व्याख्यास्मि

UP PGT(प्रवक्ता)

संस्कृत

लेखक एवं सम्पादक

सर्वज्ञभूषण

सह-सम्पादक

रमाकान्त मौर्य,

सत्यप्रकाश साहू

सुमन सिंह

ISBN : 978-81-932244-3-4

• **प्रकाशक**
संस्कृतगङ्गा (पञ्जीकृत)
59, मोरी, दारागञ्ज, इलाहाबाद
(कोतवाली दारागञ्ज के आगे, गङ्गाकिनारे संकटमोचन छोटे हनुमान् मन्दिर के पास), Mb. : 9839852033
email-Sanskritganga@gmail.com

• **प्रकाशन-सहयोग**
युनिवर्सल बुक
1519 अल्लापुर, इलाहाबाद
☎: 0532-2460638, 9453460552

• पुस्तकें डाक द्वारा भी आर्डर कर सकते हैं–
Mob. : 8004545095
8004545096

• **अक्षर संयोजक- नितिन कुमार, सन्दीप कुमार**

• **पृष्ठ विन्यास- ब्रह्मानन्द मिश्र**

• **प्रथम संस्करण –** जनवरी - 2019

• **द्वितीय संस्करण –** 14 नवम्बर 2020, दीपावली

• **मूल्य – ₹ 275/-** (दो सौ पचहत्तर रुपये मात्र)

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

1. राजू पुस्तक भण्डार, अल्लापुर, प्रयागराज
   सम्पर्क सूत्र : 0532-2503638, 9453460552
2. संस्कृतगङ्गा, दारागञ्ज, प्रयागराज - 8004545096
3. गौरव बुक एजेन्सी, कैण्ट, वाराणसी
4. विजय मैग्जीन सेन्टर, बलरामपुर
5. जायसवाल बुक सेन्टर, हरदोई
6. शिवशंकर बुक स्टाल, जौनपुर
7. न्यू पूर्वांचल बुक स्टाल, जौनपुर
8. कृष्णा बुक डिपो बस्ती
9. मौर्या बुक डिपो, पाण्डेयपुर, वाराणसी
10. मनीष बुक स्टोर, गोरखपुर
11. द्विवेदी ब्रदर्स, गोरखपुर
12. विद्यार्थी पुस्तक मन्दिर, गोरखपुर
13. रंजन मिश्रा, गोरखपुर (बस स्टैण्ड)
14. आशीर्वाद बुक डिपो, अमीनाबाद, लखनऊ
15. मालवीय पुस्तक केन्द्र, अमीनाबाद, लखनऊ
16. मॉडर्न मैग्जीन बुक शॉप, कपूरथला, लखनऊ
17. साहू बुक स्टॉल, अलीगंज, लखनऊ
18. भूमि मार्केटिंग, लखनऊ
19. दुर्गा स्टोर, राजा की मण्डी, आगरा
20. महामाया पुस्तक केन्द्र, बिलासपुर
21. डायमण्ड बुक स्टाल, ज्वालापुर, हरिद्वार
22. कम्पटीशन बुक हाउस, सब्जी मण्डी रोड, बरेली
23. अजय गुप्ता बुक स्टोर, लखीमपुर
24. शिवशंकर बुक स्टाल, रीवा
25. कृष्णा बुक एजेन्सी, वाराणसी
26. गर्ग बुक डिपो, जयपुर
27. अग्रवाल बुक सेन्टर, मुखर्जी नगर, नयी दिल्ली
28. चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी (सभी बुक स्टालों पर)
29. विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक वाराणसी
30. मोतीलाल बनारसी दास, वाराणसी
31. केशवी बुक डिस्ट्रीब्यूटर्स, नयी दिल्ली
32. महावीर बुक स्टाल, खजूरी बाजार, इन्दौर
33. हिन्दी बुक डिपो, मुरादाबाद
34. माँ बुक स्टेशनर्स, शहडोल छत्तीसगढ़
35. ज्ञानगंगा, राँची, झारखण्ड

प्राक्कथन

प्रिय संस्कृतबन्धो!

नमः संस्कृताय!

- मित्रों! उत्तर-प्रदेश माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड द्वारा आयोजित प्रवक्ता **(PGT)** परीक्षा के सभी प्रश्नपत्रों की व्याख्या ''**व्याख्यास्मि**'' के नाम से आपकी सेवा में प्रस्तुत की जा रही है।
- इस पुस्तक में सन् 2000 से लेकर अब तक के सभी प्रवक्ता परीक्षाओं के प्रश्नपत्रों के चारों विकल्पों की बृहद् व्याख्या प्रस्तुत की जा रही है।
- इस पुस्तक द्वारा विगत प्रवक्ता परीक्षाओं में पूछे गए प्रश्नों से तो आप परिचित होंगे ही साथ ही सभी महत्त्वपूर्ण सम्भावित प्रश्नों का उत्तर भी आपको इसमें मिलेगा।
- इस पुस्तक में केवल प्रश्नों की व्याख्या मात्र नहीं है अपितु प्रवक्ता के लिए एक "**Completes Notes**" है, जैसे- साहित्यदर्पण के प्रथम परिच्छेद का नाम क्या है? इस प्रश्न की व्याख्या में साहित्यदर्पण के सभी दसों परिच्छेदों का नाम लिख दिया गया है।
- सभी प्रश्नों का स्रोत भी प्रामाणिक पुस्तकों से लिखा गया है। **जैसे-** संस्कृत साहित्य का इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-125 आदि। इसीप्रकार सभी प्रश्नों के सही उत्तर का स्रोत प्रामाणिक लेखकों की पुस्तक से प्रत्येक प्रश्न के नीचे दिया गया है।
- इस पुस्तक में मुद्रणदोष की सम्भावना भी नगण्य है यदि कुत्रचित् आपको मुद्रणदोष या उत्तर गलत लगे या किसी व्याख्या में आपको आपत्ति हो तो कृपया निम्नलिखित नम्बरों पर हमें सूचित करें।
  9839852033, 7800138404
- इस पुस्तक के लेखनकार्य में संस्कृतगङ्गा की सम्पादकीय एवं लेखकीय टीम को हार्दिक धन्यवाद; जो अहर्निश परिश्रम कर इस गुरुतर कार्य को पूरा किये हैं- जिनमें **कविता सिंह, गायत्री तिवारी , पूनम दुबे, अमृता, प्रतिमा, ज्योतिमा, खुशबू, अंजना, शफीना, रिंकी, संगीता, स्वागतम् , गायत्री, अरुण पाण्डेय निर्मोही, अरुण कुमार पाण्डेय, राजीव शुक्ल, केदारनाथ तिवारी, आशुतोष, अम्बिकेश प्रताप सिंह, गणेश जी, शिवम्** आदि का अविस्मरणीय योगदान रहा। साथ ही संस्कृतगङ्गा कार्यालयीय कार्यों के हमारे सभी सहयोगियों को भी साधुवाद जो मुद्रण सम्बन्धी सभी कार्यों को यथासमय पूरा करते हैं। विशेष रूप से **गोपेश मिश्र, योगेश मिश्र, कृष्ण कुमार, सन्तोष (साहब), जितेन्द्र मिश्र, आदि।**
- इस पुस्तक के पृष्ठविन्यास हेतु सुहृदवर एवं मुद्रण हेतु को एवं प्रकाशन कार्य को शीघ्र सम्पन्न कराने हेतु **राजू पुस्तक केन्द्र अल्लापुर एवं युनिवर्सल बुक्स** को कोटिशः साधुवाद, जिनके सहयोग से इस कार्य को सफलतापूर्वक सम्पन्न किया गया।

भवदीय

14 नवम्बर 2020, दीपावली **सर्वज्ञभूषण**

संस्कृतगङ्गा, दारागंज प्रयागराज

❑❑

उ. प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयनबोर्ड, इलाहाबाद

UP-PGT (प्रवक्ता) संस्कृत पाठ्यक्रम

1. निम्नलिखित साहित्यिक ग्रन्थों का अध्ययन (गद्य, पद्य एवं नाटक)

● बाणभट्ट की कादम्बरी कथामुख ● त्रिविक्रमभट्ट का नलचम्पू (प्रथम उच्छ्वास)
● माघ का शिशुपालवधम् (प्रथमसर्ग) ● कालिदास का अभिज्ञानशाकुन्तलम् (सम्पूर्ण)
● शूद्रक का मृच्छकटिकम् (सम्पूर्ण)

● कालिदास का रघुवंशमहाकाव्यम् (द्वितीय सर्ग)
● श्रीहर्ष का नैषधीयचरितम् (प्रथमसर्ग)
→ इन दोनों ग्रन्थों का भी सामान्य अध्ययन अपेक्षित है।

2. संस्कृतसाहित्य का इतिहास– गद्यकाव्य, महाकाव्य एवं नाटक के उद्भव और विकास का सामान्य परिचय

3. संस्कृतवाङ्मय में प्रतिबिम्बित भारतीयदर्शन

निम्नलिखित दार्शनिकग्रन्थों के प्रमुख दार्शनिक सिद्धान्तों का सामान्य परिचय

● श्रीमद्भगवद्गीता ● केशवमिश्र की तर्कभाषा/अन्नंभट्ट का तर्कसंग्रह ● ईश्वरकृष्ण की सांख्यकारिका ● सदानन्द का वेदान्तसार

4. काव्यशास्त्र– मम्मट के काव्यप्रकाश एवं विश्वनाथ के साहित्यदर्पण के अनुसार निम्नलिखित काव्यशास्त्रीय विषयों का ज्ञान–

● काव्यप्रयोजन ● काव्यहेतु ● काव्यलक्षण ● काव्यभेद ● शब्दशक्तियाँ (अभिधा, लक्षणा, व्यञ्जना)
● ध्वनि ● रस ● काव्यगुण

अलङ्कार– (शब्दालङ्कार) अनुप्रास, यमक, श्लेष। **(अर्थालङ्कार)–** उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, सन्देह, भ्रान्तिमान्, अतिशयोक्ति, स्वभावोक्ति, विरोधाभास, परिसंख्या, विभावना एवं विशेषोक्ति।

5. भाषाविज्ञान– ● भाषा का उद्भव एवं विकास ● ध्वनिनियम (ग्रिम, ग्रासमान एवं वर्नर) ● ध्वनिपरिवर्तन एवं अर्थपरिवर्तन

6. व्याकरण– ● सभी गणों की प्रतिनिधि धातुओं का दसों लकारों में रूप (लघुसिद्धान्तकौमुदी के आधार पर)

यथा– (i) भ्वादिगण–भू धातु (होना)
(ii) अदादिगण–अद् धातु (खाना)
(iii) जुहोत्यादिगण–हु धातु (हवन करना)
(iv) दिवादिगण–दिव् धातु (खेल करना)
(v) स्वादिगण– सु धातु (स्नान, मद्य चुआना, निचोड़ना)
(vi) तुदादिगण– तुद् धातु (दुःख देना)
(vii) रुधादिगण– रुधिर् धातु (रोकना)
(viii) तनादिगण–तन् धातु (तानना, फैलाना)
(ix) क्र्यादिगण–क्रीञ् धातु (खरीदना)
(x) चुरादिगण–चुर् धातु (चोरी करना)

भट्टोजिदीक्षित के सिद्धान्तकौमुदी के आधार पर निम्नलिखित व्याकरण विषयों का ज्ञान

● कारक एवं विभक्तियों का प्रक्रियात्मक ज्ञान ● समास ● सन्धि का सामान्य ज्ञान

लघुसिद्धान्तकौमुदी के आधार पर निम्नलिखित प्रत्ययों का ज्ञान

कृदन्तप्रत्यय– ● तव्यत् ● अनीयर् ● यत् ● घञ् ● तृच् ● क्त ● क्तवतु ● क्त्वा ● ल्यप् ● शतृ ● शानच् ● तुमुन्
तद्धितप्रत्यय– ● अण् ● वतुप्/मतुप् ● मयट् ● ठक् ● ढक् ● फक् ● ख ● यत् ● छ
स्त्रीप्रत्यय– ● टाप् ● ङीप् ● ङीष् ● ङीन्

➔ वाच्यपरिवर्तन (कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य, भाववाच्य) ➔ संस्कृत सुभाषित एवं सूक्तियों का ज्ञान ➔ अशुद्धिपरिमार्जन

7. अपठित, अनुवाद एवं निबन्धरचना

● संस्कृत के गद्य, पद्य खण्डों का हिन्दी रूपान्तर ● हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद
● संस्कृत में निबन्ध रचना ● संस्कृत में पत्रलेखन

8. नाटक में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दों का ज्ञान– (दशरूपक अथवा साहित्यदर्पण के अनुसार)

● प्रस्तावना ● सूत्रधार ● कञ्चुकी ● विदूषक
● कथावस्तुभेद ● नायकभेद ● पताकास्थानक
● पञ्च अर्थोपक्षेपक– विष्कम्भक, चूलिका, अङ्कास्य, अङ्कावतार, प्रवेशक
● पञ्च अर्थप्रकृतियाँ– बीज, बिन्दु, पताका, प्रकरी, कार्य
● पञ्च कार्यावस्थायें– आरम्भ, यत्न, प्राप्त्याशा, नियताप्ति, फलागम
● पञ्च सन्धियाँ– मुख, प्रतिमुख, गर्भ, अवमर्श (विमर्श), उपसंहृति (निर्वहण)
● नियतश्राव्य ● सर्वश्राव्य ● स्वगत ● जनान्तिक
● अपवाारित ● आकाशभाषित ● रूपक के दस भेद ● नेपथ्य
● नान्दी ● प्रेक्षागृह आदि

विषयसूची

❑❑

1. प्रवक्ता (PGT) संस्कृत 2000

1. ''आ परितोषाद् विदुषां न साधु मन्ये प्रयोगविज्ञानम् बलवदपि शिक्षितानामात्मन्यप्रत्ययं चेतः'' यह श्लोक किस काव्य का है ?
(A) उत्तररामचरितम् (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(C) किरातार्जुनीयम् (D) शिशुपालवधम्

व्याख्या-

A. उत्तररामचरितम्-
भवभूति विरचित उत्तररामचरितम् नाटक के तृतीय अङ्क में सूत्रधार नटी से कहता है कि-

सर्वथा व्यवहर्तव्यं कुतो ह्यवचनीयता।
यथा स्त्रीणां तथा वाचां साधुत्वे दुर्जनो जनः।

(उत्तर.1/5)

सभी प्रकार से व्यवहार करना चाहिए। सर्वथा निर्दोषता कैसे सम्भव हो सकती है? मनुष्य जिसप्रकार स्त्रियों के पातिव्रत्य के सम्बन्ध में छिद्रान्वेषी होते हैं उसीप्रकार वाणी की निर्दोषता के विषय में भी छिद्रान्वेषी होते हैं।

B. अभिज्ञानशाकुन्तलम्- कालिदास कृत अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के प्रथम अङ्क में सूत्रधार नटी से कहता है-

आ परितोषाद् विदुषां न साधु मन्ये प्रयोगविज्ञानम्।
बलवदपि शिक्षितानामात्मन्यप्रत्ययं चेतः।।

(अभि.1/2)

विद्वानों के सन्तुष्ट न होनें तक मैं अभिनय के कौशल को पूर्ण नहीं समझता हूँ क्योंकि अत्यधिक शिक्षित मनुष्यों का भी मन अपने विषय में अविश्वासयुक्त होता है।

अतः विकल्प B सही है।

C. किरातार्जुनीयम्- भारवि द्वारा रचित किरातार्जुनीयम् महाकाव्य के प्रथमसर्ग में वनेचर नीतिज्ञान में अपनी अल्पज्ञता के विषय में युधिष्ठिर से कहता है कि-

निसर्गदुर्बोधमबोधविक्लवाः
क्व भूपतीनां चरितं क्व जन्तवः?
तवानुभावोऽयमवेदि यन्मया
निगूढतत्त्वं नयवर्त्म विद्विषाम्।। (किरात.1/6)

स्वाभाव से ही दुर्बोध राजाओं का चरित कहाँ?
और अज्ञान से बोझिल मुझ जैसा जीव कहाँ?
अतः शत्रुओं के अत्यन्त गूढ़ रहस्यों से भरी जो कूटनीति की बातें मुझे ज्ञात हो सकी हैं यह तो केवल आप का अनुग्रह है।

D. शिशुपालवधम्- भगवान् श्रीकृष्ण देवर्षि नारद के अवयवों को देखकर क्रमशः समझ पाये कि यह नारद हैं-

चयस्त्विषामित्यवधारितं पुरा
ततः शरीरीति विभाविताकृतिम्।
विभुर्विभक्तावयवं पुमानिति
क्रमादमुं नारद इत्यबोधि सः।। (शिशु.1/3)

सर्वप्रथम तेजों का समूह, उसके बाद मनुष्य आकार वाला शरीरधारी और फिर हाथ, पैर आदि अङ्ग दिखाई देने के बाद श्रीकृष्ण ने उन्हें क्रमानुसार नारद समझा।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/2)- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-8

2. 'कामी स्वतां पश्यति' यह सूक्ति है-
(A) दुष्यन्त की (B) कण्व की
(C) शकुन्तला की (D) दुर्वासा की

व्याख्या-

A. दुष्यन्त- 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के द्वितीय अङ्क में राजा दुष्यन्त शकुन्तला की मनोवृत्तियों एवं हाव-भाव की समीक्षा करके कहते हैं कि वह सब कुछ मुझे ही लक्ष्य करके किया गया था, फिर सोचते हैं कि 'आश्चर्य है कि कामी पुरुष सर्वत्र अपने अभिप्राय को देखता है-

''अहो कामी स्वतां पश्यति।'' (अभि.2/2)

अतः विकल्प A सही है।

B. कण्व- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में काश्यप (कण्व) विदा होती हुई शकुन्तला से कहते हैं कि-

वनौकसोऽपि सन्तो लौकिकज्ञा वयम्।

(अभि.अङ्क-4)

वनवासी होते हुये भी हम लौकिक व्यवहार को जानने वाले हैं।

C. शकुन्तला- शकुन्तला अपनी सखी अनसूया एवं प्रियंवदा से कहती हैं कि **'दुर्लभमिदानीं मे सखीमण्डनं भविष्यति।'** (अभि.अङ्क-4) ''अब मेरे लिए सखियों के द्वारा अलंकृत होना दुर्लभ हो जायेगा।''

D. दुर्वासा- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में महर्षि दुर्वासा शकुन्तला को शाप देते हुए कहते हैं कि-

विचिन्तयन्ती यमनन्यमानसा
तपोधनं वेत्सि न मामुपस्थितम्।
स्मरिष्यति त्वां न स बोधितोऽपि सन्
कथां प्रमत्तः प्रथमं कृतामिव॥

(अभि.4/1)

'अनन्य हृदय से जिसका चिन्तन करती हुई तू उपस्थित हुए मुझ तपस्वी को नहीं देख रही है, वह तेरे स्मरण दिलाने पर भी तुझको स्मरण नहीं करेगा, जैसे उन्मत्त व्यक्ति पहले कही हुई बात को स्मरण नहीं करता है।

स्रोत-अभिज्ञानशाकुन्तलम् (2/2)- कपिलदेव द्विवेदी, पेज- 95

3. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' का दुष्यन्त नायक है-
(A) धीरप्रशान्त **(B) धीरोदात्त**
(C) धीरललित **(D) धीरोद्धत**

नायक चार प्रकार

धीरप्रशान्त	धीरोदात्त	धीरललित	धीरोद्धत
(चारुदत्त)	(दुष्यन्त)	(उदयन)	(भीम)

- **धीरललित- 'निश्चिन्तो धीरललितः कलासक्तः सुखी मृदुः।'** (दश. 2/3) चिन्ता से मुक्त, कलाओं का प्रेमी, सुखी तथा कोमल प्रकृति का नायक धीरललित कहलाता है। जैसे- रत्नावली का नायक उदयन।
- **धीरप्रशान्त- 'सामान्यगुणयुक्तस्तु धीरशान्तो द्विजादिकः।'** (दश.2/3) सामान्य गुणों से युक्त द्विज आदि नायक धीरप्रशान्त नायक कहा गया है। जैसे- मृच्छकटिकम् का नायक चारुदत्त।
- **धीरोदात्त-**

महासत्त्वोऽतिगम्भीरः क्षमावानविकत्थनः।
स्थिरो निगूढाहङ्कारो धीरोदात्तो दृढव्रतः॥

(दश. 2/4)

विशाल एवं अविचल अन्तःकरणवाला, अत्यन्त गम्भीर, क्षमाशील, आत्मप्रशंसा न करने वाला (अर्थात् ढींग न हाँकने वाला), अविचल, अभिमान को दबाकर रखने वाला तथा दृढव्रती नायक धीरोदात्त कहा गया है। जैसे- उत्तररामचरितम् का नायक राम, अभिज्ञानशाकुन्तलम् का नायक दुष्यन्त,किरातार्जुनीयम् का नायक अर्जुन, नलचम्पू का नायक नल आदि धीरोदात्त नायक हैं।

- **धीरोद्धत-**

दर्पमात्सर्यभूयिष्ठो मायाच्छद्मपरायणः।
धीरोद्धतस्त्वहङ्कारी चलश्चण्डो विकत्थनः॥

(दश.2/5)

घमण्ड और डाह की अधिकता से युक्त, माया और कपट से भरपूर, अहङ्कारी, अस्थिर, अत्यन्त क्रोधी तथा अपनी प्रशंसा करने वाला नायक धीरोद्धत नायक कहा गया है। जैसे- वेणीसंहार का नायक भीम धीरोद्धत नायक है।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम्- कपिलदेव द्विवेदी, भू.पेज-86

4. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में शकुन्तला को शाप किसने दिया ?
(A) वसिष्ठ **(B) नारद**
(C) दुर्वासा **(D) विश्वामित्र**

व्याख्या-

A. वसिष्ठ- कालिदासकृत 'रघुवंशमहाकाव्य' के द्वितीयसर्ग में वशिष्ठ की नन्दिनी गाय की सेवा राजा दिलीप एवं सुदक्षिणा द्वारा पुत्र प्राप्ति हेतु की गयी है- यथा-

अथ प्रजानामधिपःप्रभाते जायाप्रतिग्राहितगन्धमाल्याम्।
वनाय पीतप्रतिबद्धवत्सां यशोधनो धेनुमृषेर्मुमोच॥

(रघु. 2/1)

B. नारद- माघकृत 'शिशुपालवधम्' के प्रथमसर्ग में इन्द्र का सन्देश लेकर नारद का आगमन एवं श्रीकृष्ण नारद सम्भाषण का वर्णन है-

'क्रमादमुं नारद इत्यबोधि सः' (शिशु. 1/3)

C. दुर्वासा- 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अङ्क में अनन्यमानसा शकुन्तला को अतिथि तिरस्कार से क्रोधित होकर दुर्वासा ने शाप दे दिया-

स्मरिष्यति त्वां न स बोधितोऽपि सन्
कथां प्रमत्तः प्रथमं कृतामिव॥ (अभि. 4/1)

अतः विकल्प C सही है।

D. विश्वामित्र- शकुन्तला, विश्वामित्र एवं मेनका की 'औरस' पुत्री है तथा महर्षि कण्व की 'मानस पुत्री' (पालिता या धर्मपुत्री) है।

''अस्ति कोऽपि कौशिक इति गोत्रनामधेयो महाप्रभावो राजर्षिः ....तमावयोः प्रियसख्याः प्रभवमवगच्छ।'' (अभि.अङ्क-1)

स्रोत-अभिज्ञानशाकुन्तलम्-(4.1) कपिलदेव द्विवेदी,पेज-184

5. 'धीवर प्रसङ्ग' अभिज्ञानशाकुन्तलम् के किस अङ्क में है?

(A) तृतीय **(B) पञ्चम**

(C) षष्ठ **(D) सप्तम**

व्याख्या-

* **1. प्रथम अङ्क (आश्रम प्रवेश)-** शिकार खेलते हुए दुष्यन्त का कण्व आश्रम में प्रवेश, भ्रमर द्वारा शकुन्तला को पीड़ित किया जाना, उन्मत्त हाथी का प्रवेश।
* **2. द्वितीय अङ्क (आश्रम निवेश)-** विदूषक (माधव्य) का मंच पर प्रथम आगमन,राजा को करभक द्वारा हस्तिनापुर का सन्देश प्राप्त होना।
* **3. तृतीय अङ्क (मिलन)-** दुष्यन्त एवं शकुन्तला का गान्धर्व विवाह एवं मिलन दुष्यन्त द्वारा शकुन्तला को अँगूठी दिया जाना।
* **4. चतुर्थ अङ्क (विदाई)-** दुर्वासा द्वारा शकुन्तला को शाप दिया जाना, केवल चतुर्थ अङ्क में कण्व की उपस्थिति, शार्ङ्गरव, शारद्वत एवं गौतमी के साथ शकुन्तला की विदाई।
* **5. पञ्चम अङ्क (प्रत्याख्यान)-** शार्ङ्गरव, शारद्वत, और गौतमी के साथ शकुन्तला का हस्तिनापुर में प्रवेश, दुष्यन्त द्वारा शकुन्तला को न पहचानना, शार्ङ्गरव, आदि का शकुन्तला को हस्तिनापुर में छोड़कर आश्रम की ओर प्रस्थान।
* **6. षष्ठ अङ्क (पश्चात्ताप)-** धीवर प्रसङ्ग (प्रवेशक), इन्द्र के सारथि मातलि द्वारा दुष्यन्त को स्वर्ग ले जाना, मेनका की सखी सानुमती का प्रवेश। इससे स्पष्ट है कि 'धीवर प्रसङ्ग' अभिज्ञानशाकुन्तलम् के पश्चाताप नामक षष्ठ अङ्क में है।

  अतः विकल्प C सही है।
* **7. सप्तम अङ्क (पुनर्मिलन)-** स्वर्ग से लौटते समय दुष्यन्त का हेमकूट पर्वत पर स्थित मारीच आश्रम में प्रवेश, पुत्र सर्वदमन, शकुन्तला एवं दुष्यन्त का मिलन।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम्- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-307

6. 'अविश्रमोऽयं लोकतन्त्राधिकारः।'इस उक्ति से युक्त नाटक है-

(A) मुद्राराक्षसम्

(B)अभिज्ञानशाकुन्तलम्

(C) मृच्छकटिकम्

(D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या-

A. मुद्राराक्षसम्- 'अत्यादरः शङ्कनीयः।' अङ्क-1 चन्दनदास का आत्मगत कथन अत्यधिक आदर शङ्का को उत्पन्न करने वाला होता है।

B. अभिज्ञानशाकुन्तलम्-

अविश्रमोऽयं लोकतन्त्राधिकारः। (अङ्क-5) कण्व शिष्यों की सूचना देने के लिए कञ्चुकी राजा की व्यस्तता को सोचकर कहता है कि मैं सूचना देने का साहस नहीं कर पा रहा हूँ अथवा 'यह लोक की रक्षा करने का अधिकार विश्राम से रहित होता है।

अतः विकल्प B सही है।

C. मृच्छकटिकम्-

बलवता सह को विरोधः। (मृच्छ. 6/2) आर्यक, राजा पालक के विषय में विचार करके कहता है कि- बलवानों से विरोध कौन करना चाहेगा?

स्रोत-अभिज्ञानशाकुन्तलम्(अङ्क-5)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-249

7. ज्वलति चलितेन्धनोऽग्निर्विप्रकृतः पन्नगः फणां कुरुते। प्रायः स्वं महिमानं क्षोभात् प्रतिपद्यते हि जनः॥ यह श्लोक निम्नलिखित में किससे सम्बन्धित है-

(A) मृच्छकटिकम्/शर्विलक

(B) अभिज्ञानशाकुन्तलम्/मातलि

(C) उत्तररामचरितम्/लव

(D) किरातार्जुनीयम्/द्रौपदी

व्याख्या-

A. मृच्छकटिकम् के चतुर्थ अङ्क में शर्विलक मदनिका से कहता है कि- **साहसे श्रीः प्रतिवसति।** (मृच्छ. अङ्क-4) साहस में लक्ष्मी का निवास होता है।

B. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में इन्द्र का सारथी मातलि राजा दुष्यन्त को क्रोध दिलाने के लिए विदूषक को पीटता है इस

पर राजा के क्रोधित होने पर मातलि कहता है कि **''ज्वलति चलितेन्धनोऽग्निर्विप्रकृतः पन्नगः फणां कुरुते। प्रायः स्वं महिमानं क्षोभात् प्रतिपद्यते हि जनः॥''** (अभि.6/36) अग्नि ईंधन को हिलाने पर जलने लगती है, छेड़ा हुआ सर्प फण फैला लेता है। क्योंकि प्रायः मनुष्य उत्तेजना से अपनी महिमा को प्राप्त कर लेता है।

अतः विकल्प B सही है।

C. उत्तररामचरितम् के पञ्चम अङ्क में क्रोधित लव चन्द्रकेतु से कहता है -

ऋषयो राक्षसीमाहुर्वाचमुन्मत्तदृप्तयोः।
स योनिः सर्ववैराणां सा हि लोकस्य निष्कृतिः॥

(उत्तर.5/29)

ऋषि लोग उन्मत्त एवं गर्वयुक्त मनुष्यों की वाणी को राक्षसी वाणी कहते हैं वह सारे झगड़ों की जड़ है और वही लोगों के तिरस्कार का कारण है।

D. किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में द्रौपदी युधिष्ठिर से कहती हैं कि- **प्रविश्य हि घ्नन्ति शठास्तथा विधानसंवृताङ्गान्निशिता इवेषवः॥** (किरात.1/30) धूर्त लोग तथाविध सौम्य पुरुषों के आत्मीय बन कर उन्हे मार ही डालते हैं जैसे तीक्ष्ण बाण कवच से अनाच्छादित शरीर वालों के भीतर घुस कर उन्हें मार ही डालते हैं।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम्-6/31

8. निम्नलिखित सूक्ति किस रचना से ली गई है ?
''एष क्रीडति कूपयन्त्रघटिकान्यायप्रसक्तो विधिः॥''

(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् **(B) स्वप्नवासवदत्तम्**
(C) मृच्छकटिकम् **(D) रत्नावली**

व्याख्या-

A. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के छठे अङ्क में विदूषक राजा से कहता है कि-

'भवितव्यता खलु बलवती।' (अभि.अङ्क-6)

होनहार होकर रहती है अर्थात् जो भाग्य में है उसे टाला नहीं जा सकता।

B. स्वप्नवासवदत्तम् के चतुर्थ अङ्क में विदूषक राजा से कहता है-

'अनतिक्रमणीयो हि विधिः।' (स्वप्न. अङ्क-4)

भाग्य का उल्लंघन नहीं किया जा सकता है।

C. मृच्छकटिकम् के दशम अङ्क में चारुदत्त शर्विलक से कहता है-

'एष क्रीडति कूपयन्त्रघटिकान्यायप्रसक्तो विधिः।'

(मृच्छ. 10/60)

कूपयन्त्र (रहट) की घटिकाओं की पद्धति का अनुसरण करने वाला वह भाग्य क्रीड़ा करता है।

अतः विकल्प C सही है।

D. रत्नावली के द्वितीय अङ्क में राजा विदूषक से कहता है-

'अचिन्त्यो हि मणिमन्त्रौषधीनां प्रभावः।'

(रत्ना.अङ्क-2)

मणि, मन्त्र एवं औषधि का प्रभाव अचिन्तनीय होता है अर्थात् इसके बारे में सोचा नहीं जा सकता है।

स्रोत- मृच्छकटिकम् (10/60)- रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-742

9. मृच्छकटिकम् का नायक कौन है?

(A) शकार **(B) दुर्योधन**
(C) संवाहक **(D) चारुदत्त**

व्याख्या-

A. शकार- शूद्रककृत 'मृच्छकटिकम्' प्रकरण का प्रतिनायक (खलनायक) शकार है। यह राजा पालक का श्यालक (साला) है एवं लोभी, धीरोद्धत्त, जड़ प्रकृति वाला, पापी और व्यसनी है।

B. दुर्योधन- भारविकृत 'किरातार्जुनीयम्' का प्रतिनायक है। दुःशासन इसका छोटा भाई है।

C. संवाहक- 'मृच्छकटिकम्' में दरिद्रता के कारण संवाहक का व्यवसाय करने वाला एक गृहपति का पुत्र है जो चारुदत्त के यहाँ नौकरी करने के पश्चात् जुआरी बन जाता है बाद में वसन्तसेना द्वारा ऋणमुक्त किये जाने पर बौद्धभिक्षु बन जाता है।

D.चारुदत्त- मृच्छकटिकम् का नायक चारुदत्त उज्जयिनी का एक ब्राह्मण युवक है। इसकी विवाहिता पत्नी धूता तथा पुत्र रोहसेन है। वसन्तसेना (गणिका नायिका) चारुदत्त पर आसक्त है। यह धीरप्रशान्त कोटि का नायक है।

'सामान्यगुणयुक्तस्तु धीरशान्तो द्विजादिकः।'

(दश.2/4)

अतः विकल्प D सही है

स्रोत- संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-321

10. 'मृच्छकटिकम्' की कथा किसमें समायोजित है ?
(A) उद्योत (B) सर्ग
(C) अङ्क (D) उच्छ्वास

व्याख्या-

ग्रन्थ	ग्रन्थकार	विभाजन
1. ध्वन्यालोक (लक्षणग्रन्थ)	आनन्दवर्धन	4 उद्योत
2. ऋतुसंहारम् (गीतिकाव्य)	कालिदास	6 सर्ग
3. मृच्छकटिकम् (प्रकरण)	शूद्रक	10 अङ्क
4. दशकुमारचरितम् (गद्यकाव्य)	दण्डी	8 उच्छ्वास

अतः विकल्प C सही है।

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज- 307

11. सुजनः खलु भृत्यानुकम्पकः स्वामी निर्धनकोऽपि शोभते।
पिशुनः पुनर्द्रव्यगर्वितो दुष्करः खलु परिणामदारुणः॥
इस श्लोक के ग्रन्थ और उसके कवि हैं-
(A) मृच्छकटिकम्/शूद्रक
(B) नीतिशतकम्/भर्तृहरि
(C) किरातार्जुनीयम्/भारवि
(D) मेघदूतम्/कालिदास

व्याख्या-

A. शूद्रककृत मृच्छकटिकम् के तीसरे अङ्क में चेट कहता है कि-

'सुजनः खलु भृत्यानुकम्पकः
स्वामी निर्धनकोऽपि शोभते।
पिशुनः पुनर्द्रव्यगर्वितो
दुष्करः खलु परिणामदारुणः॥'

नौकरों पर दया करने वाले सज्जन मालिक निर्धन रहने पर भी सुखदायी (शोभित) होता है, किन्तु धन के मद में चूर दुष्ट मालिक दुःख से सेवा करने योग्य तथा अन्त में भयंकर होता है।

अतः विकल्प A सही है।

B. ''वरं पर्वतदुर्गेषु भ्रान्तं वनचरैः सह।
न मूर्खजनसम्पर्कः सुरेन्द्रभवनेष्वपि॥''

नीति. परिशिष्ट (श्लोक-12)

वनचरों के साथ पर्वतों पर तथा दुर्गमस्थानों में विचरण करना अच्छा है परन्तु मूर्खों के साथ सुरेन्द्र(इन्द्र) के भवन में भी रहना अच्छा नहीं है।

C. ''सदाऽनुकूलेषु हि कुर्वते रतिम्।
नृपेष्वमात्येषु च सर्वसम्पदः॥'' (किरात. 1/5)

राजा और मन्त्री के परस्पर सर्वदा अनुकूल रहने पर ही उनमें सब प्रकार की समृद्धियाँ अनुरक्त होती हैं।

D. 'कस्यात्यन्तं सुखमुपनतं दुःखमेकान्ततो वा।
नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण॥

मेघ. (उत्तरमेघ-49)

नियम से सुख ही सुख अथवा दुःख ही दुःख सदा किसको रहा? सदा पहिए के घेरे के क्रम के अनुसार सुख-दुःख नीचे और ऊपर जाते रहते हैं।

स्रोत- मृच्छकटिकम् (3/1), रमाशंकर त्रिपाठी, पेज- 179

12. अगस्त्याश्रम में राम के रहने के लिए पर्णकुटी का निर्माण किसने किया था?
(A) राम (B) लक्ष्मण
(C) वाल्मीकि (D) शिव

व्याख्या-

A. भवभूतिकृत 'उत्तररामचरितम्' के नायक राम द्वितीय अङ्क में शम्बूक का वध करते हैं-

हे हस्त दक्षिण! मृतस्य शिशोर्द्विजस्य
जीवातवे विसृज शूद्रमुनौ कृपाणम्।
रामस्य बाहुरसि निर्भरगर्भखिन्न
सीताविवासनपटोः करुणा कुतस्ते॥

(उत्तररामचरितम् 2/10)

हे दक्षिण हाथ! ब्राह्मण के मृत बालक को जीवित करने के लिए शूद्र तपस्वी पर कृपाण चला। तू पूर्ण गर्भ के भार से खिन्न सीता के निर्वासन में चतुर राम की भुजा है। तुझमें दया कहाँ?

B. सुमित्रानन्दन लक्ष्मण ने अगस्त्याश्रम में राम के रहने के लिए पर्णकुटी का निर्माण किया था।

अतः विकल्प B सही है।

C. आदिकवि 'वाल्मीकि रामायण' के रचयिता एवं लव-कुश के संरक्षक हैं।

D. 'किरातार्जुनीयम्' में किरातवेशधारी शिव का अर्जुन से युद्ध एवं अर्जुन को पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति होती है।

इति निगदितवन्तं सूनुमुच्चैर्मघोनः
प्रणतशिरसमीशः सादरं सान्त्वयित्वा।
ज्वलदनलपरीतं रौद्रमस्त्रं दधानं
धनुरुपपदमस्मै वेदमभ्यादिदेश।

(किरात.18-44)

भगवान् शङ्कर ने उपर्युक्त प्रकार से उच्च स्वर में स्तुति करते हुए तथा प्रणामार्थ नतमस्तक इन्द्रपुत्र (अर्जुन) को सान्त्वना देते हुए प्रज्वलन्त अग्नि से व्याप्त पाशुपतास्त्र को धारण करते हुए धनुर्वेद का आदेश दिया।

स्रोत- वाल्मीकि रामायण (अरण्यकाण्ड)15/20

13. ''लौकिकानां हि साधूनामर्थं वागनुवर्तते।
ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति॥''
यह उपर्युक्त श्लोक किस ग्रन्थ से है ?
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् **(B) शिशुपालवधम्**
(C) उत्तररामचरितम् **(D) रघुवंशम्**

व्याख्या-

A. अभिज्ञानशाकुन्तलम्- अनसूया शकुन्तला से कहती है कि-

''एषापि प्रियेण विना गमयति रजनीं विषाददीर्घतराम्।
गुर्वपि विरहदुःखमाशाबन्धः साहयति॥'' (अभि.4/6)

यह भी अपने प्रिय के बिना दुःख के कारण अधिक लम्बी रात्रि बिताती है आशा का बन्धन विरह के कठोर दुःख को भी सहन करा देता है।

B. शिशुपालवधम्-

''ऋते रवेः क्षालयितुं क्षमेत कः। क्षपातमस्काण्डमलीमसं नभः॥ (शिशु.-1.38)

रात्रि के अन्धकार समूह से मलिन आकाश को निर्मल बनाने के लिए सूर्य के बिना कौन समर्थ होगा? अन्य कोई नहीं।

C. उत्तररामचरितम्-

''लौकिकानां हि साधूनामर्थं वागनुवर्तते।
ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति॥''

(उत्तर. 1/10)

राम कहते हैं कि लौकिक सज्जनों की वाणी तो अर्थ का अनुसरण करती है, परन्तु प्राचीन महर्षियों की वाणी के पीछे अर्थ स्वयं चलता है।

अतः विकल्प C सही है।

D. रघुवंशम्-

ईप्सितं तदवज्ञानाद्विद्धि सार्गलमात्मनः।
प्रतिबध्नाति हि श्रेयः पूज्यपूजाव्यतिक्रमः॥

(रघु. 1.79)

पुत्र प्राप्ति हेतु जब राजा दिलीप कुलगुरु के पास जाते हैं तो वशिष्ठ ने राजा दिलीप से कहा कि उस सुरभि का अनादर होने के कारण अपने मनोरथ को रुका हुआ समझो क्योंकि पूज्यों की पूजा का उल्लंघन करना कल्याण को रोक देता है।

स्रोत-उत्तररामचरितम् (1/10) कपिलदेव द्विवेदी, पेज-22

14. 'विक्रमोर्वशीयम्' है-
(A) चम्पूकाव्य **(B) खण्डकाव्य**
(C) नाटक **(D) त्रोटक**

व्याख्या-

रचना	रचयिता	विधा	विभाजन
नलचम्पू	त्रिविक्रमभट्ट	चम्पूकाव्य	7 उच्छ्वास
मेघदूतम्	कालिदास	खण्डकाव्य (पूर्वमेघ, उत्तरमेघ)	2 भाग
अभिज्ञानशाकुन्तलम्	कालिदास	नाटक	7 अङ्क
विक्रमोर्वशीयम्	कालिदास	त्रोटक	5 अङ्क

अतः विकल्प D सही है।

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी,पेज-329

15. संस्कृत नाटक में 'नान्दी' का उद्देश्य है-
(A) अर्थप्राप्ति **(B) यशप्राप्ति**
(C) आनन्दप्राप्ति **(D) विघ्नोपशान्ति**

व्याख्या-

आचार्य मम्मट ने ''काव्यप्रकाश'' के प्रथमोल्लास में काव्य के छः प्रयोजनों का उल्लेख किया है-

''काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये।
सद्यः परनिर्वृतये कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे॥''

(का.प्र.1.2)

काव्य यश के लिए, अर्थ प्राप्ति के लिए, व्यवहार ज्ञान के लिए, अनिष्ट के नाश के लिए, परमानन्द के लिए, कान्तासम्मित उपदेश के लिए होता है।

नाटक में नान्दी का उद्देश्य- साहित्यदर्पणकार आचार्य विश्वनाथ ने छठें परिच्छेद में नान्दी के प्रयोजन का वर्णन इसप्रकार किया है-

तथाऽप्यवश्यं कर्तव्या नान्दी विघ्नोपशान्तये॥

साहित्यदर्पण (6/23)

अर्थात् नाटक में विघ्नों को शान्त करने के लिए नान्दी का प्रयोग अवश्य करना चाहिए। **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत- साहित्यदर्पण (6/23)- शालिग्राम शास्त्री, पेज-172

16. रूपकों में स्त्रियों की भाषा होती है-

(A) संस्कृत **(B) संस्कृत और प्राकृत**
(C) पालि **(D) शौरसेनी प्राकृत**

व्याख्या- आचार्य विश्वनाथ ने साहित्यदर्पण के छठवें परिच्छेद में रूपकों के पात्रों की भाषा का वर्णन किया है-

पुरुषाणामनीचानां संस्कृतं स्यात्कृतात्मनाम् ।
शौरसेनी प्रयोक्तव्या तादृशीनां च योषिताम्॥
आसामेव तु गाथासु महाराष्ट्रीं प्रयोजयेत्।
अत्रोक्ता मागधी भाषा राजान्तःपुरचारिणाम्॥
चेटानां राजपुत्राणां श्रेष्ठानां चार्धमागधी।
प्राच्या विदूषकादीनां, धूर्तानां स्यादवन्तिजा॥

(साहित्यदर्पण 6.158-161)

(रूपक-प्रबन्धों में) उच्च श्रेणी के पढ़े-लिखे पुरुषों की भाषा **संस्कृत** हुआ करती है। उच्च श्रेणी की पढ़ी-लिखी स्त्रियाँ '**शौरसेनी**' में बातचीत करती दिखाई जाया करती हैं। कुलीन स्त्रियों के गीत की भाषा **महाराष्ट्री** है। राजा के अन्तःपुर में रहने वाले वामन आदि की भाषा **मागधी** होती है। चेट, राजकुमार और सेठ लोग **अर्धमागधी** बोलते हैं विदूषकादिक **प्राच्या प्राकृत** और धूर्त लोग **अवन्तिजा** बोलते हैं। अहीरों की भाषा **अभीरी,** चाण्डाल की भाषा **चाण्डाली,** मल्लाह आदि की भाषा **आभीरी** अथवा **शाबरी** होती है लुहार की भाषा **पैशाची**।

अतः विकल्प D सही है।

संस्कृत साहित्य का समीक्षा0 इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-272

17. 'सदाभिमानैकधना हि मानिनः' यह सूक्ति है-

(A) रामायण में **(B) शिशुपालवध में**
(C) नलचम्पू में **(D) कुमारसम्भव में**

व्याख्या-

A. रामायण

''अग्निसंयोगवद्हेतुः शास्त्रसंयोग उच्यते।''

जैसे आग का संयोग ईधनों को जलाने का कारण होता है उसीप्रकार शास्त्रों का संयोग शस्त्रधारी के हृदय में विकार का उत्पादक कहा गया है।

B. शिशुपालवध-

''सदाभिमानैकधना हि मानिनः॥'' (शिशु.1/67)

मानियों का अभिमान ही एकमात्र धन होता है।

अतः विकल्प B सही है।

C. नलचम्पू-

''कुलीनमनुकूलं च कलत्रं कुत्र लभ्यते।''

(नल.2/22)

कुलीन और अनुकूल पत्नी कहाँ प्राप्त होती है?

D. कुमारसम्भव-

''अशोच्या हि पितुः कन्या सद्भर्तृप्रतिपादिता॥''

(कुमार.6/79)

सत्पात्र (पति) को दी गई कन्या पिता के लिए अशोच्य होती है।

स्रोत- शिशुपालवधम् (1/67) तारिणीश झा, पेज-140

18. ''पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम्'' इस सूक्ति के रचयिता हैं-

(A) कालिदास **(B) माघ**
(C) भारवि **(D) भर्तृहरि**

व्याख्या-

A. कालिदासकृत रघुवंश महाकाव्य के दूसरे सर्ग में नन्दिनी गाय की सेवा करने के विषय में राजा दिलीप कहते हैं कि-

''स्ववीर्यगुप्ता हि मनोः प्रसूतिः।'' रघुवंशम् (2/4)

'मनुवंशी अपनी रक्षा स्वयं करते हैं।'

B. शिशुपालवध महाकाव्य के प्रथमसर्ग में नारदमुनि श्रीकृष्ण से कहते हैं कि-

''सतीव योषित्प्रकृतिः सुनिश्चला पुमांसमभ्येति भवान्तरेष्वपि॥'' (शिशु. 1.72)

मनुष्य की प्रकृति सती स्त्री की भाँति अगले जन्म में इसी रूप से प्राप्त होती है।

C. द्रौपदी युधिष्ठिर से कहती हैं कि **''पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम्।''** (किरात. 1.41) 'स्वाभिमानी के लिए पराभव (पराजय) भी उत्सव के समान होता है।'

अतः विकल्प C सही है।

D. नीतिशतकम् के अर्थपद्धति में भर्तृहरि राजा को उपदेशित करते हुए कहते हैं-

''नानाफलं फलति कल्पलतेव भूमिः।''

(नीति. श्लोक-38)

कल्पवृक्ष की भाँति भूमि अनेक फलों को देने वाली है। अर्थात् प्रजा के सुखी रहने पर यह पृथ्वी कल्पलता की भाँति अनेक मनोरथों को पूर्ण कर देती है।

स्रोत- किरातार्जुनीयम् (1/41) रामसेवक दुबे, पेज-138

19. निम्नलिखित अवतरण में किसके विशेषण हैं- अतिशुद्धस्वभावमपि कृष्णचरितम्, अकरमपि हस्तस्थितसकल-भुवनतलं राजानम् अद्राक्षीत्।

(A) शूद्रक **(B) वैशम्पायन शुक**
(C) पुण्डरीक **(D) चन्द्रापीड**

व्याख्या- कादम्बरी कथामुख के शूद्रक वर्णन में चाण्डालकन्या द्वारा देखे गए शूद्रक का वर्णन इस प्रकार है-

A. ''अत्यन्तशुद्धस्वभावमपि कृष्णचरितम् अकरमपि हस्तस्थितसकलभुवनतलं राजानम् अद्राक्षीत्।''

(कादम्बरी-कथामुखम्)

"अत्यन्त पवित्र स्वभाव के होने पर भी मलिन चरित्र वाले (विरोधपरिहारपक्ष में – कृष्ण के समान चरित्र वाले) और कर (हाथ, विरोधपरिहारपक्ष में – राजस्व) से रहित होने पर भी सम्पूर्ण पृथ्वीतल को हस्तगत किए हुए राजा को देखा।''

अतः विकल्प A सही है।

B. कादम्बरी कथामुख के शुक वर्णन में शुक का विशेषण-

''प्रणय-कलह-कुपित-कामिनी-प्रसादनोपाय-चतुरः, गज-तुरग-पुरुष-स्त्री-लक्षणाभिज्ञः, सकल-भूतल-रत्नभूतोऽयं वैशम्पायनो नाम शुकः।''

प्रेमकलह में रूठी हुई कामिनियों को रिझाने के उपायों में पटु, हाथी, घोड़े, पुरुष एवं स्त्री के शुभाशुभ लक्षणों का विशेषज्ञ और सम्पूर्ण भूतल पर रत्नभूत यह वैशम्पायन नामक तोता है।

C. पुण्डरीक दिव्यरूप में निवास करने वाले महामुनि श्वेतकेतु को देखकर आकृष्ट हुई लक्ष्मी का मानस पुत्र है।

D. कादम्बरी कथा का नायक चन्द्रापीड है-

''प्रतिदिनञ्चोत्थायोत्थाय सह विलासवत्या विरलपरिजनस्तत्रैव गत्वैनमालोकयामास राजा।'' राजा प्रतिदिन उठ-उठ कर विलासवती को साथ लेकर कुछ ही सेवकों के साथ उस विद्यामन्दिर में ही जाकर इस चन्द्रापीड को देखा करता था।

स्रोत- कादम्बरीकथामुखम्- समीर शर्मा, पेज- 54

20. कादम्बरी है-

(A) आख्यायिका **(B) कथा**
(C) प्रकरण **(D) ऐतिहासिक काव्य**

व्याख्या-

विधा	ग्रन्थ	विभाजन	ग्रन्थकार
A. आख्यायिका	हर्षचरितम्	8 उच्छ्वास	बाणभट्ट
B. कथा	कादम्बरी	2 भाग	बाणभट्ट
C. प्रकरण	* मृच्छकटिकम्	10 अङ्क	शूद्रक
	* मालतीमाधव	10 अङ्क	भवभूति
D. ऐतिहासिककाव्य	शिवराजविजय	3 विराम 12निःश्वास	अम्बिकादत्तव्यास

अतः विकल्प B सही है।

संस्कृत साहित्य का समीक्षा0 इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-493

21. निम्नलिखित में से किसके मतानुसार संस्कृत गद्य काव्य के अन्तर्गत 'प्रबन्धकल्पनाकथा' और 'आख्यायिकोपलब्धा' का विभाजन हुआ है-

(A) विश्वनाथ **(B) भर्तृहरि**
(C) दण्डी **(D) वामन**

व्याख्या-

A. विश्वनाथ- आचार्य विश्वनाथ ने गद्यकाव्य के चार भेद माने हैं- 1- मुक्तक 2- वृत्तगन्धि 3- उत्कलिकाप्राय 4- चूर्णक।

वृत्तगन्धोज्झितं गद्यं मुक्तकं वृत्तगन्धि च।
भवेदुत्कलिकाप्रायं चूर्णकं च चतुर्विधम्।।

(सा.द. 6/330,331)

B. भर्तृहरि- आचार्य भर्तृहरि ने गद्यकाव्य की विधाओं में तीन मुक्तककाव्य लिखें हैं- 1- शृङ्गारशतक 2- नीतिशतक 3- वैराग्यशतक।

C. दण्डी- आचार्य दण्डी ने संस्कृत गद्यकाव्य के मुख्य दो भेद माने हैं- 1- प्रबन्धकल्पनाकथा 2- आख्यायिकोपलब्धार्था।

''तत् कथाख्यायिकेत्येका जातिः संज्ञाद्वयाङ्किता।'' (काव्यादर्श 1/28)

अतः विकल्प C सही है।

D. वामन- आचार्य वामन ने 10 शब्दगुण तथा 10 अर्थगुण मानें हैं। जबकि मम्मटादि अन्य आचार्यों ने तीन गुण माने हैं।

ओजःप्रसादश्लेषसमतासमाधिमाधुर्यसौकुमार्योदारताऽर्थ-व्यक्तिकान्तयो बन्धगुणाः। (काव्यालङ्कार सूत्र-3.1.4) ओज, प्रसाद, श्लेष, समता, समाधि, माधुर्य, सौकुमार्य, उदारता, अर्थव्यक्ति और कान्ति ये दस शब्दगुण हैं। यही अर्थगुण भी हैं।

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इति0-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि' पेज 375

22. 'दशकुमारचरितम्' की कथावस्तु के विचार कहाँ से लिए गये हैं?

(A) ऋग्वेद **(B) छान्दोग्य उपनिषद्**
(C) बृहत्कथा **(D) महाभारत**

व्याख्या-

A. भरतमुनि के अनुसार नाटक का कथानक ऋग्वेद से लिया गया है- **'जग्राह पाठ्यमृग्वेदात्'** (नाट्य. 1/17)

B. सामवेद के **'छान्दोग्योपनिषद्'** में 'सत्यकाम जाबालि कथा' वर्णित है।

C. दण्डीकृत **'दशकुमारचरितम्'** एक गद्यकाव्य है। यह आठ उच्छ्वासों में विभक्त है जिसमें दस राजकुमारों का वर्णन है। इसकी कथावस्तु के विचार गुणाढ्य की बृहत्कथा से लिया गया है। **अतः विकल्प C सही है।**

D. महाभारत वेदव्यास द्वारा रचित संस्कृत साहित्य का आकरग्रन्थ है जिसकी कथावस्तु अठारह पर्वों में विभक्त है। महाभारत में पाञ्चाली शैली तथा शान्त रस है।

स्रोत- संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-5, पेज - 63)

23. हर्षचरितम् में उच्छ्वास हैं-

(A) दस **(B) सात**
(C) छह **(D) आठ**

व्याख्या-

A. दस अङ्कों के प्रकरण ग्रन्थ होते हैं जैसे शूद्रककृत मृच्छकटिकम्, भवभूति कृत मालतीमाधवम्।

B. सात अङ्क के कई नाटक प्राप्त होते हैं जैसे- अभिज्ञानशाकुन्तलम्, उत्तररामचरितम्, प्रतिमानाटक इत्यादि।

C. छह अङ्कों के नाटक जैसे- स्वप्नवासवदत्तम्, अभिषेकनाटकम्, अविमारकम्, वेणीसंहारम्।

D. बाणभट्ट कृत ''हर्षचरितम्'' एक आख्यायिका ग्रन्थ है जिसमें 8 उच्छ्वास हैं।

अतः विकल्प D सही है।

ग्रन्थ	ग्रन्थकार	विभाजन
* मृच्छकटिकम्	शूद्रक	10 अङ्क
* अभिज्ञानशाकुन्तलम्	कालिदास	7 अङ्क
* स्वप्नवासवदत्तम्	भास	6 अङ्क
* हर्षचरितम्	बाणभट्ट	8 उच्छ्वास

स्रोत- संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-491

24. ''मेघदूतम्'' किस प्रकार की रचना है-

(A) महाकाव्य **(B) उपन्यास**
(C) खण्डकाव्य **(D) चम्पूकाव्य**

व्याख्या-

विधा	ग्रन्थ	विभाजन	ग्रन्थकार
A. महाकाव्य	नैषधीयचरितम्	22 सर्ग	श्रीहर्ष
B. उपन्यास	शिवराजविजय	3 विराम, 12 निःश्वास	अम्बिकादत्तव्यास
C. खण्डकाव्य	मेघदूतम्	दो भाग (पूर्व एवं उत्तरमेघ)	कालिदास
D. चम्पूकाव्य	नलचम्पू	7 उच्छ्वास	त्रिविक्रमभट्ट

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि',पेज-332

25. "कस्यात्यन्तं सुखमुपनतं दुःखमेकान्ततो वा। नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण।"
इस श्लोक का सन्देश है-
(A) संसार परिवर्तनशील है
(B) दुःख में स्थिर रहना चाहिए
(C) सुखःदुख परिवर्तनशील है
(D) नीच का साथ नहीं करना चाहिए

व्याख्या-
"कस्यात्यन्तं सुखमुपनतं दुःखमेकान्ततो वा।
नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण॥"
(उत्तरमेघ-49)

यक्ष मेघ से अपनी पत्नी यक्षिणी के पास सन्देश भिजवाता है कि हे कल्याणी! तुम भी बहुत दुःखी मत होना क्योंकि "किसे अत्यन्त सुख या लगातार दुःख प्राप्त होता है? लोगों की दशा (भाग्य) पहिये के किनारे के समान ऊपर-नीचे आया-जाया करती है।" अर्थात् सुख-दुःख परिवर्तनशील है। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- उत्तरमेघ (श्लोक-49)- आर0 बी0 शास्त्री, पेज-122

26. महाकाव्य-लेखन की अलङ्कार-बहुल पद्धति विचित्रमार्ग के प्रवर्तक हैं-
(A) भारवि **(B) कालिदास**
(C) माघ **(D) श्रीहर्ष**

व्याख्या -
A. भारवि- अलङ्कार बहुल पद्धति, विचित्रमार्ग के प्रवर्तक, अर्थगौरवपूर्ण शैली, भारवेरर्थगौरवम्।
अतः विकल्प A सही है।
B. कालिदास- वैदर्भी रीति के सर्वोत्कृष्ट कवि, उपमा कालिदासस्य, रसवादी एवं सरल मार्ग के प्रवर्तक।
C. माघ- माघे सन्ति त्रयोगुणाः, मेघे माघे गतं वयः, घण्टामाघ की उपाधि, उपमा, अर्थगौरव, एवं पदलालित्य इन तीनों के लिए प्रसिद्ध हैं।
D. श्रीहर्ष- उदिते नैषधे काव्ये क्व माघः क्व च भारविः नैषधं विद्वदौषधम्, नैषधे पदलालित्यम् आदि वक्तव्यों से विभूषित।

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-241

27. 'बाण' का काल कौन सा है?
(A) सप्तम शताब्दी का पूर्वार्ध
(B) छठी शताब्दी
(C) चतुर्थ शताब्दी
(D) अष्टम शताब्दी

व्याख्या-

कवि	अनुमानित काल (समय)	रचनाएँ
A. बाणभट्ट	सातवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध	कादम्बरी, हर्षचरितम्
B. कुमारदास	छठी शताब्दी	जानकीहरणम्
C. ईश्वरकृष्ण	चतुर्थ शताब्दी	सांख्यकारिका
D. दामोदरभट्ट	अष्टम शताब्दी	कुट्टनीमतम्

अतः विकल्प A सही है।
स्रोत- संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी पेज-491

28. 'शिशुपालवधम्' का रचयिता कौन है ?
(A) सुबन्धु **(B) भारवि**
(C) भट्टि **(D) माघ**

व्याख्या-

रचना/ग्रन्थ	रचनाकार	विधा	सर्ग
A. वासवदत्ता	सुबन्धु	गद्यकाव्य	
B. किरातार्जुनीयम्	भारवि	महाकाव्य	18 सर्ग
C. भट्टिकाव्यम्(रावणवध)	भट्टि	महाकाव्य	22 सर्ग
D. शिशुपालवधम्	माघ	महाकाव्य	20 सर्ग

अतः विकल्प D सही है।
विशेष- संस्कृतवाङ्मय में सुबन्धु, भारवि, कुमारदास, एवं माघ के केवल एक-एक ग्रन्थ ही प्राप्त होते हैं।
स्रोत- संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-199

29. 'सांख्यकारिका' के रचयिता कौन है ?
(A) कपिल **(B) वाचस्पति मिश्र**
(C) आचार्यशंकर **(D) ईश्वरकृष्ण**

व्याख्या-

लेखक	रचनाएँ
A. कपिल	सांख्यसूत्र (6 अध्याय, 527 सूत्र)
B. वाचस्पति मिश्र	सांख्यतत्त्वकौमुदी (सांख्यकारिका की टीका)
C. आचार्यशंकर	जयमंगला (सांख्यकारिका की टीका)
D. ईश्वरकृष्ण	सांख्यकारिका (70 कारिकायें)

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- सांख्यकारिका-राकेश शास्त्री, भू0 पेज-31

30. यह भास की रचना नहीं है-
(A) प्रतिज्ञायौगन्धरायणम् **(B) रत्नावली**
(C) स्वप्नवासवदत्तम् **(D) दरिद्रचारुदत्तम्**

व्याख्या- नाटककार भास की तेरह रचनाएँ

रचनाएँ	विधा	अङ्क	उपजीव्य
1. दूतवाक्यम्	नाटक	1	महाभारत
2. ऊरुभङ्ग	नाटक	1	महाभारत
3. दूतघटोत्कच	नाटक	1	महाभारत
4. कर्णभार	नाटक	1	महाभारत
5. पञ्चरात्र	नाटक	3	महाभारत
6. प्रतिमा	नाटक	7	रामायण
7. बालचरित्र	नाटक	5	रामायण
8. चारुदत्त	नाटक	4	लोककथा
9. प्रतिज्ञायौगन्धरायण	नाटक	4	उदयनकथा
10. स्वप्नवासवदत्तम्	नाटक	6	उदयनकथा
11. अभिषेक	नाटक	6	रामायण
12. अविमारक	नाटक	6	लोककथा
13. मध्यमव्यायोग	नाटक	1	महाभारत
हर्षवर्धन की रचनाएँ-			
1. नागानन्द	नाटक	5	लोककथा
2. प्रियदर्शिका	नाटिका	4	लोककथा
3. रत्नावली	नाटिका	4	लोककथा

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-275

31. तर्कभाषा के रचयिता हैं-
(A) गौतम **(B) वात्स्यायन**
(C) केशवमिश्र **(D) पतञ्जलि**

व्याख्या-

लेखक	रचनाएँ	अनुमानित समय
A. गौतम (न्यायसूत्रकार)	न्यायसूत्र	-
B. वात्स्यायन(न्यायभाष्यकार)	न्यायसूत्रभाष्य	द्वितीय शताब्दी ई0
C. केशवमिश्र	तर्कभाषा	12वीं शताब्दी ई0
D. पतञ्जलि	योगसूत्र	185 ई0 पू0

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, भू0 पेज-28

32. 'तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि' लक्षण है-
(A) अलङ्कार का **(B) गुण का**
(C) काव्य का **(D) दोष का**

व्याख्या-

A. अलङ्कार का लक्षण- आचार्य मम्मट ने काव्यप्रकाश के आठवें उल्लास में अलङ्कार का लक्षण इसप्रकार दिया है-

'उपकुर्वन्ति तं सन्तं येऽङ्गद्वारेण जातुचित्।
हारादिवदलङ्कारास्तेऽनुप्रासोपमादयः॥'

(का0 प्र0 सूत्र-87)

जो अङ्गभूत शब्द तथा अर्थ के द्वारा विद्यमान होने वाले उस अङ्गी रस का हार आदि के समान कभी-कभी उपकार करते हैं वे अनुप्रास, उपमा आदि अलङ्कार होते हैं।

B. गुण का लक्षण- काव्यप्रकाश के आठवें उल्लास में गुण की परिभाषा (लक्षण) निम्नवत् है-

''ये रसस्याङ्गिनो धर्माः शौर्यादय इवात्मनः।
उत्कर्षहेतवस्ते स्युरचलस्थितयो गुणाः॥''

(का.प्र. सूत्र-87)

जिस प्रकार आत्मा के शूरता आदि धर्म हैं उसीप्रकार जो काव्य में मुख्य रस के धर्म हैं, रसोत्कर्ष के हेतु हैं, रस के साथ नियत रूप से रहने वाले हैं वे गुण कहलाते हैं।

C. काव्य का लक्षण- काव्यप्रकाश के प्रथमोल्लास में काव्य का लक्षण इस प्रकार है-

''तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि।'' (का.प्र. सूत्र-1)

दोषों से रहित, गुणयुक्त, अलङ्कारसहित परन्तु कहीं-कहीं अलंकार रहित शब्द और अर्थ दोनों की समष्टि काव्य कहलाती है। **अतः विकल्प C सही है।**

D. दोष का लक्षण- काव्यप्रकाश के सातवें उल्लास में दोष का लक्षण इसप्रकार दिया गया है-

''मुख्यार्थहतिर्दोषो रसश्च मुख्यस्तदाश्रयाद् वाच्यः। उभयोपयोगिनः स्युः शब्दाद्यास्तेन तेष्वपि सः॥''

(का. प्र.सूत्र-71)

काव्य के मुख्य अर्थ का अपकर्षक दोष होता है तथा रस मुख्य अर्थ है, इस रस के आश्रय से वाच्य भी मुख्यार्थ है उन दोनों के उपकारक शब्द आदि होते हैं अतः उनमें भी वह दोष होता है।

स्रोत- काव्यप्रकाश (सूत्र-1)- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-19

33. मम्मट के अनुसार काव्यप्रयोजन की संख्या है-

(A) चार **(B) पाँच**

(C) छः **(D) तीन**

व्याख्या- काव्यप्रकाश के द्वितीय उल्लास में आचार्य मम्मट संकेतित अर्थ के विषय में बताते हैं-

A. संकेतित अर्थ के चार भेद होते हैं- जाति, गुण, क्रिया और यदृच्छा।

'संकेतितश्चतुर्भेदो जात्यादिर्जातिरेव वा।'

(का0प्र0सूत्र-10)

B. आचार्य मम्मट ने विप्रलम्भ शृङ्गार के पाँच भेद किये हैं- 1. अभिलाषा 2. ईर्ष्या 3. विरह 4. प्रवास, 5. शाप।

C. काव्यप्रकाश के प्रथम उल्लास में आचार्य मम्मट ने काव्य के छः प्रयोजन इस प्रकार बताये हैं-

''काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये। सद्यः परनिर्वृतये कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे॥''

(का.प्र. 1.2)

अतः विकल्प C सही है।

D. आचार्य मम्मट ने काव्य के तीन हेतु गिनायें हैं, जो काव्य के पृथक्-पृथक् नहीं अपितु समुचित रूप से मिलकर काव्य के हेतु माने जाते हैं-

''शक्तिर्निपुणता लोकशास्त्रकाव्याद्यवेक्षणात्। काव्यज्ञशिक्षयाभ्यास इति हेतुस्तदुद्भवे॥''

(का.प्र. 1.3)

स्रोत- काव्यप्रकाश (1.2) आचार्य विश्वेश्वर, पेज-10

34. संकेतित अर्थ को बताने वाली शक्ति है-

(A) अभिधा **(B) लक्षणा**

(C) व्यञ्जना **(D) तात्पर्या**

व्याख्या-आचार्य मम्मट ने काव्यप्रकाश के द्वितीय उल्लास में अभिधा को परिभाषित करते हुए कहते हैं कि-

A. अभिधा-

''स मुख्योऽर्थस्तत्र मुख्यो व्यापारोऽस्याभिधोच्यते।''

(का.प्र. सूत्र-11)

साक्षात् संकेतित अर्थ मुख्य अर्थ कहलाता है और उस मुख्य अर्थ का व्यापार कराने में जो शब्द व्यापार होता है वह 'अभिधा' व्यापार कहलाता है।

अतः विकल्प A सही है।

B. लक्षणा- आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश के द्वितीय उल्लास में लक्षणा को इसप्रकार परिभाषित करते हैं-

''मुख्यार्थबाधे तद्योगे रूढितोऽथ प्रयोजनात्। अन्योऽर्थो लक्ष्यते यत् सा लक्षणारोपिता क्रिया॥''

(का.प्र. सूत्र-12)

मुख्यार्थ का बाध होने पर, रूढि अथवा प्रयोजन वश अन्य अर्थ की प्रतीति जिससे होती है वह आरोपित शब्द व्यापार लक्षणा है।

C. व्यञ्जना- व्यञ्जना को परिभाषित करते हुए आचार्य मम्मट द्वितीय उल्लास में कहते हैं कि-

यस्य प्रतीतिमाधातुं लक्षणा समुपास्यते। फले शब्दैकगम्येऽत्र व्यञ्जनान्नापरा क्रिया॥

(का.प्र. सूत्र-23)

जिस शैत्य पावनत्वादि प्रयोजन की प्रतीति को उत्पन्न करने के लिये लक्षणा का आश्रय लिया जाता है केवल लाक्षणिक शब्द से ही गम्य उस प्रयोजन रूप फल की प्रतीति में व्यञ्जना के अतिरिक्त अन्य कोई व्यापार नहीं है।

D. तात्पर्या- 'अभिहितान्वयवादी' कुमारिलभट्ट आदि मीमांसक **'तात्पर्या'** नामक शक्ति को भी मानते हैं ये अभिधा आदि शक्तियों के अतिरिक्त इस शक्ति को मानते है। **''तात्पर्यार्थोऽपि केषुचित्।''** (का.प्र. सूत्र-7)

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- साहित्यदर्पण (2-4) शालिग्राम शास्त्री, पेज-26

35. 'मम्मट' के अनुसार काव्यप्रयोजन नहीं है-
(A) प्रतिभा **(B) यश**
(C) अर्थ **(D) अनिष्ट-नाश**

व्याख्या-

प्रतिभा- मम्मट ने हेतुत्रय (शक्ति, निपुणता, अभ्यास) में प्रतिभा को 'शक्ति' शब्द से बताया है। 'शक्तिः कवित्वबीजरूपः संस्कारविशेषः यां विना काव्यं न प्रसरेत्, प्रसृतं वा उपहसनीयं स्यात्'' शक्ति, (प्रतिभा) कवित्वबीजरूपी संस्कार विशेष होता है। जिसके बिना काव्य नहीं बन सकता यदि ऐसा काव्य बना तो वह उपहास के योग्य होगा। (काव्यप्रकाश प्रथम उल्लास कारिका 3 वृत्ति) **'नवनवोन्मेषशालिनी बुद्धिः प्रतिभा।'** नये-नये विचारों को स्फुरित करने वाली बुद्धि प्रतिभा कहलाती है।

काव्य के छः प्रयोजन- आचार्य मम्मट ने काव्यप्रकाश के प्रथम उल्लास में काव्य के छः प्रयोजन बताये हैं-

काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये।
सद्यः परनिर्वृतये कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे॥

(काव्यप्रकाश 1.2)

मम्मट के अनुसार षड् काव्यप्रयोजनों मे प्रतिभा नहीं है।

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- काव्यप्रकाश (1.2) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-10

36. ''अर्थे सत्यर्थभिन्नानां वर्णानां सा पुनः श्रुतिः'' किस अलङ्कार से सम्बन्धित है-
(A) यमक **(B) रूपक**
(C) अनुप्रास **(D) उपमा**

व्याख्या-

A. यमक- नौवें उल्लास में आचार्य मम्मट यमक का लक्षण करते हैं-

''अर्थे सत्यर्थभिन्नानां वर्णानां सा पुनः श्रुतिः यमकम्।

(का.प्र. सूत्र-117)

अर्थ होने पर भिन्न-भिन्न अर्थ वाले वर्णों की पूर्वक्रम से पुनः आवृत्ति यमक अलङ्कार कहलाता है।

उदाहरण-

सन्नारीभरणोमायमाराध्य विधुशेखरम्।
सन्नारीभरणोऽमायस्ततस्त्वं पृथिवीं जय॥

इस पद्य में प्रथम पाद के तृतीय पाद में आवृत्ति होने के कारण यह सन्दंश यमक अलङ्कार है। आचार्य मम्मट ने यमक के प्रथम दो भेद किये हैं- (1) पादवृत्ति यमक (2) पादभागवृत्तियमक। पादवृत्ति यमक के प्राचीन नाम सहित 11 भेद हैं। **अतः विकल्प A सही है।**

B. रूपक-

'तद्रूपकमभेदो य उपमानोपमेययोः।'

(का.प्र. सूत्र-137)

जो उपमान तथा उपमेय का अभेद आरोप करता है, उसे रूपक कहते हैं।

रूपक अलङ्कार के तीन भेद हैं-

(1) साङ्गरूपक (2) निरङ्गरूपक (3) परम्परितरूपक

उदाहरण-

यस्य रणान्तः पुरे करे कुर्वतो मण्डलाग्रलताम्।
रससम्मुख्यपि सहसा पराङ्मुखी भवति रिपुसेना॥

यहाँ रणभूमि में आरोपित किया गया 'अन्तःपुर' शब्द द्वारा ग्रहण किया गया है, खड्गलता में नायिका का तथा 'रिपुसेना' में प्रतिनायिका का आरोप अर्थ की सामर्थ्य से ही जानने योग्य है, अतः यहाँ पर रूपक अलंकार है।

C. अनुप्रास- अनुप्रास का लक्षण काव्यप्रकाश के नौवें उल्लास में किया गया है-

'वर्णसाम्यमनुप्रासः।' (काव्यप्रकाश सूत्र-103) वर्णों की समानता अनुप्रास है।

उदाहरण-

ततोऽरुणपरिस्पन्दमन्दीकृतवपुःशशी।
दध्रे कामपरिक्षामकामिनीगण्डपाण्डुताम्॥

उदाहरण में **'स्पन्दमन्दी'** में न् तथा द् वर्ण की तथा **'गण्ड पाण्डु'** में 'ण्' तथा 'ड्' वर्णों की एक बार समानता होनें से अनुप्रास अलङ्कार है।

D. उपमा- 'साधर्म्यमुपमा भेदे' (का.प्र. सूत्र-123) उपमान तथा उपमेय का भेद होनें पर दोनों के सादृश्य का वर्णन उपमा अलङ्कार है।

उदाहरण-

स्वप्नेऽपि समरेषु त्वां विजयश्रीर्न मुञ्चति।
प्रभावप्रभवं कान्तं स्वाधीनपतिका यथा॥

37. 'स मुख्योऽर्थस्तत्र मुख्यो व्यापारोऽस्याभिधोच्यते' यह वचन है-
(A) काव्यप्रकाश का **(B) साहित्यदर्पण का**
(C) ध्वन्यालोक का **(D) नाट्यशास्त्र का**

व्याख्या-
A. काव्यप्रकाश- आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश के द्वितीयोल्लास में अभिधा को परिभाषित करते हैं-
'स मुख्योऽर्थस्तत्र मुख्यो व्यापारोऽस्याभिधोच्यते।'
(का.प्र. सूत्र-11)
वह साक्षात् संकेतित अर्थ मुख्य अर्थ कहलाता है, और उसका बोध कराने में जो शब्द व्यापार होता है। वह अभिधा व्यापार कहलाता है। **अतः विकल्प A सही है।**
B. साहित्यदर्पण- आचार्य विश्वनाथ साहित्यदर्पण के द्वितीय परिच्छेद में लक्षणा को परिभाषित करते हैं-
'मुख्यार्थबाधे तद्युक्तो ययान्योऽर्थः प्रतीयते।
रूढेः प्रयोजनाद्वाऽसौ लक्षणा शक्तिरर्पिता॥
(साहित्यदर्पण 2/5)
मुख्यार्थ का अन्वय अनुपपन्न होने पर, रूढि के कारण अथवा किसी विशेष प्रयोजन को सूचित करने के लिए, मुख्यार्थ से सम्बद्ध अन्य अर्थ का ज्ञान जिस शक्ति के द्वारा होता है उसे लक्षणा कहते हैं। यह शक्ति अर्पित अर्थात् कल्पित है।
C. ध्वन्यालोक- आचार्य आनन्दवर्धन ध्वन्यालोक के प्रथम उद्योत में वाच्य अर्थ को बताते हैं-
तत्र वाच्यः प्रसिद्धो यः प्रकारैरुपमादिभिः।
बहुधा व्याकृतः सोऽन्यैः ततो नेह प्रतन्यते॥
(ध्वन्या. 1/3)
वाच्य अर्थ वह है जो उपमादि (गुणालङ्कार) प्रकारों से प्रसिद्ध है और अन्यों ने अनेक प्रकार से उनका प्रदर्शन किया है।
D. नाट्यशास्त्र- आचार्य भरतमुनि नाट्यशास्त्र के प्रथम अध्याय में नाटक को परिभाषित करते हैं-
त्रैलोक्यस्यास्य सर्वस्य नाट्यं भावानुकीर्तनम्।
(नाट्यशास्त्र 1/107) सभी तीनों लोकों का भावानुकीर्तन ही नाट्य है।

38. साहित्यदर्पण में परिच्छेदों की संख्या है-
(A) दस **(B) आठ**
(C) चार **(D) तीन**

व्याख्या-

	ग्रन्थ	लेखक	विभाजन
A.	* साहित्यदर्पण	10 परिच्छेद	विश्वनाथ
	* काव्यप्रकाश	10 उल्लास	मम्मट
	* चन्द्रालोक	10 मयूख	जयदेव
B.	* राजतरङ्गिणी	8 तरङ्ग	कल्हण
C.	* दशरूपक	4 प्रकाश	धनञ्जय और धनिक
	* रसगङ्गाधर	4 आनन	जगन्नाथ
	* ध्वन्यालोक	4 उद्योत	आनन्दवर्धन
D.	* व्यक्तिविवेक	3 विमर्श	महिमभट्ट
	* काव्यादर्श	3 परिच्छेद	दण्डी

अतः विकल्प A सही है।
स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-587

39. 'लक्षणा' के 80 भेद किसने किये हैं?
(A) वामन ने **(B) विश्वनाथ ने**
(C) मम्मट ने **(D) कुन्तक ने**

व्याख्या-
A. **वामन – काव्यालङ्कारसूत्र –** आचार्य वामन ने काव्यालङ्कारसूत्र के तृतीय अधिकरण में शब्दगुण एवं अर्थगुण की परिभाषा करते हैं।
B. **विश्वनाथ – साहित्यदर्पण –** आचार्य विश्वनाथ ने साहित्यदर्पण के द्वितीय परिच्छेद में लक्षणा के कुल 80 भेद किये हैं।
C. **मम्मट – काव्यप्रकाश –** आचार्य मम्मट ने काव्य प्रकाश के द्वितीय उल्लास में लक्षणा के कुल 6 भेद किये हैं। 'लक्षणा तेन षड्विधा।'
D. **कुन्तक – वक्रोक्तिजीवितम् –** आचार्य कुन्तक ने वक्रोक्तिजीवितम् के प्रथमोन्मेष में वक्रोक्ति के छह भेद किये हैं।
कविव्यापारवक्रत्वप्रकाराः सम्भवन्ति षट्।
प्रत्येकं बहवो भेदास्तेषां विच्छितिशोभिनः।। (वक्रो. 1.18)
अतः विकल्प B सही है।
स्रोत- साहित्यदर्पण- शालिग्राम शास्त्री पेज-39

40. 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' के प्रतिपादक हैं-
(A) मम्मट **(B) जगन्नाथ**
(C) विश्वनाथ **(D) आनन्दवर्धन**

व्याख्या-

काव्यलक्षण विभिन्न आचार्यों की दृष्टि में

* **काव्यप्रकाश (मम्मट) –** 'तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि' (सूत्र-1) दोष से रहित, गुणों से युक्त, यदि कहीं अलङ्कार न हों तो भी शब्द अर्थ की समष्टि काव्य है।
* **रसगङ्गाधर (जगन्नाथ) –** 'रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्।' (1.1) रमणीय अर्थ का प्रतिपादन करने वाला शब्द काव्य है।
* **साहित्यदर्पण (विश्वनाथ) –** 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्।' (1.3) रसात्मक वाक्य ही काव्य है।
* **ध्वन्यालोक (आनन्दवर्धन) –** 'काव्यस्यात्मा ध्वनिः।' (1.1) काव्य की आत्मा ध्वनि है।
* **काव्यालङ्कार (भामह) –** 'शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्।' (1.15) शब्द और अर्थ दोनों के सहभाव को काव्य माना है।
* **वक्रोक्तिजीवितम् (कुन्तक) –** 'वक्रोक्तिः काव्यजीवितम्' वक्रोक्ति काव्य की आत्मा है।
* **काव्यालङ्कारसूत्र (वामन) –** 'रीतिरात्मा काव्यस्य' (1.2.6) रीति काव्य की आत्मा है।
* **काव्यादर्श (दण्डी) –** 'शरीरं तावदिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली' (1.10) इष्ट सरस मनोहरतया वर्णन करने के लिए अभिप्रेत अर्थ से युक्त शब्द को काव्य का शरीर कहा जाता है। इष्ट अर्थ से युक्त पद समुदाय को काव्य कहते हैं।
* **औचित्यविचारचर्चा (क्षेमेन्द्र) –** 'औचित्यं रससिद्धस्य स्थिरं काव्यस्य जीवितम्।' (औचित्य.श्लोक.5) श्रृङ्गार आदि रसों से प्रसिद्ध काव्य का जीवन औचित्य है।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत-साहित्यदर्पण (प्रथम परिच्छेद)-शालिग्राम शास्त्री,पेज-19

41. 'शिलष्टैः पदैरनेकार्थाभिधाने श्लेष इष्यते' श्लेष के इस लक्षण के प्रतिपादक हैं-
(A) विश्वनाथ **(B) मम्मट**
(C) रुद्रट **(D) भामह**

व्याख्या-

A. आचार्य विश्वनाथ साहित्यदर्पण के दसवें परिच्छेद में श्लेष अलंकार को परिभाषित करते हैं-

'शिलष्टैः पदैरनेकार्थाभिधाने श्लेष इष्यते'

(सा.द. 10/11)

शिलष्ट शब्दों के द्वारा जहाँ अनेक अर्थों की प्रतीति होती है वहाँ श्लेष नामक अर्थालंकार होता है।

अतः विकल्प A सही है।

B. आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश के दशमोल्लास में श्लेष अलङ्कार को परिभाषत करते हैं-

'श्लेषः स वाक्ये एकस्मिन् यत्रानेकार्थता भवेत्।'

(का.प्र. 10/96)

जहाँ एक वाक्य में अनेक अर्थों की प्रतीति होती है वहाँ श्लेष नामक अर्थालङ्कार होता है।

C. आचार्य रुद्रट कृत काव्यालङ्कार के चतुर्थ अध्याय में श्लेष अलङ्कार का लक्षण इसप्रकार है-

वक्तुं समर्थमर्थं सुश्लिष्टाक्लिष्टविविधपदसन्धिः।
युगपदनेकं वाक्यं यत्र विधीयते स श्लेषः॥

(हिन्दी काव्यालंकार 4/1)

अर्थ बताने में समर्थ, सुप्रयोजित कष्ट कल्पना रहित, नाना प्रकार के युक्त सुबन्त-तिङन्त पदों की सन्धि वाले, एक ही प्रयत्न से उच्चारणीय अनेक वाक्यों की जहाँ रचना की जाती है उसे श्लेष नामक अलङ्कार कहते हैं।

D. भामहकृत काव्यालङ्कार के तृतीय परिच्छेद में श्लेष अलङ्कार का लक्षण इस प्रकार हैं-

उपमानेन यत्तत्त्वमुपमेयस्य साध्यते।
गुणक्रियाभ्यां नाम्ना च शिलष्टं तदभिधीयते॥

(काव्यालङ्कार 4/14)

यदि गुण, क्रिया और नाम (संज्ञा) से उपमान के साथ उपमेय का तादात्म्य (अभेद) बताया जाय तो शिलष्ट अलङ्कार कहते हैं। भामह ने श्लेष के स्थान पर शिलष्ट शब्द का प्रयोग किया है।

स्रोत- साहित्यदर्पण (10/10) - शालिग्राम शास्त्री, पेज-282

42. रूपकों के भेदकतत्त्व हैं-
(A) अङ्क, संवाद, रस
(B) वस्तु, नेता, रङ्गमञ्च
(C) रस, नेता, वस्तु
(D) रस, कथोपकथन, अङ्क

व्याख्या-

➢ आचार्य धनञ्जय दशरूपक के प्रथम प्रकाश में रूपक के तीन भेदक तत्त्वों की चर्चा करते हैं-

वस्तु नेता रसस्तेषां भेदकः वस्तु च द्विधा।
(दश. 1/11)

वस्तु (कथावस्तु), नेता (नायक) और रस उन दशों रूपकों के भेदक तत्त्व हैं। वस्तु के दो भेद हैं-
1. आधिकारिक कथावस्तु 2. प्रासङ्गिक कथावस्तु।
दशरूपककार आचार्य धनञ्जय द्वितीय प्रकाश में नेता (नायक) के गुणों को बताते हैं-

नेता-
नेता विनीतो मधुरस्त्यागी दक्षः प्रियंवदः
रक्तलोकः शुचिर्वाग्मी रूढवंशः स्थिरो युवा।
बुद्ध्युत्साहस्मृतिप्रज्ञाकलामानसमन्वितः।
शूरो दृढश्च तेजस्वी शास्त्रचक्षुश्च धार्मिकः॥
(दशरूपकम् 2/1)

रूपक का नायक विनम्र, मधुर, त्यागी, कुशल, प्रियवचन बोलने वाला, लोकप्रिय, पवित्र, बोलने में प्रवीण, सुविख्यात कुलवाला, स्थिर, युवक, बुद्धिमान्, उत्साही, स्मरण, अनुचित का विचारक, कलाओं से सम्पन्न, मानी, शूर, दृढ़, तेजस्वी, शास्त्रों के अनुसार कार्य करने वाला एवं धार्मिक होता है।

➢ आचार्य धनञ्जय ने दशरूपक के चतुर्थ प्रकाश में रस का लक्षण करते हैं-

रस- 'विभावैरनुभावैश्च सात्त्विकैर्व्यभिचारिभिः।
आनीयमानः स्वाद्यत्वं स्थायीभावो रसः स्मृतः॥
(दश. 4/1)

विभाव, अनुभाव, व्यभिचारियों तथा सात्त्विकभावों के द्वारा आस्वादन की योग्यता को प्राप्त कराया गया स्थायीभाव ही रस कहा गया है।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- दशरूपक (1.11)- केशवराव मुसलगाँवकर, पेज-18

43. आरम्भ, यत्न, प्राप्त्याशा, नियताप्ति और फलागम-
(A) अर्थोपक्षेपक हैं **(B) अर्थप्रकृतियाँ हैं**
(C) सन्धियाँ हैं **(D) अवस्थाएँ हैं**

व्याख्या- दशरूपक के प्रथम प्रकाश में आचार्य धनञ्जय अर्थोपक्षेपक, अर्थप्रकृतियाँ एवं पञ्चसन्धियों की चर्चा करते हैं-

A. अर्थोपक्षेपक-
विष्कम्भकचूलिकाङ्कास्याङ्कावतारप्रवेशकैः।''
(दश. 1/58)

1. विष्कम्भक 2. चूलिका 3. अङ्कास्य 4. अङ्कावतार 5. प्रवेशक

B. अर्थप्रकृतियाँ-
'बीजबिन्दुपताकाख्यप्रकरीकार्यलक्षणाः।'
(दश० 1/18)

1. बीज 2. बिन्दु 3. पताका 4. प्रकरी 5. कार्य

C. सन्धियाँ- 'मुखप्रतिमुखे गर्भः सावमर्शोपसंहृतिः।'
(दश० 1/24)

सन्धि	भेद
1. मुख सन्धि	12
2. प्रतिमुख सन्धि	13
3. गर्भ सन्धि	12
4. अवमर्श सन्धि (विमर्श)	13
5. उपसंहृति (निर्वहण सन्धि)	14
	योग = 64

D. कार्यावस्थाएँ-
'आरम्भयत्नप्राप्त्याशानियताप्तिफलागमः।'
(दश. 1/19)

1. आरम्भ 2. यत्न (प्रयत्न) 3. प्राप्त्याशा
4. नियताप्ति 5. फलागम

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- दशरूपक (1/19)- केशवराव मुसलगाँवकर, पेज-30

44. रूपकों में किस प्राचीन आचार्य ने आठ रस को स्वीकार किया है?
(A) भरतमुनि **(B) धनञ्जय**
(C) मम्मट **(D) विश्वनाथ**

व्याख्या- आचार्य भरतमुनि नाट्यशास्त्र के छठवें अध्याय में आठ रसों को बताते हैं-

A. **शृङ्गारहास्यकरुणा रौद्रवीरभयानकाः।**
बीभत्साद्भुतसंज्ञौ चेत्यष्टौ नाट्ये रसाः स्मृताः॥

(नाट्यशास्त्र 6/15)

रस	स्थायीभाव	वर्ण	देवता
शृङ्गार	रति	श्यामवर्ण	विष्णु
हास्य	हास	शुभ्रवर्ण	प्रमथ
करुण	शोक	कपोतवर्ण	यम
रौद्र	क्रोध	रक्तवर्ण	रुद्र
वीर	उत्साह	गौरवर्ण	महेन्द्र
भयानक	भय	कृष्णवर्ण	काल
बीभत्स	जुगुप्सा	नीलवर्ण	महाकाल
अद्भुत	विस्मय	पीतवर्ण	ब्रह्मा

B. धनञ्जय भी आठ रसों को मानते हैं। इनके अनुसार भी नाट्य में शान्तरस नहीं हो सकता।

''शममपि केचित्प्राहुः पुष्टिर्नाट्येषु नैतस्य॥''

(दश. 4/35)

C. आचार्य मम्मट ने नाट्य में आठ रसों को माना है किन्तु 'निर्वेद' स्थायिभाव वाला शान्तरस को नवम रस के रूप में मानते हैं।

''निर्वेदस्थायिभावोऽस्ति शान्तोऽपि नवमो रसः।''

(का.प्र. सूत्र 47)

D. आचार्य विश्वनाथ ने 'शम' स्थायिभाव वाले शान्तरस के अतिरिक्त 'वात्सल्य' को दशम रस के रूप में मानते हैं।

''स्फुटं चमत्कारितया वत्सलं च रसं विदुः।
स्थायी वत्सलतास्नेहः पुत्राद्यालम्बनं मतम्॥''

(सा.द. 3/251)

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- नाट्यशास्त्र (6/15)- ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज-157

45. 'करुणरस' का स्थायीभाव है-
(A) उत्साह **(B) क्रोध**
(C) भय **(D) शोक**

व्याख्या- आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश के चतुर्थ उल्लास में रसों की चर्चा करते हैं-

रस- शृङ्गारहास्यकरुणरौद्रवीरभयानकाः।
बीभत्साद्भुतसंज्ञौ चेत्यष्टौ नाट्ये रसाः स्मृताः॥

(का.प्र. सूत्र-44)

शृङ्गार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, बीभत्स, अद्भुत नाटक में ये आठ रस होते हैं। इसके अतिरिक्त शान्त नामक नौवाँ रस भी होता है **'शान्तोऽपि नवमो रसः।'**

स्थायीभाव-
रतिर्हासश्च शोकश्च क्रोधोत्साहौ भयं तथा।
जुगुप्सा विस्मयश्चेति स्थायिभावाः प्रकीर्तिताः॥

(का.प्र. सूत्र-45)

रति, हास, शोक, क्रोध, उत्साह, भय, जुगुप्सा, विस्मय, नाटक में ये आठ स्थायीभाव होते हैं। इसके अतिरिक्त निर्वेद नामक स्थायीभाव भी होता है जो नौवाँ स्थायीभाव है- 'निर्वेदस्थायिभावोऽस्ति शान्तोऽपि नवमो रसः।'

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- नाट्यशास्त्रम् (6/16)- ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज-160

46. ''उत्पत्तिवाद'' के प्रतिपादक हैं-
(A) भट्टलोल्लट **(B) शङ्कुक**
(C) भट्टनायक **(D) अभिनवगुप्त**

व्याख्या-

आचार्य	रसोत्पत्तिवाद
A. भट्टलोल्लट (अष्टम-नवम शताब्दी)	उत्पत्तिवाद (उत्पाद्य-उत्पादक भाव)
B. भट्टशङ्कुक (नवम शताब्दी का प्रारम्भ)	अनुमितिवाद (अनुमाप्य-अनुमापकभाव)
C. भट्टनायक (10वीं शताब्दी)	भुक्तिवाद (भोज्य-भोजक भाव)
D. अभिनवगुप्त (दशम शताब्दी का उत्तरार्ध 11वीं शताब्दी का पूर्वार्ध)	अभिव्यक्तिवाद (अभिव्याप्य-व्यापक भाव)

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- काव्यप्रकाश (चतुर्थ उल्लास) आचार्य विश्वेश्वर, पेज-101

47. तत्सदृश अन्य वस्तु का निषेध निम्न अलङ्कार करता है-
(A) उत्प्रेक्षा **(B) सन्देह**
(C) विरोधाभास **(D) परिसंख्या**

व्याख्या-

A. आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश के दशमोल्लास में उत्प्रेक्षा अलङ्कार का लक्षण इसप्रकार करते हैं-

सम्भावनमथोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य समेन यत्।

(का.प्र. सूत्र-136)

उपमेय की उपमान के साथ सम्भावना उत्प्रेक्षा कहलाती है।

उदाहरण- उन्मेषं यो मम न सहते जातिवैरी निशायाञ्......

B. आचार्य मम्मट ने काव्यप्रकाश के दशमोल्लास में सन्देह अलङ्कार का लक्षण करते हैं-

ससन्देहस्तु भेदोक्तौ तदनुक्तौ च संशयः।

(का.प्र. सूत्र-137)

उपमेय में उपमान रूप से संशय होने पर सन्देह नामक अलङ्कार होता है। उदाहरण- अयं मार्तण्डः किं? स खलु तुरगैः सप्तभिरितः...।

C. आचार्य मम्मट ने काव्यप्रकाश के दशवें उल्लास में विरोधाभास अलङ्कार का लक्षण किया है-

विरोधः सोऽविरोधेऽपि विरुद्धत्वेन यद्वचः।

(का.प्र. सूत्र-165)

वास्तव में विरोध न होने पर भी विरुद्ध रूप से वर्णन करना विरोधाभास नामक अलङ्कार होता है। उदाहरण- अभिनवनलिनीकिसलयमृणालवलयादिदवदहनराशिः...........।

D. आचार्य मम्मट ने परिसंख्या अलङ्कार का लक्षण दशवें उल्लास में किया है-

''किंचित्पृष्टमपृष्टं वा कथितं यत्प्रकल्पते।
तादृगन्यव्यपोहाय परिसंख्या तु सा स्मृता॥''

(का0 प्र0 सूत्र-184)

कोई पूछी गयी या बिना पूछी हुई कही गयी बात उसीप्रकार की (तत्सदृश) अन्य वस्तु के निषेध में पर्यवसित होती है वह परिसंख्या कहलाती है। उदाहरण- किमासेव्यं पुंसां ? सविधमनवद्यं द्युसरितः.........।

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- काव्यप्रकाश (10.119) आचार्य विश्वेश्वर, पेज, 526

48. अलङ्कार का भेद नहीं है-
(A) शब्दालङ्कार **(B) वर्णालङ्कार**
(C) अर्थालङ्कार **(D) उभयालङ्कार**

व्याख्या-

आचार्य मम्मट ने काव्यप्रकाश के नवम एवं दशम उल्लास में क्रमशः शब्दालङ्कारों एवं अर्थालङ्कारों की चर्चा करते हैं- आचार्य मम्मट ने 6 शब्दालङ्कारों तथा 61 अर्थालङ्कारों को मिलाकर कुल अलङ्कारों की संख्या 67 मानी है। श्लेष अलङ्कार को मम्मट ने उभयालङ्कार (शब्दश्लेष और अर्थ श्लेष) के भेद से दो प्रकार का माना है।

उपर्युक्त विकल्पों में वर्णालङ्कार किसी अलङ्कार का भेद नहीं है।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- काव्यप्रकाश- पारसनाथ द्विवेदी, पेज-472

49. 'पुत्तलिका-नृत्य' से संस्कृत-नाटक की उत्पत्ति मानने वाला विद्वान् है-
(A) ल्यूडर्स **(B) डॉ0 कोनो**
(C) डॉ0 पिशेल **(D) प्रो0 वेबर**

व्याख्या-

नाट्योत्पत्ति के सिद्धान्त

A. छाया नाटकवाद – प्रो0 ल्यूडर्स
B. स्वाँगवाद – प्रो0 हिलब्रान्ड स्टेन कोनो
C. पुत्तलिका नृत्यवाद – डॉ0पिशेल
D. यूनानी प्रभाववाद – डॉ0 वेबर प्रो0 बिन्डिश

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-265-266

50. ''यन्नाट्यवस्तुनः पूर्वं रङ्गविघ्नोपशान्तये।
कुशीलवाः प्रकुर्वन्ति .... स उच्यते॥''
(A) सूत्रधार **(B) पूर्वरङ्ग**
(C) प्रस्तावना **(D) रङ्गमञ्च**

व्याख्या-

A. सूत्रधार-

नाट्यस्य यदनुष्ठानं तत्सूत्रं स्यात् सबीजकम्।
रङ्गदैवतपूजाकृतसूत्रधार उदीरितः॥

बीज सहित नाटक के अनुष्ठान को सूत्र कहते हैं, जो उसको धारण करने वाला अर्थात् संचालन करने वाला होता है तथा रङ्गमञ्च के अधिष्ठातृ देव की पूजा करता है उसे सूत्रधार कहते हैं।

B. पूवरङ्ग- साहित्यदर्पणकार आचार्य विश्वनाथ छठें परिच्छेद में पूर्वरङ्ग का लक्षण करते हैं-

यन्नाट्यवस्तुनः पूर्वं रङ्गविघ्नोपशान्तये।
कुशीलवाः प्रकुर्वन्ति पूर्वरङ्गः स उच्यते॥

(सा.द. 6/22)

रङ्ग अर्थात् नाट्यशाला के विघ्नों को शान्त करने के लिए नाट्यवस्तु से पहले सूत्रधार प्रधान नट जो काम करते हैं वह पूर्वरङ्ग कहलाता है। **अतः विकल्प B सही है।**

C. प्रस्तावना- साहित्यदर्पणकार आचार्य विश्वनाथ प्रस्तावना का लक्षण छठें परिच्छेद में करते हैं-

''चित्रैर्वाक्यैः स्वकार्योत्थैः प्रस्तुताक्षेपिभिर्मिथः।
आमुखं तत्तु विज्ञेयं नाम्ना प्रस्तावनाऽपि सा॥''

(सा.द. 6/32)

रूपकों की 'प्रस्तावना' वस्तुतः उनका वह 'आमुख' है जिसमें नटी अथवा विदूषक अथवा सूत्रधार का अनुचर नट सूत्रधार के साथ ऐसा आलाप-संलाप किया करते हैं, जिसमें प्रस्तुत अभिनय का आक्षेप करने वाला, स्वस्वविषयक अभिप्राय के सूचक चित्र-विचित्र वाक्यों का प्रयोग हुआ करता है।

D. रङ्गमञ्च- आचार्य भरतमुनि ने रङ्गमञ्च का लक्षण नाट्यशास्त्र के दूसरे अध्याय में किया है-

''त्रिविधः सन्निवेशश्च शास्त्रतः परिकल्पितः।
विकृष्टश्चतुरस्रश्च त्र्यस्रश्चैव तु मण्डपः॥''

(नाट्यशास्त्र 2/7-8)

विश्वकर्मा ने नाट्यगृह के विषय में विचार कर उसे शास्त्रानुसार तीन प्रकार के बतलाए हैं जिनके नाम हैं- विकृष्ट, चतुरस्र, त्र्यस्र। विकृष्ट को ज्येष्ठ, चतुरस्र को मध्यम, त्र्यस्र को अवर (सबसे छोटा) कहते हैं।

स्रोत- साहित्यदर्पण (6/22)- शालिग्राम शास्त्री, पेज-172

51. ''शिरसि धृतसुरापगे स्मरारावरुणमुखेन्दुरुचिर्गिरीन्द्रपुत्री। अथ चरणयुगान्ते स्वकान्ते स्मितसरसा भवतोऽस्तु भूतिहेतुः॥'' उपर्युक्त श्लोक है-

(A) ईश-स्तुति **(B) मङ्गलाचरण**
(C) पूर्वरङ्ग **(D) द्वादशपदा नान्दी**

व्याख्या-

A. किसी भी रचना में ग्रन्थ की निर्विघ्न समाप्ति के लिए ग्रन्थ के आदि, मध्य अथवा अन्त में ईश-स्तुति अथवा अपने अभीष्ट गुरु अथवा देवता की स्तुति की जाती है।

B. संस्कृत वाङ्मय में ग्रन्थ की निर्विघ्न समाप्ति के लिए मङ्गलाचरण का विधान है। यह तीन प्रकार का होता है। 1. आशीर्वादात्मक 2. नमस्कारात्मक 3. वस्तुनिर्देशात्मक।

''आशीर्नमस्क्रियावस्तुनिर्देशो वापि तन्मुखम्।''

साहित्यदर्पण में उद्धृत द्वादशपदा नान्दी का उदाहरण-

''शिरसि धृतसुरापगे स्मरारावरुणमुखेन्दुरुचिर्गिरीन्द्रपुत्री। अथ चरणयुगान्ते स्वकान्ते स्मितसरसा भवतोऽस्तु भूतिहेतुः॥''

वह देवी पार्वती आप सामाजिकों का मङ्गल करें जिनका मुखचन्द्र भगवान् शङ्कर के मस्तक पर विराजमान भगवती गङ्गा के दर्शन मात्र से लाल हो जाया करता है और चरणों पर झुके भगवान् शङ्कर के दर्शन से मन्द मुस्कान से स्निग्ध दिखायी देती है। प्रस्तुत उदाहरण में द्वादशपदा नान्दी है। **अतः विकल्प D सही है।**

C. आचार्य विश्वनाथ ने साहित्यदर्पण के छठें परिच्छेद में पूर्वरङ्ग को परिभाषित करते हैं-

यन्नाट्यवस्तुनः पूर्वं रङ्गविघ्नोपशान्तये।
कुशीलवाः प्रकुर्वन्ति पूर्वरङ्गः स उच्यते॥

(सा.द. 6/22)

रङ्ग अथवा नाट्यमण्डप की विघ्न शान्ति के लिए, नाट्य प्रयोग के पहले, नटों के द्वारा किया गया जो भी माङ्गलिक गायनवादनादि है वह पूर्वरङ्ग कहा जाता है।

D. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में भगवान् शिव की अष्टमूर्तियों की स्तुति की गयी है।

'या सृष्टिः स्रष्टुराद्या वहति विधिहुतं या हविर्या च होत्री। यह अष्टपदा नान्दी का उदाहरण है।

स्रोत- साहित्यदर्पण (6/22) शालिग्राम शास्त्री, पेज-172

52. ''तवास्मि गीतरागेण हारिणा प्रसभं हृतः।
एष राजेव दुष्यन्तः सारङ्गेणातिरंहसा॥''
उपर्युक्त श्लोक किसका उदाहरण है-

(A) नान्दी **(B) पताकास्थानक**
(C) बिन्दु **(D) प्रस्तावना**

व्याख्या-

आचार्य विश्वनाथ ने साहित्यदर्पण के छठवें परिच्छेद में नान्दी का लक्षण करते हैं-

A. नान्दी- आशीर्वचनसंयुक्ता स्तुतिर्यस्मात्प्रयुज्यते।
देवद्विजनृपादीनां तस्मान्नान्दीति संज्ञिता॥

(सा.द.6/24)

'नान्दी' देव, द्विज, नृप आदि की ऐसी स्तुतिगीत है जिसमें रङ्ग सामाजिकों की शुभाशंसा का अभिप्राय गर्भित रहा करता है जैसे-

नमस्तस्मै गणेशाय यत्कण्ठः पुष्करायते।
मदाभोगघनध्वानो नीलकण्ठस्य ताण्डवे॥

(दश.1/1)

B. पताकास्थानक- साहित्यदर्पण के छठवें परिच्छेद में पताकास्थानक को परिभाषित किया गया है-

यत्रार्थे चिन्तितेऽन्यस्मिंस्तल्लिङ्गोऽन्यः प्रयुज्यते।
आगन्तुकेन भावेन पताकास्थानकं तु तत्॥

(सा.द. 6/45)

जिसे नाट्य के उस स्थान पर जहाँ नाटककार किसी एक प्रयोजन अथवा उपाय की चिन्ता कर रहा है उसके समान अन्य प्रयोजन अथवा उपाय की अकस्मात् उपस्थिति हो जाया करती है।

C. बिन्दु- दशरूपककार आचार्य धनञ्जय ने अर्थप्रकृतियों के अन्तर्गत बिन्दु का लक्षण प्रथम प्रकाश में करते हैं-

'अवान्तरार्थविच्छेदे बिन्दुरच्छेदकारणम्।'

(दश. 1/17)

अवान्तर कथा के कारण मुख्य कथावस्तु के विच्छिन्न हो जाने पर जो उसे जोड़ने तथा आगे बढ़ाने का कारण होता है वह बिन्दु कहलाता है।

D. प्रस्तावना- आचार्य धनञ्जय ने दशरूपक के तृतीय प्रकाश में आमुख (प्रस्तावना) का लक्षण किया है-

सूत्रधारो नटीं ब्रूते मार्षं वाऽथ विदूषकम्।
स्वकार्यं प्रस्तुताक्षेपि चित्रोक्त्या यत्तदामुखम्॥
प्रस्तावना वा ...... (दश. 3/7)

जहाँ सूत्रधार विचित्र युक्ति के द्वारा नटी अथवा विदूषक को आक्षेप करने वाला अपना कार्य बतलाता है वह आमुख (प्रस्तावना) कहलाता है। जैसे- अभिज्ञानशाकुन्तलम् में सूत्रधार नटी से कहता है-

तवास्मि गीतरागेण हारिणा प्रसभं हृतः।
एष राजेव दुष्यन्तः सारङ्गेणातिरंहसा॥ (अभि.1/5)

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम्- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-13

53. 'पितरौ' में समास है-

(A) तत्पुरुष **(B) बहुव्रीहि**
(C) द्वन्द्व **(D) अव्ययीभाव**

व्याख्या-

सामासिकपदम्	लौकिकविग्रहः	अलौकिक विग्रहः	सामासिक सूत्रम्
A. पूर्वकायः	पूर्वं कायस्य	काय ङस्+पूर्व सु	'पूर्वाऽपराऽधरोत्तरमेकदेशिनैकाऽधिकरणे' सूत्र से तत्पुरुष समास
B. प्रियसर्पिष्कः	प्रियं सर्पिःयस्य सः (पुरुषस्य)	प्रिय सु सर्पिस् सु	''अनेकमन्यपदार्थे'' से बहुव्रीहि समास
C. पितरौ	माता च पिता च	मातृ सु पितृ सु	''चार्थे द्वन्द्वः'' से द्वन्द्व समास
D. प्रत्यर्थम्	अर्थम् अर्थं प्रति	अर्थ अम् प्रति	''अव्ययं-विभक्ति-समीप-समृद्धि......... साकल्यान्तवचनेषु'' सूत्र से अव्ययीभाव समास

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी (चतुर्थ खण्ड) भैमी व्याख्या, पेज-239

54. 'पौर्वशालः' का विग्रह है-
(A) शालायाः पूर्वम्
(B) पौर्व एव शालः
(C) पूर्वा शाला यस्य सः
(D) पूर्वस्यां शालायां भवः

व्याख्या-
पौर्वशालः (पूर्व दिशा वाली शाला में होने वाली)

लौकिक विग्रह	अलौकिक विग्रह	सामासिक सूत्र
पूर्वस्यां शालायां भवः	पूर्वा ङि+शाला ङि	''तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च'' सूत्र से तत्पुरुष समास

अतः विकल्प D सही है।

'तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च' (2.1.51) तद्धित प्रत्यय के अर्थ का विषय होने पर या उत्तरपद परे होने पर अथवा समाहार अर्थात् समूह अर्थ होने पर दिशा और संख्या के वाचक समर्थ सुबन्त का समान विभक्ति वाले सुबन्त के साथ समास होता है और वह तत्पुरुष समास होता है।

उदाहरण- पौर्वशालः, पञ्चगवम्।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी भैमी व्याख्या (खण्ड-4), पेज-102

55. 'द्वियमुनम्' में समास है-
(A) द्विगु **(B) तत्पुरुष** **(C) अव्ययीभाव** **(D) कर्मधारय**

व्याख्या-

सामासिक पद	लौकिक विग्रह	अलौकिक विग्रह	सामासिक सूत्र
A. पञ्चगवम्	पञ्चानां गवां समाहारः	पञ्चन् आम् + गो आम्	'तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च' सूत्र से तत्पुरुष समास ' 'संख्यापूर्वो द्विगुः'' से द्विगु समास।
B. द्विजेतरः	द्विजाद् इतरः	द्विज ङसि + इतर सु	पञ्चमी तत्पुरुष
C. द्वियमुनम्	द्वयोर्यमुनयोः समाहारः	द्वि ओस् यमुना ओस्	'नदीभिश्च' सूत्र से अव्ययीभाव समास
D. अखिलभूषणानि	'अखिलानि भूषणानि'या अखिलानि च तानि भूषणानि	अखिल जस् + भूषण जस्	'विशेषणं विशेष्येण बहुलम्' से कर्मधारय समास

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी भैमी व्याख्या (खण्ड-4), पेज-42

56. 'सुमद्रम्' में कौन सा समास है ?
(A) कर्मधारय **(B) बहुव्रीहि** **(C) अव्ययीभाव** **(D) षष्ठी तत्पुरुष**

व्याख्या-

सामासिक पद	लौकिक विग्रह	अलौकिक विग्रह	सामासिक सूत्र
A. निर्मलगुणाः	निर्मलाः गुणाः या निर्मलाश्च ते गुणाः	निर्मल जस् + गुण जस्	'विशेषणं विशेष्येण बहुलम्' से कर्मधारय समास
B. सुन्दरभार्या	सुन्दरी भार्या अस्ति यस्य	सुन्दरी सु + भार्या सु	'अनेकमन्यपदार्थे' से बहुव्रीहि समास
C. सुमद्रम्	मद्राणां समृद्धिः	मद्र आम् सु	अव्ययं विभक्ति.... से अव्ययीभाव समास
D. राजपुरुषः	राज्ञः पुरुषः	राजन् ङस् + पुरुष सु	'षष्ठी' सूत्र से षष्ठी तत्पुरुष समास

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी भैमी व्याख्या (खण्ड-4)- पेज-28

57. 'पीताम्बरः' शब्द में कौन सा समास है?
(A) कर्मधारय (B) बहुव्रीहि (C) द्वन्द्व (D) तत्पुरुष

व्याख्या-

सामासिक पद	लौकिक विग्रह	अलौकिक विग्रह	सामासिक सूत्र
A. कृष्णचतुर्दशी	कृष्णा चतुर्दशी	कृष्णा सु+चतुर्दशी सु	'विशेषणं विशेष्येण बहुलम्' से कर्मधारय समास
B. पीताम्बरः	पीतम् अम्बरम् अस्ति यस्य सः।	पीत सु+अम्बर सु	''अनेकमन्यपदार्थे'' से बहुव्रीहि समास
C. पाणिपादम्	पाणी च पादौ च तेषां समाहारः	पाणी औ पाद औ	'चार्थे द्वन्द्वः' से द्वन्द्व समास
D. हरित्रातः	हरिणा त्रातः	हरि टा + त्रात सु	'कर्तृकरणे कृता बहुलम्' से तृतीया तत्पुरुषसमास

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी- भैमी व्याख्या (खण्ड-4)- पेज-191

58. कर्ता का 'ईप्सिततम' कारक कहलाता है-
(A) कर्म (B) करण
(C) सम्प्रदान (D) अपादान

व्याख्या-

A. कर्मकारक- कर्तुरीप्सिततमं कर्म (1/4/49)
कर्ता अपनी क्रिया के द्वारा जिस पदार्थ को सबसे अधिक प्राप्त करना चाहता है उसकी कर्मकारक संज्ञा होती है।
यथा-भक्तः हरिं भजति

अतः विकल्प A सही है।

B. करण कारक- साधकतमं करणम् (1/4/42)
क्रिया की सिद्धि में जो पदार्थ सबसे अधिक उपकारक होता है उसकी करण संज्ञा होती है।
यथा-रामेण बाणेन हतो बाली

C. सम्प्रदान कारक- कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम् (1/4/32) दान क्रिया के कर्म के द्वारा कर्ता जिसको सन्तुष्ट करना चाहता है उसकी सम्प्रदान संज्ञा होती है।
उदाहरण- विप्राय गां ददाति।

D. अपादान कारक- ध्रुवमपायेऽपादानम् (1/4/24) अलग होने की क्रिया में जो पदार्थ ध्रुव होता है अर्थात् जिससे अलगाव होता है उसकी अपादान कारक संज्ञा होती है।
उदाहरण- धावतोऽश्वात्पतति।

स्रोत- सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय,पेज-16

59. 'शत्रवः स्वर्गम् अगच्छन्' वाक्य का णिजन्त रूप होगा-
(A) शत्रवः स्वर्गम् अगमयत्
(B) शत्रून् स्वर्गम् अगमयत्
(C) शत्रून् स्वर्गम् अगच्छन्
(D) शत्रवे स्वर्गम् अगमयत्

व्याख्या-
गतिबुद्धिप्रत्यवसानार्थशब्दकर्माकर्मकाणामणि कर्त्ता स णौ (1/4/5)
गति (जाना), बुद्धि (जानना), प्रत्यवसान (खाना) अर्थ वाली धातुएँ जिनका कर्म कोई शब्द हो ऐसी धातुएँ यथा पठ् (पढना), उच्चर् (बोलना) तथा अकर्मक धातुओं का जो अणिजन्त अवस्था का कर्ता होता है वह णिजन्तावस्था में कर्मसंज्ञक हो जाता है।
जैसे- शत्रवः स्वर्गम् अगच्छन्। (अणिजन्त)
शत्रून् स्वर्गम् अगमयत्। (णिजन्त)
उपर्युक्त उदाहरण में अण्यन्तावस्था का कर्ता 'शत्रवः' ण्यन्तावस्था में 'शत्रून्' कर्मसंज्ञक हो गया।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- सिद्धान्तकौमुदी (1/4/5) (कारक प्रकरण), राममुनि पाण्डेय, पेज-24

60. 'आसने उपविश्य प्रेक्षते' वाक्य का दूसरा वाक्य होगा-
(A) आसनम् उपविश्य प्रेक्षते (B) आसनं प्रेक्षते
(C) आसनात् प्रेक्षते (D) आसने प्रेक्षते

व्याख्या-

'ल्यब्लोपे कर्मण्यधिकरणे च' (वा0)

'ल्यप्' और 'क्त्वा' प्रत्ययान्त क्रिया का वाक्य में लोप होने पर उसके कर्म और अधिकरण कारक में पञ्चमी विभक्ति होती है।

क्त्वा/ल्यप् प्रत्ययान्त	क्त्वा/ल्यप् का लोप
* आसने उपविश्य प्रेक्षते	आसनात् प्रेक्षते।
अन्य उदाहरण	
* प्रासादम् आरुह्य प्रेक्षते	प्रासादात् प्रेक्षते।
* श्वसुरं वीक्ष्य जिह्रेति	श्वसुरात् जिह्रेति।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण) राममुनि पाण्डेय,पेज-63

61. 'ओदनं भुञ्जानो विषं भुङ्क्ते' उदाहरण है-

(A) अभुक्त्यर्थस्य न
(B) तथायुक्तं चानीप्सितम्
(C) अनुर्लक्षणे
(D) हेतौ

व्याख्या-

A. अभुक्त्यर्थस्य न (वा0)
उपसर्गपूर्वक 'वस्' धातु का अर्थ 'भोजन न करना' हो तो आधार की कर्मसञ्ज्ञा नहीं होती है।
उदाहरण- वने उपवसति। (वन में उपवास करता है)

B. तथायुक्तं चानीप्सितम् (1/4/50)- जिस प्रकार कर्ता का ईप्सिततम पदार्थ क्रिया के साथ युक्त होता है,उसी प्रकार यदि कर्ता के द्वारा न चाहा जाने वाला पदार्थ भी क्रिया के साथ युक्त हो तो उसकी कर्मसंज्ञा होती है।
उदाहरण- ओदनं भुञ्जानो विषं भुङ्क्ते।
(भात खाते हुए विष खा लेता है।)
अतः विकल्प B सही है।

C. अनुर्लक्षणे (1/4/84)- लक्षण द्योतित होने पर 'अनु'शब्द की कर्मप्रवचनीय सञ्ज्ञा होती है।
उदाहरण- जपम् अनुप्रावर्षत्। (जप के कारण वर्षा हुई)

D. हेतौ (2/3/23)- हेतु अर्थ के वाचक शब्दों में तृतीया विभक्ति होती है।
उदाहरण- पुण्येन दृष्टो हरिः। पुण्य से हरि के दर्शन हुए।

स्रोत- सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण) राममुनि पाण्डेय, पेज-19

62. 'हरिमभिवर्तते' वाक्य में 'हरिम्' में द्वितीया विभक्ति का कारण है-

(A) कर्मत्व **(B) अभितः कारणात्**
(C) 'अभि' का प्रयोग **(D) अनीप्सितत्वात्**

व्याख्या-

अभिरभागे (1/4/90) 'भाग' अर्थ को छोड़कर अर्थात् लक्षण, इत्थम्भूताख्यान और वीप्सा अर्थों के द्योतित होने पर 'अभि' की कर्मप्रवचनीय सञ्ज्ञा होती है। **जैसे-** हरिम् अभिवर्तते।

इस वाक्य में अभि का 'लक्षण' अर्थ द्योतित होने के कारण'अभिरभागे' सूत्र से 'अभि' की कर्मप्रवचनीयसंज्ञा तथा 'कर्मप्रवचनीययुक्ते द्वितीया' (2/3/8) से 'हरि' में द्वितीया विभक्ति का प्रयोग हुआ।

* 'बालकं पुस्तकं पठति' इस वाक्य में 'पुस्तकम्' में कर्मत्व के कारण द्वितीया विभक्ति हुई है।
* अभितः परितः समयानिकषाहाप्रतियोगेऽपि (वा0) वार्तिक से अभितः, परितः, समया, निकषा, हा, प्रति के योग में द्वितीया विभक्ति होती है।
1- अभितः ग्रामम्। 2- परितः उद्यानम्। 3- समया निकषा वा उद्यानम्। 4- हा! कृष्णाभक्तम्। 5- बुभुक्षितं न प्रतिभाति किञ्चित्।
* **तथायुक्तं चानीप्सितम्** (1/4/50) ईप्सित कर्म की भाँति अनीप्सित की भी कर्मसंज्ञा होती है।
जैसे- ग्रामं गच्छन् तृणं स्पृशति। (गाँव जाते हुए घास को छूता है) इस वाक्य में कर्त्ता का गाँव जाना ईप्सित है किन्तु तृण (घास) ऐसे ही छूते हुए जा रहा है। इसलिए तृण में 'तथायुक्तं चानीप्सितम्' से तथा 'ग्रामम्' में 'कर्तुरीप्सिततमं कर्म' से कर्मसञ्ज्ञा तथा 'कर्मणि द्वितीया' से द्वितीया विभक्ति हुई है।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण) राममुनि पाण्डेय, पेज-34

63. 'सह' के योग में कौन सी विभक्ति होती है?

(A) द्वितीया **(B) तृतीया**
(C) चतुर्थी **(D) षष्ठी**

व्याख्या-

A. अभितः-परितः-समया-निकषा-हा-प्रतियोगेऽपि (वा0) – वार्तिक से अभितः,परितः, समया, निकषा, हा, और प्रति इन छः अव्ययों के योग में द्वितीया विभक्ति होती है।अभितः कृष्णम्, परितः कृष्णम्, ग्रामं समया, निकषा लङ्काम्, हा कृष्णाभक्तम्, बुभुक्षितं न प्रतिभाति किञ्चित्।

B. सहयुक्तेऽप्रधाने (2/3/19) - सह के अर्थवाची शब्दों के योग में अप्रधान कर्त्ता में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे- पुत्रेण सह आगतः पिता।

अतः विकल्प B सही है।

C. हितयोगे च (वा0) - 'हित' शब्द के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे- ब्राह्मणाय हितम्।

D. कृञः प्रतियत्ने (2/3/53) – प्रतियत्न अर्थ में वर्तमान कृ धातु के शेषत्व की विवक्षा में, कर्मकारक में षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे- एधोदकस्य उपस्करणम्।

स्रोत- सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण) राममुनि पाण्डेय, पेज-42

64. 'भीत्रार्थानां भयहेतुः' सूत्र से सम्बद्ध है-

(A) करण **(B) अपादान**
(C) सम्प्रदान **(D) कर्म**

व्याख्या-

A- करण कारक- 'साधकतमं करणम्' (1.4.42)- क्रियासिद्धौ प्रकृष्टोपकारकं करणसञ्ज्ञं स्यात्।
क्रिया की सिद्धि में जो कारक सबसे अधिक सहायक होता है उसकी करण सञ्ज्ञा होती है।

उदाहरण- रामेण बाणेन हतो बाली।

B- अपादान-'भीत्रार्थानां भयहेतुः' (1/4/25)- भयार्थानां त्राणार्थानां च प्रयोगे भयहेतुरपादानं स्यात्।
भय अर्थ वाली तथा रक्षा (त्राण) अर्थ वाली धातुओं के प्रयोग में भय का हेतु अपादान कहलाता है और उसमें पञ्चमी विभक्ति होती है।

उदाहरण- 'चौराद् बिभेति' तथा 'चौरात् त्रायते।'

अतः विकल्प B सही है।

C. सम्प्रदान-

कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम् (1/4/32)– दानस्य कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानसंज्ञः स्यात्। दान के कर्म द्वारा कर्ता जिसे उद्देश्य बनाता है उसकी सम्प्रदान सञ्ज्ञा होती है। उदाहरण- विप्राय गां ददाति।

D. कर्म- कर्तुरीप्सिततमं कर्म (1/4/49)- कर्तुः क्रियया आप्तुमिष्टतमं कारकं कर्मसंज्ञं स्यात्। जो कर्ता की क्रिया द्वारा सबसे अधिक अभीष्ट होता है वह कर्मसंज्ञक होता है।

उदाहरण- सः ओदनं भुङ्क्ते।
(यहाँ 'ओदनं' की कर्मसंज्ञा है।)

स्रोत- सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण) राममुनि पाण्डेय, पेज-58

65. 'दा + यत्' का शुद्ध रूप है-

(A) दायकः **(B) दानीयः**
(C) देयम् **(D) दत्त्वा**

व्याख्या-

दान देने के अर्थ में 'दा' धातु का प्रयोग होने पर उससे अचो यत् (3/1/97) सूत्र से 'यत्' प्रत्यय होता है।

* दा + यत्- 'हलन्त्यम्' (1/3/3) से तकार की इत्संज्ञा 'तस्य लोपः' (1/1/60) से लोप
* दा + य- 'ईद्यति' (6/4/64) सूत्र से यत् प्रत्यय के परे होने पर धातु के अन्त में विद्यमान अकार के स्थान पर ईकार आदेश होता है।
* दी + य- य को आर्धधातुक मानकर 'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' से ईकार को गुण आदेश होकर देय बना। देय की प्रातिपदिक संज्ञा, सु को अम् आदेश एवं पूर्वरूप करके 'देयम्' बना।

अतः विकल्प C सही है।

➤ देयम् (देने योग्य)
➤ दा + ण्वुल् = दायकः
➤ दा + अनीयर् = दानीयः
➤ दा + क्त्वा = दत्त्वा

स्रोत- रचनानुवादकौमुदी- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-214

66. 'पच्' धातु में क्त प्रत्यय लगाकर रूप बनेगा-

(A) पचनीयः **(B) पक्तुम्**
(C) पक्वः **(D) पक्ववान्**

व्याख्या-

'पच्' धातु से 'निष्ठा' सूत्र के द्वारा क्त प्रत्यय।

* पच् + क्त- 'लशक्वतद्धिते' से ककार की इत्संज्ञा 'तस्य लोपः' से लोप
* पच् + त- 'पचो वः' (8/2/52) से तकार के स्थान पर वकार आदेश।
* पच् + व- 'चोः कुः' (8/2/30) से चकार के स्थान पर ककार आदेश।
* पक् + व- वर्ण सम्मेलन, प्रातिपदिक संज्ञा।

पक्व- सु, रुत्वविसर्ग करके 'पक्वः' बना।

पक्वः (पका हुआ)

अतः विकल्प C सही है।

A. पच् + अनीयर् = पचनीयः

B. पच् + तुमुन् = पक्तुम्

D. पच् + क्तवतु = पक्ववान्

स्रोत- रचनानुवादकौमुदी- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-202

67. 'गणपति + अण्' का रूप होगा-

(A) गार्ग्यायणः **(B) गणपतिम्**

(C) गणनीयः **(D) गाणपतम्**

व्याख्या-

* गणपतेरपत्यादि (लौकिक विग्रह)
* गणपति + ङस् (अलौकिक विग्रह)
* अश्वपत्यादिभ्यश्च (4/1/84) से अण् प्रत्यय
* अश्वपति + ङस् + अण्
* 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिक संज्ञा
* 'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' से विभक्ति का लुक्
* गणपति + अ
* 'तद्धितेष्वचामादेः' से आदि अच् की वृद्धि- गाणपति+अ
* अजादि प्रत्यय परे होने पर पूर्व की 'यचि भम्' से भसंज्ञा 'यस्येति च' से इकार का लोप
* गाणपत् + अ वर्णसम्मेलन करने पर
* 'गाणपत्' को 'एकदेशविकृतन्याय' से प्रातिपदिक मानकर
* 'गाणपत्' से सु प्रत्यय
* 'अतोऽम्' से अम् आदेश और 'अमि पूर्वः' से पूर्वरूप होकर 'गाणपतम्' (गणपति की सन्तान) बना।

➢ गार्ग्य + फ (आयन) गार्ग्यायणः

➢ गणपतिम् - द्वितीया विभक्ति एकवचन।

➢ गण + अनीयर् = गणनीयः

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी भैमी व्याख्या (खण्ड-5) - भीमसेन शास्त्री, पेज-7

68. 'लावणिकः' का स्त्रीलिङ्ग क्या होगा?

(A) लावणिकी **(B) लावणिका**

(C) लावणिक् **(D) लावणिजा**

व्याख्या-

* **'टिड्ढाणञ्द्वयसज्दघ्नञ्मात्रच्तयप्ठक्ठञ्कञ्क्वरपः'** (4/1/15) सूत्र में सूत्रस्थ प्रत्ययों से ङीप् प्रत्यय।
* लावणिकः- 'लवणं पण्यमस्याः' इस विग्रह में 'लवणाट्ठञ्' से ठञ् और 'ठस्येकः' से इक आदेश होकर 'लावणिक' बना। उपर्युक्त सूत्र (टिड्ढा0) से ङीप् प्रत्यय लगकर 'लावणिकी' बना।

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी भैमी व्याख्या (खण्ड-6), पेज-16

69. 'पठितवत्' में प्रत्यय है-

(A) क्तवतु **(B) शतृ**

(C) क्त **(D) तुमुन्**

व्याख्या-

A. क्तक्तवतू निष्ठा (1/1/26) सूत्र से क्त, क्तवतु प्रत्यय की निष्ठा संज्ञा तथा 'निष्ठा' सूत्र से क्त और क्तवतु प्रत्यय भूतकाल अर्थ में सभी धातुओं से होते हैं।

पठ् + क्तवतु = पठितवत् (पठितवान्)

B. पठ् + शतृ = पठन्

C. पठ् + तुमुन् = पठितुम्

D. पठ् + क्त = पठितः

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-222

70. 'पठेत्' रूप है-

(A) लट् प्रथमपुरुष एकवचन

(B) लट् मध्यमपुरुष बहुवचन

(C) विधिलिङ् प्रथमपुरुष एकवचन

(D) विधिलिङ् मध्यम पुरुष बहुवचन

व्याख्या-

पठ् धातु भ्वादिगण सकर्मक सेट् परस्मैपद

लट् लकार

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्र0पु0	पठति	पठतः	पठन्ति
म0पु0	पठसि	पठथः	पठथ
उ0पु0	पठामि	पठावः	पठामः

विधिलिङ् लकार

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
C. प्र0पु0	पठेत्	पठेताम्	पठेयुः
D. म0पु	पठेः	पठेतम्	पठेत
उ0पु0	पठेयम्	पठेव	पठेम

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- रचनानुवादकौमुदी- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-146

71. 'अदातम्' रूप है-

(A) लुङ् उत्तमपुरुष एकवचन
(B) लुङ् मध्यमपुरुष द्विवचन
(C) लङ् उत्तमपुरुष एकवचन
(D) लङ् प्रथमपुरुष बहुवचन

व्याख्या-

जुहोत्यादिगण, डुदाञ् - दाने। सकर्मक, अनिट् उभयपदी

'दा' धातु लुङ् लकार

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्र0पु0	अदात्	अदाताम्	अदुः
म0पु0	अदाः	अदातम्	अदात
उ0पु0	अदाम्	अदाव	अदाम

'दा' धातु लङ् लकार

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्र0पु0	अददात्	अदत्ताम	अददुः
म0पु0	अददाः	अदत्तम्	अदत्त
उ0पु0	अददाम्	अदद्व	अदद्म

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- रचनानुवादकौमुदी- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-167

72. 'अभवत्' रूप है-

(A) लङ् प्रथमपुरुष एकवचन
(B) लङ् मध्यमपुरुष बहुवचन
(C) लुङ् प्रथमपुरुष एकवचन
(D) लुङ् मध्यमपुरुष बहुवचन

व्याख्या-

भू सत्तायाम् भ्वादिगण, अकर्मक, सेट्, परस्मैपद 'भू' (होना)

लङ् लकार

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्र0पु0	अभवत्	अभवताम्	अभवन्
म0पु0	अभवः	अभवतम्	अभवत
उ0पु0	अभवम्	अभवाव	अभवाम

लुङ् लकार

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्र0पु0	अभूत्	अभूताम्	अभूवन्
म0पु0	अभूः	अभूतम्	अभूत
उ0पु0	अभूवम्	अभूव	अभूम

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- रचनानुवादकौमुदी- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-145

73. मिल् सङ्गमे का लट्लकार अन्यपुरुष (परस्मैपदी) एकवचन का रूप है-

(A) मिलति **(B) मिलते**
(C) दोनों नहीं **(D) दोनों ही**

व्याख्या-

तुदादिगण 'मिल्' सङ्गमे (मिलना) सकर्मक, सेट्,

परस्मैपद लट् लकार

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्र0पु0	मिलति	मिलतः	मिलन्ति
म0पु0	मिलसि	मिलथः	मिलथ
उ0पु0	मिलामि	मिलावः	मिलामः

'मिल्' धातु लट्लकार प्रथम पुरुष एकवचन में 'मिलति' रूप बनता है। **अतः विकल्प A सही है।**

आत्मनेपदी लट् लकार

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्र0पु0	मिलते	मिलेते	मिलन्ते
म0पु0	मिलसे	मिलेथे	मिलध्वे
उ0पु0	मिले	मिलावहे	मिलामहे

स्रोत- रूपचन्द्रिका- ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज-430

74. रुधिर् आवरणे का लट्लकार अन्यपुरुष एकवचन का रूप है-

(A) रुणद्धि **(B) रुन्धे**
(C) दोनों नहीं **(D) दोनों ही**

व्याख्या-

रुधादिगण रुधिर् आवरणे (रोकना) द्विकर्मक अनिट्, उभयपदी

लट्लकार परस्मैपद

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्र0पु0	रुणद्धि	रुन्धः (रुन्द्धः)	रुन्धन्ति
म0पु0	रुणत्सि	रुन्धः (रुन्द्धः)	रुन्ध (रुन्द्ध)
उ0पु0	रुणध्मि	रुन्ध्वः	रुन्ध्मः

लट्लकार- आत्मनेपदी

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्र0पु0	रुन्धे	रुन्धाते	रुन्धते
म0पु0	रुन्त्से	रुन्धाथे	रुन्द्ध्वे
उ0पु0	रुन्धे	रुन्ध्वहे	रुन्ध्महे

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- रूपचन्द्रिका- ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज-466

75. 'रामेण बाणेन हतो बाली' इस वाक्य का कर्तृवाच्य रूप है-

(A) रामः बाणेन बालीं हतवान्
(B) रामेण बाणेन बालीं हतः
(C) रामेण बाणेन बालीं हतवान्
(D) रामेण बाणेन बलिं हतवान्

व्याख्या-

जिसमें कर्ता प्रधान हो अर्थात् क्रिया कर्ता के अनुसार हो वह कर्तृवाच्य है। जैसे- रामः बाणेन बालीं हतवान्। इस वाक्य में 'हतवान्' क्रिया का साक्षात् सम्बन्ध राम के साथ है। अतः यह कर्तृवाच्य है। जिसमें कर्ता अनुक्त (अप्रधान) हो तथा क्रिया (उक्त) कर्म के अनुसार हो वहाँ कर्मवाच्य होता है। जैसे- रामेण बाणेन हतो बाली।

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- अष्टाध्यायी- 3.4.17, 2. 3. 18, 2. 3. 2

76. निम्नलिखित वाक्यों में शुद्ध है-

(A) त्वं सह अहं चित्रं द्रक्ष्यामि
(B) तव सह अहं चित्रं द्रक्षष्यामि
(C) त्वया सह अहं चित्रं द्रक्ष्यामि
(D) त्वया सः अहम् चित्रं द्रक्ष्यामि

व्याख्या-

'त्वया सह अहं चित्रं द्रक्ष्यामि।' यह वाक्य शुद्ध है क्योंकि इसमें 'सहयुक्तेऽप्रधाने (2/3/19)- सूत्र से सह के योग में अप्रधान 'त्वं' में तृतीया विभक्ति हुई तथा प्रधान कर्ता 'अहं' के कारण क्रिया उत्तम पुरुष एकवचन में प्रयुक्त हुई। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण) राममुनि पाण्डेय, पेज-42

77. शुद्ध वाक्य है-

(A) नमस्कृत्वा हरिं गच्छति
(B) नमस्कृत्य हरये गच्छति
(C) नमस्कृत्य हरिं गच्छति
(D) नमस्कृत्वा हरये गच्छति

व्याख्या-

नमः स्वस्तिस्वाहास्वधाऽलंवषड्योगाच्च (2/3/16) सूत्र से 'नमः' आदि वाक्यों के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे- हरये नमः। किन्तु उपपदविभक्ति से कारक विभक्ति बलवती होती है। 'उपपदविभक्तेः कारकविभक्तिः बलीयसी।' उदाहरण- नमस्कृत्य हरिं गच्छति।

विशेष- उक्त वाक्य में नमः उपपद एवं कृ धातु के योग के कारण कारक विभक्ति हुई है।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज-205

78. अधोलिखित वाक्यों में एक वाक्य शुद्ध है-
(A) रामाः दीनाय धनं ददन्ति
(B) रामा दीनान् धनं ददन्ति
(C) रामाः दीनं धनं ददति
(D) रामाः दीनाय धनं ददति

व्याख्या-

'रामाः दीनाय धनं ददति।' इस वाक्य मे कर्ता राम अपने दान कर्म के द्वारा दीन को सन्तुष्ट करना चाहता है। अतः 'कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्(1/4/32) सूत्र से 'दीन' की सम्प्रदानसंज्ञा तथा 'चतुर्थी सम्प्रदाने' (2/3/13) सूत्र से चतुर्थी विभक्ति हुई है। इसीप्रकार चूंकि कर्ता प्रथमपुरुष बहुवचन का है तो क्रिया भी 'दा' धातु लट् लकार प्रथमपुरुष बहुवचन का 'ददति' रूप प्रयुक्त है।

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- सिद्धान्तकौमुदी (1/4/32) (कारक प्रकरण)- राममुनि पाण्डेय, पेज-46

79. सांख्य के निम्नलिखित तत्त्वों में चेतन तत्त्व कौन-सा है?
(A) बुद्धि **(B) अहंकार**
(C) मन **(D) पुरुष**

व्याख्या-

A. ईश्वरकृष्ण प्रणीत सांख्यकारिका में बुद्धि का लक्षण इसप्रकार है-'अध्यवसायो बुद्धिः'(सां. का.23) बुद्धि (महत्) प्रकृति का विकार है। निश्चय करना बुद्धि का गुण है।

B. सांख्यकारिका में अभिमान को परिभाषित करते हुए कहते हैं- 'अभिमानोऽहङ्कारः' (सां. का. 24)
महत् का विकार अहङ्कार है। सांख्यकारिका में अभिमान को ही अहङ्कार कहा गया है।

C. सांख्यकारिका में मन का लक्षण निम्नवत् है-
'उभयात्मकं मनः'(सां. का. 27)
मन उभयेन्द्रिय है अर्थात् कर्मेन्द्रिय एवं ज्ञानेन्द्रिय दोनों है।

D. त्रिगुणमविवेकिविषयः सामान्यमचेतनं प्रसवधर्मि।
व्यक्तं तथा प्रधानं, तद्विपरीतस्तथा च पुमान्।। (सां.का. 11)

व्यक्त+प्रधान (अव्यक्त)	पुरुष
त्रिगुणम्	गुणरहितम् (त्रिगुणातीत)
अविवेकी	विवेकी
विषयी	अविषयी
सामान्यम्	असामान्यम्
अचेतनम्	चेतनम्
प्रसवधर्मी	अप्रसवधर्मी

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- सांख्यकारिका- राकेश शास्त्री, पेज-38

80. प्रकृति से साक्षात् उत्पन्न है-
(A) अहङ्कार **(B) पञ्चतन्मात्रा**
(C) पञ्चमहाभूत **(D) महत्**

व्याख्या-

सांख्यकारिका में पच्चीस तत्त्वों की चर्चा की गई है उन सब तत्त्वों का मूल प्रकृति है जो निम्न तालिका से स्पष्ट है-

त्रिगुणात्मिका प्रकृति
महत् (बुद्धि)
अहंकार
सात्विक तामस
5 ज्ञानेन्द्रियाँ 5 कर्मेन्द्रियाँ मन
श्रोत्र, त्वक्, चक्षु, रसना, घ्राण
वाक् (वाणी), पाणि (हाथ), पाद (पैर), पायु (गुदा), उपस्थ (मूत्रेन्द्रिय)
पञ्च-तन्मात्राएँ
शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध।
पञ्च-महाभूत
आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी।
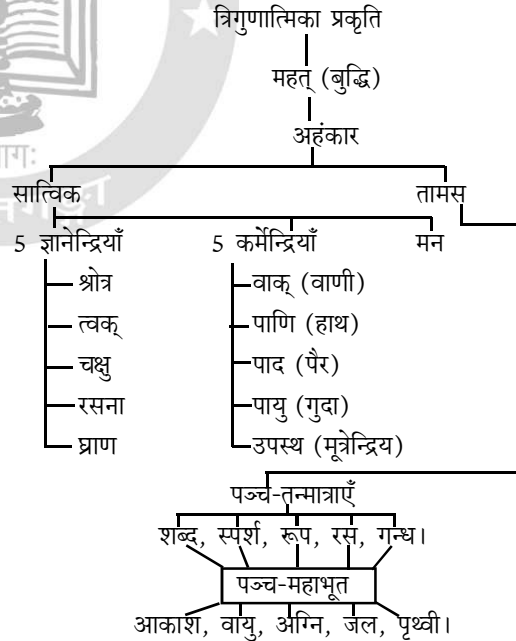
उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि मूल प्रकृति से साक्षात् 'महत्' उत्पन्न है।

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- सांख्यकारिका (कारिका-22)- राकेश शास्त्री, पेज-70

81. सांख्याभिमत में कितने तत्त्व ''प्रकृति और विकृति'' हैं ?

(A) सोलह **(B) अनेक**

(C) सात **(D) ग्यारह**

व्याख्या-

मूलप्रकृतिरविकृतिर्महदाद्याः प्रकृतिविकृतयः सप्त।
षोडशकस्तु विकारो न प्रकृतिर्न विकृतिः पुरुषः॥

(सां.का.- 3)

अतः विकल्प C सही है।

* मूल प्रकृति - एक
* विकृति (विकार) - सोलह
* प्रकृति विकृति - सात (महत्, अहङ्कार, पञ्चतन्मात्रायें)
* न प्रकृति न विकृति - एक (पुरुष)
* पञ्च ज्ञानेन्द्रियाँ - श्रोत्र, नेत्र, घ्राण, त्वक्, रसना
* पञ्च कर्मेन्द्रियाँ - वाक्, पाणि, पाद, पायु, उपस्थ
* पञ्च तन्मात्रा - शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध
* पञ्च महाभूत - आकाश, वायु, तेज, जल, पृथ्वी

स्रोत- सांख्यकारिका (कारिका- 3)- राकेश शास्त्री, पेज-8

82. सांख्यमतानुसार 'अव्यक्त' है-

(A) पुरुष **(B) ईश्वर**

(C) प्रकृति **(D) कोई नहीं**

व्याख्या-

A. सांख्य के अनुसार पुरुष न किसी का कारण (प्रकृति) न विकार (कार्य) होता है।

'न प्रकृतिर्न विकृतिः पुरुषः' (सां.का.- 3)

B. सांख्यदर्शन में ईश्वर की चर्चा नहीं है। पातञ्जल योगदर्शन ईश्वर को मानता है इसलिए इसके तत्त्वों की संख्या 26 है। इसीकारण योगदर्शन को 'सेश्वर दर्शन' भी कहा जाता है।

C. सांख्यमतानुसार प्रकृति को 'अव्यक्त' कहा गया है क्योंकि यह अत्यन्त सूक्ष्म है लेकिन प्रकृति का अभाव नहीं है।
'सौक्ष्म्यात्तदनुपलब्धिर्नाभावात्' (सां.का.- 08)
'सावयवं परतन्त्रं व्यक्तं विपरीतमव्यक्तम्' (सां.का.-10)
'तद्विपरीतः श्रेयान् व्यक्ताव्यक्तज्ञविज्ञानात्' (सां.का.-02)
'पुरुषस्य विमोक्षार्थं प्रवर्तते तद्वदव्यक्तम्' (सां.का.-58)

उपर्युक्त उद्धरणों से सिद्ध है कि सांख्यमतानुसार प्रकृति को 'अव्यक्त' कहते हैं।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- सांख्यकारिका (कारिका 10)- राकेश शास्त्री, पेज-32

83. सांख्यदर्शनानुसार प्रकाश से सम्बन्ध है-

(A) रजोगुण **(B) तमोगुण**

(C) सत्त्वगुण **(D) इनमें से कोई नहीं**

व्याख्या- **गुणों की विशेषता**

* सत्त्वं लघुप्रकाशकमिष्टम् (हल्का एवं प्रकाशक) सत्त्वगुण
* उपष्टम्भकं चलम् (प्रेरक एवं चञ्चल) रजोगुण
* गुरुवरणकम् (भारी एवं नियामक) तमोगुण
* 'प्रदीपवच्चार्थतो वृत्तिः' ये तीनों गुण मिलकर दीपक के समान व्यवहार करतें हैं।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- सांख्यकारिका (कारिका 13)- राकेश शास्त्री, पेज-45

84. तर्कभाषा के अनुसार पदार्थों की संख्या है-

(A) सात **(B) सोलह**

(C) नौ **(D) दो**

व्याख्या-

A. अन्नम्भट्ट कृत 'तर्कसंग्रह' के अनुसार सात पदार्थ हैं– द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय और अभाव।

B. केशवमिश्र प्रणीत 'तर्कभाषा' के अनुसार पदार्थों की संख्या 16 है- प्रमाण, प्रमेय, संशय, प्रयोजन, दृष्टान्त, सिद्धान्त, अवयव, तर्क, निर्णय, वाद, जल्प, वितण्डा, हेत्वाभास, छल, जाति और निग्रहस्थान।

अतः विकल्प B सही है।

C. 'तर्कसंग्रह' में नौ द्रव्य हैं- पृथ्वी, जल, तेज, वायु आकाश, काल, दिक्, आत्मा और मन।

D. तर्कसंग्रह में सामान्य के दो भेद हैं- परसामान्य और अपरसामान्य।

स्रोत- तर्कभाषा- श्रीनिवास शास्त्री, पेज-4

85. 'न्यायदर्शन' में निम्नलिखित में से कौन से प्रमाण स्वीकृत हैं ?
(A) प्रत्यक्ष, अनुमान
(B) प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द
(C) प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द
(D) प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, अर्थापत्ति, उपमान

व्याख्या-

प्रमाण	दर्शन	प्रवर्तक
* प्रत्यक्ष,अनुमान	बौद्ध	गौतम बुद्ध
* प्रत्यक्ष,अनुमान	जैन	महावीर स्वामी
* प्रत्यक्ष,अनुमान, आप्त (शब्द)	सांख्य/योग	कपिल/पतञ्जलि
* प्रत्यक्ष,अनुमान,उपमान,शब्द	न्याय/वैशेषिक	गौतम/कणाद
* प्रत्यक्ष,अनुमान,उपमान,शब्द, अर्थापत्ति	मीमांसा	प्रभाकर/मीमांसक

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- तर्कभाषा- श्रीनिवास शास्त्री, पेज-50

86. तर्कभाषा के अनुसार कारणों की संख्या है-
(A) तीन **(B) चार**
(C) पाँच **(D) छः**

व्याख्या-

A. तर्कभाषा के अनुसार तीन कारण-

कारण	उदाहरण
1- समवायि	पट का समवायि कारण तन्तु पट का
2- असमवायि	तन्तुसंयोग असमवायिकरण
3- निमित्त	वेमा, तुरी आदि पट के निमित्तकारण

अतः विकल्प A सही है।

B. तर्कभाषा के अनुसार चार प्रमाण- प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द।

C. तर्कभाषा के अनुसार पाँच हेत्वाभास- असिद्ध, विरुद्ध, अनैकान्तिक, प्रकरणसम और कालात्ययापदिष्ट।

D. तर्कभाषा के अनुसार छः सन्निकर्ष- संयोग, संयुक्तसमवाय, संयुक्तसमवेतसमवाय, समवाय, समवेतसमवाय और विशेष्य विशेषणभाव।

स्रोत- तर्कभाषा- श्रीनिवास शास्त्री, पेज-24

87. वेदान्तसार में वेदान्त के किस मत का निरूपण है?
(A) शुद्धाद्वैतवाद **(B) अद्वैतवाद**
(C) विशिष्टाद्वैतवाद **(D) द्वैताद्वैतवाद**

व्याख्या-

सिद्धान्त	आचार्य	ग्रन्थ (भाष्यनाम)
A. शुद्धाद्वैतवाद	बल्लभाचार्य	ब्रह्मसूत्र पर अणुभाष्य
B. अद्वैतवाद	शङ्कराचार्य	शारीरकभाष्य
C. विशिष्टाद्वैतवाद	रामानुजाचार्य	श्रीभाष्य
D. द्वैताद्वैतवाद	निम्बार्काचार्य	वेदान्तपारिजात सौरभभाष्य

विशेष- अद्वैतवेदान्त में एकमात्र 'ब्रह्म' की सत्ता स्वीकार की गई है- 'ब्रह्मसत्यं जगन्मिथ्या'। सदानन्द कृत वेदान्तसार में अद्वैतवाद के मत का निरूपण है।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- वेदान्तसार-सन्तनारायण श्रीवास्तव, भू० पेज-22

88. वेदान्तसार के अनुसार सृष्टिक्रम में 'पञ्चभूतों की उत्पत्ति क्रम क्या है?
(A) पृथ्वी, जल, वायु, तैजस्, आकाश
(B) आकाश, तैजस्, वायु, जल, पृथ्वी
(C) आकाश, वायु, तैजस्, जल, पृथ्वी
(D) आकाश, जल, वायु, तैजस्, पृथ्वी

व्याख्या-
वेदान्तसार के अनुसार सृष्टिक्रम में पञ्चतन्मात्राओं से पञ्चमहाभूतों की उत्पत्ति का क्रम इसप्रकार है।

शब्द-स्पर्श-रूप-रस-गन्ध
आकाश-वायु-तैजस्-जल-पृथ्वी

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- वेदान्तसार-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-79

89. 'पञ्चीकरण' का निरूपण करता है-
(A) न्याय **(B) वेदान्त**
(C) सांख्य **(D) तर्कसंग्रह**

व्याख्या-

A. न्यायशास्त्र में पाँच हेत्वाभासों का निरूपण किया गया है। 1- असिद्ध 2- विरुद्ध 3- अनैकान्तिक 4- प्रकरणसम 5- कालात्ययापदिष्ट।

B. वेदान्त में 'पञ्चीकरण' का निरूपण किया गया है।

''द्विधा विधाय चैकैकं चतुर्धा प्रथमं पुनः।
स्वस्वेतरद्वितीयांशैर्योजनात् पञ्च पञ्च ते।।'' (वेदान्तसार)

पञ्चीकरण की प्रक्रिया से उत्पन्न महाभूत आकाश, वायु, तेजस्, जल, और पृथिवी में प्रत्येक का भाग इसप्रकार होगा- आकाश 1/2 + 1/8 वायु + 1/8 तेजस् + 1/8 जल + 1/8 पृथिवी = आकाश

इसीप्रकार अन्य महाभूतों का भी होगा। अतः विकल्प B सही है।

C. सांख्य में चार प्रत्ययसर्ग (बुद्धिसर्ग) का निरूपण किया गया है।

1- विपर्यय - 5 भेद
2- अशक्ति - 28 भेद
3- तुष्टि - 9 भेद
4- सिद्धि - 8 भेद

D. 'तर्कसंग्रह' में पाँच प्रकार के कर्मों का निरूपण किया गया।

1. उत्क्षेपण 2. अपक्षेपण 3. आकुञ्चन
4. प्रसारण 5. गमन

स्रोत- वेदान्तसार-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-78,79

90. तत्त्वमसि है-

(A) ब्रह्मवाक्य **(B) अनुभववाक्य**
(C) महावाक्य **(D) आचार्यवाक्य**

व्याख्या-

महावाक्य	वेद/उपनिषद्	अपर संज्ञा
तत्त्वमसि	सामवेद/छान्दोग्योपनिषद्	उपदेशवाक्य
अहं ब्रह्मास्मि	शुक्लयजुर्वेद/बृहदारण्यकोपनिषद्	अनुभववाक्य
प्रज्ञानं ब्रह्म	शुक्लयजुर्वेद/बृहदारण्यकोपनिषद्	महावाक्य
सर्वं खल्विदं ब्रह्म	सामवेद/छान्दोग्योपनिषद्	महावाक्य

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- वेदान्तसार- सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-121

91. ''साधनचतुष्टयसम्पन्न'' किसके लिए है-

(A) सम्बन्ध **(B) विषय**
(C) अधिकारी **(D) प्रयोजन**

व्याख्या-

वेदान्तशास्त्र में अनुबन्ध चार हैं- **'तत्रानुबन्धो नामाधिकारि-विषयसम्बन्धप्रयोजनानि'** (वेदान्तसार)

A. सम्बन्ध-

'सम्बन्धस्तु तदैक्यप्रमेयस्य तत्प्रतिपादकोपनिषत्प्रमाणस्य च बोध्यबोधकभावलक्षणः।'

ज्ञान के विषय उन जीव और ब्रह्म का ऐक्य एवं इनका प्रतिपादन करने वाले उपनिषद् रूप प्रमाण वाक्यों का परस्पर बोध्य-बोधकभाव सम्बन्ध है।

B. विषय- 'विषयो जीवब्रह्मैक्यं शुद्धचैतन्यं प्रमेयं तत्रैव वेदान्तानां तात्पर्यात्।' वेदान्त का प्रतिपाद्य विषय जीव और ब्रह्म की एकता है। शुद्ध चैतन्य प्रमा का विषय है क्योंकि समस्त वेदान्त वाक्यों का अभिप्राय उसी शुद्धचैतन्य के प्रतिपादन में निहित है।

C. अधिकारी-

'अधिकारी तु विधिवदधीतवेदवेदाङ्गत्वेनापाततोऽधिगता खिलवेदार्थोऽस्मिन् जन्मनि जन्मान्तरे वा काम्यनिषिद्धवर्जन पुरस्सरं नित्यनैमित्तिकप्रायश्चित्तोपासनानुष्ठानेन-निर्गतनिखिलकल्मषतया नितान्तनिर्मलस्वान्तः साधनचतुष्टयसम्पन्नः प्रमाता।'

साधनचतुष्टय से सम्पन्न प्रमाता अधिकारी है।

D. प्रयोजन- 'प्रयोजनं तु तदैक्यप्रमेयगताज्ञाननिवृत्तिः स्वस्वरूपानन्दावाप्तिश्च।'

जीव और ब्रह्म का ऐक्य विषयक ज्ञान के साथ अज्ञान की निवृत्ति पूर्वक अपने स्वरूप का परिचय होने से परम आनन्द की प्राप्ति इस शास्त्र का मुख्य प्रयोजन है।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-11

92. 'श्रीमद्भगवद्गीता' में कितने अध्याय हैं-

(A) चौदह **(B) सत्रह**
(C) अठारह **(D) बीस**

व्याख्या-

अध्याय	अध्याय नाम/वर्णन	श्लोकसंख्या
प्रथम	अर्जुनविषादयोग	47
द्वितीय	सांख्ययोग	72
तृतीय	कर्मयोग	43
चतुर्थ	ज्ञानकर्मसंन्यासयोग	42
पञ्चम	कर्मसंन्यासयोग	29
षष्ठ	आत्मसंयमयोग/ध्यानयोग	47
सप्तम	ज्ञानविज्ञानयोग	30
अष्टम	अक्षरब्रह्मयोग	28
नवम	राजविद्याराजगुह्ययोग	34
दशम	विभूतियोग	42
एकादश	विश्वरूपदर्शनयोग	55
द्वादश	भक्तियोग	20
त्रयोदश	क्षेत्रक्षेत्रज्ञविभागयोग	34
चतुर्दश	गुणत्रयविभागयोग	27
पञ्चदश	पुरुषोत्तमयोग	20
षोडश	दैवासुरसम्पद्विभागयोग	24
सप्तदश	श्रद्धात्रयविभागयोग	28
अष्टादश	मोक्षसंन्यासयोग	78
	योग-700	

विशेष- 'श्रीमद्भगवद्गीता' कृष्णद्वैपायन भगवान् वेदव्यास द्वारा प्रणीत 'महाभारत' के 'भीष्मपर्व' से ली गयी है, इसमें 18 अध्याय तथा 700 श्लोक हैं।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा ऋषि,पेज-158

93. गीता का 'कर्मसिद्धान्त' क्या है?
(A) कर्मत्याग **(B) अशुभ कर्मत्याग**
(C) अनासक्त कर्म **(D) साकांक्ष कर्म**

व्याख्या-

'तस्मादसक्तः सततं कार्यं कर्म समाचर।
असक्तो ह्याचरन्कर्म परमाप्नोति पूरुषः॥'

(गीता 3/19)

कर्म के सिद्धान्त को बताते हुए भगवान् श्रीकृष्ण कहते हैं कि कर्मयोग से सिद्ध हुए महापुरुष का किसी भी प्राणी के साथ किंचिन्मात्र भी स्वार्थ का सम्बन्ध नहीं रहता। इसलिए "हे अर्जुन! तू निरन्तर आसक्ति रहित होकर कर्तव्य कर्म का भलीभाँति आचरण कर क्योंकि आसक्ति रहित होकर कर्म करता हुआ मनुष्य परमात्मा को प्राप्त हो जाता है।" ,

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- गीता 5/10, 2/47-48, 3/9, 3/19

94. "ध्वनिपरिवर्तन जो जिह्वानर्तन है।" के बारे में आपका मत क्या है ?
(A) यह उक्ति सही है
(B) यह उक्ति सही नहीं है।
(C) यह उक्ति सर्वथा असम्बद्ध उक्ति है।
(D) यह उक्ति एकाङ्गी है।

व्याख्या-

उच्चारण एवं भौगोलिक परिस्थितियाँ आदि ध्वनि परिवर्तन के दो कारक हैं 1- आभ्यन्तर 2- बाह्य। एक-एक शब्द के अनेक अपभ्रंश प्राप्त होते हैं।

'एकैकस्य हि शब्दस्य बहवोऽपभ्रंशाः।'

(महाभाष्य पस्पशाह्निक)

इस प्रकार 'ध्वनि परिवर्तन जो जिह्वानर्तन है।' यह उक्ति एकाङ्गी है क्योंकि ध्वनिपरिवर्तन मात्र जिह्वानर्तन का कारण नहीं अपितु अनेक परिवेश ध्वनिपरिवर्तन के कारण होते हैं।

अतः विकल्प D सही है।

95. ध्वनि परिवर्तन का आभ्यन्तर कारण है-
(A) अनुकरण की अपूर्णता
(B) अन्य भाषाओं का प्रभाव
(C) सादृश्य
(D) काल प्रभाव

व्याख्या-

A. अनुकरण की अपूर्णता- अनुकरण के द्वारा ही भाषा सीखी जाती है। वाग्यन्त्र की त्रुटि या अज्ञान आदि के कारण अनुकरण अपूर्ण हो जाता है। जैसे- बच्चे राम को लाम, रोटी को लोटी। उच्चारण सम्बन्धी परिवर्तन होने के कारण यह आभ्यन्तर कारण है।

अतः विकल्प A सही है।

B. काल प्रभाव- काल के प्रभाव से भाषा में विकास या परिवर्तन होता रहता है। जैसे- खाद् से खाना, पा से पीना, वर्तते से बाटे या बा तथा निवर्तते से निबटता है।

C. सादृश्य- सादृश्य के आधार पर कुछ ध्वनियों में परिवर्तन हो जाता है। जैसे- द्वादश के सादृश्य पर एकादश। तुभ्यम्-तुझे, मह्यम्-मुझे आदि।

D. अन्य भाषाओं का प्रभाव- अन्य भाषाओं के प्रभाव के कारण भाषा की ध्वनियों में परिवर्तन देखा जाता है। जैसे- उर्दू के प्रभाव से हिन्दी में क ग ज़ ध्वनियाँ हिन्दी में आ गयीं। द्रविड़ परिवार की भाषाओं के सम्पर्क से संस्कृत आदि में टवर्ग ध्वनि आई हैं। प्रकृत-प्रकट, संकृत - संकट, विकृत - विकट आदि।

स्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-228,230

96. क्या ध्वनि परिवर्तन के लिए वर्नर ने ग्रिम नियमों में सुधार किया है?
(A) हाँ
(B) नहीं
(C) दोनों का कोई सम्बन्ध नहीं है
(D) कुछ भी नहीं

व्याख्या-
ग्रिम नियम के अनुसार प्रथम वर्ण परिवर्तन में संस्कृत के प्रथम वर्ण को अंग्रेजी में द्वितीय वर्ण, द्वितीय और चतुर्थ को तृतीय तथा तृतीय को प्रथम हो जाता है।

ध्वनि परिवर्तन	संस्कृत	अंग्रेजी	अर्थ
क् ह् H, Wh	कः	Who	कौन
भ् ब् bh, B	भ्रातर्	Brother	भाई
ग् क् G, K	गो	Cow	गाय
ब् प् B, P	लब (फारसी)	Lip	होठ

वर्नर नियम- उपर्युक्त ग्रिम के नियम में कुछ बिन्दुओं पर सुधार किया है, जैसे- मूल भारोपीय भाषा के शब्दों के क् त् प् (k,t,p) को जर्मनिक भाषाओं में ह् थ् फ् (h,th,f) तभी होगा जब मूल भाषा मे अव्यवहित पूर्व कोई उदात्त स्वर होता है। यदि उदात्त स्वर क् त् प् के बाद होगा तो इनके स्थान पर क्रमशः ग् द् ब् होते हैं।

संस्कृत	लैटिन	गॉथिक	अंग्रेजी	ध्वनिपरिवर्तन
युवक'स्	Juvencus	Juggs	Young	क् /ग्
शत'म्	Centum	Hund	Hundred	त् /द्
सप्त'न्	Septem	Sibun	Seven	प् /ब्

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-246

97. क्या 'अर्थपरिवर्तन का कारण ध्वनिपरिवर्तन है'?
(A) हाँ
(B) नहीं
(C) कुछ-कुछ
(D) दोनों के अधिष्ठान भिन्न हैं।

व्याख्या-
विभिन्न परिस्थितियों में मानव मन की स्थिति एक सी नहीं होती है। यही कारण है कि राग, द्वेष,क्रोध, घृणा आदि में उच्चरित शब्दों के अर्थों में अन्तर होता है। कभी-कभी अर्थपरिवर्तन में एक के साथ दूसरा कारण भी सम्बद्ध होता है। भारतीय काव्यशास्त्रियों आचार्य मम्मट, विश्वनाथ, जगन्नाथ ने अर्थभेद या अर्थपरिवर्तन के कारण रूप में लक्षणा और व्यंजना शक्तियों का सूक्ष्मतम विवेचन किया है। उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि कुछ-कुछ अर्थ परिवर्तन के कारण भी ध्वनि परिवर्तन होता है।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-341

98. यो-हे-हो सिद्धान्त सम्बद्ध है-
(A) भाषोत्पत्ति से **(B) ध्वनिपरिवर्तन से**
(C) भाषावर्गीकरण से **(D) अर्थविस्तार से**

व्याख्या-

A. भाषोत्पत्ति के सिद्धान्त में विद्वानों ने 12 मत प्रस्तुत किये हैं जिनमें 'श्रम ध्वनि सिद्धान्त' को 'यो-हे-हो वाद' (Yo-He-Ho Theory) तथा 'श्रमापहारमूलकतावाद' भी कहते हैं इस सिद्धान्त के प्रतिपादक 'न्वारे'(Noire) नामक भाषाशास्त्री हैं। इस सिद्धान्त का अभिप्राय है कि मनुष्य के शारीरिक परिश्रम करते समय अनायास कुछ ध्वनियाँ निकल जाती हैं। जैसे- धोबी कपड़ा धोते समय हियो, या छियो कहता है इसी प्रकार भारी समान उठाते समय मजदूर हो-

हो, हूँ-हूँ कहते हैं। श्रमगत उच्चारण शब्दों के कारण भाषा उत्पत्ति के सिद्धान्त में इसका नाम 'यो-हे-हो वाद' पड़ा है।

B. ध्वनि परिवर्तन- भाषा में ध्वनि परिवर्तन के दो कारण बताये गये हैं -

1- आभ्यन्तर कारण 2- बाह्य कारण।

C. भाषा का वर्गीकरण-

भाषा
- पारिवारिक वर्गीकरण (भारतीय विभाजन के अनुसार- 18 परिवार स्वीकृत किये गये हैं)
- आकृतिमूलक वर्गीकरण
  - अयोगात्मक (चीनी, तिब्बती)
  - योगात्मक (संस्कृत आदि)
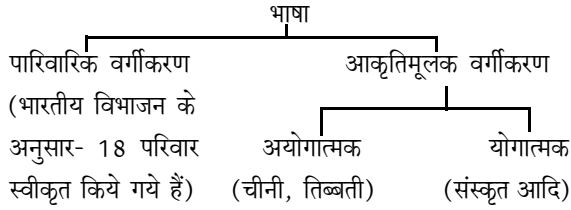
D. अर्थविस्तार- कुछ शब्द मूल रूप में किसी विशेष या संकुचित अर्थ में प्रयुक्त होते थे, बाद में उनके अर्थ में विस्तार हो गया। जैसे- कुशल, प्रवीण, तैल, गोशाला, गोष्ठ, महाराज तथा गवेषणा आदि।

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-72

99. 'मे-पोल-सिद्धान्त' में 'मे-पोल' क्या है?

(A) एक खम्भा **(B) एक गृह**

(C) एक नृत्यात्मक त्यौहार **(D) एक वृक्ष**

व्याख्या-

नाटकों की उत्पत्ति के सम्बन्ध में विभिन्न सिद्धान्तों की चर्चा की गयी है, जिनमें एक सिद्धान्त 'मे पोल सिद्धान्त' भी है। यूरोप के कुछ विद्वान् अपने यहाँ होने वाले 'मे पोल नृत्य' को संस्कृत रूपकों का प्रथम रूप कहते हैं। भारत में इन्द्रध्वजपर्व शरद्ऋतु में होता था जो इस 'मे पोल नृत्य' के समकक्ष था। **अतः विकल्प C सही है।**

संस्कृत रूपकों (नाटकों) की उत्पत्ति के सन्दर्भ में विभिन्न सिद्धान्त

नाट्योत्पत्ति सिद्धान्त	समर्थक विद्वान्
1. ब्रह्मा द्वारा चारों वेदों के सारभाग से नाट्यवेद रूपी पञ्चमवेद का निर्माण। ''चतुर्वेदाङ्गसम्भवम्''	आचार्य भरत
2. ऋग्वेद के संवाद सूक्तों से नाटक की उत्पत्ति	मैक्समूलर, सिल्वॉ लेवी, फॉन श्रोएदर, हर्टल
3. यूनानी रूपकों से उत्पत्ति	वेबर तथा बिन्डिश
4. पुत्तलिका नृत्य सिद्धान्त	प्रो0 पिशेल
5. मृतात्मश्राद्धसिद्धान्त (वीर पूजा)	डॉ0 रिजवे
6. उत्सव/पर्व सिद्धान्त (मे पोल सिद्धान्त)	यूरोपीय विद्वान्
7. छाया नाटक सिद्धान्त	जर्मन विद्वान् ल्यूडर्स, स्टेन कोनो
8. स्वांगवाद	प्रो. हिलब्राण्ड

स्रोत- संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-266

100. क्या ग्रिम-नियम का त्रिभुज निम्नवत् है?

क ख ग

य र ल   प फ ब
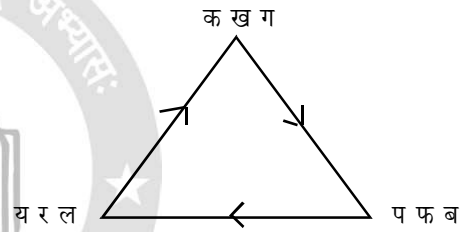
(A) बिल्कुल सही **(B) बिल्कुल गलत**

(C) कुछ रूप तक सही है **(D) कह नहीं सकते**

व्याख्या-

ग्रिम नियम- ग्रिम नियम ध्वनि नियमों में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण नियम है, ग्रिम नियम के अनुसार ध्वनि परिवर्तन पर आधारित त्रिभुज इसप्रकार बनेगा-

क त प

ग द ब   ख थ फ
घ ध भ
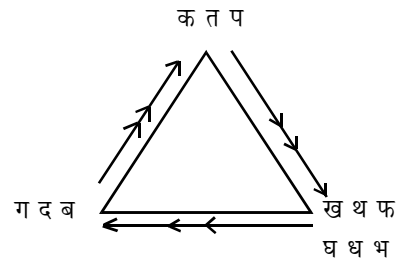
अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-242

उत्तरमाला

1.B	2.A	3.B	4.C	5.C	6.B	7.B	8.C	9.D	10.C	11.A	12.B
13.C	14.D	15.D	16.D	17.B	18.C	19.A	20.B	21.D	22.C	23.D	24.C
25.C	26.A	27.A	28.D	29.D	30.B	31. C	32. C	33. C	34. A	35. A	36.A
37. A	38. A	39. B	40. C	41. A	42. C	43. D	44. A	45. D	46. A	47. D	48. B
49. C	50. B	51. D	52. D	53. C	54. D	55. C	56. C	57. B	58. A	59. B	60. C
61. B	62. C	63. B	64. B	65. C	66. C	67. D	68. A	69. A	70. C	71. B	72. A
73. A	74. D	75. A	76. C	77. C	78. D	79. D	80. D	81. C	82. C	83. C	84. B
85. C	86. A	87. B	88. C	89. B	90. C	91. C	92. C	93. C	94. D	95. A	96. A
97. C	98. A	99. C	100. B								

2. प्रवक्ता (PGT) संस्कृत 2002

1. अभिज्ञानशाकुन्तलम् का अङ्गीरस है-
(A) वीर **(B) शृङ्गार**
(C) करुण **(D) शान्त**

व्याख्या-

	ग्रन्थ	ग्रन्थकार	अङ्गीरस
A.	वेणीसंहारम्	भट्टनारायण	वीररस
B.	अभिज्ञानशाकुन्तलम्	कालिदास	शृङ्गाररस
C.	उत्तररामचरितम्	भवभूति	करुणरस
D.	नागानन्द	हर्षवर्धन	शान्तरस

विशेष- आचार्य विश्वनाथ 'साहित्यदर्पण' में 'नाटक' का लक्षण करते हुए कहते हैं कि ''एक एव भवेदङ्गी शृङ्गारो वीर एव वा'' इसप्रकार नाटक होने के कारण अभिज्ञानशाकुन्तलम् का मुख्य/प्रधान/अङ्गीरस''शृङ्गार'' है।
अतः विकल्प (B) सही है।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी,भू.पेज-60

2. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में विदूषक का चित्रण हुआ है-
(A) प्रथम अङ्क में **(B) द्वितीय अङ्क में**
(C) तृतीय अङ्क में **(D) चतुर्थ अङ्क में**

व्याख्या–

अङ्क	प्रमुख पात्र
(A) प्रथम	सूत्रधार,नटी, प्रियंवदा, अनसूया, वैखानस, शकुन्तला, दुष्यन्त आदि।
(B) द्वितीय	विदूषक, दुष्यन्त, सेनापति, करभक आदि।
(C) तृतीय	दुष्यन्त, शकुन्तला, अनसूया, प्रियंवदा, गौतमी आदि।
(D) चतुर्थ	कण्व, अनसूया, प्रियंवदा, शकुन्तला, दुर्वासा, शार्ङ्गरव, शारद्वत, गौतमी आदि।
☆ पञ्चम	कञ्चुकी (वातायन), विदूषक, दुष्यन्त, शाङ्र्गरव, शारद्वत, गौतमी, सोमरात (पुरोहित), प्रतीहारी (वेत्रवती) आदि।
☆ षष्ठ	धीवर, श्यालक, चतुरिका, परभृतिका, मधुकरिका, सानुमती, कञ्चुकी, दुष्यन्त विदूषक, मातलि आदि।
☆ सप्तम	मातलि, मारीच, अदिति, दुष्यन्त, शकुन्तला, सर्वदमन (भरत) तापसी (सुव्रता)

विशेष-

☆ 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अङ्क को छोड़कर सभी अङ्कों में दुष्यन्त का वर्णन है।

☆ द्वितीय, पञ्चम, एवं षष्ठ अङ्क में विदूषक का चित्रण हुआ है।

☆ कण्व का चित्रण केवल चतुर्थ अङ्क में हुआ है।

☆ हंसपदिका एवं वसुमती का चित्रण केवल पञ्चम अङ्क में हुआ है।

अतः विकल्प (B) सही है।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम्- कपिलदेव द्विवेदी, (द्वितीय अङ्क) पृष्ठ-90

3. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के किस अङ्क के प्रारम्भ में शुद्ध विष्कम्भक का प्रयोग किया गया है?
(A) प्रथम अङ्क **(B) द्वितीय अङ्क**
(C) पञ्चम अङ्क **(D) चतुर्थ अङ्क**

व्याख्या–

(A) 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के प्रथम अङ्क के प्रथम श्लोक में स्रग्धरा छन्द में भगवान् शिव की स्तुति एवं 'अष्टपदा-नान्दी' का प्रयोग किया गया है।

(B) द्वितीय अङ्क के प्रारम्भ में मृगया से परिश्रान्त विदूषक (माढव्य) शरीराङ्गों को टेढ़ा-मेढ़ा करके बैठा हुआ एवं शकुन्तला विषयक वार्ता का स्मरण करके राजा से कहता है- **''ततो गण्डस्योपरि पिण्डकः संवृत्तः।''** इस मुहावरे का प्रयोग है।

(C) पञ्चम अङ्क का प्रारम्भ आसन पर बैठे हुए राजा और विदूषक के प्रवेश से होता है।

(D) चतुर्थ अङ्क के प्रारम्भ में पुष्पों का चयन करती हुई दोनों सखियाँ (अनसूया-प्रियंवदा) शकुन्तला विषयक चिन्तन करती हुई भूत एवं भावी कथा की सूचना दे रहीं हैं। अतः यहाँ शुद्ध विष्कम्भक है -

''संक्षेपार्थस्तु विष्कम्भो मध्यपात्रप्रयोजितः।''
(दशरूपक 1.59)

अतः विकल्प (D) सही है।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम्- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-134

4. अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक में प्रवेशक का प्रयोग हुआ है -
(A) तृतीय अङ्क में (B) द्वितीय अङ्क में
(C) पञ्चम अङ्क में (D) षष्ठ अङ्क में

व्याख्या–
प्रवेशक- विष्कम्भक की भाँति 'प्रवेशक' भी भूत एवं भावी कथानक को जोड़ने वाला, नीच पात्रों के द्वारा निम्न भाषा (प्राकृत) से प्रयुक्त दो अङ्कों के अन्तराल में, शेष अर्थ का सूचक (अर्थोपक्षेपक) प्रवेशक कहा गया है-
तद्वदेवानुदात्तोक्त्या नीचपात्रप्रयोजितः।
प्रवेशोऽङ्कद्वयस्यान्तः शेषार्थस्योपसूचकः॥
(दश. 1.60)
'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' नाटक में प्रवेशक का प्रयोग षष्ठ अङ्क में हुआ है। प्रवेशक में सभी नीच पात्र होते हैं। इसमें नगर रक्षक श्याल (दुष्यन्त का साला) को दो सिपाहियों के साथ एक अभियुक्त (धीवर) मछुवारे को रस्सी से बाँधे हुए रङ्गमञ्च पर प्रवेश करते हुये दिखाया गया है। इसी से अँगूठी मिलने की जानकारी मिलती है।
अतः विकल्प (D) सही है।
स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम्- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-317

5. अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक का विदूषक है-
(A) मैत्रेय (B) माधव्य
(C) माणवक (D) गौतम

व्याख्या–

	ग्रन्थ	लेखक	विदूषक
	(A) मृच्छकटिकम्	शूद्रक	मैत्रेय
	(B) अभिज्ञानशाकुन्तलम्	कालिदास	माधव्य
	(C) विक्रमोर्वशीयम्	कालिदास	माणवक
	(D) मालविकाग्निमित्रम्	कालिदास	गौतम
☆	स्वप्नवासवदत्तम्	भास	वसन्तक
☆	रत्नावली	श्रीहर्ष	वसन्तक

अतः विकल्प (B) सही है।
स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम्- कपिलदेव द्विवेदी, भू. पेज-90

6. मृच्छकटिकम् नाटक का विदूषक है-
(A) गौतम (B) माधव्य
(C) माणवक (D) मैत्रेय

व्याख्या–
(A) मालविकाग्निमित्रम् - गौतम
(B) अभिज्ञानशाकुन्तलम् - माधव्य (माढव्य)
(C) विक्रमोर्वशीयम् - माणवक
(D) मृच्छकटिकम् - मैत्रेय

साहित्यदर्पण के तृतीय परिच्छेद में विदूषक का लक्षण इस प्रकार है-
''हास्यकरः कलहरतिर्विदूषकः स्यात् स्वकर्मज्ञः।''
(सा.द. 3/42)
विदूषक- जो अपनी क्रिया, देह, वेश और भाषा आदि से हँसाने वाला हो वह 'विदूषक' कहा जाता है।
अतः विकल्प (D) सही है।
स्रोत- मृच्छकटिकम्- जगदीशचन्द्र मिश्र, भूमिका-पेज-47

7. 'गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः' उक्ति किससे सम्बन्धित है?
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (B) रघुवंशम्
(C) उत्तररामचरितम् (D) विक्रमोर्वशीयम्

व्याख्या–
अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के प्रथम अङ्क में शकुन्तला के विषय में राजा का आत्मगत कथन-
A. ''सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तः-करणप्रवृत्तयः।'' (शाकु. 1/22)
सन्देहास्पद वस्तुओं के विषय में सज्जनों के अन्तःकरण की प्रवृत्तियाँ ही प्रमाण होती हैं।
B. रघुवंश महाकाव्य के ग्यारहवें सर्ग में विश्वामित्र राम को माँगने के अवसर पर राजा दशरथ से कहते हैं-
''तेजसां हि न वयः समीक्ष्यते।''
(रघु. 11 /1)
तेजस्वियों की आयु नहीं देखी जाती है।
C. उत्तररामचरितम् के चतुर्थ अङ्क में अरुन्धती जनक की बातों का समर्थन करते हुए कहती हैं-
''गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः।''
(उत्तररामचरितम् 4/11)
गुणी व्यक्तियों में गुण ही उनके पूजा के स्थान हैं उनमें आयु एवं लिङ्ग का कोई महत्त्व नहीं है।
D. ''उत्सङ्गवर्धितानां गुरुषु भवेत् कीदृशः स्नेहः।''
(विक्रमो. 5/10)
विक्रमोर्वशीयम् नाटक के पञ्चम अङ्क में कुमार राजा से कहता है कि- गोद में पले पुसे पुत्रों का माता-पिता पर कैसा अनुराग होता होगा।
अतः विकल्प (C) सही है।
स्रोत- उत्तररामचरितम्- आनन्दस्वरूप, पेज- 347

8. 'प्रियाशोको जीवं कुसुममिव घर्मो ग्लपयति' यह उक्ति किससे सम्बन्धित है-
(A) मृच्छकटिकम् **(B) मुद्राराक्षसम्**
(C) उत्तररामचरितम् **(D) मालविकाग्निमित्रम्**

व्याख्या-
मृच्छकटिकम् 'प्रकरण' के प्रथम अङ्क में चारुदत्त विदूषक से कहता है कि-

A. **''नष्टधनाश्रयस्य सौहृदादपि जनाः शिथिलीभवन्ति।''**
(मृच्छ. 1/13)
जिसके धन का आश्रय नष्ट हो जाता है उसके सुहृद् (मित्रादि) भी शिथिल हो जाते हैं।

B. विशाखदत्त कृत मुद्राराक्षस के प्रथम अङ्क में चन्दनदास चाणक्य से कहता है कि-
''कीदृशः तृणानाम् अग्निना सह विरोधः।''
(मुद्रा. अङ्क 1)
तृणों का अग्नि के साथ कैसा विरोध अर्थात् दुर्बलों का बलवानों से कैसा विरोध।

C. उत्तररामचरितम् नाटक के तृतीय अङ्क में तमसा सीता से कहती हैं-
''प्रियाशोको जीवं कुसुममिव घर्मो ग्लपयति।''
(उत्तर. 3/30)
तमसा राम के कष्ट को देखकर सीता से कहती है कि जिस प्रकार धूप फूल को सुखा देता है, उसी प्रकार सीता विषयक शोक (राम के) जीवन को सुखा रहा है।

D. मालविकाग्निमित्रम् नाटक के प्रथम अङ्क में कुमुदिनी वकुलावलिका से कहती है-
'' आकृति विशेषेष्वादरः पदं करोति।''
(मालवि0 अङ्क.- 1)
विशेष व्यक्तियों में आकृति स्थान प्राप्त करती है।
अतः विकल्प (C) सही है।

स्रोत- उत्तररामचरितम् (3/30)- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-220

9. 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः' यह कथन किससे सम्बन्धित है-
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् **(B) किरातार्जुनीयम्**
(C) नैषधीयचरितम् **(D) मेघदूतम्**

व्याख्या–
A. अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के चतुर्थ अङ्क में शकुन्तला की विदाई के अवसर पर शार्ङ्गरव कहता है-
''न खलु धीमतां कश्चिदविषयो नाम।''
(अभि.शा. अङ्क- 4)
बुद्धिमानों के लिए कोई भी विषय अज्ञात नहीं है।

B. भारवि कृत किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में वनेचर युधिष्ठिर से कहता है कि-
''हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः।'' (किरात. 1/4)
हितकारी और मनोहारी वचन दुर्लभ होते हैं।

C. नैषधीयचरितम् के पाँचवें सर्ग में नल इन्द्र से कहता है कि-
'आर्जवं हि कुटिलेषु न नीतिः।' (नैष. 5 /103)
कुटिल (धूर्त) व्यक्ति के प्रति सरल होना यह नीति नहीं है।

D. उत्तरमेघ में यक्ष मेघ से कहता है कि -
''सूर्यापाये न खलु कमलं पुष्यति स्वामभिख्याम् ।''
(मेघदूत उत्तरमेघ श्लोक 17)
सूर्य के अस्त होनें पर कमल अपनी शोभा को नहीं प्राप्त होता है।
अतः विकल्प (B) सही है।

स्रोत- किरातार्जुनीयम् (1/4)- रामसेवक दुबे, पेज-50

10. 'अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता' यह उक्ति किसने कही है-
(A) भीम **(B) द्रौपदी**
(C) दुर्योधन **(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं**

व्याख्या–
A. ''अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता'' यह सूक्ति किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग के 23 वें श्लोक में वनेचर ने युधिष्ठिर को बताया कि दुर्योधन अर्जुन एवं भीम के पराक्रम का स्मरण कर दुःखी होता है क्योंकि वह जानता है कि ''बलवानों से किया गया विरोध दुःखान्त होता है।'' उपर्युक्त तीनों विकल्पों में कोई भी पात्र इस सूक्ति से सम्बद्धित नहीं है।
अतः विकल्प (D) सही है।

स्रोत- किरातार्जुनीयम् (1/23)- रामसेवक दुबे, पेज-98

11. 'वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः' किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है-
(A) उत्तररामचरितम् **(B) मेघदूतम्**
(C) किरातार्जुनीयम् **(D) कादम्बरी**

व्याख्या–

A. उत्तररामचरितम् के द्वितीय अङ्क में वासन्ती आत्रेयी से कहती है-

''लोकोत्तराणां चेतांसि को नु विज्ञातुमर्हसि।''

(उत्तर02/7)

'महापुरुषों के चित्त को भला कौन जान सकता है?'

B. पूर्वमेघ में यक्ष मेघ से कहता है कि-

''याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा।''

(मेघदूतम् 1/6)

गुणवान् व्यक्ति के विषय में याचना विफल होने पर भी कुछ अच्छा है परन्तु नीच व्यक्ति से की गई याचना सफल होने पर भी अच्छी नहीं है।

C. किरातार्जुनीयम् में वनेचर युधिष्ठिर से दुर्योधन के विषय में बताता है कि-

'' वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः'' (किरात. 1/8)

महात्माओं से किया गया विरोध भी श्रेयस्कर होता है।

D. कादम्बरी कथामुख के शुकशावक निपातवर्णन में शुक राजा से कहता है कि-

''किमिव हि दुष्करमकरुणानाम्।''

(कादम्बरी कथामुखम्)

करुणारहित व्यक्ति के लिए कौन सा कार्य दुष्कर है।

अतः विकल्प (C) सही है।

स्रोत- किरातार्जुनीयम् (1/8)- राजेन्द्र मिश्र, पेज-50

12. 'स्फुटता न पदैरपाकृता न च स्वीकृतमर्थगौरवम्' किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है-
(A) शिशुपालवधम् **(B) किरातार्जुनीयम्**
(C) नैषधीयचरितम् **(D) रघुवंशम्**

व्याख्या-

(A) शिशुपालवध के प्रथमसर्ग में नारद श्रीकृष्ण से कहते हैं कि-

'ऋते रवेः क्षालयितुं क्षमेत कः क्षपातमस्काण्डमलीमसं नभः।' (शिशु0 1/38)

रात्रि के अन्धकार से मलिन आकाश को सूर्य के अतिरिक्त कौन दूर करने में समर्थ है।

(B) किरातार्जुनीयम् महाकाव्य के द्वितीयसर्ग में भारवि की विशेषता इसप्रकार की गयी है-

''स्फुटता न पदैरपाकृता न च स्वीकृतमर्थगौरवम्।''

(किरात0 2/27)

आपके वचन में सुबन्त और तिङन्त पद स्पष्टार्थ को कहने वाले हैं और अर्थगाम्भीर्य कहीं अस्वीकृत नहीं हुई है।

अतः विकल्प B सही है।

(C) नैषधीयचरितम् के प्रथमसर्ग में राजा नल की विशेषता का वर्णन इस प्रकार है-

''क्व भोगमाप्नोति न भाग्यभाग्जनः।''

(नैषध. 1/102)

भाग्यशाली लोग कहाँ भोग- सामग्री नहीं प्राप्त करते हैं अर्थात् सर्वत्र प्राप्त करते हैं?

(D) रघुवंशम् के चौदहवें सर्ग में राम सीता को वन में छोड़ने का आदेश देते हैं उसी समय लक्ष्मण अपने मन में सोचते हैं कि-

''आज्ञा गुरूणां ह्यविचारणीया।'' (रघु0 14/46)

गुरुओं (श्रेष्ठजनों) की आज्ञा विचार के योग्य नहीं होती है।

स्रोत- किरातार्जुनीयम् (2/27)- रामसेवक दुबे, भू.पेज-30

13. शूद्रक अवतार था-
(A) पुण्डरीक **(B) इन्द्रायुध**
(C) वैशम्पायन **(D) चन्द्रापीड**

व्याख्या-

प्रथम जन्म	द्वितीय जन्म	तृतीय जन्म
* पुण्डरीक	वैशम्पायन	शुक
* कपिञ्जल	इन्द्रायुध	कपिञ्जल
* चन्द्रमा	चन्द्रापीड	शूद्रक
* रोहिणी	पत्रलेखा	-
* लक्ष्मी	-	चाण्डालकन्या

विशेष-

1. श्वेतकेतु का पुत्र पुण्डरीक द्वितीय जन्म में मन्त्री शुकनास के पुत्र के रूप में उत्पन्न हुआ तथा महाश्वेता के शाप के कारण शुक हो गया।
2. कपिञ्जल शाप के कारण अश्व इन्द्रायुध के रूप में हो गया पुनः शाप निवृत्ति होकर कपिञ्जल रूप में हो गया।
3. चन्द्रमा द्वितीय जन्म में राजा तारापीड के पुत्र चन्द्रापीड के रूप में पैदा हुआ तथा मित्र वैशम्पायन के शोक में प्राणत्याग कर शूद्रक के रूप में उत्पन्न हुआ।

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-438

14. संस्कृत साहित्य में अर्थगौरव के लिए प्रसिद्ध हैं-
(A) श्रीहर्ष **(B) माघ**
(C) भारवि **(D) दण्डी**

व्याख्या–

* 'श्रीहर्ष' के 'नैषधीयचरितम्' की प्रशंसा में किसी विद्वान् ने कहा है कि-
'उदिते नैषधे काव्ये क्व माघः क्व च भारविः।'
अर्थात् श्रीहर्ष द्वारा नैषधीयचरितम् लिखे जाने पर भारवि और माघ का भी स्थान नहीं ठहरता।।
* महाकवि माघ उपमा, अर्थगौरव एवं पदलालित्य इन तीनों गुणों में सिद्धहस्त हैं। इन कवियों की प्रशंसा में उद्भट ने लिखा है-
''उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्।
दण्डिनः पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयो गुणाः।।''
संस्कृत साहित्य में कालिदास उपमा के लिए प्रसिद्ध हैं।
* संस्कृत साहित्य में महाकवि भारवि 'अर्थगौरव' के लिए प्रसिद्ध हैं।
* संस्कृत साहित्य में महाकवि दण्डी पदलालित्य के लिए प्रसिद्ध हैं। जबकि माघ में ये तीनों गुण विद्यमान हैं।

अतः विकल्प 'C' सही है।

स्रोत- किरातार्जुनीयम्- राजेन्द्र मिश्र, पेज-24

15. ध्वन्यालोक किसकी रचना है?
(A) रुद्रट **(B) राजशेखर**
(C) अभिनवगुप्त **(D) आनन्दवर्धन**

व्याख्या–

लेखक	ग्रन्थ
रुद्रट	काव्यालङ्कार
राजशेखर	काव्यमीमांसा
अभिनवगुप्त	अभिनवभारती (नाट्यशास्त्र की टीका)
आनन्दवर्धन	ध्वन्यालोक

अतः विकल्प `D' सही है।

स्रोत- साहित्यदर्पण- अभिराजराजेन्द्र मिश्र, पेज-22

16. 'पृथ्वीराजविजयम्' किसकी रचना है?
(A) अश्वघोष **(B) चण्डकवि**
(C) जयदेव **(D) हर्षदेव**

व्याख्या-

ग्रन्थ	ग्रन्थकार	काव्यविधा
A. बुद्धचरितम्	अश्वघोष	महाकाव्य
B. पृथ्वीराजविजयम्	चण्डकवि	नाटक
C. प्रसन्नराघवम्	जयदेव	नाटक
D. नागानन्द	हर्षवर्धन	नाटक

अतः विकल्प `B' सही है।

स्रोत- संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-255

17. 'स्वर्गारोहण' किसकी रचना है?
(A) पतञ्जलि **(B) पाणिनि**
(C) वररुचि **(D) बाणभट्ट**

व्याख्या–

ग्रन्थ	ग्रन्थकार
A. पतञ्जलि	महाभाष्य, योगसूत्र
B. पाणिनि	अष्टाध्यायी
C. वररुचि (कात्यायन)	स्वर्गारोहण
D. बाणभट्ट	कादम्बरी

अतः विकल्प `C' सही है।

स्रोत- संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज- 254

18. महावीरचरितम् किसकी रचना है?
(A) कालिदास **(B) शूद्रक**
(C) भवभूति **(D) अश्वघोष**

व्याख्या–

ग्रन्थकार	ग्रन्थ	काव्यविधा
A. कालिदास	अभिज्ञानशाकुन्तलम्	नाटक
B. शूद्रक	मृच्छकटिकम्	प्रकरण
C. भवभूति	महावीरचरितम्	नाटक
D. अश्वघोष	सौन्दरानन्द	महाकाव्य

अतः विकल्प `C' सही है।

स्रोत- संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-395

19. प्रबोधचन्द्रोदय किसका नाटक है?
(A) राजशेखर **(B) कृष्णमिश्र**
(C) दिङ्नाग **(D) मुरारि**

व्याख्या–

ग्रन्थकार	ग्रन्थ	विभाजन
A. राजशेखर	काव्यमीमांसा	5 अध्याय
B. कृष्णमिश्र	प्रबोधचन्द्रोदय	6 अङ्क
C. दिङ्नाग	कुन्दमाला	7 अङ्क
D. अश्वघोष	सौन्दरानन्द	18 सर्ग

अतः विकल्प `B' सही है।

स्रोत- संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी,पेज-452

20. नाट्यशास्त्र किसकी रचना है?
(A) भरतमुनि (B) मम्मट
(C) विश्वनाथ (D) जगन्नाथ

व्याख्या–

	आचार्य	ग्रन्थ	विभाजन
A.	भरतमुनि	नाट्यशास्त्र	36 अध्याय
B.	मम्मट	काव्यप्रकाश	10 उल्लास
C.	विश्वनाथ	साहित्यदर्पण	10 परिच्छेद
D.	जगन्नाथ	रसगङ्गाधर	4 आनन

अतः विकल्प 'A' सही है।

स्रोत- संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-263

21. आचार्य मम्मट के अनुसार काव्य के कितने प्रयोजन हैं?
(A) चार (B) पाँच
(C) छः (D) सात

व्याख्या–
आचार्य मम्मट 'काव्यप्रकाश' के प्रथमोल्लास में काव्य के छः प्रयोजन बताये हैं 1.यशप्राप्ति 2. अर्थ (धन) प्राप्ति 3. व्यवहार ज्ञान के लिए 4. अकल्याण का नाश 5. शीघ्र आनन्द प्राप्ति एवं 6. कान्ता के समान उपदेश प्रदान करने वाला।

काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये।
सद्यः परनिर्वृतये कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे॥
(का0 प्र0 1/2)

विशेष- इन षड् प्रयोजनों में 'सद्यः परनिर्वृत्ति' को 'सकलप्रयोजनमौलिभूतम्' (सभी प्रयोजनों में मुख्य) कहा जाता है।

अतः विकल्प `C' सही है।

स्रोत- काव्यप्रकाश (1/2) आचार्य विश्वेश्वर, पेज-10

22. 'तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि' से सम्बन्धित आचार्य हैं-
(A) विश्वनाथ (B) मम्मट
(C) भामह (D) जगन्नाथ

व्याख्या–

A. विश्वनाथ- साहित्यदर्पणकार आचार्य विश्वनाथ प्रथम परिच्छेद में काव्य का लक्षण करते हैं-
वाक्यं रसात्मकं काव्यम् (सा.द.1.3)
(रसात्मक वाक्य को काव्य कहते हैं।)

B. मम्मट- आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश के प्रथमोल्लास में काव्य का लक्षण करतें हैं-
'तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि'
(काव्यप्रकाश सूत्र-1)
दोषों से रहित, गुणों से युक्त, यदि कहीं पर अलङ्कार न भी हो तो शब्द और अर्थ की समष्टि को काव्य कहा जाता है।

C. भामह- आचार्य भामह प्रथम परिच्छेद में काव्य का लक्षण करतें हैं-
'शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्' (काव्यालङ्कार सूत्र-1.16)
शब्द और अर्थ से सहित वाक्य को काव्य कहते हैं।

D. जगन्नाथ- पण्डितराज जगन्नाथ ने रसगंगाधर के प्रथम आनन में काव्य का लक्षण इस प्रकार करते हैं-
'रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्।'
(रसगंगाधर प्रथम आनन-1)
रमणीय अर्थ का प्रतिपादन करने वाला शब्द काव्य है।

अतः विकल्प `B' सही है।

स्रोत- काव्यप्रकाश (1/2) – आचार्य विश्वेश्वर, पेज-19

23. संकेतिक अर्थ की बोधक शक्ति है-
(A) तात्पर्या (B) अभिधा
(C) लक्षणा (D) व्यञ्जना

व्याख्या–
शब्द शक्तियों का विवेचन काव्यप्रकाश के द्वितीयोल्लास में किया गया है-

A. तात्पर्या - तात्पर्यार्थोऽपि केषुचित्
(काव्यप्रकाश सूत्र-7)
अभिहितान्वयवादी के मत में तात्पर्या भी एक शब्दशक्ति है ऐसा मीमांसकों का मत है।

B. अभिधा-'' स मुख्योऽर्थस्तत्र मुख्यो व्यापारोऽस्याभिधोच्यते
(काव्यप्रकाश सूत्र-11)
वह साक्षात्संकेतित अर्थ ही मुख्यार्थ है जो उस साक्षात्संकेतित अर्थ के विषय में इस वाचक शब्द का मुख्य व्यापार या वृत्ति है वह अभिधा शक्ति है-
साक्षात्सङ्केतितं योऽर्थमभिधत्ते स वाचकः।
(काव्यप्रकाश सूत्र-9)
जो साक्षात् सङ्केत किये गए अर्थ को कहता है वह वाचक शब्द है।

अतः विकल्प B सही है।

C. लक्षणा- मुख्यार्थबाधे तद्योगे रूढितोऽथ प्रयोजनात्
अन्योऽर्थो लक्ष्यते यत् सा लक्षणारोपिता क्रिया।
(का0प्र0 सूत्र-12)
मुख्य अर्थ का बाध होने पर तथा उस मुख्यार्थ के साथ सम्बन्ध होने पर प्रसिद्धिवश अथवा प्रयोजन से जिस शब्दवृत्ति के द्वारा अन्य अर्थ की प्रतीति होती है वह शब्द में कल्पितवृत्ति या व्यापार लक्षणा है।

D. व्यञ्जना-

यस्य प्रतीतिमाधातुं लक्षणा समुपास्यते॥
फले शब्दैकगम्येऽत्र व्यञ्जनान्नापरा क्रिया॥

(काव्यप्रकाश सूत्र-23)

जिस शैत्यपावनत्वादि प्रयोजन की प्रतीति को उत्पन्न करने के लिए लक्षणा का आश्रय लिया जाता है केवल लाक्षणिक शब्द से ही गम्य उस प्रयोजन रूप फल की प्रतीति में व्यञ्जना के अतिरिक्त अन्य कोई व्यापार नहीं है।

स्रोत- काव्यप्रकाश (1/2) – आचार्य विश्वेश्वर, पेज-50

24. 'गङ्गायां घोषः' का लक्ष्यार्थ है-
(A) गङ्गातटे घोषः
(B) घोषप्रान्तवाहिन्यां गङ्गायाम्
(C) घोषे शीतत्वं पावनत्वम्
(D) गङ्गाजलप्रवाहे घोषः

व्याख्या–

आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश के द्वितीयोल्लास में शब्द की तीन शक्तियों का विवचेन करते हैं-
अभिधा शक्ति से अभिधेयार्थ या वाच्यार्थ, लक्षणा शक्ति से लक्ष्यार्थ तथा व्यञ्जनाशक्ति से व्यङ्ग्यार्थ की प्रतीति होती है।

* 'गङ्गायां घोषः' में गङ्गा पद का मुख्यार्थ भगीरथखातावच्छिन्न जलप्रवाह है घोष का अर्थ है 'कुटिया' यहाँ पर जलप्रवाह कुटिया का आधार नहीं बन सकता अतः यहाँ पर मुख्यार्थ का बाध होता है।
* गङ्गा के साथ तट का सामीप्य सम्बन्ध होने पर ''गङ्गातटे घोषः'' इत्यादि के प्रयोग से अलभ्य शैत्य पावनत्वादि धर्मों की प्रतीति स्वरूप प्रयोजन से मुख्य गङ्गा का प्रवाह रूप अर्थ से अमुख्य तीरादि जो लक्षित होता है वह शब्द का व्यवहितार्थ विषयक आरोपित शब्द व्यापार लक्षणा है। 'गङ्गायां घोषः' लक्षणलक्षणा का उदाहरण है। इसप्रकार 'गङ्गायां घोषः' का लक्ष्यार्थ 'गङ्गातटे घोषः' ही होगा।

अतः विकल्प `A' सही है।

स्रोत- काव्यप्रकाश (1/2) – आचार्य विश्वेश्वर, पेज-61

25. 'राम-लक्ष्मणौ' व्यञ्जक है-

(A) संयोग	**(B) विरोधिता**
(C) साहचर्य	**(D) अर्थ**

व्याख्या-

आचार्य मम्मट व्यञ्जना की चर्चा काव्यप्रकाश के द्वितीय उल्लास में करते हैं-

A. संयोग- सशंखचक्रो हरिः। (शंख-चक्र के साथ हरि)

B. विरोधिता- रामार्जुनगतिस्तयोः। (यहाँ विरोधिता वाच्यार्थ का नियामक है। इसीकारण राम शब्द का वाच्यार्थ परशुराम तथा अर्जुन का कार्त्तवीर्य हो, क्योंकि परशुराम तथा कार्त्तवीर्य की शत्रुता पुराणादि में प्रसिद्ध है।)

C. साहचर्य- रामलक्ष्मणौ। (यहाँ राम शब्द के बलराम, परशुराम आदि अनेक अर्थ होते हैं,लेकिन राम और लक्ष्मण के साहचर्य से राम शब्द दशरथ पुत्र राम का वाचक हो जाता है। उसीप्रकार लक्ष्मण शब्द, सारस, दुर्योधन पुत्र आदि अनेकार्थक में भी समझना चाहिए।)

D. अर्थ- स्थाणुं भज भवच्छिदे। (यहाँ स्थाणु शब्द के लिये ठूंठ, संकु, रुद्र आदि अनेक अर्थ हैं किन्तु अर्थ अर्थात् फल या प्रयोजन की दृष्टि से 'स्थाणु' शब्द का अर्थ है शिव)

विशेष- 'राम-लक्ष्मणौ' इस प्रयोग में साहचर्य के कारण राम और लक्ष्मण दोनों शब्दों का 'दशरथ पुत्र' में नियन्त्रण होता है।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- काव्यप्रकाश (1/2) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-78

26. 'सशङ्खचक्रो हरिः' में व्यञ्जना है-

(A) संयोग	**(B) प्रकरण**
(C) लिङ्ग	**(D) विप्रयोग**

व्याख्या–

आचार्य मम्मट ने व्यञ्जना का उल्लेख काव्यप्रकाश के द्वितीयोल्लास में करते हैं-

A. संयोग- 'सशंखचक्रो हरिः।' (शंख-चक्र के साथ हरि) यहाँ शंख और चक्र का विष्णु के साथ सम्बन्ध होने से हरि शब्द विष्णु अर्थ में नियन्त्रित हो जाता है।

B. प्रकरण- 'सर्वं जानाति देवः' (देव सब जानते हैं) यहाँ प्रकरण शब्द का अर्थ है प्रसङ्ग, सन्दर्भ अथवा वक्ता श्रोता की बुद्धि में किसी बात का होना।

C. लिङ्ग 'कुपितो मकरध्वजः' (मकरध्वज कुपित हो रहा है) यहाँ लिङ्ग शब्द का अर्थ है चिह्न विशेष संयोग से भिन्न सम्बन्ध द्वारा दूसरे पक्ष की व्यावृत्ति कराने वाला धर्म अथवा असाधारण धर्म)

D. विप्रयोग-'अशङ्खचक्रो हरिः' (शंख चक्र से रहित हरि) यहाँ विभाग अथवा प्रसिद्ध सम्बन्ध का अभाव नियामक तत्त्व के हरि शब्द का अर्थ है विष्णु।

विशेष- शङ्ख-चक्र सहित हरि ('सशङ्खचक्रो हरिः') यहाँ संयोग के कारण हरि शब्द अच्युत (विष्णु) अर्थ में नियन्त्रित होता है।

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-78

27. किसी प्रकृत अर्थात् प्रस्तुत वस्तु की अप्रस्तुत वस्तु के रूप में सम्भावना प्रकट करने पर अलङ्कार होता है-
(A) अनुप्रास (B) श्लेष
(C) उत्प्रेक्षा (D) यमक

व्याख्या-
अलङ्कार की चर्चा आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश के 9वें, 10वें उल्लास में करते हैं-

A. अनुप्रास- 'वर्णसाम्यमनुप्रासः' (का.प्र. सू.- 104) वर्णों की समानता (आवृत्ति) का नाम अनुप्रास है।
उदाहरण-
ततोऽरुणपरिस्पन्दमन्दीकृतवपुः शशी।
दध्रेकामपरिक्षामकामिनीगण्डपाण्डुताम्।।

B. श्लेष-
'वाच्यभेदेन भिन्ना यद् युगपद् भाषणस्पृशः।
शिलष्यन्ति शब्दाःश्लेषोऽसावक्षरादिभिरष्टधा।।
(का.प्र. सू.- 118)
अर्थभेद होने से भिन्न शब्द एक साथ उच्चारण के कारण जब मिलकर एक हो जाते हैं तब वहाँ श्लेष नामक शब्दालङ्कार होता है।
उदाहरण-
पृथुकार्त्तस्वरपात्रं भूषितनिःशेषपरिजनं देव।
विलसत्करेणुगहनं सम्प्रति सममावयोः सदनम्।।
(का.प्र.पेज-446)

C. उत्प्रेक्षा- सम्भावनमथोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य समेन यत्
(का.प्र.सू.-137)
किसी प्रकृत (उपमेय) की अप्रस्तुत (उपमान) के साथ सम्भावना उत्प्रेक्षा कहलाती है।
उदाहरण-
लिम्पतीव तमोऽङ्गानि वर्षतीवाञ्जनं नभः।
असत्पुरुषसेवेव दृष्टिर्विफलतां गता।।

D. यमक- अर्थे सत्यर्थभिन्नानां वर्णानां सा पुनः श्रुतिः यमकम्। (का.प्र.सूत्र-116)
अर्थ होने पर भिन्नार्थक वर्णों की उसी क्रम से पुनः श्रवण यमक नामक शब्दालङ्कार कहलाता है।
उदाहरण-
सन्नारीभरणोमायमाराध्य विधुशेखरम्।
सन्नारीभरणोऽमायस्ततस्त्वं पृथिवीं जय।।
अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- छन्दोऽलङ्कारसौरभम्- राजेन्द्र मिश्र, पेज-69

28. अध्यवसाय की सिद्धि होने पर अलङ्कार होता है-
(A) स्वभावोक्ति (B) रूपक
(C) अतिशयोक्ति (D)काव्यलिङ्ग

व्याख्या-

A. स्वभावोक्ति-
'स्वभावोक्तिस्तु डिम्भादेः स्वक्रियारूपवर्णनम्'
(का.प्र. सूत्र-167)
बालक आदि की अपनी स्वाभाविक क्रिया अथवा रूप का वर्णन स्वभावोक्ति अलङ्कार कहलाता है।
उदाहरण- पश्चादंघ्री प्रसार्य त्रिकनतिविततं...........।

B. रूपक- 'तद्रूपकमभेदो य उपमानोपमेययोः।'
(का.प्र.सू.-138)
उपमान और उपमेय का जो अभेद वर्णन है वह रूपक अलङ्कार है।
उदाहरण-
यस्य रणान्तः पुरे करे कुर्वतो मण्डलाग्रलताम् ।
रससम्मुख्यपि सहसा पराङ्मुखी भवति रिपुसेना।।

C. अतिशयोक्ति-
निगीर्याध्यवसानन्तु प्रकृतस्य परेण यत्।
प्रस्तुतस्य यदन्यत्वं यद्यर्थोक्तौ च कल्पनम्।।
कार्यकारणयोर्यश्च पौर्वापर्यविपर्ययः।
विज्ञेयाऽतिशयोक्तिः सा (का.प्र. सूत्र-152)
अध्यवसाय की सिद्धि होने पर अतिशयोक्ति अलङ्कार होता है। यह कार्यकारण एवं पौर्वापर्यादि भेद से चार प्रकार का होता है।

D. काव्यलिङ्ग- 'काव्यलिङ्गं हेतोर्वाक्यपदार्थता'
(का.प्र. सूत्र-173)
हेतु का वाक्यार्थ अथवा पदार्थ रूप में कथन काव्यलिङ्ग अलङ्कार होता है।
उदाहरण-
वपुःप्रादुर्भावादनुमितमिदं जन्मनि पुरा
पुरारे! न प्रायः क्वचिदपि भवन्तं प्रणतवान्।
नमन्मुक्तः सम्प्रत्यहमतनुरग्रेऽप्यनतिभाक्
महेश! क्षन्तव्यं तदिदमपराधद्वयमपि।।
अतः विकल्प `C' सही है।

स्रोत- छन्दोऽलङ्कारसौरभम्- राजेन्द्र मिश्र, पेज-71

29. उपमान की अपेक्षा उपमेय की अधिकता या न्यूनता का वर्णन होने पर अलङ्कार होता है-
(A) भ्रान्तिमान् (B) व्यतिरेक
(C) अपह्नुति (D) दृष्टान्त

व्याख्या-

(A) भ्रान्तिमान्- 'भ्रान्तिमानन्यसंवित् तत्तुल्यदर्शने।'
(का.प्र.सूत्र 10/199)
उस अन्य अप्राकरणिक वस्तु के समान प्राकरणिक वस्तु के देखने पर जो अन्य अप्राकरणिक अर्थ का भान होता है वह

भ्रान्तिमान् अलङ्कार कहलाता है।

उदाहरण- कपाले मार्जारः पय इति करान्................।

(B) व्यतिरेक-

'उपमानाद् यदन्यस्य व्यतिरेकः स एव सः'।

(का.प्र. सूत्र- 158)

उपमान से उपमेय का आधिक्य वर्णन ही व्यतिरेक अलङ्कार होता है अर्थात् जहाँ उपमान की अपेक्षा उपमेय की अधिकता या न्यूनता का वर्णन हो।

उदाहरण-

क्षीणः क्षीणोऽपि शशी भूयो भूयोऽभिवर्धते सत्यम्।
विरम प्रसीद सुन्दरि! यौवनमनिवर्ति यातं तु।।

अतः विकल्प `B' सही है।

(C) अपह्नुति-

'प्रकृतं यन्निषिध्यान्यत्साध्यते सा त्वपह्नुतिः।

(का.प्र. सूत्र- 145)

जहाँ प्रकृति (उपमेय) का निषेध करके जो अन्य (उपमान) की सिद्धि की जाती है वह अपह्नुति अलङ्कार कहलाता है

अवाप्तः प्रागल्भ्यं परिणतरुचः शैलतनये.............

(D) दृष्टान्त-

'दृष्टान्तः पुनरेतेषां सर्वेषां प्रतिबिम्बनम्।'

(का.प्र. सूत्र- 154)

उपमान, उपमेय, उनके विशेषण और साधारण धर्म आदि का बिम्ब प्रतिबिम्ब भाव होने पर दृष्टान्तालङ्कार होता है।

उदाहरण-

त्वयि दृष्ट एव तस्या निर्वाति मनो मनोभवज्वलितम् ।
आलोके हि हिमांशोर्विकसति कुसुमं कुमुद्वत्याः।।

स्रोत-छन्दोलङ्कारसौरभम्- राजेन्द्र मिश्र, पेज-75

30. 'कमलमिव मनोज्ञं मुखम्' में कौन सा अलङ्कार है-

(A) उपमा **(B) रूपक**
(C) उत्प्रेक्षा **(D) यमक**

व्याख्या-

A. उपमा-

'साधर्म्यमुपमा भेदे' (का0प्र0सूत्र- 124)

उपमान तथा उपमेय का भेद होने पर दोनों के सादृश्य का वर्णन उपमा अलङ्कार है।

उदाहरण-''कमलमिव मुखं मनोज्ञमेतत् कचतितराम''

यह श्लेष उपमा की प्रतीति की उत्पत्ति का हेतु नहीं है, अपितु उपमा ही श्लेष की आभास प्रतीति का उत्पादक है जैसे कि 'कमल के समान सुन्दर यह मुख दीप्त हो रहा है इत्यादि में गुण, साम्य, क्रियासाम्य, अथवा उभयसाम्य के कारण उपमा है।

अतः विकल्प 'A' सही है।

B. रूपक-

'तद्रूपकमभेदो य उपमानोपमेययोः।'

(का.प्र. सूत्र- 138)

जो उपमान तथा उपमेय का अभेद का आरोप है उसे रूपक कहते हैं।

उदाहरण- सौन्दर्यस्य तरङ्गिणी तरुणिमोत्कर्षस्य हर्षोद्गमः......।

C. उत्प्रेक्षा-

'सम्भावनमथोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य समेन यत्'

(का.प्र.सूत्र-136)

जहाँ उपमेय की उपमान के साथ सम्भावना की जाती है वह उत्प्रेक्षा है।

उदाहरण-

उन्मेषं यो मम न सहते जातिवैरी निशायाम्...........।

D. यमक- **'अर्थे सत्यर्थभिन्नानां वर्णानां सा पुनः श्रुतिः यमकम्।'** (का.प्र.सूत्र- 116)

अर्थ होने पर भिन्न-भिन्न अर्थ वाले वर्णों की पूर्वक्रम से पुनः आवृत्ति यमक अलङ्कार कहलाता है।

उदाहरण-

विनायमेनो नयताऽसुखादिना विना यमेनोनयता सुखादिना।
महाजनोऽदीयत मानसादरं महाजनोदी यतमानसादरम्।।

स्रोत- काव्यप्रकाश- पारसनाथ द्विवेदी, पेज-527

31. 'नवपलाशपलाशवनं पुरःस्फुटपराग-परागत-पङ्कजम्' में अलङ्कार है-

(A) अनुप्रास **(B) यमक**
(C) श्लेष **(D) उत्प्रेक्षा**

व्याख्या-

A. अनुप्रास-

'अनुप्रासः शब्दसाम्यं वैषम्येऽपि स्वरस्य यत्'

(सा.द.10/3)

स्वर की विषमता रहने पर भी शब्द अर्थात् पद, पदांश के साम्य को अनुप्रास कहते हैं। स्वर की समानता हो चाहे न हो परन्तु अनेक व्यञ्जन जहाँ एक से मिल जायँ वहाँ अनुप्रास अलङ्कार होता है।

उदाहरण-आदाय बकुलगन्धानन्धीकुर्वन्पदे पदे भ्रमरान्।
अयमेति मन्दमन्दं कावेरीवारिपावनः पवनः।।

B. यमक-

'सत्यर्थे पृथगर्थायाः स्वरव्यञ्जनसंहतेः।
क्रमेण तेनैवावृत्तिर्यमकं विनिगद्यते।।'

(सा.द. 10/8)

यदि अर्थवान् हो तो भिन्न अर्थ वाले, स्वर व्यञ्जन समुदाय की उसी क्रम से आवृत्ति को यमक कहते हैं।

उदाहरण-

नवपलाश पलाशवनं पुरः स्फुटपराग-परागतपङ्कजम्।
मृदुल तान्त-लतान्तमलोकयत्स सुरभिं सुरभिं सुमनोभरैः।।

जिसमें पलाशों का वन नवीन पलाश (पत्तों से युक्त हो गया है और कमल बढ़े हुए पराग (पुष्पराज) से 'परागत' (युक्त) हो गये हैं एवं लतान्त जिसमें मृदुल और तान्त (विस्तृत) हो गये हैं पुष्पों की अधिकता से सुरभि उस सुरभि को श्रीकृष्ण ने रैवतक पर्वत पर देखा।

अतः विकल्प 'B' सही है।

C. श्लेष- 'श्लिष्टैः पदैरनेकार्थाभिधाने श्लेष इष्यते' (सा.द. 10.11)

श्लिष्ट पदों से अनेक अर्थों का अभिधान होने पर श्लेष अलङ्कार होता है ।

उदाहरण-

प्रतिकूलतामुपगते हि विधौ विफलत्वमेति बहुसाधनता।
अवलम्बनाय दिनभर्तुरभून्न पतिष्यतः करसहस्रमपि।।

D. उत्प्रेक्षा-

**'भवेत्सम्भावनोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य परात्मना।
वाच्या प्रतीयमाना सा प्रथमं द्विविधा मता।।'** (सा.द.10/40)

किसी प्रस्तुत वस्तु की अप्रस्तुत के रूप में सम्भावना करने को उत्प्रेक्षा कहते हैं ।

उदाहरण-

उरुः कुरङ्गकदृशश्चञ्चलचेलाञ्चलो भाति।
सपताकः कनकमयो विजयस्तम्भः स्मरस्येव।।

स्रोत- साहित्यदर्पण (10.8) शालिग्राम शास्त्री, पेज-280

**32. योऽसकृत्परगोत्राणां पक्षच्छेदक्षणक्षमः।
शतकोटिदतां विभ्रद्विबुधेन्द्रः स राजते।। में अलङ्कार है?**

(A) उपमा	**(B) रूपक**
(C) श्लेष	**(D) यमक**

व्याख्या-

आचार्य मम्मट ने काव्यप्रकाश के नवम एवं दशम उल्लास में अलङ्कार का लक्षण किया है-

A. उपमा- 'साधर्म्यमुपमा भेदे।' (का.प्र.सूत्र-124)

उपमान तथा उपमेय का भेद होने पर दोनों के सादृश्य का वर्णन उपमा अलङ्कार है।

उदाहरण-

स्वप्नेऽपि समरेषु त्वां विजयश्रीर्न मुञ्चति।
प्रभावप्रभवं कान्तं स्वाधीनपतिका यथा।।

उपमा के भेद- पूर्णोपमा तथा लुप्तोपमा उपमा के भेद हैं। पूर्णोपमा के 6 भेद तथा लुप्तोपमा के 19 भेद हैं।

B. रूपक- 'तद्रूपकमभेदो य उपमानोपमेययोः।' (का.प्र.सूत्र-138)

रूपक जो उपमान तथा उपमेय के अभेद का आरोप है उसे रूपक कहते हैं।

उदाहरण-

ज्योत्स्नाभस्मच्छुरणधवला बिभ्रती तारकास्थी।।

C. श्लेष-

**'वाच्यभेदेन भिन्ना यद् युगपद्भाषणस्पृशः।
श्लिष्यन्ति शब्दाः, श्लेषोऽसावक्षरादिभिरष्टधा।।'** (का.प्र.सूत्र-118)

अर्थ भेद से भिन्न-भिन्न शब्द जब एक साथ उच्चारण के विषय होने से एक रूप प्रतीत होते हैं, वह श्लेष अलङ्कार है तथा वह अक्षर आदि भेद से आठ प्रकार का होता है-

उदाहरण-योऽसकृत्परगोत्राणां पक्षच्छेदक्षणक्षमः।
शतकोटिदतां बिभ्रद्विबुधेन्द्रः स राजते।।

जो इन्द्र बार-बार श्रेष्ठ पर्वतों के क्षण भर में पंख काटने में समर्थ है, वज्र नामक अस्त्र विशेष से असुर विनाश की क्षमता को धारण करता हुआ देवराज इन्द्र सुशोभित होता है।

* यहाँ पर प्रकरणादि द्वारा अर्थ का नियम न होने से दोनों ही अर्थ वाच्य है अतः यहाँ पर श्लेष अलङ्कार है।

D. यमक- 'अर्थे सत्यर्थ भिन्नानां वर्णानां सा पुनः श्रुतिः यमकम्।' (का.प्र.सूत्र-116)

अर्थ होने पर भिन्न-भिन्न अर्थ वाले वर्णों की पूर्वक्रम से पुनः आवृत्ति यमक अलङ्कार कहलाता है।

उदाहरण-

विनायमेनो नयताऽसुखादिना विना यमेनोनयता सुखादिना।
महाजनोऽदीयत मानसादरं महाजनोदी यतमानसादरम्।।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- छन्दोलङ्कारसौरभम्- राजेन्द्र मिश्र, पेज-63

33. 'सैषा स्थली यत्र विचिन्विता त्वां भ्रष्टं मया नूपुरमेकमुर्व्याम्' में अलङ्कार है-

(A) उपमा **(B) दृष्टान्त**
(C) उत्प्रेक्षा **(D) श्लेष**

व्याख्या-

A. उपमा-

'साम्यं वाच्यमवैधर्म्यं वाक्यैक्य उपमा द्वयोः।'

(सा.द. 10.14)

एक वाक्य में दो पदार्थों के वैधर्म्य रहित वाच्य सादृश्य को उपमा कहते हैं।

उदाहरण- मधुरः सुधावदधरः पल्लवतुल्योऽतिपेलवः पाणिः। चकितमृगलोचनाभ्यां सदृशी चपले च लोचने तस्याः।।

B. दृष्टान्त-

'दृष्टान्तस्तु सधर्मस्य वस्तुनः प्रतिबिम्बनम्।।'

(सा.द.-10.50)

दो वाक्यों में धर्मं सहित वस्तु अर्थात् उपमानोपमेय के प्रतिबिम्ब को दृष्टान्त अलङ्कार कहते हैं।

उदाहरण-

अविदितगुणापि सत्कविभणितिः कर्णेषु वमति मधुधाराम्।
अनधिगतपरिमलापि हि हरति दृशं मालती माला।।

C. उत्प्रेक्षा-

**'भवेत्सम्भावनोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य परात्मना।
वाच्या प्रतीयमाना सा प्रथमं द्विविधा मता।।'**

(सा.द.10/40)

किसी प्रस्तुत वस्तु की अप्रस्तुत के रूप में सम्भावना करने को उत्प्रेक्षा कहते हैं।

उदाहरण- सैषा स्थली यत्र विचिन्वता त्वां भ्रष्टं मया नूपुरमेकमुर्व्याम् लङ्का से लौटते समय पुष्पक विमान पर बैठे हुए श्रीरामचन्द्रजी ने सीता से कहा है- यह वह स्थान है जहाँ तुम्हें ढूँढते हुए मैने तुम्हारे पैर में से पृथ्वी पर गिरा हुआ एक नूपुर देखा था। यह हेतूत्प्रेक्षा का उदाहरण है।

अतः विकल्प `C' सही है।

D. श्लेष-

'श्लिष्टैः पदैरनेकार्थाभिधाने श्लेष इष्यते।'

(सा.द.10.11)

श्लिष्ट पदों से अनेक अर्थों का अभिधान होने पर श्लेष अलङ्कार होता है। वर्ण, प्रत्यय, लिङ्ग, प्रकृति, पद, विभक्ति, वचन, भाषा के भेद से श्लेष के आठ भेद हैं।

उदाहरण- अयं सर्वाणि शास्त्राणि हृदि ज्ञेषु च वक्ष्यति। सामर्थ्यकृदमित्राणां मित्राणां च नृपात्मजः।।

स्रोत- छन्दोलङ्कारसौरभम्- राजेन्द्र मिश्र, पेज-70

34. आचार्य विश्वनाथ की काव्य पारिभाषिक शब्दावली है-

(A) रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्
(B) वाक्यं रसात्मकं काव्यम्
(C) वक्रोक्तिः काव्यजीवितम्
(D) तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि

व्याख्या-

विभिन्न काव्यशास्त्रियों ने अपने ग्रन्थों में काव्य का लक्षण निम्न रूपों में करते हैं

A. जगन्नाथ– (17 वीं शताब्दी)

'रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्।'

अर्थात् रमणीय अर्थ का प्रतिपादक शब्द काव्य कहलाता है।

B. विश्वनाथ- (14 वीं शताब्दी)

'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्।'

रसात्मक वाक्य ही काव्य है।

C. कुन्तक- (11 वीं शताब्दी)

'वक्रोक्तिः काव्यजीवितम्।'

वक्रोक्ति ही काव्य की आत्मा है।

D. मम्मट (12वीं शताब्दी)

'तददोषौ शब्दार्थौ सगुणा-वनलङ्कृती पुनः क्वापि।'

दोषों से रहित गुणों से युक्त यदि कहीं पर अलंकार न भी हो तो शब्द और अर्थ की समष्टि काव्य है।

अतः विकल्प `B' सही है।

स्रोत- काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-27

35. साहित्यदर्पण के प्रथम परिच्छेद का नाम है-

(A) काव्यदोष निरूपण
(B) काव्यस्वरूप निरूपण
(C) काव्यप्रयोजन निरूपण
(D) काव्यलक्षण निरूपण

व्याख्या-

आचार्य विश्वनाथ ने साहित्यदर्पण का विभाजन निम्नलिखित प्रकार से करते हैं-

	विभाजन		वर्णन
1.	प्रथम परिच्छेद	-	**काव्यस्वरूप**
2.	द्वितीय परिच्छेद	-	**वाक्यस्वरूप**
3.	तृतीय परिच्छेद	-	**रसादिनिरूपण**
4.	चतुर्थ परिच्छेद	-	**ध्वनिगुणीभूतव्यङ्ग्य**
5.	पञ्चम परिच्छेद	-	**व्यञ्जनावृत्ति**
6.	षष्ठ परिच्छेद	-	**दृश्यश्रव्यकाव्यनिरूपण**
7.	सप्तम परिच्छेद	-	**दोषनिरूपण**
8.	अष्टम परिच्छेद	-	**गुणनिरूपण**
9.	नवम परिच्छेद	-	**रीतिनिरूपण**
10.	दशम परिच्छेद	-	**शब्दार्थालङ्कारनिरूपण**

अतः विकल्प `B' सही है।

36. अलङ्कार सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य हैं-

(A) कुन्तक **(B) वामन**
(C) भामह **(D) क्षेमेन्द्र**

व्याख्या-

विभिन्न आचार्यों ने काव्य की आत्मा को निम्न रूपों में स्वीकार किया है-

A. कुन्तक– (वक्रोक्ति) 'वक्रोक्ति काव्यजीवितम्' वक्रोक्ति ही काव्य का जीवन आत्मा है।

B. वामन- (रीति) 'रीतिरात्मा काव्यस्य' रीति ही काव्य की आत्मा है।

C. भामह- (अलङ्कार) 'शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्'। (काव्यालङ्कार 1.16) शब्द और अर्थ दोनों का सहभाव ही काव्य है।

D. क्षेमेन्द्र- (औचित्य) 'औचित्यं रससिद्धस्य स्थिरं काव्यस्यजीवितम्' (औचित्यविचारचर्चा -5) शृङ्गारादि रसों से प्रसिद्ध काव्य का जीवन औचित्य ही है।

अतः विकल्प `C' सही है।

स्रोत- काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, भू.पेज-16

37. 'प्रकृति छन्द' में अक्षरों की संख्या होती है-

(A) 32 **(B) 44**
(C) 48 **(D) 84**

व्याख्या-

छन्द	वर्णों की संख्या
* अनुष्टुप्	08 X 4 = 32
* इन्द्रवज्रा	11 X 4 = 44
* उपेन्द्रवज्रा	11 X 4 = 44
* उपजाति	11 X 4 = 44
* रथोद्धता	11 X 4 = 44
* शालिनी	11 X 4 = 44
* स्वगता	11 X 4 = 44
* वंशस्थ	12 X 4 = 48
* द्रुतविलम्बित	12 X 4 = 48
* त्रोटक	12 X 4 = 48
* भुजङ्गप्रयात	12 X 4 = 48
* प्रकृति (स्रग्धरा)	21 X 4 = 84

अतः विकल्प `D' सही है।

स्रोत- वैदिक साहित्य का इतिहास- पारसनाथ द्विवेदी, पेज-190

38. नाटकों में विष्कम्भक का प्रयोग होता है-

(A) प्रारम्भ में **(B) अन्त में**
(C) मध्य में **(D) कहीं पर भी**

व्याख्या–

* नाटकों के प्रारम्भ में होने वाले अथवा व्यतीत हो चुके कथा के अंशों का सूचक, संक्षिप्त अर्थ वाला तथा मध्यम श्रेणी के पात्रों द्वारा प्रयुक्त अर्थोपक्षेपक 'विष्कम्भक' कहा गया है। यह शुद्ध तथा संकीर्ण के भेद से दो प्रकार का होता है-

''वृत्तवर्त्तिष्यमाणानां कथांशानां निदर्शकः।
संक्षेपार्थस्तु विष्कम्भो मध्यपात्रप्रयोजितः॥''

(दशरूपक-1/59)

* विष्कम्भक की तरह भूत एवं भावी कथा को जोड़ने वाला नीच पात्रों द्वारा निम्नभाषा से प्रयुक्त, दो अङ्कों के मध्य में स्थित, शेष अर्थ का सूचक 'प्रवेशक' कहा गया है।

तद्वदेवानुदात्तोक्त्या नीचपात्रप्रयोजितः।
प्रवेशोऽङ्कद्वयस्यान्तः शेषार्थस्योपसूचकः॥

(दशरूपक 1/ 60)

इस प्रकार नाटकों में विष्कम्भक का प्रयोग अङ्क के प्रारम्भ में एवं प्रवेशक का प्रयोग दो अङ्कों के मध्य होता है।

अतः विकल्प `A' सही है।

स्रोत- दशरूपक(1/59)- रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-99

39. नाटकों में प्रवेशक की भाषा होती है-
(A) संस्कृत
(B) प्राकृत
(C) संस्कृत एवं प्राकृत दोनों
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

व्याख्या–

A. नाटकों में उत्तम श्रेणी के पुरुष पात्रों की भाषा संस्कृत ही होती है। जैसे- राजा, मन्त्री, पुरोहित, आदि।

B. संस्कृत नाटकों में 'प्रवेशक' की भाषा प्राकृत ही होती है, क्योंकि प्रवेशक नामक अर्थोपक्षेपक में निम्न श्रेणी के पात्र होते हैं। यह दो अङ्कों के मध्य प्रयुक्त होता है। जैसे-चोर, व्याध, सेविका, सेवक आदि।

तद्वदेवानुदात्तोक्त्या नीचपात्रप्रयोजितः

(दशरूपक 1/60)

अतः विकल्प `B' सही है।

स्रोत- दशरूपक (1.60)- रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-100

40. 'विक्रमोर्वशीयम्' का विदूषक है-
(A) माणवक **(B) मैत्रेय**
(C) वसन्तक **(D) माधव्य**

व्याख्या–

रूपक	विदूषक	ग्रन्थकार
A. विक्रमोर्वशीयम्	माणवक	कालिदास
B. मृच्छकटिकम्	मैत्रेय	शूद्रक
C. स्वप्नवासवदत्तम्	वसन्तक	भास
D. अभिज्ञानशाकुन्तलम्	माधव्य	कालिदास

अतः विकल्प `A' सही है।

स्रोत- वस्तुनिष्ठ संस्कृतसाहित्यम्- सर्वज्ञभूषण, पेज-304

41. प्रियदर्शिका नाटिका का नायक है-
(A) राजवाहन **(B) उदयन**
(C) चारुदत्त **(D) पुरुरवा**

व्याख्या-

ग्रन्थ	नायक	काव्यविधा
A. दशकुमारचरितम्	राजवाहन	गद्यकाव्य
B. प्रियदर्शिका, रत्नावली	उदयन	नाटिका
C. मृच्छकटिकम्	चारुदत्त	प्रकरण
D. विक्रमोर्वशीयम्	पुरुरवा	त्रोटक

अतः विकल्प `B' सही है।

संस्कृत साहित्य का समी. इतिहास, कपिलदेव द्विवेदी, पेज-369

42. नागानन्द के नायक का नाम है-
(A) जीमूतवाहन **(B) दुष्यन्त**
(C) उदयन **(D) श्रीकृष्ण**

व्याख्या-

ग्रन्थ	नायक	नायक की कोटि
A. नागानन्द	जीमूतवाहन	धीरोदात्त
B. अभिज्ञानशाकुन्तलम्	दुष्यन्त	धीरोदात्त
C. रत्नावली	उदयन	धीरललित
D. शिशुपालवधम्	श्रीकृष्ण	धीरोदात्त

अतः विकल्प `A' सही है।

स्रोत- संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास, कपिलदेव द्विवेदी, पेज-371

43. नागानन्द के नायिका का क्या नाम है?
(A) धूता **(B) मलयवती**
(C) उर्वशी **(D) सागरिका**

व्याख्या–

रूपक	नायिका/नायक
A. मृच्छकटिकम्	धूता, वसन्तसेना/चारुदत्त
B. नागानन्द	मलयवती/जीमूतवाहन
C. विक्रमोर्वशीयम्	उर्वशी/पुरुरवा
D. रत्नावली	सागरिका/उदयन

अतः विकल्प `B' सही है।

स्रोत- संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी,पेज-371

44. 'दुर्यवनम्' में समास है-
(A) तत्पुरुष (B) अव्ययीभाव
(C) बहुव्रीहि (D) द्वन्द्व

व्याख्या–

	सामासिकपद	लौकिक विग्रह	समास
A.	उमापतिः	उमायाः पतिः	षष्ठीतत्पुरुष
B.	दुर्यवनम्	यवनानां व्यृद्धिः	अव्ययीभाव
C.	अपुत्रः	अविद्यमानः पुत्रो यस्य	बहुव्रीहि
D.	शिवकेशवौ	शिवश्च केशवश्च	द्वन्द्व

अतः विकल्प `B' सही है।
स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4)- पेज-28

45. 'पञ्चगङ्गम्' में समास है-
(A) अव्ययीभाव (B) द्वन्द्व
(C) तत्पुरुष (D) बहुव्रीहि

व्याख्या–

	सामासिकपद	लौकिक विग्रह	समास
A.	पञ्चगङ्गम्	पञ्चानां गङ्गानां समाहारः	अव्ययीभाव
B.	पाणिपादम्	पाणी च पादौ च	द्वन्द्व
C.	सुपुरुषः	शोभनः पुरुषः	तत्पुरुष
D.	सुपाद्	शोभनौ पादौ यस्य सः	बहुव्रीहि

अतः विकल्प `A' सही है।
स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज-43

46. 'कृष्णाश्रितः' में समास है-
(A) अव्ययीभाव (B) तत्पुरुष
(C) द्वन्द्व (D) बहुव्रीहि

व्याख्या-

	सामासिकपद	लौकिक विग्रह	समास
A.	अध्यात्मम्	आत्मनि	अव्ययीभाव
B.	कृष्णाश्रितः	कृष्णं श्रितः	द्वितीया तत्पुरुष
C.	दधिघृतम्	दधि च घृतञ्च	द्वन्द्व
D.	चित्रगुः	चित्राः गावः यस्य सः	बहुव्रीहि

अतः विकल्प `B' सही है।
स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज-62

47. हरित्रातः में समास है-
(A) तत्पुरुष (B) बहुव्रीहि
(C) अव्ययीभाव (D) द्वन्द्व

व्याख्या–

	सामासिकपद	लौकिक विग्रह	समास
A.	हरित्रातः	हरिणा त्रातः	तृतीया तत्पुरुष
B.	चक्रपाणिः	चक्रं पाणौ यस्य सः	बहुव्रीहि
C.	प्रत्यर्थम्	अर्थम् अर्थं प्रति	अव्ययीभाव
D.	इन्द्राग्नी	इन्द्रश्च अग्निश्च	द्वन्द्व

अतः विकल्प `A' सही है।
स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज-67

48. 'चोरभयम्' में समास है-
(A) तत्पुरुष (B) बहुव्रीहि
(C) अव्ययीभाव (D) द्वन्द्व

व्याख्या–

	सामासिकपद	लौकिक विग्रह	समास
A.	चोरभयम्	चोरात् भयम्	पञ्चमी तत्पुरुष
B.	पञ्चगवधनः	पञ्च गावो धनं यस्य सः	बहुव्रीहि
C.	सतृणम्	तृणमपि अपरित्यज्य	अव्ययीभाव
D.	हस्तचरणम्	हस्तश्च चरणश्च	द्वन्द्व

अतः विकल्प `A' सही है।
स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज-77

49. 'कुपुरुषः' में समास है-
(A) अव्ययीभाव (B) द्वन्द्व
(C) तत्पुरुष (D) बहुव्रीहि

व्याख्या–

सामासिकपद	लौ0विग्रह	अलौ0विग्रह	समास
A. कुपुरुषः	कुत्सितः पुरुषः	कुत्सित सु पुरुष सु	तत्पुरुष
B. रामलक्ष्मणौ	रामश्च लक्ष्मणश्च	राम सु लक्ष्मण सु	द्वन्द्व
C. अतिहिमम्	हिमस्य अत्ययः	हिम् ङस् अति	अव्ययीभाव
D. व्यूढोरस्कः	व्यूढम् उरो यस्य सः	व्यूढ सु उरस् सु	बहुव्रीहि

अतः विकल्प `C' सही है।
स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज-30

50. 'रूपवद्भार्यः' में समास है-
(A) तत्पुरुष (B) अव्ययीभाव
(C) द्वन्द्व (D) बहुव्रीहि

व्याख्या–

	सामासिकपद	लौकिक विग्रह	समास
A.	**चोरभयम्**	चोरात् भयम्	तत्पुरुष
B.	**उपराजम्**	राज्ञः समीपम्	अव्ययीभाव
C.	**धवखदिरौ**	धवश्च खदिरश्च	द्वन्द्व
D.	**रूपवद्भार्यः**	रूपवती भार्या यस्य सः	बहुव्रीहि

अतः विकल्प `D' सही है।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज-199

51. 'पीताम्बरः' में समास है-
(A) तत्पुरुष **(B) बहुव्रीहि**
(C) द्वन्द्व **(D) अव्ययीभाव**

व्याख्या–

	सामासिकपद	लौकिक विग्रह	समास
A.	**विद्यार्थः**	विद्यया अर्थः	तत्पुरुष
B.	**पीताम्बरः**	पीतम् अम्बरं यस्य सः	बहुव्रीहि
C.	**रामकृष्णौ**	रामश्च कृष्णश्च	द्वन्द्व
D.	**ससखि**	सदृशः सख्या	अव्ययीभाव

अतः विकल्प `B' सही है।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज-191

52. 'प्राप्तोदकः' में समास है-
(A) द्वन्द्व **(B) बहुव्रीहि**
(C) अव्ययीभाव **(D) तत्पुरुष**

व्याख्या-

	सामासिकपद	लौकिक विग्रह	समास
A.	**शमीदृशदम्**	शमी च दृशद् च तयोः समाहारः	द्वन्द्व
B.	**प्राप्तोदकः (ग्रामः)**	प्राप्तम् उदकं यं सः	बहुव्रीहि
C.	**सचक्रम्**	चक्रेण युगपत्	अव्ययीभाव
D.	**हरित्रातः**	हरिणा त्रातः	तत्पुरुष

अतः विकल्प `B' सही है।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज-189

53. 'पाणिपादम्' में समास है-
(A) इतरेतर द्वन्द्व **(B) समाहार द्वन्द्व**
(C) एकशेष द्वन्द्व **(D) अलुक् तत्पुरुष**

व्याख्या-

	सामासिकपद	लौकिक विग्रह	समास
A.	**मातापितरौ**	माता च पिता च	इतरेतर द्वन्द्व
B.	**पाणिपादम्**	पाणी च पादौ च	समाहार द्वन्द्व
C.	**श्वसुरौ**	श्वश्रूश्च श्वसुरश्च	एकशेषद्वन्द्व
D.	**युधिष्ठिरः**	युधिष्ठिरः	अलुक् तत्पुरुष

अतः विकल्प `B' सही है।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज-241

54. 'कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे' सूत्र है-
(A) कर्ता कारक का **(B) कर्म कारक का**
(C) करण कारक का **(D) सम्प्रदान कारक का**

व्याख्या–

A. स्वतन्त्रःकर्त्ता (1/4/54) क्रिया की सिद्धि में स्वतन्त्र रूप से विवक्षित अर्थ की कर्त्ता कारक संज्ञा होती है

B. कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे (2/3/5) लगातार संयोग गम्यमान होने पर कालवाची और मार्गवाची शब्दों में द्वितीया विभक्ति होती है। यह सूत्र कर्म कारक प्रकरण में दिया गया है।

C. साधकतमं करणम् (1/4/42) क्रिया की सिद्धि में जो पदार्थ सबसे अधिक उपकारक होता है उसकी करण कारक संज्ञा होती है। यथा- रामः बालिं बाणेन हतवान् । यहाँ 'हननक्रिया में बाण सबसे अधिक उपकारक होनें से करण कारक है अतः तृतीया विभक्ति है।

D. कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम् (1/4/32) दान क्रिया के कर्म के द्वारा कर्त्ता जिसको सन्तुष्ट करना चाहता है उसकी सम्प्रदान संज्ञा होती है। यथा- राजा विप्राय गां ददाति।

यहाँ राजा अपने गोदान रूपी कर्म से विप्र को सन्तुष्ट करना चाहता है अतः विप्र की सम्प्रदान संज्ञा होकर चतुर्थी विभक्ति हुई।

अतः विकल्प `B' सही है।

स्रोत- सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)- राममुनि पाण्डेय, पेज-54

55. 'रामः गृहम् अधितिष्ठति' में गृह की कर्मसंज्ञा किस सूत्र से हुई है?
(A) कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे
(B) अकथितं च
(C) अधिशीङ्स्थासां कर्म
(D) सहयुक्तेऽप्रधाने

व्याख्या -

A. **कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे (2/3/5)**- अत्यन्त संयोग (लगातार संयोग) गम्यमान होने पर कालवाची और मार्गवाची शब्दों में द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे - मासं कल्याणी । (महीने भर सुखदायी)

B. **अकथितं च (1/4/51)-** जहाँ अपादान आदि कारक विशेष अविवक्षित होते हैं, वहाँ 'अकथितं च' से कर्मसंज्ञा होती है और 'कर्मणि द्वितीया' से द्वितीया विभक्ति। जैसे- (1) गां दोग्धि पयः। (2) बलिं याचते वसुधाम्। यहाँ 'गाम्' और 'बलिम्' की **'अकथितं च'** से कर्मसंज्ञा होकर **कर्मणि द्वितीया** से द्वितीया विभक्ति हुई है।

C. **अधिशीङ्स्थासां कर्म (1/4/46)**- यदि शीङ् (शी), स्था और आस् धातुओं के पहले अधि उपसर्ग लगा हो तो क्रिया के आधार की कर्मसंज्ञा होती है।

जैसे-

* अधिशेते अधितिष्ठति अध्यास्ते वा वैकुण्ठं हरिः।
* ''रामः गृहम् अधितिष्ठति'' यहाँ स्था धातु में 'अधि' उपसर्ग होने के कारण आधार 'गृह' की कर्मसंज्ञा होकर द्वितीया विभक्ति हो गयी।

अतः विकल्प 'C' सही है।

D. **सहयुक्तेऽप्रधाने (2/3/19)-** सह एवं सह के अर्थवाची शब्दों के योग में अप्रधान में तृतीया विभक्ति होती है - **जैसे-** पुत्रेण सह आगतः पिता।

स्रोत- सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)- राममुनि पाण्डेय, पेज-42

56. 'मासमास्ते' 'मासम्' पद में कौन सी विभक्ति है?
(A) प्रथमा विभक्ति **(B) द्वितीया विभक्ति**
(C) तृतीया विभक्ति **(D)चतुर्थी विभक्ति**

व्याख्या-

A. **प्रथमा विभक्ति-** प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा (2/3/46)- अर्थात् प्रातिपदिकार्थमात्र, लिङ्गमात्र, परिमाणमात्र तथा वचनमात्र में प्रथमा विभक्ति होती हैं। उच्चैः नीचैः ,कृष्णः, श्रीः ज्ञानम् आदि।

B. **द्वितीया विभक्ति-** अकर्मकधातुभिर्योगे देशः कालो भावो गन्तव्योऽध्वा च कर्मसंज्ञक इति वाच्यम् (वा.) अकर्मक धातुओं के प्रयोग में देश, काल, भाव और गन्तव्य मार्ग की कर्मसंज्ञा होती है। (1) मासमास्ते। (2) कुरून् स्वपिति।

C. **तृतीया विभक्ति-** कर्तृकरणयोस्तृतीया (2/3/18) अनुक्त कर्त्ता करण में देश, काल, भाव और गन्तव्य मार्ग की कर्मसंज्ञा होती है। रामेण बाणेन हतो बाली।

D. **चतुर्थी विभक्ति-** रुच्यर्थानां प्रीयमाणः (1/4/33) रुच्यर्थ अर्थात् अभिलाषार्थक धातुओं के प्रयोग में प्रीयमाण व्यक्ति की सम्प्रदान सञ्ज्ञा होती है। हरये रोचते भक्तिः।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)- राममुनि पाण्डेय, पेज-36

57. 'बालकाय मोदकाः रोचन्ते' में बालकाय में कौन-सी विभक्ति है?
(A) द्वितीया विभक्ति **(B) तृतीया विभक्ति**
(C) चतुर्थी विभक्ति **(D) पञ्चमी विभक्ति**

व्याख्या-

* **अभिनिविशश्च** (द्वितीया)- यदि विश् धातु के पूर्व अभि और नि ये दोनों उपसर्ग क्रमशः लगे हों तो क्रिया के आधार की कर्मसंज्ञा होती है। अभिनिविशते सन्मार्गम्।
* **अपवर्गे तृतीया** (तृतीया)- (2/3/6) अपवर्ग का अर्थ है- क्रिया की समाप्ति होने पर फल की प्राप्ति। अपवर्ग द्योतित होने पर काल और मार्गवाची शब्द से अत्यन्तसंयोग गम्यमान होने पर तृतीया विभक्ति होती है। अह्ना क्रोशेन वा अनुवाकोऽधीत।
* **रुच्यर्थानां प्रीयमाणः (1.4.33)** (चतुर्थी)- रुच्यर्थ अर्थात् अभिलाषार्थक धातुओं के प्रयोग में प्रीयमाण व्यक्ति की सम्प्रदान सञ्ज्ञा होती है।

1. बालकाय मोदकाः रोचन्ते
2. हरये रोचते भक्तिः

* **पराजेरसोढः (1/4/26)** (पञ्चमी)- यदि जि धातु के पूर्व परा उपसर्ग लगा हो तो जो असह्य पदार्थ होता है उसकी अपादानसञ्ज्ञा होती है। अध्ययनात् पराजयते।

अतः विकल्प `C' सही है।

स्रोत- सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय,पेज-66

58. 'पुष्पेभ्यः स्पृहयति' में कौन सा कारक है?
(A) कर्म कारक **(B) करण कारक**
(C) सम्प्रदान कारक **(D) अपादान कारक**

व्याख्या–

A. कर्तुरीप्सिततमं कर्म (1/4/49)- कर्त्ता अपनी क्रिया के द्वारा जिस पदार्थ को सबसे अधिक प्राप्त करना चाहता है, उसकी कर्म कारक संज्ञा होती है।
उदाहरण- बालकः **विद्यालयं** गच्छति।

B. साधकतमं करणम् (1/4/42)- क्रिया की सिद्धि में जो पदार्थ सबसे अधिक उपकारक हो उसकी करण कारक संज्ञा होती है।-
जैसे- रामेण **बाणेन** हतो बाली। यहाँ 'बाण' करणकारक है अतः तृतीया विभक्ति हुई।

C. स्पृहेरीप्सितः (1/4/36)- स्पृह् (चाहना) धातु के योग में ईप्सित (जिसे चाहा जाय) पदार्थ की सम्प्रदान संज्ञा होती है। **जैसे-** पुष्पेभ्यः स्पृहयति।

D. ध्रुवमपायेऽपादानम् (1/4/24)- अलग होने की क्रिया में जो पदार्थ ध्रुव होता है अर्थात् जिससे अलगाव होता है उसकी अपादान कारक संज्ञा होती है, और अपादान में पञ्चमी विभक्ति होती है। **उदाहरण-** धावतोऽश्वात् पतति।

अतः विकल्प `C' सही है।

स्रोत- सिद्धान्तकौमुदी(कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय,पेज-69

59. 'मातुः स्मरति' के 'मातुः' पद में कौन सी विभक्ति है?
(A) पञ्चमी विभक्ति **(B) चतुर्थी विभक्ति**
(C) तृतीया विभक्ति **(D) षष्ठी विभक्ति**

व्याख्या-

(A) अन्तर्धौ येनादर्शनमिच्छति (1/4/28) (पंचमी)- व्यवधान (छिपना) होने की क्रिया में कर्त्ता जिससे छिपना चाहता है उसकी अपादान संज्ञा होती है।
उदाहरण- मातुर्निलीयते कृष्णः।

(B) धारेरुत्तमर्णः (1/4/35) (चतुर्थी)- णिजन्त धृ धातु के योग में ऋण देने वाले की सम्प्रदान संज्ञा होती है।
उदाहरण- भक्ताय धारयति मोक्षं हरिः।

(C) हेतौ (2/3/23) (तृतीया)- हेतु अर्थ के वाची शब्दों में तृतीया विभक्ति होती है।
उदाहरण- 1. पुण्येन दृष्टो हरिः। 2. अध्ययनेन वसति।

(D) षष्ठी शेषे (2/3/50) (षष्ठी)- शेष अर्थों में षष्ठी विभक्ति होती है। शेष अर्थ हैं -कर्म, करण इत्यादि कारकों से भिन्न तथा प्रातिपदिकार्थ से भिन्न।
उदाहरण-
1. मातुः स्मरति। 2. राज्ञः पुरुषः। 3. सर्पिषो जानीते।
अतः विकल्प `D सही है।

स्रोत- सिद्धान्तकौमुदी(कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय,पेज-109

60. 'कृष्णस्य कृतिः' में 'कृष्ण पद में षष्ठी विभक्ति किस सूत्र से हुई है?
(A) षष्ठी शेषे **(B) षष्ठी हेतुप्रयोगे**
(C) कर्तृकर्मणोः कृति **(D) उभयप्राप्तौ कर्मणि**

व्याख्या–

A. षष्ठी शेषे (2/3/50)- जहाँ कर्म आदि कारक विवक्षित न हो अर्थात् जहाँ प्रथमा से सप्तमी पर्यन्त किसी भी विभक्ति का प्रयोग विहित नहीं है ऐसे स्थलों में षष्ठी विभक्ति होती है।
जैसे- 1. सतां गतम् (2) फलानां तृप्तः।

B. षष्ठी हेतुप्रयोगे (2/3/26)- वाक्य में 'हेतु' शब्द का प्रयोग होने पर हेतु (कारण) में तथा 'हेतु' शब्द में षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होता है।
जैसे- अन्नस्य हेतोर्वसति।

C. कर्तृकर्मणोः कृतिः (2/3/65)- कृत् प्रत्ययान्त (कृदन्त) के योग में अनभिहित कर्त्ता और कर्म कारक में षष्ठी विभक्ति होती है।
जैसे- 1. कृष्णस्य कृतिः 2. जगतः कर्त्ता कृष्णः।

D. उभयप्राप्तौ कर्मणि (2/3/66)- यदि कृदन्त के योग में कर्त्ता और कर्म दोनों में एक साथ षष्ठी विभक्ति प्राप्त हो तो केवल अनुक्त कर्म कारक में ही षष्ठी विभक्ति हो।
जैसे- आश्चर्यो गवां दोहोऽगोपेन
अतः विकल्प `C' सही है।

स्रोत- सिद्धान्तकौमुदी(कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय,पेज-120

61. 'टाप्' प्रत्यय होता है-
(A) अकारान्त प्रातिपदिक से
(B) ईकारान्त प्रातिपदिक से
(C) उकारान्त प्रातिपदिक से
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

व्याख्या-

* **अजाद्यतष्टाप् (4/1/4)-** अजादिगण में पठित एवं ह्रस्व अकारान्त शब्दों से स्त्रीत्व की विवक्षा में 'टाप्' प्रत्यय होता है । **उदाहरण-** अजा, राधा, रमा आदि।
* **उगितश्च (4/1/6)-** जिसमें उक् (उ, ऋ, ऌ) की इत्संज्ञा हो गई हो ऐसे प्रातिपदिकों से स्त्रीत्व की विवक्षा में 'ङीप्' प्रत्यय होता है। जैसे- भवती, पचन्ती, दीव्यन्ती आदि।

अतः विकल्प `A' सही है।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी- गोविन्दाचार्य,पेज-1154

62. ङीप् प्रत्यय होता है-
(A) अकारान्त प्रातिपदिक से
(B) ईकारान्त प्रातिपदिक से
(C) उकारान्त प्रातिपदिक से
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

व्याख्या-

* **द्विगोः (4/1/21)-** अदन्त द्विगु समास से स्त्रीत्व की विवक्षा में ङीप् प्रत्यय होता है। **जैसे-** त्रिलोकी। किन्तु अजादि होने पर टाप् प्रत्यय लगकर त्रिफला, त्र्यनीका आदि भी बनेगा।
* **उगितश्च (4/1/6)-** सूत्र से उक् अर्थात् उ, ऋ, ऌ की जहाँ इत्सञ्ज्ञा हो गई है ऐसे उगित् प्रातिपदिकों से स्त्रीत्व की विवक्षा में ङीप् प्रत्यय होता है।
जैसे- भवन्ती, पचन्ती, कुर्वती आदि।

अतः विकल्प `C' सही है।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी- गोविन्दाचार्य,पेज-1155

63. 'लावणिकी' शब्द लावणिक में किस प्रत्यय के संयोग से बनता है?
(A) टाप् **(B) ङीप्**
(C) ङीष् **(D) ङीन्**

व्याख्या-

A. **अजाद्यतष्टाप् (4/1/4)-** अजादिगण में पढ़े गये शब्द अथवा ह्रस्व अकारान्त शब्दों से स्त्रीलिङ्ग की विवक्षा में टाप् प्रत्यय होता है
जैसे- अजा, एडका, बाला, गङ्गा आदि।

B. **टिड्ढाणञ्द्वयसज्दघ्नञ्मात्रच्तयप्ठक्ठञ्कञ्क्वरपः** (4/1/14)- अनुपसर्जन जो टित्, ढा, अण्, द्वयसच् दघ्नञ्, मात्रच्, तयप्, ठक् , ठञ्, कञ्, क्वरप् प्रत्यय के अन्त में होने वाले अदन्त प्रातिपदिक से ङीप् प्रत्यय होता है।
जैसे- लावणिकी, आक्षिकी आदि।

C. **षिद्गौरादिभ्यश्च (4/1/41)-** षित् प्रत्ययान्त गौरादिगण में पठित शब्दों से स्त्रीत्व की विवक्षा में ङीष् प्रत्यय होता है।
जैसे- गौरी, नर्तकी, गार्ग्यायणी आदि।

D. **शार्ङ्गरवाद्यञो ङीन् (4/1/73)-** शार्ङ्गरवादिगण में पठित शब्दों तथा अञ् प्रत्यय अन्त में हो ऐसे जातिवाचक प्रातिपदिकों से स्त्रीत्व की विवक्षा में ङीन् प्रत्यय होता है। जैसे- शार्ङ्गरवी, बैदी, ब्राह्मणी।

अतः विकल्प `B' सही है।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी- गोविन्दाचार्य,पेज-1155

64. 'नर्तकी' शब्द नर्तक में किस प्रत्यय के संयोग से हुआ?
(A) टाप् **(B) ङीप्**
(C) ङीष् **(D) ङीन्**

व्याख्या–

सूत्र	प्रत्यय	उदाहरण
A. अजाद्यतष्टाप्	टाप्	अजा, मूषिका, होडा, मन्दा आदि
B. वयसि प्रथमे	ङीप्	कुमारी, किशोरी
C. षिद्गौरादिभ्यश्च	ङीष्	**नर्तकी,** गौरी
D. नृनरयोर्वृद्धिश्च	ङीन्	नारी

अतः विकल्प `C' सही है।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी- गोविन्दाचार्य,पेज-1159

65. 'कुम्भकारः' में प्रत्यय है-
(A) शतृ **(B) शानच्**
(C) तुमुन् **(D) अण्**

व्याख्या–

धातु / प्रत्यय	शब्द
A. इष् + शतृ	इच्छन्
B. धा+ शानच्	दधानः
C. भुज् + तुमुन्	भोक्तुम्
D. कुम्भ+ कृ + अण्	कुम्भकारः

अतः विकल्प `D' सही है।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी- गोविन्दाचार्य,पेज-

66. 'भू' धातु लोट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन में हो जाता है-
(A) भविता **(B) भवतु**
(C) भवतः **(D) भव**

व्याख्या-
भू सत्तायाम् (होना) भ्वादिगण, अकर्मक, सेट् ,परस्मैपद

A. भू धातु लुट्लकार प्रथमपुरुष, एकवचन में 'भविता' रूप बनता है-

भविता	भवितारौ	भवितारः

B+D लोट्लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन में 'भवतु' तथा मध्यम पुरुष एकवचन में 'भव' रूप बनेगा –

भवतु	भवताम्	भवन्तु
भव	भवतम्	भवत
भवानि	भवाव	भवाम

C. लट्लकार, प्रथमपुरुष, द्विवचन में भवतः रूप बनेगा –

भवति	भवतः	भवन्ति

अतः विकल्प `B' सही है।
स्रोत- रचनानुवादकौमुदी- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-145

67. 'गम् ' धातु लट्लकार मध्यम पुरुष द्विवचन में हो जाता है-
(A) गच्छतः **(B) गच्छामि**
(C) गच्छत **(D) गच्छथः**

व्याख्या–
गम्ऌ गतौ (जाना) भ्वादिगण, सकर्मक, परस्मैपद, अनिट्

* 'गम् ' धातु लट्लकार मध्यम पुरुष द्विवचन में रूप **गच्छथः** बनेगा।

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्र0 पु0	गच्छति	गच्छतः	गच्छन्ति
म0 पु0	गच्छसि	**गच्छथः**	गच्छथ
उ0पु0	गच्छामि	गच्छावः	गच्छामः

अतः विकल्प `D' सही है।
स्रोत- रचनानुवादकौमुदी- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-149

68. 'आसीत्' क्रिया का लकार है-
(A) लुङ् **(B) लङ्**
(C) लिट् **(D) ऌङ्**

व्याख्या–
अस्-सकर्मक, सेट्, उभयपदी, भ्वादिगण

A. लुङ्

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्र0पु0	अभूत्	अभूताम्	अभूवन्
म0पु0	अभूः	अभूतम्	अभूत
उ0पु0	अभूवम्	अभूव	अभूम

B. लङ्

प्र0पु0	**आसीत्**	आस्ताम्	आसन्
म0पु0	आसीः	आस्तम्	आस्त
उ0पु0	आसम्	आस्व	आस्म

C. लिट्

प्र0पु0	बभूव	बभूवतुः	बभूवुः
म0पु0	बभूविथ	बभूवथुः	बभूव
उ0पु0	बभूव	बभूविव	बभूविम

D. ऌङ्

प्र0पु0	अभविष्यत्	अभविष्यताम्	अभविष्यन्
म0पु0	अभविष्यः	अभविष्यतम्	अभविष्यत
उ0पु0	अभविष्यम्	अभविष्याव	अभविष्याम

अतः विकल्प `B' सही है।
स्रोत- रचनानुवादकौमुदी- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-160

69. 'गम्' धातु लिट् लकार प्रथम पुरुष एकवचन में हो जाता है-
(A) अगच्छत् **(B)जग्मुः**
(C) जगाम **(D) अगमत्**

व्याख्या–
गम् धातु भ्वादिगण, परस्मैपद, सकर्मक, अनिट्

A. लङ्

प्र.पु.	अगच्छत्	अगच्छताम्	अगच्छन्

B. व C. लिट्

प्र.पु.	जगाम	जग्मतुः	जग्मुः

D. लुङ्

प्र.पु.	अगमत्	अगमताम्	अगमन्

अतः विकल्प `C' सही है।
स्रोत- रचनानुवादकौमुदी- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-149

70. 'पठ्' धातु विधिलिङ् प्रथम पुरुष द्विवचन में हो जाता है-
(A) पठ **(B) पठताम्**
(C) पठेताम् **(D) पठेत्**

व्याख्या–
(A) पठ तथा **(B)** पठताम् यह रूप लोट्लकार प्रथमपुरुष में बनता है।
पठ् विधिलिङ् लकार भ्वादिगण, परस्मैपद सकर्मक सेट्, परस्मैपद विधिलिङ्

प्र०पु०	पठेत्	पठेताम्	पठेयुः
म०पु०	पठेः	पठेतम्	पठेत
उ०पु०	पठेयम्	पठेव	पठेम

अतः विकल्प `C' सही है।
स्रोत- संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका- बाबूराम सक्सेना, पेज-324

71. 'बालकेन ग्रन्थः दृश्यते' प्रयोग है-
(A) कर्तृवाच्य का
(B) कर्मवाच्य का
(C) भाववाच्य का
(D) उपर्युक्त में से किसी का भी नहीं

व्याख्या-

वाच्य		उदाहरण
कर्तृवाच्य	-	बालकः ग्रन्थं पश्यति।
कर्मवाच्य	-	बालकेन ग्रन्थः दृश्यते।
भाववाच्य	-	बालकेन स्थीयते।

वाच्य के विषय में कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य-
* **कर्तृवाच्य-** इसमें कर्त्ता मुख्य होता है कर्ता के अनुसार ही क्रिया का रूप होता है, अर्थात् क्रिया का पुरुष, लिङ्ग कर्त्ता के पुरुष वचन और लिङ्ग के अनुसार ही होता है। कर्तृवाच्य में कर्त्ता में प्रथमा, कर्म में द्वितीया और क्रिया कर्त्ता के अनुसार होती है।
* **कर्मवाच्य-** सकर्मक धातुओं से ही कर्मवाच्य होता है इसमें कर्म की प्रधानता होती है। कर्म के अनुसार ही क्रिया के लिङ्ग, विभक्ति और वचन होते हैं। कर्मवाच्य के कर्म में प्रथमा होती है, कर्त्ता में तृतीया, क्रिया कर्म के अनुसार।
* **भाववाच्य-** अकर्मक धातु से ही भाववाच्य होता है, सकर्मक से नहीं। भाववाच्य में कर्त्ता में तृतीया होती है क्रिया में प्रथम पुरुष एकवचन का प्रयोग होता है।

अतः विकल्प 'B' सही है।
स्रोत- रचनानुवादकौमुदी- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-52,53

72. 'छात्रेण उपविश्यते' में प्रयोग है-
(A) कर्तृवाच्य
(B) कर्मवाच्य
(C) भाववाच्य
(D) उपर्युक्त में से किसी का भी नहीं

व्याख्या–

वाच्य	उदाहरण
A. कर्तृवाच्य	छात्रः पुस्तकं पठति
B. कर्मवाच्य	छात्रेण पुस्तकं पठ्यते
C. भाववाच्य	छात्रेण उपविश्यते।

विशेष- कर्तृवाच्य में कर्त्ता, कर्मवाच्य में कर्म तथा भाववाच्य में भाव (क्रिया) की प्रधानता होती है।
अतः विकल्प 'C' सही है।
स्रोत- रचनानुवादकौमुदी- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-52-55

73. सांख्यदर्शन का प्रमुख सिद्धान्त है-
(A) असत्कार्यवाद **(B) विवर्तवाद**
(C) सत्कार्यवाद **(D) शून्यवाद**

व्याख्या–

सिद्धान्त	दर्शन
A. असत्कार्यवाद	न्याय
B. विवर्तवाद	वेदान्त
C. सत्कार्यवाद	सांख्य
D. शून्यवाद	बौद्ध

विशेष- सांख्य दर्शन में कार्य अपने कारण में सत् रूप से विद्यमान रहता है। 'सांख्यकारिका' में ईश्वरकृष्ण ने सत्कार्यवाद की सिद्धि में 5 तर्क दिये हैं-
1. असदकरणात् 2. उपादानग्रहणात् 3. सर्वसम्भवाभावात् 4. शक्तस्य शक्यकरणात् 5. कारणभावाच्च सत्कार्यम्।।
अतः विकल्प `C' सही है।
स्रोत- सांख्यकारिका (का.9)- राकेश शास्त्री, पेज-29,30

74. सांख्यकारिका में कुल कितने तत्त्वों का विवेचन हुआ है-
(A) सात **(B) ग्यारह**
(C) सोलह **(D) पच्चीस**

व्याख्या–

मूलप्रकृतिरविकृतिर्महदाद्याः प्रकृतिविकृतयः सप्त।
षोडशकस्तु विकारो न प्रकृतिर्न विकृतिः पुरुषः॥

(सां.का.-3)

पुरुष, प्रकृति, महत्, अहङ्कार, पञ्चज्ञानेन्द्रियाँ, पञ्चकर्मेन्द्रियाँ, मन, पञ्चतन्मात्रायें, पञ्चमहाभूत इस प्रकार कुल 25 तत्त्वों का सांख्यकारिका में विवेचन हुआ है।

* 'प्रकृति विकृतयः- सप्त'-7
* 'षोडशकस्तु विकारः' -16
* 'केवल प्रकृतिः' (मूल प्रकृतिः) -1
* 'न प्रकृतिः न विकृतिः पुरुषः' -1

इसप्रकार सांख्यकारिका में कुल तत्त्वों की संख्या **25** हैं।

अतः विकल्प `D' सही है।

स्रोत- सांख्यकारिका (का.3)- राकेश शास्त्री, पेज-8

75. 'कैवल्यार्थं प्रवृत्तेश्च' किसके लिए प्रयुक्त है-
(A) पुरुष **(B) प्रकृति**
(C) ईश्वर **(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं**

व्याख्या–

* ईश्वरकृष्ण कृत 'सांख्यकारिका' में पुरुष की सत्ता की सिद्धि में 5 कारण दिये गये हैं-

संघातपरार्थत्वात् त्रिगुणादिविपर्ययादधिष्ठानात्।
पुरुषोऽस्ति भोक्तृभावात् कैवल्यार्थं प्रवृत्तेश्च॥

(सां.का.- 17)

1. संघटनात्मक समूहरूप वस्तुओं के दूसरे के लिए होनें के कारण **2.** गुणत्रय धर्मों से विपरीत धर्म वाले की अपेक्षा होने के कारण **3.** अधिष्ठाता होने की अपेक्षा से **4.** भोक्ता होने की अपेक्षा से **5.** मोक्ष के लिये प्रवृत्त होने से पुरुष की सत्ता सिद्ध होती है।

* अव्यक्त (प्रकृति) की सत्ता सिद्धि के 5 कारण-

भेदानां परिमाणात्, समन्वयात् शक्तितः प्रवृत्तेश्च।
कारणकार्यविभागादविभागाद् वैश्वरूप्यस्य।

(सांख्यकारिका-15)

* सांख्यदर्शन ईश्वर की सत्ता को स्वीकार नहीं करता है।

अतः विकल्प 'A' सही है।

स्रोत- सांख्यकारिका (का.17)- राकेश शास्त्री, पेज-56

76. किस दर्शन में यह प्रतिपादित किया गया है कि आत्माएँ अनेक हैं?
(A) न्यायदर्शन **(B) मीमांसादर्शन**
(C) सांख्यदर्शन **(D) वेदान्तदर्शन**

व्याख्या–

ईश्वरकृष्ण सांख्यकारिका में पुरुष (आत्मा) बहुत्व (अनेकता) सिद्ध करते हैं-

जन्ममरणकरणानां प्रतिनियमादयुगपत्प्रवृत्तेश्च।
पुरुषबहुत्वं सिद्धं त्रैगुण्यविपर्ययाच्चैव॥

(सा.का.18)

जन्म, मरण और इन्द्रियों की व्यवस्था होने के कारण और एक साथ प्रवृत्त का अभाव होने के कारण तथा तीनों गुणों के भेद के कारण ही पुरुष की अनेकता सिद्ध होती है। इसप्रकार पुरुष बहुत्व में तीन कारण बताये गये हैं।

अतः विकल्प `C' सही है।

स्रोत- सांख्यकारिका (का.18)- राकेश शास्त्री, पेज-59

77. सांख्य के अनुसार प्रमाणों की संख्या है-
(A) दो **(B) तीन**
(C) चार **(D) पाँच**

व्याख्या-

* **चार्वाक**	प्रत्यक्ष प्रमाण = एक प्रमाण
* **जैन/बौद्ध/वैशेषिक**	प्रत्यक्ष, अनुमान -दो प्रमाण
* **सांख्य/योग-**	प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द-तीन प्रमाण
* **न्याय**	प्रत्यक्ष,अनुमान,उपमान, शब्द- चार प्रमाण
* **प्रभाकर मीमांसक**	प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, अर्थापत्ति-पाँच प्रमाण
* **भाट्ट मीमांसक**	प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, अर्थापत्ति, अभाव-छः प्रमाण
* **पौराणिक**	प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, अर्थापत्ति, अभाव, सम्भव, ऐतिह्य-आठ प्रमाण

अतः विकल्प `B' सही हैं।

स्रोत- सांख्यकारिका (का.4)- राकेश शास्त्री, पेज-12

78. न्याय दर्शन के प्रणेता हैं-
(A) कपिल **(B) गौतम**
(C) शंकर **(D) पतञ्जलि**

व्याख्या-

षड् आस्तिक दर्शन		**प्रणेता (आचार्य)**
1. सांख्य	-	कपिलमुनि
2. योग	-	महर्षि पतञ्जलि
3. न्याय	-	गौतम
4. वैशेषिक	-	कणाद
5. पूर्वमीमांसा	-	जैमिनि

6. उत्तर मीमांसा (वेदान्त) - बादरायण

नास्तिक दर्शन

1. बौद्ध - गौतम
2. जैन - ऋषभदेव या महावीर स्वामी
3. चार्वाक - चार्वाक

अतः विकल्प `B' सही है।

स्रोत- भारतीय दर्शन- चटर्जी और दत्त, पेज-68

79. तर्कभाषा के अनुसार अनुमान के कितने अवयव हैं?
(A) तीन (B) चार
(C) दो (D) पाँच

व्याख्या–

A. सांख्य के अनुसार- अनुमान के तीन भेद हैं-
'' **त्रिविधमनुमानमाख्यातम्**'' (सां. का.05)
1. पूर्ववत् 2. शेषवत् 3. सामान्यतोदृष्ट

B. तर्कभाषा के अनुसार प्रमाण के चार भेद हैं-
(प्रत्यक्षानुमानोपमानशब्दाः प्रमाणानि)
1. प्रत्यक्ष 2. अनुमान 3. उपमान 4. शब्द

C. तर्कभाषा के अनुसार अनुमान के दो भेद हैं-
(अनुमानं द्विविधं, स्वार्थं परार्थं चेति)

D. परार्थानुमान के पाँच अवयव-
1. प्रतिज्ञा 2. हेतु 3. उदाहरण 4. उपनय 5. निगमन

अतः विकल्प `D' सही है।

स्रोत- तर्कभाषा- श्रीनिवास शास्त्री, पेज-92

80. तर्कभाषा के अनुसार निम्नलिखित में से कौन अलौकिक प्रत्यक्ष का भेद नहीं है?
(A) सामान्यलक्षण (B) प्रतिज्ञा
(C) ज्ञानलक्षण (D) योगज

व्याख्या-

केशव मिश्र तर्कभाषा में प्रत्यक्ष प्रमाण के अन्तर्गत छह लौकिक और तीन अलौकिक सन्निकर्षों की चर्चा करते हैं-

सन्निकर्ष

लौकिक सन्निकर्ष (6) | **अलौकिक सन्निकर्ष (3)**

1. संयोग (चक्षु-घट)
2. संयुक्त समवाय (चक्षु-घटरूप)
3. संयुक्त समवेत समवाय (चक्षु- घटरूपत्व)
4. समवाय (श्रोत्र-शब्द)
5. समवेत समवाय (श्रोत्र- शब्दत्व)
6. विशेष्य विशेषणभाव (चक्षु- घटाभाव)

अलौकिक:
1. सामान्यलक्षण
2. ज्ञानलक्षण
3. योगज

अतः विकल्प 'B' सही है।

स्रोत- तर्कभाषा- श्रीनिवास शास्त्री, पेज-61

81. हेत्वाभास के कितने भेद हैं?
(A) तीन (B) पाँच
(C) सात (D) चार

व्याख्या-

A. केशवमिश्र प्रणीत न्यायदर्शन के प्रकरण ग्रन्थ तर्कभाषा के अनुसार हेतुओं की संख्या तीन मानी गयी है।

हेतु	उदाहरण
1. अन्वयव्यतिरेकी	पर्वतोऽग्निमान् धूमवत्त्वात्।
2. केवलव्यतिरेकी	जीवच्छरीरं सात्माकम्
3. केवलान्वयी हेतु	शब्दोऽभिधेयः प्रमेयत्वात् ।
B. हेत्वाभास	**उदाहरण**
1. असिद्ध हेत्वाभास	गगनारविन्दं सुरभि, अरविन्दत्वात् सरोजारविन्दवत्

2. विरुद्ध हेत्वाभास- शब्दो नित्यः कृतकत्वात् आत्मवत्।
3. अनैकान्तिक हेत्वाभास- शब्दो नित्यः प्रमेयत्वात् व्योमवत्।
4. प्रकरणसम हेत्वाभास- शब्दो नित्यः श्रावणत्वात् शब्दत्ववत्
5. कालात्ययापदिष्ट हेत्वाभास- वह्निरनुष्णो द्रव्यत्वात् घटवत्।

C. तर्कसंग्रह के अनुसार 7 पदार्थ हैं-
द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय, अभाव।

D. तर्कभाषा के अनुसार चार प्रमाण हैं-
प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द 'प्रत्यक्षानुमानोपमानशब्दाः प्रमाणानि।'

अतः विकल्प 'B' सही है।

स्रोत- तर्कभाषा- श्रीनिवास शास्त्री, पेज-110

82. 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म' यह महावाक्य किस उपनिषद् से सम्बद्ध है?
(A) ऐतरेयोपनिषद् (B) छान्दोग्योपनिषद्
(C) तैत्तिरीयोपनिषद् (D) माण्डूक्योपनिषद्

व्याख्या–

A. प्रज्ञानं ब्रह्म (ऋग्वेद, ऐतरेयोपनिषद्)- सब प्रकार की शक्ति देने वाले प्रज्ञानस्वरूप परमात्मा है, वे ही हमारे उपास्य देव ब्रह्म हैं।

B. सर्वं खल्विदं ब्रह्म (सामवेद, छान्दोग्योपनिषद्)- यह सारा जगत् निश्चय ही ब्रह्म है।

C. सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म (कृष्णयजुर्वेद, तैत्तिरीयोपनिषद्)- ब्रह्म को जानने वाला परमात्मा की प्राप्ति करने में सफल हो जाता है।

D. अयमात्मा ब्रह्म (अथर्ववेद, माण्डूक्योपनिषद्)- यह सम्पूर्ण जगत् ब्रह्म से भिन्न कुछ नहीं है, सब का सब ब्रह्म है।

नोट- महावाक्यों की संख्या चार है-

* प्रज्ञानं ब्रह्म - ऋग्वेद - ऐतरेयोपनिषद्
* अहं ब्रह्मास्मि - यजुर्वेद - बृहदारण्यकोपनिषद्
* तत्त्वमसि - सामवेद - छान्दोग्योपनिषद्
* अयमात्मा ब्रह्म - अथर्ववेद - माण्डूक्योपनिषद्

अतः विकल्प `B' सही है।

स्रोत- छान्दोग्य उपनिषद् (3/14/1) गीताप्रेस गोरखपुर, पेज-280

83. तत्त्वमसि महावाक्य किससे सम्बन्धित है?
(A) कठोपनिषद् **(B) बृहदारण्यकोपनिषद्**
(C) छान्दोग्योपनिषद् **(D) मुण्डकोपनिषद्**

व्याख्या–

	वाक्य	उपनिषद्	वेद
A.	स्वर्गे लोके न भयं किञ्चनास्ति	कठोपनिषद्	कृष्णयजुर्वेद
B.	आत्मैवेदमग्र आसीत्पुरुषविधः	बृहदारण्यकोपनिषद्	शुक्लयजुर्वेद
C.	तत्त्वमसि	छान्दोग्योपनिषद्	सामवेद
D.	दिव्यो ह्यमूर्तः पुरुषः सबाह्याभ्यन्तरो ह्यजः।	मुण्डकोपनिषद्	अथर्ववेद

अतः विकल्प `C' सही है।

स्रोत- छान्दोग्य उपनिषद्(6/8/7) गीताप्रेस गोरखपुर, पेज-619

84. किस वेदांग को पुरुष का नेत्र समझा जाता है?
(A) शिक्षा **(B) कल्प**
(C) निरुक्त **(D) ज्योतिष**

व्याख्या-

छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते।
ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते।।
शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम्।।
तस्मात् साङ्गमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते।।

वेदाङ्ग	वेद पुरुष के अङ्ग
शिक्षा	घ्राण
निरुक्त	श्रोत्र
ज्योतिष	नेत्र
कल्प	हाथ
व्याकरण	मुख
छन्द	पाद

अतः विकल्प `D' सही है।
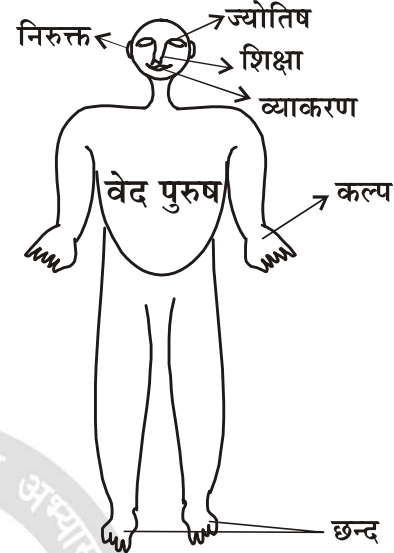
85. तर्कसंग्रह के अनुसार गुणों की संख्या है-
(A) अनन्त **(B) सात**
(C) चौबीस **(D) दो**

व्याख्या-

अन्नम्भट्ट कृत तर्कसंग्रह के अनुसार-

* विशेष पदार्थ की संख्या अनन्त है 'नित्यद्रव्यवृत्तयो विशेषास्तवनन्ता एव' अर्थात् नित्य द्रव्य में रहने वाला व्यावर्तक विशेष अनन्त हैं।
* तर्कसंग्रह में पदार्थों की संख्या सात है 'द्रव्य-गुण-कर्म-सामान्य-विशेष-समवाय-अभावाः सप्तपदार्थाः' अर्थात् द्रव्य,गुण,कर्म,सामान्य,विशेष,समवाय,अभाव ये सात पदार्थ हैं।
* रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, संख्या, परिणाम, पृथक्त्व, संयोग, विभाग, परत्व, अपरत्व, गुरुत्व, द्रव्यत्व, स्नेह, शब्द, बुद्धि, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, धर्म, अधर्म तथा संस्कार ये चौबीस गुण हैं।
* सामान्य की संख्या दो हैं- परसामान्य तथा अपर सामान्य।

अतः विकल्प `C' सही है।

उत्तरमाला

1.B	2.B	3.D	4.D	5.B	6.D	7.C	8.C	9.B	10.D	11.C	12.B
13.D	14.C	15.D	16.B	17.C	18.C	19.B	20.A	21.C	22.B	23.B	24.A
25.C	26.A	27.C	28.C	29.B	30.A	31.B	32.C	33.C	34.B	35.B	36.C
37.D	38.A	39.B	40.A	41.B	42.A	43.B	44.B	45.A	46.B	47.A	48.A
49.C	50.D	51.B	52.B	53.B	54.B	55.C	56.B	57.C	58.C	59.D	60.C
61.A	62.C	63.B	64.C	65.D	66.B	67.D	68.B	69.C	70.C	71.B	72.C
73.C	74.D	75.A	76.C	77.B	78.B	79.D	80.B	81.B	82.B	83.C	84.D
85. C											

❑❑

3. प्रवक्ता (PGT) संस्कृत 2003

1. 'आ परितोषाद् विदुषां न साधु मन्ये प्रयोगविज्ञानम्' सूक्ति किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है?
(A) उत्तररामचरितम्
(B) महाभारतम्
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(D) किरातार्जुनीयम्

व्याख्या–

A. उत्तररामचरितम्- भवभूति विरचित उत्तररामचरितम् नाटक के द्वितीय अङ्क में तापसी आत्रेयी वनदेवता से कहती है कि-
'रहस्यं साधूनामनुपधि विशुद्धं विजयते।'
(उ.रा. 2/2)
'निश्छल एवं विशुद्ध सज्जनों का चरित सदा विजय को प्राप्त होता है।'

B. महाभारत- महाभारत के द्रोणपर्व में घटोत्कच ने दुर्योधन से अलम्बुष का वध करने के पश्चात् कहा-
'रिक्तपाणिर्न पश्येत राजानं ब्राह्मणं स्त्रियम्।'
(महा. द्रोणपर्व 174/43)
राजा, ब्राह्मण एवं स्त्री से खाली हाथ नहीं मिलना चाहिए।

C. अभिज्ञानशाकुन्तलम्- कालिदास कृत अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के प्रथम अङ्क में प्रस्तावना प्रसङ्ग में सूत्रधार नटी से कहता है कि-
'आ परितोषाद् विदुषां न साधु मन्ये प्रयोगविज्ञानम्'
(अभि. 1/2)
'विद्वानों के सन्तुष्ट न होने तक मैं अभिनय के कौशल को पूर्ण नहीं समझता हूँ।'
अतः विकल्प C सही है।

D. किरातार्जुनीयम्- द्रौपदी युधिष्ठिर से कहती है कि-
'शमेन सिद्धिं मुनयो न भूभृतः।'
(किरात. 1/42)
'शान्तिपूर्वक मुनि लोग सिद्धि को प्राप्त करते हैं राजा लोग नहीं।'

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/2)- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-8

2. 'गण्डस्योपरि पिण्डकः संवृत्तः' है-
(A) सूक्ति **(B) काव्यलक्षण**
(C) मुहावरा **(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं**

व्याख्या-

A. सूक्ति - काव्यों में विशेष कथन के लिए सूक्तियों का प्रयोग किया जाता है।
मारीच आश्रम पर पहुँचने के उपरान्त राजा दुष्यन्त शुभ शकुन का अभिनय करते हुए कहते हैं कि-
'पूर्वावधीरितं श्रेयो दुःखं हि परिवर्तते।'
(अभि. 7/13)
'पहले तिरस्कृत किया हुआ कल्याण दुःख रूप में पुनः परिणत हो जाता है।'

B. काव्यलक्षण- मम्मट के अनुसार काव्यप्रकाश के प्रथमोल्लास में काव्यलक्षण निम्नवत् है-
'तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि।'
(का.प्र. सूत्र-1)
दोषों से रहित गुणयुक्त और कहीं-कहीं अलङ्कार रहित शब्द और अर्थ की समष्टि काव्य कहलाता है।

C. मुहावरा- अपनी बात को विशेष कथन के द्वारा प्रस्तुत करने के लिए मुहावरे का प्रयोग किया जाता है। **जैसे-** 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के द्वितीय अङ्क के आरम्भ में मृगया से परिश्रान्त विदूषक राजा के आने एवं शकुन्तला दर्शन विषयक वृत्तान्त का स्मरण करके कहता है-
'गण्डस्योपरि पिण्डकः संवृत्तः।' (अभि.अङ्क-2)
फोड़े के ऊपर फोड़ा हो गया अर्थात् एक विपत्ति और आ गई।
अतः विकल्प C सही है।

स्रोत - अभिज्ञानशाकुन्तलम् (अङ्क-2)- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-91

3. दुष्यन्त की मनः स्थिति जानने के लिए मेनका ने अपनी किस सखी को भेजा था?
(A) सानुमती **(B) उर्वशी**
(C) रम्भा **(D) तिलोत्तमा**

व्याख्या-

* अभिज्ञानशाकुन्तल के छठे अङ्क में दुष्यन्त की मनः स्थिति को जानने के लिए मेनका ने सानुमती नामक सखी को

भेजा। जो हस्तिनापुर के उद्यानों में छिपकर दो चेटियों के द्वारा उत्सव की बातें सुनकर कहती है-

'उत्सवप्रियाः खलु मनुष्याः' (अभि.शा. अङ्क-6) सभी मनुष्य उत्सवप्रिय होते हैं।

* कालिदासकृत 'विक्रमोर्वशीयम्' त्रोटक में विक्रम (पुरुरवा) नायक तथा उर्वशी नायिका है।
* नाट्यशास्त्र में रम्भा, तिलोत्तमा आदि 24 अप्सराओं का वर्णन मिलता है।

अतः विकल्प (A) सही है।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (अङ्क-6)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-318

4. किस स्थान पर शकुन्तला की अँगूठी गिरी-
(A) हस्तिनापुर (B) कण्वाश्रम
(C) सोमतीर्थ (D) शचीतीर्थ

व्याख्या–

(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के द्वितीय अङ्क में हस्तिनापुर का वर्णन प्राप्त होता है संदेशवाहक 'करभक' संदेश लेकर वन में आता है।

(B) 'राजा दुष्यन्त' मृगया खेलते हुए कण्वाश्रम में प्रवेश करते हैं वहाँ उनका शकुन्तला से प्रेम एवं गान्धर्व विवाह होता है।

(C) महर्षि कण्व शकुन्तला की ग्रह शान्ति के लिए सोमतीर्थ गये हैं-

'शकुन्तलामतिथिसत्काराय नियुज्य दैवमस्याः प्रतिकूलं शमयितुं सोमतीर्थं गतः।'

(अभि.अङ्क-1)

(D) पञ्चम अङ्क में राजा दुष्यन्त को विश्वास दिलाने के लिए शकुन्तला अँगूठी दिखाना चाहती है किन्तु अपनी खाली अँगुली को देखकर कहती है- 'हा धिक् हा धिक्! अङ्गुलीयकशून्य मेऽङ्गुलि। तब गौतमी कहती हैं-

''नूनं ते शक्रावताराभ्यन्तरे शचीतीर्थसलिलं वन्दमानायाः प्रभ्रष्टमङ्गुलीयकम् ।''

शक्रावतार तीर्थ में शचीतीर्थ के जल की वन्दना करते हुए तेरी अँगूठी गिर गई।

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (अङ्क-5)- कपिलदेव द्विवेदी,पेज- 283

5. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में मातलि कौन था?
(A) दुष्यन्त का पुरोहित (B) दुष्यन्त का सेनापति
(C) इन्द्र का सारथी (D) कण्व का शिष्य

व्याख्या–

अभिज्ञानशाकुन्तलम् के प्रमुख पात्रों के नाम-

	पात्र		नाम
A.	दुष्यन्त का पुरोहित	-	सोमरात
B.	दुष्यन्त का सेनापति	-	भद्रसेन
C.	इन्द्र का सारथी	-	मातलि
D.	कण्व के शिष्य	-	वैखानस, शार्ङ्गरव, शारद्वत, गौतम, हारीत।

अभिज्ञानशाकुन्तलम् के अन्य पात्रों के नाम-

राजा का भृत्य	-	रैवतक, करभक, वातायन
ऋषि मारीच का शिष्य	-	गालव
दुष्यन्त का सारथी	-	सूत
कण्व की धर्मपुत्री	-	शकुन्तला
शकुन्तला की सखियाँ	-	अनसूया, प्रियंवदा
मेनका की सखी	-	सानुमती
द्वारपालिका	-	वेत्रवती

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0 पेज-99

6. अभिज्ञानशाकुन्तलम् की कथा महाभारत के किस पर्व से सम्बन्धित है?
(A) वनपर्व से (B) सभापर्व
(C) आदिपर्व (D) भीष्मपर्व

व्याख्या –

	पर्व	ग्रन्थ	विभाजन	कवि
(A)	वनपर्व	किरातार्जुनीयम्	18 सर्ग	भारवि
(B)	सभापर्व	शिशुपालवधम्	20 सर्ग	माघ
(C)	आदिपर्व	अभिज्ञानशाकुन्तलम्	7 अङ्क	कालिदास
(D)	भीष्मपर्व	भगवद्गीता	18 अध्याय	वेदव्यास

अतः विकल्प (C) सही है।

स्रोत- संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-335

7. मैत्रेय विदूषक किस नाटक से सम्बद्ध है?
(A) मृच्छकटिकम् (B) मालविकाग्निमित्रम्
(C) रत्नावली (D) स्वप्नवासवदत्तम्

व्याख्या-

	ग्रन्थ	विदूषक	विभाजन	लेखक
(A)	मृच्छकटिकम्	मैत्रेय	10 अङ्क	शूद्रक
(B)	मालविकाग्निमित्रम्	गौतम	5अङ्क	कालिदास
(C)	रत्नावली	वसन्तक	4 अङ्क	हर्षवर्धन
(D)	स्वप्नवासवदत्तम्	वसन्तक	6अङ्क	भास

अतः विकल्प (A) सही है।

स्रोत- मृच्छकटिकम्- रमाशङ्कर त्रिपाठी, भू0 पेज-43

8. 'शिशुपालवधम्' में कितने सर्ग हैं?
(A) 17 **(B) 18**
(C) 19 **(D) 20**

व्याख्या-

	विभाजन (सर्गों में)	ग्रन्थ (महाकाव्य)	लेखक	विशेषता
(A)	17	कुमारसम्भवम्	कालिदास	लघुत्रयी
(B)	18	किरातार्जुनीयम्	भारवि	बृहत्त्रयी
(C)	19	रघुवंशम्	कालिदास	लघुत्रयी
(D)	20	शिशुपालवधम्	माघ	बृहत्त्रयी

अतः विकल्प (D) सही है।

स्रोत- शिशुपालवधम् - तारिणीश झा,भू0 पेज-27

9. शिशुपालवध के किस सर्ग में यमुना नदी का वर्णन है?
(A) प्रथम सर्ग **(B) चतुर्थ सर्ग**
(C) द्वादश सर्ग **(D) त्रयोदश सर्ग**

व्याख्या–

(A) प्रथम सर्ग- इन्द्र का संदेश लेकर श्रीकृष्ण के घर देवर्षि नारद का आगमन

तदिन्द्रसन्दिष्टमुपेन्द्र! यद्वचः क्षणं मया विश्वजनीनमुच्यते।
समस्तकार्येषु गतेन धुर्यतामहिद्विषस्तद्भवतानिशम्यताम्॥
(शिशुपालवधम् 1.41)

(B) चतुर्थ सर्ग- विन्ध्याचल पर्वत के समान ऊँचे 'रैवतक' पर्वत का वर्णन-

गुर्वीरजस्रं दृषदः समन्तादुपर्युपर्यम्बुमुचां वितानैः।
विन्ध्यायमानं दिवसस्य भर्तुर्मार्गं पुना रोद्धुमिवोन्नमद्भिः॥
(शिशु. 4/2)

(C) द्वादश सर्ग- भगवान् श्रीकृष्ण की सेना के साथ मार्ग में 'यमुना' नदी का वर्णन।

सीमन्त्यमाना यदुभूभृतां बलैर्बभौ तरद्भिर्गवलासितद्युतिः।
सिन्दूरितानेकपकङ्कणाङ्किता तरङ्गिणी वेणिरिवायता भुवः॥
(शिशु. 12/75)

अतः विकल्प (C) सही है।

(D) त्रयोदश सर्ग- यमुना पार हो जाने पर भगवान् श्री कृष्ण का हस्तिनापुर में स्वागत।

यदुभर्तुरागमनलब्धजन्मनः प्रमदादमानिव पुरे महीयसि।
सहसा ततः स सहितोऽनुजन्मभिर्वसुधाधिपोऽभिमुखमस्य निर्ययौ॥
(शिशु. 13/2)

स्रोत- शिशुपालवध-तारिणीश झा, भू.पेज- 22,24,27

10. 'नैषधीयचरितम्' में कितने सर्ग स्वीकृत किये गये हैं?
(A) 18 **(B) 50**
(C) 22 **(D) 28**

व्याख्या-

	विभाजन	ग्रन्थ	लेखक
(A)	18 सर्ग	सौन्दरानन्द	अश्वघोष
(B)	50 सर्ग	हरविजयम्	रत्नाकर
(C)	22 सर्ग	नैषधीयचरितम्	श्रीहर्ष
(D)	28 सर्ग	बुद्धचरितम्	अश्वघोष

अतः विकल्प (C) सही है।

स्रोत- संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-224

11. 'शिवराजविजय' कितने निःश्वासों में विभक्त है?
(A) दश **(B) बारह**
(C) आठ **(D) छः**

व्याख्या–

	विभाजन	ग्रन्थ/विधा	ग्रन्थकार
(A)	दश अङ्क	मालतीमाधव/प्रकरण	भवभूति
(B)	बारह निःश्वास (तीन विराम)	शिवराजविजय/उपन्यास	अम्बिकादत्तव्यास
(C)	आठ उच्छ्वास	हर्षचरितम्(आख्यायिका)	बाणभट्ट
(D)	छः सर्ग	ऋतुसंहार (गीतिकाव्य)	कालिदास

अतः विकल्प (B) सही है।

स्रोत- शिवराजविजय-रमाशङ्कर मिश्र,भू.पेज-16

12. स्वप्नवासवदत्तम् नाटक में कुल कितने अङ्क हैं?
(A) पाँच (B) छः
(C) सात (D) आठ

व्याख्या–

	अङ्क	नाटक	लेखक
(A)	पाँच अङ्क	बालचरितम्	भास
		नागानन्द	हर्षवर्धन
		मालविकाग्निमित्रम्	कालिदास
(B)	छः अङ्क	स्वप्नवासवदत्तम्	भास
		अभिषेकनाटकम्	भास
		अविमारक	भास
		वेणीसंहारम्	भट्टनारायण
(C)	सात अङ्क	अभिज्ञानशाकुन्तलम्	कालिदास
		प्रतिमानाटक	भास
		उत्तररामचरितम्	भवभूति
		महावीरचरितम्	भवभूति
		मुद्राराक्षसम्	विशाखदत्त
(D)	आठ उच्छ्वास	दशकुमारचरितम्	दण्डी
		हर्षचरितम्	बाणभट्ट

अतः विकल्प (B) सही है।
स्रोत- संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-275

13. 'घोषवती वीणा' का सम्बन्ध किस नाटक से है?
(A) शिशुपालवधम् (B) मृच्छकटिकम्
(C) महावीरचरितम् (D) स्वप्नवासवदत्तम्

व्याख्या –

	ग्रन्थ	सम्बद्ध वस्तु
A.	शिशुपालवधम्	महती वीणा (नारद से सम्बद्ध)
B.	मृच्छकटिकम्	मिट्टी की गाड़ी (रोहसेन से सम्बद्ध)
C.	महावीरचरितम्	शार्ङ्ग धनुष (राम से सम्बद्ध)
D.	स्वप्नवासवदत्तम्	घोषवती वीणा (उदयन से सम्बद्ध)

अतः विकल्प D सही है।
स्रोत- स्वप्नवासवदत्तम्-तारिणीश झा, भू. पेज-21

14. 'प्रयाग प्रशस्ति' किसकी रचना है?
(A) प्रवरसेन (B) धोयी
(C) हरिषेण (D) बाणभट्ट

व्याख्या–

	ग्रन्थ	लेखक	काव्यविधा
A.	सेतुबन्ध	प्रवरसेन	महाकाव्य
B.	पवनदूत	धोयी	गीतिकाव्य
C.	प्रयागप्रशस्ति	हरिषेण	शिलालेख
D.	हर्षचरितम्	बाणभट्ट	आख्यायिका

अतः विकल्प C सही है।
स्रोत- संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-254

15. 'राघवविलास' किसकी रचना है?
(A) राजशेखर (B) कुन्तक
(C) भरतमुनि (D) विश्वनाथ

व्याख्या-

	ग्रन्थकार	रचनाएँ	समय
A.	राजशेखर	कर्पूरमञ्जरी बालरामायण बालभारत काव्यमीमांसा	नवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध
B.	कुन्तक	वक्रोक्तिजीवितम्	ग्यारहवीं शताब्दी
C.	भरतमुनि	नाट्यशास्त्र	100 ई.पू. 300 ई.
D.	विश्वनाथ	राघवविलास साहित्यदर्पण	चौदहवीं शताब्दी

अतः विकल्प D सही है।
स्रोत- साहित्यदर्पण- राजेन्द्र मिश्र, पेज-39

16. साहित्यदर्पण के रचयिता कौन हैं?
(A) पण्डितराज जगन्नाथ (B) राजशेखर
(C) मम्मट (D) आचार्य विश्वनाथ

व्याख्या-

	आचार्य	ग्रन्थ	विभाजन
A.	पण्डित राजजगन्नाथ	रसगङ्गाधर	चार आनन
B.	राजशेखर	काव्यमीमांसा	18 अध्याय
C.	आचार्य मम्मट	काव्यप्रकाश	10 उल्लास
D.	आचार्य विश्वनाथ	साहित्यदर्पण	10 परिच्छेद

अतः विकल्प D सही है।
स्रोत- साहित्यदर्पण-राजेन्द्रमिश्र, पेज-39

17. नाट्यशास्त्र किसकी रचना है?
(A) मम्मट **(B) पीयूषवर्ष जयदेव**
(C) भरतमुनि **(D) रुय्यक**

व्याख्या–

	ग्रन्थकार	ग्रन्थ/विभाजन	समय
A.	मम्मट	काव्यप्रकाश (10 उल्लास)	एकादश शताब्दी का उत्तरार्द्ध
B.	पीयूषवर्ष जयदेव	चन्द्रालोक (10 मयूख)	तेरहवीं शताब्दी का मध्य भाग
C.	भरतमुनि	नाट्यशास्त्र (36 अध्याय)	ई0पू0 द्वितीय शताब्दी
D.	रुय्यक	अलङ्कारसर्वस्व (28 अलङ्कारों का विवेचन)	बारहवीं शताब्दी

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- साहित्यदर्पण- डॉ0 राजेन्द्र मिश्र,पेज-14

18. 'गाथासप्तशती' किसकी रचना है?
(A) धनपाल **(B) अश्वघोष**
(C) हाल **(D) विश्वेश्वर पाण्डेय**

व्याख्या-

	ग्रन्थकार	ग्रन्थ	विशेष
A.	धनपाल	तिलकमञ्जरी	गद्यकाव्य
B.	अश्वघोष	बुद्धचरितम्	महाकाव्य
C.	हाल	गाथासप्तशती	गीतिकाव्य
D.	विश्वेश्वर पाण्डेय	मन्दारमञ्जरी	कथा

अतः विकल्प 'C' सही है।

स्रोत- संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-566

19. 'शिवशतक' के लेखक हैं -
(A) प्रवरसेन **(B) आनन्दवर्धन**
(C) गोकुलनाथ **(D) वाक्पति**

व्याख्या-

	लेखक	ग्रन्थ	अनुमानित समय
A.	प्रवरसेन	सेतुबन्ध	चतुर्थ शताब्दी
B.	आनन्दवर्धन	ध्वन्यालोक	850ई॰
C.	गोकुलनाथ	शिवशतक	500ई॰
D.	वाक्पति	गउडवहो	740ई॰

अतः विकल्प 'C' सही है।

स्रोत- संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-566

20. 'तिलकमञ्जरी' किसकी रचना है?
(A) जल्हण **(B) कल्हण**
(C) धनपाल **(D) अगस्त्य**

व्याख्या-

	ग्रन्थकार	ग्रन्थ	अनुमानित समय
A.	जल्हण	सोमपालविजय	1150ई॰
B.	कल्हण	राजतरंगिणी	1150ई॰
C.	धनपाल	तिलकमञ्जरी	10वीं शताब्दी
D.	अगस्त्य	बालभारत	1300ई॰

नोट- बालभारत राजशेखर की भी रचना है जो अगस्त्य के बालभारत से भिन्न है।

अतः विकल्प 'C' सही है।

स्रोत- संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास,कपिलदेव द्विवेदी, पेज-517

21. 'गङ्गायां घोषः' किस लक्षणा भेद का उदाहरण है-
(A) रूढि लक्षण लक्षणा
(B) रूढि उपादान लक्षणा
(C) प्रयोजन लक्षण लक्षणा
(D) प्रयोजन उपादान लक्षणा

व्याख्या-

आचार्य विश्वनाथ साहित्यदर्पण के द्वितीय परिच्छेद में लक्षणा का निरूपण करते हैं-

मुख्यार्थबाधे तद्युक्तो ययाऽन्योऽर्थः प्रतीयते।
रूढेः प्रयोजनाद्वाऽसौ लक्षणा शक्तिरर्पिता।

(सा.द.2.5)

A. रूढ़ि लक्षण लक्षणा- 'कलिङ्गः साहसिकः' का मुख्यार्थ है- 'कलिङ्ग साहसी' है। मुख्यार्थ का बाध होने पर रूढ़िवश जिस अन्य अर्थ की प्रतीति लक्षणा से होती है वह 'कलिङ्गः पुरुषः साहसिकः' है अर्थात् कलिङ्ग के लोग साहसी हैं।

B. रूढ़ि उपादान लक्षणा- 'श्वेतो धावति' का मुख्यार्थ है 'श्वेत दौड़ता है' यहाँ पर भी मुख्यार्थ का बाध होने पर रूढ़िवश जिस अन्य अर्थ की प्रतीति होती है वह 'श्वेतो अश्वः धावति' अर्थात् 'श्वेत अश्व दौड़ता है।'

C. प्रयोजन लक्षण लक्षणा- 'गङ्गायां घोषः' का मुख्यार्थ है- गङ्गा में घोष है, यहाँ पर भी मुख्यार्थ का बाध होने पर प्रयोजनवश जिस अन्य अर्थ की प्रतीति होती है वह 'गङ्गा तटेः घोषः' अर्थात् गङ्गा के तट (किनारे) घोष (बस्ती) है।

अतः विकल्प 'C' सही है।

D. प्रयोजन उपादान लक्षणा- 'कुन्ताः प्रविशन्ति' का मुख्यार्थ है 'भाले प्रवेश कर रहें हैं' भला निर्जीव भाला स्वतः कैसे प्रवेश कर सकता है यहाँ पर प्रयोजनवशात् जिस अन्य अर्थ की प्रतीति होती है वह 'कुन्तधारिणः पुरुषाः प्रविशन्ति' अर्थात् भाले से युक्त पुरुष प्रवेश कर रहें हैं।

स्रोत- साहित्यदर्पण- अभिराज राजेन्द्र मिश्र,पेज-164

22. 'कलिङ्गः साहसिकः' किस लक्षणा भेद का उदाहरण है?
A. रूढ़िवती साध्यवसाना उपादान लक्षणा
B. रूढ़िवती साध्यवसाना लक्षण लक्षणा
C. रूढ़िवती सारोपा सोपादान लक्षणा
D. इनमें से कोई नहीं

व्याख्या-

लक्षणा भेद	उदाहरण
A. रूढ़िवती साध्यवसाना उपादान लक्षणा	श्वेतो धावति। (श्वेत दौड़ता है)
B. रूढ़िवती साध्यवसाना लक्षण-लक्षणा	कलिङ्गः साहसिकः। (कलिङ्गवासी साहसी होते हैं)
C. रूढ़िवती सारोपा उपादान लक्षणा	अश्वः श्वेतो धावति। (सफेद घोड़ा दौड़ता है।)

अतः विकल्प B सही हैं।

स्रोत- साहित्यदर्पण- राजेन्द्र मिश्र, पेज-159

23. 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' किस आचार्य का कथन है?
(A) मम्मट **(B) आनन्दवर्धन**
(C) विश्वनाथ **(D) जगन्नाथ**

व्याख्या-

A. मम्मट- **'तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि'** (का.प्र.सूत्र-1) दोषों से रहित गुण युक्त कहीं-कहीं अलंकारों से रहित शब्द और अर्थ की समष्टि काव्य है।

B. आनन्दवर्धन- **काव्यस्यात्मा ध्वनिः।** (ध्वन्यालोक 1.1) काव्य की आत्मा ध्वनि है।

C. विश्वनाथ- **वाक्यं रसात्मकं काव्यम्।** (सा.द. 1.3) रसात्मक वाक्य को काव्य कहते हैं।

D. जगन्नाथ- **रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्।** (रस. 1.1)। रमणीय अर्थ का प्रतिपादन करने वाला अर्थात् जिस शब्द से रमणीय अर्थ का बोध हो, वह शब्द काव्य है।

अतः विकल्प (C) सही है।

स्रोत- साहित्यदर्पण-राजेन्द्र मिश्र, पेज-115

24. आचार्य विश्वनाथ ने काव्य का लक्षण साहित्यदर्पण के किस परिच्छेद में दिया है?
(A) प्रथम **(B) द्वितीय**
(C) तृतीय **(D) चतुर्थ**

व्याख्या –

प्रथम परिच्छेद	-	काव्यस्वरूप
द्वितीय परिच्छेद	-	वाक्यस्वरूप निरूपण
तृतीय परिच्छेद	-	रसादि निरूपण
चतुर्थ परिच्छेद	-	ध्वनिगुणीभूतव्यङ्ग्य
पञ्चम परिच्छेद	-	व्यञ्जनावृत्ति
षष्ठ परिच्छेद	-	दृश्यश्रव्यकाव्यनिरूपण
सप्तम परिच्छेद	-	दोषनिरूपण
अष्टम परिच्छेद	-	गुणनिरूपण
नवम परिच्छेद	-	रीतिनिरूपण
दशम परिच्छेद	-	शब्द एवं अर्थालङ्कार

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- साहित्यदर्पण- राजेन्द्र मिश्र, पेज-115

25. 'ध्वनिरात्मा काव्यस्य' इस परिभाषा से सम्बद्ध आचार्य हैं?
(A) विश्वनाथ **(B) दण्डी**
(C) वामन **(D) आनन्दवर्धन**

व्याख्या–

A. विश्वनाथ - आचार्य विश्वनाथ साहित्यदर्पण के प्रथम परिच्छेद में काव्य का लक्षण करते हैं- **'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्'** (सा.द.1/3) रसात्मक वाक्य को काव्य कहते हैं।

B. दण्डी - आचार्य दण्डी काव्यादर्श के प्रथम परिच्छेद में काव्य का लक्षण करते हैं **'शरीरं तावदिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली'** (काव्यादर्श 1/10)
इष्ट सरस मनोहरतया वर्णन करने के लिए अभिप्रेत अर्थ से युक्त शब्द को काव्य का शरीर कहा जाता है।
इष्ट अर्थ से युक्त पद समुदाय को काव्य कहा जाता है।

C. वामन- आचार्य वामन काव्यालङ्कार के प्रथम अधिकरण के द्वितीय अध्याय में काव्य का लक्षण करते हैं- **'रीतिरात्मा काव्यस्य'** (काव्यालङ्कारसूत्र 1.2.6) काव्य की आत्मा रीति है।

D. आनन्दवर्धन- आचार्य आनन्दवर्धन ध्वन्यालोक के प्रथम उद्योत में काव्य का लक्षण करते हैं- **'काव्यस्यात्मा ध्वनिः'** (ध्वन्यालोक 1/1) काव्य की आत्मा ध्वनि है।
अतः विकल्प (D) सही है।

स्रोत- काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, भूमिका पेज-18

26. 'विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः' किससे सम्बन्धित है?
(A) आचार्य मम्मट **(B) आचार्य विश्वनाथ**
(C) आचार्य भरत **(D) आचार्य रुद्रट**

व्याख्या –

A. **आचार्य मम्मट-** आचार्य मम्मट ने रस का लक्षण काव्यप्रकाश के चतुर्थ उल्लास में किया है-
विभावा अनुभावास्तत् कथ्यन्ते व्यभिचारिणः।
व्यक्तः स तैर्विभावाद्यैः स्थायीभावो रसः स्मृतः॥
(का.प्र. सूत्र-43)
जो लोक में कार्य, कारण और सहकारी कारण कहे जाते हैं वहीं काव्य में क्रमशः विभाव, अनुभाव और व्यभिचारी भाव कहलाते हैं,उन विभाव आदि से व्यक्त वह रति आदि रूप स्थायीभाव रस कहलाता है।

B. **आचार्य विश्वनाथ-** आचार्य विश्वनाथ ने रस का लक्षण साहित्यदर्पण के तृतीय परिच्छेद में किया है-
अविरुद्धा विरुद्धा वा यं तिरोधातुमक्षमाः।
(सा.द. 3/174)
अविरुद्ध अथवा विरुद्ध भाव जिसे छिपा न सके वह आस्वाद का मूलभूत भाव स्थायी है।

C. **आचार्य भरत-** आचार्य भरत ने नाट्यशास्त्र के छठवें अध्याय में रस का लक्षण किया है-
विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः। (नाट्य.6/32)
विभाव, अनुभाव तथा व्यभिचारी भावों के संयोग से रस निष्पत्ति होती है।

D. **आचार्य रुद्रट-** आचार्य रुद्रट काव्यालङ्कार के बारहवें अध्याय में रसविषयक काव्य के विषय में कहते हैं-
तस्मात्तत्कर्तव्यं यत्नेन महीयसा रसैर्युक्तम्।
उद्वेजनमेतेषां शास्त्रवदेवान्यथा हि स्यात्॥
(काव्या.-12/2)
बड़े प्रयत्न से रसपेशल काव्य की रचना करनी चाहिए। रस के अभाव में शास्त्रों के समान काव्यों से उद्वेग उत्पन्न होने लगता है।
अतः विकल्प (C) सही है।

स्रोत- नाट्यशास्त्र (6.32)- ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज-182

27. अभिव्यक्ति के समर्थक हैं-
(A) भट्टनायक **(B) अभिनवगुप्त**
(C) भट्टलोल्लट **(D) शंकुक**

व्याख्या- आचार्य भरत के रससूत्र **'विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः'** में निष्पत्ति शब्द का अर्थ विभिन्न आचार्यों ने अलग-अलग किया है-

A. भट्टनायक- इनका सिद्धान्त **'भुक्तिवाद'** के नाम से जाना जाता है। सामान्यतः ये ध्वनि विरोधी आचार्य हैं इनके अनुसार रस की प्रतीति सामाजिकों को होती है। इन्होंने शब्द में अभिधा-व्यापार, भावकत्व-व्यापार तथा भोजकत्व व्यापार तीन प्रकार का व्यापार माना है।

B. अभिनवगुप्त- अभिनवगुप्त काश्मीरी आचार्य हैं। इन्होनें आनन्दवर्धन के ध्वन्यालोक पर अभिनवभारती नामक टीका लिखी। ये **'अभिव्यक्तिवाद'** के समर्थक हैं। आचार्य अभिनवगुप्त निष्पत्ति का अर्थ अभिव्यक्ति तथा संयोगात् का अर्थ व्यङ्ग्य-व्यञ्जकभावरूपात् किया है।
अतः विकल्प B सही है।

C. भट्टलोल्लट- आचार्य लोल्लट का सिद्धान्त '**उत्पत्तिवाद** के नाम से जाना जाता है। इनके अनुसार रस की प्रतीति अनुकार्य राम आदि में होती है। संयोग का अर्थ उत्पाद्य-उत्पाद्यक शब्द भाव तथा निष्पत्ति का उत्पत्ति अर्थ किया है।

D. भट्टशङ्कुक- आचार्य शङ्कुक का सिद्धान्त '**अनुमितिवाद**' के नाम से जाना जाता है। ये रस को अनुमेय मानते हैं। इन्होंने चित्रतुरगादि न्याय की कल्पना की। ये रस रूप साध्य में अनुमाप्य-अनुमापक भाव को माना है।

स्रोत- दशरूपक- रमाशंकर त्रिपाठी, भू.पेज-15

28. मूलतः 'बुद्धचरितम्' की सर्ग संख्या का उल्लेख मिलता है?
(A) 28 (B) 17
(C) 18 (D) 50

व्याख्या–

	सर्ग संख्या	ग्रन्थ	ग्रन्थकार
A.	28 सर्ग	बुद्धचरितम्	अश्वघोष
B.	17 सर्ग	कुमारसम्भवम्	कालिदास
C.	18 सर्ग	सौन्दरानन्द	अश्वघोष
	18 सर्ग	किरातार्जुनीयम्	भारवि
D.	50 सर्ग	हरविजयम्	रत्नाकर

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-169

29. 'बुद्धचरित' महाकाव्य में महात्माबुद्ध को बुद्धत्व की प्राप्ति का वर्णन किस सर्ग में हुआ है?
(A) 9 वें सर्ग में (B) 11 वें सर्ग में
(C) 14 वें सर्ग में (D) 26 वें सर्ग में

व्याख्या–

	सर्ग	वर्णन
A.	9 वें सर्ग में	कुमार (सिद्धार्थ) का अन्वेषण।
B.	11 वें सर्ग में	काम की निन्दा का वर्णन
C.	14 वें सर्ग में	बुद्धत्व की प्राप्ति का वर्णन
D.	26 वें सर्ग में	महापरिनिर्वाण का वर्णन

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-169

30. महाकाव्य में कम से कम कितने सर्ग होने चाहिए?
(A) 4 (B) 5-10
(C) 8 (D) 10

व्याख्या-

A. आचार्य विश्वनाथ साहित्यदर्पण के षष्ठ परिच्छेद में नाटिका का लक्षण देते हुए कहते हैं कि नाटिका में चार अङ्क होने चाहिए- "**नाटिका क्लृप्तवृत्ता स्यात्स्त्रीप्राया चतुरङ्किका**" (सा.द. 6/269) नाटिका की कथा कविकल्पित होती है इसमें अधिकांश स्त्रियाँ होती हैं इसमें चार अङ्क होते हैं- **जैसे-** रत्नावली

B. आचार्य विश्वनाथ साहित्यदर्पण के षष्ठ परिच्छेद में नाटक का लक्षण करते हुए कहते हैं कि नाटक में पाँच से दस अङ्क होनें चाहिए- **नाटकं ख्यातवृत्तं स्यात्पञ्चसन्धिसमन्वितम् --- पञ्चादिका दशपरास्तत्राङ्काः परिकीर्तिताः॥** (सा.द.6/7-8) नाटक की कथा ख्यात अर्थात् रामायणादि इतिहास में प्रसिद्ध होनी चाहिए इसमें पाँच से लेकर दस अङ्क होते हैं-
जैसे- उत्तररामचरित, वेणीसंहार, मुद्राराक्षस।

C. आचार्य विश्वनाथ के अनुसार महाकाव्य का लक्षण निम्नवत् है- **सर्गबन्धो महाकाव्यं तत्रैको नायकः सुरः---- नातिस्वल्पा नातिदीर्घाः सर्गा अष्टाधिका इह॥** (सा०द० 6/315, 320) जिसमें सर्गों का निबन्धन हो वह महाकाव्य है इसमें एक देवता या सद्वंश क्षत्रिय राजा जिसमें धीरोदात्तत्वादि गुण हो, नायक होता है। इसमें न बहुत छोटे, न बहुत बड़े आठ से अधिक सर्ग होते हैं। **जैसे-** रघुवंशम्, कुमारसम्भवम्।
अतः विकल्प C सही है।

D. लास्य के दस अङ्ग होते हैं- गेयपद, स्थितपाठ्य,आसीन, पुष्पगण्डिका, प्रच्छेदक, त्रिगूढ, सैन्धव, द्विगूढक, उत्तमोत्तमक उक्त-प्रत्युक्त।

स्रोत- साहित्यदर्पण (6.7-8)

31. महाकाव्य में अङ्गीरस नहीं होता है-
(A) शृङ्गार (B) वीर
(C) करुण (D) रौद्र

व्याख्या–

A. आचार्य विश्वनाथ (साहित्यदर्पण)- 'एक एव भवेदङ्गी शृङ्गारो वीर एव वा' (सा.द. 6/10)

नाटक में एक ही प्रधान (अङ्गी/मुख्य रस होता है। शृङ्गार अथवा वीर रस।

जैसे-

अभिज्ञानशाकुन्तलम् में शृङ्गार, वेणीसंहार में वीर रस।

'शृङ्गारवीरशान्तानामेकोऽङ्गी रस इष्यते।

(सा.द. 6/317)

B. महाकाव्य में अङ्गी- महाकाव्य में शृङ्गार, वीर अथवा शान्तरस में से एक अङ्गी रस होता है।

जैसे- 1. नैषधीयचरितम् में- शृङ्गार रस

2. शिशुपालवधम् में वीररस

3. महाभारत में शान्तरस

C. अङ्क में अङ्गी रस-

रसोऽत्र करुणः स्थायी बहुस्त्री परिदेवितम्।' (सा. द. 6/251) नाटक आदि दस रूपकों में अङ्क नामक रूपक में स्थायी रस, करुण रस होता है।

D. डिम में अङ्गी रस- षड्रसाःशान्तहास्यशृङ्गारवर्जिताः। डिम नामक रूपक में छः रस होते हैं शान्त, हास्य एवं शृङ्गार को छोड़कर।

अतः विकल्प D सही है।

रूपक	उदाहरण	रस
नाटक	अभिज्ञानशाकुन्तलम्	शृङ्गार
प्रकरण	मृच्छकटिकम्	शृङ्गार
भाण	कर्पूरचरितम्	शृङ्गार
व्यायोग	सौगन्धिकाहरणम्	हास्य,शान्त, शृङ्गार को छोड़कर सभी रस
समवकार	समुद्रमन्थनम्	वीररस
डिम	त्रिपुरदाह	रौद्ररस
ईहामृग	रुक्मिणीहरणम्	शृङ्गार
वीथी	मालविका	शृङ्गार
अङ्क	शर्मिष्ठाययाति	करुण
प्रहसन	हास्यचूडामणि	हास्य

(साहित्यदर्पण के अनुसार)

स्रोत- संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव दिवेद्वी, पेज- 132

32. 'ऋतुसंहार' है-
(A) महाकाव्य (B) गद्यकाव्य
(C) गीतिकाव्य (D) नाटक

व्याख्या–

	विधा	ग्रन्थ/विभाजन	लेखक
A.	महाकाव्य	रघुवंशम् (19 सर्ग)	कालिदास
		रावणवध (22 सर्ग)	भट्टि
		किरातार्जुनीयम् (18 सर्ग)	भारवि
B.	गद्यकाव्य	कादम्बरी (कथा) (दो भाग)	बाणभट्ट
		दशकुमारचरितम् (8 उच्छ्वास)	दण्डी
C.	गीतिकाव्य	ऋतुसंहार (6सर्ग)	कालिदास
		मेघदूतम् (दो भाग, पूर्व-उत्तर)	कालिदास
D.	नाटक	वेणीसंहारम् (6 अङ्क)	भट्टनारायण
		मुद्राराक्षस (7अङ्क)	विशाखदत्त

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी,पेज-525

33. 'रीतिरात्मा काव्यस्य' किसकी उक्ति है?
(A) मम्मट (B) कुन्तक
(C) विश्वनाथ (D) वामन

व्याख्या–

A. आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश के प्रथमोल्लास में काव्य का लक्षण करते हैं-

'तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि।'

(का.प्र.सूत्र-1)

दोषों से रहित गुणों से युक्त यदि कहीं पर अलङ्कार न भी हो तो शब्द और अर्थ की समष्टि काव्य है।

B. आचार्य कुन्तक वक्रोक्तिजीवितम् के प्रथमोन्मेष में काव्य का लक्षण करते हैं- **वक्रोक्तिः काव्यजीवितम्।** वक्रोक्ति काव्य की आत्मा है।

C. आचार्य विश्वनाथ काव्य का लक्षण साहित्यदर्पण के प्रथम परिच्छेद में करते हैं- **वाक्यं रसात्मकं काव्यम्।** (साहित्यदर्पण 1/3) रसात्मक वाक्य काव्य है।

D. आचार्य वामन काव्यालङ्कारसूत्रवृत्ति के प्रथम अधिकरण के द्वितीय अध्याय में काव्य का लक्षण करते हैं- **रीतिरात्मा काव्यस्य।** (काव्यालंकारसूत्रवृत्ति 1.2.6) रीति काव्य की आत्मा है।

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- काव्यालङ्कारसूत्रवृत्ति (1.2.6)- हरगोविन्द शास्त्री, पेज-14

34. उत्पत्तिवाद किससे सम्बन्धित है?
(A) भट्टलोल्लट **(B) भट्टशङ्कुक**
(C) भट्टनायक **(D) अभिनवगुप्त**

व्याख्या–
आचार्य भरतमुनि के रससूत्र 'विभावानुभाव व्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः' की व्याख्या विभिन्न आचार्यों ने निम्नवत् किया है-

	आचार्य	सिद्धान्त	रसप्रतीति
A.	भट्टलोल्लट	उत्पत्तिवाद	उत्पाद्य-उत्पादक भाव
B.	भट्टशङ्कुक	अनुमितिवाद	अनुमाप्य-अनुमापक
C.	भट्टनायक	भुक्तिवाद	भोज्य-भोजक भाव
D.	अभिनवगुप्त	अभिव्यक्तिवाद	व्यङ्ग्य-व्यञ्जक भाव

अतः विकल्प A सही है।
स्रोत- साहित्यदर्पण- राजेन्द्र मिश्र, भू पेज-17

35. अनुमितिवाद के समर्थक हैं-
(A) भट्टलोलट **(B) भट्टशंकुक**
(C) भट्टनायक **(D) अभिनवगुप्त**

व्याख्या–

A.	भट्टलोल्लट	अभिधावादी	मीमांसक	अष्टम-नवम शताब्दी
B.	भट्टशङ्कुक	अनुमितिवाद	नैयायिक	नवम शताब्दी का प्रारम्भ
C.	भट्टनायक	भुक्तिवादी	सांख्य	दशमशताब्दी
D.	अभिनवगुप्त	अभिव्यक्तिवादी	शैव आचार्य	दशमशताब्दी का उत्तरार्ध एकादश शताब्दी का पूर्वार्ध।

अतः विकल्प B सही है।
स्रोत- दशरूपक- रमाशंकर त्रिपाठी, भू. पेज-14

36. किसने 'वक्रोक्ति' को काव्य की आत्मा कहा है?
(A) कुन्तक **(B) क्षेमेन्द्र**
(C) भामह **(D) दण्डी**

व्याख्या-
A. कुन्तक- आचार्य कुन्तक वक्रोक्तिजीवितम् के प्रथमोन्मेष में काव्य का लक्षण करते हैं- **'वक्रोक्तिः काव्यजीवितम्।'** वक्रोक्ति काव्य की आत्मा है।

B. क्षेमेन्द्र- आचार्य क्षेमेन्द्र औचित्यविचारचर्चा में काव्य का लक्षण इस प्रकार करते हैं **'औचित्यं रससिद्धस्य स्थिरं काव्यजीवितम्।'** (औचित्यविचारचर्चा श्लोक-5) शृंगारादि रसों से प्रसिद्ध काव्य का जीवन औचित्य ही है।

C. भामह- आचार्य भामह काव्यालंकार में काव्य का लक्षण करते हैं-**'शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्।'** (काव्या. 1/16) भामह ने शब्द और अर्थ दोनों के सहभाव को काव्य माना है।

D. दण्डी- आचार्य दण्डी काव्यादर्श के प्रथम परिच्छेद में काव्य का लक्षण करते हैं- **'शरीरं तावदिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली।'**(काव्यादर्श 1/10) इष्ट सरस मनोहरतया वर्णन करने के लिए अभिप्रेत अर्थ से युक्त शब्द को काव्य का शरीर कहा जाता है इष्ट अर्थ से युक्त पद समुदाय को काव्य कहा जाता है।

अतः विकल्प A सही है।
स्रोत- काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, भू. पेज-17

37. सभी रूपकों का सामान्य लक्षण किस रूपक के समान है-
(A) भाण **(B) प्रहसन**
(C) प्रकरण **(D) नाटक**

व्याख्या–
आचार्य विश्वनाथ साहित्यदर्पण के षष्ठ परिच्छेद में रूपक का लक्षण तथा भेदोपभेद का वर्णन करते हैं- रूपक के दश भेद हैं-

नाटकमथ प्रकरणं भाणव्यायोगसमवकारडिमाः।
ईहामृगाङ्कवीथ्यः प्रहसनमिति रूपकाणि दश॥
(सा.द.6.3)

* **नाटक-**
1. नाटकं ख्यातवृत्तं स्यात् पञ्चसन्धिसमन्वितम्।
विलासद्धर्यादिगुणवद्युक्तं नानाविभूतिभिः (सा.द. 6/7)
2. प्रख्यातवंशो राजर्षिर्धीरोदात्तः प्रतापवान्।
दिव्योऽथ दिव्यादिव्यो वा गुणवान्नायको मतः।।(सा.द. 6.9)
3. एक एव भवेदङ्गी शृङ्गारो वीर एव वा।
अङ्गमन्ये रसाः सर्वे कार्यो निर्वहणेऽद्भुतः।।(सा.द.6.10)

नाटक की कथावस्तु इतिहास प्रसिद्ध, पाँच सन्धियों से युक्त, गुणों एवं अनेक प्रकार की विभूतियों से युक्त, प्रख्यात वंश वाला राजर्षि, प्रतापी, दिव्य गुण वाला नायक,शृङ्गार या वीर अङ्गीरस एवं अन्य सभी अप्रधान (गौण) रस होते हैं। नाटक का सामान्य लक्षण प्रायः अन्य सभी रूपकों में मिलता है।

प्रकरण- 'शेषं नाटकवत्सन्धिप्रवेशकरसादिकम्' (दश.3.40) प्रकरण में सन्धि, प्रवेशक तथा रस आदि नाटक के समान होते हैं।

भाण- 'भूयसा भारती वृत्तिरेकाङ्गं वस्तुकल्पितम्' (दश.3.5) भाण नामक रूपक में प्रायः भारती वृत्ति का प्रयोग होता है वह एक अंक का होता है तथा कथावस्तु कविकल्पित होती है। प्रहसन भी भाण की तरह ही होता है।

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत-संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-437

38. संस्कृत नाट्यशास्त्र में रूपक के कितने भेद हैं?

(A) 8 **(B) 10**

(C) 4 **(D) 13**

व्याख्या–

A. आचार्य भरतमुनि के नाट्यशास्त्र के अनुसार नाटक में आठ रस होते हैं-

श‍ृङ्गारहास्यकरुणरौद्रवीरभयानकाः।
बीभत्साद्भुतसंज्ञौ चेत्यष्टौ नाट्ये रसाः स्मृताः।।

(नाट्य. 6/15)

श‍ृङ्गार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, बीभत्स, अद्भुत ये आठ रस नाटक में होते हैं।

B. दशरूपक के अनुसार रूपक के दस भेद हैं-

नाटकं सप्रकरणं भाणः प्रहसनं डिमः।
व्यायोगसमवकारौ वीथ्यङ्केहामृगा इति।। (दश. 1/8)

1. नाटक 2. प्रकरण 3. भाण 4. प्रहसन 5. डिम 6.व्यायोग 7. समवकार 8. वीथी 9. अङ्क 10. ईहामृग।

C. दशरूपक के अनुसार नायक के चार भेद होते हैं-

''भेदैश्चतुर्धा ललितशान्तोदात्तोद्धतैरयम्।''

1. धीरललित 2. धीरप्रशान्त 3. धीरोदात्त 4. धीरोद्धत

D. धनञ्जयकृत 'दशरूपक' के अनुसार नायिका के मुख्य तीन भेद हैं एवं कुल तेरह भेद हैं।

स्वान्या साधारणस्त्रीति तद्गुणा नायिका त्रिधा।

(दश. 2/15)

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-264

39. संस्कृत नाट्यशास्त्र में उपरूपकों के कितने भेद हैं?

(A) 10 **(B) 8**

(C) 18 **(D) 33**

व्याख्या-

आचार्य धनञ्जय ने दशरूपक में रूपक के दश भेदों का वर्णन किया है-

नाटकं सप्रकरणं भाणः प्रहसनं डिमः।
व्यायोगसमवकारौ वीथ्यङ्केहामृगा इति।।

(दश.1.8)

A. रूपक के दस भेद- 1. नाटक 2. प्रकरण 3. भाण 4. व्यायोग 5. प्रहसन 6. डिम 7. समवकार 8. ईहामृग 9. वीथी 10. अङ्क।

B. आचार्य धनञ्जय दशरूपक के चतुर्थ प्रकाश में नाटक के आठ सात्त्विक भावों का उल्लेख करते हैं-

स्तम्भप्रलयरोमाञ्चाः स्वेदो वैवर्ण्यवेपथू।
अश्रुवैस्वर्यमित्यष्टौ, स्तम्भोऽस्मिन्निष्क्रियाङ्गता।।

(दश. 4.5-6)

सात्त्विक भाव आठ प्रकार के होते हैं-

1. स्तम्भ 2. प्रलय 3. रोमाञ्च 4. श्वेद 5. वैवर्ण्य 6. वेपथु 7. अश्रु 8. वैश्वर्य।

C. उपरूपक के 18 भेद होते हैं- 1. नाटिका 2. त्रोटक 3. गोष्ठी 4. सट्टक 5. नाट्य-रासक 6. प्रस्थान 7. उल्लाप्य 8.काव्य 9. प्रेङ्खण 10.रासक 11. संलापक 12. श्रीगदित 13. शिल्पक 14. विलासिका 15. दुर्मल्लिका 16. प्रकरणी 17. हल्लीसक 18. भाणिका।

D. आचार्य धनञ्जय दशरूपक के चतुर्थ प्रकाश में व्यभिचारी भावों का उल्लेख करते हुए उनकी संख्या 33 बताते हैं- 1. निर्वेद 2.ग्लानि 3. शङ्का 4. श्रम 5.धृति 6. जडता 7. हर्ष 8. दैन्य 9. उग्रता 10. चिंता 11. त्रास 12. असूया 13. अमर्ष 14. गर्व 15. स्मृति 16. मरण 17. मद 18. सुप्त 19. निद्रा 20. विवोध 21. व्रीडा 22. अपस्मार 23. मोह 24. मति 25. अलसता 26. आवेग 27. तर्क 28. अवहित्था 29. व्याधि 30. उन्माद 31. विषाद 32. औत्सुक्य 33. चपलता

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-264

40. 'विक्रमोर्वशीयम् ' का नायक है?

(A) उदयन **(B) अग्निमित्र**

(C) भीम **(D) पुरुरवा**

व्याख्या-

नायक/नायिका	ग्रन्थ	रचनाकार
उदयन/वासवदत्ता	स्वप्नवासवदत्तम्	भास
अग्निमित्र/मालविका	मालविकाग्निमित्रम्	कालिदास
भीम/द्रौपदी	वेणीसंहारम्	भट्टनारायण
पुरुरवा/उर्वशी	विक्रमोर्वशीयम्	कालिदास
श्रीकृष्ण	शिशुपालवधम्	माघ
चारुदत्त/वसन्तसेना, धूता	मृच्छकटिकम्	शूद्रक
जीमूतवाहन/मलयवती	दशकुमारचरितम्	दण्डी
अर्जुन/द्रौपदी	किरातार्जुनीयम्	भारवि
चन्द्रापीड/कादम्बरी	कादम्बरी (कथा)	बाणभट्ट
श्रीराम/सीता	उत्तररामचरितम्	भवभूति
चन्द्रपाल	कर्पूरमञ्जरी	राजशेखर
भगवान् बुद्ध	बुद्धचरितम्	अश्वघोष
शिव/पार्वती	कुमारसम्भवम्	कालिदास

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-329

41. 'य' वर्ण का उच्चारणस्थान है-
(A) कण्ठ **(B) तालु**
(C) मूर्धा **(D) दन्त**

व्याख्या-

A. **अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः -** अ तथा कवर्ग (क ख ग घ ङ) तथा ह विसर्ग का उच्चारण स्थान कण्ठ है।

B. **इचुयशानां तालु-** इ, चवर्ग (च छ ज झ ञ) तथा य, श का उच्चारणस्थान तालु है।

C. **ऋटुरषाणां मूर्धा-** ऋ, ट वर्ग (ट ठ ड ढ ण) र, ष का उच्चारण स्थान मूर्धा है।

D. **लृतुलसानां दन्ताः-** लृ, तवर्ग, (त थ द ध न) ल, स का उच्चारण स्थान दन्त है।

अतः विकल्प B सही है।

* **उपूपध्मानीयानामोष्ठौ -** अठारह प्रकार के उकार, पवर्ग, उपध्मानीय का उच्चारणस्थान ओष्ठ है।
* **ञमङणनानां नासिका च-** ञ्, म्, ङ्, ण्, न् का उच्चारणस्थान नासिका भी होता है।
* **एदैतोः कण्ठतालुः -** ए और ऐ का उच्चारणस्थान कण्ठ और तालु से होता है।
* **ओदौतोः कण्ठोष्ठम्-** ओ, औ का उच्चारणस्थान कण्ठ और ओष्ठ है।
* **वकारस्य दन्तोष्ठम्-** वकार का उच्चारणस्थान दन्त और ओष्ठ है।
* **जिह्वामूलीयस्य जिह्वामूलम्-** जिह्वामूलीय विसर्ग का उच्चारणस्थान जिह्वामूल है।
* **नासिकाऽनुस्वारस्य-** अनुस्वार का उच्चारण नासिका के सहयोग से होता है। अतः अनुस्वार का उच्चारणस्थान नासिका है।

स्रोत- संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज-41

42. 'ग' वर्ण का उच्चारण स्थान है-
(A) ओष्ठ **(B) दन्त ओष्ठ**
(C) कण्ठ **(D) तालु**

व्याख्या-

A. उपूपध्मानीयानामोष्ठौ- उ, पवर्ग (प् फ् ब् भ् म्),उपध्मानीय विसर्ग का उच्चारणस्थान ओष्ठ है।

B. वकारस्य दन्तोष्ठम्- व का उच्चारण स्थान दन्त + ओष्ठ है।

C. अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः- अ, कवर्ग (क ख ग घ ङ) ह, विसर्ग का उच्चारणस्थान कण्ठ है।

D. इचुयशानां तालु- इ, चवर्ग (च, छ, ज, झ, ञ,) य, श, का उच्चारणस्थान तालु है।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज-41

43. 'दैत्य + अरिः' में कौन सी सन्धि है?
(A) गुण सन्धि **(B) दीर्घ सन्धि**
(C) वृद्धि सन्धि **(D) अयादि सन्धि**

व्याख्या–

	सूत्र/सन्धि नाम	सन्धि विच्छेद	उदाहरण
A.	आद्गुणः	उप+इन्द्रः	उपेन्द्रः
	गुण सन्धि	गङ्गा+उदकम्	गङ्गोदकम्
	अ/आ+इ/ई=ए	महा+ऋषिः	महर्षिः
	अ/आ+उ/ऊ = ओ	तव+लृकारः	तवल्कारः
	अ/आ+ऋ+ॠ= अर्	गण+ईशः	गणेशः
	अ/आ+लृ = अल्	रमा+ ईशः	रमेशः
		हित + उपदेशः	हितोपदेशः
		पर+उपकारः	परोपकारः
		पीन+ऊरुः	पीनोरुः

B. अकः सवर्णे दीर्घः दीर्घ सन्धि अ/आ+अ/आ=आ उ/ऊ+उ /ऊ=ऊ ए/ऐ+ए /ए =ऐ ओ/औ+औ/औ=औ इ/ई+इ+ई=ई	सुर+ अरिः	सुरारिः
	दैत्य+अरिः	**दैत्यारिः**
	हिम+आलयः	हिमालयः
	श्री+ईशः	श्रीशः
	गुरु+उपदेशः	गुरूपदेशः
	लघु+ऊर्मिः	लघूर्मिः
	गिरि+इन्द्रः	गिरीन्द्रः
	क्षिति+ईशः	क्षितीशः
	सुधी+इन्द्रः	सुधीन्द्रः
C. वृद्धिरेचि	अद्य+एव	अद्यैव
	तत्र+एव	तत्रैव
	देव+ऐश्वर्यम्	देवैश्वर्यम्
वृद्धि सन्धि	महा+ऐश्वर्यम्	महैश्वर्यम्
अ/आ+ए/ऐ =ऐ	तथा+एव	तथैव
	विद्या+ऐश्वर्यम्	विद्यैश्वर्यम्
अ/अ+ओ/औ=औ	तण्डुल+ओदनम्	तण्डुलौदनम्
	महा+ओषधिः	महौषधिः
D. एचोऽयवायावः	शे+अनम्	शयनम्
अयादि सन्धि	ने+अनम्	नयनम्
ए/ऐ/ओ/औ+कोई	नै+अकः	नायकः
स्वर=क्रमशः	भो+अति	भवति
अय्, आय्, अव्,आव् ये	हरे+ए	हरये
आदेश प्राप्त होंगे	वटो+ऋक्षः	वटवृक्षः
	विष्णो+ए	विष्णवे
	पौ+अकः	पावकः

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका- बाबूराम सक्सेना,पेज-46

44. 'हरिहरौ' शब्द का विग्रह होगा-

(A) हरि च हरौ च **(B) हरिश्च हरश्च**

(C) हरि च हरौ **(D) हरि हरौ च**

व्याख्या–

* **चार्थे द्वन्द्वः** (2/2/29) यदि दो या दो से अधिक संज्ञाएँ 'च' से जोड़ी जाय तो वह द्वन्द्व समास कहलाता है द्वन्द्व समास के मुख्यतः दो भेद हैं-

1. **इतरेतरद्वन्द्व-** हरिश्च+हरश्च = हरिहरौ, शिवश्च केशवश्च = शिवकेशवौ
2. **समाहार द्वन्द्व-** पाणिश्च पादौ च तेषां समाहारः - पाणिपादम्, अहिश्च+नकुलश्च = अहिनकुलम्

* एकशेष द्वन्द्व- यद्यपि एकशेष वृत्ति है फिर भी इसे द्वन्द्व समास के अन्तर्गत माना जाता है- माता च+पिता च = पितरौ, श्वश्रूश्च + श्वसुरश्च = श्वसुरौ।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड-4) पेज-235

45. 'सप्तर्षयः' में कौन सा समास है?

(A) अव्ययीभाव **(B) तत्पुरुष**

(C) द्वन्द्व **(D) बहुव्रीहि**

व्याख्य–

A. अव्ययीभाव- अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि व्यृद्ध्यर्थाभावात्यया-सम्प्रति - शब्दप्रादुर्भाव-पश्चाद्यथाऽऽनुपूर्व्य यौगपद्य- सादृश्य-सम्पत्ति- साकल्यान्तवचनेषु (2.1.6)

सामासिकपद	अर्थ	लौकिक विग्रह
अधिहरि	हरि में (विभक्ति अर्थ में)	हरौ इति
उपकृष्णाम्	कृष्ण के समीप (समीप अर्थ में)	कृष्णस्य समीपम्
दुर्यवनम्	यवनों की समृद्धि का अभाव	यवनानां व्यृद्धिः
निर्मक्षिकम्	मक्खियों का अभाव	मक्षिकाणाम् अभावः
अतिहिमम्	हिम का 'नाश'(अत्यय)	हिमस्य अत्ययः
अतिनिद्रम्	निद्रा का समय 'प्रसिद्धि'	निद्रा सम्प्रति न युज्यते
अनुविष्णु	विष्णु के पीछे (पश्चात् अर्थ में)	विष्णोः पश्चात्
प्रत्यर्थम्	प्रत्येक अर्थ के प्रति (वीप्सा अर्थ)	अर्थम्-अर्थं प्रति
यथाशक्ति	शक्ति के अनुसार	शक्तिम् अनति क्रम्य
B. दिक्संख्ये संज्ञायाम् (2.1.49)		
सप्तर्षयः	सात ऋषियों की संज्ञा	सप्त च ते ऋषयः
* द्वितीया श्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नैः		(2.1.23)
कृष्णश्रितः	कृष्ण का आश्रय लिया हुआ	कृष्णं श्रितः
अरण्यातीतः	वन को पार किया हुआ	अरण्यम् अतीतः
कूपपतितः	कुएँ में गिरा हुआ	कूपं पतितः
ग्रामगतः	गाँव गया हुआ	ग्रामं गतः
दुःखापन्नः	दुःख को प्राप्त हुआ	दुःखम् आपन्नः
C. **द्वन्द्व- चार्थे द्वन्द्वः- (2.2.29)**		
हरिहरौ	विष्णु और शिव	हरिश्च हरश्च
त्वक्स्रजम्	त्वचा और माला का समुदाय	त्वक् च स्रक् च
छत्रोपाहनम्	छाते और जूते का समुदाय	छत्रं च उपानत् च तेषां समाहारः।

D. **बहुव्रीहिः - अनेकमन्यपदार्थे (2.2.24)-**

प्राप्तोदकः प्राप्त हो गया है जल जिसको = ग्राम
प्राप्तम् उदकं यं (ग्रामम्)

पीताम्बरः पीले हैं वस्त्र जिसके वह (विष्णु)
पीतम् अम्बरं यस्य सः (विष्णु)

अपुत्रः जिसका पुत्र नहीं है वह पुत्रहीन
अविद्यमानः पुरुषः पुत्रो यस्य सः

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड-4), पेज-99

46. 'सहरि' में कौन सा समास है?
(A) अव्ययीभाव **(B) तत्पुरुष**
(C) बहुव्रीहि **(D) द्वन्द्व**

व्याख्या-

A. अव्ययीभाव-

समास/समस्त पद	लौकिकविग्रह	अलौकिक विग्रह
सहरि	**हरेः सादृश्यम्**	**हरि ङस् सह**
सचक्रम्	चक्रेण युगपत्	चक्र टा सह
ससखि	सदृशः सख्या	सखि टा सह
सक्षत्रम्	क्षत्राणां सम्पत्तिः	क्षत्र आम् सह
सतृणम्	तृणम् अपि अपरित्यज्य	तृण टा सह
साग्नि	अग्निग्रन्थपर्यन्तम्	अग्नि टा सह
B. तत्पुरुष-		
हरित्रातः	हरिणा त्रातः	हरि टा त्रात सु
यूपदारु	यूपाय दारु	यूप ङे दारु सु
C. बहुव्रीहि-		
रूपवद्भार्यः	रूपवती भार्या अस्ति यस्य	रूपवती सु भार्या सु
स्त्रीप्रमाणः	स्त्रीप्रमाणी यस्य सः	स्त्री सु प्रमाणी सु
सुपात्	सु शोभनौ पादौ यस्य सः	सु पाद औ
D. द्वन्द्व-		
रामकृष्णौ	रामश्च कृष्णश्च	राम सु कृष्ण सु
हरिहरगुरवः	हरिश्च हरश्च गुरुश्च	हरि सु हर सु गुरु सु

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी भैमी व्याख्या, (खण्ड-4) पेज-36

47. 'उपराजम्' में कौन सा समास है?
(A) बहुव्रीहि **(B) अव्ययीभाव**
(C) तत्पुरुष **(D) द्वन्द्व**

व्याख्या-

A. बहुव्रीहि-

समास/समस्त पद	लौकिकविग्रह	अलौकिक विग्रह
व्यूढोरस्कः	व्यूढम् उरो यस्य (पुरुषस्य)	व्यूढ सु उरस् सु
सुहृत्	सुशोभनं हृदयं यस्य	सु हृदय सु
B. अव्ययीभाव-		
उपराजम्	राज्ञः समीपम्	राजन् ङस् उप
उपगङ्गम्	गङ्गायाः समीपम्	गङ्गा ङस् उप
उपकृष्णम्	कृष्णस्य समीपम्	कृष्ण ङस् उप
C. तत्पुरुष-		
गोहितम्	गोभ्यो हितम्	गो भ्यस् हित सु
चोरभयम्	चोरात् भयम्	चोर ङसि+भय सु
D. द्वन्द्व-		
पितरौ/मातापितरौ	माता च पिता च	मातृ सु+पितृ सु
धर्मार्थौ/अर्थधर्मौ	धर्मश्च अर्थश्च	धर्म सु अर्थ सु

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी भैमी व्याख्या, खण्ड-4 पेज-52

48. 'कुपुरुषः' में कौन सा समास है?
(A) नञ् तत्पुरुष
(B) प्रादितत्पुरुष समास
(C) अलुक्तत्पुरुष समास
(D) द्वितीयातत्पुरुष समास

व्याख्या-

समास/सूत्र	उदाहरण	लौकिक विग्रह
A. नञ् तत्पुरुष-		
नञः	अब्राह्मणः	न ब्राह्मणः
	अगर्दभः	न गर्दभः
	असत्यम्	न सत्यम्
	अचरम्	न चरम्
B. प्रादितत्पुरुष समास-		
कुगतिप्रादयः	कुपुरुषः	कुत्सितः पुरुषः
	प्राचार्यः	प्रगतः आचार्यः
प्रादयो गताद्यर्थे प्रथमया	प्रपितामहः	प्रगतः पितामहः
पर्यादयो ग्लानाद्यर्थे चतुर्थ्याः	पर्यध्ययनः	परिग्लानोऽध्ययनाय

समास/सूत्र	उदाहरण	लौकिक विग्रह
अवादयः क्रुष्टाद्यर्थे तृतीयया-	अवकोकिलः	अवक्रुष्टःकोकिलया
C. अलुक् तत्पुरुष समास-		
सञ्ज्ञायाम्	युधिष्ठिरः	युधि स्थिरः
D. उपपद तत्पुरुष समास-		
उपपदमतिङ् (2/2/19)-	कुम्भकारः	कुम्भं करोति इति
	सामगः	साम गायति इति
	धनदः	धनं ददाति इति
	कम्बलदः	कम्बलं ददातीति
	गोदः	गाः ददाति इति

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी-भैमी व्याख्या खण्ड-4, पेज-127

49. 'रामकृष्णौ' में कौन सा समास है?
(A) एकशेष द्वन्द्व (B) समाहार द्वन्द्व
(C) इतरेतर द्वन्द्व (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

व्याख्या–
द्वन्द्व समास के मुख्यतः दो भेद हैं- समाहार द्वन्द्व, इतरेतर द्वन्द्व। यद्यपि एकशेष वृत्ति है फिर भी इसकी गणना द्वन्द्व समास के अन्तर्गत होती है।

द्वन्द्व समास

इतरेतर द्वन्द्व	समाहार द्वन्द्व	एकशेष द्वन्द्व
1. रामकृष्णौ	आहारनिद्राभयम्	ब्राह्मणौ
2. मित्रावरुणौ	पाणिपादम्	शूद्रौ
3. होतापोतारौ	गोधूमचणकम्	अजौ
4. मयूरीकुक्कुटौ	रथिकाश्वारोहम्	श्वसुरौ
5. शिवकेशवौ	अहिनकुलम्	पितरौ

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका- बाबूराम सक्सेना, पेज-257

50. 'चन्द्रशेखरः' में कौन सा समास है?
(A) समानाधिकरण बहुव्रीहि
(B) व्यधिकरण बहुव्रीहि
(C) तत्पुरुष
(D) द्वन्द्व

व्याख्या- बहुव्रीहि समास के मुख्य दो भेद हैं-
बहुव्रीहि समास-
A. समानाधिकरण बहुव्रीहि के छः भेद - 1. द्वितीया प्राप्तोदकः 2. तृतीया जितेन्द्रियः 3. चतुर्थी दन्तधनः 4. पञ्चमी निर्बलः 5. षष्ठी पीताम्बरः 6.सप्तमी वीरपुरुषः
B. व्यधिकरण बहुव्रीहि- 1. चन्द्रशेखरः 2. चक्रपाणिः 3. वीणापाणिः
C. तत्पुरुषः- सत्सङ्गतिः, पूर्वकायः, अपरकायः, अक्षशौण्डः आदि।
D. द्वन्द्व- ब्राह्मणक्षत्रियौ, युधिष्ठिरार्जुनौ, शिवकेशवौ आदि
अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज-263

51. 'पितरौ' शब्द का विग्रह है-
(A) माता पिता च (B) पितरौ
(C) माता च पिता च (D) मातापिताश्च

व्याख्या-
* **पिता मात्रा** (1.2.70) मातृ-शब्द के साथ उच्चारित पितृ शब्द विकल्प से शेष होता है।
* **पितरौ/मातापितरौ-**लौकिक विग्रह- माता च पिता च तथा अलौकिक विग्रह मातृ सु पितृ सु।
* **चार्थे द्वन्द्वः** से समास होकर 'पिता मात्रा' सूत्र से पितृ का शेष तथा माता का लोप **'यःशिष्यते स लुप्यमानार्थाभिधायी'** के अनुसार पितृ से माता का भी कथन हो जाता है। द्विवचन में 'पितरौ' शब्द बनता है। यह कार्य वैकल्पिक होता है। विकल्प कार्य न होने पर मातापितरौ बनेगा। अतः 'पितरौ' का विग्रह **माता च पिता च** होगा।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी भैमी व्याख्या खण्ड-4, पेज-239

52. 'हरित्रातः' में कौन सा समास है?
(A) द्वितीया तत्पुरुष (B) तृतीया तत्पुरुष
(C) चतुर्थी तत्पुरुष (D) षष्ठी तत्पुरुष

व्याख्या-
A. द्वितीया तत्पुरुष-
'द्वितीया श्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नैः' (2/1/24)

द्वितीयान्त सुबन्त के साथ विकल्प से समास को प्राप्त होता है वह समास द्वितीया तत्पुरुष संज्ञक होता है।
उदाहरण- कृष्णश्रितः, अरण्यातीतः,कूपपतितः आदि।

B. तृतीया तत्पुरुष-
'तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन' (2/1/30)
तृतीयान्त सुबन्त, तृतीयान्त के अर्थ द्वारा कृत जो गुण तद्विशिष्ट द्रव्य सुबन्त के साथ एवं अर्थ के साथ वकल्प से समास को प्राप्त होता है वह समास तृतीया तत्पुरुष सञ्ज्ञक होता है।
उदाहरण- हरित्रातः, नखभिन्नः, विद्यार्थः आदि।

C. चतुर्थी तत्पुरुष-
चतुर्थी तदर्थार्थबलिहित-सुख-रक्षितैः (2/1/36)
द्विजार्थः, भूतबलिः, गोहितम् आदि। चतुर्थ्यन्त सुबन्त, उस चतुर्थ्यन्त के अर्थ के लिए जो तद्वाचक सुबन्तों के साथ एवं अर्थ, बलि, हित, सुख और रक्षित इन सुबन्तों के साथ विकल्प से समास को प्राप्त होता है वह चतुर्थी तत्पुरुष समास होता है।

D. षष्ठी तत्पुरुष- षष्ठी (2/2/8) षष्ठ्यन्त सुबन्त, समर्थ सुबन्त के साथ विकल्प से समास प्राप्त होता है वह षष्ठी तत्पुरुष समास होता है।
उदाहरण- राजपुरुषः, मनोविकारः, आत्मज्ञानम् आदि।
अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना,पेज-243

53. 'अब्राह्मणः' में कौन-सा समास है?
(A) अव्ययीभाव **(B) बहुव्रीहि**
(C) द्वन्द्व **(D) तत्पुरुष**

व्याख्या-

A. अव्ययीभाव- नदीभिश्च (2/1/20)-
संख्यावाची पदों का नदीवाचक सुबन्तों के साथ अव्ययीभाव समास होता है।
उदाहरण- पञ्चगङ्गम्, सप्तगङ्गम्, द्वियमुनम् आदि।

B. बहुव्रीहि- अनेकमन्यपदार्थे (2/2/24) अन्य पद के अर्थ में वर्तमान एक से अधिक प्रथमान्त पद परस्पर विकल्प से समास होता है और वह बहुव्रीहि संज्ञक होता है।
उदाहरण- दत्तद्रव्यः, ऊढरथः, वीरपुरुषः, प्रपतितपर्णः आदि।

C. द्वन्द्व- चार्थे द्वन्द्वः (2/2/29) च के अर्थ में वर्तमान अनेक सुबन्त परस्पर विकल्प से समास को प्राप्त होता है और वह समास द्वन्द्व समास होता है।
उदाहरण- अहिनकुलम्, हरिकृष्णरामाः, संज्ञापरिभाषम्, हरिहरगुरवः आदि।

D. तत्पुरुष- न ब्राह्मणः इति अब्राह्मणः में नञ् (2.2.6)सूत्र से नञ् तत्पुरुष समास है। इसके अतिरिक्त तत्पुरुष समास के अन्य उदाहरण हैं- घनश्यामः, कर्पूरगौरः, अनश्वः आदि।
अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या,भाग-4)पेज-122,126

54. 'यस्य च भावेन भावलक्षणम्' सूत्र है-
(A)कर्म कारक **(B)करण कारक**
(C) अपादान कारक **(D)अधिकरण कारक**

व्याख्या-

A. अभिनिविशश्च (1/4/47)- यदि 'विश्' धातु के पूर्व अभि और नि उपसर्ग लगे हो तो क्रिया के आधार की कर्म कारक संज्ञा होती है।
जैसे- अभिनिविशते सन्मार्गम्।

B. करणकारक- साधकतमं करणम् (1/4/42)- क्रिया की सिद्धि में जो पदार्थ सबसे अधिक उपकारक या सहायक होता है उसकी करण कारक सञ्ज्ञा होती है।
उदाहरण- रामेण बाणेन हतो बाली

C. जनिकर्तुः प्रकृतिः (1/4/30)- 'जन्' धातु के कर्त्ता के कारण की अपादान संज्ञा होती है।
जैसे- ब्राह्मणः प्रजाः प्रजायन्ते।

D. यस्य च भावेन भावलक्षणम् (2/3/37)- जहाँ एक क्रिया घटित हो वहाँ पहली क्रिया के आश्रयवाचक शब्द में सप्तमी विभक्ति होती है।
जैसे- गोषु दुह्यमानासु गतः। (वह गायों के दुहे जाते समय गया) सप्तमी विभक्ति का प्रकरण अधिकरण कारक के प्रसङ्ग में आया है।
अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज-220

55. ''कर्तृकर्मणोः कृति'' सूत्र है-
(A) सम्प्रदान कारक **(B) करणकारक**
(C) सम्बन्ध कारक **(D) कर्मकारक**

व्याख्या-

A. **सम्प्रदान कारक-** 'तादर्थ्ये चतुर्थी वाच्या (वा0)' तादर्थ्य में चतुर्थी विभक्ति होती है।
मुक्तये हरिं भजति। वह मुक्ति के लिए हरि को भजता है।

B. **करण कारक-** 'इत्थम्भूतलक्षणे' (2/3/21)
जटाभिः तापसः। किसी प्रकार विशेष (धर्म-विशेष) को प्राप्त

हुए व्यक्ति अथवा वस्तु के लक्षण से तृतीया विभक्ति होती है।

C. **सम्बन्ध कारक-** 'कर्तृकर्मणोः कृतिः' (2/3/65)
कृष्णस्य कृतिः। जगतः कर्त्ता कृष्णः। कृत् प्रत्ययान्त के योग में अनभिहित कर्त्ता और कर्म कारक में षष्ठी विभक्ति होती है।

D. **कर्म कारक-** 'उपान्वध्याङ्वसः' (1/4/48)
यदि वस् धातु के पूर्व उप, अनु, अधि और आङ् उपसर्ग लगा हो तो उसके आधार अधिवसति की कर्म संज्ञा होती है।
उदाहरण- हरिः वैकुण्ठम् उपवसति अनुवसति अधिवसति आवसति वा वैकुण्ठं हरिः।
अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- संस्कृतव्याकरण प्रवेशिका- बाबूराम सक्सेना, पेज-225

56. 'मातुर्निलीयते कृष्णः' रेखांकित पद में कौन सी विभक्ति है?
(A) तृतीया **(B) चतुर्थी**
(C) पञ्चमी **(D) सप्तमी**

व्याख्या-

A. **तृतीया-** अशिष्टव्यवहारे दाणः प्रयोगे चतुर्थ्यर्थे तृतीया (वा0) अशिष्टों के व्यवहार के विषय में दाण् धातु के प्रयोग में चतुर्थी के अर्थ सम्प्रदान में तृतीया होती है।
यथा- दास्या संयच्छते कामुकः।

B. **चतुर्थी-** मन्यकर्मण्यनादरे विभाषाऽप्राणिषु (2.3.17) दिवादिगण के 'मन्' धातु के प्राणिभिन्न कर्म में चतुर्थी विभक्ति विकल्प से होती है यदि तिरस्कार वहाँ प्रतीत होता हो। यथा- न त्वां तृणं तृणाय वा मन्ये।

C. **पञ्चमी-** अन्तर्धौ येनादर्शनमिच्छति (1/4/28)
अन्तर्धान (व्यवधान) होने की क्रिया में कर्त्ता जिससे छुपना चाहता है उसकी अपादान संज्ञा होती है।
यथा- मातुर्निलीयते कृष्णः।

D. **सप्तमी-** षष्ठी चानादरे (2/3/38)
अनादर के आधिक्य होने पर जिसकी क्रिया से दूसरी क्रिया लक्षित हो, उससे षष्ठी और सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे - रुदति रुदतो वा प्राव्राजीत्।
अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका- बाबूराम सक्सेना, पेज-209

57. 'बालकेभ्यः मिष्ठानं रोचते' रेखांकित पद में कौन सी विभक्ति है?
(A) पञ्चमी **(B) चतुर्थी**
(C) सप्तमी **(D) तृतीया**

व्याख्या-

A. **पञ्चमी-** (जनिकर्तुः प्रकृतिः 1/4/30) जन् धातु के कर्त्ता के कारण की अपादान संज्ञा होती है। जैसे- ब्राह्मणः प्रजाः प्रजायन्ते।

B. **चतुर्थी-** (रुच्यर्थानां प्रीयमाणः 1/4/33) रुच्यर्थ अर्थात् अभिलाषार्थक धातुओं के प्रयोग में प्रीयमाण व्यक्ति की सम्प्रदान संज्ञा होती है।
जैसे- बालकेभ्यः मिष्ठानं रोचते।

C. **सप्तमी-** (विभाषा कृञ् 1/4/98) कृ धातु के परे रहते ईश्वरत्व अर्थ में 'अधि' की विकल्प में कर्मप्रवचनीय संज्ञा होती है।
जैसे- यदत्र मामधिकारिष्यति।

D. **तृतीया-** (संज्ञोऽन्यतरस्यां कर्मणि 2/3/22) सम्पूर्वजानातेः कर्मणि तृतीया वा स्यात् सम् उपसर्ग पूर्वक ज्ञा धातु के अनभिहित कर्म में विकल्प से तृतीया विभक्ति होती है। जैसे- पित्रा पितरं वा सञ्जानीते।
अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका- बाबूराम सक्सेना, पेज-20

58. 'जटाभिस्तापसः' में तृतीया विभक्ति का हेतु है-
(A) **इत्थम्भूतलक्षणता** (B) **करणता**
(C) **अङ्गविकार** (D) **उपर्युक्त में से कोई नहीं**

व्याख्या–

A. **इत्थम्भूतलक्षणे (2/3/21)-** किसी धर्म विशेष को प्राप्त हुए व्यक्ति अथवा वस्तु के लक्षण (ज्ञापक चिन्ह) से तृतीया विभक्ति होती है। जैसे- 'जटाभिस्तापसः।' (जटाओं से तपस्वी प्रतीत होता है।) इस उदाहरण में 'तपस्वी' व्यक्ति विशेष में 'जटा' इत्थम्भूत (ज्ञापक चिन्ह) के कारण इसमें तृतीया विभक्ति हुई है। **अतः विकल्प (A) सही है।**

B. **कर्तृकरणयोस्तृतीया (2/3/18)-** अनुक्त कर्ता तथा करण कारक में तृतीया विभक्ति होती है। **जैसे-** रामेण बाणेन हतो बाली। इस उदाहरण में राम के अनुक्त कर्ता

होने के कारण एवं करण 'बाण' के अनुक्तत्वात् उक्त सूत्र से तृतीया विभक्ति हुई है।

C. **येनाङ्गविकारः (2/3/20)-** जिस विकृत अङ्ग के द्वारा अङ्गी का विकार लक्षित हो उस अवयववाची शब्द में तृतीया विभक्ति होती है। **जैसे-** अक्ष्णा काणः। यहाँ अक्षि अङ्ग में काणत्व विकार है अतएव उक्त सूत्र से अक्षि में तृतीया हुई है।

स्रोत- संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज-199

59. 'कर्त्री' में कौन सा प्रत्यय है?

(A) टाप् (B) ङीप्
(C) ङीष् (D) ङीन्

व्याख्या–

A. **टाप्- अजाद्यतष्टाप् (4/1/4)-** अजादिगण पठित प्रातिपदिकों के अथवा अदन्त प्रातिपदिकों के वाच्य स्त्रीत्व का द्योतन करना हो तो उन से परे टाप् प्रत्यय हो।

एडक + टाप् = एडका (मादा भेड़)

त्रैनीक + टाप् = त्र्यनीका (सेना)

धनक्रीत + टाप् = धनक्रीता (धन से खरीदी हुई)

B. **ङीप्- ऋन्नेभ्यो ङीप् (4.1.5)-** ऋकारान्त तथा नकारान्त प्रातिपदिकों से स्त्रीलिङ्ग में ङीप् प्रत्यय होता है।

कर्तृ + ङीप् = कर्त्री (करने वाली)

धतृ+ ङीप् = धर्त्री (धारण करने वाली)

C. **ङीष्- षिद्गौरादिभ्यश्च (4/1/41)-** जिसका षकार इत् हो ऐसे प्रातिपदिकों से तथा गौर आदि गण पठित प्रातिपदिकों से परे स्त्रीत्व की विवक्षा में ङीष् प्रत्यय होता है। **उदाहरण-**नर्तक + ङीष् = नर्तकी (नाचने वाली)

गौर + ङीष् = गौरी (पार्वती)

D. **ङीन्- शार्ङ्गरवाद्यञो ङीन् (4/1/73)-** शाङ्र्गरव आदि गणपठित प्रातिपदिक से तथा अञ् प्रत्यय का जो अकार तदन्त जातिवाचक प्रातिपदिक से स्त्रीत्व की विवक्षा में ङीन् प्रत्यय हो। **उदाहरण-**शार्ङ्गरव+ङीन्=**शार्ङ्गरवी** बैद+ङीन्=**बैदी**, ब्राह्मण+ङीन्=**ब्राह्मणी**

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका- बाबूराम सक्सेना, पेज-512

60. 'पठनीय' शब्द में कौन सा प्रत्यय है?

(A) तव्यत् (B) क्तवतु
(C) अनीयर् (D) क्त्वा

व्याख्या–

तव्यत्तव्यानीयरः (3.1.96)- धातु से तव्यत्, तव्य और अनीयर् प्रत्यय होते हैं।

* पठ् + तव्यत् (तव्य) = पठितव्यम्
* चि + तव्यत् = चेतव्यम्
* **पठ् + अनीयर् = पठनीयम्**
* चिञ् + अनीयर् = चयनीयः (संग्रह करना)
* एध् + अनीयर् = एधनीयम् (बढ़ना चाहिए)
* **समानकर्तृकयोः पूर्वकाले (3.4.21)**

समानकर्तृक धात्वर्थ में पूर्वकाल में विद्यमान धातु से क्त्वा प्रत्यय होता है।

* पठ् + क्तवा = पठित्वा
* नी + क्तवा = नीत्वा
* नम् + क्तवा = नत्वा
* अप् + क्तवा = आप्त्वा
* कृ + क्त्वा = कृत्वा

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज-475

61. 'देय' में कौन सा प्रत्यय है?

(A) शतृ (B) शानच्
(C) तव्य (D) यत्

व्याख्या–

लटःशतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे (3.2.124) अप्रथमान्त अर्थात् द्वितीयान्त आदि के साथ समानाधिकरण होने पर लट् के स्थान पर शतृ और शानच् होते हैं। परस्मैपद में शतृ तथा आत्मनेपद में शानच् होते हैं।

दा + शतृ = ददत् , कृ+शतृ = कुर्वत् , नी + शतृ = नयत्

दा + शानच् = ददानः, कम्प् + शानच् = कम्पमानः।

तव्यत्तव्यानीयरः (3.1.96) धातु से तव्यत् , तव्य, और अनीयर् प्रत्यय होता है-

* दा + तव्यत् = दातव्यः
* भिद् = तव्यत् = भेत्तव्यः
* छिद् + तव्यत् = छेत्तव्यः

* पच् + तव्यत् = पक्तव्यः
अचो यत्- (3.1.97) अच् प्रत्याहार के वर्ण अन्त में हो ऐसे धातुओं से यत् प्रत्यय होता है।
उदाहरण- दा + यत् = देयम्, पा + यत् = पेयम्, गै + यत् = गेयम्
अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका- बाबूराम सक्सेना, पेज-476

62. 'गम्' धातु लिट्लकार, प्रथमपुरुष, द्विवचन का रूप है-
(A) जगाम **(B) जग्मतुः**
(C) जग्मथुः **(D) जग्म**

व्याख्या–
गम् (जाना) धातु भ्वादिगण, सकर्मक, अनिट्, परस्मैपद

लिट् लकार		
जगाम	जग्मतुः	जग्मुः
जगमिथ	जग्मथुः	जग्म
जगाम	जग्मिव	जग्मिम

* 'गम्' धातु लिट्लकार प्रथमपुरुष द्विवचन में **जग्मतुः** रूप बनेगा। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका -बाबूराम सक्सेना, पेज-314

63. 'भू' धातु लुङ्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप है-
(A) अभूत् **(B) अभवत्**
(C) भवेत् **(D) बभूव**

व्याख्या–

भू धातु (भ्वादिगण) अकर्मक, सेट्, परस्मैपद (सामान्यभूत)		
लुङ् लकार		
अभूत्	अभूताम्	अभूवन्
अभूः	अभूतम्	अभूत
अभूवम्	अभूव	अभूम
लङ् लकार (अनद्यतनभूत)		
अभवत्	अभवताम्	अभवन्
अभवः	अभवतम्	अभवत
अभवम्	अभवाव	अभवाम्
विधिलिङ् लकार		
भवेत्	भवेताम्	भवेयुः
भवेः	भवेतम्	भवेत
भवेयम्	भवेव	भवेम
लिट् लकार (परोक्षभूत)		
बभूव	बभूवतुः	बभूवुः
बभूविथ	बभूवथुः	बभूव
बभूव	बभूविव	बभूविम

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज-312

64. 'द्रक्ष्यसि' क्रिया का लकार है?
(A) लुट् **(B) लृट्**
(B) लुङ् **(D) लट्**

व्याख्या–

दृश् (देखना) भ्वादिगण, सकर्मक अनिट्, परस्मैपद		
लुट् लकार (अनद्यतन भविष्य)		
द्रष्टा	द्रष्टारौ	द्रष्टारः
द्रष्टासि	द्रष्टास्थः	द्रष्टास्थ
द्रष्टास्मि	द्रष्टास्वः	द्रष्टास्मः
लृट् लकार (सामान्य भविष्य)		
द्रक्ष्यति	द्रक्ष्यतः	द्रक्ष्यन्ति
द्रक्ष्यसि	द्रक्ष्यथः	द्रक्ष्यथ
द्रक्ष्यामि	द्रक्ष्यावः	द्रक्ष्यामः
लुङ् लकार (सामान्य भूत)		
अद्राक्षीत्	अद्राष्टाम्	अद्राक्षुः
अद्राक्षीः	अद्राक्षिष्टम्	अद्राक्षिष्ट
अद्राक्षम्	अद्राक्ष्व	अद्राक्ष्म
लट्लकार (वर्तमान काल)		
पश्यति	पश्यतः	पश्यन्ति
पश्यसि	पश्यथः	पश्यथ
पश्यामि	पश्यावः	पश्यामः

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका- बाबूराम सक्सेना, पेज-318

65. 'पठ्' धातु लङ्लकार प्रथम पुरुष बहुवचन का रूप है-
(A) पठेयुः **(B) पठन्ति**
(C) अपठन् **(D) अपठत्**

व्याख्या–

पठ् (पढ़ना) भ्वादिगण, सकर्मक, सेट्, परस्मैपद		
विधिलिङ्लकार		
पठेत्	पठेताम्	पठेयुः
पठेः	पठेतम्	पठेत
पठेयम्	पठेव	पठेम
लट्लकार (वर्तमान काल)		
पठति	पठतः	पठन्ति
पठसि	पठथः	पठथ
पठामि	पठावः	पठामः
लङ्लकार (अनद्यतन भूत)		
अपठत्	अपठताम्	**अपठन्**
अपठः	अपठतम्	अपठत
अपठम्	अपठाव	अपठाम्
अतः विकल्प C सही है।		

स्रोत- संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज-324

66. पाणिनीय शिक्षा की ध्वनियाँ कितने सर्गों में विभक्त हैं?
(A) साठ **(B) पाँच**
(C) छः **(D) सात**

व्याख्या-

A. साठ- पाणिनीय शिक्षा में साठ श्लोक हैं।

B. पाँच- पाणिनीय शिक्षा में वर्णों का उदात्तादिस्वर, ह्स्वदीर्घादि काल, कण्ठमूर्धाताल्वादि स्थान, आभ्यन्तर प्रयत्न और बाह्यप्रयत्न इन पाँच कारणों से पाँच प्रकार का विभेद होता है।

सोदीर्णो मूर्ध्न्यभिहतो वक्त्रमापद्य मारुतः।
वर्णाञ् जनयते तेषां विभागः पञ्चधा स्मृतः॥
(पाणिनीयशिक्षा श्लोक -1)

C. छः- सूत्र 6 प्रकार के होते हैं-
संज्ञा च परिभाषा च विधिर्नियम एव च।
अतिदेशोऽधिकारश्च षड्विधं सूत्रमुच्यते सञ्ज्ञासूत्र, परिभाषासूत्र, विधिसूत्र, नियमसूत्र, अतिदेशसूत्र, अधिकारसूत्र से छः सूत्र हैं।

D. सात- संस्कृत व्याकरण में सात विभक्तियाँ होती हैं।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- पाणिनीय शिक्षा (श्लोक-9)

67. निम्नलिखित में से किसका मत है कि संस्कृत नाटकों की उत्पत्ति 'स्वांगवाद' से हुई है?
(A) प्रो0 हिलब्राण्ड **(B) स्टेन कोनो**
(C) उपर्युक्त दोनों **(D) डा0 पिशेल**

व्याख्या-

* प्रो0 **'हिलब्रान्ड'** और **'स्टेनकोनो'** का मत है कि लोकप्रिय स्वाँगों के साथ 'रामायण' और 'महाभारत' की कथाओं ने मिलकर नाटकों को जन्म दिया है।
* **डॉ0 पिशेल** ने यह विचार प्रस्तुत किया है कि प्राचीन समय में कठपुतली का नाच प्रचलित था उसका ही विकसित रूप नाटक हुआ। संस्कृत नाटकों में प्रस्तुत सूत्रधार (धागा पकड़ने वाला) शब्द इस कथन की पुष्टि करता है। इनका सिद्धान्त **'पुत्तलिका नृत्यवाद'** है।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-266

68. किसने यह विचार व्यक्त किया कि 'पुत्तलिका नृत्य से नाटकों की उत्पत्ति हुई?
(A) प्रो0 रिजवे **(B) प्रो0 ल्यूडर्स**
(C) प्रो0 विन्डिश **(D) डॉ0 पिशेल**

व्याख्या–

	मत प्रवर्तक/समर्थक	**नाट्योत्पत्ति का सिद्धान्त**
A.	प्रो0 रिजवे	मृतात्मवाद या श्राद्धवाद
B.	प्रो0ल्यूडर्स	छाया-नाटकवाद
C.	प्रो0 विन्डिस एवं बेवर	यूनानी प्रभाववाद (जवनिका)
D.	डॉ0 पिशेल	पुत्तलिका नृत्यवाद
*	प्रो0 मैक्समूलर, प्रो0 सिल्वाँलेवी, प्रो0 फॉन श्रोएदर एवं डा0 हर्टल	ऋक्संवाद सूक्तवाद

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-266

69. 'संस्कारमात्रजन्यं ज्ञानं स्मृतिः' किस दर्शन से सम्बन्धित है-
(A) न्यायदर्शन **(B) सांख्यदर्शन**
(C) मीमांसादर्शन **(D) जैनदर्शन**

व्याख्या-

A. न्याय-वैशेषिक- **'संस्कारमात्रजन्यं ज्ञानं स्मृतिः।'** संस्कार मात्र से उत्पन्न ज्ञान को स्मृति कहते हैं। जिस ज्ञान का विषय पहले ही ज्ञात रहता है वही स्मृति है।

B. सांख्यदर्शन- **'अध्यवसायो बुद्धिः'** (सां.का.23) निश्चयात्मक अथवा निश्चय करने वाला तत्त्व बुद्धि है।

C. मीमांसा दर्शन (वेदान्त)-'अनादिमायया सुप्तो यदा जीवः प्रबुध्यते' अनादि माया से सुप्त जीव प्रबुद्ध होता है।

D. जैनदर्शन- 'सम्यग्दर्शनज्ञानचरित्राणि मोक्षमार्गः'-सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान एवं सम्यक् चरित्र मोक्ष का मार्ग है।

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- तर्कभाषा-गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज-16

70. तर्कभाषा के अनुसार पदार्थों की संख्या है–
(A) सात **(B) सोलह**
(C) नौ **(D) दो**

व्याख्या-

A. अन्नम्भट्टकृत तर्कसंग्रह के अनुसार पदार्थों की संख्या सात है- द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय एवं अभाव।

B. केशवमिश्र कृत तर्कभाषा के अनुसार पदार्थों की संख्या सोलह है-प्रमाण-प्रमेय-संशय-प्रयोजन-दृष्टान्त-सिद्धान्त-अवयव-तर्क-निर्णय-वाद-जल्प-वितण्डा- हेत्वाभास-छल-जाति एवं निग्रहस्थान।

C. तर्कसंग्रह के अनुसार द्रव्यों की संख्या नौ हैं- पृथ्वी-जल-तेज-वायु-आकाश-काल-दिक्-आत्मा और मन।

D. तर्कसंग्रह के अनुसार सामान्य के दो भेद हैं- परसामान्य एवं अपरसामान्य।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- तर्कभाषा-आद्याप्रसाद मिश्र, पेज-18

71. तर्कभाषा के अनुसार कर्मों की संख्या है-
(A) तीन **(B) चार**
(C) पाँच **(D) छः**

व्याख्या-

A. तर्कभाषा के अनुसार कारण के तीन भेद हैं-
1. समवायिकारण 2. असमवायिकारण 3. निमित्तकारण

B. तर्कभाषा के अनुसार प्रमाणों की संख्या चार है-
1. प्रत्यक्ष प्रमाण 2. अनुमान प्रमाण
3. उपमान प्रमाण 4. शब्द प्रमाण

C. तर्कभाषा के अनुसार कर्म का लक्षण है- **''चलनात्मकं कर्म''**कर्म का स्वरूप है क्रिया (चलना)।
कर्म के पाँच भेद हैं-

1. **उत्क्षेपण-** ऊर्ध्वदेशसंयोगहेतुरुत्क्षेपणम्। ऊर्ध्व देश से संयोग का जो हेतु होता है वह उत्क्षेपण कहलाता है।
2. **अपक्षेपण-** अधोदेशसंयोगहेतुरपक्षेपणम्।' अधोदेश से संयोग का जो हेतु होता है वह अपक्षेपण कहलाता है।
3. **आकुञ्चन-** 'शरीरस्य सन्निकृष्टसंयोगहेतुराकुञ्चनम्' शरीर के निकट-संयोग का जो हेतु होता है वह आकुञ्चन कहलाता है।
4. **प्रसारण-** 'विप्रकृष्टसंयोगहेतुः प्रसारणम्' शरीर के दूरसंयोग का जो हेतु होता है। वह प्रसारण कहलाता है।
5. **गमन-** 'अन्यत्सर्वं गमनम्' इनके अतिरिक्त समस्त क्रियायें गमन हैं।

D. तर्कभाषा के अनुसार सन्निकर्ष के छह भेद हैं-

1. संयोग सन्निकर्ष- (चक्षु-घट)
2. संयुक्त समवाय सन्निकर्ष- (चक्षु-घटरूप)
3. संयुक्त समवेत समवाय सन्निकर्ष- (चक्षु-घटरूपत्व)
4. समवाय सन्निकर्ष- (श्रोत्र-शब्द)
5. समवेत समवाय सन्निकर्ष- (श्रोत्र-शब्दत्व)
6. विशेषण विशेष्यभाव सन्निकर्ष- (भूतले घटः नास्ति)

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- तर्कभाषा-श्रीनिवास शास्त्री, पेज-224

72. तर्कसंग्रह के अनुसार कारण के कितने भेद हैं?
(A) दो **(B) तीन**
(C) चार **(D) पाँच**

व्याख्या-

A. तर्कसंग्रह के अनुसार बुद्धि के दो भेद हैं- स्मृति तथा अनुभव।

B. तर्कसंग्रह के अनुसार कारण के तीन भेद हैं-

1. समवायिकारण- यत्समवेतं कार्यमुत्पद्यते तत्समवायिकारणम् यथा- तन्तवः पटस्य, पटश्च स्वगतरूपादेः।
जिस कारण में जो कार्य समवाय सम्बन्ध से उत्पन्न होता है, वह कारण उस कारण के प्रति समवायिकारण होता है। **उदाहरण-** तन्तु पट के प्रति,पट पटरूप के प्रति, कपाल घट के प्रति समवायिकारण होता है।

2. असमवायिकारण- कार्येण कारणेन वा सहैकस्मिन्नर्थे समवेतत्वे सति यत्कारणं तदसमवायिकारणम् यथा- तन्तुसंयोगः पटस्य, तन्तुरूपं पटरूपस्य। कार्य या समवायिकारण के साथ एक अधिकरण में रहने वाले कारण को असमवायिकारण कहते हैं। **उदाहरण-** तन्तुसंयोग पट के साथ तन्तु में समवाय सम्बन्ध से रहता है अतः पट के प्रति वह असमवायिकारण होता है।

3. निमित्त कारण- तदुभयभिन्नं कारणं निमित्तकारणम्। यथा- तुरीवेमादिकं पटस्य। समवायि तथा असमवायिकारण से भिन्न होने वाला कारण निमित्त कारण है। **उदाहरण-** तुरी, वेमा आदि पट के निमित्त कारण हैं।

C. तर्कसंग्रह के अनुसार अभाव के चार भेद हैं-
1. प्राग्भाव 2. प्रध्वंसाभाव 3. अन्योन्याभाव 4. अत्यन्ताभाव

D. तर्कसंग्रह के अनुसार हेत्वाभास के पाँच भेद हैं-
1. असिद्ध हेत्वाभास 2. विरुद्ध हेत्वाभास 3. अनैकान्तिक हेत्वाभास4. प्रकरणसम हेत्वाभास 5. कालात्ययापदिष्ट हेत्वाभास

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज-24

73. तर्कसंग्रह के अनुसार गुणों की संख्या है-
(A) अनन्त **(B) 7**
(C) 24 **(D) 2**

व्याख्या –तर्कसंग्रह के अनुसार

A. विशेष पदार्थ की संख्या-
अनन्त (नित्यद्रव्यवृत्तयो विशेषास्तवनन्ता एव) नित्य द्रव्य में रहने वाला व्यावर्तक ' विशेष' कहलाते हैं।

B. पदार्थों की संख्या- तर्कसंग्रह के अनुसार पदार्थों की संख्या सात हैं- द्रव्य-गुण-कर्म-सामान्य-विशेष-समवाय-अभाव।

C. गुणों की संख्या- तर्कसंग्रह में गुणों की संख्या चौबीस है- रूप, रस,गन्ध, स्पर्श, संख्या, परिणाम, पृथक्त्व, संयोग, विभाग, परत्व, अपरत्व, गुरुत्व, द्रव्यत्व, स्नेह, शब्द, बुद्धि, सुख, दुःख, इच्छा,द्वेष, प्रयत्न, धर्म, अधर्म, तथा संस्कार।

D. सामान्य की संख्या- 1. परसामान्य 2. अपरसामान्य
अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- तर्कभाषा- आद्याप्रसाद मिश्र, पेज- 19

74. जगत् ब्रह्म का है-
(A) परिणाम **(B) विवर्त**
(C) उपरोक्त दोनों **(D) इनमें से कोई नहीं**

व्याख्या–

A. परिणाम (विकार) - जब कोई वस्तु अपने वास्तविक स्वरूप का परित्याग कर अन्यरूप को ग्रहण कर लेती है यह विकारभाव या परिणाम कहलाता है। **जैसे-** दूध का दही में परिवर्तित होना विकार (परिणाम) है।
''सतत्त्वतोऽन्यथाप्रथा विकार इत्युदीरितः।''

B. विवर्त- जब कोई वस्तु अपने वास्तविक स्वरूप का परित्याग न करते हुए अपने सदृश किसी अन्य वस्तु के रूप मे प्रतिभासित होने लगती है। जैसे- रस्सी अपने यथार्थ स्वरूप का परित्याग न करते हुए सर्प की मिथ्या प्रतीति करवाने लगती है। इसी प्रकार ब्रह्म भी अपने मूल स्वरूप का परित्याग किये बिना अन्य वस्तु जगत् रूप में प्रतिभासित होने लगता है यही विवर्त है।
''अतत्त्वतोऽन्यथाप्रथा विवर्त इत्युदाहृतः।''
अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- वेदान्तसार- सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-117

75. अध्यास का अर्थ है-
(A) अपवाद **(B) अध्यारोप**
(C) भ्रान्ति **(D) साक्षात्कार**

व्याख्या-

A. अपवाद- 'अपवादो नाम रज्जुविवर्तस्य सर्पस्य रज्जुमात्रत्ववद्वस्तुविवर्त्तस्यावस्तुनोऽज्ञानादेः प्रपञ्चस्य वस्तुमात्रत्वम्।' किसी यथार्थ वस्तु की भ्रम के कारण अयथार्थ स्वरूप का ज्ञान हो जाना ही अपवाद कहलाता है। **जैसे-** रज्जुभूत सर्प का पुनः रज्जु के यथार्थ स्वरूप का ज्ञान हो जाना ।

B. अध्यारोप- 'असर्पभूतायां रज्जौ सर्पारोपवद् वस्तुन्यवस्त्वारोपोऽध्यारोपः।' सर्पभाव को न प्राप्त होने वाली रस्सी पर सर्प के आरोप के समान, वस्तु पर अवस्तु का आरोप करना ही अध्यारोप है।

C. भ्रान्ति- 'वेदान्तसार' में अध्यास का अर्थ अविद्या भ्रान्ति,अज्ञान,अध्यास आदि अनेक अर्थ हैं।

D. साक्षात्कार- वेदान्त में आत्मसाक्षात्कार (ब्रह्मसाक्षात्कार) के तीन साधन बताये गये हैं- 1.श्रवण 2.मनन 3.निदिध्यासन।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत-भारतीय दर्शन- बद्रीनाथ सिंह, पेज-317

76. साधन चतुष्टय में कौन नहीं है?
(A) नित्यानित्यवस्तुविवेक
(B) शमदमादिसाधनषट्कसम्पत्ति
(C) आत्मसंयम
(D) मुमुक्षुत्व

व्याख्या– सदानन्दप्रणीत वेदान्तसार में साधन चतुष्टय की संख्या चार है जो निम्नवत् है-

साधनचतुष्टय
- नित्यानित्यवस्तु विवेक
- इहामुत्रार्थ फलभोगविराग
- शमादिषट्क सम्पत्ति
- मुमुक्षुत्व

सदानन्दकृत 'वेदान्तसार' में अनुबन्धचतुष्टय में आत्मसंयम की गणना नहीं है। **अतः विकल्प C सही है।**
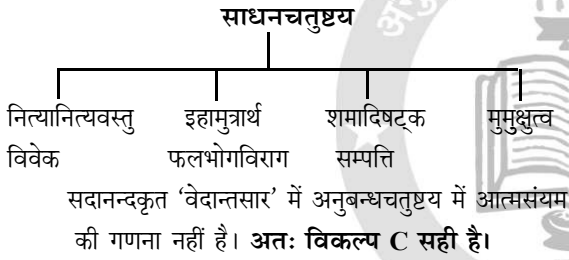
स्रोत- वेदान्तसार- सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-2

77. 'तितिक्षा' कहते हैं-
(A) सर्वदा वासनाओं का त्याग
(B) निषिद्ध विषयों से बाह्य इन्द्रियों का निवर्तन
(C) सभी मौसमों को सहन करनें का अभ्यास
(D) मन का संयम

व्याख्या– वेदान्तसार में साधनचतुष्टय के अन्तर्गत शमादि-षट्क सम्पत्ति की चर्चा की गई है-

* **शम-** 'शमस्तावच्छ्रवणादिव्यतिरिक्तविषयेभ्यो मनसो निग्रहः' श्रवण, मनन, निदिध्यासन से भिन्न विषयों से मन को हटा लेने को शम कहते हैं।
* **दम-** 'दमो बाह्येन्द्रियाणां तद्व्यतिरिक्तविषयेभ्यो निवर्त्तनम्।' बाह्य इन्द्रियों को श्रवणादि के अतिरिक्त विषयों से हटाने को दम कहते हैं।
* **उपरति-** 'विहितानां कर्मणां विधिना परित्यागः।' फिर से विषयों की ओर प्रवृत्त होने का उत्साह न रह जाने से स्थिर हो जाना उपरति है। अथवा विहित कर्मों का विधि से परित्याग कर देना उपरति है।
* **तितिक्षा-** 'तितिक्षा शीतोष्णादिद्वन्द्वसहिष्णुता।' शीत-उष्ण, मान-अपमान, लाभ-हानि, जय-पराजय, निन्दा,-स्तुति, हर्ष शोक आदि को सहन करना तितिक्षा है।

अतः विकल्प C सही है।

* **समाधान-** 'निगृहीतस्य मनसः श्रवणादौ तदनुगुणविषये च समाधिः समाधानम्' निगृहीत चित्त का श्रवणादि में तथा श्रवणादि के अनुकूल विषयों में स्थिर हो जाना समाधान है।
* **श्रद्धा-** 'गुरूपदिष्टवेदान्तवाक्येषु विश्वासः श्रद्धा।' गुरु और वेदान्त के वाक्यों में विश्वास होना श्रद्धा है।

78. जगत् की उत्पत्ति का कारण है-
(A) अज्ञानोपहित चैतन्य **(B) ईश्वर**
(C) ब्रह्म **(D) आत्मा**

व्याख्या–

A. 'अज्ञानादिसकलजडसमूहोऽवस्तु।' वेदान्त में जगत् को अवस्तु जड एवं अज्ञान से उत्पन्न बताया गया है। 'तमः प्रधानविक्षेपशक्तिमदज्ञानोपहितचैतन्यादाकाश आकाशा-द्वायुर्वायोरग्निरग्नेरापोऽद्भ्यः पृथिवी चोत्पद्यते' अर्थात् तमोगुण की प्रधानता वाली विक्षेपशक्ति से युक्त अज्ञान से उपहित चैतन्य से आकाश, आकाश से वायु, वायु से अग्नि, अग्नि से जल, जल से पृथिवी उत्पन्न होती है।

अतः विकल्प A सही है।

B. पतञ्जलि कृत 'योगदर्शन' में 26 वें तत्त्व के रूप में ईश्वर की चर्चा है। इसमें जगत् की उत्पत्ति का कारण ईश्वर को बताया गया है। इसलिए इसे सेश्वर सांख्य भी कहा जाता है।

C. वेदान्त में ब्रह्म को वस्तु तथा जगत् को अवस्तु कहा गया है। 'वस्तु सच्चिदानन्दाद्वयं ब्रह्म, अज्ञानादिसकलजड-समूहोऽवस्तु'

D. वेदान्त में अत्यन्त स्थूल मतावलम्बियों आत्मा के विषय में कहा है कि ''आत्मा ही पुत्र के रूप में जन्म लेती है।'' ''आत्मा वै जायते पुत्रः''

स्रोत- वेदान्तसार- सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-59

79. श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार निष्काम कर्म का अर्थ है-
(A) निरुद्देश्य कर्म करना
(B) सकाम कर्म करना
(C) अनासक्त होकर कर्म करना
(D) कर्मसंन्यास

व्याख्या–

A. जीवन निर्वाह के लिए कर्म करना ही पड़ता है तथा निरुद्देश्य कोई भी व्यक्ति किसी कार्य में प्रवृत्त नहीं होता है। ''प्रयोजमनुदिश्य मन्दोऽपि न प्रवर्तते।''

B. सकाम (कामना से युक्त) कार्य करने से मनुष्य संसार में बँध जाता है।

C. तस्मादसक्तः सततं कार्यं कर्म समाचर।
असक्तो ह्याचरन्कर्म परमाप्नोति पूरुषः।।
(गीता 3/19)
भगवान् श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि हे अर्जुन! तू निरन्तर आसक्ति रहित होकर कर्तव्य कर्म का भली भाँति आचरण कर क्योंकि आसक्तिरहित होकर कर्म करता हुआ मनुष्य परमात्मा को प्राप्त हो जाता है।

D. भगवद्गीता के पाँचवें अध्याय का नाम कर्मसंन्यास योग' है।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- श्रीमद्भगवद्गीता (3/9,19)

80. श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार कर्मयोगी को कर्म क्यों करना चाहिए?
(A) कीर्ति के लिए
(B) लोकसंग्रह के लिए
(C) सुख के लिए
(D) लोकत्याग के लिए

व्याख्या-

* श्रीमद्भगवद्गीता के तृतीय अध्याय में भगवान् श्री कृष्ण अर्जुन को कर्मयोगी का उदाहरण देते हुए कहते हैं कि-
कर्मणैव हि संसिद्धिमास्थिता जनकादयः।
लोकसङ्ग्रहमेवापि सम्पश्यन्कर्तुमर्हसि।।
(गीता 3/20)
राजा जनक जैसे अनेक महापुरुष भी कर्मयोग के द्वारा ही परमसिद्धि को प्राप्त हुए थे। इसलिए लोकसंग्रह को देखते हुए भी हे अर्जुन! तू निष्काम भाव से कर्म करने के ही योग्य है अर्थात् कर्म अवश्य करना चाहिए।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- श्रीमद्भगवद्गीता (3/25)

81. गीता का स्वधर्म सिद्धान्त है-
(A) वर्णव्यवस्था का सिद्धान्त
(B) कर्म सिद्धान्त
(C) आत्म सिद्धान्त
(D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या–

A. गीता के चतुर्थ अध्याय में वर्ण-व्यवस्था के सिद्धान्त का निरूपण इस प्रकार किया गया है-
चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः।
तस्य कर्तारमपि मां विद्ध्यकर्तारमव्ययम् ॥
(गीता 4/13)
''मेरे द्वारा गुणों और कर्मों के विभागपूर्वक चारों वर्णों की रचना की गयी है। उस सृष्टि-रचना आदि का कर्त्ता होने पर भी मुझ अविनाशी परमेश्वर को तू अकर्त्ता जान।

B. 1. गीता के द्वितीय एवं तृतीय अध्याय में कर्मसिद्धान्त का प्रतिपादन है।

2. श्रेयान् स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात्।
स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः॥(गीता-3.35)
अच्छी प्रकार आचरण में लाए हुए दूसरे के धर्म से गुणरहित भी अपना धर्म अति उत्तम है। अपने धर्म में तो मरना भी कल्याण कारक है और दूसरे का धर्म भय को देने वाला है।

3. कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि॥(गीता-2.47)
हे अर्जुन तुम्हारा कर्म करने में ही अधिकार है उसके फलों पर अतः तुम फल का हेतु मत हो अनासक्त होकर कर्म करो।
कर्मणैव हि संसिद्धिमास्थिता जनकादयः।
लोकसंग्रहमेवापि सम्पश्यन्कर्तुमर्हसि॥ (3.20)

C. गीता का सप्तम अध्याय आत्म सिद्धान्त (ज्ञान विज्ञान योग) का प्रतिपादन करता है।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- श्रीमद्भगवद्गीता 3/19-25 (4/16-21) (2/47)

82. 'मेघे माघे गतं वयः' यह सूक्ति किस विद्वान् के द्वारा कही गयी है?
(A) मल्लिनाथ **(B) राजशेखर**
(C) धनपाल **(D) मुरारि**

व्याख्या–

वक्ता	प्रशस्तियाँ (माघ सम्बन्धी)
A. मल्लिनाथ सूरि	* मेघे माघे गतं वयः।
B. राजशेखर	* माघेनेव च माघेन कम्पः कस्य न जायते। * उदिते च पुनर्माघे भारवे भावरवेरिव।
C. धनपाल	माघेन विघ्नतोत्साहा नोत्सहन्ते पदक्रमे।
D. मुरारि	मुरारिपदचिन्तायां तदा माघे रतिं कुरु।

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- मेघदूतम् - दयाशङ्कर शास्त्री, पेज-44

83. यजुर्वेद का प्रतिपाद्य विषय है-
(A) ज्ञान **(B) कर्मकाण्ड**
(C) जादू-टोना **(D) गान**

व्याख्या–

	प्रतिपाद्य विषय	वेद	उपवेद
A.	ज्ञान	ऋग्वेद	आयुर्वेद
B.	कर्मकाण्ड	यजुर्वेद	धनुर्वेद
C.	जादू-टोना	अथर्ववेद	स्थापत्यवेद
D.	गान	सामवेद	गान्धर्ववेद

अतः विकल्प B सही है।
स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-63

84. जैमिनिशाखा किस वेद से सम्बन्धित है?
(A) ऋग्वेद **(B) यजुर्वेद**
(C) सामवेद **(D) अथर्ववेद**

व्याख्या–

* महर्षि पतञ्जलि ने महाभाष्य में ऋग्वेद की 21 शाखाओं का उल्लेख किया है परन्तु इसमें से केवल पाँच शाखाओं का मुख्य रूप से उल्लेख मिलता है।
चरणव्यूह के अनुसार ऋग्वेद की पाँच शाखायें हैं-
1. शाकल शाखा 2. बाष्कलशाखा
3. आश्वलायन शाखा 4. शांखायनशाखा
5. माण्डूकायन शाखा।
* यजुर्वेद के दो भाग हैं- शुक्ल यजुर्वेद तथा कृष्ण यजुर्वेद

यजुर्वेद

शुक्ल यजुर्वेद
1.माध्यन्दिन या वाजसनेयि संहिता
2.काण्व संहिता

कृष्ण यजुर्वेद
1. तैत्तिरीय शाखा
2. मैत्रायणीशाखा
3. काठक या कठ शाखा
4. कपिष्ठल-कठ शाखा

सामवेद के मुख्य दो भाग हैं- पूर्वार्चिक, उत्तरार्चिक
* महाभाष्य में महर्षि पतञ्जलि ने सामवेद की एक हजार शाखाओं का उल्लेख किया है।
सामतर्पण में तेरह शाखाओं का उल्लेख है परन्तु इनमें से तीन शाखाएँ ही उपलब्ध हैं-
1. कौथुमीय शाखा 2. राणायनीय शाखा 3. जैमिनीय शाखा,
* महर्षि पतञ्जलि ने महाभाष्य में अथर्ववेद की नौ शाखाओं का उल्लेख किया है- ''नवधाऽऽथर्वणो वेदः''
अथर्ववेद - 1. पिप्पलाद शाखा 2. शौनक शाखा
3. मौदमहाभाष्य शाखा 4. जाजल शाखा
5. स्तौदशाखा 6. जलदशाखा 7. ब्रह्मवेदशाखा
8. देवदर्शशाखा 9. चारणवैद्यशाखा

अतः विकल्प C सही है।
स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-84

85. 'अध्वर्यु' से युक्त वेद है-
(A) ऋग्वेद **(B) यजुर्वेद**
(C) सामवेद **(D) अथर्ववेद**

व्याख्या–

वेद	ऋषि	उपवेद	ऋत्विक्
A. ऋग्वेद	पैल	आयुर्वेद	होता
B. यजुर्वेद	वैशम्पायन	धनुर्वेद	**अध्वर्यु**
C. सामवेद	जैमिनि	गान्धर्ववेद	उद्गाता
D. अथर्ववेद	सुमन्तु	स्थापत्यवेद	ब्रह्मा

अतः विकल्प B सही है।
स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-63

उत्तरमाला

1.C	2.C	3.A	4.D	5.C	6.C	7.A	8.D	9.C	10.C	11.B	12.B
13.D	14.C	15.D	16.D	17.C	18.C	19.C	20.C	21.C	22.B	23.C	24.A
25.D	26.C	27.B	28.A	29.C	30.C	31.D	32.C	33.D	34.A	35.B	36.A
37.D	38.B	39.C	40.D	41.B	42.C	43.B	44.B	45.B	46.A	47.B	48.B
49.C	50.B	51.C	52.B	53.D	54.D	55.C	56.C	57.B	58.A	59.B	60.C
61.D	62.B	63.A	64.B	65.C	66.B	67.C	68.D	69.A	70.B	71.C	72.B
73.C	74.B	75.C	76.C	77.C	78.A	79.C	80.B	81.B	82.A	83.B	84.C
85.B											

❑❑

4. प्रवक्ता (PGT) संस्कृत 2004

1. 'गण्डस्योपरि पिण्डकः संवृत्तः' है-
(A) सूक्ति (B) काव्यलक्षण
(C) मुहावरा (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या-

A. सूक्ति- सुष्ठु उक्तिः सूक्तिः काव्यों में उक्ति वैचित्र्य अथवा विशेष कथन के लिए सूक्तियों का प्रयोग किया जाता है। **जैसे-** 'न प्रभातरलं ज्योतिरुदेति वसुधातलात्।' (अभि.1/26) कान्ति से देदीप्यमान तेज भूतल से उत्पन्न नहीं होता है।

B. काव्यलक्षण- विभिन्न साहित्याचार्यों के द्वारा स्वविवेक से काव्यलक्षण का प्रतिपादन किया गया है। जैसे- आचार्य मम्मट ने काव्यप्रकाश के प्रथम उल्लास में काव्य का लक्षण किया है- **'तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि।'** दोषों से रहित गुणों से युक्त यदि कहीं पर अलङ्कार न भी हो तो शब्द और अर्थ की समष्टि काव्य है।

* आचार्य विश्वनाथ साहित्यदर्पण में **''वाक्यं रसात्मकं काव्यम्''** आदि के द्वारा काव्य को परिभाषित किया है।

* पण्डितराज जगन्नाथ ने **''रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्''** ऐसा काव्यलक्षण किया है।

C. मुहावरा- व्यावहारिक जीवन में अथवा काव्यों में किसी प्रसङ्ग विशेष के प्राप्त होने पर मुहावरे (लोकोक्तियों) का प्रयोग किया जाता है।

जैसे- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (अङ्क-2) में विदूषक राजा दुष्यन्त के विषय में चिन्तन करते हुए कहता है कि- ☆ 'गण्डस्योपरि पिण्डकः संवृतः' (फोड़े पर फुंसी होना) अभिज्ञानशाकुन्तल में प्रयुक्त अन्य मुहावरे-

☆ 'कृतं भवता निर्मक्षिकम्।'

☆ 'वाष्पं विहरतः' आदि

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत-अभिज्ञानशाकुन्तलम् (अङ्क-2)- कपिलदेव द्विवेदी, पेज- 91

2. 'सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तःकरणप्रवृत्तयः' यह कथन किसका है?
(A) माघ (B) श्रीहर्ष
(C) भारवि (D) कालिदास

व्याख्या-

A. माघ- शिशुपालवध के प्रथमसर्ग में नारद की विधिपूर्वक पूजा करने के पश्चात् श्रीकृष्ण मन में सोचते हैं कि- **गृहानुपैतुं प्रणयादभीप्सवो भवन्ति नापुण्यकृतां मनीषिणः।** (शिशु. 1/14)
'विद्वान् लोग पुण्य कर्म न करने वाले के घर प्रेम से जाने के लिए इच्छुक नहीं होते हैं।'

B. श्रीहर्ष- श्रीहर्ष नैषधीयचरितम् में नल और दमयन्ती के प्रेम-प्रसङ्ग का वर्णन करते हैं- **'झटिति पराशयवेदिनो हि विज्ञाः।'** (नैष. 4/118)
राजा नल ने दमयन्ती को विषमबाण (काम) के रोग से पीड़ित समझ लिया, क्योंकि 'समझदार व्यक्ति शीघ्र ही दूसरे के आशय को जान लेते हैं।'

C. भारवि- महाकवि भारवि किरातार्जुनीयम् के द्वितीय सर्ग में कहते हैं-
सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः परमापदां पदम्। (किरात. 2/30)
कोई कार्य सहसा नहीं करना चाहिए क्योंकि अविवेकपूर्वक किया गया कार्य विपत्ति का मार्ग है।

D. कालिदास- कालिदास कृत अभिज्ञानशाकुन्तलम् के प्रथम अङ्क में राजा दुष्यन्त शकुन्तला के विषय में शङ्का करते हुये कहता है कि- **'सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तःकरणप्रवृत्तयः।'** (अभि.1/22)
'संदेहशील वस्तुओं के विषय में सज्जनों के अन्तःकरण की प्रवृत्तियाँ ही प्रमाण होती हैं।' इसमें राजा दुष्यन्त के द्वारा शकुन्तला विषयक चिन्तन वर्णित है।

अतः विकल्प (D) सही है।

स्रोत-अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/22)- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-54

3. 'श्रद्धा वित्तं विधिश्चेति त्रितयं तत्समागतम्' किस नाटक का श्लोक है?

(A) मुद्राराक्षसम् **(B) उत्तररामचरितम्**
(C) विक्रमोर्वशीयम् **(D) अभिज्ञानशाकुन्तलम्**

व्याख्या-

A. मुद्राराक्षस- मुद्राराक्षस के प्रथम अङ्क में चर (इत) शिष्य से कहता है कि- **'न हि सर्वः सर्वं जानाति।'** (अङ्क-1) सभी लोग सब कुछ नहीं जानते हैं।

B. उत्तररामचरितम्- उत्तररामचरितम् के प्रथम अङ्क में सीता की पवित्रता के विषय में भवभूति वर्णन करते हुए कहते हैं कि- **'तीर्थोदकं च वह्निश्च नान्यतः शुद्धिमर्हतः।'**

(उत्तर.1/13)

श्रीराम सीता जी की पवित्रता का चिन्तन करते हुए कहते हैं कि- तीर्थ, जल और अग्नि, ये अन्य पदार्थों से शुद्धि के योग्य नहीं हैं।

C. विक्रमोर्वशीयम्- विक्रमोर्वशीयम् के पञ्चम अङ्क में कुमार का अपने पिता के प्रति आत्मगत कथन है- **'उत्सङ्गवर्धितानां गुरुषु भवेत् कीदृशः स्नेहः।'**

(विक्रम. 5/10)

कुमार मन ही मन सोचता है कि- 'उन बालकों को अपने माता-पिता के प्रति कितना प्रेम होता होगा, जो उन्हीं की गोद में पलकर बड़े होते होंगे।'

D. अभिज्ञानशाकुन्तलम्- अभिज्ञानशाकुन्तल के सातवें अङ्क में जब दुष्यन्त,शकुन्तला और उनके पुत्र का मिलन होता है तो मारीच ऋषि कहते हैं- **'श्रद्धा वित्तं विधिश्चेति त्रितयं तत्समागतम्।'** (अभि.शा. 7/29)

महर्षि मारीच एक-एक को निर्दिष्ट करते हुए कहते हैं कि परिणामतः श्रद्धा (शकुन्तला), वित्त (पुत्र) और विधि (दुष्यन्त) इस प्रकार तीनों मिल गये हैं।

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत-अभिज्ञानशाकुन्तलम् (7/29)- कपिलदेव द्विवेदी,पेज- 441

4. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के किस अङ्क में प्रथम 'विष्कम्भक' समाप्त होता है?

(A) द्वितीय **(B) तृतीय**
(C) चतुर्थ **(D) पञ्चम**

व्याख्या-

A. द्वितीय अङ्क - द्वितीय अङ्क में मृगया से परिश्रान्त एवं खिन्न विदूषक का राजा दुष्यन्त द्वारा शकुन्तला विषयक वार्तालाप का वर्णन है।

B. तृतीय अङ्क - तृतीय अङ्क में राक्षसों के विघ्न को दूर करने के लिए राजा का आश्रम में प्रस्थान तथा दुष्यन्त और शकुन्तला के गान्धर्व-विवाह का वर्णन है।इसी तृतीय अङ्क में प्रथम विष्कम्भक समाप्त होता है अङ्क के आरम्भ में महर्षि कण्व का शिष्य भूत एवं भावी घटना की सूचना देता है।

अतः विकल्प B सही है।

C. चतुर्थ अङ्क- चतुर्थ अङ्क में अनसूया-प्रियंवदा का फूल चुनते हुए रङ्गमञ्च पर प्रवेश तथा दुष्यन्त के चिन्तन में मग्न शकुन्तला को दुर्वासा द्वारा शाप तक का वृत्तान्त भी विष्कम्भक के अन्तर्गत आता है। यहाँ पर दुर्वासा संस्कृत में तथा अनसूया एवं प्रियंवदा प्राकृत में बोलती हैं सभी पात्र मध्यम श्रेणी के हैं अतः शुद्ध विष्कम्भक है।

वृत्तवर्तिष्यमाणानां कथांशानां निदर्शकः।
संक्षेपार्थस्तु विष्कम्भो मध्यपात्रप्रयोजितः॥

(दश.1/59)

व्यतीत हो चुके और आगे आने वाले कथा के अंशों का सूचक, संक्षिप्त अर्थ वाला तथा मध्यम श्रेणी के पात्रों द्वारा प्रयुक्त विष्कम्भक को शुद्ध विष्कम्भक कहा गया है।

D. पञ्चम अङ्क- पञ्चम अङ्क का आरम्भ हंसपदिका के गीत से होता है, तत्पश्चात् कञ्चुकी राजा दुष्यन्त को शकुन्तला शार्ङ्गरव, शारद्वत एवं गौतमी के आने की सूचना देता है।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम्- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-134

5. 'स्त्रीणामशिक्षितपटुत्वममानुषीषु' यह सूक्ति किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है?

(A) रघुवंशम् **(B) स्वप्नवासवदत्तम्**
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् **(D) शिशुपालवधम्**

व्याख्या-

A. रघुवंशम्- रघुवंश के सोलहवें सर्ग में जब रात्रि के समय कुश के शयन कक्ष में कोई स्त्री आ गई जो अयोध्या की अधिष्ठात्री देवी थी, से कुश बोले- **'रघूणां मनः परस्त्री विमुखप्रवृत्तिः।'** (रघु.16/8)

रघुवंशियों का चित्त पराई स्त्री की ओर नहीं जाता।

B. **स्वप्नवासवदत्तम्**- भास प्रणीत स्वप्नवासवदत्तम् के चतुर्थ अङ्क में पद्मावती का आत्मगत कथन- **'स्त्री स्वभावस्तु कातरः।'** (स्वप्न.4/9)
अर्थात् नारियों का स्वभाव तो अधीर होता है।

C. **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के पञ्चम अङ्क में जब शकुन्तला राजा दुष्यन्त से विवाह होने की बात याद दिलाती है तो राजा दुष्यन्त तापसी वृद्धा से कहता है कि- **'स्त्रीणामशिक्षितपटुत्वममानुषीषु।'** (अभि.5/22) स्त्रियों में जो मानवजाति से भिन्न स्त्रियाँ हैं उनमें भी बिना शिक्षा के पटुता देखी जाती है।
अतः विकल्प C सही है।

D. **शिशुपालवधम्- स्फुटमभिभूषयति स्त्रियस्त्रपैव।** (शिशु.7/38)
महाकवि माघ नायिका के सौन्दर्य का वर्णन करते हुए कहते हैं कि 'लज्जा ही स्त्रियों को अलङ्कृत करती है'

स्रोत -अभिज्ञानशाकुन्तलम् (5/22)-कपिलदेव द्विवेदी,पेज - 207

6. 'सर्वः कान्तमात्मीयं पश्यति' यह सूक्ति वाक्य किसके द्वारा कथित है?
(A) चारुदत्त **(B) चाणक्य**
(C) दुष्यन्त **(D) उदयन**

व्याख्या-

A. शूद्रक द्वारा रचित मृच्छकटिकम् के प्रथम अङ्क में धन से रहित हुआ चारुदत्त निर्धनता के विषय में विदूषक मैत्रेय से कहता है कि- **'अहो निर्धनता सर्वापदामास्पदम्।'** (मृच्छ.1.14) अर्थात् सारी आपदाओं का (कष्टों) मूल कारण निर्धनता ही है।

B. विशाखदत्त प्रणीत मुद्राराक्षस नाटक के प्रथम अङ्क में चाणक्य चन्दनदास से कहता है कि-
'राजनि अविरुद्धाभिर्वृत्तिभिर्वर्त्तितव्यम्' अर्थात् राजा के अनुकूल ही व्यवहार करना चाहिये। (मुद्रा.अङ्क-1)

C. कालिदास द्वारा रचित अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के द्वितीय अङ्क में राजा दुष्यन्त शकुन्तला के सौन्दर्य की चर्चा विदूषक (माधव्य) से करता है-
'सर्वः कान्तमात्मीयं पश्यति'(अभि.शा. अङ्क-2)
अर्थात् सभी आत्मीय (अपने) जनों को सुन्दर समझते हैं।
अतः विकल्प C सही है।

D. महाकवि भास द्वारा रचित स्वप्नवासवदत्तम् के षष्ठ अङ्क में राजा उदयन पद्मावती की सुन्दरता की तुलना वासवदत्ता से करते हुये कहता है कि -
'परस्परगता लोके दृश्यते रूपतुल्यता' (स्वप्न. 6.14)
अर्थात् संसार में परस्पर में रूप की समानता देखी जाती है।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम्- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-111

7. 'शकार' का विवेचन किस कृति में है-
(A) किरातार्जुनीयम् **(B) मृच्छकटिकम्**
(C) वेणीसंहार **(D) नागानन्द**

व्याख्या-
ग्रन्थों में पात्रों का वर्णन-

A. **किरातार्जुनीयम् (भारवि)-** वनेचर, युधिष्ठिर, द्रौपदी, शिव, अर्जुन, वेदव्यास आदि।

B. **मृच्छकटिकम् (शूद्रक)-** चारुदत्त, वसन्तसेना, धूता, शकार, शर्विलक, रदनिका, आर्यक, पालक, मैत्रेय (विदूषक) आदि।
अतः विकल्प B सही है।

C. **वेणीसंहार(भट्टनारायण)-** भीम,द्रौपदी,दुःशासन,दुर्योधन आदि।

D. **नागानन्द (हर्षवर्धन)-** जीमूतवाहन, मलयवती, शङ्खचूड़, मित्रावसु आदि।

स्रोत- संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-324

8. 'मृच्छकटिकम्' में है-
(A) अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता
(B) अहो अविश्वसनीयाः पुरुषाः
(C) अहो दुरासदो राजमहिमा
(D) अहो निर्धनता सर्वापदामास्पदम्

व्याख्या-

A. महाकवि भारवि कृत किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में पाण्डवों की शक्ति का स्मरण करके शङ्कित हुये दुर्योधन का वर्णन वनेचर युधिष्ठिर से कहता है-
'अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता।' (किरात.1.23) बलवान् के साथ किया गया विरोध बड़ा ही दुःखान्त होता है।

B. कालिदास कृत मालविकाग्निमित्रम् नाटक के तृतीय अङ्क में रानी इरावती विदूषक से कहती है कि-

'अविश्वसनीयाः पुरुषाः' (माल.अङ्क-3)

अर्थात् पुरुष विश्वासपात्र नहीं होते।

C. मालविकाग्निमित्रम् नाटक के प्रथम अङ्क में जब गणदास को राजा के सामने उपस्थित किया जाता है तो वह राजा से कहता है कि-

'अहो दुरासदो राजमहिमा' (मालवि.अङ्क-1)

अर्थात्- वाह! महाराज का तेज भी अद्वितीय है।

D. महाकवि शूद्रक कृत मृच्छकटिकम् के प्रथम अङ्क में चारुदत्त निर्धनता के विषय में विदूषक से कहता है-

'अहो निर्धनता सर्वापदामास्पदम्' (मृच्छ.1.14) अर्थात् निर्धनता सब आपदाओं का निवास स्थान है।

अतः विकल्प (D) सही है।

स्रोत- मृच्छकटिकम्- श्रीनिवास शास्त्री, पेज-16

9. 'मृच्छकटिकम्' के निम्नांकित पात्रों में कौन संस्कृत नहीं बोलता है-

(A) चारुदत्त **(B) वसन्तसेना**

(C) आर्यक **(C) शर्विलक**

व्याख्या-

मृच्छकटिकम् के 30 पात्रों में से 6 पात्र संस्कृत बोलते हैं शेष प्राकृत बोलते हैं।

संस्कृत बोलने वाले छः पात्र-

चारुदत्त, आर्यक, शर्विलक, विट, सूत्रधार, अधिकरणिक।

- रूपकों में स्त्रीपात्रों की भाषा प्रायः प्राकृत होती है।
- मृच्छकटिकम् में वसन्तसेना शौरसेनी प्राकृत बोलती है।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-324

10. 'मृच्छकटिकम्' किस प्रकार का रूपक है?

(A) नाटक **(B) भाण**

(C) व्यायोग **(D) प्रकरण**

व्याख्या-

संस्कृत रूपकों के दस भेद

	रूपक	अंक-संख्या	उदाहरणम्
(1)	नाटक	5 से 10अङ्क	अभिज्ञानशाकुन्तलम् स्वप्नवासवदत्तम् उत्तररामचरितम्
(2)	प्रकरण	10अङ्क	**मृच्छकटिकम्** मालतीमाधवम् शारिपुत्रप्रकरण, पुष्पभूषित
(3)	भाण	1अङ्क	लीलामधुकरम्, शृङ्गारशेखर, मर्कटमदलिका, धूर्तसमागम
(4)	व्यायोग	1अङ्क	सौगन्धिकाहरणम्, जामदग्न्यजयम्
(5)	समवकार	3अङ्क	समुद्रमन्थनम् (12नायक), नवग्रहचरितम्
(6)	डिम	4अङ्क	त्रिपुरदाह(16नायक)
(7)	ईहामृग	4अङ्क/1अङ्क	कुसुमशेखरविजयम्
(8)	अङ्क (उत्सृष्टिकांक)	1अङ्क	शर्मिष्ठा-ययातिः
(9)	वीथी	1अङ्क	मालविका
(10)	प्रहसन	1अङ्क	कन्दर्पकेलिः/धूर्तचरितम्

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- मृच्छकटिकम्- रमाशङ्कर त्रिपाठी, भू. पेज- xxxi

11. किस महाकाव्य को 'विद्वानों के लिए औषधि' कहा जाता है?

(A) शिशुपालवधम् **(B) नैषधीयचरितम्**

(C) किरातार्जुनीयम् **(D) रघुवंशम्**

व्याख्या-

A. शिशुपालवधम्- 'मेघे माघे गतं वयः' मल्लिनाथ कहते हैं महाकवि माघ का शिशुपालवध तथा कालिदास का मेघदूत पढ़ने में ही सारी उम्र निकल जाती है।

B. नैषधीयचरितम्- 'नैषधं विद्वदौषधम्' नैषधीयचरित की प्रशंसा करते हुये समालोचकों ने कहा है-

नैषध को विद्वानों के लिये औषध या रसायन माना जाता है।

अतः विकल्प (B) सही है।

C. किरातार्जुनीयम्- भारवेरर्थगौरवम्- उद्भट ने भारवि की प्रशंसा में कहा है कि 'भारवि के काव्यों में अर्थगौरव है।'

D. रघुवंशम्- 'क इह रघुकारे न रमते'- कालिदास द्वारा रचित रघुवंश महाकाव्य की प्रशंसा में किसी आलोचक ने प्रशंसा करते हुये कहा है कि-कौन है जो रघुवंश में रमण नहीं करता अर्थात् सभी लोग रघुवंश पढ़ना चाहते हैं।

स्रोत- नैषधीयचरितम्- सुरेन्द्रदेव शास्त्री, भू.पेज-52

12. 'राघवविलास' किसकी रचना है?
(A) राजशेखर (B) कुन्तक
(C) भरत (D) विश्वनाथ

व्याख्या-

	ग्रन्थकार	ग्रन्थ	अनुमानित समय
A.	राजशेखर	काव्यमीमांसा	नवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध
B.	कुन्तक	वक्रोक्तिजीवितम्	ग्यारहवीं शताब्दी
C.	भरत	नाट्यशास्त्रम्	100ई.पू. से 300ई.
D.	विश्वनाथ	राघवविलास साहित्यदर्पण	चौदहवीं शताब्दी

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- साहित्यदर्पण-भवानीशंकर शर्मा, भू.पेज-19

13. 'मेघे माघे गतं वयः' यह सूक्ति किस विद्वान् के द्वारा कही गयी है?
(A) मल्लिनाथ सूरि (B) राजशेखर
(C) जयदेव (D) जयन्तभट्ट

व्याख्या-

A. मल्लिनाथ सूरि- ''मेघे माघे गतं वयः।।''
मल्लिनाथ कहते हैं महाकवि माघ का शिशुपालवध तथा कालिदास के मेघदूतम् को पढ़ने में ही पूरी अवस्था (उम्र) बीत जाती है। **अतः विकल्प A सही है।**

B. राजशेखर- 'माघेनेव च माघेन कम्पः कस्य न जायते'
राजशेखर महाकवि माघ की प्रशंसा में कहते हैं कि- जिस प्रकार माघ महीने में ठण्ड से लोग काँपते हैं उसी प्रकार भला माघ कवि से कौन नहीं काँपता है।

C. जयदेव- 'पञ्चबाणस्तु बाणः' जयदेव बाणभट्ट की प्रशंसा में कहते हैं कविता रूपीकामिनी के कुतुहल को बढ़ाने के लिये बाण कामदेव के समान हैं।

D. जयन्तभट्ट-
अमृतेनेव संसिक्ताश्चन्दनेनेव चर्चिताः।
चन्द्रांशुभिरिवोद्धृष्टाः कालिदासस्य सूक्तयः।।
(न्यायमञ्जरी)

स्रोत- मेघदूतम्- दयाशङ्कर शास्त्री, पेज-44

14. 'सतां सद्भिः सङ्गः कथमपि हि पुण्येन भवति' यह सूक्ति किस नाट्यग्रन्थ से सम्बद्ध है?
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (B) उत्तररामचरितम्
(C) मृच्छकटिकम् (D) विक्रमोर्वशीयम्

व्याख्या-

A. अभिज्ञानशाकुन्तलम्- कालिदास द्वारा रचित अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के पञ्चम अङ्क में दुश्चरित्र सिद्ध की हुई शकुन्तला के विषय में शार्ङ्गरव कहता है-
अतः परीक्ष्य कर्तव्यं विशेषात् संगतं रहः।
अज्ञातहृदयेष्वेवं वैरीभवति सौहृदम्।। (अभि.5.24)
गुप्त मैत्री विशेष रूप से परीक्षा करके ही करनी चाहिए। परस्पर अज्ञात हृदय वाले व्यक्तियों के साथ किया हुआ प्रेम इसी प्रकार वैररूप में परिणत होता है।

B. उत्तररामचरितम्- भवभूति विरचित उत्तररामचरितम् नाटक के द्वितीय अङ्क में वनदेवता (वासन्ती) तापसी (आत्रेयी) से कहती है कि-
'सतां सद्भिः सङ्गः कथमपि हि पुण्येन भवति।' (उत्तर.2.1) अर्थात् सज्जनों का सज्जनों से मिलन बड़े पुण्य से होता है। **अतः विकल्प (B) सही है।**

C. मृच्छकटिकम्- शूद्रक प्रणीत मृच्छकटिकम् प्रकरण के द्वितीय अङ्क में संवाहक वसन्तसेना से कहता है -
सत्कारधनः खलु सज्जनः कस्य न भवति चलाचलं धनम्।
यः पूजयितुमपि न जानाति स पूजाविशेषमपि जानाति।।
(मृच्छ.2.15)
दूसरों का आदर करना ही सज्जनों का धन होता है? किसका धन नाशवान् नहीं होता है? (अर्थात् सभी लोगों का धन नश्वर होता है)। जो आदमी दूसरों का आदर भी करना नहीं जानता है, वह क्या आदर के विशेष तरीके को जानता है? (अर्थात् नहीं जानता है) ।। 15 ।।

D. विक्रमोर्वशीयम्- विक्रमोर्वशीयम् नाटक के तृतीय अङ्क में कञ्चुकी कहता है कि-
''स्त्रीषु कष्टोऽधिकारः'' अर्थात् वास्तव में स्त्रियों में सेवा का अधिकार दुःखदायी होता है।

स्रोत- उत्तररामचरितम् (2/1) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-91

15. ''शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्'' सूक्ति है-
(A) रघुवंशम् की
(B) कुमारसम्भवम् की
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् की
(D) विक्रमोर्वशीयम् की

व्याख्या-

➢ कालिदासकृत कुमारसम्भवम् महाकाव्य के पञ्चम सर्ग में पार्वती की तपस्या को देखकर ब्रह्मचारी पार्वती को समझाते हुए कहता है कि-
''शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्'' (कुमार.5.33) धर्म के जितने भी कार्य है उनमें शरीर की रक्षा करना सबसे पहला कार्य है। शरीर ही सभी धर्मों का साधन है।
अतः विकल्प B सही है।

➢ कालिदासकृत रघुवंशम् महाकाव्य के प्रथम सर्ग में पुत्र प्राप्ति का उपाय बताने के अवसर पर वशिष्ठ राजा दिलीप से कहते हैं-
'प्रतिबध्नाति हि श्रेयः पूज्यपूजाव्यतिक्रमः।' (रघु.1.79)
पूज्यों की पूजा का उल्लंघन कल्याण को रोक देता है।

➢ कालिदास द्वारा रचित अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के चतुर्थ अङ्क में विदाई के अवसर पर अनसूया शकुन्तला से कहती है-
गुर्वपि विरहदुःखमाशाबन्धः साहयति। (अभि. 4.16) आशा का बन्धन विरह के कठोर दुःख को भी सहन करा देता है।

➢ कालिदास द्वारा रचित विक्रमोर्वशीयम् के प्रथम अङ्क में चित्ररथ राजा से कहता है-
'अनुत्सेकः खलु विक्रमालङ्कारः।' (विक्रम.अङ्क-1) निश्चय ही पराक्रम की शोभा निरभिमानता है अर्थात् जो पराक्रमी होते हैं उन्हें विनय ही शोभा देता है।

स्रोत- कुमारसम्भवम् (5/33)

16. ''देशे-देशे कलत्राणि देशे-देशे च बान्धवाः तं तु देशं न पश्यामि यत्र भ्राता सहोदरः'' उपर्युक्त श्लोक में महत्त्व प्रतिपादित है-
(A) कलत्र का **(B) बन्धु का**
(C) देश का **(D) सहोदर भ्राता का**

व्याख्या-
वाल्मीकि रामायण के युद्धकाण्ड में घायल हुये लक्ष्मण के प्रति प्रेम को व्यक्त करते हुए श्रीराम कहते हैं- **देशे-देशे कलत्राणि देशे-देशे च बान्धवाः।**
तं तु देशं न पश्यामि यत्र भ्राता सहोदरः॥
(वा.रा.युद्धकाण्ड-101.15)
प्रत्येक देश में स्त्रियाँ मिल सकती हैं, देश-देश में जाति-भाई उपलब्ध हो सकते हैं, परन्तु ऐसा कोई देश मुझे नहीं दिखाई देता जहाँ सहोदर भाई मिल सके।
प्रस्तुत पद्य में सहोदर भ्राता के स्नेह (प्रेम) का वर्णन किया गया है। **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत- वाल्मीकिरामायण (युद्धकाण्ड 101.15) गीताप्रेस, पेज-514

17. 'स्वर्गारोहण' काव्य के रचनाकार हैं-
(A) पाणिनि **(B) पतञ्जलि**
(C) वररुचि (कात्यायन) **(D) भर्तृहरि**

व्याख्या-

ग्रन्थकार	अनुमानित समय	ग्रन्थ
पाणिनि	500ई.पू.	जामवन्तीविजयम् (पातालविजयम्)
पतञ्जलि	185ई.पू.	महानन्दकाव्यम्
वररुचि	300ई.पू.	स्वर्गारोहण
भर्तृहरि	छठी शताब्दी	नीतिशतकम्, शृङ्गारशतकम्, वैराग्यशतकम्

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- संस्कृत-साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-254

18. निम्नलिखित में से कौन महाकाव्य नहीं है?
(A) किरातार्जुनीयम् **(B) मेघदूतम्**
(C) नैषधीयचरितम् **(D) रघुवंशम्**

व्याख्या-

बृहत्त्रयी

किरातार्जुनीयम्	शिशुपालवधम्	नैषधीयचरितम्
(18सर्ग)	(20सर्ग)	(22सर्ग)
महाकवि भारवि	महाकवि माघ	श्रीहर्ष

लघुत्रयी

रघुवंशम्	कुमारसम्भवम्	मेघदूतम्
(19सर्ग)	(17सर्ग)	(2खण्ड)
कालिदास	कालिदास	कालिदास
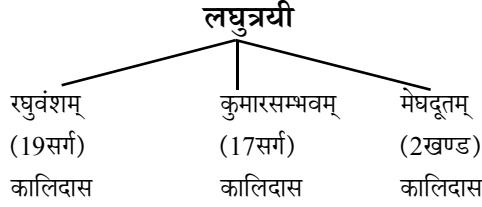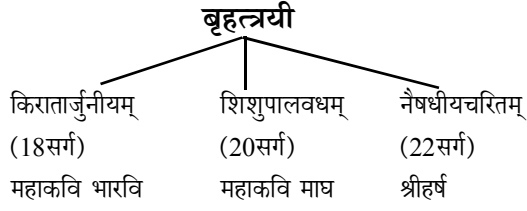
साहित्यदर्पणकार, आचार्य विश्वनाथ ने महाकाव्य का लक्षण इस प्रकार किया है-

''सर्गबन्धो महाकाव्यं तत्रैको नायकः सुरः॥'' 6/315॥

महाकाव्य का निबन्धन सर्गों में होता है, इसका नायक सद्वंश क्षत्रिय अथवा देवता होता है।

'खण्डकाव्यं भवेत्काव्यस्यैकदेशानुसारि च' (सा.द.6.329) उदाहरण- मेघदूत आदि। मेघदूतम् का विभाजन दो खण्डों में हुआ है पूर्व तथा उत्तर। अतः मेघदूतम् खण्डकाव्य (गीतिकाव्य) है।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- मेघदूतम्- दयाशङ्कर शास्त्री, भू.पेज-32

19. 'जग्राह पाठ्यमृग्वेदात्' यह कथन किसका है-
(A) भरतमुनि का (B) धनञ्जय का
(C) मम्मट का (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

व्याख्या-

A. आचार्य भरतमुनि नाटक के स्वरूप का वर्णन नाट्यशास्त्र के प्रथम अध्याय में करते हुये कहते हैं-

जग्राह पाठ्यमृग्वेदात् सामभ्यो गीतमेव च।
यजुर्वेदादभिनयान् रसानाथर्वणादपि॥ (नाट्य.-1.17)

नाट्य में पाठ्य सामग्री ऋग्वेद से, गीत को सामवेद से, अभिनय को यजुर्वेद से तथा रस को अथर्ववेद से ग्रहण किया गया है। पाठ्य, गीत, अभिनय और रस ये नाट्य के मूलतत्त्व हैं। **अतः विकल्प (A) सही है।**

B. आचार्य धनञ्जय दशरूपक के प्रथमप्रकाश में नाट्य का लक्षण करते हैं-

अवस्थानुकृतिर्नाट्यं, रूपं दृश्यतयोच्यते।
रूपकं तत्समारोपात्, दशधैव रसाश्रयम्॥ (दशरूपक1.7)

'अवस्थानुकृतिर्नाट्यं' अर्थात् अवस्था का अनुकरण ही नाट्य है। नाट्य दृश्य होने के कारण रूप कहा जाता है आरोप किये जाने के कारण नाट्य को रूपक कहा जाता है रसों पर आश्रित यह रूपक दस प्रकार का होता है।

C. आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश के पञ्चमोल्लास में गुणीभूतव्यङ्ग्य के आठ भेदों का वर्णन करते हैं-

(1)	अगूढ़ व्यङ्ग्य	(5)	सन्दिग्धप्राधान्य
(2)	इतर का अङ्ग	(6)	तुल्यप्राधान्य
(3)	वाच्यसिद्धि का अङ्ग	(7)	काकु से आक्षिप्त
(4)	अस्फुट	(8)	असुन्दर

स्रोत- नाट्यशास्त्र (1.7)- ब्रज मोहन चतुर्वेदी, पेज-

20. नाटकों में भरतवाक्य का प्रयोग होता है-
(A) प्रारम्भ में (B) अन्त में
(C) मध्य में (D) कहीं भी

व्याख्या-

(A) नाटक के प्रारम्भ में नान्दी का विधान करते हुए आचार्य विश्वनाथ साहित्यदर्पण के षष्ठ परिच्छेद में कहते हैं कि-

आशीर्वचनसंयुक्ता स्तुतिर्यस्मात्प्रयुज्यते।
देवद्विजनृपादीनां तस्मान्नान्दीति संज्ञिता॥(सा.द.6/24)

देवता, ब्राह्मण तथा राजा आदि की आशीर्वाद युक्ति स्तुति इसमें की जाती है अतः इसे नान्दी कहते हैं।

(B) नाटक के अन्त में प्रयुक्त आशीर्वादात्मक पद्य को भरतवाक्य कहते हैं। महाभाष्यकार पतञ्जलि के अनुसार ग्रन्थ के आदि, मध्य तथा अन्त में मङ्गलाचरण होना चाहिये (मङ्गलादीनि मङ्गलमध्यामानि मङ्गलान्तानि च शास्त्राणि प्रथन्ते....) भरत वाक्य सम्भवतः उसी परम्परा के पालनार्थ अन्तिम मङ्गल के रूप में नाटकों में रखा गया है।

''भरतानां वाक्यम् इति भरतवाक्यम्।'' अर्थात् भरतों अथवा नटों का अशेष अथवा नाट्याचार्य भरत का आशीष।

भरतवाक्य का लक्षण इस प्रकार है-

नाट्यान्ते नायकप्रोक्तं प्रजामङ्गलसूचकम्।
भरतानां प्रियत्वाच्च तद्वाक्यमभिधीयते॥

अतः विकल्प B सही है।

C. धनञ्जय प्रणीत दशरूपक के प्रथम प्रकाश में प्रवेशक का प्रवेश दो अङ्कों के मध्य में होना चाहिये जिसका लक्षण निम्नवत् है-

तद्वदेवानुदात्तोक्त्या नीचपात्रप्रयोजितः।
प्रवेशोऽङ्कद्वयस्यान्तः शेषार्थस्योपसूचकः॥

(दश.1.60-61)

विष्कम्भक की तरह भूत एवं भावी कथानक को जोड़ने वाला नीच पात्रों के द्वारा निम्न भाषा से प्रयुक्त, दो अङ्कों के अन्तराल में स्थित, शेष अर्थ का सूचक प्रवेशक कहा जाता है।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम्- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-453

21. सूत्रधार होता है-
(A) नायक के रूप में अभिनय करने के लिये
(B) नाटक समाप्त करने के लिए
(C) अभिनय का निर्देशन एवं नियन्त्रण करने के लिए
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

व्याख्या-

सूत्रधार का अर्थ है सूत्र को धारण करने वाला। रङ्गमञ्च पर अभिनेय नाटक के कथासूत्र की अवतारणा करने वाला व्यक्ति ही सूत्रधार कहा जाता है-

नाट्यस्य यदनुष्ठानं तत् सूत्रं स्यात् सबीजकम्।
रङ्गदैवतपूजाकृत् सूत्रधार इति स्मृतः॥

अर्थात् नाट्य के अनुष्ठान को सूत्र कहते हैं और उस सूत्र का धारक तथा मञ्च के अधिष्ठित देवता का समर्चक ही सूत्रधार होता है। नाट्योपकरण आदि ही सूत्र हैं और उन्हें धारण करने वाला व्यक्ति ही सूत्रधार कहा जाता है-

नाट्योपकरणादीनि सूत्रमित्यभिधीयते।
सूत्रं धारयतीत्यर्थे सूत्रधारो निगद्यते॥

नायक के रूप में अभिनय करने के लिए तथा नाटक समाप्त करने के लिए सूत्रधार का प्रयोग नहीं होता है। अपितु अभिनय का निर्देशन एवं नियन्त्रण करने के लिए सूत्रधार नाटक के प्रारम्भ में मञ्च पर प्रवेश करता है।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- छन्दोऽलङ्कारसौरभम्- राजेन्द्र मिश्र, पेज-48

22. अभिनेता गण जहाँ पर नाटक उपयुक्त वेश-भूषा धारण करते हैं, उसे कहते हैं-

(A) पूर्वरङ्ग	**(B) नेपथ्य**
(C) जनान्तिक	**(D) स्वगत**

व्याख्या-

A. पूर्वरङ्ग- पूर्वरङ्ग को परिभाषित करते हुये आचार्य धनञ्जय दशरूपक के तृतीय प्रकाश में कहते हैं-

पूर्वरङ्गं विधायादौ सूत्रधारे विनिर्गते।
प्रविश्य तद्वदपरः काव्यमास्थापयेन्नटः॥ (दश.3.2)

सर्वप्रथम पूर्वरङ्ग का कार्य करके सूत्रधार के चले जाने पर, उसी की तरह वेशभूषा वाला दूसरा नट प्रवेश करके काव्य की स्थापना करे। जिसमें पहले सामाजिक-वर्ग को अनुरञ्जित किया जाता है वह पूर्वरङ्ग है।

B. नेपथ्य- जहाँ अभिनेता एवं अभिनेत्रियाँ नाटक के उपयुक्त वेशभूषा धारण करते हैं उसे नेपथ्य कहा जाता है।

''कुशीलवकुटुम्बस्य गृहं नेपथ्यमुच्यते।''

C. जनान्तिक- दशरूपक के प्रथम प्रकाश में आचार्य धनञ्जय जनान्तिक का लक्षण करते हैं-

त्रिपताकाकरेणान्यानपवार्यान्तरा कथाम्।
अन्योन्यामन्त्रणं यत्स्याज्जनान्ते तज्जनान्तिकम्॥

(दश.1.65)

चल रहे संवाद के बीच में, त्रिपताकारूप हाथ के द्वारा दूसरे पात्रों को बचाकर कतिपय जनों के मध्य दो पात्र आपस में जो बातचीत करते हैं वह जनान्तिक कहलाता है।

D. स्वगत- स्वगत का लक्षण आचार्य धनञ्जय दशरूपक के प्रथम प्रकाश में करते हैं-

अश्राव्यं स्वगतं मतम्। (दश.1.64)

अश्राव्य वस्तु (अर्थात् किसी को भी न सुनने लायक) को स्वगत कहते हैं।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- नाट्यशास्त्र- ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज-70

23. नाट्यशास्त्र के प्रवर्तक हैं-

(A) धनञ्जय	**(B) रामचन्द्रगुणचन्द्र**
(C) भरतमुनि	**(D) विश्वनाथ**

व्याख्या-

प्रवर्तक आचार्य	ग्रन्थ	अनुमानित समय
A. धनञ्जय	दशरूपक	दशम शताब्दी का उत्तरार्द्ध
B. रामचन्द्र-गुणचन्द्र	नाट्यदर्पण	बारहवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध
C. भरतमुनि	नाट्यशास्त्र	ई.पू. द्वितीय शताब्दी
D. विश्वनाथ	साहित्यदर्पण	14वीं शताब्दी

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- दशरूपक - बैजनाथ पाण्डेय, पेज - 03

24. नाटक में कौन सा रस सर्वमान्य नहीं है?

(A) शान्त **(B) शृङ्गार**

(C) वीर **(D) हास्य**

व्याख्या-

'नाट्यशास्त्र' के प्रणेता आचार्य भरतमुनि ने छठे अध्याय में नाटक में आठ रस माना है-

रस-शृङ्गारहास्यकरुणा रौद्रवीरभयानकाः।
बीभत्साद्भुतसंज्ञौ चेत्यष्टौ नाट्ये रसाः स्मृताः॥

(ना.शा.6/15)

शृङ्गार,हास्य,करुण,रौद्र,वीर,भयानक,बीभत्स,अद्भुत ये आठ रस हैं।

स्थायीभाव-

रतिर्हासश्च शोकश्च क्रोधोत्साहौ भयं तथा।
जुगुप्सा विस्मयश्चेति स्थायीभावाः प्रकीर्तिताः॥

(ना.शा.6/17)

रति,हास,शोक,क्रोध,उत्साह,भय,जुगुप्सा,विस्मय ये आठ स्थायीभाव हैं। भरतमुनि ने नाट्य में शान्तरस को नहीं गिनाया है।

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- दशरूपक- बैजनाथ पाण्डेय, पेज-367

25. नाट्यशास्त्र में नान्दी से अभिप्रेत है-

(A) नान्दी देवता **(B) बैल**

(C) मङ्गलाचरण **(D) पात्र**

व्याख्या-

नान्दी का तात्पर्य है नन्दित करने वाली नाट्याभिनय के पूर्व अर्थात् जवनिका (पर्दा) खुलने के पूर्व ही मञ्च पर जो संगीतक प्रस्तुत किया जाता है उसे नान्दी अथवा नान्दीपाठ कहते हैं।

आचार्य विश्वनाथ साहित्यदर्पण के षष्ठ परिच्छेद में नान्दी का लक्षण करते हैं-

आशीर्वचनसंयुक्ता स्तुतिर्यस्मात्प्रयुज्यते।
देवद्विजनृपादीनां तस्मान्नान्दीति संज्ञिता॥

(सा.द.6.24)

देवता, ब्राह्मण तथा राजादिकों की आशीर्वाद युक्त स्तुति इससे की जाती है अतः इसे नान्दी कहते हैं।

इससे लोग आनन्दित होते हैं अतः यह नान्दी है।

नान्दी में बारह या आठ पद होने चाहिए नान्दी को ही मङ्गलाचरण कहते हैं। मङ्गलाचरण के तीन प्रकार हैं-

''आशीर्नमस्क्रिया वस्तुनिर्देशो वापि तन्मुखम्''

अर्थात् आशीर्वादात्मक, वस्तुनिर्देशात्मक तथा नमस्कारात्मक।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- छन्दोऽलङ्कारसौरभम्- राजेन्द्र मिश्र, पेज-47

26. 'ध्वनिरात्मा काव्यस्य' इस परिभाषा से सम्बद्ध आचार्य हैं-

(A) विश्वनाथ **(B) आनन्दवर्धन**

(C) दण्डी **(D) वामन**

व्याख्या-

➢ आचार्य आनन्दवर्धन ध्वन्यालोक के प्रथम उद्योत में काव्य की आत्मा ध्वनि को मानते हुए कहते हैं कि-

'काव्यस्यात्मा ध्वनिः' (ध्वन्या. 1.1)

अर्थात् काव्य की आत्मा ध्वनि है।

अतः विकल्प B सही है।

➢ आचार्य विश्वनाथ साहित्यदर्पण के प्रथम परिच्छेद में काव्य का लक्षण करते हैं-

'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' (सा.द. 1.3)

अर्थात् रसात्मक वाक्य ही काव्य है।

'रस एवात्मा साररूपतया जीवनाधायको तस्य' सार अर्थात् सबसे प्रधान होने के कारण रस ही जिसका जीवनभूत आत्मा है वह वाक्य रसात्मक वाक्य है।

➢ आचार्य दण्डी काव्यादर्श के प्रथम परिच्छेद में काव्य का लक्षण करते हैं-

'शरीरं तावदिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली' (काव्या.1.10)

अर्थात् इष्ट-सरस मनोहरतया वर्णन करने के लिए अभिप्रेत अर्थ से युक्त शब्द को काव्य का शरीर कहा जाता है।

➢ आचार्य वामन काव्यालङ्कारसूत्र के प्रथम अधिकरण के द्वितीय अध्याय में काव्य का लक्षण करते हैं-
'रीतिरात्मा काव्यस्य' (काव्या.-1.2.6)
रीति ही काव्य की आत्मा है।

स्रोत- ध्वन्यालोक (1.1)

27. बाण ने 'कादम्बरी' में किस रीति का प्रयोग किया है?
(A) गौणी **(B) वैदर्भी**
(C) पाञ्चाली **(D) लाटी**

व्याख्या-

A. गौणी रीति के कवि-
1. अम्बिकादत्तव्यास 2. मुरारि 3. भट्टनारायण

B. वैदर्भी रीति के कवि- 1. कालिदास 2. दण्डी 3. शूद्रक 4. अश्वघोष 5. भास 6. हर्षवर्धन 7. दिङ्नाग 8. पण्डिता क्षमाराव 9. भर्तृहरि 10. अमरुक 11. विष्णुशर्मा

C. पाञ्चाली- 1. बाणभट्ट

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- कादम्बरी कथामुखम्-तारिणीश झा, पेज भू.-24

28. 'हारीत' पुत्र था-
(A) महर्षि अगस्त्य का
(B) महर्षि जाबालि का
(C) महर्षि श्वेतकेतु का
(D) महर्षि विश्वामित्र का

व्याख्या-

पति/पत्नी	सन्तान
A. अगस्त्य-लोपामुद्रा	दृढदस्यु/इध्मबाहु
B. महर्षि जाबालि	हारीत
C. श्वेतकेतु-लक्ष्मी	पुण्डरीक
D. महर्षि विश्वामित्र-मेनका	शकुन्तला

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- कादम्बरी कथामुखम्-तारिणीश झा, भू.पेज-33

29. शाल्मली वृक्ष का विस्तृत वर्णन किस ग्रन्थ में है?
(A) रघुवंशम् में **(B) किरातार्जुनीम् में**
(C) कादम्बरी में **(D) शिवराजविजय में**

व्याख्या-

A. रघुवंश- महाकवि कालिदास कृत रघुवंशम् महाकाव्य के द्वितीय सर्ग में देवदारु वृक्ष का वर्णन इस प्रकार है-
अमुं पुरः पश्यसि देवदारुं पुत्रीकृतोऽसौ वृषभध्वजेन।
यो हेमकुम्भस्तननिःसृतानां स्कन्दस्य मातुः पयसां रसज्ञः॥
(रघु.2.36)
सिंह राजा दिलीप से कहता है- सामने उस देवदारु वृक्ष को देख रहे हो न? उसे शंकर जी ने पुत्र के समान माना है जो कार्तिकेय की माता पार्वती के सोने के घट रूपी स्तनों से निकले हुये दूध रूपी जल के स्वाद को जानने वाला है।

B. किरातार्जुनीयम्- भारवि कृत किरातार्जुनीयम् के दशम सर्ग में अर्जुन को मोहित करने के लिये अप्सराओं का आगमन होता है-
अथ परिमलजामवाप्य लक्ष्मीमवयवदीपितमण्डनश्रियस्ताः।
वसतिमभिविहाय रम्यहावाः सुरपतिसूनुविलोभनाय जग्मुः॥
(किरात.-10.1)
प्रभात होते ही सुराङ्गनाये भोग-विलास से उत्पन्न होने वाली शोभा को प्राप्त करके अपने अङ्ग-प्रत्यङ्गों की शोभा से आभूषण को सुशोभित करती हुई मनोहर हाव-भाव के साथ अपने निवास स्थान से इन्द्र पुत्र अर्जुन को आकृष्ट करने के लिये चल दी।

C. कादम्बरी- महाकवि बाणभट्ट रचित कादम्बरी कथामुख में शाल्मलीतरु का वर्णन निम्नवत् है-
''शाखाबाहुभिरुपगुह्येव विन्ध्याटवीमवस्थितो महान् जीर्णः शाल्मली वृक्षः।'' शाल्मली वृक्ष की विशेषता बताते हुये कहते हैं कि- वह शाल्मली का वृक्ष मानो शाखारूपी भुजाओं से विन्ध्याटवी का आलिङ्गन करके अवस्थित है।

अतः विकल्प C सही है।

D. शिवराजविजय- अम्बिकादत्त व्यास द्वारा रचित शिवराजविजय का प्रारम्भ सूर्योदय वर्णन से होता है-
'अरुण एष प्रकाशः पूर्वस्यां भगवतो मारीचिमालिनः।'

स्रोत- कादम्बरी कथामुखम्- तारिणीश झा,भू.पेज-195

30. 'त्रिभुवनप्रसवभूमिरिव विस्तीर्णा' विशेषता किसके लिए प्रयुक्त है?

(A) विदिशा **(B) उज्जयिनी**
(C) विन्ध्याटवी **(D) अच्छोदसरोवर**

व्याख्या-

A. विदिशा- कादम्बरी कथामुख में विदिशा राजधानी की विशेषता बताते हुये बाणभट्ट कहते हैं-

'त्रिभुवनप्रसवभूमिरिव विस्तीर्णा.........वेत्रवत्या परिगता विदिशाभिधाना नगरी राजधान्यासीत्।'

अतः विकल्प A सही है।

B. उज्जयिनी- उज्जयिनी नगरी की विशेषता का वर्णन कादम्बरी कथामुख में निम्नवत है-

'अस्ति त्रिभुवनललामभूता.......... उज्जयिनी नाम नगरी।' तीनों भुवनों में अतीव सुन्दरी के समान उज्जयिनी नामक नगरी है।

C. विन्ध्याटवी- विन्ध्याटवी नामक जंगल की विशेषता का वर्णन कादम्बरी कथामुख में निम्न रूपों में किया गया है। 'अस्ति पूर्वापरजलनिधि...........पुष्पवत्यपि पवित्रा विन्ध्याटवी नाम।' समुद्र के पूर्वी किनारे से पश्चिमी किनारे तक लगी हुई मध्यप्रदेश की शोभा को बढ़ाने वाली विन्ध्याटवी नामक अटवी (वन) है जो फूलों से लदी होने के कारण रजस्वल्प स्त्री सी प्रतीत होती थी किन्तु वह अत्यन्त पवित्र भी थी।

D. अच्छोदसरोवर - प्रविश्य च तस्य तरुषण्डस्य मध्यभागे.....अतिमनोहरमाह्लादनं दृष्टेः अच्छोदं नाम सरो दृष्टवान्। प्रवेश करते ही मण्डप के मध्य भाग में एक अत्यन्त मनोहर लोचनों को प्रफुल्लित करने वाला 'अच्छोद' नाम का सरोवर देखा।

स्रोत- कादम्बरी कथामुखम्- तारिणीश झा, पेज-44-45

31. 'नलचम्पू' की कथावस्तु का मूल आधार है महाभारत का-

(A) आदिपर्व **(B) भीष्मपर्व**
(C) वनपर्व **(D) सभापर्व**

व्याख्या-

	महाभारत के पर्व	आश्रित ग्रन्थ
A.	आदिपर्व	अभिज्ञानशाकुन्तलम्
B.	भीष्मपर्व	श्रीमद्भगवद्गीता
C.	वनपर्व	नलचम्पू
D.	सभापर्व	शिशुपालवधम्

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- नलचम्पू- तारिणीश झा, भू.पेज-3-4

32. 'नलचम्पू' के रचयिता हैं-

(A) बाणभट्ट **(B) विश्वेश्वर पाण्डेय**
(C) आचार्य मेधाव्रत **(D) त्रिविक्रमभट्ट**

व्याख्या-

A. बाणभट्ट की रचनाएँ- 1. कादम्बरी 2. पार्वतीपरिणय 3. मुकुटताडितकम् 4. चण्डीशतकम् 5. हर्षचरितम्

B. विश्वेश्वर पाण्डेय की रचनाएँ- 1.वैयाकरण (सिद्धान्तसुधानिधि) 2. अलङ्कारकौस्तुभ 3. रसचन्द्रिका 4. आर्यासप्तशती 5. अलङ्कारप्रदीप 6. अलङ्कारमुक्तावली 7. कवीन्द्र-कर्णाभरण 8. रोमावलीशतक 9. मन्दारमञ्जरी

C. आचार्यमेधाव्रत की रचनाएँ- 1. दयानन्द दिग्विजय

D. त्रिविक्रमभट्ट की रचनाएँ- 1. नलचम्पू 2. मदालसाचम्पू

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- नलचम्पू- धुरन्धर पाण्डेय, भू.पेज-07

33. 'नलचम्पू' कथा की नायिका हैं-

(A) प्रियंगुमञ्जरी **(B) रूपवती**
(C) किन्नरी **(D) दमयन्ती**

व्याख्या-

A. प्रियङ्गुमञ्जरी- विदर्भनरेश भीम की पत्नी तथा नलचम्पू काव्य की नायिका दमयन्ती की माता हैं।

B. रूपवती- निषध देश के राजा वीरसेन, नलचम्पू के 'नायक नल' के पिता हैं तथा उनकी पत्नी का नाम रूपवती है।

C. किन्नरी- नलचम्पू में किन्नर-मिथुन का वर्णन है। इसमें किन्नर का नाम सुन्दरक तथा किन्नरी विहंगवागुरिका है।

D. दमयन्ती- दमयन्ती नलचम्पू में मुग्धा नायिका के रूप में वर्णित है तथा राजा नल का धीरोदात्त नायक के रूप में वर्णन है।

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- नलचम्पू- धुरन्धर पाण्डेय, भू.पेज-48

34. सभङ्गश्लेष का सर्वाधिक प्रयोग किस ग्रन्थ में हुआ है?
(A) कादम्बरी (B) वासवदत्ता
(C) नलचम्पू (D) दशकुमारचरितम्

व्याख्या-

A. कादम्बरी- बाणभट्ट ने कादम्बरी में अधिकतर स्थानों पर परिसंख्या अलङ्कार का प्रयोग किया है।

B. वासवदत्ता- वासवदत्ता के लेखक सुबन्धु गौणी रीति के कवि हैं। स्वयं कवि ने इस रचना में प्रत्यक्षरश्लेष रखने की प्रतिज्ञा की है-

''प्रत्यक्षरश्लेषमयप्रबन्ध-विन्यासवैदग्धनिधिर्निबन्धम्।'' (वासव. श्लोक-13) सुबन्धु ने प्रत्येक अक्षर में श्लेष की प्रचुरता वाली रचना के निर्माण की कुशलता के आश्रयभूत वासवदत्ता नामक ग्रन्थ को विरचित किया है।

C. नलचम्पू- त्रिविक्रमभट्ट ने नलचम्पू में सभङ्गश्लेष का सर्वाधिक प्रयोग किया है तथा इस विषय में प्रथमोच्छ्वास में स्वयं कहा है कि-

'भङ्गश्लेषकथाबन्धं दुष्करं कुर्वता मया।' (नलचम्पू-1.22) अत्यन्त कठिन भङ्गश्लेष युक्त कथाग्रन्थ की रचना करते हुये मैंने अपनी भुजाओं से दुस्तीर्ण सागर को तैरना आरम्भ कर दिया है, अर्थात् जिस प्रकार बाहुओं से अथाह तथा दुस्तर समुद्र को पार करना कठिन होता है, उसी प्रकार भङ्गश्लेष युक्त कथा ग्रन्थ की रचना करना भी अत्यन्त कठिन है।

अतः विकल्प C सही है।

D. दशकुमारचरितम्- दण्डी की प्रशस्ति के रूप में **'दण्डिनः पदलालित्यम्'** अत्यधिक प्रसिद्ध उक्ति है। पदों का लालित्य, समासरहित सौम्य पदावली,तथा अनुप्रासयुक्त नादसौन्दर्य 'दशकुमारचरितम्' में मिलता है।

स्रोत- नलचम्पू- तारिणीश झा, पेज-27

35.'नवसर्गगते माघे नव शब्दो न विद्यते' यह उक्ति किस ग्रन्थ के लिए प्रचलित है?
(A) मेघदूतम् (B) शिशुपालवधम्
(C) कुमारसम्भवम् (D) जानकीहरणम्

व्याख्या-

A. मेघदूत- क्षेमेन्द्र ने अपने ग्रन्थ 'सुवृत्ततिलक में कालिदास द्वारा प्रयुक्त मन्दाक्रान्ता छन्द की प्रशंसा की है।

'सुवशा कालिदासस्य मन्दाक्रान्ता प्रवल्गाति।'

B. शिशुपालवधम्- माघ ने 'शिशुपालवधम्' के प्रथम 9 सर्गों में अपने अक्षयशब्दकोष का पूर्ण प्रदर्शन किया है। इसी वैशिष्ट्य के आधार पर कहा गया है कि- **'नवसर्गगते माघे नवशब्दो न विद्यते'** अर्थात् प्रथम नौ सर्ग पढ़ लेने पर कोई नवीन शब्द नहीं बचता।

C. कुमारसम्भवम्- कालिदासकृत 'कुमारसम्भवम्'17 सर्गों में विभक्त है। इसमें कुमार कार्तिकेय की उत्पत्ति का वर्णन है।

D. जानकीहरणम्- राजशेखर ने कुमारदास के गुणों पर मुग्ध होकर यहाँ तक कह डाला कि- 'रघुवंशम्' (राम) के रहते हुए जानकीहरण (सीताहरण) करने का साहस केवल दो ही व्यक्तियों में है एक कुमारदास और दूसरा रावण।

जानकीहरणं कर्तुं रघुवंशे स्थिते सति।
कविः कुमारदासश्च रावणश्च यदि क्षमः॥

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- शिशुपालवधम्- तारिणीश झा, भू. पेज-68

36. 'शिशुपालवधम्' महाकाव्य में कितने सर्ग हैं?
(A) उन्नीस (B) अठारह
(C) सोलह (D) बीस

व्याख्या-

रघुवंशम्- 19 सर्ग, कालिदास, रघुवंशी राजाओं का वर्णन।

किरातार्जुनीयम्- 18 सर्ग,भारवि,अर्जुन को पाशुपतास्त्र की प्राप्ति।

काव्यालङ्कार- 16 अध्याय, रुद्रट,काव्यशास्त्र का विवेचन।

शिशुपालवधम्- 20 सर्ग, माघ, शिशुपाल का वध।

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- शिशुपालवधम्- तारिणीश झा,भू.पेज-15

37. रैवतक पर्वत का वर्णन किस काव्य में है?
(A) कुमारसम्भवम् (B) शिशुपालवधम्
(C) नैषधीयचरितम् (D) किरातार्जुनीयम्

व्याख्या-

	ग्रन्थ	वर्णन	मङ्गलाचरण प्रकार
A.	कुमारसम्भवम्	हिमालय पर्वत	वस्तुनिर्देशात्मक
B.	शिशुपालवधम्	रैवतक पर्वत	वस्तुनिर्देशात्मक
C.	नैषधीयचरितम्	हंस का वर्णन	वस्तुनिर्देशात्मक
D.	किरातार्जुनीयम्	इन्द्रकील पर्वत	वस्तुनिर्देशात्मक

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- शिशुपालवधम्- तारिणीश झा,पेज भू. -24

38. शिशुपालवधम् महाकाव्य का अङ्गीरस है-
(A) शृङ्गाररस (B) वीररस
(C) शान्तरस (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

व्याख्या-

शृङ्गाररस- 1. अभिज्ञानशाकुन्तलम् 2. विक्रमोर्वशीयम् 3. मालविकाग्निमित्रम् 4. नैषधीयचरितम् 5.कुमारसम्भवम्

वीररस - 1. महावीरचरितम् 2. वेणीसंहारम् 3. मुद्राराक्षसम् 4. शिशुपालवधम् 5. हरविजयम्

शान्तरस - 1. महाभारतम् 2. बुद्धचरितम् 3. शारिपुत्रप्रकरण

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- शिशुपालवधम्- तारिणीश झा,भू.पेज-57

39. श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार कर्मयोगी को कर्म क्यों करना चाहिए?
(A) कीर्ति के लिए (B) लोकसंग्रह के लिए
(C) सुख के लिए (D) स्वर्ग के लिए

व्याख्या-

भगवद्गीता के तृतीय अध्याय में भगवान् श्रीकृष्ण अर्जुन को उपदेश देते हुए कहते हैं कि लोकसंग्रह के लिए कर्म करो।

''कर्मणैव हि संसिद्धिमास्थिता जनकादयः।
लोकसंग्रहमेवापि सम्पश्यन्कर्तुमर्हसि॥''
(गीता-3/20)

जनकादि ज्ञानीजन भी आसक्तिरहित कर्मद्वारा ही परम सिद्धि को प्राप्त हुए थे। इसलिए लोकसंग्रह को देखते हुए तू भी कर्म करने के ही योग्य है अर्थात् तुझे कर्म करना ही उचित है।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- श्रीमद्भगवद्गीता (3/20)- गीताप्रेस, पेज-56

40. 'समत्वं योग उच्यते' किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है?
(A) योगशास्त्र (B) वेदान्तदर्शन
(C) गीता (D) उपनिषद्

व्याख्या-

A. योगदर्शन- पतञ्जलि योगसूत्र के समाधिपाद में योग की चित्तवृतियों के निरोध का वर्णन किया है-
'योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः।' (योग. 1/2) योग चित्तवृत्तियों का निरोध है।

B. वेदान्तदर्शन- वेदान्तदर्शन में अष्टाङ्गयोग का वर्णन है।
1. यम 2. नियम 3. आसन 4. प्राणायाम
5. प्रत्याहार 6. धारणा 7. ध्यान 8. समाधि।

C. गीता- श्रीमद्भगवद्गीता के द्वितीय अध्याय में भगवान् श्रीकृष्ण योग की परिभाषा बताते हैं-
'योगस्थः कुरु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा धनञ्जय।
सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते।'
(गीता.2/48)
हे धनञ्जय! तू आसक्ति को त्यागकर तथा सिद्धि और असिद्धि में समानबुद्धि वाला होकर योग में स्थित हुआ कर्तव्यकर्मों को कर क्योंकि समत्व ही योग कहलाता है।
अतः विकल्प C सही है।

D. कठोपनिषद्- कठोपनिषद् के द्वितीय अध्याय के तृतीय वल्ली में योग का लक्षण निम्नवत् है-
''तां योगमिति मन्यन्ते स्थिरामिन्द्रियधारणाम्।''
(2.3.11)
इन्द्रिय मन और बुद्धि की स्थिर धारणा का ही नाम योग है।

स्रोत- श्रीमद्भगवद्गीता (2/48)

41. 'निष्काम कर्म' का अर्थ है-
(A) अकाम कर्म करना
(B) कोई भी कर्म न करना
(C) अपना काम किये जाना
(D) अनासक्त भाव से किया गया काम

व्याख्या-

श्रीमद्भगवद्गीता के तृतीय अध्याय में भगवान् श्रीकृष्ण अर्जुन को अनासक्त होकर कर्म करने के लिये कहते हैं-

'तस्मादसक्तः सततं कार्यं कर्म समाचर।
असक्तो ह्याचरन्कर्म परमाप्नोति पूरुषः॥'
(गीता 3/19)

हे अर्जुन! तू निरन्तर आसक्ति से रहित होकर सदा कर्तव्य कर्म को भलीभाँति करता रह क्योंकि आसक्ति से रहित होकर कर्म करता हुआ मनुष्य परमात्मा को प्राप्त हो जाता है।

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- श्रीमद्भगवद्गीता (3/19)

42. 'श्रीमद्भगवद्गीता' के अनुसार मनुष्य का अधिकार है-
(A) ज्ञान (B) कर्म करने पर
(C) फल पर (D) इनमें से किसी पर नहीं

व्याख्या-
श्रीमद्भगवद्गीता के द्वितीय अध्याय में भगवान् श्रीकृष्ण अर्जुन को उपदेश देते हुये कहते हैं-
'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि॥
(गीता-2/47)

हे अर्जुन! तेरा कर्म करने में ही अधिकार है, उसके फलों में कभी नहीं। इसलिए तू कर्मों के फल का हेतु मत हो तथा तेरी कर्म न करने में भी आसक्ति न हो।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- श्रीमद्भगवद्गीता (2/47)

43. 'श्रीमद्भगवद्गीता' महाभारत के किस पर्व में वर्णित है?
(A) आदिपर्व (B) अनुशासनपर्व
(C) भीष्मपर्व (D) शान्तिपर्व

व्याख्या-

	पर्व	उपजीव्य ग्रन्थ
A.	आदिपर्व	अभिज्ञानशाकुन्तलम्
B.	अनुशासनपर्व	* शिवसहस्रनामस्तोत्र * विष्णुसहस्रनामस्तोत्र
C.	भीष्मपर्व	श्रीमद्भगवद्गीता
D.	शान्तिपर्व	1. पराशरगीता 2. हंसगीता

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-118

44. 'आप्तवाक्यं शब्दः' किस दर्शन से सम्बन्धित है?
(A) जैन (B) बौद्ध
(C) मीमांसा (D) न्याय

व्याख्या-
- भारतीय दर्शन को दो भागों में विभक्त किया गया है- आस्तिक, नास्तिक। आस्तिक दर्शन की संख्या छः है- सांख्य-योग, न्याय-वैशेषिक, पूर्वमीमांसा-उत्तरमीमांसा। आस्तिक दर्शन वेदों को प्रमाण मानता है जबकि नास्तिक दर्शन वेदों को प्रमाण नहीं मानता। ''नास्तिको वेदनिन्दकः''
- तीन नास्तिक दर्शन-चार्वाक, बौद्ध, जैन।
- जैनदर्शन एवं बौद्धदर्शन दो प्रमाण मानते हैं- 1. प्रत्यक्ष 2. अनुमान
- प्रभाकर मीमांसक पाँच प्रमाण मानते हैं 1. प्रत्यक्ष 2. अनुमान 3. उपमान 4. शब्द 5. अर्थापत्ति। भाट्टमीमांसक इन पाँच प्रमाणों के अतिरिक्त छठा प्रमाण अभाव को भी मानते हैं।
- न्यायदर्शन चार प्रमाण मानता है- 1. प्रत्यक्ष 2. अनुमान 3. उपमान 4. शब्द। इसमें शब्द प्रमाण का लक्षण इस प्रकार किया गया है- **'आप्तवाक्यं शब्दः।'** आप्त का वाक्य शब्द प्रमाण कहलाता है।

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- तर्कभाषा- श्रीनिवास शास्त्री, पेज-122

45. सामान्य रहता है-
(A) द्रव्य गुण और विशेष में
(B) द्रव्य, गुण और कर्म में
(C) द्रव्य, कर्म और विशेष में
(D) द्रव्य, गुण और समवाय में

व्याख्या-
केशवमिश्र कृत तर्कभाषा में 16 पदार्थों के अन्तर्गत द्वितीय पदार्थ प्रमेय है तथा प्रमेय के 12 भेदों में चतुर्थ प्रमेय 'अर्थ' है। अर्थ के अन्तर्गत 6 पदार्थ हैं- 1. द्रव्य 2. गुण 3. कर्म 4. सामान्य 5. विशेष 6. समवाय। इसमें चतुर्थ पदार्थ समान्य का लक्षण इस प्रकार किया गया है- 'अनुवृत्तिप्रत्ययहेतुःसामान्यम्। द्रव्यादि त्रयवृत्तिः।' समान कारक प्रतीति का हेतु सामान्य (जाति) है। वह द्रव्य, गुण और कर्म में रहता है।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- तर्कभाषा- श्रीनिवास शास्त्री,पेज-244

46. विशेषण-विशेष्य भाव का सम्बन्ध होता है-
(A) भाव से
(B) अभाव से
(C) भाव और अभाव दोनों से
(D) उपर्युक्त में से किसी से नहीं

व्याख्या-
केशवमिश्र प्रणीत तर्कभाषा में प्रत्यक्ष ज्ञान का कारण इन्द्रियार्थ सन्निकर्ष को माना है। सन्निकर्ष सर्वप्रथम दो प्रकार का होता है वैदिक तथा लौकिक। लौकिक सन्निकर्ष छः प्रकार का होता है।

सन्निकर्ष	इन्द्रिय	ज्ञान
1. संयोग	चक्षु	घट
2. संयुक्तसमवाय	चक्षु	घटरूप
3. संयुक्तसमवेतसमवाय	चक्षु	घटरूपत्व
4. समवाय	श्रोत्र	शब्द
5. समवेतसमवाय	श्रोत्र	शब्दत्व
6. विशेषणविशेष्य भाव	चक्षु	घटाभाव

उपर्युक्त षोढा सन्निकर्ष के विवेचन से स्पष्ट है विशेषण-विशेष्य का सम्बन्ध अभाव से होता है।
अतः विकल्प B सही है।
स्रोत- तर्कसंग्रह- आद्याप्रसाद मिश्र, पेज-46

47. 'इन्द्रियार्थसन्निकर्षजन्य ज्ञान' है-
(A) प्रत्यक्ष (B) अनुमान
(C) उपमान (D) आप्तवचन

व्याख्या-
A. प्रत्यक्ष- अन्नम्भट्ट ने तर्कसंग्रह में प्रत्यक्ष प्रमाण का निरूपण इसप्रकार किया है- 'इन्द्रियार्थसन्निकर्षजन्यं ज्ञानं प्रत्यक्षम्।' इन्द्रिय और पदार्थ के सन्निकर्ष से उत्पन्न होने वाला ज्ञान प्रत्यक्ष है।
B. अनुमान- 'अनुमितिकरणं अनुमानम्।' (तर्कसंग्रह) अनुमिति का करण अनुमान है।
'लिङ्गपरामर्शोऽनुमानम्।' (तर्कभाषा)
C. उपमान- 'उपमितिकरणमुपमानम्।' (तर्कसंग्रह) उपमिति का करण उपमान कहलाता है।
अतिदेशवाक्यार्थस्मरणसहकृतं गोसादृश्यविशिष्ट पिण्डज्ञानमुपमानम्। (तर्कभाषा) अतिदेश वाक्य के अर्थ का स्मरण करने के साथ गौ की समानता से युक्त पिण्ड का ज्ञान ही उपमान प्रमाण है।
D. आप्तप्रमाण (शब्द प्रमाण)- 'आप्तवाक्यं शब्दः' (तर्कसंग्रह) शब्द प्रमाण आप्त व्यक्ति का वाक्य है। तर्कभाषा में भी 'शब्द प्रमाण' की यही परिभाषा है।
अतः विकल्प A सही है।
स्रोत- तर्कसंग्रह- आद्याप्रसाद मिश्र, पेज-45

48. केवल नेत्र से ग्रहण किया जाने वाला गुण है-
(A) **रूप** (B) **स्पर्श**
(C) **गन्ध** (D) **रस**

व्याख्या-
A. रूप- अन्नम्भट्टकृत तर्कसंग्रह में गुणों की संख्या चौबीस है जिसमें से रूप भी एक गुण है, उसको निम्नरूप में परिभाषित करते हैं- **'चक्षुर्मात्रग्राह्यो गुणो रूपम्।'** केवल चक्षुरिन्द्रिय से ग्रहण किया जाने वाला गुण 'रूप' है इसके सात भेद हैं- शुक्ल, नील, पीत, रक्त, हरित, कपिश और चितकबरा।
B. स्पर्श- स्पर्श की गणना भी गुण के अन्तर्गत होती है- 'त्वगिन्द्रियमात्रग्राह्यो गुणः स्पर्शः।' त्वगिन्द्रिय-मात्र से ग्रहण किया जाने वाला गुण 'स्पर्श' है। यह तीन प्रकार का होता है- 1. शीत 2. उष्ण 3. अनुष्णाशीत।
C. गन्ध- गन्ध भी गुण के अन्तर्गत आता है- 'घ्राणग्राह्यो गुणो गन्धः।' घ्राण से ग्रहण किया जाने वाला गुण गन्ध है। इसके दो भेद हैं- 1. सुगन्ध 2. दुर्गन्ध
D. रस- रस की गणना गुण के अन्तर्गत होती है- 'रसनाग्राह्यो गुणो रसः।' रसना इन्द्रिय से ग्रहण किया जाने वाला गुण 'रस' है। इसके छः भेद हैं- 1. मीठा 2. खट्टा 3. नमकीन 4. कड़वा 5. कसैला 6. तीखा।
चौबीस गुणों की संख्या इस प्रकार है- रूप-रस-गन्ध-स्पर्श-संख्या-परिणाम-पृथकत्व-संयोग-विभाग-परत्वाऽपरत्व-गुरुत्व-द्रवत्व-स्नेह-शब्द-बुद्धि-सुख-दुःखेच्छा-द्वेष-प्रयत्न-धर्माऽधर्म- संस्काराश्चतुर्विंशतिर्गुणाः।

	इन्द्रिय	ग्राह्य गुण
1.	चक्षु	रूप
2.	त्वग्	स्पर्श
3.	घ्राण	गन्ध
4.	रसना	रस
5.	श्रोत्र	शब्द

अतः विकल्प A सही है।
स्रोत- तर्कसंग्रह- आद्याप्रसाद मिश्र, पेज-29

49. तर्कभाषा/तर्कसंग्रह के अनुसार प्रमा के कितने भेद हैं?
(A) एक **(B) दो**
(C) चार **(D) पाँच**

व्याख्या-
तर्कसंग्रहकार अन्नम्भट्ट 'अनुभव' को परिभाषित करते हैं- 'तद्भिन्नं ज्ञानमनुभवः।स द्विविधः-यथार्थोऽयथार्थश्च।' स्मृति से भिन्न ज्ञान को 'अनुभव' कहते हैं। यह दो प्रकार का होता है- यथार्थ तथा अयथार्थ। इसमें यथार्थानुभव (प्रमा) के चार भेद होते हैं- 1. प्रत्यक्ष 2. अनुमिति 3. उपमिति 4. शाब्द। 'यथार्थानुभवश्चतुर्विधः, प्रत्यक्षानुमित्युपमितिशाब्दभेदात्।'

- सामान्य के दो भेद होते हैं 1. परसामान्य 2.अपरसामान्य
- 'समवाय' पदार्थ एक ही प्रकार का होता है।
- कर्म के पाँच भेद हैं- 1. उत्क्षेपण 2. अपक्षेपण 3. आकुञ्चन 4. प्रसारण 5. गमन।

अतः विकल्प C सही है।
स्रोत- तर्कसंग्रह- आद्याप्रसाद मिश्र, पेज-40

50. सांख्यदर्शन के मत से सूक्ष्मशरीर का निर्माण हुआ है-
(A) 17 तत्त्वों से
(B) 25 तत्त्वों से
(C) 18 तत्त्वों से
(D) इनमें से किसी में भी नहीं

व्याख्या-
A. सदानन्द प्रणीत वेदान्तसार में सूक्ष्मशरीर का निर्माण सत्रह अवयवों से हुआ है-
'सूक्ष्मशरीराणि सप्तदशावयवानि लिङ्गशरीराणि।' सत्रह अवयव है- पाँच ज्ञानेन्द्रिय, पाँच कर्मेन्द्रिय, पञ्चवायु, बुद्धि,मन
पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ- श्रोत्र, त्वक्, चक्षु, जिह्वा, घ्राण।
पाँच कर्मेन्द्रियाँ- वाक्, पाणि, पाद, पायु, उपस्थ।
पाँच वायु- प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान।

- सांख्यकारिका में पच्चीस तत्त्वों का वर्णन है-
मूलप्रकृतिरविकृतिर्महदाद्याः प्रकृतिविकृतयः सप्त।
षोडशकस्तु विकारो न प्रकृतिर्न विकृतिः पुरुषः।।
(सां.का. -3)
मूलप्रकृति किसी का विकार नहीं है- महत् आदि सात तत्त्व कारण और विकार अर्थात् कार्य और कारण दोनों हैं। षोडश पदार्थों का समूह केवल विकार अर्थात् कार्य है। पुरुष न तो कार्य है और न कारण।
- सांख्यकारिका के अनुसार सूक्ष्मशरीर का निर्माण अठारह तत्त्वों से होता है-

पूर्वोत्पन्नमसक्तं नियतं महदादिसूक्ष्मपर्यन्तम्।
संसरति निरुपभोगं भावैरधिवासितं लिङ्गम्।।
(सां.का.40)

सृष्टि के प्रारम्भ में उत्पन्न, सर्वत्र गति करने में सक्षम, प्रलयकाल पर्यन्त स्थायी रूप से रहने वाला महत् आदि से लेकर सूक्ष्म तन्मात्रापर्यन्त अठारह तत्त्वों से निर्मित भोगरहित, भावों से रहित, भावों से युक्त, लिङ्गशरीर गमनागमन करता रहता है।
सूक्ष्मशरीर को लिङ्गशरीर भी कहा जाता है।
सूक्ष्मशरीर- पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ- पाँच कर्मेन्द्रियाँ + पञ्चतन्मात्रा + बुद्धि + मन + अहङ्कार = 18तत्त्व।
अतः विकल्प C सही है।
स्रोत- सांख्यतत्त्वकौमुदी (का.-40) आद्याप्रसाद मिश्र,पेज-257

51. सांख्य के अनुसार प्रमाणों की संख्या है-
(A) 4 **(B) 5**
(C) 3 **(D) 2**

व्याख्या-
A. न्यायदर्शन- न्यायदर्शन में चार प्रमाण स्वीकृत हैं- 1. प्रत्यक्ष 2. अनुमान 3. उपमान 4. शब्द
B. प्रभाकर मीमांसक- प्रभाकर मीमांसक पाँच प्रकार के प्रमाण मानते हैं 1. प्रत्यक्ष 2. अनुमान 3. उपमान 4. शब्द 5. अर्थापत्ति
C. सांख्य,योगदर्शन- सांख्य तथा योग दर्शन में तीन प्रमाणों का वर्णन है- 1. प्रत्यक्ष 2. अनुमान 3. शब्द
D. बौद्धदर्शन- बौद्धदर्शन में दो प्रमाण की चर्चा की गई है- 1. प्रत्यक्ष 2. अनुमान
अतः विकल्प C सही है।
स्रोत- सांख्यतत्त्वकौमुदी (का.-04)-आद्याप्रसाद मिश्र, पेज-115

52. 'कैवल्यार्थं प्रवृत्तेश्च' चरितार्थ होता है-
(A) पुरुष (B) प्रकृति
(C) ईश्वर (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

व्याख्या-

A. पुरुष- ईश्वरकृष्ण सांख्यकारिका में पुरुष की सत्ता सिद्ध करते हुए कहते हैं-

संघातपरार्थत्वात् त्रिगुणादिविपर्ययादधिष्ठानात्।
पुरुषोऽस्ति भोक्तृभावात् कैवल्यार्थं प्रवृत्तेश्च॥
(सां.का.17)

संघटनात्मक समूहरूप वस्तुओं के दूसरे के लिए होने के कारण, गुणत्रययुक्त धर्मों से विपरीत धर्मवाले की अपेक्षा से, भोक्ता होने की अपेक्षा से, मोक्ष के लिए प्रवृत्त होने से पुरुष चरितार्थ होता है अर्थात् पुरुष की सत्ता है।
अतः विकल्प A सही है।

B. सांख्यकारिका में प्रकृति की सत्ता इसप्रकार सिद्ध की गयी है-
भेदानां परिमाणात्, समन्वयत्वात् शक्तितः प्रवृत्तेश्च।
कारणकार्यविभागादविभागाद् वैश्वरूप्यस्य॥
(सां.का.15)

महत् आदि कार्यों के परिमित होने से, कारण के समान होने से, शक्ति से उत्पन्न होने से कारण से ही कार्य आविर्भूत होने से, प्रलयकाल में उसी कारण में लीन हो जाने से, विविध रूपों वाले सभी कार्यों का एक कारण अव्यक्त (प्रधान,प्रकृति) अवश्य है। इसप्रकार कारिका से प्रकृति की सत्ता सिद्ध होती है।
यद्यपि सांख्यदर्शन वेदों की प्रामाणिकता को स्वीकार करने के कारण आस्तिक दर्शन है तथापि ईश्वर की सत्ता को नहीं स्वीकार करता है।

स्रोत- सांख्यतत्त्वकौमुदी, (का.-17)-आद्याप्रसाद मिश्र,पेज-200

53. सांख्य के अनुसार बुद्धि के प्रमुख परिणाम हैं-
(A) विपर्यय, अशक्ति, सिद्धि और तमस्
(B) विपर्यय, अशक्ति, तुष्टि और सिद्धि
(C) विपर्यय, अशक्ति, मोह और सिद्धि
(D) विपर्यय, अशक्ति, मोह और तमस्

व्याख्या-

एष प्रत्ययसर्गो विपर्ययाशक्तितुष्टिसिद्ध्याख्यः।
गुणवैषम्यविमर्दात् तस्य च भेदास्तु पञ्चाशत्॥
(सां.का. 46)

प्रत्ययसर्ग (बुद्धिसर्ग) 50

विपर्यय	अशक्ति	तुष्टि	सिद्धि
(5)	(28)	(9)	(8)

विपर्यय, अशक्ति, तुष्टि, सिद्धि नामक यह बौद्धिकसर्ग गुणों की विषमता के कारण एक दूसरे के अभिभव से उसके पचास भेद होते हैं। **अतः विकल्प B सही है।**

- बौद्ध दार्शनिक असत् से सत् की उत्पत्ति मानते हैं। 'असतः सत् जायते।'
- नैयायिक और वैशेषिक सत् से असत् की उत्पत्ति मानते हैं- 'सतः असत् जायते।'
- अद्वैतवेदान्त के अनुसार- 'एकस्य सतो विवर्त्तः कार्यजातं न वस्तु सत्।' समस्त कार्य समूह, एक अद्वितीय सतत्त्व (ब्रह्म) का विवर्त (अतात्विक अन्यथाभाव) मात्र है, वस्तुतः सत् नहीं है।

स्रोत- सांख्यतत्त्वकौमुदी (का.-09)-आद्याप्रसाद मिश्र,पेज-153

54. सांख्य स्वीकार करता है-
(A) असतः सत् जायते
(B) एकस्य सतो विवर्तः कार्यजातं न वस्तु सत्
(C) सतः असत् जायते
(D) सतः सत् जायते

व्याख्या-

सत्कार्यवाद- 'सत्कार्यवाद' सांख्यदर्शन का महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त है जिसके अनुसार कार्य वास्तव में अपने कारण में सत् रूप में विद्यमान रहता है।

असदकरणादुपादानग्रहणात् सर्वसम्भवाभावात्।
शक्तस्य शक्यकरणात् कारणभावाच्च सत्कार्यम्॥
(सां.का. 9)

सर्वथा अविद्यमान को उत्पन्न न किये जा सकने से, विशेष पदार्थ को उत्पन्न करने के लिए उससे सम्बद्ध विशेष उपादान को ग्रहण करने से, सभी कारणरूप पदार्थों से सभी कार्यों की उत्पत्ति न होने से, समर्थरूप वस्तु से ही समर्थ कार्यरूप वस्तु के उत्पन्न होने से कार्य और कारण के परस्पर अभिन्न होने से कार्य कारण में विद्यमान रहता है। सांख्य के सत्कार्यवाद के सिद्धान्त से यह सिद्ध होता है कि **'सतः सत् जायते।'**
अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- सांख्यतत्त्वकौमुदी (का. 09)-आद्याप्रसाद मिश्र,पेज-257

55. 'पुरुषबहुत्वं' को कौन सा दर्शन स्वीकार करता है?
(A) सांख्य **(B) न्याय**
(C) मीमांसा **(D) वैशेषिक**

व्याख्या-
सांख्यदर्शन- सांख्यदर्शन में पुरुषबहुत्व का सिद्धान्त प्रतिपादित किया गया है-
जन्मरणकरणानां प्रतिनियमादयुगपत्प्रवृत्तेश्च।
पुरुषबहुत्वं सिद्धं त्रैगुण्यविपर्ययाच्चैव॥
(सां.का. 18)
जन्म,मरण और इन्द्रियों की व्यवस्था होने के कारण और एक साथ प्रवृत्ति का अभाव होने से तथा तीनों गुणों के भेद के कारण ही पुरुषों की अनेकता सिद्ध होती है।
➢ **न्याय-**न्यायदर्शन असत्कार्यवाद के सिद्धान्त को मानता है। न्यायदर्शन के प्रवर्तक, अक्षपाद गौतम हैं।
➢ **मीमांसक-** मीमांसक स्वतः प्रामाण्यवाद को मानते हैं। पूर्वमीमांसा के प्रवर्तक जैमिनि तथा उत्तरमीमांसा (वेदान्त) के प्रवर्तक बादरायण हैं।
➢ **वैशेषिक-** वैशेषिक दर्शन के आचार्य महर्षि कणाद हैं। वैशेषिक परमाणुओं को जगत्कारण मानते हैं।
अतः विकल्प A सही है।
स्रोत- सांख्यतत्वकौमुदी-(का.-18)-आद्याप्रसाद मिश्र,पेज-205

56. सांख्य की प्रकृति है-
(A) व्यक्त **(B) त्रिगुणात्मिका**
(C) चेतन **(D) अप्रधान**

व्याख्या-
सांख्यकारिका में ईश्वरकृष्ण ने व्यक्त, अव्यक्त और पुरुष का प्रतिपादन करते हुये कहते हैं कि-
त्रिगुणमविवेकि विषयः सामान्यमचेतनं प्रसवधर्मि।
व्यक्तं तथा प्रधानं, तद्विपरीतस्तथा च पुमान्॥
(सां.का.-11)
महत् आदि व्यक्तपदार्थ और अव्यक्तरूप मूलकारण प्रकृति तीनों गुणों से युक्त (त्रिगुणात्मक), परस्पर अलग होने में असमर्थ, ज्ञान के विषय, अनेक पुरुषों द्वारा ग्रहण किये जाने योग्य, जड़, उत्पादन और पुरुष उसके विपरीत गुणों वाला होता है।
➢ सांख्यकारिका के अनुसार प्रकृति को प्रधान, अव्यक्त, तथा मूलप्रकृति आदि नामों से भी जाना जाता है।
➢ प्रकृति को जड़ तथा पुरुष को चेतन माना जाता है।
➢ पञ्चज्ञानेन्द्रियाँ, पञ्चकर्मेन्द्रियाँ, पञ्चतन्मात्राएँ, महत्, अहङ्कार, मन तथा पञ्चमहाभूत ये तेईस तत्त्व व्यक्त तत्त्व के रूप में वर्णित किये गये हैं।
अतः विकल्प B सही है।
स्रोत- सांख्यतत्त्वकौमुदी (का.-11)-आद्याप्रसाद मिश्र,पेज-171

57. मन किस प्रकार की इन्द्रिय है-
(A) कर्मेन्द्रिय **(B) ज्ञानेन्द्रिय**
(C) उभयात्मक **(D) इनमें से कोई नहीं**

व्याख्या-
सांख्यकारिका में ईश्वरकृष्ण मन का लक्षण करते हैं-
उभयात्मकमत्र मनः संकल्पकमिन्द्रियं च साधर्म्यात्।
गुणपरिणामविशेषान्नानात्वं बाह्यभेदाश्च॥ (सां.का.27)
इनमें मन दोनों प्रकार उभयात्मक की इन्द्रिय है। यह संकल्प करने वाला है और इन्द्रियों के सजातीय होने से इन्द्रिय कहलाता है। गुणों के विशिष्ट परिणाम के कारण जैसे विविध बाह्य पदार्थ उत्पन्न होते है वैसे ही विविध इन्द्रियाँ उत्पन्न होती हैं।
* कर्मेन्द्रियों की संख्या पाँच हैं- वाक्, पाणि, पाद, पायु, उपस्थ।
* ज्ञानेन्द्रियों की संख्या पाँच हैं- श्रोत्र, त्वक्, चक्षु, जिह्वा, घ्राण। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- सांख्यकारिका (का.27)- राकेश शास्त्री, पेज-84

58. 'वेदान्तसार' के रचनाकार हैं-
(A) आचार्य शंकर **(B) दयानन्द सरस्वती**
(C) सदानन्द योगीन्द्र **(D) भास्कराचार्य**

व्याख्या-

	रचनाकार	रचनाएँ	विशेष
A.	आचार्य शङ्कर	ब्रह्मसूत्र	प्रस्थानत्रयी (गीता, शारीरक भाष्य उपनिषद्, ब्रह्मसूत्र) के भाष्यकर्त्ता
B.	दयानन्द सरस्वती	सत्यार्थप्रकाश	वेदभाष्यकार
C.	सदानन्द योगीन्द्र	वेदान्तसार	अद्वैत वेदान्त को मानते हैं।
D.	भास्कराचार्य	लीलावती	लीलावती में पाटीगणित (अङ्कगणित) का वर्णन किया गया है।

अतः विकल्प C सही है।
स्रोत- वेदान्तसार- सन्तनारायण श्रीवास्तव,भू.पेज-xix

59. बुद्धि, ज्ञानेन्द्रियों के साथ मिलकर निर्माण करती है-
(A) प्राणमयकोश (B) आनन्दमयकोश
(C) विज्ञानमयकोश (D) मनोमयकोश

व्याख्या-

A. प्राणमयकोश-
'इदं प्राणादिपञ्चकं कर्मेन्द्रियैः सहितं सत् प्राणमयकोशो भवति।'
पञ्चप्राण (प्राण,अपान, व्यान, उदान, समान) एवं पञ्चकर्मेन्द्रियाँ (वाक्, पाणि, पाद, पायु, उपस्थ) से मिलकर प्राणमयकोश बनता है।

B. आनन्दमयकोश-
''आनन्दप्रचुरत्वात् कोशवदाच्छादकारत्वाच्चानन्दमयकोशः''
पञ्चकोशों में प्रथम आनन्दमयकोश की स्थिति सृष्टि के विकास की प्रथम कारणावस्था में विद्यमान होती है। निर्गुणब्रह्म जब शुद्धसत्त्वप्रधान अज्ञान से आच्छादित होता है तो वही कारणशरीर ईश्वर तथा आनन्द की प्रचुरता के कारण आनन्दमयकोश कहलाता है।

C. विज्ञानमयकोश-
''इयं बुद्धिर्ज्ञानेन्द्रियैः सहिता विज्ञानमयकोशो भवति।''
पञ्चज्ञानेन्द्रियाँ (श्रोत्र, त्वक् , चक्षु, जिह्वा, घ्राण) एवं बुद्धि मिलकर विज्ञानमयकोश बनाते हैं।

D. मनोमयकोश-
'मनस्तु ज्ञानेन्द्रियैः सहितं सन्मनोमयकोशो भवति।'
मन और ज्ञानेन्द्रियाँ (श्रोत्र, त्वक्, चक्षु, जिह्वा, घ्राण) से मिलकर मनोमयकोश होता है।

अन्नमयकोश- पञ्चकोशों में अन्तिम अन्नमयकोश है। इस कोश का निर्माण पञ्चीकृत महाभूतों से होता है। इसे 'जाग्रत' भी कहते हैं।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- वेदान्तसार- सन्तनारायण श्रीवास्तव,पेज-68

60. 'मिथ्यारूप से अन्य वस्तु के रूप में भासित होना' कहलाता है-
(A) आरम्भवाद (B) असत्कार्यवाद
(C) परिणामवाद (D) विवर्तवाद

व्याख्या-

असत्कार्यवाद- आरम्भवाद या असत्कार्यवाद के अनुसार कार्य उत्पत्ति के पूर्व असत् है अर्थात् अपने कारण में विद्यमान नहीं है। कार्य की सत्ता उसकी उत्पत्ति से ही आरम्भ होती है, इस मान्यता के कारण असत्कार्य को आरम्भवाद भी कहते हैं।

परिणामवाद- सदानन्दकृत वेदान्तसार में विकारवाद या परिणामवाद को इस प्रकार परिभाषित किया गया है-
''सतत्त्वतोऽन्यथाप्रथा विकार इत्युदीरितः।''
किसी वस्तु का तत्त्वतः (वस्तुतः) अन्यथा अर्थात् दूसरे रूप में प्रकट होना 'विकार' कहा गया है। जैसे- दही दूध का विकार है, क्योंकि दही का आकार, स्वाद, गुण सभी कुछ बदल जाता है।

विवर्तवाद- वेदान्तसार में विवर्तवाद की परिभाषा इस प्रकार दी गई है-
''अतत्त्वतोऽन्यथाप्रथा विवर्त इत्युदाहृतः।
जब कोई वस्तु अपने स्वरूप का बिना यथार्थतः त्याग किये दूसरे रूप में प्रतीत होने लगती है। तो उसे मूलवस्तु का विवर्त कहा जाता है। जैसे- जब रस्सी सर्प के रूप में प्रतीत होती है सर्प रस्सी का विवर्त है।

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- वेदान्तसार- सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-116

61. 'ब्रह्म' को कहा गया है-
(A) सत् (B) चित्
(C) आनन्द (D) सच्चिदानन्द

व्याख्या-

- सदानन्द प्रणीत वेदान्तसार में अद्वैत ब्रह्म को ही वस्तु कहा गया है – **'वस्तु सच्चिदानन्दान्ताद्वयं ब्रह्म।'** सच्चिदानन्द, अनन्त, अद्वैतब्रह्म ही वस्तु है।
- **'अज्ञानादिसकलजडसमूहोऽवस्तु।'** अज्ञान से लेकर सकल जड़ समुदाय अवस्तु है।

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- वेदान्तसार-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-37

62. 'तितिक्षा' का अर्थ है-
(A) मोक्षेच्छा
(B) शीतोष्णादि द्वन्द्व सहिष्णुता
(C) नित्यवस्तुविवेक
(D) नित्यानित्यवस्तुविवेक

व्याख्या-

- सदानन्द प्रणीत वेदान्तसार में साधनचतुष्टयों की संख्या चार हैं- 1. नित्यानित्यवस्तुविवेक 2. इहामुत्रार्थफलभोगविराग 3. शमादिषट्कसम्पत्ति 4.मुमुक्षुत्व
- शमादिषट्क सम्पत्ति हैं- शम, दम, उपरति, तितिक्षा, समाधान, श्रद्धा।

शम- ''शमस्तावच्छ्रवणादिव्यतिरिक्तविषयेभ्यो मनसो निग्रहः।'' श्रवण, मनन, निदिध्यासन से भिन्न विषयों से मन के हटा लेने को शम कहते हैं।

दम- ''दमो बाह्येन्द्रियाणां तद्व्यतिरिक्तविषयेभ्यो निवर्त्तनम्।'' बाह्य इन्द्रियों को श्रवणादि के अतिरिक्त विषयों से हटाने को दम कहते हैं।

उपरति- ''विहितानां कर्मणां विधिना परित्यागः।'' विहित कर्मों का विधि से परित्याग कर देना अर्थात् संन्यास ग्रहण कर लेना उपरति है।

तितिक्षा- ''तितिक्षा शीतोष्णादिद्वन्द्वसहिष्णुता।'' शीत-उष्ण आदि द्वन्द्वों को सहन करना तितिक्षा है।

अतः विकल्प B सही है।

समाधान-''निगृहीतस्य मनसः श्रवणादौ तदनुगुणविषये च समाधिः समाधानम्।'' निगृहीत चित्त का श्रवणादि में तथा श्रवणादि के अनुकूल विषयों में स्थिर हो जाना समाधान है।

श्रद्धा- ''गुरूपदिष्टवेदान्तवाक्येषु विश्वासः श्रद्धा।'' गुरु और वेदान्त के वाक्यों में विश्वास होना अर्थात् वह बिल्कुल सत्य है इस प्रकार बुद्धि का निश्चय होना श्रद्धा है।

* **मोक्षेच्छा-** ''मुमुक्षुत्वं मोक्षेच्छा'' मोक्ष की इच्छा से युक्त होना मोक्षेच्छा है।
* **नित्यानित्यवस्तुविवेक-** ''नित्यानित्यवस्तुविवेकस्तावद् ब्रह्मैव नित्यं वस्तु ततोऽन्यदखिलमनित्यमिति विवेचनम्।'' केवल ब्रह्म ही नित्य वस्तु है और उससे भिन्न सब कुछ अनित्य है ऐसा विवेचना करना नित्यानित्यवस्तुविवेक है।

स्रोत- वेदान्तसार- सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-21

63. वेदान्त के अनुसार अज्ञान की शक्ति है-
(A) आवरण
(B) विक्षेप
(C) आवरण विक्षेप दोनों
(D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या-

''अस्याज्ञानस्यावरणविक्षेपनामकमस्ति शक्तिद्वयम्।''
इस अज्ञान की आवरण और विक्षेप नामक दो शक्तियाँ हैं।

1. **आवरणशक्ति-** 'आवरणशक्तिस्तावदल्पोऽपि मेघोऽनेकयोजनायतमादित्यमण्डलमवलोकयितृनयनपथपिधायकतया यथाच्छादयतीव।'
प्रमाता जीव के दृष्टि के सामने पर्दा डालकर सत् चित् तथा आनन्दस्वस्वरूप आत्मा को आवृत्त करने वाली शक्ति को आवरण शक्ति कहते हैं।
2. **विक्षेपशक्ति-** 'विक्षेपशक्तिर्लिङ्गादिब्रह्माण्डान्तं जगत्सृजेदिति'। ब्रह्म से लेकर स्थावर प्राणियों तक सम्पूर्ण नामरूपात्मक संसार को पैदा करने वाली शक्ति को विक्षेप शक्ति कहते हैं।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- वेदान्तसार-सन्तनारायण श्रीवास्तव,पेज-56

64. पञ्चीकरण प्रक्रिया का उल्लेख किस ग्रन्थ में है?
(A) तर्कभाषा **(B) वेदान्तसार**
(C) सांख्यकारिका **(D) इशोपनिषद्**

व्याख्या-

A. तर्कभाषा- केशवमिश्र कृत 'तर्कभाषा' ग्रन्थ में प्रमाण प्रमेय आदि सोलह पदार्थों के ज्ञान से निःश्रेयस् (मोक्ष) की प्राप्ति का उल्लेख है। सोलह पदार्थों की संख्या है- प्रमाण,प्रमेय, संशय, प्रयोजन, दृष्टान्त, सिद्धान्त, अवयव, तर्क, निर्णय, वाद, जल्प, वितण्डा, हेत्वाभास, छल, जाति, निग्रहस्थान।

B. वेदान्तसार- योगीन्द्रसदानन्दकृत वेदान्तसार में स्थूलभूत पञ्चीकृत महाभूतों का उल्लेख किया गया है।
'द्विधा विधाय चैकैकं चतुर्धा प्रथमं पुनः।
स्वस्वेतरद्वितीयांशैर्योजनात् पञ्च पञ्च ते।'
प्रत्येक भूत को दो भागों में विभक्त करके, फिर प्रथम भाग को चतुर्धा विभक्त करके, अपने से भिन्न चारभूतों के द्वितीय भाग में जोड़ देने से वे आकाशादि पञ्चात्मक (पञ्चीकृत) हो जाते हैं।

C. सांख्यकारिका- सांख्यकारिका में सत्कार्यवाद का उल्लेख है एवं पच्चीस तत्त्वों का विवेचन है।
असदकरणात् उपादानग्रहणात............आदि।

D. ईशावास्योपनिषद्- ईशावास्योपनिषद् शुक्लयजुर्वेद का चालीसवाँ अध्याय है जिसमें मन्त्रों की संख्या अठारह है। इस उपनिषद् में विद्या और अविद्या तथा सम्भूति एवं असम्भूति का वर्णन है।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- वेदान्तसार-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-78

65. वेदान्त पढ़ने का अधिकारी है-
(A) साधन चतुष्टय सम्पन्न प्रमाता
(B) काम्यनिषिद्ध कर्मों को ही मात्र न करने वाला
(C) वेद वेदाङ्गों का ही मात्र अध्ययन करने वाला
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

व्याख्या-

- सदानन्दप्रणीत वेदान्तसार में चार अनुबन्धों की चर्चा की गयी है-
  1. अधिकारी 2. विषय 3. सम्बन्ध 4. प्रयोजन।

अधिकारी-

''अधिकारी तु विधिवदधीत.....साधनचतुष्टयसम्पन्नः प्रमाता।''
अधिकारी तो वही हो सकता है, जिसने इस जन्म या पूर्व जन्म में पहले विधिपूर्वक वेद वेदाङ्गों का अध्ययन करके सम्पूर्ण वेदों का अर्थज्ञान उपलब्ध करके काम्यकर्म तथा शास्त्रों के द्वारा निषिद्ध कर्मों का त्याग किया हो, तत्पश्चात् जिसका अन्तःकरण, नित्य, नैमित्तिक, प्रायश्चित तथा उपासना कर्मों को करने से सम्पूर्ण पापों से मुक्त तथा अत्यधिक स्वच्छ हो गया हो ऐसा चार साधनों से सम्पन्न (साधनचतुष्टयसम्पन्न) प्रमाता ही अधिकारी है।

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- वेदान्तसार-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-11

66. विवर्त का आशय है-
(A) यथार्थ परिवर्तन
(B) अयथार्थ परिवर्तन
(C) दोनों प्रकार के परिवर्तन
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

व्याख्या-

A. वेदान्तसार में विकार को परिभाषित करते हुए सदानन्द कहते हैं कि- कोई वस्तु अपने रूप को त्यागकर किसी अन्य यथार्थ रूप को ग्रहण करती है तो वह विकारभाव कहलाती है। ''सतत्त्वतोऽन्यथाप्रथाविकार इत्युदीरितः।''

B. वेदान्तसार में विवर्त का लक्षण निम्नवत् है- किसी वस्तु में अपने रूप के परित्याग के बिना दूसरी वस्तु का मिथ्याभास (अयथार्थ परिवर्तन) विवर्त कहलाता है।
''अतत्त्वतोऽन्यथाप्रथाविवर्तइत्युदाहृतः।।''

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- वेदान्तसार-सन्तनारायण श्रीवास्तव,पेज-115-116

67. निम्नलिखित में से एक कर्मेन्द्रिय है-
(A) वाक् **(B) श्रोत्र**
(C) घ्राण **(D) चक्षुः**

व्याख्या-

कर्मेन्द्रियाँ- कर्मेन्द्रियाणि वाक्पाणिपादपायूपस्थाख्यानि। वाक् (वाणी), पाणि (हाथ), पाद (पैर), पायु (गुदा) तथा उपस्थ (लिङ्ग) ये पाँच कर्मेन्द्रियाँ हैं।

ज्ञानेन्द्रियाँ- ज्ञानेन्द्रियाणि श्रोत्रत्वक्चक्षुर्जिह्वाघ्राणाख्यानि। श्रोत्र, त्वक् , चक्षु, जिह्वा तथा घ्राण ये पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ हैं।

पञ्चवायवः- 'वायवः प्राणापानव्यानोदानसमानाः।' प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान ये पाँच वायु हैं।

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- वेदान्तसार-सन्तनारायण श्रीवास्तव,पेज-69

68. नाटक में 'विदूषक' होता है-
(A) नाटक का नायक
(B) नाटक का प्रतिनायक
(C) हास्यरस का पात्र
(D) करुण रस का पात्र

व्याख्या-

A. नाटक का नायक- आचार्य विश्वनाथ साहित्यदर्पण के तृतीय परिच्छेद में नाटक के नायक का लक्षण करते हैं-
''त्यागी कृती कुलीनः सुश्रीको रूपयौवनोत्साही।
दक्षोऽनुरक्तलोकस्तेजोवैदग्ध्यशीलवान्नेता।।''
(सा.द.3.30)

दाता, कृतज्ञ, पण्डित, कुलीन, लक्ष्मीवान्, लोगों के अनुराग का पात्र, रूप यौवन एवं उत्साह से युक्त, तेजस्वी, चतुर और सुशील पुरुष काव्यों में नायक होता है।

जैसे- श्रीराम, दुष्यन्त, अर्जुन, कृष्ण, उदयन आदि।

B. नाटक का प्रतिनायक- प्रतिनायक का लक्षण निम्नवत् है- **'धीरोद्धतः पापकारी व्यसनी प्रतिनायकः।'** (सा.द.3.131) धीरोद्धत, पापी और काम क्रोधादि से उत्पन्न व्यसनों में फँसा हुआ पुरुष प्रतिनायक कहलाता है।

जैसे- रावण, शिशुपाल, दुर्योधन आदि।

C. हास्यरस का पात्र- साहित्यदर्पण के तृतीय परिच्छेद में विदूषक को निम्न रूप से परिभाषित किया गया है-

कुसुमवसन्ताद्यभिधः कर्मवपुर्वेषभाषाद्यैः।
हास्यकरः कलहरतिर्विदूषकः स्यात्स्वकर्मज्ञः॥

(सा.द.3/42)

किसी फूल अथवा वसन्तादिक पर जिसका नाम हो और जो अपनी क्रिया, देह, वेष और भाषा आदि से हँसाने वाला हो दूसरों को लड़ाने में प्रसन्न रहता हो और अपने मतलब का पूरा हो अर्थात् अपने खाने-पीने की बात कभी न भूले वह पुरुष विदूषक कहलाता है।

अतः विकल्प C सही है।

D. उत्तररामचरित में राम और सीता करुण रस के पात्र कहे जा सकते हैं।

स्रोत- साहित्यदर्पण (3/42)-शालिग्राम शास्त्री, पेज-68

69. नाटक में जो बात सुनाने योग्य नहीं होती है, उसे कहते हैं-

(A) प्रकाश **(B) आत्मगत**
(C) अपवारित **(D) जनान्तिक**

व्याख्या-

A. प्रकाश- साहित्यदर्पण के षष्ठ परिच्छेद में आचार्य विश्वनाथ प्रकाश का लक्षण करते हैं- **'सर्वश्राव्यं प्रकाशं स्यात्।'** (सा.द. 6/138) जो कथन सबको सुनाने योग्य हो उसे प्रकाश कहते हैं।

B. आत्मगत- आत्मगत का लक्षण साहित्यदर्पण के छठे परिच्छेद में किया गया है- **'अश्राव्यं खलु यद्वस्तु तदिह स्वगतं मतम्।'** (सा.द. 6/137) जो बात सुनाने योग्य नहीं होती उसे आत्मगत या स्वगत कहते हैं।

C. अपवारित- आचार्य धनञ्जय दशरूपक के प्रथम प्रकाश में अपवारित का लक्षण किया है- **'रहस्यं कथ्यतेऽन्यस्य परावृत्त्यापवारितम्।'** (दश.1.66) रङ्गमञ्च पर स्थित पात्रों की ओर से मुख फेरकर जब कोई गुप्त बात अन्य पात्र से की जाती है, तो वह अपवारित कहलाता है।

D. जनान्तिक- आचार्य धनञ्जय ने दशरूपक के प्रथम प्रकाश में जनान्तिक का लक्षण करते हैं-

त्रिपताकाकरेणान्यान्...तज्जनान्तिकम् (दश. 1/65-66) पात्रों के मध्य चल रहे संवाद के मध्य में, त्रिपताका रूप हस्तमुद्रा के द्वारा अन्य पात्रों से बचाकर दो पात्र आपस में जो परस्पर वार्तालाप करते हैं- वह जनान्तिक कहा जाता है।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- साहित्यदर्पण (6/137)- शालिग्राम शास्त्री,पेज-201

70. किस रस में आरभटी वृत्ति होती है?

(A) रौद्र **(B) शृङ्गार**
(C) वीर **(D) अद्‌भुत**

व्याख्या-

आचार्य धनञ्जय दशरूपक के द्वितीय प्रकाश में रस एवं वृत्तियों के पारस्परिक सम्बन्ध की चर्चा करते हैं-

'शृङ्गारे कैशिकी, वीरे सात्वत्यारभटी पुनः।
रसे रौद्रे च बीभत्से, वृत्तिः सर्वत्र भारती॥' (दश.2.62)

शृङ्गाररस में विशेषतः कैशिकी वृत्ति और वीररस में सात्त्वती वृत्ति, रौद्र तथा बीभत्स रस में आरभटी वृत्ति उपयुक्त है। किन्तु भारती वृत्ति सर्वत्र उपयुक्त हो सकती है।

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- साहित्यदर्पण (6/122)- शालिग्राम शास्त्री,पेज-199

71. 'साहित्यदर्पण' के प्रथम परिच्छेद का नाम है-

(A) काव्यदोष निरूपण
(B) काव्यस्वरूप निरूपण
(C) काव्यप्रयोजन निरूपण
(D) काव्यलक्षण निरूपण

व्याख्या-

आचार्य विश्वनाथकृत साहित्यदर्पण में 10 परिच्छेद हैं।

परिच्छेद	नाम
प्रथमपरिच्छेद	काव्यस्वरूप निरूपण
द्वितीयपरिच्छेद	वाक्यस्वरूप निरूपण
तृतीयपरिच्छेद	रसादिनिरूपण
चतुर्थपरिच्छेद	ध्वनिगुणीभूतव्यङ्ग्याख्यकाव्यभेदनिरूपण
पञ्चमपरिच्छेद	व्यञ्जनाव्यापारनिरूपण
षष्ठपरिच्छेद	दृश्यश्रव्यकाव्यनिरूपण
सप्तमपरिच्छेद	दोषनिरूपण
अष्टमपरिच्छेद	गुणविवेचन
नवमपरिच्छेद	रीतिविवेचन
दशमपरिच्छेद	शब्दालङ्कार एवं अर्थालङ्कार निरूपण

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- साहित्यदर्पण-शालिग्राम शास्त्री,पेज-23

72. 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' किस आचार्य का कथन है?
(A) मम्मट (B) आनन्दवर्धन
(C) विश्वनाथ (D) जगन्नाथ

व्याख्या-

A. मम्मट- आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश के प्रथमोल्लास में काव्य का लक्षण करते हैं-
'तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि।'
(का.प्र.सूत्र-1)
दोषों से रहित गुणयुक्त और कहीं-कहीं अलङ्कार रहित शब्द और अर्थ की समष्टि काव्य कहलाता है।

B. आनन्दवर्धन- आचार्य आनन्दवर्धन ध्वन्यालोक के प्रथम उद्योत में काव्य का लक्षण करते हैं- **काव्यस्यात्मा ध्वनिः।'** (ध्वन्या. 1/1) काव्य की आत्मा ध्वनि है।

C. विश्वनाथ- आचार्य विश्वनाथ साहित्यदर्पण के प्रथम परिच्छेद में काव्य का लक्षण करते हैं-'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्।' (सा.द. 1/3) रसात्मक वाक्य को काव्य कहते हैं।

D. जगन्नाथ- पं. राजजगन्नाथ रसगङ्गाधर के प्रथम आनन में काव्य का लक्षण करते हैं-**'रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्।'** (रसगंगाधर 1/1) रमणीय अर्थ का प्रतिपादन करने वाला शब्द काव्य है।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- साहित्यदर्पण-शालिग्राम शास्त्री,पेज-19

73. आचार्य विश्वनाथानुसार काव्य का प्रयोजन है-
(A) पुरुषार्थचतुष्टय (B) मोक्ष
(C) अर्थ (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या-
आचार्य विश्वनाथ काव्यप्रयोजन के विषय में साहित्यदर्पण के प्रथम परिच्छेद में कहते हैं कि-
चतुर्वर्गफलप्राप्तिः सुखादल्पधियामपि।
काव्यादेव यतस्तेन तत्स्वरूपं निरूप्यते॥
(सा.द. 1/2)
अल्पबुद्धिवालों को भी सुख से, बिना किसी विशेष परिश्रम के चतुर्वर्ग अर्थात् धर्म, अर्थ, काम,मोक्ष रूपीफल की प्राप्ति काव्य के ही द्वारा हो सकती है,
अतः उसके स्वरूप का निरूपण किया जाता है।
''चतुर्वर्गफलप्राप्तिः काव्यतः..........। अर्थात् काव्य से चतुर्वर्ग (पुरुषार्थचतुष्टय) की प्राप्ति होती है।
इसी बात का प्राचीनोक्ति द्वारा समर्थन करते हुए कहते हैं-
'धर्मार्थकाममोक्षेषु वैचक्षण्यं कलासु च।'
करोति कीर्तिं प्रीतिं च साधुकाव्यनिबन्धनम्॥''
काव्य के अध्ययन आदि से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के साधनों तथा नृत्यगीतादि कलाओं में वैचक्षण्य प्राप्त होता है, संसार में कीर्ति होती है और हृदय में प्रसन्नता होती है।
* आचार्य मम्मट ने काव्य के छः प्रयोजन माने हैं-
1. यश 2. अर्थ 3. व्यवहारज्ञान 4. अमङ्गलनाश
5. तुरन्त आनन्द की प्राप्ति 6. कान्ता के समान उपदेश

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- साहित्यदर्पण- कमलादेवी, पेज-44

74. 'गङ्गायां घोषः' में कौन लक्षणा है-
(A) प्रयोजनमूल
(B) रूढिमूला
(C) रूढिलक्षण-लक्षणा
(D) प्रयोजनमूला-लक्षण-लक्षणा

व्याख्या-
आचार्य विश्वनाथ लक्षणा का निरूपण साहित्यदर्पण के द्वितीय परिच्छेद में करते हैं-
'मुख्यार्थबाधे तद्युक्तो ययाऽन्योऽर्थः प्रतीयते।
रूढेः प्रयोजनाद्वाऽसौ लक्षणा शक्तिरर्पिता॥'
(सा.द. 2/5)

मुख्यार्थ के बाधित होने पर, रूढ़ि अथवा प्रयोजन के बल पर, जिस शब्द शक्ति के द्वारा मुख्यार्थ से संयुक्त अर्थ की प्रतीति होती है वही लक्षणा है। यह अर्पित अर्थात् आरोपित शब्दशक्ति है।

आचार्य विश्वनाथ लक्षणा के दो भेद करते हैं-

1. उपादान लक्षणा 2. लक्षण लक्षणा

1. **उपादान लक्षणा-**

मुख्यार्थस्येतराक्षेपो वाक्यार्थेऽन्वयसिद्धये।
स्यादात्मनोऽप्युपादानादेषोपादानलक्षणा॥

(सा.द.2/6)

जब वाक्यार्थ में अपने अन्वय की सिद्धि के लिये, मुख्यार्थ अन्य अर्थ का आक्षेप ग्रहण कर लेता है तब अपना भी अस्तित्व बने रहने के कारण इसे उपादान लक्षणा कहते हैं।

उदाहरण- श्वेतो धावति,कुन्ताः प्रविशन्ति आदि।

2. **लक्षण-लक्षणा-**

अर्पणं स्वस्य वाक्यार्थे परस्यान्वयसिद्धये।
उपलक्षणहेतुत्वादेषा लक्षणलक्षणा॥ (सा.द.2.7)

वाक्यार्थ में दूसरे के अन्वय की सिद्धि के लिये जब कोई शब्द अपने मुख्यार्थ का समर्पण कर दे तो उस शब्द का उपलक्षण हेतु होने के कारण इसे लक्षण लक्षणा कहते हैं।

उदाहरण- गङ्गायां घोषः, कलिङ्गः साहसिकः।

* 'गङ्गायां घोषः' का मुख्यार्थ है- गङ्गा में कुटी है यहाँ पर मुख्यार्थ का बाध होने पर प्रयोजन वश जिस अन्य अर्थ की प्रतीति होती है वह है गङ्गा के तट पर कुटी है। अतः यह प्रयोजनमूला लक्षण लक्षणा का उदाहरण है।

अतः विकल्प D सही है।

* प्रयोजन सारोपा लक्षण लक्षणा का उदा.- आयुर्घृतम्।
* प्रयोजनवती उपादान लक्षणा का उदा.- कुन्ताः प्रविशन्ति।
* रूढ़िवती लक्षण लक्षणा का उदा.- कलिङ्गः साहसिकः।

स्रोत- साहित्यदर्पण- शालिग्राम शास्त्री, पेज-29

75. 'साहित्यदर्पण' के अनुसार काव्य में रस की स्थिति है-
(A) शरीर जैसी
(B) आत्मा जैसी
(C) अवयव संस्थान जैसी
(D) अलङ्करण जैसी

व्याख्या-

A. काव्य का शरीर- आचार्य विश्वनाथ ने शब्दार्थ को काव्य का शरीर माना है- काव्यस्य शब्दार्थौ शरीरम्।

B. काव्य की आत्मा- आचार्य विश्वनाथ साहित्यदर्पण के प्रथम परिच्छेद में रस को काव्य की आत्मा मानते हैं। **वाक्यं रसात्मकं काव्यम्।** (सा.द. 1/3) 'रसात्मक वाक्य को काव्य कहते हैं।' प्रधान होने के कारण रस ही जीवनभूत आत्मा है। 'रस एवात्मा साररूपतया जीवनधायको यस्य।'

C. अवयव संस्थान- आचार्य विश्वनाथ ने रीति को अवयव संस्थान जैसा माना है। **'रीतयोऽवयवसंस्थानविशेषवत्'**

D. अलङ्करण जैसा- काव्य में अलङ्कार को अलङ्करण (आभूषण) रूप में माना है-
'अलङ्काराःकटककुण्डलादिवत्'

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- साहित्यदर्पण- कमला देवी, पेज-65

76. रस सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य हैं-
(A) विश्वनाथ (B) मम्मट
(C) भरतमुनि (D) कुन्तक

व्याख्या-

	आचार्य	सम्प्रदाय	अनुमानित समय
A.	विश्वनाथ	रसवादी आचार्य	चौदहवीं शताब्दी
B.	मम्मट	समन्वयवादी आचार्य	बारहवीं शताब्दी
C.	भरतमुनि	रस सम्प्रदाय के प्रवर्तक	100ई.पू. से 300ई.
D.	कुन्तक	वक्रोक्ति सम्प्रदाय के प्रवर्तक	ग्यारहवीं शताब्दी

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- काव्यप्रकाश-आचार्य विश्वेश्वर,पेज

77. अध्यवसाय की सिद्धि होने पर अलङ्कार होता हैं-
(A) स्वभावोक्ति (B) रूपक
(C) अतिशयोक्ति (D) उत्प्रेक्षा

व्याख्या-

A. स्वभावोक्ति- आचार्य मम्मट अलङ्कार का लक्षण नवम तथा दशम उल्लास में करते हैं, नवम उल्लास में शब्दालङ्कार तथा दशम उल्लास में अर्थालङ्कार का वर्णन करते हैं- **स्वभावोक्तिस्तु डिम्भादेः स्वक्रियारूपवर्णनम्।** (का.प्र.सूत्र-167) बालक आदि की अपनी स्वाभाविक क्रिया रूप का वर्णन करना ही स्वभावोक्ति अलङ्कार है।

उदा. पश्चादंघ्री प्रसार्य त्रिकनतिविततं द्राघयित्वाङ्गमुच्चै-रासज्याभुग्नकण्ठो मुखमुरसि सटां धूलिधूम्रां विधूय।।

B. रूपक- आचार्य मम्मट रूपक अलङ्कार का लक्षण दशमोल्लास में करते हैं-

'तद्रूपकमभेदो य उपमानोपमेययोः।' (का.प्र.सूत्र -138) उपमान और उपमेय का (जिनका भेद प्रसिद्ध है उनका सादृश्यातिशयवश) जो अभेद वर्णन है वह रूपक अलङ्कार है। **उदा.-** सौन्दर्यस्य तरङ्गिणी तरुणिमोत्कर्षस्य हर्षोद्गमः। कान्तेः कार्मणकर्म नर्मरहसामुल्लासनावासभूः........।

C. अतिशयोक्ति- अतिशयोक्ति अलङ्कार का लक्षण आचार्य मम्मट दशमोल्लास में करते हैं- **'निगीर्याध्यवसानन्तु प्रकृतस्य परेण यत्। प्रस्तुतस्य यदन्यत्वं यद्यर्थोक्तौ च कल्पनम्॥'** (का.प्र.सूत्र-152) 'कार्यकारणयोर्यश्च पौर्वापर्यविपर्ययः। विज्ञेयाऽतिशयोक्तिः सा'

1. उपमान द्वारा उपमेय का निगरण करके उसके साथ कल्पित अभेद का निश्चय करना
2. उपमेय का अन्य रूप में वर्णन करना
3. यदि 'अर्थ' वाले शब्दों का कथन करके असम्भव अर्थ की कल्पना करना
4. कार्य तथा कारण के पूर्व अपरभाव का विपरीत वर्णन करना, इस प्रकार का अतिशयोक्ति अलङ्कार जानना चाहिए।

उदाहरण-

कमलमनम्भसि कमले च कुवलये तानि कनकलतिकायाम्। सा च सुकुमारसुभगेत्युत्पातपरम्परा केयम्॥

जलरहित प्रदेश में कमल है, कमल में दो नीलकमल हैं, वे कमल तथा कुवलयस्वर्णलता में है और वह कनकलता कोमल तथा सुन्दर है, क्या यह कोई उत्पात की परम्परा है। प्रस्तुत उदाहरण में कमल, कमल में नेत्रद्वय आदि के सामने से मुखादि का अतिशय प्रकट हो रहा है जिसके कारण यह प्रथमा निगीर्याध्वसान रूपा अतिशयोक्ति है।

D. उत्प्रेक्षा- उत्प्रेक्षा अलङ्कार का भी लक्षण आचार्य मम्मट दशम उल्लास में करते हैं- **'सम्भावनमथोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य समेन यत्।'** (का.प्र.सूत्र -136) जो उपमेय की उपमान के साथ सम्भावना की जाती है वह उत्प्रेक्षा है।

उदा. उन्मेषं यो मम न सहते जातिवैरी निशाया....।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-482

78. 'लिम्पतीव तमोऽङ्गानि वर्षतीवाञ्जनं नभः' में अलङ्कार है-
(A) अपह्नुति **(B) रूपक**
(C) उत्प्रेक्षा **(D) सन्देह**

व्याख्या-

A. अपह्नुति- 'प्रकृतं यन्निषिध्यान्यत्साध्यते सा त्वपह्नुतिः।' (काव्यप्रकाश सूत्र-145) उपमेय का निषेध करके जो अन्य (अर्थात् उपमान) की सिद्धि की जाती है उसे अपह्नुति अलङ्कार कहते हैं।

उदा.- अवाप्तः प्रागल्भ्यं परिणतरुचः शैलतनये।

B. रूपक- 'तद्रूपकमभेदो य उपमानोपमेययोः।' (का.प्र.सूत्र-138) जो उपमान तथा उपमेय का अभेद का आरोप है उसे रूपक अलंकार कहते हैं।

उदा.- ज्योत्स्ना भस्मच्छुरणधवला बिभ्रती तारकस्थी।

C. उत्प्रेक्षा- 'सम्भावनमथोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य समेन यत्।' (का.प्र. सूत्र-136) जब उपमेय की उपमान के साथ सम्भावना की जाती है तो वहाँ उत्प्रेक्षा अलङ्कार होता है।

उदा.- लिम्पतीव तमोऽङ्गानि वर्षतीवाञ्जनं नभः। असत्पुरुषसेवेव दृष्टिर्विफलतां गता।।

'लिम्पतीव तमोऽङ्गानि' में 'तम' उपमेयरूप तथा 'लेपन' उपमान रूप है। अतः लिम्पतीव में क्रिया (लिम्पत्ति) के साथ 'इव' का प्रयोग सम्भावना के अर्थ में करने के कारण उपमेय में उपमान का सम्भावना व्यक्त की गई है इस कारण क्रियोत्प्रेक्षा अलङ्कार है।

D. सन्देह- **''ससन्देहस्तु भेदोक्तौ तदनुक्तौ च संशयः।''** (का.प्र.सूत्र-137)

जब उपमेय का उपमान के साथ संशयात्मक ज्ञान होता है वहाँ सन्देह अलङ्कार होता है।

उदा.- अयं मार्तण्डः किं स खलु तुरगैः सप्तभिरितः।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-461

79. अयं मार्तण्डः किं? स खलु तुरगैः सप्तभिरितः! कृशानुः किं? सर्वाः प्रसरति दिशो नैष, नियतम्।' में अलंकार है-
(A) उपमा **(B) रूपक**
(C) उत्प्रेक्षा **(D) सन्देह**

व्याख्या-
आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश के दशमोल्लास में अर्थालङ्कार का वर्णन करते हैं-

A. उपमा अलङ्कार- 'साधर्म्यमुपमा भेदे' (का.प्र.सूत्र-125) उपमान तथा उपमेय का भेद होने पर दोनों के साधर्म्य का वर्णन उपमा अलङ्कार है। सर्वप्रथम उपमा के दो भेद होते हैं- पूर्णोपमा तथा लुप्तोपमा।
उदा.- गाम्भीर्यगरिमा तस्य सत्यं गङ्गाभुजङ्गवत्।
दुरालोकः स समरे निदाघाम्बररत्नवत्।।

B. रूपक अलङ्कार- 'तद्रूपकमभेदो य उपमानोपमेययोः।' (का.प्र.सूत्र-139) जो उपमान तथा उपमेय का अभेद आरोप है उसे रूपक अलङ्कार कहते हैं।
उदाहरण-
नियतारोपणोपायः स्यादारोपः परस्य यः।
तत्परम्परितं श्लिष्टे वाचके भेदभाजि वा।।

C. उत्प्रेक्षा अलङ्कार-'सम्भावनमथोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य समेन यत्।' (का.प्र.सत्र-137)
उपमेय की उपमान के साथ सम्भावना जहाँ की जाय वहाँ उत्प्रेक्षा अलङ्कार है।
उदा.- उन्मेषं यो मम न सहते जातिवैरी निशायाम्....।

D. सन्देह- 'ससन्देहस्तु भेदोक्तौ तदनुक्तौ च संशयः।' (का.प्र.सूत्र-138)
जहाँ उपमेय का उपमान के साथ संशयात्मक ज्ञान होता है वहाँ सन्देह अलङ्कार होता है। सन्देह अलङ्कार के दो भेद हैं- उक्ति तथा अनुक्ति।
उदाहरण- अयं मार्तण्डः किं? स खलु तुरगैः सप्तभिरितः,
कृशानुः किं? सर्वाः प्रसरति दिशो नैष नियतम्।
कृतान्तः किं? साक्षान्महिषवहनोऽसाविति चिरं
समालोक्याजौ त्वां विदधति विकल्पान् प्रतिभटाः।
प्रस्तुत पद्य में 'अयं मार्तण्डः किं? स खलु तुरगैः सप्तभिरितः वाक्य में मार्तण्ड उपमान तथा उपमेय है इन दोनों का प्रचण्ड प्रताप ही संशय होने का कारण है, किन्तु सात अश्वों का सम्बन्ध उपमान से ही होने एवं उपमेय से न होने के कारण भेद कथन है।
अतः विकल्प D सही है।
स्रोत- काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर,पेज-462

80. काल्पनिक अभेदारोप होने पर अलङ्कार होता है,
(A) अनुप्रास **(B) उत्प्रेक्षा**
(C) रूपक **(D) उपमा**

व्याख्या-
आचार्य मम्मट अनुप्रास अलङ्कार का लक्षण काव्यप्रकाश के नवम उल्लास में करते हैं-

A. अनुप्रास- 'वर्णसाम्यमनुप्रासः।' (का.प्र.सूत्र-103) वर्णों की समानता अनुप्रास है।
उदाहरण- ततोऽरुणपरिस्पन्दमन्दीकृतवपुः शशी।
दध्रे कामपरिक्षामकामिनीगण्डपाण्डुताम्।।

B. उत्प्रेक्षा- 'सम्भावनमथोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य समेन यत्।' (का.प्र.सूत्र-137) जो उपमेय की उपमान के साथ सम्भावना की जाती है, वह उत्प्रेक्षा है।
उदा- उन्मेषं यो मम न सहते जातिवैरी निशायाम्.......।

C. रूपक- 'तद्रूपकमभेदो य उपमानोपमेययोः।' (का.प्र.सूत्र-139) उपमान तथा उपमेय के काल्पनिक अभेदारोप को रूपक कहते हैं।
उदा.- यस्य रणान्तः पुरे करे कुर्वतो मण्डलाग्रलताम्।
रससम्मुख्यपि सहसा पराङ्मुखी भवति रिपुसेना।
प्रस्तुत उदाहरण में, रणभूमि में आरोपित किया गया 'अन्तःपुर' शब्द द्वारा ग्रहण किया गया है,
खड्गलता में नायिका का तथा रिपुसेना में प्रतिनायक का आरोप अर्थ की सामर्थ्य से ही जानने योग्य है अतः एक देश में विशेष रूप से वर्तमान होने के कारण रूपक अलङ्कार है।

D. उपमा- 'साधर्म्यमुपमा भेदे।' (का.प्र.सूत्र-125) उपमान तथा उपमेय का भेद होने पर दोनों के सादृश्य का वर्णन उपमा अलङ्कार है।
उदाहरण- स्वप्नेऽपि समरेषु त्वां विजयश्रीर्न मुञ्चति।
प्रभावप्रभवं कान्तं स्वाधीनपतिका यथा।।
अतः विकल्प C सही है।
स्रोत- काव्यप्रकाश आचार्य -आचार्य विश्वेश्वर,पेज-463

81. 'लताकुञ्जं गुञ्जन् मदवदलिपुञ्जं चपलयन्' में अलङ्कार है-
(A) यमक **(B) श्लेष**
(C) अनुप्रास **(D) इनमें से कोई नहीं**

व्याख्या-
आचार्य विश्वनाथ साहित्यदर्पण के दशम परिच्छेद में अलङ्कारों का लक्षण करते हैं-

A. यमक- सत्यर्थे पृथगर्थायाः स्वरव्यञ्जनसंहतेः।
क्रमेण तेनैवावृत्तिर्यमकं विनिगद्यते। (सा.द.10.8)

यदि अर्थवान् हो, तो भिन्न अर्थ वाले, स्वर व्यञ्जन समुदाय की उसी क्रम से आवृत्ति को यमक कहते हैं।

उदा.- नवपलाश-पलाशवनं पुरः स्फुटपरागपरागतपङ्कजम्। मृदुल-तान्त-लतान्तमलोकयत्स सुरभिं सुरभिं सुमनोभरैः।।

B. श्लेष- 'श्लिष्टैः पदैरनेकार्थाभिधाने श्लेष इष्यते।' (सा.द.10.11)

श्लिष्ट पदों से अनेक अर्थों का अभिधान होने पर श्लेषालङ्कार होता है। वर्ण, प्रत्यय, लिङ्ग, प्रकृति, पद, विभक्ति, वचन और भाषा के भेद से यह अलङ्कार आठ प्रकार का होता है।

उदा.- प्रतिकूलतामुपगते हि विधौ विफलत्वमेति बहुसाधनता।

C. अनुप्रास- 'अनुप्रासः शब्दसाम्यं वैषम्येऽपि स्वरस्य यत्।' (सा.द. 10/3)

स्वर की विषमता रहने पर भी शब्द अर्थात् पद, पदांश के साम्य को अनुप्रास कहते हैं।

उदाहरण- लताकुञ्जं गुञ्जन्मदवलिपुञ्जं चपलयन्,
समालिङ्गन्नङ्गं द्रुततरमनङ्गं प्रबलयन्,
मरुन्मन्दं मन्दं दलितमरविन्दं तरलयन्,
रजोवृन्दं विन्दन् किरति मकरन्दं दिशि दिशि।।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- छन्दोऽलङ्कारमञ्जूषा-लक्ष्मीकान्त दीक्षित, पेज-25

82. भ्रान्तिमान् अलङ्कार में प्राणतत्व है-
(A) सन्देह **(B) संशय**
(C) भ्रान्ति का निश्चय **(D) भ्रान्ति का अनिश्चय**

व्याख्या-

काव्यप्रकाश के दशमोल्लास में अर्थालङ्कारों का विवेचन है-

➢ **सन्देह- 'ससन्देहस्तु भेदोक्तौ तदनुक्तौ च संशयः।'** (का.प्र.सूत्र-137)

जहाँ उपमेय का उपमान के साथ संशयात्मक ज्ञान होता है वहाँ सन्देह अलङ्कार होता है। यह भेदोक्ति और भेदानुक्ति भेद से दो प्रकार का होता है।

इसमे संशय की स्थिति बनी रहती है।

उदा.- अयं मार्तण्डः किं? स खलु तुरगैः सप्तभिरितः कृशानुः किं? सर्वाः प्रसरति दिशो नैष नियतम्। कृतान्तः किं? साक्षान्महिषवहनोऽसाविति चिरं समालोक्याजौ त्वां विदधति विकल्पान् प्रतिभटाः।।

➢ **भ्रान्तिमान्- 'भ्रान्तिमानन्यसंवित् तत्तुल्यदर्शने।'** (का.प्र.सूत्र-200)

जहाँ पर उसके समान वस्तु के देखने पर जो अन्य वस्तु का भान प्रतीत होता है, वह भ्रान्तिमान् अलङ्कार है।

उदा.- कपाले मार्जारः पय इति करान् लेढि शशिनः तरुच्छिद्रप्रोतान् बिसमिति करी सङ्कलयति। रतान्ते तल्पस्थान् हरति वनिताऽप्यंशुकमिति प्रभामत्तश्चन्द्रो जगदिदमहो विप्लवयति।।

भ्रान्तिमान् अलङ्कार में उपमेय को उपमान के रूप में निश्चित कर लिया जाता है और सन्देह अलङ्कार में उपमेय और उपमान दोनों का पृथक्-पृथक् ज्ञान रहता है।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- काव्यप्रकाश- पारसनाथ द्विवेदी,पेज-678

83. अभिहितान्वयवाद मत है-
(A) आनन्दवर्धन का
(B) प्रभाकर गुरु का
(C) मीमांसक (कुमारिलभट्ट) का
(D) मम्मट का

व्याख्या-

A. आनन्दवर्धन- आचार्य आनन्दवर्धन ध्वन्यालोक ग्रन्थ में ध्वनि का लक्षण निम्न रूप में करते हैं-

**'यत्रार्थः शब्दो वा तमर्थमुपसर्जनीकृतस्वार्थौ।
व्यङ्क्तः काव्यविशेषः स ध्वनिरिति सूरिभिः कथितः॥'**

(ध्वन्या.1/13) जहाँ अर्थ अपने को अथवा शब्द अपने अर्थ को गुणीभूत करके उस प्रतीयमान अर्थ को व्यक्त करते हैं, उस काव्यविशेष को विद्वान लोग ध्वनिकाव्य कहते हैं।

B. प्रभाकर गुरु का 'अन्विताभिधानवाद'-

"वाच्य एव वाक्यार्थ इति अन्विताभिधानवादिनः"

अन्विताभिधानवाद के अनुसार अभिधाशक्ति से पहले पदार्थों की उपस्थिति नहीं होती है। बल्कि पदों द्वारा अन्वित पदार्थों की ही उपस्थिति होती है अर्थात् पहले पद अन्वित होते हैं बाद में विशिष्ट अर्थ देते हैं इसलिए उसे अन्विताभिधानवाद कहते हैं।

C. मीमांसक (कुमारिल भट्ट) का-

"आङ्क्षाक्षायोग्यतासन्निधिवशाद्वक्ष्यमाणस्वरूपाणां पदार्थानां समन्वये तात्पर्यार्थो विशेषवपुरपदार्थोऽपि वाक्यार्थः समुल्लसतीति अभिहितान्वयवादिनां मतम्।।"

अभिहितान्वयवाद का अर्थ है अभिहित अर्थात् अभिधा शक्ति के द्वारा बोधित (कथित) अर्थों का अन्वय अर्थात् अभिधाशक्ति के द्वारा पदों का अर्थ अभिहित होता है। बाद में उनका परस्पर अन्वय होता है।

(अभिहितानां स्वस्ववृत्या पदैरुपस्थितानामर्थानामन्वयो भवतीति ये वदन्ति ते अभिहितान्वयवादिनः)

इस प्रकार अभिहितान्वयवाद के अनुसार पहले अभिधा शक्ति के द्वारा पद से पदार्थ का ज्ञान होता है। उसके पश्चात् वक्ता के तात्पर्य के अनुसार उनका परस्पर अन्वय होता है, जिससे वाक्यार्थ का ज्ञान होता है।

D. आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश के द्वितीयोल्लास में काव्य में तीन प्रकार के शब्द तथा तीन प्रकार के अर्थ का वर्णन करते हैं-

'स्याद्वाचको लाक्षणिकः शब्दोऽत्र व्यञ्जकस्त्रिधा।' (का.प्र. सूत्र-5) काव्य में वाचक, लाक्षणिक और व्यञ्जक ये तीन प्रकार के शब्द होते हैं। वाच्यार्थ, लक्ष्यार्थ, व्यङ्ग्यार्थ ये तीन प्रकार के शब्द के अर्थ हैं।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर,पेज-36

84. 'काव्यालङ्कार' किसकी रचना है,
(A) दण्डी **(B) भामह**
(C) वामन **(D) आनन्दवर्धन**

व्याख्या-

	रचनाकार	रचनाएँ	विभाजन
A.	दण्डी	काव्यादर्श	तीन परिच्छेद
B.	भामह	काव्यालङ्कार	छः परिच्छेद
C.	वामन	काव्यालङ्कारसूत्र	पाँच अधिकरण
D.	आनन्दवर्धन	ध्वन्यालोक	चार उद्योत

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- काव्यप्रकाश- पारसनाथ द्विवेदी,पेज-14

85. 'इति हेतुस्तदुद्भवे' इस कथन का सम्बन्ध निम्नलिखित में से किस ग्रन्थ से है?
(A) साहित्यदर्पण **(B) काव्यप्रकाश**
(C) दशरूपक **(D) औचित्यविचारचर्चा**

व्याख्या-

A. साहित्यदर्पणकार आचार्य विश्वनाथ साहित्यदर्पण के प्रथम परिच्छेद में काव्य का लक्षण करते हैं- **''वाक्यं रसात्मकं काव्यम्।''** (सा.द.1/3) रसात्मक वाक्य को काव्य कहते हैं। **उदाहरण-** शून्यं वासगृहं विलोक्य शयनादुत्थाय किञ्चिच्छनै- र्निद्राव्याजमुपागतस्य सुचिरं निर्वर्ण्य पत्युर्मुखम्। विश्रब्धं परिचुम्ब्य जातपुलकामालोक्य गण्डस्थलीं, लज्जानम्रमुखीप्रियेण हसता बाला चिरं चुम्बिता।

B. आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश के प्रथमोल्लास में काव्यप्रयोजन के पश्चात् काव्यहेतु को परिभाषित करते हैं-

शक्तिर्निपुणता लोकशास्त्रकाव्याद्यवेक्षणात्।
काव्यज्ञशिक्षयाभ्यास इति हेतुस्तदुद्भवे।। (का.प्र.1.3)

शक्ति, लोकशास्त्र तथा काव्य इत्यादि के निरीक्षण से होने वाली निपुणता एवं काव्य के जानने वालों की शिक्षा द्वारा अभ्यास यह तीनों मिलकर काव्य उद्भव के हेतु हैं। 'त्रयः समुदिता न तु व्यस्तास्तस्य काव्यस्योद्भवे निर्माणे समुल्लासे च हेतुर्न तु हेतवः' अर्थात् ये तीनों सम्मिलित रूप से न कि पृथक्-पृथक् कारण हैं। अतः स्पष्ट है कि 'इति हेतुस्तदुद्भवे' पंक्ति आचार्य मम्मट ने काव्यप्रकाश में काव्यहेतु के सन्दर्भ में उद्धृत किया है।

C. दशरूपककार आचार्य धनञ्जय प्रथम प्रकाश में नाट्य का लक्षण करते हैं- ''अवस्थानुकृतिर्नाट्यम्।' अवस्था का अनुकरण नाट्य है।

D. **औचित्यविचारचर्चा-** क्षेमेन्द्र औचित्यविचार में काव्य का लक्षण करते हैं- ''औचित्यं रससिद्धस्य स्थिरं काव्यस्य जीवितम्।'' (औचित्यविचारचर्चा श्लोक-5) शृङ्गारादि रसों से प्रसिद्ध काव्य का जीवन औचित्य ही है।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर,पेज-16

86. 'गुणवृत्या पुनस्तेषां वृत्तिः शब्दार्थयोर्मता' किसका कथन है?
(A) विश्वनाथ का **(B) जगन्नाथ का**
(C) मम्मट का **(D) रुद्रट का**

व्याख्या-

A. **आचार्य विश्वनाथ-** साहित्यदर्पण के अष्टम परिच्छेद में गुणों के भेदों का वर्णन करते हैं- 'गुणाः माधुर्यमोजोऽथ प्रसाद इति ते त्रिधा।' (सा. द. 8/1) माधुर्य, ओज एवं प्रसाद तीन गुण हैं।

B. **जगन्नाथ-** पण्डित राजजगन्नाथ रसगङ्गाधर के प्रथम आनन में गुणों के भेदों का वर्णन करते हैं- रसेषु चतेषु निगदितेषु माधुर्यौज प्रसादाख्यांस्त्रीन् गुणानाहुः। उन रसों में कहे गये माधुर्य, ओज एवं प्रसाद गुण हैं।

C. **मम्मट-** आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश के अष्टमोल्लास में गुणों के भेदों की चर्चा करते हैं- 'गुणवृत्त्या पुनस्तेषां वृत्तिः शब्दार्थयोर्मता।' (का. प्र. सूत्र-94) माधुर्यादि गुणों की शब्द तथा अर्थ में स्थिति गौण रूप से ही मानी जाती है।

अतः विकल्प C सही है।

D. **रुद्रट-** आचार्य रुद्रट काव्यालङ्कार के सातवें अध्याय में गुणों के भेदों की चर्चा करते हैं- द्रव्यादपृथग्भूतो भवति गुणः सततमिन्द्रियग्राह्यः। सहजाहार्यवस्थिकभावविशेषादयं त्रेधा।। (काव्यालंकार 7/4) सदैव प्रत्यक्ष के योग्य द्रव्य के ही आश्रित गुण होता है। वह सहज, आहार्य और अवस्था विशेष के आश्रित होने के कारण तीन प्रकार का होता है।

स्रोत- काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर,पेज-390

87. आचार्य वामन की काव्य परिभाषा है-
(A) काव्यस्यात्मा ध्वनिः
(B) शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्
(C) रीतिरात्मा काव्यस्य
(D) रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्

व्याख्या-

A. आचार्य आनन्दवर्धन ध्वन्यालोक के प्रथम उद्योत में काव्य का लक्षण करते हैं- काव्यस्यात्मा ध्वनिः (ध्वन्यालोक1.1) अर्थात् काव्य की आत्मा ध्वनि है।

B. आचार्य भामह काव्यालङ्कार के प्रथम परिच्छेद में काव्य का लक्षण करते हैं-
शब्दार्थौ सहितौ काव्यं गद्यं पद्यं च तद्द्विधा।
संस्कृतं प्राकृतं चान्यदपभ्रंश इति त्रिधा।। (काव्यालङ्कार 1.16) शब्द और अर्थ दोनों मिलकर काव्य कहलाते हैं। उसके दो भेद हैं- गद्य और पद्य। संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, इस तरह उसके तीन प्रकार हैं।

C. आचार्य वामन काव्यालङ्कार सूत्र के प्रथम अधिकरण में काव्य का लक्षण करते हैं- 'रीतिरात्मा काव्यस्य' (काव्यालङ्कार सूत्र 1.2.6) रीति ही काव्य की आत्मा है।
अतः विकल्प C सही है।

D. पं. राजजगन्नाथ रसगङ्गाधर के प्रथम आनन में काव्य का लक्षण करते हैं- 'रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्' (रसगङ्गाधर 1.1) रमणीय अर्थ का प्रतिपादन करने वाला शब्द काव्य है।

स्रोत- काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, भू.पेज-17

88. 'औचित्य' को काव्य की आत्मा किसने माना है?
(A) भोज **(B) कुन्तक**
(C) क्षेमेन्द्र **(D) मम्मट**

व्याख्या-

A. शृङ्गारप्रकाशकार 'आचार्य भोज' कीर्ति एवं प्रीति को काव्य की आत्मा मानते हैं- ''निर्दोषं गुणवत्काव्यमलङ्कारैरलङ्कृतम्।' रसान्वितं कविः कुर्वन् कीर्तिं प्रीतिं च विन्दति।।'' निर्दोष (दोष से रहित), गुण से युक्त, अलङ्कारों से अलङ्कृत, रस से युक्त, प्रयोग करता हुआ कवि कीर्ति और प्रीति को प्राप्त करता है।

B. वक्रोक्तिजीवितकार 'आचार्य कुन्तक' वक्रोक्ति को काव्य की आत्मा मानते हुए प्रथमोन्मेष में कहते हैं- ''वक्रोक्तिः काव्यजीवितम्।।'' वक्रोक्ति ही काव्य की आत्मा है।

C. आचार्य 'क्षेमेन्द्र' औचित्यविचारचर्चा में औचित्य को काव्य की आत्मा मानते हैं- ''औचित्यं रससिद्धस्य स्थिरं काव्यस्यजीवितम्।।'' (औचित्यविचार चर्चा श्लोक -5) औचित्य से रहित होने पर वह भी कथमपि आनन्द सन्देहजनक नहीं हो सकते इसलिये शृङ्गारादि रसों से प्रसिद्ध काव्य का जीवन औचित्य ही है।
अतः विकल्प C सही है।

D. आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश के प्रथमोल्लास में काव्य का लक्षण करते हैं- ''तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि।।'' (का.प्र. सूत्र-1) दोषों से रहित गुणों से युक्त यदि कहीं पर अलङ्कार न भी हो तो शब्द और अर्थ की समष्टि काव्य है।

स्रोत- काव्यप्रकाश- पारसनाथ द्विवेदी, भू.पेज-26

89. आचार्य मम्मट के अनुसार काव्य का लक्षण है?
(A) वाक्यं रसात्मकं काव्यम्।
(B) वक्रोक्तिः काव्यजीवितम्।
(C) तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि।
(D) रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्।

व्याख्या-

A. आचार्य विश्वनाथ साहित्यदर्पण के प्रथम परिच्छेद में काव्य को परिभाषित करते हुये कहते हैं- 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' (साहित्यदर्पण 1.3) रसात्मक वाक्य को काव्य कहते हैं। आचार्य विश्वनाथ के अनुसार काव्य के तीन भेद होते हैं- 1. उत्तमकाव्य 2. मध्यमकाव्य 3. अधमकाव्य

B. आचार्य कुन्तक वक्रोक्तिजीवितम् के प्रथमोन्मेष में काव्य का लक्षण करते हैं- 'वक्रोक्तिः काव्यजीवितम्।' काव्य की आत्मा वक्रोक्ति है। आचार्य कुन्तक के अनुसार वक्रता के छः भेद हैं- 1. वर्णविन्यास वक्रता 2. पदपूर्वार्धवक्रता 3. प्रत्ययाश्रयवक्रता 4. वाक्यवक्रता 5. प्रकरणवक्रता 6. प्रबन्धवक्रता।

C. आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश के प्रथमोल्लास में काव्य का लक्षण करते हैं- '**तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि।**' (का.प्र. सूत्र-1) दोषों से रहित गुणों से युक्त यदि कहीं पर अलङ्कार न भी तो शब्द और अर्थ की समष्टि काव्य है। आचार्य मम्मट काव्य के तीन भेद करते हैं- 1. उत्तम काव्य (ध्वनि काव्य) 2. मध्यम काव्य (गुणीभूतव्यङ्ग्य) 3. अवर काव्य (अधम काव्य)
अतः विकल्प C सही है।

D. पण्डित राजजगन्नाथ रसगङ्गाधर के प्रथम आनन में काव्य का लक्षण करते हैं- 'रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्' (रसगंगाधर 1.1) रमणीय अर्थ का प्रतिपादन करने वाला शब्द काव्य है। पण्डित राजजगन्नाथ के अनुसार काव्य के चार भेद हैं- 1. उत्तमोत्तम काव्य 2. उत्तम काव्य 3. मध्यम काव्य 4. अधम काव्य

स्रोत- काव्यप्रकाश (सूत्र-1)- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-19

90. आचार्य मम्मट ने उत्तम काव्य माना है-
(A) गुणीभूतव्यङ्ग्य को (B) शब्दचित्र को
(C) अर्थचित्र को (D) ध्वनिकाव्य को

व्याख्या-
काव्यप्रकाशकार आचार्य मम्मट काव्य के तीन भेद करते हैं-

1. **उत्तमकाव्य या ध्वनिकाव्य-** "इदमुत्तममतिशयिनि व्यङ्ग्ये वाच्याद् ध्वनिर्बुधैः कथितः।" (का.प्र.सूत्र-2) वाच्यार्थ की अपेक्षा व्यङ्ग्यार्थ की उत्कृष्टता होने पर उत्तम काव्य होता है। उसे ही विद्वानों ने 'ध्वनि' कहा है।
अतः विकल्प D सही है।
उदाहरण- निःशेषच्युतचन्दनं स्तनतटं निर्मृष्टरागोऽधरो
नेत्रे दूरमनञ्जने पुलकिता तन्वी तवेयं तनुः।
मिथ्यावादिनि दूति बान्धवजनस्याज्ञातपीडागमे
वापीं स्नातुमितो गताऽसि न पुनस्तस्याधमस्यान्तिकम्।
2. **मध्यम या गुणीभूतव्यंग्यकाव्य-** "अतादृशि गुणीभूतव्यङ्ग्यं व्यङ्ग्ये तु मध्यमम्।" (का.प्र.सूत्र-3) वाच्यार्थ की अपेक्षा विशेष चमत्कारजनक न होने पर मध्यम या गुणीभूतव्यङ्ग्य काव्य कहा गया है।
उदाहरण- ग्रामतरुणं तरुण्या नववञ्जुलमञ्जरीसनाथकरम्।
पश्यन्त्या भवति मुहुर्नितरां मलिना मुखच्छाया।।
3. **अधम या अवर काव्य-** आचार्य मम्मट अधमकाव्य के दो भेद करते हैं- "शब्दचित्रं वाच्यचित्रमव्यङ्ग्यं त्ववरं स्मृतम्।।" जिसमें व्यङ्ग्य नहीं होता वह अवर कहा गया है। शब्दचित्र और अर्थचित्र के भेद से इसके दो भेद होते हैं।
1. शब्दचित्र-
स्वच्छन्दोच्छलदच्छकच्छकुहरच्छातेतराम्बुच्छटा..।
2. अर्थचित्र-
विनिर्गतं मानदमात्ममन्दिराद् भवत्युपश्रुत्य....।

स्रोत- काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-28

91. जहाँ कोई शब्द अन्य अर्थ के लिए अपने अर्थ का त्याग कर देता है, वहाँ लक्षणा होती है-
(A) उपादान (B) लक्षण-लक्षणा
(C) शुद्धा (D) गौणी

व्याख्या-
आचार्य मम्मट लक्षणा की चर्चा काव्यप्रकाश के द्वितीय उल्लास में करते हुये कहते हैं-

'स्वसिद्धये पराक्षेपः परार्थं स्वसमर्पणम्।
उपादानं लक्षणं चेत्युक्ता शुद्धैव सा द्विधा।।'
(का.प्र.सूत्र -13)

अपने मुख्यार्थ की अन्वयसिद्धि के लिए दूसरे अर्थ का ग्रहण करना उपादान लक्षणा है तथा दूसरे मुख्य अर्थ की अन्वय की सिद्धि के लिए अपने अर्थ को समर्पित कर देना लक्षण-लक्षणा है।
लक्षणा के भेदों का वर्णन निम्नरूपों से किया है-

लक्षणा
- **शुद्धा**
  - उपादान लक्षणा (कुन्ताः प्रविशन्ति)
  - लक्षण लक्षणा (गङ्गायां घोषः)
  - शुद्धा सारोपा (आयुर्घृतम्)
  - शुद्धा साध्यवसाना (आयुरेवेदम्)
- **गौणी**
  - गौणी सारोपा (गौर्वाहीकः)
  - गौणा साध्यवसाना (गौरयम्)
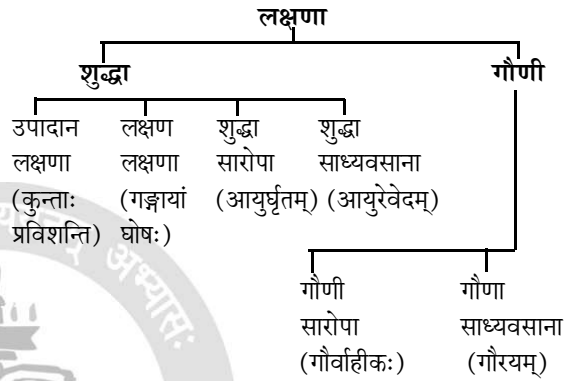
अतः विकल्प B सही है।
स्रोत- काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर,पेज-53

92. लक्षणा स्वीकृति का आधार है-
(A) योग्यता (B) संकेतग्रह
(C) आसत्ति (D) मुख्यार्थबाध

व्याख्या-
अभिहितान्वयवादियों (कुमारिलभट्ट के मतानुयायी मीमांसकों) का मत है कि आकाङ्क्षा (पदों की पारस्परिक अपेक्षा) योग्यता (पदों की पारस्परिक अन्वय योग्यता) और सन्निधि (पदों का एक बुद्धि का विषय होना) के बल से वाक्यार्थ का ज्ञान होता है।
आकाङ्क्षा-योग्यता-सन्निधिवशाद् वक्ष्यमाणस्वरूपाणां--- अभिहितान्वयवादिनां मतम्।
संकेतग्रह-
(1) नव्य नैयायिक **'द्रव्य'** में ही संकेतग्रह मानते हैं।
(2) मीमांसक **'जातिमात्र'** में ही संकेतग्रह मानते हैं।
(3) न्यायवैशेषिक **'जाति-विशिष्ट व्यक्ति'** में संकेतग्रह मानते हैं।
(4) बौद्ध विद्वान् **'अपोह'** में संकेतग्रह मानते हैं।
लक्षणा- आचार्य मम्मट लक्षणा की चर्चा काव्यप्रकाश के द्वितीयोल्लास में करते हैं-
मुख्यार्थबाधे तद्योगे रूढितोऽथ प्रयोजनात्।
अन्योऽर्थो लक्ष्यते यत् सा लक्षणारोपिता क्रिया।।
(का.प्र.सूत्र-12)

आचार्य मम्मट लक्षणा स्वीकृति के तीन आधार मानते हैं- 1. मुख्यार्थ का बाध 2. मुख्यार्थ का लक्ष्यार्थ के साथ सम्बन्ध 3. रूढि अथवा प्रयोजन

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-51

93. निम्नांकित काव्यप्रयोजनों में कौन आचार्य मम्मट द्वारा मान्य नहीं है?

(A) यश (B) धनार्जन

(C) प्रीति (D) व्यवहारज्ञान

व्याख्या-

आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश के प्रथमोल्लास में काव्य के छः प्रयोजन मानते हैं-

काव्यप्रयोजन- यश, अर्थ (धनप्राप्ति), व्यवहारज्ञान, अमङ्गलनाश, सद्यः आनन्द प्राप्ति, कान्ता के समान उपदेश

काव्यप्रयोजन

यश (धनप्राप्ति) | अर्थ | व्यवहार-ज्ञान | अमङ्गल-नाश | सद्यः आनन्द प्राप्ति | कान्ता के समान उपदेश

काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये।
सद्यः परनिवृर्तये कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे॥

(का.प्र. 1/2)

काव्यरचना यश के लिये, धन अर्जन के लिये, लोक व्यवहार के ज्ञान के लिये, अमङ्गल नाश के लिये, सद्यः परमानन्द की प्राप्ति के लिये और कान्तासम्मित होने से उपदेश के लिये होता है।

आचार्य भामह- काव्यालङ्कार के प्रथम परिच्छेद में काव्य प्रयोजन का लक्षण करते हैं-

धर्मार्थकाममोक्षेषु वैचक्षण्यं कलासु च।
करोति कीर्तिं प्रीतिं च साधुकाव्यनिबन्धनम्॥

(काव्यालङ्कार 1.2)

सत्काव्य का निर्माण धर्म,अर्थ,काम,मोक्ष एवं कलाओं में प्रवीणता, आनन्द तथा यश प्रदान करता है।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर,पेज-10

94. ध्वनि परिवर्तन का सबसे प्रमुख कारण है-

(A) बलाघात (B) अज्ञान

(C) प्रयत्नलाघव (D) सादृश्य

व्याख्या-

A. बलाघात- जिस ध्वनि पर बल दिया जाता है, वह शेष रहती है, अन्य निर्बल ध्वनियाँ क्षीण हो जाती हैं **जैसे-** आभ्यन्तर- भीतर, उपरि-पर, एकादश-ग्यारह, द्वादश-बारह

B. अज्ञान या अशिक्षा- अज्ञान या अशिक्षा के कारण ध्वनियों में परिवर्तन हो जाता है **जैसे-** लैटर्न-लालटेन, गार्ड-गारद, लाइन-लैन

C. प्रयत्नलाघव या मुखसुख- इसको उच्चारण-सुविधा या उच्चारण-सौकर्य भी कहते हैं यह ध्वनि-परिवर्तन का सबसे प्रमुख कारण है। **जैसे-** सत्य-सच, कर्म-काम, चक्र-चक्कर।

D. सादृश्य- सादृश्य ध्वनि परिवर्तन का बाह्य कारण है। सादृश्य या समानता के आधार पर कुछ ध्वनियों में परिवर्तन हो जाता है **जैसे-** द्वादश के सादृश्य पर एकादश, तुभ्यम् -तुझे के सादृश्य पर मह्यम् - मुझे हो गया है।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- भाषाविज्ञान- कर्णसिंह,पेज-163

95. 'प्रवीण' उदाहरण है-

(A) अर्थविस्तार का (B) अर्थसंकोच का

(C) अर्थादेश का (D) अर्थोत्कर्ष का

व्याख्या-

A. अर्थविस्तार- अर्थविस्तार से अभिप्राय है, किसी अर्थविशेष के क्षेत्र का पूर्व की अपेक्षा बढ़ जाना। जब पहले शब्द के अर्थ का क्षेत्र सीमित हो और बाद में उसकी सीमा का विस्तार हो जाय तो उसे अर्थविस्तार कहते हैं जैसे- **प्रवीण-** प्रवीण शब्द का अर्थ पहले 'प्रकृष्टो वीणायाम्' अर्थात् वीणावादन में बढ़ा चढ़ा था, बाद में किसी भी कार्य में आगे रहने वाले को प्रवीण कहा जाने लगा। इसप्रकार केवल वीणा वादन कौशल से बढ़कर इसके अर्थ का क्षेत्र विस्तार अन्य सभी प्रकार के कौशल तक हो गया है। इसीप्रकार अर्थविस्तार के अन्य उदाहरणों में कुशल, गोष्ठ, गवेषणा, तैल आदि हैं।

B. अर्थसंकोच- यह अर्थविस्तार के बिल्कुल विपरीत है जहाँ, अर्थ का क्षेत्र पहले की अपेक्षा संकुचित हो जाता है वहाँ अर्थसंकोच होता है। **जैसे-** मृग, सर्प, वृक, वृषभ, आदित्य, दुहितृ, पर्वत आदि।

C. अर्थादेश- जब कोई शब्द अपने पहले से प्रचलित अर्थ को छोड़कर सर्वथा नवीन अर्थ की प्रतीति कराने लगता है तब अर्थादेश होता है। **जैसे-** असुर, उष्ट्र, मौन, धूर्त, सत्-असत् आदि।

D. अर्थोत्कर्ष- अर्थविकास की जो तीन दिशाएँ बताई गयी है उनमें कुछ शब्दों में अर्थपरिवर्तन से अर्थ में उत्कर्ष आया है और कुछ में अपकर्ष। जिन शब्दों में अर्थोत्कर्ष होता है उनके उदाहरण इसप्रकार हैं-

मुग्ध- पहले 'मूर्ख' अर्थ में प्रयुक्त होता था परन्तु अब अर्थोत्कर्ष होकर 'मोहित होना' अर्थ में प्रयुक्त होता है।

गोष्ठ-गोष्ठी-गोष्ठ 'गोशाला' के लिये था अब गोष्ठी 'सभ्य समाज' के लिये प्रयुक्त होता है।

गवेषणा- पहले 'गाय ढूढ़ना' अर्थ था परन्तु अब अनुसन्धान अर्थ में प्रयुक्त होता है।

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- भाषाविज्ञान- कर्णसिंह,पेज-24

96. भाषा का दैवी उत्पत्ति के सिद्धान्त का समर्थन किसने किया है?

(A) सुसमिल्श (B) रूसो
(C) प्लेटो (D) हर्डर

व्याख्या-

	प्रवर्तक/समर्थक	सिद्धान्त/उपनाम
A.	सुसमिल्श	दिव्योत्पत्ति-सिद्धान्त (Divine Theory)
B.	रूसो	संकेत-सिद्धान्त या निर्णय-सिद्धान्त या स्वीकारवाद
C.	प्लेटो	रणन-सिद्धान्त (डिंग-डांग सिद्धान्त) धातु-सिद्धान्त या अनुकरण सिद्धान्त/अनुरणनमूलकतावाद
D.	हर्डर	ध्वन्यनुकरण-सिद्धान्त/भों-भों वाद/बाउ-बाउ सिद्धान्त/ शब्दानुकरणवाद।
	न्वारे-	श्रम-ध्वनि-सिद्धान्त
	रेवेज-	सम्पर्क-सिद्धान्त
	हेनरी-स्वीट	समन्वय-सिद्धान्त

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी,पेज-67

97. स्वराघात के कारण ध्वनि परिवर्तन होता है, इस नियम के प्रवर्तक हैं-

(A) वर्नर (B) ग्रासमान
(C) ग्रिम (D) ग्रियर्सन

व्याख्या-

A. वर्नर-नियम- ध्वनि परिवर्तन के सिद्धान्त में वर्नर ने यह पता लगाया कि ग्रिम नियम बलाघात पर आधारित था। मूल भाषा के क् त् प् के पूर्व यदि बलाघात हो तो ग्रिम-नियम के अनुसार परिवर्तन होता है, किन्तु यदि स्वराघात क् त् प् के बाद वाले स्वर हो तो परिवर्तन एक पग और आगे ग्रासमान की भाँति ग् द् ब् हो जाता है।

उदाहरण- संस्कृत युवक **(young)**

B. ग्रासमान नियम- हेर्मान ग्रासमान जर्मन विद्वान् हैं। संस्कृत और ग्रीक भाषाओं में दो अव्यवहित सोष्म ध्वनियों में से सामान्यता प्रथम ऊष्म ध्वनि (ह् ध्वनि) निकलती है। जहाँ पर द्वितीय वर्ण से ऊष्म ध्वनि निकलती है, वहाँ पर प्रथम वर्ण में ऊष्म ध्वनि आ जाती है। धा-धधामि से दधामि। भृ-भभार से बभार

C. ग्रिम-नियम- यह ध्वनि-नियम प्रो. याकोब ग्रिम (1785-1863) के नाम से प्रसिद्ध है।

वर्ण-परिवर्तन का क्रम

क् त् प्
(अघोष अल्पप्राण)

(घोष अल्पप्राण) (महाप्राण)
ख् (ह्) थ् फ्
ग् द् ब् घ् ध् भ्
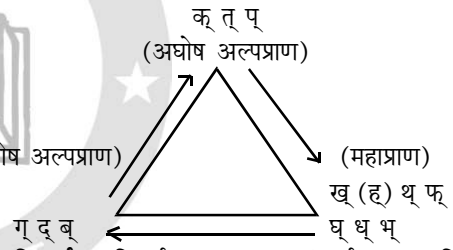
D. ग्रियर्सन- ग्रियर्सन का पूरा नाम 'जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन है। इनका जन्म आयरलैण्ड में हुआ था। इन्होंने भारत की सभी भाषाओं, उपभाषाओं, बोलियों तथा उपबोलियों का सर्वेक्षण प्रारम्भ किया, जो 'Linguistic survey of india' नाम से 11 बड़ी-बड़ी जिल्दों में प्रकाशित हुआ।

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-246

98. वृक्ष किस प्रकार का शब्द है?

(A) यौगिक (B) योगाभास
(C) योगरूढ़ (D) अव्यक्तयोग

व्याख्या-

शब्द तथा शब्द विभाजन का वर्णन करते हुए आचार्य जयदेव चन्द्रालोक के प्रथम मयूख में कहते हैं कि-

शास्त्र से सम्बन्ध रखने वाले, सुबन्त तथा तिङन्त विभक्ति को रूप धारण करने की योग्यता वाले वर्णसमुदाय को शब्द कहते हैं वह शब्द रूढ़, यौगिक और योगरूढ़ भेद से तीन प्रकार का माना गया है।

रूढ़ शब्द- प्रकृति-प्रत्यय से उत्पन्न अर्थ का ध्यान न देकर केवल समुदायशक्ति से अर्थज्ञान कराने वाले वस्तुविशेष, में सङ्केतित शब्द को रूढ़ कहते हैं उदाहरण- डित्थ, डिवित्थ आदि। रूढ़ शब्द के तीन भेद हैं-

1. **अव्यक्तयोग-** अवयवार्थ के अस्फुट होने के कारण जहाँ समुदायशक्ति से अर्थ का बोध हो वह अव्यक्त योग शब्द है। **उदाहरण-** वृक्षः 'वृश्चति आतपमिति वृक्षः' जो आतप को दूर करता है उसे वृक्ष कहते हैं। **अतः विकल्प D सही है।**
2. **निर्योग-** जहाँ अवयवार्थ का बोध न हो वह निर्योग शब्द है। **उदाहरण-** भू शब्द से निष्पन्न भू रूप धातु
3. **योगाभास-** अवयवार्थक तात्पर्यविषयीभूत अर्थ से सम्बन्ध न होने से योगाभास कहते हैं जैसे- मण्डं पिबतीति मण्डपः।

यौगिक शब्द- केवल प्रकृति-प्रत्यय के योग से उत्पन्न अर्थ का बोध कराने वाले शब्द को यौगिक कहते हैं जैसे- पाचक, पाठक, वाचक आदि।

योगरूढ़- अवयवशक्ति और समुदाय शक्ति से अर्थ बोध कराने वाले शब्द को योगरूढ़ कहते हैं।

उदाहरण- पङ्कज

स्रोत- चन्द्रालोक(प्रथम मयूख श्लोक 9-10)-कृष्णमणि त्रिपाठी, पेज 11-12

99. 'बालकेभ्यः मिष्ठानं रोचते' बालकेभ्यः पद में कौन सी विभक्ति है-

(A) पञ्चमी **(B) चतुर्थी**
(C) सप्तमी **(D) इनमें से कोई नहीं**

व्याख्या-

- **रुच्यर्थानां प्रीयमाणः** (1.4.33)- 'रुच्यर्थानां धातुनां प्रयोगे प्रीयमाणोऽर्थः सम्प्रदानं स्यात्।'
  रुच्यर्थ अर्थात् अभिलाषार्थक धातुओं के प्रयोग में प्रीयमाण (प्रसन्न होने वाले) व्यक्ति की सम्प्रदान सञ्ज्ञा होती है।
  सम्प्रदान सञ्ज्ञा होने के पश्चात् **'चतुर्थी सम्प्रदाने'** से चतुर्थी विभक्ति होती है।
  उदाहरण- 'बालकेभ्यः मिष्ठानं रोचते' प्रस्तुत उदाहरण में रुच् धातु का प्रयोग है प्रसन्न होने वाला बालक है। अतः 'रुच्यर्थानां प्रीयमाणः' सूत्र से बालकेभ्यः की सम्प्रदानसञ्ज्ञा तथा 'चतुर्थी सम्प्रदाने' से चतुर्थी विभक्ति हो गयी।
  अतः विकल्प B सही है।
- **पञ्चमी विभक्ति** का विधान करने वाला सूत्र अपादाने पञ्चमी (2.3.28) है- अनभिहित अपादान कारक में पञ्चमी विभक्ति होती है।
  उदाहरण- 'धावतोऽश्वात् पतति' - दौड़ते हुये घोड़े से गिरता है।
- **सप्तमी-** 'आधारोऽधिकरणम्' (1.4.45) कर्त्ता और कर्म में रहने वाली क्रिया का, कर्त्ता और कर्म के द्वारा, जो आधार होता है उसकी अधिकरण सञ्ज्ञा होती है और 'सप्तम्यधिकरणे च' (2.3.36) से अधिकरण में सप्तमी विभक्ति होती है।
  उदाहरण- 'स्थाल्यां पचति' कर्म 'ओदन' का औपश्लेषिक आधार है 'स्थाली' अतः 'आधारोऽधिकरणम्' सूत्र से अधिकरण सञ्ज्ञा तथा 'सप्तम्यधिकरणे च' सूत्र से सप्तमी विभक्ति का विधान हुआ।

स्रोत- अष्टाध्यायी (1.4.33) ईश्वरचन्द्र, पेज-123

100. 'जटाभिस्तापसः' में तृतीया विभक्ति का हेतु है-

(A) इत्थम्भूतलक्षण
(B) साधकतमं करणं
(C) अङ्गविकार
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

व्याख्या-

इत्थम्भूतलक्षणे (2.3.21)

उदाहरण- जटाभिस्तापसः यहाँ जटाओं से तपस्विता का बोध होता है। यहाँ 'तपस्विता' इत्थम्भूत है और उसका लक्षण (चिह्न) जटायें हैं अर्थात् जटाओं से तपस्वी लक्षित किया जा रहा है अतः चिह्नवाची 'जटा' से तृतीया विभक्ति 'जटाभिः' होगा।

अतः विकल्प A सही है।

- **साधकतमं करणम्** (1.4.42) 'क्रियासिद्धौ प्रकृष्टोपकारकं करणसञ्ज्ञं स्यात्' क्रिया की सिद्धि में जो पदार्थ सबसे अधिक उपकारक या सहायक होता है उसकी कर्मसंज्ञा होती है।
  उदा.- रामेण बाणेन हतो वाली।
- **येनाङ्गविकारः** (2.3.20) 'येनाङ्गेन विकृतेन अङ्गिनो विकारो लक्ष्यते ततस्तृतीया स्यात्' जिस विकृत अङ्ग (अवयव) के द्वारा अङ्गी (शरीर) का विकार लक्षित हो उस अवयववाची शब्द में तृतीया विभक्ति होती है। यहाँ अङ्ग अक्षि के विकृत होने से व्यक्ति शरीर (अङ्गी) विकारयुक्त कहलाता है।
  उदाहरण- अक्ष्णा काणः (एक आँख का काना) प्रकृत सूत्र से अक्ष्णा में तृतीया विभक्ति हुई है।

स्रोत- अष्टाध्यायी (2.3.21)- ईश्वरचन्द्र, पेज-201

101. 'सर्वस्मिन् शरीरे आत्मा अस्ति' इस वाक्य में अधिकरण है-
(A) आत्मा (B) शरीर
(C) अस्ति (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या-
➤ 'आधारोऽधिकरणम्' (1.4.45) सूत्र अधिकरण कारक का विधान करता है- कर्त्ता और कर्म में रहने वाली क्रिया का, कर्त्ता और कर्म के द्वारा, जो आधार होता है उसकी अधिकरण सञ्ज्ञा होती है।
* अधिकरण सञ्ज्ञा तथा आधार सञ्ज्ञी है। अधिकरण सञ्ज्ञा होने के पश्चात् 'सप्तम्यधिकरणे च' (2.3.36) सूत्र से सप्तमी विभक्ति का विधान होता है। 'सर्वस्मिन् शरीरे आत्मा अस्ति' आत्मा सब शरीर में स्थित है प्रस्तुत उदाहरण में कर्त्ता 'आत्मा' सर्व शरीर में व्याप्त है। आत्मारूपी कर्त्ता के अभिव्यापक आधार सर्व शरीर की 'आधारोऽधिकरणम्' से अधिकरण सञ्ज्ञा और 'सप्तम्यधिकरणे च' सूत्र से सप्तमी विभक्ति हुई।
* कर्त्ता-आत्मा, क्रियापद-अस्ति, अभिव्यापक आधार-सर्व शरीर है। अतः अधिकरण-शरीर होगा।

आधारः त्रिधा
औपश्लेषिक (कटे आस्ते।)
आधारः
अभिव्यापक (सर्वस्मिन्नात्मास्ति) — वैषयिक (मोक्षे इच्छास्ति।)
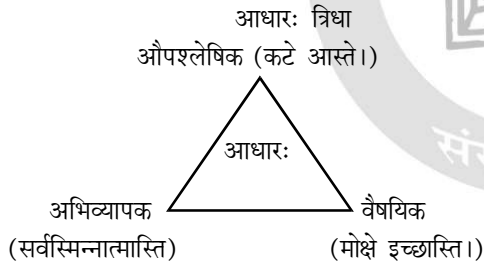
अतः विकल्प B सही है।
स्रोत- सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण2.3.36) राममुनि पाण्डेय,पेज-97-97

102. 'कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे' सूत्र है-
(A) कर्त्ताकारक का (B) कर्मकारक का
(C) करणकारक का (D) सम्प्रदानकारक का

व्याख्या-
A. कर्त्ता कारक- स्वतन्त्रः कर्त्ता (1.4.54) 'क्रियायां स्वातन्त्र्येण विवक्षितोऽर्थः कर्त्ता स्यात्।' क्रिया की सिद्धि में प्रधान (स्वतन्त्र) रूप से विवक्षित अर्थ की कर्त्ता कारक सञ्ज्ञा होती है। किसी क्रिया में जो कारक प्रधान रूप से विवक्षित हो उसे कर्त्ता कहते हैं।
उदाहरण- रामेण पुस्तकं पठ्यते, बालकेन गृहं गम्यते।
B. कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे (2.3.5) अत्यन्त संयोग गम्यमान होने पर कालवाची और मार्गवाची शब्दों में द्वितीया विभक्ति होती है। काल और मार्ग का अत्यन्त संयोग गुण, क्रिया, द्रव्य इन तीनों से होता है।
उदाहरण- मासम् अधीते, मासं गुडधाना, क्रोशं कुटिला नदी। 'कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे' सूत्र द्वितीया विभक्ति में पढ़ा गया है इस सूत्र से कर्मकारक सञ्ज्ञा होकर द्वितीया विभक्ति नहीं होती बल्कि यह सूत्र कालवाची और मार्गवाची पदों में सीधे द्वितीया विभक्ति का विधान करता है, किन्तु कर्मसंज्ञक पदों में द्वितीया होंने के कारण इस सूत्र को भी कर्मकारक के अन्तर्गत माना जा सकता है,
अतः विकल्प B सही होगा।
C. साधकतमं करणम् (1.4.42) क्रिया की सिद्धि में जो पदार्थ सबसे अधिक उपकारक (सहायक) होता है उसकी करण कारक सञ्ज्ञा होती है।
उदाहरण- रामेण बाणेन हतो बाली।
D. कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम् (1.4.32) दान क्रिया के कर्म के द्वारा कर्त्ता जिसको सन्तुष्ट करना चाहता है उसकी सम्प्रदान कारक सञ्ज्ञा होती है।
उदाहरण- विप्राय गां ददाति।
स्रोत- सिद्धान्तकौमुदी(कारकप्रकरण2.3.5)-राममुनि पाण्डेय,पेज-54

103. निम्नलिखित में से कौन-सा वाक्य शुद्ध है?
(A) अध्ययनात् पराजयते
(B) अध्ययनम् पराजयते
(C) अध्ययनः पराजयते
(D) अध्ययनस्य पराजयते

व्याख्या-
'अध्ययनात् पराजयते।' वाक्य शुद्ध है क्योंकि सूत्र (1/4/26) के अनुसार- ''पराजेरसोढः''
यदि जि धातु के पूर्व परा उपसर्ग लगा हो तो जो असह्य पदार्थ होता है उसकी 'अपादाने पञ्चमी' (2/3/28) सूत्र से पञ्चमी विभक्ति होती है। 'अध्ययनात् पराजयते' का अर्थ है अध्ययन से पराजित होता है अर्थात् अध्ययन से भागता है यहाँ पर परा उपसर्ग पूर्वक जि धातु का प्रयोग है तथा असह्य पदार्थ अध्ययन है इसलिए 'पराजेरसोढः' सूत्र से अध्ययन की अपादान सञ्ज्ञा होकर 'अपादाने पञ्चमी' से पञ्चमी विभक्ति का प्रयोग हुआ है।
अतः विकल्प A सही है।
स्रोत- अष्टाध्यायी (1.4.26) - ईश्वरचन्द्र, पेज-120

104. निम्नांकित वाक्यों में कौन-सा वाक्य शुद्ध है?
(A) अध्ययनं हेतु काश्यां तिष्ठति
(B) अध्ययनं हेतो काश्यां तिष्ठति
(C) अध्ययनस्य हेतोः काश्यां तिष्ठति
(D) अध्ययनस्य हेतु काश्यां तिष्ठति

व्याख्या-
'अध्ययनस्य हेतोः काश्यां तिष्ठति।' यह वाक्य शुद्ध है क्योंकि सूत्र 'षष्ठीहेतु प्रयोगे (2/3/26)' के अनुसार- वाक्य में 'हेतु' शब्द का प्रयोग होने पर हेतु (कारण) में तथा 'हेतु' शब्द में षष्ठी विभक्ति होती है।
अतः विकल्प C सही है।
स्रोत- संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका- बाबूराम सक्सेना, पेज-222

105. 'ओदनं भुञ्जानो विषं भुङ्क्ते' में ओदन की कर्मसंज्ञा किस सूत्र से हुई है?
(A) कर्मणि द्वितीया (B) तथायुक्तं चानीप्सितम्
(C) अकथितं च (D) कर्तुरीप्सिततमं कर्म

व्याख्या-
A. **कर्मणि द्वितीया (2,3,2)-** अनुक्त (किसी के द्वारा न कहे हुए) कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है।
उदाहरण- भक्तः हरिं भजति। (भक्त हरि को भजता है।)
B. **तथायुक्तं चानीप्सितम् (1.4.50)-** जिसप्रकार कर्त्ता का ईप्सित पदार्थ क्रिया के साथ युक्त होता है, उसी प्रकार यदि कर्त्ता के द्वारा न चाहा जाने वाला पदार्थ भी क्रिया के साथ युक्त हो, तो उसकी कर्मसंज्ञा होती है।
उदाहरण- 1. सः ग्रामं गच्छन् तृणं स्पृशति। (वह गाँव जाते हुए तिनके को छूता है।)
2. **ओदनं भुञ्जानो विषं भुङ्क्ते।** (वह भात खाते हुए विष खा लेता है।) यहाँ 'ओदन' की ईप्सिततम होने से 'कर्तुरीप्सिततमं कर्म' से कर्मसंज्ञा होगी तथा विषं की अनीप्सित होने से 'तथायुक्तं चानीप्सितं' से कर्म संज्ञा हुई है।
C. **अकथितं च-** जहाँ अपादान आदि कारक विशेष अविवक्षित होते हैं वहाँ कर्मकारक संज्ञा होती है
उदाहरण- गां दोग्धि पयः। (वह गाय से दूध दुहता है।) तण्डुलान् ओदनं पचति। (वह चावलों से भात पकाता है।)
D. **कर्तुरीप्सिततमं कर्म (1.4.49)** कर्त्ता अपनी क्रिया के द्वारा जिस पदार्थ को सबसे अधिक प्राप्त करना चाहता है, उसकी कर्मसंज्ञा होती है।
उदाहरण- पयसा ओदनं भुङ्क्ते। दूध से भात खाता है।
अतः विकल्प D सही है।
स्रोत-सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण-1.4.49)- राममुनि पाण्डेय, पेज-27

106. 'पाणिपादम्' में समास है-
(A) इतरेतर द्वन्द्व (B) समाहार द्वन्द्व
(C) एकशेष द्वन्द्व (D) अलुक् तत्पुरुष

व्याख्या-

समास	उदाहरण
A. इतरेतर द्वन्द्व	रामश्च कृष्णश्च=रामकृष्णौ, हरिश्च हरश्च= हरिहरौ, शिवश्च केशवश्च=शिवकेशवौ
B. समाहार द्वन्द्व	पाणी च पादौ च एषां समाहारः=पाणिपादम् मार्दङ्गिकाश्च वैणविकाश्च एषां माहारः=मार्दङ्गिकवैणविकम्
C. एकशेष द्वन्द्व	माता च पिता च = पितरौ
D. अलुक् तत्पुरुष	युधि स्थिरः = युधिष्ठिरः

अतः विकल्प B सही है।
स्रोत-लघुसिद्धान्तकौमुदी- गोविन्दाचार्य, पेज-974

107. 'निर्मक्षिकम्' में समास है-
(A) तत्पुरुष (B) अव्ययीभाव
(C) द्वन्द्व (D) बहुव्रीहि

व्याख्या-
समस्त पद- निर्मक्षिकम्, पञ्चगङ्गम्, अक्षशौण्डः, चोरभयम्, शिवकेशवौ, पितरौ, पीताम्बरः, पूर्णकाकुत्, पूर्णकाकुदः,

समास	विग्रह
अव्ययीभाव	मक्षिकाणाम् अभावः= निर्मक्षिकम्
अव्ययीभाव	पञ्चानां गङ्गानां समाहारः= पञ्चगङ्गम्
तत्पुरुष	अक्षेषु शौण्डः= अक्षशौण्डः
तत्पुरुष	चोराद् भयम्= चोरभयम्
द्वन्द्व	शिवश्च केशव= शिवकेशवौ
द्वन्द्व	माता च पिता च= पितरौ
बहुव्रीहि	पीतानि अम्बराणि यस्य सः= पीताम्बरः
बहुव्रीहि	पूर्णं काकुदं यस्य सः= पूर्णकाकुद्

अतः विकल्प B सही है।
स्रोत-लघुसिद्धान्तकौमुदी- गोविन्दाचार्य, पेज-897

108. 'रूपवद्भार्यः' में कौन सा समास है-
(A) अव्ययीभाव समास (B) द्विगु समास
(C) बहुव्रीहि समास (D) द्वन्द्व समास

व्याख्या-

समास	सामासिक पद
अव्ययीभावसमास	दुर्यवनम्, सुमद्रम्, उपकृष्णम्, अधिगोपम्
द्विगुसमास	पञ्चगवम्, पञ्चमूली, त्रिलोकी
बहुव्रीहिसमास	रूपवद्भार्यः, स्त्रीप्रमाणः, जलजाक्षी
द्वन्द्व समास	पाणिपादम्, हरिहरौ, श्वसुरौ

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी- गोविन्दाचार्य, पेज-957

109. 'चक्रपाणिः' में समास है-
(A) तत्पुरुष (B) बहुव्रीहि
(C) द्विगु (D) द्वन्द्व

व्याख्या-

समास	उदाहरण
(A) तत्पुरुष	सुपुरुषः = शोभनः पुरुषः प्रगतः आचार्यः= प्राचार्यः
(B) बहुव्रीहि	चक्रं पाणौ यस्य सः = **चक्रपाणिः** चित्रा गावो यस्य = चित्रगुः
(C) द्विगु	चर्तुणां युगानां समाहारः = चतुर्युगम्। पञ्चानां गवां समाहारः पञ्चगवम्
(D) द्वन्द्व	शिवश्च केशवश्च = शिवकेशवौ पाणी च पादौ च = पाणिपादम्

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी- (भैमीव्याख्या भाग-4),पेज-189

110. 'अर्य' शब्द 'ऋ' मे किस प्रत्यय के संयोग से बनता है।
(A) शतृ (B) यत्
(C) अच् (D) क्त

प्रत्यय-

A. शतृ प्रत्यय- लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे (3.2.124) अप्रथमान्त अर्थात् द्वितीयान्त आदि के साथ समानाधिकरण होने पर लट् के स्थान पर शतृ और शानच् आदेश होते हैं।
उदाहरण- गम् + शतृ = गच्छन् (जाता हुआ)
पठ् + शतृ = पठन् (पढ़ता हुआ)

B. यत् प्रत्यय- अचो यत् (3.1.97) अजन्त धातु से परे 'यत्' प्रत्यय होता है, 'यत्' प्रत्यय 'कृत' एवं 'कृत्य' संज्ञक प्रत्यय है।
उदाहरण- ऋ + यत् = अर्य, दा + यत् = देयम्
पा + यत् = पेयम्

C. अच्- एरच् (3.3.56) तथा भयादीनामुपसंख्यानम् (वा.) कर्तृभिन्न कारक के अर्थ में, सञ्ज्ञा में तथा भाव में इकारान्त धातुओं में अच् जोड़ा जाता है।
उदाहरण- जि + अच् = जयः, नी + अच् + नयः

D. क्त- 'क्तक्तवतू निष्ठा' (1.1.25) - क्त तथा क्तवतु प्रत्यय की निष्ठा सञ्ज्ञा होती है, निष्ठा का अर्थ है समाप्ति अर्थात् ये प्रत्यय भूतकाल को द्योतित कराने वाले होते हैं-
उदाहरण- चल् + क्त = चलितः
भुज् + क्त = भुक्तः
भुज् + क्तवतु = भुक्तवान्

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- अष्टाध्यायी (3.1.97)- पं. ईश्वरचन्द्र,पेज-291

111. 'नर्तकी' शब्द नर्तक में किस प्रत्यय के संयोग से बनता है-
(A) टाप् (B) ङीन्
(C) ङीष् (D) ङीप्

व्याख्या-

➢ **षिद्गौरादिभ्यश्च (4.1.41)** जिसका षकार इत् हो ऐसे प्रातिपदिकों से तथा गौरादि गणपठित प्रातिपदिकों से परे स्त्रीत्व की विवक्षा में ङीष् प्रत्यय होता है-
उदाहरण- नर्तक शब्द नृती गात्रविक्षेपे धातु से शिल्पिनि ष्वुन् सूत्र से ष्वुन् प्रत्यय लगकर, अनुबन्ध लोप आदि कार्य होकर नर्तक शब्द बनता है ष्वुन् होने के कारण षित् है अतः 'षिद्गौरादिभ्यश्च' सूत्र से 'ङीष्' प्रत्यय लगकर नर्तकी शब्द सिद्ध होता है। **अतः विकल्प C सही है।**
अन्य उदाहरण- इन्द्राणी, वरुणानी, भवानी, शर्वाणी आदि।

➢ **टाप्-** टाप् प्रत्यय विधायक सूत्र 'अजाद्यतष्टाप्' (4.1.4) है, अज आदि गणपठित प्रातिपदिकों के अथवा अदन्त प्रातिपदिकों से स्त्रीत्व का द्योतन कराना हो तो उनसे परे टाप् प्रत्यय हो।
उदाहरण- मेधा, गङ्गा, सर्वा, चटका, मूषिका आदि।

➢ **शार्ङ्गरवाद्यञो ङीन् (4.1.73)** से ङीन् प्रत्यय का विधान होता है- शार्ङ्गरव आदि गणपठित प्रातिपदिक से तथा अञ् प्रत्यय का जो अकार तदन्त जातिवाचक प्रातिपदिक से स्त्रीत्व की विवक्षा में ङीन् प्रत्यय हो।
उदाहरण- शार्ङ्गरवी, बैदी, ब्राह्मणी आदि।

➢ **उगितश्च (4.1.6)-** से ङीप् प्रत्यय का विधान होता है उगिदन्त अर्थात् जिस का उक् (उ, ऋ, ऌ) वर्ण इत् हो तदन्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व की विवक्षा में ङीप् प्रत्यय होता है-
उदाहरण- भवती, पचन्ती, दीव्यन्ती आदि।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी- आद्याप्रसाद मिश्र, पेज-122

112. 'नन्दिग्रहिपचादिभ्यो ल्युणिन्यचः' सूत्र किस प्रत्यय का विधान करता है?
(A) ल्यु **(B) णिनि**
(C) अच् **(D) उपर्युक्त तीनों**

व्याख्या-
'नन्दिग्रहिपचादिभ्यो ल्युणिन्यचः' (3/1/134) नन्दि आदि, ग्रहि आदि और पच् आदि धातुओं से क्रमशः ल्यु, णिनि और अच् प्रत्यय लगता है।

उदाहरण-
1. नन्द् + ल्यु (अन) = नन्दनः
2. जन + अम् + अर्द् + ल्यु (अन) = जनार्दनः
3. मधु + अम् + सूद् + ल्यु (अन) = मधुसूदनः
4. ग्राह् + णिनि (इन) = ग्राही
5. स्था + णिनि (इन) = स्थायी
6. पच् + अच् = पचः

इससे सिद्ध होता है कि 'नन्दिग्रहिपचादिभ्यो ल्युणिन्यचः' सूत्र से ल्यु, णिनि और अच् तीनों प्रत्ययों का विधान होता है,
अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- अष्टाध्यायी (3.1.134)- पं. ईश्वरचन्द्र, पेज-300

113. 'कुर्वाणः' में प्रत्यय है-
(A) शतृ **(B) शानच्**
(C) ऊङ् **(D) तुमुन्**

व्याख्या-
लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे (3.2.124) अप्रथमान्त अर्थात् द्वितीयान्त आदि के साथ समानाधिकरण होने पर लट् के स्थान पर परस्मैपदी धातुओं में शतृ तथा आत्मनेपदी धातुओं में शानच् प्रत्यय होता है।
उभयपदी धातुओं से शतृ तथा शानच् दोनों आदेश होते हैं- 'कृ' धातु का रूप आत्मनेपद तथा परस्मैपद दोनों में चलता है अतः उभयपदी धातु है। शानच् प्रत्यय में शकार तथा चकार का अनुबन्ध लोप होकर 'आन्' शेष बचता है। कृ धातु में शानच् प्रत्यय जोड़कर अनुबन्ध लोप आदि करने पर 'कुर्वाणः' रूप सिद्ध होता है। शानच् प्रत्यय के अन्य उदाहरण- ददानः, नयमानः, चोरयमाणः। शतृ प्रत्यय के उदाहरण- कृ + शतृ = कुर्वत् , भवत् , गच्छत् , पठत् आदि।

- **ऊङ् प्रत्यय** विधायक सूत्र 'ऊङुतः' (4.1.66) 'पङ्गोश्च' (4.1.68) आदिसूत्र हैं- ऊङुतः (4.1.66)- जिसके उपधा में अकार न हो ऐसे मनुष्यवाची उदन्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व की विवक्षा में ऊङ् प्रत्यय होता है। **उदाहरण-** कुरूः, श्वश्रूः आदि।
- **पङ्गोश्च (4.1.68)-** पङ्गु इस प्रातिपदिक से स्त्रीत्व की विवक्षा में ऊङ् प्रत्यय होता है।
  उदाहरण- पङ्गूः।
- **'तुमुन्ण्वुलौ क्रियायां क्रियार्थायाम्' (3.3.10)-** क्रियार्था क्रिया के रहते भविष्यत् में धातु से तुमुन् और ण्वुल् प्रत्यय होते हैं।
  उदाहरण- अर्च + तुमुन् = अर्चितुम् , स्ना + तुमुन् = स्नातुम् आदि। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- रचनानुवादकौमुदी- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-204

114. 'टाप्' प्रत्यय होता है-
(A) अकारान्त प्रातिपदिक से
(B) ईकारान्त प्रातिपदिक से
(C) ऊकारान्त प्रातिपदिक से
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

व्याख्या-
स्त्री प्रत्ययों अकारान्त प्रातिपदिक से 'टाप्' प्रत्यय 'अजाद्यतष्टाप्', सूत्र से होता है-
उदाहरण- टाप्- अजा, एडका, रामा, होडा आदि।
चाप्- सूर्या
डाप्- सीमा

- ईकारान्त प्रातिपदिकों से ङीप् प्रत्यय 'उगितश्च'सूत्र से, ङीष् प्रत्यय 'षिद्गौरादिभ्यश्च' सूत्र से, ङीन् प्रत्यय 'शार्ङ्गरवो ङीन्' आदि सूत्र से होता है।
  ङीप् - भवती, भवन्ती, पचन्ती
  ङीष् - नर्तकी, गौरी, गार्ग्यायणी
  ङीन् - बैदी, ब्राह्मणी, शार्ङ्गरवी, नारी आदि।
- ऊकारान्त प्रातिपदिक से ऊङ् प्रत्यय होता है
  उदाहरण- संहितोरूः, शफोरूः, वामोरूः।
  अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी- आद्याप्रसाद मिश्र, पेज-122

115. शुद्ध वाक्य है-
(A) आवां पठावः **(B) अहं पठावः**
(C) वयं पठावः **(D) यूयं पठावः**

व्याख्या-

'आवां पठावः!' वाक्य शुद्ध है क्योंकि कर्तृवाच्य में कर्त्ता के अनुसार क्रिया होती है और यहाँ उत्तम पुरुष द्विवचन का कर्त्ता 'आवाम्' है और उसी के अनुसार क्रिया भी उत्तम पुरुष द्विवचन की है।

अतः विकल्प A सही है।

	अशुद्ध वाक्य	**शुद्ध वाक्य**
B.	अहं पठावः।	अहं पठामि।
C.	वयं पठावः।	वयं पठामः।
D.	यूयं पठावः।	यूयं पठथ।

स्रोत- वस्तुनिष्ठ संस्कृतव्याकरणम्- सर्वज्ञभूषण, पेज-161

116. ''सीता......गृहम् आगतवती।'' इस वाक्य का पूरक पद होगा-

(A) रेलयानम् **(B) बसयानेन**
(C) शकटयानया **(D) साइकिलयान**

व्याख्या-

साधकतमं करणम् (1.4.42) सूत्र से क्रिया की सिद्धि में जो पदार्थ सबसे अधिक उपकारक या सहायक होता है उसकी करण सञ्ज्ञा तथा 'कर्तृकरणयोस्तृतीया' से तृतीया विभक्ति होती है **जैसे-** 'सीता बसयानेन गृहम् आगतवती' अर्थात् सीता बस के द्वारा घर आती है।

घर आने में बस साधकतम है साधकतम (करण) होने के कारण प्रकृत सूत्र से तृतीया विभक्ति हुई है, अन्य विकल्प में तृतीया विभक्ति न होने के कारण **विकल्प B शुद्ध है।**

स्रोत- अष्टाध्यायी (2.3.18) - ईश्वरचन्द्र, पेज-200

117. वह लकार जो केवल वेद में पाया जाता है-

(A) लुट् लकार **(B) लङ् लकार**
(C) लेट् लकार **(D) लट् लकार**

व्याख्या-

A. **लुट् लकार-** भविष्यत् काल के बोध के लिए लुट् और ऌट् लकार का प्रयोग किया जाता है। दूरवर्ती भविष्यत् के बोध के लिए लुट् लकार और आसन्न या समीपवर्ती भविष्यत् के लिए ऌट् लकार का प्रयोग होता है।

B. **लङ् लकार-** भूतकाल की क्रिया को प्रकट करने के लिए संस्कृत में लङ्, लिट् और लुङ् लकारों का प्रयोग होता है। अनद्यतनभूत के लिए लङ्, परोक्षभूत के लिए लिट् तथा सामान्यभूत के लिए लुङ् लकार का प्रयोग होता है।

C. **लेट् लकार-** संस्कृत में दस लकारों में लेट् लकार भी है 'लेट् लकार' का प्रयोग वैदिक भाषा में होता है।

अतः विकल्प C सही है।

D. **लट् लकार-** वर्तमान काल की क्रिया के लिये लट् लकार का प्रयोग होता है।

स्रोत-संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका- बाबूराम सक्सेना पेज-294

118. 'आसीत्' क्रिया का लकार है-

(A) लुङ् लकार **(B) लङ् लकार**
(C) लिट् लकार **(D) लट् लकार**

व्याख्या-

अस् (रहना) अदादिगण, परस्मैपदी, अकर्मक		
लुङ् लकार (सामान्यभूत)		
अभूत्	अभूताम्	अभूवन्
अभूः	अभूतम्	अभूत
अभूवम्	अभूव	अभूम
लङ् लकार (अनद्यतनभूत)		
आसीत्	आस्ताम्	आसन्
आसीः	आस्तम्	आस्त
आसम्	आस्व	आस्म
अतः विकल्प B सही है।		
लिट् लकार (परोक्षभूत)		
बभूव	बभूवतुः	बभूवुः
बभूविथ	बभूवथुः	बभूव
बभूव	बभूविव	बभूविम
लट् लकार (वर्तमान काल)		
अस्ति	स्तः	सन्ति
असि	स्थः	स्थ
अस्मि	स्वः	स्मः

स्रोत- रचनानुवादकौमुदी- कपिलदेव द्विवेदी,पेज-160

119. 'पठ्' धातु लोट्लकार प्रथम पुरुष द्विवचन का रूप है-

(A) पठ **(B) पठामि**
(C) पठताम् **(D) पठतु**

व्याख्या-

A. पठ् = पढ़ना (परस्मैपदी) भ्वादिगण, सकर्मक, सेट् परस्मैपद

लोट् लकार			
प्र.पु.	पठतु,पठतात्	पठताम्	पठन्तु
म.पु.	पठ,पठतात्	पठतम्	पठत
उ.पु.	पठानि	पठाव	पठाव
लट् लकार			
प्र.पु.	पठति	पठतः	पठन्ति
म.पु.	पठसि	पठथः	पठथ
उ.पु.	पठामि	पठावः	पठामः

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- रचनानुवादकौमुदी- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-146

120. 'भू' धातु लोट्लकार उत्तम पुरुष एकवचन में हो जाता है-
(A) भवामि (B) भवानि
(C) भविष्यामि (D) भवन्तु

व्याख्या-

भू सत्तायाम् = होना, अकर्मक, सेट् , परस्मैपद

लट्लकार			
प्र.पु.	भवति	भवतः	भवन्ति
म.पु.	भवसि	भवथः	भवथ
उ.पु.	भवामि	भवावः	भवामः
लोट् लकार			
प्र.पु.	भवतु,भवतात्	भवताम्	भवन्तु
म.पु.	भव,भवतात्	भवतम्	भवत
उ.पु.	भवानि	भवाव	भवाम
लृट् लकार			
प्र.पु.	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
म.पु.	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उ.पु.	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत - रचनानुवादकौमुदी- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-145

121. 'गम्' धातु लिट्लकार प्रथम पुरुष एक वचन में हो जाता है-
(A) अगच्छत्
(B) जग्मुः
(C) जगाम
(D) अगमत्

व्याख्या-

गम्=जाना, सकर्मक, अनिट्, परस्मैपद (भ्वादिगण)

लङ् लकार			
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र.पु.	अगच्छत्	अगच्छताम्	अगच्छन्
म.पु.	अगच्छः	अगच्छतम्	अगच्छत
उ.पु.	अगच्छम्	अगच्छाव	अगच्छाम
लिट् लकार			
प्र.पु.	जगाम	जग्मतुः	जग्मुः
म.पु.	जगमिथ	जग्मथुः	जग्म
उ.पु.	जगाम	जग्मिव	जग्मिम
लुङ् लकार			
प्र.पु.	अगमत्	अगमताम्	अगमन्
म.पु.	अगमः	अगमतम्	अगमत
उ.पु.	अगमम्	अगमाव	अगमाम

अतः विकल्प C सही है।

'जगाम' गम् धातु लिट्लकार उत्तम पुरुष एकवचन में भी बनता है।

स्रोत- रचनानुवादकौमुदी- कपिलदेव द्विवेदी,पेज-149

122. 'तेन पाठः पठ्यते' प्रयोग है-
(A) कर्तृवाच्य का (B) कर्मवाच्य का
(C) भाववाच्य का (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

व्याख्या-

A. कर्तृवाच्य- कर्तृवाच्य में कर्त्ता के अनुसार क्रिया का पुरुष एवं वचन होता है। जैसे- सः पाठं पठति।

B. कर्मवाच्य- (1) कर्मवाच्य में कर्म मुख्य होता है। कर्म के अनुसार ही क्रिया का पुरुष, वचन और लिङ्ग होगा। (2) कर्मवाच्य में कर्त्ता में तृतीया, कर्म में प्रथमा तथा क्रिया कर्म के अनुसार होती है। **जैसे-** तेन पाठः पठ्यते। यह वाक्य कर्मवाच्य का है इसका कर्तृवाच्य होगा- सः पाठं पठति। वह पाठ पढ़ता है।

C. भाववाच्य- (1) भाववाच्य में कर्त्ता में तृतीया, कर्म होगा ही नहीं क्रिया में प्रथम पुरुष का एकवचन होगा। भाववाच्य में सार्वधातुक लकारों (अर्थात् लट्, लङ्, विधिलिङ्) में धातु और प्रत्यय के बीच यक् 'य' लग जाता है। धातु का रूप सदा आत्मनेपद में ही चलता है।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-53

123. 'रामो गच्छति ग्रामम्' प्रयोग हैं-
(A) कर्तृवाच्य का (B) कर्मवाच्य का
(C) भाववाच्य का (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

व्याख्या-

A. कर्तृवाच्य- रामो गच्छति ग्रामम्।
नियम- कर्तृवाच्य में कर्त्ता मुख्य होता है, क्रिया कर्त्ता के अनुसार चलती है, कर्त्ता में प्रथमा तथा कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है। अतः उपर्युक्त वाक्य कर्तृवाच्य का है।

B. कर्मवाच्य- बालकेन उद्यानं दृश्यते।
नियम- कर्मवाच्य में कर्म मुख्य होता है। कर्म के अनुसार ही क्रिया का पुरुष, वचन एवं लिङ्ग होगा। अर्थात् कर्त्ता में तृतीया, कर्म में प्रथमा तथा क्रिया कर्म के अनुसार होती है।

C. भाववाच्य- तेन भूयते।
नियम-भाववाच्य में कर्त्ता में तृतीया विभक्ति होती है तथा कर्म नहीं होता क्रिया में प्रथम पुरुष एकवचन होता है।

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-52,53

124. 'अहं तव गृहं विचेष्यामि' का कर्मवाच्य में रूपान्तरण होगा -
(A) मया तव गृहं विचेष्ये
(B) मया तव गृहं विचेतास्मि
(C) मया तव गृहं विचेताहे
(D) मया तव गृहं विचेष्यते

व्याख्या-
कर्मवाच्य - सकर्मक धातुओं से ही कर्मवाच्य होता है, कर्म की प्रधानता होती है।
कर्म के अनुसार ही क्रिया के लिङ्ग विभक्ति और वचन होते हैं।
कर्मवाच्य के कर्म में प्रथमा होती है, कर्त्ता में तृतीया क्रिया कर्म के अनुसार होती है।

* कर्मवाच्य में लट् आदि में धातु के अन्त में यक् प्रत्यय होता है। धातुरूप सभी लकारों में आत्मनेपदी होती है। 'अहं तव गृहं विचेष्यामि' का कर्मवाच्य में रूपान्तरण 'मया तव गृहं विचेष्यते' होगा।

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी,पेज-52,53

125.'भवन्तः कुत्र भविष्यन्ति' का भाववाच्य में रूपान्तरण होगा-
(A) भवद्भिः कुत्र भवितारः
(B) भवद्भिः कुत्र भविष्ये
(C) भवद्भिः कुत्र भविष्यते
(D) भवता कुत्र भविता

व्याख्या-
भाववाच्य- अकर्मक धातुओं से भाववाच्य होता है सकर्मक से नहीं। भाववाच्य के वाक्य में कर्त्ता में तृतीया होती है, क्रिया में प्रथम पुरुष एकवचन होता है।

* भाववाच्य में लट् आदि लकारों में धातु के अन्त में यक् (य) लगाकर रूप चलाना चाहिये।
* क्त, तव्य, अनीय, यत् , भाववाच्य में होते हैं। इनमें नपुंसकलिङ्ग एकवचन ही होगा।
* 'भवन्तः कुत्र भविष्यन्ति' का भाववाच्य में वाक्य होगा 'भवद्भिः कुत्र भविष्यते।' **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- रचनानुवादकौमुदी- कपिलदेव द्विवेदी,पेज-52,53

उत्तरमाला

1.C	2.D	3.D	4.B	5.C	6.C	7.B	8.D	9.B	10.D	11.B	12.D
13.A	14.B	15.B	16.D	17.C	18.B	19.A	20.B	21.C	22.B	23.C	24.A
25.C	26.B	27.C	28.B	29.C	30.A	31.C	32.D	33.D	34.C	35.B	36.D
37.B	38.B	39.B	40.C	41.D	42.B	43.C	44.D	45.B	46.B	47.A	48.A
49.C	50.C	51.C	52.A	53.B	54.D	55.A	56.B	57.C	58.C	59.C	60.D
61.D	62.B	63.C	64.B	65.A	66.B	67.A	68.C	69.B	70.A	71.B	72.C
73.A	74.D	75.B	76.C	77.C	78.C	79.D	80.C	81.C	82.C	83.C	84.B
85.B	86.C	87.C	88.C	89.C	90.D	91.B	92.D	93.C	94.C	95.A	96.A
97.A	98.D	99.B	100.A	101.B	102.B	103.A	104.C	105.D	106.B	107.B	108.C
109.B	110.B	111.C	112.D	113.B	114.A	115.A	116.B	117.C	118.B	119.C	120.B
121.C	122.B	123.A	124.D	125.C							

❑❑

5. प्रवक्ता (PGT) संस्कृत 2005

1. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' का सर्वप्रथम अंग्रेजी अनुवाद किसने किया?
(A) शेक्सपियर (B) गेटे
(C) विलियम जोन्स (D) मैक्समूलर

व्याख्या–
सर विलियम जोन्स द्वारा 1789 ई0 में अंग्रेजी में अभिज्ञानशाकुन्तलम् का अनुवाद किया गया।
* जार्ज फास्टर द्वारा 1791 ई0 में किये गए जर्मन अनुवाद को पढ़कर जर्मन महाकवि गेटे ने अभिज्ञानशाकुन्तलम् की जो समीक्षापूर्ण प्रशस्ति लिखी थी, वह डॉ0 विष्णु मिराशी के शब्दों में इस प्रकार है-

वासन्तं कुसुमं फलं च युगपद् ग्रीष्मस्य सर्वं च यद्
यच्चान्यन्मनसो रसायनमतः सन्तर्पणं मोहनम् ।
एकीभूतमभूतपूर्वमथवा स्वर्लोकभूलोकयोः
ऐश्वर्यं यदि वाञ्छसि प्रियसखे! शाकुन्तलं सेव्यताम्॥

* कालिदास की तुलना शेक्सपियर से करते हुए कुछ आलोचक कालिदास को भारत का शेक्सपियर' कहते हैं। किन्तु मुझे लगता है शेक्सपियर को 'इग्लैण्ड का 'कालिदास' कहना चाहिए और कालिदास को 'विश्व का शेक्सपियर' कहा जाना चाहिए क्योंकि कालिदास ने खण्डकाव्य, गीतिकाव्य,नाटक, महाकाव्य सभी विधाओं में लिखा है जबकि शेक्सपियर ने केवल नाटक लिखे हैं।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-

2. ''अचेतनं नाम गुणं न लक्षयेत्'' यह पंक्ति किसने किससे कही?
(A) दुष्यन्त ने धीवर से
(B) विदूषक ने दुष्यन्त से
(C) धीवर ने मन में
(D) दुष्यन्त ने अँगूठी से

व्याख्या–
कालिदास कृत अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के षष्ठ अङ्क में शचीतीर्थ स्थल पर शकुन्तला के हाथ की अँगुली से गिरी हुई अँगूठी को मछली के पेट से जब धीवर को प्राप्त हुई तो वह राजा दुष्यन्त को देने जाता है, अँगूठी को देखते ही शकुन्तला विषयक सारी बात स्मरण आने पर दुष्यन्त ने अँगूठी से कहा कि-
कथं नु तं बन्धुरकोमलाङ्गुलिं
करं विहायासि निमग्नमम्भसि?
अथवा...........
अचेतनं नाम गुणं न लक्षयेन्मयैव कस्मादवधीरिताप्रिया
(अभि.6.13)

राजा अँगूठी को देखकर कहता है, अँगूठी! सुन्दर और कोमल अँगुलियों वाली उस हाथ को छोड़कर तुम कैसे जल में गिर पड़ी? अथवा अचेतन वस्तु गुणों की ओर ध्यान न दे, किन्तु मैंने ही क्यों प्रिया का अपमान किया?

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (6/13) कपिलदेव द्विवेदी, पेज-350

3. ....षड्भागमक्षय्यं ददत्यारण्यका हि नः॥ उपर्युक्त रिक्तस्थान की पूर्ति के लिए कौन-सा विकल्प उपयुक्त है?
(A) यशः (B) तपः
(C) मनः (D) धनम्

व्याख्या–
(A) उत्तररामचरितम् के तृतीय अङ्क में जब राम दण्डक वन में आते हैं तो राम से सीता विषयक प्रश्न पूछते हुए वासन्ती कहती है कि-

अयि कठोर! यशः किल ते प्रियं,
किमयशो ननु घोरमतः परम् (उत्तररामचरितम् 3.27)

वासन्ती राम से कहती है कि हे निष्ठुर, तुम्हें निश्चय ही यश प्यारा है, परन्तु इससे अधिक घोर अपयश और क्या हो सकता है, उस मृगनयनी सीता का वन में क्या हुआ?

(B) अभिज्ञानशाकुन्तलम् के द्वितीय अङ्क में जब विदूषक राजा से तपस्वियों द्वारा छठा भाग कर (टैक्स) देने के लिये कहता है तो राजा विदूषक से कहते हैं कि-

यदुत्तिष्ठति वर्णेभ्यो नृपाणां क्षयि तद् धनम्।
तपः षड्भागमक्षय्यं ददत्यरण्यका हि नः॥ (अभि.2/13)

राजाओं को वर्णों (प्रजाओं)से जो धन (कर) प्राप्त होता है, वह नश्वर है परन्तु ये तपस्वी लोग अपनी तपस्या का षष्ठांश देते हैं जो कि अक्षय है।

अतः विकल्प B सही है।

(C) भर्तृहरि नीतिशतकम् के धैर्यपद्धति में धीर व्यक्ति के सम्बन्ध में कहते हैं-

मनस्वी कार्यार्थी न गणयति दुःखं न च सुखम्॥

(नीति.-74)

अपना काम पूरा करने वाले मनस्वी लोग सुख-दुःख की परवाह नहीं करते।

(D) भर्तृहरि नीतिशतकम् के दुर्जनपद्धति में कहते हैं कि-

सद्विद्या यदि किं धनैरपयशो यद्यस्ति किं मृत्युना॥

(नीति.44)

सुविद्या यदि पास में है तो धन की क्या आवश्यकता? अपयश यदि है तो मृत्यु की क्या आवश्यकता?

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (2/13) कपिलदेव द्विवेदी, पेज-120

4. ''सर्वथा चक्रवर्तिनं पुत्रमाप्नुहि'' से क्या निर्दिष्ट है?

(A) अभिज्ञानशाकुन्तल के कथानक का प्रयोजन
(B) कालिदास को पुत्रप्राप्ति
(C) कुमार कार्तिकेय का जन्म
(D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या–

* कालिदासकृत 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के प्रथम अङ्क में राजा दुष्यन्त कण्वाश्रम में मृगया के लिए प्रवेश करने पर वैखानस द्वारा मृग को मारने से मना करने पर, वैखानस ने राजा को पुत्रप्राप्ति का आशीर्वाद देते हुये कहते हैं-
''जन्म यस्य पुरोर्वंशे युक्तरूपमिदं तव।
पुत्रमेवंगुणोपेतं चक्रवर्तिनमाप्नुहि।।''

(अभि.शा. 1/12)

वैखानस का समर्थन करते हुए दोनों शिष्य हाथ उठाकर कहते हैं- ''सर्वथा चक्रवर्तिनं पुत्रमाप्नुहि।''
(अवश्य ही चक्रवर्ती पुत्र को प्राप्त करो।)
इस आशीर्वाद से दुष्यन्त को भावी चक्रवर्ती भरत को पुत्ररूप में प्राप्त करने का प्रयोजन निर्दिष्ट है।
* 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के कथानक का प्रयोजन अभिज्ञान (अँगूठी) द्वारा पुनः शकुन्तला की प्राप्ति का प्रयोजन परिलक्षित होना है।
* कालिदासकृत 'कुमारसम्भवम्' महाकाव्य का प्रयोजन तारकासुर के वध के लिए कुमार (कार्तिकेय) का जन्म ही इस महाकाव्य का प्रयोजन है।

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम्- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-28

5. एक प्रसिद्ध नाटक में 'मधुकरिका' कौन है?

(A) मेनका की सखी
(B) दुष्यन्त की परिचारिका
(C) मारीच के आश्रम की तपस्विनी
(D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या-

	परिचय	**नाम**
A.	मेनका की सखी	- सानुमती
B.	दुष्यन्त की परिचारिका	- मधुकरिका, परभृतिका
C.	मारीच के आश्रम की तपस्विनी	- तापसी (सुव्रता)

अभिज्ञानशाकुन्तलम् के अन्य पात्रों के नाम-

राजा दुष्यन्त का पुत्र	भरत (सर्वदमन)
इन्द्र का सारथि	मातलि
ऋषि मारीच का शिष्य	गालव
ऋषि मारीच की पत्नी	अदिति (दाक्षायणी)
द्वारपालिका	वेत्रवती

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम्- कपिलदेव द्विवेदी, भू. पेज-100

6. ''अहो रागपरिवाहिणी गीतिः'' राजा दुष्यन्त का यह कथन किसकी प्रशंसा में है?

(A) शकुन्तला के गाने पर
(B) प्रियंवदा के गाने पर
(C) हंसपदिका के गाने पर
(D) गौतमी के गाने पर

व्याख्या-

कालिदास रचित अभिज्ञानशाकुन्तलम् के पञ्चम अङ्क में हंसपदिका भ्रमरगीत के माध्यम से राजा के लिये अपरवक्त्र छन्द में श्लोक कहती है-

अभिनवमधुलोलुपस्त्वं तथा परिचुम्ब्य चूतमञ्जरीम्।
कमलवसतिमात्रनिर्वृतो मधुकर विस्मृतोऽस्येनां कथम्॥

(अभि.5.1)

हे भ्रमर, नवीन मधु के इच्छुक तुम आम की मञ्जरी का उस प्रकार रसास्वादन करके, कमल में निवास मात्र से सन्तुष्ट, उसको क्यों भूल गये हो?
इसी गीत की प्रशंसा में राजा कहता है-
अहो, रागपरिवाहिणी गीतिः।
अहो, क्या अनुराग बरसाने वाला सङ्गीत है।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (अङ्क-5)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-243

7. 'मृच्छकटिकम्' की नायिका है-
(A) कुलजा (B) वेश्या
(C) तापसी (D) कुलजा एवं वेश्या दोनों

व्याख्या-
* मृच्छकटिकम् रूपक का एक भेद 'प्रकरण' है।
* मृच्छकटिकम् की नायिका, कुलजा एवं वेश्या दोनों हैं कुलजा नायिका 'धूता' है जो चारुदत्त की पत्नी है, 'वसन्तसेना' वेश्या है जो चारुदत्त की प्रेमिका है।
* मृच्छकटिकम् प्रकरण का नायक 'चारुदत्त' है जो 'धीरप्रशान्त' कोटि का है।
* मृच्छकटिकम् में तापसी का वर्णन नहीं प्राप्त होता है।
* मृच्छकटिकम् प्रकरण का विदूषक मैत्रेय है।
* मृच्छकटिकम् प्रकरण में अङ्कों की संख्या दस है।

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- मृच्छकटिकम् -श्रीनिवास शास्त्री,भू० पेज-34

8. कौन सा नारी पात्र मृच्छकटिकम् में नहीं है?
(A) वसन्तसेना की सखी
(B) वसन्तसेना की माता
(C) वसन्तसेना की परिचारिका
(D) वसन्तसेना की सपत्नी

व्याख्या-

परिचय	**नाम**
वसन्तसेना की माता	वृद्धा
वसन्तसेना की परिचारिका	मदनिका, छत्रधारिणी
वसन्तसेना की सपत्नी एवं चारुदत्त की पत्नी	धूता

मृच्छकटिकम् के अन्य पात्र-

विदूषक, चारुदत्त का मित्र	-	मैत्रेय
वसन्तसेना का सेवक	-	कर्णपूरक, कुम्भीलक
चारुदत्त का पुत्र	-	रोहसेन
चारुदत्त का मित्र	-	जूर्णवृद्ध
नगररक्षक	-	वीरक, चन्दनक

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- मृच्छकटिकम्- श्रीनिवास शास्त्री,पेज-01

9. चारुदत्त के पुत्र का क्या नाम है?
(A) मैत्रेय (B) आर्यक
(C) रोहसेन (D) रेभिल

व्याख्या-

(A) **मैत्रेय-** मृच्छकटिकम् नामक प्रकरण का विदूषक तथा नायक चारुदत्त का मित्र है।

(B) **आर्यक-** राजा पालक का बन्दी, बाद में राजा पालक को मारकर स्वयं राजा बनता है।

(C) **रोहसेन-** रोहसेन के पिता का नाम चारुदत्त और माता का नाम धूता है।

(D) **रेभिल-** उज्जयिनी का एक व्यापारी, चारुदत्त का मित्र, एक विशिष्ट गायक है।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- मृच्छकटिकम्-श्रीनिवास शास्त्री, भू.पेज-19

10. 'धूता' किस कृति से सम्बन्धित है?
(A) किरातार्जुनीयम् (B) वेणीसंहारम्
(C) मृच्छकटिकम् (D) नागानन्द

व्याख्या-

	ग्रन्थ	**ग्रन्थकार**	**स्त्री पात्र**
(A)	किरातार्जुनीयम्	भारवि	द्रौपदी
(B)	वेणीसंहारम्	भट्टनारायण	द्रौपदी
(C)	मृच्छकटिकम्	शूद्रक	धूता
(D)	नागानन्द	हर्षवर्धन	मलयवती

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- मृच्छकटिकम्-श्रीनिवास शास्त्री, पेज-18

11. 'मृच्छकटिकम्' किस कोटि का रूपक है?
(A) भाण (B) प्रहसन
(C) प्रकरण (D) व्यायोग

व्याख्या-
1. **नाटक-** अभिज्ञानशाकुन्तलम्, उत्तररामचरितम् आदि।
2. **प्रकरण-** मृच्छकटिकम्, मालतीमाधव, शारिपुत्रप्रकरण आदि।
3. **भाण-** लीलामधुकरम्, शृङ्गारशेखर आदि।
4. **व्यायोग-** सौगन्धिकाहरण, जामदग्न्यजय आदि।
5. **समवकार-** समुद्रमन्थनम्
6. **डिम-** त्रिपुरदाह
7. **ईहामृग-** कुसुमशेखरविजयम्
8. **अङ्क-** शर्मिष्ठाययातिः
9. **वीथी-** मालविका
10. **प्रहसन-** कन्दर्पकेलि,धूर्तचरितम् आदि

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत-मृच्छकटिकम्- रमाशंकर त्रिपाठी,भू. पेज-XXX

12. ''हृदये गृह्यते नारी' सूक्ति किस ग्रन्थ से उद्धृत है?
(A) मृच्छकटिकम् **(B) रत्नावली**
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् **(D) हर्षचरितम्**

व्याख्या-

(A) शूद्रक प्रणीत मृच्छकटिकम् प्रकरण के प्रथम अङ्क में जब शकार वसन्तसेना के बिना नहीं चलने को कहता है, तब विट शकार से कहता है कि-

आलाने गृह्यते हस्ती वाजी वल्गासु गृह्यते।
हृदये गृह्यते नारी यदिदं नास्ति गम्यताम्॥

(मृच्छ.1.50)

हाथी खम्भे में बाँधने से रोका जा सकता है, घोड़ा लगाम से रोका जा सकता है, स्त्री हृदय से वश में की जा सकती है यदि ऐसी बात नहीं है तो जाइये।

(B) हर्ष प्रणीत रत्नावली नाटिका के प्रथम अङ्क में सूत्रधार श्रीहर्ष की प्रशंसा करते हुए कहता है कि-

'मद्भाग्योपचयादयं समुदितः सर्वो गुणानां गणः।'

(रत्नावली 1.5)

मेरे भाग्य की वृद्धि से यह गुणों का सम्पूर्ण समूह एकत्रित होकर उपस्थित है।

(C) कालिदास प्रणीत अभिज्ञानशाकुन्तलम् के पञ्चम अङ्क में जब गौतमी शकुन्तला के अङ्गुली से अँगूठी शचीतीर्थ में गिरने की बात कहती हैं तो राजा दुष्यन्त कहता है कि-

'इदं तत् प्रत्युत्पन्नमति स्त्रैणमिति यदुच्यते।

(अभिज्ञानशाकुन्तलम् अङ्क- 5)

यह वही बात है, जिसके लिए कहावत है कि स्त्रियाँ प्रत्युत्पन्नमति होती हैं।

(D) बाणभट्ट हर्षचरितम् के प्रथमोच्छ्वास में आख्यायिका की प्रशंसा में कहते हैं-

उच्छ्वासान्तेऽप्यखिन्नास्ते येषां वक्त्रे सरस्वती।
कथमाख्यायिकाकारा न ते वन्द्याः कवीश्वराः॥

(हर्षचरितम् 1.10)

जो उच्छ्वास के बाद भी नहीं थकते और जिनके मुख में सरस्वती विराजमान हैं ऐसे आख्यायिकाओं का निर्माण करने वाले कवि क्यों नहीं वन्दनीय हैं? अर्थात् वन्दनीय हैं।

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-316

13. ''नवसर्गगते..........नवशब्दो न विद्यते'' उक्ति है-
(A) कालिदास के विषय में
(B) श्रीहर्ष के विषय में
(C) माघ के विषय में
(D) भारवि के विषय में

व्याख्या-

(A) **कालिदास के विषय में-**
'निर्गतासु न वा कस्य कालिदासस्य सूक्तिषु।
प्रीतिर्मधुरसान्द्रासु मञ्जरीष्विव जायते।।'
बाणभट्ट ने हर्षचरितम् के प्रथम उच्छ्वास में कालिदास की प्रशंसा में कहा है-नई निकली हुई मंजरियों के समान मधुर एवं सरस कालिदास की सूक्तियों में सुनने मात्र से ही किसे आनन्द नहीं आता?

(B) **श्रीहर्ष के विषय में-**
तावद् भा भारवेर्भाति यावन्माघस्य नोदयः।
उदिते नैषधे काव्ये क्व माघः क्व च भारविः।।
सूर्य की किरणें (भारवि) तभी तक सुशोभित हैं जब तक माघ माह (माघकवि) का उदय नहीं होता उसी प्रकार नैषधकाव्य के उदित हो जाने पर कहाँ माघ और कहाँ भारवि अर्थात् ये दोनों फीके पड़ जाते हैं।

(C) **माघ के विषय में-** 'नवसर्गगते माघे नवशब्दो न विद्यते।' माघ के नव सर्ग पढ़ चुकने पर नया शब्द शेष नहीं रह जाता।

(D) **भारवि की प्रशंसा में -** आचार्य मल्लिनाथ ने कहा है कि-

नारिकेल फलसम्मितं वचो
भारवेः सपदि तद् विभज्यते।
स्वादयन्तु रसगर्भनिर्भरं
सारमस्य रसिका यथेप्सितम्॥

भारविकाव्य नारियल के अन्तराल की ही भाँति रसगर्भ निर्भर सरल एवं सुमधुर है।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- शिशुपालवधम्-तारिणीश झा, भू. पेज-6

14. ''शरीरभाजां भवदीयदर्शनं, व्यनक्ति कालत्रितयेऽपि योग्यताम्'' सूक्ति उद्धृत है-
(A) कादम्बरी से
(B) शिशुपालवधम् से
(C) हर्षचरितम् से
(D) उपर्युक्त में से किसी से भी नहीं

व्याख्या-

(A) महाकवि बाणभट्ट कादम्बरी कथामुख में कथा की प्रशंसा का वर्णन करते हैं-

रसेन शय्यां स्वयमभ्युपागता
कथा जनस्याभिनवा वधूरिव॥

(कादम्बरी श्लोक 8)

पलंग को स्वयं प्राप्त होती हुई नवीन कथा वधू के समान लोगों के हृदय में कुतूहलपूर्ण रुचि उत्पन्न कर देती है।

(B) महाकवि माघ द्वारा रचित शिशुपालवध के प्रथमसर्ग में भगवान् श्रीकृष्ण नारदजी के दर्शन के महत्त्व का प्रतिपादन करते हुए कहते हैं कि-

हरत्यघं सम्प्रति हेतुरेष्यतः
शुभस्य पूर्वाचरितैः कृतं शुभैः।
शरीरभाजां भवदीयदर्शनं
व्यनक्ति कालत्रितयेऽपि योग्यताम्॥

(शिशुपाल 1.26)

आपका दर्शन शरीरधारियों के लिये तीनों काल में भी पवित्रता प्रकट करता है वर्तमान काल में पाप को विनष्ट करता है आने वाले मंगल का कारण बनता है और पहले से किए हुए पुण्यों से प्राप्त होता है।

(C) महाकवि बाणभट्ट हर्षचरितम् के प्रथमोच्छ्वास में कवि के काव्य महत्त्व का प्रतिपादन करते हुए कहते हैं कि-

किं कवेस्तस्य काव्येन सर्ववृत्तान्तगामिनी।
कथेव भारती यस्य न व्याप्नोति जगत्रयम् ॥

(हर्ष.1/9)

उस कवि के काव्य से क्या जिसकी सभी छन्दों का पार पा जाने वाली वाणी सभी वृत्तान्तों का बोध करा देने वाली महाभारत की वाणी, की तरह तीनों लोकों में छा नहीं जाती है।

अतः विकल्प (B) सही है।

स्रोत- शिशुपालवधम् (1/26) तारिणीश झा, पेज-57

15. 'शिशुपालवधम्' का मूलस्रोत है महाभारत का-
(A) आदिपर्व **(B) भीष्मपर्व**
(C) सभापर्व **(D) इनमें से कोई नहीं**

व्याख्या–

बीस सर्गों से युक्त महाकवि माघ द्वारा रचित शिशुपालवध का कथानक महाभारत के सभापर्व से लिया गया है। भगवान् श्रीकृष्ण धीरोदात्त कोटि के नायक हैं तथा प्रतिनायक शिशुपाल है। **अतः विकल्प C सही है।**

उपजीव्य	ग्रन्थ	विभाजन	रस
* आदिपर्व	अभिज्ञानशाकुन्तलम्	7 अङ्क	शृङ्गार
* भीष्मपर्व	श्रीमद्भगवद्गीता	18 अध्याय	-
* पद्मपुराण एवं रामायण	रघुवंशम्	19 सर्ग	वीर/शृङ्गार
* वनपर्व	किरातार्जुनीयम्	18 सर्ग	वीर
*महाभारत का नलोपाख्यान	नैषधीयचरितम्	22 सर्ग	शृङ्गार
* रामायण	जानकीहरण	25 सर्ग (15सर्गप्राप्त)	शृङ्गार
*श्रीमद्भागवत	कुमारसम्भव	17 सर्ग	शृङ्गार
* सभापर्व	शिशुपालवध	20 सर्ग	वीर

स्रोत- शिशुपालवधम्- तारिणीश झा, भू. पेज-17

16. शिशुपालवधम् के प्रथमसर्ग का प्रधान छन्द है-
(A) अनुष्टुप् **(B) मन्दाक्रान्ता**
(C) उपजाति **(D) वंशस्थ**

व्याख्या-

ग्रन्थ	ग्रन्थकार	छन्द
* महाभारत	वेदव्यास	अनुष्टुप्
* रामायण	वाल्मीकि	अनुष्टुप्
* मेघदूतम्	कालिदास	मन्दाक्रान्ता
* रघुवंशम् (प्रथमसर्ग)	कालिदास	उपजाति
* किरातार्जुनीयम् (प्रथमसर्ग)	भारवि	वंशस्थ
* शिशुपालवधम् (प्रथमसर्ग)	माघ	वंशस्थ
* नैषधीयचरितम् (प्रथमसर्ग)	श्रीहर्ष	वंशस्थ

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- शिशुपालवधम् (प्रथमसर्ग)- तारिणीश झा, पेज-05

17. ''श्रियः पतिः श्रीमति शासितुं जगत्'' में श्रीमति शब्द निम्नांकित में से किसका विशेषण है?
(A) लक्ष्मी **(B) नारद**
(C) वसुदेव का घर **(D) क्षीरसागर**

व्याख्या–

महाकवि माघ शिशुपालवध महाकाव्य के प्रथम सर्ग में ग्रन्थ की निर्विघ्न समाप्ति के लिए श्री शब्द का प्रयोग श्रीकृष्ण का नारद दर्शन रूप वस्तुनिर्देशात्मक मङ्गलाचरण करते हुए कहते हैं कि-

श्रियः पतिः श्रीमति शासितुं जग-
ज्जगन्निवासो वसुदेवसद्मनि।

वसन्ददर्शावतरन्तमम्बरात्
हिरण्यगर्भाङ्गभुवं मुनिं हरिः॥
(शिशुपालवध 1.1)

सम्पूर्ण संसार को शासित करने के लिए समृद्धिशाली वसुदेव के घर में निवास करते हुए लक्ष्मी के पति तथा जगत् के आश्रयभूत भगवान् श्रीकृष्ण ने आकाश से उतरते हुए ब्रह्मा के मानस पुत्र नारद को देखा।

* माघ कृत 'शिशुपालवधम्' के प्रथमसर्ग के प्रथम श्लोक में श्रीमति = श्रीः अस्ति अस्मिन् इति श्रीमान् तस्मिन् श्री+मतुप् (सप्तमी एकवचन) वसुदेव सद्मनि का विशेषण है।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- शिशुपालवधम्- तारिणीश झा, पेज-4

18. शिशुपालवध महाकाव्य में कितने सर्ग हैं?
(A) दस **(B) पन्द्रह**
(C) बीस **(D) बाइस**

व्याख्या–

	महाकाव्य नाम	विभाजन सर्गों में
1.	राघवपाण्डवीयम्	13
2.	कुमारसम्भवम्	17
3.	सौन्दरनन्द	18
4.	किरातार्जुनीयम्	18
5.	रघुंवशम्	19
6.	शिशुपालवधम्	20
7.	जानकीहरणम्	20
8.	धर्मशर्माभ्युदय	21
9.	नैषधीयचरितम्	22
10.	भट्टिकाव्य (रावणवधम्)	22
11.	बुद्धचरितम्	28
12.	हरविजयम्	50

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- शिशुपालवधम्- तारिणीश झा, भू.पेज-15

19. शिशुपालवधम् का प्रमुख रस है?
(A) श्रृङ्गार **(B) शान्त**
(C) वीर **(D) करुण**

व्याख्या-

रस	ग्रन्थ	उपजीव्य	विभाजन
श्रृङ्गार	अभिज्ञानशाकुन्तलम्	महाभारत आदिपर्व	7 अङ्कों में
	नैषधीयचरितम्	महाभारत का वनपर्व	22 सर्गों में
	रघुवंशम्	रामायण मूलक	19 सर्गों में
शान्त	महाभारत	कौरव पाण्डवों की कथा	18 पर्वों में
	बुद्धचरितम्	बुद्ध का जीवन	28 सर्गों में
वीर	शिशुपालवधम्	महाभारत का सभापर्व	20 सर्गों में
	किरातार्जुनीयम्	महाभारत का वनपर्व	18 सर्गों में
करुण	उत्तररामचरितम्	रामायण	7 अङ्कों में
	वाल्मीकिरामायण	रामकथा	7 काण्डों में

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- शिशुपालवधम्- तारिणीश झा, भू.पेज-37

20. ''सतीव योषित्प्रकृतिः सुनिश्चला पुमांसमभ्येति भवान्तरेष्वपि'' पंक्ति किस ग्रन्थ से उद्धृत है?
(A) शिशुपालवधम् **(B) शिवराजविजय**
(C) मनुस्मृति **(D) कुमारसम्भवम्**

व्याख्या–

शिशुपालवधम्- महाकवि माघ विरचित शिशुपालवध महाकाव्य के प्रथम सर्ग में नारदजी शिशुपाल द्वारा किये गए अत्याचारों का वर्णन श्रीकृष्ण से करते हुए कहते हैं कि-

सतीव योषित्प्रकृतिः सुनिश्चला
पुमांसमभ्येति भवान्तरेष्वपि। (शिशु.1/72)

अत्यन्त स्थिर स्वभाव पतिव्रता नारी की तरह दूसरे जन्मों में भी पुरुष को प्राप्त करता है।

* **शिवराजविजय-** शिवराजविजय के प्रथम निःश्वास में ब्रह्मचारी गुरु योगिराज से शिवाजी की बात कहते हैं **'कार्यं वा साधयेयं देहं वा पातयेयम्।'**(शिव. प्रथम निःश्वास) या तो कार्य सिद्ध करुँगा या शरीर को ही समाप्त कर दूँगा।
* **मनुस्मृति-** मनुस्मृति के सप्तम अध्याय में दण्ड के महत्त्व का प्रतिपादन निम्नवत् है-

दण्डः शास्ति प्रजाः सर्वा दण्ड एवाभिरक्षति।
दण्डः सुप्तेषु जागर्ति दण्डं धर्मं विदुर्बुधाः॥
(मनु.7-18)

दण्ड सब पर राज्य करता है सबकी रक्षा करता है यह न्याय के रक्षकों के सो जाने पर भी जगा रहता है, बुद्धिमान् लोग इसको धर्म कहते हैं।

* **कुमारसम्भवम्-** कालिदास विरचित कुमारसम्भवम् के पञ्चम सर्ग में पार्वती की कठोर तपस्या को देखकर ब्रह्मचारी पार्वती को समझाते हुए कहता है-
'शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्।'' (कु0 5.33)
धर्म के जितने भी कार्य हैं उनमें शरीर की रक्षा करना सबसे पहला काम है।
अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- शिशुपालवधम् (1/72)- तारिणीश झा, पेज-149

21. निम्नलिखित तालिका-1 में पात्रों के प्रकार दिये गए हैं और तालिका-2 में इनके प्रसिद्ध उदाहरण दिये गए हैं। इनके आधार पर दिये गए विकल्पों में से सही सुमेलित को चुनें-

तालिका-1	तालिका-2
क. विदूषक	(i) शिशुपाल
ख. नगररक्षक	(ii) मैत्रेय, माधव्य
ग. पूर्व जन्म में रावण	(iii) सोमरात
घ. पुरोहित	(iv) चन्दनक

	क	ख	ग	घ
A	(iv)	(iii)	(ii)	(i)
B	(iii)	(ii)	(i)	(iv)
C	(ii)	(iv)	(i)	(iii)
D	(ii)	(iii)	(iv)	(i)

- मृच्छकटिकम् के विदूषक का नाम मैत्रेय तथा अभिज्ञानशाकुन्तलम् के विदूषक का नाम माधव्य है।
- मृच्छकटिक प्रकरण में नगररक्षक के रूप में चन्दनक और वीरक का वर्णन प्राप्त होता है।
- शिशुपालवध महाकाव्य में शिशुपाल को पूर्वजन्म में रावण का होना दर्शाया गया है।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् में सोमरात को पुरोहित के रूप में वर्णित किया गया है।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- मृच्छकटिकम्- श्रीनिवास शास्त्री, पेज-1

22. 'लब्धापि खलु दुःखेन परिपाल्यते' किसका कथन है?
(A) शुकनास का **(B) चन्द्रापीड का**
(C) तारापीड का **(D) विलासवती का**

व्याख्या-
मन्त्री शुकनास के द्वारा चन्द्रापीड को अनेक विषयों पर उपदेश दिया गया। जिनमें से एक विषय लक्ष्मी का प्रसंग भी है जिससे यह पंक्ति उद्धृत की जा रही है।

(A) **'लब्धापि खलु दुःखेन परिपाल्यते। दृढगुणपाश सन्दान-निष्पन्दीकृतापि नश्यति, उद्दाम-दर्प-भट-सहस्त्रोल्लासितासिलता पञ्जर-विधृताप्यपक्रामति, मदजलदुर्दिनान्धकार-गज-घटित-घनघटा-परिपालितापि प्रपलायते।'**
लक्ष्मी को पा लेने पर भी कष्ट से परिपालन करना होता है। सुदृढ़ गुण रूपी जाल के बन्धन उत्कट अहङ्कार से युक्त सहस्त्रों योद्धाओं द्वारा उठाई गई खड्गलता रूपी पिंजरे में बन्द रखी जाने पर भी निकल जाती है। मद-जल रूप मेघाच्छन्न दिन के कारण अन्धकार उत्पन्न करने वाले गज रूपी मेघ के समूह के रोके जाने पर भी भाग जाती है।
अतः विकल्प A सही है।

(B) **चन्द्रापीड-** कादम्बरी कथा का नायक चन्द्रापीड है जो स्वयं चन्द्रमा का अवतार है।

(C) **तारापीड-** चन्द्रापीड का पिता है। जो मालवा की राजधानी उज्जयिनी का राजा था।

(D) **विलासवती-** तारापीड की पत्नी का नाम विलासवती है।

स्रोत- शुकनासोपदेश- तारिणीश झा-पेज-21

23. कादम्बरी का नायकत्वेन प्रमुख पात्र है?
(A) चन्द्रापीड **(B) चाण्डालकन्या**
(C) कादम्बरी **(D) शुकनास**

व्याख्या–
कादम्बरी कथा के पात्र-

(A) **चन्द्रापीड-** चन्द्रापीड कादम्बरी कथा का नायक है। वह चन्द्रमा का अवतार है। चन्द्रापीड के पिता का नाम तारापीड तथा माता का नाम विलासवती था।

(B) **चाण्डालकन्या-** राजा शूद्रक के राजसभा में सोने के पिजड़े में बन्द वैशम्पायन नामक तोते को लाती है जो कि आर्या छन्द में राजा की स्तुति करता है।

(C) **कादम्बरी-** कादम्बरी गन्धर्वराज चित्ररथ की पुत्री है। कादम्बरी कथा के पूर्वार्ध में परकीया मुग्धा नायिका के रूप में तथा उत्तरार्ध में स्वकीया नायिका के रूप में चित्रित है।

(D) **शुकनास-** तारापीड के महामन्त्री का नाम शुकनास, जो राज्याभिषेक के अवसर पर चन्द्रापीड को उपदेश देता है।

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- कादम्बरीकथामुखम्- तारिणीश झा, भू.पेज-53

24. ''मनस्तु साधुध्वनिभिः पदे पदे, हरन्ति सन्तो मणिनूपुरा इव'' पंक्ति किस ग्रन्थ से उद्धृत हैं?
(A) नीतिशतक (B) मेघदूत
(C) कादम्बरी (D) शिशुपालवधम्

व्याख्या–

(A) **नीतिशकतम्-** भर्तृहरि नीतिशतक के विद्वत्पद्धति में वाणी रूपी आभूषण को सभी आभूषणों से श्रेष्ठ बताते हुए कहते हैं- '**क्षीयन्तेऽखिलभूषणानि सततं वाग्भूषणं भूषणम्।**' (नीति.श्लोक-16)

सब भूषण तो नष्ट हो जाते हैं वाणी रूपी भूषण ही सदा बना रहता है, कभी नष्ट नहीं होता है।

(B) **मेघदूतम्-** कालिदास विरचित मेघदूतम् के पूर्वमेघ में यक्ष मेघ से कहता है कि- ''**स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु।**'' (मेघदूतम् पूर्वमेघ श्लोक-29)
स्त्रियों की प्रेमियों के प्रति शृङ्गार चेष्टा ही प्रथम प्रणयवाक्य होता है।

(C) **कादम्बरी-** बाणभट्ट कादम्बरी कथामुख में सज्जनों की वाणी के विषय में कहते हैं- '**मनस्तु साधुध्वनिभिः पदे पदे हरन्ति सन्तो मणिनूपुरा इव**' (कादम्बरी श्लोक-6)
सज्जन लोग मणि-जटित नुपूरों के समान एक-एक शब्द पर उत्तम वचनों से चित्त को चुरा लेते हैं।

(D) **शिशुपालवधम्-** शिशुपालवध महाकाव्य के प्रथमसर्ग में भगवान् श्रीकृष्ण नारदजी के दर्शन का महत्त्व बताते हुए कहते हैं कि- '**शरीरभाजां भवदीयदर्शनं व्यनक्ति कालत्रितयेऽपि योग्यताम्**' (शिशु0 1.26)
आपका दर्शन शरीरधारियों की तीनों काल में भी पवित्रता प्रकट करता है।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- कादम्बरीकथामुखम् (श्लोक-6) तारिणीश झा, पेज-8

25. 'विन्ध्यवनभूमिरिव वेत्रलतावती' निम्नांकित में से किसका विशेषण है?
(A) प्रतीहारी (B) चाण्डालकन्या
(C) महाश्वेता (D) विन्ध्याटवी

व्याख्या–

पात्र	विशेषण

(A) **प्रतीहारी-** 'विन्ध्यवनभूमिरिव वेत्रलतावती।' (प्रतीहारी बेंत की लताओं से युक्त विन्ध्याटवी की भूमि के समान बेंत की छड़ी लिए हुई थी।)

(B) **चाण्डालकन्या-** मन्ये च
''मातङ्ग-जाति-स्पर्श-दोष-भयादस्पृशतेयमुत्पादिता प्रजापतिना,अन्यथा कथमियमक्लिष्टता लावण्यस्य।'' मैं तो ऐसा मानता हूँ कि चाण्डाल जाति के स्पर्श के दोष के भय के कारण ब्रह्मा ने बिना छुए ही इसको बनाया है यदि ऐसा नहीं होता तो इसकी सुन्दरता, इतनी कोमल कैसे होती ?

(C) **महाश्वेता-** कादम्बरी के महाश्वेतावृत्तान्त में 'न हि क्षुद्रनिर्घातपाताभिहता चलति वसुधा' अर्थात् पृथ्वी तुच्छ प्रहार पात से प्रताड़ित होकर नहीं काँपती।

(D) **विन्ध्याटवी-** 'क्रूरसत्त्वापि मुनिजनसेविता।' (क्रूर जीवों से युक्त होने पर भी मुनियों द्वारा सेवित थी।)

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- कादम्बरीकथामुखम्- अभिराज राजेन्द्र मिश्र, पेज-40

26. कादम्बरी में किस रीति का प्रयोग हुआ है?
(A) वैदर्भी रीति (B) गौड़ी रीति
(C) लाटी रीति (D) पाञ्चाली रीति

व्याख्या–
वैदर्भी रीति - अभिज्ञानशाकुन्तलम्
गौड़ी रीति - मालतीमाधवम् और उत्तररामचरितम्
पाञ्चाली रीति - कादम्बरी

अतः विकल्प (D) सही है।

स्रोत- संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-496

27. कादबरी में वर्णित इन्द्रायुध था-
(A) मन्त्री (B) राजा
(C) घोड़ा (D) शुक

व्याख्या–

	पात्र		नाम
(A)	मन्त्री	-	शुकनास
(B)	राजा	-	शूद्रक
(C)	घोड़ा	-	इन्द्रायुध
(D)	शुक	-	वैशम्पायन

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- कादम्बरीकथामुखम्- तारिणीश झा, पेज-39

28. नलचम्पू के मङ्गलाचरण में किस देवता की स्तुति है?
(A) शिव-पार्वती की
(B) विष्णु की
(C) सरस्वती की
(D) उपर्युक्त में से किसी की भी नहीं

व्याख्या–

(A) नलचम्पूकार त्रिविक्रमभट्ट नलचम्पू के प्रथमोच्छ्वास में शिव-पार्वती की स्तुति करते हैं-

जयति गिरिसुतायाः कामसन्तापवाहि-
न्युरसि रसनिषेकश्चान्दनश्चन्द्रमौलिः।
तदनु च विजयन्ते कीर्तिभाजां कवीना-
मसकृदमृतबिन्दुस्यन्दिनो वाग्विलासाः।

(नलचम्पू 1.1)

पार्वती के काम सन्तप्त वक्षस्थल पर चन्दन रस के सेचन रूप चन्द्रशेखर अर्थात् शिव सर्वोत्कृष्ट हैं तत्पश्चात् यशस्वी कवियों के बार-बार अमृत बिन्दु टपकाने वाले वाणी के विलास उत्कृष्ट हैं।

(B) शिवराजविजय में अम्बिकादत्तव्यास भागवत के मन्त्रों से भगवान् विष्णु का मङ्गलाचरण करते हुए कहते हैं-

विष्णोर्माया भगवती यया सम्मोहितं जगत्

(भागवतम् 10.1.25)

भगवान् विष्णु की माया ऐश्वर्यशालिनी है जिसने सम्पूर्ण जगत् को मोह में डाल रखा है।

(C) आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश में सरस्वती की स्तुति करते हुए ग्रन्थ का आरम्भ करते हैं-

नियतिकृतनियमरहितां ह्लादैकमयीमनन्यपरतन्त्राम्।
नवरसरुचिरां निर्मितिमादधती भारती कवेर्जयति॥

(काव्यप्रकाश 1.1)

जो नियति द्वारा नियमों से रहित है, केवल आनन्दमयी है, कविभारती से अन्य की अधीनता से रहित है, काव्यगत शृङ्गार-हास्य,करुण आदि नवरसों से मनोहर ऐसी मनोहर काव्यसृष्टि को धारण करने वाली कवि भारती सर्वोत्कृष्ट है।

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- नलचम्पू (1/1) तारिणीश झा, पेज-1

29. ''किं कवेस्तेन काव्येन किं काण्डेन धनुष्मतः। परस्य हृदये लग्नं न घूर्णयति यच्छिरः॥'' पद्य वाक्य उद्धृत है-
(A) उत्तररामचरितम् से (B) नीतिशतकम् से
(C) नलचम्पू से (D) वेणीसंहार से

व्याख्या–

(A) **उत्तररामचरितम्-** भवभूति विरचित उत्तररामचरितम् के प्रथम अङ्क में राम महर्षियों की वाणी की विशेषता बताते हुए कहते हैं कि-

लौकिकानां हि साधूनामर्थं वागनुवर्तते।
ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति॥

(उत्तररामचरितम् 1/10)

लौकिक सज्जनों की वाणी तो अर्थ का अनुसरण करती है, परन्तु प्राचीन महर्षियों की वाणी के पीछे अर्थ स्वयं चलता है।

(B) **नीतिशतकम्-** भर्तृहरि विरचित नीतिशतकम् के धैर्यपद्धति में धीरवान् व्यक्ति का वर्णन किया गया है-

मनस्वी कार्यार्थी न गणयति दुःखं न च सुखम्।

(नीतिशतकम् -74)

अपना काम पूरा करने वाले मनस्वी लोग सुख और दुःख की परवाह नहीं करते।

(C) **नलचम्पू-** त्रिविक्रमभट्ट नलचम्पू के प्रथमोच्छ्वास में कवि के काव्यकर्म का वर्णन करते हुए कहते हैं-

किं कवेस्तेन काव्येन किं काण्डेन धनुष्मतः।
परस्य हृदये लग्नं न घूर्णयति यच्छिरः॥

(नलचम्पू 1.5)

कवि के उस कर्म काव्य से क्या लाभ और धनुर्धारी के उस बाण से क्या लाभ जो दूसरे के हृदय में लगकर चमत्कार अथवा सिर न झुका दे।

अतः विकल्प C सही है।

(D) **वेणीसंहार-** भट्टनारायण प्रणीत वेणीसंहार नाटक के द्वितीय अङ्क में राजा भानुमती से कहता है कि-

प्रायेणैव हि दृश्यन्ते स्वप्नाः कामं शुभाशुभाः॥

(वेणीसंहार 2.14)

लोग यद्यपि शुभ तथा अशुभ बहुत सारे स्वप्न देखते हैं।

स्रोत- नलचम्पू (1/5)- तारिणीश झा, पेज-6

30. ''करोति कस्य नाह्लादं कथा कान्तेव भारती'' सूक्ति किस ग्रन्थ से उद्धृत है ?
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (B) नलचम्पू
(C) कादम्बरी (D) हर्षचरित

व्याख्या-

(A) **अभिज्ञानशाकुन्तलम्-** कालिदास द्वारा रचित अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के द्वितीय अङ्क में शकुन्तला से अलग होने के पश्चात् राजा दुष्यन्त कहता है कि - **''अहो विघ्नवत्यः प्रार्थितार्थसिद्धयः''** (अङ्क 2)

ओह! अभीष्ट वस्तुओं की प्राप्ति विघ्नों से युक्त होती है।

(B) **नलचम्पू-** नलचम्पूकार त्रिविक्रमभट्ट नलचम्पू के प्रथमोच्छ्वास में महाभारत की प्रशंसा करते हुए कहते हैं कि-

कर्णान्तविभ्रमभ्रान्तकृष्णार्जुनविलोचना।
करोति कस्य नाह्लादं कथा कान्तेव भारती॥
(1/13)

कर्ण का विनाश हो जाने पर आश्चर्य से चंचल कृष्ण अर्जुन तथा धृतराष्ट्र वाली महाभारत की कथा किसको आनन्दित नहीं करती ।

(C) **कादम्बरी-** महाकवि बाणभट्ट कादम्बरी कथामुख के स्तुति वर्णन में सज्जनों की वाणी का वर्णन करते हुए कहते हैं कि-
मनस्तु साधुध्वनिभिः पदे-पदे,हरन्ति सन्तो मणिनूपुरा इव।।
(श्लोक-6)
सज्जन लोग मणिजटित नूपुरों के समान एक-एक शब्द पर उत्तम वचनों से चित्त को चुरा लेते हैं।

(D) **हर्षचरित-** महाकवि कालिदास की प्रशंसा करते हुए बाणभट्ट हर्षचरितम् के प्रथमोच्छ्वास में कहते हैं-
प्रीतिर्मधुरसान्द्रासु मञ्जरीष्विव जायते। (हर्ष.1/16)
कालिदास की स्वाभाविक मधुर और सरस काव्योक्तियों में सचमुच किसे आनन्द नहीं होता है।
अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- नलचम्पू (1/13)- तारिणीश झा, पेज-15

31. ''गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः'' सूक्ति किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है?
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् **(B) उत्तररामचरितम्**
(C) किरातार्जुनीयम् **(D) शिशुपालवधम्**

व्याख्या–

(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम्- कालिदास कृत अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के पञ्चम अङ्क में जब ऋषि लोग शकुन्तला को लेकर राजा के यहाँ जाते हैं तो राजा ऋषियों से कुशलक्षेम पूछते हैं तो ऋषि लोग कहते हैं-
कुतो धर्मक्रियाविघ्नः सतां रक्षितरि त्वयि।
तमस्तपति घर्मांशौ कथमाविर्भविष्यति? (अभि05.14)
ऋषि लोग राजा से कहते हैं- सज्जनों के रक्षक आपके विद्यमान होते हुए धार्मिक क्रियाओं में विघ्न कैसे हो सकता है? सूर्य के तपते हुए होने पर अन्धकार कैसे प्रकट हो सकता है?

(B) उत्तररामचरितम्- भवभूति प्रणीत उत्तररामचरितम् नाटक के चतुर्थ अङ्क में जब सीता की अग्नि परीक्षा की चर्चा होती है तो अरुन्धती कौशल्या से कहती हैं कि-
'गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः॥'
(उत्तररामचरितम् 4.11)
गुणवानों में गुण ही पूजा के स्थान होते हैं, न कोई चिह्न विशेष और न आयु।
अतः विकल्प B सही है।

(C) किरातार्जुनीयम्- भारवि विरचित किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में दुर्योधन की राजव्यवस्था को जानकर लौटा हुआ वनेचर युधिष्ठिर से कहता है कि-
'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः' (किरातार्जुनीयम् 1.4)
हितकारी एवं मनोहर वाणी दुर्लभ होती है।

(D) शिशुपालवधम्- महाकवि माघ विरचित शिशुपालवध के द्वितीय सर्ग में बलराम श्रीकृष्ण से कहते हैं कि-
तेजस्विमध्ये तेजस्वी दवीयानपि गण्यते।
पञ्चमः पञ्चतपसस्तपनो जातवेदसाम् ॥
(शिशु.2.51)
अत्यन्त दूर रहने वाला भी तेजस्वी पुरुष तेजस्वियों में उसी प्रकार गिना जाता है जिस प्रकार पञ्चतप वाले तपस्वियों की पञ्चाग्नि में सूर्य पाँचवी अग्नि होती है।
अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- उत्तररामचरितम् (4/11)- शिवबालक द्विवेदी, पेज-410

32. 'व्यक्तिविवेक' के रचनाकार हैं-
(A) भोजराज **(B) धनञ्जय**
(C) क्षेमेन्द्र **(D) महिमभट्ट**

व्याख्या–

कवि	अनुमानित समय	रचनाएँ
* भोजराज	11 वीं शताब्दी	रामायणचम्पू, सरस्वती कण्ठाभरण
* धनञ्जय	10 वीं शताब्दी	दशरूपक
* क्षेमेन्द्र	11 वीं शताब्दी	औचित्यविचारचर्चा
* महिमभट्ट	11 वीं शताब्दी	व्यक्तिविवेक
* विश्वनाथ	14 वीं शताब्दी	राघवविलास, साहित्यदर्पण
* पण्डितराज जगन्नाथ	17 वीं शताब्दी	रसगङ्गाधर
* जयदेव	13 वीं शताब्दी	प्रसन्नराघव, चन्द्रालोक

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- काव्यप्रकाश- पारसनाथ द्विवेदी, भू.पेज-25

33. सांख्यदर्शन के प्रवर्तक हैं-
(A) भरतमुनि **(B) कपिलमुनि**
(C) बादरायणमुनि **(D) जैमिनि**

व्याख्या-

मुनि	ग्रन्थ	समय	ग्रन्थप्रकार
भरतमुनि	नाट्यशास्त्र	1000ई.पू. से 300ई.	काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ
कपिल	सांख्यसूत्र	700ई.पू.	सांख्यदर्शन
बादरायण	ब्रह्मसूत्र	300ई.पू.	वेदान्तदर्शन
जैमिनि	मीमांसासूत्र	600ई.पू.	मीमांसादर्शन

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- सांख्यकारिका- राकेश शास्त्री, पेज- भू.- 25

34. 'विषमबाणलीला' किसकी रचना है?
(A) दण्डी **(B) भामह**
(C) आनन्दवर्धन **(D) रुद्रट**

व्याख्या-

	कवि	ग्रन्थ	विभाजन
(A)	दण्डी	काव्यादर्श	तीन परिच्छेद 660 पद्य
(B)	भामह	काव्यालङ्कार	6 परिच्छेद
(C)	आनन्दवर्धन	विषमबाणलीला	प्राकृतकाव्य (अप्राप्य)
(D)	रुद्रट	काव्यालंकार	16 अध्याय

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- ध्वन्यालोक- आचार्य विश्वेश्वर, भू.पेज-35

35. 'अवन्तिसुन्दरी' के लेखक हैं-
(A) दण्डी **(B) बाणभट्ट**
(C) भट्टनारायण **(D) रुद्रट**

व्याख्या-

(A) **दण्डी-** अवन्तिसुन्दरीकथा, दशकुमारचरितम्, छन्दोविचित, काव्यादर्श। (छठीं शताब्दी)
(B) **बाणभट्ट-** कादम्बरी, हर्षचरितम्, पार्वतीपरिणय, चण्डीशतक, मुकुटताडितकम् (सातवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध)
(C) **भट्टनारायण-** वेणीसंहार (सातवीं- आठवीं शताब्दी)
(D) **रुद्रट-** काव्यालङ्कार (850ई.)

अतः विकल्प 'A' सही है।

स्रोत- संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी,पेज-466

36. ''काव्यप्रकाश'' के प्रथम उल्लास का नाम है-
(A) ध्वनिस्वरूप निरूपण
(B) अर्थव्यञ्जकता निरूपण
(C) काव्यस्वरूप निरूपण
(D) शब्दार्थस्वरूप निरूपण

व्याख्या-

* प्रथम उल्लास - काव्यादिस्वरूप निर्णय
* द्वितीय उल्लास - शब्दार्थस्वरूप निर्णय
* तृतीय उल्लास - अर्थव्यञ्जकता निरूपण
* चतुर्थ उल्लास - ध्वनिकाव्य निरूपण
* पञ्चम उल्लास - गुणीभूतव्यङ्ग्य निरूपण
* षष्ठ उल्लास - चित्रकाव्य निरूपण
* सप्तम उल्लास- दोष निरूपण
* अष्टम उल्लास - गुण निरूपण
* नवम उल्लास - शब्दालङ्कार
* दशम उल्लास - अर्थालङ्कार

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- काव्यप्रकाश (प्रथम उल्लास)- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-33

37. प्रयोजन सदैव गम्य है-
(A) इंगित से **(B) व्याजोक्ति से**
(C) व्यञ्जना से **(D) उपर्युक्त सभी से**

व्याख्या-

आचार्य मम्मटकृत काव्यप्रकाश के द्वितीय उल्लास में व्यञ्जना की अपरिहार्यता एवं प्रयोजनैकमात्रगम्य बताया गया है-

'यस्य प्रतीतिमाधातुं लक्षणा समुपास्यते।
फले शब्दैकगम्येऽत्र व्यञ्जनान्नापरा क्रिया॥'

(का.प्र. सूत्र- 23)

जिस प्रयोजन विशेष की प्रतीति कराने के लिए लक्षणा का आश्रय लिया जाता है, केवल शब्द से गम्य उस प्रयोजन के विषय में व्यञ्जना के अतिरिक्त कोई व्यापार नहीं है।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- काव्यप्रकाश (सूत्र-23)- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-70

38. 'गौरयम्' उदाहरण है-
(A) शुद्धा लक्षणा का
(B) सारोपा लक्षणा का
(C) शाब्दी व्यञ्जना का
(D) साध्यवसाना गौणी लक्षणा का

व्याख्या-

आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश के द्वितीयोल्लास में लक्षणा के छः भेद किये हैं-

''लक्षणा तेन षड्विधा'' (का0प्र0 सूत्र -17)

लक्षणा
- शुद्धा
  - 1. उपादान लक्षणा (कुन्ताः प्रविशन्ति)
  - 2. लक्षण लक्षणा (गङ्गायां घोषः)
  - 3. शुद्धा सारोपा (आयुर्घृतम्)
  - 4. शुद्धासाध्यवसाना (आयुरेवेदम्)
- गौणी
  - 5. गौणी सारोपा (गौर्वाहीकः)
  - 6. गौणी साध्यवसाना (गौरयम्)
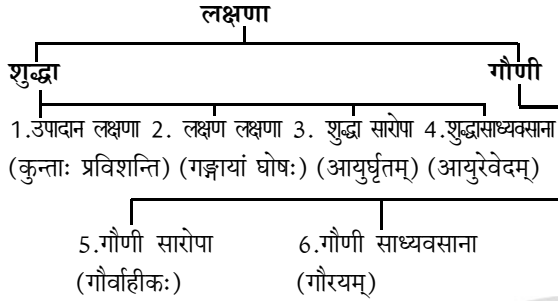
अतः विकल्प 'D' सही है।

स्रोत- काव्यप्रकाश (सूत्र-17)- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-66

39. 'रसादिध्वनि' के अन्तर्गत आते हैं-
(A) रस (B) भाव
(C) रसाभास, भावाभासादि (D) उपर्युक्त सभी

व्याख्या-

आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश के चतुर्थोल्लास में ध्वनि भेद के प्रसङ्ग में रसादि ध्वनि का निरूपण करते हैं-

* **रसभावतदाभासभावशान्त्यादिरक्रमः।**
भिन्नो रसाद्यलङ्कारादलङ्कार्यतया स्थितः॥ (का.प्र.सूत्र- 42)

जहाँ पर रस, भाव, रसाभास, भावाभास, भावोदय, भावसन्धि भावशबलता, भावशान्ति आदि प्रधानरूप से स्थित रहते हैं वहाँ असंलक्ष्यक्रमव्यङ्ग्यध्वनि होती है। इसप्रकार यहाँ पर ये रसध्वनि प्रधान होते हैं, वहाँ ये अलङ्कार्य होते हैं, इसलिए वहाँ पर रसादि व्यङ्ग्य होते हैं।

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- काव्यप्रकाश (चतुर्थ उल्लास)- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-94

40. काव्यप्रकाशकार द्वारा की गई रस की परिभाषा है-
(A) विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः
(B) व्यक्तः स तैर्विभावाद्यैः स्थायीभावो रसः स्मृतः
(C) ब्रह्मास्वादमिवानुभावयन् अलौकिकचमत्कारकारी शृङ्गारादिको रसः
(D) पुटपाकप्रतीकाशः रामस्य करुणो रसः

व्याख्या-

(A) **भरतमुनि-** आचार्य भरतमुनि नाट्यशास्त्र के छठवें अध्याय में रस का लक्षण करते हैं- ''विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः'' (नाट्य. अध्याय-6) विभाव, अनुभाव, तथा व्यभिचारीभावों के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है।

(B) मम्मट काव्यप्रकाश के चतुर्थ उल्लास में रस का लक्षण करते हैं- **'व्यक्तः स तैर्विभावाद्यैः स्थायीभावो रसः स्मृतः'** (का. प्र. सूत्र-43)। विभाव आदि के द्वारा व्यक्त किया गया रति आदि स्थायीभाव ही रस कहलाता है।

(C) काव्यप्रकाश के चतुर्थ उल्लास में रस के सन्दर्भ में आचार्य मम्मट अभिनवगुप्त के मत को उद्धृत करते हैं- **'ब्रह्मास्वादमिवानुभावयन् अलौकिक चमत्कारकारी शृङ्गारादिको रसः।'** रस के सम्बन्ध में अभिनवगुप्त का मत है कि 'ब्रह्म साक्षात्कार का अनुभव कराता हुआ सा, अलौकिक आनन्द को प्रदान करने वाला चमत्कारी शृङ्गार आदि रस होता है।

(D) **भवभूति-** उत्तररामचरितम् में करुण रस के विषय में भवभूति कहते हैं कि- **'पुटपाकप्रतीकाशःरामस्य करुणो रसः'** (3/1) उत्तररामचरितम् के तृतीय अङ्क में मुरला तमसा से कहती है कि राम का करुण रस (शोक) पुटपाक के तुल्य है।

अत विकल्प 'B' सही है।

स्रोत- काव्यप्रकाश (चतुर्थ उल्लास)- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-95

41. आरोपित शब्दव्यापार है-
(A) लक्षणा (B) अभिधा
(C) व्यञ्जना (D) लक्षणा एवं व्यञ्जना दोनों

व्याख्या-

आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश के द्वितीयोल्लास में शब्दवृत्तियों की चर्चा करते हैं-

अभिधा- अभिधा को परिभाषित करते हुये आचार्य मम्मट कहते हैं- **'स मुख्योऽर्थस्तत्र मुख्यो व्यापारोऽस्याभिधोच्यते।'** (का0प्र0सूत्र- 11) साक्षात् सङ्केतित अर्थ ही मुख्यार्थ है। साक्षात् सङ्केतित अर्थ के विषय में शब्द का जो मुख्य व्यापार है वह अभिधा कहा जाता है।

लक्षणा- लक्षणा को परिभाषित करते हुये आचार्य मम्मट कहते हैं-

मुख्यार्थबाधे तद्योगे रूढितोऽथ प्रयोजनात्।
अन्योऽर्थो लक्ष्यते यत् सा लक्षणारोपिता क्रिया॥
(का.प्र.सूत्र-12) मुख्यार्थ का बाध होने पर, मुख्यार्थ के साथ सम्बन्ध होने पर रूढ़ि अथवा प्रयोजनवश जिस शब्दवृत्ति से अन्य अर्थ की प्रतीति होती है वह शब्द में कल्पित अथवा आरोपित वृत्ति या व्यापार लक्षणा है।

अतः विकल्प 'A' सही है।

व्यञ्जना- व्यञ्जना का लक्षण आचार्य मम्मट निम्नवत् करते हैं-

यस्य प्रतीतिमाधातुं लक्षणा समुपास्यते।
फले शब्दैकगम्येऽत्र व्यञ्जनान्नापरा क्रिया॥
(का० प्र० सूत्र-23) जिस प्रयोजन विशेष की प्रतीति कराने के लिये लाक्षणिक शब्द का आश्रय लिया जाता है केवल शब्द से गम्य उस फल के विषय में व्यञ्जना के अतिरिक्त और कोई व्यापार नहीं हो सकता है।

स्रोत- काव्यप्रकाश (सूत्र-12)- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-51

42. 'काव्यप्रकाश' के नवम उल्लास का नाम है-
(A) शब्दालङ्कारनिर्णयात्मकः
(B) काव्यस्य प्रयोजन-कारण-स्वरूपनिर्णयात्मकः
(C) शब्दार्थस्वरूप-निर्णयात्मकः
(D) गुणीभूतव्यङ्ग्यनिरूपणात्मकः

व्याख्या-

A. नवम उल्लास- शब्दालङ्कार-निर्णयात्मकः
B. प्रथम उल्लास- काव्यस्य प्रयोजन-कारण-स्वरूप निर्णयात्मकः
C. द्वितीय उल्लास- शब्दार्थस्वरूपनिर्णयात्मकः
D. पञ्चम उल्लास- गुणीभूतव्यङ्ग्यनिरूपणात्मकः

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-439

43. 'तददोषौ शब्दार्थौ' में विशेष्य पद क्या है?
(A) तद् **(B) अदोषौ**
(C) शब्दार्थौ **(D) उपर्युक्त सभी**

व्याख्या-

प्रस्तुत लक्षण आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश के प्रथमोल्लास में काव्यलक्षण के सन्दर्भ में देते हैं।

'तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि।' (का० प्र० सूत्र- 1)

दोष-रहित, गुणसहित यदि कहीं-कहीं पर अलङ्कार से रहित शब्द और अर्थ की समष्टि काव्य है। यहाँ 'तद्' विशेष्य पद काव्य के लिए प्रयुक्त हुआ है अर्थात् ऐसा काव्य जो उपर्युक्त विशेषताओं से युक्त हो वह काव्य है।

अतः विकल्प 'A' सही है।

स्रोत- काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-439

44. इनमें से कौन काव्यप्रयोजन नहीं है?
(A) शक्ति **(B) निपुणता**
(C) अभ्यास **(D) उपर्युक्त सभी**

व्याख्या-

आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश के प्रथमोल्लास में शक्ति, निपुणता और अभ्यास को काव्य हेतु मानते हुए कहते हैं **कि शक्तिर्निपुणता लोकशास्त्रकाव्याद्यवेक्षणात्। काव्यज्ञशिक्षयाभ्यास इति हेतुस्तदुद्भवे ॥**(का.प्र.1.3) आचार्य मम्मट ने शक्ति, निपुणता और अभ्यास के समुदित रूप को काव्य का हेतु माना है।

1. **शक्ति-** 'शक्तिः कवित्वबीजरूपः संस्कारविशेषः।' शक्ति (प्रतिभा) कवित्व बीजरूप संस्कार विशेष है।
2. **निपुणता-** 'लोकस्य स्थावरजङ्गमात्मकलोकवृत्तस्य शास्त्राणां ....काव्यं कर्तुं विचारयितुं च ये जानन्ति।' लोक अर्थात् जड़- चेतन रूप जगत् के व्यवहार ग्रन्थ एवं महाकवियों के काव्यों तथा इतिहास आदि के अनुशीलन से उत्पन्न निपुणता तथा जो काव्य करना एवं विचार करना जानते हैं।
3. **अभ्यास-** 'तदुपदेशेन करणे योजने च पौनः पुन्येन प्रवृत्तिरिति।'
उन ग्रन्थों एवं उन कवियों के उपदेश के अनुसार काव्य-निर्माण और उनके संयोजन में बार-बार प्रवृत्ति अभ्यास है, ये तीनों मिलकर काव्य निर्माण में सहायक होते हैं।
काव्यप्रयोजन छह हैं- यश, अर्थप्राप्ति, व्यवहारज्ञान, अमङ्गलनाश, सद्यः आनन्दप्राप्ति, कान्तासम्मित उपदेश। इससे सिद्ध है कि उपर्युक्त विकल्प में कोई भी का काव्यप्रयोजन नहीं है।

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- काव्यप्रकाश (1/2)- आचार्य विश्वेश्वर,पेज-10

45. ''गौः शुक्लश्चलो डित्थः'' किसका विचार है?
(A) मम्मट का
(B) आनन्दवर्धन का
(C) महाभाष्यकार का
(D) उपर्युक्त में से किसी का भी नहीं

व्याख्या-
'गौः शुक्लश्चलो डित्थः' इत्यादौ 'चतुष्टयी शब्दानां प्रवृत्तिः इति महाभाष्यकारः।' गौः अर्थात् गाय जाति, शुक्ल अर्थात रङ्ग विशेष गुण, चलः अर्थात् चलन क्रिया, डित्थ अर्थात् सञ्ज्ञा विशेष व्यक्ति इत्यादि शब्दों के अर्थ का भेद नहीं हो सकता है, इसलिये उस व्यक्ति की उपाधि में ही सङ्केतग्रह होता है।
जाति - गौः (प्राणप्रद),
गुण - शुक्लः (विशेषाधान)
क्रिया - चलः (क्रिया रूप)
यदृच्छा - डित्थ (सञ्ज्ञा, द्रव्य)
अतः विकल्प C सही है।
स्रोत- काव्यप्रकाश(द्वितीय उल्लास)-श्रीनिवास शास्त्री,पेज-47

46. 'संकेतित अर्थ' कितने प्रकार का होता है?
(A) छह प्रकार का (B) आठ प्रकार का
(C) तीन प्रकार का (D) चार प्रकार का

व्याख्या-
(A) आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश के प्रथमोल्लास में काव्य के छः प्रयोजन मानते हैं-
काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये।
सद्यः परनिर्वृतये कान्तासम्मिततयोपेदेशयुजे॥
(का.प्र.1/2)
काव्य से यश की प्राप्ति, धन की प्राप्ति, लोक व्यवहार का ज्ञान, अमङ्गल का नाश, शीघ्र ही परमानन्द की प्राप्ति तथा प्रियतमा के तुल्य उपदेश प्रदान के लिए होता है।
(B) आचार्य भरतमुनि नाट्यशास्त्र के छठवें अध्याय में नाट्य में आठ रस मानते हैं-
शृङ्गारहास्यकरुणरौद्रवीरभयानकाः।
बीभत्साद्भुतसञ्ज्ञौ चेत्यष्टौ नाट्ये रसाः स्मृता॥
शृङ्गार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, बीभत्स, अद्भुत ये आठ रस नाटक में होते हैं। आचार्य मम्मट शान्तरस को मानते हुए नाटक में नौ रस मानते हैं।
(C) आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश के प्रथमोल्लास में तीन प्रकार के काव्यहेतु माने हैं-
शक्तिर्निपुणता लोकशास्त्रकाव्याद्यवेक्षणात्।
काव्यज्ञशिक्षयाभ्यास इति हेतुस्तदुद्भवे॥
(का.प्र.1/3) शक्ति, लोकशास्त्र तथा काव्य इत्यादि के निरीक्षण से होने वाली निपुणता तथा काव्य के जानने वालों की शिक्षा द्वारा अभ्यास यह तीनों मिलकर काव्य उद्‌भव के हेतु हैं।
(D) आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश के द्वितीयोल्लास में संकेतग्रह के विषय में कहते हैं-
'सङ्केतितश्चतुर्भेदो जात्यादिर्जातिरेव वा' (का.प्र.सूत्र-10)
जिस अर्थ में सङ्केत किया जाता हैं वह चार प्रकार का होता है-
जाति, गुण, क्रिया, यदृच्छा। जाति-गौः, गुण-शुक्ल, क्रिया-चल, यदृच्छा-डित्थ।
अतः विकल्प D सही है।
स्रोत- काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-43

47. 'सकलप्रयोजनमौलिभूतम्' किसे कहा गया है?
(A) यश को (B) धनोपार्जन को
(C) व्यवहारज्ञान को (D) सद्यः परनिर्वृति को

व्याख्या-
आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश के प्रथमोल्लास में काव्यप्रयोजन का निरूपण करते हुए कहते हैं-
काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये।
सद्यः परनिर्वृतये कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे॥
(का.प्र.1/2)
काव्य से यश की प्राप्ति, धन की प्राप्ति,लोक व्यवहार का ज्ञान, अमङ्गल का नाश, शीघ्र ही परमानन्द की प्राप्ति तथा प्रियतमा के तुल्य उपदेश प्रदान करने वाला है।
आचार्य मम्मट काव्य के पाँचवें प्रयोजन सद्यः परनिर्वृतये के विषय में कहते हैं कि-
'सकलप्रयोजनमौलिभूतं समनन्तरमेव रसास्वादनसमुद्भूतं विगलितवेद्यान्तरमानन्दम्'
अर्थात् काव्य श्रवण के अनन्तर शीघ्र ही रस के आस्वादन से उत्पन्न होता है एवं जिसमें अन्य ज्ञेय पदार्थ विगलित (नष्ट) हो जाते हैं काव्य से ऐसे आनन्द की प्राप्ति होती है।
विशेष- आचार्य मम्मट काव्य की तीन शैली का उल्लेख करते हैं- प्रभुसम्मित शैली, कान्तासम्मितशैली, सुहृत्सम्मित शैली।
अतः विकल्प D सही है।
स्रोत- काव्यप्रकाश (1/2)- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-10

48. 'अन्विताभिधानवाद' मत है-
(A) आनन्दवर्धन का (B) प्रभाकरगुरु का
(C) कुमारिलभट्ट का (D) मम्मट का

व्याख्या-

	आचार्य	सिद्धान्त या वाद
A.	आनन्दवर्धन	ध्वनिसिद्धान्त
B.	प्रभाकरगुरु	अन्विताभिधानवाद
C.	कुमारिलभट्ट	अभिहितान्वयवाद
D.	मम्मट	समन्वयवाद

विशेष- आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश के द्वितीयोल्लास में शब्द शक्तियों का विवेचन करते हुए 'तात्पर्यार्थोऽपि केषुचित्' मत का उद्धरण देते हुए दो सिद्धान्तों का उल्लेख करते हैं। अन्विताभिधानवाद जिसके आचार्य प्रभाकरगुरु हैं तथा अभिहितान्वयवाद जिसके आचार्य कुमारिलभट्ट हैं।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- काव्यप्रकाश द्वितीय उल्लास पेज-37

49. शब्दपरिवृत्ति असहिष्णुत्व प्राप्त होता है-
(A) अर्थालङ्कार में
(B) शाब्दी व्यञ्जना में
(C) शब्दालङ्कार में
(D) उपर्युक्त B एवं C दोनों में

व्याख्या-
जो शब्द परिवृत्ति को सहन नहीं करता वह शब्दालङ्कार और जो शब्द परिवृत्ति को सहन करता है वह अर्थालङ्कार होता है।

पठन्ति शब्दालङ्कारान् बहून्न्यान्मनीषिणः।
परिवृत्ति सहिष्णुत्वान्न ते शब्दैकभागिनः॥

शब्द परिवर्तन असह्य होने के कारण शब्दालङ्कार कहा जाता है। यही शब्द परिवृत्यसहत्व ही शब्दालङ्कार का भेदक तत्त्व है। इसी प्रकार शाब्दी व्यञ्जना में भी शब्द परिवृत्त असहिष्णुत्व प्राप्त होता है।

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- काव्यप्रकाश (नवम उल्लास)-आचार्य विश्वेश्वर,पेज-400

50. ''सुरभिं-सुरभिं सुमनोभरैः'' में कौन-सा अलंकार है?
(A) श्लेष (B) यमक
(C) उपमा (D) भ्रान्तिमान्

व्याख्या–
आचार्य विश्वनाथ साहित्यदर्पण के दशम परिच्छेद में अलङ्कारों का लक्षण करते हैं-

श्लेष अलङ्कार- 'शिलष्टैः पदैरनेकार्थाभिधाने श्लेष इष्यते।' (सा.द.10/11) श्लेष वह अलङ्कार है जिसे शिलष्ट पदों द्वारा अनेक अर्थों के अभिधान में देखा जाया करता है। यह श्लेष आठ प्रकार का होता है- वर्णश्लेष, प्रत्ययश्लेष, लिङ्गश्लेष, प्रकृतिश्लेष, पदश्लेष, विभक्तिश्लेष, वचनश्लेष, भाषाश्लेष।

उदाहरण- प्रतिकूलतामुपगते हि विधौ विफलत्वमेति बहुसाधनता।

यमक अलङ्कार- सत्यर्थे पृथगर्थायाः स्वरव्यञ्जनसंहतेः। क्रमेण तेनैवावृत्तिर्यमकं विनिगद्यते।। (सा०द० 10/8)
भिन्न-भिन्न अर्थों वाले स्वर व्यञ्जन समुदाय की उसी क्रम में आवृत्ति होने को यमक कहते हैं।

उदाहरण-
नवपलाश-पलाशवनं पुरः स्फुटपराग-परागत- पङ्कजम्।
मृदुल-तान्त-लतान्तमलोकयत्स सुरभिं सुरभिं सुमनोभरैः।।
प्रस्तुत उदाहरण में पलाश-पलाश और सुरभिं-सुरभिं इसमें दोनों पद सार्थक हैं। लतान्त -लतान्त में पहला निरर्थक है इसमें 'ल' मृदुल शब्द से मिला है। पराग- पराग में दूसरा पराग निरर्थक है इसमें अगले 'गत' शब्द से 'ग' मिलाया गया है। **अतः विकल्प B सही है।**

उपमा- साम्यं वाच्यमवैधर्म्यं वाक्यैक्य उपमा द्वयोः (सा.द. 10/14) उपमा वह अलङ्कार है जिसे उपमान और उपमेय का साम्य अथवा सादृश्य कहा करते हैं, जो कि स्पष्टतः एक वाक्य में प्रतिपादित रहा करता है और जिसमें वैधर्म्य की कोई भी चर्चा नहीं हुआ करती।

उदाहरण-
मधुरः सुधावदधरः पल्लवतुल्योऽतिपेलवः पाणिः।
चकितमृगलोचनाभ्यां सदृशी चपले च लोचने तस्याः।।

भ्रान्तिमान्- साम्यादतस्मिंस्तद्बुद्धिर्भ्रान्तिमान् प्रतिभोत्थितः।। (सा०द० 10/36)
जिसे सादृश्य के कारण एक वस्तु में दूसरी वस्तु का ऐसा अनुभव कहा जाया करता है जो स्वारसिक नहीं अपितु कवि प्रतिभोत्थापित हुआ करती है।

उदाहरण- प्रिय इति गोपवधूभिः शिशुरिति वृद्धैरधीश इति देवैः।।

स्रोत- छन्दोलङ्कारसौरभम्- राजेन्द्र मिश्र, पेज-60

51. आचार्य कुन्तक के अनुसार काव्य का लक्षण है-
(A) रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्
(B) तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि
(C) वाक्यं रसात्मकं काव्यम्
(D) वक्रोक्तिः काव्यजीवितम्

व्याख्या–

(A) पण्डितराज जगन्नाथ रसगङ्गाधर के प्रथम आनन में काव्य का लक्षण करते हैं-
'रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्।' (रसगङ्गाधर-01)
रमणीय अर्थ के प्रतिपादक शब्द काव्य कहलाते हैं।

(B) आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश के प्रथमोल्लास में काव्य का लक्षण करते हुये कहते हैं कि- 'तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि।' (का.प्र.सूत्र-01)
दोषरहित, गुणसहित कहीं-कहीं स्पष्ट अलङ्कारों से रहित भी शब्द और अर्थ की समष्टि काव्य है।

(C) आचार्य विश्वनाथ साहित्यदर्पण के प्रथम परिच्छेद में काव्य का लक्षण करते हैं- वाक्यं रसात्मकं काव्यम् (सा.द. 1/3)
रसात्मक वाक्य काव्य कहलाता है।

(D) आचार्य कुन्तक वक्रोक्तिजीवितम् के प्रथमोन्मेष में काव्य का लक्षण करते हैं- 'वक्रोक्तिः काव्यजीवितम्।'
वक्रोक्ति काव्य की आत्मा है।

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- साहित्यदर्पण- राजेन्द्र मिश्र, भू.पेज-94

52. 'प्रतिभा', 'व्युत्पत्ति' और 'अभ्यास' में सर्वमान्य हेतु है-
(A) प्रतिभा
(B) व्युत्पत्ति
(C) अभ्यास
(D) उपर्युक्त में से कोई भी नहीं

व्याख्या-

आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश के प्रथमोल्लास में काव्यहेतु के सम्बन्ध में कहते हैं-

* **शक्तिर्निपुणता लोकशास्त्रकाव्याद्यवेक्षणात्।**
काव्यज्ञशिक्षयाभ्यास इति हेतुस्तदुद्भवे॥
(का.प्र.-1/3)

शक्ति, लोकशास्त्र, काव्य आदि के पर्यवेक्षण से उत्पन्न निपुणता और काव्य के जानने वाले कवि और आलोचकों की शिक्षा के द्वारा अभ्यास- ये तीनों मिलकर काव्य के उद्भव के हेतु हैं।

* आचार्य मम्मट ने शक्ति (प्रतिभा) को सर्वमान्य हेतु कवित्व का बीजभूत संस्कार-विशेष को माना है।
''शक्तिः कवित्वबीजरूपः संस्कारविशेषः यां विना काव्यं न प्रसरेत् प्रसृतं वा उपहसनीयं स्यात्।''
* जगन्नाथ, विश्वनाथ आदि सभी आचार्यों ने प्रतिभा को काव्यहेतु के रूप में स्वीकार किया है।

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- काव्यप्रकाश (1/3)- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-16

53. ''प्रतिकूलतानुपगते हि विधौ विफलत्वमेति बहुसाधनता'' में अलंकार है-
(A) श्लेष **(B) अनुप्रास**
(C) उपमा **(D) उत्प्रेक्षा**

व्याख्या-

आचार्य विश्वनाथ साहित्यदर्पण के दशम परिच्छेद में अलङ्कार का लक्षण करते हैं-

* **श्लेष अलङ्कार-** श्लिष्टैः पदैरनेकार्थाभिधाने श्लेष इष्यते।
वर्णप्रत्ययलिङ्गानां प्रकृत्योः पदयोरपि।।
श्लेषाद्विभक्तिवचनभाषाणामष्टधा च सः।
(सा.द.10/11-12)

श्लिष्ट पदों से अनेक अर्थों का अभिधान होने पर श्लेष अलङ्कार होता है। वर्ण, प्रत्यय, लिङ्ग, प्रकृति, पद, विभक्ति, वचन और भाषा इनके श्लिष्ट होने के कारण वर्ण श्लेष, प्रत्यय श्लेष आदि भेदों से यह अलङ्कार आठ प्रकार का होता है।

उदाहरण-

प्रतिकूलतामुपगते हि विधौ विफलत्वमेति बहुसाधनता।
अवलम्बनाय दिनभर्तुरभून्न पतिष्यतः करसहस्रमपि।।
विधि अथवा विधु के प्रतिकूल होने पर साधन विफल हो जाते हैं। गिरने के समय सूर्य के हजार कर सहारा देने को पर्याप्त न हो सके। पूर्णिमा के दिन सूर्यास्त के समय सूर्य की विपरीत दिशा में चन्द्रमा निकला करता है। जब सहस्र कर वाले सूर्य भी विधु की प्रतिकूलता के समय गिरने से न बच सके तो विधि की प्रतिकूलता में औरों की तो बात ही क्या?

यहाँ 'विधौ' इस पद में 'विधि' और 'विधु' शब्दों के अन्तिम वर्ण (इकार तथा उकार) औकार के रूप में आ गये हैं, अतः उक्त दोनों वर्णों का यहाँ श्लेष है। 'विधौ' पद से दोनों अर्थ प्रतीत होते हैं।

* **अनुप्रास अलङ्कार-**

अनुप्रासः शब्दसाम्यं वैषम्येऽपि स्वरस्य यत् । (सा.द.10.3)

स्वर की विषमता रहने पर भी शब्द अर्थात् पद, पदांश के साम्य को अनुप्रास कहते हैं। स्वरों की समानता हो चाहे न हो परन्तु अनेक व्यञ्जन जहाँ एक से मिल जायँ वहाँ अनुप्रास अलङ्कार होता है।

उदाहरण- दृशा दग्धं मनसिजं जीवयन्ति दृशैव याः।
विरूपाक्षस्य जयिनीस्ताः स्तुमो वामलोचनाः।।

उपमा अलङ्कार-

साम्यं वाच्यमवैधर्म्यं वाक्यैक्य उपमा द्वयोः। (सा.द. 10.14)

एक वाक्य में दो पदार्थों के वैधर्म्य रहित, वाच्य सादृश्य को उपमा कहते हैं।

उदाहरण- मधुरः सुधावदधरः पल्लवतुल्योऽतिपेलवः पाणिः।
चकितमृगलोचनाभ्यां सदृशी चपले च लोचने तस्याः।।

यहाँ पर 'तस्या अधरः सुधावन्मधुरोऽस्ति' उसका अधरोष्ठ अमृत के तुल्य मधुर है। यहाँ पर तद्धितगत आर्थी पूर्णोपमा है।

* **उत्प्रेक्षा अलङ्कार-**

'भवेत्सम्भावनोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य परात्मना' (सा.द.10.40)

किसी प्रस्तुत वस्तु की अप्रस्तुत के रूप में सम्भावना करने को उत्प्रेक्षा कहते हैं।

उदाहरण- उरुः कुरङ्गकदृशश्चञ्चलचेलाञ्चलो भाति।
सपताकः कनकमयो विजयस्तम्भः स्मरस्येव।।

चञ्चल वस्त्राञ्चल से रमणीय, मृगनयनी का उरु ऐसा मालूम होता है मानों कामदेव का, पताका से युक्त, स्वर्णमय विजयस्तम्भ हो।

यहाँ पर 'उरु' में विजयस्तम्भ का स्वरूप उत्प्रेक्षित है।

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- शिशुपालवधम् (9/6)- हरगोविन्द शास्त्री, पेज-386

54. ''रसस्य च प्राधान्यान्नालंकारता'' में किस अलंकार का निषेध किया गया है-

(A) रसवद् का **(B) शब्दालङ्कार का**
(C) शृङ्गार का **(D) उपर्युक्त सभी का**

व्याख्या-

(A) आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश के प्रथम उल्लास में काव्य का लक्षण करते हुए कहते हैं-

'तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि' (का.प्र.सूत्र-1) अर्थात् दोषों से रहित, गुणों से युक्त साधारणतः अलङ्कार से युक्त परन्तु यदि कहीं-कहीं पर अलङ्कार न भी हो तो शब्द और अर्थ की समष्टि काव्य है।

इसी क्रम में उदाहरण देते हैं- यः कौमारहरः स एव हि वरस्तः एव चैत्रक्षपास्ते......आदि उदाहरण में कोई स्पष्ट अलङ्कार नहीं है और रस के प्रधान होने से रसवदलङ्कार के रूप में उसको भी अलङ्कार नहीं कहा जा सकता **''रसस्य च प्राधान्यान्नालंकारता''** क्योंकि वह रसवदलङ्कार रस के गौण होने पर ही होता है। उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि 'रसस्य च प्राधान्यान्नालङ्कारता' से रसवद् का निषेध किया गया है।

अतः विकल्प A सही है।

(B) आचार्य मम्मट ने काव्यप्रकाश के नवमोल्लास में छः शब्दालङ्कारों का वर्णन किया है-

1. वक्रोक्ति 2. अनुप्रास 3. यमक 4. श्लेष 5. चित्र 6. पुनरुक्तवदाभास।

(C) आचार्य मम्मट ने शृङ्गाररस को चित्त की द्रुति के कारण आह्लादकत्व एवं माधुर्यगुण से युक्त कहा है।

'आह्लादकत्वं माधुर्यं शृङ्गारे द्रुतिकारणम्।' (का.प्र.सूत्र-89)

स्रोत- काव्यप्रकाश (सूत्र-1)- आचार्य विश्वेश्वर,पेज-386

55. ''लिम्पतीव तमोऽङ्गानि वर्षतीवाञ्जनं नभः। असत्पुरुषसेवेव, दृष्टिर्विफलतां गता।।'' में कौन-सा अलंकार है?

(A) उपमा **(B) उत्प्रेक्षा**
(C) यमक **(D) श्लेष**

व्याख्या–

➢ आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश के नवमोल्लास में शब्दालङ्कार तथा दशमोल्लास में अर्थालङ्कार का लक्षण तथा उदाहरण करते हैं-

A. **उपमा-** 'साधर्म्यमुपमा भेदे' (का.प्र.सूत्र-124)

उपमान तथा उपमेय का भेद होने पर उनके साधर्म्य का वर्णन उपमा है।

**गाम्भीर्यगरिमा तस्य सत्यं गङ्गाभुजङ्गवत्।
दुरालोकः स समरे निदाघाम्बररत्नवत्।।**

उस राजा की गम्भीरता की गरिमा सचमुच गङ्गा के उपपति समुद्र के समान (गङ्गाभुजङ्गवत्) है और युद्धभूमि में वह ग्रीष्म कालीन (निदाघ) सूर्य के समान (अम्बररत्नवत् आकाश के मणि सूर्य के समान) दुरालोक अर्थात् कष्ट से दर्शनीय है। यहाँ पर 'गङ्गाभुजङ्ग' उपमान 'तस्य' उपमेय 'गाम्भीर्य-गरिमा' साधारण धर्म और इव के अर्थ में वत् प्रत्यय वाचक शब्द है।

B. **उत्प्रेक्षा-**'सम्भावनमथोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य समेन यत्।' (का.प्र.सूत्र-136) उपमेय की उपमान के साथ सम्भावना उत्प्रेक्षा है।

उदाहरण-

लिम्पतीव तमोऽङ्गानि वर्षतीवाञ्जनं नभः।
असत्पुरुषसेवेव, दृष्टिर्विफलतां गता॥

मानो अन्धकार अङ्गों मे लिप्त हो रहा है और आकाश काजल की वर्षा कर रहा है तथा दुष्ट पुरुष की सेवा के समान आँखे विफल सी हो गई हैं।

यहाँ पर अचेतन अन्धकार के अङ्गों में व्याप्त होने में लेपन की सम्भावना की गई है और अन्धकार के प्रसारण में अञ्जन वर्षण की सम्भावना की गई है इसलिए यहाँ उत्प्रेक्षा अलङ्कार है।

C. **यमक-** 'अर्थे सत्यर्थभिन्नानां वर्णानां सा पुनः श्रुतिः। यमकम्' (का.प्र.सूत्र-116) अर्थ होने पर भिन्नार्थक वर्णों का उसी क्रम से पुनः श्रवण होना यमक है। उदाहरण-

सन्नारीभरणोमायमाराध्य विधुशेखरम्।
सन्नारीभरणोऽमायस्ततस्त्वं पृथिवीं जय॥

सती नारियों का भरणपोषण करने वाली (अथवा पतिव्रता स्त्रियों के आभरण-आभूषण रूप सन्नारीभरण) उमा (पार्वती) को प्राप्त करने वाले विधुशेखर शिव की आराधना करके सन्नारी भरण अर्थात् शत्रुओं के हाथियों के विनाशक युद्ध करने वाले, कपट रहित आप पृथिवी पर विजय प्राप्त करें। यहाँ पर प्रथमपाद की तृतीय पाद में आवृत्ति है।

D. श्लेष-

वाच्यभेदेन भिन्ना यद् युगपद्भाषणस्पृशः।
श्लिष्यन्ति शब्दाः श्लेषोऽसावक्षरादिभिरष्टधा॥

(का.प्र.सूत्र-118)

अर्थ भेद से भिन्न-भिन्न शब्द जब एक साथ उच्चारण के विषय होने से एक रूप प्रतीत होते हैं वह श्लेष अलङ्कार होता है। श्लेष अक्षर आदि के भेद से आठ प्रकार का होता है ।

उदाहरण-

सर्वस्वं हर सर्वस्य त्वं भवच्छेदतत्परः।
नयोपकारसाम्मुख्यमायासि तनुवर्तनम्।।

दस्यु की शिव के प्रति उक्ति- हे शिव (हर) आप सब के सर्वस्व हैं और भव बन्धन काटने में तत्पर हैं अर्थात् संसार के जन्म मरण रूपी बन्धन को बाँधने वाले हैं अतः नय नीति और उपकार के अनुकूल शरीर स्थिति को प्राप्त होते हैं।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-461

56. इनमें से कौन 'रूपक' नहीं है?
(A) मृच्छकटिकम् **(B) विक्रमोर्वशीयम्**
(C) महावीरचरितम् **(D) दशकुमारचरितम्**

व्याख्या–

ग्रन्थ	ग्रन्थकार	विभाजन/विधा
मृच्छकटिकम्	शूद्रक	10 अङ्क /प्रकरण
विक्रमोर्वशीयम्	कालिदास	5 अङ्क / त्रोटक
महावीरचरितम्	भवभूति	7 अङ्क / नाटक
दशकुमारचरितम्	दण्डी	8उच्छ्वास / गद्यकाव्य

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- कादम्बरीकथामुखम्- राजेन्द्र मिश्र,भू.पेज-16

57. शकारी, अवन्तिजा, चाण्डाली एवं ढक्की ये प्रकार हैं-
(A) वेश्याओं के
(B) विशिष्ट नायिकाओं के
(C) प्राकृत के
(D) काव्य की रीतियों के

व्याख्या–

* मृच्छकटिकम् में शकार नामक पात्र शकारी प्राकृत बोलता है।
* व्याकरण तथा अन्य स्रोतों से प्राकृत भाषाओं के नाम मिलते हैं जैसे- शकारी, अवन्तिजा, चाण्डाली, ढक्की, बाह्वीकी, शाबरी, आभीरिका, दाक्षिणात्य, भूतभाषा तथा गौणी आदि।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-435

58. 'कैशिकी वृत्ति' किस रस में होती है?
(A) शृङ्गार रस **(B) वीररस**
(C) रौद्र रस **(D) अद्‌भुत रस**

व्याख्या–
आचार्य धनञ्जय दशरूपक के द्वितीय प्रकाश में रस एवं वृत्तियों के पारस्परिक सम्बन्ध का वर्णन करते हुये कहते हैं-
शृङ्गारे कैशिकी, वीरे सात्त्वत्यारभटी पुनः।
रसे रौद्रे च बीभत्से, वृत्तिः सर्वत्र भारती।। (दश.2.62)
शृङ्गार रस में कैशिकी वृत्ति, वीररस में सात्त्वती वृत्ति और रौद्र तथा बीभत्स रस में आरभटी का प्रयोग होना चाहिये इसके अतिरिक्त भारती वृत्ति का प्रयोग सभी रसों में होना चाहिए।

	रस		**वृत्ति**
*	शृङ्गार रस	-	कैशिकी
*	वीर रस	-	सात्त्वती
*	रौद्र एवं बीभत्स रस	-	आरभटी

* इसके अतिरिक्त सभी रसों में भारती वृत्ति होती है

अतः विकल्प A सही है।
स्रोत- दशरूपक (द्वितीय प्रकाश)- बैजनाथ पाण्डेय, पेज-222

59. नाटक में 'प्रवेशक' का प्रयोग होता है-
(A) प्रारम्भ में
(B) अन्त में
(C) दो अंकों के मध्य में
(D) चार अंकों के मध्य में

व्याख्या–
➢ आचार्य विश्वनाथ साहित्यदर्पण के षष्ठ परिच्छेद में नाटक के प्रारम्भ में नान्दी का विधान करते हुये कहते हैं-
आशीर्वचनसंयुक्ता स्तुतिर्यस्मात्प्रयुज्यते।
देवद्विजनृपादीनां तस्मान्नान्दीति संज्ञिता।।
(सा.द. 6.24)
देवता, ब्राह्मण तथा राजा आदि की आशीर्वाद युक्त स्तुति इसमें की जाती है अतः इसे नान्दी कहते हैं।
➢ नाटक के अन्त में प्रयुक्त आशीर्वादात्मक पद्य को भरतवाक्य कहते हैं।
➢ महाभाष्यकार पतञ्जलि ने ग्रन्थ के आदि मध्य तथा अन्त में मङ्गलाचरण होना चाहिए, ऐसा कहते हैं (मङ्गलादीनि मङ्गलमध्यानि च मङ्गलान्तानि च काव्यानि प्रथन्ते) भरतवाक्य सम्भवतः उसी परम्परा के पालनार्थ अन्तिम मङ्गल के रूप में नाटकों में रखा गया है।
भरतवाक्य का लक्षण निम्नवत् है-
नाट्यन्ते नायकप्रोक्तं प्रजामङ्गलसूचकम्।
भरतानां प्रियत्वाच्च तद् वाक्यमभिधीयते।।
➢ आचार्य विश्वनाथ साहित्यदर्पण के षष्ठ परिच्छेद में दो अङ्कों के मध्य प्रवेशक का विधान करते हैं-
प्रवेशकोऽनुदात्तोक्त्या नीचपात्रप्रयोजितः।
अङ्कद्वयान्तर्विज्ञेयः शेषं विष्कम्भके यथा।
(सा.द. 6/57)
प्रवेशक भी विष्कम्भक की ही भाँति वृत्त और वर्तिष्यमाण इतिवृत्त का सूचक हुआ करता है, इसकी योजना दो अङ्कों के बीच में की जाया करती है, इसमें अनुदात्तोक्ति अर्थात् संस्कृत भिन्न प्राकृत आदि भाषा द्वारा कथावस्तु की सूचना हुआ करती है इसका प्रयोग नीच पात्रों का कार्य है।
अतः विकल्प C सही है।
स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम्- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-463

60. निम्नलिखित में से कौन 'कञ्चुकी' की विशेषता नहीं है?
(A) अन्त:पुर में जाने वाला वृद्ध
(B) गुणवान् ब्राह्मण
(C) सब कार्यों को करने में कुशल
(D) राजा का विश्वस्त मित्र

व्याख्या–
आचार्य भरतमुनि नाट्यशास्त्र में कञ्चुकी का लक्षण करते हैं- **अन्तः पुरचरो वृद्धो विप्रो गुणगणान्वितः।**
सर्वकार्यार्थकुशलः कञ्चुकीत्यभिधीयते।
(नाट्यशास्त्र)
अन्तःपुर में जाने वाले,वृद्ध, गुणवान् ब्राह्मण को, जो कि सब कार्यों को करने में कुशल होता है, उसे कञ्चुकी कहते हैं।
उपर्युक्त विशेषताओं में राजा का विश्वस्त मित्र होना कञ्चुकी की विशेषता नहीं है।
अतः विकल्प (D) सही है।
स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम्- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-461

61. 'जवनिका' शब्द का अर्थ है-
(A) यवन देश की कन्या
(B) यवन सैनिक
(C) पर्दे के पीछे
(D) पर्दा

व्याख्या-
आचार्य धनञ्जय दशरूपक के प्रथम प्रकाश में चूलिका का लक्षण करते हुये जवनिका, नेपथ्य, को समान बताते हुये

कहते हैं कि-

'अन्तर्जवनिकासंस्थैश्चूलिकार्थस्य सूचना।' (दशरूपक 1.61) जवनिका = पर्दे के भीतर बैठे हुए पात्रों द्वारा दर्शकों को दी जाने वाले कथावस्तु की सूचना को चूलिका कहते हैं कुछ विद्वानों ने इसे नेपथ्य की संज्ञा दी है।

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- संस्कृत हिन्दी शब्दकोश- वामन शिवराम आप्टे, पेज-400

62. 'सूत्रधार' होता है-
(A) नायक के रूप में अभिनय करने के लिए
(B) नाटक आरम्भ करने के लिए
(C) अभिनय का निर्देशन एवं नियन्त्रण करने के लिए
(D) नान्दी पढ़ने के लिए

व्याख्या-

आचार्य भरतमुनि के नाट्यशास्त्र में सूत्रधार का लक्षण निम्नवत प्राप्त होता है-

* **नाट्यस्य यदनुष्ठानं तत्सूत्रं स्यात् सबीजकम्।**
रङ्गदैवतपूजाकृतसूत्रधार उदीरितः।।

बीज सहित नाटक के अनुष्ठान को 'सूत्र' कहते हैं, जो उसको धारण करने वाला अर्थात् संचालन करने वाला होता है तथा रङ्गमञ्च के अधिष्ठातृ देव की पूजा करता है, उसे सूत्रधार कहते हैं।

सूत्रधार का एक अन्य लक्षण इस प्रकार है-
नाट्योपकरणादीनि सूत्रमित्यभिधीयते।
सूत्रं धारयतीत्यर्थे सूत्रधारो निगद्यते।।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत-अभिज्ञानशाकुन्तलम्- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-460

63. 'मृगनयना' में त्रिलुप्ता उपमा दिखलाने के लिए निम्नलिखित विग्रहों में से कौन उपयुक्त है?
(A) मृगस्य नयना
(B) मृगीव नयना चञ्चला
(C) मृगस्य नयने इव चञ्चले नयने यस्याः सा
(D) मृगस्य नयने इव नयने यस्याः सा

व्याख्या–

* पूर्णोपमा के लिए उपमान, उपमेय, साधारणधर्म और उपमावाचक शब्द ये चारों आवश्यक हैं। उपर्युक्त चारों विकल्पों में विकल्प 'मृगस्य नयना' (मृग के नेत्र) इस वाक्य के उपमान मात्र है इसमें उपमेय 'यस्याः' (नायिकायाः) का, इव उपमावाचक शब्द का एवं चञ्चले (चञ्चलता) रूप साधारण धर्म इन तीनों का अभाव है। इसलिए यह त्रिलुप्ता उपमा का उदाहरण है।

अतः विकल्प (A) सही है।

स्रोत- काव्यप्रकाश (दशम उल्लास)- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-457

64. 'ख' कौन-सी ध्वनि है?
(A) मूर्धन्य **(B) तालव्य**
(C) दन्त्य **(D) कण्ठ्य**

व्याख्या–

(A) **'ऋटुरषाणां मूर्धा'-** ऋ,टवर्ग (ट्,ठ्,ड्,ढ्,ण्), र् और ष् का उच्चारण स्थान मूर्धा है। अतः यह मूर्धन्य ध्वनि है।

(B) **'इचुयशानां तालु'-** इ, चवर्ग (च्, छ्, ज्, झ्, ञ्) य् और श् का उच्चारण स्थान तालु है अतः यह ध्वनि तालव्य ध्वनि है।

(C) **'ऌतुलसानां दन्ताः'-** ऌ, तवर्ग (त्, थ्, द्, ध्, न्), ल् और स् का उच्चारण स्थान दन्त है। अतः यह दन्त्य ध्वनि है।

(D) **'अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः'-** अ, कवर्ग (क्, ख्, ग्, घ्,ङ्), ह् और विसर्ग का उच्चारण स्थान कण्ठ है अतः यह कण्ठ्य ध्वनि है।

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी- आद्याप्रसाद मिश्र, पेज-26

65. 'हरिहरौ' में कौन-सा समास है?
(A) तत्पुरुष
(B) बहुव्रीहि
(C) द्वन्द्व
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

व्याख्या–

समास	उदाहरण सूत्र/वार्तिक
(A) तत्पुरुष-	चौराद् भयं= चौरभयम् ('पञ्चमी भयेन'सूत्र से) स्तोकात् मुक्तः = स्तोकान्मुक्तः ('स्तोकान्तिक-दूरार्थकृच्छ्राणि क्तेन' से तत्पुरुष समास)
(B) बहुव्रीहि-	रूपवती भार्या यस्य सः = रूपवद्भार्यः 'अनेकमन्यपदार्थे' (2.2.24) सूत्र से।
(C) द्वन्द्व -	हरिश्च हरश्च- हरिहरौ 'चार्थे द्वन्द्वः' सूत्र से द्वन्द्व समास होकर 'द्वन्द्वे घि' से घि संज्ञक हरि का पूर्व प्रयोग हुआ।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- अष्टाध्यायी (2.2.32)- ईश्वरचन्द्र, पेज-190

66. 'स्त्रीप्रमाणः' में समास है-
(A) अव्ययीभाव **(B) द्वन्द्व**
(C) द्विगु **(D) बहुव्रीहि**

व्याख्या–

समास उदाहरण

- **अव्ययीभाव-** अव्ययं-विभक्ति-समीप-समृद्धि.......(2.1.6) सूत्र से समृद्धि तथा व्यृद्धि अर्थ में अव्ययीभाव समास-
  मद्राणां समृद्धिः - सुमद्रम्।
  यवनानां व्यृद्धि - दुर्यवनम्

पञ्चानां गङ्गानां समाहारः = पञ्चगङ्गम् (नदीभिश्च सूत्र से 2.1.20)

- **द्वन्द्व-** ब्राह्मणी च ब्राह्मणश्च = ब्राह्मणौ
  शूद्री च शूद्रश्च = शूद्रौ
  अजश्च अजा च = अजौ
- **द्विगु-** पञ्चानां मूलानां समाहारः = पञ्चमूली (आबन्तो वा-वार्तिक)
  त्रयाणां लोकानां समाहारः = त्रिलोकी
  पञ्चानां खट्वानां समाहारः = पञ्चखट्वा
- **बहुव्रीहि-** वीराः पुरुषाः सन्ति यस्मिन् (ग्रामे) वीरपुरुषः
  अनेकमन्यपदार्थे (2.2.24) सूत्र से
  अविद्यमानः पुत्रो यस्य सः = अपुत्रः
  स्त्री प्रमाणी यस्य सः = स्त्रीप्रमाणः

अतः विकल्प (D) सही है।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी भैमी व्याख्या (खण्ड-4), पेज-201

67. 'नखभिन्नः' का लौकिक विग्रह है-

(A) नखः भिन्नः **(B) नखैः भिन्नः**
(C) नखे भिन्नः **(D) नखात् भिन्नः**

व्याख्या–

* **कर्तृकरणे कृता बहुलम् (2.1.32)**
कर्त्ता और करण अर्थ में हुए तृतीयान्त समर्थ सुबन्त का कृदन्तप्रकृतिक सुबन्त शब्दों के साथ बहुल से समास होता है और वह तत्पुरुष समास होता है।

नखभिन्नः- नाखूनों से चीरा गया। यहाँ भेदन क्रिया में नख करण है और अनभिहित भी है अतः कर्तृकरणयोस्तृतीया से तृतीया विभक्ति हुई है।

लौकिक विग्रह- नखैः भिन्नः

अलौकिक विग्रह- नख भिस् + भिन्न सु।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- समास प्रकरण- राममुनिपाण्डेय, पेज-33

68. 'पञ्चगङ्गम्' में कौन सा समास है?

(A) अव्ययीभाव **(B) द्विगु**
(C) कर्मधारय **(D) बहुव्रीहि**

व्याख्या–

- **अव्ययीभाव-** नदीभिश्च (2.1.20) होता है और यह समास समाहार अर्थ में होता है। इसे अव्ययीभाव समास कहते हैं। **उदाहरण-** पञ्चगङ्गम्, सप्तगङ्गम्, द्वियमुनम्
- **द्विगु-** तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च (2.1.51) तद्धित प्रत्यय के अर्थ का विषय हो अथवा उत्तर पद परे हो या समूह अर्थ वाच्य हो तो दिशावाची और संख्यावाची सुबन्त का समानाधिकरण सुबन्त के साथ तत्पुरुष समास होता है।उदाहरण- षाण्मातुरः, द्वैमातुरः।
- **कर्मधारय-** उपमानानि सामान्यवचनैः (2.1.55) उपमान वाचक सुबन्त का सामान्य (साधारण धर्म) धर्म के वाचक सुबन्त के साथ समास होता है। उदाहरण- घनश्यामः, चन्द्राह्लादकः
- **बहुव्रीहि-** अनेकमन्यपदार्थे (2.2.24) अन्यपद के अर्थ में वर्तमान अनेक प्रथमान्तों का विकल्प से बहुव्रीहि समास होता है। उहदारण- चन्द्रशेखरः, चक्रपाणिः, चन्द्रकान्तिः,।

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी भैमी व्याख्या (खण्ड-4),पेज-201

69. 'सप्तर्षयः' में समास है-

(A) तत्पुरुष **(B) बहुव्रीहि**
(C) द्विगु **(D) कर्मधारय**

व्याख्या-

	समास	लौकिक विग्रह समस्तपद
A.	तत्पुरुष-	सप्त च ते ऋषयः = सप्तर्षयः
B.	बहुव्रीहि-	दत्तं धनं यस्मै सः = दत्तधनः दत्तं चित्तं येन सः = दत्तचित्तः
C.	द्विगु-	चतुर्णां युगानां समाहारः चतुर्युगम् पञ्चानां पात्राणां समाहारः पञ्चपात्रम्
D.	कर्मधारय-	कुत्सितः पुरुषः कुपुरुषः कुत्सितः देशः किंदेशः कुत्सितः प्रभुः किम्प्रभु

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी (2.1.50)- गोविन्दाचार्य, पेज-925

70. 'सम्प्रदान' में कौन-सी विभक्ति होती है ?
(A) द्वितीया (B) तृतीया
(C) चतुर्थी (D) पञ्चमी

व्याख्या-

(A) द्वितीया- कर्मणि द्वितीया (2.3.2) अनुक्त कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है।
उदाहरण- हरिं भजति (हरि को भजता है।)

(B) तृतीया- कर्तृकरणयोस्तृतीया (2.3.18) अनुक्त कर्त्ता तथा करण कारक में तृतीया विभक्ति होती है।
उदाहरण- रामेण बाणेन हतो बाली। (राम के द्वारा बाण से बाली मारा गया।)

(C) चतुर्थी-चतुर्थी सम्प्रदाने (2.3.13) अनभिहित सम्प्रदान कारक में चतुर्थी विभक्ति होती है।
उदाहरण-विप्राय गां ददाति। (ब्राह्मण को गाय देता है।)

(D) पञ्चमी- अपादाने पञ्चमी (2.3.28) अनभिहित अपादान कारक में पञ्चमी विभक्ति होती है।
उदाहरण- धावतोऽश्वात् पतति (दौड़ते हुए घोड़े से गिरता है।)

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- अष्टाध्यायी (2.3.13)- ईश्वरचन्द्र, पेज-197

71. 'कटे आस्ते' यह कैसा आधार है ?
(A) वैषयिक (B) अभिव्यापक
(C) औपश्लेषिक (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

व्याख्या-
आधार तीन प्रकार का होता है-

* **औपश्लेषिक आधार-** जिस आधार का साथ आधेय के साथ भौतिक संश्लेष होता है उस आधार को औपश्लेषिक आधार कहते हैं।
उदाहरण- कटे आस्ते (चटाई पर बैठता है) यहाँ पर बैठना क्रिया का साक्षात् आश्रय है कर्त्ता। कर्त्ता का आधार 'कट' है कर्त्ता का 'कट' के साथ स्पर्शमात्र संयोग है अतः यह औपश्लेषिक आधार है।

* **वैषयिक आधार-** जिस आधार के साथ आधेय का बौद्धिक संश्लेष हो उसे वैषयिक आधार कहते हैं।
उदाहरण- मोक्षे इच्छाऽस्ति (मोक्ष विषयक इच्छा है)- यहाँ इच्छा का विषय मोक्ष है, इच्छा रूपी कर्त्ता के वैषयिक आधार मोक्ष की आधारोऽधिकरणं सूत्र से अधिकरण संज्ञा और सप्तमी विभक्ति।

* **अभिव्यापक आधार-** जिस आधार के सम्पूर्ण अवयवों में आधेय व्याप्त रहता है उसे अभिव्यापक आधार कहते हैं आधार और आधेय में व्याप्य-व्यापक भाव सम्बन्ध रहता है।
उदाहरण- सर्वस्मिन् आत्मा अस्ति (सब में आत्मा है) यहाँ कर्त्ता 'आत्मा' सर्व में व्याप्त है।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका- बाबूराम सक्सेना, पेज-215

72. 'येनाङ्गविकारः' एवं 'इत्थम्भूतलक्षणे' सूत्रों से विभक्ति होती है-
(A) द्वितीया (B) द्वितीया एवं तृतीया
(C) तृतीया (D) तृतीया एवं पञ्चमी

व्याख्या-

➢ **द्वितीया- अधिशीङ्स्थासां कर्म (1.4.46)**
यदि शीङ्, स्था और आस् धातुओं के पहले अधि उपसर्ग लगा हो तो क्रिया के आधार की कर्मसञ्ज्ञा होती है।
उदा0- हरिः वैकुण्ठम् अधिशेते ।

➢ **उपान्वध्याङ्वशः (1.4.48)** यदि वस् धातु के पूर्व उप, अनु, अधि और आङ् उपसर्ग लगा हो तो उसके आधार की कर्मसञ्ज्ञा होती है।
उदा0- उपवसति अनुवसति अधिवसति आवसति वा वैकुण्ठं हरिः।

* **तृतीया-** 1. येनाङ्गविकारः (2.3.20.) जिस विकृत अङ्ग के द्वारा अङ्गी का विकार लक्षित हो उस अवयववाची शब्द में तृतीया विभक्ति होती है।
उदाहरण- अक्ष्णा काणः

➢ **इत्थम्भूतलक्षणे (2.3.21)** किसी प्रकार-विशेष को प्राप्त हुए व्यक्ति अथवा वस्तु से लक्षण ज्ञापित होने पर जिससे लक्षण ज्ञापित होता है उसमें तृतीया विभक्ति होती है। **उदाहरण-** जटाभिः तापसः।

* पञ्चमी 1. अकर्तर्यृणे पञ्चमी (2.3.24) कर्तृभिन्न हेतुभूत ऋणवाचक से पञ्चमी विभक्ति होती है।
उदा.- शताद् बद्धः।

➢ **विभाषा गुणेऽस्त्रियाम् (2.3.25)** स्त्रीलिङ्ग भिन्न गुणवाचक हेतु में विकल्प से पञ्चमी विभक्ति होती है।
उदा.- जाड्यात् जाड्येन वा बद्धः।

अतः विकल्प 'C' सही है।

स्रोत- संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका- बाबूराम सक्सेना, पेज-197,199

73. 'नक्षत्रवाची' शब्द काल विशेष को प्रकट करता है तो विभक्ति होती है-
(A) तृतीया-पञ्चमी (B) प्रथमा-सप्तमी
(C) द्वितीया-तृतीया (D) तृतीया-सप्तमी

व्याख्या-

(A) **तृतीया-पञ्चमी-** विभाषा गुणेऽस्त्रियाम् (2.3.25)- स्त्रीलिङ्ग भिन्न गुणवाचक हेतु में तृतीया तथा विकल्प से पञ्चमी विभक्ति होती है। जैसे- जाड्यात् जाड्येन वा बद्धः।

(B) **प्रथमा-सप्तमी-** 1. यतश्चाध्वकालनिर्माणं तत्र पञ्चमी (वा.) 2. तद्युक्तादध्वनः प्रथमासप्तम्यौ (वा.)
जहाँ से काल अथवा मार्ग का परिमाण किया जाय वहाँ पञ्चमी विभक्ति होती है तथा 'तदयुक्तादध्वन.......' वार्तिक से प्रथमा और सप्तमी विभक्ति होती है जैसे-वनाद् ग्रामो योजनं वा।

(C) **द्वितीया-तृतीया-** संज्ञोऽन्यतरस्यां कर्मणि (2.3.22) सम् उपसर्ग पूर्वक ज्ञा धातु के अनभिहित कर्म में द्वितीया तथा विकल्प से तृतीया विभक्ति होती है। जैसे - पित्रा पितरं वा सञ्जानीते।

(D) **तृतीया-सप्तमी-** नक्षत्रे लुपि (2.3.45) लुबन्त नक्षत्रवाची शब्द से अधिकरण अर्थ में तृतीया और सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे- मूलेनावाहायेद् देवीं श्रवणेन श्रवणे वा विसर्जयेत।

अतः विकल्प 'D' सही है।

स्रोत- कारकप्रकरण (2.3.45)- राममुनि पाण्डेय, पेज-100

74. 'एधनीयम्' में कौन-सा प्रत्यय है ?
(A) तव्यत् (B) अनीयर्
(C) यत् (D) ण्यत्

व्याख्या-

(A) तव्यत् प्रत्यय- तव्यत्तव्यानीयरः (3.1.96)
पठितव्यम् = पठ् + तव्यत्, गन्तव्यम् = गम्+तव्यत्, चलितव्यम् = चल् + तव्यत्

(B) अनीयर् प्रत्यय- तव्यत्तव्यानीयरः (3.1.96)
धातु से तव्यत्, तव्य, अनीयर् प्रत्यय होते हैं।
उदाहरण- एधनीयम् = एध् + अनीयर्,
शयनीयम् = शी + अनीयर्, गमनीयम् = गम् + अनीयर्

(C) यत् प्रत्यय- अचो यत् (3.1.97) अच् प्रत्याहार के वर्ण अन्त में हो ऐसे धातुओं से यत् प्रत्यय होता है।
उदाहरण- चेयम् = चि + यत्, पेयम् = पा + यत्, देयम् = दा + यत्

(D) ण्यत् प्रत्यय- ऋहलोर्ण्यत् (3.1.124) ऋवर्णान्त और हलन्त धातुओं से ण्यत् प्रत्यय होता है।
उदाहरण- कार्यम् = कृ + ण्यत्, हार्यम् = हृ + ण्यत्, धार्यम् = धृ + ण्यत्

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी भैमी व्याख्या (खण्ड-3) पेज-27

75. 'गौरी' में कौन-सा प्रत्यय है ?
(A) ङीप् (B) ङीष्
(C) टाप् (D) ति

व्याख्या-

- **ङीप् प्रत्यय-** वयसि प्रथमे (4.1.20)- प्रथम अवस्था अर्थात् कौमार अवस्था के सूचक शब्दों से स्त्रीत्व की विवक्षा में ङीप् प्रत्यय होता है। उदाहरण- कुमारी,किशोरी।
- **ङीष् प्रत्यय-** षिद्गौरादिभ्यश्च (4.1.41) जिस शब्द में षकार की इत् सञ्ज्ञा हो गई हो ऐसे शब्दों से और गौर आदि गणपठित शब्दों से स्त्रीत्व की विवक्षा में ङीष् प्रत्यय होता है।
  उदाहरण- गौरी,नर्तकी,गार्ग्यायणी।
- **टाप् प्रत्यय-** अजाद्यतष्टाप् (4.1.4) अज आदि गण में पढ़े गए शब्द अथवा ह्रस्व अकारान्त शब्दों से स्त्रीत्व की विवक्षा में टाप् प्रत्यय होता है।
  उदाहरण- अजा,अश्वा,एडका,चटका।
- **ति प्रत्यय-** युनस्तिः (4.1.77)- युवन् शब्द से स्त्रीत्व की विवक्षा में ति प्रत्यय होता है उदाहरण- युवतिः।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी भैमी व्याख्या (खण्ड-6)- पेज-24

76. 'सूर्या' में कौन-सा प्रत्यय है ?
(A) टाप् (B) चाप्
(C) ङीप् (D) ऊङ्

व्याख्या-

(A) **टाप् प्रत्यय-** अजाद्यतष्टाप् (4.1.4) अज आदि गण में पढ़े गए शब्द अथवा ह्रस्व अकारान्त शब्दों से स्त्रीत्व की विवक्षा में टाप् प्रत्यय होता है-
उदाहरण- बाला,मूषिका,गङ्गा,सर्वा।

(B) **चाप् प्रत्यय-** सूर्याद् देवतायां चाब्वाच्यः (वा0) सूर्य इस प्रातिपदिक से पुंयोग में देवता स्त्रीत्व वाच्य होने पर चाप् प्रत्यय होता है। **उदाहरण-** सूर्या

(C) **ङीप् प्रत्यय-** वयसि प्रथमे (4.1.20) प्रथम अवस्था अर्थात् कौमार अवस्था के सूचक शब्दों से स्त्रीत्व की विवक्षा में ङीप् प्रत्यय होता है। **उदाहरण-** कुमारी,किशोरी।

(D) **ऊङ् प्रत्यय-** ऊङुतः (4.1.66) जिसकी उपधा में अकार न हो ऐसे मनुष्यवाची उदन्त प्रातिपदिक शब्द से स्त्रीत्व की विवक्षा में ऊङ् प्रत्यय होता है।

उदाहरण- कुरूः

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी- आद्याप्रसाद मिश्र, पेज-132

77. श्यन्, शः तथा श्नुः प्राप्त होते हैं क्रमशः-

(A) दिवादि, तुदादि एवं स्वादि में

(B) तुदादि,जुहोत्यादि एवं दिवादि में

(C) अदादि, चुरादि एवं स्वादि में

(D) भ्वादि, दिवादि एवं तुदादि में

व्याख्या-

गण	धातु संख्या	विकिरण	विकिरण सूत्र
1. भ्वादिगण	1035	शप्	कर्तरि शप्
2. अदादिगण	72	-	
3. जुहोत्यादिगण	24	श्लुः	जुहोत्यादिभ्यः श्लुः
4. दिवादिगण	140	श्यन्	दिवादिभ्यः श्यन्
5. स्वादिगण	35	श्नुः	स्वादिभ्यः श्नुः
6. तुदादिगण	157	शः	तुदादिभ्यः शः
7. रुधादिगण	25	श्नम्	रुधादिभ्यः श्नम्
8. तनादिगण	10	उः	तनादिकृञ्भ्यः उः
9. क्र्यादिगण	61	श्ना	क्र्यादिभ्यः श्ना
10. चुरादिगण	411	णिच्	सत्यापपाशरूपवीणा तूलश्लोकसेनालोमत्वचवर्मवर्णचूर्ण चुरादिभ्योणिच्

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- रचनानुवादकौमुदी- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-142

78. 'वैनतेय' पद में किस प्रत्यय का विधान है?

(A) मयट् **(B) वतुप्**

(C) ढक् **(D) मतुप्**

व्याख्या-

(A) **मयट्-** मयड् वैतयोर्भाषायामभक्ष्याऽऽच्छादनयोः (4.3.140) भक्ष्य तथा आच्छादन अभिधान को छोड़कर विकार अथवा अवयव अर्थों में षष्ठ्यन्त समर्थ प्रातिपदिक से विकल्प से मयट् प्रत्यय होता है, लौकिक प्रयोग के विषय में।

उदाहरण- अश्ममयम्, भस्ममयम्, सुपर्णमयम्

(B) **वतुप्-** यत्तदेतेभ्यः परिणामे वतुप् (5.2.39) परिमाण अर्थ में विद्यमान यद्, एतद् इन प्रथमान्त प्रातिपदिकों से 'वह परिमाण है इसका' इस अर्थ में वतुप् प्रत्यय होता है।

उदाहरण- यावान्, तावान्, एतावान्

(C) **ढक्-** 'स्त्रीभ्यो ढक्' (4.1.120) अपत्य अर्थ में स्त्रीप्रत्ययान्त शब्दों से ढक् प्रत्यय होता है।

वैनतेयः (गरुण), कौन्तेयः (अर्जुन), राधेयः (कर्ण)

(D) **मतुप्-** रसादिभ्यश्च (5.2.95) 'यह है इसका', 'यह है इसमें' इन अर्थों में प्रथमा समर्थ रसादि प्रातिपदिकों से मतुप् प्रत्यय होता है। उदाहरण- रसवान् , रूपवान्

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका- बाबूराम सक्सेना, पेज-274

79. 'एडका' शब्द किस प्रत्यय के योग से बना है?

(A) टाप् **(B) चाप्**

(C) डाप् **(D) ङीष्**

व्याख्या-

(A) **टाप् प्रत्यय विधायक विधि सूत्र-** 'अजाद्यतष्टाप्' (4.1.4) अजादि गण में पढ़े गये शब्द अथवा ह्रस्व अकारान्त शब्दों से स्त्रीत्व की विवक्षा में टाप् प्रत्यय होता है।

उदाहरण- सर्वा, मेधा, एडका

(B) **चाप्-** 'सूर्याद् देवतायां चाब्वाच्यः' (वा.) सूर्य इस प्रातिपदिक से पुंयोग में देवता स्त्रीत्व वाच्य होने पर चाप् प्रत्यय होता है। यह सूत्र 'पुंयोगादाख्यायाम्' का अपवाद है। उदाहरण- सूर्या

(C) **ङीप् प्रत्यय विधायक विधिसूत्र- 'उगितश्च' (4.1.6)** जिसमें उक् अर्थात् उ, ऋ, ऌ, की इत्सञ्ज्ञा हो गई हो ऐसे प्रातिपदिकों से स्त्रीत्व की विवक्षा में ङीप् प्रत्यय होता है।

उदाहरण- भवती,भवन्ती,पचन्ती,दीव्यन्ती।

(D) **ङीष् प्रत्यय विधायक विधि सूत्र-**

'क्रीतात् करणपूर्वात्' (4.1.50) क्रीत शब्द जिस के अन्त में तथा करणवाचक जिस का पूर्वावयव हो उस अदन्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व की विवक्षा में 'ङीष्' प्रत्यय होता है- **उदाहरण-** वस्त्रक्रीती

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी भैमी व्याख्या (खण्ड-6) पेज-4

80. 'दाक्षी' में स्त्री प्रत्यय है-
(A) ङीष् **(B) ङीन्**
(C) टाप् **(D) ऊङ्**

व्याख्या-

(A) **'इतो मनुष्यजातेः' (4.1.65)** ङीष् प्रत्यय करने वाला सूत्र मनुष्यजाति वाचक ह्रस्व इकार प्रातिपदिक से परे ङीष् प्रत्यय हो जाता है स्त्रीत्व की विवक्षा में।
उदाहरण- दाक्षी- यहाँ 'दक्ष' प्रातिपादिक से 'तस्याऽपत्यम्' के अर्थ में 'अत् इञ्' सूत्र से तद्धित सञ्ज्ञक इञ् प्रत्यय होकर आदिवृद्धि एवं 'यस्येति च' द्वारा भसञ्ज्ञक अकार का लोप करने पर दाक्षि यह ह्रस्व-इकारान्त प्रातिपदिक निष्पन्न होता है।
अप्रत्ययान्त होने से 'गोत्रं च चरणै सह' के लक्षणानुसार यह जातिवाचक है। मनुष्य जाति का वाचक होने के कारण स्त्रीत्व की विवक्षा में 'इतो मनुष्यजातेः' सूत्र द्वारा ङीष् प्रत्यय होता है, भसञ्ज्ञक इकार का 'यस्येति च' से लोप करके विभक्ति कार्य करने पर दाक्षी प्रयोग सिद्ध होता है।
अतः विकल्प A सही है।

(B) **'शार्ङ्गरवाद्यञो ङीन्' (4.1.73)** ङीन् प्रत्यय करने वाला सूत्र शार्ङ्गरव आदि गणपठित प्रातिपदिक से तथा अञ् प्रत्यय का जो अकार तदन्त जातिवाचक प्रातिपदिक से स्त्रीत्व की विवक्षा में ङीन् प्रत्यय होता है।
उदाहरण- शार्ङ्गरवी,बैदी, ब्राह्मणी।

(C) **अजाद्यतष्टाप् (4.1.4)** टाप् प्रत्यय करने वाला सूत्र- अज आदि गण में पढ़े गये शब्द अथवा ह्रस्व अकारान्त शब्दों से स्त्रीत्व की विवक्षा में टाप् प्रत्यय होता है।
उदाहरण- अजा, एडका, अश्वा, चटका, मूषिका, बाला, होडा, मन्दा आदि।

(D) **पङ्गोश्च (4.1.68)** ऊङ् प्रत्यय विधायक विधिसूत्र - पङ्गु इस प्रातिपदिक से स्त्रीत्व की विवक्षा में ऊङ् प्रत्यय होता है। **उदाहरण-** पङ्गूः

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी (4.1.65)- गोविन्दाचार्य, पेज-1174

81. 'वयसि प्रथमे' सूत्र से विहित प्रत्यय है-
(A) ङीप् **(B) टाप्**
(C) ङीष् **(D) ङीन्**

व्याख्या-

(A) **वयसि प्रथमे (4.1.20)** प्रथम अवस्था अर्थात् कौमार अवस्था में सूचक शब्दों से स्त्रीत्व की विवक्षा में ङीप् प्रत्यय होता है। उदाहरण-कुमारी, किशोरी।
अतः विकल्प A सही है।

(B) **अजाद्यतष्टाप् (4.1.4)**- अज आदि गण में पढ़े गए शब्द अथवा ह्रस्व अकारान्त शब्दों से स्त्रीत्व की विवक्षा में टाप् प्रत्यय होता है।
उदाहरण- मूषिका, अजा, बाला आदि।

(C) **द्विगोः (4.1.21)** अदन्त द्विगुसमास से स्त्रीत्व की विवक्षा में ङीप् प्रत्यय होता है। उदाहरण- त्रिलोकी,

(D) **शार्ङ्गरवाद्यञो ङीन् (4.1.73)** शार्ङ्गरव आदि गणपठित शब्दों तथा अञ् प्रत्यय अन्त में हो ऐसे जातिवाचक प्रातिपदिकों से स्त्रीत्व की विवक्षा में ङीन् प्रत्यय होता है। उदाहरण- शार्ङ्गरवी, बैदी, ब्राह्मणी।

स्रोत- अष्टाध्यायी (4.1.20)- ईश्वरचन्द्र, पेज-427

82. अद् भक्षणे धातु का लुङ्लकार प्रथम पुरुष एकवचन का रूप है-
(A) अघसः **(B) अघसत्**
(C) आदत् **(D) अत्स्यति**

व्याख्या-
अद् (खाना) परस्मैपद, अनिट् , सकर्मक।

	लुङ् लकार		
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्र0पु0	अघसत्	अघसताम्	अघसन्
म0पु0	अघसः	अघसतम्	अघसत
उ0पु0	अघसम्	अघसाव	अघसाम
	लङ् लकार		
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्र0पु	आदत्	अत्ताम्	आदन्
म0पु0	आदः	आत्तम्	आत्त
उ0पु0	आदम्	आद्व	आद्म
	लृट् लकार		
प्र0पु0	अत्स्यति	अत्स्यतः	अत्स्यन्ति
म0पु0	अत्स्यसि	अत्स्यथः	अत्स्यथ
उ0पु0	अत्स्यामि	अत्स्यावः	अत्स्यामः
	अतः विकल्प B सही है।		

स्रोत- रचनानुवादकौमुदी- कपिलदेव द्विवेदी,पेज-160

83. 'असि' में लकार है-
(A) लट् **(B) लिट्**
(C) लङ् **(D) लुङ्**

व्याख्या-

अस् (होना) परस्मैपद, सेट् , अकर्मक,

A. लट् लकार			
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र0पु0	अस्ति	स्तः	सन्ति
म0पु0	**असि**	स्थः	स्थ
उ0पु0	अस्मि	स्वः	स्मः
B. लिट् लकार			
प्र0पु0	बभूव	बभूवतुः	बभूवुः
म0पु	बभूविथ	बभूवथुः	बभूव
उ0पु0	बभूव	बभूविव	बभूविम
C. लङ् लकार			
प्र0पु0	आसीत्	आस्ताम्	आसन्
म0पु0	आसीः	आस्तम्	आस्त
उ0पु0	आसम्	आस्व	आस्म
D. लुङ् लकार			
प्र0पु0	अभूत्	अभूताम्	अभूवन्
म0पु0	अभूः	अभूतम्	अभूत
उ0पु0	अभूवम्	अभूव	अभूम
अतः विकल्प A सही है।			

स्रोत- रचनानुवादकौमुदी- कपिलदेव द्विवेदी,पेज-160

84. 'अस् ' धातु का लृट् लकार प्रथम पुरुष एकवचन का रूप होगा-
(A) भविष्यति (B) असि
(C) अस्मि (D) सन्ति

व्याख्या-

अस् धातु (होना), सेट्, अकर्मक, परस्मैपद

लृट् लकार			
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र0पु0	**भविष्यति**	भविष्यतः	भविष्यन्ति
म0पु0	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उ0पु0	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः
लट् लकार			
प्र0पु0	अस्ति	स्तः	सन्ति
म0पु0	असि	स्थः	स्थ
उ0पु0	अस्मि	स्वः	स्मः
अतः विकल्प A सही है।			

स्रोत- रचनानुवादकौमुदी- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-160

85. निम्नलिखित में शुद्ध वाक्य है-
(A) मया चन्द्रः पश्यति
(B) मया चन्द्रः पश्यते
(C) मया चन्द्रः दृश्यते
(D) मया चन्द्रः पश्यामि

व्याख्या-

* "मया चन्द्रः दृश्यते" कर्मवाच्य का वाक्य है।
* कर्मवाच्य में कर्म उक्त होने के कारण क्रिया कर्म के अनुसार होती है तथा कर्त्ता के अनुक्त होने से 'कर्तृकरणयोस्तृतीया ' सूत्र से कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है।
* उपर्युक्त वाक्य में 'दृश्' धातु में यक् प्रत्यय लगकर आत्मनेपद रूप दृश्यते बना है।

अतः विकल्प 'C' सही है।

स्रोत- वस्तुनिष्ठ संस्कृतव्याकरणम्- सर्वज्ञभूषण, पेज-161

86. 'तया भूयते' का कर्तृवाच्य प्रयोग है-
(A) सा भवति (B) सः भवति
(C) सः भविष्यति (D) सा भविष्यति

व्याख्या-

'तया भूयते' इस भाववाच्य का कर्तृवाच्य होगा- 'सा भवति'

* कर्तृवाच्य- इसमें कर्त्ता मुख्य होता है। कर्त्ता के अनुसार ही क्रिया का रूप होता है। कर्तृवाच्य में कर्त्ता में प्रथमा, कर्म में द्वितीया और क्रिया कर्त्ता के अनुसार होती है।

कर्तृवाच्य	भाववाच्य
* सा भवति	तया भूयते
* सः भवति	तेन भूयते
* सः भविष्यति	तेन भविष्यते
* सा भविष्यति	तया भविष्यते
अतः विकल्प A सही है।	

स्रोत- रचनानुवादकौमुदी- कपिलदेव द्विवेदी,पेज-115

87. कर्मवाच्य सम्भव है-
(A) सकर्मक अकर्मक में
(B) केवल सकर्मक में
(C) केवल अकर्मक में
(D) उपर्युक्त सभी में

व्याख्या-

कर्मवाच्य के नियम-

* केवल सकर्मक धातुओं से ही कर्मवाच्य होता है, इसमें कर्म की प्रधानता होती है।
* कर्म के अनुसार ही क्रिया के लिङ्ग, विभक्ति और वचन होते हैं। कर्मवाच्य के कर्म में प्रथमा होती है, कर्त्ता में तृतीया होती है, कर्म के अनुसार क्रिया का प्रयोग होता है।
* कर्मवाच्य में लट् आदि में धातु के अन्त में यक् (य) प्रत्यय लगता है। **अतः विकल्प B है।**

स्रोत- संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका- बाबूराम सक्सेना, पेज-441

88. ''मैं जाना चाहता हूँ'' का संस्कृत रूपान्तर है -
(A) अहम् आजिगमिषामि
(B) अहं जिगमिषामि
(C) अहं गमिष्यामि
(D) अहं गन्तुं नेच्छामि

व्याख्या-

* 'मैं जाना चाहता हूँ' इस वाक्य का तुमुन् प्रत्यय का प्रयोग करके अनुवाद होगा-
अहं गन्तुम् इच्छामि। इसी वाक्य का 'सन्' प्रत्ययान्त अनुवाद होगा।
अहं जिगमिषामि। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका- बाबूराम सक्सेना, पेज-460

89. ''क्या जल्दी है? रेलगाड़ी के चलने में देर है। घबराइए नहीं।'' इस वाक्य का सही संस्कृत रूपान्तर है-
(A) का त्वरा। रेलयानं न चलति। व्याकुली मा भूः।
(B) का त्वरा। चिरेण प्रयास्यति रेलयानम्। मा स्म व्याकुली भूः।
(C) का शीघ्रता। रेलयानमद्य न चलिष्यति। मा स्म व्याकुलताम्।
(D) शीघ्रता का। अचिरं प्रयास्यति रेलयानम्। मा स्म व्याकुली भूः।

व्याख्या-

* का त्वरा। चिरेण प्रयास्यति रेलयानम्। मा स्म व्याकुली भूः। इस वाक्य में त्वरा का अर्थ शीघ्रता है, चिरेण अव्यय का अर्थ है देर से, प्रयास्यति 'या' धातु लृट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन है। 'मा स्म व्याकुली भूः' में स्म के प्रयोग के कारण भू धातु लुङ् लकार मध्यम पुरुष एकवचन में अभूः में अट् का आगम नहीं हुआ है।
अतः विकल्प 'B' सही है।

स्रोत- संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका- बाबूराम सक्सेना, पेज-460

90. ध्वनिपरिवर्तन का सर्वप्रमुख कारण है-
(A) प्रयत्न लाघव (B) शीघ्रभाषण
(C) बलाघात (D) कृत्रिमता

व्याख्या-

(A) **प्रयत्नलाघव या मुखसुख-** प्रयत्न लाघव को उच्चारण सुविधा या उच्चारण-सौकर्य भी कहते हैं। यह ध्वनि परिवर्तन का सबसे प्रमुख कारण है मनुष्य स्वभाव से ही कम प्रयत्न करके अधिक लाभ उठाना चाहता है। मुखसुख के लिए कठिन शब्दों को सरल बनाया जाता है- जैसे- सत्य का सच, कर्म का काम, प्रचार का परचार, चक्र का चक्कर, हास्पिटल का अस्पताल आदि।

(B) **शीघ्रभाषण-** शीघ्र बोलने के कारण भी ध्वनि में परिवर्तन हो जाता है जैसे- किसने से किन्ने, अब ही से अभी भातृजाया से भौजी, पद्मदत्त दादा से पद्दा आदि।

(C) **बलाघात-** जिस ध्वनि पर बल दिया जाता है वह ध्वनि शेष रहती है, अन्य निर्बल ध्वनियाँ क्षीण हो जाती हैं।

(D) **कृत्रिमता-** आत्माभिव्यक्ति के लिए कुछ व्यक्ति शब्दों को तोड़-मरोड़कर बोलते हैं। इसका स्थायीभाव नहीं होता। जैसे- भाई से भइया, भ्राता। स्पष्ट से अस्पष्ट आदि।

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-227

91. ग्रिम, ग्रासमैन एवं वर्नर सम्बन्धित हैं-
(A) भौतिक नियमों से
(B) जैविक नियमों से
(C) व्याकरण नियमों से
(D) ध्वनि नियमों से

व्याख्या-

* ग्रिम, ग्रासमान और वर्नर नियम मूल भारोपीय भाषा से सम्बद्ध है इन नियमों में मूल भारोपीय भाषा की ध्वनियों के परिवर्तन का वर्णन है।

* **ग्रिम नियम-**

क् त् प्
(अघोष अल्पप्राण)

(घोष अल्पप्राण)
ग् द् ब्

ख् (ह्) थ् फ्
घ्, ध्, भ
(महाप्राण)
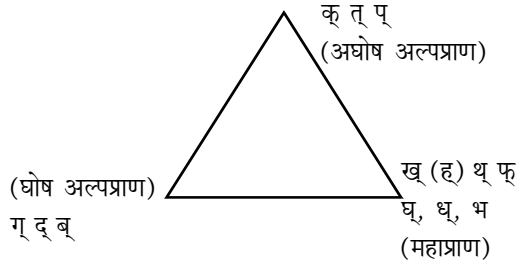
* ग्रासमान नियम- संस्कृत और ग्रीक भाषाओं में दो अव्यवहित सोष्म ध्वनियों में से सामान्यतया प्रथम ऊष्म ध्वनि (ह ध्वनि) निकल जाती है जहाँ पर द्वितीय वर्ण से ऊष्म ध्वनि निकलती है वहाँ पर प्रथम वर्ण में ऊष्म ध्वनि आ जाती है। जैसे- भभार से बभार

* **वर्नर नियम-**
मूल भारोपीय भाषा शब्दों के क्, त्, प् को जर्मनिक भाषाओं में ह्, थ्, फ्, तभी होता है जब मूल भाषा में अव्यवहित पूर्व कोई उदात्त स्वर होता है यदि उदात्त स्वर क्, त्, प् के बाद हो तो उनके स्थान पर क्रमश ग्, द्, ब् होते हैं। **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-241

92. भाषाओं का आकृतिमूलक वर्गीकरण विषयक कौन-सा विकल्प सही है?
(A) योगात्मक, वियोगात्मक, संयोगात्मक, एकल
(B) अयोगात्मक, अश्लिष्ट, श्लिष्ट, प्रश्लिष्ट
(C) श्लिष्ट, अश्लिष्ट, प्रश्लिष्ट, विश्लिष्ट
(D) चीनी, भारोपीय, द्रविड, लैटिन

व्याख्या-

आकृतिमूलक वर्गीकरण को निम्नलिखित वंशवृक्ष के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है-

भाषा
- अयोगात्मक (चीनी, तिब्बती, बर्मी)
- योगात्मक
  - अश्लिष्ट
    - पूर्वयोगात्मक — काफिर
    - मध्ययोगात्मक — सन्थाली
    - अन्त्ययोगात्मक — तुर्की
    - पूर्वान्तयोगात्मक — मफोर
  - **श्लिष्ट**
    - अन्तर्मुखी
      - संयोगात्मक (अरबी)
      - वियोगात्मक (हिब्रू)
    - बहिर्मुखी
      - संयोग0 (संस्कृत)
      - वियोगा0 (हिन्दी)
  - प्रश्लिष्ट
    - पूर्णप्रश्लिष्ट (चेरोफी)
    - आंशिक प्रश्लिष्ट — बास्क
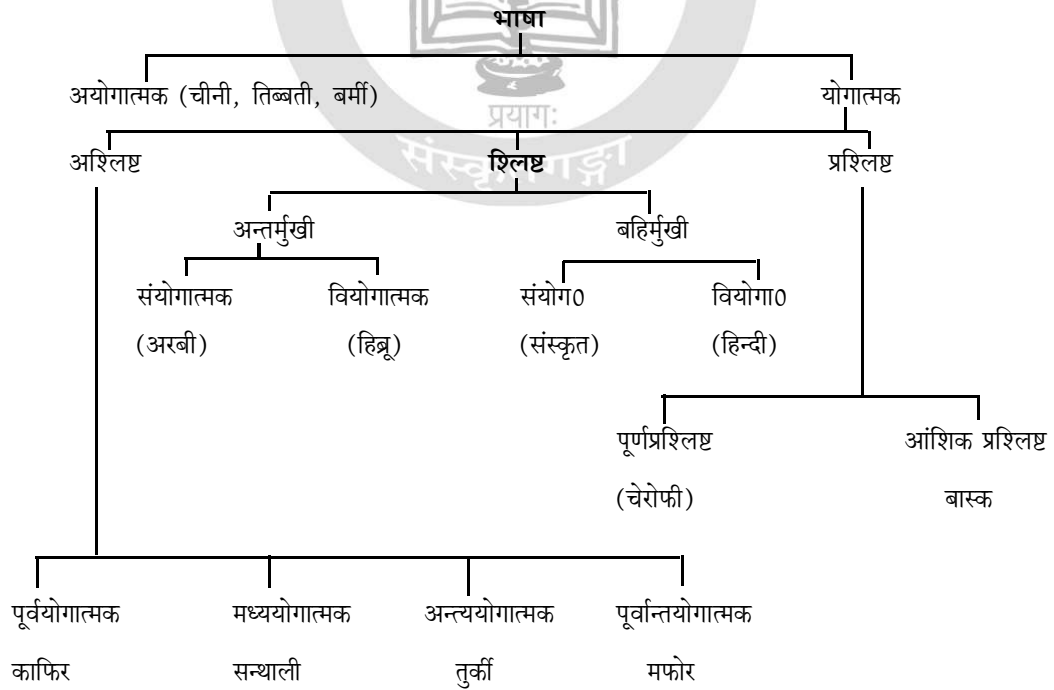
अतः विकल्प 'B' सही है।
स्रोत- भाषाविज्ञान- कर्ण सिंह, पेज-56

93. तुखारी (तोखारी) शाखा का पता कब लगा?
(A) इक्कीसवीं शताब्दी में
(B) बीसवीं शताब्दी में
(C) अट्ठारहवीं शताब्दी में
(D) उपर्युक्त में से किसी में भी नहीं

व्याख्या-

* फ्रेंच और जर्मन् विद्वानों ने 20 वीं सदी के प्रारम्भ में मध्य एशिया के तुर्फान प्रदेश भारतीय लिपि (ब्राह्मी और खरोष्ठी) में लिखे अनेक ग्रन्थ और पत्र प्राप्त किये। इनके अध्ययन के पश्चात् प्रो0 सीग ने यह निष्कर्ष निकाला कि यह भारोपीय परिवार में केन्टुम् वर्ग की भाषा है।
अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-395

94. 'उष्ट्र का ऊँट' ध्वनि परिवर्तन निम्नलिखित में से कौन-सा प्रकार है?
(A) विपर्यय **(B) लोप**
(C) आगम **(D) अनुनासिकता**

व्याख्या-

(A) **वर्ण विपर्यय-** इसको विपर्यय, वर्ण प्रत्यय, स्थान विपर्यय भी कहते हैं। कभी-कभी किसी शब्द में आने वाले स्वर या व्यञ्जन का स्थान असावधानी के कारण या जान बूझकर बदल देते हैं।
उदाहरण- हिंस् से सिंह,स्नान से नहाना,लखनऊ से नखलऊ।

(B) **वर्ण लोप-** मुखसुख, प्रयत्नलाघव आदि के कारण कुछ ध्वनियों का लोप हो जाता है। ये लोप तीन प्रकार के होते हैं- स्वर लोप, व्यञ्जन लोप, अक्षर लोप
उदाहरण- आभ्यन्तर से भीतर (आदि स्वर लोप)
स्थान से थान (आदि व्यञ्जन लोप)
अनाज से नाज (आदि स्वरलोप)

(C) **आगम-** उच्चारण की सुविधा के लिये शब्दों के आदि, मध्य या अन्त में कुछ ध्वनियाँ जोड़ दी जाती है इन्हें आगम कहते हैं आगम के तीन भेद हैं- आदि स्वरागम या प्रागुपजन, मध्य स्वरागम या स्वरभक्ति, अन्त्य स्वरागम (अक्षर आगम)
स्त्री से इस्त्री, स्नान से अस्नान, ओष्ठ से होंठ

(D) **अनुनासिकता-** मुखसुख के लिये अनुनासिकरहित शब्दों को भी अनुनासिकयुक्त कर देते हैं यह अनुनासिकता दो प्रकार की है- सकारण तथा अकारण।
उदाहरण- उष्ट्र-ऊँट (अकारण अनुनासिकता), अक्षि-आँख (अकारण अनुनासिकता), चन्द्र-चाँद (सकारण अनुनासिकता), अन्धकार से अन्धेरा (सकारण अनुनासिकता)
अतः विकल्प 'D' सही है।

स्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-237

95. 'अवेस्ता' भाषा है-
(A) ईरानी **(B) भारतीय**
(C) ग्रीक **(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं**

व्याख्या-

(A) भारत की प्राचीनतम भाषा संस्कृत है। इसका भी प्राचीनतम रूप वैदिक संस्कृत है। ईरान की प्राचीन भाषा अवेस्ता है। ईरानियों के धर्मग्रन्थ का नाम अवेस्ता है इनकी भाषा भी अवेस्ता है। 'अवेस्ता' संस्कृत 'अवस्था' का अपभ्रंश है इसका अर्थ है व्यवस्थित, परिनिष्ठित रूप।अवेस्ता शब्द धर्मग्रन्थ का वाचक है। **अतः विकल्प A सही है।**

(B) भारतीय आर्यभाषाओं को काल की दृष्टि से तीन भागों में बाँटा गया है-

(i) प्राचीन भारतीय आर्यभाषायें-2500ई॰पू॰से 500ई॰पू॰ तक

(ii) मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाएँ- 500 ई॰ पू॰ से 1000 ई.पू. तक

(iii) आधुनिक भारतीय आर्यभाषाएँ- 1000 ई.पू. से वर्तमान समय तक

(C) ग्रीस में सामान्य रूप से प्रचलित जनभाषा को **कोईने** कहते थे। साहित्यिक ग्रीक का आधार **एट्टिक** भाषा थी। यही ग्रीस की जनभाषा थी।

स्रोत-भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र- कपिलदेव द्विवेदी,पेज-416

96. भाषा के 'धातु सिद्धान्त' के प्रतिपादक हैं-
(A) रूसो **(B) मैक्समूलर**
(C) भर्तृहरि **(D) जी रेवेज**

व्याख्या-

	विद्वान्	सिद्धान्त
(A)	रूसो	संकेत सिद्धान्त
(B)	मैक्समूलर	धातु सिद्धान्त को प्रो0 हेस, डॉ॰ स्टाइथाल एवं मैक्समूलर बाद में मैक्सूलर ने इसका खण्डन कर दिया।
(C)	भर्तृहरि	प्रतिभा सिद्धान्त
(D)	जी॰ रेवेज	सम्पर्क सिद्धान्त

भाषा विषयक अन्य विद्वानों के सिद्धान्त-

डार्विन	आवेग सिद्धान्त
डार्विन, स्पेन्सर येस्पर्सन	सङ्गीत सिद्धान्त
न्वारे	श्रमध्वनि सिद्धान्त

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- भाषाविज्ञान- कर्ण सिंह, पेज-30-31

97. यास्क का सम्बन्ध है-
(A) निरुक्त से (B) प्रातिशाख्य से
(C) महाभाष्य से (C) छन्द से

व्याख्या-

A. निरुक्त - यास्क से
B. प्रातिशाख्य - वेदों से
C. महाभाष्य - पतञ्जलि से
D. छन्द - पिङ्गल से

विशेष- निरुक्त निघण्टु ग्रन्थ पर लिखी गयी टीका है, जिसमें परिशिष्ट के दो अध्यायों को जोड़कर कुल चौदह अध्याय हैं परिशिष्ट को छोड़कर बारह अध्याय हैं। निरुक्त को वेद का कान कहा जाता है।

* प्रातिशाख्य शब्द का अर्थ है प्रत्येक शाखा से सम्बद्ध व्याकरण आदि का बोध कराने वाला ग्रन्थ। विभिन्न प्रातिशाख्य इस प्रकार हैं-

ऋक् प्रातिशाख्य- इसके रचयिता शौनक हैं इसमे (18) पटल (अध्याय) हैं।

वाजसनेयि प्रातिशाख्य- इसके रचयिता कात्यायन हैं इसमें आठ अध्याय हैं।

तैत्तिरीय प्रातिशाख्य- कृष्णयजुर्वेद से सम्बन्धित हैं इसमें (24) अध्याय हैं।

* महर्षि पतञ्जलि द्वारा रचित महाभाष्य व्याकरण से सम्बद्ध ग्रन्थ है। महर्षि पतञ्जलि ने पाणिनि के सूत्रों पर भाष्य लिखा जिसमें 84 आह्निक हैं।

* छन्द को वेद का पैर कहा जाता है छन्दसूत्र के प्रणेता आचार्य पिङ्गल हैं छन्द के दो भेद होते हैं वार्णिक तथा मात्रिक छन्द। **अतः विकल्प A सही है।**

स्रोत- हिन्दी निरुक्त- कपिलदेव द्विवेदी, भू.पेज-23

भारतीय दर्शन

98. रिक्तस्थानों की पूर्ति के लिए निम्नांकित चार विकल्पों में से कौन सा विकल्प उपयुक्त है?
(A) ....लघु प्रकाशकम् (B) गुरू वरणकम् .....
(C) .....अर्थतो वृत्तिः (D) उपष्टभकं चलञ्च....
(A) प्रदीपवत्, सत्वम्, तमः, रजः
(B) सत्त्वम्, तमः, प्रदीपवत्, रजः
(C) तमः, रजः सत्वम्, प्रदीपवत्
(D) रजः, तमः, सत्वम् , प्रदीपवत्

व्याख्या-

आचार्य ईश्वरकृष्ण सांख्यकारिका में तीनों गुणों की विशेषताओं का वर्णन करते हुए कहते हैं कि-

सत्त्वं लघु प्रकाशकमिष्टमुपष्टम्भकं चलं च रजः।
गुरु वरणकमेव तमः प्रदीपवच्चार्थतो वृत्तिः॥

(सां.का.- 13)

* सत्त्वगुण हल्का और प्रकाशित करने वाला होता है।
* रजोगुण प्रेरक और क्रियाशील होता है।
* तमोगुण भारी और नियामक माना गया है। ये तीनों गुण परस्पर मिलकर दीपक के समान व्यवहार किया करते हैं।

अतः विकल्प 'B' सही है।

स्रोत- सांख्यकारिका (का.-13)- राकेश शास्त्री, पेज-45

99. सत्त्व गुण होता है-
(A) भारी (B) चञ्चल
(C) लघुप्रकाशक (D) उपष्टम्भक

व्याख्या-

गुणों का विवेचन करते हुये आचार्य ईश्वरकृष्ण सांख्यकारिका में कहते हैं -

प्रीत्यप्रीतिविषादात्मकाः प्रकाशप्रवृत्तिनियमार्थाः।
अन्योन्याभिभवाश्रयजननमिथुनवृत्तयश्च गुणाः।

(सां. का.- 12)

सत्त्व, रजस्, तमस् ये तीनों गुण क्रमशः सुखात्मक , दुःखात्मक तथा मोहात्मक स्वरूप वाले होते हैं प्रकाशन, प्रवर्तन, और नियमन इनके कार्य हैं।

तथा

सत्त्वं लघु प्रकाशकमिष्टमुपष्टम्भकं चलं च रजः।
गुरु वरणकमेव तमः प्रदीपवच्चार्थतो वृत्तिः॥

(सां. का.- 13)

सत्त्वगुण हल्का और प्रकाशित करने वाला, रजोगुण प्रेरक और क्रियाशील तथा तमोगुण भारी और नियामक माना गया है। ये गुण पुरुष के प्रयोजन के अनुसार दीपक के समान व्यवहार करते हैं।

* सत्त्वगुण- सुखात्मक, प्रकाशक, लघु
* रजस् गुण- दुःखात्मक, प्रवर्तक (क्रियाशील), प्रेरक
* तमस् गुण- मोहात्मक, नियामक, भारी
* इन तीनों गुणों का स्वभाव एक दूसरे को दबाना, तिरस्कृत करना, एक दूसरे का सहयोग लेना जिससे ये गुण महत् आदि तत्त्वों को उत्पन्न करते हैं।
* सत्त्व, रजस्, तमस् को सभी भारतीय दर्शनों ने गुण की सञ्ज्ञा प्रदान की जबकि वैशेषिक इन्हें गुण न मानकर द्रव्य की सञ्ज्ञा प्रदान करता है।
* भाष्यकारों ने सत्त्वगुण का उदाहरण सुन्दर स्त्री, रजस् का योद्धा तथा तमस् का मेघ उदाहरण दिया है।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- सांख्यकारिका (का.-13)- राकेश शास्त्री, पेज-45

100. सांख्यदर्शन के अनुसार सृष्टि का निर्माण कितने तत्त्वों से हुआ है?

(A) 25 तत्त्वों से **(B) 23 तत्त्वों से**
(C) 24 तत्त्वों से **(D) 5 तत्त्वों से**

व्याख्या-

(A) ईश्वरकृष्ण सांख्यकारिका में सृष्टिनिर्माण की प्रक्रिया का उल्लेख करते हुये कहते हैं कि-

सर्वप्रथम मूलप्रकृति से पुरुष का प्रकाश पड़ने पर महत् की उत्पत्ति होती है। सांख्य का पुरुष तेजोरूप है, इसी का दूसरा नाम 'ज्ञ' है।

प्रकृतेर्महाँस्ततोऽहङ्कारस्तस्माद् गणश्च षोडशकः।
तस्मादपि षोडशकात् पञ्चभ्यः पञ्चभूतानि॥

(सां. का.- 22)

मूलप्रकृति से महत्, महत् से अहङ्कार, उस अहङ्कार से सोलह पदार्थों का समूह तथा उसी सोलह के समूह में से पञ्चतन्मात्राओं से पञ्चमहाभूत उत्पन्न होता है।

मूल प्रकृति
पुरुष का प्रकाश ∴∴∴∴ |
महत् (बुद्धि)
|
अहङ्कार
|
पञ्चतन्मात्रा+ एकादश इन्द्रिय
|
पञ्चमहाभूत
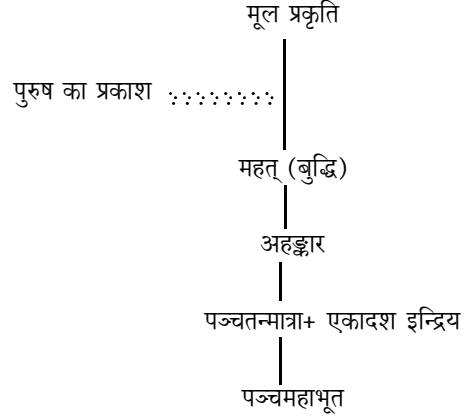
अतः मूलप्रकृति, पुरुष, महत् , अहङ्कार, पञ्चतन्मात्रा, पञ्चमहाभूत, एकादश इन्द्रिय ये पच्चीस तत्त्व हैं।

अतः विकल्प A सही है।

(B) सांख्यशास्त्र में व्यक्त पदार्थ की संख्या 23 है- महत्, अहङ्कार, एकादश इन्द्रियाँ, पञ्चतन्मात्रा, पञ्चमहाभूत।

(C) व्यक्त तथा अव्यक्त को मिलाकर सांख्य में 24 तत्त्व होते हैं।

(D) सांख्यशास्त्र में पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच कर्मेन्द्रियाँ, पञ्च तन्मात्रा, पञ्च महाभूत हैं।
पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ- श्रोत्र, त्वक्, चक्षु, रसना, घ्राण।
पाँच कर्मेन्द्रियाँ- वाक्, पाणि, पाद, पायु, उपस्थ।
पाँच तन्मात्रा- शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध।
पाँच महाभूत- आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथिवी।

स्रोत- सांख्यकारिका (का.-03)- राकेश शास्त्री, पेज-8

101. निम्नांकित तालिका- (1) में सांख्यकारिका के अनुसार कुछ सम्प्रत्यय एवं तालिका- (2) में उनके भेद अंकित हैं। उनकी सहायता से सही सुमेलित विकल्प चुनें-

तालिका-(1)	तालिका-(2)
क- प्रकृतिः	(i) अनेकः
ख- प्रकृति-विकृतिः	(ii) षोडश
ग- विकृतिः	(iii) एकः
घ- न प्रकृतिः न विकृतिः	(iv) सप्त

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
A.	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
B.	(ii)	(iii)	(iv)	(i)
C.	(iii)	(iv)	(ii)	(i)
D.	(iv)	(iii)	(ii)	(i)

आचार्य ईश्वरकृष्ण सांख्यकारिका में पच्चीस तत्त्वों का वर्णन करते हुए कहते हैं-

मूल प्रकृतिरविकृतिर्महादाद्याः प्रकृतिविकृतयः सप्त।
षोडशकस्तु विकारो न प्रकृतिर्न विकृतिः पुरुषः॥

(सां.का.-3)

* मूलप्रकृति किसी का विकार नहीं है जिसकी संख्या एक है।
* महत् आदि सात तत्त्व कारण और विकार्य (कार्य) दोनों है। 'प्रकृतिविकृतयः सप्त'
* सोलह पदार्थों का समूह केवल कार्य अर्थात् विकार है।
* पुरुष न तो कार्य है और न कारण इसकी संख्या अनेक है (पुरुषबहुत्वं सिद्धं) **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- सांख्यकारिका (का.3)- राकेश शास्त्री, पेज-8

102. इनमें से कौन-सा हेत्वाभास नहीं है?
(A) आश्रयासिद्ध (B) बाधित
(C) अनैकान्तिक (D) विपक्षव्यावृत्ति

व्याख्या-

आचार्य केशवमिश्र हेत्वाभास की चर्चा अनुमान प्रमाण के अन्तर्गत करते हुये कहते हैं कि- असद् हेतु को हेत्वाभास कहते हैं वह वस्तुतः होता नहीं है,किन्तु होने के समान भासित होता है।

'असिद्ध-विरुद्ध-अनैकान्तिक-प्रकरणसम-कालात्ययापदिष्टभेदात् पञ्चैव।' अर्थात् असिद्ध, विरुद्ध, अनैकान्तिक, प्रकरणसम, कालात्ययापदिष्ट ये पाँच हेत्वाभास हैं।

* **असिद्ध हेत्वाभास-** 'तत्र लिङ्गत्वेनानिश्चितो हेतुरसिद्धः।' उसमें लिङ्ग के रूप में निश्चित न होने वाला हेतु असिद्ध हेत्वाभास कहलाता है। असिद्ध हेत्वाभास के तीन भेद हैं- आश्रयासिद्ध, स्वरूपासिद्ध, व्याप्यात्वासिद्ध।
उदाहरण- 'गगनारविन्दं सुरभि अरविन्दत्वात् सरोजारविन्दवत्।
* **विरुद्ध हेत्वाभास-**'साध्यविपर्ययव्याप्तो हेतुर्विरुद्धः।' साध्य के अभाव से व्याप्त हेतु विरुद्ध हेत्वाभास कहलाता है। **उदाहरण-** शब्दो नित्यः कृतकत्वादात्मवत्।
* **अनैकान्तिक हेत्वाभास-**'सव्यभिचारोऽनैकान्तिकः' सव्यभिचार हेतु अनैकान्तिक हेत्वाभास कहलाता है। वह दो प्रकार का होता है-
साधारण अनैकान्तिक और असाधारण अनैकान्तिक।
उदाहरण- शब्दो नित्यः प्रमेयत्वात् व्योमवत्।
* **प्रकरणसम हेत्वाभास-** 'प्रकरणसमस्तु स एव यस्य हेतोः साध्यविपरीतसाधकं हेत्वन्तरं विद्यते।' जिस हेतु के साध्य के विपरीत अर्थ का साधक दूसरा हेतु विद्यमान होता है।
उदाहरण- शब्दोऽनित्यो नित्यधर्मरहितत्वात्।
* कालात्ययापदिष्ट हेत्वाभास- पक्षे प्रमाणान्तरावधृत साध्याभावो हेतुर्बाधितविषयः कालात्ययापदिष्ट इति च उच्यते। जिसके साध्य का अभाव अन्य प्रमाण से निश्चित कर दिया जाता है वह हेतु बाधितविषय तथा कालात्ययापदिष्ट कहलाता है। उदाहरण - अग्निरनुष्णः कृतकत्वाज्जलवत्।

अतः विकल्प D सही है।

क्योंकि विपक्ष व्यावृत्ति हेत्वाभास के अन्तर्गत नहीं है।

स्रोत- तर्कभाषा- श्रीनिवास शास्त्री, पेज-109

103. पञ्चावयव वाक्य का प्रयोग होता है-
(A) स्वार्थानुमान में
(B) परार्थानुमान में
(C) सभी अनुमानों में
(D) उपर्युक्त में से किसी में भी नहीं

व्याख्या-

आचार्य केशवमिश्र तर्कभाषा में अनुमान प्रमाण के दो भेद करते हैं- स्वार्थानुमान, परार्थानुमान। परार्थानुमान के पाँच अवयव बताते हुए कहते हैं कि-

1. **प्रतिज्ञा-** पर्वतोऽग्निमान्
2. **हेतु-** धूमवत्त्वात्
3. **उदाहरण-** यो यो धूमवान् स सोऽग्निमान्, यथा- महानसः
4. **उपनय-** तथा चायं
5. **निगमन-** तस्मात्तथा

इसप्रकार परार्थानुमान में पाँच अवयवों का प्रयोग किया गया है।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- तर्कभाषा- श्रीनिवास शास्त्री, पेज-92

104. नीचे दो पृथक् तालिकायें दी गयी हैं, इनकी सहायता से सही सुमेलित विकल्प चुनें-

तालिका - I	तालिका- II
क- असाधारणधर्मवचनम्	(i) करणम्
ख- साधकतमम्	(ii) समवायिकारणम्
ग- अनन्यथासिद्धपश्चाद्भावित्वम्	(iii) कार्यत्वम्
घ- यत्समवेतं कार्यमुत्पद्यते	(iv) लक्षणम्

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
A	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
B	(iv)	(i)	(iii)	(ii)
C	(iv)	(ii)	(iii)	(i)
D	(i)	(iii)	(iv)	(ii)

व्याख्या-
आचार्य केशवमिश्र तर्कभाषा में 'लक्षण' का लक्षण करते हुये कहते हैं कि- 'लक्षणन्त्वसाधारणधर्मवचनम्'
अर्थात् असाधारण धर्म का कथन लक्षण कहा जाता है।
उदाहरण- 'गोः सास्नादिमत्त्वम्' गलकम्बल आदि वाली होना गौ का लक्षण है।

(B) आचार्य केशवमिश्र करण का लक्षण करते हुये कहते हैं- 'साधकतमं करणम्' साधकतम को करण कहा जाता है।

(C) आचार्य केशवमिश्र कार्य के सन्दर्भ में उसका लक्षण करते हैं- 'अनन्यथासिद्धनियतपश्चाद्भावित्वं कार्यत्वम्' अनन्यथासिद्ध न होकर नियतरूप से कारण के पश्चात् होना कार्य का स्वरूप है।

(D) 'यत्समवेतं कार्यसमुत्पद्यते तत्समवायिकारणम्।' जिसमें समवेत होकर कार्य उत्पन्न होता है वह समवायिकारण है।
उदाहरण- तन्तु पट का समवायिकारण है।
उपर्युक्त विकल्पों में विकल्प B सही है।

स्रोत- तर्कभाषा- श्रीनिवास शास्त्री, पेज-7,17,20,33

105. निम्नांकित तालिका- (1) में तर्कभाषा के अनुसार कुछ प्रत्यय एवं तालिका- (2) में उनके भेद अंकित है। उनकी सहायता से सही सुमेलित विकल्प चुनें

तालिका-(A)	तालिका-(B)
क- प्रमेय	(i) 3
ख- अवयव	(ii) 16
ग- पदार्थ	(iii) 5
घ- कारण	(iv) 12

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
A	(iv)	(iii)	(ii)	(i)
B	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
C	(iii)	(iv)	(ii)	(i)
D	(iv)	(ii)	(iii)	(i)

व्याख्या-
(A) केशवमिश्र तर्कभाषा में प्रमेय का निरूपण करते हुये कहते हैं-
'आत्मशरीरेन्द्रियार्थबुद्धिमनः प्रवृत्तिदोषप्रेत्यभावफलदुःखापवर्गास्तु प्रमेयम्' अर्थात् आत्मा, शरीर, इन्द्रिय, अर्थ,बुद्धि,मन,प्रवृत्ति,दोष,प्रेत्याभाव,फल,दुःख तथा अपवर्ग ये बारह प्रमेय पदार्थ हैं।

(B) केशवमिश्र अनुमान प्रमाण के सम्बन्ध में पाँच अवयवों की चर्चा करते हैं प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय, निगमन।

(C) आचार्य केशवमिश्र तर्कभाषा में षोडश (सोलह) पदार्थों का वर्णन करते हैं-
प्रमाण, प्रमेय, संशय, प्रयोजन, दृष्टान्त, सिद्धान्त, अवयव, तर्क, निर्णय, वाद, जल्प, वितण्डा, हेत्वाभास छल, जाति, निग्रहस्थान ये सोलह पदार्थ हैं।

(D) आचार्य केशवमिश्र तर्कभाषा में कारण के तीन भेद बताये गये हैं- समवायिकारण, असमवायिकारण, निमित्तकारण।
प्रमेय-12, अवयव- 5, पदार्थ-16, कारण-3
अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- तर्कभाषा- श्रीनिवास शास्त्री, पेज-24,92,267,175

106. वेदान्तदर्शन के मत में सूक्ष्मशरीर का निर्माण कितने तत्त्वों से हुआ है?
(A) 20 **(B) 18**
(C) 17 **(D) 15**

व्याख्या-
सदानन्द योगीन्द्र वेदान्तसार में सूक्ष्मशरीर का लक्षण करते हुए कहते हैं कि- 'सूक्ष्मशरीराणि सप्तदशावयवानि लिङ्गशरीराणि' अर्थात् सूक्ष्मशरीर का निर्माण सत्रह अवयवों से होता है, इसे ही लिङ्गशरीर कहते हैं।

- ➢ सत्रह अवयव हैं- पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच कर्मेन्द्रियाँ, पञ्च वायु, बुद्धि और मन।
- ➢ पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ- श्रोत्र, त्वक्, चक्षु, जिह्वा, घ्राण।
- ➢ पाँच कर्मेन्द्रियाँ - वाक्, पाणि, पाद, पायु, उपस्थ।
- ➢ पाँच वायु- प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान ।
- ➢ ईश्वरकृष्ण सांख्यकारिका में सूक्ष्मशरीर का लक्षण करते हुये कहते हैं कि-

पूर्वोत्पन्नमसक्तं नियतं महदादिसूक्ष्मपर्यन्तम्।
संसरति निरुपभोगं भावैरधिवासितं लिङ्गम्॥
(सां.का.40)

सृष्टि के प्रारम्भ में उत्पन्न, सर्वत्र गति करने में सक्षम, प्रलयकालपर्यन्त स्थायीरूप से रहने वाला, महत् आदि से लेकर सूक्ष्मतन्मात्रापर्यन्त अठारह तत्त्वों से निर्मित भोगरहित,भावों से युक्त लिङ्गशरीर गमनागमन करता है।

➢ अठारह तत्त्व हैं- पञ्च ज्ञानेन्द्रियाँ, पञ्च कर्मेन्द्रियाँ, पञ्च महाभूत, मन, बुद्धि, अहङ्कार।
अतः विकल C सही है।

स्रोत- वेदान्तसार- सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-65

107. ''जीवब्रह्मैक्यं शुद्धचैतन्यं प्रमेयं तत्र...........।'' यह पंक्ति किस ग्रन्थ से उद्धृत है?
(A) तर्कभाषा (B) वेदान्तसार
(C) सांख्यकारिका (D) योगदर्शन

व्याख्या-

(A) तर्कभाषा- आचार्य केशवमिश्र तर्कभाषा में सोलह पदार्थों के ज्ञान का फल बताते हुए कहते हैं कि- 'प्रमाण-प्रमेय--संशय.....................श्रेयसाधिगमः।'
प्रमाण, प्रमेय, संशय आदि 16 पदार्थों के सम्यक् ज्ञान से निःश्रेयस् (मोक्ष) की प्राप्ति होती है।

(B) वेदान्तसार- सदानन्द योगीन्द्र वेदान्तसार में वेदान्तशास्त्र में अनुबन्ध चतुष्टयों के अन्तर्गत विषय का निरूपण करते हैं- 'जीवब्रह्मैक्यं शुद्धचैतन्यं प्रमेयं तत्र वेदान्तानां तात्पर्यात्'- जीव और ब्रह्म का एक होना विरुद्ध धर्मों से विमुक्त शुद्ध चैतन्य का ज्ञान है। यही वेदान्त वाक्यों का लक्ष्य है।

(C) सांख्यकारिका- ईश्वरकृष्ण सांख्यकारिका में व्यक्त और अव्यक्त के ज्ञान का निरूपण करते हुये कहते हैं- तद्विपरीतः श्रेयान् व्यक्ताव्यक्तज्ञविज्ञानात्। (सां. का.-2)
व्यक्त,अव्यक्त तथा चिद्रूप पुरुष के विवेकज्ञान से उत्पन्न तत्त्व साक्षात्कार रूप सांख्यशास्त्रोक्त उपाय उससे भिन्न होने के कारण श्रेयस्कर हैं।

(D) योगदर्शन- महर्षि पतञ्जलि योगदर्शन के समाधिपाद में चित्तवृत्तियों को निग्रह करने (रोकने) में योग की भूमिका का वर्णन करते हैं- योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः। (योगदर्शन समाधिपाद सूत्र-2) योग चित्तवृत्तियों का निरोध है।
अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- वेदान्तसार- सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-30

108. ''अनुबन्ध'' किसे कहते हैं?
(A) नित्यानित्यवस्तुविवेक को
(B) अधिकारिविषयसम्बन्धप्रयोजनानि को
(C) इहामुत्रार्थफलभोगविराग को
(D) उपर्युक्त में से किसी में भी नहीं

व्याख्या-
अनुबन्ध चतुष्टय को परिभाषित करते हुये सदानन्द योगीन्द्र वेदान्तसार में कहते हैं कि-
'तत्रानुबन्धो नामाधिकारिविषयसम्बन्धप्रयोजनानि।'
अर्थात् अनुबन्ध चतुष्टय हैं-
1. अधिकारी 2. विषय 3. सम्बन्ध 4. प्रयोजन

* साधन चतुष्टय- साधन चतुष्टय का वर्णन वेदान्तसार में निम्नवत् है- 'नित्यानित्यवस्तुविवेकेहामुत्रार्थफलभोगविराग-शमादिषट्कसम्पत्ति मुमुक्षुत्वानि।
1. नित्यानित्यवस्तुविवेक 2. इहामुत्रार्थफलभोगविराग 3. शमा दिषट्कसम्पत्ति 4. मुमुक्षुत्व
अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- वेदान्तसार- सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-9

109. 'आनुश्रविक' कहते हैं-
(A) लौकिक उपाय को (B) वैदिक उपाय को
(C) भौतिक उपाय को (D) नैतिक उपाय को

व्याख्या-
ईश्वरकृष्ण सांख्यकारिका में वेदोक्त उपायों को दोष युक्त प्रतिपादित करते हुये तत्त्वज्ञान की उपादेयता प्रतिपादित करते हैं-
दृष्टवदानुश्रविकः स ह्यविशुद्धिक्षयातिशययुक्तः।
तद्विपरीतः श्रेयान् व्यक्ताव्यक्तज्ञविज्ञानात्॥ (सां.का.2)
अविशुद्धिक्षय अतिशयता से युक्त वह वेदोक्त उपाय भी लौकिक उपायों के समान ही (दुःखों की ऐकान्तिक एवं आत्यन्तिक निवृत्ति में समर्थ नहीं हैं उस वैदिक उपाय के विपरीत व्यक्त, अव्यक्त और पुरुष के विशेष ज्ञान से अधिक उत्तम होता है।
लौकिक उपाय- दृष्टवत्, वैदिक उपाय- आनुश्रविक
सांख्यकारिका में लौकिक उपायों के समान वैदिक उपाय को अशुद्धि, क्षय और अतिशय से युक्त बताया गया है।
अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- सांख्यकारिका (का.2)- राकेश शास्त्री, पेज-5

110. 'संकल्प-विकल्पात्मिकान्तःकरणवृत्तिः' किससे सम्बन्धित है?
(A) मन (B) बुद्धि
(C) चित्त (D) अहङ्कारः

व्याख्या-

वेदान्तसार में सदानन्द मन का लक्षण करते हैं-

A. **मन-** 'मनो नाम सङ्कल्पविकल्पात्मिकान्तःकरणवृत्तिः। सङ्कल्प और विकल्प करने वाली अन्तःकरण की वृत्ति मन है।

अतः विकल्प A सही है।

B. **बुद्धि-** वेदान्तसार में सदानन्द बुद्धि का लक्षण करते हैं- 'बुद्धिर्नामनिश्चयात्मिकान्तःकरणवृत्तिः' अर्थात् निश्चय करने वाली अन्तःकरण की वृत्ति बुद्धि है।

C. **चित्त-** वेदान्तसार के टीकाकार रामतीर्थ चित्त का लक्षण इसप्रकार करते हैं- अनुसन्धानात्मिकान्तःकरणवृत्तिः चित्तम्। अनुसन्धानकर्त्री अन्तःकरण की वृत्ति चित्त है।

D. **अहङ्कार-** वेदान्तसार के टीकाकार रामतीर्थ अहङ्कार का लक्षण करते हैं- 'अभिमानात्मिकान्तः करणवृत्तिः अहङ्कारः।' अभिमान करने वाली अन्तःकरण की वृत्ति अहङ्कार है।

स्रोत- वेदान्तसार- सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-66

111. 'मोक्षेच्छा' किसे कहते हैं?
(A) मुमुक्षुत्वम्
(B) गुरूपदिष्टवेदान्तवाक्येषु विश्वासः
(C) शीतोष्णादिद्वन्द्व सहिष्णुता
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

व्याख्या-

➢ सदानन्दकृत वेदान्तसार में चार साधन बताये गये हैं-

1. **नित्यानित्यवस्तुविवेक-**
नित्यानित्यवस्तुविवेक...................... नित्यमिति विवेचनम्।
केवल ब्रह्म ही नित्य वस्तु है और उससे भिन्न सब कुछ अनित्य है ऐसा विवेचन करना नित्यानित्यवस्तुविवेक है।

2. **इहामुत्रार्थफलभोगविराग-**
ऐहिकानां स्रकचन्दन..................नितरां विरतिः।
इस लोक में होने वाले माला चन्दन कामिनी आदि विषयभोग जिसप्रकार कर्मजन्य होने से अनित्य है उसी प्रकार परलोक में होने वाले अमृत आदि विषयभोग भी अनित्य हैं इसलिए उन भोगों से विरति होना इहमुत्रार्थफलभोगविराग है।

3. **शमादिषट्कसम्पत्ति-**
शमदमोपरतितितिक्षासमाधानश्रद्धाख्याः।
शम, दम, उपरति, तितिक्षा, समाधान, श्रद्धा ये शमादिषट्कसम्पत्ति हैं।

4. **मुमुक्षुत्व-** मोक्षेच्छा। (मोक्ष की कामना ही मुमुक्षुत्व है।)

➢ **तितिक्षा-** शीतोष्णादिद्वन्द्वसहिष्णुता।
शीत-उष्ण आदि द्वन्द्वों को सहन करना तितिक्षा है।

➢ **श्रद्धा-** गुरूपदिष्टवेदान्तवाक्येषु विश्वासः श्रद्धा। गुरु और वेदान्त के वाक्यों में विश्वास होना श्रद्धा है।

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- वेदान्तसार- सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-20

112. आवरण और विक्षेप किसकी शक्तियाँ हैं ?
(A) ब्रह्म **(B) ज्ञान**
(C) अज्ञान **(D) जीव**

व्याख्या-

सदानन्द प्रणीत वेदान्तसार में ब्रह्म का लक्षण निम्नवत् है- 'वस्तु सच्चिदानन्दानन्ताद्वयं ब्रह्म' अर्थात् सच्चिदानन्द अद्वितीय अनन्त ब्रह्म है, जो वस्तु है, शेष सम्पूर्ण संसार अवस्तु है।

* वेदान्तसार में अज्ञान की दो शक्तियों का वर्णन प्राप्त होता है-

आवरणशक्ति-
अज्ञानं परिच्छिन्नमप्यात्मानमपरिच्छिन्नमसंसारिणमवलोक-यितृबुद्धिपिधायकतयाच्छादयतीव।
अज्ञान परिच्छिन्न होने पर भी प्रमाता की बुद्धि को ढक लेने के कारण, मानो अपरिच्छिन्न और असंसारी आत्मा को ढक लेता है आवरण शक्ति का ऐसा सामर्थ्य है।

* **विक्षेपशक्ति-** विक्षेपशक्तिस्तु यथा रज्ज्वज्ञानं स्वावृतरज्जौ स्वशक्त्या सर्पादिकमुद्भावयत्येवमज्ञानमपि स्वावृतात्मनि विक्षेपशक्त्या काशादिप्रपञ्चमुद्भावयति, तादृशं सामर्थ्यम्। जिसप्रकार रज्जुविषयक अज्ञान अपने द्वारा ढकी हुई रज्जु में, अपनी शक्ति से सर्प इत्यादि की उद्भावना कर देता है उसीप्रकार अज्ञान अपने द्वारा ढकी हुई आत्मा में अपनी विक्षेपशक्ति के द्वारा आकाशादि कार्य समूह की उद्भावना कर देता है विक्षेपशक्ति का ऐसा ही सामर्थ्य है।

अतः विकल्प C सही हैं।

स्रोत- वेदान्तसार- सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-57

113. 'सुषुप्तवज्जाग्रति यो न पश्यति ' स्वभाव वाला कौन होता है?
(A) ईश्वर **(B) जीवन्मुक्त**
(C) मुमुक्षु **(D) प्राज्ञ**

व्याख्या-

(A) वेदान्तसार में ईश्वर की चर्चा नहीं की गयी है- ईश्वर के स्थान पर ब्रह्म का निरूपण किया गया है।

(B) वेदान्तसार में सदानन्द जीवन्मुक्त का लक्षण करते हैं-
सुषुप्तवज्जाग्रति यो न पश्यति
द्वयं च पश्यन्नपि चाद्वयत्वतः।
तथा च कुर्वन्नपि निष्क्रियश्च यः
स आत्मविन्नान्य इतीह निश्चयः।
जागरणकाल में द्वैत को देखते हुये भी जो अद्वैत का निश्चय हो जाने के कारण सोये हुए पुरुष के समान नहीं देखता है और कर्म करते हुए भी जो निष्क्रिय रहता है, वही आत्मवेत्ता है, दूसरा नहीं वेदान्त का ऐसा निश्चय है।

(C) मुमुक्षुत्व को परिभाषित करते हुए कहते हैं कि- 'मुमुक्षुत्वं मोक्षेच्छा' मोक्ष की इच्छा मुमुक्षुत्व है।

(D) अज्ञान व्यष्टि का उदाहरण देते हुए सदानन्द कहते हैं- 'एतदुपहितं चैतन्यमल्पज्ञत्वानीश्वरत्वादिगुणकं प्राज्ञ इत्युच्यत' व्यष्ट्यज्ञान से उपहित चैतन्य केवल एक अज्ञान का प्रकाशक होने से अल्पज्ञ ता और अनीश्वरता आदि गुणों से युक्त कहा जाता है।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- वेदान्तसार- सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-192

114. श्रीमद्भगवद्गीता के एकादश अध्याय का नाम है-
(A) विश्वरूपदर्शनयोग (B) सांख्ययोग
(C) गुणत्रयविभागयोग (D) पुरुषोत्तमयोग

व्याख्या-

	अध्याय	नाम	श्लोक संख्या
(A)	एकादश	विश्वरूपदर्शन योग	55
(B)	द्वितीय अध्याय	सांख्ययोग	72
(C)	चतुर्दश अध्याय	गुणत्रयविभागयोग	27
(D)	पञ्चदश अध्याय	पुरुषोत्तम योग	20

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- श्रीमद्भगवद्गीता (अध्याय-11)

115. ''नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः'' गीता का यह सिद्धान्त किस दर्शन से सम्बन्ध रखता है ?
(A) बौद्धदर्शन (B) जैनदर्शन
(C) सांख्यदर्शन (D) वेदान्तदर्शन

व्याख्या-

(A) **बौद्ध दर्शन-**

* बौद्ध दर्शन के सम्प्रदाय हैं- हीनयान तथा महायान
* बौद्ध दर्शन में चार आर्यसत्यों का वर्णन है जिसे प्रतीत्य समुत्पाद का सिद्धान्त कहा जाता है चार आर्य सत्य हैं-

(1) सांसारिक जीवन दुःखों से परिपूर्ण है।
(2) दुःखों का कारण है।
(3) दुःख का अन्त सम्भव है।
(4) दुःखों के अन्त का उपाय है।

* बौद्धदर्शन में पाँच स्कन्ध माने गये हैं- रूप, वेदना, संज्ञा, संस्कार और विज्ञान।

(B) **जैनदर्शन-**

* जैन दर्शन में त्रिरत्न का वर्णन प्राप्त होता है त्रिरत्न हैं- सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान, सम्यक् चरित्र।
* सप्तभंगी सिद्धान्त का वर्णन जैन दर्शन में प्राप्त होता है।
* जैनदर्शन अनीश्वरवादी दर्शन है।

(C) नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः।
उभयोरपि दृष्टोऽन्तस्त्वनयोस्तत्त्वदर्शिभिः।। (गीता-2/16)
असत् वस्तु की सत्ता नहीं है और सत् का अभाव नहीं है।गीता के इस सिद्धान्त को सांख्यकारिका में भी सत्कार्यवाद के रूप में निरूपित किया गया है।

* असदकरणादुपादानग्रहणात् सर्वसम्भवाभावात्।
शक्तस्यशक्यकरणात् कारणभावाच्च सत्कार्यम्।। (सां.का.9)
कार्य सत् होता है अर्थात् कारण में वर्तमान होता है क्योंकि जो असत् है उसे उत्पन्न नहीं किया जा सकता है, उपादान कारण का ही ग्रहण किया जाता है। सभी कार्य सभी कारणों से उत्पन्न नहीं होते हैं, जिस कार्य को उत्पन्न करने में जो कारण समर्थ है उसी शक्त कारण से शक्य कार्य की उत्पत्ति होती है।

(D) वेदान्त दर्शन-

* वेदान्तदर्शन के प्रवर्तक बादरायण हैं।
* वेदान्तदर्शन में पञ्चीकरण सिद्धान्त का वर्णन है।
* वेदान्तदर्शन में जीव और ब्रह्म की अद्वैत सत्ता का निरूपण किया गया है।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- सांख्यकारिका- सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-(V)

116. श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार आत्मा किससे श्रेष्ठ है?
(A) मन से (B) बुद्धि से
(C) कर्मेन्द्रियों से (D) ज्ञानेन्द्रियों से

व्याख्या-
गीता के तृतीय अध्याय में भगवान् श्रीकृष्ण अर्जुन को उपदेश देते हुये इन्द्रियों के विषय में कहते हैं कि- इन्द्रियाणि **पराण्याहुरिन्द्रियेभ्यः परं मनः।**
मनसस्तु परा बुद्धिर्यो बुद्धेः परतस्तु सः॥
(गीता 3/42)
अर्थात् इन्द्रियों से श्रेष्ठ मन, मन से श्रेष्ठ बुद्धि और बुद्धि से श्रेष्ठ आत्मा है।
अतः विकल्प B सही है।
स्रोत- श्रीमद्भगवद्गीता (3/43)- गीताप्रेस, पेज-63

117. 'गीता' महाभारत के किस पर्व में वर्णित है?
(A) भीष्मपर्व (B) वनपर्व
(C) आदिपर्व (D) सभापर्व

व्याख्या-

पर्व	ग्रन्थ	ग्रन्थकार	विभाजन
(A) भीष्मपर्व	गीता	वेदव्यास	18 अध्याय
(B) वनपर्व	किरातार्जुनीयम्	भारवि	18 सर्ग
(C) आदिपर्व	अभिज्ञानशाकुन्तलम्	कालिदास	7 अङ्क
(D) सभापर्व	शिशुपालवधम्	माघ	20 सर्ग

अतः विकल्प (A) सही है।
स्रोत- संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-118

118. निम्नलिखित में से कौन 'योग' के अंग नहीं है?
(A) यम-नियम (B) आसन-प्राणायाम
(C) प्रत्याहार-धारणा (D) चित्त-परिकर्म

व्याख्या-
सदानन्द कृत वेदान्तसार में योग के आठ अङ्ग बताये गये हैं-
'अस्याङ्गानि यमनियमासनप्राणायामप्रत्याहारधारणा ध्यानसमाधयः।'
1. यम 2. नियम 3. आसन 4. प्राणायाम
5. प्रत्याहार 6. धारणा 7. ध्यान 8. समाधि
अष्टाङ्गयोग की चर्चा योगदर्शन में भी की गयी है।
* निम्न विकल्पों में चित्त-परिकर्म योग का अङ्ग नहीं है।
अतः विकल्प D सही है।
स्रोत- वेदान्तसार- कृष्णमणि त्रिपाठी, पेज-126

119. स्थितप्रज्ञ किसे कहते हैं?
(A) जो सभी मनोकामनाओं को छोड़ देता है
(B) जो अपने आप में सन्तुष्ट रहता है
(C) जो दुःखों से घबराता नहीं है
(D) जिसमें उपर्युक्त तीनों गुण हों

व्याख्या-
भगवान् श्रीकृष्ण गीता के द्वितीय अध्याय में स्थितप्रज्ञ का लक्षण करते हुये कहते हैं-
''प्रजहाति यदा कामान्सर्वान्पार्थ मनोगतान्।
आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते।।''
(गीता. 2/55)
जिसकाल में मनुष्य मन में स्थित सम्पूर्ण कामनाओं को भली-भाँति त्याग देता है तथा जो अपने आप में सन्तुष्ट रहता है उस काल में वह स्थितप्रज्ञ कहा जाता है।
अतः विकल्प D सही है।
स्रोत- श्रीमद्भगवद्गीता (2/56)- गीताप्रेस

120. 'योगसूत्र' पर भाष्य लिखा है-
(A) वाल्मीकि ने (B) पाणिनि ने
(C) शङ्कराचार्य ने (D) व्यास ने

व्याख्या-

ग्रन्थकार	ग्रन्थ	अनुमानित समय
(A) वाल्मीकि	रामायण	500 ई0पू0
(B) पाणिनि	अष्टाध्यायी	500 ई0पू0
(B) शङ्कराचार्य	शाङ्करभाष्य	7 वीं शताब्दी ई0
(D) व्यास	योगभाष्य	400 ई0 पू0

अतः विकल्प D सही है।
स्रोत- भारतीय दर्शन- बद्रीनाथ सिंह, पेज-216

121. इनमें से कौन सा सम्बन्धत्रय में नहीं आता?
(A) समानाधिकरणम् (B) विशेषणविशेष्यभावः
(C) लक्ष्यलक्षणभावः (D) प्रत्यक्षाप्रत्यक्षाभावः

व्याख्या-

सदानन्दकृत वेदान्तसार' में महावाक्यार्थ का बोध कराने के लिए 'तत्त्वमसि' वाक्य का उदाहरण देते हुए कहते हैं कि यह वाक्य तीन सम्बन्धों द्वारा अखण्डैकार्थबोधक होता है।

''सम्बन्धत्रयं नाम पादयोः समानाधिकरण्यं पदार्थयोविशेषणविशेष्यभावः प्रत्यगात्मपदार्थयोर्लक्ष्यलक्षण भावश्चेति।''

सामानाधिकरण्यं च विशेषणविशेष्यता।
लक्ष्यलक्षणसम्बन्धः पदार्थप्रत्यगात्मनाम्।।

पदों में समानाधिकरण्य पदों के अर्थों में विशेषण विशेष्यभाव, तथा आन्तरिक आत्मलक्षण पदों में लक्ष्यलक्षणभाव से तीन सम्बन्ध है।

* उपर्युक्त विकल्पों में प्रत्यक्षाप्रत्यक्षाभाव सम्बन्ध का भेद नहीं है। **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत- वेदान्तसार- सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-122

122. रिक्त स्थानों की पूर्ति के लिए निम्नलिखित चार विकल्पों में से कौन- सा विकल्प उपयुक्त है ?

(A) लिङ्गपरामर्श.......................
(B) व्याप्तिबलेनार्थगमकम्................
(C) स्वाभाविकः सम्बन्धः.........................
(D) साध्यव्यापकत्वे सति साधनाव्यापकत्वम्......

(A) अनुमानम् , व्याप्तिः , लिङ्गम् , उपाधिः
(B) अनुमानम् , उपमानम् , प्रतिज्ञा, व्याप्तिः
(C) अनुमानम् , लिङ्गम् , व्याप्तिः, उपाधिः
(D) व्याप्तिः , प्रमाणम् , उपाधि , अनुमानम्

व्याख्या-

(A) आचार्य केशवमिश्र तर्कभाषा में अनुमान प्रमाण का लक्षण करते हुये कहते हैं-
'लिङ्ग परामर्शोऽनुमानम्।' लिङ्ग परामर्श ही अनुमान है।

(B) आचार्य केशवमिश्र अनुमान प्रमाण के सम्बन्ध में व्याप्ति का लक्षण करते हुये कहते हैं-
व्याप्तिबलेनार्थगमकं लिङ्गम्।
व्याप्ति के बल से अर्थ का बोध कराने वाला लिङ्ग कहलाता है।

(C) अचार्य केशवमिश्र व्याप्ति का लक्षण करते हुये कहते हैं-
स्वाभाविकः सम्बन्धव्याप्तिः।स्वाभाविक सम्बन्ध व्याप्ति कहलाती है।

(D) 'साध्यव्यापकत्वे सति साधनाव्यापकत्वमुपाधिः' साध्य का व्यापक होने पर भी साधन का व्यापक होने वाला धर्म उपाधि कहलाता है।

* उपर्युक्त विकल्पों के क्रमानुसार **विकल्प C सही है।**

स्रोत- तर्कभाषा- श्रीनिवास शास्त्री, पेज-78,79,84,82

123. निम्नांङ्कित रिक्तस्थान की पूर्ति के लिए कौन-सा विकल्प उपयुक्त है? प्रतिपुरुषविमोक्षार्थम्........

(A) स्वार्थम् इव परार्थम् आरम्भः
(B) परार्थम् इव स्वार्थ आरब्धः
(C) स्वार्थ इव परार्थ आरम्भः
(D) आरब्धः स्वार्थ इव परार्थः

व्याख्या-

ईश्वरकृष्ण सांख्यकारिका में सृष्टि के सम्पूर्ण प्रपञ्च, क्रियाकलापों के पीछे होने वाले प्रयोजन का लक्षण करते हैं-

इत्येष प्रकृतिकृतो महदादिविशेषभूतपर्यन्तः।
प्रतिपुरुषविमोक्षार्थं स्वार्थ इव परार्थ आरम्भः।

(सां. का.-56)

इसप्रकार महत् आदि से लेकर स्थूलभूतों तक प्रकृति के द्वारा प्रत्येक पुरुष के मोक्ष के लिए किया हुआ यह कार्य अपने लिए प्रतीत होता हुआ भी वस्तुतः दूसरों के लिए ही है।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- सांख्यकारिका (का.56)- राकेश शास्त्री, पेज-156

124. निम्नांकित तालिका -(1) में सन्निकर्ष एवं तालिका-(2) में उनके उदाहरण दिये गये हैं। इसके आधार पर दिये गये विकल्पों में सही सुमेलित विकल्प चुनें।

तालिका-(1)	तालिका-(2)
अ- संयुक्त समवाय	(i) चक्षुषा संयुक्ते भूतले घटाभावः
ब- संयुक्त समवेत समवाय	(ii) चक्षुषा घटरूपसमवेतं रूपत्वादिकम्
स- समवेत समवाय	(iii) श्रोत्रेन्द्रियेण शब्द समवेतं शब्दत्वादिकम्
द- विशेष्य विशेषण भाव	(iv) चक्षुरादिना घटगतरूपादिकम्

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
A	(iv)	(ii)	(iii)	(i)
B	(ii)	(iii)	(iv)	(i)
C	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
D	(i)	(iv)	(iii)	(ii)

केशवमिश्र तर्कभाषा में लौकिक सन्निकर्ष के छः भेद करते हैं-

1. **संयोग सन्निकर्ष-** तत्र यदा चक्षुषा घटविषयं ज्ञानं जन्यते तदा चक्षुरिन्द्रियं घटोऽर्थः।
उनमें से जब चक्षु द्वारा घट आदि विषय का ज्ञान होता है तब चक्षु इन्द्रिय है, घट विषय है।
2. **संयुक्त समवाय सन्निकर्ष-** यदा चक्षुरादिना घटगतरूपादिकं गृह्यते, घटे श्यामं रूपमस्तीति, तदा चक्षुरिन्द्रियं घटरूपमर्थम्, अनयोः सन्निकर्षः संयुक्तसमवायः।
जब चक्षु आदि से घट में रहने वाले रूप आदि का ग्रहण होता है कि 'घट में श्याम रूप है तब चक्षु इन्द्रिय है घट का रूप विषय है। इन दोनों का सन्निकर्ष संयुक्त समवाय है।
3. **संयुक्त समवेत समवाय-** यदा पुनश्चक्षु घटरूपसमवेतं रूपत्वादिसामान्र्थः गृह्यते, तदा चक्षुरिन्द्रियं, रूपत्वादिसामान्यमर्थः अनयोसन्निकर्षः संयुक्तसमवायः।
जब चक्षु के द्वारा घट के रूप में समवेत रूपत्व आदि सामान्य जाति का ग्रहण होता है जब चक्षु इन्द्रिय है, रूपत्व आदि सामान्य ही अर्थ विषय है।
4. **समवाय सन्निकर्ष-** यदा श्रोत्रेन्द्रियेण शब्दो गृह्यते तदा श्रोत्रमिन्द्रियं,शब्दोऽर्थः अनयोः सन्निकर्षः समवाय एव।जब श्रोत्रेन्द्रिय से शब्द का ग्रहण होता है तब श्रोत्र इन्द्रिय है, शब्द अर्थ है इन दोनों का सन्निकर्ष समवाय है।
5. **समवेत समवाय सन्निकर्ष-** पुनः शब्दसमवेतं शब्दत्वादिकं सामान्यं श्रोत्रेन्द्रियेण गृह्यते तदा श्रोत्रमिन्द्रियं, शब्दत्वादिसामान्यमर्थः।
जब शब्द में समवेत शब्दत्व आदि जाति का श्रोत्र इन्द्रिय से ग्रहण किया जाता है तब श्रोत्र इन्द्रिय है, शब्दत्व आदि जाति अर्थ है इन दोनों का सन्निकर्ष समवेतसमवाय ही है।
6. **विशेषण-विशेष्यभाव सन्निकर्ष-** यदा चक्षुषा संयुक्ते भूतले घटाभावो गृह्यते ' इह भूतले घटो नास्ति।'
जब चक्षु से संयुक्त भूमि पर यहाँ भूतल पर घट नहीं है इस प्रकार घट के अभाव का ग्रहण होता है जब विशेष्यविशेषण सन्निकर्ष होता है। **अतः विकल्प A सही है।**

स्रोत- तर्कभाषा- श्रीनिवास शास्त्री, पेज-64,66,67,68

125. वह लकार जो केवल वेद में पाया जाता है-
(A) लुट् लकार **(B) लङ् लकार**
(C) लेट् लकार **(D) लट् लकार**

व्याख्या-
आचार्य पाणिनि अष्टाध्यायी के तृतीय अध्याय में लकारों का विधान करने वाले सूत्रों की चर्चा करते हैं-
लकार सूत्र

(A) **लुट् लकार-** अनद्यतने लुट् (3.3.15) अनद्यतन भविष्यत् काल में लुट् प्रत्यय होता है।

(B) **लङ् लकार-** अनद्यतने लङ् (3.2.111) अनद्यतन का अर्थ है जो आज घटित न हुआ हो अनद्यतन अर्थ में लङ् लकार का विधान होता है।

(C) **लेट् लकार-** का प्रयोग केवल वैदिक भाषा में होता है अतः लौकिक संस्कृत में लेट् का वर्णन नहीं मिलता **अतः विकल्प C सही है।**

(D) **लट् लकार-** वर्तमाने लट् (3.2.123) वर्तमान काल में विद्यमान धातु से लट् प्रत्यय होता है।

स्रोत- संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका- बाबूराम सक्सेना, पेज-294

उत्तरमाला

1. C	2. D	3. B	4. A	5. B	6. C	7. D	8. A	9. C	10. C	11. C	12. A
13. C	14. B	15. C	16. D	17. C	18. C	19. C	20. A	21. C	22. A	23. A	24. C
25. A	26. D	27. C	28. A	29. C	30. B	31. B	32. D	33. B	34. C	35. A	36. C
37. C	38. D	39. D	40. B	41. A	42. A	43. A	44. D	45. C	46. D	47. D	48. B
49. D	50. B	51. D	52. A	53. A	54. A	55. B	56. D	57. C	58. A	59. C	60. D
61. D	62. C	63. A	64. D	65. C	66. D	67. B	68. A	69. A	70. C	71. C	72. C
73. D	74. B	75. B	76. B	77. A	78. C	79. A	80. A	81. A	82. B	83. A	84. A
85. C	86. A	87. B	88. B	89. B	90. A	91. D	92. B	93. B	94. D	95. A	96. B
97. A	98. B	99. C	100. A	101. C	102. D	103. B	104. B	105. A	106. C	107. B	108. B
109. B	110. A	111. A	112. C	113. B	114. A	115. C	116. B	117. A	118. D	119. D	120. D
121. D	122. C	123. C	124. A	125. C							

❑❑

6. प्रवक्ता (PGT) संस्कृत 2009

1. 'स्त्रीणामशिक्षितपटुत्वममानुषीषु' इस उक्ति से युक्त नाटक है-
(A) स्वप्नवासवदत्तम् (B) मालविकाग्निमित्रम्
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (D) मेघदूतम्

व्याख्या–

➢ कालिदास विरचित अभिज्ञानशाकुन्तलम् के पञ्चम अङ्क में राजा दुष्यन्त तपस्विनी गौतमी से कहते हैं कि-
स्त्रीणामशिक्षितपटुत्वममानुषीषु
संदृश्यते किमुत याः प्रतिबोधवत्यः। (अभि. 5.22)
स्त्रियों में जो मनुष्य जाति से भिन्न स्त्रियाँ हैं उनमें भी बिना शिक्षा के ही चतुरता देखी जाती है।
अतः विकल्प C सही है।

➢ महाकवि भास विरचित स्वप्नवासवदत्तम् के चतुर्थ अङ्क में राजा का आत्मगत कथन है-
'स्त्रीस्वभावस्तु कातरः' (स्वप्न.4.8)
स्त्री का स्वभाव कातर होता है।

➢ कालिदास विरचित मालविकाग्निमित्रम् नाटक के तृतीय अङ्क में राजा अग्निमित्र बकुलावलिका से कहता है कि –
'स्थाने प्राणाः कामिनां दूत्यधीनाः।' (माल0 3.14)
प्रेमियों के प्राण दूतियों के ही मुट्ठी में रहता है।

➢ कालिदास विरचित मेघदूतम् के पूर्वमेघ में यक्ष निर्विन्ध्या नदी के विषय में मेघ से कहता है कि –
'स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु' (मेघ.पू.मे.29)
स्त्रियाँ हावभाव के द्वारा ही अपने प्रेमियों को प्रेम की बात बतलाती हैं।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (5/22)- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-287

2. ''अतः परीक्ष्य कर्तव्यं विशेषात् संगतं रहः'' अभिज्ञानशाकुन्तलम् में यह उक्ति किसकी है?
(A) कण्व की (B) मारीच की
(C) दुष्यन्त की (D) शार्ङ्गरव की

व्याख्या-

➢ अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के पञ्चम अङ्क में शार्ङ्गरव शकुन्तला से कहता है कि –
अतः परीक्ष्य कर्तव्यं विशेषात् संगतं रहः।
अज्ञातहृदयेष्वेवं वैरीभवति सौहृदम्॥ (अभि. 5.24)
गुप्त मैत्री (गुप्त विवाह-सम्बन्धादि) विशेषरूप से परीक्षा करके ही करनी चाहिए। परस्पर अज्ञात हृदय वाले व्यक्तियों के साथ किया हुआ प्रेम इसीप्रकार वैररूप में परिणत होता है।
अतः विकल्प D सही हैं।

➢ काश्यप (कण्व) अभिज्ञानशाकुन्तल के चतुर्थ अङ्क में शकुन्तला की विदाई के अवसर पर कहते हैं कि–
'पीड्यन्ते गृहिणः कथं नु तनयाविश्लेषदुःखैर्नवैः' (अभि. 4.6)
गृहस्थ लोग पहली बार पुत्री के वियोग के दुःख से कितने अधिक दुःखित होते होंगे।

➢ अभिज्ञानशाकुन्तलम् के प्रथम अङ्क में राजा दुष्यन्त शकुन्तला के विषय में कहता है-
'सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु
प्रमाणमन्तःकरणप्रवृत्तयः।' (अभि0 1.22)
सन्देहास्पद विषयों में सज्जनों के अन्तः करण की प्रवृत्तियाँ ही प्रमाण होती हैं।

➢ अभिज्ञानशाकुन्तलम् के सप्तम अङ्क में मारीच शकुन्तला को समझाते हुए कहते हैं –
छाया न मूर्च्छति मलोपहतप्रसादे
शुद्धे तु दर्पणतले सुलभावकाशा॥ (7.32)
मैल के कारण जिसकी स्वच्छता नष्ट हो गई, ऐसे शीशे पर प्रतिबिम्ब साफ दिखाई नहीं देता, किन्तु वह स्वच्छ हो तो प्रतिबिम्ब साफ दिखाई देगा।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (5/24)- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-291

3. ''श्रद्धा वित्तं विधिश्चेति त्रितयं तत्समागतम्'' किस नाटक का श्लोक है-
(A) मुद्राराक्षसम् **(B) उत्तररामचरितम्**
(C) विक्रमोर्वशीयम् **(D) अभिज्ञानशाकुन्तलम्**

व्याख्या-
कालिदास विरचित अभिज्ञानशाकुन्तलम् के सप्तम अङ्क में शकुन्तला, दुष्यन्त और पुत्र सर्वदमन के मिलन पर ऋषि मारीच कहते हैं–

'श्रद्धा वित्तं विधिश्चेति त्रितयं तत् समागतम्।'
(अभि.-7.29)

सौभाग्य से श्रद्धा, धन और विधि ये तीनों चीजें यहाँ एकत्र हो गई हैं। **अतः विकल्प D सही है।**

- विशाखदत्त प्रणीत मुद्राराक्षस नाटक के तृतीय अङ्क में राजा चन्द्रगुप्त का आत्मगत कथन–
श्रीर्लब्धप्रसरेव वेशवनिता दुःखोपचर्या भृशम्। (मुद्रा. 3.5)
राज्य लक्ष्मी अति प्रसिद्ध वाराङ्गना की भाँति अत्यन्त कष्ट से आराध्य होती हैं।
- उत्तररामचरितम् के प्रथम अङ्क में राम सीता से कहते हैं-
'श्रितासि चन्दनभ्रान्त्या दुर्विपाकं विषद्रुमम्।'
(उत्तरराम0 1.46)
तुमने चन्दन के भ्रम से दुःखदायी विष का आश्रय लिया है।
- कालिदास विरचित विक्रमोर्वशीयम् नाटक के तृतीय अङ्क में विदूषक राजा से कहता है-
'न खल्वन्यथा ब्राह्मणस्य वचनं भवति' ब्राह्मण का वचन निश्चय ही झूठा नहीं होता है। (विक्रमो0 अङ्क 3)

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (7.29)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-144

4. सत्य विकल्प का चयन करें-
(A) दुष्यन्त-शकुन्तला का विवाह गान्धर्व था।
(B) दुष्यन्त-शकुन्तला का विवाह दैव था।
(C) दुष्यन्त-शकुन्तला का विवाह प्राजापत्य था।
(D) दुष्यन्त-शकुन्तला का विवाह पैशाची था।

व्याख्या–
- कालिदास कृत अभिज्ञानशाकुन्तलम् के
चतुर्थ अङ्क में अनसूया द्वारा प्रियंवदा से कहे गये निम्न कथन से स्पष्ट होता है कि शकुन्तला और दुष्यन्त का विवाह गान्धर्व विधि से हुआ था-
''हला प्रियंवदे, यद्यपि गान्धर्वेण विधिना निर्वृत्तकल्याणा शकुन्तलाऽनुरूपभर्तृगामिनी संवृत्तेति निर्वृतं मे हृदयम्।''
- याज्ञवल्क्यस्मृति (आचाराध्याय) के श्लोक-58 से 61 तक 8 प्रकार के विवाहों की चर्चा है-
1. ब्रह्मविवाह 2. दैवविवाह 3. आर्षविवाह 4. प्राजापत्य विवाह 5. आसुरविवाह 6. गान्धर्वविवाह 7. राक्षसविवाह 8. पैशाचविवाह।

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत– अभिज्ञानशाकुन्तलम्–कपिलदेव द्विवेदी, पेज-180

5. 'को नामोष्णोदकेन नवमालिकां सिञ्चति' यह कथन किसका है-
(A) अनसूया का **(B) प्रियंवदा का**
(C) शार्ङ्गरव का **(D) शकुन्तला का**

व्याख्या–
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के चतुर्थ अङ्क में प्रियंवदा सखी अनसूया से कहती है –
'को नामोष्णोदकेन नवमालिकां सिञ्चति'
अर्थात् भला कौन नवमालिका को गर्म जल से सींचेगा?
अतः विकल्प B सही है।
- चतुर्थ अङ्क में ही अनसूया प्रियंवदा से कहती है कि–
'कोऽन्यो हुतवहाद् दग्धुं प्रभवति।'
अग्नि के अतिरिक्त और कौन जला सकता है? यह वाक्य दुर्वासा द्वारा शकुन्तला को दिए गए शाप के विषय में है।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के पञ्चम अङ्क में शार्ङ्गरव राजा द्वारा शकुन्तला को पत्नी के रूप में इन्कार कर दिये जाने पर शकुन्तला से कहता है-
'अथ तु वेत्सि शुचि व्रतमात्मनः
पतिकुले तव दास्यमपि क्षमम्।' (अभि.-5.27)
यदि तू अपने आचरण को पवित्र समझती है तो पति के परिवार में तुझे दासता करना भी उचित है।
अभिज्ञानशाकुन्तलम् के पञ्चम अङ्क में शकुन्तला अँगूठी दिखाने के प्रसङ्ग में राजा से कहती है कि–
'अत्र तावद् विधिना दर्शितं प्रभुत्वम्।' (अभि.अङ्क-5)
इस विषय में भाग्य ने अपना बल दिखाया है।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (अङ्क-4)- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-190

6. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के किस अङ्क में 'विष्कम्भक' समाप्त होता है-
(A) षष्ठ अङ्क **(B) द्वितीय अङ्क**
(C) चतुर्थ अङ्क **(D) प्रथम अङ्क**

व्याख्या–
कालिदास कृत अभिज्ञानशाकुन्तलम् के अनुसार

(A) षष्ठ अङ्क- षष्ठ अङ्क में प्रवेशक की समाप्ति होती है विष्कम्भक के तुल्य यह भी भूत एवं भावी घटनाओं का सूचक होता है इसके पात्र निम्न कोटि के व्यक्ति होते हैं और इनकी भाषा प्राकृत होती है। साहित्यदर्पण में इसका लक्षण निम्न है-

''प्रवेशकोऽनुदात्तोक्त्या नीचपात्रप्रयोजितः।
अङ्कस्यान्तर्विज्ञेयः शेषं विष्कम्भके यथा''
(सा. द. 6/57)

(B) द्वितीय अङ्क- द्वितीय अङ्क में बिन्दु अर्थप्रकृति का प्रयोग है –
''माधव्य, अनवाप्त'(2/38) से लेकर 'सर्वः कान्तं शकुन्तला- धिकृत्य ब्रवीमि' (20/40) तक बिन्दु है।

(C) चतुर्थ अङ्क- चतुर्थ अङ्क में शुद्ध विष्कम्भक का प्रयोग है। साहित्यदर्पण में विष्कम्भक का लक्षण इसप्रकार दिया है-

''वृत्तवर्तिष्यमाणानां कथांशानां निदर्शकः।
संक्षिप्तार्थस्तु विष्कम्भ आदावङ्कस्य दर्शितः॥
मध्येन मध्यमाभ्यां वा पात्राभ्यां सम्प्रयोजितः।
शुद्धः स्यात्स तु संकीर्णो नीचमध्यमकल्पितः॥
सा.द.(6/55,56)

भूत और भविष्यत् कथाओं का सूचक, कथा का संक्षेप करने वाला अङ्क 'विष्कम्भक' कहा जाता है यह अङ्क के आदि में रहता है जब एक ही मध्यमपात्र अथवा दो मध्यमपात्र बातचीत करते हैं तब इसे शुद्ध विष्कम्भक कहते हैं और यदि नीच तथा मध्यम पात्रों द्वारा प्रयोग किया जाय तो इसे मिश्र विष्कम्भक कहते हैं।

यहाँ पर दुर्वासा संस्कृत में बोलते हैं और अनसूया तथा प्रियंवदा प्राकृत में बोलती हैं। सभी पात्र मध्यम श्रेणी के हैं अतः शुद्ध विष्कम्भक है। **अतः विकल्प C सही है।**

(D) प्रथम अङ्क- प्रथम अङ्क में बीज अर्थप्रकृति का प्रयोग है। राघवभट्ट के अनुसार 'इदानीमेव से लेकर सोमतीर्थं गतः' तक वैखानस की उक्ति कथा का बीज है।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम्- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-190

7. ''सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यम्'' किस नाटक से उद्धृत है-
(A) उत्तररामचरितम् **(B) अभिज्ञानशाकुन्तलम्**
(C) मालविकाग्निमित्रम् **(D) मृच्छकटिकम्**

व्याख्या-

- अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के प्रथम अङ्क में राजा दुष्यन्त शकुन्तला के सौन्दर्य का वर्णन करते हुए कहता है–

'सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यं
मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति।
इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी
किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्॥
(अभि0 1.20)

शैवाल से घिरा हुआ कमल मनोहर लगता है काला कलङ्क भी चन्द्रमा की शोभा को बढ़ाता है। यह कृशाङ्गी वल्कल वस्त्रों से भी अति सुन्दर प्रतीत होती है क्योंकि सुन्दर आकृतियों के लिए कौन सी वस्तु अलङ्कार नहीं होती है।
अतः विकल्प B सही है।

- उत्तररामचरितम् के प्रथम अङ्क में राम सीता से कहते हैं कि-

'संकटा ह्याहिताग्नीनां प्रत्यवायैर्गृहस्थिता' (उत्तर.1.8)
अग्निहोत्रियों का गृहस्थ जीवन विघ्नों के कारण संकटमय होता है।

- कालिदासकृत मालविकाग्निमित्रम् नाटक के प्रथम अङ्क में विदूषक कहता है–

'सुशिक्षितोऽपि सर्वम् उपदेशदर्शनेन निष्णातो भवति।'
सुशिक्षित व्यक्ति भी अपना कौशल दिखाकर ही पण्डित माने जाते हैं।

- शूद्रक प्रणीत मृच्छकटिकम् प्रकरण के चतुर्थ अङ्क में शर्विलक मदनिका से कहता है कि–

'साहसे श्रीः प्रतिवसति' (मृच्छ.अङ्क-4)
साहस में लक्ष्मी वास करती है।

स्रोत– अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1.20)- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-46

8. 'अनाघ्रातं पुष्पं किसलयमलूनम्' वचन किसके सम्बन्ध में है-
(A) प्रियंवदा के **(B) शकुन्तला के**
(C) गौतमी के **(D) अनसूया के**

व्याख्या-

- अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के प्रथम अङ्क में राजा दुष्यन्त शकुन्तला के रूप सौन्दर्य का वर्णन करते हुए विदूषक से कहता है-

  'अनाघ्रातं पुष्पं किसलयमलूनं कररुहैः' (अभि.2.10)

  अर्थात् उसका सौन्दर्य न सूँघा गया फूल है, नाखूनों से न काटा हुआ कोमल पत्ता है।

  अतः विकल्प B सही है।
- कालिदास विरचित अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के चतुर्थ अङ्क में प्रियंवदा अनसूया से दुर्वासा ऋषि के शाप के विषय में कहती है–

  'प्रकृतिवक्रः स कस्यानुनयं प्रतिगृह्णाति।' (अभि.अङ्क-4)

  स्वभाव से टेढ़े वे किसकी प्रार्थना स्वीकार करते हैं।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के चतुर्थ अङ्क में काश्यप ऋषि द्वारा शकुन्तला को दिए गए आशीर्वाद के विषय में गौतमी कहती हैं-

  'वरः खल्वेषः नाशीः।' (अभि.अङ्क-4)

  वस्तुतः यह वर है, आशीर्वाद नहीं।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के चतुर्थ अङ्क में अनसूया प्रियंवदा से कहती है-

  'रक्षितव्या खलु प्रकृतिपेलवा प्रियसखी' (अभि. अङ्क 4)

  स्वभाव से ही कोमल प्रियसखी की रक्षा करनी चाहिए।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (2.10)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज- 115

9. चारुदत्त किस श्रेणी का नायक है-
(A) धीरोदात्त **(B) धीरोद्धत**
(C) धीरप्रशान्त **(D) धीरललित**

व्याख्या-

दशरूपककार आचार्य धनञ्जय ने द्वितीय प्रकाश में नायक भेद तथा उसका लक्षण करते हैं-

भेदैश्चतुर्धा ललितशान्तोदात्तोद्धतैरयम्।

अर्थात् नायक धीरललित, धीरशान्त, धीरोदात्त, धीरोद्धत के भेद से चार प्रकार का होता है।

- **धीरललित-** 'निश्चिन्तो धीरललितः कलासक्तः सुखी मृदुः।।' (दश02/3)

  चिन्ता से मुक्त कथाओं का प्रेमी, सुखी, तथा कोमल प्रकृति का नायक धीरललित नायक कहलाता है।

  उदाहरण- रत्नावली का नायक वत्सराज उदयन, मेघदूतम् का नायक धीरललित कोटि का नायक है।
- **धीरप्रशान्त–** 'सामान्यगुणयुक्तस्तु धीरशान्तो द्विजादिकः।' (दश02/4)

  सामान्य गुणों से युक्त द्विज आदि नायक धीरप्रशान्त नायक कहलाता है।

  उदाहरण– मृच्छकटिकम् का नायक चारुदत्त, मालतीमाधव का नायक माधव धीरशान्त या धीरप्रशान्त कोटि के नायक हैं। **अतः विकल्प C सही है।**
- **धीरोदात्त–**

  महासत्त्वोऽतिगम्भीरः क्षमावानविकत्थनः।
  स्थिरो निगूढाहङ्कारो धीरोदात्तो दृढव्रतः॥

  (दश0 2/4-5)

  विशाल एवं अविचल अन्तःकरणवाला, अत्यन्त गम्भीर, क्षमाशील, आत्मप्रशंसा न करने वाला, अविचल, अभिमान को दबाकर रखने वाला, दृढव्रती नायक धीरोदात्त कहा गया है।

  उदाहरण- नागानन्द का नायक जीमूतवाहन, अभिज्ञानशाकुन्तलम् का नायक दुष्यन्त, उत्तररामचरितम् का नायक राम।

  धीरोद्धत– दर्पमात्सर्यभूयिष्ठो मायाच्छद्मपरायणः।

  धीरोद्धतस्त्वहङ्कारी चलश्चण्डो विकत्थनः।। (दश 2/5-6)

  घमण्ड और डाह की अधिकता से युक्त, माया, और कपट से भरपूर, अहङ्कारी, अस्थिर, अत्यन्त क्रोधी तथा अपनी प्रशंसा करने वाला नायक धीरोद्धत नायक कहलाता है।

  उदाहरण– वेणीसंहार का नायक भीमसेन,जामदग्न्यविजय का नायक परशुराम।

स्रोत- मृच्छकटिकम्- जगदीशचन्द्र मिश्र, पेज-14

10. स्त्रियो हि नाम खल्वेता निसर्गादेव पण्डिताः।
पुरुषाणां तु पाण्डित्यं शास्त्रैरेवोपदिश्यते॥
प्रस्तुत श्लोक किस पुस्तक से उद्धृत है-
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् **(B) मृच्छकटिकम्**
(C) वेणीसंहारम् **(D) कुमारसम्भवम्**

व्याख्या-

शूद्रक प्रणीत मृच्छकटिकम् के चतुर्थ अङ्क में शर्विलक मदनिका से कहता है कि–

स्त्रियो हि नाम खल्वेता निसर्गादेव पण्डिताः।
पुरुषाणां तु पाण्डित्यं शास्त्रैरेवोपदिश्यते॥

(मृच्छ0 4.19)

स्त्रियाँ तो वस्तुतः स्वभाव से ही कुशल होती हैं, पुरुषों की कुशलता तो शास्त्रों के द्वारा ही सिखाई गई होती है।

अतः विकल्प B सही है।

- अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के पञ्चम अङ्क में शारद्वत राजा से शकुन्तला के विषय में कहता है- **'उपपन्ना हि दारेषु प्रभुता सर्वतोमुखी।'** (अभि0 5.26)
- पत्नी पर पति की सब प्रकार की प्रभुता स्वीकार की गई है।
- भट्टनारायण प्रणीत वेणीसंहारम् नाटक के प्रथम अङ्क में सहदेव भीमसेन से कहते हैं-

'स्त्रीणां हि साहचर्याद् भवन्ति चेतांसि भर्तृसदृशानि।'

(वेणीसंहार 1.20)

पतियों के साहचर्य से स्त्रियों के चित्त भी पतियों के समान ही हो जाते हैं।

- कुमारसम्भवम् के सप्तम सर्ग में पार्वती की शोभा का वर्णन कालिदास करते हैं–

'स्त्रीणां प्रियालोकफलो हि वेशः।' (कुमार.7.22)

स्त्रियों का वेष प्रिय के दर्शन रूप प्रयोजन वाला होता है।

स्रोत- मृच्छकटिकम् (4/19)- आचार्य जगदीशचन्द्र मिश्र, पेज-200

11. निम्नाङ्कित किस नाटक में सर्वाधिक शोषित, दलित एवं उपेक्षित वर्ग का सहानुभूतिपूर्ण चित्रण हुआ है-

(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (B) मृच्छकटिकम्
(C) उत्तररामचरितम् (D) मालविकाग्निमित्रम्

व्याख्या–

(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में दुष्यन्त एवं शकुन्तला की प्रणय कथा का वर्णन है।

(B) मृच्छकटिकम् में सर्वाधिक शोषित, दलित एवं उपेक्षित वर्ग का सहानुभूतिपूर्ण चित्रण हुआ है। दरिद्रता के कारण देह दबा-दबाकर अपना व्यवसाय करने वाला संवाहक, चारुदत्त के यहाँ नौकरी करने के पश्चात् द्यूतक्रीडा से अपनी आजीविका चलाने लगता है द्यूत में हारकर वसन्तसेना द्वारा ऋणमुक्त कराया जाता है और विरक्त होकर बौद्ध भिक्षु बन जाता है। चेट, चेटी, कुम्भीलक, मदनिका आदि शोषित एवं उपेक्षित पात्र हैं।

(C) उत्तररामचरितम् में रामायण के उत्तरकाण्ड की कथा वर्णित है। इसमें सीता-परित्याग, राम–विलाप, लव-कुश-प्राप्ति और राम के द्वारा निर्दोष सीता के स्वीकार किए जाने का वर्णन है।

(D) मालविकाग्निमित्रम् में 5 अङ्कों में मालविका एवं अग्निमित्र के प्रणय और विवाह का वर्णन है।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत– मृच्छकटिकम्– जगदीशचन्द्र मिश्र, भू. पेज–18

12. 'मृच्छकटिकम्' का विदूषक है-

(A) माधव्य (B) मैत्रेय
(C) माणवक (D) गौतम

व्याख्या–

	विदूषक	नाटक
(A)	अभिज्ञानशाकुन्तलम्-	माढव्य/माधव्य
(B)	मृच्छकटिकम्-	मैत्रेय
(C)	विक्रमोर्वशीयम्-	माणवक
(D)	मालविकाग्निमित्रम्-	गौतम

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- मृच्छकटिकम्– जगदीशचन्द्र मिश्र, पेज – 31

13. कौन चारुदत्त के घर मे सेंध लगाकर वसन्तसेना के गहने चुरा लेता है-

(A) शर्विलक (B) संवाहक
(C) दर्दुरक (D) मदनिका

व्याख्या-

महाकवि शूद्रक प्रणीत मृच्छकटिकम् के अनुसार

(A) शर्विलक– शर्विलक जाति का ब्राह्मण है वह चोरी की कला में पारङ्गत है। उसने योगाचार्य नामक किसी आचार्य से चोरी की कला सीखी है किन्तु वह पेशेवर चोर नहीं है वह मदनिका नामक गणिका के प्रेम मे फँसकर चारुदत्त के घर में सेंध लगाकर वसन्तसेना के गहने चुरा लेता है।

अतः विकल्प A सही है।

(B) संवाहक– दरिद्रता के कारण संवाहक का व्यवसाय करने वाला एक गृहपति का पुत्र है। चारुदत्त के यहाँ नौकरी

करने के पश्चात् द्यूतक्रीडा से अपनी आजीविका चलाने लगता है। द्यूत में हार कर वसन्तसेना द्वारा ऋणमुक्त कराया जाता है और विरक्त होकर बौद्धभिक्षु के रूप में हमारे सामने आता है।

(C) दर्दुरक– मृच्छकटिकम् प्रकरण में दर्दुरक नामक पात्र का उल्लेख सामान्य रूपों में हुआ है। द्वितीय अङ्क में दर्दुरक का उल्लेख जुआरी के रूप में हुआ है–
'द्यूतं हि नाम पुरुषस्यासिंहासनं राज्यम् ' जुआ भी मनुष्य के बिना सिंहासन का राज्य है।

(D) मदनिका– मदनिका एक गणिका स्त्री है जो शर्विलक नामक ब्राह्मण युवक की प्रेयसी है। मदनिका वसन्तसेना की प्रिय दासी भी है।

स्रोत– मृच्छकटिकम्– जगदीशचन्द्र मिश्र, पेज-149

14. महाभारत पर आधारित महाकाव्य है-
(A) कुमारसम्भवम् **(B) रघुवंशम्**
(C) रावणवधम् **(D) शिशुपालवधम्**

व्याख्या–

	उपजीव्यग्रन्थ	रचना	लेखक
(A)	श्रीमद्भागवतमहापुराण	कुमारसम्भव	कालिदास
(B)	वाल्मीकीयरामायण	रघुवंशम्	कालिदास
(C)	वाल्मीकीयरामायण	रावणवध(भट्टिकाव्य)	भट्टि
(D)	महाभारत का सभापर्व	शिशुपालवध	माघ

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत– संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा ऋषि, पेज– 263

15. लघुत्रयी के अन्तर्गत कौन-कौन से ग्रन्थ आते हैं–
(A) किरातार्जुनीयम्, शिशुपालवधम्, नैषधीयचरितम्
(B) वासवदत्ता, कादम्बरी, दशकुमारचरितम्
(C) रामायण, महाभारत, भागवतपुराण
(D) रघुवंशम्, मेघदूतम्, कुमारसम्भवम्

व्याख्या–

(A) बृहत्त्रयी- किरातार्जुनीयम्, शिशुपालवधम्, नैषधीयचरितम्।
(B) गद्यबृहत्त्रयी- वासवदत्ता, कादम्बरी, दशकुमारचरितम्।
(C) उपजीव्यत्रयी- रामायण, महाभारत, भागवतपुराण।
(D) लघुत्रयी- रघुवंशम्, कुमारसम्भवम्, मेघदूतम्।
अतः विकल्प D सही है।

स्रोत– मेघदूतम्– शेषराज शर्मा 'रेग्मी', भू.पेज–19

16. विश्व साहित्य के इतिहास में सबसे बड़ा महाकाव्य है-
(A) रामायण **(B) महाभारत**
(C) शिशुपालवध **(D) श्रीमद्भगवद्गीता**

व्याख्या–

(A) रामायण- रामायण महर्षि वाल्मीकि की कृति है। इसमें रामकथा आद्योपान्त वर्णित है। इसमे सात काण्ड हैं तथा लगभग 24 हजार श्लोक हैं।
अतः इसे 'चतुर्विंशतिसाहस्रीसंहिता' भी कहते हैं।

(B) महाभारत– विश्व साहित्य में सबसे बड़ा ग्रन्थ महाभारत ही है जिसमें एक लाख से अधिक श्लोक हैं। महाभारत के लेखक का नाम वेदव्यास (कृष्णद्वैपायन, व्यास) है। महाभारत को 'शतसाहस्री संहिता' भी कहते है। महाभारत की कथा पर्वों में विभक्त है। जिसमें 18 पर्व हैं। महाभारत के विकास का क्रम तीन चरणों में है। **जय-** महाभारत का मूल रूप 'जय' नाम से प्रसिद्ध था जिसमें 8800 श्लोक थे। **भारत–** द्वितीय अवस्था में जय का विस्तार भारत के रूप में हुआ जिसमें 24000 श्लोक हो गये। **महाभारत–** अन्तिम अवस्था एक लाख से अधिक श्लोकों का महाभारत के रूप प्रस्तुत हुआ। **अतः विकल्प B सही है।**

(C) शिशुपालवध- महाकवि माघ द्वारा रचित शिशुपालवध महाकाव्य में 20 सर्ग हैं। जो 'महाभारत के सभापर्व' के तेरह अध्यायों (33-45) तथा 'श्रीमद्भागवत के दशम स्कन्ध' पर आधारित है, जिसके नायक 'भगवान् श्रीकृष्ण' हैं जो धीरोदात्त कोटि के नायक हैं, तथा प्रतिनायक शिशुपाल है।

(D) श्रीमद्भगवद्गीता– श्रीमद्भगवद्गीता महाभारत के भीष्मपर्व पर आधारित है श्रीमद्भगवद्गीता में अध्यायों की संख्या 18 है।

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा ऋषि,पेज-147

17. उत्तररामचरितम् में राम किस कोटि के नायक हैं-
(A) धीरललित **(B) धीरोदात्त**
(C) धीरप्रशान्त **(D) धीरोद्धत**

व्याख्या–

	नायक	कोटि
(A)	यक्ष	धीरललित
(B)	राम	धीरोदात्त
(C)	चारुदत्त	धीरप्रशान्त
(D)	भीम	धीरोद्धत

अतः विकल्प B सही है।

आचार्य धनञ्जय दशरूपक के द्वितीय प्रकाश में चार प्रकार के नायक का विभाजन करते हैं-

(A) धीरललित– चिन्ता से मुक्त कथाओं का प्रेमी, सुखी तथा कोमल प्रकृति का नायक धीरललित नायक कहलाता है।
'निश्चिन्तो धीरललितः कलासक्तः सुखी मृदुः।'
उदाहरण- मेघदूतम् का नायक यक्ष धीरललित कोटि का नायक है।

(B) धीरोदात्त-
'महासत्त्वोऽतिगम्भीरः क्षमावानविकत्थनः।
स्थिरो निगूढाहङ्कारो धीरोदात्तो दृढव्रतः॥'
(दश.2/56)
विशाल एवं अविचल अन्तः करण वाला, अत्यन्त गम्भीर, क्षमाशील, आत्मप्रशंसा न करने वाला अविचल, अभिमान को दबाकर रखने वाला तथा दृढव्रती नायक धीरोदात्त नायक है। **उदाहरण–** उत्तररामचरितम् का नायक राम
अतः विकल्प B सही है।

(C) धीरप्रशान्त- 'सामान्यगुणयुक्तस्तु धीरशान्तो द्विजादिकः।' (दश.2/4)
सामान्य गुणों से युक्त द्विज आदि नायक धीरशान्त नायक कहलाता है।
उदाहरण– मृच्छकटिकम् का नायक चारुदत्त ।

(D) धीरोद्धत- 'दर्पमात्सर्यभूयिष्ठो मायाच्छद्मपरायणः।
धीरोद्धतस्त्वहङ्कारी चलश्चण्डो विकत्थनः।।'(दश.2/5-6)
घमण्ड और डाह की अधिकता से युक्त माया और कपट से भरपूर, अहङ्कारी, अस्थिर, अत्यन्त क्रोधी तथा अपनी प्रशंसा करने वाला नायक धीरोद्धत नायक है।
उदाहरण- वेणीसंहारम् नाटक का नायक भीम धीरोद्धत कोटि का नायक है।

स्रोत- वस्तुनिष्ठ-संस्कृतसाहित्यम्- सर्वज्ञभूषण, पेज-303

18. बृहत्त्रयी के अन्तर्गत नहीं है-
(A) किरातार्जुनीयम् **(B) शिशुपालवधम्**
(C) रघुवंशम् **(D) नैषधीयचरितम्**

व्याख्या-
- ☆ किरातार्जुनीयम्, शिशुपालवधम् और नैषधीयचरितम् ये बृहत्त्रयी के अन्तर्गत आते हैं।
- ☆ लघुत्रयी- रघुवंशम्, कुमारसम्भवम्, मेघदूतम्।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज- 208

19. 'उदिते नैषधे काव्ये क्व माघः क्व च भारविः' यहाँ 'नैषधे' पद किस महाकवि की ओर संकेत करता है-
(A) भारवि **(B) माघ**
(C) श्रीहर्ष **(D) कालिदास**

व्याख्या-
(A) भारवि– नारिकेलफलसम्मितं वचो भारवे सपदि तद् विभज्यते। (मल्लिनाथ)
(B) माघ– माघे सन्ति त्रयो गुणाः। (उद्भट)
(C) श्रीहर्ष- उदिते नैषधे काव्ये क्व माघः क्व च भारविः। (अज्ञात) **अतः विकल्प C सही है।**
(D) कालिदास– शृङ्गारे ललितोद्गारे कालिदासत्रयी किमु। (राजशेखर)

स्रोत– संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज–226

20. खण्डकाव्य है-
(A) दशकुमारचरित **(B) नलचम्पू**
(C) मेघदूत **(D) किरातार्जुनीय**

व्याख्या-

ग्रन्थ	ग्रन्थकोटि	नायक	रस
दशकुमारचरितम्	गद्यकाव्य	राजहंस	वीर/अद्भुत
नलचम्पू	चम्पूकाव्य	नल	शृङ्गाररस
मेघदूतम्	खण्डकाव्य	यक्ष	विप्रलम्भशृङ्गार
किरातार्जुनीयम्	महाकाव्य	अर्जुन	वीररस

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत– मेघदूतम्– दयाशङ्कर शास्त्री, पेज-32

21. पदलालित्य के लिए प्रसिद्ध हैं-
(A) कालिदास (B) दण्डी
(C) भारवि (D) माघ

व्याख्या-
(A) **कालिदास-** उपमा के लिए प्रसिद्ध हैं-
'उपमा कालिदासस्य'
(B) **दण्डी-** पदलालित्य के लिए प्रसिद्ध हैं-
''दण्डिनः पदलालित्यं''
(C) **भारवि-** अर्थगौरव के लिए प्रसिद्ध हैं- भारवेरर्थगौरवम्
(D) **महाकवि माघ-** उपमा, पदलालित्य एवं अर्थगौरव तीनों गुणों के लिए प्रसिद्ध हैं- **'माघे सन्ति त्रयो गुणाः'**
अतः विकल्प B सही है।

स्रोत– संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–212

22. विद्वानों के लिए औषधि है-
(A) शिशुपालवध (B) किरातार्जुनीय
(C) मेघदूत (D) नैषध

व्याख्या–
(A) ''तावद् भा भारवेर्भाति यावन्माघस्य नोदयः'' जिस प्रकार माघ मास के आ जाने पर सूर्य की कान्ति नहीं रह जाती उसीप्रकार माघ कवि के उदित होने पर भारवि की शोभा मन्द पड़ जाती है।
(B) ''नारिकेलफलसम्मितं वचो'' मल्लिनाथ ने भारवि की रचना की उपमा नारियल के फल से दी है जो ऊपर से कठोर, किन्तु अन्दर से कोमल और सरस होता है।
(C) ''मेघे माघे गतं वयः'' –कालिदास के मेघदूतम् तथा महाकवि माघ के शिशुपालवध को पढ़ने में आयु गुजर जाती है।
(D) ''नैषधं विद्वदौषधम्।'' विद्वानों के लिए नैषध औषधि है।
अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी,पेज-234

23. उत्तररामचरितम् का प्रधान रस है-
(A) श्रृङ्गार (B) शान्त
(C) करुण (D) वीर

व्याख्या-

	रचना	प्रधान रस
(A)	अभिज्ञानशाकुन्तलम्	श‍ृङ्गाररस
(B)	बुद्धचरितम्	शान्तरस
(C)	उत्तररामचरितम्	करुणरस
(D)	किरातार्जुनीयम्	वीररस

अतः विकल्प C सही है।
नाटक का लक्षण– ''एक एव भवेदऽङ्गी श‍ृङ्गारो वीर एव वा'' (सा.द. 6/10)
* नाटक का कथानक रामायण आदि इतिहास में प्रसिद्ध होना चाहिए।
* नाटक में पाँच से दस अङ्क होते हैं।
* पुराणादि प्रसिद्ध वंश में उत्पन्न धीरोदात्त आदि प्रतापी, गुणवान् कोई राजर्षि अथवा दिव्य या दिव्यादिव्य पुरुष नाटक का नायक होता है।
* श‍ृङ्गार या वीर इनमें से कोई एक रस प्रधान रहता है अन्य सब रस अङ्गभूत रहते हैं।

परन्तु भवभूति नाटक में करुणरस की प्रधानता स्वीकार करते हुए उत्तररामचरितम् के तृतीय अङ्क में कहते हैं कि
एको रसः करुण एव निमित्तभेदाद्।
भिन्नः पृथक्पृथगिव श्रयते विवर्तान्।। (उत्तर.3.47)
एक करुणरस ही है जो कारण भेद से भिन्न होकर पृथक्–पृथक् (श‍ृङ्गार आदि) परिणामों को प्राप्त करता हुआ प्रतीत होता है।

स्रोत- उत्तररामचरितम्- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-86

24. रैवतक पर्वत का वर्णन किस काव्य में है-
(A) उत्तररामचरितम् (B) कुमारसम्भवम्
(C) शिशुपालवधम् (D) कादम्बरी

व्याख्या-
* **उत्तररामचरितम्-** जटायु शिखर, शम्बूकवृत्तान्त, दुर्मुख वृत्तान्त, राम विलाप आदि।
* **कुमारसम्भवम्-** हिमालय पर्वत वर्णन, तारकासुरवध वर्णन।
* **शिशुपालवधम्-** रैवतक पर्वत वर्णन, षट्ऋतु वर्णन, वनविहार वर्णन, जल विहार वर्णन।

* **कादम्बरी-** पम्पासरोवर वर्णन, शाल्मली वृक्ष वर्णन, अच्छोदसरोवर वर्णन, कपिञ्जल कथा का वर्णन, शुक वर्णन। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- शिशुपालवधम् (सर्ग-4)- हरगोविन्द शास्त्री, पेज-173

25. सूची 1 एवं सूची 2 के साथ सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए -

सूची (1)	सूची (2)
(क) किरातार्जुनीयम्	1. श्रीकृष्ण
(ख) शिशुपालवधम्	2. अर्जुन
(ग) वेणीसंहारम्	3. दुष्यन्त
(घ) अभिज्ञानशाकुन्तलम्	4. भीम

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(A)	(3)	(2)	(4)	(1)
(B)	(1)	(2)	(3)	(4)
(C)	(3)	(2)	(1)	(4)
(D)	(2)	(1)	(4)	(3)

व्याख्या-

ग्रन्थ	नायक/नायिका
(A) किरातार्जुनीयम्	अर्जुन (धीरोदात्त), द्रौपदी
(B) शिशुपालवधम्	श्रीकृष्ण (धीरोदात्त)
(C) वेणीसंहारम्	भीम (धीरोद्धत्त), द्रौपदी
(D) अभिज्ञानशाकुन्तलम्	दुष्यन्त (धीरोदात्त), शकुन्तला

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत– संस्कृतसाहित्यम्– संस्कृतगङ्गा सर्वज्ञभूषण, पेज-298

26. हिमालय पर्वत का वर्णन है-

(A) कादम्बरी में **(B) शिशुपालवधम् में**
(C) किरातार्जुनीयम् में **(D) कुमारसम्भवम् में**

व्याख्या-

* **कादम्बरी-** शूद्रक वर्णन, शुकवर्णन, चाण्डालकन्या वर्णन, विन्ध्याटवी वर्णन, जाबालि वर्णन, उज्जयिनी वर्णन, अच्छोद सरोवर वर्णन, कादम्बरी वर्णन आदि।
* **शिशुपालवधम्-** रैवतक पर्वत वर्णन, सूर्यास्त वर्णन, मद्यपान वर्णन।
* **किरातार्जुनीयम्-** इन्द्रकीलपर्वत का वर्णन, सन्ध्यावर्णन, चन्द्रोदय वर्णन।
* **कुमारसम्भवम्-** हिमालय पर्वत का वर्णन, कार्तिकेय (स्कन्द, कुमार) की उत्पत्ति का वर्णन, पार्वतीउत्पत्ति, रति विलाप, पार्वती परिणय आदि ।

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत– शिशुपालवधम् (चतुर्थ सर्ग)- हरगोविन्द शास्त्री, पेज– 173

27. ''नवसर्गगते माघे नव शब्दो न विद्यते'' यह उक्ति किस ग्रन्थ के लिए प्रचलित है-

(A) मेघदूतम् **(B) शिशुपालवधम्**
(C) कुमारसम्भवम् **(D) जानकीहरणम्**

व्याख्या–

(A) **मेघदूतम्-** 'मेघे माघे गतं वयः' कालिदास के मेघदूतम् तथा माघ के शिशुपालवधम् को पढ़ने में पूरी अवस्था बीत जाती है।

(B) **शिशुपालवधम्-** ''नवसर्गगते माघे नवशब्दो न विद्यते'' महाकवि माघ के शिशुपालवध के नव सर्ग पढ़ लेने पर कोई भी शब्द नया नहीं रह जाता।

अतः विकल्प (B) सही है।

(C) **कुमारसम्भवम्-** 'कुमारस्य सम्भवः जन्म यस्मिन् काव्ये तत् कुमारसम्भवम्।' कुमार का जन्म जिस काव्य में हो वह कुमारसम्भव है।

(D) **जानकीहरणम्-** 'जानकीहरणं कर्तुं रघुवंशे स्थिते सति कविः कुमारदासश्च रावणश्च यदि क्षमः।' जैसे राम के रहते हुए सीता का अपहरण करने में रावण समर्थ है उसी प्रकार रघुवंश महाकाव्य के रहते हुए जानकीहरण जैसे महाकाव्य की रचना करने में कवि कुमारदास ही समर्थ है कोई अन्य नहीं।

स्रोत-संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-203,204

28. कादम्बरी में किस रीति का प्रयोग है-

(A) गौडी **(B) वैदर्भी**
(C) पाञ्चाली **(D) लाटी**

व्याख्या–

भवभूति की रीति गौड़ी और वैदर्भी है। बाणभट्ट की रीति पाञ्चाली है। **जल्हण** ने सूक्तिमुक्तावली में राजशेखर के नाम से एतद्विषयक प्रशस्ति का उद्धरण दिया है-

शब्दार्थयोः समो गुम्फः पाञ्चालीरीतिरुच्यते।
शिलाभट्टारिका वाचि बाणोक्तिषु च सा यदि।।
वैदर्भी– वैदर्भी कविता स्वयं वृतवती श्रीकालिदासं वरम् ।
वैदर्भीरीतिसन्दर्भे कालिदासः विशिष्यते।।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत– संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा ऋषि, पेज- 400

29. इन्द्रायुध किसका अवतार था-
(A) चन्द्रमा का (B) कपिञ्जल का
(C) पुण्डरीक का (D) वैशम्पायन का

व्याख्या-

चन्द्रापीड, वैशम्पायन, पत्रलेखा, इन्द्रायुध, चाण्डालकन्या क्रमशः प्रथमजन्म में चन्द्रमा, पुण्डरीक, रोहिणी, कपिञ्जल, लक्ष्मी। द्वितीय जन्म में चन्द्रापीड, वैशम्पायन, पत्रलेखा इन्द्रायुध। तृतीय जन्म में शूद्रक, शुक, कपिञ्जल, चाण्डालकन्या। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत– संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–493

30. 'अतिगहनं तमो यौवनप्रभवम्' यह सूक्ति किस ग्रन्थ से उद्धृत है-
(A) कादम्बरी (B) स्वप्नवासवदत्तम्
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (D) मृच्छकटिकम्

व्याख्या–

- बाणभट्ट कृत कादम्बरी शुकनासोपदेश में मन्त्री शुकनास चन्द्रापीड को उपदेश देते हुए कहते हैं- **'अतिगहनं तमो यौवनप्रभवम्'** (कादम्बरी शुकनासोपदेश)
युवावस्था में उत्पन्न होने वाला अज्ञान रूपी अन्धकार अत्यन्त गहन होता है। **अतः विकल्प A सही है।**
- भास द्वारा रचित स्वप्नवासवदत्तम् नाटक के चतुर्थ अङ्क में विदूषक राजा से कहता है-
'अनतिक्रमणीयो हि विधिः' (स्वप्न.अङ्क-4)
भाग्य का उल्लंघन नहीं किया जा सकता है।
- कालिदास विरचित अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के सप्तम अङ्क में राजा मातलि से कहता है-
'अनतिक्रमणीयानि श्रेयांसि' (अभि.अङ्क-7)
हाथ में आया हुआ ऐसा सौभाग्य नहीं छोड़ना चाहिए।
- शूद्रक प्रणीत मृच्छकटिकम् के तृतीय अङ्क में शर्विलक विदूषक से कहता है कि–
'अनतिक्रमणीया भगवती गोकाम्या ब्राह्मणकाम्या च।' (मृच्छ.अङ्क-3)
भगवती, गाय और ब्राह्मण की अभिलाषा उल्लंघन करने योग्य नहीं होती।

स्रोत– कादम्बरी शुकनासोपदेश–तारिणीश झा, पेज–1

31. 'त्रिभुवनप्रसवभूमिरिव विस्तीर्णा' विशेषता किसके लिए प्रयुक्त है-
(A) विदिशा (B) उज्जयिनी
(C) विन्ध्याटवी (D) हेमकूट

व्याख्या–

बाणभट्ट कृत 'कादम्बरी कथामुखम्' के अनुसार

(A) **विदिशा नगरी–** ''त्रिभुवनप्रसवभूमिरिव विस्तीर्णा ....विदिशाभिधाना नगरी राजधान्यासीत्।'' तीनों भुवन की जन्मभूमि के समान विस्तृत .... विदिशा नामक नगरी राजा शूद्रक की राजधानी थी।

(B) **उज्जयिनी-** ''अस्ति सकल–त्रिभुवन-ललामभूता, प्रसव-भूमिरिव कृतयुगस्य .... विजितामरलोक द्युतिरवन्तीषूज्जयिनी नाम नगरी।''
अवन्ति देश में 'उज्जयिनी' नाम की नगरी है, जो तीनों लोकों की अलङ्कार रूपा अथवा प्रधानभूत है, मानों सत्ययुग की जन्मभूमि हो, तीनों लोक की सृष्टि, स्थिति और प्रलय (उत्पत्ति, पालन, संहार) को करने वाली है।

(C) **विन्ध्याटवी–** ''अस्ति पूर्वापर-जलनिधि-वेलावलग्ना मध्यदेशालङ्कार भूता मेखलेव भुवः ....
पुष्पवत्यपि पवित्रा विन्ध्याटवी नाम।'' पूर्वी और पश्चिमी समुद्रों के तटवर्ती वनों से जुड़ी हुई है, मध्यदेश के भूषणस्वरूप.......पुष्पवती पवित्र विन्ध्य नाम की एक अटवी है।

(D) **हेमकूट–** ''क्रमेण च गत्वा हेमकूटमासद्य गन्धर्वराजकुलं समतीत्य काञ्चनतोरणानि सप्तकक्षान्तराणि कन्यान्तः पुरद्वारमवाप।''
क्रम से जाकर, गन्धर्वराज की राजधानी हेमकूटपर्वत पर उपस्थित होकर, सुवर्ण-तोरण जहाँ बँधे थे ऐसी सात ड्योढ़ी लाँघकर चन्द्रापीड महाश्वेता को देखकर दौड़ते हुए जाते हैं।

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत– कादम्बरी कथामुखम्–राजेन्द्र मिश्र,पेज-32

32. कादम्बरी क्या है-
(A) आख्यायिका (B) कथा
(C) नाटक (D) प्रकरण

व्याख्या–

(A) हर्षचरितम् (बाण)- आख्यायिका
तथापि नृपतेर्भक्त्या भीतो निर्वहणाकुलः।
कारोम्याख्यायिकाम्भोधौ जिह्वाप्लवनचापलम्। (हर्ष.19)

(B) कादम्बरी (बाणभट्ट)- कथा
धिया निबद्धेयमतिद्वयी कथा (कादम्बरी-20)

(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (कालिदास) नाटक-
काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला।

(D) मृच्छकटिकम् (शूद्रक) प्रकरण
'वयं मृच्छकटिकं नाम प्रकरणं प्रयोक्तुं व्यवसिता'

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत– संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास–कपिलदेव द्विवेदी पेज-333

33. मुख्यतः कादम्बरी की शैली है-
(A) वैदर्भी (B) गौड़ी
(C) पाञ्चाली (D) इनमें से सभी

व्याख्या-

कवि	शैली/रीति	गुण
कालिदास	वैदर्भी	प्रसाद गुण
सुबन्धु	गौड़ी	ओज गुण
बाणभट्ट	पाञ्चाली	ओज गुण

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत– कादम्बरी कथामुखम्- तारणीश झा, पेज-5

34. नलचम्पू में किस रस की प्रधानता है-
(A) शृङ्गार (B) वीर
(C) करुण (D) शान्त

व्याख्या–

	ग्रन्थ	प्रधान रस	विभाजन
(A)	नलचम्पू	शृङ्गाररस	सात उच्छ्वास
(B)	किरातार्जुनीयम्	वीररस	अठारह सर्ग
(C)	उत्तररामचरितम्	करुणरस	सात अङ्क
(D)	बुद्धचरितम्	शान्तरस	अट्ठाइस सर्ग

अतः विकल्प (A) सही है।

स्रोत- नलचम्पू- तारिणीश झा, पेज-26

35. नलचम्पू कितने उच्छ्वासों में विभाजित है-
(A) सात (B) आठ
(C) पाँच (D) छह

व्याख्या–

	ग्रन्थ	विभाजन	ग्रन्थकार
(A)	नलचम्पू	सात उच्छ्वास	त्रिविक्रमभट्ट
(B)	राजतरङ्गिणी	आठ तरङ्ग	कल्हण
(C)	काव्यालङ्कारसूत्र	पाँच अधिकरण	वामन
(D)	काव्यालङ्कार	छह परिच्छेद	भामह

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज–603

36. 'नवसर्गगते ....नवशब्दो न विद्यते' उक्ति है-
(A) कालिदास के विषय में
(B) श्रीहर्ष के विषय में
(C) माघ के विषय में
(D) भारवि के विषय में

व्याख्या–

(A) **कालिदास के विषय में–** कविकुलगुरुः कालिदासो विलासः– जयदेव

(B) **श्रीहर्ष विषयक उक्ति-**
तावद् भा भारवेर्भाति, यावन्माघस्य नोदयः।
उदिते नैषधे काव्ये, क्व माघः क्व च भारविः।।

(C) **माघविषयक उक्ति–** नवसर्गगते माघे नवशब्दो न विद्यते।

(D) **भारवि विषयक उक्ति–** सा भारवेः सत्पथदीपिकेव।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत– संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-203-204

37. अर्थगौरव के लिए कौन कवि प्रसिद्ध हैं-
(A) कालिदास (B) दण्डी
(C) भारवि (D) माघ

व्याख्या–

	कवि	प्रसिद्धि का कारण
(A)	कालिदास	उपमा कालिदासस्य
(B)	दण्डी	दण्डिनः पदलालित्यम्
(C)	भारवि	भारवेरर्थगौरवम्
(D)	माघ	उपमा, पदलालित्य और अर्थगौरव। (माघे सन्ति त्रयो गुणाः)

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत– संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–199

38. 'साहित्यजगत्' को किसका उच्छिष्ट कहा जाता है-
(A) बाणभट्ट (B) श्रीहर्ष
(C) दण्डी (D) भारवि

व्याख्या–

(A) बाणभट्ट– 'बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्' (अज्ञात) सम्पूर्ण संसार बाण का जूठा है। अर्थात् बाण की वर्णन शैली में कुछ भी शेष नहीं बचा है।

(B) श्रीहर्ष- 'उदिते नैषधे काव्ये क्व माघः क्व च भारविः।' श्रीहर्ष के नैषधीयचरितम् महाकाव्य के उदित होने पर भारवि का अर्थगौरव एवं माघ का पदलालित्य फीका पड़ गया।

(C) दण्डी– 'दण्डिनः पदलालित्यम्' (उद्भट) दण्डी की रचना पदलालित्य के लिए प्रसिद्ध है।

(D) भारवि– 'भारवेरर्थगौरवम्' (उद्भट) भारवि की रचना अर्थ गौरव के लिए प्रसिद्ध है।

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत– संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि',पेज –208

39. 'नलचम्पू' के रचयिता हैं-
(A) कल्हण (B) विशाखदत्त
(C) क्षेमेन्द्र (D) त्रिविक्रमभट्ट

व्याख्या–

	ग्रन्थ	लेखक
(A)	राजतरङ्गिणी	कल्हण
(B)	मुद्राराक्षसम्	विशाखदत्त
(C)	भारतमञ्जरी	क्षेमेन्द्र
(D)	नलचम्पू	त्रिविक्रमभट्ट

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज– 602

40. आचार्य दण्डी की कृति है-
(A) काव्यादर्श (B) दशकुमारचरितम्
(C) अवन्तिसुन्दरी (D) उपर्युक्त सभी

व्याख्या–

ग्रन्थ	ग्रन्थप्रकार	ग्रन्थकार	विभाजन
काव्यादर्श	काव्यशास्त्रीय	दण्डी	तीन परिच्छेद
दशकुमारचरितम्	गद्यकाव्य	दण्डी	आठ उच्छ्वास
अवन्तिसुन्दरीकथा	गद्यकाव्य	दण्डी	-

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज–466

41. जहाँ कोई शब्द अन्य अर्थ के लिए अपने अर्थ का त्याग कर देता है वहाँ होती है-
(A) उपादान लक्षणा (B) लक्षण लक्षणा
(C) शुद्धालक्षणा (D) गौणी लक्षणा

व्याख्या-

लक्षणा (लक्षणा तेन षड्विधा)
- शुद्धा
  - उपादान लक्षणा (कुन्ताः प्रविशन्ति।)
  - लक्षण-लक्षणा (गङ्गायां घोषः)
  - शुद्धा सारोपा (आयुर्घृतम्)
  - शुद्धा साध्यवसाना (आयुरेवेदम्)
- गौणी
  - गौणी सारोपा (गौर्वाहीकः)
  - गौणी साध्यवसाना (गौरयम्)
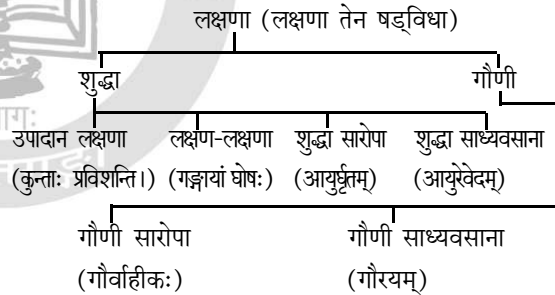
(A) उपादान लक्षणा– (सू13) ''स्वसिद्धये पराक्षेपः अपने (वाच्यार्थ के) अन्वय की सिद्धि के लिए अन्य (दूसरे) अर्थ का आक्षेप करना 'उपादान लक्षणा' है।
यथा- कुन्ताः प्रविशन्ति।

(B) लक्षण लक्षणा–परार्थं स्वसमर्पणम्......लक्षण-लक्षणा।'' दूसरे के लिए अपने को समर्पित कर देना अर्थात् अन्य के लिए अपने अर्थ का त्याग देना 'लक्षण-लक्षणा है।'
यथा–गङ्गायां घोषः।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत– काव्यप्रकाश (सूत्र-13)- आचार्य विश्वेश्वर, पेज–53

42. 'हरविजयम् महाकाव्य में कितने सर्ग हैं-
(A) 28 **(B) 50**
(C) 8 **(D) 17**

व्याख्या–

➢ आचार्य विश्वनाथ साहित्यदर्पण के छठे परिच्छेद में महाकाव्य का लक्षण करते हैं-

सर्गबन्धो महाकाव्यं तत्रैको नायकः सुरः।
नातिस्वल्पा नातिदीर्घाः सर्गा अष्टाधिका इह॥

(सा. द. 6/315-320)

अर्थात् आठ से कम सर्ग महाकाव्य में नहीं होते और ये सर्ग भी न तो बहुत छोटे तथा न तो बहुत दीर्घ होते हैं।

➢ अश्वघोष द्वारा रचित बुद्धचरितम् महाकाव्य में सर्गों की संख्या 28 है।

➢ रत्नाकर विरचित हरविजयम् महाकाव्य में 50 सर्ग हैं जो संस्कृत का सबसे बड़ा महाकाव्य है।

➢ कालिदास द्वारा रचित कुमारसम्भवम् में 17 सर्ग हैं।

नोट–

ग्रन्थ	ग्रन्थकार	विभाजन
बुद्धचरितम्	अश्वघोष	28 सर्ग
हरविजयम्	रत्नाकर	50 सर्ग
कुमारसम्भवम्	कालिदास	17 सर्ग
दशकुमारचरितम्	दण्डी	8 उच्छ्वास
नलचम्पू	त्रिविक्रमभट्ट	7 उच्छ्वास
हर्षचरितम्	बाणभट्ट	8 उच्छ्वास

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-145

43. 'महाकाव्य' में न्यूनतम सर्ग होने चाहिए-
(A) बीस **(B) आठ**
(C) अट्ठारह **(D) तेरह**

व्याख्या–

काव्यविधा	काव्य	सर्ग
महाकाव्य	शिशुपालवधम्	20 सर्ग
महाकाव्य	किरातार्जुनीयम्	18सर्ग
महाकाव्य	रघुवंशम्	19 सर्ग
महाकाव्य	नैषधीयचरितम्	22 सर्ग

नोट-

1. महाकाव्य में न्यूनतम 8 सर्ग होने चाहिए ।
2. नाटक में न्यूनतम 5 अङ्क होने चाहिए, अधिकतम 10 अङ्क होते हैं।
3. प्रकरण में 10 अङ्क होने चाहिए।
4. नाटिका में 4 अङ्क होने चाहिए।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत– साहित्यदर्पण (6/320)- शालिग्राम शास्त्री, पेज–225

44. महाकाव्य की कथावस्तु होती है-
(A) कविकल्पित **(B) मिश्रित**
(C) इतिहास प्रसिद्ध **(D) इनमें से कोई नही**

व्याख्या–

आचार्य विश्वनाथ साहित्यदर्पण के षष्ठ परिच्छेद में महाकाव्य का लक्षण करते हैं-

सर्गबन्धो महाकाव्यं तत्रैको नायकः सुरः।
सद्वंशः क्षत्रियो वापि धीरोदात्तगुणान्वितः।
एकवंशभवा भूपाः कुलजा बहवोऽपि वा।।
शृङ्गारवीरशान्तानामेकोऽङ्गी रस इष्यते।
अङ्गानि सर्वेऽपि रसाः सर्वे नाटकसन्धयः।।
इतिहासोद्भवं वृत्तमन्यद्वा सज्जनाश्रयम्।
चत्वारस्तस्य वर्गाः स्युस्तेष्वेकं च फलं भवेत्।।

(सा0 द0 6/315-317)

जिसमें सर्गों का निबन्धन हो वह महाकाव्य है। इसमें एक देवता या सद्वंश क्षत्रिय जिसमें धीरोदात्तत्वादि गुण हो नायक होता है। कहीं एक वंश के श्रेष्ठ कुलीन अनेक भूप भी नायक होते हैं। शृङ्गार वीर, शान्त में से कोई एक रस अङ्गी होता है सब नाटक सन्धियाँ होती हैं। **कथावस्तु ऐतिहासिक** या लोक में प्रसिद्ध सज्जन सम्बन्धिनी होती है। **अतः विकल्प C सही है।**

➢ आचार्य विश्वनाथ साहित्यदर्पण के षष्ठ परिच्छेद में प्रकरण का लक्षण करते हैं-

भवेत्प्रकरणे वृत्तं लौकिकं कविकल्पितम्।
शृङ्गारोऽङ्गी नायकस्तु विप्रोऽमात्योऽथवा वणिक्।
सापायधर्मकामार्थपरो धीरप्रशान्तकः।।

(सा.द. 6/224-225)

➢ प्रकरण की कथा लौकिक, कविकल्पित होती है इतिहास प्रसिद्ध नहीं होती इसमें प्रधान रस शृङ्गार होता है और नायक ब्राह्मण, मन्त्री अथवा वैश्य होता है। नायक विघ्नपूर्ण धर्म, अर्थ और काम में तत्पर धीरप्रशान्त होता है।

स्रोत– साहित्यदर्पण (6.318)- शालिग्राम शास्त्री, पेज- 225

45. अगले सर्ग की कथावस्तु कहाँ सूचित की जाती है-

(A) सर्गारम्भ में **(B) सर्ग के मध्य में**
(C) सर्गान्त में **(D) कहीं भी**

व्याख्या–

आचार्य विश्वनाथ साहित्यदर्पण के षष्ठ परिच्छेद में महाकाव्य का लक्षण करते हुए कहते हैं-

सर्गबन्धो महाकाव्यं तत्रैको नायकः सुरः .... नातिस्वल्पा नातिदीर्घाः सर्गा अष्टाधिका इह।। (सा. द. 6/315)

☆ महाकाव्य का सर्गों में निबन्धन होता है।
☆ महाकाव्य का नायक धीरोदात्तत्वादि गुणों से युक्त एक देवता या सद्वंशीय क्षत्रिय होता है।
☆ शृङ्गार, वीर, शान्त में से कोई एक रस अङ्गी मुख्य होता है।
☆ कथा ऐतिहासिक या लोक में प्रसिद्ध सज्जनसम्बन्धिनी होती है।
☆ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इस चतुर्वर्ग में से एक उसका फल होता है।
☆ सर्ग की संख्या आठ से अधिक होती है।
☆ सर्ग के अन्त में अगली कथा की सूचना होनी चाहिए।

सर्गान्ते भाविसर्गस्य कथायाः सूचनं भवेत्।

(सा.द. 6/315)

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- साहित्यदर्पण (6/321)- शालिग्राम शास्त्री, पेज-225

46. साक्षात्संकेतित अर्थ की बोधिका है-

(A) अभिधा **(B) लक्षणा**
(C) तात्पर्या **(D) व्यंजना**

व्याख्या-

आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश के द्वितीय उल्लास में वाचक आदि शब्दों एवं उनके अर्थों को परिभाषित करते हैं-

➢ **अभिधा-** साक्षात्संकेतितं योऽर्थमभिधत्ते स वाचकः

(का.प्र.सूत्र-9)

अर्थात् जो साक्षात् सङ्केत किए गए अर्थ को कहता है वह वाचक शब्द है। 'यस्य यत्राव्यवधानेन संकेतो गृह्यते स तस्य वाचकः' अर्थात् जिस शब्द का जिस अर्थ में बिना किसी बाधा के संकेत का ग्रहण है, वह शब्द उस अर्थ का वाचक होता है।

अतः विकल्प A सही है।

➢ **लक्षणा–** मुख्यार्थबाधे तद्योगे रूढितोऽथ प्रयोजनात्।
अन्योऽर्थो लक्ष्यते यत् सा लक्षणारोपिता क्रिया।।

(का.प्र.सूत्र-12)

मुख्यार्थ का बाध होने पर, मुख्यार्थ से सम्बन्धित, रूढ़ि अथवा प्रयोजन वश अन्य अर्थ का ज्ञान जिस शक्ति के द्वारा होता है, शब्द में कल्पित अथवा आरोपित वृत्ति या व्यापार लक्षणा है।

➢ **व्यञ्जना–** विरतास्वभिधाद्यासु ययाऽर्थो बोध्यते परः।
सा वृत्तिर्व्यञ्जना नाम शब्दस्यार्थादिकस्य च।।

(सा. द. 2/12.13)

अपना-अपना अर्थ बोधन करके अभिधा आदि वृत्तियों के शान्त होने पर जिससे अन्य अर्थ का बोधन होता है। वह शब्द में रहने वाली वृत्ति व्यञ्जना शक्ति है।

➢ मीमांसकों के अनुसार तात्पर्याशक्ति चौथी शब्दशक्ति है।

स्रोत- साहित्यदर्पण- राजेन्द्र मिश्र, पेज-146

47. अभिहितान्वयवाद मत है-

(A) आनन्दवर्धन का
(B) प्रभाकरगुरु का
(C) मीमांसक (कुमारिलभट्ट) का
(D) मम्मट का

व्याख्या–

	सिद्धान्त	प्रतिपादक आचार्य
*	ध्वनि सिद्धान्त	आनन्दवर्धन
*	अन्विताभिधानवाद	प्रभाकरगुरु (मीमांसक)
*	अभिहितान्वयवाद	मीमांसक (कुमारिलभट्ट)
*	समन्वयवाद सिद्धान्त	आचार्य मम्मट

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत– काव्यप्रकाश (द्वितीय उल्लास)- श्रीनिवास शास्त्री, पेज– 34

48. आचार्य मम्मट ने काव्य के कुल कितने प्रयोजन बताए हैं-

(A) छह **(B) नौ**
(C) चार **(D) आठ**

व्याख्या-

- आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश के प्रथमोल्लास में काव्यप्रयोजन का वर्णन करते हैं-

काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये।
सद्यः परनिर्वृतये कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे॥

(का०प्र० 1/2)

यश की प्राप्ति, धन की प्राप्ति, व्यवहार का ज्ञान, अनिष्ट का निवारण, सद्यः आनन्द प्रदान करने वाला तथा स्त्री के समान उपदेश प्रदान करने वाला ये काव्य के छह प्रयोजन हैं।

- आचार्य मम्मट शान्तरस को भी मानते हुए नाटक में नौ रस मानते हैं- शृङ्गार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, अद्‌भुत, भयानक, बीभत्स, शान्त। 'शान्तोऽपि नवमो रसः'
- आचार्य भरत नाट्यशास्त्र के छठवें अध्याय में चार अलङ्कार मानते हैं- यमक, उपमा, रूपक, दीपक
- गूणीभूतव्यङ्ग्य के आठ भेद होते हैं-

1. अगूढ 2. इतर का अङ्ग 3. वाच्यसिद्धि का अङ्ग 4. अस्फुट 5. सन्दिग्धप्राधान्य 6. तुल्यप्राधान्य 7. काकु से आक्षिप्त 8. असुन्दर।

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत– काव्यप्रकाश (1/2)- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-10

49. आचार्य मम्मट के अनुसार काव्य का लक्षण है-

(A) वाक्यं रसात्मकं काव्यम्
(B) वक्रोक्तिः काव्यजीवितम्
(C) तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि
(D) रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्

व्याख्या–

- आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश के प्रथम उल्लास में काव्य का लक्षण करते हैं-

तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि।

(का.प्र. सूत्र-1)

दोषों से रहित गुणयुक्त और साधारणतः अलङ्कार सहित परन्तु यदि कहीं पर अलङ्कार न भी हो तो शब्द और अर्थ की समष्टि काव्य कहलाती है।

अतः विकल्प C सही है।

- आचार्य विश्वनाथ साहित्यदर्पण के प्रथम परिच्छेद में काव्य का लक्षण करते हैं- 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्।'

(सा.द.2/3)

रसात्मक वाक्य को काव्य कहते हैं।

- आचार्य कुन्तक वक्रोक्तिजीवितम् के प्रथमोन्मेष में काव्य का लक्षण करते हैं- 'वक्रोक्तिः काव्यजीवितम्।'

काव्य की आत्मा वक्रोक्ति है।

- पण्डितराज जगन्नाथ रसगङ्गाधर के प्रथम आनन में काव्य का लक्षण करते हैं-

'रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्।' (रसगंगाधर1.1)

रमणीय अर्थ का प्रतिपादन करने वाला शब्द काव्य है।

स्रोत- काव्यप्रकाश (सूत्र-1)- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-19

50. "विरतास्वभिधाद्यासु ययाऽर्थो बोध्यते परः" यह किस वृत्ति का लक्षण है-

(A) तात्पर्या **(B) अभिधा**
(C) लक्षणा **(D) व्यञ्जना**

व्याख्या–

(A) तात्पर्या- 'तात्पर्यार्थोऽपि केषुचित्।' (का. प्र.सूत्र-7)
मीमांसक कुमारिलभट्ट आदि अभिधा,लक्षणा,व्यञ्जना के अतिरिक्त तात्पर्या नामक शक्ति को मानते हैं।

(B) अभिधा- 'तत्र संकेतितार्थस्य बोधनादग्रिमाऽभिधा।'

(सा.द.2.4)

उनमें संकेतित अर्थ (मुख्य अर्थ) का बोधन कराने वाली, शब्द की सबसे पहली शक्ति अभिधा शक्ति है।

(C) लक्षणा– 'मुख्यार्थबाधे तद्युक्तो ययाऽन्योऽर्थः प्रतीयते।
रूढेः प्रयोजनाद्वाऽसौ लक्षणा शक्तिरर्पिता।।' (सा.द.2.5)
1. मुख्य अर्थ का बाध 2. मुख्य अर्थ का लक्ष्य अर्थ से सम्बन्ध 3. रूढि अथवा प्रयोजन होने पर लक्षणा होती है।

(D) व्यञ्जना- विरतास्वभिधाद्यासु ययाऽर्थो बोध्यते परः।
सा वृत्तिर्व्यञ्जना नाम शब्दस्यार्थादिकस्य च।।

(सा.द.2/12)

अभिधा आदि के विरत हो जाने पर जिसके द्वारा अन्य अर्थ का बोध कराया जाता है, शब्द एवं अर्थादि की उस वृत्ति को व्यञ्जना कहा जाता है।

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत– साहित्यदर्पण (2/12)- शालिग्राम शास्त्री, पेज–39

51. ''रूढेः प्रयोजनाद्वासौ लक्षणा शक्तिरर्पिता'' यह लक्षण है-
(A) विश्वनाथ का (B) आनन्दवर्धन का
(C) मम्मट का (D) पण्डितराज जगन्नाथ का

व्याख्या-
आचार्य विश्वनाथ साहित्यदर्पण के द्वितीय परिच्छेद में लक्षणा शक्ति को परिभाषित करते हुए कहते हैं-
''मुख्यार्थबाधे तद्युक्तो ययाऽन्योऽर्थः प्रतीयते।
रूढेः प्रयोजनाद्वाऽसौ लक्षणा शक्तिरर्पिता''
(सा.द.2/5)
मुख्य अर्थ का बाध और उसके साथ लक्ष्यार्थ का सम्बन्ध एवं रूढ़ि अथवा प्रयोजन के कारण, मुख्य अर्थ से सम्बद्ध अर्थ का ज्ञान जिस शक्ति द्वारा होता है उसे लक्षणा कहते हैं। यह शक्ति अर्पित अर्थात् कल्पित है।
अतः विकल्प A सही है।

- **आनन्दवर्धन–** ध्वन्यालोककार आनन्दवर्धन ने लक्षणा का विवेचन नहीं किया है। इन्होंने काव्य के दो भेद माने हैं वाच्य और प्रतीयमान।

आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश के द्वितीयोल्लास में लक्षणा को निम्नरूपों में परिभाषित करते हैं-

- **मम्मट–** मुख्यार्थबाधे तद्योगे रूढितोऽथ प्रयोजनात्।
अन्योऽर्थो लक्ष्यते यत् सा लक्षणारोपिता क्रिया।।
(का0 प्र0 सूत्र -12)

मुख्यार्थ के बाध होने पर तथा मुख्यार्थ के योग होने पर रूढ़ि अथवा प्रयोजन से जिसके द्वारा अन्य अर्थ की प्रतीति होती है वह आरोपित वृत्ति लक्षणा है।

- **जगन्नाथ–** पण्डितराज जगन्नाथ ने रसगङ्गाधर में लक्षणा का विवेचन नहीं किया है।

स्रोत– साहित्यदर्पण–राजेन्द्र मिश्र, पेज–154

52. ''विपरीत'' लक्षणा का दूसरा नाम है-
(A) अजहल्लक्षणा (B) जहल्लक्षणा
(C) जहदजहल्लक्षणा (D) गौणीलक्षणा

व्याख्या–

	लक्षणा/उपनाम	उदाहरण
☆	जहल्लक्षणा/जहत्स्वार्थावृत्ति	गङ्गायां घोषः।
	लक्षण-लक्षणा	गङ्गा में अहीरों की बस्ती है
☆	अजहल्लक्षणा	शोणो धावति।
	अजहत्स्वार्थावृत्ति	लाल (घोड़ा) दौड़ता है।
	उपादान लक्षणा	
☆	जहदजहल्लक्षणा	तत्त्वमसि। (तुम वह हो)
	भागत्यागलक्षणा	सोऽयं देवदत्तः।
	भागलक्षणा	यह देवदत्त है।
	विपरीतलक्षणा	

अतः विकल्प C सही है।

53. 'साहित्यदर्पण' के अनुसार काव्य में रस की स्थिति है-
(A) शरीर जैसी (B) आत्मा जैसी
(C) अवयव संस्था जैसी (D) अलंकरण जैसी

व्याख्या-
आचार्य विश्वनाथ साहित्यदर्पण के प्रथम परिच्छेद में काव्य का लक्षण करते हैं।
व्याख्या– वाक्यं रसात्मकं काव्यम् (सा. द.–1/3)
'रस एवात्मा साररूपतया जीवनाधायको यस्य।' रसात्मक वाक्य को काव्य कहते हैं। रस के बिना काव्यत्व नहीं होता इसलिए सार अर्थात् सबसे प्रधान होने के कारण रस ही जिसकी आत्मा है वह वाक्य रसात्मक कहलाता है।
अतः विकल्प B सही है।

स्रोत– साहित्यदर्पण- कमलादेवी, पेज–57

54. 'साहित्यदर्पण' के प्रथम परिच्छेद का नाम है-
(A) काव्यदोष निरूपण
(B) काव्यस्वरूप निरूपण
(C) काव्यप्रयोजन निरूपण
(D) काव्यलक्षण निरूपण

व्याख्या-

परिच्छेद	नाम
प्रथम	काव्यस्वरूपनिरूपण
द्वितीय	वाक्यस्वरूप निरूपण
तृतीय	रसादिनिरूपण
चतुर्थ	गुणीभूतव्यङ्ग्याख्यकाव्य भेद निरूपण
पञ्चम	व्यञ्जनाव्यापार निरूपण
षष्ठ	दृश्यश्रव्यकाव्य निरूपण
सप्तम	दोषनिरूपण
अष्टम	गुणविवेचन
नवम	रीतिविवेचन
दशम	शब्दालङ्कार एवं अर्थालङ्कार निरूपण

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत– साहित्यदर्पण– कमला देवी, पेज-72

55. 'नाट्यशास्त्र' को कहा गया है-
(A) चतुर्थ वेद **(B) पञ्चम वेद**
(C) वेदत्रयी **(D) सप्तम अङ्क**

व्याख्या-
आचार्य भरत नाट्यशास्त्र के प्रथम अध्याय में नाटक को पञ्चमवेद मानते हुए कहते हैं-
सर्वशास्त्रार्थसम्पन्नं सर्वशिल्पप्रवर्तकम्।
नाट्याख्यं पञ्चमं वेदं सेतिहासं करोम्यहम्।। (ना.शा. 1.15)
भगवान् ब्रह्मा ने सभी वेदों का स्मरण करते हुए नाट्य नामक पाँचवें वेद की रचना की।

वेदत्रयी
ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद
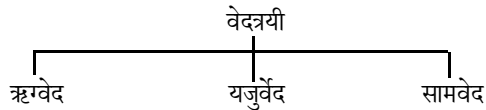
ऋग्वेद से पाठ्य- कथानक, यजुर्वेद से अभिनय, सामवेद से गान और अथर्ववेद से रस लेकर पञ्चमवेद नाट्य (नाटक) की रचना हुई।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत– नाट्यशास्त्र– ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज-39

56. रसानुभव के विषय में अभिव्यक्तिवाद के प्रवर्तक हैं-
(A) भट्टलोल्लट **(B) अभिनवगुप्त**
(C) भट्टशङ्कुक **(D) भट्टनायक**

व्याख्या-

प्रर्वतक	सिद्धान्त/वाद
(A) भट्टलोल्लट	उत्पत्तिवाद
(B) अभिनवगुप्त	अभिव्यक्तिवाद
(C) भट्टशङ्कुक	अनुमितिवाद
(D) भट्टनायक	भुक्तिवाद

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- साहित्यदर्पण- राजेन्द्र मिश्र, पेज-78

57. 'बीभत्स' का स्थायीभाव है-
(A) रति **(B) जुगुप्सा**
(C) शोक **(D) क्रोध**

व्याख्या-
आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश के चतुर्थ उल्लास में रस तथा उनके स्थायीभावों की चर्चा करते हैं-

रस	स्थायीभाव	वर्ण	देवता
शृङ्गार	रति	श्याम	विष्णु
हास्य	हास	शुक्ल	प्रमथ
करुण	शोक	कपोल	यम
रौद्र	क्रोध	रक्त	रुद्र
वीर	उत्साह	सुवर्णवत्	महेन्द्र
भयानक	भय	कृष्ण	काल
बीभत्स	जुगुप्सा	नील	महाकाल
अद्भुत	विस्मय	पीत	ब्रह्मा

इसके अतिरिक्त निर्वेद स्थायीभाव वाला शान्त नामक नौवाँ रस भी होता है।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- दशरूपक (चतुर्थ प्रकाश)- डा. बैजनाथ पाण्डेय, पेज-450

58. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये-

सूची-I	सूची-II
(क) वीर	(i) रति
(ख) हास्य	(ii) शोक
(ग) करुण	(iii) हास
(घ) शृङ्गार	(iv) उत्साह

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
A.	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
B.	(iii)	(iv)	(ii)	(i)
C.	(iv)	(iii)	(ii)	(i)
D.	(i)	(ii)	(iv)	(iii)

रस		स्थायीभाव
वीर	-	उत्साह
हास्य	-	हास
करुण	-	शोक
शृङ्गार	-	रति

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- साहित्यदर्पण- डा. कमला देवी, पेज-29

59. शृङ्गार का स्थायीभाव है-

(A) रति **(B) हास**

(C) शोक **(D) क्रोध**

व्याख्या-

रस	स्थायीभाव	देवता
शृङ्गार	रति	विष्णु
हास्य	हास	प्रमथदेव
करुण	शोक	यम
रौद्र	क्रोध	रुद्र
वीर	उत्साह	महेन्द्र
भयानक	भय	काल
बीभत्स	जुगुप्सा	महाकाल
अद्भुत	विस्मय	ब्रह्मा
शान्त	निर्वेद/शम	लक्ष्मी/नारायण

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- साहित्यदर्पण(6/321)- शालिग्राम शास्त्री,पेज-225

60. रसशास्त्र में साधारणीकरण के प्रतिपादक हैं-

(A) भट्टनायक **(B) शङ्कुक**

(C) भट्टलोल्लट **(D) अभिनवगुप्त**

व्याख्या-

आचार्य भरत के रससूत्र- **'विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः'** की व्याख्या भिन्न-भिन्न आचार्यों ने भिन्न-भिन्न प्रकार से किया है-

- **भट्टलोल्लट-** भरत के रससूत्र की व्याख्या करने वाले आचार्यों में भट्टलोल्लट का नाम प्रथम है। आचार्य भट्टलोल्लट अभिधाशक्ति को ही समस्त काव्यार्थ का साधन मानते हैं। इनका सिद्धान्त उत्पत्तिवाद के नाम से जाना जाता है। लोल्लट स्थायीभाव के साथ विभाव का उत्पाद्य-उत्पादक भाव, अनुभावों को गम्य-गमकभाव, व्यभिचारी भावों को पोष्य-पोषक भाव मानते हैं। विभावों के साथ संयोग अर्थात् उत्पाद्य-उत्पादक-भाव सम्बन्ध, अनुभावों के साथ गम्य-गमकभाव सम्बन्ध, व्यभिचारीभावों के साथ पोष्य-पोषक भाव सम्बन्ध होता है।
- **भट्टशङ्कुक-** आचार्य शङ्कुक रससूत्र के दूसरे व्याख्याकार हैं।
  इनका सिद्धान्त अनुमितिवाद के नाम से जाना जाता है ये रस को अनुमेय मानते हैं। ये विभाव आदि साधनों तथा रसरूप साध्य में अनुमाप्य-अनुमापक भावों को मानते हैं ये रस में चित्रतुरगादिन्याय की कल्पना करते हैं।
- **भट्टनायक-** भरतमुनि के रससूत्रों की व्याख्या करने वाले आचार्यों में भट्टनायक तीसरे आचार्य हैं। इनका सिद्धान्त भुक्तिवाद के नाम से जाना जाता है,ऐसा सांख्यमतानुयायी भी मानते हैं। आचार्य भट्टनायक रस में अभिधा-व्यापार,भोजकत्व-व्यापार, भावकत्व-व्यापार, इन तीन व्यापारों की कल्पना करते हैं। अभिधा व्यापार के द्वारा काव्य का सामान्य अर्थ उपस्थित होता है। भावकत्व-व्यापार सीता राम आदि के विशेष स्वरूप का अपहरण कर उनका साधारणीकरण करता है और भोजकत्व-व्यापार सामाजिक को रस की अनुभूति कराता है।
  अतः विकल्प A सही है।
- **अभिनवगुप्त-** अभिनवगुप्त रस सिद्धान्त के चतुर्थ व्याख्याकार हैं, अभिनवगुप्त ध्वनि के प्रतिष्ठापक आचार्य हैं। आचार्य अभिनवगुप्त रस को व्यङ्ग्य मानते हैं। ये 'संयोगात्' से 'व्यङ्ग्यव्यञ्जकभाव' तथा 'निष्पत्ति' से अभिव्यक्ति अर्थ करते हैं अतः इनका सिद्धान्त 'अभिव्यक्तिवाद' के नाम से जाना जाता है।

स्रोत- काव्यप्रकाश (चतुर्थ उल्लास)- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-106-107

61. रस की अवस्था को प्राप्त भाव अर्थात् स्थायीभाव कितने हैं?
(A) सात (B) आठ
(C) नौ (D) दस

व्याख्या-
आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश के चतुर्थोल्लास में रस का वर्णन करते हुए कहते हैं-
शृङ्गारहास्यकरुणरौद्रवीरभयानकाः।
बीभत्साद्भुतसंज्ञौ चेत्यष्टौ नाट्ये रसाः स्मृताः।।
(का0प्र0सूत्र-44)
शृङ्गार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, बीभत्स, अद्भुत,
ये आठ रस नाटक में होते हैं।
स्थायीभाव- रतिर्हासश्च शोकश्च क्रोधोत्साहौ भयं तथा जुगुप्सा विस्मयश्चेति स्थायिभावाः प्रकीर्तिताः।।
(का0प्र0सूत्र-44)
रति, हास, शोक, क्रोध, उत्साह, भय, जुगुप्सा, विस्मय ये आठ रसों के स्थायीभाव हैं। इसके अतिरिक्त -
निर्वेद स्थायिभावोऽस्ति शान्तोऽपि नवमो रसः।
(का0प्र0-सूत्र-47)
निर्वेद स्थायीभाव है जिसका ऐसा शान्त नामक नौवाँ रस भी होता है।
उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि आठ रसों की गणना नाट्यशास्त्र में तथा आचार्य मम्मट शान्तरस को भी नवम रस के रूप में स्वीकार करते हैं।
अतः विकल्प C सही है।
स्रोत- साहित्यदर्पण- कमलादेवी, पेज-29

62. ''शरीरं तावदिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली'' यह परिभाषा किसकी है?
(A) दण्डी की (B) भामह की
(C) मम्मट की (D) आनन्दवर्धन की

व्याख्या-
- आचार्य दण्डी काव्यादर्श के प्रथम परिच्छेद में काव्य का लक्षण करते हैं- 'शरीरं तावदिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली' (काव्यादर्श-1.10)
इष्ट मनोहरतया तथा वर्णन करने के लिए अभिप्रेत अर्थ से युक्त शब्द को काव्य का शरीर कहा जाता है। इष्ट अर्थ से युक्त पद समुदाय को काव्य कहते हैं।
अतः विकल्प A सही है।
- **भामह-** आचार्य भामह काव्यालङ्कार के प्रथम परिच्छेद में काव्य का लक्षण करते हैं- 'शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्' (काव्यालङ्कार 1.16)
शब्द और अर्थ के सहभाव को काव्य कहते हैं।
- **आचार्य मम्मट-** काव्यप्रकाश के प्रथमोल्लास में काव्य का लक्षण करते हैं- 'तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि' (का0प्र0सूत्र-1)
दोषों से रहित गुणों से युक्त यदि कहीं पर अलङ्कार की प्रतीति न भी हो तो शब्द और अर्थ की समष्टि काव्य है ।
- **आचार्य आनन्दवर्धन-** ध्वन्यालोक के प्रथम उद्योत में काव्य का लक्षण करते हैं- 'काव्यस्यात्मा ध्वनिः' (ध्वन्यालोक 1.1) काव्य की आत्मा ध्वनि है।

स्रोत- काव्यादर्श (1.10)- श्रीरामचन्द्र मिश्र, पेज-9

63. न छिपाये गये उपमेय पर उपमान का अभेदारोप होने पर अलंकार होता है-
(A) उत्प्रेक्षा (B) परिसंख्या
(C) रूपक (D) उपमा

व्याख्या-
A. उत्प्रेक्षा- 'सम्भावनमथोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य समेन यत्।'
(का0प्र0-सूत्र-136)
उपमेय की उपमान में उत्कटकोटिक सम्भावना होने पर उत्प्रेक्षा अलङ्कार होता है।
B. परिसंख्या- 'किञ्चित्पृष्टमपृष्टं वा कथितं यत्प्रकल्पते।' तादृगन्यव्यपोहाय परिसंख्या तु सा स्मृता।।
(का.प्र.सूत्र-184)
जहाँ कोई पूछी गई अथवा न पूछी गयी वस्तु शब्द के द्वारा प्रतिपादित हो अपने तुल्य अन्य वस्तु के व्यवच्छेद निराकरण में पर्यवसित होती है, उसे परिसंख्या अलङ्कार कहते हैं।
C. रूपक- 'तद्रूपकमभेदो य उपमानोपमेययोः।'
(का.प्र.सूत्र-138)
जहाँ न छिपाये गये उपमेय पर उपमान का अभेदारोप होने पर रूपक अलङ्कार होता है।
अतः विकल्प C सही है।
D. उपमा- 'साधर्म्यमुपमा भेदे।' (का.प्र.सूत्र-124)
उपमान और उपमेय का भेद होने पर सादृश्य का कथन उपमा अलङ्कार है।
स्रोत- काव्यप्रकाश (सूत्र-138)- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-463

**64. पृथुकार्तस्वरपात्रं भूषितनिःशेषपरिजनं देव।
विलसत्करेणुगहनं सम्प्रति सममावयोः सदनम्॥
यह किस अलङ्कार का उदाहरण है?**
(A) अनुप्रास (B) यमक
(C) श्लेष (D) उत्प्रेक्षा

व्याख्या-

A. अनुप्रास- वर्णसाम्यमनुप्रासः। (का0प्र0सूत्र-104)
उदा.- ततोऽरुणपरिस्पन्दमन्दीकृतवपुः शशी।
दध्रे कामपरिक्षामकामिनीगण्डपाण्डुताम्।।

B. यमक- अर्थे सत्यर्थभिन्नानां वर्णानां सा पुनः श्रुतिः। यमकम्। (का0प्र0-116)
उदा.- सन्नारीभरणोमायमाराध्य विधुशेखरम्।
सन्नारीभरणोऽमायस्ततस्त्वं पृथिवीं जय।।

C. श्लेष- वाच्यभेदेन भिन्ना यद् युगपद्भाषणस्पृशः
श्लिष्यन्ति शब्दाः श्लेषोऽसावक्षरादिभिरष्टधा। (का.प्र.सूत्र-118)
उदाहरण- पृथुकार्त्तस्वरपात्रं भूषितनिःशेषपरिजनं देव।
विलसत्करेणुगहनं सम्प्रति सममावयोः सदनम्।।
अतः विकल्प C सही है।

D. उत्प्रेक्षा- सम्भावनमथोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य समेन यत्।
उन्मेषं यो मम न..................पादयोः पादलक्ष्मीः।

स्रोत-काव्यप्रकाश (नवम-उल्लास)- आचार्य विश्वेश्वर,पेज-417

65. स्वर की विषमता होने पर भी जो शब्द साम्य होते हैं, वह अलङ्कार है-
(A) अनुप्रास (B) यमक
(C) रूपक (D) उत्प्रेक्षा

व्याख्या-

(A) अनुप्रास- 'अनुप्रासः शब्दसाम्यं वैषम्येऽपि स्वरस्य यत्।' (सा0द0-10/3)
स्वर की विषमता होने पर भी जो शब्दसाम्य होता है, वहाँ अनुप्रास अलङ्कार होता है। **अतः विकल्प A सही है।**

(B) यमक- सत्यर्थे पृथगर्थायाः स्वरव्यञ्जनसंहतेः।
क्रमेण तेनैवावृत्तिर्यमकं विनिगद्यते। (सा.द.-10/8)
यदि अर्थवान् हो, तो भिन्न अर्थ वाले, स्वर व्यञ्जन समुदाय की उसी क्रम में आवृत्ति को यमक कहते हैं।

(C) रूपक- 'रूपकं रूपितारोपो विषये निरपह्नवे' (सा.द.10.28)
निषेधरहित विषय (उपमेय) में रूपित (अपह्नव भेद उपमान) के आरोप को रूपक अलङ्कार कहते हैं।

(D) उत्प्रेक्षा- भवेत्सम्भावनोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य परात्मना। (सा.द.10/40)
उपमान में उपमेय की उत्कटकोटिक सम्भावना उत्प्रेक्षा अलङ्कार कहलाता है।

स्रोत- साहित्यदर्पण(10.3)-शालिग्राम शास्त्री,पेज-275

66. जहाँ उपमेय में उपमान की सम्भावना होती है, वह अलङ्कार है-
(A) उपमा (B) उत्प्रेक्षा
(C) रूपक (D) निदर्शना

व्याख्या-

(A) **उपमा-** साधर्म्यमुपमा भेदे। (का0प्र0सूत्र-124)
साम्यं वाच्यमवैधर्म्यं वाक्यैक्य उपमा द्वयोः। (सा0द010/14)
उपमान और उपमेय का भेद होने पर सादृश्य का कथन उपमालङ्कार है।

(B) **उत्प्रेक्षा-** सम्भावनमथोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य समेन यत्। (का0प्र0सूत्र-136)
भवेत्सम्भावनोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य परात्मना। (सा0द010/40)
उपमान में उपमेय की उत्कटकोटिक सम्भावना उत्प्रेक्षा है।
अतः विकल्प B सही है।

(C) **रूपक-** तद्रूपकमभेदो य उपमानोपमेययोः। (का0प्र0सूत्र-138)
रूपकं रूपितारोपो विषये निरपह्नवे। (सा0द0-10.28)
उपमान और उपमेय का जो अभेदोरोप है रूपक कहलाता है।

(D) **निदर्शना-** अभवन् वस्तुसम्बन्ध उपमापरिकल्पकः।निदर्शना। (का0प्र0सूत्र-148)
सम्भवन्वस्तुसंबन्धोऽसंभन्वापि कुत्रचित्।
यत्र बिम्बानुबिम्बत्वं बोधयेत् सा निदर्शना।। (सा0द010/51-52)
जहाँ वस्तुओं का परस्पर सम्बन्ध सम्भव अथवा असम्भव होकर उसके बिम्ब-प्रतिबिम्ब भाव का बोधन करे वहाँ निदर्शना अलङ्कार होता है।

स्रोत- काव्यप्रकाश- श्रीनिवास शास्त्री, पेज-487

67. अध्यवसाय की सिद्धि होने पर अलंकार होता है-
(A) स्वभावोक्ति (B) रूपक
(C) अतिशयोक्ति (D) उत्प्रेक्षा

व्याख्या-

(A) स्वभावोक्ति- 'स्वभावोक्तिस्तु डिम्भादेः स्वक्रियारूपवर्णनम्।' (का0प्र0सूत्र-167)

बच्चे पशु आदि की स्वाभाविक क्रिया का वर्णन स्वभावोक्ति अलङ्कार है ।

(B) रूपक- तद्रूपकमभेदो य उपमानोपमेययोः। (का.प्र.सूत्र-138)

उपमान और उपमेय का अभेदारोप रूपक है ।

(C) अतिशयोक्ति- सिद्धत्वेऽध्यवसायस्यातिशयोक्तिर्निगद्यते। (सा.द.10.46)

अध्यवसाय की सिद्धि होने पर अतिशयोक्ति अलङ्कार होता है। **अतः विकल्प C सही है।**

(D) उत्प्रेक्षा- सम्भावनमथोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य समेन यत्। (का.प्र.सूत्र-136)

उपमान में उपमेय की उत्कटकोटिक सम्भावना उत्प्रेक्षा है।

स्रोत- साहित्यदर्पण (10.46)- शालिग्राम शास्त्री, पेज-323

68. नान्दी प्रयुक्त होता है-

(A) महाकाव्य में (B) चम्पूकाव्य में

(C) गद्यकाव्य में (D) नाटक में

व्याख्या-

महाकाव्य,गद्यकाव्य एवं चम्पूकाव्यों में आशीर्वादात्मक आदि त्रिविध मङ्गलाचरणों का प्रयोग होता है। इनमें नान्दी का प्रयोग नहीं होता है। नाटक में नान्दी का प्रयोग होता है जैसे- विश्वनाथ ने साहित्यदर्पण में लक्षण दिया है-

यन्नाट्यवस्तुनः पूर्वं.............नान्दी विघ्नोपशान्तये। (सा0द0-6/23-24)

नाटक में रंगस्थल के विघ्नों की शान्ति के लिए 'नान्दी' अवश्य करनी चाहिए। **अतः विकल्प D सही है।**

नान्दी का लक्षण- आशीर्वचनसंयुक्ता स्तुतिर्यस्मात्प्रयुज्यते। देवद्विजनृपादीनां तस्मान्नान्दीति संज्ञिता।। (सा0द0 6/24)

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम्- कपिलदेव द्विवेदी,पेज-460

69. नाटक में कम से कम व अधिक से अधिक कितने अङ्क होने चाहिए ?

(A) 5-10 अङ्क (B) 8 सर्ग से अधिक

(C) 10 अङ्क (D) 4 अङ्क

व्याख्या-

(A) **5-10अङ्क** नाटक में- 'पञ्चादिका दशपरास्तत्राङ्कापरिकीर्तिताः।' (सा.द.6.8)

नाटक में पाँच से दस अङ्क होते हैं ।

(B) **8 सर्ग से अधिक-** महाकाव्य में- 'नातिस्वल्पा नातिदीर्घाः सर्गा अष्टाधिका इह।' (सा.द.6.320)

महाकाव्य न बहुत छोटे न बहुत बड़े आठ से अधिक सर्ग होते हैं।

(C) **10 अङ्क** प्रकरण में दस अङ्क होते हैं।

(D) **4 अङ्क** नाटिका में 'नाटिका क्लृप्तवृत्ता स्यात्स्त्रीप्राया चतुरङ्किका। (सा.द.6.269)

नाटिका की कथावस्तु कविकल्पित होती है। इसमें अधिकांश स्त्रियाँ होती हैं, चार अङ्क होते हैं।

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- उत्तररामचरितम्- कपिलदेव द्विवेदी (परिशिष्ट-2),पेज-508

70. नाट्यशास्त्र में 'नान्दी' से अभिप्रेत है -

(A) नान्दी देवता (B) बैल

(C) मंगलाचरण (D) पात्र

व्याख्या-

नाटक की रचना के निर्विघ्न समापन के लिए नाटक के प्रारम्भ में नान्दी रूप मङ्गलाचरण का विधान है। 'नान्दी' पद 'नन्द + घञ् + ङीप्' से मिलकर बना है।

साहित्यदर्पण के षष्ठ परिच्छेद में नान्दी का लक्षण इस प्रकार दिया गया है- "आशीर्वचनसंयुक्ता स्तुतिर्यस्मात् प्रयुज्यते। देवद्विजनृपादीनां तस्मान्नान्दीति संज्ञिता।।" (सा0द0 6.24)

इस लक्षण के अनुसार नान्दी में केवल देवों की ही स्तुति नहीं की जाती है अपितु उसमें देव के साथ द्विज (गुरु), नृप आदि की भी स्तुति की जाती है। इसमें माङ्गल्य वस्तु, शङ्ख, चन्द्र, कमल, चक्रवाक, कुमुद आदि का वर्णन होता है।

भरतमुनि के अनुसार नान्दी अष्टपदात्मिका अथवा द्वादशपदात्मिका होती है-

'नान्दी पदैर्द्वादशभिरष्टाभिर्वाप्यलंकृताम्।'

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम्- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-5

71. पाणिनि के अनुसार बाह्य प्रयत्नों की संख्या है-

(A) 2 (B) 5

(C) 11 (D) 7

व्याख्या-

(A) पाणिनि ने दो प्रकार के प्रयत्न बतायें हैं-
1.आभ्यन्तर प्रयत्न 2.बाह्य प्रयत्न

(B) आभ्यन्तर प्रयत्न 5 प्रकार के होते हैं-
1. स्पृष्ट- स्पर्श संज्ञक वर्ण। (क से म तक के वर्ण)
2. ईषत्स्पृष्ट- अन्तःस्थ वर्ण- य्, व्, र्, ल्,
3. विवृत- सभी स्वर
4. ईषत्विवृत- ऊष्म वर्ण- श्,ष्, स्, ह्,।
5. संवृत- उच्चारण दशा में 'अ' का ।

(C) बाह्य प्रयत्न 11 प्रकार के होते हैं-
1. विवार 2. संवार 3. श्वास 4. नाद 5. घोष 6. अघोष 7. अल्पप्राण 8. महाप्राण 9. उदात्त 10. अनुदात्त 11. स्वरित

अतः विकल्प C सही है।

(D) संस्कृत में 7 विभक्तियाँ होती हैं-
प्रथमा (सम्बोधन), द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी, सप्तमी।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी- धरानन्दशास्त्री,पेज-20

72. 'वर्णानामतिशयितः सन्निधिः' क्या है?
(A) प्रातिपदिक (B) पद
(C) संयोग (D) संहिता

व्याख्या-

(A) **प्रातिपदिक-** आचार्य पाणिनि ने प्रातिपदिक संज्ञा करने वाले दो सूत्र गिनायें हैं-

* अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम् (1.2.45)- धातुरहित प्रत्यय व प्रत्ययान्त रहित सार्थक शब्दस्वरूप की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा होती है।
उदाहरण- राम, कृष्ण, लता आदि।

* कृत्तद्धितसमासाश्च (1.2.46)- कृत् प्रत्ययान्त तद्धितप्रत्ययान्त तथा समास भी प्रातिपदिक संज्ञक होते हैं। जैसे- पठनीय, वैयाकरण, राजपुरुष आदि।

(B) **पदसंज्ञाविधायक सूत्रों की संख्या चार है-**
1. सुप्तिङन्तं पदम् (1.4.14), **2.** नः क्ये (1.4.15) **3.** सिति च (1.4.16) **4.** स्वादिष्वसर्वनामस्थाने (1.4.17)

(C) **संयोग संज्ञा-** हलोऽनन्तरा संयोगः (1.1.7)- स्वर के व्यवधान से रहित व्यञ्जनों की संयोग सञ्ज्ञा होती है।
उदाहरण- अग्नि में 'ग्न' की संयोग संज्ञा है।

(D) **संहिता-** परः सन्निकर्षः संहिता (1.4.109)
वर्णानामतिशयितः सन्निधिः संहितासञ्ज्ञा स्यात्। वर्णों की अत्यन्त सन्निधि संहिता सञ्ज्ञक होती है। अर्थात् वर्णों की अत्यन्त समीपता को संहिता कहते हैं। यथा-
राम+अवतार
राम् अ+अ वतार = रामावतार
अ व अ का सामीप्य संहिता है।

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी-आद्याप्रसाद मिश्र,पेज-27

73. 'चन्द्रशेखरः' में कौन-सा समास है?
(A) तत्पुरुष (B) बहुव्रीहि
(C) द्विगु (D) कर्मधारय

व्याख्या-

* **तत्पुरुष-** निष्कौशाम्बिः, निष्क्रान्तः, कौशाम्ब्याः, निरादयः, क्रान्ताद्यर्थे, पञ्चम्या, पर्यध्ययनः, परिग्लानोऽध्ययनाय, पर्यादयो ग्लानाद्यर्थे, चतुर्थ्या

* **बहुव्रीहि-** चन्द्रमौलिः, चन्द्रो मौलौ यस्य सः, अनेकमन्यपदार्थे, चन्द्रशेखरः, चन्द्रः शेखरे यस्य सः, अनेकमन्यपदार्थे,

* **द्विगु-** पञ्चगवम्, पञ्चानां गवां समाहारः, तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च, अष्टाध्यायी, अष्टानामध्यायानां समाहारः, तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च,

* **कर्मधारय-** नीलोत्पलम्, नीलम् उत्पलम्, विशेषणं विशेष्येण, बहुलम्, कृष्णसर्पः, कृष्णः सर्पः, विशेषणं विशेष्येण, बहुलम्,

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी- (भैमीव्याख्या भाग-4)- पेज-164-165

74. चित्रगुः का विग्रह वाक्य है-
(A) चित्रा चासौ गौः (B) चित्रा गावो यस्य सः
(C) चित्राणां गवां समाहारः (D) चित्रायाः गौः

व्याख्या-

चित्रगु- 'चित्रा गावो यस्य सः' लौकिक विग्रह तथा चित्रा जस् गो जस् इस अलौकिक विग्रह में दोनों प्रथमान्तों का अन्य पद की प्रधानता में 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से विकल्प से बहुव्रीहि समास होने पर कृत्तद्धितसमासाश्च' सूत्र से प्रातिपदिक सञ्ज्ञा 'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से सुप् विभक्ति का लुक् होकर चित्रा गो बना, चित्रा शब्द भाषिकपुंस्क है क्योंकि पुँल्लिङ्ग चित्र भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है, तथा उत्तरपद में गो शब्द स्त्रीलिङ्ग विद्यमान है तथा चित्रा शब्द से ऊङ्ादि प्रत्यय भी नहीं किये गये हैं अतः 'स्त्रियाः

पुंवद्भाषितपुंस्कादनूङ् समानाधिकरणे स्त्रियामपूरणी प्रियादिषु' सूत्र से चित्रा शब्द को पुवंद्भाव होकर चित्र हो गया, बहुव्रीहि समास में प्रथमा निर्दिष्ट पद उपसर्जन संज्ञक होते हैं, अतः 'गोस्त्रियोरुपसर्जनस्य' सूत्र से उपसर्जन गो को ह्रस्व ओ के स्थान में उ हो गया तो चित्रगु बना विशेष्य के अनुसार समस्त पद का लिङ्गवचन होगा अतः प्रातिपदिकत्वात् प्रथमा एकवचन में सु प्रत्यय तथा सु का अनुबन्ध लोप होकर चित्रगुः प्रयोग सिद्ध हुआ समासाभाव पक्ष में 'चित्रा गावो यस्य सः ऐसा' वाक्य ही रहेगा।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमीव्याख्या भाग-4),पेज-197

75. 'द्वादश' पद में समास है-
(A) बहुव्रीहि (B) तत्पुरुष
(C) अव्ययीभाव (D) द्वन्द्व

व्याख्या-

	सामासिक पद	लौकिक विग्रह	समास
*	द्विमूर्धः	द्वौ मूर्धानौ यस्य सः	बहुव्रीहि
*	द्विपात्	द्वौ पादौ यस्य सः	बहुव्रीहि
*	द्विजार्थः	द्विजाय अयम्	तत्पुरुष
*	द्विजेतरः	द्विजाद् इतरः	तत्पुरुष
*	दुर्यवनम्	यवनानां व्यृद्धिः	अव्ययीभाव
*	द्वादश	द्वौ च दश च	द्वन्द्व

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज-165

76. जिस समास में प्रथम पद प्रधान रहता है, उसे कहते हैं -
(A) तत्पुरुष समास (B) बहुव्रीहि समास
(C) अव्ययीभाव समास (D) द्वन्द्व समास

व्याख्या-

समास- 'समसनं समासः' संक्षेपीकरण को समास कहते हैं, जब दो या दो से अधिक पद मिलकर एक पद हो जाते हैं तो उसे समास कहते हैं। समासः पञ्चधा- समास के पाँच भेद हैं-

केवलसमास, अव्ययीभावसमास, तत्पुरुषसमास, बहुव्रीहिसमास, द्वन्द्वसमास।

➢ **केवल समास-** 'स च विशेषसञ्ज्ञा विनिर्मुक्तः केवलसमासः' जब समास तो किया जाता है परन्तु उसकी कोई विशेष सञ्ज्ञा नहीं होती तो उसे केवल समास कहते हैं।

उदाहरण- वागर्थाविव, नैकः आदि।
केवल समास को 'सुप्सुपा समास' भी कहते हैं ।

➢ **अव्ययीभाव समास-** 'प्रायेणपूर्वपदार्थप्रधानोऽव्ययीभावो द्वितीयः।'
जिस समास में पूर्वपदार्थ की प्रधानता हो, उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं। उदाहरण- अधिहरि,उपकृष्णम्,अधिगोपम्।
नोट- अव्ययीभाव एक अर्थानुसारी सञ्ज्ञा है।
अतः विकल्प C सही है।

➢ **तत्पुरुष समास-** 'प्रायेणोत्तरपदार्थप्रधानस्तत्पुरुषस्तृतीयः' जिस समास में उत्तर पद की प्रधानता हो तो उस समास को तत्पुरुष समास कहते हैं।
उदाहरण- कृष्णश्रितः,हरित्रातः,चोरभयम्।
नोट- तत्पुरुष का भेद कर्मधारय तथा कर्मधारय का भेद द्विगु समास है।

➢ **बहुव्रीहि समास-** 'प्रायेणान्यपदार्थप्रधानो बहुव्रीहिश्चतुर्थः।' जिस समास में न तो पूर्वपद प्रधान हो और न उत्तर पद प्रधान हो बल्कि अन्य पद प्रधान हो तो उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं।
उदाहरण- पीताम्बरः,त्रिमूर्धः,जलजाक्षी आदि।

➢ **द्वन्द्व समास-**'प्रायेणोभयपदार्थप्रधानो द्वन्द्वः पञ्चमः।' जिसमें दोनों पद की प्रधानता हो उसे द्वन्द्व समास कहते हैं। **उदाहरण-** पितरौ, पाणिपादम्, ईशकृष्णौ आदि।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4)- पेज-2

77. 'पाणिपादम्' में समास है-
(A) इतरेतर द्वन्द्व (B) समाहार द्वन्द्व
(C) एकशेष द्वन्द्व (D) अलुक् तत्पुरुष

व्याख्या-

	सामासिक पद	समास विग्रह	समास
*	कुक्कुटमयूर्यौ	कुक्कुटश्च मयूरी च	इतरेतरद्वन्द्व
*	रामकृष्णौ	रामश्च कृष्णश्च	इतरेतरद्वन्द्व
*	पाणिपादम्	पाणी च पादौ च	समाहार द्वन्द्व
*	गङ्गाशोणम्	गङ्गा च शोणश्च	समाहार द्वन्द्व
*	शूद्रौ	शूद्री च शूद्रश्च	एकशेषद्वन्द्व
*	अजौ	अजश्च अजा च	एकशेषद्वन्द्व
*	युधिष्ठिरः	युधि स्थिरः	अलुक् तत्पुरुष

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका- बाबूराम सक्सेना,पेज-259

78. 'अभितः' या 'सर्वतः' के योग में कौन सी विभक्ति होती है-
(A) षष्ठी चतुर्थी **(B) पञ्चमी**
(C) तृतीया **(D) द्वितीया**

व्याख्या-
- **चतुर्थी-** ''नमः स्वस्तिस्वाहास्वधाऽलंवषड्योगाच्च 2/3/16'' नमः,स्वस्ति(कल्याण),स्वाहा,स्वधा,अलं तथा वषट् शब्दों के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे- तस्मै गुरवे नमः
- **पञ्चमी-** ''अन्यारादितरर्तेदिक्शब्दाञ्चूत्तरपदाजाहियुक्ते (2/3/29) (2/3/2)'' अन्य,आरात्,इतर, ऋते, दिग्वाचक पूर्व दक्षिण आदि तथा अञ्चु धातु से युक्त दिग्वाचक प्रत्यक्, उदक् प्रभृति दक्षिणा,उत्तरा प्रभृति एवं दक्षिणाहि,उत्तराहि प्रभृति शब्दों के योग में पञ्चमी होती है। जैसे- दक्षिणा ग्रामात्
- **तृतीया-** ''अशिष्टव्यवहारे दाणः प्रयोगे चतुर्थ्यर्थे तृतीया (वा0)'' धर्मविरुद्ध आचरण होने पर 'दाण्' धातु कामुकः। के प्रयोग में चतुर्थी के अर्थ में तृतीया विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे- दास्या संयच्छते
- **द्वितीया-** ''अभितः परितः समया निकषा हा प्रति योगेऽपि (वार्तिक)'' अभितः कृष्णम्।
अभितः, परितः, समया, निकषा, हा, प्रति शब्दों के योग में द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है।
''उभसर्वतसोः कार्याधिगुपर्यादिषु त्रिषु।
द्वितीयाम्रेडितान्तेषु ततोऽन्यत्रापि दृश्यते।।
अर्थात् उभयतः,सर्वतः,धिक्,उपर्युपरि,अध्यधि,अधोऽधः इन छः अव्यय के योग में द्वितीया विभक्ति होती है।

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज-46

79. कर्मप्रवचनीय अप्, आङ्, के योग में कौन सी विभक्ति होती है-
(A) तृतीया **(B) चतुर्थी**
(C) पञ्चमी **(D) षष्ठी**

व्याख्या-
- ''**कर्मप्रवचनीयाः (1.4.82)**'' यह संज्ञा एवं परिभाषा दोनों है ये निपात उपसर्गों से अलग होते हैं। पाणिनि ने निपातों- अनु,उप,अप,परि,आङ्,प्रति, अभि, अधि, सु, अति, अपि की कर्मप्रवचनीय संज्ञा बतायी है जिसका प्रयोजन विभिन्न स्थितयों में भिन्न-भिन्न विभक्तियों का प्रयोग करना है।
- **पञ्चम्यपाङ्परिभिः (2.3.10)** अर्थात् अप,आङ् तथा परि इन तीनों कर्मप्रवचनीय के योग में पञ्चमी विभक्ति होती है- उदाहरण- 'अप हरेः' प्रस्तुत उदाहरण में वर्जन अर्थ में 'अप' शब्द की 'अपपरी वर्जने' सूत्र से कर्मप्रवचनीय सञ्ज्ञा तथा प्रकृत सूत्र से पञ्चमी विभक्ति हुई है।
अतः विकल्प C सही है।
- **'अपपरी वर्जने' (1.4.88)** 'अप' और 'परि' शब्दों से वर्जन अर्थ द्योतित होने पर अप और परि की कर्मप्रवचनीय सञ्ज्ञा होती है।
- **'आङ् मर्यादावचने' (1.4.89)** आङ् शब्द से मर्यादा और अभिविधि अर्थ के द्योतित होने पर कर्मप्रवचनीय सञ्ज्ञा होती है।

80. सूची-1 को सूची -2 के साथ सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए-

सूची-1	सूची-2
(क) पादेन खञ्जः	(i) द्वितीया
(ख) गुरवे नमः	(ii) पंचमी
(ग) चौरात् बिभेति	(iii) चतुर्थी
(घ) बलिं याचते वसुधाम्	(iv) तृतीया

व्याख्या-

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
A.	(i)	(ii)	(iv)	(iii)
B.	(iv)	(iii)	(ii)	(i)
C.	(iii)	(iv)	(ii)	(i)
D.	(ii)	(iv)	(iii)	(i)

- **तृतीया विभक्ति-** येनाङ्गविकारः(2/3/20)- जिस अङ्ग से अङ्गी का विकार लक्षित हो उसके वाचक शब्द से तृतीया विभक्ति होती है।
जैसे- पादेन खञ्जः (पैर से लँगड़ा है।)
- **चतुर्थी विभक्ति-** नमः स्वस्तिस्वाहास्वधाऽलंवषड्योगाच्च (2/3/16) नमः, स्वस्ति,स्वाहा,स्वधा,अलं,वषट् शब्दों के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे- गुरवे नमः (गुरु को नमस्कार है) पञ्चमी विभक्ति- भीत्रार्थानां भयहेतुः (1/4/25)- भयार्थक एवं त्राणार्थक धातुओं एवं शब्दों के प्रयोग में जो भय का कारण है वह अपादान होता है। जैसे- चौराद् बिभेति (चोर से डरता है)

➢ **द्वितीया विभक्ति-** अकथितं च (1/4/51)- अकथित कर्म में द्वितीया होती है। बलिं याचते वसुधाम् (बलि से पृथ्वी माँगता है)

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- अष्टाध्यायी- ईश्वरचन्द्र,पेज-

81. क्षिप्तः में कौन सा प्रत्यय है?

(A) क्तवतु (B) शतृ
(C) तुमुन् (D) क्त

व्याख्या-

➢ **क्त एवं क्तवतु-** ये दोनों प्रत्यय भूतकालिक प्रत्यय हैं। क्त का त और क्तवतु का तवत् शेष बचता है। क्त कर्मवाच्य या भाववाच्य में होता है जबकि क्तवतु कर्तृवाच्य में प्रयोग होता है।

क्तवतु प्रत्यय	क्त प्रत्यय
इष् + क्तवतु = इष्टवान्	क्षिप् + क्त = क्षिप्तः
	इष् + क्त = इष्टः
गै + क्तवतु = गीतवान्	गै + क्त = गीतः

➢ **शतृ प्रत्यय-** परस्मैपदी धातुओं में लट् के स्थान पर शतृ होता है शतृ का अत् शेष रहता है-
क्षिप् + शतृ = क्षिपन्
अस् + शतृ = सन् पठ् + शतृ = पठन्
कृ + शतृ = कुर्वन् गै + शतृ = गायन्

➢ **तुमुन् प्रत्यय-** यह प्रत्यय 'के लिए' अर्थ में होता है। तुमुन् का तुम् शेष बचता है। तुमुन् प्रत्ययान्त पद अव्यय होता है अतः इसके रूप नहीं चलते हैं- अस् + तुमुन् = भवितुम् क्षिप् + तुमुन् = क्षेप्तुम्

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- रचनानुवादकौमुदी- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-201

82. 'दर्शनम्' में कौन-सा प्रत्यय है?

(A) ल्युट् (B) अनीयर्
(C) घञ् (D) ण्वुल्

व्याख्या-

ल्युट्- प्रत्यय भाववाचक शब्द बनाने के लिए धातु से लगता है ल्युट् का 'अन' शेष बचता है ल्युट् प्रत्ययान्त शब्द नपुंसकलिङ्ग होता है।
यथा- **दृश्+ल्युट् = दर्शनम्,** धृ + ल्युट् = धरणम् गम् + ल्युट् =गमनम्, तृ + ल्युट् = तरणम्

अतः विकल्प A सही है।

➢ **अनीयर्-** 'चाहिए' अर्थ में अनीयर् प्रत्यय होता है अनीयर् का 'अनीय' शेष रहता है यथा-
कृ + अनीयर् = करणीयः गै + अनीयर् = गानीयः
दृश् + अनीयर् =दर्शनीयः भृ + अनीयर् = भरणीयः

➢ **घञ् प्रत्यय-** भाव अर्थ में घञ् प्रत्यय लगता है घञ् का अ शेष बचता है घञ् प्रत्ययान्त शब्द पुंल्लिङ्ग होते हैं ।
कृ + घञ् = कारः कृष् + घञ् = कर्षः
हृ + घञ् = हारः नि + सिध् + घञ् = निषेधः

➢ **ण्वुल् प्रत्यय-** कर्त्ता या वाला अर्थ में ण्वुल् प्रत्यय प्रयुक्त होता है इसका अक शेष बचता है-
कृ + ण्वुल् - कारकः। द्युत् + ण्वुल् = द्योतकः
दृश् + ण्वुल् = दर्शकः पठ् + ण्वुल् = पाठकः

स्रोत- रचनानुवादकौमुदी- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-210

83. नर्तक में किस प्रत्यय के संयोग से नर्तकी शब्द बनता है?

(A) टाप् (B) ङीप्
(C) ङीष् (D) ङीन्

व्याख्या-

(A) टाप् प्रत्यय- 'अजाद्यतष्टाप्' (4.1.4)- अजादिगणपठित शब्दों से या अदन्त (जिसके अन्त में ह्रस्व अकार है) प्रातिपदिक के वाच्य स्त्रीत्व की विवक्षा में उनसे टाप् प्रत्यय होता है।
उदाहरण- अज + टाप् = अजा, एडक + टाप् = एडका।

(B) ङीप् प्रत्यय- 'ऋन्नेभ्यो ङीप् 4.1.5' -स्त्रीत्व की विवक्षा में ऋदन्त और नकारान्त शब्दों से ङीप् प्रत्यय होता है।
उदाहरण- राजन् + ङीप् = राज्ञी, कर्तृ + ङीप् = कर्त्री।

(C) ङीष् प्रत्यय- 'षिद्गौरादिभ्यश्च 4.1.41'- षित् तथा गौरादिगण पठित अनुपसर्जन प्रातिपदिक से स्त्रीत्व की विवक्षा में ङीष् होता है।
उदाहरण- नर्तक + ङीष् = नर्तकी, अनडुह् + ङीष् = अनड्वाही।

अतः विकल्प C सही है।

(D) ङीन् प्रत्यय- 'शार्ङ्गरवाद्यञो ङीन्' (4.1.73) शार्ङ्गरव आदि गणपठित प्रातिपदिक से तथा अञ् प्रत्यय का जो अकार तदन्त जातिवाचक प्रातिपदिक से स्त्रीत्व की विवक्षा में ङीन् प्रत्यय होता है-
उदाहरण- 'शार्ङ्गरव + ङीन् = शार्ङ्गरवी, बैदी, ब्राह्मणी।

स्रोत- संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका- बाबूराम सक्सेना, पेज-514

84. 'भवानि' में लकार है -
(A) लट्   (B) लोट्
(C) लङ्   (D) विधिलिङ्

व्याख्या-
भ्वादिगण भू धातु, अकर्मक, सेट्, परस्मैपद

A. लट् (वर्तमान काल)			
	एक.	द्विव.	बहु.
प्र0पु0	भवति	भवतः	भवन्ति
म0पु0	भवसि	भवथः	भवथ
उ0पु0	भवामि	भवावः	भवामः
B. लोट् (आज्ञा)			
प्र0पु0	भवतु	भवताम्	भवन्तु
म0पु0	भव	भवतम्	भवत
उ0पु0	**भवानि**	भवाव	भवाम
C. लङ् (अनद्यतनभूत)			
प्र0पु0	अभवत्	अभवताम्	अभवन्
म0पु0	अभवः	अभवतम्	अभवत
उ0पु0	अभवम्	अभवाव	अभवाम
D. विधिलिङ्			
प्र0पु0	भवेत्	भवेताम्	भवेयुः
म0पु0	भवेः	भवेतम्	भवेत
उ0पु0	भवेयम्	भवेव	भवेम
अतः विकल्प B सही है।			

स्रोत- रचनानुवादकौमुदी- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-145

85. ''रसोइया चावलों से भात पकाता है'' का संस्कृत रूपान्तर है-
A. पाचकः तण्डुलान् ओदनं पचति
B. पाचकः तण्डुलेन ओदनं पचसि
C. पाचकः तण्डुलात् ओदनानि पचति
D. पाचकः तण्डुलेन ओदनं पचथः

व्याख्या-
'रसोइया चावलों से भात पकाता है।' का सही अनुवाद- **'पाचकः तण्डुलान् ओदनं पचति।'** होगा क्योंकि ''अकथितं च'' सूत्र से पचति क्रिया के गौणकर्म ओदन में द्वितीया विभक्ति, प्रधानकर्म ओदन की 'कर्तुरीप्सिततमं कर्म' (1/4/49) से कर्म सञ्ज्ञा एवं 'कर्मणि द्वितीया' (2/3/2) से द्वितीया विभक्ति हुई है। पचति क्रिया के कर्त्ता पाचक के उक्त होने के कारण उसमें प्रथमा
विभक्ति का प्रयोग हुआ है। अतः 'पाचकः तण्डुलान् ओदनं पचति' सही है। **इसलिए विकल्प A सही है।**

स्रोत-सिद्धान्तकौमुदी (कारक-प्रकरण)- राममुनि पाण्डेय,पेज-19

86. निम्नांकित वाक्यों में कौन शुद्ध है-
(A) अध्ययनं हेतु काश्यां तिष्ठति
(B) अध्ययनं हेतो काश्यां तिष्ठति
(C) अध्ययनस्य हेतोः काश्यां तिष्ठति
(D) अध्ययनस्य हेतु काश्यां तिष्ठति

व्याख्या-
''अध्ययनस्य हेतोः काश्यां तिष्ठति।'' वाक्य शुद्ध है क्योंकि 'षष्ठीहेतुप्रयोगे (2/3/26) सूत्र से हेतु शब्द के प्रयोग में हेतु या कारण द्योतित करने वाले शब्द में षष्ठी होती है।
अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका- बाबूराम सक्सेना, पेज-222

87. निम्नलिखित में कौन-सा वाक्य शुद्ध है?
(A) अध्ययनात् पराजयते
(B) अध्ययनाम् पराजयते
(C) अध्ययनः पराजयते
(D) अध्ययनस्य पराजयते

व्याख्या-
'अध्ययनात् पराजयते।'- वह अध्ययन से भागता है। वाक्य शुद्ध है क्योंकि ''पराजेरसोढः 1/4/26'' सूत्र द्वारा परा उपसर्ग पूर्वक 'जि धातु' के प्रयोग में असह्य विषय या वस्तु की अपादानसंज्ञा होती है इस वाक्य में परा उपसर्ग एवं जि धातु का प्रयोग है एवं अध्ययन की अपादान संज्ञा हुई एवं 'अपादाने पञ्चमी 2/3/28' से अध्ययन में पञ्चमी विभक्ति का विधान हुआ।
अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- अष्टाध्यायी (1/4/26)

88. भाषा उत्पत्ति विषयक 'समन्वय सिद्धान्त' के प्रवर्तक भाषाशास्त्री हैं-
(A) प्लेटो   (B) हेनरी स्वीट
(C) जी0 रेवेज   (D) न्वारे

व्याख्या-
भाषा की उत्पत्ति विषयक सिद्धान्त

	सिद्धान्त		विद्वान्
*	दिव्योत्पत्ति-सिद्धान्त	-	सुसमिल्श द्वारा समर्थन
*	संकेत-सिद्धान्त	-	फ्रेन्च विचारक रूसो
*	रणन-सिद्धान्त	-	प्लेटो
*	आवेग-सिद्धान्त	-	डार्विन

* श्रम-ध्वनि सिद्धान्त - न्वारे
* प्रतीक-सिद्धान्त - प्रो0 स्वीट
* **समन्वय-सिद्धान्त - हेनरी स्वीट**
* प्रतिभा-सिद्धान्त - भर्तृहरि
* सम्पर्क-सिद्धान्त - जी0 रेवेज

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- भाषाविज्ञान- कर्णसिंह, पेज-34

89. 'धर्म का धम्म' रूप में परिवर्तन उदाहरण है-
(A) पुरोगामी समीकरण का
(B) पश्चगामी समीकरण का
(C) पुरोगामी विषमीकरण का
(D) पश्चगामी विषमीकरण का

व्याख्या-

➤ **पुरोगामी समीकरण-** इसमें पूर्ववर्ती ध्वनि आगे की दूसरी ध्वनि को अपने सदृश बनाती है।
उदाहरण- विष् + नुः = विष्णुः, पुष् + तः = पुष्टः, चक्र-चक्का, अग्नि-अग्गि, पक्व-पक्का, पत्र-पत्ता

➤ **पश्चगामी समीकरण-** इसमें परवर्ती ध्वनि पूर्ववर्ती ध्वनि को अपने सदृश बनाती है-
शर्करा = शक्कर, **धर्म=धम्म,** तत् + लीन = तल्लीन, सप्त=सात, वल्कल=वक्कल, गल्प=गप्प

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र- कपिलदेव द्विवेदी,पेज-233

90. ''विचार जब ध्वन्यात्मक होकर होठों पर प्रकट होती है तो वह भाषा कहलाती है।'' यह किसका विचार है ?
(A) बाबूराम सक्सेना (B) भोलानाथ तिवारी
(C) पतञ्जलि (D) प्लेटो का

व्याख्या-

➤ **बाबूराम सक्सेना-** ''जिन ध्वनि-चिन्हों द्वारा मनुष्य परस्पर विचार-विनिमय करता है, उसको समष्टिरूप से भाषा कहते हैं।''

➤ **डॉ0 भोलानाथ तिवारी-** ''भाषा उच्चारणावयवों से उच्चरित अध्ययन-विश्लेषणीय यादृच्छिक ध्वनि प्रतीकों की वह व्यवस्था है
जिसके द्वारा एक समान के लोग आपस में भावों और विचारों का आदान-प्रदान करते हैं।''

➤ **महर्षि पतञ्जलि के अनुसार-** ''व्यक्तां वाचि वर्णा येषा त इमे व्यक्त वाचः।। (महाभाष्य 1/3/38)''
भाषा वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचार दूसरों पर भली-भाँति प्रकट कर सकता है और दूसरों के विचार स्वयं स्पष्ट रूप से समझ सकता है।''

➤ **प्लेटो के अनुसार-**
'विचार आत्मा की मूक या अध्वन्यात्मक बातचीत है पर वही जब ध्वन्यात्मक होकर होठों पर प्रकट होती है तो वह भाषा कहलाती है।' **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत- भाषाविज्ञान-भोलानाथ तिवारी, पेज-2

91. 'ध्वनि-परिवर्तन' का आन्तरिक कारण नहीं है-
(A) प्रयत्नलाघव (B) क्षिप्रभाषण
(C) ध्वनियों का प्रवेश (D) बलाघात

व्याख्या-

ध्वनि-परिवर्तन के कारण- भाषाविज्ञान में ध्वनि-परिवर्तन के कारणों को दो भागों में बाँटा गया है-

(क) आभ्यन्तर कारण-

1. प्रयत्नलाघव या मुखसुख 2. लघूकरण की प्रवृत्ति
3. अनुकरण की अपूर्णता 4. अशिक्षा
5. शीघ्रभाषण 6. भावावेश
7. काव्यात्मकता 8. बलाघात
9. कृत्रिमता 10. भ्रामक व्युत्पत्ति

(ख) बाह्य कारण-

1. भौगोलिक कारण 2. सामाजिक एवं राजनीतिक परिस्थितियाँ
3. काल प्रभाव 4. लिपि दोष 5. सादृश्य

प्रयत्नलाघव, क्षिप्रभाषण तथा बलाघात ये तीनों ध्वनिपरिवर्तन के आन्तरिक कारण हैं जबकि ध्वनियों का प्रवेश आन्तरिक कारण नहीं है। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत-भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र- कपिलदेव द्विवेदी,पेज-227

92. 'ई' से संकेतिक स्वर है-
(A) वर्तुल (B) केन्द्रीय
(C) पश्च (D) अग्र

व्याख्या-

वर्तुल- ऊ, ओ, औ।
केन्द्रीय- अ मध्य स्वर या केन्द्रीय स्वर है।
पश्च- उ, ऊ, आ ये तीन पश्च स्वर हैं।
अग्र- इ, ई, ए ये तीन अग्र स्वर हैं।
अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- भाषा विज्ञान- कर्णसिंह, पेज-155

93. सांख्य के अनुसार बुद्धि के प्रमुख परिणाम हैं-
(A) विपर्यय, अशक्ति, सिद्धि, तमस्
(B) विपर्यय, अशक्ति, तुष्टि, सिद्धि
(C) विपर्यय, अशक्ति, मोह, तामिस्त्र
(D) विपर्यय, तमस्, मोह ,तामिस्त्र

व्याख्या-
ईश्वरकृष्ण सांख्यकारिका में बुद्धि का भेद करते हुए कहते हैं-

''एष प्रत्ययसर्गो विपर्ययाशक्तितुष्टिसिद्धियाख्यः।
गुणवैषम्यविमर्दात् तस्य च भेदास्तु पञ्चाशत्॥''
(सां.का. 46)

विपर्यय,अशक्ति,तुष्टि,सिद्धि, नामक यह बौद्धिक सर्ग (सृष्टि) गुणों की विषमता के कारण एक-दूसरे के अभिभव से उसके पचास भेद होते हैं ।

विपर्यय- 5 भेद, अशक्ति-28भेद, तुष्टि-9भेद, सिद्धि-8भेद, इस प्रकार बुद्धि सर्ग के 50 भेद होते हैं।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- सांख्यतत्त्वकौमुदी (का.-46) आद्याप्रसाद मिश्र, पेज-269

94. सांख्य स्वीकार करता है-
(A) असतः सत् जायते
(B) एकस्य सतो विवर्तः कार्यजातं न वस्तु सत्
(C) सतः सत् जायते
(D) सतः असत् जायते

व्याख्या-
''सतः सत् जायते''- यह सांख्य का मत है।
असदकरणादुपादानग्रहणात् सर्वसम्भवाभावात्।
शक्तस्य शक्यकरणात् कारणभावाच्च सत्कार्यम्।। (सां.का.9)
कारण व्यापार के पूर्व भी कार्य (कारण में) विद्यमान रहता है क्योंकि

1. असत् या अविद्यमान होने पर कार्य की उत्पत्ति हो ही नहीं सकती।
2. कार्य की उत्पत्ति के लिए उसके उपादान कारण का ग्रहण अवश्य करना पड़ता है अर्थात् कार्य अपने उपादान कारण से नियत रूप से सम्बद्ध होता है।
3. सभी कार्य सभी कारण से उत्पन्न नहीं होते हैं।
4. जो कारण जिस कार्य को उत्पन्न करने में शक्त या समर्थ है, उससे उसी कार्य की उत्पत्ति होती है।
5. कार्य कारणात्मक अर्थात् कारण से अभिन्न या उसी के स्वरूप का होता है।

- एकस्य सतो विवर्तः कार्यजातं न वस्तु सत् - अद्वैत वेदान्त
- असतः सत् जायते- बौद्धमत
- सतः असत् जायते- न्याय-वैशेषिक

अतः विकल्प Cसही है।

स्रोत- सांख्यतत्त्वकौमुदीप्रभा (का0-9) आद्याप्रसाद मिश्र, पेज-153

95. सत्कार्यवाद का कारण है-
(A) प्रकृतिस्वरूपज्ञान **(B) सामीप्य**
(C) समानाभिहार **(D) सर्वसम्भवाभाव**

व्याख्या-
ईश्वरकृष्ण सांख्यकारिका में सत्कार्यवाद के सिद्धान्त का प्रतिपादन करते हैं-
''असदकरणादुपादानग्रहणात् सर्वसम्भवाभावात्।
शक्तस्य शक्यकरणात् कारणभावाच्च सत्कार्यम्।।'' सां.का.9
सर्वथा अविद्यमान को उत्पन्न न किये जा सकने से विशेष पदार्थ को उत्पन्न करने के लिए उससे सम्बद्ध उपादन को ग्रहण करने से सभी कारणरूप पदार्थों से सभी कार्यों की उत्पत्ति सम्भव न होने से समर्थ कारणरूप वस्तु से ही समर्थरूप वस्तु के उत्पन्न होने से कार्य और कारण के परस्पर अभिन्न होने से कार्य अपने कारणों में विद्यमान रहता है।

इसप्रकार सत्कार्यवाद के 5 हेतु निम्नवत् हैं-
1. असत्-अकरणात् 2. उपादान-ग्रहणात्
3. सर्वसम्भव-अभावात् 4. शक्तस्य शक्यकरणात्
5. कारण-भावात्

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत-सांख्यतत्त्वकौमुदी प्रभा (कारिका-9)- आद्याप्रसाद मिश्र,पेज-153

96. पुरुष का लक्षण है-
(A) अचेतन **(B) विवेकी**
(C) प्रसवधर्मी **(D) त्रिगुणात्मक**

व्याख्या-
''त्रिगुणमविवेकि विषयः सामान्यमचेतनं प्रसवधर्मि।
व्यक्तं तथा प्रधानं तद्विपरीतस्तथा च पुमान्।। (सां.का.11)
महत् आदि व्यक्तपदार्थ और अव्यक्तरूप मूलकारण प्रकृति (दोनों) तीन गुणों से युक्त, परस्पर अलग होने में असमर्थ, ज्ञान (या अनुभव) के विषय में अनेक पुरुषों द्वारा ग्रहण किये जाने योग्य,
जड़ उत्पादनशील हैं और पुरुष उसके विपरीत होता है।

	व्यक्त (महत् आदि) एवं प्रकृति के गुण	पुमान् (पुरुष) के गुण
*	त्रिगुणात्मक	त्रिगुणरहित
*	अविवेकि	विवेकी
*	विषयी	अविषयी
*	सामान्य	असामान्य
*	अचेतन	चेतन
*	प्रसवधर्मी	अप्रसवधर्मी

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- सांख्यकारिका (का0-11)- राकेश शास्त्री,पेज-38

97. ''न प्रकृतिः न विकृतिः'' यह कारिकांश किसके लिए प्रयुक्त है?
(A) अहङ्कार (B) ज्ञानेन्द्रियाँ
(C) कर्मेन्द्रियाँ (D) पुरुष

व्याख्या-
ईश्वरकृष्ण सांख्यकारिका में अव्यक्त और पुरुष का परिचय प्रस्तुत करते हुए कहते हैं-
मूलप्रकृतिरविकृतिर्महदाद्याः प्रकृतिविकृतयः सप्त।
षोडशकस्तु विकारो न प्रकृतिर्न विकृतिः पुरुषः।। (सां.का.3)

* **प्रकृति (अविकृति)-** मूलप्रकृति/प्रधान/अव्यक्त-**एक**
* **प्रकृति एवं विकृति-** महत् (बुद्धि),अहङ्कार,पञ्चतन्मात्रा- सात
* **केवल विकृति-**पञ्चज्ञानेन्द्रियाँ,पञ्चकर्मेन्द्रियाँ,मन,पञ्चमहाभूत-16
* **न प्रकृति न विकृति-** पुरुष एक
* **पञ्च ज्ञानेन्द्रियाँ-** चक्षु,श्रोत्र,घ्राण,रसना,त्वक्
* **पञ्च कर्मेन्द्रियाँ-** वाक्,पाणि,पाद,पायु,उपस्थ
* **पञ्च महाभूत-** आकाश,वायु,तेज,जल,पृथिवी
* **पञ्च तन्मात्रा-** शब्द,स्पर्श,रूप,रस,गन्ध

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- सांख्यतत्त्वकौमुदी प्रभा (का.-3)- आद्याप्रसाद मिश्र, पेज-112

98. सांख्य की प्रकृति क्या है-
(A) विवेकी (B) त्रिगुणात्मिका
(C) चेतन (D) अप्रधान

व्याख्या-
सांख्यकारिकाकार ईश्वरकृष्ण प्रकृति तथा पुरुष के गुणों का वर्णन करते हुए कहते हैं-
''त्रिगुणमविवेकि विषयः सामान्यमचेतनं प्रसवधर्मी।
व्यक्तं तथा प्रधानं, तद्विपरीतस्तथा च पुमान्।।''
(सां.का.-11)

	अव्यक्त या प्रधान या प्रकृति	पुरुष (पुमान्)
*	त्रिगुणात्मक	गुणरहित
*	अविवेकि	विवेकी
*	विषयी	अविषयी
*	सामान्य	असामान्य
*	अचेतन	चेतन
*	प्रसवधर्मी	अप्रसवधर्मी

➤ उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि प्रकृति त्रिगुणात्मिका है। सांख्य में प्रकृति को अव्यक्त तथा प्रधान के नामों से भी सम्बोधित किया गया है।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- सांख्यतत्त्वकौमुदी प्रभा- आद्याप्रसाद मिश्र, पेज-172

99. 'भोक्तृभाव' किसकी सत्ता का परिचायक है?
(A) प्रकृति (B) पुरुष
(C) अविवेकी (D) प्रधान

व्याख्या-
सांख्यकारिकाकार ईश्वरकृष्ण प्रकृति (प्रधान) की सत्ता की सिद्धि में पाँच हेतु बताते हुए कहते हैं-
भेदानां परिमाणात्, समन्वयत्वात् शक्तितः प्रवृत्तेश्च।
कारणकार्यविभागादविभागाद् वैश्वरूप्यस्य।।
(सां.का.-15)

महत् आदि कार्यों के परिमित होने से (महत् आदि कार्यों के) कारण के समान होने से, शक्ति से उत्पन्न होने से और कारण से ही कार्य के आविर्भूत होने से (प्रलयकाल में) उसी कारण में लीन हो जाने से विविध रूपों वाले सभी कार्यों का एक कारण अव्यक्त (प्रधान) अवश्य है।
ईश्वरकृष्ण ने पुरुष की सत्ता का प्रतिपादन इसप्रकार करते हैं-
''संघातपरार्थत्वात् त्रिगुणादिविपर्ययादधिष्ठानात्।
पुरुषोऽस्ति भोक्तृभावात् कैवल्यार्थं प्रवृत्तेश्च।।''
(सां.का.-17)

संघटनात्मक समूहरूप वस्तुओं के दूसरों के लिए होने के कारण गुणत्रययुक्त धर्मों से विपरीत धर्म वाले की अपेक्षा होने के कारण अधिष्ठाता होने की अपेक्षा से, (सांसारिक वस्तुओं के) भोक्ता होने की अपेक्षा से (कुछ लोगों की) मोक्ष के लिए प्रवृत्ति होने से पुरुष (की सत्ता) है।
अतः भोक्तृभाव पुरुष की सत्ता का परिचायक है।

➤ ईश्वरकृष्ण ने 11वीं कारिका में प्रकृति के त्रिगुणात्मक, अविवेकि विषयी, सामान्य, अचेतन, तथा प्रसवधर्मी गुणों को बताया है।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- सांख्यतत्वकौमुदी प्रभा (का.17)-आद्याप्रसाद मिश्र, पेज-200

100.'सांख्यकारिका' के कारिकाकार (लेखक) हैं-
(A) कपिल **(B) कणाद**
(C) गौतम **(D) ईश्वरकृष्ण**

व्याख्या-

ऋषि	ग्रन्थ	समय
कपिल (सांख्यसूत्रकार)	सांख्यसूत्र	700 ई.पू.
कणाद (वैशेषिकसूत्रकार)	वैशेषिकसूत्र	500ई.पू.
गौतम (न्यायसूत्रकार)	न्यायसूत्र	
ईश्वरकृष्ण (सांख्यकारिकाकार)	सांख्यकारिका	चौथी शताब्दी ई.

अतः विकल्प D सही है।
स्रोत- सांख्यतत्त्वकौमुदीप्रभा- आद्याप्रसाद मिश्र, पेज-47

101.'शब्दो नित्यः कृतकत्वात्' में कौन-सा हेत्वाभास है?
(A) असिद्ध **(B) विरुद्ध**
(C) अनैकान्तिक **(D) प्रकरणसम**

व्याख्या-
तर्कभाषाकार केशवमिश्र ने हेत्वाभास के पाँच भेद किए हैं- असिद्ध, विरुद्ध, अनैकान्तिक, प्रकरणसम, कालात्ययापदिष्ट

1. **असिद्ध हेत्वाभास-** ''तत्र लिङ्गत्वेनानिश्चितो हेतुरसिद्धः'' उसमें लिङ्ग ज्ञापक के रूप में निश्चित न होने वाला हेतु असिद्ध हेत्वाभास कहलाता है। असिद्ध हेत्वाभास के तीन भेद हैं-

(i) **आश्रयासिद्ध-** उदाहरण- गगनारविन्दं सुरभि, अरविन्दत्वात् सरोजारविन्दवत्।
(ii) **स्वरूपासिद्ध-** अनित्यः शब्दः, चाक्षुषत्वात् घटवत्।
(iii) **व्याप्यत्वासिद्ध-** शब्दः क्षणिकः सत्त्वात् क्रत्वन्तवर्तिनी हिंसा अधर्मसाधनं, हिंसात्वात् क्रतुवाह्य हिंसावत्।

2. **विरुद्ध हेत्वाभास-** ''साध्यविपर्ययव्याप्तो हेतुर्विरुद्धः'' साध्य के अभाव से व्याप्त हेतु विरुद्ध हेत्वाभास कहलाता है।
उदाहरण- शब्दो नित्यः कृतकत्वादात्मवत्
अतः विकल्प B सही है।

3. **अनैकान्तिक हेत्वाभास-** 'सव्यभिचारोऽनैकान्तिकः' सव्यभिचार हेतु अनैकान्तिक हेत्वाभास कहलाता है। वह दो प्रकार का है-

(i) **साधारण अनैकान्तिक-** शब्दो नित्यः प्रमेयत्वात् व्योमवत्।
(ii) **असाधारण अनैकान्तिक-** भूर्नित्याः गन्धवत्त्वात्।

4. **प्रकरणसम हेत्वाभास-** 'साध्यविपरीतसाधकं हेत्वन्तरं विद्यते' जिस हेतु के साध्य के विपरीत अर्थ का साधक दूसरा हेतु विद्यमान होता है वह प्रकरणसम हेत्वाभास है।
उदाहरण- शब्दोऽनित्यो नित्यधर्मरहितत्वात्।

5. **कालात्ययापदिष्ट हेत्वाभास-**
''प्रमाणान्तरावधृतसाध्याभावो हेतुर्बाधितविषयः कालात्ययापदिष्टः'' जिसके साध्य का अभाव अन्य प्रमाण से निश्चित कर दिया जाता है वह हेतु बाधितविषय तथा कालात्ययापदिष्ट कहलाता है।
उदाहरण- अग्निरनुष्णः कृतकत्वाज्जलवत्।

स्रोत- तर्कभाषा- श्रीनिवास शास्त्री, पेज-115

102. सामान्य रहता है-
(A) द्रव्य, गुण, विशेष में **(B) द्रव्य, गुण, कर्म में**
(C) द्रव्य, कर्म, विशेष में **(D) द्रव्य, गुण, समवाय में**

व्याख्या-
अन्नम्भट्ट कृत तर्कसंग्रह के अनुसार-

➢ सामान्य- ''नित्यमेकमनेकानुगतं सामान्यम्। द्रव्यगुणकर्मवृत्तिः। तद् द्विविधं परापरभेदात्।'' जो नित्य और एक हो तथा अनेक व्यक्तियों में अनुगत हो अर्थात् अनुवृत्ति प्रत्यय का हेतु हो वह सामान्य है। वह द्रव्य, गुण और कर्म में रहता है। पर तथा अपर के भेद से वह दो प्रकार का होता है।
➢ अन्नम्भट्ट ने 7 पदार्थों में 9 द्रव्य, 24 गुण, 5 कर्म, 2 सामान्य, एवं विशेष को असंख्य या अनेक बताया है।

अतः विकल्प B सही है।
स्रोत- तर्कभाषा- श्रीनिवासशास्त्री, पेज-244

103.परार्थानुमान में प्रतिज्ञावाक्य है-
(A) पर्वतोवह्निमान्
(B) यो यो धूमवान् स स वह्निमान्
(C) तस्मात्तथा
(D) धूमवत्त्वात्

व्याख्या-
अन्नम्भट्ट कृत तर्कसंग्रह के अनुसार अनुमान दो प्रकार के होते हैं- स्वार्थानुमान एवं परार्थानुमान
परार्थानुमान- ''यत्तु कश्चित् स्वयं धूमादग्निमनुमाय परं बोधयितुं पञ्चावयवानुमानवाक्यं प्रयुङ्क्ते तत् परार्थानुमानम्।'' जो स्वयं धूम से अग्नि का अनुमिति ज्ञान करके दूसरे को भी उसका ज्ञान कराने के लिये पाँच अवयवों वाले वाक्य का प्रयोग किया जाता है वह परार्थानुमान है।

	अवयव वाक्य	ज्ञान या अनुमान
1.	प्रतिज्ञा	पर्वतोऽग्निमान्
2.	हेतु	धूमवत्त्वात्
3.	उदाहरण	यो यो धूमवान् स स वह्निमान् यथा - महानसः।
4.	उपनय	तथा चायमित्युपनयः
5.	निगमन	तस्मात् तथा

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- तर्कभाषा- श्रीनिवास शास्त्री, पेज-92

104. 'आप्तवाक्य' है-
(A) रूप (B) शब्द
(C) अनुमिति (D) उपमिति

व्याख्या-

- अन्नम्भट्टकृत तर्कसंग्रह के अनुसार- सात पदार्थों के अन्तर्गत 24 गुणों में प्रथम गुण रूप आता है- ''चक्षुमात्रग्राह्यो गुणो रूपम्।'' केवल चक्षुरिन्द्रिय से ग्रहण किया जाने वाला गुण रूप है।
- अन्नम्भट्ट कृत तर्कसंग्रह में प्रमाणों की संख्या चार है - प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द। इन चारों प्रमाणों का लक्षण निम्नवत् है-
- **प्रत्यक्ष-** तत्र प्रत्यक्षज्ञानकरणं प्रत्यक्षम्। इन्द्रियार्थसन्निकर्षजन्यं ज्ञानं प्रत्यक्षम्। प्रत्यक्ष ज्ञान के करण को प्रमाण कहते हैं। प्रत्यक्ष ज्ञान का कारण इन्द्रियाँ हैं अतः ये इन्द्रियाँ ही प्रत्यक्ष प्रमाण हैं।
- **अनुमान-** 'अनुमितिकरणमनुमानम्' अनुमिति के करण को अनुमान कहते हैं।
  अनुमान प्रमाण के दो भेद हैं-
  1.स्वार्थानुमान 2.परार्थानुमान।
- **उपमान प्रमाण-** 'उपमितिकरणमुपमानम्' उपमिति के करण को
  उपमान कहते हैं। उपमिति है- संज्ञा-संज्ञिसम्बन्धत्वज्ञानम्।
- **शब्दप्रमाण-** 'आप्तवाक्यं शब्दः' आप्तपुरुष के वाक्य को शब्द कहते हैं। जो यथार्थ वक्ता है वह आप्त पुरुष है।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- तर्कभाषा-श्रीनिवास शास्त्री, पेज- 122

105. समवाय क्या है?
(A) वाक्यार्थ (B) वाक्य
(C) पदार्थ (D) पद

व्याख्या-
वाक्य के वास्तविक अर्थ को वाक्यार्थ कहते हैं।
'वाक्यं त्वाकाङ्क्षायोग्यतासन्निधिमतां पदानां समूहः'
योग्यता, आकांक्षा, और सन्निधि वाले पदों के समूह को वाक्य कहते हैं ।

- तर्कसंग्रह के अनुसार पदार्थों की सात है-
  ''द्रव्यगुणकर्मसामान्यविशेषसमवायाभावाः सप्त पदार्थाः।''
  द्रव्य,गुण,कर्म,सामान्य,विशेष,समवाय,अभाव ये सात पदार्थ हैं।
  इसमें समवाय 6 वाँ पदार्थ है जो केवल एक प्रकार का ही होता है- 'समवायस्त्वेक एव।'
- पद- 'पदं च वर्णसमूहः' अर्थात् वर्णों का समूह पद है।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- तर्कसंग्रह- आद्याप्रसाद मिश्र, पेज-47

106. ''कार्यनियतपूर्ववर्ति'' क्या है?
(A) कार्य (B) कारण
(C) पदार्थ (D) करण

व्याख्या-

- **कार्य-** कार्यं प्रागभावप्रतियोगि। जो प्रागभाव का प्रतियोगी हो वह कार्य है।
- **कारण-** कार्यनियतपूर्ववर्ति कारणम्।
  जो कार्य के पूर्व नियतरूप में रहे वह कारण कहलाता है।
- **पदार्थ-** द्रव्यगुणकर्मसामान्यविशेषसमवायाभावाः सप्त पदार्थाः। द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय और अभाव ये सात पदार्थ हैं।
- **करण-** असाधारणं कारणं करणम्।
  असाधारण कारण को करण कहते हैं।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- तर्कसंग्रह- आद्याप्रसाद मिश्र,पेज-42

107. ''आप्तवाक्यं शब्दः'' किस दर्शन से सम्बन्धित है?
(A) जैन (B) बौद्ध
(C) उत्तरमीमांसा (D) न्याय

व्याख्या-
न्यायदर्शन में प्रमाणों की संख्या चार है-
'प्रत्यक्षानुमानोपमानशब्दाः प्रमाणानि' (न्यायसूत्र 1.1.6)

1. **प्रत्यक्ष प्रमाण-** 'साक्षात्कारिप्रमाकरणं प्रत्यक्षम्'- साक्षात्कार करने वाली प्रमा का करण प्रत्यक्ष कहलाता है।

2. **अनुमान प्रमाण-** 'लिङ्गपरामर्शोऽनुमानम्' लिङ्ग परामर्श ही अनुमान है।
3. **उपमान प्रमाण-** 'अतिदेशवाक्यार्थस्मरणसहकृतं गोसादृश्यविशिष्टपिण्डज्ञानमुपमानम्।' अतिदेश वाक्य के अर्थ का स्मरण करने के साथ गौ की समानता से युक्त पिण्ड का ज्ञान ही उपमान है ।
4. **शब्द प्रमाण-** 'आप्तवाक्यं शब्दः' आप्त का वाक्य शब्द प्रमाण है।

अतः विकल्प D सही है।

- जैनदर्शन में प्रमाणों की संख्या दो है- प्रत्यक्ष,अनुमान।
- बौद्धदर्शन में प्रमाणों की संख्या दो है- प्रत्यक्ष,अनुमान।
- उत्तरमीमांसा (वेदान्त) में प्रमाणों की संख्या छः है- प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, अर्थापत्ति, अभाव।

स्रोत- तर्कभाषा- श्रीनिवास शास्त्री, पेज-122

108. तर्कभाषा के लेखक कौन हैं?
(A) सदानन्द **(B) केशवमिश्र**
(C) ईश्वरकृष्ण **(D) अन्नम्भट्ट**

व्याख्या-

लेखक	प्रकरण ग्रन्थ
सदानन्द	वेदान्तसार (वेदान्त)
केशवमिश्र	तर्कभाषा (न्याय)
ईश्वरकृष्ण	सांख्यकारिका (सांख्य)
अन्नम्भट्ट	तर्कसंग्रह (न्याय-वैशेषिक)
लौगाक्षिभास्कर	अर्थसंग्रह (मीमांसा)
विज्ञानभिक्षु	योगवार्तिक

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- तर्कभाषा- श्रीनिवास शास्त्री,पेज-1

109. पट का समवायिकारण है-
(A) तन्तु **(B) तन्तुवाय**
(C) तन्तुसंयोग **(D) तन्तुत्व**

व्याख्या-

आचार्य केशवमिश्र तर्कभाषा में कारण के तीन भेद किये हैं- समवायि, असमवायि, निमित्त।

- **समवायिकारण-**
'यत्समवेतं कार्यमुत्पद्यते तत्समवायिकारणम्'
अर्थात् जिसमें समवेत होकर कार्य उत्पन्न होता है वह समवायिकारण है-
उदाहरण- तन्तु पट के समवायि कारण तथा मृत्पिण्ड घट का समवायिकारण है।
- **असमवायिकारण-**
'यत्समवायिकारणप्रत्यासन्नमवधृतसामर्थ्यं तदसमवायिकारणम्' जो समवायि कारण में प्रत्यासन्न होता है जिसकी कार्य के प्रति सामर्थ्य निश्चित होती है वह असमवायिकारण है।
उदाहरण- तन्तुसंयोग पट के असमवायिकारण हैं।
- **निमित्तकारण-** यन्न समवायिकारणम्, नाप्यसमवायिकारणम् अथ च कारणम्।' जो न समवायिकारण है और न ही असमवायि कारण है किन्तु कारण है वह निमित्त कारण है। **उदाहरण-** तुरी,वेमा आदि।

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- तर्कभाषा- श्रीनिवास शास्त्री, पेज-28

110.'विशेष पदार्थ' की वृत्ति है-
(A) नित्य द्रव्य **(B) कर्म**
(C) अनित्य द्रव्य **(D) गुण**

व्याख्या-

अन्नम्भट्ट कृत तर्कसंग्रह में विशेष नामक पदार्थ का वर्णन निम्नवत् है-
विशेष- 'नित्यद्रव्यवृत्तयो विशेषास्त्वनन्ता एव।'
नित्य द्रव्यों में रहने वाले विशेष तो असङ्ख्य या अनेक हैं।

- **कर्म-** वैशेषिक दर्शन के सप्त पदार्थों में कर्म पाँच प्रकार का होता है -
''उत्क्षेपणापक्षेपणाकुञ्चनप्रसारणगमनानि पञ्च कर्माणि।''
उत्क्षेपण, अपक्षेपण, आकुञ्चन, प्रसारण और गमन ये पाँच कर्म हैं।
- **गुण-** तर्कसंग्रह के अनुसार गुणों की संख्या चौबीस है- रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, संख्या, परिमाण, पृथक्त्व, संयोग, विभाग, परत्व, अपरत्व, गुरुत्व, द्रव्यत्व, स्नेह, शब्द, बुद्धि, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, धर्म, अधर्म, संस्कार।

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- तर्कसंग्रह- केदारनाथ त्रिपाठी, पेज-142

111. मन किस प्रकार की इन्द्रिय है?
(A) कर्मेन्द्रिय **(B) ज्ञानेन्द्रिय**
(C) उभयात्मक **(D) इनमें से कोई नहीं**

व्याख्या-
दार्शनिक ग्रन्थों में इन्द्रियों का विवरण इसप्रकार दिया गया है-

- **पञ्च कर्मेन्द्रियाँ-** वाक्,पाणि,पाद,पायु (गुप्तेन्द्रिय), उपस्थ (जननेन्द्रिय)।
- **पञ्च ज्ञानेन्द्रियाँ-** श्रोत्र,त्वक्,चक्षु,जिह्वा,घ्राण।
- **उभयेन्द्रिय-** मन।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- सांख्यतत्त्वकौमुदी प्रभा (का0-27) आद्याप्रसाद मिश्र,पेज-

112. वेदान्तानुसार मन का स्वरूप है-
(A) अभिमान **(B) संकल्प-विकल्प**
(C) अनुसन्धान **(D) निश्चय**

व्याख्या-
सदानन्द कृत वेदान्तसार के अनुसार

- **मन-** "मनो नाम संकल्पविकल्पात्मिकान्तःकरणवृत्तिः।"
'संकल्प और विकल्प करने वाली अन्तःकरण की संशयात्मिका वृत्ति ही मन है।'
- **बुद्धि-** "बुद्धिर्नाम निश्चयात्मिकाऽन्तःकरणवृत्तिः।"
निश्चयात्मिक अन्तः करण की वृत्ति ही बुद्धि है।
- **चित्त-** "अनुसन्धानात्मिकान्तःकरणवृत्तिः चित्तम्।"
अन्तःकरण की अनुसन्धानवर्ती (स्मरणात्मिका) वृत्ति ही चित्त है।
- **अहङ्कार-** "अभिमानात्मिकान्तःकरणवृत्तिः अहंकारः।"
अभिमानरूपा अन्तःकरण की वृत्तिः का नाम अहंकार है।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- वेदान्तसार- सन्तनारायण श्रीवास्तव,पेज- 66

113. वेदान्त का एक अनुबन्ध है-
(A) अधिकारी **(B) अद्वैत**
(C) ब्रह्म **(D) अज्ञान**

व्याख्या-
"वेदान्तसार" में अनुबन्ध की चर्चा करते हुए सदानन्द योगीन्द्र कहते हैं-
"तत्रानुबन्धो नामाधिकारिविषयसम्बन्धप्रयोजनानि।"
अर्थात् अनुबन्ध चार हैं-
1. अधिकारी 2. विषय 3.सम्बन्ध 4. प्रयोजन
अधिकारी-"अधिकारी तु विधिवदधीत........... साधनचतुष्टयसम्पन्नः प्रमाता।" अर्थात् साधन चतुष्टय से सम्पन्न प्रमाता वेदान्त का अधिकारी है।
अद्वैतदर्शन के समर्थक शङ्कराचार्य हैं।

- **ब्रह्म-** "वस्तु सच्चिदानन्दान्ताद्वयं ब्रह्म।"
अर्थात् केवल सच्चिदानन्द ब्रह्म सत् (वस्तु) है ।
- **अज्ञान-** अज्ञानं तु सदसद्भ्यामनिर्वचनीयं त्रिगुणात्मकं ज्ञानविरोधि भावरूपं यत्किञ्चिदिति वदन्त्यहमज्ञ इत्याद्यनुभवात्।
अज्ञान सत् या असत् रूप से अनिर्वचनीय,त्रिगुणात्मक,ज्ञान का विरोधि भावरूप है। **अतः विकल्प A सही है।**

स्रोत- वेदान्तसार- सन्तनारायण श्रीवास्तव,पेज-9

114. अधिकारिविषय-सम्बन्धप्रयोजनानि किससे सम्बन्धित है?
(A) विवर्त **(B) बन्ध**
(C) अनुबन्ध **(D) प्रबन्ध**

व्याख्या-
वेदान्तसार के अनुसार-

- **विवर्त-** "अतत्त्वतोऽन्यथाप्रथा विवर्त इत्युदाहृतः।"
अर्थात् जब कोई वस्तु अपने वास्तविक स्वरूप का परित्याग न करते हुए अपने सदृश किसी अन्य वस्तु के रूप में भासित होने लगती है वह विवर्त कहलाती है।
- **उदाहरण-** रस्सी अपने यथार्थरूप का परित्याग न करते हुए भी सर्प की मिथ्या प्रतीति करवाने लगती है यही विवर्तवाद है।
- **अनुबन्ध-** 'अनुबध्यतेऽनेनेति अनुबन्धः' अर्थात् जिनके द्वारा ग्रन्थ आद्योपान्त बँधा रहता है उसमें असम्बद्धता शिथिलता और दिशाहीनता नहीं आने पाती है उन्हें अनुबन्ध कहते हैं। अनु उपसर्ग पूर्वक 'बन्ध' धातु में घञ् प्रत्यय लगाकर अनुबन्ध शब्द बनता है।
वेदान्तसार में अनुबन्धों की संख्या चार है-
'तत्र अनुबन्धो नामाधिकारिविषयसम्बन्धप्रयोजनानि।'
अधिकारी विषय,सम्बन्ध,प्रयोजन ये चार अनुबन्ध हैं।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- वेदान्तसार- सन्तनारायण श्रीवास्तव,पेज-9

115. सन्ध्यावन्दन इत्यादि कैसा कर्म है ?
(A) नित्य **(B) नैमित्तिक**
(C) उपासना **(D) प्रायश्चित**

व्याख्या-

सदानन्द प्रणीत वेदान्तसार में छः प्रकार के कर्मों का वर्णन है-

कर्म	साधन	फलप्राप्ति
1. काम्यकर्म	ज्योतिष्टोम यज्ञ	स्वर्गलोकादि प्राप्ति
2. निषिद्ध कर्म	ब्राह्मणहत्यादि निषेध	नरकादि अनिष्ट स्थानों से रक्षा
3. नित्यकर्म	सन्ध्यावन्दनादि	प्रत्यवाय (पाप) से रक्षा
4. नैमित्तिककर्म	जातेष्टि	पुत्रजन्मादि
5. प्रायश्चितकर्म	चान्द्रायणव्रत	पापों के नाश हेतु
6. उपासनाकर्म	शाण्डिल्यविद्या	मनोवृत्ति की स्थिरता के लिये।

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- वेदान्तसार- सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-14

116. किस पञ्चीकृत पदार्थ में शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध ये पाँचों गुण पाये जाते हैं?

(A) तेज **(B) वायु**

(C) जल **(D) पृथिवी**

व्याख्या-

सदानन्द कृत वेदान्तसार के अनुसार-

पञ्चीकृत पदार्थ	पाये जाने वाले गुण
आकाश	शब्द
वायु	शब्द, स्पर्श
अग्नि (तेज)	शब्द, स्पर्श, रूप
जल	शब्द, स्पर्श, रूप, रस,
पृथिवी	शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध

''तदानीमाकाशे शब्दोऽभिव्यज्यते वायौ शब्दस्पर्शावग्नौ शब्दस्पर्शरूपाण्यप्सु शब्दस्पर्शरूपरसाः पृथिव्यां शब्दस्पर्शरूपरस गन्धाश्च।''

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- वेदान्तसार- सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-80

117. ''वस्तुन्यवस्त्वारोपः'' से परिभाषित है-

(A) अपवाद **(B) पञ्चीकरण**

(C) अध्यारोप **(D) जीवन्मुक्त**

व्याख्या-

A. **अपवाद-** (ब्रह्मरूप) वस्तु के विवर्त आज्ञानादि प्रपञ्च का वस्तु मात्र अवशेष रहना ही अपवाद है-

''अपवादो नाम रज्जुविवर्तस्य सर्पस्य-रज्जुमात्रत्ववद्वस्तुविवर्तस्यावस्तुनोऽज्ञानादेः प्रपञ्चस्य वस्तुमात्रत्वम्।''

जैसे- भ्रमवशात् रस्सी में सर्प की मिथ्या प्रतीति होने पर उस मिथ्या-प्रतीति (आरोप) को दूर करके रज्जु (यथार्थवस्तु) का ज्ञान हो जाना अपवाद कहलाता है।

यह दो प्रकार का होता है- (1) विकार (2) विवर्त

B. **पञ्चीकरण-** स्थूलशरीर के उत्पादक पञ्चीकृत-महाभूतों की विशिष्ट स्थिति ही पञ्चीकरण के नाम से जानी जाती है। पञ्चीकरण की प्रक्रिया को इस चार्ट के माध्यम से समझ सकते हैं

स्थूलभूत	सूक्ष्मभूत				
आकाश =	1/2आकाश	1/8वायु	1/8तेज	1/8जल	1/8पृथ्वी
वायु =	1/2वायु	1/8तेज	1/8जल	1/8पृथ्वी	1/8आकाश
तेज =	1/2तेज	1/8आकाश	1/8वायु	1/8जल	1/8पृथ्वी
जल =	1/2जल	1/8आकाश	1/8वायु	1/8तेज	1/8पृथ्वी
पृथ्वी =	1/2पृथ्वी	1/8आकाश	1/8वायु	1/8तेज	1/8जल

C. **अध्यारोप-** ''असर्पभूतायां रज्जौ सर्पारोपवद् वस्तुन्यवस्त्वारोपोध्यारोपः''

जो वस्तु जिस रूप में नहीं है उस रूप का उस वस्तु में आरोप ही अध्यारोप है। जो सर्प नहीं है उस रस्सी में सर्प का आरोप करना ही अध्यारोप है।

अतः विकल्प C सही है।

D. **जीवन्मुक्ति-** स्वरूपाखण्डब्रह्मज्ञान के द्वारा, आत्मविषयक सम्पूर्ण अज्ञान को दूर करके स्व-स्वरूपाखण्डब्रह्म का साक्षात्कार होने से अज्ञान और उसके कार्यरूप स्थूल-सूक्ष्म दोनों प्रपञ्च संचितकर्म तथा संशय-विपर्ययादि को नष्ट करके, सम्पूर्ण बन्धनों से रहित ब्रह्मनिष्ठ व्यक्ति 'जीवन्मुक्त' कहलाता है।

''जीवन्मुक्तो नाम स्वस्वरूपाखण्डब्रह्मज्ञानेन तदज्ञानबाधनद्वारा स्वस्वरूपाखण्डब्रह्मणि साक्षात्कृतेऽज्ञानतत्कार्यसञ्चितकर्मसंशय विपर्ययादीनामपि बाधितत्वादखिलबन्धरहितो ब्रह्मनिष्ठः।''

स्रोत- वेदान्तसार- सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-80

118. वस्तु है-
(A) अज्ञानादिजड़ समूह (B) ब्रह्म
(C) त्रिगुणात्मक (D) अनिर्वचनीय

व्याख्या-
वेदान्तसार में वस्तु को परिभाषित करते हुए सदानन्द योगीन्द्र कहते हैं-'वस्तु सच्चिदानन्ताद्वयं ब्रह्म'
सच्चिदानन्द रूपी अद्वितीय ब्रह्म ही वस्तु है।
अवस्तु- 'अज्ञानादिसकलजडसमूहोऽवस्तु' अर्थात् अज्ञान आदि से प्रारम्भ होने वाला समस्त जडपदार्थों का समूह अवस्तु है।
'अज्ञानं तु सदसद्भ्यामनिर्वचनीयं त्रिगुणात्मकं ज्ञानविरोधि भावरूपम्।'
अज्ञान सत् या असत् रूप से अनिर्वचनीय, त्रिगुणात्मक ज्ञान का विरोधी, भावरूप है।
अतः विकल्प B सही है।
स्रोत- वेदान्तसार- सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-37

119. अज्ञानोपहित चैतन्य जगत् का कारण है-
(A) निमित्त (B) उपादान
(C) निमित्त एवं उपादान (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या-
वेदान्तसार नामक प्रकरणग्रन्थ में सदानन्द अज्ञानोपहित दो प्रकार के कारणों की चर्चा करते हैं-
निमित्त कारण तथा उपादान कारण।
'शक्तिद्वयवदज्ञानोपहितं चैतन्यं स्वप्रधानतया निमित्तं-स्वोपाधिप्रधानतयोपादानं च भवति।'
अर्थात् अपनी दोनों शक्तियों (आवरण तथा विक्षेप) से सम्पन्न अज्ञान से उपहित चैतन्य ईश्वर अपनी प्रधानता से जगत् का निमित्त कारण तथा अपनी उपाधि की प्रधानता से उपादान कारण होता है। अर्थात् अज्ञानोपहित चैतन्य जगत् का निमित्त एवं उपादान दोनों कारण होता है।
अतः विकल्प C सही है।
स्रोत- वेदान्तसार- सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-60

120. पञ्च ज्ञानेन्द्रियाँ एवं बुद्धि के द्वारा निर्मित होते हैं-
(A) प्राणमय कोश (B) मनोमय कोश
(C) विज्ञानमय कोश (D) आनन्दमय कोश

व्याख्या-
वेदान्तसार के अनुसार कोशों की रचना इस प्रकार है-
विज्ञानमय कोश (कर्तृरूप) पञ्चज्ञानेन्द्रिय + बुद्धि
मनोमय कोश (करणरूप) पञ्चज्ञानेन्द्रिय + मन
प्राणमय कोश (कार्यरूप) पञ्चकर्मेन्द्रिय + पञ्चप्राण
इन तीनों कोशों (विज्ञानमय,मनोमय और प्राणमय) को सूक्ष्मशरीर या लिङ्गशरीर के नाम से जाना जाता है।
अतः विकल्प C सही है।
स्रोत- वेदान्तसार- सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-68

121. 'मिथ्या रूप से अन्य वस्तु के रूप में भासित होना' कहलाता है-
(A) आरम्भवाद (B) असत्कार्यवाद
(C) परिणामवाद (D) विवर्तवाद

व्याख्या- आरम्भवाद-

सिद्धान्त/वाद	दर्शन
असत्कार्यवाद	न्यायदर्शन
परिणामवाद	सांख्यदर्शन
विवर्तवाद	वेदान्तदर्शन

परिणामवाद- जब कोई वस्तु अपने वास्तविक स्वरूप का परित्याग कर अन्यरूप को ग्रहण कर लेती है तो वह विकार या परिणामवाद कहलाता है- ''सतत्त्वतोऽन्यथाप्रथा विकार इत्युदीरितः।''
यथा - दूध का दही बनना - विकार है।
विवर्तवाद- जब कोई वस्तु अपने वास्तविक स्वरूप का परित्याग न करते हुए अपने सदृश्य किसी अन्य वस्तु के रूप में प्रतिभासित होने लगती है तो वह विवर्तवाद कहलाता है। ''अतत्त्वतोऽन्यथाप्रथा विवर्त इत्युदीरितः।''
यथा- रस्सी का सर्प के रूप मे भासित होना ही विवर्तवाद है।
अतः विकल्प D सही है।
स्रोत- वेदान्तसार- सन्तनारायण श्रीवास्तव,पेज-115,116

122. 'प्रमाता' किसे कहा जाता है?
(A) प्रयोजन को (B) विषय को
(C) सम्बन्ध को (D) अधिकारी को

व्याख्या-
सदानन्द प्रणीत वेदान्तसार में अनुबन्धों की संख्या चार हैं जिसे निम्नवत् परिभाषित किया गया है-
'अनुबन्धो नामाधिकारिविषयसम्बन्धप्रयोजनानि।' अर्थात् अधिकारी, विषय, सम्बन्ध, प्रयोजन ये चार अनुबन्ध

वेदान्तसार में वर्णित हैं-

- **अधिकारी-** 'अधिकारी तु विधिवदधीतवेदवेदाङ्ग........ नितान्तनिर्मलस्वान्तः साधनचतुष्टयसम्पन्नः प्रमाता।' अर्थात् जिसका अन्तःकरण अत्यन्त निर्मल हो गया है और जो साधन चतुष्टय से सम्पन्न प्रमाता है ऐसा पुरुष ब्रह्म विद्या का अधिकारी है। **अतः विकल्प D सही है।**
- **विषय-** 'विषयो जीवब्रह्मैक्यं शुद्धचैतन्यं प्रमेयम् तत्रैव वेदान्तानां तात्पर्यात्।' जीव और ब्रह्म की एकता अर्थात् अभेद,जो शुद्ध चैतन्य रूप है इस शास्त्र का प्रमेय अर्थात् विषय है।
- **सम्बन्ध-** 'सम्बन्धस्तु तदैक्यप्रमेयस्य तत्प्रतिपादकोपनिषत्प्रमाणस्य च बोध्यबोधकभावलक्षणः।' जीव और ब्रह्म एकतारूप प्रमेय का और उसका प्रतिपादन करने वाला उपनिषद्रूप प्रमाण का परस्पर बोध्य-बोधक भाव ही इस शास्त्र का सम्बन्ध है।
- **प्रयोजन-** 'प्रयोजनं तु तदैक्यप्रमेयगताज्ञाननिवृत्तिः स्वस्वरूपानन्दावाप्तिश्च।' जीव और ब्रह्म की एकतारूप प्रमेय के सम्बन्ध में जो अज्ञान है उसकी निवृत्ति होना और अपने वास्तविक स्वरूप आनन्द की प्राप्ति होना ही इस शास्त्र का प्रयोजन है।

स्रोत- वेदान्तसार-सन्तनारायण श्रीवास्तव,पेज-11

123.'ज्योतिष्टोमादि' कौन सा कर्म है?
(A) प्रायश्चित **(B) काम्य**
(C) निषिद्ध **(D) नित्य**

व्याख्या-
सदानन्द प्रणीत वेदान्तसार में छः प्रकार के कर्मों का वर्णन है- काम्यकर्म, निषिद्धकर्म, नित्यकर्म, नैमित्तिककर्म, प्रायश्चितकर्म, उपासनाकर्म।

- **काम्यकर्म-** 'काम्यानि स्वर्गादीष्टसाधनानि ज्योतिष्टोमादीनि।' अर्थात् स्वर्ग आदि स्थानों की प्राप्ति हेतु जो कर्म किए जाते हैं उन्हें काम्यकर्म कहते हैं। **उदाहरण-** ज्योतिष्टोम यज्ञ आदि से स्वर्ग आदि अभीष्ट स्थानों की प्राप्ति होती है। अतः यह काम्यकर्म का उदाहरण है।
  अतः विकल्प B सही है।
- **निषिद्ध कर्म-** 'निषिद्धानि नरकाद्यनिष्टसाधनानि ब्राह्मणहननादीनि।' नरक आदि अनिष्ट स्थानों की प्राप्ति के साधनभूत ब्राह्मणहत्या आदि निषिद्ध कर्म हैं।
- **नित्य कर्म-** 'नित्यान्यकरणे प्रत्यवायसाधनानि सन्ध्यावन्दनादीनि।' न करने पर प्रत्यवाय के साधन बनने वाले सन्ध्यावन्दन आदि नित्यकर्म हैं।
- **नैमित्तिक कर्म-** 'नैमित्तिकानि पुत्रजन्माद्यनुबन्धीनि जातेष्ट्यादीनि।' पुत्रजन्म इत्यादि से सम्बन्ध रखने वाले जातेष्टि आदि नैमित्तिक कर्म हैं।
- **प्रायश्चित कर्म-** 'प्रायश्चित्तानि पापक्षयसाधनानि चान्द्रायणादीनि।' पापों का क्षय करने के लिए साधन बनने वाले चान्द्रायण आदि व्रत प्रायश्चित कर्म हैं।
- **उपासना कर्म-** 'उपासनानि सगुणब्रह्मविषयमानसव्यापाररूपाणि शाण्डिल्यविद्यादीनि।' सगुण ब्रह्म को विषय बनाने वाला मानसिक व्यापार ही जिनका स्वरूप है उन शाण्डिल्य विद्या आदि को उपासना कर्म कहते हैं।

स्रोत- वेदान्तसार- सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-14

124. श्रीमद्भगवद्गीता महाभारत के किस पर्व से सम्बन्धित है?
(A) शान्तिपर्व **(B) वनपर्व**
(C) भीष्मपर्व **(D) उद्योगपर्व**

व्याख्या-
श्रीमद्भगवद्गीता महाभारत के भीष्मपर्व से है।

पर्व	वर्णनीय विषय
* आदिपर्व	चन्द्रवंश का इतिहास
* सभापर्व	कौरव पाण्डवों की उत्पत्ति
* वनपर्व	पाण्डवों का वनवास
* विराट्पर्व	पाण्डवों का अज्ञातवास
* उद्योगपर्व	श्रीकृष्ण का दौत्यकर्म
* भीष्मपर्व	अर्जुन को गीता का उपदेश युद्ध का प्रारम्भ,भीष्म का आहत
* द्रोणपर्व	अभिमन्यु एवं द्रोण वध
* कर्णपर्व	कर्ण का युद्ध और वध
* शल्यपर्व	शल्य का युद्ध और वध
* सौप्तिकपर्व	सोते हुए पाण्डवों के पुत्र का अश्वत्थामा द्वारा वध
* स्त्रीपर्व	शोकाकुल स्त्रियों का विलाप
* शान्तिपर्व	युधिष्ठिर को भीष्म द्वारा ज्ञान दिया जाना।
* अनुशासनपर्व	धर्म एवं नीति की कथाएँ, भीष्म का स्वर्गारोहण।
* आश्वमेधिकपर्व	युधिष्ठिर द्वारा अश्वमेध अनुष्ठान
* आश्रमवासिकपर्व	धृतराष्ट आदि का वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश
* मौसलपर्व	यादवों का पारस्परिक संघर्ष से नाश
* महाप्रस्थानिक	पाण्डवों की हिमालय यात्रा
* स्वर्गारोहणपर्व	पाण्डवों का स्वर्गारोहण

इसीप्रकार- आदिपर्व (अभिज्ञानशाकुन्तलम्), सभापर्व (शिशुपालवध), वनपर्व (किरातार्जुनीयम् एवं नलोपाख्यान) से सम्बन्धित है।

अतः विकल्प C सही है।

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी,पेज-118

125. 'यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः' श्लोकांश श्रीमद्भगवद्गीता के किस अध्याय से सम्बद्ध है?

(A) अष्टम (B) षष्ठ

(C) दशम (D) अष्टादश

व्याख्या-

अष्टम अध्याय-

यत्र काले त्वनावृत्तिमावृत्तिं चैव योगिनः।
प्रयाता यान्ति तं कालं वक्ष्यामि भरतर्षभ॥(गीता 8.23)

हे भरतश्रेष्ठ! अब मैं तुम्हें उन विभिन्न कालों को बताऊँगा, जिनमें इस संसार से प्रयाण करने के बाद योगी पुनः आता है अथवा नहीं आता।

षष्ठ अध्याय-

''यत्रोपरमते चित्तं निरुद्धं योगसेवया।
यत्र चैवात्मनात्मानं पश्यन्नात्मनि तुष्यति॥(गीता 6/20)

सिद्धि की अवस्था में जिसे समाधि कहते हैं ,मनुष्य का मन योगाभ्यास के द्वारा भौतिक, मानसिक क्रियाओं से पूर्णतया संयमित हो जाता है। इस सिद्धि की विशेषता यह है कि मनुष्य शुद्ध मन से अपने को देख सकता है और अपने आप में आनन्द उठा सकता है।

दशम अध्याय-

''भूय एव महाबाहो श्रृणु मे परमं वचः।
येत्तेऽहं प्रीयमाणाय वक्ष्यामि हितकाम्यया॥''

(गीता.10/1)

हे महाबाहु अर्जुन! और आगे सुनो। क्योंकि तुम मेरे प्रिय सखा हो, अतः मैं तुम्हारे लाभ के लिए ऐसा ज्ञान प्रदान करूगाँ, जो अभी तक बताये गये मेरे ज्ञान से श्रेष्ठ होगा।

अष्टादश अध्याय-

''यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम॥''

(गीता 18.78)

अर्थात् जहाँ योगेश्वर कृष्ण हैं और परम धनुर्धर अर्जुन है, वहीं ऐश्वर्य, विजय, अलौकिक शक्ति तथा नीति भी निश्चित रूप से रहती है। ऐसा मेरा मत है।

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- श्रीमद्भगवद्गीता (18/78)

उत्तरमाला

1.C	2.D	3.D	4.A	5.B	6.C	7.B	8.B	9.C	10.B	11.B	12.B
13.A	14.D	15.D	16.B	17.B	18.C	19.C	20.C	21.B	22.D	23.C	24.C
25.D	26.D	27.B	28.C	29.B	30.A	31.A	32.B	33.C	34.A	35.A	36.C
37.C	38.A	39.D	40.D	41.B	42.B	43.B	44.C	45.C	46.A	47.C	48.A
49.C	50.D	51.A	52.C	53.B	54.B	55.B	56.B	57.B	58.C	59.A	60.A
61.C	62.A	63.C	64.C	65.A	66.B	67.C	68.D	69.A	70.C	71.C	72.D
73.B	74.B	75.D	76.C	77.B	78.D	79.C	80.B	81.D	82.A	83.C	84.B
85.A	86.C	87.A	88.B	89.B	90.D	91.C	92.D	93.B	94.C	95.D	96.B
97.D	98.B	99.B	100.D	101.B	102.B	103.A	104.B	105.C	106.B	107.D	108.B
109.A	110.A	111.C	112.B	113.A	114.C	115.A	116.D	117.C	118.B	119.C	120.C
121.D	122.D	123.B	124.C	125.D							

❑❑

7. प्रवक्ता (PGT) संस्कृत 2010

1. दुर्वासा ऋषि के क्रोधित हो जाने पर किसने उन्हें प्रसन्न किया ?
(A) शकुन्तला (B) अनसूया
(C) प्रियंवदा (D) अनसूया एवं प्रियंवदा दोनों

व्याख्या-
कालिदास विरचित अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के चतुर्थ अङ्क में महर्षि दुर्वासा आतिथ्य सत्कार न होने से शकुन्तला को शाप देकर अबाध गति से वापस जा रहे थे तभी अनसूया ने प्रियंवदा से कहा-
'गच्छ! पादयोः प्रणम्य निवर्तयैनम्।' (अभि.अङ्क-4)
जाओ उनके चरणों में प्रणाम करके उन्हें वापस ले आओ। प्रियंवदा वैसा ही करती है तथा दुर्वासा से जाकर क्षमा याचना करती है।
प्रियंवदा- 'भगवन्, प्रथम इति प्रेक्ष्याविज्ञाततपः प्रभावस्य दुहितृजनस्य भगवतैकोऽपराधो मर्षयितव्य इति।'
भगवन् तप के प्रभाव को न जानने वाली आपकी पुत्रियों का यह पहला अपराध है यह समझकर आप इस एक अपराध को क्षमा कर दीजिए।
अतः विकल्प C सही है।
स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी , पेज-187

2. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के अनुसार 'वेत्रवती' है-
(A) नदी (B) उद्यानपालिका
(C) प्रतिहारी (D) अप्सरा

व्याख्या-
A. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में महर्षि कण्व का आश्रम मालिनी नदी के तट पर तथा विश्वामित्र ने गौतमी नदी के तट पर तपस्या की थी।
B. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के षष्ठ अङ्क में 'मधुकरिका' एवं 'परभृतिका' इन दो उद्यान पालिकाओं का वर्णन आया है।
C. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के पञ्चम अङ्क में प्रतिहारी वेत्रवती राजा से कहती है कि शकुन्तला, गौतमी, शार्ङ्गरव एवं शारद्वत आपसे मिलना चाहते हैं ।
अतः विकल्प 'C' सही है।
D. शकुन्तला की माता 'मेनका' तथा मेनका की सखी 'सानुमती' नामक दो अप्सराओं का अभिज्ञानशाकुन्तलम् में वर्णन है।
स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम्- कपिलदेव द्विवेदी,भू0 पेज-100

3. शर्मिष्ठा के पिता थे-
(A) ययाति (B) शुक्राचार्य
(C) दानवराज वृषपर्वा (D) पुरु

व्याख्या-
A. **ययाति-** ययाति चन्द्रवंश के संस्थापक राजाओं में से एक था, उसकी दो पत्नियाँ थीं।
(क) दानवों के गुरु शुक्राचार्य की पुत्री देवयानी
(ख) दानवों के राजा वृषपर्वा की पुत्री शर्मिष्ठा।
B. **शुक्राचार्य-** दैत्यों के गुरु 'शुक्राचार्य' ने अपनी पुत्री देवयानी का विवाह ययाति से किया।
C. **दानवराज वृषपर्वा-** 'दानवराज वृषपर्वा' की पुत्री शर्मिष्ठा देवयानी की सेविका थी परन्तु उसकी सुन्दरता पर मुग्ध होकर ययाति ने उससे गान्धर्व विवाह कर लिया।
अतः विकल्प C सही है।
D. **पुरु-** ययाति के पाँच पुत्र थे। उनमें शर्मिष्ठा का पुत्र पुरु भी था। ययाति के द्वारा देवयानी के साथ दुर्व्यवहार पर शुक्राचार्य ने उसे शाप दिया कि वह शीघ्र वृद्ध हो जाय। पुरु ने पिता ययाति की वृद्धता अपने ऊपर ले ली और पितृभक्ति के फलस्वरूप पुरुवंश का संस्थापक सम्राट् हुआ।
स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम्- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-211

4. शाकुन्तल की कथा और कहाँ प्राप्त होती है?
(A) महाभारत में
(B) पद्मपुराण में
(C) वायुपुराण में
(D) महाभारत और पद्मपुराण दोनों में

व्याख्या-
* अभिज्ञानशाकुन्तल की कथा महाभारत के 'आदिपर्व' (अध्याय 67 से 74) में वर्णित शकुन्तलोपाख्यान से ली गई है।
* 'पद्मपुराण' के स्वर्गखण्ड में भी यह कथा प्राप्त होती है ।
अतः विकल्प 'D' सही है।
* वायुपुराण में सृष्टिक्रम, भूगोल, खगोल, युगों, ऋषिवंशों तथा तीर्थों का वर्णन एवं राजवंशों, वेद की शाखाओं, संगीतशास्त्र तथा शिवभक्ति का विस्तृत निरूपण है।
स्रोत- संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी,पेज-335

5. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' नाटक में विदूषक है-
(A) वसन्तक (B) मैत्रेय
(C) माधव्य (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या-

विदूषक	नाटक /नाटिका विभाजन	नाटककार
1. वसन्तक	स्वप्नवासवदत्तम् (6 अङ्क)	भास
2. मैत्रेय	मृच्छकटिकम् (10अङ्क, प्रकरण)	शूद्रक
3. माधव्य	अभिज्ञानशाकुन्तलम् (7अङ्क)	कालिदास

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम्- कपिलदेव द्विवेदी, भू0 पेज-99

6. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के किस अङ्क में विष्कम्भक समाप्त होता है?
(A) प्रथम (B) द्वितीय
(C) तृतीय (D) चतुर्थ

व्याख्या-

A. **प्रथम अङ्क-** 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के प्रथम अङ्क में मृगया खेलते हुए राजा दुष्यन्त आश्रम में प्रवेश करता है।

B. **द्वितीय अङ्क-** द्वितीय अङ्क में राजा दुष्यन्त विदूषक माधव्य को हस्तिनापुर भेजता है।

C. **तृतीय अङ्क-** तृतीय अङ्क में दुष्यन्त शकुन्तला से गान्धर्व विवाह करके हस्तिनापुर वापस लौट जाता है।

D. **चतुर्थ अङ्क-** आचार्य धनञ्जय दशरूपक के प्रथम प्रकाश में विष्कम्भक का लक्षण करते है 'वृत्तवर्तिष्यमाणानां कथांशानां निदर्शकः। संक्षेपार्थस्तु विष्कम्भो मध्यपात्रप्रयोजितः।।' (दशरूपक 1.59) अर्थात् समाप्त हो चुके और आगे घटित होने वाले कथा के भागों का सूचक, संक्षिप्त अर्थ वाला तथा मध्यम श्रेणी के पात्रों के द्वारा प्रयुक्त अर्थोपक्षेपक विष्कम्भक कहा जाता है। अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के चतुर्थ अङ्क में यह लक्षण घटित होता है क्योंकि अनसूया तथा प्रियंवदा दोनों ही मध्यम श्रेणी के पात्र हैं जो भूत एवं भावी घटना के सूचक है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

नोट- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के तृतीय अङ्क में प्रथम विष्कम्भक का प्रयोग है वहाँ भी दो पात्र हैं- प्रथम पात्र शिष्य तथा द्वितीय पात्र प्रियंवदा।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम्- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-190

7. 'प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः .....पुनर्भवं परिगतशक्तिरात्मभूः'......
यह भरतवाक्य किस ग्रन्थ का है ?
(A) मृच्छकटिकम् (B) मालविकाग्निमित्रम्
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (D) उत्तररामचरितम्

व्याख्या-

नाटक के अन्त में प्रयुक्त आशीर्वादात्मक पद्य को भरतवाक्य कहते हैं। महाभाष्यकार आचार्य पतञ्जलि ने महाभाष्य में कहा है-

'मङ्गलादीनि मङ्गलमध्यानि मङ्गलान्तानि च काव्यानि प्रथन्ते।' अर्थात् ग्रन्थ के आदि, मध्य तथा अन्त में मङ्गलाचरण करना चाहिए। भरतवाक्य सम्भवतः उसी परम्परा के परिपालनार्थ अन्तिम-मङ्गल के रूप में नाटकों में रखा जाता है।

इसका तात्पर्य है- 'भरतानां वाक्यम् इति भरतवाक्यम्' अर्थात् भरतों अथवा नटों का आशीष अथवा नाट्याचार्य भरत का आशीष।

➢ **अभिज्ञानशाकुन्तलम् में प्रयुक्त भरतवाक्य-**

प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः, सरस्वती श्रुतमहतां महीयताम्।
ममापि च क्षपयतु नीललोहितः, पुनर्भवं परिगतशक्तिरात्मभूः।।
(अभि0 7/35)

राजा दुष्यन्त कहते हैं कि- राजा प्रजा के हित के लिए प्रयत्नशील हों। ज्ञान से युक्त कवियों की वाणी का पूर्ण सत्कार हो सर्वशक्तिमान् स्वयंभू शिव मेरे पुनर्जन्म को निवृत्त कर दें।

अतः विकल्प 'C' सही है।

➢ **मृच्छकटिकम् में प्रयुक्त भरतवाक्य-**

क्षीरिण्यः सन्तु गावो भवतु वसुमती सर्वसम्पन्नसस्या,
पर्जन्यः कालवर्षी सकलजनमनोनन्दिनो वान्तु वाताः।
मोदन्तां जन्मभाजः सततमभिमता ब्राह्मणाः सन्तु सन्तः
श्रीमन्तः पान्तु पृथ्वीं प्रशमितरिपवो धर्मनिष्ठाश्च भूपाः।।
(मृच्छ0 10.61)

चारुदत्त कहता है- गाएँ प्रचुर दूध देने वाली हों, पृथ्वी सब प्रकार से धन-धान्य से पूर्ण हो, मेघ समय से जल बरसाने वाला हो, समस्त जनों के मन को आनन्दित करने वाली वायु चले। प्राणधारी निरन्तर सुखी रहें, पूज्य ब्राह्मण लोग उत्तमशील हों, समृद्धिशाली, शत्रुओं का नाश करने वाले तथा धर्मनिष्ठ राजा पृथ्वी का पालन करें ।

➢ **मालविकाग्निमित्रम् का भरतवाक्य-**

त्वं मे प्रसादसुमुखी भव देवि नित्यं
एतावदेव हृदये प्रतिपालनीयम्।
आशास्यमीतिविगमप्रभृति प्रजानां
संपत्स्यते न खलु गोप्तरि नाग्निमित्रे।। (माल0 5.20)

प्रजाओं की कोई इच्छा पूर्ण नहीं होगी, ऐसी बात तो अग्निमित्र के राजत्व में होगी ही नहीं अर्थात् इच्छाएँ पूर्ण होंगी।

➢ **उत्तररामचरित में प्रयुक्त भरतवाक्य-**

पाप्मभ्यश्च पुनाति वर्धयति च श्रेयांसि सेयं कथा
मङ्गल्या च मनोहरा च जगतो मातेव गङ्गेव च।
तामेतां परिभावयन्त्वभिनयैर्विन्यस्तरूपां बुधाः
शब्दब्रह्मविदः कवेः परिणतां प्राज्ञस्य वाणीमिमाम्।।
(उत्तर0 7.21)

जगत् की माता की तरह और गङ्गा की तरह मङ्गलकारिणी तथा मनोहर यह कथा पापों से पवित्र करती है और कल्याण को बढ़ाती है वही शब्द ब्रह्मवेत्ता विद्वान् कवि के द्वारा रूपान्तरण को प्राप्त हुई, अभिनयों ने विन्यस्त स्वरूप वाली इस वाणी का विद्वान् लोग परिशीलन करें।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (7/35)- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-453

8. 'न तादृशा आकृतिविशेषा गुणविरोधिनो भवन्ति' प्रियंवदा द्वारा उक्त वाक्य किसके लिये है ?
(A) दुष्यन्त (B) शकुन्तला
(C) महर्षि कण्व (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या-

कालिदास विरचित अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के चतुर्थ अङ्क में अनसूया प्रियंवदा से कहती है कि-
''अद्य स राजर्षिरिष्टिं परिसमाप्य ऋषिभिर्विसर्जित आत्मनो नगरं प्रविश्यान्तः पुरसमागत इतोगतं वृत्तान्तं स्मरति वा न वेति।'' (अभि0 अङ्क 4) आज वह (राजा) राजर्षि यज्ञ की समाप्ति के बाद ऋषियों से विदाई लेकर अपने नगर में प्रवेश करके अन्तःपुर की स्त्रियों से मिलकर यहाँ की बात को याद करेगा अथवा नहीं।

प्रियंवदा अनसूया को इस विषय में आश्वस्त करते हुए कहती है कि- 'न तादृशा आकृतिविशेषा गुणविरोधिनो भवन्ति' (अभि. अङ्क-4) अर्थात् उसप्रकार की सुन्दर आकृतियाँ गुणों से रहित नहीं होती हैं।

अतः विकल्प 'A' सही है।

* 'अद्य पुनर्हृदयेनासंनिहिता' (अभिज्ञान0 अङ्क0 4) अनसूया प्रियंवदा से कहती है आज वह (शकुन्तला) हृदय से कहीं और है।
* अनसूया शकुन्तला के विषय में प्रियंवदा से कहती है। 'गुणवते कन्यका प्रतिपादनीयेत्ययं तावत् प्रथमः संकल्पः।' (अभि0 अङ्क- 4) गुणवान् व्यक्ति को कन्या देनी है यह माता-पिता का प्रथम संकल्प (विचार) होता है।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-180

9. ''दुष्यन्तेनाहितं तेजो दधानां भूतये भुवः। अवेहि तनयां ब्रह्मन्नग्निगर्भां शमीमिव।।'' यह सूचना कण्व को किससे प्राप्त हुई?
(A) गौतमी (B) अनसूया
(C) प्रियंवदा (D) छन्दोमयी वाणी

व्याख्या-

* अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के चतुर्थ अङ्क में प्रियंवदा अनसूया से कहती है प्रवास से लौटे हुए महर्षि काश्यप जब यज्ञशाला में प्रवेश करते हैं तो अशरीरधारी छन्दोमयी वाणी से पता चलता है कि शकुन्तला और दुष्यन्त का गान्धर्व विवाह हुआ है तथा इस समय शकुन्तला गर्भधारण की हुई है।

'अग्निशरणं प्रविष्टस्य शरीरं विना छन्दोमय्या वाण्या।'
वह छन्दोमयी वाणी प्रियंवदा अनसूया से बताती है-
दुष्यन्तेनाहितं तेजो दधानां भूतये भुवः।
अवेहि तनयां ब्रह्मन्नग्निगर्भां शमीमिव।। (अभि0 4.4)

हे ब्रह्मन्, दुष्यन्त के द्वारा स्थापित तेज (वीर्य) को पृथ्वी के कल्याण के लिए धारण करने वाली अपनी पुत्री को छिपी हुई अग्नि से युक्त शमीवृक्ष के तुल्य समझो।

अतः विकल्प 'D' सही है।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/4)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-198

10. 'सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम्' यह किससे कहा गया है?
(A) सखियों से (B) वन-देवियों से
(C) लता-पादपों से (D)पशु-पक्षियों से

व्याख्या-

अभिज्ञानशाकुन्तल नाटक के चतुर्थ अङ्क में शकुन्तला की विदाई के अवसर पर महर्षि काश्यप वनवृक्षों के स्नेह को व्यक्त करते हुए कहते हैं-

* पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं युष्मास्वपीतेषु या ....सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम्। (अभि० 4/9)
महर्षि कण्व तपोवन के वृक्षों को सम्बोधित करते हुए कहते हैं कि जो तुम्हें बिना जल पिलाये जल नहीं पीती थी। तुम्हारे प्रति प्रेम के कारण जो अलङ्कारों की प्रेमी होने पर भी तुम्हारे नये पत्ते नहीं तोड़ती थी। तुम्हारे पुष्पोद्गम के समय जिसका उत्सव होता था वह शकुन्तला अब पतिगृह को जा रही है, तुम सब अपनी स्वीकृति दो।
अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/9)- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-213

11. मृच्छकटिकम् के निम्नांकित पात्रों में कौन संस्कृत नहीं बोलता?
(A) चारुदत्त (B) वसन्तसेना
(C) आर्यक (D) शर्विलक

व्याख्या-

	नाम	पात्र	भाषा
1.	चारुदत्त	नायक	संस्कृत
2.	वसन्तसेना	नायिका	प्राकृत
3.	आर्यक	राजा पालक का बन्दी	संस्कृत
4.	शर्विलक	मदनिका का प्रेमी	संस्कृत

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-324

12. मृच्छकटिकम् का विदूषक है-
(A) मैत्रेय (B) माधव्य
(C) माणवक (D) गौतम

व्याख्या-

	विदूषक	ग्रन्थ	नायक/नायिका
A.	मैत्रेय	मृच्छकटिकम्	चारुदत्त/वसन्तसेना
B.	माधव्य	अभिज्ञानशाकुन्तलम्	दुष्यन्त/शकुन्तला
C.	माणवक	विक्रमोर्वशीयम्	विक्रम पुरुरवा/उर्वशी
D.	गौतम	मालविकाग्निमित्रम्	अग्निमित्र/मालविका

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- मृच्छकटिकम्- रमाशङ्कर त्रिपाठी, भू० पेज-42

13. 'सतां सद्भिः सङ्गः कथमपि हि पुण्येन भवति' का अर्थ है-
(A) सज्जनों का सत्य के साथ मिलन बड़े पुण्य से होता है।
(B) सज्जनों का सज्जनों से मिलन बड़े पुण्य से होता है।
(C) सत्य का सज्जनों से मिलना पुण्यकारी है।
(D) सज्जनों का दुर्जनों से मिलन पुण्यकारी नहीं है।

व्याख्या-
भवभूति कृत उत्तररामचरितम् के द्वितीय अङ्क में वनदेवता तापसी आत्रेयी के स्वागत में पुष्प बिखेरकर इस कथन का वाचन किया है-

* सतां सद्भिः सङ्गः कथमपि हि पुण्येन भवति। सज्जनों का सज्जनों से मिलन बड़े पुण्य से होता है।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- उत्तररामचरितम् (2.1)- कपिलदेव द्विवेदी,पेज-97

14. 'उत्तररामचरितम्' नाटक में तमसा और मुरला हैं-
(A) वनदेवता
(B) सीता की सखियाँ
(C) नदी विशेषाधिष्ठात्री देवियाँ
(D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या-

* 'उत्तररामचरितम्' में वनदेवता के रूप में वासन्ती का वर्णन आया है। वासन्ती राम और सीता की प्रिय सखी है। वह दण्डकारण्य में राम से वार्तालाप करती है तथा सीता का विवरण पूछती है, वह राम को निरुत्तर कर देती है।
* उत्तररामचरितम् के तृतीय अङ्क के आरम्भ में तमसा एवं मुरला नामक दो नदी विशेषाधिष्ठात्री देवियों का वर्णन आया है। 'ततः प्रविशति नदीद्वयम्'।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- उत्तररामचरितम्- कपिलदेव द्विवेदी,पेज- 155-156

15. ''अपि ग्रावा रोदित्यपि दलति वज्रस्य हृदयम्'' इसका सम्बन्ध है-
(A) रत्नावली से (B) स्वप्नवासवदत्तम् से
(C) मृच्छकटिकम् से (D) उत्तररामचरितम् से

व्याख्या-
(A) श्रीहर्ष द्वारा रचित रत्नावली के द्वितीय अङ्क में राजा ने विदूषक से कहा- 'अचिन्त्यो हि मणिमन्त्रौषधीनां प्रभावः' (रत्नावली अङ्क-2)

मणि, मन्त्र और औषधि का प्रभाव अचिन्तनीय हुआ करता है।

(B) भास विरचित स्वप्नवासवदत्ता के प्रथम अङ्क में तापसी ने पद्मावती से वासवदत्ता के विषय में कहा कि-
'तपोवनानि नामातिथिजनस्य स्वगेहम्' (स्वप्न. अङ्क-1)
अर्थात् तपोवन तो अतिथि-जन का अपना ही घर होता है।

(C) शूद्रक विरचित मृच्छकटिकम् के दशम अङ्क में शर्विलक चारुदत्त से कहता है-
'सर्वत्रार्जवं शोभते' अर्थात् सरलता सब जगह शोभायमान होती है।

(D) भवभूति विरचित उत्तररामचरितम् नाटक के प्रथम अङ्क में लक्ष्मण कहते हैं-
'अपि ग्रावा रोदित्यपि दलति वज्रस्य हृदयम्।' (उत्तर.1.28)
निर्जन जनस्थान में विकल इन्द्रियों वाले अर्थात् श्रीरामचन्द्र जी के चरितों से पत्थर भी विलाप करता है तथा वज्र का भी हृदय विदीर्ण होता है। **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत- उत्तररामचरितम् (1/28)- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-52

16. 'त्वमेव ननु कल्याणि सञ्जीवय जगत्पतिम्' इस पद्यांश में 'जगत्पतिम्' की व्यञ्जना है-
(A) राम के लिए (B) शिव के लिए
(C) राजा के लिए (D) सीता के लिए

व्याख्या-
उत्तररामचरितम् नाटक के तृतीय अङ्क में राम को मूर्च्छित देखकर तमसा ने सीता से कहा कि-
'त्वमेव ननु कल्याणि! सञ्जीवय जगत्पतिम्।
प्रियस्पर्शो हि पाणिस्ते तत्रैष निरतो जनः।।' (उत्तर0 3/10)
'हे कल्याणि! तुम्हीं जगत्पति को जीवित करो, क्योंकि तुम्हारा हाथ कोमल स्पर्श वाला है, उसी में ये रामचन्द्र अनुरक्त हैं। उपर्युक्त कथन से स्पष्ट है कि यह कथन राम के लिए है।
अतः विकल्प 'A' सही है।

स्रोत- उत्तररामचरितम् (3/10)- कपिलदेव द्विवेदी, पेज- 176

17. किस नाटक का अङ्गीरस करुणरस है?
(A) महावीरचरितम् (B) उत्तररामचरितम्
(C) वेणीसंहारम् (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या-

	ग्रन्थ	अङ्गीरस	नायक/कोटि
A.	महावीरचरितम् (सात अङ्क)	वीररस	श्रीराम /धीरोदात्त
B.	उत्तररामचरितम् (सात अङ्क)	करुणरस एको रसः करुण एव	श्रीराम /धीरोदात्त
C.	वेणीसंहार (छः अङ्क)	वीररस	भीम/धीरोदात्त

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- उत्तररामचरितम्- कपिलदेव द्विवेदी, भू.पे. 86

18. अन्तःकरणतत्त्वस्य दम्पत्योः स्नेहसंश्रयात्।
आनन्दग्रन्थिरेकोऽयमपत्यमिति पठ्यते॥
इस श्लोक में महत्त्व प्रतिपादित है-
(A) प्रेम का महत्त्व (B) पति का महत्त्व
(C) पत्नी का महत्त्व (D) पुत्र का महत्त्व

व्याख्या-
उत्तररामचरितम् नाटक के तृतीय अङ्क में पुत्र के महत्त्व को बताते हुए तमसा सीता से कहती हैं-
अन्तःकरणतत्त्वस्य दम्पत्योः स्नेहसंश्रयात्।
आनन्दग्रन्थिरेकोऽयमपत्यमिति पठ्यते॥
(उत्तर0 3/17)
'पति और पत्नी के हृदयरूपी वस्तु के प्रेम के आश्रय से यह एक आनन्द की गाँठ सन्तान इस नाम से पुकारी जाती है।' इस श्लोक में सन्तान को पति-पत्नी के बीच की कड़ी बताया गया है।
अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- उत्तररामचरितम् (3/17)- कपिलदेव द्विवेदी , पेज-196

19. उत्तररामचरितम् में किस पात्र की भूमिका नगण्य है?
(A) सूत्रधार (B) नायक
(C) नायिका (D) विदूषक

व्याख्या-
* **सूत्रधार-** 'उत्तररामचरितम्' के नान्दी पाठ के अनन्तर सूत्रधार भवभूति का परिचय देता है।
* भवभूतिकृत 'उत्तररामचरितम्' में राम को धीरोदात्त नायक तथा सीता को स्वकीया नायिका के रूप में चित्रित किया गया है।

* भूवभूति के तीनों नाटकों (उत्तररामचरितम्, महावीरचरितम् एवं मालतीमाधवम्) में विदूषक का सर्वथा अभाव है। अतः इसी पात्र की भूमिका नगण्य है।

इसलिए विकल्प D सही है।

स्रोत- उत्तररामचरितम्- कपिलदेव द्विवेदी, भू. पेज-62

20. 'नवसर्गगते माघे नव शब्दो न विद्यते' उक्ति किस ग्रन्थ के लिए उद्धृत है ?

(A) मेघदूतम् **(B) शिशुपालवधम्**
(C) किरातार्जुनीयम् **(D) कादम्बरी**

व्याख्या-

	ग्रन्थ/ग्रन्थकार	ग्रन्थ सम्बन्धित सूक्तियाँ
1.	मेघदूतम् (कालिदास)	सुवशा कालिदासस्य मन्दाक्रान्ता प्रवल्गति। क्षेमेन्द्र (सुवृत्ततिलक)
2.	शिशुपालवधम् (माघ)	1. नवसर्गगते माघे नवशब्दो न विद्यते। (प्रभावकचरिते) 2.मेघे माघे गतं वयः (मल्लिनाथ)
3.	किरातार्जुनीयम् (भारवि)	भारवेरर्थगौरवम् (उद्भट)
4.	कादम्बरी (बाण)	शब्दार्थयोः समो गुम्फः पाञ्चालीरीतिरुच्यते। (भोज)

अतः विकल्प B सही है

स्रोत- संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-204

21. 'शिशुपालवधम्' में सर्गों की कुल संख्या है-

(A) 19 **(B) 20**
(C) 18 **(D) 17**

व्याख्या-

	ग्रन्थ	सर्ग	श्लोक
1.	रघुवंशम्	19 सर्ग	1569 श्लोक
2.	शिशुपालवधम्	20 सर्ग	1650 श्लोक
3.	किरातार्जुनीयम्	18 सर्ग	1040 श्लोक
4.	कुमारसम्भवम्	17 सर्ग	1096 श्लोक
5.	नैषधीयचरितम्	22 सर्ग	2830 श्लोक

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- शिशुपालवधम्- जनार्दन गंगाधर रटाटे, भू. पेज-20

22. 'शिशुपालवधम्' की कथावस्तु महाभारत के किस पर्व से उद्धृत है?

(A) सभापर्व **(B) वनपर्व**
(C) आदिपर्व **(D) भीष्मपर्व**

व्याख्या-

A. महाभारत के सभापर्व से उद्धृत ग्रन्थ-
* शिशुपालवधम् * वेणीसंहारम्

B. महाभारत के वनपर्व से उद्धृत ग्रन्थ
* किरातार्जुनीयम् * नैषधीयचरितम्
* नलचम्पू * नलोपाख्यानम् * रामोपाख्यानम्

C. महाभारत के आदिपर्व से उद्धृत ग्रन्थ-
* अभिज्ञानशाकुन्तलम् * कद्रूविनतोपाख्यानम्
* ययात्युपाख्यानम्

D. महाभारत के भीष्मपर्व से उद्धृत ग्रन्थ- * भगवद्गीता

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- शिशुपालवध- जनार्दन गंगाधर रटाटे, भू. पेज-20

23. 'शिशुपालवधम्' के प्रथमसर्ग में कुल कितने श्लोक हैं?

(A) सत्तर **(B) साठ**
(C) पचहत्तर **(D) पचास**

व्याख्या-

सर्ग	श्लोक संख्या	सर्ग का नाम
1.	75	कृष्णनारदसम्भाषण
2.	118	उद्धव तथा बलराम के साथ मन्त्रणा
3.	82	पुरीप्रस्थान
4.	68	रैवतक पर सेना का प्रस्थान एवं शिविर का वर्णन
5.	69	सेनानिवेश
6.	79	षट् ऋतुवर्णन
7.	74	वनविहार
8.	71	जलविहार
9.	87	सूर्यास्त वर्णन
10.	90	सुरतवर्णन (मद्यपान वर्णन)
11.	67	प्रत्यूषवर्णन (प्रभात वर्णन)
12.	76	प्रयाणवर्णन (यमुना नदी का वर्णन)
13.	69	श्रीकृष्णसमागम (श्रीकृष्ण भगवान् का यज्ञसभा में प्रवेश)
14.	88	श्रीकृष्णार्घदान
15.	96	अपशकुनाविर्भाव
16.	85	दूतसंवाद
17.	69	यदुवंश क्षोभ
18.	80	संकुलयुद्धवर्णन
19.	120	द्वन्द्वयुद्धवर्णन
20.	79	शिशुपालवध वर्णन

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- शिशुपालवधम्- जनार्दन गंगाधर रटाटे, पेज-161

24. 'न्यायधारा हि साधवः' का अर्थ है-
(A) न्याय की धारा अच्छी होती है।
(B) न्याय की धारा साधुओं की धारा है।
(C) सज्जन न्यायमार्ग का ही आश्रय लेते हैं।
(D) सज्जन न्यायमार्ग का परित्याग करते हैं।

व्याख्या-
प्रस्तुत सूक्ति भारवि कृत किरातार्जुनीयम् महाकाव्य के 11 वें सर्ग का 30 वाँ श्लोक है-
''न्यायधारा हि साधवः।'' (किरात.11/30)
सज्जन न्यायमार्ग का ही आश्रय लेते हैं।
अतः विकल्प C सही है।
स्रोत- किरातार्जुनीयम् (11.30)- श्रीनिवास शर्मा,पेज-244

25. 'किरातार्जुनीयम्' में 'कुरूणामधिपस्य' शब्द प्रयुक्त किया गया है-
(A) युधिष्ठिर के लिए (B) अर्जुन के लिए
(C) दुर्योधन के लिए (D) भीम के लिए

व्याख्या-

किरातार्जुनीयम्	पात्रों के लिए प्रयुक्त शब्द
1. युधिष्ठिर के लिए	युधिष्ठिरः
2. अर्जुन के लिए	सव्यसाची, गुडाकेशः, धनञ्जयः
3. दुर्योधन के लिए	कुरूणामधिपः,सुयोधनः ....
4. भीम के लिए	वृकोदरः

नोट- ''श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीं'' में 'कुरूणामधिपस्य' पद दुर्योधन के लिए प्रयुक्त है।
अतः विकल्प C सही है।
स्रोत- किरातार्जुनीयम् (1/1)- रामसेवक दुबे, पेज-55

26. 'कृषीवल' से तात्पर्य है-
(A) कृषि से (B) किसान से
(C) सिंचाई के साधन से (D) वृष्टि से

व्याख्या-
* भारविकृत 'किरातार्जुनीयम्' के प्रथमसर्ग में दुर्योधन ने कुरुराज्य के किसानों को समृद्ध बनाने के लिए उल्लेखनीय कार्य किया जिसे वनेचर युधिष्ठिर से बताता है-
सुखेन लभ्या दधतः कृषीवलै-
रकृष्टपच्या इव सस्यसम्पदः।
वितन्वति क्षेममदेवमातृका-
श्चिराय तस्मिन् कुरवश्चकासति।। (कि0 1/17)
चिरकाल से प्रजा के कल्याण के लिए यत्नशील उस राजा दुर्योधन के कारण नदियों एवं नहरों आदि की सिंचाई की सुविधा से समन्वित कुरुप्रदेश की भूमि मानों वहाँ के किसानों के बिना अधिक परिश्रम उठाए हुए ही बड़ी सुविधा के साथ स्वयं प्राप्त होने वाले अन्नों की समृद्धि से सुशोभित हो रही है ।
अतः विकल्प B सही है।
स्रोत- किरातार्जुनीयम् (1/17)- रामसेवक दुबे, पेज-84

27. 'निरस्तनारीसमया' में 'समया' से तात्पर्य है-
(A) समान (B) माया वाली
(C) समय (D) मर्यादा

व्याख्या-
* किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में स्त्रियोचित मर्यादा को छोड़कर द्रौपदी युधिष्ठिर से कहती हैं कि मेरी विकृत मनोव्यथाएँ ही मुझे आप के समक्ष ऐसा करने के लिए बाध्य कर रही हैं।
तथापि वक्तुं व्यवसाययन्ति मां
निरस्तनारीसमया दुराधयः।। (कि0 1/28)
इस श्लोक में 'समया' पद से तात्पर्य है- मर्यादा।
अतः विकल्प D सही है।
स्रोत- किरातार्जुनीयम् (1/28)- रामसेवक दुबे, पेज-110

28. 'न बाधतेऽस्य त्रिगणः परस्परम्' सूक्ति उद्धृत है-
(A) मृच्छकटिकम् में
(B) किरातार्जुनीयम् में
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में
(D) नीतिशतकम् में

व्याख्या-
A. शूद्रक विरचित मृच्छकटिकम् के चतुर्थ अङ्क में मदनिका शर्विलक से कहती है-
'न चन्द्रादातपो भवति' (मृच्छ. अङ्क-4) अर्थात् चन्द्रमा से गर्मी नहीं होती।
B. भारवि विरचित किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग में दुर्योधन के पुरुषार्थ का वर्णन करते हुए वनेचर युधिष्ठिर से कहता है-
'न बाधतेऽस्य त्रिगणः परस्परम्।' (किरात0 1/11)
त्रिगण अर्थात् धर्म, अर्थ, काम एक दूसरे को बाधित नहीं

करते हैं बल्कि मित्रवत् व्यवहार करते हैं।
अतः विकल्प 'B' सही है।

C. कालिदास विरचित अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के प्रथम अङ्क में राजा दुष्यन्त शकुन्तला के विषय में अपने मन में कहता है-
'सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तः करणप्रवृत्तयः।' (अभि0 1/22)
सन्देहास्पद विषयों में सज्जनों के अन्तः करण की प्रवृत्तियाँ ही प्रमाण होती हैं।

D. भर्तृहरि नीतिशतकम् के अर्थपद्धति में धन की तीन गति को स्वीकार करते हुए कहते हैं-
'दानं भोगो नाशस्तिस्रो गतयो भवन्ति वित्तस्य' (नीतिशतकम् श्लोक- 34)
जो व्यक्ति न धन का दान करता है और न स्वयं भोग करता है उसके धन की तीसरी गति अर्थात् नष्ट ही समझना चाहिए।

स्रोत- किरातार्जुनीयम् (1/11)- रामसेवक दुबे, पेज-69

29. 'स्फुटता न पदैरपाकृता न च न स्वीकृतमर्थगौरवम्' यह किस काव्य से सम्बद्ध है ?
(A) शिशुपालवधम् (B) किरातार्जुनीयम्
(C) नैषधीयचरितम् (D) रघुवंशम्

व्याख्या-

A. माघ विरचित शिशुपालवधम् के द्वितीयसर्ग में उद्धव जी ने बलराम से कहा कि-
'नैकमोजः प्रसादो वा रसभावविदः कवेः।' (शिशु0 2/83)
रसभाव के ज्ञाता अर्थात् शृङ्गारादि रस के विषय को जानने वाले कवि के लिए ओजगुणयुक्त या प्रसाद गुणयुक्त ही प्रबन्ध की रचना करने का नियम नहीं है।

B. भारवि विरचित किरातार्जुनीयम् के द्वितीय सर्ग में युधिष्ठिर भीम को प्रसन्न करने के लिए कहते हैं कि-
'स्फुटता न पदैरपाकृता न च न स्वीकृतमर्थगौरवम्' (किरात0 2/27)
वाक्य में प्रयोग किए गए पदों के द्वारा अर्थ की सुस्पष्टता का परित्याग नहीं किया गया है और अर्थगौरव को स्वीकार नहीं किया ऐसी बात नहीं है।
अतः विकल्प B सही है।

C. हर्ष विरचित नैषधीयचरित के चतुर्थ सर्ग में राजा नल दमयन्ती के विषय में कहते हैं कि-
'झटिति पराशयवेदिनो हि विज्ञाः' (नैषध0 4/118)
चतुर समझदार व्यक्ति तुरन्त ही दूसरे के आशय को समझ जाते हैं।

D. महाकवि कालिदास विरचित रघुवंशम् के तीसरे सर्ग में रघु के बल से सन्तुष्ट होकर इन्द्र ने कहा-
'पदं हि सर्वत्रगुणैर्निधीयते।' (रघु0 3/62)
गुणों से ही सर्वत्र प्रतिष्ठा होती है।

स्रोत- किरातार्जुनीयम् (2.27)- रामसेवक दुबे,भू0पेज-28

30. 'जटाधरः सञ्जुहुधीह पावकम्' यह कथन किसको कहा गया है ?
(A) युधिष्ठिर (B) अर्जुन
(C) भीम (D) दुर्योधन

व्याख्या-

A. भारवि विरचित किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में द्रौपदी युधिष्ठिर के प्रति कहती हैं कि यदि क्षमा को ही चिरकाल तक सुख का साधन समझते हैं तो-
'जटाधरः सञ्जुहुधीह पावकम्' (किरात0 1/44)
जटाधारण करके इसी वन में अग्नि में हवन कीजिए।
अतः विकल्प A सही है।

B. किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग में द्रौपदी अर्जुन के विषय में युधिष्ठिर से कहती हैं कि-
'करोति मन्युं न कथं धनञ्जयः' (किरात. 1/35)
आपके लिए वृक्षों की छाल (वल्कल वस्त्रों) को लाते हुए अर्जुन को देखकर आपको क्रोध क्यों नहीं आता?

C. भीम के विषय में द्रौपदी युधिष्ठिर से कहती हैं कि-
'दुनोति नो कच्चिदयं वृकोदरः' (किरात0 1/34)
पैदल ही पर्वतों पर घूमते हुए धूलि से धूसरित यह भीम, मुझे लगता है कि आपके मन को व्यथित नहीं करता?

D. दुर्योधन के विषय में वनेचर युधिष्ठिर से कहता है-
'नयेन जेतुं जगतीं सुयोधनः' (किरात0 1/7)
छल से जीती गई पृथ्वी को नीति से जीतना चाहता है।

स्रोत- किरातार्जुनीयम् (1/44)- रामसेवक दुबे, पेज-144

31. किरातार्जुनीयम् प्रथमसर्ग के अधोलिखित अन्तिम श्लोक में कौन छन्द है?
'विधिसमयनियोगाद्दीप्तिसंहारजिह्मम्'
(A) उपजाति (B) वंशस्थ
(C) वसन्ततिलका (D) मालिनी

व्याख्या-

A. **उपजाति-** 'अनन्तरोदीरितलक्ष्मभाजौ पादौ यदीयावुपजातयस्ताः'। (वृत्त0 3/30)
उपजाति के प्रत्येक पाद में 11 वर्ण होते हैं यह इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा दोनों के मिश्रण से बनता है।
उदा0- स्वप्नो नु माया नु .... मनोरथा नाम तटप्रपाताः।।

B. **वंशस्थ-** 'जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ।' (वृत्त.3/46)
वशंस्थ में प्रत्येक पाद में 12 वर्ण होते हैं इसमें जगण, तगण, जगण, रगण होता है।
उदाहरण- श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीम्
किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में 1 से 44 तक वंशस्थ, 45 वाँ पुष्पिताग्रा तथा अन्तिम 46 वें पद्य में भारवि ने मालिनी छन्द का प्रयोग किया है।

C. **वसन्ततिलका-** 'उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः' (वृत्त0 3/79)
वसन्ततिलका छन्द के प्रत्येक पाद में 14 वर्ण होते हैं इसमें तगण, भगण, जगण, जगण तथा दो गुरु वर्ण होते हैं।
जैसे- यात्येकतोऽस्तशिखरं----------इवात्मदशान्तरेषु।।

D. **मालिनी-** 'ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः।' (वृत्त0 3.87)
मालिनी छन्द के प्रत्येक पाद में 15 वर्ण होते हैं दो नगण,एक मगण, दो यगण,तथा 8वें और 7वें वर्णो पर यति होती है।
उदाहरण- विधिसमयनियोगाद्दीप्तिसंहारजिह्मं, शिथिलवसुमगाधे मग्नमापत्पयोधौ।
अतः विकल्प D सही है ।

स्रोत- किरातार्जुनीयम् (1/46)- रामसेवक दुबे, पेज-149

32. 'त्रिभुवनप्रसवभूमिरिव विस्तीर्णा' विशेषण किसके लिए प्रयुक्त है?
(A) अवन्ति **(B) विन्ध्याटवी**
(C) विदिशा **(D) हेमकूट**

व्याख्या-

A. कालिदास विरचित मेघदूतम् के पूर्वमेघ में अवन्ती नामक जनपद की विशेषता बताते हुए कहते हैं-
पूर्वोद्दिष्टामनुसर पुरीं श्रीविशालां विशालाम्। (पूर्व0 मेघ-31)
यक्ष मेघ से कहता है कि तुम पूर्व में बताई गई शोभा से युक्त विशाला (उज्जयिनी) नगरी को जाना।

B. बाणभट्ट कादम्बरी कथामुख में विन्ध्याटवी का वर्णन करते हुए कहते हैं-
'प्रेताधिपनगरीव सदासन्निहितमृत्युभीषणा महिषाधिष्ठिता च।' (कादम्बरी विन्ध्याटवी वर्णन)
प्रेतराज यमराज की नगरी की भाँति जो सदा मृत्यु के कारण भयानक और महिष (यम का वाहन) से अधिष्ठित है।
वन पक्ष में- जो यमराज की नगरी की तरह सदा निकटवर्ती मृत्यु तुल्य हिंसक जन्तु के कारण भैसों से अधिष्ठित है।

C. कादम्बरी कथामुख में बाणभट्ट राजा शूद्रक की राजधानी विदिशा का वर्णन करते हुए कहते हैं-
'त्रिभुवनप्रसवभूमिरिव विस्तीर्णा ....विदिशाभिधाना नगरी राजधान्यासीत्'।
तीनों भुवनों की जन्मभूमि के समान विस्तृत वेत्रवती नदी से घिरी हुई विदिशा नाम की राजधानी थी।

D. अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के सप्तम अङ्क में मातलि राजा दुष्यन्त से हेमकूट पर्वत के विषय में कहता है-
'एष खलु हेमकूटो नाम किंपुरुषपर्वतस्तपःसंसिद्धिक्षेत्रम्।' (अभि. अङ्क-7)
यह हेमकूट नाम का किंपुरुषों (किन्नरों) का पर्वत है। यह तपस्या की सफलता के लिए सर्वोत्तम स्थान है।
अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- कादम्बरी कथामुख- तारिणीश झा, पेज-44

33. हारीत किसका पुत्र था?
(A) महर्षि अगस्त्य का
(B) महर्षि जाबालि का
(C) महर्षि श्वेतकेतु का
(D) महर्षि विश्वामित्र का

व्याख्या-

महर्षि	सन्तान
A. अगस्त्य	दृढ़दस्यु या इध्मवाह
B. जाबालि	हारीत
C. श्वेतकेतु	पुण्डरीक
D. विश्वामित्र	शकुन्तला

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- कादम्बरी कथामुखम्- तारिणीश झा,भू0 पेज-33

34. कादम्बरी का प्रमुख नायक कौन है?
(A) शूद्रक (B) तारापीड
(C) चन्द्रापीड (D) वैशम्पायन

व्याख्या-

* बाणभट्ट कृत 'कादम्बरी' में शूद्रक विदिशा का राजा है, जहाँ चाण्डालकन्या वैशम्पायन नामक शुक को राजा के दरबार में लेकर उपस्थित होती है।
* कादम्बरी में अवन्ति देश की राजधानी में तारापीड नामक राजा राज्य करता था, उसकी पत्नी का नाम विलासवती तथा मन्त्री का नाम शुकनास था।
* चन्द्रापीड तथा कादम्बरी प्रमुख नायक नायिका हैं तथा पुण्डरीक और महाश्वेता कादम्बरी कथा के उपनायक उपनायिका हैं। **अतः विकल्प C सही है।**
* वैशम्पायन, तारापीड के मन्त्री शुकनास एवं मनोरमा का पुत्र है।

स्रोत- वस्तुनिष्ठ संस्कृतसाहित्यम्- सर्वज्ञभूषण,पेज- 298

35. 'रात्रिर्गमिष्यति भविष्यति सुप्रभातम्' पद्यांश का सम्बन्ध किस रचनाकार से है?
(A) भर्तृहरि (B) अम्बिकादत्तव्यास
(C) भवभूति (D) भारवि

व्याख्या-

A. नीतिशतकम् के विद्वत्पद्धति में वाणी के विषय में भर्तृहरि कहते हैं- क्षीयन्ते खलु भूषणानि सततं वाग्भूषणं भूषणम्। (नीति. विद्वत्पद्धति श्लोक-15)
सब भूषण तो नष्ट हो जाते हैं किन्तु वाणी रूपी भूषण सदा बना रहता है कभी नष्ट नहीं होता है।

B. अम्बिकादत्तव्यास शिवराजविजय के द्वितीय निःश्वास का प्रारम्भ इसी श्लोक से करते हैं 'रात्रिर्गमिष्यति भविष्यति सुप्रभातम्-----
हा हन्त! हन्त! नलिनीं गज उज्जहार।। (शिव0 1/2)
'रात बीतेगी, सबेरा होगा' ऐसा कमल के अन्दर बन्द भौंरा सोच रहा था तभी उस कमल को हाथी ने उखाड़ डाला।

C. भवभूति- उत्तररामचरितम् के द्वितीय अङ्क में आत्रेयी वनदेवता से कहती हैं कि- वितरति गुरुः प्राज्ञे विद्यां यथैव तथा जडे।
(उत्तर0 2/4)
गुरु जिस प्रकार व्युत्पन्न शिष्य को विद्या देता है उसीप्रकार मन्द बुद्धि, शिष्य को भी विद्या देता है।

D. **भारवि-** वनेचर युधिष्ठर से कहता है कि- विभज्य नक्तन्दिवमस्ततन्द्रिणा वितन्यते तेन नयेन पौरुषम्।
(किरात0 1/9)
आलस्य से रहित होकर दुर्योधन के द्वारा रात-दिन समय का समुचित विभाजन करके नीतिशास्त्र के अनुसार पुरुषार्थ को बढ़ाया जा रहा है।
अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- शिवराजविजय (1/2)- रमाशङ्कर मिश्र, पेज-104

36. 'शिवराजविजय' है-
(A) ऐतिहासिक उपन्यास (B) चम्पू
(C) खण्डकाव्य (D) गीतिकाव्य

व्याख्या-

A. ऐतिहासिक उपन्यास- 'शिवराजविजय' का कथानक ऐतिहासिक है। इस उपन्यास में महाराष्ट्रकेशरी वीर शिवाजी के चरित्र का उदात्त चित्रण है।

B. त्रिविक्रमभट्ट कृत 'नलचम्पू' का कथानक महाभारत के वनपर्व से लिया गया है यह एक चम्पूकाव्य है जिसमें सात उच्छ्वास हैं।

C. कालिदास विरचित 'मेघदूत' खण्डकाव्य है।

D. कालिदास विरचित ऋतुसंहार तथा जयदेव विरचित गीतगोविन्दम् गीतिकाव्य हैं।
अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- शिवराजविजय- रमाशङ्कर मिश्र, भू0 पेज-12

37. 'वयसा षोडशवर्षदेशीयः कम्बुकण्ठः आयतललाटः, सुबाहुर्विशाललोचनः' ये विशेषण किसके लिए प्रयुक्त हुए हैं?
(A) रघुवीर सिंह (B) शिवाजी
(C) गौर सिंह (D) श्याम सिंह

व्याख्या-

➢ शिवराजविजय के प्रथम निःश्वास में गौरबटु (ब्रह्मचारी) का विशेषण इस प्रकार है-
'बटुरसौ आकृत्या सुन्दरः, वर्णेन गौरः, जटाभिर्ब्रह्मचारी, वयसा षोडशवर्षदेशीयः, कम्बुकण्ठः, आयतललाटः, सुबाहुर्विशाललोचनश्चाऽऽसीत्।'
वह गौरबटु ब्रह्मचारी सुन्दर आकृति का था, रङ्ग से गोरा, जटाओं से ब्रह्मचारी, अवस्था से सोलह वर्ष का था, शंख-तुल्य कण्ठ वाला, विस्तृत ललाट का, सुन्दर भुजाओं वाला तथा विशाल नेत्रों वाला था।

- शिवराजविजय के द्वादश निःश्वास में गौर सिंह शिवाजी से कहता है- 'श्रीमान् ! यवनोद्दण्डशुण्डादण्ड-गण्डि मण्डलं प्रविश्यापि केसरीव कुशलेन निर्गत्य........'
  श्रीमान् यवन रूपी उद्दण्ड गजराजों की मण्डली में प्रवेश करने के बाद भी सिंह की तरह उससे बाहर निकलकर महाराष्ट्र देश के राजसिंहासन पर बैठकर भारत देशवासी जनता को सन्त की तरह पालन करने लगे।
- शिवराजविजय के प्रथम निःश्वास में श्याम बटु के लिए निम्न विशेषणों का प्रयोग हुआ है- ' कस्तूरिका-रेणु-रूषित इव श्यामः, चन्दन-चर्चित-भालः, कर्पूरागुरु-क्षोदच्छुरितवक्षो-बाहु-दण्डः......................।'
  कस्तूरी के चूर्ण से सना हुआ सा साँवले वर्ण वाला, चन्दन से लिप्त ललाट वाला, कपूर और अगरु के चूर्ण से शोभित वक्षः स्थल एवं विशाल भुजाओं वाला श्याम बटु था।
- शिवराजविजय के द्वादश निःश्वास में रघुवीर सिंह शिवाजी से कहता है- 'महाराज! विनष्ट-मातृकोऽहमत्र भवत एवाऽऽश्रयेण वर्द्धितो भवच्चरणसेवनपुण्यैरेव च ....।'
  महाराज! अधमर्णता तो मेरी अपरिहार्य है, क्योंकि मातृहीन मैं आपकी शरण में पला हूँ।
  अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- शिवराजविजय- रमाशङ्कर मिश्र,पेज-9

38. 'नेदीयसि' का अर्थ है-
(A) अत्यन्त समीप में (B) नदी के तल में
(C) न देने के अर्थ में (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या-
अम्बिकादत्तव्यास शिवराजविजय के प्रथम निःश्वास में यवन युवक द्वारा अपहरण की गई युवती के बारे में कहते हैं- 'चकितचकितेव कथं कथमपि अबोधयदस्मान् यदेषा **अस्मिन्नेदीयस्येव ग्रामे** वसतः कस्यापि ब्राह्मणस्य तनयाऽस्ति।' अत्यन्त चकित हुई सी एक बालिका ने बड़ी कठिनाई से हमें बताया कि यह **समीप के ही गाँव के** रहने वाले किसी ब्राह्मण की कन्या है।
अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- शिवराजविजय - विजयशङ्कर चौबे, पेज- 63

39. 'सत्यं न लक्षितो मया समयवेगः' कथन है-
(A) ब्रह्मचारी गुरु का (B) योगिराज का
(C) गौर सिंह का (D) श्याम सिंह का

व्याख्या-
शिवराजविजय में समाधिस्थ योगिराज प्रथम बार युधिष्ठिर के समय योगनिद्रा से जगे थे द्वितीय बार विक्रमादित्य के समय तथा तृतीय बार औरंगजेब के शासनकाल में जगे तब वर्तमान स्थिति को जानकर कहते हैं कि **'सत्यं न लक्षितो मया समयवेगः।'** सत्य है कि मुझे समय के वेग का भान नहीं लक्षित हुआ। **अतः विकल्प B सही है।**

	वक्ता	कथन	हिन्दी अनुवाद
A.	ब्रह्मचारी गुरु	भगवन् ! श्रूयतां यदि कुतूहलम्	भगवन् यदि जानने की ही उत्कण्ठा है तो सुनें।
B.	योगिराज	विक्रमराज्येऽपि कथमेष पातकमयो दुराचाराणमुपद्रवः।	विक्रमराज्य में भी दुराचारियों का यह पातकम उपद्रव कैसे है?
C.	गौर सिंह	कुतो रे यवनकुलकलङ्क!	अरे यवनकुलकलङ्क यहाँ कहाँ से आया?
D.	श्याम सिंह	मयैव पूर्वमवचितानि कुसुमानि	मैंने पहले ही पुष्पों का चयन कर लिया है।

नोट- उपर्युक्त सभी कथन अम्बिकादत्तव्यास के शिवराजविजय से उद्धृत हैं।

स्रोत- शिवराजविजय- रमाशङ्कर मिश्र, पेज-45

40. 'यायजूक' शब्द का अर्थ है-
(A) यात्राशील (B) भ्रमणशील
(C) दुराचारी (D) यज्ञशील

व्याख्या-
शिवराजविजय के प्रथम निःश्वास में योगिराज ब्रह्मचारी गुरु से कहते हैं-

* निरीक्ष्यतां कदाचितस्मिन्नेव भारतवर्षे यायजूकै राजसूयादियज्ञा व्ययाजिषत्।
कभी-कभी भारतवर्ष में याज्ञिकों ने राजसूयादि यज्ञ किए थे। अतः 'यायजूकः' शब्द का अर्थ यज्ञशील होगा।
अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- शिवराजविजय- रमाशङ्कर मिश्र,पेज-52

41. राजा नल के महामन्त्री का नाम है-
(A) सालंकायन (B) श्रुतिशील
(C) वीरसेन (D) बाहुक

व्याख्या-

* त्रिविक्रमभट्ट कृत 'नलचम्पू' में सालङ्कायन के पुत्र का नाम श्रुतिशील है, जो राजा नल का महामन्त्री है।
''सालङ्कायनस्य सूनुः श्रुतिशीलो नाम महामन्त्री।''
राजा नल के पिता का नाम वीरसेन तथा माता का नाम रूपवती है।
* नलचम्पू में राजा नल के सेनापति का नाम बाहुक है।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- नलचम्पू- तारिणीश झा, भू. पेज-11

42. नलचम्पू काव्य की नायिका है-
(A) सागरिका (B) उर्वशी
(C) दमयन्ती (D) मालती

व्याख्या-

	ग्रन्थ/ग्रन्थकार	नायक/नायिका
A.	रत्नावली / हर्षवर्धन	उदयन / सागरिका
B.	विक्रमोर्वशीयम् / कालिदास	विक्रम (पुरुरवा) / उर्वशी
C.	नलचम्पू / त्रिविक्रमभट्ट	नल / दमयन्ती
D.	मालतीमाधवम् / भवभूति	माधव / मालती

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- नलचम्पू- तारिणीश झा, भू. पेज-3

43. 'नलचम्पू' के रचयिता हैं?
(A) कल्हण (B) विशाखदत्त
(C) क्षेमेन्द्र (D) त्रिविक्रमभट्ट

व्याख्या-

(A)	कल्हण	राजतरङ्गिणी	8 तरंग
(B)	विशाखदत्त	मुद्राराक्षस	7अङ्क
(C)	क्षेमेन्द्र	औचित्यविचारचर्चा	-
(D)	त्रिविक्रमभट्ट	नलचम्पू	7 उच्छ्वास

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी- पेज-602

44. नलचम्पू की कथावस्तु का आधार है-
(A) आदिपर्व (B) भीष्मपर्व
(C) वनपर्व (D) सभापर्व

व्याख्या-

	पर्व	आधारित ग्रन्थ/विभाजन	ग्रन्थकार
A.	आदिपर्व	अभिज्ञानशाकुन्तलम् (7 अङ्क)	कालिदास
B.	भीष्मपर्व	भगवद्गीता (18 अध्याय)	कृष्णद्वैपायन वेदव्यास
C.	वनपर्व	नलचम्पू (7उच्छ्वास)	त्रिविक्रमभट्ट
D.	सभापर्व	शिशुपालवधम् (20सर्ग)	माघ

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- नलचम्पू- तारिणीश झा, पेज-21

45. 'शफर' से अभिप्राय है-
(A) बादल
(B) विशाल नदी
(C) जल में चमकने वाली एक छोटी मछली
(D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या-

* कालिदास विरचित 'मेघदूतम्' के पूर्वमेघ में गम्भीरा नदी के वर्णन में चञ्चल जल में चमकने वाली छोटी मछलियों का वर्णन आया है-
गम्भीरायाः पयसि सरितश्चेतसीव प्रसन्ने .... मोघीकर्तुं चटुलशफरोद्वर्तनप्रेक्षितानि। (मेघ० 1/44)

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- मेघदूतम् (पूर्वमेघ-44)- तारिणीश झा,पेज-93

46. 'रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय' का सम्बन्ध किस ग्रन्थ से है ?
(A) किरातार्जुनीयम् (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(C) मेघदूतम् (D) रघुवंशम्

व्याख्या-

➢ कालिदास विरचित मेघदूतम् के पूर्वमेघ में यक्ष मेघ की प्रशंसा करते हुए कहता है-
'रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय।' (पूर्वमेघ-20) सभी गुणों से रिक्त जन हल्के होते हैं गुणों की पूर्णता गौरव-सम्मान के लिए होती है।

➢ भारवि विरचित किरातार्जुनीयम् के ग्यारहवें सर्ग में इन्द्र के पास बैठे हुए अर्जुन के विषय में निम्नवर्णन प्राप्त होता है-

'अविज्ञातेऽपि बन्धौ हि बलात्प्रह्लादते मनः।'

(किरात0 11.8)

अपने अज्ञात बान्धव के भी सामने आने पर व्यक्ति के मन में बलात् हर्षोदिक हो जाता है।

➢ कालिदास विरचित अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के चतुर्थ अङ्क में शकुन्तला के विदाई के अवसर पर शार्ङ्गरव महर्षि कण्व से कहते हैं।

'ओदकान्तं स्निग्धो जनोऽनुगन्तव्यः।' (अभि. अङ्क-4)

प्रिय व्यक्ति का अनुगमन जल के किनारे तक करना चाहिए।

* कालिदास विरचित रघुवंशम् महाकाव्य के चतुर्थ सर्ग में राजा रघु के विजयोपरान्त वापस लौटने का वर्णन इसप्रकार प्राप्त होता है-

'आदानं हि विसर्गाय सतां वारिमुचामिव' (रघु0 4/86)

जिस प्रकार बादल समुद्र से जल ग्रहण कर पृथ्वी पर वर्षा कर देते हैं, उसी प्रकार महात्मा लोग धन को दान करने के लिए इकट्ठा करते हैं।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- मेघदूतम् (पूर्वमेघ-20)- विजेन्द्र कुमार शर्मा, पेज-35

47. मेघदूत किस छन्द में निबद्ध है?

(A) अनुष्टुप् **(B) मन्दाक्रान्ता**

(C) उपजाति **(D) वंशस्थ**

व्याख्या-

छन्द	ग्रन्थ	ग्रन्थकार
1. अनुष्टुप्	* रामायण	महर्षिवाल्मीकि
	* महाभारत	वेदव्यास
	* रघुवंशम् (प्रथमसर्ग)	कालिदास
2. मन्दाक्रान्ता	मेघदूतम्	कालिदास
3. उपजाति	रघुवंशम् (द्वितीय सर्ग)	कालिदास
4. वंशस्थ	* किरातार्जुनीयम् (प्रथम सर्ग)	भारवि
	* शिशुपालवधम् (प्रथम सर्ग)	माघ
	* नैषधीयचरितम् (प्रथम सर्ग)	श्रीहर्ष

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- मेघदूतम्, विजेन्द्र कुमार शर्मा, भू. पेज-20

48. 'धूमज्योतिःसलिलमरुतां सन्निपातः' किसके लिए कहा गया है?

(A) वायु **(B) आकाश**

(C) वर्षा **(D) मेघ**

व्याख्या-

महाकवि कालिदास मेघदूतम् के पूर्वमेघ में मेघ को चार पदार्थों का मिश्रण बताते हुए कहते हैं-

धूमज्योतिःसलिलमरुतां सन्निपातः क्व मेघः
सन्देशार्थाः क्व पटुकरणैः प्राणिभिः प्रापणीयाः।
इत्यौत्सुक्यादपरिगणयन्गुह्यकस्तं ययाचे
कामार्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु।।

(पूर्वमेघ श्लोक-5)

धुआँ, तेज, जल एवं वायु का मिश्रण कहाँ मेघ और कहाँ सशक्त इन्द्रियों वाले प्राणियों द्वारा भेजे जाने वाले सन्देश जैसे विषय इस बात की उत्कण्ठा का विचार न करते हुए यक्ष ने मेघ से याचना की क्योंकि कामवासना से युक्त व्यक्ति स्वभाव से ही दीन हो जाते हैं।

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- मेघदूतम् (पूर्वमेघ-5)- विजेन्द्र कुमार शर्मा,पेज-9

49. मेघदूतम् के अनुसार यक्ष के शापान्त की तिथि है-

(A) वैशाख पूर्णिमा **(B) देवोत्थानी एकादशी**

(C) शिव चतुर्दशी **(D) कृष्ण जन्माष्टमी**

व्याख्या-

* कालिदास विरचित उत्तरमेघ के 47 वें श्लोक में यक्ष शापान्त की तिथि का अन्त 'देवोत्थानी एकादशी' को बताता है। वह मेघ से यह सन्देश भिजवाता है कि हे प्रिये! शेषशय्या से भगवान् विष्णु के उठने पर मेरे शाप का अन्त होगा।

'शापान्तो मे भुजगशयनादुत्थिते शार्ङ्गपाणौ।'

(उत्तरमेघ-47)

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- मेघदूतम् (उत्तरमेघ-50)- विजेन्द्र कुमार शर्मा, पेज-77

50. निम्नाङ्कित में कौन- सी सूक्ति मेघदूतम् से सम्बद्ध नहीं है?

(A) कामार्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु

(B) अकृतार्थेऽपि मनसिजे रतिमुभयप्रार्थना कुरुते

(C) याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाऽधमो लब्धकामा

(D) स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु

व्याख्या-

A. कालिदास कृत मेघदूतम् के पूर्वमेघ में यक्ष मेघ से कहता है-
''कामार्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु।'' (पूर्वमेघ -5)
कामवासना से व्याकुल व्यक्ति चेतन और अचेतन के विषय में स्वभाव से ही दीन हो जाते हैं।

B. कालिदास कृत अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के द्वितीय अङ्क में राजा दुष्यन्त शकुन्तला के प्रेम के विषय में अपने मन में कहता है-
'कामं प्रिया न सुलभा मनस्तु तद्भावदर्शनाश्वासि। अकृतार्थेऽपि मनसिजे रतिमुभयप्रार्थना कुरुते।।' (अभि0 2/1) भले ही प्रिया शकुन्तला सुलभ न हो किन्तु मेरा मन उसके भावों को देखकर सन्तुष्ट है कामभाव के सफल न होने पर भी दोनों ओर की इच्छा- प्रेम को उत्पन्न करती है।
अतः विकल्प B सही है।

C. मेघदूतम् के पूर्वमेघ में यक्ष मेघ से कहता है-
'याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा' (पूर्वमेघ-6)
गुणवान् से की गई याचना व्यर्थ होने पर भी अच्छी है परन्तु नीच से मनचाहा फल प्राप्त कर लेना अच्छा नहीं है।

D. मेघदूतम् के पूर्वमेघ में यक्ष मेघ से कहता है-
'स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु' (पूर्वमेघ-29)
स्त्रियों की प्रेमी जनों के प्रति शृङ्गार चेष्टा ही प्रथम प्रणय याचना हुआ करती है।

स्रोत- मेघदूतम्- दयाशङ्कर शास्त्री, भू0 पेज-42-43

51. ''यां चिन्तयामि सततं मयि सा विरक्ता'' पंक्ति किस पुस्तक से उद्धृत है?
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (B) मेघदूतम्
(C) उत्तररामचरितम् (D) नीतिशतकम्

व्याख्या-

(A) कालिदास विरचित अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के प्रथम अङ्क में राजा दुष्यन्त शकुन्तला के विषय में कहता है-
'न प्रभातरलं ज्योतिरुदेति वसुधातलात्' (अभि. 1/26) अर्थात् कान्ति से देदीप्यमान तेज भूतल से उत्पन्न नहीं होता है।

(B) कालिदास विरचित मेघदूतम् के पूर्वमेघ में यक्ष मेघ से कहता है-
'मन्दायन्ते न खलु सुहृदामभ्युपेतार्थकृत्याः।' (पूर्वमेघ-42) मित्रों के साथ काम की शुरुआत करने में लोग विलम्ब नहीं करते हैं।

(C) भवभूति विरचित उत्तररामचरितम् नाटक के प्रथम अङ्क में सूत्रधार नट से कहता है-
'यथा स्त्रीणां तथा वाचां साधुत्वे दुर्जनो जनः।' (1/5) जिस प्रकार मानव स्त्री के चरित्र के विषय में शङ्का करता है उसी प्रकार वाणी की निर्दोषता में भी दुर्जन छिद्रान्वेषी होते हैं ।

(D) नीतिशतकम् के अज्ञपद्धति में भर्तृहरि पिङ्गला के विषय में कहते हैं-
'यां चिन्तयामि सततं मयि सा विरक्ता।
जिसका मैं चिन्तन करता हूँ वह मुझसे विरक्त है।'
अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- नीतिशतकम्- तारिणीश झा, परिशिष्ट श्लोक-21

52. मनुष्य का कौन-सा भूषण स्थायी है?
(A) स्नान (B) उज्ज्वल हार
(C) परिष्कृत वाणी (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या-

* भर्तृहरि कृत 'नीतिशतकम्' के 'विद्वत्-पद्धति ' में सर्वस्थायी आभूषणों में 'वाणी ' को माना गया है।
* ''न स्नानं न विलेपनं न कुसुमं नालंकृता मूर्धजाः।''
न स्नान, न विलेपन और न पुष्प से अलङ्कृत बाल स्थायी भूषण है।
* ''केयूराणि न भूषयन्ति पुरुषं हारा न चन्द्रोज्ज्वला।''
पुरुष को न बाजूबन्द, न चन्द्रमा के समान उज्ज्वल हार सुशोभित करते हैं।
* ''क्षीयन्ते खलु भूषणानि सततं वाग्भूषणं भूषणम्।'' (नीति. विद्वत्पद्धति-15) निश्चय ही सभी आभूषण क्षीण हो जाते हैं किन्तु वाणीरूपी आभूषण सदा स्थायी रहने वाला आभूषण है
अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- नीतिशतकम् (श्लोक-15)- राजेश्वर प्रसाद मिश्र, पेज-53

53. 'नीतिशतकम्' किस प्रकार के काव्य के अन्तर्गत आता है-
(A) गद्यकाव्य (B) प्रबन्धकाव्य
(C) मुक्तककाव्य (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या-

आचार्य विश्वनाथ साहित्यदर्पण के षष्ठ परिच्छेद में काव्य के भेदों का वर्णन करते हैं-

(A) **गद्यकाव्य-** 'वृत्तगन्धोज्झितं गद्यं मुक्तकं वृत्तिगन्धि च। भवेदुत्कलिकाप्रायं चूर्णकं च चतुर्विधम्।।'

(सा0 द0 6/330)

गद्यकाव्य चार प्रकार का होता है-

1. मुक्तक 2. वृत्तिगन्धि, 3. उत्कलिकाप्राय और 4. चूर्णक। जैसे- कादम्बरी, दशकुमारचरितम् आदि गद्यकाव्य हैं।

(B) **प्रबन्धकाव्य-** 'सर्गबन्धो महाकाव्यं तत्रैको नायकः सुरः ....वर्णनीया यथायोगं सांगोपांगा अमी इह।'

(सा. द. 6/315-324)

जिसमें सर्गो का निबन्धन हो, एवं जिसका नायक देवता या सद्वंश क्षत्रिय जिसमें धीरोदात्तादि गुण हों वह महाकाव्य है।

(C) **मुक्तककाव्य-** 'छन्दोबद्धपदं पद्यं तेन मुक्तेन मुक्तकं द्वाभ्यां तु युग्मकं संदानितकं त्रिभिरिष्यते।' (सा 0 द0 6/314) दो पद्यों से निरपेक्ष को मुक्तक और यदि दो श्लोकों में वाक्यपूर्ति होती हो तो उसे युग्मक कहते हैं।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा ऋषि , पेज-344

54. 'बृहत्त्रयी' के अन्तर्गत नहीं है-

(A) किरातार्जुनीयम् **(B) शिशुपालवधम्**
(C) कुमारसम्भवम् **(D) नैषधीयचरितम्**

व्याख्या-

बृहत्त्रयी

किरातार्जुनीयम्	शिशुपालवधम्	नैषधीयचरितम्
18 सर्ग	20 सर्ग	22 सर्ग
भारवि	माघ	श्रीहर्ष

लघुत्रयी

रघुवंशम्	कुमारसम्भवम्	मेघदूतम्
19 सर्ग	17 सर्ग	2 भाग
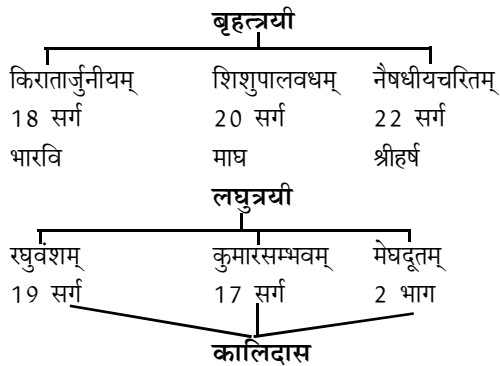
कालिदास

* उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि कुमारसम्भवम् लघुत्रयी का ग्रन्थ है।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- शिशुपालवधम्- तारिणीश झा, भू. पेज-12

55. कवि कालिदास के सम्बन्ध में निम्नांकित में से कौन-सा कथन असत्य है?

(A) कालिदास ने अपने किसी भी ग्रन्थ में अपने जीवन से सम्बद्ध किसी भी बात का उल्लेख नहीं किया है।

(B) वे कश्मीर के निवासी थे

(C) कालिदास का उज्जयिनी के प्रति विशेष आग्रह था।

(D) वे शिव की उपासना करते थे।

व्याख्या-

* कालिदास ने अपने किसी भी ग्रन्थ में अपने जीवन से सम्बद्ध किसी भी बात का उल्लेख नहीं किया है। ग्रन्थों में प्राप्त वर्णन के आधार पर विद्वानों में अलग -अलग मत हैं जैसे 'मेघदूतम्' में उज्जयिनी के सजीव एवं साङ्गोपाङ्ग वर्णन से उज्जैनवासी माना जा सकता है। उन्होनें अपने सभी ग्रन्थों में शिव की स्तुति की है।

* कालिदास कश्मीर के निवासी हैं इसका कोई प्रामाणिक साक्ष्य नहीं प्राप्त होता है अतः यह कथन असत्य हैं इसलिए **विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम्- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-10,11

56. निम्न में से कौन-सी कृति भर्तृहरि की नहीं है?

(A) वैराग्यशतकम् **(B) नीतिशतकम्**
(C) पञ्चतन्त्रम् **(D) शृङ्गारशतकम्**

व्याख्या-

ग्रन्थ	कवि	श्लोक संख्या
(A) वैराग्यशतकम्	भर्तृहरि	111 श्लोक
(B) नीतिशतकम्	भर्तृहरि	111 श्लोक
(C) पञ्चतन्त्रम्	विष्णुशर्मा	1055 श्लोक
(D) शृङ्गारशतकम्	भर्तृहरि	103 श्लोक

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज- 541

57. सुमेलित कीजिए

(क) सुबन्धु		1. वासवदत्ता	
(ख) बाण		2. शिवराजविजय	
(ग) दण्डी		3. हर्षचरितम्	
(घ) अम्बिकादत्तव्यास		4. काव्यादर्श	

	क	ख	ग	घ
(A)	1	3	4	2
(B)	3	4	2	1
(C)	1	4	2	3
(D)	2	3	1	4

व्याख्या-

सही सुमेलित सारणी

(क) सुबन्धु	-	वासवदत्ता
(ख) बाण	-	हर्षचरितम्
(ग) दण्डी	-	काव्यादर्श
(घ) अम्बिकादत्तव्यास	-	शिवराजविजय

सुमेलित सारणी के अनुसार विकल्प A सही है।

स्रोत- संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-482,490,466,508

58. निम्नांकित काव्यप्रयोजनों में कौन आचार्य मम्मट द्वारा मान्य नहीं है?

(A) यश **(B) व्यवहारज्ञान**
(C) प्रीति **(D) धनार्जन**

व्याख्या-

आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश के प्रथमोल्लास में काव्यप्रयोजन का लक्षण करते हैं-

काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये।
सद्यः परनिर्वृतये कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे।।

(का0 प्र0 1.2)

काव्य यश की प्राप्ति के लिए, धन अर्जन के लिए, लोक व्यवहार ज्ञान के लिए, अमंगल के नाश के लिए, शीघ्र ही परमानन्द की प्राप्ति के लिए तथा प्रियतमा के तुल्य उपदेश प्रदान करने के लिए होता है।

उपर्युक्त विकल्प में प्रीति की गणना मम्मट के काव्य प्रयोजनों में नहीं है **अतः विकल्प 'C' सही है।**

➢ आचार्य वामन काव्यालङ्कारसूत्र के प्रथम अधिकरण में काव्य के दो प्रयोजन माने हैं-
'काव्यं सद्दृष्टाऽदृष्टार्थं प्रीतिकीर्तिहेतुत्वात्।'

(काव्यालंकार सूत्र 1.1.5)

उत्तम काव्य प्रीतिजनक होने से दृष्ट अर्थात् इस लोक में और कीर्तिजनक होने से अदृष्ट अर्थात् पारलौकिक दोनों प्रकार से लाभकारी होता है।

स्रोत- काव्यप्रकाश (1.2)- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-10

59. ''विरतास्वभिधाद्यासु ययार्थो बोध्यते पर:'' यह किस वृत्ति का लक्षण है?

(A) तात्पर्या **(B) अभिधा**
(C) लक्षणा **(D) व्यञ्जना**

व्याख्या-

आचार्य विश्वनाथ साहित्यदर्पण के द्वितीय परिच्छेद में शब्दशक्तियों या उनके व्यापारों का वर्णन करते हैं-

➢ **अभिधा शक्ति-** तत्र संकेतितार्थस्य बोधनादग्रिमाऽभिधा। (सा. द. 2.4) मुख्य अर्थ या संकेतित अर्थ का बोधन कराने वाली शक्ति अभिधा शक्ति है यह शब्द की पहली शक्ति है।

➢ **लक्षणाशक्ति-** मुख्यार्थबाधे तद्युक्तो ययाऽन्योऽर्थः प्रतीयते। रुढेः प्रयोजनाद्वाऽसौ लक्षणा शक्तिरर्पिता।। (सा. द. 2.5) मुख्यार्थ का बाध होने पर रूढ़ि अथवा प्रयोजन वश मुख्यार्थ से सम्बद्ध जिस अन्य अर्थ की प्रतीति होती है वह लक्षणा शक्ति है यह शक्ति अर्पित अथवा कल्पित होती है।

➢ **व्यञ्जना शक्ति-**
विरतास्वभिधाद्यासु ययाऽर्थो बोध्यते परः।
सा वृत्तिर्व्यञ्जना नाम शब्दस्यार्थादिकस्य च।।

(सा.द. 2.12-13)

अपना-अपना अर्थ बोधन करके अभिधा आदि वृत्तियों के शान्त हो जाने पर जिससे अन्य अर्थ का बोधन होता है वह शब्द में तथा अर्थ में रहने वाली वृत्ति व्यञ्जना कहलाती है।

अतः विकल्प 'D' सही है।

➢ मीमांसकों के अनुसार तात्पर्या नामक भी एक शक्ति है जिसका उल्लेख आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश के द्वितीयोल्लास में करते हैं-
'तात्पर्यार्थोऽपि केषुचित् ' (काव्यप्रकाश सूत्र -7)
किन्हीं अभिहितान्वयवादी आचार्यों के मत में तात्पर्या भी एक शक्ति है।

स्रोत- साहित्यदर्पण (2/12)- शालिग्राम शास्त्री, पेज-39

60. जहाँ कोई शब्द अन्य अर्थ के लिए अपने अर्थ का त्याग कर देता है, वहाँ लक्षणा होती है-
(A) उपादान **(B) लक्षण**
(C) शुद्धा **(D) गौणी**

व्याख्या-

* आचार्य मम्मट ने प्रथमतः लक्षणा को दो भागों में बाँटा है-
1.शुद्धा लक्षणा 2. गौणी लक्षणा
पुनः शुद्धा लक्षणा के दो भेद किया है-
1.उपादान लक्षणा 2. लक्षण लक्षणा
* **उपादान लक्षणा-** 'स्वसिद्धये पराक्षेपः' (का० प्र० 2/10) जब वाक्य में प्रयुक्त पद अपने अन्वय की सिद्धि के लिए अन्य अर्थ का आक्षेप कर लेता है तो वहाँ उपादान लक्षणा होती है। जैसे- कुन्ताः प्रविशन्ति।
* **लक्षण लक्षणा-** 'परार्थं स्वसमर्पणम्' (का. प्र. 2/10) जहाँ कोई शब्द अन्य अर्थ के लिए अपने अर्थ का त्याग कर देता है तो वहाँ लक्षण लक्षणा होती है। जैसे- गङ्गायां घोषः। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-58

61. साहित्यदर्पण में काव्य में रस की स्थिति को कहा गया है।
(A) शरीर **(B) आत्मा**
(C) अवयव संस्थान **(D) अलंकरण**

व्याख्या-
आचार्य विश्वनाथ साहित्यदर्पण के प्रथम परिच्छेद में काव्य का लक्षण करते हुए कहते हैं कि-
वाक्यं रसात्मकं काव्यम् (सा. द. 1.3)
अर्थात् रसात्मक वाक्य को काव्य कहते हैं।
रसात्मक पद का अर्थ है **'रस एवात्मा साररूपतया जीवनाधायको यस्य तेन विना तस्य काव्यत्वा-भावस्य प्रतिपादितत्वात्'** सार अर्थात् सबसे प्रधान होने के कारण रस ही जिसका जीवनभूत आत्मा है वह वाक्य रसात्मक वाक्य है। रस के बिना काव्यत्व नहीं होता। 'रसस्याङ्गित्वमाप्तस्य धर्मः शौर्यादयो यथा- गुणाः।' (सा. द. 8.1)
जिसप्रकार शरीर में आत्मा के समान काव्य में अङ्गित्व अर्थात् प्रधानता को प्राप्त जो रस के धर्म है उसीप्रकार गुण कहलाते हैं जैसे आत्मा के शौर्य आदि को गुण कहा जाता है।
अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- साहित्यदर्पण- कमला देवी, पेज-65

62. साहित्यदर्पण में कितने परिच्छेद हैं ?
(A) आठ **(B) नौ**
(C) दस **(D) ग्यारह**

व्याख्या-

	परिच्छेद		परिच्छेद का नाम
*	प्रथम परिच्छेद	-	काव्यस्वरूप निरूपण
*	द्वितीय परिच्छेद	-	वाक्यस्वरूप निरूपण
*	तृतीय परिच्छेद	-	रसादि निरूपण
*	चतुर्थ परिच्छेद	-	ध्वनि गुणीभूतव्यङ्ग्याख्य-काव्यभेदनिरूपण
*	पञ्चम परिच्छेद	-	व्यञ्जना व्यापार निरूपण
*	षष्ठ परिच्छेद	-	दृश्यश्रव्य काव्यनिरूपण
*	सप्तम परिच्छेद	-	दोष निरूपण
*	अष्टम परिच्छेद	-	गुण निरूपण
*	नवम परिच्छेद	-	रीति निरूपण
*	दशम परिच्छेद	-	शब्दालङ्कार तथा अर्थालङ्कार निरूपण

इस प्रकार साहित्यदर्पण में कुल 10 परिच्छेद हैं।
अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- साहित्यदर्पण- राजेन्द्र मिश्र,पेज-39

63. 'साहित्यदर्पण' के प्रथम परिच्छेद का नाम है-
(A) काव्यदोष निरूपण
(B) काव्यस्वरूप निरूपण
(C) वाक्यस्वरूप निरूपण
(D) रीति निरूपण

व्याख्या-

परिच्छेद नाम	मुख्य विवेचन
1. काव्यस्वरूप निरूपण	काव्यलक्षण, काव्य स्वरूप तथा अन्य आचार्यों का खण्डन।
2. वाक्यस्वरूप निरूपण	तीन शब्दशक्तियों तथा तीन अर्थशक्तियों का लक्षण, व्यञ्जना निरूपण आदि का वर्णन
3. रसादि निरूपण	रस के भेदों का वर्णन, नायक भेद का वर्णन, नायिका वर्णन आदि।
4. ध्वनि गुणीभूतव्यङ्ग्य निरूपण	काव्य के भेदों का वर्णन
5. व्यञ्जना व्यापार निरूपण	व्यञ्जना के स्वरूप का वर्णन

परिच्छेद नाम	मुख्य विवेचन
6. दृश्य श्रव्य काव्यनिरूपण	रूपक के भेदों का वर्णन, पञ्च सन्धियाँ, पञ्चकार्यावस्थाएँ आदि
7. दोष निरूपण	काव्य में दोषों का वर्णन
8. गुण निरूपण	गुणों के तीन भेदों का वर्णन
9. रीति निरूपण	रीति के चार भेदों का वर्णन
10. शब्दालङ्कार तथा अर्थालङ्कार निरूपण	शब्दालङ्कार तथा अर्थालङ्कार के भेदों का वर्णन

अतः विकल्प B सही है।

64. विश्वनाथ ने काव्य में वक्रोक्ति को किस रूप में माना है?

(A) रीति **(B) गुण**
(C) अलंकार **(D) आत्मा**

व्याख्या-

आचार्य विश्वनाथ साहित्यदर्पण में काव्य का लक्षण करने से पहले अन्य आचार्यों का खण्डन करते हैं इसी क्रम में वक्रोक्तिकार आचार्य कुन्तक के काव्यलक्षण का खण्डन करते हुए कहते हैं- **'वक्रोक्तेरलङ्काररूपत्वात्'** वक्रोक्ति तो अलङ्कार रूप में है।

तथा साहित्यदर्पण के दशम परिच्छेद में वक्रोक्ति को अलङ्कार रूप में परिभाषित करते हुए कहते हैं-

अन्यस्यान्यार्थकं वाक्यमन्यथा योजयेद्यदि।
अन्यः श्लेषेण काक्वा वा सा वक्रोक्तिस्ततो द्विधा।।

(सा. द. 10.9)

जहाँ किसी के अन्यार्थक वाक्य को कोई दूसरा पुरुष श्लेष से या काकु से अन्य अर्थ में लगा दे वहाँ वक्रोक्ति अलङ्कार होता है,श्लेष तथा काकु के भेद से वह वक्रोक्ति दो प्रकार की होती है। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- साहित्यदर्पण- शालिग्राम शास्त्री, पेज-16

65. ध्वनिसिद्धान्त के प्रतिष्ठापक आचार्य हैं-

(A) क्षेमेन्द्र **(B) भरतमुनि**
(C) आनन्दवर्धन **(D) कुन्तक**

व्याख्या-

प्रतिष्ठापक आचार्य	सिद्धान्त/सम्प्रदाय	अनुमानित समय
1. क्षेमेन्द्र	औचित्य सम्प्रदाय	11 वीं शताब्दी
2. भरतमुनि	रस सिद्धान्त	ई.पू.द्वितीय शताब्दी
3. आनन्दवर्धन	ध्वनि सिद्धान्त	नवम शताब्दी का उत्तरार्द्ध
4. कुन्तक	वक्रोक्ति सिद्धान्त	एकादश शताब्दी का पूर्वार्द्ध

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-48

66. 'बीभत्स' का स्थायीभाव है-

(A) रति **(B) जुगुप्सा**
(C) शोक **(D) क्रोध**

व्याख्या-

आचार्य विश्वनाथ साहित्यदर्पण के तृतीय परिच्छेद में रस का विवेचन करते हैं-

रस	स्थायीभाव	देवता
A. शृङ्गार	रति	विष्णु
B. हास्य	हास	प्रमथ
C. करुण	शोक	यम
D. रौद्र	क्रोध	रुद्र
5. वीर	उत्साह	महेन्द्र
6. भयानक	भय	काल
7. बीभत्स	**जुगुप्सा**	**महाकाल**
8. अद्भुत	विस्मय	गन्धर्व
9. शान्त	निर्वेद	नारायण

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- साहित्यदर्पण- शालिग्राम शास्त्री, 3/239

67. शृङ्गाररस का स्थायीभाव है-

(A) शोक **(B) रति**
(C) हास **(D) उत्साह**

व्याख्या-

आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश के चतुर्थ उल्लास में रस तथा स्थायीभावों का वर्णन करते हैं।

रस-

शृङ्गारहास्यकरुणरौद्रवीरभयानकाः।
बीभत्साद्भुतसंज्ञौ चेत्यष्टौ नाट्ये रसाः स्मृताः।।

(का0 प्र0 सूत्र -44)

शृङ्गार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, बीभत्स, अद्भुत ये आठ रस नाटक में होते हैं।

स्थायिभाव- रतिर्हासश्च शोकश्च क्रोधोत्साहौ भयं तथा। जुगुप्सा विस्मयश्चेति स्थायिभावाः प्रकीर्तिताः।।

(का0 प्र0सूत्र 45)

रति, हास, शोक, क्रोध, उत्साह, भय, जुगुप्सा, विस्मय ये रस के स्थायीभाव हैं इसके अतिरिक्त आचार्य मम्मट नाटक में शान्त रस को मानते हुए कहते हैं कि-

* निर्वेदस्थायिभावोऽस्ति शान्तोऽपि नवमो रसः।

(का. प्र. सूत्र-47)

निर्वेद स्थायीभाव है जिसका, ऐसा शान्त नामक नौवाँ रस भी होता है।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-135

68. ''शरीरं तावदिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली'' यह परिभाषा किसकी है?

(A) दण्डी (B) भामह

(C) मम्मट (D) आनन्दवर्धन

व्याख्या-

- आचार्य दण्डी काव्यादर्श के प्रथम परिच्छेद में काव्यलक्षण करते हुए कहते हैं कि-
  'शरीरं तावदिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली' (काव्यादर्श 1.10)
  इष्ट सरस मनोहरतया वर्णन करने के लिए अभिप्रेत अर्थ से युक्त शब्द को काव्य का शरीर कहा जाता है इष्ट अर्थ से युक्त पदसमुदाय को काव्य कहते हैं।
- आचार्य भामह काव्यालङ्कार के प्रथम परिच्छेद में काव्य का लक्षण करते हैं।
  'शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्।' (काव्यालङ्कार 1.16)
  शब्द और अर्थ दोनों मिलकर काव्य कहलाते हैं अर्थात् शब्द और अर्थ का साहित्य सहभाव ही काव्य है।
- आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश के प्रथमोल्लास में काव्यलक्षण करते हैं-
  'तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि'
  (का0 प्र0 सूत्र -1)
  दोषों से रहित, गुणों से युक्त यदि कहीं-कहीं पर अलङ्कार न भी हो तो शब्द और अर्थ की समष्टि काव्य है।
- आचार्य आनन्दवर्धन ध्वन्यालोक के प्रथम उद्योत में काव्य का लक्षण करते हैं-
  'काव्यस्यात्मा ध्वनिः (ध्वन्यालोक 1.1)- काव्य की आत्मा ध्वनि है।

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- काव्यादर्श (1.10)-रामचन्द्र मिश्र,पेज-09

69. औचित्य को काव्य की आत्मा किसने माना है?

(A) विश्वनाथ (B) कुन्तक

(C) क्षेमेन्द्र (D) आनन्दवर्धन

व्याख्या-

- आचार्य विश्वनाथ साहित्यदर्पण के प्रथम परिच्छेद में काव्य की आत्मा रस को मानते हुए कहते हैं-
  'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' (सा0द0 1.3)
  रसात्मक वाक्य को काव्य कहते हैं। 'रस एवात्मा साररूपतया जीवनाधायको यस्य' सार अर्थात् सबसे प्रधान होने के कारण रस ही जिसका जीवनभूत आत्मा है, वह वाक्य रसात्मक वाक्य है।
- आचार्य कुन्तक वक्रोक्तिजीवितम् के प्रथम परिच्छेद में काव्य की आत्मा वक्रोक्ति को मानते हुए कहते हैं कि-
  'वक्रोक्तिः काव्यजीवितम् ' वक्रोक्ति ही काव्य की आत्मा है।
- आचार्य क्षेमेन्द्र औचित्य विचारचर्चा में औचित्य को काव्य की आत्मा मानते हुए कहते हैं-
  'औचित्यं रससिद्धस्य स्थिरं काव्यस्य जीवितम्'
  (औचित्यविचारचर्चा श्लोक-5)
  शृङ्गारादि रसों से प्रसिद्ध काव्य का जीवन औचित्य ही है।
  अतः विकल्प 'C' सही है।
- आचार्य आनन्दवर्धन ध्वन्यालोक के प्रथम उद्योत में ध्वनि को काव्य की आत्मा मानते हुए कहते हैं कि-
  'काव्यस्यात्मा ध्वनिरिति बुधैः .....' (ध्वन्यालोक 1.1)
  काव्य की आत्मा ध्वनि है।

स्रोत- काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर,भू0 पेज-61

70. भ्रान्तिमान् अलंकार में प्राणतत्त्व है-

(A) सन्देह (B) संशय

(C) भ्रान्ति का निश्चय (D) भ्रान्ति का अनिश्चय

व्याख्या-

- भ्रान्तिमान् अनन्यसंवित्तुल्यदर्शने। (का0 प्र0 सूत्र -200)
  भ्रान्तिमान् वह अलङ्कार है जिसमें प्राकरणिक (वर्णनीय) दर्शन में अप्राकरणिक के साथ उसके सादृश्य के कारण अप्राकरणिक प्रतीति या भ्रान्ति का निश्चय कर लिया जाता हैं। **अतः विकल्प C सही है।**
- ससन्देहस्तु भेदोक्तौ तदनुक्तौ च संशयः।
  (का0 प्र0 सूत्र -137)
  जहाँ उपमेय में उपमान रूप से संशय होता है वहाँ सन्देह अलङ्कार होता है। यह उक्त तथा अनुक्त के भेद से दो प्रकार का होता है। इसमें भ्रान्ति का निश्चय नहीं हो पाता है।

स्रोत- काव्यप्रकाश (सूत्र-200)- आचार्य श्रीनिवास शास्त्री, पेज-589

71. जहाँ उपमेय में उपमान की सम्भावना होती है, वह अलंकार है-
(A) उपमा **(B) उत्प्रेक्षा**
(C) रूपक **(D) निदर्शना**

व्याख्या-
आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश के दशम उल्लास में अर्थालङ्कार की विवेचना करते हैं-

(A) **उपमा अलङ्कार-** 'साधर्म्यमुपमाभेदे' (का0 प्र0 सूत्र-124) उपमान तथा उपमेय का भेद होने पर साधर्म्य का वर्णन उपमा कहलाता है। यथा- चन्द्रवत् मनोज्ञं मुखम्।

(B) **उत्प्रेक्षा अलङ्कार-** 'सम्भावनमथोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य समेन यत्' (का0 प्र0 सूत्र -136) प्रकृत (उपमेय) की समेन (उपमान) के साथ सम्भावना उत्प्रेक्षा कहलाती है। यथा- मन्ये मुखमेव चन्द्रः। **अतः विकल्प B सही है।**

(C) **रूपक अलङ्कार-** 'तद्रूपकमभेदो य उपमानोपमेययोः।' (का0प्र0-132)- उपमान और उपमेय का जो अभेद वर्णन है वह रूपक अलङ्कार है। यथा- मुखचन्द्रः

(D) **निदर्शना अलङ्कार-** अभवन् वस्तुसम्बन्धः उपमापरिकल्पकः (का0 प्र0 सूत्र 148)
जहाँ वस्तु का असम्भव सम्बन्ध उपमा का परिकल्पक होता है वहाँ निदर्शना अलङ्कार होता है। यथा- क्व सूर्यप्रभवो वंशः.......... इत्यादि।

स्रोत- काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-460

72. ''लिम्पतीव तमोऽङ्गानि वर्षतीवाञ्जनं नभः'' पंक्ति किस ग्रन्थ से उद्धृत है-
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् **(B) मृच्छकटिकम्**
(C) उत्तररामचरितम् **(D) वेणीसंहारम्**

व्याख्या-

➢ शूद्रक प्रणीत मृच्छकटिकम् के प्रथम अङ्क में वसन्तसेना को ढूँढ़ने के प्रसङ्ग में विट शकार से कहता है-
लिम्पतीव तमोऽङ्गानि वर्षतीवाञ्जनं नभः।
असत्पुरुषसेवेव दृष्टिर्विफलतां गता।। (मृच्छ0 1.34)
अङ्गों में अन्धकार व्याप्त हो रहा है, आकाश मानो काजल की बारिश कर रहा है। दुष्ट मनुष्यों की सेवा की भाँति मेरी दृष्टि निष्फलता को प्राप्त कर रही है।
अतः विकल्प B सही है।

➢ महाकवि कालिदास प्रणीत अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के पञ्चम अङ्क में राजा दुष्यन्त शकुन्तला के विषय में पुरोहित से कहते हैं- मूढः स्यामहमेषा वा वदेन्मिथ्येति संशये। दारत्यागी भवाम्याहो परस्त्रीस्पर्शपांसुलः।। (अभि0 5.29)
मेरी बुद्धि भ्रष्ट हो रही है, अथवा यह झूठ बोल रही है, इस सन्देह में मैं स्त्री परत्यागी बनूँ या परस्त्री के स्पर्श से दूषित होऊँ।

➢ भवभूति प्रणीत उत्तररामचरितम् नाटक के तृतीय अङ्क में तमसा सीता से राम के विषय में कहती हैं- त्वमेव ननु कल्याणि! सञ्जीवय जगत्पतिम्। प्रियस्पर्शो हि पाणिस्ते तत्रैष निरतो जनः।। (उत्तर0 3.10)
हे मङ्गलमयी, तुम ही अवश्य जगत् के स्वामी राम को होश में लाओ क्योंकि तुम्हारे हाथ का स्पर्श उन्हें प्रिय है और यह राम उसमें अनुरक्त है।

➢ भट्टनारायण प्रणीत वेणीसंहारम् नाटक के तृतीय अङ्क में अश्वत्थामा कहता है- 'सत्यादप्यनृतं श्रेयः' (वेणीसंहारम् 3.48) सत्य से असत्य ही श्रेयस्कर है।

स्रोत- काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-461

73. ''लिम्पतीव तमोऽङ्गानि वर्षतीवाञ्जनं नभः'' में अलङ्कार है-
(A) अपह्नुति **(B) रूपक**
(C) उत्प्रेक्षा **(D) सन्देह**

व्याख्या-

(A) **अपह्नुति अलङ्कार-** ''प्रकृतं यन्निषिध्यान्यत्साध्यते सा त्वपह्नुतिः'' (का0प्र0-145)
उपमेय का निषेध करके जो अन्य उपमान की सिद्धि की जाती है,उसे अपह्नुति अलङ्कार कहते हैं।
उदा0- अवाप्तः प्रागल्भ्यं परिणतरुचः शैलतनये........। इत्यादि।

(B) **रूपक अलंकार-** 'तद्रूपकमभेदो य उपमानोपमेययोः।' (का0 प्र0 सूत्र -138)
उपमान तथा उपमेय का जो अभेद आरोप है उसे रूपक कहते हैं।
उदा0- ज्योत्स्नाभस्मच्छुरणधवला बिभ्रती तारकास्थी.......। इत्यादि।

(C) **उत्प्रेक्षा अलङ्कार-** 'सम्भावनमथोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य समेन यत्।' (का0प्र0सू0 136) जो उपमेय की उपमान के साथ सम्भावना की जाती है वह उत्प्रेक्षा अलङ्कार है।
उदा0- लिम्पतीव तमोऽङ्गानि वर्षतीवाञ्जनं नभः

(D) **सन्देह अलङ्कार-** ससन्देहस्तु भेदोक्तौ तदनुक्तौ च संशयः। (का0 प्र0 137)
जहाँ उपमेय का उपमान के साथ संशयात्मक ज्ञान होता है वहाँ ससन्देह अलङ्कार होता है।
उदा0- अयं मार्तण्डः किं? स खलु तुरगैः सप्तभिरितः..........।
अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-461

74. अभिनेतागण जहाँ पर नाटक के उपयुक्त वेषभूषा धारण करते हैं, उसे कहते हैं-
(A) पूर्वरङ्ग (B) नेपथ्य
(C) जनान्तिक (C) स्वगत

व्याख्या-

(A) **पूर्वरङ्ग-** साहित्यदर्पण के षष्ठ परिच्छेद में आचार्य विश्वनाथ पूर्वरङ्ग का लक्षण करते हैं-
यन्नाट्यवस्तुनः पूर्वं रङ्गविघ्नोपशान्तये।
कुशीलवाः प्रकुर्वन्ति पूर्वरङ्गः स उच्यते।। (सा0द05.6.22)
नाट्यवस्तु के पूर्व, नाट्यशाला के विघ्न को कम करने के लिए जो कुछ करते हैं उसे पूर्वरङ्ग कहते हैं।

(B) **नेपथ्य-** आचार्य भरतमुनि नाट्यशास्त्र में नेपथ्य का लक्षण करते हैं- ''रङ्गाद्बहिस्तु नेपथ्यम्'' अभिनेतागण जहाँ पर नाटक के उपयुक्त वेश धारण करते हैं। उसे नेपथ्य कहते हैं।
''नेपथ्यं स्याज्जवनिका रङ्गभिः प्रसाधनात्।''
अतः विकल्प B सही है।

(C) **जनान्तिक-** आचार्य धनञ्जय दशरूपक के प्रथम प्रकाश में जनान्तिक का लक्षण करते हैं-
त्रिपताकाकरेणान्यानपवार्यान्तरा कथाम्।
अन्योन्यामन्त्रणं यत्स्याज्जनान्ते तज्जनान्तिकम्।।
(दश0 1/65)
त्रिपताकारूप हस्त की मुद्रा के द्वारा अन्य पात्रों से बचाकर कुछ पात्रों के मध्य मे जो दो पात्र परस्पर वार्तालाप करते हैं। उसे जनान्तिक कहते हैं।

(D) **स्वगत-** आचार्य धनञ्जय दशरूपक के प्रथम प्रकाश में स्वगत का लक्षण करते हैं- अश्राव्यं स्वगतं मतम्। (1/64)
किसी के न सुनने योग्य वस्तु को स्वगत कहते हैं

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम्- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-460

75. नाटक में जो बात सुनाने योग्य नहीं होती है, उसे कहते हैं-
(A) प्रकाश (B) स्वगत
(C) अपवारित (D) नियतश्राव्य

व्याख्या-

(A) **प्रकाश-** आचार्य धनञ्जय दशरूपक के प्रथमप्रकाश में 'प्रकाश' का लक्षण करते हुए कहते हैं-
'सर्वश्राव्यं प्रकाशम्' (दश0 1/64) सभी के सुनने योग्य वस्तु को 'प्रकाश' कहते हैं।

(B) **स्वगत-** स्वगत का लक्षण करते हुए आचार्य धनञ्जय दशरूपक के प्रथमप्रकाश में कहते हैं
'अश्राव्यं स्वगतं मतम्'। (दश0 1/64) नाटक में जो बात सुनाने योग्य नहीं होती है उसे स्वगत कहते हैं।
अतः विकल्प B सही है।

(C) **अपवारित-** आचार्य धनञ्जय दशरूपक के प्रथमप्रकाश में अपवारित का लक्षण करते हैं-
'रहस्यं कथ्यतेऽन्यस्य परावृत्त्यापवारितम्' (दश0 1/66)
रङ्गमञ्च पर स्थित पात्रों की ओर से मुख फेरकर अर्थात् उनसे छिपकर जब कोई गुप्त बात अन्य पात्र से की जाती है तो वह अपवारित कहलाता है।

(D) **नियतश्राव्य-** ''नियतेभ्यः निश्चितेभ्यः कतिपयविशिष्ट जनेभ्य एव श्राव्यं नियतश्राव्यम् '' ---------------
वह कथांश जो मञ्च पर विद्यमान समस्त पात्रों के मध्य कुछ विशिष्ट पात्रों को ही सुनाने योग्य हो उसे नियतश्राव्य कहते हैं।

स्रोत- दशरूपक- (1.64)- रमाशङ्कर त्रिपाठी, पेज-105

76. 'नाट्यशास्त्र' में 'नान्दी' से अभिप्रेत है-
(A) नान्दी देवता (B) बैल
(C) मंगलाचरण (D) पात्र

व्याख्या-

* नाट्यशास्त्र में नान्दी का अभिप्राय मङ्गलाचरण से है। इसको आचार्य विश्वनाथ ने इसप्रकार परिभाषित किया है-
आशीर्वचनसंयुक्ता स्तुतिर्यस्मात्प्रयुज्यते।
देवद्विजनृपादीनां तस्मान्नान्दीति संज्ञिता। (सा0द0 6/24)
देवता ब्राह्मण तथा राजादि की आशीर्वाद युक्त स्तुति जिससे की जाती है उसे नान्दी कहते हैं।
अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- उत्तररामचरितम्- कपिलदेव द्विवेदी,पेज-5

77. 'ए' तथा 'ऐ' की सवर्णसंज्ञा पाणिनि को अभीष्ट है या नहीं ?
(A) हाँ
(B) नहीं
(C) दोनो में सवर्ण संज्ञा की परिभाषा ही नहीं लागू होती
(D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या-

सवर्णसंज्ञा विधायक सञ्ज्ञासूत्र- तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम् (1.1.9) अर्थात् तालु आदि स्थान और आभ्यन्तर प्रयत्न ये दो जिस वर्ण का जिस वर्ण के साथ तुल्य हो, वे वर्ण आपस में सवर्ण सञ्ज्ञक होते हैं इस दृष्टि से 'अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः' आदि के द्वारा अ एवं आ

का उच्चारणस्थान कण्ठ है तथा 'विवृतं स्वराणाम्' इस कथन से स्वरों का आभ्यन्तर प्रयत्न 'विवृत' है अतः ह्रस्व अ, दीर्घ आ का उच्चारणस्थान कण्ठ है तथा आभ्यन्तर प्रयत्न विवृत है इसलिए अ, आ सवर्णी हैं। इसीलिए पाणिनि ने अइउण् आदि सूत्रों मे केवल 'अ' को उच्चरित किया, अ के 18 भेदों की चर्चा अइउण् सूत्र में नहीं है 'अइउण्' सूत्र के 'अ' वर्ण में ही अ के सभी सवर्णियों का बोध हो जाता है किन्तु पाणिनि ने ए तथा ऐ को दो अलग-अलग सूत्रों में पढ़ा है । एओङ् में 'ए' को तथा ऐऔच् में 'ऐ' को। इससे स्पष्ट है कि यदि पाणिनि को 'ए' तथा 'ऐ' की सवर्ण संज्ञा अभीष्ट होती तो अइउण् आदि की तरह ही 'ए' एवं 'ऐ' का बोध एक ही सूत्र मे करा देते। जैसे- दीर्घ आ, ई, ऊ आदि सभी सवर्णियों का बोध 'अइउण् ' सूत्र से हो जाता है। किन्तु ए-ऐ दोनों वर्ण दो अलग- अलग सूत्रों एओङ् और ऐऔच् से कहे गये हैं। अतः स्पष्ट है कि पाणिनि को ए तथा ऐ वर्णों की सवर्ण संज्ञा अभीष्ट नहीं है।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी- भैमी व्याख्या (खण्ड-1)- पेज-20

78. समुद्धर्ता का विग्रह है-
(A) समुद् + धर्ता (B) समुद् + हर्ता
(C) समुत् + धर्ता (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या-

* 'झयो होऽन्यतरस्याम्' (8/4/62)
झय् (वर्ग के प्रथम, द्वितीय ,तृतीय और चतुर्थ अक्षर के) बाद 'ह' हो तो उसे विकल्प से पूर्वसवर्ण होता है। अर्थात् पूर्व अक्षर के वर्ग का चतुर्थ अक्षर (घ, झ, ढ,ध, भ,) हो जाता है ।

A. समुद् + हर्ता = समुद्धर्ता
B. वाग् + हरिः = वाग्घरिः
C. तत् + हितः = तद्धितः
D. अच् + ह्रस्व = अज्झस्वः
E. अप् + हरणम् = अब्भरणम्

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी (8.4.61)- भैमी व्याख्या भाग-1, पेज-117

79. 'अ' या 'आ' के बाद 'ए' या 'ऐ' आए तो दोनों के स्थान पर 'ऐ' होने की सन्धि है-
(A) गुण (B) वृद्धि
(C) दीर्घ (D) पररूप

व्याख्या-

A. आद्गुणः (6/1/87)- अ या आ के बाद इ, उ,ऋ, ऌ वर्ण आयें तो इनके स्थान पर क्रमशः ए, ओ, अर्, अल्, हो जाते हैं। जैसे- रमा + ईशः = रमेशः। यह गुण सन्धि है।

B. वृद्धिरेचि (6/1/88) यदि अ या आ के बाद ए या ऐ आये तो दोनों के स्थान पर क्रमशः ऐ और अ या आ के बाद ओ या औ आये तो दोनों के स्थान पर क्रमशः औ होगा। जैसे- महा + औषधिः = महौषधिः। यह वृद्धि सन्धि है।

अतः विकल्प 'B' सही है।

C. अकः सवर्णे दीर्घः (6/1/101) जब ह्रस्व या दीर्घ स्वर अक् के बाद ह्रस्व या दीर्घ अक् स्वर आवे तो तब दोनों के स्थान पर दीर्घ हो जाता है।
जैसे- रत्न + आकरः = रत्नाकरः। यह दीर्घ सन्धि है।

D. एङि पररूपम् (6/1/94) यदि अकारान्त उपसर्ग के बाद एकारादि और ओकारादि धातु आवे तो दोनों के स्थान में ए या ओ हो जाता है।
जैसे- प्र + एजते = प्रेजते। उप + ओषति = उपोषति

स्रोत- अष्टाध्यायी (6.1.85)- ईश्वरचन्द्र, पेज-687

80. 'समिदाधानम्' का विग्रह होगा-
(A) समिध् + आधानम् (B) समिद् + आधानम्
(C) समिदा + धानम् (D) समिद + आधानम्

व्याख्या-

'झलां जशोऽन्ते' (8/2/39) पदान्त झल् अर्थात् वर्ग के पहले, दूसरे, तीसरे, चौथे अक्षर और ऊष्म को जश् अर्थात् अपने वर्ग का तृतीय अक्षर हो जाता है।
जैसे- समित् + आधानम् = समिदाधानम्
जगत् + ईशः = जगदीशः
चित् + आनन्दः = चिदानन्दः

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी- भैमीव्याख्या (भाग-1), पेज-106

81. 'अहरहः' का विग्रह है-
(A) अहर् + अहः (B) अहर् + अहः
(C) अहन् + अहः (D) अहन् + अहन्

व्याख्या-
रोऽसुपि (8/2/69)
अहन् शब्द को रेफ आदेश होता है परन्तु सुप् परे रहते नहीं होता।
रेफ में अकार उच्चारणार्थ है। अलोऽन्त्यस्य परिभाषा से रेफ आदेश अन्त्य अल् (नकार) के स्थान पर होता है-
अहन् + अहन् = अहरहः
अहन् + गणः = अहर्गणः
अतः विकल्प D सही है।
स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी- गोविन्दाचार्य, पेज-122

82. 'पितरौ' समस्तपद में कौन-सा समास है ?
(A) इतरेतर द्वन्द्वसमास (B) समाहार द्वन्द्वसमास
(C) एकशेष द्वन्द्वसमास (D) केवलसमास

व्याख्या- द्वन्द्व के तीन भेद हैं-

द्वन्द्व

इतरेतर द्वन्द्व	**समाहार द्वन्द्व**	**एकशेष द्वन्द्व**
रामश्च लक्ष्मणश्च	पाणी च पादौ च	माता च पिता च
= रामलक्ष्मणौ	= पाणिपादम्	= पितरौ

* अदृष्टपूर्वः, भूतपूर्वः, नैकः इत्यादि में केवल समास है।
अतः विकल्प C सही है।
स्रोत- संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका- बाबूराम सक्सेना,पेज-260

83. 'कम्बुकण्ठः' समस्तपद का सही विग्रह होगा-
(A) कम्बु कण्ठः यस्य सः
(B) कम्बोः कण्ठः
(C) कम्बुश्चासौ कण्ठश्च
(D) कम्बुरिव कण्ठो यस्य सः

व्याख्या-
* अनेकमन्यपदार्थे (2/2/24) सूत्र से 'कम्बुकण्ठः' में बहुव्रीहि समास होगा।
कम्बुरिव कण्ठो यस्य सः = कम्बुकण्ठः (शङ्ख के समान कण्ठ वाला) **अतः विकल्प D सही हैं।**
स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी- गोविन्दाचार्य, पेज-973

84. कर्मधारय समास किस समास का ही एक भेद है?
(A) अव्ययीभाव (B) तत्पुरुष
(C) बहुव्रीहि (D) द्वन्द्व

व्याख्या-
A. अव्ययीभाव समास के भेद नहीं है। 'अधि' आदि अव्ययों के आधार पर विभक्ति आदि अर्थ में समास होता है।
B. तत्पुरुष समास के दो भेद हैं-
1. समानाधिकरण तत्पुरुष **2.** व्यधिकरण तत्पुरुष, इसमें समानाधिकरण का भेद कर्मधारय है तथा व्यधिकरण तत्पुरुष के 6 भेद हैं। द्वितीया तत्पुरुष से सप्तमी तत्पुरुष तक।
C. बहुव्रीहि- बहुव्रीहि समास के मुख्य दो भेद हैं।
1. समानाधिकरण बहुव्रीहि **2.** व्यधिकरण बहुव्रीहि, समानाधिकरण के 6 भेद हैं, द्वितीया से लेकर सप्तमी बहुव्रीहि तक।
D. द्वन्द्व- द्वन्द्व के तीन भेद हैं।
1. इतरेतर द्वन्द्व 2. एकशेष द्वन्द्व 3. समाहार द्वन्द्व
अतः विकल्प B सही है।
स्रोत- संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका- बाबूराम सक्सेना, पेज-235

85. 'परस्मैपदम्' में कौन समास है?
(A) अव्ययीभाव (B) कर्मधारय
(C) तत्पुरुष (D) केवल समास

व्याख्या-
1. **अव्ययीभाव-** सुमद्रम्, दुर्यवनम्, निर्मक्षिकम्, अतिनिद्रम्,
2. **कर्मधारय-** मुखकमलम्, कृष्णश्वेतः, चराचरम्, घनश्यामः, पुरुषव्याघ्रः, कृष्णसर्पः, पीताम्बरम् आदि।
3. **तत्पुरुष-** परस्मैपदम्, नखभिन्नः, आत्मनेपदम्, यूपदारु, चोरभयम्, राजपुरुषः, अक्षशौण्डः, शङ्कुलाखण्डः।
4. **केवलसमास-** प्रकृतिवक्रः, जीमूतस्येव, अधमर्णः, निसर्गनिपुणः, वागर्थाविव, भूतपूर्वः आदि।
अतः विकल्प C सही है।
स्रोत- संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका- बाबूराम सक्सेना,पेज-255

86. 'व्यधिकरण तत्पुरुष' समास के कितने भेद हैं?
(A) चार (B) पाँच
(C) छः (D) सात

व्याख्या-

तत्पुरुष के मुख्य दो भेद हैं-

1. समानाधिकरण 2. व्यधिकरण

व्यधिकरण के छः भेद हैं-

1. द्वितीया तत्पुरुष- कूपपतितः, ग्रामगतः, कृष्णाश्रितः, आदि।
2. तृतीया तत्पुरुष- हरित्रातः, नखभिन्नः, शङ्कुलाखण्डः।
3. चतुर्थी तत्पुरुष- द्विजार्थः, गोहितम्, गोसुखम्, आदि।
4. पञ्चमी तत्पुरुष- चोरभयम्, व्याघ्रभयम्, पापमुक्तः आदि।
5. षष्ठी तत्पुरुष- मनोविकारः, राजपुत्रः, विद्यालयः आदि।
6. सप्तमी तत्पुरुष- काव्यनिपुणः, अक्षशौण्डः, कार्यकुशलः, आदि। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका- बाबूराम सक्सेना, पेज-241, 242

87. 'कृताधिपत्याम्' में समास है-
(A) तत्पुरुष
(B) बहुव्रीहि
(C) समानाधिकरण तत्पुरुष
(D) व्यधिकरण तत्पुरुष

व्याख्या-

समास	समस्त पद	समास विग्रह
1. तत्पुरुष	अर्धपिप्पली	अर्धं पिप्पल्याः
	वेदविद्वान्	वेदं विद्वान्
	जनुषान्धः	जनुषा अन्धः
2. बहुव्रीहि	प्रपतितपर्णः	प्रपतितानि पर्णानि यस्य सः
	दीर्घजङ्घः	दीर्घे जङ्घे यस्य सः
	त्रिमूर्धः	त्रयो मूर्धानो यस्य सः
	कृताधिपत्याम्	कृतं विहितं आधिपत्यम्
3. समानाधिकरण	नीलोत्पलम्	नीलम् उत्पलम्
तत्पुरुष (कर्मधारय)	कर्पूरगौरः	कर्पूर इव गौरः
	देवब्राह्मणः	देवपूजको ब्राह्मणः
4. व्यधिकरण तत्पुरुष	पूर्वकायः	पूर्वं कायस्य
	अपरकायः	अपरं कायस्य
	आत्मज्ञानम्	आत्मनः ज्ञानम्

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- किरातार्जुनीयम्- रामसेवक दुबे,पेज-68,69

88. 'परमात्मने नमः' यहाँ 'नमः' के योग में जो विभक्ति है, वह है-
(A) कारक विभक्ति
(B) उपपद विभक्ति
(C) A तथा B दोनों
(D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या-

* विभक्ति दो प्रकार की होती है।
  1. उपपद विभक्ति 2. कारक विभक्ति
  उपपद विभक्ति की अपेक्षा कारक विभक्ति बलवान् होती है। ''उपपदविभक्तेः कारकविभक्तिः बलीयसी''
* कारक विभक्ति - क्रिया सम्बन्धी विभक्ति को कारक विभक्ति कहते हैं। जैसे - नमस्करोति देवान्।
* उपपद विभक्ति - पद सम्बन्धी विभक्ति को उपपद विभक्ति कहते हैं। जैसे - देवाय नमः
  अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)- राममुनि पाण्डेय,पेज-55

89. 'कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे' सूत्र द्वारा किस विभक्ति का निर्देश किया गया है?
(A) द्वितीया **(B) तृतीया**
(C) चतुर्थी **(D) पंचमी**

व्याख्या-

➢ **कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे (2.3.5)-** अत्यन्त संयोग गम्यमान होने पर कालवाची और मार्गवाची शब्द में द्वितीया विभक्ति होती है। काल और मार्ग का यह अत्यन्त संयोग गुण, क्रिया, द्रव्य इन तीनों से होता है।
उदाहरण- मासं कल्याणी, क्रोशं कुटिला नदी।
अतः विकल्प A सही है।

➢ **अपवर्गे तृतीया (2.3.6)-** अपवर्ग का अर्थ है- क्रिया की समाप्ति होने पर फल की प्राप्ति। क्रिया की समाप्ति होने पर फल की प्राप्ति हो जाने पर काल और मार्गवाची शब्दों से अत्यन्त संयोग गम्यमान होने पर तृतीया विभक्ति होती है।
उदाहरण- अह्ना क्रोशेन वा अनुवाकोऽधीतः।

➢ **चतुर्थी- स्पृहेरीप्सितः (1.4.36)-** स्पृह् धातु के योग में ईप्सित पदार्थ की सम्प्रदानसञ्ज्ञा होकर उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है।
उदाहरण- पुष्पेभ्यः स्पृहयति।

➢ **पञ्चमी- पराजेरसोढः (1.4.26)-** जि धातु के पूर्व परा उपसर्ग लगा हो तो जो असह्य पदार्थ होता है उसकी अपादान सञ्ज्ञा होती है।
उदाहरण- अध्ययनात् पराजयते।

स्रोत- अष्टाध्यायी (2.3.5)- ईश्वरचन्द्र, पेज-195

90. कारक कितने प्रकार के हैं?
(A) पाँच (B) छः
(C) सात (D) आठ

व्याख्या-

- कारक छः प्रकार के होते हैं-
 कर्ता कर्म च करणं सम्प्रदानं तथैव च।
 अपादानाधिकरणे इत्याहुः कारकाणि षट्।।
- कारक छः प्रकार के होते हैं-
 1. कर्ता कारक 2. कर्म कारक 3. करण कारक 4. सम्प्रदान कारक 5. अपादान कारक 6. अधिकरण कारण
 अतः विकल्प B सही है।
- **पाँच सन्धियाँ-** 1. स्वर 2. व्यञ्जन 3. विसर्ग 4. स्वादि 5. प्रकृतिभाव
- **सात विभक्तियाँ-** 1. प्रथमा 2. द्वितीया 3. तृतीया 4. चतुर्थी 5. पञ्चमी 6. षष्ठी 7. सप्तमी।
- **आठ स्त्रीप्रत्यय-** ङीप्, ङीष्, ङीन्, टाप्, चाप्, डाप्, ऊङ् और ति।

स्रोत- संस्कृतव्याकरण प्रवेशिका- बाबूराम सक्सेना, पेज-175

91. अपादान कारक में विभक्ति होती है-
(A) द्वितीया (B) पञ्चमी
(C) चतुर्थी (D) तृतीया

व्याख्या-

- **द्वितीया- कर्मणि द्वितीया (2.3.2)**
 'अनुक्ते कर्मणि द्वितीया स्यात्' अनुक्त कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है।
 उदाहरण- हरिं भजति - हरि को भजता है।
 गृहं गच्छति - घर को जाता है ।
- **पञ्चमी- अपादाने पञ्चमी (2.3.28)-** अनुक्त अपादान कारक में पञ्चमी विभक्ति होती है।
 उदाहरण- ग्रामात् आयाति - गाँव से आता है।
 धावतोऽश्वात् पतति - दौड़ते हुए घोड़े से गिरता है।
- **चतुर्थी- चतुर्थी सम्प्रदाने (2.3.13)-** अनभिहित सम्प्रदान कारक में चतुर्थी विभक्ति होती है।
 उदाहरण- विप्राय गां ददाति - ब्राह्मण को गाय देता है।
- **तृतीया- कर्तृकरणयोस्तृतीया (2.3.18)-** अनुक्त कर्ता तथा करण कारक में तृतीया विभक्ति होती है।
 उदाहरण- रामेण बाणेन हतो बाली - राम के द्वारा बाण से बाली मारा गया।
 अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज-59

92. 'ऋ' में किस प्रत्यय के संयोग से 'अर्य' शब्द बनता है?
(A) शतृ (B) यत्
(C) अच् (D) क्त

व्याख्या-

- **शतृ प्रत्यय-** 'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे' (3.1.124) अप्रथमान्त अर्थात् द्वितीयान्त आदि के साथ समानाधिकरण होने पर लट् के स्थान पर शतृ और शानच् होते हैं। परस्मैपदी धातु से शतृ और आत्मनेपदी धातु से शानच् प्रत्यय होते हैं।
 उदाहरण-
 भू + शतृ = भवत् (भवन्, भवन्ती, भवत्)
 पठ् + शतृ = पठत् (पठन्, पठन्ती, पठत्)
- **यत् प्रत्यय-** 'अर्यः स्वामिवैश्ययोः' (3.1.103) स्वामी और वैश्य अर्थ गम्यमान होने पर धातु से यत् प्रत्यय होता है। 'अर्य' शब्द निपातनसिद्ध है । ण्यत् प्रत्यय था पर प्रस्तुत सूत्र से यत् हो गया।
 ऋ + यत् = अर्य। **अतः विकल्प 'B' सही है।**
- **अच् प्रत्यय-** 'एरच्' (3.3.56) तथा 'भयादीनामुपसंख्यानम्' (वा0) कर्तृभिन्न कारक के अर्थ में, सञ्ज्ञा तथा भाव में इकारान्त धातुओं में अच् जोड़ा जाता है-
 उदाहरण- जि + अच् = जयः
 नी + अच् = नयः
- **क्त प्रत्यय-** 'निष्ठा' (3.2.102) भूतकालिक अर्थ में धातु से परे निष्ठा सञ्ज्ञक प्रत्यय होते हैं।
 'क्तक्तवतू निष्ठा' से क्त तथा क्तवतु की निष्ठा सञ्ज्ञा होती है। **उदाहरण-** गम् + क्त = गतम्
 पठ् + क्त = पठितम्

स्रोत- संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका- बाबूराम सक्सेना,पेज-477

93. भगिनी में किस प्रत्यय के योग से भागिनेयः पद बनता है ?
(A) अण् (B) यत्
(C) ढक् (D) क्त

व्याख्या-

- **अण् प्रत्यय-** 'अश्वपत्यादिभ्यश्च' (4.1.84)- अश्वपति आदि समर्थ प्रातिपदिकों से प्राग्दीव्यतीय अर्थो में तद्धित अण् प्रत्यय होता है।
 उदाहरण- अश्वपति + अण् = आश्वपतम्
 गणपति + अण् = गाणपतम्

- **यत् प्रत्यय**- 'अचो यत्' (3.1.97) अच् प्रत्याहार के वर्ण अन्त में हों ऐसे धातुओं से यत् प्रत्यय होता है ।
  उदाहरण- चि + यत् = चेयम्
  जि + यत् = जेयम्
  नी + यत् = नेयम्
- **ढक् प्रत्यय-** 'स्त्रीभ्यो ढक्' (4.1.120) - अपत्य अर्थ में स्त्रीप्रत्ययान्त प्रातिपदिक से ढक् प्रत्यय होता है।
  उदाहरण- भगिनी + ढक् = भागिनेयः
  द्रौपदी + ढक् = द्रौपदेयः
  सुपर्णा + ढक् = सौपर्णेयः

  अतः विकल्प C सही है।
- **क्त प्रत्यय-** निष्ठा (3. 2. 102) - भूतकालिक अर्थ में धातु से परे निष्ठा सञ्ज्ञक प्रत्यय होते हैं।
  'क्तक्तवतू निष्ठा' से क्त तथा क्तवतु की निष्ठासञ्ज्ञा होती है।
  उदाहरण- छिद् + क्त = छिन्नः
  भिद् + क्त = भिन्नः।

स्रोत- संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका- बाबूराम सक्सेना, पेज-274

94. कृष्ण का षष्ठी द्विवचन में रूप बनेगा-
(A) कृष्णस्य **(B) कृष्णौ**
(C) कृष्णानाम् **(D) कृष्णयोः**

व्याख्या- **कृष्ण शब्द अकारान्त पुँल्लिङ्ग**

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	कृष्णः	कृष्णौ	कृष्णाः
द्वितीया	कृष्णम्	कृष्णौ	कृष्णान्
तृतीया	कृष्णेन	कृष्णाभ्याम्	कृष्णैः
चतुर्थी	कृष्णाय	कृष्णाभ्याम्	कृष्णेभ्यः
पञ्चमी	कृष्णात्	कृष्णाभ्याम्	कृष्णेभ्यः
षष्ठी	कृष्णस्य	**कृष्णयोः**	कृष्णानाम्
सप्तमी	कृष्णे	कृष्णयोः	कृष्णेषु
सम्बोधन	हे कृष्ण!	हे कृष्णौ!	हे कृष्णाः!

कृष्ण शब्द का षष्ठी द्विवचन में **कृष्णयोः** रूप बनेगा

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- रूपचन्द्रिका- ब्रह्मानन्द त्रिपाठी

95. 'इयम्' किस लिङ्ग का रूप है?
(A) पुँल्लिङ्ग **(B) स्त्रीलिङ्ग**
(C) नपुंसकलिङ्ग **(D) स्त्रीलिङ्ग व पुँल्लिङ्ग दोनों**

व्याख्या-

इदम् (यह) स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	**इयम्**	इमे	इमाः
द्वितीया	इमाम्, एनाम्	इमे/एने	इमाः/एनाः
तृतीया	अनया, एनया	आभ्याम्	आभिः
चतुर्थी	अस्यै	आभ्याम्	आभ्यः
पञ्चमी	अस्याः	आभ्याम्	आभ्यः
षष्ठी	अस्याः	अनयोः, एनयोः	आसाम्
सप्तमी	अस्याम्	अनयोः, एनयोः	आसु

* **इयम्** रूप इदम् प्रातिपदिक स्त्रीलिङ्ग प्रथमा विभक्ति एकवचन का रूप है **अतः विकल्प 'B' सही है।**

इदम् (यह) पुँल्लिङ्ग

प्रथमा	अयम्	इमौ	इमे
द्वितीया	इमम्, एनम्	इमौ, एनौ	इमान्, एनान्
तृतीया	अनेन, एनेन	आभ्याम्	एभिः
चतुर्थी	अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः
पञ्चमी	अस्मात्	आभ्याम्	एभ्यः
षष्ठी	अस्य	अनयोः, एनयोः	एषाम्
सप्तमी	अस्मिन्	अनयोः, एनयोः	एषु
	नपुंसकलिङ्ग में		
	इदम्	इमे	इमानि
	इदम्	इमे/एने	इमानि/एनानि

शेष रूप पुंल्लिङ्ग के समान होंगे।

स्रोत- संस्कृतव्याकरण प्रवेशिका- बाबूराम सक्सेना, पेज-128

96. 'सर्व ' के पञ्चमी एकवचन पुँल्लिङ्ग में रूप बनेगा-
(A) सर्वस्मात् **(B) सर्वात्**
(C) सर्वस्य **(D) सर्वाः**

व्याख्या-

सर्व (सब) सर्वनाम पुँल्लिङ्ग

प्रथमा	सर्वः	सर्वौ	सर्वे
द्वितीया	सर्वम्	सर्वौ	सर्वान्
तृतीया	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः
चतुर्थी	सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
पञ्चमी	**सर्वस्मात्**	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
षष्ठी	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्
सप्तमी	सर्वस्मिन्	सर्वयोः	सर्वेषु
सम्बोधन	हे सर्व!	हे सर्वौ!	हे सर्वे!

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- रचनानुवादकौमुदी- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-144

97. 'नृ' शब्द के प्रथमा विभक्ति एकवचन का रूप है-
(A) नरः **(B) ना**
(C) नः **(D) नृः**

व्याख्या-

नृ (मनुष्य) शब्द ऋकारान्त पुँल्लिङ्ग			
प्रथमा	**ना**	नरौ	नरः
द्वितीया	नरम्	नरौ	नॄन्
तृतीया	न्रा	नृभ्याम्	नृभिः
चतुर्थी	न्रे	नृभ्याम्	नृभ्यः
पञ्चमी	नुः	नृभ्याम्	नृभ्यः
षष्ठी	नुः	न्रोः	नृणाम्/नॄणाम्
सप्तमी	नरि	न्रोः	नृषु
सम्बोधन	हे नः!	हे नरौ!	हे नरः!

अतः विकल्प B सही है।
स्रोत-बृहच्छब्दकुसुमाकर- हरेकान्तमिश्र,पेज-22

98. 'कवि' शब्द के चतुर्थी एकवचन में होता है-
(A) कवयः **(B) कविना**
(C) कवये **(D) कवौ**

व्याख्या-

	कवि शब्द	इकारान्त	पुँल्लिङ्ग
प्रथमा	कविः	कवी	कवयः
द्वितीया	कविम्	कवी	कवीन्
तृतीया	कविना	कविभ्याम्	कविभिः
चतुर्थी	**कवये**	कविभ्याम्	कविभ्यः
पञ्चमी	कवेः	कविभ्याम्	कविभ्यः
षष्ठी	कवेः	कव्योः	कवीनाम्
सप्तमी	कवौ	कव्योः	कविषु
सम्बोधन	हे कवे!	हे कवी!	हे कवयः!

अतः विकल्प C सही है ।
स्रोत- संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज-73

99. दुह् धातु के लट्लकार मध्यमपुरुष बहुवचन का रूप है-
(A) दुहथ **(B) दुहथः**
(C) दोहथ **(D) दुग्ध**

व्याख्या-
दुह्- प्रपूरणे धातु, सकर्मक, अनिट्, उभयपदी (परस्मैपदी)

दोग्धि	दुग्धः	दुहन्ति
धोक्षि	दुग्धः	दुग्ध
दोह्मि	दुह्वः	दुह्मः

अतः विकल्प D सही है।
स्रोत- रचनानुवादकौमुदी- कपिलदेव द्विवेदी,पेज-162

100.'चोरयति' में धातु है-
(A) चोर् **(B) चुर्**
(C) चोरय् **(D) इनमें से कोई नहीं**

व्याख्या-
चुर्- स्तेये, चुरादिगण, सकर्मक, सेट्, उभयपदी।
चुरादिगण की प्रथम धातु 'चुर्' धातु है। इस गण में 411 धातुएँ है। इस गण में धातु और प्रत्यय के बीच में अय् (णिच्) जोड़ दिया जाता है तथा उपधा के ह्रस्व स्वर (अ) को छोड़कर गुण हो जाता है और यदि ऐसा अ हो जिसके बाद संयुक्ताक्षर न हो तो उसको और अन्तिम स्वर को वृद्धि सञ्ज्ञा हो जाती है।
जैसे- चुर् + अय् + ति = चोरयति

लट्लकार

चोरयति	चोरयतः	चोरयन्ति
चोरयसि	चोरयथः	चोरयथ
चोरयामि	चोरयावः	चोरयामः

अतः विकल्प B सही है।
स्रोत- रचनानुवादकौमुदी- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-185

101.'ददामि' किस धातु का रूप है?
(A) दद् **(B) धा**
(C) दा **(D) दध**

व्याख्या-
दा धातु, जुहोत्यादिगण, सकर्मक, अनिट्, उभयपदी।
इस गण में 24 धातुएँ पढ़ी गई हैं।

लट् लकार

ददाति	दत्तः	ददति
ददासि	दत्थः	दत्थ
ददामि	दद्वः	दद्मः

अतः विकल्प C सही है।
स्रोत- रचनानुवादकौमुदी- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-167

102 निम्नाङ्कित वाक्यों में शुद्ध वाक्य कौन-सा है?
(A) कृष्णा अश्वः धावति
(B) कृष्णः अश्वं धावति
(C) कृष्णम् अश्वं धावति
(D) कृष्णः अश्वः धावति

व्याख्या-

निम्नलिखित विकल्पों में विकल्प 'D' में कृष्ण अश्व का विशेषण है तथा धावति क्रिया है। इस वाक्य में धावति क्रिया के द्वारा कर्ता अश्व उक्त है इसलिए 'प्रातिपदिकार्थलिङ्ग-परिमाणवचनमात्रे प्रथमा (2/3/46)' सूत्र से प्रातिपदिक अश्व में प्रथमा विभक्ति होगी तथा विशेष्य के अनुसार विशेषण की भी विभक्ति होती है इसलिए 'कृष्णः अश्वः धावति' यह वाक्य शुद्ध है।

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- संस्कृतव्याकरण प्रवेशिका- बाबूराम सक्सेना, पेज-137

103.निम्नलिखित वाक्यों में कौन शुद्ध है?
(A) सूर्ये अस्ते गते गोपा गृहम् अगच्छन्
(B) सूर्ये अस्तं गते गोपाः गृहम् अगच्छन्
(C) सर्यस्य अस्ते गते गोपाः गृहम् अगच्छन्
(D) सूर्यस्य अस्तं गते गोपाः गृहम् अगच्छन्

व्याख्या-

यस्य च भावेन भावलक्षणम् (2.3.37) जहाँ एक क्रिया के घटित होने पर ही दूसरी क्रिया घटित हो वहाँ पहली क्रिया के आश्रयवाचक शब्द में सप्तमी विभक्ति होती है। सूत्र में 'भाव' शब्द का अर्थ है- क्रिया।

सूर्ये अस्तं गते गोपाः गृहम् अगच्छन्।

सूर्य के अस्त होने पर ग्वाले घर गये।

प्रस्तुत उदाहरण में पहली क्रिया है- 'सूर्य का अस्त होना' तथा दूसरी क्रिया है- 'ग्वाले का घर जाना' अतः पहली क्रिया में सप्तमी विभक्ति हुई इसीप्रकार- रामे वनं गते दशरथः प्राणान् तत्याज। राम के वन चले जाने पर दशरथ प्राण त्याग दिए।

अतः विकल्प B सही है।

104.शुद्ध वाक्य चुनिए-
(A) शिष्याय व्याकरणं बोधयति
(B) शिष्याय वेदं पाठयति
(C) शिष्यं व्याकरणं बोधयति
(D) शिष्यं वेदाय पाठयति

व्याख्या-

* पाणिनि ने द्विकर्मक धातुओं दुह्, याच्, पच्, दण्ड्, रुध्, प्रच्छ्, चि, ब्रु, शास्, जि, मथ्, मुष्, नी, हृ, कृष्, वह् इन 16 धातुओं के गौणकर्म में 'अकथितं च' (1/4/51) सूत्र से कर्मसंज्ञा और 'कर्मणि द्वितीया' सूत्र से द्वितीया विभक्ति होती है-
* शिष्यं व्याकरणं बोधयति। यह वाक्य शुद्ध है क्योंकि 16 धातुओं में ब्रू अर्थ वाली बुध् धातु है। इसके गौणकर्म 'शिष्यं' में 'अकथितं च' से तथा 'व्याकरणं ' में कर्तुरीप्सितमं कर्म से कर्म संज्ञा और कर्मणि द्वितीया (2/3/12) से द्वितीया विभक्ति हुई है।

अतः विकल्प 'C' सही है।

स्रोत- अष्टाध्यायी (1.4.52)- ईश्वरचन्द्र, पेज-130

105.शुद्ध वाक्य चुनिए-
(A) श्यामा गीतं शृण्वती नृत्यति
(B) श्यामा गीतं शृण्वन्ती नृत्यति
(C) श्यामा गीतं श्रुवन्ती नृत्यति
(D) श्यामा गीतं श्रुवन्ती नर्तते

व्याख्या-

* श्यामा गीतं शृण्वती नृत्यति। यह वाक्य शुद्ध है क्योंकि इसमें श्रु धातु के शतृ प्रत्ययान्त रूप में नुम् का आगम नहीं होता है। **अतः विकल्प A सही है।**

स्रोत- संस्कृतगङ्गा वस्तुनिष्ठ संस्कृतव्याकरणम्- सर्वज्ञभूषण, पेज-230

106. भवन्तः कुत्र भविष्यन्ति? का भाववाच्य में रूपान्तरण होगा-
(A) भवद्भिः कुत्र भवितारः?
(B) भवद्भिः कुत्र भविष्यते?
(C) भविद्भः कुत्र भविष्यते?
(D) भवता कुत्र भविता?

व्याख्या-

'भवन्तः कुत्र भविष्यन्ति?' इस वाक्य में भू धातु अकर्मक है तथा वाक्य को भाववाच्य में परिवर्तन करने पर अनुक्त कर्त्ता में तृतीया तथा क्रिया हमेशा प्रथम पुरुष एकवचन में होती है इसलिए भाववाच्य में 'भवद्भिः कुत्र भविष्यते' सही रूपान्तरण है। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- रचनानुवादकौमुदी- कपिलदेव द्विवेदी, पेज- 52

107.'अहं तव गृहं विचेष्यामि' का कर्मवाच्य में रूपान्तरण होगा-
(A) मया तव गृहं विचेष्ये
(B) मया तव गृहं विचेतास्मि
(C) मया तव गृहं विचेतामहे
(D) मया तव गृहं विचेष्यते

व्याख्या-

* कर्तृवाच्य को कर्मवाच्य में रूपान्तरित करते समय कर्त्ता में तृतीया तथा कर्म उक्त होने के कारण कर्म में प्रथमा विभक्ति होती है। कर्मवाच्य में क्रिया कर्म का अनुसरण करती है। कर्तृवाच्य- अहं गृहं विचेष्यामि। कर्मवाच्य- मया तव गृहं विचेष्यते। **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत- बृहद् अनुवाद चन्द्रिका- चक्रधर नौटियाल, पेज-350

108. 'माता पुत्रं प्रीणाति' का कर्मवाच्य होगा-
(A) मात्रा पुत्रं प्रीण्यते (B) मात्रा पुत्रः प्रीयते
(C) मात्रा पुत्रः प्रीणायते (D) मात्रा पुत्रः प्रीणीयते

व्याख्या-

* कर्तृवाच्य में क्रिया कर्ता के अनुसार होती है।
* कर्तृवाच्य के कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है।
* कर्मवाच्य में कर्ता अनुक्त (अकथित) होने के कारण 'कर्तृकरणयोस्तृतीया' (2/3/18) से अनुक्त कर्ता तथा करण में तृतीया विभक्ति होती है।
* कर्मवाच्य में कर्म के अनुसार क्रिया होती है। अर्थात् क्रिया के द्वारा कर्म उक्त होता है और जो भी उक्त होता है उसमें प्रथमा विभक्ति होती है।

कर्तृवाच्य- माता पुत्रं प्रीणाति।
कर्मवाच्य- मात्रा पुत्रः प्रीयते।
अतः विकल्प 'B' सही है।

स्रोत- बृहद्धातुकुसुमाकर- हरेकान्त मिश्र, पेज-420

109. कर्मवाच्य के कर्ता में कौन-सी विभक्ति होती है?
(A) प्रथमा (B) द्वितीया
(C) तृतीया (D) इनमें से सभी

व्याख्या-

* **कर्मवाच्य-** सकर्मक धातुओं से ही कर्मवाच्य होता है। इसमें कर्म की प्रधानता होती है। कर्म के अनुसार ही क्रिया के लिङ्ग विभक्ति और वचन होते हैं। **कर्मवाच्य के कर्म में प्रथमा होती है, कर्त्ता में तृतीया तथा क्रिया कर्म के अनुसार।** कर्मवाच्य में लट् आदि में धातु के अन्त में यक् (य) प्रत्यय लगता है।
कर्मवाच्य के उदाहरण- रामेण पुस्तकं पठ्यते,
बालिकया चित्रम् दृश्यते।
अतः विकल्प C सही है।
* **कर्तृवाच्य-** कर्तृवाच्य के वाक्य में कर्त्ता मुख्य होता है। कर्त्ता के अनुसार ही क्रिया का रूप चलता है। कर्तृवाच्य में कर्त्ता में प्रथमा, कर्म में द्वितीया और क्रिया कर्त्ता के अनुसार होती है।
उदाहरण- बालकः गृहं गच्छति, अहं पुस्तकानि पठामि
* **भाववाच्य-** अकर्मक धातु से भाववाच्य होता है, सकर्मक धातु से नहीं। भाववाच्य के कर्त्ता में तृतीया होती है, क्रिया में प्रथम पुरुष एकवचन या नपुंसकलिङ्ग एकवचन। धातु के अन्त में यक् (य) लगाकर रूप चलाते हैं।
उदाहरण- रामेण स्थीयते, बालिकाभिः भूयते।

स्रोत- रचनानुवादकौमुदी- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-275

110. 'सोलहवाँ बालक पढ़ता है', का संस्कृत में अनुवाद होगा-
(A) षोडशतमः बालकः पठति
(B) षोडशः बालकः पठति
(C) षडदशतमः बालकः पठति
(D) षोडशं बालकः पठति

व्याख्या-
सोलहवाँ बालक पढ़ता है। षोडशः बालकः पठति।

* **तस्य पूरणे डट् (5/2/48)-** सूत्र से संख्यावाचक षष्ठ्यन्त प्रातिपदिक से पूरण अर्थ में तद्धित संज्ञक डट् प्रत्यय होता है।
डट् के डकार की 'चुटू' से तथा टकार की 'हलन्त्यम्' से इत्संज्ञा 'तस्य लोपः' से लोप होकर 'अ' बचा 'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' से प्रातिपदिक के अवयव सुप् का लुक् कर देने पर षोडशन् अ अब डित् परे रहते 'टेः' सूत्र द्वारा भसंज्ञक टि (अन्) का लोप कर देने पर षोडश् अ = षोडश सु विभक्ति एवं रुत्व विसर्ग करने पर षोडशः शब्द बना। अतः पूरण अर्थ मे 'षोडशः' शब्द शुद्ध है।
अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- वस्तुनिष्ठ संस्कृतव्याकरणम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-257

111. 'षट्सप्ततिः' का अर्थ है-
(A) 76 (B) 67
(C) 660 (D) 607

व्याख्या-

(A) 76 - षट्सप्ततिः
(B) 67 - सप्तषष्टिः
(C) 660 - षष्ट्यधिकषट्शतम्
(D) 607 - सप्ताधिकषट्शतम्

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- रचनानुवादकौमुदी- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-131

112.'पचास' को संस्कृत में कहा जाता है-
(A) पञ्चदश (B) पञ्चाशत्
(C) पञ्चशतम् (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या-

(A) पञ्चदश - 15
(B) पञ्चाशत् - 50
(C) पञ्चशतम् - 500

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- संस्कृतव्याकरण प्रवेशिका- बाबूराम सक्सेना, पेज-153

113. कौन-सा कथन गलत है-
(A) संस्कृत में वचनों की संख्या है- तीन
(B) संस्कृत में पुरुषों की संख्या है- तीन
(C) संस्कृत में लिङ्गों की संख्या है- तीन
(D) संस्कृत में कारकों की संख्या है- तीन

व्याख्या-

A. संस्कृत में वचनों की संख्या तीन है-
1.एकवचन 2.द्विवचन 3.बहुवचन
B. संस्कृत में पुरुषों की संख्या तीन है-
1.प्रथमपुरुष 2.मध्यमपुरुष 3.उत्तमपुरुष
C. संस्कृत में लिङ्गों की संख्या तीन है-
1.पुँल्लिङ्ग 2.स्त्रीलिङ्ग 3.नपुंसकलिङ्ग
D. संस्कृत में कारकों की संख्या छः है-
'कर्त्ता कर्म च करणं सम्प्रदानं तथैव च।
अपादानाधिकरणे इत्याहुः कारकाणि षट्।।' संस्कृत में कारकों की संख्या छः है तीन नहीं।

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)- राममुनि पाण्डेय, पेज-17

114. भाषा की उत्पत्ति विषयक 'रणन-सिद्धान्त' के मूल प्रवर्तक स्वीकार किये जाते हैं-
(A) रूसो (B) सुसमिल्श
(C) प्लेटो (D) न्वारे

व्याख्या-

	विद्वान्	सिद्धान्त
➢	रूसो	संकेत सिद्धान्त (निर्णयवाद) एग्रीमेन्ट थ्योरी
➢	सुसमिल्श	दिव्योत्पत्ति-सिद्धान्त (DIVINE THEORY)
➢	प्लेटो	रणन-सिद्धान्त (धातु सिद्धान्त,अनुरणन सिद्धान्त,अनुरणनमूलकतावाद,डिंग-डांगवाद
➢	न्वारे	श्रम-ध्वनि सिद्धान्त (श्रमापहार मूलकतावाद,यो हे हो वाद)
➢	रेवेज	संपर्क सिद्धान्त
➢	हेनरी स्वीट	समन्वय-सिद्धान्त
➢	भर्तृहरि	प्रतिभा-सिद्धान्त

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-68

115. ग्रिम नियम के अनुसार निम्न जर्मन (THREE) का उच्च जर्मन में परिवर्तित रूप है-
(A) DREE (B) THREI
(C) THRI (D) DREI

व्याख्या-

ग्रिम नियम में ध्वनि परिवर्तन का क्रम-

क्, त्, प्
(अघोष अल्पप्राण)

ग् ,द् ,ब
घोष अल्पप्राण

ख् (ह्),थ,फ्,
घ्, ध्, भ् (महाप्राण)

ग्रिम नियम के प्रथम ध्वनि-परिवर्तन में मूलभारोपीय भाषा की निम्नलिखित ध्वनियों की अँग्रेजी और जर्मन भाषा में ये ध्वनियाँ हो जाती हैं- क्, त्, प्, को ह् (ख्) थ्, फ्, (प्रथम को द्वितीय) घ्, ध्, भ्, को ग्, द्, ब्, (चतुर्थ को तृतीय) तथा ग्, द्, ब्, को क्, त्, प्, (तृतीय को प्रथम) वर्ण हो जाता है।

उदाहरण- ध्वनि परिवर्तन

	अँग्रेजी	**जर्मन**	**अर्थ**
Th - d द	Three	Drei	तीन
	Thick	Dick	मोटा

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-245

116.'समाक्षर लोप' की अवधारणा प्रस्तुत की-
(A) सर विलियम जोन्स ने
(B) ब्लूमफील्ड ने
(C) मैक्समूलर ने
(D) वर्नर ने

व्याख्या-

(A) **सर विलियम जोन्स** ने 1786 ई0 में संस्कृत भाषा का अध्ययन करते समय संस्कृत की लैटिन और ग्रीक से अनेक अंशों में समानता प्राप्त की और इसके तुलनात्मक अध्ययन पर बल दिया।

(B) **ब्लूमफील्ड (समाक्षर लोप)-** जहाँ पर दो समान ध्वनियाँ एक के बाद दूसरी आती हैं,वहाँ पर उच्चारण की सुविधा के लिए उनमें से एक का लोप कर दिया जाता है। यह नाम अमेरिकन भाषाविज्ञानी 'प्रो0 ब्लूमफील्ड' ने दिया है। जैसे- जहीहि - जहि, नाककटा - नकटा, खरीददार - खरीदार, हिरण्यमय - हिरण्मय आदि-

(C) **रणन सिद्धान्त (DING DONG THEORY)** इस सिद्धान्त को धातु सिद्धान्त या अनुकरणन सिद्धान्त आदि नामों से निर्दिष्ट किया गया है। इसके मूल प्रवर्तक प्लेटो थे इसको हेस ने आगे बढाया और मैक्समूलर ने व्यवस्थित रूप दिया।

(D) **कार्ल वर्नर-** जर्मन भाषाशास्त्री हैं। इन्होंने ग्रिम-नियम का संशोधन किया। ग्रिम नियम के जो अपवाद रह गये थे उनके विषय में वर्नर ने ज्ञात किया है कि ग्रिम - नियम का आधार उदात्त स्वर था।

अतः विकल्प 'B' सही है।

स्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-235

117. सांख्य के अनुसार प्रमाण हैं-
(A) प्रत्यक्ष, अनुमान, अर्थापत्ति
(B) प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान
(C) प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द
(D) प्रत्यक्ष, उपमान, शब्द

व्याख्या-

सांख्य के अनुसार प्रमाण-

दृष्टमनुमानमाप्तवचनं च सर्वप्रमाणसिद्धत्वात्।
त्रिविधं प्रमाणमिष्टं प्रमेयसिद्धिः प्रमाणाद्धि।। (सां. का.-4)

ईश्वरकृष्ण विरचित सांख्यकारिका में सांख्य के तीन प्रमाण हैं- 1. दृष्ट 2. अनुमान 3. आप्तवचन (शब्द)

अतः विकल्प 'C' सही है।

स्रोत- सांख्यकारिका (का.-4) राकेश शास्त्री, पेज-12

विभिन्न दर्शनों में स्वीकृत प्रमाण

दर्शन	प्रमाण नाम
* **चार्वाक–**1	प्रत्यक्ष
* **बौद्ध दर्शन-**2	प्रत्यक्ष, अनुमान
* **सांख्य, योग-**3	प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द
* **न्याय - वैशेषिक-**4	प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द
* **प्रभाकर मीमांसक**-5	प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, अर्थापत्ति
* **भाट्ट मीमांसक**-6	प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, अर्थापत्ति, अभाव
* **पौराणिक-**8	प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, अर्थापत्ति, अभाव, सम्भव, ऐतिह्य।

118. सांख्य के अनुसार पुरुषार्थ हैं-
(A) धर्म और काम **(B) भोग और अपवर्ग**
(C) धर्म और मोक्ष **(D) अर्थ और मोक्ष**

व्याख्या-

सङ्घातपरार्थत्वात् त्रिगुणादिविपर्ययादधिष्ठानात्।
पुरुषोऽस्ति भोक्तृभावात् कैवल्यार्थं प्रवृत्तेश्च॥
(सां. का.-17)

* ईश्वरकृष्ण ने 'सांख्यकारिका' में पुरुष की सत्ता की सिद्धि के लिए पाँच कारण गिनायें हैं-

1. संघातकारी बुद्धयादि पदार्थ पर अर्थात् अपने से भिन्न के लिए होने से
2. सत्वादि त्रिगुण का अत्यन्ताभाव होने से
3. अधिष्ठियों का अधिष्ठाता होने से।
4. भोक्ता होने से तथा
5. कैवल्य (अपवर्ग) के लिए प्रवृत्त होने से जड़ भिन्न चेतनतत्व पुरुष की सत्ता सिद्ध होती है।

अतः विकल्प 'B' सही है।

स्रोत- सांख्यकारिका (का.-4)- राकेश शास्त्री, पेज-56

119. कैवल्य को प्राप्त करने वाला–वाली है-
(A) पुरुष **(B) प्रकृति**
(C) मन **(D) अहङ्कार**

व्याख्या-

(A) ईश्वरकृष्णकृत 'सांख्यकारिका' में पुरुष को कैवल्य प्राप्त करने वाला कहा गया है-

''पुरुषोऽस्ति भोक्तृभावात् कैवल्यार्थं प्रवृत्तेश्च''

(सां. का.-17)

अर्थात्- पुरुष भोग्यों का भोक्ता होने से तथा कैवल्य-प्राप्त्यर्थ प्रवृत्त होने से जड़भिन्न चेतनतत्व पुरुष की सत्ता सिद्ध होती है। **अतः विकल्प A सही है।**

(B) सांख्य में प्रकृति कार्यों का सीमित परिमाण होती है-
भेदानां परिमाणात्, समन्वयत्वात् शक्तितः प्रवृत्तेश्च

(सां. का. 15)

(C) सांख्य में मन को संकल्प करने वाला कहा गया है-
''उभयात्मकमत्र मनः सङ्कल्पकमिन्द्रियं च साधर्म्यात्''

(सां. का. 27)

(D) सांख्य में अहङ्कार को एकादश इन्द्रियों तथा पञ्चतन्मात्राओं को उत्पन्न करने वाला कहा गया है-
'एकादशकश्च गणस्तन्मात्रपञ्चकश्चैव' (सां. का. 24)

स्रोत- सांख्यकारिका (का.-7)- राकेश शास्त्री, पेज-56

120. मन किस प्रकार की इन्द्रिय है?
(A) कर्मेन्द्रिय (B) ज्ञानेन्द्रिय
(C) उभयात्मक (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या-

ईश्वरकृष्ण कृत सांख्यकारिका में इन्द्रियों की चर्चा निम्नवत् है-

(A) ''वाक्पाणिपादपायूपस्थानि कर्मेन्द्रियाण्याहुः।''(सां. का. 26)
वाक्, पाणि, पाद, पायु और उपस्थ ये पाँच कर्मेन्द्रियाँ हैं।

(B) ''बुद्धीन्द्रियाणि चक्षुः श्रोत्रघ्राणरसनत्वगाख्यानि''।

(सां. का.-26)

चक्षु, श्रोत्र, घ्राण, रसना और त्वचा ये पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ हैं।

(C) ''उभयात्मकमत्र मनः सङ्कल्पमिन्द्रियं च साधर्म्यात्''।

(सां. का. 27)

ग्यारह इन्द्रियों में से मन उभयात्मक है अर्थात् ज्ञानेन्द्रियों का प्रवर्त्तक होने से ज्ञानेन्द्रिय तथा कर्मेन्द्रियों का प्रवर्त्तक होने से कर्मेन्द्रिय है।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- सांख्यकारिका (का.-7)- राकेश शास्त्री, पेज-84

121.न्याय वैशेषिक स्वीकार करता है-
(A) स्वतः प्रामाण्य, परतः अप्रामाण्य
(B) परतः प्रामाण्य, स्वतः अप्रामाण्य
(C) स्वतः प्रामाण्य, स्वतः अप्रामाण्य
(D) परतः प्रामाण्य, परतः अप्रामाण्य

व्याख्या-

(A) मीमांसादर्शन- स्वतः प्रामाण्य, परतः अप्रामाण्य
(B) बौद्धदर्शन- परतः प्रामाण्य, स्वतः अप्रामाण्य
(C) सांख्यदर्शन- स्वतः प्रामाण्य, स्वतः अप्रामाण्य
(D) न्यायवैशेषिक दर्शन- परतः प्रामाण्य, परतः अप्रामाण्य

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत-भारतीय दर्शन- चन्द्रधर शर्मा, पेज-193

122. वेदान्तसार के अनुसार उपासना का परम प्रयोजन है-
(A) चित्त की शुद्धि (B) चित्त की एकाग्रता
(C) पाप का विनाश (D) पितृलोक की प्राप्ति

व्याख्या-

श्रीमत्सदानन्द वेदान्तसार में नित्य आदि कर्मों के परम प्रयोजन तथा अवान्तर प्रयोजन का वर्णन करते हैं-

(A) नित्यादि कर्मों का प्रयोजन- बुद्धिशुद्धि **'नित्यादीनां बुद्धिशुद्धिः।'**

(B) उपासना कर्मों का परम प्रयोजन- चित्त की एकाग्रता है ''परं प्रयोजनमुपासनानां तु चित्तैकाग्र्यम्''।

* ''नित्यनैमित्तिकयोरुपासनानां चावान्तरफलं पितृलोकसत्यलोकप्राप्तिः।''
नित्य नैमित्तिक प्रायश्चित्त एवं उपासना कर्मों का अवान्तर (गौण) प्रयोजन पितृलोक एवं सत्यलोक की प्राप्ति करना है।

(C) ''प्रायश्चित्तानि- पापक्षयसाधनानि चान्द्रायणादीनि।''
प्रायश्चित्त कर्म (चान्द्रायण आदि) पाप का विनाश करने के लिए किया जाता है।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- वेदान्तसार- सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-17-18

123. श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार कर्मयोगी को कर्म करना चाहिए-
(A) कीर्ति के लिए (B) लोकसंग्रह के लिए
(C) सुख के लिए (D) स्वर्ग के लिए

व्याख्या-

श्रीमद्भगवद्गीता के तृतीय अध्याय में भगवान् श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं-

''सक्ताः कर्मण्यविद्वांसो यथा कुर्वन्ति भारत।
कुर्याद्विद्वांस्तथासक्तश्चिकीर्षुर्लोकसङ्ग्रहम्।।''

(गीता 3/25)

जिसप्रकार अज्ञानी जन फल की आसक्ति से कार्य करते हैं, उसी प्रकार विद्वानों को चाहिए कि वे अनासक्त होकर लोकसङ्ग्रह के लिये कर्म करें।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- श्रीमद्भगवद्गीता (3.25)

124. महाभारत के सन्दर्भ में कौन-सा कथन सत्य है?

(A) इनमें तीन लाख श्लोक हैं।

(B) इसकी कथावस्तु अठारह पर्वों में विभक्त है।

(C) यह पौराणिक उपन्यास है।

(D) यह विश्व का सबसे बड़ा खण्डकाव्य है।

व्याख्या-

भगवान् वेदव्यासकृत 'महाभारत' की कथावस्तु 18 पर्वों में विभक्त है। इसमें कुल एक लाख श्लोक हैं।

1. आदिपर्व - 233 अध्याय
2. सभापर्व - 81 अध्याय
3. वनपर्व - 315 अध्याय
4. विराटपर्व - 72 अध्याय
5. उद्योगपर्व - 196 अध्याय
6. भीष्मपर्व - 122 अध्याय
7. द्रोणपर्व - 202 अध्याय
8. कर्णपर्व - 96 अध्याय
9. शल्यपर्व - 65 अध्याय
10. सौप्तिकपर्व - 18 अध्याय
11. स्त्रीपर्व - 27 अध्याय
12. शान्तिपर्व - 365 अध्याय (सबसे बड़ा पर्व)
13. अनुशासनपर्व - 168 अध्याय
14. आश्वमेधिकपर्व - 113 अध्याय
15. आश्रमवासिकपर्व - 39 अध्याय
16. मौसलपर्व - 8 अध्याय
17. महाप्रस्थानिकपर्व - 3 अध्याय (सबसे छोटा पर्व)
18. स्वर्गारोहणपर्व - 5 अध्याय

* महाभारत को 'शतसाहस्त्रीसंहिता' भी कहते हैं।
* महाभारत का सबसे बड़ा पर्व 'शान्तिपर्व' तथा सबसे छोटा पर्व 'महाप्रस्थानिकपर्व' है।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-117-118

125. निम्नांकित सूक्तियों को उनके रचनाकारों के साथ सुमेलित कीजिए-

क-वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः		**1-कालिदास**
ख-दिष्टया वर्धसे		**2-भर्तृहरि**
ग-कोऽन्यो हुतवहाद् दग्धुं प्रभवति		**3-भवभूति**
घ-न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः		**4-भारवि**

	क	ख	ग	घ
(A)	4	1	2	3
(B)	1	3	2	4
(C)	4	3	1	2
(D)	3	2	4	1

व्याख्या-

सूक्तियों का कवि सम्बन्धी सुमेलित क्रम-

(1) वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः (किरात0 1.8)- भारवि
भारवि कृत किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में वनेचर युधिष्ठिर से कहता है कि दुर्जनों के साथ किसी भी प्रकार की मित्रता अच्छी नहीं होती है।

(2) दिष्टया वर्धसे (उत्तरराम0 अङ्क -3)- भवभूति
उत्तररामचरितम् के तृतीय अङ्क में राम कहते हैं कि भाग्य से तुम बढ़ रही हो।

(3) कोऽन्यो हुतवहाद् दग्धुं प्रभवति (अभि0शा0 अंक -4)- कालिदास
अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में अनसूया प्रियंवदा से कहती है- कि अग्नि के अतिरिक्त और कौन जला सकता है?

(4) न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः (नीतिशतकम्-75)- भर्तृहरि
भर्तृहरि नीतिशतकम् के धैर्यपद्धति में धीरपुरुष के विषय में कहते हैं कि- धीरपुरुष न्याय के मार्ग से कभी भी विचलित नहीं होते हैं।

उपर्युक्त विकल्पों में विकल्प C सही है।

स्रोत- 1.किरातार्जुनीयम् (1/8)
2.उत्तररामचरितम् (अङ्क - 3)
3.अभिज्ञानशाकुन्तलम्- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-185
4.नीतिशतकम् (श्लोक-75)

उत्तरमाला

1.C	2.C	3.C	4.D	5.C	6.D	7.C	8.A	9.D	10.C	11.B	12.A
13.B	14.C	15.D	16.A	17.B	18.D	19.D	20.B	21.B	22.A	23.C	24.C
25.C	26.B	27.D	28.B	29.B	30.A	31.D	32.C	33.B	34.C	35.B	36.A
37.C	38.A	39.B	40.D	41.B	42.C	43.D	44.C	45.C	46.C	47.B	48.D
49.B	50.B	51.D	52.C	53.C	54.C	55.B	56.C	57.A	58.C	59.D	60.B
61.B	62.C	63.B	64.C	65.C	66.B	67.B	68.A	69.C	70.C	71.B	72.B
73.C	74.B	75.B	76.C	77.B	78.B	79.B	80.B	81.D	82.C	83.D	84.B
85.C	86.C	87.B	88.B	89.A	90.B	91.B	92.B	93.C	94.D	95.B	96.A
97.B	98.C	99.D	100.B	101.C	102.D	103.B	104.C	105.A	106.B	107.D	108.B
109.C	110.B	111.A	112.B	113.D	114.C	115.D	116.B	117.C	118.B	119.A	120.C
121.D	122.B	123.B	124.B	125.C							

❑❑

8. प्रवक्ता (PGT) संस्कृत 2011

01. 'आर्तत्राणाय वः शस्त्रं न प्रहर्तुमनागसि' अभिज्ञानशाकुन्तलम् में यह कथन है-
(A) गौतमी (B) मातलि
(C) वैखानस (D) राजा का सारथि

व्याख्या-

- कालिदास विरचित अभिज्ञानशाकुन्तलम् के प्रथम अङ्क में राजा दुष्यन्त द्वारा मृग का शिकार करने के अवसर पर वैखानस कहते हैं-
तत् साधुकृतसन्धानं प्रतिसंहर सायकम्।
आर्तत्राणाय वः शस्त्रं न प्रहर्तुमनागसि॥ (अभि. 1.11)
अच्छे प्रकार से धनुष पर चढ़ाए हुए अपने बाण को उतार लीजिए आपका शस्त्र दुःखितों की रक्षा के लिए है निरपराधों पर प्रहार के लिए नहीं।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के षष्ठ अङ्क में राक्षसों के वधार्थ इन्द्र द्वारा दुष्यन्त को बुलाए जाने पर मातलि दुष्यन्त से कहता है-
प्रसादसौम्यानि सतां सुहृज्जने
पतन्ति चक्षूंषि न दारुणाः शराः। (अभि. 6.29)
सज्जनों की अपने मित्रवर्ग पर प्रेम से मनोहर ही दृष्टि पड़ती है, न कि उनके भयंकर बाण उन पर पड़ते हैं।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में विदाई के अवसर पर गौतमी शकुन्तला से कहती हैं-
'जाते, ज्ञातिजनस्निग्धाभिरनुज्ञातगमनाऽसि तपोवनदेवताभिः'
पुत्री, सम्बन्धि-जनों के तुल्य प्रेम करने वाली तपोवन की देवताओं ने तुझे जाने की स्वीकृति दे दी है।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के प्रथम अङ्क में राजा दुष्यन्त द्वारा मृग का पीछा करने के अवसर पर सारथि राजा दुष्यन्त से कहता है-
कृष्णसारे ददच्चक्षुस्त्वयि चाधिज्यकार्मुके।
मृगानुसारिणं साक्षात् पश्यामीव पिनाकिनम्॥ (अभि. 1.6)
मैं इस कृष्णसार मृग और धनुष चढ़ाए हुए आप पर दृष्टिपात करके मृग का पीछा करते हुए साक्षात् मानो शिव को देख रहा हूँ।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत-अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1.11)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-26

02. 'दिष्ट्या धूमाकुलितदृष्टेरपि यजमानस्य पावक एवाहुतिः पतिता।' इस दृष्टान्त द्वारा किसने अपनी कृतार्थता स्वीकार की है-
(A) कण्व (B) गौतमी
(C) मातलि (D) शकुन्तला

व्याख्या-

- महाकवि कालिदास द्वारा अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में महर्षि कण्व द्वारा शकुन्तला से कही गई बात को प्रियंवदा अनसूया से कहती है-
'दिष्ट्या धूमाकुलितदृष्टेरपि यजमानस्य पावक एवाहुतिः पतिता' (अभि.अङ्क-4)
सौभाग्य से धुएँ से व्याकुल दृष्टि वाले यजमान की आहुति ठीक अग्नि में पड़ी। यह बात महर्षि कण्व शकुन्तला से कहते हैं।
अतः विकल्प A सही है।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में गौतमी शकुन्तला से कहती हैं-
'जाते, एष त आनन्दपरिवाहिणा चक्षुषा परिष्वजमान इव गुरुरुपस्थितः। आचारं तावत् प्रतिपद्यस्व' (अभि.अङ्क-4)
पुत्री, आनन्द के आँसुओं को बहाने वाली आँखों से तुझको गले लगाते हुए तुम्हारे पिता यहाँ उपस्थित हैं अब उचित शिष्टाचार का पालन करो।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के सप्तम अङ्क में मातलि राजा दुष्यन्त से मारीचि के आश्रम के विषय में कहता है-
'एष खलु हेमकूटो नाम किंपुरुषपर्वतस्तपः संसिद्धिक्षेत्रम्।' (अभि.अङ्क-7)
यह हेमकूट नाम का किन्नरों का पर्वत है। यह तपस्या की सफलता के लिए सर्वोत्तम स्थान है।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में राजा यदि तुम्हें पहचानने से इन्कार करे तो उसे अगूँठी दिखा देना दोनों सखियों के ऐसा कहने पर, शकुन्तला कहती है-
'अनेन सन्देहेन वामाकम्पिताऽस्मि' (अभि.अङ्क-4)
तुम्हारे इस सन्देह से मुझे घबड़ाहट हो रही है।

स्रोत-अभिज्ञानशाकुन्तलम् (अङ्क-4)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-197

03. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में मातलि कौन है-
(A) कण्व शिष्य **(B) द्वारपाल**
(C) तपस्वी **(D) इन्द्र-सारथि**

व्याख्या-

➢ अभिज्ञानशाकुन्तलम् में प्रयुक्त पात्रों के नाम हैं-
कण्व के शिष्य- वैखानस, शार्ङ्गरव, शारद्वत, गौतम, हारीत **द्वारपाल**- रैवतक
तपस्वी- वैखानस
इन्द्र का सारथी- मातलि
दुष्यन्त का सारथी- सूत
दुष्यन्त का विदूषक- माधव्य (माढव्य)
दुष्यन्त का पुत्र- भरत (सर्वदमन)
शकुन्तला की सखी- अनसूया, प्रियंवदा
महर्षि मारीच की पत्नी- अदिति (दाक्षायणी)
मेनका की सखी- सानुमती
अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम्- कपिलदेव द्विवेदी, भू.पेज-99

04. 'अथवाऽनार्यः परदारव्यवहारः' कथन है-
(A) दुष्यन्त **(B) गौतमी**
(C) मातलि **(D) तापसी**

व्याख्या-

➢ कालिदास विरचित अभिज्ञानशाकुन्तलम् के सप्तम अङ्क में तपस्विनी द्वारा कथित वाक्य पर विचार करते हुए राजा अपने मन में कहता है-
'अथवाऽनार्यः परदारव्यवहारः' (अभि.अङ्क-7)
पराई स्त्री के विषय में बात करना अशिष्टता है।
अतः विकल्प A सही है।

➢ अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में शकुन्तला की विदाई के अवसर पर पिता (काश्यप) को लौटने को कहते हुए गौतमी शकुन्तला एवं काश्यप से कहती हैं-
'जाते, परिहीयते गमनवेला। निवर्तय पितरम्। अथवा चिरेणापि पुनः पुनरेषैवं मन्त्रयिष्यते। (अभि.अङ्क-4)
पुत्री, हमारे प्रस्थान का समय बीतता जा रहा है। अपने पिता को लौटाओ अथवा यह शकुन्तला तो चिरकाल तक बार-बार उसी बात को कहती रहेगी।

➢ अभिज्ञानशाकुन्तलम् के षष्ठ अङ्क में इन्द्र का सारथी (मातलि) राजा दुष्यन्त से कहता है-
'अस्ति कालनेमिप्रसूतिर्दुर्जयो नाम दानवगणः'
(अभि.अङ्क-6)
कालनेमि के वंशज दुर्जय नामक राक्षसों का समुदाय है।

➢ अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में शकुन्तला के विदाई के अवसर पर प्रथम तापसी आशीर्वाद देते हुए कहती है-
'जाते, भर्तुर्बहुमानसूचकं महादेवीशब्दं लभस्व'
(अभि.अङ्क-4)
पुत्री, पति के बहुत सम्मानसूचक 'महारानी' शब्द को प्राप्त करो।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (अङ्क-7)- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-421

05. ''अर्थो हि कन्या परकीय एव तामद्य संप्रेष्य परिग्रहीतुः जातो ममायं विशदः प्रकामं प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा।।'' इस श्लोक में छन्द है?
(A) उपजाति **(B) शिखरिणी**
(C) इन्द्रवज्रा **(D) वंशस्थ**

व्याख्या-

➢ **उपजाति छन्द-**
'अनन्तरोदीरितलक्ष्मभाजौ पादौ यदीयावुपजातयस्ताः'
(वृत्त.3.30)
जिस छन्द में एक चरण इन्द्रवज्रा का तथा दूसरा चरण उपेन्द्रवज्रा का हो उसे उपजाति छन्द कहते हैं।
उदाहरण-
कृताभिमर्शामनुमन्यमानः सुतां त्वया नाम मुनिर्विमान्यः।
मुष्टं प्रतिग्राहयता स्वमर्थं पात्रीकृतो दस्युरिवासि येन।।
(अभि.5.20)

➢ **शिखरिणी छन्द-**
'रसैः रुद्रैश्छिन्ना यमनसभलागः शिखरिणी'
(वृत्त.3.93)
छः तथा ग्यारह अक्षरों की यति वाली तथा क्रमशः यगण, मगण, नगण, सगण, भगण, एक लघु तथा एक गुरु वर्ण से युक्त छन्द को शिखरिणी छन्द कहते हैं।
उदाहरण- चलापाङ्गां दृष्टिं स्पृशसि बहुशो वेपथुमतीं।
रहस्याख्यायीव स्वनसि मृदुकर्णान्तिकचरः।। (अभि.1.24)

➢ **इन्द्रवज्रा छन्द-**
'स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः' (वृत्त.3.28)
जिस छन्द के प्रत्येक चरण में दो तगण, एक जगण, तथा दो गुरु वर्ण क्रमशः हों उसे इन्द्रवज्रा कहते हैं यति प्रत्येक चरण के अन्त में होती है।
उदाहरण-
अर्थो हि कन्या परकीय एव तामद्य सम्प्रेष्य परिग्रहीतुः।
जातो ममायं विशदः प्रकामं प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा।।
(अभि.4.22)

अतः विकल्प C सही है।

➢ **वंशस्थ छन्द-**

'जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ' (वृत्त.3.46)

जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः जगण, तगण, जगण, रगण आए उसे वंशस्थ छन्द कहते हैं।

उदाहरण-

विचिन्तयन्ती यमनन्यमानसा तपोधनं वेत्सि न मामुपस्थितम्।
स्मरिष्यति त्वां न स बोधितोऽपि सन्, कथां प्रमत्तः प्रथमं कृतामिव।। (अभि.4.1)

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/22)- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-240

06. 'ओदकान्तं स्निग्धो जनोऽनुगन्तव्यः' कथन है
(A) शार्ङ्गरव **(B) शारद्वत**
(C) गौतमी **(D) प्रियंवदा**

व्याख्या-

A. शार्ङ्गरव- कालिदास कृत अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के चतुर्थ अङ्क में शकुन्तला की विदाई के अवसर पर शार्ङ्गरव ऋषि काश्यप से कहता है-

'ओदकान्तं स्निग्धो जनोऽनुगन्तव्य इति श्रूयते' (अभि.अङ्क-4)

अर्थात् प्रिय व्यक्ति का अनुगमन जल के किनारे तक करना चाहिए ऐसा सुना जाता है।

अतः विकल्प A सही है।

B. शारद्वत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के पञ्चम अङ्क में शारद्वत राजा दुष्यन्त के राजदरबार में शकुन्तला के विषय में कहता है-

तदेषा भवतः कान्ता त्यज वैनां गृहाण वा।
उपपन्ना हि दारेषु प्रभुता सर्वतोमुखी॥ (अभि.5.26)

यह शकुन्तला आपकी पत्नी है इसको चाहे अपने पास रखिए अथवा छोड़िए क्योंकि पत्नी पर पति की सब प्रकार से प्रभुता स्वीकार की गई है।

C. गौतमी- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के पञ्चम अङ्क में गौतमी दोनों के (शकुन्तला-दुष्यन्त) विवाह के विषय में राजा दुष्यन्त से कहती हैं-

नापेक्षितो गुरुजनोऽनया त्वया पृष्टो न बन्धुजनः।
एकैकस्य च चरिते भणामि किमेकैकम्॥ (अभि.5.16)

विवाह के विषय में शकुन्तला ने अपने गुरुजनों की अनुमति नहीं ली, और तुमने भी अपने सम्बन्धियों की सम्मति नहीं ली। तुम दोनों के परस्पर इस कार्य में तुम दोनों में से प्रत्येक को क्या कहूँ?

D. प्रियंवदा- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में वनस्पतियों द्वारा शकुन्तला के लिए अलङ्करण सामग्री प्रदान किए जाने के कारण प्रियंवदा शकुन्तला से कहती है-

भर्तुर्गेहेऽनुभवितव्या राजलक्ष्मीः (अभि.अङ्क-4)

पति के घर में राजलक्ष्मी का अनुभव करोगी।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (अङ्क-4)- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-225

07. 'को नामोष्णोदकेन नवमालिकां सिञ्चति' कथन है-
(A) गौतमी **(B) प्रियंवदा**
(C) अनसूया **(D) शार्ङ्गरव**

व्याख्या-

A. गौतमी- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के पञ्चम अङ्क में राजा दुष्यन्त द्वारा शकुन्तला को त्याग दिए जाने पर गौतमी शार्ङ्गरव से कहती है कि-

'प्रत्यादेशपरुषे भर्तरि किं वा मे पुत्रिका करोतु?' (अभि.अङ्क-5)

पति ने निर्दयतापूर्वक परित्याग कर दिया है बेचारी मेरी पुत्री क्या करे?

B. प्रियंवदा- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में प्रियंवदा अनसूया से कहती है-

'को नामोष्णोदकेन नवमालिकां सिञ्चति' (अभिज्ञान अङ्क-4)

भला कौन नवमालिका को गर्म जल से सींचेगा।

अतः विकल्प B सही है।

C. अनसूया- कालिदास विरचित अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में दुर्वासा ऋषि द्वारा शकुन्तला को दिए गए शाप के प्रसङ्ग में अनसूया प्रियंवदा से कहती है-

'कोऽन्यो हुतवहाद् दग्धुं प्रभवति।' (अभिज्ञान-अङ्क-4)

अग्नि के अतिरिक्त और कौन जला सकता है।

D. शार्ङ्गरव- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में शार्ङ्गरव ऋषि काश्यप से कहता है-

'ओदकान्तं स्निग्धो जनोऽनुगन्तव्यः।' (अभि.अङ्क-4)

प्रिय व्यक्ति का जल के किनारे तक अनुगमन करना चाहिए।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (अङ्क-4)- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-190

8. 'शान्तानुकूलपवनश्च शिवश्च पन्थाः' उक्ति है-
(A) गौतमी **(B) कण्व**
(C) आकाशभाषित **(D) प्रियंवदा**

व्याख्या-

A. **गौतमी-** कालिदास कृत अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के पञ्चम अङ्क में राजा दुष्यन्त के राजदरबार में दुष्यन्त द्वारा शकुन्तला को दी हुई अँगूठी को शकुन्तला की अँगुली में न देखकर गौतमी शकुन्तला से कहती है कि-
'नूनं ते शक्रावताराभ्यन्तरे शचीतीर्थसलिलं वन्दमानायाः प्रभ्रष्टमङ्गुलीयकम्' (अभि.अङ्क-5)
निश्चित रूप से शक्रावतार तीर्थ में शचीतीर्थ के जल की वन्दना करते समय तुम्हारी अँगूठी गिर गई।

B. **कण्व-** शकुन्तला की विदाई के अवसर पर अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में ऋषि कण्व कहते हैं-
'सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम्।' (अभि.4/9)
यह शकुन्तला पतिगृह को जा रही है आप सभी अपनी अनुमति प्रदान करें।

C. **आकाशभाषित-** अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में विदाई के समय आकाशवाणी होती है-
'शान्तानुकूलपवनश्च शिवश्च पन्थाः।' (अभि.शा.4/11)
शकुन्तला का मार्ग शान्त और अनुकूल वायु से युक्त तथा कल्याणकारी हो। **अतः विकल्प C सही है।**

D. **प्रियंवदा-** अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में प्रियंवदा दुर्वासा ऋषि के विषय में कहती है कि-
'प्रकृतिवक्रः स कस्यानुनयं प्रतिगृह्णाति।'
स्वभाव से ही टेढ़े वह (दुर्वासा) किसकी प्रार्थना स्वीकार करते हैं।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4.11)- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-216

09. 'अयं जनः कस्य हस्ते समर्पितः' कथन है-
(A) अनसूया **(B) अनसूया एवं प्रियंवदा**
(C) गौतमी **(D) प्रियंवदा**

व्याख्या-

A. **अनसूया-** अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में अनसूया शकुन्तला से कहती है-
'गुर्वपि विरहदुःखमाशाबन्धः साहयति।' (अभि.4.16)
आशा का बन्धन वियोग के कठोर दुःख को भी सहन करा देता है।

B. **अनसूया एवं प्रियंवदा-** अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में पतिगृह को जाती हुई शकुन्तला जब लता को धरोहर के रूप में अनसूया एवं प्रियंवदा के हाथ में छोड़ती है तो दोनों सखियाँ शकुन्तला से कहती हैं-
'अयं जनः कस्य हस्ते समर्पितः।' (अभि. अङ्क-4)
हम दोनों को किसके हाथ में छोड़ती हो।
अतः विकल्प B सही है।

C. **गौतमी-** अभिज्ञानशाकुन्तलम् के पञ्चम अङ्क में शकुन्तला के विषय में गौतमी राजा दुष्यन्त से कहती हैं-
तपोवनसंवर्धितोऽनभिज्ञोऽयं जनः कैतवस्य।
तपोवन में पाला-पोसा हुआ यह व्यक्ति अर्थात् (शकुन्तला) छल-प्रपंचों से (सर्वथा) अनभिज्ञ है।

D. **प्रियंवदा-** अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में प्रियंवदा दुर्वासा ऋषि के विषय में कहती है-
एष दुर्वासाः सुलभकोपो महर्षिः। यह अतिक्रोधी महर्षि दुर्वासा हैं।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (अङ्क-4)- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-221

10. 'शकुन्तला के गर्भ में दुष्यन्त का तेज पल रहा है'- कण्व को किसके द्वारा पता चला?
(A) गौतमी द्वारा
(B) अनसूया एवं प्रियंवदा द्वारा
(C) कण्व के तपोबल द्वारा
(D) अशरीरिणी छन्दोमयी वाणी द्वारा

व्याख्या-

A. **गौतमी-** अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में काश्यप ऋषि द्वारा शकुन्तला को आशीर्वाद दिए जाने पर गौतमी कहती हैं-
'भगवन्, वरः खल्वेषः। नाशीः।' (अभि.अङ्क-4)
भगवन्, यह वस्तुतः वर है, केवल आशीर्वाद नहीं।

B. **प्रियंवदा-** अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में प्रियंवदा अनसूया से कहती है-
'को नामोष्णोदकेन नवमालिकां सिञ्चति।' (अभि.अङ्क-4)
भला कौन नवमालिका को गर्म जल से सीचेंगा।

C. **कण्व-** अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में काश्यप शकुन्तला से कहते हैं-
'ययातेरिव शर्मिष्ठा भर्तुर्बहुमता भव।
सुतं त्वमपि सम्राजं सेव पुरूमवाप्नुहि॥' (अभिज्ञान.4.6)
पुत्री, शर्मिष्ठा जिस प्रकार ययाति की (अति प्रिय रानी) थी, उसी प्रकार (तू) पति की अति प्रिय (रानी) हो। उस (शर्मिष्ठा) ने जिस प्रकार (सम्राट् पुत्र) पुरु को (प्राप्त किया) उसी प्रकार तू भी सम्राट् पुत्र को प्राप्त कर।

D. प्रियंवदा- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में प्रियंवदा अनसूया से कहती हैं-

'अग्निशरणं प्रविष्टस्य शरीरं विना छन्दोमय्या वाण्या।'

(अभि.अङ्क-4)

यज्ञशाला में प्रविष्ट होने पर (उनको) अशरीरधारी छन्दोमयी वाणी ने ऋषि काश्यप को बताया कि शकुन्तला के गर्भ में दुष्यन्त का तेज पल रहा है।

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/4)- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-198

11. 'सागरमुज्झित्वा कुत्र वा महानद्यवतरति' यह कथन है-

(A) रामायणम् **(B) अभिज्ञानशाकुन्तलम्**
(C) रघुवंशम् **(D) मृच्छकटिकम्**

व्याख्या-

- महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण के सुन्दरकाण्ड में राक्षसियों की बात मानने से इन्कार करके शोक सन्तप्त सीता विलाप करती हुई कहती हैं कि-

  'अकाले दुर्लभो मृत्युः स्त्रिया वा पुरुषस्य वा'

  (वा.रा.5.25.12)

  किसी भी स्त्री या पुरुष की मृत्यु बिना समय के नहीं होती।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के तृतीय अङ्क में प्रियंवदा अनसूया से शकुन्तला के विषय में कहती है-

  'सागरमुज्झित्वा कुत्र वा महानद्यवतरति' (अभि.अङ्क-3)

  बड़ी नदी समुद्र को छोड़कर और कहाँ उतरती है।

  अतः विकल्प B सही है।
- कालिदास कृत रघुवंशम् के द्वितीय सर्ग में सिंह राजा दिलीप से कहता है-

  न पादपोन्मूलनशक्तिरंहः शिलोच्चये मूर्च्छति मारुतस्य

  (रघु.2/34)

  वायु का जो वेग वृक्षों को जड़ से उखाड़ देने की शक्ति रखता है वह पर्वत का कुछ भी नहीं बिगाड़ पाता।
- मृच्छकटिकम् के प्रथम अङ्क में चारुदत्त दरिद्रता का स्मरण करते हुए कहता है-

  'अल्पक्लेशं मरणं, दारिद्र्यमनन्तकं दुःखम्'

  (मृच्छ.1.11)

  "मृत्यु कम कष्ट वाली होती है किन्तु दरिद्रता कभी न समाप्त होने वाला दुःख है।"

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (अङ्क-3)- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-151

12. अधोलिखित पद्यों में 'शाकुन्तल' के प्रसिद्ध चार पद्यों में किसकी गणना नहीं की जाती-

(A) पातुं न प्रथमं व्यवस्यति...
(B) शुश्रूषस्व गुरून् कुरु....
(C) यास्यत्यद्य शकुन्तलेति.....
(D) उद्गलितदर्भकवला मृग्यः....

व्याख्या-

संस्कृतवाङ्मय में नाटक सर्वश्रेष्ठ रचना है नाटकों में अभिज्ञानशाकुन्तलम् और अभिज्ञानशाकुन्तलम् का चतुर्थ अङ्क और उस चतुर्थ अङ्क में भी चार श्लोक सर्वश्रेष्ठ हैं जो निम्नवत् हैं-

श्लोकचतुष्टयम्

- पातुं न प्रथमं व्यवस्यति......(अभि.4/9)

  कालिदास विरचित इस पद्य में आश्रमवासियों के प्रकृति प्रेम की उत्कृष्ट कल्पना परिलक्षित हो रही है।
- शुश्रूषस्व गुरून् कुरु...... (अभि.4/18)

  इस श्लोक में कण्व का दिया हुआ यह उपदेश आज भी प्रत्येक उस कन्या के लिए हृदयंगम करने के योग्य है जो विवाहित होने के उपरान्त पहले पहल अपने पति के घर जाती हैं।
- यास्यत्यद्य शकुन्तलेति......(अभि.-4/6)

  इस श्लोक में पुत्री के वियोग से उत्पन्न होने वाले दुःखों का हृदयस्पर्शी वर्णन है।
- अस्मान् साधु विचिन्त्य.......(अभि.4/17)

  इस श्लोक में कण्व ने शार्ङ्गरव द्वारा दुष्यन्त को प्रासङ्गिक एवं औचित्यपरक संदेश भिजवाया है।
- उद्गलितदर्भकवला मृग्यः........(अभि.4/12)

  इस श्लोक में शकुन्तला के वियोग से मृग, मयूर एवं लताओं की दयनीय दशा का वर्णन है। विद्वानों ने इसे 'श्लोकचतुष्टयम्' के अन्तर्गत नहीं माना है।

  अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम्- कपिलदेव द्विवेदी, भू.पेज-68

13. 'न प्रभातरलं ज्योतिरुदेति वसुधातलात्' उक्ति है-

(A) नैषधीयचरित की **(B) मृच्छकटिक की**
(C) उत्तररामचरित की **(D) अभिज्ञानशाकुन्तल की**

व्याख्या-

A. नैषधीयचरितम्- श्रीहर्ष प्रणीत नैषधीयचरितम् के नवम सर्ग में राजा नल दमयन्ती के विषय में कहते हैं-
न मोघसङ्कल्पधराः किलामराः। (नैष.9/145)
'देव निष्फल संकल्प-धारण तो संशय नहीं करते।'

B. मृच्छकटिकम्- शूद्रक प्रणीत मृच्छकटिकम् के प्रथम अङ्क में विट शकार से कहता है-
आलाने गृह्यते हस्ती वाजी वल्गासु गृह्यते। (मृच्छ.1/50)
''हाथी खम्भे में बाँध कर वश मे लाया जाता है, घोड़े को लगाम लगाकर लोग उसे अपने वश में लाते हैं।''

C. उत्तररामचरितम्- भवभूति प्रणीत उत्तररामचरितम् के षष्ठ अङ्क में श्रीराम चन्द्रकेतु से कहते हैं कि-
न तेजस्तेजस्वी प्रसृतमपरेषां विषहते। (उत्तर.6/14)
''तेजस्वी पुरुष फैले हुए दूसरों के प्रताप को सहन नहीं करता है।''

D. अभिज्ञानशाकुन्तलम्- कालिदास विरचित अभिज्ञानशाकुन्तलम् के प्रथम अङ्क में राजा दुष्यन्त शकुन्तला के विषय में चिन्तन करते हुए कहते हैं-
'न प्रभातरलं ज्योतिरुदेति वसुधातलात्।' (अभि.1/26)
''कान्ति से देदीप्यमान तेज भूतल से उत्पन्न नहीं होता है।''

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/26)- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-73

14. 'एष क्रीडति कूपयन्त्रघटिकान्यायप्रसक्तो विधिः' सूक्ति ग्रहीत है-
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से (B) मृच्छकटिकम् से
(C) शिशुपालवधम् से (D) नलचम्पू से

व्याख्या-

A. कालिदास विरचित अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के षष्ठ अङ्क में सानुमती, मधुकरिका एवं परभृतिका को वसन्तोत्सव के लिए उत्साहित देखकर कहती है-
'उत्सवप्रियाः खलु मनुष्याः।' (अभि.अङ्क-6)
मनुष्य उत्सवप्रिय होते हैं।

B. शूद्रक द्वारा रचित मृच्छकटिकम् प्रकरण के दशम अङ्क में चारुदत्त शर्विलक से कहता है-
'एष क्रीडति कूपयन्त्रघटिकान्यायप्रसक्तो विधिः।' (मृच्छ.10/60)
कूपयन्त्र रहट की क्षुद्रघटिका के अनुसरण में रत यह विधि परस्पर विरोधियों की उन्नति अवनति के समष्टिरूप इस संसारगति का बोध कराते हुए खिलवाड़ करता है।

अतः विकल्प B सही है।

C. माघ प्रणीत शिशुपालवध के प्रथमसर्ग में ऋषि नारद श्रीकृष्ण से रावण के विषय में कहते हैं-
'सदाभिमानैकधना हि मानिनः।' (शिशुपालवध 1.67)
मानी लोगों का सदा एकमात्र अभिमान ही धन होता है।

D. त्रिविक्रमभट्ट द्वारा रचित नलचम्पू के प्रथम उच्छ्वास में राजकुमारी की विशेषता का वर्णन- 'युवजनोन्मादिनी यौवनश्रीः' (नलचम्पू 1.57) युवकों को उन्मत्त कर देने वाली कोई अपूर्व ही यौवनश्री सर्वोत्कृष्ट है।

स्रोत- मृच्छकटिकम् (10.60)- रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-742

15. 'मतिस्तु गौः पङ्कगतेव सीदति' कथन किसका है-
(A) विदूषक (B) चारुदत्त
(C) शकार (D) अधिकरणिक

व्याख्या-
शूद्रक प्रणीत मृच्छकटिकम् प्रकरण में निम्नलिखित पात्रों का कथन-

A. विदूषक-
युक्तं नेदम्, सदृशं नेदम्, यदार्यचारुदत्तस्य दरिद्रतया साम्प्रतं परपुरुषा गेहं प्रविशन्ति। (मृच्छ0 अङ्क-1)
यह उचित नहीं है, यह योग्य नहीं है कि आर्य चारुदत्त की निर्धनता के कारण अब उनके घर में दूसरे लोग प्रवेश करते हैं।

B. चारुदत्त-
आश्रमं वत्स! गन्तव्यं गृहीत्वाद्यैव मातरम्।
मा पुत्र! पितृदोषेण त्वमप्येवं गमिष्यसि।। (मृच्छ.10/32)
हे बेटा! माता को लेकर आज ही आश्रम में चले जाना। हे पुत्र! ऐसा न हो कि पिता के दोष के कारण तुम भी इसीप्रकार निरपराध चले जाओ (अर्थात् मारे जाओ)।

C. शकार-
'दुर्जनवचनमिव हृदयान्नापसरति।' (मृच्छ. अङ्क-8)
दुष्टजन के वचन के समान वह (वसन्तसेना) मेरे हृदय से नहीं निकलती।

D. अधिकरणिक-
'मतिस्तु गौः पङ्कगतेव सीदति।।' (मृच्छ.9/25)
मेरी बुद्धि कीचड़ में फँसी हुई गाय के समान खिन्न हो रही है।

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- मृच्छकटिकम् (9/25)- रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-609

16. ''मांसवृक्षैरियं मूर्खैर्भाराक्रान्ता वसुन्धरा'' किसका कथन है?
(A) चेट (B) शकार
(C) विट (D) विदूषक

व्याख्या-
शूद्रक प्रणीत मृच्छकटिकम् नामक प्रकरण में निम्नलिखित पात्रों का कथन द्रष्टव्य है-

A. चेट-
सुजनः खलु भृत्यानुकम्पकः स्वामी निर्धनकोऽपि शोभते।
पिशुनः पुनर्द्रव्यगर्वितो दुष्करः खलु परिणामदारुणः।।
(मृच्छ.3/1)
नौकरों पर दया करने वाला सज्जन मालिक निर्धन रहने पर भी शोभित होता है, किन्तु धन के मद में चूर दुष्ट मालिक दुःख से सेवा करने योग्य तथा अन्त में भयंकर होता है।

B. शकार-
'शूरो विक्रान्तः पाण्डवः? श्वेतकेतुः पुत्रो राधायाः? रावण इन्द्रपुत्रः'? (मृच्छ.1/47)
शूरवीर पाण्डुपुत्र 'श्वेतकेतु है! अथवा इन्द्रप्रदत्त 'राधा' का पुत्र 'रावण' है।

C. विट-
'मांसवृक्षैरियं मूर्खैर्भाराक्रान्ता वसुन्धरा'।। (मृच्छ.8/6)
मांस के पेड़ों जैसे मूर्खों के द्वारा यह पृथ्वी बोझिल हो रही है।
अतः विकल्प C सही है।

D. विदूषक-
चारित्रेण विहीने आढ्योऽपि च दुर्गतो भवति।। (मृच्छ.1.43)
चरित्रहीन धनवान् भी दुर्दशा को प्राप्त होता है।

स्रोत- मृच्छकटिकम् (8.6)- रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-470

17. संसार में दरिद्र के समान नहीं है-
(A) म्यानविहीन तलवार (B) शुष्क वृक्ष
(C) दन्तहीन सर्प (D) पंखविहीन पक्षी

व्याख्या-
महाकविशूद्रक विरचित मृच्छकटिक नामक प्रकरण के पञ्चम अङ्क में नायक चारुदत्त अपनी गरीबी से परेशान होकर कहता है कि-
''पक्षविकलश्च पक्षी, शुष्कश्च तरुः, सरश्च जलहीनम्।
सर्पश्चोद्धृतदंष्ट्रस्तुल्यं लोके दरिद्रश्च।।'' (5/41)
अर्थात् संसार में गरीबों की जिन्दगी पंखविहीन पक्षी, शुष्क वृक्ष, सूखा तालाब एवं दन्तहीन सर्प की तरह बेकाम है।
अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- मृच्छकटिकम् (5/41)- जगदीशचन्द्र मिश्र, पेज 277

18. 'उपासिके! त्वं किल चारुदत्तेन मारितासि' उपासिका का सम्बन्ध है-
(A) कौल धर्म से (B) बौद्ध धर्म से
(C) वैष्णव धर्म से (D) कापालिक मत से

व्याख्या-
शूद्रक प्रणीत मृच्छकटिकम् के दशम अङ्क में चारुदत्त को वसन्तसेना की हत्या के अपराध में फाँसी दिए जाने के अवसर पर बौद्धभिक्षु वसन्तसेना से कहता है-
'उपासिके! त्वं किल चारुदत्तेन मारितासि'
(मृच्छ.अङ्क.-10)
उपासिके! तुम चारुदत्त के द्वारा मारी गयी हो, इसीलिए चारुदत्त को मारने के लिए ले जाया जा रहा है।
उक्त कथन भिक्षु का है जो बौद्धधर्म से सम्बन्धित है।
नोट- कौलधर्म, वैष्णवधर्म, कपालिक मत, ये सब मृच्छकटिकम् में वर्णित नहीं है।
अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- मृच्छकटिकम्- रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-700

19. 'समन्तत उपस्थित एष राष्ट्रियबन्धः' राष्ट्रियबन्धः का अभिप्राय है-
(A) राष्ट्र का बन्धन (B) चारुदत्त का बन्धन
(C) राजा का बन्धन (D) रोहसेन का बन्धन

व्याख्या-
शकार- 'मृच्छकटिकम्' नामक प्रकरण के दशम अङ्क में शकार न्यायालय में दोषी पाये जाने पर घबड़ाकर एवं चारो ओर देखकर कहता है कि-
''समन्तत उपस्थित एष राष्ट्रियबन्धः।'' (मृच्छ.अङ्क-10)
चारो ओर से राजश्यालक (अर्थात् मेरा) शत्रुवर्ग उपस्थित है। 'तत्किमिदानीमशरणः शरणं व्रजामि।' तो आश्रयहीन मैं अब किसकी शरण में जाऊँ? अर्थात् अब मुझे राजा के बन्धन से कौन बचा सकता है।
अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- मृच्छकटिकम्- रमाशङ्कर त्रिपाठी, पेज-725

20. 'द्वयमिदमतीव लोके प्रियं नराणां सुहृच्च वनिता च' श्लोकांश किस ग्रन्थ का है-
(A) मेघदूतम् (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(C) मृच्छकटिकम् (D) रघुवंशम्

व्याख्या-

A. मेघदूतम्- कालिदास विरचित मेघदूतम् के उत्तरमेघ में यक्ष मेघ से कहता है कि-
प्रायः सर्वो भवति करुणावृत्तिरार्द्रान्तरात्मा (उ.मे.30)
कोमल हृदय वाले प्रायः सभी व्यक्ति करुणा से आर्द्रचित्त हुआ करते हैं।

B. अभिज्ञानशाकुन्तलम्- कालिदास विरचित अभिज्ञानशाकुन्तलम् के तृतीय अङ्क में अनसूया राजा दुष्यन्त से कहती है कि-
बहु वल्लभाः राजानः श्रूयन्ते (अभि.अङ्क 3)
राजाओं की बहुत सी स्त्रियाँ होती हैं।

C. मृच्छकटिकम्- शूद्रक प्रणीत मृच्छकटिकम् के चतुर्थ अङ्क में राजा पालक के द्वारा आर्यक को बन्दी बना लिए जाने पर शर्विलक मदनिका से कहता है-
द्वयमिदमतीव लोके प्रियं नराणां सुहृच्च वनिता च (मृच्छ. 4/25)
इस संसार में मित्र और स्त्री दोनों ही मनुष्यों को बहुत प्रिय हैं।

D. रघुवंशम्- कालिदास प्रणीत रघुवंश महाकाव्य के प्रथमसर्ग में राजा दिलीप के विषय मे निम्न कथन प्राप्त होता हैं-
'स्ववीर्यगुप्ता हि मनोः प्रसूतिः' (रघु.2.4)
मनु के वंश में उत्पन्न राजा अपनी रक्षा स्वयं कर लेता है।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- मृच्छकटिकम् (4/25)- रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-279

21. 'मृच्छकटिकम्' के प्रथम अङ्क का नाम है-
(A) अलङ्कारन्यास (B) सन्धिविच्छेद
(C) मदनिकाशर्विलक (D) द्यूतकरसंवाहक

व्याख्या-
शूद्रक प्रणीत मृच्छकटिकम् रूपक का एक भेद प्रकरण है जिसका नायक चारुदत्त है,इसमें दस अङ्क हैं जिनके नाम इस प्रकार हैं-

अङ्क	अङ्क का नाम	श्लोक संख्या
प्रथम	अलङ्कारन्यास	58
द्वितीय	द्यूतकरसंवाहक	20
तृतीय	सन्धिच्छेद	30
चतुर्थ	मदनिका-शर्विलक	33
पञ्चम	दुर्दिन	52
षष्ठ	प्रवहणविपर्यय	27
सप्तम	आर्यकापहरण	09
अष्टम	वसन्तसेनामोटन	47
नवम	व्यवहार (न्यायालय)	43
दशम	संहार (उपसंहार)	61
		380

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- संस्कृतगङ्गा-साहित्यम्- सर्वज्ञ भूषण, पेज-305

22. 'केनोडुपेन परलोकनदीं तरिष्ये' यह कथन किसका है-
(A) चारुदत्त (B) शकार
(C) चेट (D) विट

व्याख्या-

A. चारुदत्त- शूद्रक प्रणीत मृच्छकटिकम् प्रकरण में निम्न पात्रों का कथन-
निर्धनता सर्वापदामास्पदम्। (मृच्छकटिकम्-1/14)
चारुदत्त गरीबी के विषय में कहता है 'दरिद्रता सभी आपत्तियों की जड़ है।'

B. शकार-
अहो कुन्त्यास्तेन रामेण जातः अश्वत्थामा? धर्मपुत्रो जटायुः।
राम एवं कुन्ती के संयोग से उत्पन्न अश्वत्थामा है? अथवा धर्म का पुत्र जटायु है? (मृच्छ.1.47)

C. चेटी- मृच्छकटिकम् के चतुर्थ अङ्क मे चेटी वसन्तसेना से कहती है-
दिष्ट्या वर्धसे। आर्यचारुदत्तस्य सकाशाद् ब्राह्मण आगतः। (मृच्छ.अङ्क-4)
शुभ समाचार है। आर्य 'चारुदत्त' के पास से एक ब्राह्मण आया हुआ है।

D. विट- अष्टम अङ्क में शकार द्वारा विट से वसन्तसेना को मारने के लिए कहने पर विट शकार से कहता है-
केनोडुपेन परलोकनदीं तरिष्ये। (मृच्छ.8/23)
परलोक की नदी को किस नौका से पार करुँगा।

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- मृच्छकटिकम् (8/23)- रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-505

23. 'मृच्छकटिकम्' में विदूषक का नाम क्या है?
(A) माधव्य (B) वसन्तक
(C) मैत्रेय (D) गौतम

व्याख्या-
A. अभिज्ञानशाकुन्तलम् का विदूषक - माधव्य (माढव्य)
B. रत्नावली और स्वप्नवासवदत्तम् का विदूषक - वसन्तक
C. मृच्छकटिकम् का विदूषक - मैत्रेय
D. मालविकाग्निमित्रम् का विदूषक - गौतम

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- मृच्छकटिकम्-श्रीनिवास शास्त्री, पेज-37

24. 'अयं हि पातकी विप्रो न वध्यो मनुरब्रवीत्' यह कथन किसका है-
(A) वृद्धा (B) शकार
(C) अधिकरणिक (D) श्रेष्ठी कायस्थ

व्याख्या-

A. वृद्धा- शूद्रक विरचित मृच्छकटिकम् प्रकरण के नवम अङ्क में वसन्तसेना की माता चारुदत्त के विषय में कहती है-
तद्यदि व्यापादिता मम दारिका, व्यापादिता। जीवतु मे दीर्घायुः। (मृच्छ.अङ्क-9)
अर्थ- यदि मेरी बेटी मारी गयी तो मारी गई। यह आयुष्मान् चारुदत्त तो जिन्दा रहें।

B. शकार- मृच्छकटिकम् के नवम अङ्क में शकार चारुदत्त से कहता है-
लज्जया भीरुतया वा चारित्रमलीकं निगूहितुम्।। (मृच्छ.अङ्क-9)
स्वयं मारयित्वा अर्थकारणादिदानीं गूहति न तद्धि भट्टकः।।
अर्थ- धन के लोभ से किसी औरत को मारकर अब लज्जा से अथवा डर से अपने कुकर्म को छिपाना चाहते हो। पर राजा उसे नहीं छिपायेगा।

C. अधिकरणिक- मृच्छकटिकम् के नवम अङ्क में चारुदत्त की सजा के विषय में अधिकरणिक कहता है-
अयं हि पातकी विप्रो न वध्यो मनुरब्रवीत्। (मृच्छ 9.39)
अर्थ- मनु के अनुसार यह हत्यारा ब्राह्मण अबध्य है।
अतः विकल्प C सही है।

D. श्रेष्ठी कायस्थ- मृच्छकटिकम् के नवम अङ्क में श्रेष्ठी कायस्थ का कथन-
अप्रमत्तं कथय, स एव एष न वेत्ति। (मृच्छ.अङ्क-9)
अर्थ- सावधान होकर बतलाओ कि ये आभूषण वे हैं या नहीं।

स्रोत- मृच्छकटिकम्- रमाशङ्कर त्रिपाठी, पेज-466

25. 'जगत्प्रभोरप्रसहिष्णु वैष्णवं न चक्रमस्याक्रमताधि-कन्धरम्' श्लोक में ''वैष्णवं'' पद प्रयुक्त है-
(A) भगवान् कृष्ण (B) विष्णु उपासक
(C) जगत्पालक विष्णु (D) भस्मी विशेष

व्याख्या-
जगत्प्रभोरप्रसहिष्णु वैष्णवं न चक्रमस्याक्रमताधिकन्धरम्। (शिशु. 1/54)
'असह्य विष्णु के सुदर्शन चक्र ने लोक स्वामी इस रावण के कण्ठ में आक्रमण नहीं किया।'
➢ वैष्णवम्- 'विष्णु का यह (चक्र) इस अर्थ में विष्णु + अण्, आदि वृद्धि होकर = वैष्णवम् बना। वैष्णवं पद चक्रं का विशेषण है अतः यहाँ वैष्णवं पद का अर्थ 'विष्णु उपासक' के लिए प्रयुक्त है।
अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- शिशुपालवधम् (1.54)- जनार्दन गंगाधर रटाटे, पेज (123)

26. 'कुथेन नागेन्द्रमिवेन्द्रवाहनम्' शिशुपालवध में इस उपमान सूचक वाक्य से लक्षित है-
(A) श्रीकृष्ण (B) शिशुपाल
(C) नारद (D) हिरण्यकशिपु

व्याख्या-
महाकवि माघ शिशुपालवध के प्रथमसर्ग में निम्नलिखित पात्रों की उपमा देते हुए कहते हैं-
➢ **श्रीकृष्ण की उपमा-** समुद्र से
शिखाभिराश्लिष्ट इवाम्भसां निधिः। (शिशु.1/20)
श्रीकृष्ण वडवाग्नि की ज्वालाओं से व्याप्त समुद्र के समान सुशोभित हुए।
➢ **शिशुपाल की उपमा-** नट से
अवाप्य शैलूष इवैष भूमिकाम्। (शिशु.1/69)
रावण दूसरे जन्म में नट के समान शिशुपाल के रूप मे जन्म लिया।
➢ **नारद की उपमा-**
कुथेन नागेन्द्रमिवेन्द्रवाहनम्। (शिशु.1/8)
झूल से गजराज ऐरावत की तरह शोभित उस व्यक्ति को श्रीकृष्ण ने नारद समझा। **अतः विकल्प C सही है।**
➢ **हिरण्यकशिपु की उपमा-** यमिन्द्रशब्दार्थनिषूदनं हरेर्हिरण्यपूर्वं कशिपुं प्रचक्षते। (शिशु.1/42)
इन्द्र शब्द के परमैश्वर्य रूप अर्थ को नष्ट करने वाला जिसे हिरण्यकशिपु कहते हैं।

स्रोत-शिशुपालवधम् (1.8)- जनार्दन गंगाधर रटाटे, पेज-20

27. 'पिशङ्गमौञ्जीयुजमर्जुनच्छविं' किसे समझ लिया गया?
(A) श्रीकृष्ण को (B) नारद को
(C) अर्जुन को (D) बलराम को

व्याख्या-

- महाकवि माघ प्रणीत शिशुपालवधम् के प्रथमसर्ग में भगवान् श्रीकृष्ण के पुण्डरीकाक्ष नाम की सार्थकता का वर्णन किया गया है-
  विलोचने बिभ्रदधिश्रितश्रिणी स पुण्डरीकाक्ष इति स्फुटोऽभवत्। (शिशु.1.24)
  शोभा सम्पन्न नेत्रों को धारण करते हुए श्रीकृष्ण स्पष्टरूप से कमल-नयन हो गए।
- शिशुपालवधम् के प्रथमसर्ग में नारद की तुलना बलराम से करते हुए माघ कहते हैं-
  पिशङ्गमौञ्जीयुजमर्जुनच्छविं वसानमेणाजिनमञ्जनद्युतिः।
  सुवर्णसूत्राकलिताधराम्बरां विडम्बयन्तं शितिवाससस्तनुम्।। (शिशु.1.6)
  पीले रंग की मूँज की मेखला से युक्त, गौरवर्ण वाले, अंजन की सी कान्ति वाले कृष्णमृग चर्म को धारण किए हुए सोने की करधनी से बँधे हुए अधोवस्त्र वाले बलराम के शरीर का अनुकरण करते हुए उस व्यक्ति को श्रीकृष्ण ने नारद समझा।
- भारवि विरचित किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में द्रौपदी युधिष्ठिर से अर्जुन के विषय में कहती हैं-
  स वल्कवासांसि तवाधुनाऽहरन्
  करोति मन्युं न कथं धनञ्जयः। (किरात.1.35)
  वही धनञ्जय (अर्जुन) इस समय आप युधिष्ठिर के वल्कल वस्त्रों को लाता हुआ आपको क्रोध नहीं उत्पन्न करता है।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- शिशुपालवधम् (1.6) - जनार्दन गंगाधर रटाटे, पेज-16

28. शिशुपालवधम् के प्रथमसर्ग में प्रयुक्त छन्द है-
(A) मालिनी **(B) वंशस्थ**
(C) उपेन्द्रवज्रा **(D) शिखरिणी**

व्याख्या-

- महाकवि भारवि द्वारा किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में वंशस्थ छन्द का प्रयोग है सर्गान्त में छन्द परिवर्तन कर पुष्पिताग्रा तथा मालिनी छन्द का प्रयोग हुआ है-
  मालिनी छन्द का लक्षण- 'ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः।'
  मालिनी छन्द के प्रत्येक पाद में 15 वर्ण होते हैं। दो नगण, एक मगण, दो यगण। इसमें आठ तथा सात पर यति होती है।
  उदाहरण- विधिसमयनियोगाद्दीप्तिसंहारजिह्मं
  शिथिलवसुमगाधे मग्नमापत्पयोधौ।
  रिपुतिमिरमुदस्योदीयमानं दिनादौ दिनकृतमिवलक्ष्मीस्त्वां समभ्येतु भूयः।। (किरात.1.46)
- महाकवि माघ ने शिशुपालवधम् के प्रथमसर्ग में वंशस्थ छन्द का प्रयोग किया है एवं सर्गान्त में पुष्पिताग्रा तथा शार्दूलविक्रीडित छन्द प्रयुक्त है। वंशस्थ छन्द का लक्षण- 'जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ' वंशस्थ छन्द के प्रत्येक पाद में बारह वर्ण होते हैं। एक जगण, एक तगण, एक जगण, एक रगण।
  उदाहरण- ग्रहीतुमार्यान् परिचर्यया मुहुर्महानुभावा हि नितान्तमर्थिनः।। (शिशु.1.17)
- भवभूति विरचित उत्तररामचरित के प्रथम अङ्क में-
  एतान्यपश्यन् गुरवः पुराणाः, स्वान्येव तेजांसि तपोमयानि। (उत्तरराम.1.15)
  उपेन्द्रवज्रा का लक्षण- उपेन्द्रवज्रा जतजास्ततो गौ।
  उपेन्द्रवज्रा में ग्यारह वर्ण होते हैं एक जगण, एक तगण, एक जगण, दो गुरु।
- महाकवि कालिदास विरचित अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के प्रथम अङ्क के निम्न श्लोक में शिखरिणी छन्द का प्रयोग है।
  'चलापाङ्गां दृष्टिं स्पृशसि बहुशो वेपुथमतीम्' (अभि.1.24)
  शिखरिणी छन्द का लक्षण- रसैः रुद्रैश्छिन्ना यमनसभलागः शिखरिणी।
  शिखरिणी छन्द में प्रत्येक पाद में सत्रह वर्ण होते हैं एक यगण, एक मगण, एक नगण, एक सगण, एक भगण, एक लघु तथा एक गुरु।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- शिशुपालवधम् (1.1)- जनार्दन गंगाधर रटाटे, पेज-4

29. 'अकारणाविष्कृतवैरदारुणादसज्जनात्कस्य भयं न जायते' इस श्लोकांश के रचयिता हैं-
(A) भवभूति **(B) श्रीहर्ष**
(C) बाणभट्ट **(D) कालिदास**

व्याख्या-

A. भवभूति- उत्तररामचरितम् के तृतीय अङ्क में तमसा सीता से कहती हैं-
'शोकक्षोभे च हृदयं प्रलापैरेव धार्यते।' (उत्तर.3/29)
शोकजन्य क्षोभ में हृदय विलाप के द्वारा ही बचाया जाता है।

B. श्रीहर्ष- नारद के सूर्याधिक तेजस्वी होने के विषय में प्रकारान्तर से उक्ति-
कर्म कः स्वकृतमत्र न भुङ्क्ते। (नैषध.5/6)
''कौन अपने किये कर्म को नहीं भोगता''

C. **बाणभट्ट-** बाणभट्ट कादम्बरी के श्लोक में असज्जनों का वर्णन करते हुए कहते हैं-
'अकारणाविष्कृतवैरदारुणादसज्जनात्कस्य भयं न जायते।' (कादम्बरी श्लोक-5)
'निष्कारण वैरभाव करने वाले क्रूर दुष्ट पुरुष से किसको भय उत्पन्न नहीं होता है।'

D. **कालिदास-** कालिदास कृत अभिज्ञानशाकुन्तलम् के सप्तम अङ्क में राजा दुष्यन्त शकुन्तला से कहते हैं-
'स्रजमपि शिरस्यन्धः क्षिप्ता धुनोत्यहिशङ्कया।'
(अभि. शा. 7/24)
'अन्धा व्यक्ति सिर पर डाली हुई फूलों की माला को भी साँप समझकर फेंक देता है।'

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- कादम्बरीकथामुख (श्लोक-5)- समीर शर्मा, पेज-4

30. ''नास्ति जीवितादन्यदभिमततरमिह जगति सर्वजन्तूनाम्'' सूक्ति किस ग्रन्थ की है-
(A) मृच्छकटिकम् **(B) नलचम्पू**
(C) कादम्बरी **(D) अभिज्ञानशाकुन्तलम्**

व्याख्या-

A. **मृच्छकटिकम्-** शूद्रक विरचित मृच्छकटिकम् के प्रथम अङ्क में संवाहक वसन्तसेना से कहता है-
यः पूजयितुमपि न जानाति स पूजाविशेषमपि जानाति।।
(2/15)
'जो आदमी दूसरों का आदर भी करना नहीं जानता है, वह क्या आदर के विशेष तरीकों को जानता है।

B. **नलचम्पू-** नलचम्पू के प्रथम उच्छ्वास में त्रिविक्रमभट्ट विद्वानों के विषय में कहते हैं- सर्वं सहाः सूरयः (1/15) विद्वान् लोग सब सहन करने वाले होते हैं।

C. **कादम्बरी-** बाणभट्ट विरचित कादम्बरी के कथामुख में शुक अपनी दशा का वर्णन करते हुए राजा शूद्रक से कहता है-
नास्ति जीवितादन्यदभिमततरमिह जगति सर्वजन्तूनाम्
''संसार में सभी प्राणियों के लिए जीवन से बढ़कर अधिक प्रिय और कुछ भी नहीं है। **अतः विकल्प C सही है।**

D. **अभिज्ञानशाकुन्तलम्-** शार्ङ्गरव शारद्वत आदि से राजा दुष्यन्त द्वारा कण्व का कुशल पूँछने पर कहते हैं कि-
तमस्तपति घर्मांशौ कथमाविर्भविष्यति- (5/14)
सूर्य के तपते हुए होने पर अन्धकार कैसे प्रकट होगा।

स्रोत- कादम्बरी कथामुखम्- समीर शर्मा, पेज-138

31. कादम्बरी शब्द प्रसिद्ध है-
(A) भीरु स्त्री **(B) अप्सरा**
(C) मदिरा **(D) कदम्बधारिणी**

व्याख्या-

- 'कादम्बरी' संस्कृत के श्रेष्ठ गद्यकार बाण की रचना है। संस्कृत काव्यशास्त्रियों नें संस्कृत गद्यकाव्य के दो भेद किये हैं- 1. कथा 2. आख्यायिका।
- 'कादम्बरीमधिकृत्य कृता कथा' इस अर्थ में कादम्बरी शब्द से 'अधिकृत्य कृते ग्रन्थे' सूत्र से अण् प्रत्यय होता है। उस अण् का 'लुबाख्यायिकाभ्यो बहुलम्' वार्तिक से लोप हो जाने पर 'लुपि युक्तवद् व्यक्तिवचने' सूत्र से प्रकृतिवत् लिङ्ग और वचन करके कादम्बरी शब्द की सिद्धि की जाती है।
- कादम्बरी 'मदिरा' को कहते हैं। मदिरा के समान आह्लादक एवं मादक होने के कारण इस कथा का नाम कादम्बरी रखा गया।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- शुकनासोपदेश- तारिणीश झा, भू.पेज-12

32. 'गुह इवाप्रतिहतशक्तिः' 'गुह' का अभिप्राय है-
(A) गुहावासी **(B) कामदेव**
(C) कार्तिकेय **(D) गूद**

व्याख्या-
बाणभट्ट कृत कादम्बरी के कथामुख में शूद्रक वर्णन में राजा शूद्रक के लिए निम्न विशेषण का प्रयोग किया गया है-
''हर इव जितमन्मथः, गुह इवाप्रतिहतशक्तिः, कमलयोनिरिव विमानीकृतराजहंसमण्डलः''
शिव के समान जितेन्द्रिय (भगवान् शिव ने कामदेव को भस्म किया था तथा राजा ने काम को जीत लिया था), कार्तिकेय के समान (गुह इव) अप्रतिहत शक्ति वाला, कमलयोनि (ब्रह्मा) भूपतियों के दर्प को नष्ट करने वाला (कमलयोनि ब्रह्मा जी ने राजहंस को अपना विमान बनाया था और राजा ने श्रेष्ठ राजाओं के मान का मर्दन किया था।) यहाँ गुह का अभिप्राय कार्तिकेय है।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- कादम्बरीकथामुख-समीर शर्मा, पेज-16

33. 'स्फुरत्कलालापविलासकोमला' यह वाक्यांश किसके वैशिष्ट्य को प्रकट करता है-
(A) कादम्बरी के **(B) वासवदत्ता के**
(C) शकुन्तला के **(D) काव्यकथा के**

व्याख्या-

बाणभट्ट द्वारा रचित कादम्बरी कथामुख में कथा की विशेषता का प्रतिपादन करते हुए कहते हैं-

स्फुरत्कलालापविलासकोमला करोति रागं हृदि कौतुकाधिकम्। (कादम्बरी श्लोक-8)

'स्फुट एवं सुन्दर शब्द-रचना के माधुर्य के कारण रमणीय कथा लोगों के हृदय में कुतूहलपूर्ण रुचि उत्पन्न कर देती है।' बाणभट्टकृत 'कादम्बरी' की यह पंक्ति कथा काव्य के वैशिष्ट्य को द्योतित करती है।

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- कादम्बरी कथामुखम् (श्लोक-8)

34. नलचम्पू में कितने उच्छ्वास हैं-

(A) चार **(B) सात**
(C) आठ **(D) दस**

व्याख्या-

	विभाजन	ग्रन्थ	ग्रन्थकार
*	चार आनन	रसगङ्गाधर	पं.राजजगन्नाथ
*	चार प्रकाश	दशरूपक	धनञ्जय
*	चार जवनिका	कर्पूरमञ्जरी	राजशेखर
*	चार परिच्छेद	हितोपदेश	नारायणपण्डित
*	सात अङ्क	अभिज्ञानशाकुन्तलम्	कालिदास
*	सात अङ्क	उत्तररामचरितम्	भवभूति
*	सात काण्ड	वाल्मीकीयरामायणम्	वाल्मीकि
*	सात अङ्क	अनर्घराघवम्	मुरारि
*	**सात उच्छ्वास**	**नलचम्पू**	**त्रिविक्रमभट्ट**
*	आठ उच्छ्वास	हर्षचरितम्	बाणभट्ट
*	आठ तरङ्ग	राजतरङ्गिणी	कल्हण
*	दश अङ्क	मृच्छकटिकम्	शूद्रक
*	दश मयूख	चन्द्रालोक	जयदेव

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत-संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा ऋषि,पेज- 416

35. ''किं कवेस्तेन काव्येन किं काण्डेन धनुष्मतः। परस्य हृदये लग्नं न घूर्णयति यच्छिरः॥'' यह श्लोक किस ग्रन्थ का है-

(A) मृच्छकटिकम् **(B) उत्तररामचरितम्**
(C) नलचम्पूः **(D) नीतिशतकम्**

व्याख्या-

➢ **नलचम्पू-** नलचम्पू के प्रथम उच्छ्वास में त्रिविक्रमभट्ट काव्य की प्रशंसा करते हुए कहते हैं-
किं कवेस्तेन काव्येन किं काण्डेन धनुष्मतः।
परस्य हृदये लग्नं न घूर्णयति यच्छिरः।। (नल. 1/5)
कवि के उस काव्य से क्या लाभ? अथवा धनुर्धारी के उस बाण से क्या लाभ? जो दूसरों के हृदय में लगकर उसके सिर को हिला न दे (अर्थात् काव्यपक्ष में अद्भुत चमत्कार से सिर को झुमा न दे, बाणपक्ष में- पीड़ा से सिर को न भन्ना दे)

➢ **मृच्छकटिकम्-** शर्विलक मदनिका से कहता है कि-
निशायां नष्टचन्द्रायां दुर्लभो मार्गदर्शकः (मृच्छ.4/21)
जिस रात में चन्द्रमा डूब जाता है उसमें राह बताने वाला व्यक्ति दुर्लभ होता है।

➢ **उत्तररामचरितम्-** भवभूति विरचित उत्तररामचरितम् के चतुर्थ अङ्क में अरुन्धती का सीता के प्रति कथन है कि-
गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः (4/11)
गुणवानों में गुण ही पूजा के स्थान होते हैं, न कोई चिह्न-विशेष और न आयु।

➢ **नीतिशतकम्-** बलशालियों के स्वाभाविक गुणों का वर्णन करते हुए भर्तृहरि नीतिशतकम् के मानशौर्य पद्धति में कहते हैं-
न खलु वयस्तेजसो हेतुः (नीति. श्लोक-31)
'अवस्था तेज (पराक्रम) का कारण नहीं होती।'

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- नलचम्पू (1.5)- धुरन्धर पाण्डेय, पेज-5

36. 'दृश्यते न च यत्र स्त्री नवा पीनपयोधरा' श्लोकांश किस ग्रन्थ का है-

(A) मृच्छकटिकम् **(B) नलचम्पूः**
(C) शिशुपालवधम् **(D) शृङ्गारशतकम्**

व्याख्या-

A. मृच्छकटिकम्- शूद्रक प्रणीत मृच्छकटिकम् के तृतीय अङ्क में चारुदत्त विदूषक से कहता है कि-
शङ्कनीया हि लोकेऽस्मिन् निष्प्रतापादरिद्रता (मृच्छ.3/24)
इस संसार में तेजहीन दरिद्रता सन्देह का कारण होती है।

B. नलचम्पू- आर्यावर्त का वर्णन करते हुए त्रिविक्रमभट्ट कहते हैं कि- दृश्यते न च यत्र स्त्री नवा पीनपयोधरा (नलचम्पू1/26)

आर्यावर्त में नूतन तथा प्रचुरचलयुक्त बावली और वहाँ के किसानों के स्वामी केवल मेघ ही नही हैं अपितु नदी, नहर आदि से भी सिंचाई की जाती है।

C. शिशुपालवधम्- माघकृत शिशुपालवध के प्रथमसर्ग में श्रीकृष्ण नारदजी से कह रहे हैं कि-
'श्रेयसि केन तृप्यते।' (शिशु.1/29)
कल्याण के विषय में भला कौन तृप्त होता है।

D. शृङ्गारशतकम्- भर्तृहरि सुन्दर तरुणी के विषय में कहते हैं कि
'पुण्यैर्विना नहि भवन्ति समीहितार्थाः।' (शृङ्गार.18)
अभिलाषाएँ बिना पुण्यों के पूर्ण नहीं होती।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- नलचम्पू (1.26)- धुरन्धर पाण्डेय, पेज-34

37. कर्पूरमञ्जरी की भाषा है-
(A) अपभ्रंश **(B) पैशाची**
(C) शौरसेनी **(D) शिलालेखीय प्राकृत**

व्याख्या-

	भाषा	ग्रन्थ	ग्रन्थकार
A.	अपभ्रंश	विक्रमोर्वशीयम्	कालिदास
B.	पैशाची	बृहत्कथा	गुणाढ्य
C.	शौरसेनी	कर्पूरमञ्जरी	राजशेखर
D.	शिलालेखीय प्राकृत	मानसेरा शिलालेख	

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत-संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा ऋषि,पेज- 539

38. प्रवेशक और विष्कम्भक का उल्लेख नहीं है-
(A) मालतीमाधवम् **(B) रत्नावली**
(C) मुद्राराक्षसम् **(D) कर्पूरमञ्जरी**

व्याख्या-
आचार्य विश्वनाथ साहित्यदर्पण के षष्ठ परिच्छेद में सट्टक का लक्षण करते हैं-
सट्टकं प्राकृताशेषपाठ्यं स्यादप्रवेशकम्।
न च विष्कम्भकोऽप्यत्र प्रचुरश्चाद्भुतो रसः।
अङ्का जवनिकाख्याः स्युः स्यादन्यन्नाटिकासमम्।। (6/276)
जिसकी सम्पूर्ण रचना प्राकृत में ही हो, प्रवेशक और विष्कम्भक जहाँ न हों, प्रचुर अद्भुत रस हो उसे 'सट्टक' कहते हैं। इसके अङ्कों का नाम जवनिका होता है और सब इसमें नाटिका के सदृश होता है। जैसे- कर्पूरमञ्जरी।

* मालतीमाधवम्, रत्नावली, मुद्राराक्षस में प्रवेशक और विष्कम्भक का प्रयोग हुआ है। उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि कर्पूरमञ्जरी में प्रवेशक और विष्कम्भक का प्रयोग नहीं हुआ है। **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत- साहित्यदर्पण (6/276)- शालिग्राम शास्त्री, पेज -221

39. निम्नलिखित में कौन सा रूपक नहीं है-
(A) मालविकाग्निमित्रम् **(B) मुद्राराक्षसम्**
(C) शारिपुत्रप्रकरणम् **(D) कर्पूरमञ्जरी**

व्याख्या-

	ग्रन्थ	ग्रन्थकार	विभाजन/विधा
A.	मालविकाग्निमित्रम्	कालिदास	5 अङ्क/त्रोटक
B.	मुद्राराक्षसम्	विशाखदत्त	7 अङ्क/नाटक
C.	शारिपुत्रप्रकरणम्	अश्वघोष	9 अङ्क/प्रकरण
D.	कर्पूरमञ्जरी	राजशेखर	4 जवनिका/सट्टक

नोट- मालविकाग्निमित्रम्, मुद्राराक्षसम्, शारिपुत्रप्रकरणम् ये रूपक है तथा कर्पूरमञ्जरी सट्टक नामक उपरूपक है।

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत-संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा ऋषि,पेज-539

40. कालिदास किस रीति के कवि हैं?
(A) वैदर्भी **(B) गौड़ी**
(C) पाञ्चाली **(D) लाटी**

व्याख्या-

रीति	कवि/लेखक	(समय)
वैदर्भी	कालिदास	ई.पू. प्रथम शताब्दी
गौड़ी	भट्टनारायण	सातवीं/आठवीं शताब्दी
पाञ्चाली	बाणभट्ट	सातवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध

लाटी- लाटीरीति का ग्रन्थ सम्भवतः उपलब्ध नहीं होता

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज- 346

41. प्राचीनतम महाकाव्य कौन सा है-
(A) कुमारसम्भवम् **(B) किरातार्जुनीयम्**
(C) बुद्धचरितम् **(D) जानकीहरणम्**

व्याख्या-

	ग्रन्थ	ग्रन्थकार	समय
*	कुमारसम्भवम्	कालिदास	ई.पू. प्रथम शताब्दी
*	किरातार्जुनीयम्	भारवि	छठी शताब्दी ई. (560ई.-615ई. के बीच)
*	बुद्धचरितम्	अश्वघोष	प्रथम शताब्दी ई.
*	जानकीहरणम्	कुमारदास	छठी शताब्दी

नोट- उपर्युक्त कवियों में काल की दृष्टि से कालिदास सबसे प्राचीनतम कवि हैं। अतः 'कुमारसम्भवम्' सबसे प्राचीनतम महाकाव्य है।

- अश्वघोष कुषाण नरेश कनिष्क के समकालीन थे कनिष्क का समय सिल्वाँ लेवी, ओल्डनवर्ग, फर्गूसन, रैप्सन आदि पाश्चात्य विद्वान् एवं रमेशचन्द्र मजूमदार, भगवतशरण उपाध्याय, जयचन्द्र विद्यालङ्कार आदि भारतीय विद्वान् प्रथम शताब्दी में अश्वघोष का समय मानते हैं। वे 78 ई. से प्रचलित शक संवत् को भी कनिष्क के द्वारा ही आरम्भ किया गया बताते हैं अतः अश्वघोष का समय प्रथम शताब्दी ई. है।
- कालिदास और अश्वघोष के पौर्वापर्य को लेकर विवाद खड़ा है दोनों कवियों के भावों में कहीं-कहीं साम्य मिलता है यह कहना सम्भव है कि कालिदास की रचना शैली की लोकप्रियता को देखकर अश्वघोष ने उनका अनुकरण किया। कालिदास के प्रभाव का ही परिणाम था कि दार्शनिक अश्वघोष काव्यरचना में लगे और उसे धर्मप्रचार का साधन बनाया। **अतः विकल्प A सही है।**

स्रोत- संस्कृतगङ्गा साहित्यम्- सर्वज्ञभूषण, पेज-291

42. पाणिनि ने किस विश्वविद्यालय से शिक्षा ग्रहण की थी?
(A) नालन्दा (B) तक्षशिला
(C) अवन्तिकापुरी (D) वलभी

व्याख्या-

- **नालन्दा-** यह भारत का सबसे विख्यात एवं सबसे प्राचीन विश्वविद्यालय था। ह्वेनसांग के अनुसार इसका संस्थापक शक्रादित्य था। नरसिंह बालादित्य ने नालन्दा में 80 फीट ऊँची बुद्ध की प्रतिमा स्थापित करवाया था। नालन्दा में एक प्राचीनतम विशाल पुस्तकालय था। नालन्दा महायान शिक्षा का केन्द्र था।
- **तक्षशिला-** बौद्धकाल में सबसे विख्यात विश्वविद्यालय तक्षशिला था और अपने जन्मस्थान से समीपस्थ इस विद्यापीठ में सम्भवतः पाणिनि की शिक्षा-दीक्षा हुई थी। सम्भव है कि वयस्क होने पर पाणिनि ने पाटलिपुत्र (पटना) निवासी वर्ष उपाध्याय का शिष्यत्व भी स्वीकार किया था। त्रिकाण्ड-शेष कोष मे पाणिनि के नामों में 'शालातुरीय' शब्द पठित है। ''शालातुरो नाम ग्रामः।'' महाभाष्य में पाणिनि का नाम दाक्षीपुत्र दिया गया जिससे इनकी माता का नाम दाक्षी सिद्ध होता है। पाणिनि ने घोर तपस्या से शिवजी को प्रसन्न किया और उनके अनुग्रह से अइउण् आदि 14 माहेश्वर सूत्रों को प्राप्त करके 'अष्टाध्यायी' नामक व्याकरण ग्रन्थ की रचना की।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- संस्कृत शास्त्रों का इतिहास- बलदेव उपाध्याय, पेज-426

43. अधोलिखित रूपकों में कौन सा रूपक प्राचीनतम है-
(A) मृच्छकटिकम् (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(C) मुद्राराक्षसम् (D) शारिपुत्रप्रकरणम्

व्याख्या-

	ग्रन्थ	ग्रन्थकार	समय
A.	मृच्छकटिकम्	शूद्रक	तीसरी-चौथी शताब्दी ई.
B.	अभिज्ञानशाकुन्तलम्	कालिदास	ई.पू. प्रथम शताब्दी
C.	मुद्राराक्षसम्	विशाखदत्त	पाँचवी छठी शताब्दी ई.
D.	शारिपुत्रप्रकरणम्	अश्वघोष	प्रथम शताब्दी ई.

उपर्युक्त सभी कवियों में कालिदास पूर्ववर्ती कवि हैं। इसलिए अभिज्ञानशाकुन्तलम् सबसे प्राचीन रचना है।

नोट- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि मृच्छकटिकम् के लेखक शूद्रक तीसरी चौथी शताब्दी ई., मुद्राराक्षस के लेखक विशाखदत्त पाँचवी छठी शताब्दी ई., शारिपुत्रप्रकरण के लेखक अश्वघोष का समय प्रथम शताब्दी ई. है जबकि कालिदास प्रथम शताब्दी ई. पू. के कवि हैं इसलिए अभिज्ञानशाकुन्तलम् प्राचीनतम रूपक है।

अतः विकल्प B सही है।

44. त्रिविक्रमभट्ट की रचना है-
(A) रामायणचम्पू (B) मदालसाचम्पू
(C) यशस्तिलकचम्पू (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या-

A. रामायणचम्पू राजाभोज (भोजराज)- ग्यारहवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध

B. मदालसाचम्पू - त्रिविक्रमभट्ट दशवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध

C. यशस्तिलकचम्पू - सोमदेवसूरि दशवीं शताब्दी

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत-संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा ऋषि,पेज- 416

45. 'चण्डीशतक' किसकी रचना है-
(A) त्रिविक्रमभट्ट (B) बाणभट्ट
(C) भट्टनारायण (D) दण्डी

व्याख्या-

A. **त्रिविक्रमभट्ट** (दशवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध)- नलचम्पू, मदालसाचम्पू, इन्द्रराजप्रशस्ति आदि।

B. **बाणभट्ट** (सातवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध)- कादम्बरी, हर्षचरितम्, चण्डीशतक, पार्वतीपरिणय, मुकुटताडितक आदि।

C. **भट्टनारायण** (सातवीं-आठवीं शताब्दी)- वेणीसंहार,

D. **दण्डी** (छठी शताब्दी ई.)- दशकुमारचरितम्, काव्यादर्श, अवन्तिसुन्दरीकथा, छन्दोविचिति, कलापरिच्छेद, द्विसन्धानकाव्य आदि। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा ऋषि, पेज- 395

46. भाषा की उत्पत्ति का सिद्धान्त प्राचीनतम है-
(A) प्रतीक सिद्धान्त (B) संगीत सिद्धान्त
(C) रणन सिद्धान्त (D) दिव्योत्पत्ति सिद्धान्त

व्याख्या-

A. **प्रतीक सिद्धान्त-** प्रो. स्वीट ने प्रारम्भिक भाषा में ऐसे शब्दों की संख्या बहुत अधिक मानी है। भाषाविज्ञान में ऐसे शब्दों को 'नर्सरी' शब्द कहते हैं- ये माता-पिता, भाई-बहन आदि से सम्बद्ध होते हैं।

B. **संगीत सिद्धान्त-** इसको प्रेम सिद्धान्त भी कहा जाता है। डार्विन, स्पेन्सर और येस्पर्सन अंशतः इस सिद्धान्त को मानते हैं।
इस सिद्धान्त का कथन है कि मानव के संगीत से भाषा की उत्पत्ति हुई है।

C. **रणन सिद्धान्त-** इस सिद्धान्त को धातु सिद्धान्त, अनुकरण सिद्धान्त, अनुकरणमूलकतावाद, अनुकरणात्मक अनुकरण, डिंग-डांग-वाद आदि नामों से निर्दिष्ट किया गया है। इस मत के मूल प्रवर्तक 'प्लेटो' थे।

D. **दिव्योत्पत्ति सिद्धान्त-** यह सबसे प्राचीन मत है। इस मत का कथन है कि जिस प्रकार परमात्मा ने मानव सृष्टि की, उसीप्रकार मानव के लिए एक परिष्कृत भाषा दी। इस मत में प्रत्येक कार्य के मूल में दैवी शक्ति की सत्ता मानी जाती है। जर्मन विद्वान् सुसमिल्श ने भाषा की दैवी उत्पत्ति का समर्थन किया। **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत-भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र- कपिलदेव द्विवेदी,पेज- 66

47. प्रयत्नलाघव कारण है-
(A) ध्वनि का नियम (B) अर्थपरिवर्तन का
(C) भाषा के ह्रास का (D) ध्वनिपरिवर्तन का

व्याख्या-

A. **ध्वनि का नियम-** किसी भाषा विशेष में किसी काल विशेष में कुछ विशेष परिस्थितियों के अन्तर्गत हुए विशेष प्रकार के ध्वनि परिवर्तनों को ध्वनिनियम कहते हैं। कतिपय विद्वानों ने ध्वनि नियमों पर विचार किया है।
जैसे- 1. ग्रिमनियम 2. ग्रासमाननियम 3. वर्नरनियम 4. तालव्यनियम 5. मूर्धन्यनियम

B. **अर्थपरिवर्तन-** जिस प्रकार ध्वनियों में परिवर्तन होता है उसी प्रकार प्रत्येक भाषा के शब्दों के अर्थों में भी परिवर्तन होता रहता है। यह अर्थपरिवर्तन तीन प्रकार का होता है-
1. अर्थविस्तार 2. अर्थसंकोच 3. अर्थादेश

C. **भाषा के ह्रास (अर्थापकर्ष)-** अर्थपरिवर्तन के कारण कुछ शब्दों के अर्थों में अपकर्ष (हीनता) हुआ। **जैसे-** असुर-ऋग्वेद में देव वाचक था, संस्कृत में राक्षस हो गया।

D. **ध्वनिपरिवर्तन-** ध्वनि परिवर्तन के कारणों को दो भागों में विभक्त किया जा सकता है।
(क) आभ्यन्तर कारण (ख) बाह्य कारण।

(क) आभ्यन्तरकारण- 1. प्रयत्नलाघव या मुखसुख 2. लघूकरण की प्रवृत्ति 3. अनुकरण की अपूर्णता 4. अशिक्षा 5. शीघ्रभाषण 6. भावावेश 7. काव्यात्मकता 8. बलाघात 9. कृत्रिमता 10. भ्रामक व्युत्पत्ति

(ख) बाह्य कारण- 1. भौगोलिक प्रभाव 2. सामाजिक एवं राजनीतिक परिस्थितियाँ 3. कालप्रभाव या स्वाभाविक विकास 4. लिपिदोष 5. अन्यभाषाओं का प्रभाव 6. सादृश्य **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-227

48. 'नृत्तावसाने नटराजराजो ननाद ढक्कां नवपञ्चवारम्' भाषा की उत्पत्ति के सिद्धान्त का सूचक है-
(A) संकेत सिद्धान्त (B) आवेग सिद्धान्त
(C) दिव्योत्पत्ति सिद्धान्त (D) संगीत सिद्धान्त

व्याख्या-

	सिद्धान्त	प्रवर्तक विद्वान्	सिद्धान्त का सूचक तत्व
A.	संकेतसिद्धान्त -	रूसो -	प्रारम्भ में मनुष्य पशुओं आदि के तुल्य सिर हिलाना आदि।
B.	आवेगसिद्धान्त -	डार्विन -	हर्ष, शोक, विस्मय, भय, घृणा क्रोधादि भावावेश।
C.	दिव्योत्पत्तिसिद्धान्त -	सुसमिल्श -	नृत्तावसाने नटराजराजो ननाद ढक्कां नवपञ्चवारम्।

अतः विकल्प C सही है।

D. संगीतसिद्धान्त- डार्विन, स्पेन्सर, और येस्पर्सन गुनगुनाने की निरर्थक ध्वनियाँ धीरे-धीरे वस्तुओं से सम्बद्ध हो गईं।

स्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-66

49. संस्कृत भाषा है-

(A) अयोगात्मिका **(B) शिलष्टयोगात्मिका**

(C) प्रश्लिष्ट योगात्मिका **(D) अश्लिष्टयोगात्मिका**

व्याख्या-

- **भाषा**
  - अयोगात्मक (चीनी, तिब्बती, बर्मी)
  - योगात्मक
    - अश्लिष्ट
      - पूर्वयोगात्मक (काफिर)
      - मध्ययोगात्मक (सन्थाली)
      - अन्त्ययोगात्मक (तुर्की)
      - पूर्वान्तयोगात्मक (मफोर)
    - **श्लिष्ट**
      - **अन्तर्मुखी**
        - संयोगात्मक (अरबी)
        - वियोगात्मक (हिब्रू)
      - **बहिर्मुखी**
        - संयोगात्मकः (संस्कृत)
        - वियोगात्मक (हिन्दी)
    - प्रश्लिष्ट
      - पूर्णप्रश्लिष्ट (चेरोकी)
      - आंशिक प्रश्लिष्ट बास्क
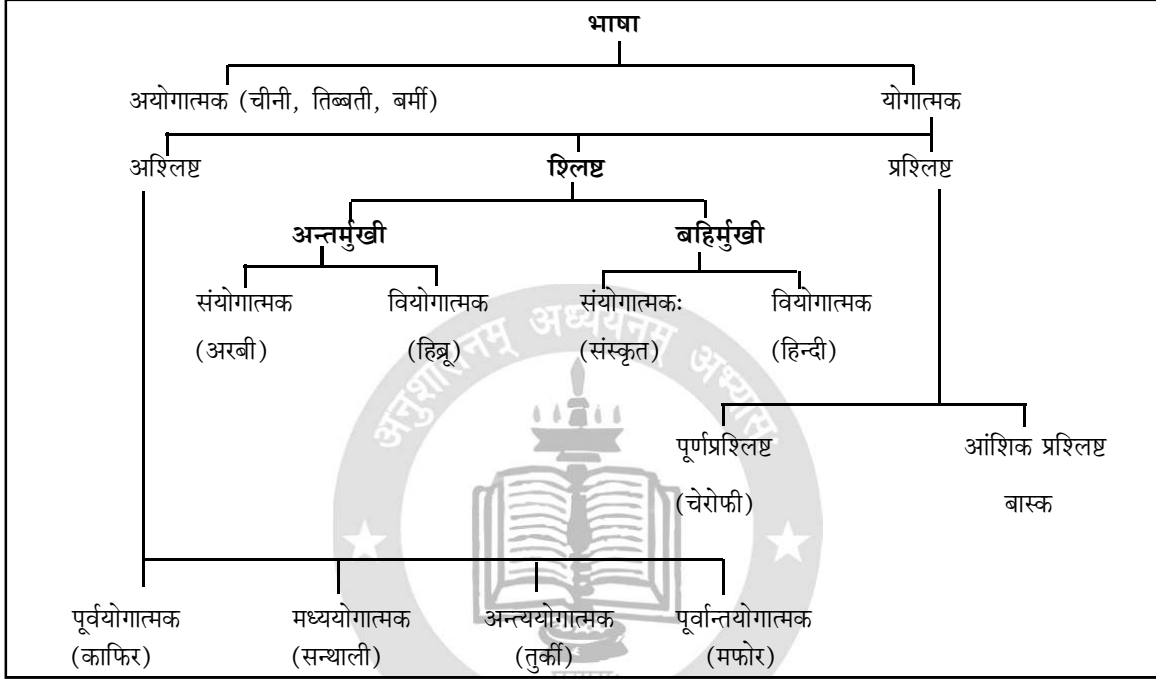
नोट- उपर्युक्त चार्ट से स्पष्ट है कि संस्कृतभाषा शिलष्टयोगात्मिका है।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत-भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-357

50. मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाएँ संगणित है-

(A) बर्मी **(B) तमिल**

(C) पालि **(D) ग्रीक**

व्याख्या-

A. **बर्मी**- बर्मी चीनी परिवार की भाषा है। इसके अन्तर्गत ये भाषाएँ हैं-
1. चीनी 2. थाई या स्यामी 3. ब्राह्मी या बर्मी 4. तिब्बती 5. अनामी।

B. **तमिल-** तमिल द्राविड परिवार की भाषा है-
1. तमिल 2. तेलगु 3. कन्नड 4. मलयालम्

C. **मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाएँ-** मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाओं को तीन भागों में बाँटा जाता है-
1. प्राचीन प्राकृत या पालि। 2. मध्यकालीन प्राकृत 3. परकालीन प्राकृत या अपभ्रंश। **अतः विकल्प C सही है।**

D. **ग्रीक-** इसका क्षेत्र ग्रीस, दक्षिणी अल्बानिया और युगोस्लाविया, बुल्गोरिया-टर्की-साइप्रस का कुछ भाग है। इसमें प्राचीनकाल में बहुत सी बोलियाँ थी, जिनमें एट्टिक और डोरिक मुख्य थीं।

स्रोत-भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-431

51. सिन्धु-हिन्दु में ध्वनि परिवर्तन का कारण है-

(A) लिपि दोष **(B) बलाघात**

(C) सादृश्य **(D) भौगोलिक**

व्याख्या-

A. **लिपि दोष-** विभिन्न लिपियों की अपूर्णता के कारण भी ध्वनि परिवर्तन देखा जाता है। अंग्रेजी और उर्दू के प्रभाव से ध्वनियों के उच्चारण में अन्तर हो गया।
जैसे- 1. अंग्रेजी में राम - रामा 2. प्रचार - परचार

B. **बलाघात-** ध्वनिपरिवर्तन में बलाघात का महत्त्वपूर्ण स्थान है। जिस ध्वनि पर बल दिया जाता है वह शेष रहती है, अन्य निर्बल ध्वनियाँ क्षीण हो जाती हैं।
जैसे- अभ्यन्तर - भीतर, उपरि - पर

C. **सादृश्य-** सादृश्य या समानता के आधार पर कुछ ध्वनियों में परिवर्तन हो जाता है।
जैसे- द्वादश के सादृश्य पर एकादश।

D. **भौगोलिक-** एक मूलभाषा से वैदिक संस्कृत अवेस्ता भाषायें निकली हैं। दोनों में भौगोलिक भेद से ध्वनियों में अन्तर हो गया है। संस्कृत का स् अवेस्ता में ह् हो जाता है।
जैसे- सप्त-हप्त, सिन्धु-हिन्दु, असि-अहि है।

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र- कपिलदेव द्विवेदी,पेज- 97

52. 'त्रिविधं प्रमाणमिष्टम्' कथन प्राप्त होता है-
(A) अर्थसंग्रह **(B) तर्कसंग्रह**
(C) सांख्यकारिका **(D) तर्कभाषा**

व्याख्या-

➢ सांख्यकारिकाकार ईश्वरकृष्ण सांख्यकारिका में तीन प्रमाण मानते हुए उसको परिभाषित करते हैं-
दृष्टमनुमानमाप्तवचनं च सर्वप्रमाणसिद्धत्वात्।
त्रिविधं प्रमाणमिष्टं प्रमेयसिद्धिः प्रमाणाद्धि॥
(सां.का.4)
सभी प्रमाणों का अन्तर्भाव होने से प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, तीन प्रकार के प्रमाण हैं, क्योंकि प्रमाणों से ही प्रमेयसिद्धि होती है। **अतः विकल्प C सही है।**

➢ अन्नम्भट्ट विरचित तर्कसंग्रह में सात पदार्थों का वर्णन है- **'द्रव्यगुणकर्मसामान्याविशेषसमवायाभावाः सप्तपदार्थाः'** (तर्कसंग्रह)
अर्थात् द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय, अभाव ये सात पदार्थ हैं।

➢ लौगाक्षिभास्कर कृत अर्थसंग्रह में धर्म का लक्षण निम्नवत् है- **'वेदप्रतिपाद्यः प्रयोजनवदर्थो धर्मः'**
अर्थात् वेद द्वारा प्रतिपादित प्रयोजन से युक्त अर्थ धर्म है।

➢ केशवमिश्र प्रणीत तर्कभाषा में चार प्रमाणों का वर्णन है- **'प्रत्यक्षानुमानोपमानशब्दाः प्रमाणानि'** (न्यायसूत्र1.1.6)
प्रत्यक्ष प्रमाण, अनुमान प्रमाण, उपमान प्रमाण, शब्द प्रमाण।

स्रोत- सांख्यकारिका (का.-4) राकेश शास्त्री, पेज-12

53. तमोगुण का प्रयोजन है-
(A) प्रवृत्ति **(B) प्रकाश**
(C) नियमन **(D) विषाद**

व्याख्या-

सांख्यकारिकाकार ईश्वरकृष्ण सांख्यकारिका में गुणों का वर्णन करते हैं-
प्रीत्यप्रीतिविषादात्मकाः प्रकाशप्रवृत्तिनियमार्थाः।
अन्योन्याभिभवाश्रयाजननमिथुनवृत्तयश्च गुणाः॥
(सां.का.-12)

गुण	कार्य/प्रयोजन	स्वरूप
सत्त्व	प्रकाश करना	सुखात्मक
रजस्	प्रवर्तन करना	दुःखात्मक
तमस्	नियमन करना	मोहात्मक

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- सांख्यकारिका (का.-12)- राकेश शास्त्री, पेज-42

54. सूक्ष्मशरीर कितने तत्त्वों का समुदाय है?
(A) 16 **(B) 18**
(C) 17 **(D) 24**

व्याख्या-

➢ सांख्यदर्शन के अनुसार सूक्ष्मशरीर का निर्माण 18 तत्त्वों से हुआ है, जिसे सांख्यकारिकाकार ईश्वरकृष्ण परिभाषित करते हैं-
पूर्वोत्पन्नमसक्तं नियतं महदादिसूक्ष्मपर्यन्तम्।
संसरति निरुपभोगं भावैरधिवासितं लिङ्गम्।।
(सां.का.-40)
सृष्टि के प्रारम्भ में उत्पन्न, सब जगह गति करने वाला, प्रलयकाल में भी स्थायी रहने वाला, महत् आदि से लेकर सूक्ष्मतन्मात्रा पर्यन्त अठारह तत्त्वों से निर्मित, भोगरहित, भावों से युक्त सूक्ष्मशरीर संसार में गमनागमन करता है। अठारह तत्त्व हैं- एकादश इन्द्रियाँ, पञ्चतन्मात्रा, महत्, अहंकार।

➢ न्यायदर्शन का प्रकरणग्रन्थ आचार्य केशवमिश्र प्रणीत तर्कभाषा में सोलह पदार्थों का वर्णन है- प्रमाण-प्रमेय-संशय-प्रयोजन-दृष्टान्त-सिद्धान्त-अवयव-तर्क-निर्णय-वाद-जल्प-वितण्डा-हेत्वाभास-च्छल-जाति-निग्रहस्थान।

➢ वैशेषिकदर्शन के प्रकरणग्रन्थ अन्नम्भट्ट विरचित तर्कसङ्ग्रह में चौबीस गुणों का विवेचन है- रूप, रस, गन्ध, स्पर्श,संख्या, परिमाण, पृथक्त्व, संयोग, विभाग, परत्व, अपरत्व, गुरुत्व,

द्रवत्व, स्नेह, शब्द, बुद्धि, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, धर्म, अधर्म, संस्कार।

➢ वेदान्तसार के अनुसार सूक्ष्मशरीर का निर्माण सत्रह अवयवों से हुआ है-
'सूक्ष्मशरीराणि सप्तदशावयवानि लिङ्गशरीराणि'
सत्रह अवयव हैं- पाँच ज्ञानेन्द्रिय, पाँच कर्मेन्द्रिय, पञ्चवायु, बुद्धि, मन।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- सांख्यकारिका (का.40)- राकेश शास्त्री, पेज-117

55. सांख्यकारिका के अनुसार अव्यक्त है-
(A) असामान्य (B) अनाश्रितम्
(C) अप्रसवधर्मी (D) अविषयम्

व्याख्या-

सांख्यकारिकाकार ईश्वरकृष्ण सांख्यकारिका में व्यक्त तथा अव्यक्त (प्रकृति) को परिभाषित करते हुए कहते हैं-
हेतुमदनित्यमव्यापि सक्रियमनेकमाश्रितं लिङ्गम्।
सावयवं परतन्त्रम् व्यक्तं, विपरीतमव्यक्तम्।।
(सां.का.-10)

व्यक्त	**-**	**अव्यक्त (प्रकृति)**
हेतुमत्	-	अहेतुमत् (कारणरहित)
अनित्य	-	नित्य
अव्यापी	-	व्यापी
सक्रिय	-	निष्क्रिय
अनेक	-	एक
आश्रित	-	अनाश्रित
लिङ्गसहित	-	लिङ्गरहित
अवयवसहित	-	अवयवरहित
परतन्त्र	-	स्वतन्त्र

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- सांख्यकारिका (का.-10)- राकेश शास्त्री, पेज-32

56. सांख्यमतानुसार पुरुष है-
(A) प्रकृति (B) प्रकृति और विकृति
(C) न प्रकृति न विकृति (D) विकृति

व्याख्या-

मूलप्रकृतिरविकृतिर्महदाद्याः प्रकृतिविकृतयः सप्त।
षोडशकस्तु विकारो न प्रकृतिर्न विकृतिः पुरुषः।।सां.का.3।।
सांख्यशास्त्र में उल्लिखित 25 तत्त्वों को चार भागों में विभाजित किया गया है-

1. प्रकृति (अविकृति) = 1 तत्त्व (मूलप्रकृति)
2. प्रकृति एवं विकृति = 7 तत्त्व (महत् या बुद्धितत्त्व, अहंकार, पञ्चतन्मात्राएँ)
3. केवल विकृति = 16 तत्त्व (पञ्चज्ञानेन्द्रियाँ, पञ्चकर्मेन्द्रियाँ, मन, पञ्चमहाभूत)
4. न प्रकृति न विकृति = 1 तत्त्व (पुरुष)

कुल = 25 तत्त्व

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- सांख्यकारिका (कारिका-3) राकेश शास्त्री, पेज-3

57. सांख्यकारिका के अनुसार रजोगुण होता है-
(A) वरणकम् (B) उपष्टम्भकम्
(C) आच्छादकम् (D) प्रकाशकम्

व्याख्या-

ईश्वरकृष्ण सांख्यकारिका में गुणों का लक्षण करते हैं-
सत्त्वं लघु प्रकाशकमिष्टमुपष्टम्भकं चलं च रजः।
गुरु वरणकमेव तमः, प्रदीपवच्चार्थतो वृत्तिः।।सां.का.13।।
अर्थात् सत्त्वगुण हल्का अतएव प्रकाशक, रजोगुण प्रवृत्तिशील (चञ्चल) अतएव उत्तेजक एवं तमोगुण भारी अतएव अवरोधक (नियामक) माना गया है। एक ही प्रयोजन की सिद्धि के लिए तीनों ही गुण प्रदीप के समान मिलकर कार्य करते हैं।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- सांख्यकारिका (का.-13)- आद्याप्रसाद मिश्र, पेज 184

58. तर्कभाषा में प्रमेयो की संख्या है-
(A) बारह (B) सोलह
(C) पाँच (D) चार

व्याख्या-

A. तर्कभाषा में प्रमेयों की संख्या बारह है-
1. आत्मा 2. शरीर 3. इन्द्रिय 4. अर्थ 5. बुद्धि 6. मन 7. प्रवृत्ति 8. दोष 9. प्रेत्यभाव 10. फल 11. दुःख 12. अपवर्ग

अतः विकल्प A सही है।

B. तर्कभाषा में सोलह पदार्थों का वर्णन है-
1. प्रमाण 2. प्रमेय 3. संशय 4. प्रयोजन 5. दृष्टान्त 6. सिद्धान्त 7. अवयव 8. तर्क 9. निर्णय 10. वाद 11. जल्प 12. वितण्डा 13. हेत्वाभास 14. छल 15. जाति 16. निग्रहस्थान

C. तर्कभाषा में हेत्वाभासों की संख्या पाँच है-
1. असिद्ध 2. विरुद्ध 3. अनैकान्तिक 4. प्रकरणसम 5. कालात्ययापदिष्ट

D. तर्कभाषा में चार प्रमाणों का वर्णन है-
1. प्रत्यक्ष 2. अनुमान 3. उपमान 4. शब्द

स्रोत- तर्कभाषा- गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज-274

59. पट का निमित्त कारण होता है-
(A) तन्तु **(B) तुरी**
(C) तन्तुसंयोग **(D) तन्तुरूप**

व्याख्या-
आचार्य केशवमिश्र तर्कभाषा में तीन प्रकार के कारण बताते हैं- समवायिकारण, असमवायिकारण, निमित्तकारण।

➢ **तन्तु-** 'यत्समवेतं कार्यमुत्पद्यते तत्समवायिकारणम्। यथा-तन्तवः पटस्य।' जिसमें समवाय-सम्बन्ध से रहकर कार्य उत्पन्न होता है उसे समवायि कारण कहते हैं जैसे- तन्तु पट के प्रति समवायिकारण है।

➢ **तन्तु संयोग-**
'कार्येण कारणेन वा सहैकस्मिन्नर्थे समवेतत्वे सति यत् कारणम् असमवायिकारणम्। यथा- तन्तुसंयोगः पटस्य।'
कार्य अथवा कारण के साथ एक पदार्थ में समवाय सम्बन्ध से वर्तमान रहता हुआ जो कारण है, वह असमवायिकारण है। जैसे - तन्तुओं का संयोग पट का असमवायिकारण है। तो उसीप्रकार तन्तुरूप पटरूप का असमवायिकारण है।

➢ **तुरी-** 'तदुभयभिन्नं कारण निमित्तकारणम्, यथा तुरीवेमादिकं पटस्य।' समवायिकारण और असमवायिकारण इन दोनों कारणों से जो भिन्न कारण है, उसे निमित्त कारण कहते हैं।
जैसे कि कपड़ा बनाने में सहायक यन्त्र तुरी, वेमा आदि पट के प्रति निमित्तकारण हैं।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- तर्कसंग्रह- गोविन्दाचार्य, पेज-149

60. तर्कभाषा के अनुसार गुण नहीं है-
(A) स्नेह **(B) दिक्**
(C) द्वेष **(D) बुद्धि**

व्याख्या-

➢ केशवमिश्रकृत तर्कभाषा के अनुसार 24 गुण हैं-
1. रूप 2. रस 3. गन्ध 4. स्पर्श 5. संख्या 6. परिमाण 7. पृथक्त्व 8. संयोग 9. विभाग 10. परत्व 11. अपरत्व 12. गुरुत्व 13. द्रव्यत्व 14. स्नेह 15. शब्द 16. बुद्धि 17. सुख 18. दुःख 19. इच्छा 20. द्वेष 21. प्रयत्न 22. धर्म 23. अधर्म 24. संस्कार

➢ तर्कभाषा के अनुसार द्रव्यों की संख्या 9 है-
1. पृथ्वी 2. जल 3. तेज 4. वायु 5. आकाश 6. काल 7. दिक् 8. आत्मा 9. मन

नोट- उपर्युक्त विकल्पों में स्नेह, द्वेष, बुद्धि ये तीनों गुण के उदाहरण हैं जबकि दिक् द्रव्य का उदाहरण है।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- तर्कभाषा- गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज-307

61. 'गुडाकेश' कौन कहा जाता है?
(A) संजय **(B) धृतराष्ट्र**
(C) श्रीकृष्ण **(D) अर्जुन**

व्याख्या-
श्रीमद्भगवद्गीता के प्रथम अध्याय में भगवान् श्रीकृष्ण अर्जुन को सम्बोधित करते हुए कहते हैं-
एवमुक्तो हृषीकेशो गुडाकेशेन भारत।
सेनयोरुभयोर्मध्ये स्थापयित्वा रथोत्तमम्।। (1/24)
भीष्मद्रोणप्रमुखतः सर्वेषां च महीक्षिताम्।
उवाच पार्थ पश्यैतान्समवेतान्कुरूनिति।।
अर्जुन द्वारा इसप्रकार कहे हुए भगवान् श्रीकृष्ण ने दोनों सेनाओं के बीच में भीष्म और द्रोणाचार्य के सामने तथा सम्पूर्ण राजाओं के सामने उत्तम रथ को खड़ा करके इस प्रकार कहा कि हे पार्थ! युद्ध के लिए जुटे हुए इन कौरवों को देखो। इसलिए 'गुडाकेश' अर्जुन को कहा जाता है।

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- गीता 1/24

62. 'स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः' यह वचन किस ग्रन्थ का है-
(A) गीता
(B) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(C) नीतिशतकम्
(D) वेदान्तसारः

व्याख्या-

A. गीता- श्रीमद्भगवद्गीता के तृतीय अध्याय में भगवान् श्रीकृष्ण नियत कर्मों के प्रति अर्जुन से कहते हैं-
श्रेयान् स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात्।
स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः।। (गीता3.35)
अपने नियतकर्मों को दोषपूर्ण ढंग से सम्पन्न करना भी अन्य के कर्मों को भलीभाँति करने से श्रेयस्कर है। स्वीय कर्मों को करते हुए मरना पराये कर्मों में प्रवृत्त होने की अपेक्षा श्रेष्ठतर है, क्योंकि अन्य किसी के मार्ग का अनुसरण भयावह होता है।

B. अभिज्ञानशाकुन्तलम्- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के प्रथम अङ्क में राजा दुष्यन्त शकुन्तला के सौन्दर्य के विषय में कहते हैं-
'किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्' (अभि.1.20)
अर्थात् सुन्दर आकृतियों के लिए क्या वस्तु अलङ्कार नहीं होती है।

C. नीतिशतकम्- भर्तृहरि दुर्जनपद्धति में सेवकों के विषय में कहते हैं-
'सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः' (नीति.श्लोक-48)
सेवाधर्म बड़ा ही विकट है, जो योगियों को भी अगम्य है, दुर्बोध है।

D. वेदान्तसार-
''भिद्यते हृदयग्रन्थिच्छिद्यन्ते सर्वसंशयाः।''
उस कारण कार्य रूप ब्रह्म का साक्षात्कार होने पर साधक की हृदय-ग्रन्थि खुल जाती है, सम्पूर्ण सन्देह दूर हो जाते हैं।

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- गीता (3.35)

63. 'बुद्धिनाशात्प्रणश्यति' किस ग्रन्थ का सन्दर्भ है-
(A) वेद **(B) वायुपुराण**
(C) गीता **(D) कादम्बरी**

व्याख्या-

A. वेद- तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।
(यजुर्वेद 34/1-6 शिवसंकल्प सूक्त)
मेरा वह मन शुभ संकल्पों वाला हो।

B. वायुपुराण-
लोकेषु सर्वभूतानां तन्न कार्यं विजानता।। (40/56)
ज्ञानियों को लोक के प्राणियों में स्थित इन विभिन्न स्वभावों की समीक्षा नहीं करनी चाहिए।

C. गीता- श्रीमद्भगवद्गीता के द्वितीय अध्याय में भगवान् श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं-
क्रोधाद्भवति सम्मोहः सम्मोहात्स्मृतिविभ्रमः। (2/63)
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति।।
क्रोध से अत्यन्त मूढ़भाव उत्पन्न हो जाता है, मूढ़भाव से स्मृति में भ्रम हो जाता है, स्मृति में भ्रम हो जाने से बुद्धि अर्थात् ज्ञानशक्ति का नाश हो जाता है और बुद्धि का नाश हो जाने से यह पुरुष अपनी स्थिति से गिर जाता है।

D. कादम्बरी- कादम्बरी के शुकनासोपदेश में शुकनास चन्द्रापीड को उपदेश देते हुए कहता है- 'अतिगहनं तमो यौवनप्रभवम्' यौवन से उत्पन्न अविवेक रूपी अन्धकार अत्यन्त सघन होता है।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- गीता (2/63)

64. भगवद्गीता को अध्यायों के अन्त में किस शास्त्र के नाम से जाना जाता है-
(A) आगमशास्त्र **(B) औषधशास्त्र**
(C) तन्त्रशास्त्र **(D) योगशास्त्र**

व्याख्या-

A. आगमशास्त्र- सभी वेदों को आगमशास्त्र के नाम से भी जाना जाता है।

B. औषधशास्त्र- यजुर्वेद को औषधशास्त्र के नाम से जाना जाता है।

C. तन्त्रशास्त्र- अथर्ववेद को तन्त्रशास्त्र भी कहते हैं।

D. योगशास्त्र- ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादेऽर्जुनविषादयोगो नाम प्रथमोऽध्यायः।
इसप्रकार ॐ, तत् , सत् - इन भगवन्नामों के उच्चारणपूर्वक ब्रह्मविद्या और योगशास्त्रमय श्रीमद्भगवद्गीतोपनिषद्रूप श्रीकृष्णार्जुनसंवाद में 'अर्जुनविषादयोग' नामक पहला अध्याय पूर्ण हुआ।।
अतः इसप्रकार सभी अध्यायों के अन्त में योगशास्त्र की चर्चा हुई है।

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- गीता- (1.47)

65. 'माण्डूक्यकारिका' किसकी रचना है?
(A) धर्मकीर्ति **(B) गौड़पाद**
(C) प्रशस्तपाद **(D) कुमारदास**

व्याख्या-

➢ **गौड़पादाचार्य-** इन्हें अद्वैतवेदान्त का प्रथम प्रवर्तक एवं प्रधान आचार्य माना गया है। इन्होंने माण्डूक्योपनिषद् पर प्रसिद्ध कृति 'माण्डूक्यकारिका' की रचना की।

अतः विकल्प B सही है।

जिस पर शङ्कराचार्य ने भाष्य की रचना की एवं इसी कारिका पर 'मिताक्षरा' नामक टीका भी मिलती है। इनका दूसरा ग्रन्थ 'उत्तरगीताभाष्य' मिलता है। उत्तरगीता महाभारत का ही एक अंश है।

स्रोत- वेदान्तसार- राकेश शास्त्री, पेज-24

66. शङ्कराचार्य के गुरूणां गुरुः हैं-
(A) गोविन्दपाद **(B) गौड़पाद**
(C) बादरायण **(D) वाचस्पति मिश्र**

व्याख्या-

आचार्य गोविन्दपाद आचार्य गौड़पाद के शिष्य तथा शङ्कराचार्य के गुरू थे, अर्थात् शङ्कराचार्य के गुरु गोविन्दपाद तथा गोविन्दपाद के गुरु गौड़पाद थे। इसलिए गौड़पाद शङ्कराचार्य के गुरुणां गुरुः हुए।

शङ्कराचार्य → गोविन्दपाद → गौड़पाद

अतः विकल्प B सही है।

➢ **आचार्य बादरायण-** यह वेदान्तदर्शन के प्रथम आचार्य माने गये हैं इनका समय 400 ई.पू. के लगभग निर्धारित किया गया है। इन्होंने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'ब्रह्मसूत्र' की रचना की इसमें चार अध्याय, सोलहपाद एक सौ बानवे अधिकरणों में पाँच सौ पचपन सूत्र हैं।

➢ **वाचस्पतिमिश्र-** इनका जन्मस्थान मिथिला माना जाता है। वाचस्पति मिश्र ने छहों दर्शनों पर अपनी टीकाएँ लिखीं।

	ग्रन्थ	टीकाएँ
1.	वेदान्त	भामती
2.	ब्रह्मसिद्धि	ब्रह्मतत्त्वसमीक्षा
3.	सांख्यकारिका	तत्त्वकौमुदी
4.	योगदर्शन	तत्त्ववैशारदी
5.	न्यायदर्शन	न्यायवार्तिकतात्पर्य
6.	पूर्वमीमांसा	न्यायसूचीनिबन्ध

स्रोत- वेदान्तसार- राकेश शास्त्री, पेज-25

67. मम्मट के मत में 'मध्यमकाव्य' है-
(A) शब्दचित्रम् **(B) ध्वनिः**
(C) गुणीभूतव्यङ्ग्यम् **(D) वाच्यचित्रम्**

व्याख्या-

आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश के प्रथमोल्लास में काव्य के भेदों का वर्णन करते हुए तीन प्रकार के काव्य मानते हैं-

➢ **ध्वनिकाव्य (उत्तमकाव्य)-**

'इदमुत्तममतिशयिनि व्यङ्ग्ये वाच्याद् ध्वनिर्बुधैः कथितः'

(का.प्र.सूत्र-2)

वाच्यार्थ की अपेक्षा व्यङ्ग्यार्थ के बढ़ जाने पर अर्थात् अधिक चमत्कारजनक होने पर काव्य उत्तम होता है विद्वानों ने इसे ध्वनि काव्य कहा है।

उदा. 'निःशेषच्युतचन्दनं स्तनतटं....न पुनस्तस्याधमस्यान्तिकम्'

➢ **मध्यमकाव्य-**

'अतादृशि गुणीभूतव्यङ्ग्यं व्यङ्ग्ये तु मध्यमम्'

(का.प्र.सूत्र-3)

व्यङ्ग्य अर्थ के वाच्यार्थ की अपेक्षा विशेषचमत्कारजनक न होने पर काव्य मध्यमकाव्य होता है इसे ही गुणीभूतव्यङ्ग्य काव्य कहा जाता है।

उदाहरण-

ग्राम तरुणं तरुण्या नववञ्जुलमञ्जरीसनाथकरम्।
पश्यन्त्या भवति मुहुर्नितरां मलिनामुखच्छाया।।

➢ **अधमकाव्य-**

'शब्दचित्रं वाच्यचित्रमव्यङ्ग्यं त्ववरं स्मृतम्' (का.प्र.सूत्र-4)

जिसमें व्यङ्ग्य नहीं होता वह अवरकाव्य या अधमकाव्य कहा जाता है शब्दचित्र और अर्थचित्र के भेद से यह दो प्रकार का होता है।

* **शब्दचित्र का उदाहरण-**

स्वच्छन्दोच्छलदच्छकच्छ..........मन्दाकिनी मन्दताम्।

* **अर्थचित्र का उदाहरण-**

विनिर्गतं मानदमात्ममन्दिराद् भवत्युपश्रुत्य यदृच्छयापि यम्
ससम्भ्रमेन्द्रद्रुतपातितार्गला निमीलिताक्षीव भियाऽमरावती।।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- काव्यप्रकाश (सूत्र-3) आचार्य विश्वेश्वर, पेज-31

68. ......डिम्भादेः स्वक्रियारूपवर्णनम्-
(A) स्वभावोक्तिः **(B) सहोक्तिः**
(C) अतिशयोक्तिः **(D) समासोक्तिः**

व्याख्या-
आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश के दशम उल्लास में अर्थालङ्कारों को परिभाषित करते हैं-

A. स्वभावोक्ति-
'स्वभावोक्तिस्तु डिम्भादेः स्वक्रियारूपवर्णनम्।
(का.प्र.सूत्र-167)
बालक आदि की अपनी स्वाभाविक क्रिया अथवा रूप का वर्णन स्वभावोक्ति अलङ्कार कहलाता है।
अतः विकल्प A सही है।

B. अन्योक्ति-
सा सहोक्तिः सहार्थस्य बलादेकं द्विवाचकम्।
(का.प्र.सूत्र-170)
जहाँ पर एक पद सह शब्द के अर्थ के बल से दो अर्थ का वाचक होता है, वहाँ सहोक्ति अलङ्कार होता है।

C. अतिशयोक्ति-
निगीर्याध्यवसानन्तु प्रकृतस्य परेण यत्।
प्रस्तुतस्य यदन्यत्वं यद्यर्थोक्तो च कल्पनम्।।
(का.प्र.सूत्र-153)
उपमान के द्वारा उपमेय का निगरण करके काल्पनिक और अभेद का निश्चय (अध्यवसान) करना अतिशयोक्ति अलङ्कार कहलाता है।

D. समासोक्ति-
परोक्तिर्भेदकैः श्लिष्टैः समासोक्तिः। (का.प्र.सूत्र-148)
श्लेषयुक्त विशेषणों के द्वारा पर अर्थात् अप्रकृत के व्यवहार का कथन समासोक्ति अलङ्कार है।

स्रोत-काव्यप्रकाश सूत्र-(168)- पारसनाथ द्विवेदी, पेज-625

69. तात्पर्यावृत्ति स्वीकृत की गयी है-
(A) अन्विताभिधानवादियों द्वारा
(B) ध्वनिवादियों द्वारा
(C) अभिहितान्वयवादियों द्वारा
(D) ध्वनिविरोधियों द्वारा

व्याख्या-

A. अन्विताभिधानवाद- अन्विताभिधानवाद का सिद्धान्त मीमांसक प्रभाकर गुरु ने दिया है। इनके अनुसार अभिधाशक्ति द्वारा पहले पदार्थों की उपस्थिति नहीं होती, बल्कि पदों द्वारा अन्वित पदार्थों की ही उपस्थिति होती है। अर्थात् पहले पद अन्वित होते हैं बाद में विशिष्ट वाक्यार्थ को कहते हैं इसलिए उसे अन्विताभिधानवाद कहते हैं।
''वाच्य एव वाक्यार्थ इति अन्विताभिधानवादिनः।''

B. ध्वनिवादी सिद्धान्त- व्याकरणशास्त्र में प्रधानभूत स्फोट की अभिव्यक्ति शब्द से होती है इसलिए 'ध्वनति स्फोटं व्यनक्ति इति ध्वनिः' इस व्युत्पत्ति के अनुसार 'स्फोट' के व्यञ्जकशब्द के लिए ध्वनि शब्द का प्रयोग किया गया था। इसी के आधार पर ध्वनिवादी आचार्यों ने भी वाच्यार्थ को दबा सकने में समर्थ जो व्यङ्ग्य अर्थ, उसको अभिव्यक्त करने वाले शब्द तथा अर्थ के लिए 'ध्वनि' इस पद का प्रयोग प्रारम्भ कर दिया।
यत्रार्थः शब्दो वा तमर्थमुपसर्जनीकृतस्वार्थौ।
व्यङ्क्तः काव्यविशेषः स ध्वनिरिति सूरिभिः कथितः।
(ध्वन्या.1/13)

C. अभिहितान्वयवाद- वाक्यार्थ ज्ञान में अभिहित पदार्थों का अन्वय होने के कारण इसे अभिहितान्वयवाद कहते हैं यह मत मीमांसक कुमारिलभट्ट का है। अभिहितान्वयवाद का अर्थ है अभिहित अर्थात् अभिधा शक्ति के द्वारा कथित होता है, बाद में उनका परस्पर अन्वय होता है।
अतः विकल्प C सही है।

D. ध्वनिविरोधी आचार्य- कुमारिलभट्ट ने ध्वनि को न मानकर तृतीय शक्ति के रूप में तात्पर्या शक्ति को मानते हैं। इसीप्रकार महिमभट्ट ने अपने ग्रन्थ 'व्यक्तिविवेक' तथा मुकुलभट्ट ने 'अभिधावृत्तिमातृका' में ध्वनि का खण्डन किया है।

स्रोत- काव्यप्रकाश- पारसनाथ द्विवेदी, पेज-39

70. 'नियतिकृतनियमरहितां' किसे कहा गया है?

(A) कविभारती	**(B) कविप्रतिभा**
(C) कवि दृष्टि	**(D) कविप्रसिद्धि**

व्याख्या-
समन्वयवादी आचार्य मम्मट ने अपने काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ काव्यप्रकाश में कवि-भारती अर्थात् सरस्वती की स्तुति करते हुए मङ्गलाचरण करते हैं-
नियतिकृतनियमरहितां ह्लादैकमयीमनन्यपरतन्त्राम्।
नवरसरुचिरां निर्मितिमादधती भारती कवेर्जयति।। का.प्र.1/1।।
नियति के द्वारा निर्धारित नियमों से रहित, केवल आनन्दमात्रस्वभावा, किसी अन्य के अधीन न रहने वाली तथा नौ रसों के योग से मनोहारिणी काव्य-सृष्टि की रचना करने वाली कवि की भारती सर्वोत्कर्षशालिनी है।
अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- काव्यप्रकाश- पारसनाथ द्विवेदी, पेज-2

71. साहित्यदर्पण विभक्त है-
(A) उल्लासों में (B) उच्छ्वासों में
(C) परिच्छेदों में (D) निःश्वासों में

व्याख्या-

विभाजन	ग्रन्थ	ग्रन्थकार	समय
A. दस उल्लास	काव्यप्रकाश	मम्मट	(बारहवीं शताब्दी)
B. 8 उच्छ्वास	हर्षचरितम्	बाणभट्ट	(सातवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध।)
C. 10 परिच्छेद	साहित्यदर्पण	विश्वनाथ	चौदहवीं शताब्दी
D. 3 विराम 12 निःश्वास	शिवराजविजय	अम्बिकादत्तव्यास	1858-1900ई.

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत-संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-587

72. जिस लक्षणा में मुख्यार्थ का भी ग्रहण होता है वह कौन सी लक्षणा कहलाती है?
(A) प्रयोजनमूला (B) रूढ़िमूला
(C) उपादान-लक्षणा (D) लक्षण-लक्षणा

व्याख्या-
आचार्य विश्वनाथ साहित्यदर्पण के द्वितीय परिच्छेद में लक्षणा के भेदों का वर्णन करते हैं-
मुख्यार्थस्येतराक्षेपो वाक्यार्थेऽन्वयसिद्धये।
स्यादात्मनोऽप्युपादानादेषोपादानलक्षणा।। (सा.द.2/6)
वाक्यार्थ में अङ्गरूप से अपने अन्वय की सिद्धि के लिए, जहाँ मुख्य अर्थ अन्य अर्थ का आक्षेप कराता है वहाँ 'आत्मा' अर्थात् मुख्यार्थ के भी बने रहने से उस लक्षणा को उपादान लक्षणा कहते हैं।

➢ **लक्षण-लक्षणा-**
अर्पणं स्वस्य वाक्यार्थे परस्यान्वयसिद्धये
उपलक्षणहेतुत्वादेषा लक्षण-लक्षणा।। (सा.द.2/7)
वाक्यार्थ में मुख्यार्थ से भिन्न अर्थ के अन्वय बोध के लिए जहाँ कोई शब्द अपने स्वरूप का समर्पण कर दे उस लक्षणा को लक्षण-लक्षणा कहते हैं।
प्रयोजनमूला - कुन्ताः प्रविशन्ति।
रूढिमूला - श्वेतो धावति।
अतः विकल्प C सही है।

स्रोत - साहित्यदर्पण (2/6)- शालिग्राम शास्त्री, पेज-31

73. 'सत्यर्थे पृथगर्थायाः.......विनिगद्यते'-
(A) अनुप्रासः (B) यमकम्
(C) उपमा (D) व्यतिरेकः

व्याख्या-
आचार्य विश्वनाथ साहित्यदर्पण के दशम परिच्छेद में अलङ्कारों का लक्षण करते हैं-

A. अनुप्रास-
अनुप्रासः शब्दसाम्यं वैषम्येऽपि स्वरस्य यत् (सा.द.10.3)
स्वर की विषमता रहने पर भी शब्द अर्थात् पद पदांश के साम्य को अनुप्रास कहते हैं-
उदाहरण- उन्मीलन्मधुगन्धलुब्धमधुपव्याधूतचूताङ्कुर
क्रीडत्कोकिलकाकलीकलकलैरुद्गीर्णकर्णज्वराः।
नीयन्ते पथिकैः कथं कथमपि ध्यानावधानक्षण
प्राप्तप्राणसमासमागमरसोल्लासैरमी वासराः।।

B. यमकम्-
सत्यर्थे पृथगर्थायाः स्वरव्यंजनसंहतेः।
क्रमेण तेनैवावृत्तिर्यमकं विनिगद्यते।। (सा.द.10.8)
यदि अर्थवान् हो, तो भिन्न अर्थ वाले, स्वर व्यंजन समुदाय की उसी क्रम से आवृत्ति को यमक कहते हैं।
उदाहरण- नवपलाशपलाशवनं पुरः स्फुटपरागपरागत पंकजम्।
मृदुलतान्तलतान्तमलोकयत्स सुरभिं सुरभिं सुमनो भरैः।।
अतः विकल्प B सही है।

C. उपमा-
साम्यं वाच्यमवैधर्म्यं वाक्यैक्य उपमा द्वयोः। (सा.द.10.14)
एक वाक्य में दो पदार्थों के वैधर्म्य रहित, वाच्य सादृश्य को उपमा कहते हैं।
उदाहरण- मधुरः सुधावदधरः पल्लवतुल्योऽतिपेलवः पाणिः।
चकितमृगलोचनाभ्यां सदृशी चपले च लोचने तस्याः।।

D. व्यतिरेक-
आधिक्यमुपमेयस्योपमानान्न्यूनताथवा।। (सा.द.10.52)
उपमान से उपमेय का आधिक्य अथवा उपमान से उपमेय भी न्यूनता में वर्णन करने में व्यतिरेक अलङ्कार होता है।
उदाहरण- अकलङ्कं मुखं तस्या न कलङ्की विधुर्यथा।

स्रोत- साहित्यदर्पण (10/8)- शालिग्राम शास्त्री,पेज-280

74. सिद्धत्वेऽध्यवसायस्य........निगद्यते।
(A) पूर्णोपमा (B) रूपकम्
(C) अतिशयोक्तिः (D) स्वभावोक्तिः

व्याख्या-
आचार्य विश्वनाथ साहित्यदर्पण के दशम परिच्छेद में अलङ्कार को परिभाषित करते हैं-

➢ **अतिशयोक्ति अलङ्कार-**
'सिद्धत्वेऽध्यवसायस्यातिशयोक्तिर्निगद्यते' (सा.द.10.46)
अध्यवसाय के सिद्ध होने पर अतिशयोक्ति अलङ्कार होता है। उपमेय का निगरण करके उपमान के साथ उसके अभेदज्ञान को अध्यवसाय कहते हैं। उत्प्रेक्षा में उपमेय का अनिश्चितरूप से कथन रहता है, अतः वहाँ अध्यवसाय साध्य रहता है और यहाँ उसकी निश्चितरूप से प्रतीति होती है अतः यहाँ अध्यवसाय सिद्ध होता है। **अतः विकल्प C सही है।**

➢ **पूर्णोपमा अलङ्कार-**
सा पूर्णा यदि सामान्यधर्म औपम्यवाचि च।
उपमेयं चोपमानं भवेद्वाच्यम्।। (सा.द.10.15)
सामान्यधर्म, औपम्यवाची शब्द, उपमेय और उपमान ये चारों यदि वाच्य हो अर्थात् किसी शब्द से प्रतिपादित हों, व्यङ्ग्य या आक्षेप न हो तो उसे पूर्णोपमा कहते हैं।

➢ **रूपक अलङ्कार-**
'रूपकं रूपितारोपो विषये निरपह्नवे' (सा.द.10.28)
निषेध रहित विषय उपमेय में रूपित के आरोप को रूपक अलङ्कार कहते हैं। अर्थात् जहाँ भेद रहित उपमेय में आरोप हो, परन्तु उपमेय के स्वरूप का निषेधक कोई शब्द न हो वहाँ रूपक अलङ्कार होता है।

➢ **स्वभावोक्ति अलङ्कार-**
'स्वभावोक्तिर्दुरूहार्थस्वक्रियारूपवर्णनम्' (सा.द.10.93)
कविमात्र से ज्ञातव्य जो बच्चे आदि की चेष्टाएँ या स्वरूप उनके वर्णन को स्वभावोक्ति अलङ्कार कहते हैं।

स्रोत- साहित्यदर्पण (10.46)- शालिग्राम शास्त्री, पेज-323

75. 'त्रिवर्ग साध्यम् ....' उचित विधा द्वारा रिक्तस्थान की पूर्ति कीजिए-
(A) महाकाव्यम् (B) खण्डकाव्यम्
(C) नाट्यम् (D) चम्पूकाव्यम्

व्याख्या-
आचार्य विश्वनाथ साहित्यदर्पण के प्रथम परिच्छेद में काव्य प्रयोजन की प्रामाणिकता के सन्दर्भ में अग्निपुराण का मत उद्धृत करते हैं-
'त्रिवर्गसाधनं नाट्यम्' (अग्निपुराण 338.7)
अर्थात् नाटक एक ऐसी वस्तु है जिससे धर्म, अर्थ, कामरूप पुरुषार्थ की प्राप्ति हुआ करती है।
अतः विकल्प C सही है।

➢ आचार्य विश्वनाथ साहित्यदर्पण के षष्ठ परिच्छेद में महाकाव्य को परिभाषित किया है-
सर्गबन्धो महाकाव्यं तत्रैको नायकः सुरः----------नामास्य
सर्गोपादेयकथया सर्गनाम तु।। (सा.द.6/315-324)
* महाकाव्य की कथा सर्गों में विभक्त होती है।
* इसका नायक देवकोटि या प्राख्यात राजवंश का राजा होता है जो धीरोदात्त कोटि का होता है।
* शृङ्गार, वीर, शान्त में से कोई एक अङ्गी रस के रूप में विद्यमान रहता है। सभी सन्धियाँ विद्यमान रहती हैं, इसमें धर्म, अर्थ, काम, मोक्षरूपी पुरुषार्थ चतुष्टय का वर्णन होता है।
* महाकाव्य की कथावस्तु में आठ से अधिक सर्ग होने चाहिए।

➢ आचार्य विश्वनाथ साहित्यदर्पण के षष्ठ परिच्छेद में खण्ड काव्य का लक्षण करते हैं-
'खण्डकाव्यं भवेत्काव्यस्यैकदेशानुसारि च।' (सा.द.6.329)
काव्य अथवा महाकाव्य के कतिपय लक्षणों से युक्त जो पद्य-प्रबन्ध है उसे खण्डकाव्य कहते हैं।

➢ साहित्यदर्पण के षष्ठ परिच्छेद में चम्पूकाव्य का लक्षण निम्नवत् है-
'गद्यपद्यमयं काव्यं चम्पूरित्यभिधीयते' (सा.द.6.336)
गद्यपद्य से युक्त काव्य को चम्पूकाव्य कहते हैं।

स्रोत- साहित्यदर्पण- सत्यव्रतसिंह, पेज-4

76. उच्चार्यत्वाद्यदेकत्र स्थाने तालुरदादिके। सादृश्यं व्यंजनस्यैव.....उच्यते - रिक्तस्थान की पूर्ति कीजिए
(A) छेकानुप्रासः (B) वृत्यानुप्रासः
(C) श्रुत्यनुप्रासः (D) अन्त्यानुप्रासः

व्याख्या-
आचार्य विश्वनाथ साहित्यपर्दण के दशम परिच्छेद में अनुप्रास अलङ्कार के भेदों को परिभाषित करते हैं-

A. छेकानुप्रास-
छेको व्यञ्जनसंघस्य सकृत्साम्यमनेकधा। (सा.द.10/3)
व्यञ्जनों के समुदाय की एक ही बार अनेक प्रकार की समानता होने को छेकानुप्रास कहते हैं।

B. वृत्त्यनुप्रास-
अनेकस्यैकधा साम्यमसकृद् वाप्यनेकधा।
एकस्य सकृदप्येष वृत्त्यनुप्रास उच्यते।। (सा.द.10/4)
अनेक बार अनेक वर्णों की आवृत्ति होने पर, एक ही वर्ण की एक ही बार समानता होने पर, या एक ही वर्ण की अनेक बार आवृत्ति होने पर 'वृत्त्यनुप्रास' नामक शब्दालङ्कार होता है।

C. श्रुत्यनुप्रास-
उच्चार्यत्वाद्यदेकत्र स्थाने तालुरदादिके।
सादृश्यं व्यञ्जनस्यैव श्रुत्यनुप्रास उच्यते।। (सा.द.10/5)
तालु, कण्ठ, मूर्धा, दन्त आदि किसी एक स्थान मे उच्चरित होने वाले व्यञ्जनों की समानता को श्रुत्यनुप्रास कहते हैं।

D. अन्त्यानुप्रास-
व्यञ्जनं चेद्यथावस्थं सहाद्येन स्वरेण तु।
आवर्त्यतेऽन्त्ययोज्यत्वादन्त्यानुप्रास एव तत्।। (सा.द.10/6)
पहले स्वर के साथ ही यदि यथावस्थ व्यञ्जन की आवृत्ति हो तो वह अन्त्यानुप्रास कहलाता है।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- साहित्यदर्पण (10.5)- शालिग्राम शास्त्री, पेज -276

77. प्रासंगिक कथा दूर तक चलती है- कहा जाता है?
(A) प्रकरी **(B) पताका**
(C) प्रस्तावना **(D) जनान्तिकम्**

व्याख्या-

A. प्रकरी- आचार्य धनञ्जय दशरूपक के प्रथम प्रकाश में प्रकरी का लक्षण करते हैं-
''**प्रकरी च प्रदेशभाक्**'' (दश.1/13)
एक प्रदेश में सीमित रहने वाला (अर्थात थोड़ी दूर तक चलने वाला) प्रासङ्गिक वृत्तान्त 'प्रकरी' कहलाता है।
जैसे- रामायणकथा में शबरी वृत्तान्त प्रकरी का उदाहरण है।

B. पताका- आचार्य धनञ्जय दशरूपक के प्रथम प्रकाश में पताका का लक्षण करते हैं-
''**सानुबन्धं पताकाख्यम्**'' (दश.1/13)
प्रधान इतिवृत्त के साथ गौणरूप से दूर तक चलने वाला प्रासङ्गिक इतिवृत्त 'पताका' कहलाता है। जैसे- रामायणकथा में सुग्रीव आदि का वृत्तान्त पताका है।

अतः विकल्प B सही है।

C. प्रस्तावना- दशरूपक के प्रथम प्रकाश में आचार्य धनञ्जय प्रस्तावना को परिभाषित करते हैं-
सूत्रधारो नटीं ब्रूते मार्ष वाऽथविदूषकम्।। (दश.3/7)
स्वकार्यं प्रस्तुताक्षेपि चित्रोक्त्या यत्तदामुखम्।।
जहाँ सूत्रधार नटी, मार्ष (परिपार्श्विक) या विदूषक के साथ बात-चीत करते हुए बहुविध विचित्र उक्तियों के द्वारा प्रस्तुत का आक्षेप कर अपने कार्य का वर्णन करे, इसे आमुख या प्रस्तावना भी कहा जाता है।

D. जनान्तिकम्- आचार्य धनञ्जय दशरूपक के प्रथम प्रकाश में अर्थोपक्षेपक के अन्तर्गत जनान्तिक का लक्षण करते हैं-
त्रिपताकाकरेणान्यानपवार्यान्तरा कथाम्।।
अन्योन्यामन्त्रणं यत्स्याज्जनान्ते तज्जनान्तिकम्।। (दश.1/65)
पात्रों के मध्य में चल रहे संवाद या उक्ति-प्रत्युक्ति के मध्य में, त्रिपाताकारूप हस्त मुद्रा के द्वारा अन्य पात्रों को अपवार्य अर्थात् बचाकर, कुछ पात्रों के मध्य में दो पात्र परस्पर जो वार्तालाप करते हैं- वह जनान्तिक कहा जाता है।

स्रोत- दशरूपक (1.13)- रमाशङ्कर त्रिपाठी, पेज-14

78. भुक्तिवाद के स्थापक कौन हैं ?
(A) अभिनवगुप्त **(B) भट्टलोल्लट**
(C) शङ्कुक **(D) भट्टनायक**

व्याख्या-

व्याख्याकार	मत	दर्शन
A. अभिनवगुप्त	अभिव्यक्तिवाद (व्यङ्ग्य-व्यञ्जक)	शैव/वेदान्त
B. भट्टलोल्लट	उत्पत्तिवाद (उत्पाद्य-उत्पादक)	मीमांसा
C. शङ्कुक	अनुमितिवाद(अनुमाप्य-अनुमापक)	न्याय
D. भट्टनायक	भुक्तिवाद (भोज्य-भोजक)	सांख्य

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- कव्यप्रकाश (चतुर्थ उल्लास)- पारसनाथ द्विवेदी- पेज-137

79. संकेतग्रह में शब्द का अर्थ अपोह मान्य है-
(A) नैयायिकों के द्वारा **(B) मीमांसकों के द्वारा**
(C) बौद्धों के द्वारा **(D) वैयाकरणों के द्वारा**

व्याख्या-

	संकेतग्रह मानने वाले विद्वान्		संकेतग्रह
A.	नैयायिक	-	जातिविशिष्ट व्यक्ति में
B.	मीमांसक	-	जाति में
C.	बौद्ध	-	अपोह में
D.	वैयाकरण	-	स्फोट में

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- काव्यप्रकाश- पारसनाथ द्विवेदी, पेज-48

80. 'परवल्लिङ्गं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः' सूत्र का उदाहरण नहीं है-
(A) सीतारामौ **(B) मयूरीकुक्कुटौ**
(C) अर्धपिप्पली **(D) कुक्कुटमयूर्यौ**

व्याख्या-

	सामासिकपद	लौकिक विग्रह	सूत्र
A.	सीतारामौ	सीता च रामश्च	'चार्थे द्वन्द्वः'
B.	मयूरीकुक्कुटौ	मयूरी च कुक्कुटश्च	परवल्लिङ्गं द्वन्द्व-तत्पुरुषयोः (2.4.26)
C.	अर्धपिप्पली	अर्धं पिप्पल्याः	परवल्लिङ्गं द्वन्द्व तत्पुरुषयोः (2.4.26)
D.	कुक्कुटमयूर्यौ	कुक्कुटश्च मयूरी च	'परवल्लिङ्गं द्वन्द्व-तत्पुरुषयोः (2.4.26)

नोट- मयूरीकुक्कुटौ, अर्धपिप्पली, कुक्कुटमयूर्यौ ये तीनों उदाहरण 'परवल्लिङ्गं द्वन्द्व-तत्पुरुषयोः' सूत्र से सिद्ध होते हैं। किन्तु सीतारामौ इस सूत्र का उदाहरण नहीं है।

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड- 4) पेज-169

81. 'द्वन्द्वे घि' सूत्र से पूर्व प्रयोग का उदाहरण है?
(A) ईशकृष्णौ **(B) शिवकेशवौ**
(C) हरिहरौ **(D) राजदन्तम्**

व्याख्या-

सामासिकपद	लौकिक विग्रह	सूत्र
A. ईशकृष्णौ	ईशश्च कृष्णश्च	अजाद्यन्तम् (2-2-33)
धर्माथौ/अर्थधर्मौ	धर्मश्च अर्थश्च	राजदन्तादिषु परम् (2-2-31)
B. शिवकेशवौ	शिवश्च केशवश्च	अल्पाच्तरम् (2-2-34)
पितरौ/मातापितरौ	माता च पिता च	पिता मात्रा (1-2-70)
C. हरिहरौ	हरिश्च हरश्च	(द्वन्द्वे घि) (2-2-32)
हरिहरगुरवः	हरिश्च हरश्च गुरुश्च	
D. राजदन्तम्	दन्तानां राजा	राजदन्तादिषु परम्(2-2-31)

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमीव्याख्या खण्ड-4), पेज-235

82. तपोधनं वेत्सि न मामुपस्थितम् - 'तपोधनं' में समास है-
(A) तत्पुरुष **(B) द्वन्द्व**
(C) अव्ययीभाव **(D) बहुव्रीहि**

व्याख्या-

पद	समास विग्रह	समास नाम
A. आकृतिविशेषाः	आकृतीनां विशेषाः	तत्पुरुष
B. अर्घोदकम्	अर्घश्च उदकं च तयोः समाहारः	द्वन्द्व
C. आपर्वभागम्	पर्वभागं यावत् आपर्वभागम्	अव्ययीभाव
D. तपोधनम्	तपः एव धनं यस्य सः तम्	बहुव्रीहि

अतः विकल्प D सही है।

83. 'शमीदृषदम्' में समास है-
(A) बहुव्रीहि **(B) कर्मधारय**
(C) द्वन्द्व **(D) अव्ययीभाव**

व्याख्या-

	समास	सामासिक पद
A.	बहुव्रीहि	पीताम्बरः, ऊढरथः
B.	कर्मधारय	कृष्णसर्पः, घनश्यामः
C.	द्वन्द्व	शमीदृषदम्, पाणिपादम्, संज्ञापरिभाषम्
D.	अव्ययीभाव	सुमद्रम्, प्रतिविपाशम्

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमीव्याख्या खण्ड-4), पेज-242

84. 'सप्तर्षयः' में कौन-सा समास है?
(A) द्विगु **(B) बहुव्रीहि**
(C) अव्ययीभाव **(D) तत्पुरुष**

व्याख्या-

सप्तर्षयः- सात ऋषियों की सञ्ज्ञा, 'सप्त च ते ऋषयः' लौकिक विग्रह और 'सप्तन् जस् ऋषि जस्' अलौकिक विग्रह। दोनों में समान विभक्ति है अतः समानाधिकरण है। सप्त यह संख्यावाचक शब्द है समास होने के बाद विश्वामित्र आदि सात ऋषियों के वाचक होने के कारण सञ्ज्ञा अर्थ भी है। 'दिक्संख्ये सञ्ज्ञायाम्' से तत्पुरुष समास।
समास विधायक सूत्र में प्रथमान्त पद है।
दिक्संख्ये और उसके द्वारा निर्दिष्ट पद है सप्तन् जस् उसकी उपसर्जन होने के बाद पूर्व निपात करके प्रातिपदिक सञ्ज्ञा सुप् का लुक् और नकार का लोप करके सप्त+ऋषि बना।

गुण रपर होकर सप्तर्षि बना।
बहुवचन में जस्, जसि च से गुण होकर सप्तर्षयः सिद्ध हुआ। यह भी एक सञ्ज्ञा है।
अतः सप्तर्षयः में तत्पुरुष समास है।
अतः विकल्प D सही है।
स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी- गोविन्दाचार्य, पेज-926

85. 'राजदन्तः' में समास है-
(A) द्वन्द्व **(B) तत्पुरुष**
(C) बहुव्रीहि **(D) अव्ययीभाव**

व्याख्या-
राजदन्तादिषु परम् (2.2.31)
राजदन्त आदि गण में पूर्वनिपात के योग्य पद का परनिपात होता है। राजदन्तः = दाँतों का राजा
'दन्तानां राजा' लौकिक विग्रह तथा 'दन्त आम् राजन् सु' अलौकिक विग्रह। 'षष्ठी' सूत्र से तत्पुरुष समास, प्रातिपदिक सञ्ज्ञा, सुप् का लुक् करके षष्ठी इस प्रथमान्तपद से निर्दिष्ट दन्त की उपसर्जन सञ्ज्ञा होकर उपसर्जनं पूर्वम् से पूर्वनिपात प्राप्त था उसे बाधितकर 'राजदन्तादिषु परम्' से पर प्रयोग अर्थात् पर निपात - राजन् + दन्त 'न लोपः प्रातिपदिकान्तस्य' से नकार का लोप राज + दन्त = राजदन्त बना। पुनः राजदन्त की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा सु विभक्ति का आगम राजदन्त + सु सु का अनुबन्ध लोप होकर राजदन्तः प्रयोग सिद्ध हुआ। इसलिए राजदन्तः में तत्पुरुष समास है
अतः विकल्प B सही है।
स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी- गोविन्दाचार्य, पेज-971

86. 'सप्तगङ्गम्' में समास है-
(A) बहुव्रीहि **(B) अव्ययीभाव**
(C) द्वन्द्व **(D) द्विगु**

व्याख्या-
सामासिक पद समासविग्रह सामासिक सूत्र
➢ **अव्ययीभाव-**
* सप्तगङ्गम् = सप्तानां गङ्गानां समाहारः - नदीभिश्च
* पञ्चगङ्गम् = पञ्चानां गङ्गानां समाहारः - नदीभिश्च
* द्वियमुनम् = द्वयोः यमुनयोः समाहारः - नदीभिश्च

➢ **बहुव्रीहि-**
* महाबाहुः = महन्तौ बाहू यस्य सः - अनेकमन्यपदार्थे
* लम्बकर्णः = लम्बौ कर्णौ यस्य सः - अनेकमन्यपदार्थे
* कृशधनः = कृशं धनं यस्य सः - अनेकमन्यपदार्थे

➢ **द्वन्द्व-**
* मातापितरौ = माता च पिता च - पिता मात्रा
* धवखदिरौ = धवश्च खदिरश्च - चार्थे द्वन्द्वः

➢ **द्विगु-**
* चतुर्युगम् = चतुर्णां युगानां समाहारः - 'तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च'
* पञ्चगवम् = पञ्चानां गवां समाहारः -'तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च'
* त्रिभुवनम् = त्रयाणां भुवनानां समाहारः-'तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च'

अतः विकल्प B सही है।
स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड-4) पेज-44

87. 'दीर्घसक्थः' में समास है-
(A) तत्पुरुष **(B) बहुव्रीहि**
(C) अव्ययीभाव **(D) द्वन्द्व**

व्याख्या-
दीर्घसक्थः= दीर्घ ऊरुओं वाला पुरुष
'दीर्घे सक्थिनी स्तः यस्य' लौकिक विग्रह तथा 'दीर्घ औ सक्थि औ' अलौकिक विग्रह।
अलौकिक विग्रह 'दीर्घ औ सक्थि औ' में 'अनेकमन्यपदार्थे' से बहुव्रीहि समास 'कृत्तद्धितसमासाश्च' सूत्र से प्रातिपदिक सञ्ज्ञा तथा 'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' से सुप् विभक्ति का लोप दीर्घ + सक्थि
सक्थि शरीर का अङ्ग है अतः 'बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णोः स्वङ्गात् षच्' से समासान्त षच् प्रत्यय दीर्घ + सक्थि + षच्
षच् के षकार की 'षः प्रत्ययस्य' से तथा चकार की 'हलन्त्यम्' से इत्सञ्ज्ञा तथा लोप होकर अ बचा दीर्घ + सक्थि + अ
'यस्येति च' से सक्थि के इकार का लोप-
दीर्घ + सक्थ् + अ दीर्घसक्थ
दीर्घ और सक्थि दोनों शब्द नपुंसकलिङ्ग के थे परन्तु समास करने से समासशक्ति के बल पर समस्त शब्द पुँल्लिङ्ग में बदल गया।
एकदेशविकृतन्यायेन से प्रातिपदिक मानकर सु विभक्ति-
दीर्घसक्थ सु
सु का अनुबन्ध लोप रुत्व विसर्ग होकर 'दीर्घसक्थः' प्रयोग सिद्ध हुआ।
अतः विकल्प B सही है।
स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी- गोविन्दाचार्य, पेज-959

88. 'कटे आस्ते' उदाहरण में आधार है-
(A) औपश्लेषिक (B) वैषयिक
(C) अभिव्यापक (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

व्याख्या-
आधार तीन प्रकार का होता है- औपश्लेषिक आधार, वैषयिक आधार, अभिव्यापक आधार

- **औपश्लेषिक आधार-** 'कटे आस्ते।' (वह चटाई पर बैठता है) यहाँ बैठना क्रिया का साक्षात् आश्रय है देवदत्त आदि कर्त्ता। उस कर्त्ता का आधार है 'कट'। कर्त्ता का 'कट' के साथ स्पर्शमात्र संयोग है। अतः यह औपश्लेषिक आधार है।
- **वैषयिक आधार-** 'मोक्षे इच्छाऽस्ति।' (मोक्ष विषयक इच्छा है) यहाँ इच्छा का विषय है मोक्ष अर्थात् इच्छा मोक्ष में अधिष्ठित है। अतएव इच्छा रूपी कर्ता के वैषयिक आधार 'मोक्ष' की 'आधारोधिकरणम्' सूत्र से अधिकरण संज्ञा हुई और प्रकृत सूत्र से उसमें सप्तमी विभक्ति।
- **अभिव्यापक आधार-** सर्वस्मिन् आत्मा अस्ति(सब में आत्मा है) यहाँ कर्त्ता 'आत्मा' सभी में व्याप्त है। अतएव आत्मारूपी कर्त्ता के अभिव्यापक आधार 'सर्व' की 'आधारोधिकरणम्' सूत्र से अधिकरण संज्ञा हुई और प्रकृत सूत्र से उसमें सप्तमी विभक्ति हुई।

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- सिद्धान्तकौमुदी(कारक प्रकरण) राममुनि पाण्डेय, पेज-93

89. स्पृह् धातु के प्रयोग में जिसकी स्पृहा होती है वहाँ विभक्ति होती है?
(A) तृतीया (B) पञ्चमी
(C) द्वितीया (D) चतुर्थी

व्याख्या-

A. तृतीया- हेतौ (2.3.23)- हेतु अर्थ के वाची शब्दों में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे - अध्ययनेन वसति। (अध्ययन के प्रयोजन से रहता है।)

B. पञ्चमी- पराजेरसोढः (1.4.26)- यदि जि धातु के पूर्व परा उपसर्ग लगा हो तो जो असह्य पदार्थ होता है उसकी अपादान संज्ञा होती है और पञ्चमी विभक्ति का विधान होता है। जैसे - अध्ययनात् पराजयते। (वह अध्ययन से भागता है।)

C. द्वितीया- अभिनिविशश्च (1.4.47)- यदि विश् धातु के पूर्व अभि और नि ये दोनों उपसर्ग क्रमशः लगे हों तो क्रिया के आधार की कर्मसंज्ञा होती है। जैसे - अभिनिविशते सन्मार्गम्। (वह सन्मार्ग पर चलता है।)

D. चतुर्थी- स्पृहेरीप्सितः (1.4.36)- स्पृह् (चाहना) धातु के योग में ईप्सित पदार्थ की अर्थात् जिसकी स्पृहा होती है उसकी सम्प्रदान संज्ञा होती है और सम्प्रदान में चतुर्थी विभक्ति होती है।
जैसे- पुष्पेभ्यः स्पृहयति। (वह फूलों को चाहता है।)

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)- राममुनि पाण्डेय,पेज-49

90. 'जटाभिः तापसः' में तृतीया विभक्ति हुई है-
(A) येनाङ्गविकारः (B) अपवर्गे तृतीया
(C) कर्तृकरणयोस्तृतीया (D) इत्थम्भूतलक्षणे

व्याख्या-

A. येनाङ्गविकारः (2/3/20)- जिस विकृत अङ्ग के द्वारा अङ्गी का विकार लक्षित होता है उस विकृत अङ्ग में तृतीया विभक्ति होती है।
उदाहरण- अक्ष्णा काणः - एक आँख का काना है।
पादेन खञ्जः - पैर से लगड़ा है।

B. अपवर्गे तृतीया (2/3/6)- फल की प्राप्ति का अर्थ द्योतित होने पर काल और मार्गवाची शब्दों से अत्यन्त संयोग में तृतीया विभक्ति होती है।
उदाहरण- अह्ना क्रोशेन वा अनुवाकोऽधीतः। (दिन भर में अथवा कोस भर में अनुवाक पढ़ लिया और याद कर डाला)

C. कर्तृकरणयोस्तृतीया (2/3/18)- अनुक्त कर्त्ता और करण में तृतीया विभक्ति होती है।
उदाहरण- रामेण बाणेन हतो बाली (राम के द्वारा बाण से बाली मारा गया)

D. इत्थम्भूतलक्षणे (2/3/21)- प्रकार विशेष को प्राप्त हुए ज्ञापक में तृतीया विभक्ति होती है अर्थात् जिस चिह्न से कोई व्यक्ति ज्ञापित हो उस चिह्न विशेष में तृतीया विभक्ति होती है।
उदाहरण- जटाभिः तापसः (जटाओं से तपस्वी प्रतीत होता है।) **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत- सिद्धान्तकौमुदी(कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय,पेज-43

91. 'राष्ट्रियः समाज्ञापयति' 'राष्ट्रियः' में प्रत्यय है-
(A) खञ् (B) घ
(C) छ (D) ल्यप्

व्याख्या-

* राष्ट्रियः (राष्ट्र में होने वाला या पैदा हुआ) राष्ट्रे जातादि लौकिक विग्रह तथा 'राष्ट्र ङि' अलौकिक विग्रह।
'राष्ट्रावारपाराद् घखौ' से घ प्रत्यय- राष्ट्र ङि घ
* प्रातिपदिक सञ्ज्ञा तथा सुप् का लुक्- राष्ट्र घ
* 'आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम्' से घ् के स्थान पर इय् आदेश- राष्ट्र इय्
* भ सञ्ज्ञा तथा अकार का लोप- राष् टर् + इय = राष्ट्रिय
पुनः राष्ट्रिय की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा तथा सु विभक्ति का आगम राष्ट्रिय + सु
* सु का अनुबन्ध लोप, तो 'राष्ट्रियः' प्रयोग सिद्ध हुआ इसलिए राष्ट्रियः में घ प्रत्यय है **अतः विकल्प B सही है।**

राष्ट्रावारपाराद् घखौ (4.2.93)- शेष अर्थ में राष्ट्र और अवारपार शब्द से क्रमशः घ और ख प्रत्यय होते हैं।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड-5) पेज-110

92. दाक्षी में स्त्री प्रत्यय है-

(A) ङीष् **(B) ङीप्**
(C) टाप् **(D) ङीन्**

व्याख्या-

दाक्षी- दक्ष की सन्तान
दक्षस्यापत्यं स्त्री। दक्ष शब्द से तद्धित में 'अत इञ्' से इञ् प्रत्यय होकर दाक्षि बना, स्त्रीत्व की विवक्षा में 'इतो मनुष्यजातेः' से ङीष् प्रत्यय - दाक्षि + ङीष्
ङीष् का अनुबन्ध लोप, भसञ्ज्ञा इकार का लोप दाक्षी बना पुनः सु विभक्ति अनुबन्ध लोप आदि कार्य करने पर दाक्षी प्रयोग सिद्ध होता है। **अतः विकल्प A सही है।**

➢ **इतो मनुष्यजातेः (4.1.65)-** मनुष्य जातिवाचक ह्रस्व इकारान्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व की विवक्षा में ङीष् प्रत्यय होता है।

➢ **ऋन्नेभ्यो ङीप् (4.1.5)-** ऋकारान्त और नकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्दों में स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए ङीप् प्रत्यय का प्रयोग होता है।
कर्तृ + ङीप् = कर्त्री दातृ+ङीप् = दात्री

➢ **अजाद्यतष्टाप् (4.1.4)-** अकारान्त शब्दों के आगे स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए उनके आगे टाप् प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है।
उदाहरण- अचल + टाप् = अचला
कृष्ण + टाप् = कृष्णा ।

➢ **शार्ङ्गरवाद्यञो ङीन् (4.1.73)-** शार्ङ्गरव आदि गणपठित शब्दों तथा अञ् प्रत्यय अन्त में हो ऐसे जातिवाचक प्रातिपदिकों से स्त्रीत्व की विवक्षा में ङीन् प्रत्यय होता है।
उदाहरण- शार्ङ्गरवी, बैदी, ब्राह्मणी आदि।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, खण्ड-6)- पेज-76

93. 'कार्यम्' में प्रत्यय है-

(A) यत् **(B) ण्यत्**
(C) क्यप् **(D) ल्यप्**

व्याख्या-

➢ **ऋहलोर्ण्यत् (3.1.124)-** ऋवर्णान्त और हलन्त धातुओं से ण्यत् प्रत्यय होता है।
कार्यम् - कृ धातु से ऋहलोर्ण्यत् से ण्यत् प्रत्यय
कृ + ण्यत् ण्यत् का अनुबन्ध लोप - कृ + य
य के णित् होने के कारण 'अचो ञ्णिति' से रपर - सहित आर् वृद्धि - क् + आर् + य = कार्य
पुनः सु आदि कार्य करके सु का अम् आदेश तो कार्यम् प्रयोग सिद्ध हुआ। **अतः विकल्प B सही है।**

➢ **यत् प्रत्ययविधायक विधिसूत्र-**
1. 'अचो यत्' (3.1.97) - अच् प्रत्याहार के वर्ण अन्त में हों ऐसे धातुओं से यत् प्रत्यय होता है।
उदाहरण- चेयम्, जेयम् आदि।
2. 'पोरदुपधात्' (3.1.98)- पवर्ग अन्त में अथवा ह्रस्व अकार उपधा में हो, ऐसे धातु से यत् प्रत्यय होता है।
उदाहरण - शप्यम्, लभ्यम् आदि।

➢ **ण्यत् प्रत्यय विधायक विधिसूत्र-**
'ऋहलोर्ण्यत्' (3.1.124)- ऋवर्णान्त और हलन्त धातुओं से ण्यत् प्रत्यय होता है। उदाहरण- हार्यम्, धार्यम्, कार्यम् आदि।

➢ **क्यप् प्रत्यय विधायक विधिसूत्र-**
एति-स्तु-शास्-वृ-दृ-जुषः क्यप् (3.1.109)- इण्, स्तु, शास्, वृ, दृ, और जुष् इन धातुओं से क्यप् प्रत्यय होता है। उदाहरण- इत्यः, स्तुत्यः शिष्यः, वृत्यः, आदृत्यः, जुष्यः।

➢ **ल्यप् प्रत्यय विधायक विधिसूत्र-**
'समासेऽनञ्पूर्वोक्त्वा ल्यप्' (7.1.37)- यदि धातु के पूर्व कोई उपसर्ग लगा हो तो क्त्वा के स्थान पर ल्यप् प्रत्यय होता है, परन्तु नञ् के पूर्व होने पर नहीं लगता।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड-3)- पेज-223

94. 'गातृ' में प्रत्यय है-
(A) शतृ (B) ण्वुल्
(C) ल्युट् (D) तृच्

व्याख्या-
- 'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे' (3.2.124) अप्रथमान्त अर्थात् द्वितीयान्त आदि के साथ समानाधिकरण होने पर लट् के स्थान पर शतृ और शानच् आदेश होते हैं। ल्युट् च (3.3.115)-
नपुंसकत्व में भाव अर्थ में ल्युट् प्रत्यय भी होता है। उदाहरण - हसितम् , हसनम्।
- 'ण्वुल्तृचौ' (3.1.133)- धातुमात्र से 'ण्वुल्' और 'तृच्' प्रत्यय होते हैं।
उदाहरण- कर्तृ, गातृ, हर्तृ आदि।
अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- अष्टाध्यायी (3/1/133)- ईश्वरचन्द्र

95. जेयम् में प्रत्यय है-
(A) तृच् (B) केलिमर्
(C) यत् (D) क्तः

व्याख्या-
जेयम् (जीतना अर्थ वाली जि धातु है) -
'अचो यत्' (3.1.97) से यत् प्रत्यय - जि + यत्
यत् का अनुबन्ध लोप - जि + य
य की आर्धधातुक सञ्ज्ञा और जि के इकार को सार्वधातुक गुण करके जेय शब्द बना। पुनः जेय की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा तथा सु विभक्ति का आगम सु का अम् आदेश और पूर्वरूप होकर जेयम् पद सिद्ध हुआ।
अतः जेयम् में यत् प्रत्यय है। **अतः विकल्प C सही है।**
- **ण्वुल्तृचौ (3.1.133)-** धातुमात्र से ण्वुल् और तृच् प्रत्यय होते हैं।
कृ + तृच् = कर्ता
हृ + तृच् = हर्ता
हन् + तृच् = हन्ता
- **केलिमर् उपसंख्यानम् (वार्तिक)-** धातुओं से केलिमर् प्रत्यय भी होता है अर्थात् तव्यत्तव्यानीयरः सूत्र से केलिमर् प्रत्यय भी जोड़ देना चाहिए। उदाहरण - पचेलिमा माषाः - पकाने योग्य उड़द, भेदेलिमाः सरलाः - सरल सीधे पेड़ आदि।
- **'अचो यत्' (3.1.97)** अजन्त धातुओं से यत् प्रत्यय होता है। उदाहरण - जेयम्, चेयम् आदि।
- **नपुंसके भावे क्तः (3.3.114)-** नपुंसकत्व में भाव अर्थ में क्त प्रत्यय होता है। उदाहरण- हसितम्।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड-3)- पेज-17

96. 'जनमेजयः' में प्रत्यय है-
(A) खश् (B) खच्
(C) क (D) तृच्

व्याख्या-
जनमेजयः जनम् एजयतीति जनमेजयः (लोगों को कँपाने वाला, राजा परीक्षित का पुत्र)
एजृ कम्पने धातु, उससे णिच् प्रत्यय होकर एजि बना।
पूर्व में जन यह कर्म उपपद में है - जन + एजि
एजेः खश् (3.2.28) से खश् प्रत्यय- जन + एजि + खश्
अनुबन्ध लोप आदि कार्य - जन + अम् + एजि + अ
अ की सार्वधातुक सञ्ज्ञा करके उससे शप् होकर उसमें भी अनुबन्ध लोप होकर जन + अम् + एजि + अ + अ
अतो गुणे से अ + अ पररूप होकर एक अकार - जन + अम् + एजि + अ अकार को सार्वधातुक मानकर एजि के इकार को 'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' से गुण होकर एकार और उसके स्थान पर अय् आदेश- जन + अम् + एज् + अय् + अ = जन + अम् + एजय
द्वितीया के स्थान 'कर्तृकर्मणोः कृति' से जन के अम् के स्थान पर षष्ठी ङस् जन ङस् एजय
'उपपदमतिङ्' से उपपद होकर षष्ठी का 'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' से लुक् -जन एजय
अरुर्द्विषदजन्तस्य मुम् से जन को मुम् आगम अनुबन्ध लोप- जन + म् + एजय मिदचोऽन्त्यात्परः से जन के नकार के अकार का अन्त्यावयव होकर जनम् + एजय = जनमेजय
पुनः जनमेजय के प्रातिपदिक सञ्ज्ञा सु विभक्ति का आगम, अनुबन्ध लोप होकर जनमेजयः प्रयोग सिद्ध हुआ। अतः जनमेजयः में खश् प्रत्यय है
इसलिए विकल्प A सही है।

➢ **खच् प्रत्यय विधायक विधिसूत्र-**
प्रियवशे वदः खच् (3.2.38) - प्रिय या वश रूप कर्म के उपपद होने पर वद् धातु से खच् प्रत्यय होता है। उदाहरण - प्रियंवदः, वंशवदः।

➢ **क प्रत्यय विधायक विधि सूत्र-**
1. इगुपध-ज्ञा-प्री-किरः कः (3.1.135) इक् उपधा में हो ऐसे धातु ज्ञा, प्री, और कृ धातुओं से क प्रत्यय होता है। उदाहरण बुधः, कृशः, ज्ञः, प्रियः, किरः।
2. आतश्चोपसर्गे (3.1.136) - उपसर्ग के उपपद रहते आकारान्त धातुओं से क प्रत्यय होता है। उदाहरण - प्रज्ञः, सुग्लः।

➢ **तृच् प्रत्यय विधायक विधि सूत्र-**
ण्वुल्तृचौ (3.1.133)- धातुमात्र से ण्वुल् और तृच् प्रत्यय होते हैं। उदाहरण - कर्त्ता, हर्ता, हन्ता आदि।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी- गोविन्दाचार्य, पेज-793

97. युवतिः में स्त्री प्रत्यय है-
(A) ङीन् **(B) ङीष्**
(C) ऊङ् **(D) ङीप्**

व्याख्या-
युनस्तिः (4.1.77)- युवन् शब्द से स्त्रीत्व की विवक्षा में ति प्रत्यय होता है।
युवतिः - युवन् शब्द से युनस्तिः से ति प्रत्यय हुआ युवन् + ति 'स्वादिष्वसर्वनामस्थाने' से ति के परे रहते युवन् की पद सञ्ज्ञा करके 'न लोपः प्रातिपदिकान्तस्य' से नकार का लोप करके युवति बना पुनः प्रातिपदिक सञ्ज्ञा, सु विभक्ति सु विभक्ति का अनुबन्ध लोप तथा रुत्व विसर्ग होकर युवतिः रूप सिद्ध होता है।
इसप्रकार युवतिः में ति प्रत्यय है।
नोट- युवतिः में ति प्रत्यय का प्रयोग है जो कि आयोग द्वारा दिए गए चारों विकल्पों में नहीं है यह आयोग की त्रुटि है।

➢ **ङीन् प्रत्यय- शार्ङ्गरवाद्यञो ङीन् (4.1.73)**
शार्ङ्गरव आदि गणपठित शब्दों तथा अञ् प्रत्यय अन्त में ऐसे जातिवाचक प्रातिपदिकों से स्त्रीत्व की विवक्षा में ङीन् प्रत्यय होता है।
उदाहरण- शार्ङ्गरवी, बैदी, ब्राह्मणी आदि।

➢ **ङीष् प्रत्यय- जातेरस्त्रीविषयादयोपधात् (4.1.63)**
जो नित्य स्त्रीलिङ्ग न हो और यकार भी उपधा में न हो ऐसे जाति वाचक प्रातिपदिक से स्त्रीत्व की विवक्षा में ङीष् प्रत्यय होता है।
उदाहरण - तटी, वृषली, कठी आदि।

➢ **ऊङ् प्रत्यय- पङ्गोश्च (4.1.68)-** जिसका पूर्वपद उपमान वाची तथा उत्तरपद ऊरु हो तो उससे स्त्रीत्व की विवक्षा में ऊङ् प्रत्यय होता है। उदा. पङ्गूः।

➢ **ङीप् प्रत्यय- उगितश्च (4.1.6)-** जिसमें उक् अर्थात् उ, ऋ, ऌ की इत्सञ्ज्ञा हो गई है ऐसे प्रातिपदिकों से स्त्रीत्व की विवक्षा में ङीप् प्रत्यय होता है।
उदाहरण- भवती, भवन्ती, पचन्ती आदि।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड-6)- पेज-88

98. 'भी' धातु लृट्लकार के प्रथम पुरुष का एकवचन रूप है-
(A) भीष्यति **(B) विभीष्यति**
(C) भेष्यति **(D) भेस्यति**

व्याख्या-
भी धातु, अकर्मक, अनिट् , परस्मैपदी

लृट् लकार			
प्र.पु.	भेष्यति	भेष्यतः	भेष्यन्ति
म.पु.	भेष्यसि	भेष्यथः	भेष्यथ
उ.पु.	भेष्यामि	भेष्यावः	भेष्यामः

अतः विकल्प C सही है।
नोट- भीष्यति, विभीष्यति और भेस्यति रूप 'भी' धातु के दसों लकारों में कहीं नहीं बनता है।
स्रोत- रूपचन्द्रिका- ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज-311

99. 'ज्ञा' (जानना) धातु (परस्मैपदी) के लृट्लकार के उत्तम पुरुष के एकवचन में रूप होगा-
(A) जानिष्यामि **(B) जनिष्यामि**
(C) ज्ञास्यामि **(D) ज्ञासिष्यामि**

व्याख्या-
ज्ञा अवबोधने धातु, सकर्मक, अनिट् , परस्मैपदी, क्र्यादिगण

लृट् लकार			
प्र.पु.	ज्ञास्यति	ज्ञास्यतः	ज्ञास्यन्ति
म.पु.	ज्ञास्यसि	ज्ञास्यथः	ज्ञास्यथ
उ.पु.	ज्ञास्यामि	ज्ञास्यावः	ज्ञास्यामः

अतः विकल्प C सही है।
नोट- जानिष्यामि, जनिष्यामि, ज्ञासिष्यामि, रूप 'ज्ञा' धातु के दसों लकारों में कहीं नहीं बनता है।
स्रोत- रचनानुवादकौमुदी- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-184

100.हु (हवनकरना) धातु के लृट् लकार में प्रथम पुरुष बहुवचन का रूप होगा-
(A) जुहोष्यन्ति (B) होष्यन्ति
(C) जुहुस्यन्ति (D) हविष्यन्ति

व्याख्या-
हु (दानादयोः) धातु, जुहोत्यादिगण, सकर्मक, अनिट्, परस्मैपदी है-

लृट्लकार			
प्र.पु.	होष्यति	होष्यतः	होष्यन्ति
म.पु.	होष्यसि	होष्यथः	होष्यथ
उ.पु.	होष्यामि	होष्यावः	होष्यामः

अतः विकल्प B सही है।

नोट- जुहोष्यन्ति, जुहुत्स्यन्ति, हविष्यन्ति रूप 'हु' धातु के दसों लकारों में कहीं नहीं बनता है।

स्रोत- रचनानुवादकौमुदी- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-166

101.शक् (समर्थ होना) धातु के लट्लकार में मध्यम पुरुष एकवचन का रूप होगा-
(A) शक्नोसि (B) शक्नोषि
(C) शक्नुसि (D) शक्नुषि

व्याख्या-
'शक्' (शक्लृ-शक्तौ धातु) समर्थ होना। अकर्मक, अनिट्, परस्मैपदी।

लट्लकार			
प्र.पु.	शक्नोति	शक्नुतः	शक्नुवन्ति
म.पु.	शक्नोषि	शक्नुथः	शक्नुथ
उ.पु.	शक्नोमि	शक्नुवः	शक्नुमः

अतः विकल्प B सही है।

नोट- शक्नोसि, शक्नुसि, शक्नुषि रूप शक् धातु के दसों लकारों में कहीं नहीं बनता है।

स्रोत- रूपचन्द्रिका- ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज-380

102. 'भी' धातु लट्लकार प्रथम पुरुष बहुवचन में रूप होगा-
(A) बिभ्यन्ति (B) भेष्यन्ति
(C) बिभ्यति (D) बिभेन्ति

व्याख्या-
भी (भये) धातु अकर्मक, अनिट्, परस्मैपद, जुहोत्यादिगण

प्र.पु.	बिभेति	बिभितः/बिभीतः	बिभ्यति
म.पु.	बिभेषि	बिभिथः/बिभीथः	बिभिथ/बिभीथ
उ.पु.	बिभेमि	बिभिवः/बिभीवः	बिभिमः/बिभीमः

अतः विकल्प C सही है।

नोट- बिभ्यन्ति, भेष्यन्ति, बिभेन्ति रूप (भी) धातु के दसों लकारों में कहीं नहीं बनता है।

स्रोत- रूपचन्द्रिका- ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज-310

103. 'तुद्' धातु के लृट् लकार मध्यम पुरुष के बहुवचन का रूप है-
(A) तोष्यस्यथः (B) तोष्यस्यथ
(C) तोत्स्यथ (D) तोतस्यथ

व्याख्या-

तुद् व्यथने धातु, सकर्मक, अनिट्, उभयपदी, तुदादिगण			
प्र.पु.	तोत्स्यति	तोत्स्यतः	तोत्स्यन्ति
म.पु.	तोत्स्यसि	तोत्स्यथः	तोत्स्यथ
उ.पु.	तोत्स्यामि	तोत्स्यावः	तोत्स्यामः

नोट- तोष्यस्यथः, तोष्यस्यथ, तोतस्यथ रूप 'तुद्' धातु के दसों लकारों में कहीं नही बनता है।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- रूपचन्द्रिका- ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज-386

104.'ब्रू' धातु के लट्लकार मध्यम पुरुष के बहुवचन का रूप है-
(A) ब्रूसि (B) ब्रवीषि
(C) ब्रवीसि (D) ब्रविसि

व्याख्या-

ब्रूञ्- व्यक्तायां वाचि, सकर्मक, अनिट्, उभयपदी, अदादिगण			
लट् लकार			
प्र.पु.	ब्रवीति	ब्रूतः	ब्रुवन्ति
	आह	आहतुः	आहुः
म.पु.	ब्रवीषि	ब्रूथः	ब्रूथ
	आत्थ	आहथुः	ब्रूथ
उ.पु.	ब्रवीमि	ब्रूवः	ब्रूमः

अतः विकल्प B सही है।

नोट- ब्रूसि, ब्रवीसि, ब्रविसि रूप दसों लकारों में कहीं नहीं बनता है।

स्रोत- रूपचन्द्रिका- ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज 271

105.दुह् धातु का लङ् लकार के उत्तम पुरुष का एकवचन रूप है-
(A) अदुहम **(B) अदुह्यम्**
(C) अदोहम् **(D) अदुहम्**

व्याख्या-

दुह् (प्रपूरणे) = दुहना (परस्मैपदी) सकर्मक, अनिट्, उभयपदी			
प्र.पु.	अधोक्/अधोग्	अदुग्धाम्	अदुहन्
म.पु.	अधोक्/अधोग्	अदुग्धम्	अदुग्ध
उ.पु.	अदोहम्	अदुह्व:	अदुह्म:

अतः विकल्प C सही है।

नोट- अदुहम, अदुह्यम्, अदुहम् रूप 'दुह्' के दसों लकारों में कहीं नहीं बनता है।

स्रोत- रूपचन्द्रिका- ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज-264

106. कौन सी धातु उभयपदी धातु नहीं है-
(A) हृ **(B) याच्**
(C) पच् **(D) तुद्**

व्याख्या-
हृञ् हरणे धातु, सकर्मक, अनिट्, उभयपदी, भ्वादिगण

परस्मैपद			आत्मनेपद		
हरति	हरतः	हरन्ति	हरते	हरेते	हरन्ते
हरसि	हरथः	हरथ	हरसे	हरेथे	हरध्वे
हरामि	हरावः	हरामः	हरे	हरावहे	हरामहे।

याच् धातु, सकर्मक, सेट्, उभयपदी भ्वादिगण

परस्मैपदी			आत्मनेपदी		
याचति	याचतः	याचन्ति	याचते	याचेते	याचन्ते
याचसि	याचथः	याचथ	याचसे	याचेथे	याचध्वे
याचामि	याचावः	याचामः	याचे	याचावहे	याचामहे

पच् धातु, सकर्मक, अनिट्, उभयपदी, भ्वादिगण

परस्मैपद			आत्मनेपद		
पचति	पचतः	पचन्ति	पचते	पचेते	पचन्ते
पचसि	पचथः	पचथ	पचसे	पचेथे	पचध्वे
पचामि	पचावः	पचामः	पचे	पचावहे	पचामहे

तुद् धातु, सकर्मक, अनिट्, उभयपदी, तुदादिगण

परस्मैपद			आत्मनेपद		
तुदति	तुदतः	तुदन्ति	तुदते	तुदेते	तुदन्ते
तुदसि	तुदथः	तुदथ	तुदसे	तुदेथे	तुदध्वे
तुदामि	तुदावः	तुदामः	तुदे	तुदावहे	तुदामहे।

नोट- 1. हृ प्रसह्य करणे धातु (सकर्मक, अनिट्, परस्मैपदी, छान्दसः) धातु परस्मैपदी धातु है इसका रूप - जिहर्ति, जिहर्तः, जिहर्न्ति चलता है इस दृष्टि से हृ धातु उभयपदी नहीं है

अतः विकल्प A सही है।

2. चूंकि आयोग ने इसका उत्तर तुद् माना है इस दृष्टि से 'कौन सी धातु भ्वादिगण की नहीं है' यदि प्रश्न इसप्रकार हो तो तुद् उत्तर सही हो सकता है क्योंकि हृ, याच् तथा पच् भ्वादिगण की धातु है जबकि तुद् धातु तुदादिगण की है।

स्रोत- सिद्धान्तकौमुदी (कारक-प्रकरण)- राममुनि पाण्डेय,पेज-20

107. 'हन्' धातु लट्लकार के प्रथम पुरुष, का द्विवचन रूप है-
(A) हतौ **(B) हन्तौ**
(C) हतः **(D) हनतः**

व्याख्या-
'हन्' = वध करना, सकर्मक, अनिट्, वधादेशे सेट्, परस्मैपदी

लट् लकार			
प्र.पु.	हन्ति	हतः	घ्नन्ति
म.पु.	हंसि	हथः	हथ
उ.पु.	हन्मि	हन्वः	हन्मः

अतः विकल्प C सही है।
हतौ, हन्तौ, हनतः रूप (हन्) धातु के दसों लकारों में कहीं नहीं बनता है।

स्रोत- रूपचन्द्रिका- ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज-296

108.'दा' धातु (आत्मनेपद) विधिलिङ् के उत्तम पुरुष के एकवचन का रूप है-
(A) ददीय **(B) दादीय**
(C) दिदय **(D) ददीत**

व्याख्या-
डुदाञ् दाने धातु, सकर्मक, अनिट्, उभयपदी (आकारान्त) दा धातु आत्मनेपद विधिलिङ्लकार

प्र.पु.	ददीत	ददीयाताम्	ददीरन्
म.पु.	ददीथाः	ददीयाथाम्	ददीध्वम्
उ.पु.	ददीय	ददीवहि	ददीमहि

अतः विकल्प A सही है।

नोट- दादीय, दिदय, ददीत रूप दा धातु के दसों लकारों में कहीं नहीं बनता है।

स्रोत- रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज -167

109. ....प्रणमामि' रिक्तस्थान में कौन से पद का प्रयोग होगा।
(A) सदाशिवं (B) सदाशिवेन
(C) सदाशिवाय (D) सदाशिवात्

व्याख्या-

A. 'सदाशिवं प्रणमामि'
उपपदविभक्तेः कारकविभक्तिः बलीयसी-
कारक विभक्ति उपपद की अपेक्षा बलवती होती है। अतः किसी स्थल पर कारक विभक्ति और उपपद विभक्ति दोनों प्राप्त होने पर कारक विभक्ति का ही प्रयोग होता है। जैसे नमः के योग में चतुर्थी का प्रयोग होता है। परन्तु 'नमस्करोति' इत्यादि क्रिया पदों के योग में कर्मकारक में द्वितीया होती है। यथा- नमस्करोति देवान्।

B. **कर्तृकरणयोस्तृतीया 2.3.18** अनुक्त कर्ता तथा करण कारक में तृतीया विभक्ति होती है - जैसे - रामेण बाणेन हतो बाली।

C. **धारेरुत्तमर्णः (1.4.35)** णिजन्त धृ धातु के योग में उत्तमर्ण ऋण देने वाले की सम्प्रदान संज्ञा होती है। जैसे - भक्ताय धारयति मोक्षं हरिः।

D. **आख्यातोपयोगे (1.4.29)** उपयोग एवं नियम पूर्वक विद्या पढ़ने में आख्याता (पढ़ाने वाला) की अपादान संज्ञा होती है। जैसे- उपाध्यायाद् अधीते।

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- कर्मणि द्वितीया (अष्टाध्यायी)

110. ....आलयः निर्मितः रिक्तस्थान की पूर्ति कीजिए
(A) मासेन (B) मासम्
(C) मासाय (D) मासात्

व्याख्या-

A. **अपवर्गे तृतीया (2.3.6)-** अपवर्ग का अर्थ है- क्रिया की समाप्ति होने पर फल की प्राप्ति। फल की प्राप्ति अर्थ के द्योतित होने पर काल और मार्गवाची शब्दों से अत्यन्त संयोग में तृतीया विभक्ति होती है। 'आलयः निर्मितः' वाक्य में फल की प्राप्ति हो जा रही है अतः 'मासेन आलयः निर्मितः' महीने भर में मकान का निर्माण हो जाता है इसलिए 'अपवर्गे तृतीया' सूत्र से तृतीया विभक्ति का विधान हुआ।

B. **अकर्मकधातुभिर्योगे देशः कालो भावो गन्तव्योऽध्वा च कर्मसंज्ञक इति वाच्यम् (वा.)-** अकर्मक धातुओं के प्रयोग में देश, काल, भाव और गन्तव्य मार्ग की कर्मसंज्ञा होती है।
जैसे- मासम् आस्ते। (महीने भर रहता है।)

C. **चतुर्थी सम्प्रदाने- (2.3.13)** अनभिहित सम्प्रदान कारक में चतुर्थी विभक्ति होती है।
जैसे- विप्राय गां ददाति (ब्राह्मण को गाय देता है।)

D. **अपादाने पञ्चमी- (2.3.28)** अनभिहित अपादान में पञ्चमी विभक्ति होती है। जैसे - ग्रामात् आयाति (गाँव से आता है।)

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- अष्टाध्यायी- (2.3.6)

111.हरिः.........आस्ते - रिक्तस्थान की पूर्ति कीजिए-
(A) वैकुण्ठं (B) वैकुण्ठे
(C) वैकुण्ठेन (D) वैकुण्ठाय

सप्तम्यधिकरणे च (2/3/36)- अधिकरण कारक में सप्तमी विभक्ति होती है।
व्याख्या- आधार तीन प्रकार का होता है-
आधार
1. अभिव्यापक (सर्वस्मिन् आत्मा अस्ति।) 2. वैषयिक (मोक्षे इच्छा अस्ति।) 3. औपश्लेषिक (हरिः वैकुण्ठे आस्ते।)
हरिः.......आस्ते - हरि वैकुण्ठ में रहते हैं अर्थात् रहना रूपी क्रिया का आधार वैकुण्ठ है इसलिए 'सप्तम्यधिकरणे च' सूत्र से वैकुण्ठ में, सप्तमी विभक्ति का रूप 'वैकुण्ठे' सही है।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- अष्टाध्यायी - (2.3.36)

112.'......नमस्कृत्य' रिक्तस्थान की पूर्ति उचित पद द्वारा कीजिए-
(A) मुनित्रयाद् (B) मुनित्रयस्य
(C) मुनित्रयम् (D) मुनित्रये

व्याख्या-

मुनित्रयं नमस्कृत्य तदुक्तीः परिभाव्य च।
वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदीयं विरच्यते।।

इस श्लोक में नमः पद के सानिध्य से 'मुनित्रयम्। पद में चतुर्थी विभक्ति की आशंका नहीं करनी चाहिए। विभक्तियाँ दो तरह की होती हैं - कारक विभक्ति और उपपद विभक्ति। जो विभक्तियाँ किसी पद के सानिध्य के कारण विहित की गई हैं उन्हे उपपद विभक्ति कहा जाता है। इसके अतिरिक्त क्रिया का आश्रय लेकर होने वाली विभक्ति कारक विभक्ति कहलाती है। क्रिया के साथ कारक का साक्षात् अन्वय होने के कारण यहाँ 'नमस्कृत्य' पद से 'नमस्कार करना' इसप्रकार की क्रिया की प्रतीति होती है इसलिए 'मुनित्रयम्' में द्वितीया विभक्ति का प्रयोग समुचित है।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत-वैयाकरण सिद्धान्तकौमुदी(खण्ड-1)-गोविन्दाचार्य पेज-01

113. ....चमरीं हन्ति' से पूर्व रिक्तस्थान में कौन से पद का प्रयोग होगा

(A) केशान् **(B) केशैः**
(C) केशेभ्यः **(D) केशेषु**

व्याख्या-

निमित्तात् कर्मयोगे (वा.)- निमित्तवाची शब्दों से सप्तमी विभक्ति होती है, यदि वह निमित्त (फल) कर्म से युक्त हो। जैसे-

चर्मणि द्वीपिनं हन्ति दन्तयोर्हन्ति कुञ्जरम्।
केशेषु चमरीं हन्ति सीम्नि पुष्कलको हतः।।

* चर्मणि द्वीपिनं हन्ति - चमड़े के लिए गैड़े को मारता है।
* केशेषु चमरीं हन्ति - केश के लिए चमरी मृग को मारता है।
* सीम्नि पुष्कलको हतः - अण्डकोश के लिए कस्तूरी मृग को मारता है।

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत-सिद्धान्तकौमुदी(कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज- 95

114. 'स........बिभेति' रिक्तस्थान में उचित पद होगा-

(A) उपवनात् **(B) उपवनस्य**
(C) उपवने **(D) उपवनेन**

व्याख्या-

भीत्रार्थानां भयहेतुः (1/4/25)

भय और त्राण अर्थों वाली धातुओं के योग में भय के कारण अर्थात् जिससे भय लगता है उसकी अपादान सञ्ज्ञा होती है।

सः व्याघ्रात् बिभेति। वह बाघ से डरता है।

भी धातु के प्रयोग में भय के कारण 'भीत्रार्थानां भयहेतुः' सूत्र से व्याघ्र की अपादान संज्ञा होकर 'अपादाने पञ्चमी' से पञ्चमी विभक्ति होकर 'व्याघ्रात्' बना।

उपर्युक्त पंक्ति में 'वन' भय का कारण नहीं बल्कि वन में रहने वाले जीव-जन्तु भय का कारण हैं इसलिए प्रस्तुत उदाहरण में वन की अपादान सञ्ज्ञा न होकर अधिकरण सञ्ज्ञा होगी और सप्तमी विभक्ति उपवने होगी, अतः 'स उपवने बिभेति' यह वाक्य शुद्ध होगा।

इसलिए विकल्प C सही है।

स्रोत- अष्टाध्यायी (1.4.25)

115.'.......दुह्यमानासु गतः' रिक्तस्थान में उचित पद का प्रयोग होगा-

(A) गावः **(B) गोभिः**
(C) गोभ्यः **(D) गोषु**

व्याख्या-

➢ **यस्य च भावेन भावलक्षणम् (2/3/37)**

जिसकी क्रिया से कोई दूसरी क्रिया लक्षित होती है, उस क्रियावान् में सप्तमी विभक्ति होती है।

'गोषु दुह्यमानासु गतः' (वह गायों के दुहे जाते समय गया)- यहाँ गाय में रहने वाली दोहन रूप क्रिया से किसी व्यक्ति की गमन क्रिया लक्षित की जा रही है।

अतः प्रकृत सूत्र से लक्षण 'गोषु दुह्यमानासु' में सप्तमी विभक्ति हुई। **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत-सिद्धान्तकौमुदी(कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज-95

116. 'भक्तिः...........कल्पते' उचित पद द्वारा रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए

(A) ज्ञानम् **(B) ज्ञाने**
(C) ज्ञानाय **(D) ज्ञानात्**

व्याख्या-

➢ **क्लृपि सम्पद्यमाने च (वा.)**

क्लृप् अर्थ वाली धातुओं के योग में सम्पद्यमान (उत्पन्न होने वाले) अर्थ में चतुर्थी विभक्ति होती है।

जैसे - भक्तिर्ज्ञानाय कल्पते सम्पद्यते जायते।

(भक्ति ज्ञान के लिए होती है।) यहाँ क्लृप् , सम्पद् अथवा जन् धातु के योग में सम्पद्यमान 'ज्ञान' में प्रकृत वार्तिक से चतुर्थी विभक्ति हुई। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत-सिद्धान्तकौमुदी(कारक प्रकरण)- राममुनि पाण्डेय, पेज-53

117. भारतस्य.......हिमालयोऽस्ति - रिक्तस्थान की पूर्ति कीजिए -
(A) उत्तरदिशायां (B) उत्तरे दिशायां
(C) उत्तरे दिशी (D) उत्तरस्यां दिशि

व्याख्या-
अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा
हिमालयो नाम नगाधिराजः।
पूर्वापरौ तोयनिधी वगाह्य
स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः।।
उत्तर दिशा में देवता की आत्मा वाला हिमालय नामक पर्वतराज है, (जो) पूर्वी तथा पश्चिमी समुद्र में प्रवेश करके पृथिवी के मानदण्ड के समान स्थित है।
नोट- उक्त कथन महाकवि कालिदास कृत कुमारसम्भवम् के प्रथम सर्ग के प्रथम श्लोक से लिया गया है। जिसमें हिमालय का वर्णन है।
अतः विकल्प D सही है।
स्रोत- कुमारसम्भवम् (1.1)

118.'स.........उपवसति' के मध्य रिक्तस्थान में कौन सा उचित पद होगा-
(A) ग्रामम् (B) ग्रामेण
(C) ग्रामात् (D) ग्रामे

व्याख्या-
उपान्वध्याङ्वसः (1.4.48)- यदि वस् धातु के पूर्व उप, अनु, अधि और आङ् उपसर्ग लगा हो तो उसके आधार की कर्म संज्ञा होती है।
स.........उपवसति
वस् धातु के पूर्व उप उपसर्ग है अतः उपर्युक्त सूत्र से आधार की कर्मसञ्ज्ञा होकर द्वितीया विभक्ति का विधान होगा, ग्राम शब्द का द्वितीया विभक्ति में ग्रामम् रूप बनेगा। **अतः विकल्प A सही है।**
स्रोत- सिद्धान्तकौमुदी (1.4.48)- राममुनि पाण्डेय, पेज-44

119.......उदिते पद्मं विकसति - से पूर्व रिक्तस्थान में उचित पद होगा-
(A) सूर्य (B) सूर्येण
(C) सूर्यस्य (D) सूर्ये

व्याख्या-
'यस्य च भावेन भावलक्षणम्' (2.3.37)
'यस्य क्रियया क्रियान्तरं लक्ष्यते, ततः सप्तमी स्यात्' अर्थात् जब किसी कार्य के हो जाने पर दूसरी क्रिया या कार्य हो तो जो कार्य पहले समाप्त होता है उसमें सप्तमी विभक्ति का विधान होता है।
सूर्य के उदित होने पर कमल खिलता है। प्रस्तुत उदाहरण में उदित होना प्रथम क्रिया है इसलिए 'यस्य च भावेन भावलक्षणम्' सूत्र से सप्तमी विभक्ति का प्रयोग (उदिते सूर्ये) होगा। **अतः विकल्प D सही है।**
स्रोत- अष्टाध्यायी (2.3.37)

120.'..........वस्त्रं देहि' से पूर्व रिक्तस्थान में कौन से पद का प्रयोग होगा
(A) दरिद्राय (B) दरिद्रस्य
(C) दरिद्रम् (D) दरिद्रे

व्याख्या-
कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम् (1.4.32)
दान क्रिया के कर्म के द्वारा कर्त्ता जिसको सन्तुष्ट करना चाहता है उसकी सम्प्रदान संज्ञा होती है और 'चतुर्थी सम्प्रदाने' (2-3-13) सूत्र से चतुर्थी विभक्ति होती है। इसलिए दरिद्र शब्द का चतुर्थी विभक्ति में दरिद्राय रूप होगा जिसका प्रयोग 'दरिद्राय वस्त्रं देहि' होगा अर्थात् दरिद्र को वस्त्र दो। **अतः विकल्प A सही है।**
स्रोत- अष्टाध्यायी (2.3.13)

121. 'उनके द्वारा हँसा जाता है'- संस्कृत में अनुवाद होगा-
(A) तेन हसति (B) तैन हस्यते
(C) तैः हस्यते (D) तै हस्यन्ते

व्याख्या-
'उनके द्वारा हँसा जाता है' यह वाक्य भाववाच्य का वाक्य है अकर्मक धातुओं से ही भाववाच्य होता है भाववाच्य के वाक्य में, कर्त्ता में तृतीया विभक्ति तथा क्रिया में प्रथम पुरुष का एकवचन होगा। भाववाच्य में लट् आदि में धातु के अन्त में य लगाकर रूप चलाते हैं धातु का रूप सदा आत्मनेपद में ही चलता है।
इसलिए 'उनके द्वारा हँसा जाता है' का अनुवाद 'तैः हस्यते' होगा। **अतः विकल्प C सही है।**
स्रोत- रचनानुवादकौमुदी- कपिलदेव द्विवेदी, पेज -52

122. राम, मैं और तुम घर को जायेंगे - संस्कृत में अनुवाद होगा-
(A) रामः अहं च त्वं च गृहं गमिष्यति
(B) रामः अहं च त्वं च गृहं गमिष्यसि
(C) रामः अहं च त्वं च गृहं गमिष्यन्ति
(D) रामः अहं च त्वं च गृहं गमिष्यामः

व्याख्या-
(D) रामः अहं च त्वं च गृहं गमिष्यामः।
नियम-
- जब प्रथम, मध्यम और उत्तम पुरुष में से दो या तीन एकत्र हो जाते हैं,वहाँ पर क्रिया का रूप निम्नलिखित रूप से रखा जायेगा।
- प्रथम पु0+प्रथम पु0= क्रिया प्रथम पुरुष होगी। वचन कर्ता की सामूहिक संख्या के अनुसार। जैसे- राम, कृष्ण और देव पढ़ते हैं- रामः कृष्णः देवश्च पठन्ति।रामः रमा च पठतः।
- प्रथम पु0+मध्यम पु0= क्रिया मध्यम पुरुष होगी। वचन कर्ता की सामूहिक संख्या के अनुसार। वह और तुम पढ़ते हो- स त्वं च पठथः। तौ त्वं च लिखथ। स यूयं च गच्छथ। अर्थात् प्रथम पुरुष और मध्यम पुरुष में मध्यम पुरुष शेष रहता है। यदि उत्तम पुरुष के साथ में होगा तो उत्तम पुरुष ही शेष रहेगा। वचन कर्ता की सामूहिक संख्या के अनुसार। तू और मैं पढ़ते हैं।

1. त्वम् अहं च पठावः
2. सः त्वम् अहं च पठामः।
3. अहं युवां च पठामः।

उसी तरह 'रामः अहं च त्वं च गृहं गमिष्यामः।'
अतः विकल्प D सही है। अन्य विकल्प व्याकरण नियमानुसार अशुद्ध है।
स्रोत- रचनानुवादकौमुदी- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-102

123.मेरे द्वारा एक बालिका देखी गयी- संस्कृत अनुवाद होगा-
(A) मया एकं बालिका दृष्टम्
(B) मया एका बालिका दृष्टा
(C) मया एका बालिका दृष्टाः
(D) मया एका बालिका दृष्टाम्

व्याख्या-
- संस्कृत में 3 वाच्य होते हैं। 1. कर्तृवाच्य 2. कर्मवाच्य 3. भाववाच्य।
- उपर्युक्त वाक्य कर्मवाच्य का उदाहरण है। कर्मवाच्य में कर्म मुख्य होता है। कर्म के अनुसार ही क्रिया का पुरुष, वचन और लिङ्ग होता है-
मेरे द्वारा एक बालिका देखी गयी। मया एका बालिका दृष्टा। **उपर्युक्त नियमानुसार विकल्प B सही है।**

स्रोत- रचनानुवादकौमुदी- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-52

124.भगवान् हनुमान् को नमस्कार- संस्कृत में अनुवाद होगा-
(A) भगवते हनुमते नमः
(B) भगवते हनुमानाय नमः
(C) भगवतस्य हनुमानाय नमः
(D) भगवते हनुमताय नमः

व्याख्या-
भगवते हनुमते नमः -
नमः स्वस्ति स्वाहास्वधाऽलंवषड्योगाच्च
(2.3.16)
नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलम् और वषट् - इन अव्यय पदों के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है।
अतः 'नमः' पद का प्रयोग होने से भगवत् , हनुमत् का चतुर्थी विभक्ति में भगवते, हनुमते रूप बनेगा इसलिए 'भगवते हनुमते नमः' (भगवान् हनुमान् को नमस्कार) वाक्य शुद्ध है। **अतः विकल्प A सही है।**
स्रोत- सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरणम्)- 2.3.16

125. इत्संज्ञा विधायक सूत्र कितने है?
(A) 14 **(B) 4**
(C) 6 **(D) 5**

व्याख्या-
इत्सञ्ज्ञा विधायक सूत्र-
- **उपदेशेऽजनुनासिक इत् (1.3.2)** उपदेश की अवस्था में अनुनासिक अच् वर्ण की इत् सञ्ज्ञा होती है।
उदाहरण - एधँ शब्द में धकारोत्तरवर्ती अकार अनुनासिक होने से इत्सञ्ज्ञक है।
- **हलन्त्यम् (1.33)-** उपदेश में अन्तिम हल् इत्सञ्ज्ञक होता है। उदाहरण - अइउण् में णकार इत्सञ्ज्ञक है।

- **आदिर्ञिटुडवः (1.3.5)-** उपदेश अवस्था में धातु के आदि में वर्तमान ञि, टु, डु इनकी इत्सञ्ज्ञा होती है। उदा. ञिमिदा, टुवेपृ।
- **षः प्रत्ययस्य (1.3.6)-** उपदेश अवस्था में प्रत्यय के आदि में स्थित षकार की इत्सञ्ज्ञा होती है। उदाहरण - नृत् + ष्वुन् यहाँ षकार इत्संज्ञक है।
- **चुटू (1.3.7)-** उपदेश अवस्था में प्रत्यय के आदि में वर्तमान चवर्ग और टवर्ग की इत्सञ्ज्ञा होती है। उदा. - वाच् + टा = वाचा में 'ट्' की इत्सञ्ज्ञा।
- **लशक्वतद्धिते (1.3.8)-** उपदेश अवस्था में प्रत्यय के आदि में स्थित लकार, शकार तथा कवर्ग की इत्सञ्ज्ञा होती है किन्तु तद्धित प्रत्यय में नही। उदाहरण - चि + ल्युट् = चयनम् में लकार की इत्सञ्ज्ञा होगी। इसप्रकार इत्सञ्ज्ञा विधायक सूत्र की संख्या - 6 है।
- **इत्सञ्ज्ञा निषेधक सूत्र-** 'न विभक्तौ तुस्माः' (1.3.4) विभक्ति में वर्तमान तवर्ग, सकार और मकार जो अन्त्य हल् है उनकी इत्सञ्ज्ञा नहीं होती है।

उदाहरण - रामात् , जस् , आम्।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- अष्टाध्यायी (1.3.2से 1.3.8तक)- ईश्वरचन्द्र, पेज-79-82

उत्तरमाला

1.C	2.A	3.D	4.A	5.C	6.A	7.B	8.C	9.B	10.D	11.B	12.D
13.D	14.B	15.D	16.C	17.A	18.B	19.C	20.C	21.A	22.D	23.C	24.C
25.B	26.C	27.B	28.B	29.C	30.C	31.C	32.C	33.D	34.B	35.C	36.B
37.C	38.D	39.D	40.A	41.A	42.B	43.B	44.B	45.B	46.D	47.D	48.C
49.B	50.C	51.D	52.C	53.C	54.B	55.B	56.C	57.B	58.A	59.B	60.B
61.D	62.A	63.C	64.D	65.B	66.B	67.C	68.A	69.C	70.A	71.C	72.C
73.B	74.C	75.C	76.C	77.B	78.D	79.C	80.A	81.C	82.D	83.C	84.D
85.B	86.B	87.B	88.A	89.D	90.D	91.B	92.A	93.B	94.D	95.C	96.A
97.*	98.C	99.C	100.B	101.B	102.C	103.C	104.B	105.C	106.*	107.C	108.A
109.A	110.A	111.B	112.C	113.D	114.C	115.D	116.C	117.D	118.A	119.D	120.A
121.C	122.D	123.B	124.A	125.C							

❑❑

9. प्रवक्ता (PGT) संस्कृत 2013

01. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में शकुन्तला को शाप दिया था-
(A) नारद ने (B) दुर्वासा ने
(C) विश्वामित्र ने (D) मारीच ने

व्याख्या–

(A) नारद– नारद महर्षि कण्व का शिष्य है चतुर्थ अङ्क में वृक्षों से प्राप्त आभूषणों को लेकर आने पर गौतमी पूँछती है–
'गौतमी–वत्स नारद! कुत एतत्?' पुत्र नारद ये कहाँ से मिले हैं?

(B) दुर्वासा– अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के चतुर्थ अङ्क में आतिथ्य सत्कार न होने से क्रोधित महर्षि दुर्वासा ने पति चिन्तन में मग्न शकुन्तला को शाप दिया कि जिसका तुम स्मरण कर रही हो वह उन्मत्त व्यक्ति के समान स्मरण कराया जाता हुआ भी तुम्हें स्मरण नहीं करेगा।
विचिन्तयन्ती यमनन्यमानसा
तपोधनं वेत्सि न मामुपस्थितम् ।
स्मरिष्यति त्वां न स बोधितोऽपि सन्
कथां प्रमत्तः प्रथमं कृतामिव।। (अभि.शा. 4/1)
अतः विकल्प B सही है।

(C) विश्वामित्र– शकुन्तला ब्रह्मर्षि विश्वामित्र एवं मेनका की औरस पुत्री है एवं महर्षि कण्व की मानस पुत्री (धर्मपुत्री) है। यह कौशिक गोत्र नाम के प्रभावशाली राजर्षि हैं। यह बात अनसूया राजा को बताती है–
अनसूया– '' श्रृणोत्वार्य! अस्ति कोऽपि कौशिक इति गोत्रनाम धेयो महाप्रभावो राजर्षिः। .....तम् आवयोः प्रियसख्याः प्रभवमवगच्छ।'' (अभि.अङ्क-1)

(D) मारीच– महर्षि मारीच ने सातवें अङ्क में शकुन्तला को इन्द्राणी के समान होने का आशीर्वाद दिया है-
'आशीरन्या न ते योग्या पौलोमीसदृशी भव।'
(अभि.शा.7/28)

स्रोत– अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/1) कपिलदेव द्विवेदी, पेज-184

02. 'किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्' पंक्ति ग्रहण की गयी है-
(A) 'कादम्बरी' से
(B) 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' से
(C) 'शिशुपालवधम्' से
(D) 'मृच्छकटिकम्' से

व्याख्या-

- कालिदास प्रणीत अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के प्रथम अङ्क में वल्कल वस्त्रधारिणी शकुन्तला को देखकर राजा दुष्यन्त कहते हैं कि–
  'किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्' (अभि. 1.20)
  ठीक ही कहा गया है कि सुन्दर एवं मनोहारिणी आकृतिवालों के लिए सभी वस्तुएँ शोभाधायक ही होती हैं ठीक इसी प्रकार शैवाल से आच्छादित कमल के समान वल्कलवस्त्र से सन्नद्ध शकुन्तला का शरीर अत्यन्त मनोहारी प्रतीत हो रहा है वस्तुतः मनोहर आकृति वालों के लिए सभी वस्तुएँ निर्बाध अलंकार बन जाती हैं अथवा उनकी शोभा में गुणात्मक वृद्धि कर देती है।
  अतः विकल्प B सही है।
- बाणभट्ट द्वारा रचित कादम्बरी के चाण्डालकन्या वर्णन में राजा शूद्रक चाण्डालकन्या के सौन्दर्य को देखकर कहता है कि– 'विधातुरस्थाने रूपनिष्पादनप्रयत्नः।'
  विधाता ने अनुचित स्थान पर रूप निर्माण का प्रयास किया है।
- शिशुपालवधम् के ग्यारहवें सर्ग में माघ रमणियों का वर्णन करते हुए कहते हैं–
  कामिनां मण्डनश्रीर्व्रजति हि सफलत्वं वल्लभालोकनेन।
  (शिशु.11.33)
  कामियों के मण्डनों की शोभा प्रिया के दर्शनमात्र से ही सफल हो जाती हैं।
- मृच्छकटिकम् के चतुर्थ अङ्क में शर्विलक मदनिका से कहता है- 'स्त्रियो हि नाम खल्वेता निसर्गादेव पण्डिताः।'
  (मृच्छ. 4.19)
  व्यवहारिक क्षेत्र में पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियाँ अधिक चतुर होती हैं।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/20)- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-46

03. 'चारुदत्त' नायक है-
(A) 'शिशुपालवधम्' में
(B) 'रघुवंशम्' में
(C) 'मृच्छकटिकम्' में
(D) 'कादम्बरी' में

व्याख्या–

ग्रन्थ	विधा	नायक-नायिका
(A) शिशुपालवधम् (20सर्ग)	महाकाव्य	श्रीकृष्ण
(B) रघुवंशम् (19सर्ग)	महाकाव्य	राम-सीता
(C) मृच्छकटिकम् (10अङ्क)	प्रकरण	चारुदत्त-वसन्तसेना और धूता
(D) कादम्बरी (दो भाग)	कथा	चन्द्रापीड/कादम्बरी

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- मृच्छकटिकम्- रमाशङ्कर त्रिपाठी, भू. पेज-31

04. 'मृच्छकटिकम्' का शाब्दिक अर्थ है-
(A) **मिट्टी की गाड़ी** (B) **मिट्टी का घोड़ा**
(C) **मृत गन्त्री** (D) **कठिन प्रयास**

व्याख्या–
शूद्रककृत 'मृच्छकटिकम्' प्रकरण में मृच्छकटिकम् का शाब्दिक अर्थ है 'मिट्टी की गाड़ी'।
मृच्छकटिकम् के षष्ठ अङ्क में चारुदत्त का पुत्र रोहसेन पड़ोसी के बच्चे के साथ सोने की गाड़ी से खेल रहा था। जब वह अपनी गाड़ी लेकर चला गया तो रदनिका द्वारा मिट्टी की गाड़ी देने पर वह रोकर उसी गाड़ी को माँगता है तब वसन्तसेना उसे शान्त कराने के लिए अपने आभूषण उतार कर दे देती हैं।
वसन्तसेना– तद्गृहाणैतमलङ्कारं, सौवर्णशकटिकां कारय। (मृच्छ. षष्ठ अङ्क)
अतः विकल्प A सही है।

स्रोत – संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास– कपिलदेव द्विवेदी, पेज-308

05. 'वेश्याः श्मशानसुमना इव वर्जनीयाः' पंक्ति ग्रहण की गयी है-
(A) **'मृच्छकटिकम्' से** (B) **'नलचम्पू' से**
(C) **'शिशुपालवधम्' से** (D) **'उत्तररामचरितम्' से**

व्याख्या-
(A) शूद्रक प्रणीत मृच्छकटिकम् के चतुर्थ अङ्क में शर्विलक मदनिका से कहता है-
'वेश्याः श्मशानसुमना इव वर्जनीयाः।' (मृच्छ.4.14)
वेश्या श्मशान पुष्प के समान त्याज्य है।
अतः विकल्प A सही है।
(B) त्रिविक्रमभट्ट विरचित नलचम्पू के प्रथम उच्छ्वास में पथिक राजा नल से कहता है– 'युवजनोन्मादिनी यौवनश्रीः' (नलचम्पू 1.57)
युवावस्था का सौन्दर्य युवकों को उन्मत्त करने वाला होता है।
(C) माघ विरचित शिशुपालवधम् के षष्ठ सर्ग में भगवान् श्रीकृष्ण शरद् ऋतु का वर्णन करते हुए कहते हैं–
'समय एव करोति बलाबलम्' (शिशु. 6.44)
समय ही मनुष्य को सबल एवं निर्बल बनाता है।
(D) भवभूति विरचित उत्तररामचरितम् के चतुर्थ अङ्क में अरुन्धती राजा जनक से कहती हैं –
'पुरन्ध्रीणां चित्तं कुसुमसुकुमारं हि भवति' (उत्तर 04.12)
कुलीन स्त्रियों का चित्त फूल के समान कोमल होता है।

स्रोत– मृच्छकटिकम् (4/14)- रमाशङ्कर त्रिपाठी, पेज -260

06. 'मृच्छकटिकम्' के सम्बन्ध में अधोलिखित कथन सत्य है-
(A) **'मृच्छकटिकम्' केवल प्राकृत भाषा में लिखा गया है।**
(B) **'मृच्छकटिकम्' एक नाटक है।**
(C) **'मृच्छकटिकम्' में केवल पद्यों का प्रयोग है।**
(D) **'मृच्छकटिकम्' एक प्रकरण है।**

व्याख्या–
'मृच्छकटिकम्' शूद्रककृत एक 'प्रकरण' नामक रूपक है। साहित्यदर्पणकार आचार्य विश्वनाथ ने साहित्यदर्पण के षष्ठ परिच्छेद में प्रकरण का लक्षण इसप्रकार दिया है–
'भवेत्प्रकरणे वृत्तं लौकिकं कविकल्पितं
शृङ्गारोऽङ्गी नायकस्तु विप्रोऽमात्योऽथवा वणिक्।
सापायधर्मकामार्थपरो धीरप्रशान्तकः।।' (सा. द. 6/224-225)
प्रकरण में कथा लौकिक, कविकल्पित होती है, इतिहास प्रसिद्ध नहीं होती। इसमें प्रधानरस शृङ्गार होता है और नायक ब्राह्मण, मन्त्री अथवा वैश्य होता है। नायक विघ्नपूर्ण धर्म, अर्थ और काम में तत्पर धीरप्रशान्त होता है।
उक्त लक्षण मृच्छकटिकम् पर घटित होता है अतः मृच्छकटिकम् रूपक का एक भेद प्रकरण है।
अतः विकल्प D सही है।

स्रोत– मृच्छकटिकम्– रमाशङ्कर त्रिपाठी, भू.पेज-27

07. 'श्रेयसि केन तृप्यते' सूक्ति ग्रहण की गयी है-
(A) शिशुपालवधम् से (B) किरातार्जुनीयम् से
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से (D) मृच्छकटिकम् से

व्याख्या–

➢ महाकवि माघ प्रणीत शिशुपालवध महाकाव्य के प्रथम सर्ग में श्रीकृष्ण देवर्षि नारद की प्रशंसा करते हुए कहते हैं– 'श्रेयसि केन तृप्यते' (शिशु. 1.29)
कल्याण के विषय में कौन तृप्त होता है, अर्थात् कोई तृप्त नहीं होता। **अतः विकल्प A सही है।**

➢ महाकवि भारवि प्रणीत किरातार्जुनीयम् महाकाव्य के ग्यारहवें सर्ग में सज्जनपुरुषों के विषय में कहते हैं–
'न्यायधारा हि साधवः' (किरात.11.30)
सज्जन पुरुष हमेशा न्यायपथावलम्बी होते हैं।

➢ कालिदास द्वारा रचित अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के सप्तम अङ्क में राजा दुष्यन्त महर्षि मारीचि के आश्रम के विषय में कहते हैं–
'अनतिक्रमणीयानि श्रेयांसि।' (अभि. अङ्क-7)
कल्याणकारी वस्तुओं को छोड़कर नहीं जाना चाहिए।

➢ महाकवि शूद्रक प्रणीत मृच्छकटिकम् प्रकरण के प्रथम अङ्क में विट, चारुदत्त-वसन्तसेना के प्रति कहता है–
'रत्नं रत्नेन सङ्गच्छते' (मृच्छ. अङ्क 1)
रत्न का संयोग रत्न से ही होता है।

स्रोत– शिशुपालवधम् (1/29)- आद्याप्रसाद मिश्र,पेज–49

08. शिशुपालवध के अनुसार शिशुपाल है–
(A) हिरण्यकशिपु का जन्मान्तर
(B) कंस का जन्मान्तर
(C) रावण का जन्मान्तर
(D) जलन्धर का जन्मान्तर

व्याख्या–

माघ विरचित शिशुपालवधम् के प्रथम सर्ग में नारद श्रीकृष्ण से बता रहें हैं कि हिरण्यकशिपु ने ही दूसरे जन्म में रावण के रूप में जन्म लिया-
विनोदमिच्छन्नथ दर्पजन्मनो रणेन कण्ड्वात्रिदशैः समं पुनः।
स रावणो नाम निकामभीषणं बभूव रक्षः क्षतरक्षणं दिवः ।।(शिशु. 1/48)
वह हिरण्यकशिपु अहङ्कारजन्य खुजलाहट को दूर करने की इच्छा करता हुआ स्वर्ग की रक्षा को नष्ट करने वाला अत्यन्त भयङ्कर रावण नामक राक्षस हुआ।
हिरण्यकशिपु → रावण → शिशुपाल
अतः विकल्प C सही है।

स्रोत– शिशुपालवधम् (1/69)- तारिणीश झा, पेज–144

09. हरत्यघं सम्प्रति हेतुरेष्यतः शुभस्य पूर्वाचरितैः कृतं शुभैः। शरीरभाजां भवदीयदर्शनं व्यनक्ति कालत्रितयेऽपि योग्यताम्।।
इस पद्य का कथन किया है-
(A) **शिशुपालवध में नारद ने**
(B) **नलचम्पू में नल ने**
(C) **शिशुपालवध में श्रीकृष्ण ने**
(D) **कादम्बरी में बाणभट्ट ने**

व्याख्या–

माघकृत 'शिशुपालवधम्' महाकाव्य के प्रथमसर्ग में भगवान् श्रीकृष्ण नारद के दर्शन का महत्त्व प्रतिपादित करते हुए कहते हैं– हरत्यघं सम्प्रति..................कालत्रितयेऽपि योग्यताम्। (शिशु. 1/26)
आपका दर्शन तीनों कालों में भी शरीरधारियों की पवित्रता को व्यक्त करता है। इस समय पाप को हरण करता है। भावी कल्याण का हेतु है तथा पहले किये गये पुण्यों से प्राप्त हुआ है। **अत विकल्प C सही है।**

स्रोत–शिशुपालवधम्(1/26)-जनार्दन गंगाधर रटाटे,पेज–61

10.'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः' सूक्ति ग्रहण की गयी है-
(A) 'नीतिशतकम्' से
(B) 'किरातार्जुनीयम्' से
(C) 'उत्तररामचरितम्' से
(D) 'कुमारसम्भवम्' से

व्याख्या–

(A) भर्तृहरि नीतिशतकम् के अर्थपद्धति में धन के विषय में कहते हैं-
''येनैकेन विना गुणास्तृणलवप्रायाः समस्ता इमे।' (नीति.श्लोक-31)
धन के बिना मनुष्य के सारे गुण तिनके के समान निरर्थक हैं।

(B) किरातार्जुनीयम् महाकाव्य के प्रथमसर्ग में वनेचर युधिष्ठिर से कहता है कि-
'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः (किरात 1.4)
हितकारी एवं मनोहर वाणी दुर्लभ होती है।
अतः विकल्प B सही है।

(C) उत्तररामचरितम् के प्रथम अङ्क में राजा राम दुर्मुख से कहते हैं–

'सतां केनापि कार्येण लोकस्याराधनं व्रतम्।' (उत्तर. 1.41)
प्रजा को प्रसन्न रखना सज्जनों का कर्तव्य है।

(D) कालिदासविरचित कुमारसम्भवम् के बारहवें सर्ग में देवता भगवान् शिव की स्तुति करते हुए कहते हैं –
'प्रभु प्रसादो हि मुदे न कस्य' (कुमार. 12.32)
स्वामी की प्रसन्नता से किसे प्रसन्नता नहीं होती है।

स्रोत- किरातार्जुनीयम् (1/4)- रामसेवक दुबे, पेज-50

11. 'सन्ततिः शुद्धवंश्या हि परत्रेह च शर्मणे' सूक्ति ग्रहण की गयी है-
(A) शिशुपालवधम् से (B) किरातार्जुनीयम् से
(C) रघुवंशम् से (D) मालविकाग्निमित्रम् से

व्याख्या–

(A) शिशुपालवध महाकाव्य के नवम सर्ग में महाकवि माघ चन्द्रोदय का वर्णन करते हैं-
'समये हि सर्वमुपकारि कृतम्' (शिशु. 9.43)
समय पर किया हुआ सब कार्य उपकार हुआ करता है।

(B) भारविकृत किरातार्जुनीयम् महाकाव्य के प्रथमसर्ग में द्रौपदी युधिष्ठिर से कहती हैं-
'शमेन सिद्धिं मुनयो न भूभृतः' (किरात. 1.42)
शान्ति से मुनि लोग सिद्धि प्राप्त करते हैं।

(C) रघुवंशम् के प्रथमसर्ग में राजा दिलीप वशिष्ठ से पुत्र प्राप्ति के विषय में कहते हैं–
'सन्ततिः शुद्धवंश्या हि परत्रेह च शर्मणे' (रघु 1.69)
पवित्रवंश में उत्पन्न हुई सन्तति इस लोक और परलोक दोनों में ही सुख के लिए होती है।
अतः विकल्प C सही है।

(D) मालविकाग्निमित्रम् नाटक के चतुर्थ अङ्क में गणदास देवी से कहता है–
'श्यामायते न युष्मासु यः काञ्चनमिवाग्निषु।'
(मालवि.अङ्क2/9)
सोना आग में पड़ने से काला नहीं होता है।

स्रोत- रघुवंशम् (1/69)- हरगोविन्द मिश्र, पेज–24

12. गोविन्द ठक्कुर हैं-
(A) एकावली के रचनाकार
(B) महाकवि
(C) काव्यप्रकाश के टीकाकार
(D) श्रीकण्ठचरितम् के रचयिता

व्याख्या-

* एकावली के रचनाकार – विद्याधर
* काव्यप्रकाश के टीकाकार – गोविन्द ठक्कुर
* श्रीकण्ठचरितम् – मंखक

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- काव्यप्रकाश- पारसनाथ द्विवेदी, भूमिका- पेज-52

13. 'प्रत्यक्षरश्लेषघना कथा' कही जाती है-
(A) अवन्तिसुन्दरी कथा (B) कादम्बरी कथा
(C) वासवदत्ता कथा (D) शिवराजविजय

व्याख्या-

ग्रन्थ	ग्रन्थकार	अलङ्कार
(A) अवन्तिसुन्दरीकथा	दण्डी	श्लेष
(B) कादम्बरीकथा	बाणभट्ट	परिसंख्या
(C) वासवदत्ताकथा	सुबन्धु	श्लेष
(D) शिवराजविजय	अम्बिकादत्तव्यास	विरोधाभास

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- वासवदत्ता– (श्लोक-13)– जमुना पाठक, पेज–12

14. 'वासवदत्ता' के रचयिता हैं-
(A) धनपाल (B) सुबन्धु कवि
(C) दण्डी (D) बाणभट्ट

व्याख्या-

	कवि	ग्रन्थ	अनुमानित समय
A	धनपाल	तिलकमञ्जरी	दशवीं शताब्दी
B	सुबन्धु	वासवदत्ता	सातवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध
C	दण्डी	दशकुमारचरितम्	छठी शताब्दी
D	बाणभट्ट	कादम्बरी	छठी शताब्दी

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-482

15. 'क्वचिद्बुधैरप्यपथेन गम्यते' सूक्ति का स्रोत है-
(A) कुमारसम्भवम् (B) मृच्छकटिकम्
(C) नैषधीयचरितम् (D) मालविकाग्निमित्रम्

व्याख्या-

(A) कालिदास विरचित कुमारसम्भवम् के सर्ग सत्रह में पार्वती की तपस्या का वर्णन इसप्रकार है-
'न धर्मवृद्धेषु वयः समीक्ष्यते। (कुमार.5/16)
धर्मवृद्धों में आयु नहीं देखी जाती है।

(B) मृच्छकटिकम् के द्वितीय अङ्क में संवाहक चारुदत्त के विषय में वसन्तसेना से कहता है-
'सत्कारधनः खलु सज्जनः।' (मृच्छ.2/15)
सज्जन सत्काररूपी धनवाले होते हैं।

(C) नैषधीयचरितम् के सर्ग 22 में नल से वियुक्त दमयन्ती का वर्णन इस प्रकार है-
'क्वचिद्बुधैरप्यपथेन गम्यते' (नैष.9/36)
समझदार व्यक्ति अपथ से भी कहीं-कहीं चला करते हैं।

(D) मालविकाग्निमित्रम् नाटक के तृतीय अङ्क में प्रियजन के विषय में वर्णन करते हुए कालिदास कहते हैं-
'न शोभते प्रणयिजने निरपेक्षता।' (मालवि.अङ्क -3)
प्रियजन के प्रति निरपेक्षा सुशोभित नहीं होती है।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत-नैषधीयचरितम् (9/36)-देवर्षि सनाढ्य शास्त्री,पेज-226

16. निम्नलिखित सूक्तियों को उनके रचनाकारों के साथ सुमेलित कीजिए-

(अ)	**सतीव योषित्प्रकृतिः सुनिश्चला पुमांसमभ्येति**	**(1) कालिदास**
(ब)	**हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः**	**(2) माघ**
(स)	**अतिकृपणाः खल्वमी प्राणाः**	**(3) भारवि**
(द)	**स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु**	**(4) बाणभट्ट**

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
A	(1)	(2)	(3)	(4)
B	(3)	(4)	(2)	(1)
C	(2)	(3)	(4)	(1)
D	(4)	(2)	(3)	(1)

➢ कालिदास विरचित मेघदूतम् के पूर्वमेघ में यक्ष मेघ से कहता है-
'स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु।'(पूर्वमेघ-29)
स्त्रियों का हाव-भाव ही अपने प्रिय के प्रति प्रथम वाक्य होता है।

➢ माघ विरचित शिशुपालवध महाकाव्य के प्रथम सर्ग में नारद शिशुपाल के विषय में श्रीकृष्ण से कहते हैं-
सतीव योषित्प्रकृतिः सुनिश्चला पुमांसमभ्येति भवान्तरेष्वपि। (शिशु 1.72)
पतिव्रता स्त्री के समान सुस्थिर प्रकृति भी दूसरे जन्मों में भी उसी पुरुष को प्राप्त होती है।

➢ भारवि रचित किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग में वनेचर युधिष्ठिर से कहता है-
'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः' (किरात. 1.4)
हितकारी और मनोहर वाणी दुर्लभ होती है।

➢ बाणभट्ट कृत कादम्बरी कथामुख में शुक राजा से अपनी जीवन वृत्तान्त बताते हुए कहता है कि-
'अतिकृपणाः खल्वमी प्राणाः'
निश्चय ही ये प्राण अत्यन्त नीच हैं।
उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि **विकल्प C सही है।**

17. 'धिया निबद्धेयमतिद्वयी कथा' के अन्तर्गत 'अतिद्वयी' कथा से दो किन कथाओं का उल्लेख है-
(A) कादम्बरी तथा हर्षचरितम्
(B) बृहत्कथा तथा वासवदत्ता
(C) दशकुमारचरितम् तथा नलचम्पू
(D) तिलकमञ्जरी तथा अवन्तिसुन्दरी

व्याख्या-

(A) 'कादम्बरी' तथा 'हर्षचरितम्' दोनों बाणभट्ट की रचनाएँ है। 'कादम्बरी कथा' दो भागों में विभक्त है पूर्व तथा उत्तर 'हर्षचरितम्' 'आख्यायिका' ग्रन्थ है जो आठ उच्छ्वासों में विभक्त है।

(B) बाणभट्ट 'कादम्बरी' की प्रशंसा में लिखते हैं-
''धिया निबद्धेयमतिद्वयी कथा'' (कादम्बरी श्लोक-20)
अर्थात् अपनी बुद्धि से दो कथाओं (गुणाढ्य की बृहत्कथा तथा सुबन्धु की वासवदत्ता) का अतिक्रमण करने वाली 'कादम्बरी कथा' की रचना की है।

(C) दण्डीकृत दशकुमारचरितम् 8 उच्छ्वासों में विभक्त है तथा त्रिविक्रमभट्टकृत नलचम्पू 7 उच्छ्वासों में विभक्त है।

(D) धनपालकृत 'तिलकमञ्जरी' तथा दण्डीकृत 'अवन्तिसुन्दरी दोनों कथाग्रन्थ हैं।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- कादम्बरीकथामुखम् (श्लोक-20) समीर शर्मा,पेज-14

18. बाणभट्ट ने अपनी कादम्बरी का लेखन किया है-
(A) पाञ्चाली रीति में (B) वैदर्भी रीति में
(C) गौड़ी रीति में (D) लाटी रीति में

व्याख्या-

(A) कादम्बरी बाणभट्ट द्वारा रचित कथा है जिसमें दो भाग हैं पूर्वभाग तथा उत्तरभाग। कादम्बरी के उत्तरार्ध भाग को बाणभट्ट के पुत्र पुलिनभट्ट (भूषणभट्ट) ने पूर्ण किया। कादम्बरी में **पाञ्चाली रीति** तथा **ओजगुण** है। कादम्बरी कथा के नायक चन्द्रापीड तथा नायिका कादम्बरी है।
अतः विकल्प A सही है।

(B) अभिज्ञानशाकुन्तलम् कालिदास द्वारा रचित नाटक है जिसमें सात अङ्क हैं जिसमें वैदर्भी रीति तथा प्रसाद गुण है अभिज्ञानशाकुन्तलम् महाभारत के आदिपर्व से उद्धृत है। इसके नायक राजा दुष्यन्त धीरोदात्त कोटि के नायक तथा नायिका शकुन्तला है।

(C) वासवदत्ता सुबन्धु द्वारा रचित गद्यकाव्य है जिसमें गौड़ी रीति तथा ओजगुण है। इसके नायक उदयन तथा नायिका वासवदत्ता है।

(D) लाटी रीति के ग्रन्थ प्रायः नहीं प्राप्त होते हैं।

स्रोत- कादम्बरीकथामुखम्– राजेन्द्र मिश्र, भू. पेज-42

19. 'किमिव हि दुष्करमकरुणानाम्' सूक्ति ग्रहण की गयी है-
(A) नलचम्पू से
(B) शिशुपालवध से
(C) अभिज्ञानशाकुन्तल से
(D) कादम्बरी से

व्याख्या-

(A) नलचम्पू के प्रथम उच्छ्वास में त्रिविक्रमभट्ट सज्जनों के विषय में कहते हैं- मुखरता न शंसन्ति साधवः।
सज्जन वाचालता की प्रशंसा नहीं करते हैं।

(B) शिशुपालवध के प्रथम सर्ग में श्रीकृष्ण नारद से कहते हैं कि 'श्रेयसि केन तृप्यते।' (शिशु. 1/26)
कल्याण से भला कौन सन्तुष्ट होता है। अर्थात् कोई भी नहीं।

(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के षष्ठ अङ्क में दुष्यन्त धनमित्र नामक व्यापारी का पत्र पढ़कर प्रतिहारी से कहते हैं कि 'कष्टं खल्वनपत्यता।' (अभि.शा.अङ्क-6)
सन्तान रहित होना कष्टकर होता है।

(D) कादम्बरी कथामुखम् में वैशम्पायन (शुक) राजा शूद्रक से कहता है कि 'किमिव हि दुष्करमकरुणानाम्।'
करुणारहित व्यक्ति के लिए भला कौन सा कार्य दुष्कर है।
अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- कादम्बरीकथामुखम् –तारिणीश झा, पेज-271

20. बाणभट्ट का समय स्वीकार किया जाता है-
(A) 202 ई. पू. लगभग (B) 303 ई. लगभग
(C) 606 ई. के लगभग (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या-

बाणभट्ट राजा हर्षवर्धन के सभाकवि और समकालीन थे, अतः इनका समय वही है जो हर्षवर्धन का है।
हर्ष का राज्याभिषेक 606 ई. में हुआ और मृत्यु 648 ई. में ताम्रपत्रों तथा चीनी यात्री ह्वेनसांग के विवरणों से तिथियाँ पूर्णतः प्रमाणिक हैं। इसप्रकार बाण का समय 575 ई. से 606 ई. तक माना जा सकता है अर्थात् इनका रचनाकाल सातवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध है।
अतः विकल्प C सही है।

स्रोत-कादम्बरीकथामुखम्- समीरशर्मा,पेज-9
स्रोत- कादम्बरी कथामुखम्- समीर शर्मा, भू. पेज-9

21. 'विन्ध्याटवी' का वर्णन प्राप्त होता है-
(A) नलचम्पू में
(B) कादम्बरीकथामुखम् में
(C) मृच्छकटिकम् में
(D) हर्षचरितम् में

व्याख्या-

(A) त्रिविक्रमभट्ट द्वारा रचित नलचम्पू में सात उच्छ्वास है। निषधदेश का राजा नल इसके नायक जो धीरोदात्त कोटि के नायक हैं तथा दमयन्ती इसकी नायिका है। नलचम्पू को दमयन्तीकथा भी कहते हैं। नलचम्पू में प्रमुख वर्णन प्राप्त होते हैं जो निम्नवत् हैं-
आर्यावर्तवर्णन, कविवंश वर्णन, नलवर्णन, वर्षावर्णन, नृपविलास, शूकरदर्शन वर्णन, राजदशावर्णन आदि।

(B) महाकवि बाणभट्ट द्वारा रचित कादम्बरीकथा में दो भाग हैं पूर्वभाग, उत्तरभाग। कादम्बरी कथा के नायक चन्द्रापीड तथा नायिका कादम्बरी है। कादम्बरीकथा में तीन जन्मों की कथा का वर्णन प्राप्त होता है। कादम्बरी में प्रमुख वर्णन प्राप्त होते हैं जैसे- शूद्रकवर्णन, विन्ध्याटवी वर्णन,

पम्पासरोवर वर्णन, शुक वर्णन, आच्छोदसरोवरवर्णन, चाण्डालकन्यावर्णन, जाबालि आश्रम वर्णन।

(C) मृच्छकटिकम् शूद्रक प्रणीत रूपक का एक भेद प्रकरण है जिसके नायक चारुदत्त तथा नायिका वसन्तसेना और धूता हैं जिसमें दस अङ्क हैं। मृच्छकटिकम् में उज्जयिनी की घटना का उल्लेख है।

(D) महाकवि बाणभट्ट द्वारा रचित हर्षचरितम् में आठ उच्छ्वास हैं, जो आख्यायिका है प्रथम दो उच्छ्वास में कवि ने अपना वंश परिचय दिया है। तृतीय उच्छ्वास में हर्षचरित की वास्तविक कथा का प्रारम्भ होता है।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- कादम्बरीकथामुखम्- समीर शर्मा, पेज-96

22. 'परस्य हृदये लग्नं न घूर्णयति यच्छिरः' पंक्ति ग्रहण की गयी है-

(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से (B) मृच्छकटिकम् से
(C) कादम्बरी से (D) नलचम्पू से

व्याख्या-

(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के सप्तम अङ्क में राजा दुष्यन्त शकुन्तला से कहता है कि–
स्रजमपि शिरस्यन्धः क्षिप्तां धुनोत्यहिशङ्कया (अभि.शा. 7/24)
अन्धा व्यक्ति सिर पर डाली हुई फूलों की माला को साँप समझकर फेंक देता है।

(B) शूद्रक प्रणीत मृच्छकटिकम् के चतुर्थ अङ्क में शर्विलक मदनिका से कहता है-
न पर्वताग्रे नलिनी प्ररोहति न गर्दभा वाजिधुरं वहन्ति। (मृच्छ-4/17)
पर्वत की चोटी पर कमलिनी नहीं उगती है और घोड़े के भार को गधे नहीं ले जा सकते।

(C) कादम्बरी कथामुख में शुक शूद्रक से जाबालि की प्रशंसा करते हुए कहता है कि-
प्रायो महाभूतानामपि दुरभिभवानि भवन्ति तेजांसि।
प्रायः महान् प्राणियों के भी तेज दबाये जाने योग्य नहीं होते हैं।

(D) त्रिविक्रमभट्ट नलचम्पू के प्रथम उच्छ्वास में काव्य की प्रशंसा करते हुए कहते हैं कि-
परस्य हृदये लग्नं न घूर्णयति यच्छिरः। (नलचम्पू 1/5)
वह काव्य अथवा बाण कैसा जो दूसरे के हृदय में लगकर सिर को घुमा न दे।

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- नलचम्पू (1/5)– धुरन्धर पाण्डेय, पेज-5

23. 'नलचम्पू' के रचयिता हैं-

(A) श्रीहर्ष (B) माघ
(C) त्रिविक्रमभट्ट (D) बिल्हण

व्याख्या-

ग्रन्थकार ग्रन्थ	अनुमानित समय
A श्रीहर्ष नैषधीयचरितम्	12 वी. शताब्दी का उत्तरार्द्ध
B माघ शिशुपालवधम्	7 वीं शताब्दी ई.
C त्रिविक्रमभट्ट नलचम्पू	10 वी. शताब्दी का पूर्वार्द्ध
D बिल्हण विक्रमाङ्कदेवचरितम्	1085 ई. के लगभग

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-415

24. 'यत्र च गुरुव्यतिक्रमं नक्षत्रराशयः, मात्राकलहं लेखशालिकाः, मित्रोदयद्वेषमुलूकाः अपत्यत्यागं कोकिलाः, बन्धुजीवविघातं ग्रीष्मदिवसाः कुर्वन्ति, न जनाः। इन पंक्तियों में प्रसिद्ध अलंकार है-

(A) उपमा (B) परिसंख्या
(C) यमक (D) वक्रोक्ति

व्याख्या-

त्रिविक्रमभट्ट नलचम्पू के प्रथम उच्छ्वास में आर्यावर्त वर्णन के प्रसङ्ग में कहते हैं- 'यत्र च गुरुव्यतिक्रमं नक्षत्रराशयः, मात्राकलहं, लेखशालिकाः, मित्रोदयद्वेषमुलूकाः, अपत्यत्यागं कोकिलाः, बन्धुजीवविघातं ग्रीष्मदिवसाः कुर्वन्ति न जनाः' अर्थात् जिस आर्यावर्त देश में तारों का समूह ही बृहस्पति नामक ग्रह का परिवर्तन करता है, वहाँ के लोग गुरु का परिवर्तन नहीं करते। लेखशालिकाएँ ही मात्राओं के सम्बन्ध में कलह करती हैं वहाँ के लोग माता से कलह नहीं करते, उल्लू ही सूर्योदय से वैर करते हैं वहाँ के लोग मित्रों के अभ्युदय से वैर नहीं करते, कोयल ही अपनी सन्तान का परित्याग करती है, वहाँ के लोग अपनी सन्तान का परित्याग नहीं करते, ग्रीष्मकालीन दिन ही बन्धुजीव नामक फूल का विनाश करते हैं वहाँ के लोग अपने भाई के जीवन का नाश नहीं करते हैं।

उपर्युक्त पंक्ति में श्लेषानुप्राणित परिसंख्या अलङ्कार है क्योंकि परिसंख्या अलङ्कार का लक्षण है-
प्रश्नादप्रश्नतो वापि कथिताद्वस्तुनो भवेत्।
तादृगन्यव्यपोहश्चेच्छाब्द आर्थोऽथवा तदा।। (सा.द. 10.81)

अर्थात् परिसंख्या वह अलङ्कार है जो प्रश्नपूर्वक अथवा बिना प्रश्न के, किसी एक वस्तु के कथन से, उसके सादृश्य किसी दूसरी वस्तु के शब्दतः अथवा अर्थतः व्यवच्छेद में देखा जाया करता है। उपर्युक्त पंक्ति में परिसंख्या अलङ्कार का यह लक्षण घटित हो रहा है अतः परिसंख्या अलङ्कार है।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- नलचम्पू - तारिणीश झा, पेज-44,45

25. 'नलचम्पू' विभक्त किया गया है-
(A) अध्यायों में (B) अङ्कों में
(C) उच्छ्वासों में (D) सर्गों में

व्याख्या-

ग्रन्थ विभाजन	ग्रन्थ	लेखक
* 18 अध्याय	गीता	वेदव्यास
* 5 अध्याय	कविकण्ठाभरण	क्षेमेन्द्र
* 16 अध्याय	काव्यालङ्कार	रुद्रट
* 7 अङ्क	महावीरचरितम्	भवभूति
* 7 अङ्क	उत्तररामचरितम्	भवभूति
* 7 अङ्क	मुद्राराक्षसम्	विशाखदत्त
* 8 उच्छ्वास	हर्षचरितम्	बाणभट्ट
* 7 उच्छ्वास	नलचम्पू	त्रिविक्रमभट्ट
* 8 उच्छ्वास	दशकुमारचरितम्	दण्डी
* 17 सर्ग	कुमारसम्भवम्	कालिदास
* 18 सर्ग	किरातार्जुनीयम्	भारवि
* 19 सर्ग	रघुवंशम्	कालिदास
* 20 सर्ग	शिशुपालवधम्	माघ
* 22 सर्ग	नैषधीयचरितम्	श्रीहर्ष
* 28 सर्ग	बुद्धचरितम्	अश्वघोष

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा ऋषि, पेज-416

26. महाकवि बाणभट्ट के गुरु का नाम था-
(A) भत्सु (भर्वु) (B) मौखरि
(C) सदानन्द (D) भवभूति

व्याख्या-

(A) भत्सु (भर्वु)– बाणभट्ट ने 'कादम्बरी' में अपने गुरु 'भर्वु' की प्रशंसा में लिखा है-

नमामि भर्वोश्चरणाम्बुजद्वयं सशेखरैर्मौखरिभिः कृतार्चनम्।
समस्तसामन्तकिरीटवेदिका विटङ्कपीठोल्लुठितारुणाङ्गुलिः।।
(काद.श्लोक -4)

मैं श्री 'भर्वु' के दोनों चरणकमलों को प्रणाम करता हूँ, जिनकी अर्चना मुकुटों के साथ मौखरिवंश के राजाओं ने की है और जिनकी अंगुलियाँ सभी सामन्तों के मुकुटों की वेदिका के उन्नतभाग के रगड़ने के कारण लाल हो गयी हैं।

अतः विकल्प A सही है।

➢ वेदान्तसार सदानन्द की रचना है इनके गुरु का नाम 'अद्वयानन्द' है।
'अर्थतोऽप्यद्वयानन्दानतीतद्वैतभानतः' (वेदान्तसार)

➢ उत्तररामचरितम् के रचयिता भवभूति के गुरु का नाम 'ज्ञाननिधि' है।

कवि	गुरु
(1) बाणभट्ट	भत्सु/भर्वु
(2) सदानन्द	अद्वयानन्द
(3) भवभूति	ज्ञाननिधि

स्रोत- कादम्बरीकथामुखम् (श्लोक-4)- समीर शर्मा, पेज-3

27. साहित्यदर्पण के रचयिता हैं-
(A) आचार्य विश्वनाथ (B) विद्यानाथ
(C) सागरनन्दी (D) शिङ्गभूपाल

व्याख्या-

आचार्य	ग्रन्थ	अनुमानित काल
A. विश्वनाथ	साहित्यदर्पण	14 वीं शताब्दी
B. विद्यानाथ	प्रतापरुद्रयशोभूषण	13वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध
C. सागरनन्दी	नाटकलक्षणरत्नकोश	11 वीं शताब्दी ई.
D. शिङ्गभूपाल	रसार्णवसुधाकर	1320 ई. के लगभग

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- साहित्यदर्पण- शालिग्राम शास्त्री, पेज-1

28. आचार्य भरतमुनि के अनुसार नाटक में गीत का उद्भव हुआ है-
(A) ऋग्वेद से (B) संगीत से
(C) गान्धर्व वेद से (D) सामवेद से

व्याख्या–
जग्राह पाठ्यमृग्वेदात् सामभ्यो गीतमेव च।
यजुर्वेदादभिनयान् रसानाथर्वणादपि।।(नाट्यशास्त्र-1/17)

वेद	वेदों से ग्राह्य नाट्यतत्त्व	उपवेद
1. ऋग्वेद	उपाख्यान (कथानक)	आयुर्वेद
2. यजुर्वेद	अभिनय	धनुर्वेद
3. सामवेद	संगीत	गान्धर्ववेद
4. अथर्ववेद	रस	स्थापत्यवेद

अतः विकल्प D सही है।
स्रोत–नाट्यशास्त्र (1/17)- ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज–92

29. अधोलिखित में से लक्षणा के लिए कौन सा हेतु अपेक्षित नहीं है-
(A) मुख्यार्थबाध (B) समवाय सम्बन्ध
(C) रूढ़ि (D) प्रयोजन

व्याख्या-
आचार्य मम्मट ने 'काव्यप्रकाश' के द्वितीय उल्लास में लक्षणा की तीन शर्तें (हेतु) माना है-
मुख्यार्थबाधे तद्योगे रूढितोऽथ प्रयोजनात्।
अन्योऽर्थो लक्ष्यते यत् सा लक्षणारोपिता क्रिया।।
(का.प्र.सूत्र-12)

1. मुख्यार्थ बाध
2. मुख्यार्थ का लक्ष्यार्थ के साथ सम्बन्ध
3. रूढि अथवा प्रयोजनवश अन्य अर्थ की प्रतीति

* अन्नम्भट्ट 'तर्कसंग्रह' में समवाय को पदार्थ मानते हैं- ''द्रव्य-गुण-कर्म-सामान्य-विशेष-समवायाभावः सप्तपदार्थाः।'' अर्थात् द्रव्य,गुण,कर्म,सामान्य,विशेष,समवाय,अभाव सात पदार्थ हैं।
* पद में पदार्थ समवाय सम्बन्ध से रहता है। उपर्युक्त विकल्पों में यह लक्षणा का हेतु नहीं है।

अतः विकल्प B सही है।
स्रोत- काव्यप्रकाश (सूत्र-12)- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-51

30. 'खण्डकाव्य' कहा जाता है जो-
(A) काव्य के एक देश का अनुसरण करता है।
(B) खण्डों में विभक्त हो।
(C) खण्डिता नायिका के चरित्र पर आधारित हो।
(D) महाकाव्य के कुछ सर्गो का निबद्धीकरण हो।

व्याख्या-
साहित्यदर्पणकार आचार्य विश्वनाथ ने साहित्यदर्पण के षष्ठ परिच्छेद में खण्डकाव्य का लक्षण इसप्रकार दिया है-
''खण्डकाव्यं भवेत्काव्यस्यैकदेशानुसारि च'' (सा.द. 6/329)
काव्य के एक अंश का अनुसरण करने वाला खण्डकाव्य होता है, जैसे- मेघदूतम्। **अतः विकल्प A सही है।**
स्रोत- साहित्यदर्पण (6/329)– शालिग्राम शास्त्री, पेज-226

31. संकेतित अर्थ को देने वाला शब्द कहलाता है-
(A) वाचक (B) लक्षक
(C) व्यञ्जक (D) गौण

व्याख्या-
आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश के द्वितीयोल्लास में तीन प्रकार के शब्दों का तथा उनके व्यापार का विवेचन करते हैं-
(A) साक्षात्संकेतितं योऽर्थमभिधत्ते स वाचकः। (का.प्र.सूत्र -9)
जो साक्षात् संकेतित अर्थ को कहता है वह वाचक शब्द कहलाता है।
अतः विकल्प A सही है।
(B) मुख्यार्थबाधे तद्योगे रूढितोऽथ प्रयोजनात्।
अन्योऽर्थो लक्ष्यते यत् सा लक्षणारोपिता क्रिया।।
(का.प्र.सूत्र -12)
मुख्यार्थ बाध, मुख्यार्थ का लक्ष्यार्थ से सम्बन्ध, रूढि अथवा प्रयोजन के द्वारा जो अन्य अर्थ लक्षित होता है वह आरोपित व्यापार लक्षणा है।
(C) फले शब्दैकगम्येऽत्र व्यञ्जनान्नापरा क्रिया।
(का.प्र.सूत्र-23)
केवल शब्द से गम्य उस प्रयोजन (फल) के विषय में व्यञ्जना के अतिरिक्त कोई व्यापार नहीं हो सकता ।
स्रोत- काव्यप्रकाश (सूत्र -9)- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-42

32. 'गङ्गायां घोषः' में शैत्य तथा पावनत्व की प्रतीति होती है-
(A) अभिधावृत्ति से (B) लक्षणा वृत्ति से
(C) आधारत्व की विवक्षा से (D) व्यञ्जना से

व्याख्या-
'गङ्गायां घोषः' पद का मुख्यार्थ है 'गङ्गा में घोष है' घोष का अर्थ कुटिया है, जलप्रवाह कुटिया का आधार नहीं बन सकता अतः यहाँ पर मुख्यार्थ का बाध होता है। गङ्गा के साथ तट का सामीप्य सम्बन्ध होने पर 'गङ्गातटे घोषः'

इत्यादि पदों के प्रयोग से अलभ्य शैत्य पावनत्वादि धर्मों की प्रतीति स्वरूप प्रयोजन से मुख्य गङ्गा का प्रवाह रूप अर्थ से अमुख्य तीरादि जो लक्षित होते हैं वह शब्द का व्यवहितार्थ विषयक आरोपित शब्द व्यापार लक्षणा है।

परन्तु तट मुख्यार्थ नहीं, न तटरूप लक्ष्यार्थ में बाध ही दिखाई देता है, गङ्गा शब्द के लक्ष्यार्थ तट का पावनत्वादि लक्ष्यार्थों से सम्बन्ध भी नहीं है और प्रयोजन को लक्ष्य मानने में कोई और प्रयोजन भी नहीं है। प्रयोजन को लक्ष्य मान लेने पर अनवस्था होगी जो मूल का विनाश करने वाली है।

अतः 'गङ्गायां घोषः' में शैत्य तथा पावनत्व की प्रतीति व्यञ्जना शक्ति से होती है।

गङ्गायां घोष-

मुख्यार्थ - जलप्रवाह या जलधारा

लक्ष्यार्थ - तट रूप अर्थ

सम्बन्ध – सामीप्यादि

प्रयोजन – शैत्यपावनत्वादि

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- काव्यप्रकाश– आचार्य विश्वेश्वर, पेज-72

33. आचार्य मम्मट ने शान्तरस का स्थायीभाव स्वीकार किया है-

(A) शम को **(B) निर्वेद को**

(C) शान्ति को **(D) दैन्य को**

व्याख्या-

आचार्य विश्वनाथ साहित्यदर्पण के तृतीय परिच्छेद में शान्त रस का स्थायीभाव 'शम' को माना है।

''शान्तः शमस्थायिभावः'' (सा.द. 3/245)

➤ आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश के चतुर्थ उल्लास में शान्तरस का स्थायीभाव 'निर्वेद' को माना है।

'निर्वेदस्थायिभावोऽस्ति शान्तोऽपि नवमो रसः।'

(का.प्र.सूत्र -47) **अतः विकल्प B सही है।**

आचार्य भरतमुनि नाट्यशास्त्र के छठे अध्याय में रसों की संख्या आठ मानते हैं 'अष्टौ नाट्ये रसाः स्मृताः' (नाट्यशास्त्र 6.15)

शृङ्गार,हास्य,करुण,रौद्र,वीर,भयानक,बीभत्स,अद्भुत।

स्रोत- काव्यप्रकाश (सूत्र -47)– आचार्य विश्वेश्वर, पेज-138

34. काव्यप्रकाश के अनुसार काव्य के प्रयोजनों की संख्या है-

(A) पञ्च **(B) अष्ट**

(C) षट् **(D) एकादश**

व्याख्या-

आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश के प्रथम उल्लास में काव्य प्रयोजन का लक्षण करते हैं-

काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये।

सद्यः परनिर्वृतये कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे।। (का.प्र. 1.2)

काव्य से यश की प्राप्ति, धन की प्राप्ति, लोक व्यवहार का ज्ञान, अमङ्गल का नाश, शीघ्र ही परमानन्द की प्राप्ति के लिए तथा प्रियतमा के तुल्य उपदेश प्रदान करने वाला होता है।

इसप्रकार मम्मट के अनुसार काव्य प्रयोजन की संख्या छः है।

अतः विकल्प C सही है।

➤ आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश में 'तदेवं पञ्चधा मतः' से अनुप्रास अलङ्कार के पाँच भेद, **'गुणीभूतव्यङ्गस्याष्टौ भिदाः स्मृताः'** से गुणीभूतव्यङ्ग्य के आठ भेद तथा यमक के कुल ग्यारह भेद किया है।

स्रोत-काव्यप्रकाश (1/2)- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-10

35. गौणीलक्षणा का ज्ञान होता है-

(A) समवाय से **(B) सादृश्य से**

(C) संयोग से **(D) अर्थापत्ति से**

व्याख्या-

(A) पद में पदार्थ समवाय सम्बन्ध से रहता है।

(B) आचार्य विश्वनाथ के अनुसार चार सारोपा और चार साध्यवसाना लक्षणायें, यदि सादृश्य से इतर किसी सम्बन्ध के द्वारा सिद्ध हुई हों तो 'शुद्धा' कहलाती हैं और यदि ''सादृश्य'' सम्बन्ध ही इनका प्रयोजन हो तो इन्हें गौणी लक्षणा कहते हैं।

अतः विकल्प B सही है।

(C) मम्मट द्वारा प्रतिपादित उदाहरणों में अनेकार्थ शब्दों का एक अर्थ में 'संयोग' का उदाहरण है-

''सशङ्खचक्रो हरिः''।

(D) वेदान्त के षड् प्रमाणों में अर्थापत्ति प्रमाण की गणना है-

1. प्रत्यक्ष 2. अनुमान 3. उपमान 4. शब्द 5. अर्थापत्ति 6. अभाव।

स्रोत- साहित्यर्दपण (2/9)- शालिग्राम शास्त्री, पेज-35

36. आचार्य मम्मट के अनुसार काव्य का लक्षण है-
(A) रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्।
(B) तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि।
(C) वाक्यं रसात्मकं काव्यम्।
(D) शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्।

व्याख्या-
आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश के प्रथमोल्लास में काव्य का लक्षण करते हैं-
'तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि' (का.प्र.सूत्र-1)
दोष से रहित, गुणों से युक्त यदि कहीं-कहीं पर अलङ्कार रहित शब्द और अर्थ की समष्टि काव्य है।
अतः विकल्प B सही है।

- पण्डितराज जगन्नाथ रसगङ्गाधर के प्रथम आनन में काव्य का लक्षण करते हैं-
'रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्' (रसगङ्गाधर 1.1)
रमणीय अर्थ का प्रतिपादन करने वाला शब्द काव्य है।
- आचार्य विश्वनाथ साहित्यदर्पण के प्रथम परिच्छेद में काव्य का लक्षण करते हैं-
'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' (सा.द. 1.3)
रसात्मक वाक्य को काव्य कहते हैं।
- आचार्य भामह काव्यालङ्कार के प्रथम परिच्छेद में काव्य का लक्षण करते हैं-
'शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्' (काव्यालङ्कार 1.16)
शब्द और अर्थ दोनों मिलकर काव्य कहलाते हैं।

स्रोत- काव्यप्रकाश (सूत्र-1)- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-19

37. 'ध्वनिर्बुधैः कथितः' इस काव्यप्रकाश की पंक्ति में बुधैः का अर्थ है-
(A) काव्यशास्त्रिभिः (B) नैयायिकैः
(C) वेदान्तिभिः (D) वैयाकरणैः

व्याख्या-
आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश के प्रथमोल्लास में ध्वनि काव्य का लक्षण करते हैं-
''इदमुत्तममतिशयिनि व्यङ्ग्ये वाच्याद् ध्वनिर्बुधैः कथितः।' (का.प्र. सूत्र-2)
वाच्यार्थ की अपेक्षा व्यङ्ग्यार्थ के अधिक चमत्कारयुक्त होने पर उत्तमकाव्य होता है। यहाँ 'इदं' पद काव्य का बोधक है। 'बुधैः' अर्थात् वैयाकरणों ने प्रधान भूत 'स्फोट' रूप व्यङ्ग्य की अभिव्यक्ति कराने में समर्थ शब्द के लिए 'ध्वनि' शब्द का प्रयोग किया। आचार्य मम्मट ध्वनिकाव्य की वृत्ति में लिखते हैं-'बुधैर्वैयाकरणैः प्रधान भूतस्फोटरूपव्यङ्ग्यव्यञ्जकस्य शब्दस्य ध्वनिरिति व्यवहारः कृतः।'
अर्थात् 'बुधैः' पद का प्रयोग वैयाकरणों के लिए किया है।
स्फोटवाद- 'स्फोटवाद' वैयाकरणों का प्रमुख सिद्धान्त है। स्फोट शब्द की व्युत्पत्ति 'स्फुटति अर्थः यस्मात् स स्फोटः' इस प्रकार की जाती है, अर्थात् जिससे अर्थ की प्रतीति हो उसे स्फोट कहते हैं यह स्फोट पदस्फोट, वाक्यस्फोट आदि के भेद से आठ प्रकार का होता है।
अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- काव्यप्रकाश (सूत्र-2)- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-28

38. 'भासते प्रतिभासार! रसाभाताहताविभा। भावितात्मा शुभा वादे देवाभा बत ते सभा ॥' नामक पद्य में चित्रबन्ध है-
(A) खड्गबन्ध (B) सर्वतोभद्र
(C) मुरजबन्ध (D) पद्मबन्ध

व्याख्या-

चित्रकाव्य के भेद (अधम या अवर काव्य)	उदाहरण
(A) खड्गबन्ध	मारिशिक्र....रामाणां शं मे दिश्यादुमादिमा।(का.प्र.उदा. 385)
(B) सर्वतोभद्र	रसासार! रसा सारसायताक्ष? क्षतायसा। (का.प्र.उदा.-389)
(C) मुरजबन्ध	सरला बहुलामन्दकरलाबहुलामला। (का.प्र.उदा.-287)
D- पद्मबन्ध	भासते प्रातिभासार रसाभाताहताविभा। (का.प्र.उदा.-388)

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- काव्यप्रकाश– आचार्य विश्वेश्वर, पेज-436

39. संयोगादि के द्वारा अनेकार्थक शब्दों के वाचकत्व के नियन्त्रित होने पर वाच्यार्थ से भिन्न अर्थ की प्रतीति कराने वाले व्यापार को कहा जाता है-
(A) तात्पर्या (B) अभिधा
(C) व्यञ्जना (D) लक्षणा

व्याख्या-

(A) आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश के द्वितीयोल्लास में शब्दशक्तियों आदि का विवेचन करते हैं इसी क्रम में मीमांसको के मत को उद्धृत करते हैं-
'तात्पर्यार्थोऽपि केषुचित्।' (का.प्र.सूत्र -7)
कुमारिलभट्ट के अनुयायी पार्थसारथिमिश्र आदि मीमांसक तात्पर्यार्थ को मानते हैं।

(B) **अभिधा शक्ति** को आचार्य मम्मट परिभाषित करते हुए कहते हैं-
'स मुख्योऽर्थस्तत्र मुख्यो व्यापारोऽस्याभिधोच्यते।' (का.प्र.सूत्र -11)
वह साक्षात्संकेतित अर्थ मुख्य अर्थ कहलाता है और उस का बोधन कराने वाली शक्ति अभिधा शक्ति कहलाती है।

(C) **व्यञ्जना शक्ति-**
अनेकार्थस्य शब्दस्य वाचकत्वे नियन्त्रिते।
संयोगाद्यैरवाच्यर्थधीकृद् व्यापृतिरञ्जनम्।। (का.प्र.सूत्र-32)
संयोगादि के द्वारा अनेकार्थक शब्दों के वाचकत्व के नियन्त्रित हो जाने पर उससे भिन्न अवाच्य अर्थ की प्रतीति कराने वाला शब्द का व्यापार व्यञ्जना कहलाता है।
अतः विकल्प C सही है।

(D) **लक्षणाशक्ति-**
मुख्यार्थबाधे तद्योगे रूढितोऽथ प्रयोजनात्।
अन्योऽर्थो लक्ष्यते यत् सा लक्षणारोपिता क्रिया।।(का.प्र.सूत्र-12)
मुख्यार्थ बाध, मुख्यार्थ का लक्ष्यार्थ से सम्बन्ध, रूढि अथवा प्रयोजन विशेष के द्वारा अन्य अर्थ लक्षित होता है वह आरोपित व्यापार लक्षणा कहलाता है।

स्रोत- काव्यप्रकाश (सूत्र-32)– आचार्य विश्वेश्वर, पेज-77

40. रसनावृत्ति का उल्लेख किया है-
(A) आचार्य विश्वनाथ ने
(B) आचार्य मम्मट ने
(C) आचार्य आनन्दवर्धन ने
(D) आचार्य भामह ने

व्याख्या-

(A) आचार्य विश्वनाथ साहित्यदर्पण के तृतीय परिच्छेद में रस का वर्णन करते हैं-
विभावेनानुभावेन व्यक्तः संचारिणा तथा।
रसतामेति रत्यादिः स्थायीभावः सचेतसाम्।।
(सा.द. 3/1)
सहृदयों के हृदय में स्थित रति आदि स्थायीभाव-विभाव अनुभाव तथा संचारीभाव द्वारा अभिव्यक्त हुआ – रस कहा जाता है।
''रस्यते आस्वाद्यते इति रसः'' अर्थात् रसन प्रक्रिया को ही रस कहते हैं। **अतः विकल्प A सही है।**

(B) आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश के चतुर्थ उल्लास में रस को परिभाषित करते हैं-
विभावा अनुभावास्तत् कथ्यन्ते व्यभिचारिणः।
व्यक्तः स तैर्विभावाद्यैः स्थायीभावो रसः स्मृतः।।
(का.प्र.सूत्र -43)
लोक में जो कारण, कार्य और सहकारी होते हैं वे काव्य में क्रमशः विभाव, अनुभाव और व्यभिचारी भावों से अभिव्यक्त स्थायीभाव कहलाता है।

(C) प्रधानेऽन्यत्र वाक्यार्थे यत्राङ्गन्तु रसादयः।
काव्ये तस्मिन्नलङ्कारो रसादिरिति मे मतिः।।
(ध्वन्या-2/5)
जहाँ रसादि से भिन्न, रस या वस्तु अथवा अलङ्कार प्रधान वाक्यार्थ हो, और उसमें रसादि अङ्ग हों उस काव्य में रसादि अलङ्कार (रसवत् , प्रेय, ऊर्जस्व,समाहित) होते हैं।

(D) हीनताऽसम्भवो लिङ्गवचोभेदौ विपर्ययः।
उपमानाधिकत्वं च तेनासदृशतापि च।। (काव्यालङ्कार 2/39-40)
भामह ने सात प्रकार के उपमा दोषों का निरूपण किया है।
1. हीनता 2. असम्भव 3. लिङ्गभेद 4. वचनभेद 5. विपर्यय 6. उपमानाधिक्य 7. उपमानासादृश्य।

स्रोत- साहित्यदर्पण-शालिग्राम शास्त्री, पेज-46

41. 'तथा रामायणादीनां भविता दुःखहेतुता' पंक्ति ग्रहण की गयी है-
(A) काव्यप्रकाश से (B) साहित्यदर्पण से
(C) नाट्यशास्त्र से (D) वेदान्तसार से

व्याख्या-

(A) आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश के अष्टम उल्लास में माधुर्य गुण को परिभाषित करते हुए कहते हैं-
करुणे विप्रलम्भे तच्छान्ते चातिशयान्वितम्। (का.प्र.सूत्र-90)
माधुर्यगुण करुणरस, विप्रलम्भ शृङ्गार तथा शान्त रस में उत्तरोत्तर चमत्कार जनक होता है।

(B) आचार्य विश्वनाथ साहित्यदर्पण के तृतीय परिच्छेद में नाटक में करुण रस के विषय में कहते हैं-

तथा रामायणादीनां भविता दुःखहेतुता। (सा.द.3/6)
यदि करुणरस को दुःख का हेतु मानोगे तो करुणरस प्रधान रामायण आदि ग्रन्थ भी दुःख के ही हेतु मानने पड़ेगे।
अतः विकल्प B सही है।

(C) आचार्य भरतमुनि नाट्यशास्त्र के छठे अध्याय में नाटक में आठ रस मानते हैं- अष्टौ नाट्ये रसाः स्मृताः। (ना. शा. 6/15) आठ रसों के नाट्य में होने का विधान पाया जाता है।

(D) सदानन्द प्रणीत वेदान्तसार में अनुबन्धों की संख्या चार है- तत्रानुबन्धो नामाधिकारि-विषय-सम्बन्ध-प्रयोजनानि। वेदान्तसार में अनुबन्धों की संख्या चार है- अधिकारी, विषय,सम्बन्ध, प्रयोजन।

स्रोत- साहित्यदर्पण (3/6) शालिग्राम शास्त्री, पेज-52

42. अविवक्षितवाच्य तथा विवक्षितान्यपरवाच्य भेद हैं-
(A) अभिधा के (B) लक्षणा के
(C) ध्वनि के (D) तात्पर्या के

व्याख्या-

(A) आचार्य मम्मट ने अभिधा का भेद नहीं किया है।

(B) लक्षणा तेन षड्विधा (का.प्र.सूत्र-17)
आचार्य मम्मट ने लक्षणा के छः भेद किये हैं-

लक्षणा
- **शुद्धा**
  - उपादान लक्षणा (कुन्ताः प्रविशन्ति)
  - लक्षण लक्षणा (गङ्गायां घोषः)
  - शुद्धा सारोपा (आयुर्घृतम्)
  - शुद्धा साध्यवसाना (आयुरेवेदम्)
- **गौणी**
  - गौणी सारोपा (गौर्वाहीकः)
  - गौणी साध्यवसाना (गौरयम्)

(C) ध्वनि काव्य– अविवक्षितवाच्यध्वनि, विवक्षितान्यपरवाच्यध्वनि
(लक्षणामूलाध्वनि) (अभिधामूलाध्वनि)
अर्थान्तरसंक्रमित, अत्यन्त तिरस्कृत, असंलक्ष्यक्रमध्वनि, संलक्ष्यक्रमध्वनि

(D) कुमारिलभट्टादि मीमांसक तात्पर्याशक्ति को मानते हैं। इसके कोई भेद नहीं है।
अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- काव्यप्रकाश (सूत्र-39,40)- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-91-93

43. काव्य की आत्मा को ध्वनि मानने वाले आचार्य हैं-
(A) आनन्दवर्धन (B) क्षेमेन्द्र
(C) पं. राजजगन्नाथ (D) वामन

व्याख्या-

(A) **आनन्दवर्धन-**काव्यस्यात्मा ध्वनिः (ध्वन्यालोक 1.1)
काव्य की आत्मा ध्वनि है।

(B) **क्षेमेन्द्र-** औचित्यं रससिद्धस्य स्थिरं काव्यस्य जीवितम्। (औचित्यविचार चर्चा-श्लोक-5) शृङ्गार रसों से प्रसिद्ध काव्य का जीवन औचित्य ही है।

(C) **विश्वनाथ-** वाक्यं रसात्मकं काव्यम्। (सा.द.-1.3)
रसात्मक वाक्य ही काव्य है।

(D) **वामन-** रीतिरात्मा काव्यस्य (काव्यालंकारसूत्र- 2.6)
रीति काव्य की आत्मा है।
अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- ध्वन्यालोक (1/1)– आचार्य विश्वेश्वर, पेज-2

44. नाटक में सन्धियों की संख्या होती है-
(A) दो (B) चार
(C) दश (D) पाँच

व्याख्या-

आचार्य धनञ्जय दशरूपक के प्रथम प्रकाश में कथावस्तु के दो भेद करते हैं- 'वस्तु च द्विधा' (दश. 1.11)
आधिकारिक कथावस्तु तथा प्रासङ्गिक कथावस्तु।

- आचार्य धनञ्जय दशरूपक के द्वितीय प्रकाश में नायक के चार भेद को बताते हैं-
'भेदैश्चतुर्धा ललितशान्तोदात्तोद्धतैरयम्' (दश. 2.3)
धीरललित, धीरशान्त, धीरोदात्त, धीरोद्धत ये नायक के चार भेद हैं।
- दशरूपक के प्रथम प्रकाश में रूपक के दस भेदों का वर्णन करते हैं-
नाटकं सप्रकरणं भाणः प्रहसनं डिमः।
व्यायोगसमवकारौ वीथ्यङ्केहामृगा इति।। (दश. 1.8)
नाटक, प्रकरण, भाण, प्रहसन, डिम, व्यायोग, समवकार, वीथी, अङ्क, इहामृग ये रूपक के दस भेद हैं।
- दशरूपक के प्रथम प्रकाश में पाँच सन्धियों का वर्णन किया गया है-
'मुखप्रतिमुखे गर्भः सावमर्शोपसंहृतिः' (दशरूपक 1.24)
अर्थात् मुख सन्धि, प्रतिमुख सन्धि, गर्भ सन्धि, अवमर्श या विमर्श सन्धि, उपसंहृति या निर्वहण सन्धि।

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- साहित्यदर्पण- शालिग्राम शास्त्री, पेज-184

45. अवान्तर प्रयोजन की समाप्ति से कथावस्तु के मुख्य प्रयोजन में विच्छेद प्राप्त हो जाने पर जो उसके अविच्छेद का कारण होता है उसे कहते हैं-
(A) बिन्दु (B) बीज
(C) आरम्भ (D) फलागम

व्याख्या-

(A) बिन्दु– अवान्तरार्थविच्छेदे बिन्दुरच्छेदकारणम्। (दश.1/17)
अवान्तर प्रयोजन की समाप्ति से कथावस्तु के मुख्य प्रयोजन में विच्छेद प्राप्त हो जाने पर जो उसके विच्छेद का कारण होता है उसे बिन्दु कहते हैं। बिन्दु की गणना अर्थप्रकृति के अन्तर्गत होती है।
अतः विकल्प A सही है।

(B) बीज– स्वल्पोद्दिष्टस्तु तद्धेतुर्बीजं विस्तार्यनेकधा (दश. 1/17)
अल्परूप में संकेतित वह तत्त्व जो रूपक के फल का कारण है तथा इतिवृत्त में अनेक रूप में पल्लवित होता है बीज कहलाता है।
बीज भी अर्थप्रकृति के अन्तर्गत परिगणित है।

(C) आरम्भ– औत्सुक्यमात्रमारम्भः फललाभाय भूयसे (दश. 1/20)
अत्यन्त फलभाग की उत्सुकता मात्र ही आरम्भ कहलाती है। आरम्भ की गणना कार्यावस्था के अन्तर्गत होती है।

(D) फलागम– समग्रफलसम्पत्तिः फलयोगो यथोदितः। (दश. 1/22)
समस्त फल की प्राप्ति हो जाने पर फलागम कहलाता है। फलागम की गणना कार्यावस्था के अन्तर्गत होती है।

स्रोत- दशरूपक (1/17)- केशवराव मुसलगाँवकर, पेज-27

46. आचार्यों ने व्यभिचारी भावों की संख्या स्वीकृत की है-
(A) अष्टादश (B) त्रयस्त्रिंशत्
(C) अष्ट (D) पञ्च

व्याख्या-

(A) अष्टादश उपरूपक- 1.नाटिका 2. त्रोटक 3. गोष्ठी 4.सट्टक 5.नाट्यरासक 6.प्रस्थान 7.उल्लाप्य 8.काव्य 9.प्रेङ्खण 10.रासक 11.संलापक 12.श्रीगदित 13.शिल्पक 14.विलासिका 15. दुर्मल्लिका 16.प्रकरणी 17.हल्लीश 18.भणिका।

(B) त्रयस्त्रिंशत् व्यभिचारीभाव (संचारीभाव)- 1.निर्वेद 2.ग्लानि 3.शङ्का 4.श्रम 5.धृति 6.जड़ता 7.हर्ष 8दैन्य 9.उग्रता 10.चिन्ता 11.त्रास 12.असूया 13.अमर्ष 14.गर्व 15.स्मृति 16.मरण 17.मद 18.सुप्त 19.निद्रा 20.विबोध 21.व्रीडा 22.अपस्मार 23.मोह 24.मति 25.आलस्य 26.आवेग 27.वितर्क 28.अवहित्था 29.व्याधि 30.उन्माद 31.विषाद 32.औत्सुक्य 33.चपलता। **अतः विकल्प B सही है।**

(C) अष्ट सात्त्विक भाव- 1.स्तम्भ 2.प्रलय (अचेतनता) 3.रोमाञ्च 4.स्वेद 5.वैवर्ण्य (मुख आदि का अङ्ग फीका पड़ जाना) 6.वेपथु (कम्पन) 7.अश्रु 8.वैस्वर्य (आवाज में परिवर्तन)

(D) पाँच – अर्थोपक्षेपक – 1.विष्कम्भक 2. प्रवेशक 3. चूलिका 4. अङ्कास्य 5.अङ्कावतार

स्रोत- दशरूपक (चतुर्थ प्रकाश)– श्रीनिवास शास्त्री, पेज-268

47. रामायण कथानक के प्रसंग में सुग्रीवादि का वृत्तान्त कहा जाता है-
(A) प्रकरी (B) पताकास्थानक
(C) पताका (D) सन्धि

व्याख्या-

(A) आचार्य धनञ्जय दशरूपक के प्रथम प्रकाश में प्रकरी नामक अर्थप्रकृति का लक्षण करते हैं-
'प्रकरी च प्रदेशभाक्' (दश. 1/13)
एक देश में सीमित रहने वाला प्रासङ्गिक इतिवृत्त 'प्रकरी' कहलाता है। जैसे- रामायण में 'शबरी की कथा'।

(B) पताकास्थानक– पताकास्थानक का लक्षण दशरूपक के प्रथम प्रकाश में निम्नवत् है-
प्रस्तुतागन्तुभावस्य वस्तुनोऽन्योक्तिसूचकम्।
पताकास्थानकं तुल्यसंविधानविशेषणम्।(दश. 1/14)
जहाँ भावी कथावस्तु के समय वृत्त या समान विशेषण द्वारा अन्योक्ति रूप में सूचना हो उसे पताकास्थानक कहते हैं। जैसे –'रत्नावली' में उदयन कहते हैं–हे कमलनयने! मैं जा रहा हूँ। यह मेरे जाने का समय है कल प्रातः काल तुम्हें मै ही जगाऊँगा।

(C) पताका– दशरूपक के प्रथम प्रकाश में पताका का लक्षण है- 'सानुबन्धं पताकाख्यं' (दश.1/13)
प्रधान इतिवृत्त के साथ गौणरूप से दूर तक चलने वाला प्रासङ्गिक इतिवृत्त पताका कहलाता है।

जैसै- रामायण में 'सुग्रीव कथा'।

अतः विकल्प C सही है।

(D) सन्धि– सन्धि के भेद का निरूपण दशरूपक के प्रथम प्रकाश में उद्धृत है।

मुखप्रतिमुखे गर्भः सावमर्शोपसंहृतिः। (दश.1/24)

मुखसन्धि, प्रतिमुखसन्धि, गर्भसन्धि, अवमर्शसन्धि, निर्वहणसन्धि ये सन्धि के पाँच भेद हैं।

सन्धि	भेद
1. मुख सन्धि	12
2. प्रतिमुख सन्धि	13
3. गर्भ सन्धि	12
4. अवमर्श सन्धि (विमर्श)	13
5. उपसंहृति सन्धि (निर्वहण)	14

स्रोत- दशरूपक- रमाशङ्कर त्रिपाठी, पेज-15

48. जिस नायिका का नायक दूर देश में किसी प्रयोजन से रहता हो तो उस नायिका को कहते हैं-

(A) स्वाधीनपतिका (B) अभिसारिका

(C) कलहान्तरिता (D) प्रोषितप्रिया

व्याख्या-

आचार्य धनञ्जय नायिकाओं का वर्णन दशरूपक के द्वितीय प्रकाश में करते हुए कहते हैं-

(A) स्वाधीनपतिका– आसन्नायत्तरमणा हृष्टा स्वाधीनभर्तृका। (दश.2/24)

जिस नायिका का पति पास में रहता है तथा उसके वश में एवं प्रसन्न रहा करती है वह स्वाधीनभर्तृका (स्वाधीनपतिका) कहलाती है।

(B) अभिसारिका– कामार्ताऽभिसरेत्कान्तं सारयेद्वाभिसारिका। (दश. 2/27)

जो नायिका कामार्त होकर अपने प्रियतम के पास स्वयं जाती है, अथवा उसे अपने पास बुलाती है, वह अभिसारिका कहलाती है।

(C) कलहान्तरिता– कलहान्तरिताऽमर्षाद्विधूतेऽनुशयार्तियुक्। (दश.2/26)

जो नायिका क्रोध से अपराधी नायक का तिरस्कार कर दे और पश्चात् पश्चात्ताप करती रहे, उसे 'कलहान्तरिता' नायिका कहा जाता है।

(D) प्रोषितप्रिया– दूरदेशान्तरस्थे तु कार्यतः प्रोषितप्रिया। (दश.2/27)

जिस नायिका का नायक दूर देश में किसी प्रयोजन से रहता हो उसे प्रोषितप्रिया कहते हैं।

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- दशरूपक– श्रीनिवास शास्त्री, पेज-156

49. नाटक में किसी पात्र के द्वारा मुँह फेरकर दूसरे व्यक्ति से रहस्यात्मक बात कही जाती है, उसे कहते हैं-

(A) जनान्तिक (B) आकाशभाषित

(C) अपवारित (D) अंकास्य

व्याख्या-

(A) जनान्तिक–

'त्रिपताकाकरेणान्यानपवार्यान्तरा कथाम्। (दश.1/65)

अन्योन्यामन्त्रणं यत्स्याज्जनान्ते तज्जनान्तिकम्।।'

चल रहे संवाद के बीच में, त्रिपताका का रूप हाथ की मुद्रा के द्वारा दूसरे पात्रों को बचाकर, कतिपय जनों के मध्य, दो पात्र आपस में जो बात-चीत करते हैं वह जनान्तिक कहलाता है।

(B) आकाशभाषित–

'किं ब्रवीष्येवमित्यादि विना पात्रं ब्रवीति यत्।

श्रुत्वेवानुक्तमप्येकस्तत्स्यादाकाशभाषितम्।।'(दश.1/67)

जहाँ कोई एक ही पात्र किसी दूसरे पात्र के बिना ही बात करता है तथा किसी के बिना कुछ कहे भी मानों सुनकर ही "क्या कह रहे हो?" इसप्रकार कथोपकथन करता है, वह आकाशभाषित होता है।

(C) अपवारित–

'रहस्यं कथ्यतेऽन्यस्य परावृत्त्यापवारितम्।' (दश.1/66)

नाटक में किसी पात्र के द्वारा मुँह फेरकर दूसरे व्यक्ति से रहस्यात्मक बात कही जाती है, वह अपवारित कही जाती है। **अतः विकल्प C सही है।**

(D) अंकास्य–

'अङ्कान्तपात्रैरङ्कास्यं छिन्नाङ्कस्यार्थसूचनात्।' (दश.1/62)

अङ्क के अन्त में अभिनय करने वाले पात्रों के द्वारा विछिन्न आगे आने वाले अङ्क के अर्थ की सूचना देने के कारण वह अङ्कास्य कहलाता है।

स्रोत- दशरूपक (1/66)– रमाशङ्कर त्रिपाठी, पेज-106

50. नाटक के मङ्गलाचरण को कहा जाता है-

(A) मङ्गलाशासन (B) नन्दिताकरण

(C) नान्दी (D) वेदस्तवन

व्याख्या-
मङ्गलाचरण को मङ्गलाशासन भी कहते हैं। संस्कृत ग्रन्थों की परम्परा में ग्रन्थ की निर्विघ्न समाप्ति के लिए मङ्गलाचरण का विधान किया जाता है। मङ्गलाचरण तीन प्रकार का होता है-
1.नमस्कारात्मक 2.आशीर्वादात्मक 3.वस्तुनिर्देशात्मक।
'आशीर्वचनसंयुक्ता स्तुतिर्यस्मात्प्रयुज्यते।
देवद्विजनृपादीनां तस्मान्नान्दीति संज्ञिता।।'(सा.द.6/24)
देवता, ब्राह्मण तथा राजादिकों की आशीर्वादयुक्त स्तुति जिससे की जाती है, उसे नान्दी कहते हैं। नान्दी का प्रयोग केवल नाटकों में होता है जबकि मङ्गलाचरण का प्रयोग चम्पूकाव्य, महाकाव्य, गद्यकाव्य आदि सभी काव्यों में होता है- जैसा कि भावप्रकाश के सप्तम अधिकार में भी नान्दी के विषय में कहा गया है-
देवतादिनमस्कारमङ्गलारम्भपाठकैः।
या क्रिया नन्द्यते नाट्यारम्भे नान्दीति सा स्मृता।।
(भावप्रकाश 7.99)
नाटक के प्रारम्भ में देवता आदि के लिये नमस्कारात्मक या मंगलात्मक जो श्लोक पाठ पाठकों द्वारा किया जाता है, आनन्द प्रदान करता है वह नान्दी कहा जाता है
अतः विकल्प C सही है।
स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम्- कपिलदेव द्विवेदी,पेज-5

51. नाटक मे 'स्वगतम्' का अर्थ है-
(A) अश्राव्य (B) सर्वश्राव्य
(C) स्वागतयोग्य (D) स्वयं गाया हुआ

व्याख्या-
आचार्य धनञ्जय दशरूपक के प्रथम प्रकाश में सर्वश्राव्य तथा अश्राव्य का लक्षण करते हैं-
'सर्वश्राव्यं प्रकाशं स्यादश्राव्यं स्वगतं मतम्।'(दश.1/64)
नाटक में सभी के सुनने योग्य वस्तु को 'प्रकाश' या सर्वश्राव्य तथा किसी के भी न सुनने योग्य वस्तु को 'स्वगत' या 'अश्राव्य' कहते हैं।
अतः विकल्प A सही है।
स्रोत-दशरूपक (1/64)– रमाशङ्कर त्रिपाठी, पेज-105

52. 'जनान्तिक' में एक मुद्रा का प्रकाशन होता है उसे कहते हैं-
(A) चिन्मुद्रा (B) अंगुष्ठानामिके
(C) मत्तवारणी (D) त्रिपताकाकर

व्याख्या-
आचार्य धनञ्जय दशरूपक के प्रथम प्रकाश में जनान्तिक का लक्षण करते हैं-
'त्रिपताकाकरेणान्यानपवार्यान्तरा कथाम्।
अन्योन्यामन्त्रणं यत्स्याज्जनान्ते तज्जनान्तिकम्।।' (दश. 1/65)
पात्रों के मध्य में चल रहे संवाद या उक्ति प्रत्युक्ति के मध्य में ,त्रिपताकारूप हस्त मुद्रा के द्वारा अन्य पात्रों को अपवार्य अर्थात् बचाकर, कुछ पात्रों के मध्य में दो पात्र परस्पर जो वार्तालाप करते हैं, वह जनान्तिक कहा जाता है। **अतः विकल्प D सही है।**
स्रोत- दशरूपक (1/65)– श्रीनिवास शास्त्री, पेज-104

53. रस सिद्धान्त के अन्तर्गत साधारणीकरण व्यापार का सर्वप्रथम उल्लेख किया है-
(A) अभिनवगुप्त ने (B) भट्टनायक ने
(C) भट्टलोल्लट ने (D) श्रीशङ्कुक ने

व्याख्या-

आचार्य	वाद/सिद्धान्त	व्यापार/सम्बन्ध
A अभिनवगुप्त	अभिव्यक्तिवाद	व्यङ्ग्य-व्यञ्जक
B भट्टनायक	भुक्तिवाद	भोज्य-भोजक
C भट्टलोल्लट	उत्पत्तिवाद	उत्पाद्य-उत्पादक
D श्रीशङ्कुक	अनुमितिवाद	अनुमाप्य-अनुमापक

अतः विकल्प B सही है।
स्रोत- काव्यप्रकाश-आचार्य विश्वेश्वर, पेज-107

54. रससिद्धान्त के प्रसंग में चित्रतुरगादिन्याय का समुल्लेख किया है-
(A) शंकुक ने (B) भट्टनायक ने
(C) भट्टलोल्लट ने (D) नान्यदेव ने

व्याख्या-
(A) शङ्कुक ने नट में रस को अनुमेय माना है। अनुमान की सामग्री में, नट में 'चित्रतुरगन्याय' से राम बुद्धि का प्रतिपादन

किया है। जैसे-घोड़े के चित्र को देखकर 'यह घोड़ा है' इसप्रकार का व्यवहार होता है। परन्तु इस प्रतीति को न सत्य कहा जा सकता है, न मिथ्या, न संशयरूप और न ही सादृश्यरूप प्रतीति माना जा सकता है। चित्रस्थ तुरग में होने वाली बुद्धि इन चारों प्रकार की बुद्धियों से भिन्न होती है इसप्रकार नट में जो राम बुद्धि होती है वह 1.सम्यक् 2.मिथ्या 3.संशय तथा 4.सादृश्य इन चारों प्रकार की प्रतीतियों से विलक्षण होती है।

अतः विकल्प A सही है।

(B) भट्टनायक ने रसानुभूति के उपपादन के लिए एक नये मार्ग का अवलम्बन किया है उसे साहित्यशास्त्र में 'भुक्तिवाद' के नाम से कहा जाता है। उसका आशय यह है कि रस की 'निष्पत्ति' न अनुकार्य राम आदि में होती है और न अनुकर्ता नट आदि में। अनुकार्य और अनुकर्ता दोनों तटस्थ हैं उदासीन हैं उनको रसानुभूति नहीं होती है। वास्तविक रसानुभूति सामाजिक को होती है।

(C) भरत के रससूत्र के व्याख्याकारों में भट्टलोल्लट उत्पत्तिवाद को मानने वाले हैं। उनके मत में विभावादि के संयोग से अनुकार्य राम आदि में रस की उत्पत्ति होती है।

(D) रसोत्पत्ति के व्याख्याकारों में नान्यदेव का कोई सिद्धान्त प्राप्त नहीं होता है।

स्रोत-काव्यप्रकाश(चतुर्थ उल्लास)-आचार्य विश्वेश्वर,पेज-103

55. रस को 'पानकरसन्याय' से चर्व्यमाण स्वीकृत किया है-

(A) भट्टलोल्लट ने
(B) भट्टनायक ने
(C) आचार्य शङ्कुक ने
(D) श्रीमदभिनवगुप्तपाद ने

व्याख्या–

(A) भट्टलोल्लट के अनुसार अनुकार्य रामादि में रस रहते हैं। अनुकर्ता नट आदि में इसकी प्रतीति मात्र होती है।

(B) भट्टनायक के अनुसार भोज्य-भोजक व्यापार द्वारा सामाजिक में रस की प्रतीति होती है।

(C) शङ्कुक ने अनुमेय नट में जो राम बुद्धि होती है उसमें सम्यक्,मिथ्या,संशय एवं सादृश्य से विलक्षण 'चित्रतुरगन्याय' द्वारा रसोत्पत्ति मानते हैं।

(D) श्रीमदभिनवगुप्तपाद ने रति आदि अपने आकार के समान अभिन्न रूप से अनुभूत होता हुआ भी आस्वादनमात्र स्वरूपवाला, विभावादि की स्थिति पर्यन्त रहने वाला 'पानकरस' के समान आस्वाद्यमान साक्षात् रूप से प्रस्फुरित होता हुआ सा, हृदय में प्रवेश करता हुआ सा, समस्त अङ्गों में व्याप्त आलिङ्गन करता हुआ सा, अन्य सबको ढकता हुआ सा तथा ब्रह्मानुभव के आनन्द का सा अनुभव कराता हुआ अलौकिक चमत्कार करने वाला, शृङ्गारादि रस कहा जाता है।

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- काव्यप्रकाश- श्रीनिवास शास्त्री, पेज-130

56. मम्मट ने विप्रलम्भ शृङ्गार के भेद स्वीकार किये हैं-

(A) चार **(B) पाँच**
(C) आठ **(D) दश**

व्याख्या-

(A) आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश के द्वितीयोल्लास में संकेतग्रह के विषय में कहते हैं-
''संकेतितश्चतुर्भेदो जात्यादिर्जातिरेव वा।''(का.प्र.सूत्र-10)
संकेतित अर्थ के चार भेद हैं-
1. जाति 2. गुण 3. क्रिया 4. यदृच्छा।

(B) आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश के चतुर्थ उल्लास में शृङ्गार रस के भेदों का वर्णन करते हैं-
'अभिलाषविरहेर्ष्याप्रवासशापहेतुक इति पञ्चविधः।' (का.प्र. चतुर्थ उल्लास) अर्थात् विप्रलम्भ शृङ्गार के पाँच भेद होते हैं- 1. अभिलाषा 2.ईर्ष्या 3.विरह 4.प्रवास 5.शाप

अतः विकल्प B सही है।

(C) आचार्य भरतमुनि नाट्यशास्त्र के छठे अध्याय में रस के आठ भेद किए हैं-
'शृङ्गारहास्यकरुणरौद्रवीरभयानकाः।
बीभत्साद्भुतसंज्ञौ चेत्यष्टौ नाट्ये रसाः स्मृताः।।'
(नाट्यशास्त्र 6.15)
नाट्य में रसों की संख्या 8 है।
1. शृङ्गार 2.हास्य 3.करुण 4.रौद्र 5.वीर 6.भयानक 7.बीभत्स 8.अद्भुत।

(D) आचार्य वामन ने 10 शब्दगुण मानते हैं-
1. ओज 2. प्रसाद 3. श्लेष 4. समता 5. समाधि
6. माधुर्य
7. सौकुमार्य 8. उदारता 9. अर्थव्यक्ति 10. कान्ति

स्रोत- काव्यप्रकाश– आचार्य विश्वेश्वर, पेज-123

57. 'काव्य रस कार्य नहीं है' इसको प्रमाणित करने हेतु कौन सा कथन सत्य है-

(A) रस विभावानुभावव्यभिचारि भावों से निष्पन्न होता है।

(B) लौकिक कारणों के समान ही रस के कारण कहे गये हैं।

(C) विभावादि के नाश होने पर रस की स्थिति नहीं रहती है।

(D) सहृदयों के हृदय में रस पहले से ही विद्यमान रहता है।

व्याख्या-

काव्यप्रकाश के चतुर्थ उल्लास में आचार्य मम्मट रस का लक्षण करते हुए कहते हैं-

'कारणान्यथ कार्याणि सहकारीणि यानि च ।
रत्यादेः स्थायिनो लोके तानि चेन्नाट्यकाव्ययोः।।'
'विभावा अनुभावास्तत् कथ्यन्ते व्यभिचारिणः।
'व्यक्तः स तैर्विभावाद्यैः स्थायी भावो रसः स्मृतः।।'
(का.प्र.सूत्र-43)

लोक में रति आदि रूप स्थायीभाव के जो कारण, कार्य और सहकारी होते हैं वे यदि नाटक या काव्य में प्रयुक्त होते हैं तो क्रमशः विभाव, अनुभाव और व्यभिचारी भाव कहलाते हैं और उन विभावादि रूप कारण, कार्य तथा सहकारियों के योग से व्यक्त वह स्थायीभाव 'रस' कहलाता है।

'काव्य रस कार्य नहीं है' इसको प्रमाणित करने हेतु आचार्य मम्मट ने कहा है कि लोक में जो कारण, कार्य एवं सहकारी होते हैं वे ही नाटक में विभाव,अनुभाव एवं व्यभिचारी भावों के योग से रसोत्पत्ति में सहायक होते हैं। अतः इन विभावादि के नाश होने पर रस की स्थिति नहीं रहती है।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- काव्यप्रकाश– आचार्य विश्वेश्वर,पेज-109,110

58. निम्नलिखित तथ्यों का सही सुमेलन कीजिए-

अ-	**अनुमितिवाद**	(i)	**विश्वनाथ**
ब-	**व्यक्तिविवेक**	(ii)	**शङ्कुक**
स-	**वात्सल्यरस**	(iii)	**महिमभट्ट**
द-	**कवि-सृष्टि की श्रेष्ठता**	(iv)	**मम्मट**

	अ	ब	स	द
A.	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
B.	(iv)	(iii)	(i)	(ii)
C.	(ii)	(iv)	(iii)	(i)
D.	(ii)	(iii)	(i)	(iv)

➢ आचार्यभरतमुनिके रससूत्र
'विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः'
पर व्याख्या करने वाले आचार्य शङ्कुक द्वितीय आचार्य हैं। आचार्य शङ्कुक संयोगाद् शब्द का अर्थ अनुमाप्य-अनुमापक सम्बन्ध या साध्य-साधक सम्बन्ध तथा निष्पत्ति का अर्थ अनुमिति करते हैं अतः इनका सिद्धान्त 'अनुमितिवाद' है।

➢ महिमभट्ट द्वारा रचित व्यक्तिविवेक में ध्वन्यालोक तथा वक्रोक्तिजीवितम् के मत का खण्डन किया है, जिसमें तीन विमर्श (अध्याय) हैं। आचार्य महिमभट्ट ने व्यक्तिविवेक में ध्वनि का खण्डन किया गया है।

➢ आचार्य विश्वनाथ साहित्यदर्पण के तृतीय परिच्छेद में वात्सल्य स्थायीभाव है जिसका, ऐसा वत्सल नामक रस को मानते हैं।

➢ आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश के मङ्गलाचरण में सृष्टि की श्रेष्ठता से कवि सृष्टि की श्रेष्ठता सिद्ध करते हैं क्योंकि सृष्टि में छः रस होते हैं जबकि कवि सृष्टि में शृङ्गार आदि नौ रस होते हैं। **अतः विकल्प D सही है।**

59. समस्तवस्तु विषयक तथा एकदेशविवर्त्ति ये भेद हैं-

(A) उपमालंकार के **(B) उत्प्रेक्षालंकार के**
(C) सांगरूपक के **(D) निरंगरूपक के**

व्याख्या-

➢ आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश के दशम उल्लास में अर्थालङ्कारों का विवेचन करते हैं-

➢ **उपमा अलङ्कार-** 'साधर्म्यमुपमा भेदे' (का.प्र.सूत्र125) उपमान तथा उपमेय का भेद होने पर दोनों के सादृश्य का वर्णन उपमा अलङ्कार है। पूर्णोपमा तथा लुप्तोपमा के भेद से उपमा के दो भेद हैं।

➢ **उत्प्रेक्षा अलङ्कार-** 'सम्भावनमथोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य समेन यत्।' (का.प्र.सूत्र -136)
उपमेय की उपमान के साथ सम्भावना जहाँ की जाती है वहाँ उत्प्रेक्षा अलङ्कार होता है।

➢ **रूपक अलङ्कार-**'तद्रूपकमभेदो य उपमानोपमेययोः (का.प्र.सूत्र 139)
जो उपमान तथा उपमेय का अभेद का आरोप है, उसे रूपक कहते हैं। रूपक के भेद-

(i) समस्तवस्तुविषयक साङ्गरूपक- समस्तवस्तुविषयं श्रौता आरोपिता यदा (का.प्र.सूत्र -139)
जब आरोपित उपमान शब्द द्वारा प्रतिपाद्य होता है वहाँ समस्तवस्तुविषयक रूपक होता है। अर्थात् आरोप के विषय के समान आरोप्यमाण भी जब शब्द द्वारा ग्रहण किया जाता है तब 'समस्त वस्तुएँ जिसका विषय है'
ऐसा यह समस्तवस्तुविषयक होता है।

(ii) एकदेशविवर्ति साङ्गरूपक- 'श्रौता आर्थाश्च ते यस्मिन्नेकदेशविवर्ति तत्' (का.प्र.सूत्र-140)
तथा कुछ अर्थ द्वारा प्रतिपाद्य अर्थात् अर्थगम्य हो, वह एक देशविवर्तिरूपक होता है।

अतः विकल्प C सही हैं।

निरङ्गन्तु शुद्धम् (का.प्र.सूत्र-142)
अर्थात् अङ्गों के आरोप से रहित केवल अङ्गी का आरोप हो वह शुद्ध निरङ्ग रूपक होता है।

स्रोत- काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-466

60. बालक आदि की अपनी स्वाभाविक क्रिया या रूप का वर्णन कहा जाता है-
(A) अतिशयोक्ति (B) परिसंख्या
(C) स्वभावोक्ति (D) रसोक्ति

व्याख्या-

(A) **अतिशयोक्ति–**
'निगीर्याध्यवसानन्तु प्रकृतस्य परेण यत्।
प्रस्तुतस्य यदन्यत्वं यद्यर्थोक्तौ च कल्पनम्।।' (का.प्र.सूत्र-152)
उपमान के द्वारा उपमेय का निगरण करके जो कल्पित अभेद कथनरूप अध्यवसान करता है वह अतिशयोक्ति है।
जैसे- कमलमनम्भसि................परम्परा केयम्

(B) परिसंख्या–
'किंचित्पृष्टमपृष्टं वा कथितं यत्प्रकल्पते।
तादृगन्यव्यपोहाय परिसंख्या तु सा स्मृता।।'(का.प्र.सूत्र-184)
जहाँ कुछ पूछी गई अथवा न पूछी गई वस्तु शब्द के द्वारा कहीं जाकर उस जैसी किसी अन्य वस्तु के निराकरण में पर्यवसित हो जाती है, वहाँ परिसंख्या अलङ्कार जानना चाहिए।

उदाहरण-
किमासेव्यं पुंसां? सविधमनवद्यं....निरवधिविमुक्त्यै प्रभवति।।

(C) स्वभावोक्ति–
'स्वभावोक्तिस्तु डिम्भादेः स्वक्रियारूपवर्णनम्।' (का.प्र.सूत्र-167) बालक आदि की अपनी स्वाभाविक क्रिया अथवा रूपादि का वर्णन स्वभावोक्ति अलङ्कार कहलाता है।

अतः विकल्प C सही है।

उदाहरण- पश्चादङ्घ्री प्रसार्य.........शयनादुत्थितः क्ष्मां खुरेण।।

स्रोत- काव्यप्रकाश (सूत्र-167) – आचार्य विश्वेश्वर, पेज-505

61. 'साधर्म्यमुपमा भेदे' में उपमा का लक्षण लिखा है-
(A) आचार्य विश्वनाथ ने
(B) आचार्य मम्मट ने
(C) जयदेव ने
(D) पण्डितराज जगन्नाथ ने

व्याख्या-

(A) **विश्वनाथ-**'साम्यं वाच्यमवैधर्म्यं वाक्यैक्य उपमा द्वयोः' (सा.द. 10/14)
एक वाक्य में दो पदार्थों के वैधर्म्य रहित, वाच्य सदृश को उपमा कहते हैं।

(B) **मम्मट-**'साधर्म्यमुपमा भेदे'(का.प्र.सूत्र-124)
उपमान तथा उपमेय का भेद होने पर उनके साधर्म्य का वर्णन उपमा कहलाता है।

(C) **जयदेव-** 'उपमा यत्र सादृश्यलक्ष्मीरुल्लसति द्वयोः।
हृदये खेलतोरुच्चैस्तन्वङ्गीस्तनयोरिव।।'(चन्द्रा.5/11)
सुन्दरी नायिका के वक्षःस्थल पर छलकते हुए उभरे स्तनों की तरह जहाँ उपमान और उपमेय दोनों समानता की शोभा से विकसित हो उपमा अलंकार होता है।

(D) **जगन्नाथ-** 'सादृश्यसुन्दरवाक्यार्थोपस्कारमुपमालङ्कृती।'
वाक्यार्थ को शोभित करने वाले सुन्दर सादृश्य का नाम उपमालंकार है।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- काव्यप्रकाश (सूत्र-124)- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-443

62. 'यस्य न सविधे दयिता दवदहनस्तुहिन-दीधितिस्तस्य। यस्य च सविधे दयिता दवदहन-स्तुहिनदीधितिस्तस्य॥' इस पद्य में अलंकार है-
(A) यमक **(B) श्लेष**
(C) वक्रोक्ति **(D) लाटानुप्रास**

व्याख्या-

(A) यमक- 'अर्थे सत्यर्थ भिन्नानां वर्णानां सा पुनः श्रुतिः यमकम्।' (का.प्र.सूत्र-116)
अर्थभेद होने पर भिन्नार्थक वर्णों का उसी क्रम से पुनः श्रवण यमक नामक शब्दालङ्कार है।
उदा.- सन्नारीभरणोमायमाराध्य विधुशेखरम्।

(B) श्लेष- 'श्लेषः स वाक्ये एकस्मिन् यत्रानेकार्थता भवेत्।' (का.प्र.सूत्र-146)
जहाँ एक ही वाक्य में अनेक अर्थ हों वह श्लेष होता है।
उदा.- उदयमयते दिङ्मालिन्यं निराकुरुतेतरां।

(C) वक्रोक्ति- 'यदुक्तमन्यथा वाक्यमन्यथाऽन्येन योज्यते। श्लेषेण काक्वा वा ज्ञेया सा वक्रोक्तिस्तथा द्विधा।।' (का.प्र.सूत्र 102)
वक्ता के द्वारा अन्य अभिप्राय से जो वाक्य कहा गया है उसे किसी अन्य के द्वारा श्लेष अथवा काकु के द्वारा अन्य अर्थ में लगा लिया जाता है वह वक्रोक्ति नामक शब्दालङ्कार होता है।
उदा. अहो केनेदृशी बुद्धिर्दारुणा तव निर्मिता।

(D) लाटानुप्रास- शाब्दस्तु लाटानुप्रासो भेदे तात्पर्यमात्रतः।
(का.प्र.सूत्र-111)
तात्पर्य मात्र से भेद होने पर शब्दानुप्रास लाटानुप्रास कहलाता है।
यस्य न सविधे दयिता दवदहनस्तुहिनदीधितिस्तस्य।
यस्य च सविधे दयिता दवदहनस्तुहिनदीधिस्तस्य।।
अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-407

63. यदि उपमेय की उपमान के साथ सम्भावना व्यक्त की जाए तो अलंकार होता है-
(A) उत्प्रेक्षा **(B) रूपक**
(C) उपमेयोपमा **(D) सन्देह**

व्याख्या-
आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश के दशम उल्लास में अर्थालङ्कार का वर्णन करते हैं-

(A) उत्प्रेक्षा- 'सम्भावनमथोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य समेन यत्।' (का.प्र.सूत्र-136)
जहाँ उपमेय की उपमान के साथ सम्भावना व्यक्त की जाय, वहाँ उत्प्रेक्षा अलङ्कार होता है।
अतः विकल्प A सही है।

(B) रूपक-'तद्रूपकमभेदो य उपमानोपमेययोः।' (का.प्र.सूत्र-138)
जो उपमान तथा उपमेय के अभेद का आरोप है, उसे रूपक कहते हैं।

(C) उपमेयोपमा- 'विपर्यास उपमेयोपमा तयोः।' (का.प्र.सूत्र-135)
उपमान का उपमेय तथा उपमेय का उपमान रूप में वर्णन उपमेयोपमा अलङ्कार है।

(D) सन्देह- 'ससन्देहस्तु भेदोक्तौ तदनुक्तौ च संशयः।' (का.प्र.सूत्र-137)
उपमेय में उपमान रूप से संशय होने पर संदेह नामक अलङ्कार होता है।

स्रोत- काव्यप्रकाश (सूत्र-136)- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-460

64. सभंगश्लेष अलंकार के भेद बतलाये गये हैं-
(A) चार (B) छः
(C) आठ (D) दो

व्याख्या-
- परिसंख्या अलङ्कार के चार भेद हैं-
  1. प्रश्नपूर्वक प्रतीयमान 2.प्रश्नपूर्वक वाच्य 3.अप्रश्नपूर्वक प्रतीयमान 4.अप्रश्नपूर्वक वाच्य
- उपमा अलङ्कार के अन्तर्गत परिगणित पूर्णोपमा के छः भेद हैं-
  1.तद्धितगा श्रौती 2.तद्धितगा आर्थी 3.समासगा श्रौती 4.समासगा आर्थी 5.वाक्यगा श्रौती 6.वाक्यगा आर्थी
- श्लेष अलङ्कार के आठ भेद हैं-
  1.वर्णश्लेष, 2.पदश्लेष 3.लिङ्गश्लेष 4.भाषाश्लेष 5.प्रकृतिश्लेष 6.प्रत्ययश्लेष 7.विभक्तिश्लेष 8.वचनश्लेष
- वक्रोक्ति अलङ्कार के दो भेद हैं-
  1.श्लेषवक्रोक्ति 2.काकुवक्रोक्ति

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-415

65. 'भक्तिर्भवे न विभवे व्यसनं शास्त्रे न युवतिकामास्त्रे। चिन्ता यशसि न वपुषि प्रायः परिदृश्यते महताम्।' प्रस्तुत पद्य में अलङ्कार है-

(A) विरोधाभास (B) परिसंख्या
(C) कारणमाला (D) भ्रान्तिमान्

व्याख्या-

परिसंख्या अलङ्कार-

'किञ्चित्पृष्टमपृष्टं वा कथितं यत्प्रकल्पते।
तादृगन्यव्यपोहाय परिसंख्या तु सा स्मृता।।' (का.प्र.सूत्र-184)

जहाँ कुछ पूछी गयी अथवा न पूछी गयी वस्तु शब्द के द्वारा कही जाकर उस जैसी किसी अन्य वस्तु के निराकरण में पूर्ण या समाप्त हो जाती है वहाँ परिसंख्या अलङ्कार होता है।

उदाहरण- भक्तिर्भवे न विभवे व्यसनं शास्त्रे न युवति कामास्त्रे। चिन्ता यशसि न वपुषि प्रायः परिदृश्यते महताम्।।

महापुरुषों की भक्ति शिव में देखी जाती है न कि सम्पत्ति आदि वैभव में, महापुरुषों कि रुचि शास्त्र में होती है न कि रमणियों के कामरूप अस्त्र में, महापुरुषों की चिन्ता यश में होती है न कि शरीर में।

उक्त पद्य में महापुरुषों की शिव के प्रति भक्ति आदि के कथन द्वारा वैभव आदि के प्रति आसक्ति का निषेध किया गया है यहाँ कथन अप्रश्नपूर्वक है तथा निषेध द्वारा कथित होने से वाच्य है अतः अप्रश्न पूर्विका वाच्यव्यवच्छेद्या परिसंख्या अलङ्कार है।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत-काव्यप्रकाश (सूत्र-184)- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-528

66. ≍प तथा ≍फ को कहा जाता है-

(A) प् तथा फ् (B) जिह्वामूलीय
(C) उपध्मानीय (D) यम वर्ण

व्याख्या-

जिह्वामूलीय- 'जिह्वामूलीयस्य जिह्वामूलम्' जिह्वामूलीय विसर्ग का जिह्वामूल स्थान है क्योंकि इसका उच्चारण सीधे जिह्वा के मूलभाग से होता है।

उपध्मानीय- ''उपूपध्मानीयानामोष्ठौ'' अठारह प्रकार के उकार,पवर्ग, उपध्मानीय विसर्ग का उच्चारण स्थान ओष्ठ है। उकार पवर्ग अर्थात् प् फ् ब् भ् म् और उपध्मानीय विसर्ग का उच्चारण होठों के टकराने से होता है, अतः इसका उच्चारण स्थान ओष्ठ है।

यमवर्ण- यम प्रत्याहार मे ये वर्ण हैं-
य्,व्, र्, ल्, ञ्, म्, ङ्, ण्, न्।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी- गोविन्दप्रसाद शर्मा, पेज-20

67. ≍क तथा ≍ख का उच्चारणस्थान है-

(A) कण्ठ (B) तालु
(C) ओष्ठ (D) जिह्वामूल

व्याख्या-

- **अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः-**अ, कवर्ग (क् ख् ग् घ् ङ्) ह और विसर्ग का उच्चारण स्थान कण्ठ है।
- **ऌतुलसानां दन्ताः-** ऌ , तवर्ग (त् थ् द् ध् न्) और स का उच्चारण स्थान दन्त है।
- **उपूपध्मानीयानामोष्ठौ-** उकार, पवर्ग, उपध्मानीय विसर्ग का उच्चारणस्थान ओष्ठ है। (प् फ् ब् भ् म्)
- **जिह्वामूलीयस्य जिह्वामूलम्-** ≍क ≍ख का उच्चारण स्थान जिह्वामूल है।

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी- गोविन्दप्रसाद शर्मा, पेज-20

68. 'अनुविष्णु' समस्तपद का विग्रह होगा-

(A) अनुविष्णोः (B) विष्णोः पश्चात्
(C) अनुगर्ता विष्णुम् (D) विष्णोरनुयायी

व्याख्या-

अनुविष्णु- विष्णु के पीछे

लौकिक विग्रह-'विष्णोः पश्चात्' अलौकिक विग्रह-विष्णु ङस् अनु। पश्चात् अर्थात् पीछे इस अर्थ में अनु के साथ विष्णु+ङस् का 'अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि......आदि सूत्र से समास हो गया। समास होने के बाद विष्णु+ङस् अनु इस समुदाय की 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिक सञ्ज्ञा।

ङस् का 'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से सुप् का लुक् विष्णु+अनु प्रथमानिर्दिष्ट अनु की 'प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' से उपसर्जन सञ्ज्ञा तथा 'उपसर्जनं पूर्वम्' से उपसर्जन सञ्ज्ञक अनु का पूर्व प्रयोग-अनु विष्णु 'अव्ययीभावश्च' से अव्ययसञ्ज्ञा, 'एक देशविकृतमनन्यवत्' इस परिभाषा से अनुविष्णु को प्रातिपदिक मानकर सु विभक्ति आई और उसका 'अव्ययादाप्सुपः' से लुक् हुआ तो- अनुविष्णु प्रयोग सिद्ध हुआ।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमीव्याख्या भाग-4) पेज-32

69. 'पितरौ' समस्तपद का विग्रह होगा-
(A) माता च पिता च (B) पिता च पिता च
(C) मातृ च पितृ च (D) मातृ च पिता च

व्याख्या-
पितरौ- माता च पिता च लौकिक विग्रह और मातृ सु पितृ सु अलौकिक विग्रह।
'चार्थे द्वन्द्वः' से समास होकर प्रातिपदिक सञ्ज्ञा, सुप् का लुक् करके 'पिता मात्रा' से एकशेष होकर सूत्र का शेष और मातृ का लोप हो जाता है और 'यः शिष्यते स लुप्यमानार्थाभिधायी' के अनुसार पितृ से माता का भी कथन होने से द्विवचन की प्रतीति हो रही है। अतः द्विवचन में 'पितरौ' बन जाता है।
अतः विकल्प A सही है।
स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमीव्याख्या भाग-4) पेज-239

70. 'नक्तन्दिवम्' में समास होगा-
(A) कर्मधारय (B) अव्ययीभाव
(C) द्वन्द्व (D) तत्पुरुष

व्याख्या-

	समास	सामासिक पद	लौकिक विग्रह
(A)	कर्मधारय	किंसखा	कुत्सितः सखा
(B)	अव्ययीभाव	अनुविष्णु	विष्णोः पश्चात्
(C)	द्वन्द्व	नक्तन्दिवम्	नक्तं च दिवं च तयोः समाहारः
(D)	तत्पुरुष	धनार्चिताः	धनैः अर्चिताः

अतः विकल्प C सही है।
स्रोत- किरातार्जुनीयम्- रामसेवक दुबे, पेज-66

71. 'नीलोत्पलम्' शब्द में समास है-
(A) द्वन्द्व (B) अव्ययीभाव
(C) कर्मधारय (D) बहुव्रीहि

व्याख्या-

	समास	उदाहरण	समास-विग्रह
(A)	द्वन्द्व	धवखदिरौ	धवश्च खदिरश्च
		त्वक्स्रजम्	त्वक् च स्रक् च अनयोः समाहारः
		छत्रोपानहम्छत्रं	चोपानच्चानयोः समाहारः
(B)	अव्ययीभाव	अधिहरि	हरौ इति
		अध्यात्मम्	आत्मनि इति
		सचक्रम्	चक्रेण युगपत्
		ससखि	सख्या सदृशः
(C)	कर्मधारय	नीलोत्पलम्	नीलम् उत्पलम्
		रक्तोपलम्	रक्तञ्च तदुत्पलम्
(D)	बहुव्रीहि	द्विमूर्धः	द्वौ मूर्धानौ यस्य सः
		त्रिमूर्धः	त्रयो मूर्धानो यस्य सः
		सुपात्	शोभनौ पादौ यस्य सः

अतः विकल्प C सही है।
स्रोत- संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज-249

72. 'मित्रावरुणौ' में समास होता है-
(A) 'इद्वृद्धौ' सूत्र से
(B) 'इदग्नेः सोमवरुणयोः' सूत्र से
(C) 'अग्नेः स्तुत्स्तोमसोमाः' सूत्र से
(D) 'देवता द्वन्द्वे च' सूत्र से

व्याख्या-
(A) **इद् वृद्धौ (6.3.27)-** वृद्धि आदेश युक्त उत्तर पद के परे रहते देवताद्वन्द्व समास में अग्नि शब्द को इकारादेश होता है। जैसे- अग्निवारुणीम्, अग्निमारुतम्।
(B) **ईदग्नेः सोमवरुणयोः (6.3.26)-** देवतावाची द्वन्द्व समास में सोम तथा वरुण शब्द उत्तरपद परे रहते अग्नि शब्द को ईकारादेश होता है। जैसे- अग्निषोमौ।
(C) **अग्नेः स्तुत्स्तोमसोमाः (8.3.82)-** संहिता के विषय में अग्नि शब्द से उत्तर स्तुत्, स्तोम तथा सोम शब्दों से सकार को मूर्धन्य होता है। जैसे- अग्नीषोमौ।
(D) **देवता द्वन्द्वे च (6.3.25)-** देवतावाची शब्दों के द्वन्द्व समास में उत्तरपद रहते पूर्वपद को आनङ् आदेश होता है। जैसे- 1.मित्रावरुणौ 2.इन्द्रावरुणौ 3.इन्द्रासोमौ
अतः विकल्प D सही है।
स्रोत- सिद्धान्तकौमुदी- गोविन्दाचार्य (भाग-2), पेज-833

73. 'अनुर्लक्षणे' सूत्र विधायक है-
(A) कर्मप्रवचनीय संज्ञा का
(B) उपसर्गसंज्ञा का
(C) गतिसंज्ञा का
(D) निपातसंज्ञा का

व्याख्या-
(A) **अनुर्लक्षणे (1/4/84)-** लक्षण विशेष हेतु द्योतित होने पर 'अनु' शब्द की कर्मप्रवचनीय संज्ञा होती।
उदाहरण- पर्जन्यो जपम् अनु प्रावर्षत्।
अतः विकल्प A सही है।
(B) **उपसर्गाः क्रियायोगे (1/4/59)-** क्रिया के योग में प्र आदि उपसर्ग संज्ञक होते हैं।
(C) **गतिश्च (1.4.59)-** क्रिया के योग मे 'प्र' आदि भी गतिसंज्ञा और उपसर्गसंज्ञा भी होती है।
(D) **प्रादयः (1.4.58)-** द्रव्य अर्थ न होने पर प्र आदि भी निपातसंज्ञक होते हैं।
स्रोत-सिद्धान्तकौमुदी (कारक-प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय,पेज-32

74. 'ग्रामं गच्छन् तृणं स्पृशति' में 'तृण' शब्दगत द्वितीया विभक्ति होती है-
(A) 'कर्मणि द्वितीया' से
(B) 'अकथितं च' से
(C) 'तथायुक्तं चानीप्सितम्' से
(D) 'अभिनिविशश्च' से

व्याख्या-
(A) **कर्मणि द्वितीया (2.3.2)-** अनुक्त कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे- भक्तः हरिं भजति। भक्त हरि को भजता है।
(B) **अकथितं च (1.4.51)-** अपादानादि कारक विशेष के अविवक्षित होते हैं। वहाँ कर्मकारक संज्ञा होती है।
(C) **तथायुक्तं चानीप्सितम् (1.4.50)-** जिसप्रकार कर्ता का ईप्सिततम पदार्थ क्रिया के साथ युक्त होती है उसी प्रकार कर्ता द्वारा न चाहा जाने वाला पदार्थ भी क्रिया के साथ युक्त हो, तो उसकी भी कर्मसंज्ञा होती है।
जैसे- ग्रामं गच्छन् तृणं स्पृशति । वह गाँव जाते हुए तिनके को स्पर्श करता है। इस वाक्य में 'ग्राम' शब्द की 'कर्तुरीप्सितमं कर्म' से कर्म संज्ञा तथा अनीप्सित कर्म 'तृण' शब्द की 'तथायुक्तं चानीप्सितं' से कर्मसंज्ञा तथा 'कर्मणि द्वितीया' से द्वितीया विभक्ति हुई है।
अतः विकल्प C सही है।
(D) **अभिनिविशश्च (1.4.47)-** यदि विश् धातु के पूर्व अभि और नि ये दोनों उपसर्ग क्रमशः लगे हों तो क्रिया के आधार की कर्मसंज्ञा होती है।
जैसे- अभिनिविशते सन्मार्गम्।
स्रोत- अष्टाध्यायी (1/4/50)- ईश्वरचन्द्र, पेज-128

75. अपादान कारक में विभक्ति होती है-
(A) चतुर्थी (B) पञ्चमी
(C) तृतीया (D) सप्तमी

व्याख्या-
(A) **चतुर्थी-** चतुर्थी सम्प्रदाने (2.3.13) अनभिहित सम्प्रदान कारक में चतुर्थी विभक्ति होती है। विप्राय गां ददाति। विप्र (ब्राह्मण) को गाय देता है।
(B) **पञ्चमी-** अपादाने पञ्चमी (2.3.28) अनभिहित अपादान में पञ्चमी विभक्ति होती है। ग्रामादायाति। गाँव से आता है।
(C) **तृतीया-** कर्तृकरणयोस्तृतीया (2.3.18) अनुक्त कर्त्ता तथा करण कारक में तृतीया विभक्ति होती है। रामेण बाणेन हतो वाली। राम के द्वारा बाण से बाली मारा गया।
(D) **सप्तमी** सप्तम्यधिकरणे च (2.3.36) अधिकरणकारक में सप्तमी विभक्ति होती है। कटे आस्ते। वह चटाई पर बैठता है। **अतः विकल्प B सही है।**
स्रोत- अष्टाध्यायी (2/3/28)- ईश्वरचन्द्र, पेज-203

76. 'क्रोशेन अनुवाकोऽधीतः' में तृतीया विभक्ति का प्रयोग किया गया है-
(A) 'सहयुक्तेऽप्रधाने' सूत्र से
(B) 'इत्थम्भूतलक्षणे' सूत्र से
(C) 'प्रकृत्यादिभ्य उपसंख्यानम्' सूत्र से
(D) 'अपवर्गे तृतीया' सूत्र से

व्याख्या-
(A) **सहयुक्तेऽप्रधाने (2.3.19)-** सह के अर्थवाची शब्दों के योग में अप्रधान में तृतीया विभक्ति होती है।
उदाहरण- पुत्रेण सह आगतः पिता, (पुत्र के साथ पिता आये) उपर्युक्त उदाहरण में पिता का आगमन क्रिया के साथ सीधा सम्बन्ध है वही प्रधान है। अतः पुत्र अप्रधान हुआ इसलिए पुत्र में तृतीया विभक्ति का प्रयोग है।
(B) **इत्थम्भूतलक्षणे (22.3.21)-** किसी प्रकार विशेष (धर्म-विशेष) को प्राप्त हुए व्यक्ति अथवा वस्तु के लक्षण (ज्ञापक चिन्ह) से तृतीया विभक्ति होती है।

उदाहरण- जटाभिस्तापसः (जटाओं से तपस्वी प्रतीत होता है) इस उदाहरण में इत्थम्भूत 'तपस्विता' का लक्षण 'जटा' है अर्थात् जटा से तापस लक्षित किया जा रहा है अतः प्रकृत सूत्र से तृतीया विभक्ति हुई।

(C) **प्रकृत्यादिभ्य उपसंख्यानम्-** प्रकृति आदि शब्दों से तृतीया विभक्ति होती है।
उदाहरण- प्रकृत्या चारु (स्वभाव से सुन्दर) इस उदाहरण में सम्बन्ध अर्थ में तृतीया हुई है।

(D) **अपवर्गे तृतीया (2.3.6)-** अपवर्ग का अर्थ है क्रिया की समाप्ति होने पर फल की प्राप्ति। अपवर्ग द्योतित होने पर काल और मार्गवाची शब्दों से अत्यन्त संयोग गम्यमान होने पर तृतीया विभक्ति होती है।
क्रोशेन अनुवाकोऽधीतः - कोश भर में अनुवाक याद कर डाला। यहाँ अध्ययन क्रिया कोस तक लगातार चलती रही अनुवाक समाप्त हो गया तथा अध्ययन का फल स्मरण करना भी प्राप्त हो गया अतः तृतीया विभक्ति का विधान हुआ।

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- डा. राममुनि पाण्डेय- कारक प्रकरण, पेज-60

77. 'कृ + ण्वुल्' प्रत्यय के संयोग से शब्द बनता है-
(A) कारकः **(B) कर्त्ता**
(C) कृण्वुल् **(D) कृतिः**

व्याख्या-

कृ धातु से 'ण्वुल्तृचौ' सूत्र से ण्वुल् प्रत्यय = कृ +ण्वुल्, ण्वुल् प्रत्यय का अनुबन्ध लोप - कृ+वु
वु के स्थान पर 'युवोरनाकौ' सूत्र से अक आदेश-कृ+अक। अक की 'आर्धधातुकं शेषः' से आर्धधातुक सञ्ज्ञा परन्तु इसका कोई फल नहीं है, ण्वुल् प्रत्यय णित् है। स्थानिवद्-भाव से णित्व अक् में भी आ गया अतः 'अचोञ्णिति' से कृ को 'उरण रपरः' की सहायता से आर् वृद्धि होकर- 'क् + आर् + अक = कारक' रूप बना- पुनः कारक की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा आदि कार्य होकर कारकः रूप सिद्ध हुआ।

अतः विकल्प A सही है।

कृ धातु से 'ण्वुल्तृचौ' सूत्र से तृच् प्रत्यय = कृ + तृच् तृच् के चकार की इत्सञ्ज्ञा तथा लोप = कृ + तृ
तृ की आर्धधातुकसञ्ज्ञा और कृ का सार्वधातुकार्धधातुकयोः से अर् गुण हुआ- कृ+अर्+तृ =कर्तृ
कर्तृ की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा तथा सु विभक्ति, ऋकारान्त की तरह ऋकार के स्थान पर 'ऋदुशनस्पुरुदंसोऽनेहसाञ्च' से अनङ् आदेश अनुबन्ध लोप, कर्तृ+अन् +स्। वर्णसम्मेलन होकर कर्तन् स् बना।
त के अकार की 'अलोऽन्त्यात्पूर्व उपधा' से उपधा सञ्ज्ञा करके 'अप्तृन्तृच्स्वसृनप्तृनेष्टृत्वष्टृक्षतृहोतृपोतृप्रशास्तॄणाम्' से दीर्घ- कर्तान् स् बना 'अपृक्तएकाल्प्रत्ययः' से सकार की अपृक्तसञ्ज्ञा करके लोप आदि कार्य कर्तान् बना, नकार का 'नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य' से लोप हुआ तो कर्त्ता रूप सिद्ध हुआ
कृ+क्तिन् =कृ+ति=कृतिः
कृति की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा सु विभक्ति आदि कार्य तथा लोप होकर 'कृतिः' रूप बना।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी(भैमीव्याख्या भाग-3),पेज-36-37

78. 'पृष्टवान्' शब्द में प्रकृति तथा प्रत्यय है-
(A) प्रच्छ् + क्तवतु **(B) प्रष्ट् + वान्**
(C) प्रच्छ + क्त **(D) प्रच्छ्+मतुप्**

व्याख्या-
प्रच्छ् धातु से 'क्तक्तवतू निष्ठा' (1.1.26) सूत्र से क्तवतु प्रत्यय प्रच्छ् + क्तवतु - क्तवतु का अनुबन्ध लोप तवत् शेष बचा।
'ग्रहि-ज्या-वयि-व्यधि-वष्टि-विचति-वृश्चति-पृच्छति-भृज्जतीनां ङिति च' सूत्र से प्रच्छ् का पृच्छ् आदेश पृच्छ् + क्तवतु क्तवतु का अनुबन्ध लोप आदि कार्य होकर पृष्टवत् बना प्रथमा एकवचन में 'पृष्टवान्' रूप बनेगा

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी(भैमीव्याख्या भाग-3), पेज-107

79. दा + यत् प्रत्यय के संयोग से शब्द निर्मित होगा-
(A) दायः **(B) देयम्**
(C) दानम् **(D) दत्त्वा**

व्याख्या-

(A) **ददातिदधात्योर्विभाषा (3.1.139) -** उपसर्ग रहित दा व धा धातुओं के विकल्प से 'श' प्रत्यय होता है- जैसे- दधः, दायः।

(B) **अचो यत् (3.1.97)** अच् प्रत्याहार के वर्ण आदि में हों ऐसे धातुओं से यत् प्रत्यय होता है।

ईद्यति (6.4.65) यत् प्रत्यय के परे होने पर धातु के अन्त मे विद्यमान आकार के स्थान पर ईकार आदेश होता है। जैसे- दा+यत् = देयम्।

अतः विकल्प B सही है।

(C) **कृत्यल्युटो बहुलम् (3.3.113)** कृत्यसंज्ञक प्रत्यय और ल्युट् प्रत्यय बहुल से होते हैं।
दा + ल्युट् = दानम्

(D) **समानकर्तृकयोः पूर्वकाले (3.4.21)** यदि दो धातुओं के अर्थों का कर्ता एक ही हो और किसी धातु का अर्थ पूर्वकाल में स्थित हो तो उस पूर्वकाल में स्थित धातु से क्त्वा प्रत्यय होता है।
जैसे- दा + क्त्वा = दत्त्वा

स्रोत- संस्कृतव्याकरण प्रवेशिका- बाबूराम सक्सेना, पेज-476

80. 'एधनीयम्' पद में प्रत्यय है-
(A) ईय **(B) अनीयर्**
(C) तव्यत् **(D) ढक्**

व्याख्या-
'आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम्' (7.1.2) प्रत्यय के आदि में जो फ् , ढ् , ख् , छ् तथा घ् इन्हें यथासंख्य करके आयन् , एय् , ईन् , ईय् तथा इय् आदेश होते हैं। उदाहरण- मालीयः, अर्जुनीयः आदि।

- **तव्यत्तव्यानीयरः (3.1.96)-** धातु से तव्यत् , तव्य तथा अनीयर् प्रत्यय होते हैं-
उदाहरण - एध्+ अनीयर् = एधनीयम्
शी + अनीयर् = शयनीयम्।
गम् + तव्यत् = गन्तव्यः
पठ् + तव्यत् = पठितव्यः
अतः विकल्प B सही है।

- **स्त्रीभ्यो ढक् (4.1.120)-** अपत्य अर्थ में स्त्रीप्रत्ययान्त प्रातिपदिक से ढक् प्रत्यय होता है।
उदाहरण- वैनतेयः, द्रौपदेयः, सारमेयः आदि।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमीव्याख्या भाग-3), पेज-27

81. 'कृ' धातु से स्त्रीलिंग में शतृ प्रत्यय लगाने पर रूप बनेगा-
(A) कुर्वनी **(B) कुर्वन्ती**
(C) कुर्वती **(D) कुर्वन्ता**

व्याख्या-
'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे' (3.2.124) अप्रथमान्त अर्थात् द्वितीयान्त आदि पदों के साथ यदि लट् के समानाधिकरण हो तो लट् के स्थान पर शतृ और शानच् प्रत्यय होते हैं।
परस्मैपदी धातुओं में शतृ तथा आत्मनेपदी धातुओं में शानच् प्रत्यय आदेश होता है।
कृ + शतृ = कुर्वती। पठ् + शतृ = पठन्, पठन्ती,पठत्
अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी- (भैमीव्याख्या भाग-3), पेज-132

82. 'शुष् + क्त' प्रत्यय के योग से शब्द बनेगा-
(A) शुष्कः **(B) शुष्थ**
(C) शुष्तः **(D) शुष्वः**

व्याख्या-
शुषः कः = (8.2.51)
'शुष्' धातु से उत्तर निष्ठा के तकार को ककार होता है। ककार मे अकार उच्चारणार्थ है।
शुष् + क्त
शुष् + क
शुष् + क सु = शुष्कः
पच् + क्त = पक्वः
अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी- (भैमीव्याख्या, भाग-3) पेज-112

83. वह् धातु से तुमुन् प्रत्यय लगने पर रूप होगा-
(A) बहितुम् **(B) बहेतुम्**
(C) वोष्तुि **(D) वोढुम्**

व्याख्या-
'तुमन्ण्वुलौ क्रियायां क्रियार्थायाम्' (3.3.10)
क्रियार्था क्रिया के उपपद रहते भविष्यत् में धातु से 'तुमुन्'और 'ण्वुल्' प्रत्यय होते हैं।
वह् धातु से तुमुन् प्रत्यय अनुबन्ध लोप आदि कार्य होकर 'वोढुम्' रूप बनेगा।
अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- रचनानुवादकौमुदी- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-206

84. अधोलिखित शब्दों तथा उनके प्रत्ययों के साथ सुमेलित कीजिए-

(अ) शिक्षकः	**(i) शानच्**
(ब) अजा	**(ii) वुन्**
(स) बुद्धिमान्	**(iii) टाप्**
(द) याचमानः	**(iv) मतुप्**

	अ	ब	स	द
(A)	(i)	(iv)	(iii)	(ii)
(B)	(ii)	(i)	(iv)	(iii)
(C)	(iv)	(ii)	(iii)	(i)
(D)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)

व्याख्या- प्रत्ययों का सुमेलित क्रम-

अ	शिक्षकः	(i)	वुन् (क्रमादिभ्योवुन्)
ब	अजा	(ii)	टाप् (अजाद्यतष्टाप्)
स	बुद्धिमान्	(iii)	मतुप्
द	याचमानः	(iv)	शानच्

नोट- उपर्युक्त विकल्पों में विकल्प D का क्रम सुमेलित है
अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी भैमी व्याख्या, पेज-5/90,6/4, 3/137,5/1110

85. 'कुन्ती' शब्द से 'कौन्तेय' पद बनता है, अधोलिखित सूत्र से-
(A) 'तस्यापत्यम्' सूत्र से
(B) 'स्त्रीभ्यो ढक्' सूत्र से
(C) 'अत इञ्' सूत्र से
(D) 'लुक् स्त्रियाम्' सूत्र से

व्याख्या-

(A) **तस्यापत्यम् (4.1.92)-** षष्ठ्यन्त कृत सन्धिकार्य समर्थ प्रातिपदिक से अपत्य अर्थ में इस सूत्र से पहले कहे गये प्रत्यय और आगे आने वाले प्रत्यय होते हैं।

(B) **स्त्रीभ्यो ढक् (4.1.120)** अपत्य अर्थ में स्त्रीप्रत्ययान्त शब्दों से ढक् प्रत्यय होता है। जैसे- कुन्ती + ढक् (एय) = कौन्तेयः।
अतः विकल्प B सही है।

(C) **अत इञ् (4.1.94)** अपत्य अर्थ में ह्रस्व अकारान्त षष्ठ्यन्त समर्थ प्रातिपदिक से इञ् प्रत्यय होता है।
जैसे- दक्षस्य अपत्यं पुमान् दक्ष + इञ् = दाक्षिः
दशरथस्य अपत्यं पुमान् = दशरथ +इञ् = दाशरथिः।

(D) **लुक् स्त्रियाम् (4.1.109)** आङ्गिरस गोत्र वाच्य होने पर विधीयमान यञ् प्रत्यय का लुक् होता है स्त्री अभिधेय हो तो।
जैसे- वतण्ड + ई = वातण्डी।

स्रोत- अष्टाध्यायी (4/1/120)- ईश्वरचन्द्र, पेज-456

86. 'अद्' धातु से लिट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन में रूप बनता है-
(A) अत्तः **(B) आदत्**
(C) जघास **(D) अत्ता**

व्याख्या-
अद् भक्षणे (अदादिगण), अनिट् , सकर्मक,परस्मैपद

(A)	**लट् लकार**	
अत्ति	अत्तः	अदन्ति
अत्सि	अत्थः	अत्थ
अद्मि	अद्वः	अद्मः
(B)	**लङ् लकार**	
आदत्	आत्ताम्	आदन्
आदः	आत्तम्	आत्त
आदम्	आद्व	आद्म
(C)	**लिट् लकार**	
जघास	जक्षतुः	जक्षुः
जघसिथ	जक्षथुः	जक्ष
जघास/जघस	जक्षिव	जक्षिम
	अथवा	
आद	आदतुः	आदुः
आदिथ	आदुथुः	आद
आद	आदिव	आदिम
(D)	**लुट् लकार**	
अत्ता	अत्तारौ	अत्तारः
अत्तासि	अत्तास्थः	अत्तास्थ
अत्तास्मि	अत्तास्वः	अत्तास्मः

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- रूपचन्द्रिका- ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज-246

87. 'हु' धातु से लोट्लकार प्रथम पुरुष एकवचन में रूप बनता है-
(A) हेर्धि (B) जुहाव
(C) हूयात् (D) जुहोतु

व्याख्या-
हु धातु, जुहोत्यादिगण, सकर्मक, अनिट् , परस्मैपद

➢ **लिट् लकार- उत्तम पुरुष एकवचन-**
जुहाव,जुहव जुहुविव जुहुमिम

➢ **आशीर्लिङ् लकार- प्रथम पुरुष एकवचन-**
हूयात् हूयास्ताम् हूयासुः

➢ **लोट्लकार- प्रथम पुरुष एकवचन-**
जुहोतु, जुहुतात् जुहुताम् जुह्वतु

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- रूपचन्द्रिका- ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज-298

88. 'क्री' धातु से लट्लकार प्रथम पुरुष एकवचन में रूप बनता है-
(A) क्रेष्यति (B) क्रीणाति
(C) क्रेषोष्ट (D) क्रीणीतः

व्याख्या-
डुक्रीञ् धातु, अनिट् , सकर्मक, उभयपदी

लट् लकार			
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र.पु.	क्रीणाति	क्रीणीतः	क्रीणन्ति
म.पु.	क्रीणासि	क्रीणीथः	क्रीणीथ
उ.पु.	क्रीणामि	क्रीणीवः	क्रीणीमः
लृट् लकार			
प्र.पु.	क्रेष्यति	क्रेष्यतः	क्रेष्यन्ति
म.पु.	क्रेष्यसि	क्रेष्यथः	क्रेष्यथ
उ.पु.	क्रेष्यामि	क्रेष्यावः	क्रेष्यामः

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- रूपचन्द्रिका- ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज-531

89. 'बभूव' रूप बनता है-
(A) 'भू' धातु लोट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन में
(B) 'भू' धातु लिट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन में
(C) 'भू' धातु लङ्लकार मध्यमपुरुष द्विवचन में
(D) 'भू' धातु लुङ्लकार प्रथमपुरुष एकवचन में।

व्याख्या-
भू धातु, अकर्मक, अनिट्, परस्मैपद भ्वादिगण

लिट्लकार			
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र.पु.	बभूव	बभूवतुः	बभूवुः
म.पु.	बभूविथ	बभूवथुः	बभूव
उ.पु.	बभूव	बभूविव	बभूविम
लुङ् लकार- प्रथम पुरुष एकवचन			
प्र.पु.	अभूत्	अभूताम्	अभूवन्
म.पु.	अभूः	अभूतम्	अभूत
उ.पु.	अभूवम्	अभूव	अभूम

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- रचनानुवादकौमुदी- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-145

90. 'पुष्पा स्वलेखन्या पत्रं लिखति' वाक्य का वाच्य परिवर्तन होगा-
(A) पुष्पा स्वलेखनीं पत्रं लिखति।
(B) पुष्पया स्वलेखन्या पत्रं लिख्यते।
(C) पुष्पया स्वलेखन्या पत्रेण लिख्यते।
(D) पत्रेण पुष्पा स्वलेखन्या लिख्यते।

व्याख्या-
कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य में परिवर्तन करते समय क्रिया कर्म का अनुगमन करती है अर्थात् क्रिया के द्वारा कर्म उक्त होता है और उक्त कर्म में प्रथमा विभक्ति होती है।
'कर्तृकरणयोस्तृतीया' (2.3.18) से अनुक्त कर्त्ता तथा करण में तृतीया विभक्ति होती है।
कर्तृवाच्य- पुष्पा स्वलेखन्या पत्रं लिखति। (पुष्पा अपनी लेखनी से पत्र लिखती है।)
कर्मवाच्य- पुष्पया स्वलेखन्या पत्रं लिख्यते।
अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-117

91. 'आभा पुष्पं जिघ्रति' का हिन्दी अनुवाद होगा-
(A) आभा फूल खाती है।
(B) आभा फूल से नफरत (ईर्ष्या) करती है।
(C) आभा पुष्प पसन्द करती है।
(D) आभा फूल सूँघती है।

व्याख्या-

आभा पुष्पं जिघ्रति।

इस वाक्य का हिन्दी अनुवाद होगा - आभा फूल सूँघती है।

वाक्य में क्रिया 'जिघ्रति' का अर्थ सूँघना है।

घ्रा धातु लट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन।

अन्य वाक्यों का अनुवाद-

- आभा पुष्पं अत्ति।
- आभा पुष्पाय ईर्ष्यति।
- आभा पुष्पाय स्पृहयति।

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- रचनानुवादकौमुदी- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-151

92. अशुद्ध वाक्य बतलाइये-
(A) रमेशः पठितवान्
(B) राधा अहं च पठावः
(C) रामश्च अहं च त्वं च पठसि
(D) मीना नृत्यं चकार

व्याख्या-

(C) **रामश्च अहं च त्वं च पठसि।**

प्रथम पुरुष + मध्यम पुरुष = क्रिया मध्यम पुरुष की होगी वचन कर्ता की सामूहिक संख्या के अनुसार।

वह और तुम पढ़ते हो।

- सः त्वं च पठथः।
- तौ त्वं च लिखथ।
- सः यूयं च गच्छथ।

अर्थात् प्रथम पुरुष और मध्यम पुरुष में मध्यम पुरुष ही शेष रहेगा। **अतः विकल्प C सही है।**

नोट- रमेशः पठितवान्। राधा अहं च पठावः। मीना नृत्यंचकार आदि वाक्य व्याकरण की दृष्टि से शुद्ध है। वाक्य में प्रथम पुरुष मध्यम पुरुष और उत्तम पुरुष का कर्त्ता एक साथ आयें तो क्रिया उत्तमपुरुष के लिङ्ग वचन के अनुसार होगी। जैसे- रामश्च अहं च त्वं च पठामः। इसलिए व्याकरण की दृष्टि से 'रामश्च अहं च त्वं च पठसि' यह वाक्य अशुद्ध है। **इसलिए विकल्प C सही है।**

स्रोत- रचनानुवादकौमुदी-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-102

93. कौन सा शब्द संस्कृत में अशुद्ध है-
(A) मयंक (B) शशाङ्क
(C) कलङ्क (D) भुजङ्ग

व्याख्या-

(A) मयंक शब्द का अर्थ 'चन्द्रमा' है। पाणिनि की दृष्टि में यह अव्युत्पन्न शब्द है। इसलिए इस शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत शब्दकोशों में नहीं प्राप्त होती है। अतः यह शब्द संस्कृत की दृष्टि से अशुद्ध है।

(B) शश् + अच् + अङ्क = 'शशाङ्कः' जिसका अर्थ है 'चन्द्रमा'

(C) कल् + क्विप् = 'कलङ्कः' जिसका अर्थ- धब्बा, चिन्ह, काला धब्बा।

(D) भुजः सन् गच्छति गम् + खच् मुम् डिच्च = 'भुजङ्गः' जिसका अर्थ है 'साँप'

जैसे - भुजङ्गमपि कोपितं शिरसि पुष्पवद्धारयेत्। (भर्तृहरि-नीतिशतकम्)

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- (संस्कृत - हिन्दी शब्दकोश -वामन शिवराम आप्टे)

94. कौन सा वाक्य अशुद्ध है-
(A) राधा कृष्णेन सह वनं जगाम
(B) सुधा रामायणं पठितवती
(C) पिता पुत्रं प्रश्नं पृच्छति
(D) शोभा मोहनेन जलं याचयामास

व्याख्या-

(A) **राधा कृष्णेन सह वनं जगाम-** 'कृष्ण के साथ राधा वन गई, प्रस्तुत उदाहरण में सहयुक्तेऽप्रधाने (2.3.19) सूत्र से सह के योग में अप्रधान में तृतीया विभक्ति हुई है।

(B) **सुधा रामायणं पठितवती-** सुधा रामायण पढ़ चुकी। इस उदाहरण में 'क्तवतु' प्रत्यय का प्रयोग हुआ है जो भूतकाल का द्योतक है क्तवतु प्रत्यय में स्त्रीलिङ्ग का ङीप् प्रत्यय लगाकर पठितवती प्रयोग बना।

(C) **पिता पुत्रं प्रश्नं पृच्छति-** पिता पुत्र से प्रश्न पूछता है इस उदाहरण में अकथितं च (1.4.51) सूत्र से कर्मसञ्ज्ञा होकर द्वितीया विभक्ति का विधान हुआ।

(D) **शोभा मोहनेन जलं याचयामास-** यह वाक्य संस्कृत की दृष्टि से अशुद्ध है इसका शुद्ध वाक्य होगा-

'शोभा मोहनात् जलं याचयामास' अर्थात् शोभा मोहन से जल माँगती है-

अपादान की अविवक्षा में 'अकथितं च' से कर्मसञ्ज्ञा होकर 'शोभा मोहनं जलं याचयामास' भी प्रयोग बनेगा।

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- अष्टाध्यायी(1.4.24)-

95. भाषा की कौन सी प्रकृति सत्य नहीं है-
(A) भाषा प्रतीकों की एक व्यवस्था है।
(B) जिन प्रतीकों से भाषा का निर्माण होता है उन्हे वाक् प्रतीक कहते हैं।
(C) प्रत्येक समुदाय में भाषा एक होती है।
(D) भाषा सम्बन्धी प्रतीक यादृच्छिक होते हैं।

व्याख्या-
भाषा प्रतीकों की एक व्यवस्था है।
जिन प्रतीकों से भाषा का निर्माण होता है उसे वाक् - प्रतीक कहते हैं।
भाषा सम्बन्धी प्रतीक यादृच्छिक होते हैं।
प्रत्येक समुदाय में एक भाषा नहीं अपितु अनेक भाषाएँ हो सकती हैं क्योंकि किसी व्यक्ति के भाषा प्रयोग के आधार पर उस व्यक्ति के सामाजिक स्तर तथा व्यक्तित्व के विषय में काफी कुछ सुनने वाले को भाषा से पता चल जाता है।
अतः विकल्प C सही है।
स्रोत- भाषाविज्ञान- डॉ. भोलानाथ तिवारी, पेज-5

96. आभ्यन्तर परिवर्तन के द्वारा एक दूसरे से सम्बद्ध ध्वनियों तथा रूपिमों के मध्य के प्रत्यावर्तन के अध्ययन को कहते हैं-
(A) रूपध्वनिम विज्ञान (B) ध्वनि विज्ञान
(C) शब्द विज्ञान (D) वाक्य विज्ञान

व्याख्या-
(A) रूपध्वनिम विज्ञान- रूपस्वनिम-विज्ञान या रूप-ध्वनिग्राम-विज्ञान रूपविज्ञान की ही एक शाखा है। इसको अंग्रेजी में मार्फोफोनीमिक्स कहते हैं इसका अर्थ है- मार्फो- रूपसम्बन्धी फोनीमिक्स - ध्वनिविकार। इस प्रकार मार्फोफोनीमिक्स का अर्थ होता- दो रूपों या दो शब्दों के मिलने से होने वाले परिवर्तनों का अध्ययन। यह
रूपविज्ञान का ही एक अंग है।
अतः विकल्प A सही है।
(B) ध्वनि विज्ञान- ध्वनिविज्ञान भाषाशास्त्र का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अंग है इसके लिए अंग्रेजी में फोनोलॉजी और फोनेटिक्स दो शब्द प्रचलित हैं। दोनों शब्दों का सम्बन्ध ग्रीकफोन शब्द से है। फोन का अर्थ है ध्वनि। यह शब्द संस्कृत भण् धातु का ही परिवर्तित रूप है।
(C) शब्द विज्ञान- शब्द का विज्ञान है. इसमें शब्द और उसके सम्बद्ध उन सारे अध्ययनों को रखा जा सकता है जो भाषा विज्ञान की पारस्परिक शाखाओं-ध्वनि विज्ञान रूपविज्ञान तथा अर्थविज्ञान में नहीं रखे जा सकते।
(D) वाक्यविज्ञान- भाषा में प्रयुक्त विभिन्न पदों के परस्पर सम्बन्ध का विचार किया जाता है। इसमें वाक्य का स्वरूप, वाक्य की परिभाषा, वाक्य की रचना, वाक्य के अनिवार्य तत्त्व, वाक्य में पदों का विन्यास आदि विषय समावेश होता है।
स्रोत-भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-286

97. भाषाविज्ञान के अनुसार व्यंजनों के मूल चार प्रकारों में कौन सा प्रकार नहीं आता है-
(A) स्पर्शी (B) संघर्षी
(C) निःश्वासी (D) कम्पनयुक्त

व्याख्या-
(A) **स्पर्शी-** स्पर्श उन ध्वनियों को कहते हैं, जिन ध्वनियों के उच्चारण में अन्दर से आने वाली वायु मुख-विवर में किसी स्थान विशेष पर पूर्णतया अवरुद्ध होकर बाहर निकलती है जैसे- क् च् ट् त् प्।
(B) **संघर्षी या ऊष्म व्यंजन-** संघर्षी उन व्यञ्जनों को कहते हैं जिनके उच्चारण में मुख-विचार का कोई स्थान विशेष इस प्रकार संकुचित हो जाता है कि उसमें एक पतली दरार या नाली के आकार की शेष रहती है। जिससे अन्दर से आने वाली वायु रगड़कर निकलती है जैसे- स, श,ज, आदि।
(C) **निःश्वासी-** जब स्वरतंत्रियाँ श्वास लेते समय की तुलना में कुछ निकट होती है। स्वरतंत्रियों का मुख कुछ कम चौड़ा हो जाता है। निःश्वासी स्वर का भेद है जबकि 1.स्पर्श 2.संघर्षी 3.नासिक्य 4.पार्श्विक 5. लुंठित या कंपित व्यञ्जन के भेद हैं स्वर के नहीं।
अतः विकल्प C सही है।
(D) **लुण्ठित या कम्पनयुक्त-** उन ध्वनियों को कहते हैं जिनके उच्चारण में अन्दर से आने वाली वायु जिह्वा में शीघ्रता से होने वाला कम्पन्न उत्पन्न करे। जैसे- र
व्याख्या से स्पष्ट है कि स्पर्शी, संघर्षी, कम्पन्नयुक्त ये चार व्यञ्जनों के भेद के अन्तर्गत आते हैं जबकि निःश्वासी इसके अन्तर्गत नहीं आता है।
स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-168

98. भाषाविज्ञान के अनुसार स्वर के उच्चारण से सम्बद्ध चार प्रकारों में कौन सा प्रकार नहीं है–
(A) पार्श्विक (B) नासिक्यरंजन
(C) प्रतिवेष्टन (D) तनन

व्याख्या–
प्रयत्न के आधार पर व्यञ्जनों को मुख्यतया पाँच भागों में बाँटा जाता है-
1. स्पर्श 2.संघर्षी या ऊष्म 3.पार्श्विक 4.लुंठित 5.नासिक्य
नासिक्यरंजन प्रतिवेष्टन एवं तनन ये सभी उच्चारण से सम्बद्ध स्वर के भेद हैं।
अतः विकल्प A सही है।
स्रोत– भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-168

99. भाषाविज्ञान के अन्तर्गत अध्ययन का क्षेत्र नहीं है–
(A) अर्थपरिवर्तन
(B) ध्वनिपरिवर्तन
(C) काव्य ध्वनिनिरूपण
(D) पदविज्ञान

व्याख्या-
प्रत्येक शब्द का एक अर्थ होता है किन्तु यह अर्थ हमेशा एक नहीं रहता उसमें परिवर्तन होता रहता है। जिस प्रकार ध्वनियों में परिवर्तन होता रहता है, उसीप्रकार प्रत्येक भाषा के शब्दों के अर्थों में भी परिवर्तन होता रहता है। उदाहरण-प्राचीनकाल में मन्दिर शब्द का प्रयोग प्रत्येक घर के लिए होता था परन्तु आजकल इसका प्रयोग देवालय के लिए होता है उसीप्रकार संस्कृत में 'मृग' का अर्थ था जंगली पशु परन्तु आज मृग का प्रयोग हिरण के लिए होता है।
भाषा का प्रमुखतत्त्व ध्वनि है। वक्ता इसका उच्चारण करता है और श्रोता इसे सुनता है। वक्ता की ध्वनि पर दो प्रकार का प्रभाव पड़ता है—
1.आभ्यन्तर 2.बाह्य। वक्ता और श्रोता से सम्बद्ध कारणों को आभ्यन्तर कारण कहते हैं। जैसे- प्रयत्नलाघव, मुखसुख, अज्ञान आदि। इसके अतिरिक्त अन्य कारणों को बाह्य कारण कहते हैं। ये कारण बाहर से ध्वनि को प्रभावित करते हैं जैसे- सामाजिक, राजनीतिक, भौगोलिक आदि। उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि अर्थपरिवर्तन, ध्वनिपरिवर्तन, पदविज्ञान ये तीनों भाषाविज्ञान के अन्तर्गत आते हैं जबकि काव्य ध्वनिनिरूपण काव्यशास्त्र के अन्तर्गत आता है।
अतः विकल्प C सही है।
स्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-8

100. भाषाविज्ञान में अग्रस्वरों के उच्चारण में जिह्वा की चार कोटियों में कौन नहीं है–
(A) उच्च (B) उच्चमध्य
(C) निम्नमध्य (D) निम्नोच्च

व्याख्या–
ईषद्विवृत एँ,ओ तालु संवृत ई ऊ (ह्रस्व) जिह्वा की उच्चतम स्थिति आ विवृत जिह्वा की उच्चमध्य स्थिति ए,ओ, ईषत्संवृत जिह्वा की निम्नमध्य स्थिति।
जिह्वा की निम्नतम स्थिति।
नोट- भाषाविज्ञान में अग्रस्वरों के उच्चारण में जिह्वा की उच्चतम स्थिति, उच्चमध्य स्थिति, निम्नमध्य स्थिति तथा निम्नतम स्थिति आती है किन्तु निम्नोच्च स्थिति नहीं आती है।
अतः विकल्प D सही है।
स्रोत– भाषाविज्ञान-कर्णसिंह, पेज-154

101. सांख्य में तत्त्वों की संख्या है–
(A) पच्चीस (B) सात
(C) एकादश (D) सोलह

व्याख्या–
(A) 'ईश्वरकृष्ण' कृत 'सांख्यकारिका' में 25 तत्त्वों का विवेचन हुआ है-
'प्रकृतेर्महाँस्ततोऽहङ्कारस्तस्माद् गणश्च षोडशकः।
तस्मादपि षोडशकात् पञ्चभ्यः पञ्चभूतानि। (सा.का-22)
मूलप्रकृति से महान् अर्थात् महत् की, महत् से अहङ्कार की,अहङ्कार से सोलह पदार्थों का समूह उत्पन्न होता है। उसी सोलह के समूह में से पाँच तन्मात्रा से पाँच महाभूत उत्पन्न होते हैं।
- पुरुष का प्रकाश...... मूलप्रकृति-अहङ्कार-पञ्चतन्मात्रा+एकादश इन्द्रियाँ-पञ्चमहाभूत
- पञ्च तन्मात्रा हैं- शब्द,स्पर्श,रूप, रस, गन्ध।
- पञ्च महाभूत हैं- आकाश, वायु, तेज, जल, पृथिवी।
- पाँच ज्ञानेन्द्रिय हैं- श्रोत्र, नेत्र, घ्राण, त्वक् रसना।
- पाँच कर्मेन्द्रिय हैं- वाक्, पाणि, पाद, पायु, उपस्थ।
- मन उभयात्मक इन्द्रिय है।

अतः विकल्प A सही है।
स्रोत- सांख्यकारिका (कारिका-3) राकेश शास्त्री, पेज-8

102. 'सांख्यदर्शन' कहा जाता है–
(A) अद्वैतवादी (B) द्वैताद्वैतवादी
(C) विशिष्टाद्वैतवादी (D) द्वैतवादी

व्याख्या–

दर्शन/प्रणेता	वाद/सिद्धान्त
(A) अद्वैतवेदान्त दर्शन/ शङ्कराचार्य	अद्वैतवाद
(B) द्वैतवेदान्तदर्शन/निम्बार्काचार्य	द्वैताद्वैत/भेदाभेदवाद
(C) विशिष्टाद्वैतवेदान्त/रामानुजाचार्य	विशिष्टाद्वैत
(D) सांख्यदर्शन/कपिल	द्वैतवाद

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत– भारतीयदर्शन-चन्द्रधर शर्मा,पेज-139

103. कौन सा कथन असत्य है–
(A) प्रकृति बद्ध होती है और मुक्त होती है।
(B) प्रकृति से सुकुमार कोई वस्तु नहीं है।
(C) प्रकृति ईश्वर है तथा पुरुष जीव है।
(D) ज्ञान से अपवर्ग की प्राप्ति होती है।

व्याख्या–
संसरति बध्यते मुच्यते च नानाश्रया प्रकृतिः।
(सां.का.-62)
अनेक आश्रयों वाली प्रकृति ही संसरण करती है, बँधती है और मुक्त होती है।
प्रकृतेः सुकुमारतरं न किंचिदस्तीति मे मतिर्भवति। (सां.का.-61)
प्रकृति से सुकुमार कोई वस्तु नहीं है।
........व्यक्ताव्यक्तज्ञविज्ञानात्। (सां.का.-2)
व्यक्त, अव्यक्त (प्रकृति) एवं ज्ञ (पुरुष) के ज्ञान से अपवर्ग की प्राप्ति होती है।
सांख्यकारिका में प्रकृति ईश्वर है तथा पुरुष जीव है इस प्रकार का विवेचन नहीं प्राप्त होता है।
अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- भारतीयदर्शन- सतीशचन्द्र चट्टोपाध्याय, पेज-276

104. सांख्यदर्शन में रजोगुण होता है–
(A) स्थिर
(B) उपष्टम्भक तथा चल
(C) अनुपष्टम्भक तथा अचल
(D) लघु तथा प्रकाशक

व्याख्या-
गुणों का विवेचन करते हुए सांख्यकारिका में ईश्वरकृष्ण कहते हैं-
सत्त्वं लघु प्रकाशकमिष्टमुपष्टम्भकं चलं च रजः।
गुरु वरणकमेव तमः प्रदीपवच्चार्थतो वृत्तिः।।(सां.का.-13)

1. सत्त्व- लघु, प्रकाशक
2. रजस्- प्रेरक,चञ्चल (उपष्टम्भक,चल)
3. तमस्- भारी, नियामक

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत– सांख्यतत्त्वकौमुदी प्रभा (का.-13)- आद्याप्रसाद मिश्र, पेज-186

105. सांख्यदर्शन में महदादि प्रकृति के विकार कहे गये हैं–
(A) द्वादश (B) त्रयोदश
(C) षोडश (D) एकविंशति

व्याख्या-
ईश्वरकृष्ण सांख्यकारिका में पदार्थ का विवेचन करते हैं-
मूलप्रकृतिरविकृतिर्महदाद्याः प्रकृतिविकृतयः सप्त।

- षोडशकस्तु विकारो न प्रकृतिर्न विकृतिः पुरुषः।। (सां.का.3) मूलप्रकृति किसी का विकार नही है, महद् आदि सात तत्त्व प्रकृति और विकृति दोनों हैं सोलह गणों का समुदाय केवल विकार है, पुरुष न प्रकृति है न विकृति।
- महद् आदि सात तत्त्व हैं— महत्, अहङ्कार, पञ्चतन्मात्रा।
- सोलह गणों का समुदाय है— पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच कर्मेन्द्रियाँ, पञ्चमहाभूत, मन

अतः विकल्प C सही है।

- पुरुष न ही प्रकृति है और न ही विकृति।
- मूलप्रकृति किसी की विकृति नहीं है।

स्रोत– सांख्यकारिका (का.-22)- राकेश शास्त्री, पेज-70

106. न्यायदर्शन के अनुसार कारण का लक्षण है–
(A) अन्यथासिद्ध नियतपूर्वभावित्व
(B) अनन्यथासिद्ध नियतपूर्वभावित्व
(C) अन्यथासिद्ध नियतपश्चाद्भावित्व
(D) अनन्यथासिद्ध नियतपश्चाद्भावित्व

व्याख्या–
आचार्य केशवमिश्र कारण का लक्षण करते हैं—
''अनन्यथासिद्धनियतपूर्वभावित्वं कारणत्वम्।''

अनन्यथासिद्ध का अर्थ है- जो अन्य प्रकार से उपयुक्त या चरितार्थ न हो । भाव यह है कि किसी कारण में कार्य के उत्पादन की कोई शक्ति होती है वह शक्ति जब किसी कार्य के प्रति उपयुक्त हो चुकती है तो वह कारण अन्य कार्य के प्रति अन्यथासिद्ध कहलाता है।

इसके विपरीत जो अन्यथासिद्ध नहीं होता वही अनन्यथासिद्ध कहलाता है जैसे- तन्तु पट का कारण है और वह तन्तु का नियतपूर्ववर्ती है तथा अनन्यथासिद्ध भी है अतः तन्तु पट का कारण है **अतः विकल्प B सही है।**

- कार्य का लक्षण- ''अनन्यथासिद्धनियतपश्चाद्भावित्वं कार्यत्वम्।'' अनन्यथासिद्ध का नियतपश्चात्भावी कार्य कहलाता है जैसे- तन्तु पट का कारण है किन्तु पट तन्तु का कार्य है।

कारण-कार्य में अन्तर सिर्फ इतना है कि कारण नियत पूर्वभावी होता है किन्तु कार्य नियतपश्चात्भावी होता है।

स्रोत- तर्कभाषा- श्रीनिवास शास्त्री, पेज-18

107. तर्कभाषा के रचयिता का नाम है–
(A) अक्षपादगौतम (B) वात्स्यायन
(C) वाचस्पति मिश्र (D) केशवमिश्र

व्याख्या–

ग्रन्थकार	ग्रन्थ	अनुमानित समय
(A) अक्षपादगौतम	न्यायदर्शन	
(B) वात्स्यायन	न्यायभाष्य	तीसरी शताब्दी
(C) वाचस्पति मिश्र	सांख्यतत्त्वकौमुदी	नवीं शताब्दी
(D) केशव मिश्र	तर्कभाषा	बारहवीं शताब्दी

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत– तर्कभाषा-केशवमिश्र,भू.पेज-28

108. यथार्थ अनुभव को न्याय की शब्दावली में कहा गया है–
(A) प्रमाण (B) स्मृति
(C) प्रमा (D) करण

व्याख्या–

आचार्य केशवमिश्र प्रमाण को परिभाषित करते हुए कहते हैं-

(A) प्रमाण- ''प्रमाकरणं प्रमाणम्''
प्रमा का करण प्रमाण कहलाता है।

(B) स्मृति- ''ज्ञातविषयं ज्ञानं स्मृतिः''
स्मृति वह ज्ञान है जिसका विषय पहले से ही ज्ञात होता है।

(C) प्रमा- ''यथार्थानुभवः प्रमा''
यथार्थ अनुभव प्रमा है।
अतः विकल्प C सही है।

(D) करण- ''साधकतमं करणम्''
साधकतम को करण कहा जाता है।

स्रोत– तर्कभाषा-श्रीनिवास शास्त्री, पेज-11,12,13,17

109. न्यायदर्शन के अनुसार लिङ्गत्व का लक्षण है–
(A) उपाधित्वं लिङ्गत्वम्
(B) अव्याप्तिवनार्थगमकं लिङ्गत्वम्
(C) व्याप्तिबलेनार्थगमकत्वं लिङ्गत्वम्
(D) धूमाग्नोः स्वाभाविकः सम्बन्धः लिङ्गत्वम्

व्याख्या–

केशवमिश्र अनुमान प्रमाण को परिभाषित करते हुए कहते हैं- **'लिङ्गपरामर्शोऽनुमानम्'** (लिङ्ग परामर्श ही अनुमान है) पुनः लिङ्ग क्या है? इस को परिभाषित करते हैं- **''व्याप्तिबलेनार्थगमकं लिङ्गम्''**
व्याप्ति के बल से अर्थ का बोध कराने वाला लिङ्ग कहलाता है।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत– तर्कभाषा-श्रीनिवास शास्त्री, पेज-79

110. अनुमान प्रमाण के भेद हैं–
(A) उपमान तथा प्रत्यक्ष
(B) अर्थापत्ति तथा अभाव
(C) स्वार्थ तथा परार्थ
(D) षोढासन्निकर्ष तथा व्याप्ति

व्याख्या–

तर्कसंग्रहकार आचार्य अन्नम्भट्ट प्रमाणों को परिभाषित करते हुए कहते हैं-

- **प्रत्यक्ष प्रमाण-** 'इन्द्रियार्थसन्निकर्षजन्यं ज्ञानं प्रत्यक्षम्।' अर्थात् इन्द्रिय और पदार्थ के सन्निकर्ष (सम्बन्ध) से उत्पन्न ज्ञान को प्रत्यक्ष प्रमाण कहते हैं। यह प्रत्यक्ष ज्ञान दो प्रकार का होता है- निर्विकल्पक और सविकल्पक।
- **अनुमान प्रमाण-** 'अनुमितिकरणमनुमानम्।' 'परामर्शजन्यं ज्ञानम् अनुमितिः।' अनुमानं द्विविधम् - स्वार्थं परार्थं च। अर्थात् अनुमिति के असाधारण कारण को अनुमान कहते हैं। परामर्श से उत्पन्न ज्ञान को अनुमिति कहते हैं। अनुमान

दो प्रकार का होता है- स्वार्थानुमान और परार्थानुमान।

- **उपमान प्रमाण-**
'उपमितिकरणमुपमानम्। संज्ञासंज्ञिसम्बन्धज्ञानम् उपमितिः।' अर्थात् उपमिति के करण (असाधारण कारण) को उपमान कहते हैं। सञ्ज्ञा (पद) और सञ्ज्ञी (पदार्थ) के सम्बन्धज्ञान को उपमिति कहते हैं।
- **अर्थापत्ति-** आचार्य केशवमिश्र तर्कभाषा में अर्थापत्ति नामक प्रमाण को मानने वाले मीमांसकों के मत का खण्डन करते हुए उसे अनुमान प्रमाण में अन्तर्भूत करते हैं।
'अनुपपद्यमानार्थदर्शनात् तदुपपादकीभूतार्थान्तर-कल्पनम् अर्थापत्तिः।' तथाहि, 'पीनो देवदत्तो दिवा न भुङ्क्ते'। अर्थात् अनुपपद्यमान (न बन सकने वाले) अर्थ को जानकर उसके उपपादक अर्थ की कल्पना अर्थापत्ति कहलाती है, जैसे कि- 'देवदत्त पुष्ट(पीनः) है किन्तु दिन में नहीं खाता यह देखने पर या सुनने पर उसके रात्रिभोजन की कल्पना कर ली जाती है। दिन में न खाने वाले का पुष्ट होना रात्रिभोजन के बिना उपपन्न नहीं होता इसलिये पीनत्व की अन्य प्रकार से अनुपपत्ति से होने वाली अर्थापत्ति ही रात्रि-भोजन में प्रमाण हो जाती है।
अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- तर्कभाषा- श्रीनिवास शास्त्री, पेज-91

111. 'यथा गौस्तथा गवयः' उदाहरण है–
(A) उपमान प्रमाण का **(B) अनुमान प्रमाण का**
(C) प्रत्यक्ष का **(D) अर्थापत्ति का**

व्याख्या–
आचार्य केशवमिश्र तर्कभाषा में प्रमाणों को परिभाषित करते हैं-

- **उपमान प्रमाण-** अतिदेशवाक्यार्थस्मरणसहकृतं गोसादृश्यविशिष्टपिण्ड-ज्ञानमुपमानम्। यथा गौः तथा गवयः। अर्थात् अतिदेश वाक्य के अर्थ का स्मरण करने के साथ गौ की समानता से युक्त पिण्ड(शरीर,आकृति) का ज्ञान ही उपमान प्रमाण है। उदाहरण- जैसी गाय वैसी नीलगाय।
अतः विकल्प A सही है।
- **अनुमान प्रमाण-** लिङ्गपरामर्शोऽनुमानम्। यत्र यत्र धूमस्तत्र तत्र अग्निः। अर्थात् लिङ्गपरामर्श ही अनुमान प्रमाण है। जिससे अनुमिति की जाती है, वह अनुमान है। जैसे- जहाँ-जहाँ धूम होता है, वहाँ-वहाँ अग्नि होती है।
- **प्रत्यक्ष प्रमाण-** 'साक्षात्कारिप्रमाकरणं प्रत्यक्षम्।' अर्थात् साक्षात्कार करने वाली प्रमा का करण प्रत्यक्ष कहलाता है। और साक्षात्कार करने वाली प्रमा वह है जो इन्द्रिय से उत्पन्न होती है।
- **अर्थापत्ति प्रमाण-** मीमांसक अर्थापत्ति को पृथक् प्रमाण मानते हुए कहते हैं- अनुपपद्यमानार्थदर्शनात् तदुपपादकीभूतार्थान्तरकल्पनम् अर्थापत्तिः। तथाहि, 'पीनो देवदत्तो दिवा न भुङ्क्ते' इति दृष्टे श्रुते वा रात्रिभोजनं कल्प्यते। अर्थात् अनुपपद्यमान (उपपन्न न होने वाले) अर्थ को जानकर उसके उपपादक अर्थ की कल्पना अर्थापत्ति कहलाती है। जैसे कि 'देवदत्त पुष्ट है, किन्तु दिन में नहीं खाता' यह देखने या सुनने पर उसके रात्रिभोजन की कल्पना कर ली जाती है।
- आचार्य केशवमिश्र चार प्रमाण (प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, तथा शब्द) ही स्वीकार करते हैं। अर्थापत्ति प्रमाण का अनुमान प्रमाण में अन्तर्भाव हो जाता है।

स्रोत- तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री , पेज-119

112. 'अनुपपद्यमानार्थदर्शनात् तदुपपादकीभूतार्थान्तरकल्पनम्' यह लक्षण है–
(A) अभाव का **(B) अर्थापत्ति का**
(C) शरीर का **(D) असमवायिकारण का**

व्याख्या-

- आचार्य केशवमिश्र प्रमाणों के सन्दर्भ में नैयायिकों के मत का उदाहरण देते हुए कहते हैं-
नैयायिक अभाव को पृथक् प्रमाण नहीं मानते हैं अपितु प्रत्यक्ष प्रमाण से ही अभाव का ग्रहण कर लेते हैं।
नन्वभावाख्यमपि पृथक् प्रमाणमस्ति। प्रत्यक्षेणैवा भावग्रहणात्।
- **अर्थापत्ति-** अनुपपद्यमानार्थदर्शनात् तदुपपादकीभूतार्थान्तर कल्पनम् अर्थापत्तिः।
उपपन्न न होने वाले अर्थ को जानकर उसके उपपादक अर्थ की कल्पना अर्थापत्ति कहलाती है।
- ''यत्समवायिकारणप्रत्यासन्नमवधृतसामर्थ्यं तदसमवायिकारणम्'' जो समवायिकारण में प्रत्यासन्न होता है और जिसकी कार्य के प्रति सामर्थ्य निश्चित होती है। वह असमवायि कारण है।
अतः विकल्प B सही है।

स्रोत-तर्कभाषा- श्रीनिवास शास्त्री,पेज-138

113. तर्कभाषा में शब्द प्रमाण का लक्षण है–
(A) आप्तवाक्यं शब्दः (B) वेदोक्तं वाक्यं शब्दः
(C) शास्त्रोक्तं शब्दः (D) लोकवाक्यं शब्दः

व्याख्या–
तर्कभाषा में शब्द प्रमाण- का लक्षण करते हुए आचार्य केशवमिश्र कहते हैं- **''आप्तवाक्यं शब्दः''**

* आप्त का वाक्य शब्दप्रमाण कहलाता है।

आप्त वाक्य का लक्षण करते हुए आचार्य केशवमिश्र कहते हैं-
''आप्तस्तु यथाभूतस्यार्थस्योपदेष्टा पुरुषः''
जैसा पदार्थ है उसका उसी रूप में उपदेश करने वाला पुरुष आप्त कहा जाता है।

* वाक्य का लक्षण करते हुए आचार्य केशवमिश्र कहते हैं-

''वाक्यं त्वाकाङ्क्षायोग्यतासन्निधिमतां पदानां समूहः।''
आकाङ्क्षा योग्यता तथा सन्निधि वाले पदों का समूह वाक्य कहलाता है।
अतः विकल्प A सही है।
स्रोत– तर्कभाषा-श्रीनिवास शास्त्री, पेज-138

114. प्रत्यक्ष का लक्षण है-
(A) असाक्षात्कारिप्रमाकरणं प्रत्यक्षम्
(B) साक्षात्कारिप्रमाकरणं प्रत्यक्षम्
(C) इन्द्रियजं प्रत्यक्षम्
(D) यद् दृश्यते तत् प्रत्यक्षम्

व्याख्या–
केशवमिश्र तर्कभाषा में प्रत्यक्ष प्रमाण का लक्षण करते हैं-
'साक्षात्कारिप्रमाकरणं प्रत्यक्षम्'
साक्षात्कार करने वाली प्रमा का करण प्रत्यक्ष कहलाता है। साक्षात्कार करने वाली प्रमा है जो इन्द्रिय से उत्पन्न होती है। सविकल्पक तथा निर्विकल्पक भेद से प्रत्यक्ष दो प्रकार का होता है।
अतः विकल्प B सही है।
स्रोत–तर्कभाषा-श्रीनिवास शास्त्री, पेज-51

115. 'तत्त्वमसि' वाक्य के अर्थ बोध हेतु स्वीकार की जाती है–
(A) जहल्लक्षणा (B) अजहल्लक्षणा
(C) भागलक्षणा (D) व्यञ्जना

व्याख्या–

	लक्षणा	उदाहरण
*	जहल्लक्षणा	गङ्गायां घोषः
*	अजहल्लक्षणा	शोणो धावति
*	जहदजहल्लक्षणा (भागलक्षणा, भागत्यागलक्षणा)	तत्त्वमसि, सोऽयं देवदत्तः

अतः विकल्प C सही है।
स्रोत– वेदान्तसार-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-127

116. वेदान्तदर्शन में असर्पभूत रज्जु में सर्प के आरोप को कहा जाता है–
(A) भ्रम (B) अध्यारोप
(C) मायाजन्य (D) आभास

व्याख्या–
विवर्त (भ्रम)- वेदान्तसार में विवर्त्त को भ्रम कहा जाता है-
''अतत्त्वतोऽन्यथाप्रथा विवर्त्त इत्युदाहृतः।''
किसी वस्तु का मिथ्यारूप से अन्य वस्तु के रूप में भासित होना 'विवर्त्त' कहा गया है।
विकार- सतत्त्वतोऽन्यथाप्रथा विकार इत्युदीरितः।''
किसी वस्तु का वस्तुतः अन्यरूप से प्रसिद्ध होना विकार कहा गया है।
अध्यारोप-
''असर्पभूतायां रज्जौ सर्पारोपवद् वस्तुन्यवस्त्वारोपोऽध्यारोपः।''
साँप की सत्ता रहित रस्सी में सर्प का आभास होने के समान किसी वस्तु में अन्य वस्तु के आरोप को अध्यारोप कहते हैं।
वेदान्त में माया को अध्यास, अविद्या, अज्ञान, अवस्तु आदि नाम से कहा गया है।
अतः विकल्प B सही है।
स्रोत– वेदान्तसार-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-37

117. वेदान्तसार के रचयिता हैं–
(A) सदानन्द (B) रामानुजाचार्य
(C) बादरायण (D) विद्यारण्य

व्याख्या–

	ग्रन्थकार	ग्रन्थ
(A)	सदानन्द	वेदान्तसार
(B)	रामानुजाचार्य	श्रीभाष्य
(C)	बादरायण	उत्तरमीमांसा
(D)	विद्यारण्य	पञ्चदशी,विवरणप्रमेयसंग्रह

अतः विकल्प A सही है।
स्रोत– वेदान्तसार- सन्तनारायण श्रीवास्तव, भू. पेज-22

118. अनुबन्धचतुष्टय में क्या नहीं आता है–
(A) विषय **(B) सम्बन्ध**
(C) प्रयोजन **(D) पूर्वपक्ष**

व्याख्या–
अनुबन्ध चतुष्टय- सदानन्दकृत वेदान्तसार में चार अनुबन्ध हैं-
''अनुबन्धो नामाधिकारिविषयसम्बन्धप्रयोजनानि।''
अधिकारी, विषय,सम्बन्ध,प्रयोजन ये चार अनुबन्ध हैं।
1. **अधिकारी-** अधिकारी तु ....साधनचतुष्टयसम्पन्नः प्रमाता।
साधन चतुष्टय से सम्पन्न प्रमाता ही वेदान्त का अधिकारी है।
2. **विषय-** विषयो जीवब्रह्मैक्यं शुद्धचैतन्यं प्रमेयं तत्रैव वेदान्तानां तात्पर्यात्।
जीव और ब्रह्म की एकता अर्थात् अभेद का वर्णन ही वेदान्त का विषय है।
3. **सम्बन्ध-** सम्बन्धस्तु तदैक्यप्रेमयस्य तत्प्रतिपादकोपनिषत्प्रमाणं च बोध्यबोधकभावलक्षणः।
जीव और ब्रह्म की एकतारूप प्रमेय का और उसका प्रतिपादन करने वाले उपनिषद् रूप प्रमाण का परस्पर बोध्य-बोधक भाव ही इस शास्त्र का सम्बन्ध है।
4. **प्रयोजन-** प्रयोजनं तु तदैक्यप्रमेयगताज्ञाननिवृत्तिः स्वस्वरूपानन्दावाप्तिश्च।
जीव और ब्रह्म की एकता रूप प्रमेय के सम्बन्ध में जो अज्ञान है उसकी निवृत्ति होना वेदान्त का प्रयोजन है।

* वेन्दान्त में पूर्वपक्ष नामक कोई अनुबन्ध नही है

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत– वेदान्तसार-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-9

119. अज्ञान की दो शक्तियाँ वेदान्त में कही गयी हैं–
(A) आवरण तथा विक्षेप
(B) माया तथा अविद्या
(C) इन्द्रिय तथा शरीर
(D) जड़ तथा चेतन

व्याख्या–
(A) सदानन्दकृत ''वेदान्तसार'' में अज्ञान की दो शक्तियाँ कही गयी हैं- 1.आवरण 2. विक्षेप
''अज्ञानस्यावरणविक्षेपनामकमस्ति शक्तिद्वयम्।''
(B) वेदान्त में अज्ञान को ही माया, अविद्या आदि नामों से भी जाना जाता है।
वेदान्त में एकादश इन्द्रियों तथा दो प्रकार के शरीर का वर्णन है-
(C) इन्द्रियाँ- पञ्चकर्मेन्द्रियाँ, पञ्चज्ञानेन्द्रियाँ और मन।
(D) वेदान्त में जड़ को अवस्तु तथा चेतन को वस्तु कहा गया है।

वस्तु- ''वस्तु सच्चिदानन्दानन्ताद्वयं ब्रह्म।''
सच्चिदानन्द अनन्त अद्वैत ब्रह्म ही वस्तु है।
अवस्तु- ''अज्ञानादिसकलजडसमूहोऽवस्तु।''
अज्ञान से लेकर सकल जडसमुदाय अवस्तु है।

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत– वेदान्तसार-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-56

120. 'अन्तवन्त इमे देहा' का तात्पर्य है कि–
(A) ये शरीर नाशवान् है।
(B) आत्मा अजर-अमर है।
(C) आत्मा नश्वर है।
(D) शरीर का अन्त हो चुका है।

व्याख्या–
भगवद्गीता के द्वितीय अध्याय में भगवान् श्रीकृष्ण अर्जुन से शरीर की नश्वरता के विषय में कहते हैं-
अन्तवन्त इमे देहा नित्यस्योक्ताः शरीरिणः।
अनाशिनोऽप्रमेयस्य तस्माद्युध्यस्व भारत॥ (गीता 2/18) इस नाशरहित, अप्रमेय, नित्यस्वरूप जीवात्मा के 'ये सब शरीर नाशवान् कहे गये हैं।' इसलिए हे भरतवंशी अर्जुन! तुम युद्ध करो।

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत– श्रीमद्भगवद्गीता (2/18)- गीताप्रेस गोरखपुर

121. 'योगः कर्मसु कौशलम्' योग का लक्षण है–
(A) योगसूत्र में
(B) हठयोगप्रदीपिका में
(C) श्रीमद्भगवद्गीता में
(D) सांख्यतत्त्वकौमुदी में

व्याख्या–

महर्षि पतञ्जलिकृत योगसूत्र के समाधिपाद में योग का लक्षण है-

'योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः।' (योग.1/2)

चित्तवृत्ति निरोध रूप साधन को योग कहते हैं।

भगवद्गीता के द्वितीय अध्याय में भगवान् श्रीकृष्ण योग को परिभाषित करते हुए कहते हैं-

योगस्थः कुरु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा धनञ्जय।
सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते॥
(गीता.2.48)

हे अर्जुन! जय अथवा पराजय की समस्त आसक्ति त्याग कर समभाव से अपना कर्म करो ऐसी समता योग कहलाती है।

तथा- बुद्धियुक्तो जहातीह उभे सुकृतदुष्कृते।
तस्माद्योगाय युज्यस्व **योगः कर्मसु कौशलम्॥**(2.50)

भक्ति में संलग्न मनुष्य इस जीवन में ही अच्छे तथा बुरे कार्यों से अपने को मुक्त कर लेता है। अतः योग के लिए प्रयत्न करो क्योंकि सारा कार्य कौशल यही है।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत– श्रीमद्भगवद्गीता (2/50)- गीताप्रेस गोरखपुर

122. श्रीमद्भगवद्गीता में माया का कौन सा गुण नहीं है–
(A) दैवी **(B) दुरत्यया**
(C) गुणमयी **(D) असती**

व्याख्या–

भगवद्गीता के सातवें अध्याय में प्रकृति के तीन स्वरूपों का वर्णन है।

दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया।
मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते।। (गीता.7/14)

क्योंकि मेरी यह गुणमयी दैवी माया दुरत्यया है अर्थात् पार पाना बड़ा कठिन है। जो केवल मेरे ही शरणागत होते हैं वे इस माया को पार कर जाते हैं।

माया के स्वरूपों में **असती** का वर्णन नहीं है

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत– श्रीमद्भगवद्गीता (7/14)- गीताप्रेस गोरखपुर

123. गीता में मूल प्रकृति के प्रकार है-
(A) आठ **(B) दो**
(C) पाँच **(D) दश**

व्याख्या–

भगवद्गीता के सातवें अध्याय में भगवान् श्रीकृष्ण मूल प्रकृति का वर्णन करते हुए कहते हैं

भूमिरापोऽनलो वायुः खं मनो बुद्धिरेव च।
अहङ्कार इतीयं मे भिन्ना प्रकृतिरष्टधा॥ (गीता-7/4)

1.पृथ्वी 2.जल 3.अग्नि 4.वायु 5.आकाश 6.मन 7.बुद्धि 8.अहङ्कार ये आठ प्रकृतियाँ हैं।

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत– श्रीमद्भगवद्गीता (7/4)- गीताप्रेस, गोरखपुर

124.' नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः' पंक्ति ली गयी है–
(A) तर्कभाषा से **(B) वेदान्तसार से**
(C) श्रीमद्भगवद्गीता से **(D) सांख्यकारिका से**

व्याख्या–

भगवद्गीता के द्वितीय अध्याय में भगवान् श्रीकृष्ण ने सत् एवं असत् की सत्ता की विद्यमानता का वर्णन करतें हैं-

नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः।
उभयोरपि दृष्टोऽन्तस्त्वनयोस्तत्त्वदर्शिभिः॥
(गीता2/16)

असत् का तो भाव (सत्ता) विद्यमान नहीं है और सत् का अभाव विद्यमान नहीं है तत्त्वदर्शी महापुरुषों ने इन दोनों का तत्त्व देखा अर्थात् अनुभव किया है।

ईश्वरकृष्णकृत 'सांख्यकारिका' में भी सत्कार्यवाद के पाँच सिद्धान्त दिये गये हैं-

असदकरणादुपादानग्रहणात् सर्वसम्भवाभावात्।
शक्तस्य शक्यकरणात् कारणभावाच्च सत्कार्यम्॥
(सा.का.-9)

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत– श्रीमद्भगवद्गीता (2/16)- गीताप्रेस, गोरखपुर

125.श्रीमद्भगवद्गीता में भीम के शंख का नाम था–

(A) पाञ्चजन्य (B) पौण्ड्र

(C) देवदत्त (D) दिव्य

व्याख्या–

पाञ्चजन्यं हृषीकेशो देवदत्तं धनञ्जयः।
पौण्ड्रं दध्मौ महाशङ्खं भीमकर्मा वृकोदरः।। (गीता1.15)
अनन्तविजयं राजा कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः।
नकुलः सहदेवश्च सुघोषमणिपुष्पकौ।। (गीता-1.16)

देव	शङ्ख
श्रीकृष्ण	पाञ्चजन्य
अर्जुन	देवदत्त
भीम	पौण्ड्र
युधिष्ठिर	अनन्तविजय
नकुल	सुघोष
सहदेव	मणिपुष्पक

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत– श्रीमद्भगवद्गीता (1/15)

उत्तरमाला

1.B	2.B	3.C	4.A	5.A	6.D	7.A	8.C	9.C	10.B	11.C	12.C
13.C	14.B	15.C	16.C	17.B	18.A	19.D	20.C	21.B	22.D	23.C	24.B
25.C	26.A	27.A	28.D	29.B	30.A	31.A	32.D	33.B	34.C	35.B	36.B
37.D	38.D	39.C	40.A	41.B	42.C	43.A	44.D	45.A	46.B	47.C	48.D
49.C	50.C	51.A	52.D	53.B	54.A	55.D	56.B	57.C	58.D	59.C	60.C
61.B	62.D	63.A	64.C	65.B	66.C	67.D	68.B	69.A	70.C	71.C	72.D
73.A	74.C	75.B	76.D	77.A	78.A	79.B	80.B	81.C	82.A	83.D	84.D
85.B	86.C	87.D	88.B	89.B	90.B	91.D	92.C	93.A	94.D	95.C	96.A
97.C	98.A	99.C	100.D	101.A	102.D	103.C	104.B	105.C	106.B	107.D	108.C
109.C	110.C	111.A	112.B	113.A	114.B	115.C	116.B	117.A	118.D	119.A	120.A
121.C	122.D	123.A	124.C	125.B							

❑❑

10. प्रवक्ता (PGT) संस्कृत 2016

1. 'यथा गौस्तथा गवयः' यह उदाहरण है?
(A) उपमान का (B) अनुमान का
(C) प्रत्यक्ष का (D) बुद्धिव्यवसाय का

व्याख्या- आचार्य गौतम प्रणीत न्यायदर्शन का प्रकरणग्रन्थ तर्कभाषा है। तर्कभाषा में षोडश पदार्थों में प्रथम पदार्थ प्रमाण है, प्रमाण के अन्तर्गत चार प्रमाण बताये गये हैं, वह चार क्रमशः प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द हैं। जिसमें उपमान प्रमाण का लक्षण करते हुए कहते हैं कि-

अतिदेशवाक्यार्थस्मरणसहकृतं गोसादृश्यविशिष्टपिण्ड-ज्ञानम् उपमानम् । यथा गवय जानन्नपि नागरिको 'यथा गौस्तथा गवय' इति....

प्रत्यक्ष और अनुमान के बाद तीसरा प्रमाण उपमान है। अतः उसके स्वरूप और प्रक्रिया को बताया जा रहा है।

'यथा गौः तथा गवयः' जैसी गाय, वैसा गवय- इस अतिदेश वाक्य के अर्थ का स्मरण करने के साथ गोसादृश्यविशिष्ट पिण्ड (गाय की समानता से युक्त पिण्ड शरीर या आकृति) अर्थात् गवय पशुप्राणी का जो ज्ञान होता है वही उपमान प्रमाण है।

उदाहरण- गवय (नीलगाय) को न जानने वाला कोई नागरिक आदमी किसी वनवासी आदमी से **यथा गौस्तथा गवयः** (जैसी गाय होती है वैसा ही गवय होता है) यह वाक्य सुनकर जब कभी वह वन में जाता है और 'यथा गौस्तथा गवयः' इस प्रकार वनवासी आदमी से पहले सुने हुए वाक्य के अर्थ को याद करके साथ ही गोसादृश्यविशिष्टपिण्ड गाय को देखता है ऐसी आकृति को देखकर उस अतिदेश वाक्य के अर्थ का जब उसको स्मरण हो जाता है तब वह वाक्यार्थ के स्मरण सहित जो उसे गोसादृश्यविशिष्टपिण्ड का ज्ञान होता है, तब वही ज्ञान उपमिति संज्ञासंज्ञिसम्बन्ध बोधरूप फल का कारण कहलाता है। उसी ज्ञान को उपमान प्रमाण कहते हैं।

* गोसादृश्यविशिष्टपिण्ड का ज्ञान होने के बाद **'अयमसौ गवय शब्दवाच्यः'** यह आकृति पिण्ड ही गवय शब्द का वाच्य अर्थ है। इस प्रकार से संज्ञा-संज्ञि-सम्बन्ध की जो प्रतीति होती है, वह प्रतीति ही उपमान प्रमाण का फल है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'यथा गौस्तथा गवयः' यह उदाहरण उपमान प्रमाण का है।

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत - तर्कभाषा गजाननशास्त्री - मुसलगाँवकर - पेज 179

2. 'चतुर्वर्ग–फलप्राप्तिः' यह काव्य प्रयोजन स्वीकृत है?
(A) मम्मट द्वारा (B) दण्डी द्वारा
(C) विश्वनाथ द्वारा (D) आनन्दवर्धन द्वारा

व्याख्या- * आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश के प्रथमोल्लास में काव्य-प्रयोजन का लक्षण करते हैं-

काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये।
सद्यः परनिर्वृतये कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे॥

काव्य से यश की प्राप्ति, अर्थ की प्राप्ति, व्यवहार का ज्ञान, अनिष्ट का नाशक, पढ़ने या सुनने के साथ ही परम आनन्द को देने वाला और स्त्री के समान उपदेश प्रदान करने वाला होता है। यह छः काव्य के प्रयोजन हैं।

* **विश्वनाथ-** आचार्य विश्वनाथ ने साहित्यदर्पण के प्रथम परिच्छेद में काव्य-प्रयोजन का लक्षण करते हैं-

चतुर्वर्गफलप्राप्तिः सुखादल्पधियामपि।
काव्यादेव यतस्तेन तत्स्वरूपं निरूप्यते॥

अल्प बुद्धि वालों को भी सुख से बिना किसी विशेष परिश्रम के चतुर्वर्ग धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, रूप फल की प्राप्ति काव्य के ही द्वारा हो सकती है।

* **आनन्दवर्धन-** ध्वन्यालोक में काव्य की परिभाषा करते हैं- **'काव्यस्यात्मा ध्वनिः'** काव्य की आत्मा ध्वनि है।
* **दण्डी-** काव्य की परिभाषा करते हैं- **'शरीरं तावदिष्टार्थ व्यवच्छिन्ना पदावली।'** इष्ट और मनोरम हृदयाह्लादक अर्थ से युक्त पदावली (शब्द समूह) दोनों मिलाकर ही काव्य का शरीर है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'चतुर्वर्गफलप्राप्तिः' यह काव्यप्रयोजन विश्वनाथ द्वारा स्वीकृत है।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत - साहित्यदर्पण (1.2) - शालिग्राम शास्त्री, पेज 07

3. काव्यप्रकाश के अनुसार श्लेष 'अलङ्कार' के भेद हैं-
(A) आठ (B) दश
(C) ग्यारह (D) सात

व्याख्या- मम्मट कृत काव्यप्रकाश के नवमोल्लास में श्लेषालङ्कार की चर्चा करते हुये कहते हैं-

श्लेष- वाच्यभेदेन भिन्ना यद् युगपद्भाषणस्पृशः।
श्लिष्यन्ति शब्दाः श्लेषोऽसावक्षरादिभिरष्टधा॥

अक्षर आदि के भेद से श्लेष के आठ प्रकार होते हैं।
'वर्ण-पद-लिङ्ग-भाषा-प्रकृति-प्रत्यय-विभक्तिवचनानां भेदादष्टधा।'

श्लेष- 1. वर्णश्लेष 2. पदश्लेष 3. लिङ्गश्लेष 4. भाषाश्लेष 5. प्रकृति श्लेष 6. प्रत्ययश्लेष 7. विभक्तिश्लेष 8. वचनश्लेष

⇒ **विरोध- जातिश्चतुर्भिर्जात्याद्यैर्विरुद्धा स्यात् गुणस्त्रिभिः। क्रिया द्वाभ्यामपि द्रव्यं द्रव्येणैवेति ते दश॥**

जाति का जाति आदि चार (जाति, गुण, क्रिया तथा द्रव्य) के साथ विरोध हो सकता है, गुण का गुणादि (गुण, क्रिया, द्रव्य) तीन के साथ, क्रिया का क्रिया तथा द्रव्य दो के साथ और द्रव्य का केवल द्रव्य के साथ विरोध हो सकता है। इस प्रकार ये दस प्रकार का विरोध या विरोधाभास अलङ्कार होता है।

1. जाति का - जाति, गुण, क्रिया, द्रव्य = 4
2. गुण का - गुण, क्रिया, द्रव्य = 3
3. क्रिया का - क्रिया, द्रव्य = 2
4. द्रव्य का - द्रव्य = 1

⇒ **अनुप्रास- छेकवृत्तिगतो द्विधा**

वर्णानुप्रास के छेकानुप्रास और वृत्यनुप्रास ये दो भेद होते हैं।

अनुप्रास

1. वर्णानुप्रास
2. पादानुप्रास (लाटानुप्रास) (तदेवं पञ्चधा मतः)

1. वर्णानुप्रास

(i) छेकानुप्रास
(ii) वृत्यनुप्रास

2. पादानुप्रास (लाटानुप्रास) तदेवं पञ्चधा मतः

(i) अनेक पदों की आवृत्ति रूप
(ii) एक पद की आवृत्ति रूप
(iii) एक समास में आवृत्ति रूप
(iv) भिन्न समासों में आवृत्ति रूप
(v) समास तथा असमास दोनों में आवृत्ति रूप

उपमा- मम्मट के अनुसार उपमा के भेद करते हैं- पूर्णोपमा के 6, लुप्तोपमा के 19 = 25भेद
इसप्रकार उपमा के कुल 25 भेद हुए हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि- काव्यप्रकाश के अनुसार मम्मट ने श्लेषालङ्कार के 8 भेद किये हैं। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज 415

4. द्रक्ष्यति यह धातु रूप है-

(A) दृक्ष धातु का लट्लकार का प्रथमपुरुष एकवचन
(B) पश्य धातु का लृट्लकार का प्रथमपुरुष एकवचन
(C) दृश् धातु का लृट्लकार का प्रथमपुरुष एकवचन
(D) द्रक्ष्य धातु का लोट्लकार का प्रथमपुरुष एकवचन

व्याख्या- 'दृश्' धातु परस्मैपदी

लट्लकार

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमपुरुष	पश्यति	पश्यतः	पश्यन्ति
मध्यमपुरुष	पश्यसि	पश्यथः	पश्यथ
उत्तमपुरुष	पश्यामि	पश्यावः	पश्यामः

लृट्लकार

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमपुरुष	द्रक्ष्यति	द्रक्ष्यतः	द्रक्ष्यन्ति
मध्यमपुरुष	द्रक्ष्यसि	द्रक्ष्यथः	द्रक्ष्यथ
उत्तमपुरुष	द्रक्ष्यामि	द्रक्ष्यावः	द्रक्ष्यामः

लोट्लकार

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमपुरुष	पश्यतु, तात्	पश्यताम्	पश्यन्तु
मध्यमपुरुष	पश्य, तात्	पश्यतम्	पश्यत
उत्तमपुरुष	पश्यानि	पश्याव	पश्याम

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'द्रक्ष्यति' रूप 'दृश्' धातु लृट्लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन का है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज 154

5. 'याच्' में शानच् प्रत्यय होने पर रूप बनता है?

(A) याचन् **(B)** याचयन्ती
(C) याचशान् **(D)** याचमानः

व्याख्या- सूत्र- लटः शतृँशानचावप्रथमासमानाधिकरणे (3.2.124)

अप्रथमान्त अर्थात् द्वितीयान्त आदि पदों के साथ यदि लट् का समान अधिकरण हो तो लट् के स्थान पर शतृँ और शानच् आदेश होते हैं।

➢ शतृ और शानच् दोनों प्रत्यय वर्तमानकालिक कृदन्त के अन्तर्गत गिने जाते हैं। परस्मैपदी से शतृ प्रत्यय और आत्मनेपदी से शानच् प्रत्यय होता है किन्तु उभयपदी धातुओं से दोनों प्रत्यय होता है।

➢ शतृ प्रत्यय का अन्तिम ऋकार 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' से इत्संज्ञा और आदि शकार 'लशक्वतद्धिते' द्वारा इत्संज्ञक होकर लोप हो जाता है, 'अत्' मात्र शेष रहता है।

- शानच् का आदि शकार 'लशक्वतद्धिते' द्वारा तथा अन्तिम चकार 'हलन्त्यम्' द्वारा इत्संज्ञक होकर लोप हो जाता है। 'आन' मात्र शेष बचता है, इसीलिये शतृ और शानच् शित् प्रत्यय होने से सार्वधातुक संज्ञा के कारण शप् आदि का विकरण हो जाते हैं।
- शतृ और शानच् प्रत्ययान्त शब्दों के रूप तीनों लिङ्गों में और सातों विभक्तियों में चलते हैं।

शानच् प्रत्यय के कुछ उदाहरण

याच्+ शानच् = याचमानः
वृध् + शानच् = वर्धमानः
कृ + शानच् = कुर्वाणः
भाष् + शानच् = भाषमाणः
आस् + शानच् = आसीनः

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि याच् धातु से शानच् प्रत्यय लगाने पर पुँल्लिङ्ग में 'याचमानः' बनेगा। स्त्रीलिङ्ग में 'याचमाना' और 'नपुंसकलिङ्ग' में 'याचमानम्' बनेगा। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज 204

6. कुन्ती में ढक् प्रत्यय के योग से रूप बनता है-
(A) कुन्ताढः **(B)** कौन्तेयः
(C) कौन्तेयाढ्यः **(D)** कुन्तीढः

व्याख्या- आचार्य वरदराज कृत लघुसिद्धान्तकौमुदी के तद्धित प्रकरण के अन्तर्गत अपत्याधिकार प्रकरण में ढक् प्रत्यय को बताया गया है।

सूत्र- 'स्त्रीभ्यो ढक्' (4/1/120)- अपत्य अर्थ में स्त्री प्रत्ययान्त शब्दों से ढक् प्रत्यय होता है।

- ढक् में ककार की **'हलन्त्यम्'** से इत्संज्ञा होती है। कित् होने के कारण **'किति च'** सूत्र से आदिवृद्धि होगी। ढकार की **'चुटू'** से इत्संज्ञा प्राप्त होती है किन्तु उसे बाधकर **'आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम्'** (7.1.2) उसके स्थान पर एय् आदेश का विधान होता है। ढ में केवल ढ् के स्थान पर ही एय् होगा। ढ का अकार बचा हुआ है। **जैसे**- कौन्तेयः - कुन्ती की सन्तान। कुन्त्याः अपत्यं पुमान् लौकिक विग्रह है और अलौकिक विग्रह है- कुन्ती ङस् । 'स्त्रीभ्यो ढक्' से ढक् 'आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम्' से एय् आदेश प्रातिपदिकसंज्ञा, सुप् का लुक् हुआ, कुन्ती + एय बना।

कित् होने के कारण 'किति च' से आदिवृद्धि करने पर ककारोत्तरवर्ती उकार के स्थान पर औकार आदेश और भसंज्ञक ईकार का 'यस्येति च' से लोप करने पर कौन्त् + एय बना, वर्णसम्मेलन हुआ कौन्तेय बना। एकदेशविकृतन्याय प्रातिपदिक मानकर सु, रुत्वविसर्ग करके **'कौन्तेयः'** सिद्ध हुआ। **अन्य उदाहरण-** वैनतेयः, राधेयः आदि।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि कुन्ती में ढक् प्रत्यय के योग से **'कौन्तेयः'** पद बनेगा। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी-भैमी व्याख्या (भाग-5), पेज 42,43

7. कादम्बरी कथामुख में वर्णन हुआ?
(A) अगस्त्याश्रम का **(B)** हारीताश्रम का
(C) जाबाल्याश्रम का **(D)** उपर्युक्त तीनों का

व्याख्या- बाणभट्ट कृत कादम्बरी कथामुख में शूद्रक वर्णन, विन्ध्याटवी वर्णन, पम्पासरोवर वर्णन, प्रभातवर्णन, मृगयावर्णन, शबरसेनापतिवर्णन, शबरचरित्रवर्णन, शुकशावकनिपातवर्णन, हारीतवर्णन, जाबालि आश्रमवर्णन, उज्जयिनीवर्णन, तारापीडवर्णन, शुकनासवर्णन आदि वर्णन प्रमुखरूपेण प्राप्त होते हैं।

⇒ **अगस्त्य वर्णन-** नहुषप्रकटप्रभावस्य भगवतो महामुनेरगस्त्यस्य भार्यया लोपामुद्रया स्वयमुपरचितालवालकैः........ नहुष को स्वर्ग में गिराने से अपने प्रभाव को प्रकट किया था ऐसे अति माहात्म्य वाले महर्षि अगस्त्य की धर्मपत्नी लोपामुद्रा द्वारा...।

⇒ **हारीत आश्रम वर्णन-** नातिदूरवर्त्तिनि तपोवने जाबालिर्नाम महातपाः मुनिः प्रतिवसति स्म। तत्तनयश्च हारीतनामा मुनिकुमारकः सनत्कुमार इव...।
पम्पासरोवर से दूर नहीं स्थित अर्थात् समीप में ही वर्तमान तपोवन में जाबालि नामक एक महान् तपस्वी रहते थे और उस तपस्वी का पुत्र हारीत नाम का तपस्वी कुमार जो सनत्कुमार के समान, अपने समान अवस्था वाले दूसरे मुनिकुमारों से अनुगम्यमान उसी सरोवर में स्नान करने की इच्छा वाला उसी मार्ग से वहाँ आ गया।

⇒ **जाबालि आश्रम-**शून्यनगरमिव दीनानाथविपन्नशरणम् पशुपतिमिव भस्मपाण्डु-रोमाश्लिष्टशरीरं भगवन्तं जाबालिमपश्यम्। सूना नगर जिस प्रकार दीनों, अनाथों और विपन्न लोंगो के शरणों घरों से युक्त होता है उसी प्रकार जाबालि दीनों अनाथों और विपन्नों के कारण रक्षक थे, भगवान् शंकर जिस प्रकार भस्म से पाण्डु वर्ण और उमा से

आलिङ्गित शरीर वाले हैं अथवा भस्म के समान पाण्डु वर्ण वाली उमा से आलिङ्गित शरीर वाले हैं। उसी प्रकार (जाबालि) भी भस्म में पाण्डुर वर्ण वाले रोमों से युक्त शरीर वाले थे इस प्रकार के भगवान् तपस्वी जाबालि का दर्शन किया।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि कादम्बरी कथामुख में अगस्त्याश्रम, हारीताश्रम, जाबालि आश्रम उपर्युक्त तीनों का वर्णन प्राप्त होता है। **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत- कादम्बरी-जयशङ्कलाल त्रिपाठी, पेज 169,182,199

8. 'करोति कस्य नाह्लादं कथा कान्तेव भारती' यह उक्ति किस कवि की है?

(A) बाणभट्ट की **(B)** त्रिविक्रमभट्ट की
(C) शूद्रक की **(D)** कालिदास की

व्याख्या- त्रिविक्रमभट्ट- चम्पूकार त्रिविक्रमभट्ट द्वारा विरचित प्राचीन चम्पू काव्य **नलचम्पू** है, इसका दूसरा नाम **दमयन्ती कथा** है। नलचम्पू में सात उच्छ्वास हैं और **नल तथा दमयन्ती की कथा** वर्णित है। नलचम्पू के प्रथमोच्छ्वास में महाभारत की प्रशंसा करते हुए चम्पूकार त्रिविक्रमभट्ट जी कहते हैं कि

कर्णान्तविभ्रमभ्रान्तकृष्णार्जुनविलोचना।
करोति कस्य नाह्लादं कथा कान्तेव भारती॥ (1/13)

कर्ण का विनाश हो जाने पर आश्चर्य से चञ्चल कृष्ण, अर्जुन तथा धृतराष्ट्र वाली महाभारत की कथा किसको आनन्दित नहीं करती?

अन्य प्रमुख सूक्तियाँ-

(i) सर्वं सहाः सूरयः (1/15)
विद्वान् सब कुछ सहन कर लेते हैं अर्थात् विद्वान् सभी का समादर करते हैं।

(ii) नैको रसः कवेः (1/16)
कवि को एक ही रस प्रिय नहीं होता है अर्थात् जिस कवि की जिस रस में अभिरुचि होती है, वह उसी के अनुरूप अपनी रचना सहृदय पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करता है।

(iii) परस्परहृदये लग्नं न घूर्णयति यच्छिरः (1/5)
कवि के उस काव्य का क्या लाभ? जो दूसरे श्रोता के हृदय से लगकर उसे प्रभावित न कर दे तथा धनुर्धारी के उस बाण से क्या लाभ? जो शत्रु के हृदय से लगकर उसके मस्तक को हिला न दे अर्थात् बाण से आहत होकर मूर्च्छित होकर भूमि पर लोटने न लग जाय, अर्थात् वेदना के मारे तड़प उठे।

(iv) रम्या रामायणी कथा (1/11)
दूषण तथा खर नामक राक्षसों से युक्त होने पर भी निर्दोष तथा सुकोमलभावों से युक्त रमणीय रामायण की कथा जिस कवि ने रची, उस आदिकवि वाल्मीकि को प्रणाम है।

➢ **बाणभट्ट-** बाणभट्ट द्वारा विरचित कादम्बरी कथामुख में बाणभट्ट द्वारा गुरु की वन्दना की गयी है-
नमामि भर्वोश्चरणाम्बुजद्वयं सशेखरैः मौखरिभिः कृतार्च्चनम्।
(कादम्बरी)
गुरुदेव भर्वु (भत्सु) के चरणकमल-युगल की मैं (बाणभट्ट) वन्दना करता हूँ।
कथा की प्रशंसा के सन्दर्भ में यह श्लोक-

➢ **(i) स्फुरत्कलालापविलासकोमला करोति रागं हृदि कौतुकाधिकम्। (कादम्बरी-8)**
यह कादम्बरी कथा स्फुट एवं सुन्दर शब्द रचना के माधुर्य के कारण रमणीय तथा गुम्फन को स्वयं प्राप्त होती हुई नवीन कथावधू के समान रस के द्वारा लोगों के हृदय में कुतूहलपूर्ण रुचि उत्पन्न कर देती है।

➢ **(ii) धिया निबद्धेयमतिद्वयी कथा। (कादम्बरी-20)**
उस ब्राह्मण (बाणभट्ट) ने अप्रगल्भ बुद्धि के द्वारा यह दो (बृहत्कथा और वासवदत्ता) को मात देने वाली कथा कादम्बरी रची है।

⟹ **शूद्रक-** शूद्रक द्वारा प्रणीत मृच्छकटिकम् में वसन्तसेना चारुदत्त के पुत्र रोहसेन के विषय में कहती है-
'अनलंकृतशरीरोऽपि चन्द्रमुख आनन्दयति मम हृदयम्।'
आभूषणरहित शरीर वाला भी चन्द्रमा जैसा मुख वाला यह मेरे हृदय को आनन्दित कर रहा है। (मृच्छकटिकम् अङ्क-6)

➢ **द्वयमिदमतीव लोके प्रियं नराणां सुहृच्च वनिता च॥ (4/25)**
शर्विलक कहता है कि इस दुनिया में मित्र और स्त्री दोनों ही मनुष्यों को बहुत प्रिय हैं।

तस्य दर्शनेन मृगलाञ्छनस्येव कुमुदिनीमानन्दय माम्। (मृच्छ..)
वसन्तसेना का कथन है- (चारुदत्त) उनके दर्शन से मुझे इस प्रकार आनन्दित करो जैसे चन्द्रमा के दर्शन से कुमुदिनी आनन्दित होती है।

कालिदास- कालिदास कृत अभिज्ञानशाकुन्तलम् में राजा दुष्यन्त शकुन्तला के विषय में कहता है-
इदं किलाव्याजमनोहरं वपुः तपः क्षमं साधयितुं य इच्छति।

ऋषि (कण्व) स्वभाव से ही सुन्दर इस (शकुन्तला) के शरीर को, खेद है कि तपस्या के योग्य बनाना चाहते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'करोति कस्य नाह्लादं कथा कान्तेव भारती' यह उक्ति त्रिविक्रमभट्ट की है। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- नलचम्पू (1/13) - रामनाथ त्रिपाठी, पेज 13

9. त्रिविक्रमभट्ट ने नलचम्पू में सबसे पहले स्तवन किया है-

(A) कामदेव का **(B)** विष्णुदेव का

(C) गिरिसुता का **(D)** भगवान् शङ्कर का

व्याख्या- त्रिविक्रमभट्ट द्वारा रचित नलचम्पू चम्पूकाव्य है जिसमें **सात उच्छ्वास** हैं। नलचम्पू का नायक **राजा नल** तथा नायिका **दमयन्ती** हैं। नलचम्पू **शृङ्गार रस** से युक्त चम्पूकाव्य है। त्रिविक्रमभट्ट ग्रन्थ के प्रारम्भ में श्लेष के माध्यम से भगवान् शङ्कर की वन्दना करते हुए नमस्कारात्मक के साथ-साथ वस्तुनिर्देशात्मक मङ्गलाचरण भी किया है-

जयतु गिरिसुतायाः कामसन्तापवाहि-
न्युरसि रसनिषेकश्चान्दनश्चन्द्रमौलिः।
तदनु च विजयन्ते कीर्तिभाजां कवीना-
मसकृदमृतबिन्दुस्यन्दिनो वाग्विलासाः॥ (नलचम्पू.1.1)

गिरिसुता पार्वती के कामसन्तप्त वक्षस्थल पर चन्दन रस के धार के सदृश शीतलता प्रदान करने वाले चन्द्रशेखर भगवान् शंकर सर्वोत्कृष्ट हैं तथा भीम की पुत्री भैमी के वक्षःस्थल पर चन्दनरस के सिञ्चन के समान शीतलता के दायक चन्द्रवंशीय राजाओं में शिरोमणि नल सर्वोत्कृष्ट हैं उसके पश्चात् कवियों के अविराम गति से सुधा बिन्दु की वर्षा करने वाली वाणी के विलास (आनन्दानुभव) सर्वोत्कृष्ट है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि नलचम्पू के मङ्गलाचरण में त्रिविक्रमभट्ट ने सर्वप्रथम भगवान् शङ्कर की स्तुति की है। **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत- नलचम्पू (1/1)- रामनाथ त्रिपाठी, पेज 13

10. 'गतं तिरश्चीनमनूरुसारथेः' में 'अनूरुसारथिः' पद का अर्थ है?

(A) नारद **(B)** सूर्य

(C) हविर्भुक् **(D)** पङ्गु

व्याख्या- महाकवि माघ द्वारा विरचित 20 सर्गों वाला शिशुपालवध महाकाव्य जो कि बृहत्त्रयी के अन्तर्गत आता है।

गतं तिरश्चीनमनूरुसारथेः
प्रसिद्धमूर्ध्वज्वलनं हविर्भुजः।
पतत्यधो धाम विसारि सर्वतः
किमेतदित्याकुलमीक्षितं जनैः॥ (1/2)

सूर्य की गति तिरछी प्रसिद्ध है, और अग्नि का ऊपर की और जलना प्रसिद्ध है, किन्तु सब और फैलने वाला यह तेज नीचे आ रहा है। यह क्या है? इसप्रकार लोगों ने व्यग्रतापूर्वक देखा।

द्वारिकापुरी स्थित नगरवासियों ने आकाश मार्ग से आते हुए नारद को अत्यन्त आश्चर्य और व्याकुलता के साथ देखा।

शिशुपालवधम् में प्रयुक्त शब्दार्थ-

सूर्यः - अनूरुसारथिः, भानुः, रविः, अहस्करः सहस्ररश्मिः
अग्नि - तनूनपात्, हविर्भुक्
आकाश - व्योम्नि, नभ
पृथ्वी - धरा, महीतलम्
स्वर्ग - त्रिदिवात्
देवता - त्रिदश, सुरा, नाकिनाम्

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'अनूरुसारथि' पद सूर्य का पर्यायवाची है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- शिशुपालवधम् (1/2) - तारिणीश झा, पेज 06

11. 'हरत्यघं सम्प्रति हेतुरेष्यतः' यह पद्यांश है-

(A) शिशुपालवधम् का

(B) अभिज्ञानशाकुन्तलम् का

(C) श्रीमद्भगवद्गीता का

(D) मृच्छकटिकम् का

व्याख्या- महाकवि माघ द्वारा विरचित शिशुपालवध महाकाव्य के प्रथमसर्ग में भगवान् श्रीकृष्ण महर्षि नारद के दर्शन का महत्त्व बताते हुए कहते हैं कि-

हरत्यघं सम्प्रति हेतुरेष्यतः
शुभस्य पूर्वाचरितैः कृतं शुभैः
शरीरभाजां भवदीयदर्शनं
व्यनक्ति कालत्रितयेऽपि योग्यताम्॥ (शिशु.1/26)

आपका दर्शन शरीरधारियों की त्रिकाल (वर्तमान, भविष्यत् तथा भूतकाल) में भी योग्यता को व्यक्त करता है। वर्तमान में पाप को हरता है, आने वाले शुभ का हेतु है, पहले आचरण किये हुए शुभ कर्मों से सम्पादित है।

- महाकवि कालिदास द्वारा विरचित अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अंक में प्रियंवदा अपनी सखी अनसूया से कण्व की बात बताती है-

दुष्यन्तेनाहितं तेजो, दधानां भूतये भुवः
अवेहि तनयां ब्रह्मन्नग्निगर्भां शमीमिव॥(अभि.शा.4/4)

हे ब्रह्मन्, दुष्यन्त के द्वारा स्थापित तेज (वीर्य) को पृथ्वी के कल्याण के लिए धारण करने वाली अपनी पुत्री को छिपी हुई अग्नि से युक्त शमीवृक्ष के तुल्य समझो।

➢ महर्षि वेदव्यास द्वारा विरचित महाभारत के भीष्मपर्व से उद्धृत है श्रीमद्भगवद्गीता जिसमें 18 अध्याय हैं। गीता के ग्यारहवें अध्याय में अर्जुन श्रीकृष्ण से कहते हैं-

अनादिमध्यान्तमनन्तवीर्यमनन्तबाहुं शशिसूर्यनेत्रम्।
पश्यामि त्वां दीप्तहुताशवक्त्रं स्वतेजसा विश्वमिदं तपन्तम्॥
(गीता 11/18)

आपको आदि, अन्त और मध्य से रहित, अनन्त सामर्थ्य से युक्त, अनन्त भुजावाले चन्द्रसूर्य रूप नेत्रों वाले, प्रज्वलित अग्निरूप मुखवाले और अपने तेज से इस जगत् को संतप्त करते हुए देखता हूँ।

➢ शूद्रक द्वारा रचित मृच्छकटिकम् 10 अङ्कों का एक प्रकरण ग्रन्थ है। इसके चतुर्थ अंक में शर्विलक कहता है-

गुणेषु यत्नः पुरुषेण कार्यो न किंचिदप्राप्यतमं गुणानाम्।
गुणप्रकर्षादुडुपेन शम्भोरलङ्घ्यमुल्लङ्घितमुत्तमाङ्गम्॥
(मृच्छ.4/23)

मनुष्यों को हमेशा अच्छी आदतों (गुणों) को पाने के लिए प्रयत्न करना चाहिए क्योंकि गुणवान् दरिद्र भी गुणहीन धनिकों के समान नहीं बल्कि उनसे बढ़कर हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'हरत्यघं सम्प्रति हेतुरेष्यतः' यह शिशुपालवध की सूक्ति है।

अतः विकल्प 'A'सही है।

स्रोत- शिशुपालवधम् (1/26) - तारिणीश झा पेज 57

12. दरिद्रता के वर्णन से पूर्ण रूपक प्रणीत किया है-
(A) बाणभट्ट ने **(B)** माघ ने
(C) त्रिविक्रमभट्ट ने **(D)** शूद्रक ने

व्याख्या- मृच्छकटिकम् शूद्रक प्रणीत संस्कृत का एक अद्भुत रूपक है जिसे कल्पित कथानक के कारण प्रकरण की श्रेणी में रखा जाता है। इसमें विप्र वणिक् चारुदत्त का चरित्र अंकित किया गया है। इसमें कोई धीरोदात्त नायक नहीं है- सामान्य जनता का धीरप्रशान्त नायक है, पात्र भी राजमार्ग पर साधारणतः दिखायी पड़ने वाले ही हैं। ब्राह्मण होते हुए भी व्यापार से जीविका चलाने वाला एवं अपनी दानशीलता के कारण निर्धन बन चुका चारुदत्त अपने गुणों से उज्जयिनी की वैभव सम्पन्न गणिका वसन्तसेना का हृदय चुरा लेता है कथानक का अन्त उसे वधूपद की प्राप्ति कराता है।

➢ प्रथम अङ्क (अलङ्कारन्यास) में चारुदत्त अपनी दरिद्रता का मार्मिक चित्रण करता है।

➢ चारुदत्त के पूर्वज प्रसिद्ध व्यापारी थे। उन लोगों ने विशाल धनराशि अर्जित की थी।

➢ चारुदत्त का विशाल घर उसके पूर्वजों की समृद्धि का स्मारक है।

➢ चारुदत्त उदार हृदय वाला होने के कारण सारी सम्पत्ति निर्धनों को दे देता है।

➢ धन के कारण उसने कभी किसी का अपमान नहीं किया है।

➢ इस श्लोक में चारुदत्त को दरिद्र बताया जा रहा है-

अवन्तिपुर्यां द्विजसार्थवाहो युवा दरिद्रः किल चारुदत्तः।
गुणानुरक्ता गणिका च यस्य वसन्तशोभेव वसन्तसेना।
(1/6)

उज्जयिनी नगरी में व्यापारी ब्राह्मण अथवा धनदान के द्वारा ब्राह्मणों का पोषक किन्तु बाद में निर्धन युवक चारुदत्त जिसके गुणों से अनुरक्त वसन्त ऋतु की शोभा के समान वसन्तसेना नाम की वेश्या भी वहाँ थी।

⇒ चारुदत्त अपनी दरिद्रता के विषय में कहता है-

शून्यमपुत्रस्य गृहं चिरशून्यं नास्ति यस्य सन्मित्रम् ।
मूर्खस्य दिशः शून्याः सर्वं शून्यं दरिद्रस्य॥ (1/8)

पुत्रहीन व्यक्ति का घर सूना होता है सच्चे मित्र के अभाव में सारा जीवन सूना है। मूर्ख के लिए सभी दिशाएँ सूनी हैं, और दरिद्रों के लिए सारा संसार सूना है।

⇒ **बाणभट्ट-** बाणभट्ट की प्रसिद्ध रचना कादम्बरी कथामुख है। जिसमें शाल्मलीवृक्ष वर्णन, जाबालि वर्णन, अगस्त्यवर्णन, अच्छोद-सरोवर वर्णन, शुकवर्णन, चाण्डालकन्या आदि वर्णन प्रमुख हैं।

⇒ **माघ-** माघ कृत एकमात्र महाकाव्य शिशुपालवध है। शिशुपालवध महाकाव्य में रैवतक पर्वत का विशद वर्णन किया गया है।

रैवतक पर्वत पर सूर्योदय का दृश्य है लम्बी-लम्बी और ऊपर की ओर रस्सी के समान फैली हुई किरणों वाले सूर्य के उदय एवं चन्द्रमा के अस्त होने के समय यह पर्वत लटकने वाले दो घण्टाओं से युक्त गजराज के सदृश शोभा पा रहा है।

इस वर्णन से माघ को **'घण्टामाघ'** की उपमा दी गयी।

उदयति विततोर्ध्वरश्मिरज्जा......वारणेन्द्रलीलाम् (4/20)

⇒ **त्रिविक्रमभट्ट-** त्रिविक्रमभट्ट कृत नलचम्पू संस्कृत का सर्वप्रथम चम्पूकाव्य है। यह सात उच्छ्वासों का चम्पूकाव्य है जिसमें नल-दमयन्ती की प्रणयकथा वर्णित है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि नायक चारुदत्त की दरिद्रता के वर्णन से पूर्णरूपक शूद्रक ने प्रणीत किया है **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत- मृच्छकटिकम् - रमाशङ्कर त्रिपाठी, पेज भू. (xxxi)

13. 'प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः' यह भरतवाक्य किस नाटक में प्रयुक्त हुआ है?

(A) मृच्छकटिकम् में
(B) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में
(C) नलचम्पू में
(D) उत्तररामचरितम् में

व्याख्या- शूद्रक प्रणीत मृच्छकटिकम् दस अङ्कों वाला एक प्रकरण ग्रन्थ है जिसमें चारुदत्त के द्वारा भरतवाक्य कहा गया है- संहार नामक दशवें अङ्क में -

क्षीरिण्यः सन्तु गावो, भवतु वसुमती सर्वसम्पन्नसस्या,
पर्जन्यः कालवर्षी, सकलजनमनोनन्दिनो वान्तु वाताः।
(मृच्छ.10/61)

गायें दुधारू हों, हर तरह की फसलों से धरती भरी हो, मेघ समय पर पानी दे, सबके मन को हरने वाली हवा बहे, संसार में जन्म देने वाले सभी प्राणी सुखी हों, लोग सदा सबके समादरणीय एवं सदाचारी हों, लक्ष्मीवान् शत्रुओं का शमन करने वाले हों तथा धार्मिक राजा धरती का शासक हो।

⇒ **अभिज्ञानशाकुन्तलम्-** महाकवि कालिदास द्वारा अभिज्ञानशाकुन्तलम् के सातवें अङ्क के अन्तिम श्लोक में भरतवाक्य राजा दुष्यन्त के द्वारा उद्घोषित हुआ है-

प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः
सरस्वती श्रुतमहतां महीयताम्।
ममापि च क्षपयतु नीललोहितः
पुनर्भवं परिगत-शक्तिरात्मभूः॥ (अभि.7/35)

राजा प्रजा के हित के लिये प्रयत्नशील हों। ज्ञान-गरिष्ठ कवियों की वाणी का पूर्ण सत्कार हो। सर्वशक्तिमान् स्वयं शिव मेरे पुनर्जन्म को निवृत्त कर दें। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (7/35)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 453

14. ब्रह्मजिज्ञासा के साधन चतुष्टय में निम्न में से किसका ग्रहण नहीं हुआ है?

(A) नित्यानित्यवस्तुविवेक
(B) इहामुत्रार्थफलभोगानुराग
(C) शमादिषट्क सम्पत्ति
(D) मुमुक्षुत्व

व्याख्या- श्रीसदानन्दयोगीन्द्र द्वारा विरचित वेदान्तदर्शन का प्रकरणग्रन्थ है वेदान्तसार ।

➢ 'साधनचतुष्टयसम्पन्न प्रमाता' वेदान्त का अधिकारी होता है साधन चतुष्टय का वर्णन किया जा रहा है-

नित्यानित्यवस्तुविवेकेहामुत्रार्थफलभोगविरागशमादिषट्क-सम्पत्ति मुमुक्षुत्वानि।

1- नित्यानित्यवस्तुविवेक
2- इहामुत्रार्थफलभोगविराग
3- शमादिषट्कसम्पत्ति
4- मुमुक्षुत्व

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि साधनचतुष्टय के अन्तर्गत इहामुत्रार्थफलभोगानुराग नहीं है अपितु इहामुत्रार्थफलभोगविराग है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- वेदान्तसार - राकेश शास्त्री, पेज 132

15. सांख्यमत में जो प्रमाण स्वीकार नहीं किया गया वह है-

(A) दृष्ट **(B)** अनुमान
(C) आप्त **(D)** अर्थापत्ति

व्याख्या- ईश्वरकृष्ण प्रणीत सांख्यकारिका की चौथी कारिका में बताया गया है-

दृष्टमनुमानमाप्तवचनं च सर्वप्रमाणसिद्धत्वात्।
त्रिविधं प्रमाणमिष्टं प्रमेयसिद्धिः प्रमाणाद्धि॥
(सा.का. 4)

सभी प्रमाणों का अन्तर्भाव होने से प्रत्यक्ष, अनुमान और शब्द तीन प्रकार के प्रमाण ही अभिप्रेत हैं, क्योंकि प्रमाणों से ही प्रमेयसिद्धि होती है।

➢ चार्वाक दर्शन केवल **प्रत्यक्ष को प्रमाण** मानता है।
➢ जैन, बौद्धदर्शन **दो प्रमाण** = प्रत्यक्ष, अनुमान को प्रमाण स्वीकार करता है।
➢ सांख्य, योग = **तीन प्रमाण**- प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द मानते हैं।
➢ न्याय-वैशेषिक- **चार प्रमाण** - प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द मानते हैं।

➢ प्राभाकर-मीमांसक-प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, अर्थापत्ति- **पाँच प्रमाण** मानते हैं।

➢ भाट्ट-मीमांसक- प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, अर्थापत्ति, अभाव छः प्रमाण मानते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि सांख्यशास्त्री तीन प्रमाण दृष्ट, अनुमान और आगम (आप्त या शब्द) स्वीकार करते हैं। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- सांख्यकारिका (का.4) - रमेशचन्द्र पाण्डेय, पेज 42

16. निम्न में से कौन सा सिद्धान्त श्रीमद्भगवद्गीता में नहीं कहा गया है?

(A) पुनर्जन्मसिद्धान्त **(B)** आत्मा की नित्यता
(C) सांख्ययोग सिद्धान्त **(D)** अधर्मोत्थान सिद्धान्त

व्याख्या- महाभारत के भीष्मपर्व से श्रीमद्भगवद्गीता ग्रन्थ लिया गया है। गीता के अन्तर्गत पुनर्जन्मसिद्धान्त, आत्मा की नित्यता और सांख्ययोग सिद्धान्त, धर्म का उत्थान आदि का उल्लेख प्राप्त होता है।

* **पुनर्जन्म सिद्धान्त-**
जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च।
तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि।। (गीता 2/27)
जिसने जन्म लिया है उसकी मृत्यु निश्चित है और मृत्यु के पश्चात् पुनर्जन्म भी निश्चित है। अतः अपने अपरिहार्य कर्तव्यपालन में तुम्हें (अर्जुन) शोक नहीं करना चाहिए।

* **आत्मा की नित्यता-**
न जायते म्रियते वा कदाचित्--- न हन्यते हन्यमाने शरीरे।
(गीता 2/20)
आत्मा के लिए किसी भी काल में न तो जन्म है न मृत्यु। वह न तो जन्म लेता है, न लेगा। वह अजन्मा, नित्य, शाश्वत तथा पुरातन है। शरीर के मारे जाने पर वह मारा नहीं जाता।
य एनं वेत्ति हन्तारं यश्चैनं मन्यते हतम्।
उभौ तौ न विजानीतो नायं हन्ति न हन्यते।। (2/19)
'यह आत्मा न तो मरता है और न मारा जाता है।'

* **सांख्ययोग सिद्धान्त-**
नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः।
उभयोरपि दृष्टोऽन्तस्त्वनयोस्तत्त्वदर्शिभिः॥
(गीता2/16)
तत्त्वदर्शियों ने यह निकर्ष निकाला है कि असत् (भौतिक शरीर) का तो कोई चिरस्थायित्व नहीं है, किन्तु सत् (आत्मा) अपरिवर्तित रहता है। उन्होंने इन दोनों की प्रकृति के अध्ययन द्वारा यह निष्कर्ष निकाला है।
एषा तेऽभिहिता सांख्ये बुद्धिर्योगे त्विमां शृणु। (गीता 2/3)
यहाँ मैंने तेरे लिए सांख्य द्वारा इस ज्ञान का वर्णन किया है।

* **धर्मोत्थान सिद्धान्त-**
यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।। (4/7)
हे भरतवंशी! जब भी और जहाँ भी धर्म का पतन होता है और अधर्म की प्रधानता होने लगती है, तब तब मैं अवतार लेता हूँ।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि श्रीमद्भगवद्गीता में अधर्मोत्थान सिद्धान्त की चर्चा नहीं की गयी है।
अतः विकल्प (D) सही है।

स्रोत- श्रीमद्भगवद्गीता - गीताप्रेस, पेज भू. 10-12

17. राजा नल की नगरी का नाम था-

(A) अवन्ती **(B)** विशाला
(C) निषधा **(D)** काशी

व्याख्या- त्रिविक्रमभट्ट द्वारा रचित नलचम्पू में राजा नल की नगरी निषधा का वर्णन है-

* **निषधा-** तस्य निषधो नामास्ति जनपदः प्रथितः। (1/29)
आर्यावर्त देश के बीच में प्रसिद्ध निषध नामक जनपद
तस्यामासीन्निजभुजयुगलबलविदलितसकलवैरिवृन्द–सुन्दरीनेत्र....
उस निषध नगरी में नल नामक राजा रहता था।
इस पंक्ति से सिद्ध होता है कि राजा नल की नगरी निषधा थी।

* **अवन्ती-विशाला-** कालिदास कृत मेघदूतम् में अवन्ती प्रदेश में विशाला नगरी है। विशाला को उज्जयिनी नाम से भी जाना जाता है।
उज्जयिनी (विशाला) राजा उदयन की नगरी है-
प्राप्यावन्तीनुदयनकथाकोविदग्रामवृद्धान्,
पूर्वोद्दिष्टामुपसर पुरीं श्रीविशालां विशालाम्।
(पूर्वमेघ-31)
मृच्छकटिकम् में चारुदत्त की नगरी उज्जयिनी
अवन्तिपुर्य्यां द्विजसार्थवाहो युवा दरिद्रः किल चारुदत्तः।
(मृच्छ. 1/6)

* **विदिशा-** बाणभट्ट कृत कादम्बरी में राजा शूद्रक की राजधानी विदिशा है- **'वेत्रवत्या परिगता विदिशाभिधाना नगरी राजधान्यासीत्**

* **विदर्भ-** राजकुमारी दमयन्ती की नगरी विदर्भ देश के कुण्डिनपुर में थी।
देशानां दक्षिणो देशस्तत्र वैदर्भमण्डलम्।
तत्रापि वरदातीरमण्डलं कुण्डिनं पुरम्॥(नलचम्पू 2/28)

वहाँ देशों में महान् देश वैदर्भमण्डल है। उस वैदर्भमण्डल में भी वरदा नदी के तट का अलङ्कारस्वरूप कुण्डिननगर है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि राजा नल की नगरी निषधा थी। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- नलचम्पू (1/29) - रामनाथ त्रिपाठी, पेज 48

18. राजा नल की कथा किस ग्रन्थ में नहीं है?

(A) रामायण में **(B)** स्कन्दपुराण में
(C) विक्रमाङ्कदेवचरित में **(D)** मत्स्यपुराण में

व्याख्या- अठारह पुराणों में परिगणित मत्स्यपुराण के सूर्यवंशानुकीर्तन नामक बारहवें अध्याय के इक्यावनवें श्लोक में राजा नल के विषय में बताया गया है-

'नलस्तुनैषधस्तस्मान्नभास्तस्मादजायत'

महर्षि वाल्मीकि जी ने वर्णन किया है कि इन रामचन्द्र जी के लव और कुश यह दो पुत्र इक्ष्वाकुवंश को बढ़ाने वाले हुए, कुश से अतिथि नाम का पुत्र उत्पन्न हुआ, अतिथि से निषध नामक पुत्र हुआ, निषध से नल नामक पुत्र हुआ और नल से नभा नामक पुत्र उत्पन्न हुआ।

* **स्कन्दपुराण-** स्कन्दपुराण में विभिन्न स्थलों पर नल की चर्चा की गयी है-

रामं च लक्ष्मणं नलं नीलं गवाक्षं च गवयं गन्धमादनम् (1.1.51.40)

नलस्तानि समादाय चक्रे सेतुं महोदधौ (3.1.755)

* **वाल्मीकि रामायण-** वाल्मीकि कृत रामायण के युद्धकाण्ड में समुद्र की सलाह के अनुसार नल के द्वारा सागर पर सौ योजन लम्बे पुल का निर्माण तथा उसके द्वारा श्रीराम आदि सहित वानरसेना का उस पार पहुँचकर पड़ाव डालना आदि का वर्णन किया गया है।

अयं सौम्य नलो नाम तनयो विश्वकर्मणः
पित्रा दत्तवरः श्रीमान् प्रीतिमान् विश्वकर्मणः

(6/22/45)

सौम्य आपकी सेना में यह नल नामक कान्तिमान् वानर है, साक्षात् विश्वकर्मा का पुत्र है। इसे इसके पिता ने यह वर दिया है कि तुम मेरे ही समान समस्त शिल्पकला में निपुण होओगे।

* **विक्रमाङ्कदेवचरितम्-** बिल्हण ने विक्रमाङ्कदेवचरित नामक महाकाव्य 18 सर्गों में प्रायः 1085 ई. में लिखा है। यह ऐतिहासिक महाकाव्य है। कल्याण के चालुक्य राजा विक्रमादित्य (षष्ठ) के ऐतिहासिक चरित का इसमें वर्णन है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि प्रश्न में पूछे गये राजा नल की कथा रामायण में और विक्रमाङ्कदेवचरितम् में नहीं प्राप्त होता परन्तु नल रूपी वानर की चर्चा रामायण में है। **अतः विकल्प A और C सही होना चाहिए।**

नोट :- उपर्युक्त प्रश्न में उचित विकल्प न होने के कारण आयोग ने इस प्रश्न के उत्तर को **F** मान लिया है।

स्रोत- संस्कृतसाहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा,पेज 310

19. राजा नल के मन्त्री का नाम था?

(A) बालाहक **(B)** श्रुतशील
(C) विदध **(D)** बाहुक

व्याख्या- त्रिविक्रमभट्ट द्वारा प्रणीत नलचम्पू चम्पूकाव्य का प्रसिद्ध ग्रन्थ है। इनके पात्र-परिचय निम्नलिखित हैं-

वीरसेन	- निषधराज, नायक नल के पिता
नल	- नायक, राजा वीरसेन के पुत्र
श्रुतशील	- नल का महामन्त्री, सालङ्कायन का पुत्र
सालङ्कायन	- वीरसेन के महामन्त्री
वैतालिक	- नल का सेवक
बाहुक	- नल का सेनापति
भीम	- कुण्डिनपुर के राजा, नायिका दमयन्ती के पिता
दमयन्ती	- नायिका, कुण्डिननरेश भीम की पुत्री
प्रियङ्गुमञ्जरी	- दमयन्ती की माता, राजा भीम की राजमहिषी
विहङ्गवागुरिका	- दमयन्ती की किन्नरी
रूपवती	- राजा वीरसेन की पत्नी, नल की माता
लवङ्गिका	- नल के सरोवर की रक्षिका

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि राजा नल के मन्त्री श्रुतशील हैं और बाहुक नल का सेनापति था। बालाहक और विदध ये दोनों पात्र नलचम्पू में नहीं हैं। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- नलचम्पू - रामनाथ त्रिपाठी, पेज भू. 71

20. 'बृहत्कथामञ्जरी' का विभाजन है-

(A) लम्बकों में **(B)** लावाणकों में
(C) उच्छ्वासों में **(D)** निःश्वासों में

व्याख्या-

ग्रन्थ – ग्रन्थकार – विभाजन

बृहत्कथामञ्जरी–क्षेमेन्द्र–19 लम्बकों (अध्याय),7500 श्लोक
हर्षचरितम्–बाणभट्ट–8 उच्छ्वास
शिवराजविजय– अम्बिकादत्तव्यास- 3 विराम- 12 निःश्वास

(i) रसगङ्गाधर - पण्डितराज जगन्नाथ- 4 आनन
(ii) दशरूपक - धनञ्जय - 4 प्रकाश
(iii) व्यक्तिविवेक - महिमभट्ट - 3 विमर्श
(iv) चन्द्रालोक - जयदेव - 10 मयूख
(v) राजतरङ्गिणी - कल्हण - 8 तरङ्ग
(vi) कथासरित्सागर-सोमदेव-18लम्बक,124तरङ्ग,22000 पद्य

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'बृहत्कथा-मञ्जरी' का विभाजन 19 लम्बकों (अध्यायों) में हुआ है।**अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत - संस्कृतसाहित्य का इतिहास-उमाशंकरशर्मा ऋषि, पेज 424

21. 'यष्टयः प्रविशन्ति' में लक्षणा है?
(A) उपादानलक्षणा **(B)** लक्षणलक्षणा
(C) शुद्धा सारोपा **(D)** गौणी साध्यवसाना

व्याख्या- आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश के द्वितीयोल्लास में लक्षणा की परिभाषा देते हुए कहते हैं कि-

मुख्यार्थबाधे तद्योगे रूढितोऽथ प्रयोजनात् ।
अन्योऽर्थो लक्ष्यते यत् सा लक्षणारोपिता क्रिया॥

मुख्यार्थ का बाध होने पर उस मुख्यार्थ के साथ अन्य अर्थ का सम्बन्ध होने पर रूढि से अथवा प्रयोजन विशेष से जिस शब्दशक्ति के द्वारा अन्य अर्थ लक्षित होता है वह आरोपित व्यापार लक्षणा कहलाता है।

उदाहरण- 'कर्मणि कुशलः।' काम में कुशल है इत्यादि उदाहरण में 'कुशान् लाति आदत्ते इति कुशलः' इस व्युत्पत्ति के अनुसार कुशों को लाने का कोई सम्बन्ध न होने पर मुख्यार्थ का बाध हुआ और **'गङ्गायां घोषः'** इत्यादि में गङ्गा पद के जलप्रवाह रूप मुख्यार्थ आदि में घोष आदि का आधारत्व सम्भव न होने से मुख्यार्थ का बाध हुआ।

स्वसिद्धये पराक्षेपः परार्थं स्वसमर्पणम् ।
उपादानं लक्षणं चेत्युक्ता शुद्धैव सा द्विधा॥

लक्षणा के उपादान लक्षणा तथा लक्षण-लक्षणा नाम से पहले दो भेद करते हैं। अपने अन्वय की सिद्धि के लिए अन्य अर्थ का आक्षेप करना उपादान लक्षणा और दूसरे अन्वय की सिद्धि के लिए मुख्य अर्थ का परित्याग करना लक्षण लक्षणा कहलाता है। इस प्रकार वह शुद्धालक्षणा ही दो प्रकार की कही गयी है।

⇒ **उपादानलक्षणा के दो उदाहरण-**

कुन्ताः प्रविशन्ति। (भाले प्रवेश कर रहे हैं।)
यष्टयः प्रविशन्ति। (लाठियाँ प्रवेश कर रही हैं।)

इत्यादि वाक्यों में कुन्त आदि पदों के द्वारा अपने 'प्रवेश' क्रिया की सिद्धि के लिए अपने से संयुक्त अर्थात् कुन्तधारी पुरुषों का आक्षेप द्वारा अर्थ बोध कराया जाता है।

इसलिए स्वार्थ का परित्याग किये बिना अन्य अर्थ के ग्रहणरूप अथवा स्वार्थ के भी ग्रहणरूप उपादान से यह लक्षणा है। अतः यह उपादान लक्षणा कहलाती है।

मम्मट के अनुसार लक्षणा के **छः** भेद किये गये हैं-

⇒ **लक्षणा तेन षड्विधा-**

1. शुद्धा उपादान लक्षणा- कुन्ताः प्रविशन्ति/यष्टयः प्रविशन्ति।
2. शुद्धा लक्षणलक्षणा- गङ्गायां घोषः
3. शुद्धा सारोपा लक्षणा- आयुर्घृतम्
4. शुद्धा साध्यवसाना- आयुरेवेदम्
5. गौणी सारोपा लक्षणा- गौर्वाहीकः
6. गौणी साध्यवसाना लक्षणा- गौरयम्

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'यष्टयः प्रविशन्ति' यह उपादान लक्षणा का उदाहरण है।

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत - काव्यप्रकाश-श्रीनिवासशास्त्री, पेज 59

22. शिशुपालवध की कथा का आधार है?
(A) महाभारत **(B)** श्रीमद्भगवद्गीता
(C) विष्णुपुराण **(D)** दशावतार

व्याख्या-

ग्रन्थ – ग्रन्थकार – उपजीव्य ग्रन्थ – विभाजन
शिशुपालवधम् – माघ – महाभारत का सभापर्व – 20 सर्गों में
किरातार्जुनीयम् –भारवि – महाभारत का वनपर्व– 18 सर्गों में
नैषधीयचरितम्– श्रीहर्ष – महाभारत का वनपर्व–22 सर्गों में
कुमारसंभवम् – कालिदास–श्रीमद्भागवत महापुराण–17 सर्ग
रघुवंशम् – कालिदास – वाल्मीकीय रामायण – 19 सर्ग
बुद्धचरितम् – अश्वघोष – बौद्धग्रन्थ –28 सर्ग
सौन्दरनन्द – अश्वघोष – इतिहासप्रसिद्ध –18 सर्ग
भट्टिकाव्य –भट्टि–रामायण–22 सर्ग

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि शिशुपाल की कथा का आधार 'महाभारत' का सभापर्व' है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- संस्कृतसाहित्य का इतिहास-उमाशङ्करशर्मा ऋषि, पेज 263

23. किस ग्रन्थ की गणना बृहत्त्रयी के अन्तर्गत नहीं है-
(A) किरातार्जुनीयम् **(B)** शिशुपालवधम्
(C) नैषधीयचरितम् **(D)** रघुवंशम्

व्याख्या- **बृहत्त्रयी**

1. किरातार्जुनीयम् 2. शिशुपालवधम् 3. नैषधीयचरितम्

लघुत्रयी

1. रघुवंशम् 2. कुमारसम्भवम् 3. मेघदूतम्

गद्यबृहत्त्रयी

1. वासवदत्ता 2. कादम्बरी 3. दशकुमारचरितम्

उपजीव्यग्रन्थत्रयी

1. रामायणम् 2. महाभारतम् 3. भागवतपुराणम्

प्रस्थानत्रयी

1. ब्रह्मसूत्र 2. उपनिषद् 3. गीता

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि बृहत्त्रयी के अन्तर्गत 'रघुवंशम्' नहीं आता। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- संस्कृतसाहित्य का इतिहास-उमाशङ्करशर्मा ऋषि, पेज 208

24. नीचे लिखे गये ग्रन्थों में कौन सा ग्रन्थ काव्यशास्त्र का नहीं है?

(A) ध्वन्यालोक
(B) सरस्वतीकण्ठाभरण
(C) कविकर्णाभरण
(D) कविकण्ठाभरण

व्याख्या-

काव्यशास्त्रीयग्रन्थ –ग्रन्थकार– विभाजन

नाट्यशास्त्र – भरतमुनि – 36 अध्याय
काव्यादर्श – दण्डी – 3 परिच्छेद, 660 श्लोक
काव्यालङ्कार – भामह – 6 परिच्छेद, लगभग 400 श्लोक
काव्यालङ्कारसारसंग्रह–उद्भट– 6 वर्ग, 79 कारिका
काव्यालङ्कारसूत्रवृत्ति–वामन– 5 अधिकरण,12अध्याय
काव्यालङ्कार–रुद्रट– 16 वर्ग, 734 श्लोक
ध्वन्यालोक–आनन्दवर्धन– 4 उद्योत, 117 कारिकायें
काव्यमीमांसा–राजशेखर– 3 अध्याय/अवशिष्ट 15अध्याय
अभिधावृत्तिमातृका–मुकुलभट्ट– 15 कारिका
दशरूपक–धनञ्जय/धनिक– 4 प्रकाश
वक्रोक्तिजीवितम्–कुन्तक– 4 उन्मेष
व्यक्तिविवेक–महिमभट्ट– 3 विमर्श (अध्याय)
कविकण्ठाभरण–क्षेमेन्द्र– 55 कारिका
सरस्वती कण्ठाभरण–भोजराज– 5 परिच्छेद
काव्यप्रकाश–मम्मट– 10 उल्लास
चन्द्रालोक–जयदेव– 10 मयूख
साहित्यदर्पण–विश्वनाथ–10 परिच्छेद
कुवलयानन्द–अप्पयदीक्षित
चित्रमीमांसा–अप्पयदीक्षित
रसगङ्गाधर–पण्डितराज जगन्नाथ- –4 आनन

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि 'कर्णाभरण' ही ऐसा है जो काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ के अन्तर्गत सम्मिलित नहीं है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- संस्कृतशास्त्र का इतिहास-बलदेव उपाध्याय, पेज 212,228

25. निम्नलिखित में से जो न्यायसूत्रकार के मत में नहीं है?

(A) अनुमान **(B)** उपमान
(C) प्रत्यक्ष **(D)** परोक्ष

व्याख्या- गौतम प्रणीत न्यायसूत्र में 'प्रमाणानि चत्वारि' से प्रमाणों का विवेचन प्राप्त होता है।

प्रत्यक्षानुमानोपमानशब्दाः प्रमाणानि।

प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द यह चार प्रमाण स्वीकृत हैं।

स्पष्टीकरण- इससे स्पष्ट होता है कि परोक्ष न्यायसूत्रकार गौतम के मत में प्रमाण नहीं है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- तर्कभाषा - गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज 59

26. पञ्चतन्मात्राओं से उत्पत्ति होती है?

(A) पञ्च प्राणों की **(B)** पञ्च मकारों की
(C) पञ्च इन्द्रियों की **(D)** पञ्च उपचारों की

व्याख्या- आचार्य कपिल द्वारा प्रणीत सांख्यदर्शन का प्रकरण ग्रन्थ सांख्यकारिका है जो ईश्वरकृष्ण द्वारा रचित है। इसमें प्रकृति के द्वारा उत्पन्न कार्यों का विवरण दिया गया है।

मूलप्रकृतिरविकृतिर्महदाद्याः प्रकृतिविकृतयः सप्त।
षोडशकस्तु विकारो न प्रकृतिर्न विकृतिः पुरुषः॥(कारिका 3)

मूल प्रकृति किसी का विकार अथवा कार्य नहीं है, महत् इत्यादि सात तत्त्व कारण और कार्य दोनों हैं। सोलह तत्त्वों का समुदाय तो केवल कार्य ही है, पुरुष न कारण ही है और न कार्य ही।

* सांख्यकारिका में पच्चीस तत्त्वों की चर्चा की गयी है उन सब तत्त्वों का मूल प्रकृति है जो तालिका द्वारा समझाया गया है -

सांख्य की सृष्टि प्रक्रिया

↓
मूलप्रकृति
↓
महत् (बुद्धि)
↓
अहङ्कार
↓

सात्विक अहङ्कार	तामसिक अहङ्कार
5 ज्ञानेन्द्रियाँ	पाँच तन्मात्रा
5 कर्मेन्द्रियाँ	पाँच महाभूत
1 मन	
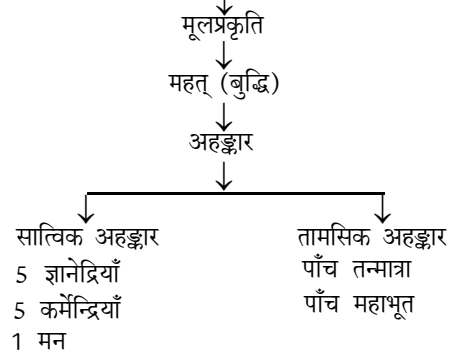
पञ्च ज्ञानेन्द्रियाँ–श्रोत्र,त्वक् ,चक्षु ,रसना,घ्राण
पञ्च कर्मेन्द्रियाँ – वाक्,पाणि, पाद, पायु ,उपस्थ
पञ्चतन्मात्रायें – शब्द ,स्पर्श,रूप,रस,गन्ध
पञ्चमहाभूत- आकाश,वायु, अग्नि, जल, पृथिवी
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि मूलप्रकृति से महत्, महत् से अहङ्कार, अहङ्कार से पञ्चतन्मात्रायें, पञ्चतन्मात्राओं से पञ्चमहाभूतों की उत्पत्ति होती है।
नोट :- इस प्रश्न के चारों विकल्पों में 'महाभूत' का विकल्प न होने के कारण यह प्रश्न विवाद की श्रेणी में है। अतः आयोग के द्वारा इस प्रश्न का उत्तर **F** माना गया है।

स्रोत- सांख्यकारिका (का.-22)- राकेश शास्त्री, पेज 70

27. विश्वपा शब्द के पञ्चमी एकवचन का रूप है?
(A) विश्वपा **(B)** विश्वपः
(C) विश्वपाः **(D)** विश्वपि

व्याख्या- विश्वपा = संसार का रक्षक अजन्त पुँल्लिङ्ग प्रकरण

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	विश्वपाः	विश्वपौ	विश्वपाः
द्वितीया	विश्वपाम्	विश्वपौ	विश्वपः
तृतीया	विश्वपा	विश्वपाभ्याम्	विश्वपाभिः
चतुर्थी	विश्वपे	विश्वपाभ्याम्	विश्वपाभ्यः
पञ्चमी	विश्वपः	विश्वपाभ्याम्	विश्वपाभ्यः
षष्ठी	विश्वपः	विश्वपोः	विश्वपाम्
सप्तमी	विश्वपि	विश्वपोः	विश्वपासु
सम्बोधन	हे विश्वपाः!	हे विश्वपौ!	हे विश्वपाः!

इसी प्रकार सोमपा = सोम रस पीने वाला
गोपा = गायों का रक्षक
धूमपा = धुआँ (तमाखू) पीने वाला
शङ्खध्मा = शंख बजाने वाला
बलदा = बल देने वाला का रूप चलेगा।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'विश्वपा' शब्द के पञ्चमी एकवचन का रूप है –विश्वपः। **अतः विकल्प 'B' सही है।**
स्रोत- रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज 07

28. शिशुपालवध में 'हिरण्यगर्भाङ्गभूः' कहा गया है?
(A) नारद को
(B) श्रीकृष्ण को
(C) बलराम को
(D) गर्ग को

व्याख्या- शिशुपालवधम् में प्रयुक्त नाम
नारद - हिरण्यगर्भाङ्गभूः, तपोनिधिः, धातुःसुतः
श्रीकृष्ण - अच्युतः, देवकीसुतम्, आदिपूरुषः, पुराविदः, उपेन्द्रः, रथाङ्गपाणिः, शार्ङ्गिणः, कंसकृषः, हरिः, पुण्डरीकाक्षः।
बलराम - शितिवासाः
शिव - भूतिसितेन, पिनाकिनम्, शूलिनः, शम्भुना
यम - परेतभर्तुः, कीनाशः
इन्द्र - अहिद्विषः, महेन्द्रः, नमुचिद्विषा, कौशिकः, पुरन्दरः
स्पष्टीकरण- 'हिरण्य-गर्भाङ्गभुवं मुनिं हरिः' इस वर्णन से स्पष्ट है कि 'हिरण्यगर्भाङ्गभूः' पद से 'नारद' का बोध हो रहा है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**
स्रोत- शिशुपालवधम् (1/1)- तारिणीश झा, पेज 02

29. 'अथवाऽनार्यः परदारव्यवहारः' यह उक्ति है?
(A) कण्व की **(B)** माधव्य की
(C) इन्द्र की **(D)** दुष्यन्त की

व्याख्या- अभिज्ञानशाकुन्तलम् में दुष्यन्त का कथन-
'अथवाऽनार्यः परदारव्यवहारः' (अभि.-7) परस्त्री के विषय में बात करना अशिष्टता है।
(i) **'स्रजमपि शिरस्यन्धः क्षिप्तां धुनोत्यहिशङ्कया'** (अभि॰-7/24) अन्धा आदमी शिर पर डाली हुई फूलों की माला को भी साँप समझकर फेंक देता है।
(ii) **'उदेति पूर्वं कुसुमं ततः फलं घनोदयः प्राक् तदनन्तरं पयः।'** पहले फूल आते हैं, फिर फल होते हैं। पहले बादल आते हैं, तत्पश्चात् वर्षा होती है। (अभि॰7/30)
(iii) **'कुसुममिव लोभनीयं यौवनमङ्गेषु सन्नद्धम्।'** (अभि॰1/21) अंगों में फूल की तरह मनोहर यौवन व्याप्त है।
(iv) **'न प्रभातरलं ज्योतिरुदेति वसुधातलात्'** (अभि॰1/26) कान्ति से देदीप्यमान् तेज (विद्युत्) भूतल से उत्पन्न नहीं होता है।
(v) **'कामी स्वतां पश्यति'** (अभि॰2/2) कामी व्यक्ति सर्वत्र अपनी ही बात देखता है।
(vi) **'ईदृग् विनोदः कुतः'** (अभि॰2/5) इतना मनोरंजन और कहाँ?

कण्व का कथन-
(i) **'सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम्'** यह शकुन्तला पतिगृह को जा रही है, तुम सब अपनी स्वीकृति दो। (अभि॰4/9)
(ii) **'अस्यामहं त्वयि च सम्प्रति वीतचिन्तः।'** अब मैं इसकी और तेरी ओर से निश्चिन्त हो गया हूँ। (अभि॰4/13)

(iii) **'वनौकसोऽपि सन्तो लौकिकज्ञा वयम्'** (अभि॰/4) वनवासी होते हुये भी हम लोग लौकिक व्यवहार को जानते हैं।
(iv) **'शिवास्ते पन्थानः सन्तु।'** (अभि॰4/21) तुम्हारा मार्ग मंगलमय हो।
(v) **'अर्थो हि कन्या परकीय एव'** (अभि॰4/22) कन्या वस्तुतः पराई सम्पत्ति है।
(vi) **'यान्त्येवं गृहिणीपदं युवतयो वामाः कुलस्याधयः।'** (अभि॰4/18) स्त्रियाँ गृहलक्ष्मी के पद पर अधिकृत होती हैं और इसके विपरीत चलने वाली कुल के लिए अभिशाप होती हैं।

माढव्य विदूषक का कथन-

(i) **'अरण्ये मया रुदितमासीत्।'** (अभि॰-अङ्क2) मैंने अरण्य रोदन ही किया।
(ii) **'गण्डस्योपरि पिण्डकः संवृत्तः।'** (अभि॰ अङ्क 02) फोड़े पर फोड़ा हो गया है।
(iii) **'त्रिशङ्कुरिवान्तरा तिष्ठ'** (अभि॰-अङ्क 02) त्रिशङ्कु की तरह बीच में लटके रहिये।
(iv) **'भवितव्यता खलु बलवती'** (अभि॰-अङ्क 6) होनहार प्रबल होती है।
(v) **'कदापि सत्पुरुषाः शोकवास्तव्या न भवन्ति'** (अङ्क 6) सज्जन व्यक्ति कभी भी शोक के पात्र नहीं होते।
(vi) **'अवश्यमभाव्यचिन्तनीयः समागमो भवति'** (अङ्क-06) अवश्यंभावी मिलन अचानक ही होता है।

मातलि का कथन-

(i) **'अहो, उदाररमणीया पृथ्वी'** (अभि॰-7) अहो, यह पृथिवी कैसी विशाल मनोहर, दिख रही है।
(ii) **'उत्सर्पिणी खलु महतां प्रार्थना'** (अभि॰-7) महात्माओं की इच्छा सदा ऊर्ध्वगामिनी होती है।
(iii) **'अस्ति कालनेमिप्रसूतिर्दुर्जयो नाम दानवगणः।'** (अङ्क-07) कालनेमि के वंशज दुर्जय नामक राक्षसों का एक समुदाय है।
(iv) **'ज्वलति चलितेन्धनोऽग्निर्विप्रकृतः पन्नगः फणां कुरुते।'** (अभि॰7/31) अग्नि लकड़ियों को हिला देने से प्रज्वलित हो जाती है, साँप छेड़ने से फन को फैलाता है। इसी प्रकार मनुष्य भी प्रायः उत्तेजित होने पर अपने पराक्रम को प्राप्त होता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'अथवाऽनार्यः परदारव्यवहारः' यह उक्ति दुष्यन्त की है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत-अभिज्ञानशाकुन्तलम् (अङ्क-07)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 421

30. 'गुणः खलु अनुरागस्य कारणम्' यह उक्ति है?
(A) चारुदत्त की **(B)** मैत्रेय की
(C) शकार की **(D)** वसन्तसेना की

व्याख्या- शूद्रक प्रणीत मृच्छकटिकम् दश अङ्कों का प्रकरणग्रन्थ है जिसके नायक चारुदत्त और नायिका वसन्तसेना है।

वसन्तसेना का कथन-

(i) **गुणः खलु अनुरागस्य कारणं न पुनर्बलात्कारः (प्रथमोऽङ्क)** 'प्रेम तो गुण से होता है न कि बलात्कार से।'
(ii) **अपेयेषु तडागेषु बहुतरमुदकं भवति।** (मृच्छ अङ्क-02) जिन तालाबों का पानी पीने योग्य नहीं होता, उसमें पानी अधिक होता है।
(iii) **गणयामि नैव सर्वं दयिताभिमुखेन हृदयेन।** (04/33) हृदय से प्रियतम की ओर अभिमुख मैं (वसन्तसेना) इन सबकी परवाह नहीं करती हूँ।
(iv) **गणयन्ति न शीतोष्णं रमणाभिमुखाः स्त्रियः।** (मृच्छ॰5/16) रमणोत्सुक रमणी प्रियतम के पास जाने में शीत या ताप की चिन्ता नहीं करती।
(v) **पुरुषेषु न्यासा निक्षिप्यन्ते, न पुनर्गेहेषु** (अङ्क-01) धरोहर तो किसी योग्य पुरुष के हाथ में रखी जाती है, न कि योग्य घर में।

चारुदत्त के कथन-

(i) **अल्पक्लेशं मरणं दारिद्र्यमनन्तकं दुःखम्।** (1/11) यह दरिद्रता तो आजीवन दुःख भोगने को विवश कर देती है।
(ii) **अहो निर्धनता सर्वापदामास्पदम्** (मृच्छ-1/14) हाय, सारी विपत्तियों की जड़ यही दरिद्रता है।
(iii) **शङ्कनीया हि लोकेऽस्मिन् निष्प्रतापा दरिद्रता।** (5/43) क्योंकि इस संसार में गरीबी सबके संदेह का घर है।
(iv) **छिद्रेष्वनर्था बहुलीभवन्ति।** (मृच्छ॰9/26) आपत्ति के समय जरा सी भूल पाकर भी अनेक अनिष्ट एक साथ जुड़ जाते हैं।
(v) **अमौक्तिकमसौवर्णं ब्राह्मणानां विभूषणम्।
देवतानां पितॄणां भागो येन प्रदीयते॥** (मृच्छ॰10/18) बिना मोती और सोने का यह जनेऊ ही ब्राह्मणों का असली आभूषण है। इससे देवताओं तथा पितरों का भाग दिया जाता है।

मैत्रेय कथन- (i) **आर्य चारुदत्तो दरिद्रः संस्कृतः, तत् किं तस्य गुणैर्नालङ्कृता उज्जयिनी?** आर्य चारुदत्त निर्धन हो गये हैं, फिर भी क्या यह नगरी उज्जयिनी उनके गुणों से विभूषित नहीं है?
(ii) **'अलं परकलत्रदर्शनशङ्कया'** (मृच्छ-अङ्क॰1) परस्त्री समझकर सन्दिग्ध हो रहे हैं।

(iii) **'कामो वामः।'** (मृच्छ अङ्क-.5) काम सदा प्रतिकूल होता है।
(iv) **'त्वया विना अहं प्राणान् धारयामीति।'** (मृच्छ अङ्क-10) तुम्हारे बिना मैं जिन्दा नहीं रह सकता?

शकार का कथन-

(i) **'मम वशमनुयाता रावणस्येव कुन्ती।'** (मृच्छ.1/21) मेरे वश में उसी तरह आ गयी हो जैसे रावण के वश में कुन्ती हो गयी थी।
(ii) **'समन्तत उपस्थित एव राष्ट्रियबान्धः तत्किमिदानीमशरणः शरणं व्रजामि?'** (मृच्छ अङ्क 10) सब ओर राजा आर्यक के ही आत्मीय दिखाई पड़ रहे हैं। तो उस विपत्ति में मैं किसकी शरण जाऊँ।
(iii) **'नहि रत्नकुम्भसदृशोऽहं स्त्रियं व्यापादयामि।'** (मृच्छ-अङ्क 10) मणि कलश सदृश मेरे जैसा सत्पुरुष क्या नारी-हत्या करता है?

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वक्तव्यों से स्पष्ट है कि **'गुणः खलु अनुरागस्य कारणम्'** को कहने वाली वसन्तसेना है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- मृच्छकटिकम् (प्रथमोऽङ्क)- रमाशङ्कर त्रिपाठी, पेज 65

31. निर्वात दीपवत् चलत्व होता है?
(A) सविकल्पक समाधि का **(B)** सगुण ब्रह्म का
(C) जीव का **(D)** निर्विकल्पक समाधि का

व्याख्या- सदानन्द योगीन्द्र प्रणीत वेदान्तसार में दो समाधि बतायी गयी हैं- **सविकल्पक और निर्विकल्पक समाधिर्द्विविधः** सविकल्पको निर्विकल्पकश्चेति।

सविकल्पक समाधि-

सविकल्पको नाम ज्ञातृज्ञानादिविकल्पलयानपेक्षयाद्वितीय–वस्तुनि तदाकाराकारितायाश्चित्तवृत्तेरवस्थानम्।
ज्ञाता और ज्ञेय के भेद का लोप न होकर केवल अद्वितीय वस्तु के आकार से आकारित चित्तवृत्ति की स्थिति ही सविकल्पक समाधि है।

निर्विकल्पक समाधि-

निर्विकल्पकस्तु ज्ञातृज्ञानादिविकल्पलयापेक्षयाद्वितीयवस्तुनि तदाकाराकारितायाश्चित्तवृत्तेरतितरामेकीभावेनावस्थानम्।
किन्तु ज्ञाता एवं ज्ञेय के भेद का लोप होकर मात्र अद्वैतवस्तु ब्रह्म में तदाकार से आकारित चित्तवृत्ति का अत्यधिक एकीभाव से स्थित होना निर्विकल्पक समाधि है। निर्विकल्पक समाधि के विषय में पञ्चदशीकार कहते हैं-

ध्यातृ ध्याने परित्यज्य क्रमाद् ध्येयैकगोचरम्।
निर्वातदीपवच्चित्तं समाधिरभिधीयते॥

जिस समय चित्त, ध्याता एवं ध्यान की प्रतीति का परित्याग करके एकमात्र ध्येय ब्रह्मतत्त्व की अनुभूति करता है, उसे समाधि कहते हैं। इस अवस्था में चित्त वायुरहित स्थान में रखे दीपक के समान पूर्णतया निश्चल हो जाता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'निर्वात दीपवत् चलत्व' निर्विकल्पक समाधि होती है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

नोट :- उपर्युक्त प्रश्न में मुद्रण दोष होने के कारण आयोग ने इस प्रश्न के उत्तर को **F** माना है।

स्रोत- वेदान्तसार - राकेश शास्त्री, पेज 275

32. वेदान्तसार के अनुसार प्रयोजन नहीं है?
(A) दुःखनिवृत्ति
(B) अभ्युदयलाभ
(C) पाण्डित्य सम्पादन
(D) अज्ञाननिवृत्ति और स्वस्वरूपानन्दावाप्ति

व्याख्या- सदानन्द प्रणीत वेदान्तसार में चार अनुबन्धचतुष्टय अधिकारी, विषय, सम्बन्ध, प्रयोजन बताये गये हैं।

1.अधिकारी-

अधिकारी तु विधिवदधीतवेदवेदाङ्गत्वेनापाततोऽधिगताखिलवेदार्थोऽस्मिन् जन्मनि जन्मान्तरे वा साधनचतुष्टयसम्पन्नः प्रमाता।
अधिकारी तो वस्तुतः वह जिज्ञासु प्रमाता है जिसने वेद-वेदाङ्गों का विधिपूर्वक अध्ययन करके सम्पूर्ण वेदों के अभिप्राय को भली प्रकार जान लिया है। इस जन्म में अथवा पूर्वजन्म में कामनाओं को पूर्ण करने वाले काम्य कर्म तथा शास्त्रों द्वारा निषेध किये गये कर्मों को छोड़ने के साथ-साथ नित्य नैमित्तिक, प्रायश्चित्त और उपासनाकर्मों के अनुष्ठान से सम्पूर्ण पापों से मुक्त, अत्यधिक निर्मल अन्तःकरण वाला होकर साधनचतुष्टय को अपना लिया है।

2. विषय- विषय जीवब्रह्मैक्यं शुद्धचैतन्यं प्रमेयं तत्रैव वेदान्तानां तात्पर्यात् वेदान्त का प्रतिपाद्य विषय जीव और ब्रह्म की एकता है। शुद्धचैतन्य ही यहाँ प्रमा का विषय है।

3. सम्बन्ध- सम्बन्धस्तु तदैक्यप्रमेयस्तु तत्प्रतिपादकोपनिषत्प्रमाणस्य च बोध्यबोधकभावः।
ज्ञान के विषय उन जीव और ब्रह्म का ऐक्य एवं उनका प्रतिपादन करने वाले उपनिषद् रूप प्रमाणवाक्यों का परस्पर बोध्यबोधकभाव सम्बन्ध है।

4. प्रयोजन- प्रयोजनं तु तदैक्यप्रमेयगताज्ञाननिवृत्तिः स्वस्वरूपानन्दावाप्तिश्च ''तरति शोकमात्मवित्'' इत्यादिश्रुतेः। जबकि उस जीव एवं ब्रह्म के ऐक्यविषयक ज्ञान के साथ अज्ञान की निवृत्तिपूर्वक अपने स्वरूप का परिचय होने से चरम आनन्द की प्राप्ति ही इस शास्त्र का मुख्य प्रयोजन है।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि वेदान्तसार के अनुसार प्रयोजन दुःखनिवृत्ति, अभ्युदयलाभ, अज्ञाननिवृत्ति और स्वस्वरूपानन्दावाप्ति है। **अतः विकल्प C सही है।**
स्रोत- वेदान्तसार - राकेश शास्त्री, पेज 116,143,145

33. वेदान्तसार में लिङ्गशरीर है-
(A) षोडशावयव **(B)** पञ्चदशावयव
(C) एकादशावयव **(D)** सप्तदशावयव

व्याख्या- सदानन्द योगीन्द्र द्वारा प्रणीत वेदान्तसार प्रकरण ग्रन्थ है। वेदान्तसार में सत्रह (17) अवयव से लिङ्गशरीर बना है-
सूक्ष्मशरीराणि सप्तदशावयवानि लिङ्गशरीराणि। सूक्ष्मशरीर (लिङ्गशरीर) में सत्रह अवयव होते हैं-
ज्ञानेन्द्रियपञ्चकं बुद्धिमनसी कर्मेन्द्रियपञ्चकं वायुपञ्चकं चेति। पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पञ्चकर्मेन्द्रियाँ, पञ्चवायु, बुद्धि और मन यह कुल सत्रह अवयव हैं जिससे सूक्ष्म शरीर का निर्माण हुआ है।

* ईश्वरकृष्ण प्रणीत सांख्यकारिका में सूक्ष्मशरीर अठारह अवयवों से मिलकर उत्पन्न होता है।

पूर्वोत्पन्नमसक्तं नियतं महदादिसूक्ष्मपर्यन्तम्।
संसरति निरूपभोगं भावैरधिवासितं लिङ्गम्।। (सां का.-40)
सृष्टि के प्रारम्भ में उत्पन्न सर्वत्र गति करने में सक्षम, प्रलय-काल पर्यन्त स्थायी रूप से बहने वाला, महत् आदि से लेकर सूक्ष्म तन्मात्रापर्यन्त अठारह तत्त्वों से निर्मित, भोग-रहित, भावों से युक्त, लिङ्गशरीर संसार में गमनागमन करता है। अठारह तत्त्व इसप्रकार हैं- महत्, अहङ्कार,मन, पञ्च ज्ञानेन्द्रियाँ, पञ्च कर्मेन्द्रियाँ, पञ्चतन्मात्रायें।

* सदानन्द योगीन्द्र द्वारा प्रणीत वेदान्तसार में पञ्चीकरण की प्रक्रिया मुख्य है-

द्विधा विधाय चैकैकं चतुर्धा प्रथमं पुनः।
स्वस्वेतरद्वितीयांशैर्योजनात्पञ्च पञ्च ते।।
पञ्चीकृत महाभूतों को ही स्थूलभूत कहा जाता है।
सर्वप्रथम समान दो भागों में विभाजित करके, प्रत्येक को चार भागों में विभाजित करके, अपने-अपने अंश को छोड़कर अन्य भूतों के अर्धांश के साथ जोड़ने से वे पाँच (सूक्ष्मभूत) पाँच (स्थूलभूत) हो जाते हैं।

⇒ **षोडश- प्रकृतेर्महाँस्ततोऽहङ्कारस्तस्माद् गणश्च षोडशकः।**
तस्मादपि षोडशकात् पञ्चभ्यः पञ्चभूतानि।।
(सा.का.-22)
मूल प्रकृति से महत् (उत्पन्न होता है), उस महत् से अहङ्कार और उस अहङ्कार से सोलह पदार्थों का समूह प्रकट होता है। उसी सोलह के समूह में से पाँच तन्मात्राओं से पञ्चमहाभूत उत्पन्न होते हैं।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि वेदान्तसार के सूक्ष्म या लिङ्गशरीर में 'सप्तदशावयव' होते हैं।
अतः विकल्प 'D' सही है।
स्रोत- वेदान्तसार - राकेश शास्त्री, पेज 184

34. विश्वनाथ के मतानुसार हास्य होता है?
(A) द्विविध **(B)** त्रिविध
(C) चतुर्विध **(D)** षड्विध

व्याख्या- ⇒ **आचार्य विश्वनाथ के अनुसार हास्य रस के छः भेद-**
1. स्मित 2. हसित 3. विहसित 4. अवहसित
5. अपहसित 6. अतिहसित

हास्य भेद

(1) स्मित (2) हसित- उच्च श्रेणी
(3) विहसित (4) अवहसित- मध्यम श्रेणी
(5) अपहसित (6)अतिहसित- निम्न श्रेणी

⇒ **शृङ्गार रस- शृङ्गं हि मन्मथोद्भेदस्तदागमनहेतुकः**
उत्तमप्रकृतिप्रायो रसः शृङ्गार इष्यते।। (सा.द.3/183)
कामदेव के उद्भेद को शृङ्ग कहते हैं, उसकी उत्पत्ति का कारण,अधिकांश उत्तम प्रकृति से युक्त रस शृङ्गार कहलाता है।
शृङ्गार के भेद- (i) संभोग (ii) विप्रलम्भ
विप्रलम्भ शृङ्गार के भेद- (i)पूर्वराग (ii)मान,(iii) प्रवास, (iv) करुण

⇒ **वीररस का लक्षण-**
उत्तमप्रकृतिर्वीर उत्साहस्थायिभावकः।
महेन्द्रदैवतो हेमवर्णोऽयं समुदाहृतः।। (सा.द. 3/232)
उत्तम पात्र (रामादि) में आश्रित वीररस होता है। इसका स्थायीभाव उत्साह, देवता महेन्द्र और रंग सुवर्ण होता है।
स च दानधर्मयुद्धैर्दयया च समन्वितश्चतुर्धा स्यात्।
(सा.द.3/234)

वीररस के भेद- 1. दानवीर 2. धर्मवीर 3. दयावीर 4. युद्धवीर

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि हास्य के छः भेद होते हैं। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- साहित्यदर्पण - शालिग्राम शास्त्री, पेज 118

35. व्यायोग में नायक होता है?

(A) धीरप्रशान्त **(B)** धीरोदात्त
(C) धीरोद्धत **(D)** धीरललित

व्याख्या- ⇒ **नायक का लक्षण-**

त्यागी कृती कुलीनः सुश्रीको रूपयौवनोत्साही।
दक्षोऽनुरक्तलोकस्तेजोवैदग्ध्यशीलवान्नेता॥

(सा.द.3/30)

दाता, कृतज्ञ, पण्डित, कुलीन, लक्ष्मीवान् लोगों के अनुराग का पात्र, रूप, यौवन और उत्साह से युक्त, तेजस्वी, चतुर और सुशील पुरुष काव्यों में नायक होता है।

⇒ **नायक के भेद-**

धीरोदात्तो धीरोद्धतस्तथा धीरललितश्च।
धीरप्रशान्त इत्ययमुक्तः प्रथमश्चतुर्भेदः॥

(सा.द. 3/31)

धीरोदात्त, धीरोद्धत, धीरललित तथा धीरप्रशान्त ये नायक के प्रथम चार भेद हैं।

⇒ **धीरोदात्त का लक्षण-**

अविकत्थनः क्षमावानतिगम्भीरो महासत्त्वः।
स्थेयान्निगूढमानो धीरोदात्तो दृढव्रतः कथितः॥

(सा.द.3/32)

अविकत्थन अर्थात् अपनी प्रशंसा न करने वाला, क्षमायुक्त, अतिगम्भीर स्वभाव वाला, महासत्त्व अर्थात् हर्ष, शोकादि से अपने स्वभाव को नहीं बदलने वाला, स्थिर प्रकृति, विनय से प्रच्छन्न गर्व रखने वाला और दृढ़व्रत अपनी बात का पक्का और आन का पूरा पुरुष धीरोदात्त कहलाता है।

धीरोदात्त नायक का उदाहरण-

नाटकं ख्यातवृत्तं स्यात्पञ्चसन्धिसमन्वितम्।
प्रख्यातवंशो राजर्षिर्धीरोदात्तः प्रतापवान्।। (6-9)

नाटक में धीरोदात्त नायक होता है।अभिज्ञानशाकुन्तलम् में राजा दुष्यन्त और उत्तररामचरितम् में राजा राम धीरोदात्त नायक हैं।

⇒ **धीरोद्धत-**मायापरः प्रचण्डश्चपलोऽहंकारदर्पभूयिष्ठः। (3/33)
मायावी, प्रचण्ड, घमण्डी, शूर, अपनी तारीफ करने वाला धीरोद्धत नायक कहलाता है। जैसे- भीमसेन

'ख्यातेतिवृत्तो व्यायोगः स्वल्पस्त्रीजनसंयुतः भवेद्धीरोद्धतश्च सः।' (सा.द.-6/233)

व्यायोग में नायक प्रख्यात धीरोद्धत राजर्षि अथवा दिव्य पुरुष होता है। उदाहरण- सौगन्धिकाहरण (व्यायोग)

⇒ **धीरप्रशान्त-** सामान्यगुणैर्भूयान्द्विजादिको धीरशान्तः स्यात्। (3/34)
सामान्य गुणों से युक्त ब्राह्मणादिक 'धीरप्रशान्त' कहलाता है। जैसे- मृच्छकटिक का नायक चारुदत्त, मालतीमाधव में माधव।

भवेत्प्रकरणे वृत्तं लौकिकं कविकल्पितम्
सापायधर्मकामार्थपरो धीरप्रशान्तकः।(सा.द.-224-225)

प्रकरण में कथा लौकिक, कविकल्पित होती है। इसका नायक विघ्नपूर्ण धर्म, अर्थ, काम में तत्पर धीरप्रशान्त होता है।

धीरललित- निश्चिन्तो मृदुरनिशं कलापरो धीरललितः स्यात्। (3/34)

निश्चिन्त, अति कोमल स्वभाव, सदा नृत्य गीतादि कलाओं में प्रसक्त नायक धीरललित कहलाता है।

उदाहरण- रत्नावली का नायक-उदयन

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि व्यायोग का नायक धीरोद्धत होता है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- साहित्यदर्पण - शालिग्राम, पेज 65

36. ''अर्थे सत्यर्थभिन्नानां वर्णानां सा पुनः श्रुतिः'' यह लक्षण है?

(A) अनुप्रास का **(B)** यमक का
(C) श्लेष का **(D)** उपमा का

व्याख्या- यमक का लक्षण- आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश के नवें उल्लास में यमक का लक्षण करते हैं-

अर्थे सत्यर्थभिन्नानां वर्णानां सा पुनः श्रुतिःयमकम्।

अर्थ होने पर भिन्नार्थक वर्णों की उसी क्रम से पुनः श्रवण (पुनरावृत्ति) यमक नामक शब्दालङ्कार कहलाता है।

सन्नारीभरणोमायमाराध्य विधुशेखरम्।
सन्नारीभरणोऽमायस्ततस्त्वं पृथिवीं जय॥

सती नारियों का भरण करने वाली जो उमा अर्थात् पार्वती उसको प्राप्त करने वाले विधुशेखर शिव की आराधना करके शत्रुओं के हाथियों का विनाश करने वाले युद्ध के प्रवर्त्तक होकर उस शिव की आराधना से छल-कपट रहित आप पृथिवी का विजय करें।

साहित्यदर्पण के अनुसार यमक का लक्षण-

सत्यर्थे पृथगर्थायाः स्वरव्यञ्जनसंहतेः।
क्रमेणतेनैवावृत्तिर्यमकं विनिगद्यते। (सा.द.10/8)
उदाहरण- नवपलाशपलाशवनं पुरः स्फुटपराग-परागत-पंकजम्।
मृदुलतान्त-लतान्तमलोकयत्स सुरभिं सुरभिं सुमनोभरैः।।
जिसमें पलाशों (ढालों) का वन नवीन पलाशों से युक्त हो गया है और कमल बढ़े हुए पराग से परागत हो गये हैं एवं लतान्त जिसमें मृदुल (कोमल) और तान्त (विस्तृत, झुके हुए) हो गए हैं। पुष्पों की अधिकता से सुरभि उस सुरभि (वसन्त ऋतु) को श्रीकृष्ण ने रैवतक पर्वत पर देखा।
स्पष्टीकरण- 'पलाश पलाश' और सुरभिं सुरभिं इसमें दोनों पद सार्थक है' लतान्त, लतान्त में पहला निरर्थक है। क्योंकि इस लतान्त में 'ल' मृदुल शब्द से मिला है। पराग, पराग में दूसरा पराग निरर्थक है, क्योंकि इसमें गत शब्द का 'ग' मिलाया गया है।

⇒ **अनुप्रास- वर्णसाम्यमनुप्रासः** (का.प्र.9/103)
अनुप्रासः शब्दसाम्यं वैषम्येऽपि स्वरस्य यत्। (सा.द.10/3)
वर्णों की समानता अनुप्रास है।
उदाहरण- ततोऽरुणपरिस्पन्दमन्दीकृतवपुः शशी।
दध्रे कामपरिक्षामकामिनीगण्डपाण्डुताम्।।
यहाँ न्द-न्द, म-म, ण्ड-ण्ड, की बार-बार आवृत्ति होने से अनुप्रास है।

⇒ **श्लेष- वाच्यभेदेन भिन्ना यद् युगपद्भाषणस्पृशः।**
शिलष्यन्ति शब्दाः श्लेषोऽसावक्षरादिभिरष्टधा॥
(का.प्र.9/118)
शिलष्टैः पदैरनेकार्थाभिधाने श्लेष इष्यते। (सा.द.10/11)
यथा- पृथुकार्त्तस्वरपात्रं भूषितनिःशेषपरिजनं देव।
विलसत्करेणु गहनं सम्प्रति सममावयोः सदनम्।।
(का. प्र.9/371)
हे राजन्! इस समय हम दोनों का घर **(1) पृथुकार्त्तस्वरपात्रं** (i)बच्चों के रोने का स्थान तथा (ii)बड़े-बड़े सोने के पात्रों से युक्त **(2) भूषितनिःशेषपरिजन** (i) पृथिवी पर लोटते हुये परिजनों वाला तथा (ii) अलङ्कृत परिजनों वाला **(3) विलसत्करेणुगहनम्** (i) चूहों की मिट्टी से भरा हुआ तथा (ii) झूमती हुई हथिनियों से भरा हुआ होने से एक समान हो रहा है।

⇒ **उपमा- साधर्म्यमुपमा भेदे** (का.प्र. 10/124)
साम्यं वाच्यमवैधर्म्यं वाक्यैक्य उपमा द्वयोः भेद होने पर उनका साधर्म्य उपमा कहलाता है। (सा.द./14)
उदाहरण- चकितहरिणलोललोचनायाः क्रुधि तरुणारुणतार-हारिकान्तिः सरसिजमिदमाननं च तस्याः सममिति चेतसि सम्मदं विधत्ते।
स्पष्टीकरण- इसमें 'सरसिज' उपमान है,'आनन' उपमेय है,अरुण के समान 'कान्तिमत्त्व' साधारणधर्म और 'समम्' यह उपमानवाचक शब्द है, 'सम' के साथ समास न होने से वाक्यगा श्रौती उपमा है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**
स्रोत- काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज 409

37. संस्कृत भाषा में निम्नलिखित में से दीर्घ नहीं होता है?
(A) ऋकार का **(B)** अकार का
(C) इकार का **(D)** ऌकार का

व्याख्या- ⇒ अ इ उ ऋ इन वर्णों के 18 प्रभेद होते हैं।
अ इ उ ऋ एषां वर्णानां प्रत्येकमष्टादशभेदात्।
⇒ ऌ वर्ण के 12 प्रभेद होते हैं क्योंकि इसका (ऌ का) दीर्घ नहीं होता है। 'ऌवर्णस्य द्वादश तस्य दीर्घाभावात्'
⇒ एच् अर्थात् ए,ओ, ऐ, तथा औ में से प्रत्येक के 12 भेद होते हैं, क्योंकि इनका ह्रस्व नहीं होता।'एचामपि द्वादश तेषां ह्रस्वाभावात् '

वर्ण	**भेद**
अ इ उ ऋ	18 भेद (ह्रस्व, दीर्घ,प्लुत)
ऌ	12 भेद (ह्रस्व, प्लुत)
ए, ओ, ऐ, औ	12 भेद (दीर्घ, प्लुत)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि ऌकार का दीर्घ नहीं होता। 'ऌवर्णस्य द्वादश तस्य दीर्घाभावात्।'
अतः विकल्प 'D' सही है।
स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी - आद्यप्रसाद मिश्र, पेज 20-21

38. 'द्वियमुनम्' में समास है?
(A) द्विगु (B) द्वन्द्व
(C) अव्ययीभाव (D) तत्पुरुष

व्याख्या- सूत्र- नदीभिश्च-सूत्र से अव्ययीभाव समास
नदीभिश्च सूत्र से - संख्यावाची द्वि ओस् सुबन्त का नदी विशेष के वाचक यमुना ओस् सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास हुआ।
प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम् -सूत्र से द्वि ओस् की उपसर्जन संज्ञा हुई और
उपसर्जनं पूर्वम् - सूत्र से पूर्व निपात होकर द्वि ओस् यमुना ओस् बना।

कृत्तद्धितसमासाश्च - सूत्र से द्वि ओस् यमुना ओस् की प्रातिपदिक संज्ञा हुई।

सुपोधातुप्रातिपदिकयोः- सूत्र से सुप् दोनों ओस् का लोप होकर द्वियमुना बना।

अव्ययीभावश्च (2.4.18)- सूत्र से द्वियमुना की नपुंसकलिङ्ग संज्ञा हुई और

ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य- सूत्र से नपुंसकलिङ्ग द्वियमुना को ह्रस्व करके द्वियमुन किया।

ङ्याप्प्रातिपदिकात् - सूत्र से प्रथमा विभक्ति एकवचन की विवक्षा में सु की प्राप्ति होकर द्वियमुन सु बना।

अव्ययीभावश्च (1.1.41)- सूत्र से अव्यय संज्ञा हुई और

अव्ययादाप्सुपः- सूत्र से सुप् का लोप प्राप्त हुआ

नाव्ययीभावादतोऽमत्वपञ्चम्याः- सूत्र से सु के लोप का निषेध हुआ और सु के स्थान पर अम् आदेश होकर द्वियमुन + अम् बना। अमिपूर्वः- सूत्र से पूर्वरूप एकादेश होकर **द्वियमुनम्** बना।

द्विगु समास–इसका सूत्र है- **संख्यापूर्वो द्विगुः** (2.1.52) **'तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च'** सूत्र द्वारा तद्धितार्थ के विषय में उत्तरपद परे होने पर या समाहार अर्थ में जो तीन प्रकार का समास कहा गया है उस समास में संख्यावाची पूर्वपद हो तो वह समास द्विगुसंज्ञक होता है।

जैसे-

पञ्चगवम् - पञ्चानां गवां समाहारः

पञ्चपात्रम् - पञ्चानां पात्राणां समाहारः

त्रिभुवनम् - त्रयाणां भुवनानां समाहारः

चतुर्युगम् - चतुर्णां युगानां समाहारः

द्वन्द्व समास- सूत्र- चार्थे द्वन्द्वः (2.2.29)

च के अर्थ में वर्तमान अनेक सुबन्त परस्पर विकल्प से समास को प्राप्त होते हैं और वह समास द्वन्द्वसंज्ञक होता है।

उदाहरण-

हरिहरौ – हरिश्च हरश्च

पाणिपादम् - पाणी च पादौ च

पितरौ - माता च पिता च

द्वादश - द्वौ च दश च

तत्पुरुष समास- द्वितीया तत्पुरुष समास का विधान करने वाला सूत्र **द्वितीया श्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्ताऽपन्नैः** (2.1.23) द्वितीयान्त सुबन्त श्रित आदि प्रकृति वाले सुबन्तों के साथ विकल्प से समास होता है।

उदाहरण-

कृष्णश्रितः – कृष्णं श्रितः

कूपपतितः - कूपं पतितः

ग्रामगतः - ग्रामं गतः

सुखप्राप्तः - सुखं प्राप्तः

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि अव्ययीभाव समास का उदाहरण द्वियमुनम् है। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज 157

39. पक्वः में प्रत्यय है?

(A) क्त (B) क्तवतु

(C) घञ् (D) यत्

व्याख्या-

- क्तक्तवतू निष्ठा (1.1.26)- क्त और क्तवतु प्रत्यय निष्ठा संज्ञक होते हैं।
- निष्ठा (3.2.102)- सूत्र से क्त और क्तवतु प्रत्यय भूतकाल अर्थ में सभी धातुओं से लगाये जाते हैं।
- क्त और क्तवतु प्रत्ययों से बने पदों का तीनों लिङ्गों में रूप चलता है।

  पच् + क्त = 'लशक्वतद्धिते' सूत्र से आदि क् की इत्संज्ञा और 'तस्य लोपः' से लोप

  पच् + त = 'पचो वः' सूत्र से निष्ठा के तकार को वकार आदेश होकर

  पच् + व = अब प्रकृत वत्व के त्रिपादी में परत्वेन असिद्ध होने के कारण झल् वर्ण (त्) के परे होने से 'चोः कुः' सूत्र द्वारा पच् के चकार को कुत्व ककार करने पर विभक्ति 'पक्वः' प्रयोग सिद्ध होता है।
- क्त प्रत्यय में क् की 'लशक्वतद्धिते' सूत्र से इत्संज्ञा 'तस्य लोपः' से लोप होकर त शेष बचता है।

* यह प्रत्यय भाववाच्य एवं कर्मवाच्य में प्रयुक्त होता है।

क्त प्रत्ययान्त पदों की सूची

धातु+प्रत्यय	पु.	स्त्री.	नपुं.
पठ् + क्त	पठितः	पठिता	पठितम्
प्रच्छ् + क्त	पृष्टः	पृष्टा	पृष्टम्
नश् + क्त	नष्टः	नष्टा	नष्टम्
शक् + क्त	शक्तः	शक्ता	शक्तम्
प्रविश् + क्त	प्रविष्टः	प्रविष्टा	प्रविष्टम्
पा + क्त	पीतः	पीता	पीतम्
पच् + क्त	पक्वः	पक्वा	पक्वम्

इष् + क्त	इष्टः	इष्टा	इष्टम्
गॄ + क्त	गीर्णः	गीर्णा	गीर्णम्
छिद् + क्त	छिन्नः	छिन्ना	छिन्नम्
दह् + क्त	दग्धः	दग्धा	दग्धम्
दा + क्त	दत्तः	दत्ता	दत्तम्
दुह् + क्त	दुग्धः	दुग्धा	दुग्धम्
दृश् + क्त	दृष्टः	दृष्टा	दृष्टम्
धा + क्त	हितः	हिता	हितम्
नम् + क्त	नतः	नता	नतम्
ब्रू + क्त	उक्तः	उक्ता	उक्तम्
भञ्ज् + क्त	भुक्तः	भुक्ता	भुक्तम्
मुच् + क्त	मुक्तः	मुक्ता	मुक्तम्
यज् + क्त	इष्टः	इष्टा	इष्टम्
लभ् + क्त	लब्धः	लब्धा	लब्धम्
वच् + क्त	उक्तः	उक्ता	उक्तम्
शुष् + क्त	शुष्कः	शुष्का	शुष्कम्

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि पच् + क्त के योग से पक्वः बनेगा। **अतः विकल्प A सही है।**

स्रोत- रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज 201,202

40. 'वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि' यह सुभाषित है?
(A) रघुवंशम् में (B) उत्तररामचरितम् में
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में (D) वेणीसंहारम् में

व्याख्या- उत्तररामचरितम्- महाकवि भवभूति द्वारा विरचित उत्तररामचरितम् के द्वितीय अङ्क में वासन्ती कहती है-

वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि
लोकोत्तराणां चेतांसि को हि विज्ञातुमर्हति॥ (2/7)

वज्र से भी कठोर और फूल से भी कोमल महापुरुषों के चित्त को कौन जान सकता है?

अन्य सूक्तियाँ-

⇒ लक्ष्मण का कथन राम से- **अपि ग्रावा रोदित्यपि दलति वज्रस्य हृदयम्।** (1/28)
निर्जन जनस्थान में खिन्न चित्त आपके चरितों से पत्थर भी रो पड़ा था और वज्र का भी हृदय फट गया था।

⇒ **तमसा का कथन है-प्रसवः खलु प्रकर्षपर्यन्तः स्नेहस्य।** सन्तान वस्तुतः प्रेम की चरम सीमा होती है।

➤ महाकवि कालिदास प्रणीत **रघुवंश महाकाव्य** के द्वितीय सर्ग में गो सेवा व्रत के सन्दर्भ में कहा गया है-
स्ववीर्यगुप्ता हि मनोः प्रसूतिः (2/4)
मनु के वंश में उत्पन्न राजा लोग अपने ही पराक्रम से आत्मरक्षा कर लेते थे।

अन्य सूक्तियाँ-

* **छायेव तां भूपतिरन्वगच्छत्** (2/6) राजा दिलीप ने नन्दिनी गाय की छाया की भाँति अनुसरण किया।
* **धेनुर्दिनक्षपामध्यगतेव सन्ध्या** (2/20)- सुदक्षिणा और दिलीप के बीच में दिन और रात्रि के मध्य में स्थित (नन्दिनी) सन्ध्याकाल की भाँति सुशोभित हुई।
* **'सम्बन्धमाभाषणपूर्वमाहुः'** (2/58)- सम्बन्ध (मैत्री) तो बातचीत से उत्पन्न हुआ करते हैं। ऐसा लोग कहते हैं।

⇒ **अभिज्ञानशाकुन्तलम् -** महाकवि कालिदास द्वारा रचित प्रसिद्ध नाटक अभिज्ञानशाकुन्तलम् है। इसके नायक दुष्यन्त और नायिका शकुन्तला है। अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में शिष्य कहता है-

इष्टप्रवासजनितान्यबलाजनस्य
दुःखानि नूनमतिमात्रसुदुः सहानि। (4/3)

वस्तुतः स्त्रियों को अपने इष्ट व्यक्ति के प्रवास से उत्पन्न दुःख अत्यन्त असह्य होते हैं।

शारद्वत का कथन है-

➤ **'उपपन्ना हि दारेषु प्रभुता सर्वतोमुखी'** (5/26)- पत्नी पर (पति) की सब प्रकार की प्रभुता स्वीकार की गयी है।

➤ **अनसूया का कथन- 'गुर्वपि विरहदुःखमाशाबन्धः साहयति।'** (4/16)- आशा का बन्धन विरह के कठोर दुःख को भी सहन करा देता है।

⇒ **वेणीसंहारम्-** भट्टनारायण प्रणीत वेणीसंहार नाटक है। वेणीसंहार के द्वितीयाङ्क में राजा कहता है कि- **'अहो मुग्धत्वमबलानाम्'।** अबलाओं की मूर्खता धन्य है।

कर्ण का कथन- 'दैवायत्तं कुले जन्म मदायत्तं तु पौरुषम्।' (3/7)
कुल में जन्म होना भाग्य के अधीन होता है परन्तु पौरुष तो मुझ पर ही निर्भर है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि वज्रादपि कठोराणि....यह सूक्ति उत्तररामचरितम् से उद्धृत है।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- उत्तररामचरितम् (2/7)- आनन्दस्वरूप, पेज 169

41. ''गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः'' यह सूक्ति किस ग्रन्थ में है?

(A) उत्तररामचरितम् में
(B) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में
(C) मृच्छकटिकम् में
(D) मालविकाग्निमित्रम् में

व्याख्या- उत्तररामचरितम् के चतुर्थ अङ्क में अरुन्धती का कथन है- **शिशुर्वा शिष्या वा यदसि मम तत्तिष्ठतु तथा विशुद्धेरुत्कर्षस्त्वयि तु मम भक्तिं दृढयति।**
शिशुत्वं स्त्रैणं वा भवतु ननु वन्द्यासि जगतां
गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः॥
(उत्तर.4/11)

गुणवानों में गुण ही पूजा के योग्य होते हैं, न कोई चिह्न-विशेष और न आयु।

⇒ **उत्तररामचरितम् की अन्य सूक्तियाँ-** अरुन्धती का कथन दशरथ से-
पुरन्ध्रीणां चित्तं कुसुमसुकुमारं हि भवति। (4/12)
कुलीन स्त्रियों का चित्त फूल के समान कोमल होता है।
वनदेवता तापसी से कहती है-

➢ **सतां सद्भिः सङ्गः कथमपि हि पुण्येन भवति।** (2/1)- सज्जनों का सज्जनों से मिलन बड़े पुण्य से होता है।

➢ तापसी वनदेवता से कहती है-
रहस्यं साधूनामनुपधि विशुद्धं विजयते। (2/2)
एक सा प्रेम वाला, निश्छल और विशुद्ध सज्जनों का चरित (सदा) विजय को प्राप्त होता है।

⇒ **अभिज्ञानशाकुन्तलम्-** प्रियंवदा अनसूया से कहती है-
तादृशा आकृतिविशेषा गुणविरोधिनो भवन्ति।
सुन्दर आकृतियाँ गुणों से रहित नहीं होती हैं।

⇒ **मृच्छकटिकम्-** वसन्तसेना शकार से कहती है-
गुणः खल्वनुरागस्य कारणम् न पुनर्बलात्कारः।
गुण ही अनुराग का कारण होता है, न कि बलात्कार।

⇒ **मालविकाग्निमित्रम्-** कालिदास मालविकाग्निमित्रम् में कहते हैं- **पुराणमित्येव न साधु सर्वम्** (1/2)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'गुणाः पूजास्थानं' यह सूक्ति उत्तररामचरितम् से ली गयी है। **अतः विकल्प A सही है।**

स्रोत- उत्तररामचरितम् (4/11)- आनन्दस्वरूप, पेज 347

42. 'चण्डीशतक' के रचयिता कौन हैं?

(A) मयूरभट्ट (B) बाणभट्ट
(C) रामानुजाचार्य (D) भर्तृहरि

व्याख्या-

लेखक	**ग्रन्थ**
बाणभट्ट	चण्डीशतक, कादम्बरी, हर्षचरित, मुकुटताडितक, पार्वती-परिणय।
मयूरभट्ट	सूर्यशतकम्
रामानुजाचार्य	श्रीभाष्य
भर्तृहरि	नीतिशतकम्, शृङ्गारशतकम्, वैराग्यशतकम् वाक्यपदीयम्।
हर्ष	प्रियदर्शिका, रत्नावली, नागानन्द
त्रिविक्रमभट्ट	नलचम्पू, मदालसाचम्पू
गुणाढ्य	बृहत्कथा
भवभूति	उत्तररामचरितम्, मालतीमाधवम्, महावीरचरितम्।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि 'चण्डीशतक' बाणभट्ट की रचना है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत - संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा ऋषि, पेज 395

43. एक मात्र वर्ण ''दकार'' का प्रयोग करते हुए जिस महाकवि ने पद्य निर्मित किया है, वे हैं-

(A) कालिदास (B) माघ
(C) भारवि (D) भवभूति

व्याख्या- बृहत्त्रयी का द्वितीय काव्य अपनी विशिष्ट काव्य शैली के लिए प्रख्यात 'शिशुपालवध' है। संस्कृत साहित्य में बृहत्त्रयी किरातार्जुनीयम्, शिशुपालवधम् तथा नैषधीयचरितम् का बड़ा आदर है। शिशुपालवध के कर्ता का नाम माघ है। माघ के दादा का नाम सुप्रभदेव था। वे वर्मलात, नामक राजा जो गुजरात के किसी प्रदेश का शासक था, उसके प्रधानमन्त्री थे। माघ के पिता का नाम दत्तक (सर्वाश्रय) था। ये बड़े विद्वान् तथा दानी थे। माघ का जन्म भीनमाल में हुआ था। माघ का समय सातवीं शताब्दी का उत्तरार्ध माना जाता है। इनका एकमात्र महाकाव्य 'शिशुपालवध' ही है। शिशुपालवध के अन्त में कविवंशवर्णन दिया गया है-

सर्वाधिकारी सुकृताधिकारी
श्रीवर्मलाख्य तस्य बभूव राज्ञः।
असक्तदृष्टिर्विरजाः सदैव
देवोऽपरः सुप्रभदेवनामा॥

शिशुपालवधम्- यह माघकवि की एकमात्र कृति 20

सर्गों के महाकाव्य के रूप में है। पाँच पद्य कवि वंश वर्णन के हैं उन्हें जोड़कर माघ की रचना 1650 पद्यों की है। एक मात्र वर्ण दकार का प्रयोग करते हुए महाकवि माङ ने यह पद्य निर्मित किया है

दाददो दुद्ददुद्दादी दाददो दूददीददोः।
दुद्दादं दददे दुद्दे ददाददददोऽददः॥ (19/114)

भारवि- 'किरातार्जुनीयम्' महाकाव्य के रचयिता के रूप में संस्कृत महाकाव्यों के इतिहास में भारवि विख्यात हैं। इन्होंने महाकाव्य के लेखन में विचित्रमार्ग का प्रवर्तन किया जिसमें भावपक्ष की अपेक्षा कलापक्ष पर ही अधिक बल रहता है। भारवि दण्डी के प्रपितामह थे और उनका वास्तविक नाम दामोदर था। भारवि के पिता का नाम श्रीधर या नारायणस्वामी था। दण्डी दामोदर (भारवि) के प्रपौत्र थे।

किरातार्जुनीय- यह भारवि की एकमात्र उपलब्ध कृति है। इस महाकाव्य में 18 सर्ग हैं। इसका कथानक महाभारत के वनपर्व के कुछ अध्यायों पर आश्रित है। इसीलिए इसका शीर्षक है- किरातार्जुनीयम्। किरातः (किरातवेशधारी शिवः) च अर्जुनश्च किरातार्जुनौ (द्वन्द्व समास)। इस महाकाव्य के

⇒ नायक अर्जुन धीरोदात्त कोटि के हैं, इसमें वीररस प्रमुख है, शृङ्गार रस अङ्ग के रूप में है। इस महाकाव्य पर मल्लिनाथ ने घण्टापथ नामक टीका लिखी है, 15वें सर्ग पर दुर्विनीत ने भारवि के काल में ही टीका लिखी थी।

⇒ यहाँ एकाक्षर केवल एक नकार व्यञ्जन का प्रयोग करने वाले पद्य का उदाहरण दिया जा रहा है-

न नोननुन्नो नुन्नोनो नाना नानानना ननु।
नुन्नोऽनुन्नो ननुन्नेनो नानेना नुन्ननुन्ननुत्॥ (15/14)

नानाननाः - हे अनेक मुखवाले सैनिकों
ऊननुन्नः - निष्कृष्ट व्यक्ति के द्वारा आहत पुरुष
(ना नू) - वस्तुतः पुरुष नहीं है।
नुन्नोनः - जिससे न्यूनता को नष्ट कर दिया है
ना ननु अना - पुरुष वस्तुतः पुरुष से भिन्न अर्थात् देवता है।
न- नुन्नेनः - जिसका स्वामी अनाहत या अक्षत है वह
नुन्नः अनुन्नः - आहत होने पर भी आहत नहीं है।
नुन्न नुन्ननुत् - अत्यधिक आहत व्यक्ति को क्षति पहुँचाने वाला
न अनेनाः - अपराध-मुक्त नहीं हो सकता

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि एकमात्र वर्ण दकार का प्रयोग करने वाले महाकवि माघ हैं। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- शिशुपालवधम् (19/114)- हरगोविन्द शास्त्री, पेज 894

44. शकुन्तला की अँगूठी किस स्थान पर गिरी थी?
(A) सोमतीर्थ (B) शचीतीर्थ
(C) कण्वाश्रम (D) प्रभासतीर्थ

व्याख्या- कालिदास विरचित अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के प्रथम अङ्क में वैखानस द्वारा कण्व के सोमतीर्थ जाने के विषय में दुष्यन्त को बताया जा रहा है-

वैखानस-

इदानीमेव दुहितरं शकुन्तलामतिथिसत्काराय
नियुज्य दैवमस्याः प्रतिकूलं शमयितुं सोमतीर्थं गतः॥

तापस- (कण्व) अभी अपनी पुत्री शकुन्तला को अतिथि-सत्कार के कार्य में नियुक्त करके उसके प्रतिकूल भाग्य को शान्त करने के लिए सोमतीर्थ गए हैं।

⇒ **शचीतीर्थ-** गौतमी- नूनं ते शक्रावताराभ्यन्तरे शचीतीर्थसलिलं वन्दनायाः प्रभ्रष्टमङ्गुलीयकम्।
अवश्य ही शक्रावतार तीर्थ में शचीतीर्थ के जल की वन्दना करते समय तेरी (शकुन्तला की) अंगूठी गिर गई है।

⇒ **कण्वाश्रम-** एष खलु कण्वस्य कुलपतेरनुमालिनीतीरमाश्रमो दृश्यते।
वैखानस कहता है राजा दुष्यन्त से- यह सामने मालिनी नदी के किनारे कुलपति कण्व का आश्रम दिखाई पड़ रहा है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि शकुन्तला की अँगूठी शचीतीर्थ में गिर गयी थी। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज 283

45. नलचम्पू महाभारत के किस पर्व से सम्बन्धित है?
(A) सभापर्व (B) भीष्मपर्व
(C) वनपर्व (D) द्रोणपर्व

व्याख्या-

ग्रन्थ	ग्रन्थकार	उपजीव्य ग्रन्थ
नलचम्पू –	त्रिविक्रमभट्ट	– महाभारत का वनपर्व
किरातार्जुनीयम् –	भारवि	– महाभारत का वनपर्व
नैषधीयचरितम् –	श्रीहर्ष	– महाभारत का वनपर्व
पञ्चरात्रम् –	भास	– महाभारतम्
मध्यमव्यायोग –	भास	– महाभारतम्
ऊरुभङ्ग –	भास	– महाभारतम्
कर्णभारम् –	भास	– महाभारतम्
दूतघटोत्कचम् –	भास	– महाभारतम्
बालचरितम् –	भास	– महाभारतम्

वेणीसंहार –	भट्टनारायण	– महाभारत का सभापर्व
अभिज्ञानशाकु.-	कालिदास	– महाभारत का आदिपर्व
शिशुपालवधम् –	माघ	– महाभारत का सभापर्व
श्रीमद्भगवद्गीता –	वेदव्यास	– महाभारत का भीष्मपर्व

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि नलचम्पू महाभारत के वनपर्व से सम्बन्धित है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- नलचम्पू - तारिणीश झा, पेज भू. 21

46. नलचम्पू में जो अलङ्कार बहुलता पूर्वक प्रयुक्त हुआ है-
(A) यमक (B) अनुप्रास
(C) रूपक (D) श्लेष

व्याख्या- श्लेषालङ्कार- त्रिविक्रमभट्ट द्वारा रचित नलचम्पू के प्रथमोच्छ्वास में सभंगश्लेष की विशेषता बतायी गयी है-

* **वाचः काठिन्यमायान्ति भङ्गश्लेषविशेषतः।**
नोद्वेगस्तत्र कर्तव्यो यस्मानैको रसः कवेः॥ (1/16)
काव्य की वाणियाँ सभंगश्लेष की विशेषता से कठिन हो जाती है पर उससे घबराना नहीं चाहिये। क्योंकि कवि के लिए एक ही रस नहीं है।
* **प्रसन्नाः कान्तिहारिण्यो नानाश्लेषविचक्षणाः।** (1/4)
पुण्यों से ही किसी के मुख में प्रसादगुण युक्त, औज्ज्वल्य रूप कान्तिगुण के कारण मनोहर तथा अनेक प्रकार के श्लेषालङ्कारों को प्रकट करने वाली वाणियाँ होती है।
* **भङ्गश्लेषकथाबन्धं दुष्करं कुर्वता मया।** (1/22)
कठिन सभङ्गश्लेषमय कथाकाव्य की रचना करके मैंने मानों दुर्गम समुद्र को भुजाओं से तैरना आरम्भ किया है।

⇒ **यमक-** भारवि कृत किरातार्जुनीयम् में यमक अलंकार का प्रयोग किया गया है-

वनान्तशय्याकठिनीकृताकृती,
कचाचितौ विष्वगिवागजौ गजौ।
कथं त्वमेतौ धृतिसंयमौ यमौ,
विलोकयन्नुत्सहसे न बाधितुम्॥ (1/36)

धृतिसंयमौ यमौ, अगजौ गजौ में यमक अलङ्कार है।

रूपक- जयति गिरिसुतायाः कामसन्तापवाहिन्।
उरसि रसनिषेकश्चान्दनश्चन्द्रमौलिः।। (नलचम्पू 1/1)
इस श्लोक में रूपक अलङ्कार है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'नलचम्पू' में श्लेष अलङ्कार की बहुलता है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- नलचम्पू - तारिणीश झा, पेज भू. 21

47. 'बोध्यबोधकभावलक्षणः' किसको अभिव्यक्त करता है?
(A) अधिकारी को (B) विषय को
(C) सम्बन्ध को (D) प्रयोजन को

व्याख्या- सदानन्द योगीन्द्र प्रणीत वेदान्तसार में अनुबन्ध चतुष्टय के अन्तर्गत अधिकारी, विषय, सम्बन्ध और प्रयोजन को बताते हैं-

(i) **अधिकारी-**अधिकारी तु विधिवदधीतवेदवेदाङ्गत्वेनापाततोऽधिगताखिलवेदार्थोऽस्मिन्...........साधनचतुष्टय-सम्पन्नः प्रमाता।।
जिसने इस जन्म में अथवा अन्य जन्मों में वेदों और वेदाङ्गों का विधिपूर्वक अध्ययन करने के द्वारा..... जो साधनचतुष्टय से सम्पन्न है, ऐसा प्रमाता पुरुष अधिकारी है।

(ii) **विषय-** विषयो जीवब्रह्मैक्यं शुद्धचैतन्यं प्रमेयं तत्रैव वेदान्तानां तात्पर्यात्। विषय है- जीव और ब्रह्म की एकता।

(iii) **सम्बन्ध-** सम्बन्धस्तु तदैक्यप्रमेयस्य तत्प्रतिपादकोपनिषत्प्रमाणस्य च बोध्यबोधकभावलक्षणः। जीव और ब्रह्म के ऐक्य रूप प्रमेय और उसका प्रतिपादन करने वाले उपनिषद् रूप प्रमाण का परस्पर बोध्यबोधकभाव ही इस शास्त्र का सम्बन्ध है।

(iv) **प्रयोजन-** जीव और ब्रह्म की एकता रूप प्रमेय के सम्बन्ध में जो अज्ञान है उसकी निवृत्ति होना और अपने वास्तविक स्वरूप आनन्द की प्राप्ति होना ही प्रयोजन है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'बोध्यबोधकभाव' लक्षण **सम्बन्ध** को अभिव्यक्त करता है।

अतः विकल्प 'C' सही है।

स्रोत - वेदान्तसार - राकेशशास्त्री, पेज. 143

48. वैशेषिकदर्शन में प्रमाण के कितने भेद उपदिष्ट हैं?
(A) 4 (B) 6
(C) 2 (D) 5

व्याख्या- वैशेषिक दर्शन **दो प्रमाण** को स्वीकार करता है- प्रत्यक्ष और अनुमान। उपमान और शब्द प्रमाण को वैशेषिकों ने अनुमान में ही अन्तर्भाव किया है।
(संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इति.- बलदेव उपा. पेज-229)

➢ **न्यायदर्शन चार प्रमाण** को मानता है-
(1) प्रत्यक्ष (2) अनुमान (3) उपमान और (4) शब्द
'प्रत्यक्षानुमानोपमानशब्दाः प्रमाणानि' (न्यायसूत्र- 1.1.6)

➢ **मीमांसक**- मीमांसक लोग **पाँच प्रमाण** स्वीकार करते (प्रभाकर मिश्र) हैं-
1. प्रत्यक्ष 2. अनुमान 3. उपमान 4. शब्द 5. अर्थापत्ति

- अद्वैतवेदान्ती और भाट्ट मीमांसक- यह लोग **छः प्रमाण** को मानते हैं-1. प्रत्यक्ष 2. अनुमान 3. उपमान 4 शब्द 5. अर्थापत्ति 6. अभाव
- वैशेषिक दर्शन-दो प्रमाण- 1. प्रत्यक्ष 2. अनुमान
- जैन दर्शन + बौद्ध दर्शन दो प्रमाण- 1. प्रत्यक्ष 2.अनुमान
- सांख्य दर्शन के प्रमाण- 1. प्रत्यक्ष 2. अनुमान 3. आप्तवचन
- न्यायदर्शन के प्रमाण- 1. प्रत्यक्ष 2. अनुमान 3. उपमान 4.शब्द
- प्राभाकर मीमांसक के प्रमाण- 1. प्रत्यक्ष 2. अनुमान 3. उपमा 4.शब्द 5. अर्थापत्ति

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि वैशेषिक दर्शन दो प्रमाण को ही मानता है।

अतः विकल्प 'C' सही है।

स्रोत - सर्वदर्शनसंग्रह-उमाशङ्कर शर्मा ऋषि, पेज 88

49. चार्वाक दर्शन में कितने प्रमाण हैं?

(A) 3 **(B)** 4
(C) 5 **(D)** 2

व्याख्या- ⇒ **चार्वाक दर्शन-** केवल एक प्रमाण (प्रत्यक्ष) को ही स्वीकार करता है।

'प्रत्यक्षैकप्रमाणवादितया अनुमानादेः अनङ्गीकारेण प्रामाण्याभावात्॥' अर्थात् ये केवल प्रत्यक्षज्ञान को ही प्रमाण मानते हैं, अनुमानादि को अस्वीकार करने से उनको प्रमाण नहीं माना जाता।

' **प्रत्यक्षमेव प्रमाणम्'** प्रत्यक्ष ही एकमात्र प्रमाण है।

⇒ **सांख्यदर्शन-** सांख्यदर्शन तीन प्रमाण स्वीकार करता है-
दृष्टमनुमानमाप्तवचनं च सर्वप्रमाणसिद्धत्वात्।
त्रिविधं प्रमाणमिष्टं प्रमेयसिद्धिः प्रमाणाद्धि (का.-4)
अर्थात् सांख्य दृष्ट (प्रत्यक्ष), अनुमान और आप्तवचन (शब्द) इन तीन को प्रमाण मानते हैं क्योंकि प्रमाणों से ही प्रमेयसिद्धि होती है।

⇒ **न्यायदर्शन-** नैयायिक चार प्रमाणों को मानते हैं-
प्रत्यक्षानुमानोपमानशब्दाः प्रमाणानि (न्यायसूत्र-1.1.6)
प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द ये ही चार प्रमाण हैं।

⇒ **बौद्धदर्शन-** बौद्धदर्शन दो प्रमाण स्वीकार करता है-
प्रत्यक्षमनुमानं च प्रमाणद्वितीयं अर्थात् प्रत्यक्ष और अनुमान ये केवल दो प्रमाण हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि चार्वाक दर्शन मात्र एक प्रमाण प्रत्यक्ष को ही स्वीकार करता है, परन्तु विकल्प में एक नहीं दिया गया है।

नोट :- उपर्युक्त प्रश्न का विकल्प समीचीन न होने के कारण आयोग के द्वारा इस प्रश्न के उत्तर को **F** कर दिया गया है।

स्रोत - सर्वदर्शनसंग्रह-उमाशङ्कर शर्मा ऋषि, पेज 04

50. श्रीभगवद्गीता के द्वितीय अध्याय का नाम है?

(A) कर्मयोग **(B)** सांख्ययोग
(C) ज्ञानकर्मसंन्यासयोग **(D)** कर्मसंन्यासयोग

व्याख्या- गीता महाभारत के भीष्मपर्व से ली गयी है, जिसमें 18 अध्याय और 700 श्लोक हैं। इसके प्रत्येक अध्याय का नाम और श्लोक संख्या इसप्रकार है-

अध्याय नाम		श्लोकों की संख्या
1. अर्जुन विषादयोग	–	47
2. सांख्ययोग	–	72
3. कर्मयोग	–	43
4. ज्ञानकर्मसंन्यासयोग	–	42
5. कर्मसंन्यासयोग	–	29
6. आत्मसंयमयोग	–	47
7. ज्ञानविज्ञानयोग	–	30
8. अक्षरब्रह्मयोग	–	28
9. राजविद्याराजगुह्ययोग	–	34
10. विभूतियोग	–	42
11. विश्वरूपदर्शन योग	–	55
12. भक्तियोग	–	20
13. क्षेत्रक्षेत्रज्ञविभागयोग	–	34
14. गुणत्रयविभाग योग	–	27
15. पुरुषोत्तम योग	–	20
16. देवासुरसम्पत् विभागयोग	–	24
17. श्रद्धात्रयविभाग योग	–	28
18. मोक्षसंन्यास योग	–	78
कुल श्लोक		= 700

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि श्रीमद्भगवद्गीता के द्वितीय अध्याय का नाम 'सांख्ययोग' है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- श्रीमद्भगवद्गीता - गीताप्रेस, पेज 47

51. साक्षात् संकेतित अर्थ की बोधक शक्ति है-

(A) तात्पर्या **(B)** अभिधा
(C) लक्षणा **(D)** व्यञ्जना

व्याख्या- आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश के द्वितीयोल्लास में अर्थ के तीन भेद बताते हैं- वाच्य, लक्ष्य, व्यङ्ग्य।

वाचक वाच्यार्थ = अभिधा, लाक्षणिक-लक्ष्यार्थ = लक्षणा, व्यञ्जक व्यङ्ग्यार्थ = व्यञ्जना

अभिधा को परिभाषित करते हुए मम्मट कहते हैं कि-

स मुख्योऽर्थस्तत्र मुख्यो व्यापारोऽस्याभिधोच्यते।

(का.प्र.सूत्र-11)

वह साक्षात् संकेतित अर्थ ही मुख्य अर्थ है उसका बोध कराने में जिस शब्द का व्यापार होता है वही अभिधा शक्ति कहलाती है।

⇒ **लक्षणा-** आचार्य मम्मट लक्षणा का लक्षण करते हैं-

मुख्यार्थबाधे तद्योगे रूढितोऽथ प्रयोजनात्।
अन्योऽर्थो लक्ष्यते यत् सा लक्षणारोपिता क्रिया॥

(का.प्र. सूत्र-12)

(1) मुख्यार्थ का बाध (2) उस मुख्यार्थ के साथ लक्ष्यार्थ का सम्बन्ध (3) रूढ़ि अथवा प्रयोजन विशेष के द्वारा अन्य अर्थ लक्षित होता है।

इन तीनों से युक्त होने पर आरोपित व्यापार लक्षणा है।

⇒ **व्यञ्जना-** आचार्य मम्मट व्यञ्जना व्यापार का लक्षण करते हैं-

यस्य प्रतीतिमाधातुं लक्षणा समुपास्यते।
फले शब्दैकगम्येऽत्र व्यञ्जनान्नापरा क्रिया॥ (सू.-23)

जिस प्रयोजन की प्रतीति कराने के लिए लक्षणा शब्द का आश्रय लिया जाता है केवल शब्द से गम्य उस फल के विषय में व्यञ्जना के अतिरिक्त और कोई व्यापार नहीं हो सकता है।

⇒ **तात्पर्या-** आचार्य मम्मट बताते हैं कि मीमांसक तात्पर्या शक्ति को भी मानते हैं-

तात्पर्यार्थोऽपि केषुचित् (सू.-7)

कुछ मीमांसक तात्पर्यार्थ को भी मानते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि साक्षात् संकेतित अर्थ का बोध कराने वाली अभिधा है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज 42

52. आचार्य मम्मट द्वारा स्वीकृत रसदोषों की संख्या है-

(A) बारह **(B)** चौदह
(C) तेरह **(D)** ग्यारह

व्याख्या- आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश के सातवें उल्लास में दोष का लक्षण करते हुये कहते हैं-

मुख्यार्थहतिर्दोषो रसश्च मुख्यस्तदाश्रयाद् वाच्यः।

मुख्यार्थ (रस) का अपकर्ष जिससे होता है उसको दोष कहते हैं।

⇒ **रसदोष-** मम्मट **13 रसदोषों** की चर्चा करते हैं-

व्यभिचारिरसस्थायिभावानां शब्दवाच्यता
कष्टकल्पनया व्यक्तिरनुभावविभावयोः॥60॥
प्रतिकूलविभावादिग्रहो दीप्तिः पुनः पुनः।
अकाण्डे प्रथनच्छेदौ अङ्गस्याप्यतिविस्तृतिः॥61॥

(का.प्र.सू.-81)

(1) व्यभिचारिभावों (2) रसों
(3) स्थायिभावों का अपने वाचक शब्द द्वारा कहना,
(4) अनुभाव
(5) विभाव की कष्टकल्पना से अभिव्यक्ति
(6) (रस के) प्रतिकूल विभाव आदि का ग्रहण करना
(7) (रस की) बार-बार दीप्ति
(8) (रस का) अनवसर में विस्तार कर देना
(9) अनवसर में विच्छेद कर देना
(10) अप्रधान (अङ्ग रस) का भी अत्यधिक विस्तार कर देना।
(11) (अङ्गी) प्रधान रस को त्याग देना (भुला देना),
(12) प्रकृतियों (पात्रों) का विपर्यय कर देना
(13) अनङ्ग का कथन

इस प्रकार रस में रहने वाले 13 दोष होते हैं।

⇒ आचार्य मम्मट ने **16 पदगत दोष** माने हैं-

दुष्टं पदं श्रुतिकटु च्युतसंस्कृत्यप्रयुक्तमसमर्थम्।
निहतार्थमनुचितार्थं निरर्थकवाचकं त्रिधाऽश्लीलम्
सन्दिग्धमप्रतीतं ग्राम्यं नेयार्थमथ भवेत् क्लिष्टम्।
अविमृष्टविधेयांशं विरुद्धमतिकृत् समासगतमेव॥

(का.प्र.सू.72)

(1) श्रुतिकटु (2) च्युतसंस्कार
(3) अप्रयुक्त (4) असमर्थ
(5) निहतार्थ (6) अनुचितार्थ
(7) निरर्थक (8) अवाचक
(9) तीन प्रकार का अश्लील (10) सन्दिग्ध
(11) अप्रतीत (12) ग्राम्य
(13) नेयार्थ (ये पदगत व समास दोनों में होते हैं।)
(14) क्लिष्ट (15) अविमृष्टविधेयांश
(16) विरुद्धमतिकृत् (14,15,16 ये तीन दोष केवल समास में ही होते हैं।)

⇒ **वाक्यदोष-** मम्मट के अनुसार **वाक्यदोष 9** होते हैं-

प्रतिकूलवर्णमुपहतलुप्तविसर्गं विसन्धिहतवृत्तम्।
न्यूनाधिककथितपदं पतत्प्रकर्षं समाप्तपुनरात्तम्॥

(का.प्र.सू.-74)

(1) प्रतिकूलवर्णता (2) उपहतविसर्गता (3) विसन्धि (4) हतवृत्तता
(5) न्यूनपदता (6) अधिकपदता (7) कथितपदता (8) पतत्प्रकर्षता
(9) समाप्तपुनरात्तता

⇒ **अर्थदोष-** मम्मट के अनुसार **अर्थदोष 23** माने गये हैं-
अर्थोऽपुष्टः कष्टो व्याहतपुनरुक्तदुष्क्रमग्राम्याः
सन्दिग्धो निर्हेतुः प्रसिद्धिविद्याविरुद्धश्च।
अनवीकृतः सनियमानियमविशेषाविशेषपरिवृत्ताः
साकाङ्क्षोऽपदयुक्तः सहचरभिन्नः प्रकाशितविरुद्धः।
विध्यनुवादायुक्तस्त्यक्तपुनःस्वीकृतोऽश्लीलः॥
(का.प्र.सू.-75)

(1) अपुष्ट (2) कष्ट
(3) व्याहत (4) पुनरुक्त
(5) दुष्क्रम (6) ग्राम्य
(7) सन्दिग्ध (8) निर्हेतु
(9) प्रसिद्धिविरुद्ध (10) विद्याविरुद्ध
(11) अनवीकृत (12) नियम में अनियम
(13) अनियम में नियम (14) विशेष में अविशेष
(15) अविशेष में विशेष रूप परिवृत्त
(16) साकाङ्क्षता (17) अपयुक्तता
(18) सहचरभिन्नता (19) प्रकाशित विरुद्धता
(20) विध्ययुक्तत्व (21) अनुवादायुक्त्व
(22) त्यक्त पुनः स्वीकृत (23) अश्लील

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि मम्मट ने रसदोष 13 माने हैं। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज 358

53. 'उगितश्च' सूत्र से किस प्रत्यय का विधान होता है?
(A) ङीष् का **(B)** ङीप् का
(C) ङीन् का **(D)** ति का

व्याख्या- ⇒ **उगितश्च-** उगिदन्त अर्थात् जिस का उक् (उ,ऋ लृ) वर्ण इत् हो तदन्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व की विवक्षा में ङीप् प्रत्यय हो।

उदाहरण- भवन्ती, पचन्ती, दीव्यन्ती आदि।

⇒ **षिद्गौरादिभ्यश्च** (4.1.41)
जिसका षकार इत् हो ऐसे प्रातिपदिकों से तथा गौर आदि गणपठित प्रातिपदिकों से परे स्त्रीत्व की विवक्षा में ङीप् प्रत्यय होता है।

उदाहरण- गार्ग्यायणी, नर्तकी, गौरी आदि।

⇒ **नृनरयोर्वृद्धिश्च-** नृ और नर इन दो जातिवाचक प्रातिपदिकों से परे स्त्रीत्व की विवक्षा में ङीन् प्रत्यय तथा इसके साथ नृ और नर शब्दों की वृद्धि भी हो जाती है।

उदाहरण- नारी।

⇒ **यूनस्तिः** (4.1.77)- युवन् शब्द से स्त्रीत्व की विवक्षा में 'ति' प्रत्यय होता है।

उदाहरण- युवतिः

ङीप् प्रत्यय करने वाले अन्य सूत्र-

* **सूत्र-द्विगोः-** (4.1.21)
उदाहरण- त्रिपादी, त्रिलोकी, त्रिफला, त्र्यनीका, अष्टाध्यायी, पञ्चवटी, चतुःसूत्री आदि।

* **सूत्र- वयसि प्रथमे** (4.1.20)
उदाहरण- कुमारी, किशोरी

* **सूत्र**- नञ्स्नञीकक्-ख्युंस्तरुण-तलुनानामुपसंख्यानम्।।
उदाहरण- स्त्रैणी, पौंस्नी,शाक्तीकी, आढ्यङ्करणी, तरुणी, तलुनी आदि।

सूत्र- टिड्-ढाऽणञ्-द्वयसज्-दघ्नञ् मात्रच्-तयप्-ठक्-ठञ्-कञ्-क्वरपः (4.1.15)
उदाहरण- कुरुचरी, नदी, देवी, सौपर्णेयी, ऐन्द्री, औत्सी, ऊरुद्वयसी, ऊरुदघ्नी, ऊरुमात्री, पञ्चतयी, आक्षिकी, प्रास्थिकी, लावणिकी, यादृशी, इत्वरी।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'उगितश्च' सूत्र ङीप् स्त्रीप्रत्यय का विधान करता है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत - लघुसिद्धान्तकौमुदी-आद्याप्रसाद मिश्र, पेज 123

54. 'ग्रामं गच्छन् तृणं स्पृशति' यहाँ तृणं में किस सूत्र से द्वितीया विभक्ति होती है?
(A) कर्तुरीप्सिततमं कर्म **(B)** कर्मणि द्वितीया
(C) अकथितं च **(D)** तथायुक्तं चानीप्सितम्

व्याख्या- तथायुक्तं चानीप्सितम् (1.4.50)
ईप्सिततम के समान क्रिया से युक्त अनीप्सित की भी कर्मसंज्ञा होती है। कुछ पदार्थ कर्ता द्वारा अनीप्सित होते हुए भी क्रिया से ईप्सित के समान जुड़े रहते हैं। क्रिया से सटे रहने के कारण उन अनीप्सित पदार्थों की भी **'तथायुक्तं चानीप्सितम्'** सूत्र से कर्मसंज्ञा होती है।

उदाहरण- **'ग्रामं गच्छन् तृणं स्पृशति'**- (गाँव जाता हुआ तृण का स्पर्श करता है) कर्ता (गाँव जाने वाले) को गाँव जाना ईप्सिततम है और तृण का स्पर्श अनीप्सित है फिर भी क्रिया से सटे रहने के कारण तृण की **'तथायुक्तं**

चानीप्सितम्' सूत्र से तृण की कर्मसंज्ञा और 'कर्मणि द्वितीया' से द्वितीया विभक्ति होकर तृणम् बना।

'कर्तुरीप्सिततमं कर्म' (1.4.49)- कर्ता की क्रिया के द्वारा सबसे अधिक चाहे गये पदार्थ की कर्मसंज्ञा होती है।

उदाहरण- **बालकः ओदनं भुङ्क्ते।** कर्ता ओदन को अधिक चाहता है। इसलिए ओदन में 'कर्तुरीप्सिततमम् कर्म' सूत्र से कर्मसंज्ञा और 'कर्मणि द्वितीया' से द्वितीया विभक्ति होकर 'ओदनम्' बना।

अकथितं च (1.4.51)

अपादानादि अर्थात् करण, सम्प्रदान और अधिकरण कारकों से अविवक्षित कारक की कर्मसंज्ञा होती है। इसे यदि अपादान, करण, सम्प्रदान और अधिकरण की विवक्षा होगी तो क्रमशः पञ्चमी, तृतीया, चतुर्थी और सप्तमी विभक्तियाँ प्रयोग होगी।

* संस्कृत में दुह्, याच्, पच्,दण्ड्, रुध्, प्रच्छ्, चि, ब्रू, शास्, जि, मथ्, मुष्, नी, हृ, कृष्, और वह् ये 16धातुएँ हैं जिनके प्रयोग में वक्ता स्वतन्त्र होता है। चाहे वह करण, सम्प्रदान, अपादान और अधिकरण का प्रयोग करें या इनके स्थान पर कर्म का प्रयोग करें।

उपर्युक्त सोलह धातुएँ द्विकर्मक कहीं जाती हैं।

उदाहरण- **बलिं याचते वसुधाम्** (विष्णु बलि से पृथ्वी माँगते हैं।)

* याच् द्विकर्मक धातु के योग में **'अकथितं च'** सूत्र से अपादान 'बलि' की (गौण) कर्मसंज्ञा हुई और **'कर्मणि द्वितीया'** से द्वितीया विभक्ति होकर 'बलिम्' पद बना। प्रधान कर्म वसुधा है 'कर्तुरीप्सिततमं कर्म' सूत्र से 'वसुधा' की कर्मसंज्ञा हुई और **'कर्मणि द्वितीया'** सूत्र से द्वितीया विभक्ति होकर वसुधाम् बना। अपादान की विवक्षा में **'बलेः याचते वसुधाम्'** बनेगा।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि **'ग्रामं गच्छन् तृणं स्पृशति'** में तृणं में 'कर्मणि द्वितीया' से द्वितीया विभक्ति हुई है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

नोट :- उपर्युक्त प्रश्न में विकल्प 'B' सही उत्तर होना चाहिये था परन्तु आयोग ने विकल्प 'D' को सही उत्तर माना है। अथवा B और D दोनों को सही माना जा सकता है।

स्रोत - सिद्धान्तकौमुदी-राममुनि पाण्डेय, पेज 30-31

55. 'महाकवि कालिदास उपमा के सम्राट् हैं तो बाण परिसंख्या के' इस कथन के कथनकार हैं-

(A) डॉ0 जनार्दन पाण्डेय **(B)** डॉ0 रमाशङ्कर त्रिपाठी
(C) डॉ0 अवनीश कुमार **(D)** डॉ0 विश्वेश्वर

व्याख्या- कालिदास विषयक प्रशस्तियाँ-

(i) डॉ0 रमाशङ्कर त्रिपाठी का कथन है कि- **'महाकवि कालिदास उपमा के सम्राट् हैं तो बाण परिसंख्या के।'**

(ii) बाणभट्ट ने हर्षचरित में कालिदास के विषय में कहा है-
निर्गतासु न वा कस्य कालिदासस्य सूक्तिषु।
प्रीतिर्मधुरसान्द्रासु मञ्जरीष्विव जायते॥

(iii) **साकूतमधुरकोमलविलासिनीकण्ठकूजितप्राये।**
शिक्षासमयेऽपि मुदे रतलीला कालिदासोक्ती॥
गोवर्धनाचार्य ने आर्यासप्तशती में कालिदास के विषय में कहा है।

(iv) जयदेव ने प्रसन्नराघवम् में कालिदास के विषय में कहा है-
कविकुलगुरुः कालिदासो विलासः।

(v) जयन्त ने न्यायमञ्जरी में कालिदास के विषय में कहा है-
अमृतेनेव संसिक्ताश्चन्दनेनैव चर्चिताः।
चन्द्रांशुभिरिवोद्घृष्टाः कालिदासस्य सूक्तयः॥

बाण की प्रशस्तियाँ-

(i) रुचिरस्वरवर्णपदा रसभाववती जगन्मनो हरति। सा किं तरुणी? नहि नहि वाणी बाणस्य मधुरशीलस्य।। (धर्मदास)

(ii) जाता शिखण्डिनी प्राक् यथा शिखण्डी तथावगच्छामि। प्रागल्भ्यमधिमाप्तुं वाणी बाणो बभूव ह।। (गोवर्धनाचार्य)

(iii) बाणस्तु पञ्चाननः। (चन्द्रदेव)

(iv) पञ्चबाणस्तु बाणः। (जयदेव)

(v) कविताकामिनी कौतुकाय (जयदेव)

(vi) यादृग् गद्यविधौ बाणः पद्यबन्धेऽपि तादृशः (भोजराज)

भारवि की प्रशस्तियाँ-

(i) भारवेरर्थगौरवम् (उद्भट)

(ii) नारिकेलफलसम्मितं वचो भारवेः सपदि तद् विभज्यते। (मल्लिनाथ)

(iii) प्रकृतिमधुराभारविगिरः (श्रीधरदास - सदुक्तिकर्णामृत)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'महाकवि कालिदास उपमा के सम्राट् हैं तो बाण परिसंख्या' के इस कथन के वक्ता डॉ0 रमाशङ्कर त्रिपाठी है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत - संस्कृत साहित्य का इतिहास-रमाशङ्कर त्रिपाठी, पेज 268

56. राजा शूद्रक की राजधानी थी?
(A) उज्जयिनी (B) अयोध्या
(C) विदिशा (D) धारानगरी

व्याख्या-

राजा		राजधानी
शूद्रक	–	विदिशा
तारापीड	–	उज्जयिनी
प्रद्योत	–	उज्जयिनी
उदयन	–	कौशाम्बी/उज्जयिनी
विक्रमादित्य	–	उज्जयिनी
राम	–	अयोध्या
राजाभोज	–	धारानगरी
दुष्यन्त	–	हस्तिनापुर
युधिष्ठिर	–	इन्द्रप्रस्थ/हस्तिनापुर
दुर्योधन (सुयोधन)	–	हस्तिनापुर
पुरु	–	हस्तिनापुर
शिवाजी	–	सतारा/रायगढ़
कुबेर	–	अलकापुरी
नल	–	निषधदेश
हर्षवर्धन	–	थाणेश्वर
महमूदगजनवी	–	गजनी
मुहम्मद गोरी	–	गोरदेश
पृथ्वीराज	–	दिल्ली
औरङ्गजेब	–	दिल्ली

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि 'शूद्रक' की राजधानी 'विदिशा' है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत - कादम्बरी कथामुख-तारिणीश झा, पेज 45

57. 'अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता' यह सूक्ति है?
(A) शिशुपालवध में (B) किरातार्जुनीय में
(C) रघुवंश में (D) कुमारसम्भव में

व्याख्या- अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता (किरात01/23) वनेचर युधिष्ठिर से कहता है- बलवान् के साथ किया गया विरोध दुःखद अन्त वाला होता है।

➢ **समय एव करोति बलाबलम्-** (शिशु 06/44) समय ही प्राणियों के बलाबल को करता है अर्थात् समय के प्रभाव से ही प्राणी बलवान् तथा निर्बल होते हैं।

➢ **अयथाबलमारम्भो निदानं क्षयसम्पदः** (शिशुपाल0-2/94) बल के प्रतिकूल कार्य को प्रारंभ करना हानि का कारण होता है।

➢ **अहो निर्धनता सर्वापदामास्पदम्** (मृच्छ0-1/14) चारुदत्त विदूषक से कहता है- दरिद्रता सभी आपत्तियों की जड़ है।

➢ **अहो मुग्धत्वमबलानाम्** (वेणीसंहार-अङ्क2) राजा दुर्योधन-जयद्रथ की माता तथा दुःशला को सम्बोधित करके कहता है अबलाओं की मूर्खता धन्य है।

➢ **आज्ञा गुरूणां ह्यविचारणीया** (रघु0-14/46) बड़ों की आज्ञा विचारणीय नहीं होती।

➢ **तेजसां हि न वयः समीक्ष्यते।** (रघु0-11/1)

➢ **धिगिमां देहभृतामसारताम्** (रघु0-8/51)

➢ **एको हि दोषो गुणसन्निपाते निमज्जतीन्दोः किरणेष्विवाङ्कः** (कुमारसम्भव- 1/03)

➢ **कठिनाः खलु स्त्रियः** (कुमारसम्भव-4/5)

➢ **शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्** (कुमारसम्भव- 5/33)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता' यह सूक्ति किरातार्जुनीयम् से उद्धृत है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- किरातार्जुनीयम् (1/23)- श्रीनिवास शर्मा, पेज 15

58. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के नान्दीपाठ में भगवान् शिव की मूर्तियाँ निर्दिष्ट हैं-
(A) पाँच (B) नव
(C) ग्यारह (D) आठ

व्याख्या- ⇒ महाकवि कालिदास द्वारा विरचित अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के मङ्गलाचरण में अष्टमूर्ति शिव की स्तुति की गयी है-

या सृष्टिः स्रष्टुराद्या, वहति विधिहुतं या हविर्या च होत्री, ये द्वे कालं विधत्तः, श्रुतिविषयगुणा या स्थिता व्याप्य विश्वम्।
यामाहुः सर्वबीजप्रकृतिरिति यया प्राणिनः प्राणवन्तः प्रत्यक्षाभिः प्रपन्नस्तनुभिरवतु वस्ताभिरष्टाभिरीशः॥

(अभि0-1/1)

1. विधाता की पहली सृष्टि- जलरूपी मूर्ति
2. जो विधिपूर्वक हवन की गई हवि को ले जाती है- अग्नि रूपी मूर्ति
3. जो स्वयं हवन करने वाली यजमान रूपी मूर्ति
4. दिन और रातरूप समय का निर्माण करने वाली- सूर्य और चन्द्र की मूर्ति
5. सम्पूर्ण संसार को व्याप्त करके स्थित है- श्रवणेन्द्रिय के विषयस्वरूप गुणवाली- आकाशरूपी मूर्ति
6. जिसे लोग सभी बीजों का कारण कहते हैं- पृथ्वीरूपी मूर्ति

7. जिसके द्वारा सभी प्राणी प्राणवान् हैं। वायुरूपी मूर्ति प्रत्यक्ष दिखायी देने वाली उन आठ मूर्तियों से युक्त भगवान् शिव आप सबकी रक्षा करें।

⇒ **मृच्छकटिकम्-** महाकवि शूद्रक मृच्छकटिकम् के प्रारम्भ में मङ्गलाचरण में शिव जी की स्तुति किये हैं-

पर्यङ्कग्रन्थिबन्धद्विगुणितभुजगाश्लेष ... ब्रह्मलग्नः समाधिः।

शिव की वह ब्रह्मलीन समाधि आप सभी की रक्षा करें।

⇒ **मुद्राराक्षस-** महाकवि विशाखदत्त द्वारा प्रणीत मुद्राराक्षस के मङ्गलाचरण में शिव की वन्दना की गयी है-

धन्या केयं स्थिता ते शिरसि......सुरसरितं शाख्यमव्याद्विभोर्वः।। (1/1)

देवी पार्वती से गङ्गा छिपाने के इच्छुक भगवान् शिव की कुटिलता आप सबकी रक्षा करें।

⇒ **नलचम्पू- जयति गिरिसुतायाः.....वाग्विलासाः।** (1/1)

पर्वतपुत्री पार्वती के काम से उत्पन्न सन्ताप को धारण करने वाले, वक्षस्थल पर चन्दन रस की धारा के समान शीतल लगने वाले भगवान् चन्द्रमौलि (शिव) सर्वोत्कृष्ट हैं। शिव के पश्चात् निरन्तर सुधारस को बरसाने वाला यशस्वी कवियों का वाग्विलास भी सर्वोत्कृष्ट है।

⇒ **रघुवंशम्-** महाकवि कालिदास जी ने रघुवंशमहाकाव्य के मङ्गलाचरण में शिव-पार्वती की स्तुति की है-

वागर्थाविव सम्पृक्तौ......पार्वतीपरमेश्वरौ।। (1/1)

शब्द और अर्थ के समान नित्य मिले हुए संसार के माता-पिता उमा और महेश्वर को मैं (कालिदास) शब्द और अर्थ का भलीभाँति से ज्ञान होने के लिये नमस्कार करता हूँ।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि अभिज्ञानशाकुन्तलम् के नान्दीपाठ में अष्टमूर्ति शिव की स्तुति की गयी है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/1)- कपिलदेव द्विवेदी, पेज 01

59. 'मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति' यहाँ पर 'लक्ष्म' और 'लक्ष्मी' का अर्थ है?

(A) लक्ष्म और लक्ष्मी देवी **(B)** लाक्षा और विष्णुपत्नी

(C) चिह्न और शोभा **(D)** अमृत और छवि

व्याख्या- महाकवि कालिदास जी द्वारा रचित अभिज्ञानशाकुन्तल नामक नाटक के प्रथमोऽङ्क में यह श्लोक उद्धृत है-

सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यं,

मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति।

इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी,

किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाऽऽकृतीनाम्।। (अभि0-1/20)

राजा दुष्यन्त-शकुन्तला के विषय में कहता है- कमल का पुष्प यदि शैवाल से भी युक्त हो, तो भी रमणीय व सुन्दर ही लगता है। जैसा चन्द्रमा का कलङ्क मलिन होते हुए भी चन्द्रमा की शोभा को बढ़ाता ही है। इसी प्रकार यह कोमलाङ्गी बाला भी इस वल्कलवस्त्र से अधिक सुन्दर मालूम होती है। ठीक ही है, सुन्दर और मनोहर आकृति वालों के लिये कौन वस्तु शोभादायक नहीं होती? अर्थात् सुन्दर आकृतियों के शरीर पर साधारण सी वस्तु भी अलङ्कार के तुल्य ही मालूम होती है।

शब्दार्थ

सरसिजम् - कमलम् ,रम्यम् - मनोहारि

लक्ष्म - कलङ्क, हिमांशोः - चन्द्रस्य

लक्ष्मीं - शोभाम्, इयं तन्वी - शकुन्तला

मनोज्ञा- मनोहारिणी,मण्डनम् - भूषण

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि लक्ष्म अर्थात् चिह्न और लक्ष्मी का अर्थ 'शोभा' है।

अतः विकल्प 'C' सही है।

स्त्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/20) कपिलदेव द्विवेदी, पेज-46-47

60. मृच्छकटिकम् की नायिका है-

(A) वसन्तसेना

(B) विचर्चिका

(C) मालती

(D) सागरिका

व्याख्या-

ग्रन्थ	ग्रन्थकार	नायक	नायिका
मृच्छकटिकम्	शूद्रक	चारुदत्त	वसन्तसेना-धूता
मालतीमाधवम्	भवभूति	(i) माधव	(i) मालती (ii) मदयन्तिका
रत्नावली	हर्ष	उदयन	रत्नावली (सागरिका)
अभिज्ञानशाकुन्तल-	कालिदास-	दुष्यन्त	शकुन्तला
उत्तररामचरित-	भवभूति	राम	सीता
स्वप्नवासवदत्तम्-	भास	उदयन	वासवदत्ता/पद्मावती
कुमारसम्भवम्	कालिदास	शिव	पार्वती
किरातार्जुनीयम्	भारवि	अर्जुन	द्रौपदी
नैषधीयचरितम्	श्रीहर्ष	नल	दमयन्ती
रघुवंशम्	कालिदास	राम	सीता
शिशुपालवधम्	माघ	श्रीकृष्ण	सत्यभामा/रुक्मिणी
मेघदूतम्	कालिदास	यक्ष(हेममाली)	यक्षिणी (विशालाक्षी)
विक्रमोर्वशीयम्	कालिदास	पुरुरवा (विक्रम)	उर्वशी

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'मृच्छकटिकम्' की नायिका 'वसन्तसेना' है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- मृच्छकटिकम् - श्रीनिवास शास्त्री, पेज 01

61. कर्मयोग का सिद्धान्त प्रतिपादित है-
(A) सांख्यतत्त्वकौमुदी में **(B)** तर्कभाषा में
(C) वेदान्तसार में **(D)** श्रीमद्भगवद्गीता में

व्याख्या- ⟹ श्रीमद्भगवद्गीता के द्वितीय अध्याय सांख्ययोग में **कर्मयोग के सिद्धान्त को** प्रतिपादित किया गया है-

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि॥ (2/47)

तेरा कर्म करने में ही अधिकार है, उसके फलों में कभी नहीं। इसलिये तू कर्मों के फल का हेतु मत हो तथा तेरी कर्म न करने में भी आसक्ति न हो।

⟹ सांख्यकारिका में ईश्वरकृष्ण सत्कार्यवाद का सिद्धान्त प्रतिपादित करते हैं-

असदकरणादुपादानग्रहणात् सर्वसम्भवाभावात्।
शक्तस्य शक्यकरणात् कारणभावाच्च सत्कार्यम्॥

(सा.का.-09)

सत्कार्यवाद सिद्धान्त की पुष्टि के लिए पाँच हेतुओं को बताया गया है- (1) असदकरणात् (2) उपादानग्रहणात् (3) सर्वसम्भवाभावात् (4) शक्तस्य शक्यकरणात् (5) कारणभावात्

इन पाँच हेतुओं के द्वारा सत्कार्यवाद की सिद्धि होती है।

⟹ **तर्कभाषा-** न्यायदर्शनविद् केशवमिश्र असत्कार्यवाद के सिद्धान्त को प्रतिपादित करते हैं। इनके मत में कार्य कारण से सर्वथा भिन्न है। वह किसी रूप में कारण में नहीं रहता। उत्पन्न होने के पश्चात् उसका ध्वंसाभाव हो जाता है। कारण और कार्य का सम्बन्ध अभेद सहिष्णु अत्यन्तभेद है। इसी कारण ये लोग 'असत्कार्यवादी' भी कहलाते हैं।

वेदान्तसार- वेदान्तसार में भी सांख्यदर्शन की तरह सत्कार्यवाद की सत्ता मानी गयी है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'कर्मयोग' का सिद्धान्त 'श्रीमद्भगवद्गीता' में प्रतिपादित है।

अतः विकल्प 'D' सही है।

स्रोत- श्रीमद्भगवद्गीता (2/47) - गीताप्रेस, पेज भू. 09

62. 'सत्कार्यवाद सिद्धान्त' उपलब्ध होता है-
(A) सिद्धान्तकौमुदी में **(B)** सांख्यकारिका में
(C) वेदान्तसार में **(D)** तर्कभाषा में

व्याख्या- ईश्वरकृष्ण द्वारा प्रणीत सांख्यकारिका की नौवीं कारिका में सत्कार्यवाद सिद्धान्त को प्रतिपादित किया गया है-

असदकरणादुपादानग्रहणात् सर्वसम्भवाभावात्।
शक्तस्य शक्यकरणात् कारणभावाच्च सत्कार्यम्॥

(सा.का.-09)

- सत्कार्यवाद की पुष्टि के लिये पाँच हेतुओं का उल्लेख है- (i) असदकरणात् (ii) उपादानग्रहणात् (iii) सर्वसम्भवाभावात् (iv) शक्तस्य शक्यकरणात् (v) कारणभावात्
- सत्कार्यवाद सांख्यदर्शन का महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त है, जिसके अनुसार कार्य वास्तव में अपने कारण में विद्यमान रहता है अर्थात् अपने व्यापार से पहले वह अव्यक्तरूप में अपने कारण में वर्तमान रहता है। कार्य की उत्पत्ति अथवा नाश का अभिप्राय उस विषय की सत्ता का होना या न होना नहीं है, अपितु कारण से कार्य की उत्पत्ति का अर्थ अव्यक्त से व्यक्त होना है एवं कार्य के नाश से अभिप्राय व्यक्त से अव्यक्त होना होता है।
- सांख्यशास्त्र के अनुसार न तो किसी वस्तु की उत्पत्ति होती है और न ही विनाश होता है अपितु उत्पत्ति उसका अपने कारण से आविर्भाव है एवं विनाश उसका पुनः अपने कारण में तिरोहित होना है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि सत्कार्यवाद सिद्धान्त सांख्यकारिका का सिद्धान्त है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत - सांख्यकारिका (का.-9) - राकेश शास्त्री, पेज 29

63. प्रत्यक्ष प्रमाण का अवगम होता है?

(A) अनुमान से **(B)** शब्द से
(C) षोढा सन्निकर्ष से **(D)** अभाव से

व्याख्या- आचार्य गौतम प्रणीत न्यायदर्शन के प्रकरणग्रन्थ केशवमिश्र रचित तर्कभाषा में षोडश पदार्थों की परिगणना में प्रथम पदार्थ प्रमाण के अन्तर्गत प्रत्यक्षप्रमाण के विवेचन में षोढा सन्निकर्ष को परिभाषित करते हैं-

इन्द्रियार्थयोस्तु यः सन्निकर्षः साक्षात्कारिप्रमाहेतुः स षड्विध एव। तद्यथा, संयोगः, संयुक्तसमवायः, संयुक्तसमवेतसमवायः, समवायः, समवेतसमवायः, विशेष्यविशेषण-भावश्चेति।

प्रमाकरणं प्रमाणम्। प्रमा का करण ही प्रमाण है। प्रमाण में सर्वप्रथम परिगणित प्रत्यक्षप्रमाण का लक्षण करते हैं- साक्षात्कारिप्रमाकरणं प्रत्यक्षम्। साक्षात्कार, करने वाली प्रमा का करण प्रत्यक्ष कहलाता है।

सन्निकर्ष	इन्द्रिय		विषय
1. संयोग सन्निकर्ष	– चक्षु	–	घट
2. संयुक्त समवाय	– चक्षु	–	घटरूप
3. संयुक्तसमवेत समवाय	– चक्षु	–	घटरूपत्व जाति
4. समवाय सन्निकर्ष	– श्रोत्र	–	शब्द
5. समवेत समवाय	– श्रोत्र	–	शब्दत्व
6. विशेषण-विशेष्यभाव	–चक्षु	–	भूतले घटाभाव

* साक्षात्कारिणी प्रमा का करण तीन प्रकार का होता है-
(i) कभी इन्द्रिय (ii) कभी इन्द्रिय और अर्थ का सन्निकर्ष (iii)कभी ज्ञान।
* सन्निकर्ष प्रथमतः दो प्रकार के होते हैं-
(i) लौकिक और (i) अलौकिक
* लौकिक सन्निकर्ष छः प्रकार के होते हैं, जिन्हें षोढ़ा सन्निकर्ष कहते हैं।
* अलौकिक सन्निकर्ष तीन प्रकार के होते हैं-
(i) सामान्य लक्षण (ii) ज्ञानलक्षण (iii) योगज

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि प्रत्यक्ष प्रमाण का अवगम षोढा सन्निकर्ष के द्वारा होता है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत - तर्कभाषा- गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर- पेज 77

64. आरोपित शब्द व्यापार का दूसरा नाम है-

(A) व्यञ्जना व्यापार **(B)** तात्पर्या व्यापार
(C) अभिधा व्यापार **(D)** लक्षणा व्यापार

व्याख्या- आचार्य मम्मट कृत काव्यप्रकाश के द्वितीयोल्लास में शब्दवृत्तियों की चर्चा करते हैं-

⇒ **अभिधा-** मम्मट कहते हैं कि- **स मुख्योऽर्थस्तत्र मुख्यो व्यापारोऽस्याभिधोच्यते।** (का. प्र.सूत्र-11) साक्षात् संकेतित अर्थ ही मुख्यार्थ है, उसका बोध कराने में जो व्यापार होता है वह अभिधा व्यापार कहलाता है। साहित्यदर्पणकार कहते हैं कि-

तत्र संकेतितार्थस्य बोधनादग्रिमाऽभिधा।
संकेतोगृह्यते जातौ गुणद्रव्यक्रियासु च।।(सा.द.2/4)

संकेतित मुख्य अर्थ का बोधन कराने वाली, शब्द की सबसे पहली शक्ति का नाम अभिधा है।

शब्द चार प्रकार के होते हैं- (i) जातिशब्द (ii) गुणशब्द, (iii) क्रियाशब्द (iv) यदृच्छाशब्द।

लक्षणा- मुख्यार्थबाधे तद्योगे रूढितोऽथ प्रयोजनात्।
अन्योऽर्थो लक्ष्यते यत् सा लक्षणारोपिता क्रिया।।
(का.प्र.सू.-12)

मुख्यार्थ का बाध, उस के साथ लक्ष्यार्थ या अन्य अर्थ का सम्बन्ध होने पर, रूढ़ि से अथवा प्रयोजन-विशेष से जिस शब्द-शक्ति के द्वारा अन्य अर्थ लक्षित होता है वह आरोपित व्यापार लक्षणा कहलाता है।

⇒ **साहित्यदर्पण के अनुसार-**
मुख्यार्थबाधे तद्युक्तोययाऽन्योऽर्थः प्रतीयते।
रूढेः प्रयोजनाद्वाऽसौ लक्षणा शक्तिरर्पिता।।(सा.द.-2/5)

अभिधा शक्ति के द्वारा जिसका बोधन किया जाय वह मुख्यार्थ कहलाता है, इसका बाध होने पर अर्थात् वाक्य में मुख्यार्थ का अन्वय अनुपपन्न होने पर रूढ़ि के कारण अथवा किसी विशेष प्रयोजन के कारण मुख्यार्थ से सम्बद्ध अन्य अर्थ का ज्ञान, जिस शक्ति द्वारा होता है, वह लक्षणा शक्ति है।

⇒ **व्यञ्जना शक्ति-** मम्मट के अनुसार-
यस्य प्रतीतिमाधातुं लक्षणा समुपास्यते।
फले शब्दैकगम्येऽत्र व्यञ्जनान्नापरा क्रिया।।

जिस प्रयोजन विशेष की प्रतीति के लिये लाक्षणिक शब्द का आश्रय लिया जाता है, केवल शब्द से गम्य उस फल के विषय में व्यञ्जना के अतिरिक्त और कोई व्यापार नहीं हो सकता है।

⇒ **आचार्य विश्वनाथ के अनुसार व्यञ्जना शक्ति-**
विरतास्वभिधाद्यासु ययाऽर्थो बोध्यते परः।
सा वृत्तिर्व्यञ्जना नाम शब्दस्यार्थादिकस्य च॥
(सा.द.-2/12)

अपना-अपना अर्थ बोधन करके अभिधा आदि वृत्तियों के शान्त होने पर जिससे अन्य अर्थ का बोध होता है, वह शब्द में तथा अर्थादिक में रहने वाली वृत्ति 'व्यञ्जना' कहलाती है।

⇒ **तात्पर्या शक्ति-** आचार्य मम्मट ने काव्यप्रकाश के द्वितीयोल्लास के प्रारम्भ में तात्पर्या को बताते हैं- **तात्पर्यार्थोऽपि केषुचित्।** कुछ लोग तात्पर्यार्थ भी मानते हैं। कुमारिलभट्ट के अनुयायी पार्थसारथि मिश्र आदि (अभिहितान्वयवादी) के मत में तीन प्रकार के वाच्यादि अर्थों के अतिरिक्त चौथे प्रकार का तात्पर्यार्थ भी होता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि आरोपित शब्द व्यापार लक्षणा है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत - साहित्यदर्पण-शालिग्राम शास्त्री, पेज 29-30
काव्यप्रकाश-आचार्य विश्वेश्वर, पेज 51

65. 'वर्णसाम्यमनुप्रासः' यह अनुप्रास अलङ्कार का लक्षण है-
(A) साहित्यदर्पण के अनुसार
(B) काव्यप्रकाश के अनुसार
(C) चन्द्रालोक के अनुसार
(D) अलङ्कारसर्वस्व के अनुसार

व्याख्या- ⇒ मम्मट कृत काव्यप्रकाश के नवें उल्लास में-
अनुप्रास अलङ्कार का लक्षण- **'वर्णसाम्यमनुप्रासः'**
वर्णों की समानता या आवृत्ति का नाम अनुप्रास अलङ्कार है।
ततोऽरुणपरिस्पन्दमन्दीकृतवपुः शशी।
दध्रे कामपरिक्षामकामिनीगण्डपाण्डुताम्॥

तब (प्रातःकाल के समय सूर्य के सारथि) अरुण के गतिशील होने से मलिन स्वरूपवाला चन्द्रमा काम के उपभोग से दुर्बल कामिनी के कपोलस्थल के समान सफेद हो गया। यहाँ पर अनेक वर्णों का एकबार सादृश्य है इसलिए यहाँ छेकानुप्रास है।

⇒ आचार्य विश्वनाथ कृत साहित्यदर्पण के दशवें परिच्छेद में अनुप्रास अलङ्कार का लक्षण किया गया है-
अनुप्रासः शब्दसाम्यं वैषम्येऽपि स्वरस्य यत्।
(सा द. 10/3)

स्वर की विषमता रहने पर भी शब्द अर्थात् पद, पदांश के साम्य को 'अनुप्रास' कहते हैं।

उन्मीलन्मधुगन्धलुब्धमधुपव्याधूतचूताङ्कुर .....।
प्राप्तप्राणसमासमागमरसोल्लासैरमी वासराः॥

यहाँ पर रसोल्लास सैरमी इन शब्दों में 'र' और 'स' की एक ही प्रकार से समानता है। दूसरे चरण में क और ल की अनेक बार आवृत्ति हुई है और उसी क्रम से हुई है।

⇒ जयदेव चन्द्रालोक के पञ्चम मयूख में छेकानुप्रास का लक्षण करते हुए कहते हैं कि-
स्वरव्यञ्जनसन्दोहव्यूहा मन्दोहदोहदा।
गौर्जगज्जाग्रदुत्सेका छेकानुप्रासभासुरा॥ (5/2)

विशेष ज्ञान को कराने वाली, कवि संसार में जागरूक उत्कर्ष वाली स्वर और व्यञ्जनों की आवृत्तिरूप वाणी छेकानुप्रास से शोभायमान हुआ करती है। अर्थात् ऐसी वाणी जहाँ हो वहाँ छेकानुप्रास हुआ करता है।

⇒ अलङ्कारसर्वस्वकार रुय्यक ने छेकानुप्रास का लक्षण करते हुए कहते हैं-
सङ्ख्यानियमे पूर्वं छेकानुप्रासः। संख्या का नियम रहने पर पूर्व अर्थात् व्यञ्जनमात्र शब्दपौनरुक्त्य को छेकानुप्रास कहते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'वर्णसाम्यमनुप्रासः' काव्यप्रकाश के अनुसार अनुप्रास का लक्षण है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत - काव्यप्रकाश-आचार्य विश्वेश्वर, पेज 404

66. भाषाविज्ञान के अर्थपरिवर्तन कारणों में जो कारण नहीं है वह है-
(A) अर्थविस्तार **(B)** अर्थसङ्कोच
(C) अर्थव्यञ्जकता **(D)** अर्थविपर्यय

व्याख्या- सर्वप्रथम फ्रांसीसी भाषाविज्ञानवेत्ता ब्रील ने अर्थपरिवर्तन विचार किया था। उन्होंने अर्थपरिवर्तन की तीन दिशाएँ मानीं अर्थविकास, अर्थसंकोच तथा अर्थादेश। अर्थविज्ञान के भारतीय विशेषज्ञ यास्क, पतञ्जलि, भर्तृहरि एवं अन्य संस्कृत काव्यशास्त्रकारों ने भी अर्थ-विकास की इन्हीं तीन दिशाओं का उल्लेख किया है।

⇒ अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से अर्थपरिवर्तन की दिशाओं को निम्न 5 भागों में विभक्त कर उसका विश्लेषण किया जा सकता है-
1- अर्थविस्तार (Expansion of meaning)
2- अर्थसंकोच (Contract of meaning)
3- अर्थादेश (Transference of meaning)

4- अर्थोत्कर्ष (Elevoation of meaning)
5- अर्थापकर्ष (Deterioration of meaning)

⇒ **अर्थविस्तार-** अर्थविस्तार का अर्थ है- अर्थ का सीमित क्षेत्र से निकलकर विस्तार पा लेना।

जैसे- 'प्रवीण' शब्द का प्रारम्भिक अर्थ वीणा बजाने में दक्ष था परन्तु आज वह किसी काम में दक्षता, निपुणता का वाचक हो गया है।

शब्द	मौलिक अर्थ	अर्थ-विस्तार
गवेषणा –	गाय को खोजना	– अनुसंधान
कुशल –	कुश लाने में दक्ष	– दक्ष
निपुण –	पुण्य करने वाला	– किसी काम में दक्ष
अभ्यास –	बाण चलाना	– प्रयत्न

2. अर्थसंकोच- अर्थविस्तार के विपरीत सामान्य या संकुचित अर्थ में प्रयुक्त होना 'अर्थसंकोच' कहलाता है। अर्थसंकोच का अर्थ ही है- 'अर्थ का संकुचित हो जाना।' भोलानाथ **तिवारी के अनुसार**- अर्थसंकोच, अर्थविस्तार का ठीक उल्टा है।

शब्द	मूल अर्थ	अर्थ-संकोच
वेद –	विद्या	– ऋग्वेद आदि वेद
श्राद्ध –	श्रद्धायुक्त कर्म	– मृतक श्राद्ध
वर –	जो माँगा जाये	– दूल्हा
धान्य –	अन्न	– धान
महाराज –	बड़े राजा, मान्य ब्राह्मण	– रसोइयां
मृग –	जंगली पशु	– हिरण

3. अर्थादेश- शब्द के मूल अर्थ का लुप्त होना और उसके स्थान पर कोई नये अर्थ का आना 'अर्थादेश' कहलाता है।

शब्द	मूल अर्थ	अर्थादेश
असुर –	देवता –	दानव,दैत्य
उपवास –	अग्निके पास रहना –	व्रत
मुग्ध –	मूर्ख –	मोहित होना
वर –	श्रेष्ठ –	दूल्हा
साहस –	चोरी/डकैती –	उत्साहपूर्वक कार्य

अर्थोत्कर्ष- निकृष्ट अर्थ में प्रयुक्त होने वाले शब्दों का उत्कृष्ट अर्थ में प्रयुक्त होना। 'साहस' अर्थोत्कर्ष का श्रेष्ठ उदाहरण है।

अर्थापकर्ष- अर्थापकर्ष का अर्थ है- अर्थ का पतन होना। अर्थापकर्ष का सुन्दर उदाहरण है- 'सहवास'। सहवास का पहले उत्कृष्ट अर्थ था- गुरु आदि के सम्पर्क में रहना और अब अर्थ है- स्त्री पुरुष का परस्पर रतिक्रिया।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि भाषाविज्ञान के अर्थपरिवर्तन कारणों में अर्थव्यञ्जकता कारण नहीं है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 336-37

67. 'पाणिपादम्' में समास है-
(A) इतरेतरद्वन्द्व **(B)** समाहारद्वन्द्व
(C) कर्मधारय **(D)** बहुव्रीहि

व्याख्या- 'चार्थे द्वन्द्वः' सूत्र से च के अर्थ में वर्तमान अनेक सुबन्त परस्पर विकल्प से समास को प्राप्त होते हैं, और वह समास द्वन्द्वसंज्ञक होता है।

➢ 'च' के चार अर्थ माने जाते हैं- समुच्चय, अन्वाचय, इतरेतर, समाहार।

➢ समूह का नाम 'समाहार' है। यह भी 'च' का एक अर्थ है। समूह के होने पर इस समास से सदा एकवचन तथा 'स नपुंसकम्' के अनुसार नपुंसकलिङ्ग का प्रयोग होता है।

समाहार द्वन्द्व के उदाहरण	
पाणिपादम्	पाणी च पादौ च
संज्ञापरिभाषम्	संज्ञा च परिभाषा च
मार्दङ्गिकवैणविकम्	मार्दङ्गिकाश्च वैणविकाश्च
रथिकाश्वारोहम्	रथिकाश्च अश्वारोहाश्च
वाक्त्वचम्	वाक् च त्वक् च

इतरेतर द्वन्द्व	
धर्माथौं -	धर्मश्च अर्थश्च
शब्दार्थौ -	शब्दश्च अर्थश्च
अर्थकामौ -	अर्थश्च कामश्च
आद्यन्तौ -	आदिश्च अन्तश्च
जायापती /जम्पती/दम्पती-	जाया च पतिश्च

द्विगुसमास का उदाहरण	
पञ्चकपालः -	पञ्चानां कपालानां समाहारः
पञ्चगवम् -	पञ्चानां गवां समाहारः
पञ्चपात्रम् -	पञ्चानां पात्राणां समाहारः
त्रिभुवनम् -	त्रयाणां भुवनानां समाहारः
चतुर्युगम् -	चतुर्णां युगानां समाहारः
त्रिकटु -	त्रयाणां कटूनां समाहारः

बहुव्रीहि का उदाहरण

द्विपात्- द्वौ पादौ यस्य सः
चतुर्मुखः - चत्वारि मुखानि यस्य सः

चतुराननः - चत्वारि आननानि यस्य सः
षडाननः - षड् आननानि यस्य सः
दशाननः - दश आननानि यस्य सः
द्विमूर्धः - द्वौ मूर्धानौ यस्य सः
त्रिमूर्धः - त्रयो मूर्धानो यस्य सः

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि **'पाणिपादम्'** में समाहार द्वन्द्व है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत - लघुसिद्धान्तकौमुदी-आद्याप्रसाद मिश्र, पेज 196

68. प्रच्छ् धातु में क्त्वा प्रत्यय के योग से रूप बनता है?
(A) पृष्ट्वा **(B)** प्रष्ट्वा
(C) प्रच्छत्वा **(D)** प्रच्छित्वा

व्याख्या- ⟹ सूत्र - **समासेऽनञ्पूर्वो क्त्वो ल्यप्** (7.1.37)

जिस समास के पूर्वपद में नञ् से भिन्न कोई अन्य अव्यय स्थित हो तो उस समास में क्त्वा के स्थान पर ल्यप् आदेश होता है। क्त्वा के क् की 'लशक्वतद्धिते' से इत्संज्ञा 'तस्य लोपः' से लोप होकर 'त्वा' शेष बचता है।

⟹ जब एक ही कर्ता द्वारा एक कार्य की समाप्ति के बाद दूसरी क्रिया की जाती है, तो समाप्ति क्रिया में क्त्वा प्रत्यय का प्रयोग होता है।

⟹ इस प्रत्यय से बने हुए शब्द पूर्वकालिक क्रिया के अन्तर्गत आते हैं।

उदाहरण

प्रच्छ्	+	क्त्वा	=	पृष्ट्वा
अद्	+	क्त्वा	=	जग्ध्वा
इष्	+	क्त्वा	=	इष्ट्वा/एषित्वा
ईक्ष्	+	क्त्वा	=	ईक्षित्वा
कुर्द्	+	क्त्वा	=	कूर्दित्वा
कृ	+	क्त्वा	=	कृत्वा
कृष्	+	क्त्वा	=	कृष्ट्वा
अस्	+	क्त्वा	=	भूत्वा
आप्	+	क्त्वा	=	आप्त्वा
क्री	+	क्त्वा	=	क्रीत्वा
क्रीड्	+	क्त्वा	=	क्रीडित्वा
क्षिप्	+	क्त्वा	=	क्षिप्त्वा
गम्	+	क्त्वा	=	गत्वा
गॄ	+	क्त्वा	=	गीर्त्वा
छिद्	+	क्त्वा	=	छित्त्वा
जि	+	क्त्वा	=	जित्वा
ज्ञा	+	क्त्वा	=	ज्ञात्वा
तुद्	+	क्त्वा	=	तुत्त्वा
तुष्	+	क्त्वा	=	तुष्ट्वा
त्यज्	+	क्त्वा	=	त्यक्त्वा
दृश्	+	क्त्वा	=	दृष्ट्वा
दह्	+	क्त्वा	=	दग्ध्वा
दा	+	क्त्वा	=	दत्त्वा
धा	+	क्त्वा	=	हित्वा
पच्	+	क्त्वा	=	पक्त्वा
पा	+	क्त्वा	=	पीत्वा
ब्रू	+	क्त्वा	=	उक्त्वा
भू	+	क्त्वा	=	भूत्वा
यज्	+	क्त्वा	=	इष्ट्वा

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि प्रच्छ्+क्त्वा के योग से पृष्ट्वा बनता है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत - रचनानुवादकौमुदी-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 208

69. 'सुभाषितं हारि विशत्यधो, गलान्न दुर्जनस्यार्करिपो-रिवामृतम्' यह सूक्ति उद्धृत है?
(A) कादम्बरी से **(B)** शिशुपालवधम् से
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से **(D)** नीतिशतकम् से

व्याख्या- बाणभट्ट कादम्बरी कथामुख में सुभाषित सूक्तियों के प्रसंग में कहते हैं कि-

सुभाषितं हारि विशत्यधो गलान्नदुर्जनस्यार्करिपोरिवामृतम्।
तदेव धत्ते हृदयेन सज्जनो हरिर्महारत्नमिवातिनिर्मलम्॥
(कादम्बरी कथामुख-7)

मनोहर सुभाषित दुर्जन के गले के नीचे वैसे ही नहीं उतरता, जैसे राहु के गले के नीचे अमृत नहीं उतरता, किन्तु उसे ही सज्जन अपने हृदय में इस प्रकार धारण करते हैं जैसे भगवान् विष्णु अत्यन्त स्वच्छ कौस्तुभमणि को हृदय पर धारण करते हैं।

* **भवच्छिदस्त्र्यम्बकपादपांसवः**।।2।।
संसार के बन्धन को काटने वाली शिव के चरणों की धूलि की जय हो।

* **धिया निबद्धेयमतिद्वयी कथा॥** (20) अतिद्वयी = (दो कथाओं बृहत्कथा और वासवदत्ता से उत्कृष्ट) कथा की रचना की।।

शिशुपालवधम् की सूक्तियाँ-

➢ **सदाभिमानैकधना हि मानिनः।** (शिशु.1/67)
मानी जन सदा मान मात्र धन वाले होते हैं।

➢ **सतीव योषित् प्रकृतिः सुनिश्चला।**
पुमांसमभ्येति भवान्तरेष्वपि॥ (शिशु.1/72)
पतिव्रता स्त्री के समान अतिस्थिर प्रकृति दूसरे जन्मों में भी उसी पुरुष को प्राप्त करती है।

अभिज्ञानशाकुन्तलम् की सूक्तियाँ-

सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तः करण-प्रवृत्तयः । (अभि.1/22)
सन्देहास्पद विषयों में सज्जनों के अन्तःकरण की प्रवृत्तियाँ ही प्रमाण होती है।

➢ **सर्वः कान्तमात्मीयं पश्यति** (अभि. अङ्क-2)
राजा दुष्यन्त विदूषक से कहता है- 'सभी आत्मीय जनों को सुन्दर समझते हैं।

⇒ **नीतिशतकम् की सूक्तियाँ-**

* **शीलं परं भूषणम्।**
यह सदाचार सभी का सर्वोत्कृष्ट आभूषण है।

* **सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः।**
कठिन सेवा का कार्य योगियों को भी अगम्य या दुर्बोध है अर्थात् उनके भी समझ से परे है तो साधारण पुरुषों की तो बात ही क्या है?

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है- 'सुभाषितं हारि विशत्यधो... यह सूक्ति कादम्बरी से उद्धृत है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत - कादम्बरी कथामुख (श्लोक 07)- तारिणीश झा,पेज 9

70. 'नमस्तस्मै कृता येन रम्या रामायणी कथा' यह कहकर महर्षि वाल्मीकि का अभिवादन किया गया है-

(A) कादम्बरी में **(B)** रामायण में
(C) नलचम्पू में **(D)** अभिज्ञानशाकुन्तलम् में

व्याख्या- नलचम्पू के प्रथमोच्छ्वास में त्रिविक्रमभट्ट जी ने महर्षि वाल्मीकि का अभिवादन इस श्लोक के माध्यम से किया है-

* **सदूषणापि निर्दोषा सखरापि सुकोमला।**
नमस्तस्मै कृता येन रम्या रामायणी कथा॥ (1/11)
दोषयुक्त होने पर भी निर्दुष्ट एवं कठोर होने पर भी कोमल तथा दूषण और खर नामक राक्षस से युक्त होने पर भी दोषरहित एवं सुकोमल रमणीय रामायण की कथा का जिसने सृजन किया, उस आदिकवि वाल्मीकि के लिए नमस्कार है।

* **व्यासः क्षमाभृतां श्रेष्ठो वन्द्यः स हिमवानिव।**
सृष्टा गौरीदृशी येन भवे विस्तारिभारता॥ (1/12)
(व्यासपक्ष में) जिसके द्वारा इस संसार में अत्यन्त विस्तृत महाभारतरूप वाणी की रचना की गई है। क्षमाशीलों में श्रेष्ठ वे महर्षि व्यास पर्वतश्रेष्ठ हिमालय के समान वन्दनीय हैं।
(हिमालय पक्ष में)- जिसके द्वारा भगवान् शिव में अनुरक्ता और विकसनशील कान्तिसम्पन्ना गौरी-पार्वती को उत्पन्न किया गया, वह पर्वतों में श्रेष्ठ हिमालय महर्षि व्यास के समान वन्दनीय है।

➢ **करोति कस्य नाह्लादं कथा कान्तेव भारती।** (1/13)
इसप्रकार की कान्ता सदृशी महाभारत की कथा किसे आह्लादित नहीं करती?

कादम्बरी- त्रयीमयाय त्रिगुणात्मने नमः। (कादम्बरी-01)
बाणभट्ट द्वारा कादम्बरी कथामुख के मङ्गलाचरण में जगत्कारण त्रिगुणात्मक ब्रह्म को नमस्कार किया गया है।
त्रिगुण- सत्व, रज, तम
त्रयीमयाय- ब्रह्मा, विष्णु, शिव

* **नमामि भर्वोश्चरणाम्बुजद्वयं**....(कादम्बरी-4)
इस पद्य में कवि ने अपने गुरु भर्वु के चरणकमलों की वन्दना की है।

रामायण- न सर्वे भ्रातरस्तात भवन्ति भरतोपमाः।
राम जी का कथन 'तात सुग्रीव। संसार में सब, भाई भरत के ही समान नहीं होते।' (वा.रा. 6/18/15)

न मानुषी राक्षसस्य भार्या भवितुमर्हति।
सीता जी का कथन- 'एक मानव कन्या किसी राक्षस की भार्या नहीं हो सकती। (वा.रा.5/24/8)

अभिज्ञानशाकुन्तलम् की सूक्तियाँ-

➢ **न प्रभातरलं ज्योतिरुदेति वसुधातलात्।** (अभि.1/26)
दुष्यन्त का कथन कान्ति से देदीप्यमान् तेज भूतल से उत्पन्न नहीं होता।

➢ **'न खलु धीमतां कश्चिदविषयो नाम'** (अभि.-अङ्क 04)
शार्ङ्गरव का कथन विद्वानों के लिये वस्तुतः कोई चीज अज्ञात नहीं होती है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि **'नमस्तस्मै कृता येन...** यह कथन नलचम्पू (1.11) में है।
अतः विकल्प 'C' सही है।

स्रोत - नलचम्पू-रामनाथ त्रिपाठी, पेज 12

71. निम्न में से नलचम्पू की सूक्ति है-
(A) नैको रसः कवेः **(B)** सर्वं सहा सूरयः
(C) उपर्युक्त दोनों **(D)** इनमें से कोई नहीं

व्याख्या- त्रिविक्रमभट्ट द्वारा प्रणीत नलचम्पू में सात उच्छ्वास हैं। प्रथमोच्छ्वास में त्रिविक्रमभट्ट द्वारा अपनी विनम्रता को दर्शाया गया है-

* **वाचः काठिन्यमायान्ति भङ्गश्लेषविशेषतः।**
नोद्वेगस्तत्र कर्तव्यो यस्मान्नैको रसः कवेः॥ (1/16)
सभङ्गश्लेष में वाणी यद्यपि विशेष रूप से क्लिष्ट हो जाती है, फिर भी उसमें उद्वेग नहीं करना चाहिये- उसके प्रति उद्विग्न होकर अनिच्छा नहीं प्रकट करनी चाहिए, क्योंकि कवि के लिए सर्वदा एक ही रस नहीं होता अर्थात् कवि की रुचि बराबर एक समान नहीं होती।

* **इत्थं काव्यकथाकथानकरसैरेषां कवीनाममी।**
विद्वांसः परिपूर्णकर्णहृदयाः कुम्भाः पयोभिर्यथा।
वाचो वाच्यविवेकविक्लवधियामीदृग्विधा मादृशां
लप्स्यन्ते क्व किलावकाशमथवा सर्वंसहाः सूरयः॥
(1/15)

इसप्रकार इन कवियों के काव्य कथा, कथानक आदि के रसों से परिपूर्ण कर्ण एवं अन्तःकरण से युक्त ये विद्वान् लोग दुग्ध से आप्लावित कलश के समान हैं- ऐसी स्थिति में वर्णनीय वस्तु के उपस्थापन में विवेकशून्य हमारे जैसे व्यक्तियों की वाणी कहाँ से स्थान प्राप्त कर सकेगी? अथवा (फिर भी) निराश होने की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि विद्वान् लोग सब कुछ सहन करने में समर्थ होते हैं।

* **जयति तरुणयोषिल्लोचनानां विलासः ॥** (1/2)
नवयौवनाओं की आँखों के प्रान्तभागरूपी गोद से सञ्चालित होने वाला आँखों का विलास भी सर्वोत्कृष्ट है, अतः उसकी जय हो।

* **पुण्यैर्मुखे वाचो गृहे स्त्रियः॥** (1/4) किन्हीं अलौकिक पुण्यों के कारण मनोहारिणीं और अनेक प्रकार के श्लेषों आलिङ्गनादि विधियों में चतुर स्त्रियाँ किसी पुरुष के घर में आती हैं।

* **परस्य हृदये लग्नं न घूर्णयति यच्छिरः॥** (1/5)
कवि का काव्य और धनुर्धारी का बाण समर्थ नहीं है तो वे दोनों ही निष्प्रयोजन है, उनका होना न होने के बराबर है। अर्थात् कवि के इस काव्य का क्या प्रयोजन, जो कि दूसरे श्रोता के हृदय पर आघात कर उसे कम्पित न कर दे? और धनुर्धारी के इस प्रकार के बाण का क्या प्रयोजन जो कि दूसरे शत्रु के वक्षस्थल पर लगकर उसे शिर घूमने पर मजबूर न कर दे।

* **करोति कस्य नाह्लादं कथा कान्तेव भारती।** (1/13)
कान्ता-सदृशी महाभारत की कथा किसे आह्लादित नहीं करती?

* **वेत्ति विश्वम्भरा भारं गिरीणां गरिमाश्रयम्** (1/18)
पर्वतों के गरिमामूलक भार एवं विश्व के भार को धारण करने वाली पृथ्वी ही जानती है (अन्य कोई नहीं)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि A+B दोनों सूक्तियाँ नलचम्पू से उद्धृत हैं **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत - नलचम्पू- रामनाथ त्रिपाठी, पेज 15, 16

72. शिशुपालवध महाकाव्य के प्रथम सर्ग में प्रयुक्त छन्द है-
(A) वंशस्थ, पुष्पिताग्रा, शिखरिणी
(B) वंशस्थ, पुष्पिताग्रा, मन्दाक्रान्ता
(C) वंशस्थ, पुष्पिताग्रा, शार्दूलविक्रीडित
(D) मन्दाक्रान्ता, पुष्पिताग्रा, शिखरिणी

व्याख्या- शिशुपालवधम्, किरातार्जुनीयम् और नैषधीयचरितम् ये तीनों महाकाव्य बृहत्त्रयी के अन्तर्गत आते हैं।
इन तीनों महाकाव्यों के अन्तिम में छन्द परिवर्तन हुआ है।

शिशुपालवधम्- (प्रथम सर्ग)- 1से लेकर 73 श्लोक तक वंशस्थ छन्द, 74वें श्लोक में पुष्पिताग्रा, 75वें श्लोक में शार्दूलविक्रीडितम् छन्द का प्रयोग हुआ है।

किरातार्जुनीयम् (प्रथम सर्ग)- 1 से लेकर 44 श्लोक तक वंशस्थ छन्द, 45 वें में पुष्पिताग्रा और 46वें श्लोक में मालिनी छन्द का प्रयोग किया गया है।

नैषधीयचरितम् (प्रथमसर्ग)- 1 से लेकर 142 वें श्लोक तक वंशस्थ, 143 वें श्लोक में दोधक छन्द, 144वें श्लोक में वसन्ततिलका 145वें में शार्दूलविक्रीडित छन्द का प्रयोग किया गया है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि शिशुपालवध महाकाव्य में प्रयुक्त छन्द क्रमशः वंशस्थ, पुष्पिताग्रा और शार्दूलविक्रीडित है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत - शिशुपालवधम् - तारिणीश झा, पेज 03, 154,

73. 'रथाङ्गपाणिः' पद में समास है-
(A) तत्पुरुष **(B)** कर्मधारय
(C) बहुव्रीहि **(D)** द्वन्द्व

व्याख्या-

बहुव्रीहि समास		
(कृष्ण) रथाङ्गपाणिः	-	रथाङ्गं पाणौ यस्य सः
(विष्णु) चक्रपाणिः	-	चक्रं पाणौ यस्य सः
(सरस्वती) वीणापाणिः	-	वीणा पाणौ यस्याः सा
(शिव) शूलपाणिः	-	शूलं पाणौ यस्य सः
(राम) धनुष्पाणिः	-	धनुः पाणौ यस्य सः
(वैद्य) पीयूषपाणिः	-	पीयूषं पाणौ यस्य सः
(विष्णु) गदापाणिः	-	गदा पाणौ यस्य सः
तत्पुरुष समास		
चोरभयम्	-	चोरात् भयम्
व्याघ्रभयम्	-	व्याघ्रात् भयम्
राजभयम्	-	राज्ञः भयम्
सिंहभीतः	-	सिंहात् भीतः
वृकभीतिः	-	वृकात् भीतिः
सर्पभीः	-	सर्पात् भीः
कर्मधारय समास		
घनश्यामः	-	घन इव श्यामः
नीरदश्यामः	-	नीरद इव श्यामः
चन्द्रोज्ज्वलः	-	चन्द्र इव उज्ज्वलः
चन्द्राह्लादकः	-	चन्द्र इव आह्लादकः
द्वन्द्व समास		
पितरौ	-	माता च पिता च
पुत्रौ	-	पुत्रश्च पुत्री च
रामौ	-	रामश्च रामश्च
हंसौ	-	हंसश्च हंसी च
युवानौ	-	युवा च युवती च
दुहितरौ	-	दुहिता च दुहिता च
भ्रातरौ	-	भ्राता च स्वसा च
श्वसुरौ	-	श्वश्रूः च श्वसुरश्च

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि 'रथाङ्गपाणिः' में बहुव्रीहि समास है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत - शिशुपालवधम् (1/21)- तारिणीश झा, पेज 48

74. मृच्छकटिक की कथावस्तु किस नगर से सम्बद्ध है?

(A) उज्जयिनी नगर से **(B)** अयोध्या नगर से
(C) काशी नगर से **(D)** काञ्ची नगर से

व्याख्या- मृच्छकटिकम् की कथावस्तु- मृच्छकटिकम् की कथा कल्पना प्रसूत है तथा लोक प्रसिद्ध प्रेमकथानक पर इस प्रकरण की रचना की गई है। यह शूद्रक द्वारा प्रणीत दस अङ्कों का प्रकरणग्रन्थ है। उज्जयिनी से मध्यमवर्गीय समाज की दैनिक परिचर्या को इस रूपक का आधार बनाकर कवि ने इसे अत्यधिक स्वाभाविकता दे दी है।

चारुदत्त- मृच्छकटिकम् के नायक चारुदत्त कुलीन, सभ्य एवं एक सच्चरित्र युवक हैं। उसमें कुछ ऐसे महान् गुण हैं, कुछ ऐसी विलक्षणता है जिसके कारण उसने उज्जयिनी के सम्पूर्ण जन-मन को जीत लिया है। अपनी दानशीलता के कारण ही एक श्रेष्ठी से चारुदत्त दरिद्र बन गया है, और दरिद्र हो जाने पर भी उसे दुख इस बात का है कि याचक उसके घर को समृद्धिहीन जानकर अब वहाँ नहीं आते हैं।

अवन्तिपुर्यां द्विजसार्थवाहो युवा दरिद्रः किल चारुदत्तः।
गुणानुरक्ता गणिका च यस्य वसन्तशोभेव वसन्तसेना॥

(1/6)

उज्जयिनी में एक व्यापारी ब्राह्मण अथवा ब्राह्मणों का पालक निर्धन युवक चारुदत्त रहता था। वसन्तश्री की तरह उसी नगरी की वसन्तसेना नामक अत्यन्त छविमयी गणिका इसके गुणों से आकर्षित थी।

वसन्तसेना- वसन्तसेना उज्जयिनी की एक समृद्ध गणिका की पुत्री है नारी चरित्र की दृढ़ता का एक प्रतीक है सत्य और विशुद्ध प्रेम की एक प्रतिमूर्ति है। अपूर्वत्याग और गुणस्पृहा की आग में निरन्तर जलकर, गणिका वृत्ति के कालुष्य को जलाकर, भास्कर सोने की तरह दमकता एक नारी रत्न है। जिसे विट-वापी, लता या नौका की तरह सर्वभोग्या समझता है- **'त्वं वापीव लतेव नौरिव जनं वेश्यासि सर्वं भज'** (1/32) वह अति सम्पन्न प्रभावशाली राजश्यालक शकार जैसे अनुरक्त राजवल्लभ को अपनी माँ की प्रेरणा के बावजूद ठुकराकर निर्धन चारुदत्त के प्रति अपनी हार्दिक आसक्ति अभिव्यक्त कर शुद्ध और गम्भीर प्रेम का परिचय देती है। अपने मधुर शुद्ध और पवित्र प्रणय से अन्त में चारुदत्त के हृदय को अपनी ओर आकृष्ट कर लेती है। उज्जयिनी के आभूषणभूत चारुदत्त के हृदय को जीत लेती है।

विदूषक- मृच्छकरिकम् प्रकरण के विदूषक का नाम मैत्रेय है। यह जाति का ब्राह्मण तथा चारुदत्त का नर्मसचिव ही नहीं, घनिष्ट मित्र भी है। मैत्रेय चारुदत्त का एक सच्चा मित्र है, सुख-दुःख में साथ देने वाला एक अनन्य बन्धु। चारुदत्त के शब्दों में वह उसका सार्वकालिक मित्र है।

'अये सर्वकालिकमित्रं मैत्रेयः प्राप्तः'

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि मृच्छकटिकम् की कथावस्तु उज्जयिनी से सम्बद्ध है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- मृच्छकटिकम्- जगदीशचन्द्रमिश्र, भू.पेज- 26-28

75. निम्न में से मृच्छकटिकम् का सहवचन है-
(A) सुखं हि दुःखान्यनुभूय शोभते
(B) विभवाऽनुगता भार्या
(C) शून्यमपुत्रस्य गृहम्
(D) उपर्युक्त तीनों

व्याख्या- महाकवि शूद्रक द्वारा प्रणीत मृच्छकटिकम् में दस अङ्क हैं। जिसमे अलङ्कारन्यास नामक प्रथमोऽङ्क में चारुदत्त कहते हैं कि-

* **सुखं हि दुःखान्यनुभूय शोभते घनान्धकारेष्विव दीपदर्शनम्**
सुखात्तु यो याति नरो दरिद्रतां धृतः शरीरेण मृतः स जीवति
चारुदत्त का कथन है- घोर अन्धेरे में दीये के उजाले का जो आनन्द है, वही मजा तो दुःख झेलने के बाद सुख पाने का है। मगर, मित्र अमीरी की कब्र पर जन्मी गरीबी की घास तो बड़ी जहरीली होती है। ऐसा आदमी तो जिन्दा रहकर भी मरा ही होता है। (मृच्छ.1/10)

* **विभवानुगता भार्या सुखदुःखसुहृद्भवान्।**
सत्यञ्च न परिभ्रष्टं यद्दरिद्रेषु दुर्लभम् ॥ 3/28
चारुदत्त विदूषक से कहता है- विभव के अनुसार निर्वाह करने वाली पत्नी, सुख दुख में साथ निभाने वाली तुम जैसे मित्र और सच्चाई का पल्ला थामे रहना भला किस गरीब को नसीब है, मेरे पास तो ये सारी चीजे मौजूद हैं।

* **शून्यमपुत्रस्य गृहं, चिरशून्यं नास्ति यस्य सन्मित्रम्।**
मूर्खस्य दिशः शून्याः, सर्वं शून्यं दरिद्रस्य॥
(मृच्छ.1/8)
चारुदत्त का कथन- पुत्रहीन व्यक्ति का घर सूना होता है। सच्चे मित्र के अभाव में सारा जीवन सूना होता है। मूर्खों की सारी दिशाएँ सूनी होती हैं, और दरिद्रों के लिए सारा संसार सूना होता है।

* **दारिद्र्यान्मरणाद्वा मरणं मम रोचते न दारिद्र्यम्।**
अल्पक्लेशं मरणं दारिद्र्यमनन्तकं दुःखम्॥
(मृच्छ.1/11)
चारुदत्त विदूषक से कहता है- मृत्यु और गरीबी दोनों में से गरीबी की अपेक्षा मृत्यु ही मुझे अधिक अच्छी लगती है। क्योंकि मृत्यु तो मनुष्य को एक बार ही मरने का कष्ट देती है किन्तु यह दरिद्रता तो आजीवन दुःख भोगने को विवश कर देती है।

अन्य सूक्तियाँ

* **अहो निर्धनता सर्वापदामास्पदम्॥** (मृच्छ.1/14) चारुदत्त का कथन- 'हाय सारी विपत्तियों की जड़ यही दरिद्रता है।

* **धिगस्तु खलु दारिद्र्यमनिवेदितपौरुषम्।**
यदेतद्गर्हितं कर्म निन्दामि च करोमि च॥
(मृच्छ.3/19)
शर्विलक विदूषक से कहता है- अप्रदर्शित पुरुषार्थ वाली इस गरीबी को धिक्कार है जिस काम की मैं स्वयं निन्दा करता हूँ उसे ही करने के लिए इस गरीबी के कारण विवश भी होता हूँ।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि सुखं हि दुःख.. विभवानुऽगता भार्या, शून्यमपुत्रस्य..यह तीनों मृच्छकटिकम् के सहवचन (कथन) है।

अतः विकल्प 'D'सही है।

स्रोत - मृच्छकटिकम् - रमाशङ्कर त्रिपाठी, पेज 13,28, 30

76. पञ्चीकरण प्रक्रिया का विशद विवेचन है-
(A) तर्कभाषा में
(B) सांख्यकारिका में
(C) वेदान्तसार में
(D) उपर्युक्त तीनों में

व्याख्या- सदानन्द कृत वेदान्तसार में पञ्चीकरण प्रक्रिया का विशद विवेचन है।

द्विधा विधाय चैकैकं चतुर्धा प्रथमं पुनः।
स्वस्वेतरद्वितीयांशैर्योजनात् पञ्च पञ्च ते॥

प्रत्येक भूत को दो भागों में विभक्त करके फिर प्रथम भाग को चतुर्धा विभक्त करके, अपने से भिन्न चार भूतों के द्वितीय भाग में जोड़ देने से, वे आकाशादि पञ्चात्मक (पञ्चीकृत) हो जाते हैं।

पञ्चीकरण प्रक्रिया

	आकाश	वायु	अग्नि	जल	पृथ्वी
	1/2	1/2	1/2	1/2	1/2
1/8	वायु	आकाश	आकाश	आकाश	आकाश
1/8	अग्नि	अग्नि	वायु	वायु	वायु
1/8	जल	जल	जल	अग्नि	अग्नि
1/8	पृथिवी	पृथिवी	पृथिवी	पृथिवी	जल

पञ्चीकृत पञ्चमहाभूत

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि पञ्चीकरण प्रक्रिया का वर्णन वेदान्तसार में प्राप्त होता है।

अतः विकल्प 'C' सही है।

स्रोत - वेदान्तसार- राकेशशास्त्री, पेज 200

77. 'अधोलिखित में से सत्कार्यवाद का हेतु नहीं है-

(A) असदकरण **(B)** उपादानग्रहण
(C) सर्वसम्भवभाव **(D)** शक्त का शक्यकरण

व्याख्या- ईश्वरकृष्ण कृत सिद्धान्त है- सत्कार्यवाद, इसके पाँच हेतु बताये गये हैं-

असदकरणादुपादानग्रहणात् सर्वसम्भवाभावात्।
शक्तस्य शक्यकरणात् कारणभावाच्च सत्कार्यम्॥9॥

(1) असद्-अकरणात् (2) उपादानग्रहणात्
(3) सर्वसम्भव-अभावात् (4) शक्तस्य-शक्यकरणात्
(5) कारण-भावात्

इसी सिद्धान्त के कारण सांख्यशास्त्र सम्पूर्ण विश्व प्रपञ्च रूप कार्य को अपने मूलकारण प्रकृति / अव्यक्त अथवा प्रधान में अव्यक्त रूप से स्वीकार करता है।

(1) **असत् -अकरणात्** = बालू से तेल नहीं निकाल सकते।
(2) **उपादान -ग्रहणात्** = घड़े के निर्माण में मिट्टी अनिवार्य है।
(3) **सर्वसम्भव-अभावात्** = सभी वस्तुओं से सभी की उत्पत्ति सम्भव नहीं
(4) **कारण -भावात्** = कारण कार्य भिन्न हैं।
(5) **शक्तस्य शक्यकरणात्** = दही के लिये दूध ही समर्थ है। कारण है। दूसरा कुछ नहीं।

अतः विकल्प C सही है।

नोट :- उपर्युक्त प्रश्न में मुद्रणदोष के कारण आयोग ने इस प्रश्न के उत्तर को **F** कर दिया था किन्तु यहाँ मुद्रणदोष दूर कर दिया गया है।

स्रोत - सांख्यकारिका (का 09)- राकेश शास्त्री, पेज 29

78. सांख्यकारिका के अनुसार सत्त्व गुण में नहीं होता है-

(A) लाघव **(B)** प्रकाशत्व
(C) उपर्युक्त दोनों **(D)** चलत्व

व्याख्या- ईश्वरकृष्ण सांख्यकारिका में तीन गुणों की चर्चा करते हुए कहते हैं-

सत्त्वं लघुप्रकाशकमिष्टमुपष्टम्भकं चलं च रजः।
गुरुवरणकमेव तमः प्रदीपवच्चार्थतो वृत्तिः॥ (का.-13)

सत्त्व गुण- हल्का (लाघव) और प्रकाशित करने वाला (प्रकाशत्व) होता है।

रजो गुण - प्रेरक और क्रियाशील होता है।

तमो गुण - भारी और नियामक होता है।

सत्त्व - प्रीति (सुख) सुखात्मक
रज - अप्रीति (दुःख) दुःखात्मक
तम - विषाद (मोह) मोहात्मक

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि सत्वगुण में 'चलत्व' नहीं होता है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत - सांख्यकारिका (का. 13)- राकेश शास्त्री, पेज 45

79. अधोलिखित में से श्रीमद्भगवद्गीता में जो नहीं कहा गया-

(A) ईशावास्यमिदं सर्वम् **(B)** कर्म ब्रह्मोद्भवं विद्धि
(C) योगस्थः कुरु कर्माणि **(D)** ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म

व्याख्या- गीता महाभारत के भीष्मपर्व से उद्धृत है, जिसमें 18 अध्याय एवं 700 श्लोक हैं -

गीता के तीसरे अध्याय में कर्म का विषय प्रतिपादित है -

* **कर्मब्रह्मोद्भवं विद्धि ब्रह्माक्षरसमुद्भवम्।**
तस्मात्सर्वगतं ब्रह्मनित्यं यज्ञे प्रतिष्ठितम्॥

(गीता 3/15)

कर्मसमुदाय को तू वेद से उत्पन्न और वेद को अविनाशी परमात्मा से उत्पन्न हुआ जान। इससे सिद्ध होता है कि सर्वव्यापी परम अक्षर परमात्मा सदा ही यज्ञ में प्रतिष्ठित है।

गीता के द्वितीय अध्याय में कहा गया है-

* **योगस्थः कुरु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा धनञ्जय।**
सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते॥

(2/48)

हे धनञ्जय! तू आसक्ति को त्यागकर तथा सिद्धि और असिद्धि में समान बुद्धि वाला होकर योग में स्थित हुआ कर्तव्यकर्मों को कर समत्व ही योग कहलाता है।

* **ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन्।**
यः प्रयाति त्यजन्देहं स याति परमां गतिम्॥ (8/13)

श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि- परमात्मा सम्बन्धी योगधारणा में स्थित होकर जो पुरुष 'ॐ' इस एक अक्षररूप ब्रह्म को उच्चारण करता हुआ और उसके अर्थस्वरूप ब्रह्म का उच्चारण करता हुआ और उसके अर्थस्वरूप मुझ निर्गुण ब्रह्म का चिन्तन करता हुआ शरीर को त्याग कर जाता है, वह पुरुष परमगति को प्राप्त होता है।

➢ ईशावास्योपनिषद् शुक्ल यजुर्वेद काण्व शाखीय संहिता का चालीसवाँ अध्याय है। इसमें कुल अठारह मन्त्र हैं प्रथम मन्य है-
ईशावास्यमिदं सर्वम् यत्किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम्॥1॥
मनुष्यों के प्रति वेदभगवान् का पवित्र आदेश है कि अखिल विश्व-ब्रह्माण्ड में जो कुछ भी यह चराचरात्मक जगत् तुम्हारे देखने-सुनने में आ रहा है, सब का सब सर्वाधार, सर्वनियन्ता, सर्वाधिपति, सर्वशक्तिमान्, सर्वज्ञ, सर्वकल्याण गुण स्वरूप परमेश्वर से व्याप्त है, सदा सर्वत्र उन्हीं से परिपूर्ण है।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'ईशावास्यमिदं'- यह सूक्ति गीता की नहीं है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत - श्रीमद्भगवद्गीता- 2/48, 8/13, 3/15

80. 'कुमारपालित' पात्र के रूप में वर्णित हैं-
(A) मृच्छकटिकम् में **(B)** कादम्बरी में
(C) नलचम्पू में **(D)** शिशुपालवधम् में

व्याख्या- बाणभट्ट कृत कादम्बरी कथामुख में राजा शूद्रक के प्रधान अमात्य कुमारपालित हैं। प्रधानामात्यं कुमारपालित-नामानमब्रवीत्...... इस पंक्ति से स्पष्ट है कि राजा शूद्रक के प्रधान अमात्य कुमारपालित थे।

पुरुष पात्र	परिचय
शूद्रक	– विदिशा का राजा, चन्द्रापीड का अवतार
कुमारपालित	– शूद्रक का प्रधान अमात्य
जाबालि	– कथा कहने वाले महर्षि, हारीत के पिता।
हारीत	– मुनि कुमार,जाबालि के पुत्र
चन्द्रापीड	– प्रधान नायक, तारापीड का पुत्र
तारापीड	– चन्द्रापीड के पिता, उज्जयिनी के राजा
वैशम्पायन	– चन्द्रापीड का सखा, शुकनास का पुत्र
शुकनास	– तारापीड का मन्त्री और वैशम्पायन का पिता
बलाहक	– राजा तारापीड का बलाधिकृत (सेनापति)
मेघनाद	– बलाहक का पुत्र, चन्द्रापीड का महाबलाधिकृत
पुण्डरीक	– महर्षि श्वेतकेतु का पुत्र, महाश्वेता का आराध्य प्रेमी
कपिञ्जल	– पुण्डरीक का सखा मुनिकुमार
श्वेतकेतु	– पुण्डरीक के पिता
हंस	– महाश्वेता के पिता
चित्ररथ	– गन्धर्वों के राजा, कादम्बरी के पिता
केयूरक	– कादम्बरी का वीणावाहक गन्धर्वकुमार
मातङ्गक	– शबर सेनापति
क्षीरोद	– गन्धर्वराज चित्ररथ का कञ्चुकी
कैलास	– अन्तःपुर का प्रधान कञ्चुकी
मङ्गल	– शुकनास का भृत्य
जालपाद	– जाबालि का शिष्य

स्त्री पात्र-	परिचय
कादम्बरी	– कथा की नायिका, गन्धर्वराज चित्ररथ की पुत्री
मदिरा	– चित्ररथ की पत्नी, कादम्बरी की माता।
गौरी	– हंस की पत्नी, महाश्वेता की माता
मदलेखा	– कादम्बरी की अन्य सखी
तमालिका	– कादम्बरी की अन्य सखी
तरलिका	– महाश्वेता की ताम्बूल करङ्कवाहिनी
पत्रलेखा	– कुलूतेश्वर की पुत्री, चन्द्रापीड की प्रियसखी
विलासवती	– तारापीड की पत्नी, चन्द्रापीड की माता
मनोरमा	– शुकनास की पत्नी, वैशम्पायन की माता
मकरिका	– विलासवती की ताम्बूलकरङ्कवाहिनी
कुलवर्धना	– विलासवती के अन्तःपुर की महत्तरिका
चाण्डालकन्या	–पुण्डरीक की माता, लक्ष्मी का अवतार

अन्यपात्र-	परिचय
वैशम्पायन	– कथा सुनाने वाला शुकशावक, पुण्डरीक का अवतार
इन्द्रायुध	– चन्द्रापीड का अश्व,कपिञ्जल का अवतार
गन्धमादन	– चन्द्रापीड का राजकुजर
कालिन्दी	– कादम्बरी की सारिका
परिहास	– कादम्बरी का शुक, कालिन्दी का पति

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि कुमारपालित पात्र कादम्बरी में वर्णित है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत - कादम्बरी कथामुख- तारिणीश झा, पेज 101

81. गद्यकाव्य का निम्न में जो प्रभेद नहीं है?
(A) वृत्तगन्धि **(B)** चूर्णक
(C) कल्लिका प्राय **(D)** मुक्तक

व्याख्या- आचार्य विश्वनाथ प्रणीत साहित्यदर्पण के षष्ठ परिच्छेद में आचार्य विश्वनाथ ने गद्यकाव्य के चार भेद माने हैं- 1. मुक्तक 2. वृत्तगन्धि 3. उत्कलिकाप्राय 4. चूर्णक
वृत्तगन्धोज्झितं गद्यं मुक्तकं वृत्तगन्धि च।
भवेदुत्कलिकाप्रायं चूर्णकं च चतुर्विधम्॥
(6/330-331)

1- मुक्तक गद्यकाव्य समास रहित होता है।
उदाहरण- गुरुर्वचसि पृथुरुरसि...इत्यादि।
2- वृत्तगन्धि गद्यकाव्य में पद्य के अंश पड़े रहते हैं।
उदाहरण- समरकण्डूलनिबिडभुजदण्डकुण्डलीकृतकोदण्ड-शिञ्जिनीटंकारोज्जागरितवैरिनगर...इत्यादि।
3- उत्कलिकाप्राय गद्यकाव्य में दीर्घ समास होते हैं-
उदाहरण- 'अणिसविसुमरणिसिदसरविसरविदलि-दसमरपरिगद-पवरपरबल...' इत्यादि।
4- चूर्णक गद्यकाव्य में छोटे-छोटे समास होते हैं।
उदाहरण- 'गुणरत्नसागर, जगदेकनागर, कामिनीमदन जनरञ्जन' आदि। ⟹ **कथा- कथायां सरसं वस्तु गद्यैरेव विनिर्मितम्। क्वचिदत्र भवेदार्या क्वचिद्वक्त्रापवक्त्रके। आदौ पद्यैर्नमस्कारः खलादेर्वृत्तकीर्तनम् ॥**

(7/332-333)

कथा में सरस वस्तु गद्यों द्वारा ही बनायी जाती है। इसमें कहीं-कहीं आर्याछन्द और कहीं वक्त्र तथा अपरवक्त्र छन्द होते हैं। प्रारम्भ में पद्यमय नमस्कार और खलादिकों का चरित निबद्ध होता है। जैसे- कादम्बरी।

⟹ **आख्यायिका-कथांशानां व्यवच्छेद आश्वास इति बध्यते। आर्यावक्त्रापवक्त्राणां छन्दसा येन केनचित्। अन्यापदेशेनाश्वासमुखे भाव्यर्थसूचनम्।**
यथा- हर्षचरितादिः।
आख्यायिका भी कथा के समान होती है। इसमें कविवंशवर्णन होता है, और अन्य कवियों का वृत्तान्त तथा पद्य भी कहीं-कहीं रहते हैं। यहाँ कथा भागों का नाम उच्छ्वास रखा जाता है। आर्या, वक्त्र या अपरवक्त्र छन्द के द्वारा अन्योक्ति से उच्छ्वास के आरम्भ में अगली कथा की सूचना दी जाती है। जैसे- हर्षचरित।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि गद्यकाव्य में कल्लिकाप्राय परिगणित नहीं है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत - साहित्यदर्पण-शालिग्राम शास्त्री, पेज 226

82. 'वेतालपञ्चविंशतिका' ग्रन्थ के लेखक हैं-
(A) त्रिविक्रमभट्ट **(B)** त्रिविक्रमसेन
(C) त्रिबलादित्य **(D)** त्रिरत्नाकर

व्याख्या-

कथा साहित्य

लेखक		ग्रन्थ
त्रिविक्रमसेन	–	वेतालपञ्चविंशतिका
विक्रमादित्य	–	सिंहासनद्वात्रिंशिका
सोमदेव	–	कथासरित्सागर
गुणाढ्य	–	बृहत्कथा
क्षेमेन्द्र	–	बृहत्कथामञ्जरी
बुधस्वामी	–	बृहत्कथाश्लोकसंग्रह
विष्णुशर्मा	–	पञ्चतन्त्रम्
नारायण पण्डित	–	हितोपदेश
बल्लालसेन	–	भोजप्रबन्ध
आर्यशूर	–	जातकमाला
राजशेखर	–	प्रबन्धकोष
सोड्ढल	–	उदयसुन्दरी कथा

चम्पूकाव्य

लेखक		ग्रन्थ
त्रिविक्रमभट्ट	–	नलचम्पू (दमयन्ती कथा)
त्रिविक्रमभट्ट	–	मदालसाचम्पू
हरिश्चन्द्र	–	जीवन्धरचम्पू
सोमदेवसूरि	–	यशस्तिलकचम्पू
राजाभोज (भोजराज)	–	रामायणचम्पू
अभिनवकालिदास	–	भागवतचम्पू
अनन्तभट्ट	–	भारतचम्पू

ऐतिहासिक काव्य

लेखक		ग्रन्थ
अश्वघोष	–	बुद्धचरितम्
बाणभट्ट	–	हर्षचरितम्
पद्मगुप्त	–	नवसाहसाङ्कदेवचरितम्
बिल्हण	–	विक्रमाङ्कदेवचरितम्
महाकवि कल्हण	–	राजतरङ्गिणी
कल्हण	–	सोमपालविजयम्
वामनभट्टबाण	–	वेमभूपालचरितम्

गीतिकाव्य/खण्डकाव्य/मुक्तककाव्य

लेखक		ग्रन्थ
कालिदास	–	मेघदूत
कालिदास	–	ऋतुसंहार
भर्तृहरि	–	नीतिशतकम्
भर्तृहरि	–	श्रृङ्गारशतकम्
भर्तृहरि	–	वैराग्यशतकम्
अमरुक	–	अमरुकशतकम्
जयदेव	–	गीतगोविन्दम्
बाणभट्ट	–	चण्डीशतकम्

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'वेताल-पञ्चविंशतिका' के लेखक 'त्रिविक्रमसेन' हैं। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

नोट :- प्रश्नपत्र में मुद्रणदोष के कारण उपर्युक्त प्रश्न का उत्तर आयोग ने F माना है।

स्रोत- संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास- (खण्ड-5) पेज-252

83. कथा साहित्य के रचनाकार के रूप में किसकी गणना नहीं है?

(A) क्षमाराव **(B)** महालिङ्ग शास्त्री
(C) नरहरि **(D)** रङ्गनाथाचार्य

व्याख्या-

कथा साहित्य		रचनाकार
कथामुक्तावली	–	क्षमाराव
कथासंग्रह	–	रङ्गनाथाचार्य
कथानककोशः	–	महालिङ्ग शास्त्री
मन्दारमञ्जरी	–	विश्वेश्वर पाण्डेय
पर्यटकत्रिंशत्	–	हृषीकेश शास्त्री भारद्वाज
हरिकथामृतम्	–	अरिभट्टनारायणदास
उपदेश प्रसाद	–	विजयलक्ष्मी
उत्तराखण्डयात्रा	–	शिवप्रसाद भट्टाचार्य
चारुचरित चर्चा	–	रमेशचन्द्र शुक्ल

गद्यकाव्य

रचना		लेखक		विधा
दशकुमारचरितम्	–	दण्डी	–	आख्यायिका
अवन्तिसुन्दरी	–	दण्डी	–	कथा
वासवदत्ता	–	सुबन्धु	–	कथा
कादम्बरी	–	बाणभट्ट	–	कथा
हर्षचरितम्	–	बाणभट्ट	–	आख्यायिका
मन्दारमञ्जरी	–	विश्वेश्वर पाण्डेय	–	कथासंग्रह
शिवराजविजय	–	अम्बिकादत्तव्यास	–	ऐतिहासिक उपन्यास
कथामुक्तावलिः	–	पण्डिताक्षमाराव	-	कथासंग्रह
ग्रामज्योतिः	–	पण्डिताक्षमाराव	-	कथासंग्रह
कथापञ्चकम्	–	पण्डिताक्षमाराव	-	कथासंग्रह

नाट्यग्रन्थ

रचना		लेखक		अङ्क
अभिज्ञानशाकुन्तलम्	–	कालिदास	–	07
मुद्राराक्षसम्	–	विशाखदत्त	–	07
उत्तररामचरितम्	–	भवभूति	–	07
महावीरचरितम्	–	भवभूति	–	07
अनर्घराघवम्	–	मुरारि	–	07
प्रसन्नराघवम्	–	जयदेव	–	07
प्रतिमानाटकम्	–	भास	–	07
वेणीसंहारम्	–	भट्टनारायण	–	06
अभिषेकनाटकम्	–	भास	–	06
अविमारकम्	–	भास	–	06
स्वप्नवासवदत्तम्	–	भास	–	06

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि कथा साहित्य के रचनाकारों में नरहरि परिगणित नहीं है।

अतः विकल्प 'C' सही है।

स्रोत- संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-5) पेज-259

84. निम्नलिखित में से कौन कवयित्री संस्कृत साहित्य की नहीं है?

(A) शीला भट्टारिका **(B)** विकटनितम्बा
(C) विज्जका **(D)** पत्रलेखा

व्याख्या- लौकिक संस्कृत साहित्य की कवयित्रियाँ- भारतीय इतिहास के प्राचीन काल तथा मध्यकाल के अन्तर्गत श्री सम्पन्न कुल में उत्पन्न कन्याओं को विविध शास्त्रों के अतिरिक्त चौंसठ ललित कलाओं की भी शिक्षा दी जाती थी, जिनमें काव्यकला को अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण तथा उपादेय माना जाता था। संस्कृत में काव्यरचना करने वाली महिला कवियों की परम्परा का अस्तित्व असन्दिग्धभाव से प्रमाणित होता है। लौकिक संस्कृत साहित्य की काव्यमूर्ति को अपनी मञ्जुल कृतियों से विभूषित करने वाली महिला कवियों के नाम विभिन्न सुभाषित संग्रहों तथा अलङ्कारशास्त्र के लक्षण-ग्रन्थों में उपलब्ध होते हैं।

प्रस्तुत निबन्ध में चर्चित महिला कवियों के नाम कालक्रम के अनुसार निम्नस्थ है

शीला भट्टारिका	–	ईसा की नौवीं सदी
विकट नितम्बा	–	ईसा की नौवीं सदी
विज्जका	–	ईसा की नौवीं सदी
तिरुमलाम्बा	–	ईसा की सोलहवीं सदी
गङ्गादेवी	–	ईसा की पन्द्रहवीं सदी
चिन्नम्मा	–	ईसा की दसवीं सदी
सरस्वती	–	ईसा की दसवीं सदी

सीता – ईसा की दसवीं सदी
रामभद्राम्बा – ईसा की सत्रहवीं सदी
पद्मावती – ईसा की सत्रहवीं सदी

शीलाभट्टारिका शीला भट्टारिका संस्कृत की महिला कवयित्रियों में बहुचर्चित हैं। इनके पद्य कवीन्द्रवचन समुच्चय, शाङ्र्गधरपद्धति तथा अलङ्कारसर्वस्व में उद्धृत किए गए हैं।

विकट नितम्बा कवयित्री विकटनितम्बा का नाम संस्कृत महिला कवियों की प्रथम पंक्ति में सुप्रतिष्ठित माना जाता है। इनके द्वारा रचित पद्यों के उद्धरण संस्कृत के सभी प्रमुख सुभाषित संग्रहों तथा अलङ्कारशास्त्र के ग्रन्थों में प्राप्त होता है।

विज्जका संस्कृत की महिला कवियों में कवयित्री विज्जका का नाम शृङ्गारपरक सुप्रसिद्ध मुक्तक रचनाओं तथा अपनी काव्य प्रतिभा के प्रति मुखर चेतना के लिए विद्वद्गोष्ठी में चिरकाल से प्रशंसा के साथ चर्चित रहता आया है। इनके पद्य सदुक्तिकर्णामृत, शार्ङ्गधरपद्धति, सूक्तिमुक्तावली, सुभाषितहारावली तथा सुभाषितरत्न भाण्डा-गार जैसे प्रायः सुभाषितसंग्रहों में समुद्धृत किए गये हैं।

पत्रलेखा यह बाणभट्ट कृत कादम्बरी कथामुख में नायक चन्द्रापीड की प्रियसखी के रूप में वर्णित है। कुलुतेश्वर की पुत्री और चन्द्रापीड की ताम्बूलकरङ्कवाहिनी है। यह संस्कृत कवियित्री नहीं हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि पत्रलेखा संस्कृत साहित्य में कवयित्री नहीं हैं अपितु यह एक पात्र है।

अतः विकल्प 'D' सही है।

स्रोत - कादम्बरी कथामुख- जयशंकर लाल त्रिपाठी, पेज भू. 37

85. माघ को 'घण्टापथ' की उपाधि से अलंकृत किया गया है?
(A) अच्छोद सरोवर के वर्णन के कारण
(B) रैवतक पर्वत के वर्णन के कारण
(C) नारद के वर्णन के कारण
(D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या- शिशुपालवध- नामक महाकाव्य के रचयिता महाकवि माघ को परम्परा से विद्वानों ने श्रेष्ठ महाकाव्य का प्रणेता माना है- 'काव्येषु माघः' यह महाकवि माघ की एकमात्र कृति **20 सर्गों** के महाकाव्य के रूप में है। इसका कथानक **महाभारत के सभापर्व** (अध्याय-35-43) से लिया गया है।

माघ रचित शिशुपालवध में महाकाव्य के सभी लक्षण घटित होते हैं। इसीलिए विद्वानों के बीच एक लोकोक्ति है- **'काव्येषु माघः कविःकालिदासः'** अर्थात् कवि की दृष्टि से कालिदास श्रेष्ठ हैं, किन्तु काव्य (महाकाव्य) के लेखन में माघ उत्कृष्ट हैं।

* इस काव्य के **नायक श्रीकृष्ण** हैं जो यदुपति तथा विष्णु के अवतार हैं। इस काव्य का प्रधान रस **वीररस** है।
* श्रियः मङ्गल पद से आरम्भ होने वाले इस महाकाव्य में वस्तु– निर्देशात्मक मंगलाचरण है।
* **माघ की प्रशस्तियाँ-** मेघे माघे गतं वयः। अर्थात् माघकाव्य के अध्ययन में और मेघदूत का आनन्द लेने में सारी आयु बीत गयी।
* माघ की सभी उपमाओं में यह बहुत प्रसिद्ध है, जिसके कारण उन्हें **'घण्टामाघ'** की उपाधि प्राप्त हुई, लम्बी-लम्बी तथा ऊपर की ओर रस्सी के समान फैलती हुई किरणों वाले सूर्य के उदय तथा चन्द्रमा के अस्त होते रहने पर यह रैवतक पर्वत नीचे की ओर लटकती हुई दो घण्टाओं से वेष्टित गजराज के समान शोभनीय प्रतीत हो रहा है।

उदयति विततोर्ध्वरश्मिरज्जावहिमरुचौ हिमधाम्नि याति चास्तम्।
वहति गिरिरयं विलम्बिघण्टाद्वयपरिवारितवारणेन्द्रलीलाम्॥
(4/20)

माघे सन्ति त्रयो गुणाः- माघ में तीनों गुणों का समन्वय है। अर्थात् **उपमा कालिदासस्य** उपमा में महाकवि कालिदास प्रसिद्ध हैं तो **भारवि में अर्थगौरव, 'भारवेरर्थगौरवम्'** दण्डी में पदलालित्य है किन्तु माघ में ये तीनों गुण उपमा, अर्थगौरव और पदलालित्य समाहित है।

राजनीति की तुलना शब्दविद्या से की गयी है-
'शब्दविद्येव नो भाति राजनीतिरपस्पशा' (2/112)
माघ के पाण्डित्य और कवित्व के विषय में कई प्रशस्तियाँ विख्यात हैं। इनके शब्द भाण्डागार के विषय में कहा गया है- **'नवसर्गगते माघे नवशब्दो न जायते।'** अर्थात् माघ काव्य में नौ सर्ग समाप्त कर लेने पर संस्कृत में कोई नया शब्द जानने को रह नहीं जाता।

टीका- शिशुपालवध पर अनेक टीकाएं हैं। जिनमें वल्लभदेव कृत 'सन्देहविषौषधि', मल्लिनाथकृत 'सर्वङ्कषा' टीका, भरतमल्लिक कृत 'सुबोधा' दिनकरमिश्र कृत 'सुबोधिनी टीका' यह सब प्रमुख टीकायें हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि माघ को घण्टापथ की उपाधि रैवतक पर्वत के वर्णन के कारण मिली

है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत - शिशुपालवधम् (4/20)- हरगोविन्द शास्त्री,

86. 'हतो नरो वा कुञ्जरो मे न निर्णयः' इनमें कौन सा अलङ्कार है?

(A) भ्रान्तिमान् **(B)** उत्प्रेक्षा

(C) सन्देह **(D)** अपह्नुति

व्याख्या- आचार्य मम्मट कृत काव्यप्रकाश के नवें और दशवें उल्लास में क्रमशः शब्दालङ्कार और अर्थालङ्कार की चर्चा की गई है।

⇒ **सन्देह अलङ्कार-** ससन्देहस्तु भेदोक्तौ तदनुक्तौ च संशयः। प्रकृतस्य समेन यत् इति पूर्वान्वयः जहाँ उपमेय का उपमान के साथ संशयात्मक ज्ञान होता है वहाँ ससन्देह अलङ्कार होता है। भेद की उक्ति तथा अनुक्ति से वह दो प्रकार का होता है।

उदाहरण- हतो नरो वा कुञ्जरो मे न निर्णयः।
अश्वत्थामा मारा गया, नर है या हाथी, पता नहीं।

यहाँ संशयात्मक ज्ञान होने से सन्देह अलंकार है।

⇒ **भ्रान्तिमान् -** भ्रान्तिमानन्यसंवित् तत्तुल्यदर्शने। उसके समान वस्तु के देखने पर अन्य वस्तु की प्रतीति ही भ्रान्तिमान् अलङ्कार है।

उदाहरण-

कपाले मार्जारः पय इति करान् लेढि शशिनः
तरुच्छिद्रप्रोतान् बिसमिति करी संकलयति।
रतान्ते तल्पस्थान् हरति वनिताऽप्यंशुकमिति
प्रभामत्तश्चन्द्रो जगदिदमहो विप्लवयति।।

अर्थ -बिलाव खप्पर में स्थित चन्द्रमा की किरणों को दूध है, ऐसा समझकर चाट रहा है, हाथी वृक्षों के छिद्रों से गिरने वाली चाँदनी को बिसतन्तु (मृणाल) समझकर ग्रहण कर रहा है, कोई युवती रतिक्रीडा के अन्त में पलङ्ग पर स्थित किरणों को श्वेतवस्त्र समझकर उठाने लगती है, इस प्रकार अहो कान्ति से मतवाला यह चन्द्रमा इस संसार को भ्रम में डाल रहा है।

विशेष- उक्त पद्य में प्रस्तुत चन्द्रकिरणों की शुभ्रता से अप्रस्तुत दुग्धादि की सदृशतावश अप्रस्तुत दुग्धादि का भ्रमात्मक या निश्चयात्मक ज्ञान होने से भ्रान्तिमान् अलङ्कार है।

⇒ **उत्प्रेक्षा-** सम्भावनमथोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य समेन यत् । जो उपमेय की उपमान के साथ सम्भावना की जाती है, वह उत्प्रेक्षा अलङ्कार है।

उदाहरण- लिम्पतीव तमोऽङ्गानि वर्षतीवाञ्जनं नभः।
असत्पुरुषसेवेव दृष्टिर्विफलतां गता।।

अन्धकार अङ्गों को मानो लीप सा रहा है। आकाश का जल मानो वर्षा कर रहा है, इस प्रकार दुष्ट व्यक्ति की सेवा के समान दृष्टि व्यर्थ हो गई है।

* मृच्छकटिकम् में उक्त पद्य में लिम्पतीव तमोऽङ्गानि में 'तम' उपमेय रूप तथा 'लेपन' उपमान रूप है। अतः 'लिम्पतीव' में क्रिया के साथ 'इव' का प्रयोग सम्भावना अर्थ में करने के कारण उपमेय में उपमान की सम्भावना व्यक्त की गयी है इस कारण क्रियोत्प्रेक्षा अलङ्कार है।

अपह्नुति- प्रकृतं यन्निषिध्यान्यत्साध्यते सा त्वपह्नुतिः। उपमेय का निषेध करके जो अन्य उपमान की सिद्धि की जाती है उसे अपह्नुति अलङ्कार कहते हैं।
जहाँ उपमेय को असत्य प्रतिपादित कर उपमान को सत्य रूप में स्थापित किया जाता है तो वहाँ अपह्नुति अलङ्कार होता है।

उदाहरण- बत सखि! कियदेतत् पश्य वर स्मरस्य
प्रियविरहकृशेऽस्मिन् रागिलोके तथा हि -
उपवनसहकारोद्भासिभृङ्गच्छलेन ।
प्रतिविशिखमनेनोट्टङ्कितं कालकूटम् ।।

हाय सखि, देखो तो प्रिय के विरह से दुबले हुए रागी लोगों के प्रति कामदेव का यह कितना वैरभाव है कि बगीचे के आम के बौरों पर बैठे हुए (शोभित) भौरों के बहाने से इसने प्रत्येक बाण पर कालकूट विष लगा दिया है।
यहाँ भौरों से युक्त आम के बौर नहीं हैं अपितु कालकूट विषसहित (कामदेव के) बाण हैं यह प्रतीति होती है। (भ्रमर) युक्त सहाकारों के बिना निषेध करके कालकूट युक्त बाणों की स्थापना की जाने से आर्थी अपह्नुति है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'हतो नरो वा कुञ्जरो मे न निर्णयः' में सन्देह अलङ्कार है। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत - काव्यप्रकाश-आचार्य विश्वेश्वर, पेज 462

87. पट का समवायिकारण है-

(A) कुलाल **(B)** वेमा

(C) तुरी **(D)** तन्तु

व्याख्या-

* गौतम प्रणीत न्यायदर्शन का प्रकरण ग्रन्थ है तर्कभाषा जिसके रचनाकार केशव मिश्र हैं।

* न्यायदर्शन में पाँच अध्याय हैं तथा प्रत्येक अध्याय में दो आह्निक हैं। आरम्भ में प्रमाण-प्रमेय-संशय-प्रयोजन-दृष्टान्त-सिद्धान्त- अवयव-तर्क-निर्णय-वाद-जल्प-वितण्डा-हेत्वाभासच्छल-जाति-निग्रहस्थानानां तत्त्वज्ञानान्निःश्रेयसाधिगमः (न्या.सू.1.1.)

इस सूत्र के तत्त्वज्ञान से निःश्रेयस् की प्राप्ति होती है। तदनन्तर प्रमाण की चर्चा करते हुये तीन प्रकार के कारण की चर्चा करते हैं-

* तच्च कारणं त्रिविधम् -समवायि - असमवायि -निमित्तभेदात्। कारण तीन प्रकार के हैं- समवायि, असमवायि और निमित्त।

⇒ **समवायिकारणम्-** यत्समवेतं कार्यमुत्पद्यते तत्समवायिकारणम् यथा-तन्तवः पटस्य समवायिकारणम्।

जिसमें कार्य समवाय सम्बन्ध से उत्पन्न होता है जैसे- तन्तु पट के समवायि कारण हैं क्योंकि तन्तुओं में ही पट (कार्य) समवाय सम्बन्ध से उत्पन्न होता है, तुरी आदि में नहीं।

⇒ **असमवायिकारण-** यत्समवायिकारणप्रत्यासन्नमवधृतसामर्थ्यं तदसमवायिकारणम्। यथा तन्तुसंयोगः पटस्यासमवायिकारणम्। जो समवायि कारण में प्रत्यासन्न होता है और जिसकी कार्य के प्रति सामर्थ्य निश्चित होती है वह असमवायि कारण है। जैसे- तन्तुसंयोग पट का असमवायि कारण है।

निमित्तकारण- यन्न समवायिकारणम् नाप्यसमवायिकारणम् अथ च कारणम्। यथा वेमादिकं पटस्य निमित्तकारणम्। जो न समवायिकारण है, न ही असमवायिकारण है, किन्तु कारण है वह निमित्त कारण कहलाता है। जैसे वेमा, तुरी आदि पट के निमित्त कारण हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट होता है कि पट का समवायिकारण तन्तु है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत - तर्कभाषा- गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज 39

88. वेदान्तसार के अनुसार सत्ता के कितने प्रकार हैं?

(A) दो **(B)** तीन
(C) चार **(D)** पाँच

व्याख्या- अद्वयानन्द के शिष्य सदानन्द द्वारा रचित वेदान्तसार एक प्रकरण ग्रन्थ है। सदानन्द ने सर्वप्रथम अपने अभीष्ट की सिद्धि के लिए अखण्ड सत् चित् आनन्दस्वरूप, वाणी के अविषय, सम्पूर्ण जगत् के आधार आत्मा का आश्रय लिया है।

⇒ वेदान्तसार में अज्ञान की दो शक्तियों का उल्लेख किया है- आवरण तथा विक्षेप। ''अस्याज्ञानस्यावरणविक्षेपनामकमस्ति शक्तिद्वयम्।''

⇒ वेदान्त दर्शन तीन प्रकार की सत्ता स्वीकार करता है।

(i) प्रातिभासिक सत्ता- वेदान्त की दृष्टि में 'सीपी में चाँदी की प्रतीति' तथा 'रस्सी में साँप की प्रतीति' प्रातिभासिक सत्ता है। जो यथार्थ ज्ञान के साथ स्वतः समाप्त हो जाती है।

(ii) व्यावहारिक सत्ता- प्रातिभासिक सत्ता की अपेक्षा इसका स्थायित्त्व अधिक समय तक रहता है। प्रत्यक्ष रूप से देखने पर उनकी सत्ता को नकारा नहीं जा सकता, किन्तु ब्रह्मज्ञान की स्थिति में इसका बाध हो जाता है। शंकराचार्य के अनुसार यह जगत् एकान्ततः सत्य न होकर केवल व्यवहारकाल में सत्य होता है। अतः इसे व्यावहारिक सत्ता कहते हैं।

(iii) पारमार्थिक सत्ता- यह पूर्णतया सत्य और शाश्वत् है। भूत, भविष्य एवं वर्तमान तीनों कालों में इसका अस्तित्त्व है। यह भौतिक पदार्थों से विलक्षण है। एकमात्र ब्रह्म की ही पारमार्थिक सत्ता है।

सत्ता के त्रिविध रूप

प्रातिभासिक सत्ता- रज्जु में सर्प की प्रतीति, सीपी में चाँदी की प्रतीति। क्षणिक अस्तित्त्व, यथार्थज्ञान के बाद समाप्ति

व्यावहारिक- घट पट आदि व्यावहारिक जगत्, अपेक्षाकृत अधिक लम्बे समय तक अस्तित्व, ब्रह्मज्ञान होने पर समाप्ति।

पारमार्थिक- ब्रह्म नित्य, शाश्वत्, त्रिकालिक स्थिति।

वेदान्तसार में **अनुबन्ध चतुष्टय** का वर्णन मिलता है- अधिकारी, विषय, सम्बन्ध, प्रयोजन।

'तत्रानुबन्धो नामाधिकारिविषयसम्बन्धप्रयोजनानि' (वेदान्तसार)

पञ्चकोश-

वेदान्तसार में पाँच कोशों की महत्त्वपूर्ण भूमिका है-

1- आनन्दमय कोश 2- विज्ञानमय कोश
3- मनोमय कोश 4- प्राणमय कोश
5- अन्नमय कोश

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि वेदान्तसार के अनुसार सत्ता के तीन प्रकार बताये गये हैं।

अतः विकल्प 'B' सही है।

स्रोत - वेदान्तसार- राकेश शास्त्री, पेज भू. 84

89. वेदान्तदर्शन के अनुसार प्रमाण हैं?

(A) चार **(B)** पाँच
(C) छः **(D)** तीन

व्याख्या-

प्रत्यक्षमात्रं चार्वाकाः बौद्धा वैशेषिका द्वयम्।
सांख्या योगास्त्रयं चैव, तार्किकाश्च चतुष्टयम्॥
पञ्च प्राभाकरा, भाट्टास्तथा वेदान्तिनश्च षट्।
पौराणिकास्तथा चाष्टौ, प्रमाणानि ब्रुवन्ति वै॥

अर्थात् चार्वाक केवल प्रत्यक्ष प्रमाण को बौद्ध और वैशेषिक प्रत्यक्ष व अनुमान को, सांख्य तथा योग प्रत्यक्ष, अनुमान,तथा आप्तवचन को, तार्किक अर्थात् नैयायिक प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान व शब्द को, प्रभाकर पाँच प्रमाण,भाट्ट और वेदान्ती छः तथा पौराणिक आठ प्रमाण बताते हैं-

दर्शन		प्रमाणों की संख्या	प्रमाण
सांख्य	–	3	प्रत्यक्ष, अनुमान आप्त
योग	–	3	प्रत्यक्ष, अनुमान आप्त
न्याय	–	4	प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान,शब्द
वैशेषिक	–	2	प्रत्यक्ष, अनुमान
पूर्वमीमांसा	–	6	प्रत्यक्ष, अनुमान,उपमान, शब्द, अर्थापत्ति, अनुपलब्धि,(अभाव)
उत्तरमीमांसा (वेदान्त)	–	6	(पूर्वमीमांसा की तरह)
चार्वाक	–	1	प्रत्यक्ष
बौद्ध	–	2	प्रत्यक्ष, अनुमान
प्रभाकर/मीमांसक	–	5	प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, अर्थापत्ति
पौराणिक	–	8	प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, अर्थापत्ति, अभाव, सम्भव,ऐतिह्य

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि वेदान्तदर्शन छः प्रमाण मानता है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत - वेदान्तसार- राकेश शास्त्री, पेज भू. 73

90. शिशुपालवध महाकाव्य में सर्गों की संख्या है?
(A) सोलह **(B)** सत्रह
(C) अठारह **(D)** बीस

व्याख्या-

ग्रन्थकार		ग्रन्थ		सर्ग	
माघ		शिशुपालवधम्		20	(बृहत्त्रयी)
भारवि		किरातार्जुनीयम्		18	(बृहत्त्रयी)
श्रीहर्ष	-	नैषधीयचरितम्	-	22	(बृहत्त्रयी)
कालिदास	-	रघुवंशम्	-	19	(लघुत्रयी)
कालिदास	-	कुमारसम्भवम्	-	17	(लघुत्रयी)
अश्वघोष	-	बुद्धचरितम्	-	28	
अश्वघोष	-	सौन्दरनन्द	-	18	
भट्टि	-	भट्टिकाव्य (रावणवधम्)	-	22	
रत्नाकर	-	हरविजयम्	-	50 सर्ग (सबसे बड़ा महाकाव्य)	
कुमारदास	-	जानकीहरणम्	-	20 से 25सर्ग (10-15सर्ग प्राप्त)	
कविराज	-	राघवपाण्डवीयम्	-	13सर्ग	
हरिश्चन्द्र	-	धर्मशर्माभ्युदय	-	21सर्ग	

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि शिशुपालवध महाकाव्य में 20 सर्ग हैं। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत - संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा, पेज 262

91. 'अग्निगर्भां शमीमिव' यह उपमा दी गयी है-
(A) शकुन्तला की **(B)** गौतमी की
(C) प्रियंवदा की **(D)** अनसूया की

व्याख्या- महाकवि कालिदास प्रणीत अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में शकुन्तला की उपमा 'अग्निगर्भां शमीमिव' से दी गई है। (कण्व की बात) प्रियवंदा कहती है अनसूया से-

➢ **दुष्यन्तेनाहितं तेजो दधानां भूतये भुवः।**
अवेहि तनयां ब्रह्मन्नग्निगर्भां शमीमिव॥ (4/4)
हे ब्रह्मन्, दुष्यन्त के द्वारा स्थापित तेज को पृथ्वी के कल्याण के लिए धारण करने वाली (अपनी) पुत्री को छिपी हुई अग्नि से युक्त शमीवृक्ष के तुल्य समझो।

शकुन्तला के लिए प्रसिद्ध उपमायें

➢ **ध्रुवं स नीलोत्पलपत्रधारया**
शमीलतां छेत्तुमृषिर्व्यवस्यति॥ (1/18)
वह अवश्य ही नीलकमल के पत्ते की धार से शमी की लता को काटने का यत्न करता है।

➢ **किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्।** (1/20)
क्योंकि सुन्दर आकृतियों के लिए क्या वस्तु अलङ्कार नहीं होती।

➢ यथा वनज्योत्स्नाऽनुरूपेण पादपेन संगता, अपि नामैवम-हमप्यात्मनोऽनुरूपं वरं लभेयेति।
जिस प्रकार वनज्योत्स्ना अपने अनुरूप वृक्ष से मिल गई है, क्या मैं भी अपने अनुरूप वर को पाऊँगी?

➢ **प्रियंवदा- सागरमुज्झित्वा कुत्र वा महानद्यवतरति।**

बड़ी नदी समुद्र को छोड़कर और कहाँ उतरती है?

(अभि.अङ्क.-3)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'अग्निगर्भां शमीमिव' यह उपमा शकुन्तला के लिए दी गई है। **अतः विकल्प A सही है।**

स्रोत - अभिज्ञानशाकुन्तलम् - (4/4)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 498

92. अधोलिखित में से जो यत् प्रत्यय से निष्पन्न नहीं है?

(A) कार्यम् **(B)** शप्यम्

(C) ग्लेयम् **(D)** जेयम्

व्याख्या- पाणिनीय व्याकरण में धातुओं से लगने वाले तिङ् भिन्न कृत् प्रत्ययों में यत् प्रत्यय महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। यत् प्रत्यय का प्रयोग कर्मवाच्य तथा भाववाच्य में होता है। जब ये कर्मवाच्य में होंगे तो कर्म के अनुसार इनके लिंग, वचन, कारक होंगे।

यथा-

* तेन मया वा विद्या अध्येया, शिक्षा देया च (स्त्री.)
* अस्माभिः वारि पेयम् (नपु.)

जब यत् प्रत्यय भाववाच्य में होगा, तो कर्ता में तृतीया तथा क्रिया नपुंसकलिंग एकवचन में होगी-

* तेन अत्र स्थेयम्।

'अचो यत्'- अच् प्रत्याहारस्थ स्वर वर्ण अन्त में हो, ऐसे धातुओं से यत् प्रत्यय होता है। 'यत्' प्रत्यय में तकार की इत्संज्ञा होने से 'य' ही शेष बचता है। 'अचो यत्'- इस सूत्र में धातोः प्रत्ययः, परश्च इन तीनों सूत्रों का अधिकार है।

यथा जेयम्- जि + यत्। अनुबन्धलोप, य की आर्धधातुक संज्ञा तथा जि के इकार को सार्वधातुक गुण करके जेय बना। प्रातिपदिक संज्ञा, सु, अम्, पूर्वरूप करके 'जेयम्' सिद्ध हुआ।

⇒ **'ऋहलोर्ण्यत्'-** यह सूत्र 'अचो यत्' का अपवाद सूत्र है। अच् प्रत्याहार (अ, इ, उ, ऋ, ऌ, ए, ओ, ऐ, औ) में से ऋवर्णान्त धातु से तथा हलन्त धातु से ण्यत् प्रत्यय होता है ऋवर्णान्त धातुओं से 'अचो यत्' से यत् प्रत्यय प्राप्त था। इस अंश में यह सूत्र उसका अपवाद है।

यथा- **कार्यम्-** 'डुकृञ् करणे' धातु के अनुबन्धों का लोप होकर कृ शेष रहता है। यह धातु ऋवर्णान्त है। अतः 'ऋहलोर्ण्यत्' से कर्म में ण्यत् होकर अनुबन्ध लोप तथा कृ+ण्यत् में णित् होने से ऋकार को 'अचो ञ्णिति' से वृद्धि तथा 'उरण् रपरः' से रपर अर्थात् 'आर्' आदेश करने से कार्य बना। प्रातिपदिक संज्ञा, सु, अम्, पूर्वरूप करके 'कार्यम्' सिद्ध हुआ।

⇒ **'पोरदुपधात्'-** यह सूत्र 'ऋहलोर्ण्यत्' का अपवाद है। (पोः=पवर्गान्त) अन्त में पवर्ग वाली तथा (अदुपधात्) उपधा में अत् वाली धातु से परे, 'यत्' प्रत्यय होता है। अजन्त न होने से 'अचो यत्' द्वारा यत् नहीं हो सकता। 'ऋहलोर्ण्यत्' इस वक्ष्यमाण सूत्र से ण्यत् प्राप्त था। उसका अपवाद यहाँ यत् प्रत्यय का विधान किया गया है।

शप्यम्- 'शप् आक्रोशे' धातु हलन्त होने के कारण 'ऋहलोर्ण्यत्' - सूत्र से 'ण्यत्' प्राप्त था, किन्तु 'शप्' धातु पवर्गान्त भी है और अदुपध भी है। अतः उसे बाधकर 'पोरदुपधात्' से यत् प्रत्यय हुआ है। सु आदि कार्य होने से **'शप्यम्'** प्रयोग सिद्ध हुआ है। ध्यान रहे कि यदि यहाँ ण्यत् हो जाता, तो उसके णित् होने से 'अत उपधायाः' सूत्र से उपधा के अत् को वृद्धि होकर 'शाप्यम् लाभ्यम्' ऐसे अनिष्ट रूप बन जाते।

⇒ **ईद्यति-** यत् प्रत्यय परे होने पर आकार को ईकार आदेश होता है। यथा- **ग्लेयम्**- 'ग्लै हर्षक्षये' धातु से यत् की विवक्षा में प्रत्यय लाने से पूर्व ही 'आदेच उपदेशेऽशिति' से ऐकार को आकार आदेश होकर 'अचो यत्' द्वारा भाव में यत् प्रत्यय लगाने पर ग्ला+यत् हुआ। तदनन्तर 'ईद्यति' सूत्र से आकार को ईकार आदेश तथा 'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' से उस ईकार को भी गुण होकर विभक्ति लाने पर 'ग्लेयम्' प्रयोग सिद्ध होता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि शप्यम्, जेयम् ग्लेयम् में यत् प्रत्यय है। तथा कार्यम् में ण्यत् प्रत्यय है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

0स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज 780

93. वेदान्तसार के अनुसार अज्ञान है-

(A) भावरूप **(B)** अभावरूप

(C) शून्यरूप **(D)** निष्क्रिय

व्याख्या- सदानन्द योगीन्द्र द्वारा प्रणीत वेदान्तसार के अनुसार अज्ञान का लक्षण है-

अज्ञानादिसकलजडसमूहोऽवस्तु।

अज्ञानं तु सदसद्भ्यामनिर्वचनीयं त्रिगुणात्मकं ज्ञानविरोधि भावरूपं यत्किञ्चिदिति वदन्त्यहमज्ञ इत्याद्यनुभवात्।

अज्ञान सत् या असत् रूप से अनिर्वचनीय, त्रिगुणात्मक

ज्ञान का विरोधी, भावरूप कुछ है, ऐसा (वृद्धजन) कहते हैं। मैं अज्ञानी हूँ इत्यादि।

अज्ञान के लक्षण

1- सदसद्भ्यामनिर्वचनीयम्
2- त्रिगुणात्मकम्
3- ज्ञानविरोधि
4- भावरूपम्
5- यत्किञ्चित्

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त कथन से स्पष्ट है कि वेदान्तसार के अनुसार अज्ञान भावरूप है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत - वेदान्तसार- राकेश शास्त्री, पेज 149

94. अधोलिखित में जो अर्थोपक्षेपकों में परिगणित नहीं है-
(A) विष्कम्भक **(B)** प्रवेशक
(C) प्रकरी **(D)** चूलिका

व्याख्या- आचार्य विश्वनाथ कृत साहित्यदर्पण के षष्ठपरिच्छेद में अर्थोपक्षेपक का लक्षण दिया गया है-
अर्थोपक्षेपकाः पञ्च विष्कम्भकप्रवेशकौ।
चूलिकाङ्कऽवतारोऽथ स्यादङ्कमुखमित्यपि।।54।।
अर्थोपक्षेपक पाँच होते हैं-
1. विष्कम्भक 2. प्रवेशक 3. चूलिका 4. अङ्कावतार 5. अङ्कमुख

विषकम्भक –
वृत्तवर्तिष्यमाणानां कथांशानां निदर्शकः
संक्षिप्तार्थस्तु विष्कम्भ आदावङ्कस्य दर्शितः।
मध्येन मध्यमाभ्यां वा पात्राभ्यां सम्प्रयोजितः।
शुद्धः स्यात् स तु संकीर्णो नीचमध्यमकल्पितः॥
(सा.द.6/55,56)

भूत और भविष्यत् कथाओं का सूचक, कथा को संक्षेप करने वाला, अंक के आदि में रहने वाला '**विष्कम्भक**' कहलाता है। जब एक ही मध्यमपात्र या दो मध्यमपात्र प्रयोग करते हैं तब इसे **शुद्धविष्कम्भक** कहते हैं। यदि नीच तथा मध्यम पात्रों द्वारा किया जाय तो इसे **मिश्र विष्कम्भक** कहते हैं।

* **प्रवेशक-** प्रवेशकोऽनुदात्तोक्त्या नीचपात्रप्रयोजितः अंकस्यान्तर्विज्ञेयः शेषं विष्कम्भके यथा। (सा.द.6/57)
प्रवेशक भी विष्कम्भक के सदृश होता है किन्तु इसका प्रयोग नीचपात्रों के द्वारा कराया जाता है और इसमें उक्तियाँ उदात्त नहीं होतीं। यह दूसरे अंक के आगे किया जाता है, पहले अङ्क में नहीं।

* **चूलिका-** अन्तर्जवनिकासंस्थैः सूचनार्थस्य चूलिका। जवनिका (पर्दे) के भीतर स्थित पात्रों के द्वारा की हुई वस्तु की सूचना को चूलिका कहते हैं।

* **प्रकरी-** प्रासंगिकं प्रदेशस्थं चरितं प्रकरी मता (सा.द.6/68)
प्रसङ्गगत तथा एकदेशस्थित चरित्र को प्रकरी कहते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि पाँच अर्थोपक्षेपक हैं- विष्कम्भक, प्रवेशक, चूलिका, अङ्कस्य, अङ्कावतार है। बीज, बिन्दु, पताका, प्रकरी कार्य ये पाँच अर्थप्रकृतियाँ हैं, **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत - दशरूपक (1/58)- रमाशंकर त्रिपाठी, पेज 99

95. सांख्यमत में आधिभौतिक दुःख है-
(A) ज्वरातिसार से उत्पन्न दुःख
(B) स्वजन वियोग जन्य दुःख
(C) सर्पादि से उत्पन्न दुःख
(D) भूतप्रेतादि जन्य दुःख

व्याख्या- सांख्यदर्शन के प्रकरणग्रन्थ सांख्यकारिका में दुःखत्रय की मीमांसा करते हुए ईश्वरकृष्ण कहते हैं-
दुःखत्रयाभिघाताज्जिज्ञासा तदपघातके हेतौ।
दृष्टे साऽपार्था चेन्नैकान्तात्यन्ततोऽभावात्॥
दुःखत्रय अर्थात् आध्यात्मिक, आधिभौतिक, आधिदैविक इन त्रिविध दुःखों से पञ्चविंशति पदार्थों के ज्ञान से जीव छुटकारा प्राप्त कर लेता है। सांख्य ने त्रिविध दुःखों के विनाश का कारण विवेकज्ञान को स्वीकार किया है।

सांख्य का दुःखत्रय

1. आध्यात्मिक दुःख - वह दुःख, जिसका आन्तरिक तत्त्वों से सम्बन्ध है। जो दो प्रकार का होता है- (i) **शारीरिक-** जो शरीर के प्रमुख तत्त्व वात, पित्त व कफ की विषमता के कारण उत्पन्न होता है **शारीरिक दुःख** कहलाता है। यथा- बुखारादि। यह भी दो प्रकार का होता है-
(अ) नैसर्गिक (भूखादि)
(ब) त्रिदोषजन्य (ज्वरादि)
(ii) काम, क्रोध, लोभ, मोह, भय और ईर्ष्या आदि भावों के कारण उत्पन्न होने वाला दुःख मानसिक कहलाता है।

2. आधिभौतिक- बाह्यकारणों अथवा पदार्थों, जिन्हें हम देख सकते हैं, से उत्पन्न होने वाला दुःख आधिभौतिक कहलाता है। जैसे- पशु,पक्षी, सर्प, मनुष्यादि पदार्थों से उत्पन्न दुःख अथवा कष्ट।

3. आधिदैविक- प्रत्यक्ष दिखायी न देने वाली देवयोनियों जैसे- यक्ष, राक्षस, किन्नर, ग्रहादि के दुष्प्रभाव से होने वाला कष्ट, आधिदैविक कहलाता है।

दुःखत्रय-(i) -आध्यात्मिक

शारीरिक- नैसर्गिक (भूखादि), त्रिदोषजन्य (ज्वरादि)

मानसिक- काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, भयादि से उत्पन्न।

(ii)आधिभौतिक- मनुष्य, पशु, सर्प, मृगादि से होने वाला कष्ट

(iii) आधिदैविक- यक्ष, राक्षस, किन्नर, भूत, प्रेत आदि से होने वाला कष्ट।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि आधिभौतिक दुःख के अन्तर्गत सर्पादि से उत्पन्न दुःख आता है।

अतः विकल्प 'C' सही है।

स्रोत - सांख्यकारिका (1/1)- रमेशचन्द्र पाण्डेय, पेज 1-2

96. 'स्वधर्मे निधनं श्रेयः' यह श्रीमद्भगवद्गीता के किस अध्याय में है-

(A) द्वितीय में (B) तृतीय में
(C) चतुर्थ में (D) पञ्चम में

व्याख्या- श्रीमद्भगवद्गीता के तीसरे अध्याय में धर्म के विषय में कहा गया है-

श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात्।
स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः।। (गीता 3/35)

अच्छी प्रकार आचरण में लाये हुए दूसरे के धर्म से गुणरहित भी अपना धर्म अति उत्तम है। अपने धर्म में तो मरना भी कल्याणकारक है और दूसरे का धर्म भय को देने वाला है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि 'स्वधर्मे निधनं श्रेयः' श्रीमद्भगवद्गीता के तृतीय अध्याय से है।

अतः विकल्प (B) सही है।

स्रोत - श्रीमद्भगवद्गीता (3/35)-गीताप्रेस, पेज 58

97. काव्यप्रकाश की संकेत टीका के प्रणेता हैं-

(A) माणिक्यचन्द्र (B) वामन
(C) मम्मट (D) मल्लिनाथ

व्याख्या- कमलाकरभट्ट ने काव्यप्रकाश की टीका में लिखा है-

काव्यप्रकाशस्य टिप्पण्यः सहस्रं सन्ति यद्यपि।
ताभ्यस्त्वस्या विशेषो यः पण्डितैः सोऽवधार्यताम्।।

काव्यप्रकाश की गुरुता को स्पष्ट किया गया है।

काव्यप्रकाशस्य कृता गृहे गृहे, टीकास्तथाप्येष तथैव दुर्गमः।
सुखेन विज्ञातुमिमं य ईहते, धीरः स एतां निपुणं विलोकताम्।।

1. काव्यप्रकाश की सबसे प्राचीन टीका रुय्यक की काव्यप्रकाश संकेत है। इस टीका की रचना 1145 ई. के आसपास अर्थात 12वीं शताब्दी के मध्य में हुई है।
2. माणिक्यचन्द्र की 'संकेत टीका' (1160ई.) काव्यप्रकाश की सबसे प्रसिद्ध टीका है।
3. श्रीधर (सन्धिविग्रहिक उपाधि) की टीका का नाम 'काव्यप्रकाश टीका' (1225ई.) है।
4. सोमेश्वर ने 'काव्यादर्श' टीका लिखी है।
5. सरस्वतीतीर्थ की टीका का नाम 'बालचित्तानुरञ्जिनी' है।
6. जयन्तभट्ट की काव्यप्रकाश पर 'दीपिका' टीका प्राप्त होती है।

काव्यप्रकाश की प्रमुख टीकायें

टीकाकार	टीका
1. विश्वनाथ	दर्पण
2. भास्कर	साहित्यदीपिका
3. परमानन्द भट्टाचार्य	विस्तारिका
4. गोविन्द	प्रदीपच्छाया
5. जयराम न्यायपञ्चानन	तिलक
6. श्रीवत्सलाञ्छन	सारबोधिनी
7. नरसिंह ठक्कुर	नरसिंह मनीषा
8. वैद्यनाथ रामचन्द्रभट्ट	उदाहरण चन्द्रिका, गोविन्द भट्ट के काव्यप्रदीप पर 'प्रभा' टीका लिखी
9. भीमसेन दीक्षित	सुधासागर अथवा सुधोदधि
10. बलदेव विद्याभूषण	साहित्य कौमुदी
11. नागेश भट्ट	लघ्वी टीका,बृहती टीका
12. वामनाचार्य झलकीकर	बालबोधिनी वामनाचार्य ने बालबोधिनी में 21-टीकाओं का उपयोग किया है।

मल्लिनाथ की सुप्रसिद्ध संस्कृत टीकाएँ

1. रघुवंशमहाकाव्यम् (कालिदास) - सञ्जीवनी टीका
2. कुमारसम्भवम् (कालिदास) - सञ्जीवनी
3. मेघदूतम् (कालिदास) - सञ्जीवनी

4. किरातार्जुनीयम् (भारवि) - घण्टापथ
5. शिशुपालवधम् (माघ) - सर्वङ्कषा
6. रावणवध (भट्टि) - जीवातु
7. नैषधीयचरितम् (श्रीहर्ष) - जीवातु

इसके अतिरिक्त तार्किकरक्षा, नलोदयकाव्य, प्रशस्तपादभाष्य तथा लघुशब्देन्दुशेखर पर भी मल्लिनाथ ने टीका लिखी है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि काव्यप्रकाश की संकेत टीका के प्रणेता माणिक्यचन्द्र हैं। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत - काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज भू. 72

98. नाटक में इतिवृत्त होता है-
(A) कल्पित **(B)** अप्रसिद्ध
(C) प्रसिद्ध **(D)** मिश्र

व्याख्या- विश्वनाथकृत साहित्यदर्पण नाटक का लक्षण इस प्रकार है-

नाटकं ख्यातवृत्तं स्यात्पञ्चसन्धिसमन्वितम्।
विलासर्द्ध्यादिगुणवद्युक्तं नानाविभूतिभिः॥ (6/7)
सुखदुःखसमुद्भूतिः नानारसनिरन्तरम्।
पञ्चादिका दशपरास्तत्राङ्काः परिकीर्तिताः।
प्रख्यातवंशो राजर्षिर्धीरोदात्तः प्रतापवान्।
दिव्योऽथ दिव्यादिव्यो वा गुणवान्नायको मतः
एक एव भवेदङ्गी शृङ्गारो वीर एव वा।
अङ्गमन्ये रसाः सर्वे कार्यो निर्वहणेऽद्भुतः॥ (6/10)
चत्वारः पञ्च वा मुख्याः कार्यव्यापृतपूरुषाः।
गोपुच्छाग्रसमाग्रं तु बन्धनं तस्य कीर्तितम्॥

ख्यात अर्थात् रामायणादि प्रसिद्ध वृत्त (चरित) जैसे- श्री रामचन्द्र जी की कथा। नानाविभूतिभिः अर्थात् बड़े-बड़े सहायकों से युक्त हो। वह मुख, प्रतिमुख, गर्भ, विमर्श, निर्वहण-इन पाँच सन्धियों से युक्त होना चाहिए। 'रचना गोपुच्छ के अग्रभाग के समान होनी चाहिए। 5-10 अंक होने चाहिए। नायक कुलीन राजा, धीरोदात्त, प्रतापी दिव्य, दिव्यादिव्य क्षत्रिय या क्षत्रिय भिन्न होना चाहिए। शृंगार या वीर रस प्रधान रूप में तथा अन्य रस गौण रूप में होने चाहिए।

⇒ साहित्यदर्पणकार प्रकरण का लक्षण इस प्रकार करते हैं-
भवेत्प्रकरणे वृत्तं लौकिकं कविकल्पितम्। (6/224)
शृंगारोऽङ्गी नायकस्तु विप्रोऽमात्योऽथवा वणिक्॥
सापायधर्मकामार्थपरो धीरप्रशान्तकः। (6/225)
नायिका कुलजा क्वापि, वेश्या क्वापि, द्वयं क्वचित्।
तेन भेदास्त्रयस्तस्य तत्र भेदस्तृतीयकः॥
कितवद्यूतकारादिविटचेटसंकुलः।

अर्थात् प्रकरण में कथावस्तु लौकिक एवं कविकल्पित होती है। शृंगार रस मुख्य होता है। नायक ब्राह्मण, मन्त्री या वैश्य होता है,जो विघ्नपूर्ण धर्म,काम और अर्थ में आसक्त धीर-प्रशान्त होता है। जैसे- मृच्छकटिक में ब्राह्मण नायक, मालतीमाधवम् में मन्त्री नायक तथा 'पुष्पभूषितम्' में वैश्य नायक मिलता है। प्रकरण में कुलीन स्त्र, कहीं वेश्या और कहीं कुलीन तथा वेश्या दोनों प्रकार की नायिकाएँ होती हैं। इस प्रकरण में जुआरी चोर आदि होते हैं। इसप्रकार नायिका भेद से प्रकरण के तीन भेद होते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि नाटक में प्रसिद्ध इतिवृत्त होता है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत - साहित्यदर्पण (6/7)-शालिग्राम शास्त्री, पेज 175

99. ''श्लिष्टैः पदैरनेकार्थाभिधाने'' यह लक्षण है-
(A) अनुप्रास का **(B)** श्लेष का
(C) सन्देह का **(D)** भ्रान्तिमान् का

व्याख्या- कविराज विश्वनाथ कृत साहित्यदर्पण के दशम परिच्छेद में श्लेष अलंकार का वर्णन इसप्रकार किया गया है-

श्लिष्टैः पदैरनेकार्थाभिधाने श्लेष इष्यते।
वर्णप्रत्ययलिङ्गानां प्रकृत्योः पदयोरपि॥
श्लेषाद्विभक्तिवचनभाषाणामष्टधा च सः

अर्थात् -श्लिष्ट पदों से अनेक अर्थों का अभिधान होने पर श्लेषालंकार होता है। वर्ण, प्रत्यय, लिङ्ग, विभक्ति, प्रकृति, पद, वचन और भाषा इनके श्लिष्ट होने के कारण वर्णश्लेष, प्रत्ययश्लेष आदि भेदों से यह श्लेष अलंकार आठ प्रकार का होता है।

➢ वाग्देवतावतार मम्मट श्लेष अलंकार का लक्षण इस प्रकार करते हैं-

वाच्यभेदेन भिन्ना यद् युगपद्भाषणस्पृशः।
श्लिष्यन्ति शब्दाः श्लेषोऽसावक्षरादिभिरष्टधा॥

⇒ विश्वनाथ अनुप्रास अलंकार को इसप्रकार परिभाषित करते हैं-

अनुप्रासः शब्दसाम्यं वैषम्येऽपि स्वरस्य यत् ।
छेको व्यञ्जनसंघस्य सकृत्साम्यमनेकधा॥

अर्थात् स्वर की विषमता होने पर भी शब्द अर्थात् पद, पदांश के साम्य (सादृश्य) को अनुप्रास अलंकार कहते हैं। व्यञ्जनों के समुदाय की एक ही बार अनेक प्रकार की समानता होने को छेक अर्थात् छेकानुप्रास कहते हैं।

यह 1. अनेकपदों की आवृत्तिरूप 2. एक पद की आवृत्तिरूप 3. एक समास में आवृत्ति रूप 4. भिन्न समास में आवृत्तिरूप, 5. समास तथा असमास वृत्ति रूप दोनों में इस तरह पाँच प्रकार का होता है।

⇒ आचार्य विश्वनाथ संदेह अलंकार को निरूपित करते हैं-

संदेहः प्रकृतेऽन्यस्य संशयः प्रतिभोत्थितः।
शुद्धो निश्चयगर्भोऽसौ निश्चयान्त इति त्रिधा॥

प्रकृत अर्थात् उपमेय में अन्य अर्थात् उपमान के संशय को संदेहालंकार कहते हैं। संशय ही संदेह अलंकार कहलाता है। यह शुद्ध, निश्चयगर्भ, व निश्चयान्त भेद से तीन प्रकार का होता है।

➢ विश्वनाथ भ्रान्तिमान् अलंकार को इसप्रकार परिभाषित करते हैं-

'साम्यादतस्मिंस्तदबुद्धिर्भ्रान्तिमान् प्रतिभोत्थितः'

अर्थात् सादृश्य के कारण अन्य वस्तु में अन्य वस्तु के निश्चयात्मक ज्ञान को-यदि वह कवि की प्रतिभा से उत्पन्न हो, भ्रान्तिमान् अलंकार कहलाता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि 'श्लिष्टैपदैरने-कार्थाभिधाने' यह लक्षण श्लेष अलंकार का है।

अतः विकल्प 'B' सही है।

स्रोत - साहित्यदर्पण (1/11)- शालिग्राम शास्त्री, पेज 282

100. 'सुमद्रम्' में 'सु' उपसर्ग का अर्थ है-
(A) समीप **(B)** शोभन
(C) समृद्धि **(D)** युगपत्

व्याख्या-'प्रायेण पूर्वपदार्थोऽव्ययीभावः'- जिस समास में पूर्वपद का अर्थ प्रधान हो, उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं। इस समास में पूर्वपद प्रायः अव्यय होता है।

जैसे- मद्राणां समृद्धिः = सुमद्रम्

अव्ययीभाव समास होने पर सामासिक पद अव्यय बन जाता है, तथा नपुंसकलिंग एकवचन में प्रयोग किया जाता है।

अव्यय, विभक्ति, समीप, समृद्धि, व्यृद्धि, अर्थाभाव, अत्यय, असम्प्रति, शब्दप्रादुर्भाव, पश्चात्, यथा, आनुपूर्व्य, यौगपद्य, सादृश्य, सम्पत्ति, साकल्य, अन्त इन 16 अर्थों में विद्यमान अव्यय का समर्थ सुबन्त पदों के साथ नित्य समास होता है। अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि-व्यृद्धि-अर्थाभाव-अत्यय-असम्प्रति- शब्द प्रादुर्भाव- पश्चात्-यथा-आनुपूर्व्य-यौगपद्य-सादृश्य- सम्पत्ति-साकल्य-अन्तवचनेषु (अष्टाध्यायी 2.1.6)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि मद्राणां समृद्धिः = सुमद्रम् में 'सु' उपसर्ग का अर्थ 'समृद्धि' है।

अतः विकल्प 'C' सही है।

स्रोत - लघुसिद्धान्तकौमुदी (भाग 4) भैमी व्याख्या, पेज 28

101. एध् धातु के आशीर्लिङ् उत्तम पुरुष एकवचन में रूप होता है-
(A) एधेय **(B)** एधिषीय
(C) एधिताहे **(D)** एधिषि

व्याख्या-

एध् धातु आशीर्लिङ्		
एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
एधिषीष्ट	एधिषीयास्ताम्	एधिषीरन्
एधिषीष्ठाः	एधिषीयास्थाम्	एधिषीध्वम्
एधिषीय	एधिषीवहि	एधिषीमहि
	लुङ् लकार	
ऐधिष्ट	ऐधिषाताम्	ऐधिषत
ऐधिष्ठाः	ऐधिषाथाम्	ऐधिढ्वम्
ऐधिषि	ऐधिष्वहि	ऐधिष्महि
	लृङ् लकार	
ऐधिष्यत	ऐधिष्येताम्	ऐधिष्यन्त
ऐधिष्यथाः	ऐधिष्येथाम्	ऐधिष्यध्वम्
ऐधिष्ये	ऐधिष्यावहि	ऐधिष्यामहि
	विधिलिङ् लकार	
एधेत	एधेयाताम्	एधेरन्
एधेथाः	एधेयाथाम्	एधेध्वम्
एधेय	एधेवहि	एधेमहि
	लङ् लकार	
एधेत	ऐधेताम्	ऐधन्त
ऐधथाः	ऐधेथाम्	ऐधध्वम्
ऐधे	ऐधावहि	ऐधामहि

लोट्लकार		
एधताम्	एधेताम्	एधन्ताम्
एधस्व	एधेथाम्	एधध्वम्
एधै	एधावहै	एधामहै

लृट्लकार		
एधिष्यते	एधिष्येते	एधिष्यन्ते
एधिष्यसे	एधिष्येथे	एधिष्यध्वे
एधिष्ये	एधिष्यावहे	एधिष्यामहे

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'एध्' धातु के आशीर्लिङ् उत्तमपुरुष एकवचन में 'एधिषीय' रूप बनता है। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत - लघुसिद्धान्तकौमुदी- गोविन्दाचार्य, पेज- 495

102. 'वृत्तवर्तिष्यमाणानां कथांशानां निदर्शकः' यह लक्षण है-
(A) प्रवेशक का (B) अङ्कावतार का
(C) अङ्कास्य का (D) विष्कम्भक का

व्याख्या- धनञ्जय विरचित दशरूपक के प्रथम प्रकाश में नीरस तथा अनुचित कथावस्तु के सूच्यार्थ पाँच अर्थोपक्षेपक का उल्लेख किया गया है-

अर्थोपक्षेपकैः सूच्यं पञ्चभिः प्रतिपादयेत्।
विष्कम्भचूलिकाङ्कास्याङ्कावतारप्रवेशकैः॥ (1/58)

विष्कम्भक-
वृत्तवर्तिष्यमाणानां कथांशानां निदर्शकः।
संक्षेपार्थस्तु विष्कम्भो मध्यपात्रप्रयोजितः (1/59)
एकानेककृतः शुद्धः सङ्कीर्णो नीचमध्यमैः॥

अर्थात् भूत और भविष्य के कथांशों का सूचक, एक या दो मध्यम पात्रों द्वारा प्रयुक्त शुद्ध विष्कम्भक होता है। एक या अनेक मध्यम पात्रों द्वारा प्रयुक्त विष्कम्भक तथा मध्यम व नीच पात्रों द्वारा प्रयोजित सङ्कीर्ण विष्कम्भक कहलाता है।

प्रवेशक- तद्वदेवानुदात्तोक्त्या नीचपात्रप्रयोजितः।
प्रवेशोऽङ्कद्वयस्यान्तः शेषार्थस्योपसूचकः॥ (1/60)

अर्थात्- भूत और भविष्य के अर्थ की सूचना एक अथवा अनेक निम्न पात्रों द्वारा दो अंको के मध्य प्रवेशक होता है।

चूलिका- 'अन्तर्जवनिकासंस्थैश्चूलिकार्थस्य सूचना' जवनिका अर्थात् पर्दे के अन्दर स्थित पात्रों द्वारा किसी भी अर्थ की सूचना देना चूलिका है।

अङ्कास्य- 'अङ्कान्तपात्रैरङ्कास्यं छिन्नाङ्कस्यार्थसूचनात्' यदि किसी अंक के अन्त में पात्रों द्वारा किसी ऐसे वृत्त की सूचना दी जाती है, जिससे आगामी अंक की सूचना दी जाती है। उसे अंकास्य या अंकमुख कहते हैं।

अङ्कावतार- अङ्कावतारस्तु अङ्कान्ते पातोऽङ्कस्याविभागतः (1/62)
जहाँ प्रथम अंक की वस्तु के विच्छेद के बिना ही द्वितीय अंक की वस्तु आरम्भ हो जाती है, वहाँ अंकावतार होता है।

अर्थोपक्षेपक - विष्कम्भक, प्रवेशक, चूलिका, अंकास्य,अङ्कावतार

उत्तम पात्र- राजा, आदि जो संस्कृत भाषा बोलते हैं
मध्यम पात्र- अमात्य, सेनापति आदि संस्कृत भाषा बोलते हैं।
नीच पात्र- दास, चेट, विट आदि प्राकृत भाषा बोलते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि, 'वृत्तवर्तिष्यमाणानां कथांशानां निदर्शकः' यह लक्षण विष्कम्भक का है,। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत - दशरूपक (1/59)- रमाशंकर त्रिपाठी, पेज 99

103. अधोलिखित वाक्यों में शुद्ध वाक्य है-
(A) कृष्णम् अभितः गोपाः सन्ति।
(B) कृष्णेन अभितः गोपाः सन्ति।
(C) कृष्णाद् अभितः गोपाः सन्ति।
(D) कृष्णस्य अभितः गोपाः सन्ति।

व्याख्या-
अभितः = दोनों ओर = कृष्णम् अभितः गोपाः सन्ति।
परितः= चारों ओर- ग्रामं परितः वृक्षाः सन्ति।
समया= समीप- वनं समया नदी अस्ति।
निकषा (समीप)- गङ्गां निकषा संस्कृतगङ्गा अस्ति।
हा-(खेद) हा दुर्जनम्।
प्रति-(की ओर) विद्यालयं प्रति गच्छति।
अनु-(के पीछे) रामम् अनु गच्छति।
अभितः, परितः, समया, निकषा, हा, प्रति, अनु, उभयतः, सर्वतः, अध्यधि, अधोऽधः, उपर्युपरि, धिक् शब्दों के साथ द्वितीया विभक्ति होती है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि 'अभितः' के योग में द्वितीया विभक्ति होने से 'कृष्णम् अभितः गोपाः सन्ति' वाक्य शुद्ध है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- सिद्धान्तकौमुदी - राममुनि पाण्डेय, पेज 46

104. बृहत्कथा किस भाषा शैली में लिखी गयी रचना है?
(A) मागधी **(B)** पैशाची
(C) वैदर्भी **(D)** गौड़ी

व्याख्या- बृहत्कथा-

* लोककथाओं का प्राचीनतम संग्रह गुणाढ्य के द्वारा बृहत्कथा में किया गया था।
* यह पैशाची प्राकृत में लिखी गयी थी।
* इसका रचनाकाल पाश्चात्त्य विद्वानों के अनुसार प्रथम या द्वितीय शताब्दी ई. है।
* इसके एक संस्करण कथासरित्सागर के आरम्भ में इसकी रचना की परिस्थितयों का विस्तृत वर्णन है कि सातवाहन नरेश की राजसभा में संस्कृत भाषा सिखाने की एक बाजी में हार जाने के कारण गुणाढ्य को संस्कृत बोलना छोड़ देना पड़ा एवं विषण्ण हृदय होकर वे विन्ध्याटवी में पशु-पक्षियों को पैशाची भाषा में कथायें सुनाने लगे। उन्हीं कथाओं में कुछ कथाएँ बच गयीं और एक लाख पद्यों की बृहत्कथा कहलायी।

➢ सातवाहन राजाओं के काल के आधार पर ब्यूलर ने उक्त काल का निर्धारण किया।
➢ कीथ ने कहा कि इस ग्रन्थ का काल चतुर्थ शताब्दी ई. के पूर्व ही होगा।
➢ संस्कृत कवियों ने बृहत्कथा की प्रशंसा की थी। जैसे- सुबन्धु, बाण, त्रिविक्रमभट्ट, धनपाल, गोवर्धनाचार्य इत्यादि।
➢ कवियों ने रामायण और महाभारत के समान बृहत्कथा को उपजीव्य बनाकर अनेक संस्कृत रचनाएँ की थीं।
➢ बृहत्कथा की तीन वाचनाएँ इस समय उपलब्ध हैं जो पृथक् पृथक् चार ग्रन्थों के रूप में हैं-
1. नेपालीवाचना बुधस्वामी कृत बृहत्कथाश्लोकसंग्रह के रूप में।
2. प्राकृतवाचना संघदासगणि कृत वसुदेवहिण्डी के रूप में
3. कश्मीरी वाचना क्षेमेन्द्रकृत बृहत्कथामञ्जरी और सोमदेव कृत कथासरित्सागर के रूप में।

* **बृहत्कथाश्लोकसंग्रह-** बृहत्कथा की नेपाली वाचना का एकमात्र प्रतिनिधि यही ग्रन्थ है। इसे नेपाल से हरप्रसाद शास्त्री ने 1893 ई. में प्राप्त किया था। इसका विभाजन सर्गों में हुआ है, 28 सर्ग प्राप्त हुए हैं।जिनमें 4539 श्लोक हैं। ग्रन्थ अपूर्ण ही रह गया।
* **बृहत्कथामञ्जरी -** संस्कृत वाङ्मय को अपनी 40 कृतियों से भरने वाले कश्मीरी कवि क्षेमेन्द्र ने बृहत्कथा की काश्मीरी वाचना को अपनी इस महती कृति में प्रकट किया है। बृहत्कथामञ्जरी अठारह लम्बकों में विभक्त प्रायः सात हजार पद्यों का ग्रन्थ है।
* **कथासरित्सागर-** बृहत्कथा का यह अर्वाचीनतम और विशालतम संस्कृत संस्करण है। इसकी रचना कश्मीरी पण्डित सोमदेव ने कश्मीरनरेश अनन्त की पत्नी सूर्यवती के मनोविनोदार्थ 1064 से 1081 ई. के बीच की थी। बृहत्कथा मञ्जरी के समान 18 लम्बकों में विभक्त है। ये पुनः 124 तरङ्गों में भी विभक्त है। इसमें 21388 श्लोक हैं जिसमें 761 पद्य बड़े छन्दों में है शेष सरल, प्रवाहपूर्ण भाषा शैली के परिचायक अनुष्टुप् छन्द में हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि बृहत्कथा पैशाची भाषा में लिखा गया है। **अतः विकल्प (B) सही है।**

स्रोत-संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा ऋषि, पेज-423-425

105. 'ऋते रवेः क्षालयितुं क्षमेत कः क्षपातमस्काण्डमलीमसं नभः' यह उक्ति है?
(A) किरातार्जुनीयम् की **(B)** रघुवंशम् की
(C) शिशुपालवधम् की **(D)** नैषधीयचरितम् की

व्याख्या-

➢ शिशुपालवध नामक महाकाव्य के रचयिता महाकवि माघ हैं। इन्हें विद्वानों ने श्रेष्ठ महाकाव्य का प्रणेता माना है-
'काव्येषु माघः कवि कालिदासः'
➢ माघ के पितामह सुप्रभदेव थे जो राजा वर्मलात के सर्वाधिकारी अर्थात् दीवान थे। वे पुण्यात्मा, अनासक्त तथा सात्त्विक वृत्ति के पुरुष थे-
सर्वाधिकारी सुकृताधिकारी श्रीवर्मलाख्यस्य बभूव राज्ञः।
असक्तदृष्टिर्विरजाः सदैव देवोऽपरः सुप्रभदेवनामा॥
➢ सुप्रभदेव के पुत्र का नाम दत्तक था जो अत्यन्त उदार, क्षमाशील कोमल स्वभाव के कारण 'सर्वाश्रय' नाम से भी जाने जाते थे।
➢ माघ का निवासस्थान राजस्थान के श्रीमाल या भिन्नमाल नामक नगर में माना जाता है।
➢ माघ का समय विद्वान् 700 ई. के आसपास स्वीकार करते हैं।
➢ माघ की एकमात्र कृति शिशुपालवधम् 20 सर्गों के महाकाव्य के रूप में है।

- इसमें 1645 पद्य हैं, पन्द्रहवें सर्ग में 34 प्रक्षिप्त श्लोक हैं जिनकी व्याख्या मल्लिनाथ ने नहीं की है।
- पाँच पद्य कविवंश वर्णन के हैं उन्हें मिलाकर माघ की रचना 1650 पद्यों की है।

शिशुपालवध की सूक्तियाँ-

ऋते रवेः क्षालयितुं क्षमेत कः क्षपातमस्काण्डमलीमसं नभः। (1/38)

अर्थ - मुनि नारद कहते हैं- आप ही कंसादि मदोन्मत्त राजाओं से पृथ्वी की रक्षा करने में समर्थ हैं। जैसे सूर्य को छोड़कर कोई और रात्रि के अन्धकार को दूर करने में समर्थ नहीं होता।

- **भवन्ति नापुण्यकृतां मनीषिणः।** (1/14)
  क्योंकि महात्मा लोग अपुण्यात्माओं के घर पर प्रेम से जाना नहीं चाहते हैं।
- **हरत्यघं सम्प्रति हेतुरेष्यतः**
  शुभस्य पूर्वाचरितैः कृतं शुभैः।
  शरीरभाजां भवदीयदर्शनं
  व्यनक्ति कालत्रितयेऽपि योग्यताम्॥ (1/26)
  आपका दर्शन त्रिकाल में शरीरधारियों की योग्यता को प्रकट करता है, क्योंकि वर्तमानकाल में पाप नष्ट करता है, भविष्यकाल में आने वाले शुभ का कारण है तथा भूतकाल में पहले किये गये पुण्यों का परिणाम है।
- **श्रेयसि केन तृप्यते** (1/29)
  मङ्गल के विषय में कौन सन्तुष्ट होता है? अर्थात् कोई नहीं।
- **सदाभिमानैकधना हि मानिनः** (1/67)
  नारद कृष्ण जी से कहते हैं कि- मानी लोगों का सर्वदा एकमात्र अभिमान ही धन होता है।
- **सतीव योषित्प्रकृतिः सुनिश्चला पुमांसमभ्येति भवान्तरेष्वपि॥** (1/72)
  पतिव्रता स्त्री जिस प्रकार जन्मान्तर में भी पूर्वजन्म के पति को प्राप्त करती है, उसी प्रकार सुनिश्चल स्वभाव भी जन्मान्तर में पुरुष को प्राप्त करता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'ऋते रवेः क्षालयितुं क्षमेत कः क्षपातमस्काण्डमलीमसं नभः' यह उक्ति शिशुपालवधम् से है। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत - शिशुपालवधम् - हरगोविन्द शास्त्री, पेज 27

106. शिशुपालवध का अङ्गीरस है-

(A) हास्यरस **(B)** शृङ्गाररस
(C) रौद्ररस **(D)** वीररस

व्याख्या- शिशुपालवधम्- लेखक माघ, 20सर्ग, वीर रस, प्रथमसर्ग में 75 श्लोक, उपजीव्य महाभारत का सभापर्व, कथानक- युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में श्रीकृष्ण द्वारा शिशुपाल का वध होने के कारण वीररस।

रामायण- लेखक- महर्षि वाल्मीकि, 7 काण्ड, करुण रस, अनुष्टुप् छन्द, उपमा-रूपक-उत्प्रेक्षा- अर्थान्तरन्यास आदि अलंकार, अध्यात्म रामायण, अद्भुत रामायण, अगस्त्य रामायण आदि आश्रित ग्रन्थ।

महाभारत- लेखक- व्यास, 18पर्व, पाञ्चाली शैली, शान्त रस, महाभारताश्रित ग्रन्थ- किरातार्जुनीयम्, शिशुपालवधम्, भारतमंजरी, नैषधीयचरित, नलाभ्युदय, दूतवाक्य, कर्णभार, मध्यमव्यायोग, नलचम्पू, पञ्चरात्र, ऊरुभंग, अभिज्ञानशाकुन्तल, वेणीसंहार इत्यादि।

कुमारसम्भवम्- लेखक- कालिदास, 17सर्ग, मल्लिनाथ की सञ्जीवनी टीका, शृंगार रस, उपजाति छन्द, प्रथम सर्गान्त में मालिनी छन्द।

रघुवंशम्- लेखक- कालिदास, 19सर्ग, वीररस,

किरातार्जुनीयम्- लेखक- भारवि, 18सर्ग, वीररस उपजीव्य- महाभारत का वनपर्व।

नैषधीयचरितम्- लेखक-श्रीहर्ष, 22सर्ग, नल नायक व नायिका दमयन्ती का प्रेम प्रसंग होने से शृंगार रस।

स्पष्टीकरण- इससे स्पष्ट है कि शिशुपालवधम् का अंगीरस वीररस है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत - शिशुपालवधम् - हरगोविन्द शास्त्री, पेज भू. 06

107. 'अतः परीक्ष्य कर्तव्यं विशेषात् संङ्गतं रहः' यह उक्ति है?

(A) कण्व **(B)** मारीच
(C) दुष्यन्त **(D)** शार्ङ्गरव

व्याख्या- महाभारत के आदिपर्व में शृंगाररस प्रधान, सप्त अंक समन्वित, वैदर्भी शैली के कवि कालिदास विरचित अभिज्ञानशाकुन्तलम् एक अद्वितीय नाट्यकृति है।

* अभिज्ञानशाकुन्तलम् के पञ्चम अंक के चौबीसहवें श्लोक में कण्व-शिष्य शार्ङ्गरव, शकुन्तला द्वारा किए गए गान्धर्व विवाह के विषय में अपने विचार प्रकट करते हैं-

- **अतः परीक्ष्य कर्तव्यं विशेषात् संगतं रहः।**
  अज्ञातहृदयेष्वेव वैरीभवति सौहृदम्॥
  अर्थात् किसी भी प्रकार की मित्रता परीक्षा करके ही करनी चाहिए। जैसे- गुप्त मैत्री गुप्त विवाह सम्बन्ध गान्धर्व विवाह आदि विशेष रूप से परीक्षा करके ही करना चाहिए।

➢ आश्रम के कुलाधिपति ऋषि कण्व धर्मपुत्री शकुन्तला को लौकिक व्यवहार का ज्ञान देते हुए कहते हैं-
शुश्रूषस्व गुरून् कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीजने, भर्तुर्विप्रकृतापि रोषणतया मा स्म प्रतीपं गमः। (अभि.4.)

➢ द्वितीय अंक में राजा दुष्यन्त आत्मगत विचार से परिचय कराते हैं-
अकृतार्थेऽपि मनसिजे रतिमुभयप्रार्थना कुरुते॥ (अभि.2.)

➢ सप्तम अंक में ऋषि मातलि माननीय कण्व के प्रति यह शुभ समाचार प्रेषित करते हैं-
पुत्रवती शकुन्तला तच्छापनिवृत्तौ
स्मृतिमता दुष्यन्तेन प्रतिगृहीता इति।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि 'अतः परीक्ष्य कर्तव्यं विशेषात् संगतं रहः' यह उक्ति शार्ङ्गरव की है।
अतः विकल्प 'D' सही है।

स्रोत - अभिज्ञानशाकुन्तलम् (5/24)- कपिलदेव द्विवेदी, पेज 291

108. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में दुष्यन्त की मनःस्थिति जानने के लिए मेनका ने अपनी किस सखी को भेजा था?

(A) सानुमती **(B)** उर्वशी
(C) रम्भा **(D)** तिलोत्तमा

व्याख्या- महाकवि कालिदास द्वारा प्रणीत सप्ताङ्कों वाला सर्वश्रेष्ठ नाटक अभिज्ञानशाकुन्तलम् के षष्ठ अङ्क में मेनका अपनी सखी सानुमती को दुष्यन्त की मनःस्थिति को जानने के लिए भेजती है-

* **ततः प्रविशत्याकाशयानेन सानुमती नामाप्सराः।**
तदनन्तर विमान से सानुमती नामक अप्सरा का प्रवेश।

* **मेनकासम्बन्धेन शरीरभूता मे शकुन्तला। तया च दुहितृनिमित्तमादिष्टपूर्वाऽस्मि। .....अनयोरेवोद्यानपालिकयोस्तिरस्करिणीप्रतिच्छिन्ना पार्श्ववर्तिनी भूत्वोपलप्स्ये।**
मेनका से उसका (शकुन्तला) का सम्बन्ध होने के कारण शकुन्तला मेरे शरीर के एक भाग के तुल्य है और उसने अपनी पुत्री के लिए मुझसे पहले से कहा हुआ है (कि मैं उसके लिए कुछ करूँ) क्या बात है कि वसन्त ऋतु का उत्सव उपस्थित होने पर भी राजपरिवार में उत्सव का प्रारम्भ दिखाई नहीं पड़ रहा है। मुझे अपनी सखी की प्रार्थना का आदर करना चाहिए।

* **सानुमती के कथन-** उत्सवप्रियाः खलु मनुष्याः।
मनुष्य उत्सवप्रिय होते हैं।

स्थाने खलु प्रत्यादेशविमानिताऽप्यस्य कृते शकुन्तला क्लाम्यतीति।
(राजा को देखकर) परित्याग के द्वारा अपमानित भी शकुन्तला इसके लिए दुःखित रहती है, यह उचित ही है।

* **सानुमती - लतासंश्रिता द्रक्ष्यामि तावत् सख्याः प्रतिकृतिम्। ततोऽस्या भर्तुर्बहुमुखमनुरागं निवेदयिष्यामि॥**
मैं लता का सहारा लेकर अपनी सखी का चित्र देखती हूँ तत्पश्चात् उसके पति के विविध प्रकार से प्रकट हुए प्रेम को उसे बताऊँगी।

* **सानुमती- अहो, ईदृशी स्वकार्यपरता। अस्य सन्तापेनाहं रमे।**
ओह अपने स्वार्थ के प्रति प्रेम ऐसा ही होता है कि मैं उसके (दुष्यन्त) दुःख से प्रसन्न हो रही हूँ।

* **सानुमती - सम्मोहः खलु विस्मयनीयो न प्रतिबोधः।**
(इस राजा का शकुन्तला को) भूलना ही आश्चर्य की बात है, स्मरण करना नहीं।

* **सानुमती- यद्यन्यहस्तगतं भवेत् सत्यमेव शोचनीयं भवेत्।**
यदि यह किसी और के हाथ पड़ जाती तो वस्तुतः शोक की बात हो जाती।

* **सानुमती- रमणीयः खल्ववधिर्विधिना विसंवादितः।**
यह बहुत सुन्दर अवधि थी परन्तु भाग्य ने इसे बिगाड़ दिया।

* **सानुमती- अत एव तपस्विन्याः शकुन्तलाया अधर्मभीरोरस्य राजर्षेः परिणये सन्देह आसीत् । अथवेदृशोऽनुरागोऽभिज्ञानमपेक्षते। कथमिवैतत्?**
इस अधर्म भीरु राजर्षि को बेचारी शकुन्तला के साथ विवाह के विषय में सन्देह हो गया था। अथवा, इस प्रकार का प्रेम अभिज्ञान की अपेक्षा करता है, यह कहाँ तक ठीक है?

* **सानुमती- सदृशमेतत् पश्चात्तापगुरोः स्नेहस्यानवलेपस्य च।**
पश्चात्ताप के कारण बढ़े हुए स्नेह और निरभिमान के योग्य ही यह वक्तव्य है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि अभिज्ञानशाकुन्तलम् में दुष्यन्त की मनःस्थिति जानने के लिए मेनका ने सानुमती को भेजा था। **अतः विकल्प A सही है।**

स्रोत - अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज 318

109. वेदान्तसार के अनुसार प्रमाता विशेषण है?

(A) ईश्वर का **(B)** जीवन्मुक्त का

(C) विषय का **(D)** अधिकारी का

व्याख्या- सदानन्द प्रणीत वेदान्तसार यह एक प्रकरणग्रन्थ है। जिसमें अनुबन्धचतुष्टय की चर्चा करते हुए कहते हैं- **तत्रानुबन्धो नामाधिकारिविषयसम्बन्धप्रयोजनानि।**

अनुबन्धचतुष्टय- अधिकारी, विषय, सम्बन्ध, प्रयोजन।

(i) अधिकारी- अधिकारी तु विधिवदधीतवेदवेदाङ्गत्वेनापाततोऽधिगताखिलवेदार्थोऽस्मिन् जन्मनि जन्मान्तरे वा काम्यनिषिद्धवर्जनपुरःसरं नित्यनैमित्तिकप्रायश्चित्तोपासनानुष्ठानेन निर्गतनिखिलकल्मषतया नितान्तनिर्मलस्वान्तः **साधनचतुष्टयसम्पन्नः प्रमाता।**

अधिकारी तो वस्तुतः वह जिज्ञासु प्रमाता है जिसने वेद वेदाङ्गों का विधिपूर्वक अध्ययन करके सम्पूर्ण वेदों के अभिप्राय को भली प्रकार जान लिया है। इस जन्म में अथवा पूर्वजन्म में कामनाओं को पूर्ण करने वाले काम्य कर्म तथा शास्त्रों द्वारा निषेध किए गए कर्मों को छोड़ने के साथ-साथ, नित्य, नैमित्तिक, प्रायश्चित्त और उपासना कर्मों के अनुष्ठान से सम्पूर्ण पापों से मुक्त अत्यधिक निर्मल अन्तःकरण वाला होकर साधनचतुष्टय को अपना लिया है। वही अधिकारी है।

(ii)विषय- विषयो जीवब्रह्मैक्यं शुद्धचैतन्यं प्रमेयं तत्रैव वेदान्तानां तात्पर्यात् ।

वेदान्तसार में जीव और ब्रह्म दोनों की एकता प्रतिपादित की गयी है। यही विषय है।

(iii)सम्बन्ध- सम्बन्धस्तु तदैक्यप्रमेयस्य **तत्प्रतिपादकोपनिषत्प्र-माणस्य च बोध्यबोधकभावः।**

जीव और ब्रह्म के ऐक्य रूप प्रमेय और उसका प्रतिपादन करने वाले उपनिषद् वाक्यरूप प्रमाण का परस्पर बोध्यबोधकभाव ही इस शास्त्र का सम्बन्ध है।

(iv)प्रयोजन- प्रयोजनं तु तदैक्यप्रमेयगताज्ञाननिवृत्तिः स्वस्वरूपानन्दावाप्तिश्च तरति शोकमात्मविद् इत्यादि श्रुतेः ब्रह्मविद् ब्रह्मैव भवति इत्यादि श्रुतेश्च।

जीव और ब्रह्म के ऐक्य रूप प्रमेय के विषय में वर्तमान अज्ञान की निवृत्ति तथा जीव को वस्तुतः ब्रह्म रूप में जानने वाला ब्रह्म ही हो जाता है- इस मुण्डक श्रुति के अनुसार अपने वास्तविक स्वरूप आनन्द की प्राप्ति इस शास्त्र का प्रयोजन है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि वेदान्तसार के अनुसार प्रमाता विशेषण है अधिकारी का। **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत - वेदान्तसार- राकेश शास्त्री, पेज 122

110. प्रायश्चित्त कर्म क्या है?

(A) सन्ध्यावन्दनादि **(B)** जातेष्टि आदि

(C) चान्द्रायणव्रत **(D)** शाण्डिल्य विद्या

व्याख्या- सदानन्द विरचित वेदान्तसार में काम्य, निषिद्ध, नित्य-नैमित्तिक कर्मों के माध्यम से अधिकारी की योग्यता को स्पष्ट किया गया है-

* **काम्य कर्म-** फल विशेष की प्राप्ति की कामना से किया गया कर्म काम्य कहलाता है जैसे- ज्योतिष्टोम आदि। यथा- काम्यानि स्वर्गादीष्टज्योतिष्टोमादीनि
* **निषिद्ध कर्म-** स्वर्गादि नरक जैसी अनिष्ट स्थितियों में डालने वाले कर्मों को वेदान्तदर्शन में निषिद्ध कर्म कहा गया है। जैसे- ब्राह्मणहत्या आदि।
  निषिद्धानि नरकाद्यनिष्टसाधनानि ब्राह्मणहननादीनि।
* **नित्य कर्म-** ऐसे कर्म, जिनके न करने पर हानि अवश्य ही होती है। जैसे- सन्ध्यावन्दन आदि। यथा- नित्यानि अकरणे प्रत्यवायसाधनानि सन्ध्यावन्दनादीनि।
* **नैमित्तिक कर्म-** कारण विशेष से शास्त्र द्वारा अनुमोदित कर्म ही नैमित्तिक कर्म कहलाते हैं। जैसे- जातेष्टि आदि। यथा- नैमित्तिकानि पुत्रजन्माद्यनुबन्धीनि जातेष्टयादीनि।
* **प्रायश्चित्त कर्म-** अज्ञानवश परिस्थिति विशेष में निषिद्ध कर्मों के पाप निवारणार्थ प्रायश्चित्त कर्म किए जाते हैं। जैसे- चान्द्रायण व्रत आदि। यथा- 'प्रायश्चित्तानि पापक्षयसाधनानि चान्द्रायणादीनि'।
* **उपासना कर्म-** सगुण ब्रह्म में चिन्तनपूर्वक मन को स्थिर करना ही उपासना कर्म है। यथा- 'उपासनानि सगुणब्रह्मविषयमानसव्यापाररूपाणि शाण्डिल्यविद्यादीनि।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि प्रायश्चित्त कर्म चान्द्रायण व्रत हैं। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत - वेदान्तसार- राकेश शास्त्री, पेज 127

111. भाषा के उद्भव सिद्धान्तों में कौन सा नहीं है?

(A) आवेग सिद्धान्त **(B)** वेग सिद्धान्त

(C) सङ्गीत सिद्धान्त **(D)** रणन सिद्धान्त

व्याख्या- भाषा वैज्ञानिकों ने भाषोत्पत्तिविषयक अनेक सिद्धान्तों को निर्दिष्ट किया है।

1. **दिव्योत्पत्ति सिद्धान्त-** प्राचीन मत, दिव्य शक्ति की सत्ता से उत्पन्न होने के कारण दिव्योत्पत्ति सिद्धान्त, वेद, उपनिषद्, दर्शन ग्रन्थ, स्मृतियाँ, अ इ उ ण् आदि 14 माहेश्वरसूत्र। **देवीं वाचमजनयन्त देवास्तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति।** अर्थात् वाग्देवी (भाषा) को देवों ने उत्पन्न किया और उसे सभी प्राणी बोलते हैं।
2. **संकेत सिद्धान्त-** अन्य नाम निर्णयवाद, निर्णय सिद्धान्त, स्वीकारवाद।
प्रवर्तक- 18वीं शती के प्रसिद्ध फ्रेंच विचारक रूसो हैं।
3. **रणन सिद्धान्त-** अन्य नाम धातुसिद्धान्त, अनुरणन सिद्धान्त, अनुरणनमूलकतावाद, अनुरणात्मक अनुकरण, डिंग डाँग वाद।
प्रवर्तक- प्लेटो, संवर्धन-हेस व मैक्समूलर।
4. **ध्वन्यनुकरण सिद्धान्त-** अन्य नाम-अनुकरण सिद्धान्त, ध्वन्यात्मकानुकरण सिद्धान्त, अनुकरणमूलकतावाद, शब्दानुकरणवाद, भों-भों वाद। मूल नाम- ओनोमेटोपोइक थ्योरी।
5. **आवेग सिद्धान्त-** अन्य नाम- मनोभावाभिव्यञ्जकतावाद, मनोभावाभिव्यक्तिवाद, मनोरागव्यंजक शब्दमूलकतावाद, पूँह-पूहवाद,
6. **श्रमध्वनि सिद्धान्त-** अन्य नाम- श्रमापहारमूलकतावाद या यो-हे -हो-वाद,। प्रतिपादक-न्वारे।
7. **इंगित सिद्धान्त-** प्रस्तावक- डॉ. राये, 1930 ई. के लगभग प्रो. रिचार्ड ने अपनी पुस्तक Human..Speech में 'मौखिक इंगित सिद्धान्त' नाम से प्रस्तुत किया है।
8. **संपर्क सिद्धान्त-** प्रवर्तक-जी. रेवेज।
9. **संगीत सिद्धान्त-** समर्थकडार्विन, स्पेन्सर व येम्पर्सन।
10. **प्रतीक सिद्धान्त-** प्रो. स्वीट। प्रारम्भिक भाषा में ऐसे शब्दों को नर्सरी शब्द कहते हैं।
11. **समन्वय सिद्धान्त-** अन्य नाम-सर्वसिद्धान्त संकलन।
12. **प्रतिभा सिद्धान्त** - संस्थापक- आचार्य भर्तृहरि।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि आवेग सिद्धान्त, संगीत सिद्धान्त तथा रणनसिद्धान्त भाषा के उद्भव सिद्धान्त हैं, जबकि वेग सिद्धान्त नहीं है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत - भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव , पेज 65, 78

112. योगदर्शन में पदार्थों की संख्या है?

(A) 25 **(B)** 26
(C) 24 **(D)** 22

व्याख्या- महर्षि पतञ्जलि कृत योगदर्शन को **'सेश्वर सांख्य'** कहा जाता है। सांख्य के 25तत्त्वों के अतिरिक्त ईश्वर को क्लेश, कर्म, कर्मों के फल और वासनाओं से सम्बन्धरहित बताया गया है। समाधिपाद, साधनपाद, विभूतिपाद तथा कैवल्यपाद में विभाजित योगदर्शन पर वाचस्पति मिश्र की तत्त्ववैशारदी नामक टीका प्राप्त होती है। इस प्रकार योगदर्शन सांख्य के 25 तत्त्वों के साथ 26 वाँ तत्त्व ईश्वर को स्वीकार करता है-

यथा- **'क्लेशकर्मविपाकाशयैरपरामृष्टः पुरुष-विशेष ईश्वरः'** योगदर्शन। (24)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि योगदर्शन 26 तत्त्वों को स्वीकार करता है।

अतः विकल्प 'B' सही है।

स्रोत- सर्वदर्शनसंग्रह - उमाशङ्कर शर्मा ऋषि, पेज 558

113. 'शरीरं तावदिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली' यह परिभाषा किसकी है?

(A) दण्डी की **(B)** भामह की
(C) मम्मट की **(D)** आनन्दवर्धन की

व्याख्या- * काव्यादर्श- लेखक- दण्डी, समय-सातवीं शताब्दी काव्यलक्षण-'शरीरं तावदिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली।'

* **काव्यालंकार-** लेखक- भामह, समय- 500ई., काव्यलक्षण- 'शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्।'
* **काव्यप्रकाश-** लेखक- मम्मट, समय- 1050ई., काव्यलक्षण- 'तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि'।
* **ध्वन्यालोक-** लेखक- आनन्दवर्धन, समय- नवम शताब्दी का उत्तरार्द्ध, काव्यलक्षण- 'काव्यस्यात्मा ध्वनिः।
* **साहित्यदर्पण-** लेखक- आचार्य विश्वनाथ, समय-14वीं शताब्दी, काव्यलक्षण- 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्'
* **रसगंगाधर-** लेखक- पण्डितराज जगन्नाथ, समय-17वीं शताब्दी का मध्यभाग, काव्यलक्षण-'रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्।
* **वक्रोक्तिजीवितम्-** लेखक-कुन्तक, समय- एकादश शताब्दी का पूर्वार्द्ध, काव्यलक्षण- 'वक्रोक्तिः काव्यजीवितम्'
* **काव्यालंकारसूत्र-** लेखक- वामन, समय- 800-850ई. लगभग, काव्यलक्षण-'रीतिरात्मा काव्यस्य'।

* **औचित्यविचारचर्चा-** लेखक- क्षेमेन्द्र,समय-एकादश-शताब्दी का उत्तरार्ध, काव्यलक्षण-'औचित्यं रससिद्धस्य स्थिरं काव्यस्य जीवितम्'।
* **अग्निपुराण-** लेखक- व्यास, काव्यलक्षण- 'संक्षेपाद्वाक्यमिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली'/काव्यं स्फुटदलंकारं गुणवद्दोषवर्जितम्।।
* **शृङ्गारप्रकाश-** लेखक- भोज-, समय- एकादश शताब्दी 1050 ई. लगभग, काव्यलक्षण-'अदोषं गुणवद्काव्य-मलंकारैरलंकृतं रसान्वितः कविः कुर्वन् कीर्तिं प्रीतिं च विन्दति।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि 'शरीरं तावदिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली' यह परिभाषा दण्डी की है।
अतः विकल्प 'A' सही है।

स्रोत - काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज 24

114. बोधव्यवैशिष्ट्य पर आधारित है-
(A) आर्थीव्यञ्जना **(B)** शाब्दीव्यञ्जना
(C) उपादान लक्षणा **(D)** गौणी लक्षणा

व्याख्या- वाग्देवतावतार आचार्य मम्मट कृत दश उल्लास युक्त काव्यप्रकाश के द्वितीय उल्लास के विषय निम्नलिखित हैं-

त्रिविध शब्द- वाचक, लक्षक, व्यञ्जक।
त्रिविध अर्थ- वाच्य, लक्ष्य, व्यंग्य।
त्रिविध शक्तियाँ- अभिधा, लक्षणा, व्यञ्जना।
काव्यप्रकाशकार ने वाच्य, लक्ष्य, व्यंग्य रूप त्रिविध अर्थों की व्यञ्जकता स्वीकार की है-
'सर्वेषां प्रायशोऽर्थानां व्यञ्जकत्वमपीष्यते'। (का.प्र.)
व्यञ्जना- व्यञ्जना शक्ति दो प्रकार की होती है -
शाब्दी व्यञ्जना तथा आर्थी व्यञ्जना
शाब्दी व्यञ्जना के भी दो भेद हैं -
(1) अभिधामूला व्यञ्जना (2) लक्षणामूला व्यञ्जना
1. **संयोग-**सशंखचक्रो हरिः = विष्णु
2. **विप्रयोग-**अशंखचक्रो हरिः= विष्णु
3. **साहचर्य-** रामलक्ष्मणौ = दशरथपुत्र राम
4. **विरोधिता-**रामार्जुनगतिस्तयोः = परशुराम,कार्तवीर्य
5. **अर्थ-** स्थाणुं भज भवच्छिदे= शिव
6. **प्रकरण-** सर्वं जानाति देवः= राजा
7. **लिंग-** कुपितो मकरध्वजः = कामदेव
8. **अन्यशब्द की सन्निधि-** देवस्य पुरारातेः = शिव
9. **सामर्थ्य-**मधुना मत्तः कोकिलः = वसन्त ऋतु
10. **औचित्य-**पातु वो दयितामुखम् = साम्मुख्य
11. **देश-** भात्यत्र परमेश्वरः = यहाँ परमेश्वर शोभित होते हैं इसमें राजधानी रूप देश के कारण 'राजा' अर्थ में नियन्त्रित हो जाता है।
12. **काल-** चित्रभानुर्विभाति = दिन में सूर्य, रात में अग्नि
13. **व्यक्ति-** मित्रं भाति = सुहृद् /मित्रः = सूर्य।
14. **स्वर आदि-** उदात्त, अनुदात्तादि स्वर तथा अभिनय आदि

आर्थी व्यञ्जना	
1. वक्तृ वैशिष्ट्य	2. बोद्धव्य वैशिष्ट्य
3. काकु वैशिष्ट्य	4. वाक्य वैशिष्ट्य
5. वाच्य वैशिष्ट्य	6. अन्य सन्निधि वैशिष्ट्य
7. प्रस्ताव वैशिष्ट्य	8. देश वैशिष्ट्य
9. काल वैशिष्ट्य	10. चेष्टा वैशिष्ट्य

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि वक्तृ, बोद्धव्य, काकु आदि वैशिष्ट्य पर आर्थी व्यञ्जना आधारित है।
अतः विकल्प 'A' सही है।

स्रोत - काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज 82

115. आचार्य मम्मट ने विरोधाभास अलङ्कार के प्रकार माने हैं?
(A) 8 **(B)** 10
(C) 11 **(D)** 12

व्याख्या- विरोधाभास अलंकार- 'विरोधः सोऽविरोधेऽपि विरुद्धत्वेन यद्वचः (10.166)
अर्थात् जहाँ विरोध न होने पर भी (दो वस्तुओं का) विरुद्ध रूप से जो वर्णन किया जाता है, वह विरोध अलंकार है।
भेद- 'जातिश्चतुर्भिर्जात्याद्यैर्विरुद्धा स्याद् गुणस्त्रिभिः (10.167)
यह विरोध अलंकार दस प्रकार का होता है।
1. जाति का जाति के साथ विरोध वर्णन में।
2. जाति का गुण के साथ विरोध वर्णन में।
3. जाति का क्रिया के साथ विरोध वर्णन में।
4. जाति का द्रव्य के साथ विरोध वर्णन में।
5. गुण का गुण के साथ विरोध होने पर।
6. गुण का क्रिया के साथ विरोध होने पर।
7. गुण का द्रव्य के साथ विरोध होने पर।

8. क्रिया का क्रिया के साथ विरोध होने पर।
9. क्रिया का द्रव्य के साथ विरोध होने पर।
10. द्रव्य का द्रव्य के साथ विरोध वर्णन में।

विशेषोक्ति अलंकार- 'विशेषोक्तिरखण्डेषु कारणेषु फलावचः।

भेद- 1. अनुक्तनिमित्ता
2. उक्तनिमित्ता
3. अचिन्त्यनिमित्ता

व्यतिरेक अलंकार- 'उपमानाद् यदन्यस्य व्यतिरेकः स एव सः।' (10.158) अर्थात् उपमान से उपमेय का जो व्यतिरेक (आधिक्य) बताया जाता है, वह व्यतिरेक अलंकार है।

भेद- हेत्वोरुक्तावनुक्तीनां त्रये साम्ये निवेदिते।
शब्दार्थाभ्यामथाक्षिप्ते श्लिष्टे तद्वत् त्रिरष्ट तत्॥

व्यतिरेक अलंकार के 24 भेद निम्नवत् हैं-
1. उपमान से उपमेय का आधिक्य वर्णन है, उसमें उपमेय के आधिक्य के हेतु तथा उपमान के अपकर्ष के हेतु इन दोनों का वर्णन होने से यह प्रथम भेद है।
2. दोनों के अनुक्त होने पर।
3. उत्कर्ष हेतु के अनुक्त होने पर।
4. अपकर्ष हेतु के अनुक्त होने पर।

शब्द, अर्थ व आक्षिप्त होने से प्रत्येक के 3 भेद 4×3 =12 हो जाते हैं। ये बारह भेद श्लेषमूलक या अश्लेषमूलक होने से दो प्रकार के होकर व्यतिरेक के कुल 12 × 2 = 24 भेद बन जाते हैं।

* **अपह्नुति अलंकार-** 'प्रकृतं यन्निषिध्यान्यत्साध्यते सा तु अपह्नुतिः'। (का.प्र. 10.145)
 भेद- (1) शाब्दी अपह्नुतिः।
 (2) आर्थी अपह्नुतिः।
* **रूपक अलंकार-** 'तद्रूपकमभेदो य उपमानोपमेययोः।' उपमान और उपमेय का जो अभेद वर्णन होता है, वह रूपक अलङ्कार है।
* **उपमा अलंकार-** 'साधर्म्यमुपमा भेदे'। (का.प्र.10. उपमा के 25 प्रकार ही आचार्य मम्मट को अभीष्ट है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि विरोधाभास अलंकार के 10 प्रकार माने गए हैं। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत - काव्यप्रकाश-आचार्य विश्वेश्वर, पेज 502

116. 'पंगोश्च' सूत्र से किस स्त्री प्रत्यय का विधान होता है-
(A) ऊङ् **(B)** ङीप्
(C) ङीष् **(D)** ङीन्

व्याख्या-
1- ऊङुतः- (4.1.66) ऊङ् प्रत्यय, उदाहरण - कुरूः।
2- ऊरूत्तरपदादौपम्ये (4.1.69) ऊङ् प्रत्यय, उदाहरण- करभोरूः
3- संहितशफलक्षणवामादेश्च- (4.1.70) ऊङ् प्रत्यय, उदाहरण- संहितोरूः शफोरूः, वामोरूः, लक्षणोरूः
4- 'पंगोश्च' (4.1.68) ऊङ् प्रत्यय, पङ्गूः।
5- 'उगितश्च'- ङीप् प्रत्यय, उदाहरण- भवती/भवन्ती/पचन्ती। दीव्यन्ती।
6- 'टिड्ढाणञ्द्वयसज्दघ्नञ्मात्रच्तयप्ठक्ठञ्कञ्क्वरपः'- ङीप् प्रत्यय,उदाहरण-
टित् - कुरुचरी,नदी,
ढ - सौपर्णेयी,
अण् - ऐन्द्री, **अञ् -** औत्सी, **द्वयस् -** ऊरुद्वयसी,
द्वयसच् - ऊरुद्वयसी, **दघ्नच् -** ऊरुदघ्नी
मात्रच्- ऊरुमात्री, **तयप् -** पञ्चतयी।
ठक्- आक्षिकी, **ठञ्-** प्रास्थिकी, लावणिकी,
कञ्- यादृशी, **क्वरप्-** इत्वरी
7- वयसि प्रथमे- ङीप् प्रत्यय, उदाहरण- कुमारी
8- द्विगोः- ङीप् प्रत्यय, उदाहरण- त्रिलोकी,
9- वर्णादनुदात्तात्तोपधात्तोः नः- ङीप् प्रत्यय, उदाहरण- एनी, रोहिणी
10- इन्द्रवरुणभवशर्वरुद्रमृडहिमारण्ययवयवनमातुलाचार्याणामानुक् (4.1.49) ङीष् प्रत्यय, उदाहरण- इन्द्राणी, वरुणानी, हिमानी, अरण्यानी, यवानी, यवनानी, मातुलानी, उपाध्यायानी, आचार्यानी,
11- क्रीतात् करणपूर्वात् (4.1.50)
ङीप् प्रत्यय, उदाहरण- वस्त्रक्रीती
12- स्वाङ्गाच्चोपसर्जनादसंयोगोपधात् (4.1.54)
ङीष् प्रत्यय, उदाहरण- अतिकेशी, चन्द्रमुखी
13- इतो मनुष्यजातेः (4.1.65)
ङीष् प्रत्यय, उदाहरण- दाक्षी
14- षिद्गौरादिभ्यश्च (4.1.41)
ङीष् प्रत्यय, उदाहरण- गार्ग्यायणी, नर्तकी, गौरी

15- शार्ङ्गरवाद्यञो ङीन् (4.1.73)

ङीन् प्रत्यय, उदाहरण- नारी, बैदी, ब्राह्मणी, शार्ङ्गरवी

16- यूनस्तिः (4.1.77)

ति प्रत्यय, उदाहरण- युवतिः।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि 'पंगोश्च' यह सूत्र 'ऊङ्' स्त्री प्रत्यय का विधान करता है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत - लघुसिद्धान्तकौमुदी - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज 141

117. 'सहस्रगुणमुत्स्रष्टुमादत्ते हि रसं रविः' सूक्ति है-

(A) रघुवंश की **(B)** मेघदूत की

(C) अभिज्ञानशाकुन्तल की **(D)** कुमारसम्भव की

व्याख्या- महाकवि कालिदास कृत 19 सर्गात्मक , वीररस युक्त 'रघुवंशम्' महाकाव्य के प्रथम सर्ग में राजा दिलीप के जीवन की गुणवत्ता को सूर्य के सदृश बताया है-

प्रजानामेव भूत्यर्थं स ताभ्यो बलिमग्रहीत्।
सहस्रगुणमुत्स्रष्टुमादत्ते हि रसं रविः॥1/18॥

अर्थात् प्रजा की भलाई के लिए ही वह राजा दिलीप उन सभी (प्रजाओं) से कर लेता था, जैसे कि सहस्रगुणा बरसाने के लिए ही सूर्य जल लेता है।

अभिज्ञानशाकुन्तल-

सप्त अंक युक्त, शृंगार रस प्रधान, वैदर्भी रीत्यात्मक, 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' नाट्यकृति के धीरोदात्त नायक दुष्यन्त षष्ठ अङ्क में अंगूठी से कहते हैं-

'अचेतनं नाम गुणं न लक्षयेत्।' (6/13)

षष्ठ अङ्क में राजा दुष्यन्त अगूँठी को देखकर कहते हैं कि- हे अगूँठी, सुन्दर और कोमल अगुँलियों वाले उस हाथ को छोड़कर तुम कैसे जल में गिर पड़ी? अथवा अचेतन वस्तु गुणों की ओर ध्यान नहीं देते, किन्तु मैंने ही क्यों प्रिया का अपमान किया?

मेघदूतम् -

विप्रलम्भशृंगार युक्त, खण्डकाव्य मेघदूत में कवि कालिदास कहते हैं- कि अधिक गुण वाले व्यक्ति से की गयी याचना फलवती न होने पर भी उत्तम है, नीच व्यक्ति से फलवती याचना भी अच्छी नहीं है- **'याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा'।** (पूर्वमेघ)

कुमारसम्भव-

सप्तदश (17) सर्गात्मक कुमारसम्भव महाकाव्य में ब्रह्मचारी का कथन है- **'शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्'।**

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि 'सहस्रगुणमुत्स्रष्टुमादत्ते हि रसं रविः' यह सूक्ति रघुवंशम् में राजा दिलीप के लिए है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत - रघुवंशम् (1/18)-हरगोविन्द शास्त्री, पेज 08

118. 'त्रयीमयाय त्रिगुणात्मने नमः' यह पद्यांश उद्धृत है-

(A) नलचम्पू से **(B)** कादम्बरी कथामुख से

(C) शिशुपालवध से **(D)** अभिज्ञानशाकुन्तलम् से

व्याख्या-

ग्रन्थ मंगलाचरण विधा मङ्गलाचरण

कादम्बरी - नमस्कारात्मक, वंशस्थ छन्द रजोजुषे जन्मनि सत्त्व वृत्तये स्थितौ प्रजानां प्रलये तमस्पृशे अजाय सर्गस्थिति-नाशहेतवे त्रयीमयाय त्रिगुणात्मने नमः

अभिज्ञानशाकुन्तलम् - अष्टमूर्ति शिव जी की उपासना, स्रग्धरा छन्द या सृष्टिः स्रष्टुराद्या वहति विधिहुतं या -हविर्या च होत्री,.. प्रत्यक्षाभिःप्रपन्नस्त- नुभिरवतु वस्ताभि-रष्टाभिरीशः।।

शिशुपालवधम्, वस्तुनिर्देशात्मक, वंशस्थ छन्द, श्रियः पतिः श्रीमति शासितुं जगज्जगन्नि-वासो वसुदेवसद्मनि। वसन्ददर्शावतरन्तमम्बरात् हिरण्य-गर्भाङ्गभुवं मुनिं हरिः।।

नलचम्पूः,-वस्तुनिर्देशात्मक तथा नमस्कारात्मक जयति गिरिसुतायाः कामसन्तापवाहिन्युरसः....मसकृदमृत-बिन्दुस्यन्दिनो वाग्विलासाः (1/1)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'त्रयीमयाय त्रिगुणात्मने नमः' यह पद्यांश कादम्बरी कथामुख से अवतरित है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- कादम्बरी कथामुख (1/1) - तारिणीश झा, पेज 01

119. 'त्रिविक्रमभट्ट' का वंश था-

(A) भट्टवंश **(B)** शाण्डिल्यवंश

(C) भरद्वाजवंश **(D)** गर्गवंश

व्याख्या-

ग्रन्थ	ग्रन्थकार	वंश
नलचम्पू	त्रिविक्रमभट्ट	शाण्डिल्य
कादम्बरी	बाणभट्ट	वत्स/वात्स्यायन
उत्तररामचरितम्	भवभूति	काश्यप
किरातार्जुनीयम्	भारवि	कुशिक
अभिज्ञानशाकुन्तलम्	कालिदास	ब्राह्मण वंश
शिवराजविजय	अम्बिकादत्तव्यास	पराशर गोत्रीय यजुर्वेदी ब्राह्मण त्रिप्रवर 'भीड़ा' वंश

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि त्रिविक्रमभट्ट का वंश शाण्डिल्यवंश है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत - नलचम्पू - तारिणीश झा, पेज 21-26

120. बहिर्विकारं प्रकृतेः पृथग् विदुः।
पुरातनं त्वां पुरुषं पुराविदः।। यह पद्यांश उद्धृत है-

(A) सांख्यकारिका से **(B)** शिशुपालवध से
(C) नलचम्पू से **(D)** मृच्छकटिक से

व्याख्या- सूर्यपूजक माघ की कृति 20 सर्गात्मक, 1650 पद्यात्मक वीररस युक्त शिशुपालवधम् के प्रथम सर्ग में नारद श्रीकृष्ण की परब्रह्मता तथा अध्यात्मज्ञेयता को निरूपित करते हैं-

उदासितारं निगृहीतमानसैर्गृहीतमध्यात्मदृशा कथञ्चन।
बहिर्विकारं प्रकृतेः पृथग्विदुः पुरातनं त्वां पुरुषं पुराविदः।। (1/33)

अर्थात् प्राचीन तत्त्व को जानने वाले विद्वान् योगियों द्वारा अन्तर्दृष्टि से किसी तरह दर्शन किए गए आपको संसार से उदासीन, त्रिगुणात्मक कारणरूप मूलप्रकृति से पृथक् परमपुरुष ऐसा कहते हैं।

अल्पक्लेशं मरणं दारिद्र्यमनन्तकं दुःखम्। (मृच्छ.1/11) चारुदत्त विदूषक के पूछने पर कहता है- मृत्यु कम कष्ट वाली होती है, किन्तु दरिद्रता कभी न समाप्त होने वाला दुःख है।

'अप्रगल्भाः पदन्यासे जननीरागहेतवः' (नलचम्पू 1.6) अर्थात् समुचित शब्द प्रयोग में असमर्थ, सारहीन बातों को कहने के कारण कतिपय कवि अत्यधिक आलाप करने वाले बच्चों के समान होते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि 'बहिर्विकारं प्रकृतेः पृथग् विदुः। पुरातनं त्वां पुरुषं पुराविदः।।' यह पद्यांश 'शिशुपालवधम्' का है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत - शिशुपालवधम् (1/33)- हरगोविन्द शास्त्री, पेज 23

121. 'भवितव्यानां द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र'- यह सूक्ति उद्धृत है-

(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से **(B)** नलचम्पू से
(C) कादम्बरी से **(D)** शिशुपालवधम् से

व्याख्या- कालिदास विरचित अभिज्ञानशाकुन्तलम् के प्रथम अंक में राजा दुष्यन्त की दाहिनी भुजा का फड़कना सुन्दर स्त्री की प्राप्ति का सूचक माना गया है दुष्यन्त का विचार है कि वन में इसकी प्राप्ति कैसे सम्भव है? अथवा भावी (होनहार) घटनाओं के लिए सर्वत्र ही द्वार (मार्ग) हो जाते हैं। यथा-

शान्तमिदमाश्रमपदं स्फुरति च बाहुः कुतः फलमिहास्य
अथवा भवितव्यानां द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र।। (1/16।।)

⇒ माघकृत शिशुपालवध के प्रथम अंक में नारदमुनि के आगमन पर श्रीकृष्ण द्वारा उनका स्वागत करते हुए कहा गया है- महात्मा लोग अपुण्य आत्माओं के घर पर प्रेम से आना नहीं चाहते। **यथा- 'गृहानुपैतुं प्रणयादभीप्सवो भवन्ति नापुण्यकृतां मनीषिणः'।- 1/14**

⇒ **कादम्बरी (शुकनासोपदेश)** में शुकनास युवराज चन्द्रापीड को युवावस्था में उत्पन्न होने वाला (अज्ञानरूप) अन्धकार से सावधान रहने की शिक्षा दी है। यथा- **'अतिगहनं तपो यौवनप्रभवम्'**

⇒ त्रिविक्रमभट्ट कृत नलचम्पू में बताया गया है कि काव्य और बाण को मर्मस्पर्शी होना चाहिए-

किं कवेस्तेन काव्येन किं काण्डेन धनुष्मतः।
परस्य हृदये लग्नं न घूर्णयति यच्छिरः।।1/5।।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि **'भवितव्यानां द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र'** यह सूक्ति अभिज्ञानशाकुन्तलम् की है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत - अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/16)- कपिलदेव, पेज 38

122. ''अनाघ्रातं पुष्पं किसलयमलूनं कररुहैः''-यह उक्ति है-

(A) शकुन्तला की **(B)** दुष्यन्त की
(C) विदूषक की **(D)** प्रियंवदा की

व्याख्या- महाकवि कालिदास विरचित 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के द्वितीय अंक में राजा दुष्यन्त शकुन्तला के विषय में अपना विचार व्यक्त करते हैं-

अनाघ्रातं पुष्पं किसलयमलूनं कररुहै-
रनाविद्धं रत्नं मधुनवमनास्वादितरसम्।
अखण्डं पुण्यानां फलमिव च तद्रूपमनघं,
न जाने भोक्तारं कमिह समुपस्थास्यति विधिः।।

(2/10)

अर्थात् अनाघ्रात, अलून, अनाविद्ध इत्यादि गुणों से युक्त शकुन्तला दुष्यन्त को प्रतीत होती है।

⇒ द्वितीय अंक का प्रारम्भ विदूषक के कथन से होता है।

दुर्भाग्य से विदूषक शिकार के व्यसनी राजा की मित्रता से खिन्न हो गया है। यथा (**'भोः दिष्टम् ! एतस्य मृगयाशीलस्य राज्ञो वयस्यभावेन निर्विण्णोऽस्मि'।**)

⇒ तृतीय अंक में प्रियंवदा अपनी सखी अनसूया से शकुन्तला के विषय में वार्ता करती है कि शकुन्तला की आसक्ति पुरुवंशियों में श्रेष्ठ दुष्यन्त पर है। बड़ी नदी समुद्र को छोड़कर और कहाँ उतरती हैं- यथा- **'सागरमुज्झित्वा कुत्र वा महानद्यवतरति'।**

⇒ कालिदास रचित अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में शकुन्तला का कथन है- **हला, पश्य। नलिनी पत्रान्तारितमपि सहचरमपश्यन्त्यातुरा चक्रवाक्यारटति, दुष्करमहं करोमीति।**

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि **'अनाघ्रातं पुष्पं किसलयमलूनं कररुहैः'** यह उक्ति दुष्यन्त की शकुन्तला के प्रति है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत - अभिज्ञानशाकुन्तलम् (2/10)-कपिलदेव, पेज 115

123. नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः न चैनं क्लेदयन्त्यापो, न शोषयति मारुतः। इस पद्य में 'एनम्' शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?

(A) आत्मा के लिए **(B)** ब्रह्म के लिए
(C) जगत् के लिए **(D)** चित्त के लिए

व्याख्या- महर्षि वेदव्यास द्वारा विरचित महाभारत के भीष्म पर्वान्तर्गत 18 अध्याय युक्त, 700 श्लोक समन्वित श्रीमद्भगवद्गीता के सांख्ययोग नामक द्वितीय अध्याय के 23 वें श्लोक में आत्मा को परिभाषित किया गया है-

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः॥ (2/23)

अर्थात् एनम् = इस आत्मा को शस्त्र काट नहीं सकते, अग्नि जला नहीं सकती, पानी गला नहीं सकता तथा वायु सुखा नहीं सकती।

⇒ श्रीमद्भगवद्गीता के ध्यानयोग नामक षष्ठ अध्याय में चित्त की चञ्चलता के बारे में अर्जुन श्रीकृष्ण से कहते हैं-

चञ्चलं हि मनः कृष्ण प्रमाथि बलवद्दृढम्।
तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम्॥ (6/34)

अर्थात् हे कृष्ण! यह मन चञ्चल, हठीला तथा बलवान् होने के कारण वायु के समान वश में करना अत्यन्त कठिन है।

⇒ भगवद्गीता के ज्ञानकर्मसंन्यास योग नामक चतुर्थ अध्याय के चौबीसवें श्लोक में ब्रह्म अर्थात् आध्यात्मिक कर्मों द्वारा भगवद् धाम की प्राप्ति होती है-

ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्।
ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्मसमाधिना॥ (4/24)

⇒ भगवद्गीता के राजविद्याराजगुह्ययोग नामक नवम अध्याय के चतुर्थ श्लोक में सम्पूर्ण जगत् को अव्यक्त रूप से भगवान् के अधीन बताया गया है-

मया ततमिदं सर्वं जगदव्यक्तमूर्तिना।
मत्स्थानि सर्वभूतानि न चाहं तेष्ववस्थितः॥ (9/4)

अर्थात् समस्त दृश्य जगत् अव्यक्त रूप से भगवान् (श्रीकृष्ण) में व्याप्त है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि 'नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि' इस श्लोक में एनं शब्द आत्मा के लिए प्रयुक्त हुआ है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत - श्रीमद्भगवद्गीता (2/23)-गीताप्रेस, पेज 32

124. ''मखशतपरिपूतं गोत्रमुद्भासितं यद्'' यह कथन है-

(A) शर्विलक का **(B)** शकार का
(C) चारुदत्त का **(D)** विदूषक का

व्याख्या- महाकवि शूद्रक प्रणीत सामाजिक रूपक दश अङ्कात्मक प्रकरण 'मृच्छकटिकम्' के दशम अंक में मालिनी छन्द में चारुदत्त का कथन है-

मखशतपरिपूतं गोत्रमुद्भासितं मे,
सदसि निविडचैत्यब्रह्मघोषैः पुरस्तात्।
मम मरणदशायां वर्तमानस्य पापै-
स्तदसदृशमनुष्यैर्घुष्यते घोषणायाम्॥10/12॥

अर्थात् सैकड़ों यज्ञों से पवित्र मेरा कुल यज्ञसभा में तथा भरे हुए पूजा आदि के स्थानों में वेदपाठों से उज्ज्वल रहता था। (वहीं मेरा कुल) मरणदशा में मेरे विद्यमान होने पर इन पापी तथा अयोग्य जनों के द्वारा घोषणा के स्थान पर घोषित किया जा रहा है।

⇒ चतुर्थ अंक में शर्विलक, मदनिका से कहता है- **'साहसे श्रीः प्रतिवसति'।** अर्थात् साहस में लक्ष्मी निवास करती है।

⇒ प्रथम अंक में विदूषक चारुदत्त से कहता है- (मृच्छ. 1/55) **'अलं परकलत्रदर्शनम्'** अर्थात् परायी स्त्री के दर्शन की शंका से मत करो।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि 'मखशतपरिपूतं गोत्रमुद्भासितं यद्' यह कथन चारुदत्त का है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत - मृच्छकटिकम् (10/12) - श्रीनिवास शास्त्री, पेज 304

125. तर्कभाषा में कारणों की संख्या है-

(A) पाँच (B) नव
(C) तीन (D) सात

व्याख्या- कारण '**यस्य कार्यात् पूर्वभावो नियतोऽन्यथा-सिद्धश्च तत्कारणम्**'। अर्थात् जिसकी सत्ता कार्य से पूर्व निश्चित हो और जो अन्यथासिद्ध न हो, उसे कारण कहते हैं। जैसे तन्तु, वेमा आदि पट के कारण हैं।

तर्कभाषा में तीन कारण बताये गए हैं-

(i) समवायिकारण
(ii) असमवायिकारण
(iii) निमित्त कारण

षोडश पदार्थ- प्रमाण-प्रमेय- संशय-प्रयोजन-दृष्टान्त-सिद्धान्त-अवयव- तर्क- निर्णय-वाद-जल्प-वितण्डा-हेत्वाभास-छल- जाति- निग्रहस्थान।

द्वादश प्रमेय- आत्मा, शरीर, इन्द्रिय, अर्थ, बुद्धि, मन, प्रवृत्ति,दोष, प्रेत्यभाव, फल, दुःख, अपवर्ग।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि तर्कभाषा में कारण तीन होते हैं। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत - तर्कभाषा-आचार्य विश्वेश्वर, पेज 25

••••••

उत्तरमाला

1.A	2.C	3.A	4.C	5.D	6.B	7.D	8.B	9.D	10.B	11.A	12.D
13.B	14.B	15.D	16.D	17.C	18.A/C	19.B	20.A	21.A	22.A	23.D	24.C
25.D	26.F	27.B	28.A	29.D	30.D	31.D	32.C	33.D	34.D	35.C	36.B
37.D	38.C	39.A	40.B	41.A	42.B	43.B	44.B	45.C	46.D	47.C	48.C
49.F	50.B	51.B	52.C	53.B	54.B/D	55.B	56.C	57.B	58.D	59.C	60.A
61.D	62.B	63.C	64.D	65.B	66.C	67.B	68.A	69.A	70.C	71.C	72.C
73.C	74.A	75.D	76.C	77.B/C	78.D	79.A	80.B	81.C	82.B/F	83.C	84.D
85.B	86.C	87.D	88.B	89.C	90.D	91.A	92.A	93.A	94.C	95.C	96.B
97.A	98.C	99.B	100.C	101.B	102.D	103.A	104.B	105.C	106.D	107.D	108.A
109.D	110.C	111.B	112.B	113.A	114.A	115.B	116.A	117.A	118.B	119.B	120.B
121.A	122.B	123.A	124.C	125.C							

सर्वज्ञभूषण द्वारा सम्पादित एवं संस्कृतगंगा प्रकाशन से प्रकाशित पुस्तकों का विवरण

क्र.	पुस्तक का नाम	पेज	मूल्य
1.	**वस्तुनिष्ठ संस्कृत–साहित्यम्** (TGT, PGT, UGC, NET हेतु उपयोगी)	320	230
2.	**वस्तुनिष्ठ संस्कृत–व्याकरणम्** (TGT, PGT, UGC-NET में उपयोगी)	312	230
3.	**प्रतियोगितागंगा भाग-1** (TGT, PGT, UGC-NET में अत्यन्त उपयोगी)	448	350
4.	**प्रतियोगितागंगा भाग-2** (TGT, PGT, UGC-NET में अत्यन्त उपयोगी)	576	425
5.	**आख्यातास्मि** (UGC-NET संस्कृत कोड-25 हेतु उपयोगी)	272	180
6.	**प्राख्याता** (UGC–NET संस्कृत कोड-25 हेतु उपयोगी)	320	240
7.	**वैदिकवाङ्मय परीक्षा दृष्टि** UGC-NET एवं हायर Exam में उपयोगी)	232	145
8.	**भारतीयदर्शनसार** (PGT/UGC-NET में उपयोगी)	160	135
9.	**आचार्योऽहम्** (UGC-NET संस्कृत कोड- 73 हेतु उपयोगी)	164	125
10.	**असिस्टेण्ट प्रोफेसर संस्कृत** (Higher Education GDC/GIC हेतु उपयोगी)	124	105
11.	**SUPER-30 GK/GS** (असिस्टेण्ट प्रोफेसर एवं हायर एजुकेशन हेतु)	176	130
12.	**प्रवक्तास्मि** (PGT प्रवक्ता संस्कृत हेतु उपयोगी)	200	125
13.	**व्याख्यास्मि** (PGT प्रवक्ता संस्कृत हेतु उपयोगी)	316	240
14.	**TGT प्रश्न!अस्मि** (TGT/ L. T. संस्कृत हेतु उपयोगी)	232	145
15.	**प्रश्नमीमांसा संस्कृत** (TGT/LT हेतु उपयोगी)	296	140
16.	**TGT व्याख्यात्मिका संस्कृत** (TGT/ L. T. में उपयोगी)	276	190
17.	**मिशन L. T. संस्कृत** (L. T. एवं TGT हेतु उपयोगी)	400	325
18.	**L. T. प्रश्नोत्तरी संस्कृत** (L. T. एवं TGT हेतु उपयोगी)	328	250
19.	**गुरुमन्त्र** (UP-TET/Super TET संस्कृत हेतु उपयोगी)	120	120
20.	**विजयीभव** (UP-TET संस्कृत हेतु उपयोगी)	196	145
21.	**विजयपथ प्रैक्टिस सेट** (UP-TET संस्कृत हेतु उपयोगी)	196	130
22.	**C-TET, शिक्षकोऽहम्** (C-TET हेतु उपयोगी)	216	140
23.	**मिशन हरियाणा** (H-TET लेवल-2 TGT एवं लेवल-3 PGT हेतु उपयोगी)	300	240
24.	**जय हो** (MP वर्ग- 1,2 हेतु उपयोगी)	324	260
25.	**लक्ष्य झारखण्ड** (PGT संस्कृत झारखण्ड के लिए उपयोगी)	284	250
26.	**TGT झारखण्ड संस्कृत**	252	250
27.	**सम्भाषण शब्दकोश** (संस्कृत सम्भाषण हेतु उपयोगी)	208	110

संस्कृतगङ्गा
प्रकाशनम्
शुद्धं सत्यं सरलम्

कोड : SG- 020

UP-TET

प्राथमिक शिक्षक भर्ती परीक्षा, 2018

संस्कृत

विजयी भव

The Powerfull Notes

सर्वज्ञभूषण

शिक्षक पात्रता परीक्षा 2018

UP TET

प्राथमिक शिक्षक भर्ती परीक्षा

संस्कृत

विजयी भव

लेखक

सर्वज्ञभूषण

प्रकाशक

संस्कृतगङ्गा

59, मोरी, दारागंज, प्रयागराज

मो. 9839852033, 7800138404

- **प्रकाशक**
  संस्कृतगङ्गा (पञ्जीकृत)
  59, मोरी, दारागञ्ज, इलाहाबाद
  (कोतवाली दारागञ्ज के आगे, गङ्गाकिनारे संकटमोचन छोटे हनुमान् मन्दिर के पास), Mb. : 9839852033
  email-Sanskritganga@gmail.com

- **प्रकाशन-सहयोग**
  युनिवर्सल बुक
  1519 अल्लापुर, इलाहाबाद
  ☎ : 0532-2503638

- मुख्यवितरक
  राजू पुस्तक केन्द्र
  अल्लापुर, इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश)
  मो० 9453460552
- पुस्तकें डाक द्वारा भी आर्डर कर सकते हैं–
  Mob. : 7800138404
  9839852033

- **अक्षर संयोजक- मिथिलेश**

- **पृष्ठ विन्यास- कृष्णा कम्प्यूटर संस्थान,**
  मोरी, दारागंज

- **प्रथम संस्करण –** नवम्बर - 2018
- **मूल्य – ₹ 99/-** (निन्यान्बे रुपये मात्र)

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

1. राजू पुस्तक भण्डार, अल्लापुर, इलाहाबाद
   सम्पर्क सूत्र : 0532-2503638, 9453460552
2. संस्कृतगङ्गा, दारागञ्ज, इलाहाबाद - 7800138404
3. गौरव बुक एजेन्सी, कैण्ट, वाराणसी
4. विजय मैग्जीन सेन्टर, बलरामपुर
5. जायसवाल बुक सेन्टर, हरदोई – 9415414569
6. शिवशंकर बुक स्टाल, जौनपुर
7. न्यू पूर्वांचल बुक स्टाल, जौनपुर – 9235743254
8. कृष्णा बुक डिपो बस्ती – 8182854095
9. मौर्या बुक डिपो, पाण्डेयपुर, वाराणसी– 9454735892
10. मनीष बुक स्टोर, गोरखपुर – 9415848788
11. द्विवेदी ब्रदर्स, गोरखपुर – 0551-344862
12. विद्यार्थी पुस्तक मन्दिर, गोरखपुर – 9838172713
13. रंजन मिश्रा, गोरखपुर (बस स्टैण्ड)
14. आशीर्वाद बुक डिपो, अमीनाबाद, लखनऊ
15. मालवीय पुस्तक केन्द्र, अमीनाबाद, लखनऊ – 9918681824
16. मॉडर्न मैग्जीन बुक शॉप, कपूरशाला, लखनऊ
17. साहू बुक स्टॉल, अलीगंज, लखनऊ – 9838640164
18. भूमि मार्केटिंग, लखनऊ – 9450520503
19. दुर्गा स्टोर, राजा की मण्डी, आगरा – 9927092063
20. महामाया पुस्तक केन्द्र, बिलासपुर – 09907418171
21. डायमण्ड बुक स्टाल, ज्वालापुर, हरिद्वार
22. कम्पटीशन बुक हाउस, सब्जी मण्डी रोड, बरेली – 9897529906
23. अजय गुप्ता बुक स्टोर, लखीमपुर – 809062054
24. शिवशंकर बुक स्टाल, रीवा – 9616355944
25. कृष्णा बुक एजेन्सी, वाराणसी – 9415820103
26. गर्ग बुक डिपो, जयपुर
27. अग्रवाल बुक सेन्टर, मुखर्जी नगर, नयी दिल्ली
28. चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी (सभी बुक स्टालों पर)
    मो. – 9839243286, 9415508311, 0532-2420414
29. विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक वाराणसी – 0542-2413741
30. मोतीलाल बनारसी दास, वाराणसी
31. केशवी बुक डिस्ट्रीब्यूटर्स, नयी दिल्ली – 93
32. महावीर बुक स्टाल, खजूरी बाजार, इन्दौर
33. हिन्दी बुक डिपो, मुरादाबाद – 94566888596
34. माँ बुक स्टेशनर्स, शहडोल छत्तीसगढ़ – 9406754644
35. ज्ञानगंगा, राँची, झारखण्ड – 9234249100

प्राक्कथन

प्रिय संस्कृतबन्धो!

नमः संस्कृताय।

- UP-TET (संस्कृत) एवं प्राथमिक शिक्षक भर्ती परीक्षा-2018 को ध्यान में रखकर यह ''**विजयी भव**'' नामक पुस्तक सभी संस्कृत प्रेमियों को समर्पित है।

- UP-TET संस्कृत के पाठ्यक्रम को ध्यान में रखकर इस पुस्तक को तैयार किया गया है, कोशिश की गयी है कि माध्यमिक शिक्षा परिषद् की कक्षा 6 से 12 तक की पुस्तकों में जो सूत्र उदाहरण आदि दिये गये हैं उन्हीं को आधार बनाकर इसे लिखा जाय; जो आपकी परीक्षा के लिए अत्यन्त उपयोगी हो।

- संस्कृतगङ्गा के सम्पादक मण्डल ने अथक परिश्रम करके इस पाठ्यसामग्री को तैयार किया है इसके लिए सभी सदस्यों को हार्दिक धन्यवाद। विशेषकर **अम्बिकेश, सत्यप्रकाश, सुमन और मिथिलेश** को।

- साथ ही संस्कृतगङ्गा कार्यालयीय कार्यों के हमारे सभी सहयोगियों को भी साधुवाद जो मुद्रण सम्बन्धी सभी कार्यों को यथासमय पूरा करते हैं। विशेष रूप से गोपेश, अविनाश कुमार (शिवम्), जितेन्द्र (मामा बवाली), कृष्णकुमार, रामप्रसाद, सन्तोष कुमार यादव (साहब जी), जितेन्द्र मिश्र, योगेश (मुनि जी), नितिन जी (सपत्नीक), राकेश पाण्डेय, दीक्षा, शिवानी, जूही, प्रीती आदि।

- अन्त में अपने सुहृदवर ब्रह्मानन्द मिश्र को सादर नमन जिन्होंने **कृष्णा कम्प्यूटर संस्थान** को संस्कृतगङ्गा की नींव के रूप में विकसित किया है और इस सम्पूर्ण पुस्तक की अन्तः चेतना एवं बाह्य शरीर के वही ब्रह्मा (निर्माणकर्ता) हैं।

- मित्रों यह प्रयास किया गया है कि पुस्तक में मुद्रणदोष न हो, इसलिए पाँच बार इसका प्रूफ पढ़ा गया है किन्तु भूलवशात् कुत्रचित् दोष दिखायी पड़े तो हमें नीचे लिखे मोबाइल नम्बरों पर अवश्य सूचित करें ताकि आगामी संस्करण में उसे दूर किया जा सके।

सभी परीक्षार्थियों को परीक्षा की शुभकामनायें।

''विजयी भव''

दिनाङ्क - 01 नवम्बर, 2018

सम्पर्क सूत्र - 8004545096
9839852033

भवदीय
सर्वज्ञभूषण
संस्कृतगङ्गा,
दारागञ्ज, प्रयागराज

UP-TET संस्कृत पाठ्यक्रम (प्राथमिक स्तर 1-5)

1. वर्ण विचार- स्वर, व्यञ्जन
2. माहेश्वर सूत्र
3. प्रत्याहार
4. वर्णों का उच्चारणस्थान
5. वर्णों का आभ्यन्तर एवं बाह्यप्रयत्न
6. व्याकरणशास्त्र की प्रसिद्ध संज्ञायें एवं परिभाषायें
   गुण, वृद्धि, ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत, अनुनासिक, लिङ्ग, वचन, पुरुष, विभक्ति, कारक, गण, लकार आदि
7. सन्धि (स्वर, व्यञ्जन एवं विसर्ग)
8. समास (पाँच प्रकार)
9. कारक (प्रमुख सूत्र)
10. प्रत्यय- क्त्वा, ल्यप्, तव्यत्, अनीयर्, तुमुन्, क्त, क्तवतु, शतृ, शानच्, ल्युट्, आदि।
11. उपसर्ग एवं अव्यय
12. पर्यायवाची शब्द
13. विलोमशब्द
14. वाच्यपरिवर्तन (कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य, भाववाच्य)
15. शरीर के अंगों के नाम, घर, परिवार, परिवेश, पशु, पक्षी, एवं घरेलू उपयोग की वस्तुओं के संस्कृत नाम
16. **शब्दरूप-**
   (i) अकारान्त पुंलिङ्ग - राम, बालक, छात्र आदि
   (ii) इकारान्त पुंलिङ्ग - हरि, मुनि, कवि आदि
   (iii) उकारान्त पुंलिङ्ग - गुरु, भानु, साधु आदि
   (iv) ऋकारान्त पुंलिङ्ग - पितृ, मातृ, जामातृ आदि
   (v) आकारान्त स्त्रीलिङ्ग - रमा, बालिका, लता आदि
   (vi) ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग - नदी, जननी, नगरी आदि
   (vii) ऋकारान्त स्त्रीलिङ्ग - मातृ, स्वसृ, दुहितृ आदि
   (viii) अकारान्त नपुंसकलिङ्ग - फल, जल, ज्ञान आदि
17. **सर्वनाम रूप-** तद्, एतद्, यत्, किम्, सर्व, अस्मद्, युष्मद्, भवत् आदि।
18. **धातुरूप (क्रियायें) -** भू, गम्, पठ्, वस्, अस्, शक्, प्रच्छ्, पा, दृश्, स्था, नी, नश्, आप्, इष्, लिख्, वद्, लभ्, कथ्, दा, ज्ञा, कृ, कृष्, श्रि, हन्।
19. संस्कृतसंख्यायें (1 से 100 तक)
20. कवियों एवं लेखकों की रचनायें
21. संस्कृत सूक्तियाँ
22. अपठित अनुच्छेद

UP-TET (संस्कृत)

संस्कृत- सम् + कृ + क्त (सुट् का आगम)
'संस्कृत' शब्द का अर्थ है- शुद्ध, परिष्कृत, परिमार्जित, परिनिष्ठित। अतः संस्कृत भाषा का अर्थ है- शुद्ध एवं परिमार्जित भाषा।

व्याकरण- वि + आङ् + √कृ + ल्युट्
'व्याक्रियन्ते व्युत्पाद्यन्ते अनेन इति व्याकरणम्' जिसके माध्यम से शब्दों की व्युत्पत्ति या निष्पत्ति बतायी जाय, वह व्याकरण है। व्याकरण 'शब्दशास्त्र' या 'पदशास्त्र' है।

त्रिमुनि- संस्कृत व्याकरण के त्रिमुनि हैं-
1. पाणिनि
2. कात्यायन/वररुचि
3. पतञ्जलि

अष्टाध्यायी- व्याकरणशास्त्र का महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है- अष्टाध्यायी जो महर्षि पाणिनि की रचना है।

- अष्टाध्यायी में 8 अध्याय, प्रत्येक अध्याय में 4-4 पाद हैं, तो कुल मिलाकर 8×4 = 32 पाद हैं, तथा 3978 अर्थात् लगभग 4000 सूत्र हैं। इसीलिए पाणिनि को **'सूत्रकार'** कहा गया है।
- अष्टाध्यायी का प्रथम सूत्र- 'वृद्धिरादैच् (1.1.1) तथा अन्तिम सूत्र 'अ अ' (8.4.67) है।
- महर्षि कात्यायन या वररुचि ने अष्टाध्यायी के सूत्रों पर वार्तिक लिखा, इसीलिए इन्हें **'वार्तिककार'** कहते हैं।
- महर्षि पतञ्जलि ने अष्टाध्यायी के 4000 सूत्रों पर एक विस्तृत भाष्य लिखा; जिसे **'महाभाष्य'** कहते हैं। इसीलिए व्याकरण शास्त्र के **'भाष्यकार'** के रूप में पतञ्जलि प्रसिद्ध हैं।
  महाभाष्य में कुल 84 'आह्निक' हैं।
- भट्टोजिदीक्षित ने सूत्रों पर वृत्ति लिखी इसीलिए इन्हें **'वृत्तिकार'** के नाम से जानते हैं। 'सिद्धान्तकौमुदी' इनकी प्रसिद्ध रचना है।

वर्ण विचार

- **वर्ण अथवा अक्षर-** हम मुख से जिन ध्वनियों का उच्चारण करते हैं, उन्हें 'वर्ण' अथवा 'अक्षर' कहते हैं। वैसे तो 'न क्षरति इति अक्षरः' ऐसा 'अक्षर' शब्द का व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ है। अर्थात् जिनका क्षरण या विनाश न हो वे अक्षर हैं, जैसे- अ, इ, उ, क्, ख्, ग् आदि, परन्तु सामान्यतया 'वर्ण' या 'अक्षर' समानार्थी समझे जाते हैं। वर्ण दो प्रकार के होते हैं-
  (i) स्वर और (ii) व्यञ्जन

स्वर (अच्)

स्वर - 'स्वयं राजन्ते इति स्वराः' -
स्वर वे ध्वनियाँ हैं, जिनके उच्चारण के लिए किसी अन्य वर्ण की आवश्यकता नहीं होती। जैसे- 'अ' के उच्चारण में किसी अन्य स्वर या व्यञ्जन वर्णों की सहायता नहीं लेनी पड़ती इसीलिए 'अ' स्वर है। इसप्रकार अ, इ, उ, ऋ, ऌ, ए, ओ, ऐ, औ- ये सभी स्वर हैं।

1. स्वरों की संख्या- संस्कृत व्याकरणशास्त्र में स्वरों की संख्या 09 मानी गयी है।
जैसे- अ, इ, उ, ऋ, ऌ, ए, ओ, ऐ, औ। ये सभी स्वर 'अच्' प्रत्याहार के अन्तर्गत परिगणित हैं इसीलिए स्वरों को 'अच्' भी कहा जाता है।

2. मूल स्वर- मूल स्वर 05 हैं। अ, इ, उ, ऋ, ऌ यें पाँच मूलस्वर कहे जाते हैं।

3. संयुक्त स्वर- ए, ओ, ऐ, औ - ये चार संयुक्त या मिश्रित स्वर कहे जाते हैं।
जैसे- अ + इ = ए
अ + उ = ओ
अ + ए = ऐ
अ + ओ = औ

नोट- ऊकालोऽज्झस्वदीर्घप्लुतः (1.2.27) सूत्र से एकमात्रिक , द्विमात्रिक तथा त्रिमात्रिक स्वरों की क्रमशः ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत संज्ञा होती है।

स्वरों के भेद- स्वरों के मुख्यतया तीन भेद हैं-

1. ह्रस्व स्वर- जिन स्वरों के उच्चारण में एक मात्रा का समय लगे, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं-
जैसे- अ, इ, उ, ऋ, ऌ ये सभी ह्रस्व स्वर हैं।

2. दीर्घ स्वर- जिन स्वरों के उच्चारण में दो मात्रा का समय लगे, वे दीर्घस्वर कहे जाते हैं-
जैसे- आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ओ, ऐ, औ।

3. प्लुत स्वर- जिन स्वरों के उच्चारण में दो मात्रा से अधिक अर्थात् तीन मात्रा का समय लगे इन्हें प्लुतस्वर कहते हैं। प्लुतस्वरों

की पहचान के लिए '३' यह चिह्न लगाया जाता है।
जैसे- अ-३, इ-३, उ-३ आदि।
'ओ३म्'- यह स्वर त्रैमात्रिक है, जिसका प्रयोग प्रायः वेदों में होता है। यहाँ 'ओ' प्लुतस्वर है।

वर्णों का उच्चारण काल

एकमात्रो भवेत् ह्रस्वो द्विमात्रो दीर्घ उच्यते।
त्रिमात्रस्तु प्लुतो ज्ञेयो व्यञ्जनं चार्धमात्रिकम्॥

अर्थात्- ह्रस्व स्वर की एकमात्रा, दीर्घस्वर की दो मात्रा एवं प्लुत स्वरों को त्रिमात्रिक समझना चाहिए। व्यञ्जन वर्णों की आधी मात्रा जाननी चाहिए।

एकमात्रिक स्वर- अ, इ, उ, ऋ, ऌ (ह्रस्व स्वर)।
द्विमात्रिक स्वर- आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ओ, ऐ, औ (दीर्घ स्वर)
त्रिमात्रिक स्वर- अ-३, इ-३, उ-३, ऋ-३ आदि। (प्लुत स्वर)
अर्द्धमात्रिक वर्ण- क् ख् ग् घ् ङ् च् छ् ज् (सभी व्यञ्जनवर्ण) आदि।

मात्राकाल- पलक झपकने के समय को एकमात्राकाल कहते हैं।

व्यञ्जन (हल् वर्ण)

व्यञ्जन- 'अन्वग् भवति व्यञ्जनम्'
व्यञ्जन वे वर्ण हैं, जो स्वतन्त्र रूप से न बोले जा सकें; अर्थात् जिनका उच्चारण स्वर की सहायता के बिना नहीं हो सकता।

जैसे- क् + अ = क
ख् + अ = ख
ग् + अ = ग आदि।

- व्याकरण में जो शुद्ध व्यञ्जन वर्ण होंगे उन्हें हलन्त के साथ ही लिखा जाता है। जैसे- क् च् ट् त् प् आदि। इसीलिए इन्हें अर्धमात्रिक वर्ण कहा गया है। **'व्यञ्जनं चार्धमात्रिकम्'।**
- सभी व्यञ्जन वर्ण 'हल्' प्रत्याहार में समाहित होते हैं अतः व्यञ्जनों को **'हल्'** भी कहते हैं। कुल व्यञ्जन वर्ण 33 माने गये हैं। जो कि माहेश्वर सूत्रों के 'हयवरट्' से लेकर 'हल्' तक 10 सूत्रों में कहे गये हैं।

व्यञ्जन के प्रकार- मुख्यरूप से व्यञ्जन के तीन प्रकार होते, हैं; जो माहेश्वरसूत्रों में गिने गये हैं।
1. स्पर्श व्यञ्जन 2. अन्तःस्थ व्यञ्जन 3. ऊष्म व्यञ्जन।
चतुर्थ प्रकार है 4. संयुक्त व्यञ्जन (जो माहेश्वर सूत्रों में परिगणित नहीं है)

(i) स्पर्श व्यञ्जन- जिन वर्णों के उच्चारण में मुख के विभिन्न अवयवों (भागों) का स्पर्श होता है; उन्हें स्पर्श व्यञ्जन कहते हैं। इसकी संख्या 25 होती है- क से लेकर म तक के वर्ण स्पर्श व्यञ्जन हैं। ये वर्ण कण्ठ, तालु, मूर्धा, दन्त आदि स्थानों को स्पर्श करने के बाद उच्चरित होते हैं। इसीलिए **'स्पर्श'** हैं।

'कादयो मावसानाः स्पर्शाः'
क वर्ग- क् ख् ग् घ् ङ्
च वर्ग- च् छ् ज् झ् ञ्
ट वर्ग- ट् ठ् ड् ढ् ण्
त वर्ग- त् थ् द् ध् न्
प वर्ग- प् फ् ब् भ् म्

वर्ग- इनमें से 5-5 वर्णों के जो समूह बने हैं, इन समूहों का नाम है- वर्ग। ये वर्ग उच्चारणस्थान के आधार पर बने हैं।

जैसे- (i) क् ख् ग् घ् ङ् ये पाँच व्यञ्जन कण्ठ से बोले जाते हैं, अतः इन सबका एक वर्ग बनाया गया जिसका नाम रखा गया **'कवर्ग'**। कण्ठ से उच्चरित होने के कारण इन्हें **'कण्ठ्यवर्ण'** भी कहते हैं।
इसीप्रकार (ii) च् छ् ज् झ् ञ् ये पाँच व्यञ्जन तालु से बोले जाने के कारण **'तालव्यवर्ण'** कहे जाते हैं, इस वर्ग का नाम है- **'चवर्ग'**।
(iii) ट् ठ् ड् ढ् ण् - मूर्धा से उच्चारण होने के कारण **'मूर्धन्यवर्ण'** हैं। इस वर्ग का नाम है- **'टवर्ग'**।
(iv) त् थ् द् ध् न् - दन्त से उच्चारण होने के कारण **'दन्त्यवर्ण'** हैं। इस वर्ग को **'तवर्ग'** कहते हैं।
(v) प् फ् ब् भ् म् - ये पाँच व्यञ्जन ओष्ठ से बोले जाते हैं, अतः ये **'ओष्ठ्यवर्ण'** कहे जाते हैं, इस वर्ग का नाम **'पवर्ग'** है।
इसप्रकार कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग, पवर्ग कुल **पाँच वर्ग** होते हैं, तथा प्रत्येक वर्ग के अन्तर्गत 5-5 वर्ण आते हैं अतः 5×5 = **25 वर्ण** वर्गाक्षिर या वर्गीय व्यञ्जन, या स्पर्श व्यञ्जन कहे जाते हैं।

उदित् - 'कु चु टु तु पु एते उदितः'। इन्ही पाँच वर्गों का लघुनाम या दूसरा नाम कु चु टु तु पु भी है। इनमें 'उ' की इत् संज्ञा होती है, अतः ये उदित् कहलाते हैं।
संस्कृत व्याकरण में जब भी 'कु' कहा जाएगा तो उस का अर्थ होगा- कवर्ग अर्थात् क् ख् ग् घ् ङ्।
'चु' का मतलब चवर्ग अर्थात् - च् छ् ज् झ् ञ्।
'टु' का अर्थ होगा टवर्ग अर्थात् ट् ठ् ड् ढ् ण्
'तु' का अर्थ है- तवर्ग अर्थात् - त् थ् द् ध् न्।
'पु' का अर्थ है- पवर्ग अर्थात् - प् फ् ब् भ् म्।

जैसे-
(i) 'कुहोश्चुः' सूत्र में 'कु' का अर्थ 'कवर्ग' है और 'चु' का अर्थ चवर्ग है।
(ii) 'चुटू' सूत्र में 'चु' का अर्थ चवर्ग है और 'टु' का अर्थ टवर्ग है।

व्यञ्जन (33 वर्ण)

- **स्पर्श**
  - कवर्ग- क् ख् ग् घ् ङ्
  - चवर्ग- च् छ् ज् झ् ञ्
  - टवर्ग- ट् ठ् ड् ढ् ण्
  - तवर्ग- त् थ् द् ध् न्
  - पवर्ग- प् फ् ब् भ् म्
  - **कादयो मावसानाः स्पर्शाः**
- **अन्तःस्थ (यण्)**
  - य् व् र् ल्
  - **यणोऽन्तस्थाः**
- **ऊष्म (शल्)**
  - श् ष् स् ह्
  - **शल ऊष्माणः**
- **संयुक्त व्यञ्जन**
  - क्ष त्र ज्ञ आदि

अन्तःस्थ व्यञ्जन- 'यणोऽन्तःस्थाः' यण् प्रत्याहार के अन्तर्गत आने वाले य् व् र् ल् ये चार वर्ण अन्तःस्थ व्यञ्जन कहे जाते हैं।

ऊष्म व्यञ्जन- 'शल ऊष्माणः' शल् प्रत्याहार के अन्तर्गत परिगणित श् ष् स् ह् ये चार वर्ण ऊष्म व्यञ्जन कहे जाते हैं।

मिश्रित या संयुक्त व्यञ्जन- दो व्यञ्जन वर्णों के मेल से जो वर्ण बनते हैं उन्हें संयुक्त या मिश्रित व्यञ्जन कहते हैं।

जैसे- क् + ष् + अ = क्ष

त् + र् + अ = त्र

ज् + ञ् + अ = ज्ञ

अयोगवाह- वर्णमातृका (वर्णमाला) में पढे हुए वर्णों के अतिरिक्त चार वर्ण और भी हैं-

(i) अनुस्वार (ii) विसर्ग (iii) जिह्वामूलीय (iv) उपध्मानीय

- वर्णमाला तथा माहेश्वरसूत्रों में न पढे जाने के कारण ये अयोगवाह कहलाते हैं।

(i) अनुस्वार तथा विसर्ग- ''अं अः इत्यचः परावनुस्वारविसर्गौ''

अं और अः ये अच् के बाद आने पर क्रमशः अनुस्वार और विसर्ग कहलाते हैं।

- बालकं रामं श्यामं आदि में मकार के बाद अकार के ऊपर जो बिन्दु (ं) है उसका नाम अनुस्वार है। इसका उच्चारणस्थान 'नासिका' है। **''नासिकाऽनुस्वारस्य''**
- रामः श्यामः ग्रामः आदि में मकारोत्तर अकार के बाद जो दो बिन्दु (ः) है, उसी को विसर्ग (ः) कहते हैं।
- इसका उच्चारणस्थान 'कण्ठ' है- **''अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः।''**

जिह्वामूलीय- ''ᳵक, ᳵख इति कखाभ्यां प्रागर्धविसर्गसदृशो जिह्वामूलीयः''

ᳵक, ᳵख के पहले जो आधे विसर्ग के समान लिखा जाता है, उसे जिह्वामूलीय वर्ण कहते हैं।

यथा- बालक ᳵक्रीडति। बालक ᳵखेलति।

- इसका उच्चारण कण्ठ के भी नीचे 'जिह्वामूल' से होता है।- **''जिह्वामूलीयस्य जिह्वामूलम्''**
- ''कुप्वोः ᳵक ᳵपौ च सूत्र से विसर्ग ही विकल्प से जिह्वामूलीय बन जाता है, नहीं तो विसर्ग भी रह सकता है।

उपध्मानीय- ''ᳵप ᳵफ इति पफाभ्यां प्रागर्धविसर्गसदृश उपध्मानीयः''

ᳵप ᳵफ के पहिले जो आधे विसर्ग के समान लिखा जाता है, उसे 'उपध्मानीय वर्ण' कहते हैं। जैसे- वृक्ष ᳵपतति। वृक्ष ᳵफलति। इसका उच्चारणस्थान ओष्ठ है। **''उपूपध्मानीयानां ओष्ठौ''**

''कुप्वोः ᳵक ᳵपौ च'' सूत्र से विसर्ग ही विकल्प से उपध्मानीय बन जाता है।

कार और इफ प्रत्यय- ''वर्णात्कारः'' संस्कृत व्याकरण में वर्णों में 'कार' प्रत्यय लगाकर बोलना चाहिए।

यथा- अ + कार = अकार

क + कार = ककार, ख से खकार, ग से गकार आदि।

'र' में 'इफ' प्रत्यय (र + इफ) लगाकर 'रेफ' कहना चाहिए।

आनुपूर्वी या पदों का अन्तक्रम- किसी भी शब्द में वर्ण जिस क्रम से व्यवस्थित रहते हैं; उस क्रम का नाम आनुपूर्वी होता है। जैसे 'बालक' शब्द में छह वर्ण हैं- ब् आ ल् अ क् अ।

'राम' शब्द में चार वर्ण हैं- र् आ म् अ।

- 'बालक' और 'राम' के अन्त में अकार है अतः ये अकारान्त शब्द हैं।
- इसीप्रकार हरि, कवि, रवि, ऋषि, कपि आदि इकारान्त हैं।
- भानु, गुरु, शिशु आदि उकारान्त शब्द हैं।
- पितृ, भ्रातृ, मातृ, जामातृ आदि ऋकारान्त शब्द हैं।
- राजन्, आत्मन् आदि नकारान्त हैं, मनस्, पयस्, यशस् आदि सकारान्त हैं, सरित्, जगत् आदि तकारान्त हैं।

वर्ण
- स्वर
  - ह्रस्व: अ, इ, उ, ऋ, ऌ
  - दीर्घ: आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ओ, ऐ, औ
  - प्लुत: अ-३, उ-३, ऋ-३ आदि।
- व्यञ्जन
  - स्पर्श: क से म तक 25 वर्ण
  - अन्तःस्थ: यण् य् व् र् ल् 4 वर्ण
  - ऊष्म: शल् श् ष् स् ह् 4 वर्ण
  - मिश्रित/संयुक्त: क्ष त्र ज्ञ आदि

माहेश्वर सूत्र

महर्षि पाणिनि ने संस्कृत का व्याकरण बनाने की इच्छा से घोर तप करके भगवान् महेश्वर (शिव) को प्रसन्न किया। प्रसन्न होकर शिव ने नृत्य के साथ जो डमरू वादन किया उसी से महर्षि पाणिनि को ये 14 सूत्र सुनायी पड़े। भगवान् महेश्वर के डमरू से उत्पन्न होने के कारण इन्हें ''**माहेश्वर सूत्र**'' कहा जाता है।

नृत्तावसाने नटराजराजो ननाद ढक्कां नवपञ्चवारम्।
उद्धर्तुकामः सनकादिसिद्धान् एतद्विमर्शे शिवसूत्रजालम्॥

नटराजराज भगवान् शिव ने नृत्य के अवसान में सनकादि सिद्धों के उद्धार की कामना से चौदह बार डमरू बजाया जिसमें 14 शिवसूत्रों का ताना बाना निहित था।

- अइउण् ऋऌक् आदि ये चौदह सूत्र हैं इसलिए इन्हें ''**चतुर्दशसूत्र**'' कहते हैं।
- इन्हीं सूत्रों से प्रत्याहार बनाये जाते हैं, अतः इन्हें ''**प्रत्याहारसूत्र**'' भी कहते हैं।
- भगवान् शिव के डमरू से निकलकर पाणिनि को प्राप्त हुए हैं, अतः इन्हें ''**शिवसूत्र**'' या ''**माहेश्वरसूत्र**'' भी कहते हैं।
- इन सूत्रों में संस्कृत वर्णमाला है अतः इन्हें ''**वर्णसमाम्नायसूत्र**'' भी कहते हैं।

चतुर्दश माहेश्वर सूत्र–

1. अइउण् 2. ऋऌक् 3. एओङ् 4. ऐऔच्
5. हयवरट् 6. लण् 7. ञमङणनम्
8. झभञ् 9. घढधष् 10. जबगडदश्
11. खफछठथचटतव् 12. कपय्
13. शषसर् 14. हल्

माहेश्वरसूत्रों के विषय में ज्ञातव्य तथ्य–

- माहेश्वरसूत्रों में सबसे पहिले स्वर हैं; उसके बाद अन्तःस्थ वर्ण य् व् र् ल् हैं। उसके बाद वर्गों के पञ्चम वर्ण, फिर चतुर्थ वर्ण, तदनन्तर तृतीयवर्ण फिर द्वितीय वर्ण तब प्रथमवर्ण, सबसे अन्त में श् ष् स् ह् ये चार ऊष्म वर्ण गिने गये हैं।
- इन चतुर्दशसूत्रों के अन्त में जो ण् क् ङ् च् आदि व्यञ्जन वर्ण हलन्त हैं उनका नाम 'इत्' है। ''**एषाम् अन्त्याः इतः**''
- इन इत्संज्ञक वर्णों का लोप हो जाता है। कुल 14 इत्संज्ञक वर्ण होते हैं। 'लण्' सूत्र का अकार भी इत्संज्ञक होने से इत्संज्ञक वर्ण 15 भी कहे जा सकते हैं। ''**लण्मध्ये तु इत्संज्ञकः**'' इत् को 'अनुबन्ध' भी कहा जाता है। अर्थात् 'अनुबन्ध' और 'इत्' पर्यायवाची हैं।
- प्रत्याहार बनाने में इत्संज्ञकवर्णों का प्रयोग किया जाता है किन्तु प्रत्याहार के अन्तर्गत वर्णों की गिनती में इन इत्संज्ञक वर्णों को नही गिना जाता है।
  जैसे- 'अच्' प्रत्याहार ''अइउण् ऋऌक् एओङ् ऐऔच्'' इन चार सूत्रों से बना है। यहाँ अइउण् के 'अ' से लेकर ऐऔच् के 'च्' के बीच आने वाले सभी वर्ण ''अच्'' प्रत्याहार में गिने जायेंगे किन्तु ''ण् क् ङ् और च्'' ये चार इत्संज्ञक वर्ण 'अच्' प्रत्याहार में नही गिने जायेंगे।
  अतः 'अच्' के अन्तर्गत- ''अ, इ, उ, ऋ, ऌ, ए, ओ, ऐ, औ'' ये 9 वर्ण आते हैं। जिसमें इत्संज्ञक वर्ण नहीं गिने गये हैं।
- माहेश्वरसूत्रों के पाँचवे सूत्र 'हयवरट्' में 'ह' वर्ण गिना गया है तथा चौदहवें सूत्र 'हल्' में भी 'ह' वर्ण गिना गया है। अतः हकार की दो बार गणना की गयी है।

- माहेश्वरसूत्रों में हकार का दो बार ग्रहण क्यों? 'अट्' और 'शल्' प्रत्याहार में 'ह' वर्ण को शामिल करने के लिए तथा 'अर्हेण' और 'अधुक्षत' आदि प्रयोगों की सिद्धि के लिए।
- माहेश्वर सूत्रों में 'ण्' इत्संज्ञक वर्ण दो बार आया है- एक बार अइउण् में दूसरी बार लण् में।

इत्संज्ञा करने वाला सूत्र-

- **हलन्त्यम् -** (1.3.3) उपदेशावस्था में जो अन्तिम हल् होता है, उसकी इत्संज्ञा होती है।

इत्संज्ञक वर्णों का लोप करने वाला सूत्र-

तस्य लोपः - जिस वर्ण की इत्संज्ञा होती है, उसका लोप हो जाता है।

इसीलिए 'अइउण्' में जो 'ण्' है ऋऌक् में जो 'क्' है इनकी ''हलन्त्यम्'' सूत्र से इत्संज्ञा होकर ''तस्य लोपः'' सूत्र से लोप हो जाता है। अतएव प्रत्याहार वर्णों की गिनती में इन इत्संज्ञक वर्णों की गिनती नहीं की जाती।

उपदेश क्या है- ''उपदेश आद्योच्चारणम्''

पाणिनि कात्यायन एवं पतञ्जलि ने जिसका प्रथम उच्चारण या प्रथम पाठ किया, उसे व्याकरणशास्त्र में 'उपदेश' कहा जाता है। यहाँ 'अइउण् ऋऌक् आदि चौदह सूत्रों को महर्षि पाणिनि ने महेश्वर के डमरू की ध्वनि को प्रथम बार उच्चारण किया अतः ये 14 सूत्र भी 'उपदेश' कहलाये।

- भू आदि धातु, अइउण् आदि सूत्र, उणादि सूत्र, वार्तिक, लिङ्गानुशासन, आगम, प्रत्यय, और आदेश, ये उपदेश माने जाते हैं। कहा भी गया है-

  धातु-सूत्र-गणोणादि-वाक्यलिङ्गानुशासनम्।
  आगम-प्रत्ययादेशा उपदेशाः प्रकीर्तिताः॥

प्रत्याहार संज्ञा

- **प्रति + आङ् + हृ + घञ् = प्रत्याहारः**
- 'प्रत्याहार' शब्द का अर्थ है- संक्षेपीकरण।
- ''प्रत्याह्रियन्ते संक्षिप्यन्ते वर्णाः यत्र स प्रत्याहारः''
- जिनकी सहायता से कम से कम शब्दों में अधिकतम बात कही जा सके, उन्हें प्रत्याहार कहते हैं।

प्रत्याहार संज्ञा विधायक सूत्र- ''आदिरन्त्येन सहेता'' (1.1.71) अन्त्य इत् वर्ण के साथ जो आदि वर्ण वह मध्यगामी सभी वर्गों का बोधक होता हुआ स्वयं का भी बोध कराता है। जैसे- अण् प्रत्याहार 'अइउण्' सूत्र के 'अ' से लेकर इत्संज्ञक वर्ण 'ण्' से मिलकर बना है जिसमें अ इ उ ये तीन वर्ण आते हैं।

- इसीप्रकार 'इक्' प्रत्याहार अइउण्, ऋऌक् इन दो सूत्रों से बना है। यहाँ इ से लेकर क् के बीच के सभी वर्ण इ उ ऋ ऌ इक् प्रत्याहार में गिने जाते हैं।

प्रत्याहारों की संख्या- संस्कृत व्याकरण में कुल **42 प्रत्याहार** हैं। कुछ विद्वान् 'रँ' और 'ञम्' प्रत्याहार भी मानते हैं अतः इनके अनुसार प्रत्याहार 43 अथवा 44 हो जाते हैं।

प्रत्याहारों के विषय में कुछ विशेष जानकारी

- 'अच्' प्रत्याहार में समस्त 9 स्वरवर्ण आते हैं, ये अइउण् से ऐऔच् तक के चार सूत्रों से बना है। इसीलिए स्वरों को **''अच्''** भी कहा जाता है।
- 'हल्' प्रत्याहार में समस्त 33 व्यञ्जन वर्ण आते हैं, जो हयवरट् से लेकर हल् तक के 10 सूत्रों से बना है। इसीलिए व्यञ्जनों को **''हल्''** भी कहा जाता है।
- 'झष्' प्रत्याहार में वर्गों के चौथे वर्ण (झ् भ् घ् ढ् ध्) आते हैं जो झभञ् और घढधष् इन दो सूत्रों से बना है।
- 'जश्' प्रत्याहार में वर्गों के तीसरे वर्ण (ज् ब् ग् ड् द्) आते हैं, जो 'जबगडदश्' सूत्र से बना है।
- 'चय्' प्रत्याहार में वर्गों के प्रथम वर्ण (च् ट् त् क् प्) आते हैं।
- 'शल्' प्रत्याहार में चारों ऊष्मवर्ण (श् ष् स् ह्) आते हैं। जो शषसर् और हल् इन दो सूत्रों से बना है।
- 'यण्' प्रत्याहार में चारों अन्तःस्थ वर्ण (य् व् र् ल्) आते हैं। जो हयवरट् और लण् इन दो सूत्रों से बना है।
- अइउण् ऋऌक् एओङ् ऐऔच् आदि 14 सूत्रों के अन्त में जो ण् क् ङ् च् आदि हल् वर्ण लगे हुए हैं; इनका प्रयोजन प्रत्याहार बनाना है। जैसा कि कहा गया है, **''णादयोऽणाद्यर्थाः--''**

माहेश्वर सूत्रों के इत्संज्ञक वर्णों से मिलकर बनने वाले 42 प्रत्याहार

सूत्र	इत्संज्ञकवर्ण	प्रत्याहार	प्रत्याहारों की संख्या
1. अइउण्	इसके 'ण्' से एक प्रत्याहार	अण्	1
2. ऋऌक्	इसके 'क्' से तीन प्रत्याहार	अक् इक् उक्	3
3. एओङ्	इसके 'ङ्' से एक प्रत्याहार	एङ्	1
4. ऐऔच्	इसके 'च्' से चार प्रत्याहार	अच् इच् एच् ऐच्	4
5. हयवरट्	इसके 'ट्' से एक प्रत्याहार	अट्	1
6. लण्	इसके 'ण्' से तीन प्रत्याहार	अण् इण् यण्	3
7. ञमङणनम्	इसके 'म्' से तीन प्रत्याहार	अम् यम् ङम्	3
8. झभञ्	इसके 'ञ्' से एक प्रत्याहार	यञ्	1
9. घढधष्	इसके 'ष्' से दो प्रत्याहार	भष् झष्	2
10. जबगडदश्	इसके 'श्' से छह प्रत्याहार	अश् हश् वश् जश् झश् बश्	6
11. खफछठथचटतव्	इसके 'व्' से एक प्रत्याहार	छव्	1
12. कपय्	इसके 'य्' से पाँच प्रत्याहार	यय् मय् झय् खय् चय्	5
13. शषसर्	इसके 'र्' से पाँच प्रत्याहार	यर् झर् खर् चर् शर्	5
14. हल्	इसके 'ल्' से छह प्रत्याहार	अल् हल् वल् रल् झल् शल्	6
			कुल-42

संस्कृतव्याकरण के 42 प्रत्याहार

क्र.	प्रत्याहारः	वर्णाः	कुलवर्णाः	सूत्रों में प्रत्याहार का प्रयोग
01.	**अण्**	अ, इ, उ	03 वर्ण	उर**ण्** रपरः (1.1.51)
02.	**अक्**	अ, इ, उ,ऋ, ऌ	05 वर्ण	**अकः** सवर्णे दीर्घः (6.1.101)
03.	**अच्**	अ,इ,उ,ऋ,ऌ,ए,ओ,ऐ,औ **(सम्पूर्ण स्वरवर्ण)**	09 वर्ण	**अचो**ऽन्त्यादि टि (1.1.64)
04.	**अट्**	अ,इ,उ,ऋ,ऌ,ए,ओ,ऐ,औ, ह,य,व,र	13 वर्ण	शश्छो**ऽटि** (8.4.63)
05.	**अण्**	अ,इ,उ,ऋ,ऌ,ए,ओ,ऐ,औ, ह,य,व,र,ल	14 वर्ण	**अणु**दित्सवर्णस्य चाऽप्रत्ययः (1.1.69)
06.	**अम्**	अ,इ,उ,ऋ,ऌ,ए,ओ,ऐ,औ, ह,य,व,र,ल,ञ,म,ङ,ण,न	19 वर्ण	पुमः खय्य**म्**परे (8.3.6)
07.	**अश्**	अ,इ,उ,ऋ,ऌ,ए,ओ,ऐ,औ, ह,य,व,र,ल,ञ,म,ङ,ण,न, झ,भ,घ,ढ,ध,ज,ब,ग,ड,द	29 वर्ण	"भो भगो-अघो-अपूर्वस्य योऽशि" (8.3.17)

क्र.	प्रत्याहारः	वर्णाः	कुलवर्णाः	सूत्रों में प्रत्याहार का प्रयोग
08.	**अल्**	अ,इ,उ,ऋ,ऌ,ए,ओ,ऐ,औ, ह,य,व,र,ल ञ,म,ङ,ण,न,झ,भ, घ,ढ,ध,ज,ब,ग,ड,द,ख,फ,छ,ठ, थ,च,ट,त,क,प,श,ष,स,ह **(सम्पूर्ण वर्णमाला)**	42 वर्ण	**अलो**ऽन्त्यात्पूर्व उपधा (1.1.65)
09.	**इक्**	इ,उ,ऋ,ऌ	04 वर्ण	**इको** गुणवृद्धी (1.1.3)
10.	**इच्**	इ,उ,ऋ,ऌ,ए,ओ,ऐ,औ	08 वर्ण	**इच** एकाचोऽम्प्रत्ययवच्च (6.3.68)
11.	**इण्**	इ,उ,ऋ,ऌ,ए,ओ,ऐ,औ, ह,य,व,र,ल	13 वर्ण	**इण्**कोः (8.3.57)
12.	**उक्**	उ,ऋ,ऌ	03 वर्ण	**उगि**तश्च (4.1.6)
13.	**एङ्**	ए,ओ **(गुणसंज्ञकवर्ण)**	02 वर्ण	**एङि** पररूपम् (6.1.94)
14.	**एच्**	ए,ओ,ऐ,औ	04 वर्ण	**एचो**ऽयवायावः (6.1.78)
15.	**ऐच्**	ऐ,औ **(वृद्धिसंज्ञकवर्ण)**	02 वर्ण	वृद्धिरा**दैच्** (1.1.1)
16.	**हश्**	ह,य,व,र,ल,ञ,म,ङ,ण,न, झ,भ,घ,ढ,ध,ज,ब,ग,ड,द	20 वर्ण	**हशि** च (6.1.114)
17.	**हल्**	ह,य,व,र,ल,ञ,म,ङ,ण,न, झ,भ,घ,ढ, ध,ज,ब,ग,ड,द, ख,फ,छ,ठ,थ,च,ट, त,क, प,श,ष,स, (ह) **(सम्पूर्ण व्यञ्जनवर्ण)**	33 वर्ण	**हलो**ऽनन्तराः संयोगः (1.1.7)
18.	**यण्**	य,व,र,ल, **(अन्तःस्थवर्ण)**	04 वर्ण	इको **यण**चि (6.1.77)
19.	**यम्**	य,व,र,ल,ञ,म,ङ,ण,न	09 वर्ण	हलो **यमां** यमि लोपः (8.4.64)
20.	**यञ्**	य,व,र,ल,ञ,म,ङ,ण,न,झ,भ	11 वर्ण	अतो दीर्घो **यञि (** 7.3.101)
21.	**यय्**	य,व,र,ल,ञ,म,ङ,ण,न,झ, भ,घ,ढ,ध,ज,ब,ग,ड,द,ख, फ,छ,ठ,थ,च,ट,त,क,प	29 वर्ण	अनुस्वारस्य **ययि** परसवर्णः (8.4.58)
22.	**यर्**	य,व,र,ल,ञ,म,ङ,ण,न,झ, भ,घ,ढ,ध,ज,ब,ग,ड,द,ख, फ,छ,ठ,थ,च,ट,त,क,प,श,ष,स	32 वर्ण	**यरो**ऽनुनासिकेऽनुनासिको वा (8.4.45)
23.	**वश्**	व,र,ल,ञ,म,ङ,ण,न,झ,भ, घ,ढ,ध,ज,ब,ग,ड,द	18 वर्ण	नेड् **वशि** कृति (7.2.8)
24.	**वल्**	व,र,ल,ञ,म,ङ,ण,न,झ,भ, घ,ढ,ध,ज,ब,ग,ड,द,ख,फ,छ, ठ,थ,च,ट,त,क,प,श,ष,स,ह	32 वर्ण	लोपो व्यो**र्वलि (** 6.1.66)

क्र.	प्रत्याहारः	वर्णाः	कुलवर्णाः	सूत्रों में प्रत्याहार का प्रयोग
25.	रल्	र,ल,ञ,म,ङ,ण,न,झ,भ,घ,ढ, ध,ज,ब,ग,ड,द,ख,फ,छ,ठ, थ,च,ट,त,क,प,श,ष,स,ह	31 वर्ण	"**रलो** व्युपधाद्धलादेः सँश्च" (1.2.26)
26.	मय्	म,ङ,ण,न,झ,भ,घ,ढ,ध, ज,ब,ग,ड,द,ख,फ,छ,ठ, थ,च,ट,त,क,प	24 वर्ण	**मय** उञो वो वा (8.3.33)
27.	ङम्	ङ,ण,न	03 वर्ण	**ङमो** ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम् (8.3.32)
28.	झष्	झ,भ,घ,ढ,ध **(वर्गों के चतुर्थ वर्ण)**	05 वर्ण	एकाचो बशो भष् (8.2.37) **झष**न्तस्य स्ध्वोः
29.	झश्	झ,भ,घ,ढ,ध,ज,ब,ग,ड,द	10 वर्ण	झलां जश् **झशि (** 8.4.53)
30.	झय्	झ,भ,घ,ढ,ध,ज,ब,ग,ड,द, ख,फ,छ,ठ,थ,च,ट,त,क,प	20 वर्ण	**झयो** होऽन्यतरस्याम् (8.4.62)
31.	झर्	झ,भ,ध,ढ,ध,ज,ब,ग,ड,द, ख,फ,छ,ठ,थ,च,ट,त,क, प,श,ष,स,	23 वर्ण	**झरो** झरि सवर्णे (8.4.65)
32.	झल्	झ,भ,घ,ढ,ध,ज,ब,ग,ड, द,ख,फ,छ,ठ,थ,च,ट, त,क,प,श,ष,स,ह	24 वर्ण	**झलो** झलि (8.2.26)
33.	भष्	भ,घ,ढ,ध	04 वर्ण	एकाचो बशो **भष्** झषन्तस्य स्ध्वोः (8.2.37)
34.	जश्	ज,ब,ग,ड,द **(वर्गों के तृतीय अक्षर)**	05 वर्ण	झलां **जशो**ऽन्ते (8.2.39)
35.	बश्	ब,ग,ड,द	04 वर्ण	एकाचो **बशो** भष् झषन्तस्य स्ध्वोः (8.2.37)
36.	खय्	ख,फ,छ,ठ,थ,च,ट,त,क,प **(वर्गों के द्वितीय एवं प्रथम वर्ण)**	10 वर्ण	पुमः **खय्**यम्परे (8.3.6)
37.	खर्	ख,फ,छ,ठ,थ,च, ट,त,क,प,श,ष,स	13 वर्ण	**खरि** च (8.4.54)
38.	छव्	छ,ठ,थ,च,ट,त	06 वर्ण	नश्**छव्य**प्रशान् (8.3.7)
39.	चय्	च,ट,त,क,प **(वर्गों के प्रथम अक्षर)**	05 वर्ण	**चयोः द्वितीयाः शरि (** 8.4.47) पौष्करशादेः वार्तिक-
40.	चर्	च,ट,त,क,प,श,ष,स	08 वर्ण	अभ्यासे **चर्च (** 8.4.54)
41.	शर्	श,ष,स	03 वर्ण	वा **शरि (** 8.3.36)
42.	शल्	श,ष,स,ह **(ऊष्मवर्ण)**	04 वर्ण	"**शल** इगुपधादनिटः क्सः" (3.1.45)
*	रँ	र,ल	02 वर्ण	उरण् **रपरः** (1.1.51)
*	ञम्	ञ,म,ङ,ण,न **(वर्गों के पञ्चमवर्ण)**	05 वर्ण	**ञमन्ताड्डः** (उणादि.1.114)

वर्णों का उच्चारण स्थान

उच्चारणस्थान- मुख के जिस भाग से जिस वर्ण का उच्चारण किया जाता है, वही उस वर्ण का उच्चारण स्थान कहा जाता है।

क्र.	सूत्रम्	उच्चारित वर्ण (वर्णों के नाम)	उच्चारण स्थान
1.	**अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः**	अ, आ (18 प्रकार) कु = कवर्ग = क् ख् ग् घ् ङ् ह् और विसर्ग (ः) (कण्ठ्य वर्ण)	कण्ठ
2.	**इचुयशानां तालु**	इ, ई (18 प्रकार) चु अर्थात् चवर्ग = च् छ् ज् झ् ञ् य् और श् (तालव्य वर्ण)	तालु
3.	**ऋटुरषाणां मूर्धा**	ऋ, ॠ (18 प्रकार) टु अर्थात् टवर्ग = ट् ठ् ड् ढ् ण् र् और ष् (मूर्धन्यवर्ण)	मूर्धा
4.	**लृतुलसानां दन्ताः**	लृ (12 प्रकार) तु अर्थात् तवर्ग = त् थ् द् ध् न् ल् और स् (दन्त्यवर्ण)	दन्त
5.	**उपूपध्मानीयानां ओष्ठौ**	उ ऊ (18 प्रकार) पु अर्थात् पवर्ग = प् फ् ब् भ् म् उपध्मानीय ᳵप ᳵफ (ओष्ठ्य वर्ण)	ओष्ठौ
6.	**ञमङणनानां नासिका च**	ञ् म् ङ् ण् न् (अनुनासिक वर्ण)	नासिका भी
7.	**एदैतोः कण्ठतालु**	ए, ऐ (कण्ठतालव्य वर्ण)	कण्ठतालु
8.	**ओदौतोः कण्ठोष्ठम्**	ओ, औ (कण्ठोष्ठ्य वर्ण)	कण्ठ ओष्ठ
9.	**वकारस्य दन्तोष्ठम्**	व (दन्तोष्ठ्य वर्ण)	दन्तोष्ठ
10.	**जिह्वामूलीयस्य जिह्वामूलम्**	ᳵक ᳵख (जिह्वामूलीय वर्ण)	जिह्वामूलम्
11.	**नासिकाऽनुस्वारस्य**	(ं) अनुस्वार (नासिक्य वर्ण)	नासिका

➢ उच्चारणस्थान और प्रयत्न को अष्टाध्यायी सूत्रो में नही बताया गया है अपितु पाणिनीय शिक्षा आदि ग्रन्थों में उच्चारणस्थान आठ प्रकार के माने गये हैं-

अष्टौ स्थानानि वर्णानाम् उरः कण्ठः शिरस्तथा।

जिह्वामूलं च दन्तश्च नासिकोष्ठौ च तालु च।। (पाणिनीय शिक्षा -13)

वर्णों के उरः, कण्ठ, मूर्धा, जिह्वामूल, दन्त, नासिका, ओष्ठ और तालु ये आठ उच्चारण स्थान हैं।

उच्चारणस्थान तालिका

स्थान	वर्ण
कण्ठ	अ, आ, क् ख् ग् घ् ङ्, ह् विसर्ग (:)
तालु	इ ई, च् छ् ज् झ् ञ्, य् श्
मूर्धा	ऋ ॠ, ट् ठ् ड् ढ् ण्, र् ष्
दन्त	ऌ, त् थ् द् ध् न्, ल् स्
ओष्ठ	उ ऊ, प् फ् ब् भ् म्, ×प ×फ
नासिका	(ं) अनुस्वार
कण्ठ तालु	ए ऐ
कण्ठ ओष्ठ	ओ औ
दन्त ओष्ठ	व्
कण्ठ+नासिका	ङ्
तालु+नासिका	ञ्
मूर्धा+नासिका	ण्
दन्त+नासिका	न्
ओष्ठ+नासिका	म्
जिह्वामूलीय	×क, ×ख

वर्णों का आभ्यन्तर एवं बाह्य प्रयत्न

प्रयत्न- वर्णों के उच्चारण करने की चेष्टा को प्रयत्न कहते हैं। प्रयत्न दो प्रकार का होता है-

(i) आभ्यन्तर प्रयत्न (ii) बाह्य प्रयत्न

''यत्नो द्विधा आभ्यन्तरो बाह्यश्च''

(i) आभ्यन्तर प्रयत्न- 'आभ्यन्तर' का अर्थ है भीतर/आभ्यन्तर प्रयत्न से तात्पर्य उस चेष्टा से है, जो वर्णों के उच्चारण के पूर्व मुख के अन्दर होती है।

आभ्यन्तर प्रयत्न पाँच प्रकार का होता है-

1. **स्पृष्ट-** इस आभ्यन्तर प्रयत्न में जिह्वा-कण्ठ, तालु, मूर्धा, दन्त आदि उच्चारण स्थानों को स्पर्श करती है, इसलिए इन्हें **'स्पर्श वर्ण'** कहते हैं। इसमें क से म तक के **25 वर्ण** आते हैं। **''स्पृष्टं प्रयत्नं स्पर्शानाम्''**
2. **ईषत् स्पृष्ट-** ईषत् का अर्थ है- थोडा स्पृष्ट का अर्थ है- छुआ गया।
   इस प्रयत्न में जिह्वा उच्चारण स्थान को थोडा स्पर्श करती है। इसमें य् व् र् ल् (यण्) अन्तःस्थ वर्ण आते हैं। **''ईषत्स्पृष्टम् अन्तःस्थानाम्''**
3. **विवृत-** विवृत का अर्थ है- खुला हुआ। इनके उच्चारण में मुँह खोलना पड़ता है। यह प्रयत्न स्वरों का है। **''विवृतं स्वराणाम्''**

जैसे- अ, इ, उ, ऋ, ऌ ए ओ ऐ औ सभी स्वर विवृत हैं।

4. **ईषत् विवृत-** ईषत् का अर्थ है- थोडा विवृत का अर्थ है- खुला हुआ। इसमें जिह्वा को कम उठाना पडता है। शल् अर्थात् श् ष् स् ह् इन चार ऊष्म वर्णों का प्रयत्न ईषत्विवृत होता है।

''ईषत्विवृतम् ऊष्मणाम्''

5. **संवृत-** संवृत का अर्थ है- ढका हुआ या बन्द। इसमें वायु का मार्ग बन्द रहता है। प्रयोग करने अर्थात् उच्चारणावस्था में ह्रस्व 'अ' का प्रयत्न संवृत होता है।

''ह्रस्वस्य अवर्णस्य प्रयोगे संवृतम्''

किन्तु शास्त्रीय (साधनिका या प्रयोगसिद्धि) अवस्था में 'अ का प्रयत्न अन्य स्वरों की भाँति विवृत ही होता है-

''प्रक्रियादशायां तु विवृतमेव''

आभ्यन्तर प्रयत्न तालिका

स्पृष्ट	ईषत्स्पृष्ट	ईषत्विवृत	विवृत	संवृत
(क से म तक) क् ख् ग् घ् ङ् च् छ् ज् झ् ञ् ट् ठ् ड् ढ् ण् त् थ् द् ध् न् प् फ् ब् भ् म्	अन्तःस्थ वर्ण (यण्) य् व् र् ल्	ऊष्म वर्ण (शल्) श् ष् स् ह्	अच् अ इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ	अ

बाह्य प्रयत्न- मुख से जब वर्ण बाहर निकलने लगते हैं उस समय उच्चारण की जो चेष्टा होती है, उसे बाह्य प्रयत्न कहते हैं। बाह्य प्रयत्न 11 प्रकार का होता है- **''बाह्यप्रयत्नस्तु एकादशधा''**

1. विवार 2. संवार 3. श्वास 4. नाद 5. घोष 6. अघोष 7. अल्पप्राण 8. महाप्राण 9. उदात्त 10. अनुदात्त 11. स्वरित।

विवार श्वास अघोष- खर् प्रत्याहार (ख् फ् छ् ठ् थ् च् ट् त् क् प् श् ष् स्) के अन्तर्गत आने वाले वर्णों का बाह्यप्रयत्न विवार, श्वास और अघोष होगा। **''खरो विवाराः श्वासा अघोषाश्च''**

विवार श्वास अघोष
खर्
ख् फ् छ् ठ् थ् च् ट् त् क् प्
श् ष् स्

संवार नाद घोष- हश् प्रत्याहार (ह् य् व् र् ल् ञ् म् ङ् ण् न् झ् भ् घ् ढ् ध् ज् ब् ग् ड् द्) के अन्तर्गत आने वाले सभी व्यञ्जनवर्णों का बाह्यप्रयत्न संवार नाद घोष होगा। - **''हशः संवारा नादा घोषाश्च''** इसे संक्षेप में ''संनाघो हशः'' भी कह सकते हैं।

संवार नाद घोष
हश्
ह् य् व् र् ल् ञ् म् ङ् ण् न् झ् भ्
घ् ढ् ध् ज् ब् ग् ड् द्

अल्पप्राण- अल्प का अर्थ है- थोड़ा। 'प्राण' का अर्थ होता है- वायु। जिस वर्ण से बोलने के लिए भीतर से कम वायु फेंकना पड़े उसे 'अल्पप्राण' कहते हैं।

वर्गों के प्रथम, तृतीय और पञ्चम वर्ण और यण् (य् व् र् ल्) का बाह्यप्रयत्न अल्पप्राण होगा।

''वर्गाणां प्रथम-तृतीय-पञ्चमा-यणश्च अल्पप्राणाः''

अल्पप्राण वर्ण हैं-

कवर्ग - क ग ङ
चवर्ग - च ज ञ
टवर्ग - ट ड ण
तवर्ग - त द न
पवर्ग - प ब म
यण् - य व र ल

इसप्रकार 19 व्यञ्जनवर्णों का बाह्यप्रयत्न अल्पप्राण होगा।

महाप्राण-

महा का अर्थ है- अधिक या ज्यादा, प्राण का अर्थ हुआ-वायु। जिस वर्ण को बोलने के लिए भीतर से अधिक वायु फेंकना पड़े उसे महाप्राण कहते हैं।

महाप्राण- वर्गों के द्वितीय, चतुर्थ और शल् (श् ष् स् ह्) वर्णों का बाह्यप्रयत्न महाप्राण होगा।

''वर्गाणां द्वितीय-चतुर्थौ शलश्च-महाप्राणाः''

महाप्राण वर्ण हैं-

कवर्ग - ख छ
चवर्ग - छ झ
टवर्ग - ठ ढ
तवर्ग - थ ध
पवर्ग - फ भ
शल् - श ष स ह

इस प्रकार कुल 14 व्यञ्जनवर्णों का बाह्यप्रयत्न महाप्राण होगा।

ध्यान दें- किसी भी वर्ण का चार बाह्यप्रयत्न होगा। यदि वर्ण हश् प्रत्याहार का हैं तो संवार नाद घोष के साथ-साथ अल्पप्राण और महाप्राण में से कोई एक होगा और यदि वर्ण खर् प्रत्याहार का है तो विवार श्वास अघोष के साथ-साथ अल्पप्राण और महाप्राण में से कोई एक होगा। जैसे-

ह- संवार नाद घोष महाप्राण **ख-** विवार श्वास अघोष महाप्राण
य- संवार नाद घोष अल्पप्राण **क-** विवार श्वास अघोष अल्पप्राण

उदात्त- उच्चैरुदात्तः (1.2.29) मुख के भीतर जो कण्ठ तालु आदि उच्चारण स्थान हैं उनमें ऊर्ध्व भाग से बोले जाने वाले अच् (स्वर) की उदात्त संज्ञा होगी।

अनुदात्त- नीचैरनुदात्तः (1.2.30) कण्ठ तालु आदि उच्चारणस्थानों के निम्न (अधोभाग) भाग से उच्चरित अच् (स्वर) की अनुदात्त संज्ञा होती है।

स्वरित- समाहारः स्वरितः (1.2.31) जहाँ उदात्त और अनुदात्त दोनों का समाहार होता है, उस अच् (स्वर) की स्वरित संज्ञा होगी।

- उदात्त अनुदात्त और स्वरित प्रयत्न केवल स्वरों के होते हैं।
- उदात्त अनुदात्त और स्वरित को समझने के लिए वैदिकग्रन्थों में विशेष चिह्नों का प्रयोग किया गया है-
- अनुदात्त अक्षर के नीचे पड़ी लाइन, स्वरित के ऊपर खड़ी लाइन होती है जबकि उदात्त के लिए कोई चिह्न नहीं होता।

जैसे- स नः पितेव सूनवे, अग्ने सूपायनो भव। (ऋग्वेद 1.1.9)

बाह्यप्रयत्न बोधक तालिका

विवार श्वास अघोष	संवार नाद घोष	अल्पप्राण	महाप्राण	उदात्त अनुदात्त स्वरित
खर्	हश्	वर्गों के प्रथम	वर्गों के	अ इ उ
क ख	ग घ ङ	तृतीय और पञ्चम	द्वितीय चतुर्थ	ऋ ऌ
च छ	ज झ ञ	वर्ण और यण्	और शल्	ए ओ
ट ठ	ड ढ ण	क ग ङ	ख छ	ऐ औ
त थ	द ध न	च ज ञ	छ झ	
प फ	ब भ म	ट ड ण	ठ ढ	
श ष स	य व र ल	त द न	थ ध	
		प ब म	क ञ	
		य व र ल	श ष स ह	

❑❑❑

व्याकरणशास्त्र की प्रमुख संज्ञायें एवं परिभाषायें

1. वृद्धि संज्ञा

सूत्र- वृद्धिरादैच् (1.1.1)

पदच्छेद- वृद्धिः आत् (आ) ऐच् (ऐ, औ)

सूत्रार्थ- आ, ऐ, औ- इन तीन वर्णों की **वृद्धिसंज्ञा** होती है। जैसे- त्यागः में **आ**, सदैव में **ऐ**, महौषधि में **औ** वृद्धिसंज्ञक वर्ण हैं।

2. गुण संज्ञा

सूत्र- अदेङ् गुणः (1.1.2)

पदच्छेद- अत् (अ) एङ् (ए ओ) गुणः

सूत्रार्थ- अ, ए, ओ- इन तीन वर्णों की **गुणसंज्ञा** होती है।

उदाहरण- रमेशः में 'ए', सूर्योदयः में 'ओ', महर्षि में 'अ' (र्) गुणसंज्ञक वर्ण हैं।

3. संयोग संज्ञा

सूत्र- हलोऽनन्तराः संयोगः (1.1.7)

पदच्छेद- हलः अनन्तराः संयोगः

सूत्रार्थ- ऐसे दो या दो से अधिक व्यञ्जन जिनके बीच में कोई स्वर न आया हो, उसे **संयोग** कहते हैं।

उदाहरण- (i) पुष्प में ष् + प् का संयोग है।
(ii) अग्नि में ग् + न् का संयोग है।
(iii) राष्ट्र में ष् + ट् + र् का संयोग है।
(iv) बुद्धि में द् + ध् का संयोग है।

4. अनुनासिक संज्ञा

सूत्र- मुखनासिकावचनोऽनुनासिकः (1.1.8)

पदच्छेद- मुख-नासिका-वचनः अनुनासिकः

सूत्रार्थ- जो वर्ण मुख तथा नासिका दोनों की सहायता से बोले जाते हों, उसकी **अनुनासिक संज्ञा** होती है।

उदाहरण- अँ, ङ्, ञ्, ण्, न्, म् आदि वर्ण अनुनासिक हैं।

नोट- जो वर्ण नासिका के साथ नहीं बोले जाते वे अननुनासिक या निरनुनासिक कहे जाते हैं। जैसे- क, ख, ग, घ, च, छ, ज आदि।

5. सवर्णसंज्ञा

सत्र- ''तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम्'' (1.1.9)

पदच्छेद- तुल्य-आस्य-प्रयत्नं सवर्णम्

सूत्रार्थ- जिन दो या दो से अधिक वर्णों के कण्ठ तालु आदि उच्चारणस्थान तथा आभ्यन्तरप्रयत्न दोनों समान हों, वे परस्पर सवर्णी (सवर्णसंज्ञक) होते हैं।

उदाहरण- अ-आ, इ-ई, उ-ऊ आदि परस्पर सवर्णी हैं।

रमा + अपि = रमापि। मुनि + ईशः = मुनीशः

भानु + उदयः = भानूदयः

- उच्चारणस्थान और प्रयत्न का साम्य होने पर भी स्वर और व्यञ्जन की परस्पर सवर्णसंज्ञा नहीं होती है- ''नाज्झलौ''

यथा- दण्ड हस्तः, दधि शीतम्।

- **''ऋलृवर्णयोः मिथः सावर्ण्यं वाच्यम्''** इस वार्तिक से ऋ और लृ वर्ण आपस में सवर्णी हैं।

6. प्रगृह्य संज्ञा

सूत्र- ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम् (1.1.11)

पदच्छेद- ईत् ऊत् एत् द्विवचनं प्रगृह्यम्

सूत्रार्थ- द्विवचनान्त ई ऊ ए की **प्रगृह्यसंज्ञा** होती है।

उदाहरण- (i) हरी एतौ (ii) विष्णू इमौ (iii) गङ्गे अमू (iv) अग्नी इति (v) वायू इति (vi) माले इति (vii) पचेते इति

7. 'घ' संज्ञा

सूत्र- तरप्तमपौ घः (1.1.21)

पदच्छेद- तरप् - तमपौ घः

सूत्रार्थ- तरप् और तमप् - ये दो प्रत्यय **'घ' संज्ञक** होते हैं।

उदाहरण- कुमारितरा, कुमारितमा

8. निष्ठा संज्ञा

सूत्र- क्तक्तवतू निष्ठा (1.1.25)

पदच्छेद- क्त - क्तवतू निष्ठा

सूत्रार्थ- क्त तथा क्तवतु दोनों प्रत्ययों की **निष्ठा संज्ञा** होती है।

उदाहरण- भुक्तः, भुक्तवान्, पठितः, पठितवान् आदि।

9. सर्वनामसंज्ञा

सूत्र- सर्वादीनि सर्वनामानि (1.1.26)

पदच्छेद- सर्व-आदीनि सर्वनामानि

सूत्रार्थ- सर्व, विश्व, यत् , तद्, एतत्, इदम्, अदस्, अस्मद्, युष्मद् आदि शब्दों की **सर्वनामसंज्ञा** होती है।

10. अव्यय संज्ञा

सूत्र- स्वरादिनिपातमव्ययम् (1.1.36)

पदच्छेद- स्वरादि-निपातम् अव्ययम्

सूत्रार्थ- स्वरादिगण में पठित शब्दों की तथा निपात शब्दों की अव्यय संज्ञा होती है।

उदाहरण- स्वरादि- स्वर्, प्रातर् इत्यादि

निपात- च, वा, ह इत्यादि

- क्त्वा, ल्यप्, तुमुन् प्रत्ययान्त पद भी अव्ययसंज्ञक होते हैं- **यथा-** पठित्वा, प्रपठ्य, पठितुम् आदि।
- कुछ तद्धित प्रत्ययान्त शब्दों की भी अव्ययसंज्ञा होती है। जैसे- ततः, तत्र, तदा, विना आदि।
- अव्ययीभाव समास की अव्ययसंज्ञा होती है। जैसे- अधिहरि, अध्यात्मम्, उपगङ्गम्, यथाशक्ति आदि।

11. विभाषा संज्ञा

सूत्र- न वेति विभाषा (1.1.43)

पदच्छेद- न वा इति विभाषा

सूत्रार्थ- न का अर्थ है- निषेध। 'वा' का अर्थ है- विकल्प। निषेध तथा विकल्प इन दो अर्थों की **विभाषा संज्ञा** होती है।

12. सम्प्रसारण संज्ञा-

सूत्र- इग्यणः सम्प्रसारणम् (1.1.44)

पदच्छेद- इक् यणः सम्प्रसारणम्

सूत्रार्थ- यण् के स्थान पर होने वाले इक् की **सम्प्रसारण संज्ञा** होती है।

यण् -	य्	व्	र्	ल्
इक् -	इ	उ	ऋ	लृ

उदाहरण- (i) यज् + क्त = इष्टः

(ii) वप् + क्त = उप्तः

13. टि संज्ञा

सूत्र- अचोऽन्त्यादि टि (1.1.63)

पदच्छेद- अचः अन्त्य आदि टि

सूत्रार्थ- अचों के मध्य में जो अन्तिम अच् होता है, वह आदि में हो जिसके उस वर्णसमुदाय की **टि संज्ञा** होती है।

व्याख्या- किसी शब्द में जो अन्तिम स्वर होगा वही टिसंज्ञक वर्ण होगा, उस अन्तिम स्वर के बाद भी जो व्यञ्जन वर्ण होंगे वे भी टिसंज्ञक होंगे।

जैसे-

(i) मनस् = म् अ न् अ स्
यहाँ अन्तिम स्वर है 'नकार' में विद्यमान अ । 'अ' के बाद 'स्' व्यञ्जन वर्ण भी टिसंज्ञा में गिना जाएगा अतः 'मनस्' में **'अस्'** की टिसंज्ञा होगी।

(ii) राजन् में **'अन्'** इस वर्णसमुदाय की टिसंज्ञा होगी।

(iii) 'राम' में **'अ'** टिसंज्ञक वर्ण है। क्योंकि यहाँ अन्तिम स्वर अकार के बाद कोई व्यञ्जन वर्ण नहीं है।

(iv) 'दधि' में **'इ'** टिसंज्ञक वर्ण है।

नोट-

(i) अन्तिम स्वर तथा उसके बाद आने वाले स्वर रहित व्यञ्जन वर्ण टिसंज्ञक होंगे। जैसे- मनस् में 'अस्'।

(ii) यदि अन्तिम स्वर के बाद व्यञ्जन वर्ण नहीं होगा तो केवल शब्द का अन्तिम स्वर ही टिसंज्ञक होगा। जैसे- दधि में टिसंज्ञक वर्ण हैं- **'इ'**।

14. उपधा संज्ञा

सूत्र- अलोऽन्त्यात् पूर्व उपधा (1.1.64)

पदच्छेद- अलः अन्त्यात् पूर्वः उपधा

सूत्रार्थ- अन्तिम वर्ण से पूर्व में रहने वाले वर्ण की **उपधा संज्ञा** होती है।

व्याख्या- किसी शब्द या धातु में जो अन्त्य वर्ण होगा, उसके ठीक पहले वाले वर्ण की उपधा संज्ञा होती है।

जैसे-

(i) राम- र् आ म् अ - यहाँ अन्तिम वर्ण है 'अ' तो अकार के ठीक पहले वाले वर्ण 'म्' की उपधा संज्ञा होगी।

(ii) 'गम्' में अन्तिम वर्ण मकार के पूर्व 'अकार' की उपधा संज्ञा होगी।

(iii) इसीप्रकार भिद् में 'इ' की, मुच् में 'उ' की, वृध् में 'ऋ' की उपधा संज्ञा होगी।

नोट- Second Last वर्ण उपधासंज्ञक होगा।

15. नदी संज्ञा

सूत्र- यू स्त्र्याख्यौ नदी (1.4.3)

पदच्छेद- यू स्त्री आख्यौ नदी

सूत्रार्थ- 'यू' = (ई + ऊ) का अर्थ है ईकारान्त और ऊकारान्त

- **'स्त्र्याख्यौ'** का अर्थ है- नित्य स्त्रीलिङ्ग शब्द

इसप्रकार ईकारान्त तथा ऊकारान्त नित्यस्त्रीलिङ्ग शब्दों की नदी संज्ञा होती है।
उदाहरण- नदी, गौरी, वधू आदि नदीसंज्ञक पद हैं।

16. घि संज्ञा

सूत्र- शेषो घ्यसखि (1.4.7)

पदच्छेद- शेषः घि असखि

सूत्रार्थ- जिनकी नदी संज्ञा नहीं है, ऐसे ह्रस्व इकारान्त और ह्रस्व उकारान्त शब्दों की **घि संज्ञा** होती है। 'सखि' शब्द को छोड़कर।

उदाहरण- हरिः, भानुः, वारि, मधु आदि घिसंज्ञक हैं।

नोट- (i) 'पति' शब्द समास होने पर ही घिसंज्ञक होता है- जैसे- भूपतिः, सीतापतिः आदि। **'पतिः समास एव'**

17. पद संज्ञा

सूत्र- सुप्तिङन्तं पदम् (1.4.14)

पदच्छेद- सुप् तिङ् अन्तम् पदम्

सूत्रार्थ- सुबन्त (सुप् अन्त वाला) तथा तिङन्त (तिङ् अन्त वाला) शब्द की **पद संज्ञा** होती है।

व्याख्या-

(i) प्रातिपदिकों में प्रथमा से सप्तमी तक सु औ जस् आदि सुप् विभक्तियाँ लगाकर जो रामः, रामौ, रामाः आदि शब्दरूप बनते हैं, वे **सुबन्त पद** कहलाते हैं।

(ii) धातुओं से विभिन्न लकारों में तिप् तस् झि तथा त आताम् झ आदि 18 तिङ् प्रत्यय लगाकर जो पठति पठतः पठन्ति आदि धातुरूप बनते हैं, वे **तिङन्त पद** कहलाते हैं

नोट- पद दो प्रकार के होते हैं-

(i) सुबन्त पद (शब्दरूप) रामः, हरिः, गुरुः आदि।

(ii) तिङन्त पद (धातुरूप) पठति, लभते, जानाति आदि।

18. संहिता संज्ञा

सूत्र- परः सन्निकर्षः संहिता (1.4.108)

पदच्छेद- परः सन्निकर्षः संहिता

सूत्रार्थ- वर्णों के अत्यधिक सामीप्य की **संहिता संज्ञा** होती है।

उदाहरण- मधु + अरिः = मध्वरिः
रमा + ईशः = रमेशः

19. सत् संज्ञा

सूत्र- तौ सत् (3.2.127)

सूत्रार्थ- शतृ एवं शानच् - इनकी **सत् संज्ञा** होती है।

20. प्रातिपदिक संज्ञा

सूत्र- अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम् (1.2.45)

पदच्छेद- अर्थवत् अधातुः अप्रत्ययः प्रातिपदिकम्

सुत्रार्थ- धातुरहित, प्रत्ययान्तरहित सार्थक शब्दस्वरूप की प्रातिपदिक संज्ञा होती है।

उदाहरण- राम, कृष्ण, लता आदि।

नोट- कृत्तद्धितसमासाश्च (1.2.46) कृत् प्रत्ययान्त, तद्धितप्रत्ययान्त तथा समास भी प्रातिपदिक संज्ञक होते हैं।

जैसे- कारकः (कृत्), शालीयः (तद्धित), राजपुरुषः (समास) आदि।

21. प्रत्ययसंज्ञा

प्रत्यय- धातु और प्रातिपदिक के बाद जो जुड़ते हैं, उनकी प्रत्यय संज्ञा होती है।

यथा-

(i) भवति में 'भू' धातु है 'तिप्' प्रत्यय है।

(ii) पाठकः में पठ् धातु है 'ण्वुल्' प्रत्यय है।

(iii) रामस्य में राम प्रातिपदिक है 'ङस्' प्रत्यय है।

➢ धातु के अन्त में लगने वाले प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं-

1. कृत् प्रत्यय - क्त, क्तवतु, तुमुन् आदि।
2. तिङ् प्रत्यय - तिप्, तस्, झि आदि।

➢ प्रातिपदिक (शब्दों) से लगने वाले प्रत्यय हैं-

1. सुप् प्रत्यय - सु औ जस् आदि।
2. स्त्रीप्रत्यय - टाप्, ङीप्, ङीष् आदि।
3. तद्धितप्रत्यय - मतुप्, अण्, इनि आदि।

कृत् प्रत्यय- कृत् प्रत्यय धातु के अन्त में लगते हैं, और वे दो प्रकार के शब्द बनाते हैं।

1. अव्यय- क्त्वा, ल्यप्, तुमुन् आदि।

2. विशेषण- तव्यत्, अनीयर्, यत्, ण्यत्, क्यप्, शतृ, शानच्, क्त, क्तवतु आदि।

उदाहरण- पठ् + क्त = पठितः, पठ् + अनीयर् = पठनीयम्

तिङ् प्रत्यय- दसों लकारों के प्रत्ययों को तिङ्प्रत्यय कहा जाता है। ये दो प्रकार के हैं- परस्मैपदी और आत्मनेपदी।

परस्मैपदी तिङ् प्रत्यय- (9)

प्र. पु.	तिप्	तस्	झि
म. पु.	सिप्	थस्	थ
उ. पु.	मिप्	वस्	मस्

आत्मनेपदी तिङ् प्रत्यय- (9)

प्र. पु.	त	आताम्	झ
म. पु.	थास्	आथाम्	ध्वम्
उ. पु.	इट्	वहि	महिङ्

➢ इस प्रकार ये 18 प्रत्यय तिङ् कहलाते हैं। तिप् के 'ति' से लेकर महिङ् के 'ङ्' तक 'तिङ्' कहा गया।

सुप् प्रत्यय- सुप् प्रत्यय प्रातिपदिक से जुड़कर पद बनाते हैं। जैसे- 'राम' प्रातिपदिक से 'सु' लगेगा तो 'रामः' यह पद बनेगा।

➢ सुप् प्रत्यय 21 होते हैं।

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सु	औ	जस्
द्वितीया	अम्	औट्	शस्
तृतीया	टा	भ्याम्	भिस्
चतुर्थी	ङे	भ्याम्	भ्यस्
पञ्चमी	ङसि	भ्याम्	भ्यस्
षष्ठी	ङस्	ओस्	आम्
सप्तमी	ङि	ओस्	सुप्

स्त्रीप्रत्यय- पुंलिङ्ग शब्द को स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए जिन प्रत्ययों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें स्त्रीप्रत्यय कहा जाता है।

जैसे- टाप्, डाप्, चाप्, ङीप्, ङीष्, ङीन्, ऊङ्, ति आदि।

उदाहरण-

अज + टाप् = अजा
छात्र + टाप् = छात्रा
राजन् + ङीप् = राज्ञी
कुमार + ङीप् = कुमारी
नर्तक + ङीष् = नर्तकी
गौर + ङीष् = गौरी
नृ + ङीन् = नारी
युवन् + ति = युवतिः आदि।

तद्धित प्रत्यय- शब्द के अन्त में लगने वाले प्रत्यय तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

यथा- मतुप्, इनि, त्व, तल्, ष्यञ्, तसिल् आदि।

उदाहरण- बुद्धि + मतुप् = बुद्धिमत् (बुद्धिमान्)
महत् + त्व = महत्त्वम्

22. स्थानी और आदेश- किसी वर्ण को या शब्द को हटाकर जब उसकी जगह, कोई दूसरा वर्ण या शब्द आकर बैठ जाता है, तब जिसे हटाया जाता है, उसे **'स्थानी'** कहते हैं।

➢ जो स्थानी की जगह आकर बैठ जाता है, उसे आदेश कहते हैं। व्याकरणशास्त्र में आदेश को शत्रु के समान कहा गया है- **''शत्रुवदादेशः''**

जैसे- प्रति + एकः = प्रत्येकः

यहाँ 'इ' को हटाकर उसके स्थान पर 'य्' बैठ गया है, अतः 'इ' स्थानी है तथा 'य्' आदेश है।

23. निमित्त- एक वर्ण को हटाकर उसकी जगह दूसरे वर्ण का आदेश जिसके कारण होता है, उसे **निमित्त** कहा जाता है।

जैसे- प्रति + एकः = प्रत्येकः में 'इ' स्थानी के स्थान पर 'य्' आदेश 'ए' स्वर (अच्) के कारण हुआ है अतः 'ए' निमित्त है।

24. आगम- जो वर्ण किसी वर्ण को हटाये बिना आकर बैठ जाता है, तो उसे हम **'आगम'** कहते हैं।

''मित्रवदागमः'' अर्थात् मित्र की तरह आगमन आगम कहा जाता है।

''सम् + सुट् + कृ + क्त'' = संस्कृत यहाँ सुट् का आगम हुआ है।

25. उपसर्ग संज्ञा

सूत्र- ''उपसर्गाः क्रियायोगे'' (1.4.59)

सूत्रार्थ- प्रादि जब किसी क्रिया के साथ लगते हैं तब इनकी उपसर्ग संज्ञा होती है।

➢ उपसर्गों की संख्या 22 है-

प्र परा अप सम् अनु अव निस् निर् दुस् दुर् वि आङ् नि अधि अपि अति सु उत् अति प्रति परि उप।

26. कारक

कारक- कृ + ण्वुल् = कारकम् अर्थात् क्रियां करोति इति कारकम्।

जिनका क्रिया के साथ सीधा सम्बन्ध होता है, या जो क्रिया की सिद्धि में सहायक होते हैं, उन्हें **'कारक'** कहा जाता है।

''क्रियाजनकत्वं कारकत्वम्'', **''क्रियान्वयित्वं कारकत्वम्''**

➢ कारक छः होते हैं-

1. कर्ता 2. कर्म 3. करण
4. सम्प्रदान 5. अपादान 6. अधिकरण

कर्ता कर्म च करणं सम्प्रदानं तथैव च।
अपादानाधिकरणे इत्याहुः कारकाणि षट्॥

➢ संस्कृत व्याकरण में सम्बन्ध और सम्बोधन को कारक नहीं माना जाता।

27. विभक्तियाँ

विभक्ति- जिसके द्वारा कारकों और संख्याओं को विभक्त किया जाता है, उसे विभक्ति कहते हैं। इसीलिए सुप् और तिङ् को भी विभक्ति कहते हैं।

➢ संस्कृत व्याकरण में **विभक्तियाँ सात** होती हैं-

1. प्रथमा 2. द्वितीया 3. तृतीया 4. चतुर्थी 5. पञ्चमी
6. षष्ठी 7. सप्तमी

➢ सम्बोधन में प्रथमा विभक्ति होती है।

28. पुरुष

संस्कृत में तीन पुरुष होते हैं-

1. प्रथमपुरुष या अन्य पुरुष- उत्तम पुरुष के अहं, आवां, वयम् और मध्यम पुरुष के त्वम्, युवां, यूयम् इन छह शब्दों को छोड़कर संस्कृत वाङ्मय के सभी कर्तृपद प्रथम पुरुष के अन्तर्गत गिने जाते हैं।

यथा- भवान् , भवती, बालकः, बालिका, सः, सा, नरः, वानरः, पिता, पुत्रः, इत्यादि।

और इन सभी पदों के साथ प्रथम पुरुष की क्रिया 'पठति, पठतः, पठन्ति' आदि का ही प्रयोग होता है।

2. मध्यम पुरुष- जिससे बात कही जाय, वह मध्यम पुरुष है। इसमें 'त्वम्, युवाम्, यूयम्' कर्तृपद आते हैं। इनके साथ मध्यमपुरुष की क्रिया क्रमशः **त्वम्** के साथ पठसि **युवां** के साथ पठथः तथा **यूयं** के साथ पठथ का प्रयोग होगा।

3. उत्तम पुरुष- जो बात को कहता है; वह उत्तम पुरुष है। इसके अन्तर्गत 'अहं, आवाम्, वयम्' कर्तृपद आते हैं। इनके साथ उत्तम पुरुष की क्रिया क्रमशः **अहं** के साथ 'पठामि' **आवां** के साथ पठावः **वयं** के साथ 'पठामः' का प्रयोग होता है।

29. वचन

'वचन' का अर्थ होता है- संख्या।

संस्कृत में तीन वचन होते हैं-

1. **एकवचन-** एक वस्तु या एक व्यक्ति का बोध कराने के लिए एकवचन का प्रयोग होता है, जैसे- बालकः, हरिः, गुरुः, विद्यालयः आदि।
2. **द्विवचन-** दो व्यक्तियों या दो वस्तुओं के लिए द्विवचन का प्रयोग होता है। जैसे- बालकौ, हरी, गुरू, विद्यालयौ, पुस्तके आदि।
3. **बहुवचन-** तीन या तीन से अधिक व्यक्तियों या वस्तुओं का बोध कराने के लिए बहुवचन का प्रयोग किया जाता है। **''बहुषु बहुवचनम्''**

जैसे- बालकाः, हरयः, गुरवः, विद्यालयाः, पुस्तकानि आदि।

30. लिङ्ग

➢ 'लिङ्ग' शब्द का अर्थ है- चिह्न, लक्षण या पहचान।

संस्कृत में तीन लिङ्ग होते हैं-

1. पुंलिङ्ग- जिससे पुरुष जाति का बोध होता है।

जैसे- छात्रः, बालकः, मुनिः, विद्यालयः, काकः, व्याघ्रः आदि।

2. स्त्रीलिङ्ग- जिससे स्त्रीजाति का बोध होता है।

जैसे- छात्रा, बालिका, गौरी, नदी आदि।

3. नपुंसकलिङ्ग- जिससे न पुरुष जाति का बोध हो और न स्त्री जाति का बोध हो, उसे नपुंसकलिङ्ग कहते हैं।

जैसे- फलम्, जलम्, गृहम्, पुष्पम्, नेत्रम् वारि, दधि, मधु आदि।

31. लकार

संस्कृत में दस लकार होते हैं-

1. **लट्लकार -** (वर्तमान काल) वर्तमान काल को सूचित करने के लिए लट्लकार का प्रयोग होता है।
2. **लिट्लकार-** (अनद्यतन परोक्षभूतकाल) परोक्षभूतकाल अर्थात् बहुत प्राचीनकाल को सूचित करने के लिए लिट्लकार की क्रिया का प्रयोग होता है।
3. **लुट्लकार-** (अनद्यतन भविष्यत् काल) आज के पश्चात् भविष्यकाल को सूचित करने के लिए लुट्लकार का प्रयोग होता है।
4. **लृट् -** (सामान्य भविष्यत् काल)
5. **लेट्लकार -** (संशय अर्थ में) लेट्लकार का प्रयोग वेदों में होता है, लौकिक संस्कृत में नहीं।
6. **लोट्लकार -** (प्रेरणा तथा आज्ञा अर्थ में)
7. **लङ्लकार -** (अनद्यतन भूतकाल) अब से पहले के भूतकाल को सूचित करने के लिए लङ् लकार का प्रयोग किया जाता है।
8. **लिङ् लकार-** इसके दो भेद हैं-

(i) **विधिलिङ् -** (विधि, निमन्त्रण, आमन्त्रण, सम्प्रश्न प्रार्थना, चाहिए अर्थ में)

(ii) **आशीर्लिङ् -** (आशीर्वाद अर्थ में)

9. **लुङ्लकार -** (सामान्यभूत) सामान्यभूतकाल को सूचित करने के लिए।
10. **लृङ्लकार-** (हेतु हेतुमद्भाव भूत) जहाँ एक क्रिया का कारण दूसरी क्रिया हो।

32. धातुसंज्ञा

सूत्र- भूवादयो धातवः (1.3.1)

क्रियावाचक भू आदि की धातुसंज्ञा होती है। ये सभी धातुयें पाणिनीय धातुपाठ में दी गयी हैं। इनकी संख्या 1970 अर्थात् लगभग 2000 है।

➢ धातुओं के तीन प्रकार से रूप चलते हैं-

(i) परस्मैपदी √पठ्- पठति, पठतः, पठन्ति आदि।
(ii) आत्मनेपदी √ल- लभते, लभेते, लभन्ते आदि।
(iii) उभयपदी √ज्ञा- जानाति, जानीतः, जानन्ति जानीते, जानाते, जानते।

33. गण (धातुओं के विभाग)

संस्कृत में दस गण होते हैं। संस्कृत व्याकरणशास्त्र में लगभग 2000 धातुयें हैं; प्रत्येक धातु किसी न किसी गण में ही परिगणित है।

	गण	धातुयें
1.	भ्वादिगण	1035 धातुयें
2.	अदादिगण	72 धातुयें
3.	जुहोत्यादिगण	24 धातुयें
4.	दिवादिगण	140 धातुयें
5.	स्वादिगण	35 धातुयें
6.	तुदादिगण	157 धातुयें
7.	रुधादिगण	25 धातुयें
8.	तनादिगण	10 धातुयें
9.	क्र्यादिगण	61 धातुयें
10.	चुरादिगण	411 धातुयें
	कुल धातुयें –	1970

भ्वाद्यदादि जुहोत्यादिर्दिवादिः स्वादिरेव च।
तुदादिश्च रुधादिश्च तनादिक्रीचुरादयः॥

➢ **भ्वादिगण की प्रमुख धातुएँ-** भू (होना), हस् (हँसना), पठ् (पढ़ना), रक्ष् (रक्षा करना), वद् (बोलना), पच् (पकाना), नम् (झुकना), गम् (जाना), दृश् (देखना), सद् (बैठना), स्था (रुकना), पा (पीना), घ्रा (सूँघना), स्मृ (स्मरण करना), जि (जीतना), श्रु (सुनना), वस् (रहना), सेव् (सेवा करना), लभ् (पाना), वृध् (बढ़ना), मुद् (प्रसन्न होना), सह् (सहन करना), याच् (माँगना), नी (ले जाना) आदि।

➢ **अदादिगण की प्रमुख धातुएँ-** अद् (खाना), अस् (होना), ब्रू (कहना), दुह् (दुहना), रुद् (रोना), स्वप् (सोना), हन् (मारना), इ (जाना), आस् (बैठना), शी (सोना) आदि।

➢ **जुहोत्यादिगण की प्रमुख धातुएँ-** हु (हवन करना), भी (डरना), दा (देना), धा (धारण), करना आदि।

➢ **दिवादिगण की प्रमुख धातुएँ-** दिव् (चमकना), नृत् (नाचना), नश् (नष्ट होना), भ्रम् (घूमना), युध् (लड़ना), जन् (उत्पन्न होना) आदि।

➢ **स्वादिगण की प्रमुख धातुएँ-** सु (स्नान करना या रस निकालना), आप् (पाना), शक् (सकना) आदि।

➢ **तुदादिगण की प्रमुख धातुएँ-** तुद् (दुःख देना), इष् (चाहना), स्पृश् (छूना), प्रच्छ् (पूँछना), लिख् (लिखना), मृ (मरना), मुच् (छोड़ना) आदि।

➢ **रुधादिगण की प्रमुख धातुएँ-** रुध् (ढकना, रोकना), भुज् (पालन करना, भोजन करना), आदि।

➢ **तनादिगण की प्रमुख धातुएँ-** तन् (फैलाना), कृ (करना) आदि।

➢ **क्र्यादिगण की प्रमुख धातुएँ-** क्री (मोल लेना), ग्रह (पकड़ना), ज्ञा (जानना) आदि।

➢ **चुरादिगण की प्रमुख धातुएँ-** चुर् (चुराना), चिन्त् (सोचना), कथ् (कहना), भक्ष् (खाना) आदि।

❑❑

सन्धिः

- सम् + √धा + कि = सन्धिः (पुँल्लिङ्ग)
- 'सन्धि' शब्द का अर्थ है- मेल या योग अर्थात् मिलना।
- **''वर्णानां परस्परं विकृतिमत् सन्धानं सन्धिः''** अर्थात् वर्णों का आपस में विकारसहित मिलना 'सन्धि' कहलाता है। 'विकृति' का मतलब है- वर्णपरिवर्तन।
- इसप्रकार दो वर्णों के मेल से जो विकार (परिवर्तन) उत्पन्न होता है, उसे 'सन्धि' कहते हैं।
  जैसे-

(i) रमा + ईशः = रमेशः
(ii) रम् आ ईशः (आ + ई का मेल)
(iii) रम् ए शः (आ + ई = 'ए' हो गया)
(iv) रमेशः (गुण सन्धि)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त उदाहरण में रमा के 'मा' में विद्यमान 'आ' तथा ईशः का 'ई' मिलकर 'ए' (वर्णपरिवर्तन) हो गया।
यह वर्णविकार या वर्णपरिवर्तन ही सन्धि है।

- **संहिता-** 'सन्धि' के लिए अनिवार्य तत्त्व है- संहिता।

सूत्र - ''परः सन्निकर्षः संहिता''
अर्थात् दो वर्णों का अत्यन्त सन्निकट हो जाना ही 'संहिता' है।

- 'संहिता' के विषय में व्याकरणशास्त्र में एक नियम प्रसिद्ध है कि-

संहितैकपदे नित्या नित्या धातूपसर्गयोः।
नित्या समासे वाक्ये तु सा विवक्षामपेक्षते॥

(i) संहिता (सन्धि) एक पद में नित्य होती है।
जैसे-
नै + अकः = नायकः
पौ + अकः = पावकः
भो + अनम् = भवनम्

(ii) उपसर्ग और धातु में संहिता नित्य (अनिवार्य) होती है-
जैसे-
नि + अवसत् = न्यवसत्
प्र + ऋच्छति = प्रार्च्छति
अधि + आगच्छति = अध्यागच्छति

(iii) सामासिक पदों में संहिता अनिवार्य (नित्य) होगी-
जैसे-
देवस्य आलयः (सामासिक विग्रह)
देव + आलयः = देवालयः
कृष्णस्य अस्त्रम् (सामासिक विग्रह)
कृष्ण + अस्त्रम् = कृष्णास्त्रम्

(iv) वाक्य में संहिता (सन्धि) विवक्षाधीन होती है अर्थात् आपकी इच्छा के अधीन है कि आप चाहें तो सन्धि करें या चाहें तो न करें-
जैसे-

☆ रामः गच्छति वनम्। (सन्धि नहीं हुई)
रामो गच्छति वनम्। (सन्धि कार्य हुआ)
☆ अत्र कः अस्ति। (सन्धि नहीं हुई)
अत्र कोऽस्ति (सन्धि हुई)
☆ द्वाविंशे एव वर्षे इन्दुमती अधिजगाम स्वर्गम्। (सन्धि नहीं हुई)

- **सन्धि विच्छेद-** सन्धि युक्त वर्णों को अलग-अलग करना ही सन्धि विच्छेद है।

सन्धि = मिलना **विच्छेद** = अलग करना।
जैसे- गणेशः का सन्धिविच्छेद होगा = गण + ईशः।
'विद्यार्थी' का विच्छेद होगा = विद्या + अर्थी।

- **सन्धि में क्या होगा-----?**

1. दो वर्णों के स्थान पर एक नया वर्ण हो जाता है-
जैसे-
रवि + ईशः = रवीशः (इ+ई=ई)
सुर + इन्द्रः = सुरेन्द्रः (अ+इ=ए)
सदा + एव = सदैव (आ+ए=ऐ)

एकः पूर्वपरयोः (6.1.84) पूर्व और पर दोनों वर्णों के स्थान पर एक आदेश होगा।

2. दो वर्णों के निकट आने से केवल पूर्व वर्ण में ही विकार (परिवर्तन) होता है।
जैसे-
इति + आदिः = इत्यादिः (इ के स्थान पर य्)
मधु + अरिः = मध्वरिः (उ के स्थान पर व्)
ने + अनम् = नयनम् (ए के स्थान पर अय्)

'एकस्थाने एकादेशः' - एक के स्थान पर एक आदेश होगा।

3. दो वर्णों में से किसी वर्ण का लोप हो जाता है-
जैसे- रामः आगच्छति = राम आगच्छति (विसर्ग का लोप)
दोषः अस्ति = दोषोऽस्ति (अकार का लोप)

4. दो वर्णों में से किसी एक वर्ण का द्वित्व हो जाना।

जैसे- एकस्मिन् + अवसरे = एकस्मिन्नवसरे

5. कभी कभी दोनों वर्णों में साथ-साथ परिवर्तन होगा।

जैसे- तत् + शिवः = तच्छिवः

वाक् + हरिः = वाग्घरिः

यहाँ 'त् + श्' वर्णों में सन्धि हुई तो त् को 'च्' तथा श् को 'छ्' हो गया।

6. कभी कभी दोनों वर्णों के बीच कोई तीसरा वर्ण चला आएगा।

जैसे- वृक्ष + छाया = वृक्षच्छाया

यहाँ 'क्ष' एव 'छ' के बीच 'च्' के रूप में एक नया वर्ण आ गया।

सन्धि के प्रकार

सन्धि तीन प्रकार की होती है-

(1) स्वर सन्धि (अच् सन्धि) -

- (स्वर + स्वर = स्वरसन्धि)
- जब दो स्वरों के निकट आने से जो परिवर्तन (विकार) होता है उसे स्वर सन्धि कहते हैं।
- संक्षेप में स्वर के स्थान पर होने वाले आदेश को ही स्वर सन्धि कहेंगे।

(i) इति + अलम् = इत्यलम् (इ+अ)

(ii) कवि + इन्द्रः = कवीन्द्रः (इ+इ)

(iii) नर + ईशः = नरेशः (अ+ई)

(iv) तव + एव = तवैव (अ +ए)

(v) पो + इत्रम् = पवित्रम् (ओ+इ)

- अर्थात् स्वर वर्ण का स्वर वर्ण के साथ मेल स्वर सन्धि है। स्वर सन्धि को **अच् सन्धि** भी कहा जाता है; क्योंकि 'अच्' प्रत्याहार के अन्तर्गत ही सभी स्वर आते हैं।

(2) व्यञ्जन सन्धि (हल् सन्धि) -

- व्यञ्जन + स्वर = व्यञ्जन सन्धि
  व्यञ्जन + व्यञ्जन = व्यञ्जन सन्धि
- व्यञ्जन के बाद स्वर या व्यञ्जन वर्णों के आने पर जो विकार (परिवर्तन) उत्पन्न होगा, उसे व्यञ्जन सन्धि कहते हैं।
- संक्षेप में व्यञ्जन (हल्) के स्थान पर होने वाले आदेश को ही व्यञ्जन सन्धि कहेंगे।

जैसे- वाक् + ईशः = वागीशः(हल् + अच्)

जगत् + ईशः = जगदीशः (हल् + अच्)

तत् + लयः = तल्लयः (हल् + हल्)

सत् + जनः = सज्जनः (हल् + हल्)

स्पष्ट है कि उपर्युक्त उदाहरणों में व्यञ्जन के बाद स्वर तथा व्यञ्जन के बाद व्यञ्जन वर्ण आये हैं; अतः यहाँ व्यञ्जन सन्धि है।

(3) विसर्ग सन्धि-

ः + स्वर = विसर्ग सन्धि।

ः + व्यञ्जन = विसर्ग सन्धि।

- जब विसर्ग के बाद कोई स्वर या व्यञ्जन वर्ण आये तो विसर्ग के स्थान पर जो विकार (परिवर्तन) होगा, वह विसर्ग सन्धि कही जायेगी। विसर्ग के बाद विसर्ग नहीं आएगा क्योंकि विसर्ग से किसी शब्द का प्रारम्भ नहीं होता।
- संक्षेप में ऐसा कह सकते हैं कि- विसर्ग के स्थान पर होने वाले आदेश को ही विसर्ग सन्धि कहेंगे।

जैसे-

बालकः + गच्छति = बालको गच्छति। (ः + व्यञ्जन)

नमः + करोति = नमस्करोति (ः + व्यञ्जन)

अलिः + अयम् = अलिरयम् (ः + स्वर)

यहाँ विसर्ग के बाद स्वर या व्यञ्जन आ रहा है अतः विसर्ग सन्धि है।

1. स्वर सन्धि (अच् सन्धि) -

- पूर्व तथा पर स्वरों के मिलने से जो परिवर्तन होता है, उसे स्वरसन्धि कहेंगे। जैसे-

हिम + आलयः = हिमालयः (अ + आ)

उप + इन्द्रः = उपेन्द्रः (अ + इ)

स्पष्टीकरण- यहाँ पूर्व वर्ण है हिम के 'म' में विद्यमान - 'अ' तथा पर वर्ण है आलयः का 'आ'।

इसीप्रकार दूसरे उदाहरण में - उप के प में विद्यमान 'अ' पूर्ववर्ण है तथा इन्द्रः का 'इ' परवर्ण है। अतः यहाँ स्वर सन्धि हो रही है।

स्वरसन्धि के प्रमुख भेद

1. दीर्घ सन्धि-

सूत्र- अकः सवर्णे दीर्घः (6.1.101)

सूत्र विश्लेषण-

अकः - 'अक्' एक प्रत्याहार है जिसमें पाँच वर्ण आते हैं- अ इ उ ऋ ऌ इसी प्रत्याहार से इनके दीर्घ वर्णों (आ ई ऊ ॠ) का भी बोध होगा।

सवर्णे - सवर्ण अक् (अ इ उ ऋ ऌ) आने पर।

दीर्घः - दीर्घ आदेश (आ ई ऊ ॠ) हो जाता है।

'ऌ' वर्ण का दीर्घ नहीं होता अतः उसका सवर्णी 'ॠ' हो जाता है।

संक्षेप में- अक् + अक् = दीर्घ

अकः (पूर्व वर्ण)	सवर्णी (पर वर्ण)	दीर्घः (आदेश वर्ण)
अ आ	अ आ	आ
इ ई	इ ई	ई
उ ऊ	उ ऊ	ऊ
ऋ ॠ	ऋ ॠ	ॠ

➢ दीर्घ सन्धि में केवल पाँच वर्णों (अ, इ, उ, ऋ ऌ) में ही सन्धि कार्य होगा।

➢ ह्रस्व और दीर्घ स्वरों का मिलना चार प्रकार से हो सकता है-

(i) अ + अ = आ। जैसे- अद्य + अपि = **अद्यापि**

(ii) आ + आ = आ। जैसे- विद्या + आलयः = **विद्यालयः**

(iii) अ + आ = आ। जैसे- हिम + आलयः = **हिमालयः**

(iv) आ + अ = आ। जैसे- विद्या + अर्थी = **विद्यार्थी**

इसीप्रकार इ, उ, ऋ, ऌ में भी चार प्रकार से दीर्घ सन्धि हो सकती है।

दीर्घ सन्धि के उदाहरण

1. हिम + आलयः (सन्धि विच्छेद)
   हिम् अ + आलयः (वर्ण विच्छेद)
   हिम् आ लयः (दो वर्णों के स्थान पर दीर्घ 'आ' आदेश)
   हिमालयः (सन्धियुक्त पद)
   उपर्युक्त उदाहरण में 'हिम' के म में विद्यमान 'अ' आलयः के 'आ' से मिलकर दीर्घ 'आ' हो गया।

2. पुस्तक + आलयः (अ + आ = आ)
   पुस्तक् अ + आलयः
   पुस्तक् आ लयः
   = पुस्तकालयः

3. रवि + इन्द्रः (इ + इ = ई)
   रव् इ + इन्द्रः
   रव् ई न्द्रः
   = रवीन्द्रः

4. भानु + उदयः (उ + उ = ऊ)
   भान् उ + उदयः
   भान् ऊ दयः
   = भानूदयः

5. मातृ + ऋणम् (ऋ + ऋ = ॠ)
   मात् ऋ + ऋणम्
   मात् ॠ णम्
   मातॄणम्

कुछ अन्य उदाहरण-

वाचन + आलयः = वाचनालयः | देव + आलयः = देवालयः
शस्त्र + आगारः = शस्त्रागारः | विद्या + आलयः = विद्यालयः

इ + इ = ई

कपि + ईशः = कपीशः
गौरी + ईशः = गौरीशः
मुनि + इन्द्रः = मुनीन्द्रः
श्री + ईशः = श्रीशः
मही + इन्द्रः = महीन्द्रः
गिरि + ईशः = गिरीशः

उ + उ = ऊ

वधू + उत्सवः = वधूत्सवः
लघु + ऊर्मिः = लघूर्मिः
विधु + उदयः = विधूदयः
गुरु + उपदेशः = गुरूपदेशः
साधु + उक्तम् = साधूक्तम्
भू + ऊर्जा = भूर्जा

ऋ + ऋ = ॠ

मातृ + ऋणम् = मातॄणम्
पितृ + ऋणम् = पितॄणम्
होतृ + ऋकारः = होतॄकारः
होतृ + ऌकारः = होतॄकारः

2. गुण सन्धि

सूत्र- आद्गुणः (6.1.87)

सूत्रार्थ- अ या आ के बाद ह्रस्व या दीर्घ इ, उ, ऋ, ऌ, आयें तो दोनों के स्थान पर क्रमशः ए, ओ, अर्, अल् हो जाता है।

संक्षेप में कहें तो - आत् + अचि = गुण

पूर्ववर्ण + परवर्ण = सन्धिवर्ण

(i) अ/आ + इ/ई = ए
(ii) अ/आ + उ/ऊ = ओ
(iii) अ/आ + ऋ/ॠ = अर्
(iv) अ/आ + ऌ = अल्

गुण सन्धि के उदाहरण

1. उप + इन्द्रः (सन्धि विच्छेद)
   उप् अ + इन्द्रः (वर्ण विच्छेद)
   उप् ए न्द्रः (अ + इ = ए)
   उपेन्द्रः (गुणसन्धि)

2. हित + उपदेशः
हित् अ + उपदेशः
हित् ओ पदेशः
हितोपदेशः

3. देव + ऋषिः
देव् अ + ऋषिः
देव् अर् षिः (अ + ऋ = अर्)
देवर्षिः

4. तव + ऌकारः
तव् अ + ऌकारः
तव् अल् कारः
तवल्कारः

गुणसन्धि के कुछ प्रसिद्ध उदाहरण

अ + इ = ए

सुर + ईशः = सुरेशः
राजा + इन्द्रः = राजेन्द्रः
रमा + ईशः = रमेशः
गण + ईशः = गणेशः
महा + इन्द्रः = महेन्द्रः
उमा + ईशः = उमेशः

अ + उ = ओ

महा + उत्सवः = महोत्सवः
पीन + ऊरुः = पीनोरुः
गङ्गा + ऊर्मिः = गङ्गोर्मिः
सूर्य + उदयः = सूर्योदयः
सूर्य + ऊष्मा = सूर्योष्मा

अ + ऋ = अर्

महा + ऋषिः = महर्षिः
ग्रीष्म + ऋतुः = ग्रीष्मर्तुः
वसन्त + ऋतुः = वसन्तर्तुः
वर्षा + ऋतुः = वर्षर्तुः

अ + ऌ = अल्

तव + ऌकारः = तवल्कारः

शंका 1- अ के बाद इ आने पर 'ए' ही क्यों होता है?

समाधान

(i) क्योंकि 'अदेङ् गुणः' सूत्र से ''अ, ए, ओ'' ये तीन वर्ण ही गुणसंज्ञक हैं इसलिए -

(ii) अ का उच्चारणस्थान है- कण्ठ
इ का उच्चारणस्थान है- तालु

इसीलिए अ+इ=ए हुआ क्योंकि 'ए' का उच्चारणस्थान है- कण्ठतालु **''एदैतोः कण्ठतालु''**

शंका 2- अ के बाद उ आने पर 'ओ' ही क्यों होता है--?

समाधान- चूँकि गुणसंज्ञक वर्ण तीन ही होते हैं- अ, ए, ओ। गुणसन्धि में गुणवर्ण ही होंगे। इसका भी जवाब पहले जैसा ही है।
अ का उच्चारणस्थान है- कण्ठ
उ का उच्चारणस्थान है- ओष्ठ
इसीलिए अ+उ=ओ होगा क्योंकि 'ओ' का उच्चारणस्थान हैं- कण्ठोष्ठ। **'ओदैतौः कण्ठोष्ठम्'**

➢ इसीप्रकार अ+ऋ के बाद अ होगा। 'अ' गुण वर्ण है। परन्तु एक सूत्र है **''उरण् रपरः''** जो कहता है कि यदि ऋ या ऌ के स्थान पर अ, इ, उ आदेश होगा तो रेफ या लकार के साथ होगा। अतः यहाँ जो अ+ऋ के स्थान पर 'अ' आदेश है पर रेफ के साथ मिलकर 'अर्' हो जाएगा।

इसीप्रकार अ+ऌ = अल् हो आएगा।

3. वृद्धि सन्धि

सूत्र- वृद्धिरेचि (6.1.88)

परिभाषा- जब अ या आ के बाद ए या ऐ आये तो = **ऐ** और ओ या औ वर्ण के आने पर = **औ** हो जाता है।

संक्षेप में - आत् + एचि = वृद्धि
अ/आ + ए/ऐ = ऐ
अ/आ + ओ/औ = औ

➢ ''वृद्धिरादैच्'' सूत्र से वृद्धिसंज्ञक तीन वर्ण बताये गये हैं- आ, ऐ, औ। अतः वृद्धि सन्धि में पूर्व और पर दोनों वर्णों के मिलने से वृद्धि (आ, ऐ, औ) वर्ण ही होंगे।

वृद्धि सन्धि का सूत्र है- वृद्धिरेचि। इस सूत्र का अर्थ करने के लिए 'आद्गुणः' से 'आत्' पद ले लेंगे।
तो अर्थ होगा- **आत् + एचि = वृद्धिः।**
अ/आ + ए ओ ऐ औ = ऐ औ

वृद्धि सन्धि के उदाहरण -

अ/आ + ए/ऐ = ऐ

(i) सदा + एव (सन्धि विच्छेद)
(ii) सद् आ + एव (वर्ण विच्छेद)
(iii) सद् ऐ व (आ + ए = ऐ)
(iv) सदैव (सन्धियुक्त पद)

अ आ + ओ औ = औ

(i) जल + ओघः
(ii) जल् अ + ओघः
(iii) जल् औ घः
(iv) जलौघः

वृद्धि सन्धि के कुछ प्रसिद्ध उदाहरण

अ आ + ए ऐ = ऐ

न + एवम् = नैवम्
या + एवम् = यैवम्
लता + एषा = लतैषा
देव + ऐश्वर्यम् = देवैश्वर्यम्
मत + ऐक्यम् = मतैक्यम्
धन + एषणा = धनैषणा
पञ्च + एते = पञ्चैते
विद्या + ऐश्वर्यम् = विद्यैश्वर्यम्

अ आ + ओ औ = औ

वन + औषधिः = वनौषधिः
देव + औदार्यम् = देवौदार्यम्
महा + औषधिः = महौषधिः
वन + ओकसः = वनौकसः
पुष्प + ओकः = पुष्पौकः
कन्या + ओदनम् = कन्यौदनम्

4. यण् सन्धि

सूत्र- इको यणचि (6.1.77)
इस सूत्र में तीनों पद प्रत्याहार हैं-
इक् = इ उ ऋ ऌ
यण् = य् व् र् ल्
अच् = अ इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ
सूत्रार्थ- यदि ह्रस्व या दीर्घ इ, उ, ऋ, ऌ इक् के बाद कोई भी असमान अच् (स्वर) आये तो इ के स्थान पर य्, उ के स्थान पर व्, ऋ के स्थान पर 'र्', 'ऌ' के स्थान पर 'ल्' हो जाता है।
संक्षेप में कहें तो-

इक् + अच् = यण्

इ/ई + स्वर = य्
उ/ऊ + स्वर = व्
ऋ/ॠ + स्वर = र्
ऌ + स्वर = ल्
नोट- ध्यान रहे पूर्व और पर दोनों वर्णों के स्थान पर एकादेश नहीं होगा केवल इक् (इ उ ऋ ऌ) के स्थान पर क्रमशः यण् (य् व् र् ल्) होगा।

यण् सन्धि के उदाहरण

इ ई + अच् = य्

(1) इति + आदिः (सन्धि विच्छेद)
इत् इ + आदिः (वर्ण विच्छेद)
इत् य् + आदिः (इ + अच् = य्)
इत्यादिः (सन्धियुक्त पद)
(2) मधु + अरिः
मध् उ + अरिः
मध् व् अरिः
मध्वरिः
(3) पितृ + आदेशः
पित् ऋ + आदेशः
पित् र् आदेशः
पित्रादेशः
(4) ऌ + आकृतिः
ल् + आकृतिः
लाकृतिः

यण् सन्धि के कुछ प्रसिद्ध उदाहरण

इ/ई के स्थान पर 'य्'

यदि + अपि = यद्यपि
सुधी + उपास्यः = सुध्युपास्यः
नदी + ऊर्मिः = नद्यूर्मिः
अभि + उदयः = अभ्युदयः

उ/ऊ के स्थान पर 'व्'

सु + आगतम् = स्वागतम्
वधू + आदेशः = वध्वादेशः

ऋ / ॠ के स्थान पर र्

धातृ + अंशः = धात्रंशः
पितृ + आज्ञा = पित्राज्ञा

5. अयादि सन्धि (अयवायाव सन्धि)

सूत्र- 'एचोऽयवायावः' (6.1.78)
सूत्र विश्लेषण- 'एचः' यह प्रत्याहार है, जिसमें ए, ओ, ऐ,

औ- ये चार वर्ण आते हैं।

- अय् अव् आय् आव् - ये चार आदेश वर्ण हैं।
- इसप्रकार ए ओ ऐ औ (एच्) के बाद कोई स्वर वर्ण (अच्) आयें तो 'ए' के स्थान पर **'अय्'** ओ के स्थान पर **'अव्'** 'ऐ' के स्थान पर **'आय्'** औ के स्थान पर **'आव्'** होगा।

संक्षेप में- एच् + अचि = अयवायावः

ए + अच् = अय्

ओ + अच् = अव्

ऐ + अच् = आय्

औ + अच् = आव्

ध्यान दें- ए + अच् दोनों के स्थान पर 'अय्' आदेश नहीं हो रहा है; केवल 'ए' के स्थान पर 'अय्' होगा।

अयादि सन्धि के उदाहरण-

ए + अच् = अय्

1.चे + अनम् (सन्धिविच्छेद)
च् ए + अनम् (वर्ण विच्छेद)
च् अय् अनम् (ए के स्थान पर 'अय्')
चयनम् (सन्धियुक्त पद)

2. ने + अनम् = नयनम्
3. शे + अनम् = शयनम्
4. हरे + ए = हरये
5. मुने + ए = मुनये

ओ + अच् = अव्

1. पवनः

सन्धिविच्छेद- पो + अनः

वर्णविच्छेद- प् ओ + अनः

'ओ' के स्थान पर 'अव्' - प् अव् + अनः

सन्धियुक्त पद = पवनः

2. भो + अनम् = भवनम्
3. साधो + ए = साधवे
4. श्रो + अनम् = श्रवणम्
5. लो + अनम् = लवणम्
6. गुरो + ए = गुरवे
7. भो + अति = भवति
8. गौ + एषणा = गवेषणा
9. पो + इत्रम् = पवित्रम्

ऐ + अच् = आय्

1. (i) सन्धि विच्छेद = नै + अकः
(ii) वर्ण विच्छेद = न् ऐ + अकः
(iii) 'ऐ' के स्थान पर 'आय्' = न् आय् अकः
(iv) सन्धियुक्त पद = नायकः
2. गै + इका = गायिका
3. शै + अकः = शायकः
4. दै + अकः = दायकः
5. गै + अनम् = गायनम्
6. गै + अकः = गायकः

औ + अच् = आव्

1. पौ + अकः सन्धिविच्छेद
प् औ + अकः वर्णविच्छेद
प् आव् + अकः औ के स्थान पर 'आव्' आदेश
पावकः सन्धियुक्त पद

2. एतौ + अपि = एतावपि
3. द्वौ + एव = द्वावेव
4. बालकौ + अपि = बालकावपि
5. पौ + अनः = पावनः
6. भौ + उकः = भावुकः
7. पौ + अनः = पावनः
8. नौ + इकः = नाविकः

6.पूर्वरूप सन्धि

सूत्र- एङः पदान्तादति (6.1.109)

सूत्र विश्लेषण- एङ् = ए, औ (यह एक प्रत्याहार है)

पदान्तात् = पद के अन्त में

अति = ह्रस्व 'अ' के आने पर

परिभाषा- जब पदान्त ए या ओ के बाद ह्रस्व 'अ' आये तो 'अ' को पूर्वरूप हो जाता है।

पूर्वरूप- अपने रूप को छोड़कर पूर्व वर्ण जैसा हो जाना- पूर्वरूप है। अर्थात् 'अ' वर्ण ए या ओ में जाकर मिल जायेगा, और ह्रस्व 'अ' की जगह अवग्रह (ऽ) का चिह्न लग जाता है।

संक्षेप में - पदान्त एङ् + अ = पूर्वरूप

ए ओ + अ = ऽ

पूर्वरूप सन्धि के उदाहरण

हरे + अव (सन्धिविच्छेद)

हर् ए + अव (वर्ण विच्छेद)

हर् ए + ऽव ('अ' जाकर पूर्ववर्ण 'ए' में मिल गया)

हरेऽव (सन्धियुक्त पद)

विष्णो + अव (सन्धिविच्छेद)
विष्ण् ओ + अव (वर्ण विच्छेद)
विष्ण् ओ ऽ व ('अ' जाकर पूर्ववर्ण 'ओ' मे मिल गया)
विष्णोऽव (सन्धियुक्त पद)

ए + अ = ऽ

रमे + अत्र = रमेऽत्र
वने + अत्र = वनेऽत्र

ओ + अ = ऽ

को + अपि = कोऽपि
बालको + अपि = बालकोऽपि
को + अवादीत् = कोऽवादीत्
बालो + अवदत् = बालोऽवदत्

7. पररूप सन्धि

सूत्र- एङि पररूपम् (6.1.94)
परिभाषा- अकारान्त उपसर्ग के बाद ए या ओ (एङ्) से प्रारम्भ होने वाली धातुओं के आने पर पररूप हो जाता है।
पररूप- पर (बाद) वाले वर्ण के समान हो जाना ही पररूप है।

पूर्ववर्ण	परवर्ण	सन्धियुक्तवर्ण
अवर्णान्त उपसर्ग +	ए ओ से प्रारम्भ होने वाले धातुरूप	पररूप (ए, ओ के समान रूप)

पररूप सन्धि के उदाहरण

(1) प्र + एजते (सन्धि विच्छेद)
प्र् अ + एजते (वर्ण विच्छेद)
प्र् अ + एजते (परवर्ण 'ए' में 'अ' मिल गया)
प्रेजते

(2) उप + ओषति (सन्धि विच्छेद)
उप् अ + ओषति (वर्ण विच्छेद)
उप् अ + ओषति ('अ' जाकर परवर्ण 'ओ' में मिल गया)
उपोषति (सन्धियुक्त पद)
प्र + ओषति = **प्रोषति**

8. प्रकृतिभाव सन्धि

सूत्र- प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम् (5.1.125)
सूत्रार्थ- प्लुत और प्रगृह्य वर्णों को प्रकृतिभाव होता है, यदि बाद में स्वर वर्ण आयें तो।
प्रकृतिभाव- प्रकृतिभाव का अर्थ है- कोई भी सन्धि न होना अर्थात् ज्यों का त्यों रहना।
संक्षेप में- प्लुत/प्रगृह्य + अच् = प्रकृतिभाव
उदाहरण- हरी + एतौ = हरी एतौ
विष्णू + इमौ = विष्णू इमौ
गङ्गे + अमू = गङ्गे अमू
पचेते + इमौ = पचेते इमौ
विशेष- दीर्घ ईकारान्त ऊकारान्त, एकारान्त द्विवचन की प्रगृह्य संज्ञा होती है। अतः **हरी, विष्णू, गङ्गे** की प्रगृह्यसंज्ञा है। प्रगृह्यसंज्ञा होने के कारण यहाँ प्रकृतिभाव हुआ।
नहीं तो हरी +एतौ = हर्येतौ बन जाता यण् सन्धि से।

स्वरसन्धि तालिका

सन्धि का नाम	सन्धिसूत्र	सूत्रार्थ	उदाहरण
1. यण् सन्धि	इको यणचि	**इक् + अच् = यण्**	यदि + अपि = यद्यपि
		इ/ई + असमान अच् =य्	मधु + अरिः = मध्वरिः
		उ/ऊ + अच् (असमान) = व्	पितृ + आदेशः = पित्रादेशः
		ऋ ॠ + अच् (असमान) = र्	ऌ + आकृतिः = लाकृतिः
		ऌ + अच् (असमान) = ल्	
2. अयादि सन्धि	एचोऽयवायावः	**एच् + अच् = अयवायाव**	
		ए + अच् = अय्	ने + अनम् = नयनम्
		ओ + अच् = अव्	पो + अनः = पवनः
		ऐ + अच् = आय्	नै + अकः = नायकः
		औ + अच् = आव्	पौ + अकः = पावकः

3. गुण सन्धि	आद्गुणः	**आत् + अच् = गुण**	
		अ/आ + इ/ई = ए	रमा + ईशः = रमेशः
		अ/आ + उ/ऊ = ओ	हित + उपदेशः = हितोपदेशः
		अ/आ + ऋ/ॠ = अर्	देव + ऋषिः = देवर्षिः
		अ/आ + ऌ = अल्	तव + ऌकारः = तवल्कारः
4. वृद्धि सन्धि	वृद्धिरेचि	**आत् + एच् = वृद्धि**	
		अ/आ + ए/ऐ = ऐ	सदा + एव = सदैव महा + ऐश्वर्यम् = महैश्वर्यम्
		अ/आ + ओ/औ = औ	जल + ओघः = जलौघः महा + औषधिः = महौषधिः
5. दीर्घ सन्धि	अकः सवर्णे दीर्घः	**अक् + अक् = दीर्घः**	
		अ/आ + अ/आ = आ	हिम + आलयः = हिमालयः
		इ/ई + इ/ई = ई	रवि + इन्द्रः = रवीन्द्रः
		उ/ऊ + उ/ऊ = ऊ	भानु + उदयः = भानूदयः
		ऋ ॠ + ऋ/ॠ = ॠ	मातृ + ऋणम् = मातॄणम्
6. पूर्वरूप सन्धि	एङः पदान्तादति	**एङ् + अ = पूर्वरूप**	
		ए + अ = (ऽ) पूर्वरूप	हरे + अव = हरेऽव
		ओ + अ = (ऽ) पूर्वरूप	विष्णो + अव = विष्णोऽव
7. पररूप सन्धि	एङि पररूपम्	**अवर्णान्त उपसर्ग + एङादिधातु = पररूप**	प्र + एजते = प्रेजते
		प्र, उप + ए, ओ धातु = पररूप	उप + ओषति = उपोषति
8. प्रकृतिभाव	प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम्	प्लुत/प्रगृह्य + अच् = प्रकृतिभाव	हरी + एतौ = हरी एतौ विष्णू + इमौ = विष्णू इमौ गङ्गे + अमू = गङ्गे अमू

स्वरसन्धि के कुछ अपवाद सूत्र/वार्तिक

(1) अक्षादूहिन्यामुपसंख्यानम् - 'अक्ष' शब्द के बाद 'ऊहिनी' शब्द के आने पर पूर्व और पर दोनों के (अ+ऊ) स्थान पर वृद्धिसंज्ञक 'औ' वर्ण आदेश होता है।

अक्ष + ऊहिनी

अक्ष् अ + ऊहिनी

अक्ष् औ हिनी

अक्षौहिणी

नोट- पूर्वपदात्संज्ञायामगः (8.4.3) सूत्र से 'नकार' के स्थान पर 'णकार' आदेश होकर 'अक्षौहिणी' प्रयोग सिद्ध हो जाता है।

- अक्षौहिणी सेना होती है, जिसमें 21870 रथ, 21870 हाथी, 65610 घोड़े और 109350 पैदल सैनिक होते हैं।

(2) प्रादूहोढोढ्येषैष्येषु (वा.) - 'प्र' उपसर्ग के बाद ऊहः, ऊढः, ऊढिः, एषः, और एष्यः पद आयें तो पूर्व और पर दोनों के स्थान पर वृद्धिसंज्ञक वर्ण आदेश होते हैं।

(i) प्र + ऊहः
प्र् अ + ऊहः
प्र् औ हः
प्रौहः (उत्तम अर्थ करने वाला)

(ii) प्र + ऊढः
प्र् अ + ऊढः
प्र औ ढः
प्रौढः (परिपक्व)

(iii) प्र + ऊढिः
प्र् अ + ऊढिः
प्र् औ ढिः
प्रौढिः (परिपक्वता, प्रौढता)

उपर्युक्त उदाहरणों में गुण सन्धि हो रही थी, किन्तु यहाँ गुण को बाधकर वृद्धिसन्धि हो रही है।

(iv) प्र + एषः
प्र् अ + एषः
प्र् ऐ षः
प्रैषः (प्रेरणा)

(v) प्र + एष्यः
प्र् अ + एष्यः
प्र् ऐ ष्यः
प्रैष्यः (प्रेरणीय/सेवक आदि)

नोट- इन दोनों उदाहरणों में वृद्धि सन्धि तो हो रही थी किन्तु ''एङि पररूपम्'' सूत्र से पररूप भी प्राप्त हो रहा था। यदि पररूप हो जाता तो प्रेषः, प्रेष्यः ऐसे अशुद्ध रूप बन जाते।

(3) ऋते च तृतीयासमासे (वा.) - यदि पूर्व में अवर्ण हो और बाद में 'ऋत' शब्द हो और दोनों शब्दों में तृतीया तत्पुरुष समास हुआ हो तो पूर्व और पर दोनों वर्णों के स्थान पर वृद्धिसंज्ञक वर्ण हो जाता है।

सुखेन ऋतः = सुखार्तः (तृतीया तत्पुरुष समास)
सुख + ऋतः = सुखार्तः (सुख से युक्त) - वृद्धिसन्धि
दुःख + ऋतः = दुःखार्तः (दुःख से युक्त) - वृद्धिसन्धि
कष्ट + ऋतः = कष्टार्तः (कष्ट से युक्त) - वृद्धिसन्धि

किन्तु परमश्चासौ ऋतः = परमर्तः यहाँ वृद्धि नहीं हुई क्योंकि यहाँ तृतीया तत्पुरुष समास नहीं, बल्कि कर्मधारय समास है।

परम + ऋतः = परमर्तः (गुण सन्धि)

4. प्रवत्सतरकम्बलवसनार्णदशानामृणे (वार्तिक)- प्र, वत्सतर, कम्बल, वसन, ऋण तथा दश- इन छह शब्दों के बाद यदि 'ऋण' शब्द आये तो पूर्व और पर दोनों के स्थान पर वृद्धिसंज्ञक वर्ण हो जाता है।

(i) प्र + ऋणम्
प्र् अ + ऋणम्
प्र आर् णम्
प्रार्णम् (अधिक ऋण)

(ii) वत्सतर + ऋणम् = वत्सतरार्णम् (बछड़े के लिए ऋण)
(iii) कम्बल + ऋणम् = कम्बलार्णम् (कम्बल के लिए ऋण)
(iv) वसन + ऋणम् = वसनार्णम् (वस्त्र के लिए ऋण)
(v) ऋण + ऋणम् = ऋणार्णम् (ऋण चुकाने के लिए ऋण)
(vi) दश + ऋणम् = दशार्णम् (दस प्रकार के जल वाला देश)

5. उपसर्गादृति धातौ- अवर्णान्त उपसर्ग के बाद 'ऋ' से प्रारम्भ होने वाली धातु हो तो पूर्व और पर के स्थान पर वृद्धिसंज्ञक एक आदेश होता है।

जैसे-
प्र + ऋच्छति = प्रार्च्छति
उप + ऋच्छति = उपार्च्छति
प्र + ऋणोति = प्रार्णोति
प्र + ऋञ्जते = प्रार्ञ्जते

(6) शकन्ध्वादिषु पररूपं वाच्यम् (वार्तिक)- शकन्धु आदि गण में टिसंज्ञक पूर्व और पर वर्णों के स्थान पर पररूप सन्धि होती है।

जैसे-
(i) शक + अन्धुः = शकन्धुः (शक नामक देश का कूप)
(ii) कर्क + अन्धुः = कर्कन्धुः (कर्क नामक राजा का कूप)
(iii) मनस् + ईषा = मनीषा (बुद्धि)
(iv) मार्त + अण्डः = मार्तण्डः (सूर्य)
(v) पतत् + अञ्जलिः = पतञ्जलिः (पतञ्जलि)

(7) स्वादीरेरिणोः (वार्तिक)- जब 'स्व' शब्द के बाद 'ईर' और 'ईरिन्' आदि शब्द आयें तो 'स्व' के अकार 'ईर्' और 'ईरिन्' के ईकार के स्थान में ''ऐ'' वृद्धि हो जाता है।

जैसे-
स्व + ईरः = स्वैरः (स्वेच्छाचारी)
स्व + ईरिणी = स्वैरिणी (स्वेच्छाचारिणी)
स्व + ईरम् = स्वैरम् (स्वेच्छाचारिता)
स्व + ईरी = स्वैरी (स्वेच्छाचारी)

व्यञ्जन (हल्) सन्धि

व्यञ्जन सन्धि- व्यञ्जन के बाद स्वर या व्यञ्जन आने पर जो विकार होता है, उसे व्यञ्जन सन्धि कहते हैं।
जैसे-
(i) वाक् + ईशः = वागीशः (व्यञ्जन + स्वर)
(ii) सत् + चित् = सच्चित् (व्यञ्जन + व्यञ्जन)

स्पष्टीकरण- यहाँ प्रथम उदाहरण में 'क्' व्यञ्जन के बाद 'ई' स्वर है तथा दूसरे उदाहरण में 'त्' व्यञ्जन के बाद 'च्' व्यञ्जन है। इससे स्पष्ट होता है कि व्यञ्जन वर्णों के बाद स्वर आये चाहे व्यञ्जन दोनों ही स्थितियों में व्यञ्जन सन्धि होगी।

1. श्चुत्व सन्धि

सूत्र- स्तोः श्चुना श्चुः
सूत्र विश्लेषण-
स्तु - सकार तवर्ग = स् त् थ् द् ध् न्
श्चु - शकार चवर्ग = श् च् छ् ज् झ् ञ्

सूत्रार्थ- सकार या तवर्ग (त् थ् द् ध् न्) के पहले या बाद में शकार या चवर्ग (च् छ् ज् झ् ञ्) का योग होने पर स् के स्थान पर श् तथा तवर्ग के स्थान पर चवर्ग हो जाता है।

स्थानी	आदेश	योग
स्	श्	श् या
त्	च्	चवर्ग का
थ्	छ्	योग पहले हो
द्	ज्	या बाद में।
ध्	झ्	
न्	ञ्	

उदाहरण-
रामस् + शेते = रामश्शेते

स्पष्टीकरण- इस उदाहरण में 'रामस्' में विद्यमान सकार के स्थान पर शकार हो गया; क्योंकि 'शेते' में शकार आ रहा था इसलिए।

ध्यान दें- इस सूत्र में सकार के बाद शकार आये ऐसा नहीं कहा गया है; अपितु योग होने पर कहा गया है। 'योग' का अर्थ है- 'मिलना'। तात्पर्य यह हुआ कि- 'स्तु' (सकार तवर्ग) पहले हो श्चु बाद में हो या श्चु (शकार चवर्ग) पहले हो 'स्तु' बाद में हो, बदलेगा 'स्तु' ही। जैसे-
(i) सत् + चित् = सच्चित्
(ii) याच् + ना = याच्ञा

- उपर्युक्त उदाहरण में 'सत्' के त् का 'चित्' के 'च्' से योग होने पर 'सत्' के 'त्' के स्थान पर 'च्' होकर 'सच्चित्' बन गया।
- दूसरे उदाहरण में 'याच्' के 'च्' का 'ना' के 'न्' से योग होने पर 'न्' के स्थान पर चवर्ग का 'ञ्' हो गया। जबकि 'ना' परवर्ण है तब भी।
- इससे सिद्ध हुआ कि सकार और तवर्ग चाहे पूर्व में हो चाहे पर में उनके स्थान पर ही शकार या चवर्ग आदेश के रूप में होंगे।

अवश्य देखें- श्चुत्व सन्धि में हमेशा-
स् के स्थान पर **श्**
त् के स्थान पर **च्**
थ् के स्थान पर **छ्**
द् के स्थान पर **ज्**
ध् के स्थान पर **झ्**
न् के स्थान पर **ञ्** होगा।

स्तु (सकार तवर्ग) स्थानी हैं, श्चु (शकार चवर्ग) आदेश हैं।

अन्य उदाहरण- सद् + जनः = सज्जनः
कस् + चित् = कश्चित्
शाङ्गिन् + जयः = शाङ्गिञ्जयः
बृहद् + झरः = बृहज्झरः
दुस् + चरित्रः = दुश्चरित्रः
उद् + ज्वलः = उज्ज्वलः
उत् + चारणम् = उच्चारणम्

2. ष्टुत्व सन्धि

सूत्र- 'ष्टुना ष्टुः' (8.4.41)
सूत्रार्थ- स्तु (सकार तवर्ग) के स्थान पर 'ष्टु' (षकार टवर्ग) होता है, 'ष्टु' के योग में।
स्तु = सकार तवर्ग- स् त् थ् द् ध् न्
ष्टु = षकार टवर्ग- ष् ट् ठ् ड् ढ् ण्
अर्थात् सकार या तवर्ग के पहले या बाद में षकार या टवर्ग (ट् ठ् ड् ढ् ण्) का योग होने पर स् को ष् तथा तवर्ग को टवर्ग हो जाता है।

स्थानी	आदेश	योग
स्	ष्	षकार या
त्	ट्	टवर्ग का योग
थ्	ठ्	होने पर
द्	ड्	
ध्	ढ्	
न्	ण्	

ध्यान रहे- सकार तवर्ग के पहले या सकार तवर्ग के बाद में षकार टवर्ग होने पर **स्** के स्थान पर '**ष्**'।
'**त्**' के स्थान पर '**ट्**'। '**थ्**' के स्थान पर '**ठ्**'।
द् के स्थान पर '**ड्**'। '**ध्**' के स्थान पर '**ढ्**'।
'**न्**' के स्थान पर '**ण्**' होता है।

उदाहरण-

1. तत् + टीका
   तट् + टीका (त् के स्थान पर ट्)
   तट्टीका
2. रामस् + षष्ठः
   रामष् + षष्ठः (स् के स्थान पर ष्)
   रामष्षष्ठः
3. उद् + डयनम्
   उड् + डयनम् (द् के स्थान पर ड्)
   उड्डयनम्
4. कृष् + नः
   कृष् + णः (न् के स्थान पर ण्)
   कृष्णः
5. दुष् + तः
   दुष् + टः (त् के स्थान पर ट्)
   दुष्टः
6. चक्रिन् + ढौकसे
   चक्रिण् + ढौकसे (न् के स्थान पर ण्)
   चक्रिण्ढौकसे
7. विष् + नुः
   विष् + णुः (न् के स्थान पर ण्)
   विष्णुः
8. पेष् + ता
   पेष् + टा (त् के स्थान पर ट्)
   पेष्टा

3.1 जश्त्व सन्धि

सूत्र- झलां जशोऽन्ते (8.2.39)

सूत्रविवरण- पदान्त झल् के स्थान पर 'जश् ' आदेश होता है। 'झल् ' एक प्रत्याहार है जिसमें - वर्णों के पहले, दूसरे, तीसरे, चौथे और ऊष्म वर्ण आते हैं-

झल् = झ भ घ ढ ध
ज ब ग ड द
ख फ छ ठ थ
च ट त क प
श ष स ह

जश् = ज ब ग ड द (वर्गों के तीसरे अक्षर)

स्थानी (झल्)	आदेश (जश्)
(i) च् छ् ज् झ् श्	ज्
(ii) प् फ् ब् भ्	ब्
(iii) क् ख् ग् घ् ह्	ग्
(iv) ट् ठ् ड् ढ् ष्	ड्
(v) त् थ् द् ध् स्	द्

ध्यान रहे- झल् प्रत्याहार के बाद अच् हो, या हल् हो, या कोई वर्ण हो या न हो तो भी जश् होगा।

नोट- जश्त्व सन्धि दो प्रकार की होती है-
(i) पदान्त जश्त्व सन्धि
(ii) अपदान्त जश्त्व सन्धि

उदाहरण-

1. अच् + अन्तः
   अज् + अन्तः
   अजन्तः
2. वाक् + ईशः
   वाग् + ईशः
   वागीशः
3. षट् + आननः
   षड् + आननः
   षडाननः
4. दिक् + अम्बरः
   दिग् + अम्बरः
   दिगम्बरः
5. एतत् + मुरारिः
   एतद् + मुरारिः
   एतद् मुरारिः
6. सुप् + ईशः
   सुब् + ईशः
   सुबीशः
7. जगत् + ईशः
   जगद् + ईशः
   जगदीशः
8. वाक् + अत्र
   वाग् + अत्र
   वागत्र
9. दिक् + गजः
   दिग् + गजः
   दिग्गजः
10. चित् + आनन्दः
    चिद् + आनन्दः
    चिदानन्दः
11. सुप् + अन्तः
    सुब् + अन्तः
    सुबन्तः
12. कृत् + अन्तः
    कृद् + अन्तः
    कृदन्तः
13. तिप् + अन्तः
    तिब् + अन्तः
    तिबन्तः
14. अप् + जम्
    अब् + जम्
    अब्जम्
15. महत् + दानम्
    महद् + दानम्
    महद्दानम्

3.2 अपदान्त जश्त्व सन्धि-

सूत्र- झलां जश् झशि (8.4.53)
सूत्रविश्लेषण- झलाम् - झल् वर्णों के स्थान पर
जश् - जश् वर्ण होते हैं
झशि - झश् वर्णों के (बाद) में आने पर
सूत्रार्थ- झल् वर्णों के बाद झश् वर्णों के आने पर झल् के स्थान पर जश् होगा।

(i) 'झल्' एक प्रत्याहार है, जिसमें वर्गों के 1,2,3,4 और श् ष् स् ह् आते हैं।

झल् = झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द
ख फ छ ठ थ च ट त क प
श ष स ह

(ii) 'जश्' एक प्रत्याहार है, जिसमें वर्गों के तीसरे वर्ण आते हैं
जश् = ज ब ग ड द।

(iii) 'झश्' भी एक प्रत्याहार है जिसमें वर्गों के तीसरे और चौथे वर्ण आते हैं।
झश् = झ भ घ ढ ध
ज ब ग ड द

स्थानी (झल्)	आदेश (जश्)
क् ख् ग् घ् ह्	ग्
च् छ् ज् झ् श्	ज्
ट् ठ् ड् ढ् ष्	ड्
त् थ् द् ध् स्	द्
प् फ् ब् भ्	ब्

ध्यान दें- 'स्थानेऽन्तरतमः' की सहायता से उच्चारणस्थान की साम्यता को लेकर ज् ब् ग् ड् द् (जश्) आदेश होता है।

उदाहरण-

(1) क्रुध् + धः
क्रुद् + धः
क्रुद्धः

(2) शुध् + धः
शुद् + धः
शुद्धः

(3) युध् + धः
युद् + धः
युद्धः

(4) लभ् + धः
लब् + धः
लब्धः

(5) दुह् + धम्
दुग् + धम्
दुग्धम्

(6) वृध् + धिः
वृद् + धिः
वृद्धिः

(7) रुणध् + धिः
रुणद् + धिः
रुणद्धिः

(8) बोध् + धा
बोद् + धा
बोद्धा

4. चर्त्व सन्धि-

सूत्र- खरि च (8.4.55)
सूत्रार्थ- यदि झल् के बाद खर् आये तो झल् के स्थान पर 'चर्' होगा।

- 'झल्' एक प्रत्याहार है जिसमें वर्गों के प्रथम, द्वितीय, तृतीय चतुर्थ, एवं श ष स ह वर्ण आते हैं।
- **झल् =** झ भ घ ढ ध
  ज ब ग ड द
  ख फ छ ठ थ
  च ट त क प
  श ष स ह
- 'खर्' एक प्रत्याहार है जिसमें वर्गों के प्रथम, द्वितीय वर्ण और श् ष् स् आते हैं।
  खर् = ख् फ् छ् ठ् थ्
  च् ट् त् क् प्
  श् ष् स्
- 'खरि च' सूत्र का सम्पूर्ण अर्थ करने के लिए 'झलाम्' और 'चर्' की अनुवृत्ति आती है।

स्थानी (झल्)	आदेश (चर्)	साम्य (उच्चारण स्थान)	परवर्ण (खर्)
क् ख् ग् घ्	क्	कण्ठ	ख् फ् छ्
च् छ् ज् झ्	च्	तालु	ठ् थ् य्
ट् ठ् ड् ढ्	ट्	मूर्धा	ट् त् क्
त् थ् द् ध्	त्	दन्त	प् श् ष्
प् फ् ब् भ्	प्	ओष्ठ	स्

- श् ष् स् के स्थान पर श् ष् स् आदेश होगा

उदाहरण-

(1) सद् + कारः
सत् + कारः
सत्कारः

(2) सद् + पात्रम्
सत् + पात्रम्
सत्पात्रम्

(3) दिग् + पालः
दिक् + पालः
दिक्पालः

(4) भेद् + तुम्
भेत् तुम्
भेत्तुम्

(5) छेद् + तव्यम्
छेत् + तव्यम्
छेत्तव्यम्

(6) लिभ् + सा
लिप् + सा
लिप्सा

5. अनुस्वार सन्धि-

सूत्र- मोऽनुस्वारः (8.3.23)

सूत्रार्थ- पदान्त 'म्' के बाद कोई भी व्यञ्जन (हल्) आये तो 'म्' के स्थान पर अनुस्वार (ं) हो जाता है।

पूर्ववर्ण	परवर्ण	सन्धिवर्ण
पदान्त मकार	हल्	ं अनुस्वार

उदाहरण-

(i) हरिम् + वन्दे = हरिं वन्दे

(ii) त्वम् + करोषि = त्वं करोषि

(iii) रामम् + भजामि = रामं भजामि

(iv) जलम् + वहति = जलं वहति

(v) धनम् + यच्छ = धनं यच्छ

(vi) दुःखम् + सहते = दुःखं सहते

6. तोर्लि सन्धि-

सूत्र- तोर्लि (8.4.60)

सूत्रविश्लेषण- तोः - तवर्ग के बाद

लि - ल् वर्ण हो तो

➢ **परसवर्ण -** परसवर्ण 'ल्' हो जाता है।

➢ 'अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः' से 'परसवर्ण' की अनुवृत्ति।

सूत्रार्थ- यदि तवर्ग (त् थ् द् ध् न्) के बाद 'ल्' वर्ण आये तो तवर्ग के स्थान पर 'ल्' हो जाता है।

पूर्ववर्ण	परवर्ण	सन्धिवर्ण
त् थ् द् ध् न्	ल्	ल्

उदाहरण-

(i) उद् + लिखितम्
उल् + लिखितम्
उल्लिखितम्

(ii) तद् + लीनः
तल् + लीनः
तल्लीनः

(iii) उद् + लेखः
उल् + लेखः
उल्लेखः

(iv) विद्वान् + लिखति
विद्वाल्ँ + लिखति
विद्वाँल्लिखति

(v) तद् + लयः
तल् + लयः
तल्लयः

(vi) महान् + लाभः
महाल्ँ + लाभः
महाँल्लाभः

(vii) विपद् + लीनः
विपल् + लीनः
विपल्लीनः

(viii) जगद् + लीयते
जगल् + लीयते
जगल्लीयते

(ix) यद् + लक्षणम्
यल् + लक्षणम्
यल्लक्षणम्

(x) विद्युद् + लेखा
विद्युल् + लेखा
विद्युल्लेखा

(xi) धनवान् + लुनीते
धनवाल्ँ लुनीते
धनवाँल्लुनीते

7. परसवर्ण सन्धि-

सूत्र- अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः (8.4.58)

सूत्रविश्लेषण-

अनुस्वारस्य- अनुस्वार (ं) के स्थान पर

परसवर्णः - परसवर्ण होता है।

ययि - 'यय्' प्रत्याहार का वर्ण बाद में आये तो।

सूत्रार्थ- अपदान्त अनुस्वार के बाद यदि यय् प्रत्याहार का कोई भी व्यञ्जन आये तो अनुस्वार को परसवर्ण हो जाता है।

➢ **परसवर्ण-** परस्य सवर्णः परसवर्णः। परसवर्ण का अर्थ है- पर = (बाद) में जो वर्ण हैं उसके सवर्णियों में से आदेश होना।

➢ अर्थात् अनुस्वार के बाद किसी भी वर्ग का कोई भी व्यञ्जन आने पर अनुस्वार के स्थान पर उस वर्ग का पञ्चम वर्ण हो जाता है।

यय् - 'यय्' एक प्रत्याहार है जिसमें श् ष् स् ह् को छोड़कर सभी व्यञ्जन वर्ण आते हैं।

यय् = य् व् र् ल्
ञ् म् ङ् ण् न्
झ् भ् घ् ढ् ध्
ज् ब् ग् ड् द्
ख् फ् छ् ठ् थ्
च् ट् त् क् प्।

पूर्ववर्ण (अनुस्वार)	परवर्ण (यय्)	सन्धिवर्ण (परसवर्ण)
अनुस्वार (ं)	क् ख् ग् घ् ङ्	ङ्
अनुस्वार (ं)	च् छ् ज् झ् ञ्	ञ्
अनुस्वार (ं)	ट् ठ् ड् ढ् ण्	ण्
अनुस्वार (ं)	त् थ् द् ध् न्	न्
अनुस्वार (ं)	प् फ् ब् भ् म्	म्

उदाहरण-

(1) गं + गा = **गङ्गा/गङ्गा**

(2) शं + खः = **शङ्खः/शङ्खः**

(3) अं + कः = **अङ्कः/अङ्कः**
(4) अं + कितः = **अङ्कितः**
(5) लं + घनम् = **लङ्घनम् / लङ्घनम्**
(6) अं + चितः = **अञ्चितः**
(7) मं + चः = **मञ्चः**
(8) झं + झा = **झञ्झा**
(9) खं + जः = **खञ्जः**
(10) लां + छनम् = **लाञ्छनम्**
(11) कुं + ठितः = **कुण्ठितः**
(12) घं + टा = **घण्टा**
(13) मुं + डा = **मुण्डा**
(14) दं + डः = **दण्डः**
(15) खं + ड = **खण्डः**
(16) शां + त = **शान्तः**
(17) मं + दः = **मन्दः**
(18) बं + धनम् = **बन्धनम्**
(19) मं + थनम् = **मन्थनम्**
(20) नं + दति = **नन्दति**
(21) कं + पनम् = **कम्पनम्**
(22) गुं + फितः = **गुम्फितः**
(23) लं + बः = **लम्बः**
(24) स्तं + भः = **स्तम्भः**
(25) पं + पा = **पम्पा**

➢ **विशेष-** अनुस्वार तभी अनुस्वार रह सकता है, जब उसके बाद य् व् र् ल् या श् ष् स् ह् हों। जैसे-
संयमः, संवारः, संरम्भः, संलापः, संयोगः, संशयः, संसारः, संहारः आदि।

➢ **वा पदान्तस्य-** पदान्त अनुस्वार के स्थान पर परसवर्ण विकल्प से होता है। यय् प्रत्याहार के वर्ण बाद में आयें तो। अर्थात् पदान्त अनुस्वार में यह नियम वैकल्पिक है। जैसे-
(i) कार्यं करोति = कार्यं करोति / कार्यङ्करोति।
(ii) किं करोषि = किं करोषि / किङ्करोषि
(iii) किं चित् = किंचित् / किञ्चित्
(iv) कथं चलसि = कथं चलसि / कथञ्चलसि।
(v) त्वं करोषि = त्वं करोषि / त्वङ्करोषि

8. अनुनासिक सन्धि

सूत्र- यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा (8.4.45)
सूत्र विश्लेषण- यरः = पदान्त यर् के स्थान पर
अनुनासिके = अनुनासिक वर्ण बाद में आये तो
अनुनासिकः = अनुनासिक वर्ण होगा।
वा = विकल्प से।
सूत्रार्थ- अनुनासिक वर्ण यदि बाद में आयें तो पदान्त यर् वर्णों के स्थान पर विकल्प से अनुनासिक आदेश होता है।
➢ **अनुनासिक होने का अर्थ है-** उसी वर्ग का पञ्चमाक्षर हो जाना
यर् - यर् एक प्रत्याहार है जिसमें ह को छोड़कर सभी व्यञ्जन (हल्) वर्ण आते हैं।

पूर्ववर्ण	परवर्ण	सन्धिवर्ण
पदान्त यर्	**अनुनासिक वर्ण**	**अनुनासिक**
क् ख् ग् घ् ङ्	ङ् ञ् ण् न् म्	ङ्
च् छ् ज् झ् ञ्	में से कोई भी	ञ्
ट् ठ् ड् ढ् ण्	अनुनासिक वर्ण	ण्
त् थ् द् ध् न्	बाद में आये	न्
प् फ् ब् भ् म्		म्

जैसे-
(i) प्राक् + मुखः
प्राङ् + मुखः
प्राङ्मुखः

(ii) षट् + मासाः
षण् + मासाः
षण्मासाः

(iii) षट् + मुखः
षण् + मुखः
षण्मुखः

(iv) सद् + मतिः
सन् + मतिः
सन्मतिः

(v) दिक् + नागः
दिङ् + नागः
दिङ्नागः

(vi) जगत् + नाथः
जगन् + नाथः
जगन्नाथः

(vii) तत् + मित्रम्
तन् + मित्रम्
तन्मित्रम्

(viii) एतद् + मुरारिः
एतन् + मुरारिः
एतन्मुरारिः

ध्यान रहे- यह सन्धि वैकल्पिक है, सन्धि न होने पर जो सन्धि विच्छेद है, वही रूप रहेगा।

प्रत्यये भाषायां नित्यम् - (वार्तिक)

अनुनासिक वर्णों से प्रारम्भ होने वाले प्रत्ययों के बाद में आने पर पदान्त यर् के स्थान पर नित्य से अनुनासिक होता है।

(i) तत् + मात्रम्
तन् मात्रम्
= तन्मात्रम्

(ii) चित् + मयम्
चिन् + मयम्
= चिन्मयम्

(iii) वाक् + मयम्
वाङ् मयम्
= वाङ्मयम्

व्यञ्जन सन्धि तालिका

सन्धि का नाम	सन्धिसूत्र	सूत्रार्थ	उदाहरण
1. श्चुत्वसन्धि	स्तोः श्चुना श्चुः	स् तवर्ग + श् चवर्ग = श् चवर्ग	रामस् + चिनोति = रामश्चिनोति सत् + चित् = सच्चित्
2. ष्टुत्व सन्धि	ष्टुना ष्टुः	स् तवर्ग + ष् टवर्ग = ष् टवर्ग	रामस् + षष्ठः = रामष्षष्ठः रामस् + टीकते = रामष्टीकते तत् + टीका = तट्टीका
3. जश्त्व सन्धि	झलां जशोऽन्ते	झल् को जश् आदेश	जगत् + ईशः = जगदीशः षट् + आननः = षडाननः
4. चर्त्व सन्धि	खरि च	झल् + खर् = चर्	छेद् + ता = छेत्ता लिभ् + सा = लिप्सा
5. अनुस्वार सन्धि	मोऽनुस्वारः	पदान्त म् + हल् = अनुस्वार (ं)	हरिम् + वन्दे = हरिं वन्दे त्वम् करोषि = त्वं करोषि
6. तोर्लि सन्धि	तोर्लि	तवर्ग + ल् = ल्	उद् + लेख = उल्लेखः तद् + लीनः = तल्लीनः
7. परसवर्ण सन्धि	अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः	अनुस्वार + यय् = परसवर्ण (पञ्चमाक्षर)	गं + गा = गङ्गा मं + चः = मञ्चः
8. अनुनासिकसन्धि	यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा	यर् + अनुनासिक = अनुनासिक	जगत् + नाथः = जगन्नाथः दिक् + नागः = दिङ्नागः

विसर्ग सन्धि

विसर्ग सन्धि- विसर्ग के बाद स्वर या व्यञ्जन वर्णों के आने पर विसर्ग (:) में जो विकार या परिवर्तन होता है, उसे **विसर्ग सन्धि** कहते हैं।

जैसे- मनः + रथः = मनोरथः

- विसर्ग हमेशा किसी न किसी स्वर के बाद ही आता है। जैसे- 'रामः' में 'अ' के बाद, हरिः में 'इ' के बाद, गुरुः में 'उ' के बाद विसर्ग आया है।
- विसर्ग सन्धि में विसर्ग से पहले आने वाले स्वर तथा विसर्ग के बाद आने वाले स्वर और व्यञ्जन दोनों का ही ध्यान रखा जाता है।

1. सत्व सन्धि-

विसर्जनीयस्य सः (8.3.34) - यदि विसर्ग के आगे कोई खर् प्रत्याहार का वर्ण आये तो विसर्ग के स्थान पर 'स्' हो जाता है।

विसर्ग (:) + खर् = स्

खर् - खर् एक प्रत्याहार है जिसमें वर्गों के प्रथम, द्वितीय अक्षर और श ष स आते हैं। खर् में कुल 13 वर्ण आते हैं।

खर् = क ख, च छ, ट ठ, त थ, प फ, श ष स।

ध्यान रखें-

इस नियम को समझने के लिए निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना आवश्यक है-

(i) यदि विसर्ग के बाद च् या छ् आये तो ''विसर्जनीयस्य सः'' सूत्र से विसर्ग के स्थान पर 'स्' होता है और इस 'स्' को ''स्तोः श्चुना श्चुः'' सूत्र से 'श्' हो जाता है।

जैसे-

☆ रामः + चलति
रामस् + चलति
रामश्चलति

☆ निः + छलम्
निस् + छलम्
निश्छलम्

☆ निः + चलम्
निस् + चलम्
निश्चलम्

☆ गौः + चरति
गौस् + चरति
गौश्चरति

☆ कः + चित्
कस् + चित्
कश्चित्

☆ बालः + चलति
बालस् + चलति
बालश्चलति

☆ निः + चयः
निस् + चयः
निश्चयः

☆ पूर्णः + चन्द्रः
पूर्णस् + चन्द्रः
पूर्णश्चन्द्रः

☆ हरिः + छलति
हरिस् + छलति
हरिश्छलति

☆ हरिः + चलति
हरिस् + चलति
हरिश्चलति

(ii) यदि विसर्ग के बाद ट् या ठ् हो तो **''विसर्जनीयस्य सः''** सूत्र से विसर्ग के स्थान पर 'स्' होता है, और उस 'स्' को ''ष्टुना ष्टुः'' सूत्र से 'ष्' हो जाता है—
जैसे-

☆ रामः + टीकते
रामस् + टीकते
रामष्टीकते।

☆ धनुः + टङ्कारः
धनुस् + टङ्कारः
धनुष्टङ्कारः

☆ रामः + ठकारः
रामस् + ठकारः
रामष्ठकारः

(iii) यदि विसर्ग के बाद त् और थ् आये तो **''विसर्जनीयस्य सः''** सूत्र से विसर्ग के स्थान पर 'स्' हो जाता है और वह 'स्' जैसा का तैसा रहता है अर्थात् 'स्' ही रहता है। जैसे-

☆ हरिः + त्राता — **हरिस्त्राता**
☆ विष्णुः + तत्र — **विष्णुस्तत्र**
☆ बालः + तिष्ठति — **बालस्तिष्ठति**
☆ विष्णुः + त्रायते — **विष्णुस्त्रायते**
☆ इतः + ततः — **इतस्ततः**
☆ कृतः + तथा — **कृतस्तथा**
☆ गजाः + तिष्ठन्ति — **गजास्तिष्ठन्ति**
☆ विष्णुः + त्राता — **विष्णुस्त्राता**
☆ बालकः + थुडति — **बालकस्थुडति**
☆ मनः + तापः — **मनस्तापः**
☆ नमः + ते — **नमस्ते**

(iv) यदि विसर्ग के बाद क् या ख् आये तो विसर्ग के स्थान पर विसर्ग ही रहता है अथवा **''कुप्वोः ≍क ≍पौ च''** (8.3.37) सूत्र से विकल्प से जिह्वामूलीय हो जाता है।
विसर्ग को 'स्' नहीं होता है जैसे-
☆ बालकः क्रीडति अथवा बालक≍ क्रीडति।
☆ बालकः खेलति अथवा बालक≍ खेलति।

नोट-
☆ जिह्वामूलीय वर्णों को कण्ठ के भी नीचे जिह्वामूल से बोला जाता है।
☆ जिह्वामूलीय को आधे विसर्ग≍ के समान लिखा जाता है।

(v) यदि विसर्ग के बाद प या फ आये तो विसर्ग के स्थान पर विसर्ग ही रहता है अथवा **''कुप्वोः ≍क ≍पौ च''** (8.3.37) सूत्र से विसर्ग के स्थान पर उपध्मानीय होता है। विसर्ग को 'स्' नहीं होता। जैसे-
वृक्षः पतति = वृक्ष≍ पतति।
वृक्षः फलति = वृक्ष≍ फलति।

नोट-
☆ उपध्मानीय वर्ण का उच्चारण 'ओष्ठ' से होता है।
☆ उपध्मानीय को भी आधे विसर्ग ≍ के समान लिखा जाता है।

(vi) यदि विसर्ग के बाद शर् (श् ष् स्) आये तो **''वा शरि''** (8.3.36) सूत्र से विसर्ग को विसर्ग ही रहता है अथवा विसर्ग के स्थान पर 'स्' होकर परवर्ण श् ष् स् की तरह हो जाता है।
जैसे-

☆ हरिः + शेते
हरिस् + शेते
हरिश्शेते

☆ रामः + षष्ठः
रामस् + षष्ठः
रामष्षष्ठः/रामःषष्ठः (विकल्प से)

अथवा हरिःशेते (विकल्प से)

☆ निः + सन्देहम्
निस् + सन्देहम्
निस्सन्देहम्
निःसन्देहम् (विकल्प से)

☆ वायुः + सरति
वायुस् + सरति
वायुस्सरति
वायुःसरति (विकल्प से)

☆ बालकः + शयानः
बालकस् शयानः
बालकश्शयानः
बालकः शयानः (विकल्प से)
☆ मुनिः + शेते - मुनिस् + शेते = मुनिश्शेते
कृष्णः + सर्पः - कृष्णस् + सर्पः = कृष्णस्सर्पः

2. रुत्व सन्धि

सूत्र - ससजुषो रुः (8.2.66) -
☆ पदान्त सकार और 'सजुष्' के षकार के स्थान पर 'रु' आदेश होता है।
☆ 'रु' में 'उ' की इत्संज्ञा होकर लोप हो जाता है 'र्' शेष बचता है।
☆ जब 'रु' (र्) के ठीक पहले ह्रस्व 'अ' न हो और रु (र्) के ठीक बाद में खर् न हो, तो यह 'र्', 'र्' ही रहता है। इसे ही 'रुत्वसन्धि' कहते हैं।

☆ कविस् + अयम्
कवि रु + अयम्
कवि र् अयम्
कविरयम्

☆ हरेस् + इदम्
हरे रु + इदम्
हरे र् + इदम्
हरेरिदम्

☆ गौस् + अयम्
गौ रु + अयम्
गौ र् + अयम्
गौरयम्

☆ प्रातस् + अहम्
प्रात रु + अहम्
प्रात र् + अहम्
प्रातरहम्

☆ पाशैस् + बद्धः
पाशै रु + बद्धः
पाशै र् + बद्धः
पाशैर्बद्धः

☆ निस् + धनम्
नि रु + धनम्
नि र् + धनम्
निर्धनम्

☆ मातुस् + आज्ञा
मातु रु + आज्ञा
मातु र् आज्ञा
मातुराज्ञा

☆ मुनिस् आगच्छति
मुनि रु आगच्छति
मुनि र् आगच्छति
मुनिरागच्छति

☆ कैस् + उक्तम्
कै रु + उक्तम्
कै र्+ उक्तम्
कैरुक्तम्

☆ भानुस् + उदेति
भानु रु + उदेति
भानु र् + उदेति
भानुरुदेति

☆ लक्ष्मीस् + इयम्
लक्ष्मी रु + इयम्
लक्ष्मी र् + इयम्
लक्ष्मीरियम्

☆ गुरोस् + भाषणम्
गुरो रु + भाषणम्
गुरो र् + भाषणम्
गुरोर्भाषणम्

☆ पितुस् + आज्ञा
पितु रु + आज्ञा
पितु र् + आज्ञा
पितुराज्ञा

☆ ऋषिस् + वदति
ऋषि रु + वदति
ऋषि र्+ वदति
ऋषिर्वदति

☆ भानोस् + अयम्
भानो रु + अयम्
भानो र् अयम्
भानोरयम्

☆ हरिस् + जयति
हरि रु + जयति
हरि र्+ जयति
हरिर्जयति

☆ साधुस् + गच्छति
साधु रु + गच्छति
साधु र् + गच्छति
साधुर्गच्छति

☆ हरिस् + अवदत्
हरि रु + अवदत्
हरि र् + अवदत्
हरिरवदत्

☆ पितुस् + इच्छा
पितु रु + इच्छा
पितु र् + इच्छा
पितुरिच्छा

अन्य उदाहरण-

☆ कविस् + आगच्छति = **कविरागच्छति**
☆ मुनिस् + इव = **मुनिरिव**
☆ निस् + दयः = **निर्दयः**
☆ पतिस् + उवाच = **पतिरुवाच**
☆ हरेस् + जन्म = **हरेर्जन्म**
☆ गुरोस् + आगमनम् = **गुरोरागमनम्**
☆ मुनिस् + गच्छति = **मुनिर्गच्छति**
☆ भानुस् + उदेति = **भानुरुदेति**
☆ प्रातस् + एव = **प्रातरेव**
☆ मातृस् + आदेशः = **मातृरादेशः**

3. उत्व सन्धि

अतो रोरप्लुतादप्लुते (6.1.13) -

यदि 'रु' के ठीक पहले 'ह्रस्व अ' हो और 'रु' के ठीक बाद में पुनः 'ह्रस्व अ' हो, तो ऐसे दो ह्रस्व अ के बीच बैठे 'रु' (र्) को 'उ' हो जाता है। इसे ही **उत्व सन्धि** कहते हैं।

➢ ध्यान रहे कि 'रु' के स्थान पर 'उ' नही होता, किन्तु उकार की इत्संज्ञा होकर लोप होने पर शेष बचे 'र्' के स्थान पर ही 'उ' होता है। सूत्र में 'रु' के कथन का यह तात्पर्य है कि 'रुँ' के 'र्' को ही उत्व हो, अन्य 'र्' को नहीं।

जैसे-

☆ शिवस् + अर्च्यः
शिव रु + अर्च्यः ('ससजुषो रुः' से 'रु')
शिव र् + अर्च्यः ('रु' के 'उ' का लोप)
शिव उ + अर्च्यः (अतो रोरप्लुतादप्लुते से 'उ')
शिवो + अर्च्यः (आद् गुणः से अ+उ = ओ गुण)
शिवोऽर्च्यः (''एङः पदान्तादति'' से पूर्वरूप)

☆ देवस् + अपि (पदान्त सकार)
देव रु + अपि ('ससजुषो रुः' से स् को 'रु' आदेश)
देव र्+ अपि ('रु' के 'उ' का लोप, 'र्' शेष)
देव उ + अपि (अतो रोरप्लुतादप्लुते से 'र्' को 'उ')
देवो + अपि (आद्गुणः से 'ओ' गुण)
देवोऽपि (''एङः पदान्तादति'' सूत्र से पूर्वरूप)

☆ शिवस् + अत्र = शिवोऽत्र
☆ सस् + अहम् = सोऽहम्
☆ सस् + अपि = सोऽपि
☆ रामस् + अयम् = रामोऽयम्
☆ रामस् + अवदत् = रामोऽवदत्
☆ देवस् + अधुना = देवोऽधुना
☆ कस् + अयम् = कोऽयम्
☆ सस् + अयम् = सोऽयम्
☆ रामस् + अस्ति = रामोऽस्ति
☆ सस् + अवदत् = सोऽवदत्

''हशि च'' (6.1.114) - यदि 'रु' (र्) के पूर्व ह्रस्व 'अ' हो और बाद में हश् प्रत्याहार के वर्ण आयें तो रु (र्) के स्थान पर 'उ' हो जाता है फिर अ+उ में गुण सन्धि हो जाती है। यह भी उत्व सन्धि है।

➢ हश् प्रत्याहार में वर्णों के तीसरे, चौथे और पाँचवे वर्ण तथा य व र ल ह वर्ण आते हैं।

जैसे-

☆ शिवस् + वन्द्यः (पदान्त सकार)
शिव रु + वन्द्यः (''ससजुषो रुः'' से 'रु' आदेश)
शिव र् + वन्द्यः ('रु' के 'उ' का लोप 'र्' शेष)
शिव उ + वन्द्यः (''हशि च'' से 'र्' के स्थान पर 'उ' आदेश)
शिवो + वन्द्यः (अ + उ = ओ गुण हुआ)
शिवो वन्द्यः (उत्व सन्धि)

☆ मनस् + रथः
मन रु + रथः
मन र् + रथः
मन उ + रथः
मनो + रथः
मनोरथः

☆ रामस् + नमति = **रामो नमति**
☆ रामस् + हसति = **रामो हसति**
☆ मृगस् + धावति = **मृगो धावति**
☆ मेघस् + गर्जति = **मेघो गर्जति**
☆ सरस् + वरः = **सरोवरः**
☆ पयस् + धरः = **पयोधरः**
☆ रामस् + जयति = **रामो जयति**
☆ बालकस् + हसति = **बालको हसति**
☆ वीरस् + गच्छति = **वीरो गच्छति**
☆ पुरुषस् + वदति = **पुरुषो वदति**
☆ अधस् + गतिः = **अधोगतिः**
☆ यशस् + दा = **यशोदा**
☆ मनस् + भावः = **मनोभावः**

4. रलोप सन्धि

सूत्र- रो रि (8.3.14) –
सूत्रार्थ- 'र्' के बाद 'र्' आये तो पूर्व 'र्' का लोप होता है।
जैसे-

☆ बालकास् + रमन्ते (पदान्त सकार)
बालका रु + रमन्ते ('ससजुषो रुः' से 'स्' के स्थान पर रु')
बालका र् + रमन्ते (''रो रि'' से पूर्व रेफ का लोप)
बालका रमन्ते (र लोप सन्धि)

☆ गौस् + रम्भते (पदान्त सकार)
गौरु + रम्भते (ससजुषो रुः)
गौर् + रम्भते (रो रि)
गौ रम्भते (र लोप सन्धि)

सूत्र- ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः (6.3.111)
'ढ् ' या 'र्' का लोप हुआ हो तो उससे पूर्ववर्ती अण् (अ इ उ) को दीर्घ हो जाता है। जैसे-

☆ लिढ् + ढः = लीढः
☆ पुनर् + रमते = पुनारमते
☆ हरिर् + रम्यः = हरी रम्यः
☆ शम्भुर् + राजते = शम्भू राजते
☆ गुरुर् + रुष्टः = गुरू रुष्टः
☆ निर् + रोगः = नीरोगः
☆ निर् + रसः = नीरसः
☆ अन्तर् + राष्ट्रियः = अन्ताराष्ट्रियः

5. रेफ को विसर्ग

सूत्र- खरवसानयोर्विसर्जनीयः (8.3.15) -
सूत्रार्थ- पदान्त रेफ (र्) के स्थान पर विसर्ग आदेश होता है यदि खर् प्रत्याहार के वर्ण बाद में आयें तो अथवा अवसान (विराम) हो तो-

र् + खर् = विसर्ग (:)
र् + ----- = विसर्ग (:)

➢ 'खर्' एक प्रत्याहार है जिसमें - क ख, च छ, ट ठ, त थ, प फ, तथा श ष स आते हैं।

➢ **अवसान में पदान्त 'र्' को विसर्ग-**
☆ पुनर् = पुनः
☆ शनैर् = शनैः
☆ उच्चैर् = उच्चैः
☆ नीचैर् = नीचैः

➢ **'खर्' बाद में आये तो पदान्त 'र्' को विसर्ग-**

☆ रामर् + खादति = रामः खादति
पुनर् + पृच्छति = पुनः पृच्छति
☆ रामस् + करोति (पदान्त स्)
राम रु + करोति (ससजुषो रुः)
राम र् + करोति (रु को 'र्')
रामः + करोति ('र्' को विसर्ग)
☆ वृक्षर् + फलति = वृक्षः फलति
☆ गुरु र् + पाठयति = गुरुः पाठयति

❑❑

समास

- **समासः -** सम् √अस् + घञ् = समासः
- **'अनेकपदानाम् एकपदीभवनं समासः'** अर्थात् अनेकपदों का एकपद हो जाना 'समास' कहलाता है।
- **'समसनं समासः'** अर्थात् संक्षेपीकरण को समास कहते हैं। 'समास' का अर्थ है- संक्षिप्त। जब दो या दो से अधिक पद परस्पर मिलकर नया शब्द बनाते हैं; तो उनके बीच की विभक्तियाँ लुप्त हो जाती हैं, और बना हुआ शब्द 'समास' कहलाता है।

  विभक्तिर्लुप्यते यत्र तदर्थस्तु प्रतीयते।
  पदानां चैकपद्यं च समासः सोऽभिधीयते॥

  अर्थात् जहाँ विभक्तियों का लोप हो जाता है, परन्तु उनका अर्थ प्रतीत होता रहता है, और अनेक पद मिलकर एकपद बन जाता है, उसे 'समास' कहते हैं।

  जैसे- दशरथस्य पुत्रः = **दशरथपुत्रः**
  पीतम् अम्बरं यस्य सः = **पीताम्बरः**
- **विग्रह- ''वृत्त्यर्थावबोधकं वाक्यं विग्रहः''** समासवृत्ति के अर्थ का बोध कराने के लिए जो वाक्य होता है, उसे 'विग्रह' कहते हैं।

  जैसे- 'पीताम्बरः' इस सामासिक पद का अर्थ बताने के लिए ''पीतम् अम्बरं यस्य सः'' यह जो वाक्य है यही विग्रह कहा जाता है।

समास विग्रह- विग्रह दो प्रकार का होता है-
(i) लौकिक विग्रह (ii) अलौकिक विग्रह

(i) लौकिक विग्रह- लोक के समझने लायक विग्रह को 'लौकिक विग्रह' कहते हैं।
जैसे- 'दशरथपुत्रः' इस सामासिक पद का लौकिक विग्रह होगा- दशरथस्य पुत्रः।

(ii) अलौकिक विग्रह- जो व्याकरणशास्त्र की प्रक्रिया दर्शाने हेतु अर्थात् शास्त्रीय प्रक्रिया के लिए विग्रह होता है, उसे 'अलौकिक विग्रह' कहते हैं।
जैसे- 'दशरथ ङस् पुत्र सु' यह ''दशरथपुत्रः'' इस सामासिक पद का अलौकिक विग्रह होगा।

समस्त पद या **सामासिक पद-** समास होने पर जो शब्द बनता है, उसे 'समस्तपद' या 'सामासिक पद' कहते हैं।
जैसे- अधिगोपम्, चन्द्रशेखरः, त्रिभुवनम्, रामकृष्णौ आदि ये समस्तपद या सामासिकपद कहें जायेंगे।

समास के भेद

'लघुसिद्धान्तकौमुदी' के लेखक वरदराज ने समास के पाँच प्रकार बताये हैं- **'समासः पञ्चधा'**। किन्तु माध्यमिक शिक्षा परिषद् की पाठ्यपुस्तकों में **समास के छह भेद** बताये गये हैं; अतः आप सभी UP-TET के परीक्षार्थियों के लिए समास के छह भेद ही मानना चाहिए।

समास के प्रमुख रूप से छह भेद हैं-

1. अव्ययीभाव समास
2. तत्पुरुष समास
3. कर्मधारय समास
4. द्विगु समास
5. द्वन्द्व समास
6. बहुव्रीहि समास

नोट- भट्टोजिदीक्षित सिद्धान्तकौमुदी में तत्पुरुष का भेद कर्मधारय और कर्मधारय का भेद द्विगु समास को बताते हैं अतः इनके अनुसार समास चार प्रकार का ही होता है।

1. अव्ययीभाव समास

अव्ययीभाव- 'पूर्वपदार्थप्रधानोऽव्ययीभावः' अर्थात् जिस समास में पूर्वपद का अर्थ प्रधान/मुख्य हो, उसे 'अव्ययीभाव' समास कहते हैं। इस समास में पूर्वपद प्रायः अव्यय होता है।

ध्यान दें- समास में सामान्यतया दो पद होते हैं। इनमें पहले आने वाला पद 'पूर्वपद' और उसके बाद आनेवाला पद 'उत्तरपद' होता है। 'उत्तर' पद का एक अर्थ 'बाद में' या 'बादवाला' भी है।

जैसे- **समास**	**पूर्वपद**	**उत्तरपद**
उपनदम्	उप	नदम्

विशेष ध्यान रखें- अव्ययीभाव समास होने पर सामासिक पद अव्यय बन जाता है, तथा नपुंसकलिङ्ग एकवचन में प्रयोग किया जाता है।

'अनव्ययम् अव्ययः सम्पद्यते इति अव्ययीभावः' अर्थात् जो शब्द समास होने के पूर्व तो अव्यय न हो, किन्तु समास होने पर 'अव्यय' हो जाय, वही अव्ययीभाव समास है।

जैसे- शक्तिम् अनतिक्रम्य = यथाशक्ति।

यहाँ 'शक्ति' शब्द अव्यय नहीं है किन्तु 'यथा' इस अव्यय के साथ समास होने के कारण 'यथाशक्ति' यह पूरा पद अव्यय हो गया; और नपुंसकलिङ्ग एकवचन में प्रयुक्त है।

अव्ययीभाव समास करने वाला सूत्र-

''अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि-व्यृद्धि-अर्थाभाव-अत्यय-असम्प्रति-शब्दप्रादुर्भाव-पश्चात्-यथा-आनुपूर्व्य-यौगपद्य-सादृश्य-सम्पत्ति-साकल्य-अन्तवचनेषु'' (2.1.6)

सूत्र का अर्थ- विभक्ति, समीप, समृद्धि, व्यृद्धि (वृद्धि का अभाव), अर्थाभाव, अत्यय (नष्ट होना), असम्प्रति (अब युक्त न होना), शब्दप्रादुर्भाव (शब्द और सादृश्य), आनुपूर्व्य (क्रमशः), यौगपद्य (एक साथ होना), सादृश्य (समान), सम्पत्ति, साकल्य (सम्पूर्णता) और अन्त (समाप्ति) अर्थों में विद्यमान अव्यय का समर्थ सुबन्त पदों के साथ नित्य से समास होता है।

अव्ययीभाव समास के उदाहरण-

1. **'विभक्ति'** के अर्थ में विद्यमान अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त (पद) के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

समास विग्रह	समस्त पद (अर्थ सहित)
हरौ इति	**अधिहरि** (हरि में)
आत्मनि इति	**अध्यात्मम्** (आत्मा में)
गोपि इति	**अधिगोपम्** (गोप में)

यहाँ 'अधि' अव्यय सप्तमी विभक्ति के अर्थ में है।

2. **'समीप'** अर्थ में विद्यमान 'उप' आदि अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

समास विग्रह	सामासिक पद (अर्थ सहित)
गङ्गायाः समीपम्	**उपगङ्गम्** (गङ्गा नदी के समीप)
नगरस्य समीपम्	**उपनगरम्** (नगर के समीप)
कृष्णस्य समीपम्	**उपकृष्णम्** (कृष्ण के समीप)
कूलस्य समीपम्	**उपकूलम्** (किनारे के समीप)
तटस्य समीपम्	**उपतटम्** (तट के समीप)

उपर्युक्त उदाहरणों में 'उप' यह अव्यय समीप अर्थ में है। जिसका गङ्गा आदि समर्थ सुबन्त पदों के साथ अव्ययीभाव समास हुआ है। समास होने के बाद उपगङ्गम्, उपनगरम् आदि पूरा पद अव्यय हो जाता है।

3. **'समृद्धि'** के अर्थ में अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

समास विग्रह	समस्त पद (अर्थसहित)
मद्राणां समृद्धिः	**सुमद्रम्** (मद्रदेशवासियों की समृद्धि)
भिक्षाणां समृद्धिः	**सुभिक्षम्** (भिक्षाटन की समृद्धि)

4. **व्यृद्धि** (दुर्गति या वृद्धि का अभाव) के अर्थ में विद्यमान अव्यय पदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

यवनानां व्यृद्धिः	=	**दुर्यवनम्** (यवनों की दुर्गति)
भिक्षाणां व्यृद्धिः	=	**दुर्भिक्षम्** (भिक्षा का न मिलना)
शकानां व्यृद्धिः	=	**दुःशकम्** (शकों की दुर्गति)
राक्षसाणां व्यृद्धिः	=	**दुर्राक्षसम्** (राक्षसों की अवनति)

5. **'अर्थाभाव'** के अर्थ में विद्यमान अव्यय पदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

मक्षिकाणाम् अभावः	=	**निर्मक्षिकम्** (मक्खियों का अभाव)
प्राणानाम् अभावः	=	**निष्प्राणम्** (प्राणों का अभाव)
विघ्नानाम् अभावः	=	**निर्विघ्नम्** (विघ्नों का अभाव)
मशकानाम् अभावः	=	**निर्मशकम्** (मच्छरों का अभाव)
जनानाम् अभावः	=	**निर्जनम्** (मनुष्यों का अभाव)
दोषाणाम् अभावः	=	**निर्दोषम्** (दोषों का अभाव)

उपर्युक्त उदाहरणों में 'निर्' आदि अव्ययपदों का 'मक्षिका' आदि समर्थ सुबन्तों के साथ अव्ययीभाव समास हुआ है। यहाँ 'निर्' अव्यय का अर्थ है- अर्थाभाव।

6. **अत्यय** (ध्वंस या नाश) के अर्थ में विद्यमान अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

हिमस्य अत्ययः	=	**अतिहिमम्** (हिम का नाश)
रोगस्य अत्ययः	=	**अतिरोगम्** (रोग का नाश)
शीतस्य अत्ययः	=	**अतिशीतम्** (शीतलता का नाश)

उपर्युक्त उदाहरणों में 'अति' इस अव्यय पद का अर्थ है- अत्यय (नाश) अतः 'अति' इस अव्यय पद के साथ 'हिम' आदि समर्थ सुबन्तों का अव्ययीभाव समास हुआ है।

7. **असम्प्रति** (अनौचित्य) के अर्थ में विद्यमान अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

समास विग्रह	सामासिक पद (अर्थ सहित)
निद्रा सम्प्रति न युज्यते	**अतिनिद्रम्** (इस समय नींद उचित नहीं)
स्वप्नः सम्प्रति न युज्यते	**अतिस्वप्नम्** (इस समय स्वप्न उचित नहीं)
कम्बलं सम्प्रति न युज्यते	**अतिकम्बलम्** (इस समय कम्बल उचित नहीं)

उपर्युक्त उदाहरणों में 'अति' यह अव्यय असम्प्रति अर्थ में है, जिसका 'निद्रा' आदि समर्थ पदों के साथ अव्ययीभाव समास हुआ है।

8. **शब्दप्रादुर्भाव** (शब्द का प्रकाश) के अर्थ में विद्यमान अव्यय पदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

हरिशब्दस्य प्रकाशः	**इतिहरि** ('हरि' शब्द का प्रकट होना)

विष्णुशब्दस्य प्रकाशः **इतिविष्णु** ('विष्णु' शब्द का प्रकट होना)
पाणिनिशब्दस्य प्रकाशः **इतिपाणिनि** ('पाणिनि' शब्द का प्रकट होना)
ज्ञानशब्दस्य प्रकाशः **इतिज्ञानम्** ('ज्ञान' शब्द का प्रकट होना)

9. 'पश्चात्' (पीछे) के अर्थ में विद्यमान अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

विष्णोः पश्चात् **अनुविष्णु** (विष्णु के पीछे)
रामस्य पश्चात् **अनुरामम्** (राम के पीछे)
रथस्य पश्चात् **अनुरथम्** (रथ के पीछे)
शिष्यस्य पश्चात् **अनुशिष्यम्** (शिष्य के पीछे)
गोपालस्य पश्चात् **अनुगोपालम्** (गोपाल के पीछे)

10. 'यथा' के अर्थ में विद्यमान अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। 'यथा' के चार अर्थ होते हैं-
(क) योग्यता अथवा लायक या अनुकूलता
(ख) वीप्सा अथवा दुहराया जाना
(ग) पदार्थानतिवृत्ति अथवा पदार्थों की सीमा के बाहर नहीं जाना
(घ) सादृश्य अथवा समानता

(क) योग्यता-

रूपस्य योग्यम् = **अनुरूपम्** (रूप के योग्य)
गुणस्य योग्यम् = **अनुगुणम्** (गुण के योग्य)

(ख) वीप्सा-

अक्षम् अक्षम् प्रति = **प्रत्यक्षम्** (प्रत्यक्ष)
एकं एकं प्रति = **प्रत्येकम्** (प्रत्येक)
गृहं गृहं प्रति = **प्रतिगृहम्** (घर-घर)
दिनं दिनं प्रति = **प्रतिदिनम्** (प्रतिदिन)
अर्थम् अर्थं प्रति = **प्रत्यर्थम्** (प्रत्येक अर्थ)
जनं जनं प्रति = **प्रतिजनम्** (प्रत्येक जन)
छात्रं छात्रं प्रति = **प्रतिच्छात्रम्** (प्रत्येक छात्र)
दिशं दिशं प्रति = **प्रतिदिशम्** (प्रत्येक दिशा)

(ग) पदार्थानतिवृत्ति-

शक्तिम् अनतिक्रम्य = **यथाशक्ति** (शक्ति के अनुसार)
बलम् अनतिक्रम्य = **यथाबलम्** (बल के अनुसार)
समयम् अनतिक्रम्य = **यथासमयम्** (समय के अनुसार)
बुद्धिम् अनतिक्रम्य = **यथाबुद्धि** (बुद्धि के अनुसार)
ज्ञानम् अनतिक्रम्य = **यथाज्ञानम्** (ज्ञान के अनुसार)

(घ) सादृश्य-

हरेः सादृश्यम् = **सहरि** (हरि की समानता)
रूपस्य सादृश्यम् = **सरूपम्** (रूप की समानता)

11. आनुपूर्व्य (क्रम) के अर्थ में विद्यमान अव्यय पदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

ज्येष्ठस्य आनुपूर्व्येण = **अनुज्येष्ठम्** (ज्येष्ठ के क्रम से)
वर्णस्य आनुपूर्व्येण = **अनुवर्णम्** (वर्ण के क्रमानुसार)

12. यौगपद्य (साथ होना) के अर्थ में विद्यमान अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

चक्रेण युगपत् = **सचक्रम्** (चक्र के साथ)
हर्षेण युगपत् = **सहर्षम्** (हर्ष के साथ)

13. सादृश्य (जैसा) के अर्थ में विद्यमान अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव होता है। जैसे-

सदृशः सख्या = **ससखि** (मित्र के जैसा)
सदृशः वर्णेन = **सवर्णम्** (वर्ण के समान)

14. सम्पत्ति के अर्थ में विद्यमान अव्ययपदों का समर्थसुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

क्षत्राणां सम्पत्तिः = **सक्षत्रम्** (राजाओं की सम्पत्ति)

15. साकल्य (सम्पूर्णता) के अर्थ में विद्यमान अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

तृणम् अपि अपरित्यज्य = **सतृणम्** (तिनके को भी छोड़े बिना सब खाता है)

16. अन्तवचन (तक) के अर्थ में अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

अग्निग्रन्थपर्यन्तम् = **साग्नि**
(अग्नि ग्रन्थ की समाप्ति तक पढता है)
बालकाण्डपर्यन्तम् = **सबालकाण्डम्** (बालकाण्ड तक)

➢ **आङ्मर्यादाभिविध्योः** अर्थात् मर्यादा और अभिविधि (तक) के अर्थ में 'आङ्' अव्यय पद का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

आ मरणात् = **आमरणम्** (मरने तक)
आ जीवनात् = **आजीवनम्** (जीवन भर)

➢ **नदीभिश्च** (2.1.20) नदी वाची शब्दों के साथ संख्यावाची शब्दों का समास होता है, और वह अव्ययीभाव समास कहलाता है। जैसे-

पञ्चानां गङ्गानां समाहारः = **पञ्चगङ्गम्**
(पाँच गङ्गाओं का समाहार)

द्वयोः यमुनयोः समाहारः = **द्वियमुनम्** (दो यमुनाओं का समाहार)
सरतानां नर्मदानाम् समाहारः = **सरतनर्मदम्**
उपर्युक्त उदाहरणों में 'पञ्च' आदि संख्यावाची पदों का गङ्गा आदि नदीवाचक पदों के साथ अव्ययीभाव समास हुआ है।

➢ **अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्यः (5.4.107)**
अव्ययीभाव समास में शरद् आदि शब्दों से समासान्त 'टच्' प्रत्यय होता है। 'टच्' प्रत्यय में 'ट्' और 'च्' का लोप हो जाता है केवल 'अ' शेष बचता है। जैसे-
शरदः समीपम् = **उपशरदम्** (शरद् के समीप)
विपाशं विपाशं प्रति = **प्रतिविपाशम्** (विपाशा नदी के सम्मुख)

➢ **अनश्च (5.4.108)** - जिस अव्ययीभाव समास के अन्त में 'अन्' होता है, वह अन्नन्त अव्ययीभाव है। उससे समासान्त 'टच्' प्रत्यय होता है। जैसे-
राज्ञः समीपम् = **उपराजम्** (राजा के समीप)

नपुंसकादन्यतरस्याम् (5.4.109) - 'अन्' अन्तवाला जो नपुंसकलिङ्ग शब्द है, उस अव्ययीभाव समास के अन्त में विकल्प से 'टच्' प्रत्यय होता है। जैसे-
चर्मणः समीपम् = **उपचर्मम्** (चर्म के समीप) 'टच्'प्रत्यय हुआ
चर्मणः समीपम् = **उपचर्म** (चर्म के समीप) 'टच्' नहीं हुआ।

2. तत्पुरुष समास

तत्पुरुष- 'प्रायेण उत्तरपदार्थप्रधानः तत्पुरुषः'
अर्थात् जिस समास में उत्तरपद का अर्थ प्रधान होता है, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं।
जैसे- 'गङ्गाजलम् आनय'। यहाँ 'आनय' इस क्रिया पद के साथ 'जलम्' का ही साक्षात् सम्बन्ध है। अतः 'जल' इस उत्तरपद का अर्थ ही प्रधान होने के कारण यहाँ तत्पुरुषसमास है।

तत्पुरुष समास के भेद- तत्पुरुष समास के मुख्यतः दो भेद होते हैं- 1. समानाधिकरण तत्पुरुष 2. व्यधिकरण तत्पुरुष

1. समानाधिकरण तत्पुरुष- समानाधिकरण को 'समविभक्तिक' भी कह सकते हैं। इस तत्पुरुष समास के पूर्वपद एवं उत्तरपद दोनों में समान विभक्ति (प्रथमा) लगी रहती है। समान अधिकरण (विभक्ति) वाला तत्पुरुष कर्मधारय समास होता है- ''तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः''

2. व्यधिकरण तत्पुरुष- जिस तत्पुरुष समास में पूर्वपद तथा उत्तर पद दोनों में अलग-अलग विभक्तियाँ लगी हों, वह व्यधिकरण तत्पुरुष होता है। वि = विषय और 'अधिकरण' = विभक्ति वाले तत्पुरुष को व्यधिकरण तत्पुरुष कहते हैं। पूर्वपद में जो विभक्तियाँ लगी होती हैं, उनके आधार पर ही तत्पुरुष के प्रमुख भेद किये जाते हैं। जैसे यदि पूर्वपद में द्वितीया विभक्ति हो तो द्वितीया तत्पुरुष, यदि पूर्व पद में तृतीया विभक्ति लगी हो तो तृतीया तत्पुरुष आदि। इसप्रकार **व्यधिकरण तत्पुरुष के छह भेद किये गये हैं-**
1. द्वितीया तत्पुरुष 2. तृतीया तत्पुरुष 3. चतुर्थी तत्पुरुष
4. पञ्चमी तत्पुरुष 5. षष्ठी तत्पुरुष 6. सप्तमी तत्पुरुष।

तत्पुरुष समास के उपभेद- समानाधिकरण तथा व्यधिकरण समास के अतिरिक्त तत्पुरुष के अन्य उपभेद भी इसप्रकार हैं-
(i) नञ् तत्पुरुष समास - अनश्वः, अब्राह्मणः, अनिच्छा आदि।
(ii) प्रादि तत्पुरुष समास - कुपुरुषः, प्राचार्यः आदि।
(iii) उपपद तत्पुरुष समास - कुम्भकारः, धर्मज्ञः आदि।
(iv) अलुक् तत्पुरुष समास - युधिष्ठिरः, सरसिजम्, अभ्यासादागतः आदि।

द्वितीया तत्पुरुष समास- जिस तत्पुरुष समास का पूर्वपद द्वितीया विभक्ति में हो, ऐसे द्वितीयान्त सुबन्त पद का 'श्रित' आदि शब्दों के साथ द्वितीया तत्पुरुष समास होता है।
सूत्र- ''द्वितीया श्रित-अतीत-पतित-गत-अत्यस्त-प्राप्त-आपन्नैः'' (2.1.24)
जैसे-

समास विग्रह	सामासिक पद (अर्थ सहित)
कृष्णं श्रितः	**कृष्णश्रितः** (कृष्ण का आश्रय लिया हुआ)
शरणम् आगतः	**शरणागतः** (शरण में आया हुआ)
लोकम् अतीतः	**लोकातीतः** (लोक से परे)
भयम् आपन्नः	**भयापन्नः** (भय को प्राप्त)
रामम् आश्रितः	**रामाश्रितः** (राम के आश्रित)
सुखं प्राप्तः	**सुखप्राप्तः** (सुख को प्राप्त हुआ)
अश्वम् आरूढः	**अश्वारूढः** (घोड़े पर आरूढ़)
स्वर्गं गतः	**स्वर्गगतः** (स्वर्ग को गया हुआ)
दुःखम् अतीतः	**दुःखातीतः** (दुःख को पार किया हुआ)
कूपं पतितः	**कूपपतितः** (कुयें में गिरा हुआ)
ग्रामं गतः	**ग्रामगतः** (गाँव को गया हुआ)
जीवनं प्राप्तः	**जीवनप्राप्तः** (जीवन को प्राप्त किया हुआ)
सुखम् आपन्नः	**सुखापन्नः** (सुख को पाया हुआ)

तृतीया तत्पुरुष समास- जिस तत्पुरुष समास का पूर्वपद तृतीया विभक्ति में हो, ऐसे तृतीयान्त सुबन्त पद का तत्कृत (उसके

द्वारा किये गए) गुणवाचक शब्द के साथ तथा 'अर्थ' शब्द के साथ तृतीया तत्पुरुष समास होता है।

सूत्र- ''तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन'' (2.1.30)

जैसे-

शङ्कुलया खण्डः = **शङ्कुलाखण्डः** (सरौते से किया गया टुकड़ा)
धान्येन अर्थः = **धान्यार्थः** (अन्न से प्रयोजन)
दानेन अर्थः = **दानार्थः** (दान से प्रयोजन)

➢ तृतीयान्त सुबन्त पदों का 'पूर्व' आदि शब्दों के साथ तृतीया तत्पुरुष समास होता है।

सूत्र- ''पूर्व-सदृश-समोनार्थ-कलह-निपुण-मिश्र-श्लक्ष्णैः'' (2.1.30)

समास विग्रह	सामासिक पद (अर्थ सहित)
मासेन पूर्वः	= **मासपूर्वः** (महीने से पहले)
पित्रा सदृशः	= **पितृसदृशः** (पिता के समान)
भ्रात्रा समः	= **भ्रातृसमः** (भाई के बराबर)
माषेण ऊनम्	= **माषोणम्** (मासा भर कम)
ज्ञानेन हीनः	= **ज्ञानहीनः** (ज्ञान से हीन)
वाचा कलहः	= **वाक्कलहः** (बातचीत से झगड़ा)
आचारेण निपुणः	= **आचारनिपुणः** (आचार में निपुण)
गुडेन मिश्रः	= **गुडमिश्रः** (गुड़ से मिला हुआ)
आचारेण श्लक्ष्णः	= **आचारश्लक्ष्णः** (आचरण में सहज)
मात्रा सदृशः	= **मातृसदृशः** (माता के समान)
नेत्राभ्यां हीनः	= **नेत्रहीनः** (नेत्रों से रहित)
घृतेन पक्वम्	= **घृतपक्वम्** (घी से पकाया हुआ)
पादेन खञ्जः	= **पादखञ्जः** (पैर से लँगड़ा)

➢ कर्ता और करणकारक में तृतीयान्त पद का कृदन्त के साथ तृतीया तत्पुरुष समास होता है- **''कर्तृकरणे कृता बहुलम्'' (2.1.32)**

जैसे-

हरिणा त्रातः = **हरित्रातः** (हरि के द्वारा रक्षित)
नखैः भिन्नः = **नखभिन्नः** (नखों से फाड़ा गया)
नखैः निर्भिन्नः = **नखनिर्भिन्नः** (नखों से फाड़ा गया)
धर्मेण रक्षितः = **धर्मरक्षितः** (धर्म से रक्षित)
बाणेन विद्धः = **बाणविद्धः** (बाण से घायल)

चतुर्थी तत्पुरुष समास- जिस तत्पुरुष समास में पूर्वपद चतुर्थी विभक्ति में हो तथा चतुर्थ्यन्त पदों का अर्थ, बलि, हित, सुख, रक्षित आदि पदों के साथ समास होता है। उसे चतुर्थी तत्पुरुष समास कहते हैं।

''चतुर्थी तदर्थार्थबलिहितसुखरक्षितैः'' (2.1.36)

जैसे-

समास विग्रह	सामासिक पद (अर्थ सहित)
यूपाय दारु	= **यूपदारु** (यज्ञ के खम्भे के लिए लकड़ी)
कुम्भाय मृत्तिका	= **कुम्भमृत्तिका** (घड़े के लिए मिट्टी)
भूतेभ्यः बलिः	= **भूतबलिः** (जीव के लिए बलि)
गोभ्यः हितम्	= **गोहितम्** (गाय के लिए हितकारी)
ब्राह्मणाय हितम्	= **ब्राह्मणहितम्** (ब्राह्मण के लिए हितकर)
गोभ्यः सुखम्	= **गोसुखम्** (गाय के लिए सुखकारी)
गोभ्यः रक्षितम्	= **गोरक्षितम्** (गाय के लिए रक्षित)
धनाय कामना	= **धनकामना** (धन के लिए इच्छा)

विशेष नियम- अर्थ शब्द के साथ चतुर्थी का नित्यसमास होता है, और अर्थ शब्दान्त शब्द का लिङ्ग विशेष्य के अनुसार होता है-

जैसे-

पुँल्लिङ्ग - द्विजाय अयम् = **द्विजार्थः सूपः** (ब्राह्मण के लिए दाल)
स्त्रीलिङ्ग - द्विजाय इयम् = **द्विजार्था यवागूः** (ब्राह्मण के लिए लप्सी)
नपुंसकलिङ्ग - द्विजाय इदम् = **द्विजार्थं पयः** (ब्राह्मण के लिए दूध)

धनाय इदम् = **धनार्थम्** (धन के लिए)
सुखाय इदम् = **सुखार्थम्** (सुख के लिए)
रक्षाय इदम् = **रक्षार्थम्** (रक्षा के लिए)

पञ्चमी तत्पुरुष समास- जिस तत्पुरुष समास का पूर्वपद पञ्चमी विभक्ति में हो, ऐसे पञ्चम्यन्त पदों का भय आदि शब्दों के साथ पञ्चमी तत्पुरुष समास होता है।

''पञ्चमी भयेन'' (2.1.37)

जैसे-

समास विग्रह	सामासिक पद (अर्थ सहित)
चोरात् भयम्	= **चोरभयम्** (चोर से डरा हुआ)
व्याघ्रात् भयम्	= **व्याघ्रभयम्** (बाघ से डरा हुआ)
सिंहात् भीतः	= **सिंहभीतः** (सिंह से भय)
वृकात् भीतिः	= **वृकभीतिः** (भेड़िये से भय)
सर्पात् भीः	= **सर्पभीः** (सर्प से डर)
राज्ञः भयम्	= **राजभयम्** (राजा से डर)

➢ पञ्चम्यन्त शब्दों का 'अपेत, अपोढः युक्त, पतित' आदि पदों के साथ पञ्चमी तत्पुरुष समास होता है। जैसे -

समासविग्रह		सामासिक पद (अर्थ सहित)
सुखात् अपेतः	=	**सुखापेतः** (सुख से रहित)
कल्पनायाः अपोढः	=	**कल्पनापोढः** (कल्पना से शून्य)
बन्धनात् युक्तः	=	**बान्धनमुक्तः** (बन्धन से मुक्त)
मार्गात् भ्रष्टः	=	**मार्गभ्रष्टः** (मार्ग से भ्रष्ट हुआ)
अश्वात् पतितः	=	**अश्वपतितः** (घोड़े से गिरा हुआ)
वृक्षात् पतितः	=	**वृक्षपतितः** (वृक्ष से गिरा हुआ)
स्वर्गात् पतितः	=	**स्वर्गपतितः** (स्वर्ग से पतित)

षष्ठी तत्पुरुष समास

जिस तत्पुरुष समास का पूर्वपद षष्ठी विभक्ति में हो, ऐसे षष्ठ्यन्त पदों का समर्थ सुबन्त के साथ षष्ठी तत्पुरुष समास होता है।

सूत्र- ''षष्ठी'' (2.2.8)

जैसे-

समासविग्रह		सामासिक पद (अर्थ सहित)
नराणां पतिः	=	**नरपतिः** (मनुष्यों का स्वामी)
विद्यायाः आलयः	=	**विद्यालयः** (विद्या का घर)
राज्ञः सेवकः	=	**राजसेवकः** (राजा का सेवक)
राज्ञः पुरुषः	=	**राजपुरुषः** (राजा का पुरुष)
राज्ञः कुमारः	=	**राजकुमारः** (राजा का कुमार)
राज्ञः पुत्रः	=	**राजपुत्रः** (राजा का पुत्र)
राज्ञः माता	=	**राजमाता** (राजा की माता)
दशरथस्य पुत्रः	=	**दशरथपुत्रः** (दशरथ का पुत्र)
देवस्य पूजा	=	**देवपूजा** (देव की पूजा)
रामस्य अनुजः	=	**रामानुजः** (राम का भाई)
प्रजायाः पतिः	=	**प्रजापतिः** (प्रजा का स्वामी)
कृष्णस्य सखा	=	**कृष्णसखः** (कृष्ण का सखा)
नन्दस्य नन्दनः	=	**नन्दनन्दनः** (नन्द का नन्दन)
सीतायाः पतिः	=	**सीतापतिः** (सीता का पति)
ईश्वरस्य भक्तः	=	**ईश्वरभक्तः** (ईश्वर का भक्त)
गङ्गायाः जलम्	=	**गङ्गाजलम्** (गङ्गा का जल)
देवस्य मन्दिरम्	=	**देवमन्दिरम्** (देवों का मन्दिर)
हिमस्य आलयः	=	**हिमालयः** (हिम का घर)
राष्ट्रस्य पतिः	=	**राष्ट्रपतिः** (राष्ट्र का स्वामी)
देवानां भाषा	=	**देवभाषा** (देवों की भाषा)
पशूनां पतिः	=	**पशुपतिः** (पशुओं का स्वामी)
पाठस्य शाला	=	**पाठशाला** (पठन का घर)
काल्याः दासः	=	**कालिदासः** (काली का दास)

सप्तमी तत्पुरुष सूत्र - ''सप्तमी शौण्डै''

जिस तत्पुरुष समास का पूर्वपद सप्तमी विभक्ति में हो, ऐसे सप्तम्यन्त सुबन्तों का शौण्डादिगण में पठित शब्दों के साथ सप्तमी तत्पुरुष समास होता है। जैसे-

समास विग्रह		सामासिकपद (अर्थ सहित)
अक्षेषु शौण्डः	=	**अक्षशौण्डः** (पासों में चतुर)
कार्ये कुशलः	=	**कार्यकुशलः** (कार्य में कुशल)
रणे कुशलः	=	**रणकुशलः** (रण में कुशल)
मुनिषु श्रेष्ठः	=	**मुनिश्रेष्ठः** (मुनियों में श्रेष्ठ)
पुरुषेषु उत्तमः	=	**पुरुषोत्तमः** (पुरुषों में श्रेष्ठ)
गुरौ भक्तिः	=	**गुरुभक्तिः** (गुरु में भक्ति)
युद्धे निपुणः	=	**युद्धनिपुणः** (युद्ध में निपुण)
नरेषु उत्तमः	=	**नरोत्तमः** (नरों में श्रेष्ठ)
विद्यायां प्रवीणः	=	**विद्याप्रवीणः** (विद्या में कुशल)

तत्पुरुष समास के उपभेद

(i) नञ् तत्पुरुष समास -

सूत्र- ''नञ्'' (2.2.6) 'नञ्' इस अव्यय का समर्थ सुबन्त के साथ नञ् तत्पुरुष समास होता है। अर्थात् जिस समास का पूर्वपद 'नञ्' हो तथा उत्तरपद कोई संज्ञा या विशेषण हो तो वहाँ नञ् समास होगा।

➢ 'नञ्' के बाद यदि व्यञ्जन वर्ण आते हैं तो 'नञ्' के स्थान पर 'अ' और यदि 'नञ्' के बाद स्वरवर्ण आये तो 'नञ्' के स्थान पर 'अन्' हो जाता है। जैसे-

न स्वस्थः	=	अस्वस्थः (बीमार)
न अश्वः	=	अनश्वः (घोड़ा नहीं)

नञ् समास के उदाहरण

समास विग्रह		सामासिक पद (अर्थ सहित)
न कृतम्	=	**अकृतम्** (जो किया न हो)
न इच्छा	=	**अनिच्छा** (इच्छा न हो)
न आगतम्	=	**अनागतम्** (जो आया न हो)
न गजः	=	**अगजः** (जो गज न हो)
न उक्तः	=	**अनुक्तः** (जो उक्त न हो)
न मोघः	=	**अमोघः** (अव्यर्थ)
न सिद्धः	=	**असिद्धः** (असफल)
न ब्राह्मणः	=	**अब्राह्मणः** (अब्राह्मण)
न ईश्वरः	=	**अनीश्वरः** (जो ईश्वर न हो)
न अर्थः	=	**अनर्थः** (अनर्थ)
न उचितः	=	**अनुचितः** (जो उचित नहीं)

(ii) गति समास या प्रादि तत्पुरुष समास-

जिस तत्पुरुष समास के पूर्वपद में कु आदि शब्द, ऊरी आदि गतिसंज्ञक शब्द, प्र आदि शब्द आयें तो इनका समर्थ सुबन्तों के

साथ नित्य समास होता है, ऐसे समास को **गति तत्पुरुष** या **प्रादि तत्पुरुष** समास कहते हैं।
जैसे-

कुत्सितः पुत्रः = **कुपुत्रः** (बुरा पुत्र)
सुन्दरः देशः = **सुदेशः** (सुन्दर देश)
कुत्सितः पुरुषः = **कुपुरुषः** (निन्दित पुरुष)
कुत्सितः राजा = **कुराजा** (बुरा राजा)
प्रगतः आचार्यः = **प्राचार्यः** (श्रेष्ठ आचार्य)
विरुद्धः पक्षः = **विपक्षः** (जो पक्ष में न हो)
शोभनः पुरुषः = **सुपुरुषः** (सुन्दर पुरुष)
प्रकृष्टो वीरः = **प्रवीरः** (प्रकृष्ट वीर)
ऊरी कृत्वा = **ऊरीकृत्य** (स्वीकार करके)
अशुक्लं शुक्लं कृत्वा = **शुक्लीकृत्य** (सफेद करके)
पटत् पटत् इति कृत्वा = **पटपटाकृत्य** (पटत् पटत् इसप्रकार शब्द करके)

(iii) उपपद तत्पुरुष समास

कृदन्त सुबन्तों के साथ उपपदों का समास ही उपपदसमास कहलाता है। इस समास में पूर्वपद उपपद तथा उत्तरपद कृत् प्रत्ययान्त समर्थ पद होता है। अर्थात् उपपद सुबन्त का तिङ् रहित धातु के साथ समास होता है। जैसे-

कुम्भं करोति इति = **कुम्भकारः** (कुम्हार)
धर्मं जानाति इति = **धर्मज्ञः** (जो धर्म जानता है)
सामं गायति इति = **सामगः** (जो सामवेद को जानता है)
आसने तिष्ठति इति= **आसनस्थः** (जो आसन पर बैठता है)
धनं ददाति इति = **धनदः** (जो धन देता है)
भारं हरति इति = **भारहारः** (भार ढोने वाला, कुली)
दिनं करोति इति = **दिनकरः** (सूर्य)
शं करोति इति = **शङ्करः** (महादेव)
भिक्षां चरति इति = **भिक्षाचरः** (भिखारी)
निशायां चरति इति = **निशाचरः** (रात्रि में विचरण करने वाला, राक्षस)
उरसा गच्छति इति = **उरगः** (छाती के बल चलने वाला, साँप)
विहायसा गच्छति इति = **विहगः** (आकाशमार्ग से चलने वाला, पक्षी)
पङ्के जायते इति = **पङ्कजः** (कमल)
मर्म जानाति इति = **मर्मज्ञः** (मर्म को जानने वाला)
कम्बलं ददाति इति = **कम्बलदः** (कम्बल देने वाला)
प्रभां करोति इति = **प्रभाकरः** (सूर्य)

अलुक् तत्पुरुष समास

- 'अलुक्' का अर्थ है न लुक् अर्थात् 'लोप' का न होना। जिस समास में विभक्ति का लोप नहीं होता उसे अलुक् समास कहते हैं।
- सामान्यतया समास में सामासिक पदों की विभक्ति का लोप हुआ करता है, किन्तु कुछ शब्दों में समास होने पर भी विभक्ति का लोप (लुक्) नहीं होता, उसे 'अलुक्' तत्पुरुष समास कहते हैं।

अलुक् तत्पुरुष समास के उदाहरण

समासविग्रह		सामासिक पद (अर्थ सहित)
आत्मने पदम्	=	**आत्मनेपदम्** (अपने लिए पद)
पस्स्मै पदम्	=	**परस्मैपदम्** (दूसरे के लिए पद)
युधि स्थिरः	=	**युधिष्ठिरः** (युद्ध में स्थिर)
कृच्छ्रात् आगतः	=	**कृच्छ्रादागतः** (कठिनाई से आया हुआ)
अभ्यासात् आगतः	=	**अभ्यासादागतः** (अभ्यास से आया हुआ)
सरसि जातम्	=	**सरसिजम्** (तालाब में उत्पन्न)
खे चरति	=	**खेचरः** (आकाश में विचरण करने वाला पक्षी)
वाचः पतिः	=	**वाचस्पतिः** (बृहस्पति)
शरदि जायते	=	**शरदिजः** (शरद् में होने वाला)
प्रावृषि जायते	=	**प्रावृषिजः** (बरसात में होने वाला)
देवानां प्रियः	=	**देवानाम्प्रियः** (मूर्ख)

कर्मधारय समास

तत्पुरुष समास के समानाधिकरण भेद को कर्मधारय समास कहते हैं। अर्थात् समान अधिकरण (विभक्ति) वाला तत्पुरुष, कर्मधारय होता है।

''तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः'' (1.2.42)
तात्पर्य यह है कि पूर्वपद एवं उत्तरपद, दोनों में समान विभक्ति (प्रथमा) लगी रहती है। जैसे- कृष्णः सर्पः = कृष्णसर्पः

- कर्मधारय अथवा समानाधिकरण तत्पुरुष में पूर्वपद विशेषण एवं उत्तरपद विशेष्य होता है। कहीं कहीं दोनों पद विशेष्य होते हैं।

सूत्र- ''विशेषणं विशेष्येण बहुलम्'' (2.1.57) अर्थात् समान विभक्ति वाले विशेषण का विशेष्य के साथ बहुलता से समास होता है।

कर्मधारय समास के भेद

कर्मधारय समास के कुछ प्रमुख भेद निम्नवत् हैं-

(i) विशेषण पूर्वपद कर्मधारय- कर्मधारय समास में यदि प्रथम पद विशेषण तथा द्वितीय पद विशेष्य होता है, तो उसे विशेषण पूर्वपद कर्मधारय कहते हैं। यथा-

समास विग्रह		सामासिक पद (अर्थ सहित)
कृष्णः सर्पः	=	**कृष्णसर्पः** (काला साँप)
महान् चासौ देवः	=	**महादेवः** (महादेव)
महान् चासौ राजा	=	**महाराजः** (महान् राजा)
महान् चासौ आत्मा	=	**महात्मा** (महान् आत्मा)
श्रेष्ठः पुरुषः	=	**श्रेष्ठपुरुषः** (श्रेष्ठ पुरुष)
महान् चासौ पुरुषः	=	**महापुरुषः** (महान् पुरुष)
महान् चासौ ऋषिः	=	**महर्षिः** (महान् ऋषि)
महान् कविः	=	**महाकविः** (महान् कवि)
महान् चासौ रथी	=	**महारथी** (महान् रथी)
महत् काव्यम्	=	**महाकाव्यम्** (महान् काव्य)
श्वेतं च तत् वस्त्रम्	=	**श्वेतवस्त्रम्** (सफेद वस्त्र)
श्वेतः च असौ अश्वः	=	**श्वेताश्वः** (सफेद घोड़ा)
सुन्दरः च असौ बालकः	=	**सुन्दरबालकः** (सुन्दर बालक)
मधुरं च तत्फलम्	=	**मधुरफलम्** (मधुरफल)
नीलः आकाशः	=	**नीलाकाशः** (नीला आकाश)
रक्तं च तत् उत्पलम्	=	**रक्तोत्पलम्** (लाल कमल)
गौरः बालकः	=	**गौरबालकः** (गोरा बालक)
नीलम् उत्पलम्	=	**नीलोत्पलम्** (नीला कमल)
नीलं कमलम्	=	**नीलकमलम्** (नील कमल)
प्रियः सखा	=	**प्रियसखः** (प्रिय मित्र)
महती नदी	=	**महानदी** (बडी नदी)

(ii) उपमानपूर्वपद कर्मधारय

''उपमानानि सामान्यवचनैः'' (2.1.55) - जब उपमानवाचक शब्द का सामान्यवाचक शब्द के साथ समास होता है, तो उसे उपमानपूर्वपद कर्मधारय कहते हैं।

समासविग्रह		सामासिक पद (अर्थसहित)
घन इव श्यामः	=	**घनश्यामः** (घनश्याम)
विद्युत् इव चञ्चला	=	**विद्युच्चञ्चला** (बिजली सी चञ्चल)
नवनीतम् इव कोमलम्	=	**नवनीतकोमलम्** (नवनीत के समान कोमल)
चन्द्रः इव उज्ज्वलः	=	**चन्द्रोज्ज्वलः** (चन्द्रमा सा उज्ज्वल)
चन्द्रः इव मुखम्	=	**चन्द्रमुखम्** (चन्द्रमा के समान मुख)
नरः शार्दूल इव	=	**नरशार्दूलः** (नरों में चीते के समान)
पुरुषः सिंह इव	=	**पुरुषसिंहः** (सिंह के समान पुरुष)
नरः सिंह इव	=	**नरसिंहः** (मनुष्य सिंह के समान)
चन्द्र इव आह्लादकः	=	**चन्द्राह्लादकः** (चन्द्र के समान कोमल)
कमलम् इव कोमलम्	=	**कमलकोमलम्** (कमल के समान कोमल)
पुरुषः व्याघ्र इव	=	**पुरुषव्याघ्रः** (व्याघ्र के समान पुरुष)
दुग्धम् इव धवलम्	=	**दुग्धधवलम्** (दूध के समान सफेद)
नीरदः इव श्यामः	=	**नीरदश्यामः** (बादल के समान काला)

(iii) रूपक कर्मधारय–

उपमान और उपमेय के एकरूप होने से, उपमान उपमेय पद के समास को रूपक कर्मधारय समास कहते हैं। जैसे-

समासविग्रह		सामासिक पद (अर्थ सहित)
शोक एव अग्निः	=	**शोकाग्निः** (शोकरूपी अग्नि)
विद्या एव धनम्	=	**विद्याधनम्** (विद्यारूपी धन)
मुखमेव कमलम्	=	**मुखकमलम्** (मुखरूपी कमल)
परीक्षा एव पयोधिः	=	**परीक्षापयोधिः**(परीक्षारूपी सागर)

(iv) उभयपद विशेषण कर्मधारय–

इस समास में पूर्वपद और उत्तरपद दोनों विशेषण होते हैं। जैसे-

समासविग्रह		सामासिकपद (अर्थ सहित)
पीतः चासौ कृष्णः	=	**पीतकृष्णः** (पीला और काला)
श्वेतः चासौ कृष्णः	=	**श्वेतकृष्णः** (श्वेत और काला)
चरं च अचरं च	=	**चराचरम्** (चराचर)
पूर्वं सुप्तः पश्चात् उत्थितः	=	**सुप्तोत्थितः** (पहले सोया फिर उठा)
कृतं च अकृतं च	=	**कृताकृतम्** (किया हुआ और न किया हुआ)
शीतं च उष्णम्	=	**शीतोष्णम्** (ठण्डा-गरम)
रक्तश्च पीतश्च	=	**रक्तपीतः** (लाल-पीला)

नोट - **परवल्लिङ्गं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः (2.426)**
द्वन्द्व और तत्पुरुष का लिङ्ग उस समास के बाद वाले पद के समान होता है।

4. द्विगु समास

''**संख्यापूर्वो द्विगुः**'' (2.1.52) - अर्थात् जिस समास में पूर्वपद संख्यावाचक हो, वह द्विगु समास कहलाता है। यह कर्मधारय समास का उपभेद है, पर अपने प्रकृति वैशिष्ट्य के कारण स्वतन्त्र समास के रूप में स्वीकृत है।

द्विगु समास के उदाहरण-

समास विग्रह	सामासिकपद (अर्थ सहित)
पञ्चानां गवां समाहारः	= **पञ्चगवम्** (पाँच गायों का समूह)
पञ्चानां वटानां समाहारः	= **पञ्चवटी** (पाँच वटों/वृक्षों का समूह)
पञ्चानां पात्राणां समाहारः	= **पञ्चपात्रम्** (पाँच पात्रों का समूह)
पञ्चानाम् अमृतानां समाहारः	= **पञ्चामृतम्** (पाँच अमृतों का समूह)
पञ्चानां दिनानां समाहारः	= **पञ्चदिनम्** (पाँच दिनों का समूह)
त्रयाणां लोकानां समाहारः	= **त्रिलोकी** (तीन लोकों का समाहार)
त्रयाणां भुवनानां समाहारः	= **त्रिभुवनम्** (तीनों भुवनों का समाहार)
चतुर्णां फलानां समाहारः	= **चतुर्फलम्** (चार फलों का समाहार)
अष्टानाम् अध्यायानां समाहारः	= **अष्टाध्यायी** (आठ अध्यायों का समाहार)
त्रयाणां फलानां समाहारः	= **त्रिफला** (तीन फलों का समाहार)
शतानाम् अब्दानां समाहारः	= **शताब्दी** (सौ वर्षों का समूह)
चतुर्णां भुजानां समाहारः	= **चतुर्भुजम्** (चार भुजाओं का समूह)
तिसृणां वेणीनां समाहारः	= **त्रिवेणी** (तीन वेणियों का समूह)
चतुर्णां युगानां समाहारः	= **चतुर्युगम्** (चार युगों का समूह)
सप्तानां शतानां समाहारः	= **सप्तशती** (सात सैकड़ों का समूह)
सप्तानाम् अह्नाम् समाहारः	= **सप्ताहः** (सात अह्नों/दिनों का समाहार)
नवानां रात्रीणां समाहारः	= **नवरात्रम्** (नव रात्रियों का समूह)

5. द्वन्द्व समास

''**उभयपदार्थप्रधानः द्वन्द्वः**'' अर्थात् जिस समास में उभयपद (दोनों पद) या सभी पदों की प्रधानता होती है, उसे द्वन्द्वसमास कहते हैं। जैसे- रामश्च कृष्णश्च = **रामकृष्णौ**

यहाँ 'राम' और 'कृष्ण' दोनों पद प्रधान हैं, अतः इसमें द्वन्द्वसमास है।

द्वन्द्व समास के भेद- द्वन्द्व समास के मुख्यतः दो ही भेद होते हैं किन्तु एकशेष को शामिल करके इसके कुल तीन भेद हो जाते हैं-

(i) इतरेतर द्वन्द्व- जब समास में प्रयुक्त होने वाले शब्द के अर्थ अपनी-अपनी प्रधानता अलग-अलग प्रदर्शित करते हैं, उसे इतरेतर द्वन्द्व कहते हैं। इसका लिङ्ग निर्धारण उत्तरपद के अनुसार होता है।

जैसे- 'रामश्च लक्ष्मणश्च = रामलक्ष्मणौ' - यहाँ राम तथा लक्ष्मण का अलग-अलग अस्तित्व है। अतः यहाँ 'रामलक्ष्मणौ' में इतरेतर द्वन्द्व समास है।

(ii) समाहार द्वन्द्व- जिस द्वन्द्व समास में आये हुए पद अपना अर्थ बतलाने के साथ-साथ समूह या समाहार अर्थ का भी बोध कराते हैं, उसे 'समाहार द्वन्द्व' कहते हैं। यह समास नित्य नपुंसकलिङ्ग में होता है।

यथा- पाणिपादम् = पाणी च पादौ च तेषां समाहारः (हाथ और पैर का समूह)

(iii) एकशेष द्वन्द्व- जिस द्वन्द्व समास में दो या दो से अधिक पदों में से केवल एक पद शेष रहता है, उसे 'एकशेष द्वन्द्व' कहते हैं। जैसे- दुहिता च दुहिता च = दुहितरौ।

➢ यदि समास में पुँल्लिङ्ग तथा स्त्रीलिङ्ग दोनों प्रकार के शब्द हों तो पुँल्लिङ्ग शब्द ही शेष बचेगा। जैसे-

माता च पिता च = **पितरौ**

मयूरी च मयूरः च = **मयूरौ**

द्वन्द्व समास करने वाला सूत्र-

''**चार्थे द्वन्द्वः**'' (2.2.29) इस सूत्र से 'च' (और) के अर्थ में विद्यमान अनेक सुबन्तों का द्वन्द्व समास होता है।

इतरेतर द्वन्द्व समास के उदाहरण

सीता च रामश्च	= **सीतारामौ** (सीता और राम)
रामः च कृष्णः च	= **रामकृष्णौ** (राम और कृष्ण)
देवश्च असुरश्च	= **देवासुरौ** (देवता और असुर)
धर्मश्च अर्थश्च	= **धर्मार्थौ** (धर्म और अर्थ)
कृष्णश्च अर्जुनश्च	= **कृष्णार्जुनौ** (कृष्ण और अर्जुन)
वाणी च विनायकश्च	= **वाणीविनायकौ** (वाणी और विनायक)

पार्वती च परमेश्वरश्च	=	**पार्वतीपरमेश्वरौ** (पार्वती और परमेश्वर महादेव)
सूर्यश्च चन्द्रश्च	=	**सूर्यचन्द्रौ** (सूर्य और चन्द्र)
शिवश्च केशवश्च	=	**शिवकेशवौ** (शिव और केशव)
रामश्च लक्ष्मणश्च	=	**रामलक्ष्मणौ** (राम और लक्ष्मण)
भीमश्च अर्जुनश्च	=	**भीमार्जुनौ** (भीम और अर्जुन)
सज्जनश्च दुर्जनश्च	=	**सज्जनदुर्जनौ** (सज्जन और दुर्जन)
ईशश्च कृष्णश्च	=	**ईशकृष्णौ** (ईश और कृष्ण)
पिता च पुत्रश्च	=	**पितापुत्रौ** (पिता और पुत्र)
हरिश्च हरश्च	=	**हरिहरौ** (हरि और हर)
बालश्च वृद्धश्च	=	**बालवृद्धौ** (बालक और वृद्ध)
नरश्च नारी च	=	**नरनार्यौ** (नर और नारी)
जाया च पतिश्च	=	**जायापती/जम्पती/दम्पती** (पति और पत्नी)

नोट- इतरेतर द्वन्द्व समास में दो या दो से अधिक पदों का योग होता है। दो पदों के लिए द्विवचन और दो से अधिक पदों का समास होने पर बहुवचन का प्रयोग होता है। लिङ्ग अन्तिम पद के समान प्रयोग किया जाता है। जैसे-

☆ हरिश्च हरश्च गुरुश्च = **हरिहरगुरवः**

☆ रामश्च भरतश्च लक्ष्मणश्च शत्रुघ्नश्च = **रामभरतलक्ष्मणशत्रुघ्नाः**

यहाँ दो से अधिक पदों का समास हुआ है, अतः बहुवचन का प्रयोग हुआ है।

समाहार द्वन्द्व के उदाहरण

समास विग्रह		सामासिकपद (अर्थ सहित)
पाणी च पादौ च तेषां समाहारः	=	**पाणिपादम्** (हाथ और पैर का समूह)
रथिकः च अश्वारोही च	=	**रथिकाश्वारोहम्** (रथी और घुड़सवार)
भेरी च पटहश्च	=	**भेरीपटहम्** (भेरी और पटह का समूह)
अहिश्च नकुलश्च	=	**अहिनकुलम्** (साँप और नेवला)
अहश्च रात्रिश्च	=	**अहोरात्रम्** (रात और दिन)
रथाश्च अश्वाश्च तेषां समाहारः	=	**रथाश्वम्** (रथ और घोड़े)
संज्ञा च परिभाषा च अनयोः समाहारः	=	**संज्ञापरिभाषम्** (संज्ञा और परिभाषा का समूह)

नोट- जिस समास में अनेक पदों के समूह का बोध होता है, उसे समाहार द्वन्द्व कहते हैं। समाहार द्वन्द्व में समास के बाद नपुंसकलिङ्ग एकवचन का प्रयोग होता है।

एकशेष द्वन्द्व समास के उदाहरण

समास विग्रह		सामासिक पद (अर्थ सहित)
माता च पिता च	=	**पितरौ** (माता और पिता)
पुत्रश्च पुत्री च	=	**पुत्रौ** (पुत्र और पुत्री)
रामश्च रामश्च	=	**रामौ** (दो राम)
हंसश्च हंसी च	=	**हंसौ** (हंस और हंसी)
युवा च युवती च	=	**युवानौ** (युवक और युवती)
दुहिता च दुहिता च	=	**दुहितरौ** (दो पुत्रियाँ)
मयूरी च मयूरः च	=	**मयूरौ** (मयूरी और मयूर)
भ्राता च स्वसा च	=	**भ्रातरौ** (भाई और बहन)
श्वश्रूः च श्वसुरश्च	=	**श्वसुरौ** (सास और ससुर)

नोट- (i) एकः च दश च = एकादश

(ii) द्वौ च दश च = द्वादश

(iii) त्रयः च दश च = त्रयोदश

(iv) अष्टौ च दश च = अष्टादश इत्यादि में द्वन्द्व समास है।

6. बहुव्रीहि समास

''अन्यपदार्थप्रधानो बहुव्रीहिः'' अर्थात् जिस समास में सामासिक पदों से भिन्न किसी अन्य पद का अर्थ प्रधान होता है, उसे 'बहुव्रीहि' समास कहते हैं। अर्थात् बहुव्रीहि में जितने भी पद होते हैं वे सभी मिलकर किसी दूसरे पद के विशेषण होते हैं।

जैसे- लम्बम् उदरं यस्य सः = **लम्बोदरः**।

यहाँ लम्बम् उदरं दोनों विशेषण विशेष्य तो है लेकिन वे किसी अन्य पद 'गणेश' की विशेषता बता रहे हैं। अतः यहाँ बहुव्रीहि समास है।

बहुव्रीहि समास विधायक सूत्र- अनेकमन्यपदार्थे (2.2.24) - अन्य पद के अर्थ में वर्तमान अनेक प्रथमान्त पदों का विकल्प से बहुव्रीहि समास होता है।

बहुव्रीहि समास के भेद-

(क) समानाधिकरण बहुव्रीहि- इसके दोनों पदों में समान विभक्ति होती है।

समास विग्रह		सामासिक पद (अर्थ सहित)
पीतम् अम्बरं यस्य सः	=	**पीताम्बरः** (श्रीकृष्ण) पीले वस्त्र वाला
लम्बम् उदरं यस्य सः	=	**लम्बोदरः** (गणेश) लम्बा है उदर जिसका
नीलं कण्ठं यस्य सः	=	**नीलकण्ठः** (शिव) नीला है कण्ठ जिसका
श्वेतम् अम्बरं यस्य सः	=	**श्वेताम्बरः** (साधु) सफेद है वस्त्र जिसका

दामम् उदरं यस्य सः = **दामोदरः** (श्रीकृष्ण) रस्सी है उदर पर जिसके
जितानि इन्द्रियाणि येन सः = **जितेन्द्रियः** (मुनि) जीत ली है इन्द्रियाँ जिसने
शुक्लम् अम्बरं यस्याः सा = **शुक्लाम्बरा** (सरस्वती)
दश आननानि यस्य सः = **दशाननः** (रावण)
चत्वारि आननानि यस्य सः = **चतुराननः** (ब्रह्मा)
दिक् अम्बरं यस्य सः = **दिगम्बरः** (शिव)
प्राप्तम् उदकं यं सः = **प्राप्तोदकः** (जल जिसे प्राप्त है।)
महान् आशयः यस्य सः = **महाशयः** (सभ्य व्यक्ति)
यशः एव धनं यस्य सः = **यशोधनः** (राजा) यश ही है धन जिसका
लब्धा प्रतिष्ठा येन सः = **लब्धप्रतिष्ठः** (विद्वान्)
नीलम् अम्बरं यस्य सः = **नीलाम्बरः** (बलराम)
दिव्यम् अम्बरं यस्य सः = **दिव्याम्बरः** (दिव्य हैं वस्त्र जिसका, वह)
पञ्च आननानि यस्य सः = **पञ्चाननः** (शिव)
नीलं कण्ठं यस्य सः = **नीलकण्ठः** (शिव)
गज इव आननं यस्य सः = **गजाननः** (गणेश)
कमलम् आसनं यस्य सः = **कमलासनः** (ब्रह्मा)
लम्बौ कर्णौ यस्य सः = **लम्बकर्णः** (लम्बे हैं कान जिसके, वह)

(ख) व्यधिकरण बहुव्रीहि-

इसके दोनों पद अलग-अलग विभक्तियों में होते हैं। जैसे-

चक्रं पाणौ यस्य सः = **चक्रपाणिः** (विष्णु)
वीणा पाणौ यस्याः सा = **वीणापाणिः** (सरस्वती)
धनुः पाणौ यस्य सः = **धनुष्पाणिः** (श्रीराम)
चन्द्रः शेखरे यस्य सः = **चन्द्रशेखरः** (शिव)
पीयूषं पाणौ यस्य सः = **पीयूषपाणिः** (वैद्य)
मृगस्य नयने इव नयने यस्याः सा = **मृगनयनी** (स्त्री) (मृग के नयनों के समान हैं नयन जिसके)
शूलं पाणौ यस्य सः = **शूलपाणिः** (शूल है हाथ में जिसके, वह)
शीतिः कण्ठे यस्य सः = **शीतिकण्ठः** (नीलिमा है जिसके कण्ठ में, वह)
चन्द्रस्य कान्तिः इव कान्तिः यस्य सः = **चन्द्रकान्तिः** (चन्द्र की कान्ति के समान कान्ति है जिसकी, वह)
गदा पाणौ यस्य सः = **गदापाणिः** (विष्णु)

(ग) व्यतिहार बहुव्रीहि-

युद्ध लड़ाई आदि का ज्ञान कराने वाले सप्तम्यन्त तथा तृतीयान्त पदों में जो समास होता है, उसे व्यतिहार बहुव्रीहि कहते हैं। यथा-

☆ केशेषु केशेषु गृहीत्वा इदं युद्धं प्रवृत्तम् = **केशाकेशि** (बालों को पकड़कर प्रारम्भ होने वाला युद्ध)
☆ हस्ताभ्यां हस्ताभ्यां प्रवृत्तं युद्धम् = **हस्ताहस्ति** (हाथों से प्रवृत्त हुआ युद्ध)
☆ दण्डैश्च दण्डैश्च प्रहृत्य इदं युद्धं प्रवृत्तम् = **दण्डादण्डि** (परस्पर लाठियों से मार-मार कर युद्ध में प्रवृत्त हुआ)
☆ मुष्टिभिश्च मुष्टिभिश्च प्रहृत्य इदं युद्धं प्रवृत्तम् = **मुष्टामुष्टि** (परस्पर मुक्कों से मार-मार कर यह लड़ाई लड़ी गयी)

(घ) तुल्य योग बहुव्रीहि-

जब बहुव्रीहि समास में साथ अर्थ वाले 'सह' का समास होता है, तब तुल्ययोग बहुव्रीहि समास होता है। 'सह' को विकल्प से 'स' हो जाता है। जैसे-

अर्जुनेन सह = **सार्जुनः** (अर्जुन के साथ)
राधिकया सह इति = **सराधिकः** (कृष्ण) राधिका के साथ
भार्यया सह = **सभार्यः** (स्त्री सहित)
कलाभिः समम् = **सकलम्** (कलाओं से युक्त)
सीतया सह = **ससीतः** (राम, सीता के साथ)
पुत्रेण सह = **सपुत्रः** (पुत्र के साथ)
परिवारेण सह = **सपरिवारः** (परिवार के साथ)
अनुजेन सह = **सानुजः** (अनुज के साथ)

बहुव्रीहि समास के कुछ अन्य उदाहरण-

द्वौ वा त्रयो वा = **द्वित्राः** (दो या तीन)
त्रयः वा चत्वारो वा = **त्रिचतुराः** (तीन-चार)
पञ्च वा षट् वा = **पञ्चषाः** (पाँच या छह)
युवतिः जाया यस्य सः = **युवजानिः** (जिसकी स्त्री युवती है, वह)
सीता जाया यस्य सः = **सीताजानिः** (जिसकी स्त्री सीता है, वह)
पठितुं कामं यस्य सः = **पठितुकामः** (पढ़ने की इच्छा वाला)
अविद्यमानो पुत्रः यस्य सः = **अपुत्रः**

❑❑

कारक तथा विभक्ति

- **'क्रियां करोति इति कारकम्'** क्रिया को करने वाला कारक है।
- **'क्रियाजनकत्वं कारकत्वम्'** क्रिया का जो जनक होता है, वह कारक है।
- **'क्रियान्वयित्वं कारकत्वम्'** क्रिया के साथ जिसका सीधा सम्बन्ध (अन्वय) होता है, उसे कारक कहते हैं।

जैसे- वन से आकर राम ने सीता के लिए लंका में रावण को बाण से मारा था।

वनात् आगत्य रामः सीतायै लङ्कायां रावणं बाणेन जघान।

स्पष्टीकरण-

(i) इस वाक्य में 'मारना' क्रिया को सम्पादित करने वाला 'राम' है, अतः 'राम' कर्ताकारक है।

(ii) क्रिया का प्रभाव जिस पर पड़ता है वह कर्म है। 'मारना' क्रिया का प्रभाव 'रावण' पर पड़ता है, अतः 'रावण' कर्म है।

(iii) क्रिया के सम्पन्न करने में अत्यधिक सहायक 'करण' कहलाता है, यहाँ 'मारने' की क्रिया में अत्यधिक सहायक 'बाण' है अतः 'बाण' करण कारक है।

(iv) सीता के लिए रावण मारा गया, अतः 'सीता' सम्प्रदान है।

(v) 'वन' अपादान कारक है।

(vi) मारने की क्रिया लंका में पूर्ण हुई थी, अतः लंका अधिकरण कारक है।

इसप्रकार इस वाक्य में 'राम, सीता, रावण, वन, बाण, लंका' इन सभी शब्दों का 'मारना' (जघान) क्रिया से सम्बन्ध है, अतः उपर्युक्त ये सभी शब्द कारक हैं।

कारकों की संख्या - कारक छह हैं-

1. कर्ता 2. कर्म 3. करण 4. सम्प्रदान 5. अपादान 6. अधिकरण

कर्ता कर्म च करणं सम्प्रदानं तथैव च।
अपादानाधिकरणे इत्याहुः कारकाणि षट्॥

जिनका क्रिया के साथ सीधा सम्बन्ध नहीं होता या जो क्रिया की सिद्धि में सहायक नहीं होते, उन्हें कारक नहीं कहा जा सकता। इसीलिए सम्बन्ध और सम्बोधन कारक नहीं माने जाते क्योंकि क्रिया के साथ इनका साक्षात् सम्बन्ध नहीं होता।

कारक चिह्न

विभक्ति	कारक	चिह्न
प्रथमा/तृतीया	कर्ता	ने
द्वितीया	कर्म	को
तृतीया	करण	से/द्वारा
चतुर्थी	सम्प्रदान	के लिए
पञ्चमी	अपादान	से (अलग होना)
षष्ठी	सम्बन्ध	का, के, की, रा, रे, री
सप्तमी	अधिकरण	में, पै, पर
प्रथमा	सम्बोधन	हे, भो, अरे

प्रथमा विभक्ति

1. स्वतन्त्रः कर्ता- क्रिया करने में जिसकी स्वतन्त्रता मानी जाय, वही कर्ता होता है। यह सूत्र 'कर्तृसंज्ञा' करने वाला संज्ञा सूत्र है। जैसे- मोहनः पठति। यहाँ 'मोहन' पठन क्रिया करने में स्वातन्त्र्येण विवक्षित है, अतः 'मोहन' कर्ता है।

वाक्य में कर्ता की स्थिति के अनुसार संस्कृत में वाक्य तीन प्रकार के होते हैं-

(क) कर्तृवाच्य- मोहनः पुस्तकं पठति। - यहाँ कर्ता की प्रधानता होती है, और उसमें प्रथमा विभक्ति होती है।

(ख) कर्मवाच्य- मोहनेन पुस्तकं पठ्यते। यहाँ 'कर्म' की प्रधानता होती है और कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है।

(ग) भाववाच्य- रामेण भूयते। यहाँ भाव (क्रिया) की प्रधानता होती है, और कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है।

2. प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा- प्रातिपदिकार्थ मात्र में, लिङ्गमात्र के आधिक्य में, परिमाण मात्र के आधिक्य में तथा वचनमात्र के आधिक्य में प्रथमा विभक्ति होती है।

- किसी प्रातिपदिक के उच्चारण से स्वार्थ, द्रव्य, लिङ्ग, संख्या और कारक- इन पाँचों में, जिसका ज्ञान निश्चित रूप से हो, उसे प्रातिपदिकार्थ कहते हैं।

उदाहरण- उच्चैः, नीचैः, कृष्णः, श्रीः, ज्ञानम्।

लिङ्गमात्राधिक्ये प्रथमा- जिन शब्दों के लिङ्ग निश्चित नहीं हैं, उन शब्दों से लिङ्गमात्राधिक्य में प्रथमा विभक्ति होती है। जैसे- तटः (पुंलिङ्ग), तटी (स्त्रीलिङ्ग), तटम् (नपुंसकलिङ्ग)

परिमाणमात्राधिक्ये प्रथमा- परिमाण (वजन, माप, तौल) मात्रा का बोध कराने के लिए प्रथमा विभक्ति होती है। जैसे- द्रोणो व्रीहिः।

वचनमात्रे प्रथमा- वचन अर्थात् संख्यामात्र का बोध कराने के लिए प्रथमा विभक्ति का प्रयोग होता है। यथा- एकः, द्वौ, बहवः।

3. सम्बोधने च - सम्बोधन में प्रथमा विभक्ति होती है- जैसे- हे राम! अत्र आगच्छ! यहाँ हे राम! में सम्बोधन होने से प्रथमा विभक्ति प्रयुक्त है।

4. उक्ते कर्तरि प्रथमा- कर्तृवाच्य में जहाँ कर्ता उक्त या 'कहा गया' रहता है, उसमें प्रथमा विभक्ति होती है। जैसे- रामः गृहं गच्छति।

➢ यहाँ 'राम' कर्तृवाच्य का कर्ता है जो कि उक्त है अतः 'रामः' में प्रथमा विभक्ति है।

इसप्रकार प्रातिपदिकार्थमात्र में, लिङ्गमात्र में, परिमाणमात्र में, वचनमात्र में, सम्बोधन में, उक्त कर्ता में प्रथमा विभक्ति होगी।

द्वितीया विभक्ति (कर्मकारक)

1. कर्तुरीप्सिततमं कर्म- कर्ता अपनी क्रिया के द्वारा जिसे विशेष रूप से प्राप्त करना चाहता है उसकी कर्मसंज्ञा होती है। जैसे- रामः लेखन्या पत्रं लिखति।

यहाँ 'राम' रूपी कर्ता अपनी लेखन रूपी क्रिया से सबसे ज्यादा 'पत्र' लिखना चाह रहा है अतः 'पत्र' यहाँ कर्म होगा।

2. कर्मणि द्वितीया- कर्म में द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे-

1. रामः गृहं गच्छति।
2. छात्रः विद्यालयं गच्छति।
3. अहं जलं पिबामि।
4. बालकाः फलानि खादन्ति।
5. सः नगरं गच्छति।
6. भक्तः हरिं भजति।

उपर्युक्त वाक्यों में 'गृह, विद्यालय, जल, फल, नगर, हरि' इन सभी की कर्मसंज्ञा है, अतः सभी पदों में कर्म होने के कारण 'कर्मणि द्वितीया' से द्वितीया विभक्ति हुई है।

3. अकथितं च- अपादान, सम्प्रदान, करण आदि कारकों के द्वारा अविवक्षित कारक कर्मसंज्ञक होता है। दुह् आदि (बारह) एवं नी आदि (चार) कुल 16 धातुओं के कर्म से जिसका सम्बन्ध होता है, वह अकथित कहा जाता है।

सोलह द्विकर्मक धातुयें- दुह्, याच्, पच्, दण्ड्, रुध्, प्रच्छ्, चि, ब्रू, शास्, जि, मथ्, मुष् -12

नी, हृ, कृष्, वह् = 4 ये **सोलह द्विकर्मक धातुयें** हैं।

इन सोलह धातुओं एवं इनके समानार्थक धातुओं के योग में अपादान, सम्प्रदान, करण आदि कारकों की कर्मसंज्ञा होती है, और उनमें द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है।

द्विकर्मक धातुओं के योग में अपादान आदि का कर्म होना

	धातु	प्रयोग	अर्थ
1.	**दुह्** (दुहना)	ग्वालः धेनुं दुग्धं दोग्धि।	ग्वाला गाय से दूध दुहता है।
2.	**याच्** (माँगना)	हरिः बलिं वसुधां याचते।	हरि वामन बलि से पृथ्वी माँगते हैं।
		सः नृपं क्षमां याचते।	वह राजा से क्षमा माँगता है।
3.	**पच्** (पकाना)	माता तण्डुलान् ओदनं पचति।	माता चावलों से भात पकाती है।
4.	**दण्ड्** (दण्ड देना)	राजा चौरं शतं दण्डयति।	राजा चोर से 100 रुपये दण्ड लेता है।
5.	**रुध्** (रोकना)	राजा शत्रून् दुर्गं रुणद्धि।	राजा शत्रुओं को किले में रोकता है।
6.	**प्रच्छ्** (पूछना)	गुरुः शिष्यं प्रश्नं पृच्छति।	गुरु शिष्य से प्रश्न पूछता है।
7.	**चि** (चुनना)	बालकः वृक्षं फलानि अवचिनोति।	बालक वृक्ष से फल चुनता है।
8.	**ब्रू** (बोलना)	गुरुः शिष्यं धर्मं ब्रूते।	गुरु शिष्य से धर्म बताता है।
9.	**शास्** (उपदेश देना)	गुरुः शिष्यं धर्मं शास्ति।	गुरु शिष्य को धर्म का उपदेश देता है।
10.	**जि** (जीतना)	सः देवदत्तं शतं जयति।	वह देवदत्त से सौ रुपये जीतता है।
11.	**मथ्** (मथना)	सुधां क्षीरनिधिं मथ्नाति।	अमृत के लिए समुद्र को मथता है।
12.	**मुष्** (चुराना)	यज्ञदत्तं शतं मुष्णाति।	यज्ञदत्त से सौ रुपये चुराता है।
13.	**नी** (ले जाना)	कृषकः धेनुं ग्रामं नयति।	किसान गाय को गाँव ले जाता है।
14.	**हृ** (हरना)	कृषकः धेनुं ग्रामं हरति।	किसान गाय को गाँव ले जाता है।
15.	**कृष्** (खींचना)	कृषकः धेनुं ग्रामं कर्षति।	किसान गाय को गाँव तक खींचकर ले जाता है।
16.	**वह्** (ले जाना)	कृषकः धेनुं ग्रामं वहति।	किसान गाय को ग्राम तक वहन करता है।

4. अधिशीङ्स्थासां कर्म- (1.4.46) **शी** (सोना), **स्था** (ठहरना), **आस्** (बैठना) - इन तीन धातुओं के पहले यदि 'अधि' उपसर्ग जुड़ा हो तो इनके आधार की कर्मसंज्ञा होती है, और कर्म में द्वितीया विभक्ति होगी। जैसे-

1. राजा **सिंहासनम्** अधितिष्ठति। (राजा सिंहासन पर बैठता है)
2. हरिः **वैकुण्ठम्** अध्यास्ते। (हरि वैकुण्ठ में बैठते हैं)
3. शिष्यः **आसनम्** अधितिष्ठति। (शिष्य आसन पर बैठता है)
4. मुनिः **शिलाम्** अधिशेते। (मुनि शिला पर सोते हैं)
5. सः **पर्यङ्कम्** अधिशेते (वह पलंग पर सोता है)

उपर्युक्त वाक्यों में सिंहासन, वैकुण्ठ, आसन, शिला, पर्यङ्क ये सभी आधार हैं। यहाँ सभी क्रिया पदों में 'अधि' उपसर्ग के साथ शीङ्, स्था, आस्, धातुओं का प्रयोग है। अतः आधार की कर्मसंज्ञा होकर द्वितीया विभक्ति हो गयी।

5. अभिनिविशश्च- (1.4.47) 'अभि' और 'नि' इसी क्रम से ये दोनों ही उपसर्ग यदि 'विश्' धातु के पूर्व में आयें तो आधार की कर्मसंज्ञा हो जाती है। कर्म में द्वितीया विभक्ति होगी।

जैसे- सन्तः सन्मार्गम् अभिनिविशते।
(सज्जन सन्मार्ग में प्रवेश करते हैं)

➢ यहाँ 'अभिनिविशते' में 'अभि' एवं 'नि' उपसर्ग के साथ 'विश्' धातु का प्रयोग हुआ है अतः 'सन्मार्गम्' इस आधार की कर्मसंज्ञा होकर द्वितीया विभक्ति हो गयी है।

6. उपान्वध्याङ्वसः - (1.4.48) उप, अनु, अधि या आङ् इनमें से कोई उपसर्ग यदि वस् धातु के पूर्व में आये तो आधार की कर्मसंज्ञा होकर द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होगा।

जैसे- राजा नगरम् उपवसति। (राजा नगर में रहता है)
राजा नगरम् अनुवसति।
राजा नगरम् अधिवसति।
राजा नगरम् आवसति।

➢ यहाँ 'वस्' धातु के पूर्व उप, अनु, अधि एवं आङ् उपसर्ग का प्रयोग हुआ है अतः आधार 'नगर' की कर्मसंज्ञा हो गयी और उसमें द्वितीया विभक्ति का प्रयोग हुआ है।

7. अन्तराऽन्तरेण युक्ते- (2.3.4) 'अन्तरा' (मध्य में) और 'अन्तरेण' (बिना) इन अव्ययों के योग में द्वितीया विभक्ति होती है।

(i) अन्तरा **ग्रामं** नदी प्रवहति। (दो गाँवों के बीच नदी बहती है)
(ii) **संस्कृतम्** अन्तरेण न किमपि जानामि। (संस्कृत के सिवाय और कुछ नहीं जानता)

8. अभितः - परितः - समया - निकषा - हा - प्रति-योगेऽपि-

अभितः (दोनों ओर या आस पास) परितः (चारों ओर) समया (समीप) निकषा (निकट) हा (शोक) प्रति (ओर)
इन शब्दों के योग में द्वितीया विभक्ति होती है।
जैसे-

(i) **ग्रामम्** अभितः वनम् अस्ति। (गाँव के आस-पास वन है)
(ii) **आश्रमम्** अभितः वृक्षाः सन्ति। (आश्रम के दोनों ओर वृक्ष हैं)
(iii) **विद्यालयं** परितः वृक्षाः सन्ति। (विद्यालय के चारों ओर वृक्ष हैं)
(iv) **ग्रामं** परितः उपवनानि सन्ति। (गाँव के चारों ओर उपवन हैं)
(v) **लङ्कां** समया सागरः अस्ति। (लङ्का के समीप सागर है)
(vi) **लङ्कां** निकषा हनिष्यति (लङ्का के समीप मारेगा)
(vii) हा **कृष्णाभक्तम्** (कृष्ण के अभक्त के लिए खेद है)
(viii) **बुभुक्षितं** न प्रतिभाति किञ्चित् (भूखे को कुछ भी अच्छा नहीं लगता)
(ix) छात्रः **गुरुं** प्रति श्रद्धधाति। (छात्र की गुरु के प्रति श्रद्धा है)
(x) सः **नगरं** प्रति गच्छति। (वह नगर की ओर जाता है)

9. उभसर्वतसोः कार्या धिगुपर्यादिषु त्रिषु।
द्वितीयाऽऽम्रेडितान्तेषु ततोऽन्यत्रापि दृश्यते॥

उभयतः, सर्वतः, धिक्, उपर्युपरि, अध्यधि, अधोऽधः पदों के योग होने पर द्वितीया विभक्ति होगी।
जैसे-

(i) उभयतः नदीं वृक्षाः सन्ति। (नदी के दोनों ओर वृक्ष हैं)
(ii) मार्गम् उभयतः वृक्षाः सन्ति। (मार्ग के दोनों ओर पेड़ हैं)
(iii) नगरं सर्वतः प्राकारः अस्ति। (नगर के चारों ओर परकोटा है)
(iv) धिक् कृष्णाभक्तम्। (कृष्ण के अभक्त को धिक्कार है)
(v) उपर्युपरि लोकं हरिः। (इस लोक के ठीक ऊपर हरि हैं)
(vi) अध्यधि लोकं हरिः। (हरि लोक के पास हैं)
(vii) अधोऽधः लोकं हरिः। (पाताल लोक के ठीक नीचे हरि हैं)

10. कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे (2.3.5)-

➢ यदि किसी काल में कोई क्रिया लगातार हो तो ऐसे कालवाची पद में द्वितीया विभक्ति होगी।

➢ इसीतरह यदि अध्व (मार्ग की दूरी) में कोई वस्तु लगातार हो तो उस अध्ववाचक = मार्गवाचक शब्दों में द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे-

(i) छात्रः मासम् अधीते (छात्र महीने भर लगातार पढ़ता है) - कालवाचक

(ii) छात्रः क्रोशम् अधीते (छात्र कोश भर लगातार पढ़ता है) - मार्गवाचक

(iii) क्रोशं गिरिः वर्तते। (कोश भर विस्तृत पर्वत है) - मार्गवाचक

(iv) क्रोशं कुटिला नदी (कोश भर नदी टेढ़ी है) - मार्गवाचक

(v) सः मासम् अधीते रामायणम् (वह महीने भर रामायण पढ़ता है) - कालवाचक

(vi) सः सप्ताहं पठिष्यति (वह सप्ताह भर पढ़ता है) - कालवाचक

तृतीया विभक्ति (करण कारक)

1. साधकतमं करणम् - क्रिया की सिद्धि में जो सबसे अधिक उपकारक होता है, उसे करण कहते हैं।

'क्रियासिद्धौ प्रकृष्टोपकारकं करणसंज्ञं स्यात्'।

यथा- सः हस्तेन मिष्टान्नं वितरति।

यहाँ- मिष्टान्न वितरण रूपी कार्य को करने में हाथ सबसे अधिक सहायक है, अतः 'हाथ' करण है।

2. कर्तृकरणयोस्तृतीया (2.3.18) - अनुक्त कर्ता अर्थात् (कर्मवाच्य और भाववाच्य के कर्ता) और करण में तृतीया विभक्ति होती है।

जैसे-

(i) सः **कुठारेण** वृक्षं छिनत्ति। (वह कुल्हाड़ी से वृक्ष को काटता है) - करण में तृतीया

(ii) **रामेण** बालिः हतः (राम के द्वारा बाली मारा गया) - कर्ता में तृतीया

(iii) बालकः **दण्डेन** सर्पं हन्ति। (बालक डण्डे से सॉप को मारता है) - करण में तृतीया

(iv) त्वं **कलमेन** पत्रं लिख। (तू कलम से पत्र लिख) - करण में तृतीया

(v) मोहनः **दात्रेण** लुनाति। (मोहन हसियें से काटता है) - करण में तृतीया

(vi) **रामेण बाणेन** हतो बाली। (राम के बाण द्वारा बाली मारा गया) - कर्ता (रामेण) और करण (बाणेन) दोनों में तृतीया।

3. सहयुक्तेऽप्रधाने (2.3.19) -

सह, साकम्, सार्धम्, समम् आदि सहार्थक शब्दों के योग में अप्रधान में तृतीया विभक्ति होती है।

जैसे-

(i) पुत्रेण सह आगतः पिता। (पुत्र के साथ पिता आया)

(ii) पिता पुत्रेण सह मेरठनगरं गतः (पिता पुत्र के साथ मेरठनगर को गया)

(iii) रामः जानक्या साकं गच्छति। (राम जानकी के साथ जाते हैं)

(iv) मोहनः गुरुणा सार्धं विद्यालयं गच्छति। (मोहन गुरु के साथ विद्यालय जाता है।)

(v) लक्ष्मणेन समं रामः गच्छति। (लक्ष्मण के साथ राम जाते हैं)

4. येनाङ्गविकारः - (2.3.20) शरीर के जिस अङ्ग के विकार से शरीरधारी का विकार समझा जाय, उस अङ्गवाचक शब्द में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे-

(i) अक्ष्णा काणः (आँख से काना)

(ii) हस्तेन लुञ्जः (हाथ से लुञ्जा)

(iii) शिरसा खल्वाटः (शिर से गंजा)

(iv) कर्णाभ्यां बधिरः (कानों से बहरा)

(v) पादेन खञ्जः (पैर से लँगड़ा)

(vi) पृष्ठेन कुब्जः (पीठ से कुबड़ा)

यहाँ 'आँख से' काना दिखायी पड़ रहा है, इसलिए 'अक्ष्णा' में तृतीया विभक्ति हुई। इसीप्रकार 'हाथ से' लुंजा है अतः 'हस्तेन' इस अङ्गवाची पद में तृतीया विभक्ति हुई।

5. पृथग्विना नानाभिस्तृतीयान्यतरस्याम् -

- पृथक्, विना, नाना शब्दों के योग में तृतीया विभक्ति का प्रयोग विकल्प से होता है। तृतीया न हो तो पञ्चमी अथवा द्वितीया विभक्ति होती है।
- 'नाना' शब्द अनेकार्थक है लेकिन यहाँ 'विना' के अर्थ में प्रयुक्त है।

जैसे-

(i) **जलेन** विना न जीवति कमलम्। (जल के विना कमल जीवित नहीं रहता)

(ii) **ग्रामं** पृथक् या **ग्रामेण** पृथक् या **ग्रामात्** पृथक् (गाँव से अलग)

(iii) **रामं** विना या **रामेण** विना या **रामात्** विना (राम के विना)

(iv) नाना **रामेण** या नाना **रामात्** या नाना **रामम्** (राम के विना)

चतुर्थी विभक्ति (सम्प्रदान कारक)

1. कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम् (1.4.32) - कर्ता दान कर्म के द्वारा जिसे अभिप्रेत करता है; अर्थात् कर्ता जिसे कुछ देता है, या जिसके लिए कुछ करता है, वह 'सम्प्रदान' कहलाता है।

सम्प्रदान- 'सम्यक् प्रदीयते अस्मै तत् सम्प्रदानम्' (जिसे कुछ दिया जाय, परन्तु उस वस्तु को वापस न लिया जाय, वह सम्प्रदान होता है)

2. चतुर्थी सम्प्रदाने (2.3.13) - सम्प्रदान में चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे-

(i) राजा **ब्राह्मणाय** गां ददाति। (राजा ब्राह्मण को गाय देता है)
(ii) माता **बालकाय** फलं ददाति। (माता बालक को फल देती है)
(iii) **उपाध्यायाय** गां ददाति (उपाध्याय के लिए गाय देता है)
(iv) **ब्राह्मणाय** भूमिं ददाति। (ब्राह्मण को भूमि देता है)

3. रुच्यर्थानां प्रीयमाणः (1.4.33) -

रुच् (अच्छा लगना, पसन्द आना) तथा इसी अर्थ की अन्य धातुओं के प्रयोग में जो प्रीयमाण अर्थात् जो प्रसन्न होता है, या जिसको पसन्द होता है उस कारक की सम्प्रदान संज्ञा होती है, और उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे-

(i) **हरये** रोचते भक्तिः। (हरि को भक्ति अच्छी लगती है)
(ii) **सुरेशाय** दुग्धं रोचते। (सुरेश को दूध अच्छा लगता है)
(iii) **मह्यं** मोदकं रोचते। (मुझे लड्डू पसन्द है)
(iv) **मह्यम्** ओदनं रोचते। (मुझे भात अच्छा लगता है)

यहाँ 'हरि' को भक्ति पसन्द है, सुरेश को दूध पसन्द है, मुझे लड्डू पसन्द है, मुझे ओदन (भात) पसन्द है, तो जिसे पसन्द है वो प्रीयमाण है, और जो प्रीयमाण है उसी की सम्प्रदानसंज्ञा होगी, और सम्प्रदान में चतुर्थी विभक्ति होगी, इसीलिए ''हरये, सुरेशाय, मह्यम्'' में चतुर्थी विभक्ति लगी है।

4.''क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः''(1.4.37)

क्रुध् (क्रोध करना), द्रुह् (द्रोह करना), ईर्ष्य् (ईर्ष्या करना), असूय् (जलन करना) इन धातुओं तथा इन्हीं अर्थों की अन्य धातुओं के प्रयोग में भी जिसके प्रति क्रोध किया जाता है उसकी **सम्प्रदान संज्ञा** होती है, और उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे-

(i) पिता **पुत्राय** क्रुध्यति। (पिता पुत्र पर क्रोध करता है)
(ii) दुष्टाः **सज्जनाय** द्रुह्यन्ति (दुष्ट सज्जनों से द्रोह करते हैं)
(iii) कंसः **कृष्णाय** ईर्ष्यति (कंस कृष्ण से ईर्ष्या करता है)
(iv) दैत्याः **देवेभ्यः** असूयन्ति (दैत्य देवों से जलते हैं)
(v) तनुश्रीदत्ता **नानापाटेकराय** क्रुध्यति (तनुश्रीदत्ता नानापाटेकर पर क्रोध करती है)
(vi) रावणः **रामाय** असूयति (रावण राम से द्वेष करता है)

यहाँ पिता अपने पुत्र पर क्रोध करता है, इसलिए जिस पर क्रोध किया जाय उसकी सम्प्रदानसंज्ञा होती है और उसमें चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग होता है इसीलिए 'पुत्राय' में चतुर्थी विभक्ति लगी है।

5. स्पृहेरीप्सितः (1.4.36) -

स्पृह् (चाहना) धातु के प्रयोग में जिस वस्तु की चाह, इच्छा या अभीप्सा होती है उसकी सम्प्रदानसंज्ञा होती है और उसमें चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे-

(i) सा **पुरुषेभ्यः** स्पृहयति। (वह पुरुषों को चाहती है)
(ii) रमा **पुष्पेभ्यः** स्पृहयति (रमा फूलों की चाह करती है)
(iii) बालिकाः **फलेभ्यः** स्पृहयन्ति (लड़कियाँ फलों की चाह करती हैं)
(iv) अहं **संस्कृताय** स्पृहयामि (मैं संस्कृत चाहता हूँ)

6. ''नमः स्वस्ति स्वाहा स्वधाऽलंवषट्योगाच्च'' (2.3.16)

नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलं, वषट् - इन शब्दों के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है; यथा-

(i) गणेशाय नमः (गणेश के लिए नमस्कार)
(ii) शिवाय नमः (शिव को नमस्कार है)
(iii) देवेभ्यः नमः (देवताओं को नमस्कार है)
(iv) विष्णवे नमः (विष्णु को नमस्कार है)
(v) तुभ्यम् स्वस्ति (तुम्हारा कल्याण हो)
(vi) बालकाय स्वस्ति (बालक का कल्याण हो)
(vii) इन्द्राय स्वाहा (इन्द्र के लिए स्वाहा)
(viii) अग्नये स्वाहा (अग्नि के लिए स्वाहा)
(ix) पितृभ्यः स्वधा (पितरों को स्वधा)
(x) दैत्येभ्यः हरिः अलम् (दैत्यों के लिए हरि पर्याप्त हैं)

पञ्चमी विभक्ति (अपादान कारक)

1. ध्रुवमपायेऽपादानम् (1.4.24) –

अपाय (अलग होना) अर्थ में जो ध्रुव हो, जिससे कोई वस्तु अलग हो रही हो, उसे 'अपादान' कहते हैं। जैसे-

वृक्षात् पत्रं पतति। (वृक्ष से पत्ता गिरता है)

इस वाक्य में पत्ता 'वृक्ष' से अलग हो रहा है अतः वृक्ष 'अपादान' है।

2. अपादाने पञ्चमी (2.3.28) –

अपादान में पञ्चमी विभक्ति होती है। जैसे-

(i) सः **ग्रामात्** गच्छति। (वह गाँव से जाता है)
(ii) **वृक्षात्** पत्राणि पतन्ति (वृक्ष से पत्ते गिरते हैं)

(iii) महेशः **आसनात्** उत्तिष्ठति (महेश आसन से उठता है)
(iv) गङ्गा **हिमालयात्** प्रभवति। (गंगा हिमालय से निकलती है)
(v) बालकः **सोपानात्** पतति (बालक सीढी से गिरता है)
(vi) सर्वे **विमानात्** अवतरन्ति (सभी विमान से उतरते हैं)

3. जुगुप्सा-विराम-प्रमादार्थानामुपसंख्यानम् (वा.)

सूत्रार्थ- जुगुप्सा (घृणा, निन्दा), विराम (रुकना), प्रमाद (आलस्य) इन अर्थ वाली धातुओं के प्रयोग में जिससे जुगुप्सा, विराम अथवा प्रमाद किया जाय, उसकी अपादान संज्ञा होती है, और उसमें पञ्चमी विभक्ति होगी।
जैसे-
(i) **पापात्** जुगुप्सते। (पाप से घृणा करता है)
(ii) सः **कार्यात्** विरमति (वह कार्य से रुकता है)
(iii) सः **पठनात्** प्रमाद्यति। (वह पढ़ने से प्रमाद करता है)
(iv) सः **धर्मात्** प्रमाद्यति। (वह धर्म से प्रमाद करता है)
(v) **स्वाध्यायात्** मा प्रमदः (स्वाध्याय से प्रमाद मत कर)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वाक्यों में जुगुप्सा, विराम और प्रमाद अर्थ वाली धातुओं का प्रयोग है तथा पाप, कार्य, पठन, धैर्य और स्वाध्याय से जुगुप्सा, विराम या प्रमाद किया जा रहा है इसलिए इनकी अपादान संज्ञा होकर पञ्चमी विभक्ति हो गयी है।

4. भीत्रार्थानां भयहेतुः (1.4.25) –

सूत्रार्थ- भय (डर) अर्थवाली और त्राण (रक्षा) अर्थवाली धातुओं के योग में जिससे भय हो या जिससे रक्षा की जाय, उसकी अपादान संज्ञा होती है। जैसे-
(i) **चोरात्** बिभेति (चोर से डरता है)
(ii) वृकः **सिंहात्** बिभेति (भेड़िया सिंह से डरता है)
(iii) शिशुः **सर्पात्** बिभेति (बच्चा साँप से डरता है)
(iv) पिता पुत्रं **सिंहात्** रक्षति (पिता पुत्र की सिंह से रक्षा करता है)
(v) माता पुत्रम् **अग्नेः** रक्षति (माता पुत्र की आग से रक्षा करती है)
(vi) पापात् त्रायते (पाप से रक्षा करता है)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त उदाहरणों में भयार्थक 'भी' (बिभेति) धातु का तथा त्राणार्थक 'रक्ष्' (रक्षति) धातु का प्रयोग है, तथा चोर, सिंह, सर्प, अग्नि, पाप आदि से डर या रक्षा हो रही है, इसीलिए इनमें अपादानसंज्ञा होकर पञ्चमी विभक्ति का प्रयोग हुआ है।

5. आख्यातोपयोगे (1.4.29) –

जिससे नियमपूर्वक विद्या पढ़ी जाय या कुछ सीखा जाय ऐसे व्याख्याता/प्रवक्ता/शिक्षक/पढ़ाने वाले की अपादान संज्ञा होगी, और अपादान में पञ्चमी विभक्ति होगी। जैसे-
(i) **उपाध्यायात्** अधीते। (उपाध्याय से पढ़ता है)
(ii) छात्रः **गुरोः** अधीते (छात्र गुरु जी से पढ़ता है)
(iii) रविः **शिक्षकात्** सङ्गीतं शिक्षते (रवि शिक्षक से संगीत सीखता है)
(iv) बालकः **अध्यापकात्** संस्कृतं पठति (बालक अध्यापक से संस्कृत पढ़ता है)
(v) वटुः **गुरोः** कर्मकाण्डं जानाति। (वटु गुरु से कर्मकाण्ड जानता है)

6. ''अन्यारादितरर्तेदिक्शब्दाञ्चूत्तरपदाजाहियुक्ते'' (2.3.29) –

अन्य, भिन्न, इतर, ऋते, पूर्व, प्राक्, प्रत्यक्, बहिः, आरभ्य, प्रभृति आदि शब्दों के योग में पञ्चमी विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे-
(i) अन्यः कृष्णात् (कृष्ण से भिन्न)
(ii) भिन्नः कृष्णात् (कृष्ण से भिन्न)
(iii) इतरः कृष्णात् (कृष्ण से भिन्न)
(iv) ऋते कृष्णात् (कृष्ण के विना)
(v) पूर्वो ग्रामात् (गाँव से पूर्व)
(vi) प्राक् ग्रामात् (गाँव से पूर्व)
(vii) प्रत्यक् ग्रामात् (गाँव के बाद)
(viii) भवात् प्रभृति हरिः सेव्यः। (जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त हरि सेव्य हैं)
(ix) ग्रामाद् बहिः उद्यानम् अस्ति। (गाँव के बाहर बगीचा है)

षष्ठी विभक्ति (सम्बन्ध)

1. षष्ठी शेषे (2.3.50) – कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, अधिकरण कारकों में तथा प्रातिपदिकार्थ में विभक्तियों का विधान कर चुके हैं। इसके अतिरिक्त जो बच गया हो, वही 'शेष' है। इसप्रकार कारक और प्रातिपदिकार्थ से अतिरिक्त स्व-स्वामिभाव, जन्यजनकभाव, कार्यकारणभाव आदि सम्बन्ध शेष है। उस शेष की विवक्षा में षष्ठी विभक्ति होती है।
जैसे-
(i) राज्ञः पुरुषः (राजा का पुरुष)
(ii) गङ्गायाः जलम् (गङ्गा का जल)
(iii) दशरथस्य पुत्रः (दशरथ का पुत्र)
(iv) पाञ्चालानां भूमिः (पाञ्चालों की भूमि)

2. षष्ठी हेतुप्रयोगे (2.3.36) –

सूत्रार्थ- यदि किसी वस्तु की हेतुता (कारणता) प्रकट करनी हो, और 'हेतु' शब्द का साक्षात् प्रयोग हो तो उस वस्तु या कारण तथा 'हेतु' शब्द - दोनों में षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे-
(i) **छात्रः अध्ययनस्य हेतोः प्रयागे वसति।**
(छात्र अध्ययन के लिए प्रयाग में रहता है)
(ii) **सः धनस्य हेतोः सेवते।** (वह धन के हेतु सेवा करता है)
(iii) **सः अन्नस्य हेतोः वसति।** (वह अन्न के कारण रहता है)
(iv) **सुमना गृहस्य हेतोः यतते।** (सुमन घर के लिए प्रयास कर रही है)

स्पष्टीकरण- यहाँ कोई छात्र 'अध्ययन के लिए' प्रयाग में रहता है, अतः उसके रहने का कारण 'अध्ययन' है इसलिए अध्ययन में षष्ठी विभक्ति हुई और वाक्य में 'हेतु' शब्द का प्रयोग हुआ है अतः 'हेतु' में भी षष्ठी विभक्ति का प्रयोग हुआ है।

3. क्तस्य च वर्तमाने (2.3.67) - वर्तमान अर्थ में होने वाले 'क्त' प्रत्ययान्त शब्दों के योग में षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे-

(i) **राज्ञां** पूजितः विद्वान् (वह विद्वान्, जो राजाओं द्वारा पूजा जाता है)
(ii) **सर्वेषाम्** आदृतः गुरुः (वह गुरु, जिसका सब आदर करते हैं)
(iii) **राज्ञां** मतः बुद्धः पूजितः वा (राजा मानते हैं, जानते हैं अथवा पूजते हैं)

4. षष्ठी चानादरे (2.3.38) - अनादर अर्थ प्रकट करने के लिए षष्ठी और सप्तमी दोनों विभक्ति का प्रयोग होता है। यथा-

(i) बालकानां चन्दनः दुष्टः (बालकों में चन्दन दुष्ट है)
(ii) खगानां काकः धूर्तः (पक्षियों में कौआ धूर्त होता है)
(iii) पशूनां शृगालः मूर्खः (पशुओं में गीदड़ मूर्ख होता है)
(iv) रुदतः पुत्रस्य पिता वनं गतः (रोते हुए पुत्र को छोड़कर पिता वन चला गया)
(v) रुदति पुत्रे सः प्रव्राजीत् (पुत्र के रोते रहने पर भी उसे छोड़कर संन्यास ले लिया)

सप्तमी विभक्ति (अधिकरण कारक)

1. आधारोऽधिकरणम् (1.4.45) - आधार को **'अधिकरण'** कहते हैं। अधिकरण उसे कहते हैं, जो कर्ता और कर्म का आधार होता है।

आधार के भेद

आधार तीन प्रकार का होता है-

(i) औपश्लेषिक आधार - कटे आस्ते।
(ii) वैषयिक आधार - मोक्षे इच्छा अस्ति।
(iii) अभिव्यापक आधार - तिलेषु तैलम्, पयसि घृतम्, सर्वस्मिन् आत्मा अस्ति।

2. सप्तम्यधिकरणे च (2.3.36) - अधिकरण में सप्तमी विभक्ति होती है-
जैसे-

(i) वयं **गेहे** वसामः (हम घर में रहते हैं)
(ii) **गङ्गायां** निर्मलं जलम् अस्ति। (गङ्गा में निर्मल जल है)
(iii) **क्षेत्रेषु** अन्नम् उत्पद्यते (खेतों में अन्न उत्पन्न होता है)
(iv) **वनेषु** सिंहाः वसन्ति (वनों में सिंह रहते हैं)

3. 'कुशल' तथा 'निपुण' शब्दों के योग में सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे-

(i) सः **शास्त्रे** कुशलः अस्ति (वह शास्त्र में कुशल है)
(ii) विद्वान् **वेदेषु** निपुणः अस्ति (विद्वान् वेदों में निपुण हैं)

4. साध्वसाधुप्रयोगे च (वा.)

'साधु' और 'असाधु' शब्दों के प्रयोग में सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे-

(i) कृष्णः **मातरि** साधुः (कृष्ण माता के विषय में साधु हैं)
(ii) कृष्णः **मातुले** असाधुः। (कृष्ण मामा के विषय में असाधु हैं)

यहाँ साधु शब्द के प्रयोग होने से 'मातरि' में सप्तमी तथा 'असाधु' शब्द के प्रयोग होने से 'मातुले' में सप्तमी विभक्ति का प्रयोग हुआ है।

5. यतश्च निर्धारणम् (2.3.41) - निर्धारण में समुदाय वाचक शब्द से षष्ठी या सप्तमी विभक्ति होती है।

➤ यदि किन्हीं वस्तुओं या व्यक्तियों के समुदाय में से किसी एक वस्तु या व्यक्ति को किसी विशेषता के आधार पर सबसे उत्कृष्ट या निकृष्ट बताया जाय तो वही 'निर्धारण' कहलाता है।

अथवा

निर्धारण- जाति, गुण, क्रिया या संज्ञा के द्वारा किसी समुदाय से उसके एकदेश का उत्कर्ष या अपकर्ष बताने के लिए अलग निर्देश करना 'निर्धारण' कहलाता है।

उदाहरण-

(i) **कविषु** कालिदासः श्रेष्ठः। (कवियों में कालिदास श्रेष्ठ हैं)
कवीनां कालिदासः श्रेष्ठः।
(ii) **नदीषु** गङ्गा पवित्रतमा। (नदियों में सबसे पवित्र गङ्गा हैं)
नदीनां गङ्गा पवित्रतमा।
(iii) **बालकेषु** रविः श्रेष्ठः। (बालकों में रवि सबसे अच्छा हैं)
बालकानां रविः श्रेष्ठः।
(iv) **पर्वतानां** हिमालयः उच्चतमः।
पर्वतेषु हिमालयः उच्चतमः। (पर्वतों में हिमालय सबसे ऊँचा हैं)
(v) **नृणां** ब्राह्मणः श्रेष्ठः (मनुष्यों में ब्राह्मण श्रेष्ठ हैं)
नृषु ब्राह्मणः श्रेष्ठः
(vi) **गवां** कृष्णा बहुक्षीरा
गोषु कृष्णा बहुक्षीरा (गायों में काली गाय बहुत दूध देती है)
(vii) **गच्छतां** धावन् शीघ्रः।
गच्छत्सु धावन् शीघ्रः (चलने वालों में दौड़ने वाला शीघ्र पहुँचता है)

❑❑

प्रत्यय

प्रत्यय- प्रति + √अय् + अच् अर्थात् जो वर्णसमूह किसी धातु या शब्द के अन्त में जुड़कर नए अर्थ की प्रतीति कराते हैं, उस वर्णसमूह को प्रत्यय कहते हैं।

➢ मुख्य रूप से प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं-

1. कृत् प्रत्यय 2. तद्धित प्रत्यय

➢ धातु के अन्त में लगने वाले प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं-

(i) कृत् प्रत्यय- क्त्वा, ल्यप्, तुमुन्, तव्यत्, अनीयर् आदि।

(ii) तिङ् प्रत्यय- तिप्, तस्, झि आदि 18 प्रत्यय।

➢ शब्दों से लगने वाले प्रत्यय हैं-

(i) सुप् प्रत्यय- सु औ जस् आदि 21 प्रत्यय।

(ii) स्त्रीप्रत्यय- टाप्, ङीप्, ङीष्, ङीन् आदि।

(iii) तद्धित प्रत्यय- मतुप्, अण्, इनि आदि।

➢ कृत् प्रत्यय (कृदन्त)

कृत् प्रत्यय धातुओं से जोड़े जाते हैं, और इनसे बने पद को 'कृदन्त' कहते हैं। कृत् प्रत्ययों से तीन प्रकार के शब्द निर्मित होते हैं- अव्यय, विशेषण और संज्ञा।

1. क्त्वा प्रत्यय

जब एक ही कर्ता द्वारा एक कार्य की समाप्ति के बाद दूसरी क्रिया की जाती है, तो समाप्ति क्रिया में क्त्वा प्रत्यय का प्रयोग होता है। इस प्रत्यय से बने हुए शब्द को पूर्वकालिक क्रिया कहते हैं।

जैसे- छात्रः पठित्वा गृहं गच्छति। (छात्र पढ़कर घर जाता है)

इस वाक्य में 'छात्र' रूपी कर्ता दो क्रियायें करता है- (i) पढ़ता है (ii) घर जाता है। इन दो क्रियाओं में पढ़ने की क्रिया पूर्वकाल में हुई अतः यह पूर्वकालिक क्रिया होगी जिसमें 'क्त्वा' प्रत्यय लगकर 'पठित्वा' रूप बना है। अतः 'क्त्वा' पूर्वकालिक कृदन्त है।

➢ 'क्त्वा' प्रत्यय के 'क्' की ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र से इत्संज्ञा होकर लोप हो जाता है केवल 'त्वा' शेष रहता है। कुछ धातुओं में 'इट्' का आगम होता है तो 'इत्वा' लगता है।

जैसे- बालकः पठित्वा गृहं गच्छति।

यहाँ 'पठ्' धातु में 'इट्' का आगम होकर 'क्त्वा' प्रत्यय लगा है, इसीलिए 'पठित्वा' बना है।

धातु + प्रत्यय		क्त्वा-प्रत्ययान्त रूप
1. कृ + क्त्वा	=	**कृत्वा** (करके)
2. दा + क्त्वा	=	**दत्त्वा** (देकर)
3. पा + क्त्वा	=	**पीत्वा** (पीकर)
4. गम् + क्त्वा	=	**गत्वा** (जाकर)
5. हस् + क्त्वा	=	**हसित्वा** (हँसकर)
6. जि + क्त्वा	=	**जित्वा** (जीतकर)
7. स्था + क्त्वा	=	**स्थित्वा** (ठहरकर)
8. श्रु + क्त्वा	=	**श्रुत्वा** (सुनकर)
9. ज्ञा + क्त्वा	=	**ज्ञात्वा** (जानकर)
10. पत् + क्त्वा	=	**पतित्वा** (गिरकर)
11. स्ना + क्त्वा	=	**स्नात्वा** (स्नानकर)
12. दृश् + क्त्वा	=	**दृष्ट्वा** (देखकर)
13. पठ् + क्त्वा	=	**पठित्वा** (पढ़कर)
14. लभ् + क्त्वा	=	**लब्ध्वा** (प्राप्तकर)
15. भू + क्त्वा	=	**भूत्वा** (होकर)
16. त्यज् + क्त्वा	=	**त्यक्त्वा** (त्यागकर)
17. कथ् + क्त्वा	=	**कथयित्वा** (कहकर)
18. क्री + क्त्वा	=	**क्रीत्वा** (खरीदकर)
19. खेल + क्त्वा	=	**खेलित्वा** (खेलकर)
20. नी + क्त्वा	=	**नीत्वा** (लेकर)
21. प्रच्छ् + क्त्वा	=	**पृष्ट्वा** (पूँछकर)
22. ग्रह् + क्त्वा	=	**गृहीत्वा** (लेना)

2. ल्यप् प्रत्यय

➢ जब धातु से पहले कोई उपसर्ग होता है तो 'क्त्वा' प्रत्यय के स्थान पर 'ल्यप्' आदेश हो जाता है।

➢ 'ल्यप्' में 'ल्' और 'प्' की इत्संज्ञा होकर लोप हो जाता है, केवल 'य' शेष बचता है। ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र से 'ल्' की तथा ''हलन्त्यम्'' सूत्र से 'प्' की इत्संज्ञा।

➢ 'क्त्वा' और 'ल्यप्' प्रत्ययों से बनने वाले शब्द अव्यय होते हैं और दोनों प्रत्यय 'पूर्वकालिक कृदन्त' है।

➢ **समासेऽनञ्पूर्वे क्त्वो ल्यप्** (7.1.37) सूत्र से 'ल्यप्' प्रत्यय का विधान होता है।

➢ 'ल्यप्' प्रत्ययान्त पदों का भी वही अर्थ है जो 'क्त्वा' प्रत्यय का है।

जैसे- अनुभूय (अनुभव करके), आगम्य (आकर), प्रणम्य (प्रणाम करके) आदि।

(i) छात्रः **आगत्य** पठति (छात्र आकर पढ़ता है)

(ii) मनुष्यः सर्वं **विस्मृत्य** सुखी भवति (मनुष्य सब कुछ भूलकर सुखी होता है)

उपसर्ग + धातु + प्रत्यय = प्रत्ययान्त रूप (अर्थसहित)

1. अनु + भू + ल्यप् = **अनुभूय** (अनुभव करके)
2. आङ् + गम् + ल्यप् = **आगम्य** (आकर)
3. वि + नी + ल्यप् = **विनीय** (लेकर)
4. आङ् + प्रच्छ् + ल्यप् = **आपृच्छ्य** (पूँछकर)
5. प्र + कृ + ल्यप् = **प्रकृत्य** (करके)
6. प्र + आप् + ल्यप् = **प्राप्य** (प्राप्तकर)
7. वि + चि + ल्यप् = **विचित्य** (चुनकर)
8. वि + रम् + ल्यप् = **विरम्य/विरत्य** (रुककर)
9. प्र + नम् + ल्यप् = **प्रणत्य/प्रणम्य** (प्रणाम करके)
10. उत् + तृ + ल्यप् = **उत्तीर्य** (तैरकर, पारकर)
11. आ + दा + ल्यप् = **आदाय** (लेकर)
12. उप + गम् + ल्यप् = **उपगम्य** (समीप जाकर)
13. वि + हा + ल्यप् = **विहाय** (छोड़कर)
14. नि + पा + ल्यप् = **निपीय** (पानकर)
15. वि + स्मृ + ल्यप् = **विस्मृत्य** (भूलकर)
16. अव + तृ + ल्यप् = **अवतीर्य** (उतरकर)
17. सम् + श्रु + ल्यप् = **संश्रुत्य** (सुनकर)
18. आ + नी + ल्यप् = **आनीय** (लाकर)
19. प्र + स्था + ल्यप् = **प्रस्थाय** (चलकर)
20. उत् + लिख् + ल्यप् = **उल्लिख्य** (ऊपर लिखकर)
21. वि + ज्ञा + ल्यप् = **विज्ञाय** (अच्छी तरह से जानकर)
22. सम् + भू + ल्यप् = **सम्भूय** (मिलकर, इकट्ठा होकर)
23. प्र + पठ् + ल्यप् = **प्रपठ्य** (पढ़कर)
24. आङ् + पा + ल्यप् = **आपीय** (पूरी तरह से पीकर)
25. अनु + श्रु + ल्यप् = **अनुश्रूय** (सुन-सुनकर)
26. उप + कृ + ल्यप् = **उपकृत्य** (उपकार करके)
27. प्र + कुप् + ल्यप् = **प्रकुप्य** (अत्यधिक क्रोधित होकर)
28. अव + मुच् + ल्यप् = **अवमुच्य** (छोड़कर)
29. उप + भुज् + ल्यप् = **उपभुज्य** (खाकर)
30. सम् + दृश् + ल्यप् = **सन्दृश्य** (अच्छी तरह से देखकर)
31. उप + लभ् + ल्यप् = **उपलभ्य** (प्राप्त करके)

3. तुमुन् प्रत्यय

➢ **तुमुन्ण्वुलौ क्रियायां क्रियार्थायाम्** (3.3.10) इस सूत्र से 'तुमुन्' प्रत्यय का विधान किया जाता है।

➢ 'के लिए' यह अर्थ बताना हो तो धातुओं से 'तुमुन्' प्रत्यय लगाया जाता है। जैसे- **पठितुम्** (पढ़ने के लिए) **गन्तुम्** (जाने के लिए), **क्रेतुम्** (खरीदने के लिए) आदि।

➢ इसीलिए 'तुमुन्' प्रत्यय को **'हेतु कृदन्त'** कहते हैं। अर्थात् धातु के अर्थ के साथ 'के लिए' जोड़ देने पर तुमुनन्त पदों का अर्थ निकल आता है। जैसे- 'पठ्' धातु का अर्थ है- पढ़ना। इसमें 'तुमुन्' जोड़ने से बनेगा- **पठितुम्,** जिसका अर्थ है- पढ़ने के लिए।

➢ 'तुमुन् ' प्रत्यय से बने शब्द अव्यय होते हैं, अतः इनके रूप नहीं चलते।

➢ कर्ता जिस कार्य के निमित्त कोई क्रिया करता है उसे निमित्तार्थक क्रिया कहते हैं, निमित्तार्थक क्रिया में ही 'तुमुन्' प्रत्यय लगाया जाता है।

जैसे- **बालकः पठितुं विद्यालयं गच्छति।** (बालक पढ़ने के लिए विद्यालय जाता है)

➢ यहाँ बालक रूपी कर्ता पढ़ने के निमित्त विद्यालय जाता है; अतः निमित्तार्थक क्रिया 'पठ्' में तुमुन् प्रत्यय लगकर 'पठितुम्' बना। बालक की गमन क्रिया पढ़ने के निमित्त हो रही है।

➢ 'तुमुन्' प्रत्यय में नकार की 'हलन्त्यम्' से और उकार की ''उपदेशेऽजनुनासिक इत्'' से इत्संज्ञा होकर लोप होने पर 'तुम्' शेष रहता है।

तुमुन् प्रत्ययान्त पदों की सूची

	धातु + प्रत्यय	=	तुमुनन्त पद (अर्थ सहित)
1.	भू + तुमुन्	=	**भवितुम्** (होने के लिए)
2.	पा + तुमुन्	=	**पातुम्** (पीने के लिए)
3.	पठ् + तुमुन्	=	**पठितुम्** (पढ़ने के लिए)
4.	गम् + तुमुन्	=	**गन्तुम्** (जाने के लिए)
5.	स्था + तुमुन्	=	**स्थातुम्** (बैठने के लिए)
6.	दृश् + तुमुन्	=	**द्रष्टुम्** (देखने के लिए)
7.	दा + तुमुन्	=	**दातुम्** (देने के लिए)
8.	लभ् + तुमुन्	=	**लब्धुम्** (पाने के लिए)
9.	ज्ञा + तुमुन्	=	**ज्ञातुम्** (जानने के लिए)
10.	हन् + तुमुन्	=	**हन्तुम्** (मारने के लिए)
11.	कृ + तुमुन्	=	**कर्तुम्** (करने के लिए)
12.	जि + तुमुन्	=	**जेतुम्** (जीतने के लिए)
13.	श्रु + तुमुन्	=	**श्रोतुम्** (सुनने के लिए)
14.	प्रच्छ् + तुमुन्	=	**प्रष्टुम्** (पूँछने के लिए)
15.	त्यज् + तुमुन्	=	**त्यक्तुम्** (छोड़ने के लिए)
16.	स्ना + तुमुन्	=	**स्नातुम्** (नहाने के लिए)
17.	गै (गा) + तुमुन्	=	**गातुम्** (गाने के लिए)

18. खाद् + तुमुन् = **खादितुम्** (खाने के लिए)
19. क्रीड् + तुमुन् = **क्रीडितुम्** (खेलने के लिए)
20. वन्द् + तुमुन् = **वन्दितुम्** (वन्दना करने के लिए)
21. भुज् + तुमुन् = **भोक्तुम्** (खाने के लिए)
22. शीङ् + तुमुन् = **शयितुम्** (सोने के लिए)
23. वच् + तुमुन् = **वक्तुम्** (बोलने के लिए)
24. ग्रह् + तुमुन् = **ग्रहीतुम्** (लेने के लिए)
25. अस् + तुमुन् = **भवितुम्** (होने के लिए)
26. क्षिप् + तुमुन् = **क्षेप्तुम्** (फेंकने के लिए)
27. क्री + तुमुन् = **क्रेतुम्** (खरीदने के लिए)
28. चि + तुमुन् = **चेतुम्** (चुनने के लिए)
29. कुप् + तुमुन् = **कोपितुम्** (क्रोध करने के लिए)
30. मुच् = तुमुन् = **मोक्तुम्** (छोड़ने के लिए)

4. यत् प्रत्यय

➢ **''अचो यत्''** (3.1.97) सूत्र से 'यत्' प्रत्यय का विधान किया जाता है। अर्थात् अच् (स्वर) वर्ण जिन धातुओं के अन्त में होते हैं, उनसे 'यत्' प्रत्यय होता है।

➢ 'चाहिए' या 'योग्य' अर्थ को बताने वाले 'यत्' प्रत्यय के 'त्' की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा होकर लोप होने पर केवल 'य' शेष बचता है।

➢ 'यत्' प्रत्यय जुड़ने के बाद धातु के स्वर को गुण हो जाता है।

	नपुंसकलिङ्ग	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
चि + यत्	= **चेयम्** (चयन करने योग्य)	**चेयः**	चेया
पा + यत्	= **पेयम्** (पीने योग्य)	**पेयः**	पेया
नी + यत्	= **नेयम्** (ले जाने योग्य)	**नेयः**	नेया
जि + यत्	= **जेयम्** (जीतने योग्य)	**जेयः**	जेया
श्रु + यत्	= **श्रव्यम्** (सुनने योग्य)	**श्रव्यः**	श्रव्या
दा + यत्	= **देयम्** (देने योग्य)	**देयः**	देया
गै + यत्	= **गेयम्** (गाने योग्य)	**गेयः**	गेया
भू + यत्	= **भव्यम्** (होने योग्य)	**भव्यः**	भव्या
भी + यत्	= **भेयम्** (डरने योग्य)	**भेयः**	भेया
लभ् + यत्	= **लभ्यम्** (प्राप्त करने योग्य)	**लभ्यः**	लभ्या
शक् + यत्	= **शक्यम्** (होने योग्य)	**शक्यः**	शक्या
हन् + यत्	= **वध्यम्** (वधयोग्य)	**वध्यः**	वध्या

➢ **पोरदुपधात् (3.1.98) -** सूत्र से पवर्ग अन्त में हो अथवा ह्रस्व अकार उपधा में हो, ऐसी धातुओं से 'यत्' प्रत्यय होता है जैसे- लभ् + यत् = **लभ्यम्**
शप् + यत् = **शप्यम्**

5. क्तिन् प्रत्यय

➢ **स्त्रियां क्तिन्** (3.3.94) सूत्र से भाव अर्थ में स्त्रीत्व की विवक्षा होने पर धातु से 'क्तिन्' प्रत्यय होता है।

➢ 'क्तिन्' में ककार और नकार की इत्संज्ञा होकर लोप हो जाता है केवल 'ति' शेष बचता है। ''लशक्वतद्धिते'' से 'क्' की तथा ''हलन्त्यम्'' से 'न्' की इत्संज्ञा होती है।

➢ 'क्तिन्' प्रत्यय से बने शब्द सदैव स्त्रीलिङ्ग में होंगे।

जैसे- कृतिः, गतिः, भूतिः, धृतिः आदि।

उदाहरण-

(1) कृ + क्तिन् = **कृतिः**
(2) नी + क्तिन् = **नीतिः**
(3) गम् + क्तिन् = **गतिः**
(4) धृ + क्तिन् = **धृतिः**
(5) भू + क्तिन् = **भूतिः**
(6) नम् + क्तिन् = **नतिः**
(7) स्तु + क्तिन् = **स्तुतिः**
(8) श्रु + क्तिन् = **श्रुतिः**
(9) स्मृ + क्तिन् = **स्मृतिः**
(10) दृश् + क्तिन् = **दृष्टिः**
(11) मन् + क्तिन् = **मतिः**
(12) भज् + क्तिन् = **भक्तिः**
(13) बुध् + क्तिन् = **बुद्धिः**
(14) मुच् + क्तिन् = **मुक्तिः**
(15) शम् + क्तिन् = **शान्तिः**
(16) गै + क्तिन् = **गीतिः**
(17) पुष् + क्तिन् = **पुष्टिः**

6. ल्युट् प्रत्यय

➢ **''नपुंसके भावे क्तः''** (3.3.114) **''ल्युट् च''** (3.3.115) सूत्र से भाववाचक अर्थ में नपुंसकत्व में 'ल्युट्' प्रत्यय लगता है।

➢ ल्युट् प्रत्यय से बने शब्द नपुंसलिङ्ग में ही होते हैं।

जैसे- पठनम्, लेखनम्, दानम्, लेखनम् आदि।

➢ 'ल्युट्' प्रत्यय के 'ल्' और 'ट्' की इत्संज्ञा होकर लोप हो जाता है, 'यु' शेष रहता है। तथा 'यु' को ''युवोरनाकौ'' सूत्र से 'अन' आदेश हो जाता है।

उदाहरण-

1. लिख् + ल्युट् = **लेखनम्**
2. दा + ल्युट् = **दानम्**
3. अर्च + ल्युट् = **अर्चनम्**
4. कथ् + ल्युट् = **कथनम्**
5. पठ् + ल्युट् = **पठनम्**

6. ज्ञा + ल्युट् = **ज्ञानम्**
7. कृ + ल्युट् = **करणम्**
8. नी + ल्युट् = **नयनम्**
9. ग्रह् + ल्युट् = **ग्रहणम्**
10. गम् + ल्युट् = **गमनम्**
11. भू + ल्युट् = **भवनम्**
12. दृश् + ल्युट् = **दर्शनम्**
13. हन् + ल्युट् = **हननम्**
14. अपि + इङ् + ल्युट् = **अध्ययनम्**
15. श्रु + ल्युट् = **श्रवणम्**
16. स्मृ + ल्युट् = **स्मरणम्**
17. हृ + ल्युट् = **हरणम्**
18. कथ् + ल्युट् = **कथनम्**
19. शीङ् + ल्युट् = **शयनम्**
20. चि + ल्युट् = **चयनम्**
21. यच् + ल्युट् = **याचनम्**

7. तव्यत् और अनीयर् प्रत्यय

- ''**तव्यत्तव्यानीयरः**'' (3.1.96) सूत्र से धातु के बाद तव्यत् और अनीयर् प्रत्यय होते हैं।
- तव्यत् के त् का लोप होकर 'तव्य' एवं 'अनीयर्' प्रत्यय के 'र्' का लोप होकर 'अनीय' शेष बचता है।
- तव्यत् और अनीयर् प्रत्ययों का प्रयोग 'चाहिए' या 'योग्यता' अर्थ में होता है।

जैसे-

पठितव्यम् (पढ़ना चाहिए)

पठनीयम् (पढ़ना चाहिए)

- इन प्रत्ययों का प्रयोग कर्मवाच्य और भाववाच्य में होता है; कर्तृवाच्य में नहीं।

जैसे- मया पठनीयम्।

मया पठितव्यम्।

'अनीयर्' प्रत्यय के उदाहरण

1.	कथ् + अनीयर्	=	कथनीयम्	-	कथनीयः	-	कथनीया
2.	भू + अनीयर्	=	भवनीयम्	-	भवनीयः	-	भवनीया
3.	दृश् + अनीयर्	=	दर्शनीयम्	-	दर्शनीयः	-	दर्शनीया
4.	पठ् + अनीयर्	=	पठनीयम्	-	पठनीयः	-	पठनीया
5.	पा + अनीयर्	=	पानीयम्	-	पानीयः	-	पानीया
6.	कृ + अनीयर्	=	करणीयम्	-	करणीयः	-	करणीया
7.	गम् + अनीयर्	=	गमनीयम्	-	गमनीयः	-	गमनीया
8.	रम् + अनीयर्	=	रमणीयम्	-	रमणीयः	-	रमणीया
9.	हस् + अनीयर्	=	हसनीयम्	-	हसनीयः	-	हसनीया
10.	घ्रा + अनीयर्	=	घ्राणीयम्	-	घ्राणीयः	-	घ्राणीया
11.	स्था + अनीयर्	=	स्थानीयम्	-	स्थानीयः	-	स्थानीया
12.	वच् + अनीयर्	=	वचनीयम्	-	वचनीयः	-	वचनीया
13.	लिख् + अनीयर्	=	लेखनीयम्	-	लेखनीयः	-	लेखनीया
14.	श्रु + अनीयर्	=	श्रवणीयम्	-	श्रवणीयः	-	श्रवणीया
15	दा + अनीयर्	=	दानीयम्	-	दानीयः	-	दानीया

तव्यत् प्रत्यय के उदाहरण

1.	कृ + तव्यत्	=	कर्तव्यम्	-	कर्तव्यः	-	कर्त्तव्या
2.	गम् + तव्यत्	=	गन्तव्यम्	-	गन्तव्यः	-	गन्तव्या
3.	पच् + तव्यत्	=	पक्तव्यम्	-	पक्तव्यः	-	पक्तव्या
4.	दृश् + तव्यत्	=	द्रष्टव्यम्	-	द्रष्टव्यः	-	द्रष्टव्या
5.	प्रच्छ् + तव्यत्	=	प्रष्टव्यम्	-	प्रष्टव्यः	-	प्रष्टव्या
6.	भू + तव्यत्	=	भवितव्यम्	-	भवितव्यः	-	भवितव्या

7.	स्था + तव्यत्	=	स्थातव्यम्	-	स्थातव्यः	-	स्थातव्या
8.	रुद् + तव्यत्	=	रोदितव्यम्	-	रोदितव्यः	-	रोदितव्या
9.	नृत् + तव्यत्	=	नर्तितव्यम्	-	नर्तितव्यः	-	नर्तितव्या
10.	पठ् + तव्यत्	=	पठितव्यम्	-	पठितव्यः	-	पठितव्या
11.	लिख् + तव्यत्	=	लेखितव्यम्	-	लेखितव्यः	-	लेखितव्या
12.	स्मृ + तव्यत्	=	स्मर्तव्यम्	-	स्मर्तव्यः	-	स्मर्तव्या
13.	कृ + तव्यत्	=	कर्तव्यम्	-	कर्तव्यः	-	कर्तव्या
14.	गम् + तव्यत्	=	गन्तव्यम्	-	गन्तव्यः	-	गन्तव्या
15.	श्रु + तव्यत्	=	श्रोतव्यम्	-	श्रोतव्यः	-	श्रोतव्या
16.	जि + तव्यत्	=	जेतव्यम्	-	जेतव्यः	-	जेतव्या
17.	दा + तव्यत्	=	दातव्यम्	-	दातव्यः	-	दातव्या
18.	पा + तव्यत्	=	पातव्यम्	-	पातव्यः	-	पातव्या
19.	ज्ञा + तव्यत्	=	ज्ञातव्यम्	-	ज्ञातव्यः	-	ज्ञातव्या

8. क्त और क्तवतु प्रत्यय

- क्तक्तवतू निष्ठा (1.1.26)- क्त और क्तवतु प्रत्यय निष्ठासंज्ञक होते हैं।
- निष्ठा (3.2.102)- सूत्र से क्त और क्तवतु प्रत्यय भूतकाल अर्थ में सभी धातुओं से लगाये जाते हैं।
- 'क्त' प्रत्यय में 'क्' की इत्संज्ञा होकर लोप हो जाता है केवल 'त' शेष बचता है। यह प्रत्यय भाववाच्य एवं कर्मवाच्य में प्रयुक्त होता है।
- क्त और क्तवतु प्रत्ययों से बने पदों का रूप तीनों लिङ्गों में होता है-

जैसे- पठितः (पुं.) पठिता (स्त्री.) पठितम् (नपु.) - क्त प्रत्ययान्तपद

पठितवान् (पु.) पठितवती (स्त्री.) पठितवत् (नपुं.) - क्तवतु प्रत्ययान्तपद

'क्त' प्रत्ययान्त पदों की सूची-

			पु.	स्त्री.	नपुं.
1.	गम् + क्त	=	गतः	गता	गतम्
2.	कृ + क्त	=	कृतः	कृता	कृतम्
3.	पठ् + क्त	=	पठितः	पठिता	पठितम्
4.	प्रच्छ् + क्त	=	पृष्टः	पृष्टा	पृष्टम्
5.	लिख् + क्त	=	लिखितः	लिखिता	लिखितम्
6.	कथ् + क्त	=	कथितः	कथिता	कथितम्
7.	कम्प् + क्त	=	कम्पितः	कम्पिता	कम्पितम्
8.	चिन्त् + क्त	=	चिन्तितः	चिन्तिता	चिन्तितम्
9.	जि + क्त	=	जितः	जिता	जितम्
10.	पूज् + क्त	=	पूजितः	पूजिता	पूजितम्
11.	विद् + क्त	=	विदितः	विदिता	विदितम्
12.	नश् + क्त	=	नष्टः	नष्टा	नष्टम्
13.	शक् + क्त	=	शक्तः	शक्ता	शक्तम्
14.	शिक्ष् + क्त	=	शिक्षितः	शिक्षिता	शिक्षितम्
15.	भू + क्त	=	भूतः	भूता	भूतम्
16.	शोभ् + क्त	=	शोभितः	शोभिता	शोभितम्

17.	प्रविश् + क्त	=	प्रविष्टः	प्रविष्टा	प्रविष्टम्
18.	भाष् + क्त	=	भाषितः	भाषिता	भाषितम्
19.	मिल् + क्त	=	मिलितः	मिलिता	मिलितम्
20.	पा + क्त	=	पीतः	पीता	पीतम्
21.	अधि + इङ् + क्त	=	अधीतः	अधीता	अधीतम्
21.	आङ् + हु + क्त	=	आहूतः	आहूता	आहूतम्
22.	ज्वल् + क्त	=	ज्वलितः	ज्वलिता	ज्वलितम्
23.	जीव् + क्त	=	जीवितः	जीविता	जीवितम्
24.	रुच् + क्त	=	रुचितः	रुचिता	रुचितम्

क्तवतु प्रत्ययान्त पदों की सूची

			पुँल्लिङ्ग	**स्त्रीलिङ्ग**	**नपुंसकलिङ्ग**
1.	कृ + क्तवतु	=	कृतवान्	कृतवती	कृतवत्
2.	गम् + (जाना)	=	गतवान्	गतवती	गतवत्
3.	श्रु (सुनना)	=	श्रुतवान्	श्रुतवती	श्रुतवत्
4.	पूज् (पूजा करना)	=	पूजितवान्	पूजितवती	पूजितवत्
5.	लिख् (लिखना)	=	लिखितवान्	लिखितवती	लिखितवत्
6.	ज्ञा (जानना)	=	ज्ञातवान्	ज्ञातवती	ज्ञातवत्
7.	अर्च् (पूजा करना)	=	अर्चितवान्	अर्चितवती	अर्चितवत्
8.	आ दिश् (आज्ञा देना)	=	आदिष्टवान्	आदिष्टवती	आदिष्टवत्
9.	आप् (प्राप्त करना)	=	आप्तवान्	आप्तवती	आप्तवत्
10.	आ + रुह् (चढ़ना)	=	आरूढवान्	आरूढवती	आरूढवत्
11.	उप् + विश् (बैठना)	=	उपविष्टवान्	उपविष्टवती	उपविष्टवत्
12.	कथ् (कहना)	=	कथितवान्	कथितवती	कथितवत्
13.	क्री (खरीदना)	=	क्रीतवान्	क्रीतवती	क्रीतवत्
14.	पत् (गिरना)	=	पतितवान्	पतितवती	पतितवत्
15.	त्यज् (त्यागना)	=	त्यक्तवान्	त्यक्तवती	त्यक्तवत्
16.	लभ् (प्राप्त करना)	=	लब्धवान्	लब्धवती	लब्धवत्
17.	सृज् (सृष्टि करना)	=	सृष्टवान्	सृष्टवती	सृष्टवत्
18.	ग्रह् (ग्रहण करना)	=	गृहीतवान्	गृहीतवती	गृहीतवत्
19.	पा (पीना)	=	पीतवान्	पीतवती	पीतवत्
20.	भू (होना)	=	भूतवान्	भूतवती	भूतवत्
21.	स्ना (स्नान करना)	=	स्नातवान्	स्नातवती	स्नातवत्

9. णमुल् प्रत्यय

- **''आभीक्ष्ण्ये णमुल् च''** (3.4.22) सूत्र से समान कर्ता वाले दो धातुओं से पूर्वकालिक धातु से 'णमुल्' प्रत्यय होता है; बार-बार होना अर्थ द्योतित होने पर।
- यदि किसी क्रिया का बार-बार लगातार (आभीक्ष्ण्य) अर्थ में प्रयोग करना होता है तो वहाँ 'णमुल्' प्रत्यय जोड़ा जाता है। 'णमुल्' में 'अम्' शेष रहता है।
- णमुल् प्रत्यय से बने शब्द अव्यय होते हैं, इनके रूप नहीं चलते।

'णमुल्' प्रत्ययान्त पदों की सूची

(1) तड् + णमुल् = ताडं ताडम् (मार मारकर)
(2) दा + णमुल् = दायं दायम् (दे-देकर)
(3) पा + णमुल् = पायं पायम् (पी-पीकर)
(4) गम् + णमुल् = गामं गामम् (जा-जाकर)
(5) वृ + णमुल् = वारं वारम् (बार-बार)
(6) छिद् + णमुल् = छेदं छेदम् (छेद-छेदकर)
(7) नम् + णमुल् = नामं नामम् (झुक-झुककर)
(8) पठ् + णमुल् = पाठं पाठम् (पढ़-पढ़कर)
(9) रुद् + णमुल् = रोदं रोदम् (रो-रोकर)
(10) भिद् + णमुल् = भेदं भेदम् (फोड़-फोड़कर)
(11) पच् + णमुल् = पाचं पाचम् (पका पकाकर)
(12) दृश् + णमुल् = दर्शं दर्शम् (बार बार देखकर)
(13) नश् + णमुल् = नाशं नाशम् (नष्ट कर करके)
(14) लभ् + णमुल् = लाभं लाभम् (बार बार प्राप्त करके)
(15) ग्रह् + णमुल् = ग्राहं ग्राहम् (बार बार पकडकर)

10. शतृ प्रत्यय और शानच् प्रत्यय

- **लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे (3.2.124)** सूत्र से शतृ और शानच् प्रत्ययों का विधान होता है।
- शतृ और शानच् - दोनों प्रत्यय वर्तमानकालिक कृदन्त के अन्तर्गत गिने जाते हैं।
- **''तौ सत्''** सूत्र से शतृ और शानच् - दोनों प्रत्ययों की 'सत् संज्ञा' होती है।
- 'लगातार कार्य का होना' इस अर्थ को बताने के लिए इन दोनों प्रत्ययों का प्रयोग होता है।
- शतृ प्रत्यय में 'अत्' और 'शानच्' में 'आन' शेष बचता है।
- परस्मैपदी धातुओं से 'शतृ' एवं आत्मनेपदी धातुओं से 'शानच्' प्रत्यय का विधान किया जाता है। किन्तु उभयपदी धातुओं से दोनों प्रत्यय होते हैं।
- 'शतृ' और 'शानच्' प्रत्ययान्त शब्दों के रूप तीनों लिङ्गों और सातों विभक्तियों में चलते हैं-

(i) पठ् + शतृ = पठन् (पुं.) पठन्ती (स्त्री.) पठत् (नपु.)
(ii) कम्प् + शानच् = कम्पमानः (पु.) कम्पमाना (स्त्री.) कम्पमानम् (नपु.)

- ये प्रत्यय कर्ता के विशेषण के रूप में प्रयुक्त होते हैं।

जैसे- **पठन् बालकः गच्छति।** (पढ़ता हुआ बालक जाता है)
भाषमाणः शिक्षकः लिखति। (बोलता हुआ शिक्षक लिखता है)

शतृ प्रत्ययान्त शब्दों की सूची

	धातु (अर्थ सहित)	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
1.	पठ् (पढ़ना)	पठन्	पठन्ती	पठत्
2.	लिख् (लिखना)	लिखन्	लिखन्ती	लिखत्
3.	क्रीड् (खेलना)	क्रीडन्	क्रीडन्ती	क्रीडत्
4.	कृ (करना)	कुर्वन्	कुर्वती	कुर्वत्
5.	धाव् (दौड़ना)	धावन्	धावन्ती	धावत्
6.	श्रु (सुनना)	शृण्वन्	शृण्वती	शृण्वत्
7.	आप् (पाना)	आप्नुवन्	आप्नुवती	आप्नुवत्
8.	गम् (जाना)	गच्छन्	गच्छन्ती	गच्छत्
9.	गर्ज् (गरजना)	गर्जन्	गर्जन्ती	गर्जत्
10.	दृश् (देखना)	पश्यन्	पश्यन्ती	पश्यत्
11.	कथ् (कहना)	कथयन्	कथयन्ती	कथयत्
12.	अर्च् (पूजना)	अर्चन्	अर्चन्ती	अर्चत्
13.	क्री (खरीदना)	क्रीणन्	क्रीणती	क्रीणत्
14.	गै (गाना)	गायन्	गायन्ती	गायत्
15.	छिद् (काटना)	छिन्दन्	छिन्दन्ती	छिन्दत्
16.	शक् (सकना)	शक्नुवन्	शक्नुवन्ती	शक्नुवत्
17.	स्वप् (सोना)	स्वपन्	स्वपन्ती	स्वपत्
18.	स्मृ (स्मरण करना)	स्मरन्	स्मरन्ती	स्मरत्
19.	हृ (हरण करना)	हरन्	हरन्ती	हरत्

20.	हस् (हँसना)	हसन्	हसन्ती	हसत्
21.	अस् (होना)	सन्	सती	सत्
22.	खाद् (खाना)	खादन्	खादन्ती	खादत्
23.	चल् (चलना)	चलन्	चलन्ती	चलत्
24.	ज्ञा (जानना)	जानन्	जानती	जानत्
25.	भू (होना)	भवन्	भवन्ती	भवत्
26.	कथ् (कहना)	कथयन्	कथयन्ती	कथयत्

शानच् प्रत्ययान्त पदों की सूची

	धातु (अर्थ सहित)	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
1.	भाष्	भाषमाणः	भाषमाणा	भाषमाणम्
2.	एध्	एधमानः	एधमाना	एधमानम्
3.	कृ	कुर्वाणः	कुर्वाणा	कुर्वाणम्
4.	यज्	यजमानः	यजमाना	यजमानम्
5.	लभ्	लभमानः	लभमाना	लभमानम्
6.	याच्	याचमानः	याचमाना	याचमानम्
7.	नी	नयमानः	नयमाना	नयमानम्
8.	वृध्	वर्धमानः	वर्धमाना	वर्धमानम्
9.	वृत् (होना)	वर्तमानः	वर्तमाना	वर्तमानम्
10.	शी (सोना)	शयानः	शयाना	शयानम्
11.	कम्प् (काँपना)	कम्पमानः	कम्पमाना	कम्पमानम्
12.	आस् (बैठना)	आसीनः	आसीना	आसीनम्
13.	जन् (पैदा होना)	जायमानः	जायमाना	जायमानम्
14.	त्वर् (जल्दी करना)	त्वरमाणः	त्वरमाणा	त्वरमाणम्
15.	सेव् (सेवा करना)	सेवमानः	सेवमाना	सेवमानम्
16.	सह् (सहन करना)	सहमानः	सहमाना	सहमानम्
17.	कथ् (कहना)	कथयमाणः	कथयमाणा	कथयमाणम्

तद्धितप्रत्यय

तद्धितप्रत्यय- संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण एवम् अव्ययपदों से जोड़े जाने वाले प्रत्यय तद्धित प्रत्यय हैं। तद्धितप्रत्यय के योग से बने शब्द **'तद्धितान्त'** कहे जाते हैं।

1. मतुप् प्रत्यय

(i) तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप् (5.2.94) सूत्र से 'वह इसका है' 'वह इसमें है' - इन अर्थों में 'मतुप्' प्रत्यय होता है।

(ii) 'मतुँप्' के पकार एवं उकार का योग होकर 'मत्' शेष बचता है।

(iii) 'मतुँप्' प्रत्ययान्त पद विशेषण होते हैं अतः विशेष्य के अनुसार इनका लिङ्ग, वचन और विभक्ति निर्धारित होती है।

मतुप् प्रत्ययान्त पदों की सूची-

1. गो + मतुप् = **गोमत् (गोमान्)** गौ वाला
2. मति + मतुप् = **मतिमत् (मतिमान्)** बुद्धि वाला
3. श्री + मतुप् = **श्रीमत् (श्रीमान्)** श्री से युक्त
4. धी + मतुप् = **धीमत् (धीमान्)** बुद्धि वाला
5. आयुस् + मतुप् = **आयुष्मत् (आयुष्मान्)** दीर्घायु

(1) मतुप् (मत्) का 'म' बदलकर 'व' हो जाता है, यदि- अकारान्त या आकारान्त हो; जैसे-

(i) बल + मतुप् = बलवत् (बलवान्)
(ii) विद्या + मतुप् = विद्यावत् (विद्यावान्)
(iii) धन + मतुप् = धनवत् (धनवान्)
(iv) दया + मतुप् = दयावत् (दयावान्)
(v) गुण + मतुप् = गुणवत् (गुणवान्)
(vi) भग + मतुप् = भगवत् (भगवान्)

(2) ऐसा शब्द, जिसके अन्तिम स्वर के पहले 'म्' हो-

लक्ष्मी + मतुप् = लक्ष्मीवान्

(3) ऐसा शब्द, जिसके अन्तिम व्यञ्जन के पहले 'अ' या 'आ' हो। जैसे-

यशस् + मतुप् = यशस्वत् (यशस्वान्)

भास् + मतुप् = भास्वत् (भास्वान्)

(4) जिस शब्द के अन्त में वर्गों के प्रथम चार वर्णों में से कोई हो। जैसे-

विद्युत् + मतुप् = विद्युत्वत् (विद्युत्वान्)

सुहृद् + मतुप् = सुहृद्वत् (सुहृद्वान्)

मतुप् प्रत्ययान्त पदों की सूची —

शब्द + प्रत्यय	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
1. धन् + मतुप्	धनवान्	धनवती	धनवत्
2. रूप + मतुप्	रूपवान्	रूपवती	रूपवत्
3. बल + मतुप्	बलवान्	बलवती	बलवत्
4. गुण + मतुप्	गुणवान्	गुणवती	गुणवत्
5. रस + मतुप्	रसवान्	रसवती	रसवत्
6. धी + मतुप्	धीमान्	धीमती	धीमत्
7. श्री + मतुप्	श्रीमान्	श्रीमती	श्रीमत्

2. इनि प्रत्यय

(1) अत इनिठनौ (5.2.115) अर्थात् अकारान्त शब्दों से 'इनि' और 'ठन्' प्रत्यय होते हैं।

(2) 'इनि' प्रत्यय के अन्त में विद्यमान 'इ' का लोप हो जाता है अतः केवल 'इन्' शेष बचता है।

(3) यह प्रत्यय भी 'वाला' अर्थ में प्रयुक्त होता है। जैसे-

धन + इनि = धनिन् (धनी) = धन वाला।

इनि (इन्) प्रत्ययान्त पदों की सूची

1.	च्रक + इनि	=	चक्रिन् /चक्री
2.	धन + इनि	=	धनिन् / धनी
3.	बल + इनि	=	बलिन् / बली
4.	दुःख + इनि	=	दुःखिन् / दुःखी
5.	गुण + इनि	=	गुणिन् / गुणी
6.	कर + इनि	=	करिन् / करी
7.	हस्त + इनि	=	हस्तिन् / हस्ती
8.	दण्ड + इनि	=	दण्डिन् / दण्डी
9.	शिखा + इनि	=	शिखिन् / शिखी
10.	सुख + इनि	=	सुखिन् / सुखी
11.	कर्म + इनि	=	कर्मिन् / कर्मी
12.	प्रणय + इनि	=	प्रणयिन् / प्रणयी
13.	माला + इनि	=	मालिन् / माली
14.	दोष + इनि	=	दोषिन् / दोषी
15.	ज्ञान + इनि	=	ज्ञानिन् / ज्ञानी
16.	दान + इनि	=	दानिन् / दानी
17.	माया + इनि	=	मायिन् / मायी

3. त्व और तल् प्रत्यय

(1) ''तस्य भावस्त्वतलौ'' (5.1.119) सूत्र से किसी शब्द को भाववाचक संज्ञा बनाने के लिए उस शब्द में 'त्व' अथवा 'तल्' (ता) प्रत्यय जोड़ देते हैं।

(2) 'त्व' से अन्त होने वाले शब्द सदा नपुंसकलिङ्ग में होते हैं और 'तल्' से अन्त होने वाले शब्द स्त्रीलिङ्ग में होते हैं।

(3) 'ग्रामजनबन्धुभ्यस्तल्' (4.2.43) सूत्र से तल् प्रत्यय होता है। जैसे- ग्रामता, बन्धुता, जनता आदि।

'त्व' और तल् प्रत्ययान्त सूची

शब्द	'त्व' प्रत्ययान्त पद	'तल्' प्रत्ययान्त पद
1. कुशल	कुशलत्वम्	कुशलता
2. गुरु	गुरुत्वम्	गुरुता
3. मित्र	मित्रत्वम्	मित्रता
4. देव	देवत्वम्	देवता
5. सुन्दर	सुन्दरत्वम्	सुन्दरता
6. मनुष्य	मनुष्यत्वम्	मनुष्यता
7. शिशु	शिशुत्वम्	शिशुता
8. पशु	पशुत्वम्	पशुता
9. मूर्ख	मूर्खत्वम्	मूर्खता
10. दुर्जन	दुर्जनत्वम्	दुर्जनता
11. महत्	महत्त्वम्	महत्ता

4. ठक् प्रत्यय

(1) 'ठक्' प्रत्यय का प्रयोग भाववाचक संज्ञा बनाने के लिए होता है। शब्द के साथ जुड़ने पर 'ठक्' के 'ठ्' के स्थान पर 'इक' आदेश होता है।

(2) शब्द के प्रथम स्वर में वृद्धि हो जाती है; जैसे- 'अ' को 'आ', 'इ' को 'ऐ', 'उ' को 'औ' हो जाता है। अर्थात् आदि अच् की वृद्धि होती है।

ठक् (इक) प्रत्ययान्त पदों की सूची

1.	धर्म + ठक् (इक)	=	धार्मिकः
2.	अस्ति + ठक् (इक)	=	आस्तिकः
3.	सप्ताह + ठक् (इक)	=	साप्ताहिकः
4.	संस्कृति + ठक् (इक)	=	सांस्कृतिकः
5.	अश्व + ठक् (इक)	=	आश्विकः
6.	साहित्य + ठक् (इक)	=	साहित्यिकः
7.	लोक + ठक् (इक)	=	लौकिकः
8.	दिन + ठक् (इक)	=	दैनिकः

स्त्रीप्रत्यय

पुंलिङ्ग शब्दों को स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए जिन प्रत्ययों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें **'स्त्रीप्रत्यय'** कहा जाता है।
जैसे- टाप्, चाप्, डाप्, ङीप्, ङीष्, ङीन्, ऊङ्, ति आदि।

(1) टाप् प्रत्यय-

(i) अजाद्यतष्टाप् (4.1.4) सूत्र से अजादिगण में गिने गये शब्दों को और अकारान्त पुंलिङ्ग शब्दों को स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए 'टाप्' प्रत्यय लगाया जाता है।

(ii) 'टाप्' प्रत्यय के 'ट्' और 'प्' का लोप होकर केवल 'आ' बचता है। अतः 'टाप्' प्रत्ययान्त शब्द आकारान्त स्त्रीलिङ्ग कहलाते हैं।

(iii) 'टाप्' प्रत्यय से बने शब्दों के रूप 'रमा' की भाँति चलते हैं।
जैसे-

अज + टाप् = **अजा**
चटक + टाप् = **चटका**
सुत + टाप् = **सुता**
शूद्र + टाप् = **शूद्रा**
कनिष्ठ + टाप् = **कनिष्ठा**
प्रथम + टाप् = **प्रथमा**
बाल + टाप् = **बाला**
अश्व + टाप् = **अश्वा**
क्षत्रिय + टाप् = **क्षत्रिया**
अनुकूल + टाप् = **अनुकूला**
सुनयन + टाप् = **सुनयना**
अचल + टाप् = **अचला**
कुशल + टाप् = **कुशला**

नोट- 'टाप्' प्रत्यय जोड़ते समय यदि शब्द के अन्त में 'क' हो, और 'क' से पूर्व 'अ' हो तो.....'अ' के स्थान पर 'इ' हो जाता है।
जैसे-

कारक + टाप् = **कारिका**
नाटक + टाप् = **नाटिका**
बालक + टाप् = **बालिका**
अध्यापक + टाप् = **अध्यापिका**
गायक + टाप् = **गायिका**

(2) ङीष् प्रत्यय-

(i) 'षिद्गौरादिभ्यश्च' (4.1.41) सूत्र से 'ङीष्' प्रत्यय का विधान किया जाता है।

(ii) जिन प्रत्ययों में 'षकार' का लोप हुआ हो, ऐसे प्रत्ययों से बने हुए शब्दों से तथा गौरादिगण के शब्दों से स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए 'ङीष्' प्रत्यय का प्रयोग होता है।

(iii) 'ङीष्' में 'ङ्' की और 'ष्' की इत्संज्ञा होकर लोप हो जाता है, केवल 'ई' शेष बचता है। इसीलिए ङीष् प्रत्ययान्त पद ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग पद कहलाते हैं।

(iv) ङीष् प्रत्ययान्त पदों का रूप 'नदी' की तरह चलता है।
जैसे-

नर्तक + ङीष् = **नर्तकी**
गौर + ङीष् = **गौरी**
नट + ङीष् = **नटी**
मातामह + ङीष् = **मातामही**
चन्द्रमुख + ङीष् = **चन्द्रमुखी**
मनुष्य + ङीष् = **मनुषी**
शिखण्ड + ङीष् = **शिखण्डी**
तट + ङीष् = **तटी**
शूद्र + ङीष् = **शूद्री**

(3) ङीप् प्रत्यय-

(i) 'ङीप्' प्रत्यय के 'ङ्' और 'प्' का लोप होकर 'ई' शेष बचता है।

(ii) ङीप् प्रत्ययान्त पद ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग कहलाते हैं, इनका रूप भी 'नदी' की तरह चलता है।

(iii) ''टिड्ढाणञ् ....'' ''वयसि प्रथमे'' ''द्विगोः'' आदि सूत्रों से 'ङीप्' प्रत्यय का विधान होता है।
जैसे-

नद + ङीप् = **नदी**
देव + ङीप् = **देवी**
तरुण + ङीप् = **तरुणी**
गार्ग्य + ङीप् = **गार्गी**
कुमार + ङीप् = **कुमारी**
किशोर + ङीप् = **किशोरी**
त्रिलोक + ङीप् = **त्रिलोकी**
अष्टाध्याय + ङीप् = **अष्टाध्यायी**
पञ्चवट + ङीप् = **पञ्चवटी**
त्रिपाद + ङीप् = **त्रिपादी**

(4) ङीन् प्रत्यय-

(i) 'ङीन्' प्रत्यय का भी 'ङ्' और 'न्' का लोप होकर 'ई' शेष बचता है।

(ii) इस प्रत्यय से बने रूप भी ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग होते हैं, अतः इनका रूप भी 'नदी' की तरह चलेगा।

(iii) ''शार्ङ्गरवाद्यञो ङीन्'' एवं ''नृनरयोर्वृद्धिश्च'' से 'ङीन्' प्रत्यय का विधान होता है।
जैसे-

ब्राह्मण + ङीन् = ब्राह्मणी
शार्ङ्गरव + ङीन् = शार्ङ्गरवी
नृ + ङीन् = नारी
नर + ङीन् = नारी

❑❑

वाच्य

➢ वाक्य के कहने की विधि को संस्कृत में वाच्य कहते हैं।
वाच्य तीन प्रकार के होते हैं-
1. कर्तृवाच्य 2. कर्मवाच्य 3. भाववाच्य

1. कर्तृवाच्य- जिस वाक्य में कर्ता प्रधान हो उसे कर्तृवाच्य कहते हैं।
कर्तृवाच्य के वाक्यों में-
(i) कर्ता में प्रथमा विभक्ति होती है
(ii) कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है
(iii) क्रिया का पुरुष तथा वचन कर्ता के अनुसार होता है।
जैसे-

	कर्ता	**कर्म**	**क्रिया।**
(i)	सीता	गृहं	गच्छति।
(ii)	अहं	रामायणं	पठामि।

उपर्युक्त दोनों वाक्यों के कर्ता में प्रथमाविभक्ति, कर्म में द्वितीया विभक्ति तथा क्रिया कर्ता के अनुसार प्रयुक्त है।

2. कर्मवाच्य- कर्मवाच्य के वाक्यों में कर्म की प्रधानता होती है, अतः-
(i) कर्म में प्रथमा विभक्ति होती है।
(ii) कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है।
(iii) क्रिया का पुरुष तथा वचन कर्म के अनुसार होता है।

	कर्ता	**कर्म**	**क्रिया**
जैसे-	बालकेन	पुस्तकं	पठ्यते।
	त्वया	विद्यालयः	गम्यते।
	मया	पत्रं	लिख्यते।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वाक्यों के कर्ता में तृतीया विभक्ति, कर्म में प्रथमा विभक्ति तथा क्रिया कर्म के अनुसार प्रयुक्त है।
अतः सभी वाक्य कर्मवाच्य के उदाहरण हैं।

3. भाववाच्य- 'भाव' का अर्थ है- क्रिया। जिस वाक्य में भाव (क्रिया) की प्रधानता होती है, उसे भाववाच्य कहते हैं।
भाववाच्य में -
(i) कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है।
(ii) क्रिया हमेशा प्रथमपुरुष एकवचन की प्रयुक्त होगी।
(iii) अकर्मक (कर्म रहित) धातुओं से ही भाववाच्य होगा।
(iv) भाववाच्य में कर्म का अभाव होता है।

जैसे-

	कर्ता	**क्रिया**
(i)	मया	हस्यते।
(ii)	त्वया	स्थीयते।
(iii)	ईश्वरेण	भूयते।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त उदाहरणों में कर्ता में तृतीया विभक्ति तथा अकर्मक क्रिया प्रथमपुरुष एकवचन की प्रयुक्त है। कर्म पद का अभाव है।

वाच्य के सन्दर्भ में कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य

➢ वाक्य में जो प्रधान होता है, उसमें प्रथमा विभक्ति आती है कर्तृवाच्य के वाक्यों में कर्ता प्रधान होता है, अतः इसके कर्ता में प्रथमा विभक्ति आती है। इसीप्रकार कर्मवाच्य के वाक्यों में कर्मप्रधान होता है, अतः इसके कर्म में प्रथमा विभक्ति आती है।
➢ सकर्मक (कर्म सहित) धातुओं के रूप दो वाच्यों में होते हैं- (i) कर्तृवाच्य और (ii) कर्मवाच्य
➢ अकर्मक (कर्म रहित) धातुओं के रूप भी दो वाच्यों में होते हैं- (i) कर्तृवाच्य (ii) भाववाच्य
➢ सकर्मक एवं अकर्मक दोनों प्रकार की धातुओं से- कर्तृवाच्य
सकर्मक धातुओं से - कर्मवाच्य
अकर्मक धातुओं से - भाववाच्य
➢ कर्मवाच्य और भाववाच्य में सार्वधातुक लकारों (लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ्) में धातु और प्रत्यय के बीच 'यक्' लग जाता है। 'यक्' का 'य' शेष रहता है। धातु का रूप सदा आत्मनेपद में ही चलता है।

जैसे- पठ्यते, लिख्यते, हस्यते, नीयते, पीयते आदि।

कर्ता पदों की सूची

कर्तृवाच्य कर्ता	कर्मवाच्य कर्ता/भाववाच्य कर्ता
भवान्	भवता
भवती	भवत्या
त्वम्	त्वया
अहम्	मया
सः	तेन
सा	तया
कः	केन
का	कया

एषः	एतेन
एषा	एतया
यः	येन
या	यया
सर्वः	सर्वेण
सर्वा	सर्वया
अयम्	अनेन
इयम्	अनया
रामः	रामेण
बालकः	बालकेन
हरिः	हरिणा
मुनिः	मुनिना
पिता	पित्रा
माता	मात्रा
रमा	रमया
लता	लतया
नदी	नद्या
लक्ष्मीः	लक्ष्म्या
गुरुः	गुरुणा
साधुः	साधुना
मतिः	मत्या
युवतिः	युवत्या
मित्रम्	मित्रेण
फलम्	फलेन
वारि	वारिणा

कर्मवाच्य/भाववाच्य के अनुसार प्रमुख धातुरूप

भू धातु (अकर्मक,अनिट्, परस्मैपद)

1. लट् लकार

भूयते	भूयेते	भूयन्ते
भूयसे	भूयेथे	भूयध्वे
भूये	भूयावहे	भूयामहे

2. विधिलिङ् लकार

भूयेत	भूयेयाताम्	भूयेरन्
भूयेथाः	भूयाथाम्	भूयध्वम्
भूयेय	भूयेवहि	भूयेमहि।

3. लोट् लकार

भूयताम्	भूयेताम्	भूयन्ताम्
भूयस्व	भूयेथाम्	भूयध्वम्
भूयै	भूयावहै	भूयामहै।

4. लङ् लकार

अभूयत	अभूयेताम्	अभूयन्त
अभूयथाः	अभूयेथाम्	अभूयध्वम्
अभूये	अभूयावहि	अभूयामहि।

5. लृट् लकार

भविष्यते	भविष्येते	भविष्यन्ते
भविष्यसे	भविष्येथे	भविष्यध्वे
भविष्ये	भविष्यावहे	भविष्यामहे

गम् धातु (सकर्मक,अनिट्,परस्मैपद,भ्वादिगण)

लट् लकार

गम्यते	गम्येते	गम्यन्ते
गम्यसे	गम्येथे	गम्यध्वे
गम्ये	गम्यावहे	गम्यामहे

वद् धातु (सकर्मक,सेट्,परस्मैपद,भ्वादिगण)

उद्यते	उद्येते	उद्यन्ते
उद्यसे	उद्येथे	उद्यध्वे
उद्ये	उद्यावहे	उद्यामहे

पठ् धातु (सकर्मक,सेट्,परस्मैपद,भ्वादिगण)

पठ्यते	पठ्येते	पठ्यन्ते
पठ्यसे	पठ्येथे	पठ्यध्वे
पठ्ये	पठ्यावहे	पठ्यामहे

कृ धातु लट् लकार

क्रियते	क्रियेते	क्रियन्ते
क्रियसे	क्रियेथे	क्रियध्वे
क्रिये	क्रियावहे	क्रियामहे

याच् धातु (सकर्मक,सेट्,उभयपदी,भ्वादिगण)

याच्यते	याच्येते	याच्यन्ते
याच्यसे	याच्येथे	याच्यध्वे
याच्ये	याच्यावहे	याच्यामहे

पच् धातु (सकर्मक, अनिट्, उभयपदी, भ्वादिगण)

पच्यते	पच्येते	पच्यन्ते
पच्यसे	पच्येथे	पच्यध्वे
पच्ये	पच्यावहे	पच्यामहे

रुच् धातु (अकर्मक, सेट्, आत्मनेपद, भ्वादिगण)

रुच्यते	रुच्येते	रुच्यन्ते
रुच्यसे	रुच्येथे	रुच्यध्वे
रुच्ये	रुच्यावहे	रुच्यामहे

रम् धातु (अकर्मक, अनिट्, आत्मनेपद, भ्वादिगण)

रम्यते	रम्येते	रम्यन्ते
रम्यसे	रम्येथे	रम्यध्वे
रम्ये	रम्यावहे	रम्यामहे

यज् धातु (सकर्मक,अनिट्,उभयपदी,भ्वादिगण)

इज्यते	इज्येते	इज्यन्ते
इज्यसे	इज्येथे	इज्यध्वे
इज्ये	इज्यावहे	इज्यामहे

वह् धातु (सकर्मक,अनिट्,उभयपदी,भ्वादिगण)

उह्यते	उह्येते	उह्यन्ते
उह्यसे	उह्येथे	उह्यध्वे
उह्ये	उह्यावहे	उह्यामहे

श्रु धातु (सकर्मक,अनिट्,परस्मैपद,भ्वादिगण)

श्रूयते	श्रूयेते	श्रूयन्ते
श्रूयसे	श्रूयेथे	श्रूयध्वे
श्रूये	श्रूयावहे	श्रूयामहे

तुद् धातु (सकर्मक,अनिट्,उभयपदी,तुदादिगण)

तुद्यते	तुद्येते	तुद्यन्ते
तुद्यसे	तुद्येथे	तुद्यध्वे
तुद्ये	तुद्यावहे	तुद्यामहे

भुज् धातु (अकर्मक,अनिट्,परस्मैपद,तुदादिगण)

भुज्यते	भुज्येते	भुज्यन्ते
भुज्यसे	भुज्येथे	भुज्यध्वे
भुज्ये	भुज्यावहे	भुज्यामहे

हन् धातु (सकर्मक,अनिट्,परस्मैपद,अदादिगण)

हन्यते	हन्येते	हन्यन्ते
हन्यसे	हन्येथे	हन्यध्वे
हन्ये	हन्यावहे	हन्यामहे

हस् धातु (अकर्मक,सेट्,परस्मैपद,भ्वादिगण)

हस्यते	हस्येते	हस्यन्ते
हस्यसे	हस्येथे	हस्यध्वे
हस्ये	हस्यावहे	हस्यामहे

क्रीड् धातु (अकर्मक,सेट्,परस्मैपद,भ्वादिगण)

क्रीड्यते	क्रीड्येते	क्रीड्यन्ते
क्रीड्यसे	क्रीड्येथे	क्रीड्यध्वे
क्रीड्ये	क्रीड्यावहे	क्रीड्यामहे

स्था धातु

स्थीयते	स्थीयेते	स्थीयन्ते
स्थीयसे	स्थीयेथे	स्थीयध्वे
स्थीये	स्थीयावहे	स्थीयामहे

आस् धातु (अकर्मक,सेट्,आत्मनेपद,अदादिगण)

आस्यते	आस्येते	आस्यन्ते
आस्यसे	आस्येथे	आस्यध्वे
आस्ये	आस्यावहे	आस्यामहे

जीव् धातु (अकर्मक,सेट्,परस्मैपद,भ्वादिगण)

जीव्यते	जीव्येते	जीव्यन्ते
जीव्यसे	जीव्येथे	जीव्यध्वे
जीव्ये	जीव्यावहे	जीव्यामहे

धातु/अर्थ	कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य/ भाववाच्य	कर्मवाच्य/ भाववाच्य प्रयोग	कर्तृवाच्य प्रयोग
भू (होना)	भवति	भूयते	ईश्वरेण भूयते	ईश्वरः अस्ति।
भी (डरना)	बिभेति	भीयते	शिशुभिः मूषकेभ्यः भीयते	शिशवः मूषकेभ्यः बिभ्यति।
शी (सोना)	शेते	शय्यते	पथिकैः मार्गे शय्यते	पथिकाः मार्गे शेरते।
याच् (माँगना)	याचति	याच्यते	याचकैः भैक्ष्यं याच्यते	याचकाः भैक्ष्यं याचन्ते।
अद् (खाना)	अत्ति	अद्यते	तेन मिष्ठानं अद्यते	सः मिष्ठान्नं अत्ति।
वद् (बोलना)	वदति	उद्यते	आचार्येण सत्यम् उद्यते	आचार्यः सत्यं वदति।
ज्ञा (जानना)	जानाति	ज्ञायते	तेन श्लोकः न ज्ञायते	सः श्लोकं न जानाति।
खन् (खोदना)	खनति	खन्यते	श्रमिकः भूमिः खन्यते	श्रमिकः भूमिं खनति।
वप् (बोना)	वपति	उप्यते	कृषकेण बीजानि उप्यन्ते	कृषकः बीजानि वपन्ति।
स्था (ठहरना)	तिष्ठति	स्थीयते	मुनिना कुटीरे स्थीयते	मुनिः कुटीरे तिष्ठति।
कथ् (कहना)	कथयति	कथ्यते	ऋषिणा रामकथा कथ्यते	ऋषिः रामकथां कथयति।
दुह् (दोहना)	दोग्धि	दुह्यते	तेन गौः पयः दुह्यते	सः गां पयः दोग्धि।

धातु/अर्थ	कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य/ भाववाच्य	कर्मवाच्य/ भाववाच्य प्रयोग	कर्तृवाच्य प्रयोग
नी (ले जाना)	नयति	नीयते	भृत्येन भारः नीयते	भृत्यः भारं नयति।
गम् (जाना)	गच्छति	गम्यते	पुत्रेण ग्रामः गम्यते	पुत्रः ग्रामं गच्छति।
भक्ष् (खाना)	भक्षयति	भक्ष्यते	मया फलानि भक्ष्यन्ते	अहं फलानि भक्षयामि।
हन् (मारना)	हन्ति	हन्यते	राज्ञा सिंहः हन्यते	राजा सिंहं हन्ति।
पा (पीना)	पिबति	पीयते	शिशुना दुग्धं पीयते	शिशुः दुग्धं पिबति।
अस् (होना)	अस्ति	भूयते	तेन कुत्रापि न भूयते	सः कुत्रापि न भवति।
श्रु (सुनना)	शृणोति	श्रूयते	बालकेन कथा श्रूयते	बालकः कथां शृणोति।
सेव् (सेवा करना)	सेवते	सेव्यते	प्रजाभिः राजा सेव्यते	प्रजाः राजानं सेवन्ते।
चि (चुनना)	चिनोति	चीयते	मालाकारेण पुष्पाणि चीयन्ते	मालाकारः पुष्पाणि चिनोति।
हु (हवन करना)	जुहोति	हूयते	यतिभिः अग्नौ हूयते	यतयः अग्नौ जुह्वति।
स्वप् (सोना)	स्वपिति	सुप्यते	चालकेन मार्गे सुप्यते	चालकः मार्गे स्वपिति।
मन्थ् (मथना)	मथ्नाति	मथ्यते	मात्रा दधि मथ्यते	माता दधि मथ्नाति।
पूज् (पूजा करना)	पूजयति	पूज्यते	यत्र नार्यः पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः	यत्र नारीः पूजयन्ति रमन्ते तत्र देवताः।
कृ (करना)	करोति	क्रियते	ऋषिभिः शुभकर्माणि क्रियन्ते	ऋषयः शुभकर्माणि कुर्वन्ति।
धृ (धारण करना)	धारयति	धार्यते	शिष्येन वस्त्रं धार्यते	शिष्यः वस्त्रं धरति
गण् (गिनना)	गणयति	गण्यते	छात्रेण शतं गण्यते	छात्रः शतं गणयति।
लिख् (लिखना)	लिखति	लिख्यते	छात्रेण पत्रं लिख्यते	छात्रः पत्रं लिखति।
स्मृ (याद करना)	स्मरति	स्मर्यते	मया ईश्वरः स्मर्यते	अहं ईश्वरं स्मरामि।
दृश् (देखना)	पश्यति	दृश्यते	बालकेन चित्रं दृश्यते	बालकः चित्रं पश्यति।
प्रच्छ् (पूछना)	पृच्छति	पृच्छ्यते	अध्यापकेन प्रश्नः पृच्छ्यते	अध्यापकः प्रश्नं पृच्छति।
वस् (रहना)	वसति	उष्यते	बालकैः उद्याने उष्यते	बालकाः उद्याने वसन्ति।

कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य में प्रयोग

- ➢ कर्तृवाच्य के कर्त्ता में प्रथमा विभक्ति तथा कर्मवाच्य के कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है।
- ➢ कर्तृवाच्य के कर्म में द्वितीया विभक्ति तथा कर्मवाच्य के कर्म में प्रथमा विभक्ति हो जाती है।
- ➢ कर्मवाच्य में क्रिया का पुरुष और वचन कर्म के पुरुष और वचन के अनुसार हो जाता है।

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
अहं शिक्षां लभे	मया शिक्षा लभ्यते
सः पुस्तकं पठति	तेन पुस्तकं पठ्यते
सः ईश्वरं स्मरति	तेन ईश्वरः स्मर्यते
छात्राः प्रश्नं पृच्छन्ति	छात्रैः प्रश्नः पृच्छ्यते
गायकः गीतानि गायति	गायकेन गीतानि गीयन्ते
शिशुः दुग्धं पिबति	शिशुना दुग्धं पीयते
सः सत्यं वदति	तेन सत्यम् उद्यते
अहं पुस्तकं पश्यामि	मया पुस्तकं दृश्यते
माता ओदनं पचति	मात्रा ओदनं पच्यते
वयं युद्धं कुर्मः	अस्माभिः युद्धं क्रियते

कर्मवाच्य से कर्तृवाच्य में प्रयोग

- ➢ कर्मवाच्य में कर्त्ता की तृतीया विभक्ति कर्तृवाच्य के कर्ता में प्रथमा विभक्ति हो जाती है।
- ➢ कर्मवाच्य में कर्म के स्थान पर प्रयुक्त प्रथमा विभक्ति कर्तृवाच्य में द्वितीया विभक्ति हो जाती है।
- ➢ क्रिया के पुरुष और वचन कर्त्ता के अनुसार हो जाते हैं।
- ➢ कर्मवाच्य में प्रयुक्त क्त के स्थान पर कर्तृवाच्य में क्तवतु प्रत्यय हो जाता है।
- ➢ कर्मवाच्य में प्रयुक्त तव्य प्रत्यय के स्थान पर कर्तृवाच्य में विधिलिङ् का प्रयोग कर दिया जाता है।

वाच्य परिवर्तन अभ्यास

कर्मवाच्य	कर्तृवाच्य
अध्यापकेन पाठः पठ्यते	अध्यापकः पाठं पठति
अस्माभिः सिंहः दृश्यते	वयं सिंहं पश्यामः
सैनिकैः युद्धं क्रियते	सैनिकाः युद्धं कुर्वन्ति
रमेशेन ईश्वरः स्मर्यते	रमेशः ईश्वरं स्मरति
बालकेन पत्रं लिख्यते	बालकः पत्रं लिखति
गायकेन गीतं गीयते	गायकः गीतं गायति
नृपेण सिंहः हन्यते	नृपः सिंहं हन्ति
स्वामिना कथा कथ्यते	स्वामी कथां कथयति
तेन ग्रामः गम्यते	सः ग्रामं गच्छति
सेनया युद्धः जीयते	सेना युद्धं जयति
तेन कथा श्रूयते	सः कथां शृणोति
मया चन्द्रः दृश्यते	अहं चन्द्रं पश्यामि
गुरुभिः किं न ज्ञायते	गुरवः किं न जानन्ति
मया लोभः त्यजते	अहं लोभं त्यजामि
वृक्षैः फलानि दीयन्ते	वृक्षाः फलानि ददति

कर्तृवाच्य से भाववाच्य में प्रयोग

भाववाच्य के कर्त्ता में तृतीया विभक्ति होती है और क्रिया सदा प्रथम पुरुष एकवचन में होती है। उदाहरण-

कर्तृवाच्य	भाववाच्य
छात्रः क्रीडति	छात्रेण क्रीड्यते
बालकाः तिष्ठन्ति	बालकैः स्थीयते
सिंहः गर्जति	सिंहेन गर्ज्यते
अहं पठामि	मया पठ्यते
ईश्वरः अस्ति	ईश्वरेण भूयते
अश्वाः धावन्ति	अश्वैः धाव्यते
कन्याः लिखति	कन्याभिः लिख्यते
अहं गच्छामि	मया गम्यते
त्वं खादसि	त्वया खाद्यते
लता वर्धते	लतया वर्ध्यते
युवां हसथः	युवाभ्यां हस्यते
पुष्पाणि विकसन्ति	पुष्पैः विकस्यते
गुरुः तिष्ठति	गुरुणा स्थीयते
वयं हसामः	अस्माभिः हस्यते
त्वं पठसि	त्वया पठ्यते

भाववाच्य	कर्तृवाच्य
हरिणा वैकुण्ठे उष्यते	हरिः वैकुण्ठे वसति
अस्माभिः विद्यालये स्थीयते	वयं विद्यालये तिष्ठामः
मयूरैः नृत्यते	मयूराः नृत्यन्ति
मया नैव रुद्यते	अहं नैव रोदिमि
तेन गृहे सुप्यते	सः गृहे स्वपिति

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
रामः वेदं पठति	रामेण वेदः पठ्यते।
बालकः चन्द्रं पश्यति	बालकेन चन्द्रः दृश्यते।
बालकः गीतां पठति	बालकेन गीता पठ्यते।
रामः पत्रं लिखति	रामेण पत्रं लिख्यते।
सुरेशः ग्रामं गच्छति	सुरेशेन ग्रामः गम्यते।
सः आपणं गच्छति	तेन आपणः गम्यते।
सः गीतं गायति	तेन गीतं गीयते।
सः रघुवंशं पठति	तेन रघुवंशं पठ्यते।
कृष्णः जलं पिबति	कृष्णेन जलं पीयते।
बालकः मोहनं पश्यति	बालकेन मोहनः दृश्यते।
बालिका पुस्तकं पठति	बालिकया पुस्तकं पठ्यते।
रजकः गर्दभं ताडयति	रजकेन गर्दभः ताड्यते।
कृषकः जलं पिबति	कृषकेन जलं पीयते।
सः दुग्धं पिबति	तेन दुग्धं पीयते।
कविः काव्यं करोति	कविना काव्यं क्रियते।
सा विद्यालयं गच्छति	तया विद्यालयः गम्यते।
माता ओदनं पचति	मात्रा ओदनं पच्यते।
रामः तीव्रं हसति	रामेण तीव्रं हस्यते।
भक्तः ज्ञानं प्राप्नोति	भक्तेन ज्ञानं प्राप्यते।
रामः धनं ददाति	रामेण धनं दीयते।
सः ईश्वरं स्मरति	तेन ईश्वरः स्मर्यते।
सः सत्यं वदति	तेन सत्यम् उद्यते।
सः कथां शृणोति	तेन कथा श्रूयते।
वृक्षाः फलानि ददति	वृक्षैः फलानि दीयन्ते।
सैनिकाः युद्धं कुर्वन्ति	सैनिकैः युद्धं क्रियते।
छात्राः पत्रं लिखन्ति	छात्रैः पत्रं लिख्यते।
तौ प्रयागं गच्छतिः	ताभ्याम् प्रयागः गम्यते।
छात्राः पुस्तकानि नयन्ति	छात्रैः पुस्तकानि नीयन्ते।
तौ गृहं गच्छतः	ताभ्याम् गृहं गम्यते।
कृषकाः जलं पिबन्ति	कृषकैः जलं पीयते।
ते पुस्तकानि पठन्ति	तैः पुस्तकानि पठ्यन्ते।

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
बालकौ गीतं गायतः	बालकाभ्याम् गीतं गीयते।
भक्तौ ईश्वरं स्मरतः	भक्ताभ्याम् ईश्वरः स्मर्यते।
तौ पुस्तकं पठतः	ताभ्याम् पुस्तकं पठ्यते।
त्वं गृहं गच्छसि	त्वया गृहं गम्यते।
त्वं पत्रं लिखसि	त्वया पत्रं लिख्यते।
त्वं किं लिखसि	त्वया किं लिख्यते।
यूवां पुस्तकं पठथः	युवाभ्याम् पुस्तकं पठ्यते।
त्वं कुत्र गच्छसि	त्वया कुत्र गम्यते।
त्वं ईश्वरं पश्यसि	त्वया ईश्वरः दृश्यते।
त्वं प्रश्नं पृच्छसि	त्वया प्रश्नः पृच्छ्यते।
युवां गृहं गच्छथः	युवाभ्यां गृहं गम्यते।
युवां प्रश्नानि पृच्छथः	युवाभ्यां प्रश्नानि पृच्छयन्ते।
युवां बालकौ पश्यथः	युवाभ्यां बालकौ दृश्येते।
यूयं पुस्तकानि पठथ	युष्माभिः पुस्तकानि पठ्यन्ते।
यूयं गीतानि गायथ	युष्माभिः गीतानि गीयन्ते।
अहं पुस्तकं पठामि	मया पुस्तकं पठ्यते।
अहं दुग्धं पिबामि	मया दुग्धं पीयते।
अहं पुस्तकं लिखामि	मया पुस्तकं लिख्यते।
अहं त्वां पश्यामि	मया त्वं दृश्यसे।
अहं जलं पिबामि	मया जलं पीयते।
अहं पत्रं लिखामि	मया पत्रं लिख्यते।
आवां गृहं गच्छवः	आवाभ्यां गृहं गम्यते।
आवां पुस्तकानि पठावः	आवाभ्यां पुस्तकानि पठ्यन्ते
आवां जलं पिबावः	आवाभ्यां जलं पीयते
वयं पत्रं लिखामः	अस्माभिः पत्रं लिख्यते
वयं नगरं गच्छामः	अस्माभिः नगरं गम्यते
वयं विद्यालयं गच्छामः	अस्माभिः विद्यालयं गम्यते
वयं बालकं पश्यामः	अस्माभिः बालकः दृश्यते।
रामः वेदं पठिष्यति	रामेण वेदः पठिष्यते
बालकः चन्द्रं द्रक्ष्यति	बालकेन चन्द्रः द्रक्ष्यते।
रमेशः पत्रं पठिष्यति	रमेशेन पत्रं पठिष्यते।
सीता काव्यं करिष्यति	सीतया काव्यं करिष्यते।
सः ग्रन्थं पठिष्यति	तेन ग्रन्थः पठिष्यते।
मोहनः दुग्धं पास्यति	मोहनेन दुग्धं पास्यते
मुनिः रामायणं कथयिष्यति	मुनिना रामायणं कथयिष्यते
छात्रः विद्यालयं गमिष्यति	छात्रेण विद्यालयः गंस्यते
राधा नृत्यं करिष्यति	राधया नृत्यं करिष्यते
शिशुः दुग्धं पास्यति	शिशुना दुग्धं पास्यते।
सः त्वां द्रक्ष्यति	तेन त्वं द्रक्ष्यसे

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
सः आपणं गमिष्यति	तेन आपणं गम्यते
तौ दुग्धं पास्यन्ति	ताभ्याम् दुग्धं पास्यते
तौ कार्याणि करिष्यन्ति	ताभ्याम् कार्याणि करिष्यन्ते
तौ वनं गमिष्यन्ति	ताभ्याम् वनं गंस्यते
ते पत्राणि पठिष्यन्ति	तैः पत्राणि पठिष्यन्ते
ते फलानि नेष्यन्ति	तैः फलानि नेष्यन्ते
ते कथां कथयिष्यन्ति	तैः कथा कथयिष्यते।

कर्तृवाच्य	भाववाच्य
सः हसति	तेन हस्यते
त्वं पठसि	त्वया पठ्यते
अहं गच्छामि	मया गम्यते
वयं हसामः	अस्माभिः हस्यते
ते हसन्ति	तैः हस्यते
रामः गच्छति	रामेण गम्यते
सीता गच्छति	सीतया गम्यते
पिता गच्छति	पित्रा गम्यते
अहं वदामि	मया उद्यते
यूयं पठथ	युष्माभिः पठ्यते
अहं हसामि	मया हस्यते
सा लिखति	तया लिख्यते
सः तिष्ठति	तेन स्थीयते
त्वं हससि	त्वया हस्यते
त्वं खादसि	त्वया खाद्यते
सः क्रीडति	तेन क्रीड्यते
रामः हसति	रामेण हस्यते
अहं तिष्ठामि	मया स्थीयते
श्यामः गच्छति	श्यामेन गम्यते
छात्रः क्रीडति	छात्रेण क्रीड्यते
बालकाः तिष्ठन्ति	बालकैः स्थीयते
ईश्वरः अस्ति	ईश्वरेण भूयते
गुरुः तिष्ठति	गुरुणा स्थीयते
मयूराः नृत्यन्ति	मयूरैः नृत्यते

❑❑

उपसर्ग एवं अव्यय

उपसर्ग

- उप उपसर्ग पूर्वक √'सृज्' धातु से घञ् प्रत्यय करने पर ''उपसर्ग'' शब्द निर्मित होता है। जिसका अर्थ है- 'जो समीप रखे जाय'
- ''उपसृज्यन्ते धातूनां समीपे क्रियन्ते इति उपसर्गाः'' अर्थात् जो धातुओं के समीप रखे जाते हैं, वे उपसर्ग कहलाते हैं।
- पाणिनि कहते हैं ''प्रादयः उपसर्गाः क्रियायोगे'' (1.4.59) अर्थात् क्रिया के योग में 'प्र' आदि उपसर्गसंज्ञक होते हैं।

यथा- प्रभवति, पराभवति, अपहरति, निरीक्षते आदि।

- जो किसी भी 'धातु' अथवा शब्द के पहले जुड़कर अर्थ को बदल देता है, उसे 'उपसर्ग' कहा जाता है। जैसे- हार = माला, या पराजय किन्तु इसमें 'प्र' उपसर्ग जुड़कर इसके अर्थ को परिवर्तित कर देता है- प्रहारः (चोट, आघात), आहारः (भोजन), संहारः (विनाश), विहारः (भ्रमण), परिहारः (त्याग)।
  उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते।
  प्रहाराहार-संहार-विहार-परिहारवत्॥
- उपसर्ग सहित धातुओं के प्रयोग से भाषा परिष्कृत, सुन्दर और चमत्कृत लगती है।
- उपसर्ग हमेशा **धातुओं या शब्दों के पूर्व** ही जोड़े जाते हैं। उपसर्ग भी अव्यय पद ही हैं।

धातु के साथ उपसर्गों के जुड़ने से तीन परिवर्तन होते हैं-

(i) क्रिया का अर्थ बिल्कुल बदल जाता है अर्थात् मुख्यार्थ को बाधकर नवीन अर्थ का बोध कराता है। जैसे- विजयते = जीतता है (वि उपसर्ग जि धातु), पराजयते = हारता है (परा उपसर्ग जि धातु), उपकार - अपकारः। आहारः - प्रहारः आदि।

(ii) क्रिया के अर्थ में विशिष्टता आ जाती है। जैसे- गच्छति- अनुगच्छति, आप्नोति - प्राप्नोति आदि।

(iii) क्रिया के अर्थ में कोई परिवर्तन नहीं होता। जैसे- वसति- निवसति, उच्यते-प्रोच्यते, वसति-अधिवसति आदि।

- यही बात इस श्लोक में इसप्रकार से कही गयी है-
  धात्वर्थं बाधते कश्चित् कश्चित् तमनुवर्तते।
  विशिनष्टि तमेवार्थमुपसर्गगतिस्त्रिधा॥
- उपसर्गों के योग से कहीं कहीं अकर्मक भी सकर्मक हो जाती है। जैसे भू (भवति) धातु अकर्मक है किन्तु 'अनु' उपसर्ग के साथ 'अनुभवति' सकर्मक क्रिया हो जाती है। जैसे- सः सुखम् अनुभवति। माता दुःखम् अनुभवति। आदि।

उपसर्गों की संख्या- संस्कृत व्याकरण में कुल 22 (बाइस) उपसर्ग हैं। जिनका अर्थसहित प्रयोग अधोलिखित तालिका में देखा जा सकता है- 1. प्र 2. परा 3. अप 4. सम् 5. अनु 6. अव 7. निस् 8. निर् 9. दुस् 10. दुर् 11. वि 12. आङ् 13. नि 14. अधि 15. अपि 16. अति 17. सु 18. उत् 19. अभि 20. प्रति 21. परि 22. उप

उपसर्गयुक्त शब्द

क्रम	उपसर्ग	अर्थ	उपसर्गयुक्त शब्द
1.	**प्र**	विशेष रूप से, उत्कर्ष, अधिक	प्रचारः, प्रसारः, प्रहारः, प्रकारः, प्रख्यातम्।
2.	**परा**	पीछे, विपरीत, अनादर, नाश	पराक्रमः, परामर्शः, पराजयः, पराकाष्ठाः।
3.	**अप**	दूर, विरोध, लघुता	अपमानः, अपकारः, अपयशः, अपशब्दः, अपकर्षः।
4.	**सम्**	साथ, अच्छा, अच्छी तरह से पूर्ण	संकल्पः, संसर्गः, सम्मोहः, संग्रहः।
5.	**अनु**	पीछे, साथ-साथ, योग्य, अनुकूल	अनुजः, अनुचरः, अनुभवः, अनुनयः।
6.	**अव**	नीचे, दूर, अनादर, हीनता, पतन	अवगुणः, अवनतिः, अवलोकनम्, अवतारः।
7.	**निस्**	वियोग, बिना, बाहर	निस्सारः, निश्शंकः, निस्तत्त्वम्, निश्चियः।
8.	**निर्**	निषेध, रहित, बाहर, बिना, निकलना	निरपराधः, निर्गच्छति, निरक्षरः, निर्दयः।
9.	**दुस्**	कठिन, बुरा	दुस्तरः, दुष्करः, दुस्साहसः।
10.	**दुर्**	बुरा, कठिनता, दुष्टता, निन्दा	दुराचारः, दुराग्रहः, दुर्गतिः, दुरात्मा।

क्रम	उपसर्ग	अर्थ	उपसर्गयुक्त शब्द
11.	**वि**	विशेषता, अलग, बिना	विकारः, विवादः, विज्ञानम्, विदेशः, विरोधः।
12.	**आङ् (आ)**	तक, कम, स्वीकृति	आहारः, आरम्भः, आचारः, आग्रहः, आगमनम्।
13.	**नि**	नीचे, निषेध, समूह, निश्चित	निबन्धः, नियुक्तः, निषेधः, निवारणम्।
14.	**अधि**	ऊपर, श्रेष्ठ, प्रधान	अधिकम्, अध्यात्मम्, अध्यक्षः, अधिभारः, अधिकृतः।
15.	**अति**	बहुत, अधिक, बाहर	अत्याचारः, अतिशयः, अत्युत्तमम्, अत्यन्तम्, अतिरिक्तम्।
16.	**सु**	सुन्दर, अच्छा, अत्यधिक	स्वागतम् , सुवेषः, सुस्वरः, सूक्तिः, सुपुत्रः।
17.	**उत्**	ऊपर, श्रेष्ठ, विपरीत	उत्पत्तिः, उत्तरम्, उत्तमः, उन्नतिः, उद्धारः।
18.	**अभि**	सामने, ओर, ऊपर, पास, तरफ	अभ्यागतः, अभियानम्, अभिमुखम्, अभिमानः।
19.	**प्रति**	ओर, तरफ, पीछे, विपरीत	प्रतिकूलम्, प्रत्युत्तरम्, प्रतिध्वनिः, प्रतिपन्नः, प्रतिकारः।
20.	**परि**	चारों ओर, और भी, आस-पास	परिश्रमः, परिवादः, परिचयः, परिजनः, प्रतिकूलम्, प्रत्युत्तरम्।
21.	उप	निकट, समीप, शक्ति	उपकारः, उपदेशः, उपाधिः, उपेन्द्रः, उपद्रवः।
22.	अपि	निकट	अपिधानः, अपिगीर्णः।

उपसर्गयुक्त क्रियायों का वाक्य में प्रयोग

क्र०	उपसर्ग	धातु (अर्थसहित)	उपसर्ग सहित धातुरूप	प्रयोग
1.	उत्	√अय् (जाना)	**उदयति** (उगना)	सूर्यः उदयति
2.	प्र	√अर्थ् (माँगना)	**प्रार्थयते** (प्रार्थना करना)	भक्तः भगवन्तं प्रार्थयते।
3.	अभि	√अस् (फेंकना)	**अभ्यसति** (अभ्यास करना)	छात्रः पाठम् अभ्यसति।
4.	प्र	√आप् (प्राप्त करना)	**प्राप्नोति** (प्राप्त करना)	छात्रः अध्यापकात् ज्ञानं प्राप्नोति
5.	अव	√इ (जाना)	**अवेहि** (जानना)	अवेहि मां किङ्करमष्टमूर्तेः।
6.	प्रति	√ईक्ष् (देखना)	**प्रतीक्षते** (इन्तजार करना)	न हि प्रतीक्षते कालः।
7.	अनु	√कृ (करना)	**अनुकरोति** (नकल करना)	बालः मातरम् अनुकरोति।
8.	अव	√क्षिप् (फेंकना)	**अवक्षिपति** (निन्दा करना)	दुष्टः सज्जनम् अवक्षिपति।
9.	आङ्	√गम् (जाना)	**आगच्छति** (आना)	अहं विद्यालयात् आगच्छामि।
10.	अनु	√गम् (जाना)	**अनुगच्छति** (पीछे पीछे चलना)	दिलीपः नन्दिनीम् अनुगच्छति
11.	उप	√चर् (चरना)	**उपचरति** (सेवा करना)	वैद्यः रोगिणं उपचरति।
12.	सम्	√चि (चुनना)	**सञ्चिनोति** (संग्रह करना)	धनिकः धनं सञ्चिनोति।
13.	निर्	√दिश् (देना, सौंपना)	**निर्दिशति** (निर्देश देना)	माता अङ्गुल्या निर्दिशति।
14.	वि	√धा (धारण करना)	**विदधीत** (करना)	सहसा विदधीत न क्रियाम्।
15.	नि	√मन्त्र (मन्त्रणा करना)	**निमन्त्रयति** (निमन्त्रण देना)	मित्रं मां निमन्त्रयति।
16.	अप	√लप् (बोलना)	**अपलपति** (मुकरना)	स अपलपति।
17.	अव	√सद् (बैठना)	**अवसीदति** (दुःखित होना)	उद्यमं कृत्वा न अवसीदति जनः।
18.	अधि	√स्था (रुकना)	**अधितिष्ठति** (बैठना)	राजा सिंहासनम् अधितिष्ठति।
19.	अति	√वह (बहना)	**अतिवहति** (बिताना)	सः सुखेन कालम् अत्यवहत्।
20.	निस्	√क्रम् (चलना, जाना)	**निष्क्रामति** (निकलना)	इति निष्क्रान्ताः सर्वे।

महत्त्वपूर्ण उपसर्गयुक्त क्रियायें

उपसर्ग	उपसर्ग युक्त क्रियायें
प्र	प्रभवति, प्रसरति , प्राप्नोति, प्रददाति।
परा	पराभवति, पराजयते, पलायते आदि।
अप	अपहरति, अपनयति, अपकरोति, अपेहि, अपेक्षते, अपलपति।
सम्	संक्षिपति, सञ्चिनोति, संगृह्णाति, सन्तपति, सन्तरति, संहरति।
अनु	अनुभवति, अनुतिष्ठति, अनुकरोति, अनुगच्छति, अनुवदति।
अव	अवरोहति, अवतरति, अवजानाति, अवक्षिपति, अवगच्छति।
निस्	निश्चिनोति, निष्क्रामति।
निर्	निरीक्षते, निरस्यति, निर्दिशति।
दुस्	दुष्करोति, दुश्चरति।
दुर्	दुर्गच्छति, दुर्वक्ति।
वि	विचरति, विलपति, वितरति, व्याप्नोति, विदधति, विरमति।
आङ्	आरोहति, आगच्छति, आददाति, आक्षिपति, आचरति, आनयति।
नि	निषीदति, निगृह्णाति, निमन्त्रयति, नियन्त्रयति, निवर्तते।
अधि	अधिगच्छति, अधिक्षिपति, अध्यास्ते, अधितिष्ठति।
अपि	अपिधत्ते, अपिनह्यति।
अति	अतिशेते, अतिरिच्यते, अत्येति, अतिक्रामति, अतिवहति।
सु	सुचरति, सुकरोति, सुनयति।
उत्	उत्पतति, उत्तिष्ठति, उत्तरति, उदयति, उदेति, उत्क्षिपति।
अभि	अभिमन्यते, अभिजानाति, अभिधत्ते।
प्रति	प्रतिवदति, प्रतीक्षते, प्रतिजानाति, प्रतिवसति।
परि	परिवर्तते, परिचिनोति, परीक्षते।
उप	उपदिशति, उपतिष्ठते, उपक्रमते, उपासते, उपैति, उपकरोति, उपचरति।

अव्यय

सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्वासु च विभक्तिषु।
वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम्॥

- जो शब्द तीनों लिङ्गों, सभी विभक्तियों तथा तीनों वचनों में समान रहते हैं; वे 'अव्यय' कहलाते हैं।
- **'न व्ययम् इति अव्ययम्'** अर्थात् जो व्यय (खर्च, घट-बढ, यानी परिवर्तन) को प्राप्त नहीं होता अर्थात् हमेशा ज्यों का त्यों यथावत् स्थिति में रहता है वह अव्यय (अविकारी) पद कहा जाता है।
- अव्यय पदों का रूप नहीं चलता।
  जैसे- यथा, तत्र, अत्र, किम्, कुत्र, कदा आदि।
- **''स्वरादिनिपातमव्ययम्''** (1.1.37) सूत्र से स्वर् आदि शब्द तथा निपातशब्द अव्यय संज्ञक होते हैं।

जैसे- स्वः, अन्तः, प्रातः, पुनः, उच्चैः, नीचैः, शनैः, ऋते, पृथक्, अद्य, ईषत्, आदि।

- **तद्धितश्चासर्वविभक्तिः, कृन्मेजन्तः, क्त्वातोसुन्कसुनः** आदि सूत्रों से कुछ तद्धित प्रत्ययान्त एवं कुछ कृदन्त प्रत्ययान्त शब्दों की अव्यय संज्ञा होती है।

जैसे-

(i) **कृदन्त प्रत्यय जो अव्यय बनाते हैं-** क्त्वा, ल्यप्, तुमुन्, तोसुन्, कसुन् आदि प्रत्ययों से बने पद अव्यय संज्ञक होते हैं- गत्वा, आगत्य, पठितुम् आदि पद अव्यय पद हैं।

(ii) तद्धित प्रत्यय तसिल् , त्रल् , थाल् , धा, शस् प्रत्ययों से भी अव्यय पद बनते हैं। जैसे-
सर्वतः, अत्र, तत्र, सर्वथा, एकधा, द्विधा, अनेकशः, अक्षरशः, शब्दशः आदि

➢ **अव्ययीभावश्च (1.1.41)** अव्ययीभाव समास भी अव्यय होता है। जैसे- यथाशक्ति, उपगङ्गम्, यथानिर्देशम्, यथोचितम् आदि।

मुख्यतः अव्यय चार प्रकार के हैं-

(i) **उपसर्ग-** प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव आदि 22 उपसर्ग।

(ii) **क्रियाविशेषण-** अद्य, अत्र, अधुना, अभितः, किल आदि।

(iii) **समुच्चय बोधक-** च, इति, तथापि, तु, वा आदि।

(iv) **मनोविकार सूचक** (विस्मयबोधक)- अहा, अहो, हन्त, धिक्, अये, अरे, आदि।

प्रमुख अव्यय पदों का वाक्यों में प्रयोग

	अव्यय पद	वाक्य प्रयोग
1.	सदा (हमेशा)	रामः सदा सत्यं वदति।
2.	सर्वत्र (सब जगह)	ईश्वरः सर्वत्र अस्ति।
3.	प्रतिदिनम् (प्रतिदिन)	अहं प्रतिदिनं दुग्धं पिबामि
4.	यदा तदा (जब-तब)	यदा कृष्णः आगच्छति तदा सुदामा गच्छति।
5.	अत्र (यहाँ)	सः अत्र आगच्छति
6.	तत्र (वहाँ)	सः तत्र गच्छति।
7.	श्वः (आने वाला कल)	अहं श्वः विद्यालयं गमिष्यामि।
8.	कुत्र (कहाँ)	बालकाः कुत्र निवसन्ति।
9.	एवम् (ऐसा)	जनाः एवं कथयन्ति।
10.	कथं (कैसे)	सा कथं लिखति।
11.	अद्यैव (आज ही)	रामः अद्यैव गमिष्यति।
12.	प्रातः (सवेरे)	प्रातः सूर्यः उदयति।
13.	यथाशक्ति (शक्ति के अनुसार)	कृषकः यथाशक्ति दानं ददाति।
14.	अधः (नीचे)	बालकः अधः पतति।
15.	एकदा (एक बार)	एकदा बालकः तत्र गतवान्।
16.	स्वयमेव (स्वयं ही)	सः स्वयमेव धनं दास्यति।
17.	विना (बिना)	मोहनः लेखन्या विना कथं लिखति।
18.	सायम् (सायंकाल)	चन्द्रः सायं उदयति।
19.	नमः (नमस्कार)	गणेशाय नमः।
20.	नक्तम् (रात्रि में)	सः नक्तं भोजनं न करोति।
21.	दिवा (दिन में)	मोहनः दिवा न पठति।
22.	अधुना (इस समय)	राजेन्द्रः अधुना न पठति।
23.	अचिरम् (शीघ्र ही)	अचिरं सः गतवान्।
24.	उभयतः (दोनों ओर)	विद्यालयम् उभयतः वृक्षाः सन्ति।

अव्ययशब्दसंग्रहः अव्यय शब्दों का संग्रह

अव्ययशब्दः		हिन्दी
		अ
अकस्मात्	–	अचानक
अग्रतः	–	आगे
अग्रिमवर्षे	–	परसाल, अगले साल।
अग्रे	–	पहले, आगे
अचिरेण	–	शीघ्र, जल्दी
अचिरम्	–	शीघ्र
अचिराय	–	शीघ्र
अचिराद्	–	शीघ्र, जल्दी
अजस्रम्	–	निरन्तर/लगातार
अतएव	–	इसलिए
अतः	–	इसलिए
अतःपरम्	–	इसके बाद
अति	–	बहुत
अत्यन्तम्	–	बहुत
अतीव	–	बहुत ही
अत्र	–	यहाँ
अत्रापि	–	यहाँ भी
अत्रैव	–	यहाँ ही/यहीं
अथ	–	इसके बाद/तब/फिर / मङ्गल
अथवा	–	या, अथवा
अथ किम्	–	और क्या, तो क्या, हाँ
अद्य	–	आज
अद्यतनम्	–	आज का
अद्यत्वे	–	आजकल
अद्यपर्यन्तम्	–	आजतक

अव्ययशब्दः		हिन्दी
अद्यप्रभृति	–	आज से लेकर
अद्यापि	–	आज भी
अद्यारभ्य	–	आज से
अद्यावधि	–	आज तक, अब तक
अधः	–	नीचे, नीचा
अर्धम्	–	आधा
अधस्तात्	–	नीचे
अधिकम्	–	अधिक, बहुत
अधिकतरम्	–	अधिकतर
अधुना	–	अब
अधुनापि	–	आज भी/अभी
अधुनैव	–	अभी
अन्तः	–	अन्दर, भीतर, बीच में
अन्ततः	–	आखिरकार, आखिर
अन्ततोगत्वा	–	आखिरकार, आखिर
अनन्तरम्	–	पीछे, बाद में
अन्तरा	–	बीच में
अन्यत्	–	दूसरा
अन्यच्च	–	और भी, और
अन्तिकम्	–	पास
अनारतम्	–	निरन्तर/लगातार
अनायासेन	–	बिना मेहनत के
अनवरतम्	–	निरन्तर/लगातार
अनिशम्	–	निरन्तर/लगातार
अनुमानतः	–	लगभग
अनेकम्	–	अनेक
अन्तर्बहिः	–	बाहर-भीतर
अन्यत्र	–	दूसरी जगह
अन्यथा	–	नहीं तो
अन्योन्यम्	–	परस्पर
अपरत्र	–	दूसरी जगह
अपरम्	–	और, दूसरा
अब्दे	–	परसाल, अगले साल
अपि	–	भी
अपितु	–	बल्कि, वरन्
अन्येद्युः	–	दूसरे दिन
अपरेद्युः	–	दूसरे दिन
अपेक्षया	–	अपेक्षा

अव्ययशब्दः		हिन्दी
अभिमुखम्	–	तरफ
अभितः	–	दोनों ओर, पास
अये	–	हे (आदर सहित बुलाने में)
आरात्	–	दूर
अर्थम्	–	लिए
अरे	–	हे (अवज्ञापूर्वक बुलाने में)
अल्पम्	–	थोड़ा, कुछ, (मात्रा)
अल्पशः	–	थोड़ा-थोड़ा
अलम्	–	बस/काफी, रहने दो
अविलम्बम्	–	जल्दी, शीघ्र
अवश्यम्	–	जरूर/अवश्य/निश्चय ही
अर्वाक्	–	पहले
असकृत्	–	बार-बार
असत्यम्	–	असत्य
अस्तु	–	इसलिए, खैर, अच्छा, ठीक है
असाम्प्रतम्	–	अनुचित
अहा	–	उल्लास या हर्षसूचक, अहो, अहा

आ

आः	–	क्रोधसूचक
आगत्य/आगम्य	–	आकर के
आगामिदिनम्	–	आने वाला कल
आदि	–	बगैरह
आम्	–	हाँ (अङ्गीकारवाचक)
आश्चर्यम्	–	ओफ-हो
आशु	–	शीघ्र/त्वरित

इ

इत्थम्	–	इसप्रकार से, ऐसे
इति	–	समाप्ति सूचक शब्द
इतस्ततः	–	इधर-उधर, जहाँ-तहाँ
इतरेद्युः	–	दूसरे दिन
इतः	–	यहाँ से
इत्थमेव	–	यों ही
इदानीम्	–	अब/इससमय
इदानीमपि	–	आज भी
इयत्	–	इतना

अव्ययशब्दः		हिन्दी
इव	–	तरह/सदृश, समान
इह	–	यहाँ/इस लोक में
		ई
ईषत्	–	थोड़ा, कुछ (मात्रा)
		उ
उच्चैः	–	ऊँचे/जोर से
उत्तरेद्युः	–	दूसरे दिन
उत	–	अथवा (विकल्पार्थवाचक)
उपरि	–	ऊपर
उपर्यधः	–	ऊपर- नीचे
उभयतः	–	दोनों ओर, दोनों तरफ
उभयेद्युः	–	दोनों दिन
ऊर्ध्वम्	–	ऊपर
		ऋ
ऋतम्	–	बिना, सत्य
ऋते	–	बिना, सिवाय
		ए
एकधा	–	एकप्रकार से
एकदा	–	एकबार, एक समय
एकैकम्	–	एक-एक करके
एकपदे	–	एक साथ, अचानक
एकत्र	–	इकट्ठा
एतर्हि	–	इसीसमय/अब
एव	–	ही
एवम्	–	इसतरह/और/तुल्य/हाँ
एवमस्तु	–	ऐसा ही हो।
एतावत्	–	इतना
एकैकशः	–	एक-एक करके
		ऐ
ऐषमे	–	इस वर्ष
		क
कच्चित्	–	क्या
कतिवारम्	–	कितनी बार
किञ्च	–	और
कुतः	–	कहाँ से, क्यों
कुत्र	–	कहाँ
कुतश्चन	–	कहीं से

अव्ययशब्दः		हिन्दी
कुत्रापि	–	कहीं/कहीं पर/कहीं भी
कृते	–	के लिए, लिए
कृतम्	–	बस
कथम्	–	कैसे/क्यों
कथमपि	–	जैसे-तैसे, किसी प्रकार
कदा	–	कब/किस समय
कदापि	–	कभी भी, जब कभी
कदाचित्	–	कभी/शायद
कष्टम्	–	अफसोस
कुत्रचित्	–	कहीं
किञ्चित्	–	कुछ, थोड़ा
किञ्चिदपि	–	कुछ भी
किन्तु	–	लेकिन, मगर
कथञ्चित्	–	किसी तरह
कतिचित्	–	थोड़ा/कुछ (संख्या)
कतिपय	–	थोड़ा (संख्या)
कस्मात्	–	क्यों
कस्मात् स्थानात्	–	कहाँ से
कस्मिन् स्थाने	–	कहाँ
किम्	–	क्या/क्यों
कियत्	–	कितना
किमुत	–	और कितना
किमपि	–	कुछ (संख्या)
किं परिमाणम्	–	कितना
किं मात्रम्	–	कितना
किं भोः	–	क्यों हो
किमिति	–	क्यों
क्रमशः	–	लगातार
किल	–	सचमुच/निश्चय
केन प्रकारेण	–	कैसे
केवलम्	–	केवल,सिर्फ
क्व	–	कहाँ
क्वचित्	–	कहीं
कर्हि	–	कब
किमर्थम्	–	क्यों
कतिशः	–	एक बार में कितना, कितनी बार
खलु	–	निश्चय ही/जरूर
गतेद्युः	–	कल (बीता हुआ)

अव्ययशब्दः		हिन्दी
	च	
च	–	और
चतुर्धा	–	चार प्रकार से
चिरम्	–	देर तक, देर में
चिराय	–	देर तक, देर में
चिरात्	–	देर तक
चिरेण	–	देर तक, देर में
चेत्	–	यदि/अगर
	ज	
जातु	–	कभी भी
जातुचित्	–	कभी भी
जयतु जयतु	–	जय जय
झटिति	–	शीघ्र, जल्दी, झटपट
	त	
ततः	–	फिर/तब/वहाँ से
ततः प्रभृति	–	तब से
ततः पर्यन्तम्	–	तब तक
तत्र	–	वहाँ/वहाँ पर
तत्रापि	–	वहाँ भी
तत्रैव	–	वहीं
तथा	–	उस तरह/वैसे
तथैव	–	उसी तरह/वैसे ही
तथापि	–	फिर भी, तो भी
तथाहि	–	जैसे कि, वैसे ही
तदा	–	तब
तदानीम्	–	तभी, उस समय, तब
तदारभ्य	–	तब से
तदा-तदा	–	तब-तब
तदापि	–	तब भी
तु	–	तो, किन्तु, लेकिन, मगर
तूष्णीम्	–	चुपचाप
तावत्	–	तब तक, उतना
तर्हि	–	तब, तो
तेन प्रकारेण	–	वैसे
तावन्मात्रम्	–	उतना

अव्ययशब्दः		हिन्दी
	द	
दक्षिणतः	–	दाहिना
दिने दिने	–	प्रतिदिन
दिने	–	दिन में'
दूरम्	–	दूर
दूरे	–	दूर
द्वारा	–	द्वारा, मारफत
दिवा	–	दिन में
दिशि-दिशि	–	चारों तरफ
दिष्ट्या	–	सौभाग्य से
द्राक्	–	शीघ्र/फौरन
द्रुतम्	–	शीघ्र, जल्दी
दैवात्	–	भाग्यवश
द्विधा	–	दो प्रकार से
	ध	
धिक्-धिक्	–	धिक्कार है, छिः-छिः
ध्रुवम्	–	निश्चय ही/जरूर
धन्यम्-धन्यम्	–	शाबास-शाबास
	न	
निकटे	–	समीप, नजदीक
न	–	नहीं, मत
न च	–	न कि
न तु	–	न कि
नमस्कारः	–	नमस्कार
नो	–	नहीं, मत
नहि	–	नहीं, मत
नमः	–	प्रणाम/नमस्कार
निकषा	–	समीप, नजदीक
नित्यम्	–	हमेशा/लगातार/ नित्य
निरन्तरम्	–	लगातार, निरन्तर
नीचैः	–	नीचा
निस्सन्देहम्	–	बेशक
निमित्तम्	–	हेतु
नितराम्	–	बिल्कुल
नोचेत्	–	नहीं तो

अव्ययशब्दः		हिन्दी
नाना	–	अनेक
नक्तम्	–	रात को, रात में

प

अव्ययशब्दः		हिन्दी
परन्तु	–	लेकिन, मगर
परम्	–	परन्तु
परश्वः	–	परसों (आने वाला)
परस्परम्	–	आपस में, परस्पर
पदे पदे	–	जगह-जगह
परह्यः	–	परसों (बीता हुआ)
परितः	–	चारों ओर
प्रत्यूषः	–	प्रातः काल
प्रतिकूलम्	–	विरुद्ध
प्रथमम्	–	पहले
पृष्ठदेशे	–	पीछे
प्राक्	–	पहले, पूर्वकाल में
प्रायशः	–	अक्सर
प्रायेण	–	अक्सर
प्रातः	–	प्रातःकाल
प्रायः	–	अक्सर
पश्चात्	–	बाद में/पीछे/फिर
परेद्युः	–	दूसरे दिन, आने वाला कल
पर्याप्तम्	–	काफी/यथेष्ट/ बस
प्रकामम्	–	काफी/यथेष्ट
प्रतिदिनम्	–	रोज/नित्य प्रतिदिन
प्रसह्य	–	जबरदस्ती
प्रत्युत्	–	बल्कि, वरन्
पायं-पायम्	–	पी-पीकर/पीते-पीते
पुनः	–	फिर
पुनश्च	–	फिर भी
पुनरपि	–	फिर भी
पुनः-पुनः	–	बार-बार
पुरः	–	सामने/आगे
पुरतः	–	सामने/आगे
पुरस्तात्	–	सामने/आगे
पुरा	–	पहले/प्राचीन काल में
पूर्वेद्युः	–	पहले दिन
पूर्वदिने	–	कल (बीता हुआ)
पूर्वम्	–	पहले, पूर्वकाल में
पृथक्	–	अलग, अलावा
पृष्ठतः	–	पीछे
पार्श्वतः	–	बगल में/पास में
पार्श्वदेशे	–	बगल में
पर्याप्तम्	–	काफी

ब

अव्ययशब्दः		हिन्दी
बलात्	–	जबरदस्ती से
बहिः	–	बाहर
बहु	–	अधिक
बहुधा	–	अक्सर, अधिकतर
बहुकालम्	–	देर में, देर तक
बहु	–	अधिक
बहुत्र	–	बहुत जगह
बाढम्	–	अच्छा/हाँ (अंगीकार सूचक), बहुत अच्छा
बारम्बारम्	–	बार-बार
बाहुल्येन	–	अधिकता से

भ

अव्ययशब्दः		हिन्दी
भिन्नम्	–	अलग
भूयः	–	फिर/अधिक/बार-बार
भूयोऽपि	–	फिर भी
भूरि	–	बहुत
भृशम्	–	अधिक/बार-बार
भोः	–	हे (आदर सहित बुलाने में), अरे

म

अव्ययशब्दः		हिन्दी
मङ्गलम्	–	मङ्गल
मध्ये	–	बीच में, भीतर, मध्य में
मनाक्	–	थोड़ा, कुछ (मात्रा)
मन्दम्	–	धीरे-धीरे
मा	–	मत, नहीं
मा स्म	–	रहने दो
मिथः	–	परस्पर/एकान्त में/ आपस में
मिथ्या	–	झूठ, असत्य
मुधा	–	बेकार में
मुहुर्मुहुः	–	बार-बार
मृषा	–	झूठा/बेकार/ असत्य
मौनम्	–	चुप

य

अव्ययशब्दः		हिन्दी
यत्र	–	जहाँ/जहाँ पर

अव्ययशब्दः		हिन्दी
यत्र-तत्र	–	जहाँ-तहाँ
यत्र-कुत्र	–	जहाँ-कहीं
यत्र कुत्रापि	–	जहाँ कहीं भी
यत्रापि	–	जहाँ भी
यत्रैव	–	जहाँ पर ही
यत्	–	कि/क्योंकि/जो
यतः	–	क्योंकि/जो/जहाँ से
यथार्थतः	–	सचमुच/वस्तुतः/ दर-असल
यथापूर्वम्	–	पूर्व के अनुसार/पहले की तरह
यथा-तथा	–	जिस प्रकार से/जैसे-तैसे करके/ जैसे-तैसे
यथाशक्ति	–	शक्ति के अनुसार
यथा	–	जैसे/जैसे कि/ ताकि/ समान
यथायथम्	–	यथायोग्य
यथायोग्यम्	–	यथायोग्य
यथेष्टम्	–	मनमाना
यथाकथञ्चित्	–	जैसे-तैसे
यत्किञ्चित्	–	जो कुछ
यद्यपि	–	हलाकि/यद्यपि
यदा	–	जब
यदापि	–	जब कभी
यदा कदाचित्	–	जब कभी
यदा-यदा	–	जब -जब
यदापर्यन्तम्	–	जब तक
यदि	–	अगर, यदि
यदैव	–	जब ही
यदा-कदा	–	कभी-कभी
यावत्	–	जब तक, जीतना
यस्मात्	–	क्योंकि/जहाँ से
यस्मिन् काले	–	जब
यस्मिन् स्थाने	–	जहाँ
यस्मात् स्थानात्	–	जहाँ से
युक्तम्	–	युक्त
युगपत्	–	एकसाथ
यथार्थम्	–	सत्य
येन केन प्रकारेण	–	किसी भी प्रकार
येन	–	जिससे
येन प्रकारेण	–	जैसे
रे रे	–	हे (अवज्ञा से बुलाने में)
रात्रौ	–	रात्रि में

व

अव्ययशब्दः		हिन्दी
वस्तुतः	–	वास्तविक
व्यर्थम्	–	व्यर्थ
वृथा	–	व्यर्थ/बेकार में
वत्	–	समान
विना	–	बिना
विशेषतः	–	विशेष रूप से
विलम्बेन	–	देर से ,देर तक
विषये	–	बाबत
विपरीतम्	–	विरुद्ध
वरम्	–	श्रेष्ठ, बढ़िया, अच्छा
वा	–	अथवा
वामतः	–	बाँए, बायाँ

श

अव्ययशब्दः		हिन्दी
शनैः	–	धीरे-धीरे
श्वः	–	कल (आने वाला)
शाश्वत्	–	निरन्तर, सदा, नित्य, लगातार
शीघ्रम्	–	जल्दी, शीघ्र
श्रावं श्रावम्	–	सुनते-सुनते, सुन-सुन कर।
शोभनम्	–	अच्छा

स

अव्ययशब्दः		हिन्दी
स्वैरम्	–	स्वेच्छा से।
सततम्	–	लगातार।
सपदि	–	शीघ्र, तुरन्त।
सत्यम्	–	सत्य
समक्षम्	–	सामने
समानम्	–	समान
स्पष्टम्	–	स्पष्ट
स्फुटम्	–	स्पष्ट
स्तोकम्	–	थोड़ा, कुछ (मात्रा)
सद्यः	–	शीघ्र, तुरन्त
सम्प्रति	–	इसी समय, अब
साम्प्रतम्	–	इसी समय, अब, ठीक, युक्त
सकृत्	–	एक बार
स्थाने- स्थाने	–	जगह-जगह
स्थले-स्थले	–	जगह-जगह
स्तोकशः	–	थोड़ा-थोड़ा
सदा	–	हमेशा
संवत्सरे	–	अगले साल

अव्ययशब्दः		हिन्दी
सर्वदा	–	हमेशा
सदैव	–	हमेशा
सायम्	–	शाम, सायंकाल
सर्वत्र	–	जब जगह
सर्वथा	–	सब तरह से, बिल्कुल
सविधे	–	समीप, नजदीक
समीपम्	–	पास, नजदीक
सम्बन्धे	–	बाबत
सम्भवतः	–	लगभग
सम्यक्	–	भली प्रकार से
सहसा	–	एक दम, अचानक
सह	–	साथ
साकम्	–	साथ
समम्	–	साथ
सार्धम्	–	साथ
सुष्ठु	–	ठीक, अच्छी तरह, अच्छा
साधु	–	ठीक, खूब, अच्छा
साधु-साधु	–	शाबाश (प्रशंसा सूचक), वाह-वाह
स्वस्ति	–	आशीर्वाद, कल्याण, कल्याण हो, मङ्गल
साक्षात्	–	प्रत्यक्ष, तुल्य।
समन्तात्	–	आसपास, चारों तरफ।
सपद्येव	–	तुरन्त, एकदम।

अव्ययशब्दः		हिन्दी
स्वयम्	–	अपने आप, खुद, स्वयं
स्वतः	–	अपने आप।
सहितम्	–	साथ।
समकालम्	–	एक साथ
समन्ततः	–	चारों तरफ
समम्	–	साथ, बराबर-बराबर।
समया	–	निकट, समीप, नजदीक
समीचीनम्	–	ठीक, अच्छा
सम्मुखम्	–	सामने, तरफ
सर्वतः	–	चारों ओर/सभी ओर
स्मारं-स्मारम्	–	याद कर-करके, याद करते-करते।
सत्वरम्	–	शीघ्रता से, जल्दी-जल्दी, झटपट।
सुतराम्	–	बिलकुल

ह

अव्ययशब्दः		हिन्दी
हठात्	–	जबरदस्ती
हि	–	इसलिए, निश्चय वाचक।
ह्यः	–	कल (बीता हुआ)।
हन्त	–	विषादसूचक, हर्ष सूचक, हा।
हा	–	शोक या पीड़ासूचक।
हा हा	–	शोक या परितापसूचक।
हुम्	–	क्रोध सूचक।
हे	–	हे, अरे
हेतौ	–	हेतु

पर्यायवाचिशब्दाः (पर्यायवाची शब्द)

अ

अग्निः (पुँ.) – अग्निः, वैश्वानरः, वह्निः, वीतिहोत्रः, धनञ्जयः, कृपीटयोनिः, जातवेदाः, ज्वलनः, तनूनपात्, बर्हिः, शुष्मा, कृष्णवर्त्मा, शोचिष्केशः, उषर्बुधः, आश्रयाशः, बृहद्भानुः, कृशानुः, पावकः, अनलः, रोहिताश्वः, वायुसखः, शिखावान्, आशुशुक्षणिः, हिरण्यरेताः, हुतभुक्, दहनः, हव्यवाहनः, सप्तार्चिः, दमुनाः, शुक्रः, चित्रभानुः, विभावसुः, शुचिः।

असुरः (पुँ.) – दैत्यः, दैतेयः, दनुजः, इन्द्रारिः, दानवः, शुक्रशिष्यः, दितिसुतः, पूर्वदेवः, सुरद्विषः।

अमृतम् (नपुं.) – त्रिदशाहारः, सुधा, पीयूषम्, अमिय।

अश्वः (पुँ.) – घोटकः, वीतिः, तुरगः, तुरङ्गः, तुरङ्गमः, वाजी, वाहः, अर्वा, गन्धर्वः, हयः सैन्धवः, सप्तिः।

अध्यापकः (पुँ.) – उपाध्यायः, गुरुः, आचार्यः।

असिः (पुँ.) – कृपाणः, करपालः, चन्द्रहासः, खड्गः।

आ

आनन्दः (पुँ.) – मुदा (स्त्री), प्रीतिः, प्रमदः (पुँ.), हर्षः (पुँ.), प्रमोदः (पुँ.), आमोदः (पुँ.),सम्मदः, आनन्दथुः, शर्मम्, शातम्, सुखम् (नपुं.)

आकाशः (पुँ.) – नभः, मरुद्वर्त्मा, वियत्, विहायः, तारापथः, पुष्करम्, अन्तरिक्षम्, व्योम, अम्बरम्, विष्णुपदम्, खम्, द्यौः, विहायसम्, गगनम्, द्यु, अभ्रम्, अनन्तम्, महाविलम्, मेघाध्वा।

आम्रः (पुँ.) – चूतः, रसालः, सहकारः, अतिसौरभः।

इ

इन्द्रः (पुँ.) – ऋभुक्षः, संक्रन्दनः, सहस्राक्षः, इन्द्रः, दुश्च्यवनः, शक्रः, हरिः, बलारातिः, स्वाराट्, नमुचिसूदनः, वृत्रहा, शुनासीरः, आखण्डलः, गोत्रभिद्, वज्री, वृषा, वास्तोष्पतिः, वासवः, पुरन्दरः, लेखर्षभः, शतमन्युः, दिवस्पतिः, सुत्रामा, मघवा, विडौजाः, पाकशासनः, सुरपतिः, शचीपतिः, मेघवाहनः, मरुत्वान्, वृद्धश्रवाः, पुरुहूतः।

उ

उष्ट्रः (पुँ.) – क्रमेलकः, मयः, महांगः, करभः।

क

कर्णः (पुँ.) – शब्दग्रहः, श्रोत्रम्, श्रुतिः, श्रवणम्, श्रवः।

कामदेवः (पुँ.) – मदनः, मन्मथः, मारः, प्रद्युम्नः, मीनकेतनः, कन्दर्पः, दर्णकः, अनङ्गः, कामः, पञ्चशरः, स्मरः, शम्बरारिः, मनसिजः, अनन्यजः, पुष्पधन्वा, रतिपतिः, मकरध्वजः, आत्मभूः, ब्रह्मसूः, विश्वकेतुः, कुसुमेषः।

काकः (पुँ.) – अरिष्टः, करटः, बलिपुष्टः, स्कृत्प्रजः, एकदृक्, बलिभुक्, ध्वाङ्क्षः, चिरञ्जीवी, वायसः, आत्मघोषः, परभृत्, काकोलः।

कोकिलः (पुँ.) – वनप्रियः, परभृतः, कोकिला, पिकः, परभृतिका।

कमलम् (नपुं.) – नीरजम्, पङ्कजम्, पुण्डरीकम्, इन्दीवरम्, तामरसम्, उत्पलम्, पद्मम्, कुवलयम्, नीलाम्बुजम्, कुमुदम्, कैरवम्, राजीवम्, नलिनम्, अरविन्दम्, सहस्रपत्रम्, कुशेशयम्, शतपत्रम्, सरसीरुहः, जलजम्।

कपोतः (पुँ.) – पारावतः, कलरवः।

कन्या (स्त्री.) – कुमारी, गौरी, नग्निका, अनागतार्तवा।

कृषकः (पुँ.) – कर्षकः, क्षेत्राजीवः, कृषीवलः, कृषिकः।

कुक्कुरः (पुँ.) – शुनकः, श्वा, कौलेयकः, सारमेयः, मृगदंशकः।

कामी (पुँ.) – कामुकः, कमिता, अनुकः, कामयिता, कम्रः, अभीकः, कमनः, कामनः, अभिकः।

कार्तिकेयः (पुँ.) – महासेनः, शरजन्मा, षडाननः, पार्वतीनन्दनः, स्कन्दः, सेनानी, अग्निभूः, बाहुलेयः, तारकजित्, विशाखः, शिखिवाहनः, षाण्मातुरः, शक्तिधरः, कुमारः, क्रौञ्चदारणः।

कुबेरः (पुँ.) – त्र्यम्बकसखः, यक्षराट्, गुह्यकेश्वरः, मनुष्यधर्मा, धनदः, राजराजः, धनाधिपः, किंनरेशः, वैश्रवणः, पौलस्त्यः, नरवाहनः, यक्षः, एकपिंगः, ऐलविलः, श्रीदः, पुण्यजनेश्वरः।

कल्पवृक्षः (पुँ.) – पारिजातिकः, मन्दारः, सन्तानः, हरिचन्दनम्।

ग

गणेशः (पुँ.) – विनायकः, विघ्नराजः, द्वैमातुरः, गणाधिपः, एकदन्तः, हेरम्बः, गजाननः, लम्बोदरः।

गङ्गा (स्त्री.) – मन्दाकिनी, त्रिपथगा, भागीरथी, विष्णुपदी, जह्नुतनया, सुरनिम्नगा, त्रिस्रोता, भीष्मसूः।

गजः (पुँ.) – दन्ती, दन्तावलः, हस्ती, द्विरदः, अनेकपः, द्विपः, मतङ्गजः, गजः, नागः, कुञ्जरः,

वारणः, करी।

गृहम् (नपुं.) – गेहम्, उदवसितम्, वेश्म, निकेतनम्, निशान्तम्, वस्त्यम्, सदनम्, भवनम्, आगारम्, मन्दिरम्, निलयः, निकायः, आलयः, वासः, प्रासादः, सौधः, हर्म्यम्।

गरुडः (पुँ.) – वैनतेयः, खगेश्वरः, विष्णुरथः, सुपर्णः, नागान्तकः, तार्क्ष्यः, पन्नगाशनः।

गुप्तचरः (पुँ.) – गूढपुरुषः, चरः, चारः, स्पशः, अपसर्पः, प्रणिधिः।

गर्दभः (पुँ.) – रासभः, खरः, वालेयः, चक्रीवान्।

च

चन्द्रः (पुँ.) – इन्दुः, चन्द्रमाः, सोमः, कुमुदबान्धवः, निशापतिः, ओषधीशः, राजा, रोहिणी-वल्लभः, अब्जः, शशाङ्कः, सुधांशुः, विधुः, ऋक्षेशः, अत्रिनेत्रप्रसूतः, नक्षत्रेशः, शशधरः, जैवातृकः, प्रालेयांशुः, श्वेतरोचिः, हिमांशुः, ग्लौः, मृगाङ्कः, कलानिधिः, द्विजराजः, क्षपाकरः।

चिकित्सकः (पुँ.) – वैद्यः, भिषक्, रोगहारी।

चौरः (पुँ.) – स्तेनः, दस्युः, तस्करः, मोषकः, पाटच्चरः।

ज

जलम् (नपुं.) – आपः, तोयम्, घनरसः, पयः, पुष्करम्, मेघपुष्पम्, कम्, पानीयम्, सलिलम्, उदकम्, वारि, कुशम्, जलम्, वनम्, क्षीरम्, अम्भः, अम्बु, नीरम्, भुवनम्, अमृतम्, जीवनीयम्, पाथम्, कीलालम्।

जगत् (नपुं.) – भुवनम्, विष्टपम्, लोकः, जगत्।

जिह्वा (स्त्री.) – रसज्ञा, रसना, जिह्वा।

त

तरुणी (स्त्री.) – युवती, मनोज्ञा, सुन्दरी, यौवनवती, प्रमदा, रमणी।

तडागः (पुँ.) – सरः, जलाशयः, कासारः, तालः, सरसी, पुष्करः, ह्रदः, सरोवरः, जलाधारः, खातम्, अखातम्।

तरुः (पुँ.) – वृक्षः, विटपः, द्रुमः, पादपः।

द

दक्षः (पुँ.) – चतुरः, प्रवीणः, कुशलः, निपुणः।

दन्तः (पुँ.) – रदनः, दशनः, रदः, दन्तः, द्विजः, मुखक्षुरः।

दानवः (पुँ.) – राक्षसः, दैत्यः, निशाचरः, असुरः, शम्बरः, दनुजः, इन्द्रारिः।

दिवसः (पुँ.) – वासरः, दिवा, वारः, दिनम्, अहः, घस्रः।

द्रौपदी (स्त्री.) – कृष्णा, पाञ्चाली, द्रुपदसुता, याज्ञसेनी।

देवः (पुँ.) – अमरः, निर्जरः, अजरः, सुरः, सुमनाः, सुपर्वा, ऋभुः, त्रिदिवेशः, दिवौकाः, आदितेयः, आदित्यः, अदितिनन्दनः, अस्वप्नः, अमर्त्यः, अमृतान्धाः, बहिर्मुखः, क्रतुभुक्, गीर्वाणः, दानवारिः, वृन्दारकः, दैवतम्, देवता।

दम्पती (पुँ., द्विव.) – जम्पती, जायापती, भार्यापती।

दासः (पुँ.) – कर्मकरः, वैतनिकः, भृतकः, भृत्यः, चेतकः, किंकरः, भुजिष्यः।

ध

धनम् (नपुं.) – द्रव्यम्, वित्तम्, अर्थः, राः, रिक्थम्, वशुः, स्वापतेयम्, हिरण्यम्, द्रविणम्, ऋक्थम्।

न

नर्मदा (स्त्री.) – रेवा, सोमोद्भवा, मेकलकन्यका, सदानीरा, बाहुदा, सैतवाहिनी।

नायकः (पुँ.) – पतिः, स्वामी, ईश्वरः, ईशिता, अधिभूः, नेता, प्रभुः, परिवृढः, अधिपः।

नदी (स्त्री.) – सरिता, निर्झरिणी, तरिनी, ह्रदिनी, नदः, स्रवन्ती, तरङ्गिणी, पयस्विनी, लहरी, शैवालिनी, अपगा, स्रोतस्विनी, सरिः, तरङ्गवती, निम्नगा, धुनिः, समुद्रकान्ता, कूलङ्कषा, सरस्वती, द्वीपवती, धुनी, तटिनी।

नरकः (पुँ.) – यमलोकः, यमपुरम्, यमालयः, निरयः, दुर्गतिः, नारकः, तामिस्रम्, सञ्जीवनम्, सम्प्रतापनम्, अन्धतामिस्रम्।

नौका (स्त्री.) – तरणी, जलयानम्, तरी, वनवाहनम्, पतङ्गम्।

निधनः (पुँ.) – पञ्चता, कालधर्मः, दिष्टान्तः, प्रलयः, अत्ययः, अन्तः, नाशः, मृत्युः, मरणम्।

नासिका (स्त्री.) – घ्राणम्, गन्धवहा, नासा, घोणा।

प

पतिः (पुँ.) – भर्त्ता, वल्लभः, धवः, आर्यपुत्रः, ईशः, स्वामी, जीवनाधारः, नाथः, प्रियः, प्राणेशः, प्राणवल्लभः।

पण्डितः (पुँ.) – सुधी, विद्वान्, कोविदः, बुधः, धीरः, मनीषी, प्राज्ञः, विलक्षणः, युधः, विज्ञः।

पर्वतः (पुँ.) – भूधरः, गिरिः, महीधरः, महीध्रः, शिखरी, धीरः, शैलः, नगः, मेरुः, गोत्रः, अद्रिः, क्षमाभृत्, भूमिधरः, महीधरः, तुङ्गम्, शिलोच्चयः, अहार्यः, अचलः, धराधरः।

पक्षी (पुँ.) – द्विजः, अण्डजः, विहङ्गः, खगः, शकुन्तः, शकुनिः, पतङ्गः, विः, विष्किरः, पतत्रिः, वाजी, पत्री, विहायसः, विहगः, शकुनः।

परशुरामः (पुँ.) – भृगुसुतः, जामदग्न्यः, भार्गवः, परशुधरः, रेणुकातनयः, भृगुनन्दनः।

पवित्रम् (वि.) – पावनम्, पुनीतम्, पूतम्, विशुद्धम्, पाकम्, शुद्धम्, शुचिः, स्वच्छम्।

पार्वती (स्त्री.) – उमा, कात्यायनी, गौरी, शिवा, भवानी, दुर्गा, गिरिजा, गिरिराजकुमारी, सती, अम्बिका, शैलसुता, ईश्वरी, रुद्राणी, आर्या, अभया, सर्वमङ्गला, हैमवती, शर्वाणी, अपर्णा, मृडानी, चण्डिका, काली, मैनसुता, दाक्षायणी, दाक्षी।

पुत्रः (पुँ.) – तनयः, आत्मजः, सुतः, औरसः, सूनुः।

पुत्री (स्त्री.) – तनया, आत्मजा, सुता, दुहिता, सूनुः।

पातालम् (नपुं.) – वडवामुखम्, वैरोचनिकेतनम्, रसातलम्, नागलोकः, अधोभुवनम्, अतलम्, वितलम्, सुतलम्, तलातलम्, महातलम्, बलिसद्म।

पुरुषः (पुँ.) – मनुष्यः, मानवः, मर्त्यः, मनुजः, मानुषः, नरः, पञ्चजनः, पूरुषः, पुमान्, कान्तः।

पथिकः (पुँ.) – अध्वनीनः, अध्वगः, अध्वन्यः, पान्थः, पथिकः।

पुष्पम् (नपुं.) – सुमनस्, पुष्पम्, प्रसूनम्, कुसुमम्, सुमनसः।

पृथ्वी (स्त्री.) – भूः, भूमिः, अचला, अनन्ता, रसा, धरा, धरित्री, धरणी, वसुन्धरा, वसुधा, उर्वी, क्षितिः, विश्वम्भरा, क्षोणिः, ज्या, कुः, पृथिवी, गोवा, क्ष्मा, अवनिः, मेदिनी, मही, स्थिरा, सर्वसहा, काश्यपी, वसुमती, जगतिः, धात्री।

पाषाणः (पुँ.) – प्रस्तरः, ग्रावा, उपलः, अश्म, शिला, दृषत्।

पत्नी (स्त्री.) – पाणिगृहीती, सहधर्मिणी, भार्या, जाया, दाराः।

ब

बलरामः (पुँ.) – बलदेवः, बलभद्रः, हलधरः, बलवीरः, हलायुधः, रौहिणेयः, श्यामबन्धुः, रेवतीरमणः, नीलाम्बरः, मुसली, कामपालः।

ब्रह्मा (पुँ.) – पितामहः, स्वयम्भूः, विधिः, चतुराननः, विरञ्चिः, विधाता, विधना, सृष्टा, प्रजापतिः, कमलासनः, हिरण्यगर्भः, आत्मभूः, हंसवाहनः, लोकेशः, अजः, नाभिजन्मा, सदानन्दः, अण्डजः, गिरापतिः, सुरज्येष्ठः, परमेष्ठी, पितामहः।

बुद्धिः (स्त्री.) – मनीषा, धिषणा, धीः, प्रज्ञा, शेमुषी, मतिः, प्रेक्षा, उपलब्धिः, चित्, संवित्, प्रतिपद्, ज्ञप्तिः, चेतना।

बुद्धः (पुँ.) – सुगतः, सर्वज्ञः, सर्ववित्, भगवान्, तथागतः, समन्तभद्रः।

बृहस्पतिः (पुँ.) – सुराचार्यः, गीर्पतिः, गुरुः, जीवः, वाचस्पतिः, चित्रशिखण्डिजः, आङ्गिरसः, धिषणः।

बिडालः (पुँ.) – मार्जारः, ओतुः, वृषदंशकः, आखुभुक्।

ब्राह्मणः (पुँ.) – विप्रः, भूदेवः, भूसुरः, महिदेवः, महीसुरः, अग्रजन्मा, द्विजातिः, आश्रमः, श्रोत्रियः, छान्दसः।

बाणः (पुँ.) – शरः, पृषत्कः, विशिखः, खगः, आशुगः, कलम्बः, मार्गणः, पत्री, इषुः, नाराचः।

भ

भ्रमरः (पुँ.) – मधुकरः, मधुपः, अलिः, भृङ्गः, भ्रमरः, षट्पदः, मधुराजः, मधुभक्षः, द्विरेफः, मधुव्रतः।

म

मनः (नपुं.) – चितः, चेतः, हृदयः, स्वान्तः, मानस् , मनस्।

मार्गः (पुँ.) – अयनम्, वर्त्म, अध्वा, पन्थानः, पदवी, सृतिः, सरणिः, पद्धतिः, पद्य, वर्तनिः, एकपदी।

मन्दिरम् (नपुं.) – देवालयः, देवस्थानम्, देवगृहम्, ईशगृहम्।

महादेवः (पुँ.) – शिवः, शम्भुः, हरः, शङ्करः, महेशः, गिरीशः, चन्द्रशेखरः, नीलकण्ठः, रुद्रः, त्रिलोचनः, त्रिपुरारी, गङ्गाधरः, उमापतिः, भूतनाथः, पशुपतिः, महेश्वरः, गिरिजापतिः, कपर्दी, वामदेवः, कैलाशपतिः, शितिकण्ठः, चन्द्रमौलिः, देवाधिदेवः, मदनारिः, ईशः, ईशानः, ईश्वरः, शर्वः, शूली, भूतेशः, पिनाकी, मृत्युञ्जयः, सर्वज्ञः।

मनुष्यः (पुँ.) – मानुषः, मर्त्यः, मनुजः, मानवः, नरः।

माता (स्त्री.) – जननी, जनयित्री, प्रसूः, अम्बा।

मीनः (पुँ.) – मत्स्यः, शफरी, झषः, जलजीवनम्, अण्डजः,विसारः, शकुली।

मदिरा (स्त्री.) – आसवः, मधु, सोमरसः, मद्यम्, मध्वासवः, वारुणी, मध्विजा।

महात्मा (पुँ.) – महामनाः, महाशयः, महानुभावः, महापुरुषः।

मूर्खः (पुँ.) – मूढः, अज्ञानी, जडः, निर्बुद्धिः, अज्ञः, बालिशः।

मेघः (पुँ.) – धाराधरः, घनः, जलधरः, वारिदः, जीमूतः, नीरदः, वारिधरः, पयोदः, पयोधरः, अम्बुदः, वारिवाहः, बलाहकः।

मयूरः (पुँ.) – केकी, कलापी, शिखी, शिखण्डी, ध्वजी, हरिः, नीलकण्ठः, भुजगारिः, सारङ्गः, शिवसुतवाहनः।

य

यमः (पुँ.) – सूर्यपुत्रः, जीवनपतिः, पितृपतिः, समवर्ती, अन्तकः, धर्मराजः, शमनः, परेतराट्, शमनः, वैवस्वतः, कीनासः, कृतान्तः, कालः, अन्तकः, जीवितेशः, मृत्युपतिः, यमराजः, नरदण्डधरः, यमुनाभ्राता, दण्डधरः, श्राद्धदेवः।

यमुना (स्त्री.) – कालिन्दी, अर्कजा, रवितनया, कृष्णा,

कालगङ्गा, सूर्यसुता, भानुजा, तरणितनूजा, अर्कसुता, सूर्यतनया, शमनस्वसा।

युवती (स्त्री.) – सुन्दरी, श्यामा, किशोरी, तरुणी, नवयौवना, सुवासिनी, स्नुषा, रमणी, यौवनवती, वनिता, वधूः, इच्छावती, मध्यमा, वामा, भामा, अभिसारिका।

यज्ञः (पुं.) – सवः, अध्वरः, यागः, क्रतुः, मखः।

युद्धम् (नपुं.) – आयोधनम्, जन्यम्, प्रधनम्, प्रविदारणम्, रणः, साम्परायिकम्, कलहः, विग्रहः, सम्प्रहारः, अभिसम्पातः, संस्फोटः, समाघातः, आहवः, समुदायः, समितिः, आजिः, तुमुलम्।

र

राधा (स्त्री.) – बृषभानुजा, राधिका, व्रजरानी, हरिप्रिया, व्रजेश्वरी।

राजा (पुं.) – नृपः, नृपतिः, भूपः, महीशः, नरेशः, नरपतिः, नरेन्द्रः, सम्राट्, महीपतिः, भूस्वामी, भूपतिः, भूपालः, महीपालः।

रात्रिः (स्त्री.) – रजनी, निशा, निशीथः, यामिनी, विभावरी, शर्वरी, तमी, त्रियामा, तमिस्रा, विभा, क्षपा, तमस्विनी, क्षणदा, ज्यौत्स्नी।

रोगः (पुं.) – रुजा, उपतापः, व्याधः, गदः, आमयः, रुग्णः, अस्वस्थः।

राक्षसः (पुं.) – कौणपः, क्रव्यादः, अस्रपः, आशरः, रात्रिञ्चरः रात्रिचरः, कर्बुरः, निकषात्मजः, यातुधानः, पुण्यजनः, नैऋतः, यातुः, रक्षसी।

राज्ञी (स्त्री.) – देवी, महिषी, भट्टिनी, साम्राज्ञी।

रोगी (पुं.) – आतुरः, आमयावी, विकृतः, व्याधितः, अपटुः, अभ्यान्तः, अभ्यमितः।

ल

लक्ष्मणः (पुं.) – शेषावतारः, शेषः, रामानुजः, सौमित्रः, अनन्तः

लक्ष्मीः (स्त्री.) – श्रीः, कमला, रमा, पद्मासना, इन्दिरा, समुद्रजा, हरिप्रिया, क्षीरोदतनया, भार्गवी, सिन्धुसुता, पद्मवासा, मा, लोकमाता, लोकजननी, पद्मालया, पद्मा।

लवणम् (नपुं.) – सामुद्रम्, सैन्धवम्, अक्षीवम्, वशिरम्, शीतशिवम्, सिन्धुजम्, रौमकम्, माणिमन्थम्, खिडम्, रुचकम्, सौवर्चलम्, पाक्यम्, वसुकम्।

व

व्याधः (पुं.) – वागुरिकः, जालिकः, कौटिकः, मृगयुः, लुब्धकः, वैतंसिकः।

वनम् (नपुं.) – अरण्यम्, काननम्, अटवी, विपिनम्, कान्तारम्, वनम्, गहनम्, सत्वम्

वरः (पुं.) – श्रेष्ठः, उत्तमः, मुख्यः, सर्वोपरिः, उत्कृष्टः, प्रधानम्।

वायुः (पुँ.) – पवनः, समीरः, अनिलः, वातः, मारुतः समीरणः, गन्धवाहः, सदागतिः, श्वसनः, जगत्प्राणः, मारुतः, प्रकम्पनः।

विष्णुः (पुँ.) – गरुड़ध्वजः, अच्युतः, जनार्दनः, चक्रपाणिः, विश्वम्भरः, मुकुन्दः, नारायणः, हृषीकेशः, माधवः, केशवः, गोविन्दः, दामोदरः, लक्ष्मीपतिः, विधुः, विश्वरूपः, जलाशायी, वनमाली, उपेन्द्रः, पीताम्बरः, चतुर्भुजः, अधोक्षजः, शार्ङ्गिन्, मधुरिपुः।

विद्युत् (स्त्री.) – विद्युत्, **शम्पा**, ह्रादिनी, ऐरावती, क्षणप्रभा, तडित्, सौदामिनी, चञ्चला, चपला, क्षणप्रभा, घनवल्ली।

वानरः (पुँ.) – बलीमुखः, मर्कटकः, वनौकाः, हरिः, प्लवङ्गमः, प्लवङ्गः, प्लवगः, कपिः, कीशः, शाखामृगः, वानरः।

वृक्षः (पुँ.) – महीरुहः, शाखी, विटपी, पादपः, तरुः, अनोकहः, कुटः, सालः, पलाशी, द्रुः, द्रुमः, अगमः।

वेदः (पुँ.) – श्रुतिः, आम्नायः, त्रयी, निगमः।

विद्वान् (पुँ.) – दोषज्ञः, सुधी, कोविदः, बुधः, धीरः, मनीषी, ज्ञः, प्राज्ञः, संख्यावान्, पण्डितः, कविः, धीमान्, सूरिः, कृती, कृष्टिः, विचक्षणः, दूरदर्शी, दीर्घदर्शी।

श

शरीरम् (नपुं.) – गात्रम्, वपुः, संहननम्, वर्ष्मन्, विग्रहः, कायः, देहः, मूर्तिः, तनुः, तनूः।

शिवः (पुँ.) – शम्भुः, पशुपतिः, महेश्वरः, शङ्करः, चन्द्रशेखरः, हरः।

शृगालः (पुँ.) – शिवा, फेरवः, जम्बुकः, फेरुः, क्रोष्टुः, वञ्चकः, मृगधूर्तकः, गोमायुः, भूरिमायः।

स

सरस्वती (स्त्री.) – ब्राह्मी, भारती, भाषा, गीः, वाक्, वाणी, वागेश्वरी, वीणावादिनी, शारदा, विद्यादेवी, विधात्री।

स्वर्गः (पुँ.) – स्वः, स्वर्गः, नाकः, द्यौः, त्रिदशालयः, सुरलोकः, दिवम्, त्रिविष्टपम्, त्रिदिवः, देवलोकः

सूर्यः (पुँ.) – आदित्यः, सविता, सहस्रकिरणः प्रद्योतनः, भास्करः, तिग्मांशुः, तरणिः, दिनमणिः, भास्वान्, विवस्वान्, हरिः, मार्तण्डः, तपनः, विकर्तनः, इनः, पूषन्, पतङ्गः, भगः, सूरः, गोपतिः, अर्यमान्, रविः, दिनकरः, अंशुमाली, प्रभाकरः, भानुः।

सिंहः (पुँ.) – मृगेन्द्रः, हर्यक्षः, केसरी, हरिः, पञ्चास्यः।

सूकरः (पुँ.) – वराहः, घृष्टिः, कोलः, पोत्री, किरः, किटिः, दष्ट्री, घोणी, स्तब्धरोमा, क्रोडः, भूदारः।

स्त्री (स्त्री.) – रामा, वामा, वामनेत्रा, नारी, भीरुः, भामिनी, कामिनी, योषी, योषित्, वासिता, वर्णिनी, सीमन्तिनी, अङ्गना, सुन्दरी, अबला, वधूः, वनिता, महिला, कान्ता, अङ्गना, रमणी, जाया, दाराः।

सर्पः (पुँ.) – पृदाकुः, चक्री, व्यालः, सरीसृपः, उरगः, पन्नगः, भोगी, जिह्मगः, पवनाशनः, काकोलः, फणी, अहिः, विषधरः, बिलेशयः, भुजङ्गः।

सुन्दरम् (वि.) – सुन्दरम्, रुचिरम्, चारु, सुषमा, साधु, शोभनम्, कान्तम्, मनोरमम्, रुच्यम्, मनोज्ञम्, मञ्जुः, मञ्जुलम्।

सारङ्गः (पुँ.) – सिंहः, गजः, कामदेवः, मृगः, मयूरः, दीपः, नेत्रम्, बादलः, वायुः,

सीता (स्त्री.) – भूमिजा, वैदेही, जनककिशोरी, जनकतनया, जानकी, रामप्रिया, जनकसुता।

समुद्रः (पुँ.) – अब्धिः, अकूपारः, उदधिः, सिन्धुः, सागरः, अर्णवः, रत्नाकरः, जलनिधिः, पारावारः, अपांपतिः, सरित्पतिः, उदन्वान्, सरस्वान्।

ह

हरिणः (पुँ.) – मृगः, कुरङ्गः, वातायुः, अजिनयोनिः।

हनुमान् (पुँ.) – पवनसुतः, पवनकुमारः, महावीरः, रामदूतः, मारुततनयः, वज्राङ्गी, वज्राङ्गिः, मारुतिनन्दनः, आञ्जनेयः, कपिशः, पवनपुत्रः

हिमालयः (पुँ.) – हिमपतिः, नगराजः, शैलेन्द्रः, नगपतिः, हिमाद्रिः, हिमाचलः, गिरिराजः, हिमगिरिः।

हिमम् (नपुं.) – नीहारः, अवश्यायः, तुहिनम्, प्रालेयम्, हिमानी, हिमसंहतिः, मिहिका।

विलोम–शब्दाः

अनुलोमः	विलोमः
	अ
असीमः (वि.)	– ससीमः (वि.)
अतिवृष्टिः (स्त्री.)	– अनावृष्टिः (स्त्री.)
अमावस्या (स्त्री.)	– पूर्णिमा (स्त्री.)
अमृतम् (नपुं.)	– विषम् (नपुं.)
अधोगामी (पुँ.)	– ऊर्ध्वगामी (पुँ.)
अर्वाचीनम् (वि.)	– प्राचीनम् (वि.)
अनुकूलः (वि.)	– प्रतिकूलः (वि.)
अपकारः (पुँ.)	– उपकारः (पुँ.)
अनुरागः (पुँ.)	– विरागः (पुँ.)
अभिज्ञः (पुँ.)	– अनभिज्ञः (पुँ.)
अनुजः (पुँ.)	– अग्रजः (पुँ.)
अर्धम् (वि.)	– पूर्णम् (वि.)
अवकाशः (पुँ.)	– अनवकाशः (पुँ.)
अल्पम् (वि.)	– बहु (वि.)
अनुलोमः (पुँ.)	– प्रतिलोमः (पुँ.)
अनादरः (पुँ.)	– आदरः (पुँ.)
अधमः (वि.)	– उत्तमः (वि.)
अनुकूलः (वि.)	– प्रतिकूलः (वि.)
अनुलोपः (वि.)	– विलोपः (वि.)

अनुलोमः	विलोमः
अग्रिमः (वि.)	– अन्तिमः (वि.)
असाध्यम् (वि.)	– साध्यम् (वि.)
अन्तरङ्गम् (वि.)	– बहिरङ्गम् (वि.)
अङ्गीकारः (वि.)	– अस्वीकारः (वि.)
अल्पज्ञः (पुँ.)	– बहुज्ञः (पुँ.)
अभिमानी (पुँ.)	– निरभिमानी (पुँ.)
अम्बरम् (नपुं.)	– अवनिः (स्त्री.)
अचलम् (वि.)	– चलम् (वि.)
अभिव्यक्तः (वि.)	– अनभिव्यक्तः (वि.)
अज्ञः (पुँ.)	– विज्ञः (पुँ.)
अकर्तव्यः (वि.)	– कर्तव्यः (वि.)
अपेक्षा (स्त्री.)	– अनपेक्षा (स्त्री.)
अन्तिमः (वि.)	– प्रथमः (वि.)
अङ्कुशः (पुँ.)	– निरङ्कुशः (पुँ.)
अवलम्बः (पुँ.)	– निरालम्बः (पुँ.)
अधर्मः (पुँ.)	– सद्धर्मः (पुँ.)
अन्तरम् (वि.)	– बाह्यम् (वि.)
अंशतः (अव्य.)	– पूर्णतः (अव्य.)
अल्पकालिकः (पुँ.)	– दीर्घकालिकः (पुँ.)
अध्यवसायः (पुँ.)	– अनध्यवसायः (पुँ.)
अवरोधः (पुँ.)	– अनवरोधः (पुँ.)

अनुलोमः		विलोमः
अपेक्षितम् (वि.)	–	अनपेक्षितम् (वि.)
अग्राह्यः (वि.)	–	ग्राह्यः (वि.)
अरुचिः (स्त्री.)	–	सुरुचिः (स्त्री.)
अकर्मण्यः (पुँ.)	–	कर्मण्यः (पुँ.)
अत्यधिकम् (नपुं.)	–	स्वल्पम् (नपुं.)
अत्र (अव्य.)	–	तत्र (अव्य.)
अथ (अव्य.)	–	इति (अव्य.)
अधस्तन (वि.)	–	उपरितन (वि.)
अधमर्णः (पुँ.)	–	उत्तमर्णः (पुँ.)
अधिकतमः (वि.)	–	न्यूनतमः (वि.)
अधित्यका (स्त्री.)	–	उपत्यका (स्त्री.)
अधिकांशः (पुं.)	–	अल्पांशः (पुं.)
अधः (अव्य.)	–	उपरि (अव्य.)
अधुनातनः (पुँ.)	–	पुरातनः (पुँ.)
अनृतम् (नपुँ.)	–	ऋतम् (नपुँ.)
अनुपस्थितः (पुँ.)	–	उपस्थितः (पुँ.)
अनिवार्यः (पुँ.)	–	वैकल्पिकः (पुँ.)
अन्धकारः (पुँ.)	–	प्रकाशः (पुँ.)
अन्तर्मुखी (वि.)	–	बहिर्मुखी (वि.)
अन्तर्भूतः (पुँ.)	–	बहिर्भूतः (पुँ.)
अनुरक्तिः (पुँ.)	–	विरक्तिः (पुँ.)
अनुग्रहः (पुं.)	–	विग्रहः (पुं.)
अन्तर्द्वन्द्वः (पुँ.)	–	बहिर्द्वन्द्वः (पुँ.)
अपररात्रः (पुँ.)	–	पूर्वरात्रः (पुँ.)
अर्पणम् (नुप0)	-	ग्रहणम् (नपुं.)
अपराह्णः (पुँ.)	-	पूर्वाह्नः (पुँ.)
अपकीर्तिः (स्त्री.)	-	कीर्तिः (स्त्री.)
अपकर्षः (पुँ.)	-	उत्कर्षः (पुँ.)
अर्पितः (पुँ.)	-	गृहीतः (पुँ.)
अभीष्टः (पुँ.)	-	अनभीष्टः (पुँ.)
अल्पसंख्यकः(पुँ.)	-	बहुसंख्यकः (पुँ.)
अल्पायुः (वि.)	-	दीर्घायुः (वि.)
अवनिः (स्त्री.)	-	अम्बरः (पुँ.)
अवनतिः (स्त्री.)	-	उन्नतिः (स्त्री.)
अशिवः (पुं.)	-	शिवः (पुँ.)
असभ्यः (पुं.)	-	सभ्यः (पुँ.)

आ

अनुलोमः		विलोमः
आकीर्णः (पुं.)	-	विकीर्णः (पुँ.)
आदिष्टः (पुँ.)	-	निषिद्धः (पुँ.)
आवरणम् (नपुं.)	-	अनावरणम् (नपुं.)
आवृत्तः (पुँ.)	-	अनावृत्तः (पुँ.)
आज्ञा (स्त्री.)	-	अवज्ञा (स्त्री.)
आमिषः (पुँ.)	-	निरामिषः (पुँ.)
आदत्तः (पुँ.)	-	प्रदत्तः (पुँ.)
आदानम् (वि.)	–	प्रदानम् (वि.)
आकर्षणम् (नपुं.)	–	विकर्षणम् (नपुं.)
आहूतः (वि.)	–	अनाहूतः (वि.)
आदिः (वि.)	–	अन्तम् (नपुं.)
आश्रितः (वि.)	–	अनाश्रितः (वि.)
आहारः (पुँ.)	–	निराहारः (पुँ.)
आरम्भः (पुँ.)	–	अन्तः (पुँ.)
आदरः (पुँ.)	–	निरादरः (पुँ.)
आदरणीयः (पुँ.)	–	अनादरणीयः (पुँ.)
आयातः (पुँ.)	–	निर्यातः (पुँ.)
आस्तिकः (पुँ.)	–	नास्तिकः (पुँ.)
आर्द्रम् (नपुं.)	–	शुष्कम् (नपुं.)
आकाशः (पुँ.)	–	पातालम् (नपुं.)
आशा (स्त्री.)	–	निराशा (स्त्री.)
आवरणम् (वि.)	–	निरावरणम् (वि.)
आकुञ्चनम् (नपुं.)	–	प्रसारणम् (नपुं.)
आचारः (पुँ.)	–	अनाचारः (पुँ.)
आवाहनम् (नपुं.)	–	विसर्जनम् (नपुं.)
आरोहणम् (नपुं.)	–	अवरोहणम् (नपुं.)
आतपः (पुँ.)	–	निरातपः (पुँ.)
आरूढः (पुँ.)	–	अनारूढः (पुँ.)
आविर्भावः (पुँ.)	–	तिरोभावः (पुँ.)
आभ्यन्तरः (वि.)	–	बाह्यः (वि.)
आध्यात्मिकः (पुँ.)	–	भौतिकः (पुँ.)
आर्षः (पुँ.)	–	अनार्षः (पुँ.)
आवश्यकम् (नपुं.)	–	अनावश्यकम् (नपुं.)
आग्रहः (पुँ.)	–	दुराग्रहः (पुँ.)
आधारः (पुँ.)	–	निराधारः (पुँ.)
इहलोकम् (वि.)	–	परलोकम् (वि.)
ईश्वरः (पुँ.)	–	अनीश्वरः (पुँ.)

उ

अनुलोमः		विलोमः
उत्कृष्टः (वि.)	–	निकृष्टः (वि.)
उत्खननम् (नपुं.)	–	निखननम् (नपुं.)
उदयः (पुँ.)	–	अस्तः (पुँ.)
उदयाचलः (पुँ.)	–	अस्ताचलः (पुँ.)
उत्तरार्द्धः (पुँ.)	–	पूर्वार्द्धः (पुँ.)

अनुलोमः	विलोमः
उपयोगी (पुँ.)	– अनुपयोगी (पुँ.)
उपसर्गः (पुँ.)	– प्रत्ययः (पुँ.)
उत्तीर्णम् (वि.)	– अनुत्तीर्णम् (वि.)
उग्रः (पुँ.)	– सौम्यः (पुँ.)
उद्धतः (वि.)	– विनतः (वि.)
उत्थानम् (नपुं.)	– पतनम् (नपुं.)
उच्चः (वि.)	– निम्नः (वि.)
उत्साहः (पुँ.)	– अनुत्साहः (पुँ.)
उपचारः (पुँ.)	– अनुपचारः (पुँ.)
उपकारः (पुँ.)	– अपकारः (पुँ.)
उन्नतः (वि.)	– अवनतः (वि.)
उन्मीलनम् (नपुं.)	– निमीलनम् (नपुं.)
उर्वरः (पुँ.)	– अनुर्वरः (पुँ.)
उदारः (वि.)	– अनुदारः (वि.)
उदीची (स्त्री.)	– अवाची (स्त्री.)
उन्मुखम् (वि.)	– विमुखम् (वि.)
उत्तरायणम् (नपुं.)	– दक्षिणायनम् (नपुं.)
उत्पत्तिः (स्त्री.)	– प्रलयः (पुँ.)
उत्कर्षः (पुँ.)	– अपकर्षः (पुँ.)
उदात्तः (वि.)	– अनुदात्तः (वि.)
उन्मूलनम् (नपुं.)	– रोपणम् (नपुं.)
उपमेयः (वि.)	– अनुपमेयः (वि.)
उद्योगी (पुँ.)	– अनुद्योगी (पुँ.)
उपस्थितिः (स्त्री.)	– अनुपस्थितिः (स्त्री.)

ऊ

अनुलोमः	विलोमः
ऊर्ध्वम् (अव्य.)	– अधः (अव्य.)
उच्चैः (अव्य.)	– नीचैः (अव्य.)
ऋतम् (नपुं.)	– अनृतम् (नपुं.)
ऋजुता (स्त्री.)	– वक्रता (स्त्री.)
ऋजुः (वि.)	– वक्रम् (वि.)

ए

अनुलोमः	विलोमः
एकता (स्त्री.)	– अनेकता (स्त्री.)
एकम् (वि.)	– अनेकम् (वि.)
एकाग्रता (स्त्री.)	– चञ्चलता (स्त्री.)
एकाधिकारः (वि.)	– सर्वाधिकारः (वि.)
एकश्रुतः (वि.)	– बहुश्रतः (वि.)
एकत्रम् (अव्य.)	– विकीर्णम् (वि.)
एकतन्त्रम् (वि.)	– बहुतन्त्रम् (वि.)
एकनिष्ठः (पुँ.)	– बहुनिष्ठः (पुँ.)
एकेश्वरवादः (पुँ.)	– बहुदेववादः (पुँ.)

अनुलोमः	विलोमः
ऐश्वर्यः (पुँ.)	– अनैश्वर्यः (पुँ.)
ऐतिहासिकः (पुँ.)	– अनैतिहासिकः (पुँ.)

औ

अनुलोमः	विलोमः
औपचारिकः (पुँ.)	– अनौपचारिकः (पुँ.)
औचित्यः (पुँ.)	– अनौचित्यः (पुँ.)

क

अनुलोमः	विलोमः
कर्षणम् (नपुं.)	– विकर्षणम् (नपुं.)
कृतज्ञः (पुँ.)	– कृतघ्नः (पुँ.)
कृत्रिमः (पुँ.)	– प्राकृतः (वि.)
कुसङ्गः (पुँ.)	– सुसङ्गः (पुँ.)
कठोरम् (वि.)	– कोमलम् (वि.)
कनिष्ठः (पुँ.)	– वरिष्ठः (पुँ.)
कण्टकः (पुँ.)	– निष्कण्टकः (पुँ.)
कटुः (पुँ.)	– मृदुः (पुँ.)
कर्कशः (वि.)	– मधुरः (वि.)
कीर्तिः (स्त्री.)	– अपकीर्तिः (स्त्री.)
क्रमबद्धः (वि.)	– क्रमहीनः (वि.)
कृशः (वि.)	– पुष्टः (वि.) / स्थूलः
क्रोधः (पुँ.)	– अक्रोधः (पुँ.)
कुरूपः (पुँ.)	– सुरूपः (पुँ.)
करुणः (पुँ.)	– क्रूरः (पुँ.)
कलुषः (पुँ.)	– निष्कलुषः (पुँ.)
कृपणः (पुँ.)	– उदारः (पुँ.)
कुकृत्यः (पुँ.)	– सुकृत्यः (पुँ.)
कर्मण्यः (पुँ.)	– अकर्मण्यः (पुँ.)
कदाचारः (पुँ.)	– सदाचारः (पुँ.)

ख

अनुलोमः	विलोमः
खण्डः (पुँ.)	– अखण्डः (पुँ.)
खण्डनम् (वि.)	– मण्डनम् (वि.)
ख्यातः (पुँ.)	– कुख्यातः (पुँ.)

ग

अनुलोमः	विलोमः
गमनम् (नपुं.)	– आगमनम् (नपुं.)
गण्यः (वि.)	– नगण्यः (वि.)
गमनीयम् (वि.)	– आगमनीयम् (वि.)
गुणाढ्यः (पुँ.)	– गुणहीनः (पुँ.)
गुप्तः (पुँ.)	– प्रकटः (पुँ.)
गुरुः (पुँ.)	– लघुः (पुँ.)

अनुलोमः	विलोमः
ग्राह्यः (वि.)	– त्याज्यः (वि.)
गृहस्थः (पुँ.)	– संन्यासी (पुँ.)
गणतन्त्रः (पुँ.)	– स्वतन्त्रः (पुँ.)
गोचरः (पुँ.)	– अगोचरः (पुँ.)
गोपनीयम् (वि.)	– प्रकाशनीयम् (वि.)
गुप्तम् (वि.)	– प्रकटम् (वि.)
ग्राम्यम् (वि.)	– नगरम् (वि.)
गौरवम् (वि.)	– लाघवम् (वि.)
गगनम् (नपुं.)	– धरणी (स्त्री.)
ग्रस्तः (वि.)	– मुक्तः (वि.)

घ

अनुलोमः	विलोमः
घातः (पुँ.)	– प्रतिघातः (पुँ.)
घृणा (स्त्री.)	– स्नेहः (पुँ.)

च

अनुलोमः	विलोमः
चलः (पुँ.)	– अचलः (पुँ.)
चर्चितः (वि.)	– अचर्चितः (वि.)
चञ्चलता (स्त्री.)	– स्थिरता (स्त्री.)
चाञ्चल्यम् (नपुं.)	– स्थैर्यम् (नपुं.)
चेतनम् (वि.)	– अचेतनम् (वि.)
चरित्रवान् (पुँ.)	– चरित्रहीनः (पुँ.)
चिरञ्जीवी (पुँ.)	– अल्पजीवी (पुँ.)
च्युतम् (वि.)	– अच्युतम् (वि.)
चेष्टा (स्त्री.)	– निश्चेष्टा (स्त्री.)
चिन्ता (स्त्री.)	– शान्तिः (स्त्री.)

छ

अनुलोमः	विलोमः
छलः (पुँ.)	– निश्छलः (पुँ.)
छाया (स्त्री.)	– आतपः (पुँ.)

ज

अनुलोमः	विलोमः
जङ्गमः (वि.)	– स्थावरः (वि.)
जडः (पुँ.)	– चेतनः (पुँ.)
जीवितः (वि.)	– मृतः (वि.)
जनकः (पुँ.)	– जननी (स्त्री.)
जलम् (नपुं.)	– निर्जलम् (नपुं.)
जागरूकः (पुँ.)	– उदासीनः (पुँ.)
जागृतिः (वि.)	– सुसुप्तिः (वि.)
जर्जरम् (वि.)	– दृढम् (वि.)
जितेन्द्रियः (पुँ.)	– इन्द्रियासक्तः (पुँ.)

अनुलोमः	विलोमः
जागरणम् (नपुं.)	– निद्रा (स्त्री.)
जातीयः (पुँ.)	– विजातीयः (पुँ.)
जनाकीर्णः (वि.)	– जनहीनः (वि.)
जीवनम् (नपुं.)	– मरणम् (नपुं.)
ज्येष्ठः (पुँ.)	– कनिष्ठः (पुँ.)
ज्योतिर्मयम् (नपुं.)	– तमोमयम् (नपुं.)

त

अनुलोमः	विलोमः
तनयः (पुँ.)	– तनया (स्त्री.)
तरलम् (वि.)	– कठोरम् (वि.)
तरुणः (वि.)	– वृद्धः (पुँ.)
तनुता (स्त्री.)	– पुष्टता (स्त्री.)
तप्तः (वि.)	– शीतः (वि.)
तामसिकः (पुँ.)	– सात्त्विकः (पुँ.)
तारुण्यम् (वि.)	– वार्द्धक्यम् (वि.)
तिक्तः (वि.)	– मधुरः (वि.)
तृषा (स्त्री.)	– तृप्तिः (स्त्री.)
तृष्णा (स्त्री.)	– वितृष्णा (स्त्री.)
त्यक्तः (वि.)	– गृहीतः (वि.)
तुष्टः (वि.)	– रुष्टः (वि.)
तीक्ष्णः (वि.)	– कुण्ठितः (वि.)
तीव्रम् (वि.)	– मन्दम् (वि.)
तेजस्वी (पुँ.)	– निस्तेजः (पुँ.)

द

अनुलोमः	विलोमः
दुर्लभः (वि.)	– सुलभः (वि.)
दासः (पुँ.)	– स्वामी (पुँ.)
दण्डः (पुँ.)	– क्षमा (स्त्री.), पुरस्कारः (पुँ.)
दयालुः (पुँ.)	– क्रूरः (पुँ.)
दीर्घकायः (पुँ.)	– कृशकायः (पुँ.)
देवः (पुँ.)	– दानवः (पुँ.)
दुःसाध्यम् (वि.)	– सुसाध्यम् (वि.)
दृश्यः (पुँ.)	– अदृश्यः (पुँ.)
दुष्कृतिः (स्त्री.)	– सुकृतिः (स्त्री.)
दृष्टः (वि.)	– अदृष्टः (वि.)
दुर्दान्तः (वि.)	– शान्तः (वि.)
दीर्घः (वि.)	– ह्रस्वः (वि.)
दुःखान्तः (वि.)	– सुखान्तः (वि.)
दुराग्रहः (पुँ.)	– आग्रहः (पुँ.)
दुर्गतिः (स्त्री.)	– सद्गतिः (स्त्री.)
दुर्जनः (पुँ.)	– सज्जनः (पुँ.)

अनुलोमः		विलोमः
दूरवर्ती (पुँ.)	–	निकटवर्ती (पुँ.)
दैविकः (पुँ.)	–	भौतिकः (पुँ.)
दैत्यः (पुँ.)	–	देवः (पुँ.)
दिवा (स्त्री.)	–	रात्रिः (स्त्री.)

ध

अनुलोमः		विलोमः
धर्मः (पुँ.)	–	अधर्मः (पुँ.)
धनिकः (पुँ.)	–	निर्धनः (पुँ.)
धीरः (पुँ.)	–	अधीरः (पुँ.)
ध्वंसः (पुँ.)	–	निर्माणः (पुँ.)
धृष्टः (पुँ.)	–	विनीतः (पुँ.)

न

अनुलोमः		विलोमः
नराधमः (वि.)	–	नरोत्तमः (वि.)
निन्द्यः (पुँ.)	–	वन्द्यः (पुँ.)
निर्मलम् (वि.)	–	मलिनम् (वि.)
निर्लज्जः (वि.)	–	सलज्जः (वि.)
नीरोगः (पुँ.)	–	रोगः (पुँ.)
न्यासः (पुँ.)	–	विन्यासः (पुँ.)
न्यायः (पुँ.)	–	अन्यायः (पुँ.)
नीरसः (पुँ.)	–	सरसः (पुँ.)
निष्पापः (पुँ.)	–	पापः (पुँ.)
नास्तिकः (पुँ.)	–	आस्तिकः (पुँ.)
निष्कण्टकम् (वि.)	–	कण्टकाकीर्णम् (वि.)
निरादरः (पुँ.)	–	आदरः (पुँ.)
निद्रा (स्त्री.)	–	जागरणम् (नपुं.)
निरावृतः (वि.)	–	आवृतः (वि.)
न्यूनम् (वि.)	–	अधिकम् (वि.)
निरुद्विग्नः (वि.)	–	उद्विग्नः (वि.)
निवृत्तः (वि.)	–	प्रवृत्तः (वि.)
निःशङ्कः (पुँ.)	–	सशङ्कः (पुँ.)
निष्कलङ्कम् (वि.)	–	कलङ्कितम् (वि.)
निर्माणः (वि.)	–	विध्वंसः (वि.)
निर्वाक् (वि.)	–	सवाक् (वि.)
निश्चेष्टः (वि.)	–	सचेष्टः (वि.)
निर्भीकः (वि.)	–	भीरुः (वि.)
निष्कामः (पुँ.)	–	सकामः (पुँ.)
निरक्षरम् (वि.)	–	साक्षरम् (वि.)
नगरम् (नपुं.)	–	ग्रामः (पुँ.)

प

अनुलोमः		विलोमः
परकीयः (वि.)	–	स्वकीयः (वि.)
प्रकटः (वि.)	–	प्रच्छन्नः (वि.)
प्रदानम् (वि.)	–	आदानम् (वि.)
प्रभुः (पुँ.)	–	भृत्यः (पुँ.)
प्रदोषः (पुँ.)	–	प्रत्यूषः (पुँ.)
प्रातः (अव्य.)	–	सायम् (अव्य.)
पराधीनम् (वि.)	–	स्वाधीनम् (वि.)
प्रतिकूलः (वि.)	–	अनुकूलः (वि.)
प्रलयः (पुँ.)	–	सृष्टिः (स्त्री.)
प्रज्ञः (वि.)	–	मूढः (वि.)
परिग्रहः (पुँ.)	–	अपरिग्रहः (पुँ.)
परिगृहीतम् (वि.)	–	परित्यक्तम् (वि.)
पार्थिवः (पुँ.)	–	अपार्थिवः (पुँ.)
पूर्वार्द्धः (पुँ.)	–	उत्तरार्द्धः (पुँ.)
पौरुषम् (नपुं.)	–	स्त्रीत्वम् (नपुं.)
प्रबुद्धः (पुँ.)	–	बुद्धिहीनः (पुँ.)
प्रमेयम् (वि.)	–	अप्रमेयम् (वि.)
पक्षः (पुँ.)	–	विपक्षः (पुँ.)
पराजयः (पुँ.)	–	जयः (पुँ.)
पाश्चात्त्यः (वि.)	–	पौर्वात्त्यः (वि.)
परोक्षः (वि.)	–	प्रत्यक्षः (वि.)
प्राचीनम् (वि.)	–	अर्वाचीनम्/नवीनम् (वि.)
पण्डितः (पुँ.)	–	मूर्खः (पुँ.)
प्राप्त्याशा (स्त्री.)	–	दुराशा (स्त्री.)
पर्णकुटी (स्त्री.)	–	प्रासादः (पुँ.)
पतनम् (नपुं.)	–	उत्थानम् (नपुं.)
परम् (वि.)	–	अपरम् (वि.)
पुण्यम् (नपुं.)	–	पापम् (नपुं.)
परिमितम् (वि.)	–	अपरिमितम् (वि.)
प्रवरम् (वि.)	–	अवरम् (वि.)
पूर्वाह्णः (पुँ.)	–	अपराह्णः (पुँ.)
प्रवृत्तिः (स्त्री.)	–	निवृत्तिः (स्त्री.)
प्राची (स्त्री.)	–	प्रतीची (स्त्री.)
प्रशान्तः (पुँ.)	–	उद्भ्रान्तः (पुँ.)
प्रियोक्तिः (स्त्री.)	–	कटूक्तिः (स्त्री.)
प्रजातन्त्रम् (नपुं.)	–	राजतन्त्रम् (नपुं.)
पतनोन्मुखः (पुँ.)	–	विकासोन्मुखः (पुँ.)
प्रस्थानम् (नपुं.)	–	प्रवेशः (पुँ.)
प्रकाशः (पुँ.)	–	अन्धकारः (पुँ.)
प्रशंसकः (पुँ.)	–	निन्दकः (पुँ.)
फलम् (नपुं.)	–	निष्फलम् (नपुं.)

अनुलोमः	विलोमः
ब	
बन्धनम् (नपुं.)	– मोक्षः (पुँ.)
बोध्यम् (नपुं.)	– दुर्बोध्यम् (नपुं.)
बुद्धिमान् (पुँ.)	– बुद्धिहीनः (पुँ.)
बहु (वि.)	– अल्पः (वि.)
बहिः (अव्य.)	– अन्तः (वि.)
ब्रह्म (पुँ.)	– जीवः (पुँ.)
भ	
भर्त्ता (पुँ.)	– भार्या (स्त्री.)
भेदः (पुँ.)	– अभेदः (पुँ.)
भक्ष्यम् (वि.)	– अभक्ष्यम् (वि.)
भद्रम् (वि.)	– अभद्रम् (वि.)
भयम् (नपुं.)	– अभयम् (नपुं.)
भावः (पुँ.)	– अभावः (पुँ.)
भयाक्रान्तः (पुँ.)	– भयशून्यः (पुँ.)
भव्यम् (वि.)	– सामान्यम् (वि.)
भूमिका (स्त्री.)	– उपसंहारः (पुँ.)
भोग्यम् (वि.)	– अभोग्यम् (वि.)
भ्रामकः (पुँ.)	– निश्चयात्मकः (पुँ.)
भूगोलः (पुँ.)	– खगोलः (पुँ.)
भविष्यम् (वि.)	– भूतम् (वि.)
भौतिकः (पुँ.)	– आध्यात्मिकः (पुँ.)
भ्रान्तिः (स्त्री.)	– निर्भ्रान्तिः (स्त्री.)
म	
मङ्गलम् (वि.)	– अमङ्गलम् (वि.)
मन्दम् (अव्य.)	– शीघ्रम् (अव्य.)
मर्त्यः (पुँ.)	– अमर्त्यः (पुँ.)
महिमा (पुँ.)	– लघिमा (पुँ.)
मानवः (पुँ.)	– दानवः (पुँ.)
मधुरम् (वि.)	– कटुः (वि.)
मुखरः (पुँ.)	– तूष्णीकः (पुँ.)
मिथ्या (स्त्री.)	– सत्यम् (नपुं.)
मूर्खः (पुँ.)	– बुद्धिमान् (पुँ.)
मानम् (वि.)	– अपमानम् (वि.)
मूकः (पुँ.)	– वाचालः (पुँ.)
मृत्युः (पुँ.)	– जीवनम् (नपुं.)
महात्मा (पुँ.)	– दुरात्मा (पुँ.)
मित्रम् (नपुं.)	– शत्रुः (पुँ.)

अनुलोमः	विलोमः
मितव्ययः (पुँ.)	– अपव्ययः (पुँ.)
मनःस्थैर्यम् (नपुं.)	– मनःदौर्बल्यम् (नपुं.)
मतैक्यम् (नपुं.)	– मतभेदः (पुँ.)
महायोगी (पुँ.)	– महाभोगी (पुँ.)
मुक्तिः (स्त्री.)	– बन्धनम् (नपुं.)
मलिनम् (वि.)	– पवित्रम् (वि.)
य	
योगी (पुँ.)	– भोगी (पुँ.)
यौवनम् (नपुं.)	– वार्धक्यम् (नपुं.)
यशः (नपुं.)	– अपयशः (नपुं.)
यद्यपि (अव्य.)	– तथापि (अव्य.)
यथार्थः (वि.)	– काल्पनिकः (वि.), कल्पितः (वि.)
यादृशः (वि.)	– तादृशः (वि.)
र	
रात्रिः (स्त्री.)	– दिनम् (नपुं.)
राजा (पुँ.)	– रानी (स्त्री.)
रिक्तः (वि.)	– पूर्णम् (वि.)
राष्ट्रप्रेम (नपुं.)	– राष्ट्रद्रोहः (पुँ.)
रुग्णः (वि.)	– नीरोगी (पुँ.)
रसवान् (पुँ.)	– नीरसः (पुँ.)
रुचिः (स्त्री.)	– अरुचिः (स्त्री.)
ल	
लङ्घनीयः (वि.)	– अलङ्घनीयः (वि.)
लाभः (पुँ.)	– हानिः (पुँ.)
लिप्तः (वि.)	– अलिप्तः (वि.)
लक्ष्यम् (नपुं.)	– निर्लक्ष्यम् (नपुं.)
लौकिकम् (वि.)	– अलौकिकम् (वि.)
लज्जावान् (पुँ.)	– निर्लज्जः (पुँ.)
व	
वाचालः (पुँ.)	– मूकः (पुँ.)
वादी (पुँ.)	– प्रतिवादी (पुँ.)
वाग्मी (वि.)	– मितभाषी (वि.)
वृद्धः (पुँ.)	– बालकः (पुँ.)
विजयः (पुँ.)	– पराजयः (पुँ.)
विपद् (स्त्री.)	– सम्पद् (स्त्री.)
विपुलः (पुँ.)	– न्यूनः (पुँ.)
विश्लेषणम् (नपुं.)	– संश्लेषणम् (नपुं.)
विशेषम् (वि.)	– सामान्यम् (वि.)

अनुलोमः	विलोमः
विधवा (स्त्री.)	– सधवा (स्त्री.)
वरिष्ठः (वि.)	– कनिष्ठः (वि.)
विहितः (वि.)	– निषेधः (वि.)
विदेशी (पुँ.)	– स्वदेशी (पुँ.)
वन्दनीयः (वि.)	– निन्दनीयः (वि.)
विभाज्यम् (वि.)	– अविभाज्यम् (वि.)
विश्रान्तः (वि.)	– श्रान्तः (वि.)
वैषम्यम् (वि.)	– साम्यम् (वि.)
वीरः (पुँ.)	– कायरः (पुँ.)
व्यष्टिः (स्त्री.)	– समष्टिः (स्त्री.)
विकारी (पुँ.)	– अविकारी (पुँ.)
विशिष्टम् (वि.)	– सामान्यम् (वि.)
विश्वसनीयः (वि.)	– अविश्वसनीयः (वि.)
वैयक्तिकः (पुँ.)	– सार्वजनिकः (पुँ.)
वैमनस्यः (पुँ.)	– मैत्री (स्त्री.)
व्यस्तः (पुँ.)	– अव्यस्तः (पुँ.)
विषम् (नपुं.)	– अमृतम् (नपुं.)
विस्तृतम् (वि.)	– संक्षिप्तम् (वि.)
व्ययः (पुँ.)	– आयः (पुँ.)

श

अनुलोमः	विलोमः
शत्रुः (पुँ.)	– मित्रम् (नपुं.)
शुभम् (वि.)	– अशुभम् (वि.)
शुक्लः (वि.)	– कृष्णः (वि.)
शीतलम् (वि.)	– उष्णम् (वि.)
शेषम् (वि.)	– अशेषम् (वि.)
शयनम् (वि.)	– जागरणम् (वि.)
शापितः (वि.)	– शापमुक्तः (वि.)
शासकः (वि.)	– शासितः (वि.)
शिक्षितः (वि.)	– अशिक्षितः (वि.)
शिष्टाचारः (पुँ.)	– अशिष्टाचारः (पुँ.)
शिष्टः (वि.)	– अशिष्टः (वि.)
श्लिष्टः (वि.)	– अश्लिष्टः (वि.)
शापः (पुँ.)	– आशीर्वादः (पुँ.)
शुष्कम् (वि.)	– आर्द्रम् (वि.)
शरीरी (पुँ.)	– अशरीरी (पुँ.)
शीघ्रता (स्त्री.)	– विलम्बम् (नपुं.)
शूरः (पुँ.)	– कायरः (पुँ.)
शोकः (पुँ.)	– आनन्दः (पुँ.)
शोषणम् (नपुं.)	– पोषणम् (नपुं.)
श्वासः (पुँ.)	– प्रश्वासः (पुँ.)

स

अनुलोमः	विलोमः
संस्कृतम् (वि.)	– असंस्कृतम् (वि.)
सभ्यः (वि.)	– असभ्यः (वि.)
संकल्पः (पुँ.)	– विकल्पः (पुँ.)
संक्षिप्तम् (नपुं.)	– विस्तृतम् (नपुं.)
सापेक्षः (पुँ.)	– निरपेक्षः (पुँ.)
सुसङ्गतिः (स्त्री.)	– कुसङ्गतिः (स्त्री.)
सङ्घटनम् (नपुं.)	– विघटनम् (नपुं.)
सञ्ज्ञावान् (पुँ.)	– सञ्ज्ञाहीनः (पुँ.)
सरलम् (वि.)	– कठिनम् (वि.)
सन्दिग्धः (वि.)	– असन्दिग्धः (वि.)
सन्धिः (पुँ.)	– वियोगः (पुँ.), विग्रहः (पुँ.)
सम्पत्तिः (स्त्री.)	– विपत्तिः (स्त्री.)
सम्भावितम् (वि.)	– असम्भावितम् (वि.)
संयोगः (पुँ.)	– वियोगः (पुँ.)
सङ्कीर्णः (पुँ.)	– विस्तारः (पुँ.)
सङ्गः (पुँ.)	– निःसङ्गः (पुँ.)
संग्रहः (पुँ.)	– विग्रहः (पुँ.)
सन्तः (पुँ.)	– असन्तः (पुँ.)
सन्देहः (पुँ.)	– निःसन्देहः (पुँ.)
सम्पूर्णम् (वि.)	– अपूर्णम् (वि.)
सम्भेद्यम् (वि.)	– अभेद्यम् (वि.)
स्तुतिः (स्त्री.)	– निन्दा (स्त्री.)
स्वीकारः (पुँ.)	– अस्वीकारः (पुँ.)
साक्षरः (वि.)	– निरक्षरः (वि.)
साकारः (वि.)	– निराकारः (वि.)
समः (वि.)	– विषमः (वि.)
सम्भवम् (वि.)	– असम्भवम् (वि.)
समर्थः (वि.)	– असमर्थः (वि.)
सजीवम् (वि.)	– निर्जीवम् (वि.)
सत्यम् (नपुं.)	– असत्यम् (नपुं.)
सूक्ष्मम् (वि.)	– विराटम् (वि.)
सृष्टिः (स्त्री.)	– प्रलयः (पुँ.)
स्वर्गः (पुँ.)	– नरकः (पुँ.)
सार्थकः (वि.)	– निरर्थकः (वि.)
सुगन्धः (वि.)	– दुर्गन्धः (वि.)
संस्कारः (पुँ.)	– असंस्कारः (पुँ.)
सुगमः (वि.)	– दुर्गमः (वि.)
सङ्कलनम् (नपुं.)	– व्यकलनम् (नपुं.)
सगुणः (वि.)	– निर्गुणः (वि.)

अनुलोमः		विलोमः
स्वस्थः (पुँ.)	–	अस्वस्थः (पुँ.)
सधवा (स्त्री.)	–	विधवा (स्त्री.)
संयोगः (पुँ.)	–	वियोगः (पुँ.)
सकामम् (वि.)	–	निष्कामम् (वि.)
स्थावरः (वि.)	–	जङ्गमः (वि.)
स्त्री (स्त्री.)	–	पुरुषः (पुँ.)
संयमः (वि.)	–	असंयमः (वि.)
संरक्षितः (वि.)	–	असंरक्षितः (वि.)
संस्थापनम् (नपुं.)	–	विस्थापनम् (नपुं.)
स्वकीया (स्त्री.)	–	परकीया (स्त्री.)
समासः (पुँ.)	–	व्यासः (पुँ.)
सात्त्विकः (वि.)	–	तामसिकः (वि.)
सुकालः (वि.)	–	अकालः (वि.)
सजलम् (वि.)	–	निर्जलम् (वि.)
संग्रहः (पुँ.)	–	अपरिग्रहः (पुँ.)
समादृतः (वि.)	–	निरादृतः (वि.)
सापेक्षः (वि.)	–	निरपेक्षः (वि.)
सुमार्गी (पुँ.)	–	कुमार्गी (पुँ.)
सुमतिः (स्त्री.)	–	कुमतिः (स्त्री.)
समाधानम् (नपुं.)	–	अवधानम् (नपुं.)
सरलम् (वि.)	–	कठिनम् (वि.)
सदाचारः (वि.)	–	दुराचारः (वि.)
सुबुद्धिः (स्त्री.)	–	दुर्बुद्धिः (स्त्री.)
स्पष्टम् (वि.)	–	अस्पष्टम् (वि.)
स्वल्पायुः (पुँ.)	–	दीर्घायुः (पुँ.)
सूर्योदयः (पुँ.)	–	सूर्यास्तः (पुँ.)
सत्कारः (वि.)	–	तिरस्कारः (वि.)
सुधा (स्त्री.)	–	गरलम् (नपुं.)
सच्चरित्रम् (वि.)	–	दुश्चरित्रम् (वि.)
स्वतन्त्रता (स्त्री.)	–	परतन्त्रता (स्त्री.)
सत् (वि.)	–	असत् (वि.)
सम्मुखम् (वि.)	–	विमुखम् (वि.)
सुयोगः (पुँ.)	–	कुयोगः (पुँ.)
समर्थनम् (वि.)	–	विरोधः (वि.)
स्वाभाविकः (वि.)	–	अस्वाभाविकः (वि.)
स्वदेशः (पुँ.)	–	परदेशः (पुँ.)
सामिषम् (वि.)	–	निरामिषम् (वि.)
सगुणः (वि.)	–	निर्गुणः (वि.)
सर्वज्ञः (वि.)	–	अल्पज्ञः (वि.)

ह

अनुलोमः		विलोमः
हितम् (वि.)	–	अहितम् (वि.)
हर्षः (पुँ.)	–	विषादः (पुँ.)
ह्रस्वः (वि.)	–	दीर्घः (वि.)
हानिप्रदः (वि.)	–	लाभप्रदः (वि.)
ह्रासः (पुँ.)	–	वृद्धिः (स्त्री.)
हताशः (पुँ.)	–	आशावान् (पुँ.)

क्ष

अनुलोमः		विलोमः
क्षतम् (वि.)	–	अक्षतम् (वि.)
क्षमता (स्त्री.)	–	अक्षमता (स्त्री.)
क्षणिकम् (वि.)	–	शाश्वतम् (वि.)
क्षुण्णः (वि.)	–	अक्षुण्णः (वि.)
क्षुद्रः (वि.)	–	महान् (वि.)
ज्ञानी (पुँ.)	–	अज्ञानी (पुँ.)

श्र

अनुलोमः		विलोमः
श्रीगणेशः (पुँ.)	–	इतिश्रीः (स्त्री.)
श्रमः (पुँ.)	–	विश्रामः (पुँ.)
श्रोता (पुँ.)	–	वक्ता (पुँ.)
श्रद्धा (स्त्री.)	–	घृणा (स्त्री.)
श्रव्यः (वि.)	–	अश्रव्यः (वि.)
श्रुतम् (वि.)	–	अश्रुतम् (वि.)

❑❑

शरीर अंगों के नाम, घर, परिवार, परिवेश, पशु, पक्षी एवं घरेलू उपयोग की वस्तुओं के संस्कृत नाम

शरीर के अंगों के नाम

हिन्दी	संस्कृत
अंग	– अङ्गम् (नपुं.), अवयवः (पुँ.)
अँजली	– अञ्जलिः (स्त्री.)
अण्डकोष	– वृषणः, मुष्कः (पुँ.)
अस्थिपञ्जर	– कङ्कालः (पुँ.)
आँख	– नेत्रम्,लोचनम्, नयनम्, चक्षुः (नपुं.)
आँत	– अन्त्रम् (नपुं.)
आँसू	– अश्रु, अस्रम्, नेत्रवाष्पम् (नपुं.)
आँख का कीचड़	– इषिका, दूषिका (स्त्री.), अक्षिमलम् (नपुं.)
आँख की पुतली	– कनीनिका, तारका (स्त्री.)/नेत्रगोलकम् (नपुं.)
आँख का कोना	– अपाङ्गः (पुँ.)
अँगुली	– अङ्गुलिः, करशाखा (स्त्री.)
अंगूठा	– अङ्गुष्ठः (पुँ.)
अँगूठे के पास की अँगुली	– तर्जनी, प्रदेशिनी (स्त्री.)
इन्द्रिय	– करणम्, इन्द्रियम् (नपुं.)
ओठ	– ओष्ठः (पुँ.)
एड़ी	- पार्ष्णिः (पु./स्त्री.), एडुकम् (नपुं.)
कण्ठ	– कण्ठः (पुँ.)
कन्धा	– स्कन्धः, अंसः (पुँ.)
कन्धे की हड्डी	– जत्रु (नपुं.)
कमर	– कटिः, श्रोणिः (स्त्री.)
कंकाल	– कङ्कालः (पुँ.)
कनपटी	– हनुः (पुँ.)/हनू (स्त्री.), गण्डस्थलः (पुँ.)
कलाई	– मणिबन्धः (पुँ.), कलाचिका (स्त्री.)
कलेजा	– वृक्कम्/अग्रमांसम्, हृद् (नपुं.), बुक्कः (पुँ.)
काँख	– कक्षान्तरम् / कक्षः, बाहुमूलम् (नपुं.)
कान	– कर्णः (पुँ.), श्रोत्रम् , श्रवणम् (नपुं.)
कूला	– कटिप्रोक्षः, कटिप्रोथः (पुँ.)
कूबड़	– कुब्जः (पुँ.)
कोहनी	– कफोणिः (स्त्री.)/कूर्परः (पुँ.)

हिन्दी	संस्कृत
खाल	– त्वच् (स्त्री.)
खून	– रक्तम्/रुधिरम्/शोणितम् (नपुं.)
खोपड़ी	– कपालः, खपरः (पुँ.), मस्तकम् (नपुं.)
गर्दन	– ग्रीवा (स्त्री.)/शिरोधरः (पुँ.)
गला	– कण्ठः/गलः (पुँ.)
गंजा	– खल्वाटः (पुँ.)
गंजी	– खल्वाटा (स्त्री.)
ग्रन्थि (गाँठ)	– ग्रन्थिः (स्त्री.)
गाल	– कपोलः, गण्डः (पुँ.)
गुदा	– गुदम्/मलद्वारम्/ अपानम् (नपुं.)
गुर्दा	– वृक्कः (पुँ.)
गोद	– क्रोडम् (नपुं.)/अङ्कः/ उत्सङ्गः (पुँ.)
घुटना	– जानु (नपुं.)
घुंघराले बाल	– अलकः/चूर्णकुन्तलः (पुँ.)
चरण (पैर)	– चरणः (पुँ.) पा
चर्बी	– मेदः (पुँ.)/वसा (स्त्री.)/वपा (स्त्री.)
चिकोटी	– नखक्षतम् (नपुं.)
चुटकी	– छोटिका, अङ्गुलिध्वनिः (स्त्री.)
चूतड़	– नितम्बः (पुँ.)/स्फिक् (स्त्री.)
चोटी	– शिखा, चूडा (स्त्री.)
छाती	– वक्षस्थलम् (नपुं.), वक्षः, उरः
छोटी अँगुली के पास की अँगुली	– अनामिका (स्त्री.)
जटा	– जटा, सटा (स्त्री.)
जबड़ा	– सृक्कणी (नपुं.)
जाँघ	– जङ्घा (स्त्री.)/ऊरुः (पुँ.), जघनम् (नपुं.)
जिगर	– यकृतम्/कालेयम् (नपुं.)
जीभ	– जिह्वा/रसना (स्त्री.)
जूड़ा	– वेणिः (स्त्री.)
टुड्डी	– चिबुकम्/हनुः (नपुं.)
टेढ़ी भौं	– भृकुटिः (स्त्री.)
तलवा	– तलः (पुँ.), पादतलम् (नपुं.)
ताली	– करतलध्वनिः (पुँ.)/तालः (पुँ.)
तालु	– तालु/काकुदम् (नपुं.)
त्यौरी	– मस्तकावलिः, मस्तकरेखा (स्त्री.)

हिन्दी	संस्कृत
तोंद	– तुन्दम् (नपुं.)
तोंद के बीच छिद्र	– नाभिः (स्त्री.)
थप्पड़	– चपेटा (स्त्री.)/चर्पटः (पुँ.)
थूक (खखार)	– निष्ठ्यूतिः (स्त्री.)/निष्ठ्यूतम् (नपुं.)
दाढ़	– दंष्ट्रा (स्त्री.)
दाढ़ी	– श्मश्रु (नपुं.)/दाढिका (स्त्री.)/ कूर्चम् (नपुं.)
दाँत	– दन्तः, रदनः,दशनः (पुँ.)
दिल	– हृदयम् (नपुं.)
दिमाग	– मस्तिष्कम् (नपुं.)
दिमागी	– मानसिकः/बौद्धिकः (पुँ.)
नरम	– मृदु (वि.), कोमलम् (नपुं.)
नस	– रक्तवाहिनी, शिरा, स्नायुः, धमनी (स्त्री.)
नाखून	– नखः, करजः(पुँ.),नखम् (नपुं.)
नाक	– नासिका (स्त्री.), घ्राणम् (नपुं.)
नाक के छेद	– नासारन्ध्रम्/नासिक्यम् (नपुं.)
नाड़ी	– स्नायुः (पुँ.), नाडी, नाडिः, धमनी (स्त्री.)
नेत्र	– नेत्रम् (नपुं.)
पंजड़ी	– पर्शुका (स्त्री.)
पंजा	– पञ्चाङ्गुलम् (नपुं.)
पलक	– नेत्ररोमन्/पक्ष्म (नपुं.)
पसीना	– स्रवणम् (नपुं.)/स्वेदः, प्रस्वेदः (पुँ.)
पीठ	– पृष्ठम् (नपुं.), पृष्ठदेशः (पुँ.)
पेट	– उदरम्, जठरम् (नपुं.)
पैर	– पादः/चरणः/अङ्घ्रिः (पुँ.)
पैर का टखना	– गुल्फः (पुँ.)
प्लीहा	– गुल्मः (पुँ.)
फेफड़ा	– फुफ्फुसम् (नपुं.)
बस्ति	– मूत्रपुटम् (नपुं.)
बाल	– केशः/कचः (पुँ.), शिरोरुहः (वि.)
बाँह	– बाहुः (पुँ.)/भुजा (स्त्री.), भुजः (पुँ.)
बीच की अँगुली	– मध्यमा (स्त्री.)
बुद्धि	– बुद्धिः, प्रज्ञा, मनीषा, धीः (स्त्री.)
भौंह	– भ्रूः (स्त्री.)
भौंह का मध्य भाग	– कूर्चम् (नपुं.)
भुजा	– बाहुः (पुँ.)

हिन्दी	संस्कृत
मल	– मलम् (नपुं.)/विष्ठा (स्त्री.), पुरीषम् (नपुं.)
मन	– मनः,चित्तम् , स्वान्तम्, मानसम् (नपुं.)
मसूड़ा	– काकुदम् , दन्तमूलम् (नपुं.)
माथा	– ललाटम् , मस्तकम्
माँग	– सीमन्तः (पुँ.)
माँस	– मांसम्/पिशितम्/ आमिषम् (नपुं.)
माँसपेशी	– मांसपेशिका (स्त्री.)
मुख	– मुखम्,आननम्, वक्त्रम् (नपुं.)
मुट्ठी	– मुष्टिका/मुष्टिः (स्त्री.)
मूँछ	– मुच्छः/गुम्फः (पुँ.)/गण्डलोमन् (नपुं.)
मूत्राशय	– वस्तिः (पु., स्त्री.)
मूत्र	– मूत्रम् (नपुं.)/प्रस्रावः (पुँ.)
योनि	– योनिः (स्त्री.)/भगः (पुँ.)
रज	– रजः (नपुं.)
रीढ़	– कशेरुका (स्त्री.), पृष्ठास्थि (नपुं.)
रोएं	– रोमः (पुँ.)
लार	– लाला (स्त्री.), स्यन्दिनी (स्त्री.)
लिंग	– लिङ्गम् (नपुं.), शिशनः, मेढ्रः (पुँ.)
वीर्य	– वीर्यम् /शुक्रम् (नपुं.)
शरीर	– गात्रम्,शरीरम् (नपुं.), देहः, कायः (पुँ.)
शरीर का तिल	– क्लोमन् (नपुं.)
सफेद बाल	– पलितम् (नपुं.),श्वेतकचः (पुँ.)
सबसे छोटी अँगुली	– कनिष्ठिका (स्त्री.)
सिर	– मस्तकः (पुँ.), शीर्षम्, शिरः (नपुं.)
स्तन	– पयोधरः, स्तनः,उरोजः (पुँ.)
स्तन का अग्रभाग	– चूचुकम्, कुचाग्रम् (नपुं.), कुचः (पुँ.)
स्त्रियों की जाँघ	– जघनम् (स्त्री.)
हड्डियों का ढाँचा	– अस्थिपञ्जरः (पुँ.)
हड्डी	– अस्थि, कीकसम् (नपुं.)
हड्डी के अन्दर की चर्बी	– मज्जा (स्त्री.)
हथेली	– करतलम् (नपुं.),प्रहस्तः (पुँ.)
हाथ	– हस्तः/करः (पुँ.)
हृदय	– हृदयम् (नपुं.)

बन्धुबान्धवानां नामानि
(बन्धु–बान्धवों के नाम)

हिन्दी	संस्कृत
अतिथि	– अतिथिः, अभ्यागतः (पुँ.)
पिता	– पिता/जनकः/तातः (पुँ.)

हिन्दी		संस्कृत
अम्मा	–	अम्बा/माता/जननी (स्त्री.)
भाई	–	भ्राता (पुँ.)
बड़ा भाई	–	अग्रजः (पुँ.)
छोटा भाई	–	अनुजः (पुँ.)
सगा भाई	–	सहोदरः (पुँ.)
चचेरा भाई	–	पितृव्यपुत्रः/पितृव्यजः (पुँ.)
ममेरा भाई	–	मातुलपुत्रः/मातुलेयः (पुँ.)
फुफेरा भाई	–	पैतृष्वस्रीयः/पैतृष्वसेयः (पुँ.)
मौसेरा भाई	–	मातृष्वस्रीयः/मातृष्वसेयः (पुँ.)
सौतेला भाई	–	विमातृजः (पुँ.)
बहिन	–	भगिनी/स्वसा/सोदर्या (स्त्री.)
बड़ी बहिन (दीदी)	–	अत्तिका/अग्रजा (स्त्री.)
छोटी बहिन	–	अनुजा (स्त्री.)
सगी बहिन	–	सहोदरा (स्त्री.)
पति	–	पतिः/भर्ता/वरः (पुँ.)
पत्नी	–	अर्धाङ्गिनी/पत्नी/भार्या/ जाया (स्त्री.)
चाचा	–	पितृव्यः/तातकः (पुँ.)
चाची	–	पितृव्या, पितृव्याणी, पितृव्यपत्नी (स्त्री.)
बड़े पापा	–	प्रतातः,ज्येष्ठतातः (पुँ.)
बड़ी अम्मा	–	ज्येष्ठाम्बा,अम्बाला,प्राम्बा (स्त्री.)
मामा	–	मातुलः (पुँ.)
मामी	–	मातुली,मातुलानी (स्त्री.)
फूफा	–	पितृष्वसृपतिः (पुँ.)
बुआ (फुफू)	–	पितृष्वसा (स्त्री.)
मौसा	–	मातृष्वसृपतिः (पुँ.)
मौसी	–	मातृष्वसा (स्त्री.)
भौजी	–	भ्रातृजाया/प्रजावती/भामिनी (स्त्री.)
साला	–	श्यालः (पुँ.)
साला-पुत्र	–	श्यालजः (पुँ.)
सरहज	–	श्यालिनी/श्यालपत्नी (स्त्री.)
साली	–	श्याली/श्यालिका (स्त्री.)
साढ़ू	–	श्यालिपतिः, सढोकः (पुँ.)
बहनोई	–	आवुत्तः/भगिनीपतिः (पुँ.)
देवर	–	देवरः, देवा (पुँ.)
देवरानी	–	याता (स्त्री.)

हिन्दी		संस्कृत
जेठ	–	ज्येष्ठः, पत्यग्रजः (पुँ.)
जेठानी	–	ज्येष्ठा (स्त्री.)
ननद	–	ननान्दा (स्त्री.)
नन्दोई	–	ननान्दृपतिः (पुँ.)
समधी	–	सम्बन्धी (पुँ.)
समधिन	–	सम्बन्धिनी (स्त्री.)
सास	–	श्वश्रूः (स्त्री.)
ससुर	–	श्वसुरः (पुँ.)
दामाद	–	जामाता (पुँ.)
पतोहू	–	पुत्रवधूः, स्नुषा (स्त्री.)
बेटा	–	पुत्रः,तनयः, सुतः, आत्मजः (पुँ.)
सगा बेटा	–	औरसः,उरस्यः (पुँ.)
बेटी	–	पुत्री, तनया,सुता,आत्मजा (स्त्री.)
धेवता (नाना का नाती)	–	दौहित्रः/नप्ता (पुँ.)
धेवती (नाना की नातिन)	–	दौहित्री/नप्त्री (स्त्री.)
पोता	–	पौत्रः (पुँ.)
पोती	–	पौत्री (स्त्री.)
परपोता	–	प्रपौत्रः (पुँ.)
परपोती	–	प्रपौत्री (स्त्री.)
भतीजा	–	भ्रातृव्यः/भ्रातृजः/ भ्रात्रीयः (पुँ.)
भतीजी	–	भ्रातृसुता/भ्रातृव्या/भ्रातृजा (स्त्री.)
भानजा	–	भागिनेयः/स्वस्रीयः (पुँ.)
भानजी	–	भागिनेयी/स्वस्रीया (स्त्री.)
बाबा (दादा)	–	पितामहः (पुँ.)
दाई (दादी)	–	पितामही (स्त्री.)
परदादा	–	प्रपितामहः (पुँ.)
परदादी	–	प्रपितामही (स्त्री.)
नाना	–	मातामहः (पुँ.)
नानी	–	मातामही (स्त्री.)
परनाना	–	प्रमातामहः (पुँ.)
परनानी	–	प्रमातामही (स्त्री.)
यार (प्रेमी)	–	जारः/उपपतिः/प्रेमी (पुँ.)
प्रेमिका	–	प्रेमिका/उपपत्नी (स्त्री.)
दोस्त	–	सखा/मित्रम् (नपुं.)/वयस्यः/ सुहृद् (वि.) / सार्थी (पुँ.)
सहेली	–	आलिः/वयस्या/सखी/सहचरी (स्त्री.)

हिन्दी		संस्कृत
मालिक	–	स्वामी (पुँ.)
नौकर	–	भृत्यः/सेवकः/परिचारकः (पुँ.)
नौकरानी	–	भृत्या/सेविका/परिचारिका (स्त्री.)
आदमी	–	मनुष्यः,नरः, मानवः (पुँ.)
मर्द	–	पुरुषः (पुँ.)
महिला	–	महिला, ललना, नारी, स्त्री (स्त्री.)
औरत	–	महिला (स्त्री.)
जवान स्त्री	–	युवती/युवतिः (स्त्री.)
कामेच्छु स्त्री	–	कामुकी (स्त्री.)
प्रेमी से मिलने वाली स्त्री	–	अभिसारिका (स्त्री.)
जिसका पति मर गया हो	–	विधवा, मृतभर्तृका (स्त्री.)
जिसका पति जीवित हो	–	सधवा, सनाथा, सौभाग्यवती (स्त्री.)
जिसकी पत्नी मर गयी हो	–	विधुरः (पुँ.)
जिसकी पत्नी जीवित हो	–	सपत्नीकः (पुँ.)
स्वयं पति को चुनने वाली	–	स्वयंवरा (स्त्री.)
सुहागिन स्त्री	–	सौभाग्यवती स्त्री (स्त्री.)
पतिव्रता स्त्री	–	पतिव्रता/साध्वी/ सच्चरित्रा (स्त्री.)
वेश्या	–	वेश्या/गणिका/ पण्याङ्गना (स्त्री.)
कुँवारी कन्या का पुत्र	–	कानीनः (पुँ.)
खानदानी	–	सगोत्रः (पुँ.)
पति-पत्नी	–	दम्पती (पुँ., द्विव0)
रिश्तेदार / सम्बन्धी	–	ज्ञातिः, बन्धुः (पुँ.)
दुलारा	–	प्रियः (वि.), दुर्लालितः (पुँ.)

पशूनां नामानि (पशुओं के नाम)

हिन्दी		संस्कृत
ऊँट	–	उष्ट्रः/क्रमेलकः (पुँ.)
ऊँटनी	–	उष्ट्री, वागी, लम्बोष्ठी (स्त्री.)
ऊदबिलाव	–	उदविडालः (पुँ.)
एक वर्ष ब्याई गाय	–	गृष्टिः (स्त्री)
काला हरिण	–	कृष्णसारः (पुँ.)
कुत्ता	–	कुक्कुरः सारमेयः, श्वानः (पुँ.)
कुतिया	–	कुक्कुरी, शुनी, सरमा (स्त्री.)
कछुआ	–	कच्छपः, कूर्मः (पुँ.)
खच्चर	–	खच्चरः, अश्वतरः (पुँ.)
खरगोश	–	शशकः,शशः (पुँ.)
खेखर	–	खिङ्खिरिः (पुँ.)
गधा	–	गर्दभः/खरः/ रासभः (पुँ.)
गधी	–	गर्दभी, खरी (स्त्री.)
गाय	–	गौः/धेनुः (स्त्री.)
गिलहरी	–	वृक्षशायिका (स्त्री.)/चिक्रोडः/ वृक्षमार्जारः/ काष्ठमार्जारः/ चमरपुच्छः (पुँ.)
गीदड़ (सियार)	–	शृगालः, गोमायुः, शिवालुः (पुँ.)
गीदड़ी (सियारिन)	–	शृगाली, शिवा (स्त्री.)
गैंडा	–	गण्डकः/खड्गः/ गण्डः/ खड्गमृगः (पुँ.)
गोह	–	गोधा/गोधिका (स्त्री.)
घड़ियाल	–	ग्राहः (पुँ.)
घोड़ा	–	अश्वः, घोटकः, तुरगः,घोटकः, हयः, वाजी (पुँ.)
घोड़ी	–	अश्वा/घोटिका/ बडवा (स्त्री.)
घोड़े का बच्चा	–	किशोरः (पुँ.)
चीता	–	चित्रकायः/शार्दूलः/ चित्रकः (पुँ.)
तेन्दुआ	–	तरक्षुः (पुँ.)
नीलगाय	–	गवयः, गवयी, वनधेनुः (पुँ.)
नेवला	–	नकुलः (पुँ.)
पूँछ	–	पुच्छः, लाङ्गूलम् (नपुं.)
बकरा	–	अजः,छागः (पुँ.)
बकरी	–	अजा, छागी (स्त्री.)
बछड़ा	–	वत्सः, तर्णकः (पुँ.)
बाघ	–	व्याघ्रः,द्वीपी, शार्दूलः (पुँ.)
बाघिन	–	व्याघ्री (स्त्री.)
बारहसिंगा	–	शम्बरः (पुँ.)
बन्दर	–	वानरः, कपिः, शाखामृगः, कीशः (पुँ.)
बँदरिया	–	वानरी (स्त्री.)
बिलाव	–	बिडालः/मार्जारः (पुँ.)
बिल्ली	–	बिडाली/मार्जारी (स्त्री.)
बैल	–	वृषभः, बलदः, बलीवर्दः (पुँ.)
बैल का कूबड़	–	ककुदः (पुँ.), ककुद् (स्त्री.)
भालू	–	भल्लूकः, ऋक्षः,भालूकः (पुँ.)
भेड़	–	मेषः/एडकः/ ऊर्णायुः (पुँ.)
भेड़िया	–	वृकः, इहामृगः (पुँ.)
भैंसा	–	महिषः, कलुषः (पुँ.)

हिन्दी		संस्कृत
भैंस	–	महिषी, कलुषा (स्त्री.)
रीछ	–	ऋक्षः (पुँ.)
रोज	–	रुरुः (पुँ.)
लँगूर	–	लाङ्गुलिन् (पुँ.)
लोमड़ी	–	लोमशा, लोमाली (स्त्री.) लोमशः (पुँ.)
शेर	–	सिंहः, केसरी, मृगेन्द्रः, वनाधिपः (पुँ.)
साही	–	शल्लकी (स्त्री.), शल्यः, शल्यकः (पुँ.)
साँड	–	बलीवर्दः, गोपतिः,षण्डः, वृषभः (पुँ.)
सुअर	–	शूकरः/वराहः (पुँ.)
सूअरी	–	वराही, शूकरी (स्त्री.)
हिरन	–	हरिणः/मृगः/ कुरङ्गः (पुँ.)
हिरनी	–	हरिणी/मृगी (स्त्री.)
हथिनी	–	हस्तिनी, करिणी (स्त्री.)
हाथी	–	गजः, हस्ती, करी, कुञ्जरः (पुँ.)
हाथी का बच्चा	–	कलभः/करिशावकः (पुँ.)

पक्षीणां नामानि
(पक्षियों के नाम)

हिन्दी		संस्कृत
अण्डा	–	अण्डम् (नपुं.), कोषः(पुँ.)
अबाबील	–	कृष्णचटका (स्त्री.)
उल्लू	–	उलूकः,कौशिकः, घूकः, दिवान्धः (पुँ.)
कबूतर	–	कपोतः, पारावतः (पुँ.)
कबूतरी	–	कपोती (स्त्री.)
कुरर	–	कुररः (पुँ.)
कोयल	–	कोकिलः/पिकः परभृतः (पुँ.)
कौआ	–	काकः, वायसः, ध्वांक्षः (पुँ.)
क्रौञ्च	–	क्रौञ्चः, खञ्जरीटः (पुँ.)
खञ्जन	–	खञ्जनः (पुँ.)
खुटकपरिया (कठफोड़वा)	–	दार्वाघाटः/काष्ठकुट्टः (पुँ.)
गरुण	–	गरुणः (पुँ.)
गिरगिट	–	कृकलासः (पुँ.)
गीध	–	गृध्रः (पुँ.)
घोंसला	–	नीडम् (नपुं.), कुलायः, खगालयः (पुँ.)
चकवा	–	चक्रवाकः, चक्रकोकः (पुँ.)
चकवी	–	चक्रवाकी (स्त्री.)
चकोर	–	चकोरः, चन्द्रिकापायी (पुँ.)
चमगादड़	–	जतुका, अजिनपत्रा (स्त्री.)
चिड़िया (गौरैया)	–	चटका (स्त्री.)
चिरौटा (नरचिड़िया)	–	चटकः, कलविङ्कः (पुँ.)
चील	–	चिल्लः, चिल्ला, आतापी (पुँ.)
चोंच	–	चञ्चुः,त्रोटिः (स्त्री.)
छोटी मक्खी	–	लघुमक्षिका (स्त्री.)
जलकौआ	–	कारण्डवः,मरुलः (पुँ.)
टिड्डी	–	षट्चरणः/शलभः (पुँ.)
टिटहरी	–	टिट्टिभी (स्त्री.)
टिटहरा	–	टिट्टिभः (पुँ.)
तीतर	–	तित्तिरः (पुँ.)
तोता	–	शुकः/कीरः (पुँ.)
नीलकण्ठ	–	नीलकण्ठः, चाषः (पुँ.)
पक्षी	–	पक्षी, खगः, विहगः, विहङ्गमः (पुँ.)
पंख	–	पक्षः (पुँ.), डयनम्, पत्रम् (नपुं.)
पण्डुक (पनडुब्बी)	–	श्वेतकपोतः (पुँ.)
पपीहा	–	चातकः, सारङ्गः (पुँ.)
पपीहिन	–	चातकी (स्त्री.)
पिंजड़ा	–	पञ्जरम् (नपुं.)
बगुला	–	बकः, कह्वः (पुँ.)
बटेर	–	लावः, लावकः (पुँ.)
बतख	–	वर्तकः (पुँ.)
बुलबुल	–	बुलबुलः (पुँ.)
मादा बतख	–	वर्तिका (स्त्री.)
बया	–	सुगृहः/चञ्चूसूचकः (पुँ.)
बाज	–	श्येनः, शशादनः (पुँ.)
भरदूल	-	भारद्वाजः, व्याघ्राटः (पुँ.)
मुर्गा	–	कुक्कुटः, ताम्रचूडः, चरणायुधः (पुँ.)
मुर्गी	–	कुक्कुटी (स्त्री.)
मैना	–	सारिका, शारिका, मदना, चित्रलोचना (स्त्री.)
मोर	–	मयूरः, बर्हिन्, शिखी (पुँ.)
मोर की पँख	–	पिच्छम् , बर्हः (पुँ.)
मोर की कलँगी	–	शिखा, चूडा (स्त्री.)

हिन्दी		संस्कृत
मोरनी	–	मयूरी (स्त्री.)
लावापक्षी	–	भरद्वाजः (पुँ.)
सारस	–	सारसः, पुष्कराहवः (पुँ.)
सारसी	–	लक्ष्मणा, सारसी (स्त्री.)
हरियल	–	हारीतः (पुँ.)
हंस	–	हंसः, मरालः (पुँ.)
हंसी	–	हंसिनी/वरटा/ चक्राङ्गी (स्त्री.)

कीटानां नामानि (कीड़े-मकोड़ों के नाम)

हिन्दी		संस्कृत
अजगर	–	अजगरः, शयुः, बाहसः (पुँ.)
कनखजूरा	–	कर्णजलौका (स्त्री.)
केंचुआ	–	किञ्चुलुकः, गण्डूपदः (पुँ.)
कीड़ा	–	कृमिः/कीटः/ कीटकः (पुँ.)
केंकड़ा	–	कर्कटकः, कुलीरः (पुँ.)
खटमल	–	मत्कुणः, उत्कुणः (पुँ.)
गिरगिट	–	कृकलासः,सरटः, सरटुः (पुँ.)
घुन	–	घुणः (पुँ.)
घोंघा	–	शम्बुकः, कोषस्थः (पुँ.)
चींटा	–	पिपीलकः, पिपीलः (पुँ.)
चींटी	–	पिपीलिका, पिपीली (स्त्री.)
चूहा	–	मूषकः, मूषः, आखुः (पुँ.)
चुहिया	–	मूषिका, मूषा, गरिका (स्त्री.)
छुछुन्दर	–	छुछुन्दरी (स्त्री.)
छिपकली	–	गृहगोधिका, मुषली, गृहालिका (स्त्री.)
जुँगनू	–	खद्योतः, प्रभाकीटः, ज्योतिरिङ्गणः (पुँ.)
जुआ (जूँ)	–	यूका, केशटः, षट्पदी (स्त्री.)
जौंक	–	रक्तपः (पुं.)/जलौका (पुँ.)
झींगुर	–	झिल्लिका, झिल्ली (स्त्री.)
डाँस	–	दंशः, कण्टकः (पुँ.), वनमक्षिका (स्त्री.)
तिलचट्टा	–	तैलपः (पुँ.)
तितली	–	शलभः, चित्रपतङ्गः, तित्तिरः (पुँ.)
दीमक	–	उपदीका, सीमिका, वम्री, पुत्तिका (स्त्री.)

हिन्दी		संस्कृत
नाग	–	सर्पः/भुजङ्गः/नागः/फणकरः/ फणधरः (पुँ.)
नाग की मणि	–	नागमणिः (स्त्री.)
नागिन	–	भुजङ्गी/सर्पिणी (स्त्री.)
पतंगा	–	पतङ्गः, शलभः, पत्रचिल्लः (पुँ.)
बर्रे	–	वरटा, गन्धाली (स्त्री.)
बिच्छू	–	वृश्चिकः (पुँ.)
भौंरा	–	भ्रमरः/द्विरेफः/ अलिः (पुँ.)
मकड़ी	–	मर्कटकः, ऊर्णनाभः (पुँ.), लूता, बृहल्लूता (स्त्री.)
मकड़ी का जाला	–	मर्कटजालम् (नपुं.)
मक्खी	–	मक्षिका (स्त्री.)
मक्खी (शहद)	–	मधुमक्षिका, सरधा (स्त्री.)
मच्छर	–	मशकः, वज्रतुण्डः (पुँ.)
मछली	–	मत्स्यः/मीनः (पुँ.)
मेंढ़क	–	मण्डूकः (पुँ.)
मेंढकी	–	मण्डूकी (स्त्री.)
लीख	–	लिक्षा, रिक्षा (स्त्री.)
सर्प का डसना	–	दंशनम् (नपुं.)
साँप	–	अहिः, सर्पः, भुजंगः, उरगः (पुँ.)
साँप केंचुल	–	कञ्चुकः, निर्मोकः, अहित्वचः (पुँ.)
सीपी	–	शुक्तिः (स्त्री.)

गृहोपयोगिवस्तूनां नामानि

(घर की उपयोगी वस्तुओं के नाम)

हिन्दी		संस्कृत
अगरबत्ती	–	अगरुवर्तिका, गन्धवर्तिका (स्त्री.)
अँगीठी	–	अग्नीष्टिका, अङ्गारशकटी, अङ्गारधानी, हसन्ती (स्त्री.)
अरगनी	–	लङ्गनी (स्त्री.)
अलार्म घड़ी	–	प्रबोधनघटी (स्त्री.)
आलमारी	–	आधानी, आधानिका, काष्ठमञ्जूषा (स्त्री.)
आरामकुर्सी	–	आसन्दः (पुँ.), सुखासनिका, सुखासन्दिका (स्त्री.)
आँवा	–	आवाकः (पुँ.)
ओखर	–	उलूखलम्/उदूखलम् (नपुं.)
इन्धन	–	इध्यम्/इन्धनम्/ ज्वलनकाष्ठम् (नपुं.)

हिन्दी		संस्कृत
इस्तरी	–	स्तरकी (स्त्री.), वस्त्रस्तरस्योपकरणम् (नपुं.)
ईंट	–	इष्टका (स्त्री.)
उपला	–	करीषम्,गोमयपिण्डम् (नपुं.)
कनस्तर	–	कर्णस्त्रम् (नपुं.)
कनात	–	काण्डपटः (पुँ.)
कमण्डलु	–	कमण्डलुः (पुँ.)
कम्बल	–	कम्बलः (पुँ.)
कर्छुली	–	कम्बिः/दर्वी (स्त्री.)
कराही	–	कटाहः (पुँ.)
कटोरी	–	कंसः (पुँ.)/कंसिका (स्त्री.)/कंसम् (नपुं.)
कठौती	–	गलन्तिका/कर्करी (स्त्री.)
कील	–	कीलकम् (नपुं.)
कुञ्जी	–	कुञ्जिका/तालिका (स्त्री.)
किंवाड़	–	कपाटः (पुँ.)
कुप्पी	–	स्नेहपात्रम् (नपुं.)
कुर्सी	–	आसन्दिका (स्त्री.)/आसन्दः (पुँ.)
कुल्हाड़ा	–	कुठारः (पुँ.)
कुल्हाड़ी	–	कुठारिका (स्त्री.)
कैंची	–	कर्त्तरी (स्त्री.)
कैलेण्डर	–	दिनदर्शिका (स्त्री.)
खलबट्टा	–	खल्लः (पुँ.)
खाट	–	खट्वा (स्त्री.)
पलङ्ग की पाटी	–	पल्यङ्कपट्टिका (स्त्री.)
खुण्टी	–	नागदन्तः (पुँ.)
खूँटा	–	कीलकः (पुँ.)
खिड़की	–	गवाक्षः (पुँ.)/वातायनम् (नपुं.)
खिलौना	–	क्रीडनकम् (नपुं.)
गद्दी	–	गर्दिका (स्त्री.)
गलीचा	–	कुथः (पुँ.)
गागर	–	गगरः (पुँ.)
गुलदस्ता	–	पुष्पदानी (स्त्री.)
गुदड़ी (कथरी)	–	कन्था (स्त्री.)
गेंद	–	कन्दुकः (पुँ.)/कन्दुकम् (नपुं.)
घड़ा	–	घटः/कलशः (पुँ.)
घड़ी	–	घटी, घटिका (स्त्री.)
चक्की	–	घरट्टः (पुँ.)/पेषणयन्त्रम् (नपुं.)/ पेषणी (स्त्री.)
चकला	–	पिष्टिशिला (स्त्री.)
चटाई	–	कटः (पुँ.)
चम्मच	–	चमसः (पुँ.)
चलनी	–	चालनी (स्त्री.), तितउः (पुँ.)
चप्पल	–	पादरक्षा (स्त्री.)
चबूतरा	–	कुट्टिमः (पुँ.)
चादर	–	शय्याच्छादनम्/शय्यच्छदम् (नपुं.)
चाकू	–	असिपुत्रम् (नपुं.)/छुरिका (स्त्री.)
चाभी	–	कुञ्चिका (स्त्री.)
चारपाई	–	शय्या (स्त्री.)
चिराग	–	दीपकः (पुँ.)
चूल्हा	–	चूल्लिका (स्त्री.)/चुल्लिः (स्त्री.)
चौकी	–	चतुष्की (स्त्री.)/चतुष्पादिकः (पुँ.)
छकड़ा	–	शकटः (पुँ.)/शकटम् (नपुं.)
छड़ी	–	यष्टिका (स्त्री.), दण्डः (पुँ.)
छाता	–	छत्रम्/आतपत्रम्/ जलत्रम् (नपुं.)
छींका	-	शिक्यम् (नपुं०)
छुरी	–	छुरिका (स्त्री.)
छोटा बक्सा	–	पेटिका (स्त्री.)
जाल	–	जालम् (नपुं.)
जाला	–	वागुरा (स्त्री.)
जीना (सीढ़ी)	–	आरोहणम्, सोपानम् (नपुं.)
जूता	–	पादत्राणम् (नपुं.)/पादुका (स्त्री.)
झाड़ू	–	मार्जनी, सम्मार्जनी, शोधनी (स्त्री.)
झूला	–	दोला (स्त्री.)
झोपड़ी	–	उटजः (पुँ.)
झोला	–	स्यूतः (पुँ.)
ट्यूबलाइट	–	दण्डदीपः (पुँ.)
टार्च	–	हस्तदीपिका (स्त्री.)/करदीपः/सम्पुटकः (पुँ.)
टेलीफोन	–	दूरभाषः (पुँ.)
टोकरी	–	कण्डोलः (पुँ.)
डाइनिंग टेबिल	–	भोजनफलकम् (नपुं.)
डिब्बा	–	सम्पूरकः/करण्डकः (पुँ.)
डेस्क	–	लेखनपीठम् (नपुं.)
डोरा	–	सूत्रम् (नपुं.)/तन्तुः (पुँ.)
डोंगी	–	दोला (स्त्री.)/हिन्दोलः (पुँ.)
तखत	–	काष्ठपटलम् (नपुं.)
तकला	–	तर्कः (पुँ.)/सूत्रवेष्टनम् (नपुं.)

हिन्दी		संस्कृत
तकली	–	तर्कुटिः (स्त्री.)
तकिया	–	उपधानम् (नपुं.)
तराजू	–	तुला (स्त्री.)
तराजू का पलड़ा	–	तुलाफलकम् (नपुं.)
तराजू की डण्डी	–	तुलादण्डः (पुँ.)
तीली	–	शलाका (स्त्री.)
तवा	–	ऋजीषम् (नपुं.)
तिजोरी	–	शेवधिः (स्त्री.)
थाली	–	स्थालिका (स्त्री.)
थैला	–	स्यूतः (पुँ.)
थैली	–	भस्त्रिका (स्त्री.)
दन्तमञ्जन	–	दन्तफेनः (पुँ.)
दरेती (पक्कड़)	–	दात्रम् (नपुं.)
दाँत खोदनी	–	दन्तशोधनी (स्त्री.)
दातून	–	दन्तधावनम् (नपुं.)
दियासलाई	–	दीपशलाका, अग्निपेटिका (स्त्री.)
दीया	–	दीपकः, दीपः (पुँ.), दीपकम् (नपुं.)
दीवट	–	दीपस्तम्भः (पुँ.)
दोना	–	पत्रपुटम् (नपुं.)
धागा	–	तन्तुः (पुँ.), सूत्रम् (नपुं.)
नॉव	–	नौका/तरणिः (स्त्री.)
नीवार	–	नीवारः (नपुं.)
पत्तल	–	पत्राली/पत्रावली (स्त्री.)
पलंग	–	पर्यङ्कः/पल्यङ्कः (पुँ.)
पंखा	–	व्यजनम् (नपुं.)
पंखा (हाथ का)	–	तालवृन्तकम्/हस्तव्यजनम् (नपुं.)
पीढ़ा	–	पीठम् (नपुं.)/पीठिका (स्त्री.)
पाँसा	–	अक्षः (पुँ.)/अक्षम् (नपुं.)
पेटी	–	पेटिका/मञ्जूषा (स्त्री.)
प्रेस	–	समीकरः (पुँ.)
प्याला	–	चषकः (पुँ.)
फर्नीचर	–	उपस्करः (पुँ.)/काष्ठीयम् (नपुं.)
फ्रिज	–	हिमीकरः (पुँ.)
बटन	–	कुड्मलः (पुँ.)

हिन्दी		संस्कृत
बटलोई	–	पिठरः (पुँ.)/स्थाली (स्त्री.)
बल्ब	–	गोलदीपः (पुँ.)
बत्ती	–	वर्तिका (स्त्री.)
बाँस की पिटारी (झौआ)	–	करण्डः (पुँ.)
बाल्टी	–	द्रोणी (स्त्री.)
बिजली की बत्ती	–	विद्युज्ज्योतिः (स्त्री.)
बेलन	–	बेल्लनम् (नपुं.)
बेंच	–	काष्ठासनम्/फलकम् (नपुं.)
बैट्री (सेल)	–	विद्युत्कोषः (पुँ.)
बोतल	–	काचकूपिका/कूपी (स्त्री.)
बोरा	–	गोणी (स्त्री.)/शणपुटः (पुँ.)
बैलगाड़ी	–	गन्त्री (स्त्री.)/शकटयानम् (नपुं.)
भट्टी	–	भ्राष्ट्रिका (स्त्री.)
मथानी	–	मन्थानः, मथी (पुँ.)
माचिस	–	अग्निपेटिका (स्त्री.)
मूसल	–	मुसलम्/अयोग्रम् (नपुं.)/ मूसलः (पुँ.)
मोगरी (थपका)	–	लोष्टभेदनः (पुँ.)
मृगछाला	–	कृष्णाजिनम् (नपुं.)
मेज	–	उत्पीठिका (स्त्री.)/फलकम्/काष्ठपीठम् (नपुं.)
मोमबत्ती	–	मधूच्छिष्टवर्तिः, सिक्थवर्त्तिका (स्त्री.), दीपपादपः (पुँ.)
मोम	–	सिक्थम् (नपुं.)
रस्सी	–	रज्जुः (स्त्री.)
लालटेन	–	आवृत्तदीपिका (स्त्री.), प्रदीपकोशः, काचदीपः (पुँ.)
लैम्प	–	नेयदीपः (पुँ.)
सिल	–	शिला (स्त्री.), शिलापट्टम् (नपुं.)
सिल का बट्टा	–	शिलावटकम् (नपुं.)
सन्दूक	–	मञ्जूषा (स्त्री.)
साँकल	–	अर्गला (स्त्री.)/अर्गलम् (नपुं.)
सरौता	–	शङ्कुला (स्त्री.)
सियेफल	–	वक्रदीपः (पुँ.)
सीढ़ी	–	सोपानम् (नपुं.)

हिन्दी		संस्कृत
सुआ	–	बृहत्सूची (स्त्री.)
सुई	–	सूची/सूचिका (स्त्री.)
सूपा	–	सूर्पम्/प्रस्फोटनम् (नपुं.)
स्टूल	–	संवेशः (पुँ.)/उच्चपीठम् (नपुं.)/ सन्दिका (स्त्री.)
स्टील	–	आयसम् (नपुं.)
स्टोव	-	उद्ध्मानम्, अश्मन्तकम् (नपुं.)
सोफा	–	तल्पासन्दी (स्त्री.)
सिकहर	–	शिक्यम् (नपुं.)
स्विच	–	विद्युत्कुञ्चिका (स्त्री.) पिञ्जः (पुँ.)
हीटर	–	तापकम् (नपुं.)
हैंगर	–	अवलम्बकः (पुँ.)

पात्राणां नामानि (बर्तनों के नाम)

हिन्दी		संस्कृत
अँगीठी	–	अग्नीष्टिका/हसन्ती/ अङ्गारशकटी (स्त्री.)
कटोरा	–	कंसः (पुँ.), कटोरम् (नपुं.)
कटोरी	–	कटोरिका, कसोरिका (स्त्री.)
कठौती	–	काष्ठपात्रम् (नपुं.)
कड़ाहा	–	कटाहः, कर्परः (पुँ.)
कड़ाही	–	कटाहः (पुँ.), स्वेदनी (स्त्री.)
कण्डाल	–	वारिधिः (पुँ.)
करछुल	–	दर्वी/कम्बी (स्त्री.)/ कडच्छदकः (पुँ.)
काँच का जार	–	काचघटी (स्त्री.)
काँच का गिलास	–	काचकंसः (पुँ.)
कुल्हड़	–	मल्लकः/चषकः (पुँ.)
कुकर	–	वाष्पस्थाली (स्त्री.)
गिलास	–	चषकः/गल्लकः (पुँ.)/ पानपात्रम् (नपुं.)
घड़ा	–	घटः/कुम्भः/ कलशः (पुँ.)
चम्मच	–	चमसः (पुँ.)
चिमटा	–	कङ्कमुखः/सन्दंशः (पुँ.)
चिलमची	–	हस्तधावनी (स्त्री.)
जलेबी बनाने की तई	–	पिष्टपचनम् (नपुं.)
टब	–	बृहद्द्रोणी (स्त्री.)

हिन्दी		संस्कृत
टीपॉट	–	चायपात्रम् (नपुं.)
टोकरा	–	कण्डोलः (पुँ.)
टोकरी	–	कण्डोलिका (स्त्री.)
तवा	–	तवी, तप्तिका (स्त्री.), ऋजीषम् (नपुं.)
तसला	–	धिषणः (पुँ.), धिषणा (स्त्री.)
तस्तरी	–	शरावः (पुँ.)/उपस्तरी (स्त्री.)
थाली	–	स्थालिका, थालिका (स्त्री.)
दोना	–	पत्रपुटः,द्रोणः, पुटकः (पुँ.), द्रोणा (स्त्री.)
पतीली (बटलोई)	–	स्थाली, पातिली, चरुः (स्त्री.)
पत्तल	–	पत्रस्थालिका (स्त्री.), पत्तलम् (नपुं.)
परात	–	परामत्रम्, परायतम् (नपुं.), महास्थालिका (स्त्री.)
पानदान	–	ताम्बूलकरण्डः (पुँ.)
प्याला	–	चषकः (पुँ.)/पानपात्रम् (नपुं.)
प्लेट	–	शरावः (पुँ.)/आस्थालिका (स्त्री.)
पेटी /ट्रंक	–	मञ्जूषा (स्त्री.)
बर्तन	–	भाण्डम्, भाजनम्, पात्रम् (नपुं.)
बाल्टी	–	उदञ्चनम् (नपुं.), जलधरी (स्त्री.)
बोतल	–	काचकूपकः, कूपी (पुँ.)
मलसा	–	मल्लिका (स्त्री.)
मिट्टी की प्याली	–	कुण्डिका (स्त्री.)
लोटा	–	गण्डूकः/करकः (पुँ.)
संसी	–	सन्दंशिका (स्त्री.), कङ्कमुखः (पुँ.)
सॉस / पैन	–	उखा (स्त्री.)
सुराही	–	कर्करी, जलशीतिका (स्त्री.)
स्टोव	–	उद्ध्मानम् (नपुं.)
हड़िया	–	हण्डिका (स्त्री.)

❑❑

शब्दरूप

1. अकारान्त पुंलिङ्ग एकवचन

विभक्ति	राम	श्याम	शिक्षक	देव	बालक
प्रथमा	रामः	श्यामः	शिक्षकः	देवः	बालकः
द्वितीया	रामम्	श्यामम्	शिक्षकम्	देवम्	बालकम्
तृतीया	रामेण	श्यामेन	शिक्षकेण	देवेन	बालकेन
चतुर्थी	रामाय	श्यामाय	शिक्षकाय	देवाय	बालकाय
पञ्चमी	रामात्	श्यामात्	शिक्षकात्	देवात्	बालकात्
षष्ठी	रामस्य	श्यामस्य	शिक्षकस्य	देवस्य	बालकस्य
सप्तमी	रामे	श्यामे	शिक्षके	देवे	बालके
सम्बोधन	हे राम!	हे श्याम!	हे शिक्षक!	हे देव!	हे बालक!

अकारान्त पुंलिङ्ग द्विवचन

प्रथमा	रामौ	श्यामौ	शिक्षकौ	देवौ	बालकौ
द्वितीया	रामौ	श्यामौ	शिक्षकौ	देवौ	बालकौ
तृतीया	रामाभ्याम्	श्यामाभ्याम्	शिक्षकाभ्याम्	देवाभ्याम्	बालकाभ्याम्
चतुर्थी	रामाभ्याम्	श्यामाभ्याम्	शिक्षकाभ्याम्	देवाभ्याम्	बालकाभ्याम्
पञ्चमी	रामाभ्याम्	श्यामाभ्याम्	शिक्षकाभ्याम्	देवाभ्याम्	बालकाभ्याम्
षष्ठी	रामयोः	श्यामयोः	शिक्षकयोः	देवयोः	बालकयोः
सप्तमी	रामयोः	श्यामयोः	शिक्षकयोः	देवयोः	बालकयोः
सम्बोधन	हे रामौ!	हे श्यामौ!	हे शिक्षकौ!	हे देवौ!	हे बालकौ!

अकारान्त पुंलिङ्ग बहुवचन

प्रथमा	रामाः	श्यामाः	शिक्षकाः	देवाः	बालकाः
द्वितीया	रामान्	श्यामान्	शिक्षकान्	देवान्	बालकान्
तृतीया	रामैः	श्यामैः	शिक्षकैः	देवैः	बालकैः
चतुर्थी	रामेभ्यः	श्यामेभ्यः	शिक्षकेभ्यः	देवेभ्यः	बालकेभ्यः
पञ्चमी	रामेभ्यः	श्यामेभ्यः	शिक्षकेभ्यः	देवेभ्यः	बालकेभ्यः
षष्ठी	रामाणाम्	श्यामानाम्	शिक्षकाणाम्	देवानाम्	बालकानाम्
सप्तमी	रामेषु	श्यामेषु	शिक्षकेषु	देवेषु	बालकेषु
सम्बोधन	हे रामाः!	हे श्यामाः!	हे शिक्षकाः!	हे देवाः!	हे बालकाः!

अन्य अकारान्त पुंलिङ्ग शब्द

नोट- निम्नलिखित शब्दों का रूप 'राम' की तरह चलेगा।

कृष्ण, वृक्ष, कोविद (विद्वान्), सिंह (शेर), नृप, चन्द्र, चिकित्सक (डॉक्टर), नाग (साँप), छात्र, अश्व, वैद्य (डॉक्टर), जनक (पिता), नर, वानर, मधुप (भौंरा), सूत (पुत्र), पुत्र, सुर, खग (पक्षी), कर (हाथ), मूषक, अर्चक (पुजारी), तस्कर (चोर), नायक (हीरो), मातुल, काण (काना), गर्दभ (गदहा), गायक (गाने वाला), गज, कृपण (कंजूस), याचक (भिक्षुक), चालक (ड्राइवर), सर्प, विप्र (ब्राह्मण), इन्द्र, कूप, नारिकेल (नारियल), गणेश, तडाग, केशव (कृष्ण), मयूर आदि अनेक अकारान्त पुंलिङ्ग शब्दों का रूप 'राम' की तरह चलेगा।

2. इकारान्त पुंलिङ्ग एकवचन

विभक्ति	हरि	मुनि	ऋषि	कवि	रवि
प्रथमा	हरिः	मुनिः	ऋषिः	कविः	रविः
द्वितीया	हरिम्	मुनिम्	ऋषिम्	कविम्	रविम्
तृतीया	हरिणा	मुनिना	ऋषिणा	कविना	रविणा
चतुर्थी	हरये	मुनये	ऋषये	कवये	रवये
पञ्चमी	हरेः	मुनेः	ऋषेः	कवेः	रवेः
षष्ठी	हरेः	मुनेः	ऋषेः	कवेः	रवेः
सप्तमी	हरौ	मुनौ	ऋषौ	कवौ	रवौ
सम्बोधन	हरे!	हे मुने!	हे ऋषे!	हे कवे!	हे रवे!

इकारान्त पुंलिङ्ग द्विवचन

प्रथमा	हरी	मुनी	ऋषी	कवी	रवी
द्वितीया	हरी	मुनी	ऋषी	कवी	रवी
तृतीया	हरिभ्याम्	मुनिभ्याम्	ऋषिभ्याम्	कविभ्याम्	रविभ्याम्
चतुर्थी	हरिभ्याम्	मुनिभ्याम्	ऋषिभ्याम्	कविभ्याम्	रविभ्याम्
पञ्चमी	हरिभ्याम्	मुनिभ्याम्	ऋषिभ्याम्	कविभ्याम्	रविभ्याम्
षष्ठी	हर्योः	मुन्योः	ऋष्योः	कव्योः	रव्योः
सप्तमी	हर्योः	मुन्योः	ऋष्योः	कव्योः	रव्योः
सम्बोधन	हे हरी!	हे मुनी!	हे ऋषी!	हे कवी!	हे रवी!

इकारान्त पुंलिङ्ग बहुवचन

प्रथमा	हरयः	ऋषयः	रवयः	मुनयः	कवयः
द्वितीया	हरीन्	ऋषीन्	रवीन्	मुनीन्	कवीन्
तृतीया	हरिभिः	ऋषिभिः	रविभिः	मुनिभिः	कविभिः
चतुर्थी	हरिभ्यः	ऋषिभ्यः	रविभ्यः	मुनिभ्यः	कविभ्यः
पञ्चमी	हरिभ्यः	ऋषिभ्यः	रविभ्यः	मुनिभ्यः	कविभ्यः
षष्ठी	हरीणाम्	ऋषीणाम्	रवीणाम्	मुनीनाम्	कवीनाम्
सप्तमी	हरिषु	ऋषिषु	रविषु	मुनिषु	कविषु
सम्बोधन	हे हरयः!	हे ऋषयः!	हे रवयः!	हे मुनयः!	हे कवयः!

अन्य इकारान्त पुंलिङ्ग शब्द

अग्नि (आग), मणि (मणि), अरि (शत्रु), अहि (साँप), यति (संन्यासी), अतिथि (मेहमान), कपि (वानर), राशि (ढेर), उदधि (समुद्र), ध्वनि (आवाज), सभापति (सभाध्यक्ष), गिरि (पहाड़), पशुपति (शिव), परिधि (एक रेखा), नृपति (राजा), पाणिनि (वैयाकरण), आधि (मानसिक कष्ट), मारुति (हनुमान्), सन्धि (मेल), अवधि (सीमा), रमापति (विष्णु), सारथि (ड्राइवर), प्रणिधि (प्रार्थना), विधि (तरीका), उपाधि (उपाधि), रश्मि (किरण), समाधि (समाधि), निधि (खजाना), अद्रि (पर्वत), पाणि (हाथ), बलि (राजा बलि), अवि (भेंड) आदि।

नोट- इसीप्रकार सभी इकारान्त पुंलिङ्ग शब्दों के रूप 'हरि' के समान बना लीजिए।

3. उकारान्त पुंलिङ्ग एकवचन

विभक्ति	गुरु	भानु	शम्भु	शिशु	साधु
प्रथमा	गुरुः	भानुः	शम्भुः	शिशुः	साधुः
द्वितीया	गुरुम्	भानुम्	शम्भुम्	शिशुम्	साधुम्
तृतीया	गुरुणा	भानुना	शम्भुना	शिशुना	साधुना
चतुर्थी	गुरवे	भानवे	शम्भवे	शिशवे	साधवे
पञ्चमी	गुरोः	भानोः	शम्भोः	शिशोः	साधोः
षष्ठी	गुरोः	भानोः	शम्भोः	शिशोः	साधोः
सप्तमी	गुरौ	भानौ	शम्भौ	शिशौ	साधौ
सम्बोधन	हे गुरो!	हे भानो!	हे शम्भो!	हे शिशो!	हे साधो!

उकारान्त पुंलिङ्ग द्विवचन

प्रथमा	गुरू	भानू	शम्भू	शिशू	साधू
द्वितीया	गुरू	भानू	शम्भू	शिशू	साधू
तृतीया	गुरुभ्याम्	भानुभ्याम्	शम्भुभ्याम्	शिशुभ्याम्	साधुभ्याम्
चतुर्थी	गुरुभ्याम्	भानुभ्याम्	शम्भुभ्याम्	शिशुभ्याम्	साधुभ्याम्
पञ्चमी	गुरुभ्याम्	भानुभ्याम्	शम्भुभ्याम्	शिशुभ्याम्	साधुभ्याम्
षष्ठी	गुर्वोः	भान्वोः	शम्भ्वोः	शिश्वोः	साध्वोः
सप्तमी	गुर्वोः	भान्वोः	शम्भ्वोः	शिश्वोः	साध्वोः
सम्बोधन	हे गुरू!	हे भानू!	हे शम्भू!	हे शिशू!	हे साधू!

उकारान्त पुंलिङ्ग बहुवचन

प्रथमा	गुरवः	भानवः	शम्भवः	शिशवः	साधवः
द्वितीया	गुरून्	भानून्	शम्भून्	शिशून्	साधून्
तृतीया	गुरुभिः	भानुभिः	शम्भुभिः	शिशुभिः	साधुभिः
चतुर्थी	गुरुभ्यः	भानुभ्यः	शम्भुभ्यः	शिशुभ्यः	साधुभ्यः
पञ्चमी	गुरुभ्यः	भानुभ्यः	शम्भुभ्यः	शिशुभ्यः	साधुभ्यः
षष्ठी	गुरूणाम्	भानूनाम्	शम्भूनाम्	शिशूनाम्	साधूनाम्
सप्तमी	गुरुषु	भानुषु	शम्भुषु	शिशुषु	साधुषु
सम्बोधन	हे गुरवः!	हे भानवः!	हे शम्भवः!	हे शिशवः!	हे साधवः!

अन्य उकारान्त पुंलिङ्ग शब्द

कृशानु (आग), प्रभु (स्वामी), विधु (चन्द्रमा), परशु (मृत्यु), बाहु (भुजा), पांशु (धूला), वायु (हवा), पशु (पशु), तरु (वृक्ष), इषु (गन्ना) आदि।

नोट- इसीप्रकार सभी उकारान्त पुंलिङ्ग शब्दों का रूप 'गुरु' की तरह चलेगा।

4. ऋकारान्त पुंलिङ्ग एकवचन

विभक्ति	पितृ	भ्रातृ	जामातृ	कर्तृ	हर्तृ
प्रथमा	पिता	भ्राता	जामाता	कर्ता	हर्ता
द्वितीया	पितरम्	भ्रातरम्	जामातरम्	कर्तारम्	हर्तारम्
तृतीया	पित्रा	भ्रात्रा	जामात्रा	कर्त्रा	हर्त्रा
चतुर्थी	पित्रे	भ्रात्रे	जामात्रे	कर्त्रे	हर्त्रे
पञ्चमी	पितुः	भ्रातुः	जामातुः	कर्तुः	हर्तुः
षष्ठी	पितुः	भ्रातुः	जामातुः	कर्तुः	हर्तुः
सप्तमी	पितरि	भ्रातरि	जामातरि	कर्तरि	हर्तरि
सम्बोधन	हे पितः!	हे भ्रातः!	हे जामातः!	हे कर्तः!	हे हर्तः!

ऋकारान्त पुंलिङ्ग द्विवचन

विभक्ति	पितृ	भ्रातृ	जामातृ	कर्तृ	हर्तृ
प्रथमा	पितरौ	भ्रातरौ	जामातरौ	कर्तारौ	हर्तारौ
द्वितीया	पितरौ	भ्रातरौ	जामातरौ	कर्तारौ	हर्तारौ
तृतीया	पितृभ्याम्	भ्रातृभ्याम्	जामातृभ्याम्	कर्तृभ्याम्	हर्तृभ्याम्
चतुर्थी	पितृभ्याम्	भ्रातृभ्याम्	जामातृभ्याम्	कर्तृभ्याम्	हर्तृभ्याम्
पञ्चमी	पितृभ्याम्	भ्रातृभ्याम्	जामातृभ्याम्	कर्तृभ्याम्	हर्तृभ्याम्
षष्ठी	पित्रोः	भ्रात्रोः	जामात्रोः	कर्त्रोः	हर्त्रोः
सप्तमी	पित्रोः	भ्रात्रोः	जामात्रोः	कर्त्रोः	हर्त्रोः
सम्बोधन	हे पितरौ!	हे भ्रातरौ!	हे जामातरौ!	हे कर्तारौ!	हे हर्तारौ!

ऋकारान्त पुंलिङ्ग बहुवचन

विभक्ति	पितृ	भ्रातृ	जामातृ	कर्तृ	हर्तृ
प्रथमा	पितरः	भ्रातरः	जामातरः	कर्तारः	हर्तारः
द्वितीया	पितृन्	भ्रातृन्	जामातृन्	कर्तृन्	हर्तृन्
तृतीया	पितृभिः	भ्रातृभिः	जामातृभिः	कर्तृभिः	हर्तृभिः
चतुर्थी	पितृभ्यः	भ्रातृभ्यः	जामातृभ्यः	कर्तृभ्यः	हर्तृभ्यः
पञ्चमी	पितृभ्यः	भ्रातृभ्यः	जामातृभ्यः	कर्तृभ्यः	हर्तृभ्यः
षष्ठी	पितृणाम्	भ्रातृणाम्	जामातृणाम्	कर्तृणाम्	हर्तृणाम्
सप्तमी	पितृषु	भ्रातृषु	जामातृषु	कर्तृषु	हर्तृषु
सम्बोधन	हे पितरः!	हे भ्रातरः!	हे जामातरः!	हे कर्तारः!	हे हर्तारः!

अन्य ऋकारान्त पुंलिङ्ग शब्द

नेतृ (नेता), नेष्टृ (नष्टा), वक्तृ (वक्ता), होतृ (होता), प्रष्टृ (प्रष्टा), रक्षितृ (रक्षिता), श्रोतृ (श्रोता), नप्तृ (नप्ता), सवितृ (सविता), क्रेतृ (खरीदने वाला), पठितृ (पढ़ाने वाला), गन्तृ (जाने वाला), ज्ञातृ, भर्तृ, रचयितृ (रचना करने वाला), स्मर्तृ (स्मरण करने वाला), जेतृ (जीतने वाला), दातृ (देने वाला), भोक्तृ (भोग करने वाला), प्रशास्तृ (प्रशासक), वष्टृ (विश्वकर्मा) आदि।

5. आकारान्त स्त्रीलिङ्ग एकवचन

विभक्ति	रमा	लता	सीता	राधा	बालिका
प्रथमा	रमा	लता	सीता	राधा	बालिका
द्वितीया	रमाम्	लताम्	सीताम्	राधाम्	बालिकाम्
तृतीया	रमया	लतया	सीतया	राधया	बालिकया
चतुर्थी	रमायै	लतायै	सीतायै	राधायै	बालिकायै
पञ्चमी	रमायाः	लतायाः	सीतायाः	राधायाः	बालिकायाः
षष्ठी	रमायाः	लतायाः	सीतायाः	राधायाः	बालिकायाः
सप्तमी	रमायाम्	लतायाम्	सीतायाम्	राधायाम्	बालिकायाम्
सम्बोधन	हे रमे!	हे लते!	हे सीते!	हे राधे!	हे बालिके!

आकारान्त स्त्रीलिङ्ग द्विवचन

विभक्ति	रमा	लता	सीता	राधा	बालिका
प्रथमा	रमे	लते	सीते	राधे	बालिके
द्वितीया	रमे	लते	सीते	राधे	बालिके
तृतीया	रमाभ्याम्	लताभ्याम्	सीताभ्याम्	राधाभ्याम्	बालिकाभ्याम्
चतुर्थी	रमाभ्याम्	लताभ्याम्	सीताभ्याम्	राधाभ्याम्	बालिकाभ्याम्
पञ्चमी	रमाभ्याम्	लताभ्याम्	सीताभ्याम्	राधाभ्याम्	बालिकाभ्याम्
षष्ठी	रमयोः	लतयोः	सीतयोः	राधयोः	बालिकयोः
सप्तमी	रमयोः	लतयोः	सीतयोः	राधयोः	बालिकयोः
सम्बोधन	हे रमे!	हे लते!	हे सीते!	हे राधे!	हे बालिके!

आकारान्त स्त्रीलिङ्ग बहुवचन

विभक्ति	रमा	लता	सीता	राधा	बालिका
प्रथमा	रमाः	लताः	सीताः	राधाः	बालिकाः
द्वितीया	रमाः	लताः	सीताः	राधाः	बालिकाः
तृतीया	रमाभिः	लताभिः	सीताभिः	राधाभिः	बालिकाभिः
चतुर्थी	रमाभ्यः	लताभ्यः	सीताभ्यः	राधाभ्यः	बालिकाभ्यः
पञ्चमी	रमाभ्यः	लताभ्यः	सीताभ्यः	राधाभ्यः	बालिकाभ्यः
षष्ठी	रमाणाम्	लतानाम्	सीतानाम्	राधानाम्	बालिकानाम्
सप्तमी	रमासु	लतासु	सीतासु	राधासु	बालिकासु
सम्बोधन	हे रमाः!	हे लताः!	हे सीताः!	हे राधाः!	हे बालिकाः!

अन्य आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

पाठशाला, प्रभा, क्रीडा, कान्ता, कथा, श्रद्धा, कन्या, निष्ठा, वसुधा, वाटिका, सुधा, शाटिका, अजा, वाटिका, मूषिका, नासिका, चटका, व्यथा, बाला, अचला (पृथ्वी), आशा, उमा, गङ्गा, ग्रीवा (गर्दन), जनता, तनया (बेटी), देवता, निशा, वनिता (स्त्री), शाखा, शिला (पत्थर), सञ्ज्ञा, अर्चा, अम्बिका (लक्ष्मी), क्षमा, जाया, तन्द्रा (ऊँघना), प्रतिभा, व्यथा, शारदा, सुरा (शराब), हरिद्रा (हल्दी), उपमा, क्षुधा, गोशाला, चेतना, तुला (तराजू), धारणा (विचार), प्रतिमा (मूर्ति), भाषा, यात्रा, रेखा, वामा (सुन्दरी), शर्करा, शिक्षा, सुता, सेना, स्पृहा, होरा (एक घण्टा), त्वरा (शीघ्र), घोषणा, नौका, पिपासा, अमावस्या आदि।

6. ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग एकवचन

विभक्ति	जननी	रजनी	नगरी	भवती	नदी
प्रथमा	जननी	रजनी	नगरी	भवती	नदी
द्वितीया	जननीम्	रजनीम्	नगरीम्	भवतीम्	नदीम्
तृतीया	जनन्या	रजन्या	नगर्या	भवत्या	नद्या
चतुर्थी	जनन्यै	रजन्यै	नगर्यै	भवत्यै	नद्यै
पञ्चमी	जनन्याः	रजन्याः	नगर्याः	भवत्याः	नद्याः
षष्ठी	जनन्याः	रजन्याः	नगर्याः	भवत्याः	नद्याः
सप्तमी	जनन्याम्	रजन्याम्	नगर्याम्	भवत्याम्	नद्याम्
सम्बोधन	हे जननि!	हे रजनि!	हे नगरि!	हे भवति!	हे नदि!

ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग द्विवचन

विभक्ति	जननी	रजनी	नगरी	भवती	नदी
प्रथमा	जनन्यौ	रजन्यौ	नगर्यौ	भवत्यौ	नद्यौ
द्वितीया	जनन्यौ	रजन्यौ	नगर्यौ	भवत्यौ	नद्यौ
तृतीया	जननीभ्याम्	रजनीभ्याम्	नगरीभ्याम्	भवतीभ्याम्	नदीभ्याम्
चतुर्थी	जननीभ्याम्	रजनीभ्याम्	नगरीभ्याम्	भवतीभ्याम्	नदीभ्याम्
पञ्चमी	जननीभ्याम्	रजनीभ्याम्	नगरीभ्याम्	भवतीभ्याम्	नदीभ्याम्
षष्ठी	जनन्योः	रजन्योः	नगर्योः	भवत्योः	नद्योः
सप्तमी	जनन्योः	रजन्योः	नगर्योः	भवत्योः	नद्योः
सम्बोधन	हे जनन्यौ!	हे रजन्यौ!	हे नगर्यौ!	हे भवत्यौ!	हे नद्यौ!

ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग बहुवचन

विभक्ति	जननी	रजनी	नगरी	भवती	नदी
प्रथमा	जनन्यः	रजन्यः	नगर्यः	भवत्यः	नद्यः
द्वितीया	जननीः	रजनीः	नगरीः	भवतीः	नदीः
तृतीया	जननीभिः	रजनीभिः	नगरीभिः	भवतीभिः	नदीभिः
चतुर्थी	जननीभ्यः	रजनीभ्यः	नगरीभ्यः	भवतीभ्यः	नदीभ्यः
पञ्चमी	जननीभ्यः	रजनीभ्यः	नगरीभ्यः	भवतीभ्यः	नदीभ्यः
षष्ठी	जननीनाम्	रजनीनाम्	नगरीणाम्	भवतीनाम्	नदीनाम्
सप्तमी	जननीषु	रजनीषु	नगरीषु	भवतीषु	नदीषु
सम्बोधन	हे जनन्यः!	हे रजन्यः!	हे नगर्यः!	हे भवत्यः!	हे नद्यः!

अन्य ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

नलिनी, शालिनी, मालिनी, सूची, कूपी, कदली, कुमारी, गोष्ठी, गर्भिणी, देवी, नगरी, कुटी, गायत्री, कौमुदी, कामिनी, दामिनी, दासी, कावेरी, काशी, देवकी, द्रौपदी, नटी, पत्नी, पार्वती, पुरी, पृथ्वी, प्राची, बदरी, भागीरथी, भारती, मञ्जरी, मसी, मही, मातुलानी, मालती, मुरली, मोदिनी, यामिनी, रजनी, वाणी, विदुषी, वैदेही, सखी, सपत्नी, सुन्दरी, हिमानी, श्रेणी, राक्षसी, राजधानी, युवती, भवती आदि। इनका रूप 'जननी' के समान चलेगा।

7. ऋकारान्त स्त्रीलिङ्ग एकवचन

विभक्ति	मातृ	दुहितृ	ननादृ	स्वसृ
प्रथमा	माता	दुहिता	ननान्दा	स्वसा
द्वितीया	मातरम्	दुहितरम्	ननान्दरम्	स्वसारम्
तृतीया	मात्रा	दुहित्रा	ननान्द्रा	स्वस्रा
चतुर्थी	मात्रे	दुहित्रे	ननान्द्रे	स्वस्रे
पञ्चमी	मातुः	दुहितुः	ननान्दुः	स्वसुः
षष्ठी	मातुः	दुहितुः	ननान्दुः	स्वसुः
सप्तमी	मातरि	दुहितरि	ननान्दरि	स्वसरि
सम्बोधन	हे मातः!	हे दुहितः!	हे ननान्दः!	हे स्वसः!

ऋकारान्त स्त्रीलिङ्ग द्विवचन

प्रथमा	मातरौ	दुहितरौ	ननान्दरौ	स्वसारौ
द्वितीया	मातरौ	दुहितरौ	ननान्दरौ	स्वसारौ
तृतीया	मातृभ्याम्	दुहितृभ्याम्	ननान्दृभ्याम्	स्वसृभ्याम्
चतुर्थी	मातृभ्याम्	दुहितृभ्याम्	ननान्दृभ्याम्	स्वसृभ्याम्
पञ्चमी	मातृभ्याम्	दुहितृभ्याम्	ननान्दृभ्याम्	स्वसृभ्याम्
षष्ठी	मात्रोः	दुहित्रोः	ननान्द्रोः	स्वस्रोः
सप्तमी	मात्रोः	दुहित्रोः	ननान्द्रोः	स्वस्रोः
सम्बोधन	हे मातरौ!	हे दुहितरौ!	हे ननान्दरौ!	हे स्वसारौ!

ऋकारान्त स्त्रीलिङ्ग बहुवचन

प्रथमा	मातरः	दुहितरः	ननान्दरः	स्वसारः
द्वितीया	मातॄः	दुहितॄः	ननान्दॄः	स्वसॄः
तृतीया	मातृभिः	दुहितृभिः	ननान्दृभिः	स्वसृभिः
चतुर्थी	मातृभ्यः	दुहितृभ्यः	ननान्दृभ्यः	स्वसृभ्यः
पञ्चमी	मातृभ्यः	दुहितृभ्यः	ननान्दृभ्यः	स्वसृभ्यः
षष्ठी	मातॄणाम्	दुहितॄणाम्	ननान्दॄणाम्	स्वसॄणाम्
सप्तमी	मातृषु	दुहितृषु	ननान्दृषु	स्वसृषु
सम्बोधन	हे मातरः!	हे दुहितरः!	हे ननान्दरः!	हे स्वसारः!

अन्य ऋकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

तिसृ (तीन संख्या), चतसृ (चार की संख्या), यातृ (देवरानी) आदि।

8. अकारान्त नपुंसकलिङ्ग एकवचन

विभक्ति	फलम्	पुष्पम्	पत्रम्	नेत्रम्	वनम्
प्रथमा	फलम्	पुष्पम्	पत्रम्	नेत्रम्	वनम्
द्वितीया	फलम्	पुष्पम्	पत्रम्	नेत्रम्	वनम्
तृतीया	फलेन	पुष्पेण	पत्रेण	नेत्रेण	वनेन
चतुर्थी	फलाय	पुष्पाय	पत्राय	नेत्राय	वनाय
पञ्चमी	फलात्	पुष्पात्	पत्रात्	नेत्रात्	वनात्
षष्ठी	फलस्य	पुष्पस्य	पत्रस्य	नेत्रस्य	वनस्य
सप्तमी	फले	पुष्पे	पत्रे	नेत्रे	वने
सम्बोधन	हे फल!	हे पुष्प!	हे पत्र!	हे नेत्र!	हे वन!

अकारान्त नपुंसकलिङ्ग द्विवचन

विभक्ति	फलम्	पुष्पम्	पत्रम्	नेत्रम्	वनम्
प्रथमा	फले	पुष्पे	पत्रे	नेत्रे	वने
द्वितीया	फले	पुष्पे	पत्रे	नेत्रे	वने
तृतीया	फलाभ्याम्	पुष्पाभ्याम्	पत्राभ्याम्	नेत्राभ्याम्	वनाभ्याम्
चतुर्थी	फलाभ्याम्	पुष्पाभ्याम्	पत्राभ्याम्	नेत्राभ्याम्	वनाभ्याम्
पञ्चमी	फलाभ्याम्	पुष्पाभ्याम्	पत्राभ्याम्	नेत्राभ्याम्	वनाभ्याम्
षष्ठी	फलयोः	पुष्पयोः	पत्रयोः	नेत्रयोः	वनयोः
सप्तमी	फलयोः	पुष्पयोः	पत्रयोः	नेत्रयोः	वनयोः
सम्बोधन	हे फल!	हे पुष्प!	हे पत्र!	हे नेत्र!	हे वन!

अकारान्त नपुंसकलिङ्ग बहुवचन

विभक्ति	फलम्	पुष्पम्	पत्रम्	नेत्रम्	वनम्
प्रथमा	फलानि	पुष्पाणि	पत्राणि	नेत्राणि	वनानि
द्वितीया	फलानि	पुष्पाणि	पत्राणि	नेत्राणि	वनानि
तृतीया	फलैः	पुष्पैः	पत्रैः	नेत्रैः	वनैः
चतुर्थी	फलेभ्यः	पुष्पेभ्यः	पत्रेभ्यः	नेत्रेभ्यः	वनेभ्यः
पञ्चमी	फलेभ्यः	पुष्पेभ्यः	पत्रेभ्यः	नेत्रेभ्यः	वनेभ्यः
षष्ठी	फलानाम्	पुष्पाणाम्	पत्राणाम्	नेत्राणाम्	वनानाम्
सप्तमी	फलेषु	पुष्पेषु	पत्रेषु	नेत्रेषु	वनेषु
सम्बोधन	हे फलानि!	हे पुष्पाणि!	हे पत्राणि!	हे नेत्राणि!	हे वनानि!

अन्य अकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द

(जिनका रूप 'फल' के समान चलेगा)

मित्रम्, पापम्, उपनेत्रम्, उद्यानम्, उदकम्, रत्नम्, मुखम्, सूत्रम्, क्रीडनकम्, कमलम्, जलजम्, वचनम्, पात्रम्, गृहम्, कार्यम्, कुसुमम्, मौनम्, द्वारम्, फलकम्, चरणम्, उदरम्, पुस्तकम्, सोपानम्, समाचारपत्रम्, तैलम्, पृष्ठम्, वस्त्रम्, मन्दिरम्, अक्षरम्, धनम्, नयनम्, कारयानम्, जलम्, अरण्यम्, ज्ञानम्, सुखम्, व्यजनम्, दुग्धम्, अमृतम्, दुःखम्, चित्रम्, तिलकम्, आसनम् आदि।

नोट- उपर्युक्त शब्दों का रूप 'फल' की तरह बनाइये।

सर्वनाम रूप

सर्वनाम रूप पुंलिङ्ग एकवचन में

विभक्ति	तद्	किम्	एतद्	यत्	सर्व
प्रथमा	सः	कः	एषः	यः	सर्वः
द्वितीया	तम्	कम्	एतम्	यम्	सर्वम्
तृतीया	तेन	केन	एतेन	येन	सर्वेण
चतुर्थी	तस्मै	कस्मै	एतस्मै	यस्मै	सर्वस्मै
पञ्चमी	तस्मात्	कस्मात्	एतस्मात्	यस्मात्	सर्वस्मात्
षष्ठी	तस्य	कस्य	एतस्य	यस्य	सर्वस्य
सप्तमी	तस्मिन्	कस्मिन्	एतस्मिन्	यस्मिन्	सर्वस्मिन्

सर्वनामरूप पुंलिङ्ग द्विवचन में

विभक्ति	तद्	किम्	एतद्	यत्	सर्व
प्रथमा	तौ	कौ	एतौ	यौ	सर्वौ
द्वितीया	तौ	कौ	एतौ	यौ	सर्वौ
तृतीया	ताभ्याम्	काभ्याम्	एताभ्याम्	याभ्याम्	सर्वाभ्याम्
चतुर्थी	ताभ्याम्	काभ्याम्	एताभ्याम्	याभ्याम्	सर्वाभ्याम्
पञ्चमी	ताभ्याम्	काभ्याम्	एताभ्याम्	याभ्याम्	सर्वाभ्याम्
षष्ठी	तयोः	कयोः	एतयोः	ययोः	सर्वयोः
सप्तमी	तयोः	कयोः	एतयोः	ययोः	सर्वयोः

सर्वनाम रूप पुंलिङ्ग बहुवचन में

विभक्ति	तद्	किम्	एतद्	यत्	सर्व
प्रथमा	ते	के	एते	ये	सर्वे
द्वितीया	तान्	कान्	एतान्	यान्	सर्वान्
तृतीया	तैः	कैः	एतैः	यैः	सर्वैः
चतुर्थी	तेभ्यः	केभ्यः	एतेभ्यः	येभ्यः	सर्वेभ्यः
पञ्चमी	तेभ्यः	केभ्यः	एतेभ्यः	येभ्यः	सर्वेभ्यः
षष्ठी	तेषाम्	केषाम्	एतेषाम्	येषाम्	सर्वेषाम्
सप्तमी	तेषु	केषु	एतेषु	येषु	सर्वेषु

सर्वनाम रूप पुंलिङ्ग में

मूलशब्द	प्रथमा			द्वितीया			तृतीया		
	एक॰	द्विव॰	बहु॰	एक॰	द्विव॰	बहु॰	एक॰	द्विव॰	बहु॰
तद् (वह)	सः	तौ	ते	तम्	तौ	तान्	तेन	ताभ्याम्	तैः
किम् (क्या)	कः	कौ	के	कम्	कौ	कान्	केन	काभ्याम्	कैः
एतद् (यह)	एषः	एतौ	एते	एतम्	एतौ	एतान्	एतेन	एताभ्याम्	एतैः
यत् (जो)	यः	यौ	ये	यम्	यौ	यान्	येन	याभ्याम्	यैः
सर्व (सब)	सर्वः	सर्वौ	सर्वे	सर्वम्	सर्वौ	सर्वान्	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः
इदम् (यह)	अयम्	इमौ	इमे	इमम्	इमौ	इमान्	अनेन	आभ्याम्	एभिः
अदस् (वह)	असौ	अमू	अमी	अमुम्	अमू	अमून्	अमुना	अमूभ्याम्	अमीभिः
अस्मद् (मैं)	अहम्	आवाम्	वयम्	माम्	आवाम्	अस्मान्	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
युष्मद् (तुम)	त्वम्	युवाम्	यूयम्	त्वाम्	युवाम्	युष्मान्	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
भवत् (आप)	भवान्	भवन्तौ	भवन्तः	भवन्तम्	भवन्तौ	भवतः	भवता	भवद्भ्याम्	भवद्भिः

चतुर्थी			पञ्चमी			षष्ठी			सप्तमी		
एक॰	द्विव॰	बहु॰	एक॰	द्विव॰	बहु॰	एक॰	द्विव॰	बहु॰	एक॰	द्विव॰	बहु॰
तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः	तस्य	तयोः	तेषाम्	तस्मिन्	तयोः	तेषु
कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः	कस्य	कयोः	केषाम्	कस्मिन्	कयोः	केषु
एतस्मै	एताभ्याम्	एतेभ्यः	एतस्मात्	एताभ्याम्	एतेभ्यः	एतस्य	एतयोः	एतेषाम्	एतस्मिन्	एतयोः	एतेषु
यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः	यस्मात्	याभ्याम्	येभ्यः	यस्य	ययोः	येषाम्	यस्मिन्	ययोः	येषु
सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः	सर्वस्मात्	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्	सर्वस्मिन्	सर्वयोः	सर्वेषु
अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः	अस्मात्	आभ्याम्	एभ्यः	अस्य	अनयोः	एषाम्	अस्मिन्	अनयोः	एषु
अमुष्मै	अमूभ्याम्	अमीभ्यः	अमुष्मात्	अमूभ्याम्	अमीभ्यः	अमुष्य	अमुयोः	अमीषाम्	अमुष्मिन्	अमुयोः	अमीषु
मह्यम्	आवाभ्याम्	अस्मभ्यम्	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्	मम	आवयोः	अस्माकम्	मयि	आवयोः	अस्मासु
तुभ्यम्	युवाभ्याम्	युष्मभ्यम्	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्	तव	युवयोः	युष्माकम्	त्वयि	युवयोः	युष्मासु
भवते	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः	भवतः	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः	भवतः	भवतोः	भवताम्	भवति	भवतोः	भवत्सु

सम्बोधन- हे भवन्   हे भवन्तौ   हे भवन्तः

सर्वनाम रूप स्त्रीलिङ्ग में

मूलशब्द	प्रथमा			द्वितीया			तृतीया		
	एक॰	**द्विव॰**	**बहु॰**	**एक॰**	**द्विव॰**	**बहु॰**	**एक॰**	**द्विव॰**	**बहु॰**
तद्	सा	ते	ताः	ताम्	ते	ताः	तया	ताभ्याम्	ताभिः
किम्	का	के	काः	काम्	के	काः	कया	काभ्याम्	काभिः
एतद्	एषा	एते	एताः	एताम्	एते	एताः	एतया	एताभ्याम्	एताभिः
यत्	या	ये	याः	याम्	ये	याः	यया	याभ्याम्	याभिः
सर्व	सर्वा	सर्वे	सर्वाः	सर्वाम्	सर्वे	सर्वाः	सर्वया	सर्वाभ्याम्	सर्वाभिः

चतुर्थी			पञ्चमी			षष्ठी			सप्तमी		
एक॰	**द्विव॰**	**बहु॰**	**एक॰**	**द्विव॰**	**बहु॰**	**एक॰**	**द्विव॰**	**बहु॰**	**एक॰**	**द्विव॰**	**बहु॰**
तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः	तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः	तस्याः	तयोः	तासाम्	तस्याम्	तयोः	तासु
कस्यै	काभ्याम्	काभ्यः	कस्याः	काभ्याम्	काभ्यः	कस्याः	कयोः	कासाम्	कस्याम्	कयोः	कासु
एतस्यै	एताभ्याम्	एताभ्यः	एतस्याः	एताभ्याम्	एताभ्यः	एतस्याः	एतयोः	एतासाम्	एतस्याम्	एतयोः	एतासु
यस्यै	याभ्याम्	याभ्यः	यस्याः	याभ्याम्	याभ्यः	यस्याः	ययोः	यासाम्	यस्याम्	ययोः	यासु
सर्वस्यै	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः	सर्वस्याः	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः	सर्वस्याः	सर्वयोः	सर्वासाम्	सर्वस्याम्	सर्वयोः	सर्वासु

सर्वनाम रूप नपुंसलिङ्ग में

मूलशब्द	प्रथमा			द्वितीया			तृतीया		
	एक॰	**द्विव॰**	**बहु॰**	**एक॰**	**द्विव॰**	**बहु॰**	**एक॰**	**द्विव॰**	**बहु॰**
तद्	तत्	ते	तानि	तत्	ते	तानि	तेन	ताभ्याम्	तैः
किम्	किम्	के	कानि	किम्	के	कानि	केन	काभ्याम्	कैः
एतद्	एतत्	एते	एतानि	एतत्	एते	एतानि	एतेन	एताभ्याम्	एतैः
यद्	यत्	ये	यानि	यत्	ये	यानि	येन	याभ्याम्	यैः
सर्व	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः

चतुर्थी			पञ्चमी			षष्ठी			सप्तमी		
एक॰	**द्विव॰**	**बहु॰**	**एक॰**	**द्विव॰**	**बहु॰**	**एक॰**	**द्विव॰**	**बहु॰**	**एक॰**	**द्विव॰**	**बहु॰**
तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः	तस्य	तयोः	तेषाम्	तस्मिन्	तयोः	तेषु
कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः	कस्य	कयोः	केषाम्	कस्मिन्	कयोः	केषु
एतस्मै	एताभ्याम्	एतेभ्यः	एतस्मात्	एताभ्याम्	एतेभ्यः	एतस्य	एतयोः	एतेषाम्	एतस्मिन्	एतयोः	एतेषु
यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः	यस्मात्	याभ्याम्	येभ्यः	यस्य	ययोः	येषाम्	यस्मिन्	ययोः	येषु
सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः	सर्वस्मात्	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्	सर्वस्मिन्	सर्वयोः	सर्वेषु

अस्मद् और युष्मद्

एकवचन		द्विवचन		बहुवचन	
अहम्	त्वम्	आवाम्	युवाम्	वयम्	यूयम्
माम्	त्वाम्	आवाम्	युवाम्	अस्मान्	युष्मान्
मया	त्वया	आवाभ्याम्	युवाभ्याम्	अस्माभिः	युष्माभिः
मह्यम्	तुभ्यम्	आवाभ्याम्	युवाभ्याम्	अस्मभ्यम्	युष्मभ्यम्
मत्	त्वत्	आवाभ्याम्	युवाभ्याम्	अस्मत्	युष्मत्
मम	तव	आवयोः	युवयोः	अस्माकम्	युष्माकम्
मयि	त्वयि	आवयोः	युवयोः	अस्मासु	युष्मासु

	अस्मद् (मैं)			युष्मद् (तुम)		
1.	अहम्	आवाम्	वयम्	त्वम्	युवाम्	यूयम्
2.	माम्, मा	आवाम्, नौ	अस्मान्, नः	त्वाम्, त्वा	युवाम्, वाम्	युष्मान्, वः
3.	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
4.	मह्यम्, मे	आवाभ्याम्, नौ	अस्मभ्यम्, नः	तुभ्यम्, ते	युवाभ्याम्, वाम्	युष्मभ्यम्, वः
5.	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
6.	मम, मे	आवयोः, नौ	अस्माकम्, नः	तव, ते	युवयोः, वाम्	युष्माकम्, वः
7.	मयि	आवयोः	अस्मासु	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

नोट- अस्मद् और युष्मद् शब्दों के रूप तीनों लिङ्गों में यही रूप चलेगा। इनका सम्बोधन रूप नहीं होता।

□□

धातुरूप

1. लट्लकार

धातु	प्रथम पुरुष			मध्यम पुरुष			उत्तम पुरुष		
पठ् (पढ़ना)	पठति	पठतः	पठन्ति	पठसि	पठथः	पठथ	पठामि	पठावः	पठामः
गम् (जाना)	गच्छति	गच्छतः	गच्छन्ति	गच्छसि	गच्छथः	गच्छथ	गच्छामि	गच्छावः	गच्छामः
दृश् (देखना)	पश्यति	पश्यतः	पश्यन्ति	पश्यसि	पश्यथः	पश्यथ	पश्यामि	पश्यावः	पश्यामः
पा (पीना)	पिबति	पिबतः	पिबन्ति	पिबसि	पिबथः	पिबथ	पिबामि	पिबावः	पिबामः
लिख् (लिखना)	लिखति	लिखतः	लिखन्ति	लिखसि	लिखथः	लिखथ	लिखामि	लिखावः	लिखामः
प्रच्छ् (पूँछना)	पृच्छति	पृच्छतः	पृच्छन्ति	पृच्छसि	पृच्छथः	पृच्छथ	पृच्छामि	पृच्छावः	पृच्छामः
वद् (बोलना)	वदति	वदतः	वदन्ति	वदसि	वदथः	वदथ	वदामि	वदावः	वदामः
भू (होना)	भवति	भवतः	भवन्ति	भवसि	भवथः	भवथ	भवामि	भवावः	भवामः
नश् (नष्ट होना)	नश्यति	नश्यतः	नश्यन्ति	नश्यसि	नश्यथः	नश्यथ	नश्यामि	नश्यावः	नश्यामः
नी (ले जाना)	नयति	नयतः	नयन्ति	नयसि	नयथः	नयथ	नयामि	नयावः	नयामः
इष् (चाहना)	इच्छति	इच्छतः	इच्छन्ति	इच्छसि	इच्छथः	इच्छथ	इच्छामि	इच्छावः	इच्छामः
कृष् (जोतना)	कृषति	कृषतः	कृषन्ति	कृषसि	कृषथः	कृषथ	कृषामि	कृषावः	कृषामः
श्रि (सेवा करना)	श्रयति	श्रयतः	श्रयन्ति	श्रयसि	श्रयथः	श्रयथ	श्रयामि	श्रयावः	श्रयामः
अस् (होना)	अस्ति	स्तः	सन्ति	असि	स्थः	स्थ	अस्मि	स्वः	स्मः
हन् (मारना)	हन्ति	हतः	घ्नन्ति	हन्सि	हथः	हथ	हन्मि	हन्वः	हन्मः
शक् (सकना)	शक्नोति	शक्नुतः	शक्नुवन्ति	शक्नोषि	शक्नुथः	शक्नुथ	शक्नोमि	शक्नुवः	शक्नुमः
आप् (प्राप्त करना)	आप्नोति	आप्नुतः	आप्नुवन्ति	आप्नोषि	आप्नुथः	आप्नुथ	आप्नोमि	आप्नुवः	आप्नुमः
कथ्(बोलना)(परस्मै.)	कथयति	कथयतः	कथयन्ति	कथयसि	कथयथः	कथयथ	कथयामि	कथयावः	कथयामः
दा (देना) (परस्मै.)	ददाति	दत्तः	ददति	ददासि	दत्थः	दत्थ	ददामि	दद्वः	दद्मः
ज्ञा(जानना) (परस्मै.)	जानाति	जानीतः	जानन्ति	जानासि	जानीथः	जानीथ	जानामि	जानीवः	जानीमः
कृ (करना) (परस्मै.)	करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति	करोषि	कुरुथः	कुरुथ	करोमि	कुर्वः	कुर्मः
कथ् (आत्मने.)	कथयते	कथयेते	कथयन्ते	कथयसे	कथयेथे	कथयध्वे	कथये	कथयावहे	कथयामहे
दा (आत्मने.)	दत्ते	ददाते	ददते	दत्से	ददाथे	दद्ध्वे	ददे	दद्वहे	दद्महे
ज्ञा (आत्मने.)	जानीते	जानाते	जानते	जानीषे	जानाथे	जानीध्वे	जाने	जानीवहे	जानीमहे
कृ (आत्मने)	कुरुते	कुर्वाते	कुर्वते	कुरुषे	कुर्वाथे	कुरुध्वे	कुर्वे	कुर्वहे	कुर्महे
लभ (पाना)(आत्मने)	लभते	लभेते	लभन्ते	लभसे	लभेथे	लभध्वे	लभे	लभावहे	लभामहे

2. लृट्लकार

	प्रथम पुरुष			मध्यम पुरुष			उत्तम पुरुष		
पठ्	पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति	पठिष्यसि	पठिष्यथः	पठिष्यथ	पठिष्यामि	पठिष्यावः	पठिष्यामः
गम्	गमिष्यति	गमिष्यतः	गमिष्यन्ति	गमिष्यसि	गमिष्यथः	गमिष्यथ	गमिष्यामि	गमिष्यावः	गमिष्यामः
लिख्	लेखिष्यति	लेखिष्यतः	लेखिष्यन्ति	लेखिष्यसि	लेखिष्यथः	लेखिष्यथ	लेखिष्यामि	लेखिष्यावः	लेखिष्यामः
वद्	वदिष्यति	वदिष्यतः	वदिष्यन्ति	वदिष्यसि	वदिष्यथः	वदिष्यथ	वदिष्यामि	वदिष्यावः	वदिष्यामः
भू	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः
नश्	नशिष्यति	नशिष्यतः	नशिष्यन्ति	नशिष्यसि	नशिष्यथः	नशिष्यथ	नशिष्यामि	नशिष्यावः	नशिष्यामः
इष्	एषिष्यति	एषिष्यतः	एषिष्यन्ति	एषिष्यसि	एषिष्यथः	एषिष्यथ	एषिष्यामि	एषिष्यावः	एषिष्यामः
श्रि	श्रयिष्यति	श्रयिष्यतः	श्रयिष्यन्ति	श्रयिष्यसि	श्रयिष्यथः	श्रयिष्यथ	श्रयिष्यामि	श्रयिष्यावः	श्रयिष्यामः
अस्	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः
हन्	हनिष्यति	हनिष्यतः	हनिष्यन्ति	हनिष्यसि	हनिष्यथः	हनिष्यथ	हनिष्यामि	हनिष्यावः	हनिष्यामः
पा	पास्यति	पास्यतः	पास्यन्ति	पास्यसि	पास्यथः	पास्यथ	पास्यामि	पास्यावः	पास्यामः
नी	नेष्यति	नेष्यतः	नेष्यन्ति	नेष्यसि	नेष्यथः	नेष्यथ	नेष्यामि	नेष्यावः	नेष्यामः
आप्	आप्स्यति	आप्स्यतः	आप्स्यन्ति	आप्स्यसि	आप्स्यथः	आप्स्यथ	आप्स्यामि	आप्स्यावः	आप्स्यामः
शक्	शक्ष्यति	शक्ष्यतः	शक्ष्यन्ति	शक्ष्यसि	शक्ष्यथः	शक्ष्यथ	शक्ष्यामि	शक्ष्यावः	शक्ष्यामः
कृष्	कृक्ष्यति	कृक्ष्यतः	कृक्ष्यन्ति	कृक्ष्यसि	कृक्ष्यथः	कृक्ष्यथ	कृक्ष्यामि	कृक्ष्यावः	कृक्ष्यामः
दृश्	द्रक्ष्यति	द्रक्ष्यतः	द्रक्ष्यन्ति	द्रक्ष्यसि	द्रक्ष्यथः	द्रक्ष्यथ	द्रक्ष्यामि	द्रक्ष्यावः	द्रक्ष्यामः
प्रच्छ्	प्रक्ष्यति	प्रक्ष्यतः	प्रक्ष्यन्ति	प्रक्ष्यसि	प्रक्ष्यथः	प्रक्ष्यथ	प्रक्ष्यामि	प्रक्ष्यावः	प्रक्ष्यामः
कथ् (पर.)	कथयिष्यति	कथयिष्यतः	कथयिष्यन्ति	कथयिष्यसि	कथयिष्यथः	कथयिष्यथ	कथयिष्यामि	कथयिष्यावः	कथयिष्यामः
दा (पर.)	दास्यति	दास्यतः	दास्यन्ति	दास्यसि	दास्यथः	दास्यथ	दास्यामि	दास्यावः	दास्यामः
ज्ञा (पर.)	ज्ञास्यति	ज्ञास्यतः	ज्ञास्यन्ति	ज्ञास्यसि	ज्ञास्यथः	ज्ञास्यथ	ज्ञास्यामि	ज्ञास्यावः	ज्ञास्यामः
कृ (पर.)	करिष्यति	करिष्यतः	करिष्यन्ति	करिष्यसि	करिष्यथः	करिष्यथ	करिष्यामि	करिष्यावः	करिष्यामः
कथ् (आ.)	कथयिष्यते	कथयिष्येते	कथयिष्यन्ते	कथयिष्यसे	कथयिष्येथे	कथयिष्यध्वे	कथयिष्ये	कथयिष्यावहे	कथयिष्यामहे
दा (आ.)	दास्यते	दास्येते	दास्यन्ते	दास्यसे	दास्येथे	दास्यध्वे	दास्ये	दास्यावहे	दास्यामहे
ज्ञा (आत्म.)	ज्ञास्यते	ज्ञास्येते	ज्ञास्यन्ते	ज्ञास्यसे	ज्ञास्येथे	ज्ञास्यध्वे	ज्ञास्ये	ज्ञास्यावहे	ज्ञास्यामहे
कृ (आत्म.)	करिष्यते	करिष्येते	करिष्यन्ते	करिष्यसे	करिष्येथे	करिष्यध्वे	करिष्ये	करिष्यावहे	करिष्यामहे
लभ् (आत्म.)	लप्स्यते	लप्स्येते	लप्स्यन्ते	लप्स्यसे	लप्स्येथे	लप्स्यध्वे	लप्स्ये	लप्स्यावहे	लप्स्यामहे

3.लोट्लकार

	प्रथम पुरुष			मध्यम पुरुष			उत्तम पुरुष		
पठ्	पठतु	पठताम्	पठन्तु	पठ	पठतम्	पठत	पठानि	पठाव	पठाम
गम्	गच्छतु	गच्छताम्	गच्छन्तु	गच्छ	गच्छतम्	गच्छत	गच्छानि	गच्छाव	गच्छाम
दृश्	पश्यतु	पश्यताम्	पश्यन्तु	पश्य	पश्यतम्	पश्यत	पश्यानि	पश्याव	पश्याम
पा	पिबतु	पिबताम्	पिबन्तु	पिब	पिबतम्	पिबत	पिबानि	पिबाव	पिबाम
लिख्	लिखतु	लिखताम्	लिखन्तु	लिख	लिखतम्	लिखत	लिखानि	लिखाव	लिखाम
प्रच्छ्	पृच्छतु	पृच्छताम्	पृच्छन्तु	पृच्छ	पृच्छतम्	पृच्छत	पृच्छानि	पृच्छाव	पृच्छाम
वद्	वदतु	वदताम्	वदन्तु	वद	वदतम्	वदत	वदानि	वदाव	वदाम
भू	भवतु	भवताम्	भवन्तु	भव	भवतम्	भवत	भवानि	भवाव	भवाम
नश्	नश्यतु	नश्यताम्	नश्यन्तु	नश्य	नश्यतम्	नश्यत	नश्यानि	नश्याव	नश्याम
नी	नयतु	नयताम्	नयन्तु	नय	नयतम्	नयत	नयानि	नयाव	नयाम
इष्	इच्छतु	इच्छताम्	इच्छन्तु	इच्छ	इच्छतम्	इच्छत	इच्छानि	इच्छाव	इच्छाम
कृष्	कृषतु	कृषताम्	कृषन्तु	कृष	कृषतम्	कृषत	कृषाणि	कृषाव	कृषाम
श्रि	श्रयतु	श्रयताम्	श्रयन्तु	श्रय	श्रयतम्	श्रयत	श्रयाणि	श्रयाव	श्रयाम
अस्	अस्तु	स्ताम्	सन्तु	एधि	स्तम्	स्त	असानि	असाव	असाम
हन्	हन्तु	हताम्	घ्नन्तु	जहि	हतम्	हत	हनानि	हनाव	हनाम
शक्	शक्नोतु	शक्नुताम्	शक्नुवन्तु	शक्नुहि	शक्नुतम्	शक्नुत	शक्नवानि	शक्नवाव	शक्नवाम
आप्	आप्नोतु	आप्नुताम्	आप्नुवन्तु	आप्नुहि	आप्नुतम्	आप्नुत	आप्नवानि	आप्नवाव	आप्नवाम
कथ् (पर.)	कथयतु	कथयताम्	कथयन्तु	कथय	कथयतम्	कथयत	कथयानि	कथयाव	कथयाम
दा (पर.)	ददातु	दत्ताम्	ददतु	देहि	दत्तम्	दत्त	ददानि	ददाव	ददाम
ज्ञा (पर.)	जानातु	जानीताम्	जानन्तु	जानीहि	जानीतम्	जानीत	जानानि	जानाव	जानाम
कृ (पर.)	करोतु	कुरुताम्	कुर्वन्तु	कुरु	कुरुतम्	कुरुत	करवाणि	करवाव	करवाम
कथ् (आ.)	कथयताम्	कथयेताम्	कथयन्ताम्	कथयस्व	कथयेथाम्	कथयध्वम्	कथयै	कथयावहै	कथयामहै
दा (आ.)	दत्ताम्	ददाताम्	ददताम्	दत्स्व	ददाथाम्	दद्ध्वम्	ददै	ददावहै	ददामहै
ज्ञा (आ.)	जानीताम्	जानाताम्	जानताम्	जानीष्व	जानाथाम्	जानीध्वम्	जानै	जानावहै	जानामहै
कृ (आ.)	कुरुताम्	कुर्वाताम्	कुर्वताम्	कुरुष्व	कुर्वाथाम्	कुरुध्वम्	करवै	करवावहै	करवामहै
लभ (आ.)	लभताम्	लभेताम्	लभन्ताम्	लभस्व	लभेथाम्	लभध्वम्	लभै	लभावहै	लभामहै

4. विधिलिङ्लकार

	प्रथम पुरुष			मध्यम पुरुष			उत्तम पुरुष		
पठ्	पठेत्	पठेताम्	पठेयुः	पठेः	पठेतम्	पठेत	पठेयम्	पठेव	पठेम
लिख्	लिखेत्	लिखेताम्	लिखेयुः	लिखेः	लिखेतम्	लिखेत	लिखेयम्	लिखेव	लिखेम
पा	पिबेत्	पिबेताम्	पिबेयुः	पिबेः	पिबेतम्	पिबेत	पिबेयम्	पिबेव	पिबेम
भू	भवेत्	भवेताम्	भवेयुः	भवेः	भवेतम्	भवेत	भवेयम्	भवेव	भवेम
वद्	वदेत्	वदेताम्	वदेयुः	वदेः	वदेतम्	वदेत	वदेयम्	वदेव	वदेम
नी	नयेत्	नयेताम्	नयेयुः	नयेः	नयेतम्	नयेत	नयेयम्	नयेव	नयेम
श्रि	श्रयेत्	श्रयेताम्	श्रयेयुः	श्रयेः	श्रयेतम्	श्रयेत	श्रयेयम्	श्रयेव	श्रयेम
इष्	इच्छेत्	इच्छेताम्	इच्छेयुः	इच्छेः	इच्छेतम्	इच्छेत	इच्छेयम्	इच्छेव	इच्छेम
गम्	गच्छेत्	गच्छेताम्	गच्छेयुः	गच्छेः	गच्छेतम्	गच्छेत	गच्छेयम्	गच्छेव	गच्छेम
प्रच्छ्	पृच्छेत्	पृच्छेताम्	पृच्छेयुः	पृच्छेः	पृच्छेतम्	पृच्छेत	पृच्छेयम्	पृच्छेव	पृच्छेम
दृश्	पश्येत्	पश्येताम्	पश्येयुः	पश्येः	पश्येतम्	पश्येत	पश्येयम्	पश्येव	पश्येम
नश्	नश्येत्	नश्येताम्	नश्येयुः	नश्येः	नश्येतम्	नश्येत	नश्येयम्	नश्येव	नश्येम
कृष्	कृषेत्	कृषेताम्	कृषेयुः	कृषेः	कृषेतम्	कृषेत	कृषेयम्	कृषेव	कृषेम
अस्	स्यात्	स्याताम्	स्युः	स्याः	स्यातम्	स्यात	स्याम्	स्याव	स्याम
हन्	हन्यात्	हन्याताम्	हन्युः	हन्याः	हन्यातम्	हन्यात	हन्याम्	हन्याव	हन्याम
शक्	शक्नुयात्	शक्नुयाताम्	शक्नुयुः	शक्नुयाः	शक्नुयातम्	शक्नुयात	शक्नुयाम्	शक्नुयाव	शक्नुयाम
आप्	आप्नुयात्	आप्नुयाताम्	आप्नुयुः	आप्नुयाः	आप्नुयातम्	आप्नुयात	आप्नुयाम्	आप्नुयाव	आप्नुयाम
दा (पर.)	दद्यात्	दद्याताम्	दद्युः	दद्याः	दद्यातम्	दद्यात	दद्याम्	दद्याव	दद्याम
ज्ञा (पर.)	जानीयात्	जानीयाताम्	जानीयुः	जानीयाः	जानीयातम्	जानीयात	जानीयाम्	जानीयाव	जानीयाम
कृ (पर.)	कुर्यात्	कुर्याताम्	कुर्युः	कुर्याः	कुर्यातम्	कुर्यात	कुर्याम्	कुर्याव	कुर्याम
कथ् (पर.)	कथयेत्	कथयेताम्	कथयेयुः	कथयेः	कथयेतम्	कथयेत	कथयेयम्	कथयेव	कथयेम
कथ् (आ.)	कथयेत	कथयेयाताम्	कथयेरन्	कथयेथाः	कथयेयाथाम्	कथयेध्वम्	कथयेय	कथयेवहि	कथयेमहि
दा (आ.)	ददीत	ददीयाताम्	ददीरन्	ददीथाः	ददीयाथाम्	ददीध्वम्	ददीय	ददीवहि	ददीमहि
ज्ञा (आ.)	जानीत	जानीयाताम्	जानीरन्	जानीथाः	जानीयाथाम्	जानीध्वम्	जानीय	जानीवहि	जानीमहि
कृ (आ.)	कुर्वीत	कुर्वीयाताम्	कुर्वीरन्	कुर्वीथाः	कुर्वीयाथाम्	कुर्वीध्वम्	कुर्वीय	कुर्वीवहि	कुर्वीमहि
लभ (आ.)	लभेत	लभेयाताम्	लभेरन्	लभेथाः	लभेयाथाम्	लभेध्वम्	लभेय	लभेवहि	लभेमहि

5.लङ्लकार

	प्रथम पुरुष			मध्यम पुरुष			उत्तम पुरुष		
पठ्	अपठत्	अपठताम्	अपठन्	अपठः	अपठतम्	अपठत	अपठम्	अपठाव	अपठाम
गम्	अगच्छत्	अगच्छताम्	अगच्छन्	अगच्छः	अगच्छतम्	अगच्छत	अगच्छम्	अगच्छाव	अगच्छाम
दृश्	अपश्यत्	अपश्यताम्	अपश्यन्	अपश्यः	अपश्यतम्	अपश्यत	अपश्यम्	अपश्याव	अपश्याम
पा	अपिबत्	अपिबताम्	अपिबन्	अपिबः	अपिबतम्	अपिबत	अपिबम्	अपिबाव	अपिबाम
लिख्	अलिखत्	अलिखताम्	अलिखन्	अलिखः	अलिखतम्	अलिखत	अलिखम्	अलिखाव	अलिखाम
प्रच्छ्	अपृच्छत्	अपृच्छताम्	अपृच्छन्	अपृच्छः	अपृच्छतम्	अपृच्छत	अपृच्छम्	अपृच्छाव	अपृच्छाम
वद्	अवदत्	अवदताम्	अवदन्	अवदः	अवदतम्	अवदत	अवदम्	अवदाव	अवदाम
भू	अभवत्	अभवताम्	अभवन्	अभवः	अभवतम्	अभवत	अभवम्	अभवाव	अभवाम
नश् -	अनश्यत्	अनश्यताम्	अनश्यन्	अनश्यः	अनश्यतम्	अनश्यत	अनश्यम्	अनश्याव	अनश्याम
नी	अनयत्	अनयताम्	अनयन्	अनयः	अनयतम्	अनयत	अनयम्	अनयाव	अनयाम
कृष्	अकृषत्	अकृषताम्	अकृषन्	अकृषः	अकृषतम्	अकृषत	अकृषम्	अकृषाव	अकृषाम
श्रि	अश्रयत्	अश्रयताम्	अश्रयन्	अश्रयः	अश्रयतम्	अश्रयत	अश्रयम्	अश्रयाव	अश्रयाम
अस्	आसीत्	आस्ताम्	आसन्	आसीः	आस्तम्	आस्त	आसम्	आस्व	आस्म
हन्	अहन्	अहताम्	अघ्नन्	अहन्	अहतम्	अहत	अहनम्	अहन्व	अहन्म
इष्	ऐच्छत्	ऐच्छताम्	ऐच्छन्	ऐच्छः	ऐच्छतम्	ऐच्छत	ऐच्छम्	ऐच्छाव	ऐच्छाम
शक्	अशक्नोत्	अशक्नुताम्	अशक्नुवन्	अशक्नोः	अशक्नुतम्	अशक्नुत	अशक्नवम्	अशक्नुव	अशक्नुम
आप्	आप्नोत्	आप्नुताम्	आप्नुवन्	आप्नोः	आप्नुतम्	आप्नुत	आप्नवम्	आप्नुव	आप्नुम
कथ् (पर.)	अकथयत्	अकथयताम्	अकथयन्	अकथयः	अकथयतम्	अकथयत	अकथयम्	अकथयाव	अकथयाम
दा (पर.)	अददात्	अदत्ताम्	अददुः	अददाः	अदत्तम्	अदत्त	अददाम्	अदद्व	अदद्म
ज्ञा (पर.)	अजानात्	अजानीताम्	अजानन्	अजानाः	अजानीतम्	अजानीत	अजानाम्	अजानीव	अजानीम
कृ (पर.)	अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्	अकरोः	अकुरुतम्	अकुरुत	अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म
कथ् (आ.)	अकथयत	अकथयेताम्	अकथयन्त	अकथयथाः	अकथयेथाम्	अकथयध्वम्	अकथये	अकथयावहि	अकथयामहि
दा (आ.)	अदत्त	अददाताम्	अददत	अदत्थाः	अददाथाम्	अदद्ध्वम्	अददि	अदद्वहि	अदद्महि
ज्ञा (आ.)	अजानीत	अजानाताम्	अजानत	अजानीथाः	अजानाथाम्	अजानीध्वम्	अजानि	अजानीवहि	अजानीमहि
कृ (आ.)	अकुरुत	अकुर्वाताम्	अकुर्वत	अकुरुथाः	अकुर्वाथाम्	अकुरुध्वम्	अकुर्वि	अकुर्वहि	अकुर्महि
लभ (आ.)	अलभत	अलभेताम्	अलभन्त	अलभथाः	अलभेथाम्	अलभध्वम्	अलभे	अलभावहि	अलभामहि

धातुओं का पूर्ण परिचय

1. **पठ्** पठ व्यक्तायां वाचि (पढ़ना,सीखना) सकर्मक, सेट्, परस्मैपदी, भ्वादिगण।
2. **गम्** गम्लृ गतौ (जाना) सकर्मक, अनिट्, परस्मैपदी, भ्वादिगण।
3. **दृश्** दृशिर् प्रेक्षणे (देखना) सकर्मक, अनिट्, परस्मैपदी, भ्वादिगण।
4. **पा** पा पाने (पीना) सकर्मक, अनिट्, परस्मैपदी, भ्वादिगण।
5. **लिख्** लिख अक्षरविन्यासे (लिखना) सकर्मक, सेट् परस्मैपदी, तुदादिगण।
6. **प्रच्छ्** प्रच्छ-ज्ञीप्सायाम् (पूछना, जानने की इच्छा करना) सकर्मक, अनिट्, परस्मैपदी, तुदादिगण।

7.	वद्	वद- व्यक्तायां वाचि (कहना, स्पष्ट बोलना) सकर्मक, सेट्, परस्मैपदी, भ्वादिगण।
8.	भू	भू-सत्तायाम् (होना) अकर्मक, अनिट्, परस्मैपदी, भ्वादिगण।
9.	अस्	अस भुवि (होना,रहना) अकर्मक, सेट्, परस्मैपदी अदादिगण।
10.	हन्	हन हिंसागत्योः (मार डालना, जाना) सकर्मक, अनिट्, सेट्, परस्मैपदी अदादिगण।
11.	कथ्	कथ-वाक्यप्रबन्धे (कहना, व्याख्यान करना) सकर्मक, सेट्, उभयपदी, चुरादिगण।
12.	दा	डुदाञ् दाने, (देना, सौंपना) सकर्मक, अनिट्, उभयपदी, जुहोत्यादिगण।
13.	ज्ञा	ज्ञा अवबोधने (जानना, समझना) सकर्मक, अनिट्, उभयपदी, क्र्यादिगण।
14.	कृ	डुकृञ् करणे (करना) सकर्मक, सेट्, उभयपदी, तनादिगण।
15.	लभ	डुलभष् प्राप्तौ (प्राप्त होना, मिलना) सकर्मक, अनिट्, आत्मनेपदी भ्वादिगण।

संख्याशब्दरूप 'एक'

	प्रथमा	द्वितीया	तृतीया	चतुर्थी	पञ्चमी	षष्ठी	सप्तमी
पुं0	एकः	एकम्	एकेन	एकस्मै	एकस्मात्	एकस्य	एकस्मिन्
नपुं0	एकम्	एकम्	एकेन	एकस्मै	एकस्मात्	एकस्य	एकस्मिन्
स्त्री0	एका	एकाम्	एकया	एकस्यै	एकस्याः	एकस्याः	एकस्याम्

नोट- केवल 'एक' शब्द के एकवचन में रूप चलते हैं।

द्वि (दो)

पुं0	द्वौ	द्वौ	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वयोः	द्वयोः
नपुं0	द्वे	द्वे	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वयोः	द्वयोः
स्त्री0	द्वे	द्वे	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वयोः	द्वयोः

नोट- 'द्वि' शब्द के केवल द्विवचन में रूप चलेंगे।

त्रि (तीन)

पुं0	त्रयः	त्रीन्	त्रिभिः	त्रिभ्यः	त्रिभ्यः	त्रयाणाम्	त्रिषु
नपुं0	त्रीणि	त्रीणि	त्रिभिः	त्रिभ्यः	त्रिभ्यः	त्रयाणाम्	त्रिषु
स्त्री0	तिस्रः	तिस्रः	तिसृभिः	तिसृभ्यः	तिसृभ्यः	तिसृणाम्	तिसृषु

नोट- 3 से 18 तक की संख्याओं के रूप बहुवचन में ही चलते हैं।

चतुर् (चार)

पुं0	चत्वारः	चतुरः	चतुर्भिः	चतुर्भ्यः	चतुर्भ्यः	चतुर्णाम्	चतुर्षु
नपुं0	चत्वारि	चत्वारि	चतुर्भिः	चतुर्भ्यः	चतुर्भ्यः	चतुर्णाम्	चतुर्षु
स्त्री0	चतस्रः	चतस्रः	चतसृभिः	चतसृभ्यः	चतसृभ्यः	चतसृणाम्	चतसृषु

पञ्चन् (पाँच) तीनों लिङ्गों में

पञ्च	पञ्च	पञ्चभिः	पञ्चभ्यः	पञ्चभ्यः	पञ्चानाम्	पञ्चसु

षष् (छह) तीनों लिङ्गों में

षट्	षट्	षड्भिः	षड्भ्यः	षड्भ्यः	षण्णाम्	षट्सु

सप्तन् (सात) तीनों लिङ्गों में

सप्त	सप्त	सप्तभिः	सप्तभ्यः	सप्तभ्यः	सप्तानाम्	सप्तसु

अष्टन् (आठ) तीनों लिङ्गों में

अष्ट	अष्ट	अष्टभिः	अष्टभ्यः	अष्टभ्यः	अष्टानाम्	अष्टसु
अष्टौ	अष्टौ	अष्टाभिः	अष्टाभ्यः	अष्टाभ्यः	अष्टानाम्	अष्टासु

नवन् (नौ) तीनों लिङ्गों में

नव	नव	नवभिः	नवभ्यः	नवभ्यः	नवानाम्	नवसु

दशन् (दस) तीनों लिङ्गों में

दश	दश	दशभिः	दशभ्यः	दशभ्यः	दशानाम्	दशसु

संस्कृतसंख्यायें

संख्या	संस्कृत
1	एकः, एकम् ,एका
2	द्वौ ,द्वे, द्वे
3	त्रयः ,त्रीणि ,तिस्रः
4	चत्वारः, चत्वारि ,चतस्रः
5	पञ्च
6	षट्
7	सप्त
8	अष्ट/अष्टौ
9	नव
10	**दश**
11	एकादश
12	द्वादश
13	त्रयोदश
14	चतुर्दश
15	पञ्चदश
16	षोडश
17	सप्तदश
18	अष्टादश
19	नवदश
20	**विंशतिः**
21	एकविंशतिः
22	द्वाविंशतिः
23	त्रयोविंशतिः
24	चतुर्विंशतिः
25	पञ्चविंशतिः
26	षड्विंशतिः
27	सप्तविंशतिः
28	अष्टाविंशतिः
29	नवविंशतिः
30	**त्रिंशत्**
31	एकत्रिंशत्
32	द्वात्रिंशत्
33	त्रयस्त्रिंशत्
34	चतुस्त्रिंशत्
35	पञ्चत्रिंशत्
36	षट्त्रिंशत्
37	सप्तत्रिंशत्
38	अष्टात्रिंशत्
39	नवत्रिंशत् , एकोनचत्वारिंशत्
40	**चत्वारिंशत्**
41	एकचत्वारिंशत्
42	द्विचत्वारिंशत् , द्वाचत्वारिंशत्
43	त्रिचत्वारिंशत् , त्रयश्चत्वारिंशत्
44	चतुश्चत्वारिंशत्
45	पञ्चचत्वारिंशत्
46	षट्चत्वारिंशत्
47	सप्तचत्वारिंशत्
48	अष्टचत्वारिंशत्, अष्टाचत्वारिंशत्
49	नवचत्वारिंशत्, एकोनपञ्चाशत्
50	**पञ्चाशत्**
51	एकपञ्चाशत्
52	द्विपञ्चाशत्, द्वापञ्चाशत्
53	त्रिपञ्चाशत्, त्रयःपञ्चाशत्
54	चतुःपञ्चाशत्
55	पञ्चपञ्चाशत्
56	षट्पञ्चाशत्
57	सप्तपञ्चाशत्
58	अष्टपञ्चाशत्, अष्टापञ्चाशत्
59	नवपञ्चाशत् , एकोनषष्टिः
60	**षष्टिः**
61	एकषष्टिः
62	द्विषष्टिः, द्वाषष्टिः
63	त्रिषष्टिः , त्रयःषष्टिः
64	चतुःषष्टिः
65	पञ्चषष्टिः
66	षट्षष्टिः
67	सप्तषष्टिः
68	अष्टषष्टिः, अष्टाषष्टिः
69	नवषष्टिः , एकोनसप्ततिः
70	**सप्ततिः**
71	एकसप्ततिः
72	द्विसप्ततिः , द्वासप्ततिः
73	त्रिसप्ततिः , त्रयःसप्ततिः
74	चतुःसप्ततिः
75	पञ्चसप्ततिः
76	षट्सप्ततिः
77	सप्तसप्ततिः
78	अष्टसप्ततिः, अष्टासप्ततिः
79	नवसप्ततिः, एकोनाशीतिः
80	**अशीतिः**
81	एकाशीतिः
82	द्व्यशीतिः
83	त्र्यशीतिः
84	चतुरशीतिः
85	पञ्चाशीतिः
86	षडशीतिः
87	सप्ताशीतिः
88	अष्टाशीतिः
89	नवाशीतिः , एकोननवतिः
90	**नवतिः**
91	एकनवतिः
92	द्विनवतिः, द्वानवतिः
93	त्रिनवतिः, त्रयोनवतिः
94	चतुर्नवतिः
95	पञ्चनवतिः
96	षण्णवतिः
97	सप्तनवतिः
98	अष्टनवतिः , अष्टानवतिः
99	नवनवतिः , एकोनशतम्
100.	**शतम्**

एक हजार - सहस्रम्
दस हजार - अयुतम् (दशसहस्रम्)
एक लाख - लक्षम्
दस लाख - नियुतम्,प्रयुतम्, दशलक्षम्
एक करोड़ - कोटिः
दस करोड़ - दशकोटिः
एक अरब - अर्बुदम्
दस अरब - दशार्बुदम्
एक खरब - खर्वम्
दस खरब - दशखर्वम्
एक नील - नीलम्
दस नील - दशनीलम्
एक पद्म - पद्मम्
दशपद्म - दशपद्मम्
एक शंख - शंखम्
दस शंख - दशशंखम्
महाशंख - महाशंखम्

संख्या सम्बन्धी कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य

➢ 101	=	एकाधिकं शतम्
102	=	द्व्यधिकं शतम्
103	=	त्र्यधिकं शतम्
104	=	चतुरधिकं शतम्
105	=	पञ्चाधिकं शतम् आदि।

➢ 200	=	द्विशती/शतद्वयम्/द्विशतम्
300	=	त्रिशती/शतत्रयम् / त्रिशतम्
400	=	चतुःशती / चतुरशतम्
500	=	पञ्चशती / पञ्चशतम्
600	=	षट्शती / षट्शतम्
700	=	सप्तशती / सप्तशतम्।

- त्रि (3) से लेकर अष्टादशन् (18) तक सभी शब्दों के रूप केवल बहुवचन में चलते हैं।
- **''विंशत्यादिरानवतेः''** एकोनविंशतिः (19) से नवनवतिः (99) तक सभी शब्द एकवचनान्त स्त्रीलिङ्ग हैं। इनके रूप हमेशा एकवचन में ही चलेंगे।
- इकारान्त विंशति, षष्टि, सप्तति, अशीति, नवति – जिन पदों के अन्त में ये पद आयें उनके रूप 'मति' के समान चलेंगे।
- तकारान्त त्रिंशत्, चत्वारिंशत्, पञ्चाशत् आदि शब्दों के रूप 'सरित्' के समान चलेंगे।
- शतम्, सहस्रम्, अयुतम्, लक्षम्, नियुतम्, प्रयुतम्, आदि शब्द सदा एकवचनान्त नपुंसकलिङ्ग में होते हैं। इनके रूप 'फल' की तरह चलेंगे।

संस्कृत कवियों एवं लेखकों की रचनायें

महाकाव्य

1. रामायण (7 काण्ड) - महर्षि वाल्मीकि
2. महाभारत (18 पर्व) - वेदव्यास
3. कुमारसम्भवम् (17 सर्ग) - कालिदास
4. रघुवंशम् (19 सर्ग) - कालिदास
5. बुद्धचरितम् (28 सर्ग) - अश्वघोष
6. सौन्दरनन्द (18 सर्ग) - अश्वघोष
7. किरातार्जुनीयम् (18 सर्ग) - भारवि
8. शिशुपालवधम् (20 सर्ग) - माघ
9. नैषधीयचरितम् (22 सर्ग) - श्रीहर्ष
10. जानकीहरणम् - कुमारदास
11. हरविजयम् (50 सर्ग) - रत्नाकर
12. धर्मशर्माभ्युदय - हरिश्चन्द्र
13. राघवपाण्डवीयम् - कविराज (माधवभट्ट)
14. जाम्बवती-विजयम् - पाणिनि (पाताल-विजयम्)
15. स्वर्गारोहणम् - कात्यायन (वररुचि)
16. महानन्दकाव्य - पतञ्जलि
17. प्रयागप्रशस्ति - हरिषेण
18. सेतुबन्ध - प्रवरसेन
19. हयग्रीववध - भर्तृमेण्ठ
20. गउडवहो - वाक्पति
21. रामचरित - अभिनन्द
22. नवसाहसाङ्कचरित - पद्मगुप्त
23. रघुनाथचरित - वामनभट्टबाण
24. सेतुकाव्य - मातृगुप्त
25. कादम्बरीसार - अभिनन्द
26. रामायणमञ्जरी - क्षेमेन्द्र
27. भारतमञ्जरी - क्षेमेन्द्र
28. विक्रमाङ्कदेवचरित - बिल्हण
29. श्रीकण्ठचरितम् - मंखक
30. राजतरङ्गिणी (8 तरंग) - कल्हण

काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ

1. नाट्यशास्त्र (36 अध्याय) - आचार्य भरत
2. काव्यालङ्कार - भामह
3. काव्यादर्श (3 परिच्छेद) - दण्डी
4. ध्वन्यालोक (4 उद्योत) - आनन्दवर्धन
5. काव्यमीमांसा - राजशेखर
6. दशरूपक (4 प्रकाश) - धनञ्जय और धनिक
7. वक्रोक्तिजीवितम् - कुन्तक
8. व्यक्तिविवेक (3 विमर्श) - महिमभट्ट
9. सरस्वतीकण्ठाभरण - भोजराज
10. शृङ्गारप्रकाश (36 प्रकाश) - भोजराज
11. औचित्यविचारचर्चा - क्षेमेन्द्र
12. कविकण्ठाभरण - क्षेमेन्द्र
13. काव्यप्रकाश (10 उल्लास) - मम्मट
14. काव्यानुशासन - हेमचन्द्र
15. नाट्यदर्पण - रामचन्द्र/गुणचन्द्र
16. भावप्रकाशन - शारदातनय
17. चन्द्रालोक (10 मयूख) - जयदेव
18. साहित्यदर्पण (10 परिच्छेद) - विश्वनाथ
19. कुवलयानन्द - अप्पयदीक्षित
20. रसगंगाधर (4 आनन) - पण्डितराज जगन्नाथ

नाट्यग्रन्थ

1. प्रतिज्ञायौगन्धरायण (4 अङ्क) - भास
2. स्वप्नवासवदत्तम् (6 अङ्क) - भास
3. प्रतिमानाटकम् (7 अङ्क) - भास
4. अभिषेकनाटकम् (6 अङ्क) - भास
5. अविमारकम् (6 अङ्क) - भास
6. बालचरितम् (5 अङ्क) - भास
7. चारुदत्तम् (4 अङ्क) - भास
8. पञ्चरात्रम् (3 अङ्क) - भास
9. दूतवाक्यम् (एकाङ्की) - भास
10. कर्णभारम् (एकाङ्की) - भास
11. ऊरुभङ्गम् (एकाङ्की) - भास
12. दूतघटोत्कचम् (एकाङ्की) - भास
13. मध्यमव्यायोगः (एकाङ्की) - भास
14. मृच्छकटिकम् (10 अङ्क) - शूद्रक
15. मालविकाग्निमित्रम् (5 अङ्क) - कालिदास
16. विक्रमोर्वशीयम् (5 अङ्क) - कालिदास

17. अभिज्ञानशाकुन्तलम् (7 अङ्क) - कालिदास
18. मुद्राराक्षसम् (7 अङ्क) - विशाखदत्त
19. प्रियदर्शिका (नाटिका) (4 अङ्क) - हर्षवर्धन
20. रत्नावली (नाटिका) (4 अङ्क) - हर्षवर्धन
21. नागानन्द (5 अङ्क) - हर्षवर्धन
22. वेणीसंहारम् (6 अङ्क) - भट्टनारायण
23. मालतीमाधवम् (10 अङ्क) - भवभूति
24. महावीरचरितम् (7 अङ्क) - भवभूति
25. उत्तररामचरितम् (7 अङ्क) - भवभूति
26. शारिपुत्रप्रकरण (9 अङ्क) - अश्वघोष
27. कर्पूरमञ्जरी (सट्टक) (4 अङ्क) - राजशेखर
28. बालरामायण (10 अङ्क) - राजशेखर
29. कुन्दमाला (6 अङ्क) - दिङ्नाग
30. प्रसन्नराघव (7 अङ्क) - जयदेव
31. प्रबोधचन्द्रोदय (6 अङ्क) - कृष्णमिश्र
32. हनुमन्नाटक - दामोदरमिश्र
33. सामवतम् - अम्बिकादत्त व्यास
34. पार्वतीपरिणय - बाणभट्ट
35. मुकुटताडितक - बाणभट्ट

गद्यकाव्य

1. दशकुमारचरितम् - दण्डी
2. अवन्तिसुन्दरी कथा - दण्डी
3. वासवदत्ता (कथा) - सुबन्धु
4. कादम्बरी (कथा) - बाणभट्ट
5. हर्षचरितम् (आख्यायिका) - बाणभट्ट
6. मन्दारमञ्जरी - विश्वेश्वर पाण्डेय
7. शिवराजविजय (ऐतिहासिक उपन्यास) - अम्बिकादत्त व्यास
8. कथामुक्तावलिः - पण्डिता क्षमाराव
9. ग्रामज्योतिः - पण्डिता क्षमाराव
10. तिलकमञ्जरी - धनपाल
11. वेमभूपालचरितम् - वामनभट्ट बाण

गीतिकाव्य/खण्डकाव्य

1. ऋतुसंहारम् - कालिदास
2. मेघदूतम् - कालिदास
3. नीतिशतकम् - भर्तृहरि
4. शृङ्गारशतकम् - भर्तृहरि
5. वैराग्यशतकम् - भर्तृहरि
6. अमरुशतकम् - अमरुक
7. गीतगोविन्दम् - जयदेव
8. गङ्गालहरी - पण्डित जगन्नाथ
9. सुधालहरी - पण्डित जगन्नाथ
10. आसफ विलास - पण्डित जगन्नाथ
11. जगदाभरण - पण्डित जगन्नाथ
12. भामिनी विलास - पण्डित जगन्नाथ
13. गाथासप्तशती - हाल
14. चौरपञ्चाशिका - बिल्हण
15. आर्यासप्तशती - गोवर्धनाचार्य
16. चण्डीशतकम् - बाणभट्ट
17. सूर्यशतकम् - मयूरभट्ट
18. कुट्टिनीमतम् - दामोदरगुप्त
19. पवनदूत - धोयी
20. हंसदूत - रूपगोस्वामी

स्तोत्रकाव्य

1. शिवताण्डवस्तोत्रम् - रावण
2. सौन्दर्यलहरी - शङ्कराचार्य
3. आनन्दलहरी - शङ्कराचार्य
4. शिवमहिम्नस्तोत्रम् - पुष्पदन्त
5. गङ्गास्तव - जयदेव

सुभाषितग्रन्थ

1. सदुक्तिकर्णामृतम् - श्रीधरदास
2. सूक्तिमुक्तावली - सिद्धचन्द्रमणि
3. सूक्तिरत्नाकर - सिद्धचन्द्रमणि
4. सुभाषित सुधानिधि - सायण
5. सुभाषित रत्नभाण्डागार - शिवदत्त एवं नारायण राम आचार्य

कथासाहित्य

1. पञ्चतन्त्र - विष्णुशर्मा
2. हितोपदेश - नारायणपण्डित
3. बृहत्कथा - गुणाढ्य
4. बृहत्कथामञ्जरी - क्षेमेन्द्र
5. कथासरित्सागर - सोमदेव
6. पुरुषपरीक्षा - विद्यापति
7. भोजप्रबन्ध - बल्लाल सेन
8. जातकमाला - आर्यसूर
9. उदयसुन्दरी कथा - सोड्ढल

चम्पूकाव्य

1. नलचम्पू (दमयन्तीकथा)	-	त्रिविक्रमभट्ट
2. मदालसाचम्पू	-	त्रिविक्रमभट्ट
3. जीवन्धरचम्पू	-	हरिश्चन्द्र
4. रामायणचम्पू	-	भोजराज
5. भारतचम्पू	-	अनन्तभट्ट

दर्शनग्रन्थ

1. सांख्यसूत्र	-	कपिल
2. मीमांसासूत्र	-	जैमिनि
3. वैशेषिकसूत्र	-	कणाद
4. ब्रह्मसूत्र	-	बादरायण
5. योगसूत्र	-	पतञ्जलि
6. न्यायसूत्रभाष्य	-	वात्स्यायन
7. सांख्यकारिका	-	ईश्वरकृष्ण
8. भामतीटीका, तत्त्वकौमुदी	-	वाचस्पति मिश्र
9. वेदान्तसार	-	सदानन्द
11. तर्कभाषा	-	केशवमिश्र
12. तत्त्वचिन्तामणि	-	गङ्गेशोपाध्याय

अन्य महत्त्वपूर्णग्रन्थ

1. वेदाङ्गज्योतिष	-	आचार्य लगध
2. निरुक्त	-	यास्क
3. छन्दःसूत्रम्	-	आचार्य पिङ्गल
4. चरक संहिता	-	चरक
5. सुश्रुत संहिता	-	सुश्रुत
6. अर्थशास्त्र	-	कौटिल्य
7. मनुस्मृति	-	मनु
8. नामलिङ्गानुशासनम् (अमरकोश)	-	अमर सिंह
9. कामसूत्रम्	-	वात्स्यायन
10. रावणवध/भट्टिकाव्य	-	भट्टि
11. छन्दोमञ्जरी	-	गङ्गादास
12. लीलावती, बीजगणित	-	भास्कराचार्य
13. अणुभाष्यम्	-	वल्लभाचार्य
14. ब्रह्मसूत्र शांकरभाष्य	-	शङ्कराचार्य

व्याकरणग्रन्थ

1. अष्टाध्यायी	-	पाणिनि
2. महाभाष्यम्	-	पतञ्जलि
3. सिद्धान्तकौमुदी	-	भट्टोजिदीक्षित
4. प्रौढमनोरमा	-	भट्टोजिदीक्षित
5. लिङ्गानुशासनम्	-	व्याडि
6. वाक्यपदीयम्	-	भर्तृहरि
7. मनोरमाकुचमर्दनम्	-	पण्डितराज जगन्नाथ
8. लघुसिद्धान्तकौमुदी	-	वरदराज
9. मध्यसिद्धान्तकौमुदी	-	वरदराज
10. सारसिद्धान्तकौमुदी	-	वरदराज
11. शब्देन्दुशेखर	-	नागेशभट्ट
12. परिभाषेन्दुशेखर	-	नागेशभट्ट
13. काशिकावृत्तिः	-	जयादित्य एवं वामन
14. वैयाकरणभूषणसार	-	कौण्डभट्ट
15. कातन्त्रव्याकरण	-	शर्ववर्मा
16. रूपमाला	-	विमलसरस्वती
17. शब्दानुशासनम्	-	हेमचन्द्र
18. चान्द्रव्याकरणम्	-	चन्द्रगोमी

सूक्तियाँ

1. अप्रियस्य च पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः
(वाल्मीकि रामायण 6.16.21)

अर्थ- अप्रिय किन्तु परिणाम में हितकर हो ऐसी बात कहने और सुनने वाले दुर्लभ होते हैं।

2. अप्रार्थितानुकूलः मन्मथः प्रकटीकरिष्यति।
(कादम्बरी/चन्द्रापीडकथा)

अर्थ- बिना प्रार्थना किये ही मेरे प्रति अनुकूल हो जाने वाला कामदेव शीघ्र ही उसे प्रकट कर देगा। ऐसा कादम्बरी के अनुराग के कारणों के विषय में चन्द्रापीड कहता है।

3. अनाथपरिपालनं हि धर्मः अस्मद्विधानाम्।
(कादम्बरी/चन्द्रापीडकथा)

अर्थ- पिंजड़े में स्थित वैशम्पायन तोते ने शूद्रक को बताया कि मुनिकुमार हारीत मुझे जाबालि के आश्रम में ले गया और आश्रम के मुनियों के पूँछने पर मेरे विषय में इसप्रकार बताया- 'हमारे जैसे लोगों का धर्म ही अनाथों (शुक) का पालन करना है।'

4. अपुत्राणां न सन्ति लोकाशुभाः।
(कादम्बरी/चन्द्रापीडकथा)

अर्थ- जिन दम्पतियों को पुत्र की प्राप्ति नहीं होती है उन्हें लोक शुभ नहीं होते।

5.अतिगर्हितेन अकृत्येनापि रक्षणीयान् सुहृदसून् मन्यते साधवः।
(कादम्बरी/चन्द्रापीडकथा)

अर्थ- साधु प्रकृति के लोग अत्यन्त निन्दनीय बुरे कर्मों के द्वारा भी मित्र के प्राणों की रक्षा करना उचित मानते हैं।

6. अशेषजनपूजनीया चेयं जातिः तस्मै प्रणामम् अकरवम्।
(कादम्बरी/चन्द्रापीडकथा)

अर्थ- महाश्वेता चन्द्रापीड से कहती है- ऋषि-मुनियों की जाति सभी के लिए पूजनीय होती है, इसलिए मैंने मुनिकुमार पुण्डरीक को प्रणाम किया।

7. अशान्तस्य कुतः सुखम्। (श्रीमद्भगवद्गीता- 2/26)

अर्थ- अशान्त (शान्ति रहित) व्यक्ति को सुख कैसे मिल सकता है?

8. आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान्रिपुः।
(नीतिशतकम्)

अर्थ- आलस्य मनुष्य के शरीर में रहने वाला उसी का घोर शत्रु है।

9. अस्यामहं त्वयि च सम्प्रति वीतचिन्तः।
(अभि0शाकुन्तलम्)

अर्थ- कण्व कहते हैं- अब मैं इस वनज्योत्स्ना और तुम्हारे विषय में निश्चिन्त हो गया हूँ।

10. अनुमतगमनाशकुन्तला तरुभिरियं वनवासबन्धुभिः।
(अभि0शाकुन्तलम्-4/10)

अर्थ- कण्व कहते हैं वृक्षों ने इस शकुन्तला को पतिगृह जाने की अनुमति दे दी है।

11. अवेहि तनयां ब्रह्मन्नग्निगर्भां शमीमिव।
(अभि0शाकुन्तलम्)

अर्थ- महर्षि कण्व को आकाशवाणी से शकुन्तला विषयक ज्ञान हुआ ऐसा प्रियंवदा ने अनसूया से बताया है ब्रह्मन् पृथ्वी के कल्याण हेतु दुष्यन्त द्वारा स्थापित वीर्य को धारण करती हुई 'पुत्री शकुन्तला को तुम अग्निधारण करने वाले शमी वृक्ष की भाँति समझो।'

12. अनुपयुक्तभूषणोऽयं जनः। (अभि0शाकुन्तलम् अङ्क 4)

अर्थ- दोनों सखियाँ शकुन्तला को आभूषण धारण कराते हुए कहती हैं 'हम दोनों आभूषणों के उपयोग से अनभिज्ञ हैं' अतः चित्रावली को देखकर आभूषण पहनाती हैं।

13. आभरणोचितं रूपमाश्रमसुलभैः
प्रसाधनैर्विप्रकार्यते। (अभि0शाकुन्तलम् अङ्क 4)

अर्थ- प्रियंवदा कहती है- आभूषण के योग्य रूप आश्रम में प्राप्त अलंकारों से विकृत किया जा रहा है।

14. आत्मकृतनां हि दोषाणां नियतम् अनुभवितव्यं फलम् आत्मनैव (कादम्बरी/चन्द्रापीडकथा)

अर्थ- अपने किये गये दोषों का फल निश्चय ही स्वयं को भोगना पड़ता है।

15. 'अतिथिदेवो भव' (तैत्तिरीयोपनिषद् 1/11/2)

अर्थ- अतिथि देव स्वरूप होता है।

16. 'अतिस्नेहः पापशंकी।' (अभि0शाकुन्तलम् अङ्क-4)

अर्थ- अत्यधिक प्रेम पाप की आशंका उत्पन्न करता है।

17. 'अत्यादरः शंकनीयः।' (मुद्राराक्षस अङ्क-1)

अर्थ- अत्यधिक आदर किया जाना शङ्कनीय है।

18. 'अनार्यः परदारव्यवहारः।' (अभि0शाकुन्तलम् अङ्क-7)

अर्थ- परस्त्री के विषय में बात करना अशिष्टता है।

19. 'अर्थो हि कन्या परकीय एव।' (अभि0शाकुन्तलम्)
अर्थ- कन्या वस्तुतः पराई वस्तु है।
20. अनुलङ्घनीयः सदाचारः (वेणीसंहार-अङ्क-5)
अर्थ- सदाचार का उल्लङ्घन नहीं करना चाहिए।
21. 'अनतिक्रमणीयो हि विधिः।' (स्वप्नवासवदत्तम्)
अर्थ- भाग्य का उल्लङ्घन नहीं किया जा सकता।
22. 'अहिंसा परमो धर्मः।' (महाभारत-अनुशासनपर्व)
अर्थ- अहिंसा परम धर्म है।
23. 'अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता।' (किरातार्जुनीयम् 1/23)
अर्थ- बलवान् के साथ किया गया वैर-विरोध होना अनिष्ट अन्त है।
24. 'आचारः परमो धर्मः।' (मनुस्मृति 01/108)
अर्थ- आचार ही परम धर्म है।
25. आज्ञा गुरुणामविचारणीया। (रघुवंशम् 14/46)
अर्थ- बड़ों की आज्ञा विचारणीय नहीं होती।
26. आचारपूतं पवनः सिषेवे। (रघुवंशम् 02/13)
अर्थ- आचारों से पवित्र राजा दिलीप की सेवा में झरनों के कणों से सिञ्चित हवायें संलग्न थीं।
27. आर्जवं हि कुटिलेषु न नीतिः। (नैषधीयचरितम्)
अर्थ- कुटिल जनों के प्रति सरलता नीति नहीं होती।
28. अल्पस्य हेतोर्बहु हातुमिच्छन्विचारमूढः प्रतिभासि मे त्वम्। (रघुवंशम् 02/47)
अर्थ- थोड़ी सी वस्तु के लिए शरीर का त्याग करने वाले राजा दिलीप मुझे मूढ़बुद्धि वाले प्रतीत हो रहे हैं ऐसा सिंह कुम्भोदर ने कहा।
29. अवेहि मां कामदुधां प्रसन्नाम्। (रघुवंशम् 02/63)
अर्थ- नन्दिनी गाय राजा से बोली- मै प्रसन्न हूँ वरदान माँगो! मुझे केवल दूध देने वाली गाय न समझो बल्कि प्रसन्न होने पर मुझे अभिलाषाओं को पूरी करने वाली समझो।
30. अनतिक्रमणीया नियतिरिति। (कादम्बरी/चन्द्रापीडकथा)
अर्थ- नियति अतिक्रमणीय होती है अर्थात् होनी नहीं टाला जा सकता।
31. अहो मे मन्दपुण्यस्य दारुणः कर्मणां विपाकः। (कादम्बरी/चन्द्रापीडकथा)
अर्थ- संसार में प्रत्येक प्राणी को अपने कर्मों का फल अवश्य भोगना पड़ता है। यह निश्चय ही मेरे दुष्कृत्यों का परिणाम है जो मुझे चाण्डाल युवक के हाथों जाना पड़ रहा है यह शुक-शिशु कहता है।
32. अकारणपक्षपातिनं भवन्तं द्रष्टुम् इच्छति मे हृदयम्। (कादम्बरी/चन्द्रापीडकथा)
अर्थ- केयूरक महाश्वेता का सन्देश चन्द्रापीड को देते हुए कहता है कि आपके प्रति मेरा स्नेह स्वार्थ रहित है फिर भी आपसे मिलने की उत्कण्ठा हो रही है।
33. अनाराधित प्रसन्नेन कुसुमशरेण भगवत ते वरः दत्तः। (चन्द्रापीडकथा/कादम्बरी)
अर्थ- कामपीड़ित कादम्बरी जब अपनी दयनीय दशा के लिए चन्द्रापीड को दोष देती है तो पत्रलेखा उसे समझाती है- कि कामदेव के दोषों के लिए राजकुमार को दोष देना उचित नहीं है। यह तो तुम्हारे ऊपर कामदेव की स्वतः प्रसन्नता का लक्षण है।
34. अहो मानुषीषु पक्षपातः प्रजापतेः। (कादम्बरी/चन्द्रापीडकथा)
अर्थ- कादम्बरी पत्रलेखा के सौन्दर्य को देखकर कहती है कि ब्रह्मा ने पत्रलेखा के प्रति पक्षपात किया है और उसे गन्धर्वों से भी अधिक सौन्दर्य प्रदान किया है।
35. अपसृतपाण्डुपत्रा मुञ्चन्त्यश्रूणीव लताः। (अभि0शाकुन्तलम् 4/12)
अर्थ- शकुन्तला के पतिगृह गमन के समय आश्रम में पशु-पक्षी और तरु लतायें भी वियोग पीड़ित हैं। लताओं से पीले पत्ते टूट कर गिर रहे हैं मानो वे आँसू बहा रहे हैं।
36. अद्यप्रभृति दूरपरिवर्तिनी ते खलु भविष्यामि। (अभि0शाकुन्तलम् अङ्क 04)
अर्थ- शकुन्तला वनज्योत्स्ना के पास जाकर तथा लता का आलिङ्गन करती हुई कहती है कि - आज से मैं तुमसे दूर हो जाऊँगी। मैं पतिगृह के लिए विदा हो रही हूँ। (मेरा पुनरागमन कब होगा, इसे मैं नहीं जानती हूँ।)
37. असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय। (बृहदारण्यक - 1.3.28)
अर्थ- मुझे असत् से सत् की ओर ले जायें, अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जायें।
38. आलाने गृह्यते हस्ती वाजी वल्गासु गृह्यते।
हृदये गृह्यते नारी यदीदं नास्ति गम्यताम्॥ (मृच्छकटिकम् 01/50)
अर्थ- हाथी खम्भे से रोका जाता है। घोड़ा लगाम से रोका जाता है, स्त्री हृदय से प्रेम करने से ही वश में की जाती है यदि ऐसा नहीं है तो सीधे अपनी राह नापिये।
39. इष्टप्रवासजनितान्यबलाजनस्य दुःखानि नूनमतिमात्र सुदुःसहानि। (अभि0शाकुन्तलम्-4/3)
अर्थ- कण्व का शिष्य कहता है वस्तुतः स्त्रियों को अपने इष्ट व्यक्ति के प्रवास से उत्पन्न दुःख अत्यन्त असह्य होते हैं।

40. ''ईशावास्यमिदं सर्वम्'' (ईशावास्योपनिषद्-मन्त्र1)
अर्थ- सम्पूर्ण जगत् के कण-कण में ईश्वर व्याप्त है।
41. उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत (कठोपनिषद्)
अर्थ- हे मनुष्य! उठो, जागो और श्रेष्ठ महापुरुषों को पाकर उनके द्वारा परब्रह्म परमेश्वर को जान लो।
42. उत्सवप्रियाः खलुः मनुष्याः (अभि0शाकुन्तलम् अङ्क-6)
अर्थ- मनुष्य उत्सव प्रिय होते हैं।
43. उपस्थिता शोणितपारणा मे सुरद्विषश्चान्द्रमसी सुधेव। (रघुवंश-2/39)
अर्थ- सिंह दिलीप से कहता है कि यह गाय मेरी रक्तमयी पारणा है, उपवासोपरान्त का भोजन है वह मुझे भूख मिटाने के लिए उसी प्रकार पर्याप्त है, जिस प्रकार राहु के लिए चन्द्रमा का अमृत।
44. उत्तरावकाशम् अपहरन्त्या कृतं वचसि कौशलम्। (कादम्बरी/चन्द्रापीडकथा)
अर्थ- चन्द्रापीड मदलेखा से कहता है- तुम अपना मन्तव्य स्वीकार कराने की कला जानती हो। तुमने उत्तर का अवसर दिये बिना ही अपनी वाणी की कुशलता प्रकट कर दी है।
45. एको रसः करुण एव निमित्तभेदात्। (उत्तररामचरितम्)
अर्थ- एक करुण रस ही कारण भेद से भिन्न होकर अलग-अलग परिणामों को प्राप्त होता है।
46. एको हि दोषो गुणसन्निपाते निमज्जतीन्दोः किरणेष्विवाङ्कः। (कुमारसम्भवम् -01/03)
अर्थ- अनेक गुणों के होने पर एक दोष चन्द्रमा की किरणो में कलंक के समान छिप जाता है।
47. ओदकान्तं स्निग्धो जनोऽनुगन्तव्यः। (अभि0शाकुन्तलम्)
अर्थ- शार्ङ्गरव कहता है- भगवन्! प्रिय व्यक्ति का जल के किनारे तक अनुगमन करना चाहिए, ऐसी श्रुति है।
48. ऋद्धं हि राज्यं पदमैन्द्रमाहुः। (रघुवंशम् सर्ग 2/50)
अर्थ- समृद्धशाली राज्य इन्द्र के पद स्वर्ग के समान होता है।
49. को नामोष्णोदकेन नवमालिकां सिञ्चति। (अभि0शाकुन्तलम् अङ्क-4)
अर्थ- प्रियंवदा कहती है नवमालिका को गर्म जल से कौन सींचना चाहेगा।
50. कोऽन्यो हुतवहाद् दग्धुं प्रभवति। (अभि0शाकुन्तलम्)
अर्थ- अनसूया कहती है अग्नि के सिवाय कौन जला सकता है? यहाँ अग्नि से अभिप्राय 'दुर्वासा' से है।
51. काले खलु समारब्धाः फलं बध्नन्ति नीतयः। (रघुवंशम् 12/69)
अर्थ- समय पर आरम्भ की गयी नीतियाँ सफल होती हैं।
52. कः कं शक्तो रक्षितुं मृत्युकाले। (स्वप्नवासवदत्तम्)
अर्थ- मृत्यु समीप आ जाने पर कौन किसकी रक्षा कर सकता है।
53. किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम् (अभि0शाकुन्तलम् 1/20)
अर्थ- सुन्दर आकृतियों के लिए क्या वस्तु अलंकार नहीं होती है।
54. कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः। (ईशावास्योपनिषद् मन्त्र-2)
अर्थ- शास्त्र नियत कर्त्तव्य कर्मों का आचरण करते हुए ही सौ वर्ष तक जीने की इच्छा करो।
55. क्षणे-क्षणे यन्नवतामुपैति तदेवरूपं रमणीयतायाः। (शिशुपालवधम् 4/17)
अर्थ- जो प्रत्येक क्षण नवीनता को धारण करता है वही रमणीयता का स्वरूप है।
56. कर्तारः सुलभा लोके विज्ञातारस्तु दुर्लभाः॥ (स्वप्नवासवदत्तम् 4/9)
अर्थ- संसार में सत्कार करने वाले लोग बहुत मिल जाते हैं लेकिन उसके वास्तविक ज्ञाता बहुत कम मिलते हैं।
57. क्षणत्यागे कुतो विद्या कणत्यागे कुतो धनम्।
अर्थ- क्षण त्यागने से विद्या कहाँ और कण त्यागने से धन कहाँ।
58. क्षत्रस्य शब्दो भुवनेषु रूढः। (रघुवंशम् 2/53)
अर्थ- महर्षि वशिष्ठ के प्रभाव से मेरे ऊपर यमराज भी आक्रमण करने में समर्थ नहीं है तो सांसारिक हिंसक पशुओं का तो कहना ही क्या?
59. गरीयसी गुरोः आज्ञा। (कादम्बरी/चन्द्रापीडकथा)
अर्थ- गुरुजनों (बड़ों) की आज्ञा महान् होती है अतः प्रत्येक मनुष्य को उसका पालन करना चाहिए।
60. गुर्वपि विरह दुःखमाशाबन्धः साहयति। (अभि0शाकुन्तलम् 4/16)
अर्थ- अनसूया शकुन्तला से कहती है- आशा का बन्धन विरह के कठोर दुःख को भी सहन करा देता है।
61. गुणवते कन्यका प्रतिपादनीया। (अभि0शाकुन्तलम्)
अर्थ- गुणवान् (सुयोग्य) व्यक्ति को कन्या देनी चाहिए। यह माता-पिता का मुख्य विचार होता है।
62. गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः।
अर्थ- सीता विषयक शोक से युक्त जनक तथा अरुन्धती की बातचीत-अरुन्धती का कथन- 'गुणवानों में गुण ही पूजा के स्थान होते हैं, न कोई चिह्न विशेष, न आयु।'
63. चित्रार्पितारम्भ इवावतस्थे। (रघुवंशम्- 2/31)
अर्थ- चित्र में लिखे हुए बाण निकालने के उद्योग में लगे हुए की भाँति हो गया।

64. चरति विमुक्ताहारं व्रतमिव भवतो रिपुस्त्रीणाम्। (कादम्बरी/चन्द्रापीडकथा)

अर्थ- आपके शत्रुओं की स्त्रियों के स्तनों का जोड़ा ऐसा लगता है, जैसे कोई तपस्वी भोजन का त्याग करके तप कर रहा हो।

65. चक्रारपंक्तिरिव गच्छति भाग्यपंक्तिः। (स्वप्नवासवदत्तम्)

अर्थ- समय के क्रम से बदलती हुई संसार में भाग्य पंक्ति पहिए के अरों की तरह चलती है।

66. चारित्र्येण विहीन आढ्योपि च दुगर्तो भवति। (मृच्छकटिकम् 1/43)

अर्थ- चरित्रहीन धनवान् भी दुर्दशा को प्राप्त होता है।

67. छायेव तां भूपतिरन्वगच्छत्। (रघुवंश-2/6)

अर्थ- राजा दिलीप ने नन्दिनी को छाया की भाँति अनुसरण किया।

68. छायेव मैत्री खलसज्जनानाम्। (नीतिशतकम्)

अर्थ- छाया के समान दुर्जनों और सज्जनों की मित्रता होती है।

69. जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।

अर्थ- माता-जन्मभूमि और स्वर्ग से भी बड़ी होती है।

70. जीवेम शरदः शतम्। (यजुर्वेद 36/24)

अर्थ- हम सौ वर्ष तक देखने वाले और जीवित रहने वाले हों।

71. तमसो मा ज्योतिर्गमय। (बृहदारण्यक 1.3.28)

अर्थ- अन्धकार से प्रकाश की ओर तथा मृत्यु से अमृत की ओर ले जायें।

72. तेजोद्वयस्य युगपद्व्यसनोदयाभ्याम् ।
लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु।। (अभि0शाकुन्तलम्)

अर्थ- दो तेजों चन्द्रमा और सूर्य के एक साथ अस्त एवं उदित होने से अपनी दशाओं के परिवर्तित होने से मानों संसार को नियन्त्रित अर्थात् शिक्षित किया जा रहा है।

73. तीर्थोदकं च वह्निश्च नान्यतः शुद्धिमर्हतः। (उत्तररामचरितम् 1/13)

अर्थ- तीर्थ जल और अग्नि से अन्य पदार्थ से शुद्धि के योग्य नहीं होते हैं।

74. तेजसां हि न वयः समीक्ष्यते। (रघुवंशम् 11/1)

अर्थ- तेजस्वी पुरुषों की आयु नहीं देखी जाती है।

75. दुःखं न्यासस्य रक्षणम्। (स्वप्नवासवदत्तम् 1/10)

अर्थ- किसी के न्यास अर्थात् धरोहर की रक्षा करना दुःखपूर्ण (दुष्कर) है।

76. दुःखशीले तपस्विजने कोऽभ्यर्थ्यताम्? (अभि0शाकुन्तलम् अङ्क-4)

अर्थ- कष्ट सहन करने वाले तपस्वियों में से किससे प्रार्थना करें।

77. दिनक्षपामध्यगतेव सन्ध्या। (रघुवंशम् 2/20)

अर्थ- वह नन्दिनी दिन और रात्रि के मध्य सन्ध्या के समान सुशोभित हुई।

78. दीर्घसूत्री विनश्यति। (महाभारत शान्तिपर्व 137/1)

अर्थ- प्रत्येक कार्य में अनावश्यक विलम्ब करने वाला नष्ट होता है।

79. दैवमविद्वांसः प्रमाणयन्ति। (मुद्राराक्षस अङ्क-3)

अर्थ- मूर्ख व्यक्ति भाग्य को ही प्रमाण मानते हैं।

80. धैर्यधना हि साधवः। (कादम्बरी/चन्द्रापीडकथा)

अर्थ- सज्जन लोगों का धैर्य ही धन होता है।

81. धूमाकुलितदृष्टेरपि यजमानस्य पावके एवाहुतिः पतिता। (अभि0शाकुन्तलम् अङ्क-4)

अर्थ- सौभाग्य से धुएँ से व्याकुल दृष्टि वाले यजमान की भी आहुति ठीक अग्नि में ही पड़ी।

82. न केवलानां पयसां प्रसूतिमवेहि मां कामदुधां प्रसन्नाम् (रघुवंशम् 2/63)

अर्थ- नन्दिनी राजा दिलीप से कहती है, वर माँगो, मैं केवल दूध देने वाली गाय मात्र नहीं हूँ बल्कि प्रसन्न होने पर अभिलाषाओं को पूर्ण करने वाली भी हूँ।

83. न पादपोन्मूलनशक्तिरंहः शिलोच्चये मूर्च्छति मारुतस्य। (रघुवंशम् -2/34)

अर्थ- सिंह ने राजा दिलीप से कहा- मुझ पर बाण चलाने का प्रयास व्यर्थ है, क्योंकि जो वायु का वेग वृक्षों को जड़ से उखाड़ने की शक्ति रखता है, वह पर्वत पर व्यर्थ हो जाता है।

84. न खलु धीमतां कश्चिद्विषयो नाम। (अभि0शाकुन्तलम् अङ्क-4)

अर्थ- शार्ङ्गरव कहता है- विद्वानों के लिए वस्तुतः कोई चीज अज्ञात नहीं होती है।

85. न तादृशा आकृतिविशेषा गुणविरोधिनो भवन्ति। (अभि0शाकुन्तलम् अङ्क-4)

अर्थ- प्रियंवदा अनसूया से कहती है राजा दुष्यन्त की भांति सुन्दर आकृति वाले लोग गुण विरोधी नहीं होते।

86. न धर्मवृद्धेषु वयः समीक्ष्यते। (कुमारसम्भवम् -5/16)

अर्थ- कम उम्र वाले व्यक्ति भी तप के कारण आदरणीय होते हैं।

87. न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यः। (कठोपनिषद् 1/1/27)

अर्थ- मनुष्य कभी धन से तृप्त नहीं हो सकता।

88. न हि प्रियं प्रवक्तुमिच्छन्ति मृषा हितैषिणः। (किरातार्जुनीयम् 1/2)

अर्थ- कल्याण चाहने वाले लोग झूठा प्रिय वचन बोलने की इच्छा नहीं करते हैं।

89. न हि सर्वः सर्वं जानाति। (मुद्राराक्षस अङ्क-1)

अर्थ- सभी लोग सब कुछ नहीं जानते हैं।

90. नास्तिको वेदनिन्दकः। (मनुस्मृति 2/11)

अर्थ- वेदों की निन्दा करने वाला नास्तिक है।

91. नास्ति मातृसमो गुरुः। (महाभारत अनुशासनपर्व)

अर्थ- भीष्म कहते हैं- माता के समान कोई गुरु नहीं।

92. नास्ति विद्या समं चक्षुः। (महाभारत शान्तिपर्व)

अर्थ- संसार में ब्रह्मविद्या के समान कोई नेत्र नहीं है।

93. पयोधरीभूत चतुःसमुद्रां,
जुगोप गोरूपधरामिवोर्वीम्। (रघुवंशम् -2/3)

अर्थ- राजा दिलीप ने समुद्र के समान चार थनों वाली नन्दिनी गाय की रक्षा इसप्रकार की जैसे चार थनों के समान चार समुद्रों वाली पृथ्वी ही गाय के रूप में हो।

94. प्राणैरुपक्रोशमलीमसैर्वा। (रघुवंशम् -2/53)

अर्थ- राजा दिलीप को जब लगा कि नन्दिनी को सिंह से नहीं छुड़ा पायेंगे तो उन्होंने कहा- तब तो मेरा क्षत्रियत्व ही नष्ट हो जायेगा क्योंकि क्षत्रियत्व से विपरीत वृत्ति वाले व्यक्ति का राज्य से या निन्दा युक्त मलिन प्राणों से क्या लाभ?

95. पिण्डेष्वनास्था खलु भौतिकेषु। (रघुवंशम् -2/57)

अर्थ- विवेकी लोगों की आस्था नष्ट होने वाले इन भौतिक शरीरों से नहीं है, बल्कि यश रूपी शरीर की रक्षा करने में है।

96. प्रसादचिह्नानि पुरःफलानि। (रघुवंशम् 2/22)

अर्थ- पहले प्रसन्नतासूचक चिह्न दिखाई पड़ते हैं तदन्तर फल की प्राप्ति होती है।

97. परित्यक्तः कुलकन्यकानां क्रमः।
(कादम्बरी/चन्द्रापीडकथा)

अर्थ- कादम्बरी चन्द्रापीड को अपना हृदय समर्पित करके कहती है- कुल कन्याओं की परम्परा रही है कि गुरुजनों की सहमति से ही वे योग्य वर का चुनाव करती हैं। मैनें यह परम्परा तोड़ दी है। यह लज्जा का विषय है।

98. पीड्यन्ते गृहिणः कथं नु तनयाविश्लेषदुःखैर्नवैः।
(अभि0शाकुन्तलम् 4/6)

अर्थ- काश्यप (कण्व) शकुन्तला की विदाई वेला में दुःखी होकर कहते हैं कि जब हम जैसे वनवासी तपस्वी भी अपनी पुत्री के वियोग में इस प्रकार दुःखी होते हैं तो गृहस्थ लोगों की बात ही क्या (वे तो और अधिक दुःखी होते होंगे।)

99. परोपकाराय सतां विभूतयः। (नीतिशतक)

अर्थ- सज्जनों की विभूति (ऐश्वर्य) परोपकार के लिए है।

100. प्रियं च नानृतं ब्रूयाद् एष धर्मः सनातनः।

अर्थ- प्रिय झूठ नहीं बोलना चाहिए यही सनातन धर्म है।

101. पदं हि सर्वत्र गुणैर्निधीयते। (रघुवंशम् -3/62)

अर्थ- गुण ही सर्वत्र शत्रु-मित्रादिकों में पैर को स्थापित करते हैं।

102. पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम्।
(किरातार्जुनीयम् 1/41)

अर्थ- मनस्वी पुरुषों के लिए पराभव भी उत्सव के ही समान है।

103. प्रतिबदध्नाति हि श्रेयः पूज्यपूजाव्यतिक्रमः।
(रघुवंशम् 1/79)

अर्थ- वसिष्ठ कहते हैं- पूजनीय की पूजा का उल्लङ्घन कल्याण को रोकता है।

104. प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः।
(मुद्राराक्षस/नीतिशतक 2/7)

अर्थ- नीच लोग विघ्नों के भय से कार्य प्रारम्भ ही नहीं करते।

105. बलवता सह को विरोधः। (मृच्छकटिकम् 6/2)

अर्थ- बलशाली के साथ क्या विरोध?

106. बलवती हि भवितव्यता। (कादम्बरी/चन्द्रापीडकथा)

अर्थ- होनहार बलवान् है, जो होना है वह होकर ही रहता है उसे टाला नहीं जा सकता।

107. बलवान् जननीस्नेहः। (कादम्बरी/चन्द्रापीडकथा)

अर्थ- माता का स्नेह बलवान् होता है।

108. बहुभाषिणः न श्रद्दधाति लोकः।
(कादम्बरी/चन्द्रापीडकथा)

अर्थ- अधिक बोलने वाले पर लोग श्रद्धा नहीं रखते।

109. भाग्यायत्तमतः परं न खलु तद् वाच्यं वधू-बन्धुभिः
(अभि0शाकुन्तलम् 4/17)

अर्थ- कण्व का कथन है- इसके आगे भाग्य के अधीन है, वह हम वधू के सम्बन्धियों को नहीं कहना चाहिये।

110. भोगीव मन्त्रोषधिरुद्धवीर्यः (रघुवंशम् 2/32)

अर्थ- हाथ के रुक जाने से बढ़े हुए क्रोध वाले, राजा दिलीप, मन्त्र और औषधि से बाँध दिया गया है पराक्रम जिसका, ऐसे साँप की भाँति समीप में (स्थित) अपराधी को नहीं स्पर्श करते हुए अपने तेज से भीतर जलने लगे।

111. मा गृधः कस्यस्विद् धनम् (ईशावास्योपनिषद्)

अर्थ- 'किसी के भी धन का लोभ मत करो।'

112. मा कश्चित् दुःखभाग्भवेत्

अर्थ- कोई दुःखी न हो।

113. मा ब्रूहि दीनं वचः (नीतिशतकम्)

अर्थ- दीन वचन मत बोलो।

114. मातरं पितरं तस्मात् सर्वयत्नेन पूजयेत्।

अर्थ- 'माता पिता की भली प्रकार से सेवा करनी चाहिये।'

115. मार्गे पदानि खलु ते विषमीभवन्ति।
(अभिज्ञानशाकुन्तल 4/15)

अर्थ- काश्यप (कण्व) शकुन्तला से कहते हैं कि ऊँची-नीची भूमि को न देखने के कारण इस मार्ग में तेरे पैर वस्तुतः लड़खड़ा रहे हैं।

116. यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता (मनुस्मृति)

अर्थ- मनु कहते हैं- जिस कुल में स्त्रियाँ सम्मानित होती हैं, उस कुल से देवगण प्रसन्न होते हैं।

117. यान्त्येवं गृहिणीपदं युवतयो वामाः कुलस्याधयः (अभि0शाकुन्तलम् 4/18)

अर्थ- अच्छा आचरण करने वाली स्त्रियाँ गृहलक्ष्मी पद पर अधिष्ठित होती हैं और इसके विपरीत चलने वाली कुल के लिए अभिशाप होती हैं।

118. योगः कर्मसु कौशलम् (गीता 2/50)

अर्थ- समत्वरूप योग ही कर्मों में कुशलता है अर्थात् कर्मबन्धन से छूटने का उपाय है।

119. रक्षितव्या खलु प्रकृतिपेलवा प्रियसखी (अभि0शाकुन्तलम् अङ्क-4)

अर्थ- अनसूया प्रियवंदा से कहती है- स्वभाव से ही कोमल प्रियसखी की रक्षा करनी चाहिए।

120. रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय (मेघदूतम् 1/20)

अर्थ- वर्षा कर चुके खाली मेघ को यक्ष रेवा के जल को ग्रहण कर भारी होने को कहता है- 'क्योंकि सभी खाली (पदार्थ) हल्के होते हैं और भरा होना भारीपन का कारण होता है।'

121. लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु (अभि0शाकुन्तलम्)

अर्थ- यह संसार दो तेजों के एक साथ अस्त और उदय के द्वारा मानों अपने दशा-विशेषों में नियन्त्रित हो रहा है।

122. लोभः पापस्य कारणम्

अर्थ- (लालच) लोभ पाप का कारण है।

123. वचने का दरिद्रता

अर्थ- बोलने में क्या दारिद्र्य।

124. वसुधैव कुटुम्बकम्

अर्थ- सम्पूर्ण पृथ्वी एक परिवार है।

125. वनौकसोऽपि सन्तो लौकिकज्ञा वयम् (अभि0शाकुन्तलम् अङ्क-4)

अर्थ- कण्व कहते हैं- 'वनवासी होते हुए भी हम लोग लौकिक व्यवहारों को जानने वाले हैं।'

126. वाग्भूषणं भूषणम्। (नीतिशतकम्)

अर्थ- वाणी रूपी भूषण (अलङ्कार) ही सदा बना रहता है, कभी नष्ट नहीं होता।

127. विद्याविहीनः पशुः (नीतिशतकम्)

अर्थ- विद्याविहीन मनुष्य पशु के समान है।

128. विभूषणं मौनमपण्डितानाम् (नीतिशतकम्)

अर्थ- मूर्खों का मौन रहना उनके लिए भूषण (अलङ्कार) है।

129. वत्से! सुशिष्यपरिदत्ता विद्येव अशोचनीया संवृता (अभि0शाकुन्तलम् अङ्क-4)

अर्थ- कण्व शकुन्तला से कहते हैं- 'पुत्री, योग्य शिष्य को दी गई विद्या की तरह तुम अशोचनीय हो गई हो।'

130. शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम् (कुमारसम्भव 5.33)

अर्थ- ब्रह्मचारी शास्त्रोक्तविधिपूर्वक की गई पूजा को स्वीकार करके पार्वती से बोले- 'शरीर धर्म का मुख्य साधन है।'

131. शस्त्रेण रक्ष्यं यदशक्यरक्षं, न तद्यशः शस्त्रभृतां क्षिणोति (रघुवंशम् 2/40)

अर्थ- जो रक्षा करने योग्य वस्तु शस्त्र से रक्षा करने के योग्य नहीं होती वह नष्ट होती हुई भी शस्त्रधारी की कीर्त्ति को नष्ट नहीं कर सकती है।

132. शठे शाठ्यं समाचरेत्। (नीतिशतकम्)

अर्थ- शठ (धूर्त) के साथ शठता करनी चाहिये।

133. शीलं परं भूषणम्। (नीतिशतकम्)

अर्थ- यह शील बड़ा भारी आभूषण है।

134. शान्तानुकूलपवनश्च शिवश्च पन्थाः। (अभि0शाकुन्तलम् 4/11)

अर्थ- कण्व का कथन- यह मार्ग (शकुन्तला के विदाई के अवसर पर) 'शान्त और अनुकूल वायु से युक्त तथा कल्याणकारी हो।'

135. स्ववीर्यगुप्ता हि मनोः प्रसूतिः (रघुवंशम् 2/4)

अर्थ- मनु के वंश में उत्पन्न राजा लोग अपने ही पराक्रम से आत्मरक्षा कर लेते थे।

136. स्वाधीनोऽयं जनः कुमारस्य कोऽत्रानुरोधः। (कादम्बरी/चन्द्रापीडकथा)

अर्थ- राजकुमार चन्द्रापीड अपने स्थान को लौटने का अनुरोध कर रहे हैं।

137. सर्वथा रक्षणीयाः सुहृदसवः (कादम्बरी/चन्द्रापीडकथा)

अर्थ- मित्र के प्राणों की रक्षा हर प्रकार से करनी चाहिए।

138. सोऽयं न पुत्रकृतकः पदवीं मृगस्ते (अभि0शाकुन्तलम्)

अर्थ- कण्व का कथन - पुत्रवत् पाला हुआ मृग तेरा मार्ग नहीं छोड़ रहा है।

139. स्मरिष्यति त्वां न स बोधितोऽपि सन् कथा प्रमत्तः प्रथमं कृतामिव (अभि0शाकुन्तलम् 4/1)

अर्थ- दुर्वासा ऋषि शकुन्तला को शाप देते हुए कहते हैं- अनन्यहृदय से जिसका चिन्तन करती हुई तू उपस्थित हुए (भी) मुझ तपस्वी को नहीं देख रही है, 'वह तेरे स्मरण दिलाने पर भी तुझको स्मरण

नहीं करेगा, जैसे उन्मत्त व्यक्ति पहले कही बात को स्मरण नहीं करता।

140. सहसा विदधीत न क्रियाम्। (किरातार्जुनीयम्)

अर्थ- शत्रुओं के प्रति क्रोध से व्याकुल भीम को शान्त करने के लिए युधिष्ठिर ने कहा- कार्य को एकाएक बिना विचार विमर्श किये नहीं प्रारम्भ करना चाहिए।

141. सरस्वती श्रुतमहतां महीयताम् (अभि०शाकुन्तलम्)

अर्थ- ज्ञान- गरिष्ठ कवियों की वाणी का पूर्ण सत्कार हो।

142. सत्सङ्गतिः कथय किं न करोति पुंसाम्। (नीतिशतकम्)

अर्थ- सत्संगति मनुष्यों की कौन सी भलाई नहीं करती।

143. साहसे श्रीः प्रतिवसति। (मृच्छकटिकम् अङ्क 4)

अर्थ- शर्विलक का कथन है- साहस में लक्ष्मी निवास करती हैं।

144. स्वभावो दुरतिक्रमः (वाल्मीकि रामायण 6.36.11)

अर्थ- माल्यवान् की कही हुई हितकर बातों को सुनकर कुपित रावण बोला- 'स्वभाव किसी के लिए भी दुर्लङ्घ्य होता है।

145. सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ते। (नीतिशतक)

अर्थ- सोने में ही सब गुण रहते हैं।

146. सकलभूतलरत्नभूतः वैशम्पायनो नाम शुकोऽयम् आत्मीयः क्रियताम्। (कादम्बरी/चन्द्रापीडकथा)

अर्थ- वैशम्पायन नाम का यह शुक (तोता) समस्त भूतल का अद्वितीय रत्न है इसे आप स्वीकार करें।

147. सम्बन्धमाभाषणपूर्वमाहुः (रघुवंश 2/58)

अर्थ- सम्बन्ध (मैत्री) तो बातचीत से उत्पन्न हुआ करती है, ऐसा लोग कहते हैं।

148. श्रुतेरिवार्थं स्मृतिरन्वगच्छत् (रघुवंशम् 2/2)

अर्थ- नन्दिनी के पीछे-पीछे मार्ग में राजा की धर्मपत्नी सुदक्षिणा इस प्रकार चल रही थी जिस प्रकार वेदों के अर्थ के पीछे स्मृतियाँ चलती हैं।

149. श्रद्धेव साक्षाद्विधिनोपपन्ना (रघुवंशम् 2/6)

अर्थ- सज्जनों के द्वारा पूजित राजा से युक्त वह नन्दिनी भी उस समय वैसी ही सुशोभित थी, जैसे सज्जनों के किये गये अनुष्ठान से युक्त श्रद्धा शोभा पाती है।

❑❑

अपठित अनुच्छेद

पद्यांश पर आधारित प्रश्न

निम्नलिखित पद्य के आधार पर प्रश्नों के सही विकल्प चुनें-

1. अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्॥

(i) 'कुटुम्ब' शब्द का अर्थ है-
(A) समाज (B) लड़ाई-झगड़ा
(C) परिवार (D) व्यवसाय

(ii) उपर्युक्त श्लोक में 'यह मेरा यह पराया' इस प्रकार की गणना करने वाले को क्या कहा गया है?
(A) उदारचित्त वाला (B) लघुचित्त वाला
(C) शक्तिशाली (D) महानात्मा

(iii) जो सम्पूर्ण 'वसुधा' को अपना 'कुटुम्ब' मानता है वह किस प्रकार का व्यक्ति होता है-
(A) उदारचरित्र वाला
(B) लघुचित्त वाला
(C) समाजसेवी
(D) अपने पराये की गणना करने वाला

(iv) निम्नलिखित में पृथ्वी का पर्यायवाची नहीं है-
(A) वसुधा (B) अचला
(C) उर्वी (D) जाया

(v) प्रस्तुत पद्य से हमें किस प्रकार की शिक्षा मिलती है-
(A) राष्ट्रीयता की (B) विश्वबन्धुत्व की
(C) समाजसेवा की (D) अपने-पराये की

उत्तरमाला- (i).C (ii).B (iii).A (iv).D (v).B

2. न चौरहार्यं न च राज्यहार्यं
न भ्रातृभाज्यं न च भारकारि।
व्यये कृते वर्धत एव नित्यं
विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्॥

(i) 'चौरहार्यम्' पद का अर्थ है-
(A) चोरों के द्वारा न चुराने योग्य
(B) भाइयों के द्वारा बाँटने योग्य
(C) राजा के द्वारा छीनने योग्य
(D) चोरों के द्वारा चुराने योग्य

(ii) सभी धनों में प्रधानधन माना गया है-
(A) जमीन (B) सोना
(C) विद्या (D) आभूषण

(iii) भाइयों द्वारा बाँटने (विभाजन) योग्य नहीं है-
(A) आभूषण (B) विद्या
(C) घर (D) जमीन

(iv) कौन सा धन है जो व्यय करने पर नित्य बढ़ता है-
(A) विद्याधन (B) सोना-चाँदी
(C) रुपया-पैसा (D) जमीन-जायदाद

(v) उपर्युक्त श्लोक में किसकी प्रधानता बतायी गयी है-
(A) परिवार की (B) चोर की
(C) राजा की (D) ज्ञान की

उत्तरमाला- (i).D (ii).C (iii).B (iv).A (v).D

3. काव्यशास्त्रविनोदेन कालो गच्छति धीमताम्।
व्यसनेन तु मूर्खाणां निद्रया कलहेन वा॥

(i) 'गच्छति' पद में लकार है-
(A) लोट्लकार (B) लृट्लकार
(C) लट्लकार (D) लङ्लकार

(ii) मूर्खों का समय व्यतीत होता है-
(A) निद्रा में
(B) कलह में
(C) बुरी आदत में (व्यसन में)
(D) उपर्युक्त सभी

(iii) काव्यशास्त्रादि के द्वारा विनोद में किसका समय व्यतीत होता है-
(A) विद्वानों का (B) मूर्खों का
(C) धनवानों का (D) उपर्युक्त सभी

(iv) 'धीमताम्' पद में विभक्ति एवं वचन बताइए-
(A) प्रथमा, बहुवचन (B) षष्ठी, बहुवचन
(C) तृतीया, एकवचन (D) षष्ठी, एकवचन

(v) उपर्युक्त श्लोक से हमें क्या शिक्षा प्राप्त होती है-
(A) राष्ट्रभक्ति की
(B) विद्या के प्रधानता की
(C) समय के सदुपयोग की
(D) राष्ट्र सेवा की

उत्तरमाला- (i).C (ii).D (iii).A (iv).B (v).C

4. **प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः**
प्रारभ्य विघ्नविहिता विरमन्ति मध्याः।
विघ्नैर्मुहुर्मुहुरपि प्रतिहन्यमानाः
प्रारब्धमुत्तमजना न परित्यजन्ति॥

(i) भय वश कार्य प्रारम्भ नहीं करते हैं-
(A) नीच लोग (B) मध्यम श्रेणी के लोग
(C) उत्तम लोग (D) उपर्युक्त सभी

(ii) कार्य प्रारम्भ करके बीच में विघ्न आने पर कार्य छोड़ देते हैं-
(A) उत्तम श्रेणी वाले (B) मध्यम श्रेणी वाले
(C) निम्न श्रेणी वाले (D) उपर्युक्त सभी

(iii) विघ्न के द्वारा बार-बार बाधित होने पर भी कार्य पूर्ण किये बिना नहीं छोड़ते-
(A) विद्वान् पुरुष (B) मध्यम श्रेणी के पुरुष
(C) उत्तम श्रेणी के पुरुष (D) निम्न श्रेणी के पुरुष

(iv) 'परित्यजन्ति' पद में उपसर्ग बताइये-
(A) प्र (B) परा
(C) परि (D) निस्

(v) इस श्लोक में कितने प्रकार के मनुष्य बताये गये हैं-
(A) दो (B) तीन
(C) पाँच (D) चार

उत्तरमाला- (i).A (ii).B (iii).C (iv).C (v).B

5. **आरम्भगुर्वी क्षयिणी क्रमेण**
लघ्वी पुरा वृद्धिमती च पश्चात्।
दिनस्य पूर्वार्धपरार्धभिन्ना
छायेव मैत्री खलसज्जनानाम्॥

(i) 'गुर्वी' पद का अर्थ है-
(A) घटती हुई (B) हल्की
(C) विस्तृत (D) लघु

(ii) किसकी मित्रता प्रारम्भ में विस्तृत होती है?
(A) सज्जनों की (B) खलों की
(C) मूर्खों की (D) उपर्युक्त सभी की

(iii) 'आरम्भगुर्वी क्षयिणी क्रमेण' रेखांकित पद में विभक्ति है-
(A) प्रथमा, बहुवचन (B) तृतीया, एकवचन
(C) प्रथमा, एकवचन (D) चतुर्थी, एकवचन

(iv) दिन के पूर्वभाग के समान किसकी मैत्री होती है-
(A) सज्जनों की (B) दुर्जनों की
(C) बलवानों की (D) निर्बलों की

(v) किसकी मैत्री प्रारम्भ में लघु तथा क्रमशः विस्तृत होती चली जाती है?
(A) बलवानों की (B) मूर्खों की
(C) दुर्जनों की (D) सज्जनों की

(vi) सज्जनों और दुर्जनों की मैत्री होती है-
(A) छाया के समान
(B) दोपहर के समान
(C) प्रातःकाल के समान
(D) सायंकाल के समान

उत्तरमाला- (i).C (ii).B (iii).B (iv).B (v).D (vi).A

6. **वृथा वृष्टिः समुद्रेषु वृथा तृप्तस्य भोजनम्।**
वृथा दानं समर्थस्य वृथा दीपो दिवापि च॥

(i) 'वृष्टिः' पद का अर्थ है-
(A) बरसात (B) सर्दी (ठण्डी)
(C) बुद्धि (D) ग्रीष्म

(ii) वृथा तृप्तस्य........। रिक्तस्थान की पूर्ति करें-
(A) चन्दनम् (B) उपवनम्
(C) उपदेशम् (D) भोजनम्

(iii) किसके लिए 'दान' अनावश्यक है-
(A) तृप्त के लिए (B) समुद्र के लिए
(C) समर्थ के लिए (D) गरीब के लिए

(iv) समुद्र के लिए आवश्यक नहीं है-
(A) वृष्टि (B) लवणता
(C) मन्थन (D) लहर

(v) 'दिन' में किसकी आवश्यकता नहीं होती है-
(A) वृष्टि की (B) दीपक की
(C) दान की (D) भोजन की

(vi) 'समुद्रेषु' पद में विभक्ति है-
(A) सप्तमी, बहुवचन (B) प्रथमा, बहुवचन
(C) पञ्चमी, बहुवचन (D) षष्ठी, एकवचन

उत्तरमाला- (i).A (ii).D (iii).C (iv).A (v).B (vi).A

7. **विदेशेषु धनं विद्या व्यसनेषु धनं मतिः।**
परलोके धनं धर्मः शीलं सर्वत्र वै धनम्॥

(i) 'व्यसनेषु' पद का अर्थ है-
(A) उन्नति में (B) कष्टों में
(C) परलोक में (D) विदेश में

(ii) विदेश में 'धन' के रूप में काम आता है-
(A) धर्म (B) मति
(C) व्यवहार (D) विद्या

(iii) स्वर्ग में धन की तरह काम आता है-

(A) ज्ञान (B) बुद्धि
(C) धर्म (D) उपर्युक्त सभी

(iv) सब जगह धन की तरह कार्य करता है-

(A) आचरण (B) ज्ञान
(C) धर्म (D) उत्साह

(v) विपत्ति अथवा कष्ट के समय धन है-

(A) धर्म (B) विद्या
(C) मति (D) शील

(vi) प्रस्तुत श्लोक में किसकी सर्वत्र महत्ता बताई गयी है-

(A) ज्ञान की (B) बुद्धि की
(C) शील की (D) धर्म की

उत्तरमाला- (i).B (ii).D (iii).C (iv).A (v).C (vi).C

**8. वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि।
लोकोत्तराणां चेतांसि को नु विज्ञातुमर्हति॥**

(i) प्रस्तुत श्लोक में वज्र से भी कठोर हृदय वाला किसे कहा गया है-

(A) महापुरुषों को (B) दुर्जनों को
(C) मूर्खों को (D) इनमें से कोई नहीं

(ii) महापुरुषों का हृदय होता है-

(A) दुःख से व्याप्त (B) फूल से भी कोमल
(C) वज्र से भी कठोर (D) B तथा C दोनों

(iii) किसके चित्त (हृदय) को नहीं जाना जा सकता-

(A) विवेकहीनों के (B) महापुरुषों के
(C) मूर्खों के (D) दुर्जनों के

(iv) 'लोकोत्तराणाम्' पद का अर्थ है-

(A) महापुरुषों के
(B) सत्यवादी
(C) दुरात्माओं को
(D) सांसारिक जनों के

(v) 'लोकोत्तराणां' पद में विभक्ति तथा वचन बताइये-

(A) सप्तमी, एकवचन (B) तृतीया, एकवचन
(C) षष्ठी, बहुवचन (D) पञ्चमी, बहुवचन

उत्तरमाला- (i).A (ii).D (iii). B (iv).A (v).C

**9. निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु
लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा
न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः॥**

(i) 'गच्छतु' पद में लकार है-

(A) लट्लकार (B) लोट्लकार
(C) लृट्लकार (D) लङ्लकार

(ii) निन्दा और स्तुति की परवाह कौन नहीं करता-

(A) अज्ञानी व्यक्ति (B) सज्जन पुरुष
(C) धैर्यवान् व्यक्ति (D) मूर्ख व्यक्ति

(iii) धन के आने अथवा इच्छानुसार चले जाने से कौन विचलित नहीं होता-

(A) सज्जन लोग (B) धैर्यवान् लोग
(C) विद्वान् लोग (D) उपर्युक्त कोई नहीं

(iv) विपरीत परिस्थितियों में भी न्याय के पथ से विचलित नहीं होते-

(A) धीर पुरुष (B) अज्ञानी पुरुष
(C) बलवान् पुरुष (D) इनमें से कोई नहीं

(v) 'अद्यैव' पद में कौन सी सन्धि है-

(A) दीर्घ (B) गुण
(C) वृद्धि (D) यण्

(vi) किसमे लोट्लकार नहीं है-

(A) समाविशतु (B) स्तुवन्तु
(C) प्रविचलन्ति (D) अस्तु

उत्तरमाला- (i).B (ii).C (iii).B (iv).A (v).C (vi).C

**10. विपदि धैर्यमथाभ्युदये क्षमा
सदसि वाक्पटुता युधि विक्रमः।
यशसि चाभिरुचिर्व्यसनं श्रुतौ
प्रकृतिसिद्धमिदं हि महात्मनाम्॥**

(i) 'विपदि सदसि यशसि युधि' इत्यादि शब्दों में विभक्ति है-

(A) सप्तमी, बहुवचन (B) पञ्चमी, बहुवचन
(C) षष्ठी, बहुवचन (D) सप्तमी, एकवचन

(ii) षष्ठी विभक्ति प्रयुक्त है-

(A) अभ्युदये (B) महात्मनाम्
(C) श्रुतौ (D) विपदि

(iii) 'व्यसनम्' पद का अर्थ है-

(A) अत्यधिक रुचि (B) दुर्गुण कार्य
(C) व्यवसाय (D) घृणा करना

(iv) महात्माओं के स्वाभाविक गुण हैं-

(A) वेदों में अत्यधिक रुचि
(B) विपत्ति में धैर्य
(C) युद्धक्षेत्र में पराक्रम
(D) उपर्युक्त सभी

(v) यश प्राप्ति में कौन अनुराग रखता है-
(A) महात्मा लोग (B) दुरात्मा लोग
(C) लालची लोग (D) वाक्पटुलोग

(vi) महात्मा लोग उन्नति के समय बनें रहते हैं-
(A) धैर्यवान् (B) क्षमावान्
(C) वाक्पटु (D) पराक्रमी

उत्तरमाला- (i).D (ii).B (iii).A (iv).D (v).A (vi).B

11. अक्रोधेन जयेत्क्रोधम् असाधुं साधुना जयेत्।
जयेत्कदर्यं दानेन जयेत्सत्येन चानृतम्॥

(i) 'कदर्यम्' पद का अर्थ है-
(A) असत्य (B) कृपणता
(C) कार्यकर्त्ता (D) क्रिया-कलाप

(ii) 'क्रोध' को किससे जीतें-
(A) अक्रोध से (B) असत्य से
(C) सत्य से (D) साधुता से

(iii) सत्य से किसको जीता जा सकता है-
(A) क्रोध को (B) असत्य को
(C) साधुता को (D) कृपणता को

(iv) 'अनृतम्' पद में विभक्ति है-
(A) प्रथमा, द्विवचन (B) द्वितीया, बहुवचन
(C) प्रथमा, एकवचन (D) द्वितीया, एकवचन

(v) 'कृपणता' को जीता जा सकता है-
(A) सत्य से (B) ज्ञान से
(C) दान से (D) उपर्युक्त सभी

(vi) तृतीया विभक्ति प्रयुक्त नहीं है-
(A) अक्रोधेन (B) साधुना
(C) दानेन (D) क्रोधम्

उत्तरमाला- (i).B (ii).A (iii).B (iv).D (v).C (vi).D

गद्यखण्ड

प्रस्तुत गद्यखण्ड के आधार पर प्रश्नों के सही उत्तर दीजिए-

1. ग्राम्यजीवनं सुव्यवस्थितं भवति। ग्रामे प्रायेण सर्वे स्वस्थाः भवन्ति। वनेषु नगरेषु च तथा जीवनं न भवति। वस्तुतः ग्रामाः वननगरयोः मध्ये सन्ति। ग्रामीणाः जनाः प्रायेण कृषीवलाः भवन्ति। ते च प्रातःकालात् सायं यावत् क्षेत्रेषु कर्म कुर्वन्ति। क्षेत्राणि परितः वारिणा पूर्णाः कुल्याः भवन्ति। कृषकाः क्षेत्राणि हलेन कर्षन्ति। कुल्याजलेन तानि सिञ्चन्ति, तत्र बीजानि वपन्ति च।

(i) ग्राम्यजीवनं कथं भवति?
(A) दुष्करम् (B) व्ययसाध्यम्
(C) सुव्यवस्थितम् (D) अव्यवस्थितम्

(ii) ग्रामीणाः जनाः प्रायेण कीदृशाः भवन्ति?
(A) सर्वे स्वस्थाः (B) रुग्णाः
(C) निष्कपटाः (D) कृषीवलाः

(iii) के प्रातःकालात् सायं यावत् क्षेत्रेषु कर्म कुर्वन्ति-
(A) नागरिकाः (B) ग्रामीणाः
(C) गोपालाः (D) व्यवसायिकाः

(iv) 'कृषीवलाः' इत्यस्य पर्यायपदम् -
(A) गोपालाः (B) ग्रामीणाः
(C) कृषकाः (D) पथिकाः

(v) एतस्य गद्यखण्डस्य समुचितं शीर्षकं किम्?
(A) कृषीवलाः (B) ग्राम्यजीवनम्
(C) नागरिकाः (D) आपणम्

उत्तरमाला- (i).C (ii).D (iii).B (iv).C (v).B

2. महाभारतस्य युद्धम् अष्टादश दिनानि यावत् प्राचलत्। आदौ कौरवपक्षे पितामहः भीष्मः सेनापतिः अभवत्। दश दिनानि स युद्धम् अकरोत्। ततः एकादशे दिवसे द्रोणाचार्यः सेनापतिः अभवत्। स पञ्च दिनानि सेनापतिः आसीत्। पञ्चदशे दिवसे सः वीरगतिं प्राप्तवान्। तदनन्तरं कर्णः दिनद्वयपर्यन्तं सेनापतिः अभवत्। तस्मिन् वीरगतिं प्राप्ते अर्धं दिनं शल्यः मातुलः युद्धं कृतवान्। शेषे दिवसार्धे भीमदुर्योधनयोः गदायुद्धम् अभवत्।

(i) महाभारतस्य युद्धे एकादशे दिवसे कः सेनापतिः आसीत्?
(A) शल्यः (B) पितामहः भीष्मः
(C) द्रोणाचार्यः (D) मातुलः

(ii) कौरवपक्षे प्रथमं कः सेनापतिः अभवत्?
(A) कर्णः (B) द्रोणाचार्यः
(C) शल्यः (D) भीष्मः

(iii) द्रोणाचार्यः कति दिनानि सैनापत्यम् अकरोत्?
(A) दश दिनानि (B) पञ्चदिनानि
(C) दिनद्वयम् (D) अष्टदिनानि

(iv) 'आदौ' पदे विभक्तिः अस्ति?
(A) प्रथमा, बहुवचन (B) तृतीया, एकवचन
(C) सप्तमी, एकवचन (D) तृतीया, बहुवचन

(v) द्रोणाचार्यानन्तरं कः सेनापतिः अभवत्?
(A) कर्णः (B) शल्यः
(C) भीष्मः (D) मातुलः

(vi) अस्मिन् अनुच्छेदे 'प्राप्तवान्' इति पदे प्रत्ययः अस्ति?
(A) क्त (B) शानच्
(C) क्तवतु (D) शतृ

उत्तरमाला- (i).C (ii).D (iii).B (iv).C (v).A (vi).C

3. संस्कृतभाषायाः व्याकरणशास्त्रे पाणिनिर्महान् वैयाकरणः अभवत्। अस्य पितुर्नाम पणिनः, मातुश्च नाम दाक्षी आसीत्। तस्मादेव दाक्षीपुत्रः पाणिनिः कथ्यते। छन्दःशास्त्रस्य रचयिता पिङ्गलः पाणिने अनुजः आसीत्। अतः छन्दःशास्त्रं 'पिङ्गलशास्त्रम्' इत्युच्यते। पाणिनिः ख्रिष्टाब्दात् पञ्चशतवर्षपूर्वम् (500 ई.पू.) अजायत। तस्य जन्म शलातुरग्रामे अभवत्, तस्माद् अयं शालातुरीयः अपि उच्यते। शलातुरग्रामस्यैव नाम सम्प्रति लाहौर इति जातम्।

(i) कस्मिन् ग्रामे पाणिनिः अजायत?
(A) शालापुरः (B) शलातुरः
(C) शिवपुरः (D) कश्मीरः

(ii) पाणिनेर्मातुर्नाम किम्?
(A) गोणिका (B) दाक्षायणी
(C) दाक्षी (D) साक्षी

(iii) पाणिनेः जन्म कदा अभवत्?
(A) 200 ई.पू. (B) 300 ई.पू.
(C) 50 ई.पू. (D) 500 ई.पू.

(iv) पाणिनिः कस्य शास्त्रस्य ज्ञाता आसीत्?
(A) छन्दशास्त्रस्य (B) पिङ्गलशास्त्रस्य
(C) व्याकरणशास्त्रस्य (D) नाट्यशास्त्रस्य

(v) छन्दशास्त्रस्य रचयिता कः आसीत्?
(A) पाणिनिः (B) पिङ्गलः
(C) कात्यायनः (D) पतञ्जलिः

उत्तरमाला- (i).B (ii).C (iii).D (iv).C (v).B

4. दीपावली प्रकाशस्य महोत्सवः अस्ति। असौ महोत्सवः कार्तिक्याम् अमावस्यायां संघटते। अमुस्मिन् दिने भगवान् रामचन्द्रः चतुर्दशवर्षमितं स्वकीयं वनवासं परिसमाप्य रावणवधानन्तरम् अयोध्यां प्रत्यागच्छत्। ततः प्रभृत्ययम् उत्सवः प्रचलति। अमुस्मिन् महोत्सवे रात्रौ महालक्ष्मीपूजनं भवति। तत्र देवीं वयं सर्वे धनधान्यादिकं याचामहे। सर्वे जनाः स्वकीयान् गृहान् दीपमालया सज्जयन्ति। सायं वयं वीथीष्वापणेषु मार्गेषु गृहेषु च सर्वत्र दीपकानां प्रकाशं पश्यामः। अहो, कियत् चाकचिक्यं प्रतिभवनं विद्युद्दीपानाम्।

(i) रामः अयोध्यां कदा प्रत्यागच्छत्?
(A) कार्तिक्याम् अमावस्यायाम्
(B) कार्तिक्याम् पूर्णिमायाम्
(C) त्रयोदश्याम्
(D) चतुर्दश्याम्

(ii) कस्मिन् महोत्सवे रात्रौ महालक्ष्मीपूजनं भवति?
(A) रक्षाबन्धने (B) विजयदशम्याम्
(C) दीपावल्याम् (D) होलिकोत्सवे

(iii) 'गृहान्' इति पदे विभक्तिः अस्ति?
(A) द्वितीया, बहुवचन (B) तृतीया, बहुवचन
(C) प्रथमा, बहुवचन (D) तृतीया, एकवचन

(iv) 'आपणेषु' इति पदस्य कोऽर्थः?
(A) मार्गों में (B) गलियों में
(C) बाजारों में (D) नगरों में

(v) स्वकीयं--------परिसमाप्य रावणं वधानन्तरम् - ------प्रत्यागच्छत्। क्रमेण रिक्तस्थानं पूरयतु।
(A) वनवासं, काशीं (B) वनवासं, अयोध्यां
(C) अयोध्यां, वनवासं (D) अयोध्यां, ग्रामवासं

उत्तरमाला- (i).A (ii).C (iii).A (iv).C (v).B

5. अस्माकं देशे बहूनि तीर्थस्थानानि सन्ति। तेषु वाराणसी अपि एकं प्रसिद्धं तीर्थस्थानम् अस्ति। इदं काशीनाम्नापि प्रसिद्धं वर्तते। एतत् पुण्यप्रदं प्राचीनतमं तीर्थस्थानं वर्तते।

अनेकेषु प्राचीनग्रन्थेषु अस्य महिमा वर्णितः। स्कन्दपुराणस्य काशीखण्डे अस्याः वाराणस्याः विस्तरेण वर्णनं विहितम्। इयं नगरी गङ्गायाः पवित्रे तटे विराजमाना अस्ति। अत्र विश्वनाथस्य प्रसिद्धं सुवर्णचूडं मन्दिरम् अस्ति। अन्यानि अपि बहूनि देवमन्दिराणि सन्ति।

(i) स्कन्दपुराणस्य कस्मिन् खण्डे वाराणस्याः वर्णनं विहितम्–
(A) पुराणखण्डे (B) भारतखण्डे
(C) उत्तरकाण्डे (D) काशीखण्डे

(ii) गङ्गायाः पवित्रे तटे विराजमाना नगरी अस्ति-
(A) उज्जयिनी (B) काशी
(C) देहली (D) नासिक

(iii) अस्मिन् गद्यांशस्य समुचितं शीर्षकम् अस्ति-
(A) प्राचीनतमं नगरम् (B) स्कन्दपुराणम्
(C) विश्वनाथमन्दिरम् (D) वाराणसी नगरी

(iv) 'सुवर्णचूडं' इत्यस्य पदस्य कोऽर्थः?

(A) स्वर्णमण्डित शिखर वाला
(B) स्वर्ण घण्टों वाला
(C) स्वर्ण मूर्ति वाला
(D) स्वर्ण के दरवाजों वाला

(v) अनेकेषु प्राचीनग्रन्थेषु अस्य महिमा वर्णितः। रेखांकितपदे विभक्तिः अस्ति-

(A) सप्तमी, एकवचन (B) पञ्चमी, बहुवचन
(C) सप्तमी, बहुवचन (D) सप्तमी, द्विवचन

उत्तरमाला- (i).D (ii).B (iii).D (iv).A (v).C

6. प्रजातन्त्रं लोकतन्त्रमपि कथ्यते। प्रजाभिः प्रजानां प्रजार्थं च शासनम् एव प्रजातन्त्रम्। आधुनिकयुगे प्रजातन्त्रस्य बहु विकसितं स्वरूपं दृश्यते। प्रजातन्त्रविधानस्य विकासः प्रधानतः इंग्लैण्डदेशवासिभिः मध्ययुगे सम्पादितः। प्रजातन्त्रे बहवः गुणाः सन्ति। तथा हि प्रत्येकं जनः सर्वोच्चपदं प्राप्तुमर्हति यदि स योग्यो भवेत्। अतएव स्वस्मिन् योग्यता आधेया इति विचारः सर्वेषामभ्युदयाय प्रवर्तते। अन्येषु शासनतन्त्रेषु शासनसत्ताधिकारिणो भयकारणं भवन्ति न तथा प्रजातन्त्रे।

(i) 'प्रजातन्त्रस्य' पर्यायः अस्ति-

(A) राजतन्त्रः (B) जनतन्त्रः
(C) लोकतन्त्रः (D) B, C द्वयमपि

(ii) प्रजातन्त्रविधानस्य विकासः प्रधानतः कैः सम्पादितः

(A) अमेरिकादेशवासिभिः
(B) भारतदेशवासिभिः
(C) इग्लैण्डदेशवासिभिः
(D) जर्मनीदेशवासिभिः

(iii) शासनसत्ताधिकारिणः भयकारणं न भवन्ति-

(A) राजतन्त्रे (B) प्रजातन्त्रे
(C) A,B द्वयोऽपि (D) एकोऽपि न

(iv) 'बहवः' इति पदस्य विशेष्यपदं किम्?

(A) गुणाः (B) जनः
(C) विचारः (D) देशः

(v) प्रजाभिः प्रजानां प्रजार्थं च शासनम् एव प्रजातन्त्रम्। रेखांकित पदे विभक्तिः अस्ति–

(A) तृतीया, एकवचन (B) द्वितीया, एकवचन
(C) द्वितीया, बहुवचन (D) तृतीया, बहुवचन

उत्तरमाला- (i).D (ii).C (iii).B (iv).A (v).D

7. अस्माकं प्रदेशस्य राजधानी लखनऊनगरमस्ति। तद् नगरं निकषा नैमिषारण्यं प्राचीनं तीर्थस्थलम् अतीव प्रसिद्धम् अस्ति। तत्र पुरा एकस्मिन् आश्रमे ऋषयः, मुनयः, गुरवः, कवयः, छात्राश्च निवसन्ति स्म। आश्रमस्य विशाले परिसरे अश्वत्थ-वट-निम्बाशोकवृक्षाणां गहना छाया परिव्याप्तासीत्। तत्र फलशालिनः आम्राऽऽमलक-पनस-पेरुवृक्षाः अपि विपुलाः आसन्। एभिः वृक्षैः तत्र पर्यावरणम् अत्यन्तं शुद्धमासीत्, येन शीतलाः वायवः मन्दं मन्दं निरन्तरं वहन्ति स्म, काले काले च मेघः वर्षति स्म।

(i) 'अश्वत्थ' इति पदस्य कोऽर्थः?

(A) अमरूद (B) पीपल
(C) बरगद (D) आम

(ii) लखनऊनगरं कस्य प्रदेशस्य राजधानी अस्ति?

(A) आन्ध्रप्रदेश (B) राजस्थान
(C) उत्तरप्रदेश (D) उत्तराखण्ड

(iii) आश्रमस्य परिसरे कस्य वृक्षः नास्ति?

(A) आँवला (B) खर्जूर
(C) कटहल (D) अमरूद

(iv) आश्रमे के निवसन्ति स्म?

(A) ऋषयः (B) मुनयः
(C) गुरवः (D) उपर्युक्तं सर्वम्

(v) काले-काले मेघः कुत्र वर्षति स्म?

(A) आश्रमे (B) वने
(C) लखनऊ-नगरे (D) विद्यालये

(vi) 'निकषा' इति पदस्य कोऽर्थः -

(A) चारों-ओर (B) समीप
(C) पहले (D) निवास

उत्तरमाला- (i).B (ii).C (iii).B (iv).D (v).A (vi).B

8. संस्कृतस्य एव छात्रः, नाम्ना चन्द्रशेखरः तदानीं वाराणस्यां पठति स्म। एकादशवर्षदेशीयः अयं यदा जलियावाला-काण्डस्य नृशंसताम् अशृणोत् तदा एव प्रतिज्ञाम् अकरोत् 'येन केनापि प्रकारेण इदं क्रूरशासनम् उन्मूलनीयम्' इति। शीघ्रमेव सः कालः आगतः। भारते ब्रिटिशयुवराजः आगच्छत्। शासनेन तस्य सत्काराय आयोजनं कृतम्। तस्य बहिष्काराय भारतीयाः जनाः निश्चयम् अकुर्वन्।

(i) कस्य स्वागतस्य बहिष्काराय जनाः निश्चयम् अकुर्वन्?

(A) ब्रिटिशमहाराजस्य (B) ब्रिटिशयुवराजस्य
(C) सेनापतेः (D) आजादस्य

(ii) संस्कृतस्य एव छात्रः कः वाराणस्यां पठति स्म।

(A) चन्द्रशेखरः (B) लालालाजपतः
(C) लालबहादुरः (D) मदनमोहनमालवीयः

(iii) 'अभवत्' इति पदे लकारः अस्ति-

(A) लोट्लकारः (B) लङ्लकारः
(C) लृट्लकारः (D) विधिलिङ्लकारः

(iv) 'शासनेन' इति पदे का विभक्तिः -

(A) चतुर्थी (B) पञ्चमी
(C) तृतीया (D) प्रथमा

(v) 'उन्मूलनीयम्' इति पदे प्रत्ययः अस्ति-

(A) तुमुन् (B) तव्यत्
(C) क्तवतु (D) अनीयर्

उत्तरमाला- (i).B (ii).A (iii).B (iv).C (v).D

9. विश्वस्य सर्वान् जनान् प्रति बन्धुत्वस्य भावः एव विश्वबन्धुत्वम् इति कथ्यते। शान्तिमयाय जीवनाय विश्वबन्धुत्वस्य भावना नितरां महत्त्वं भजते। भावनैका अपरिहार्या आवश्यकता। सर्वजनहितं सर्वजनसुखं च बन्धुत्वं विना न सम्भवति। विश्वबन्धुत्वम् एव दृष्टौ निधाय केनापि मनीषिणा निर्दिष्टम्

अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्॥

संसारे सर्वेषु मानवेषु समानं रक्तं प्रवहति, सर्वेषां च नियन्तैकः एव अस्ति। एतत्सर्वं जानन्तः अपि जनाः स्वार्थपरायणतया परस्परं कलहं कुर्वन्ति। अस्य मूलकारणं विश्वबन्धुत्वस्य अभाव एव अस्ति। अतएव सर्वेषु विश्वबन्धुत्वस्य भावना नितान्तम् अपेक्षिता वर्तते।

(i) बन्धुत्वं विना किं न सम्भवति?

(A) सम्बन्धम् (B) उदारचरितम्
(C) सर्वजनहितम् (D) परोपकारम्

(ii) एका अपरिहार्या आवश्यकता अस्ति-

(A) आशा (B) विश्वबन्धुत्व भावना
(C) दया (D) शान्ति

(iii) परस्परकलहस्य मूलकारणम् अस्ति-

(A) विश्वबन्धुत्वस्य अभावः
(B) स्वार्थपरायणता
(C) ज्ञानस्य अभावः
(D) सुखस्य अभावः

(iv) 'अपरिहार्या' पदस्य कोऽर्थः -

(A) कल्याणी (B) रोगरहिता
(C) विद्वान् (D) अनिवार्या

(v) 'कुर्वन्ति' इति पदे लकारः अस्ति-

(A) लोट्लकार, मध्यम पुरुष एकवचन
(B) लट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन
(C) लट्लकार प्रथमपुरुष बहुवचन
(D) लृट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन

उत्तरमाला- (i).C (ii).B (iii).A (iv).D (v).C

10. सतां सङ्गतिः सत्सङ्गतिः कथ्यते। अस्मिन् संसारे यथा सज्जनाः तथा दुर्जनाः अपि सन्ति। यद्यपि पूर्व-जन्मनः गुणदोषौ अपि मनुष्ये जन्मना सह आगच्छतः तथापि नहि कोऽपि जनः जन्मतः एव सज्जनः दुर्जनो वा भवति, अपितु, मनुष्येषु संसर्गस्य विशेषरूपेण प्रभावः भवति। यः यादृशेन पुरुषेण सह सङ्गतिं करोति, यादृशेन पुरुषेण च सहतिष्ठति, उपविशति, खादति, पिबति, आलाप-संलापौ च कुरुते तस्य तादृशः एव स्वभावो भवति। यदि सज्जनैः सह सङ्गतिः भविष्यति तर्हि सज्जनता आगमिष्यति, दुर्जनैः सह सङ्गतिः भविष्यति तर्हि दुर्जनता आगमिष्यति। अतएव नीतिकाराः कथयन्ति- 'संसर्गजा दोषगुणाः भवन्ति।'

(i) मनुष्येषु विशेषरूपेण कस्य प्रभावः -

(A) दुर्जनस्य (B) संसर्गस्य
(C) गुणस्य (D) दोषस्य

(ii) 'उपविशति' अस्मिन् पदे उपसर्गः अस्ति-

(A) वि (B) आङ्
(C) उप (D) सु

(iii) सतां सङ्गतिः किं कथ्यते-

(A) सत्सङ्गतिः (B) दुर्गतिः
(C) सुमतिः (D) सज्जनगतिः

(iv) संसर्गजा भवन्ति-

(A) दोषाः (B) गुणाः
(C) उपर्युक्त द्वयमपि (D) द्वयोऽपि न

(v) सज्जनैः सह सङ्गतिः भविष्यति तर्हि-

(A) सज्जनता गमिष्यति (B) दुर्जनता आगमिष्यति
(C) कटुता आगमिष्यति (D) सज्जनता आगमिष्यति

उत्तरमाला- (i).B (ii).C (iii).A (iv).C (v).D

❑❑

संस्कृत	UP-TET	मॉडल पेपर

1. भट्टोजिदीक्षित के शिष्य कौन हैं?
(A) पाणिनि　(B) कात्यायन
(C) पतञ्जलि　(D) वरदराज

2. 'झश्' प्रत्याहार के अन्तर्गत वर्ण आते हैं-
(A) झ भ घ ढ ध
(B) झ भ ञ् घ ढ ध ष ज ब ग ड द श्
(C) झ भ घ ढ ध ज ब ड द ह य व र
(D) झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द

3. 'ओ, औ' का उच्चारण स्थान है?
(A) कणठतालु　(B) कण्ठोष्ठाम्
(C) दन्तोष्ठम्　(D) दन्त तालु

4. 'सुप् तिङन्तम् -----' रिक्त स्थान की पूर्ति करें
(A) प्रत्ययः　(B) पदम्
(C) सुबन्तम्　(D) वाक्यम्

5. 'गङ्गा + ऊर्मिः' सन्धि होने पर बनेगा-
(A) गङ्गर्मिः　(B) गङ्गूर्मिः
(C) गङ्गोर्मिः　(D) गङ्गर्मिः

6. यण् सन्धि का उदाहरण है-
(A) लृ + आकृतिः　(B) इति + आदिः
(C) सु + आगतम्　(D) उपर्युक्त सभी

7. 'त्रिभुवन' किस समास का उदाहरण है?
(A) द्वन्द्व　(B) द्विगु
(C) अव्ययीभाव　(D) तत्पुरुष

8. 'स्थाल्यां तण्डुलान् पचति' यह किस सूत्र का उदाहरण है-
(A) आधारोऽधिकरणम्　(B) अधिशीङ्स्थाणम्
(C) चतुर्थी सम्प्रदाने　(D) अकथितं च

9. 'अहं गृहं गच्छामि' इस वाक्य को कर्मवाच्य में बदलिये-
(A) मया गृहं गमयति　(B) मया गृहं गम्यते
(C) मम गृहं गच्छामि　(D) मह्यं गृहः गम्यते

10. विधिलिङ्ग लकार का प्रयोग किस अर्थ में होता है-
(A) भूतकाल में　(B) भविष्यकाल मे
(C) आशीर्वाद अर्थ में　(D) चाहिये अर्थ में

11. 'युष्मद्' शब्द का प्रथमा विभक्ति बहुवचन में रूप बनेगा-
(A) त्वं　(B) यूयम्
(C) युवाम्　(D) त्वत्

12. दृ 'कुमारसम्भवम्' के लेखक कौन हैं?
(A) व्यास　(B) तुलसीदास
(C) वाल्मीकि　(D) कालिदास

13. 'विलोक्य' पद में कौन सा प्रकृति प्रत्यय है-
(A) वि + लोक् + ल्यप्
(B) वि + आङ् लुक् + ल्यप्
(C) वि + लुक् + ल्यु
(D) वि + लोक् + घञ्

14. निम्नलिखित में से अव्यय पद चुनिये-
(A) अकस्मात्　(B) अचिरम्
(C) अद्यैव　(D) उपर्युक्त सभी

15. 'छह' को संस्कृत में कहेंगे -
(A) षट्　(B) षष्ट
(C) षट　(D) षड

16. अंगूर, और अनार को क्रमशः संस्कृत में कहा जाता है-
(A) अंगूरम्, दाडिमम्
(B) द्राक्षा, दाडिमम्
(C) दाडिमम्, द्राक्षा
(D) अनारम्, द्राक्षा

17. 'एक अरब' को संस्कृत में कहते हैं-
(A) एककोटिः　(B) एक लक्षम्
(C) एक नियुतम्　(D) अर्बुदम्

18. 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः।' यह सूक्ति किस ग्रन्थ से उद्धृत है?

(A) गीता (B) मनुस्मृति
(C) नीतिशतकम् (D) विदुसीति

19. 'कमलम्' का पर्यायवाची है?

(A) पुण्डरीकम् (B) कुवलयम्
(C) कुशेशयम् (D) उपर्युक्त सभी

20. 'विंशति' शब्द से लेकर 'नवति' पर्यन्त संख्यावाची शब्द किस लिङ्ग में होते है-

(A) पुँल्लिङ्ग (B) नपुंसकलिङ्ग
(C) स्त्रीलिङ्ग (D) उभयलिङ्ग

21. 'गङ्गा' पद में स्त्री प्रत्यय है?

(A) चाप् (B) डीष्
(C) डीप् (D) टाप्

22. 'तीन लड़कियों का परिचय बोलो' - इस वाक्य का शुद्ध अनुवाद बताइये-

(A) त्रयाणां बालिकानां परिचयं वद
(B) तिसृणां बालिकानां परिचयं वद
(C) तिसृणां बालिकानां परिचयं वद
(D) त्रीणि खालिकानां परिचयं वद

23. 'लक्ष्मीपदाङ्कमहाकाव्य' किसे कहा जाता है?

(A) शिशुपालवधम् (B) नैषधीयचरितम्
(C) शुकनासोपदेशम् (D) किरातार्जुनीयम्

24. गीता में 'गुडाकेश' किसे कहा गया है-

(A) कृष्ण को (B) भीम को
(C) अर्जुन को (D) कर्ण को

25. 'धिया निबद्धेयमतिद्वयी कथा' किस ग्रन्थ में उद्धृत है-

(A) नीतिशतकम् (B) कादम्बरी कथामुखम्
(C) पञ्चतन्त्रम् (D) सुभाषित रत्नावली

26. ऋग्वेद का अपर नाम है-

(A) ब्रह्मवेद (B) शब्दशास्त्र
(C) दशतयी (D) गानवेद

27. श्रुतलेख बोलते समय अध्यापक के लिए क्या आवश्यक है-

(A) उच्चारण की स्पष्टता।
(B) रुक-रुक कर बोलना।
(C) बीच में वाक्यों की पुनरावृत्ति।
(D) तीन-चार बार सम्पूर्ण अंश को पढ़ना।

28. निम्नलिखित में से कौन सी परीक्षा संस्कृत के लिए उपयुक्त है-

(A) केवल मौखिक
(B) केवल लिखित
(C) लिखित और मौखिक दोनों
(D) शास्त्रार्थ

29. निम्नलिखित में से कौन-सा क्रियात्मक अनुसन्धान का सोपान नहीं है-

(A) समस्या की पहचान
(B) सम्बद्ध साहित्य का सर्वेक्षण
(C) क्रियात्मक प्राक्कल्पना निर्माण
(D) प्राक्कल्पना का परीक्षण

30. निम्नलिखित में से कौन सी बात कथा शिक्षण में अनावश्यक है-

(A) कथा सुनाना
(B) पुस्तक का प्रयोग
(C) सरल भाषा
(D) कथा की मुख्य विशेषता का उल्लेख।

उत्तरमाला

1.D 2.D 3.B 4.B 5.C 6.D 7.B 8.A 9.B 10.D 11.B 12.D 13.A 14.D 15.A 16.B 17.D 18.B 19.D 20.C 21.D 22.C 23.D 24.C 25.B 26.C 27.A 28.C 29.B 30.B

संस्कृतगंगा पुस्तकालय योजना

में

आप अनुदान कर सकते हैं

खाता धारक का नाम - संस्कृत गंगा शिक्षा समिति
खाता संख्या - 35312212163
IFSC कोड - SBIN0003310

अथवा

PayTM करें - 7800138404

ध्यान रहे - अनुदान की न्यूनतम राशि 1.00 (एक रुपये)
अधिकतम राशि - 100 (सौ रुपये)

निवेदन - कृपया 100 (सौ रुपये) से अधिक न भेजें

निवेदक
सर्वज्ञभूषण
सचिव
संस्कृतगंगा, दारागञ्ज, प्रयागराज

सम्पर्क सूत्र
9839852033

TGT, UGC, GIC, GDC, DSSSB, REET, असिस्टेण्ट प्रोफेसर आदि सभी प्रतियोगी परीक्षाओं हेतु

किरातमीमांसा

परीक्षा दृष्टि

व्याख्याकार एवं सम्पादक

सर्वज्ञभूषण

सह-सम्पादक

सुमन सिंह

शुभम ममगाई

संस्कृतगङ्गा

दारागञ्ज, प्रयागराज

☞ **ISBN-** 978-81-932244-8-9

☞ **पुस्तक का नाम–** किरातमीमांसा

☞ **सम्पादक एवं व्याख्याकार-** सर्वज्ञभूषण

☞ **प्रकाशक**

संस्कृतगङ्गा (पञ्जीकृत)
59, मोरी, दारागञ्ज, प्रयागराज 211006
(कोतवाली दारागञ्ज के आगे, गङ्गाकिनारे, संकटमोचन छोटे हनुमान् मन्दिर के पास)
कार्यालय - **8004545095, 8004545096**
email-Sanskritganga@gmail.com
बेवसाइट - www.Sanskritganga.org

☞ **मुख्यवितरक**

राजू पुस्तक केन्द्र
अल्लापुर, प्रयागराज (उत्तर प्रदेश)
मो० 9453460552

☞ **मुद्रक-** एकेडमी प्रेस दारागञ्ज प्रयागराज

☞ प्रथम संस्करण - 05 जुलाई, 2021,

☞ **मूल्य –** **151** /= (एक सौ इक्यावन रुपये मात्र)

संस्कृतगङ्गा उवाच

प्रिय संस्कृतबन्धो!

नमः संस्कृताय

- 'किरातमीमांसा- परीक्षा दृष्टि' यह पुस्तक **TGT, GIC** प्रवक्ता, **UGC - NET, DSSSB, REET, GDC,** असिस्टेण्ट प्रोफेसर आदि प्रतियोगी परीक्षाओं को ध्यान में रखकर लिखी गयी है।

- किरातमीमांसा का तात्पर्य है- किरातार्जुनीयम् (प्रथमसर्ग) के प्रश्नों की मीमांसा अर्थात् व्याख्या, जो प्रश्न प्रतियोगी परीक्षाओं की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं उनका सङ्कलन इस पुस्तक में किया गया है।

- किरातमीमांसा परीक्षा की दृष्टि से लिखी गयी है, अर्थात् महाकवि भारवि का परिचय, किरातार्जुनीयम् महाकाव्य का परिचय, पात्रों का चरित्र-चित्रण, सूक्तियाँ, शब्दार्थ, व्याकरणात्मक टिप्पणी, परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण वन लाइनर क्वेश्चन और लगभग 450 वस्तुनिष्ठ प्रश्न आपको इस पुस्तक में मिलेंगे।

- इस पुस्तक के सम्पादन एवं प्रफू रीडिंग में सुमन सिंह और शुभम ममगाई ने अथक एवं अनवरत परिश्रम किया है, जो इस पुस्तक के प्रत्येक पृष्ठ में देखा जा सकता है। इन दोनों संस्कृत भगीरथ एवं भागीरथी को कोटिशः साधुवाद।

- इस पुस्तक के प्रूफ रीडिंग कार्य में **संगीता राय, रूबी अग्रहरी, कृष्णा ओझा, विनीत द्विवेदी, ब्रह्मा जी द्विवेदी**, निर्मोही सर, प्रभाशंकर, कृष्णकुमार आदि साथियों का विशेष योगदान रहा।

➢ इस पुस्तक के अक्षर संयोजन के लिए **संदीप कुमार,** एवं **नितिन कुमार** जी को साधुवाद तथा मुद्रणकार्य के लिए **राजकुमार गुप्ता (राजू पुस्तक केन्द्र)** को कोटिशः धन्यवाद।

भवदीय

दिनाङ्क
05 जुलाई, 2021

सर्वज्ञभूषण
संस्कृतगङ्गा, प्रयागराज

❐❐

अनुक्रमणिका

1. किरातार्जुनीयम् (प्रथमसर्ग)

संस्कृत मूलपाठ | **अनुवाद**

1

**श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीं
प्रजासु वृत्तिं यमयुङ्क्त वेदितुम्।
स वर्णिलिङ्गी विदितः समाययौ
युधिष्ठरं द्वैतवने वनेचरः।।**

◆ कुरुदेश के स्वामी (दुर्योधन) की, राजलक्ष्मी का पालन करने वाली प्रजाविषयक प्रवृत्ति को जानने के लिए (युधिष्ठिर ने) जिस (वनेचर) को नियुक्त किया था, वह ब्रह्मचारी वेश वाला वनेचर सारा वृत्तान्त जानकर द्वैतवन में युधिष्ठिर के पास लौट आया।

2

**कृतप्रणामस्य महीं महीभुजे
जितां सपत्नेन निवेदयिष्यतः।
न विव्यथे तस्य मनो न हि प्रियं
प्रवक्तुमिच्छन्ति मृषा हितैषिणः॥**

◆ (महाराज युधिष्ठिर को) प्रणाम करके, शत्रु द्वारा जीती हुई पृथ्वी (के वृत्तान्त) को राजा के प्रति निवेदित करते हुए उस वनेचर का मन व्यथित नहीं हुआ, क्योंकि हित चाहने वाले लोग मिथ्या मधुर वचन बोलने की इच्छा नहीं करते।

3

**द्विषां विघाताय विधातुमिच्छतो
रहस्यनुज्ञामधिगम्य भूभृतः।
स सौष्ठवौदार्यविशेषशालिनीं
विनिश्चितार्थामिति वाचमाददे॥**

◆ शत्रुओं के नाश के लिए कार्य करने की इच्छा वाले राजा (युधिष्ठिर) की एकान्त में आज्ञा प्राप्त करके उस (वनेचर) ने शब्दसौष्ठव और अर्थगौरव के वैशिष्ट्य से सुशोभित तथा सुनिश्चित अर्थ वाली इस प्रकार की वाणी अङ्गीकृत की अर्थात् कही।

4

**क्रियासु युक्तैर्नृप चारचक्षुषो
न वञ्चनीयाः प्रभवोऽनुजीविभिः।
अतोऽर्हसि क्षन्तुमसाधु साधु वा
हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः॥**

◆ हे राजन्! कार्यों में नियुक्त किये गये सेवकों द्वारा गुप्तचररूपी नेत्रों वाले राजा लोग ठगे नहीं जाने चाहिए, अतएव (मेरे) अप्रिय अथवा प्रिय (वचन) को क्षमा करें। क्योंकि हितकर और मनोहर वचन दुर्लभ होता है।

5

स किंसखा साधु न शास्ति योऽधिपं
हितान्न यः संश्रृणुते स किम्प्रभुः।
सदाऽनुकूलेषु हि कुर्वते रतिं
नृपेष्वमात्येषु च सर्वसम्पदः ॥

◆ जो राजा को हितकर उपदेश नहीं करता वह कुमित्र है। जो हितैषी व्यक्ति से (उपदेश) नहीं सुनता वह कुत्सित राजा है। क्योंकि राजाओं और अमात्यों के (परस्पर) अनुकूल होने पर समस्त सम्पदाएँ सर्वदा अनुराग करती हैं।

6

निसर्गदुर्बोधमबोधविक्लवाः
क्व भूपतीनां चरितं क्व जन्तवः।
तवानुभावोऽयमवेदि यन्मया
निगूढतत्त्वं नयवर्त्म विद्विषाम् ॥

◆ कहाँ स्वभाव से ही दुर्ज्ञेय राजाओं का चरित, और कहाँ अज्ञान से विकल (मुझ जैसे) प्राणी ! (तथापि) जो मेरे द्वारा शत्रुओं का गुप्त तत्त्वों वाला नीतिमार्ग जान लिया गया, यह आपका प्रभाव ही है।

7

विशङ्कमानो भवतः पराभवं
नृपासनस्थोऽपि वनाधिवासिनः।
दुरोदरच्छद्मजितां समीहते
नयेन जेतुं जगतीं सुयोधनः॥

◆ राजसिंहासन पर बैठा हुआ भी दुर्योधन, वन में निवास करने वाले आपसे पराजय की आशङ्का करता हुआ जुए के छल से जीती हुई पृथ्वी को नीति से जीतने के लिए प्रयत्न कर रहा है।

8

तथापि जिह्मः स भवज्जिगीषया
तनोति शुभ्रं गुणसम्पदा यशः।
समुन्नयन्भूतिमनार्यसङ्गमाद्-
वरंविरोधोऽपि समं महात्मभिः ॥

◆ फिर भी अर्थात् आपके द्वारा पराजय से सशङ्कित होकर भी, कुटिल स्वभाव वाला वह दुर्योधन आपको जीतने की इच्छा से अपनी गुणरूपी सम्पत्ति के द्वारा धवल कीर्ति को फैला रहा है। ऐश्वर्य को बढ़ाता हुआ, महापुरुषों के साथ विरोध भी दुष्टों के समागम से अच्छा है।

9

कृतारिषड्वर्गजयेन मानवीम्-
अगम्यरूपां पदवीं प्रपित्सुना।
विभज्य नक्तन्दिवमस्ततन्द्रिणा
वितन्यते तेन नयेन पौरुषम् ॥

◆ (कामादिक) छह शत्रुओं के समूह को जीत लेने वाले, (तथा) मनु द्वारा उपदिष्ट दुष्प्राप्य स्वरूप वाली शासन-पद्धति को प्राप्त करने के इच्छुक, आलस्यरहित उस (दुर्योधन) के द्वारा रात्रि और दिन का समुचित विभाजन करके नीति से पुरुषार्थ का विस्तार किया जा रहा है

(10)

सखीनिव प्रीतियुजोऽनुजीविनः
समानमानान्सुहृदश्च बन्धुभिः।
स सन्ततं दर्शयते गतस्मयः
कृताधिपत्यामिव साधु बन्धुताम् ॥

◆ अभिमानरहित वह (दुर्योधन) निरन्तर सेवकों को प्रेम से युक्त मित्रों की तरह, मित्रों को बन्धुओं के समान सम्मानयुक्त एवं बन्धुवर्ग को आधिपत्य रखने वाले स्वामी की भाँति अच्छी तरह प्रदर्शित करता है।

(11)

असक्तमाराधयतो यथायथं
विभज्य भक्त्या समपक्षपातया।
गुणानुरागादिव सख्यमीयिवान्
न बाधतेऽस्य त्रिगणः परस्परम् ॥

◆ यथोचित विभाजन करके समान पक्षपात वाले अनुराग से अनासक्त भाव से सेवन करते हुए इस (दुर्योधन) के तीन पुरुषार्थ (धर्म, अर्थ, काम) मानों उसके गुणों में अनुराग होने के कारण मित्रता को प्राप्त हुए के समान एक दूसरे को बाधा नहीं पहुँचाते।

(12)

निरत्ययं साम न दानवर्जितं
न भूरिदानं विरहय्य सत्क्रियाम्।
प्रवर्त्तते तस्य विशेषशालिनी
गुणानुरोधेन विना न सत्क्रिया ॥

◆ उस (दुर्योधन) की निर्बाध (प्रवृत्त होने वाली) मधुरवाणी दान के बिना प्रवृत्त नहीं होती। उसका प्रचुर दान सत्कार के बिना प्रवृत्त नहीं होता। विशेषरूप से सुशोभित होने वाला उसका सत्कार गुणों का विचार किये बिना प्रवृत्त नहीं होता अर्थात् वह गुणी का ही सत्कार करता है।

(13)

वसूनि वाञ्छन्न न वशी न
मन्युना स्वधर्म इत्येव निवृत्तकारणः।
गुरूपदिष्टेन रिपौ सुतेऽपि वा
निहन्ति दण्डेन स धर्मविप्लवम् ॥

◆ इन्द्रियों को वश में रखने वाला वह (दुर्योधन) न तो धन चाहते हुए, न क्रोध से, (अपितु) (सभी) कारणों से रहित होते हुए 'अपना धर्म है'– ऐसा मानकर, गुरुओं द्वारा उपदिष्ट दण्डनीति से शत्रु अथवा पुत्र में भी (विद्यमान) धर्म के व्यतिक्रम को नष्ट करता है।

(14)

विधाय रक्षान्परितः परेतरान्-
अशङ्किताकारमुपैति शङ्कितः।
क्रियापवर्गेष्वनुजीविसात्कृताः
कृतज्ञतामस्य वदन्ति सम्पदः ॥

◆ चारों ओर शत्रुओं के शत्रुओं को रक्षक नियुक्त करके, सशङ्कित होता हुआ भी (वह दुर्योधन) शङ्कारहित आकृति बनाए रखता है। कार्यों की समाप्ति पर सेवकों को प्रदान की गई सम्पत्तियाँ इस (दुर्योधन) की कृतज्ञता को कहती हैं।

15

अनारतं तेन पदेषु लम्भिता
विभज्य सम्यग्विनियोगसत्क्रियाः।
फलन्त्युपायाः परिबृंहितायतीः
उपेत्य सङ्घर्षमिवार्थसम्पदः ॥

◆ उस (दुर्योधन) के द्वारा उपादेय वस्तुओं में भलीभाँति विभाग करके समुचित प्रयोगरूप सत्कार को प्राप्त कराये गये सामादिक उपाय मानो (आपस में) स्पर्धा करके समुन्नत भविष्य वाली धनसम्पदाओं को निरन्तर उत्पन्न करते हैं।

16

अनेकराजन्यरथाश्वसङ्कुलं
तदीयमास्थाननिकेतनाजिरम्।
नयत्ययुग्मच्छदगन्धिरार्द्रतां
भृशं नृपोपायनदन्तिनां मदः ॥

◆ राजाओं के द्वारा उपहार में दिये गये हाथियों का सप्तपर्ण के पुष्प की गन्ध वाला मदजल अनेक राजाओं के रथों और घोड़ों से भरे हुए उस (दुर्योधन) के आँगन को अत्यधिक गीला कर देता है।

17

सुखेन लभ्या दधतः कृषीवलैः
अकृष्टपच्या इव सस्यसम्पदः।
वितन्वति क्षेममदेवमातृका-
श्चिराय तस्मिन्कुरवश्चकासति ॥

◆ पर्याप्त समय से उस (दुर्योधन) के द्वारा (प्रजाओं का) कल्याण करते रहने पर वर्षा पर आश्रित न रहने वाला कुरुदेश मानो बिना जुताई के ही पकने वाली (अतः) अनायास प्राप्त होनी वाली धान्य-सम्पत्तियों को किसानों के द्वारा धारण करते हुए सुशोभित हो रहा है।

18

उदारकीर्तेरुदयं दयावतः
प्रशान्तबाधं दिशतोऽभिरक्षया।
स्वयं प्रदुग्धेऽस्य गुणैरुपस्नुता
वसूपमानस्य वसूनि मेदिनी ॥

◆ विशाल कीर्ति वाले, दयालु, सब ओर से रक्षा के द्वारा उपद्रवरहित अभ्युदय को सम्पादित करते हुए कुबेर के समान इस (दुर्योधन) के गुणों से द्रवीभूत हुई पृथिवी, सम्पदाओं को स्वयं ही प्रदान कर रही है।

19

महौजसो मानधना धनार्चिता
धनुर्भृतः संयति लब्धकीर्तयः।
नसंहतास्तस्य नभिन्नवृत्तयः
प्रियाणि वाञ्छन्त्यसुभिः समीहितुम्॥

◆ महापराक्रमी, मानरूपी धन वाले, धन से सत्कृत, युद्ध में कीर्ति अर्जित कर लेने वाले, (परस्पर) गुटबन्दी न करने वाले, (एक-दूसरे के) विरुद्ध आचरण न करने वाले धनुर्धर (योद्धा) उस (दुर्योधन) के प्रिय कार्यों को प्राणपण से पूरा करने की इच्छा करते हैं।

(20)

महीभृतां सच्चरितैश्चरैः क्रियाः
स वेद निःशेषमशेषितक्रियः।
महोदयैस्तस्य हितानुबन्धिभिः
प्रतीयते धातुरिवेहितं फलैः॥

◆ कार्यों को पूर्णरूप से सम्पन्न कर लेने वाला वह (दुर्योधन) उत्तम चरित्र वाले गुप्तचरों द्वारा राजाओं की क्रियाओं को सम्पूर्ण रूप से जान लेता है, विधाता की भाँति उस (दुर्योधन) के कार्य अत्यधिक उत्कर्ष वाले हितकारक परिणाम वाले फलों के द्वारा ही प्रतीत होते हैं।

(21)

न तेन सज्यं क्वचिदुद्यतं धनुः
कृतं न वा कोपविजिह्ममाननम्।
गुणानुरागेण शिरोभिरुह्यते
नराधिपैर्माल्यमिवास्य शासनम्॥

◆ उस (दुर्योधन) के द्वारा कहीं भी चढ़ी हुई प्रत्यञ्चा वाला धनुष नहीं उठाया गया अथवा क्रोध के कारण मुख विकृत नहीं किया गया। राजाओं के द्वारा इस (दुर्योधन) का आदेश गुणों के अनुराग के कारण पुष्पमाला की भाँति शिरों से धारण किया जाता है।

(22)

स यौवराज्ये नवयौवनोद्धतं
निधाय दुःशासनमिद्धशासनः।
मखेष्वखिन्नोऽनुमतः पुरोधसा
धिनोति हव्येन हिरण्यरेतसम् ॥

◆ अप्रतिहत आज्ञा वाला वह (दुर्योधन) अभिनव यौवन के कारण उद्दण्ड दुःशासन को युवराज के पद पर नियुक्त करके पुरोहित से अनुमति लेकर आलस्यरहित होकर यज्ञों में हव्य के द्वारा अग्निदेव को प्रसन्न करता है।

(23)

प्रलीनभूपालमपि स्थिरायति
प्रशासदावारिधि मण्डलं भुवः।
स चिन्तयत्येव भियस्त्वदेष्यतीः
अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता ॥

◆ शत्रुरहित और स्थिर भविष्य वाले समुद्रपर्यन्त भूमण्डल पर शासन करता हुआ भी वह (दुर्योधन) आपकी ओर से आने वाली विपत्तियों के विषय में सोचता ही रहता है। अहो! बलवानों से किया गया विरोध दुःखद अन्त वाला होता है।।

(24)

कथाप्रसङ्गेन जनैरुदाहृताद्-
अनुस्मृताखण्डलसूनुविक्रमः।
तवाभिधानाद् व्यथते नताननः
स दुःसहान्मन्त्रपदादिवोरगः ॥

◆ वार्तालाप में प्रसङ्गवश लोगों द्वारा उदाहरण-स्वरूप उच्चरित आपके (युधिष्ठिर) नाम से अर्जुन के पराक्रम का स्मरण करके वह (दुर्योधन), श्रेष्ठ विषवैद्यों द्वारा उच्चारण किये गये गरुड और वासुकि के नामों से संयुक्त अत्यन्त दुःसह मन्त्रपद से विष्णु के वाहनभूत पक्षी गरुड के पादप्रहार का स्मरण करके अधोमुख होकर व्यथित होने वाले सर्प के समान अधोमुख होकर व्यथित होता है।

25

तदाशु कर्तुं त्वयि जिह्ममुद्यते
विधीयतां तत्र विधेयमुत्तरम्।
परप्रणीतानि वचांसि चिन्वतां
प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः ॥

◆ तो आपके प्रति छल करने को उद्यत उस (दुर्योधन) के प्रति उचित प्रतिक्रिया (आपके द्वारा) शीघ्र की जानी चाहिए। दूसरे लोगों के द्वारा कहे गए वचनों का संग्रह करने वाले मुझ जैसों की बातें तो वृतान्तों का सारमात्र होती हैं।

26

इतीरयित्वा गिरमात्तसत्क्रिये
गतेऽथ पत्यौ वनसन्निवासिनाम्।
प्रविश्य कृष्णासदनं महीभुजा
तदाचचक्षेऽनुजसन्निधौ वचः ॥

◆ इस प्रकार (सभी) बातें कहकर, सत्कार पाकर, वनवासियों के स्वामी (उस वनेचर) के चले जाने पर महाराज (युधिष्ठिर) ने द्रौपदी के भवन में प्रवेश करके अनुजों के सान्निध्य में उस बात को कह सुनाया।

27

निशम्य सिद्धिं द्विषतामपाकृती
स्ततस्ततस्त्या विनियन्तुमक्षमा।
नृपस्य मन्युव्यवसायदीपिनीः
उदाजहार द्रुपदात्मजा गिरः ॥

◆ उसके पश्चात् शत्रुओं की सफलता को सुनकर, उनसे प्राप्त अपमानों को अथवा उद्भूत अपने मनोविकारों को सहन करने में असमर्थ द्रुपद की पुत्री द्रौपदी राजा (युधिष्ठिर) के क्रोध और उद्यम को उद्दीप्त करने वाले वचन बोली।

28

भवादृशेषु प्रमदाजनोदितं
भवत्यधिक्षेप इवानुशासनम्।
तथापि वक्तुं व्यवसाययन्ति मां
निरस्तनारीसमया दुराधयः ॥

◆ आप जैसों के विषय में नारीजनों द्वारा कहा गया उपदेशपरक वचन अपमान के समान होता है, फिर भी स्त्रीजनोचित शालीनता को नष्ट कर देने वाली दुष्ट मानसिक व्यथाएँ मुझे बोलने के लिए प्रेरित कर रही हैं।

29

अखण्डमाखण्डलतुल्यधामभि-
श्चिरं धृता भूपतिभिः स्ववंशजैः।
त्वयात्महस्तेन मही मदच्युता
मतङ्गजेन स्त्रगिवापवर्जिता ॥

◆ इन्द्र-सदृश तेजस्वी अपने वंश में उत्पन्न हुए राजाओं के द्वारा चिरकाल तक अखण्डरूप से धारण की गई पृथ्वी को आपने मद बहाने वाले हाथी के द्वारा (अपनी ही सूँड़ से गिराई गई) माला के समान अपने हाथ से गँवा दिया है।

(30)

व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवं
भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः।
प्रविश्य हि घ्नन्ति शठास्तथाविधान्-
असंवृताङ्गान्निशिता इवेषवः ।।

♦ जो लोग मायावियों के साथ मायावी नहीं होते, वे मूर्ख लोग पराजय को प्राप्त होते हैं। धूर्त लोग बिना ढँके हुए अङ्गों वाले उन जैसे लोगों को तीक्ष्ण बाणों के समान प्रविष्ट होकर निश्चित ही मार डालते हैं।

(31)

गुणानुरक्तामनुरक्तसाधनः
कुलाभिमानी कुलजां नराधिपः।
परैस्त्वदन्यः क इवापहारये
न्मनोरमामात्मवधूमिव श्रियम्।।

♦ अनुकूल सहायकों अथवा साधनों वाला एवं कुलीनता का गर्व रखने वाला आपके अतिरिक्त अन्य कौन राजा होगा जो गुणों में अनुरक्त, कुलीन एवं मनोहारिणी अपनी पत्नी के समान (साम, दानादि) गुणों में अनुरक्त एवं कुलक्रम से आयी हुई मनोहारिणी राजलक्ष्मी को दूसरों से अपहृत करायेगा?

(32)

भवन्तमेतर्हि मनस्विगर्हिते
विवर्त्तमानं नरदेव! वर्त्मनि।
कथं न मन्युर्ज्वलयत्युदीरितः
शमीतरुं शुष्कमिवाग्निरुच्छिखः।।

♦ राजन्! इस समय मनस्वियों द्वारा निन्दित मार्ग में स्थित आपको सूखे हुए शमी के वृक्ष को जला देने वाली प्रज्वलित अग्नि के समान उद्दीप्त क्रोध कैसे नहीं प्रज्वलित करता?

(33)

अबन्ध्यकोपस्य विहन्तुरापदां
भवन्ति वश्याः स्वयमेव देहिनः।
अमर्षशून्येन जनस्य जन्तुना
न जातहार्देन न विद्विषादरः।।

♦ सफल क्रोध वाले (और) विपत्तियों को नष्ट करने वाले (मनुष्य) के सभी प्राणी स्वयं ही वशीभूत हो जाते हैं। क्रोधहीन व्यक्ति के मित्र बनने पर न तो उसे लोगों का आदर प्राप्त होता है (और) न ही शत्रु बनने पर भय होता है।

(34)

परिभ्रमँल्लोहितचन्दनोचितः
पदातिरन्तर्गिरि रेणुरूषितः।
महारथः सत्यधनस्य मानसं
दुनोति नो कच्चिदयं वृकोदरः।।

♦ लाल चन्दन का लेप करने वाला, महारथी (किन्तु अब) पैदल पर्वतों पर घूमते हुए धूलिधूसरित यह भीम, क्या (आप) सत्यसन्ध के मन को व्यथित नहीं करता?

35

विजित्य यः प्राज्यमयच्छदुत्तरान्
कुरूनकुप्यं वसु वासवोपमः।
स वल्कवासांसि तवाधुनाहरन्
करोति मन्युं न कथं धनञ्जयः ॥35॥

♦ इन्द्रतुल्य पराक्रम वाले जिस अर्जुन ने उत्तर कुरुओं को जीतकर प्रभूत स्वर्ण और रजतरूपी सम्पदा आप को प्रदान की थी, वही (अर्जुन) अब वल्कल वस्त्रों को लाता हुआ आपके क्रोध को कैसे नहीं उत्पन्न करता?

36

वनान्तशय्याकठिनीकृताकृती
कचाचितौ विष्वगिवागजौ गजौ।
कथं त्वमेतौ धृतिसंयमौ यमौ
विलोकयन्नुत्सहसे न बाधितुम् ॥36॥

♦ वनभूमिरूपी शय्या के कारण कठोर शरीर वाले, सब ओर बालों से ढँके हुए दो पर्वतीय हाथियों के समान, इन दोनों जुड़वे भाइयों को देखते हुए तुम अपने धैर्य और संयम को त्यागने के लिए क्यों उद्यत नहीं होते?

37

इमामहं वेद न तावकीं धियं
विचित्ररूपाः खलु चित्तवृत्तयः।
विचिन्तयन्त्या भवदापदं परां
रुजन्ति चेतः प्रसभं ममाधयः॥37॥

♦ तुम्हारी इस बुद्धि को मैं नहीं जानती क्योंकि चित्तवृत्तियाँ विचित्र रूपों वाली होती हैं (किन्तु) आपकी महान् विपत्तियों को सोचते हुए मेरी मनोव्यथाएँ मेरे चित्त को बलपूर्वक क्षतविक्षत कर देती हैं।

38

पुराधिरूढः शयनं महाधनं
विबोध्यसे यः स्तुतिगीतिमङ्गलैः।
अदभ्रदर्भामधिशय्य स स्थलीं
जहासि निद्रामशिवैः शिवारुतैः ॥38॥

♦ जो (आप) पहले बहुमूल्य शय्या पर शयन किए हुए माङ्गलिक स्तुतियों और गीतों के द्वारा जगाए जाते थे, वही (आप) बहुत से कुशों वाली भूमि पर शयन कर शृगालियों के अमङ्गलसूचक शब्दों (के श्रवण) से निद्रा त्यागते हैं।

39

पुरोपनीतं नृप रामणीयकं
द्विजातिशेषेण यदेतदन्धसा।
तदद्य ते वन्यफलाशिनः परं
परैति कार्श्यं यशसा समं वपुः॥39॥

♦ हे राजन्! आपका जो यह शरीर पहले ब्राह्मणों के भोजन के पश्चात् बचे हुए अन्न से रमणीयता को प्राप्त हो गया था, आज जङ्गली फलों को खाने से आपका वह शरीर (आपके) यश के साथ अत्यधिक क्षीणता को प्राप्त हो रहा है।

(40)

अनारतं यौ मणिपीठशायिना
वरञ्जयद्राजशिरःस्रजां रजः।
निषीदतस्तौ चरणौ वनेषु ते
मृगद्विजालूनशिखेषु बर्हिषाम् ॥40॥

♦ निरन्तर मणिमय पादपीठ पर स्थित रहने वाले जिन (चरणों) को राजाओं की शिरोमालाओं की परागधूलि रञ्जित करती थी (आज) आपके वही दोनों चरण, हरिणों और ब्राह्मणों द्वारा काटे गये अग्रभाग वाले कुशों के समूहों पर पड़ते हैं।

(41)

द्विषन्निमित्ता यदियं दशा ततः
समूलमुन्मूलयतीव मे मनः।
परैरपर्य्यासितवीर्य्यसम्पदां
पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम् ॥41॥

♦ चूँकि (आपकी) यह दशा शत्रुओं के कारण हुई है, अतः मेरा मन समूल उखड़ा-सा जा रहा है। शत्रुओं द्वारा नष्ट न की गई पराक्रमरूपी सम्पत्ति वाले स्वाभिमानियों के लिए पराजय भी उत्सवरूप ही है।

(42)

विहाय शान्तिं नृप! धाम तत्पुनः
प्रसीद सन्धेहि वधाय विद्विषाम्।
व्रजन्ति शत्रूनवधूय निःस्पृहाः
शमेन सिद्धिं मुनयो न भूभृतः ॥42॥

♦ हे राजन्! शान्ति त्यागकर शत्रुओं के वध के लिए प्रसन्न होइये, उस तेज को पुनः धारण कीजिए। निष्काम मुनिजन ही (काम, क्रोधादि आन्तरिक) शत्रुओं को परास्त करके शान्ति के द्वारा सिद्धि प्राप्त करते हैं, राजा लोग नहीं।

(43)

पुरःसरा धामवतां यशोधना
सुदुः सहं प्राप्य निकारमीदृशम्।
भवादृशाश्चेदधिकुर्वते रतिं
निराश्रया हन्त हता मनस्विता॥43॥

♦ तेजस्वियों में अग्रणी (तथा) यशरूपी धन वाले आप जैसे लोग यदि इस प्रकार के अतीव दुःसह अपमान को प्राप्त करके (भी) सन्तोष करते हैं तो खेद है कि मनस्विता आश्रयहीन होकर नष्ट हो गयी।

(44)

अथ क्षमामेव निरस्तविक्रम-
श्चिराय पर्येषि सुखस्य साधनम्।
विहाय लक्ष्मीपतिलक्ष्मकार्मुकं
जटाधरः सञ्जुहुधीह पावकम् ॥44॥

♦ और यदि पराक्रम का परित्याग करके आप क्षमा को ही चिरकाल के लिए सुख का साधन मानते हैं तो राजचिह्न रूप धनुष को त्यागकर और जटा धारण करके यहीं (वन में) अग्नि में होम कीजिए।

45

न समयपरिरक्षणं क्षमं ते
निकृतिपरेषु परेषु भूरिधाम्नः।
अरिषु हि विजयार्थिनः क्षितीशाः
विदधति सोपधि सन्धिदूषणानि ॥45॥

◆ शत्रुओं के (आपके प्रति) अपकार में लगे रहने पर, परमतेजस्वी आपके लिए समय की प्रतीक्षा करनी उचित नहीं है अथवा सन्धि के नियमों की रक्षा करनी उचित नहीं है क्योंकि विजय की अभिलाषा वाले राजा लोग शत्रुओं के विषय में (की गयी) सन्धियों को छलपूर्वक भङ्ग कर देते हैं।

46

विधिसमयनियोगाद्दीप्तिसंहारजिह्मं
शिथिलवसुमगाधे मग्नमापत्पयोधौ।
रिपुतिमिरमुदस्योदीयमानं दिनादौ
दिनकृतमिव लक्ष्मीस्त्वां समभ्येतु भूयः ॥46॥

◆ विधाता अथवा भाग्य और काल के नियोगवश अत्यन्त गम्भीर आपत्तिरूपी समुद्र में डूबे हुए, प्रकाश नष्ट हो जाने से मन्दप्रभ, शिथिल किरणों वाले, शत्रुरूपी अन्धकार को नष्ट करके उदित होते हुए सूर्य की भाँति आपको शुभसमय प्रातःकाल (अनुकूल समय) में (खोई हुई) राज्यलक्ष्मी पुनः प्राप्त हो।

2. महाकवि भारवि का परिचय

- भारवि का प्रामाणिक जीवनवृत्त सर्वथा अप्राप्त है, कुछ किंवदन्तियाँ प्रचलित हैं।
- महाकवि दण्डी विरचित 'अवन्तिसुन्दरीकथा' के अनुसार भारवि का जीवनवृत्त निम्नलिखित है।
- भारवि चालुक्यवंशी सम्राट् पुलकेशिन द्वितीय के अनुज विष्णुवर्धन (615 ई0) के मित्र/सभापण्डित/राजकवि थे।

स मेधावी कविर्विद्वान् भारविः प्रभवो गिराम्।
अनुरुध्याकरोन्मैत्रीं नरेन्द्रे विष्णुवर्धने॥

- भारवि **कुशिक/कौशिक गोत्रीय** ब्राह्मण थे।
- भारवि का सम्बन्ध कोङ्कण के गङ्गवंशी नरेश दुर्विनीत और काञ्ची के पल्लववंशी नरेश सिंहविष्णु तथा उनके पुत्र महेन्द्रविक्रम के साथ भी था।
- सिंहविष्णु से मिलते समय कवि की अवस्था थी – **बीस वर्ष।**
- किरातार्जुनीयम् के 15वें सर्ग की संस्कृत टीका लिखी थी – **विद्वान् नरेश दुर्विनीत ने।**
- एक अन्य किंवदन्ती के अनुसार भारवि धारानगरी के निवासी थे।

भारवि के समय निर्धारण में प्रमुख स्रोत

- पुलकेशिन द्वितीय का एहोल शिलालेख।
- वामन और जयादित्य की काशिकावृत्ति।
- गुम्मरेड्डीपुर का पत्रलेख।
- महाकवि दण्डी की अवन्तिसुन्दरीकथा और उस पर आधारित 'अवन्तिसुन्दरीकथासार'।
- विष्णुवर्धन, सिंहविष्णु तथा दुर्विनीत की ऐतिहासिकता।
- भारवि का जन्मसमय – **560 ई0 के लगभग।**
- भारवि का रचनाकाल – **615 ई0 के लगभग।**
- भारवि का समय – **600 ई0 के आसपास (555 ई0 से 625 ई0 के मध्य) (छठी शती के उत्तरार्ध से सातवीं शती के पूर्वार्द्ध तक)**
- श्री एन0सी0 चटर्जी ने उन्हें **ट्रावनकोर** का निवासी बताया है।
- विद्वानों का मानना है कि महाकवि भारवि विष्णुवर्धन, सिंहविष्णु, महेन्द्रविक्रम एवं दुर्विनीत के आश्रय में रहने वाले एक **दाक्षिणात्य कवि** थे।
- महाकवि भारवि का जन्म – **नासिक के समीपवर्ती बरारप्रान्त के 'अचलपुर' (एलिचपुर) नामक ग्राम में।**
- भारवि **शैवदर्शन** के अनुयायी थे, उन्होंने किरातार्जुनीयम् के 18वें सर्ग में शिवस्तुति की है।
- भारवि किस कवि से प्रभावित थे – **कालिदास से**
- भारवि से कौन प्रभावित था – **महाकवि माघ**
- राजशेखर के अनुसार कालिदास एवं भर्तृमेण्ठ की भाँति भारवि की भी परीक्षा उज्जयिनी में ली गयी थी – **''श्रूयते चोज्जयिन्यां काव्यकारपरीक्षा''**

- **उत्फुल्लस्थलनलिनीवनादमुष्मात्.......कनकमयातपत्रलक्ष्मीम् (5/39)** 'किरातार्जुनीयम्' के इस श्लोक की उपमा के कारण ही उन्हें **'आतपत्रभारवि'** की उपाधि मिली।
- **पिता** – (i) श्रीधर, (ii) नारायणस्वामी (अवन्तिसुन्दरीकथा के अनुसार)
- **माता** – सुशीला ➢ **पत्नी** – रसिकवती या रसिका
- **पुत्र** – मनोरथ ➢ **मूल नाम** – दामोदर
- **गोत्र** – कुशिक
- **जन्म स्थान** – (i) दक्षिण भारत में नासिक प्रदेश के **'अचलपुर'** (एलिचपुर), (ii) धारानगरी (अवन्तिसुन्दरी कथा के अनुसार)
- **समय** – छठवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध/सातवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध

भारवि की वंशपरम्परा

नारायणस्वामी (श्रीधर) – (भारवि के पिता)

↓

भारवि – (दण्डी के प्रपितामह)

↓

मनोरथ – (दण्डी के पितामह)

↓

वीरदत्त-गौरी – (दण्डी के पिता-माता)

↓

दण्डी – (भारवि के प्रपौत्र)

- **सम्प्रदाय** – शैव ➢ **उपाधि** – 'आतपत्र भारवि'
- **''आधत्ते कनकमयातपत्रलक्ष्मीम्'' (किरात. 5.39)** इस श्लोक में **'कनकमय आतपत्र'** (सोने का छाता) की उपमा को अति सुन्दर मानकर आलोचकों ने कवि का नाम ही **'आतपत्र भारवि'** रख दिया।
- **आश्रयदाता** – 1. विष्णुवर्द्धन (पुलकेशिन द्वितीय के अनुज), 2. सिंहविष्णु (अवन्तिसुन्दरीकथा के अनुसार), 3. दुर्विनीत, 4. महेन्द्रविक्रम (सिंहविष्णु का पुत्र)
- राजा दुर्विनीत ने 'किरातार्जुनीयम्' के 15वें सर्ग पर संस्कृतटीका लिखी।
- 'भारवि' **दण्डी के प्रपितामह** हैं।
- भारवि की वाणी को **'प्रकृतिमधुरा'** कहा जाता है।
- भारवि महाकाव्यों में **'अलङ्कृतकाव्यशैली'** या **'रीतिशैली' के जन्मदाता हैं।** इनके काव्यमार्ग को **विचित्रमार्ग** कहते हैं।
- श्री एन. सी. चटर्जी भारवि को **'ट्रावनकोर' का निवासी** सिद्ध करते हैं।
- एक किंवदन्ती के अनुसार पिता द्वारा अपमानित भारवि उनके वध के लिए उद्यत हो गये, परन्तु पिता द्वारा उनके हित के लिए डाँटा गया, यह जानकर उन्हें बहुत पश्चात्ताप हुआ, और पिता ने छः माह तक ससुराल में सेवा करने का आदेश दिया।
- भारवि का जन्म 560 ई. के लगभग तथा रचनाकाल 580 ई. के लगभग अधिकांश आलोचकों ने माना है।
- भारवि **'अर्थगौरव'** के लिए प्रसिद्ध हैं।
- आचार्य मल्लिनाथ ने भारवि के 'किरातार्जुनीयम्' पर **'घण्टापथ'** नाम की टीका लिखी है।

- भारवि राजनीति के प्रकाण्ड पण्डित हैं।
- मल्लिनाथ, भारवि की कविता की उपमा '**नारिकेलफल**' से करते हैं– '**नारिकेलफलसम्मितं वचः**'
- दक्षिण के '**एहोल शिलालेख**' में भारवि का नाम उल्लिखित है।
- भारवि के किरातार्जुनीयम् को '**लक्ष्म्यन्त**' महाकाव्य, माघ के शिशुपालवधम् को '**श्र्यन्त**' महाकाव्य तथा श्रीहर्ष के नैषधीयचरितम् को '**आनन्दान्त**' महाकाव्य कहते हैं।

महाकवि 'भारवि' विषयक प्रशस्तियाँ

1. भारवेरर्थगौरवम्। **– उद्भट**
2. वृत्तच्छत्रस्य सा कापि वंशस्थस्य विचित्रता।
   प्रतिभा भारवेर्येन सच्छायेनाधिकीकृता।।
   – क्षेमेन्द्र - सुवृत्ततिलक
3. नारिकेलफलसम्मितं वचो भारवेः सपदि तद् विभज्यते।
   स्वादयन्तु रसगर्भनिर्भरं सारमस्य रसिका यथेप्सितम्।।
   – मल्लिनाथ
4. प्रदेशवृत्यापि महान्तमर्थं प्रदर्शयन्ती रसमादधाना।
   सा भारवेः सत्पथदीपिकेव एषा कृतिः कैरिव नोपजीव्या।।
   – कृष्णकवि
5. तादात्म्यं रसभावयोः भारविः स्पष्टमूचिवान्।।
   – शारदातनय
6. "प्रकृतिमधुरा भारविगिरः।" **– श्रीधरदास (सदुक्तिकर्णामृत)**
7. वंशस्थवृत्तेन धृतातपत्रो वृत्तेन संदर्शितराजवृत्तिः।
   अर्थप्रकर्षाहृतराजलक्ष्मीर्नृपायते भारविरात्तकीर्तिः।।
   – आचार्य कपिलदेव द्विवेदी
8. There is no doubt of the power of Bharvi in describption, his style at its best has a calm dignity which is certainly attractive, while he excels also in the observation and record of the beauties of nature and of maidens.

   हिन्दी अनुवाद – भारवि की वर्णन-शक्ति के विषय में सन्देह को अवसर नहीं है। उनकी शैली उत्कृष्टरूप में शान्त गौरवमयी है जो निश्चय ही आकर्षक है। वे प्रकृति और प्रमदाओं के सौन्दर्य, निरीक्षण और उन्हें चित्रित करने में सर्वश्रेष्ठ हैं।
   – प्रो. ए. बी. कीथ, संस्कृत साहित्य का इतिहास
9. स मेधावी कविर्विद्वान् भारविः प्रभवो गिराम्।
   अनुसाध्याकरोन्मैत्रीं नरेन्द्रे विष्णुवर्धने।। **– ऐहोल शिलालेख - रविकीर्ति।**
10. अर्थदीधितिसंवीता, सन्नीरजसुहासिनी।
    अज्ञोलूकनिरानन्दा, भा रवेरिव भारवेः।। **– आचार्य कपिलदेव द्विवेदी**

3. किरातार्जुनीयम् का परिचय

भारवि की रचना

- भारवि की रचना/कृति – **''किरातार्जुनीयमहाकाव्यम्' (एकमात्र कृति)**
- विधा – **महाकाव्य**
- सर्ग – **18 (अठारह)**
- श्लोक – **1040**
- उपजीव्यग्रन्थ – **महाभारत का वनपर्व**
- नायक – **मध्यमपाण्डव अर्जुन (धीरोदात्त)**
- प्रतिनायक – **किरातवेशधारी शिव**
- नायक की प्रकृति – **धीरोदात्त**
- नायिका – **द्रौपदी**
- मुख्य/अङ्गी/प्रधानरस – **वीररस**
- गौण/अङ्गरस – **शृङ्गार आदि**
- रीति एवं गुण – **पाञ्चाली रीति एवं ओजगुण**
- किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग में– **वैदर्भी रीति**
- अलङ्कार – **3 शब्दालङ्कार, 60 अर्थालङ्कार, 7 चित्राक्षर**
- भारवि की शैली – **पाण्डित्यप्रधान अलङ्कृतशैली**
- कथानक – **तपस्यारत अर्जुन द्वारा किरातवेशधारी भगवान् शिव से पाशुपतास्त्र की प्राप्ति**
- बृहत्त्रयी में परिगणित महाकाव्य –
  1. **भारवि का किरातार्जुनीयम् (सर्ग 18)**
  2. **माघ का शिशुपालवधम् (सर्ग 20)**
  3. **श्रीहर्ष का नैषधीयचरितम् (सर्ग 22)**
- भारवि के किरातार्जुनीयम् का प्रारम्भ – **'श्री'** – शब्द से तथा प्रत्येक सर्ग के अन्तिम श्लोक में **'लक्ष्मी'** पद का प्रयोग हुआ है।
- भारवि के काव्य को कहा जाता है – **''लक्ष्मीपदाङ्क''**
- किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग में श्लोक/पद्य हैं – **46**
- किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग में छन्द – **वंशस्थ** (1-44 श्लोकों तक)
- 45वें श्लोक में (न समयपरिरक्षणं क्षमं ते....) – **पुष्पिताग्रा छन्द**
- अन्तिम 46वें श्लोक में (विधिसमयनियोगाद् दीप्तिसंहारजिह्मम्) – **मालिनी छन्द**
- अर्थगौरव के लिए प्रसिद्ध हैं – **भारवि** (भारवेरर्थगौरवम्)
- नायक अर्जुन और प्रतिनायक किरात (शिव) के नाम पर महाकाव्य का नाम पड़ा – **'किरातार्जुनीयम्'**
- श्रीकृष्णमाचारियर ने किरातार्जुनीयम् की कितनी टीकाओं का उल्लेख किया है – **34**

- किरातार्जुनीयम् की सर्वाधिक प्रसिद्ध, प्रामाणिक एवं सारवती टीका का नाम – **'घण्टापथ' – मल्लिनाथ**
- ''घण्टापथ'' का शाब्दिक अर्थ है – **राजमार्ग**
- किरात की अन्य टीकाओं में सर्वाधिक लोकप्रिय टीका है – **'शब्दार्थदीपिका' – श्री चित्रभानु** (केवल प्रथम तीन सर्गों पर)
- किरातार्जुनीयम् के प्रथम तीन सर्गों को कहा जाता है – **'पाषाणत्रय'**
- भारवि के आश्रयदाता दुर्विनीत ने संस्कृत टीका लिखी – **किरातार्जुनीयम् के 15वें सर्ग पर।**
- 'शब्दावतार' नाम से बृहत्कथा का संस्कृत रूपान्तरण किसने किया – **दुर्विनीत ने**
- किरातार्जुनीयम् का 15वाँ सर्ग प्रसिद्ध है – **चित्रकाव्य के लिए**
- भारवि का एकाक्षर श्लोक – (केवल नकार का प्रयोग)

न नोननुन्नो नुन्नोनो नाना नानानना ननु।
नुन्नोऽनुन्नो ननुन्नेनो नानेना नुन्ननुन्ननुत्॥

(किरात० – 15/14)

- अर्थगौरव का क्या अर्थ है – अल्पशब्दों में प्रभूत अर्थ का सन्निवेश अर्थात् 'गागर में सागर भरना।'
- **''नारिकेलफलसम्मितं वचः''** मल्लिनाथ का यह कथन किसके लिए है – भारवि के लिए।
- **''प्रसन्नगम्भीरपदा सरस्वती''** यह वाक्य किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है – किरातार्जुनीयम् से
- **''स्फुटता न पदैरपाकृता न च न स्वीकृतमर्थगौरवम्''** यह वाक्य किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है – किरातार्जुनीयम् (2/27)
- किरातार्जुनीयम् का मुख्य कथानक है – अर्जुन द्वारा किरातवेशधारी भगवान् शङ्कर से पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति।
- अर्जुन पाशुपत अस्त्र के लिए भगवान् शङ्कर को प्रसन्न करने के लिए हिमालय (इन्द्रकील) पर्वत की यात्रा व्यास के कहने पर करते हैं।
- किरातार्जुनीयम् में 'किरात' से तात्पर्य है – **किरातवेषधारी शिव**
- 'किरातार्जुनीयम्' का मङ्गलाचरण है – **वस्तुनिर्देशात्मक**
- किरातार्जुनीयम् महाकाव्य का फल है – **नायक अर्जुन को किरातवेशधारी शिव से पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति।**
- युधिष्ठिर बारह वर्षों के वनवास के काल में अपने अनुजों और द्रौपदी के साथ कहाँ रहते थे – **द्वैतवन में।**

किरातार्जुनीयम् का नामकरण

- किरातश्च अर्जुनश्च किरातार्जुनौ **(द्वन्द्वसमास)** तौ अधिकृत्य कृतं काव्यम् इति किरातार्जुनीयम्।
- **किरातार्जुन + 'छ'** ('अधिकृत्य कृते ग्रन्थे' के अर्थ में ''छ'' प्रत्यय)
- **'शिशुक्रन्दयमसभद्वन्द्वेन्द्रजननादिभ्यश्छः'** सूत्र से ''छ'' प्रत्यय।
- किरातार्जुन + छ (ईय) = किरातार्जुनीय। (**''आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम्''** से 'छ' के स्थान पर 'ईय' आदेश हो गया)

- ग्रन्थवाची शब्द सदा नपुंसकलिङ्ग में होते हैं, अतः – 'किरातार्जुनीयम्' पद बना।
- इस प्रकार नायक अर्जुन और प्रतिनायक (शिव) के नाम पर महाकाव्य का नाम **'किरातार्जुनीयम्'** पड़ा।

किरातार्जुनीय महाकाव्य के पात्र

- अर्जुन **(नायक)**, द्रौपदी **(नायिका)**, किरातवेशधारी शिव **(प्रतिनायक)**, श्रीकृष्ण, युधिष्ठिर, भीम, नकुल, सहदेव, वनेचर, दुर्योधन, कर्ण, भीष्म, परशुराम, यक्ष, द्रोण, इन्द्र, व्यास, मूक (शूकर) आदि प्रमुख पात्र हैं।

आचार्य मल्लिनाथसूरि का जीवनचरित्र

- काश्यपगोत्रीय तेलगू ब्राह्मण – **मल्लिनाथ सूरि**
- मल्लिनाथ के पिता – **कार्दिन**
- मल्लिनाथ के दो पुत्र – **पेड्डुभट्ट तथा कुमारस्वामी**
- कुमारस्वामी की रचना – **प्रतापरुद्रयशोभूषण** (काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ)
- मल्लिनाथ की आनुवांशिक उपाधि – **कोलाचल**
- मल्लिनाथ की व्यक्तिगत उपाधि – **महामहोपाध्याय**
- मल्लिनाथ का समय – **14वीं शताब्दी का उत्तरार्ध**

मल्लिनाथ की सुप्रसिद्ध संस्कृत टीकायें

1. रघुवंशमहाकाव्यम् (कालिदास) – **सञ्जीवनी टीका**
2. कुमारसम्भवम् (कालिदास) – **सञ्जीवनी टीका**
3. मेघदूतम् (कालिदास) – **सञ्जीवनी टीका**
4. किरातार्जुनीयम् (भारवि) – **घण्टापथ टीका**
5. शिशुपालवधम् (माघ) – **सर्वङ्कषा टीका**
6. रावणवध (भट्टि) – **जीवातु टीका**
7. नैषधीयचरितम् (श्रीहर्ष) – **जीवातु टीका**

- इसके अतिरिक्त तार्किकरक्षा, नलोदयकाव्य, प्रशस्तपादभाष्य, और लघुशब्देन्दुशेखर पर भी मल्लिनाथ ने टीका लिखी है।
- इनका पूरा नाम– **महामहोपाध्याय कोलाचल मल्लिनाथसूरि**

किरातार्जुनीय महाकाव्य के टीकाकार

- किरातार्जुनीयम् के प्रसिद्ध टीकाकार – **मल्लिनाथ – ''घण्टापथ टीका''**
- किरातार्जुनीयम् के दूसरे प्रसिद्ध टीकाकार – **चित्रभानु – ''शब्दार्थदीपिका'' (त्रिसागरिका)** (प्रारम्भ के केवल तीन सर्गों पर)
- भारवि के आश्रयदाता दुर्विनीत ने किरातार्जुनीयम् के 15वें सर्ग पर संस्कृतटीका लिखी थी।

किरातार्जुनीयम् की संक्षिप्त कथा

- किरातार्जुनीयम् में कौरवों पर विजय प्राप्ति के लिए अर्जुन का हिमालयपर्वत पर जाकर तपस्या करना, किरातवेशधारी शिव से युद्ध और प्रसन्न हुए भगवान् शिव से पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति का वर्णन है।
- **सर्ग – 1.** हस्तिनापुर भेजे गये वनेचर का द्वैतवन में आकर युधिष्ठिर से मिलना, दुर्योधन के शासन प्रबन्ध का वर्णन तथा युधिष्ठिर के लिए/द्रौपदी का उत्तेजनापूर्ण कथन।
- **सर्ग – 2.** युधिष्ठिर–भीम का संवाद, व्यास का आगमन।
- **सर्ग – 3.** युधिष्ठिर – व्यास संवाद, व्यास द्वारा अर्जुन को पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति के लिए हिमालय पर जाकर तपस्या करने का आदेश, अर्जुन का प्रस्थान।
- **सर्ग – 4.** शरद् ऋतु का वर्णन।
- **सर्ग – 5.** हिमालय पर्वत का वर्णन।
- **सर्ग – 6.** हिमालय पर अर्जुन की तपस्या, तपोविघ्न के लिए इन्द्र द्वारा अप्सराओं को भेजना।
- **सर्ग – 7.** इन्द्र द्वारा प्रेषित गन्धर्वों और अप्सराओं के आने और उनके विलासों का वर्णन
- **सर्ग – 8.** गन्धर्वों और अप्सराओं का उद्यानविहार और जलक्रीडा।
- **सर्ग – 9.** सायंकाल और चन्द्रोदयवर्णन, सुरतवर्णन तथा प्रभातवर्णन।
- **सर्ग – 10.** वर्षा आदि का वर्णन, अप्सराओं का चेष्टावर्णन तथा उनका प्रयत्न वैफल्य।
- **सर्ग – 11.** मुनिरूप में इन्द्र का आगमन, इन्द्र अर्जुन संवाद, इन्द्र का पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति के लिए अर्जुन को शिवाराधना करने का उपदेश।
- **सर्ग – 12.** अर्जुन की तपस्या, शूकर के रूप में मूक नामक दानव का अर्जुन वध के लिए आगमन, तथा किरातवेशधारी शिव का भी आगमन।
- **सर्ग – 13.** शूकररूपधारी मूकदानव पर शिव और अर्जुन के बाणों का प्रहार, उस वराह की मृत्यु, बाण के विषय में शिव के अनुचर और अर्जुन का विवाद।
- **सर्ग – 14.** सेना सहित शिव का आगमन और सेना के साथ अर्जुन का युद्ध।
- **सर्ग – 15.** चित्रयुद्ध वर्णन, (चित्रकाव्य)।
- **सर्ग – 16.** शिव और अर्जुन का अस्त्रयुद्ध।
- **सर्ग – 17.** शिव की सेना के साथ अर्जुन का युद्ध, शिव और अर्जुन का युद्ध।
- **सर्ग – 18.** शिव और अर्जुन का बाहुयुद्ध, शिव का वास्तविक रूप में प्रकट होना, इन्द्रादि का आगमन, अर्जुन को पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति, इन्द्रादि का अर्जुन को विविध अस्त्र देना, सफल मनोरथ अर्जुन का युधिष्ठिर के समीप पहुँचना।
- सम्भोग शृङ्गार का सुन्दर वर्णन है – **सर्ग 8 और 9 में।**
- युद्ध वर्णन में वीररस का वर्णन है – **सर्ग 13 से 17 तक।**
- उपमा अलङ्कार का सुन्दर प्रयोग है – **सर्ग 13 से 17 में।**
- प्रमुख वर्णनवैचित्र्य – सर्ग 4 में **शरद् वर्णन।**
  – सर्ग 5 में **हिमालय वर्णन।**
  – सर्ग 8 में **जलक्रीडा वर्णन।**
  – सर्ग 9 में **सन्ध्या, चन्द्रोदय और सुरत वर्णन।**
  – सर्ग 12 से 18 तक – **युद्ध वर्णन।**

- अर्थगौरव या अर्थगाम्भीर्य के लिए प्रशंसा की जाती है – **महाकवि भारवि की।**
- भारवि को कौन सा रस सर्वाधिक प्रिय है – **वीर और शृङ्गार रस**
- महाकाव्यों में रीतिशैली के जन्मदाता कवि हैं – **भारवि।**
- ग्रन्थ के आरम्भ में **'श्री'** शब्द तथा सर्गान्त श्लोकों में **'लक्ष्मी'** शब्द का प्रयोग किया गया है – **किरातार्जुनीयम् में।**
- किस कवि का काव्यसौन्दर्य 'नारिकेलफलसम्मितम्' माना गया है – **भारवि का।**
- भारवि की प्रशंसा में कही गयी सूक्तियाँ हैं –
  (1) ''भारवेरर्थगौरवम्'' **(2) ''भा रवेरिव भारवेः''**
  (3) ''प्रकृतिमधुरा भारविगिरः'' **(4) ''नारिकेलफलसम्मितं वचः''**
  (5) ''स्फुटता न पदैरपाकृता''
- केवल 'न' कार को लेकर सर्वप्रथम एकाक्षरी श्लोक लिखने वाले कवि हैं – **भारवि।**
- अपने काव्य में सर्वप्रथम चित्रालङ्कारों का प्रयोग करने वाले कवि हैं – **भारवि** (किरातार्जुनीयम्, सर्ग-15)
- भारवि ने विभिन्न सर्गों में 11 छन्दों का प्रयोग किया है और सर्गान्त श्लोकों में मालिनी और वसन्ततिलका प्रमुख हैं।
- भारवि द्वारा प्रयुक्त मुख्य छन्दों की संख्या है – **13**
- भारवि का अत्यन्त प्रिय छन्द है – **वंशस्थ तथा उपजाति।**
- क्षेमेन्द्र ने वंशस्थ छन्द के लिए प्रशंसा की है – **भारवि की।**
- संस्कृतसाहित्य में रीतिकाव्यपरम्परा के जन्मदाता हैं – **भारवि।**
- किरातार्जुनीयम् में दुर्योधन को किस नाम से वर्णित किया गया है – **सुयोधन।**
- 'राजनीतिपरक महाकाव्य' कहा गया है – **किरातार्जुनीयम् को**
- शिव और अर्जुन पर आधारित महाकाव्य है – **किरातार्जुनीयम्**
- किरातार्जुनीयम् में एकाक्षर श्लोकों की संख्या है – **7 (सप्त)**
- महाकवि भारवि की मित्रता थी – **चालुक्यवंशी राजा विष्णुवर्धन से**
- भारवि के तीन पुत्र थे, इनके मध्यम पुत्र मनोरथ के चार पुत्र थे, जिनमें एक पुत्र वीरदत्त था इन्हीं वीरदत्त और गौरी के पुत्र दण्डी हुए।
- महाकवि भारवि, दण्डी के प्रपितामह और दण्डी, भारवि के प्रपौत्र थे।
- भारवि **शैव** थे, जबकि **माघ वैष्णव** थे।
- दक्षिण के एहोल शिलालेख में कालिदास और भारवि का नामोल्लेख हुआ। इस शिलालेख का समय 634 ई० है – **''कविताश्रित-कालिदास-भारवि-कीर्तिः''।**
- गुम्मरेड्डीपुर के शिलालेखों से हमें पता चलता है कि राजा दुर्विनीत ने किरातार्जुनीयम् के 15वें सर्ग पर टीका लिखी थी। दुर्विनीत का समय 580 ई० के आसपास माना जाता है।
- भारवि के किरातार्जुनीयम् का उद्धरण जयादित्य की 'काशिकावृत्ति' में उपलब्ध होता है। मैक्समूलर 'काशिका' का समय 660 ई० मानते हैं।
- बाणभट्ट (सप्तम शताब्दी) अपने ''हर्षचरित'' में पूर्ववर्ती सभी कवियों का उल्लेख करते हैं, किन्तु उसमें भारवि का नामोल्लेख नहीं है।

- कीथमहोदय भारवि का समय 550 ई० मानते हैं।
- जैकोबी, मैक्डानल, बलदेव उपाध्याय, चन्द्रशेखर पाण्डेय इत्यादि विद्वानों ने भारवि का समय 600 ई० के लगभग मानते हैं।
- शिवजी अर्जुन की तपस्या की परीक्षा के लिए 'किरात' का वेश धारण करते हैं।
- किरातार्जुनीयम् में **मूक दानव** अर्जुन को मारने के लिए मायावी वाराह का रूप धारण करता है।
- महाकाव्यकारों में **कालिदास** और **अश्वघोष** के बाद **भारवि** का नाम लिया जाता है।
- भारवि व्याकरण, वेदान्त, न्याय, धर्म, राजनीति, कामशास्त्र, पुराण, इतिहास आदि के मूर्धन्य विद्वान् थे।
- उदात्त एवं सजीव वर्णन, कमनीय कल्पनाओं, अर्थगौरव, हृदयग्राही शब्दयोजना, कोमलकान्त पदावली, हृदयस्पर्शी एवं रोचक संवाद, अलङ्कारों का चमत्कारिक प्रयोग, कलात्मक काव्यशैली, मनोहर प्रकृतिचित्रण, रसपेशलता, सजीव चरित्रचित्रण इत्यादि महनीय गुणों ने भारवि को महाकवियों में अत्यन्त उच्चस्थान पर प्रतिष्ठित किया है।
- भारवि राजनीतिशास्त्र और नीतिशास्त्र के प्रकाण्ड पण्डित थे।
- किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में वनेचर की स्वामिभक्ति, सत्यवादिता, निश्छलता, विनम्रता, साहस, स्पष्टवादिता आदि गुणों का चित्रण है।
- द्रौपदी की मानसिकपीड़ा, व्याकुलता, प्रतिकार की तीव्रभावना का वर्णन है।
- अर्जुन की वीरता, भ्रातृभक्ति, कर्तव्यनिष्ठा का वर्णन है।
- भीम की वीरता, नीतिज्ञता, असहिष्णुता का वर्णन है।
- युधिष्ठिर की नीतिज्ञता, शान्तिप्रियता, धर्मपरायणता इत्यादि का वर्णन है।
- किरातार्जुनीयम् प्रथमसर्ग के प्रारम्भ में वनेचर की उक्तियों का तथा उत्तरार्ध में द्रौपदी की उक्तियों का चित्रण है।
- सम्पूर्ण प्रथमसर्ग युधिष्ठिर को सम्बोधित करके लिखा गया है।
- भारवि का संस्कृतसाहित्य में '**अलङ्कृतकाव्यशैली**' तथा '**विचित्रमार्ग के जनक**' के रूप में विशिष्ट स्थान है।
- विचित्रमार्ग की विशेषता यह है कि इसमें कथानक बहुत कम होता है और वर्णन अधिक।
- भारवि की अलंकृतकाव्यशैली में पाण्डित्यप्रदर्शन और अलङ्कार सन्निवेश को प्रधानता दी गयी है, इसमें कलापक्ष की प्रधानता तथा भावपक्ष (हृदयपक्ष) की अप्रधानता का वर्णन है।
- कालिदास के प्रमुख छन्द 6 हैं, भारवि के 13 और माघ के 16 माने गये हैं।
- भारवि ने **वंशस्थ छन्द** का सर्वाधिक प्रयोग किया है, इसके अतिरिक्त इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, द्रुतविलम्बित, प्रमिताक्षरा, प्रहर्षिणी, स्वागता, पुष्पिताग्रा, आदि का प्रयोग मिलता है।
- भारवि **वीररस** के सिद्धहस्त कवि हैं।

- किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में युधिष्ठिर के मुख से किसी उक्ति (कथन) को नहीं कहलाया गया है।
- महाकवि भारवि की **एकमात्र रचना 'किरातार्जुनीय'** का उपजीव्य महाभारत के वनपर्व की एक घटना है।
- किरातश्च अर्जुनश्च (द्वन्द्व) = किरातार्जुन + 'छ' प्रत्यय लगकर 'किरातार्जुनीय' शब्द बना है। ग्रन्थवाची होने पर नपुंसकलिङ्ग में 'किरातार्जुनीयम्' बना।
- इसमें अर्जुन का हिमालय पर्वत पर जाकर तपस्या करने व किरातवेषधारी भगवान् शिव से युद्ध करके उन्हें प्रसन्न कर **'पाशुपत अस्त्र'** प्राप्त करने की कथा है।
- 'किरात' में कुल **18 सर्ग और 1040 श्लोक** हैं।
- 'किरातार्जुनीय' में **कुल 25 छन्दों और मुख्यतः 13 छन्दों का** प्रयोग हुआ है।
- भारवि का **अत्यन्त प्रिय छन्द वंशस्थ** है। तत्पश्चात् उन्होंने **उपजाति** का ज्यादा प्रयोग किया है। 4 सर्गों में वंशस्थ, 3 सर्गों में उपजाति प्रयुक्त है।
- भारवि ने 3 शब्दालंकार, 60 अर्थालंकार और 7 चित्राक्षर अलंकारों का प्रयोग किया है। सर्वाधिक उपमा अलंकार प्रयुक्त है।
- भारवि ने 'किरात' के **15वें सर्ग में** युद्ध प्रसङ्ग में **चित्रालंकारों** का प्रयोग किया है।
- किरातार्जुनीय में **'वीर रस' मुख्य रस** है तथा 'शृंगार' गौण रस है।
- किरात में **'पाञ्चाली रीति'** और 'प्रसाद गुण' है, किन्तु वैदर्भीरीति का भी प्रयोग बाहुल्य है।
- किरात का **नायक 'अर्जुन'** (कहीं-कहीं युधिष्ठिर प्राप्त होता है), **प्रतिनायक किरातवेषधारी 'शिव'** तथा **नायिका 'द्रौपदी**' हैं।
- 'किरात' के 18वें सर्ग में शिव की अत्यन्त भावुक स्तुति की गई है।
- भारवि का प्रसिद्ध **एकाक्षर श्लोक** (न नोननुन्नो....) 15वें सर्ग में मिलता है।
- भारवि ने मङ्गलाचरण में **'श्री' शब्द** तथा सर्गान्त श्लोकों में **'लक्ष्मी'** शब्द का प्रयोग किया है।
- क्षेमेन्द्र ने भारवि के वंशस्थ वृत्त की प्रशंसा की है और वंशस्थ को राजनीतिक चर्चा के लिए सर्वाधिक उपयुक्त माना है।
- काव्य का आरम्भ **'द्वैतवन'** से होता है जहाँ महाराज युधिष्ठिर द्यूतक्रीड़ा में दुर्योधन से हारकर **'तेरह वर्ष'** का वनवास काट रहे होते हैं।
- युधिष्ठिर द्वारा नियुक्त ब्रह्मचारी वेष वाला गुप्तचर वनेचर लौटकर आता है और दुर्योधन के राज्य की शासन प्रणाली का वर्णन करता है।
- द्रौपदी इस समाचार से अत्यधिक क्रुद्ध हुयी और युधिष्ठिर को युद्ध के लिए प्रोत्साहित करती है।
- द्वितीय सर्ग में महर्षि व्यास आते हैं और अर्जुन को पाशुपत अस्त्र प्राप्त करने की सलाह देते हैं।
- अर्जुन तपस्या हेतु **इन्द्रकील** (हिमालय) पर जाते हैं।
- किरातार्जुनीय के प्रारम्भिक तीन सर्ग विशेष कठिन हैं अतः उन्हें **'पाषाण-त्रय'** के नाम से जाना जाता है।

- अर्जुन को **18वें सर्ग में पाशुपत अस्त्र प्राप्त** होता है।
- प्रथमसर्ग के अन्तिम दो श्लोकों में क्रमशः पुष्पिताग्रा और 'मालिनी' छन्दों का प्रयोग हुआ है। प्रथमसर्ग का अन्तिम श्लोक **'विधिसमयनियोगात् ....'** है।
- **'प्रसन्नगम्भीरपदा सरस्वती'** भारवि की भाषा तथा शैली का द्योतक महनीय मन्त्र है।
- भारवि के किरात के **'प्रथमसर्ग' में कुल 46 श्लोक** हैं।

किरातार्जुनीयम् (प्रथमसर्ग का सारांश)

- 'किरातार्जुनीयम्' में **'वस्तुनिर्देशात्मक मङ्गलाचरण'** किया गया है।
- दुर्योधन के प्रजाविषयक व्यवहार को जानने के लिए युधिष्ठिर ने वनेचर को नियुक्त किया था।
- युधिष्ठिर को प्रणाम करके उसने शत्रु द्वारा जीती गयी पृथ्वी का वर्णन किया। ऐसा करते हुए किरात का मन खिन्न नहीं हुआ।
- शत्रुओं के नाश के लिए यत्न करने वाले युधिष्ठिर की आज्ञा पाकर वह एकान्त में अपनी बात कहता है।
- वनेचर कहता है कि सेवकों द्वारा गुप्तचर रूपी नेत्र वाले 'स्वामी' को धोखा नहीं दिया जाना चाहिए।
- जो स्वामी को उचित सलाह न दे वह बुरा मित्र है और जो स्वामी हितैषी मित्र की न सुने वह बुरा स्वामी है।
- राजाओं का चरित्र स्वभाव से ही कठिनाई से जानने योग्य होता है। वनेचर जो कुछ जान पाया वह युधिष्ठिर का प्रभाव है।
- दुर्योधन अब 'जुएँ' में जीती गई पृथ्वी को 'नीति' से जीतना चाहता है।
- युधिष्ठिर को जीतने के लिए दुर्योधन अपने गुणों से यश का विस्तार करता है।
- दुर्योधन अपने छः शत्रुओं - काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य पर विजय प्राप्त कर लिया।
- दुर्योधन सेवकों से मित्र जैसा, मित्रों से भाइयों जैसा और भाई-बन्धुओं को शासक मानकर व्यवहार करता है।
- दुर्योधन का मधुर वचन दान के बिना नहीं होता, दान आदर-सत्कार को छोड़कर नहीं होता और विशेष आदर गुणों के अनुराग के बिना नहीं होता।
- जितेन्द्रिय दुर्योधन 'अपना कर्तव्य मानकर धर्म-विप्लव' को दण्ड से रोकता है अन्य कारण से नहीं।
- राजाओं के उपहारस्वरूप प्राप्त हाथियों के मदजल से दुर्योधन का आँगन गीलेपन को प्राप्त है।
- कुरुदेश के निवासी कृषि के लिए वर्षा जल पर निर्भर नहीं रहते। कुरुप्रदेश की कृषि अदेवमातृक है।
- दुर्योधन के 'कुबेर' सदृश गुणों से द्रवित पृथ्वी स्वयं धनरूपी दुग्ध देती है।
- दुर्योधन के धनुर्धर लोग मानरूपी धन वाले, धन से सम्मानित और युद्ध में यश पाने वाले हैं।
- महीपाल लोग दुर्योधन के गुणों में अनुराग के कारण उसके आदेश को 'माला' की भाँति शिरोधार्य करते हैं।
- दुर्योधन ने दुःशासन को 'युवराज' नियुक्त किया है।

- वनेचर प्रथमसर्ग के 25वें श्लोक तक का वक्ता है और उसके चले जाने पर युधिष्ठिर द्रौपदी के आवास में प्रवेश करते हैं।
- 'बुरी मनोव्यथाएँ' द्रौपदी को बोलने के लिए उद्यत करती हैं।
- द्रौपदी कहती है युधिष्ठिर ने मदस्रावी हाथी के समान पृथ्वी को माला की तरह अपने हाथ से त्याग दिया।
- सफल क्रोध वालों के वश में प्राणी स्वयं हो जाता है।
- **वृकोदर (भीम)** धूलधूसरित होकर पैदल ही पर्वतों में घूमता है।
- इन्द्र के समान पराक्रमी अर्जुन ने 'उत्तरकुरुदेश' को जीतकर प्रचुर धन युधिष्ठिर को दिया था, वह अब **'वल्कल वस्त्र'** संग्रह करता है।
- नकुल और सहदेव का शरीर वन में सोने के कारण कठोर हो गया है और दोनों जुड़वे हाथियों के समान हैं।
- युधिष्ठिर कुशवाली भूमि पर सोकर शृगाली (सियारिनियों) के शब्दों से निद्रा का परित्याग करते हैं।

किरातार्जुनीयम् के पात्रों का चरित्र-चित्रण

युधिष्ठिर

- सत्य का पालन करने वाले।
- धर्म पर दृढ़ रहने वाले।
- सहनशील और राजनीतिकुशल।
- द्रौपदी और भीम द्वारा उलाहना दिये जाने पर भी उनके मन में विकार उत्पन्न नहीं होता।
- प्रथमसर्ग में युधिष्ठिर एक भी वाक्य नहीं बोलते हैं, केवल श्रोता के रूप में उनका वर्णन है।
- जुयें में हारकर वन में निवास करते हुए भी युधिष्ठिर हस्तिनापुर के राजा दुर्योधन के विचारों, उद्देश्यों और कार्यों को जानने के लिए वनेचर को गुप्तचर के रूप में भेजते हैं।
- किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में भारवि ने भले ही युधिष्ठिर के मुख से कोई बात नहीं कहलवायी हो, फिर भी वनेचर एवं द्रौपदी के कथनों द्वारा उनके व्यक्तित्व की विशेषताएँ परिलक्षित होती हैं।
- भारवि ने पाँचों पाण्डवों के ज्येष्ठ भ्राता युधिष्ठिर को एक कुशल राजनीतिज्ञ, प्रतिज्ञापालक, संयमी एवं धैर्यशाली, सत्यप्रिय, शान्तिप्रिय, धर्मात्मा एवं शास्त्रज्ञ के रूप में चित्रित किया है।

वनेचर

- गुप्तचरों के लिए चार प्रकार के गुण बताये गये हैं – अमूढ़ता, अशैथिल्य, सत्यपरता और ठीक प्रकार से अनुमान कर सकने की क्षमता। युधिष्ठिर द्वारा गुप्तचर बनाकर भेजे गए वनेचर में ये सभी गुण विद्यमान थे।
- वनेचर ब्रह्मचारी के वेश में हस्तिनापुर जाकर सुयोधन (दुर्योधन) के सभी विचारों, योजनाओं, कार्यों और उद्देश्यों को ठीक प्रकार से समझता है, और द्वैतवन में आकर युधिष्ठिर को सम्पूर्ण वृत्तान्त बताता है।
- यद्यपि वनेचर द्वारा लाये गये समाचार युधिष्ठिर के लिए अप्रिय थे, तथापि वह उनको कहने में हिचकिचाया नहीं।

- वनेचर कार्यदक्ष था, उसने दुर्योधन की दुरभिसन्धियों, दुःश्चिंतन और युद्ध की पूर्ण तैयारियों को ठीक प्रकार से जान लिया और राजा युधिष्ठिर से सुस्पष्ट और प्रभावशाली ढंग से वहाँ के सभी गूढ़ रहस्यों को व्यक्त किया।
- वनेचर की वाणी, सौष्ठव और औदार्य गुणों से युक्त थी, और उसके कथन, प्रमाण और तर्कों से पूर्ण निश्चित अर्थों को व्यक्त करने वाले होते थे –

  ''स सौष्ठवौदार्यविशेषशालिनीं विनिश्चितार्थामिति वाचमाददे।''
  (किरात० 1/3)
- वह राजा युधिष्ठिर का सच्चा हितैषी था, और अप्रिय लगने वाले भी हितकारी वचनों को कहने में कोई संकोच नहीं करता–

  ''न विव्यथे तस्य मनो न हि प्रियं प्रवक्तुमिच्छन्ति मृषा हितैषिणः''
  (किरात० 1/2)
- वनेचर अतिविनम्र था और अपनी सफलता के लिए अपने स्वामी युधिष्ठिर की कृपा को ही श्रेय देता है –

  ''तवानुभावोऽयमवेदि यन्मया, निगूढतत्त्वं नयवर्त्म विद्विषाम्''
  (किरात० 1/6)
- इसप्रकार सम्पूर्ण प्रथमसर्ग में वनेचर को एक कुशल गुप्तचर, सच्चा हितैषी, शिष्टाचारी एवं निरहंकारी, स्वामिभक्त, सत्यवादी, वाक्पटु, निरालस्य, निश्छल, कर्त्तव्यनिष्ठ, विनम्र, निर्भीक, साहसी, स्पष्टवादी, गुणी, कार्यकुशल एवं अत्यन्त बुद्धिमान् के रूप में चित्रित किया गया है।

सुयोधन (दुर्योधन)

- महाकवि भारवि ने दुर्योधन को सुयोधन नाम से अभिहित किया है, जो कुरु प्रदेश का राजा है–**''श्रियः कुरूणामधिपस्य'' (किरात. 1/1)**
- क्योंकि उसको सुखपूर्वक जीता जा सकता था अथवा उसकी नीतियाँ प्रजा को सुख पहुँचाने वाली थीं।
- किरातार्जुनीयम् का 'सुयोधन' कामक्रोधादि रिपुओं को जीतने वाला, प्रजावत्सल एवं आदर्श राजा बनने का दिखावा करता है। – **''स सन्ततं दर्शयते गतस्मयः''**
  (किरात० 1/10)
- दुर्योधन के राज्य की स्थिरता और सुख प्रजा और सेवकों की अनुरक्ति पर निर्भर है।
- सुयोधन अपने राष्ट्र को धन-धान्य से समृद्ध बनाने के लिए कृषि की उन्नति हेतु कृत्रिम सिंचाई के साधन उपलब्ध कराता है।

  ''सुखेन लभ्या दधतः कृषीवलैः'' (किरात० 1/17)
- सुयोधन अहंकार से शून्य होकर सेवकों के साथ मित्रों के समान तथा मित्रों के साथ बन्धु-बान्धव की तरह व्यवहार करता था –

  ''सखीनिव प्रीतियुजोऽनुजीविनः'' – (किरात० 1/10)
- दुर्योधन पराक्रमी शूरवीरों को अपने आस-पास एकत्र किए रहता था जो उसके उत्तम व्यवहार से प्रभावित होकर अपने प्राणों की बाजी लगाकर भी उसका हित करना चाहते थे –

  ''महौजसो मानधनाः धनार्चिताः....प्रियाणि वाञ्छन्त्यसुभिः समीहितुम्।''
  (किरात० 1/19)

- यद्यपि दुर्योधन कुटिल स्वभाव वाला है किन्तु आपको जीतने की इच्छा से वह अपने शुभ्र यश एवं पुरुषार्थ को फैला रहा है और प्रजा को यह दिखलाने का प्रयास करता है कि वह निरहंकारी, निरालस्य तथा युधिष्ठिर से कहीं अधिक गुणवान्, दयावान्, क्षमावान्, सत्यवादी तथा धर्मज्ञ है –
  ''तथापि जिह्मः स भवज्जिगीषया तनोति शुभ्रं गुणसम्पदा यशः।''
  (किरात० 1/8)
- राजाओं द्वारा भय के कारण नहीं, अपितु श्रद्धा और प्रेम के कारण दुर्योधन के आदेशों का पालन किया जाता था – **''गुणानुरागेण शिरोभिरुह्यते'' (किरात० 1/21)**
- दुर्योधन को कभी क्रोध करने अथवा शस्त्रों को उठाने की आवश्यकता नहीं होती थी – **''कृतं न वा कोपविजिह्ममाननम्'' (किरात० 1/21)**
- राजनीति के छः अंगों – सन्धि, विग्रह, यान, आसन, संशय और द्वैधीभाव का प्रयोग करने में सुयोधन (दुर्योधन) कुशल था।
- साम, दान, दण्ड, भेद– इन चारों उपायों का सुयोधन सफलतापूर्वक प्रयोग करता था – **''निरत्ययं साम न दानवर्जितम्'' (किरात० 1/12)**
- न्याय करने में दुर्योधन कभी पक्षपात नहीं करता था –
  ''गुरूपदिष्टेन रिपौ सुतेऽपि वा निहन्ति दण्डेन स धर्मविप्लवम्''
  (किरात० 1/13)
- इस प्रकार सुयोधन नीतिज्ञ एवं कुशल प्रशासक, प्रजावत्सल, कुशल राजनीतिज्ञ, राजाओं के प्रति उदार, कूटनीतिज्ञ, उदारवादी राजा के रूप में किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में चित्रित है।

द्रौपदी

- किरातार्जुनीयम् की सबसे महत्त्वपूर्ण नारीपात्र द्रौपदी है, जो इस **महाकाव्य की नायिका** है।
- प्रथमसर्ग में द्रौपदी की मानसिक पीड़ा एवं अपमानजन्य वेदना अभिव्यक्त होती है।
- वनेचर द्वारा बतायी गयी दुर्योधन की कार्यप्रणालियों एवं सफलता को युधिष्ठिर से सुनकर द्रौपदी का क्रोध उद्दीप्त हो उठता है।
- युधिष्ठिर की नीतियाँ, सत्यप्रतिज्ञा के पालन और शान्तस्वभाव के कारण सबसे अधिक कष्ट द्रौपदी को झेलने पड़ते हैं।
- दुर्योधन से प्रतिशोध लेने की आकांक्षा सबसे अधिक द्रौपदी को है।
- द्रौपदी ओजस्विनी वाणी द्वारा युधिष्ठिर के क्रोध को उद्दीप्त करने का प्रयत्न करती है – **''उदाजहार द्रुपदात्मजा गिरः'' (किरात० 1/27)**
- द्रौपदी युधिष्ठिर से कहती है कि तुम जैसा और कौन होगा, जो स्वयं ही अपनी राजलक्ष्मी और कुलवधू को शत्रुओं द्वारा अपहरण करा दे –
  ''परैस्त्वदन्यः क इवापहारयेत्........'' (किरात० 1/31)

- वह युधिष्ठिर को क्षत्रियों तथा राजाओं के समान आचरण करने का उपदेश करती है, और उसकी सत्यप्रतिज्ञा को ढोंग कहती है।
- द्रौपदी पहले भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव के वन में प्राप्त होने वाले कष्टों का वर्णन करती है और उसके बाद स्वयं युधिष्ठिर को होने वाले दुःखों और अपमानों को बताती है – **''पुराधिरूढः शयनं महाधनम्'' (किरात० 1/38)**
- द्रौपदी युधिष्ठिर से कहती है कि जो मनुष्य क्रोध नहीं कर सकता, शत्रु उससे भय नहीं करते और मित्र उसका आदर नहीं करते –**''न जातहार्देन न विद्विषादरः''** **(किरात० 1/33)**
- वह युधिष्ठिर से कहती है कि वह किसी बहाने से सन्धि को तोड़ दे और समय की प्रतीक्षा न करके अपने पराक्रम से शत्रुओं को जीत लें – **''न समयपरिरक्षणं क्षमं ते''......। (किरात० 1/45)**
- शान्ति और क्षमा मुनियों के लिए ही उचित है, राजाओं के लिए नहीं, यदि शान्ति और क्षमा का पालन नहीं करना है तो उसको राजाओं के चिह्न धनुष को छोड़कर जटाओं को धारण करके अग्नि में आहुति देते रहना ही उचित है। यह बात द्रौपदी युधिष्ठिर से कह रही है– **''जटाधरः सञ्जुहुधीह पावकम्'' (किरात० 1/44)**
- इसप्रकार द्रौपदी को एक वीरक्षत्राणी, कुशल राजनीतिज्ञा, स्वाभिमानिनी, कूटनीतिज्ञा, अपमान से दुखी, सहृदया एवं क्रोधोद्दीपन में दक्ष नारी के रूप में चित्रित किया गया है।

किरातार्जुनीयम् की व्याकरणात्मक टिप्पणी

लट्लकार

- **इच्छन्ति** = √इष् (इच्छायाम्) + लट् + प्र. पु. बहु. (परस्मै०)
- **अर्हसि** = √अर्ह् (पूजायाम्) + लट् + म. पु. एक. (परस्मै०)
- **शास्ति** = √शास् (शिक्षा देना) + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै०)
- **संश्रृणुते** = सम् + √श्रु + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने०)
- **कुर्वते** = √कृ (करना) + लट् + प्र. पु. बहु. (आत्मने०)
- **समीहते** = सम् + √ईह् (चेष्टा करना) + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने.)
- **तनोति** = √तन् (विस्तार करना) + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **वितन्यते** = वि + √तन् (विस्तार करना) + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मनेपदी) यहाँ कर्मणि 'त' प्रत्यय हुआ है।
- **दर्शयते** = √दृश् + णिच् + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने.)
- **बाधते** = √बाध् (पीड़ा देना) + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने०)
- **प्रवर्तते** = प्र + √वृत् (होना) + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने०)
- **निहन्ति** = नि + √हन् (मारना) + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै०)
- **उपैति** = उप + √इण् (जाना) + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै०)

- **वदन्ति** = √वद् (बोलना) + लट् + प्र. पु. बहु. (परस्मै0)
- **फलन्ति** = √फल् (फलना) + लट् + प्र. पु. बहु. (परस्मै0)
- **नयति** = √नी (ले जाना) + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै0)
- **चकासति** = √चकासृ + लट् + प्र. पु. बहु. (परस्मै0)

  नोट – यहाँ अदादिगण पठित ''चकासृ'' (दीप्तौ) शोभार्थक धातु से लट्लकार प्र. पु. बहु. में प्राप्त झि प्रत्यय को **''जक्षित्यादयः षट्''** सूत्र से 'चकासृ' के अभ्यस्त होने के कारण **''अति''** आदेश होकर **''चकासति''** रूप निष्पन्न होता है।

  लट्लकार में इसका रूप इस प्रकार चलेगा–

चकास्ति	**चकास्तः**	**चकासति**
चकास्सि	**चकास्थः**	**चकास्थ**
चकास्मि	**चकास्वः**	**चकास्मः**

- **प्रदुग्धे** = प्र + √दुह् (दुहना) + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने0)
- **वाञ्छन्ति** = √वाञ्छ् (चाहना) + लट् + प्र. पु. बहु. (परस्मै0)
- **प्रतीयते** = प्रति + √इण् (जाना) + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने0)
- **वेद** = √विद् (जानना) + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै0)

विशेष – अदादिगण की **''विद् ज्ञाने''** धातु से लट्लकार में **''विदो लटो वा''** (3.4.83) सूत्र से, णलादि (णल्, अतुस्, उस्) आदेश होकर **''वेद, विदतुः, विदुः रूप** निष्पन्न होता है, एवं पक्ष में, **'वेत्ति, वित्तः, विदन्ति'** इत्यादि। (णलादि आदेश विकल्प से होते हैं)

- **उह्यते** = √वह् (ढोना) + लट् + प्र. पु. एक. (कर्मवाच्य)
- **धिनोति** = √धिवि + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै0)
- **चिन्तयति** = √चिन्त् (सोचना) + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै0)
- **व्यथते** = √व्यथ् + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने0)
- **भवति** = √भू (होना) + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै0)
- **व्यवसाययन्ति** = वि + अव + √षो + लट् प्र. पु. बहु0 (परस्मै0)
- **व्रजन्ति** = √व्रज् (जाना) + लट् + प्र. पु. बहु. (परस्मै0)
- **भवन्ति** = √भू (होना) + लट् + प्र. पु. बहु. (परस्मै0)
- **घ्नन्ति** = √हन् (मारना) + लट् + प्र. पु. बहु. (परस्मै0)
- **ज्वलयति** = √ज्वल् + णिच् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै0)
- **दुनोति** = √दु (पीड़ा) लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै0)
- **करोति** = √कृ (करना) + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै0)
- **उत्सहसे** = उद् + √सह् + लट् + म. पु. एक. (आत्मने0)
- **रुजन्ति** = √रुज् (हिंसा) + लट् + प्र. पु. बहु. (परस्मै0)
- **विबोध्यसे** = वि + √बुध् + णिच् म. पु. एक. (कर्मवाच्य)
- **जहासि** = √ओहाक् (हा) + लट् + म. पु. एक. (परस्मै0)

- **परैति** = परा + √इण् (जाना) + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै0)
- **निषीदतः** = नि + √सद् + लट् + प्र. पु. द्विव. (परस्मै0)
- **उन्मूलयति** = उद् + √मूल् + णिच् + लट् प्र. पु. एक. (परस्मै0)
- **अधिकुर्वते** = अधि + √कृ + लट् + प्र. पु. बहु. (आत्मने0)
- **पर्येषि** = परि + √इण् (जाना) + लट् + म. पु. एकवचन

लङ्लकार

- **अयुङ्क्त** = √युज् + लङ् + प्र. पु. एक. (आत्मने0)
- **अरञ्जयत्** = √रञ्ज् + णिच् + लङ् + प्र. पु. एक. (परस्मै0)
- **अयच्छत्** = √दाण् (यच्छ, आदेश) + लङ् + प्र. पु. एक. (परस्मै0)

लिट्लकार

- **समाययौ** = सम् + आङ् + √या + लिट् प्र. पु. एक. (परस्मै0)
- **विव्यथे** = √व्यथ् (दुःखित होना) + लिट् + प्र. पु. एक. (आत्मने.)
- **आददे** = आङ् + √दा (देना) + लिट् + प्र. पु. एक. (आत्मने0)
- **आचचक्षे** = आङ् + √चक्ष् + लिट् + प्र. पु. एक. (आत्मने.)

लोट्लकार

- **विधीयताम्** = वि + √धा + लोट् + प्र. पु. एक. (कर्मवाच्य)
- **सन्धेहि** = सम् + √धा + लोट् + म. पु. एक. (परस्मै0)
- **प्रसीद** = प्र + √सद् + (बैठना) लोट् + म. पु. एक. (परस्मै0)
- **समभ्येतु** = सम् + अभि + √इण् + लोट् + प्र. पु. एक. (परस्मै0)

लुङ् लकार

अवेदि = √विद् (ज्ञानार्थक) + लुङ् + प्र. पु. एक. (कर्मवाच्य)

विधिलिङ्

अपहारयेत् = अप + √हृ + णिच् + विधिलिङ् + प्र. पु. एक. (परस्मै0)

किरातार्जुनीयम् में प्रत्यय

क्विप्-प्रत्यय

- **श्रियः** = श्रयति पुरुषम् अर्थ में श्री + क्विप् = श्री, ''कर्तृकर्मणोः कृति'' सूत्र से 'श्री' शब्द में कर्म अर्थ में षष्ठी एक.
- **महीभुजे** = महीं भुनक्ति अर्थ में मही + भुज् + क्विप् = (चतुर्थी एक.)
- **द्विषाम्** = द्विषन्ति इस अर्थ में √द्विष् + क्विप् ''कर्तृकर्मणोः कृति'' सूत्र से षष्ठी विभक्ति होकर बहुवचन में 'द्विषाम्' निष्पन्न हुआ।
- **भूभृतः** = भुवं बिभर्ति अर्थ में भू + √भृ + क्विप् (षष्ठी एक.)

- **सम्पदः** = सम् + √पद् + क्विप्, (प्रथमा बहु.)
- **विद्विषाम्** = द्वेष्टि अर्थ में वि + √द्विष् + क्विप्, (षष्ठी बहु.)
- **प्रीतियुजः** = प्रीत्या युज्यन्ते अर्थ में प्रीति + √युज् + क्विप् = प्रीतियुज् (द्वितीया बहु.)
- **धनुर्भृतः** = धनु + √भृ + क्विप् (प्रथमा बहु.)
- **संयति** = सम् + √यम् + क्विप् = संयत् (सप्तमी एक.)
- **महीभृताम्** = मही + √भृ + क्विप् (षष्ठी बहु.)
- **भियः** = √भी + क्विप् = प्रथमा बहु.
- **मादृशः** = अस्मद् + √दृश् + क्विन्
- **मदच्युता** = मद + √च्यु + क्विप् (तृतीया एक.)
- **आपदाम्** = आङ् + √पद् + क्विप् (षष्ठी बहु.)
- **विद्विषा** = वि + √द्विष् + क्विप् (तृतीया एक.)
- **धियम्** = √ध्यै + क्विप् (द्वितीया एक.)
- **आपदम्** = आङ् + √पद् + क्विप् (द्वितीया एक0)
- **दिनकृतम्** = दिनं करोति अर्थ में, दिन + √कृ + क्विप् (द्वितीया एक.)

क–प्रत्यय

- **अधिपस्य** = "अधि पाति रक्षति" इस अर्थ में अधि + √पा + क = अधिप, षष्ठी एकवचन
- **नृपासनस्थः** = नृपस्य आसनं नृपासनं सिंहासनम्, तस्मिन् स्थितः अर्थ में नृप + आसन + √स्था + क
- **कृतज्ञताम्** = कृत + √ज्ञा + क = कृतज्ञ + तल् + टाप् द्वितीया, एकवचन
- **सङ्कुलम्** = सम् + कुल + क
- **भवादृशः** = भवत् + √दृश् + कञ्

युच् प्रत्यय

- **सुयोधनः** = सु + √युध् + युच् (अन)
- **दुःशासनम्** = दुर् + √शास् + युच् (अन) दुःशासन (द्वितीया एक.)

ल्युट्-प्रत्यय

- **पालनीम्** = पाल् + ल्युट् + ङीप्, द्वितीया एक.
- **दानम्** = दा + ल्युट् (अन)
- **कारणः** = √कृ + णिच् + ल्युट् (अन)
- **आस्थानम्** = आङ् + √स्था + ल्युट् (अन)
- **निकेतनम्** = नि + √कित् + ल्युट् (अन)
- **उपायनम्** = उप + √इण् + ल्युट् (अन)
- **उपमानम्** = उप + √मा + ल्युट् (अन)
- **आननम्** = आङ् + √अन् + ल्युट् (अन)

- **शासनम्** = √शास् + ल्युट् (अन)
- **अभिधानम्** = अभि + √धा + ल्युट् (अन)
- **सदनम्** = √सद् + ल्युट् (अन)
- **अनुशासनम्** = अनु + √शास् + ल्युट् (अन)
- **साधनम्** = √साध् + ल्युट्
- **चन्दनम्** = √चन्द् + ल्युट् (अन)
- **शयनम्** = √शीङ् + ल्युट् (अन), द्वितीया एक.
- **परिरक्षणम्** = परि + √रक्ष् + ल्युट् (अन)
- **दूषणम्** = √दुष् + णिच् + ल्युट् (अन)

टाप् – प्रत्यय

- **लब्धा** = √लभ् + क्त + टाप्
- **विरोधिता** = विरोधिन् + तल् + टाप्
- **सत्क्रिया** = सत् + √कृ + श + (रिङ् आदेश) + टाप्
- **कृष्णा** = √कृष् + नक् + अच् + टाप्
- **ततस्त्याः** = तद् + तसिल् = ततस्, "अव्ययात्त्यप्" सूत्र से त्यप् प्रत्यय, ततस् + त्यप् + टाप् = ततस्त्या, (द्वितीया बहु.)
- **क्षमा** = क्षम् + अङ् + टाप्
- **आत्मजा** = आत्मन् + √जन् + ड + टाप्
- **प्रमदा** = प्र + √मद् + अच् + टाप्
- **अपवर्जिता** = अप + √वृज् + णिच् + क्त + टाप्
- **अनुरक्ता** = अनु + √रञ्ज् + क्त + टाप्
- **कुलजा** = कुल + √जन् + ड + टाप्
- **मनोरमा** = मनस् + √रम् + अच् + टाप्
- **कठिनीकृता** = कठिन + च्वि + कृता। कृ + क्त + टाप् = कृता
- **शय्या** = √शीङ् + क्यप् + टाप्
- **हता** = √हन् + क्त + टाप्
- **स्पृहा** = स्पृह् + अङ् + टाप्
- **मनस्विता** = मनस्विन् + तल् + टाप्
- **प्रजासु** = प्र + √जन् + ड + टाप् (सप्तमी बहु.)
- **जिताम्** = √जि + क्त + टाप् (द्वितीया एक.)
- **अनुज्ञाम्** = अनु + √ज्ञा + अङ् + टाप् (द्वितीया. एक.)
- **जिगीषया** = √जि + सन् + अ + टाप् (तृतीया एक.)
- **उपस्नुता** = उप + √स्नु + क्त + टाप्
- **अगम्यरूपाम्** = अगम्य + √रूपप् + टाप् (द्वितीया एक.)
- **आर्द्रता** = आर्द्र + तल् + टाप्।
- **बन्धुताम्** = बन्धु + तल् + टाप् (द्वितीया एक.)

- **सत्क्रिया** = सत् + √कृ + श + रिङ् + इयङ् + टाप्
- **प्रशान्ताः** = प्र + √शम् + क्त + टाप् (द्वितीया बहु०)
- **अभिरक्षया** = अभि + √रक्ष् + अ + टाप् (तृतीया एक.)

क्तिन् – प्रत्यय

- **वृत्तिम्** = √वृत् + क्तिन् (द्वितीया एक.)
- **रतिम्** = √रम् + क्तिन् (द्वितीया एक.)
- **भूतिम्** = √भू + क्तिन् (द्वितीया एक.)
- **भक्तिम्** = √भज् + क्तिन् (द्वितीया एक.)
- **आयतिः** = आङ् + √यम् + क्तिन्
- **कीर्तिम्** = √कृ + क्तिन् (द्वितीया एक.)
- **प्रवृत्तिः** = प्र + √वृत् + क्तिन्
- **सिद्धिम्** = √सिध् + क्तिन्
- **आकृतिः** = आङ् + √कृ + क्तिन्
- **धृतिः** = √धृ + क्तिन्
- **स्तुतिः** = √स्तु + क्तिन्
- **शान्तिः** = √शम् + क्तिन्
- **गीतिः** = √गै + क्तिन्
- **निकृतिः** = नि + √कृ + क्तिन्
- **क्षितिः** = √क्षि + क्तिन्
- **दीप्तिः** = √दीप् + क्तिन्
- **द्विजातिः** = द्वि + √जन् + क्तिन्

तुमुन्-प्रत्यय

- **वेदितुम्** = √विद् + तुमुन्
- **प्रवक्तुम्** = प्र + √वच् + तुमुन्
- **विधातुम्** = वि + √धा + तुमुन्
- **जेतुम्** = √जि + तुमुन्
- **समीहितुम्** = सम् + √ईह् + तुमुन्
- **कर्तुम्** = √कृ + तुमुन्
- **विनियन्तुम्** = वि + नि + √यम् + तुमुन्
- **बाधितुम्** = √बाध् + तुमुन्

सर्वनाम–रूप

- **यम्** = 'यत्' सर्वनाम से पुंलिङ्ग में द्वितीया एक.
- **तत्र** = तद् सर्वनाम शब्द से सप्तमी के अर्थ में त्रल् प्रत्यय
  तद् + त्रल् = तत्र
- **ततः** = तद् सर्वनाम शब्द से, पञ्चमी के अर्थ में तसिल् प्रत्यय तद् + तसिल्

इनि-प्रत्यय

- **वर्णिलिङ्गी** = 'वर्णः प्रशस्तः अस्य' अस्ति इस अर्थ में वर्ण + इनि = वर्णिन् । वर्णिनः लिङ्गं चिह्नम् अस्य अस्ति सः वर्णिन् + लिङ्ग + इनि = वर्णिलिङ्गी
- **दन्तिन्** = √दन्त् + इनि
- **वशी** = वश् + इनि = वशिन् (प्रथमा एक.)
- **देहिनः** = देहि + इनि = देहिन् (प्रथमा बहु.)

क्त-प्रत्यय

- **विदितः** = √विद् + क्त (भावे नपुंसके) = विदितम् (वेदनम्) अस्य अस्ति इति विदितः, अर्शादिगण में आने वाले शब्दों के समान होने के कारण 'विदितम्' शब्द से 'अर्शादिभ्योऽच्' से मत्वर्थीय 'अच्' प्रत्यय होकर विदितः शब्द निष्पन्न हुआ।
- **रुतः** = रु + क्त
- **कृतः** = √कृ + क्त
- **निश्चित** = √निस् + चि + क्त
- **युक्तैः** = √युज् + क्त (तृतीया बहु.)
- **हितम्** = √धा + क्त। (नपुंसक लिङ्ग भावे क्त प्रत्यय)
- **उपनीतम्** = उप + √नी + क्त
- **चरितम्** = √चर् + क्त
- **निगूढः** = नि + √गुह् + क्त
- **अस्तम्** = √अस् + क्त
- **सन्ततम्** = सम् + √तन् + क्त
- **सक्तः** = √सञ्ज् + क्त
- **वर्जितम्** = √वृज् + क्त
- **उपदिष्टम्** = उप + √दिश् + क्त
- **निवृत्तम्** = नि + √वृत् + क्त
- **अनारतम्** = नञ् + आङ् + √रम् + क्त
- **लम्भिताः** = √लभ् + णिच् + क्त (प्रथमा बहु.)
- **परिबृंहितः** = परि + √बृह् + णिच् + क्त
- **कृष्टः** = √कृष् + क्त
- **अर्चितः** = √अर्च् + णिच् + क्त, अथवा अर्चा अस्य अस्ति अर्थ में अर्चा + इतच्
- **संहताः** = सम् + √हन् + क्त
- **भिन्नः** = √भिद् + क्त
- **रूषितः** = √रुष् + क्त

- **आलूनः** = आ + √लू + क्त
- **सच्चरितैः** = सत् + √चर् + क्त (तृतीया बहु.)
- **शेषितः** = शेष + णिच् + क्त
- **ईहितम्** = √ईह् + क्त
- **उद्यतम्** = उद् + √यम् + क्त (द्वितीया एक.)
- **उद्धतम्** = उद् + √हन् + क्त
- **इद्धम्** = √इन्ध् + क्त ।
- **खिन्नः** = √खिद् + क्त ।
- **अनुमतः** = अनु + √मन् + क्त
- **अनुस्मृतः** = अनु + √स्मृ + क्त
- **आत्तः** = आङ् + √दा + क्त
- **गते** = √गम् + क्त (सप्तमी एक.)
- **उदितः** = √वद् + क्त
- **निरस्तः** = निर् + √अस् + क्त
- **मूढः** = √मुह् + क्त
- **संवृतः** = सम् + √वृ + क्त
- **निशिताः** = नि + √शो + क्त (प्रथमा बहु.)
- **उदीरितः** = उद् + √ईर् + णिच् + क्त
- **शुष्कम्** = √शुष् + क्त ("शुषः कः" सूत्र से 'क्त' को 'क' आदेश) (द्वितीया एक०)
- **जातः** = √जन् + क्त
- **आचितम्** = आङ् + √चि + क्त
- **अधिरूढः** = अधि + √रुह् + क्त
- **मग्नम्** = √मस्ज् + क्त

घञ् प्रत्यय

- **प्रणामः** = प्र + √नम् + घञ्
- **सारः** = √सृ + घञ्
- **विघाताय** = वि + √हन् + घञ् = विघात यहाँ "भाववचनाच्च" सूत्र द्वारा 'घञ्' प्रत्यय लगकर बने विघातः पद में "तुमर्थाच्च भाववचनात्" सूत्र से चतुर्थी वि. एक. "विघाताय" निष्पन्न हुआ।
- **निसर्गः** = नि + √सृज् + घञ्
- **बोधः** = √बुध + घञ् (प्रथमा एक.)

- **शेषः** = √शिष् + घञ्
- **अनुभावः** = अनुभूयते अर्थ में अनु + √भू + घञ्
- **अनुबन्धः** = अनु + √बन्ध् + घञ्
- **मानः** = √मन् + घञ्
- **गुणानुरागात्** = गुण + अनु + √रञ्ज् + घञ् (पञ्चमी एक.)
- **अनुरोधः** = अनु + √रुध् + घञ्
- **आकारः** = आङ् + √कृ + घञ्
- **अपवर्गः** = अप + √वृज् + घञ्
- **विनियोगः** = वि + नि + √युज् + घञ्
- **उपायाः** = उप + √अय् + घञ् (प्रथमा बहु.)
- **संघर्षः** = सम् + √घृष् + घञ्
- **उदारः** = उत् + √ऋ + घञ्
- **कोपः** = √कुप् + घञ्
- **प्रसङ्गः** = प्र + √सञ्ज् + घञ्
- **अधिक्षेपः** = अधि + √क्षिप् + घञ्
- **अभिमानः** = अभि + √मन् + घञ्
- **मर्षः** = √मृष् + घञ्
- **निकारम्** = नि + √कृ + घञ् (द्वितीया, एक.)
- **नियोगः** = नि + √युज् + घञ्
- **संहारः** = सम् + √हृ + घञ्
- **गाधः** = √गाध् + घञ्

शतृ-प्रत्यय

- **निवेदयिष्यतः** = नि + √विद् + णिच् + शतृ लृट् लकार के अर्थ में = निवेदयिष्यन् (षष्ठी एक.)
- **इच्छतः** = √इष् + शतृ (षष्ठी एक.)
- **भवतः** = √भू + शतृ (पञ्चमी एक.)
- **समुन्नयन्** = सम् + उत् + √नी + शतृ (प्रथमा एक.)
- **आराधयतः** = आङ् + √राध् + शतृ (षष्ठी एक.)
- **दधतः** = √धा + शतृ (प्रथमा बहु.)
- **वाञ्छन्** = वाञ्छ् + शतृ (प्रथमा एक.)

- **वितन्वति** = वि + √तन् + शतृ (सप्तमी एक.)
- **प्रशासत्** = प्र + √शास् + शतृ
- **चिन्वताम्** = √चि + शतृ (षष्ठी बहु.)
- **परिभ्रमन्** = परि + √भ्रम् + शतृ (प्रथमा एक.)
- **आहरन्** = आङ् + √हृ + शतृ (प्रथमा एक.)
- **विलोकयन्** = वि + √लोक् + शतृ
- **द्विषत्** = √द्विष् + शतृ

णिनि प्रत्यय

- **हितैषिणः** = हितम् इच्छन्ति इस अर्थ में हित + √इष् + णिनि ''सुप्यजातौ णिनिः ताच्छील्ये'' सूत्र से 'णिनि' प्रत्यय लगकर प्रथमा बहु. में ''हितैषिणः'' बनता है।
- **अनुजीविभिः** = अनु जीवितुं शीलं येषां ते अर्थ में अनु + जीव् + णिनि। तृतीया बहुवचन।
- **मनोहारि** = मनः हर्तुं शीलं यस्य तत् अर्थ में, मनस् + √हृ + णिनि, नपुंसकलिङ्ग में प्रथमा एकवचन
- **वनाधिवासिनः** = 'वनम् अधिवसति इति तस्मात्' अर्थ में वन + अधि + √वस् + णिनि, पञ्चमी एकवचन
- **विरोधिनः** = वि + √रुध् + णिनि (प्रथमा, बहु.)
- **वनसन्निवासिनाम्** = वन + सम् + नि + √वस् + णिनि (षष्ठी बहु.)
- **वन्यफलाशिनः** = वन्यफल + √अश् + णिनि (षष्ठी एक.)
- **मणिपीठशायिनौ** = मणिपीठ + √शी + णिनि (द्वितीया, द्विव0)

ल्यप्-प्रत्यय

- **अधिगम्य** = अधि + √गम् + ल्यप्
- **विभज्य** = वि + √भज् + ल्यप्
- **विरहय्य** = वि + √रह् + णिच् + ल्यप्
- **विधाय** = वि + √धा + ल्यप्
- **उपेत्य** = उप + √इण् + ल्यप्
- **निधाय** = नि + √धा + ल्यप्
- **प्रविश्य** = प्र + √विश् + ल्यप्

- **निशम्य** = नि + √शम् + ल्यप्
- **विजित्य** = वि + √जि + ल्यप्
- **अधिशय्य** = अधि + √शी + ल्यप्
- **विहाय** = वि + √हा + ल्यप्
- **अवधूय** = अव + √धू + ल्यप्
- **प्राप्य** = प्र + √आप् + ल्यप्
- **उदस्य** = उत् + √अस् + ल्यप्
- **ईरयित्वा** = √ईर् + णिच् + क्त्वा

ङीप्-प्रत्यय

- **सौष्ठवौदार्यविशेषशालिनीम्** = सौष्ठव + औदार्य + विशेष + शाल् + णिनि + ङीप् (द्वितीया एकवचन)
- **मानवीम्** = मनु + अण् + ङीप् (द्वितीया एक.)
- **विशेषशालिनी** = विशेष + √शाल् + णिनि + ङीप्
- **त्वदेष्यतीः** = √इण् (जाना) धातु से भविष्यत् काल में शतृ प्रत्यय होकर, इ + स्य + शतृ + ङीप् = एष्यतीः (द्वितीया, बहु.)
- **दीपिनी** = √दीप् + णिनि + ङीप् + (द्वितीया बहु०)
- **तावकीम्** = तव इयम् अर्थ में, युष्मद् + अण् + ङीप् युष्मद् शब्द को तवक आदेश होता है।
- **विचिन्तयन्ती** = वि + √चिन्त् + शतृ + ङीप्
- **स्थलीम्** = √स्थल् + अच् + ङीप् (द्वितीया एक.)

अण्

- **सौष्ठव** = सुष्ठु + अण्
- **कुरूणाम्** = कुरूणां निवासाः जनपदाः कुरवः। कुरु जाति के निवास स्थान जनपद कुरु कहलाते हैं, यहाँ जनपद अर्थ में ''तस्य निवासः'' सूत्र से अण् प्रत्यय होकर ''जनपदे लुप्'' सूत्र से उसका लोप हो जाता है। जनपद वाची शब्द बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं। अतः षष्ठी बहुवचन में 'कुरूणाम्''
- **समान** = सम् + अन् + अण्
- **चिराय** = चिर् + अय् + अण्
- **यौवन** = युवन् + अण्
- **हार्दः** = हृदय + अण् (हृदय को हृद आदेश होकर) = हार्द
- **मानसः** = मनस् + अण्

ष्यञ्

- **औदार्यम्** = उदार + ष्यञ्
- **माल्यम्** = माला + ष्यञ्
- **यौवराज्ये** = युवराज + ष्यञ् = यौवराज्य, (सप्तमी एक.)

ण्यत्

- **आर्य** = √ऋ + ण्यत्
- **प्राज्यम्** = प्र + √अज् + ण्यत्

अनीयर् प्रत्यय

- **वञ्चनीयाः** = √वञ्च् + अनीयर् (प्रथमा बहु.)
- **रामणीयकम्** = √रम् + अनीयर्
  'रमणीयस्य भावः' अर्थ में, रमणीय + वुञ् (अक) रामणीयकम्

अन्य प्रत्यय

- **अतः** = एतस्माद् अर्थ में एतत् + तसिल्
- **दुर्लभम्** = दुर् + √लभ् + खल्
- **साधु** = साध् + उण्
- **अमात्येषु** = अमा बुद्धिः तया सह वसनि अर्थ में अमा + त्यप् = अमात्य (सप्तमी बहु.)
- **दुर्बोधम्** = दुर् + √बुध् + खल् (कर्मणि)
- **विक्लवः** = वि + √क्लु + अच्
- **नयः** = नी + अच्
- **विशङ्कमानः** = वि + शङ्क् + शानच्
- **पराभवम्** = परा + √भू + अप् (द्वितीया, एक.)
- **सङ्गमः** = सम + गम् + अप्
- **जयः** = √जि + अच्
- **सुखम्** = सुख + अच्
- **पदवीम्** = पद + √अवि + ङीष् = पदवी (द्वितीया एक.)
- **प्रपित्सुना** = प्र + √पद् + सन् + उ = प्रपित्सुः (तृतीया एक.)
- **तन्द्रिः** = तन्द् + क्रिन्
- **सखीन्** = सह समानं ख्यायते अर्थ में सह + ख्या + डिन् = सखि (द्वितीया बहुवचन)
- **बन्धुभिः** = बन्ध् + उ = बन्धु (तृतीया बहु.)
- **स्मयः** = स्मि + अच्

- **सख्यम्** = 'सख्युर्भावः' अर्थ में 'सख्युर्यः'' सूत्र से 'य' प्रत्यय होकर सखि + य
- **ईयिवान्** = √इण् धातु से लिट्लकार में 'क्वसु' प्रत्यय होकर निपातन से ईयिवान् रूप बना।
- **निरत्ययम्** = निर् + अति + इ + अच् (द्वितीया एक.)
- **वसूनि** = √वस् + उ (प्रथमा बहु.)
- **मन्युना** = मन् + युच् (तृतीया एक.)
- **गुरु** = गृ + कु, उत्वम्
- **दण्डः** = दण्ड् + अच्
- **विप्लवः** = वि + प्लु + अप्
- **रक्षान्** = √रक्ष् + अच् (द्वितीया बहु.)
- **परितः** = परि + तस्
- **शङ्कितः** = शङ्का + इतच्
- **राजन्य** = राजन् + यत्
- **अश्वः** = अश्व + क्वन्
- **रथः** = √रम् + क्यन्
- **तदीया** = तद् + छ (ईय)
- **वचांसि** = वचस् शब्द नपुंसकलिङ्ग (द्वितीया बहु.)
- **अजिर** = √अज् + किरन्
- **मदः** = मद + अप्
- **लभ्यः** = √लभ् + यत्
- **कृषीवलैः** = कृषि + वलच् (तृतीया, बहु०)
- **सस्य** = √सस् + क्यप्
- **उदयम्** = उत् + √इ + अच् (द्वितीया, एक०)
- **दयावतः** = दया + मतुप् (षष्ठी एक.)
- **प्रतीय** = प्रति + √इण् + यक्
- **धातुः** = √धा + तृच् (षष्ठी एक.)
- **नरः** = √नृ + अच् ।
- **मखेषु** = मख + घ (सप्तमी बहु.)
- **पुरोधसा** = पुरस् + √धा + असि (तृतीया एक.)
- **भूपालः** = भू + √पाल् + अच्
- **स्थिरः** = √स्था + किरच्
- **आयतिः** = आङ् + √या + इति
- **बलवद्** = बल + मतुप्
- **आखण्डलः** = आङ् + खण्ड् + डलच्

- **सूनुः** = सू + नुक्
- **विक्रमः** = वि + √क्रम + अच्
- **उरगः** = उरस् + √गम् + ड
- **जिह्मः** = 'हा' धातु + मन, औणादिक मन् प्रत्यय का लोप तथा ''ह्'' को जिह् आदेश होकर प्रथमा एक. में जिह्मः पद निष्पन्न होता है।
- **विधेयम्** = वि + √धा + यत्।
- **उत्तरम्** = उद् + √तृ + अप्
- **अनुजः** = अनु + √जन् + ड
- **सन्निधिः** = सम् + नि + √धा + कि
- **वचः** = √वच् + असुन्
- **तथा** = तद् + थाल्
- **नारी** = √नॄ + अच् = नर + ङीन्
- **दुराधयः** = √दुर् + आङ् + धा + कि (प्रथमा बहु.)
- **तुल्यम्** = तुला + यत्
- **धामन्** = √धा + मनिन्
- **स्ववंशजः** = स्ववंश + √जन + ड
- **मही** = मह् + अच् + ङीष्
- **मतङ्गजः** = मतङ्ग + √जन + ड
- **मानिनाम्** =मान + इनि (षष्ठी बहु0)
- **स्त्रक्** = √सृज् + क्विन्
- **पराभवम्** = परा + √भू + अप्
- **मायाविषु** = माया + विनि ''अस्मायामेधास्त्रजो विनिः'' (5.2.121) सूत्र से विनि प्रत्यय = मायाविन्, (सप्तमी बहु.)
- **मायिनः** = माया + इनि ''माया'' शब्द से ''व्रीह्यादिभ्यश्च'' सूत्र से मत्वर्थीय 'इनि' प्रत्यय (प्रथमा बहु.)
- **इषवः** = √इष् + उ = इषु (प्रथमा बहु.)
- **एतर्हि** = 'अस्मिन् काले' अर्थ में इदम् शब्द से ''इदमोर्हिल्'' (5.3.16) सूत्र से र्हिल् प्रत्यय होकर इदम् + र्हिल् = यहाँ इदम् शब्द को एत आदेश होता है।
- **भवन्तम्** = √भा + डवतु = भवत् (द्वितीया एक.)
- **गर्हितः** = √गर्ह + क्त
- **विवर्तमानम्** = वि + वृत् + शानच्
- **वर्त्मनि** = वृत् + मनिन् = वर्त्मन्, (सप्तमी एक.)
- **मन्युः** = मन् + युच्

- **अग्निः** = अङ्ग + नि
- **बन्ध्यः** = बन्ध् + ण्यत्
- **विहन्तुः** = वि + √हन् + तृच् षष्ठी एक.
- **वश्याः** = वश् + यत्, प्रथमा बहु.
- **शून्यम्** = शूना + यत्
- **आदरः** = आङ् + दृ + अप् = आदर
- **जन्तुः** = √जन् + तुन्
- **लोहितः** = √रुह् + इतन् 'र' को 'ल' आदेश
- **पदातिः** = पाद + अत् + इण्
- **रेणुः** = री + नु
- **सत्यम्** = सत् + यत्
- **अकुप्यम्** = गुप् + क्यप् (ग को क आदेश होकर) कुप्य
- **वासांसि** = वस्यते आच्छाद्यते अनेन अर्थ में वस् + असुन् = वासम्, नपुंसकलिङ्ग में द्वितीया एक. = वासांसि
- **धनञ्जयः** = धनं जयति अर्थ में–धन + जि + खच् (मुम् का आगम)
- **कचः** = √कच् + अच्
- **अगजः** = अग + √जन् + ड
- **अगः** = न + √गम् + ड
- **गजः** = गज् + अच्
- **संयमः** = सम् + यम् + अप्
- **विचित्ररूपः** = विचित्र + रूपप्
- **आश्रयः** = आङ् + √श्रि + अच्
- **आधयः** = आङ् + √धा + कि, प्रथमा बहु.
- **अन्धसा** = अद् + असुन्, नुम् और ध होकर तृतीया एक. अन्धसा
- **कार्श्यम्** = कृष् + ष्यञ्
- **द्विजः** = द्वि + √जन् + ड
- **उत्सवः** = उत् + √सू + अप्
- **धामन्** = धा + मनिन् नपुंसकलिङ्ग - प्रथमा एक
- **शत्रुम्** = शद् + त्रुन् द्वितीया एक.
- **मुनिः** = मन् + इन् (अ को उ आदेश)
- **पुरस्** = पूर्व + असि
- **सरः** = सृ + अच्
- **धामवताम्** = धाम + मतुप् = धामवत्, षष्ठी का बहु.

- **दुस्सहः** = दुर् + सह् + खल्
- **आश्रयः** = आङ् + √श्रि + अच्
- **मनस्विन्** = मनस् + विनि
- **पतिः** = √पा + डति
- **लक्ष्मन्** = √लक्ष् + मनिन्
- **कार्मुकः** = कर्मन् + उकञ्
- **जटाधरः** = जटा + √धृ + अच्
- **पावकम्** = √पू + ण्वुल् (अक) द्वितीया एक.
- **समयः** = सम् + √इ + अच्
- **क्षमः** = क्षम् + अच्
- **अरिषु** = ऋ + इन् सप्तमी बहु.
- **विजयः** = वि + √जि + अच् = विजय
- **अर्थिनः** = अर्थ + इनि प्रथमा बहु.
- **उपधिः** = उप + √धा + कि
- **सन्धिः** = सम् + √धा + कि
- **विधिः** = वि + √धा + कि
- **पयोधिः** = पयस् + √धा + कि
- **रिपुः** = अनिष्टं रपति अर्थ में रप् + कु (अ को इ होकर)
- **तिमिरः** = तिम् + किरच्
- **उदीयमानम्** = उत् + √ईङ् + शानच् = उदीयमान, द्वितीया एक. (उदीयमानम्)
- **लक्ष्मीः** = लक्ष् + ई (मुट् का आगम)
- **भूयः** = बहु + ईयसुन् (बहु को भू आदेश और ईयसुन् को ईकार का लोप होकर) भू + यस्

किरातार्जुनीयम् (प्रथमसर्ग) में सन्धि

- **प्रभवोऽनुजीविभिः** = प्रभवस् + अनुजीविभिः विसर्गसन्धि एवं ''एङः पदान्तादति'' से पूर्वरूपसन्धि।
- **अतोऽर्हसि** = अतस् + अर्हसि, विसर्गसन्धि एवं ''एङःपदान्तादति'' से पूर्वरूपसन्धि।
- **सदानुकूलेषु** = सदा + अनुकूलेषु = दीर्घसन्धि
- **नृपेष्वमात्येषु** = नृपेषु + अमात्येषु = यण्सन्धि (इको यणचि)
- **तवानुभावः** = तव + अनुभावः = दीर्घसन्धि
- **तवानुभावोऽयमवेदि** = तवानुभावस् + अयमवेदि (विसर्ग सन्धि एवं पूर्वरूपसन्धि)
- **व्याख्या** – यहाँ पर ''ससजुषो रुः'' सूत्र से अनुभावस् के अन्त्य सकार को 'रु' आदेश होकर उपदेशेऽजनुनासिक इत् से ''उकार'' की इत्संज्ञा और ''तस्य लोपः'' से लोप, ''र्'' को ''अतो रोरप्लुतादप्लुते'' सूत्र से उकार आदेश, तवानुभाव + उ + अयमवेदि ''आद्गुणः'' से गुण होकर, तवानुभावो + अयमवेदि, पुनः ''एङः पदान्तादति'' सूत्र से पूर्वरूप सन्धि होकर, यहाँ सन्धिकार्य निष्पन्न हुआ अन्यस्थलों पर भी अध्येतागण ऐसा ही समझे।

- **नृपासनस्थोऽपि** = नृपासनस्थस् + अपि, विसर्गसन्धि एवं पूर्वरूपसन्धि।
- **भवज्जिगीषया** = भवत् + जिगीषया, ''झलां जशोऽन्ते'' सूत्र से ''जश्त्वसन्धि'' भवद् + जिगीषया पुनः ''स्तोः श्चुना श्चुः''. से श्चुत्व सन्धि।
- **कृतारिः** = कृत + अरिः (दीर्घसन्धि)
- **कृताधिपत्याम्** = कृत + आधिपत्याम् = (दीर्घसन्धि)
- **असक्तमाराधयतो यथायथम्** = असक्तमाराधयतः + यथायथम्, ''विसर्गसन्धि'' (''हशि च'' से उत्व ''आद्गुणः'' से गुण)
- **गुरूपदिष्टेन** = गुरु + उपदिष्टेन, (दीर्घसन्धिः)
- **क्रियापवर्गेष्वनुजीवि** = क्रियापवर्गेषु + अनुजीवि (यण्सन्धि)
- **फलन्त्युपायाः** = फलन्ति + उपायाः (यण्सन्धि)
- **नयत्ययुग्मः** = नयति + अयुग्मः (यण्सन्धि)
- **कुरवश्चकासति** = कुरवस् + चकासति ''स्तोः श्चुना श्चुः'' (श्चुत्वसन्धि)
- **इत्येव** = इति + एव (यण्सन्धि)
- **वाञ्छन्त्यसुभिः** = वाञ्छन्ति + असुभिः (यण्सन्धि)
- **धातुरिवेहितम्** = धातुरिव + ईहितम् (गुणसन्धि)
- **मखेष्वखिन्नः** = मखेषु + अखिन्नः (यण्सन्धि)
- **चिन्तयत्येव** = चिन्तयति + एव (यण्सन्धि)
- **इवानुशासनम्** = इव + अनुशासनम् (दीर्घसन्धि)
- **त्वयात्महस्तेन** = त्वया + आत्महस्तेन (दीर्घसन्धि)
- **स्रगिवापवर्जिता** = स्रगिव + अपवर्जिता (दीर्घसन्धि)
- **शठास्तथाविधान्** = शठाः + तथाविधान् (विसर्गसन्धि)
- **इवेषवः** = इव + इषवः = गुणसन्धिः (आद् गुणः)
- **परैस्त्वदन्यः** = परैः + त्वदन्यः (विसर्गसन्धिः)
- **परिभ्रमँल्लोहितचन्दनोचितः** = परिभ्रमन् + लोहित - चन्दनोचितः, ''तोर्लि'' सूत्र से परसवर्णसन्धि (हल्सन्धि)
- **तवाधुनाहरन्** = तव + अधुना + आहरन्, (दीर्घसन्धि)
- **विष्वगिवागजौ** = विष्वगिव + अगजौ (दीर्घसन्धि)
- **उन्मूलयतीव** = उन्मूलयति + इव (दीर्घसन्धि)
- **भावादृशाश्चेत्** = भवादृशास् + चेत् ''स्तोः श्चुना श्चुः'' (श्चुत्वसन्धि)
- **उदस्योदीयमानम्** = उदस्य + उदीयमानम् (गुणसन्धि)
- **लक्ष्मीस्त्वाम्** = लक्ष्मीस् + त्वाम् (विसर्गसन्धि)

किरातार्जुनीयम् में समास

- **पालनीम्** = पाल्यतेऽनया इति पालनी, ताम् पालनीम्। (तृतीया तत्पुरुष समास)
- **वर्णिलिङ्गी** = वर्णः अस्य अस्ति वर्णी, तस्य लिङ्गम् अस्यास्तीति वर्णिलिङ्गी।
- **वनेचरः** = वने चरति इति वनेचरः। (सप्तमी अलुक् तत्पुरुषसमास)

- **युधिष्ठिरम्** = युधि स्थिरः तम् युधिष्ठिरम् ।
  (सप्तमी अलुक् तत्पुरुषसमास)
- **कृतप्रणामस्य** = कृतः प्रणामः येन तस्य कृतप्रणामस्य।
  (बहुव्रीहि समास)
- **सौष्ठवौदार्यविशेषशालिनीम्** = ''सौष्ठवं च औदार्यं च इति सौष्ठवौदार्ये तयोः विशेषः तेन शालते इति
  सौष्ठवौदार्यविशेषशालिनी ताम्, सौष्ठवौदार्यविशेषशालिनीम्।
  (इतरेतरद्वन्द्व एवं षष्ठी तत्पुरुषसमास)
- **चारचक्षुषः** = चरन्ति इति चराः त एव चाराः, चाराः चक्षूंषि येषां ते चारचक्षुषः। (बहुव्रीहि समास)
- **किंसखा** = कुत्सितः सखा इति किंसखा (कर्मधारयसमास)
- **किंप्रभुः** = कुत्सितः प्रभुः (कर्मधारयसमास)
- **सर्वसम्पदः** = सर्वाः सम्पदः सर्वसम्पदः (कर्मधारयसमास)
- **अमात्येषु** = अमा सह भवाः अमात्याः तेषु
- **अनुकूलेषु** = कूलम् अनुगताः इत्यनुकूलाः तेषु (प्रादितत्पु. समास)
- **अबोधविक्लवाः** = अबोधेन विक्लवाः (तृतीया तत्पुरुष समास)
- **नयवर्त्म** = नयस्य वर्त्म, नयवर्त्म (षष्ठी तत्पुरुष समास)
- **अनुभावः** = अनुगतो भावः इति (प्रादितत्पुरुष समास)
- **वनाधिवासिनः** = वनम् अधिवसति इति वनाधिवासी तस्मात् वनाधिवासिनः (उपपदतत्पुरुषसमास)
- **दुर्लभम्** = दुःखेन लभ्यते इति दुर्लभम्, (उपपद तत्पु. समास)
- **सुयोधनः** = सुखेन युद्धयते इति, सुयोधनः (उपपदतत्पुरुष समास)
- **दुरोदरच्छद्मजिताम्** = दुष्टम् उदरं यस्य तत् दुरोदरम्, तस्य छद्मना जितां तां ''दुरोदरच्छद्मजिताम्''। बहुव्रीहि एवं तृतीया तत्पुरुष समास
- **भवज्जिगीषया** = भवन्तं जेतुम् इच्छया, (द्वितीयातत्पुरुष समास)
  अथवा ''भवतः जिगीषा इति'' (षष्ठी तत्पुरुष समास)
- **गुणसम्पदा** = गुणानां सम्पत् तया, गुणसम्पदा। (षष्ठीतत्पुरुष समास)
- **षड्वर्गः** = षण्णां वर्गः, षड्वर्गः। अरीणां षड्वर्गः, अरिषड्वर्गः तस्य जयः अरिषड्वर्गजयः, कृतः अरिषड्वर्गजयः येन तेन कृतारिषड्वर्गजयेन।
  (षष्ठी तत्पुरुष एवं बहुव्रीहि समास)
- **मानवीम्** = इयम् इति मानवी ताम्, मानवीम्, (षष्ठी तत्पु0 समास)
- **अस्ततन्द्रिणा** = अस्ता तन्द्रिः आलस्यं यस्य तेन (बहुव्रीहि समास)
- **गतस्मयः** = गतः स्मयः यस्य सः गतस्मयः। (बहुव्रीहि समास)
- **बन्धुताम्** = बन्धूनां समूहः बन्धुता ताम्, बन्धुताम् (षष्ठी तत्पुरुष समास)
- **सुहृदः** = शोभनं हृदयं येषां ते, तान् सुहृदः (बहुव्रीहि समास)

- **कृताधिपत्याम्** = कृतम् आधिपत्यं यस्याः तां कृताधिपत्याम् (बहुव्रीहि समास)
- **समपक्षपातया** = पक्षे पातः पक्षपातः, समः पक्षपातः यस्यां तया, समपक्षपातया। (सुप्सुपासमास)
- **निरत्ययम्** = निर्गतः अत्ययः यस्मात् तम् निरत्ययम् (बहुव्रीहि समास)
- **निवृत्तकारणः** = निवृत्तं कारणं यस्मात् सः - निवृत्तकारणः। (बहुव्रीहि समास)
- **गुरूपदिष्टेन** = गुरुभिः उपदिष्टः तेन – गुरूपदिष्टेन (तृतीया तत्पुरुष समास)
- **अगम्यरूपाम्** = अगम्यं रूपं यस्याः सा ताम् (बहुव्रीहि समास)
- **धर्मविप्लवम्** = धर्मस्य विप्लवः धर्मविप्लवः तम् (षष्ठी तत्पुरुष समास)
- **कृतज्ञताम्** = कृतं जानाति इति कृतज्ञः, तस्य भावः कृतज्ञता, ताम् कृतज्ञताम् (षष्ठी तत्पुरुषसमास)
- **विनियोगसत्क्रियाः** = विनियोग एव सत्क्रिया येषां ते विनियोगसत्क्रियाः। (बहुव्रीहि समास)
- **अनेकराजन्यरथाश्वसङ्कुलम्** = अनेकेषां राजन्यानां रथाश्वेन सङ्कुलम्, अनेकराजन्यरथाश्वसङ्कुलम् (षष्ठी तत्पुरुष समास)
- **आस्थाननिकेतनाजिरम्** = आस्थानस्य निकेतनम्, आस्थान निकेतनं तस्य अजिरम् = आस्थाननिकेतनाजिरम्। (षष्ठी तत्पुरुष समास)
- **नृपोपायनदन्तिनाम्** = नृपाणाम् उपायनानि ये दन्तिनः तेषाम्। (षष्ठी तत्पुरुष समास)
- **अकृष्टपच्याः** = अकृष्टेन पच्यन्त इति अकृष्टपच्याः। (तृतीया तत्पुरुष समास)
- **अदेवमातृकाः** = देवः पर्जन्यः माता येषां ते देवमातृकाः, ते न भवन्ति इति अदेवमातृकाः। (बहुव्रीहि समास)
- **उदारकीर्तेः** = उदारा कीर्तिः यस्य स उदारकीर्तिः तस्य, उदारकीर्तेः, (बहुव्रीहि समास)
- **महौजसः** = महान्ति ओजांसि येषां ते महौजसः। (बहुव्रीहि समास)
- **मानधनाः** = मान एव धनं येषां ते मानधनाः, (बहुव्रीहि समास)
- **धनार्चिताः** = धनैः अर्चिताः धनार्चिताः। (तृतीया तत्पुरुष समास)
- **लब्धकीर्त्तयः** = लब्धा कीर्तिः यैः ते = लब्धकीर्तयः, बहुव्रीहि समास
- **अशेषितक्रियः** = अशेषिताः क्रियाः येन सः अशेषितक्रियः। (बहुव्रीहि समास)
- **हितानुबन्धिभिः** = हितम् अनुबध्नन्ति इति
  हितानुबन्धीनि तैः हितानुबन्धिभिः।
  (उपपदतत्पुरुष समास)
- **सज्यम्** = सह ज्यया इति सज्यम् (बहुव्रीहि समास)
  तृतीयान्त शब्द के साथ तुल्ययोग होने पर ''सह'' शब्द के साथ बहुव्रीहि समास होता है।
- **कोपविजिह्मम्** = कोपेन विजिह्मं, कोपविजिह्म (तृतीया तत्पुरुष समास)
- **नराधिपैः** = नराणाम् अधिपाः तैः, नराधिपैः, (षष्ठी तत्पुरुष समास)
- **नवयौवनोद्धतम्** = नवेन यौवनेन उद्धतः, नवयौवनोद्धतः तम्, = नवयौवनोद्धतम् (तृतीया तत्पुरुष समास)

- **दुःशासनम्** = दुःखेन शास्यते इति दुःशासनः तम् (तृतीया तत्पुरुष समास)
- **इद्धशासनः** = इद्धं शासनं यस्य स इद्धशासनः (बहुव्रीहि समास)
- **हिरण्यरेतसम्** = हिरण्यं रेतो यस्य तं हिरण्यरेतसम् (बहुव्रीहि समास)
- **प्रलीनभूपालम्** = प्रलीनाः भूपालाः यस्मिन् तत् प्रलीनभूपालम् (बहुव्रीहि समास)
- **स्थिरायति** = स्थिरा आयतिः यस्य तत् स्थिरायति। (बहुव्रीहि समास)
- **अनुस्मृताखण्डलसूनुविक्रमः** = आखण्डलस्य सूनुः आखण्डलसूनुः, अनुस्मृतः आखण्डलसूनोः विक्रमो येन सः (षष्ठी तत्पुरुष समास)
- **महोदयैः** = महान् उदयः येभ्यः तानि महोदयानि तैः (बहुव्रीहि समास)
- **तवाभिधानात्** = तश्च वश्च तवौ तयोः अभिधानं यस्मिन् तस्मात् (बहुव्रीहि समास)
- **उरगः** = उरसा गच्छति इति (तृतीया तत्पुरुषसमास)
- **परप्रणीतानि** = परैः प्रणीतानि (तृतीया तत्पुरुषसमास)
- **प्रवृत्तिसाराः** = प्रवृत्तिः एव सारो यासां ताः (बहुव्रीहि)
- **आत्तसत्क्रिये** = आत्ता सत्क्रिया येन स आत्तसत्क्रियः तस्मिन् (बहुव्रीहि समास)
- **मन्युव्यवसायदीपिनी** = मन्युश्च व्यवसायश्च मन्युव्यवसायौ तयोः दीपिनीः ताः (इतरेतरद्वन्द्वसमासः) एवं (षष्ठी तत्पुरुष समास)
- **द्रुपदात्मजा** = आत्मनः जाता आत्मजा, द्रुपदस्य आत्मजा = (षष्ठी तत्पुरुष समास)
- **प्रमदाजनोदितम्** = प्रमदाजनेन उदितम् (तृतीया तत्पुरुष समास)
- **निरस्तनारीसमयाः** = निरस्तः नारीणां समयः याभ्यः ताः (षष्ठी तत्पुरुषसमास एवं बहुव्रीहि समास)
- **आखण्डलतुल्यधामभिः** = आखण्डलतुल्यः धामानि येषां तैः (बहुव्रीहि समास)
- **मदच्युता** = मदं च्योतति इति मदच्युत् तेन। (उपपद तत्पुरुष समास)
- **असंवृताङ्गान्** = न संवृतानि असंवृतानि, असंवृतानि अङ्गानि येषां ते असंवृताङ्गाः तान् (नञ् तत्पु. समास, एवं बहुव्रीहि समास)
- **अनुरक्तसाधनः** = अनुरक्तं साधनं यस्य, सः (बहुव्रीहि समास)
- **नराधिपः** = नराणाम् अधिपः इति नराधिपः (षष्ठी तत्पुरुष)
- **मनस्विगर्हिते** = मनस्विभिः गर्हिते। (तृतीया तत्पु.)
- **शमीतरुम्** = शमी चासौ तरुश्च शमीतरुः तम् (कर्मधारय)
- **उच्छिखः** = उद्गता शिखा यस्य स उच्छिखः। (बहुव्रीहि)
- **अबन्ध्यकोपस्य** = अबन्ध्यः कोपो यस्य तस्य अबन्ध्यकोपस्य (बहुव्रीहि समास)
- **अन्तर्गिरि** = गिरिषु अन्तः (सप्तमी तत्पुरुष समास)
- **रेणुरूषितः** = रेणुभिः रूषितः (तृतीया तत्पुरुष)
- **सत्यधनस्य** = सत्यम् एव धनं यस्य तस्य (बहुव्रीहि समास)
- **वृकोदरः** = वृकस्य उदरम् इव उदरं यस्य सः (षष्ठी तत्पुरुष समास, एवं बहुव्रीहि समास)

- **वासवोपमः** = वासवः उपमा यस्य सः (बहुव्रीहि समास)
- **धनञ्जयः** = धनं जयतीति (द्वितीया तत्पुरुष)
- **वनान्तशय्याकठिनीकृताकृती** = वनान्तः एव शय्या इति वनान्तशय्या तस्यां कठिनीकृते आकृती ययोः तौ, अथवा वनान्तशय्यया कठिनीकृते आकृती ययोः तौ। (कर्मधारयसमास, तृतीया तत्पुरुषसमास, बहुव्रीहि समास)
- **धृतिसंयमौ** = धृतिश्च संयमश्च (द्वन्द्वसमास)
- **विचित्ररूपाः** = विचित्राणि रूपाणि यासां ताः (बहुव्रीहिसमास)
- **चित्तवृत्तयः** = चित्तस्य वृत्तयः (षष्ठी तत्पुरुष)
- **स्तुतिगीतिमङ्गलैः** = स्तुतयश्च गीतयश्च ता एव मङ्गलानि तैः (द्वन्द्वसमास एवं कर्मधारयसमास)
- **अदभ्रदर्भाम्** = अदभ्राः दर्भाः यस्यां सा अदभ्रदर्भा ताम् (बहुव्रीहि समास)
- **द्विजातिशेषेण** = द्विजातिभिः भुक्तं तस्य शेषः तेन (तत्पुरुष समास)
- **राजशिरःस्रजाम्** = राज्ञां शिरः राजशिरः तेषां स्रजः तासाम् (षष्ठी तत्पुरुष समास)
- **मृगद्विजालूनशिखेषु** = मृगाश्च द्विजाश्च मृगद्विजाः तैः आलूनाः शिखाः येषां तेषु (द्वन्द्वसमास एवं तत्पुरुष समास)
- **द्विषन्निमित्ता** = द्विषन्तो निमित्तं यस्याः सा, (बहुव्रीहि समास)
- **अपर्य्यासितवीर्यसम्पदाम्** = अपर्य्यासिता वीर्यसम्पत् येषां तेषाम् (बहुव्रीहि समास)
- **निःस्पृहाः** = निर्गता स्पृहा येभ्यः ते, (बहुव्रीहि समास)
- **पुरःसराः** = पुरः सरन्ति इति
- **यशोधनाः** = यश एव धनं येषां ते, (बहुव्रीहि समास)
- **निराश्रया** = निर्गतः आश्रयः यस्याः सा (बहुव्रीहि समास)
- **निरस्तविक्रमः** = निरस्तः विक्रमः येन सः (बहुव्रीहि समास)
- **जटाधरः** = धरतीति धरो, जटानां धरः (षष्ठी तत्पुरुषसमास)
- **निकृतिपरेषु** = निकृतिः परं येषु तेषु, (बहुव्रीहि समास)
- **भूरिधाम्नः** = भूरि धाम यस्य तस्य (बहुव्रीहि समास)
- **दीप्तिसंहारजिह्मम्** = दीप्तेः संहारः तेन जिह्मः तम् दीप्तिसंहारजिह्मम्'' (षष्ठी तत्पुरुषसमास)
- **शिथिलवसुम्** = शिथिलं वसु यस्य सः तम्, ''शिथिलवसुम्'' (बहुव्रीहि समास)
- **आपत्पयोधौ** = आपत् एव पयोधिः तस्मिन् अथवा आपदः पयोधिः तस्मिन्, ''आपत्पयोधौ'' (उपमित समासः)
- **विधिसमयनियोगः** = विधिश्च समयश्च इति विधिसमयौ (द्वन्द्वसमासः) तयोः नियोगः इति विधिसमयनियोगः (षष्ठी तत्पुरुष)

किरातार्जुनीयम् में कारकप्रयोग

- ''**कुरूणामधिपस्य**'' में ''**षष्ठी शेषे**'' सूत्र से षष्ठी विभक्ति हुई।
- **महीभुजे** – यहाँ पर ''**महीभुजं निवेदयिष्यतः**'' ऐसा प्रयोग होना चाहिए था, किन्तु ऐसा हुआ नहीं, क्योंकि व्याकरण का एक नियम है कि जब तुमुन् प्रत्यय से युक्त धातु का प्रयोग परोक्ष हो तो उसके कर्म में चतुर्थी विभक्ति होती है, उपर्युक्त प्रयोग में ''महीभुजं बोधयितुं निवेदयिष्यतः'' कहने से ही पूरा अर्थ निकलता है, किन्तु ''बोधयितुम्'' का प्रयोग प्रत्यक्षतः नहीं हुआ, फलतः इस क्रिया के कर्म अर्थात् महीभुजम् में चतुर्थी हो गई। सूत्र है – ``**क्रियार्थोपपदस्य च कर्मणि स्थानिनः**''
- **द्विषाम्** = यहाँ ''**द्विषां विघाताय**'' में विघातशब्द में आने वाला घञ् प्रत्यय चूँकि कृत् प्रत्ययों में से एक है, तथा 'द्विषः' शब्द मूलतः उसका कर्म है (इसका अर्थ है – द्विषः विहन्तुम्) अतएव ''**कर्तृकर्मणोः कृति**'' सूत्र से कर्मणि षष्ठी का बहुवचन हुआ।
- **विघाताय** = विघाताय = विहन्तुमित्यर्थः यहाँ ''तुमर्थाच्च भाववचनात्'' सूत्र से चतुर्थी विभक्ति।
- **हितात्** – यहाँ पञ्चमी का विधान ''**आख्यातोपयोगे**'' तथा 'अपादाने पञ्चमी' सूत्र से हुआ है।
- **भवज्जिगीषया** = यहाँ पर ''**हेतौ**'' सूत्र से '**तृतीया**' विभक्ति का विधान होता है। ''गुणैर्भवन्तमाक्रमितुमिच्छतीत्यर्थः'' ''**हेतौ**'' इति **तृतीया**
- **महात्मभिः समम्** = यहाँ पर ''**सहयुक्तेऽप्रधाने**'' सूत्र से समम् के योग में तृतीया विभक्ति का प्रयोग हुआ।
- **बन्धुभिः** = यहाँ सह के अर्थ में ''**सहयुक्तेऽप्रधाने**'' से तृतीया विभक्ति।
- **अनुजीविनः** = यहाँ ''**कर्तुरीप्सिततमं कर्म**'' सूत्र से कर्मसंज्ञा एवं ''**कर्मणि द्वितीया**'' से द्वितीया बहु. का प्रयोग।
- **गुणानुरागात्** = ''**विभाषा गुणेऽस्त्रियाम्**'' इस नियम से यहाँ पञ्चमी विभक्ति हुई, सूत्रार्थ है, स्त्रीलिङ्ग से भिन्न लिङ्ग वाले गुणवाचक शब्दों में हेत्वर्थक पञ्चमी विभक्ति विकल्प से होती है।
- **गुणानुरोधेन विना** = यहाँ ''**पृथग्विनानानाभिस्तृतीयाऽन्यतरस्याम्**'' इस सूत्र से विना के योग में तृतीया विभक्ति का प्रयोग हुआ।
- **मन्युना** = ''**हेतौ**'' सूत्र से तृतीया विभक्ति का प्रयोग हुआ है।
- **दण्डेन** = यहाँ पर ''**हेतौ**'' से तृतीया विभक्ति।
- **क्रियापवर्गेषु** = कर्म समाप्तिषु अर्थात् कार्यों की समाप्ति होने पर ''**यस्य च भावेन भावलक्षणम्**'' सूत्र से सति सप्तमी का प्रयोग हुआ।

- **तस्मिन्** = "दुर्योधने", (उस दुर्योधन के द्वारा) इत्यर्थः , यहाँ पर **"यस्य च भावेन भावलक्षणम्"** से सति सप्तमी का प्रयोग।
- **सुखेन** = यहाँ "प्रकृत्यादिभ्यः उपसंख्यानम् (वा)" से तृतीया विभक्ति का प्रयोग।
- **तवाभिधानात्** = हेतु अर्थ में पञ्चमी विभक्ति
- **द्विषताम्** = यहाँ पर **"षष्ठी शेषे"** सूत्र से शेष अर्थ में षष्ठी विभक्ति का प्रयोग हुआ है।
- **भवादृशेषु** = यहाँ अधिकरणे सप्तमी, **"सप्तम्यधिकरणे च"** इससे सप्तमी विभक्ति का प्रयोग हुआ।
- **व्यवसाययन्ति माम्** – माम् की यहाँ कर्मसंज्ञा है, और **"कर्मणि द्वितीया"** से द्वितीयाविभक्ति का प्रयोग हुआ। **("गति बुद्धि......." सूत्र से कर्मसंज्ञा)**
- **त्वदन्यः** = त्वत् + अन्यः = यहाँ पर "अन्य" शब्द के योग में "अन्यारादितर्ते....." सूत्र से पञ्चमी विभक्ति का विधान होता है।
- **आपदाम्** = यहाँ पर कर्मणि षष्ठी हुई है, सूत्र है, **"कर्तृकर्मणोः कृति"** से **षष्ठी** विभक्ति का प्रयोग हुआ।
- **विचिन्तयन्त्याः मम चेतः रुजन्ति** = यहाँ पर **"रुजार्थानां भाववचनानामज्वरेः"** सूत्र से विचिन्तयन्त्याः में षष्ठी विभक्ति का प्रयोग।
- **अधिरूढः शयनम्** = यहाँ पर **"अधिशीङ्स्थासां कर्म"** सूत्र से कर्म कारक एवं द्वितीया का प्रयोग।
- **अधिशय्य स्थलीम्** = यहाँ पर **"अधिशीङ्स्थासां कर्म"** सूत्र से कर्म कारक एवं द्वितीया का प्रयोग।
- **यशसा समम्** = **"सहयुक्तेऽप्रधाने"** सूत्र से समम् के योग में **'यशसा'** में तृतीयाविभक्ति का विधान किया गया।
- **वधाय** = **"क्रियार्थोपपदस्य च कर्मणि स्थानिनः"** सूत्र से 'वधाय' में **चतुर्थी** विभक्ति हुई।
- **निकृतिपरेषु** = "सति सप्तमी" का प्रयोग **"यस्य च भावेन भावलक्षणम्"** सूत्र से।
- **अरिषु** = शत्रुषु, शत्रुविषयक, **'विषयाधिकरणे सप्तमी'**।

किरातार्जुनीयम् (प्रथमसर्ग) में छन्द

- किरातार्जुनीयमहाकाव्य के प्रथमसर्ग में प्रथमश्लोक **"श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीम्"** से लेकर 44वें श्लोक **"अथ क्षमामेव निरस्तविक्रमः"** तक वंशस्थ छन्द है। जिसका लक्षण है– **"जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ"**

  अर्थात् जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः जगण, तगण जगण और रगण आता है, उसे 'वंशस्थ' छन्द कहते हैं। इसके प्रत्येकचरण में 12 वर्ण होते हैं और पादान्त में यति होती है।

- किरातार्जुनीयम् (प्रथमसर्ग) के 45वें श्लोक **''न समयपरिरक्षणं क्षमं ते''** में **पुष्पिताग्रा छन्द** है; जिसका लक्षण है–

  ''अयुजि नयुगरेफतो यकारो, युजि च नजौ जरगाश्च पुष्पिताग्रा''

  अर्थात् जब प्रथम एवं तृतीय चरण में क्रमशः नगण नगण रगण यगण (12 अक्षर) और द्वितीय तथा चतुर्थ चरण में नगण जगण जगण रगण और एक गुरु (13 अक्षर) वर्ण हों तो वहाँ **'पुष्पिताग्रा'** छन्द होता है।
- किरातार्जुनीयम् (प्रथमसर्ग) के अन्तिम 46वें **''विधिसमयनियोगाद् दीप्तिसंहारजिह्मम्''** इस श्लोक में ''मालिनीछन्द'' है; जिसका लक्षण है – **''ननमयययुतेयं मालिनीभोगिलोकैः''**

  अर्थात् जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः नगण नगण मगण यगण और यगण हों, और आठवें तथा सातवें वर्ण में यति (विराम) हो, उसे 'मालिनी छन्द' कहते हैं। इस छन्द के प्रत्येक चरण में 15 वर्ण होते हैं।
- इस प्रकार महाकवि भारवि ने सर्गान्त में छन्दपरिवर्तन करके महाकाव्य के लक्षण का पूर्णतया पालन किया है। **'श्री' शब्द से** इस महाकाव्य का **आरम्भ** तथा **'लक्ष्मी' शब्द से सर्ग का अन्त** करते हुए महाकवि भारवि ने एक नयी परम्परा का प्रारम्भ किया, जो परवर्ती माघ आदि कवियों द्वारा उसका अनुपालन किया गया।

किरातार्जुनीयम् का प्रारम्भ – **'श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीम्'**

किरातार्जुनीयम् का सर्गान्त **'दिनकृतमिव लक्ष्मीस्त्वां समभ्येतु भूयः'**

किरातार्जुनीयम् में अलङ्कार

श्लोक-1 – श्रियः .... वनेचरः॥

प्रस्तुत श्लोक में वृत्यनुप्रास नामक अलङ्कार है, क्योंकि 'पालनीम्' एवं 'प्रजासु' में 'प्' की 'वृत्तिम्' 'वेदितुम्' 'वर्णिलिङ्गी' तथा 'विदितः' में 'व्' की और 'वने वनेचरः' में वने की आवृत्ति हो रही है। इसका लक्षणा है

अनेकस्यैकधा साम्यमसकृद्वाप्यनेकधा । एकस्य सकृदप्येष वृत्यनुप्रास उच्चते'' (सा. द.)

श्लोक-2 – कृतप्रणामस्य .... हितैषिणः ॥

प्रस्तुत श्लोक में, प्रथम की तीन पंक्तियों में एक विशेष कथन का उपन्यास किया गया है, और चौथी पंक्ति में विद्यमान एक सामान्य बात से उसका समर्थन किया गया है, फलतः यहाँ **अर्थान्तरन्यास अलङ्कार** है। लक्षण इस प्रकार है–

सामान्यं वा विशेषो वा तदन्येन समर्थ्यते,

यत्तु सोऽर्थान्तरन्यासः साधर्म्येणेतरेण वा

श्लोक-3 – द्विषां विघाताय .... वाचमाददे ॥

उपर्युक्त श्लोक में वृत्यनुप्रास नामक अलङ्कार है, क्योंकि 'विघाताय विधातुम् विनिश्चितार्थाम्, विशेषः और वाचम्' इत्यादि में 'व' की आवृत्ति हो रही है। आचार्य मम्मट के अनुसार अनुप्रास का लक्षण है – 'वर्णसाम्यमनुप्रासः'।

श्लोक-4 – क्रियासु .... दुर्लभं वचः ।

प्रस्तुत श्लोक में प्रथम तीन चरण में कही गयी, एक विशेष बात का समर्थन चतुर्थ चरण में कही गयी सामान्य बात से होने के कारण **अर्थान्तरन्यास** अलङ्कार है, काव्यप्रकाश के अनुसार इसका लक्षण श्लोक सं. 2 में देखें।

श्लोक-5 – स किंसखा .... सर्वसम्पदः।

प्रस्तुत श्लोक में राजाओं और अमात्यों को एक दूसरे के अनुकूल रहने रूप कारण का सम्पूर्ण सम्पत्तियों की प्राप्ति रूप कार्य से समर्थन हो रहा है। अतः **''अर्थान्तरन्यास''** अलङ्कार है।

श्लोक-6 – निसर्गदुर्बोध .... विद्विषाम्॥

इस पद्य में 'अज्ञान से युक्त प्राणी' और छिपे हुए रहस्यों वाले नीति मार्ग का प्रयोग करने वाले राजाओं का दुर्बोध चरित इन दोनों परस्पर अत्यन्त भिन्न स्थितियों वाले पदार्थों का एक साथ प्रयोग होने से **विषम अलङ्कार** है, इसका लक्षण है,

''क्वचिद्यदति वैधर्म्यान्नश्लेषो घटनामियात् .... इत्यादि (काव्यप्रकाशः)।

श्लोक-7 – विशङ्कमानो .... सुयोधनः।

इस श्लोक में ''दुरोदरच्छद्मजिताम्'' इस विशेषण पद का अर्थ - जुए के द्वारा छल से जीती गयी पृथ्वी को 'नयेनजेतुम्' के अर्थ नीति से जीतने के लिए - का कारण होने से **काव्यलिङ्ग** नामक अलङ्कार है।

इसका लक्षण है - हेतोर्वाक्यपदार्थत्वे काव्यलिङ्गं निगद्यते (सा. द.)

श्लोक-8 – तथापि .... महात्मभिः।

इस श्लोक में कुटिल स्वभाव वाले दुर्योधन के द्वारा युधिष्ठिर को जीतने के लिये अपनी निर्मल कीर्ति का विस्तार करना - इस विशेष बात का समर्थन दुष्टों की सङ्गति की अपेक्षा ऐश्वर्य को बढ़ाने वाला महापुरुषों का विरोध श्रेयस्कर है –

इस सामान्य कथन से करने के कारण **''अर्थान्तरन्यास''** नामक अलङ्कार है। इसमें **काव्यलिङ्ग** नामक अलङ्कार भी है, क्योंकि ''भूतिं समुन्नयन् (ऐश्वर्य को बढ़ाने के लिए) इस कारण पद से ''वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः''

(महापुरुषों का विरोध दुष्ट सङ्गति की अपेक्षा कुछ अच्छा होता है)

श्लोक-9 – कृतारिषड् .... पौरुषम्।

उपर्युक्त पद्य में ''नयेन पौरुषं वितन्यते'' (नीति से पौरुष का विस्तार किया जा रहा है) इस अर्थ के ज्ञान का हेतु - 'कृतारिषड्वर्गजयेन अगम्यरूपाम् मानवीं पदवीं प्रपित्सुना' तथा ''नक्तन्दिवं विभज्य अस्ततन्द्रिणा'' आदि है, अतएव इसमें **काव्यलिङ्ग अलङ्कार** है। इसका लक्षण, श्लोक सं. 7 में देखें।

श्लोक-10 – सखीनिव .... बन्धुताम्।

उपर्युक्त पद्य में **''रशनोपमा''** नामक अलङ्कार है, क्योंकि क्रमशः पहले के वाक्यों में वर्णित उपमेय आगे के वाक्यों में उपमान हो जाते हैं, आचार्य विश्वनाथ के अनुसार इसका लक्षण है–

कथिता रशनोपमा यथोर्ध्वमुपमेयस्य यदि स्याद् उपमानता।।

श्लोक 11 – असक्त .... परस्परम्।

इस श्लोक में 'सख्यमीयिवान् इव' इत्यादि शब्दों से उपमेय की उपमान के साथ सम्भावना होने के कारण **उत्प्रेक्षा** अलङ्कार है, जिसका लक्षण है –

''सम्भावनामथोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य समेन यत्'' (काव्यप्रकाशः)

श्लोक-12 – निरत्ययं .... सत्क्रिया।

इस पद्य में पूर्व-पूर्व वाक्य के विशेषण के रूप में उत्तर-उत्तर वाक्य की स्थापना होने के कारण **एकावली** नामक अलङ्कार है, इसका लक्षण इस प्रकार है,

● स्थाप्यतेऽपोह्यते वापि यथापूर्व परं परम्। विशेषणतया वस्तु यत्र सैकावली द्विधा'' (काव्यप्रकाश)

श्लोक-13 – वसूनि वाञ्छन्न .... धर्मविप्लवम्॥

प्रस्तुत श्लोक में 'नकार' का अनेक बार उच्चारण होने से **''वृत्यनुप्रासालङ्कार''** है।

श्लोक-14 – विधाय रक्षान् .... सम्पदः।

इस श्लोक में 'न शङ्कि' तथा 'कृ' इत्यादि की आवृत्ति होने से **अनुप्रास** नामक शब्दालङ्कार है।

श्लोक-15 – अनारतं तेन .... सम्पदः।

यद्यपि साम, दान, दण्ड और भेद, ये परस्पर कभी स्पर्धा नहीं करते, फिर भी प्रस्तुत श्लोक में अर्थ की सुन्दरता को अभिव्यक्त करने के लिए उनमें प्रतिस्पर्धा की सम्भावना की गयी है। अतः इसमें **''उत्प्रेक्षा''** नामक अलङ्कार है, श्लोक का इव शब्द उत्प्रेक्षा को व्यञ्जित कर रहा है।

मन्ये शङ्के ध्रुवं प्रायो नूनमित्येवमादयः, उत्प्रेक्षा व्यञ्जकाः शब्दा इव शब्दोऽपि तादृशः''

श्लोक-16 – अनेकराजन्य .... मदः।

इस श्लोक में 'उदात्त' नामक अलङ्कार है, क्योंकि इसमें दुर्योधन की लोकोत्तर समृद्धि का वर्णन किया गया है। 'अलङ्कारसूत्र' के अनुसार इसका लक्षण है –

''समृद्धिमद्वस्तुवर्णनमुदात्तः''

श्लोक-17 – सुखेन लभ्या .... चकासति।

उपर्युक्त श्लोक में **उत्प्रेक्षा** अलङ्कार है जिसका लक्षण है, ''सम्भावनमथोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य समेन यत् (काव्यप्रकाशः)

श्लोक-18 – उदारकीर्ते .... मेदिनी।

उपर्युक्त पद्य में प्रस्तुत उपमेय ''पृथ्वी'' पर अप्रस्तुत उपमान ''गाय'' के दोहन रूप कार्य का आरोप होने के कारण **समासोक्ति अलङ्कार** है, लक्षण है –

''समासोक्तिः समैर्यत्र कार्यलिङ्गविशेषणैः, व्यवहारसमारोपः प्रस्तुतेऽन्यस्य वस्तुनः (सा. द.)

श्लोक-19 –महौजसो .... समीहितुम्।

इस पद्य में **काव्यलिङ्ग** और **'परिकर'** ये दो अलङ्कार हैं। साथ ही इन दो अलङ्कारों की 'संसृष्टि' भी है।

श्लोक-20 – महीभृतां .... फलैः।

इस पद्य में दुर्योधन के कार्यों की समानता विधाता के कार्यों से करने के कारण **'उपमा'** अलङ्कार है।

श्लोक-21 – न तेन .... शासनम्॥

प्रस्तुत श्लोक में ''माल्यम् इव'' यह अंश दुर्योधन की आज्ञा और माला में साधर्म्य है। अतः **उपमा अलङ्कार** है।

श्लोक-22 – स यौवराज्ये .... हिरण्यरेतसम्॥

प्रस्तुत श्लोक में ''उद्धतम्'' ''निधाय'' ''पुरोधसा'' ''धिनोति'' इत्यादि में ध् वर्ण की, ''दुःशासनः'' ''इद्धशासनः'' में 'श्' वर्ण की तथा ''हव्येन हिरण्यरेतसम्'' में ''ह'' वर्ण की आवृत्ति होने से **अनुप्रास** अलङ्कार है।

श्लोक-23 – प्रलीन .... बलवद्विरोधिता।

इस श्लोक में ''दुरन्ताबलवद्विरोधिता'' इस सामान्य कथन का ''स चिन्तयत्येव भियस्त्वदेष्यतीः'' इस विशेष कथन से समर्थन होने के कारण **अर्थान्तरन्यास** अलङ्कार है,

श्लोक-24 – कथाप्रसङ्गेन .... पदादिवोरगः

इस पद्य में श्लेषानुप्राणित पूर्णोपमा अलङ्कार है ''कथाप्रसङ्गेन'' ''अनुस्मृताखण्डलसूनुविक्रमः'' तवाभिधानात्'' इत्यादि श्लिष्टपद हैं। सः (दुर्योधनः) उपमेय, 'उरगः' उपमान। 'इव' वाचक शब्द तथा ''नताननः व्यथते'' साधारण धर्म सभी स्पष्टतया प्रतिपादित हैं अतः **पूर्णोपमा अलङ्कार** है।

श्लोक-25 – तदाशु कर्तुं .... मादृशां गिरः

उपर्युक्त पद्य में उत्तरार्द्ध के दूसरों के द्वारा कहे गये कथनों का संग्रह करने वाली मुझ जैसों की बातें केवल वृत्तान्त मात्र वाली होती है, इस सामान्य कथन का समर्थन पूर्वार्द्ध के तदाशु कर्तुं त्वयि जिह्ममुद्यते विधीयतां तत्र विधेयमुत्तरम्'' इस विशेष कथन से होने के कारण **''अर्थान्तरन्यास''** नामक अलङ्कार है।

श्लोक-26 – इतीरयित्वा .... सन्निधौ वचः

प्रस्तुत श्लोक में ''अनुप्रास अलङ्कार है, क्योंकि इसके पूर्वार्द्ध में ''न'' वर्ण की तथा चतुर्थ चरण में ''च'' वर्ण की आवृत्ति हुई है।

श्लोक-27 – निशम्य सिद्धिं .... गिरः।

अलङ्कार – उपर्युक्त श्लोक के द्वितीय चरण ''ततस्ततस्त्याः'' में 'त' वर्ण की कई बार आवृत्ति होने से **'अनुप्रास अलङ्कार'** है।

श्लोक-28 – भवादृशेषु .... दुराधयः।

अलङ्कार – उपर्युक्त श्लोक के पूर्वार्द्ध में **''उपमा''** अलङ्कार है, और उत्तरार्द्ध में वाक्यार्थहेतुक ''काव्यलिङ्ग'' अलङ्कार है।

श्लोक-29 – अखण्ड .... वर्जिता।

अलङ्कार – इस श्लोक में उपमेय ''मही'' एवं उपमान ''स्रक्'' के सादृश्य को ''इव'' वाचक शब्द से कहा गया है। इसलिए इसमें **उपमा** अलङ्कार है।

श्लोक-30 – व्रजन्ति ते .... इवेषवः॥

अलङ्कार – इस श्लोक में **उपमा** एवं **अर्थान्तरन्यास** अलङ्कार है, साथ ही दोनों अलङ्कारों की तिलतण्डुलवत् संसृष्टि भी है। ''ये मायाविषु मायिनः न भवन्ति ते पराभवं व्रजन्ति'' इस सामान्य कथन का ''शठा'' ''असंवृताङ्गान् तथाविधान्'' निशिता ''इषवः इव'' प्रविश्य घ्नन्ति हि'' इस विशेष कथन से समर्थन होने के कारण **अर्थान्तरन्यास अलङ्कार** है।

श्लोक-31 – गुणानुरक्ता .... श्रियम्।

अलङ्कार – प्रस्तुत श्लोक में ''आत्मवधू'' उपमेय और ''श्री'' उपमान का 'गुणानुरक्ताम्' आदि समानधर्म से कथन है, ''इव'' उपमा वाचक शब्द है। इस प्रकार इसमें **पूर्णोपमा** अलङ्कार है। इसका लक्षण है, ''साम्यं वाच्यमवैधर्म्यं वाक्यैक्य उपमा द्वयोः'' (सा. द.)

श्लोक-32 – भवन्तमेतर्हि .... रुच्छिखः।

अलङ्कार – इस पद्य में ''सूखे हुए शमी के वृक्ष को प्रज्वलित कर देने वाले अग्नि की तरह आपका क्रोध क्यों नहीं उद्दीप्त होता या भड़क उठता? इस अंश में युधिष्ठिर के क्रोध की उपमा सूखे हुए शमी के वृक्ष के अन्तःस्थित अग्नि से दी गयी है, अतः इसमें **उपमा अलङ्कार** है। ''अग्नि और मन्यु'' में उपमानोपमेय भाव है।

श्लोक-33 – अबन्ध्यकोपस्य .... विद्विषादरः।

अलङ्कार – इस पद्य में व, ज, द और न् वर्णों की बार-बार आवृत्ति होने से **''अनुप्रास''** अलङ्कार है। इसके अतिरिक्त इसमें ''विद्विषादरः'' शब्द का ''विद्विषा + आदरः'' तथा ''विद्विषा + दरः'' इन दो प्रकारों से पदच्छेद होने के कारण **'सभङ्गश्लेष'** अलङ्कार भी है।

श्लोक-34 – परिभ्रमँल्लोहित .... वृकोदरः।

अलङ्कार – 'लोहितचन्दनोचितः' रेणुरूषितः' 'महारथः' 'पदातिः' इत्यादि विशेषण जो वृकोदर अर्थात् भीम के लिए प्रयुक्त हुए हैं, उनका एक विशेष अभिप्राय है। अतः इसमें परिकर नाम अलङ्कार है, जिसका लक्षण है,

''विशेषणैर्यत्साकूतैरुक्तिः परिकरस्तु सः'' इति (काव्यप्रकाश)

श्लोक-35 – ''विजित्य यः .... धनञ्जयः॥

अलङ्कार – प्रस्तुत श्लोक में ''अनुप्रास'' अलङ्कार है।

श्लोक-36 – 'वनान्तशय्या .... न बाधितुम्।

अलङ्कार – ''कृताकृती'' 'कचाचितौ' इत्यादि में **अनुप्रास** तथा ''अगजौ गजौ'' एवं ''धृतिसंयमौ यमौ'' में ''गजौ गजौ'' व ''यमौ यमौ'' अंश में **यमक** अलङ्कार है।

श्लोक-37 – इमामहं वेद .... ममाधयः

प्रस्तुत श्लोक पूर्वार्द्ध में ''विचित्ररूपाः खलुचित्तवृत्तयः'' - इस सामान्य कथन से 'अहं तावकीं धियं न वेद' इस विशेष कथन का समर्थन होने के कारण सामान्य से विशेष का समर्थन रूप ''**अर्थान्तरन्यास** अलङ्कार'' है, श्लोक के उत्तरार्द्ध में वाक्यार्थ हेतुक **''काव्यलिङ्ग''** अलङ्कार भी है।

श्लोक-38 – पुराधिरूढः ....शिवारुतैः।

अलङ्कार – ''महाधनं शयनम्'' और अदभ्रदर्भां स्थलीम् अधिशय्य एवं ''स्तुतिगीतिमङ्गलैः विबोध्यसे और ''अशिवैः शिवारुतैः निद्रां जहासि'' इन विरुद्ध पदार्थों का वर्णन होने से

'विषम' अलङ्कार है।

श्लोक-39 – पुरोपनीतं .... समं वपुः॥

अलङ्कार – इस पद्य में **''सहोक्ति अलङ्कार''** है जिसका लक्षण है, ''सा सहोक्तिः सहार्थस्य बलादेकं द्विवाचकम्'' (का. प्र.)

श्लोक-40 – अनारतं यौ .... बर्हिषाम्।

अलङ्कार – मणिजटित पीठ पर रहने वाले और राजाओं के शिरोमाल्यों के पराग से रञ्जित होने वाले चरण तथा मृगों और तपस्वियों के द्वारा छिन्न कुशों के वनों में पड़ने वाले चरण इन दो विरुद्ध पदार्थों का प्रयोग होने से **'विषम' नामक अलङ्कार** है,

इसके अतिरिक्त ''मणिपीठशायिनौ'' 'मृगद्विजालूनशिखेषु' इत्यादि पदों के विशेष अभिप्राय से प्रयुक्त होने के कारण यहाँ **परिकर अलङ्कार** भी है।

श्लोक-41 – द्विषन्निमित्ता .... मानिनाम्॥

अलङ्कार – राजा युधिष्ठिर की यह ''दुर्दशा'' उनके दुर्भाग्यवशात् नहीं है, प्रत्युत शत्रुजन्य है, अतः वह असहनीय है, इसके समर्थन में वैधर्म्यपूर्वक सामान्य दिया गया है – ''परैरपर्यासितवीर्यसम्पदां पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम्'' अतः यहाँ **अर्थान्तरन्यास अलङ्कार** है। ''इव'' शब्द के द्वारा मन के उन्मूलन की सम्भावना होने से **उत्प्रेक्षा अलङ्कार** भी है। साथ ही पूर्वार्द्ध में 'म' वर्ण तथा उत्तरार्द्ध में र वर्ण की आवृत्ति होने से **अनुप्रास अलङ्कार** भी है।

श्लोक-42 – ''विहाय शान्तिं .... न भूभृतः''।

अलङ्कार – इस पद्य में **''अर्थान्तरन्यास''** और **''अनुप्रास''** अलङ्कार की संसृष्टि है। शत्रुओं को नष्ट करने के लिए शम को त्याग कर अपने विख्यात तेज को धारण कीजिए - इस विशेष कथन का समर्थन ''शमेन सिद्धिं मुनयो न भूभृतः'' रूपी सामान्य कथन से होने के कारण **अर्थान्तरन्यास** अलङ्कार है। पूर्वार्द्ध में 'वकार' की एवं उत्तरार्द्ध में 'नकार' की आवृत्ति होने से **अनुप्रास** अलङ्कार भी है।

श्लोक-43 – पुरः सरा .... मनस्विता।

अलङ्कार– प्रस्तुत श्लोक में **''अर्थान्तरन्यास''** अलङ्कार है।

श्लोक-44 – अथ क्षमामेव .... पावकम्।

अलङ्कार – प्रस्तुत श्लोक में ''लक्ष्मीपतिलक्ष्म'' में 'ल', 'क्ष्' एवं 'म' की आवृत्ति होने के कारण **छेकानुप्रास** है।

श्लोक-45 – न समय .... सन्धिदूषणानि॥

अलङ्कार – 'ते समय परिरक्षणं न क्षमम्' इस विशेष कथन का 'विजयार्थिनः क्षितीशाः अरिषु सन्धिदूषणानि सोपधि विदधति' इस सामान्य कथन से समर्थन होने के कारण **''अर्थान्तरन्यास''** अलङ्कार है, इसके अतिरिक्त ''परेषु-परेषु'' में **यमक** तथा पूर्वार्द्ध में रकार एवं उत्तरार्द्ध में धकार इत्यादि वर्णों की आवृत्ति होने से **'अनुप्रास'** भी है।

श्लोक-46 – विधिसमय .... समभ्येतु भूयः।

अलङ्कार – इस श्लोक में उपमा के चारों अवयव विद्यमान हैं। अतः **पूर्णोपमा अलङ्कार** है। इसमें द्वितीयान्त पद ''त्वाम्'' (युधिष्ठिर) उपमेय ''दिनकृतम्'' (सूर्य) उपमान ''दीप्तिसंहार- जिह्मम्'' शिथिलवसुम् आपत्पयोधौ, मग्नम् एवम् उदीयमानम् इत्यादि साधारणधर्म तथा ''इव'' वाचक शब्द है।

4. प्रश्नमीमांसा

1. 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः' यह सूक्ति किस ग्रन्थ में आयी है? **TGT-1999, 2001**

(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में **(B) किरातार्जुनीयम् में**
(C) नीतिशतकम् में (D) मेघदूतम् में

व्याख्या

* 'श्रिया दुरापः कथमीप्सितो भवेत्' अभिज्ञानशाकुन्तलम्
* 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः' (किरातार्जुनीयम् 1/4)– वनेचर, हस्तिनापुर से लौटने के पश्चात् युधिष्ठिर से कहता है कि–हितकारी और प्रियवाणी दुर्लभ होती है।
* ''विभूषणं मौनमपण्डितानाम्''–नीतिशतकम् 7 से
* 'रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय'– (मेघदूतम् 20) से

अतः विकल्प `B' सही है।

2. 'निराश्रया हन्त! हता मनस्विता' यह किसकी उक्ति है? **TGT-1999**

(A) वनेचर की **(B) द्रौपदी की**
(C) युधिष्ठिर की (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या

* 'वसूपमानस्य वसूनि मेदिनी'– वनेचर
* 'निराश्रया हन्त! हता मनस्विता' (किरातार्जुनीयम् 1/43)– द्रौपदी युधिष्ठिर को उलाहना देते हुए कहती है कि–यदि आप जैसे लोग दुःसह अपमान को सहन कर लेंगे, तो मानवता आश्रयहीन होकर नष्ट हो जायेगी।
* किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में युधिष्ठिर की एक भी उक्ति नहीं है। वह केवल श्रोता है। **अतः विकल्प `B' सही है।**

3. ''सदानुकूलेषु हि कुर्वते रतिं, नृपेष्वमात्येषु च सर्वसम्पदः'' यह किसके द्वारा कहा गया है? **TGT-1999**

(A) द्रौपदी द्वारा **(B) वनेचर द्वारा**
(C) दुर्योधन द्वारा (D) युधिष्ठिर द्वारा

व्याख्या

* ''विजित्य यः प्राज्यमयच्छदुत्तरान्, कुरूनकुप्यं वसु वासवोपमः''–द्रौपदी द्वारा
* ''सदानुकूलेषु हि कुर्वते रतिं, नृपेष्वमात्येषु च सर्वसम्पदः'' (किरात. 1/5)–प्रस्तुत पद्य

में वनेचर युधिष्ठिर से कहता है कि राजाओं और मन्त्रियों के परस्पर अनुकूल होने पर राज्य में सारी समृद्धियाँ अनुराग करती हैं।

* किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में दुर्योधन और युधिष्ठिर के द्वारा एक भी उक्ति नहीं कही गयी है। * प्रथमसर्ग में केवल वनेचर एवं द्रौपदी की उक्ति है।

अतः विकल्प `B' सही है।

4. 'स चिन्तयत्येव भियस्त्वदेष्यतीः, अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता' यह किसके विषय में कहा गया है? **TGT-1999**

(A) दुर्योधन के विषय में (B) वनेचर के विषय में
(C) युधिष्ठिर के विषय में (D) दुःशासन के विषय में

व्याख्या

* 'स चिन्तयत्येव भियस्त्वदेष्यतीः, अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता' (किरातार्जुनीयम् 1/23)– वनेचर, युधिष्ठिर से कहता है कि–वह (दुर्योधन) आप की ओर से आने वाली विपत्तियों को सोचता ही है (क्योंकि) अहो! बलशाली से विरोध करना दुःखमय परिणाम वाला होता है। इसलिए यह कथन दुर्योधन के विषय में कहा गया है।
* 'प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः'–वनेचर के विषय में
* 'मृगद्विजालूनशिखेषु बर्हिषाम्' युधिष्ठिर के विषय में
* 'निधाय दुःशासनमिद्धशासनः' दुःशासन की चर्चा

अतः विकल्प `A' सही है।

5. 'अदेवमातृकाः'' शब्द का प्रयोग किस ग्रन्थ में है? **TGT-1999**

(A)किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में
(B)अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में
(C) उत्तररामचरितम् के तृतीय अङ्क में
(D) कादम्बरी (शुकनासोपदेश) में

व्याख्या

* 'वितन्वति क्षेममदेवमातृकाश्चिराय तस्मिन् कुरवश्चकासति' (किरातार्जुनीयम् 1/17) प्रस्तुत पद्य में 'अवेदमातृकाः' शब्द का प्रयोग हुआ है जिसका अर्थ है–वर्षा के जल पर निर्भर न रहने वाले (कुरुदेशवासी)।
* 'क्षौमं' = रेशमीवस्त्र (अभिज्ञानशाकुन्तलम् 4/5)
* 'स्तनयित्नोः'=बादल के (उत्तररामचरितम् 3/7)
* 'अनार्या'–लक्ष्मी के लिए आया है– कादम्बरी शुकनासोपदेश में।

अतः विकल्प `A' सही है।

6. किरातार्जुनीयम् महाभारत के किस पर्व से लिया गया है? **TGT-2001**

(A) वनपर्व से (B) आदिपर्व से
(C) भीष्मपर्व से (D) सभापर्व से

व्याख्या

ग्रन्थ		**उपजीव्य**
(A) किरातार्जुनीयम्	–	वनपर्व (महाभारत)
(B) अभिज्ञानशाकुन्तलम्	–	आदिपर्व (महाभारत)
(C) गीता	–	भीष्मपर्व (महाभारत)
(D) शिशुपालवधम्	–	सभापर्व (महाभारत)

अतः विकल्प (A) सही है।

7. किरातार्जुनीयम् में कुल कितने सर्ग हैं? **TGT-2001**

(A) 18 (B) 19
(C) 20 (D) 22

व्याख्या

महाकाव्य सर्ग		**महाकाव्य सर्ग**
(A) किरातार्जुनीयम्	–	18
(B) रघुवंशमहाकाव्यम्	–	19
(C) शिशुपालवधम्	–	20
(D) नैषधीयचरितम्	–	22

अतः विकल्प (A) सही है।

8. 'निगूढतत्त्वं नयवर्त्म विद्विषाम्' –
यह उक्ति किसकी है? **TGT-2001**

(A) वनेचर की (B) दुर्योधन की
(C) द्रौपदी की (D) युधिष्ठिर की

व्याख्या

* 'निगूढतत्त्वं नयवर्त्म विद्विषाम्' (किरात. 1/6)– वनेचर, युधिष्ठिर से कहता है कि – गुप्त रहस्यों वाला नीतिमार्ग जो मेरे द्वारा जाना गया वह आपका प्रभाव है।
* 'शमीतरुं शुष्कमिवाग्निरुच्छिखः' – द्रौपदी

नोट – किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में दुर्योधन एवं युधिष्ठिर की एक भी उक्ति नहीं है।

अतः विकल्प (A) सही है।

9. 'तथापि वक्तुं व्यवसाययन्ति मां निरस्तनारीसमया दुराधयः'– यह श्लोकांश किस ग्रन्थ से लिया गया है? **TGT-2001**

(A) मेघदूतम् से **(B) किरातार्जुनीयम् से**
(C) नीतिशतकम् से (D) शिवराजविजय से

व्याख्या–
* 'ह्रीमूढानां भवति विफलप्रेरणा चूर्णमुष्टिः'–(उत्तरमेघ)
* 'तथापि वक्तुं व्यवसाययन्ति मां, निरस्तनारीसमया दुराधयः (किरात. 1/28)– प्रस्तुत पद्य में द्रौपदी युधिष्ठिर से कहती है कि – नारी की मर्यादा को नष्ट करने वाली दुष्ट मनोव्यथाएँ मुझे कुछ कहने के लिए उद्यत कर रही हैं।
* 'दुर्जनः परिहर्तव्यो विद्ययाऽलंकृतोऽपि सन्' – (नीतिशतकम्)
* 'सत्यः पात्यन्ते, सन्तश्च सन्ताप्यन्ते'–(शिवराजविजयम्) **अतः विकल्प (B) सही है।**

10. ''स वर्णिलिङ्गी विदितः समाययौ युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचरः'' – इस श्लोक में 'वर्णिलिङ्गी' शब्द का अर्थ है? **TGT-2003**

(A) ब्रह्मचारी (B) ब्राह्मण
(C) राजा लोग (D) आत्मीयजन

व्याख्या

(A) वर्णिलिङ्गी – ब्रह्मचारी (B) द्विजः – ब्राह्मण
(C) क्षितीशाः – राजा लोग (D) परेतरान् – आत्मीयजन

अतः विकल्प (A) सही है।

11. 'किरातार्जुनीयम्' काव्य में दुर्योधन अपनी श्रेष्ठता प्रदर्शित करने के लिए जो आचरण करता है वह आचरण/नीति निर्धारित है – **TGT-2003**

(A) बृहस्पति के द्वारा (B) नारद के द्वारा
(C) मनु के द्वारा (D) कामन्दक के द्वारा

व्याख्या – ''कृतारिषड्वर्गजयेन मानवीमगम्यरूपां पदवीं प्रपित्सुना'' (किरात. 1/9) अर्थात् छः शत्रुओं के समुदाय पर विजय प्राप्त करने वाला वह दुर्योधन मनु द्वारा प्रतिपादित आचरण का पालन करता है। **अतः विकल्प (C) सही है।**

12. दुर्योधन कुरु की प्रजा को प्रसन्न करने के लिए जो विशेष व्यवस्था करता है, वह सम्बन्धित है – **TGT-2003**

(A) करों को उदार बनाने में
(B) उपहार बाँटने में
(C) कृष्ण के साथ सम्बन्धों को सुधारने में
(D) सिंचाई व्यवस्था को उन्नत करने में

व्याख्या–
'वितन्वति क्षेममदेवमातृकाश्चिराय तस्मिन् कुरवश्चकासति' (किरात. 1/17) अर्थात् वर्षा के जल पर ही निर्भर न रहने वाले कुरुदेशवासी (नदी, नहर से सिंचाई करने की व्यवस्था दुर्योधन द्वारा की गई है) धान्य आदि सम्पत्ति को धारण करते शोभित होते हैं।
अतः विकल्प (D) सही है।

13.'मखेष्वखिन्नोऽनुमतः पुरोधसा, धिनोति हव्येन हिरण्यरेतसम्' – प्रस्तुत श्लोक में 'हिरण्यरेतसम्' का अर्थ है? **TGT-2003**
(A) अग्नि (B) इन्द्र
(C) कुबेर (D) ब्रह्मा

व्याख्या – वनेचर, दुर्योधन के विषय में कहता है कि – पुरोहित की आज्ञा के अनुसार बिना थके हुए यज्ञों में हव्य के द्वारा अग्नि को प्रसन्न करता है। (किरात. 1/22)

शब्द		**अर्थ**			
(A) हिरण्यरेताः	–	अग्नि	(B) वासवः	–	इन्द्र
(C) वसुः	–	कुबेर	(D) स्रष्टा	–	ब्रह्मा

अतः विकल्प (A) सही है।

14.किरातार्जुनीयम् में दुर्योधन की तुलना की गयी है? **TGT-2004**
(A) उरग से (B) शुक से
(C) द्विप से (D) सिंह से

व्याख्या
''स दुःसहान्मन्त्रपदादिवोरगः'' (किरात-1/24) के अनुसार दुर्योधन की तुलना उरग (साँप) से की गयी है। **अतः विकल्प `A' सही है।**

15.किरातार्जुनीयम् में गुप्तचर किस वेष में जाता है? **TGT-2004**
(A) सैनिक (B) संन्यासी
(C) ब्रह्मचारी (D) मन्त्री

व्याख्या–'स वर्णिलिङ्गी विदितः समाययौ'(किरात० 1/1) अर्थात् वह ब्रह्मचारी का वेश धारण करने वाला वनेचर सारा वृत्तान्त जानकर लौट आया।
अतः विकल्प 'C' सही है।

16.द्वैतवन में गुप्तचर किसके पास लौट आया? **TGT-2004**
(A) दुर्योधन **(B) युधिष्ठिर**
(C) कृष्ण (D) भीष्म

व्याख्या–'स वर्णिलिङ्गी विदितः समाययौ, युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचरः'(किरात० 1/1) अर्थात् ब्रह्मचारी का वेश धारण करने वाला वनेचर सारा वृत्तान्त जानकर द्वैतवन में युधिष्ठिर के पास लौट आया। **अतः विकल्प `B' सही है।**

17. 'प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः'–यहाँ 'मादृशां' से तात्पर्य है? **TGT-2004**

(A) भीम (B) युधिष्ठिर
(C) गुप्तचर (D) द्रौपदी

व्याख्या– 'प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः' (किरात० 1/25) प्रस्तुत पंक्ति में वनेचर युधिष्ठिर से कहता है कि–हम जैसों की वाणी केवल बात बताने वाली है। **अतः विकल्प `C' सही है।**

18. धन जीतकर युधिष्ठिर को कौन देता था? **TGT-2004**

(A) भीम (B) नकुल
(C) सहदेव **(D) अर्जुन**

व्याख्या–''विजित्य यः प्राज्यमयच्छदुत्तरान्, कुरूनकुप्यं वसु वासवोपमः'' (किरात० 1/35) द्रौपदी के इस कथन से ज्ञात होता है, कि अर्जुन ने उत्तर कुरु प्रदेश को जीतकर प्रचुर मात्रा में सोना-चाँदी रूपी धन युधिष्ठिर को दिया था। **अतः विकल्प `D' सही है।**

19. ''विचित्ररूपाः खलु चित्तवृत्तयः''– **TGT-2004**

यह सुभाषित किस ग्रन्थ से है?

(A) मेघदूतम् से **(B) किरातार्जुनीयम् से**
(C) उत्तररामचरितम् से (D) शिवराजविजय से

व्याख्या

* ''एकः सूते सकलमबलामण्डनं कल्पवृक्षः''–मेघदूतम् से
* ''विचित्ररूपाः खलु चित्तवृत्तयः''–किरातार्जुनीयम् से
* ''ननु लाभो हि रुदितम्''–उत्तररामचरितम् से
* ''कार्यं वा साधयेयं देहं वा पातयेयम्''–शिवराजविजय से।

अतः विकल्प `B' सही है।

20. 'किरातार्जुनीयम्' ग्रन्थ में किस विषय का चमत्कारित्व है? **TGT-2004**

(A) अर्थगौरव का (B) उपमा का
(C) पदलालित्य का (D)उपर्युक्त तीनों का

व्याख्या – किरातार्जुनीयम् अर्थगौरव के लिए प्रसिद्ध है।

	कवि		**प्रसिद्धि**
(A)	भारवि	–	अर्थगौरव
(B)	कालिदास	–	उपमा
(C)	दण्डी	–	पदलालित्य
(D)	माघ	–	अर्थगौरव, उपमा, पदलालित्य

अतः विकल्प (A) सही है।

21. 'प्रजासु वृत्तिं यमयुङ्क्त वेदितुम्' – **TGT-2004**

यह श्लोकांश कहाँ से उद्धृत है?

(A) किरातार्जुनीयम् से (B) प्रतिमानाटकम् से

(C) मालविकाग्निमित्रम् से (D) शिशुपालवधम् से

व्याख्या – 'प्रजासु वृत्तिं यमयुङ्क्त वेदितुम्' (किरात. 1/1) अर्थात् प्रजाओं के व्यवहार को जानने के लिए युधिष्ठिर ने जिसको (वनेचर) नियुक्त किया था, वह द्वैतवन में युधिष्ठिर के पास लौट आया। **अतः विकल्प (A) सही है।**

22. 'वनेचर' शब्द का संस्कृत प्रतिशब्द होगा? **TGT-2004**

(A) ब्रह्मचारी **(B) गुप्तचर**

(C) वर्णिलिङ्गी (D) दूत

व्याख्या – वने चरतीति वनेचरः (वन में विचरण करने वाला) किरातार्जुनीयम् में 'वनेचर' शब्द गुप्तचर के लिए प्रयुक्त है। **अतः विकल्प (B) सही है।**

23. 'किरातार्जुनीयम्' में अर्जुन को कौन-सा **TGT-2004**

प्रसिद्ध अस्त्र प्राप्त हुआ है?

(A) गाण्डीव **(B) पाशुपतास्त्र**

(C) अग्निबाण (D) जृम्भकास्त्र

व्याख्या –

* किरातार्जुनीयम् के 18 वें सर्ग में अर्जुन को शिव से 'पाशुपत अस्त्र' की प्राप्ति होती है।
* 'गाण्डीव' अर्जुन के धनुष का नाम है।
* 'अग्निबाण' अग्निदेवता से सम्बन्धित है। * 'जृम्भकास्त्र' कुश और लव को जन्मजात प्राप्त था। **अतः विकल्प (B) सही है।**

24. 'किरातार्जुनीयम्' में किरात है? **TGT-2004**

(A) गणेश **(B) शिव**

(C) राहु (D) युधिष्ठिर

व्याख्या – किरातार्जुनीयम् में किरातवेशधारी भगवान् 'शिव' हैं। जिनका अर्जुन के साथ इन्द्रकील पर्वत पर घनघोर युद्ध होता है। और बाद में प्रसन्न होकर वह अर्जुन को 'पाशुपत अस्त्र' प्रदान करते हैं। **अतः विकल्प (B) सही है।**

25. ''सहसा विदधीत न क्रियाम्'' **TGT-2004**

इस वाक्य का हिन्दी में अनुवाद होगा?

(A) हठपूर्वक कार्य करें (B) हठपूर्वक कार्य न करें

(C) सहसा कार्य करें **(D) सहसा कार्य न करें**

व्याख्या – 'सहसा विदधीत न क्रियाम्' – यह भारवि की उक्ति है, जिसका अर्थ है– अचानक (सहसा) कार्य न करें। **अतः विकल्प (D) सही है।**

26. 'किरातार्जुनीयम्' में दुर्योधन की शासन व्यवस्था जानने के लिए किसे भेजा गया था? **TGT-2004**

(A) भीम को (B) अर्जुन को
(C) सहदेव को **(D) वनेचर को**

व्याख्या – भारवि कृत 'किरातार्जुनीयम्' में दुर्योधन की शासन व्यवस्था को जानने के लिए युधिष्ठिर ने वनेचर को नियुक्त किया था। ''श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीं''.... 'युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचरः' (किरात0 1/1) **अतः विकल्प (D) सही है।**

27. ''नारिकेलफलसम्मितं वचः'' किस कवि के बारे में कहा गया है? **TGT-2004, 2009**

(A) कालिदास **(B) भारवि**
(C) भवभूति (D) बाणभट्ट

व्याख्या

* 'कविकुलगुरुः कालिदासो विलासः' कालिदास के बारे में जयदेव की प्रशस्ति है।
* 'नारिकेलफलसम्मितं वचः' – भारवि के विषय में मल्लिनाथ की प्रशस्ति है।
* 'साम्बा पुनातु भवभूतिपवित्रमूर्तिः'–भवभूति
* 'वश्यवाणी कविचक्रवर्ती' – बाणभट्ट के विषय में हर्षवर्धन की प्रशस्ति है।

अतः विकल्प (B) सही है।

28. 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः'– यह उक्ति किसकी है? **TGT-1999, 2001, 2004**

(A) वनेचर की (B) द्रौपदी की
(C) युधिष्ठिर की (D) दुर्योधन की

व्याख्या– किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग में
वनेचर की उक्ति - (1) प्रवक्तुमिच्छन्ति मृषा हितैषिणः (1/2)
(2) हितं मनोहरि च दुर्लभं वचः (1/4)
द्रौपदी की उक्ति = पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम् (1/41)
दुर्योधन, युधिष्ठिर दोनों लोगों की उक्ति नहीं है। **अतः विकल्प (A) सही है।**

29. किरातार्जुनीयम् में 'अदेवमातृका' कौन है? **TGT-2005**

(A) नदी जलाशय एवं नहरों से सिंचाई करने वाले
(B) बादलों की वर्षा पर निर्भर रहने वाले
(C) देवताओं की कृपा प्राप्ति के लिए यज्ञानुष्ठान करने वाले
(D) राक्षसी शक्तियों के भरोसे कार्य सिद्धि करने वाले

व्याख्या–

* ''वितन्वति क्षेममदेवमातृकाश्चिराय तस्मिन् कुरवश्चकासति'' (किरात० 1/17) अर्थात् वर्षा के जल पर ही निर्भर न रहने वाले कुरुदेशवासी (नदी, जलाशय, एवं नहरों से सिंचाई करने वाले) अदेवमातृक हैं।
* नदी, जलाशय एवं नहरों से सिंचाई करने वालों को अदेवमातृक कहा जाता है।
* वर्षा के जल पर निर्भर रहने वाले देवमातृक की श्रेणी में आते हैं।

अतः विकल्प (A) सही है।

30. वनेचर की बात सुनने के बाद युधिष्ठिर कहाँ पहुँचे? **TGT-2005**

(A) अपने विश्रामगृह में **(B) द्रौपदी के समीप**
(C) व्यास के समीप (D) हिमालय पर्वतपर

व्याख्या– * 'प्रविश्य कृष्णासदनं महीभुजा, तदाचचक्षेऽनुज-सन्निधौ वचः' अर्थात् राजा युधिष्ठिर वनेचर से सारा समाचार जानकर द्रौपदी के आवास में प्रविष्ट होकर छोटे भाइयों के समीप सम्पूर्ण वृत्तान्त द्रौपदी से कहते हैं।–(किरात० 1/26) * यहाँ 'कृष्णा' शब्द द्रौपदी के लिए प्रयुक्त है। **अतः विकल्प (B) सही है।**

31. किस प्रकार के वचन दुर्लभ होते हैं? **TGT-2005**

(A) प्रिय किन्तु असत्य **(B) हितकारी और मनोहर**
(C) हानिकर एवं कठोर (D) सत्य और अप्रिय

व्याख्या– ''हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः'' (किरात० 1/4) वनेचर युधिष्ठिर से कहता है कि हितकारी और मनोहर (प्रिय) वचन दुर्लभ होते हैं। **अतः विकल्प (B) सही है।**

32. 'कथं त्वमेतौ धृतिसंयमौ यमौ विलोकयन्नुत्सहसे न बाधितुम्' इस श्लोक में 'धृतिसंयमौ' किस युग्म के लिए प्रयुक्त है? **TGT-2005**

(A) राम-लक्ष्मण **(B) नकुल-सहदेव**
(C) भीम-अर्जुन (D) बलराम-कृष्ण

व्याख्या– यह श्लोकांश द्रौपदी का कथन है जिसमें युधिष्ठिर को लक्ष्य करके वह कहती है कि–इन दोनों (नकुल/सहदेव) को देखते हुए आप धैर्य और संयम छोड़ने के लिए क्यों नहीं साहस करते? (किरात० 1/36) **अतः विकल्प (B) सही है।**

33. महापुरुषों के साथ कैसा विरोध भी अच्छा होता है? **TGT-2005**

(A) महापुरुषों को पराजित करने वाला
(B) धन-सम्पत्ति दिलाने वाला
(C) उन्नति कराने वाला
(D) मित्रता बढ़ाने वाला

व्याख्या– ''समुन्नयन्भूतिमनार्यसङ्गमाद्वरं, विरोधोऽपि समं महात्मभिः!'' अर्थात् ऐश्वर्य को बढ़ाते हुए मनुष्य के लिए नीचों के संग की अपेक्षा महापुरुषों के साथ विरोध करना भी अच्छा (उन्नति कराने वाला) होता है। (किरात० 1/8)

अतः विकल्प (C) सही है।

34. दुर्योधन यज्ञ कार्य में कैसे लगा रहता है? **TGT-2005**
(A) चारों ओर सैनिक नियुक्त करके
(B) शत्रुओं को कैद करके
(C) मित्रों को उपकृत करके
(D) दुःशासन को युवराज पद पर बैठा करके

व्याख्या– 'स यौवराज्ये नवयौवनोद्धतं विधाय दुःशासनमिद्धशासनः' (किरात 1/22) नवयौवन के कारण अति गर्विष्ठ दुःशासन को युवराज के पद पर नियुक्त कर पुरोहित की आज्ञा के अनुसार बिना थके हुए यज्ञों में हव्य के द्वारा अग्नि को दुर्योधन प्रसन्न करता है। **अतः विकल्प (D) सही है।**

35. महाकवि भारवि किस शैली के प्रवर्तक माने जाते हैं? **TGT-2005**
(A) सरल (B) कठोर
(C) अर्थगौरव (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या– *महाकवि भारवि अर्थगौरव शैली के प्रवर्तक माने जाते हैं यथा– उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्। दण्डिनः पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयो गुणाः''– उद्भट। **अतः विकल्प (C) सही है।**

36. दुर्योधन कब भयभीत हो जाता है? **TGT-2005**
(A) श्रीकृष्ण की माया शक्ति सोचकर **(B) युधिष्ठिर का नाम सुनकर**
(C) पाण्डवों की दैवीय शक्ति से (D) विदुर के उपदेश सुनकर

व्याख्या– ''तवाभिधानाद् व्यथते नताननः स दुःसहान्मन्त्रपदादिवोरगः।'' अर्थात् अति असह्य मन्त्रपद रूप आपके (युधिष्ठिर) नाम से तथा अर्जुन के पराक्रम को स्मरण करके नीचे मुख किए (वह दुर्योधन) पीड़ा का अनुभव करता है। –(किरात 1/24) **अतः विकल्प (B) सही है।**

37. वनेचर किस वन में युधिष्ठिर के पास आया? **TGT-2009**
(A) विन्ध्याटवी में (B) दण्डकारण्य में
(C) द्वैतवन में (D) पञ्चवटी में

व्याख्या– * ''स वर्णिलिङ्गी विदितः समाययौ युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचरः।'' (किरात० 1/1) अर्थात् वह ब्रह्मचारी का वेश धारण करने वाला वनेचर सारा वृत्तान्त जानकर द्वैतवन में युधिष्ठिर के पास लौट आया। **अतः विकल्प (C) सही है।**
* विन्ध्याटवी' का वर्णन कादम्बरी में है, तथा दण्डकारण्य एवं पञ्चवटी का वर्णन उत्तररामचरितम् में है।

38. 'कुरूणामधिपः' का तात्पर्य है? **TGT-2009**
(A) अर्जुन (B) भीम
(C) दुर्योधन (D) दुःशासन

व्याख्या–
* 'श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीं' (किरात० 1/1) अर्थात् कुरुदेश के राजा (दुर्योधन) के प्रजापालन के व्यवहार को जानने के लिए........।

* यहाँ 'कुरूणामधिपः' शब्द दुर्योधन के लिए आया है। भारवि दुर्योधन के लिए सुयोधन शब्द का भी प्रयोग करते हैं। **अतः विकल्प (C) सही है।**
* किरातार्जुनीयम् में 'वृकोदरः' शब्द भीम के लिए तथा 'धनञ्जयः' शब्द अर्जुन के लिए प्रयुक्त है।

39. 'महीभुजे' में कौन-सी विभक्ति है? **TGT-2009**

(A) प्रथमा **(B) चतुर्थी**
(C) षष्ठी (D) सप्तमी

व्याख्या– * ''कृतप्रणामस्य महीं महीभुजे, जितां सपत्नेन निवेदयिष्यतः'' (किरात० 1/2) अर्थात् प्रणाम करने के बाद शत्रु द्वारा जीती गई पृथ्वी का वृत्तान्त महाराज युधिष्ठिर से वर्णन करते हुए .....।

* यहाँ 'महीभुजे' में चतुर्थी विभक्ति का विधान –''क्रियार्थोपपदस्य च कर्मणि स्थानिनः'' सूत्र से हुआ है। **अतः विकल्प (B) सही है।**

40. किरातार्जुनीयम् का प्रथम पद्य किस छन्द में है? **TGT-2009**

(A) वंशस्थ (B) स्रग्धरा
(C) अनुष्टुप् (D) मन्दाक्रान्ता

व्याख्या

(A) 'श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीं'–किरातार्जुनीयम् के इस पद्य में वस्तुनिर्देशात्मक मङ्गलाचरण है जिसमें 'वंशस्थ छन्द' है।

(B) ''या सृष्टिः स्रष्टुराद्या वहति विधिहुतं या हविर्या च होत्री'' अभिज्ञानशाकुन्तलम् के इस पद्य में आशीर्वादात्मक मङ्गलाचरण है जिसमें स्रग्धराछन्द है।

(C) 'नत्त्वा सरस्वतीं देवीं शुद्धां गुण्यां करोम्यहम्'–लघुसिद्धान्तकौमुदी के इस पद्य में वस्तुनिर्देशात्मक/नमस्कारात्मक मङ्गलाचरण और अनुष्टुप् छन्द है।

(D) 'कश्चित् कान्ताविरहगुरुणा स्वाधिकारात्प्रमत्तः''–मेघदूतम् के इस पद्य में वस्तुनिर्देशात्मक मङ्गलाचरण है जिसमें मन्दाक्रान्ता छन्द है। **अतः विकल्प (A) सही है।**

41. ''सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः'' **TGT-2009**

किस कवि का प्रिय श्लोक है?

(A) भारवि का (B) कालिदास का
(C) बाणभट्ट का (D) माघ का

व्याख्या– 'सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः (बिना विचार किये किसी भी कार्य को सहसा नहीं करना चाहिए) यह भारवि का प्रिय श्लोक है।

अतः विकल्प (A) सही है।

42. 'किरातार्जुनीयम्' के प्रत्येक सर्ग का अन्तिम पद है? **TGT-2009**

(A) लक्ष्मी (B) विष्णु
(C) शिव (D) श्री

व्याख्या– * ''दिनकृतमिव लक्ष्मीस्त्वां समभ्येतु भूयः'' (किरात0 1/46) किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग की अन्तिम पंक्ति है, इसमें 'लक्ष्मी' पद का प्रयोग हुआ है।
* इसीप्रकार किरातार्जुनीयम् के प्रत्येकसर्ग का अन्तिम पद लक्ष्मी है।
अतः विकल्प (A) सही है।

43. ''नारिकेलफलसम्मितं वचः'' **TGT-2004, 2009**

किस कवि के बारे में कहा जाता है?

(A) महाकवि बाण (B) कालिदास
(C) भास **(D) भारवि**

व्याख्या– प्रसिद्ध टीकाकार मल्लिनाथ ने भारवि की रचना की उपमा नारियल के फल से दी है। जो ऊपर से कठोर, किन्तु अन्दर से कोमल और सरस होता है। ''नारिकेलफलसम्मितं वचो भारवेः सपदि तद् विभज्यते''–मल्लिनाथ।
अतः विकल्प (D) सही है।

44. 'शमेन सिद्धिं मुनयो न भूभृतः' **TGT-2009**

यह कथन किसका है।

(A) द्रौपदी का (B) वनेचर का
(C) दुर्योधन का (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या– प्रस्तुत सूक्ति में द्रौपदी, युधिष्ठिर को उलाहना देते हुए कहती है कि– निष्काम तपस्वीजन शान्ति के द्वारा (काम, क्रोध आदि) शत्रुओं को जीतकर सिद्धि प्राप्त करते हैं, राजा नहीं। (किरात0 1/42) **अतः विकल्प (A) सही है।**

45. 'भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः' पंक्ति का भावसाम्य **TGT-2011**

निम्नलिखित में से किसके साथ बैठता है?

(A) जैसी करनी, वैसी भरनी
(B) जैसे के संग तैसा
(C) जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरत देखी तिन तैसी
(D) इनमें से किसी के साथ नहीं

व्याख्या – द्रौपदी युधिष्ठिर को शत्रुओं के प्रति उत्तेजित करते हुए कहती हैं कि – मूढबुद्धि वाले वे लोग पराभव प्राप्त करते हैं, जो मायावियों के विषय में स्वयं मायावी नहीं होते। **व्रजन्ति वे मूढधियः पराभवं भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः॥** (कि. 1/30) स्पष्ट है कि इन पंक्तियों का भावसाम्य ''जैसे के संग तैसा'' से मिलता है,
अतः विकल्प (B) सही है।

46. भारवि का आश्रयदाता था? **TGT-2010**

(A) पुलकेशिन का भाई (B) हर्ष
(C) यशोवर्मा (D) पुलकेशिन

कवि		राज्याश्रय
* भारवि	–	पुलकेशिन द्वितीय का भाई (विष्णुवर्धन)
* बाणभट्ट	–	सम्राट् हर्षवर्द्धन
* भवभूति	–	यशोवर्मा
* रविकीर्ति	–	पुलकेशिन द्वितीय

अतः विकल्प (A) सही है।

47. भारवि थे– **TGT-2010**

(A) दाक्षिणात्य (B) औदीच्य

(C) पश्चिमी भारत के (D) पूर्वी भारत के

व्याख्या– 'आतपत्र भारवि' दक्षिण भारत के एलिचपुर (अचलपुर) नामक स्थान के निवासी थे। अतः सभी विद्वान् उन्हें एक मत होकर दाक्षिणात्य मानते हैं।

अतः विकल्प (A) सही है।

48. किरातार्जुनीयम् का गुप्तचर किस वेष में हस्तिनापुर जाता है? **TGT-2010**

(A) संन्यासी (B) मन्त्री

(C) ब्रह्मचारी (D) सैनिक

व्याख्या– ''स वर्णिलिङ्गी विदितः समाययौ युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचरः।'' (किरात० 1/1) अर्थात् वह ब्रह्मचारी का वेश धारण करने वाला सारा वृत्तान्त जानकर द्वैतवन में युधिष्ठिर के पास लौट आया। **अतः विकल्प (C) सही है।**

49. ''कृतप्रणामः'' में कौन-सा समास है? **TGT-2010**

(A) तत्पुरुष (B) कर्मधारय

(C) द्वन्द्व **(D) बहुव्रीहि**

व्याख्या–

पद		समास
(A) **षड्वर्गः**	–	षष्ठीतत्पुरुष (षण्णां वर्गः)
(B) **सत्क्रिया**	–	कर्मधारय (सती क्रिया)
(C) **नक्तन्दिवम्**	–	द्वन्द्व (नक्तं च दिवा च)
(D) **कृतप्रणामः**	–	बहुव्रीहि (कृतः प्रणामः येन सः)

अतः विकल्प (D) सही है।

50. किस महाकाव्य के प्रत्येक सर्ग के अन्त में 'लक्ष्मी' शब्द का प्रयोग किया गया है? **TGT-2010**

(A) रघुवंशम् (B) शिशुपालवधम्

(C) किरातार्जुनीयम् (D) नैषधीयचरितम्

व्याख्या–

* कालिदास कृत रघुवंशमहाकाव्य 19 सर्गों तथा 1569 श्लोकों में विभक्त है।

* माघ कृत शिशुपालवधमहाकाव्य के प्रत्येक सर्ग का प्रारम्भ 'श्री' शब्द से और अन्त भी 'श्री' शब्द से होता है। इस पर मल्लिनाथ की 'सर्वङ्कषा' नाम की टीका है।
* किरातार्जुनीय महाकाव्य के प्रत्येक सर्ग का आरम्भ 'श्री' शब्द से तथा अन्त 'लक्ष्मी' शब्द से होता है। अतः इसे 'लक्ष्मीपदाङ्क' भी कहा जाता है। मल्लिनाथ ने इस पर 'घण्टापथ' नामक टीका लिखी है।
* श्रीहर्ष कृत 'नैषधीयचरितम्' 22 सर्गों तथा 2830 श्लोकों में विभक्त है इस महाकाव्य के नायक नल (धीरोदात्त कोटि) के हैं। इसके प्रत्येक सर्ग के अन्त में 'आनन्द' पद का प्रयोग है, अतः इसे ''आनन्दाङ्क महाकाव्य'' भी कहते हैं।

अतः विकल्प (C) सही है।

51. 'वीररस' प्रधानकाव्य है? **TGT-2010**

(A) उत्तररामचरितम् (B) नैषधीयचरितम्
(C) कुमारसम्भवम् **(D) किरातार्जुनीयम्**

व्याख्या

ग्रन्थ	**लेखक**	**प्रधानरस**
* उत्तररामचरितम्	भवभूति	करुणरस
* नैषधीयचरितम्	श्रीहर्ष	शृङ्गाररस
* कुमारसम्भवम्	कालिदास	शृङ्गाररस
* किरातार्जुनीयम्	भारवि	वीररस

अतः विकल्प (D) सही है।

52. किरातार्जुनीयम् प्रथमसर्ग में सर्वाधिक प्रयुक्त छन्द में प्रयुक्त गण है– **TGT-2013**

(A) जगण तगण जगण रगण
(B) जगण तगण जगण दो गुरुवर्ण
(C) तगण तगण जगण गुरु गुरु
(D) तगण भगण जगण जगण गुरु गुरु

व्याख्या

(A) किरातार्जुनीयम् प्रथमसर्ग में कुल 46 श्लोक हैं। जिसके अन्तिम 46वें श्लोक में मालिनी छन्द, तथा 45वें श्लोक में पुष्पिताग्रा छन्द है। शेष प्रथम श्लोक से लेकर 44वें श्लोक तक वंशस्थ है। अतः किरातार्जुनीयम् प्रथमसर्ग में सर्वाधिक प्रयुक्त छन्द 'वंशस्थ' होगा। जिसका लक्षण है– ''जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ'' अर्थात् ''जगण तगण जगण रगण'' गणों वाला छन्द वंशस्थ कहा जाता है, इसके प्रत्येक चरण में 12 अक्षर होते हैं।

यथा– ''श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीम्'' (किरात० 1/1)

अतः विकल्प `A' सही है।

(B) ''जगण तगण जगण दो गुरुवर्ण'' से युक्त छन्द 'उपेन्द्रवज्रा' कहा जाता है, इसका लक्षण निम्नवत् है– ''उपेन्द्रवज्रा जतजास्ततो गौ''
अर्थात् उपेन्द्रवज्रा के प्रत्येक चरण में जगण, तगण, जगण तथा दो गुरु वर्ण होते हैं। इसके प्रत्येक चरण में 11 वर्ण होते हैं। यथा– ''त्वमेव माता च पिता त्वमेव''

(C) ''तगण, तगण, जगण गुरु गुरु'' – इन गणों से युक्त छन्द 'इन्द्रवज्रा' कहा जाता है– ''स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः'' इसके प्रत्येक चरण में 11वर्ण होते हैं।
यथा– ''अर्थो हि कन्या परकीय एव''

(D) ''तगण भगण जगण जगण गुरु गुरु'' इन गणों से युक्त छन्द को 'वसन्ततिलका' कहते हैं। इसका लक्षण है–
''उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः'' इसके प्रत्येक चरण में 14 वर्ण होते हैं। यथा–
''न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः'' – नीतिशतकम्

53. ''वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः'' **TGT-2013**

यह उक्ति किस ग्रन्थ में किसने कही है?

(A) शिवराजविजय में, सेनापति ने

(B) किरातार्जुनीय में, वनेचर ने

(C) किरातार्जुनीय में, युधिष्ठिर ने

(D) शिवराजविजय में, शिवाजी ने

व्याख्या

* एहि, एहि, समये समायातोऽसि (शिवराजविजय, चतुर्थनिःश्वास) आओ, आओ, ठीक समय पर आ गये – दुर्गाध्यक्ष (सेनापति)
* वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः (किरात0-1/8) – वनेचर
* युधिष्ठिर की किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में कोई कथन नहीं है।
* ''प्राणाः यान्तु न च धर्मः'' (शिवराजविजय द्वितीय निःश्वास) – शिववीरः (शिवाजी) अर्थात् प्राण भले ही चलें जाय, पर धर्म न जाय। **अतः विकल्प `B' सही है।**

54. किरातार्जुनीयम् (प्रथमसर्ग) के कथानक में किसका वर्णन नहीं है? **TGT-2013**

(A) द्वैतवन में पाण्डवों का निवास

(B) गुप्तचर द्वारा दुर्योधन का वृत्तान्त

(C) द्रौपदी का क्रोध

(D) द्रौपदी के क्रोध का युधिष्ठिर द्वारा समर्थन

व्याख्या

* ''स वर्णिलिङ्गी विदितः समाययौ युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचरः'' किरातार्जुनीयम् की इस पंक्ति से स्पष्ट है कि युधिष्ठिर आदि पाण्डव द्वैतवन में निवास करते थे।
* 'दुरोदरच्छद्मजितां समीहते, नयेन जेतुं जगतीं सुयोधनः' 'तवानुभावोऽयमवेदि यन्मया निगूढतत्त्वं नयवर्त्म विद्विषाम्' आदि पंक्तियों से स्पष्ट है कि वनेचर रूपी गुप्तचर द्वारा युधिष्ठिर दुर्योधन का वृत्तान्त जानते हैं।
* (i) नृपस्य मन्युव्यवसायदीपिनीः उदाजहार द्रुपदात्मजा गिरः, (ii) तथापि वक्तुं व्यवसाययन्ति मां निरस्तनारीसमया दुराधयः, इत्यादि कथनों से स्पष्ट है कि दुर्योधन के उत्कर्ष को सुनकर द्रौपदी द्वारा युधिष्ठिर के ऊपर क्रोध किया जाता है।
* द्रौपदी के क्रोध करने पर युधिष्ठिर न तो उसके क्रोध का समर्थन करते हैं और न ही विरोध। किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में युधिष्ठिर केवल एक शान्तचित्त श्रोता के रूप में पहले वनेचर द्वारा हस्तिनापुर का समाचार सुनते हैं, बाद में द्रौपदी की क्रोधपूर्ण फटकार। **अतः विकल्प `D' सही है।**

55. किरातार्जुनीयम् का नायक कौन है? **TGT-2013**

(A) युधिष्ठिर **(B) अर्जुन**
(C) शिव (किरातवेशधारी) (D) भीम

व्याख्या–

- किरातार्जुनीयम् महाकाव्य के नायक अर्जुन हैं, क्योंकि पाशुपतास्त्र की प्राप्ति इस ग्रन्थ का प्रयोजन है, और यह अस्त्र किरातवेशधारी शिव से अर्जुन को प्राप्त हुआ है। इन्द्रकील पर्वत पर तपस्या करने भी अर्जुन ही जाते हैं। किरातवेषधारी शिव से युद्ध भी अर्जुन ही करते हैं। इस ग्रन्थ का नामकरण भी किरातवेषधारी शिव और अर्जुन के नाम पर किया गया है इससे सिद्ध होता है कि इस महाकाव्य के नायक अर्जुन ही हैं।
- युधिष्ठिर पाँचों पाण्डवों में सबसे बड़े हैं और प्रथमसर्ग में वनेचर की बातों को सुनते हैं, किन्तु ये नायक नहीं हैं।
- किरातवेषधारी शिव किरातार्जुनीयम् के सहनायक हैं।
- भट्टनारायण विरचित वेणीसंहारम् के भीम धीरोद्धत कोटि के नायक हैं।

अतः विकल्प (B) सही है।

56. ''पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम्'' **TGT-2013**

यह वचन किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है–

(A) उत्तररामचरितम् (B) नीतिशतकम्
(C) किरातार्जुनीयम् (D) अभिज्ञानशाकुन्तलम्

ग्रन्थ **सूक्ति**

* उत्तररामचरितम् (2.26) - ''पुराभूतः शोको विकलयति मां नूतन इव''
* नीतिशतकम् (दैवपद्धति)-''प्रायो गच्छति यत्र भाग्यरहितः तत्रैव यान्त्यापदः''
* किरातार्जुनीयम् (1/41) -''पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम्'' (7/35)
* अभिज्ञानशाकुन्तलम्-''प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः, सरस्वती श्रुतमहतां महीयताम्''

अतः विकल्प `C' सही है।

57. किरातार्जुनीयम् का प्रधान रस क्या है? **TGT-2013**

(A) शृङ्गाररस (B) करुणरस
(C) वीररस (D) शान्तरस

व्याख्या–

* **शृङ्गाररस प्रधानग्रन्थ–**
(i) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (ii) नैषधीयचरितम्
(iii) मृच्छकटिकम् (iv) स्वप्नवासवदत्तम्
(v) रत्नावली
* **करुणरस प्रधानग्रन्थ–**
(i) उत्तररामचरितम् (ii) कुन्दमाला (iii) वाल्मीकीयरामायणम्
* **वीररस प्रधानग्रन्थ–**
(i) किरातार्जुनीयम् (ii) शिशुपालवधम्
(iii) शिवराजविजयः (iv) मुद्राराक्षसम्
(v) महावीरचरितम्
* **शान्तरस प्रधानग्रन्थ–**
(i) महाभारतम् (ii) बुद्धचरितम्
(iii) शारिपुत्रप्रकरणम्

अतः विकल्प `C' सही है।

58. किरातार्जुनीयम् शब्द में कौन सा तद्धित प्रत्यय लगता है? **TGT-2013**

(A) फ (B) घ
(C) ख **(D) छ**

व्याख्या–

किरातार्जुन + छ
किरातार्जुन + ईय (आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम्' किरातार्जुनीयम् से 'छ' के स्थान पर 'ईय' आदेश) **अतः विकल्प `D' सही है।**
(A) गार्ग्य + फ (आयन) = गार्ग्यायणः
(B) क्षत्र + घ (इय) = क्षत्रियः
(C) ग्राम + खञ् (ईन) = ग्रामीणः
(D) किरातार्जुन + छ (ईय) = किरातार्जुनीयम्

59. ''श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीम्'' **TGT-2014**
किस प्रकार का मङ्गलाचरण है-
(A) आशीर्वादात्मक (B) नमस्कारात्मक
(C) वस्तुनिर्देशात्मक (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

व्याख्या–

ग्रन्थ -उपास्य देवता-मंगलाचरण -छन्द
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् -अष्टमूर्तिशिव -आशीर्वादात्मक-स्रग्धरा
(B) कादम्बरी–त्रिगुणात्मक ब्रह्म – नमस्कारात्मक -वंशस्थ
(C) किरातार्जुनीयम् – मूलतः शैव – वस्तुनिर्देशात्मक – वंशस्थ
अतः विकल्प (C) सही है।

60. भारवि की शैली में कौन सा तत्त्व प्रधान है – **TGT-2014**
(A) ओजप्रधान्यता (B) वैदर्भीरीति की प्रधानता
(C) गौडीरीति की प्रधानता **(D) अर्थगौरवता**

व्याख्या –

ग्रन्थ/ग्रन्थकार				**विशेषताएँ**
(A) अनर्घराघव (मुरारि)	–	गौडीरीति,	–	ओजगुण
(B) अभिज्ञानशाकुन्तलम्	–	वैदर्भीरीति,	–	प्रसादगुण ''वैदर्भीरीतिसन्दर्भे कालिदासो विशिष्यते''
(C) वेणीसंहार	–	गौडीरीति,	–	ओजगुण
(D) किरातार्जुनीयम्	–	अर्थगौरवता,	–	रीतिवादी या अलंकृतकाव्यशैली के जन्मदाता ''भारवेरर्थगौरवम्''

अतः विकल्प (D) सही है।

61. 'अर्थगौरवता' का अर्थ है – **TGT-2014**
(A) गौरव गरिमा से युक्त बातें कहना
(B) शब्द से ज्यादा अर्थ पर जोर देना
(C) **थोड़े से शब्दों में ज्यादा अर्थ कह देना**
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

व्याख्या – समालोचकों ने कवियों की प्रशंसा में कहा है कि-
''उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्।
दण्डिनः पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयो गुणाः।।''

1. उपमा अलङ्कार की दृष्टि से कालिदास अद्वितीय कवि हैं।
2. अर्थगौरव अर्थात् थोड़े से शब्दों में ज्यादा अर्थ कह देना यह भारवि की विशेषता है।
3. पदों में लालित्य के लिए दण्डी प्रसिद्ध हैं।
4. महाकवि माघ में उपमा, अर्थगौरव और पदलालित्य-ये तीनों गुण विद्यमान हैं।

अतः विकल्प (C) सही है।

62.किरातार्जुनीयम् के रचनाकार हैं – **TGT-2014**

(A) भारवि (B) भवभूति

(C) कालिदास (D) श्रीहर्ष

व्याख्या –

ग्रन्थकार	**ग्रन्थ**	**शैली**
* भारवि	किरातार्जुनीयम्	पाण्डित्य
प्रधान	अलङ्कृत	शैली के जन्मदाता
* भवभूति	उत्तररामचरितम्	वैदर्भी
उत्तररामचरितम्	भवभूति गौड़ी	रीति के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं।

* कालिदास (i) रघुवंशम् (ii) कुमारसम्भवम् वैदर्भीरीतिसन्दर्भे कालिदासो विशिष्यते।
* श्रीहर्ष नैषधीयचरितम्

अतः विकल्प (A) सही है।

63.'किरातार्जुनीयम्' शीर्षक में प्रयुक्त **TGT-2014**

'किरात' शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है –

(A) चाण्डाल जाति के लिए

(B) किरात नामक पात्र के लिए

(C) शिव जो किरात वेषधारी हैं

(D) अर्जुन जो किरात वेषधारी हैं।

व्याख्या – 'किरातार्जुनीयम्' शीर्षक में प्रयुक्त 'किरात' शब्द भगवान् शिव के लिए प्रयुक्त हुआ है। नायक अर्जुन किरातवेषधारी भगवान् शिव से अमोघ 'पाशुपत अस्त्र' प्राप्त करता है, जो महाकाव्य का फल भी है।

* किरातश्च अर्जुनश्च इति किरातार्जुनौ (द्वन्द्व समास)
* किरातार्जुन + छ ''शिशुक्रन्दयमसभ द्वन्द्वेन्द्रजननादिभ्यश्छः''सूत्र से 'छ' प्रत्यय
* 'आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम्' सूत्र से 'छ' को 'ईय' आदेश होकर किरातार्जुनीय बना। ग्रन्थवाची शब्द होने के कारण नपुंसकलिङ्ग होकर 'किरातार्जुनीयम्' शब्द बना।
* मल्लिनाथ ने 'किरातार्जुनीयम्' की 'घण्टापथ' नामक टीका की है।
* इसका कथानक महाभारत के वनपर्व से लिया गया है।
* कुल 18 सर्ग हैं। 18वें सर्ग में अर्जुन को पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति होती है।
* भारवि दाक्षिणात्य थे। इनका समय छठीं शताब्दी उत्तरार्द्ध या सातवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध माना जाता है।
* 'स्फुटता न पदैरपाकृता न च न स्वीकृतमर्थगौरवम्' – किरातार्जुनीयम् (2/27)

अतः विकल्प (C) सही है।

64.'किरातार्जुनीयम्' के प्रथम सर्ग के आधार पर पाण्डव कहाँ निवास कर रहे थे। **TGT-2014**

(A) खाण्डववन में (B) अद्वैतवन में
(C) वृन्दावन में **(D) द्वैतवन में**

व्याख्या – भारवि विरचित 'किरातार्जुनीयम्' के प्रथमसर्ग के आधार पर पाण्डव द्वैतवन में निवास कर रहे थे –

श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीं
प्रजासु वृत्तिं यमयुङ्क्तवेदितुम्।
स वर्णिलिङ्गी विदितः समाययौ
युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचरः।।1/1

अतः विकल्प (D) सही है।

65.'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः' का अर्थ है – **TGT-2011**

(A) हितकारी वचन दुर्लभ होता है।
(B) मनोहारि वचन दुर्लभ होता है
(C) हितकारी और प्रियवचन दुर्लभ होता है
(D) दुर्लभ वचन ही हितकारी होता है।

व्याख्या – महाकवि भारवि वनेचर से युधिष्ठिर को लक्षित करके कहलवाते हैं कि–

क्रियासु युक्तैर्नृपचारचक्षुषो न
वञ्चनीयाः प्रभवोऽनुजीविभिः।
अतोऽर्हसि क्षन्तुमसाधुसाधु वा हितं
मनोहारि च दुर्लभं वचः।। (कि. 1/4)

हे राजन्! करणीय कार्यों में स्वामी द्वारा नियुक्त किये गये सेवकों को चाहिए कि वे गुप्तचररूपी नेत्रों वाले प्रभुओं को धोखा न दें। अतएव मेरे अप्रिय अथवा प्रिय कथन को आप सहन करें क्योंकि 'हितकारिणी के साथ ही साथ मनोहारिणी वाणी भी दुर्लभ होती है।' **अतः विकल्प (C) सही है।**

66.ब्रह्मचारी विप्र का वेषधारण करने वाला गुप्तचर था – **TGT-2011**

(A) यक्ष **(B) वनेचर**
(C) ब्राह्मण (D) वैश्य

व्याख्या –

* यक्ष – यक्ष कालिदास कृत 'मेघदूतम्' नामक खण्डकाव्य का नायक है।
* वनेचर – 'किरातार्जुनीयम्' में भारवि ने उस वर्णी या ब्रह्मचारी के लिङ्ग अर्थात् चिह्न (वेशभूषा) से युक्त व्यक्ति को वर्णिलिङ्गी कहा है। यह वनेचर के लिए प्रयुक्त हुआ है, जो युधिष्ठिर के गुप्तचर के रूप में ब्रह्मचारी के वेष में हस्तिनापुर जाता है। 'स वर्णिलिङ्गी विदितः समाययौ युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचरः।। (कि. 1/1)

* ब्राह्मण – संस्कृत रूपकों में विदूषक पात्र ब्राह्मण होता है।
* वैश्य – प्रकरण का नायक ब्राह्मण, मन्त्री अथवा वैश्य होता है।

अत: विकल्प (B) सही है।

67. 'वरं विरोधोऽपि समं महात्मभि:' के अनुसार खलजनों के सम्पर्क की अपेक्षा श्रेष्ठ होता है – **TGT-2011**

(A) साधुजनों का साथ **(B) साधुजनों का विरोध**
(C) दुष्टजनों का साथ (D) मूर्ख लोगों का विरोध

व्याख्या – किरातार्जुनीयम् में वनेचर युधिष्ठिर को बताता है कि कुटिल प्रवृत्तिवाला दुर्योधन आपको जीत लेने की लालसावश अपनी गुण सम्पत्ति से कीर्ति का विस्तार कर रहा है, क्योंकि ऐश्वर्य का अभ्युत्थान करने वाला, महापुरुषों के साथ किया गया विरोधभाव भी दुष्टों के संसर्ग की अपेक्षा अच्छा है।'

अत: विकल्प (B) सही है।

68. राजाओं का स्वभाव होता है – **TGT-2011**

(A) दुर्विज्ञेय (B) विज्ञेय
(C) अप्रत्यक्ष (D) प्रत्यक्ष

व्याख्या – वनेचर के लिए दुर्योधन की दुरुह नीतियों को समझना कोई सामान्य बात नहीं है, फिर भी इस दुष्कर कार्य को पूरा करने वाला अहङ्कारहीन वह वनेचर विनम्रतापूर्वक इस शत्रु राजनीति को जानने का श्रेय युधिष्ठिर को देता है।
'निसर्गदुर्बोधमबोधविक्लवा:क्व भूपतीनां चरितं क्व जन्तव:।
तवानुभावोऽयमवेदियन्मया निगूढतत्त्वं नयवर्त्म विद्विषाम्।। (कि.1/6)
कहाँ स्वाभाविक रूप से बहुत कठिनाई पूर्वक समझ में आने वाला राजाओं का चरित्र और अज्ञान से विकल मुझ जैसे प्राणी कहाँ? फिर भी जो मेरे द्वारा गुप्त रहस्यों वाला नीतिमार्ग जान लिया गया वह निश्चित रूप से आपका प्रभाव ही है। अत: "निसर्गदुर्बोधं.... भूपतीनां चरितम् " से स्पष्ट है कि राजाओं का स्वभाव ही दुर्विज्ञेय होता है।

विकल्प (A) सही है।.

69. 'प्रविश्य कृष्णासदनं महीभुजा' में कृष्णा का तात्पर्य है – **TGT-2011**

(A) कृष्ण से **(B) द्रौपदी से**
(C) कुन्ती से (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या – वार्ता का निवेदन करने के उपरान्त पारितोषिक लेकर वनेचर के चले जाने पर राजा युधिष्ठिर द्वारा द्रौपदी भवन में प्रवेश करके भाइयों के समीप यह वृत्तान्त वर्णित किया गया–
इतीरयित्वा गिरमात्तसत्क्रिये गतेऽथ पत्यौ वनसन्निवासिनाम्।
प्रविश्य कृष्णासदनं महीभुजा तदाचचक्षेऽनुजसन्निधौ वच:।। (कि. 1/26)
यहाँ कृष्णासदनम् = द्रौपदी के भवन में, महीभुजा = युधिष्ठिर के द्वारा, प्रविश्य = प्रवेश करके **अत: विकल्प (B) सही है।**

70. किरातार्जुनीयम् में सर्ग हैं- **UP TET-2013**

(A) उन्नीस **(B) अठारह**

(C) सत्रह (D) सोलह

व्याख्या-

ग्रन्थ		सर्ग		ग्रन्थकार
1. किरातार्जुनीयम्	-	18	-	भारवि
2. रघुवंशम्	-	19	-	कालिदास
3. कुमारसम्भवम्	-	17	-	कालिदास
4. शिशुपालवधम्	-	20	-	माघ
5. हरविजयम्	-	50	-	रत्नाकर
6. रावणवध (भट्टिकाव्य)	-	22	-	भट्टि
7. बुद्धचरितम्	-	28	-	अश्वघोष
8. नैषधीयचरितम्	-	22	-	श्रीहर्ष
9. जानकीहरणम्	-	20-25	-	कुमारदास
10. सौन्दरानन्दम्	-	18	-	अश्वघोष

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि किरातार्जुनीयम् महाकाव्य में 18 सर्ग हैं जो भारवि की रचना है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

71. अर्थगौरव के लिए प्रसिद्ध हैं- **UP TET-2013**

(A) भारवि (B) कालिदास

(C) बाणभट्ट (D) दण्डी

व्याख्या-

उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्।
दण्डिनः पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयो गुणाः॥

अर्थात् कालिदास उपमा के लिए, भारवि अर्थगौरव के लिए, दण्डी पदलालित्य के लिए एवं माघ उपमा, अर्थगौरव और पदलालित्य इन तीनों के लिए प्रसिद्ध हैं।

* बाणभट्ट के लिए प्रसिद्धि है- बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्। वाणी बाणो बभूव ह। कविताकामिनी कौतुकाय।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि अर्थगौरव के लिए भारवि प्रसिद्ध हैं। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

72. 'कीदृशं वचः दुर्लभम्' भवति— **UP TET-2014**

(A) सत्यम् (B) प्रियम्

(C) हितं मनोहारि च (D) मनोहारि

व्याख्या- उपर्युक्त पंक्ति भारवि द्वारा रचित किरातार्जुनीयम् महाकाव्य के प्रथमसर्ग से उद्धृत है जिसमें वनेचर दुर्योधन की राजव्यवस्था को जानकर वापस आकर युधिष्ठिर से कहता है-

क्रियासु युक्तैर्नृप चारचक्षुषो
न वञ्चनीयाः प्रभवोऽनुजीविभिः।
अतोऽर्हसि क्षन्तुमसाधु साधु वा
हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः॥ (किरात. 1/4)

कार्यों में नियुक्त किये गये अनुचरों के द्वारा गुप्तचररूपी नेत्रों वाले स्वामी लोग ठगे नहीं जाने चाहिये। प्रशंसा के द्वारा गुप्तचरों को अपने राजा को कभी भी ठगना नहीं चाहिए। इसलिए मेरा (वनेचर का) वचन अप्रिय हो अथवा प्रिय, आप क्षमा करने योग्य हैं क्योंकि परिणाम में कल्याण करने वाला तथा तुरन्त ही प्रिय मधुर लगने वाला वचन इस संसार में दुर्लभ होता है। **'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः'** अर्थात् हितकारी और मनोहारी वचन दुर्लभ होते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि 'हितकारी और मनोहारी वचन दुर्लभ होते हैं।' **अतः विकल्प 'C' सही है।**

73. किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग में प्रयुक्त छन्द है- **UP TET-2016**

(A) अनुष्टुप् (B) जगती
(C) वंशस्थ (D) उपजाति

व्याख्या-

- किरातार्जुनीयम् महाकवि भारवि की रचना है जिसमें 18 सर्ग हैं।
- किरातार्जुनीयम् महाकाव्य की गणना बृहत्त्रयी के अन्तर्गत की जाती है। बृहत्त्रयी के महाकाव्य हैं- किरातार्जुनीयम्, शिशुपालवधम्, नैषधीयचरितम्।
- किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में वंशस्थ छन्द का प्रयोग किया गया है- वंशस्थ छन्द का लक्षण है- जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ
- नैषधीयचरितम् और शिशुपालवध के प्रथमसर्ग में भी वंशस्थ छन्द का प्रयोग किया गया है।
- वाल्मीकि रामायण अनुष्टुप् छन्द में निबद्ध है।
- जगती छन्दों का प्रयोग प्रायः वेदों में हुआ है।
- नैषधीयचरितम् के द्वितीय सर्ग में उपजाति छन्द का प्रयोग है।

अतः विकल्प 'C' सही है।

74. 'किरातार्जुनीयम्' में अर्जुन भगवान् शङ्कर से किस अस्त्र की प्राप्ति करता है? **UP TET-2016**

(A) पाशुपत (B) चक्र
(C) गदा (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या-

- किरातार्जुनीयम् महाकाव्य में अर्जुन को 18वें सर्ग में शिव जी के द्वारा पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति होती है।

  'ज्वलदनलपरीतं रौद्रमस्त्रं दधानं धनुरुपपदमस्मै वेदमभ्यादिदेश'

  (किरात 18/44)
- उत्तररामचरितम् में राम के पुत्र होने के कारण लव को जृम्भक अस्त्र और वारुण अस्त्र प्राप्त होता है।
- उत्तररामचरितम् में ही लक्ष्मण के पुत्र चन्द्रकेतु के पास आग्नेय अस्त्र रहता है।
- हनुमान् जी के पास हमेशा गदा रहता था। इनका अस्त्र गदा ही था।
- विष्णु जी अपने हाथों में सुदर्शन नाम का चक्र लिये रहते थे। इसीलिये इन्हे 'चक्रपाणिः' भी कहा जाता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति अर्जुन को होती है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

75. ''पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम्'' इस सूक्ति के रचयिता हैं- **PGT-2002**

(A) कालिदास (B) माघ

(C) भारवि (D) भर्तृहरि

व्याख्या-

A. कालिदासकृत रघुवंश महाकाव्य के दूसरे सर्ग में नन्दिनी गाय की सेवा करने के विषय में राजा दिलीप कहते हैं कि- ''**स्ववीर्यगुप्ता हि मनोः प्रसूतिः।**'' रघुवंशम् (2/4) 'मनुवंशी अपनी रक्षा स्वयं करते हैं।'

B. शिशुपालवध महाकाव्य के प्रथमसर्ग में नारदमुनि श्रीकृष्ण से कहते हैं कि-

''**सतीव योषित्प्रकृतिः सुनिश्चला पुमांसमभ्येति भवान्तरेष्वपि॥**''

(शिशु. 1.72)

मनुष्य की प्रकृति सती स्त्री की भाँति अगले जन्म में इसी रूप से प्राप्त होती है।

C. द्रौपदी युधिष्ठिर से कहती हैं कि ''**पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम्।**'' (किरात. 1.41) 'स्वाभिमानी के लिए पराभव (पराजय) भी उत्सव के समान होता है।'

अतः विकल्प C सही है।

D. नीतिशतकम् के अर्थपद्धति में भर्तृहरि राजा को उपदेशित करते हुए कहते हैं-

''**नानाफलं फलति कल्पलतेव भूमिः।**''(नीति. श्लोक-38)

कल्पवृक्ष की भाँति भूमि अनेक फलों को देने वाली है। अर्थात् प्रजा के सुखी रहने पर यह पृथ्वी कल्पलता की भाँति अनेक मनोरथों को पूर्ण कर देती है।

स्रोत- किरातार्जुनीयम् (1/41) रामसेवक दुबे, पेज-138

76. 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः' यह कथन किससे सम्बन्धित है- **PGT-2002,2013**

(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् **(B) किरातार्जुनीयम्**

(C) नैषधीयचरितम् (D) मेघदूतम्

व्याख्या–

A. अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के चतुर्थ अङ्क में शकुन्तला की विदाई के अवसर पर शार्ङ्गरव कहता है-**''न खलु धीमतां कश्चिदविषयो नाम।''**(अभि.शा. अङ्क- 4) बुद्धिमानों के लिए कोई भी विषय अज्ञात नहीं है।

B. भारवि कृत किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में वनेचर युधिष्ठिर से कहता है कि- **''हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः।''** हितकारी और मनोहारी वचन दुर्लभ होते हैं। (किरात. 1/4)

C. नैषधीयचरितम् के पाँचवें सर्ग में नल इन्द्र से कहता है कि- **'आर्जवं हि कुटिलेषु न नीतिः।'** (नैष. 5 /103) कुटिल (धूर्त) व्यक्ति के प्रति सरल होना यह नीति नहीं है।

D. उत्तरमेघ में यक्ष मेघ से कहता है कि - **''सूर्यापाये न खलु कमलं पुष्यति स्वामभिख्याम् ।''** (मेघदूत उत्तरमेघ श्लोक 17) सूर्य के अस्त होने पर कमल अपनी शोभा को नहीं प्राप्त होता है।

अतः विकल्प (B) सही है।

स्रोत- किरातार्जुनीयम् (1/4)- रामसेवक दुबे, पेज-50

77. 'अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता' यह उक्ति किसने कही है- **PGT-2002**

(A) भीम (B) द्रौपदी

(C) दुर्योधन **(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं**

व्याख्या–

A. ''अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता'' यह सूक्ति किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग के 23 वें श्लोक में वनेचर ने युधिष्ठिर को बताया कि दुर्योधन अर्जुन एवं भीम के पराक्रम का स्मरण कर दुःखी होता है क्योंकि वह जानता है कि ''बलवानों से किया गया विरोध दुःखान्त होता है।'' उपर्युक्त तीनों विकल्पों में कोई भी पात्र इस सूक्ति से सम्बन्धित नहीं है।

अतः विकल्प (D) सही है।

स्रोत- किरातार्जुनीयम् (1/23)- रामसेवक दुबे, पेज-98

78. 'वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः' किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है- **PGT-2002**

(A) उत्तररामचरितम् (B) मेघदूतम्

(C) किरातार्जुनीयम् (D) कादम्बरी

व्याख्या–

A. उत्तररामचरितम् के द्वितीय अङ्क में वासन्ती आत्रेयी से कहती है-
''**लोकोत्तराणां चेतांसि को नु विज्ञातुमर्हसि।**'' (उत्तर02/7)
'महापुरुषों के चित्त को भला कौन जान सकता है?'

B. पूर्वमेघ में यक्ष मेघ से कहता है कि-
''**याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा।**'' (मेघदूतम् 1/6)
गुणवान् व्यक्ति के विषय में याचना विफल होने पर भी कुछ अच्छा है परन्तु नीच व्यक्ति से की गई याचना सफल होने पर भी अच्छी नहीं है।

C. किरातार्जुनीयम् में वनेचर युधिष्ठिर से दुर्योधन के विषय में बताता है कि-
'' **वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः**'' (किरात. 1/8)
महात्माओं से किया गया विरोध भी श्रेयस्कर होता है।

D. कादम्बरी कथामुख के शुकशावक निपातवर्णन में शुक राजा से कहता है कि-
''**किमिव हि दुष्करमकरुणानाम्।**'' (कादम्बरी कथामुखम्)
करुणारहित व्यक्ति के लिए कौन सा कार्य दुष्कर है?

अतः विकल्प (C) सही है।

स्रोत- किरातार्जुनीयम् (1/8)- राजेन्द्र मिश्र, पेज-50

79. संस्कृत साहित्य में अर्थगौरव के लिए प्रसिद्ध हैं- **PGT-2002,2010**

(A) श्रीहर्ष (B) माघ
(C) भारवि (D) दण्डी

व्याख्या–

* 'श्रीहर्ष' के 'नैषधीयचरितम्' की प्रशंसा में किसी विद्वान् ने कहा है कि-
'**उदिते नैषधे काव्ये क्व माघः क्व च भारविः।**'
अर्थात् श्रीहर्ष द्वारा नैषधीयचरितम् लिखे जाने पर भारवि और माघ का भी स्थान नहीं ठहरता।।
* महाकवि माघ उपमा, अर्थगौरव एवं पदलालित्य इन तीनों गुणों में सिद्धहस्त हैं। इन कवियों की प्रशंसा में उद्भट ने लिखा है-

''**उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्।**
दण्डिनः पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयो गुणाः॥''

संस्कृत साहित्य में कालिदास उपमा के लिए प्रसिद्ध हैं।
* संस्कृत साहित्य में महाकवि भारवि 'अर्थगौरव' के लिए प्रसिद्ध हैं।
* संस्कृत साहित्य में महाकवि दण्डी पदलालित्य के लिए प्रसिद्ध हैं। जबकि माघ में ये तीनों गुण विद्यमान हैं। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- किरातार्जुनीयम्- राजेन्द्र मिश्र, पेज-24

80. बृहत्त्रयी के अन्तर्गत नहीं है- **PGT-2016**

(A) किरातार्जुनीयम् (B) शिशुपालवधम्
(C) रघुवंशम् (D) नैषधीयचरितम्

व्याख्या-

☆ किरातार्जुनीयम्, शिशुपालवधम् और नैषधीयचरितम् ये बृहत्त्रयी के अन्तर्गत आते हैं।

☆ लघुत्रयी- रघुवंशम्, कुमारसम्भवम्, मेघदूतम्। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज- 208

81. 'किरातार्जुनीयम्' में 'कुरूणामधिपस्य' शब्द प्रयुक्त किया गया है- **PGT-2010**

(A) युधिष्ठिर के लिए (B) अर्जुन के लिए

(C) दुर्योधन के लिए (D) भीम के लिए

व्याख्या-

किरातार्जुनीयम्	पात्रों के लिए प्रयुक्त शब्द
1. युधिष्ठिर के लिए	युधिष्ठिरः
2. अर्जुन के लिए	सव्यसाची, गुडाकेशः, धनञ्जयः
3. दुर्योधन के लिए	कुरूणामधिपः,सुयोधनः ....
4. भीम के लिए	वृकोदरः

नोट- ''श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीं'' में 'कुरूणामधिपस्य' पद दुर्योधन के लिए प्रयुक्त है। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- किरातार्जुनीयम् (1/1)- रामसेवक दुबे, पेज-55

82. 'कृषीवल' से तात्पर्य है- **PGT-2010**

(A) कृषि से **(B) किसान से**

(C) सिंचाई के साधन से (D) वृष्टि से

व्याख्या-

* भारविकृत 'किरातार्जुनीयम्' के प्रथमसर्ग में दुर्योधन ने कुरुराज्य के किसानों को समृद्ध बनाने के लिए उल्लेखनीय कार्य किया जिसे वनेचर युधिष्ठिर से बताता है-

सुखेन लभ्या दधतः कृषीवलैः-
अकृष्टपच्या इव सस्यसम्पदः।
वितन्वति क्षेममदेवमातृका-
श्चिराय तस्मिन् कुरवश्चकासति॥ (कि० 1/17)

चिरकाल से प्रजा के कल्याण के लिए यत्नशील उस राजा दुर्योधन के कारण नदियों एवं नहरों आदि की सिंचाई की सुविधा से समन्वित कुरुप्रदेश की भूमि मानों वहाँ के किसानों के बिना अधिक परिश्रम उठाए हुए ही बड़ी सुविधा के साथ स्वयं प्राप्त होने वाले अन्नों की समृद्धि से सुशोभित हो रही है ।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- किरातार्जुनीयम् (1/17)- रामसेवक दुबे, पेज-84

83. 'निरस्तनारीसमया' में 'समया' से तात्पर्य है-
(A) समान (B) माया वाली
(C) समय **(D) मर्यादा**

व्याख्या-

* किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में स्त्रियोचित मर्यादा को छोड़कर द्रौपदी युधिष्ठिर से कहती हैं कि मेरी विकृत मनोव्यथाएँ ही मुझे आप के समक्ष ऐसा करने के लिए बाध्य कर रही हैं।
तथापि वक्तुं व्यवसाययन्ति मां
निरस्तनारीसमया दुराधयः।। (कि0 1/28)
इस श्लोक में 'समया' पद से तात्पर्य है- मर्यादा। **अतः विकल्प D सही है।**

स्त्रोत- किरातार्जुनीयम् (1/28)- रामसेवक दुबे, पेज-110

84. 'न बाधतेऽस्य त्रिगणः परस्परम्' सूक्ति उद्धृत है-
(A) मृच्छकटिकम् में **(B) किरातार्जुनीयम् में**
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में (D) नीतिशतकम् में

व्याख्या-

A. शूद्रक विरचित मृच्छकटिकम् के चतुर्थ अङ्क में मदनिका शर्विलक से कहती है-
'न चन्द्रादातपो भवति' (मृच्छ. अङ्क-4) अर्थात् चन्द्रमा से गर्मी नहीं होती।

B. भारवि विरचित किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग में दुर्योधन के पुरुषार्थ का वर्णन करते हुए वनेचर युधिष्ठिर से कहता है-
'न बाधतेऽस्य त्रिगणः परस्परम्।' (किरात0 1/11)
त्रिगण अर्थात् धर्म, अर्थ, काम एक दूसरे को बाधित नहीं करते हैं बल्कि मित्रवत् व्यवहार करते हैं।
अतः विकल्प 'B' सही है।

C. कालिदास विरचित अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के प्रथम अङ्क में राजा दुष्यन्त शकुन्तला के विषय में अपने मन में कहता है-
'सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तः करणप्रवृत्तयः।' (अभि0 1/22)
सन्देहास्पद विषयों में सज्जनों के अन्तः करण की प्रवृत्तियाँ ही प्रमाण होती हैं।

D. भर्तृहरि नीतिशतकम् के अर्थपद्धति में धन की तीन गति को स्वीकार करते हुए कहते हैं-
'दानं भोगो नाशस्तिस्रो गतयो भवन्ति वित्तस्य' (नीतिशतकम् श्लोक- 34)
जो व्यक्ति न धन का दान करता है और न स्वयं भोग करता है उसके धन की तीसरी गति अर्थात् नष्ट ही समझना चाहिए।

स्त्रोत- किरातार्जुनीयम् (1/11)- रामसेवक दुबे, पेज-69

85. 'स्फुटता न पदैरपाकृता न च न स्वीकृतमर्थगौरवम्' यह किस काव्य से सम्बद्ध है ?
(A) शिशुपालवधम् **(B) किरातार्जुनीयम्**
(C) नैषधीयचरितम् (D) रघुवंशम्

व्याख्या-

A. माघ विरचित शिशुपालवधम् के द्वितीयसर्ग में उद्धव जी ने बलराम से कहा कि-
'नैकमोजः प्रसादो वा रसभावविदः कवेः।' (शिशु0 2/83)
रसभाव के ज्ञाता अर्थात् शृङ्गारादि रस के विषय को जानने वाले कवि के लिए ओजगुणयुक्त या प्रसाद गुणयुक्त ही प्रबन्ध की रचना करने का नियम नहीं है।

B. भारवि विरचित किरातार्जुनीयम् के द्वितीय सर्ग में युधिष्ठिर भीम को प्रसन्न करने के लिए कहते हैं कि-
'स्फुटता न पदैरपाकृता न च न स्वीकृतमर्थगौरवम्' (किरात0 2/27)
वाक्य में प्रयोग किए गए पदों के द्वारा अर्थ की सुस्पष्टता का परित्याग नहीं किया गया है और अर्थगौरव को स्वीकार नहीं किया ऐसी बात नहीं है।
अतः विकल्प B सही है।

C. हर्ष विरचित नैषधीयचरित के चतुर्थ सर्ग में राजा नल दमयन्ती के विषय में कहते हैं कि-
'झटिति पराशयवेदिनो हि विज्ञाः' (नैषध0 4/118)
चतुर समझदार व्यक्ति तुरन्त ही दूसरे के आशय को समझ जाते हैं।

D. महाकवि कालिदास विरचित रघुवंशम् के तीसरे सर्ग में रघु के बल से सन्तुष्ट होकर इन्द्र ने कहा-
'पदं हि सर्वत्रगुणैर्निधीयते।' (रघु0 3/62)
गुणों से ही सर्वत्र प्रतिष्ठा होती है।

स्रोत- किरातार्जुनीयम् (2.27)- रामसेवक दुबे,भू0पेज-28

86. 'जटाधरः सञ्जुहुधीह पावकम्' यह कथन किसको कहा गया है ?
(A) युधिष्ठिर (B) अर्जुन
(C) भीम (D) दुर्योधन

व्याख्या-

A. भारवि विरचित किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में द्रौपदी युधिष्ठिर के प्रति कहती हैं कि यदि क्षमा को ही चिरकाल तक सुख का साधन समझते हैं तो-
'जटाधरः सञ्जुहुधीह पावकम्' (किरात0 1/44)
जटाधारण करके इसी वन में अग्नि में हवन कीजिए। **अतः विकल्प A सही है।**

B. किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग में द्रौपदी अर्जुन के विषय में युधिष्ठिर से कहती हैं कि-
'करोति मन्युं न कथं धनञ्जयः' (किरात. 1/35)

आपके लिए वृक्षों की छाल (वल्कल वस्त्रों) को लाते हुए अर्जुन को देखकर आपको क्रोध क्यों नहीं आता?

C. भीम के विषय में द्रौपदी युधिष्ठिर से कहती हैं कि-
'दुनोति नो कच्चिदयं वृकोदरः' (किरात0 1/34)
पैदल ही पर्वतों पर घूमते हुए धूलि से धूसरित यह भीम, मुझे लगता है कि आपके मन को व्यथित नहीं करता?

D. दुर्योधन के विषय म ें वनेचर युधिष्ठिर से कहता है-
'नयेन जेतुं जगतीं सुयोधनः' (किरात0 1/7)
छल से जीती गई पृथ्वी को नीति से जीतना चाहता है।

स्रोत- किरातार्जुनीयम् (1/44) - रामसेवक दुबे, पेज-144

87. किरातार्जुनीयम् प्रथमसर्ग के अधोलिखित अन्तिम श्लोक में कौन छन्द है? 'विधिसमयनियोगाद्दीप्तिसंहारजिह्मम्'
(A) उपजाति (B) वंशस्थ
(C) वसन्ततिलका **(D) मालिनी**

व्याख्या-

A. **उपजाति-** 'अनन्तरोदीरितलक्ष्मभाजौ पादौ यदीयावुपजातयस्ताः'। (वृत्त0 3/0)
उपजाति के प्रत्येक पाद में 11 वर्ण होते हैं यह इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा दोनों के मिश्रण से बनता है।
उदा0- स्वप्नो नु माया नु .... मनोरथा नाम तटप्रपाताः।।

B. **वंशस्थ-** 'जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ।' (वृत्त.3/46)
वशंस्थ में प्रत्येक पाद में 12 वर्ण होते हैं इसमें जगण, तगण, जगण, रगण होता है।
उदाहरण- श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीम्
किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में 1 से 44 तक वंशस्थ, 45 वाँ पुष्पिताग्रा तथा अन्तिम 46 वें पद्य में भारवि ने मालिनी छन्द का प्रयोग किया है।

C. **वसन्ततिलका-** 'उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः' (वृत्त0 3/79)
वसन्ततिलका छन्द के प्रत्येक पाद में 14 वर्ण होते हैं इसमें तगण, भगण, जगण, जगण तथा दो गुरु वर्ण होते हैं।
जैसे- यात्येकतोऽस्तशिखरं----------इवात्मदशान्तरेषु।।

D. **मालिनी-** 'ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः।' (वृत्त0 3.87)
मालिनी छन्द के प्रत्येक पाद में 15 वर्ण होते हैं दो नगण,एक मगण, दो यगण,तथा 8वें और 7वें वर्णों पर यति होती है।
उदाहरण- विधिसमयनियोगाद्दीप्तिसंहारजिह्मं, शिथिलवसुमगाधे मग्नमापत्पयोधौ।
अतः विकल्प D सही है ।
स्रोत- किरातार्जुनीयम् (1/46)- रामसेवक दुबे, पेज-149

88. न तेन सज्यं क्वचिदुद्यतं धनुः
कृतं न वा तेन विजिह्ममाननम्।
गुणानुरागेण शिरोभिरुह्यतेन
राधिपैर्माल्यमिवास्य शासनम्।।
अस्मिन् श्लोके प्रशंसा वर्तते? **(UGC-25, D 2019)**
(A) युधिष्ठिरस्य (B) वनेचरस्य
(C) दुर्योधनस्य (D) अर्जुनस्य

व्याख्या- महाकवि भारवि द्वारा प्रणीत बृहत्त्रयी के अन्तर्गत परिगणित अष्टादशसर्गात्मक महाकाव्य किरातार्जुनीयम् है।
इस ग्रन्थ के प्रथम सर्ग में वनेचर हस्तिनापुर से दुर्योधन के राज्य वृत्तान्त को जानकर द्वैतवन में युधिष्ठिर के पास आकर उस वृत्तान्त को कहता है -

न तेन सज्यं क्वचिदुद्यतं धनुः
कृतं न वा कोपविजिह्ममाननम् ।
गुणानुरागेण शिरोभिरुह्यते
नराधिपैर्माल्यमिवास्य शासनम् ॥1/21॥

दुर्योधन के मित्र राजाओं की स्थिति के विषय में वनेचर दुर्योधन की प्रशंसा का वर्णन कर रहा है -
उस दुर्योधन के द्वारा कहीं पर भी चढ़ी हुयी प्रत्यञ्चा वाला धनुष नहीं उठाया गया अथवा क्रोध के कारण मुख टेढ़ा नहीं किया गया। राजाओं के द्वारा गुणों के प्रति प्रेम के कारण उसकी आज्ञा को माला के समान शिरोधार्य किया जाता है।

किरातार्जुनीयम् की महत्त्वपूर्ण सूक्तियाँ-

* **अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता (1/23)**
वनेचर का कथन है- अहो (आश्चर्य है कि) बलवानों से विरोध बड़ा ही दुःखान्त होता है।
* **प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः (1/25)**
वनेचर युधिष्ठिर से कहता है- दूसरे लोगों के द्वारा कहे गये वचनों का सङ्ग्रह करने वाले मुझ जैसों की बातें तो वृत्तान्तमात्र पर्यवसायिनी होती हैं।
* **प्रविश्य हि घ्नन्ति शठास्तथाविधान्**
असंवृताङ्गान्निशिता इवेषवः ॥1/30॥
द्रौपदी का कथन युधिष्ठिर से- धूर्त लोग बिना ढके हुए अङ्गों वाले उन जैसे लोगों को तीक्ष्ण बाणों के समान भीतर प्रविष्ट होकर मार डालते हैं।
* **शमीतरुं शुष्कमिवाग्निरुच्छिखः ॥1/32॥**
द्रौपदी का कथन है- आपको सूखे हुए शमी के वृक्ष को जला देने वाली प्रज्वलित अग्नि के समान उद्दीप्त क्रोध क्यों नहीं क्रोधित करता?

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'न तेन सज्यं क्वचिदुद्यतं धनुः ....' यह वनेचर का कथन है जिसमें दुर्योधन की प्रशंसा हो रही है।

अतः विकल्प 'C' सही है। स्रोत- किरातार्जुनीयम् (1/21)

89.(A) स किंसखा साधु न शास्ति यो नृपम्। **(UGC-25, D 2019)**

इयं पंक्तिः भारवेः किरातार्जुनीयादुद्धृतोऽस्ति।

(R) वनेचरः युधिष्ठिरं प्रति दुर्योधनस्य सत्यं वृत्तान्तमवबोध-यितुं वदति अधोलिखितेषु

उचितं कारणं लिखत-

(A)(A) कथनं मित्रस्य साधुशीलतां प्रमाणी करोति
(R) कथनं वनेचरस्य स्वामिनः वञ्चनां निषेधयति

(B) (A) कथने नृपस्य स्वरूपं वर्णितमस्ति
(R) कथने दुर्योधनं प्रति वनेचरस्य सहृदयता ज्ञायते

(C) (A) कथने सः पदेन वनेचरः नृपम् पदेन सुयोधनं कथितमस्ति।
(R) कथनेन सुयोधनं प्रति सेवाभावोऽस्ति।

(D) (A) कथने सखा वनेचर अस्ति
(R) वनेचरः युधिष्ठिरं सत्यं वृत्तान्तं न कथयति

व्याख्या- महाकवि भारविप्रणीत किरातार्जुनीयम् महाकाव्य बृहत्त्रयी के अन्तर्गत परिगणित अठारह सर्गों वाला महाकाव्य है। जिसके नायक अर्जुन और नायिका द्रौपदी है। राजा युधिष्ठिर के द्वारा नियुक्त ब्रह्मचारी वेश वाला वनेचर दुर्योधन के राज्यकार्यों को जानकर आया है और कहता है-

स किंसखा साधु न शास्ति योऽधिपं
हितान्न यः संश्रृणुते स किम्प्रभुः।
सदाऽनुकूलेषु हि कुर्वते रतिं
नृपेष्वमात्येषु च सर्वसम्पदः (॥1/5॥)

जो राजा को समुचित उपदेश नहीं देता है क्या वह मित्र है? (कभी नहीं) अथवा वह कुत्सित मित्र है। इसी प्रकार जो शुभाकांक्षी व्यक्ति से सदुपदेश नहीं सुनता है क्या वह प्रभु है? (कभी नहीं) अथवा वह निन्दनीय नरेश है। क्योंकि राजाओं तथा सचिवों के परस्पर अनुकूल रहने पर ही समग्र सम्पत्तियाँ सदैव अनुराग करती हैं। (अन्यथा नहीं)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त पंक्ति से स्पष्ट होता है कि वनेचर कथन (A) में मित्र की साधुशीलता को प्रमाणित कर रहा है। और कथन (R) में स्वामी को धोखा नहीं देना चाहिये या झूठ नहीं बोलना चाहिये। धोखा देने का निषेध कर रहा है।

अतः विकल्प 'A' सही है।

स्रोत- किरातार्जुनीयम् (1/5)

90. 'न वञ्चनीयाः प्रभवोऽनुजीविभिः' इति केनोक्तम्? **(UGC 25, J 2019)**

(A) विशाखदत्तेन (B) दण्डिना

(C) भासेन **(D) भारविणा**

व्याख्या- भारविकृत एकमात्र ग्रन्थ किरातार्जुनीयम् महाकाव्य, जो बृहत्त्रयी के अन्तर्गत परिगणित है, जिसमें 18 सर्ग हैं। प्रथम सर्ग में युधिष्ठिर द्वारा भेजा गया वनेचर दुर्योधन के राजकार्यों को जानकर द्वैतवन में आया है और युधिष्ठिर से कहता है–

क्रियासु युक्तैर्नृप! चारचक्षुषो न वञ्चनीयाः प्रभवोऽनुजीविभिः।
अतोऽर्हसि क्षन्तुमसाधु साधु वा हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः॥ (1/4)

हे राजन्। किसी कार्य को करने के लिए नियुक्त किए गए सेवकों के द्वारा स्वामी (झूठी तथा प्रिय बातें बताकर) नहीं ठगे जाने चाहिये। इसलिए मैं अप्रिय अथवा प्रिय बाते करूँ, उन्हें आप क्षमा करेंगे, क्योंकि मधुर तथा परिणाम में कल्याण देने वाली वाणी दुर्लभ होती है।

अन्य प्रमुख सूक्तियाँ- • **हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः** (1/4) मधुर तथा परिणाम में कल्याण देने वाली वाणी दुर्लभ होती है • **न हि प्रियं प्रवक्तुमिच्छन्ति मृषा हितैषिणः** (1/2) कल्याण चाहने वाले लोग मिथ्याभूत मधुर वचन बोलने की इच्छा नहीं करते हैं।

- **वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः** (1/8) महापुरुषों के साथ किया गया विरोधभाव भी दुष्टों के संसर्ग की अपेक्षा अच्छा है।
- **अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता** (1/23) बलवान् के साथ किया गया वैर विरोध अनर्थपर्यवसायी होता है।

⇒ **विशाखदत्त-** विशाखदत्तकृत मुद्राराक्षस सात अङ्कों का नाटक है।

⇒ मुद्राराक्षस की प्रमुख सूक्तियाँ-

- **न हि खलु सर्वं जानाति।**

  प्रथम अङ्क में गुप्तचर कहता है, ''सभी लोग सब कुछ नहीं जानते हैं।''
- **अत्यादरः शङ्कनीयः।**

  प्रथम अङ्क में चाणक्य के घर जाकर चन्दनदास मन में सोचता है, ''आज अत्यधिक आदर किया जाना शङ्कनीय है।
- **पुरन्ध्रीणां प्रज्ञा पुरुषगुणविज्ञानविमुखी (2/7)।**

  राक्षस कहता है, कासपुष्प के अग्रभाग के समान स्त्रियों की बुद्धि ही पुरुषों के शौर्यादि गुणों की जानकारी से पराङ्मुख होती है।

⇒ **दण्डी-** दण्डी कृत ग्रन्थ दशकुमारचरितम् है, जिसमें आठ उच्छ्वास हैं। इसके नायक राजवाहन और नायिका अवन्तिसुन्दरी है।

* दशकुमारचरितम् की प्रमुख सूक्तियाँ-

- **दुष्करसाधनं प्रज्ञा इति**
  मित्रगुप्त कहता है कि जो कार्य करना कठिन है, उसके करने का उपाय बुद्धि है।
- **गृहिणः प्रियहिताय दारगुणाः इति**
  मित्रगुप्त कहता है कि पत्नी के गुण गृहस्थ के प्रिय और हित के लिये होते हैं।
- **दैव्याः शक्तेः पुरो न बलवती मानवी शक्तिः।**
  विश्रुत कहता है कि ईश्वरीय ताकत के आगे आदमी की ताकत बली नहीं है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'न वञ्चनीयाः प्रभवोऽनुजीविभिः' यह सूक्ति किरातार्जुनीयम् से उद्धृत है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- किरातार्जुनीयम् (1/4)

91. कथाप्रसङ्गेन जनैरुदाहृतादनुस्मृताखण्डलसूनुविक्रमः। तवाभिधानाद् व्यथते नताननः स दुःसहान्मन्त्रपदादिवोरगः।। अत्र कोऽलङ्कारः- **(UGC 25, J. 2019)**

(A) लुप्तोपमा (B) मालोपमा
(C) श्लिष्टोपमा (D) उत्प्रेक्षा

व्याख्या- भारवि प्रणीत किरातार्जुनीयम् महाकाव्य में 18 सर्ग हैं जिसकी गणना संस्कृत बृहत्त्रयी में होती है। महाकाव्य के नायक अर्जुन तथा प्रधान रस वीर है।

किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग में दुर्योधन अर्जुन के पराक्रम का स्मरण करके नतमस्तक होकर दुःखी हो उठता है। इस प्रसंग को वनेचर युधिष्ठिर के समक्ष सर्प से उपमा देते हुए कहता है-

कथाप्रसङ्गेन जनैरुदाहृताद्
अनुस्मृताखण्डलसूनुविक्रमः।
तवाभिधानाद् व्यथते नताननः
स दुःसहान्मन्त्रपदादिवोरगः॥ (किराता.1.24)

वार्तालाप में प्रसंगवश आप लोगों के सम्बन्ध में चर्चा चलने पर अर्जुन के पराक्रम का स्मरण करके जैसे श्रेष्ठ विष वैद्यों द्वारा उच्चारण किए गये गरुड और वासुकि के नामों से युक्त अत्यन्त दुःसह मन्त्र से गरुड के पादविक्षेप का स्मरण कर नीचा मुख किए सर्प व्यथित होता है, वैसे ही नीचा मुख किए हुए दुःखित होता है।

इस श्लोक के दो-दो अर्थ हैं एक दुर्योधन पक्ष में और दूसरा सर्पपक्ष में-

1. कथाप्रसङ्गेन जनैः-
   दुर्योधनपक्ष में- बातचीत के प्रसङ्ग में लोगों के द्वारा
   सर्प पक्ष में- विषवैद्यों में श्रेष्ठ लोगों के द्वारा।
2. तवाभिधानात्-
   दुर्योधनपक्ष में- आप (युधिष्ठिर) के नाम से।
   सर्पपक्ष में- वासुकि और गरुड़ के नाम से

3 अनुस्मृताखण्डलसूनुविक्रमः-
दुर्योधन पक्ष में- इन्द्र के पुत्र अर्जुन के पराक्रम का स्मरण करके।
सर्पपक्ष में-स्मरण कर लिया गया है इन्द्र के सूनु (अनुज) अर्थात् विष्णु के पक्षी।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि इस श्लोक के श्लिष्ट दो-दो अर्थ उपमा के द्वारा निर्देशित हैं। अतः श्लेषानुप्राणित (श्लिष्टोपमा) अलङ्कार है।
अतः विकल्प (C) सही है।
स्त्रोत- किरातार्जुनीयम् - रामसेवक दुबे, पेज 103

92. किरातार्जुनीयस्य प्रधानो रसोऽस्ति- **(UGC 25, J2018)**
(A) शृङ्गारः **(B) वीरः**
(C) शान्तः (D) अद्भुतः

व्याख्या- महाकवि भारवि प्रणीत 'किरातार्जुनीयम्' 18 सर्गों का वीर रस प्रधान महाकाव्य है। इसका उपजीव्य महाभारत का वनपर्व है। इस महाकाव्य में अर्जुन द्वारा भगवान् शिव की तपस्या से पाशुपतास्त्र की प्राप्ति का वर्णन है।

भारवि के काव्य में (किरातार्जुनीयम् में) प्रधान रस के रूप में 'वीर' रस का प्रयोग किया गया है। वीर रस की अभिव्यक्ति काव्य के प्रथम सर्ग से ही प्रारम्भ हो जाती है। जब द्रौपदी युधिष्ठिर के उत्साह को प्रबोधित करने और शत्रुओं से प्रतिशोध लेने के लिए ओज से भरे शब्दों को कहती है-

अबन्ध्यकोपस्य विहन्तुरापदां भवन्ति वश्याः स्वयमेव देहिनः।
अमर्षशून्येन जनस्य जन्तुना न जातहार्देन न विद्विषादरः॥

अर्थ- अनिष्फल क्रोध करने वाले और शत्रुओं का विनाश करने वाले व्यक्ति के वश में प्राणी स्वयं ही हो जाते हैं। व्यक्ति के क्रोध से हीन होने पर उसका न तो मित्रगण ही आदर करते हैं और न ही उससे शत्रु भय करते हैं।

संस्कृत ग्रन्थों के अंगी रस

अभिज्ञानशाकुन्तलम्	शृङ्गाररस	जानकीहरणम्	शृङ्गाररस
मेघदूतम्	विप्रलम्भशृङ्गार	शिवराजविजय	वीररस
उत्तररामचरितम्	करुणरस	नागानन्द	शान्तरस/वीररस
शिशुपालवधम्	वीररस	प्रबोधचन्द्रोदय	करुण/वीर
रघुवंशम्	वीररस	महाभारतम्	शान्तरस
बुद्धचरितम्	शान्तरस	गीतगोविन्दम्	शृङ्गाररस
रावणवध (भट्टिकाव्य)	वीररस	रत्नावली	शृङ्गाररस

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि किरातार्जुनीयम् का प्रधान रस वीर है।
अतः विकल्प B सही है।
स्त्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि'- पेज 244

93. किरातार्जुनीयमहाकाव्यस्य कथावस्तु कुतः गृहीतम्? **(UGC 25 J 2016)**

(A) महाभारतस्य आदिपर्वतः

(B) महाभारतस्य भीष्मपर्वतः

(C) महाभारतस्य वनपर्वतः

(D) रामायणमहाकाव्यात्

व्याख्या-

ग्रन्थकार	ग्रन्थ	उपजीव्य ग्रन्थ
भारवि	किरातार्जुनीयम्	महाभारत का वनपर्व
माघ	शिशुपालवधम्	महाभारत का सभापर्व
श्रीहर्ष	नैषधीयचरितम्	महाभारत का वनपर्व
कालिदास	रघुवंशम्	वाल्मीकीय रामायण/पद्मपुराण
कालिदास	अभिज्ञानशाकुन्तलम्	महाभारत का आदिपर्व एवं पद्मपुराण
भट्टनारायण	वेणीसंहारम्	महाभारत का सभापर्व
शूद्रक	मृच्छकटिकम्	भासकृत चारुदत्तम् नाटक
बाणभट्ट	कादम्बरी	गुणाढ्य की बृहत्कथा सुमनस् वृत्तान्त
अश्वघोष	बुद्धचरितम्	'ललितविस्तर' बौद्धग्रन्थ
भास	स्वप्नवासवदत्तम्	इतिहासप्रसिद्ध उदयन- विषयक लोककथायें
भवभूति	उत्तररामचरितम्	उत्तरकाण्ड (42 से97 सर्ग तक)

स्पष्टीकरण-उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि किरातार्जुनीयम् की कथावस्तु महाभारत के वनपर्व से ली गयी है।

अतः विकल्प 'C' सही है।

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्करशर्मा ऋषि, पेज-243

5. सम्भावित प्रश्न

1. किरातार्जुनीयम् इति महाकाव्यस्य रचनाकारः कः?
   (A) माघः (B) कालिदासः
   (C) श्रीहर्षः (D) **भारविः**

2. ''किरातार्जुनीयम्'' महाभारतस्य कस्मात् पर्वणः उद्धृतम्?
   (A) आदिपर्वणः
   (B) वनपर्वणः
   (C) सभापर्वणः
   (D) विराट्पर्वणः

3. किरातार्जुनीये कति सर्गाः सन्ति?
   (A) 15 (पञ्चदश)
   (B) 20 (विंशतिः)
   (C) 18 (अष्टादश)
   (D) 22 (द्वाविंशतिः)

4. किरातार्जुनीयस्य प्रथमपद्ये किं छन्दः वर्तते?
   (A) वंशस्थः (B) उपजातिः
   (C) आर्या (D) मालिनी

5. वनेचरः कस्मिन् वने युधिष्ठिरस्य समीपम् आगतवान्?
   (A) विन्ध्याटवीवने
   (B) द्वैतवने
   (C) दण्डकारण्ये
   (D) पञ्चवटीवने

6. किरातार्जुनीये 'कुरूणामधिपस्य' इति पदं कस्मै प्रयुक्तम्?
   (A) अर्जुनाय (B) भीमाय
   (C) दुर्योधनाय (D) दुःशासनाय

7. किरातार्जुनीयस्य प्रतिसर्गस्य अन्तिमं पदमस्ति?
   (A) लक्ष्मीः (B) विभुः
   (C) शिवः (D) श्रीः

8. 'किरातार्जुनीयम्' शब्दे कः प्रत्ययः?
   (A) 'छ' – प्रत्ययः
   (B) 'ङीप्' – प्रत्ययः
   (C) 'ल्युट्' – प्रत्ययः
   (D) 'युच्' – प्रत्ययः

9. 'किरातार्जुनीयस्य' नायकः कः?
   (A) युधिष्ठिरः **(B) अर्जुनः**
   (C) शिवः (D) भीमः

10. किरातार्जुनीयस्य प्रधानरसः कः?
    (A) शृङ्गाररसः (B) करुणरसः
    (C) वीररसः (D) शान्तरसः

11. 'श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीम्' इति कीदृशं मङ्गलाचरणम्?
    (A) आशीर्वादात्मकम्
    (B) नमस्कारात्मकम्
    (C) वस्तुनिर्देशात्मकम्
    (D) एतेषु न कोऽपि

12. 'निराश्रया हन्त! हता मनस्विता' एतत् कस्याः वचनम्?
(A) वनेचरस्य
(B) द्रौपद्याः
(C) युधिष्ठिरस्य
(D) एतेषु न कोऽपि

13. 'सदानुकूलेषु हि कुर्वते रतिं, नृपेष्वमात्येषु च सर्वसम्पदः' उक्तिरियं केन कथिता?
(A) द्रौपद्या **(B) वनेचरेण**
(C) दुर्योधनेन (D) युधिष्ठिरेण

14. किरातार्जुनीये दुर्योधनस्य शासन-व्यवस्थां ज्ञातुं युधिष्ठिरः कं प्रेषितवान् आसीत्?
(A) सहदेवम् **(B) वनेचरम्**
(C) नकुलम् (D) धृष्टद्युम्नम्

15. 'प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः' इत्यत्र 'मादृशां' इति पदेन कस्य बोधः?
(A) भीमस्य (B) युधिष्ठिरस्य
(C) गुप्तचरस्य (D) द्रौपद्याः

16. 'वनेचरस्य कृते किं पदं प्रयुक्तं किरातार्जुनीये?
(A) ब्रह्मचारी (B) गुप्तचरः
(C) वर्णिलिङ्गी (D) दूतः

17. किरातार्जुनीये 'अदेवमातृकाः' के?
(A) नदीजलाशयाश्रिताः
(B) देवकृपाप्राप्त्यै मातृपूजकाः
(C) देवकृपाप्राप्त्यै यज्ञानुष्ठातारः
(D) दैवकृपया वर्षाजलाश्रिताः

18. कीदृशानि वचनानि दुर्लभानि भवन्ति?
(A) प्रियमसत्यम् च
(B) सत्यं प्रियं च
(C) अहितमनोहारि च
(D) हितं मनोहारि च

19. 'विघाताय' पदे धातुः वर्तते?
(A) धा (B) तन्
(C) हन् (D) गम्

20. 'कृतप्रणामः' पदे समासः वर्तते?
(A) तत्पुरुषः (B) कर्मधारयः
(C) द्वन्द्वः **(D) बहुव्रीहिः**

21. 'वनेचरः' इत्यत्र कः प्रत्ययः?
(A) घञ् (B) स्यन्
(C) ट (D) मनिन्

22. किरातार्जुनीयस्य प्रथमसर्गस्य अन्तिमे श्लोके किं छन्दः वर्तते?
(A) उपजातिः
(B) वशस्थः
(C) वसन्ततिलका
(D) मालिनी

23. 'कृषीवलः' अस्याभिप्रायः वर्तते?
(A) कृषिकार्यम् **(B) कृषकः**
(C) जलसिञ्चनम्(D) वृषभः

24. 'नारीसमया' इत्यत्र 'समया' इत्यस्य तात्पर्यम् अस्ति?
(A) सामग्री (B) मायायुक्ता
(C) कालः **(D) मर्यादा**

25. 'यमौ' कौ स्तः?
 (A) युधिष्ठिरार्जुनौ
 (B) भीमार्जुनौ
 (C) नकुलसहदेवौ
 (D) अर्जुननकुलौ

26. तवाभिधानाद् व्यथते नताननः, स दुःसहान्मन्त्रपदादिवोरगः' इत्यत्र 'नताननः' कः?
 (A) सुयोधनः (B) धर्मराजः
 (C) वनेचरः (D) भीमसेनः

27. 'कथं न मन्युर्ज्वलयत्युदीरितः, शमीतरुं शुष्कमिवाग्निरुच्छिखः।' इत्युक्त्या कः प्रेरितः?
 (A) अर्जुनः **(B) युधिष्ठिरः**
 (C) वनेचरः (D) सुयोधनः

28. ''प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः'' इत्यत्र 'खलु' अव्ययस्य अर्थः अस्ति?
 (A) अनुनयः (B) जिज्ञासा
 (C) निग्रहः **(D) निश्चयः**

29. ''भवादृशेषु प्रमदाजनोदितं भवत्यधिक्षेप इवानुशासनम्। तथापि वक्तुं व्यवसाययन्ति मां निरस्तनारी-समया दुराधयः।।'' पद्येऽस्मिन् 'मां' इति पदेन कस्याः बोधो जायते?
 (A) द्रौपद्याः (B) शकुन्तलायाः
 (C) सीतायाः (D) लक्ष्म्याः

30. 'स वल्कवासांसि तवाधुनाहरन्' कः?
 (A) अर्जुनः (B) भीमः
 (C) नकुलः (D) सहदेवः

31. किरातार्जुनीयस्य प्रथमसर्गस्य कथानकेषु किं नास्ति?
 (A) द्वैतवन-निवासः
 (B) गुप्तचरेण दुर्योधनस्य वृत्तान्तकथनम्
 (C) द्रौपद्याः कोपः
 (D) द्रौपद्याः कोपस्य युधिष्ठिरेण प्रत्युत्तरम्।

32. ''न बाधतेऽस्य त्रिगणः परस्परम्'' इयं सूक्तिः प्राप्यते?
 (A) मृच्छकटिके
 (B) किरातार्जुनीये
 (C) अभिज्ञानशाकुन्तले
 (D) नीतिशतके

33. ''प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः'' इति वचनं वर्तते?
 (A) वनेचरस्य (B) नारदस्य
 (C) युधिष्ठिरस्य (D) द्रौपद्याः

34. ''व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवम्'' इति कस्मिन् काव्ये उक्तम्?
 (A) शिशुपालवधे
 (B) भट्टिकाव्ये
 (C) किरातार्जुनीये
 (D) कुमारसम्भवे

35. 'शमेन सिद्धिं मुनयो न भूभृतः।' कस्याः इदं वचनम् ?
 (A) द्रौपद्याः
 (B) वनेचरस्य
 (C) दुर्योधनस्य
 (D) न एतेषु कोऽपि

36. ''जटाधरः सञ्जुहुधीह पावकम्'' कथनमिदं कः कं प्रति वदति?

(A) द्रौपदी युधिष्ठिरम् प्रति
(B) वनेचरः अर्जुनं प्रति
(C) द्रौपदी भीमं प्रति
(D) वनेचरः दुर्योधनं प्रति

37. ''वसन्ति हि प्रेम्णि गुणा न वस्तुनि'' इति कस्योक्तिः?

(A) कालिदासस्य (B) भवभूतेः
(C) भारवेः (D) श्रीहर्षस्य

38. 'प्रवक्तुमिच्छन्ति मृषा हितैषिणः' इत्यत्र अलङ्कारः कः?

(A) उपमालङ्कारः
(B) उत्प्रेक्षालङ्कारः
(C) काव्यलिङ्गालङ्कारः
(D) अर्थान्तरन्यासालङ्कारः

39. भारविः कस्योपासकः आसीत्?

(A) ब्रह्मणः **(B) शिवस्य**
(C) विष्णोः (D) सूर्यस्य

40. किरातार्जुनीयस्य प्रथमसर्गे कति श्लोकाः सन्ति?

(A) 46 (B) 48
(C) 45 (D) 49

41. कवीनां समुचितः उत्तरोत्तरः कालक्रमः कः?

(A) माघ-भारवि-श्रीहर्षाः
(B) भास-भारवि-अश्वघोषाः
(C) भास-माघ-कालिदासाः
(D) वाल्मीकि-भास-भारविकवयः

42. भारवेः प्रिय अलङ्कारः वर्तते?

(A) उपमा
(B) उत्प्रेक्षा
(C) रूपकः
(D) अर्थान्तरन्यासः

43. वनवासकाले वनान्तशय्यायां कौ शयनं कुरुतः?

(A) अर्जुन –वनेचरौ
(B) नकुल –सहदेवौ
(C) युधिष्ठिर –कृष्णौ
(D) दुर्योधन –दुःशासनौ

44. 'अवन्तिसुन्दरीकथानुसारं' भारविः आसीत्?

(A) दक्षिणभारतस्य
(B) उत्तरभारतस्य
(C) मध्यप्रदेशस्य
(D) पूर्वीभारतस्य

45. द्रौपद्याः चारित्रिकी विशेषता नास्ति?

(A) वीरक्षत्राणी
(B) कुशलराजनीतिज्ञा
(C) तेजस्विनी
(D) कुलटा

46. ''विनिश्चितार्थामिति वाचमाददे'' इत्यनेन कः वाचमाददे-

(A) युधिष्ठिरः **(B) वनेचरः**
(C) दुर्योधनः (D) द्रौपदी

47. 'वञ्चनीयाः' पदे प्रत्ययोऽस्ति?

(A) तव्यत् **(B) अनीयर्**
(C) ल्यप् (D) तुमुन्

48. ''शास्ति'' इतिपदे लकार-पुरुष-वचनञ्चास्ति?

(A) लट्, प्रथमपुरुषः, एक.

(B) लृट्, प्रथमपुरुषः, एक.

(C) लिट्, प्रथमपुरुषः,एक.

(D) लोट्, प्रथमपुरुषः,एक.

49. ''अतोर्हसि क्षन्तुमसाधु साधु वा'' इत्यत्र कः कं वदति?

(A) दुर्योधनः, युधिष्ठिरम्।

(B) वनेचरः, युधिष्ठिरम्।

(C) अर्जुनः किरातम्।

(D) द्रौपदी, युधिष्ठिरम्।

50. ''स किं सखा साधु न शास्ति योऽधिपम्'' सूक्तिरियं केनोक्ता?

(A) युधिष्ठिरेण (B) दुर्योधनेन

(C) वनेचरेण (D) द्रौपद्या

51. ''प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः'' इति कः कं वदति?

(A) वनेचरः द्रौपदीम्।

(B) वनेचरः युधिष्ठिरम्।

(C) द्रौपदी युधिष्ठिरम्।

(D) न एतेषु कोऽपि

52. ''व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवम्' द्रौपदी कं प्रति वदति?

(A) युधिष्ठिरम् (B) वनेचरम्

(C) द्रौपदीम् (D) दुर्योधनम्

53. ''परिभ्रमँल्लोहितचन्दनोचितः'' इत्यनेन द्रौपदी कस्य दुर्दशायाः वर्णनं करोति?

(A) युधिष्ठिरस्य (B) दुर्योधनस्य

(C) वनेचरस्य **(D) भीमस्य**

54. ''दुनोति नो कच्चिदयं वृकोदरः'' अत्र 'वृकोदरः' कः?

(A) युधिष्ठिरः **(B) भीमः**

(C) दुर्योधनः (D) वनेचरः

55. ''क्रियासु युक्तैर्नृप चारचक्षुषो न..... प्रभवोऽनुजीविभिः'' रिक्तस्थानं पूरयतु–

(A) रक्षणीयाः

(B) वञ्चनीयाः

(C) प्रेषणीयाः

(D) पालनीयाः

56. 'प्रविश्य हि घ्नन्ति शठास्तथाविधान्'' इत्यत्र 'घ्नन्ति' पदे धातुः वर्तते?

(A) घन् **(B) हन्**

(C) नन् (D) नी

57. 'परिभ्रमन्' पदे प्रत्ययः अस्ति?

(A) शतृ (B) शानच्

(C) ल्युट् (D) घञ्

58. ''भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः'' इति कः केन सह वदति?

(A) भीमः, धृतराष्ट्रेन सह

(B) वनेचरः, युधिष्ठिरेण सह

(C) द्रौपदी, युधिष्ठिरेण सह

(D) वनेचरः, दुर्योधनेन सह

59. 'प्रजासु वृत्तिं यमयुङ्क्तवेदितुम्' इत्यत्र 'यम्' पदेन कः सङ्केतितः-

(A) दुर्योधनः (B) युधिष्ठिरः

(C) अर्जुनः **(D) वनेचरः**

60. ''निगूढतत्त्वं नयवर्त्म विद्विषाम्' इति कस्य उक्तिः?
(A) यक्षस्य
(B) वनेचरस्य
(C) युधिष्ठिरस्य
(D) द्रौपद्याः

61. भारवेः जन्मस्थानं वर्तते?
(A) दक्षिणभारतस्य ज्ञानपुरम्
(B) दक्षिणभारतस्य अचलपुरम्
(C) पूर्वीभारतस्य सीतापुरम्
(D) मध्यभारतस्य शिवपुरम्

62. किरातार्जुनीयमहाकाव्ये श्लोकानां संख्या वर्तते?
(A) 1050 (B) 1250
(C) 1040 (D) 1150

63. भारवेः आश्रयदाता आसीत्?
(A) श्रीहर्षः
(B) विक्रमादित्यः
(C) पुलकेशिनस्य भ्राता विष्णुवर्धनः
(D) समुद्रगुप्तः

64. ''नारिकेलफलसम्मितं वचः'' सूक्तिः कस्मै प्रयुज्यते?
(A) श्रीहर्षाय (B) माघाय
(C) भारवये (D) दण्डिने

65. 'द्विषां विघाताय विधातुमिच्छतः' इत्यत्र 'द्विषां' पदे विभक्तिः वर्तते?
(A) द्वितीया **(B) षष्ठी**
(C) प्रथमा (D) सप्तमी

66. अर्जुनः कुत्र तपस्यामकरोत्?
(A) रैवतके
(B) इन्द्रकीलपर्वते
(C) विन्ध्याचले
(D) चित्रकूटे

67. मनोरथस्य पिता आसीत्?
(A) भवभूतिः **(B) भारविः**
(C) भर्तृहरिः (D) कालिदासः

68. 'महाकाव्ये' न्यूनातिन्यूनाः सर्गाः भवेयुः?
(A) अष्ट (B) चत्वारः
(C) पञ्च (D) सप्त

69. ''प्रजासु वृत्तिं यमयुङ्क्त वेदितुम्'' इत्यत्र 'यं' पदे का विभक्तिः?
(A) प्रथमा (B) तृतीया
(C) द्वितीया (D) चतुर्थी

70. ''हितैषिणः प्रियं प्रवक्तुं न इच्छन्ति'' इति कस्य कथनम्?
(A) युधिष्ठिरस्य
(B) सुयोधनस्य
(C) वनेचरस्य
(D) द्रौपद्याः

71. ''रहस्यनुज्ञामधिगम्य भूभृतः'' इत्यत्र 'भूभृतः' पदे विभक्तिरस्ति?
(A) पञ्चमीविभक्तिः एकवचनम्
(B) षष्ठीविभक्तिः एकवचनम्
(C) द्वितीयाविभक्तिः एकवचनम्
(D) चतुर्थीविभक्तिः एकवचनम्

72. 'प्रभवः' कैः न वञ्चनीयाः ?
(A) रक्षकैः **(B) अनुजीविभिः**
(C) राजभिः (D) मन्त्रिभिः

73. केषां चरित्रं दुर्बोधेन विज्ञेयः भवति ?
(A) मन्त्रिणाम्
(B) अनुजीविनाम्
(C) राज्ञाम्
(D) गुप्तचराणाम्

74. 'अबोधविक्लवः' कोऽस्ति ?
(A) वनेचरः (B) सुयोधनः
(C) युधिष्ठिरः (D) किरातः

75. ''वरं विरोधोऽपि......महात्मभिः'' रिक्तस्थानं पूरयतु ?
(A) सह (B) साकम्
(C) समम् (D) शुभ्रम्

76. मानवीम् अगम्यरूपां पदवीं प्रपित्सुः कः ?
(A) दुर्योधनः (B) युधिष्ठिरः
(C) वनेचरः (D) अर्जुनः

77. 'गतस्मयः सः' इत्यनेन कस्य बोधो जायते ?
(A) युधिष्ठिरस्य
(B) वनेचरस्य
(C) अर्जुनस्य
(D) सुयोधनस्य

78. ''तदीयमास्थाननिकेतनाजिरम्'' इत्यत्र 'तदीयम्' पदेन बोध्यते ?
(A) युधिष्ठिरः (B) रक्षकः
(C) दुर्योधनः (D) न कोऽपि

79. 'महौजसो मानधना धनार्चिता' इति कस्मै प्रयुक्तम् ?
(A) दुर्योधनाय
(B) युधिष्ठिराय
(C) वनेचराय
(D) धर्नुर्धारिसेनायै

80. ''कोपविजिह्ममाननम्'' पदमिदं कस्मै प्रयुक्तम् ?
(A) युधिष्ठिराय (B) द्रौपद्ये
(C) दुर्योधनाय (D) धनञ्जयाय

81. कस्मै स्त्रीजनवचनम् अपमानमिव भवति ?
(A) युधिष्ठिराय (B) सुयोधनाय
(C) भीष्माय (D) द्रौपद्यै

82. ''तथापि वक्तुं व्यवसाययन्ति मां'' इत्यत्र 'मां' पदेन कस्य ग्रहणं भवति ?
(A) वनेचरस्य (B) दुर्योधनस्य
(C) युधिष्ठिरस्य **(D) द्रौपद्याः**

83. 'कुरूनकुप्यं वसु वासवोपमः' इत्यत्र ''वासवोपमः'' कस्य विशेषणं वर्तते ?
(A) वृकोदरस्य **(B) धनञ्जयस्य**
(C) युधिष्ठिरस्य **(D)** वनेचरस्य

84. ''वनान्तशय्याकठिनीकृताकृती'' इति कस्य सन्दर्भे प्रयुक्तम् ?
(A) अर्जुनस्य
(B) नकुल-सहदेवयोः
(C) युधिष्ठिरस्य
(D) द्रौपद्याः

85. पराभवः केषां कृते उत्सव इव भवति?
(A) शत्रूणाम् (B) राज्ञाम्
(C) मानिनाम् (D) कुरूणाम्

86. ''न समयपरिरक्षणं क्षमं ते'' इत्यत्र किं छन्दः?
(A) वंशस्थ **(B)** मालिनी
(C) वियोगिनी **(D) पुष्पिताग्रा**

87. ''न तेन सज्यं क्वचिदुद्यतं धनुः'' इत्यत्र 'तेन' पदेन कस्य बोधः?
(A) दुर्योधनस्य (B) भीमस्य
(C) युधिष्ठिरस्य (D) अर्जुनस्य

88. 'विहाय' पदे प्रकृतिप्रत्ययः वर्तते?
(A) वि + हा + यत्
(B) वि + हा + ल्यप्
(C) वि + हा + ण्यत्
(D) वि + हा + क्त

89. 'अनुस्मृताखण्डलसूनुविक्रमः' इत्यत्र वर्णनमस्ति?
(A) अर्जुनस्य पराक्रमस्य
(B) द्रौपद्याः पराक्रमस्य
(C) दुर्योधनस्य कृषिव्यवस्थायाः
(D) दुर्योधनस्य सैन्यव्यवस्थायाः

90. 'अबन्ध्यकोपस्य' इति पदस्य अर्थः वर्तते?
(A) अकोपेन युक्तः
(B) कोपेन रहितः
(C) सफलकोपेन युक्तः
(D) न कोऽपि

91. 'चित्तवृत्तयः' इत्यत्र समासः वर्तते?
(A) षष्ठीतत्पुरुषः
(B) तृतीयातत्पुरुषः
(C) द्वितीयातत्पुरुषः
(D) चतुर्थीतत्पुरुषः

92. 'शास्ति' पदे धातुरस्ति?
(A) अकर्मकः (B) सकर्मकः
(C) द्विकर्मकः (D) न कोऽपि

93. किरातार्जुनीयस्य केन सर्गेण 'भारविः' आतपत्रोपाधिना विभूषितः?
(A) पञ्चमसर्गेण
(B) षष्ठसर्गेण
(C) तृतीयसर्गेण
(D) एकादशसर्गेण

94. 'पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम्'' इत्यत्र अलङ्कारः वर्तते?
(A) उत्प्रेक्षा (B) रूपकः
(C) परिसंख्या **(D) अर्थान्तरन्यासः**

95. 'शमेन सिद्धिं मुनयो न भूभृतः' इत्यस्य श्रोता वर्तते?
(A) वनेचरः (B) दुर्योधनः
(C) युधिष्ठिरः (D) द्रौपदी

96. 'विहाय लक्ष्मीपतिलक्ष्मकार्मुकम्' इत्यत्र 'कार्मुकम्' पदस्य अर्थः वर्तते?
(A) शरः
(B) भल्लः
(C) शरस्य प्रत्यञ्चा
(D) धनुः

97. किरातार्जुनीयमहाकाव्यस्य फलमस्ति?
(A) पाण्डवानां कृते राज्यप्राप्तिः
(B) पाशुपतास्त्रस्य प्राप्तिः
(C) इन्द्रकीलपर्वतस्य यात्रा
(D) शूकरेण सह युद्धः

98. 'रहसि' पदे प्रकृतिप्रत्ययः वर्तते?
(A) रह् + असुन्
(B) रम् + असि
(C) रम् + असुन्
(D) रह + असि

99. 'भवज्जिगीषया' इति पदे समासः वर्तते?
(A) केवलसमासः
(B) द्वन्द्वसमासः
(C) तृतीयातत्पुरुषः
(D) षष्ठीतत्पुरुषः

100. 'विधाय रक्षान् परितः परेतरान्' इत्यस्यां पङ्क्त्यां वनेचरः कस्य वर्णनं करोति?
(A) अर्जुनस्य युद्धकौशलस्य
(B) दुर्योधनस्य भेदनीतेः
(C) युधिष्ठिरस्य गुणगौरवस्य
(D) भीमस्य शरीरसौष्ठवस्य

101. 'तवाभिधानात् व्यथते नताननः' अत्र 'नताननः' कः?
(A) वनेचरः (B) युधिष्ठिरः
(C) अर्जुनः **(D) दुर्योधनः**

102. किरातार्जुनीयस्य प्रथमसर्गे का रीतिः प्राप्यते?
(A) गौडीरीतिः (B) पाञ्चालीरीतिः
(C) लाटीरीतिः **(D) वैदर्भीरीतिः**

103. 'महाभारतस्य वनपर्वणि' आधारितः ग्रन्थः कः?
(A) रघुवंशम्
(B) किरातार्जुनीयम्
(C) दशकुमारचरितम्
(D) बुद्धचरितम्

104. किरातार्जुनीयमहाकाव्यस्य प्रथमे सर्गे सर्वाधिकाः श्लोकाः कस्मिन् छन्दसि वर्तन्ते?
(A) वसन्ततिलकायाम्
(B) उपेन्द्रवज्रायाम्
(C) वंशस्थछन्दसि
(D) उपजातौ

105. 'किरातार्जुनीयम्' इत्यत्र 'किरात' पदेन कस्य बोधः भवति?
(A) गणेशस्य **(B) शिवस्य**
(C) राहोः (D) युधिष्ठिरस्य

106. युधिष्ठिरस्य समीपम् द्वैतवने कः आगतवान्?
(A) अर्जुनः **(B) वनेचरः**
(C) भीमः (D) सुयोधनः

107. वीररसप्रधानं काव्यमस्ति?
(A) उत्तररामचरितम्
(B) नैषधीयचरितम्
(C) कुमारसम्भवम्
(D) किरातार्जुनीयम्

108. किरातार्जुनीयस्य प्रथमसर्गे वनेचरः वार्तालापं करोति?

(A) दुर्योधनेन सह

(B) युधिष्ठिरेण सह

(C) अर्जुनेन सह

(D) नकुलेन सह

109. किरातः कस्य महाकाव्यस्य पात्रम् अस्ति?

(A) रघुवंशस्य

(B) किरातार्जुनीयस्य

(C) नैषधस्य

(D) बुद्धचरितस्य

110. 'किरातार्जुनीयमहाकाव्यस्य' उपजीव्यमस्ति -

(A) श्रीमद्भागवतम्

(B) विष्णुपुराणम्

(C) महाभारतम्

(D) रामायणम्

111. द्वैतवने गुप्तचरः कस्य समीपं समाययौ?

(A) दुर्योधनस्य

(B) युधिष्ठिरस्य

(C) गुप्तचरस्य

(D) द्रौपद्याः

112. 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः' सूक्तिरियं कुत्र प्राप्यते?

(A) अभिज्ञानशाकुन्तले

(B) किरातार्जुनीये

(C) नीतिशतके

(D) मेघदूते

113. 'अदेवमातृकाः' इति पदप्रयोगः कस्मिन् ग्रन्थे?

(A) अभिज्ञानशाकुन्तलस्य चतुर्थेऽङ्के

(B) किरातार्जुनीयस्य प्रथमसर्गे

(C) उत्तररामचरितस्य तृतीये अङ्के

(D) कादम्बर्य्याः शुकनासोपदेशे

114. 'स वर्णिलिङ्गी ....वनेचरः' श्लोकेऽस्मिन् 'वर्णिलिङ्गी' इत्यस्य कोऽभिप्रायः?

(A) ब्रह्मचारी (B) किरातः

(C) देवयोनिविशेषः (D) विपरीतलिङ्गी

115. किरातार्जुनीये दुर्योधनस्य शासन-व्यवस्थां ज्ञातुं कं प्रेषितवान् आसीत्?

(A) सहदेवम् **(B) वनेचरम्**

(C) नकुलम् (D) धृष्टद्युम्नम्

116. दुर्योधनः कुरुदेशस्य प्रजां प्रसीदयितुं यां व्यवस्थां करोति, सा सम्बन्धिता अस्ति–

(A) करव्यवस्थायां औदार्येण

(B) उपहारवितरणेन

(C) कृष्णेन सह सम्बन्धसुस्थापनेन

(D) सिञ्चनव्यवस्थायै नदीकूपादिनिर्माणेन

117. 'मखेष्वखिन्नोऽनुमतः पुरोधसा धिनोति हव्येन हिरण्यरेतसम्'– प्रस्तुत श्लोक में 'हिरण्यरेतसम्' का अर्थ है?

(A) अग्नि (B) इन्द्र

(C) कुबेर (D) ब्रह्मा

118. किरातार्जुनीये दुर्योधनस्य तुलना केन सह वर्णिता?
(A) **उरगेन सह** (B) शुकेन सह
(C) गजेन सह (D) सिंहेन सह

119. किरातार्जुनीये गुप्तचरः कस्मिन् वेषे हस्तिनापुरं प्रति गच्छति?
(A) सैनिकवेषेण
(B) यतिवेषेण
(C) ब्रह्मचारिवेषेण
(D) मन्त्रिवेषेण

120. किरातार्जुनीयस्य कः पाकः प्रथितः?
(A) द्राक्षापाकः
(B) कदलीपाकः
(C) आमलकीपाकः
(D) नारिकेलपाकः

121. ब्रह्मचारिवेशधारिणः गुप्तचरः क आसीत्?
(A) यक्षः (B) **वनेचरः**
(C) सुयोधनः (D) दुर्मुखः

122. धनं विजित्य युधिष्ठिराय कः ददति स्म?
(A) भीमः (B) नकुलः
(C) सहदेवः (D) **अर्जुनः**

123. किरातार्जुनीये कीदृशं चमत्कारित्वम्?
(A) पदलालित्यम्
(B) अर्थगौरवम्
(C) उपमा
(D) श्लेषालङ्कारम्

124. किरातार्जुनीये अर्जुनः भगवतः शङ्करात् किम् अस्त्रं प्राप्नोति?
(A) गाण्डीवम्
(B) पाशुपतास्त्रम्
(C) अग्निबाणम्
(D) जृम्भकास्त्रम्

125. 'सहसा विदधीत न क्रियाम्' अस्य वाक्यस्य हिन्द्याम् अनुवादो भवति?
(A) हठपूर्वकं कार्यं मा कुरु
(B) हठपूर्वकं कार्यं कुर्यात्
(C) सहसा कार्यं कुर्यात्
(D) सहसा कार्यं मा कुर्यात्

126. किरातार्जुनीयस्य पात्रं नास्ति-
(A) वनेचरः (B) सुयोधनः
(C) **नलः** (D) द्रौपदी

127. वनेचरस्य वार्तां श्रवणानन्तरं युधिष्ठिरः कुत्र गतवान्?
(A) स्वविश्रामगृहे
(B) द्रौपद्याः समीपे
(C) व्यासस्य समीपे
(D) पर्वते

128. ''कथं त्वमेतौ धृतिसंयमौ यमौ'' श्लोकेऽस्मिन् 'यमौ' इत्यनेन कयोः बोधः भवति?
(A) राम-लक्ष्मणयोः
(B) नकुल-सहदेवयोः
(C) भीमार्जुनयोः
(D) बलराम-कृष्णयोः

129. महात्मभिः साकं विरोधोऽपि कीदृशः भवति?
(A) दुःखदायकः
(B) धन-सम्पत्तिप्रदायकः
(C) उन्नतिप्रदायकः
(D) मैत्रीसम्बन्धवर्धकः

130. दुर्योधनः यज्ञकार्ये कथं संलग्नः भवति?
(A) परितः सैनिकान् नियुज्य
(B) रिपून् कारागारे संस्थाप्य
(C) मित्राणि उपकृत्य
(D) दुःशासनं यौवराज्यपदे संस्थाप्य

131. दुर्योधनः कदा भयभीतो भवति–
(A) श्रीकृष्णस्य मायाशक्तिं विचिन्त्य
(B) युधिष्ठिराभिधानं श्रुत्वा
(C) पाण्डवानां दैवीयशक्तिं स्मृत्य
(D) विदुरस्य उपदेशं श्रुत्वा

132. 'कृतप्रणामः' पदे समासः वर्तते?
(A) तत्पुरुषः (B) कर्मधारयः
(C) द्वन्द्वः **(D) बहुव्रीहिः**

133. कस्य महाकाव्यस्य प्रतिसर्गान्ते 'लक्ष्मीशब्दः' प्राप्यते?
(A) रघुवंशस्य
(B) शिशुपालवधस्य
(C) किरातार्जुनीयस्य
(D) नैषधीयचरितस्य

134. भीमस्य दैवीयजनकः आसीत्?
(A) धर्मराजः **(B) वायुः**
(C) अग्निः (D) इन्द्रः

135. 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः'– कस्मिन् ग्रन्थे उक्तम्–
(A) शिशुपालवधे (श्रीकृष्णः)
(B) हर्षचरिते (राज्यश्रीः)
(C) किरातार्जुनीये (वनेचरः)
(D) किरातार्जुनीये (युधिष्ठिरः)

136. अर्जुनः कुत्र नायकरूपेण वर्तते?
(A) किरातार्जुनीये
(B) शिशुपालवधे
(C) कुमारसम्भवे
(D) नैषधीयचरिते

137. 'किरातार्जुनीयम्' इत्यत्र 'किरात' पदेन कस्य बोधो जायते?
(A) किरातवेशधारी-शिवस्य
(B) वनेचरस्य
(C) सुयोधनस्य
(D) अर्जुनस्य

138. किरातार्जुनीयस्य प्रथमसर्गस्य अनुसारेण पाण्डवाः क्व निवसन्तः आसन्?
(A) शान्तिवने
(B) द्वैतवने
(C) तुलसीवने
(D) विन्ध्यवने

139. भारवेः अर्थगौरवसम्पन्नं काव्यं किम्?
(A) जानकीहरणम्
(B) किरातार्जुनीयम्
(C) सौन्दरानन्दम्
(D) रामचरितम्

140. 'अबन्ध्यकोपस्य विहन्तुरापदां, भवन्ति वश्याः स्वयमेव देहिनः' अत्र 'अबन्ध्यकोपस्य' कोऽर्थः?
(A) सफलक्रोध वाले
(B) मृषाक्रोध वाले
(C) मुक्तकोप वाले
(D) व्यर्थक्रोध वाले

141. किरातार्जुनीयस्य प्रथमसर्गे प्रयुक्तच्छन्दसि गणाः वर्तन्ते?
(A) जगण-तगण-जगण-रगणाः
(B) जगण-तगण-जगण-द्वौ गुरुवर्णौ
(C) तगण-तगण-जगण-गुरौ
(D) तगण-भगण-जगण-जगण-गुरौ

142. 'न्यायधारा हि साधवः।' तात्पर्यं किम्?
(A) न्यायधारा सरला भवति
(B) न्यायधारा सतां धारा भवति
(C) सज्जनाः न्यायमार्गमेव अनुसरन्ति
(D) सज्जनाः न्यायमार्गं परित्यजन्ति

143. यस्य कथा रामायणाश्रिता नास्ति–
(A) रघुवंशस्य
(B) भट्टिकाव्यस्य
(C) जानकीहरणस्य
(D) किरातार्जुनीयस्य

144. 'पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम्' अस्याः पङ्क्तेः रचयिता कः?
(A) कालिदासः
(B) माघः
(C) भारविः
(D) भर्तृहरिः

145. 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः' इत्यस्य अर्थः भवति?
(A) हितकरं वचनं दुर्लभं भवति
(B) मनोहारिवचनं दुर्लभं भवति
(C) हितकरं मनोहारि च वचनं दुर्लभम्
(D) दुर्लभवचनमेव हितकरं भवति।

146. 'वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः' इति वचनानुसारेण खलजनसंसर्गस्य अपेक्षया श्रेष्ठं भवति–
(A) साधुजनसंसर्गः
(B) साधुजनविरोधः
(C) दुष्टजनसंसर्गः
(D) मूर्खजनविरोधः

147. ''अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता'' कस्मिन् ग्रन्थे उक्तम्?
(A) नीतिशतके
(B) किरातार्जुनीये
(C) अभिज्ञानशाकुन्तले
(D) मेघदूते

148. 'समुन्नयन् भूतिमनार्यसंगमाद्वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः' इत्युक्तिः कुत्र प्राप्यते?
(A) उत्तररामचरिते
(B) मेघदूते
(C) किरातार्जुनीये
(D) कादम्बरीकथायाम्

149. 'अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता' कः एवं वदति–
(A) वनेचरः (B) द्रौपदी
(C) भीमः (D) युधिष्ठिरः

150. ''स्फुटता न पदैरपाकृता, न च न स्वीकृतमर्थगौरवम्'' इति कुत्र प्राप्यते?
(A) शिशुपालवधे
(B) किरातार्जुनीये
(C) जानकीहरणे
(D) रघुवंशे

151. 'न तितिक्षासममस्ति साधनम्'' इदं वाक्यमस्ति?
(A) शिशुपालवधे
(B) किरातार्जुनीये
(C) बुद्धचरिते (D) मेघदूते

152. 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः' उक्तिरियं वर्तते?
(A) युधिष्ठिरस्य **(B) वनेचरस्य**
(C) द्रौपद्याः (D) अर्जुनस्य

153. हितं मनोहारि च दुर्लभं..... ?
(A) धनम् (B) पुस्तकम्
(C) वचः (D) गृहम्

154. 'सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः परमापदां पदम्' सूक्तिरियं प्राप्यते?
(A) अभिज्ञानशाकुन्तले
(B) गीतायाम्
(C) किरातार्जुनीये
(D) शिशुपालवधे

155. राज्ञां स्वभावः भवति?
(A) दुर्विज्ञेयः
(B) विज्ञेयः
(C) अप्रत्यक्षः
(D) प्रत्यक्षः

156. 'प्रविश्य कृष्णासदनं महीभुजा' इत्यत्र 'कृष्णा' इत्यस्य तात्पर्यमस्ति?
(A) कृष्णः **(B) द्रौपदी**
(C) कुन्ती (D) सीता

157. 'भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः।' अस्य वचनस्य भावसाम्यं वर्तते?
(A) यथा कर्म तथा फलम्
(B) यः यादृशः तेन सह तादृशः
(C) जाकी रही भावना जैसी
(D) न एतेषु किमपि

158. ''अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता'' कस्य वचनमिदम्?
(A) माघस्य **(B) भारवेः**
(C) श्रीहर्षस्य (D) भवभूतेः

159. ''सहसा विदधीत न क्रियाम्'' – इत्ययमुपदेशः केन प्रदत्तः?
(A) भीमेन (B) द्रौपद्या
(C) युधिष्ठिरेण (D) वनेचरेण

160. 'निराश्रया हन्त! हता मनस्विता।' उक्तिरियं वर्तते?
(A) काश्यपस्य (B) भर्तृहरेः
(C) द्रौपद्याः (D) युधिष्ठिरस्य

161. ''सदानुकूलेषु हि कुर्वते रतिं, नृपेष्वमात्येषु च सर्वसम्पदः'' इति केनोक्तम्?
(A) द्रौपद्या
(B) वनेचरेण
(C) दुर्योधनेन
(D) युधिष्ठिरेण

162. ''स चिन्तयत्येव भियस्त्वदेष्यतीः, अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता'' उक्तिरियं कस्य विषये सङ्केतयति?
(A) युधिष्ठिरस्य
(B) वनेचरस्य
(C) दुर्योधनस्य
(D) दुःशासनस्य

163. 'निगूढतत्त्वं नयवर्त्म विद्विषाम्।' इयमुक्तिः कस्य वर्तते?
(A) वनेचरस्य (B) दुर्योधनस्य
(C) द्रौपद्याः (D) युधिष्ठिरस्य

164. 'विचित्ररूपाः खलु चित्तवृत्तयः।' सुभाषितमिदं प्राप्यते?
(A) मेघदूते
(B) किरातार्जुनीये
(C) उत्तररामचरिते
(D) शिवराजविजये

165. ''तथापि वक्तुं व्यवसाययन्ति मां निरस्तनारीसमया दुराधयः'' अयं श्लोकांशः प्राप्यते?
(A) मेघदूते
(B) शिवराजविजये
(C) नीतिशतके
(D) किरातार्जुनीये

166. 'प्रजासु वृत्तिं यमयुङ्क्त वेदितुम्।' श्लोकांशोऽयं प्राप्यते?
(A) किरातार्जुनीये
(B) प्रतिमानाटके
(C) मालविकाग्निमित्रे
(D) शिशुपालवधे

167. ''हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः'' कस्येयमुक्तिः?
(A) भारवेः (B) कालिदासस्य
(C) व्यासस्य (D) वाल्मीकेः

168. 'पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम्।' उक्तिरियं प्राप्यते?
(A) नीतिशतके
(B) किरातार्जुनीये
(C) मुद्राराक्षसे
(D) शिशुपालवधे

169. ''व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवं'' सूक्तिरियं किरातार्जुनीयस्य कस्मात् सर्गात् उद्धृता वर्तते?
(A) प्रथमसर्गात्
(B) द्वितीयसर्गात्
(C) तृतीयसर्गात्
(D) चतुर्थसर्गात्

170. ''क्रियासु युक्तैर्नृपचारचक्षुषो, न वञ्चनीयाः प्रभवोऽनुजीविभिः'' पंक्तिरियं कुत्र प्राप्यते?
(A) किरातार्जुनीये
(B) शिशुपालवधे
(C) विक्रमाङ्कदेवचरिते
(D) रघुवंशे

171. 'वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः' सूक्तिरियं प्राप्यते?
(A) शिवराजविजये – सेनापतिना
(B) किरातार्जुनीये – वनेचरेण
(C) किरातार्जुनीये – युधिष्ठिरेण
(D) शिवराजविजये – शिववीरेण

172. 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः' एषा उक्तिः कस्य काव्यस्य?
(A) शिशुपालवधे श्रीकृष्णः
(B) हर्षचरिते-राज्यश्रीः
(C) किरातार्जुनीये-युधिष्ठिरः
(D) किरातार्जुनीये-वनेचरः

173. "व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवं भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः"– इत्याद्युक्तिः किरातार्जुनीये भवति–
(A) अर्जुनस्य **(B) द्रौपद्याः**
(C) युधिष्ठिरस्य (D) वनेचरस्य

174. 'अबन्ध्यकोपस्य विहन्तुरापदां भवन्ति वश्याः स्वयमेव देहिनः' इति वाक्यं कस्मिन् महाकाव्येऽस्ति?
(A) रघुवंशे
(B) शिशुपालवधे
(C) किरातार्जुनीये
(D) नैषधीयचरिते

175. द्वैतवने युधिष्ठिरं कः समाययौ–
(A) नभश्चरः (B) स्थलचरः
(C) वनेचरः (D) शनैश्चरः

176. 'वृणुते हि विमृश्यकारिणं गुणलुब्धाः स्वयमेव सम्पदः' उक्तिरियं प्राप्यते?
(A) नीतिशतके
(B) शिशुपालवधे
(C) किरातार्जुनीये
(D) कुमारसम्भवे

177. किरातार्जुनीयस्य मल्लिनाथसूरि-कृतटीकायाः नाम किम्?
(A) सञ्जीवनी
(B) घण्टापथः
(C) छाया
(D) चन्द्रालोकः

178. "सहसा विदधीत न क्रियाम्" कस्य कवेः अयं प्रियः श्लोकः?
(A) भारवेः
(B) माघस्य
(C) कालिदासस्य
(D) भवभूतेः

179. बृहत्त्रयीषु किं महाकाव्यं नास्ति?
(A) किरातार्जुनीयम्
(B) शिशुपालवधम्
(C) रघुवंशमहाकाव्यम्
(D) नैषधीयचरितम्

180. अर्थगौरवस्य कृते प्रसिद्धिरस्ति?
(A) कालिदासस्य
(B) दण्डिनः
(C) भारवेः
(D) माघस्य

181. "न नो ननुन्नो नुन्नोनो नाना नानानना ननु" अस्य श्लोकस्य सम्बन्धः अस्ति–
(A) भारवेः किरातार्जुनीयेन सह
(B) माघस्य शिशुपालवधेन सह
(C) कालिदासस्य रघुवंशेन सह
(D) वाल्मीकेः रामायणेन सह

182. "व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवं" सूक्तिरियं प्राप्यते?
(A) माघकाव्ये
(B) दण्डिकाव्ये
(C) भारविकाव्ये
(D) कालिदासकाव्ये

183. कस्य महाकाव्यस्य प्रथमत्रयसर्गाणां प्रसिद्धिः 'पाषाणत्रय' नाम्ना वर्तते?
(A) रघुवंशस्य
(B) किरातार्जुनीयस्य
(C) नैषधीयचरितस्य
(D) कुमारसम्भवस्य

184. भारवेः मूलनाम किमासीत्?
(A) रत्नाकरः
(B) श्रीधरः
(C) दामोदरः
(D) नारायणस्वामी

185. किरातार्जुनीयस्य मङ्गलाचरणे किं छन्दः?
(A) मालिनी
(B) वंशस्थः
(C) पुष्पिताग्रा
(D) रुचिरा

186. पाण्डवानां कृते वनवासस्य अवधिः आसीत्?
(A) चतुर्दशवर्षाणाम्
(B) पञ्चदशवर्षाणाम्
(C) अष्टादशवर्षाणाम्
(D) त्रयोदशवर्षाणाम्

187. 'किरातार्जुनीयस्य कथानकं कुतः उद्धृतं वर्तते?
(A) महाभारतस्य वनपर्वणः
(B) महाभारतस्य आदिपर्वणः
(C) महाभारतस्य सभापर्वणः
(D) महाभारतस्य भीष्मपर्वणः

188. 'आतपत्र' इति कस्य उपाधिः?
(A) माघस्य **(B) भारवेः**
(C) कालिदासस्य (D) श्रीहर्षस्य

189. 'बृहत्त्रय्यां परिगणितम् अस्ति'?
(A) रामायणम्
(B) महाभारतम्
(C) किरातार्जुनीयम्
(D) रघुवंशमहाकाव्यम्

190. भारवेः कालः विद्वद्भिः स्वीक्रियते?
(A) ६०० ईस्वीये
(B) ८०० ईस्वीये
(C) कालिदासस्य पूर्वम्
(D) प्रथम-शताब्द्याः परम्

191. भारविः पूर्ववर्तिकविः वर्तते?
(A) व्यासस्य **(B) श्रीहर्षस्य**
(C) कालिदासस्य (D) अश्वघोषस्य

192. किरातार्जुनीयस्य मुख्यः रसः अस्ति?
(A) वीररसः
(B) शृङ्गाररसः
(C) भयानकरसः
(D) न कोऽपि

193. पाण्डवानां कृते अज्ञातवासः आसीत्?
(A) वर्षद्वयस्य
(B) एकवर्षस्य
(C) त्रयोदशवर्षाणाम्
(D) चतुर्दशवर्षाणाम्

194. पाण्डवाः वनवासकाले निवसन्ति स्म?
(A) तुलसीवने (B) विन्ध्यवने
(C) द्वैतवने (D) नन्दनवने

195. द्रौपदी युधिष्ठिरं कं प्रति उपालम्भयति?
(A) भीमं प्रति
(B) दुर्योधनं प्रति
(C) वनेचरं प्रति
(D) कर्णं प्रति

196. भारवेः काव्ये कस्य अलङ्कारस्य प्रामुख्यं वर्तते?
(A) रूपकस्य
(B) उत्प्रेक्षायाः
(C) उपमायाः
(D) चित्रालङ्कारस्य

197. भारवेः पितुर्नाम आसीत्?
(A) श्रीधरः (B) महीधरः
(C) लक्ष्मीधरः (D) कृष्णधरः

198. भारवेः माता आसीत्?
(A) रसिका **(B) सुशीला**
(C) सुनीता (D) सुगीता

199. किरातार्जुनीयस्य पात्रं नास्ति?
(A) भीमः (B) दुर्योधनः
(C) वनेचरः **(D) रघुः**

200. 'किरातार्जुनीयस्य पात्रमस्ति?
(A) दुष्यन्तः (B) चारुदत्तः
(C) युधिष्ठिरः (D) बाली

201. किरातार्जुनीयं कीदृशं काव्यम्?
(A) नाटकम्
(B) चम्पूकाव्यम्
(C) आख्यायिका
(D) महाकाव्यम्

202. भारवेः कवितायां कस्य प्रभावः दृश्यते?
(A) कालिदासस्य
(B) माघस्य
(C) भवभूतेः
(D) न कस्यापि

203. किरातार्जुनीयस्य प्रथमसर्गे कस्याः उदात्तचरित्रं वर्णितम्?
(A) कुन्त्याः **(B) द्रौपद्याः**
(C) गान्धार्य्याः (D) तारायाः

204. वर्णिलिङ्गी कः आसीत्?
(A) अर्जुनः **(B) वनेचरः**
(C) दुर्योधनः (D) युधिष्ठिरः

205. वनेचरः हस्तिनापुरं कस्मिन् वेशे गतवान्?
(A) राजवेशे
(B) ब्रह्मचारिवेशे
(C) मन्त्रिवेशे
(D) कृषकवेशे

206. भारवेः रचनाः सन्ति?
(A) तिस्रः (B) द्वे
(C) एका (D) सप्त

207. द्वैतवने युधिष्ठिरस्य समीपे कः आगच्छति?

(A) दुर्योधनः
(B) भीष्मः
(C) वर्णिलिङ्गी वनेचरः
(D) द्रोणाचार्यः

208. किरातार्जुनीये 'दुर्योधनस्य' संज्ञा वर्तते?

(A) सुयोधनः (B) दुःशासनः
(C) ज्येष्ठभ्राता (D) धनञ्जयः

209. वनेचरस्य चारित्रिकी विशेषता नास्ति?

(A) सत्यवान्, हितैषी
(B) स्पष्टवक्ता
(C) गुणवान्
(D) नीचः अहङ्कारी

210. किरातार्जुनीयस्य प्रारम्भः केन पदेन भवति?

(A) श्रियः (B) लक्ष्मीः
(C) वनेचरः (D) कुरूणाम्

211. 'वञ्चनीयाः' पदे प्रत्ययोऽस्ति?

(A) तव्यत् **(B) अनीयर्**
(C) ल्यप् (D) तुमुन्

212. 'न वञ्चनीयाः प्रभवोऽनुजीविभिः' कथनमेतत् कस्य वर्तते?

(A) वनेचरस्य युधिष्ठिरं प्रति
(B) द्रौपद्याः युधिष्ठिरं प्रति
(C) युधिष्ठिरस्य वनेचरं प्रति
(D) सेवकस्य जनतां प्रति

213. 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः' सूक्तिरियं प्राप्यते?

(A) किरातार्जुनीयस्य प्रथमसर्गे
(B) शिशुपालवधस्य प्रथमसर्गे
(C) रघुवंशमहाकाव्यस्य प्रथमसर्गे
(D) नैषधीयचरितस्य प्रथमसर्गे

214. ''स किं सखा साधु न शास्ति योऽधिपम्'' सूक्तिरियं केनोक्तम्?

(A) युधिष्ठिरेण (B) दुर्योधनेन
(C) वनेचरेण **(D)** द्रौपद्या

215. 'नयेन जेतुं जगतीं सुयोधनः' अत्र 'सुयोधनस्य' कोऽर्थः?

(A) भारविः (B) श्रीकृष्णः
(C) दुर्योधनः (D) युधिष्ठिरः

216. ''वितन्यते तेन नयेन पौरुषम्'' इत्यत्र पुरुषार्थ-विस्तारः केन क्रियते?

(A) युधिष्ठिरेण **(B) दुर्योधनेन**
(C) वनेचरेण (D) भीमेन

217. 'निहन्ति दण्डेन स धर्मविप्लवम्' इति कस्मै प्रयुक्तम् ?

(A) दुर्योधनाय (B) युधिष्ठिराय
(C) वनेचराय (D) द्रौपद्यै

218. ''भवादृशेषु प्रमदाजनोदितं भवत्यधिक्षेप इवानुशासनम्'' इति कः केन सह वदति?

(A) वनेचरः-युधिष्ठिरेण सह
(B) वनेचरः-दुर्योधनेन सह
(C) द्रौपदी-युधिष्ठिरेण सह
(D) दुर्वासाः-शकुन्तलया सह

219. वनवासकाले अर्जुनः किं गृहीत्वा युधिष्ठिराय ददति स्म?
(A) स्वर्णम्
(B) रजतः
(C) धनम्
(D) वल्कलवस्त्रम्

220. किरातार्जुनीये 'युगलभ्रातृरूपेण' वर्णनं वर्तते?
(A) भीमार्जुनयोः
(B) दुर्योधन-दुःशासनयोः
(C) नकुल-सहदेवयोः
(D) वनेचर-युधिष्ठिरयोः

221. किरातार्जुनीयस्य सूक्तिः नास्ति?
(A) हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः
(B) प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः
(C) विचित्ररूपाः खलु चित्तवृत्तयः
(D) भवन्ति नम्रास्तरवः फलोद्गमैः

222. "कृतप्रणामस्य महीं महीभुजे" इत्यत्र 'महीभुजे' पदे का विभक्तिः?
(A) सप्तमी **(B) चतुर्थी**
(C) तृतीया (D) पञ्चमी

223. किरातार्जुनीये 'किरात' शब्देन कस्य बोधः जायते?
(A) भीमस्य **(B) शिवस्य**
(C) अर्जुनस्य (D) दुर्योधनस्य

224. वनेचरस्य वार्तां श्रुत्वा युधिष्ठिरः कुत्र अगच्छत्?
(A) द्रौपद्याः समीपे
(B) व्यासस्य समीपे
(C) श्रीकृष्णस्य समीपे
(D) दुर्योधनस्य समीपे

225. दुर्योधनस्य शासनव्यवस्थां ज्ञातुं हस्तिनापुरं युधिष्ठिरः कं प्रेषितवान् आसीत्?
(A) वनेचरम् (B) अर्जुनम्
(C) नकुलम् (D) न एतेषु कोऽपि

226. किरातार्जुनीये अर्जुनः शिवेन कम् अस्त्रं प्राप्तवान्?
(A) पाशुपतास्त्रम्
(B) आग्नेयास्त्रम्
(C) वायव्यास्त्रम्
(D) ब्रह्मास्त्रम्

227. 'वनेचरः' कस्य ग्रन्थस्य पात्रम्?
(A) उत्तररामचरितस्य
(B) कादम्बर्य्याः
(C) शिशुपालवधस्य
(D) किरातार्जुनीयस्य

228. किरातार्जुनीये संवादः नास्ति?
(A) युधिष्ठिर-व्यासयोः
(B) वनेचर-युधिष्ठिरयोः
(C) इन्द्र-अर्जुनयोः
(D) सिंह-दिलीपयोः

229. किरातार्जुनीये कुशलगुप्तचर-भूमिकायां चित्रितोऽस्ति?
(A) दुर्योधनः (B) युधिष्ठिरः
(C) वनेचरः (D) द्रौपदी

230. किरातार्जुनीयं निबद्धमस्ति?
(A) अध्यायेषु **(B) सर्गेषु**
(C) काण्डेषु (D) अङ्केषु

231. किरातार्जुनीयस्य प्रथमसर्गे पात्ररूपेण चर्चा नास्ति?
(A) वनेचरः (B) द्रौपदी
(C) सुयोधनः **(D) श्रीकृष्णः**

232. वनेचरः युधिष्ठिरं, कस्य वृत्तान्तं श्रावयति?
(A) हस्तिनापुरस्य कर्णस्य
(B) इन्द्रप्रस्थस्य राज्ञः
(C) हस्तिनापुरस्य दुर्योधनस्य
(D) वनाधिराजस्य सिंहस्य

233. किरातार्जुनीयस्य पात्रं नास्ति?
(A) द्रौपदी (B) युधिष्ठिरः
(C) सुयोधनः **(D) मुरला**

234. किरातार्जुनीयस्य प्रथमसर्गस्य प्रथमः वक्ता अस्ति?
(A) वनेचरः (B) श्रीकृष्णः
(C) भीमः (D) दुर्योधनः

235. वनेचरः हस्तिनापुरवृत्तान्तं कं श्रावितवान्?
(A) भीमम्
(B) द्रौपदीम्
(C) युधिष्ठिरम्
(D) अर्जुनम्

236. भारविः किरातार्जुनीयस्य मङ्गलाचरणं केन पदेन कृतवान्?
(A) श्रीशब्देन
(B) 'लक्ष्मीशब्देन'
(C) 'ओम्' शब्देन
(D) श्रीकृष्णशब्देन

237. भीमः स्वदेहे लेपनं करोति स्म?
(A) कमलरसस्य
(B) रक्तचन्दनस्य
(C) पीतचन्दनस्य
(D) सुगन्धित-इत्रस्य

238. 'शमेन सिद्धिं मुनयो न भूभृतः' इति कस्य कथनम् ?
(A) श्रीहर्षस्य (B) माघस्य
(C) भारवेः (D) दण्डिनः

239. 'किरातश्च अर्जुनश्च' इत्यत्र कः समासः?
(A) द्विगुः **(B) द्वन्द्वः**
(C) तत्पुरुषः (D) बहुव्रीहिः

240. अर्थगौरवस्य कृते प्रसिद्धिरस्ति?
(A) कालिदासस्य (B) भवभूतेः
(C) बाणस्य **(D) भारवेः**

241. महाकविदण्डिनः पितामहः कः आसीत्?
(A) मम्मटः (B) कैय्यटः
(C) भारविः (D) बाणः

242. महाकवेः भारवेः उपाधिः आसीत्?
(A) आतपत्रम्
(B) घण्टा
(C) घटिकाशतक
(D) उपमा सम्राट्

243. 'महाकाव्ये' न्यूनातिन्यूनाः सर्गाः भवेयुः?
(A) अष्ट (B) चत्वारः
(C) पञ्च (D) सप्त

244. अधोलिखितेषु लघुत्रयीषु न परिगण्यते?
(A) रघुवंशम्
(B) कुमारसम्भवम्
(C) शिशुपालवधम्
(D) मेघदूतम्

245. ''प्रजासु वृत्तिं यमयुङ्क्त वेदितुम्'' इत्यत्र 'यं' पदेन कस्यावबोधः जायते?
(A) सुयोधनस्य (B) युधिष्ठिरस्य
(C) वनेचरस्य (D) द्वैतवनस्य

246. ''हितैषिणः प्रियं प्रवक्तुं न इच्छन्ति'' इत्यत्र 'हितैषिणः' पदे का विभक्तिः-
(A) प्रथमा
(B) पञ्चमी
(C) षष्ठी
(D) द्वितीया

247. 'स सौष्ठवौदार्यविशेषशालिनीं विनिश्चितार्थामिति वाचमाददे' इत्यत्र 'स' पदेन कस्य बोधः भवति?
(A) सुयोधनस्य
(B) युधिष्ठिरस्य
(C) किरातस्य
(D) वनेचरस्य

248. राज्ञः मन्त्रिणश्च अनुकूले सति अनुरागं कुर्वन्ति?
(A) सर्वसम्पत्तयः
(B) सर्वोपदेशाः
(C) विपत्तयः
(D) कुमतयः

249. ''तनोति शुभ्रं गुणसम्पदा यशः'' कथनमिदं कस्मै प्रयुक्तम्?
(A) सुयोधनाय (B) भीमाय
(C) वनेचराय (D) अर्जुनाय

250. 'धर्मार्थकामान्' भारविः किं वदति–
(A) धर्मत्रयः **(B) त्रिगणः**
(C) त्रिमुनिः (D) धर्मार्थकामाः

251. 'अशंकिताकारमुपैति शङ्कितः' कथनमिदं कस्य वर्तते?
(A) द्रौपद्याः (B) किरातस्य
(C) वनेचरस्य (D) सुयोधनस्य

252. कुल्यादिभिः सिञ्चिता कृषिभूमिः निगद्यते?
(A) अदेवमातृकाः (B) देवमातृकाः
(C) क्षेत्रमातृकाः (D) मातृकाः

253. पृथिव्याः कृते किरातार्जुनीये किं पदं प्रयुक्तम् ?
(A) बाधम् **(B) मेदिनी**
(C) वसूनि (D) उदयनः

254. ''नवयौवनोद्धतम्'' भारविः कं वदति?
(A) दुर्योधनम्
(B) दुःशासनम्
(C) भीमम्
(D) नकुल-सहदेवौ

255. कः आगम्यमानानां विपत्तीनां विषये एव चिन्तयति?
(A) युधिष्ठिरः (B) वनेचरः
(C) सुयोधनः (D) द्रौपदी

256. वनेचरस्य गमनानन्तरं युधिष्ठिरः कस्य भवनं गच्छति?
(A) कौरवस्य **(B) द्रौपद्याः**
(C) अर्जुनस्य (D) वनेचरस्य

257. ''व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवम्'' इति कः वदति?
(A) वनेचरः (B) सुयोधनः
(C) द्रौपदी (D) अर्जुनः

258. ''परिभ्रमँल्लोहितचन्दनोचितः'' पदमिदं कस्मै प्रयुक्तम्?
(A) सुयोधनाय (B) धनञ्जयाय
(C) वृकोदराय (D) यमाय

259. 'चित्तवृत्तयः' कथं भवन्ति ?
(A) अचेतनाः **(B) विचित्ररूपाः**
(C) प्रसभाः (D) चलायमानाः

260. ''पुरोपनीतं नृप रामणीयकम्'' इति कस्य कथनम्?
(A) वनेचरस्य **(B) द्रौपद्याः**
(C) युधिष्ठिरस्य (D) अर्जुनस्य

261. द्रौपदी 'वन्यफलाशिनः' इति पदेन 'कं' भावयति?
(A) अर्जुनम् (B) भीमम्
(C) युधिष्ठिरम् (D) नकुलम्

262. ''समूलमुन्मूलयतीव मे मनः'' इति वाक्यं कस्मै प्रयुक्तम्?
(A) युधिष्ठिराय
(B) द्रौपद्ये
(C) भीमाय
(D) दुर्योधनाय

263. 'जटाधरः सञ्जुहुधीह पावकम्' कथनमिदं कः कं प्रति वदति?
(A) द्रौपदी युधिष्ठिरं प्रति
(B) वनेचरः युधिष्ठिरं प्रति
(C) अर्जुनः भीमं प्रति
(D) दुर्योधनः सेवकं प्रति

264. ''विशङ्कमानो भवतः पराभवम्'' इत्यत्र 'भवतः' पदेन कः संकेतितः-
(A) दुर्योधनः
(B) वनेचरः
(C) युधिष्ठिरः
(D) द्रौपदी

265. भारवेः पूर्ववर्तिकविः कः वर्तते?
(A) व्यासः
(B) कालिदासः
(C) श्रीहर्षः
(D) अश्वघोषः

266. ''न तेन सज्यं क्वचिदुद्यतं धनुः'' इत्यत्र 'उद्यतम्' पदे कः धातुः?
(A) उद् + यम् + क्त
(B) उद् + क्त
(C) उद्य + क्त
(D) उद् + वह् + क्त

267. ''महौजसो मानधना धनार्चिताः'' इत्यत्र 'मानधना' पदस्यार्थः भवति?
(A) दर्पयुक्तः
(B) स्वाभिमानी
(C) निरभिमानी
(D) न एतेषु कोऽपि

268. "स चिन्तयत्येव भियस्त्वदेष्यतीः इत्यत्र 'स' पदेन कः सङ्केतितः-
(A) द्रौपदी (B) भीमः
(C) युधिष्ठिरः **(D) दुर्योधनः**

269. 'अवधूय' पदे प्रकृतिप्रत्ययः वर्तते?
(A) अव + धू + यत्
(B) आङ् + धू + ल्यप्
(C) अव + धू + ल्यप्
(D) अव + धू + यत्

270. 'कृतारिषड्वर्गजयेन' इति पदं कस्मै प्रयुक्तम्?
(A) युधिष्ठिराय (B) वनेचराय
(C) भीमाय **(D) दुर्योधनाय**

271. अर्जुनः कस्य पर्वतस्य यात्रां करोति?
(A) रैवतकपर्वतस्य
(B) इन्द्रकीलपर्वतस्य
(C) सुमेरुपर्वतस्य
(D) हिमालयपर्वतस्य

272. 'प्रसन्नगम्भीरपदा सरस्वती' इति प्रयोगः प्राप्यते?
(A) भारवेः कृते
(B) कालिदासस्य कृते
(C) भवभूतेः कृते
(D) श्रीहर्षस्य कृते

273. के जनाः शत्रून् पराजितं कृत्वा शान्तिमार्गेण सिद्धिं प्राप्नुवन्ति?
(A) मुनिजनाः (B) राजा
(C) दुर्योधनः (D) युधिष्ठिरः

274. एकाक्षरी-श्लोकाय कः प्रसिद्धः?
(A) दण्डी **(B) भारविः**
(C) बिल्हणः (D) न कोऽपि

275. 'सदानुकूलेषु हि कुर्वते रतिं, नृपेष्वमात्येषु च सर्वसम्पदः' इति केनोक्तम्?
(A) द्रौपद्या **(B) वनेचरेण**
(C) दुर्योधनेन (D) युधिष्ठिरेण

276. भारवेः पितरौ स्तः-
(A) नीलकण्ठः जातुकर्णी
(B) चन्द्रदेवः राजदेवी
(C) श्रीधरः सुशीला
(D) श्रीकण्ठः रसिकवती

277. अवन्तिसुन्दरीकथानुसारं भारवेः पितुः नाम किम्?
(A) नारायणस्वामी (B) श्रीधरः
(C) नीलकण्ठः (D) दामोदरः

278. भारवेः भार्यायाः नाम किम्?
(A) रसिकवती (B) यशोधरा
(C) राजदेवी (D) गोणिका

279. अवन्तिसुन्दरीकथानुसारं भारवेः मूलनाम किम्?
(A) लम्बोदरः (B) मंखकः
(C) जयादित्यः **(D) दामोदरः**

280. भारवेः सम्बन्धः कस्मात् प्रदेशात् अस्ति?
(A) उत्तरभारतात्
(B) दक्षिणभारतात्
(C) कश्मीरप्रदेशात्
(D) बंगालप्रदेशात्

281. भारवेः गोत्रोऽस्ति।
(A) कुशिकः (B) वशिष्ठः
(C) अंगिरा (D) किमपि न

282. भारविः कस्य मित्रं सभापण्डितः च आसीत् -
(A) हर्षवर्धनस्य
(B) सिंहविष्णोः
(C) विष्णुवर्धनस्य
(D) रविकीर्तेः

283. भारवेः स्थितिकालः अस्ति-
(A) कालिदासस्य पूर्वार्धम्
(B) माघस्य उत्तरार्धम्
(C) षष्ठ-शताब्द्याः उत्तरार्द्धे सप्तम शताब्द्याः पूर्वार्द्धे च-
(D) उपर्युक्तं न किमपि

284. भारवेः पुत्रस्य नाम आसीत्?
(A) मनोरथः (B) वीरदत्तः
(C) दण्डी (D) सर्वाश्रयः

285. भारवेः पुत्रस्य मनोरथस्य चतुर्थः पुत्रः कः आसीत्?
(A) रविदत्तः **(B) वीरदत्तः**
(C) वीरकान्तः (D) नारायणः

286. वीरदत्तस्य पत्न्याः नाम अस्ति-
(A) सुशीला **(B) गौरी**
(C) गार्गी (D) किमपि न

287. वीरदत्तस्य पुत्रः कः?
(A) अश्वघोषः (B) कालिदासः
(C) दण्डी (D) भवभूतिः

288. भारविः दण्डिनः कः अस्ति-
(A) जनकः (B) मातुलः
(C) पितामहः **(D) प्रपितामहः**

289. भारवेः जन्मस्थानम् अस्ति?
(A) अचलपुरम् (B) अचलीपुरम्
(C) पद्मपुरम् (D) उज्जयिनी

290. भारवेः काव्यस्य वैशिष्ट्यम् अस्ति-
(A) अर्थगौरवम्
(B) पदलालित्यम्
(C) उपमायाः निरूपणम्
(D) किमपि न

291. भारविः उपासकः आसीत् -
(A) ब्रह्मणः **(B) शिवस्य**
(C) बुद्धस्य (D) विष्णोः

292.भारवेः उपाधिः अस्ति-
(A) कविकुलगुरुः
(B) आतपत्र-भारविः
(C) शतावधानः
(D) पदवाक्यप्रमाणज्ञः

293. किरातार्जुनीयमहाकाव्ये कति सर्गाः श्लोकाश्च सन्ति?
(A) 19/1025
(B) 18/1040
(C) 20/1650
(D) 22/2830

294. किरातार्जुनीयस्य उपजीव्यम् अस्ति-
(A) महाभारतस्य भीष्मपर्व
(B) महाभारतस्य विराट्पर्व
(C) महाभारतस्य उद्योगपर्व
(D) महाभारतस्य वनपर्व

295. किरातार्जुनीयं विभक्तम् अस्ति-
(A) प्रकाशेषु (B) निःश्वासेषु
(C) अङ्केषु **(D) सर्गेषु**

296. युधिष्ठिरादीनां पञ्चपाण्डवानां कृते वनवासः अभूत्-
(A) 12 वर्षाणाम्
(B) 13 वर्षाणाम्
(C) 14 वर्षाणाम्
(D) 15 वर्षाणाम्

297. पाण्डवानां अज्ञातवासस्य अवधिः आसीत्-
(A) 13 वर्षस्य (B) 12 वर्षस्य
(C) 1 वर्षस्य (D) 5 वर्षस्य

298. महाकविभारवेः शैली अस्ति-
(A) सुकुमारशैली
(B) अलङ्कृतशैली
(C) वैदर्भीशैली
(D) सर्वे

299. महाराजदुर्विनीतः किरातार्जुनीयस्य कस्य सर्गस्य टीकाम् अरचयत्।
(A) प्रथमसर्गस्य
(B) दशमसर्गस्य
(C) पञ्चदशसर्गस्य
(D) षोडशसर्गस्य

300. बृहत्कथायाः संस्कृतरूपान्तर-शब्दावतारस्य लेखकः अस्ति।
(A) सिंहविष्णुः (B) विष्णुवर्धनः
(C) दुर्विनीतः (D) पुष्यमित्रः

301. संस्कृतसाहित्ये रीतिकाव्यस्य जन्मदाता अस्ति-
(A) माघः (B) वामनः
(C) विश्वनाथः **(D) भारविः**

302. किरातार्जुनीयस्य प्रथमं द्वितीयं तृतीयं च सर्गाः किं कथ्यन्ते-
(A) चित्रकाव्यम्
(B) पाषाणत्रयम्
(C) राजनीतिकाव्यम्
(D) सरसकाव्यम्

303. किरातार्जुनीयस्य नायकः अस्ति-
(A) युधिष्ठिरः (B) दुर्योधनः
(C) अर्जुनः (D) श्रीकृष्णः

304. एहोलशिलालेखस्य अवधिः अस्ति-
(A) 633 ई. **(B) 634 ई.**
(C) 635 ई. (D) 636 ई.

305. किरातार्जुनीयस्य सर्वप्रामाणिकी टीका कस्य अस्ति-
(A) हरिकान्तस्य
(B) भागीरथमित्रस्य
(C) विश्वनाथस्य
(D) मल्लिनाथस्य

306. किरातार्जुनीये आचार्यमल्लिनाथस्य टीकायाः नाम अस्ति-
(A) सारस्वती (B) बालबोधिनी
(C) घण्टापथ (D) तत्त्वदीपिका

307. आचार्य-मल्लिनाथस्य पुत्रः अस्ति-
(A) पेड्डुभट्ट (B) कुमारस्वामी
(C) (A) (B) **उभौ** (D) सारस्वतः

308. आचार्यमल्लिनाथस्य उपाधिः अस्ति-
(A) कोलाचलः
(B) महामहोपाध्यायः
(C) (A) (B) उभौ
(D) आतपत्रम्

309. आचार्यमल्लिनाथस्य कालः अस्ति-
(A) 14वीं शताब्दी उत्तरार्ध
(B) 15वीं शताब्दी
(C) 16वीं शताब्दी
(D) 17वीं शताब्दी

310. आचार्यमल्लिनाथस्य प्रणीतग्रन्थः अस्ति-
(A) उदारकाव्यम् (B) रघुवीरचरितम्
(C) (A) (B)**उभौ** (D) किरातार्जुनीयम्

311. आचार्यमल्लिनाथः 'सञ्जीवनी' नाम्नी टीकाम् अरचयत् -
(A) कुमारसम्भवे
(B) रघुवंशे
(C) मेघदूते
(D) उपर्युक्तेषु सर्वेषु

312. किरातार्जुनीयम् शब्दे कः प्रत्ययः?
(A) छ-प्रत्ययः
(B) ङीप्-प्रत्ययः
(C) ल्युट्-प्रत्ययः
(D) युच्-प्रत्ययः

313. 'हितं मनोहारि च दुर्लभं ....' रिक्तस्थानं पूरयतु-
(A) धनम् (B) पुस्तकम्
(C) वचः (D) गृहम्

314. "वसन्ति हि प्रेम्णि गुणा न वस्तुनि" इति कस्योक्तिः?
(A) कालिदासस्य (B) भवभूतेः
(C) भारवेः (D) श्रीहर्षस्य

315. "अबन्ध्यकोपस्य विहन्तुरापदां भवन्ति वश्याः स्वयमेव देहिनः" इति वाक्यं कस्मिन् महाकाव्येऽस्ति?
(A) रघुवंशे (B) शिशुपालवधे
(C) किरातार्जुनीये (D) नैषधीयचरिते

316. 'स वल्कवासांसि तवाधुनाहरन्' कः?
(A) अर्जुनः (B) भीमः
(C) नकुलः (D) सहदेवः

317. "कीदृशं वचः दुर्लभं भवति।" सम्यक् शब्दस्य चयनं करोतु-
(A) सत्यम्
(B) प्रियम्
(C) हितं मनोहारि च
(D) मनोहारि

318. "निराश्रया हन्त! हता मनस्विता" कस्य वचनमिदम्?
(A) काश्यपस्य (B) भर्तृहरेः
(C) द्रौपद्याः (D) युधिष्ठिरस्य

319. आचार्यमल्लिनाथः शिशुपालवधे कां टीकाम् अरचयत्-
(A) जीवातु (B) संजीवनी
(C) सर्वङ्कषा (D) घण्टापथः

320. आचार्यमल्लिनाथः 'जीवातु' टीकामरचयत्-
(A) नैषधीयचरिते (B) रावणवधे
(C)(A) (B)उभौ (D) कुमारसम्भवे

321. घण्टापथस्य अर्थः अस्ति-
(A) घण्टामार्गम्   (B) घण्टानादम्
(C) उभौ   **(D) राजमार्गम्**

322. 'शब्दार्थदीपिका' इत्यस्य टीकाकारः कः?
(A) रामचन्द्रः   **(B) चित्रभानुः**
(C) राजकुन्दः   (D) भागीरथमिश्रः

323. किरातस्य 'सुबोधा' टीकायाः टीकाकारः कः?
(A) रामचन्द्रः   (B) हरिकान्तः
(C) राजकुन्दः   **(D) भरतसेनः**

324. सुमेलितं नास्ति-
(A) सर्वमङ्गला - भागीरथमिश्रः
(B) सारावली - राजकुन्दः
(C) मनोरमा - रामचन्द्रः
(D) बालबोधिनी - मल्लः

325. मेलयतु-
(a) अल्लड़नरहरिः (i) सारावली
(b) राजकुन्दः (ii) घण्टापथ
(c) हरिकान्तः (iii) दुर्घटसंग्रह
(d) मल्लिनाथः (iv) तत्त्वदीपिका

	a	b	c	d
(A)	(i)	(iii)	(ii)	(iv)
(B)	(ii)	(i)	(iii)	(iv)
(C)	**(iv)**	**(iii)**	**(i)**	**(ii)**
(D)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)

326. किरातार्जुनीयमहाकाव्यस्य मुख्यप्रयोजनमस्ति –
(A) युधिष्ठिरस्य जागरणम्
(B) स्कन्दार्जुनयोः युद्धम्
(C) पाशुपतस्य अस्त्रप्राप्तिः
(D) शिवार्जुनयोः युद्धम्

327. किरातार्जुनीयस्य प्रथमसर्गे कति श्लोकाः सन्ति-
(A) 44   (B) 45
(C) 46   (D) 47

328. महाकविभारवेः काव्ये कस्य प्रभावः अस्ति-
(A) माघस्य   (B) भवभूतेः
(C) कालिदासस्य   (D) श्रीहर्षस्य

329. भारवेः प्रभावः कुत्र दृश्यते-
(A) श्रीहर्षे   **(B) माघे**
(C) कालिदासे   (D) उपर्युक्तेषु सर्वेषु

330. किरातार्जुनीयस्य पात्रमस्ति-
(A) अभिमन्युः   (B) परीक्षितः
(C) जनमेजयः   **(D) वनेचरः**

331. किरातार्जुनीये यमौ भ्रातरौ स्तः -
(A) भीमार्जुनौ
(B) नकुलसहदेवौ
(C) दुर्योधनदुःशासनौ
(D) कृष्णबलरामौ

332. पात्रं सुमेलयतु-
(a) उत्तररामचरितम् (1) नारदः
(b) शिशुपालवधम् (2) वासन्ती
(c) किरातार्जुनीयम् (3) दमयन्ती
(d) नैषधीयचरितम् (4) द्रौपदी

	a	b	c	d
(A)	(1)	(2)	(3)	(4)
(B)	(1)	(2)	(4)	(3)
(C)	(2)	(1)	(3)	(4)
(D)	**(2)**	**(1)**	**(4)**	**(3)**

333. दुर्योधनेन सह युद्धाय युधिष्ठिरं कः प्रेरयति-
(A) भीमः (B) अर्जुनः
(C) द्रौपदी (D) श्रीकृष्णः

334. राजसिंहासने उपविष्टः दुर्योधनः कस्मात् पराजयस्य आशंकां करोति-
(A) शिशुपालात् **(B) पाण्डवात्**
(C) कंसात् (D) कृष्णात्

335. किरातार्जुनीयस्य मङ्गलाचरणमस्ति-
(A) श्रियःपतिः श्रीमति शासितुं जगज्जगन्निवासो वसुदेवसद्मनि
(B) श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीं
(C) वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये
(D) या सृष्टिः स्रष्टुराद्यावहति विधिहुतं या हविर्या च होत्री

336.किरातार्जुनीये प्रयुक्तमङ्गलाचरणं कीदृशमस्ति-
(A) नमस्कारात्मकम्
(B) आशीर्वादात्मकम्
(C) वस्तुनिर्देशात्मकम्
(D) किमपि न

337. 'श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीं' इत्यत्र 'कुरूणामधिपः' पदं कस्य कृते अस्ति-
(A) युधिष्ठिरस्य (B) धृतराष्ट्रस्य
(C) श्रीकृष्णस्य **(D) दुर्योधनस्य**

338.''स वर्णिलिङ्गी विदितः समाययौ'' अत्र 'सः' पदं कस्य कृतेऽस्ति-
(A) दुर्योधनस्य **(B) वनेचरस्य**
(C) युधिष्ठिरस्य (D) भारवेः

339.कृतप्रणामस्य महीं महीभुजे अस्मिन् श्लोके 'महीभुजे' पदं कस्य प्रतीकमस्ति?
(A) दुर्योधनस्य (B) भीमस्य
(C) वनेचरस्य **(D) युधिष्ठिरस्य**

340.''न विव्यथे तस्य मनो न हि प्रियं'' अस्मिन् वाक्ये 'तस्य' पदेन तात्पर्यमस्ति-
(A) वनेचरस्य
(B) युधिष्ठिरस्य
(C) द्रौपद्याः
(D) भीमस्य

341.के जनाः मृषा प्रियञ्च न वक्तुमिच्छन्ति-
(A) शत्रुः
(B) मित्रम्
(C) हिताभिलाषिणः
(D) उपर्युक्ताः सर्वेऽपि

342. कीदृशं वचनं दुर्लभमस्ति?
(A) हितं मनोहारि च
(B) अहितकरं प्रियञ्च
(C) उपदेशकारी
(D) सत्यं प्रियञ्च

343.यः नृपाय समुचितं परामर्शं न ददाति सः नास्ति?
(A) मन्त्री **(B) सखा**
(C) बन्धुः (D) गुरुः

344. वनेचरः हस्तिनापुरस्य वृत्तान्तं युधिष्ठिरं श्रावितवान्-
(A) सभामध्ये (B) वने
(C) रणे **(D) एकान्ते**

345. नृपस्य कृते गुप्तचरः भवति-
(A) कर्णः **(B) नेत्रम्**
(C) नासिका (D) मुखम्

346. निसर्गदुर्बोधं किम्?
(A) शास्त्रचिन्तनं
(B) राजनीतिचर्चा
(C) भूपतीनां चरितम्
(D) मैत्रीसम्बन्धः

347. कथं न मन्युर्ज्वलयत्युदीरितः, शमीतरुं शुष्कमिवाग्निरुच्छिखः। इति उक्त्या कः प्रेरितः?
(A) अर्जुनः **(B) युधिष्ठिरः**
(C) वनेचरः (D) सुयोधनः

348. नृपासनस्थोऽपि, वनाधिवासिनः पदं क्रमशः कस्य विशेषणम्-
(A) युधिष्ठिरदुर्योधनयोः
(B) युधिष्ठिरश्रीकृष्णयोः
(C) शिशुपालदुर्योधनयोः
(D) दुर्योधनयुधिष्ठिरयोः

349. ''छद्मजितां महीं नयेन कः जेतुम्'' इच्छति?
(A) शिशुपालः **(B) दुर्योधनः**
(C) अर्जुनः (D) युधिष्ठिरः

350. 'तथापि जिह्मः स भवज्जिगीषया' इत्यत्र 'स' पदस्य तात्पर्यमस्ति-
(A) दुर्योधनः (B) युधिष्ठिरः
(C) उभौ (D) वनेचरः

351. दुर्योधनः स्वशुभ्रं यशः तनोति-
(A) राज्यसंचालनेन **(B) गुणसम्पदा**
(C) उभौ (D) युद्धजयेन

352. 'स सन्ततं दर्शयते गतस्मयः' इत्यत्र 'गतस्मयः' पदं कस्य कृते अस्ति-
(A) अर्जुनस्य (B) श्रीकृष्णस्य
(C) दुर्योधनस्य (D) युधिष्ठिरस्य

353. नृपेषु अमात्येषु च अनुकूलेषु रतिं कुर्वते–
(A) सर्वसम्पदः (B) सुखः
(C) उभौ (D) किमपि न

354. दुर्योधनः स्वभृत्येन व्यवहारं करोति-
(A) भ्रातृसदृशम् **(B) मित्रसदृशम्**
(C) शत्रुसदृशम् (D) पितृसदृशम्

355. दुर्योधनस्य व्यवहारः मित्रैः सह अस्ति-
(A) मित्रवत् (B) सेवकवत्
(C) बन्धुवत् (D) किमपि न

356. 'न बाधतेऽस्य त्रिगणः परस्परम्' इत्यत्र 'त्रिगणः' इति पदस्य तात्पर्यमस्ति-
(A) धर्मार्थमोक्षाः
(B) अर्थकाममोक्षाः
(C) धर्मार्थकामाः
(D) कामार्थधर्माः

357. ''न बाधतेऽस्य त्रिगणः परस्परम्'' इत्यत्र 'अस्य' पदं कस्य कृते अस्ति?
(A) दुर्योधनस्य (B) वनेचरस्य
(C) युधिष्ठिरस्य (D) द्रौपद्याः

358. ''वसूनि वाञ्छन्न वशी न मन्युना'' अस्मिन् श्लोके 'वशी' पदस्य प्रयोगः कस्य कृते अस्ति-
(A) अर्जुनस्य (B) युधिष्ठिरस्य
(C) दुःशासनस्य **(D) दुर्योधनस्य**

359. ''फलन्त्युपायाः परिबृंहतायतीः'' अस्मिन् श्लोके 'उपायाः' पदं कस्य कृते अस्ति-
(A) सामदानयोः
(B) दण्डभेदयोः
(C) A, B उभौ
(D) उपर्युक्तं किमपि न

360. 'इषवः' पदस्य कोऽर्थः-
(A) धनुषः **(B) बाणाः**
(C) कुन्ताः (D) त्रिशूलाः

361. 'अनुस्मृताखण्डलसूनु-विक्रमः इत्यत्र 'आखण्डलसूनुः' कः -
(A) युधिष्ठिरः (B) भीमः
(C) अर्जुनः (D) सुयोधनः

362. गरुडः कस्य वाहनमस्ति-
(A) इन्द्रस्य **(B) विष्णोः**
(C) कुबेरस्य (D) किमपि न

363. 'प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः' इत्यत्र 'मादृशां' पदं कस्य कृते अस्ति-
(A) दुर्योधनस्य (B) युधिष्ठिरस्य
(C) द्रौपद्याः **(D) वनेचरस्य**

364. वनेचरेण दुर्योधनस्य वृत्तान्तं श्रुत्वा युधिष्ठिरः गतवान् -
(A) अर्जुनस्य समीपे
(B) भीमस्य समीपे
(C) द्रौपद्याः समीपे
(D) श्रीकृष्णस्य समीपे

365. ''प्रतीयते धातुरिवेहितं फलैः'' इत्यत्र 'धातुरिव' पदस्य अर्थः अस्ति-
(A) युधिष्ठिरः इव **(B) ब्रह्मा इव**
(C) श्रीकृष्णः इव (D) अर्जुनः इव

366. 'भवादृशेषु प्रमदाजनोदितं' पंक्तिरियं कस्मात् काव्यात् उदधृतोऽस्ति?
(A) किरातार्जुनीयात्
(B) रघुवंशात्
(C) नैषधमहाकाव्यात्
(D) शिशुपालवधात्

367. 'नयेन जेतुं जगतीं सुयोधनः' इति वाक्यं कस्मिन् महाकाव्ये वर्तते-
(A) सौन्दरानन्दे
(B) बुद्धचरिते
(C) शिशुपालवधे
(D) किरातार्जुनीये

368. किरातार्जुनीयमहाकाव्यस्य शुभारम्भः कस्मात् शब्दात् भवति?
(A) 'लक्ष्मी'-शब्दात् **(B) 'श्री'- शब्दात्**
(C) 'शिव'-शब्दात् (D) 'विष्णु'-शब्दात्

369. किरातार्जुनीयस्य प्रतिसर्गान्ते कः शब्दप्रयोगो भवति -
(A) लक्ष्मीः
(B) श्रीः
(C) शिवः
(D) विष्णुः

370. किरातार्जुनीये अर्जुनस्य केन सह युद्धं वर्णितम् -
(A) विष्णुना सह
(B) इन्द्रेण सह
(C) किरातवेशधारिणा शंकरेण सह
(D) नारदेन सह

371. भारविणा कति अक्षरात्मकाः श्लोकाः रचिताः-

(A) एकाक्षर-द्वयाक्षरश्लोकाः

(B) द्वित्रयाक्षरश्लोकाः

(C) चतुराक्षरश्लोकाः

(D) पञ्चाक्षरश्लोकाः

372.न तेन सज्यं क्वचिदुद्यतं धनुः
कृतं न वा कोपविजिह्ममाननम्।
गुणानुरागेण शिरोभिरुह्यते,
नराधिपैर्माल्यमिवास्य शासनम् ।।
अस्मिन् श्लोके प्रशंसा वर्तते-

(A) युधिष्ठिरस्य (B) वनेचरस्य

(C) दुर्योधनस्य (D) अर्जुनस्य

373.भवन्तमेतर्हि मनस्विगर्हिते,
विवर्तमानं नरदेव वर्त्मनि। इत्यत्र 'नरदेव' पदस्य अभिप्रायः अस्ति-

(A) श्रीकृष्णः (B) अर्जुनः

(C) युधिष्ठिरः (D) भीमः

374.अमर्षशून्येन जनस्य जन्तुना, न जातहार्देन न विद्विषादरः। इत्यत्र 'अमर्ष' पदस्य अर्थोऽस्ति-

(A) ईर्ष्या **(B) क्रोधः**

(C) सुखम् (D) स्नेहः

375.परिभ्रमँल्लोहितचन्दनोचितः, पदातिरन्तर्गिरिरेणुरूषितः। इत्यत्र 'लोहितचन्दनोचितः' पदातिः कस्य विशेषणमस्ति-

(A) दुर्योधनस्य

(B) भीमस्य

(C) नकुलस्य

(D) अर्जुनस्य

376. इन्द्रसदृशः पराक्रमयुक्तः कः अस्ति-

(A) श्रीकृष्णः **(B) अर्जुनः**

(C) भीमः (D) नकुलः

377. 'विजित्य यः प्राज्यमयच्छदुत्तरान् कुरूनकुप्यं वसु वासवोपमः' इत्यत्र अकुप्यं पदस्य कोऽर्थः-

(A) स्वर्णरजतरूपधनम्

(B) वसुन्धरारूपधनम्

(C) पशुरूपधनम्

(D) उपर्युक्तं सर्वम्

378. वनवाससमये पाण्डवेभ्यः वल्कलवस्त्राणि कः आनयति स्म -

(A) भीमः (B) नकुलः

(C) अर्जुनः (D) सहदेवः

379. ''वनान्तशय्याकठिनीकृताकृती, कचाचितौ विष्वगिवागजौ गजौ'' इत्यत्र 'अगजौ गजौ' कौ -

(A) सहदेवः (B) नकुलः

(C) A,B उभौ (D) भीमः

380. इमामहं वेद न तावकीं धियं, विचित्ररूपाः खलु चित्तवृत्तयः। इत्यत्र 'तावकीं' पदस्य अभिप्रायः अस्ति-

(A) भीमः (B) नकुलः

(C) अर्जुनः **(D) युधिष्ठिरः**

381. 'इमामहं वेद न तावकीं धियं' कस्योक्तिः

(A) युधिष्ठिरस्य

(B) द्रौपद्याः

(C) भीमस्य

(D) श्रीकृष्णस्य

382. विचिन्तयन्त्या भवदापदं परां, रुजन्ति चेतः प्रसभं ममाधयः। इत्यत्र 'भवतः' 'मम' च पदस्य क्रमशः कयोः बोधः भवति।

(A) अर्जुन-भीमयोः
(B) वनेचर-युधिष्ठिरयोः
(C) युधिष्ठिर-द्रौपद्योः
(D) नकुल-सहदेवयोः

383. 'पुराधिरूढः शयनं महाधनं, विबोध्यसे यः स्तुतिगीतिमङ्गलैः' इत्यत्र 'यः' पदस्य तात्पर्यमस्ति-

(A) युधिष्ठिरः (B) भीमः
(C) अर्जुनः (D) दुर्योधनः

384. 'अदभ्रदर्भामधिशय्य स स्थलीं, जहासि निद्रामशिवैः शिवारुतैः' इत्यत्र 'शिवा' पदस्य अभिप्रायः अस्ति-

(A) पार्वती
(B) शिवः
(C) शृगाली
(D) द्रौपदी

385. ''पुरोपनीतं नृप! रामणीयकं, द्विजातिशेषेण यदेतदन्धसा'' इत्यत्र 'नृप' इति पदं कस्य कृते अस्ति-

(A) दुर्योधनस्य कृते
(B) युधिष्ठिरस्य कृते
(C) श्रीकृष्णस्य कृते
(D) धृतराष्ट्रस्य कृते

386. ''मृगद्विजालूनशिखेषु बर्हिषाम्'' इत्यत्र 'बर्हिषाम्' पदस्य तात्पर्यमस्ति-

(A) कुशानाम् (B) फलानाम्
(C) नृपाणाम् (D) शत्रूणाम्

387. 'कथं न मन्युर्ज्वलयत्युदीरितः शमीतरुं शुष्कमिवाग्निरुच्छिखः' का कं प्रेरयति।

(A) द्रौपदी-युधिष्ठिरम्
(B) भीमः-अर्जुनम्
(C) नकुलः-सहदेवम्
(D) अर्जुनः-द्रौपदीम्

388. किरातार्जुनीयस्य प्रतिनायकः अस्ति-

(A) किरातवेशधारी शिवः
(B) अर्जुनः
(C) दुर्योधनः
(D) युधिष्ठिरः

389. इन्द्रस्य सदृशः पराक्रमी अस्ति-

(A) श्रीकृष्णः **(B) अर्जुनः**
(C) भीमः (D) नकुलः

390. अर्जुनः कं प्रदेशम् अजयत्।

(A) पाञ्चालम्
(B) मगधम्
(C) गान्धारम्
(D) उत्तरकुरुप्रदेशम्

391. 'विचित्ररूपाः खलु चित्तवृत्तयः' इति कस्योक्तिः-

(A) भीमस्य (B) अर्जुनस्य
(C) द्रौपद्याः (D) युधिष्ठिरस्य

392. किरातार्जुनीयस्य प्रथमसर्गे वर्णनं नास्ति-

(A) वनेचरयुधिष्ठिरयोः संवादः
(B) दुर्योधनस्य शासनपद्धतेः वर्णनम्
(C) युधिष्ठिरस्य व्यासेन संवादः
(D) द्रौपद्याः युधिष्ठिरेण सह संवादः

393.किरातार्जुनीयस्य पञ्चमसर्गे वर्णनं नास्ति-
(A) हिमालयस्य वर्णनम्
(B) इन्द्रकीलस्य वर्णनम्
(C) अर्जुनस्य तपस्यायाः प्रारम्भः
(D) युधिष्ठिरभीमयोः संवादः

394.किरातार्जुनीयस्य कस्मिन् सर्गे अर्जुनस्य तपस्यायाः वर्णनम् अस्ति-
(A) 6 सर्गे (B) 7 सर्गे
(C) 8 सर्गे **(D) 5 सर्गे**

395. किरातार्जुनीयस्य कस्मिन् सर्गे चित्रयुद्धस्य वर्णनं प्राप्यते-
(A) किरातस्य- 13 सर्गे
(B) किरातस्य- 15 सर्गे
(C) किरातस्य- 14 सर्गे
(D) किरातस्य- 12 सर्गे

396.किरातार्जुनीयमहाकाव्ये इन्द्रकीलपर्वतस्य वैशिष्ट्यं कस्मिन् सर्गे वर्तते-
(A) 2 सर्गे (B) 3 सर्गे
(C) 5 सर्गे (D) 6 सर्गे

397.किरातार्जुनीयमहाकाव्ये कस्मिन् सर्गे पाशुपतास्त्र-प्राप्तिः वर्णिता अस्ति-
(A) 14 सर्गे (B) 15 सर्गे
(C) 16 सर्गे **(D) 18 सर्गे**

398. 'युधिष्ठिरम्' इत्यस्मिन् पदे समासः अस्ति-
(A) बहुव्रीहिः
(B) सप्तमी अलुक्तत्पुरुषः
(C) षष्ठीतत्पुरुषः
(D) तृतीयातत्पुरुषः

399.'किरातार्जुनीयम्' इत्यस्मिन् पदे समासः अस्ति-
(A) अव्ययीभावः (B) सुप्सुपा
(C) द्वन्द्वः (D) तत्पुरुषः

400.'किरातार्जुनीयम्' इत्यस्य समासविग्रहः अस्ति-
(A) किरातश्च अर्जुनश्च
(B) किरातौ च अर्जुनौ
(C) अर्जुनस्य किरातः यस्य सः
(D) किमपि न

401. 'असाधुः' इत्यत्र समासः -
(A) प्रादितत्पुरुषः (B) अव्ययीभावः
(C) अलुक्तत्पुरुषः **(D) नञ्तत्पुरुषः**

402. 'अनुभावः' इत्यत्र समासः -
(A) सुप्सुपा (B) नञ्तत्पुरुषः
(C) प्रादितत्पुरुषः (D) पञ्चमीतत्पुरुषः

403. 'वनाधिवासिनः' इत्यस्य समासविग्रहः अस्ति-
(A) वने अधिवसति
(B) वनम् अधिवसति
(C) वने वसति
(D) वनं वसति

404. 'सुयोधनः' इत्यत्र कः समासः अस्ति-
(A) उपपदतत्पुरुषः (B) बहुव्रीहिः
(C) कर्मधारयः (D) प्रादितत्पुरुषः

405. 'मानवीम्' इत्यत्र सामासिकविग्रहः अस्ति-
(A) मनुना प्रोक्तम् इति मानवीम्
(B) मनुः उद्देश्यम् अध्वनम्
(C) मनोः इयम् इति मानवी ताम् मानवीम्
(D) मानवीताम् मानवीम्

406. 'भवदापदं' पदे समासः अस्ति-
(A) अलुक्तत्पुरुषः
(B) सप्तमीतत्पुरुषः
(C) पञ्चमीतत्पुरुषः
(D) षष्ठीतत्पुरुषः

407. मानधनाः' पदस्य विग्रहपदमस्ति-
(A) मानं धनं येषां ते
(B) मानः एव धनं येषां ते
(C) मानस्य धनः येषां ते
(D) मानम् एव धनस्य येषां ते

408.'हिरण्यरेतसम्' पदे समासः अस्ति-
(A) तत्पुरुषः (B) द्वन्द्वः
(C) बहुव्रीहिः (D) अव्ययीभावः

409.'दुरन्ता' पदस्य समासविग्रहमस्ति-
(A) दुष्ट अन्तः यस्याः सा
(B) दुष्टम् अन्तम्
(C) दुष्टम् अन्तः यस्य सः
(D) दुष्टस्य अन्तम्

410.'कृष्णासदनम्' इत्यस्य विग्रहपदमस्ति-
(A) कृष्णस्य सदनम्
(B) कृष्णस्य सदनं यस्य सः
(C) कृष्णाय सदनम्
(D) कृष्णायाः सदनम्

411.'किरातार्जुनीयम्' इत्यत्र प्रत्ययः अस्ति-
(A) इय प्रत्ययः (B) क प्रत्ययः
(C) फ प्रत्ययः **(D) छ प्रत्ययः**

412.'वनेचरः' इत्यत्र प्रत्ययः अस्ति-
(A) छ प्रत्ययः **(B) ट प्रत्ययः**
(C) प प्रत्ययः (D) द प्रत्ययः

413. 'प्रवक्तुम्' पदे प्रकृति-प्रत्ययः अस्ति-
(A) प्र + वद् + तुमुन्
(B) प्र + वच् + ल्युट्
(C) प्र + वद् + ल्युट्
(D) प्र + वच् + तुमुन्

414.'प्रणामः' इत्यत्र प्रत्ययः अस्ति-
(A) ल्युट्- प्रत्ययः
(B) क्त- प्रत्ययः
(C) घञ् -प्रत्ययः
(D) शानच् -प्रत्ययः

415. 'शुभ्रम्' इत्यत्र प्रत्ययः अस्ति-
(A) रक्-प्रत्ययः (B) ल्युट्-प्रत्ययः
(C) घञ्-प्रत्ययः (D) क्त-प्रत्ययः

416.'अनुरागः' इत्यत्र प्रकृति-प्रत्ययः अस्ति-
(A) अनु + रञ् + क्त
(B) अनु + रञ्ज् + घञ्
(C) अनु + रञ्ज + क्त
(D) अनु + रञ्ज + सत्

417.'पावकः' इत्यत्र प्रकृति-प्रत्ययः अस्ति-
(A) पू + ल्युट् **(B) पू + ण्वुल्**
(C) पू + क्त (D) पू + घञ्

418.'समुन्नयन्' इत्यत्र प्रकृति-प्रत्ययः अस्ति-
(A) सम् + उद् + नी + शतृ
(B) सम् + उत + नी + शानच्
(C) सम + उत + नी + क्त
(D) सम + उत + नी + ता

419. 'विरोधिनः' इत्यत्र धातुः अस्ति-
(A) रुध् धातुः (B) नी धातुः
(C) कृ धातुः (D) पा धातुः

420. किरातार्जुनीयस्य प्रथमसर्गे प्रयुक्तः छन्दः अस्ति-
(A) वंशस्थः
(B) मालिनी
(C) पुष्पिताग्रा
(D) उपर्युक्तं सर्वम्

421. वंशस्थस्य लक्षणम् अस्ति-
(A) जरौ जरौ ततो जगौ च
(B) जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ
(C) अयुजि नयुगरेफतो यकारो युजि च नजौ जरगाश्च पुष्पिताग्रा
(D) ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः

422. मालिनीछन्दसः लक्षणमस्ति-
(A) जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ।
(B) उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः।
(C) ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः।
(D) रसैः रुद्रैश्छिन्ना यमनसभलागः शिखरिणी।

423. मालिनी छन्दसि यतिः भवति-
(A) 8-7 वर्णे
(B) 9-6 वर्णे
(C) 9-7 वर्णे
(D) 6-9 वर्णे

424. किरातार्जुनीयस्य प्रथमसर्गस्य अन्तिमे श्लोके किं छन्दः अस्ति-
(A) मालिनी (B) वंशस्थः
(C) पुष्पिताग्रा (D) अनुष्टप्

425. भारवेः प्रियच्छन्दः-
(A) इन्द्रवज्रा (B) मालिनी
(C) पुष्पिताग्रा **(D) वंशस्थः**

426. विधिसमयनियोगाद्दीप्तिसंहारजिह्मं, शिथिलवसुमगाधे मग्नमापत्पयोधौ। इत्यत्र छन्दः अस्ति -
(A) वंशस्थः **(B) मालिनी**
(C) पुष्पिताग्रा (D) उपमालंकारः

427. पुष्पिताग्राछन्दसः लक्षणमस्ति-
(A) अयुजि नयुगरेफतो यकारो युजि च नजौ जरगाश्च पुष्पिताग्रा।
(B) ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः।
(C) जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ।
(D) रसैः रुद्रैश्छिन्ना यमनसभलागः शिखरिणी।

428. 'स वर्णिलिङ्गी विदितः समाययौ, युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचरः' अत्र अलङ्कारः अस्ति-
(A) यमकः (B) छेकानुप्रासः
(C) वृत्यनुप्रासः (D) श्रुत्यनुप्रासः

429. 'गुणानुरागादिव सख्यमीयिवान्' अस्मिन् श्लोके कः अलंकारः प्रयुक्तः-
(A) निदर्शना
(B) उपमा
(C) रूपकालंकारः
(D) उत्प्रेक्षालंकारः

430. 'उपेत्यसङ्घर्षमिवार्थसम्पदः' अत्र कः अलङ्कारः अस्ति-
(A) उपमालंकारः
(B) काव्यलिङ्गालंकारः
(C) उत्प्रेक्षालंकारः
(D) रूपकालंकारः

431. 'प्रतीयते धातुरिवेहितं फलैः' अत्र अलङ्कारः अस्ति-
(A) उपमालंकारः
(B) श्लेषालंकारः
(C) रूपकालंकारः
(D) उत्प्रेक्षालंकारः

432. स चिन्तयत्येव भियस्त्वदेष्यतीः, अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता। अत्र अलङ्कारः अस्ति-
(A) दृष्टान्तालंकारः
(B) अर्थान्तरन्यासालंकारः
(C) रूपकालंकारः
(D) वृत्यनुप्रासालंकारः

433. परिभ्रमॅल्लोहितचन्दनोचितः, पदातिरन्तर्गिरिरेणुरूषितः। अस्मिन् श्लोके अलङ्कारः-
(A) उपमालंकारः
(B) दृष्टान्तालंकारः
(C) अनुप्रासालंकारः
(D) परिकरालंकारः

434.भारवेः प्रिय-अलङ्कारः -
(A) अर्थान्तरन्यासः (B) रूपकः
(C) श्लेषः (D) उत्प्रेक्षा

435. 'कृतप्रणामस्य महीं महीभुजे जितां सपत्नेन निवेदयिष्यतः' इत्यत्र 'सपत्नेन' पदस्य अर्थः अस्ति-
(A) सहपत्निकः (B) पत्नीद्वारा
(C) शत्रुणा (D) किमपि न

436. नसंहतास्तस्य नभिन्नवृत्तयः, प्रियाणि वाञ्छन्त्यसुभिः समीहितुम्। इत्यत्र 'असुभिः' पदस्य अर्थः -
(A) असुरैः **(B) प्राणभिः**
(C) यज्ञैः (D) सैनिकैः

437. 'स सन्ततं दर्शयते गतस्मयः, कृताधिपत्यामिव साधु बन्धुताम्' इत्यत्र 'गतस्मयः' पदस्य अस्ति-
(A) ईर्ष्यायुक्तः
(B) स्वाभिमानी
(C) निरभिमानी
(D) अभिमानः

438. 'विनिश्चितार्थामिति वाचमाददे' इत्यत्र 'आददे' पदस्य अर्थोऽस्ति-
(A) अकथयत् (B) ग्रहणम्
(C) दानम् (D) निश्चयकरणम्

439. क्रियासु युक्तैर्नृप चारचक्षुषो, न वञ्चनीयाः प्रभवोऽनुजीविभिः। इत्यत्र 'चारचक्षुषः' पदस्य तात्पर्यमस्ति-
(A) चत्वारि नेत्राणि
(B) चोराणां चक्षुः
(C) चतुरपादः
(D) गुप्तचरस्वरूप इव नेत्रवान्

440. किरातवेषधारिणं भगवन्तं शिवम् एवं तृतीयं पाण्डवम् अर्जुनमभिलक्ष्य कृतं काव्यं किम् अभिधीयते?
(A) शिशुपालवधम्
(B) रघुवंशम्
(C) किरातार्जुनीयम्
(D) नैषधीयचरितम्

441. अर्जुनः महर्षेः व्यासस्य आदेशं प्राप्य पाशुपतास्त्रस्य प्राप्त्यर्थं कुत्र गतवान्-
(A) इन्द्रकीलपर्वतम्
(B) प्रस्रवणपर्वतम्
(C) मलयपर्वतम्
(D) उदयाचलम्

442. युधिष्ठिरादयः पञ्च पाण्डवाः वनवासस्य अवधिं कुत्र व्यतीयुः?
(A) द्वैतवने (B) नन्दनवने
(C) हिमवने (D) हिमालये

443. अर्थगौरवाय कः कविः प्रसिद्धः अस्ति?
(A) कालिदासः (B) भासः
(C) भारविः (D) माघः

444. कस्य महाकाव्यस्य प्रथमं त्रयः सर्गाः 'पाषाणत्रयम्' नाम्ना प्रसिद्धाः?
(A) कुमारसम्भवमहाकाव्यस्य
(B) बुद्धचरितमहाकाव्यस्य
(C) किरातार्जुनीयमहाकाव्यस्य
(D) शिशुपालवधमहाकाव्यस्य

445. 'न नोननुन्नो नुन्नोनोनाना नानानना ननु' इति श्लोकपंक्तौ कविना असाधारणं कौशलं प्रदर्शितम् -
(A) कालिदासेन **(B) भारविना**
(C) अश्वघोषेन (D) श्रीहर्षेण

446. 'स किं सखा साधु न शास्ति योऽधिपं' इति सूक्तिः किरातार्जुनीयस्य कस्मात् सर्गात् उद्धृता?
(A) द्वितीयसर्गात् (B) चतुर्थसर्गात्
(C) पञ्चमसर्गात् **(D) प्रथमसर्गात्**

447. 'स वर्णिलिङ्गी विदितः समाययौ युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचरः' इत्यत्र 'वने वनेचरः' पदस्य कोऽलंकारः?
(A) उपमालंकारः
(B) अनुप्रासोऽलंकारः
(C) यमकालंकारः
(D) रूपकालंकारः

448. भगवान् शिवः कं वेषमाधृत्य अर्जुनस्य वीरतायाः परीक्षार्थम् अर्जुनेन सार्धं युद्धमकरोत्?
(A) किरातवेषम् (B) सिंहवेषम्
(C) शशवेषम् (D) गुप्तचरवेषम्

449. 'वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः' इति सूक्तिः कस्मिन् ग्रन्थेऽस्ति-
(A) नीतिशतके
(B) किरातार्जुनीये
(C) कुमारसम्भवे
(D) पञ्चतन्त्रे

450. युधिष्ठिरः स्वाश्रमात् वनेचरं दुर्योधनस्य शासनपद्धतिं वेदितुं कुत्र प्रेषयति–
(A) अयोध्याम् **(B) हस्तिनापुरम्**
(C) कुरुक्षेत्रम् (D) न कुत्राऽपि

451. दुर्योधनेन केन प्रकारेण सर्वप्रजाजनाः स्ववशं कर्तुमिच्छति।
(A) स्वबलेन
(B) उत्तमशासनपद्धत्या
(C) प्रलोभनेन
(D) अहंकारेण

452. 'दामोदरः' इति नाम्ना प्रख्यातोऽभवत्?
(A) भारविः (B) कालिदासः
(C) नारायणः (D) भवभूतिः

453.'वसूनि वाञ्छन्न वशी न मन्युना स्वधर्म इत्येव निवृत्तकारणः' इत्यत्र दुर्योधनस्य कस्य गुणस्य उल्लेखः वर्तते-

(A) अहंकारस्य

(B) दण्डनीतेः न्यायप्रियतायाः च

(C) सत्याचरणस्य

(D) अनाचारस्य

454.'अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता' इत्यत्र वनेचरः कस्य भयं वर्णयति-

(A) युधिष्ठिरस्य

(B) भीमस्य

(C) द्रौपद्याः

(D) दुर्योधनस्य

455. 'तवाभिधानाद् व्यथते नताननः, स दुःसहान्मन्त्रपदादिवोरगः' इत्यत्र 'उरगः' पदस्य प्रयोगः कस्य कृते अस्ति-

(A) सुयोधनस्य

(B) धर्मराजस्य

(C) भीमसेनस्य

(D) अर्जुनस्य

456. 'सदानुकूलेषु हि कुर्वते रतिं नृपेष्वमात्येषु च सर्वसम्पदः' इदं केन कथितम् -

(A) द्रौपद्या **(B) वनेचरेण**

(C) दुर्योधनेन (D) युधिष्ठिरेण

457. ''स चिन्तयत्येव भियस्त्वदेष्यती, अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता'' कस्य विषये कथितम् -

(A) दुर्योधनस्य विषये

(B) वनेचरस्य विषये

(C) युधिष्ठिरस्य विषये

(D) दुःशासनस्य विषये

458. 'निगूढतत्त्वं नयवर्त्म विद्विषाम्' इति कस्योक्तिः ?

(A) वनेचरस्य

(B) दुर्योधनस्य

(C) द्रौपद्याः

(D) युधिष्ठिरस्य

459. 'तथापि वक्तुं व्यवसाययन्ति मां निरस्तनारीसमया दुराधयः' कस्मिन् ग्रन्थे समुपलभ्यते-

(A) मेघदूते

(B) किरातार्जुनीये

(C) नीतिशतके

(D) शिवराजविजये

460. 'स वर्णिलिङ्गी विदितः समाययौ युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचरः' पद्येऽस्मिन् 'वर्णिलिङ्गी' शब्दः कस्य बोधकः अस्ति-

(A) वनेचरस्य

(B) अर्जुनस्य

(C) युधिष्ठिरस्य

(D) भीमस्य

6. परीक्षा दृष्टि

किरातार्जुनीयम् का मङ्गलाचरण

- ☞ किरातार्जुनीयम् में ''श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीम्'' इस वंशस्थ छन्द के द्वारा वस्तुनिर्देशात्मक मङ्गलाचरण किया गया है।
- ☞ संस्कृतग्रन्थों के आरम्भ, मध्य और अन्त में मङ्गलाचरण करने की परम्परा रही है। 'ग्रन्थादौ ग्रन्थमध्ये ग्रन्थान्ते च मङ्गलमाचरणीयम् '
- ☞ संस्कृतशास्त्रों में मङ्गलाचरण के तीन प्रकार बताये गए हैं-
  (1) नमस्कारात्मक
  (2) आशीर्वादात्मक
  (3) वस्तुनिर्देशात्मक *'आशीर्नमस्क्रियावस्तुनिर्देशो वापि तन्मुखम्''* इति दण्डी।
- ☞ मङ्गलाचरण का उद्देश्य बताते हुए महर्षि पतञ्जलि महाभाष्य में कहते हैं- 'मङ्गलादीनि मङ्गलमध्यानि मङ्गलान्तानि च शास्त्राणि प्रथन्ते वीरपुरुषकाणि आयुष्मत्पुरुषकाणि च भवन्ति अध्येतारश्च प्रवक्तारो भवन्ति''
- ☞ भारवि ने किरातार्जुनीयम् के प्रथमश्लोक में सर्वप्रथम 'श्रियः' शब्द का प्रयोग किया है, जो कि मङ्गलवाचक है। मल्लिनाथ घण्टापथ नामक टीका में लिखते हैं- *''आदितः श्रीशब्दप्रयोगात् वर्णगणादिशुद्धिर्नात्रातीवोपयुज्यते''*
- ☞ भारवि किसके उपासक थे– **शिव**
- ☞ अर्थगौरव के लिए प्रसिद्ध हैं– **भारवि**
- ☞ भारवि का वास्तविक नाम था– **दामोदर**
- ☞ 'आतपत्र' किस कवि की उपाधि है– **भारवि**
- ☞ भारवि का समय विद्वानों ने क्या माना है– **600 ई0 के आस पास**
- ☞ भारवि का आश्रयदाता राजा था– **पुलकेशिन् का भाई विष्णुवर्धन**
- ☞ भारवि का जन्म स्थान है– **दक्षिणभारत का अचलपुर**
- ☞ अवन्तिसुन्दरीकथा के अनुसार भारवि रहने वाले थे– **दक्षिण भारत के**
- ☞ भारवि के बाद किसका समय माना जाता है– **माघ का**
- ☞ भारवि पूर्ववर्ती कवि माने जाते हैं– **श्रीहर्ष के**
- ☞ भारवि के पिता का नाम– **श्रीधर**
- ☞ भारवि के पूर्ववर्ती कवि कौन हैं– **अश्वघोष**

☞ भारवि किससे प्रभावित थे– **कालिदास**

☞ महाकवि भारवि ने कुल कितने ग्रन्थों की रचना की है– **एक (1)**

☞ ''भारवेरिव भारवेः'' भारवि के सम्बन्ध में किसने कहा है– **कपिलदेव द्विवेदी ने**

☞ भारवि का सम्बन्ध किससे नहीं है– **लघुत्त्रयी से**

☞ किस पाश्चात्त्य विद्वान् ने भारवि के किरातार्जुनीयम् की भूरि-भूरि प्रशंसा की है– **डॉ० ए०बी०कीथ**

☞ संस्कृत साहित्य में 'अलङ्कृतकाव्यशैली' तथा विचित्रमार्ग के जनक के रूप में किस कवि का नाम उल्लेखनीय है– **भारवि**

☞ अवन्तिसुन्दरीकथा के अनुसार भारवि के पिता का नाम है– **नारायणस्वामी**

☞ किस महाकवि के साथ भारवि का पारिवारिक सम्बन्ध माना जाता है– **दण्डी**

☞ भारवि की माता का नाम– **सुशीला**

☞ 'प्रसन्नगम्भीरपदा सरस्वती' यह किस कवि की भाषा शैली की विशेषता रही है– **भारवि की**

☞ कालिदास के साथ भारवि का नामोल्लेख किस अभिलेख में मिलता है– **ऐहोल**

☞ भारवि किसके सभापण्डित थे– **विष्णुवर्धन**

☞ भारवि के प्रपौत्र माने जाते हैं– **दण्डी**

☞ भारवि की पत्नी का नाम है– **रसिका**

☞ किरातार्जुनीयम् की रचना भारवि ने की थी– **ससुराल में रहकर**

☞ भारवि प्रकाण्ड पण्डित थे– **राजनीति के**

☞ भारवि किस रस के वर्णन में अद्वितीय थे– **वीर**

☞ भारवि किस रीति के कवि थे– **वैदर्भी**

☞ भारवि का समय है– **6वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध**

☞ मनोरथ किसके पुत्र हैं– **भारवि**

☞ ''वर्णिलिङ्गी'' पद में समास है– **षष्ठी तत्पुरुष**

☞ किरात के किस सर्ग के आधार पर भारवि को आतपत्र की उपाधि प्राप्त हुई– **पञ्चम सर्ग**

☞ एकाक्षरी श्लोक के लिए कौन कवि प्रसिद्ध है– **भारवि**

☞ महाकाव्य में चित्रकाव्य के प्रथम प्रयोगकर्ता हैं– **भारवि**

☞ भारवि किस गोत्र के थे– **कुशिक**

☞ भारवि के पुत्र थे– **मनोरथ**

☞ भारवि का प्रिय अलंकार है– **अर्थान्तरन्यास**

- अर्थगौरवसम्पन्नकाव्यं किं नाम भारवेः– **किरातार्जुनीयम्**
- वीरदत्त एवं गौरी के पुत्र का नाम– **दण्डी**
- भारवि दण्डी के हैं– **प्रपितामह**
- पल्लव नरेश सिंहविष्णु का शासन काल है– **575-600**
- पापत्राण के लिए तीर्थयात्रा पर जाते समय मार्ग में भारवि की भेंट हुई– **दुर्विनीत से**
- राजा दुर्विनीत को भारवि ने सुनाया– **आर्या**
- महाकवि भारवि की शैली है– **अलङ्कार शैली**
- किरातार्जुनीयम् में कितने सर्ग हैं– **(18)**
- किरातार्जुनीयम् मङ्गलाचरण में छन्द प्रयुक्त है– **वंशस्थ**
- किरातार्जुनीयम् का कथानक लिया गया है– **महाभारत के वनपर्व से**
- किरातार्जुनीयम् के प्रत्येक सर्ग के अन्त में कौन-सा शब्द प्रयुक्त हुआ है– **लक्ष्मी**
- किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग में कुल कितने श्लोक हैं– **46**
- किरातार्जुनीयम् का मुख्य रस है– **वीररस**
- किरातार्जुनीयम् किस विधा का ग्रन्थ है– **महाकाव्य**
- किरातार्जुनीयम् का नायक कौन है– **अर्जुन**
- किरातार्जुनीयम् महाकाव्य में कुल श्लोकों की संख्या– **1040**
- किरातार्जुनीयम् निबद्ध है– **सर्गों में**
- केवल एक ग्रन्थ लिखने वाले महाकवि हैं– **भारवि**
- किरातार्जुनीयम् के प्रारम्भिक तीन सर्गों को कहा जाता है– **पाषाणत्रय**
- 'किरातार्जुनीयम्' इस पद में कौन-सा प्रत्यय है– **छ प्रत्यय (शिशुक्रन्दयमसभद्वन्द्वेन्द्रजननादिभ्यश्छ)**
- किरातार्जुनीयम् में समास है– **द्वन्द्व**
- किसकी गणना बृहत्त्रयी काव्यों में होती है– **किरातार्जुनीयम्, शिशुपालवधम्, नैषधीयचरितम् की**
- किरातार्जुनीयम् का मङ्गलाचरण है– **वस्तुनिर्देशात्मक**
- महाकाव्य में न्यूनातिन्यून कितने सर्ग होने चाहिए– **(8)**
- भारवि के काव्य में किस अलंकार की प्रमुखता है– **चित्रालंकार**
- किरातार्जुनीयम् महाकाव्य का फल है– **पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति**
- किरात के प्रथम सर्ग में किस रीति का प्रयोग है– **वैदर्भी रीति**
- 'किरातार्जुनीयम्' महाकाव्य किस पर आधारित है– **महाभारत**
- 'स्फुटता न पदैरपाकृता न च न स्वीकृतमर्थगौरवम्' किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है– **किरातार्जुनीयम् से**

☞ महाभारत पर आधारित ग्रन्थ है– **किरातार्जुनीयम्**
☞ किरातार्जुनीयम् का प्रथम पद्य किस छन्द में है– **वंशस्थ**
☞ किरातार्जुनीयम् में किरात है– **शिव**
☞ किरातार्जुनीयम् में किस विषय का चमत्कारित्व है– **अर्थगौरव**
☞ अर्जुन किसमें नायक के रूप में वर्णित हैं– **किरातार्जुनीयम् में**
☞ मल्लिनाथविरचितं किरातार्जुनीयस्य व्याख्यानं किम्– **घण्टापथ**
☞ भारवि काव्य की विशेषता है – **अर्थगौरव**
☞ महाराज दुर्विनीत ने किरातार्जुनीयम् की टीका लिखी है– **15वें सर्ग की**
☞ दुर्विनीत द्वारा किरात (सर्ग 15) की टीका का नाम है–
☞ श्रीकृष्णमाचारियर महोदय के अनुसार किरात की कुल कितनी टीकाएँ हैं– **34**
☞ किरात की सर्वप्रामाणिक टीका किसकी है– **मल्लिनाथ की**
☞ बृहत्त्रयी में प्रथम स्थान है– **भारवि काव्य (किरातार्जुनीयम् का)**
☞ किरात की टीका 'सुबोध' लिखी है– **भरतसेन**
☞ 'नारिकेलफलसम्मितं वचो भारवेः' कथन किसका है– **आचार्य मल्लिनाथ**
☞ महाकवि भारवि की कथा पर प्रभाव है– **कालिदास का**
☞ भारविकाव्य का प्रभाव किस कवि पर दिखाई देता है– **माघ पर**
☞ किरातार्जुनीयम् का पात्र है– **वनेचर**
☞ किरात के प्रथम तीन सर्गों पर लिखी गई लोकप्रिय टीका 'शब्दार्थदीपिका' के प्रणेता हैं– **चित्रभानु**
☞ 'सहसा विदधीत न क्रियाम्' यह किस कवि का प्रिय श्लोक है– **भारवि**
☞ ''न नोननुन्नो नुन्नो नो नानानाना नना ननु'' यह श्लोक किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है– **भारवि के किरातार्जुनीयम् से**
☞ किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग के अन्तिम श्लोक में छन्द है– **मालिनी**
☞ पाण्डव वन में कितने वर्ष तक रहे – **13 वर्ष**
☞ पाण्डवों को अज्ञातवास करना पड़ा– **01 वर्ष**
☞ पाण्डवों ने वनवास काल में निवास किया था– **द्वैतवन में**
☞ द्रौपदी युधिष्ठिर को किसके प्रति उकसाती है– **दुर्योधन के प्रति**
☞ किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग में किस नारी का उदात्त चरित्र वर्णन है– **द्रौपदी का**
☞ किरातार्जुनीयम् में किरात शब्द किसका बोधक है– **शिव**
☞ किरातार्जुनीयम् में अर्जुन को शिव से कौन-सा अस्त्र प्राप्त हुआ था– **पाशुपतास्त्र**
☞ अर्जुन ने किस पर्वत पर तपस्या की– **इन्द्रकील**
☞ किरातार्जुनीयम् के अनुसार अर्जुन ने इन्द्रकील पर्वत पर किस अस्त्र की प्राप्ति के लिये तपस्या की– **पाशुपतास्त्र की**

- ☞ द्रुपदात्मजा, वृकोदर, सुयोधन, वनेचर आदि पात्रों से युक्त रचना है– **किरातार्जुनीयम्**
- ☞ मल्लिनाथ का उपनाम है– **कोलाचल**
- ☞ किरातार्जुनीयम् के किस सर्ग में अर्जुन को पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति का वर्णन है– **18वें सर्ग में**
- ☞ मल्लिनाथ की टीका 'घण्टापथ' का शाब्दिक अर्थ है– **राजमार्ग ('घण्टापथो राजमार्गः' इत्यमरः)**
- ☞ अर्जुन को गाण्डीव धनुष किसने दिया था– **अग्नि ने**
- ☞ अर्जुन के गुरु कौन थे– **द्रोण**
- ☞ 'किरातार्जुनीयम्' महाकाव्य का सहनायक है– **किरात (शिव)**
- ☞ 'भारवेरर्थगौरवम्' यह कथन है– **उद्भट का**
- ☞ ''नारिकेलफलसम्मितं वचः'' सूक्ति किसने कहा है– **मल्लिनाथ ने**
- ☞ 'किरातार्जुनीयम्' में कौन से सर्ग में इन्द्रकील पर्वत का वर्णन है– **पाँचवें सर्ग में**
- ☞ किरातार्जुनीयम् के पाषाणत्रय पर शब्दार्थदीपिका नामक टीका किसने लिखा है– **चित्रभानु ने**
- ☞ युधिष्ठिर नायकों की किस कोटि में आते हैं– **धीरोदात्त**
- ☞ 'सहसा विदधीत न क्रियाम्' यह किस कवि का प्रिय श्लोक है– **भारवि का**
- ☞ जगण, तगण, जगण, रगण, किस छन्द का लक्षण है– **वंशस्थ**
- ☞ युधिष्ठिर भीम का संवाद तथा व्यास का आगमन किरातार्जुनीयम् के किस सर्ग में वर्णित है– **सर्ग-2**
- ☞ 'लक्ष्मीपदाङ्क' महाकाव्य कहा जाता है– **किरातार्जुनीयम् को**
- ☞ 'सुदुर्लभा सर्वमनोरमा गिरः' यह सूक्ति किस ग्रन्थ से सम्बद्ध है– **किरातार्जुनीयम् से**
- ☞ इन्द्रकील पर्वत पर जाते हुए अर्जुन किसकी शोभा देखने में अत्यन्त मग्न हो गये थे– **शरत्कालीन शोभा**
- ☞ 'काशिकावृत्ति' जिसमें किरातार्जुनीयम् का 'संशय्य कर्णादिषु तिष्ठतेयः' श्लोक उद्धृत है, किसकी रचना है– **जयादित्य**
- ☞ चालुक्यवंशीय पुलकेशिन् द्वितीय का ऐहोल शिलालेख जिसमें भारवि का नामोल्लेख है, कहाँ मिलता है– **बीजापुर**
- ☞ ऐहोल अभिलेख जो जैन मन्दिर से प्राप्त हुआ है किसके द्वारा रचित है– **रविकीर्ति**
- ☞ 'कविताश्रितश्रीकालिदासभारविकीर्तिः' कथन है– **रविकीर्ति**
- ☞ 'सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः परमापदां पदम्' श्लोकांश को लेकर भारवि की पत्नी गई थी– **वर्धमान की पत्नी के पास**
- ☞ 'नामूलं लिख्यते किञ्चिन्नानपेक्षितमुच्यते' कथन किसका है– **मल्लिनाथ का**
- ☞ 'वसन्ति हि प्रेम्णि गुणा न वस्तुनि' इति कस्योक्तिः– **भारवेः**

- वंशस्थ छन्द के प्रत्येक पाद में वर्ण होते हैं– **12**
- 'न्यायाधारा ही साधवः' का अर्थ है– **सज्जन न्यायमार्ग का ही आश्रय लेते हैं।**
- भीम किसके पुत्र हैं– **वायु के**
- 'नहि तितिक्षासममस्ति साधनम्' इदं वाक्यमस्ति?– **किरातार्जुनीये**
- किरातार्जुनीयस्य कः पाकः प्रथितः– **नारिकेलपाकः**
- 'वृणुते हि विमृश्यकारिणं गुणलुब्धाः स्वयमेव सम्पदः' यह उक्ति कहाँ प्राप्त होती है– **किरातार्जुनीयम्**
- अवन्तिसुन्दरीकथा रचना है– **दण्डी की**
- दण्डी की रचना है– **दशकुमारचरितम् तथा काव्यादर्श**
- महेन्द्र विक्रम की शासन अवधि है– **600-625**
- महेन्द्रवर्मन् की उपाधि है– **शतुमल्ल, अवविभाजन**
- महेन्द्रवर्मन् की रचना है– **मत्तविलास, प्रहसन**
- महाराज दुर्विनीत के पिता का नाम था– **अविनीत**
- बृहत्कथा के संस्कृत रूपान्तर 'शब्दावतार' के लेखक हैं– **दुर्विनीत**
- एहोल शिलालेख का समय है– **634 ई.**
- एहोल नाम का स्थान स्थित है– **बीजापुर**
- एहोल शिलालेख का लेखक रविकीर्ति हैं– **जैनकवि**
- आचार्य मल्लिनाथ का गोत्र है– **काश्यप**
- आचार्य मल्लिनाथ के पितामह का नाम था– **कर्दिन**
- मल्लिनाथ एवं कर्दिन का सम्बन्ध है– **पुत्र-पिता**
- आचार्य मल्लिनाथ का पुत्र है– **पेड्डुभट्ट तथा कुमारस्वामी**
- काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ प्रतापरुद्रयशोभूषणम् पर टीका लिखी है– **कुमारस्वामी ने**
- आचार्य मल्लिनाथ की व्यक्तिगत उपाधि है– **महामहोपाध्याय**
- आचार्य मल्लिनाथ का समय है– **14वीं शताब्दी**
- आचार्य मल्लिनाथ का पवित्र ग्रन्थ है– **उदारकाव्य, रघुवीरचरित**
- शूकर के रूप में अर्जुन पर आक्रमण किया– **मूकदानव ने**
- आचार्य मल्लिनाथ ने संजीवनी नामक टीका लिखी है– **कुमारसम्भवम्, रघुवंशम्, मेघदूतम् पर**
- आचार्य मल्लिनाथ ने शिशुपालवधम् पर टीका लिखी है– **सर्वङ्कषा**
- आचार्य मल्लिनाथ ने 'जीवातु' टीका लिखी है– **नैषधीयचरितम् तथा रावणवधम् दोनों पर**

- ☞ किरातार्जुनीयम् मङ्गलाचरण में छन्द प्रयुक्त है - **वंशस्थ**
- ☞ 'वर्णिलिङ्गी' से किसका बोध हो रहा है - **वनेचर का**
- ☞ वनेचर हस्तिनापुर से लौटकर युधिष्ठिर से कहाँ मिला - **द्वैतवन में**
- ☞ वनेचर हस्तिनापुर किस वेष में गया - **ब्रह्मचारी के वेश में।**
- ☞ वनेचर हस्तिनापुर का समाचार जानकर किसके पास आता है– **युधिष्ठिर के पास**
- ☞ किरातार्जुनीयम् का प्रारम्भ किस पद से होता है – **श्रियः**
- ☞ 'कुरूणामधिपः' पद से किसका बोध होता है – **सुयोधन (दुर्योधन) का**
- ☞ 'वनेचर' किस ग्रन्थ का पात्र है – **किरातार्जुनीयम् का**
- ☞ किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग का आरम्भिक वक्ता है – **वनेचर**
- ☞ 'वनेचरः' में कौन सा प्रत्यय है – **'चरेष्टः' सूत्र से 'ट' प्रत्यय**
- ☞ वनेचर में हस्तिनापुर का समाचार सर्वप्रथम किससे कहा– **युधिष्ठिर से**
- ☞ किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग के आधार पर पाण्डव कहाँ निवास कर रहे थे **– द्वैतवन में**
- ☞ किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में प्रयुक्त छन्द में प्रयुक्त गण हैं **– जगण तगण जगण रगण (जतौ जरौ)**
- ☞ 'प्रजासु वृत्तिं यमयुङ्क्त वेदितुम्' यह श्लोकांश कहाँ से उद्धृत है – **किरातार्जुनीयम् से**
- ☞ 'स वर्णिलिङ्गी विदितः समाययौ' यहाँ 'सः' पद से किसका बोध हो रहा है – **वनेचर का**
- ☞ 'समाययौ' में कौन सा लकार है – **लिट्लकार**
- ☞ 'अयुङ्क्त' पद की व्याकरणात्मक टिप्पणी लिखें – **युज्, धातु, लङ्लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन**
- ☞ 'श्रियः' में कौन सी विभक्ति है– **षष्ठी विभक्ति**
- ☞ वर्णिलिङ्गी कौन था – **वनेचर**
- ☞ दुर्योधन की शासनव्यवस्था जानने के लिए हस्तिनापुर किसे भेजा गया था – **वनेचर को**
- ☞ 'युधिष्ठिर' पद में स् को ष् किस सूत्र से हुआ है – **गवियुधिभ्यां स्थिरः**
- ☞ वनेचर पद के 'वने' पद में सप्तमी विभक्ति का अलुक् हुआ है – **'तत्पुरुषे कृति बहुलम्'**
- ☞ वनेचर का शाब्दिक अर्थ होगा – **वने चरति इति=वनेचरः**
- ☞ किरातार्जुनीयम् का मङ्गलाचरण है – **वस्तुनिर्देशात्मक**
- ☞ 'प्रजासु वृत्तिं यमयुङ्क्त वेदितुम्' में 'यम्' पद से किसका बोध होता है– **वनेचर का**
- ☞ किरातार्जुनीयम् प्रथम सर्ग में प्रमुखता से प्रयुक्त छन्द हैं–**वंशस्थ, पुष्पिताग्रा, मालिनी**

☞ 'वर्णिलिङ्गी' पद में समास है – **षष्ठीतत्पुरुष**

☞ 'श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीम्' में 'श्रियः' पद में विभक्ति है–**षष्ठी**

☞ 'श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीम्' में 'श्रियः' से तात्पर्य है – **राजलक्ष्मी**

☞ 'वनेचरः' में समास है – **अलुक् तत्पुरुष**

☞ 'द्वैतवने वनेचरः' में अलंकार है – **वृत्त्यनुप्रास**

☞ 'युधिष्ठिरम्' पद में समास है – **सप्तमी अलुक् तत्पुरुष**

☞ ''न हि प्रियं प्रवक्तुमिच्छन्ति मृषा हितैषिणः'' यह सूक्ति किस ग्रन्थ से उद्धृत है –**किरातार्जुनीयम् से**

☞ ''कृतप्रणामस्य महीं महीभुजे'' यहाँ 'महीभुजे' पद में विभक्ति है– **चतुर्थी**

☞ 'महीभुज्' में प्रत्यय है – **क्विँप्**

☞ ''हितैषिणः प्रियं प्रवक्तुं न इच्छन्ति'' यह कथन किसका किससे है –**वनेचर का युधिष्ठिर से**

☞ ''न विव्यथे तस्य मनो न हि प्रियं'' यह कथन किसके लिए आया है – **वनेचर**

☞ 'न विव्यथे तस्य मनः' यहाँ 'विव्यथे' पद में धातु है – **व्यथ् धातु है**

☞ 'कृतप्रणामः' में कौन-सा समास है – **बहुव्रीहि**

☞ 'प्रवक्तुमिच्छन्ति मृषा हितैषिणः' अत्र अलङ्कारः कः – **अर्थान्तरन्यासालङ्कारः**

☞ 'महीभुजे' में कौन-सी विभक्ति है – **चतुर्थी**

☞ हस्तिनापुर से लौटकर वनेचर ने किसे प्रणाम किया – **युधिष्ठिर को**

☞ शत्रुओं द्वारा जीती गई पृथ्वी के वृत्तान्त का वर्णन करते हुए किसका मन दुःखी नहीं हुआ – **वनेचर का**

☞ कौन लोग मिथ्या एवं प्रिय नहीं बोलना चाहते –**हिताभिलाषी**

☞ शत्रुओं के नाश के लिए कार्य करने की इच्छा वाला राजा कौन है – **युधिष्ठिर**

☞ वनेचर ने युधिष्ठिर से हस्तिनापुर का वृत्तान्त बताया – **एकान्त में**

☞ 'कृतप्रणामस्य महीं महीभुजे जितां सपत्नेन निवेदयिष्यतः' में 'सपत्नेन' पद का अर्थ है – **शत्रु द्वारा**

☞ 'प्रवक्तुम्' पद में उपसर्ग, धातु एवं प्रत्यय है –**प्र + वच् + तुमुन्**

☞ 'प्रणामः' पद में प्रयुक्त प्रत्यय है – **घञ्**

☞ ''विनिश्चितार्थामिति वाचमाददे'' यह वाक्य किसके लिये प्रयुक्त है– **वनेचर के लिये**

☞ ''द्विषां विघाताय विधातुमिच्छतः'' के 'विघाताय' पद में धातु है– **हन्**

☞ 'आददे' में लकार है – **लिँट्**

☞ 'रहसि' शब्द में विभक्ति है – **सप्तमी**

☞ 'स सौष्ठवौदार्यविशेषशालिनीं विनिश्चितार्थामिति वाचमाददे' में 'स' पद किसके लिए आया है – **वनेचर**

☞ 'रहसि' पद में प्रकृति प्रत्यय है – **रह् + असुँन्**

☞ 'विघाताय' में कौन-सी धातु प्रयुक्त है – **हन् धातु**

☞ वनेचर ने युधिष्ठिर से हस्तिनापुर का वृत्तान्त बताया – **एकान्त में**

☞ 'विनिश्चितार्थामिति वाचमाददे' में 'आददे' पद का अर्थ है – **कहा**

☞ ''वञ्चनीयाः'' पद में प्रत्यय है – **अनीयर्**

☞ ''अतोऽर्हसि क्षन्तुमसाधु साधु वा'' में कौन किससे क्षमायाचना कर रहा है – **वनेचर युधिष्ठिर से**

☞ 'न वञ्चनीयाः प्रभवोऽनुजीविभिः' यह कथन है – **वनेचर का युधिष्ठिर से**

☞ 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः' यह सूक्ति कहाँ की है– **किरातार्जुनीयम् की**

☞ राजाओं का नेत्र होता है – **गुप्तचर**

☞ ''हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः'' उक्ति है – **वनेचरस्य**

☞ ''हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः'' यह उक्ति किसकी है? – **भारवि की**

☞ किस प्रकार के वचन दुर्लभ होते हैं – **हितकारी और मनोहारी**

☞ 'स किंसखा साधु न शास्ति योऽधिपम्' इसे किसने कहा – **वनेचर ने**

☞ 'शास्ति' में लकार, पुरुष और वचन है – **लँट्लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन**

☞ सम्पदाएँ सदा अनुराग करती हैं– **राजा और मंत्री के परस्पर अनुकूल होने पर**

☞ राजा और मन्त्री के अनुकूल रहने पर अनुराग करती हैं – **सर्वसम्पत्तियाँ**

☞ 'शास्ति' धातु है – **द्विकर्मक**

☞ 'सदानुकूलेषु हि कुर्वते रतिं, नृपेष्वमात्येषु च सर्वसम्पदः' यह किसके द्वारा कहा गया है – **वनेचर के द्वारा**

☞ जो राजा को उचित परामर्श नहीं देता वह नहीं है – **मंत्री**

☞ जो हितकारी बातों को नहीं सुनता वह नहीं है – **राजा**

☞ 'निगूढतत्त्वं नयवर्त्म विद्विषाम्' यह उक्ति किसकी है –**वनेचर की**

☞ ''तवानुभावोऽयमवेदि यन्मया'' यहाँ 'अवेदि' पद में लकार है –**लुँङ्लकार**

☞ राजाओं का आचरण कैसा होता है –**स्वभाव से दुर्बोध**

☞ किसका चरित्र कष्टपूर्वक समझ में आने वाला है –**राजाओं का**

- ☞ 'अबोधविक्लव' कौन है –**वनेचर**
- ☞ राजाओं का स्वभाव होता है – **दुर्विज्ञेय**
- ☞ दुर्योधन की नीतियों को समझ लेने का श्रेय वनेचर ने किसको दिया – **युधिष्ठिर को**
- ☞ 'अनुभावः' पद में समास है – **प्रादितत्पुरुष**
- ☞ किरातार्जुनीयम् में दुर्योधन को कहा गया है – **सुयोधनः**
- ☞ ''विशङ्कमानो भवतः पराभवम्'' यहाँ विशङ्कमानः पद में प्रत्यय है– **शानच्**
- ☞ ''विशङ्कमानो भवतः पराभवम्'' यहाँ 'भवतः' से बोध होता है– **युधिष्ठिर**
- ☞ दुर्योधन कब भयभीत हो जाता है – **युधिष्ठिर का नाम सुनकर**
- ☞ वन में निवास करने वाले युधिष्ठिर से पराजय की आशंका करता है– **दुर्योधन**
- ☞ दुर्योधन ने युधिष्ठिर से पृथ्वी जीत ली थी – **जुए में**
- ☞ 'नृपासनस्थः' एवं 'वनाधिवासिनः' पद क्रमशः किसका विशेषण है–**दुर्योधन, युधिष्ठिर**
- ☞ छल से जीती गई पृथ्वी को नीति से कौन जीतना चाहता है – **दुर्योधन**
- ☞ 'दुरोदरच्छद्मजितां समीहते' में 'छद्म' पद का तात्पर्य है – **छल**
- ☞ 'वनाधिवासिनः' पद का सामासिक विग्रह है – **वनम् अधिवसति इति**
- ☞ 'सुयोधनः' पद में समास है – **उपपद तत्पुरुषसमास**
- ☞ 'जिह्मः' में प्रकृति-प्रत्यय है – **हा + मनिन्**
- ☞ 'भवज्जिगीषया' पद में समास है – **षष्ठीतत्पुरुष**
- ☞ ''तनोति शुभ्रं गुणसम्पदा यशः'' यह किसके लिए कहा गया है – **सुयोधन**
- ☞ 'वरं विरोधोऽपि------------महात्मभिः' रिक्तस्थान की पूर्ति करें – **समम्**
- ☞ दुर्योधन अपने निर्मलयश को फैला रहा है – **गुणसम्पत्ति के द्वारा**
- ☞ दुष्टों के साथ मित्रता से अच्छा है – **महात्माओं से शत्रुता**
- ☞ 'शुभ्रम्' पद में प्रत्यय बताइए – **रक्**
- ☞ 'समुन्नयन्' पद में उपसर्ग, धातु एवं प्रत्यय बताइए– **सम् + उद् + नी + शतृँ**
- ☞ 'विरोधिनः' पद में धातु है – **रुध्**
- ☞ वनेचर के अनुसार किसने अपने छः शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर ली–**दुर्योधन ने।**
- ☞ ''नक्तं च दिवा च'' इस समास विग्रह से सामासिक पद होगा–**नक्तन्दिवम्।**
- ☞ 'कृतारिषड्वर्गजयेन' यहाँ षड्वर्ग से तात्पर्य है– **काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मत्सर।**

☞ मनुवादी मार्ग का अनुसरण करता है – **दुर्योधन**
☞ दुर्योधन के लिए प्रयुक्त अस्ततन्द्रिणा पद का अर्थ है– **आलस्यरहित।**
☞ रात और दिन को अच्छी तरह बाँटकर अपने पौरुष को कौन बढ़ा रहा है– **दुर्योधन।**
☞ 'वितन्यते' पद में प्रकृति-प्रत्यय बताइए – **वि + तन् + यक् + त ।**
☞ 'गतस्मयः सः' में 'सः' पद किसके लिए आया है – **सुयोधन**
☞ गर्वहीन दुर्योधन अपने सेवकों से व्यवहार करता है – **मित्र जैसा**
☞ गर्वहीन दुर्योधन का व्यवहार मित्रों के साथ है – **बन्धुवत्**
☞ 'गतस्मयः' पद किसके लिए प्रयुक्त हुआ है – **दुर्योधन**
☞ दुर्योधन स्वामी जैसा सम्मान किसे दे रहा है – **भाइयों को**
☞ ''स सन्ततं दर्शयते गतस्मयः कृताधिपत्यामिव साधु बन्धुताम्''– पंक्ति में प्रयुक्त अलङ्कार है – **रशनोपमा**
☞ 'गतस्मयः' का अर्थ है – **निरभिमानी**
☞ त्रिगण किसको परस्पर बाधा नहीं डालते – **दुर्योधन को**
☞ ''न बाधतेऽस्य त्रिगणः परस्परम्'' श्लोकांश में 'त्रिगणः' से क्या तात्पर्य है – **धर्म, अर्थ, काम**
☞ किरातार्जुनीयम् के 'त्रिगणः' पद में परिगणित नहीं है – **मोक्ष**
☞ ''न बाधतेऽस्य त्रिगणः परस्परम्'' में 'अस्य' पद बोधक है – **दुर्योधन का**
☞ 'गुणानुरागादिव सख्यमीयिवान्' इस पंक्ति में अलङ्कार बताइए – **उत्प्रेक्षा**
☞ 'अनुरागः' पद में उपसर्ग, धातु, प्रत्यय है – **अनु + रञ्ज + घञ्**
☞ दुर्योधन की वाणी है – **दानयुक्त**
☞ दुर्योधन का दानयुक्त है – **सत्कार से**
☞ दुर्योधन द्वारा किया जानेवाला सत्कार किसके बिना नहीं होता –**गुणों के प्रति अनुराग के बिना**
☞ 'न भूरिदानं विरहय्य सत्क्रियाम्' में 'विरहय्य' पद का अर्थ है – **छोड़कर**
☞ 'निहन्ति दण्डेन स धर्मविप्लवम्' किसके लिये कहा गया है – **दुर्योधन के लिए**
☞ ''वसूनि वाञ्छन्न वशी न मन्युना'' में 'वशी' पद का प्रयोग हुआ है–**दुर्योधन के लिए**
☞ दुर्योधन गुरुजनों द्वारा बताए गये विधान से किसके विषय में धर्मविप्लव को रोकता है – **शत्रुओं और पुत्रों**
☞ 'स्वधर्म इत्येव निवृत्तकारणः'– इस पंक्ति में 'निवृत्तकारणः' का अर्थ है– **कारणरहित**

☞ "अशंकिताकारमुपैति शङ्कितः" यह कथन किसका है – **वनेचर का**

☞ 'विधाय रक्षान् परितः परेतरान्' पंक्ति से वनेचर किसका वर्णन करता है – **दुर्योधन की भेदनीति का**

☞ दुर्योधन ने अपना रक्षक किसे नियुक्त किया – **शत्रुओं के शत्रु को**

☞ दुर्योधन को पराजय की आशङ्का है – **युधिष्ठिर से**

☞ 'अनारतं तेन पदेषु लम्भिता' में 'पदेषु' पद से तात्पर्य है– **कार्यों से**

☞ 'फलन्त्युपायाः परिबृंहितायतीः' में 'उपाय' पद से तात्पर्य है– **साम, दान, दण्ड, भेद**

☞ 'उपेत्यसङ्घर्षमिवार्थसम्पदः' में अलङ्कार है – **उत्प्रेक्षा**

☞ 'अयुग्मच्छदगन्धिः' का अर्थ क्या है – **सप्तपर्ण वृक्ष के पुष्प की गन्ध**

☞ 'तदीयमास्थाननिकेतनाजिरम्' में 'तदीयम्' से ग्रहण होता है – **दुर्योधन का**

☞ राजाओं द्वारा दिये गये हाथियों के मदजल की सुगन्ध कैसी थी –**सप्तपर्ण के पुष्प की तरह**

☞ दुर्योधन के सभाभवन का प्राङ्गण गीला होता है – **हाथियों के मदजल से**

☞ जो देश वर्षा पर निर्भर नहीं रहते हैं उन्हें कहा जाता है – **अदेवमातृक**

☞ 'कृषीवलैः' का अर्थ है – **किसानों द्वारा**

☞ दुर्योधन कुरु की प्रजा को प्रसन्न करने के लिए जो विशेष व्यवस्था करता है वह सम्बन्धित है – **सिंचाई व्यवस्था को उन्नत करने से**

☞ "चिराय तस्मिन् कुरवः चकासति" यहाँ 'चकासति' पद में लकार है – **लँट् प्र0पु0 बहुवचन**

☞ 'चिराय तस्मिन् कुरवः चकासति' क्रियापद में कौन-सी धातु है – **चकासृँ दीप्तौ धातु**

☞ दुर्योधन ने अपने राज्य में किसानों की सुविधा के लिए किया – **नदी, नहर, कुओं का निर्माण**

☞ 'वसूपमानस्य वसूनि मेदिनी' यहाँ 'वसूपमानस्य' पद से किसका संकेत है–**दुर्योधन का**

☞ 'वसूपमानस्य वसूनि मेदिनी' में किसके गुणों की प्रशंसा की गई है– **दुर्योधन के**

☞ पृथ्वी के लिए प्रयुक्त पद है – **मेदिनी**

☞ किरातार्जुनीयम् में 'उदारकीर्तेः' विशेषण किसके लिए है – **दुर्योधन के लिए**

☞ 'उदारकीर्तेरुदयं दयावतः' में 'दयावतः' पद का प्रयोग हुआ है– **दुर्योधन के लिए**

☞ दुर्योधन के अन्दर आने वाले गुणों का समावेश हुआ–**युधिष्ठिर से विरोध के कारण**

- ☞ किसके गुणों से द्रवीभूत होकर पृथ्वी स्वयं सम्पदा बरसाती है– **दुर्योधन के**
- ☞ 'महौजसो मानधनाः धनार्चिताः धनुर्भृतः संयति लब्धकीर्तयः' ये किसके विशेषण हैं – **योद्धाओं के**
- ☞ 'प्रियाणि वाञ्छन्त्यसुभिः समीहितुम्' यह श्लोकांश है– **किरातार्जुनीयम् का**
- ☞ 'महौजसो मानधना धनार्चिताः' किसके लिए प्रयुक्त किया गया है– **धनुर्धारी सेना**
- ☞ 'महौजसो मानधना धनार्चिताः' पद में 'मानधनाः' पद का अर्थ है– **स्वाभिमानी**
- ☞ कुरुराज्य के सैनिक दुर्योधन के प्रति समर्पित हैं – **प्राणपण लगाकर**
- ☞ 'मानधनाः' पद का समास विग्रह है – **मानः एव धनं येषां ते**
- ☞ 'प्रतीयते धातुरिवेहितं फलैः'– यह पद्यांश किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है – **किरातार्जुनीयम्**
- ☞ दुर्योधन अन्य राजाओं की सारी गतिविधियाँ जान लेता है– **गुप्तचरों के द्वारा**
- ☞ सभी राजा दुर्योधन की आज्ञा स्वीकार करते हैं– **माला के समान**
- ☞ अनुल्लङ्घनीय आदेश वाला कौन है – **दुर्योधन**
- ☞ 'प्रतीयते धातुरिवेहितं फलैः' में अलङ्कार बताइए – **उपमा**
- ☞ 'कोपविजिह्ममाननम्' यह पद किसके लिए आया है – **दुर्योधन**
- ☞ 'न तेन सज्यं क्वचिदुद्यतं धनुः' यहाँ 'उद्यतम्' में कौन सी धातु है– **यम् धातु**
- ☞ 'हिरण्यरेतसम्' का अर्थ क्या है– **अग्नि**
- ☞ 'नवयौवनोद्धतम्' यह पद भारवि ने किसके लिए प्रयोग किया है– **दुःशासन के लिए**
- ☞ ''निधाय दुःशासनमिद्धशासनः'' में 'इद्धशासनः' विशेषण किसके लिए प्रयुक्त है – **दुर्योधन के लिए**
- ☞ दुर्योधन यज्ञकार्य में कैसे लगा रहता है – **दुःशासन को युवराज पद पर बैठा करके**
- ☞ दुर्योधन ने युवराज किसे बनाया– **दुःशासन को**
- ☞ 'हिरण्यरेतसम्' पद में समास है– **बहुव्रीहि**
- ☞ 'यौवन' पद में प्रकृति प्रत्यय बताइए– **युवन् + अण्**
- ☞ 'स चिन्तयत्येव भियस्त्वदेष्यतीः' में 'स' पद का अर्थ है– **दुर्योधन**
- ☞ ''अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता'' यह कथन किसका है– **वनेचर का**
- ☞ 'अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता' यह सूक्ति किसके लिए कथित है– **दुर्योधन के विषय में**
- ☞ ''स चिन्तयत्येव भियस्त्वदेष्यतीरहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता''उदाहरण है – **अर्थान्तरन्यास अलङ्कार का**

☞ 'दुरन्ता' पद का सामासिक विग्रह होगा – **दुष्टः अन्तः यस्याः सा**
☞ 'भूपालाः' पद की व्युत्पत्ति है– **भू + पाल + अच्**
☞ किरातार्जुनीयम् में दुर्योधन की तुलना की गई है– **उरग से**
☞ 'तवाभिधानाद् व्यथते नताननः स दुःसहान्मन्त्रपदादिवोरगः'
इत्यत्र नताननः कः?– **सुयोधनः**
☞ दुर्योधन किसके पराक्रम को स्मरण करके नतमस्तक हो जाता है– **अर्जुन के**
☞ विषवैद्य सर्प के प्रभाव को कम करने के लिए किसका
स्मरण करता है– **गरुड एवं वासुकि**
☞ 'आखण्डलसूनुः' से तात्पर्य है– **अर्जुन**
☞ गरुड किसका वाहन है – **विष्णु का**
☞ 'प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः' यहाँ 'मादृशां' पद से किसका संकेत है– **वनेचर का**
☞ ''प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः'' यहाँ गिरः पद में विभक्ति है– **प्रथमा बहुवचन**
☞ किसका वचन केवल राजाओं को सूचना मात्र देने के लिए होते हैं– **गुप्तचरों के**
☞ वनेचर की बातें सुनने के बाद युधिष्ठिर कहाँ पहुँचे – **द्रौपदी के पास**
☞ 'प्रविश्य कृष्णासदनं महीभुजा' यहाँ 'महीभुजा' पद में तृतीया
विभक्ति है – **अनुक्ते कर्तरि तृतीया**
☞ 'महीभुजा' पद किसके लिए प्रयुक्त है – **युधिष्ठिर के लिए**
☞ 'कृष्णासदनम्' पद का समास विग्रह होगा – **कृष्णायाः सदनम्**
☞ ''उदाजहार द्रुपदात्मजा गिरः'' यहाँ 'गिरः'पद में वचन विभक्ति है–**बहुवचन, द्वितीया**
☞ दुर्योधन की उन्नति का वृत्तान्त सुनकर द्रौपदी किसका
क्रोध उद्दीप्त कर रही हैं – **युधिष्ठिर का**
☞ द्रुपदात्मजा पद से तात्पर्य है– **द्रौपदी**
☞ दुर्योधन की उन्नति का वृत्तान्त किससे सहन नहीं होता – **द्रौपदी से**
☞ ''भवादृशेषु प्रमदाजनोदितम्'' यहाँ 'प्रमदाजन' से किसका बोध हो रहा है– **द्रौपदी का**
☞ 'निरस्तनारीसमया दुराधयः' किसका कथन है– **द्रौपदी का**
☞ 'नारीसमया' में 'समया' से तात्पर्य है– **मर्यादा**
☞ ''मतङ्गजेन स्रगिवापवर्जिता'' उद्धृत है – **किरातार्जुनीयम् से**
☞ ''मतङ्गजेन स्रगिवापवर्जिता'' में अलंकार है– **उपमा**
☞ ''अखण्डमाखण्डलतुल्यधामभिः'' यहाँ 'आखण्डल' पद का अर्थ है– **इन्द्र**
☞ मदस्रावी हाथी के समान युधिष्ठिर ने क्या अपने हाथों से गिरा दिया– **पृथ्वी**
☞ ''व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवम्'' किसको सम्बोधित करके कहा गया है– **युधिष्ठिर को**

☞ ''भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः'' किसने किससे कहा– **द्रौपदी ने युधिष्ठिर से**
☞ ''प्रविश्य हि घ्नन्ति शठास्तथाविधान्'' यहाँ घ्नन्ति पद में धातु है– हन्
☞ धूर्त लोग निश्छल लोगों के भीतर किस रूप में प्रवेश करते हैं– **बाण के रूप में**
☞ जो लोग मायावियों के साथ मायावी आचरण नहीं करते वे– **पराजय प्राप्त करते हैं।**
☞ 'इषवः' पद का अर्थ है– **बाण**
☞ ''गुणानुरक्तामनुरक्तसाधनः कुलाभिमानी कुलजां नराधिपः'' इस पंक्ति में 'कुलाभिमानी' पदबोधक है– **युधिष्ठिर का**
☞ 'कुलजाम्' पद का भाव है – **उत्तम वंश में उत्पन्न हुई**
☞ ''परैस्त्वदन्यः क इवापहारयेत् में'' 'परैः' पद का भाव है– **शत्रु**
☞ 'घ्नन्ति' में धातु है – **हन्**
☞ 'शमीतरुं शुष्कमिवाग्निरुच्छिखः' यह सूक्ति किस कवि से सम्बन्धित है– **भारवि से**
☞ 'शमीतरुं शुष्कमिवाग्निरुच्छिखः' इस सूक्ति में कौन-सा अलङ्कार है– **उपमा**
☞ 'भवन्तमेतर्हि मनस्विगर्हिते' यहाँ 'भवन्तम्' पद से किसका सङ्केत किया गया है – **युधिष्ठिर का**
☞ निराशावस्था में बैठे युधिष्ठिर की तुलना की गई है – **शमीवृक्ष से**
☞ 'भवन्तमेतर्हि मनस्विगर्हिते विवर्तमानं नरदेव वर्त्मनि' में 'नरदेव' पद आया है – **युधिष्ठिर के लिए**
☞ 'वश्याः' में प्रत्यय जुड़ा है – **यत्**
☞ 'अबन्ध्यकोपस्य' पद का अर्थ है– **सफलक्रोध से युक्त**
☞ 'देहिनः' पद से तात्पर्य है – **शरीरधारी**
☞ 'अमर्षशून्येन जनस्य जन्तुना न जातहार्देन न विद्विषादरः' में 'अमर्ष' पद का अर्थ है – **क्रोध**
☞ 'दरः' पद का अर्थ है – **भय**
☞ ''परिभ्रमन्'' पद में प्रत्यय है– **शतृँ**
☞ 'वासवः' शब्द का अर्थ है– **इन्द्र**
☞ 'लोहितचन्दनोचितः, 'रेणुरुषितः' विशेषण है– **भीम का**
☞ द्रौपदी ने सबसे पहले किसकी दयनीय दशा का वर्णन किया– **भीम**
☞ 'महारथः सत्यधनस्य मानसं दुनोति नो कच्चिदयं वृकोदरः' श्लोक में अलङ्कार है– **परिकर**
☞ 'लोहितः' पद की प्रकृति-प्रत्यय है– **रुह + इतच्**
☞ ''स वल्कवासांसि तवाधुनाहरन्'' इस पंक्ति में किसका वर्णन है– **अर्जुन का**
☞ ''वासवोपमः'' किसके विषय में कहा गया है– **अर्जुन**

☞ इन्द्र के समान पराक्रमी है– **अर्जुन**
☞ अर्जुन ने किस प्रदेश को जीता था– **उत्तरी कुरुप्रदेश**
☞ 'अकुप्यधन' से तात्पर्य है– **स्वर्णरजतरूपी धन**
☞ वनवासकाल के समय पाण्डवों के लिए वल्कलवस्त्र कौन ले आता था–**अर्जुन**
☞ वनवासकाल में कठोर भूमि में कौन सोते हैं– **नकुल-सहदेव**
☞ किरातार्जुनीयम् में युगलभ्राता के रूप में वर्णन है– **नकुल-सहदेव**
☞ पर्वतीय हाथियों से तुलना की गई– **नकुल-सहदेव की**
☞ ''वनान्तशय्याकठिनीकृताकृती कचाचितौ विष्वगिवागजौ गजौ'' इस पंक्ति में 'अगजौ' एवं 'गजौ' पद आया है– **नकुल-सहदेव के लिए**
☞ ''कचाचितौ विष्वगिवागजौ गजौ में'' 'कचाचितौ' पद का अर्थ है–**केशों से ढका हुआ**
☞ ''इमामहं वेद न तावकीं धियम्'' यहाँ 'अहम्' पद से किसका बोध हो रहा है– **द्रौपदी का**
☞ चित्तकी वृत्तियाँ कैसी होती हैं– **विचित्ररूप वाली**
☞ 'रुजन्ति चेतः प्रसभं ममाधयः' इस श्लोकांश में किसकी मानसिक स्थिति बतलाई गई है – **द्रौपदी की**
☞ 'इमामहं वेद न तावकीं धियम्' किसका कथन है – **द्रौपदी का**
☞ 'भवदापदम्' पद में समास है– **षष्ठी तत्पुरुष**
☞ अमंगलकारी सियारिनियों की बोलियों से कौन जगते हैं– **युधिष्ठिर**
☞ पुरा कः स्तुतिगीतिमङ्गलै विबोध्यते – **युधिष्ठिर**
☞ 'शयनं' पद का अर्थ है– **शय्या**
☞ ''जहासि निद्रामाशिवैः शिवारुतैः'' इस पंक्ति में 'शिवा' पद का अर्थ है– **शृगाली**
☞ 'पुरोपनीतं नृप रामणीयकं' कथन किसका है– **द्रौपदी**
☞ द्रौपदी 'वन्यफलाशिनः' किसको कहती है– **युधिष्ठिर को**
☞ 'अन्धसा' पद से तात्पर्य है – **अन्न**
☞ 'द्विजः' पद की व्युपत्ति है – **द्वि + जन् + ड**
☞ 'मृगद्विजालूनशिखेषु बर्हिषाम्' यहाँ 'बर्हिषाम्' पद का अर्थ है– **कुश**
☞ 'निषीदतस्तौ चरणौ वनेषु ते मृगद्विजालूनशिखेषु बर्हिषाम्' इस पंक्ति में 'निषीदतः' का अर्थ होगा– **पड़ना**
☞ 'बर्हिषाम्' से तात्पर्य है– **कुशों के**
☞ 'पराभव' किसके लिए उत्सव के समान होता है – **स्वाभिमानी के लिए**
☞ ''समूलमुन्मूलयतीव मे मनः'' किसके लिए आया है– **द्रौपदी**

- 'पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम्' पंक्ति में अलङ्कार है– **अर्थान्तरन्यास**
- युधिष्ठिर के बुरी दशा का कारण है – **शत्रु**
- स्वाभिमानी पुरुषों के लिए पराजय होती है– **उत्सव के समान**
- 'शमेन सिद्धिं मुनयो न भूभृतः' यह कथन किसका है– **द्रौपदी का**
- 'विहाय' पद में प्रकृति प्रत्यय है– **वि + हा + ल्यप्**
- 'अवधूय' पद में प्रकृति प्रत्यय है– **अव + धू + ल्यप्**
- मुनि लोग सिद्धि प्राप्त करते हैं– **शम से**
- द्रौपदी युधिष्ठिर को फिर से क्या धारण करने को कहा– **तेज**
- 'निराश्रया हन्त! हता मनस्विता' सूक्ति के वक्ता तथा श्रोता हैं– **द्रौपदी-युधिष्ठिर**
- 'भवादृशाश्चेदधिकुर्वते रतिम्' में 'रतिम्' पद का भाव है– **सन्तोष**
- 'कार्मुकम्' पद का अर्थ है – **धनुष**
- 'जटाधरः सञ्जुहुधीह पावकम्' यह किसके लिए किसने कहा– **द्रौपदी ने युधिष्ठिर से**
- द्रौपदी ने राजचिह्न त्यागने को किसे कहा– **युधिष्ठिर को**
- 'जटाधरः' इस पद का समास विग्रह है– **जटानां धरः**
- 'पावकम्' की धातु एवं प्रत्यय बताइए – **पू + ण्वुल्**
- 'निकृतिपरेषु परेषु भूरिधाम्नः' इस पंक्ति में अलंकार है– **यमक**
- 'न समयपरिरक्षणं क्षमं ते'– यहाँ छन्द है– **पुष्पिताग्रा**
- 'किरातार्जुनीयम्' प्रथम सर्ग का पैतालिसवाँ श्लोक किस छन्द में है– **पुष्पिताग्रा**
- 'न समयपरिरक्षणं क्षमं ते' इस पंक्ति में 'समय' पद का भाव है– **शपथ, प्रतिज्ञा, काल**
- 'निकृतिपरेषु भूरिधाम्नः' यहाँ 'निकृति' पद बोधक है– **शत्रुता, अपमान**
- किरातार्जुनीयम् के प्रत्येक सर्ग का अंतिम पद है– **लक्ष्मीः**
- किरातार्जुनीयम् के अंतिम श्लोक में छन्द है– **मालिनी**
- 'रिपुतिमिरमुदस्योदीयमानम्' में अलंकार है– **रूपक**
- किसके वक्तव्य की समाप्ति के साथ किरातार्जुनीयम् का प्रथम सर्ग समाप्त होता है– **द्रौपदी के**
- मालिनी छन्द के प्रत्येक चरण में कितने वर्ण होते हैं– **15**
- रिपुतिमिरमुदस्योदीयमानं दिनादौ-यहाँ पर 'रिपुतिमिर' पद का अर्थ है– **सूर्य, शत्रुसदृश अन्धकार**

8. महत्त्वपूर्ण सूक्तियाँ

- **अरिषु हि विजयार्थिनः क्षितीशाः विदधति सोपधि सन्धिदूषणानि।** (1/45)

भावार्थ-द्रौपदी का कथन, युधिष्ठिर से- विजय की अभिलाषा वाले राजा लोग शत्रुओं के विषय में (की गयी) सन्धियों को छलपूर्वक भङ्ग कर देते हैं।

- **अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता।** (1/23)

भावार्थ- वनेचर युधिष्ठिर से कहता है- 'बलवान् के साथ किया गया वैर-विरोध होना अनिष्ट अन्त है।'

- **कामाः कष्टा हि शत्रवः।** (11/35)

भावार्थ- इन्द्र अर्जुन से कहता है- 'ये कामादि विषय बड़े कष्टदायी शत्रु हैं।'

- **तत्तविदां किमिवास्ति यन्न सुकरं मनस्विभिः।** (12/6)

भावार्थ-भगवान् शंकर की आराधना करने हुए अर्जुन का शरीर क्षीण हो गया था फिर भी उसने तीनों लोक के उत्कर्ष को जीत लिया था-'उस शरीर के देखने से तत्त्वज्ञ लोगों को भी भय उत्पन्न हो जाता था। कौन ऐसा कार्य है जिसे मनस्वी लोग आसानी से नहीं कर सकते?'

- **तथापि वक्तुं व्यवसाययन्ति मां, निरस्तनारीसमया दुराधयः॥** (1/28)

भावार्थ- द्रौपदी का कथन- फिर भी स्त्रीजनोचित शालीनता को नष्ट कर देने वाली दुष्ट मानसिक व्यथाएँ मुझे बोलने के लिए प्रेरित कर रही हैं।

- **न तितिक्षा सममस्ति साधनम्।** (2/43)

भावार्थ- युधिष्ठिर भीम से कहते हैं- क्षमाशीलता ही सभी काल में सभी फलों को देने वाली है।

- **नयहीनादपरज्यते मनः।** (2/49)

भावार्थ- युधिष्ठिर भीम से कहते हैं- 'नीतिमार्ग से भ्रष्ट हुए राजा से प्रजानन विरक्त हो जाते हैं अर्थात् उससे अनुराग नहीं करते।'

- **न रम्यमाहार्यमपेक्षते गुणम्।** (4/23)

भावार्थ- शरत् ऋतु की शोभा को देखकर यक्ष अर्जुन से बिना पूछे ही कहने लगा- 'क्योंकि मनोहर वस्तु आरोपित गुणों की अपेक्षा नहीं करता।'

- **न हि प्रियं प्रवक्तुमिच्छन्ति मृषा हितैषिणः।** (1/2)

भावार्थ- वनेचर युधिष्ठिर से कहता है- 'क्योंकि कल्याण चाहने वाले (स्वपक्षीय) लोग मिथ्याभूत मुधर वचन बोलने की इच्छा नहीं करते हैं।'

- **न्यायाधारा हि साधवः।** (11/30)

भावार्थ- अर्जुन को तपस्या करते देख प्रसन्न मुनि वेशधारी इन्द्र आकर अर्जुन से बोले-'सज्जन लोग तो न्याय का ही आश्रय लेते हैं।'

➢ **पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम्।** (1/41)
भावार्थ- युधिष्ठिर की दशा को देखकर द्रौपदी कहती है- शत्रुओं द्वारा अपराभूत शौर्य सम्पत्ति वाले मनस्वी पुरुषों के लिये पराभव भी उत्सव के ही समान है।

➢ **प्रकृत्यमित्रा हि सतामसाधवः।** (14/21)
भावार्थ-वराह की मृत्यु पर अर्जुन तथा किरात आपस में युद्ध करने के पूर्व एक दूसरे से बहस करते हैं- 'गुणों के अर्जन से उत्कृष्ट जन एकत्र करने के विरोधी असज्जन लोग सज्जनों के सहज बैरी होते हैं।'

➢ **प्रकर्षतन्त्रा हि रणे जयश्रीः।** (3/17)
भावार्थ-वेदव्यास युधिष्ठिर से कहते हैं- 'युद्ध में विजयश्री उत्कर्ष के ही अधीन रहती है।'

➢ **प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः।** (1/25)
भावार्थ-वनेचर का कथन- मुझ जैसे की बाते तो वृत्तान्त मात्र पर्यवसायिनी होती हैं।

➢ **भवन्ति भव्येषु हि पक्षपाताः।** (3/12)
भावार्थ- युधिष्ठिर के विजय के लिए विचार करते द्वैपायन व्यास बोले- 'विरागी मुमुक्षु लोगों का भी साधुजनों में अधिक स्नेह होता है।'

➢ **मित्रलाभमनुलाभसम्पदः।** (13/52)
भावार्थ- भगवान् शंकर द्वारा भेजा गया वनेचर अर्जुन से कहता है- इस तरह का मित्रलाभ सर्वोत्कृष्ट है।

➢ **मुखरताऽवसरे हि विराजते।** (5/16)
भावार्थ- कुबेर का अनुचर यक्ष अर्जुन से प्रिय वचन बोला- अवसर पर वाचालता शोभित ही होती है।

➢ **लङ्घ्यते न खलु कालनियोगः।** (9/13)
भावार्थ- महाकवि भारवि ने सूर्यास्त के समय चकवा-चकवी अलग हो जाते हैं इस विषय में लिखा- 'दैव की आज्ञा कौन भङ्ग कर सकता है।'

➢ **वसन्ति हि प्रेम्णि गुणा न वस्तुनि।** (8/37)
भावार्थ-अप्सरायें कहती हैं- 'गुण तो प्रेम में निवास करते हैं, किसी वस्तु में नहीं।'

➢ **विविक्तं ब्रह्मणः पदम्।** (11/66)
भावार्थ-अर्जुन इन्द्र को अपने तपस्या का प्रयोजन बताते हुए बोले- न तो मैं विनश्वरता रूप विद्युत्पात से ही डरता हूँ, अतः मुझे मुक्ति की भी इच्छा नहीं है।

➢ **वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः।** (1/8)
भावार्थ- वनेचर युधिष्ठिर से बताता है कि दुर्योधन अपने यश का विस्तार कर रहा है- 'महापुरुषों के साथ विरोध भी दुष्टजनों के साथ की अपेक्षा श्रेष्ठ है।'

➢ **व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवं**
भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः।
प्रविश्य हि घ्नन्ति शठास्तथा-
विधानसंवृतांगान्निशिता इवेषवः। (1/30)

भावार्थ-द्रौपदी युधिष्ठिर से कहती है- 'जो मनुष्य कपटियों के प्रति स्वयं कपटी नहीं बनते, विवेकरहित वे मनुष्य सर्वत्र पराजय को प्राप्त करते हैं, क्योंकि कुटिल व्यक्ति उस

प्रकार के व्यक्तियों के (कुटिलता से रहित सज्जनों के) शरीर में प्रवेश करके कवच आदि से आरक्षित देह वाले पुरुषों को मारने वाले अत्यन्त तीक्ष्ण बाणों की तरह आत्मीय बनकर मार डालते हैं।'

- **शमेन सिद्धिं मुनयो न भूभृतः।** (1/42)

  भावार्थ-द्रौपदी युधिष्ठिर से शान्तिमार्ग को छोड़कर युद्ध के लिए कहती हैं- 'कामना रहित तपस्वी लोग काम,क्रोध,लोभ,मोह,मद,मात्सर्य नामक षड्विध शत्रुओं को जीतकर संयम के द्वारा (मोक्षरूपी सिद्धि को प्राप्त करते हैं।)

- **सदानुकूलेषु हि कुर्वते रतिं नृपेष्वमात्येषु च सर्वसम्पदः।** (1/5)

  भावार्थ- वनेचर का कथन, युधिष्ठिर से- क्योंकि राजाओं और अमात्यों के परस्पर अनुकूल होने पर समस्त सम्पदाएँ सर्वदा अनुराग करती हैं।

- **सः किं सखा साधु न शास्ति योऽधिपम्।** (1/5)

  भावार्थ- युधिष्ठिर द्वारा दुर्योधन के विषय में जानकारी लेने के लिए भेजा गया वनेचर (गुप्तचर) वापस आकर बोला- 'जो राजा को समुचित उपदेश नहीं देता है क्या वह मित्र है? अर्थात् कभी नहीं।'

- **सुदुर्लभा सर्वमनोरमा गिरः।** (14/5)

  भावार्थ- अर्जुन ने किरात से क्षोभरहित की तरह वचन बोले- 'तुम्हारी वाणी तो सर्वगुण सम्पन्न होने से सर्वप्रिय है।'

- **सुलभा रम्यता लोके दुर्लभं हि गुणार्जनम्।** (11/11)

  भावार्थ- मुनिवेषधारण कर इन्द्र अर्जुन से कहते हैं- सौन्दर्य का मिलना तो संसार में कोई कठिन बात नहीं है परन्तु गुणों को प्राप्त करना अत्यन्त कठिन है।

- **स्फुटता न पदैरपाकृता न च स्वीकृतमर्थगौरवम्।**
  रचित पृथगर्थता गिरां न च सामर्थ्यमपोहितं क्वचित्। (2/27)

  भावार्थ- युधिष्ठिर भीम को समझाते हुये बोले- '(वचन में प्रयोग किये गये) पदों के द्वारा अर्थ की सुस्पष्टता का परित्याग नहीं किया गया है और अर्थगौरव को नहीं स्वीकार किया गया, ऐसी बात नहीं (अर्थात् अर्थ विपुलता है ही) पदों का भिन्न भिन्न अर्थ निरूपित है। कहीं पर भी परस्पर सापेक्षभाव परित्यन्त नहीं हुआ है अर्थात् भीमसेन के वचन के पद स्फुट अर्थ वाले अर्थगौरव सार्थक तथा परस्पर पूर्वापर सम्बन्ध से युक्त है।'

- **स सौष्ठवौदार्यविशेषशालिनीं विनिश्चितार्थामिति वाचमाददे।**

  (किरात. 03)

  भावार्थ- शब्द सौन्दर्य और अर्थ-सम्पत्ति की विशिष्टता से सुशोभित तथा सुनिश्चित अर्थवाली, इस प्रकार की वाणी अङ्गीकृत अर्थात् कही।

- **हरति मनो मधुरा यौवनश्रीः।** (10/17)

  भावार्थ- अप्सरायें अर्जुन को तपस्या करता देख मोहित हो जाती हैं तथा अर्जुन की तपस्या भंग करने का विचार करती हैं- 'क्योंकि युवावस्था की रम्य शोभा मन का हरण कर लेती है।'

❑❑

माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड द्वारा आयोजित

प्रशिक्षित स्नातकशिक्षक-चयनपरीक्षा

TGT

संस्कृतम्

व्याख्यात्मक-हलप्रश्नपत्रम्

लेखक
सर्वज्ञभूषण

सम्पादक
रमाकान्त मौर्य

प्रकाशक
संस्कृतगङ्गा
59, मोरी, दारागंज, इलाहाबाद
मो. 9839852033
7800138404

प्रकाशन-सहयोग
युनिवर्सल बुक्स
1519, अल्लापुर, इलाहाबाद
☎: 0532-2503638
मो. 9453460552

* **प्रकाशनाधिकारिणी संस्था**

संस्कृतगङ्गा (पञ्जीकृत)
59, मोरी, दारागञ्ज, इलाहाबाद
(कोतवाली दारागञ्ज के आगे, गङ्गाकिनारे संकटमोचन छोटे हनुमान मन्दिर के पास), Mb. : 9839852033
email-Sanskritganga@gmail.com

* पुस्तकें डाक द्वारा भी आर्डर कर सकते हैं–

Mob. : 7800138404

* **प्रकाशक**

युनिवर्सल बुक
1519 अल्लापुर, इलाहाबाद
☎ : 0532-2503638

ISBN : 978-81-932244-7-2

* **मुख्यवितरक**

राजू पुस्तक केन्द्र
अल्लापुर, इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश)
मो० 9453460552

* **अक्षर संयोजक- संस्कृतगङ्गा, दारागंज, इला.**

* प्रथम संस्करण – 15 अगस्त - 2014
* षष्ठ संशोधित संस्करण - मई- 2018
* **मूल्य –** ` **140/-** (एक सौ चालीस रुपये मात्र)

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

1. राजू पुस्तक भण्डार, अल्लापुर, इलाहाबाद
   सम्पर्क सूत्र : 0532-2503638, 9453460552
2. संस्कृतगङ्गा, दारागञ्ज, इलाहाबाद - 7800138404
3. गौरव बुक एजेन्सी, कैण्ट, वाराणसी
4. विजय मैग्जीन सेन्टर, बलरामपुर
5. जायसवाल बुक सेन्टर, हरदोई – 9415414569
6. शिवशंकर बुक स्टाल, जौनपुर
7. न्यू पूर्वांचल बुक स्टाल, जौनपुर – 9235743254
8. कृष्णा बुक डिपो बस्ती – 8182854095
9. मौर्या बुक डिपो, पाण्डेयपुर, वाराणसी– 9454735892
10. मनीष बुक स्टोर, गोरखपुर – 9415848788
11. द्विवेदी ब्रदर्स, गोरखपुर – 0551-344862
12. विद्यार्थी पुस्तक मन्दिर, गोरखपुर – 9838172713
13. रंजन मिश्रा, गोरखपुर (बस स्टैण्ड)
14. आशीर्वाद बुक डिपो, अमीनाबाद, लखनऊ
15. मालवीय पुस्तक केन्द्र, अमीनाबाद, लखनऊ – 9918681824
16. मॉडर्न मैग्जीन बुक शॉप, कपूरशाला, लखनऊ
17. साहू बुक स्टॉल, अलीगंज, लखनऊ – 9838640164
18. भूमि मार्केटिंग, लखनऊ – 9450520503
19. दुर्गा स्टोर, राजा की मण्डी, आगरा – 9927092063
20. महामाया पुस्तक केन्द्र, बिलासपुर – 09907418171
21. डायमण्ड बुक स्टाल, ज्वालापुर, हरिद्वार
22. कम्पटीशन बुक हाउस, सब्जी मण्डी रोड, बरेली – 9897529906
23. अजय गुप्ता बुक स्टोर, लखीमपुर – 809062054
24. शिवशंकर बुक स्टाल, रीवा – 9616355944
25. कृष्णा बुक एजेन्सी, वाराणसी – 9415820103
26. गर्ग बुक डिपो, जयपुर
27. अग्रवाल बुक सेन्टर, मुखर्जी नगर, नयी दिल्ली
28. चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी (सभी बुक स्टालों पर)
    मो. – 9839243286, 9415508311, 0532-2420414
29. विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक वाराणसी – 0542-2413741
30. मोतीलाल बनारसी दास, वाराणसी
31. केशवी बुक डिस्ट्रीब्यूटर्स, नयी दिल्ली – 93
32. महावीर बुक स्टाल, खजूरी बाजार, इन्दौर
33. हिन्दी बुक डिपो, मुरादाबाद – 94566888596
34. माँ बुक स्टेशनर्स, शहडोल छत्तीसगढ़ – 9406754644
35. ज्ञानगंगा, राँची, झारखण्ड – 9234249100

षष्ठसंस्करणे संस्कृतगङ्गा उवाच

प्रियसंस्कृतमित्राणि!

नमः संस्कृताय

- संस्कृतगङ्गा, दारागञ्ज, इलाहाबाद की यह षष्ठ प्रस्तुति '**TGT परीक्षा व्याख्यात्मक हलप्रश्नपत्र**' के रूप में आपकी सेवा में समर्पित है।
- यह पुस्तक उ0 प्र0 माध्यमिक शिक्षा सेवा चयनबोर्ड, इलाहाबाद द्वारा आयोजित सन् 1999 से लेकर अब तक के प्रशिक्षित स्नातकशिक्षक चयनपरीक्षा (T.G.T.) संस्कृत का व्याख्यात्मक हलप्रश्नपत्र है।
- यद्यपि बाजारों में कुछ और हलप्रश्नपत्र आपको मिलेंगे किन्तु उनमें मुद्रणदोष तथा यत्र कुत्रापि उत्तर भी गलत हो गये हैं। अतः उन सभी मुद्रणदोषों को दूर करके सही और प्रामाणिक उत्तर देने का प्रयास किया गया है, क्योंकि संस्कृत में तो एक हलन्त, विसर्ग और अनुस्वार की गलती भी अर्थ का अनर्थ कर सकती है।
- यहाँ सभी प्रश्नों के चारों विकल्पों पर व्याख्यान किया गया है। चार विकल्पों में से जो उत्तर सही है वह क्यों सही है? और जो तीन गलत हैं, वह क्यों गलत हैं? इसकी वैज्ञानिक विवेचना ही इस हलप्रश्नपत्र का वैशिष्ट्य है।
- सम्पादकमण्डल के सभी सदस्यों के द्वारा यह पूरा प्रयास किया गया है कि इसमें मुद्रणदोष न हों, तथा सभी प्रश्नों का सही और प्रामाणिक विवेचन किया जाय, फिर भी प्रमादवशात् कुत्रचित् दोषदर्शन हों तो कृपया हमें अवश्य सूचित करें। हमें मिस्डकॉल करें या कॉल करें– **09839852033**
- अन्त में उन सभी संस्कृतमित्रों को हार्दिक धन्यवाद, जिन्होंने इस पुस्तक के प्रूफ संशोधन में मनसा, वाचा, कर्मणा संस्कृतगङ्गा का सहयोग किया। विशेषकर – **मनीष शर्मा, सत्यप्रकाश साहू, अम्बिकेश सिंह, रागिनी शुक्ला, सुमन सिंह।**

- सर्वज्ञभूषणः

TGT संस्कृत पाठ्यक्रम

संस्कृतसाहित्य–गद्य, पद्य एवं नाटक–अधोलिखित ग्रन्थों के निर्धारित अंशों के आधार पर शब्दार्थ, सूक्तियाँ, हिन्दी रूपान्तर, अन्वय, सुभाषित, शब्दों की व्याकरणात्मक टिप्पणी, पात्रों का चरित्र-चित्रण तथा ग्रन्थकर्ता का परिचय– इनसे सम्बद्ध बहुविकल्पीय प्रश्न परीक्षा में प्रष्टव्य होंगे।

- कादम्बरी (शुकनासोपदेश)
- शिवराजविजयम् (प्रथम निःश्वास)
- किरातार्जुनीयम् (प्रथमसर्ग)
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (चतुर्थ अङ्क)
- उत्तररामचरितम् (तृतीय अङ्क)
- मेघदूतम् (सम्पूर्ण)
- नीतिशतकम् (सम्पूर्ण)

व्याकरण– डॉ० बाबूराम सक्सेना कृत ''संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका'' के आधार पर संज्ञाप्रकरण, सन्धि, समास, कारक, प्रत्याहारों का ज्ञान एवं प्रत्ययों का सामान्य परिचय।

शब्दरूप– अकारान्त, इकारान्त, उकारान्त, ऋकारान्त पुंलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग एवं नपुंसकलिङ्ग शब्दों का रूप।

सर्वनामरूप– सर्व, यत्, तद्, किम्, युष्मद्, अस्मद्, इदम्, अदस् सर्वनामों के रूप।

धातुरूप– भू, गम्, पठ्, पा, भी, श्रु, लभ्, हन्, दुह्, दा, दिव्, जन्, तुद्, प्रच्छ्, ब्रू तथा चुर् धातुओं के लट्, लोट्, लृट्, लङ् और विधिलिङ् इन पाँचों लकारों में रूप।

संस्कृतसंख्या– एक से सौ तक की संख्याओं के संस्कृत-शब्दों का ज्ञान। पूरणी संख्याओं का ज्ञान

अनुवाद एवं निबन्ध–हिन्दी वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद। संस्कृत में पत्रलेखन एवं निबन्ध, संस्कृत सूक्तियों का ज्ञान, वाच्यपरिवर्तन, अशुद्धि परिमार्जन।

प्रशिक्षणात्मक-संस्कृत– संस्कृत प्रशिक्षण की दृष्टि से व्याकरण, अनुवाद, गद्य, पद्य आदि की पाठन विधियों का सामान्य परिचय।

संस्कृतसाहित्य का इतिहास– संस्कृत कवियों का सामान्य परिचय, प्रसिद्ध रचनायें एवं रचनाकार

अनुक्रमणिका

पेज

निर्धारित समय : 2 घण्टे] **[पूर्णांक : 425 अंक**

आवश्यक निर्देश

1. अभ्यर्थी अपना अनुक्रमाङ्क केवल आवरण पृष्ठ तथा प्रश्न-पुस्तिका के साथ दिए गए उत्तर-पत्रक के निर्दिष्ट स्थान पर लिखेंगे, अन्यत्र कहीं नहीं।
2. प्रश्न-पुस्तिका मिलने के उपरान्त अभ्यर्थी को तुरन्त सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि पुस्तिका में पूरे पृष्ठ हैं तथा कोई प्रश्न छूट तो नहीं गया है। यदि कोई विसंगति है, तो प्रश्न-पुस्तिका मिलने के 10 मिनट के भीतर ही कक्ष-निरीक्षक को सूचित करना चाहिए तथा त्रुटिरहित दूसरी पुस्तिका प्राप्त कर लेनी चाहिए।
3. प्रश्न-पुस्तिका में किसी विसंगति के अतिरिक्त, किसी भी स्थिति में, अभ्यर्थी को कोई दूसरी प्रश्न-पुस्तिका नहीं दी जाएगी। अभ्यर्थी को प्रश्न-पुस्तिका को उपयोग में लाने और उत्तर-पत्रक को पूरित करने में सावधानी बरतनी चाहिए।
4. अभ्यर्थी को **125 प्रश्नों** के उत्तर देने हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। गलत उत्तर के लिए **नकारात्मक अंक नहीं** दिये जायेंगे।
5. उत्तर-पत्रक को भरने के पूर्व अभ्यर्थी उत्तर-पत्रक पर मुद्रित महत्वपूर्ण निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
6. अभ्यर्थी उत्तर-पत्रक में उस प्रश्न संख्या के सामने दिए गए चार विकल्पों में से एक सही विकल्प को उत्तर पत्रक में दिए गए निर्देशानुसार भरे। केवल उत्तर-पत्रक का ही मूल्यांकन होगा।
7. किसी भी परिस्थिति में प्रश्न-पुस्तिका का कोई भी कागज अलग नहीं करना है।
6. अभ्यर्थी परीक्षा भवन में प्रवेशपत्र के अतिरिक्त सादा या लिखा कोई अन्य कागज नहीं लायेंगे। यदि कोई अभ्यर्थी कोई अतिरिक्त कागज, नोटबुक, पुस्तक, कैलकुलेटर, स्लाइड, रूल, मोबाइल फोन आदि अपने साथ परीक्षाभवन में रखे पाया जाता है, तो वह अनुचित साधन-प्रयोग के अन्तर्गत दण्डित किया जा सकता है।
9. प्रश्न-पुस्तिका के अन्त में रफ-कार्य हेतु लगे कागज का प्रयोग रफ-कार्य हेतु किया जा सकता है।
10. केवल काला/नीला बाल पेन उत्तर भरने के लिए प्रयोग करें।

नोट– सभी प्रश्नपत्रों के पूर्व में यही आवश्यकनिर्देश रहता है, अतः इसकी पुनरावृत्ति अगले प्रश्नपत्रों में नहीं की जायेगी।

सन्दर्भग्रन्थ सूची

1. कादम्बरी (शुकनासोपदेश) – तारिणीश झा
2. शिवराजविजयम् (प्रथम निःश्वास) – रमाशंकर मिश्र
3. किरातार्जुनीयम् (प्रथमसर्ग) – रामसेवक दुबे
4. अभिज्ञानशाकुन्तलम् – कपिलदेव द्विवेदी
5. उत्तररामचरितम् – कपिलदेव द्विवेदी
6. मेघदूतम् (सम्पूर्ण) – विजेन्द्रकुमार शर्मा
7. नीतिशतकम् (सम्पूर्ण) – तारिणीश झा
8. अष्टाध्यायी (सूत्रपाठ) – गोपालदत्त पाण्डेय
9. रूपचन्द्रिका – चौखम्भा, वाराणसी
10. बृहद् अनुवाद चन्द्रिका – चक्रधर नौटियाल
11. रचनानुवादकौमुदी – कपिलदेव द्विवेदी
12. संस्कृतसाहित्य का इतिहास – कपिलदेव द्विवेदी
13. संस्कृतव्याकरणप्रवेशिका – बाबूराम सक्सेना
14. लघुसिद्धान्तकौमुदी – गोविन्दाचार्य

प्रशिक्षित-स्नातकशिक्षक-चयनपरीक्षा (TGT)–1999

1. निम्नलिखित में शुद्ध वाक्य कौन-सा है?
(A) ग्रामस्य बहिः विद्यालयोऽस्ति।
(B) ग्रामे बहिः विद्यालयोऽस्ति।
(C) ग्रामात् बहिः विद्यालयोऽस्ति।
(D) ग्रामं बहिः विद्यालयोऽस्ति।

व्याख्या–
(A) 'दूरान्तिकार्थैः षष्ठ्यन्यतरस्याम्' (2/3/34) सूत्र से निकट शब्द के योग में ग्राम में 'षष्ठी विभक्ति' का प्रयोग होगा। यथा–ग्रामस्य निकटं विद्यालयोऽस्ति।
(B) 'सप्तम्यधिकरणे च' (2/3/36) सूत्र से ग्राम में सप्तमी विभक्ति का प्रयोग होगा। यथा–ग्रामे विद्यालयोऽस्ति।
(C) 'अपपरिबहिरञ्चवः पञ्चम्या' (2/1/12) सूत्र से अप, परि, बहिस् का पञ्चम्यन्त पद के साथ वैकल्पिक समास का विधान है, इसलिए 'बहिः' के योग में पञ्चमी विभक्ति का प्रयोग होगा। यथा–**ग्रामात् बहिः विद्यालयोऽस्ति।** अतः विकल्प (C) सही है।
(D) 'अभितः-परितः-समया-निकषा-हा-प्रतियोगेऽपि'–वार्तिक से 'अभितः' के योग में ग्राम में द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होगा यथा–ग्रामम् अभितः विद्यालयोऽस्ति।

2. निम्नलिखित में शुद्ध वाक्य के क्रमाङ्क का निर्देश कीजिए?
(A) कृष्णस्य उभयतः गोपालाः सन्ति।
(B) कृष्णं उभयतः गोपालाः सन्ति।
(C) कृष्णेन उभयतः गोपालाः सन्ति।
(D) कृष्णात् उभयतः गोपालाः सन्ति।

व्याख्या–
(A) 'कर्तृकर्मणोः कृति' (2/3/65) सूत्र से कृष्ण में षष्ठी विभक्ति का विधान होगा यथा–कृष्णस्य कृतिः।
(B) "उभसर्वतसोः कार्या धिगुपर्यादिषु त्रिषु। द्वितीयाम्रेडितान्तेषु ततोऽन्यत्रापि दृश्यते।।" वार्तिक से 'उभयतः' के योग में कृष्ण में द्वितीया विभक्ति का विधान हुआ है। यथा–**कृष्णं उभयतः गोपालाः सन्ति।**
(C) 'सहयुक्तेऽप्रधाने' (2/3/19) सूत्र से कृष्ण में तृतीया विभक्ति का विधान होगा।
यथा–कृष्णेन सह गोपालः आगतः।
(D) 'आरात्' शब्द के योग में पञ्चमी विभक्ति का प्रयोग होता है। यथा–कृष्णात् आरात् गोपालाः सन्ति।
अतः उपर्युक्त विकल्प (B) सही है।

3. 'गां दोग्धि पयः' 'बलिं भिक्षते वसुधाम्।' उपर्युक्त वाक्यों में क्रमशः 'गाम्' और 'बलिम्' में कर्मकारक द्वितीया विभक्ति का विधायक सूत्र कौन-सा है?
(A) अधिशीङ्स्थासां कर्म
(B) उपान्वध्याङ्वसः
(C) अकथितं च (दुह्याच्पचदण्ड् .....)
(D) अभिनिविशश्च

व्याख्या–
(A) 'अधिशीङ्स्थासां कर्म' (1/4/46) सूत्र से शीङ्, स्था, और आस् धातुओं के पहले 'अधि' उपसर्ग लगा हो तो क्रिया के आधार की कर्मसंज्ञा होगी।
यथा–हरिः वैकुण्ठम् अधितिष्ठति।
(B) 'उपान्वध्याङ्वसः' (1/4/48) सूत्र से वस् धातु के पूर्व उप, अनु, अधि और आङ् में से कोई उपसर्ग लगा हो तो क्रिया के आधार की कर्मसंज्ञा होगी। यथा– हरिः वैकुण्ठम् उपवसति अनुवसति आवसति वा।
(C) **'अकथितं च'** (1/4/51) सूत्र से अपादानादिकारक की अविवक्षा में 'गाम्' और 'बलिम्' में कर्मकारक द्वितीया विभक्ति का प्रयोग हुआ है। यथा–
(i) गां दोग्धि पयः। (ii) बलिं भिक्षते वसुधाम् (दुह्याच्पच्........आदि इस कारिका में सोलह द्विकर्मकधातुओं की गणना है।) अतः विकल्प (C) सही है।
(D) 'अभिनिविशश्च' (1/4/47) सूत्र से विश् धातु के पूर्व 'अभि' और 'नि' उपसर्ग क्रमशः लगे हों तो क्रिया के आधार की कर्मसंज्ञा होगी।
यथा– सः सन्मार्गम् अभिनिविशते।

4. नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलम्, और वषट् शब्दों के योग में कौन-सी विभक्ति होती है?
(A) द्वितीया विभक्ति **(B) तृतीया विभक्ति**
(C) चतुर्थी विभक्ति **(D) पञ्चमी विभक्ति**

व्याख्या–
(A) 'अन्तरान्तरेण युक्ते' (2/3/4) सूत्र से 'अन्तरा' और 'अन्तरेण' शब्दों के योग में द्वितीया होगी।
(B) 'प्रकृत्यादिभ्य उपसंख्यानम्' वार्तिक से प्रकृति, सम, सुख, दुःख आदि शब्दों के योग में तृतीया होगी।
(C) 'नमः-स्वस्तिस्वाहास्वधाऽलंवषड्योगाच्च' (2/3/16) सूत्र से नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलम्, वषड् शब्दों के योग में **चतुर्थी विभक्ति** होती है।

1. (C) 2. (B) 3. (C) 4. (C)

(D) 'अन्यारादितरर्तेदिक्छब्दाञ्चूत्तरपदाजाहियुक्ते' (2/3/29) सूत्र से अन्य, आरात्, इतर, ऋते, दिक् शब्द, अञ्चूत्तरपद शब्द आच्-प्रत्ययान्त, आहि-प्रत्ययान्त शब्दों के योग में पञ्चमी होती है।
अतः विकल्प (C) सही है।

5. निम्नलिखित में कौन-सा वाक्य शुद्ध है?
A. कविषु कालिदासः श्रेष्ठः।
B. कवीनां कालिदासः श्रेष्ठः।
C. कविभ्यः कालिदास श्रेष्ठः।
D. कविभिः कालिदासः श्रेष्ठः।
(A) केवल A (B) केवल B
(C) केवल C (D) A और B दोनों

व्याख्या– 'यतश्च निर्धारणम्' (2/3/41) सूत्र से किसी समुदाय से एक को पृथक् करना निर्धारण कहलाता है जिससे निर्धारण होता है उसमें **षष्ठी और सप्तमी विभक्ति** प्रयुक्त होती है। यथा– (i) कवीनां कालिदासः श्रेष्ठः।
(ii) कविषु कालिदासः श्रेष्ठः। अतः विकल्प (D) सही है।

6. निम्नलिखित में शुद्ध विभक्ति का प्रयोग किस वाक्य में है?
(A) मयि मोदकं रोचते (B) माम् मोदकं रोचते
(C) मया मोदक रोचते (D) मह्यं मोदकं रोचते

व्याख्या–
(A) 'साध्वसाधुप्रयोगे च' वार्तिक से साधु एवं असाधु दोनों शब्दों के प्रयोग में सप्तमी विभक्ति का प्रयोग होगा। यथा–त्वं मयि साधुः असि।
(B) 'अकथितं च' (1/4/51) सूत्र से अपादानादि की अविवक्षा में कर्मसंज्ञा होकर द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होगा। यथा– माणवकं धर्मं ब्रूते।
(C) 'सहयुक्तेऽप्रधाने' (2/3/19) सूत्र से 'सह' के योग में तृतीया होगी। यथा–सः मया सह गच्छति।
(D) 'रुच्यर्थानां प्रीयमाणः' (1/4/33) रुच्यर्थ धातुओं के योग में प्रीयमाण की सम्प्रदानसंज्ञा होकर ''चतुर्थी सम्प्रदाने'' (2/3/13) सूत्र से **चतुर्थी विभक्ति** का प्रयोग हुआ है। यथा–मह्यं मोदकं रोचते।
अतः विकल्प (D) सही है।

7. निम्नलिखित में शुद्ध है?
(A) मातरं स्मरति (B) मातुः स्मरति
(C) मातरि स्मरति (D) मात्रा स्मरति

व्याख्या–
(A) 'कर्मणि द्वितीया' (2/3/2) सूत्र से माता में द्वितीया विभक्ति होगी। यथा–सः मातरं पश्यति।
(B) 'अधीगर्थदयेशां कर्मणि' (2/3/52) 'अधि' उपसर्ग पूर्वक इक् स्मरणे धातु के अर्थवाली धातुओं के कर्म में सम्बन्ध मात्र की विवक्षा में **षष्ठी विभक्ति** का प्रयोग हुआ है। यथा–**सः मातुः स्मरति।** अतः विकल्प (B) सही है।
(C) 'साधुनिपुणाभ्यामर्चायां सप्तम्यप्रतेः' (2/3/43) अर्च (सत्कार, प्रशंसा, पूजा) अर्थ में 'साधु' और 'निपुण' शब्दों के योग में सप्तमी होगी यथा–
(i) मातरि साधुः, (ii) मातरि निपुणः
(D) 'संज्ञोऽन्यतरस्यां कर्मणि' (2/3/22) सूत्र से 'सम्' उपसर्ग-पूर्वक 'ज्ञा' धातु के अनभिहित कर्म में विकल्प से तृतीया विभक्ति होगी। यथा–सः मात्रा सञ्जानीते।
सः मातरं सञ्जानीते।

8. कृते के साथ विभक्ति प्रयोग होती है?
(A) तृतीया (B) चतुर्थी
(C) पञ्चमी (D) षष्ठी

व्याख्या–
A. 'पृथग्विनानानाभिस्तृतीयाऽन्यतरस्याम्' (2/3/32) सूत्र से पृथक्, विना, नाना, अव्यय पदो के योग में द्वितीया, तृतीया और पञ्चमी विभक्ति होती है।
B. 'क्रुधद्रुहेर्ष्याऽसूयार्थानां यं प्रति कोपः' (1/4/37) सूत्र से क्रुध्, द्रुह्, ईर्ष्य्, असूय-धातुओं के प्रयोग में चतुर्थी विभक्ति होती है।
C. 'दूरान्तिकार्थेभ्यो द्वितीया च' (2/3/35) सूत्र से दूर तथा अन्तिक अर्थ वाले शब्दों से पञ्चमी, द्वितीया और तृतीया विभक्ति होती है।
D. 'कर्तृकर्मणोः कृति' (2/3/65) सूत्र से कृत् प्रत्ययान्त शब्दों के योग में अनभिहितकर्ता और कर्म में **षष्ठी विभक्ति** होती है। अतः विकल्प `D' सही है।

9. 'धिक्' के योग में कौन-सी विभक्ति होती है–
(A) षष्ठी (B) पञ्चमी
(C) तृतीया (D) द्वितीया

व्याख्या– A. 'षष्ठी चानादरे' (2/3/38) सूत्र से अनादर अर्थ में षष्ठी और सप्तमी विभक्ति होती है।
यथा– रुदति रुदतः वा प्राव्राजीत्
B. 'भीत्रार्थानां भयहेतुः' (1/4/25) सूत्र से भय अर्थवाली और रक्षा अर्थवाली धातुओं के प्रयोग में भय के हेतु में पञ्चमी होती है। यथा– चोरात् बिभेति।

5. (D) 6. (D) 7. (B) 8. (D) 9. (D)

C. 'हेतौ' (2/3/23) सूत्र से हेतु शब्द के वाची शब्दों में तृतीया होती है। जैसे–अध्ययनेन वसति।

D. उभयतः, सर्वतः, धिक्, उपर्युपरि, अध्यधि, अधोऽधः इन अव्ययपदों के योग में **द्वितीया विभक्ति** होती है। जैसे–धिक् कृष्णाभक्तम्। अतः विकल्प `D' सही है। (विस्तृत व्याख्या के लिए प्रश्न संख्या-2 देखें)

10. शरीर के किसी अङ्ग के विकार में कौन-सी विभक्ति होती है?

(A) द्वितीया (B) चतुर्थी
(C) तृतीया (D) षष्ठी

व्याख्या–

A. 'अनुर्लक्षणे' (1/4/84) सूत्र से लक्षण द्योतित होने पर 'अनु' शब्द की कर्मप्रवचनीय संज्ञा होकर 'कर्मप्रवचनीययुक्ते द्वितीया' (2/3/8) सूत्र से द्वितीया विभक्ति होती है। यथा–पर्जन्यो जपम् अनु प्रावर्षत्!

B. 'हितयोगे च' वार्तिक से 'हित' शब्द के योग में चतुर्थी होगी। यथा–ब्राह्मणाय हितम्।

C. 'येनाङ्गविकारः' (2/3/20) सूत्र से जिस अङ्ग में विकार हो, उसमें **तृतीयाविभक्ति** होती है।
यथा–सः अक्ष्णा काणः अस्ति! अतः विकल्प `C' सही है।

D. 'षष्ठी हेतुप्रयोगे' (2/3/26) सूत्र से 'हेतु' शब्द में षष्ठी विभक्ति का विधान होता है।
यथा–सः अन्नस्य हेतोः वसति!

11. 'स्वस्ति' के योग में कौन-सी विभक्ति होती है?

(A) चतुर्थी (B) पञ्चमी
(C) षष्ठी (D) सप्तमी

व्याख्या–

A. 'स्वस्ति' के योग में **चतुर्थी विभक्ति** का विधान होता है। यथा–प्रजाभ्यः स्वस्ति (विस्तृत व्याख्या के लिए प्रश्न संख्या-4 देखें)

B. 'अपादाने पञ्चमी' (2/3/28) अपादान में पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा–ग्रामात् आयाति।

C. 'षष्ठी शेषे' (2/3/50) सूत्र से सम्बन्ध मात्र में षष्ठी विभक्ति होगी। यथा–राज्ञः पुरुषः।

D. 'निमित्तात्कर्मयोगे' वार्तिक से निमित्तवाची शब्दों में सप्तमी विभक्ति होती है। यथा–चर्मणि द्वीपिनं हन्ति। अतः विकल्प `A' सही है।

12. 'जटाभिः तापसः' में तृतीयाविभक्ति विधायक सूत्र है?

(A) अपवर्गे तृतीया (B) दिवः कर्म च
(C) हेतौ (D) इत्थम्भूतलक्षणे

व्याख्या–

A. 'अपवर्गे तृतीया' (2/3/6) सूत्र से–क्रोशेन अनुवाकोऽधीतः।

B. 'दिवः कर्म च' (1/4/43) सूत्र से–(i) अक्षैः दीव्यति। (ii) अक्षान् दीव्यति।

C. 'हेतौ' (2/3/23) सूत्र से –(i) दण्डेन घटः। (ii) पुण्येन दृष्टः हरिः

D. **'इत्थम्भूतलक्षणे'** (2/3/21) सूत्र से–जटाभिः तापसः। अतः विकल्प `D' सही है।

13. संस्कृत व्याकरण की दृष्टि से शुद्ध रूप है?

(A) उपरोक्त (B) उर्पयुक्त
(C) अपरोक्त (D) उपर्युक्त

व्याख्या– * संस्कृत व्याकरण की दृष्टि से उपर्युक्त शब्द शुद्ध है। यहाँ **उपरि+उक्त = उपर्युक्त** में यण्सन्धि होगी। शेष तीनों विकल्प वर्तनी दोष से युक्त हैं।
* 'उपरि' अव्यय शब्द है।
अतः विकल्प `D' सही है।

14. निम्नलिखित में कौन-सा शुद्ध है?

(A) महानता (B) महान्ता
(C) महत्ता (D) महनता

व्याख्या–
'तस्य भावस्त्वतलौ' (5/1/119) सूत्र से 'महत्' प्रातिपदिक से 'तल्' प्रत्यय करने पर स्त्रीलिङ्ग में 'महत्ता' रूप सिद्ध होगा। 'महान्' यह प्रथमान्त रूप है, इससे 'तल्' प्रत्यय का विधान नही होगा, अतः 'महानता' अशुद्ध है।
इसलिए विकल्प `C' सही है।

15. निम्नलिखित में शुद्ध वाक्य कौन-सा है?

(A) गुरुः शिष्याय क्रुध्यति।
(B) गुरुः शिष्यम् क्रुध्यति।
(C) गुरुः शिष्ये क्रुध्यति।
(D) गुरुः शिष्यस्य क्रुध्यति।

व्याख्या– 'क्रुधद्रुहेर्ष्याऽसूयार्थानां यं प्रति कोपः' (1/4/37) सूत्र से क्रुध्, द्रुह्, ईर्ष्य्, असूय धातुओं के योग में जिस पर क्रोध किया जाय उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है।
यथा–गुरुः शिष्याय क्रुध्यति।
अतः विकल्प `A' सही है।

10. (C) 11. (A) 12. (D) 13. (D) 14. (C) 15. (A)

16. 'रमेश मेरा मित्र है' का संस्कृत में शुद्ध अनुवाद कौन-सा है?
(A) रमेशः मम मित्रम् अस्ति
(B) रमेशः मया मित्रम् अस्ति
(C) रमेशः मम् मित्रं अस्ति
(D) रमेशः मह्यं मित्रं असि।

व्याख्या– * शुद्ध अनुवाद–रमेशः मम मित्रम् अस्ति।
* 'मित्र' शब्द नित्य नपुंसकलिङ्ग शब्द है।
अतः विकल्प `A' सही है।

17. अधोलिखित में कौन-सा वाक्य अशुद्ध है?
(A) अचिराय देवदत्तो गमिष्यति
(B) अचिरे देवदत्तो गमिष्यति
(C) अचिरात् देवदत्तो गमिष्यति
(D) अचिरेण देवदत्तो गमिष्यति

व्याख्या– अचिरेण, अचिराय, अचिरात्–ये सभी 'शीघ्र' अर्थवाची अव्यय पद हैं, जबकि 'अचिरे' कोई अव्यय नहीं है, अतः विकल्प B अशुद्ध वाक्य है। इसीलिए इसका उत्तर `B' सही है।

18. 'गङ्गा हिमालय से निकलती है' का संस्कृत अनुवाद है–
(A) गङ्गा हिमालयेन निःसरति
(B) गङ्गा हिमालयात् निःसरति
(C) गङ्गा हिमालयस्य निःसरति
(D) गङ्गा हिमालयात निसरत्

व्याख्या– 'भुवः प्रभवः' (1/4/31) सूत्र से कर्ता के प्रकट होने का जो प्रथमस्थान होता है। वह 'अपादान' संज्ञक होगा और ''अपादाने पञ्चमी'' सूत्र से उसमें पञ्चमी विभक्ति का प्रयोग होता है यथा–गङ्गा हिमालयात् निःसरति। यहाँ 'गङ्गा' कर्तृपद है और 'हिमालय' अपादान है।
अतः विकल्प `B' सही है।

19. 'वाराणसी भारत का प्रमुख धार्मिक नगर है'–इसका अनुवाद है?
(A) वाराणसी भारतस्य प्रमुखं धार्मिकनगरम् अस्ति।
(B) वाराणसी भारतस्य प्रमुखः धार्मिकनगरः अस्ति।
(C) वाराणसी भारते प्रमुख नगरम् सन्ति।
(D) वाराणसी भारतस्य प्रमुखं धार्मिकनगर सन्ति।

व्याख्या– 'नगर' शब्द नपुंसकलिङ्ग है।
अनुवाद–वाराणसी भारतस्य प्रमुखं धार्मिकनगरम् अस्ति
अतः विकल्प `A' सही है।

20. 'यहाँ भगवान् विश्वनाथ का प्रसिद्ध मन्दिर है'–का अनुवाद है?
(A) इदम् भगवतो शंकरस्य प्रसिद्ध मन्दिराणि अस्ति
(B) तत्र भगवतः शंकरस्य प्रसिद्धः मन्दिरे अस्ति
(C) तत्र भगवतः शिवस्य प्रसिद्धं देवालयम् सन्ति
(D) अत्र भगवतः विश्वनाथस्य प्रसिद्धमन्दिरम् अस्ति।

व्याख्या– अनुवाद–अत्र भगवतः विश्वनाथस्य प्रसिद्धमन्दिरम् अस्ति। 'मन्दिर' शब्द नित्य नपुंसकलिङ्ग है। 'भगवत्' शब्द की षष्ठी में 'भगवतः' रूप बनेगा। कर्तानुसार 'अस्ति' क्रिया का प्रयोग है। 'अत्र' अव्ययपद है।
अतः विकल्प `D' सही है। शेष विकल्प अशुद्ध हैं।

21. 'काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना मदन मोहन मालवीय ने की थी'–का अनुवाद है?
(A) काशी हिन्दू विश्वविद्यालयानां स्थापना मदन मोहन मालवीयः करोति।
(B) काशी हिन्दू विश्वविद्यालये स्थापनां मदन मोहन मालवीयः अकरोत्।
(C) काशी हिन्दू विश्वविद्यालयस्य स्थापना मदनमोहनमालवीयः अकरोत्।
(D) काशी हिन्दू विश्वविद्यालयः स्थापना मदन मोहन मालवीयः करोतः।

व्याख्या– 'मदनमोहनमालवीयः' यह प्रथमपुरुष एकवचन का कर्ता है, और 'अकरोत्' लङ्लकार प्र0पु0 एक0 की क्रिया है, सम्बन्ध मात्र में षष्ठीविभक्ति का प्रयोग है।
अतः विकल्प `C' सही है।

22. 'बौद्धों का तो यह अत्यन्त पवित्र तीर्थ है'–का संस्कृत में अनुवाद है–
(A) बौद्धस्य इदमत्यन्तं पवित्रं तीर्थम् अस्ति।
(B) बौद्धानाम् अयम् अत्यन्तं पवित्र तीर्थं अस्ति।
(C) बौद्धानाम् तु इदम् अत्यन्तं तीर्थम् स्तः।
(D) बौद्धानां तु इदम् अत्यन्तं पवित्रं तीर्थम् अस्ति।

व्याख्या– 'तीर्थ' शब्द नपुंसकलिङ्ग है।
बौद्धानां तु इदम् अत्यन्तं पवित्रं तीर्थम् अस्ति।
अतः विकल्प `D' सही है।

23. 'वह गाय से दूध दुहता है' का सही अनुवाद होगा?
(A) सः गवा पयः दोग्धि (B) सः गां पयः दुहति
(C) सः गोभि पयः दोग्धि (D) सः गां पयः दोग्धि

व्याख्या– यहाँ गाय वस्तुतः अपादानकारक है किन्तु अपादान की अविवक्षा में ''अकथितं च'' (1/4/51) सूत्र से कर्मकारक हुआ, ''कर्मणि द्वितीया'' सूत्र से द्वितीयाविभक्ति का प्रयोग हुआ है। यथा–सः गां दोग्धि पयः। अतः विकल्प `D' सही है।

16. (A) 17. (B) 18. (B) 19. (A) 20. (D) 21. (C) 22. (D) 23. (D)

24. प्रत्यय का ज्ञान कराने के लिए सर्वप्रथम?
(A) प्रत्यय की परिभाषा बतायेंगे
(B) प्रत्यय युक्त शब्दों में से कुछ शब्द बतायेंगे
(C) कुछ प्रत्यय युक्त शब्दों के अर्थ को बतायेंगे
(D) प्रत्यययुक्त शब्दों के साथ कुछ वाक्यों को प्रस्तुत करेंगे।

व्याख्या–प्रत्यययुक्त शब्दों को देखकर छात्र को उन शब्दों की रचना और अर्थ जानने की सहज जिज्ञासा होगी, तभी शिक्षक, छात्र को प्रत्ययों का ज्ञान करायेगा। अतः विकल्प (D) सर्वाधिक उपयुक्त है।

25. हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद बनाने के लिए पहले?
(A) धातु एवं शब्दरूपों का ज्ञान करायेंगे
(B) लकारों का ज्ञान करायेंगे
(C) लकारों से कुछ हिन्दी वाक्यों का संस्कृत अनुवाद पूछेंगे
(D) किसी एक लकार के एकपुरुष और एकवचन के वाक्य संस्कृत में श्यामपट्ट पर लिखेंगे।

व्याख्या–छात्र के सम्मुख श्यामपट्ट पर एक लकार के एकपुरुष और एकवचन के वाक्यों को लिखने से उसे उस वाक्य का अर्थ जानने की जिज्ञासा होगी और वह छात्र उसी तरह के अन्य वाक्यों को भी जानना और समझना चाहेगा। तभी शिक्षक उसे हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद की प्रक्रिया बतायेगा। अतः विकल्प `D' सर्वाधिक उपयुक्त है।

26. निम्नलिखित वर्गों में विधिलिङ्लकार के रूप किस वर्ग में हैं?

(A) भवतु, भवता	**(B) लभताम्, सेवन्ताम्,**
(C) रुन्धः, रुणद्धि	**(D) भवेत्, लभेय**

व्याख्या–
A भू धातु लोट्लकार प्र.पु. का रूप-भवतु, भवताम्, भवन्तु।
B. लभ् धातु (आत्मनेपद) लोट्लकार प्र0पु0– लभताम् लभेताम्, लभन्ताम्।
सेव् धातु लोट्लकार प्र0पु0– सेवताम्, सेवेताम्, सेवन्ताम्
C. 'रुध्' (रोकना) लट्लकार प्र0पु0-रुणद्धि, रुन्धः, रुन्धन्ति
D. 'लभ्' धातु विधिलिङ् लकार उ0पु0–**लभेय,** लभेवहि, लभेमहि
'भू' धातु विधिलिङ् लकार प्र0पु0–**भवेत्,** भवेताम्, भवेयुः
अतः विकल्प `D' सही है।

27. 'हन्' (मारना) धातु के लङ्लकार के प्रथमपुरुष एकवचन में क्या रूप होगा?

(A) अहन्	**(B) अहताम्**
(C) अघ्नन्	**(D) अहः**

व्याख्या– 'हन्' धातु लङ्लकार का रूप
प्र0पु0 अहन्, अहताम्, अघ्नन्
म0पु0 अहन्, अहतम्, अहत
उ0प्र0 अहनम्, अहन्व, अहन्म
अतः विकल्प `A' सही है।

28. 'दुह्' धातु परस्मैपद लट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन में रूप होगा?

(A) दोग्धि	**(B) दोहति**
(C) दुहति	**(D) दुहोति**

व्याख्या– 'दुह' धातु लट्लकार का रूप–
प्र0पु0 **दोग्धि**, दुग्धः, दुहन्ति
म0पु0 धोक्षि, दुग्धः, दुग्ध
उ0पु0 दोह्मि, दुह्वः, दुह्मः
अतः विकल्प `A' सही है।
नोट–दोहति, दुहति, दुहोति रूप दुह धातु के दसों लकारों में कहीं नहीं बनता है। अतः ये सभी गलत हैं।

29. संस्कृत में भविष्यकाल के लिए किस लकार का प्रयोग किया जाता है?

(A) लट्लकार	**(B) लोट्लकार**
(C) लृट्लकार	**(D) लङ्लकार**

लकार		**काल बोधक**
A. लट्लकार	–	वर्तमानकाल में
B. लोट्लकार	–	आज्ञा अर्थ में
C. **लृट्लकार**	–	**भविष्यकाल में**
D. लङ्लकार	–	भूतकाल में

अतः विकल्प `C' सही है।

30. नीचे लिखे धातु रूपों में आत्मनेपद के रूप किस वर्ग में है?
(A) लभै, लभावहै, लभामहै
(B) पास्यामि, पास्यावः, पास्यामः
(C) ब्रूयात्, ब्रूयाताम्, ब्रूयुः
(D) गच्छेत्, गच्छेताम्, गच्छेयुः

व्याख्या–
A. 'लभ्' धातु आत्मनेपद लोट्लकार उ0पु0– **लभै, लभावहै, लभामहै**
B. 'पा' धातु परस्मैपद लृट्लकार उ0पु0– पास्यामि, पास्यावः, पास्यामः
C. 'ब्रू' धातु परस्मैपद विधिलिङ् प्रथमपुरुष– ब्रूयात्, ब्रूयाताम् , ब्रूयुः
D. 'गम्' धातु परस्मैपद विधिलिङ् प्रथमपुरुष– गच्छेत्, गच्छेताम्, गच्छेयुः
अतः विकल्प `A' सही है।

24. (D) 25. (D) 26. (D) 27. (A) 28. (A) 29. (C) 30. (A)

31. 'दा' धातु के मध्यमपुरुष के रूप किस वर्ग में है?
(A) ददाति, दत्तः, ददति (B) ददासि, दत्थः, दत्थ
(C) ददामि, दद्वः, दद्मः (D) दद्यात्, दद्याताम्, दद्युः

'दा' धातु लट्लकार का रूप–
(A) प्र०पु० ददाति, दत्तः, ददति
(B) म०पु० ददासि, दत्थः, दत्थ
(C) उ०पु० ददामि, दद्वः, दद्मः
(D) 'दा' धातु विधिलिङ्लकार का रूप–
प्र०पु० दद्यात्, दद्याताम्, दद्युः। अतः विकल्प `B' सही है।

32. 'पीतम् अम्बरम् इति पीताम्बरम्' में कौन-सा समास है?
(A) बहुव्रीहिसमास (B) केवलसमास
(C) कर्मधारयसमास (D) तत्पुरुषसमास

व्याख्या–
A. 'अनेकमन्यपदार्थे' (2/2/24) सूत्र से 'पीतम् अम्बरं यस्य सः = पीताम्बरः' में बहुव्रीहिसमास।
B. 'सह सुपा' (2/1/4) सूत्र से 'पूर्वं भूतः = भूतपूर्वः' में केवलसमास हुआ।
C. 'विशेषणं विशेष्येण बहुलम्' (2/1/57) सूत्र से 'पीतम् अम्बरम्=पीताम्बरम्' में **कर्मधारयसमास** है।
D. 'पञ्चमी भयेन' (2/1/37) सूत्र से 'चोरात् भयम् = चोरभयम्' में पञ्चमी तत्पुरुषसमास हुआ।
अतः विकल्प `C' सही है।

33. कर्मधारय समास किसका भेद है?
(A) अव्ययीभावसमास का
(B) तत्पुरुषसमास का
(C) द्विगुसमास का
(D) बहुव्रीहिसमास का

व्याख्या–
A. अव्ययीभावसमास में प्रथमपद अव्यय होता है। इसमें पूर्वपद का अर्थ प्रधान होता है।
अष्टाध्यायी में 'अव्ययीभावश्च' दो सूत्र हैं। "अव्ययीभावश्च" (1.1.41) सूत्र से अव्ययीभावसमास को प्राप्तशब्द अव्ययसंज्ञक होते हैं। तथा 'अव्ययीभावश्च' (2.4.18) सूत्र से अव्ययीभावसमास होने के बाद निष्पन्न शब्द नपुंसकलिङ्ग हो जाता है।
B. तत्पुरुषसमास में उत्तरपद का अर्थ प्रधान होता है। **तत्पुरुष का भेद कर्मधारय समास** है।
C. जिस समास में प्रथमपद संख्यावाची हो, वह द्विगु समास होता है। द्विगुसमास कर्मधारय का भेद है।
D. बहुव्रीहिसमास में अन्यपद प्रधान होता है।
अतः विकल्प `B' सही है।

34. 'पौर्वशालः' का विग्रह है?
(A) पौर्व एवं शालः (B) पूर्वस्यां शालायां भवः
(C) शालायाः पूर्वः (D) पूर्व शाला यस्य

व्याख्या– 'तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च' (2/1/51) सूत्र से दिशावाची शब्द 'पौर्वशालः' का समासविग्रह **'पूर्वस्यां शालायां भवः'** होगा। अतः विकल्प `B' सही है।

35. 'माता च पिता च' के निम्नलिखित तीन रूपों में कौन-सा अशुद्ध है?
1. पितरौ 2. मात्पितरौ 3. मातापितरौ
(A) पहला (B) दूसरा
(C) तीसरा (D) तीनों

व्याख्या–
* 'पिता मात्रा' (1/2/70) सूत्र से 'माता च पिता च = **पितरौ'**, एकशेष द्वन्द्व होगा।
* 'चार्थे द्वन्द्वः' (2/2/29) सूत्र से 'माता च पिता च = **मातापितरौ'** भी होगा। किन्तु 'मात्पितरौ' यह अशुद्ध प्रयोग है। अतः विकल्प `B' सही है।

36. 'पञ्चवटी' में समास है?
(A) द्विगुसमास (B) द्वन्द्वसमास
(C) अव्ययीभावसमास (D) बहुव्रीहिसमास

व्याख्या–
A. 'अकारान्तोत्तरपदो द्विगुः स्त्रियामिष्टः' वार्तिक से 'पञ्चानां वटानां समाहारः = पञ्चवटी' में **द्विगुसमास** होकर स्त्रीलिङ्ग में प्रयोग हुआ।
B. 'अल्पाच्तरम्' (2/2/34) सूत्र से 'शिवश्च केशवश्च = शिवकेशवौ' इस द्वन्द्वसमास में 'शिव' पद का पूर्वप्रयोग हुआ।
C. 'नदीभिश्च' (2/1/20) सूत्र से 'द्वयोः यमुनयोः समाहारः = द्वियमुनम्' में अव्ययीभावसमास होगा।
D. 'अनेकमन्यपदार्थे' (2/2/24) सूत्र से 'ऊढः रथः येन सः=ऊढरथः' में बहुव्रीहि समास होगा।
अतः विकल्प `A' सही है।

31. (B) 32. (C) 33. (B) 34. (B) 35. (B) 36. (A)

37. निम्नलिखित वर्गों में किस वर्ग में समास का उदाहरण अशुद्ध है?

(A) अव्ययीभाव – यथाक्रमम्, उपगङ्गम्
(B) द्विगु – पञ्चगङ्गम्, द्वियमुनम्
(C) तत्पुरुष – ग्रामगतः, सुखप्राप्तः
(D) द्वन्द्व – रामकृष्णौ, पितरौ

व्याख्या– 'नदीभिश्च' (2/1/20) सूत्र से–
''पञ्चानां गङ्गानां समाहारः = पञ्चगङ्गम्''
''द्वयोः यमुनयोः समाहारः = द्वियमुनम्'' में अव्ययीभाव समास होगा, न कि द्विगुसमास। अतः विकल्प `B' सही है।

38. 'इन्द्रश्च अग्निश्च' का समस्त रूप होगा?

(A) इन्द्राग्निः (B) इन्द्राग्नयः
(C) अग्नीन्द्रः (D) इन्द्राग्नी

व्याख्या–
* 'चार्थे द्वन्द्वः' (2/2/29) सूत्र से ''**इन्द्रश्च अग्निश्च = इन्द्राग्नी**'' में द्वन्द्वसमास होगा।
* यदि द्वन्द्वसमास में घिसंज्ञक व अजादि एवं अदन्त पद का एकसाथ प्रयोग हो तो 'विप्रतिषेधे परं कार्यम्' इस नियम के आधार पर अजादि अदन्त पद का पूर्वनिपात होता है।
* यहाँ 'इन्द्र' पद अजादि एवं अदन्त है अतः 'इन्द्र' पद का पूर्वप्रयोग हुआ है। अतः विकल्प `D' सही है।

39. 'किंसखा' में कौन-सा समास है?

(A) द्वन्द्व (B) द्विगु
(C) अव्ययीभाव (D) कर्मधारय

व्याख्या–
A. 'अजाद्यदन्तम्' (2/2/33) सूत्र से ''ईशश्च कृष्णश्च = ईशकृष्णौ'' इस द्वन्द्वसमास में 'ईश' पद का पूर्वनिपात हुआ।
B. 'त्रयाणां भुवनानां समाहारः = त्रिभुवनम्' में द्विगुसमास होगा।
C. 'अव्ययं विभक्तिसमीप.....' इस सूत्र से 'कृष्णस्य समीपम् इति उपकृष्णम्' में अव्ययीभावसमास हुआ।
D. 'कुत्सितः सखा = किं सखा' यहाँ पर 'किम्' शब्द का निन्दा (क्षेप, अर्थात् कुत्सित) अर्थ होने के कारण ''किं क्षेपे'' (2.1.64) सूत्र से **कर्मधारयसमास** हुआ। अतः विकल्प `D' सही है।

40. 'अष्टाविंशतिः' शब्द का क्या अर्थ है?

(A) अठारह (B) अड़तिस
(C) अट्ठाईस (D) अड़तालिस

	शब्द		अर्थ
A.	अष्टादश (18)	–	अठारह
B.	अष्टात्रिंशत् (38)	–	अड़तिस
C.	**अष्टाविंशतिः (28)**	–	**अट्ठाईस**
D.	अष्टचत्वारिंशत् (48)	–	अड़तालिस

अतः विकल्प `C' सही है।

41. `55' संख्या का वाचक संस्कृत शब्द कौन सा है?

(A) पञ्चपञ्चाशत् (B) पञ्चापञ्चशत
(C) पञ्चपञ्च (D) पञ्चशताम्

व्याख्या– 55 (पचपन) का संस्कृतवाचक शब्द है–
पञ्चपञ्चाशत्
अतः विकल्प `A' सही है। शेष विकल्प अशुद्ध हैं।

42. निम्नलिखित में से कौन-सा वाक्य शुद्ध है?

(A) एकविंशतयः छात्रा कक्षायाम्
(B) एकविंशतिः छात्राः कक्षायाम्
(C) एकविशताः छात्राः कक्षायाम्
(D) एकविंशततमी छात्राः कक्षायाम्

व्याख्या– 'एकोनविंशतिः से नवनवतिः' तक सारे शब्द स्त्रीलिङ्ग हैं। 'विंशत्यादिरानवतेः' के अनुसार 'विंशति' शब्द से लेकर 'नवति' पर्यन्त संख्यावाची शब्द स्त्रीलिङ्ग एकवचन में होते हैं। अतः विकल्प `B' सही है। शेष सभी विकल्प अशुद्ध हैं।

43. संस्कृत शब्द 'चत्वारिंशत्' किस संख्या का वाचक है?

(A) 400 (B) 104
(C) 40 (D) 44

संख्या		संख्यावाचक शब्द
(A) 400	–	चतुःशती, चतुःशतम्
(B) 104	–	चतुरधिकैकशतम्
(C) 40	–	**चत्वारिंशत्**
(D) 44	–	चतुश्चत्वारिंशत्

अतः विकल्प `C' सही है।

37. (B)	38. (D)	39. (D)	40. (C)	41. (A)	42. (B)	43. (C)

44. शुद्ध वाक्य का चयन कीजिए?
(A) त्रिः बालाः गच्छन्ति
(B) त्रयः बालः गच्छन्ति
(C) त्रीणि बालाः गच्छन्ति
(D) तिस्रः बालाः गच्छन्ति

व्याख्या–
* त्रि (तीन) का रूप केवल बहुवचन में चलता है।
* पुंलिङ्ग में त्रयः, त्रीन्, त्रिभिः, त्रिभ्यः, त्रिभ्यः, त्रयाणाम्, त्रिषु।
* नपुंसकलिङ्ग का रूप–त्रीणि, त्रीणि, त्रिभिः, त्रिभ्यः, त्रिभ्यः, त्रयाणाम्, त्रिषु।
* स्त्रीलिङ्ग में तिस्रः, तिस्रः, तिसृभिः, तिसृभ्यः, तिसृभ्यः, तिसृणाम्, तिसृषु। अतः **तिस्रः बालाः गच्छन्ति।** (तीन लड़कियाँ जाती हैं) यह वाक्य शुद्ध है। अतः विकल्प `D' सही है। शेष वाक्यों में लिङ्गगत विशेष्य विशेषण की अशुद्धियाँ हैं।

45. शुद्ध वाक्य का चयन कीजिए?
(A) चतुरः विप्रान् आमन्त्र्य भोजय।
(B) चत्वारि विप्रान् आमन्त्र्य भोजय।
(C) चतस्रः विप्रान् आमन्त्र्य भोजय।
(D) चत्वारि विप्रान् आमन्त्र्य भोजय।

व्याख्या–
* चतुर् (चार) का रूप तीनों लिङ्गों में केवल बहुवचन में चलता है। **पुंलिङ्ग–** 1. चत्वारः 2. चतुरः 3. चतुर्भिः 4. चतुर्भ्यः 5. चतुर्भ्यः 6. चतुर्णाम् 7. चतुर्षु।
* **नपुंसकलिङ्ग–** 1. चत्वारि 2. चत्वारि 3. चतुर्भिः 4. चतुर्भ्यः 5. चतुर्भ्यः 6. चतुर्णाम् 7. चतुर्षु।
* **स्त्रीलिङ्ग–** 1. चतस्रः 2. चतस्रः 3. चतसृभिः 4. चतसृभ्यः 5. चतसृभ्यः 6. चतसृणाम् 7. चतसृषु।
* शुद्ध वाक्य–**चतुरः विप्रान् आमन्त्र्य भोजय** (चार ब्राह्मणों को बुलाकर भोजन कराओ)
* 'चतुरः' रूप द्वितीया का बहुवचन है, 'विप्रान्' भी द्वितीया बहुवचन का रूप है, 'आमन्त्र्य' में ल्यप् प्रत्यय है, 'भोजय' लोट्लकार म0 प्र0 एकवचन का रूप है, अतः विकल्प `A' शुद्ध है। शेष विकल्प अशुद्ध है।

46. संख्यावाची शब्द 'षण्णवतिः' किस अङ्क का वाचक है।
(A) 69 **(B) 96**
(C) 79 **(D) 66**

अंक		संख्यावाची शब्द
69	–	एकोनसप्ततिः, नवषष्टिः
96	–	**षण्णवतिः**
79	–	एकोनाशीतिः, नवसप्ततिः
66	–	षट्षष्टिः

अतः विकल्प `B' सही है।

47. निम्नलिखित में शुद्ध वाक्य है?
(A) तत्र पञ्च जनाः निवसन्ति।
(B) तत्र पञ्चाः जनाः निवसन्ति।
(C) तत्र पञ्चा जनैः निवसति।
(D) तत्र पच्चसु जनाः निवसति।

व्याख्या–
* पञ्चन् (पाँच) शब्द तीनों लिङ्गों में बहुवचनान्त है। यथा– पञ्च, पञ्च, पञ्चभिः, पञ्चभ्यः, पञ्चभ्यः, पञ्चानाम्, पञ्चसु।
* इसलिए **'तत्र पञ्च जनाः निवसन्ति'**–यह शुद्ध वाक्य है। अतः विकल्प `A' सही है।

48. निम्नलिखित में कौन-सा वाक्य शुद्ध है?
(A) अष्टानि फलानि आनय।
(B) अष्टौ फलानि आनय।
(C) अष्टाः फलानि आनय।
(D) अष्टे फलानि आनय।

व्याख्या–
* 'अष्टन्' (आठ) का रूप केवल बहुवचन में चलता है– अष्टौ, अष्टौ, अष्टाभिः अष्टाभ्यः, अष्टाभ्यः, अष्टानाम् अष्टासु।
* 'अष्टन्' का रूप तीनों लिङ्गों में एकसमान चलता है।
* फल शब्द नपुंसकलिङ्ग है। द्वितीया विभक्ति बहुवचन का रूप है - फलानि।
* अतः **''अष्टौ फलानि आनय''**- यह शुद्ध वाक्य है। यहाँ विकल्प `B' सही है।

49. निम्नलिखित वाक्यों में शुद्ध वाक्य कौन-सा है?
(A) ये सुकृतिभिः असूयन्ति ते पापात्मनः।
(B) ये सुकृतिभ्यः असूयन्ति ते पापात्मानः।
(C) ये सुकृतिषु असूयन्ति ते पापात्मनः।
(D) ये सुकृतिनाम् असूयन्ति ते पापात्मनः।

व्याख्या–*''क्रुधद्रुहेर्ष्याऽसूयार्थानां यं प्रति कोपः'' (1.4.37) सूत्र से क्रुध्, द्रुह, ईर्ष्य्, असूय धातुओं के योग में तथा इन धातुओं के समान अर्थ रखने वाली धातुओं के योग में जिसके ऊपर क्रोध आदि किया जाता है, वह सम्प्रदान संज्ञक होता है, और उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है। अतः
* इस उदाहरण में 'असूय' धातु का प्रयोग होने से 'सुकृतिभ्यः' में चतुर्थी विभक्ति का बहुवचन है।
अतः विकल्प `B' सही है।

44. (D) 45. (A) 46. (B) 47. (A) 48. (B) 49. (B)

50. निम्नलिखित वाक्यों में शुद्ध वाक्य कौन-सा है?
(A) शिशुः क्रीडनकं रोचते
(B) शिशुं क्रीडनकं रोचते
(C) शिशवे क्रीडनकं रोचते
(D) शिशोः क्रीडनकं रोचते

व्याख्या– 'रुच्यर्थानां प्रीयमाणः' (1/4/33) सूत्र से रुच्यर्थ (अभिलाषार्थक) धातुओं के प्रयोग में प्रीयमाण व्यक्ति की सम्प्रदानसंज्ञा होकर 'चतुर्थी सम्प्रदाने' (2/3/13) सूत्र से उसमें चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग होता है। यथा–**शिशवे क्रीडनकं रोचते।** यहाँ 'रोचते' क्रियापद का प्रयोग होने से 'शिशवे' में चतुर्थी विभक्ति का एकवचन है। अतः विकल्प `C' सही है।

51. माहेश्वरसूत्रों में चौथा सूत्र है?
(A) ऐऔच् **(B) हयवरट्**
(C) खफछठथचटतव् **(D) हल्**

व्याख्या–
* माहेश्वर सूत्र– अइउण्, ऋलृक्, एओङ्, ऐऔच्, हयवरट्, लण्, ञमङणनम्, झभञ्, घढधष्, जबगडदश्, खफछठथचटतव्, कपय्, शषसर्, हल्।
* उपर्युक्त क्रम में चौथा सूत्र **'ऐऔच्'** है।
अतः विकल्प `A' सही है।

52. सिद्धान्तकौमुदी का रचनाकार कौन है?
(A) पाणिनि **(B) पतञ्जलि**
(C) भट्टोजिदीक्षित **(D) वरदराज**

	ग्रन्थ		रचनाकार
A.	अष्टाध्यायी	–	पाणिनि
B.	महाभाष्यम्	–	पतञ्जलि
C.	**सिद्धान्तकौमुदी**	–	**भट्टोजिदीक्षित**
D.	लघुसिद्धान्तकौमुदी	–	वरदराज

अतः विकल्प `C' सही है।

53. स्वरों के व्यवधान के बिना आये हुए व्यञ्जनों की क्या संज्ञा होती है?
(A) पदम् **(B) निष्ठा**
(C) संहिता **(D) संयोग**

व्याख्या–
A. 'सुप्-तिङन्तं पदम्' (1/4/14) सूत्र से सुबन्त और तिङन्त की ''पदसंज्ञा'' होती है।
B. ''क्तक्तवतू निष्ठा'' (1/1/26) सूत्र से क्त और क्तवतु प्रत्ययों की ''निष्ठासंज्ञा'' होती है।
C. ''परः सन्निकर्षः संहिता'' (1/4/109) सूत्र से अति समीप वर्णों की ''संहितासंज्ञा'' होती है।
D. ''हलोऽनन्तराः संयोगः'' (1/1/7) सूत्र से स्वरों के व्यवधान के बिना आये हुए व्यञ्जनों की **''संयोगसंज्ञा''** होती है। अतः विकल्प `D' सही है।

54. वृद्धिसन्धि विधायक सूत्र है?
(A) वृद्धिरेचि **(B) वृद्धिरादैच्**
(C) एङः पदान्तादति **(D) एङि पररूपम्**

व्याख्या–
A. **'वृद्धिरेचि'** (6/1/88) वृद्धिसन्धि विधायक सूत्र है।
B. 'वृद्धिरादैच्' (1/1/1) वृद्धिसंज्ञक सूत्र है।
C. 'एङः पदान्तादति' (6/1/109) पूर्वरूपसन्धि विधायक सूत्र है।
D. 'एङि पररूपम्' (6/1/94) 'पररूपसन्धि' विधायक सूत्र है। अतः विकल्प `A' सही है।

55. ''पितुः + इच्छा'' में सन्धि होने पर–
(A) पितोच्छा **(B) पितोछा**
(C) पितुरिच्छा **(D) पितुः इच्छा**

व्याख्या– 'पितुः + इच्छा'–यहाँ ''विसर्जनीयस्य सः'' (8.3.34) सूत्र से विसर्ग को सकार; फिर सकार को ''ससजुषो रुः'' (8.2.66) 'रु' आदेश। इसके बाद 'रु' के उकार की इत्संज्ञा, लोप होकर ''रोऽसुपि'' सूत्र से **'पितुरिच्छा'** पद सिद्ध होगा। अतः विकल्प `C' सही है।

56. ''हरिस् + शेते'' में सन्धि होने पर कौन-सा रूप बनेगा?
(A) हरिशयते **(B) हरिण्शेते**
(C) हरिश्शेते **(D) हरिशेते**

व्याख्या–
''स्तोः श्चुना श्चुः'' (8/4/40) सूत्र से जब सकार या तवर्ग, शकार या चवर्ग के योग में आता है, तो सकार और तवर्ग के स्थान में क्रम से शकार और चवर्ग हो जाता है। यथा– रामस् + शेते = रामश्शेते। **हरिस् + शेते = हरिश्शेते।**
अतः विकल्प `C' सही है।

50. (C) 51. (A) 52. (C) 53. (D) 54. (A) 55. (C) 56. (C)

57. निम्नलिखित किस स्थिति में 'ष्टुना ष्टुः' सूत्र प्रयुक्त होगा?
(A) आ+ उष्णम् **(B) रामस् + चिनोति**
(C) तत् + टीका **(D) वाक् + हरिः**

व्याख्या–

A. 'आद् गुणः' (6/1/87) सूत्र से 'आ + उष्णम् – ओष्णम्' में गुणसन्धि होगी।

B. 'स्तोः श्चुना श्चुः' (8/4/40) सूत्र से 'रामस् + चिनोति = रामश्चिनोति' होगा।

C. 'ष्टुना ष्टुः (8/4/41) सूत्र से **'तत् + टीका = तट्टीका'** शब्द बनेगा। जब स् अथवा तवर्ग ष् या टवर्ग के योग में आता है तो 'स्' के स्थान पर 'ष्' और तवर्ग के स्थान पर टवर्ग हो जाता है। अतः विकल्प `C' सही है।

D. 'झयो होऽन्यतरस्याम्' (8/4/62) सूत्र से 'वाक् + हरिः = वाग्घरिः' शब्द बनेगा।

58. ''सन् + षष्ठः = सन्षष्ठः'' इस उदाहरण में किस सूत्र का नियम प्रयुक्त होगा?
(A) शात् **(B) शश्छोऽटि**
(C) तोः षि **(D) न पदान्ताट्टोरनाम्**

व्याख्या–

A. 'शात्' (8/4/44) सूत्र से ''विश् + नः = विश्नः''

B. शश्छोऽटि (8/4/63) सूत्र से ''तद् + शिवः = तच्छिवः'' शब्द बनेगा।

C. **'तोः षि' (8/4/43)** सूत्र से ''सन् + षष्ठः = सन्षष्ठः'' शब्द बनेगा। अतः विकल्प `C' सही है।

D. 'न पदान्ताट्टोरनाम्' (8/4/42) सूत्र से ''षट् + सन्तः = षट्सन्तः'' शब्द बनेगा

59. 'एतत् + मुरारिः = एतन्मुरारिः' सन्धि में किस सूत्र की प्रवृत्ति है?
(A) मोऽनुस्वारः
(B) यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा
(C) न पदान्ताट्टोरनाम्
(D) तोर्लि

व्याख्या–

A. 'मोऽनुस्वारः' (8/3/23) सूत्र से ''हरिम् + वन्दे = हरिं वन्दे'' शब्द बनेगा।

B. **'यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा'** (8/4/45) सूत्र से ''एतत् + मुरारिः = एतन्मुरारिः'' शब्द बनेगा।

C. 'न पदान्ताट्टोरनाम्' (8/4/42) सूत्र से 'षट्+ते = षट् ते' बनेगा

D. 'तोर्लि' (8/4/60) सूत्र से ''तत् + लयः = तल्लयः'' शब्द बनेगा।

विकल्प `B' सही है।

60. 'कः + अत्र' का सन्धि रूप है?
(A) को अत्र **(B) कोऽत्र**
(C) कः अत्र **(D) कोऽत्रा**

व्याख्या–

'अतो रोरप्लुतादप्लुते' (6/1/113) सूत्र से ''कः + अत्र = **कोऽत्र**'' शब्द बनेगा। अतः विकल्प `B' सही है।

61. 'मनीषा' में सन्धि होगी?
(A) पररूप
(B) प्रकृतिभाव
(C) पूर्वरूप
(D) दीर्घ

व्याख्या–

A. ''शकन्ध्वादिषु पररूपं वाच्यम्'' वार्तिक से ''मनस् + ईषा = मनीषा'' में **पररूपसन्धि** होगी।

B. 'ईदूदेद् द्विवचनं प्रगृह्यम्' (1/1/11) सूत्र से हरी + एतौ = हरी एतौ की प्रगृह्यसंज्ञा होकर प्रकृतिभाव हुआ।

C. 'एङः पदान्तादति' (6/1/109) सूत्र से ''हरे + अव = हरेऽव'' में पूर्वरूपसन्धि है।

D. 'अकः सवर्णे दीर्घः' (6/1/101) सूत्र से 'विष्णु + उदयः = विष्णूदयः' में दीर्घसन्धि है।

अतः विकल्प `A' सही है।

62. 'सखि' शब्द का द्वितीया एकवचन में रूप होगा–
(A) सखिम् **(B) सखीन्**
(C) सखी **(D) सखायम्**

व्याख्या–

सखि (मित्र) इकारान्त पुंलिङ्ग शब्द के 'सखा, **सखायम्**, सख्या, सख्ये, सख्युः, सख्युः सख्यौ' सातों विभक्तियों के एकवचन में ये रूप बनते हैं।

अतः विकल्प `D' सही है।

57. (C) 58. (C) 59. (B) 60. (B) 61. (A) 62. (D)

63. निम्नलिखित वर्गों में केवल पुंलिङ्ग शब्द किस वर्ग में हैं?
(A) सखा, हरिः, दाराः
(B) महिमा, सविता, अञ्जलिः
(C) मधुरम्, फलम्, जलम्
(D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या–
A. * सखा, हरिः, दाराः, पुंलिङ्ग शब्द हैं।
* दाराः, अक्षताः, लाजाः, असवः, प्राणाः नित्य पुंलिङ्ग एवं बहुवचनान्त शब्द हैं।
B. सविता, अञ्जलिः, आपः, अप्सराः, सुमनसः आदि स्त्रीलिङ्ग शब्द हैं।
C. मधुरम्, वारि, फलम्, जलम्, वनम्, चर्म, जगत्, तेजः, आदि नपुंसकलिङ्ग शब्द हैं।
अतः विकल्प `A' सही है।

64. 'माता' रूप का मूल प्रातिपदिक शब्द–
(A) आकारान्त **(B) उकारान्त**
(C) इकारान्त **(D) ऋकारान्त**

व्याख्या–
A. रमा, बालिका, कविता, आकारान्त स्त्रीलिङ्गशब्द हैं।
B. धेनु, रेणु, उकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द हैं।
C. मति, बुद्धि इकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द हैं।
D. मातृ (माता) दुहितृ (पुत्री) **ऋकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द** हैं। अतः विकल्प `D' सही है।

65. सर्वनाम शब्द 'इदम्' स्त्रीलिङ्ग षष्ठी विभक्ति बहुवचन का रूप होगा?
(A) एषामो **(B) एतेषाम्**
(C) एतासाम् **(D) आसाम्**

व्याख्या– 'इदम्' स्त्रीलिङ्ग का सातों विभक्तियों के बहुवचन में क्रमशः इसप्रकार रूप चलेगा इमाः, इमाः, आभिः, आभ्यः, आभ्यः, **आसाम्**, आसु'
अतः विकल्प `D' सही है।

66. निम्नलिखित में चतुर्थी विभक्ति एकवचन का कौन-सा रूप है?
(A) भानौ **(B) राज्ञः**
(C) दध्ने **(D) हरेः**

व्याख्या–
A. भानु उकारान्त पुंलिङ्ग शब्द का एकवचन में–'भानुः भानुम्, भानुना, भानवे, भानोः, भानोः, भानौ' रूप सातों विभक्तियों में बनता है।
B. 'राजन्' अन्नन्त पुंलिङ्ग शब्द का एकवचन में 'राजा, राजानम्, राज्ञा, राज्ञे, राज्ञः, राज्ञः, राज्ञि/राजनि' रूप सातों विभक्तियों में बनता है।
C. 'दधि' इकारान्त नपुंसकलिङ्ग का रूप एकवचन में–'दधि, दधि, दध्ना, **दध्ने**, दध्नः, दध्नः, दध्नि/दधनि' सातों विभक्तियों में बनता है।
D. 'हरि' इकारान्त पुंलिङ्ग का रूप एकवचन में–'हरिः, हरिम्, हरिणा, हरये, हरेः, हरेः, हरौ' सातों विभक्तियों में बनता है।
अतः विकल्प `C' सही है।

67. अप् (जल) शब्द के रूप कितने वचनों में चलते हैं?
(A) केवल एकवचन **(B) केवल बहुवचन**
(C) केवल द्विवचन **(D) इनमें से कोई नहीं**

व्याख्या–
A. 'एक' शब्द का रूप केवल एकवचन में बनता है। यथा– (पुंलिङ्ग) एकः, एकम् एकेन, एकस्मै, एकस्मात् एकस्य, एकस्मिन्।
B. अप् (जल) शब्द का रूप **केवल बहुवचन** में चलता है। यथा–आपः, अपः, अद्भिः, अद्भ्यः, अद्भ्यः, अपाम्, अप्सु। अतः विकल्प `B' सही है। 'अप्' शब्द स्त्रीलिङ्ग में है।
C. 'द्वि' (दो) का रूप केवल द्विवचन में चलता है यथा–द्वौ, द्वौ, द्वाभ्याम्, द्वाभ्याम्, द्वाभ्याम्, द्वयोः द्वयोः।

68. ''असौ, अमू, अमी'' में किस प्रातिपदिक के रूप हैं?
(A) इदम् शब्द पुंल्लिङ्ग के
(B) अदस् शब्द पुंल्लिङ्ग के
(C) इदम् शब्द स्त्रीलिङ्ग के
(D) इदम् शब्द नपुंसकलिङ्ग के

व्याख्या–
A. इदम् (यह) शब्द का पुंलिङ्ग प्रथमा में–''अयम्, इमौ, इमे'' रूप बनता है।
B. **'अदस्' (वह) शब्द का पुंलिङ्ग प्रथमा में–** ''असौ, अमू, अमी'' रूप बनता है।
C. इदम् स्त्रीलिङ्ग शब्द का प्रथमा में–''इयम्, इमे, इमाः'' रूप बनता है।
D. 'इदम्' शब्द नपुंसकलिङ्ग का प्रथमा में–''इदम् इमे इमानि'' रूप बनता है।
अतः विकल्प `B' सही है।

63. (A) 64. (D) 65. (D) 66. (C) 67. (B) 68. (B)

69. निम्नलिखित वर्गों में चतुर्थी विभक्ति के रूप किस वर्ग में है?

(A) कः, कौ **(B) तम्, तौ**

(C) तस्याः, ताभ्याम् **(D) तस्मै, ताभ्यः**

व्याख्या–

A. किम् (कौन) पुंलिङ्ग का रूप प्रथमा में–
''कः, कौ, के'' बनता है।

B. तद् (वह) पुंलिङ्ग का रूप द्वितीया में–
''तम्, तौ, तान्'' बनता है।

C. 'तद्' स्त्रीलिङ्ग का रूप षष्ठी में–
''तस्याः, तयोः, तासाम्'' बनता है।

D. तद् पुंलिङ्ग चतुर्थी विभक्ति में–
''**तस्मै,** ताभ्याम्, तेभ्यः'' रूप बनता है
तद् स्त्रीलिङ्ग चतुर्थी विभक्ति में–
''तस्यै, ताभ्याम्, **ताभ्यः**'' बनता है।
अतः विकल्प `D' सही है।

70. निम्नलिखित में से स्त्रीलिङ्ग तृतीयाविभक्ति का रूप कौन-सा है?

(A) नद्यः **(B) रमया**

(C) धेनोः **(D) स्त्रियै**

व्याख्या–

A. 'नदी' शब्द का रूप प्रथमा में–
'नदी, नद्यौ, नद्यः' बनता है।

B. 'रमा' शब्द का रूप तृतीयाविभक्ति में–
'**रमया**, रमाभ्याम्, रमाभिः' बनता है।

C. धेनु शब्द का रूप षष्ठी विभक्ति में–
'धेनोः' धेन्वोः, धेनूनाम्' बनता है।

D. 'स्त्री' शब्द का रूप चतुर्थी विभक्ति में–
स्त्रियै, स्त्रीभ्याम्, स्त्रीभ्यः बनता है।

अतः विकल्प `B' सही है।

71. सर्वनाम शब्द 'तद्' पुंलिङ्ग प्रथमाविभक्ति बहुवचन का रूप होगा–

(A) तानि

(B) तत्

(C) ते

(D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या–

तद् का पुंलिङ्ग प्रथमा विभक्ति में–
'सः, तौ, **ते'** रूप चलता है।
नपुंसकलिङ्ग में 'तत्, ते, तानि' रूप चलता है अतः विकल्प `C' सही है।

72. 'युष्मद्' सर्वनाम शब्द पञ्चमी विभक्ति बहुवचन का रूप होगा–

(A) युष्मत्

(B) युष्मभ्यम्

(C) युष्माभिः

(D) युष्मात्

व्याख्या– युष्मद् सर्वनाम का तीनों लिङ्गों में एकसमान रूप चलता है।

A. युष्मद् शब्द का पञ्चमी विभक्ति में–
''त्वत्, युवाभ्याम्, **युष्मत्**'' रूप बनता है

B. चतुर्थी विभक्ति में–
''तुभ्यम् युवाभ्याम्, युष्मभ्यम्'' रूप बनता है।

C. तृतीया में ''त्वया, युवाभ्याम्, युष्माभिः'' रूप बनता है।

D. 'युष्मात्' रूप युष्मद् शब्द की सातों विभक्ति में कहीं नहीं बनता है। अतः विकल्प `A' सही है।

73. 'भू' धातु का 'भवत' रूप–

(A) विधिलिङ् लकार म.पु. बहुवचन का है।

(B) लोट्लकार म.पु. बहुवचन का है।

(C) लङ्लकार म.पु. बहुवचन का है।

(D) लोट्लकार प्र.पु. एकवचन का है।

व्याख्या–

A. भू धातु का विधिलिङ्लकार म.पु. में–
''भवेः, भवेतम्, भवेत'' रूप बनता है

B. **लोट्लकार म.पु.** में–
'भव भवतम् **भवत**' रूप बनता है

C. लङ्लकार म.पु. में–
अभवः, अभवतम्, अभवत रूप बनता है

D. लोट् लकार प्र.पु. में–
'भवतु, भवताम् , भवन्तु' रूप बनता है
अतः विकल्प `B' सही है।

69. (D) 70. (B) 71. (C) 72. (A) 73. (B)

74. 'चुर्' धातु का 'चोरयतम्' रूप–
(A) लट्लकार म.पु. द्विवचन का है।
(B) लोट्लकार म.पु. द्विवचन का है।
(C) विधिलिङ् लकार म.पु. द्विवचन का है।
(D) लङ् लकार म.पु. द्विवचन का है।

व्याख्या–
A. 'चुर्' धातु लट्लकार म.पु. में– 'चोरयसि, चोरयथः, चोरयथ' रूप बनता है।
B. **लोट्लकार म.पु. में** – परस्मैपद 'चोरय, **चोरयतम्,** चोरयत' रूप चलता है
C. विधिलिङ्लकार म.पु. में– 'चोरयेः चोरयेतम् चोरयेत' रूप चलता है
D. लङ्लकार म.पु. में– अचोरयः, अचोरयतम्, अचोरयत रूप चलता है।
अतः विकल्प `B' सही है।

75. 'लभ्' धातु लट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन में रूप होगा–
(A) लभते (B) लभेते
(C) लभेत (D) लभति

व्याख्या–
A+B 'लभ्' धातु आत्मनेपदी का रूप लट्लकार प्र0पु0 में– '**लभते,** लभेते, लभन्ते' बनता है
C. विधिलिङ्लकार प्रथमपुरुष में– 'लभेत, लभेयाताम्, लभेरन्' रूप बनता है।
D. 'लभति' रूप लभ् धातु के दशों लकारों में कहीं नहीं बनता है। क्योंकि यह धातु आत्मनेपदी है, न कि उभयपदी। अतः विकल्प `A' सही है।

76. कादम्बरी किस प्रकार की रचना है?
(A) आख्यायिका (B) ऐतिहासिकग्रन्थ
(C) कथा (D) चम्पूकाव्य

काव्य	विधा
A. हर्षचरितम् (बाणभट्ट)	– आख्यायिका
B. शिवराजविजयम् (अम्बिकादत्तव्यास)	– ऐतिहासिक उपन्यास
C. **कादम्बरी (बाणभट्ट)**	**– कथा**
D. नलचम्पू (त्रिविक्रमभट्ट)	– चम्पूकाव्य

अतः विकल्प `C' सही है।

77. ''कदलीदलकुञ्जायितस्य एतत्कुटीरस्य समन्तात् पुष्पवाटिका, पूर्वतः परम-पवित्र-पानीयं परस्सहस्त्र-पुण्डरीक-पटल-परिलसितं पतत्रि-कुल-कूजित-पूजितं पयःपूरितं सर आसीत्।''
उपर्युक्त गद्यांश किस रचना से उद्धृत है?
(A) कादम्बरी से
(B) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से
(C) शिवराजविजयम् से
(D) उत्तररामचरितम् से

व्याख्या–
A. 'भवादृशा एव भवन्ति भाजनानि उपदेशानाम्' कादम्बरी (शुकनासोपदेश) से
B. 'न तादृशा आकृतिविशेषा गुणविरोधिनो भवन्ति'– अभिज्ञानशाकुन्तलम् में प्रियंवदा का कथन।
C. 'कदलीदलकुञ्जायितस्य........पूरितं सर आसीत्'– **शिवराजविजयम्** से
D. 'कर्तव्यानि खलु दुःखितैर्दुःखनिर्वापणानि'– उत्तररामचरितम् तृतीय अङ्क में तमसा का कथन।
अतः विकल्प `C' सही है।

78. ''अकालकुसुमप्रसवा इव मनोहराकृतयोऽपि लोक-विनाश-हेतवः, श्मशानाग्नय इवातिरौद्रभूतयः, तैमिरिका इवादूरदर्शिनः, उपसृष्टा इव क्षुद्राधिष्ठित भवनाः, श्रूयमाणा अपि प्रेतपटहा इवोद्वेजयन्ति।''
प्रस्तुत गद्यांश किस ग्रन्थ से उद्धृत है?
(A) शिवराजविजयम्
(B) उत्तररामचरितम्
(C) कादम्बरी (शुकनासोपदेश)
(D) अभिज्ञानशाकुन्तलम्

व्याख्या–
A. 'वेदा एतस्यैव वन्दिनः, गायत्री अमुमेव गायति' - शिवराजविजयम् से
B. 'प्रणय एव व्याहरति शोकश्च'–उत्तररामचरितम्
C. 'अकालकुसुमप्रसवा इव..... प्रेतपटहा इवोद्वेजयन्ति'– कादम्बरी (शुकनासोपदेश) से अवतरित इस गद्यांश में शुकनास, चन्द्रापीड को उपदेश देते हुए कहते हैं कि– लक्ष्मी से उन्मत्त राजागण असमय में खिलने वाले फूलों के समान सुन्दर आकृति के होते हुए भी लोगों के विनाश के कारण होते हैं।
D. कोऽन्यो हुतवहाद् दग्धुं प्रभवति–अभिज्ञानशाकुन्तलम्। अतः विकल्प `C' सही है।

74. (B) 75. (A) 76. (C) 77. (C) 78. (C)

79. शुकनास ने किसे उपदेश दिया?
(A) तारापीड को (B) वैशम्पायन को
(C) चन्द्रापीड को (D) पुण्डरीक को

व्याख्या–
A. तारापीड उज्जयिनी के राजा हैं, और चन्द्रापीड के पिता हैं।
B. वैशम्पायन, शुकनास का पुत्र है।
C. शुकनास तारापीड का प्रधान अमात्य है, जो **चन्द्रापीड को** राज्याभिषेक के समय उपदेश देता है।
D. पुण्डरीक के अगले जन्म का नाम ''वैशम्पायन'' है।
अतः विकल्प `C' सही है।

80. गद्यकार बाणभट्ट का स्थितिकाल क्या है?
(A) षष्ठ शताब्दी ई. (B) सप्तम शताब्दी ई.
(C) अष्टम शताब्दी ई. (D) नवम शताब्दी ई.

	कवि		स्थितिकाल (समय)
A.	भारवि	–	षष्ठ शताब्दी ई.
B.	**बाणभट्ट**	–	**सप्तम शताब्दी का पूर्वार्द्ध**
C.	वामन	–	अष्टम शताब्दी ई.
D.	रत्नाकर	–	नवम शताब्दी ई.

अतः विकल्प `B' सही है।

81. ''तेजोद्वयस्य युगपद्व्यसनोदयाभ्यां लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु''–यह किस पात्र का कथन है?
(A) काश्यप (B) कण्वशिष्य
(C) अनसूया (D) प्रियंवदा

व्याख्या–
A. 'ययातेरिव शर्मिष्ठा भर्तुर्बहुमता भव – काश्यप की उक्ति है।
B. 'तेजोद्वयस्य युगपद्व्यसनोदयाभ्यां लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु' (अभि.शा. 4/2) – प्रस्तुत सूक्ति में कण्व का शिष्य कहता है कि–
संसार दो तेजों (सूर्य, चन्द्रमा) का एक साथ अस्त एवं उदित होने से अपनी अवस्थाओं के परिवर्तन से मानों लोक को नियन्त्रित किया जा रहा है।
C. 'काम इदानीं सकामो भवतु'–अनसूया का कथन
D. 'एष दुर्वासाः सुलभकोपो महर्षिः'–प्रियंवदा का कथन
अतः विकल्प `B' सही है।

82. ''उद्गलितदर्भकवला मृग्यः परित्यक्तनर्तना मयूराः अपसृतपाण्डुपत्रा मुञ्चन्त्यश्रूणीव लताः।''
उपर्युक्त पद्य किस पात्र द्वारा कहा गया है?
(A) काश्यप द्वारा (B) अनसूया द्वारा
(C) प्रियंवदा द्वारा (D) गौतमी द्वारा

व्याख्या–
A. ''मम विरहजां न त्वं वत्से शुचं गणयिष्यसि'' कण्व का कथन है।
B. 'रक्षितव्या खलु प्रकृतिपेलवा प्रियसखी'–अनसूया का कथन।
C. ''उद्गलितदर्भकवला.....मुञ्चन्त्यश्रूणीव लताः'' (अभि. 4/12) प्रस्तुत पद्य में शकुन्तला के विदाई के समय प्रियंवदा कहती है–शकुन्तला के जाने के वियोग में हरिणियों ने कुश के ग्रास को उगल दिया है, मयूरों ने नाचना छोड़ दिया है।
D. 'वरः खल्वेषः नाशीः'–गौतमी का कथन है
अतः विकल्प `C' सही है।

83. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में ययाति के किस पुत्र का नाम उल्लिखित है?
(A) यदु (B) तुर्वशु
(C) पुरु (D) द्रुध्यु

व्याख्या–
* ''ययातेरिव शर्मिष्ठा भर्तुर्बहुमता भव।
सुतं त्वमपि सम्राजं सेव **पूरुमवाप्नुहि**।।'' अभि.शा. (4/7)
* प्रस्तुत श्लोक से यह ज्ञात होता है कि–
ययाति के पुत्र का नाम पुरु था।
पुरु की माता शर्मिष्ठा थीं।
* राजा दुष्यन्त भी पुरुवंशीय क्षत्रिय थे।
अतः विकल्प `C' सही है।

84. 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः' यह सूक्ति किस ग्रन्थ में आयी है?
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में
(B) किरातार्जुनीयम् में
(C) नीतिशतकम् में
(D) मेघदूतम् में

व्याख्या–
A. 'श्रिया दुरापः कथमीप्सितो भवेत्' अभिज्ञानशाकुन्तलम्
B. 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः' **(किरातार्जुनीयम् 1/4)**– वनेचर, हस्तिनापुर से लौटने के पश्चात् युधिष्ठिर से कहता है कि–हितकारी और प्रियवाणी दुर्लभ होती है।
C. ''विभूषणं मौनमपण्डितानाम्''–नीतिशतकम् 7 से
D. 'रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय'– मेघदूतम् 20 से
अतः विकल्प `B' सही है।

79. (C) 80. (B) 81. (B) 82. (C) 83. (C) 84. (B)

85. 'निराश्रया हन्त! हता मनस्विता' यह किसकी उक्ति है?
(A) वनेचर की (B) द्रौपदी की
(C) युधिष्ठिर की (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या–
(A) 'वसूपमानस्य वसूनि मेदिनी'– वनेचर
(B) 'निराश्रया हन्त! हता मनस्विता' (किरातार्जुनीयम् 1/43)– द्रौपदी युधिष्ठिर को उलाहना देते हुए कहती है कि– यदि आप जैसे लोग दुःसह अपमान को सहन कर लेंगे, तो मानवता आश्रयहीन होकर नष्ट हो जायेगी।
(C) किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में युधिष्ठिर की एक भी उक्ति नहीं है। वह केवल श्रोता है।
अतः विकल्प `B' सही है।

86. ''सदानुकूलेषु हि कुर्वते रतिं, नृपेष्वमात्येषु च सर्वसम्पदः'' यह किसके द्वारा कहा गया है?
(A) द्रौपदी द्वारा (B) वनेचर द्वारा
(C) दुर्योधन द्वारा (D) युधिष्ठिर द्वारा

व्याख्या–
(A) ''विजित्य यः प्राज्यमयच्छदुत्तरान्, कुरूनकुप्यं वसु वासवोपमः''–द्रौपदी द्वारा
(B) ''सदानुकूलेषु हि कुर्वते रतिं, नृपेष्वमात्येषु च सर्वसम्पदः'' (किरात. 1/5)–प्रस्तुत पद्य में **वनेचर** युधिष्ठिर से कहता है कि राजाओं और मन्त्रियों के परस्पर अनुकूल होने पर राज्य में सारी समृद्धियाँ अनुराग करती हैं।
(C+D) किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में दुर्योधन और युधिष्ठिर के द्वारा एक भी उक्ति नहीं कही गयी है।
* प्रथमसर्ग में केवल वनेचर एवं द्रौपदी की उक्ति है।
अतः विकल्प `B' सही है।

87. 'स चिन्तयत्येव भियस्त्वदेष्यतीः, अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता' यह किसके विषय में कहा गया है?
(A) दुर्योधन के विषय में
(B) वनेचर के विषय में
(C) युधिष्ठिर के विषय में
(D) दुःशासन के विषय में

व्याख्या–
(A) 'स चिन्तयत्येव भियस्त्वदेष्यतीः, अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता' (किरातार्जुनीयम् 1/23)– वनेचर, युधिष्ठिर से कहता है कि–वह (दुर्योधन) आप की ओर से आने वाली विपत्तियों को सोचता ही है (क्योंकि) अहो! बलशाली से विरोध करना दुःखमय परिणाम वाला होता है। इसलिए यह कथन **दुर्योधन के विषय में** कहा गया है।
(B) 'प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः'–वनेचर के विषय में
(C) 'मृगद्विजालूनशिखेषु बर्हिषाम्' युधिष्ठिर के विषय में
(D) 'निधाय दुःशासनमिद्धशासनः' दुःशासन की चर्चा
अतः विकल्प `A' सही है।

88. ''न क्षुद्रोऽपि प्रथमसुकृतापेक्षया संश्रयाय, प्राप्ते मित्रे भवति विमुखः किं पुनर्यस्तथोच्चैः''
उपर्युक्त सूक्ति किस ग्रन्थ से उद्धृत है?
(A) मेघदूतम् से
(B) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से
(C) उत्तररामचरितम् से
(D) नीतिशतकम् से

व्याख्या–
(A) 'न क्षुद्रोऽपि.......पुनर्यस्तथोच्चैः' (पूर्वमेघ/17) **मेघदूतम्** में विरही यक्ष मेघ से कहता है कि–छोटा व्यक्ति भी आश्रय के लिए मित्र के आने पर पहले किये हुए उपकार को सोचकर मुँह नहीं मोड़ता, फिर जो (आम्रकूट पर्वत) उतना महान् है, उसकी बात ही क्या?
(B) ''आः, अतिथिपरिभाविनि!''–अभिज्ञानशाकुन्तलम् से
(C) ''यत्र द्रुमा अपि मृगा अपि बन्धवो मे''–उत्तररामचरितम् से
(D) 'सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः'–नीतिशतकम् से
अतः विकल्प `A' सही है।

89. मेघदूतम् किस छन्द में रचित है?
(A) स्रग्धरा (B) शार्दूलविक्रीडित
(C) मन्दाक्रान्ता (D) शिखरिणी

व्याख्या–
(A) ''या सृष्टिः स्रष्टुराद्या वहति विधिहुतं या हविर्या च होत्री''– अभिज्ञानशाकुन्तलम् के इस मङ्गल श्लोक में स्रग्धरा छन्द है। इसके प्रत्येक चरण में 21 वर्ण होते हैं।
(B) ''या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता'' में शार्दूलविक्रीडित छन्द है, इसके प्रत्येक चरण में 19 वर्ण होते हैं।
(C) सम्पूर्ण मेघदूत में **''मन्दाक्रान्ता छन्द''** है।

86. (B) 87. (A) 88. (A) 89. (C)

वृत्तरत्नाकर में मन्दाक्रान्ता का लक्षण–''मन्दाक्रान्ता जलधिषडगैम्भौं नतौ ताद् गुरू चेत्'' अर्थात् जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः मगण, भगण, नगण, तगण, तगण तथा दो गुरु वर्ण आयें और जलधि (4), षट् (6), अग (7 कुलपर्वत) संख्यक वर्णों पर यति होती है, उसे मन्दाक्रान्ता छन्द कहते हैं।
मन्दाक्रान्ता के प्रत्येक चरण में 17 वर्ण होते हैं।

(D) ''यदा किञ्चिद्ज्ञोऽहं द्विप इव मदान्धः समभवम्'' नीतिशतक के इस श्लोक में ''शिखरिणी छन्द'' है, इसके प्रत्येक चरण में 17-17 अक्षर होते हैं।

90. ''स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु''–सूक्ति किस ग्रन्थ में है?
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में
(B) किरातार्जुनीयम् में
(C) नीतिशतकम् में
(D) मेघदूतम् में

व्याख्या–
(A) 'गुर्वपि विरहदुःखमाशाबन्धः साहयति'–अभिज्ञान शाकुन्तलम् से
(B) 'निरस्तनारीसमया दुराधयः'–किरातार्जुनीयम् से
(C) 'वाराङ्गनेव नृपनीतिरनेकरूपा'–नीतिशतकम् से
(D) 'स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु' **(पूर्वमेघ/29)**– मेघदूतम् से प्रस्तुत पद्य में यक्ष, मेघ से निर्विन्ध्या नदी के विषय में कहता है कि–स्त्रियों का प्रियतम के प्रति किया गया हाव-भाव ही पहला प्रार्थनावाक्य होता है।
अतः विकल्प `D' सही है।

91. भवभूति का स्थितिकाल क्या है?
(A) पञ्चम शताब्दी (B) षष्ठ शताब्दी
(C) सप्तम शताब्दी (D) अष्टम शताब्दी

	कवि		स्थितिकाल (समय)
(A)	विशाखदत्त	–	पञ्चम शताब्दी
(B)	दण्डी	–	षष्ठ शताब्दी
(C)	भवभूति	–	**सप्तम शताब्दी**
(D)	वामन	–	अष्टम शताब्दी

अतः विकल्प `C' सही है।

92. ''अनिर्भिन्नो गभीरत्वादन्तर्गूढघनव्यथः'' यह किस कवि ने और किस सन्दर्भ में कहा?
(A) कालिदास ने मेघ के वर्णन में
(B) भारवि ने द्रौपदी के व्यथा के वर्णन में
(C) भवभूति ने राम के करुणरस वर्णन में
(D) भर्तृहरि ने मूर्ख (जड़) के वर्णन में

व्याख्या–
(A) 'जातं वंशे भुवनविदिते पुष्करावर्तकानां'–कालिदास ने मेघ के विषय में कहा है।
(B) 'तथापि वक्तुं व्यवसाययन्ति मां, निरस्तनारीसमया दुराधयः'–भारवि ने द्रौपदी के व्यथा के वर्णन में।
(C) 'अनिर्भिन्नो गभीरत्वादन्तर्गूढघनव्यथः' **(उत्तररामचरितम् 3/1)**– प्रस्तुत पंक्ति में भवभूति राम के करुणरस का वर्णन करते हुए कहते हैं कि–गम्भीरता के कारण अप्रकट एवं अन्दर छिपी हुई घोर वेदना से युक्त राम का करुणरस पुटपाक के तुल्य है।
(D) ''न तु प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्तमाराधयेत्''–भर्तृहरि ने 'नीतिशतकम्' में मूर्ख व्यक्तियों के बारे में कहा है।
अतः विकल्प `C' सही है।

93. ''स्नपयति हृदयेशं स्नेहनिष्यन्दिनी ते, धवलमधुरमुग्धा दुग्धकुल्येव दृष्टिः'' उपर्युक्त पद्यांश किस ग्रन्थ से उद्धृत है।
(A) उत्तररामचरितम् से
(B) मेघदूतम् से
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से
(D) नीतिशतकम् से

व्याख्या–
(A) 'स्नपयति हृदयेशं.......दृष्टिः'–प्रस्तुत पद्यांश उत्तररामचरितम् से उद्धृत है। **(उत्तररामचरितम् 3/23)**
(B) ''सद्यः पाति प्रणयि हृदयं विप्रयोगे रुणद्धि''–मेघदूतम् से उद्धृत है।
(C) 'अतिस्नेहः पापशङ्की'–अभिज्ञानशाकुन्तलम् से उद्धृत है
(D) ''माधुर्यं मधुबिन्दुना रचयितुं क्षाराम्बुधेरीहते''–नीतिशतकम् से उद्धृत है।
अतः विकल्प `A' सही है।

90. (D) 91. (C) 92. (C) 93. (A)

94. ''मन्यामहे मलयमेव यदाश्रयेण, कङ्कोलनिम्बकुटजा अपि चन्दनानि।'' यह पद्यांश किस ग्रन्थ से उद्धृत है?
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से
(B) नीतिशतकम् से
(C) उत्तररामचरितम् से
(D) शुकनासोपदेश से

व्याख्या–
(A) 'मलयतटोन्मूलिता चन्दनलतेव देशान्तरे जीवितं धारयिष्यामि'–अभिज्ञानशाकुन्तलम् से
(B) ''मन्यामहे मलयमेव यदाश्रयेण कङ्कोलनिम्बकुटजा अपि चन्दनानि'' **(परिशिष्ट-17)–नीतिशतकम्** से उद्धृत है।
(C) ''आश्च्योतनं नु हरिचन्दनपल्लवानाम्''–उत्तररामचरित से
(D) ''चन्दनप्रभवो न दहति किमनलः''–शुकनासोपदेश से
अतः विकल्प `B' सही है।

95. ''दुर्जनः परिहर्तव्यो विद्ययालङ्कृतोऽपि सन्''–यह वचन किसने कहा है?
(A) भर्तृहरि ने (B) कालिदास ने
(C) भवभूति ने (D) भारवि ने

व्याख्या–
(A) ''दुर्जनः परिहर्तव्यो विद्ययालङ्कृतोऽपि सन्'' **भर्तृहरि** नीतिशतकम्–43 में कहते हैं कि– विद्या से अलंकृत होने पर भी दुष्ट का साथ छोड़ देना चाहिए।
(B) 'न खलु धीमतां कश्चिदविषयो नाम'– कालिदास ने अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में कहा है।
(C) 'राक्षसकुलप्रलयधूमकेतो किमद्यापि ते मन्युविषयः''–भवभूति ने उत्तररामचरितम् में कहा है।
(D) ''व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवं'–भारवि ने किरातार्जुनीयम् में कहा है।
अतः विकल्प `A' सही है।

96. ''विधिरहो बलवानिति मे मतिः'' यह सुभाषित किस ग्रन्थ में आया है?
(A) नीतिशतकम् में
(B) उत्तररामचरितम् में
(C) कादम्बरी (शुकनासोपदेश में)
(D) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में

व्याख्या–
(A) ''विधिरहो बलवानिति मे मतिः'' **(नीतिशतकम्/86)**– प्रस्तुत सुभाषित में भर्तृहरि कहते हैं कि–'भाग्य ही बलवान् है, ऐसी मेरी सम्मति है'
(B) ''विष्वङ्मोहः स्थगयति कथं मन्दभाग्यः करोमि'– उत्तररामचरितम् से उद्धृत है।
(C) ''न लक्षणं प्रमाणीकरोति''–कादम्बरी (शुकनासोपदेश) से उद्धृत है।
(D) ''भाग्यायत्तमतः परं न खलु तद् वाच्यं वधूबन्धुभिः''– अभिज्ञानशाकुन्तलम् में चतुर्थ अङ्क में कण्व कहते हैं।
अतः विकल्प `A' सही है।

97. 'तस्मिन्नद्रौ कतिचिदबलाविप्रयुक्तः स कामी' मेघदूतम् की इस पंक्ति के आगे की पंक्ति कौन-सी है?
(A) वप्रक्रीडापरिणतगजप्रेक्षणीयं ददर्श
(B) जीमूतेनस्वकुशलमयीं हारयिष्यन् प्रवृत्तिम्
(C) नीत्वा मासान्कनकवलयभ्रंशरिक्तप्रकोष्ठः
(D) अन्तर्वाष्पश्चिरमुनचरो राजराजस्य दध्यौ

व्याख्या–
* तस्मिन्नद्रौ कतिचिदबलाविप्रयुक्तः स कामी
* नीत्वा मासान्कनकवलयभ्रंशरिक्तप्रकोष्ठः
* प्रस्तुत पद्य कालिदास कृत मेघदूतम् का दूसरा श्लोक है।
अतः विकल्प `C' सही है।

98. शकुन्तला से 'भर्तुर्बहुमता भव' यह वाक्य किसने कहा है?
(A) काश्यप ने (B) एक तापसी ने
(C) गौतमी ने (D) प्रियंवदा ने

व्याख्या–
(A) ''सुतं त्वमपि सम्राजं सेव पूरुमवाप्नुहि''–कण्व, शकुन्तला के लिए कहते हैं।
(B) ''भर्तुर्बहुमता भव''–कण्वाश्रम की **एक तापसी**, शकुन्तला को आशीर्वाद देते हुए कहती है कि– 'पति द्वारा बहुत सम्मान वाली हो।'
(C) ''वरः खल्वेषः नाशीः''–गौतमी, शकुन्तला के लिए कहती है।
(D) ''भर्तुर्गेहेऽनुभवितव्या राजलक्ष्मीः''–प्रियंवदा, शकुन्तला के लिए कहती है।
उपर्युक्त सभी कथन अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क से उद्धृत हैं, अतः विकल्प `B' सही है।

94. (B) 95. (A) 96. (A) 97. (C) 98. (B)

99. ''को नामोष्णोदकेन नवमालिकां सिञ्चति''–यह वाक्य किस ग्रन्थ में आया है?
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में
(B) मेघदूतम् में
(C) किरातार्जुनीयम् में
(D) अभिज्ञानशाकुन्तलम् चतुर्थ अङ्क के चौथे श्लोक में

व्याख्या–

(A) ''को नामोष्णोदकेन नवमालिकां सिञ्चति''– **अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क** में प्रियंवदा अनसूया से शकुन्तला के विषय में कहती है कि–भला कौन नवमालिका (चमेली) को गर्म जल से सींचता है।

(B) ''चूडापाशे नवकुरबकं चारु कर्णे शिरीषम्''–मेघदूतम् में

(C) ''शमीतरुं शुष्कमिवाग्निरुच्छिखः''–किरातार्जुनीयम् के प्रथम अङ्क में द्रौपदी युधिष्ठिर से कहती है।

(D) ''अवेहि तनयां ब्रह्मन्नग्निगर्भां शमीमिव''–(अभिज्ञान-शाकुन्तलम् के 4/4 श्लोक में) आकाशवाणी के माध्यम से यह श्लोक कण्व को सुनायी पड़ता है।

अतः विकल्प `A' सही है।

100. 'अदेवमातृकाः'' शब्द का प्रयोग किस ग्रन्थ में है?
(A) किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में
(B) अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में
(C) उत्तररामचरितम् के तृतीय अङ्क में
(D) कादम्बरी (शुकनासोपदेश) में

व्याख्या–

(A) 'वितन्वति क्षेममदेवमातृकाश्चिराय तस्मिन् कुरवश्चकासति' **(किरातार्जुनीयम् 1/17)** प्रस्तुत पद्य में 'अवेदमातृकाः' शब्द का प्रयोग हुआ है जिसका अर्थ है–वर्षा के जल पर निर्भर न रहने वाले (कुरुदेशवासी)।

(B) 'क्षौमं' = रेशमीवस्त्र (अभिज्ञानशाकुन्तलम् 4/5)

(C) 'स्तनयित्नोः' = बादल के (उत्तररामचरितम् 3/7)

(D) 'अनार्या'–लक्ष्मी के लिए आया है– कादम्बरी शुकनासोपदेश में।

अतः विकल्प `A' सही है।

99. (A) 100. (A)

प्रशिक्षित-स्नातकशिक्षक-चयनपरीक्षा (TGT)–2001

1. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में 'अभिज्ञान' शब्द से किसका बोध होता है?
(A) नथुनी **(B) पायल**
(C) अँगूठी **(D) लॉकेट**

व्याख्या –
'तेन राजर्षिणा सम्प्रस्थितेन स्वनामधेयाङ्कितमङ्गुलीयकं स्मरणीयमिति स्वयं पिनद्धम्'– (अभि.शाकु., अङ्क-4)
अनसूया के इस कथन से यह ज्ञात होता है कि अभिज्ञान-शाकुन्तलम् में 'अभिज्ञान' का तात्पर्य **''अँगूठी''** से है।

	शब्द	**अर्थ**
(A)	नासाभरणम् (नपु.)	नथुनी
(B)	नूपुरम् (नपु.)	पायल
(C)	अङ्गुलीयकम् (नपु.)	अँगूठी
(D)	कण्ठभूषा (स्त्री.)	लॉकेट

अतः विकल्प (C) सही है।

2. शकुन्तला की सखी कौन थी?
(A) गौतमी **(B) मालविका**
(C) उर्वशी **(D) अनसूया और प्रियंवदा**

व्याख्या –
(A) गौतमी, कण्वाश्रम की अध्यक्षा है।
(B) मालविका, कालिदास कृत मालविकाग्निमित्रम् की नायिका है।
(C) उर्वशी, कालिदासकृत विक्रमोर्वशीयम् की नायिका है।
(D) **अनसूया और प्रियंवदा** शकुन्तला की सखियाँ हैं।
अतः विकल्प (D) सही है।

3. शकुन्तला के साथ राजदरबार तक कौन गयी थी?
(A) गौतमी **(B) मेनका**
(C) अनसूया **(D) प्रियंवदा**

व्याख्या –
(A) **''त्वया सह गौतमी यास्यति''** – कण्व के इस कथन से ज्ञात होता है कि शकुन्तला के साथ गौतमी दुष्यन्त के राजदरबार हस्तिनापुर तक जाती है।
* गौतमी के साथ शार्ङ्गरव एवं शारद्वत भी हस्तिनापुर जाते हैं।
(B) मेनका – एक अप्सरा है, जो विश्वामित्र की पत्नी एवं शकुन्तला की जन्मदात्री माता है।
(C) + (D) अनसूया एवं प्रियंवदा, शकुन्तला के साथ हस्तिनापुर नही जाती हैं। ''न युक्तमनयोस्तत्र गन्तुम्''
अतः विकल्प (A) सही है।

4. अभिज्ञानशाकुन्तलम् का विदूषक कौन है?
(A) माढव्य **(B) मैत्रेय**
(C) वसन्तक **(D) माणवक**

	ग्रन्थ		**विदूषक**
(A)	अभिज्ञानशाकुन्तलम्	–	**माढव्य**
(B)	मृच्छकटिकम्	–	मैत्रेय
(C)	रत्नावली	–	वसन्तक
(D)	विक्रमोर्वशीयम्	–	माणवक

अतः विकल्प (A) सही है।

5. किसके आग्रह पर शकुन्तला के प्रति दुर्वासा के शाप में लघुता आयी –
(A) अनसूया **(B) प्रियंवदा**
(C) कण्व **(D) गौतमी**

व्याख्या –
(A) ''गच्छ पादयोः प्रणम्य निवर्तयैनम्'' – अनसूया, प्रियंवदा को दुर्वासा ऋषि को मनाने के लिए भेजती है।
(B) ''प्रकृतिवक्रः स कस्यानुनयं प्रतिगृह्णाति! किमपि पुनः सानुक्रोशः कृतः'' – **प्रियंवदा** कहती है कि– स्वभाव से टेढे वह (दुर्वासा) भला किसकी प्रार्थना को स्वीकार करते हैं, फिर भी मैंने कुछ दयायुक्त कर लिया है। अर्थात् प्रियंवदा के आग्रह से शाप में कमी आयी। अतः विकल्प (B) सही है।
(C) कण्व, दुर्वासा ऋषि के आगमन के समय सोमनाथ तीर्थ गये थे।
(D) गौतमी को इस बात की जानकारी नहीं थी कि ऋषि दुर्वासा आश्रम में आये हैं।

1. (C) 2. (D) 3. (A) 4. (A) 5. (B)

6. 'कथां प्रमत्तः प्रथमं कृतामिव' – यह श्लोकांश है?
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में
(B) शुकनासोपदेश में
(C) शिवराजविजयम् में
(D) मेघदूतम् में

व्याख्या –

(A) ''कथां प्रमत्तः प्रथमं कृतामिव'' **(अभिज्ञानशाकुन्तलम् 4/1)** – ऋषि दुर्वासा नेपथ्य में शकुन्तला को शाप देते हुए कहते हैं कि 'याद दिलाये जाने पर भी वह (दुष्यन्त) तुमको याद नहीं करेगा। जैसे कोई प्रमत्त व्यक्ति पूर्व में किये गये कार्यों को स्मरण नहीं करता।

(B) ''कल्याणाभिनिवेशो लक्ष्मीमेव प्रथमम्''–(शुकनासोपदेश)

(C) ''अरुण एष प्रकाशः पूर्वस्यां भगवतो मरीचिमालिनः'' (शिवराजविजयम्)

(D) ''आषाढस्य प्रथमदिवसे मेघमाश्लिष्टसानुम्'' – (मेघदूतम्)

अतः विकल्प (A) सही है।

7. 'पीड्यन्ते गृहिणः कथं नु तनया विश्लेषदुःखैर्नवैः' – यह उक्ति किसकी है –
(A) प्रियंवदा की **(B) अनसूया की**
(C) गौतमी की **(D) कण्व की**

व्याख्या –

(A) 'एते खलु हस्तिनापुरगामिन ऋषयः शब्दायन्ते' – प्रियंवदा

(B) 'यद्यपि गान्धर्वेण विधिना निवृत्तकल्याणा शकुन्तला....' – अनसूया

(C) 'वरः खल्वेषः नाशीः' – गौतमी

(D) 'पीड्यन्ते गृहिणः कथं नु तनया विश्लेषदुःखैर्नवैः' – प्रस्तुतपद्य में **कण्व**, शकुन्तला की विदाई के समय कहते हैं कि – जंगल में रहने वाले मेरी भी स्नेह के कारण ऐसी व्याकुलता है तो गृहस्थ लोग पुत्री के वियोग के दुःख में कितना अधिक दुःखी होते होंगे। (अभि. 4/6)

अतः विकल्प (D) सही है।

8. ''सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं............'' रिक्तस्थान की पूर्ति करें –
(A) सर्वैरनुज्ञायताम् **(B) नादत्ते**
(C) अनुमतगमना **(D) स्नेहेन**

व्याख्या –

(A) 'सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं **सर्वैरनुज्ञायताम्**' (अभि. 4/9) – कण्व

(B) 'नादत्ते प्रियमण्डनाऽपि भवताम्' – कण्व

(C) 'अनुमतगमना शकुन्तला तरुभिरियं वनवासबन्धुभिः'–कण्व

(D) 'नादत्ते प्रियमण्डनापि भवतां स्नेहेन या पल्लवम्'–कण्व

अतः विकल्प (A) सही है।

9. ''अर्थो हि कन्या परकीय एव'' – किसके लिए कहा गया है?
(A) शकुन्तला के लिए **(B) प्रियंवदा के लिए**
(C) अनसूया के लिए **(D) गौतमी के लिए**

व्याख्या –

(A) 'अर्थो हि कन्या परकीय एव' (अभि. 4/22)– कण्व **शकुन्तला के लिए** कहते हैं कि – ''कन्या वस्तुतः दूसरे का ही धन है''

(B) + (C) ''निगृह्यशोकमनुगच्छतं मां प्रस्थितम्'' – कण्व, अनसूया प्रियंवदा के लिए कहते हैं।

(D) 'कथं वा गौतमी मन्यते' – कण्व गौतमी से कहते हैं।

अतः विकल्प (A) सही है।

10. 'तन्माऽतिमात्रं मम कृत उत्कण्ठस्व' – यह कथन किसका है?
(A) काश्यप का **(B) शकुन्तला का**
(C) प्रियंवदा का **(D) अनसूया का**

व्याख्या –

(A) 'मम विरहजां न त्वं वत्से शुचं गणयिष्यसि' – काश्यप

(B) 'तन्माऽतिमात्रं मम कृत उत्कण्ठस्व' – **शकुन्तला** कण्व से कहती है कि मेरे लिए आप अत्यधिक दुःखी मत होइए।

(C) 'को नामोष्णोदकेन नवमालिकां सिञ्चति' – प्रियंवदा

(D) 'काम इदानीं सकामो भवतु' – अनसूया

अतः विकल्प (B) सही है।

11. किरातार्जुनीयम् महाभारत के किस पर्व से लिया गया है?
(A) वनपर्व से **(B) आदिपर्व से**
(C) भीष्मपर्व से **(D) सभापर्व से**

	ग्रन्थ		उपजीव्य
(A)	**किरातार्जुनीयम्**	–	**वनपर्व (महाभारत)**
(B)	अभिज्ञानशाकुन्तलम्	–	आदिपर्व (महाभारत)
(C)	गीता	–	भीष्मपर्व (महाभारत)
(D)	शिशुपालवधम्	–	सभापर्व (महाभारत)

अतः विकल्प (A) सही है।

6. (A) 7. (D) 8. (A) 9. (A) 10. (B) 11. (A)

12. किरातार्जुनीयम् में कुल कितने सर्ग हैं?
(A) 18 **(B) 19**
(C) 20 **(D) 22**

	महाकाव्य		सर्ग
(A)	**किरातार्जुनीयम्**	–	**18**
(B)	रघुवंशमहाकाव्यम्	–	19
(C)	शिशुपालवधम्	–	20
(D)	नैषधीयचरितम्	–	22

अतः विकल्प (A) सही है।

13. ''हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः'' – सूक्ति किस ग्रन्थ से है?
(A) मेघदूतम् से
(B) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से
(C) किरातार्जुनीयम् से
(D) नीतिशतकम् से

व्याख्या –
(A) 'सद्यः पाति प्रणयि हृदयं विप्रयोगे रुणद्धि मेघदूतम् (पूर्व भाग-9) से
(B) 'गुर्वपि विरहदुःखमाशाबन्धः साहयति'–अभि. शाकु.–16
(C) 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः' (**किरात. 1/4**) – वनेचर, युधिष्ठिर से कहता है कि – हितकारी और मनोहारी वचन दुर्लभ होते हैं।
(D) नानाफलं फलति कल्पलतेव भूमिः–नीतिशतकम्-38
अतः विकल्प (C) सही है।

14. 'निगूढतत्त्वं नयवर्त्म विद्विषाम्' – यह उक्ति किसकी है?
(A) वनेचर की **(B) दुर्योधन की**
(C) द्रौपदी की **(D) युधिष्ठिर की**

व्याख्या –
(A) 'निगूढतत्त्वं नयवर्त्म विद्विषाम्' (किरात. 1/6)– **वनेचर**, युधिष्ठिर से कहता है कि – गुप्त रहस्यों वाला नीतिमार्ग जो मेरे द्वारा जाना गया वह आपका प्रभाव है।
(C) 'शमीतरुं शुष्कमिवाग्निरुच्छिखः' – द्रौपदी
नोट – किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में दुर्योधन एवं युधिष्ठिर की एक भी उक्ति नहीं है।
अतः विकल्प (A) सही है।

15. 'तथापि वक्तुं व्यवसाययन्ति मां निरस्तनारीसमया दुराधयः'–यह श्लोकांश किस ग्रन्थ से लिया गया है?
(A) मेघदूतम् से **(B) किरातार्जुनीयम् से**
(C) नीतिशतकम् से **(D) शिवराजविजयम् से**

व्याख्या –
(A) 'ह्रीमूढानां भवति विफलप्रेरणा चूर्णमुष्टिः'–(उत्तरमेघ)
(B) 'तथापि वक्तुं व्यवसाययन्ति मां, निरस्तनारीसमया दुराधयः **(किरात. 1/28)**– प्रस्तुत पद्य में द्रौपदी युधिष्ठिर से कहती है कि – नारी की मर्यादा को नष्ट करने वाली दुष्ट मनोव्यथाएँ मुझे कुछ कहने के लिए उद्यत कर रही हैं।
(C) 'दुर्जनः परिहर्तव्यो विद्ययाऽलंकृतोऽपि सन्' – (नीतिशतकम्)
(D) 'सत्यः पात्यन्ते, सन्तश्च सन्ताप्यन्ते'–(शिवराजविजयम्)
अतः विकल्प (B) सही है।

16. मेघदूतम् है –
(A) कथा **(B) महाकाव्य**
(C) खण्डकाव्य **(D) नाटक**

	ग्रन्थ		काव्यविधा
(A)	कादम्बरी	–	कथा
(B)	किरातार्जुनीयम्	–	महाकाव्य
(C)	**मेघदूतम्**	–	**खण्डकाव्य**/गीतिकाव्य
(D)	अभिज्ञानशाकुन्तलम्	–	नाटक

अतः विकल्प (C) सही है।

17. मेघदूतम् में अभिशप्त यक्ष कहाँ रहता था?
(A) नर्मदा के तट पर **(B) अलकापुरी में**
(C) आम्रकूट पर्वत पर **(D) रामगिरि पर्वत में**

व्याख्या –
(A) **नर्मदा** (रेवा) – मेघ के मार्ग में पड़ने वाली पहली नदी है।
(B) **अलका** – यह कुबेर की राजधानी है। शाप के पूर्व यक्ष अलकापुरी में ही निवास करता था।
(C) **आम्रकूट** – मेघ के मार्ग का पहला पर्वत।
(D) 'स्निग्धच्छायातरुषु वसतिं रामगिर्याश्रमेषु' – प्रस्तुत श्लोकांश से ज्ञात होता है कि – अभिशप्त यक्ष **रामगिरि पर्वत** पर रहता था। (पूर्वमेघ–1)
अतः विकल्प (D) सही है।

12. (A) 13. (C) 14. (A) 15. (B) 16. (C) 17. (D)

18. मेघदूतम् के अनुसार कैलाशपर्वत तक मेघ के सहयात्री कौन होंगे?
(A) राजहंस **(B) बलाका**
(C) चातक **(D) नलगिरि**

व्याख्या –
(A) **राजहंस**– कैलाशपर्वत तक मेघ के सहयात्री। ''आ कैलासाद् .... भवतो राजहंसाः सहायाः'' (पूर्वमेघ-11)
(B) **बलाका** – आकाश में पंक्तिबद्ध होकर बगुलियाँ मेघ से मिलती हैं। ''सेविष्यन्ते नयनसुभगं खे भवन्तं बलाकाः'' (पूर्वमेघ-10)
(C) **चातक**–मेघ के वामपार्श्व (बाईं ओर) में बोलता है।
(D) **नलगिरि** – राजा प्रद्योत का हाथी है।
अतः विकल्प (A) सही है।

19. 'कण्ठाश्लेषप्रणयिनि जने किं पुनर्दूरसंस्थे' – इसमें 'जन' शब्द किसका बोधक है –
(A) मेघ का **(B) यक्षिणी का**
(C) राजहंस का **(D) चातक का**

व्याख्या –
कण्ठ के आलिङ्गन से प्रेम करने वाली मेरी प्रिया रूप जन के दूर होने पर क्या कहा जाय।
इस पद में सप्तमी के कारण ऐसे व्यक्ति की ओर संकेत कर रहा है, जो उस यक्ष के कण्ठालिङ्गन का इच्छुक हो और वह व्यक्ति केवल उसकी प्रिया ही हो सकती है जो उससे दूर स्थित है। 'जने' से अर्थ यहाँ पर प्रिया अर्थात् यक्षिणी है। अतः विकल्प (B) सही है।
स्रोत- 1. मेघदूतम् (पूर्वमेघ-3) आर0बी0 शास्त्री
2. मेघदूतम्- विजेन्द्र शर्मा, पेज-07

20. कालिदास के अनुसार कितने तत्वों की समष्टि से मेघ बनता है?
(A) पाँच **(B) चार**
(C) तीन **(D) दो**

व्याख्या –''धूमज्योतिःसलिलमरुतां सन्निपातः क्व मेघः''– (पूर्वमेघ /5) धुआँ, ज्योति (प्रकाश), जल, वायु इन **चार तत्वों** के सन्निपात से मेघ बना है। अतः विकल्प (B) सही है।

21. कालिदास के अनुसार चेतन और अचेतन में कृपण कौन है?
(A) कामार्त **(B) शोकार्त**
(C) क्षुधार्त **(D) रोगार्त**

व्याख्या – ''**कामार्ता** हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु'' (पूर्वमेघ–5)– कालिदास कहते हैं कि – कामार्त व्यक्ति स्वाभाविक रूप से चेतन और अचेतन में भेद करने में कृपण (दीन) हो जाते हैं।

शब्द	**अर्थ**
कामार्त	कामपीड़ित
शोकार्त	शोक से पीड़ित
क्षुधार्त	भूख से पीड़ित
रोगार्त	रोग से पीड़ित

अतः विकल्प (A) सही है।

22. 'याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा' – इसमें 'अधिगुण' शब्द से किसका बोध होता है?
(A) यक्ष का **(B) मेघ का**
(C) गङ्गा का **(D) कुबेर का**

व्याख्या –
(A) यक्ष- कुबेर का सेवक था जो अपनी प्रिया से दूर रामगिरि पर्वत में रहता था।
(B) 'याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा' (पूर्वमेघ/6)– यहाँ **'अधिगुण' शब्द मेघ के लिए** आया है।
(C) गङ्गा को भगीरथ धरती पर लाये थे, अतः इसे 'भागीरथी' भी कहते हैं।
(D) कुबेर-अलकापुरी का राजा था। जिसने यक्ष को अपनी प्रिया से एकवर्ष तक दूर रहने का शाप दिया था।
अतः विकल्प (B) सही है।

23. मेघ की यात्रा के समय वामपार्श्व में किसकी ध्वनि होती है?
(A) राजहंस की **(B) बलाका की**
(C) चातक की **(D) सारिका की**

व्याख्या –
(A) राजहंस मानसरोवर जाते समय आकाश मार्ग में मेघ के सहयात्री होंगे।
(B) आकाश में पंक्तिबद्ध बगुलियाँ मेघ को देखती हैं।
(C) **'वामश्चायं नदति मधुरश्चातकस्ते सगन्धः'** (पूर्वमेघ /10) – मेघ की यात्रा के समय वामपार्श्व (बाईं ओर) **चातक** बोलते हैं।
(D) यक्ष के घर में यक्षिणी द्वारा पिंजड़े में सारिका (मैना) पाली गयी है।
अतः विकल्प (C) सही है।

18. (A) 19. (B) 20. (B) 21. (A) 22. (B) 23. (C)

24. उत्तररामचरितम् में कुल कितने अङ्क हैं?
(A) 5 **(B) 6**
(C) 7 **(D) 10**

ग्रन्थ		अङ्क
(A) मालविकाग्निमित्रम्	–	5
(B) स्वप्नवासवदत्तम्	–	6
(C) **उत्तररामचरितम्**	–	**7**
(D) मृच्छकटिकम्	–	10

अतः विकल्प (C) सही है।

25. उत्तररामचरितम् में ''छाया अङ्क'' कौन-सा है?
(A) प्रथम **(B) द्वितीय**
(C) तृतीय **(D) चतुर्थ**

अङ्क		नाम
(A) प्रथम अङ्क	–	चित्रदर्शन
(B) द्वितीय अङ्क	–	पञ्चवटीप्रवेश
(C) **तृतीय अङ्क**	**–**	**छाया अङ्क**
(D) चतुर्थ अङ्क	–	कौशल्याजनकयोग

अतः विकल्प (C) सही है।

26. ''त्वं जीवितं त्वमसि मे हृदयं द्वितीयम्'' – उत्तररामचरित में यह किसकी उक्ति है?
(A) वासन्ती की **(B) तमसा की**
(C) मुरला की **(D) सीता की**

व्याख्या –
(A) ''त्वं जीवितं त्वमसि मे हृदयं द्वितीयम्'' (उत्तररामचरितम् 3/26)– **वासन्ती** राम को उलाहना देते हुए कहती हैं कि – 'तुम मेरा जीवन हो, तुम मेरा दूसरा हृदय हो' इत्यादि सैकड़ों वचन आपने सीता के लिए कहा था!
(B) 'विरहव्यथेव वनमेति जानकी' – तमसा
(C) 'शरदिज इव घर्मः केतकीगर्भपत्रम्' – मुरला
(D) 'अहमेवैतस्य हृदयं जानामि ममैषः' – सीता
अतः विकल्प (A) सही है।

27. उत्तररामचरित के तृतीय अङ्क में राम किससे अपनी व्यथा का वर्णन करते हैं?
(A) वासन्ती से **(B) तमसा से**
(C) मुरला से **(D) सीता से**

व्याख्या –
(A) राम **वासन्ती से** अपनी विरहव्यथा का वर्णन करते हैं।
(B) तमसा, सीता के साथ रहती है।
(C) तमसा और मुरला – ये दोनों नदियाँ हैं।
(D) सीता, अपनी बात तमसा से कहती है, क्योंकि पूरे तृतीय अङ्क में राम के साथ वासन्ती और सीता के साथ तमसा रहती है।
अतः विकल्प (A) सही है।

28. 'पुरोत्पीडे तटाकस्य परीवाहः प्रतिक्रिया' में 'पुरोत्पीडे' शब्द का क्या अर्थ है –
(A) वाणी
(B) जलवृद्धि
(C) सरोवर
(D) बादल

शब्द		अर्थ
(A) भारतीनिर्घोषः	–	वाणी
(B) **पुरोत्पीडे**	**–**	**जलवृद्धि**
(C) तटाकः	–	सरोवर
(D) स्तनयित्नुः	–	बादल

अतः विकल्प (B) सही है।

29. 'तोयस्येवाप्रतिहतरयः सैकतं सेतुमोघः' श्लोकांश है?
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से
(B) नीतिशतकम् से
(C) मेघदूतम् से
(D) उत्तररामचरितम् से

व्याख्या –
(A) 'प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा' – अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(B) 'हतविधिपरिपाकः केन वा लङ्घनीयः' – नीतिशतकम्
(C) 'नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण' – मेघदूतम्
(D) 'तोयस्येवाप्रतिहतरयः सैकतं सेतुमोघः' **(उत्तररामचरितम् अङ्क 3/36)** – राम कहते हैं कि – अबाध गति से जाने वाला जलप्रवाह रेत के पुल को तोड़कर फैल जाता है। अतः विकल्प (D) सही है।

24. (C) 25. (C) 26. (A) 27. (A) 28. (B) 29. (D)

30. करुणरस प्रधान नाटक है?
(A) उत्तररामचरितम् (B) मुद्राराक्षसम्
(C) मालतीमाधवम् (D) अभिज्ञानशाकुन्तलम्

	नाटक		प्रधानरस
(A)	**उत्तररामचरितम्**	–	**करुणरस**
(B)	मुद्राराक्षसम्	–	वीररस
(C)	मालतीमाधवम्	–	शृंगाररस
(D)	अभिज्ञानशाकुन्तलम्	–	शृंगाररस

अतः विकल्प (A) सही है।

31. उत्तररामचरित में वर्णित तमसा और मुरला हैं?
(A) दो नदियाँ
(B) वनदेवियाँ
(C) सीता की परिचारिका
(D) लव कुश की परिचारिका

व्याख्या –
(A) 'ततः प्रविशति नदीद्वयम्' – प्रस्तुत पंक्ति तमसा और मुरला के लिए प्रयुक्त है अर्थात् ये **दोनों नदियाँ हैं।**
(B) वासन्ती वनदेवी है और सीता की सखी भी है।
(C) सीता राजा जनक की पुत्री और राम की पत्नी हैं। कुश और लव इनके दो पुत्र हैं। वनवासकाल में इनकी कोई परिचारिका नही थी।
(D) कुश और लव दोनों राम और सीता के पुत्र हैं। कुश बड़ा भाई और लव छोटा है। इनकी भी किसी परिचारिका का उल्लेख नहीं है।
अतः विकल्प (A) सही है।

32. ''करुणस्य मूर्तिरथवा शरीरिणी, विरहव्यथेव वनमेति जानकी'' – यह कथन किसका है?
(A) मुरला का (B) सीता का
(C) राम का (D) तमसा का

व्याख्या –
(A) ''हृदयकमलशोषी दारुणो दीर्घशोकः'' – मुरला
(B) 'दिष्ट्या अपरिहीनधर्मः खलु स राजा' – सीता
(C) 'यत्कल्याणं वयसि तरुणे भाजनं तस्य जातः' – राम
(D) 'करुणस्य मूर्तिरथवा शरीरिणी विरहव्यथेव वनमेति जानकी' (उत्तर. 3/4) – जब सीता गोदावरी से निकलकर पञ्चवटी में प्रवेश करने लगती हैं, तब **तमसा कहती है** – सीता करुणरस की साक्षात् मूर्ति अथवा शरीरधारिणी वियोग व्यथा के तुल्य पञ्चवटी में आ रही हैं।
अतः विकल्प (D) सही है।

33. भवभूति किसके आश्रित कवि थे –
(A) यशोवर्मा के
(B) विक्रमादित्य के
(C) हर्षवर्धन के
(D) विष्णुवर्धन के

	कवि		राज्याश्रय
(A)	**भवभूति**	–	**यशोवर्मा**
(B)	कालिदास	–	विक्रमादित्य
(C)	बाणभट्ट	–	हर्षवर्धन
(D)	भारवि	–	विष्णुवर्धन

अतः विकल्प (A) सही है।

34. शिवराजविजयम् के लेखक हैं?
(A) दण्डी (B) अम्बिकादत्तव्यास
(C) कालिदास (D) भारवि

	ग्रन्थ		लेखक
(A)	दशकुमारचरितम्	–	दण्डी
(B)	**शिवराजविजयम्**	–	**अम्बिकादत्तव्यास**
(C)	ऋतुसंहारम्	–	कालिदास
(D)	किरातार्जुनीयम्	–	भारवि

अतः विकल्प (B) सही है।

35. 'संस्कृत संजीवनी समाज' की स्थापना किसने की?
(A) गोविन्ददास ने
(B) कुसुमदेव ने
(C) माधवभट्ट ने
(D) अम्बिकादत्तव्यास ने

व्याख्या –
* संस्कृत शिक्षा प्रणाली में सुधार के लिए 'संस्कृत संजीवनी समाज' नामक संस्था की स्थापना **अम्बिकादत्त व्यास जी** ने की थी।
अतः विकल्प (D) सही है।

30. (A) 31. (A) 32. (D) 33. (A) 34. (B) 35. (D)

36. संस्कृतसाहित्य में प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास का सौभाग्य किसे प्राप्त है?
(A) नवसाहसाङ्कचरितम् (B) शिवराजविजयम्
(C) कादम्बरी (D) हर्षचरितम्

व्याख्या –
(A) नवसाहसाङ्कचरितम् – संस्कृतसाहित्य का प्रथम ऐतिहासिक महाकाव्य है।
(B) **शिवराजविजयम्** – संस्कृतसाहित्य का प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास।
(C) कादम्बरी – बाणभट्ट कृत कादम्बरी तीन जन्मों की एक काल्पनिक 'कथा' है।
(D) हर्षचरितम् – यह एक 'आख्यायिका' ग्रन्थ है, इसमें कुल 8 उच्छ्वास हैं।
अतः विकल्प (B) सही है।

37. शिवराजविजयम् का प्रधानरस कौन सा है?
(A) करुणरस (B) श्रृंगाररस
(C) शान्तरस (D) वीररस

	ग्रन्थ		प्रधानरस
(A)	उत्तररामचरितम्	–	करुणरस
(B)	नैषधीयचरितम्	–	श्रृंगाररस
(C)	शारिपुत्रप्रकरणम्	–	शान्तरस
(D)	**शिवराजविजयम्**	–	**वीररस**

अतः विकल्प (D) सही है।

38. शिवराजविजयम् की सम्पूर्ण कथा कितने निःश्वासों में विभक्त है?
(A) 5 (B) 8
(C) 10 (D) 12

	ग्रन्थ		विभाजन
(A)	सरस्वतीकण्ठाभरणम्	–	5 परिच्छेद
(B)	हर्षचरितम्	–	8 उच्छ्वास
(C)	काव्यादर्श	–	3 परिच्छेद
(D)	**शिवराजविजयम्**	–	**12 निःश्वास**

अतः विकल्प (D) सही है।

39. शिवराजविजय में किस रीति का आश्रय लिया गया है?
(A) गौडी (B) वैदर्भी
(C) पाञ्चाली (D) इनमें से कोई नहीं

	ग्रन्थ		मुख्य रीति
(A)	महावीरचरितम्	–	गौडी रीति
(B)	अभिज्ञानशाकुन्तलम्	–	वैदर्भी रीति
(C)	**शिवराजविजयम्**	–	**पाञ्चाली** (कहीं कहीं वैदर्भी और गौडी का समन्वय)

अतः विकल्प (C) सही है।

40. भर्तृहरि ने नीतिशतक लिखा है?
(A) गद्य में (B) गद्य, पद्य में
(C) छन्द में (D) श्लोक में

	ग्रन्थ		विधा
(A)	कादम्बरी	–	गद्य में
(B)	अभिज्ञानशाकुन्तलम्	–	गद्य, पद्य में
(C)	**नीतिशतकम्**	–	**विभिन्न छन्दों में**
(D)	गीता	–	श्लोक (अनुष्टुप्) में

अतः विकल्प (C) सही है।

41. नीतिशतक में कितने प्रकार के प्राणी बताये गये हैं?
(A) तीन (B) चार
(C) छः (D) आठ

व्याख्या – प्रायेणाधममध्यमोत्तमगुणः संसर्गतो जायते।
(A) नीतिशतक में भर्तृहरि ने **तीन प्रकार** के प्राणी बताये हैं–
1. अधम 2. मध्यम 3. उत्तम
(B) चार वेद – ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद
(C) ऋतुसंहारम् के 6 सर्गों में वर्णित षट् ऋतुयें – ग्रीष्म, वर्षा, शरद्, हेमन्त, शिशिर, वसन्त
(D) अष्टमूर्ति शिव – जल, अग्नि, यजमान, सूर्य, चन्द्र, आकाश, पृथ्वी, वायुरूप मूर्ति।
अतः विकल्प (A) सही है।

42. 'विद्याविहीनः पशुः' यह उक्ति किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है?
(A) नीतिशतकम् से
(B) मेघदूतम् से
(C) उत्तररामचरितम् से
(D) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से

व्याख्या –
(A) **'विद्याविहीनः पशुः'** – विद्या से विहीन व्यक्ति पशु है, **(नीतिशतकम्–17)**
(B) 'स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु'–(मेघदूतम्–19)
(C) 'भवति ननु लाभो हि रुदितम्' – (उत्तररामचरितम्)
(D) 'उचितं न ते मङ्गलकाले रोदितुम्'–(अभिज्ञान. शाकु.)
अतः विकल्प (A) सही है।

36. (B) 37. (D) 38. (D) 39. (C) 40. (C) 41. (A) 42. (A)

43. 'प्रारब्धमुत्तमजना न परित्यजन्ति' – श्लोकांश उद्धृत है?

(A) मेघदूतम् से (B) कादम्बरी से
(C) नीतिशतकम् से (D) किरातार्जुनीयम् से

व्याख्या –

(A) 'के वा न स्युः परिभवपदं निष्फलारम्भयत्नाः'–(मेघदूतम्)
(B) 'पुरुषोत्तमरतापि खलजनप्रिया'–(कादम्बरी शुकनासोपदेश)
(C) **'प्रारब्धमुत्तमजना न परित्यजन्ति'** – भर्तृहरि कहते हैं कि – उत्तम प्रकृति के लोग विघ्नों द्वारा बार-बार आहत किये जाने पर भी आरम्भ किये हुए कार्य को नहीं त्यागते हैं। – **(नीतिशतकम्-73)**
(D) 'मनोरमामात्मवधूमिव श्रियम्' – (किरातार्जुनीयम्)
अतः विकल्प (C) सही है।

44. 'सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः' – श्लोकांश में 'परमगहनो' का क्या अर्थ है?

(A) अत्यन्त कठिन (B) असंगत बोलने वाले
(C) धोखा न देने वाले (D) लज्जावाली

	शब्द	**अर्थ**
(A)	**परमगहनो**	– **अत्यन्तकठिन (असम्भव)**
(B)	जल्पकः	– असंगत बोलने वाले
(C)	अवञ्चकः	– धोखा न देने वाले
(D)	ह्रीमति	– लज्जावाली

अतः विकल्प (A) सही है।

45. कादम्बरी की कथा है?

(A) कल्पनाप्रसूत
(B) रामायण पर आधारित
(C) महाभारत पर आधारित
(D) पूर्णतः काल्पनिक

	ग्रन्थ	**उपजीव्य**
(A)	**कादम्बरी**	– **कल्पनाप्रसूत** (गुणाढ्य बृहत्कथा)
(B)	अभिषेकनाटक	– रामायण पर आधारित
(C)	वेणीसंहारम्	– महाभारत पर आधारित
(D)	मालतीमाधवम्	– पूर्णतः काल्पनिक

अतः विकल्प (A) सही है।

46. कादम्बरी में कितने जन्मों की कथा है?

(A) दो (B) तीन
(C) चार (D) पाँच

व्याख्या –

कादम्बरी में **तीन जन्मों** की कथा का वर्णन है।
तीन जन्मों के नाम –

1	2	3
पुण्डरीक	वैशम्पायन	शुक
चन्द्रमा	चन्द्रापीड	शूद्रक

अतः विकल्प (B) सही है।

47. 'ऐश्वर्यतिमिरान्धत्वम्' यह कथन किस ग्रन्थ का है?

(A) शुकनासोपदेश का
(B) मेघदूतम् का
(C) नीतिशतकम् का
(D) किरातार्जुनीयम् का

व्याख्या –

(A) ''ऐश्वर्यतिमिरान्धत्वम्' – कादम्बरी **शुकनासोपदेश** में शुकनास, चन्द्रापीड को उपदेश देते हुए कहते हैं कि – ऐश्वर्यरूपी अन्धकार की चिकित्सा अञ्जनलिप्त शलाका से नहीं की जा सकती है।
(B) 'मन्दायन्ते न खलु सुहृदामभ्युपेतार्थकृत्याः – मेघदूतम् से
(C) 'सत्संगतिः कथय किं न करोति पुंसाम् – नीतिशतकम् से
(D) 'गुणानुरोधेन विना न सत्क्रिया' – किरातार्जुनीयम् से
अतः विकल्प (A) सही है।

48. 'पार्वतीपरिणय' किसकी रचना है?

(A) कालिदास (B) बाणभट्ट
(C) माघ (D) कुमारदास

रचना		**रचनाकार**
(A) ऋतुसंहारम्	–	कालिदास
(B) **पार्वतीपरिणयम्**	–	**बाणभट्ट**
(C) शिशुपालवधम्	–	माघ
(D) जानकीहरणम्	–	कुमारदास

अतः विकल्प (B) सही है।

43. (C) 44. (A) 45. (A) 46. (B) 47. (A) 48. (B)

49. कर्ता का इष्टतम कारक है?
(A) कर्मकारक (B) करणकारक
(C) सम्प्रदानकारक (D) अपादानकारक

व्याख्या –
(A) 'कर्तुरीप्सिततमं कर्म' (1/4/49) सूत्र से कर्ता अपनी क्रिया द्वारा जिसको सबसे अधिक चाहता है उसकी **कर्मसंज्ञा** होती है यथा – हरिं भजति।
(B) 'साधकतमं करणम्' (1/4/42) – करणकारकसंज्ञा
(C) 'कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्' (1/4/32) – सम्प्रदानसंज्ञा
(D) 'ध्रुवमपायेऽपादानम्' (1/4/24) – अपादानकारक संज्ञा
अतः विकल्प (A) सही है।

50. 'इत्थंभूतलक्षणे' से सम्बन्धित विभक्ति है?
(A) द्वितीया विभक्ति (B) तृतीया विभक्ति
(C) चतुर्थी विभक्ति (D) पञ्चमी विभक्ति

व्याख्या –
(A) 'तथायुक्तं चानीप्सितम्' (1/4/50) – 'द्वितीयाविभक्ति का सूत्र। ग्रामं गच्छन् तृणं स्पृशति।
(B) **'इत्थंभूतलक्षणे'** (2/3/21) सूत्र से किसी विशेष लक्षण को प्राप्त हुए व्यक्ति अथवा वस्तु के लक्षण में **तृतीया विभक्ति** होती है। यथा – जटाभिः तापसः।
(C) रुच्यर्थानां प्रीयमाणः (1/4/33) – चतुर्थी विभक्ति में। यथा– चन्दनाय चाकलेहः रोचते।
(D) पराजेरसोढः (1/4/26) – पञ्चमी विभक्ति में। यथा– बालकः अध्ययनात् पराजयते।
अतः विकल्प (B) सही है।

51. 'प्रजाभ्यः स्वस्ति' में चतुर्थी विभक्ति का सूत्र है –
(A) हितयोगे च (B) रुच्यर्थानां प्रीयमाणः
(C) चतुर्थी सम्प्रदाने (D) नमःस्वस्तिस्वाहास्वधा...

व्याख्या –
(A) हितयोगे च (वार्तिक) – ब्राह्मणाय हितम्
(B) रुच्यर्थानां प्रीयमाणः – (1/4/33) हरये रोचते भक्तिः
(C) चतुर्थी सम्प्रदाने (2/3/13) – विप्राय गां ददाति
(D) **नमःस्वस्तिस्वाहास्वधाऽलंवषड्योगाच्च** (2/3/16) सूत्र से नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलम् और वषट् अव्यय पदों के योग में भी चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा – प्रजाभ्यः स्वस्ति। अतः विकल्प (D) सही है।

52. 'चौराद् बिभेति' में पञ्चमी विभक्ति किस सूत्र से है?
(A) पञ्चमी विभक्ते (B) भीत्रार्थानां भयहेतुः
(C) आख्यातोपयोगे (D) जनिकर्तुः प्रकृतिः

व्याख्या –
(A) अपादाने पञ्चमी (2/3/28) – धावतोऽश्वात् पतति
(B) **भीत्रार्थानां भयहेतुः** (1/4/25) – सूत्र से भय और त्राण अर्थवाली धातुओं के योग में भय के कारण की अपादानसंज्ञा होकर उसमें पञ्चमी विभक्ति होती है यथा – चौराद् बिभेति
(C) आख्यातोपयोगे (1/4/29) – उपाध्यायात् अधीते
(D) जनिकर्तुः प्रकृतिः (1/4/30) – ब्रह्मणः प्रजाः प्रजायन्ते
अतः विकल्प (B) सही है।

53. अनुक्त कर्म में विभक्ति है?
(A) द्वितीया (B) तृतीया
(C) चतुर्थी (D) पञ्चमी

व्याख्या –
(A) **'कर्मणि द्वितीया'** (2/3/2) सूत्र से अनुक्त कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है, यथा – हरिं भजति।
(B) 'कर्तृकरणयोस्तृतीया' (2/3/18) – सूत्र से अनुक्त कर्ता तथा करण में तृतीया विभक्ति होती है।
(C) 'चतुर्थी सम्प्रदाने' (2/3/13) सूत्र से अनभिहित सम्प्रदान कारक में चतुर्थी विभक्ति होती है।
यथा – ब्राह्मणाय गां ददाति।
(D) अपादाने पञ्चमी (2/3/28) सूत्र से अनभिहित (अनुक्त) अपादान कारक में पञ्चमी विभक्ति होती है।
यथा – बालकः ग्रामात् आयाति।
अतः विकल्प (A) सही है।

54. 'पादेन खञ्जः' में तृतीया विभक्ति है?
(A) 'येनाङ्गविकार' से
(B) 'सहयुक्तेऽप्रधाने' से
(C) 'साधकतमं करणम्' से
(D) 'कर्तृकरणयोस्तृतीया' से

व्याख्या –
(A) **'येनाङ्गविकारः'** (2/3/20) सूत्र से जिस अङ्ग के द्वारा अङ्गी का विकार लक्षित हो उसमें तृतीया विभक्ति होती है। यथा – पादेन खञ्जः।
(B) 'सहयुक्तेऽप्रधाने' (2/3/19) सूत्र से – पुत्रेण सह आगतः पिता।
(C) 'साधकतमं करणम्' (1/4/42) सूत्र से–बाणेन हतो बाली।
(D) 'कर्तृकरणयोस्तृतीया' (2/3/18) सूत्र से–रामेण हतो बाली।
अतः विकल्प (A) सही है।

49. (A) 50. (B) 51. (D) 52. (B) 53. (A) 54. (A)

55. 'बलिं याचते वसुधाम्' यहाँ 'बलि' की कर्मसंज्ञा विधायक सूत्र है?
(A) अकथितं च
(B) अपवर्गे तृतीया
(C) तथायुक्तं चानीप्सितम्
(D) अभिनिविशश्च

व्याख्या –
(A) **'अकथितं च'** (1/4/51) सूत्र से जब वक्ता अपादान आदि कारक न कहना चाहे तो वहाँ **कर्मकारक** तथा द्वितीया विभक्ति होती है यथा – बलिं याचते वसुधाम्।
(B) 'अपवर्गे तृतीया' (2/3/6) सूत्र से–अह्ना अनुवाकोऽधीतः।
(C) 'तथायुक्तं चानीप्सितम्' (1/4/50) सूत्र से – ग्रामं गच्छन् तृणं स्पृशति।
(D) 'अभिनिविशश्च' (1/4/47) सूत्र से – अभिनिविशते सन्मार्गम्।
अतः विकल्प (A) सही है।

56. लृट्लकार किस काल का बोधक है?
(A) भूतकाल **(B) आज्ञार्थक**
(C) भविष्यकाल **(D) वर्तमानकाल**

	लकार		**कालबोधक**
(A)	लङ्लकार	–	भूतकाल
(B)	लोट्लकार	–	आज्ञार्थक
(C)	**लृट्लकार**	–	**भविष्यकाल**
(D)	लट्लकार	–	वर्तमानकाल

अतः विकल्प (C) सही है।

57. संस्कृत में 'धातुरूप' कहते हैं?
(A) संज्ञापद को **(B) कर्मपद को**
(C) क्रियापद को **(D) विशेषणपद को**

व्याख्या –
संस्कृत में **क्रियापद** को धातुरूप कहते हैं।
अतः विकल्प (C) सही है।

58. इनमें से कौन-सी धातु सकर्मक नहीं है?
(A) पठ् **(B) हन्**
(C) लिख् **(D) नृत्**

व्याख्या – नृत् (नाचना) अकर्मक धातु है। शेष सभी सकर्मक धातुएँ हैं। यथा– नृत्यति, नृत्यतः नृत्यन्ति
अतः विकल्प (D) सही है।

59. 'गच्छेत्' किस लकार का रूप है?
(A) लट्लकार का **(B) लोट्लकार का**
(C) लङ्लकार का **(D) विधिलिङ्लकार का**

व्याख्या –
'गम्' धातु का रूप निम्न लकारों में इस प्रकार चलता है –
(A) लट्लकार प्र. पु. – गच्छति गच्छतः गच्छन्ति
(B) लोट्लकार प्र. पु. – गच्छतु गच्छताम् गच्छन्तु
(C) लङ्लकार प्र. पु. – अगच्छत् अगच्छताम् अगच्छन्
(D) **विधिलिङ्लकार** प्र. पु.–**गच्छेत्** गच्छेताम् गच्छेयुः
अतः विकल्प (D) सही है।

60. 'भू' धातु लट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप है?
(A) भवामि **(B) भवथ**
(C) भवन्ति **(D) भवति**

व्याख्या – भू धातु के रूप निम्न लकारों में इस प्रकार है–
(A) लट्लकार उ. पु. – भवामि भवावः भवामः
(B) लट्लकार म. पु. – भवसि भवथः भवथ
(C)+(D) लट्लकार प्र. पु.– **भवति** भवतः भवन्ति
अतः विकल्प (D) सही है।

61. 'सखि' शब्द का प्रथमा बहुवचन का रूप है?
(A) सखा **(B) सखायौ**
(C) सखायः **(D) इनमें से कोई नहीं**

व्याख्या –
'सखि' (मित्र) इकारान्त पुंलिङ्ग का रूप प्रथमा में – ''सखा सखायौ **सखायः**'' बनता है। अतः विकल्प (C) सही है।

62. 'भूपति' शब्द का षष्ठी एकवचन का रूप है?
(A) भूपत्याः **(B) भूपत्युः**
(C) भूपतेः **(D) भूपतयः**

व्याख्या –
भूपति (राजा) शब्द का रूप षष्ठी विभक्ति में –
* **भूपतेः** भूपत्योः भूपतीनाम्
* प्रथमा में – भूपतिः भूपती भूपतयः
* ''भूपत्याः, भूपत्युः'' रूप सातों विभक्तियों में कहीं नहीं बनता है। अतः विकल्प (C) सही है।

55. (A) 56. (C) 57. (C) 58. (D) 59. (D) 60. (D) 61. (C) 62. (C)

63. 'विश्वपा' शब्द का सप्तमी एकवचन का रूप है?
(A) विश्वपायाम् **(B) विश्वपि**
(C) विश्वपोः **(D) विश्वासु**

व्याख्या –
* विश्वपा (आकारान्त पुंलिङ्ग) शब्द का सप्तमी विभक्ति में– ''**विश्वपि,** विश्वपोः, विश्वपासु'' रूप बनता है।
* विश्वपायाम् विश्वासु रूप सातों विभक्तियों में कहीं नहीं बनता है। अतः विकल्प (B) सही है।

64. 'नदी' शब्द का द्वितीया बहुवचन का रूप है?
(A) नदीः **(B) नद्यः**
(C) नदीन् **(D) नद्या**

व्याख्या –
* 'नदी' (ईकारान्त, स्त्रीलिङ्ग) शब्द का रूप निम्न विभक्तियों में इसप्रकार बनता है–

प्रथमा में –	नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वितीया में –	नदीम्	नद्यौ	**नदीः**
तृतीया में –	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः

* 'नदीन्' रूप सातों विभक्तियों में कहीं नहीं बनता है।
अतः विकल्प (A) सही है।

65. 'गो' शब्द का षष्ठी बहुवचन का रूप होगा?
(A) गोनाम् **(B) गोवाम्**
(C) गवाम् **(D) गवानाम्**

व्याख्या –
* 'गो' (गाय या बैल) ओकारान्त पुंलिङ्ग का रूप षष्ठी विभक्ति में – ''गोः, गवोः, **गवाम्**'' बनता है।
* गोनाम्, गोवाम्, गवानाम् रूप सातों विभक्तियों में कहीं नहीं बनते हैं। अतः विकल्प (C) सही है।

66. 'तत्' शब्द का स्त्रीलिङ्ग, षष्ठी बहुवचन का रूप है?
(A) तेषाम् **(B) तस्याम्**
(C) तासाम् **(D) ताषाम्**

व्याख्या –

तत् (स्त्रीलिङ्ग) का षष्ठी में –	तस्याः	तयोः	**तासाम्**
सप्तमी में –	तस्याम्	तयोः	तासु
पुंलिङ्ग षष्ठी में –	तस्य	तयोः	तेषाम्

* 'ताषाम्' रूप तीनों लिङ्गों, सातों विभक्तियों में कहीं नहीं बनता है। अतः विकल्प (C) सही है।

67. 'अस्मद्' शब्द का चतुर्थी बहुवचन में रूप होगा?
(A) मह्यम् **(B) आवाभ्याम्**
(B) अस्मत् **(D) अस्मभ्यम्**

व्याख्या –
* **अस्मद्** (सर्वनाम) का चतुर्थी विभक्ति में रूप –
मह्यम् आवाभ्याम् **अस्मभ्यम्।**
* पञ्चमी विभक्ति में – मत्, आवाभ्याम्, अस्मत्
अतः विकल्प (D) सही है।

68. 'युष्मद्' शब्द का षष्ठी एकवचन का रूप है?
(A) तव **(B) त्वत्**
(C) युष्मत् **(D) युष्माकम्**

व्याख्या –
* **युष्मद्** (सर्वनाम) का षष्ठी विभक्ति में रूप –
तव युवयोः युष्माकम्
* पञ्चमी विभक्ति में – त्वत्, युवाभ्याम्, युष्मत्
अतः विकल्प (A) सही है।

69. 'सर्व' शब्द का स्त्रीलिङ्ग सप्तमी एकवचन का रूप है?
(A) सर्वस्मिन् **(B) सर्वस्याम्**
(C) सर्वयोः **(D) सर्वेषु**

व्याख्या –
* '**सर्व**' शब्द (स्त्रीलिङ्ग) का सप्तमी में रूप –
सर्वस्याम् सर्वयोः सर्वासु
* 'सर्व' शब्द पुंलिङ्ग में सप्तमी का रूप –
सर्वस्मिन् सर्वयोः सर्वेषु
अतः विकल्प (B) सही है।

70. 'तद्' शब्द का पुंलिङ्ग द्वितीया बहुवचन का रूप बनता है?
(A) तौ **(B) तम्**
(C) तान् **(D) तेषाम्**

व्याख्या –
* तद् शब्द पुंलिङ्ग द्वितीया विभक्ति में– ''तम् तौ **तान्**'' रूप बनता है।
* षष्ठी में – ''तस्य, तयोः, तेषाम्''
अतः विकल्प (C) सही है।

63. (B) 64. (A) 65. (C) 66. (C) 67. (D) 68. (A) 69. (B) 70. (C)

71. 'अकः सवर्णे दीर्घः' सूत्र है?
(A) स्वरसन्धि का **(B) व्यञ्जनसन्धि का**
(C) विसर्गसन्धि का **(D) यण्सन्धि का**

व्याख्या –
(A) 'अकः सवर्णे दीर्घः' (6/1/101) सूत्र से अक् प्रत्याहार (अ, इ, उ, ऋ, ऌ) के बाद समान स्वर (ह्रस्व या दीर्घ) आये तो दोनों के स्थान पर दीर्घस्वरसन्धि होगी। यथा – देव + आलयः = देवालयः
(B) 'स्तोः श्चुना श्चुः' (8/4/40) सूत्र से – सत् + चित् = सच्चित्
(C) 'रोऽसुपि' (8/2/69) सूत्र से – अहन् + अहन् = अहरहः
(D) 'इको यणचि' (6/1/77) सूत्र से – सुधी + उपास्यः = सुध्युपास्यः
अतः विकल्प (A) सही है।

72. 'पावकः' का सन्धिविच्छेद है?
(A) प + अकः **(B) पो + अकः**
(C) पौ + अकः **(D) पाव + अकः**

व्याख्या – 'एचोऽयवायावः' (6/1/78) सूत्र से ए, ओ, ऐ, औ के स्थान पर क्रमशः अय्, अव्, आय्, आव् हो जाता है यथा–**पौ + अकः = पावकः** (औ + अ = आव्) अतः विकल्प (C) सही है। अन्य सभी विकल्प गलत है।

73. 'रामश्चलति' उदाहरण है –
(A) यण्सन्धि का **(B) गुणसन्धि का**
(C) हल्सन्धि का **(D) दीर्घसन्धि का**

व्याख्या –
(A) 'इको यणचि' (6/1/77) सूत्र से – यदि + अपि = यद्यपि (यण् सन्धि)
(B) 'आद्गुणः' (6/1/87) सूत्र से – गङ्गा + उदकम् = गङ्गोदकम् (गुणसन्धि)
(C) 'स्तोः श्चुना श्चुः' (8/4/40) सूत्र से स और तवर्ग के किसी वर्ण का जब श और चवर्ग के किसी वर्ण से योग होता है तो 'स्' के स्थान पर 'श्' और तवर्ग के स्थान पर चवर्ग हो जाता है यथा – रामस् + चलति =रामश्चलति। यह **हल्सन्धि का सूत्र** है।
(D) 'अकः सवर्णे दीर्घः' (6/1/101) सूत्र से – कवि + इन्द्रः = कवीन्द्रः (दीर्घ सन्धि)
अतः विकल्प (C) सही है।

74. 'तट्टीका' शब्द किस सूत्र से बना है?
(A) स्तोः श्चुना श्चुः **(B) एङि पररूपम्**
(C) ष्टुना ष्टुः **(D) झलां जशोऽन्ते**

व्याख्या –
(A) 'स्तोः श्चुना श्चुः' (8/4/40) सूत्र से – रामस् + शेते = रामश्शेते।
(B) 'एङि पररूपम्' (6/1/94) सूत्र से – प्र + एजते = प्रेजते।
(C) **'ष्टुना ष्टुः'** (8/4/41) सूत्रानुसार स और तवर्ग के स्थान पर ष् और टवर्ग हो जाता है यथा – तत् + टीका = तट्टीका
(D) 'झलां जशोऽन्ते' (8/2/39) सूत्र से – वाक् + ईशः = वागीशः।
अतः विकल्प (C) सही है।

75. 'शिवोऽर्च्यः' का सन्धि विच्छेद होगा?
(A) शिवस् + अर्च्यः **(B) शिवो + अर्च्य**
(C) शिव + अर्च्य **(D) शिवस् + च**

व्याख्या – शिवस् + अर्च्यः यहाँ 'ससजुषो रुः' (8/2/66) सूत्र से पदान्त 'स्' के स्थान पर 'रु' आदेश होकर शिव रु + अर्च्यः पुनः 'अतो रोरप्लुतादप्लुते' (6/1/113) सूत्र से 'रु' के स्थान पर 'उ' आदेश होकर शिव उ + अर्च्यः बना फिर 'आद् गुणः' (6/1/87) से गुण होकर शिवो + अर्च्यः बना।
पुनः 'एङः पदान्तादति' सूत्र से पूर्वरूप आदेश होकर शिवो + अर्च्यः = शिवोऽर्च्यः रूप सिद्ध होता है।
अतः विकल्प (A) सही है।

76. 'मनोरथः' का सन्धि विच्छेद है?
(A) मनो + रथः **(B) मनर् + रथः**
(C) मनस् + रथः **(D) मन + रथ**

व्याख्या – यहाँ **'मनस् + रथः'** में सकार के स्थान पर 'रु' आदेश। अनुबन्धलोप होकर 'मनर्' + रथः' यहाँ ''रो रि'' और ''हशि च'' दोनों सूत्रों की प्राप्ति होगी, तदनन्तर ''हशि च'' सूत्र से उत्व होकर 'मन उ रथः' बनेगा। पुनः ''आद् गुणः'' से गुण होकर 'मनोरथः' सिद्ध होगा। अतः विकल्प (C) सही है।

71. (A)	72. (C)	73. (C)	74. (C)	75. (A)	76. (C)

77. 'अधिहरि' में समास है –
(A) अव्ययीभावसमास (B) तत्पुरुषसमास
(C) केवलसमास (D) बहुव्रीहिसमास

व्याख्या –
(A) 'अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि......साकल्यान्तवचनेषु' (2/1/6) सूत्र से विभक्ति अर्थ में 'अधि' अव्यय का 'हरि ङि' सुबन्त के साथ समास होकर 'हरौ इति = अधिहरि' में **अव्ययीभावसमास** होगा।
(B) 'षष्ठी' (2/2/8) सूत्र से – 'राज्ञः पुरुषः = राजपुरुषः' में षष्ठी तत्पुरुषसमास होगा।
(C) 'सह सुपा' (2/1/4) सूत्र से – ''पूर्वं भूतः = भूतपूर्वः'' में केवलसमास होगा।
(D) 'अनेकमन्यपदार्थे' (2/2/24) सूत्र से – ''ऊढः रथः येन सः = ऊढरथः'' में बहुव्रीहिसमास होगा।
अतः विकल्प (A) सही है।

78. 'अब्राह्मणः' में तत्पुरुषसमास है?
(A) तृतीयातत्पुरुष के कारण
(B) द्वितीयातत्पुरुष के कारण
(C) नञ्तत्पुरुष के कारण
(D) पञ्चमीतत्पुरुष के कारण

व्याख्या –
(A) 'तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन' (2/1/30) सूत्र से – शङ्कुलया खण्डः = शङ्कुलाखण्डः (तृतीयातत्पुरुष)
(B) 'द्वितीया श्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नैः' (2/1/24) सूत्र से–आशाम् अतीतः = आशातीतः (द्वितीयातत्पुरुष)
(C) ''न लोपो नञः'' (6/3/73) सूत्रानुसार नञ् के न् का लोप हो जाता है, ञ् इत्संज्ञक होकर लोप हो जाता है केवल अ बचता है। यथा– **न ब्राह्मणः = अब्राह्मणः (नञ् तत्पुरुष)**
(D) ''पञ्चमी भयेन'' (2/1/37) सूत्र से – चोराद् + भयम् = चोरभयम् (पञ्चमीतत्पुरुष)
अतः विकल्प (C) सही है।

79. द्वन्द्वसमास के भेद हैं?
(A) दो भेद (B) तीन भेद
(C) पाँच भेद (D) एक भेद

व्याख्या –
द्वन्द्वसमास के **तीन भेद** हैं –
1. इतरेतर द्वन्द्वसमास
2. समाहार द्वन्द्वसमास
3. एकशेष द्वन्द्वसमास
नोट– द्वन्द्वसमास के मुख्यतः दो ही भेद हैं। 'एकशेष' तो वृत्ति है किन्तु आयोग ने इसका उत्तर तीन माना है।
अतः विकल्प (B) सही है।

80. 'चन्द्रशेखरः' में समास है?
(A) तत्पुरुष (B) अव्ययीभाव
(C) बहुव्रीहि (D) द्वन्द्व

व्याख्या –
(A) 'स्तोकान्तिकदूरार्थकृच्छ्राणि क्तेन' (2/1/39) सूत्र से – अन्तिकात् आगतः = अन्तिकादागतः (अलुक् तत्पुरुष)
(B) विभक्ति अर्थ में 'अध्यात्मम्' में अव्ययीभावसमास।
(C) 'अनेकमन्यपदार्थे' (2/2/24) सूत्र से जहाँ अन्य पद की प्रधानता हो, वहाँ बहुव्रीहिसमास होता है यथा– चन्द्रः शेखरे यस्य सः = चन्द्रशेखरः
(D) 'धर्मादिष्वनियमः' वार्तिक से - धर्मश्च अर्थश्च = धर्मार्थौ अथवा अर्थधर्मौ (द्वन्द्वसमास)
अतः विकल्प (C) सही है।

81. 'धवखदिरौ' में समास है?
(A) द्विगुसमास (B) द्वन्द्वसमास
(C) कर्मधारयसमास (D) तत्पुरुषसमास

व्याख्या –
(A) 'तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च' (2/1/51) सूत्र से 'पञ्चानां गवां समाहारः = पञ्चगवम्' में द्विगुसमास है।
(B) 'चार्थे द्वन्द्वः' (2/2/29) सूत्रानुसार 'च' के अर्थ में अनेक सुबन्तों का समास होता है और उसकी द्वन्द्वसंज्ञा होती है। यथा – 'धवश्च खदिरश्च = धवखदिरौ' में द्वन्द्वसमास।
(C) 'विशेषणं विशेष्येण बहुलम्' (2/1/57) सूत्र से – ''कृष्णः सर्पः = कृष्णसर्पः'' में कर्मधारयसमास है।
(D) 'कर्तृ-करणे कृता बहुलम्' (2/1/32) सूत्र से 'हरिणा त्रातः = हरित्रातः' में तृतीया तत्पुरुषसमास है।
अतः विकल्प (B) सही है।

77. (A) 78. (C) 79. (B) 80. (C) 81. (B)

82. 'भूतपूर्वः' में समास विधायक सूत्र है?
(A) कुगतिप्रादयः
(B) उपसर्जनं पूर्वम्
(C) प्राक् कडारात् समासः
(D) सह सुपा

व्याख्या –
(A) 'कुगतिप्रादयः' (2/2/18) सूत्र से 'कुत्सितः पुरुषः = कुपुरुषः' में गतितत्पुरुषसमास होगा।
(B) 'उपसर्जनं पूर्वम्' (2/2/30) सूत्र से उपसर्जनसंज्ञा का समास में पूर्वनिपात होता है।
(C) 'प्राक् कडारात् समासः' (2/1/3) यह अधिकार सूत्र है।
(D) **'सह सुपा'** (2/1/4) सूत्र से समर्थ सुबन्त का समर्थ सुबन्त के साथ विकल्प से समास होता है। यथा– "पूर्वं भूतः = भूतपूर्वः" में केवलसमास होगा।
अतः विकल्प (D) सही है।

83. '49' का संस्कृत शब्दात्मक रूप होगा?
(A) नवचत्वारिंशत् **(B) नवपञ्चाशत्**
(C) एकोनचत्वारिंशत् **(D) एकोनत्रिंशत्**

	संख्या		शब्दात्मक रूप
(A)	**49**	–	**नवचत्वारिंशत्**
(B)	59	–	नवपञ्चाशत्
(C)	39	–	एकोनचत्वारिंशत्
(D)	29	–	एकोनत्रिंशत्

अतः विकल्प (A) सही है।

84. '99' का संस्कृत शब्द होगा?
(A) नवतिः
(B) नवनवतिः
(C) षण्णवतिः
(D) एकोननवतिः

	संख्या		संस्कृत-शब्द
(A)	90	–	नवतिः
(B)	**99**	**–**	**नवनवतिः**
(C)	96	–	षण्णवतिः
(D)	89	–	एकोननवतिः

अतः विकल्प (B) सही है।

85. '33' को संस्कृत में कैसे लिखेंगे?
(A) त्रयोत्रिशत्
(B) त्रयशती
(C) त्रयस्त्रिंशत्
(D) त्रयोस्त्रिशती

व्याख्या – "33" का संस्कृत शब्दात्मक रूप त्रयस्त्रिंशत् होगा। अतः विकल्प (C) सही है। शेष विकल्प गलत है।

82. (D)	83. (A)	84. (B)	85. (C)

प्रशिक्षित-स्नातकशिक्षक-चयनपरीक्षा (TGT)–2003

1. ''अन्तःकरणतत्त्वस्य दम्पत्योः स्नेहसंश्रयात् आनन्दग्रन्थिरेकोऽयमपत्यमिति पठ्यते'' – यहाँ 'अपत्यम्' शब्द का अर्थ है?

(A) विश्वास (B) सन्तान
(C) सीधा (D) गर्भिणी

व्याख्या – प्रस्तुत श्लोक में तमसा कहती है कि – पति और पत्नी के हृदयरूपी तत्त्व के प्रेम का आश्रय होने के कारण 'सन्तान' यह अनुपम सुख की गाँठ कही जाती है। (उत्तर रामचरितम् 3/17)

	शब्द		अर्थ
(A)	प्रत्ययः	–	विश्वास
(B)	**अपत्यम्**	**–**	**सन्तान**
(C)	अनरालम्	–	सीधा
(D)	आपन्नसत्वा	–	गर्भिणी

अतः विकल्प (B) सही है।

2. ''स वर्णिलिङ्गी विदितः समाययौ युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचरः'' – इस श्लोक में 'वर्णिलिङ्गी' शब्द का अर्थ है?

(A) ब्रह्मचारी (B) ब्राह्मण
(C) राजा लोग (D) आत्मीयजन

	शब्द		अर्थ
(A)	**वर्णिलिङ्गी**	–	**ब्रह्मचारी**
(B)	द्विजः	–	ब्राह्मण
(C)	क्षितीशाः	–	राजा लोग
(D)	परेतरान्	–	आत्मीयजन

अतः विकल्प (A) सही है।

3. 'किरातार्जुनीयम्' काव्य में दुर्योधन अपनी श्रेष्ठता प्रदर्शित करने के लिए जो आचरण करता है वह आचरण/नीति निर्धारित है –

(A) बृहस्पति के द्वारा (B) नारद के द्वारा
(C) मनु के द्वारा (D) कामन्दक के द्वारा

व्याख्या – ''कृतारिषड्वर्गजयेन मानवीमगम्यरूपां पदवीं प्रपित्सुना'' (किरात. 1/9) अर्थात् छः शत्रुओं के समुदाय पर विजय प्राप्त करने वाला वह दुर्योधन **मनु द्वारा प्रतिपादित** आचरण का पालन करता है।
अतः विकल्प (C) सही है।

4. दुर्योधन कुरु की प्रजा को प्रसन्न करने के लिए जो विशेष व्यवस्था करता है, वह सम्बन्धित है –

(A) करों को उदार बनाने में
(B) उपहार बाँटने में
(C) कृष्ण के साथ सम्बन्धों को सुधारने में
(D) सिंचाई व्यवस्था को उन्नत करने में

व्याख्या – 'वितन्वति क्षेममदेवमातृकाश्चिराय तस्मिन् कुरवश्चकासति' (किरात. 1/17) अर्थात् वर्षा के जल पर ही निर्भर न रहने वाले कुरुदेशवासी (नदी, नहर से **सिंचाई करने की व्यवस्था** दुर्योधन द्वारा की गई है) धान्य आदि सम्पत्ति को धारण करते शोभित होते हैं।
अतः विकल्प (D) सही है।

5. 'किरातार्जुनीयम्' का कथानक लिया गया है?

(A) वनपर्व से (B) सभापर्व से
(C) आदिपर्व से (D) भीष्मपर्व से

	ग्रन्थ		महाभारत का पर्व
(A)	**किरातार्जुनीयम्**	–	**वनपर्व से**
(B)	शिशुपालवधम्	–	सभापर्व से
(C)	अभिज्ञानशाकुन्तलम्	–	आदिपर्व से
(D)	गीता	–	भीष्मपर्व से

अतः विकल्प (A) सही है।

6. 'मखेष्वखिन्नोऽनुमतः पुरोधसा, धिनोति हव्येन हिरण्यरेतसम्' – प्रस्तुत श्लोक में 'हिरण्यरेतसम्' का अर्थ है?

(A) अग्नि (B) इन्द्र
(C) कुबेर (D) ब्रह्मा

व्याख्या – वनेचर, दुर्योधन के विषय में कहता है कि – पुरोहित की आज्ञा के अनुसार बिना थके हुए यज्ञों में हव्य के द्वारा अग्नि को प्रसन्न करता है। (किरात. 1/22)

	शब्द		अर्थ
(A)	**हिरण्यरेताः**	–	**अग्नि**
(B)	वासवः	–	इन्द्र
(C)	वसुः	–	कुबेर
(D)	स्रष्टा	–	ब्रह्मा

अतः विकल्प (A) सही है।

1. (B) 2. (A) 3. (C) 4. (D) 5. (A) 6. (A)

7. 'ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रह्मापि नरं न रञ्जयति' – श्लोकांश में 'रञ्जयति' का तात्पर्य है?
(A) मूर्ख (B) ज्ञाता
(C) बलपूर्वक (D) प्रसन्न करना

व्याख्या – अल्पज्ञान के कारण गर्वित अर्थात् थोड़ी सी जानकारी से स्वयं को पण्डित मानने वाले मूर्ख मनुष्य को ब्रह्मा भी प्रसन्न नहीं कर सकते हैं। (नीतिशतकम् /3)

	शब्द		अर्थ
(A)	अज्ञः	–	मूर्ख
(B)	बोद्धारः	–	ज्ञाता
(C)	प्रसह्य	–	बलपूर्वक
(D)	**रञ्जयति**	–	**प्रसन्न करना**

अतः विकल्प (D) सही है।

8. नीतिशतककार के अनुसार सभा में किस उपाय के द्वारा मूर्ख अपनी मूर्खता को छिपा सकता है?
(A) कम बोलकर (B) मौन रहकर
(C) विचारपूर्वक बोलकर (D) हँसकर

व्याख्या –
'विशेषतः सर्वविदां समाजे, **विभूषणं मौनमपण्डितानाम्**' अर्थात् विद्वानों की सभा में मूर्ख **मौन रहकर** अपनी मूर्खता को छिपा सकता है। (नीतिशतकम्/7)
अतः विकल्प (B) सही है।

9. ''मूर्ध्नि वा सर्वलोकस्य शीर्यते वन एव वा'' – श्लोकांश में 'मूर्ध्नि' शब्द का अर्थ है-
(A) आगे (B) पीछे
(C) ऊपर (मस्तक) (D) नीचे

व्याख्या – भर्तृहरि कहते हैं कि स्वाभिमानी पुरुष की पुष्प-गुच्छ की भाँति या तो सब लोगों के मस्तक पर चढ़ता है अथवा वन में ही जीर्ण-शीर्ण हो जाता है। (नीतिशतकम्/26)

	शब्द		अर्थ
(A)	अग्रे	–	आगे
(B)	पश्चात्	–	पीछे
(C)	**मूर्ध्नि**	–	**ऊपर (मस्तक)**
(D)	अधः	–	नीचे

अतः विकल्प (C) सही है।

10. 'उत्तररामचरितम्' की कथावस्तु प्रारम्भ होती है?
(A) शम्बूक वध के लिए राम के दण्डकारण्य जाने से
(B) राम द्वारा सीता के निर्वासन से
(C) राम-सीता के पुनर्मिलन से
(D) लव-कुश का चन्द्रकेतु युद्ध से

व्याख्या –
(A) शम्बूक वध के लिए राम का दण्डकारण्य में जाना– द्वितीय अङ्क
(B) उत्तररामचरित के कथानक का आरम्भ **राम द्वारा सीता के निर्वासन से होता है – प्रथम अङ्क**
(C) राम-सीता का पुनर्मिलन – **तृतीय अङ्क**
(D) चन्द्रकेतु से लव-कुश का युद्ध – षष्ठ अङ्क
अतः विकल्प (B) सही है।

11. 'उत्तररामचरितम्' में पात्रों की संख्या है –
(A) 8 (B) 30
(C) 5 (D) 12

व्याख्या – * उत्तररामचरितम् में कुल 30 पात्र है। इसके अतिरिक्त 6 पात्रों का केवल उल्लेख मात्र है।
* पुरुषपात्र 19 और स्त्रीपात्र 11 हैं। अतः विकल्प `B' सही है।

12. 'उत्तररामचरितम्' में वर्णित तमसा और मुरला हैं?
(A) सीता की सखियाँ
(B) दो नदियाँ
(C) लव कुश की परिचारिकाएं
(D) राक्षसियाँ

व्याख्या – * 'ततः प्रविशति नदीद्वयम्' – प्रस्तुत पंक्ति तमसा और मुरला के लिए प्रयुक्त है अर्थात् ये **दो नदियाँ** हैं।
* सीता की सखी वासन्ती (वनदेवी) हैं।
अतः विकल्प (B) सही है।

13. 'उत्तररामचरितम्' नाटक के तृतीय अङ्क में प्रधानरस है?
(A) करुणरस (B) वीररस
(C) शृङ्गाररस (D) विप्रलम्भशृङ्गार

	ग्रन्थ		प्रधान रस
(A)	**उत्तररामचरितम्**	–	**करुणरस**
(B)	शिवराजविजयम्	–	वीररस
(C)	स्वप्नवासवदत्तम्	–	शृङ्गाररस
(D)	मेघदूतम्	–	विप्रलम्भशृङ्गार

अतः विकल्प (A) सही है।

7. (D) 8. (B) 9. (C) 10. (B) 11. (B) 12. (B) 13. (A)

14. 'छायाङ्क' उत्तररामचरितम् का कौन-सा अङ्क है?
(A) द्वितीय (B) तृतीय
(C) चतुर्थ (D) सप्तम

अङ्क		नाम
(A) द्वितीय अङ्क	–	पञ्चवटीप्रवेश
(B) **तृतीय अङ्क**	–	**छाया अङ्क**
(C) चतुर्थ अङ्क	–	कौशल्याजनकयोग
(D) सप्तम अङ्क	–	सम्मेलन अङ्क

अतः विकल्प (B) सही है।

15. ''ईदृशानां विपाकोऽपि जायते परमाद्भुतः'' यह कथन किसका है?
(A) मुरला का (B) तमसा का
(C) वासन्ती का (D) सीता का

व्याख्या –
(A) ''ईदृशानां विपाकोऽपि जायते परमाद्भुतः'' (उत्तर 3/3) – **मुरला कहती है** कि – ऐसे व्यक्तियों (राम और सीता) की दुरवस्था भी अत्यन्त आश्चर्यजनक होती है, जिसमें ऐसे (पृथ्वी और गङ्गा जैसे) लोग सहायक होते हैं। अतः विकल्प (A) सही है।
(B) 'तटस्थं नैराश्यादपि च कलुषं विप्रियवशात्' – तमसा
(C) 'पुनरिदमयं देवो रामः स्वयं वनमागतः' – वासन्ती
(D) 'ईदृशो मे पुत्रकः संवृत्तः'' – सीता का कथन

16. 'विपाक' शब्द का अर्थ है?
(A) कृत्रिम नदी (B) घास
(C) स्वभाव (D) दुरवस्था

शब्द		अर्थ
(A) कुल्या	–	कृत्रिम नदी (नहर)
(B) शष्पम्	–	हरीघास
(C) निसर्गः	–	स्वभाव
(D) **विपाकः**	–	**दुरवस्था**

अतः विकल्प (D) सही है।

17. 'उत्तररामचरितम्' के तृतीय अङ्क में दो पात्रों के परस्पर संवादों में नाटकीयतत्वों का परिचय मिलता है, ये दो पात्र हैं –
(A) राम और वासन्ती (B) सीता और तमसा
(C) तमसा और मुरला (D) सीता और मुरला

व्याख्या –
(A) तृतीय अङ्क में राम, वासन्ती से वार्तालाप करते हैं अर्थात् राम के साथ वासन्ती रहती है।
(B) तृतीय अङ्क में सीता के साथ तमसा रहती है।
(C) तृतीय अङ्क **तमसा और मुरला** नामक दो नदियों के परस्पर वार्तालाप से आरम्भ होता है जिसमें राम पञ्चवटी में पुनः आ रहे हैं, इसकी सूचना मिलती है। यह वार्तालाप 'विष्कम्भक नामक नाटकीय तत्व का उदाहरण है। अतः विकल्प (C) सही है।
(D) मुरला को अगस्त्य पत्नी लोपामुद्रा गोदावरी के पास भेजती हैं, इसका सीता के साथ कोई संवाद नहीं होता।

18. ''पौलस्त्यस्य जटायुषा विघटितः'' श्लोक में 'पौलस्त्यस्य' से तात्पर्य है?
(A) सुग्रीव से (B) रावण से
(C) लक्ष्मण से (D) हनुमान् से

व्याख्या – ''पौलस्त्यस्य जटायुषा विघटितः कार्ष्णायसोऽयं रथः'' – वासन्ती कहती है कि – जटायु द्वारा तोड़ा गया यह रावण का लोहे का रथ है। पुलस्त्य ऋषि की गणना सप्तर्षियों में होती है। पुलस्त्य रावण के दादा थे। इसी पुलस्त्य से अपत्य अर्थ में 'अण्' प्रत्यय लगकर पौलस्त्य बना जो यहाँ रावण का बोध करा रहा है। (उत्तर. 3/43)
कपीन्द्रः = सुग्रीव, सौमित्रः = लक्ष्मण ,वायुपुत्रः = हनुमान्, **पौलस्त्यः = रावण,** को कहा गया है।
अतः विकल्प (B) सही है।

19. मेघदूतम् में किस राजा का उल्लेख मिलता है?
(A) उदयन का (B) शूद्रक का
(C) दुष्यन्त का (D) राम का

व्याख्या –

ग्रन्थ		राजा का उल्लेख/वर्णन
(A) **मेघदूतम्**	–	**उदयन का**
(B) कादम्बरी	–	शूद्रक का
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम्	–	दुष्यन्त का
(D) उत्तररामचरितम्	–	राम का

नोट–''प्राप्यावन्तीनुदयनकथाकोविदग्रामवृद्धान्'' (पूर्वमेघ-31)
अतः विकल्प (A) सही है।

14. (B) 15. (A) 16. (D) 17. (C) 18. (B) 19. (A)

20. ''प्राप्ते मित्रे भवति विमुखः किं पुनर्यस्तथोच्चैः'' यह श्लोकांश उद्धृत है?
(A) मेघदूतम् से
(B) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से
(C) किरातार्जुनीयम् से
(D) शिवराजविजयम् से

व्याख्या –
(A) उपर्युक्त पंक्ति **मेघदूतम् में यक्ष**, मेघ से कहता है कि – छोटा व्यक्ति भी आश्रय के लिए मित्र के आने पर पहले किये गये उपकार को सोचकर उसका सत्कार करने में मुँह नहीं मोड़ता फिर जो महान् हैं, उसकी बात ही क्या। (पूर्वमेघ/17)
(B) 'चित्रकर्म परिचयेनाङ्गेषु त आभरणविनियोगं कुर्वः – अभिज्ञानशाकुन्तलम् में
(C) 'नयेन जेतुं जगतीं सुयोधनः' – किरातार्जुनीयम् से
(D) 'कलितमानवदेहामिव सरस्वतीम्'–शिवराजविजयम् से
अतः विकल्प (A) सही है।

21. अनसूया और प्रियंवदा हैं?
(A) शकुन्तला की सखियाँ
(B) दुष्यन्त की रानियाँ
(C) कण्व आश्रम की अध्यक्षा
(D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या –
(A) अनसूया और प्रियंवदा **शकुन्तला की सखियाँ** हैं। अनसूया गम्भीर प्रकृति की है। प्रियंवदा हास्यप्रकृति की है। अतः विकल्प (A) सही है।
(B) हंसपदिका और वसुमती राजा दुष्यन्त की रानियाँ हैं। इनमें प्रथम रानी हंसपदिका है।
(C) गौतमी कण्व आश्रम की अध्यक्षा है।

22. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' नाटक में वर्णित गौतमी हैं?
(A) दुष्यन्त की परिचारिका
(B) कण्व आश्रम की अध्यक्षा
(C) मारीच आश्रम की तपस्विनी
(D) एक अप्सरा

व्याख्या –
(A) मधुकरिका – दुष्यन्त की परिचारिका है।
(B) **गौतमी – कण्व आश्रम की अध्यक्षा हैं।**
(C) सुव्रता – मारीच के आश्रम की एक तपस्विनी स्त्री
(D) मेनका – एक अप्सरा (शकुन्तला की माता)
अतः विकल्प (B) सही है।

23. दुष्यन्त के साथ शकुन्तला का विवाह सम्पन्न होने पर उसकी सखियाँ हो जाती हैं?
(A) प्रसन्न **(B) चिन्तित**
(C) क्रोधित **(D) ईर्ष्याग्रस्त**

व्याख्या – 'शकुन्तलाऽनुरूपभर्तृगामिनी संवृत्तेति निर्वृतं मे हृदयम्' – अनसूया चतुर्थ अङ्क के आरम्भ में कहती है कि – शकुन्तला अपने योग्य पति को पा गयी है, इसलिए मेरा हृदय **सुखी (प्रसन्न)** है। अतः विकल्प (A) सही है।

24. ''तपोधनं वेत्सि न मामुपस्थितम्'' – यहाँ 'तपोधन' शब्द प्रयुक्त हुआ है?
(A) कण्व के लिए **(B) दुष्यन्त के लिए**
(C) दुर्वासा के लिए **(D) जंगल के लिए**

व्याख्या – * प्रस्तुत पद्य में 'तपोधन' शब्द का प्रयोग **ऋषि दुर्वासा** के लिए प्रयुक्त है। (अभिज्ञान. 4/1)
* कण्व के लिए 'काश्यप' तथा दुष्यन्त के लिए 'पौरव' शब्द का प्रयोग अभिज्ञान शाकुन्तलम में हुआ है।
अतः विकल्प (C) सही है।

25. ''गच्छ, पादयोः प्रणम्य निवर्तयैनं'' – यह कथन है?
(A) अनसूया का प्रियंवदा के प्रति
(B) प्रियंवदा का अनसूया के प्रति
(C) शकुन्तला का अनसूया के प्रति
(D) अनसूया का शकुन्तला के प्रति

व्याख्या – गच्छ, पादयोः प्रणम्य निवर्तयैनं – अभिज्ञान – शाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में **अनसूया, प्रियंवदा से कहती है** कि–जाओ (दुर्वासा) के चरणों में प्रणाम करके इन्हें लौटा लाओ। अतः विकल्प (A) सही है।

26. शकुन्तला की शापमुक्ति का कारण है?
(A) मोतियों की माला **(B) कङ्गन**
(C) बाजूबन्द **(D) अँगूठी**

व्याख्या – * ''ततो न मे वचनमन्यथाभवितुमर्हति, किन्त्वभिज्ञानाभरणदर्शनेन शापो निवर्तिष्यत'' अर्थात् – मेरा वचन अन्यथा नहीं हो सकता किन्तु पहचान (अभिज्ञान) के आभूषण **(अँगूठी) को दिखलाने से शाप समाप्त** हो जायेगा।
* अनसूया कहती है– 'अस्ति तेन राजर्षिणा संप्रस्थितेन स्वनामधेयाङ्कितम् **अङ्गुलीयकम्**......''
अतः विकल्प (D) सही है।

20. (A) 21. (A) 22. (B) 23. (a) 24. (C) 25. (A) 26. (D)

27. शिवराजविजयम् विभक्त है?
(A) सर्गों में
(B) खण्डों में
(C) उन्मेषों में
(D) निःश्वास एवं विरामों में

	ग्रन्थ		विभाजन
(A)	किरातार्जुनीयम्	–	18 सर्गों में
(B)	मेघदूतम्	–	2 खण्डों में
(C)	वक्रोक्तिजीवितम्	–	4 उन्मेषों में
(D)	**शिवराजविजयम्**	–	**3 विराम, 12 निःश्वासों में**

अतः विकल्प (D) सही है।

28. नीतिशतककार के मतानुसार क्रोधी राजा के प्रिय होते हैं?
(A) उसके अपने परिजन
(B) उसके घनिष्ठ मित्र
(C) उसके निजी सेवक
(D) कोई व्यक्ति भी नहीं

व्याख्या – 'न कश्चिच्चण्डकोपानामात्मीयो नाम भूभुजाम्' – अर्थात् प्रचण्डक्रोध वाले राजाओं का **कोई भी व्यक्ति आत्मीय नहीं होता है।** (नीतिशतकम् /47)
अतः विकल्प (D) सही है।

29. दुष्टों की मित्रता की तुलना की गयी है?
(A) छाया से
(B) कोयल से
(C) सर्प से
(D) विष से

व्याख्या – ''आरम्भगुर्वी क्षयिणी क्रमेण.....छायेव मैत्री खलसज्जनानाम्'' (नीतिशतकम्/50) के अनुसार दुष्टों एवं सज्जनों की मित्रता **छाया के समान** होती है।
अतः विकल्प (A) सही है।

30. सभी प्रकार की विपत्तियों से रक्षा होती है?
(A) पूर्वकृत पुण्यों के कारण
(B) वीरता के कारण
(C) देवताओं की सहायता से
(D) प्रत्युत्पन्नमति से

व्याख्या – 'कृत्स्ना च भूर्भवति सन्निधिरत्नपूर्णा यस्यास्ति पूर्वसुकृतं विपुलं नरस्य' (नीतिशतकम् /100) – अर्थात् जिस पुरुष का पूर्वजन्म का पुण्य बहुत अधिक है सब लोग उसके लिए सज्जन बन जाते हैं, और पृथिवी उत्तम निधियों एवं रत्नों से परिपूर्ण हो जाती है। अर्थात् **पूर्वकृत पुण्यों के कारण** उसकी सभी विपत्तियों से रक्षा होती है। अतः विकल्प (A) सही है।

31. 'कन्था' शब्द का अर्थ है?
(A) जीर्णवस्त्र **(B) सरलता**
(C) तुच्छता **(D) समुद्र**

	शब्द		अर्थ
(A)	**कन्था**	–	**जीर्णवस्त्र (कथरी)**
(B)	आर्जवम्	–	सरलता
(C)	फल्गु	–	तुच्छता, निःसारता
(D)	अर्णवः	–	समुद्र

अतः विकल्प (A) सही है।

32. 'मेघदूतम्' में यक्ष शापित है?
(A) शिव के द्वारा **(B) कुबेर के द्वारा**
(C) हिमालय के द्वारा **(D) मेघ के द्वारा**

व्याख्या – मेघदूतम् में यक्ष कुबेर का सेवक था और **कुबेर के द्वारा** ही उसे अपनी प्रिया से एक वर्ष दूर रहने का शाप दिया गया था। ''शापेनास्तङ्गमितमहिमावर्षभोग्येण भर्तुः'' (पूर्वमेघ-01)
अतः विकल्प (B) सही है।

33. ''तस्मिन्नद्रौ कतिचिदबलाविप्रयुक्तः स कामी'' – यहाँ 'अद्रौ' का तात्पर्य है?
(A) पर्वत से **(B) घर से**
(C) सूक्ष्म वस्त्र से **(D) मार्ग से**

	शब्द		अर्थ
(A)	**अद्रिः**	–	**पर्वत**
(B)	आगारम्	–	घर
(C)	अंशुकानि	–	सूक्ष्मवस्त्र
(D)	वर्त्म	–	मार्ग

अतः विकल्प (A) सही है।

27. (D) 28. (D) 29. (A) 30. (A) 31. (A) 32. (B) 33. (A)

34. 'धूमज्योतिः सलिलमरुतां सन्निपातः क्व मेघः' – प्रस्तुत श्लोकांश में 'सन्निपात' का अर्थ है?
(A) जूही की कली से (B) गर्जन से
(C) चमेली से (D) मेघसमूह से

व्याख्या – 'धूमज्योतिःसलिलमरुतां सन्निपातः क्व मेघः' (पूर्वमेघ/5) – कहाँ धुएँ, अग्नि (प्रकाश), जल और वायु से बना है मेघ।

	शब्द		**अर्थ**
(A)	यूथिका	–	जूही की कली
(B)	स्तनित	–	गर्जन
(C)	मालती	–	चमेली
(D)	**सन्निपात**	–	**मेघसमूह (सम्मिश्रण)**

अतः विकल्प (D) सही है।

35. मेघदूत में वर्णित 'पुष्करावर्तक' है?
(A) यक्ष का दूत (B) मेघों का निवास स्थान
(C) मेघों का कुल (D) अलकापुरी का मेघ

व्याख्या – 'जातं वंशे भुवनविदिते पुष्करावर्तकानां' (पूर्वमेघ/6) प्रस्तुत पद्य में यक्ष मेघ से कहता है कि – तुम संसार में प्रसिद्ध पुष्कर और आवर्तक नामक **मेघों के कुल** में उत्पन्न हो। पुष्कर और आवर्तक मेघों का कुल है।
अतः विकल्प (C) सही है।

36. 'सम्पत्स्यन्ते कतिपयदिनस्थायिहंसा दशार्णाः' है–यहाँ 'दशार्णाः' है एक–
(A) पर्वत (B) देश
(C) नदी (D) राजा

व्याख्या – 'सम्पत्स्यन्ते कतिपयदिनस्थायिहंसा दशार्णाः' (पूर्वमेघ/24) अर्थात् दशार्ण देश कुछ ही दिनों तक रहने वाले राजहंसों से मुक्त हो जायेगा।
(A) 'आम्रकूट' एक पर्वत का नाम है।
(B) **'दशार्ण' देश का नाम है।**
(C) 'नर्मदा' नदी है।
(D) 'उदयन' वत्सदेश का राजा है।
अतः विकल्प (B) सही है।

37. अव्ययीभावसमास की सिद्धि होने पर सम्पूर्ण पद हो जाता है –
(A) पुंलिङ्ग (B) स्त्रीलिङ्ग
(C) नपुंसकलिङ्ग (D) उपर्युक्त तीनों

व्याख्या – 'अव्ययीभावश्च' (2/4/18) सूत्र से अव्ययीभाव समास की सिद्धि होने पर सम्पूर्ण पद **नपुंसकलिङ्ग** हो जाता है, – 'गोपि इति' = अधिगोपम्
अतः विकल्प (C) सही है।

38. 'विष्णोः पश्चात्' का सम्पूर्ण पद है?
(A) उपविष्णुन् (B) अनुविष्णो
(C) अनुविष्णवे (D) अनुविष्णु

व्याख्या – 'अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि'.................... (2/1/6) सूत्र से 'विष्णु ङस् अनु' के साथ समास होकर **''विष्णोः पश्चात् = अनुविष्णु''** पद बनेगा जिसमें अव्ययीभावसमास है।
अतः विकल्प (D) सही है।

39. 'निर्मक्षिकम्' में समास है –
(A) नञ्समास (B) तृतीयातत्पुरुष
(C) सप्तमीतत्पुरुष (D) अव्ययीभाव

व्याख्या –
(A) 'नञ्' (2/2/6) सूत्र से ''न ब्राह्मणः = अब्राह्मणः'' में नञ्समास है।
(B) 'तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन' (2/1/30) सूत्र से 'धान्येन अर्थः = धान्यार्थः' में तृतीयातत्पुरुषसमास है।
(C) 'सप्तमी शौण्डैः' (2/1/40) सूत्र से ''अक्षेषु शौण्डः = अक्षशौण्डः'' में सप्तमीतत्पुरुषसमास है।
(D) ''अव्ययंविभक्ति समीप'' ..... (2/1/6) सूत्र से अभाव अर्थ में 'निर्' अव्यय का 'मक्षिकाणाम्' सुबन्त के साथ समास होकर **''मक्षिकाणाम् अभावः = निर्मक्षिकम्'' में अव्ययीभावसमास है।**
अतः विकल्प (D) सही है।

40. 'नखभिन्नः' में समास है?
(A) तृतीयातत्पुरुष (B) कर्मधारय
(C) बहुव्रीहि (D) द्वन्द्वसमास

व्याख्या –
(A) 'कर्तृ-करणे कृता बहुलम्' (2/1/32) सूत्र से अनुक्त कर्ता और करण में आने वाली तृतीया में अन्त होने वाले पदों का कृदन्त पद के साथ समास होता है। यथा– **''नखैः भिन्नः = नखभिन्नः''** में तृतीयातत्पुरुषसमास है।
(B) 'विशेषणं विशेष्येण बहुलम्' (2/1/57) सूत्र से 'निर्मलाः गुणाः = निर्मलगुणाः' में कर्मधारयसमास है।
(C) 'अनेकमन्यपदार्थे' (2/2/24) सूत्र से ''कण्ठे कालो यस्य सः = कण्ठेकालः'' में बहुव्रीहिसमास है।
(D) 'चार्थे द्वन्द्वः' (2/2/29) सूत्र से ''हस्तश्च चरणश्च = हस्तचरणम्'' में द्वन्द्वसमास है।
अतः विकल्प (A) सही है।

34. (D) 35. (C) 36. (B) 37. (C) 38. (D) 39. (D) 40. (A)

41. षष्ठी तत्पुरुष युक्त समास है?
(A) दूरादागतः (B) राजपुरुषः
(C) धान्यार्थः (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या –
(A) 'पञ्चम्याः स्तोकादिभ्यः' (6/3/2) सूत्र से 'दूरात् आगतः = दूरादागतः' में पञ्चमीतत्पुरुषसमास है।
(B) 'षष्ठी' (2/2/8) सूत्र से षष्ठ्यन्त सुबन्त का समर्थ सुबन्त के साथ समास होता है। यथा–**'राज्ञः पुरुषः = राजपुरुषः'**
(C) 'तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन' (2/1/30) सूत्र से ''धान्येन अर्थः = धान्यार्थः'' में तृतीयातत्पुरुषसमास है।
अतः विकल्प (B) सही है।

42. समास में प्रथम शब्द संख्यावाचक हो तो वह द्विगु समास होगा जब दूसरा शब्द हो –
(A) संज्ञा (B) अव्यय
(C) विशेषण (D) उपसर्ग

व्याख्या –
(A) 'संख्यापूर्वो द्विगुः' (2/1/52) सूत्र से जिस समास में प्रथम पद संख्यावाची हो और **दूसरा संज्ञाशब्द हो** तो वह द्विगुसंज्ञक होगा। यथा–''त्रयाणां लोकानां समाहारः = त्रिलोकी''
(B) प्रथमपद अव्यय या उपसर्ग रहे तो अव्ययीभावसमास होता है।
(C) प्रथमपद विशेषण रहे तो कर्मधारयसमास होता है।
अतः विकल्प (A) सही है।

43. 'पीताम्बरः' में समास है?
(A) बहुव्रीहि (B) कर्मधारय
(C) द्विगु समास (D) अव्ययीभाव

व्याख्या –
(A) 'अनेकमन्यपदार्थे' (2/2/24) सूत्र से अन्यपद के अर्थ में अनेक प्रथमान्त पदों का विकल्प से समास होता है। यथा – **''पीतम् अम्बरं यस्य सः = पीताम्बरः'' में बहुव्रीहिसमास है।**
(B) 'विशेषणं विशेष्येण बहुलम्' (2/1/57) सूत्र से पीतम् च तत् अम्बरम् = पीताम्बरम् में कर्मधारयसमास है।
(C) ''तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च'' (2/1/51) सूत्र से 'पञ्चानां गवां समाहारः = पञ्चगवम्' में द्विगुसमास है।
(D) 'अव्ययं विभक्ति - समीप - समृद्धि .....' (2/1/6) सूत्र से 'शक्तिम् अनतिक्रम्य = यथाशक्ति' में अव्ययीभाव समास हुआ है।
अतः विकल्प (A) सही है।

44. 'बालक' शब्द का द्वितीया बहुवचन का रूप है?
(A) बालकम्
(B) बालकौ
(C) बालकान्
(D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या –
'बालक' शब्द का द्वितीयाविभक्ति में निम्न रूप बनता है –
बालकम् – बालकौ – **बालकान्**
अतः विकल्प (C) सही है।

45. 'कवि' शब्द का पञ्चमी एकवचन का रूप है?
(A) कवेः (B) कविभ्याम्
(C) कविभ्यः (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या –
'कवि' इकारान्त पुंलिङ्ग शब्द का पञ्चमी विभक्ति में – **'कवेः** कविभ्याम् कविभ्यः' रूप बनता है।
अतः विकल्प (A) सही है।

46. 'सुधियम्' किस विभक्ति का रूप है?
(A) तृतीया (B) द्वितीया
(C) चतुर्थी (D) पञ्चमी

व्याख्या –
(A) सुधी (पण्डित) ईकारान्त पुंलिङ्ग शब्द का तृतीया में – 'सुधिया, सुधीभ्याम्, सुधीभिः'
(B) द्वितीयाविभक्ति में – **'सुधियम्,** सुधियौ, सुधियः'
(C) चतुर्थीविभक्ति में – 'सुधिये, सुधीभ्याम्, सुधीभ्यः'
(D) पञ्चमीविभक्ति में – 'सुधियः, सुधीभ्याम्, सुधीभ्यः'
अतः विकल्प (B) सही है।

47. पञ्चमीविभक्ति में 'भानु' का सही रूप होगा?
(A) भानवे (B) भानोभ्याम्
(C) भानुना (D) भानोः

व्याख्या –
(A) 'भानु' शब्द का चतुर्थीविभक्ति में –
''भानवे, भानुभ्याम्, भानुभ्यः'' रूप बनता है।
(C) तृतीया विभक्ति में –
''भानुना, भानुभ्याम्, भानुभिः''
(D) पञ्चमीविभक्ति में – **भानोः**, भानुभ्याम्, भानुभ्यः
अतः विकल्प (D) सही है।
नोट – 'भानोभ्याम्' रूप भानु शब्द के सातों विभक्तियों में कहीं नहीं बनता है।

41. (B) 42. (A) 43. (A) 44. (C) 45. (A) 46. (B) 47. (D)

48. 'स्वयम्भुवि' किस विभक्ति का रूप है?
(A) तृतीया
(B) चतुर्थी
(C) षष्ठी
(D) सप्तमी

व्याख्या –
(A) 'स्वयम्भू' (ब्रह्मा) शब्द का तृतीयाविभक्ति में – ''स्वयम्भुवा, स्वयम्भूभ्याम्, स्वयम्भूभिः''
(B) चतुर्थीविभक्ति में – ''स्वयम्भुवै, स्वयम्भूभ्याम्, स्वयम्भूभ्यः'' रूप बनता है।
(C) षष्ठी विभक्ति में – ''स्वयम्भुवः, स्वयम्भुवोः, स्वयम्भुवाम्''
(D) सप्तमी विभक्ति में– **स्वयम्भुवि**, स्वयम्भुवोः, स्वयम्भुषु
अतः विकल्प (D) सही है।

49. 'फलानाम्' किस विभक्ति का रूप है?
(A) द्वितीया
(B) तृतीया
(C) पञ्चमी
(D) षष्ठी

व्याख्या –
(A) फल (नपुंसकलिङ्ग) का रूप द्वितीयाविभक्ति में– ''फलम् फले फलानि''
(B) तृतीयाविभक्ति में – ''फलेन, फलाभ्याम्, फलैः''
(C) पञ्चमीविभक्ति में – ''फलात्, फलाभ्याम्, फलेभ्यः''
(D) षष्ठीविभक्ति में – ''फलस्य, फलयोः, **फलानाम्**''
अतः विकल्प (D) सही है।

50. षष्ठी विभक्ति में 'दधि' का सही रूप होगा?
(A) दध्नोः
(B) दध्नाभाम्
(C) दधि
(D) दधीनि

व्याख्या – 'दधि' इकारान्त नपुंसकलिङ्ग का रूप षष्ठी विभक्ति में – ''दध्नः **दध्नोः** दध्नाम्'' बनता है।
प्रथमा और द्वितीया – ''दधि, दधिनी, दधीनि''
* 'दध्नाभाम्' रूप सातों विभक्तियों में कहीं नहीं बनता है।
अतः विकल्प (A) सही है।

51. 'अभिनिविशश्च' सूत्र है?
(A) करणकारक का **(B) कर्मकारक का**
(C) सम्प्रदानकारक का **(D) अपादानकारक का**

व्याख्या –
(A) ''साधकतमं करणम्'' (1/4/42)– करणकारक का सूत्र
(B) अभिनिविशश्च (1/4/47) – **कर्मकारक** का सूत्र
(C) स्पृहेरीप्सितः (1/4/36) – सम्प्रदानकारक का सूत्र
(D) पराजेरसोढः (1/4/26) – अपादानकारक का सूत्र
अतः विकल्प (B) सही है।

52. 'अभितः' के योग में विभक्ति होती है?
(A) द्वितीया **(B) तृतीया**
(C) चतुर्थी **(D) पञ्चमी**

व्याख्या –
(A) **'अभितः**-परितः-समया-निकषा-हा-प्रतियोगेऽपि' वार्तिक से अभितः, परितः, समया, निकषा, हा और प्रति शब्दों के योग में **द्वितीयाविभक्ति** होती है।
(B) सह, साकं, सार्धं, समं आदि शब्दों के योग में तृतीयाविभक्ति होती है।
(C) नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलम्, वषट् शब्दों के योग में चतुर्थीविभक्ति होती है।
(D) अन्य, आरात्, इतर, ऋते, प्राक्, प्रत्यक् शब्दों के योग में पञ्चमी विभक्ति होती है।
अतः विकल्प (A) सही है।

53. तृतीया विभक्ति तब होती है जब –
(A) काल अर्थ द्योतित होने पर
(B) हीन अर्थ द्योतित होने पर
(C) अनादर अर्थ द्योतित होने पर
(D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या –
(A) 'अपवर्गे तृतीया' (2/3/6) सूत्र से अपवर्ग (फल प्राप्ति) द्योतित होने पर **काल और मार्गवाची शब्दों से** अत्यन्तसंयोग गम्यमान होने पर **तृतीयाविभक्ति** होती है। यथा – अह्ना क्रोशेन अधीतः।
(B) 'हीने' (1/4/86) सूत्र से द्वितीयाविभक्ति होती है।
(C) 'षष्ठी चानादरे' (2/3/38) सूत्र से षष्ठी या सप्तमी विभक्ति होती है।
अतः विकल्प (A) सही है।

48. (D) 49. (D) 50. (A) 51. (B) 52. (A) 53. (A)

54. 'येनाङ्गविकारः' सूत्र है?
(A) करणकारक का (B) कर्मकारक का
(C) सम्प्रदानकारक का (D) अपादानकारक का

व्याख्या –
(A) **'येनाङ्गविकारः'** (2/3/20)–**करणकारक** का सूत्र है।
(B) 'उपान्वध्याङ्वसः' (1/4/48)– कर्मकारक का सूत्र है।
(C) 'अनुप्रतिगृणश्च' (1/4/41)–सम्प्रदानकारक का सूत्र है।
(D) 'वारणार्थानामीप्सितः' (1/4/27)–अपादान का सूत्र है।
अतः विकल्प (A) सही है।

55. 'बालकाय मोदकं रोचते' वाक्य में बालकाय है?
(A) चतुर्थी विभक्ति में
(B) द्वितीया विभक्ति में
(C) तृतीया विभक्ति में
(D) पञ्चमी विभक्ति में

व्याख्या –
(A) 'रुच्यर्थानां प्रीयमाणः' (1/4/33) सूत्रानुसार रुच्यर्थ धातुओं के प्रयोग में प्रीयमाण (प्रसन्न होने वाले) व्यक्ति की सम्प्रदानसंज्ञा होकर उसमें **चतुर्थी विभक्ति** का प्रयोग होता है। यथा – बालकाय मोदकं रोचते। यहाँ 'बालकाय' में चतुर्थीविभक्ति है।
(B) तण्डुलान् ओदनं पचति – 'अकथितं च' (1/4/51) सूत्र से 'तण्डुलान्' में द्वितीयाविभक्ति है।
(C) प्रकृत्या चारु – 'प्रकृत्यादिभ्य उपसंख्यानम्' वार्तिक से 'प्रकृत्या' में तृतीयाविभक्ति।
(D) चोरात् त्रायते – 'भीत्रार्थानां भयहेतुः' (1/4/25) सूत्र से 'चोरात्' में पञ्चमीविभक्ति।
अतः विकल्प (A) सही है।

56. जब 'क्रुध्' तथा 'द्रुह्' धातु उपसर्ग सहित हों तो जिसके प्रति क्रोध या द्रोह किया जाता है वह होता है –
(A) सम्प्रदानसंज्ञा में (B) करणसंज्ञा में
(C) कर्मसंज्ञा में (D) अपादानसंज्ञा में

व्याख्या –
(A) ''क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः'' (1.4.37) सूत्र से क्रुध्, दुह्, ईर्ष्य्, असूय धातुओं तथा इनके तुल्यार्थ धातुओं के प्रयोग में जिस पर क्रोध किया जाय, उसकी सम्प्रदानसंज्ञा होती है।
(B) ''हेतौ'' (2/3/23) सूत्र से हेतु अर्थ के वाची शब्दों की करणसंज्ञा होती है। यथा– अध्ययनेन वसति।
(C) 'क्रुधद्रुहोरुपसृष्टयोः कर्म' (1/4/38) सूत्र से क्रुध्, द्रुह् धातु उपसर्ग सहित हों तो उसकी **कर्मसंज्ञा** होती है। यथा–रामम् अभिक्रुध्यति। अतः विकल्प (C) सही है।
(D) 'आख्यातोपयोगे' (1/4/29) सूत्र से नियमपूर्वक विद्या पढ़ने में 'आख्याता' (व्याख्याता/गुरु) की अपादानसंज्ञा होती है। यथा– उपाध्यायात् अधीते।

57. अपादानकारक मूलतः प्रयुक्त होता है?
(A) संयोग के अर्थ में
(B) वियोग के अर्थ में
(C) पराजित करने के अर्थ में
(D) दया करने के अर्थ में

व्याख्या – 'ध्रुवमपायेऽपादानम्' (1/4/24) सूत्र से जिससे **वियोग (अलगाव)** होता है, उसकी अपादानसंज्ञा होकर उसमें 'अपादाने पञ्चमी' (2.3.28) से पञ्चमीविभक्ति का प्रयोग होता है। यथा – ग्रामात् आयाति। अतः विकल्प (B) सही है।

58. धातुयें कितने प्रकार की होती हैं।
(A) दो प्रकार से (B) चार प्रकार से
(C) तीन प्रकार से (D) पाँच प्रकार से

व्याख्या – धातुएँ **तीन प्रकार** की होती हैं,
1. परस्मैपदी, 2. आत्मनेपदी, 3. उभयपदी
अतः विकल्प (C) सही है।

59. आसन्न भविष्य के लिए प्रयुक्त होता है?
(A) लिट्लकार (B) लुट्लकार
(C) लृट्लकार (D) लङ्लकार

	लकार		**काल बोधक**
(A)	लिट्लकार	–	परोक्षभूत
(B)	लुट्लकार	–	अनद्यतन भविष्य
(C)	**लृट्लकार**	–	**आसन्न भविष्य**
(D)	लङ्लकार	–	अनद्यतन भूत

अतः विकल्प (C) सही है।

54. (A) 55. (A) 56. (C) 57. (B) 58. (C) 59. (C)

60. 'भू' धातु का रूप लोट्लकार मध्यमपुरुष एकवचन में होगा–
(A) भव **(B) भवतम्**
(C) भवत **(D) भवन्तु**

व्याख्या –
* 'भू' धातु लोट्लकार म. पु. का रूप –
भव भवतम् भवत
* प्रथमपुरुष में – भवतु भवताम् भवन्तु
अतः विकल्प (A) सही है।

61. 'भू' धातु लिट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन में रूप बनता है?
(A) बभूव **(B) बभूवतुः**
(C) बभूवुः **(D) इनमें से कोई नहीं**

व्याख्या – 'भू' धातु लिट्लकार प्र. पु. में – **बभूव** बभूवतुः बभूवुः रूप बनता है। अतः विकल्प (A) सही है।

62. 'गम्' धातु लिट्लकार मध्यमपुरुष बहुवचन में रूप बनता है?
(A) **जगाम** **(B) जग्मुः**
(C) जग्म **(D) अगच्छत्**

व्याख्या –
* 'गम्' धातु लिट्लकार म. पु. में –
* ''जगमिथ जग्मथुः **जग्म**'' रूप बनता है।
* प्रथमपुरुष में – ''जगाम जग्मतुः जग्मुः''
गम् धातु लङ्लकार प्र. पु. में –
''अगच्छत् अगच्छताम् अगच्छन्''
अतः विकल्प (C) सही है।

63. `99' का संस्कृत शब्दात्मक रूप होगा?
(A) नवनवतिः **(B) षण्णवतिः**
(C) नवतिः **(D) एकनवतिः**

संख्या		शब्दात्मक रूप
(A) **99**	–	**नवनवतिः (एकोनशतम्)**
(B) 96	–	षण्णवतिः
(C) 90	–	नवतिः
(D) 91	–	एकनवतिः

अतः विकल्प (A) सही है।

64. 'तुम कुसुमपुर जाओ' का संस्कृत अनुवाद है?
(A) त्वां कुसुमपुरं गच्छ **(B) त्वं कुसुमपुरं गच्छ**
(C) त्वं कुसुमपुरं गच्छेत् **(D) त्वां गच्छेत् कुसुमपुरम्**

व्याख्या – यहाँ 'त्वम्' मध्यम पुरुष एकवचन का कर्ता है, और 'गच्छ' लोट्लकार मध्यमपुरुष एकवचन की क्रिया है। और 'कुसुमपुरं' कर्म है, इसमें द्वितीया का एकवचन है।
त्वं कुसुमपुरं गच्छ (तुम कुसुमपुर जाओ)
अतः विकल्प (B) सही है।

65. 'किं करवाणि ते' का अर्थ है?
(A) मैं तुम्हारे लिए क्या कर सकता हूँ।
(B) तुम मेरे लिए क्या कर सकते हो।
(C) तुम्हें क्या करना है।
(D) मैं तुमसे क्या करवाता हूँ।

व्याख्या – 'किं करवाणि ते'–का अर्थ है 'मैं तुम्हारे लिए क्या कर सकता हूँ।' यहाँ 'ते' अर्थात् 'तव' युष्मद् शब्द का षष्ठी का एकवचन का रूप है, और 'करवाणि' लोट्लकार उत्तमपुरुष एकवचन की क्रिया है। अतः विकल्प (A) सही है।

66. 'एतदासनमास्यतां' का अर्थ है?
(A) तुम आसन ग्रहण कर।
(B) यह आसन ग्रहण करें।
(C) इस आसन पर वह आ गया।
(D) इस आसन पर मैं आता हूँ।

व्याख्या– एतत् = यह, आसनम् = आसन, आस्यताम् = ग्रहण करें या बैठें। 'आस्' धातु लोट्, प्र० पु०, एक०, कर्मणि। अर्थात् यह आसन ग्रहण करें।
अतः विकल्प (B) सही है।

67. संस्कृत व्याकरण में मूल स्वरों की संख्या है?
(A) पाँच **(B) छः**
(C) सात **(D) आठ**

व्याख्या – संस्कृतव्याकरण में मूल स्वरों की संख्या पाँच है। अ, इ, उ, ऋ, ऌ मूलस्वर हैं। कुल स्वर नव हैं– अ, इ, उ, ऋ, ऌ, ए, ओ, ऐ, औ।
अतः विकल्प (A) सही है।

68. सन्धि है –
(A) दो पदों का मेल
(B) दो वर्णों का मेल
(C) दो दूरवर्ती पदों का मेल
(D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या – 'परः सन्निकर्षः संहिता' (1/4/109) सूत्र से वर्णों की अत्यधिक सामीप्यता को 'संहिता' कहते हैं। जैसे– सुधी +उपास्यः = सुध्युपास्यः अर्थात् दो वर्णों के मेल को सन्धि कहते हैं। जबकि 'समर्थः पदविधिः' (2/1/1) सूत्र से दो पदों के बीच समास होता है। अतः विकल्प (B) सही है।

60. (A) 61. (A) 62. (C) 63. (A) 64. (B) 65. (A) 66. (B) 67. (A) 68. (B)

69. सन्धि के कारण हो सकता है –
(A) लोप
(B) कोई नया वर्ण
(C) दो में से एक का द्वित्व
(D) उपर्युक्त तीनों परिवर्तन

व्याख्या –
(A) प्रथम शब्द के अन्तिम अक्षर का लोप – रामः आयाति = राम आयाति।
(B) दोनों के स्थान में कोई नया वर्ण – रमा + ईशः = रमेशः (आ + ई = ए)
(C) दो में से एक का द्वित्व – एकस्मिन् + अवसरे = एकस्मिन्नवसरे

उपर्युक्त तीनों विकल्प सही है, अर्थात् सन्धि में **लोप, आगम और द्वित्त्व तीनों कार्य** होता है इसलिए विकल्प (D) सही है।

70. स्वरसन्धि का परिणाम 'ओ' होगा –
(A) यदि 'अ' या 'आ' के बाद 'उ' या 'ऊ' हो
(B) यदि 'अ' या 'आ' के बाद 'इ' या 'ई' हो
(C) यदि 'अ' या 'आ' के बाद 'ऋ' या 'ॠ' हो
(D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या –
(A) आद्गुणः (6/1/87) सूत्र से यदि अ या आ के बाद उ या ऊ आये तो गुण होकर ओ हो जाता है। यथा – नील + उत्पलः = नीलोत्पलः
(B) अ, आ + इ, ई = ए (गण + ईशः = गणेशः)
(C) अ, आ + ऋ, ॠ = अर् (देव + ऋषिः = देवर्षिः)

अतः विकल्प (A) सही है।

71. यदि 'अ' या 'आ' के बाद 'इ' या 'ई' आए तो होगा–
(A) ए **(B) ऐ**
(C) ओ **(D) औ**

व्याख्या – 'आद्गुणः' (6/1/87) सूत्र से अ या 'आ' वर्ण के बाद इ या ई हो तो गुण आदेश 'ए' होता है। यथा – उप + इन्द्रः =उपेन्द्रः। यहाँ अ + इ = ए हो गया।

गुणसन्धि में– अ, आ + इ, ई = ए
अ, आ + उ, ऊ = ओ
अ, आ + ऋ, ॠ = अर्
अ, आ + ऌ = अल्

अतः विकल्प (A) सही है।

72. स्वरसन्धि में अर् होगा –
(A) यदि 'ऋ' के बाद 'अ' आये
(B) यदि 'अ' के बाद 'ऋ' आये
(C) यदि 'अ' के बाद 'उ' आये
(D) यदि अ के बाद अर् आये

व्याख्या – यदि 'अ' या 'आ' के बाद 'ऋ' आये तो उसके स्थान में गुण होकर 'अर्' हो जाता है यथा – ग्रीष्म + ऋतुः =ग्रीष्मर्तुः, अ + ऋ = अर् अतः विकल्प (B) सही है।

73. अच् 'सन्धि' कहते हैं –
(A) व्यञ्जनसन्धि को **(B) स्वरसन्धि को**
(C) विसर्गसन्धि को **(D) इनमें से कोई नहीं**

व्याख्या – हल्सन्धि को व्यञ्जनसन्धि कहते हैं। स्वर सन्धि को अच्सन्धि कहते हैं। क्योंकि 'अच् ' प्रत्याहार में सभी स्वर वर्ण आ जाते हैं। अतः विकल्प (B) सही है।

74. 'मातृ + औदार्यम्' का शुद्ध रूप है –
(A) मात्रोदार्यम् **(B) मात्रौदार्यम्**
(C) मातृदार्यम् **(D) मातृऔदार्यम्**

व्याख्या – 'इको यणचि' (6/1/77) सूत्र से इक् के स्थान पर यण् आदेश होकर ''मातृ + औदार्यम् = मात्रौदार्यम्'' बनेगा। अतः विकल्प (B) सही है।

75. 'नायकः' का सन्धिविच्छेद है –
(A) ना + अकः **(B) ने + अकः**
(C) न + अकः **(D) नै + अकः**

व्याख्या – 'एचोऽयवायावः' (6/1/78) सूत्रानुसार एच् = ए, ओ, ऐ, औ के स्थान पर क्रमशः अय्, अव्, आय्, आव् आदेश होकर – नै + अकः =नायकः बनेगा। अतः विकल्प (D) सही है।

76. ''स्तोः श्चुना श्चुः'' के अनुसार सन्धि रूप है –
(A) प्रश्नः **(B) शिवच्छाया**
(C) हरिश्शेते **(D) तट्टीका**

व्याख्या –
(A) 'शात्' (8/4/44) सूत्र से – प्रश् + नः = प्रश्नः
(B) 'छे च' (6/1/73) सूत्र से – शिव + छाया = शिवच्छाया
(C) 'स्तोः श्चुना श्चुः' (8/4/40) सूत्र से हरिस् + शेते = हरिश्शेते
(D) 'ष्टुना ष्टुः' (8/4/41) सूत्र से तत् + टीका = तट्टीका

अतः विकल्प (C) सही है।

69. (D)	70. (A)	71. (A)	72. (B)	73. (B)	74. (B)	75. (D)	76. (C)

77. शिवराजविजयम् काव्य की रीति है –
(A) पाञ्चाली
(B) गौडी
(C) वैदर्भी
(D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या – (A) अम्बिकादत्तव्यास कृत शिवराजविजयम् में पाञ्चाली रीति का प्रयोग है।
(B) उत्तररामचरितम् में वैदर्भी एवं गौडीरीति का समन्वय है। किन्तु भवभूति गौडीरीति के कवि माने जाते हैं।
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में वैदर्भीरीति का प्रयोग है।
अतः विकल्प (A) सही है।

78. 'शिवराजविजयम्' काव्य का प्रारम्भ होता है?
(A) सूर्योदय वर्णन से
(B) कोंकण यात्रा से
(C) रघुवीर सिंह की तोरण यात्रा से
(D) हनुमान् मंदिर के वर्णन से

व्याख्या–'अरुण एष प्रकाशः पूर्वस्यां भगवतो मरीचिमालिनः'– प्रस्तुत पंक्ति से शिवराजविजयम् का आरम्भ होता है जिसमें सूर्योदय का वर्णन है। अतः विकल्प (A) सही है।

79. गोपीनाथ है –
(A) शिवाजी का मित्र
(B) अफजल खाँ का दूत
(C) हनुमान् मंदिर का पुजारी
(D) रघुवीर सिंह का गुरु

व्याख्या – 'शिवराजविजयम्' में गोपीनाथ अफजल खाँ का दूत था जो शिवाजी के पास सन्धि का प्रस्ताव लेकर आता है। अतः विकल्प (B) सही है।

80. 'चन्द्रापीड' किस ग्रन्थ का नायक है –
(A) शिवराजविजयम्
(B) कादम्बरी
(C) मेघदूतम्
(D) अभिज्ञानशाकुन्तलम्

	ग्रन्थ		नायक
(A)	शिवराजविजयम्	–	शिवाजी
(B)	**कादम्बरी**	**–**	**चन्द्रापीड**
(C)	मेघदूतम्	–	यक्ष (हेममाली)
(D)	अभिज्ञानशाकुन्तलम्	–	दुष्यन्त

अतः विकल्प (B) सही है।

81. 'कादम्बरी' में किसके तीन जन्मों का वर्णन है?
(A) चन्द्रापीड **(B) कपिञ्जल**
(C) पुण्डरीक **(D) लक्ष्मी**

व्याख्या – * कादम्बरी कथामुखम् में मुख्यतः चन्द्रापीड के तीन जन्मों की कथा का वर्णन है। चन्द्रापीड के तीनों जन्मों के नाम – चन्द्रमा चन्द्रापीड शूद्रक।
* वैशम्पायन के तीनों जन्मों के नाम–पुण्डरीक, वैशम्पायन, शुक
अतः विकल्प (A) सही है।

82. 'वैशम्पायन' की प्रेमिका थी?
(A) कादम्बरी **(B) महाश्वेता**
(C) चाण्डालकन्या **(D) इनमें से कोई नहीं**

	प्रेमी		प्रेमिका
(A)	चन्द्रापीड	–	कादम्बरी
(B)	**वैशम्पायन**	**–**	**महाश्वेता**

अतः विकल्प (B) सही है।

83. 'कादम्बरी' में वर्णन नहीं है?
(A) अच्छोदसरोवर का
(B) पम्पासरोवर का
(C) शाल्मलीवृक्ष का
(D) देवदारु का

व्याख्या – कादम्बरी में – शूद्रकवर्णन, शुकवर्णन, विन्ध्याटवीवर्णन, शबरसैन्यवर्णन, शाल्मलीवृक्षवर्णन, जाबालि आश्रमवर्णन, अच्छोदसरोवर, पम्पासरोवर आदि का वर्णन है। किन्तु देवदारु वृक्ष का वर्णन रघुवंश के द्वितीयसर्ग में है। अतः विकल्प (D) सही है।

77. (A) 78. (A) 79. (B) 80. (B) 81. (A) 82. (B) 83. (D)

84. 'शिवराजविजयम्' किस विधा में लिखा गया है –
(A) नाटक (B) उपन्यास
(C) महाकाव्य (D) कथा

	ग्रन्थ		विधा
(A)	उत्तररामचरितम्	–	नाटक
(B)	**शिवराजविजयम्**	–	**ऐतिहासिक उपन्यास**
(C)	किरातार्जुनीयम्	–	महाकाव्य
(D)	कादम्बरी	–	कथा

अतः विकल्प (B) सही है।

85. 'तिलकमञ्जरी' के लेखक हैं –
(A) हर्ष (B) रत्नाकर
(C) धनपाल (D) दण्डी

	ग्रन्थ		रचनाकार
(A)	रत्नावली	–	हर्ष
(B)	हरविजयम्	–	रत्नाकर
(C)	**तिलकमञ्जरी**	–	**धनपाल**
(D)	दशकुमारचरितम्	–	दण्डी

अतः विकल्प (C) सही है।

84. (B) **85.** (C)

प्रशिक्षित-स्नातकशिक्षक-चयनपरीक्षा (TGT)–2004 (निरस्त)

1. वर्णमाला में वर्णों की संख्या है?
(A) ग्यारह (B) तेरह
(C) छियालिस (D) तैंतीस

व्याख्या–`14 माहेश्वर' सूत्रों के आधार पर वर्णमाला में 9 स्वर और 33 व्यञ्जन मिलाकर कुल 42(बयालिस) वर्ण हैं। किन्तु चारों विकल्पों में बयालिस नहीं है। अतः यहाँ आ, ई, ऊ, ॠ (दीर्घ स्वरों) को जोड़कर **छियालिस (46) वर्ण** माना गया है। अतः विकल्प (C) सही है।

2. यण् सन्धि होगी जब–
(A) आ + ई (B) इ + ई
(C) अ + ए (D) इ + अ

व्याख्या–
(A) आ + ई = ए होकर (रमा + ईशः = रमेशः) में गुणसन्धि होगी
(B) इ + ई = ई होकर (हरि + ईशः = हरीशः) में दीर्घसन्धि होगी
(C) अ + ए = ऐ होकर (मम + एवम् = ममैवम्) में वृद्धिसन्धि होगी
(D) 'इको यणचि' (6/1/77) सूत्र से इक् के बाद कोई असमान स्वर हो तो इक् के स्थान पर यण् आदेश हो जाता है यथा– **इति + अत्र = इत्यत्र** (इ + अ = य्)
अतः विकल्प `D' सही है।

3. यदि अ या आ के बाद ए या ऐ आये तो होगा–
(A) ए (B) ऐ
(C) ओ (D) औ

व्याख्या– * 'वृद्धिरेचि' (6/1/88) सूत्र से अवर्ण से एच् (ए, ओ, ऐ, औ) परे हो तो दोनों के स्थान में वृद्धि एकादेश हो जाता है। यथा–
* कृष्ण + एकत्वम् (अ + ए = ऐ) = कृष्णैकत्वम्
* नृप + ऐश्वर्यम् = नृपैश्वर्यम् (अ + ऐ = ऐ)
* इस प्रकार अ/आ + ए/ऐ = ऐ

अतः विकल्प `B' सही है।

4. स्वर सन्धि में अय् होगा–
(A) ए + अ (B) ऐ + अ
(C) ओ + अ (D) औ + अ

व्याख्या–एचोऽयवायावः (6/1/78) सूत्र से एच् (ए, ओ, ऐ, औ) के बाद यदि कोई भी स्वर हो तो एच् के स्थान में क्रमशः अय्, अव्, आय्, आव् हो जाता है यथा–
(A) ने + अनम् = नयनम् **(ए + अ = अय्)**
(B) नै + अकः = नायकः (ऐ + अ = आय्)
(C) पो + अनः = पवनः (ओ + अ = अव्)
(D) पौ + अकः = पावकः (औ + अ = आव्)
अतः विकल्प `A' सही है।

5. हल् सन्धि में विकार होता है?
(A) व्यञ्जन का (B) स्वर का
(C) विसर्ग का (D) उपर्युक्त तीनों का

व्याख्या–
(A) हल् एक प्रत्याहार जिसके अन्तर्गत समस्त व्यञ्जन आते है इस प्रकार **हल्सन्धि में व्यञ्जन का विकार** होता है यथा–तद् + शिवः = तच्छिवः
(B) अच् प्रत्याहार के अन्तर्गत सभी स्वर आते हैं, इसलिए स्वर सन्धि को 'अच्सन्धि' भी कहते हैं। यथा– हरे + अव = हरेऽव
(C) विसर्गसन्धि में विसर्ग का विकार होता है। यथा– विष्णुः + त्राता = विष्णुस्त्राता।
अतः विकल्प `A' सही है।

6. 'गङ्गोदकम्' का सन्धिविच्छेद है?
(A) गङ्गा + उदकम् (B) गङ्गो + उदकम्
(C) गङ्ग + उदकम् (D) गङ्गा + उदके

व्याख्या– 'आद् गुणः' (6/1/87) सूत्र से अवर्ण के बाद ह्रस्व या दीर्घ इ, उ, ऋ, ऌ आयें तो दोनों के स्थान में गुण हो जाता है। यथा– **गङ्गा + उदकम्** (आ + उ = ओ) = **गङ्गोदकम्।** अतः विकल्प `A' सही है।

1. (C) 2. (D) 3. (B) 4. (A) 5. (A) 6. (A)

7. 'कस्मिंश्चित्' का सन्धि विच्छेद है?
(A) कस्मिन् + श्चित
(B) कस्मिन् + चित्
(C) कस्मि + चित
(D) कस्मिनः + श्चितन्

व्याख्या–'नश्छव्यप्रशान्' (8/3/7) सूत्र से **कस्मिन् + चित् = कस्मिंश्चित्** में व्यञ्जन सन्धि है। अतः विकल्प `B' सही है।

8. 'झलां जश् झशि' के अनुसार सन्धि रूप है?
(A) तट्टीका　**(B) षण्मुखः**
(C) सच्चित्　**(D) युद्धम्**

व्याख्या–
(A) ''ष्टुना ष्टुः (8/4/41)'' सूत्र से तत् + टीका = तट्टीका में व्यञ्जनसन्धि है।
(B) ''यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा'' (8/4/45) सूत्र षट् + मुखः = षण्मुखः में व्यञ्जन सन्धि है।
(C) ''स्तोः श्चुना श्चुः'' (8/4/40) सूत्र से सत् + चित् = सच्चित् में श्चुत्वसन्धि है।
(D) ''झलां जश् झशि'' (8/4/53) सूत्र से झल् प्रत्याहार के बाद झश् प्रत्याहार का वर्ण हो तो झल् को जश् आदेश हो जाता है। यथा– **युध् + धम् = युद्धम्** अतः विकल्प `D' सही है।

9. 'यशस्कम्' का सन्धि विच्छेद है?
(A) यश + कम्　**(B) यश + अस्कम्**
(C) यशः + स्कम्　**(D) यशः + कम्**

व्याख्या– 'विसर्जनीयस्य सः' (8/3/34) सूत्र से पदान्त विसर्ग के बाद खर् हो तो विसर्ग के स्थान पर स् हो जाता है यथा–**यशः + कम् = यशस्कम्।** अतः विकल्प `D' सही है।

10. 'तत्' सर्वनाम शब्द का षष्ठी विभक्ति का रूप है?
(A) तेन　**(B) तस्य**
(C) तस्मिन्　**(D) तस्मै**

व्याख्या–
(A) 'तद्' पुंलिङ्ग का रूप तृतीया विभक्ति में तेन, ताभ्याम्, तैः बनता है
(B) षष्ठी विभक्ति में– **तस्य** तयोः तेषाम्
(C) सप्तमी विभक्ति में– तस्मिन् तयोः तेषु
(D) चतुर्थी विभक्ति में– तस्मै ताभ्याम् तेभ्यः
अतः विकल्प `B' सही है।

11. 'त्वत्' किस सर्वनाम का रूप है?
(A) तत्　**(B) इदम्**
(C) अस्मद्　**(D) युष्मद्**

व्याख्या–
(A) 'तद्' (वह) का रूप तीनों लिङ्गों में अलग-अलग चलता है।
पुंलिङ्ग पञ्चमी विभक्ति में–'तस्मात्, ताभ्याम्, तेभ्यः' रूप बनता है।
(B) 'इदम्' (यह) सर्वनाम का रूप तीनों लिङ्गों में चलता है।
पुंलिङ्ग पञ्चमी विभक्ति में–'अस्मात्, आभ्याम्, एभ्यः' रूप बनता है।
(C) 'अस्मद्' सर्वनाम का रूप तीनों लिङ्गों में एक समान चलता है अर्थात् लिङ्ग बदलने पर रूप नहीं बदलता है। पञ्चमी विभक्ति में–'मत्, आवाभ्याम्, अस्मत्' रूप बनता है।
(D) **युष्मद् सर्वनाम** का रूप भी तीनों लिङ्गों में एकसमान चलता है।
पञ्चमी विभक्ति में–'**त्वत्**, युवाभ्याम्, युष्मत्' रूप चलता है। अतः विकल्प `D' सही है।

12. 'मह्यम्' किस सर्वनाम का रूप है?
(A) अस्मद् का　**(B) युष्मद् का**
(C) एतद् का　**(D) अदस् का**

व्याख्या–
(A) **'अस्मद्' सर्वनाम** का रूप चतुर्थी विभक्ति में– **'मह्यम्'** आवाभ्याम्, अस्मभ्यम्' बनता है।
अतः विकल्प `A' सही है।
(B) 'युष्मद्' (तुम) सर्वनाम का चतुर्थी विभक्ति में–तुभ्यम्, युवाभ्याम्, युष्मभ्यम् रूप बनता है।
(C) एतत् (यह) सर्वनाम का रूप तीनों लिङ्गो में बनता है। पुंलिङ्ग चतुर्थीविभक्ति में–'एतस्मै, एताभ्याम्, एतेभ्यः' रूप बनता है।
(D) अदस् (वह) का रूप तीनों लिङ्गों में बनता है। पुंलिङ्ग चतुर्थी विभक्ति में–
'अमुष्मै, अमूभ्याम्, अमीभ्यः' रूप बनता है।

7. (B)　z 12. (A)

13. 'एकोनसप्ततिः' कौन-सी संख्या है?
(A) 79 (B) 71
(C) 70 (D) 69

संख्या	शब्द
(A) 79	एकोनाशीतिः/नवसप्ततिः
(B) 71	एकसप्ततिः
(C) 70	सप्ततिः
(D) **69**	**एकोनसप्ततिः/नवषष्टिः**

अतः विकल्प `D' सही है।

14. `89' का संस्कृत रूप होगा?
(A) नवतिः (B) नवनवतिः
(C) एकोननवतिः (D) षडशीतिः

संख्या	संस्कृतरूप
(A) 90	नवतिः
(B) 99	नवनवतिः/एकोनशतम्
(C) **89**	**एकोननवतिः/नवाशीतिः**
(D) 86	षडशीतिः

अतः विकल्प `C' सही है।

15. 'द्वि' शब्द के रूप किन वचनों में हो सकते हैं?
(A) द्विवचन में
(B) एकवचन में
(C) बहुवचन में
(D) उपर्युक्त तीनों वचनों में

व्याख्या–
(A) **'द्वि'** (दो) के रूप **केवल द्विवचन** में चलते हैं। 'द्वि' (दो) के रूप तीनों लिङ्गो में अलग-अलग चलते हैं।
(B) 'एक' (एक) के रूप केवल एकवचन में चलते हैं। तीनो लिङ्गो में चलते हैं।
(C) 'त्रि' (तीन) से लेकर 'अष्टादशन्' (अठारह) तक की संख्याओं के रूप केवल बहुवचन में चलते हैं।
अतः विकल्प `A' सही है।

16. उपसर्ग धातु के साथ कहाँ आता है?
(A) पहले (B) पीछे
(C) आगे-पीछे (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या–
(A) 'उपसर्ग' का प्रयोग **धातु के पहले** होता है।
(B) 'प्रत्यय' का प्रयोग धातु या शब्द के बाद (पीछे) होता है।
अतः विकल्प `A' सही है।

17. 'उच्चैः' का स्वरूप क्या है?
(A) अव्यय (B) प्रत्यय
(C) उपसर्ग (D) सर्वनाम

व्याख्या–
(A) **'उच्चैः' अव्ययपद** है, कुछ अव्यय पद निम्नवत् हैं– अग्रतः (आगे), अतएव (इसलिए), अथ (इसके बाद), अन्तिकम् (पास), अन्यथा (नहीं तो), कथमपि (जैसे-तैसे) चेत् (यदि/अगर)।
(B) प्रत्यय धातु या शब्द के पीछे लगते हैं, कृदन्तप्रत्यय– तव्यत्, तव्य, अनीयर्, यत्, क्यप्, ण्यत्, क्त, क्तवतु, शतृ, शानच्, तुमुन्, ल्यप्, क्त्वा, ण्वुल्। तद्धितप्रत्यय–अण्, मतुप्, ढक्, इञ्, यत्, ठन्, तल्, इमनिच्, ष्यञ्, कन्, ठञ्।
(C) उपसर्गों की संख्या 22 है जो निम्नवत् हैं– प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव, निस्, निर्, दुस्, दुर्, वि, आङ्, नि, अधि, अपि, अति, सु, उद्, अभि, प्रति, परि, उप।
(D) सर्वनामशब्द– अस्मद्, युष्मद्, सर्व, यत्, तद्, किम् आदि। अतः विकल्प `A' सही है।

18. संस्कृत में कितने लकार हैं?
(A) पाँच (B) दश
(C) तीन (D) आठ

व्याख्या– संस्कृत में **दश लकार** हैं, जो निम्नवत हैं–
1. लट्लकार – वर्तमानकाल
2. लिट्लकार – परोक्षभूत
3. लुट्लकार – अनद्यतन भविष्य
4. लृट्लकार – भविष्यत काल
5. लेट्लकार – वेदों में प्रयुक्त
6. लोट्लकार – आज्ञार्थक
7. लङ्लकार – अनद्यतन भूत
8. (i) विधिलिङ् – चाहिए अर्थ में
(ii) आशीर्लिङ् – आशीर्वाद
9. लुङ्लकार – सामान्यभूत
10. लृङ्लकार – हेतुहेतुमद् भविष्य

अतः विकल्प `B' सही है।

13. (D) 14. (C) 15. (A) 16. (A) 17. (A) 18. (B)

19. 'सामान्य भविष्य' के लिए प्रयुक्त होता है।
(A) लङ्लकार (B) लोट्लकार
(C) लृट्लकार (D) लट्लकार

व्याख्या–सामान्य भविष्य के लिए **लृट्लकार** का प्रयोग किया जाता है? अतः विकल्प `C' सही है।

20. प्रत्येक लकार में पुरुष होते हैं?
(A) एक (B) दो
(C) तीन (D) चार

व्याख्या–प्रत्येक लकार में **तीन पुरुष** होते हैं–
1. प्रथम पुरुष 2. मध्यम पुरुष 3. उत्तम पुरुष
अतः विकल्प `C' सही है।

21. 'भद्रं भूयाद् भवतः' का अर्थ है?
(A) आपका भला हो
(B) हे मान्यवर! आप कैसे हैं।
(C) भद्र कैसे हैं।
(D) आप भले तो हैं।

व्याख्या–'भद्रं भूयाद् भवतः' का अर्थ है–**आपका भला** हो। अतः विकल्प `A' सही है।

22. 'एका क्रिया द्व्यर्थकरी प्रसिद्धा' का अर्थ है?
(A) एक बार काम करना काफी है।
(B) एक काम ही प्रसिद्ध है।
(C) दो प्रयोजन प्रसिद्ध हैं।
(D) एक पन्थ दो काज।

व्याख्या–'एका क्रिया द्व्यर्थकरी प्रसिद्धा' लोकोक्ति का अर्थ–**'एक पन्थ दो काज'** है। अतः विकल्प `D' सही है।

23. 'डण्डा सबको ठीक करता है'–सही संस्कृत रूप है?
(A) दण्डः न शास्ति सर्वः प्रजाः।
(B) दण्डः शास्ति सर्वाः प्रजाः।
(C) दण्डः शास्ति सर्वः प्रजाः।
(D) दण्डः शास्ति प्रजा सर्वा।

व्याख्या–**दण्डः शास्ति सर्वाः प्रजाः**–डण्डा सबको ठीक करता है। अतः विकल्प `B' सही है।

24. 'दृश्' धातु का लृट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन में रूप होगा?
(A) अपश्यत् (B) द्रक्ष्यति
(C) द्रक्ष्यन्ति (D) पश्यतु

व्याख्या–
(A) 'दृश्' धातु लङ्लकार प्र0पु0 में–'अपश्यत्, अपश्यताम्, अपश्यन्' रूप बनता है।
(B) लृट्लकार प्रथमपुरुष में–**'द्रक्ष्यति,** द्रक्ष्यतः, द्रक्ष्यन्ति'
(D) लोट्लकार प्रथमपुरुष में–'पश्यतु, पश्यताम्, पश्यन्तु'
अतः विकल्प `B' सही है।

25. भू धातु लट्लकार उत्तमपुरुष एकवचन में रूप होगा?
(A) भवामि
(B) भवावः
(C) भवामः
(D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या–'भू' धातु लट्लकार उत्तमपुरुष में–'भवामि, भवावः, भवामः' रूप बनता है। अतः विकल्प `A' सही है।

26. तृतीया विभक्ति में 'कवि' शब्द का सही रूप होगा?
(A) कविना (B) कवये
(C) कवयः (D) कवौ

व्याख्या–
(A) 'कवि' शब्द का तृतीयाविभक्ति में–**'कविना,** कविभ्याम्, कविभिः' रूप बनता है।
(B) चतुर्थीविभक्ति में–'कवये, कविभ्याम्, कविभ्यः'
(C) प्रथमा में–'कविः, कवी, कवयः' रूप बनता है।
(D) सप्तमी विभक्ति में–'कवौ, कव्योः, कविषु' रूप बनता है।
अतः विकल्प `A' सही है।

27. 'मालायाम्' किस विभक्ति का रूप है?
(A) द्वितीया
(B) पञ्चमी
(C) सप्तमी
(D) षष्ठी

व्याख्या–
(A) 'माला' शब्द का रूप द्वितीयाविभक्ति में–'मालाम्, माले, मालाः'
(B) पञ्चमीविभक्ति में–'मालायाः, मालाभ्याम्, मालाभ्यः'
(C) **सप्तमीविभक्ति** में–**'मालायाम्,** मालयोः, मालासु'
(D) षष्ठीविभक्ति में–'मालायाः, मालयोः, मालानाम्'
अतः विकल्प `C' सही है।

19. (C)	20. (C)	21. (A)	22. (D)	23. (B)	24. (B)	25. (A)	26. (A)
27. (C)							

28. 'नदीः' किस विभक्ति का रूप है?
(A) सप्तमी का (B) द्वितीया का
(C) तृतीया का (D) पञ्चमी का

व्याख्या–
(A) 'नदी' ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग का रूप सप्तमीविभक्ति में–'नद्याम्, नद्योः, नदीषु' बनता है।
(B) **द्वितीयाविभक्ति** में–'नदीम्, नद्यौ, **नदीः**'
(C) तृतीयाविभक्ति में–'नद्या, नदीभ्याम्, नदीभिः'
(D) पञ्चमीविभक्ति में–'नद्याः, नदीभ्याम्, नदीभ्यः'
अतः विकल्प `B' सही है।

29. द्वितीयाविभक्ति में 'दधि' का रूप होगा?
(A) दध्नोः (B) दध्ना
(C) दध्नः (D) दधीनि

व्याख्या–
(A) 'दधि' नपुंसकलिङ्ग का रूप षष्ठीविभक्ति में–'दध्नः, दध्नोः, दध्नाम्' बनता है।
(B) तृतीयाविभक्ति में–'दध्ना, दधिभ्याम्, दधिभिः' बनता है।
(C) पञ्चमीविभक्ति में–'दध्नः, दधिभ्याम्, दधिभ्यः'
(D) **द्वितीयाविभक्ति** में–'दधि, दधिनी, **दधीनि**'
अतः विकल्प `D' सही है।

30. 'मधुनी' किस विभक्ति का रूप है?
(A) द्वितीया (B) चतुर्थी
(C) षष्ठी (D) सप्तमी

व्याख्या– 'मधु' (उकारान्त) नपुंसकलिङ्ग का रूप–
(A) **द्वितीयाविभक्ति** में–'मधु, **मधुनी**, मधूनि' बनता है।
(B) चतुर्थीविभक्ति में– 'मधुने, मधुभ्याम्, मधुभ्यः'
(C) षष्ठीविभक्ति में– 'मधुनः, मधुनोः, मधूनाम्'
(D) सप्तमीविभक्ति में– 'मधुनि, मधुनोः, मधुषु'
अतः विकल्प `A' सही है।

31. 'येनाङ्गविकारः' सूत्र है?
(A) करणकारक का (B) कर्मकारक का
(C) सम्प्रदानकारक का (D) अपादानकारक का

व्याख्या–
(A) 'येनाङ्गविकारः' (2/3/20) सूत्र से जिस अङ्ग के विकार से अङ्गी के सम्पूर्ण शरीर का विकार लक्षित हो, उसमें **तृतीयाविभक्ति** का प्रयोग होता है यथा–अक्ष्णा काणः।
(B) 'कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे' (2/3/5) सूत्र से अत्यन्तसंयोग गम्यमान होने पर कालवाची और मार्गवाची शब्दो में द्वितीया विभक्ति होती है यथा– मासं कल्याणी।
(C) 'परिक्रयणे सम्प्रदानमन्यतरस्याम्' (1/4/44) सूत्र से परिक्रयण क्रिया में साधकतम कारक की विकल्प से सम्प्रदानसंज्ञा होती है यथा– (i) शताय परिक्रीतः, (ii) शतेन परिक्रीतः।
(D) 'अन्तर्धौ येनादर्शनमिच्छति' (1/4/28) सूत्र से अन्तर्धान (छुपना) होने की क्रिया में कर्त्ता जिससे छुपना चाहता है उसकी अपादानसंज्ञा होती है यथा–मातुः निलीयते कृष्णः। अतः विकल्प `A' सही है।

32. 'अभितः' के योग में विभक्ति होती है?
(A) द्वितीया (B) तृतीया
(C) चतुर्थी (D) पञ्चमी

व्याख्या–
(A) अभितः, परितः, समया, निकषा, हा, प्रति के योग में **द्वितीयाविभक्ति** होती है।
अतः विकल्प `A' सही है।
(B) सह, साकम्, सार्धम्, समम्, प्राय, गोत्र, पृथक्, विना, नाना, स्तोक, अल्प आदि के योग में तृतीया विभक्ति होती है।
(C) नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलम्, वषट्, के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है।
(D) अन्य, आरात्, ऋते, प्राक्, प्रत्यक्, बहिः, शब्दों के योग में पञ्चमी विभक्ति होती है।

33. 'अन्तराऽन्तरेण युक्ते' सूत्र है?
(A) कर्मकारक का (B) करणकारक का
(C) अपादानकारक का (D) अधिकरणकारक का

व्याख्या–
(A) 'अन्तराऽन्तरेण युक्ते' (2/3/4) सूत्र से अन्तरा, अन्तरेण पदों के योग में **द्वितीयाविभक्ति** होती है।
यथा–अन्तरेण हरिं न सुखम्।
(B) 'संज्ञोऽन्यतरस्यां कर्मणि' (2/3/22) सूत्र से सम् उपसर्ग पूर्वक 'ज्ञा' धातु के अनभिहित कर्म में विकल्प से तृतीयाविभक्ति होती हैं (पक्ष में द्वितीया)
यथा–सः पित्रा पितरं वा सञ्जानीते।
(C) 'पृथग्विनानानाभिस्तृतीयाऽन्यतरस्याम्' (2/3/32) सूत्र से पृथक्, विना, नाना इन तीन पदों के योग में तृतीया विभक्ति होती है, पक्ष में पञ्चमी और द्वितीया विभक्ति भी होती है। यथा–पृथक् रामात्, रामेण-रामं वा।
(D) 'निमित्तात्कर्मयोगे' वार्तिक से निमित्तवाची शब्दों में सप्तमी विभक्ति होती है यदि वह निमित्त कर्म (फल) से युक्त हो यथा– चर्मणि द्वीपिनं हन्ति।
अतः विकल्प `A' सही है।

28. (B) 29. (D) 30. (A) 31. (A) 32. (A) 33. (A)

34. चतुर्थी विभक्ति तब आती है? जब–
(A) अनादर अर्थ द्योतित हो
(B) अतसुच् प्रत्ययान्त शब्दों के योग में
(C) कर्म-प्रवचनीय में
(D) अपवर्ग द्योतित होने पर

व्याख्या–

(A) **'मन्यकर्मण्यनादरे विभाषाऽप्राणिषु'** (2/3/17) सूत्र से अनादर भाव गम्यमान होने पर दिवादिगण मन् धातु के कर्म में (यदि वह प्राणीवाचक न हो तो) विकल्प से **चतुर्थी विभक्ति** होती है यथा–अहं न त्वां तृणाय मन्ये।

(B) 'षष्ठ्यतसर्थप्रत्ययेन' (2/3/30) सूत्र से अतसुच् प्रत्ययान्त शब्दों के योग में षष्ठी विभक्ति होती है। यथा–ग्रामस्य दक्षिणतः।

(C) कर्म-प्रवचनीय में द्वितीया, पञ्चमी, सप्तमी विभक्ति का प्रयोग होता है।

(D) 'अपवर्गे तृतीया' (2/3/6) सूत्र से अपवर्ग (फलप्राप्ति) द्योतित होने पर कालवाची और मार्गवाची शब्दों से तृतीयाविभक्ति होती है। यथा–क्रोशेन अनुवाकः अधीतः। अतः विकल्प `A' सही है।

35. 'व्याघ्रः चर्मणि द्वीपिनं हन्ति' वाक्य में 'चर्मणि' है?
(A) तृतीया विभक्ति में (B) द्वितीया विभक्ति में
(C) सप्तमी विभक्ति में (D) पञ्चमी विभक्ति में

व्याख्या–

(A) 'रामेण बाणेन हतो बाली'–अनुक्त कर्ता तथा करण कारक में तृतीयाविभक्ति का विधान 'कर्तृकरणयोस्तृतीया' (2/3/18) सूत्र से हुआ है।

(B) 'पर्जन्यो जपम् अनु प्रावर्षत्'–यहाँ जपम् में 'अनुर्लक्षणे' (1/4/84) सूत्र से लक्षण द्योतित होने पर 'अनु' की कर्मप्रवचनीय संज्ञा होकर, कर्मप्रवचनीय के योग में द्वितीया विभक्ति होती है।

(C) 'व्याघ्रः चर्मणि द्वीपिनं हन्ति' यहाँ 'चर्मणि' में **सप्तमी विभक्ति** का प्रयोग 'निमित्तात्कर्मयोगे' वार्तिक से हुआ है।

(D) 'प्रासादात् प्रेक्षते' यहाँ 'प्रासादात्' में पञ्चमीविभक्ति का प्रयोग 'ल्यब्लोपे कर्मण्यधिकरणे च' वार्तिक से हुआ है। अतः विकल्प `C' सही है।

36. 'स्पृहा' के योग में विभक्ति होती है?
(A) चतुर्थी (B) तृतीया
(C) द्वितीया (D) सप्तमी

व्याख्या–

(A) 'स्पृहेरीप्सितः' (1/4/36) सूत्र से 'स्पृह्' धातु के योग में 'ईप्सितपदार्थ' की सम्प्रदानसंज्ञा होकर उसमें **चतुर्थीविभक्ति** होती है। यथा–सः पुष्पेभ्यः स्पृहयति।

(B) 'हेतौ' (2/3/23) सूत्र से हेतु अर्थ के वाची शब्दो में तृतीया विभक्ति होती है। यथा–दण्डेन घटः।

(C) 'तथायुक्तं चानीप्सितम्' (1/4/50) सूत्र से कर्ता के द्वारा अनीप्सितपदार्थ की भी कर्मसंज्ञा होती है यथा–ओदनं भुञ्जानो विषं भुङ्क्ते।

(D) 'सप्तम्यधिकरणे च' (2/3/36) सूत्र से अधिकरण में सप्तमी विभक्ति का प्रयोग होता है। यथा– सर्वस्मिन् आत्मा अस्ति।
अतः विकल्प `A' सही है।

37. समास, जिसमें प्रायः उत्तरपद के अर्थ की प्रधानता होती है
(A) अव्ययीभाव (B) तत्पुरुष
(C) बहुव्रीहि (D) द्वन्द्व

व्याख्या–

(A) 'प्रायेण पूर्वपदार्थप्रधानोऽव्ययीभावः' – अर्थात् अव्ययीभाव में पूर्वपद के अर्थ की प्रधानता होती है। यथा– उपकृष्णम्।

(B) प्रायेणोत्तर-पदार्थ-प्रधानस्तत्पुरुषः–अर्थात् **तत्पुरुष समास** में उत्तरपद के अर्थ की प्रधानता होती है। यथा–राजपुरुषः।

(C) प्रायेणान्य-पदार्थ-प्रधानो बहुव्रीहिः–अर्थात् बहुव्रीहि समास में अन्यपद की प्रधानता होती है। यथा– वीणापाणिः

(D) प्रायेणोभय-पदार्थ-प्रधानो द्वन्द्वः–अर्थात् द्वन्द्वसमास में उभय (दोनों) पदों की प्रधानता होती है। यथा– रामलक्ष्मणौ।
अतः विकल्प `B' सही है।

38. 'विष्णु के बाद' का सम्पूर्ण पद है?
(A) अनुविष्णु (B) अनुविष्णषु
(C) इतिविष्णु (D) सुविष्णु

व्याख्या–'अव्ययं विभक्तिसमीप...........साकल्यान्तवचनेषु' (2/1/6) सूत्र से 'पश्चात्' अर्थ में 'अनु' अव्यय का विष्णु ङस् सुबन्त के साथ 'विष्णोः पश्चात् = **अनुविष्णु**' में अव्ययीभाव समास हुआ। अतः विकल्प `A' सही है।

34. (A) 35. (C) 36. (A) 37. (B) 38. (A)

39. 'सहरि' में समास है?
(A) बहुव्रीहि **(B) अव्ययीभाव**
(C) तत्पुरुष **(D) द्वन्द्व**

व्याख्या–
(A) 'अप्पूरणीप्रमाण्योः' (5/4/116) सूत्र से–'स्त्री प्रमाणी यस्य सः = स्त्रीप्रमाणः' में बहुव्रीहिसमास है।
(B) 'अव्ययीभावे चाकाले' (6/3/81) सूत्र से **अव्ययीभाव समास** में 'सह' को 'स' आदेश हो, किन्तु कालवाचक होने पर नहीं। यथा– हरेः सादृश्यम् = सहरि
(C) 'कर्तृकरणे कृता बहुलम्' (2/1/32) सूत्र से 'हरिणा त्रातः = हरित्रातः' में तृतीया तत्पुरुषसमास है।
(D) 'अल्पाच्तरम्' (2/2/34) सूत्र से 'शिवश्च केशवश्च = शिवकेशवौ' इस द्वन्द्वसमास में 'शिव' पद का पूर्वनिपात हुआ। अतः विकल्प `B' सही है।

40. चौरभयम् में समास है?
(A) पञ्चमीतत्पुरुष **(B) सप्तमीतत्पुरुष**
(C) अव्ययीभाव **(D) द्वन्द्वसमास**

व्याख्या–
(A) 'पञ्चमी भयेन' (2/1/37) सूत्र से पञ्चम्यन्त सुबन्त का भयवाचक सुबन्त के साथ **पञ्चमी तत्पुरुषसमास** होता है। यथा–चोराद् भयम् = चोरभयम्
(B) 'सप्तमी शौण्डैः' (2/1/40) सूत्र से 'अक्षेषु शौण्डः = 'अक्षशौण्डः' में सप्तमी तत्पुरुषसमास
(C) 'झयः' (5/4/111) सूत्र से 'समिधः समीपं = उपसमिधम्' इस अव्ययीभावसमास में 'टच्' प्रत्यय हुआ।
(D) 'चार्थे द्वन्द्वः' (2/2/29) सूत्र से 'द्वौ च दश च = 'द्वादश' में द्वन्द्वसमास है। अतः विकल्प `A' सही है।

41. चतुर्थी तत्पुरुषसमास है?
(A) यूपदारु **(B) द्विमूर्धः**
(C) धवखदिरौ **(D) इनमें से कोई नहीं**

व्याख्या–
(A) 'चतुर्थी तदर्थार्थ-बलि-हित-सुखरक्षितैः' (2/1/36) सूत्र से **'यूपाय दारु = यूपदारु' में चतुर्थी तत्पुरुषसमास** है।
(B) 'अनेकमन्यपदार्थे' (2.2.24) सूत्र से–'द्वौ मूर्धानौ यस्य सः = द्विमूर्धः' में बहुव्रीहि समास है।
(C) 'चार्थे द्वन्द्वः' (2/2/29) सूत्र से–'धवश्च खदिरश्च = धवखदिरौ' में द्वन्द्वसमास है।
अतः विकल्प `A' सही है।

42. समास में प्रथम शब्द संख्यावाचक हो तो वह समास होगा?
(A) नञ् तत्पुरुष **(B) अव्ययीभाव**
(C) बहुव्रीहि **(D) द्विगु**

व्याख्या–
(A) **नञ् तत्पुरुष** – सुबन्त के साथ 'नञ्' अव्यय का समास होने पर नञ् तत्पुरुष समास होगा। यथा– न भावः इति अभावः
(B) **अव्ययीभाव**– जहाँ पूर्वपदार्थप्रधान हो, और समस्तपद की अव्ययसंज्ञा हो तो वह अव्ययीभावसमास होगा। यथा– उपकृष्णम्
(C) **बहुव्रीहि** – जहाँ अन्यपदार्थ की प्रधानता हो, वह बहुव्रीहि होगा। यथा– चन्द्रः मौलौ यस्य सः = चन्द्रमौलिः (शिवः)
(D) **द्विगु** – 'संख्यापूर्वो द्विगुः' (2/1/52) सूत्रानुसार प्रथमशब्द संख्यावाचक और द्वितीयशब्द संज्ञा हो तो **द्विगुसमास** होता है। यथा– पञ्चानां वटानां समाहारः = पञ्चवटी। अतः विकल्प `D' सही है।

43. 'शशिशेखरः' में समास है?
(A) बहुव्रीहि **(B) कर्मधारय**
(C) द्वन्द्व **(D) नञ्तत्पुरुष**

	शब्द	समास
(A)	**शशिशेखरः**	**बहुव्रीहि**
(B)	पीताम्बरम्	कर्मधारय
(C)	अहिनकुलम्	समाहारद्वन्द्व
(D)	अब्राह्मणः	नञ् तत्पुरुष

अतः विकल्प `A' सही है।

44. 'राम' शब्द का षष्ठी बहुवचन का रूप है?
(A) रामस्य **(B) रामयोः**
(C) रामाणाम् **(D) इनमें से कोई नहीं**

व्याख्या–राम अकारान्त पुंलिङ्ग का रूप षष्ठीविभक्ति में– 'रामस्य, रामयोः, **रामाणाम्'** बनता है।
अतः विकल्प `C' सही है।

39. (B)	40. (A)	41. (A)	42. (D)	43. (A)	44. (C)

45. 'साधु' शब्द का सप्तमी एकवचन का रूप है?
(A) साधौ (B) साधुषु
(C) साधुना (D) साधुभिः

व्याख्या–'साधु' उकारान्त पुंलिङ्ग का रूप सप्तमी विभक्ति में–'**साधौ,** साधोः, साधुषु' बनता है। तृतीया विभक्ति में–'साधुना, साधुभ्याम्, साधुभिः' रूप बनता है।
अतः विकल्प `A' सही है।

46. 'धेनवः' किस विभक्ति का रूप है?
(A) प्रथमा में (B) तृतीया में
(C) चतुर्थी में (D) षष्ठी में

व्याख्या–
(A) धेनु (गाय) उकारान्त स्त्रीलिङ्ग का रूप प्रथमाविभक्ति में– 'धेनुः, धेनू, **धेनवः**' रूप बनता है।
(B) तृतीयाविभक्ति में– 'धेन्वा, धेनुभ्याम्, धेनुभिः' रूप बनता है।
(C) चतुर्थी विभक्ति में– 'धेन्वै, धेनुभ्याम्, धेनुभ्यः' रूप बनता है।
(D) षष्ठी विभक्ति में–'धेन्वाः, धेन्वोः, धेनूनाम्' रूप बनता है।
अतः विकल्प `A' सही है।

47. छोटी से छोटी व्यक्त खण्ड ध्वनि को कहते हैं?
(A) वर्ण (B) पद
(C) शब्द (D) वाक्य

व्याख्या– * छोटी से छोटी व्यक्त खण्ड ध्वनि को '**वर्ण**' (अक्षर) कहते हैं।
* वर्णों के समूह को 'पद' या 'शब्द' कहते हैं।
* पदों के समूह को 'वाक्य' कहते हैं।
अतः विकल्प `A' सही है।

48. कुल स्वर संख्या है।
(A) पाँच (B) दस
(C) तेरह (D) तैंतीस

व्याख्या–माहेश्वर सूत्रों में कुल नौ स्वर (अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ बताये गये हैं।) दीर्घ आ, ई, ऊ, ॠ को मिलाकर **तेरह स्वर** हो जाते हैं। यह प्रश्न विवादित है। क्योंकि संस्कृत में मूल स्वर पाँच (अ, इ, उ, ऋ, लृ) और कुल स्वर नव माने जाते हैं।
दिये गये विकल्पों में `C' सही है।

49. वाक्य में सन्धि करना अथवा न करना है?
(A) ऐच्छिक (B) निषिद्ध
(C) उपर्युक्त दोनों (D) इनमें से कोई नहीं।

व्याख्या–''संहितैकपदे नित्या नित्या धातूपसर्गयोः।
नित्या समासे वाक्ये तु सा विवक्षामपेक्षते।।''
अर्थात् एक पद में, धातु और उपसर्ग के योग में, और समास में सन्धि करना नित्य है परन्तु **वाक्य में सन्धि विवक्षाधीन (ऐच्छिक)** होती है। अतः विकल्प `A' सही है।

50. धातु और उपसर्ग में सन्धि करना है?
(A) ऐच्छिक (B) अनिवार्य
(C) निषिद्ध (D) उपर्युक्त तीनों

व्याख्या– धातु और उपसर्ग में सन्धि करना **नित्य (अनिवार्य)** है। विस्तृत व्याख्या के लिए उपर्युक्त प्रश्न देखें।
अतः विकल्प `B' सही है।

51. 'द्रक्ष्यति' किस धातु का लृट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप है?
(A) द्रक्ष् (B) दृश्य
(C) दृश् (D) पश्य्

व्याख्या– '**दृश्**' धातु लृट्लकार प्रथमपुरुष में '**द्रक्ष्यति,** द्रक्ष्यतः द्रक्ष्यन्ति' रूप बनता है। अतः विकल्प `C' सही है।

52. 'नम्' धातु लृट्लकार उत्तमपुरुष एकवचन का रूप है?
(A) नंस्यति (B) नंस्यतः
(C) नंस्यामि (D) नष्यति

व्याख्या– * 'नम्' धातु (प्रणाम करना) लृट्लकार प्रथमपुरुष में नंस्यति, नंस्यतः, नंस्यन्ति रूप बनता है।
* उत्तम पुरुष में–**नंस्यामि,** नंस्यावः, नंस्यामः रूप बनता है।
अतः विकल्प `C' सही है।

53. 'द्वि' शब्द के रूप कौन-कौन लिङ्ग में होंगे?
(A) पुंलिङ्ग में (B) स्त्रीलिङ्ग में
(C) नपुंसकलिङ्ग में (D) उपर्युक्त तीनों लिङ्गो में

व्याख्या– * **तीनों लिङ्गों में** 'द्वि' शब्द का रूप केवल द्विवचन में चलता है।
* पुंल्लिङ्ग में–द्वौ, द्वौ, द्वाभ्याम्, द्वाभ्याम् द्वाभ्याम्, द्वयोः, द्वयोः रूप चलता है।
* नपुंसकलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग में एकसमान–द्वे, द्वे, द्वाभ्याम्, द्वाभ्याम्, द्वाभ्याम्, द्वयोः, द्वयोः रूप चलता है।
अतः विकल्प `D' सही है।

45. (A) 46. (A) 47. (A) 48. (C) 49. (A) 50. (B) 51. (C) 52. (C) 53. (D)

54. संस्कृत में 'दशहजार' होगा?
(A) अयुतम् (B) सहस्त्रम्
(C) लक्षम् (D) नियुतम्

	संख्या	**संस्कृत शब्द**
(A)	**दश हजार**	**अयुतम्**
(B)	एक हजार	सहस्त्रम्
(C)	एक लाख	लक्षम्
(D)	दश लाख	नियुतम्/प्रयुतम्

अतः विकल्प `A' सही है।

55. मैनाक किसका पुत्र है?
(A) इन्द्र का (B) हिमालय का
(C) समुद्र का (D) दैत्य का

व्याख्या–मैनाक, **हिमालय का** पुत्र था। हिमालय के पंख इन्द्र ने काटे थे। मैनाक इन्द्र के डर से समुद्र में जाकर छुप गया था। 'तुषाराद्रेः सूनोरहह! पितरि क्लेशविवशे' (नीतिशतकम्/29) अतः विकल्प `B' सही है।

56. प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन..........कैः?
(A) नीचैः (B) मध्याः
(C) परित्यजन्ति (D) धीराः

व्याख्या–
(A) 'प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः' अर्थात् अधम कोटि के मनुष्य विघ्न के भय से कार्य आरम्भ नहीं करते हैं। नीतिशतकम/73
(B) 'प्रारभ्य विघ्नविहता विरमन्ति मध्याः'–मध्यम श्रेणी के लोग कार्य को आरम्भ करके विघ्न आ जाने पर कार्य से विरत हो जाते हैं।
(C) 'प्रारब्धमुत्तमजना न परित्यजन्ति' अर्थात् श्रेष्ठ मनुष्य कार्य को पूर्ण करते हैं।
(D) 'न्याय्यात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः' अर्थात् धीर पुरुष न्यायोचित मार्ग से एक कदम भी विचलित नहीं होते हैं। अतः विकल्प `A' सही है।

57. विभाति कायः करुणाकुलानां.........रिक्त स्थान की पूर्ति करे?
(A) कुण्डलेन
(B) कङ्कणेन
(C) परोपकारेण न चन्दनेन
(D) परोपकारिणाम्

व्याख्या–
(A) श्रोत्रं श्रुतेनैव न कुण्डलेन
(B) दानेन पाणिर्न तु कङ्कणेन।
(C) विभाति कायः करुणापराणां **परोपकारेण न चन्दनेन** (नीतिशतकम/63)
(D) स्वभाव एवैष परोपकारिणाम्। (नीतिशतकम्/62)
अतः विकल्प `C' सही है।

58. 'ये परहितं स्वार्थाय निघ्नन्ति' नीतिशतकम् के अनुसार वे लोग हैं?
(A) सत्पुरुषाः (B) सामान्याः
(C) मानुषराक्षसाः (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या–
(A) 'एते सत्पुरुषाः परार्थघटकाः स्वार्थान्परित्यज्य ये'– अर्थात् जो लोग अपने स्वार्थ को त्यागकर दूसरों का प्रयोजन सिद्ध करते हैं वे सज्जनपुरुष हैं।
(B) 'सामान्यास्तु परार्थमुद्यमभृतः स्वार्थाविरोधेन ये'–अर्थात् जो अपने स्वार्थ की हानि किए बिना ही दूसरों का हित करते हैं, वे सामान्य लोग हैं।
(C) 'तेऽमी **मानुषराक्षसाः** परहितं स्वार्थाय निघ्नन्ति ये' अर्थात् जो अपने स्वार्थ के लिए दूसरों के हित को नष्ट करते हैं, वे मनुष्यों में राक्षसस्वरूप हैं। (नीतिशतकम्/65) अतः विकल्प `C' सही है।

59. नास्त्युद्यमसमो .... रिक्त स्थान की पूर्ति करें?
(A) लज्जा (B) भूषणम्
(C) रिपुः (D) बन्धुः

व्याख्या–
(A) 'लज्जाङ्गनायाः कृशता कटौ च'–अर्थात् स्त्री का लज्जा उत्कृष्ट आभूषण है, कमर का पतला होना उसकी शोभा है। नीतिशतकम्/परिशिष्ट-7
(B) 'शीलं हि सर्वस्य नरस्य भूषणम्' अर्थात् शील (सदाचार) सभी मनुष्यों का उत्कृष्ट आभूषण है। नीतिशतकम्/परिशिष्ट-7
(C) 'आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः' अर्थात् निश्चित रूप से आलस्य मनुष्य के शरीर में रहने वाला महान् शत्रु है। नीतिशतकम्/परिशिष्ट-1
(D) 'नास्त्युद्यमसमो **बन्धुः**कृत्वा यं नावसीदति' अर्थात् कार्य में प्रवृत्ति (उद्यम) के समान अन्य कोई बन्धु नहीं है। नीतिशतकम्/परिशिष्ट-1
अतः विकल्प `D' सही है।

54. (A) 55. (B) 56. (A) 57. (C) 58. (C) 59. (D)

60. पर्वत के पंख किसने काटे थे?
(A) इन्द्र (B) विष्णु
(C) शिव (D) ब्रह्मा

व्याख्या–पर्वत के पंख **इन्द्र** ने काटा था ''वरं पक्षच्छेदः समदमघवन्मुक्तकुलिश.......'' (नीतिशतकम्/29)
अतः विकल्प `A' सही है।

61. लक्ष्मी ने निष्ठुरता का गुण किससे प्राप्त किया?
(A) कौस्तुभमणि (B) उच्चैःश्रवा
(C) कालकूट (D) मदिरा

व्याख्या–लक्ष्मी ने निम्नवत् गुण प्राप्त किया
(A) कौस्तुभमणि से निष्ठुरता
(B) उच्चैःश्रवा से चञ्चलता
(C) कालकूट से **मोहनशक्ति**
(D) मदिरा से मादकता
अतः विकल्प `A' सही है।

62. लक्ष्मी 'पातालगुहेव...........' है?
(A) विटपकानध्यारोहति
(B) तमोबहुला
(C) चिरद्युतिकारिणी
(D) प्रकटितविविध-संक्रान्तिः

व्याख्या–
(A) 'लतेव विटपकानध्यारोहति' अर्थात् लक्ष्मी लता की भाँति धूर्तो का आश्रय लेती है।
(B) 'पातालगुहेव **तमोबहुला**' अर्थात् लक्ष्मी पातालगुफा के समान अत्यन्त अन्धकार से युक्त है। –(शुकनासोपदेश)
(C) 'प्रावृडिवाचिरद्युतिकारिणी' अर्थात् लक्ष्मी वर्षा ऋतु के समान क्षणिक प्रकाश उत्पन्न करने वाली है।
(D) 'दिवसकरगतिरिव प्रकटितविविधसंक्रान्तिः' अर्थात् लक्ष्मी सूर्य की गति के समान अनेक प्रकार के लोगों को प्रकाशित करती है। अतः विकल्प `B' सही है।

63. लक्ष्मी से कुप्रभावित राजा 'दर्शनप्रदानमपि...... गणयन्ति–
(A) अनुग्रहं (B) वर प्रदानं
(C) पावनं (D) उपकारं

व्याख्या–
(A) 'दर्शनप्रदानमपि **अनुग्रहं** गणयन्ति'–लक्ष्मी से कुप्रभावित राजा दर्शन देना भी अनुग्रह करना समझते हैं। –(शुकनासोपदेश)
(B) 'आज्ञामपि वरप्रदानं मन्यन्ते'–आज्ञा देना भी वरदान मानते हैं।
(C) 'स्पर्शमपि पावनमाकलयन्ति'–स्पर्श को भी पवित्र करने वाला समझते हैं।
(D) 'दृष्टिपातमप्युपकारपक्षे स्थापयन्ति'–आँखों से देख भर लेने को भी उपकार की श्रेणी में रखते हैं।
अतः विकल्प `A' सही है।

64. कौन-सा राजा सिद्धादेश होता है?
(A) भीरुप्रकृतिः (B) उन्मत्तः
(C) आरुढप्रतापः (D) तरलहृदयः

व्याख्या–'**आरुढप्रतापो** हि राजा त्रैलोक्यदर्शीव सिद्धादेशो भवति'–अर्थात् प्रताप की स्थापना (विस्तार) करने वाला राजा त्रैलोक्यदर्शी की भाँति सिद्धादेश होता है। –शुकनासोपदेश
अतः विकल्प `C' सही है।

65. लक्ष्मी 'साधुभाव' की क्या है?
(A) प्रस्तावना (B) कदलिका
(C) राहुजिह्वा (D) वध्यशाला

व्याख्या–
(A) 'प्रस्तावना कपटनाटकस्य'–लक्ष्मी कपटनाटक की प्रस्तावना है।
(B) 'कदलिका कामकरिणः'–कामदेव रूपी हाथी का कदली वन है।
(C) 'राहुजिह्वा धर्मेन्दुमण्डलस्य'–धर्म रूपीचन्द्रमण्डल के लिए राहुजिह्वा है।
(D) '**वध्यशाला** साधुभावस्य'–सुजनता का हत्यागृह है।
अतः विकल्प `D' सही है।

66. 'उत्तररामचरितम्' के रचयिता हैं?
(A) भारवि (B) भवभूति
(C) भर्तृहरि (D) भरतमुनि

	ग्रन्थ	**रचनाकार**
(A)	किरातार्जुनीयम्	भारवि
(B)	**उत्तररामचरितम्**	**भवभूति**
(C)	नीतिशतकम्	भर्तृहरि
(D)	नाट्यशास्त्रम्	भरतमुनि

अतः विकल्प `B' सही है।

60. (A) 61. (A) 62. (B) 63. (A) 64. (C) 65. (D) 66. (B)

67. ‘अमरसिन्धु’ है?
(A) रेवा **(B) वेत्रवती**
(C) चर्मण्वती **(D) गङ्गा**

	प्राचीन नाम	आधुनिक नाम
(A)	रेवा	नर्मदा
(B)	वेत्रवती	बेतवा
(C)	चर्मण्वती	चम्बल
(D)	**अमरसिन्धु**	**गङ्गा**

अतः विकल्प `D' सही है।

68. उत्तररामचरितम् के तृतीय अङ्क का मुख्य रस है?
(A) करुणरस **(B) वीररस**
(C) शृङ्गाररस **(D) शान्तरस**

	ग्रन्थ	मुख्यरस
(A)	उत्तररामचरितम्	**करुणरस**
(B)	वेणीसंहारम्	वीररस
(C)	कर्पूरमञ्जरी	शृङ्गाररस
(D)	शारिपुत्रप्रकरणम्	शान्तरस

अतः विकल्प `A' सही है।

69. शिवराजविजयम् किस श्रेणी का काव्य है?
(A) महाकाव्य **(B) ऐतिहासिक उपन्यास**
(C) गीतिकाव्य **(D) ऐतिहासिक काव्य**

व्याख्या–

	ग्रन्थ	विधा
(A)	जानकीहरणम्	महाकाव्य
(B)	**शिवराजविजयम्**	**ऐतिहासिक उपन्यास**
(C)	नीतिशतकम्	गीतिकाव्य (मुक्तककाव्य)
(D)	राजतरङ्गिणी	ऐतिहासिक काव्य

अतः विकल्प `B' सही है।

70. मेघदूतम् में ‘धूमज्योतिः सलिलमरुतां सन्निपातः’ है?
(A) यक्ष **(B) मेघ**
(C) कुबेर **(D) इन्द्र**

व्याख्या–‘धूमज्योतिः सलिलमरुतां सन्निपातः क्व मेघः’ (पूर्वमेघ/5) अर्थात् धुएँ, ज्योति, जल और वायु से मिलकर मेघ बना है। अतः विकल्प `B' सही है।

71. ‘प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु’ होते हैं?
(A) मूढजनाः
(B) विद्वज्जनाः
(C) राजानः
(D) कामार्ताः

व्याख्या–‘**कामार्ता** हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु’ (पूर्वमेघ/5) क्योंकि कामपीड़ित लोग जड़ और चेतन पदार्थों के विषय में स्वभावतः दीन हो जाते हैं। अतः विकल्प `D' सही है।

72. राजहंस कहाँ जाने को उत्सुक हैं?
(A) कैलासपर्वत **(B) वैकुण्ठ**
(C) मानसरोवर **(D) स्वर्गलोक**

व्याख्या–
तच्छ्रुत्वा ते श्रवणसुभगं गर्जितं मानसोत्काः।
सम्पत्स्यन्ते नभसि भवतो राजहंसाः सहायाः।। (पूर्वमेघ/11)
मेघ के सहयात्रियों का वर्णन करते हुए यक्ष कहता है कि–मानसरोवर जाने को उत्सुक राजहंस कैलासपर्वत तक तुम्हारे साथी होगें? अतः विकल्प `C' सही है।

73. शिवराजविजयम् का विभाजन हुआ है?
(A) निःश्वास में **(B) उच्छ्वास में**
(C) खण्ड में **(D) तरङ्ग में**

	ग्रन्थ	विभाजन
(A)	**शिवराजविजयम्**	**3 विराम, 12 निःश्वास**
(B)	हर्षचरितम्	8 उच्छ्वास
(C)	मेघदूतम्	2 खण्ड (पूर्व, उत्तर)
(D)	राजतरङ्गिणी	8 तरङ्ग

अतः विकल्प `A' सही है।

74. किरातार्जुनीयम् में दुर्योधन की तुलना की गयी है?
(A) उरग से **(B) शुक से**
(C) द्विप से **(D) सिंह से**

व्याख्या–
‘‘स दुःसहान्मन्त्रपदादिवो**रगः**’’ (किरात-1/24) के अनुसार दुर्योधन की तुलना **उरग** (साँप) से की गयी है।
अतः विकल्प `A' सही है।

67. (D) 68. (A) 69. (B) 70. (B) 71. (D) 72. (C) 73. (A) 74. (A)

75. अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक में गौतमी है?
(A) शकुन्तला की सखी
(B) तपोवन की अध्यक्षा
(C) अप्सरा
(D) दुष्यन्त की प्रतीहारी

व्याख्या–
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक में अनसूया और प्रियंवदा शकुन्तला की सखियाँ हैं।
(B) गौतमी तपोवन (कण्वाश्रम) की **अध्यक्षा** हैं।
(C) मेनका, सानुमती–अप्सरा हैं।
(D) वेत्रवती, दुष्यन्त की प्रतीहारी है।
अतः विकल्प `B' सही है।

76. उत्तररामचरितम् के तृतीय अङ्क का घटना स्थल है?
(A) अयोध्या
(B) जनस्थानप्रदेश
(C) पञ्चवटी
(D) वाल्मीकि आश्रम

	अङ्क		**घटना स्थल**
(A)	प्रथम अङ्क	–	अयोध्या
(B)	द्वितीय अङ्क	–	जनस्थानप्रदेश
(C)	**तृतीय अङ्क**	–	**पञ्चवटी**
(D)	चतुर्थ अङ्क	–	वाल्मीकि आश्रम

अतः विकल्प `C' सही है।

77. सुप्रसिद्ध कविजन निर्धन होकर रहते हैं, तो इसमें दोषी है?
(A) प्रजा **(B) राजा**
(C) मन्त्री **(D) सेनापति**

व्याख्या–"विख्याताः कवयो वसन्ति विषये यस्य **प्रभोर्निर्धनाः**"– 'तज्जाड्यं वसुधाधिपस्य........' (नीतिशतकम्/12) अर्थात् जिस राजा के राज्य में सुप्रसिद्ध कविजन निर्धन होकर निवास करते हैं, तो वह राजा की जड़ता (मूर्खता) है। अतः विकल्प `B' सही है।

78. किरातार्जुनीयम् में गुप्तचर किस वेष में जाता है?
(A) सैनिक **(B) संन्यासी**
(C) ब्रह्मचारी **(D) मन्त्री**

व्याख्या–'स वर्णिलिङ्गी विदितः समाययौ'(किरात0 1/1) अर्थात् वह ब्रह्मचारी का वेश धारण करने वाला वनेचर सारा वृत्तान्त जानकर लौट आया। अतः विकल्प `C' सही है।

79. शुकनासोपदेश, कादम्बरी का अंश है, उसके रचयिता हैं?
(A) बाणभट्ट **(B) गुणाढ्य**
(C) सुबन्धु **(D) क्षेमेन्द्र**

	ग्रन्थ		**रचयिता**
(A)	**कादम्बरी**	–	**बाणभट्ट**
(B)	बृहत्कथा	–	गुणाढ्य
(C)	वासवदत्ता	–	सुबन्धु
(D)	बृहत्कथामञ्जरी	–	क्षेमेन्द्र

अतः विकल्प `A' सही है।

80. कैलासपर्वत में कौन सी नगरी बसी है?
(A) पाटलिपुत्र **(B) द्वारकापुरी**
(C) अलकापुरी **(D) उज्जयिनी**

व्याख्या– * कालिदास कृत मेघदूतम् में वर्णन आता है कि कैलासपर्वत पर अलकापुरी नामक नगरी अवस्थित है। "तस्योत्सङ्गे प्रणयिन इव स्रस्तगङ्गादुकूलां न त्वं दृष्ट्वा न **पुनरलकां** ज्ञास्यसे कामचारिन्" (पूर्वमेघ-66)
* पाटलिपुत्र (पटना) – बिहार में, द्वारकापुरी – गुजरात में, उज्जयिनी – मध्य प्रदेश में स्थित है।
अतः विकल्प `C' सही है।

81. राजा दुष्यन्त शकुन्तला को पहचान सकते हैं, जब वे देखेंगें?
(A) कुण्डल **(B) हार**
(C) अँगूठी **(D) केयूर**

व्याख्या–'**अभिज्ञानाभरणदर्शनेन** शापो निवर्तिष्यत' दुर्वासा के इस कथन से ज्ञात होता है कि जब राजा दुष्यन्त पहचान का आभूषण (अँगूठी) देखेंगे, तब शकुन्तला को पहचान सकेंगे। अतः विकल्प `C' सही है।

82. शिवराजविजयम् के कथानक के प्रारम्भ का काल है?
(A) रात्रि **(B) सायंकाल**
(C) मध्याह्न **(D) प्रातःकाल**

व्याख्या– '**अरुण एष प्रकाशः** पूर्वस्यां भगवतो मरीचिमालिनः'–प्रस्तुत पंक्ति से यह विदित होता है कि शिवराजविजयम् के कथानक का आरम्भ प्रातःकालीन सूर्योदय वर्णन से होता है। अतः विकल्प `D' सही है।

75. (B) 76. (C) 77. (B) 78. (C) 79. (A) 80. (C) 81. (C) 82. (D)

83. 'सुलभकोपो महर्षिः' हैं?
(A) कण्व (B) दुर्वासा
(C) दुष्यन्त (D) शकुन्तला

व्याख्या–
(A) कण्व नैष्ठिक ब्रह्मचारी हैं।
(B) दुर्वासा सुलभकोप महर्षि हैं। प्रियंवदा– 'एष **दुर्वासाः** सुलभकोपो महर्षिः' – (अभि० शाकु० अङ्क-4)
(C) दुष्यन्त पुरुवंशी राजा तथा हस्तिनापुर के सम्राट् हैं।
(D) शकुन्तला अतिथिपरिभाविनी है। जो कण्व की पालिता पुत्री और विश्वामित्र मेनका की जन्मना पुत्री है।
अतः विकल्प `B' सही है।

84. विषयों की आसक्ति मनुष्य को............... करती है?
(A) नष्ट (B) बुद्धिमान्
(C) समृद्ध (D) प्रसन्न

व्याख्या–'नाशयति च दिङ्मोहः... पुरुषमत्यासङ्गो विषयेषु' विषयों के सुख में आसक्ति, मनुष्य को **नष्ट कर** देती है। (कादम्बरी शुकनासोपदेश) अतः विकल्प `A' सही है।

85. सोमनाथ तीर्थ को धूलि में किसने मिला दिया।
(A) शहाबुद्दीन (B) कुतुबुद्दीन
(C) अकबर (D) महमूद गजनवी

व्याख्या– (A) गजनी देश पर प्रथम आक्रमण मो० शहाबुद्दीन गोरी ने किया। इसी ने भारत में यवनराज्य का बीजारोपण किया।
(B) कुतुबुद्दीन भारत का प्रथम विदेशी सम्राट् था।
(C) अकबर को 'गूढशत्रु' कहा गया है।
(D) **महमूद गजनवी ने** सोमनाथ तीर्थ को धूलि में मिलाया **''सोमनाथतीर्थमपि धूलीचकार''**– (शिवराजविजयम्)
* वह भारत पर बारह बार आक्रमण किया। इसकी मृत्यु 1087 ई० में हुई थी
नोट–उपर्युक्त सभी तथ्य शिवराजविजयम् पर आधारित हैं। अतः विकल्प `D' सही है।

86. ऋषि वशिष्ठ की पत्नी थीं?
(A) अदिति (B) लोपामुद्रा
(C) अरुन्धती (D) मेनका

	पति		**पत्नी**
(A)	मारीच	–	अदिति
(B)	अगस्त्य	–	लोपामुद्रा
(C)	**वशिष्ठ**	–	**अरुन्धती**
(D)	विश्वामित्र	–	मेनका

अतः विकल्प `C' सही है।

87. सोमनाथ तीर्थ का देवता है?
(A) ब्रह्मा (B) विष्णु
(C) राम (D) महादेव

व्याख्या–सोमनाथ तीर्थ के देवता भगवान् **शिव** हैं। ''त्यजेमामकिञ्चितकरीं जडां **महादेवप्रतिमाम्**'' – (शिवराजविजयम्) अतः विकल्प `D' सही है।

88. शकुन्तला को विदाई का सन्देश दिया?
(A) कण्व ने (B) दुर्वासा ने
(C) तपोवन के वृक्षों ने (D) मृगों ने

व्याख्या–
(A) 'शुश्रूषस्व गुरून् कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीजने' इस श्लोक के माध्यम से कण्व, ससुराल जाती हुई शकुन्तला को उपदेश देते हैं। (अभिज्ञान 4/18)
(B) 'स्मरिष्यति त्वां न स बोधितोऽपि सन्, कथां प्रमत्तः प्रथमं कृतामिव''(अभि० 4/1) प्रस्तुत श्लोक में दुर्वासा कुटिया के पास बैठी हुई शकुन्तला को शाप देते हैं।
(C) ''अनुमतगमना शकुन्तला तरुभिरियं वनवासबन्धुभिः'' (अभि० 4/10) इस श्लोक से यह ज्ञात होता है कि तपोवन के वृक्षों के द्वारा शकुन्तला को पतिगृह जाने की अनुमति प्राप्त हुई।
(D) 'उद्गलितदर्भकवला मृग्यः' (अभि० 4/12) ससुराल जाती हुई शकुन्तला के वियोग में मृगियों ने कुश के ग्रास को उगल दिया है।
अतः विकल्प `A' सही है।

89. शूरवीर महीतल पर अपना प्रभाव प्रकट कर सकता है?
(A) धन से (B) ज्ञान से
(C) पराक्रम से (D) अहङ्कार से

व्याख्या–नीतिशतकम् में भर्तृहरि कहते है, कि शूरवीर पराक्रम से धरती पर अपना प्रभाव प्रकट करते हैं। ''एकेनापि हि **शूरेण** पादाक्रान्तं महीतलम्'' (नीति० परि०-2)
अतः विकल्प `C' सही है।

83. (B) 84. (A) 85. (D) 86. (C) 87. (D) 88. (A) 89. (C)

90. नीतिशतकम् में 'पूर्वतपसा खलु सञ्चितानि' है?
(A) कर्माणि (B) भाग्यानि
(C) फलानि (D) गुणानि

व्याख्या–'भाग्यानि पूर्वतपसा खलु सञ्चितानि' (नीतिशतकम्/98) पहले की गई तपस्या से सञ्चित भाग्य ही निश्चय रूप से यथोचित समय पर फल देते हैं।
अतः विकल्प `B' सही है।

91. द्वैतवन में गुप्तचर किसके पास लौट आया?
(A) दुर्योधन (B) युधिष्ठिर
(C) कृष्ण (D) भीष्म

व्याख्या–'स वर्णिलिङ्गी विदितः समाययौ, **युधिष्ठिरं** द्वैतवने वनेचरः'(किरात० 1/1) अर्थात् ब्रह्मचारी का वेश धारण करने वाला वनेचर सारा वृत्तान्त जानकर द्वैतवन में युधिष्ठिर के पास लौट आया। अतः विकल्प `B' सही है।

92. 'राजविषविकारतन्द्राप्रदा' है?
(A) राजलक्ष्मी (B) सरस्वती
(C) युवावस्था (D) सुन्दरता

व्याख्या–'राज्यविषविकारतन्द्राप्रदा **राजलक्ष्मीः**' (शुकनासोपदेश) राजलक्ष्मी राज्य रूपी विष के विकार से उत्पन्न तन्द्रा प्रदान करती है। अतः विकल्प `A' सही है।

93. 'प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः'–यहाँ 'मादृशां' से तात्पर्य है?
(A) भीम (B) युधिष्ठिर
(C) गुप्तचर (D) द्रौपदी

व्याख्या– 'प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः' (किरात० 1/25) प्रस्तुत पंक्ति में वनेचर युधिष्ठिर से कहता है कि–हम जैसों की वाणी केवल बात बताने वाली है।
अतः विकल्प `C' सही है।

94. यक्ष के विरह का कितना समय बीत चुका है?
(A) एक वर्ष (B) आठ मास
(C) चार मास (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

व्याख्या–
(A) कुबेर ने यक्ष को अपनी पत्नी से एक वर्ष दूर रहने का शाप दिया था। ''शापेनास्तङ्गमितमहिमा वर्षभोग्येण भर्तुः'' (पूर्वमेघ-01)
(B) यक्ष रामगिरि पर्वत पर जिस दिन मेघ को देखता है तब तक विरह के **आठ मास** बीत चुके हैं।
(C) यक्षिणी से मिलन में अभी चार मास बाकी है, अर्थात् वियोग का अभी चार मास शेष है। ''शेषान् मासान् गमयचतुरो लोचने मीलयित्वा'' (उत्तरमेघ-50)
अतः विकल्प `B' सही है।

95. ''इत्याख्याते पवनतनयं मैथिलीवोन्मुखी सा'' यहाँ 'सा' से तात्पर्य है?
(A) सीता (B) विद्युत्
(C) यक्षिणी (D) हनुमान्

व्याख्या–'इत्याख्याते पवनतनयं मैथिलीवोन्मुखी सा' (उत्तरमेघ/40) अर्थात् इसप्रकार कहने पर ऊपर को मुख किये हुए वह (**मेरी प्रिया**) तुम्हारी सारी बात सुनेगी, जैसे सीताजी ने हनुमान् जी की बात सुनी थी। अतः विकल्प `C' सही है।

96. सीता, राम को कितने वर्षों के अन्तराल पर देखती हैं?
(A) 14 वर्ष (B) 20 वर्ष
(C) 10 वर्ष (D) 12 वर्ष

व्याख्या–''अद्य खल्वायुष्मतोः कुशलवयो**र्द्वादशस्य जन्मवत्सरस्य** संख्यामङ्गलग्रन्थिरभिवर्तते''–तमसा के इस कथन से ज्ञात होता है कि आज लवकुश के जन्म की **12वीं वर्षगाँठ** है। इसी समय राम पञ्चवटी में शम्बूक को दण्ड देने के लिए आये। अर्थात् सीता, राम को **12 वर्षों के अन्तराल के** बाद देखती हैं। अतः विकल्प `D' सही है।

97. धन जीतकर युधिष्ठिर को कौन देता था?
(A) भीम (B) नकुल
(C) सहदेव (D) अर्जुन

व्याख्या–''विजित्य यः प्राज्यमयच्छदुत्तरान्, कुरूनकुप्यं वसु **वासवोपमः''** (किरात० 1/35) द्रौपदी के इस कथन से ज्ञात होता है, कि अर्जुन ने उत्तर कुरु प्रदेश को जीतकर प्रचुर मात्रा में सोना-चाँदी रूपी धन युधिष्ठिर को दिया था।
अतः विकल्प `D' सही है।

98. यक्ष को शाप दिया था?
(A) इन्द्र (B) नारद
(C) कुबेर (D) दुर्वासा

व्याख्या–कुबेर ने यक्ष को अपनी पत्नी से एक वर्ष तक दूर रहने का शाप दिया था। ''शापेनास्तङ्गमितमहिमा वर्षभोग्येण **भर्तुः''** (पूर्वमेघ/1) अतः विकल्प `C' सही है।

90. (B) 91. (B) 92. (A) 93. (C) 94. (B) 95. (C) 96. (D) 97. (D)
98. (C)

99. महमूद गजनवी ने सिन्धु नदी पार करके किसे अपनी राजधानी बनाया?
(A) गजिनी को **(B) तक्षशिला को**
(C) काबुल को **(D) तेहरान को**

व्याख्या–महमूद गजनवी ने सिन्धुनदी पार करके 'गजिनी' नामक अपनी राजधानी में प्रवेश किया – ''सिन्धुनदमुत्तीर्य स्वकीयां...... **गजिनीं नाम राजधानीं** प्राविशत्'' (शिवराजविजयम्) अतः विकल्प `A' सही है।

100. शिवराजविजयम् में कान्यकुब्ज के राजा थे?
(A) शहाबुद्दीन **(B) पृथ्वीराज**
(C) कुतुबुद्दीन **(D) जयचन्द्र**

	राज्य	राजा/युवराज
(A)	गोरदेश	शहाबुद्दीन (मो0 गोरी)
(B)	दिल्ली	पृथ्वीराजचौहान
(C)	दिल्ली	कुतुबुद्दीन (प्रथम विदेशी भारत सम्राट्)
(D)	**कान्यकुब्ज**	**जयचन्द्र**

अतः विकल्प `D' सही है।

101. उत्तररामचरित में सीता की सखी है?
(A) लोपामुद्रा **(B) वासन्ती**
(C) अरुन्धती **(D) तमसा और मुरला**

व्याख्या–
(A) लोपामुद्रा, अगस्त्य की पत्नी हैं।
(B) **वासन्ती,** सीता की सखी है।
(C) अरुन्धती, वशिष्ठ की पत्नी हैं।
(D) तमसा और मुरला दो नदियाँ हैं।
अतः विकल्प `B' सही है।

102. बाणभट्ट ने किस रीति में अपने काव्य की रचना की?
(A) वैदर्भी **(B) गौडी**
(C) पाञ्चाली **(D) इनमें से कोई नहीं**

	रीति		कवि
(A)	वैदर्भी	–	कालिदास
(B)	गौडी	–	भवभूति
(C)	**पाञ्चाली**	–	**बाणभट्ट**

अतः विकल्प `C' सही है।

103. तेजस्वी पुरुष स्वाभाविक रूप से होते हैं?
(A) भीरु **(B) शूरवीर**
(C) गृहस्थ **(D) संन्यासी**

व्याख्या–भर्तृहरि, नीतिशतकम् में कहते हैं कि तेजस्वी पुरुष स्वाभाविक रूप से **शूरवीर** होते हैं ''तत्तेजस्वी पुरुषः परकृतनिकृतिं कथं सहते''। (नीतिशतकम्-30)
अतः विकल्प `B' सही है।

104. ''मम विरहजां न त्वं वत्से! शुचं गणयिष्यसि'' यहाँ 'मम' से तात्पर्य है?
(A) कण्व **(B) शकुन्तला**
(C) सर्वदमन भरत **(D) इनमें से कोई नहीं**

व्याख्या–'मम विरहजां न त्वं वत्से शुचं गणयिष्यसि (अभिज्ञान 4/19) कण्व शकुन्तला से कहते हैं कि तुम पवित्र और तेजस्वी पुत्र को जन्म देकर, मेरे विरह से उत्पन्न शोक को नहीं गिनोगी।
(A) 'मम' शब्द **कण्व के** लिए आया है।
(B) 'त्वम्' शब्द शकुन्तला के लिए आया है।
(C) दुष्यन्त और शकुन्तला के पुत्र का नाम भरत (सर्वदमन) है।
अतः विकल्प `A' सही है।

105. अभिज्ञानशाकुन्तलम् है?
(A) महाकाव्य **(B) नाटक**
(C) गद्यकाव्य **(D) व्याकरणग्रन्थ**

	ग्रन्थ		विधा
(A)	कुमारसम्भवम्	–	महाकाव्य
(B)	**अभिज्ञानशाकुन्तलम्**	–	**नाटक**
(C)	अवन्तिसुन्दरीकथा	–	गद्यकाव्य (कथा)
(D)	वाक्यपदीयम्	–	व्याकरणग्रन्थ

अतः विकल्प `B' सही है।

106. ''उत्कुपितलोचना इव तेजस्विनो नेक्षन्ते'' ऐसा आचरण करते हैं?
(A) सज्जन **(B) युवकजन**
(C) मूर्खजन **(D) लक्ष्मी से प्रभावित राजा**

व्याख्या–''उत्कुपितलोचना इव तेजस्विनो नेक्षन्ते''–शुकनासोपदेश में शुकनास चन्द्रापीड को उपदेश देते हुए कहते हैं कि–**लक्ष्मी से प्रभावित राजा** नेत्ररोगियों के समान तेजस्वियों को नहीं देखते हैं। अतः विकल्प `D' सही है।

99. (A)	100. (D)	101. (B)	102. (C)	103. (B)	104. (A)	105. (B)	106. (D)

107. 'विद्याविहीनः' है?
(A) गौः **(B) अश्वः**
(C) पशुः **(D) हस्ती**

व्याख्या–'विद्या राजसु पूज्यते न हि धनं 'विद्याविहीनः **पशुः**' (नीतिशतकम्/16)–भर्तृहरि विद्या से हीन व्यक्ति को पशु कहते हैं। अतः विकल्प `C' सही है।

108. ''विचित्ररूपाः खलु चित्तवृत्तयः''–यह सुभाषित किस ग्रन्थ से है?
(A) मेघदूतम् से **(B) किरातार्जुनीयम् से**
(C) उत्तररामचरितम् से **(D) शिवराजविजयम् से**

व्याख्या–
(A) ''एकः सूते सकलमबलामण्डनं कल्पवृक्षः''–मेघदूतम् से
(B) ''विचित्ररूपाः खलु चित्तवृत्तयः''–**किरातार्जुनीयम्** से
(C) ''ननु लाभो हि रुदितम्''–उत्तररामचरितम् से
(D) ''कार्यं वा साधयेयं देहं वा पातयेयम्''–शिवराजविजयम् से। अतः विकल्प `B' सही है।

109. मुनि अगस्त्य की पत्नी है?
(A) शान्ता **(B) लोपामुद्रा**
(C) वासन्ती **(D) तमसा और मुरला**

	पात्र	परिचय
(A)	शान्ता	– राम की बहन, ऋष्यशृङ्ग की पत्नी
(B)	**लोपामुद्रा**	– **अगस्त्य की पत्नी**
(C)	वासन्ती	– सीता की सखी
(D)	तमसा और मुरला	– दो नदी देवियाँ

अतः विकल्प `B' सही है।

110. चन्द्रापीड को राज्याभिषेक पर उपदेश देता है?
(A) तारापीड **(B) शुकनास**
(C) वैशम्पायन **(D) पत्रलेखा**

व्याख्या–
(A) तारापीड उज्जयिनी का राजा है।
(B) **शुकनास** तारापीड का प्रधान अमात्य है, जो चन्द्रापीड को राज्याभिषेक के समय उपदेश देता है।
(C) वैशम्पायन, शुकनास का पुत्र है।
(D) पत्रलेखा, चन्द्रापीड की ताम्बूलकरङ्कवाहिनी है। अतः विकल्प `B' सही है।

111. 'पति' शब्द का चतुर्थी विभक्ति में रूप होगा?
(A) पत्या **(B) पत्ये**
(C) पत्युः **(D) पत्योः**

व्याख्या–
(A) 'पति' इकारान्त पुंलिङ्ग का रूप तृतीया विभक्ति में ''पत्या, पतिभ्याम्, पतिभिः'' बनता है।
(B) चतुर्थी विभक्ति में–''**पत्ये,** पतिभ्याम्, पतिभ्यः''
(C) षष्ठी विभक्ति में–''पत्युः, पत्योः, पतीनाम्''
(D) सप्तमी विभक्ति में–''पत्यौ, पत्योः, पतिषु''
अतः विकल्प `B' सही है।

112. 'सुधियम्' किस विभक्ति का रूप है?
(A) द्वितीया **(B) चतुर्थी**
(C) पञ्चमी **(D) सप्तमी**

व्याख्या–
(A) 'सुधी' (पण्डित) द्वितीयाविभक्ति में– ''**सुधियम्,** सुधियौ, सुधियः'' रूप बनता है।
(B) चतुर्थीविभक्ति में–''सुधिये, सुधीभ्याम्, सुधीभ्यः''
(C) पञ्चमीविभक्ति में–''सुधियः, सुधीभ्याम्, सुधीभ्यः''
(D) सप्तमीविभक्ति में–''सुधियि, सुधियोः, सुधीषु''
अतः विकल्प `A' सही है।

113. 'चक्रपाणिः' में कौन-सा समास है?
(A) नञ्तत्पुरुष **(B) कर्मधारय**
(C) बहुव्रीहि **(D) द्वन्द्व**

	पद		समास
(A)	अभावः	–	नञ् तत्पुरुषसमास
(B)	पुरुषव्याघ्रः	–	कर्मधारयसमास
(C)	**चक्रपाणिः**	–	**बहुव्रीहिसमास**
(D)	ईशकृष्णौ	–	द्वन्द्वसमास

अतः विकल्प `C' सही है।

114. अव्ययीभावसमास में पद के अन्त में लिङ्ग होता है?
(A) नपुंसकलिङ्ग **(B) पुंलिङ्ग**
(C) स्त्रीलिङ्ग **(D) तीनों लिङ्ग**

व्याख्या– 'अव्ययीभावश्च' (2/4/18) सूत्र से अव्ययीभाव समास **नपुंसकलिङ्ग** में होता है। यथा–अहः अहः प्रति =प्रत्यहम् (नपुंसकलिङ्ग) अतः विकल्प `A' सही है।

107. (C) 108. (B) 109. (B) 110. (B) 111. (B) 112. (A) 113. (C) 114. (A)

115. **'प्रत्यक्षम्' में समास है?**
(A) नञ्तत्पुरुष **(B) अव्ययीभाव**
(C) द्वन्द्व **(D) कर्मधारय**

	पद		**समास**
(A)	असत्यम्	–	नञ् तत्पुरुषसमास
(B)	**प्रत्यक्षम्**	–	**अव्ययीभावसमास**
(C)	अहिनकुलम्	–	(समाहार) द्वन्द्वसमास
(D)	नीलोत्पलम्	–	कर्मधारयसमास

अतः विकल्प `B' सही है।

116. **'ऋते' के योग में विभक्ति होती है?**
(A) द्वितीया **(B) तृतीया**
(C) चतुर्थी **(D) पञ्चमी**

व्याख्या–"अन्यारादितरर्ते-दिक्छब्दाञ्चूत्तरपदाजाहियुक्ते" (2.3.29) सूत्र से 'ऋते' के योग में **पञ्चमी विभक्ति** होती है। अतः विकल्प `D' सही है।

117. **कर्मवाच्य क्रिया का कर्ता किस विभक्ति में आता है?**
(A) प्रथमा **(B) तृतीया**
(C) कर्म के अनुसार **(D) इनमें से कोई नहीं**

व्याख्या–
(A) कर्मवाच्य में कर्म में प्रथमाविभक्ति होती है।
(B) कर्त्ता में **तृतीयाविभक्ति** होती है।
(C) कर्म के अनुसार क्रिया का चयन होता है।
यथा–तेन अहं दृश्ये।
1. कर्त्ता में तृतीया – तेन
2. कर्म में प्रथमा – अहं
3. क्रिया कर्म के अनुसार उ0 पु0 एकवचन में–दृश्ये
अतः विकल्प `B' सही है।

118. **क्रुध् धातु के योग में जिस पर क्रोध किया जाय उसमें विभक्ति होती है?**
(A) चतुर्थी **(B) द्वितीया**
(C) तृतीया **(D) पञ्चमी**

व्याख्या–
(A) 'क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः' (1/4/37) सूत्र से जिस पर क्रोध किया जाय उसमें **चतुर्थी विभक्ति** का विधान होता है। यथा–गुरुः शिष्याय क्रुध्यति।
(B) 'क्रुधद्रुहोरुपसृष्टयोः कर्म' (1/4/38) सूत्र से उपसर्ग से युक्त क्रुध् और द्रुह् धातुओं के योग में जिस पर क्रोध किया जाय उस कारक की कर्मसंज्ञा होती है। यथा–गुरुः शिष्यम् अभिक्रुध्यति।
(C) 'सह' के योग में तृतीयाविभक्ति होती है। यथा– पुत्रेण सह आगतः पिता।
(D) 'ऋते' के योग में पञ्चमीविभक्ति होती है। यथा– ऋते ज्ञानात् न मुक्तिः।
अतः विकल्प `A' सही है।

119. **उपसर्ग क्या हैं?**
(A) प्रत्यय **(B) शब्द**
(C) कृदन्त **(D) अव्यय**

व्याख्या– उपसर्ग मूलतः **अव्यय** हैं। अव्यय चार प्रकार के होते हैं।
1. उपसर्ग 2. क्रियाविशेषण
3. समुच्चयबोधक 4. मनोविकारसूचक
उपसर्ग–जो अव्यय धातु या धातु से बने विशेषण, संज्ञा आदि शब्दों के पूर्व जोड़े जाते हैं, उनको उपसर्ग कहते हैं।
"उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते।
प्रहाराहारसंहार-विहारपरिहारवत्।।"
अतः विकल्प `D' सही है।

120. **नाम के बाद जो प्रत्यय जुड़ते हैं, उन्हें क्या कहते हैं?**
(A) तद्धित **(B) तिङन्त**
(C) कृदन्त **(D) णिजन्त**

व्याख्या–
(A) नाम के बाद जो प्रत्यय जुड़ते हैं उन्हें **'तद्धितप्रत्यय'** कहा जाता है। उन शब्दों को **'तद्धितान्त'** कहते हैं।
(B) धातुओं मे जो प्रत्यय जुड़ते हैं, उन्हें 'तिङन्त' कहते हैं।
(C) धातु में जिस प्रत्यय को जोड़कर संज्ञा, विशेषण, अथवा अव्यय पद बनता है, उसको कृत्प्रत्यय कहते हैं, और इसके द्वारा जो शब्द सिद्ध होता है उसे 'कृदन्त' कहते हैं।
(D) किसी धातु में जब प्रेरणा का अर्थ बताना हो तो णिच् प्रत्यय जोड़ देते हैं, जिसे 'णिजन्त' कहते हैं।
अतः विकल्प `A' सही है।

115. (B) 116. (D) 117. (B) 118. (A) 119. (D) 120. (A)

121. कर्तृवाच्य में कर्म कौन-सी विभक्ति में आता है?
(A) प्रथमा **(B) द्वितीया**
(C) तृतीया **(D) चतुर्थी**

व्याख्या– कर्तृवाच्य के कर्ता में – प्रथमाविभक्ति
* कर्म में – **द्वितीयाविभक्ति**
* क्रिया – कर्ता के अनुसार
* यथा– सः ओदनं खादति।

अतः विकल्प `B' सही है।

122. 'नारीभिः आभूषणानि धार्यन्ते' में वाच्यपरिवर्तन होगा?
(A) नारी भूषणानि धारयति
(B) नारी आभूषणानि धारयन्ति
(C) नार्याः आभूषणानि धारयन्ति
(D) नार्यः आभूषणानि धारयन्ति

व्याख्या–'नारीभिः आभूषणानि धार्यन्ते' यह कर्मवाच्य का वाक्य है, इसको कर्तृवाच्य में परिवर्तन करने पर– **'नार्यः आभूषणानि धारयन्ति'** ऐसा वाक्य बनेगा। अतः विकल्प `D' सही है।

123. 'रामः पुस्तकानि पठति' में वाच्यपरिवर्तन करने पर वाक्य होगा?
(A) रामेण पुस्तकं पठ्यन्ते।
(B) रामेण पुस्तकं पठ्यते
(C) रामेण पुस्तकानि पठ्यन्ते
(D) रामेण पुस्तकानि पठ्यते

व्याख्या–
* 'रामः पुस्तकानि पठति' कर्तृवाच्य है। सर्वप्रथम कर्ता में तृतीया विभक्ति - **रामेण**
* तत्पश्चात् कर्म में प्रथमा बहुवचन - **पुस्तकानि**
* अन्त में कर्म के अनुसार क्रिया अर्थात् प्रथमा बहुवचन की क्रिया का चयन - **पठ्यन्ते**
* इसप्रकार **'रामेण पुस्तकानि पठ्यन्ते'** कर्मवाच्य होगा। अतः विकल्प `C' सही है।

124. भवान् घटान् ...... 'भर दो' के लिए संस्कृतपद होगा?
(A) पूरयतु **(B) पूरयन्तु**
(C) पूरय **(D) पूरयत**

व्याख्या– 'भवत्' (आप) शब्द के साथ सदा प्रथमपुरुष की क्रिया का प्रयोग होता है। भवान् घटान् पूरयतु। (आप घड़ों को भर दें) यहाँ 'पूरयतु'–लोट्लकार प्र०पु० एकवचन का रूप होता है। अतः विकल्प `A' सही है।

125. जिस क्रिया का वाच्य कर्म है। उसे कहते हैं?
(A) कर्तृवाच्य **(B) कर्मवाच्य**
(C) भाववाच्य **(D) तीनों वाच्य**

व्याख्या–
(A) कर्तृवाच्य में कर्ता मुख्य होता है। कर्ता में प्रथमा विभक्ति तथा कर्म में द्वितीया विभक्ति और क्रिया कर्ता के अनुसार प्रयुक्त होती है। यथा–सः ग्रामं गच्छति।
(B) कर्मवाच्य में कर्म मुख्य होता है, क्रिया कर्म के अनुसार प्रयुक्त होती है, कर्म में प्रथमाविभक्ति तथा कर्ता में तृतीयाविभक्ति का प्रयोग होता है।
यथा–(i) तेन ग्रामः गम्यते। (ii) मया पुस्तकं पठ्यते
(C) भाववाच्य के कर्ता में तृतीया, क्रिया में प्रथमपुरुष एकवचन का प्रयोग यथा–
1. तेन भूयते 2. त्वया भूयते 3. मया भूयते
अतः विकल्प `B' सही है।

121. (B) 122. (D) 123. (C) 124. (A) 125. (B)

प्रशिक्षित-स्नातकशिक्षक-चयनपरीक्षा (TGT)–2004

1. सन्ध्यक्षर होता है?
(A) क, ख, ग, घ, ङ (B) य, र, ल, व
(C) श, ष, स, ह (D) ए, ऐ, ओ, औ

(A) स्पर्शव्यञ्जन – क्, ख्, ग्, घ्, ङ्
(B) अन्तस्थवर्ण – य्, र्, ल्, व्
(C) ऊष्मवर्ण – श्, ष्, स्, ह्
(D) **सन्ध्यक्षर – ए, ऐ, ओ, औ**
अतः विकल्प (D) सही है।

2. 'अष्टाध्यायी' का दूसरा नाम है?
(A) वाक्यानुशासन (B) शब्दानुशासन
(C) अर्थानुशासन (D) अनुशासन

अष्टाध्यायी के तीन और नाम हैं –
1. **शब्दानुशासन**
2. अष्टक
3. वृत्तिसूत्र
अतः विकल्प (B) सही है।

3. 'जन्' धातु लङ्लकार प्रथमपुरुष बहुवचन में होगा–
(A) अजागरुः (B) अजायत
(C) अजायेताम् (D) अजायन्त

व्याख्या – 'जन्' धातु आत्मनेपद लङ्लकार प्रथमपुरुष में – 'अजायत, अजायेताम्, **अजायन्त**' रूप बनता है।
अतः विकल्प (D) सही है।
नोट – 'अजागरुः' रूप दशों लकारों में कहीं नहीं बनता है।

4. 'जलमुच्' शब्द का प्रथमाविभक्ति एकवचन का रूप होगा?
(A) जलमुचि (B) जलमुक्/जलमुग्
(C) जलमुचौ (D) जलमुचः

व्याख्या – 'जलमुच्' शब्द का प्रथमा विभक्ति में – ''**जलमुक्** जलमुचौ जलमुचः'' रूप बनता है।
अतः विकल्प (B) सही है।

5. 'पञ्चगवम्' का विग्रह वाक्य होगा?
(A) पञ्चानां गोवां समाहारः
(B) पञ्चानां गवा समाहारः
(C) पञ्चानां गवां समाहारः
(D) पञ्चानां गवेतरा समाहारः

व्याख्या – 'तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च' (2/1/51) सूत्र से ''**पञ्चानां गवां समाहारः**=पञ्चगवम्'' में द्विगुसमास होगा। अतः विकल्प (C) सही है। अन्य विकल्प गलत हैं।

6. ''क्त और क्तवतु'' किस नाम से प्रसिद्ध हैं?
(A) निष्ठा (B) सत्
(C) घ (D) पद

	प्रत्यय		संज्ञा
(A)	**क्त, क्तवतु**	–	**निष्ठासंज्ञा**
(B)	शतृ, शानच्	–	सत्संज्ञा
(C)	तरप्, तमप्	–	घसंज्ञा
(D)	सुप्, तिङ्	–	पदसंज्ञा

अतः विकल्प (A) सही है।

7. 'रुदति पुत्रे माता जगाम' के रेखाङ्कित शब्द में कौन-सी विभक्ति है?
(A) चतुर्थी (B) षष्ठी
(C) सप्तमी (D) पञ्चमी

व्याख्या – * 'षष्ठी चानादरे' (2/3/38) सूत्र से एक क्रिया से दूसरी क्रिया लक्षित हो और अनादर अर्थ गम्यमान हो वहाँ जिसका अनादर किया जाता है, उसमें षष्ठी या सप्तमी विभक्ति होती है। यथा – 'रुदति पुत्रे माता जगाम' इस वाक्य में पुत्र शब्द में **सप्तमी विभक्ति** का प्रयोग हुआ है।
* सम्प्रदान में चतुर्थी, सम्बन्ध में षष्ठी और अपादान में पञ्चमी का प्रयोग होता है। अतः विकल्प (C) सही है।

1. (D) 2. (B) 3. (D) 4. (B) 5. (C) 6. (A) 7. (C)

8. 'ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति' यह वाक्यांश कहाँ से उद्धृत है?
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से (B) उत्तररामचरितम् से
(C) शिवराजविजयम् से (D) नीतिशतकम् से

व्याख्या –
(A) न खलु धीमतां कश्चिदविषयो नाम – अभिज्ञानशाकुन्तलम् से
(B) 'ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति' (**उत्तररामचरित** 1/10) राम कहते हैं कि – प्राचीन महर्षियों की वाणी के पीछे अर्थ स्वयं चलता है।
(C) 'मन्दिराणि मन्दुरी क्रियन्ते' – शिवराजविजयम् से
(D) 'हतविधिपरिपाकः केन वा लङ्घनीयः' – नीतिशतकम्
अतः विकल्प (B) सही है।

9. निम्नलिखित में से शुद्ध वाक्य कौन-सा है?
(A) विपदि ददातु मे धनान् भवान्।
(B) विपदि दादतु मम धनानि भवान्।
(C) विपदि ददातु मे धनं भवान्।
(D) ददतु धने विपदि।

व्याख्या – **विपदि ददातु मे धनं भवान्** (आप मुझको विपत्ति में धन दो) * यहाँ 'विपदि' में सप्तमीविभक्ति
* 'ददातु' लोट्लकार प्र0 पु0 एकवचन की क्रिया,
* 'मे' अस्मद् शब्द का चतुर्थी एकवचन * 'धनं' कर्म है जिसमें द्वितीया विभक्ति है * 'भवान्' कर्ता है, जिसमें प्रथमा विभक्ति है।
अतः विकल्प (C) सही है।

10. 'याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा' – यह पंक्ति कहाँ से उद्धृत है?
(A) मेघदूतम् से (B) किरातार्जुनीयम् से
(C) शिवराजविजयम् से (D) शुकनासोपदेश से

व्याख्या –
(A) 'याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा' अर्थात् गुणी व्यक्ति के प्रति की गई याचना निष्फल होने पर भी श्रेष्ठ है, पर नीच से मनचाहा फल पा जाना भी अच्छा नहीं है। **(पूर्वमेघ/6)**
(B) 'प्रवक्तुमिच्छन्ति मृषा हितैषिणः' – किरातार्जुनीयम् से
(C) 'गायत्री अमुमेव गायति' – शिवराजविजयम् से
(D) 'राज्यविषविकारतन्द्राप्रदा राजलक्ष्मीः' – शुकनासोपदेश
अतः विकल्प (A) सही है।

11. शकुन्तला के साथ दुष्यन्त के राजदरबार तक कौन गयी थी?
(A) प्रियंवदा (B) अनसूया
(C) मेनका (D) गौतमी

व्याख्या – * शकुन्तला के साथ राजदरबार तक **गौतमी** जाती। शार्ङ्गरव, शारद्वत भी गौतमी के साथ जाते हैं।
* अनसूया, प्रियंवदा राजदरबार तक नहीं जाती हैं।
* मेनका, शकुन्तला की माता है, जो कि एक अप्सरा है।
अतः विकल्प (D) सही है।

12. दुष्यन्त की मनःस्थिति जानने के लिए मेनका अपनी किस सखी को भेजती है?
(A) उर्वशी को (B) तिलोत्तमा को
(C) सानुमती को (D) भानुमती को

व्याख्या – मेनका, दुष्यन्त की मनःस्थिति जानने के लिए अपनी सखी **'अप्सरा सानुमती'** को भेजती है।
अतः विकल्प (C) सही है।

13. 'परि अभूषयत् = पर्यभूषयत्' इस विग्रहवाक्य में कौन-सा समास है?
(A) द्विगुसमास (B) बहुव्रीहिसमास
(C) द्वन्द्वसमास (D) अव्ययीभावसमास

व्याख्या –
(A) 'पञ्चवटी' में द्विगुसमास है।
(B) 'शशिशेखरः' में बहुव्रीहिसमास है।
(C) 'पितरौ' में द्वन्द्वसमास है।
(D) 'पर्यभूषयत्' में **अव्ययीभावसमास** है।
अतः विकल्प (D) सही है।

14. अभिज्ञानशाकुन्तलम् का विदूषक कौन है?
(A) माढव्य (B) मैत्रेय
(C) वसन्तक (D) माणवक

ग्रन्थ		विदूषक
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम्	–	**माढव्य**
(B) मृच्छकटिकम्	–	मैत्रेय
(C) स्वप्नवासवदत्तम्	–	वसन्तक
(D) विक्रमोर्वशीयम्	–	माणवक

अतः विकल्प (A) सही है।

8. (B) 9. (C) 10. (A) 11. (D) 12. (C) 13. (D) 14. (A)

15. पञ्चोपास्य देवताओं में कौन-कौन से देवता शामिल हैं?
(A) शिव, गणेश, सूर्य, विष्णु, दुर्गा
(B) अरविन्दम्, अशोक, चूतम्, नवमल्लिका, नीलोत्पल
(C) अहिल्या, द्रौपदी, सीता, तारा, मन्दोदरी
(D) दुग्धम्, दधि, घृतम्, मूत्रम्, गोमयम्

व्याख्या –
(A) पञ्चोपास्यदेवता – **शिव, गणेश, सूर्य, विष्णु, दुर्गा।**
(B) कामदेव के पञ्चबाण – अरविन्दम्, अशोकम्, चूतम्, नवमल्लिका, नीलोत्पलम्।
(C) पञ्चकन्या – अहिल्या, द्रौपदी, सीता, तारा, मन्दोदरी।
(D) पञ्चगव्यम् – दुग्धम्, दधि, घृतम्, मूत्रम्, गोमयम्।
अतः विकल्प (A) सही है।

16. 'शुकनासोपदेश' किस ग्रन्थ का अंश विशेष है?
(A) रघुवंशम् **(B) कादम्बरी**
(C) महाभारतम् **(D) रामायणम्**

व्याख्या – बाणभट्ट कृत **कादम्बरी कथा का एक भाग** शुकनासोपदेश है। महाभारत को 'शतसाहस्रीसंहिता' एवं रामायण को 'चतुर्विंशतिसाहस्रीसंहिता' भी कहते हैं।
अतः विकल्प (B) सही है।

17. कादम्बरी किस प्रकार का ग्रन्थ है?
(A) आख्यायिका **(B) कथा**
(C) नाटक **(D) महाकाव्य**

	ग्रन्थ		काव्य विधा
(A)	हर्षचरितम् (बाण)	–	आख्यायिका
(B)	**कादम्बरी (बाण)**	–	**कथा**
(C)	महावीरचरितम् (भवभूति)	–	नाटकम्
(D)	रघुवंशम् (कालिदास)	–	महाकाव्यम्

अतः विकल्प (B) सही है।

18. 'किरातार्जुनीयम्' ग्रन्थ में किस विषय का चमत्कारित्व है?
(A) अर्थगौरव का **(B) उपमा का**
(C) पदलालित्य का **(D) उपर्युक्त तीनों का**

व्याख्या – किरातार्जुनीयम् **अर्थगौरव** के लिए प्रसिद्ध है।

	कवि		प्रसिद्धि
(A)	**भारवि**	–	**अर्थगौरव**
(B)	कालिदास	–	उपमा
(C)	दण्डी	–	पदलालित्य
(D)	माघ	–	अर्थगौरव, उपमा, पदलालित्य

अतः विकल्प (A) सही है।

19. 'कादम्बरी' शब्द का अर्थ है?
(A) सुरा **(B) विष**
(C) अमृत **(D) जल**

	शब्द		अर्थ
(A)	**कादम्बरी**	–	**सुरा (मदिरा)**
(B)	कालकूट	–	विष
(C)	सुधा	–	अमृत
(D)	पयः	–	जल/दूध

अतः विकल्प (A) सही है।

20. 'नैषधीयचरितम्' किस श्रेणी की रचना है?
(A) महाकाव्य **(B) खण्डकाव्य**
(C) गद्यकाव्य **(D) नाटक**

व्याख्या –

	ग्रन्थ		विधा
(A)	**नैषधीयचरितम्**	–	**महाकाव्य**
(B)	ऋतुसंहारम्	–	खण्डकाव्य
(C)	शिवराजविजयम्	–	गद्यकाव्य
(D)	उत्तररामचरितम्	–	नाटक

अतः विकल्प (A) सही है।

21. 'नैषधीयचरितम्' में मुख्य रस कौन-सा है?
(A) वीररस **(B) शृङ्गाररस**
(C) करुणरस **(D) शान्तरस**

व्याख्या –

	ग्रन्थ		मुख्यरस
(A)	महावीरचरितम्	–	वीररस
(B)	**नैषधीयचरितम्**	–	**शृङ्गाररस**
(C)	कुन्दमाला	–	करुणरस
(D)	बुद्धचरितम्	–	शान्तरस

अतः विकल्प (B) सही है।

15. (A) 16. (B) 17. (B) 18. (A) 19. (A) 20. (A) 21. (B)

22. 'प्रतिसर्ग' लक्षण है?

(A) धर्ममार्ग का (B) काव्य का
(C) पुराण का (D) नीतिकाव्य का

व्याख्या – पुराण के पाँच लक्षण निम्नवत् हैं –

1. सर्ग
2. **प्रतिसर्ग**
3. वंश
4. वंशानुचरित
5. मन्वन्तर

सर्गश्च प्रतिसर्गश्च
वंशो मन्वन्तराणि च।
वंशानुचरितं चैव
पुराणं पञ्चलक्षणम्।।

अतः विकल्प (C) सही है।

23. शकुन्तला की माता कौन थी?

(A) मेनका (B) शर्मिष्ठा
(C) मदिरा (D) मैना

	पुत्री/पुत्र		माता
(A)	**शकुन्तला**	–	**मेनका**
(B)	पुरु	–	शर्मिष्ठा
(C)	कादम्बरी	–	मदिरा
(D)	पार्वती	–	मैना

अतः विकल्प (A) सही है।

24. स्वप्नवासवदत्तम् का 'स्वप्न अङ्क' कौन-सा है?

(A) द्वितीय (B) तृतीय
(C) चतुर्थ (D) पञ्चम

व्याख्या – 'स्वप्नवासवदत्तम्' महाकविभास की रचना है। इसमें 6 अङ्क हैं। इसका नायक उदयन तथा नायिका वासवदत्ता तथा पद्मावती। इसके पञ्चम अङ्क में राजा स्वप्न में वासवदत्ता का नाम लेते हैं। अतः **पञ्चम अङ्क** 'स्वप्न अङ्क' है। इसलिए विकल्प `D' सही है।

25. 'प्रतिमा' नाटक में कितने अङ्क हैं?

(A) 5 (B) 6
(C) 7 (D) 10

	नाटक		अङ्क
(A)	मालविकाग्निमित्रम्	–	5 अङ्क
(B)	अभिषेकनाटकम्	–	6 अङ्क
(C)	**प्रतिमानाटकम्**	–	**7 अङ्क**
(D)	मालतीमाधवम्	–	10 अङ्क

अतः विकल्प (C) सही है।

26. 'वसन्तक' किस नाटक से सम्बन्धित है?

(A) मालविकाग्निमित्रम् (B) मृच्छकटिकम्
(C) रत्नावली (D) मालतीमाधवम्

	नाटक		विदूषक
(A)	मालविकाग्निमित्रम्	–	गौतम
(B)	मृच्छकटिकम्	–	मैत्रेय
(C)	**रत्नावली**	–	**वसन्तक**
(D)	मालतीमाधवम्	–	विदूषक का अभाव

अतः विकल्प (C) सही है।

27. भास का 'दूतवाक्यम्' किस पर आधारित है?

(A) रामायण पर (B) महाभारत पर
(C) ललितविस्तार पर (D) कविकल्पनाप्रसूत

	ग्रन्थ		उपजीव्य
(A)	महावीरचरितम्	–	वाल्मीकिरामायण
(B)	**दूतवाक्यम्**	–	**महाभारत**
(C)	बुद्धचरितम्	–	ललितविस्तार
(D)	मालतीमाधवम्	–	कविकल्पित

अतः विकल्प (B) सही है।

28. माहेश्वर सूत्रों में 'ह्' व्यञ्जन कितनी बार प्रयुक्त हुआ है?

(A) 15 (B) 2
(C) 14 (D) 8

व्याख्या – माहेश्वर सूत्र 14 हैं – जिसके 5 वें सूत्र हयवरट् में पहली बार 'ह' प्रयुक्त है और 14वें सूत्र 'हल्' में दूसरी बार 'ह' प्रयुक्त है। अतः माहेश्वर सूत्र में 'ह' **दो बार प्रयुक्त है।** अतः विकल्प `B' सही है।

22 (C)	23. (A)	24. (D)	25. (C)	26. (C)	27. (B)	28. (B)

29. 'कादम्बरी' में चन्द्रापीड किस राज्य का युवराज है?
(A) कौशाम्बी **(B) धारानगरी**
(C) सतारा **(D) उज्जयिनी**

	राजधानी		**युवराज/राजा**
(A)	कौशाम्बी	–	उदयन
(B)	धारानगरी	–	भोजराज
(C)	सतारा	–	शिवाजी
(D)	**उज्जयिनी**	–	**चन्द्रापीड**

अतः विकल्प (D) सही है।

30. दिवम् 'दिव्' शब्द का किस विभक्ति का रूप है?
(A) प्रथमा **(B) द्वितीया**
(C) तृतीया **(D) चतुर्थी**

व्याख्या –
(A) दिव् (आकाश, स्वर्ग) वकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द का रूप प्रथमा में – ''द्यौः, दिवौ, दिवः'' बनता है।
(B) **द्वितीया में** – ''दिवम्, दिवौ, दिवः'' बनता है।
(C) तृतीया में – ''दिवा, द्युभ्याम्, द्युभिः'' बनता है।
(D) चतुर्थी में – ''दिवे, द्युभ्याम्, द्युभ्यः'' बनता है।
अतः विकल्प (B) सही है।

31. 'युवन्' शब्द का षष्ठीविभक्ति एकवचन का रूप है–
(A) यूनः **(B) यूनि**
(C) यूनोः **(D) यूनाम्**

व्याख्या – * 'युवन्' नकारान्त पुंलिङ्ग का रूप षष्ठी में – ''**यूनः**, यूनोः, यूनाम्'' बनता है। अतः विकल्प `A' सही है।
* सप्तमी में – ''यूनि, यूनोः, युवसु'' बनता है।

32. ''अस्मद्' शब्द का चतुर्थी विभक्ति बहुवचन का रूप होगा?
(A) मयि **(B) अस्मभ्यम्**
(C) अस्माकम् **(D) अस्मत्**

व्याख्या –
(A) अस्मद् शब्द का सप्तमी में – ''मयि, आवयोः, अस्मासु''
(B) चतुर्थीविभक्ति में – ''मह्यम्, आवाभ्याम्, **अस्मभ्यम्**''
(C) षष्ठी विभक्ति में – ''मम, आवयोः, अस्माकम्''
(D) पञ्चमी में– ''मत्, आवाभ्याम्, अस्मत्''
अतः विकल्प (B) सही है।

33. 'विद्वस्' शब्द का सप्तमी बहुवचन का रूप है?
(A) विद्वत्सु **(B) विदुषाम्**
(C) विदुषोः **(D) विदुषि**

व्याख्या – * 'विद्वस्' (सकारान्त) पुंलिङ्ग का सप्तमी में – ''विदुषि, विदुषोः, **विद्वत्सु**'' रूप बनता है।
* षष्ठीविभक्ति में– ''विदुषः, विदुषोः, विदुषाम्'' रूप बनता है।
अतः विकल्प (A) सही है।

34. 'अदस्' शब्द का नपुंसकलिङ्ग द्वितीया बहुवचन का रूप होगा?
(A) अमू **(B) अमूनि**
(C) अमून् **(D) अमू**

व्याख्या – * अदस् (वह) नपुंसकलिङ्ग द्वितीया में – 'अदः, अमू, अमूनि रूप बनता है।
* पुंलिङ्ग, द्वितीया विभक्ति में – 'अमुम्, अमू, अमून्' रूप बनता है। अतः विकल्प `B' सही है।

35. 'गुणिने' किस विभक्ति का रूप है?
(A) तृतीया **(B) द्वितीया**
(C) पञ्चमी **(D) चतुर्थी**

व्याख्या – * 'गुणिन्' (नकारान्त, पुंलिङ्ग) शब्द का तृतीया विभक्ति में–गुणिना, गुणिभ्याम्, गुणिभिः * द्वितीयाविभक्ति–गुणिनम्, गुणिनौ, गुणिनः * चतुर्थीविभक्ति–**गुणिने,** गुणिभ्याम्, गुणिभ्यः * पञ्चमी विभक्ति में–गुणिनः, गुणिभ्याम्, गुणिभ्यः।

36. 'हन्' धातु का रूप लोट्लकार मध्यमपुरुष एकवचन में होगा?
(A) हंसि **(B) जहि**
(C) हतः **(D) हन्तु**

व्याख्या – * 'हन्' (मारना) धातु लोट्लकार मध्यमपुरुष में– ''**जहि,** हतम्, हत'' रूप बनता है।
* लट्लकार म. पु. में – हंसि, हथः, हथ।
* लट्लकार प्र. पु. में – हन्ति, हतः, घ्नन्ति।
* लोट्लकार प्र. पु. में – हन्तु, हताम्, घ्नन्तु।
अतः विकल्प (B) सही है।

29. (D)	30. (B)	31. (A)	32. (B)	33. (A)	34. (B)	35. (D)	36. (B)

37. व्यञ्जन वर्ण की सही मात्रा है?
(A) एकमात्रा (B) द्विमात्रा
(C) त्रिमात्रा (D) अर्धमात्रा

व्याख्या – एकमात्रो भवेद् ह्रस्वो द्विमात्रोदीर्घ उच्यते।
त्रिमात्रस्तु प्लुतो ज्ञेयो **व्यञ्जनं चार्धमात्रिकम्।**
अर्थात् –
* व्यञ्जन **अर्धमात्रिक** है। यथा – क्, ख्, ग् आदि
* ह्रस्वस्वर एकमात्रिक – अ, इ, उ, ऋ, ऌ।
* दीर्घस्वर द्विमात्रिक – आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ओ, ऐ, औ।
* प्लुतस्वर त्रिमात्रिक – अ ३, उ३ आदि

अतः विकल्प (D) सही है।

38. 'गवेषणा' शब्द का सन्धि-विच्छेद होगा –
(A) गवे + एषणा (B) गो + एषणा
(C) गव + एषा (D) गवि + एषा

व्याख्या – 'गो + एषणा = गवेषणा' यहाँ ''एचोऽयवायावः'' (6.1.78) सूत्र से 'ओ' के स्थान पर 'अव्' आदेश होकर 'गवेषणा' सिद्ध होगा। यहाँ अयादिसन्धि है।
अतः विकल्प (B) सही है।

39. '32' का संस्कृत शब्दात्मक रूप होगा?
(A) द्वात्रिंशत् (B) द्वाविंशतिः
(C) द्विचत्वारिंशत् (D) द्विपञ्चाशत्

	संख्या		शब्दात्मक रूप
(A)	**32**	–	**द्वात्रिंशत्**
(B)	22	–	द्वाविंशतिः
(C)	42	–	द्विचत्वारिंशत्
(D)	52	–	द्विपञ्चाशत्

अतः विकल्प (A) सही है।

40. 'रथस्य पश्चात्' इस विग्रहवाक्य का समास होगा?
(A) रथिपत् (B) पथपश्चात्
(C) अनुरथम् (D) पश्चात्रथेन

व्याख्या – अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि - - - - (2/1/6) सूत्र से 'अनु' अव्यय का पश्चात् अर्थ में रथं सुबन्त के साथ अव्ययीभावसमास होकर (रथस्य पश्चात्) 'अनुरथम्' बनेगा।
अतः विकल्प (C) सही है।

41. सुबन्त पद के साथ सुबन्त पद के समास को कहा जाता है?
(A) सुबसुबा (B) सुपुसुपा
(C) सुप्सुपा (D) सुसुपा

व्याख्या – ''सह सुपा'' (2/1/4) सूत्र से – 'सुबन्तं समर्थेन सह समस्यते' अर्थात् सुबन्त पद का समर्थ सुबन्त पद के साथ समास होता है। जिसे **'सुप्सुपा'** या केवलसमास कहते हैं। यथा– पूर्वं भूतः = भूतपूर्वः। अतः विकल्प (C) सही है।

42. 'कादम्बरी' के रचयिता हैं?
(A) बाणभट्ट (B) सुबन्धु
(C) दण्डी (D) धनपाल

	रचना		रचनाकार
(A)	**कादम्बरी**	–	**बाणभट्ट**
(B)	वासवदत्ता	–	सुबन्धु
(C)	दशकुमारचरितम्	–	दण्डी
(D)	तिलकमञ्जरी	–	धनपाल

अतः विकल्प (A) सही है।

43. 'घि' व्याकरण का एक शब्द है?
(A) आमशब्द (B) विधिशब्द
(C) पारिभाषिकशब्द (D) संज्ञाशब्द

व्याख्या – ''शेषो घ्यसखि'' (1.4.7) सूत्र से 'घि' संज्ञा का विधान होता है। अतः **'घि' संज्ञाशब्द** है। 'द्वन्द्वे घि' (2/2/32) सूत्रानुसार द्वन्द्वसमास में 'घि' संज्ञक शब्द का प्रथम प्रयोग होता है। विकल्प (D) सही है।

44. 'सीता जाया यस्य सः' एक शब्द में होगा?
(A) सीताजाया (B) सीतापत्नी
(C) सीताजानिः (D) सीतापतिः

व्याख्या – ''जायायाः निङ्'' (5/4/134) सूत्र से बहुव्रीहि समास में यदि 'जाया' शब्द आये तो तदन्त को निङ् समासान्त आदेश होता है, 'निङ्' के 'ङ्' की इत्संज्ञा होती है।
(i) सीता जाया यस्य सः = **सीताजानिः**
(ii) युवतिः जाया यस्य सः = युवजानिः
(iii) इसीप्रकार भूजानिः, महीजानिः आदि भी बनेंगे।

37. (D) 38. (B) 39. (A) 40. (C) 41. (C) 42. (A) 43. (D) 44. (C)

45. 'प्रजासु वृत्तिं यमयुङ्क्त वेदितुम्' – यह श्लोकांश कहाँ से उद्धृत है?
(A) किरातार्जुनीयम् से
(B) प्रतिमानाटकम् से
(C) मालविकाग्निमित्रम् से
(D) शिशुपालवधम् से

व्याख्या – 'प्रजासु वृत्तिं यमयुङ्क्त वेदितुम्' (**किरात. 1/1**) अर्थात् प्रजाओं के व्यवहार को जानने के लिए युधिष्ठिर ने जिसको (वनेचर) नियुक्त किया था, वह द्वैतवन में युधिष्ठिर के पास लौट आया। अतः विकल्प (A) सही है।

46. 'वनेचर' शब्द का संस्कृत प्रतिशब्द होगा?
(A) ब्रह्मचारी **(B) गुप्तचर**
(C) वर्णिलिङ्गी **(D) दूत**

व्याख्या – वने चरतीति वनेचरः (वन में विचरण करने वाला) किरातार्जुनीयम् में 'वनेचर' शब्द **गुप्तचर** के लिए प्रयुक्त है। अतः विकल्प (B) सही है।

47. 'वैराग्यशतकम्' किस प्रकार की रचना है?
(A) ऐतिहासिक **(B) महाकाव्य**
(C) खण्डकाव्य **(D) व्याकरणग्रन्थ**

	ग्रन्थ		विधा
(A)	शिवराजविजयम्	–	ऐतिहासिक उपन्यास
(B)	शिशुपालवधम्	–	महाकाव्य
(C)	**वैराग्यशतकम्**	–	**खण्डकाव्य**
(D)	महाभाष्यम्	–	व्याकरणग्रन्थ

अतः विकल्प (C) सही है।

48. 'शतकत्रय' के रचयिता हैं?
(A) भर्तृहरि **(B) भट्टि**
(C) मयूरभट्ट **(D) भोज**

व्याख्या –
(A) **भर्तृहरि** शतकत्रय के रचयिता हैं।
शतकत्रय के अन्तर्गत –
1. नीतिशतकम्
2. शृङ्गारशतकम्
3. वैराग्यशतकम्।

(B) भट्टि की रचना रावणवध/भट्टिकाव्य है।
(C) मयूरभट्ट, सूर्यशतकम् के रचयिता हैं।
(D) भोज, रामायणचम्पू के रचनाकार हैं। विकल्प `A' सही

49. 'भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्ताः' यह श्लोकांश किस ग्रन्थ से उद्धृत है?
(A) अमरुशतक से **(B) नीतिशतक से**
(C) मुद्राराक्षस से **(D) वैराग्यशतक से**

व्याख्या – ''भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्ताः'' –
प्रस्तुत सूक्ति भर्तृहरि के **वैराग्यशतक** से उद्धृत है, जिसमें वे कहते हैं कि – 'भोगों को हम नहीं भोगते बल्कि भोग हमें भोगते हैं।' अतः विकल्प (D) सही है।

50. भर्तृहरि ने विद्याविहीन मानव को क्या कहा?
(A) भूभारभूता **(B) पशु**
(C) दुर्जन **(D) हृदयहीन**

व्याख्या –
* भर्तृहरि कहते हैं, कि – जिनके पास न तो विद्या, न तप, न दान, न ज्ञान, न शील, न गुण और न तो धर्म है वे पृथ्वी पर भुविभारभूता है (नीतिशतकम्)
* विद्या राजसु पूज्यते नहि धनं **विद्याविहीनः पशुः** – अर्थात् विद्या से विहीन मनुष्य पशु है। (नीतिशतकम्/17)

अतः विकल्प (B) सही है।

51. 'शतकत्रय' ग्रन्थ के रचनाकार ने और किस प्रसिद्ध ग्रन्थ की रचना की है?
(A) अष्टाध्यायी **(B) महाभाष्यम्**
(C) वाक्यपदीयम् **(D) सिद्धान्तकौमुदी**

	व्याकरणग्रन्थ		रचनाकार
(A)	अष्टाध्यायी	–	पाणिनि
(B)	महाभाष्यम्	–	पतञ्जलि
(C)	**वाक्यपदीयम्**	–	**भर्तृहरि**
(D)	सिद्धान्तकौमुदी	–	भट्टोजिदीक्षित

अतः विकल्प (C) सही है।

45. (A) 46. (B) 47. (C) 48. (A) 49. (D) 50. (B) 51. (C)

52. शकुन्तला-दुष्यन्त के पुत्र का नाम है?
(A) सर्वदमन (भरत) (B) चन्द्रापीड
(C) वैशम्पायन (D) पुरु

	पुत्र		माता-पिता
(A)	**सर्वदमन (भरत)**	–	**शकुन्तला - दुष्यन्त**
(B)	चन्द्रापीड	–	विलासवती - तारापीड
(C)	वैशम्पायन	–	मनोरमा - शुकनास
(D)	पुरु	–	शर्मिष्ठा - ययाति

अतः विकल्प (A) सही है।

53. 'किरातार्जुनीयम्' में अर्जुन को कौन-सा प्रसिद्ध अस्त्र प्राप्त हुआ है?
(A) गाण्डीव (B) पाशुपतास्त्र
(C) अग्निबाण (D) जृम्भकास्त्र

व्याख्या – * किरातार्जुनीयम् के 18 वें सर्ग में अर्जुन को शिव से **'पाशुपत अस्त्र'** की प्राप्ति होती है।
* 'गाण्डीव' अर्जुन के धनुष का नाम है।
* 'अग्निबाण' अग्निदेवता से सम्बन्धित है।
* 'जृम्भकास्त्र' कुश और लव को जन्मजात प्राप्त था।
अतः विकल्प (B) सही है।

54. 'किरातार्जुनीयम्' में किरात है?
(A) गणेश (B) शिव
(C) राहु (D) युधिष्ठिर

व्याख्या – किरातार्जुनीयम् में किरातवेशधारी **भगवान् 'शिव'** हैं। जिनका अर्जुन के साथ इन्द्रकील पर्वत पर घनघोर युद्ध होता है। और बाद में प्रसन्न होकर वह अर्जुन को 'पाशुपत अस्त्र' प्रदान करते हैं। अतः विकल्प (B) सही है।

55. 'कादम्बरी' का शुक पक्षी पूर्वजन्म में कौन था?
(A) शूद्रक (B) वैशम्पायन
(C) पत्रलेखा (D) कपिञ्जल

व्याख्या – बाणभट्ट कृत कादम्बरी में तीन जन्मों की कथा का वर्णन है।
तीन जन्मों के नाम निम्नवत् हैं –

	प्रथम जन्म		द्वितीय जन्म		तृतीय जन्म
(A)	चन्द्रमा	–	चन्द्रापीड	–	शूद्रक
(B)	पुण्डरीक	–	**वैशम्पायन**	–	शुक
(C)	कपिञ्जल	–	इन्द्रायुध	–	कपिञ्जल

अतः विकल्प (B) सही है।

56. 'कादम्बरी' में पार्श्वनायिका कौन है?
(A) पत्रलेखा (B) विलासवती
(C) महाश्वेता (D) कादम्बरी

व्याख्या –
(A) पत्रलेखा, ताम्बूलकरङ्कवाहिनी है।
(B) विलासवती, तारापीड की पत्नी है।
(C) **महाश्वेता,** पार्श्वनायिका (सहनायिका) है।
(D) कादम्बरी, नायिका है।
अतः विकल्प (C) सही है।

57. 'अभिज्ञानाभरणदर्शनेन शापो निवर्तिष्यत इति' – यह उक्ति किसकी है?
(A) कण्व की (B) अनसूया की
(C) दुर्वासा की (D) गौतमी की

व्याख्या –
(A) भगिन्यास्ते मार्गमादेशय – कण्व का कथन।
(B) अतिथीनामिव निवेदितम् – अनसूया का कथन।
(C) 'अभिज्ञानाभरणदर्शनेन शापो निवर्तिष्यत इति'– प्रियंवदा के आग्रह पर **दुर्वासा ऋषि** कहते हैं कि – पहचान (अभिज्ञान) के आभूषण (अँगूठी) को दिखलाने से शकुन्तला का शाप समाप्त हो जायेगा।
(D) वरः खल्वेषः, नाशीः – गौतमी का कथन।
अतः विकल्प (C) सही है।

58. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' नाटक का उत्स (मूल) है?
(A) महाभारत (B) रामायण
(C) श्रीमद्भागवतपुराण (D) कविकल्पित

	ग्रन्थ		उत्स (उपजीव्य)
(A)	**अभिज्ञानशाकुन्तलम्**	–	**महाभारत (आदिपर्व)**
(B)	अभिषेकनाटकम्	–	वाल्मीकिरामायण
(C)	कुमारसम्भवम्	–	श्रीमद्भागवतपुराण
(D)	ऋतुसंहारम्	–	कविकल्पित

अतः विकल्प (A) सही है।

52. (A) 53. (B) 54. (B) 55. (B) 56. (C) 57. (C) 58. (A)

59. 'सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम्' उक्ति है?

(A) कण्व की (B) शकुन्तला की
(C) अनसूया की (D) प्रियंवदा की

व्याख्या –

(A) 'सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम्' – **कण्व** तपोवन के वृक्षों को सम्बोधित करते हुए कहते हैं कि – यह शकुन्तला पति के घर (ससुराल) जा रही है, अतः आप सभी लोग अनुमति दें। (अभिज्ञान. 4/9)

(B) 'लताभगिनीं वनज्योत्स्नां तावदामन्त्रयिष्ये' – शकुन्तला का कथन।

(C) 'न मे उचितेष्वपि निजकरणीयेषु कार्येषु हस्तपादं प्रसरति' – अनसूया का कथन

(D) 'उद्गलितदर्भकवला मृग्यः परित्यक्तनर्तना मयूराः' – प्रियंवदा का कथन

अतः विकल्प (A) सही है।

60. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में सखियों ने शापवृत्तान्त' सर्वप्रथम किसे सुनाया?

(A) कण्व को (B) मेनका को
(C) शकुन्तला को (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या –

* 'अग्निशरणं प्रविष्टस्य शरीरं विना छन्दोमय्या वाण्या' – अर्थात् यज्ञशाला में गये हुए (कण्व को) शरीर रहित छन्दोमयी वाणी के द्वारा विवाहवृत्तान्त बतलाया गया है।
* 'द्वयोरेव नौ मुख एष वृत्तान्तस्तिष्ठतु' अनसूया के इस कथन से ज्ञात होता है कि सखियों ने शापवृत्तान्त किसी को भी नहीं बताया।

अतः विकल्प (D) सही है।

61. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में 'अभिज्ञान' कहाँ पर गिरा था?

(A) प्रभासखण्ड में (B) मानसरोवर में
(C) सरयूनदी में (D) शचीतीर्थ में

व्याख्या – अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक में अभिज्ञान (अँगूठी) शक्रावतार प्रदेश के शचीतीर्थ में गिरी थी। शचीतीर्थ गङ्गा नदी के किनारे अवस्थित है। अतः विकल्प (D) सही है।

62. रामचन्द्र 'छायासीता' को क्यों नहीं देख पाये?

(A) दुर्वासा के अभिशाप के कारण
(B) गोदावरी के आशीर्वाद के कारण
(C) भागीरथी के अभिशाप के कारण
(D) भागीरथी के आशीर्वाद के कारण

व्याख्या – उत्तररामचरितम् के तृतीय अङ्क में **भागीरथी के आशीर्वाद** के कारण सीता को राम नहीं देख पाते हैं, किन्तु सीता राम को देखतीं हैं। सीता को राम स्पर्श से पहचानते हैं। अतः विकल्प (D) सही है।

63. 'उत्तररामचरितम्' नाटक का मुख्यरस है?

(A) करुणरस (B) शृङ्गार रस
(C) वीररस (D) विप्रलम्भशृङ्गार

	ग्रन्थ		मुख्य रस
(A)	**उत्तररामचरितम्**	–	**करुणरस**
(B)	कुमारसम्भवम्	–	शृङ्गाररस
(C)	मुद्राराक्षसम्	–	वीररस
(D)	मेघदूतम्	–	विप्रलम्भ शृङ्गार

अतः विकल्प (A) सही है।

64. उत्तररामचरित की अङ्कसंख्या है?

(A) 4 (B) 5
(C) 6 (D) 7

	नाटक		अङ्क
(A)	रत्नावली	–	4 अङ्क
(B)	विक्रमोर्वशीयम्	–	5 अङ्क
(C)	स्वप्नवासवदत्तम्	–	6 अङ्क
(D)	**उत्तररामचरितम्**	–	**7 अङ्क**

अतः विकल्प (D) सही है।

65. 'अविदितगतयामा रात्रिरेव व्यरंसीत्' – उत्तररामचरित में यह किसकी उक्ति है?

(A) तमसा की (B) मुरला की
(C) राम की (D) सीता की

व्याख्या –

(A) तमसा का कथन– ''परिपाण्डुदुर्बलकपोलसुन्दरम्'' – उत्तररामचरितम् 3/4

(B) मुरला का कथन– ''शरदिज इव घर्मः केतकीगर्भपत्रम्'' – उत्तररामचरितम्-3/5

(C) ''अशिथिलपरिरम्भव्यापृतैकैकदोष्णोः अविदितगतयामा रात्रिरेव व्यरंसीत्'' –

59. (A) 60. (D) 61. (D) 62. (D) 63. (A) 64. (D) 65. (C)

प्रस्तुत पंक्ति में **राम कहते हैं** कि गाढ़ आलिङ्गन में व्यस्त एक-एक बाहु वाले हम दोनों की रात्रि, विगत प्रहरों के ज्ञान के बिना ही, बीत गई। (उत्तररामचरितम् 1/27)

(D) 'कियच्चिरं वा मेघान्तरेण पूर्णचन्द्रदर्शनम्' – सीता कहती हैं कि – मेघ के व्यवधान के कारण पूर्ण चन्द्रमा का दर्शन कितनी देर और हो सकता है अर्थात् अधिक देर तक राम का दर्शन नहीं हो सकता
अतः विकल्प (C) सही है।

66. छायाङ्क का मुख्य कथानक है?
(A) राम-सीता का पुनर्मिलन
(B) राम-तमसा का मिलन
(C) राम-सीता का प्रथममिलन
(D) तमसा-वासन्ती का मिलन

व्याख्या – उत्तररामचरितम् तृतीय अङ्क (छायाङ्क) का मुख्य कथानक राम-सीता का पुनर्मिलन है। राम-सीता का पुनर्मिलन तृतीय अङ्क में स्पर्शजन्य है। सीता छाया के रूप में विद्यमान हैं, जिसे तमसा के अलावा कोई नहीं देख सकता, जबकि सीता सबको देख पा रहीं हैं। सीता के साथ तमसा, जबकि राम के साथ वासन्ती उपस्थित है। अतः विकल्प (A) सही है।

67. 'मेघदूतम्' में शाप कितने वर्ष का था?
(A) एक वर्ष **(B) दो वर्ष**
(C) चार मास **(D) आठ मास**

व्याख्या – * 'शापेनास्तङ्गमितमहिमा वर्षभोग्येण भर्तुः' (पूर्वमेघ/1) अर्थात् **एक वर्ष तक** भोगे जाने वाले स्वामी कुबेर के शाप से विनष्ट महिमा वाला यक्ष रामगिरि पर्वत में निवास करता है। शाप के आठ माह बीत गये हैं, केवल चार माह शेष हैं– ''शेषान्मासान्गमय चतुरो लोचने मीलयित्वा'' (उत्तरमेघ-50)
अतः विकल्प (A) सही है।

68. 'मेघदूतम्' में अभिशप्त यक्ष कहाँ निवास कर रहा था?
(A) आम्रकूट में **(B) कैलाश में**
(C) रामगिरि में **(D) मानसरोवर में**

व्याख्या –
(A) आम्रकूट, मेघ के मार्ग का प्रथमपर्वत है।
(B) कैलाशपर्वत पर अलकापुरी नगरी अवस्थित है।
(C) 'स्निग्धच्छायातरुषु वसतिं रामगिर्याश्रमेषु' अर्थात् घनी छाया से युक्त **रामगिरि** के आश्रमों में वह यक्ष निवास करने लगा। (पूर्वमेघ /1) अतः विकल्प (C) सही है।
(D) राजहंस मानसरोवर जाने को उत्सुक हैं।

69. 'कण्ठाश्लेषप्रणयिनि जने किं पुनर्दूरसंस्थे' – यहाँ 'जन' शब्द से किसकी ओर संकेत है?
(A) यक्षिणी **(B) कुबेर**
(C) मेघ **(D) इनमें से कोई नहीं**

व्याख्या – कण्ठ के आलिङ्गन से प्रेम करने वाली मेरी प्रिया रूप जन के दूर होने पर क्या कहा जाय। इस पद में सप्तमी के कारण ऐसे व्यक्ति की ओर संकेत कर रहा है, जो उस यक्ष के कण्ठालिङ्गन का इच्छुक हो और वह व्यक्ति केवल उसकी प्रिया ही हो सकती है जो उससे दूर स्थित है। 'जने' से अर्थ यहाँ पर प्रिया अर्थात् यक्षिणी है। अतः विकल्प (A) सही है।

स्रोत- (i) मेघदूतम् (पूर्वमेघ-3) आर0बी0 शास्त्री
(ii) मेघदूतम्- विजेन्द्र शर्मा, पेज-07

70. 'मेघदूतम्' में चेतन और अचेतन में कौन भेद नहीं कर पाते हैं?
(A) विलासी **(B) भोगी**
(C) कामार्त **(D) संन्यासी**

व्याख्या – 'कामार्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु' – अर्थात् कामपीड़ित लोग जड़ और चेतन के विषय में स्वभावतः दीन हो जाते हैं। (पूर्वमेघ/5) अतः विकल्प (C) सही है।

71. ''यक्षश्चक्रे जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु'' इस श्लोकांश में 'जनकतनया' कौन है?
(A) यक्षिणी **(B) सीता**
(C) गङ्गा **(D) इनमें से कोई नहीं**

व्याख्या – प्रस्तुत श्लोकांश में 'जनकतनया' मिथिलानरेश जनक की पुत्री सीता के लिए आया है। (पूर्वमेघ/1)

72. 'मेघदूतम्' में 'दिङ्नाग' कौन हैं?
(A) मीमांसक **(B) नैयायिक**
(C) बौद्ध **(D) वेदान्ती**

व्याख्या – 'दिङ्नागानां पथि परिहरन् स्थूलहस्तावलेपान्' (पूर्वमेघ/14) प्रस्तुतपंक्ति में दिङ्नाग शब्द का प्रयोग दिशाओं के आठ हाथियों के लिए प्रयुक्त है। कुछ विद्वान् इस श्लोक का एक अर्थ बौद्धों के पक्ष में भी करते हैं। यहाँ 'दिङ्नाग' शब्द से **बौद्धदार्शनिक दिङ्नाग** अर्थ लेते हैं।
अतः विकल्प (C) सही है।

66. (A) 67. (A) 68. (C) 69. (A) 70. (C) 71. (B) 72. (C)

73. 'अस्' धातु का लट्लकार उत्तमपुरुष बहुवचन में रूप होगा?

(A) अस्ति (B) स्तः
(C) सन्ति (D) स्मः

व्याख्या – * 'अस्' धातु का लट्लकार प्रथमपुरुष में "अस्ति, स्तः, सन्ति" रूप बनता है।
* लट्लकार उत्तमपुरुष में–अस्मि, स्वः, **स्मः** रूप बनता है। अतः विकल्प (D) सही है।

74. 'गम्' धातु का लङ्लकार उत्तमपुरुष बहुवचन में रूप बनता है?

(A) अगच्छम् (B) अगच्छाव
(C) अगच्छाम (D) अगच्छः

व्याख्या – * गम् धातु लङ्लकार उत्तमपुरुष में – "अगच्छम् अगच्छाव, **अगच्छाम**" रूप बनता है।
* मध्यमपुरुष में – "अगच्छः, अगच्छतम्, अगच्छत" रूप बनता है। अतः विकल्प (C) सही है।

75. 'सन्धि' का तात्पर्य है?

(A) श्रेष्ठ पदीयता (B) पदार्थसम्बन्ध
(C) परः सन्निकर्षः संहिता (D) वाक्यार्थ सम्बन्ध

व्याख्या – परः सन्निकर्षः संहिता (1/4/109) सूत्रानुसार वर्णों के अत्यधिक सामीप्य को संहिता कहते हैं, जैसे – 'सुधी + उपास्यः' में इकार और उकार में अत्यधिक सामीप्य है, इसलिए दोनों के सामीप्य को संहिता (सन्धि) कहेंगे। अतः विकल्प (C) सही है।

76. 'नयन' शब्द का सन्धिविच्छेद होगा?

(A) नौ + आय (B) नै + अन
(C) नो + अन (D) ने + अन

व्याख्या – एचोऽयवायावः (6/1/78) सूत्र से एच् के बाद अच् आने पर एच् के स्थान पर क्रमशः अय्, अव्, आय्, आव् हो जाता है। यथा–ने + अन = नयन (ए + अ = अय्) अतः विकल्प (D) सही है।

77. निम्नलिखित में से अव्ययीभावसमास हैं–

(A) पञ्चनरम् (B) पञ्चनदम्
(C) पञ्चाननम् (D) पञ्चगवम्

व्याख्या –
(A) 'पञ्चानां नराणां समाहारः = पञ्चनरम्' में "तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च" (2.1.51) सूत्र से द्विगुसमास होगा।
(B) **'पञ्चानां नदीनां समाहारः=पञ्चनदम्'** में "नदीभिश्च" (2.1.20) सूत्र से अव्ययीभाव समास हुआ।
(C) * 'पञ्चानाम् आननानां समाहारः = पञ्चाननम्' में द्विगुसमास।
* पञ्च आननानि यस्य सः = पञ्चाननः, (शिवः) में 'अनेकमन्यपदार्थे" सूत्र से दशाननः, षडाननः गजाननः आदि में बहुव्रीहि भी हो सकता है।
(C) 'पञ्चानां गवां समाहारः=पञ्चगवम्' में "तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च" (2.1.51) तथा "संख्यापूर्वो द्विगुः" सूत्र से द्विगुसमास होगा। अतः विकल्प `B' सही है।

78. 'अति+इव = अतीव' में सन्धि का नियम है?

(A) इको यणचि (B) अकः सवर्णे दीर्घः
(C) वृद्धिरादैच् (D) सर्वत्र विभाषा गोः

व्याख्या –
(A) 'इको यणचि' (6/1/77) सूत्र से इक् के स्थान पर यण् आदेश होता है अच् पर में हो तब
यथा – खलु + एषः = खल्वेषः
(B) **'अकः सवर्णे दीर्घः'** (6/1/101) सूत्र से अक् (अ, इ, उ, ऋ, ऌ) के पश्चात् कोई सवर्ण स्वर हो तो दोनों के स्थान पर दीर्घ एकादेश होता है।
यथा – अति + इव = अतीव
(C) 'वृद्धिरादैच्' (1/1/1) सूत्र "आ, ऐ, औ," की वृद्धिसंज्ञा करता है।
(D) 'सर्वत्र विभाषा गोः' (6/1/122) सूत्र से – गो + अग्रम् = गो अग्रम् होगा। अतः विकल्प (B) सही है।

79. 'राज्ञा पूजितः = राजपूजितः' में कौनसा समास है?

(A) तत्पुरुष (B) अव्ययीभाव
(C) द्विगु (D) बहुव्रीहि

व्याख्या –
(A) 'कर्तृ-करणे कृता बहुलम्' (2/1/32) सूत्र से अनुक्त कर्त्ता और करण में आने वाले तृतीयान्त पदों का कृदन्त पद के साथ समास होता है।
यथा–राज्ञा पूजितः=राजपूजितः (तृतीया तत्पुरुषसमास)
(B) 'अव्ययीभावे चाकाले' (6/3/81) सूत्र से 'सह' को 'स' आदेश होकर "क्षत्राणां सम्पत्तिः = सक्षत्रम्" में अव्ययीभावसमास।
(C) 'पञ्चानां गवां समाहारः=पञ्चगवम्' में द्विगुसमास है।
(D) "अनेकमन्यपदार्थे" (2.2.24) सूत्र से 'उढो रथो येन सः ऊढरथः' में बहुव्रीहिसमास है।
अतः विकल्प (A) सही है।

73. (D) 74. (C) 75. (C) 76. (D) 77. (B) 78. (B) 79. (A)

80. 'ज्ञानाय इदं ज्ञानार्थम्' में समास है?
(A) द्वितीयातत्पुरुष (B) तृतीयातत्पुरुष
(C) चतुर्थीतत्पुरुष (D) पञ्चमीतत्पुरुष

व्याख्या –
(A) "द्वितीया श्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नैः (2/1/24) सूत्र से पतित अर्थ में – नरकं पतितः = नरकपतितः में द्वितीया तत्पुरुषसमास है।
(B) 'शङ्कुलया खण्डः = शङ्कुलाखण्डः' में तृतीया तत्पुरुषसमास है।
(C) "चतुर्थी तदर्थार्थ–बलि-हित-सुख–रक्षितैः" (2/1/36) सूत्र से अर्थ (के लिए) के अर्थ में **'ज्ञानाय इदम् = ज्ञानार्थम्' में चतुर्थी तत्पुरुषसमास** है।
(D) "पञ्चमी भयेन" (2/1/37) सूत्र से 'चोराद् भयम् = चोरभयम्' में पञ्चमी तत्पुरुषसमास है।
अतः विकल्प (C) सही है।

81. 'पुनर् + रमते' का सन्धिरूप है?
(A) पुनरमते (B) पुनो रमते
(C) पुनः रमते (D) पुना रमते

व्याख्या – "रो रि" सूत्र से पूर्व रेफ का लोप होकर ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः (6/3/111) सूत्र से 'अ' के स्थान पर दीर्घ एकादेश होकर विसर्गसन्धि में **'पुना रमते'** रूप बनता है। अतः विकल्प (D) सही है।

82. यण् प्रत्याहार में होगा?
(A) य, क, व, ल (B) ष, अ, र, ल
(C) य्, व्, र्, ल् (D) य, र, ल, ष

व्याख्या – यण् प्रत्याहार के अन्तर्गत **य्, व्, र्, ल्** वर्ण आते हैं। यह प्रत्याहार दो सूत्रों से बना है– हयवरट् और लण्। अतः विकल्प (C) सही है।

83. यदि 'उपसर्ग' क्रिया से युक्त हो तो उसे कहेंगे?
(A) संज्ञा (B) परिभाषा
(C) गति (D) अधिकार

व्याख्या – "उपसर्गाः क्रियायोगे" (1/4/59) सूत्र से जब उपसर्ग क्रिया से युक्त हो तो उसे **गतिसंज्ञक** कहते हैं। यथा– प्रकरोति। अतः विकल्प (C) सही है।

84. 'पाणी च पादौ च' का सामासिक पद होगा?
(A) पाणीपादौ (B) पाणीपादः
(C) पाणिपादौ (D) पाणिपादम्

व्याख्या – "द्वन्द्वश्च प्राणि-तूर्य-सेनाङ्गानाम्" (2/4/2) सूत्र से प्राणी के अङ्गवाचक शब्दों से द्वन्द्वसमास सदैव एकवचन में होता है। यथा – पाणी च पादौ च = पाणिपादम्
अतः विकल्प (D) सही है।

85. 'घनश्यामः' में समास है?
(A) षष्ठीतत्पुरुष (B) पञ्चमीतत्पुरुष
(C) उपमान-कर्मधारय (D) द्वन्द्वसमास

व्याख्या –
(A) 'षष्ठी' (2/2/8) सूत्र से राज्ञः पुरुषः = राजपुरुषः में षष्ठी तत्पुरुषसमास है।
(B) "पञ्चम्याः स्तोकादिभ्यः" (6/3/2) सूत्र से 'स्तोकात् मुक्तः = स्तोकान्मुक्तः' में पञ्चमी तत्पुरुषसमास है।
(C) "उपमानानि सामान्यवचनैः" (2/1/55) सूत्रानुसार उपमान वाचक सुबन्त का साधारण धर्म के वाचक सुबन्त के साथ समास होता है। यथा – **'घन इव श्यामः = घनश्यामः'** में कर्मधारयसमास है।
(D) 'क्षुद्रजन्तवः' (2/4/8) सूत्र से यूका च लिक्षा च = 'यूकालिक्षम्' में द्वन्द्वसमास है।
अतः विकल्प (C) सही है।

86. 'राजहंसः' इस पद का विग्रहवाक्य होगा?
(A) राजा इव हंस (B) हंसानां राजानां
(C) हंस एव राजा स (D) हंसानां राजा

व्याख्या – षष्ठी (2/2/8) सूत्र से षष्ठ्यन्त सुबन्त का समर्थ सुबन्त के साथ समास होता है। यथा – **'हंसानां राजा =राजहंसः'** में षष्ठी तत्पुरुषसमास है।
अतः विकल्प (D) सही है।

87. 'स्पृहेरीप्सितः' सूत्र है?
(A) कर्मकारक का (B) करणकारक का
(C) अपादानकारक का (D) सम्प्रदानकारक का

व्याख्या –
(A) 'अभिनिविशश्च' (1/4/47) सूत्र कर्मकारक का है।
(B) 'हेतौ' (2/3/23) सूत्र करणकारक का है।
(C) 'पराजेरसोढः' (1/4/26) सूत्र अपादानकारक का है।
(D) 'स्पृहेरीप्सितः' (1/4/36) सूत्र से 'स्पृह्' धातु के योग में ईप्सितपदार्थ की **सम्प्रदानसंज्ञा** होती है। यथा –पुष्पेभ्यः स्पृहयति।
अतः विकल्प (D) सही है।

80. (C) 81. (D) 82. (C) 83. (C) 84. (D) 85. (C) 86. (D) 87. (D)

88. 'हेत्वर्थक' अनु शब्द को कहते हैं?
(A) कर्मप्रवचनीय (B) व्यपेक्षा
(C) अतिदेश (D) विभाषा

व्याख्या – * 'अनुर्लक्षणे' (1/4/84) सूत्र से हेत्वर्थक 'अनु' शब्द **कर्मप्रवचनीय** है।
* कर्मप्रवचनीय में द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है। अतः विकल्प (A) सही है।

89. 'अभिनिविशश्च' सूत्र सम्बन्धित है?
(A) अपादानकारक से (B) करणकारक से
(C) सम्प्रदानकारक से (D) कर्मकारक से

व्याख्या –
(A) 'भुवः प्रभवः' (1/4/31)–अपादानकारक का सूत्र है।
(B) 'साधकतमं करणम्' (1/4/42) – करणकारक का सूत्र है।
(C) 'रुच्यर्थानां प्रीयमाणः' (1/4/33) – सम्प्रदानकारक का सूत्र है।
(D) 'अभिनिविशश्च' (1/4/47) सूत्र से विश् धातु के पूर्व अभि और नि उपसर्ग क्रमशः लगे हों तो क्रिया के आधार की **कर्मसंज्ञा** होती है यथा – सन्मार्गम् अभिनिविशते। अतः यह सूत्र कर्मकारक से सम्बन्धित है। अतः विकल्प (D) सही है।

90. 'वपुषा चतुर्भुजः' वाक्य में वपुषा में किस सूत्र पर आधारित तृतीया है?
(A) इत्थम्भूतलक्षणे (B) हेतौ
(C) येनाङ्गविकारः (D) अपवर्गे तृतीया

व्याख्या –
(A) **'इत्थम्भूतलक्षणे'** (2/3/21) सूत्र से किसी विशेष धर्म को प्राप्त हुए व्यक्ति अथवा वस्तु के लक्षण में तृतीयाविभक्ति होती है। यथा – वपुषा चतुर्भुजः।
(B) 'हेतौ' (2/3/23) सूत्र से – दण्डेन घटः
(C) 'येनाङ्गविकारः' (2/3/20) सूत्र से – अक्ष्णा काणः
(D) 'अपवर्गे तृतीया' (2/3/6) सूत्र से–अह्ना अनुवाकोऽधीतः मासेन व्याकरणम् अधीतवान्।
अतः विकल्प (A) सही है।

91. 'धारेरुत्तमर्णः' सूत्र किस कारक के साथ सम्बन्धित है?
(A) अपादानकारक से
(B) अधिकरणकारक से
(C) सम्प्रदानकारक से
(D) करणकारक से

व्याख्या –
(A) 'वारणार्थानामीप्सितः' (1/4/27) – अपादान से सम्बन्धित है।
(B) 'यस्य च भावेन भावलक्षणम्' (2/3/37) – अधिकरण कारक से सम्बन्धित है।
(C) **'धारेरुत्तमर्णः'** (1/4/35) सूत्र से णिजन्त 'धृ' धातु के योग से उत्तमर्ण (ऋण देने वाले की) की **सम्प्रदानसंज्ञा** होती है यथा – भक्ताय धारयति मोक्षं हरिः।
(D) 'प्रकृत्यादिभ्य उपसंख्यानम्' (वार्तिक) – करणकारक से सम्बन्धित है।
अतः विकल्प (C) सही है।

92. 'दिवः कर्म च' यह सूत्र वैकल्पिक रूप से किस कारक से सम्बन्धित हो सकता है?
(A) कर्मकारक से
(B) सम्प्रदानकारक से
(C) अधिकरणकारक से
(D) अपादानकारक से

व्याख्या –
(A) **'दिवः कर्म च'** (1/4/43) इस सूत्र से दिव् धातु के साधकतम कारक की विकल्प से **कर्मसंज्ञा** होती है तथा पक्ष में तृतीयाविभक्ति होती है। यथा – अक्षैः अक्षान् वा दीव्यति।
(B) ''तादर्थ्ये चतुर्थी वाच्या'' (वार्तिक) – सम्प्रदानकारक से सम्बन्धित है।
(C) 'यतश्चनिर्धारणम्' (2/3/41) – अधिकरणकारक से सम्बन्धित है।
(D) 'भीत्रार्थानां भयहेतुः' (1/4/25) – अपादानकारक से सम्बन्धित है।
अतः विकल्प (A) सही है।

88. (A) 89. (D) 90. (A) 91. (C) 92. (A)

93. 'शिवराजविजयम्' किस प्रकार का काव्य है?
(A) ऐतिहासिककाव्य (B) कथाकाव्य
(C) पद्यकाव्य (D) चम्पूकाव्य

	काव्य		विधा
(A)	**शिवराजविजयम्**	–	**ऐतिहासिक उपन्यास**
(B)	कादम्बरी	–	कथाकाव्य
(C)	नीतिशतकम्	–	पद्यकाव्य (मुक्तककाव्य)
(D)	नलचम्पू	–	चम्पूकाव्य

अतः विकल्प (A) सही है।

94. 'शिवराजविजयम्' में शिवाजी के अतिरिक्त और किसका चरित्र चित्रण है?
(A) भैरोसिंह (B) गौरसिंह
(C) गुजरालसिंह (D) मोहनसिंह

व्याख्या – 'शिवराजविजयम्' में शिवाजी के अतिरिक्त **गौर सिंह** का भी चरित्र-चित्रण है।
अतः विकल्प (B) सही है।

95. 'शिवराजविजयम्' में कहाँ की घटना का वर्णन है?
(A) महाराष्ट्र (B) राजस्थान
(C) दिल्ली (D) बिहार

व्याख्या – शिवराजविजयम् में **महाराष्ट्र की घटना** का वर्णन है। अतः विकल्प (A) सही है।

96. 'शिवराजविजयम्' में किस तरह की चेतना का प्रकाश है?
(A) राष्ट्रीय (B) प्रादेशिक
(C) दैशिक (D) कालिक

व्याख्या – अम्बिकादत्तव्यास कृत शिवराजविजयम् में **राष्ट्रीय चेतना का प्रकाश** है।
अतः विकल्प (A) सही है।

97. 'शिवराजविजयम्' के रचयिता कहाँ के प्राध्यापक थे?
(A) कानपुर (B) पटना
(C) जयपुर (D) दिल्ली

व्याख्या – 'शिवराजविजयम्' के रचयिता 'अम्बिकादत्तव्यास' **पटना** के संस्कृत कालेज में प्राध्यापक थे।
अतः विकल्प (B) सही है।

98. 'भवभूतिर्विशिष्यते' यह उक्ति किस नाटक के बारे में है?
(A) महावीरचरितम् (B) मालतीमाधवम्
(C) उत्तररामचरितम् (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या – 'उत्तरे रामचरिते भवभूतिर्विशिष्यते' – विक्रमार्क के इस प्रशस्ति से ज्ञात होता है कि **'भवभूतिर्विशिष्यते' उत्तररामचरित नाटक के बारे में कहा गया है।** महावीरचरितम् और मालतीमाधवम् नाटक भी भवभूति की कृतियाँ हैं। अतः विकल्प (C) सही है।

99. 'उत्तररामचरितम्' के तृतीय अङ्क में किस नदी का उल्लेख है?
(A) कावेरी (B) कृष्णा
(C) गोदावरी (D) यमुना

व्याख्या–'उत्तररामचरितम्' के तृतीय अङ्क में **गोदावरी नदी** का उल्लेख है। मुरला– ''सखि तमसे, प्रेषितास्मि भगवतोऽगस्त्यस्य पत्न्या लोपामुद्रया सरिद्वरां गोदावरीमभिधातुम्।'' (उत्तररामचरितम्-अङ्क-3) अतः विकल्प (C) सही है।

100. 'करुणस्य मूर्तिरिव' यह उक्ति किसके बारे में है?
(A) तमसा (B) शम्बूक
(C) भागीरथी (D) सीता

व्याख्या – 'करुणस्य मूर्तिरथवा शरीरिणी' – अर्थात् सीता करुणरस की साक्षात् मूर्ति अथवा शरीरधारिणी हैं, यह तमसा का कथन है। (उत्तररामचरि 3/4)
अतः विकल्प (D) सही है।

101. 'स्वाराज्यम्' का सन्धि विच्छेद है?
(A) स + राज्यम् (B) स्वर् + राज्यम्
(C) सु + राज्यम् (D) सो + राज्यम्

व्याख्या – **'स्वर् + राज्यम्'** यहाँ 'स्वर्' इस अव्ययपद के रेफ का ''रो रि'' (8/3/14) सूत्र से लोप करके ''ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः'' (6.3.111) सूत्र से पूर्व अण् अर्थात् 'व' में विद्यमान अकार को दीर्घ होकर 'स्वाराज्यम्' बना।
अतः विकल्प (B) सही है।

93. (A) 94. (B) 95. (A) 96. (A) 97. (B) 98. (C) 99. (C) 100. (D) 101. (B)

102. 'मतैक्यम्' में निम्न सूत्र से सन्धि कार्य होता है?
(A) अदेङ्गुणः (B) वृद्धिरादैच्
(C) वृद्धिरेचि (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या –
(A) 'अदेङ्गुणः' (1/1/2) सूत्र से 'अ, ए, ओ' की गुणसंज्ञा होती है।
(B) 'वृद्धिरादैच्' (1/1/1) सूत्र से 'आ, ऐ, औ' की वृद्धि संज्ञा होती है।
(C) 'वृद्धिरेचि' (6/1/88) सूत्र से **''मत + ऐक्यम् = मतैक्यम्''** में **वृद्धिसन्धि** होती है।
अतः विकल्प (C) सही है।

103. 'प्रत्यक्षम्' शब्द में समास है?
(A) तत्पुरुष (B) कर्मधारय
(C) अव्ययीभाव (D) द्विगुसमास

	शब्द		समास
(A)	ग्रामगतः	–	द्वितीयातत्पुरुष
(B)	पीताम्बरम्	–	कर्मधारय
(C)	**प्रत्यक्षम्**	–	**अव्ययीभाव**
(D)	चतुर्युगम्	–	द्विगुसमास

अतः विकल्प (C) सही है।

104. ''शिखया परिव्राजकः'' यहाँ किस कारक में तृतीया विभक्ति है?
(A) कर्मणि (B) कर्तरि
(C) संज्ञायाम् (D) करणे

व्याख्या – 'इत्थम्भूतलक्षणे' (2/3/21) सूत्र से 'शिखया' में तृतीयाविभक्ति का विधान **करणकारक** से हुआ है। यथा – (i) शिखया परिव्राजकः। (ii) जटाभिस्तापसः
अतः विकल्प (D) सही है।

105. 'अस्मद्' शब्द का द्वितीया बहुवचन का विकल्प रूप होगा?
(A) मा (B) नौ
(C) नः (D) माम्

व्याख्या – 'अस्मद्' शब्द का द्वितीया विभक्ति में ''माम् , आवाम् , अस्मान्'' रूप बनता है।
विकल्प में – ''मा, नौ, **नः''** रूप भी बनता है।
अतः विकल्प (C) सही है।

106. '25' का संस्कृत शब्दात्मक रूप होगा?
(A) पञ्चविंशतिः (B) पञ्चपञ्चाशत्
(C) पञ्चदश (D) एकोनपञ्चाशत्

	संख्या		संस्कृत शब्दात्मक रूप
(A)	**25**	–	**पञ्चविंशतिः**
(B)	55	–	पञ्चपञ्चाशत्
(C)	15	–	पञ्चदश
(D)	49	–	एकोनपञ्चाशत्

अतः विकल्प (A) सही है।

107. 'अस्' धातु का लोट्लकार मध्यमपुरुष एकवचन में रूप होगा?
(A) अस्तु (B) स्ताम्
(C) सन्तु (D) एधि

व्याख्या –
* 'अस्' धातु लोट्लकार प्रथमपुरुष में ''अस्तु, स्ताम्, सन्तु'' रूप चलता है।
* मध्यमपुरुष में – **''एधि**, स्तम्, स्त'' रूप चलता है।
अतः विकल्प (D) सही है।

108. 'हन्' धातु लङ्लकार उत्तमपुरुष बहुवचन में रूप होगा?
(A) अहनम् (B) अघ्नन्
(C) अहन्म (D) जहि

व्याख्या –
* 'हन्' धातु लङ्लकार उ. पु. में – ''अहनम्, अहन्व, **अहन्म''** रूप बनता है।
* 'हन्' धातु लोट्लकार म. पु. में – ''जहि, हतम्, हत'' रूप बनता है।
* लङ्लकार प्रथमपुरुष में– ''अहन्, अहताम्, अघ्नन्''
अतः विकल्प (C) सही है।

109. 'त्वं चन्द्रं पश्य' इसका कर्मवाच्य में रूप होगा?
(A) तेन चन्द्रः दृष्टः। (B) त्वयि चन्द्रं पश्यति।
(C) त्वया चन्द्रः पश्यामि। (D) त्वया चन्द्रः दृश्यताम्।

व्याख्या – 'त्वं चन्द्रं पश्य' – कर्मवाच्य में कर्त्ता में तृतीया, कर्म में प्रथमा तथा क्रिया कर्म के अनुसार प्रयुक्त होती है। इसलिए – **''त्वया चन्द्रः दृश्यताम्''** होगा।
अतः विकल्प (D) सही है।

102. (C) 103. (C) 104. (D) 105. (C) 106. (A) 107. (D) 108. (C) 109. (D)

110. ''सहसा विदधीत न क्रियाम्'' इस वाक्य का हिन्दी में अनुवाद होगा?
(A) हठपूर्वक कार्य करें (B) हठपूर्वक कार्य न करें
(C) सहसा कार्य करें (D) सहसा कार्य न करें

व्याख्या – 'सहसा विदधीत न क्रियाम्' – यह भारवि की उक्ति है, जिसका अर्थ है–**अचानक (सहसा) कार्य न करें।** अतः विकल्प (D) सही है।

111. 'मैं यश नही चाहता' इसका संस्कृत अनुवाद होगा?
(A) अहं यशं न इच्छति (B) अहं यशं इच्छामि
(C) न अहं यशं लिप्समि (D) अहं यशः न इच्छामि

व्याख्या – * मैं यश नहीं चाहता – अहं यशः न इच्छामि। यहाँ 'यशस्' (नपु0) शब्द का द्वितीया एकवचन में रूप बनेगा–'यशः' * 'अहम्' उत्तमपुरुष का कर्ता है, अतः 'इच्छामि' लट्लकार उ0पु0 एकवचन की क्रिया का प्रयोग है।
अतः विकल्प (D) सही है।

112. 'कादम्बरी' में मन्त्री शुकनास ने किसे उपदेश दिया है?
(A) तारापीड को (B) चन्द्रापीड को
(C) पुण्डरीक को (D) वैशम्पायन को

व्याख्या – * शुकनास, तारापीड का प्रधान अमात्य था।
* तारापीड के पुत्र '**चन्द्रापीड**' को राज्याभिषेक के समय शुकनास ने उपदेश दिया। अतः विकल्प (B) सही है।

113. 'शूद्रक' की राजसभा में शुकपक्षी को कौन लाया था?
(A) प्रतीहारी (B) पत्रलेखा
(C) पुण्डरीक (D) मातङ्गिनी (चाण्डालकन्या)

व्याख्या – * शूद्रक की राजसभा में शुकपक्षी को **मातङ्गिनी (चाण्डालकन्या)** लेकर आती है।
* प्रतीहारी, शूद्रक के राजदरबार की द्वाररक्षिका है।
* पत्रलेखा, चन्द्रापीड की ताम्बूलकरङ्कवाहिनी है।
* पुण्डरीक, चन्द्रापीड का मित्र है।
अतः विकल्प (D) सही है।

114. शिवराजविजयम् के रचयिता को किस सम्मान से विभूषित किया गया था?
(A) घटिकाशतक (B) दीपशिखा
(C) वाग्देवतावतार (D) श्रीकण्ठपदलाञ्छन

	कवि		उपाधि
(A)	**अम्बिकादत्तव्यास**	–	**घटिकाशतक/शतावधान**
(B)	कालिदास	–	दीपशिखा
(C)	मम्मट	–	वाग्देवतावतार
(D)	भवभूति	–	श्रीकण्ठपदलाञ्छन

अतः विकल्प (A) सही है।

115. शिवराजविजयम् में निःश्वास संख्या कितनी है?
(A) 12 (B) 8
(C) 3 (D) 5

व्याख्या – शिवराजविजयम् में तीन विराम एवं **बारह निःश्वास** हैं। अतः विकल्प (A) सही है।

116. 'किरातार्जुनीयम्' में दुर्योधन की शासन व्यवस्था जानने के लिए किसे भेजा गया था?
(A) भीम को (B) अर्जुन को
(C) सहदेव को (D) वनेचर को

व्याख्या – भारवि कृत 'किरातार्जुनीयम्' में दुर्योधन की शासन व्यवस्था को जानने के लिए युधिष्ठिर ने **वनेचर को** नियुक्त किया था। ''श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीं''.... 'युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचरः' (किरात0 1/1)
अतः विकल्प (D) सही है।

117. ''नारिकेलफलसम्मितं वचः'' किस कवि के बारे में कहा गया है?
(A) कालिदास (B) भारवि
(C) भवभूति (D) बाणभट्ट

व्याख्या –
(A) 'कविकुलगुरुः कालिदासो विलासः' कालिदास के बारे में जयदेव की प्रशस्ति है।
(B) **'नारिकेलफलसम्मितं वचः' – भारवि के विषय** में मल्लिनाथ की प्रशस्ति है।
(C) 'साम्बा पुनातु भवभूतिपवित्रमूर्तिः'–भवभूति
(D) 'वश्यवाणी कविचक्रवर्ती' – बाणभट्ट के विषय में हर्षवर्धन की प्रशस्ति है।
अतः विकल्प (B) सही है।

118. 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः'–यह उक्ति किसकी है?
(A) वनेचर की (B) द्रौपदी की
(C) युधिष्ठिर की (D) अर्जुन की

व्याख्या –
(A) 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः' – **वनेचर** कहता है कि–हितकारी और प्रियवाणी दुर्लभ होती है। (किरात. 1/4)
(B) 'भवत्यधिक्षेप इवानुशासनम्' – द्रौपदी की उक्ति है।
नोट – किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में केवल वनेचर एवं द्रौपदी की उक्तियाँ हैं।
अतः विकल्प (A) सही है।

110. (D) 111. (D) 112. (B) 113. (D) 114. (A) 115. (A) 116. (D) 117. (B) 118. (A)

119. 'मेघदूतम्' में यक्ष को किसने अभिशाप दिया?
(A) इन्द्र ने (B) वायु ने
(C) कुबेर ने (D) कामदेव ने

व्याख्या – 'मेघदूतम्' में अलकापुरी के स्वामी **कुबेर** ने यक्ष को अपनी प्रिया से एक वर्ष तक दूर रहने का शाप दिया था। अतः विकल्प (C) सही है।

120. कालिदास के अनुसार निम्नलिखित में से किससे मेघ का सम्पर्क नहीं है?
(A) धुएं से (B) ज्योति से
(C) सलिल से (D) वृक्ष से

व्याख्या – 'धूमज्योतिःसलिलमरुतां सन्निपातः क्व मेघः' – (पूर्वमेघ/5) प्रस्तुत पंक्ति से विदित होता है कि मेघ – धुआँ, ज्योति, सलिल (जल), वायु से निर्मित है।
अतः विकल्प (D) सही है।

121. मेघदूतम् किस श्रेणी का काव्य है?
(A) चम्पूकाव्य (B) स्मार्तकाव्य
(C) गद्यकाव्य (D) दूतकाव्य

व्याख्या – * कालिदास कृत 'मेघदूतम्' **दूतकाव्य** है। इसे खण्डकाव्य या गीतिकाव्य भी कहते हैं।
* नलचम्पू, रामायणचम्पू, भारतचम्पू आदि चम्पूकाव्य हैं।
* कादम्बरी, दशकुमारचरितम्, वासवदत्ता आदि गद्यकाव्य हैं।
अतः विकल्प (D) सही है।

122. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में शाप वृत्तान्त किस अङ्क में है?
(A) प्रथम (B) तृतीय
(C) चतुर्थ (D) षष्ठ

व्याख्या –
(A) प्रथम अङ्क में राजा दुष्यन्त कण्व के आश्रम में प्रवेश करता है।
(B) तृतीय अङ्क में दुष्यन्त और शकुन्तला का मिलन होता है।
(C) चतुर्थ अङ्क में दुर्वासा शकुन्तला को शाप देते हैं। इसी अङ्क में शकुन्तला की विदाई होती है।
(D) षष्ठ अङ्क में राजा दुष्यन्त पश्चाताप करता है।
अतः विकल्प (C) सही है।

123. 'पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलम्' – यह उक्ति किसकी है?
(A) कण्व की (B) अनसूया की
(C) प्रियंवदा की (D) शकुन्तला की

व्याख्या –
(A) 'पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलम्' – प्रस्तुत पंक्ति में **कण्व**, शकुन्तला के विदाई के समय समीपस्थ तपोवन के वृक्षों को सम्बोधित करते हुए कहते हैं कि – आप लोगों को बिना जल पिलाये जो पहले जल पीने का प्रयास नहीं करती थी। वह शकुन्तला आज पतिगृह जा रही है। (अभिज्ञान 4/9)
(B) 'एषापि प्रियेण विना गमयति रजनीं विषाददीर्घतराम्'– अनसूया की उक्ति।
(C) 'अपसृतपाण्डुपत्रा मुञ्चन्त्यश्रूणीव लताः' – प्रियंवदा की उक्ति है।
(D) 'को नु खल्वेष निवसने मे सज्जते' – शकुन्तला की उक्ति है। अतः विकल्प (A) सही है।

124. ''किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्'' – यह वाक्य किसके बारे में कहा गया है?
(A) दुर्वासा (B) शकुन्तला
(C) कण्व (D) मेनका

व्याख्या –
(A) 'सुलभकोपो महर्षिः' – यह वाक्य प्रियंवदा दुर्वासा के लिए कहती है।
(B) **'किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्' – दुष्यन्त शकुन्तला के लिए** कहता है कि सुन्दर आकृतियों के लिए कौन सी वस्तु अलङ्कार नहीं है।
(C) नैष्ठिक ब्रह्मचारी – कण्व के लिए प्रयुक्त है।
(D) मेनका, शकुन्तला की जन्मदात्री माता है।
अतः विकल्प (B) सही है।

125. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में अभिज्ञान का सम्बन्ध किस वस्तु से है?
(A) घुंघरू (B) पायल
(C) बाली (D) अँगूठी

व्याख्या – कालिदास कृत 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में अभिज्ञान से तात्पर्य, दुष्यन्त द्वारा शकुन्तला को दी गयी **'अँगूठी'** से है। अतः विकल्प (D) सही है।

119. (C)	120. (D)	121. (D)	122. (C)	123. (A)	124. (B)	125. (D)

प्रशिक्षित-स्नातकशिक्षक-चयनपरीक्षा (TGT)–2005

1. शुकनासोपदेश की विषयवस्तु में निम्न में से कौन सम्मिलित नहीं है?
(A) युवावस्था जन्यविकार
(B) लक्ष्मीमद
(C) उत्तराधिकार के प्रति लापरवाही
(D) ऐश्वर्य सम्बन्धी दोष

व्याख्या–
* बाणभट्ट कृत कादम्बरी (कथा) का अंश शुकनासोपदेश है?
* इसमें 'गर्भेश्वरत्वमभिनवयौवनत्वमप्रतिमरूपत्वममानुषशक्तित्वञ्चेति' अर्थात्–

(i) जन्मतः प्राप्त ऐश्वर्य
(ii) नई जवानी
(iii) अनुपम सौन्दर्य
(iv) अलौकिक शक्ति,

* इन चारों को अनर्थों की महान् परम्परा कहा गया है।

अतः **उत्तराधिकार के प्रति लापरवाही** शुकनासोपदेश की विषयवस्तु नहीं है।
इसलिए विकल्प (C) सही उत्तर है।

2. शिवराजविजयम् का मङ्गलाचरण है?
(A) अम्बिकादत्तव्यास द्वारा लिखा गया है
(B) महाभारत से उद्धृत है
(C) श्रीमद्भगवद्गीता से उद्धृत है
(D) श्रीमद् भागवतपुराण से उद्धृत है

व्याख्या–
* अम्बिकादत्तव्यास कृत शिवराजविजयम् प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास है
* ''विष्णोर्माया भगवती यया सम्मोहितं जगत् (10-1-25)" –पूर्णतः मङ्गलपरक श्लोक है।
* ''हिंस्रः स्वपापेन विहिंसितः खलः साधुः समत्वेन भयाद् विमुच्यते'' (10/7/31) –वस्तुनिर्देशात्मक मङ्गलाचरण है
* उपर्युक्त दोनों मङ्गलाचरण श्रीमद्भागवतपुराण से उद्धृत हैं।

अतः विकल्प (D) सही है।

3. किरातार्जुनीयम् ग्रन्थ में किरात कौन है?
(A) युधिष्ठिर का गुप्तचर (B) एक प्रसिद्ध भील
(C) भगवान् शिव (D) एकलव्य

व्याख्या– * युधिष्ठिर का गुप्तचर वनेचर है।
* वनेचर भील जाति का है।
* किरात **भगवान् शिव** हैं।
* निषादराज हिरण्यधनु का पुत्र एकलव्य है।

अतः विकल्प (C) सही है।

4. 'बृहत्त्रयी' का एक ग्रन्थ 'किरातार्जुनीयम्' है शेष दो ग्रन्थों के नाम हैं–
(A) शिशुपालवधम्,कादम्बरी
(B) शिशुपालवधम्, नैषधीयचरितम्
(C) नैषधीयचरितम्, वेमभूपालचरितम्
(D) नैषधीयचरितम्, तिलकमञ्जरी

व्याख्या– * बृहत्त्रयी के अन्तर्गत तीन महाकाव्यों की गणना की जाती है–
1. किरातार्जुनीयम् (भारवि)
2. **शिशुपालवधम् (माघ)**
3. **नैषधीयचरितम् (श्रीहर्ष)**

* 'वेमभूपालचरितम्' वामनभट्ट की रचना है।
* 'तिलकमञ्जरी' धनपाल की रचना है

अतः विकल्प (B) सही है।

5. किरातार्जुनीयम् में 'अदेवमातृका' कौन है?
(A) नदी जलाशय एवं नहरों से सिंचाई करने वाले
(B) बादलों की वर्षा पर निर्भर रहने वाले
(C) देवताओं की कृपा प्राप्ति के लिए यज्ञानुष्ठान करने वाले
(D) राक्षसी शक्तियों के भरोसे कार्य सिद्धि करने वाले

व्याख्या– * ''वितन्वति क्षेममदेवमातृकाश्चिराय तस्मिन् कुरवश्चकासति'' (किरात0 1/17) अर्थात् वर्षा के जल पर ही निर्भर न रहने वाले कुरुदेशवासी (नदी, जलाशय, एवं नहरों से सिंचाई करने वाले) अदेवमातृक हैं।
* नदी, जलाशय एवं नहरों से सिंचाई करने वालों को अदेवमातृक कहा जाता है।
* वर्षा के जल पर निर्भर रहने वाले देवमातृक की श्रेणी में आते हैं।

अतः विकल्प (A) सही है।

1. (C) 2. (D) 3. (C) 4. (B) 5. (A)

6. निम्न विकल्पों में से किसे भर्तृहरि ने मूर्ख एवं दुराग्रही व्यक्ति को प्रसन्न करने की अपेक्षा अधिक सरल नहीं कहा है?
(A) मगर की दाढ़ से बलात् मणि निकाल लेना।
(B) क्रुद्ध सर्प को पुष्प की भाँति सिर पर धारण करना।
(C) कभी मृगतृष्णा से जल प्राप्ति कर लेना।
(D) नाव से नदी पार करना।

व्याख्या–
* भर्तृहरि कहते हैं कि– यदि कोई चाहे तो–मगर के मुख की दाढों के बीच से बलपूर्वक मणि को बाहर निकाल सकता है– 'प्रसह्य मणिमुद्धरेत् मकरवक्त्रदंष्ट्रान्तरात्'
* उठती हुई तरङ्गमालाओं से उमड़ते सागर को भी तैर कर पार कर सकता है।
* क्रुद्ध सर्प को भी फूल की तरह शिर पर धारण कर सकता है।
* प्रयत्नपूर्वक मर्दित करने पर कदाचित् बालुका से भी तेल निकल सकता है।
* मरुस्थल में भी मृगतृष्णा का जल पिया जा सकता है।
* पृथ्वी पर भ्रमण करते-करते किसी समय खरगोश की सींग भी प्राप्त किया जा सकता है
* परन्तु दुराग्रही (हठी) मूर्ख व्यक्ति के मन को प्रसन्न नहीं किया जा सकता है। –नीतिशतकम्-4

अतः विकल्प (D) सही उत्तर है।

7. ''वामाः कुलस्याधयः'' में वामा का अभिप्राय है?
(A) सुन्दर युवतियाँ
(B) अच्छे स्वभाव वाली स्त्रियाँ
(C) मनोनुकूल व्यवहार करने वाली स्त्रियाँ
(D) कहे गये ढंग के विपरीत आचरण करने वाली स्त्रियाँ

व्याख्या–
* ''यान्त्येवं गृहिणीपदं युवतयो वामाः कुलस्याधयः'' (अभिज्ञान 4/18) प्रस्तुत पंक्ति में कण्व भारतीय संस्कृति के अनुरूप अपनी पालिता पुत्री शकुन्तला को आदर्श गृहिणी होने का उपदेश देते हुए कहते हैं कि–इस प्रकार युवतियाँ गृहस्वामिनी (गृहलक्ष्मी) पद को प्राप्त कर लेती हैं और इसके प्रतिकूल (विपरीत) आचरण करने वाली युवतियाँ कुल के लिए आधि (मानसिक कष्ट का कारण) बन जाती हैं।
* **यहाँ 'वामाः' का अर्थ, 'कहे गये ढंग के विपरीत आचरण करने वाली स्त्रियों' के लिए है।**
* 'आधयः' का तात्पर्य-मानसिक व्याधि से है।

अतः विकल्प (D) सही है।

8. ''दिष्ट्या धूमाकुलितदृष्टेरपि यजमानस्य पावक एवाहुतिः पतिता।'' इस वाक्य में 'पावक' शब्द से किसको सङ्केतित किया गया है?
(A) शकुन्तला को **(B) दुष्यन्त को**
(C) कण्व को **(D) यज्ञशाला को**

व्याख्या–
* ''दिष्ट्या धूमाकुलितदृष्टेरपि यजमानस्य पावक एवाहुतिः पतिता'' अर्थात्–सौभाग्य से धुएं के द्वारा व्याकुल दृष्टि वाले यजमान की आहुति अग्नि में ही पड़ी।–अभिज्ञानशाकुन्तलम् अङ्क-4
* 'यजमान' शब्द कण्व के लिए प्रयुक्त है।
* **'पावक', शब्द से दुष्यन्त की ओर सङ्केत है।**
* 'आहुति', शब्द शकुन्तला के लिए प्रयुक्त है।

अतः विकल्प (B) सही है।

9. अनसूया एवं प्रियंवदा ने अपने किस ज्ञान के आधार पर शकुन्तला को आभूषण पहनाया?
(A) उन्होंने आभूषण पहनाने का प्रशिक्षण लिया था
(B) गौतमी ने उन्हें आभूषण पहनाना बताया था
(C) शकुन्तला ने स्वतः अपने ज्ञान से आभूषण पहना
(D) चित्रकारी में आभूषण प्रयोग से प्राप्त ज्ञान के आधार पर पहनाया।

व्याख्या– ''चित्रकर्मपरिचयेनाङ्गेषु त आभरणविनियोगं कुर्वः।'' अर्थात् चित्रकला से प्राप्त ज्ञान के आधार पर हम तुम्हारे अङ्गों में आभूषण पहनाती हूँ? अनसूया एवं प्रियंवदा का यह कथन है। –अभिज्ञानशाकुन्तलम्-अङ्क-4

अतः विकल्प (D) सही है।

10. भवभूति का मूल नाम था?
(A) श्रीपति **(B) उम्बेक**
(C) श्रीकण्ठ **(D) नीलकण्ठ**

व्याख्या–
* भवभूति का मूलनाम **'श्रीकण्ठ'** या **'भट्ट श्रीकण्ठ'** था।
* 'श्रीकण्ठपदलाच्छन' इनकी उपाधि है।
* 'उम्बेक' या उम्बिकाचार्य इनका दार्शनिक नाम था।
* 'नीलकण्ठ' भवभूति के पिता का नाम था।
* भवभूति की माता का नाम 'जातुकर्णी' था

अतः विकल्प (C) सही है।

6. (D) 7. (D) 8. (B) 9. (D) 10. (C)

11. 'पुम् + कोकिलः' की सन्धि होगी?
(A) पुस्कोकिलः (B) पुंस्कोकिलः
(C) पुङ्कोकिलः (D) पुंकोकिलः

व्याख्या– यहाँ 'पुमः खय्यम्परे (8/3/6)' सूत्र से पुम् + कोकिलः = **पुँस्कोकिलः, पुंस्कोकिलः** में व्यञ्जनसन्धि है।
अतः विकल्प (B) सही है।

12. समास की प्रक्रिया होती है?
(A) दो वर्णों के बीच
(B) दो पदों के बीच
(C) दो वाक्यों के बीच
(D) एक वर्ग और एक पद के बीच

व्याख्या–
* ''समर्थः पदविधिः'' (2/1/1) सूत्रानुसार जिन पदों में सामर्थ्य होगा, उन्हीं में तत्सम्बन्धी विधि होगी अर्थात् समास सुबन्त पद का सुबन्त पद के साथ होता है।
* ''समसनं समासः''–अनेक पदों का एक साथ रखा जाना समास कहलाता है।
* दो वर्णों के बीच सन्धि कार्य होता है, जबकि **दो या दो से अधिक पदों** के बीच समास होता है।
अतः विकल्प (B) सही है।

13. 'अक्ष्णा काणः' में तृतीया विभक्ति हुई है?
(A) येनाङ्गविकारः सूत्र से (B) कर्तृकरणयोस्तृतीया से
(C) अपवर्गे तृतीया से (D) इत्थंभूतलक्षणे से

व्याख्या–
(A) **'येनाङ्गविकारः'** (2/3/20) सूत्र से जिस अङ्ग के विकार से अङ्गी में विकार लक्षित हो उस अङ्ग में तृतीया का प्रयोग होता है यथा–अक्ष्णा काणः। अतः विकल्प (A) सही है।
(B) 'कर्तृकरणयोस्तृतीया' (2/3/18) सूत्र से अनुक्त कर्ता और करणकारक में तृतीया विभक्ति होती है। यथा– रामेण बाणेन हतो बाली।
(C) 'अपवर्गे तृतीया' (2/3/6) सूत्र से अपवर्ग (फलप्राप्ति) द्योतित होने पर कालवाची और भाववाची शब्दों से अत्यन्त संयोग गम्यमान होने पर तृतीया विभक्ति होती है यथा– अह्ना अनुवाकः अधीतः।
(D) इत्थंभूतलक्षणे (2/3/21) सूत्र से जिस लक्षण से कोई व्यक्ति या वस्तु ज्ञापित हो उसमें तृतीया होती है यथा–जटाभिः तापसः।

14. 'मुक्तये हरिं' भजति' से मुक्तये में चतुर्थी हुई–
(A) 'चतुर्थी सम्प्रदाने' द्वारा
(B) 'स्पृहेरीप्सितः' सूत्र से
(C) 'क्लृपि संपद्यमाने च' वार्तिक से
(D) 'तादर्थ्ये चतुर्थी वाच्या' से

व्याख्या –
(A) 'चतुर्थी सम्प्रदाने' (2/3/13) सूत्र से अनभिहित सम्प्रदान कारक में चतुर्थी होती है यथा–विप्राय गां ददाति।
(B) 'स्पृहेरीप्सितः' (1/4/36) सूत्र से स्पृह् धातु के योग में ईप्सित पदार्थ की सम्प्रदानसंज्ञा होती है और 'चतुर्थी सम्प्रदाने' सूत्र से उसमें चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग होता है यथा–सः पुष्पेभ्यः स्पृहयति।
(C) 'क्लृपि सम्पद्यमाने च' वार्तिक से क्लृप् अर्थ वाली धातु के योग में सम्पद्यमान अर्थ में चतुर्थी विभक्ति होती है–भक्तिर्ज्ञानाय सम्पद्यते।
(D) **'तादर्थ्ये चतुर्थी वाच्या'** वार्तिक से जिस प्रयोजन के लिए कोई कार्य किया जाता है उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा–सः मुक्तये हरिं भजति। अतः विकल्प (D) सही है।

15. 'चर्मणि द्वीपिनं हन्ति' यहाँ चर्मणि में सप्तमी का प्रयोग हुआ है?
(A) ''सप्तम्यधिकरणे च'' से
(B) ''निमित्तात्कर्मयोगे'' से
(C) ''यस्य च भावेन भावलक्षणम्'' से
(D) ''यतश्च निर्धारणम्'' से

व्याख्या–
(A) 'सप्तम्यधिकरणे च' (2/3/36) सूत्र से अधिकरणकारक में सप्तमी होती है यथा–सः स्थाल्यां पचति।
(B) **'निमित्तात्कर्मयोगे'** वार्तिक से निमित्तवाची शब्दों में सप्तमी विभक्ति होती है, यदि वह निमित्त फल से युक्त हो यथा–सः चर्मणि द्वीपिनं हन्ति। अतः विकल्प (B) सही है।
(C) 'यस्य च भावेन भावलक्षणम्' (2/3/37) सूत्र से जिस क्रिया से दूसरी क्रिया लक्षित हो उस क्रिया में सप्तमी होती है। यथा–सः गोषु दुह्यमानासु गतः।
(D) यतश्च निर्धारणम् (2/3/41) सूत्र से जिससे निर्धारण होता है, उसमें षष्ठी और सप्तमी विभक्ति होती है। यथा–नृणां नृषु वा द्विजः श्रेष्ठः।

11. (B) 12. (B) 13. (A) 14. (D) 15. (B)

16. 'चर्' प्रत्याहार में निम्नलिखित वर्ण आते हैं?
(A) च्, ट्, त्, क्, प्
(B) च्, ट्, त्, क्, प्, श्, ष्, स्
(C) श्, ष्, स्
(D) श्, ष्, स्, ह्

व्याख्या–
(A) चय् प्रत्याहार–च् ट् त् क् प्
(B) **चर् प्रत्याहार–च् ट् त् क् प् श् ष् स्**
(C) शर् प्रत्याहार–श् ष् स्
(D) शल् प्रत्याहार–श् ष् स् ह्
* कुल प्रत्याहारों की संख्या `42' है।
* बाबूराम सक्सेना `43' प्रत्याहार मानते हैं।
विकल्प (B) सही है।
नोट–'आदिरन्त्येन सहेता' (1/1/71) सूत्र से इत्संज्ञक वर्ण से युक्त आदि वर्ण मध्यस्थ एवं अपने का बोधक होता है यथा– अण् = अ, इ, उ वर्णों का बोधक है। यही प्रत्याहार की प्रक्रिया है।

17. 'हन्ति' रूप कहाँ बनता है?
(A) प्रथमपुरुष बहुवचन में
(B) मध्यमपुरुष एकवचन में
(C) प्रथमपुरुष एकवचन में
(D) उत्तमपुरुष एकवचन में

व्याख्या– * हन् (मारना) धातु लट्लकार
* प्रथमपुरुष में–''हन्ति हतः घ्नन्ति''
* मध्यमपुरुष में–''हंसि हथः हथ''
* उत्तमपुरुष में–''हन्मि हन्वः हन्मः''
अतः विकल्प (C) सही है।

18. 'ददति' रूप बनता है?
(A) प्रथमपुरुष एकवचन में
(B) प्रथमपुरुष द्विवचन में
(C) प्रथमपुरुष बहुवचन में
(D) उत्तमपुरुष बहुवचन में

व्याख्या– दा (देना) धातु परस्मैपद लट्लकार
प्रथमपुरुष में–''ददाति दत्तः **ददति**'' रूप बनता है।
मध्यमपुरुष में–''ददासि दत्थः दत्थ'' रूप बनेगा।
उत्तमपुरुष में–''ददामि दद्वः दद्मः'' रूप बनता है।
अतः विकल्प (C) सही है।

19. ''यं यं पश्यसि तस्य तस्य पुरतो मा ब्रूहि दीनं वचः'' इस सूक्ति के माध्यम से किसे शिक्षा दी जा रही है?
(A) राजा को **(B) बादल को**
(C) चातक को **(D) याचक को**

व्याख्या– प्रस्तुत सूक्ति में भर्तृहरि चातक के माध्यम से मानवों को यह सन्देश देना चाहते हैं कि–जिस जिस को देखते हो, उस-उस के सामने अपना दीनवचन मत कहो।
''रे रे चातक! सावधानमनसा मित्र! क्षणं श्रूयताम्''
नीतिशतकम/परिशिष्ट/3
अतः विकल्प (C) सही है।
नोट– कवि यहाँ चातक के माध्यम से याचक को भी यही शिक्षा देना चाहते हैं कि सभी से याचना नहीं करनी चाहिए। अतः इसका `D' विकल्प भी सही माना जा सकता है; किन्तु 'चातक' का श्लोक में नाम लेने के कारण सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प `C' ही होगा।

20. 'आमन्त्रयस्व सहचरम्' का अभिप्राय है?
(A) सहचर से मिल लो **(B) सहचर से बात कर लो**
(C) सहचर को छोड़ दो **(D) सहचर से विदा ले लो**

व्याख्या– 'आमन्त्रयस्व सहचरम्'–अर्थात् **सहचर से विदा ले लो।** यह नेपथ्य का कथन है। (अभिज्ञान/अङ्क 3) अतः विकल्प (D) सही है।

21. ''गुरुः छात्रेण सह विद्यालयं गच्छति'' का कर्मवाच्य होगा?
(A) गुरुणा सह छात्र विद्यालयं गच्छति
(B) गुरु छात्रेण सह विद्यालयं गच्छति
(C) गुरुणा छात्रेण सह विद्यालयं गम्यते
(D) गुरुणा छात्रेण सह विद्यालयः गम्यते

व्याख्या– कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य में परिवर्तन के लिए कर्त्ता में तृतीयाविभक्ति और कर्म में प्रथमाविभक्ति का प्रयोग होता है, तथा क्रिया कर्म के अनुसार प्रयुक्त होती है। यथा–
गुरुणा छात्रेण सह विद्यालयः गम्यते।
अतः विकल्प (D) सही है।

22. 'याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा' इस श्लोकांश में 'अधिगुणे' शब्द से किसका सङ्केत किया गया है?
(A) कुबेर का **(B) यक्ष का**
(C) मेघ का **(D) रामगिरिपर्वत का**

व्याख्या– * 'याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा' अर्थात् गुणी व्यक्ति के प्रति की हुई याचना निष्फल होने पर भी श्रेष्ठ है, पर नीच से मनचाहा फल पा जाना भी अच्छा नहीं है। (पूर्वमेघ/6)
* यहाँ **'अधिगुणे' शब्द मेघ के लिए** प्रयुक्त है जिसका अर्थ है अधिक गुणवान् होना।
अतः विकल्प (C) सही है।

16. (B) 17. (C) 18. (C) 19. (C) 20. (D) 21. (D) 22. (C)

23. दुष्यन्त के साथ शकुन्तला के विवाह की सूचना महर्षिकण्व को किसने दी?
(A) गौतमी ने
(B) अनसूया एवं प्रियंवदा ने
(C) अशरीरिणी छन्दोमयी वाणी ने
(D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या–
(A) गौतमी को इस घटनाचक्र (शकुन्तला के विवाह) की जानकारी नहीं थी।
(B) 'द्वयोरेव नौ मुख एष वृत्तान्तस्तिष्ठतु'–अनसूया के इस कथन से ज्ञात होता है कि दोनों सखियों ने पूरे घटना चक्र के बारे में किसी को नहीं बताया।
(C) 'अग्निशरणं प्रविष्टस्य शरीरं विना छन्दोमय्या वाण्या' अर्थात् यज्ञशाला में गये हुए (कण्व) को शरीररहित छन्दोमयी वाणी के द्वारा शकुन्तला के विवाह की सूचना दी गयी। –(अभिज्ञान/4/प्रियंवदा का कथन) अतः विकल्प (C) सही है।

24. 'पुटपाक' का अभिप्राय है?
(A) एक प्रकार का व्यञ्जन
(B) एक प्रकार का आभूषण
(C) एक प्रकार की औषधि
(D) औषधि पकाने का विशिष्ट ढंग

व्याख्या– * मुरला – ''पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः'' अर्थात् राम का करुणरस (शोक) पुटपाक के तुल्य है। –(उत्तररामचरितम् 3/1)
* 'पुटपाक' आयुर्वेद का पारिभाषिक शब्द है, यह औषधि पकाने का एक विशिष्ट ढंग है।
अतः विकल्प (D) सही है।

25. 'चन्द्रशेखर' में बहुव्रीहि समास है, इसका विग्रह है–
(A) चन्द्रः शेखरः यस्य (B) चन्द्रः शेखरे यस्य
(C) चन्द्र शिखर यस्य (D) चन्द्रः शिखरे यस्य

व्याख्या–
* 'अनेकमन्यपदार्थे' (2/2/24) सूत्र से 'चन्द्रः शेखरे यस्य सः = चन्द्रशेखरः' (चन्द्र है जिसके सिर पर अर्थात् भगवान् शिव) में बहुव्रीहि समास है।
* अतः विकल्प (B) सही है। शेष विकल्प अशुद्ध है।

26. 'सः ग्रामे निवसति' में क्रियापद को लङ्लकार में परिवर्तित करने पर वाक्य बनेगा?
(A) सः ग्रामे अनिवसत् (B) सः ग्रामे अनिवसति
(C) सः ग्रामे न्यवसत् (D) सः ग्रामे न्यवसति

व्याख्या–
लङ्लकार में 'नि + वस्' का रूप–
प्र0पु0–''**न्यवसत्** न्यवसताम् न्यवसन्'' होगा
अतः वाक्य '**सः ग्रामे न्यवसत्**' बनेगा।
अतः विकल्प (C) सही है।

27. 'पुरुषोत्तमरताऽपि खलजनप्रिया' यह उक्ति किसके लिए है?
(A) चाण्डालकन्या के लिए
(B) कादम्बरी के लिए
(C) महाश्वेता के लिए
(D) लक्ष्मी के लिए

व्याख्या–
* 'पुरुषोत्तमरताऽपि खलजनप्रिया'–शुकनासोपदेश
* शुकनास, चन्द्रापीड को उपदेश देते हुए कहते हैं कि यह **लक्ष्मी** पुरुषोत्तम (पुरुषों में श्रेष्ठ-विष्णु) में आसक्त होते हुए भी दुष्ट जनों से प्रेम करने वाली है।
* 'चाण्डालकन्या' कादम्बरी कथा की एक पात्र है, जो शूद्रक के दरबार में वैशम्पायन नामक शुक को लेकर आती है।
* 'महाश्वेता कादम्बरी ग्रन्थ में पार्श्वनायिका है। इसके माता पिता का नाम हंस और गौरी है।
अतः विकल्प (D) सही है।

28. 'कादम्बरी किस विधा की रचना है?
(A) महाकाव्य (B) आख्यायिका
(C) गद्यकाव्य-कथा (D) ऐतिहासिक महाकाव्य

	ग्रन्थ	**विधा**
(A)	हरविजयम्	महाकाव्य
(B)	हर्षचरितम्	आख्यायिका
(C)	**कादम्बरी**	**कथा (गद्यकाव्य)**
(D)	बुद्धचरितम्	ऐतिहासिक महाकाव्य

अतः विकल्प (C) सही है।

23. (C) 24. (D) 25. (B) 26. (C) 27. (D) 28. (C)

29. 'शिवराजविजयम्' प्रथमनिःश्वास में पहले ही पुष्पचयन करने वाला कौन है?
(A) श्यामवटु **(B) गौरवटु**
(C) गुरूजी **(D) बालिका**

व्याख्या–
* 'मयैव पूर्वमवचितानि कुसुमानि'–गौरवटु से श्यामवटु कहता है कि मेरे द्वारा पहले ही पुष्प चुन लिए गये हैं।
* प्रथम निःश्वास में सर्वप्रथम पुष्पचयन करने वाला **श्यामवटु** है।
* बालिका (सौवर्णी) श्यामवटु और गौरवटु की बहन है। अतः विकल्प (A) सही है।

30. योगिराज ने पहली बार कब समाधि लगायी थी?
(A) युधिष्ठिर के समय में
(B) विक्रमादित्य के समय में
(C) दुराचारपूर्ण (यवनकाल) समय में
(D) इनमें से कोई नहीं?

व्याख्या– ''यौधिष्ठिरे समये कलितसमाधिरहं वैक्रमसमये उदस्थाम्। पुनश्च वैक्रमसमये समाधिमाकलय्य अस्मिन् दुराचारमये समयेऽहमुत्थितोऽस्मि।''–योगिराज के इस कथन से ज्ञात होता है कि–
(A) योगिराज प्रथमबार **युधिष्ठिर के समय में** समाधि लगाये थे और विक्रमादित्य के समय उठते हैं।
(B) द्वितीयबार विक्रमादित्य के समय समाधि लगाते हैं और दुराचारसमय (यवनकाल) में उठते हैं।
(C) फिर कहते हैं कि मैं पुनः जाकर समाधि ही लगाऊँगा अर्थात् तृतीयबार यवनकाल में समाधिस्थ होगें।–(शिवराजविजयम्)। अतः विकल्प (A) सही है।

31. वनेचर की बात सुनने के बाद युधिष्ठिर कहाँ पहुँचे?
(A) अपने विश्रामगृह में **(B) द्रौपदी के समीप**
(C) व्यास के समीप **(D) हिमालय पर्वतपर**

व्याख्या– * 'प्रविश्य कृष्णासदनं महीभुजा, तदाचचक्षेऽनुजसन्निधौ वचः' अर्थात् राजा युधिष्ठिर वनेचर से सारा समाचार जानकर **द्रौपदी के आवास में** प्रविष्ट होकर छोटे भाइयों के समीप सम्पूर्ण वृत्तान्त द्रौपदी से कहते हैं।–(किरात0 1/26)
* यहाँ 'कृष्णा' शब्द द्रौपदी के लिए प्रयुक्त है। अतः विकल्प (B) सही है।

32. किस प्रकार के वचन दुर्लभ होते हैं?
(A) प्रिय किन्तु असत्य **(B) हितकारी और मनोहर**
(C) हानिकर एवं कठोर **(D) सत्य और अप्रिय**

व्याख्या– ''हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः'' (किरात0 1/4) वनेचर युधिष्ठिर से कहता है कि हितकारी और मनोहर (प्रिय) वचन दुर्लभ होते हैं। अतः विकल्प (B) सही है।

33. मेघदूत किस विधा की रचना है?
(A) गद्यकाव्य **(B) महाकाव्य**
(C) गीतिकाव्य **(D) सट्टक**

	ग्रन्थ	**विधा**
(A)	तिलकमञ्जरी	गद्यकाव्य
(B)	भट्टिकाव्य	महाकाव्य
(C)	**मेघदूतम्**	**गीतिकाव्य/खण्डकाव्य**
(D)	कर्पूरमञ्जरी	सट्टक

अतः विकल्प (C) सही है।

34. स्त्रियों का पहला प्रणयवचन क्या होता है?
(A) प्रेम की बातें करना
(B) नैन से नैन मिलाना
(C) स्त्रियों का हाव-भाव या विभ्रमप्रदर्शन करना
(D) सामने आ-आ कर हट जाना

व्याख्या– ''स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु'' पूर्वमेघ/29 अर्थात् स्त्रियों का प्रियतम के प्रति किया गया हाव-भाव अर्थात् **विभ्रम प्रदर्शन करना** ही पहला प्रार्थनावाक्य होता है।
अतः विकल्प (C) सही है।

35. 'शान्तानुकूलपवनश्च शिवश्च पन्थाः' यह उक्ति किसकी है।
(A) कण्व की **(B) प्रियंवदा की**
(C) आकाशभाषित **(D) कण्वशिष्य**

व्याख्या–
(A) 'शान्ते करिष्यसि पदं पुनराश्रमेऽस्मिन्'–कण्व की उक्ति है।
(B) ''अपसृतपाण्डुपत्रा मुञ्चन्त्यश्रूणीव लताः''–प्रियंवदा की उक्ति है।
(C) ''शान्तानुकूलपवनश्च शिवश्च पन्थाः''–शकुन्तला की विदाई के समय **आकाशवाणी** होती है कि–तुम्हारा मार्ग शान्त और अनुकूल वायु वाला एवं कल्याणकारी हो।–(अभिज्ञान 4/11)
(D) ''क्षौमं केनचिदिन्दुपाण्डुतरुणा माङ्गल्यमाविष्कृतम्''–कण्व शिष्य का कथन है।
अतः विकल्प (C) सही है।

29. (A) 30. (A) 31. (B) 32. (B) 33. (C) 34. (C) 35. (C)

36. विदाई के समय कण्व ने किस श्लोक से शकुन्तला को उपदेश दिया?
(A) 'शुश्रूषस्व गुरून्'
(B) 'अस्मान् साधु विचिन्त्य'
(C) 'पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलम्'
(D) 'एषापि प्रियेण विना गमयति।'

व्याख्या–

(A) **'शुश्रूषस्व गुरून् कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीजने'** (अभिज्ञान 4/18) इस श्लोक में कण्व शकुन्तला को उपदेश देते हुए कहते हैं कि–गुरुजनों की सेवा करना, सौतों के साथ प्रियसखी जैसा व्यवहार करना आदि। अतः विकल्प (A) सही है।

(B) 'अस्मान् साधु विचिन्त्य संयमधनानुच्चैः कुलं चात्मनः' (अभिज्ञान 4/17) इस श्लोक में कण्व, शार्ङ्गरव के माध्यम से दुष्यन्त को संदेश भेजते हैं।

(C) 'पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलम्' (अभिज्ञान 4/9) प्रस्तुत श्लोक में कण्व तपोवन के वृक्षों को सम्बोधित करते हुए शकुन्तला को ससुराल जाने की अनुमति देने को कहते हैं।

(D) 'एषापि प्रियेण विना गमयति'–अनसूया की उक्ति है।

37. रामचन्द्रजी दुबारा दण्डकारण्य किसलिए गये थे?
(A) राक्षसों के वध के लिए
(B) सीता से मिलने के लिए
(C) दण्डकारण्य देखने के लिए
(D) तपस्या करते हुए शम्बूक को दण्ड देने के लिए

व्याख्या–

* भवभूति कृत उत्तररामचरित नाटक में राम दुबारा दण्डकारण्य में तपस्या करते हुए **शूद्र शम्बूक को दण्ड देने के लिए** गये थे।
* दण्डकारण्य के पञ्चवटी प्रदेश में राम पहली बार 'वनवास' काल में गये थे।

अतः विकल्प (D) सही है।

38. मूर्च्छित राम को चेतना कैसे मिली?
(A) शीतल वायु के स्पर्श से
(B) शीतल जल के स्पर्श से
(C) सीता के कर (हस्त) स्पर्श से
(D) वाल्मीकि के कर स्पर्श से

व्याख्या– 'पाणिस्पर्शो हि रामभद्रस्य जीवनोपायः'–अर्थात् तमसा, सीता से कहती है कि–तुम्हारे **हाथ का स्पर्श** राम को जीवित करने का उपाय है। उत्तररामचरित/तृतीय अङ्क अतः विकल्प (C) सही है।

39. कौन-सा रस विवर्त्त प्राप्त कर लेता है?
(A) श‍ृङ्गार (B) शान्त
(C) करुण (D) हास्य

व्याख्या–

''एको रसः करुण एव निमित्तभेदाद्
भिन्नः पृथक्पृथगिव श्रयते विवर्तान्।'' (उत्तररामचरित 3/47) तमसा कहती है कि–एक **करुण रस** ही कारण भेद से भिन्न होकर पृथक्-पृथक् (श‍ृङ्गार आदि) परिणामों को प्राप्त होता है। अतः विकल्प (C) सही है।

40. 'रामश्चिनोति' में निम्न सूत्र से सन्धिकार्य होता है?
(A) ष्टुना ष्टुः (B) स्तोः श्चुना श्चुः
(C) खरि च (B) झलां जशोऽन्ते

व्याख्या–

(A) 'ष्टुना ष्टुः' (8/4/41) सूत्र से 'तत् + टीका = तट्टीका' में व्यञ्जनसन्धि है।

(B) **'स्तोः श्चुना श्चुः'** (8/4/40) सूत्र से रामस् + चिनोति=रामश्चिनोति में व्यञ्जन (श्चुत्व) सन्धि है। अतः विकल्प (B) सही है।

(C) 'खरि च' (8/4/55) सूत्र से उत् + स्थानम् = उत्थानम् में व्यञ्जन सन्धि है।

(D) 'झलां जशोऽन्ते' (8/2/39) सूत्र से वाक् + ईशः = वागीशः में व्यञ्जनसन्धि है।

41. 'प्रार्च्छति' का सन्धि विच्छेद है?
(A) प्रा + ऋच्छति (B) प्रर + ऋच्छति
(C) प्र + ऋच्छति (D) प्रार्च्छ + ति

व्याख्या–

* 'उपसर्गादृति धातौ' (6/1/91) सूत्रानुसार अवर्णान्त उपसर्ग के पश्चात् ऋकारादि धातु हो तो (अ और ऋ) दोनों के स्थान में वृद्धि एकादेश हो जाता है यथा–

प्र + ऋच्छति (अ + ऋ) = प्रार्च्छति
अतः विकल्प (C) सही है।

36. (A) 37. (D) 38. (C) 39. (C) 40. (B) 41. (C)

42. 'व्यूढोरस्कः' में समास है?
(A) अव्ययीभाव (B) कर्मधारय
(C) बहुव्रीहि (D) द्वन्द्व

	पद	समास
(A)	अधिगोपम्	अव्ययीभाव
(B)	नीलकमलम्	कर्मधारय
(C)	**व्यूढोरस्कः**	**बहुव्रीहि**
(D)	नक्तन्दिवम्	द्वन्द्व

अतः विकल्प (C) सही है।

43. 'वैकुण्ठम् अध्यास्ते हरिः' यहाँ किस अर्थ में कर्म संज्ञा होती है?
(A) अपादान अर्थ में (B) सम्प्रदान अर्थ में
(C) सम्बन्ध अर्थ में (D) आधार अर्थ में

व्याख्या–
(A) 'जनिकर्तुः प्रकृतिः' (1/4/30) सूत्र से जन् धातु के कर्त्ता के कारण की अपादानसंज्ञा होती है। यथा– ब्राह्मणः प्रजाः प्रजायन्ते।
(B) 'रुच्यर्थानां प्रीयमाणः' (1/4/33) सूत्र से रुच्यर्थ धातुओं के प्रयोग में प्रीयमाण (प्रसन्न होने वाले) व्यक्ति की सम्प्रदान संज्ञा होती है। यथा–हरये भक्तिः रोचते।
(C) 'अधीगर्थदयेशां कर्मणि' (2/3/52) सूत्र से सम्बन्ध मात्र की विवक्षा में षष्ठी विभक्ति होती है। यथा–मातुः स्मरति।
(D) 'अधिशीङ्स्थासां कर्म' (1/4/46) सूत्र से शीङ्, स्था, आस् धातुओं के पहले 'अधि' उपसर्ग लगा हो तो क्रिया के **आधार की कर्मसंज्ञा** होती है। यथा– वैकुण्ठम् अध्यास्ते हरिः। अतः विकल्प (D) सही है।

44. युष्मद्' शब्द का सप्तमी बहुवचन का रूप होता है?
(A) त्वयि (B) युष्मासु
(C) युष्माकम् (D) युस्मत्

व्याख्या–
* युष्मद् सर्वनाम का पञ्चमी विभक्ति में रूप–'त्वत् युवाभ्याम् युष्मत्' बनता है।
* षष्ठी विभक्ति में–'तव युवयोः युष्माकम्' रूप बनता है।
* सप्तमी विभक्ति में–'त्वयि युवयोः **युष्मासु**' रूप बनता है। अतः विकल्प (B) सही है।

45. `96' का संस्कृत रूप होगा?
(A) षट्सप्ततिः (B) षडशीतिः
(C) षण्णवतिः (D) षट्षष्टिः

	संख्या	संस्कृत रूप
(A)	76	षट्सप्ततिः
(B)	86	षडशीतिः
(C)	**96**	**षण्णवतिः**
(D)	66	षट्षष्टिः

अतः विकल्प (C) सही है।

46. हन् धातु लोट्लकार मध्यमपुरुष एकवचन का रूप होता है?
(A) जहि (B) हन्तु
(C) हंसि (D) वध

व्याख्या–
(A) हन् धातु लोट्लकार मध्यमपुरुष में–''**जहि** हतम् हत'' रूप बनता है।
(B) प्रथमपुरुष में–'हन्तु हताम् घ्नन्तु' रूप बनता है।
(C) लट्लकार मध्यमपुरुष में–'हंसि हथः हथ' रूप बनता है।
(D) 'वध' रूप ''हन्'' धातु के दसों लकारों में कहीं नहीं बनता है।
अतः विकल्प (A) सही है।

47. 'पा' धातु लृट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप होगा?
(A) पास्यसि (B) पिबिष्यति
(C) पास्यति (D) पास्यामि

व्याख्या–
(A) 'पा' धातु (पीना) लृट्लकार मध्यमपुरुष में– 'पास्यसि पास्यथः' पास्यथ रूप बनता है।
(B) पिबिष्यति रूप 'पा' धातु के दसों लकारों में कहीं नहीं बनता है।
(C) लृट्लकार प्रथमपुरुष में–'**पास्यति** पास्यतः पास्यन्ति' रूप बनता है।
(D) उत्तमपुरुष में–'पास्यामि पास्यावः, पास्यामः'
अतः विकल्प (C) सही है।

42. (C) 43. (D) 44. (B) 45. (C) 46. (A) 47. (C)

48. 'रामः अश्वं ग्रामं नयति' इसका कर्मवाच्य होगा?
(A) रामः अश्वं नीयते
(B) रामेण अश्वः ग्रामं नयते
(C) रामेण ग्रामः अश्वं नयते
(D) रामेण अश्वः ग्रामं नीयते

व्याख्या–
* 'रामः अश्वं ग्रामं नयति' इस कर्तृवाच्य का कर्मवाच्य **'रामेण अश्वः ग्रामं नीयते'** होगा
* कर्मवाच्य के कर्त्ता में तृतीया विभक्ति, कर्म में प्रथमा विभक्ति, क्रिया कर्म के अनुसार सदा आत्मनेपद में प्रयुक्त होती है।
* किन्तु द्विकर्मक वाक्यों के लिए नियम है कि ''गौणे कर्मणि दुह्यादेः''– अर्थात् दुह्, याच् आदि द्वादश धातुओं के वाच्यपरिवर्तन के समय गौणकर्म में परिवर्तन हो, किन्तु नी, हृ, कृष्, वह् इन चार धातुओं के मुख्यकर्म में परिवर्तन हो। यहाँ 'अश्वम्' और 'ग्रामम्' दो कर्म हैं, और 'नी' धातु का प्रयोग है। अतः मुख्यकर्म 'अश्व' में प्रथमाविभक्ति हुई। अतः विकल्प (D) सही है।

49. 'अत्रभवतां भवताम् आगमनेन धन्या वयम्' इस वाक्य का हिन्दी अनुवाद होगा?
(A) यहाँ आपके आगमन से वे धन्य हुए
(B) यहाँ आपके आगमन से मैं धन्य हुआ
(C) यहाँ आप लोगों के आगमन से हम धनवान् हुए
(D) पूजनीय आप लोगों के आगमन से हम लोग धन्य हुए

व्याख्या– 'भवत्' प्रातिपदिक के पूर्व 'अत्र' अव्यय का प्रयोग करने से उसका अर्थ पूजनीय होगा।
अतः विकल्प (D) सही है।

50. 'यात्येकतोऽस्तशिखरं पतिरोषधीनाम्' यहाँ 'पतिरोषधीनाम्' शब्द प्रयुक्त हुआ है?
(A) चन्द्रमा के लिए
(B) सूर्य के लिए
(C) कण्व के लिए
(D) विश्वामित्र के लिए

व्याख्या–
* यात्येकतोऽस्तशिखरं पतिरोषधीना–
माविष्कृतोऽरुणपुरःसर एकतोऽर्कः''– (अभिज्ञान 4/2)

अर्थात् एक ओर वनस्पतियों का स्वामी चन्द्रमा अस्ताचल के शिखर को जा रहा है और एक ओर अरुण को आगे किए हुए सूर्य प्रकट (उदय) हो रहा है।
* यहाँ **'पतिरोषधीनाम्' चन्द्रमा के लिए** आया है।
* 'अर्कः' शब्द सूर्य के लिए प्रयुक्त है।

अतः विकल्प (A) सही है।

51. अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक में वर्णित शार्ङ्गरव है?
(A) कण्व का शिष्य
(B) मारीच का शिष्य
(C) दुष्यन्त का पुरोहित
(D) राजा ययाति का पुत्र

व्याख्या–
(A) शार्ङ्गरव तथा शारद्वत-**कण्व के शिष्य** हैं।
(B) गालव, मारीच का शिष्य है।
(C) सोमरात, दुष्यन्त का पुरोहित है।
(D) पुरु, राजा ययाति का पुत्र है।
अतः विकल्प (A) सही है।

52. 'अयं जनः कस्य हस्ते समर्पितः' यह कथन है।
(A) शकुन्तला का
(B) अनसूया और प्रियंवदा का
(C) कण्व का
(D) कण्व शिष्य का

व्याख्या–
(A) 'एषा द्वयोर्युवयोर्हस्ते निक्षेपः' शकुन्तला, दोनों सखियों से कहती है कि ये लता (वनज्योत्सना) तुम दोनों के हाथ में (मेरी) धरोहर है।
(B) 'अयं जनः कस्य हस्ते समर्पितः'–**अनसूया एवं प्रियंवदा** शकुन्तला से कहती है कि हम दोनों को किसे सौंप रही हो? अतः विकल्प (B) सही है।
(C) 'अवैमि ते तस्यां सोदर्यास्नेहम्'–कण्व, शकुन्तला से कहते हैं कि इस (वनज्योत्स्ना) पर तुम्हारा सगी बहन सा प्रेम है।
(D) निष्ठ्यूतश्चरणोपरागसुभगो लाक्षारसः केनचित्'–कण्व शिष्य का कथन है। (अभि0 4/5)

48. (D) 49. (D) 50. (A) 51. (A) 52. (B)

53. 'रक्षितव्या खलु प्रकृतिपेलवा प्रियसखी'–यह कथन है?
(A) अनसूया का शकुन्तला के प्रति
(B) प्रियंवदा का शकुन्तला के प्रति
(C) अनसूया का प्रियंवदा के प्रति
(D) कण्व का शकुन्तला के प्रति

व्याख्या–
(A) 'रक्षितव्या खलु प्रकृतिपेलवा प्रियसखी'–**अनसूया**, प्रियंवदा से शकुन्तला के लिए कहती है कि– हमें स्वभाव से कोमल प्रियसखी की रक्षा करनी चाहिए।
(B) 'को नामोष्णोदकेन नवमालिकां सिञ्चति'–प्रियंवदा, शकुन्तला के लिए कहती है कि भला कौन नवमालिका (चमेली) को गर्म जल से सींचता है।
(C) 'गच्छ, पादयोः प्रणम्य निवर्तयैनं'–अनसूया, प्रियंवदा से कहती है।
(D) 'ययातेरिव शर्मिष्ठा भर्तुर्बहुमता भव'–कण्व, शकुन्तला के लिए कहते हैं।
अतः विकल्प (A) सही है।

54. 'प्रसवः खलु प्रकर्षपर्यन्तः स्नेहस्य' यहाँ प्रसवः शब्द का अर्थ है?
(A) सन्तान **(B) गर्भावस्था**
(C) प्रसववेदना **(D) सन्तानोत्पत्ति**

व्याख्या–
'प्रसवः खलु प्रकर्षपर्यन्तः स्नेहस्य'–तमसा कहती है कि वस्तुतः **सन्तान** प्रेम की चरम सीमा होती है।
अतः विकल्प (A) सही है।

55. 'पूरोत्पीडे तटाकस्य परीवाहः प्रतिक्रिया' यह कथन है?
(A) तमसा का **(B) मुरला का**
(C) सीता का **(D) राम का**

व्याख्या–
(A) 'पुरोत्पीडे तटाकस्य परीवाहः प्रतिक्रिया'–**तमसा** कहती है कि तालाब में जलप्रवाह की अधिकता होने पर जल को बाहर निकालना ही उसका एकमात्र प्रतिकार है। (उत्तररामचरित 3/29)
(B) 'पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः'–मुरला का कथन है।
(C) 'एष परित्याग एषोऽभिषङ्ग इति'–सीता का कथन
(D) 'मया लब्धः पाणिर्ललितलवलीकन्दलनिभः'–राम का कथन
अतः विकल्प (A) सही है।

56. 'त्वं जीवितं त्वमसि मे हृदयं द्वितीयं' त्वं कौमुदी नयनयोरमृतं त्वमङ्गे' यह कथन है?
(A) सीता का **(B) वासन्ती का**
(C) मुरला का **(D) तमसा का**

व्याख्या–
(A) 'ईदृशो मे पुत्रकः संवृत्तः'–सीता का कथन
(B) 'त्वं जीवितं त्वमसि मे हृदयं द्वितीयं, त्वं कौमुदी नयनयोरमृतं त्वमङ्गे'–प्रस्तुत पद्य में **वासन्ती** राम को उलाहना देते हुए कहती है कि–'तुम मेरा जीवन हो, तुम मेरा दूसरा हृदय हो, तुम मेरे नेत्रों के लिए चाँदनी हो, तुम मेरे अङ्गों के लिए अमृत हो। इत्यादि सैकड़ों शब्दों से आपने सीता को बहलाया था।
(उत्तररामचरित 3/26)
(C) 'ईदृशानां विपाकोऽपि जायते परमाद्भुतः'–मुरला का कथन
(D) 'द्रवीभूतं प्रेम्णा तव हृदयमस्मिन्क्षण इव'–तमसा का कथन
अतः विकल्प (B) सही है।

57. 'उत्तररामचरितम्' नाटक में वर्णित 'वासन्ती' है?
(A) राक्षसी **(B) नदी**
(C) लव-कुश की परिचारिका **(D) सीता की सखी**

व्याख्या–
* भवभूति कृत उत्तररामचरितम् नाटक में **वासन्ती (वनदेवता) सीता की सखी** है। अतः विकल्प (D) सही है।
* तमसा और मुरला-दो नदी पात्र हैं।

58. 'उत्तररामचरितम्' के छायाङ्क में प्रधानरस है?
(A) वीररस **(B) करुणरस**
(C) शृङ्गाररस **(D) विप्रलम्भशृङ्गार**

	ग्रन्थ	**प्रधानरस**
(A)	वेणीसंहारम्	वीररस
(B)	**उत्तररामचरितम् (छायाङ्क)**	**करुणरस**
(C)	मालविकाग्निमित्रम्	शृङ्गाररस
(D)	मेघदूतम्	विप्रलम्भशृङ्गार

अतः विकल्प (B) सही है।

53. (A) 54. (A) 55. (A) 56. (B) 57. (D) 58. (B)

59. 'रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय' यह श्लोकांश उद्धृत है?
(A) नीतिशतकम् से (B) किरातार्जुनीयम् से
(C) उत्तररामचरितम् से (D) मेघदूतम् से

व्याख्या–
(A) 'भवति हृदयदाही शल्यतुल्यो विपाकः'–नीतिशतकम् से
(B) 'मखेष्वखिन्नोऽनुमतः पुरोधसा'–किरातार्जुनीयम् से
(C) 'उत्पीड इव धूमस्य मोहः प्रागावृणोति माम्'–उत्तररामचरितम् से
(D) **'रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय'** (पूर्वमेघ/20) अर्थात् रिक्त सब हल्के होते हैं और भरा-पूरा होना गौरव (वृद्धि) के लिए होता है।
अतः विकल्प (D) सही है।

60. मेघदूत में किस नगरी का उल्लेख मिलता है?
(A) अयोध्या (B) अलका
(C) काञ्ची (D) मथुरा

व्याख्या– कालिदास कृत मेघदूतम् (खण्डकाव्य) में **'अलका'** नगरी का उल्लेख है। जहाँ यक्ष निवास करते हैं। **''गन्तव्या ते वसतिरलका नाम यक्षेश्वराणाम्''–(पूर्वमेघ-7)** अतः विकल्प (B) सही है।

61. 'शापान्तो मे भुजगशयनादुत्थिते शार्ङ्गपाणौ'–यहाँ 'शार्ङ्गपाणौ' का अर्थ है?
(A) भगवान् सूर्य (B) भगवान् शङ्कर
(C) भगवान् विष्णु (D) भगवान् राम

व्याख्या– शापान्तो मे भुजगशयनादुत्थिते शार्ङ्गपाणौ' (उत्तरमेघ/50) यक्ष, मेघ से शापान्त में यक्षिणी को सुख की आशा बाँधने का वर्णन करते हुए कहता है कि–**विष्णु भगवान्** के शय्या पर से उठने पर (अर्थात् अगली देवोत्थान एकादशी को) मेरा शाप बीत जायेगा। अतः यहाँ 'शार्ङ्गपाणिः' पद का अर्थ 'भगवान् विष्णु' है।
अतः विकल्प (C) सही है।

62. 'कथं त्वमेतौ धृतिसंयमौ यमौ विलोकयन्नुत्सहसे न बाधितुम्' इस श्लोक में 'धृतिसंयमौ' किस युग्म के लिए प्रयुक्त है?
(A) राम-लक्ष्मण (B) नकुल-सहदेव
(C) भीम-अर्जुन (D) बलराम-कृष्ण

व्याख्या– यह श्लोकांश द्रौपदी का कथन है जिसमें युधिष्ठिर को लक्ष्य करके वह कहती है कि–इन दोनों **(नकुल सहदेव)** को देखते हुए आप धैर्य और संयम छोड़ने के लिए क्यों नहीं साहस करते। (किरात० 1/36) अतः विकल्प (B) सही है।

63. 'राजनीति' की तुलना की गयी है?
(A) नारी से (B) वेश्या से
(C) छाया से (D) रानी से

व्याख्या– 'वाराङ्गनेव नृपनीतिरनेकरूपा'–इस पंक्ति में भर्तृहरि कहते हैं कि–'राजाओं की नीति (राजनीति) **वाराङ्गना (वेश्या)** की तरह अनेक रूपों वाली है। नीतिशतकम्/अर्थपद्धति/39 अतः विकल्प (B) सही है।

64. 'न हि गणयति क्षुद्रो जन्तुः परिग्रहफल्गुताम्' इस श्लोक में 'गणयति' का तात्पर्य है?
(A) गणना करने से (B) संख्या गिनने से
(C) विचारने से (D) शत्रुता करने से

व्याख्या–
न हि गणयति क्षुद्रो जन्तुः परिग्रहफल्गुताम्' अर्थात् क्षुद्र (नीच) व्यक्ति अपनायी गयी वस्तु की तुच्छता पर **विचार नहीं करते हैं।** नीतिशतकम्/अज्ञपद्धति/9
अतः विकल्प (C) सही है।

65. 'शूरे निर्घृणता मुनौ विमतिता दैन्यं प्रियालापिनि'–इस श्लोकांश में 'निर्घृणता' का क्या अर्थ है?
(A) घृणा (B) निर्दयता
(C) सज्जनता (D) दुर्जनता

व्याख्या– प्रस्तुत पंक्ति का अर्थ है–वीर में **निर्दयता**, मुनि में बुद्धिहीनता, मधुरभाषी में दीनता। (नीतिशतकम्/दुर्जनपद्धति/44) अतः निर्घृणता का अर्थ निर्दयता है।
अतः विकल्प (B) सही है।

66. नीतिशतककार के मतानुसार सम्पत्तिकाल में महापुरुषों की मनोवृत्ति होती है?
(A) विशाल पर्वत की शिलाओं की समूह की भाँति कठोर
(B) कमल के समान कोमल
(C) पीपल पात की तरह चञ्चल
(D) पवन के समान गतिशील

व्याख्या–''सम्पत्सु महतां चित्तं भवत्युत्पलकोमलम्। आपत्सु च महाशैलशिलासंघातकर्कशम्।।'' (नीतिशतकम्/सुजनपद्धति/56) अर्थात् महापुरुषों का चित्त (मनोवृत्ति) सम्पत्तिकाल में **कमल के समान कोमल** रहता है और विपत्ति में विशाल पर्वत की शिलाओं के समूह के समान कठोर होता है। अतः विकल्प (B) सही है।

59. (D)	60. (B)	61. (C)	62. (B)	63. (B)	64. (C)	65. (B)	66. (B)

67. 'जीमूतेन स्वकुशलमयीं हारयिष्यन् प्रवृत्तिम्' प्रस्तुत पंक्ति में 'जीमूतेन' का अभिप्राय है?
(A) पवन से **(B) बादल से**
(C) शकुन्तला से **(D) यशोमति से**

व्याख्या– जीमूतेन स्वकुशलमयीं हारयिष्यन् प्रवृत्तिम्' अर्थात् (यक्ष) मेघ के द्वारा अपना कुशल समाचार पहुँचाने की इच्छा करता है। अतः यहाँ **'जीमूत' का अर्थ है–मेघ (बादल)** (पूर्वमेघ/4) अतः विकल्प (B) सही है।

68. चन्द्रापीड की प्रेमिका थी?
(A) महाश्वेता **(B) कादम्बरी**
(C) शकुन्तला **(D) चाण्डालकन्या**

	पति/प्रेमी	**पत्नी/प्रेमिका**
(A)	वैशम्पायन	महाश्वेता
(B)	**चन्द्रापीड**	**कादम्बरी**
(C)	दुष्यन्त	शकुन्तला
(D)	श्वेतकेतु	लक्ष्मी

अतः विकल्प (B) सही है।

69. शुकनास किस राजा का प्रधान अमात्य था?
(A) राम का **(B) दुष्यन्त का**
(C) दशरथ का **(D) तारापीड का**

व्याख्या– * **तारापीड** का प्रधान अमात्य शुकनास था
* दुष्यन्त का प्रधान अमात्य पिशुन था।
* दशरथ और राम के प्रधान अमात्य सुमन्त्र थे।
अतः विकल्प (D) सही है।

70. सप्तमी विभक्ति में 'गुरु' का सही रूप होगा?
(A) गुरवे **(B) गुरौ**
(C) गुरुणा **(D) गुरो**

व्याख्या–
(A) 'गुरु' उकारान्त पुंलिङ्ग का रूप चतुर्थी विभक्ति में– "गुरवे गुरुभ्याम् गुरुभ्यः" बनता है।
(B) सप्तमी विभक्ति में–"**गुरौ** गुर्वोः गुरुषु" रूप बनता है।
(C) तृतीया विभक्ति में–"गुरुणा गुरुभ्याम् गुरुभिः" रूप बनता है।
(D) 'गुरो' रूप सातों विभक्तियों में कहीं नहीं बनता है।
अतः विकल्प (B) सही है।

71. 'प्रध्यम्' किस विभक्ति का रूप है?
(A) द्वितीया **(B) तृतीया**
(C) पञ्चमी **(D) सप्तमी**

व्याख्या– 'प्रधी' ईकारान्त पुंलिङ्ग शब्द का रूप–
(A) द्वितीया विभक्ति में–'**प्रध्यम्** प्रध्यौ प्रध्यः' बनता है।
(B) तृतीया विभक्ति में–'प्रध्या प्रधीभ्याम् प्रधीभिः' बनता है।
(C) पञ्चमी विभक्ति में–'प्रध्यः प्रधीभ्याम् प्रधीभ्यः' बनता है।
(D) सप्तमी विभक्ति में–'प्रध्यि प्रध्योः प्रधीषु' होता है।
अतः विकल्प (A) सही है।

72. 'पति' शब्द का सप्तमी एकवचन का रूप होगा?
(A) पतीन् **(B) पत्ये**
(C) पत्युः **(D) पत्यौ**

व्याख्या– 'पति' इकारान्त पुंलिङ्ग शब्द के रूप–
(A) द्वितीया विभक्ति में–'पतिम् पती पतीन्' बनता है
(B) चतुर्थी विभक्ति में–'पत्ये पतिभ्याम् पतिभ्यः' होता है
(C) षष्ठी विभक्ति में–'पत्युः पत्योः पतीनाम्' बनता है
(D) सप्तमी विभक्ति में–'**पत्यौ** पत्योः पतिषु' बनता है।
अतः विकल्प (D) सही है।

73. 'बालक' शब्द का षष्ठी बहुवचन का रूप होगा?
(A) बालकान् **(B) बालकानाम्**
(C) बालकेन **(D) बालकेभ्यः**

व्याख्या– 'बालक' अकारान्त पुंलिङ्ग शब्द का रूप–
(A) द्वितीया विभक्ति में–"बालकम् बालकौ बालकान्"
(B) षष्ठी विभक्ति में–"बालकस्य बालकयोः **बालकानाम्**"
(C) तृतीया विभक्ति में–"बालकेन बालकाभ्याम् बालकैः"
(D) पञ्चमी विभक्ति में–"बालकात् बालकाभ्याम् बालकेभ्यः।"
अतः विकल्प (B) सही है।

74. 'अक्षिषु' किस विभक्ति का रूप है?
(A) सप्तमी **(B) द्वितीया**
(C) तृतीया **(D) चतुर्थी**

व्याख्या– 'अक्षि' इकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द के रूप–
(A) सप्तमी विभक्ति में–अक्षिण अक्ष्णोः **अक्षिषु**
(B) द्वितीया विभक्ति में–अक्षि अक्षिणी अक्षीणि
(C) तृतीया विभक्ति में–अक्ष्णा अक्षिभ्याम् अक्षिभिः
(D) चतुर्थी विभक्ति में–अक्ष्णे अक्षिभ्याम् अक्षिभ्यः
अतः विकल्प (A) सही है।

67. (B) 68. (B) 69. (D) 70. (B) 71. (A) 72. (D) 73. (B) 74. (A)

75. 'ष्टुना ष्टुः' के अनुसार सन्धि रूप है?
(A) तट्टीका (B) सच्चित्
(C) विश्नः (D) वृक्षाल्लगुडम्

व्याख्या–
(A) **'ष्टुना ष्टुः'** (8/4/41) सूत्र से **तत् + टीका = तट्टीका** में त् का ट् से योग होने पर त् के स्थान पर ट् आदेश हुआ है।
(B) 'स्तोः श्चुना श्चुः' (8/4/40) सूत्र से सत् + चित् = सच्चित्।
(C) 'शात्' (8/4/44) सूत्र से विश् + नः = विश्नः।
(D) 'तोर्लि' (8/4/60) सूत्र से वृक्षात् + लगुडम् = वृक्षाल्लगुडम्।
अतः विकल्प (A) सही है।

76. 'तुम कानपुर जाओ' का सही संस्कृत अनुवाद है?
(A) गच्छ त्वं कर्णपुरम् (B) कर्णपुरं त्वं गच्छेत्
(C) कर्णपुर त्वाम् गच्छ (D) त्वं कर्णपुरं गच्छेय

व्याख्या– तुम कानपुर जाओ–आज्ञार्थक है इसलिए लोट्लकार की क्रिया का प्रयोग होगा–**गच्छ त्वं कर्णपुरम्।**
अतः विकल्प (A) सही है।

77. '91' का संस्कृत शब्दात्मक रूप होगा?
(A) एकनवतिः (B) नवनवतिः
(C) एकोननवतिः (D) एकाशीतिः

	संख्या	**संस्कृतरूप**
(A)	**91**	**एकनवतिः**
(B)	99	नवनवतिः
(C)	89	एकोननवतिः
(D)	81	एकाशीतिः

अतः विकल्प (A) सही है।

78. 'अनद्यतन भविष्य' के लिए प्रयुक्त होता है?
(A) लट् (B) लिट्
(C) लुट् (D) लङ्

	लकार	**कालबोधक**
(A)	लट्लकार	वर्तमान काल
(B)	लिट्लकार	परोक्ष भूत
(C)	**लुट्लकार**	**अनद्यतन भविष्य**
(D)	लङ्लकार	अनद्यतन भूतकाल

अतः विकल्प (C) सही है।

79. गम् धातु का लुङ्लकार प्रथमपुरुष बहुवचन में रूप बनता हैं–
(A) जगाम (B) अगमन्
(C) गम्यात् (D) अगमाम

व्याख्या– गम् धातु का रूप–
(A) लिट्लकार प्रथमपुरुष में–''जगाम जग्मतुः जग्मुः''।
(B) लुङ्लकार प्रथमपुरुष में–''अगमत् अगमताम् अगमन्''।
(C) आ. लिङ् प्रथमपुरुष में–''गम्यात् गम्यास्ताम् गम्यासु''।
(D) लुङ्लकार उत्तमपुरुष में–''अगमम् अगमाव अगमाम''।
अतः विकल्प (B) सही है।

80. भू धातु का लुङ्लकार प्रथमपुरुष एकवचन में रूप होता है?
(A) अभूत् (B) अभूवन्
(C) अभूत (D) बभूव

व्याख्या– भू धातु लुङ्लकार प्रथमपुरुष में रूप–**''अभूत्,** अभूताम् अभूवन्'' बनता है।
मध्यमपुरुष में–''अभूः अभूतम् अभूत'' बनता है।
लिट्लकार प्रथमपुरुष में–बभूव बभूवतुः बभूवुः
अतः विकल्प (A) सही है।

81. 'हल्' सन्धि कहते है?
(A) स्वरसन्धि को (B) व्यञ्जनसन्धि को
(C) विसर्गसन्धि को (D) मुखसन्धि को

व्याख्या–
(A) स्वरसन्धि को अच्सन्धि भी कहते हैं।
(B) **व्यञ्जनसन्धि को हल्सन्धि** भी कहा जाता है।
(C) विसर्ग में हुए विकार को विसर्ग सन्धि कहते हैं
(D) 'मुखसन्धि' नाटक में प्रयुक्त होती है।
अतः विकल्प (B) सही है।

82. पितृ + आकृतिः का शुद्ध सन्धि रूप है?
(A) पितृ आकृतिः (B) पतिकृतिः
(C) पित्राकृतिः (D) पित्राराकृतिः

व्याख्या– * 'इको यणचि' (6/1/77) सूत्र से इक् के स्थान पर यण् (अर्थात् ऋ को र्) आदेश होकर **पितृ + आकृतिः = पित्राकृतिः** में यण् सन्धि होगी।
* त् और र् के संयोग से 'त्र' बनता है।
अतः विकल्प (C) सही है।

75. (A)	76. (A)	77. (A)	78. (C)	79. (B)	80. (A)	81. (B)	82. (C)

83. 'पावकः' का सन्धि विच्छेद है?
(A) पा + अकः **(B) पो + अकः**
(C) पै + अकः **(D) पौ + अकः**

व्याख्या– 'एचोऽयवायावः' (6/1/78) सूत्र से 'औ' के स्थान पर 'आव्' आदेश होकर **पौ + अकः = पावकः** में अयादि सन्धि है।
अतः विकल्प (D) सही है।

84. चतुर्थी तत्पुरुष युक्त समास है?
(A) यूपदारु **(B) चौरभयम्**
(C) राजपुरुषः **(D) सभापण्डितः**

	पद	समास
(A)	**यूपदारु**	**चतुर्थीतत्पुरुष**
(B)	चौरभयम्	पञ्चमीतत्पुरुष
(C)	राजपुरुषः	षष्ठीतत्पुरुष
(D)	सभापण्डितः	सप्तमीतत्पुरुष

अतः विकल्प (A) सही है।

85. 'द्विगु' समास युक्त शब्द है?
(A) दूरादागतः **(B) त्रिभुवनम्**
(C) चन्द्रशेखरः **(D) हरिहरौ**

व्याख्या–
(A) 'स्तोकान्तिकदूरार्थकृच्छ्राणि क्तेन' (2.1.39) सूत्र से दूरात् आगतः दूरादागतः में पञ्चमी तत्पुरुषसमास है।
(B) 'तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च' (2/1/51) सूत्र से **त्रयाणां भुवनानां समाहारः त्रिभुवनम् में द्विगुसमास** है।
(C) 'अनेकमन्यपदार्थे' (2/2/24) सूत्र से चन्द्रः शेखरे यस्य सः = चन्द्रशेखरः में बहुव्रीहि समास है।
(D) 'द्वन्द्वे घि' (2/2/32) सूत्र से 'हरिश्च हरश्च = हरिहरौ' इस द्वन्द्वसमास में घिसंज्ञक 'हरि' शब्द का पूर्वप्रयोग हुआ है। और "चार्थे द्वन्द्वः" से द्वन्द्वसमास हुआ।
अतः विकल्प (B) सही है।

86. 'चक्रपाणिः' में समास है?
(A) द्वन्द्व **(B) बहुव्रीहि**
(C) द्विगु **(D) तत्पुरुष**

	पद	समास
(A)	चटकौ	द्वन्द्वसमास
(B)	**चक्रपाणिः**	**बहुव्रीहिसमास**
(C)	पञ्चग्रामम्	द्विगुसमास
(D)	मेघात्यस्तः	तत्पुरुषसमास

अतः विकल्प (B) सही है।

87. यदि 'अ' या 'आ' के बाद 'उ' या 'ऊ' आये तो होगा?
(A) ए **(B) ऐ**
(C) ओ **(D) औ**

व्याख्या– आद्गुणः (6/1/87) सूत्र से अ या आ के बाद स्वर हो तो (इ, उ, ऋ, ऌ) दोनों के स्थान पर गुण हो जाता है यथा–
अ, आ + इ, ई = ए
अ, आ + उ, ऊ = ओ
अ, आ + ऋ, ॠ = अर्
अ, आ + ऌ = अल्
रमा + ईशः = रमेशः (आ + ई = ए)
गङ्गा + उदकम् = गङ्गोदकम् (आ + उ = ओ)
अतः विकल्प (C) सही है।

88. 'हिमस्य अत्ययः' का सम्पूर्ण पद है?
(A) अनुहिमम् **(B) अतिहिमम्**
(C) उपहिमम् **(D) उपहिमाय**

व्याख्या– 'अव्ययं विभक्ति समीप.....' (2/1/6) सूत्र से यहाँ नाश अर्थ में अति अव्यय का हिमस्य सुबन्त के साथ **'हिमस्य अत्ययः = अतिहिमम्'** में अव्ययीभाव समास है?
अतः विकल्प (B) सही है।

89. 'निर्मक्षिकम्' में समास है?
(A) द्वितीया तत्पुरुष **(B) अव्ययीभाव**
(C) नञ् तत्पुरुष **(D) सप्तमी तत्पुरुष**

	पद	समास
(A)	प्रलयगतः	द्वितीयातत्पुरुष
(B)	**निर्मक्षिकम्**	**अव्ययीभाव**
(C)	अगर्दभः	नञ् तत्पुरुष
(D)	अक्षशौण्डः	सप्तमी तत्पुरुष

अतः विकल्प (B) सही है।

83. (D) 84. (A) 85. (B) 86. (B) 87. (C) 88. (B) 89. (B)

90. 'हरित्रातः में समास है?
(A) अव्ययीभाव (B) तृतीया तत्पुरुष
(C) पञ्चमी तत्पुरुष (D) द्विगु

व्याख्या–
(A) ''अव्ययं विभक्तिसमीप''.....आदि सूत्र से 'शक्तिम् अनतिक्रम्य इति यथाशक्ति' में अव्ययीभाव समास है।
(B) 'कर्तृकरणे कृता बहुलम्' (2/1/32) सूत्र से **'हरिणा त्रातः = हरित्रातः' में तृतीया तत्पुरुषसमास** है।
(C) 'पञ्चमी भयेन' (2/1/37) सूत्र एवं 'भयभीतभीतिभीभिरिति वाच्यम्' वार्तिक से 'वृकाद् भीतिः = वृकभीतिः' में पञ्चमी तत्पुरुषसमास है।
(D) 'तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च' (2/1/51) सूत्र से 'षण्णां मातृणामपत्यं पुमान् इति = षाण्मातुरः' में द्विगुसमास है
अतः विकल्प (B) सही है।

91. 'उपान्वध्याङ्वसः' सूत्र है?
(A) करणकारक का (B) कर्मकारक का
(C) अपादानकारक का (D) सम्प्रदानकारक का

व्याख्या–
(A) कर्तृकरणयोस्तृतीया' (2/3/18) सूत्र से अनुक्त कर्त्ता तथा करणकारक में तृतीया होती है। यथा–रामेण गम्यते।
(B) 'उपान्वध्याङ्वसः' (1/4/48) सूत्रानुसार यदि वस् धातु के पूर्व उप, अनु, अधि और आङ् उपसर्ग लगा हो तो क्रिया के आधार की **कर्मसंज्ञा** होती है यथा– हरिः वैकुण्ठम् अनुवसति।
(C) 'अकर्तर्यृणे पञ्चमी' (2/3/24) सूत्र से कर्तृभिन्न हेतुभूत ऋणवाचक शब्द से पञ्चमी विभक्ति होती है यथा– शताद् बद्धः।
(D) ''उत्पातेन ज्ञापिते च'' वार्तिक से उत्पात से जो बात जानी जाय उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है यथा– वाताय कपिला विद्युत्।
अतः विकल्प (B) सही है।

92. 'परितः' के योग में विभक्ति होती है?
(A) द्वितीया (B) तृतीया
(C) चतुर्थी (D) पञ्चमी

व्याख्या–
(A) अभितः, परितः, समया, निकषा, हा, प्रति, उभयतः सर्वतः, धिक्, उपर्युपरि, अध्यधि, अधोऽधः, अन्तरा, अन्तरेण, शब्दों के योग में **द्वितीयाविभक्ति** होती है।
(B) सह, साकम्, सार्धम्, समम्, प्राय, गोत्र, पृथक्, विना, नाना, आदि शब्दों के योग में तृतीया विभक्ति होती है।
(C) नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलम्, वषट्, शब्दों के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है।
(D) अन्य, आरात्, इतर, ऋते, प्राक्, प्रत्यक्, बहिः, दक्षिणा, उत्तरा, पूर्वा, दक्षिणाहि, उत्तराहि, स्तोक, अल्प, कृच्छ्र, कतिपय, दूर, अन्तिक शब्दों के योग में पञ्चमी विभक्ति होती है।
अतः विकल्प (A) सही है।

93. 'इत्थंभूतलक्षणे' सूत्र है?
(A) करणकारक का (B) सम्प्रदानकारक का
(C) अपादानकारक का (D) अधिकरणकारक का

	सूत्र	सम्बन्धित कारक
(A)	**इत्थम्भूतलक्षणे**	**करणकारक**
(B)	रुच्यर्थानां प्रीयमाणः	सम्प्रदानकारक
(C)	भुवः प्रभवः	अपादान
(D)	यतश्च निर्धारणम्	अधिकरण

अतः विकल्प (A) सही है।

94. 'तस्मै श्रीगुरवे नमः' वाक्य में 'श्रीगुरवे' है?
(A) द्वितीया विभक्ति में (B) पञ्चमी विभक्ति में
(C) षष्ठी विभक्ति में (D) चतुर्थी विभक्ति में

व्याख्या–
(A) 'कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे' (2/3/5) सूत्र से कालवाची और मार्गवाची शब्दों में द्वितीया विभक्ति होती है यथा–क्रोशं कुटिला नदी।
(B) 'दूरान्तिकार्थेभ्यो द्वितीया च' (2/3/35) सूत्र से दूर तथा अन्तिक वाले शब्दों से द्वितीया, पञ्चमी और तृतीया विभक्ति होती है यथा–ग्रामस्य दूरात् दूरम् दूरेण वा
(C) 'षष्ठी हेतुप्रयोगे' (2/3/26) सूत्र से वाक्य में हेतु शब्द का प्रयोग होने पर हेतु (कारण) और हेतु शब्द में अर्थात् दोनों में षष्ठी विभक्ति होती है। यथा–अन्नस्य हेतोः वसति।
(D) 'नमः स्वस्तिस्वाहास्वधाऽलंवषड्योगाच्च' (2/3/16) सूत्र से 'नमः' शब्द के योग में **'श्रीगुरवे' में चतुर्थी विभक्ति** का प्रयोग हुआ है। यथा–तस्मै श्रीगुरवे नमः।
अतः विकल्प (D) सही है।

90. (B) 91. (B) 92. (A) 93. (A) 94. (D)

95. 'भीत्रार्थानां भयहेतुः' सूत्र है?
(A) कर्मकारक का (B) सम्प्रदानकारक
(C) अपादानकारक का (D) अधिकरणकारक का

सूत्र	सम्बन्धितकारक
(A) अकथितं च	कर्मकारक
(B) धारेरुत्तमर्णः	सम्प्रदानकारक
(C) **भीत्रार्थानां भयहेतुः**	**अपादानकारक**
(D) आधारोऽधिकरणम्	अधिकरणकारक

अतः विकल्प (C) सही है।

96. 'यस्य च भावेन भावलक्षणम्' सूत्र है?
(A) करणकारक का (B) कर्मकारक का
(C) अधिकरणकारक का (D) अपादानकारक का

व्याख्या–
(A) 'हेतौ' (2/3/23) सूत्र से हेतु अर्थ के वाची शब्दों में तृतीया विभक्ति होती है, यथा–अध्ययनेन वसति।
(B) 'कर्मणि द्वितीया' (2/3/2) सूत्र से अनुक्त कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है। यथा–हरिं भजति।
(C) 'यस्य च भावेन भावलक्षणम्' (2/3/37) सूत्रानुसार जिस क्रिया में कोई दूसरी क्रिया लक्षित होती है वहाँ पहली क्रिया के आश्रयवाचक शब्द में सप्तमी होती है। यथा–सः गोषु दुह्यमानासु गतः।
(D) ''जुगुप्साविरामप्रमादार्थानामुपसंख्यानम्'' वार्तिक से जुगुप्सा, विराम, प्रमाद अर्थवाली धातुओं के योग में जिस वस्तु से घृणा हो उसमें पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा–सः पापात् जुगुप्सते।
अतः विकल्प (C) सही है।

97. विप्र-बालिका के अपहर्ता यवनयुवक का वध किसने किया?
(A) श्यामसिंह ने (B) गौरसिंह ने
(C) ब्रह्मचारी गुरु ने (D) शिवाजी ने

व्याख्या– * बालिका के अपहर्ता का वध **गौरसिंह** ने किया।
* बालिका की उम्र 7 वर्ष थी।
* गौरसिंह 16 वर्षीय था।
* यवन युवक 20 वर्ष का था।
* शिवाजी शिवराजविजयम् ग्रन्थ के नायक हैं।
अतः विकल्प (B) सही है।

98. शिवराजविजयम् में कुल निःश्वास हैं?
(A) 10 (B) 12
(C) 18 (D) 36

ग्रन्थ	विभाजन
(A) काव्यादर्श (दण्डी)	3 परिच्छेद
(B) शिवराजविजयम्	**3 विराम 12 निःश्वास**
(C) महाभारत (व्यास)	18 पर्व
(D) शृङ्गारप्रकाश (भोज)	36 प्रकाश

अतः विकल्प (B) सही है।

99. 'शिवराजविजयम्' के रचयिता हैं?
(A) अम्बिकादत्तव्यास (B) कालिदास
(C) भवभूति (D) क्षेमेन्द्र

ग्रन्थ	रचनाकार
(A) **शिवराजविजयम्**	**अम्बिकादत्तव्यास**
(B) ऋतुसंहारम्	कालिदास
(C) महावीरचरितम्	भवभूति
(D) कविकण्ठाभरणम्	क्षेमेन्द्र

अतः विकल्प (A) सही है।

100. 'शिवराजविजयम्' क्या है?
(A) महाकाव्य (B) गीतिकाव्य
(C) नाटक (D) ऐतिहासिक उपन्यास

ग्रन्थ	विधा
(A) राघवपाण्डवीयम्	महाकाव्य
(B) हंसदूतम्	गीतिकाव्य
(C) प्रसन्नराघवम्	नाटक
(D) **शिवराजविजयम्**	**ऐतिहासिक उपन्यास**

अतः विकल्प (D) सही है।

101. सोमनाथ मन्दिर पर किसने आक्रमण किया?
(A) बाबर ने (B) औरङ्गजेब ने
(C) महमूद गजनवी ने (D) मुहम्मद गोरी ने

व्याख्या– सोमनाथ मन्दिर पर **महमूद गजनवी** ने आक्रमण किया था।
अतः विकल्प (C) सही है।

95. (C) 96. (C) 97. (B) 98. (B) 99. (A) 100. (D) 101. (C)

102. पण्डित अम्बिकादत्तव्यास की जन्मभूमि है?
(A) जयपुर (B) प्रयाग
(C) पटना (D) काशी

व्याख्या– * अम्बिकादत्तव्यास जी का जन्म **राजस्थान** में **जयपुर** के निकट 'रावतजी का धूला' नामक गाँव में हुआ था।
* इनका जन्म चैत्रशुक्लपक्ष अष्टमी सम्वत् 1915 (1858 ई0) में तथा मृत्यु सम्वत् 1957 (1900 ई0) में हुई थी।
* इनके पिता का नाम दुर्गादत्त तथा पितामह पं0 राजाराम थे। अतः विकल्प (A) सही है।

103. कादम्बरी कथा के विषय में निम्न में से कौन सी बात गलत है?
(A) शुक ने शूद्रक को सुनाया
(B) जाबालि ने शुक को सुनाया
(C) महाश्वेता ने चन्द्रापीड को सुनाया
(D) शुकनास ने चन्द्रापीड को सुनाया

व्याख्या–
(A) शुक, राजा शूद्रक को विन्ध्यारण्य में अपने जन्म से लेकर महर्षि जाबालि के आश्रम में पहुँचने तक का वृत्तान्त सुनाया।
(B) शुक, जाबालि मुनि से अपने पूर्व-जन्म की कथा सुनता है।
(C) महाश्वेता चन्द्रापीड को कुमार पुण्डरीक के साथ अपने अधूरे प्रेम की कथा सुनाती है।
(D) शुकनास चन्द्रापीड को उपदेश देते हैं न कि पूर्वजन्म की कथा सुनाते हैं।
अतः विकल्प (D) सही उत्तर है।

104. शुकनासोपदेश में किसे अविनयों (दुराचारों) का घर नहीं कहा गया है?
(A) गर्भेश्वरत्वम् (B) अभिनवयौवनत्वम्
(C) अप्रतिमरूपत्वम् (D) ऐश्वर्यतिमिरान्धत्वम्

व्याख्या– शुकनासोपदेश में निम्न को अविनयों (दुराचारों) का घर कहा गया–
(A) गर्भेश्वरत्वम्–कुल परम्परा से प्राप्त प्रभुता
(B) अभिनवयौवनत्वम्–नवयौवन अर्थात् नई जवानी तरुणावस्था का होना
(C) अप्रतिमरूपत्वम्–अनुपम या अद्वितीय सौन्दर्य का होना
(D) अमानुषशक्तित्वम्–अलौकिक शक्ति सम्पन्न होना
* **ऐश्वर्यतिमिरान्धत्वम्** को अविनयों (दुराचारों, दुर्विचारों) का घर नहीं कहा गया है?
अतः विकल्प (D) सही उत्तर है।

105. लक्ष्मीमद कैसा होता है?
(A) मदिरापान के समान
(B) विषपान के समान
(C) शीघ्रविनाशी
(D) अन्तिम अवस्था में भी नष्ट न होने वाला

व्याख्या–''अपरिणामोपशमो दारुणो लक्ष्मीमदः''– अर्थात् धन सम्पत्ति का भयंकर मद **अन्तिम अवस्था में भी शान्त नहीं होता है।** –शुकनासोपदेश
अतः विकल्प (D) सही है।

106. किस प्रकार के राजा का आदेश सिद्धयोगी के समान सफल होता है?
(A) प्रचुर धन वाले का
(B) अतिशय बलवान् का
(C) आरूढ़ प्रताप वाले का
(D) सरल व्यवहार वाले का

व्याख्या– 'आरूढप्रतापो राजा त्रैलोक्यदर्शीव सिद्धादेशो भवति' अर्थात् आरूढ़ प्रताप वाले राजा का आदेश सिद्धयोगी के समान सफल होता है? –शुकनासोपदेश
अतः विकल्प (C) सही है।

107. बिना जल वाला स्नान कौन-सा है?
(A) धूप स्नान
(B) मन्त्र स्नान
(C) मानसिक स्नान
(D) गुरूपदेश रूपी स्नान

व्याख्या– ''गुरूपदेशश्च नाम पुरुषाणामखिलमलप्रक्षालनक्षममजलं स्नानम्''–अर्थात् **गुरु का उपदेश** तो पुरुषों के लिए समग्र मलों (मानसिक विकारों) को धोने में समर्थ बिना जल (जलरहित)का स्नान है। – शुकनासोपदेश
अतः विकल्प (D) सही है।

102. (A) 103. (D) 104. (D) 105. (D) 106. (C) 107. (D)

108. उत्तररामचरित के तृतीय अङ्क को छायाङ्क कहते हैं?
(A) इसमें राम को सीता का चित्र दिखाया गया है।
(B) इस अङ्क में सीता की छाया सभी पात्रों एवं दर्शकों को दिखाई पड़ती है।
(C) इस अङ्क में राम को सीता की छाया दिखाई देती है।
(D) मंच पर उपस्थित सीता राम को नहीं दिखाई देती।

व्याख्या– मंच पर उपस्थित सीता को राम नहीं देख पाते हैं किन्तु सीता राम को देखती हैं। सीता, राम के लिए स्पर्श जन्य हैं। भागीरथी गंगा की कृपा से सीता को कोई भी नहीं देख पाता है। इसीलिए उत्तररामचरितम् के तृतीय अङ्क को 'छायाङ्क' कहते हैं। अतः विकल्प (D) सही है।

109. रोती हुई बालिका को शान्त करने के लिए किसको आदेश दिया गया था?
(A) गौरवटु को **(B) श्यामवटु को**
(C) सेवक को **(D) किसी को भी नहीं**

व्याख्या– ''ब्रह्मचारिगुरुणा बालिकां सान्त्वयितुं श्यामबटुमादिश्य कथितम्'' (शिवराजविजयम्)
रोती बालिका को शान्त कराने के लिए ब्रह्मचारी गुरु ने **श्यामवटु** को आदेश दिया। अतः विकल्प (B) सही है।

110. गौरवटु का परिचय है?
(A) वह शिवाजी का सेनानी है।
(B) वह आश्रम में निवास करने वाला विद्यार्थी है।
(C) वह श्यामवटु का बड़ा भाई है।
(D) वह संन्यस्त ब्रह्मचारी है।

व्याख्या– गौरवटु आश्रम में निवास करने वाला विद्यार्थी है। अर्थात् उपर्युक्त विकल्पों में से इस प्रश्न के उत्तर के लिए विकल्प (B) सर्वश्रेष्ठ विकल्प है। किन्तु गौरवटु के परिचय में कही गयी ये सारी बातें लगभग सत्य हैं, अतः यह प्रश्न विवादित हो सकता है।

111. किस प्रकार का व्यक्ति उपदेश का पात्र होता है?
(A) ज्ञानी
(B) पठनशील
(C) प्रौढ़
(D) सांसारिक विषयास्वाद से रहित

व्याख्या– अयमेव चानास्वादितविषयरसस्य ते काल उपदेशस्य' अर्थात् विषय का उपभोग या अनुभव न किए हुए तुम्हारे लिए उपदेश का यही समय उचित है। – **(शुकनासोपदेश)**
अतः विकल्प (D) सही है।

112. किरातार्जुनीयम् में समस्त सर्गों की संख्या है?
(A) 18 **(B) 19**
(C) 20 **(D) 22**

व्याख्या–

महाकाव्य	**सर्ग**
(A) **किरातार्जुनीयम्**	**18**
(B) रघुवंशमहाकाव्यम्	19
(C) शिशुपालवधम्	20
(D) नैषधीयचरितम्	22

अतः विकल्प (A) सही है।
नोट– यह प्रश्न आयोग का पसंदीदा प्रश्न है। न जाने क्यों इसी प्रश्न को लगभग प्रतिवर्ष दुहराया जा रहा है।

113. महापुरुषों के साथ कैसा विरोध भी अच्छा होता है?
(A) महापुरुषों को पराजित करने वाला
(B) धन-सम्पत्ति दिलाने वाला
(C) उन्नति कराने वाला
(D) मित्रता बढ़ाने वाला

व्याख्या– ''समुन्नयन्भूतिमनार्यसङ्गमाद्वरं, विरोधोऽपि समं महात्मभिः!'' अर्थात् ऐश्वर्य को बढ़ाते हुए मनुष्य के लिए नीचों के संग की अपेक्षा महापुरुषों के साथ विरोध करना भी अच्छा **(उन्नति कराने वाला)** होता है। (किरात० 1/8)
अतः विकल्प (C) सही है।

114. दुर्योधन यज्ञ कार्य में कैसे लगा रहता है?
(A) चारों ओर सैनिक नियुक्त करके
(B) शत्रुओं को कैद करके
(C) मित्रों को उपकृत करके
(D) दुःशासन को युवराज पद पर बैठा करके

व्याख्या– 'स यौवराज्ये नवयौवनोद्धतं विधाय दुःशासनमिद्धशासनः' (किरात 1/22) नवयौवन के कारण अति गर्विष्ठ दुःशासन को युवराज के पद पर नियुक्त कर पुरोहित की आज्ञा के अनुसार बिना थके हुए यज्ञों में हव्य के द्वारा अग्नि को दुर्योधन प्रसन्न करता है।
अतः विकल्प (D) सही है।

108. (D) 109. (B) 110. (B) 111. (D) 112. (A) 113. (C) 114. (D)

115. महाकवि भारवि किस शैली के प्रवर्तक माने जाते हैं?
(A) सरल (B) कठोर
(C) अर्थगौरव (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या– *महाकवि भारवि **अर्थगौरव शैली** के प्रवर्तक माने जाते है यथा–
उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्।
दण्डिनः पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयो गुणाः''–उद्भट
अतः विकल्प (C) सही है।

116. दुर्योधन कब भयभीत हो जाता है?
(A) श्रीकृष्ण की माया शक्ति सोचकर
(B) युधिष्ठिर का नाम सुनकर
(C) पाण्डवों की दैवीय शक्ति से
(D) विदुर के उपदेश सुनकर

व्याख्या– ''तवाभिधानाद् व्यथते नताननः स दुःसहान्मन्त्रपदादिवोरगः।'' अर्थात् अति असह्य मन्त्रपद रूप आपके **(युधिष्ठिर) नाम से तथा अर्जुन के पराक्रम को** स्मरण करके नीचे मुख किए (वह दुर्योधन) पीड़ा का अनुभव करता है। –(किरात 1/24)
अतः विकल्प (B) सही है।

117. मेघदूतम् के प्रथमश्लोक में 'वर्षभोग्येण' शब्द आया है। यहाँ पर 'न' को 'ण' किस सूत्र से हुआ?
(A) रषाभ्यां नो णः समानपदे
(B) पूर्वपदात्संज्ञायामगः
(C) अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि
(D) कुमति च

व्याख्या– * 'रषाभ्यां नो णः समानपदे' सूत्र से रेफ और षकार से परे नकार के स्थान पर णकार आदेश होता है यथा–चतुर् + नाम् = चतुर्णाम्
* 'वर्षभोग्येण' शब्द में ''**कुमति च**'' सूत्र से न को ण आदेश हुआ है।
अतः विकल्प (D) सही है।

118. स्त्रियों का आशाबन्ध कैसा होता है?
(A) नवनीतसदृश (B) पाषाणसदृश
(C) कुसुमसदृश (D) वज्रसदृश

व्याख्या– ''**आशाबन्धः कुसुमसदृशं प्रायशो ह्यङ्गनानां।**
सद्यः पाति प्रणयि हृदयं विप्रयोगे रुणद्धि॥''
अर्थात् आशा का बन्धन **फूल के समान** शीघ्र कुम्भलाने वाले स्त्रियों के प्रेमी हृदय को वियोग में प्रायः थामे रहता है। **(पूर्वमेघ/9)** अतः विकल्प (C) सही है।

119. 'शकुन्तला के गर्भ में दुष्यन्त का तेज (वीर्य) पल रहा है।' यह बात कण्व को किसने बताई?
(A) अनसूया एवं प्रियंवदा ने
(B) गौतमी ने
(C) अशरीरिणी वाक्शक्ति (छन्दोमयी आकाशवाणी)
(D) कण्व के तपोबल ने

व्याख्या–
''**अग्निशरणं प्रविष्टस्य शरीरं विना छन्दोमय्या वाण्या।**''
प्रियंवदा के इस कथन से ज्ञात होता है कि–यज्ञशाला में गये हुए कण्व को शरीररहित छन्दोमयी वाणी (आकाशवाणी) के द्वारा यह समाचार बतलाया गया है। (अभिज्ञान/अङ्क-4)
अतः विकल्प (C) सही है।

120. सबका आभूषण क्या है?
(A) स्वर्ण (B) धन
(C) शील (D) सत्य

व्याख्या–
''**सर्वेषामपि सर्वकारणमिदं शीलं परं भूषणम्**'' अर्थात् शील ही एक ऐसा उत्कृष्ट आभूषण है, जो मनुष्य को शोभावर्द्धक साधनों से अत्यधिक शोभावान् बनाता है, अतः शील ही सर्वोत्तम आभूषण है। अतः विकल्प (C) सही है।

121. सबसे अधिक लघु (हल्का) कौन होता है?
(A) तूल (B) मन
(C) रिक्त (D) तिनका

व्याख्या–''**रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय**''
मेघदूतम् के इस श्लोकांश से ज्ञात होता है कि रिक्त को सबसे हल्का माना गया है, अतः विकल्प (C) सही है।

122. शकुन्तला ने विदाई के समय जिस लता का आलिङ्गन किया था उसका क्या नाम था?
(A) वनज्योत्स्ना (B) नवमालिका (चमेली)
(C) लताभगिनी (D) केसरलता

व्याख्या–(उपेत्य लतामालिङ्ग्य) 'वनज्योत्स्ने! चूतसङ्गतापि मां प्रत्यालिङ्गेतोगताभिः शाखाबाहुभिः।' शकुन्तला के इस कथन से स्पष्ट है कि विदाई के समय उसने **वनज्योत्स्ना** लता का आलिङ्गन किया था। (अभिज्ञान/अङ्क-4)
अतः विकल्प (A) सही है।

115. (C)	116. (B)	117. (D)	118. (C)	119. (C)	120. (C)	121. (C)	122. (A)

123. सबसे बड़ा पुण्यसाधन क्या है?

(A) दान (B) पूजन
(C) तीर्थयात्रा (D) परहितसाधन

व्याख्या– "सन्तः स्वयं परहिते विहिताभियोगः।"
अर्थात् सन्त लोग स्वयं दूसरे के हितसाधन (परहित साधन) में आग्रहशील होते है। (नीतिशतकम् 64)
अतः सबसे बड़ा पुण्य **परहितसाधन** है।
विकल्प (D) सही है।

124. भवभूति के आश्रयदाता नरेश का नाम था?

(A) यशोवर्मा
(B) चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य
(C) विष्णुवर्धन
(D) हर्षवर्धन

	कवि	राज्याश्रय
(A)	**भवभूति**	**यशोवर्मा**
(B)	कालिदास	चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य
(C)	भारवि	विष्णुवर्धन
(D)	बाणभट्ट	हर्षवर्धन

अतः विकल्प (A) सही है।

125. संसार में सबसे अधिक मनोहर तथा कष्टकारक कौन होता है?

(A) धन (B) ज्ञान
(C) रमणी (D) यश

व्याख्या– सबसे अधिक मनोहर तथा कष्टकारक **रमणी** (स्त्री) को माना गया है।
अतः विकल्प (C) सही है।

123. (D) 124. (A) 125. (C)

प्रशिक्षित-स्नातकशिक्षक-चयनपरीक्षा (TGT)–2009

1. 'पा' धातु परस्मैपदी का लट्लकार प्रथमपुरुष द्विवचन का रूप है?
(A) पिबसि (B) पिबतः
(C) पिबति (D) पिबामि

व्याख्या–
'पा' धातु सकर्मक, अनिट्, परस्मैपद का लट्लकार में रूप निम्नवत् है–

प्रथमपुरुष	पिबति	**पिबतः**	पिबन्ति
मध्यमपुरुष	पिबसि	पिबथः	पिबथ
उत्तमपुरुष	पिबामि	पिबावः	पिबामः

अतः विकल्प (B) सही है।

2. 'भी' धातु परस्मैपद लट्लकार मध्यमपुरुष एकवचन का रूप है?
(A) बिभेमि (B) बिभेषि
(C) बिभेतु (D) बिभीत

व्याख्या–
(A) 'भी' (डरना) धातु का रूप लट्लकार-
उत्तम पुरुष में–बिभेमि बिभीवः बिभीमः बनता है।
(B) मध्यमपुरुष में–**बिभेषि** बिभीथः बिभीथ बनता है।
(C) लोट्लकार प्रथमपुरुष में–बिभेतु बिभीताम् बिभ्यतु
(D) लोट्लकार मध्यमपुरुष में–बिभीहि बिभीतम् बिभीत
अतः विकल्प (B) सही है।

3. माहेश्वर सूत्र में 'ह' कितनी बार आया है?
(A) चौदह (B) दो
(C) नौ (D) बयालिस

व्याख्या–
(A) चौदह माहेश्वर सूत्र हैं यथा–
अइउण्, ॠलृक्, एओङ्, ऐऔच्, हयवरट्, लण् ञमङणनम्, झभञ्, घढधष्, जबगडदश्, खफछठथचटतव्, कपय्, शषसर्, हल्।
(B) उपर्युक्त चौदह माहेश्वर सूत्रों में 'हल्' और 'हयवरट्' सूत्र में 'ह' का प्रयोग हुआ है अर्थात् **'ह' दो बार** प्रयुक्त है। प्रथम 5वें सूत्र में तथा द्वितीय 14वें सूत्र में।
(C) उपर्युक्त माहेश्वर सूत्र के चार सूत्रों में स्वर का प्रयोग है जो कुल मिलाकर नौ है। यथा– अ, इ, उ, ऋ, ऌ, ए, ओ, ऐ, औ।
(D) अन्तिम 10 सूत्रों में 34 व्यञ्जन प्रयुक्त हैं किन्तु 'ह' का दो बार प्रयोग होने से कुल 33 व्यञ्जन ही हैं। स्वर और व्यञ्जन कुल मिलाकर 42 वर्ण हैं।
अतः विकल्प (B) सही है।

4. वर्णमाला में व्यञ्जनों की संख्या है?
(A) 31 (B) 41
(C) 33 (D) 39

व्याख्या– * पाणिनि के चौदह माहेश्वरसूत्रों में कुल 42 वर्ण हैं जिनमें 33 व्यञ्जन तथा 9 स्वर हैं।
* इस प्रकार संस्कृत वर्णमाला में **व्यञ्जनों की संख्या '33'** है।
अतः विकल्प (C) सही है।

5. 'अदस्' शब्द का स्त्रीलिङ्ग प्रथमा एकवचन का रूप है?
(A) असौ (B) अदः
(C) अमू (D) अमूः

व्याख्या– अदस् (वह) सर्वनाम का रूप स्त्रीलिङ्ग प्रथमाविभक्ति में–"**असौ** अमू अमूः"
नपुंसकलिङ्ग प्रथमाविभक्ति में–"अदः, अमू , अमूनि"
अतः विकल्प (A) सही है।

6. भगवान् अगस्त्य की पत्नी का नाम था?
(A) अदिति (B) अरुन्धती
(C) लोपामुद्रा (D) वसुमती

	पति	**पत्नी**
(A)	मारीच	अदिति
(B)	वशिष्ठ	अरुन्धती
(C)	**अगस्त्य**	**लोपामुद्रा**
(D)	दुष्यन्त	हंसपदिका/वसुमती/शकुन्तला

अतः विकल्प (C) सही है।

1. (B) 2. (B) 3. (B) 4. (C) 5. (A) 6. (C)

7. ''किसलयमिव मुग्धं बन्धनाद् विप्रलूनं हृदयकमलशोषी दारुणो दीर्घशोकः'' प्रस्तुत श्लोक किस पुस्तक से उद्धृत है?

(A) मेघदूतम् से

(B) नीतिशतकम् से

(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से

(D) उत्तररामचरितम् से

व्याख्या–

(A) ''सद्यः पाति प्रणयि हृदयं विप्रयोगे रुणद्धि''–मेघदूतम्- (पूर्वभाग-9)

(B) ''भवति हृदयदाही शल्यतुल्यो विपाकः''– (नीतिशतकम्/95)

(C) ''कस्मिन्नपि पूजार्हेऽपराद्धा शून्यहृदया शकुन्तला''– अभिज्ञानशाकुन्तलम् (अङ्क-4)

(D) **''हृदयकमलशोषी दारुणो दीर्घशोकः''**– उत्तररामचरितम् 3/5) यह मुरला का कथन है, जो सीता के लिए कहा गया है।

अतः विकल्प (D) सही है।

8. 'लृ' का उच्चारणस्थान है?

(A) कण्ठ	**(B) दन्त**
(C) तालु	**(D) मूर्धा**

व्याख्या–

(A) ''अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः''–अर्थात् अ, क्, ख्, ग्, घ्, ङ्, ह् और विसर्ग, का उच्चारणस्थान कण्ठ है।

(B) **'लृतुलसानां दन्ताः'**–अर्थात् **लृ**, त्, थ्, द्, ध्, न्, ल्, स्, का उच्चारणस्थान **दन्त** है।

(C) ''इचुयशानां तालु''–अर्थात् इ, च्, छ्, ज्, झ्, ञ्, य्, श् का उच्चारणस्थान तालु है।

(D) 'ऋटुरषाणां मूर्धा''–अर्थात् ऋ, ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्, र्, ष् का उच्चारणस्थान मूर्धा है। अतः विकल्प (B) सही है।

9. 'पावकः' का सन्धिविच्छेद है?

(A) पो + अकः	**(B) पाव + अकः**
(C) प + आवक	**(D) पौ + अकः**

व्याख्या– 'एचोऽयवायावः' (6/1/78) सूत्र से ए, ऐ ओ, औ के बाद कोई भी स्वर आये तो इनके स्थान पर क्रमशः अय् , आय् ,आव् , आदेश हो जाता है।**''पौ + अकः = पावकः''** में अयादिसन्धि है। अतः विकल्प (D) सही है।

10. 'भीत्रार्थानां भयहेतुः' में कौन-सा कारक है?

(A) सम्प्रदान	**(B) अपादान**
(C) करण	**(D) अधिकरण**

व्याख्या–

(A) ''क्रियार्थोपपदस्य च कर्मणि स्थानिनः'' (2/3/14) सूत्र से अप्रयुज्यमान तुमुन् प्रत्ययान्त क्रिया का प्रयोग होने पर उसके कर्म में चतुर्थी होती है यथा– सः फलेभ्यो याति।

(B) **''भीत्रार्थानां भयहेतुः''** (1/4/25) सूत्र से भय के हेतु (कारण) में **अपादानकारक** और पञ्चमी विभक्ति होती है यथा– सः चौराद् बिभेति।

(C) ''हेतौ'' (2/3/23) सूत्रानुसार हेतु अर्थ के वाची शब्दों में तृतीया विभक्ति होती है यथा– अध्ययनेन वसति।

(D) ''निमित्तात्कर्मयोगे'' वार्तिक से निमित्तवाची शब्दों से सप्तमी विभक्ति होती है, यदि वह निमित्त फल से युक्त हो यथा– सः केशेषु चमरीं हन्ति।

अतः विकल्प (B) सही है।

11. उपसर्ग धातु के साथ कहाँ आता है?

(A) पहले	**(B) पीछे**
(C) आगे-पीछे	**(D) लग नहीं सकता।**

व्याख्या– उपसर्ग धातुओं से बने हुए विशेषण, संज्ञा, आदि शब्दों के **पूर्व (पहले)** जोड़ा जाता है यथा–विहार, परिहार, संहार में 'हृ' धातु के पहले वि, परि, सम् उपसर्ग लगे हैं। अतः विकल्प (A) सही है।

12. ''हनुमते नमः'' में हनुमते में कौन सी विभक्ति है?

(A) चतुर्थी	**(B) पञ्चमी**
(C) षष्ठी	**(D) सप्तमी**

व्याख्या–

(A) ''नमःस्वस्तिस्वाहास्वधाऽलंवषड्योगाच्च'' (2/3/16) सूत्र से 'नमः' आदि शब्दों के योग में **चतुर्थी विभक्ति** होती है। यथा– हनुमते नमः।

(B) ''पञ्चम्यपाङ्परिभिः'' (2/3/10) सूत्र से अप, आङ् तथा परि इन तीन कर्मप्रवचनीयों के योग में पञ्चमीविभक्ति होती है। यथा– आ मुक्तेः संसारः।

(C) ''षष्ठी शेषे'' (2/3/50) सूत्र से शेष अर्थों में षष्ठीविभक्ति होती है (कर्म, करण, इत्यादि कारकों तथा प्रातिपदिक से भिन्न) यथा– राज्ञः पुरुषः।

(D) ''सप्तम्यधिकरणे च'' (2/3/36) सूत्र से अधिकरणकारक में सप्तमीविभक्ति होती है। यथा–मोक्षे इच्छाऽस्ति।

अतः विकल्प (A) सही है।

7. (D)	8. (B)	9. (D)	10. (B)	11. (A)	12. (A)

13. लट्लकार किस काल का बोधक है?
(A) भविष्यकाल का
(B) विधि, आज्ञा, आशीष अर्थ का
(C) भूतकाल का
(D) वर्तमानकाल का

लकार	**कालबोधक**
(A) लृट्लकार	भविष्यकाल का
(B) लिङ्लकार	विधि, आज्ञा, आशीष अर्थ का
(C) लङ्लकार	अनद्यतन भूत का
(D) **लट्लकार**	**वर्तमानकाल** का

अतः विकल्प (D) सही है।

14. तिलकमञ्जरी के लेखक हैं?
(A) भास **(B) धनपाल**
(C) कल्हण **(D) बिल्हण**

रचना	**रचनाकार**
(A) प्रतिज्ञायौगन्धरायण	भास
(B) **तिलकमञ्जरी**	**धनपाल**
(C) राजतरङ्गिणी	कल्हण
(D) विक्रमाङ्कदेवचरितम्	बिल्हण

अतः विकल्प (B) सही है।

15. कादम्बरी में किसके तीन जन्मों का वर्णन है?
(A) तारापीड **(B) चन्द्रापीड**
(C) कपिञ्जल **(D) पुण्डरीक**

व्याख्या–
(A) तारापीड उज्जयिनी के राजा तथा चन्द्रापीड के पिता हैं। इनका प्रधान अमात्य शुकनास, चन्द्रापीड को राज्याभिषेक के समय उपदेश देता है?
(B) कादम्बरी में मुख्यतः **चन्द्रापीड के तीन जन्मों का वर्णन** है तीन जन्म निम्नवत् है–''चन्द्रमा, चन्द्रापीड, शूद्रक''
(C) कपिञ्जल वैमानिक द्वारा शापित पात्र है, जो इन्द्रायुध नामक अश्व बन जाता है।
(D) श्वेतकेतु और लक्ष्मी पुण्डरीक के माता-पिता हैं। पुण्डरीक के तीन जन्म–''पुण्डरीक, वैशम्पायन, शुक''। अतः विकल्प (B) सही है।

नोट– यहाँ चन्द्रापीड और पुण्डरीक दोनों विकल्प नहीं देना चाहिए, इससे छात्रों को संदेह होता है। चूँकि कादम्बरी का नायक चन्द्रापीड है, अतः नायकत्व को आधार मानकर विकल्प `B' ही सही होगा। अन्यथा विकल्प B' और `D' दोनों को सही मानना होगा।

16. ''रामः पुस्तकं पठति'' का कर्मवाच्य क्या होगा?
(A) रामेण पुस्तकं पठेत **(B) रामेण पुस्तकं पठितानि**
(C) रामेण पुस्तके पठ्यते **(D) रामेण पुस्तकं पठ्यते**

व्याख्या– कर्मवाच्य के कर्ता में तृतीयाविभक्ति और कर्म में प्रथमाविभक्ति होती है, तथा क्रिया कर्म के अनुसार प्रयुक्त होती है– अतः '**रामेण पुस्तकं पठ्यते**' कर्मवाच्य होगा। यहाँ पुस्तकम् 'पुस्तक' शब्द का प्रथमा एकवचन का रूप है। अतः विकल्प (D) सही है। अन्य विकल्प अशुद्ध है।

17. ''अर्थो हि कन्या परकीय एव तामद्य सम्प्रेष्य परिग्रहीतुः।'' यह वक्तव्य किसका है?
(A) गौतमी का **(B) काश्यप का**
(C) दुष्यन्त का **(D) मेनका का**

व्याख्या– प्रस्तुतपद्य में **कण्व (काश्यप)** शकुन्तला को विदा करने के पश्चात् कहते हैं कि अर्थो हि...(अभि.4/23) कन्या वस्तुतः पराया धन है, आज उसको प्राप्तकर्त्ता (पति) को दे देने पर मेरी अन्तरात्मा उसी प्रकार प्रसन्न हो रही है जिस प्रकार धरोहर को लौटा देने पर धरोहर को रखने वाले का मन प्रसन्न हो जाता है। **(अभिज्ञान 4/22)** अतः विकल्प (B) सही है।

18. 'सम्बोधने च' सूत्र से विभक्ति होती है?
(A) सप्तमी **(B) षष्ठी**
(C) द्वितीया **(D) प्रथमा**

व्याख्या–
(A) ''सप्तमीपञ्चम्यौ कारकमध्ये'' (2/3/7) सूत्र से दो कारक के मध्य में वर्तमान जो कालवाचक और मार्गवाचक शब्द उनमें सप्तमी और पञ्चमीविभक्ति होती है। यथा–'अद्य भुक्त्वा अयं द्व्यहे द्व्यहाद् वा भोक्ता' (यह आज खाकर दो दिन बाद खायेगा)
(B) ''अधिकरणवाचिनश्च'' (2/3/68) सूत्र अधिकरणवाची क्त प्रत्ययान्त के योग में कर्त्ता कारक में षष्ठी विभक्ति होती है यथा– 'इदम् एषाम् आसितम् (यह इनका आसन है)
(C) ''अकथितं च'' (1/4/51) सूत्र से जहाँ अपादानादि कारक अविवक्षित हों तो वहाँ कर्मकारक होता है (दुह्, याच्, पच् आदि 16 धातुओं के योग में वक्ता स्वतन्त्र है चाहे अपादानादि संज्ञा करे या कर्मसंज्ञा) यथा– तण्डुलान् ओदनं पचति।
(D) **''सम्बोधने च''** (2/3/47) सूत्र से सम्बोधन अर्थ में प्रातिपदिक से **प्रथमाविभक्ति** होती है यथा– हे राम! अत्र आगच्छ। अतः विकल्प (D) सही है।

13. (D) 14. (B) 15. (B) 16. (D) 17. (B) 18. (D)

19. 'द्वादश' पद में समास है?
(A) बहुव्रीहि (B) तत्पुरुष
(C) अव्ययीभाव (D) द्वन्द्व

व्याख्या–
(A) 'अनेकमन्यपदार्थे' (2/2/24) सूत्र से 'चक्रं पाणौ यस्य सः = चक्रपाणिः' में बहुव्रीहि समास है।
(B) ''पूर्वसदृशसमोनार्थकलहनिपुणमिश्रश्लक्ष्णैः'' (2/1/31) सूत्र से 'मासेन पूर्वः = मासपूर्वः' में तत्पुरुषसमास है।
(C) ''अव्ययीभावे चाकाले'' (6/3/81) सूत्र से 'चक्रेण युगपत् = सचक्रम्' में 'सह' को 'स' आदेश होकर अव्ययीभावसमास हुआ है।
(D) ''चार्थे द्वन्द्वः'' (2/2/29) सूत्र से **'द्वौ च दश च = द्वादश' में द्वन्द्वसमास** है।
अतः विकल्प (D) सही है।

20. 'द्वौ पादौ यस्य सः' किसका विग्रह है?
(A) दिपादः (B) द्विपात्
(C) द्विपद् (D) द्विपदी

व्याख्या– ''संख्या-सु-पूर्वस्य'' (5/4/140) से 'द्वौ पादौ यस्य सः = द्विपात्' में 'अलोऽन्त्यस्य' सूत्र की सहायता से 'पाद' के अकार का समासान्त लोप करके **'द्विपात्'** बना। इसमें **बहुव्रीहिसमास** है। अतः विकल्प (B) सही है।

21. 'शिवराजविजयम्' के कथानक के आरम्भ का काल है?
(A) रात्रि (B) प्रातः
(C) मध्याह्न (D) सायं

व्याख्या– शिवराजविजयम् के कथानक का आरम्भ–'अरुण एष प्रकाशः पूर्वस्यां भगवतो मरीचिमालिनः' पंक्ति से होता है इसमें **सूर्योदय (प्रातःकाल)** का वर्णन है।
अतः विकल्प (B) सही है।

22. चन्द्रापीड के पिता का नाम था?
(A) श्वेतकेतु (B) तारापीड
(C) शुकनास (D) हंस

	सन्तान	**पिता**
(A)	पुण्डरीक	श्वेतकेतु
(B)	**चन्द्रापीड**	**तारापीड**
(C)	वैशम्पायन	शुकनास
(D)	महाश्वेता	गन्धर्वराज हंस

अतः विकल्प (B) सही है।

23. राजप्रकृति कैसी होती है?
(A) विह्वला (B) उज्ज्वला
(C) निर्मला (D) सुलभा

व्याख्या– ''अहङ्कारदाहज्वरमूर्च्छान्धकारिता **विह्वला** हि राजप्रकृतिः' अर्थात् राजा का स्वभाव अभिमान रूपी तीव्रताप से उत्पन्न होने वाली मूर्च्छा के कारण अन्धकार तुल्य बना हुआ एवं व्याकुल करता है? –शुकनासोपदेश
अतः विकल्प (A) सही है।

24. 'चिकीर्षुः' किस धातु से बना है?
(A) चि (B) कृष्
(C) सु (D) कृ

व्याख्या– 'चिकीर्षुः' (कर्तुम् इच्छा) सन्नन्त प्रयोग है। किसी कार्य के करने की इच्छा का अर्थ बतलाने के लिए धातु के अनन्तर सन् प्रत्यय लगाया जाता है जैसे–**कृ + सन् = चिकीर्षुः** (करने की इच्छा)। अतः विकल्प (D) सही है।

25. 'उवाच' किस लकार का रूप है?
(A) लट् (B) लिट्
(C) लङ् (D) लिङ्

व्याख्या– ब्रू (बोलना) धातु का रूप–
(A) लट्लकार प्रथमपुरुष में– ब्रवीति ब्रूतः ब्रुवन्ति
(B) **लिट्लकार** प्रथमपुरुष में– **उवाच** ऊचतुः ऊचुः
(C) लङ्लकार प्रथमपुरुष में– अब्रवीत् अब्रूताम् अब्रुवन्
(D) आशीर्लिङ् प्रथमपुरुष में– उच्यात् उच्यास्ताम् उच्यासुः
अतः विकल्प (B) सही है।

26. वनेचर किस वन में युधिष्ठिर के पास आया?
(A) विन्ध्याटवी में (B) दण्डकारण्य में
(C) द्वैतवन में (D) पञ्चवटी में

व्याख्या– * ''स वर्णिलिङ्गी विदितः समाययौ
युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचरः।'' (किरात० 1/1)
अर्थात् वह ब्रह्मचारी का वेश धारण करने वाला वनेचर सारा वृत्तान्त जानकर **द्वैतवन में** युधिष्ठिर के पास लौट आया। अतः विकल्प (C) सही है।
* विन्ध्याटवी' का वर्णन कादम्बरी में है, तथा दण्डकारण्य एवं पञ्चवटी का वर्णन उत्तररामचरितम् में है।

19. (D) 20. (B) 21. (B) 22. (B) 23. (A) 24. (D) 25. (B) 26. (C)

27. 'कुरूणामधिपः' का तात्पर्य है?
(A) अर्जुन **(B) भीम**
(C) दुर्योधन **(D) दुःशासन**

व्याख्या– * 'श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीं' (किरात० 1/1) अर्थात् कुरुदेश के **राजा (दुर्योधन)** के प्रजापालन के व्यवहार को जानने के लिए........।

* यहाँ 'कुरूणामधिपः' शब्द दुर्योधन के लिए आया है। भारवि दुर्योधन के लिए सुयोधन शब्द का भी प्रयोग करते हैं। अतः विकल्प (C) सही है।
* किरातार्जुनीयम् में 'वृकोदरः' शब्द भीम के लिए तथा 'धनञ्जयः' शब्द अर्जुन के लिए प्रयुक्त है।

28. 'महीभुजे' में कौन-सी विभक्ति है?
(A) प्रथमा **(B) चतुर्थी**
(C) षष्ठी **(D) सप्तमी**

व्याख्या– * ''कृतप्रणामस्य महीं महीभुजे, जितां सपत्नेन निवेदयिष्यतः'' (किरात० 1/2) अर्थात् प्रणाम करने के बाद शत्रु द्वारा जीती गई पृथ्वी का वृत्तान्त महाराज युधिष्ठिर से वर्णन करते हुए.....।

* यहाँ **'महीभुजे' में चतुर्थी विभक्ति** का विधान– ''क्रियार्थोपपदस्य च कर्मणि स्थानिनः'' सूत्र से हुआ है?

अतः विकल्प (B) सही है।

29. 'विघाताय' में कौन सी धातु है?
(A) धा **(B) तन्**
(C) हन् **(D) गम्**

व्याख्या– ''द्विषां विघाताय विधातुमिच्छतो'' (किरात 1/3) अर्थात् शत्रुओं के नाश के लिए यत्न करने की इच्छा वाले। 'विघाताय' में चतुर्थी का विधान–'तुमर्थाच्च भाववचनात्' सूत्र से हुआ है। **विघाताय में वि उपसर्ग + हन् धातु + घञ्** प्रत्यय है। अतः विकल्प (C) सही है।

30. किरातार्जुनीयम् का प्रथम पद्य किस छन्द में है?
(A) वंशस्थ **(B) स्रग्धरा**
(C) अनुष्टुप् **(D) मन्दाक्रान्ता**

व्याख्या–

(A) 'श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीं'–किरातार्जुनीयम् के इस पद्य में वस्तुनिर्देशात्मक मङ्गलाचरण है जिसमें **'वंशस्थ छन्द'** है।

(B) ''या सृष्टिः स्रष्टुराद्या वहति विधिहुतं या हविर्या च होत्री'' अभिज्ञानशाकुन्तलम् के इस पद्य में आशीर्वादात्मक मङ्गलाचरण है जिसमें स्रग्धराछन्द है।

(C) 'नत्वा सरस्वतीं देवीं शुद्धां गुण्यां करोम्यहम्'–लघुसिद्धान्त कौमुदी के इस पद्य में वस्तुनिर्देशात्मक/नमस्कारात्मक मङ्गलाचरण अनुष्टुप् में छन्द है।

(D) 'कश्चित् कान्ताविरहगुरुणा स्वाधिकारात्प्रमत्तः''–मेघदूतम् के इस पद्य में वस्तुनिर्देशात्मक मङ्गलाचरण है जिसमें मन्दाक्रान्ता छन्द है। अतः विकल्प (A) सही है।

31. यक्ष ने मेघ को किस मास के प्रथमदिन को देखा था?
(A) चैत्र **(B) श्रावण**
(C) माघ **(D) आषाढ़**

व्याख्या– ''आषाढस्य प्रथमदिवसे मेघमाश्लिष्टसानुं, वप्रक्रीडापरिणतगजप्रेक्षणीयं ददर्श।'' (पूर्वमेघ/2) प्रस्तुत पंक्ति से ज्ञात होता है कि यक्ष ने मेघ को आषाढ़ के प्रथम दिन देखा था। अतः विकल्प (D) सही है।

32. विदिशा नगरी में कौन सी नदी थी?
(A) चर्मण्वती **(B) गम्भीरा**
(C) वेत्रवती **(D) शिप्रा**

	नदी किनारे स्थित	**नगर/नगरी**
(A)	चर्मण्वती	दशपुर
(B)	गम्भीरा	मालवा
(C)	**वेत्रवती**	**विदिशा**
(D)	शिप्रा	उज्जयिनी

अतः विकल्प (C) सही है।

33. 'कृतान्तः' का अर्थ है?
(A) मित्र के द्वारा लाया गया
(B) प्रियतम का समाचार
(C) दैव (भाग्य)
(D) कम बोलने वाली

व्याख्या– ''क्रूरस्तस्मिन्नपि न सहते सङ्गमं नौ कृतान्तः'' (उत्तरमेघ/44) अर्थात् क्रूर दैव उस चित्र में भी हम दोनों का मिलन सहन नहीं करता।

	शब्द	**अर्थ**
(A)	सुहृदुपनतः	मित्र के द्वारा लाया गया
(B)	कान्तोदन्तः	प्रियतम का समाचार
(C)	**कृतान्तः**	**दैव या भाग्य**
(D)	परिमितभाषिणी	कम बोलने वाली स्त्री

अतः विकल्प (C) सही है।

27. (C) 28. (B) 29. (C) 30. (A) 31. (D) 32. (C) 33. (C)

34. 'नागेन्द्र' का अर्थ है?
(A) श्रेष्ठ हाथी (B) पर्वतराज
(C) चन्द्रमा (D) समुद्र

व्याख्या– ''नागेन्द्रो निशिताङ्कुशेन समदो दण्डेन गोगर्दभौ'' (नीतिशतकम्/11) अर्थात् मतवाला हाथी तीखे अङ्कुश से, बैल और गधे डण्डे से वश में किये जा सकते।

	शब्द	अर्थ
(A)	**नागेन्द्रः**	**श्रेष्ठ हाथी**
(B)	नगेन्द्रः	पर्वतराज
(C)	रजनिकरः	चन्द्रमा
(D)	अर्णवः	समुद्र

अतः विकल्प (A) सही है।

35. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में कण्व ऋषि को किस अन्य नाम से वर्णित किया गया है?
(A) दुर्वासा (B) वशिष्ठ
(C) गौतमी (D) काश्यप

व्याख्या– * अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक में कण्व को **'काश्यप'** के नाम से भी वर्णित किया गया है।
* 'गौतमी' एवं 'दुर्वासा' भी अभिज्ञानशाकुन्तलम् के पात्र हैं, जबकि 'वशिष्ठ' उत्तररामचरितम् के पात्र हैं।

अतः विकल्प (D) सही है।

36. दुष्यन्त के वंश का नाम था?
(A) रघुवंश (B) पुरु
(C) काश्यप (D) कुशिक

	राजा/कवि	गोत्र/वंश
(A)	राम	रघुवंशी (सूर्यवंशी)
(B)	**दुष्यन्त**	**पुरुवंशी (चन्द्रवंशी)**
(C)	भवभूति	काश्यप
(D)	भारवि	कुशिक

अतः विकल्प (B) सही है।

37. उत्तररामचरित के तृतीय अङ्क का नाम है?
(A) छाया (B) चित्रदर्शन
(C) सम्मेलन (D) कौशल्याजनकयोग

	अङ्क	नाम
(A)	**तृतीय अङ्क**	**छाया**
(B)	प्रथम अङ्क	चित्रदर्शन
(C)	सप्तम अङ्क	सम्मेलन
(D)	चतुर्थ अङ्क	कौशल्याजनकयोग

द्वितीय अङ्क-पञ्चवटी प्रवेश, पञ्चम अङ्क- कुमार विक्रम, षष्ठ अङ्क- कुमार-प्रत्यभिज्ञान अतः विकल्प (A) सही है।

38. मुरला एवं तमसा कौन हैं?
(A) सीता की सखियाँ (B) सेविकाएँ
(C) तपस्विनियाँ (D) नदियाँ

व्याख्या– भवभूति कृत उत्तररामचरितम् नाटक में तमसा और मुरला **दो नदियाँ** है। इनका वर्णन तृतीय अङ्क में है। 'ततः प्रविशति नदीद्वयम्' अतः विकल्प (D) सही है।

39. ''त्वं जीवितम्'' का अर्थ है?
(A) तुम जीवित हो
(B) तुम जियो
(C) तुम जीवन हो
(D) तुम्हारे जीते जी

व्याख्या– ''त्वं जीवितं त्वमसि मे हृदयं द्वितीयम्'' (उत्तररामचरित 3/26) अर्थात् **'तुम मेरा जीवन हो,** तुम मेरा दूसरा हृदय हो!' अतः विकल्प (C) सही है।

40. ''हरि + रम्यः'' में किस वर्ण का लोप हुआ है?
(A) स् (B) र्
(C) विसर्ग (D) य्

व्याख्या– * 'हरिस् + रम्यः' इस दशा में सकार को 'ससजुषो रुः' (8/2/66) सूत्र से रु आदेश होकर 'हरिर् रम्यः' रूप बना।
* पुनः 'र्' के बाद र् होने से ''रो रि'' (8/3/14) सूत्र से पूर्व **र् का लोप** होकर 'हरि + रम्य' बना
* अन्त में ''ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः'' (6/3/111) सूत्र से 'अण्' (इ) के स्थान में दीर्घादेश होकर हरी रम्यः बना।

अतः विकल्प (B) सही है।

41. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में किस रीति का प्रयोग है?
(A) वैदर्भी रीति (B) गौडीरीति
(C) पाञ्चालीरीति (D) इनमें से कोई नहीं

	ग्रन्थ	मुख्य रीति
(A)	**अभिज्ञानशाकुन्तलम्**	**वैदर्भी रीति**
(B)	उत्तररामचरितम्	गौड़ी एवं वैदर्भी रीति
(C)	कादम्बरी	पाञ्चाली रीति

अतः विकल्प (A) सही है।

34. (A) 35. (D) 36. (B) 37. (A) 38. (D) 39. (C) 40. (B) 41. (A)

42. ''कोऽन्यो हुतवहाद् दग्धुं प्रभवति'' कथन है।
(A) प्रियंवदा का (B) अनसूया का
(C) कण्व का (D) गौतमी का

व्याख्या–
(A) 'कास्मिन्नापि पूजार्हेऽपराद्धा शून्यहृदया शकुन्तला'(अभि0,अङ्क-4) –प्रियंवदा का कथन
(B) **'कोऽन्यो हुतवहाद् दग्धुं प्रभवति'–अनसूया का कथन**
(C) 'सुतं त्वमपि सम्राजं सेव पूरुमवाप्नुहि'–कण्व का कथन
(D) 'वरः खल्वेषः नाशीः''(अभि0,अङ्क-4)–गौतमी का कथन अतः विकल्प (B) सही है।

43. 'अतिस्नेहः पापशङ्की' यह सूक्ति किस ग्रन्थ में है?
(A) नीतिशतकम् में
(B) उत्तररामचरितम् में
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में
(D) शिवराजविजयम् में

व्याख्या–
(A) 'पापान्निवारयति योजयते हिताय'– (नीतिशतकम्/66)
(B) ''सञ्जीवनौषधिरसो हृदि नु प्रसक्तः''– उत्तररामचरितम्/3/11
(C) **'अतिस्नेहः पापशङ्की'–अभिज्ञानशाकुन्तलम्/अङ्क–4**
(D) 'हिंस्रः स्वपापेन विहिंसितः खलः, साधुः समत्वेन भयाद् विमुच्यते'– शिवराजविजयम् का मङ्गलाचरण है जो भागवतपुराण से उद्धृत है। अतः विकल्प (C) सही है।

44. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में विष्कम्भक है?
(A) अङ्क के अन्त में (B) अङ्क के प्रारम्भ में
(C) अङ्क के मध्य में (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या– विष्कम्भक द्वारा भूत या भावी घटना की सूचना दी जाती है। अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क के **प्रारम्भ में विष्कम्भक का प्रयोग** है। अतः विकल्प (B) सही हैं।

45. किरातार्जुनीयम् महाकाव्य में सर्ग है?
(A) 18 (B) 17
(C) 19 (D) 50

	महाकाव्य	**सर्ग संख्या**
(A)	**किरातार्जुनीयम्**	**18**
(B)	कुमारसम्भवम्	17 (कुछ विद्वान् 8 सर्ग भी मानते हैं)
(C)	रघुवंशमहाकाव्यम्	19
(D)	हरविजयम्	50

अतः विकल्प (A) सही है।

46. 'अर्थगौरव' के लिए कौन कवि प्रसिद्ध हैं–
(A) माघ (B) दण्डी
(C) भारवि (D) कालिदास

	कवि	**प्रसिद्धि**
(A)	माघ	उपमा, पदलालित्य, अर्थगौरव
(B)	दण्डी	पदलालित्य
(C)	**भारवि**	**अर्थगौरव**
(D)	कालिदास	उपमा

अतः विकल्प (C) सही है।

47. बाण ने 'कादम्बरी' में किस रीति का प्रयोग किया है?
(A) गौडी (B) वैदर्भी
(C) पाञ्चाली (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या– बाणभट्ट ने कादम्बरी में पाञ्चाली रीति का प्रयोग किया है– ''शब्दार्थयोः समो गुम्फः पाञ्चालीरीतिरिष्यते''

	कवि	**रीति**
(A)	सुबन्धु	गौडीरीति
(B)	भर्तृहरि	वैदर्भी
(C)	**बाणभट्ट**	**पाञ्चाली**

अतः विकल्प (C) सही है।

48. 'रुचिरस्वरवर्णपदा रसभाववती जगन्मनो हरति' किस कवि की रचना के लिए कहा गया है?
(A) कालिदास (B) भवभूति
(C) बाणभट्ट (D) भारवि

व्याख्या–
(A) 'निर्गतासु न वा कस्य कालिदासस्य सूक्तिषु'–कालिदास के विषय में बाणभट्ट ने कहा।
(B) 'उत्तरे रामचरिते भवभूतिर्विशिष्यते'–भवभूति के विषय में विक्रमार्क ने कहा
(C) **'रुचिरस्वरवर्णपदा रसभाववती जगन्मनो हरति'**– बाणभट्ट के विषय में धर्मदास ने कहा
(D) 'प्रकृतिमधुरा भारविगिरः'–भारवि के विषय में श्रीधरदास ने कहा। अतः विकल्प (C) सही है।

42. (B) 43. (C) 44. (B) 45. (A) 46. (C) 47. (C) 48. (C)

49. 'विलासवती' किसकी पत्नी थी?
(A) शुकनास (B) तारापीड
(C) चन्द्रापीड (D) पुण्डरीक

	पति	पत्नी
(A)	शुकनास	मनोरमा
(B)	**तारापीड**	**विलासवती**
(C)	चन्द्रापीड	कादम्बरी
(D)	पुण्डरीक	महाश्वेता

अतः विकल्प (B) सही है।

50. चन्द्रापीड का विवाह किससे होता है?
(A) महाश्वेता (B) मनोरमा
(C) कादम्बरी (D) लक्ष्मी

व्याख्या– * बाणभट्ट कृत कादम्बरी कथा में **चन्द्रापीड का विवाह कादम्बरी के साथ** होता है। अतः विकल्प (C) सही है।
* 'मनोरमा' शुकनास की पत्नी है, और लक्ष्मी, श्वेतकेतु की पत्नी है।
* 'महाश्वेता' से पुण्डरीक प्रेम करता है।

51. मेघदूतम् में किस छन्द का प्रयोग है?
(A) स्रग्धरा (B) मन्दाक्रान्ता
(C) हरिणी (D) शिखरिणी

व्याख्या– सम्पूर्ण मेघदूतम् में **मन्दाक्रान्ता छन्द** का प्रयोग है। अतः विकल्प (B) सही है।

52. मेघदूतम् में मेघ को किस नदी से जल-ग्रहण करने की सलाह दी गई है?
(A) यमुना (B) गोदावरी
(C) जाह्नवी (D) नर्मदा

व्याख्या– मेघदूतम् में यक्ष मेघ को **रेवा (नर्मदा) नदी** का जल-ग्रहण करने की सलाह देता है। ''जम्बूकुञ्जप्रतिहतरयं तोयमादाय गच्छेः'' (पूर्वमेघ/20) अतः विकल्प (D) सही है।

53. 'मेघदूतम्' में यक्ष के शापान्त की अवधि मानी गयी है?
(A) तीन माह (B) चार माह
(C) दो माह (D) एक सप्ताह

व्याख्या– ''शापान्तो मे भुजगशयनादुत्थिते शार्ङ्गपाणौ शेषान्मासान्गमय चतुरो लोचने मीलयित्वा।'' (उत्तरमेघ/50) अर्थात् भगवान् के शेष-शय्या पर से उठते ही (आने वाली देवोत्थान एकादशी को) मेरा शाप समाप्त हो जाएगा। अतः **शेष चार मासों** को आखें मूदकर बिता डालो।
अतः विकल्प (B) सही है।

54. किस नाट्यकृति में गर्भाङ्क मिलता है?
(A) मालतीमाधवम् में (B) महावीरचरितम् में
(C) उत्तररामचरितम् में (D) स्वप्नवासवदत्तम् में

व्याख्या– * भवभूति कृत **उत्तररामचरित के 7वें अङ्क में गर्भाङ्क की योजना** है। अतः विकल्प (C) सही है।
* 'मालतीमाधवम्' और 'महावीरचरितम्' दोनों भवभूति की रचनायें हैं, जबकि स्वप्नवासवदत्तम्' भास की रचना है।

55. 'उत्तररामचरितम्' में किससे कुश एवं लव के जन्म का रहस्योद्घाटन होता है?
(A) विष्कम्भक द्वारा (B) प्रवेशक द्वारा
(C) चूलिका द्वारा (D) आकाशभाषित द्वारा

व्याख्या–
* विष्कम्भक–भूत और भावी घटनाओं की सूचना मध्यमश्रेणी के पात्रों द्वारा दी जाती है। इनकी भाषा संस्कृत होती है।
* विष्कम्भक का प्रयोग सदैव अङ्क के प्रारम्भ में होता है।
* उत्तररामचरितम् के तृतीय अङ्क में तमसा के कथन द्वारा **कुश एवं लव के जन्म की सूचना शुद्ध विष्कम्भक के द्वारा** दी गयी है। ''तदैव तत्र दारकद्वयं च प्रसूता''
अतः विकल्प (A) सही है।

56. 'सहयुक्तेऽप्रधाने सूत्र है?
(A) कर्मकारक का (B) करणकारक का
(C) सम्प्रदानकारक का (D) अपादानकारक का

	सूत्र	सम्बन्धित कारक
(A)	उपान्वध्याङ्वसः	कर्मकारक
(B)	**सहयुक्तेऽप्रधाने**	**करणकारक**
(C)	राधीक्ष्योर्यस्य विप्रश्नः	सम्प्रदानकारक
(D)	जनिकर्तुः प्रकृतिः	अपादानकारक

अतः विकल्प (B) सही है।

57. 'सूर्ये अस्तं गते गोपाः गृहम् अगच्छन्' में विभक्ति है?
(A) चतुर्थी (B) पञ्चमी
(C) सप्तमी (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या– ''यस्य च भावेन भावलक्षणम्'' (2/3/37) सूत्र से जहाँ एक क्रिया के घटित होने पर दूसरी क्रिया सूचित हो वहाँ पहली क्रिया के आश्रय वाचक शब्द में **सप्तमी विभक्ति** होती है यथा– सूर्ये अस्तं गते गोपाः गृहम् अगच्छन्।
अतः विकल्प (C) सही है।

49. (B) 50. (C) 51. (B) 52. (D) 53. (B) 54. (C) 55. (A) 56. (B) 57. (C)

58. 'बालक' शब्द का चतुर्थी एकवचन का रूप है?
(A) बालकेभ्यः (B) बालकाय
(C) बालकाभ्याम् (D) बालकात्

व्याख्या– 'बालक' अकारान्त पुंलिङ्ग शब्द का रूप चतुर्थी विभक्ति में "**बालकाय,** बालकाभ्याम् बालकेभ्यः" बनता है। पञ्चमी विभक्ति में–"बालकात्, बालकाभ्याम्, बालकेभ्यः" रूप बनता है। अतः विकल्प (B) सही है।

59. 'अस्मद्' शब्द सप्तमी एकवचन का रूप है?
(A) मया (B) मम
(C) मयि (D) माम्

व्याख्या– 'अस्मद्' शब्द का सातों विभक्तियों का एकवचन में रूप–अहम्, माम्, मया, मह्यम्, मत्, मम, **मयि।** अतः सप्तमी एकवचन में 'मयि' रूप बनता है। इसलिए विकल्प (C) सही है।

60. 'तेरह' के लिए संस्कृत में शब्द है?
(A) त्रयदशम् (B) त्रिदश
(C) त्रयोदश (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या– तेरह के लिए '**त्रयोदश**' संस्कृतशब्द है। अतः विकल्प (C) सही है।

61. कालिदास किस राजा के आश्रयदाता कवि थे?
(A) चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य (B) धवलचन्द्र
(C) अवन्तिवर्मा (D) यशोवर्मा

	कवि	**आश्रयदाता राजा**
(A)	**कालिदास**	**चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य**
(B)	नारायणपण्डित	धवलचन्द्र
(C)	आनन्दवर्धन	अवन्तिवर्मा
(D)	भवभूति	यशोवर्मा

अतः विकल्प (A) सही है।

62. 'रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय'–प्रस्तुत सूक्ति किस ग्रन्थ से उद्धृत है?
(A) कादम्बरी से (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से
(C) रघुवंशम् से (D) मेघदूतम् से

व्याख्या–
(A) 'अप्रत्ययबहुला च दिवसान्त'– (कादम्बरी/शुकनासोपदेश)
(B) 'मम विरहजां न त्वं वत्से शुचं गणयिष्यसि'– (अभिज्ञान/अङ्क 4)
(C) 'स्ववीर्यगुप्ता हि मनोः प्रसूतिः'–(रघुवंशम् 2/4)
(D) 'रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय'– पूर्वमेघ/20
अतः विकल्प (D) सही है।

63. उत्तररामचरित के तृतीय अङ्क में कुल कितने श्लोक हैं?
(A) 46 (B) 22
(C) 48 (D) 256

	ग्रन्थ	**श्लोक**
(A)	किरातार्जुनीयम् (प्रथमसर्ग)	46
(B)	अभिज्ञानशाकुन्तलम् (चतुर्थ अङ्क)	22
(C)	उत्तररामचरितम् (तृतीय अङ्क)	48
(D)	**उत्तररामचरितम् (सम्पूर्ण)**	**256**

अतः विकल्प (C) सही है।

64. 'बृहत्कथा' के लेखक है?
(A) नारायण पण्डित (B) विष्णुशर्मा
(C) गुणाढ्य (D) क्षेमेन्द्र

व्याख्या–

	कथा साहित्य	**लेखक**
(A)	हितोपदेश	नारायणपण्डित
(B)	पञ्चतन्त्रम्	विष्णुशर्मा
(C)	**बृहत्कथा**	**गुणाढ्य**
(D)	बृहत्कथामञ्जरी	क्षेमेन्द्र

अतः विकल्प (C) सही है।

65. "सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः" किस कवि का प्रिय श्लोक है?
(A) भारवि का (B) कालिदास का
(C) बाणभट्ट का (D) माघ का

व्याख्या– 'सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः (बिना विचार किये किसी भी कार्य को सहसा नहीं करना चाहिए) यह **भारवि का प्रिय श्लोक** है। अतः विकल्प (A) सही है।

66. निम्न में से कौन-सा युग्म सही नहीं है?
(A) मृच्छकटिकम्– शूद्रक
(B) वेणीसंहारम्– भट्टनारायण
(C) मुद्राराक्षसम्– विशाखदत्त
(D) राजतरङ्गिणी– क्षेमेन्द्र

व्याख्या– राजतरङ्गिणी, कल्हण की रचना है। अतः विकल्प (D) सही है।

58. (B) 59. (C) 60. (C) 61. (A) 62. (D) 63. (C) 64. (C) 65. (A) 66. (D)

67. 'किरातार्जुनीयम्' के प्रत्येक सर्ग का अन्तिम पद है?
(A) लक्ष्मी (B) विभु
(C) शिव (D) श्री

व्याख्या– * "दिनकृतमिव लक्ष्मीस्त्वां समभ्येतु भूयः" (किरात० 1/46) किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग की अन्तिम पंक्ति है, इसमें **'लक्ष्मी' पद का प्रयोग** हुआ है।
* इसीप्रकार किरातार्जुनीयम् के प्रत्येकसर्ग का अन्तिम पद लक्ष्मी है। अतः विकल्प (A) सही है।

68. किरातार्जुनीयम् में 'किरात' शब्द किसका बोधक है?
(A) कोल-भील (B) किरीटधारी
(C) शङ्कर (D) कार्तिकेय

व्याख्या– भारवि कृत महाकाव्य किरातार्जुनीयम् में 'किरात' शब्द **भगवान् शङ्कर का बोधक** है।
अतः विकल्प (C) सही है।

69. 'कवीनां कविषु वा कालिदासः श्रेष्ठः'' में प्रयुक्त विभक्ति है?
(A) चतुर्थी (B) सप्तमी
(C) पञ्चमी (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या– * "यतश्च निर्धारणम्" (2/3/41) सूत्र से किसी समुदाय से एक को पृथक् करना 'निर्धारण' कहलाता है।
* जिससे निर्धारण होता है उसमें **षष्ठी और सप्तमी विभक्ति** होती है यथा–कवीनां कविषु वा कालिदासः श्रेष्ठः।
अतः विकल्प (B) सही है।

70. शकुन्तला के साथ दुष्यन्त के राजदरबार तक कौन गयी थी?
(A) प्रियंवदा (B) गौतमी
(C) अनसूया (D) मालविका

व्याख्या– "त्वया सह गौतमी यास्यति" (अभि० शा० अङ्क 4) कण्व के इस कथन से ज्ञात होता है कि– शकुन्तला के साथ दुष्यन्त के दरबार तक **गौतमी जाती है** तथा इसके साथ शार्ङ्गरव और शारद्वत भी जाते हैं।
अतः विकल्प (B) सही है।

71. 'चौरभयम् में कौन-सा समास है?
(A) द्वितीया तत्पुरुष (B) तृतीया तत्पुरुष
(C) षष्ठी तत्पुरुष (D) पञ्चमी तत्पुरुष

व्याख्या–
(A) "द्वितीया श्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नैः" (2/1/24) सूत्र से 'कष्टम् आपन्नः = कष्टापन्नः' में द्वितीया तत्पुरुषसमास है।
(B) "पूर्वसदृशसमोनार्थकलहनिपुणमिश्रश्लक्ष्णैः" (2/1/31) सूत्र से 'गुडेन मिश्रं=गुडमिश्रम्' में तृतीया तत्पुरुषसमास है।
(C) "षष्ठी" (2/2/8) सूत्र से 'राज्ञः पुरुषः = राजपुरुषः' में षष्ठी तत्पुरुषसमास है।
(D) "पञ्चमी भयेन" (2/1/37) सूत्र से 'चौराद् भयं = चौरभयम्' में **पञ्चमी तत्पुरुषसमास है।**
अतः विकल्प (D) सही है।

72. 'तथेति' का सन्धि विच्छेद होगा?
(A) तथ + इति (B) तथा + तेति
(C) तथा + इति (D) तथा + इत

व्याख्या– "आद्गुणः" (6/1/87) सूत्र से यदि अ/आ के बाद स्वर हो तो दोनों के स्थान में गुण आदेश हो।
यथा–**तथा + इति** = तथेति। (आ + इ = ए)
अतः विकल्प (C) सही है।

73. निम्नलिखित में कौन-सा कथन असत्य है?
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक में सात अङ्क हैं।
(B) शकुन्तला की कथा महाभारत के आदिपर्व में वर्णित है।
(C) कालिदास वैदर्भी रीति के कवि हैं।
(D) मालविकाग्निमित्रम् नाटक में सात अङ्क हैं।

व्याख्या– विकल्प (D) असत्य है, क्योंकि मालविकाग्निमित्रम् कालिदास कृत नाटक है। जिसमें पाँच अङ्क हैं।
अतः विकल्प (D) सही है।

74. महाभारत को जाना जाता है?
(A) जयसंहिता (B) आदिकाव्य
(C) सौप्तिक संहिता (D) अरण्यसंहिता

व्याख्या– * महाभारत को **'जयसंहिता'** भी कहा जाता है।
* महाभारत में एक लाख श्लोक हैं। इसके रचयिता "वेदव्यास" हैं।
* रामायण का अपर नाम "चतुर्विंशतिसाहस्री संहिता" है।
* रामायण को 'आदिकाव्य' कहते हैं। वाल्मीकि को 'आदिकवि' कहा जाता है। अतः विकल्प (A) सही है।

67. (A) 68. (C) 69. (B) 70. (B) 71. (D) 72. (C) 73. (D) 74. (A)

75. संस्कृत में दस हजार होगा?
(A) सहस्त्रम् (B) नियुतम्
(C) लक्षम् (D) अयुतम्

व्याख्या–

	संख्या	**संस्कृत शब्द**
(A)	एक हजार	सहस्त्रम्
(B)	दस लाख	नियुतम्/प्रयुतम्
(C)	एक लाख	लक्षम्
(D)	**दस हजार**	**अयुतम्**

नोट–सहस्त्रम्, नियुतम्, लक्षम्, अयुतम्, सभी नपुंसकलिङ्ग शब्द हैं। अतः विकल्प (D) सही है।

76. `99' का संस्कृत शब्दात्मक रूप होगा?
(A) नवनवतिः (B) त्रिनवतिः
(C) अष्टानवतिः (D) नवतिः

व्याख्या–

	संख्या	**शब्द**
(A)	**99**	**नवनवतिः**
(B)	93	त्रिनवतिः/त्रयोनवतिः
(C)	98	अष्टानवतिः/अष्टनवतिः
(D)	90	नवतिः

अतः विकल्प (A) सही है।

77. अनुनासिक वर्णों की संख्या है?
(A) तीन (B) चार
(C) पाँच (D) सात

व्याख्या– अनुनासिक वर्णों का उच्चारण मुख और नासिका दोनों से होता है। ''मुखनासिकावचनोऽनुनासिकः'' (1.1.8) **इनकी संख्या 5** है। यथा–
'ञमङणनानां नासिका च'–**ञ्, म्, ङ्, ण्, न्**
अतः विकल्प (C) सही है।

78. ''नारिकेलफलसम्मितं वचः'' किस कवि के बारे में कहा जाता है?
(A) महाकवि बाण (B) कालिदास
(C) भास (D) भारवि

व्याख्या– प्रसिद्ध टीकाकार मल्लिनाथ ने **भारवि** की रचना की उपमा नारियल के फल से दी है। जो ऊपर से कठोर, किन्तु अन्दर से कोमल और सरस होता है। ''नारिकेलफलसम्मितं वचो भारवेः सपदि तद् विभज्यते''–मल्लिनाथ।
अतः विकल्प (D) सही है।

79. किरातार्जुनीयम् में कितने सर्ग हैं?
(A) 28 (B) 18
(C) 22 (D) 13

व्याख्या–

	ग्रन्थ	**सर्ग**
(A)	बुद्धचरितम्	28
(B)	**किरातार्जुनीयम्**	**18**
(C)	भट्टिकाव्य (रावणवध)	22
(D)	राघवपाण्डवीयम्	13

अतः विकल्प (B) सही है।

नोट–यह प्रश्न इसी प्रश्नपत्र में प्रश्न संख्या 45 में एक बार पूछा जा चुका है। कृपया प्रश्न संख्या 45 देखें।

80. कादम्बरी में वर्णित शुक पूर्वजन्म में था?
(A) शूद्रक (B) वैशम्पायन
(C) तारापीड (D) चन्द्रापीड

व्याख्या– बाणभट्ट कृत कादम्बरी में तीन जन्मों की कथा है। जिसमें शुक के पूर्वजन्म का नाम वैशम्पायन था। यथा–
1. पुण्डरीक 2. **वैशम्पायन** 3. शुक

81. मेघदूतम् की कथावस्तु विभक्त है?
(A) खण्डों में (B) निःश्वासों में
(C) अध्यायों में (D) सर्गों में

व्याख्या–

	ग्रन्थ	**विभाजन**
(A)	**मेघदूतम्**	**खण्डों में** (पूर्वमेघ, उत्तरमेघ)
(B)	शिवराजविजयम्	3 विराम, 12 निःश्वास
(C)	कविकण्ठाभरण (क्षेमेन्द्र)	5 अध्याय, 55 कारिकाएँ
(D)	ऋतुसंहार	6 सर्ग, 144 श्लोक

अतः विकल्प (A) सही है।

82. 'रघुवंश' है?
(A) महाकाव्य (B) गीतिकाव्य
(C) नाटक (D) व्याकरणग्रन्थ

व्याख्या–

	ग्रन्थ	**विधा**
(A)	**रघुवंशम्**	**महाकाव्य**
(B)	गङ्गालहरी	गीतिकाव्य
(C)	बालरामायणम्	नाटक
(D)	अष्टाध्यायी	व्याकरणग्रन्थ

अतः विकल्प (A) सही है।

75. (D) 76. (A) 77. (C) 78. (D) 79. (B) 80. (B) 81. (A) 82. (A)

83. ''एको रसः करुण एव निमित्तभेदाद्'' से सम्बद्ध रचना है?
(A) मेघदूतम् **(B) वाल्मीकिरामायणम्**
(C) उत्तररामचरितम् **(D) नीतिशतकम्**

व्याख्या–
(A) 'एकः सख्यास्तव सह मया वामपादाभिलाषी'–मेघदूतम्
(B) 'एको हि कुरुते पापं कालपाशवशं गतः'–वाल्मीकि रामायण
(C) 'एको रसः करुण एव निमित्तभेदाद्'–**उत्तररामचरितम्।**
(D) 'एको देवः केशवो वा शिवो वा'–नीतिशतकम्
अतः विकल्प (C) सही है।

84. विदूषक रहित रचना है?
(A) उत्तररामचरितम् **(B) मृच्छकटिकम्**
(C) शिशुपालवधम् **(D) नैषधीयचरितम्**

व्याख्या– उत्तररामचरितम् विदूषक रहित रचना है। मृच्छकटिकम् का विदूषक 'मैत्रेय' है। शिशुपालवधम् और नैषधीयचरितम् दोनों महाकाव्य हैं। अतः विकल्प `A' सही है।

85. 'भू' धातु परस्मैपद का लङ्लकार मध्यमपुरुष एकवचन का रूप है?
(A) अभवन् **(B) भवतु**
(C) अभवः **(D) भवताम्**

व्याख्या– भू धातु परस्मैपद लङ्लकार का रूप प्रथमपुरुष में–अभवत् अभवताम् अभवन् बनता है
मध्यमपुरुष में–**अभवः** अभवतम् अभवत
लोट्लकार प्रथमपुरुष में–भवतु भवताम् भवन्तु
अतः विकल्प (C) सही है।

86. 'सतीर्थ्यः' का अर्थ है?
(A) सहपाठी **(B) सूर्य**
(C) थाल्हा **(D) दोना**

व्याख्या– ''तावत् तस्यैव सतीर्थ्योऽपरस्तत्समानवयाः कस्तुरिका–रेणुरूषित इव श्यामः।'' (शिवराजविजयम्)

	शब्द	**अर्थ**
(A)	**सतीर्थ्यः**	**सहपाठी/सहाध्यायी**
(B)	इनः	स्वामी
(C)	आलवालम्	थाल्हा
(D)	पुटकम्	दोना

अतः विकल्प (A) सही है।

87. योगिराज किस राजा के काल में प्रथमबार समाधिस्थ हुए थे?
(A) युधिष्ठिर **(B) विक्रमादित्य**
(C) यवनकाल **(D) हर्षवर्धन**

व्याख्या– ''यौधिष्ठिरे समये कलितसमाधिरहं वैक्रम-समये उदस्थाम्। पुनश्च वैक्रम-समये समाधिमाकलय्य अस्मिन् दुराचारमये समयेऽहमुत्थितोऽस्मि। (शिवराज0प्र0नि0)
योगिराज के इस कथन से ज्ञात होता है कि–
* योगिराज प्रथमबार युधिष्ठिर के समय में समाधि लगाते हैं और विक्रमादित्य के समय में उठते हैं।
* द्वितीय बार विक्रमादित्य के समय में समाधि लगाते हैं, और दुराचारसमय (यवनकाल) में उठते हैं।
* फिर कहते हैं कि मैं पुनः जाकर समाधिस्थ होऊँगा अर्थात् तृतीयबार यवनकाल में समाधिस्थ होंगे।

अतः विकल्प (A) सही है।

88. 'अपजिहीर्षुः' में कौन सी धातु है?
(A) आप् **(B) जि**
(C) हृ **(D) हृष्**

व्याख्या– ''मा स्म गमदन्योऽपि कश्चित् कन्यकामपजिहीर्षुरिति।'' (शिवराजविजयम्) 'अपजिहीर्षुः' सन्नन्तप्रयोग है। जिसका अर्थ है– अपहरण करने की इच्छा वाला। **'अप + हृ + सन् + उ' = अपजिहीर्षुः' में अप उपसर्ग एवं हृ धातु है।** अतः विकल्प (C) सही है।

89. 'चन्द्रहास' का अर्थ है?
(A) उदीयमान चन्द्र **(B) तलवार**
(C) चन्द्र का उपहास
(D) चाँदनी के समान ह्रास वाला

व्याख्या– चन्द्रहास का अर्थ **'तलवार'** है
''कृपाणः, करपालः, असिः, खड्गः'' आदि शब्द चन्द्रहास के पर्यायवाची शब्द हैं। अतः विकल्प (B) सही है।

90. 'वर्णिलिङ्गी' का अर्थ है।
(A) वर्ण एवं लिङ्ग **(B) वर्णी एवं चिह्न**
(C) ब्रह्मचारी के वेश वाला **(D) शिव**

व्याख्या– * वर्णिलिङ्गी का अर्थ है–**ब्रह्मचारी** वेश वाला।
* ब्रह्मचारी की वेशभूषा से युक्त व्यक्ति को 'वर्णिलिङ्गी' कहा जाता है।
* ''वर्णः प्रशस्तिः अस्ति अस्य इति वर्णी, तस्य लिङ्गं चिह्नं वर्णिलिङ्गम्। वर्णिलिङ्गम् अस्य अस्ति इति वर्णिलिङ्गी।''

अतः विकल्प (C) सही है।

83. (C)	**84. (A)**	**85. (C)**	**86. (A)**	**87. (A)**	**88. (C)**	**89. (B)**	**90. (C)**

91. 'उह्यते' में कौन सी धातु है?
(A) ऊह (B) या
(C) वह् (D) ह्वा

व्याख्या– ''गुणानुरागेण शिरोभिरुह्यते'–(किरात० 1/21) **वह् धातु** का रूप कर्मवाच्य में–लट्लकार प्रथमपुरुष में– ''उह्यते उह्येते उह्यन्ते'' बनता है। अतः विकल्प (C) सही है।

92. 'पत्यौ' में कौन सी विभक्ति है?
(A) प्रथमा द्विवचन (B) द्वितीया द्विवचन
(C) तृतीया एकवचन (D) सप्तमी एकवचन

व्याख्या–
(A) 'पति' इकारान्त पुंलिङ्ग का रूप प्रथमाविभक्ति में– 'पतिः, पती, पतयः' बनता है।
(B) द्वितीयाविभक्ति में–''पतिम् पती पतीन्'' बनता है।
(C) तृतीयाविभक्ति में–'पत्या पतिभ्याम् पतिभिः'।
(D) सप्तमी विभक्ति में–''**पत्यौ** पत्योः पतिषु'' रूप बनता है। अतः विकल्प (D) सही है।

93. यक्ष का प्रवास किस पर्वत पर था?
(A) देवगिरि (B) नीलगिरि
(C) रामगिरि (D) उदयगिरि

व्याख्या– ''स्निग्धच्छायातरुषु वसतिं रामगिर्याश्रमेषु''(पूर्वमेघ/1) अर्थात् (यक्ष) घनी छाया से युक्त वृक्षों वाले **रामगिरि पर्वत** के आश्रमों में निवास करने लगा।
अतः विकल्प (C) सही है।

94. यक्ष की पत्नी कहाँ रहती थी?
(A) अमरावती (B) विदिशा
(C) उज्जयिनी (D) अलकापुरी

व्याख्या– * ''न त्वं दृष्ट्वा न पुनरलकां ज्ञास्यसे कामचारिन्''। (पूर्वमेघ/66)
* यक्ष की पत्नी विशालाक्षी '**अलकापुरी**' में रहती थी।
* 'विदिशा' शूद्रक की राजधानी है।
* 'उज्जयिनी' तारापीड की राजधानी थी
* 'अमरावती' इन्द्र की पुरी है। अतः विकल्प (D) सही है।

95. यक्ष का स्वामी कौन था?
(A) कुबेर (B) यम
(C) इन्द्र (D) वरुण

व्याख्या– * ''श्रुत्वा वार्तां जलदकथितां तां धनेशोऽपि सद्यः'' (उत्तरमेघ/प्रक्षिप्त)
प्रस्तुत पंक्ति में धनेशः, कुबेर के लिए प्रयुक्त है।
* ''सन्देशं मे हर धनपतिक्रोधविश्लेषितस्य'' यहाँ 'धनपति' का अर्थ भी 'कुबेर' है। अतः **यक्ष का स्वामी कुबेर** था अतः विकल्प (A) सही है।

96. गौतमी कौन थी?
(A) शकुन्तला की सखी (B) वृद्धा तापसी
(C) आश्रम की परिचारिका (D) कण्व की पत्नी

व्याख्या– कालिदास कृत अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में गौतमी नामक स्त्रीपात्र का उल्लेख है। जो कण्वाश्रम की अध्यक्षा तथा **एक वृद्धा तापसी** भी है।
अतः विकल्प (B) सही है।

97. शकुन्तला का दुष्यन्त के साथ विवाह किस विधि से हुआ था?
(A) ब्रह्म (B) गान्धर्व
(C) प्राजापत्य (D) दैव

व्याख्या– * ''यद्यपि गान्धर्वेण विधिना निर्वृत्तकल्याणा शकुन्तलाऽनुरूपभर्तृगामिनी संवृत्तेति'' अर्थात् गान्धर्व विधि से सम्पन्न विवाह वाली, शकुन्तला अपने योग्य पति को प्राप्त हो गयी है। (अभिज्ञान अङ्क-04)
* अनसूया के इस कथन से स्पष्ट है कि **शकुन्तला का दुष्यन्त के साथ गान्धर्व विवाह** हुआ था।
नोट–'कल्याण' का शाब्दिक अर्थ 'विवाह' है क्योंकि कालिदास दक्षिण भारत के थे और आज भी दक्षिण भारत में विवाह को ''कल्याणम्'' कहते हैं। गान्धर्वविवाह को हिन्दी में प्रेमविवाह और आधुनिक काल में प्रचलित Love marriage गान्धर्वविवाह का ही प्रतिरूप है। अतः विकल्प (B) सही है।

98. ''वामाः कुलस्याधयः'' में 'वामा' का अर्थ है?
(A) बायीं ओर स्थित (B) सुन्दर
(C) प्रतिकूल (D) महिला

व्याख्या– * ''यान्त्येवं गृहिणीपदं युवतयो वामाः कुलस्याधयः'' (अभिज्ञान 4/18) प्रस्तुत पंक्ति में कण्व भारतीय संस्कृति के अनुरूप अपनी पालित पुत्री शकुन्तला को आदर्श गृहिणी होने का उपदेश देते हुए कहते हैं कि–इसप्रकार युवतियाँ गृहस्वामिनी पद को प्राप्त कर लेती हैं, और इसके प्रतिकूल आचरण करने वाली युवतियाँ कुल के लिए आधि (मानसिक कष्ट का कारण) बन जाती हैं।
* अतः यहाँ '**वामा**' **का अर्थ प्रतिकूल** है।
अतः विकल्प (C) सही है।

91. (C) 92. (D) 93. (C) 94. (D) 95. (A) 96. (B) 97. (B) 98. (C)

99. ''भूयिष्ठं भव दक्षिणा परिजने'' में 'परिजन' का अर्थ है?
(A) सौत (B) अत्यधिक
(C) उदार (D) सेवकजन

व्याख्या– ''भूयिष्ठं भव दक्षिणा परिजने भाग्येष्वनुत्सेकिनी'' (अभिज्ञान० 4/18) अर्थात्–सेवक-सेविकाओं के प्रति अत्यधिक उदार रहना और अच्छे भाग्य पर अभिमान मत करना।

	शब्द	अर्थ
(A)	सपत्नी	सौत
(B)	भूयिष्ठम्	अत्यधिक
(C)	दक्षिणा	उदार
(D)	**परिजन**	**सेवकजन/आश्रितजन**

नोट– भूयिष्ठं में 'बहु + इष्ठन्' प्रत्यय है।
अतः विकल्प (D) सही है।

100. 'विचिन्त्य' में कौन-सा प्रत्यय है?
(A) ल्यप् (B) क्विप्
(C) कनिन् (D) यत्

व्याख्या–

	शब्द	प्रत्यय
(A)	**विचिन्त्य**	**वि + चिन्त् + ल्यप्**
(B)	श्रीः	श्रिञ् + क्विप्
(C)	श्वा	श्वि + कनिन्
(D)	चेयम्	चि + यत्

अतः विकल्प (A) सही है।

101. 'पठ्' धातु के विधिलिङ् में प्रथमपुरुष बहुवचन का रूप होता है?
(A) पठानि (B) पठेयुः
(C) अपठाव (D) पठन्ति

व्याख्या–
(A) पठ् धातु का रूप लोट्लकार उत्तमपुरुष में–पठानि, पठाव, पठाम, बनता है।
(B) विधिलिङ् प्रथमपुरुष में–'पठेत्, पठेताम्, **पठेयुः**'
(C) लङ्लकार उत्तमपुरुष में–'अपठम्, अपठाव, अपठाम'
(D) लट्लकार प्रथमपुरुष में–'पठति, पठतः, पठन्ति'
अतः विकल्प (B) सही है।

102. गम् धातु लृट्लकार उत्तमपुरुष में एकवचन का रूप है?
(A) गमिष्यामि (B) गच्छताम्
(C) अगच्छत् (D) अगच्छन्

व्याख्या–
(A) गम् धातु लृट्लकार उत्तमपुरुष में–
गमिष्यामि, गमिष्यावः, गमिष्यामः रूप बनता है।
(B) लोट्लकार प्रथमपुरुष में–'गच्छतु, गच्छताम्, गच्छन्तु'
(C)+(D) लङ्लकार प्रथमपुरुष में–'अगच्छत्, अगच्छताम्, अगच्छन्' रूप बनता है।
अतः विकल्प (A) सही है।

103. हन् धातु से वर्तमानकाल में प्रथमपुरुष एकवचन का शुद्ध रूप होता है?
(A) हनति (B) घ्नन्ति
(C) हन्ति (D) हनन्ति

व्याख्या– * हन् धातु परस्मैपद लट्लकार प्रथमपुरुष में–**'हन्ति**, हतः, घ्नन्ति' रूप बनता है।
* हनति, हनन्ति रूप हन् धातु के दसों लकारों में कहीं नहीं बनते हैं। अतः विकल्प (C) सही है।

104. निम्नांकित में शुद्ध वाक्य कौनसा है?
(A) युवां पुस्तकं पठथ
(B) यूयं पुस्तकं पठथम्
(C) यूयं पुस्तकं पठथ
(D) आवां पुस्तक पठथ

व्याख्या– कर्ता के अनुसार क्रिया का प्रयोग होता है, इसलिए यहाँ मध्यमपुरुष बहुवचन की क्रिया के साथ मध्यमपुरुष बहुवचन के कर्ता का प्रयोग होकर–**'यूयं पुस्तकं पठथ'** शुद्ध वाक्य है। अतः विकल्प (C) सही है।

105. इनमें शुद्ध वाक्य है–
(A) बालिका जलात् मुखं प्राक्षालयति
(B) बालिका जले मुखं प्रक्षालयति
(C) बालिका जलेन मुखं प्रक्षालयति
(D) बालिका जलानि मुखं प्रक्षालयति

व्याख्या– ''साधकतमं करणम्'' (1/4/42) सूत्र से क्रिया की सिद्धि में जो पदार्थ सबसे अधिक सहायक होता है, उसकी करणसंज्ञा होकर उसमें तृतीया विभक्ति का विधान होता है। यथा–**बालिका जलेन मुखं प्रक्षालयति।** (बालिका जल से मुख धोती है) अतः विकल्प (C) सही है।

99. (D) 100. (A) 101. (B) 102. (A) 103. (C) 104. (C) 105. (C)

106. ''शोकक्षोभे च हृदयं प्रलापैरेव धार्यते''–उक्ति है?
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् की
(B) स्वप्नवासवदत्तम् की
(C) उत्तररामचरितम् की
(D) मृच्छकटिकम् की

व्याख्या– भवभूति विरचित उत्तररामचरितम् नाटक के तृतीय अङ्क में तमसा राम को विलाप करते हुए देखकर कहती है कि– ''शोकजन्य क्षोभ में हृदय विलाप के द्वारा ही बचाया जाता है।'' **(उत्तररामचरितम् 3/29)** अतः विकल्प (C) सही है।

107. 'ओ' के उपरान्त यदि कोई स्वर आवे तो उसके स्थान पर हो जाता है?
(A) अय् **(B) अव्**
(C) आय् **(D) आव्**

व्याख्या– ''एचोऽयवायावः (6/1/78)'' सूत्र से एच् प्रत्याहार (ए, ओ, ऐ, औ) के बाद कोई स्वर आये तो उसके स्थान पर क्रमशः अय्, अव्, आय्, आव् आदेश हो जाता है। यथा–
(A) हरे + ए = हरये (ए + ए = अय्)
(B) **विष्णो + ए = विष्णवे (ओ + ए = अव्)**
(C) नै + अकः = नायकः (ऐ + अ = आय्)
(D) पौ + अकः = पावकः (औ + अ = आव्)
अतः विकल्प (B) सही है।

108. 'वाक् + ईशः' = वागीशः में सन्धि का सूत्र है?
(A) झलां जश् झशि **(B) झलां जशोऽन्ते**
(C) खरि च **(D) झयो होऽन्यतरस्याम्**

व्याख्या–
(A) ''झलां जश् झशि'' (8/4/53) सूत्र से बुध् + धिः = बुद्धिः में व्यञ्जन सन्धि है।
(B) **''झलां जशोऽन्ते''** (8/2/39)" सूत्र से पदान्त झल् के स्थान में जश् आदेश हो जाता है। यथा– वाक् + ईशः = वागीशः
(C) ''खरि च'' (8/4/55) सूत्र से उद् + थानम् = उत्थानम् में सन्धि हुई।
(D) ''झयो होऽन्यतरस्याम्'' (8/4/62)" सूत्र से वाक् + हरिः = वाग्घरिः में व्यञ्जनसन्धि है।
अतः विकल्प (B) सही है।

109. 'महाराजः' में समास है?
(A) द्विगु **(B) द्वन्द्व**
(C) कर्मधारय **(D) तत्पुरुष**

व्याख्या–
(A) पञ्चानां खट्वानां समाहारः = पञ्चखट्वा/पञ्चखट्वी में द्विगुसमास है।
(B) ''विशिष्टलिङ्गो नदीदेशोऽग्रामाः'' (2/4/7) सूत्र से 'गङ्गा च शोणश्च = गङ्गाशोणम्' में द्वन्द्वसमास में समाहारवद्भाव (नपुंसकलिङ्ग, एकवद्भाव) किया गया।
(C) 'राजाहः सखिभ्यष्टच्' (5/4/91) सूत्र से **'महान् चासौ राजा = महाराजः'** में समासान्त 'टच्' प्रत्यय होकर ''विशेषणं विशेष्येण बहुलम्'' (2.1.57) सूत्र से **कर्मधारयसमास** है।
(D) ''सप्तमी शौण्डैः'' (2/1/40) सूत्र से 'चक्रे बन्धः = चक्रबन्धः' में सप्तमी तत्पुरुषसमास है।
अतः विकल्प (C) सही है।

110. 'पीताम्बरः' में कौन-सा समास है?
(A) तत्पुरुष **(B) बहुव्रीहि**
(C) द्विगु **(D) द्वन्द्व**

व्याख्या–

	पद	**समास**
(A)	यूपदारु	तत्पुरुष
(B)	**पीताम्बरः**	**बहुव्रीहि**
(C)	चतुर्युगम्	द्विगु
(D)	हरिहरौ	द्वन्द्व

अतः विकल्प (B) सही है।

111. ''आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महारिपुः।
नास्त्युद्यमसमो बन्धुः कृत्वा यं नावसीदति॥''
इस श्लोक में किसका महत्त्व प्रतिपादित है?
(A) ज्ञान का **(B) धर्म का**
(C) कर्म का **(D) मित्र का**

व्याख्या– * प्रस्तुत श्लोक में भर्तृहरि कहते हैं कि– आलस्य निश्चित रूप से मनुष्यों के शरीर में स्थित महान् शत्रु है। उद्यम के समान कोई बन्धु नहीं है, जिसे करके मनुष्य दुःख नहीं पाता है। (नीतिशतकम्/कर्मपद्धति) अतः इस श्लोक में **कर्म का महत्त्व** बतलाया गया है।
अतः विकल्प (C) सही है।

106. (C) 107. (B) 108. (B) 109. (C) 110. (B) 111. (C)

112. ''सेवाधर्मो परमगहनो योगिनामप्यगम्यः'' कथन है?
(A) भवभूति का (B) भर्तृहरि का
(C) कालिदास का (D) भारवि का

व्याख्या–
(A) ''सस्वेदरोमाञ्चितकम्पिताङ्गी''(भवभूति/उत्तररामचरितम्-3/42)
(B) ''सेवाधर्मो परमगहनो योगिनामप्यगम्यः'' भर्तृहरि/नीतिशतकम्
(C) 'सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम्'' (कालिदास/अभिज्ञान-49)
(D) ''सदानुकूलेषु हि कुर्वते रतिम्'' (भारवि/किरातार्जुनीयम्–1/5)
अतः विकल्प (B) सही है।

113. ''विधिरहो बलवानिति मे मतिः'' सूक्ति उद्धृत है?
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से
(B) किरातार्जुनीयम् से
(C) उत्तररामचरितम् से
(D) नीतिशतकम् से

व्याख्या–
(A) ''विभवगुरुभिः कृत्यैस्तस्य प्रतिक्षणमाकुला'' (अभिज्ञान0 4/19)
(B) ''विधीयतां तत्र विधेयमुत्तरम्'' (किरातार्जुनीयम् 1/25)
(C) 'विरहव्यथेव वनमेति जानकी'' (उत्तर0 3/4)
(D) **''विधिरहो बलवानिति मे मतिः'' (नीतिशतकम्-85) से**
अतः विकल्प (D) सही है।

114. साहित्य, सङ्गीत एवं कला से अपरिचित व्यक्ति होता है?
(A) परममूर्ख (B) परमबुद्धिमान
(C) परमपशु (D) परमदुष्ट

व्याख्या– ''साहित्य–सङ्गीत-कलाविहीनः,
साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः'' (अज्ञपद्धति)
साहित्य, संगीत और कला से अपरिचित व्यक्ति बिना सींग एवं पूँछ का **साक्षात् पशु** है।
''तृणं न खादन्नपि जीवमान-स्तद्भागधेयं **परमं पशूनाम्''**।
(नीतिशतकम्) अतः विकल्प (C) सही है।

115. योगिराज पुनः कब समाधिस्थ हुए?
(A) युधिष्ठिर के समय (B) विक्रमादित्य के समय
(C) भोजराज के समय (D) पृथ्वीराज के समय

व्याख्या– इसका विकल्प (B) सही है।
नोट–इस प्रश्न की विस्तृत व्याख्या के लिए प्रश्न संख्या-87 देखें।

116. किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग में छन्द है?
(A) वसन्ततिलका (B) उपेन्द्रवज्रा
(C) वंशस्थ (D) उपजाति

व्याख्या– भारवि कृत किरातार्जुनीयम् महाकाव्य के प्रथमसर्ग में (1/44) श्लोक तक **वंशस्थ छन्द** है तथा 45वें एवं 46वें श्लोक में क्रमशः पुष्पिताग्रा एवं मालिनी छन्द है।
अतः विकल्प (C) सही है।
नोट–कृपया प्रश्न संख्या-30 भी देखें।

117. 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः'' उक्ति है?
(A) युधिष्ठिर की (B) दुर्योधन की
(C) वनेचर की (D) द्रौपदी की

व्याख्या– * 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः' अर्थात् हितकारी और प्रियवाणी दुर्लभ होती है। (किरात0 1/4)
* उपर्युक्त पंक्ति **वनेचर की उक्ति** है। किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में युधिष्ठिर और दुर्योधन की एक भी उक्ति नहीं है। केवल वनेचर एवं द्रौपदी की उक्तियाँ है।
अतः विकल्प (C) सही है।

118. ''अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता'' सूक्ति किसके लिए कथित है?
(A) दुर्योधन के विषय में (B) युधिष्ठिर के विषय में
(C) भीम के विषय में (D) द्रौपदी के विषय में

व्याख्या–
(A) ''अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता''– (किरात. 1/23)
यह उक्ति दुर्योधन के विषय में है।
(B) ''पुरोपनीतं नृप! रामणीयकं, द्विजातिशेषेण यदेतदन्धसा'' युधिष्ठिर के विषय में (किरात. 1/39)
(C) ''परिभ्रमँल्लोहितचन्दनोचितः पदातिरन्तर्गिरि रेणुरूषितः'' भीम के विषय में (किरात. 1/34)
(D) ''तथापि वक्तुं व्यवसायन्ति मां, निरस्तनारीसमया दुराधयः'' (किरात. 1/28)
द्रौपदी के विषय में। अतः विकल्प (A) सही है।

112. (B) 113. (D) 114. (C) 115. (B) 116. (C) 117. (C) 118. (A)

119. 'पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम्' यह उक्ति किस ग्रन्थ में है?
(A) नीतिशतकम्' में (B) किरातार्जुनीयम् में
(C) मुद्राराक्षसम् में (D) शिशुपालवधम् में

व्याख्या–
(A) 'परोपकारैर्न तु चन्दनेन'–(नीतिशतकम्/63)
(B) **'पराभवोप्युत्सव एव मानिनाम्'–(किरात. 1/41)**
(C) 'परायत्तःप्रीतेः कथमिव रसं वेत्ति पुरुषः'–'मुद्राराक्षस/अङ्क 3)
(D) 'परिभवोऽरिभवो हि सुदुःसहः'–(शिशुपाल० 6/45)
अतः विकल्प (B) सही है।

120. 'शमेन सिद्धिं मुनयो न भूभृतः' यह कथन किसका है।
(A) द्रौपदी का (B) वनेचर का
(C) दुर्योधन का (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या– प्रस्तुत सूक्ति में **द्रौपदी**, युधिष्ठिर को उलाहना देते हुए कहती है कि–निष्काम तपस्वीजन शान्ति के द्वारा (काम, क्रोध आदि) शत्रुओं को जीतकर सिद्धि प्राप्त करते हैं, राजा नहीं। (किरात० 1/42) अतः विकल्प (A) सही है।

121. 'बलिं याचते वसुधाम्' में किस सूत्र से 'बलि' की कर्मसंज्ञा हुई है।
(A) कर्तुरीप्सिततमं कर्म (B) अधिशीङ्स्थासां कर्म
(C) तथायुक्तं चानीप्सितम् (D) अकथितं च

व्याख्या–
(A) ''कर्तुरीप्सिततमं कर्म'' (1/4/49) सूत्र से कर्ता अपनी क्रिया के द्वारा जिस पदार्थ को सबसे अधिक चाहता है उसकी कर्मसंज्ञा होती है। यथा–भक्तः हरिं भजति।
(B) ''अधिशीङ्स्थासां कर्म'' (1/4/46) सूत्र से यदि शीङ्, स्था और आस् धातुओं के पहले 'अधि' उपसर्ग लगा हो तो क्रिया के आधार की कर्मसंज्ञा होती है यथा–हरिः वैकुण्ठम् अधिशेते।
(C) ''तथायुक्तं चानीप्सितम् (1/4/50) सूत्र से ईप्सित पदार्थ के साथ-साथ अनीप्सित पदार्थ की भी कर्मसंज्ञा होती है। यथा–ग्रामं गच्छन् तृणं स्पृशति।
(D) **''अकथितं च''** (1/4/51) सूत्र से अपादानादि कारकों की अविवक्षा में (दुह्, याच् आदि 16 धातुओं के योग में) प्रकृत सूत्र से अपादान आदि कारकों की कर्मसंज्ञा होती है। यथा–बलिं याचते वसुधाम् (बलि से पृथ्वी माँगता है) अतः विकल्प (D) सही है।

122. 'उपगङ्गम्' में कौन सा समास है?
(A) तत्पुरुष (B) द्वन्द्व
(C) अव्ययीभाव (D) बहुव्रीहि

व्याख्या–
(A) ''पूर्वसदृशसमोनार्थकलहनिपुणमिश्रश्लक्ष्णैः'' (2/1/31) सूत्र से 'मात्रा सदृशः = मातृसदृशः' में तृतीया तत्पुरुषसमास है।
(B) ''चार्थे द्वन्द्वः'' (2/2/29) सूत्र से पाणी च पादौ च = पाणिपादम् में द्वन्द्वसमास है।
(C) ''ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य'' (1/2/47) सूत्र से **गङ्गायाः समीपम् = उपगङ्गम्' इस अव्ययीभाव समास** में ह्रस्व का विधान किया गया।
(D) ''अनेकमन्यपदार्थे'' (2/2/24) सूत्र से 'वीराः पुरुषाः सन्ति यस्मिन् ग्रामे सः = वीरपुरुषको ग्रामः' में बहुव्रीहि समास है। अतः विकल्प (C) सही है।

123. 'कष्टापन्नः' समास का विग्रह क्या है?
(A) कष्टम् आपन्नः (B) कष्टेन आपन्नः
(C) कष्टे आपन्नः (D) कष्टाय आपन्नः

व्याख्या– ''द्वितीया श्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नैः'' (2/1/24) सूत्र से **'कष्टम् आपन्नः = कष्टापन्नः' में द्वितीया तत्पुरुषसमास है।** अतः विकल्प (A) सही है।

124. 'वाग्युद्धम्' समास का विग्रह है?
(A) वाचि युद्धम् (B) वाचे युद्धम
(C) वाचा युद्धम् (D) वाचो युद्धम्

व्याख्या– ''पूर्वसदृशसमोनार्थकलहनिपुणमिश्रश्लक्ष्णैः (2/1/31)" सूत्र से कलह अर्थ में ''वाचा युद्धम् = वाग्युद्धम्'' में तृतीया तत्पुरुषसमास है। अतः विकल्प (C) सही है।

125. 'पितृ' शब्द का सप्तमी एकवचन में रूप क्या होगा?
(A) पितरि (B) पितुः
(C) पित्रे (D) पित्रा

व्याख्या–
(A) 'पितृ' ऋकारान्त पुंलिङ्ग शब्द का रूप **सप्तमी में–पितरि, पित्रोः, पितृषु बनता है।**
(B) षष्ठी विभक्ति में–पितुः, पित्रोः, पितृणाम्
(C) चतुर्थी विभक्ति में–पित्रे, पितृभ्याम्, पितृभ्यः
(D) तृतीया विभक्ति में–पित्रा, पितृभ्याम्, पितृभिः
अतः विकल्प (A) सही है।

119. (B) 120. (A) 121. (D) 122. (C) 123. (A) 124. (C) 125. (A)

प्रशिक्षित-स्नातकशिक्षक-चयनपरीक्षा (TGT)–2010

1. 'घटिका-शतक' की उपाधि से विभूषित किये गये हैं?
(A) बाणभट्ट (B) भर्तृहरि
(C) अम्बिकादत्तव्यास (D) कालिदास

कवि	उपाधि
(A) बाणभट्ट	गद्यसम्राट्/तुरङ्गबाण
(B) भर्तृहरि	शतकत्रयकार
(C) **अम्बिकादत्तव्यास**	**घटिकाशतक/शतावधान/अभिनवबाण**
(D) कालिदास	दीपशिखा/रघुकार/कविकुलगुरु

अतः विकल्प (C) सही है।

2. बाणभट्ट का काल माना जाता है?
(A) ई0पू0 प्रथम शताब्दी
(B) सातवीं शताब्दी का उत्तरार्ध
(C) छठी शताब्दी
(D) सातवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध

कवि	अनुमानित काल
(A) कालिदास	ई0पू0 प्रथम शताब्दी
(B) भवभूति	सातवीं शताब्दी का उत्तरार्ध
(C) भारवि	छठी शताब्दी
(D) **बाणभट्ट**	**सातवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध**

अतः विकल्प (D) सही है।

3. 'गां दोग्धि पयः' में 'गां' की संज्ञा होगी?
(A) कर्म (B) करण
(C) अधिकरण (D) अपादान

व्याख्या–
(A) ''अकथितं च'' (1/4/51) सूत्र से दुह्, याच्, आदि सोलह धातुओं के योग में या तो करण, सम्प्रदान, अपादान इत्यादि का प्रयोग करें अथवा इनके स्थान पर कर्मकारक का प्रयोग करें यथा–'सः गां दोग्धि पयः'–(वह गाय से दूध दुहता है) यहाँ 'गाय' वस्तुतः अपादानकारक है किन्तु अपादान की अविवक्षा में **कर्मकारक** है। अतः विकल्प (A) सही है।

(B) ''संज्ञोऽन्यतरस्यां कर्मणि'' (2/3/22) सूत्र से 'सम्' उपसर्गपूर्वक 'ज्ञा' धातु के अनभिहित कर्म में विकल्प से करणकारक होकर तृतीया विभक्ति होती है। यथा– सः पित्रा पितरं वा सञ्जानीते।

(C) ''आधारोऽधिकरणम्'' (1.4.45) सूत्र से 'आधार' की अधिकरणसंज्ञा होकर ''सप्तम्यधिकरणे च'' से सप्तमीविभक्ति होगी। यथा– सःकटे आस्ते।

(D) ''आख्यातोपयोगे'' (1/4/29) सूत्र से जिससे नियमपूर्वक विद्या पढ़ी जाती है, उसकी अपादान संज्ञा होकर पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा–सः अध्यापकात् संस्कृतं पठति।

4. कादम्बरी के कथानक का आधार है?
(A) महाभारत (B) पद्मपुराण
(C) वाल्मीकिरामायण (D) बृहत्कथा

व्याख्या–

ग्रन्थ	कथानक का आधार
(A) किरातार्जुनीयम्	महाभारत (वनपर्व)
(B) अभिज्ञानशाकुन्तलम्	पद्मपुराण और महाभारत (आदिपर्व)
(C) उत्तररामचरितम्	वाल्मीकिरामायण
(D) **कादम्बरी**	**बृहत्कथा**

अतः विकल्प (D) सही है।

5. निम्नलिखित में से किसका सम्बन्ध 'उत्तररामचरितम्' से नहीं है?
(A) विदूषक का अभाव
(B) करुणरस की प्रधानता
(C) गर्भाङ्क की योजना
(D) अष्टपदा नान्दी

व्याख्या– भवभूति कृत उत्तररामचरितम् नाटक में विदूषक का अभाव, करुणरस की प्रधानता, तथा गर्भाङ्क की योजना–ये तीनों शैलीगत विशेषताएँ हैं, किन्तु 'अष्टपदा' नान्दी का वर्णन नहीं है। इसमें **'द्वादशपदा' नान्दी का प्रयोग** है।
अतः विकल्प (D) सही उत्तर है।

1. (C) 2. (D) 3. (A) 4. (D) 5. (D)

6. राजा शूद्रक की राजधानी थी?
(A) विदिशा (B) उज्जयिनी
(C) अवन्तिका (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या– * राजा **'शूद्रक' की राजधानी 'विदिशा'** है, जो वेत्रवती नदी के किनारे अवस्थित थी।

* तारापीड की राजधानी 'उज्जयिनी' है, जो 'शिप्रा' नदी के किनारे अवस्थित थी। उज्जयिनी को 'अवन्तिका' (विशाला) भी कहा जाता है। जो महाकाल की भी नगरी मानी जाती है। अतः विकल्प (A) सही है।

7. 'छायाङ्क' का सम्बन्ध किस नाटक से है?
(A) उत्तररामचरितम्
(B) मालविकाग्निमित्रम्
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(D) स्वप्नवासवदत्तम्

व्याख्या–

(A) भवभूति कृत 'उत्तररामचरितम्' नाटक के तृतीय अङ्क में सीता छाया रूप में उपस्थित हैं, इसलिए इस अङ्क को 'छायाङ्क' के नाम से जाना जाता है।
छायाङ्क भवभूति की मौलिक कल्पना है अर्थात् इसका वर्णन 'वाल्मीकिरामायण' में नहीं है।
अतः विकल्प (A) सही है।

(B) मालविकाग्निमित्रम् कालिदास द्वारा लिखित 5 अङ्कों का नाटक है।

(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् कालिदास का सर्वोत्कृष्ट नाटक है जो 7 अङ्कों में विभक्त है। इस नाटक का अंग्रेजी में अनुवाद 'विलियम जोन्स' ने किया तथा इसकी प्रशंसा 'गेटे' ने अपनी पुस्तक 'फाडस्ट' में किया है।

(D) 'स्वप्नवासवदत्तम्' भास कृत नाटक है, जिसमें 6 अङ्क हैं।
अतः विकल्प `A' सही है।

8. निम्न में पूर्व से पर की ओर सही कालक्रम है?
(A) माघ, भारवि, कालिदास
(B) माघ, कालिदास, भारवि
(C) कालिदास, भारवि, माघ
(D) कालिदास, माघ, भारवि

कवियों का कालक्रम इसप्रकार है–

1. कालिदास	–	ई0पू0 प्रथम शताब्दी
2. भारवि	–	छठी शताब्दी ई0
3. माघ	–	सातवीं शताब्दी ई0

अतः विकल्प (C) सही है।

9. अभिज्ञानशाकुन्तलम् का नायक दुष्यन्त है?
(A) धीरोदात्त (B) धीरोद्धत
(C) धीरललित (D) धीरप्रशान्त

नायक	कोटि
(A) **दुष्यन्त**	**धीरोदात्त** (अभिज्ञानशाकुन्तलम्)
(B) भीम	धीरोद्धत (वेणीसंहारम्)
(C) उदयन	धीरललित (स्वप्नवासवदत्तम्)
(D) चारुदत्त	धीरप्रशान्त (मृच्छकटिकम्)

अतः विकल्प (A) सही है।

10. किरातार्जुनीयम् महाकाव्य में सर्गों की कुल संख्या है?
(A) 17 (B) 18
(C) 19 (D) 22

महाकाव्य	सर्ग
(A) कुमारसम्भवम्	17
(B) **किरातार्जुनीयम्**	**18**
(C) रघुवंशमहाकाव्यम्	19
(D) नैषधीयचरितम्	22

अतः विकल्प (B) सही है।

11. विन्ध्याचल की तलहटी में बहने वाली नदी है?
(A) गङ्गा (B) नर्मदा
(C) कावेरी (D) व्यास

व्याख्या– ''रेवां द्रक्ष्यस्युपलविषमे विन्ध्यपादे विशीर्णां भक्तिच्छेदैरिव विरचितां भूतिमङ्गे गजस्य'' (पूर्वमेघ/19)
अर्थात् विन्ध्याचल की तलहटी में बिखरी हुई **नर्मदा नदी** को हाथी के शरीर पर चित्रकारी की रेखाओं के प्रकारों से बनायी गयी शृङ्गाररेखा के समान देखोगे।
अतः विकल्प (B) सही है।

6. (A) 7. (A) 8. (C) 9. (A) 10. (B) 11. (B)

12. 'निधिः' शब्द किस लिङ्ग का है–
(A) पुंलिङ्ग (B) स्त्रीलिङ्ग
(C) नपुंसकलिङ्ग (D) उभयलिङ्ग

व्याख्या–
(A) **पुंलिङ्ग शब्द–निधिः**, विधिः, प्रविधिः, जलधिः, आधिः, व्याधिः, उदधिः, समाधिः, प्रधीः, सुधीः, अग्निः, रश्मिः, दाराः, असवः, प्राणाः, महिमा
(B) **स्त्रीलिङ्ग शब्द**–आपः, अप्सराः, वर्षाः, सिकता, सभा, सुमनाः, देवता, पूः, द्यौः, गीः, वाक्ः, प्रावृट्, रुचिः, मतिः, बुद्धिः
(C) **नपुंसकलिङ्ग**–दधि, अस्थि, सक्थि, अभ्र, कलत्रम्, जलम्, मित्रम्, वनम्, कुसुमम्, गात्रम्, ऋणम्, पुस्तकम्, ज्ञानम्
(D) **उभयलिङ्गी**– अशनि, भरणि, अरणि, श्रोणि, योनि, उर्मि, सुधि, गौः
अतः विकल्प (A) सही है।

13. निम्नलिखित में पुंलिङ्ग शब्द कौन-सा नहीं है?
(A) निधिः (B) विधिः
(C) प्रविधिः (D) सरणी

व्याख्या– निधिः, विधिः, प्रविधिः पुंलिङ्ग शब्द हैं। 'धि' जिनके अन्त में हो, ऐसे शब्द सामान्यतया पुंलिङ्ग होते हैं। अतः विकल्प (D) उत्तर सही है।

14. भारत में सोमनाथ मन्दिर पर आक्रमण करने वाला शासक था?
(A) मुहम्मद गोरी (B) कुतुबुद्दीन ऐबक
(C) महमूद गजनवी (D) बाबर

व्याख्या– सोमनाथ मन्दिर पर महमूद गजनवी ने आक्रमण कर उसे लूटा।
अतः विकल्प (C) सही है।

15. 'मेघदूतम्' में यक्ष का नाम है?
(A) राजवाहन (B) बुद्ध
(C) हेममाली (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या– * महाकवि कालिदास कृत 'मेघदूतम्' नामक गीतिकाव्य में यक्ष का किसी नाम से वर्णन नहीं मिलता है। क्योंकि प्रथम श्लोक में ही यह कह दिया गया कि–'कश्चित् कान्ताविरहगुरुणा स्वाधिकारात्प्रमत्तः (पूर्वमेघ/1)। अतः विकल्प (D) सही है। ब्रह्मवैवर्तपुराण में यक्ष का नाम 'हेममाली' तथा यक्षिणी का नाम 'विशालाक्षी' मिलता है। चूँकि यह पुराण मेघदूतम् का उपजीव्य ग्रन्थ है, अतः इस आधार पर मेघदूतम् के यक्ष का नाम 'हेममाली' भी कहा जा सकता है। अतः विकल्प C भी सही हो सकता है।
* दण्डी कृत दशकुमारचरितम् में राजहंस के पुत्र 'राजवाहन' का उल्लेख मिलता है।
* बुद्ध अश्वघोष विरचित 'बुद्धचरितम्' के नायक हैं।

16. कौन-सी रचना बाणभट्ट की नहीं है?
(A) हर्षचरित (B) कादम्बरी
(C) तिलकमञ्जरी (D) मुकुटताडितम्

व्याख्या– * हर्षचरितम्, कादम्बरी, मुकुटताडितम् रचनाएँ बाणभट्ट कृत हैं।
* **'तिलकमञ्जरी'** धनपाल की रचना है।
अतः विकल्प (C) सही है।

17. 'भी' धातु लोट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप होगा?
(A) भयतु (B) विभीतु
(C) बभयतु (D) बिभेतु

व्याख्या– * 'भी' धातु लोट्लकार प्रथमपुरुष में **''बिभेतु** बिभीताम् बिभ्यतु'' रूप बनता है।
* भयतु, विभीतु, बभयतु रूप 'भी' धातु के दसों लकारों में कहीं नहीं बनते हैं। अतः विकल्प (D) सही है।

18. 'अर्थो हि कन्या परकीय एव' सूक्ति है?
(A) गौतमी की (B) अनसूया की
(C) शार्ङ्गरव की (D) कण्व की

व्याख्या–
(A) 'वरः खल्वेषः नाशीः'–गौतमी
(B) 'गुर्वपि विरहदुःखमाशाबन्धः साहयति'–अनसूया
(C) 'ओदकान्तं स्निग्धो जनोऽनुगन्तव्य इति श्रूयते'–शार्ङ्गरव
(D) **'अर्थो हि कन्या परकीय एव'–कण्व**
अतः विकल्प (D) सही है।

19. राजा दुष्यन्त की प्रथम पटरानी थी?
(A) सानुमती (B) वसुमती
(C) शकुन्तला (D) मेनका

व्याख्या– राजा दुष्यन्त की प्रथम पटरानी हंसपदिका है किन्तु आयोग वसुमती को प्रथम पटरानी मानता है। जो कि

12. (A) 13. (D) 14. (C) 15. (D) 16. (C) 17. (D) 18. (D) 19. (B)

मेरी दृष्टि में अनुचित है। क्योंकि अभिज्ञानशाकुन्तलम् के पञ्चम अङ्क में हंसपदिका सङ्गीत का अभ्यास करते हुए दुष्यन्त को उलाहना देती है। किन्तु हंसपदिका का चारो विकल्पों में नाम न होने से वसुमती ही ठीक है।
अतः विकल्प (B) सही है।

20. युष्मद् शब्द का चतुर्थी बहुवचन का रूप है?
(A) तुभ्यः (B) वः
(C) युष्मेभ्यः (D) युष्मेभ्यम्

व्याख्या– * युष्मद् शब्द का चतुर्थी विभक्ति में– तुभ्यम् युवाभ्याम्, युष्मभ्यम् रूप बनता है विकल्प से– **ते वाम वः**
* 'तुभ्यः युष्मेभ्यः, युष्मेभ्यम् रूप युष्मद् शब्द के सातों विभक्तियों में कहीं नहीं बनता है। अतः विकल्प (B) सही है।

21. 'राजन्' शब्द का सप्तमी एकवचन का रूप होगा?
(A) राजि (B) राज्ञि
(C) राज्ञि एवं राजनि (D) राजनि

व्याख्या– राजन् (राजा) शब्द का रूप सप्तमी विभक्ति में–**राज्ञि/राजनि** राज्ञोः राजसु बनता है।
अतः विकल्प (C) सही है।

22. 'लभ्' धातु आत्मनेपद के विधिलिङ् मध्यमपुरुष बहुवचन का रूप है?
(A) लभेध्वम् (B) लभध्वम्
(C) लभेत (D) लभेः

व्याख्या–
(A) लभ् (पाना) आत्मनेपद का रूप–(विधिलिङ्लकार) मध्यमपुरुष में– ''लभेथाः, लभेयाथाम्, **लभेध्वम्**'' बनता है।
(B) लोट्लकार मध्यमपुरुष में–'लभस्व, लभेथाम्, लभध्वम्'
(C) विधिलिङ् प्रथमपुरुष में–'लभेत, लभेयाताम्, लभेरन्'
अतः विकल्प (A) सही है।

23. 'ब्रू' धातु के लोट्लकार अन्यपुरुष एकवचन का रूप है?
(A) वदतु (B) ब्रवतु
(C) ब्रवीतु (D) ब्रूहि

व्याख्या– ब्रू धातु लोट्लकार का रूप–
* प्रथमपुरुष (अन्यपुरुष) में–'**ब्रवीतु**, ब्रूताम्, ब्रुवन्तु' बनता है।
* मध्यमपुरुष में–ब्रूहि, ब्रूतम्, ब्रूत।
* वदतु, ब्रवतु रूप ब्रू धातु में कहीं नहीं बनते हैं।
अतः विकल्प (C) सही है।

24. 'जन्' धातु आत्मनेपद के विधिलिङ्लकार उत्तम पुरुष एकवचन का रूप है?
(A) जायेयम् (B) जायेत
(C) जाये (D) जायेय

व्याख्या– जन् धातु आत्मनेपद विधिलिङ् लकार का रूप– उत्तमपुरुष में–'**जायेय,** जायेवहि, जायेमहि' है।
अतः विकल्प (D) सही है।

25. सन्धि है?
(A) पदविधि (B) वर्णविधि
(C) इनमें से दोनों (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या– * समास का साधारण अर्थ है–'संक्षेप' दो पदों के मेल को समास कहते हैं। अतः समास पदविधि है
यथा–पूर्वं भूतः = भूतपूर्वः
* सन्धि का साधारण अर्थ है–'मेल' दो वर्णों के मेल को सन्धि कहते है अर्थात् सन्धि **वर्णविधि** है
यथा–खलु + एषः = खल्वेषः। अतः विकल्प (B) सही है।

26. ''रामेण बाणेन हतः बाली'' वाक्य में 'बाली' कौन कारक है?
(A) कर्ता (B) कर्म
(C) प्रातिपादिक (D) करण

व्याख्या–
(A) 'रामेण बाणेन हतः बाली' वाक्य में राम की ''स्वतन्त्रः कर्ता'' (1/4/54) सूत्र से कर्तृसंज्ञा हुई तथा कर्तृकरणयोस्तृतीया (2/3/18) सूत्र से उसमें तृतीयाविभक्ति का प्रयोग हुआ है।
(B) उपर्युक्त उदाहरण में 'क्त' प्रत्यय के द्वारा कर्म उक्त होने के कारण **'बाली' रूप कर्म में** प्रथमाविभक्ति हुई। ''उक्ते सर्वत्र प्रथमा'' इतिनियमात्। अतः विकल्प (B) सही है।
(C) ''कृत्तद्धितसमासाश्च'' (1/2/46) सूत्र से कृदन्त, तद्धितान्त और समास की प्रातिपदिकसंज्ञा होती है। ''अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्'' (1.2.45) सूत्र से भी प्रातिपदिकसंज्ञा होती है।
(D) 'कर्तृकरणयोस्तृतीया'' (2/3/18) सूत्र से अनुक्त कर्त्ता राम में तथा करणकारक बाण में तृतीया विभक्ति हुई है यथा–रामेण बाणेन हतः बाली यहाँ साधकतमं करणम् (1/4/42) सूत्र से बाण की करणसंज्ञा हुई है।

20. (B) 21. (C) 22. (A) 23. (C) 24. (D) 25. (B) 26. (B)

27. ''द्रोणो व्रीहिः'' वाक्य के 'व्रीहिः' पद में कौन-सी विभक्ति है?
(A) प्रातिपदिकार्थ मात्र में प्रथमा
(B) परिमाणमात्र में प्रथमा
(C) परिमाण सामान्य को बताने में प्रथमा
(D) परिमाण विशेष को बताने में प्रथमा

व्याख्या– * ''प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा'' (2/3/46) सूत्र से केवल प्रातिपदिकार्थ, लिङ्गमात्र के अधिक अर्थ, परिमाणमात्र के अधिक अर्थ एवं संख्यामात्र अर्थ बताने के लिए प्रथमाविभक्ति होती है।
* 'द्रोणो व्रीहिः' का अर्थ है द्रोण रूप परिमाण से नापा हुआ व्रीहि! अतः **'व्रीहिः' पद में प्रातिपदिकार्थ मात्र में प्रथमा** विभक्ति हुई।
* किन्तु 'द्रोणः' पद में परिमाणमात्र में प्रथमा विभक्ति हुई है। यहाँ द्रोणः और व्रीहिः में 'मेय-मापक' या 'परिच्छेद्य-परिच्छेदकभाव' सम्बन्ध है। इसका अर्थ है– ''द्रोणरूपं यत् परिमाणं तत्परिछिन्नो व्रीहिः'' अतः विकल्प (A) सही है।

28. 'भवान् वपति' का कर्मवाच्य होगा?
(A) त्वया वायते **(B) त्वया वपते**
(C) भवता वप्यते **(D) भवता उप्यते**

व्याख्या– कर्मवाच्य में कर्त्ता में तृतीयाविभक्ति, कर्म में प्रथमा तथा क्रिया कर्म के अनुसार आत्मनेपद में आती है यथा–**भवता उप्यते।**
अतः विकल्प (D) सही है।

29. निम्नलिखित में से शुद्ध वाक्य है?
(A) श्रान्ताः जनाः शीघ्रं शयन्ते
(B) श्रान्ताः जनाः शीघ्रं शेरते
(C) श्रान्ताः जनाः शीघ्रं शयन्ति
(D) श्रान्ताः जनाः शीघ्रः स्वपिति

व्याख्या– शीङ् धातु (सोना) आत्मनेपद के प्रथमपुरुष बहुवचन का रूप 'शेरते' बनता है। इसलिए ''श्रान्ताः जनाः शीघ्रं शेरते'' वाक्य सही है। शीङ् धातु का रूप लट्लकार प्र०पु० में– शेते शयाते शेरते बनता है।
अतः विकल्प (B) सही है।

30. शुद्ध वाक्य छाँटिए–
(A) सः कौचित् साधूं पश्यति
(B) सः कञ्चित् साधुं पश्यति
(C) सः कञ्चित् साधून् पश्यति
(D) सः कश्चन् साधू पश्यसि

व्याख्या– प्रस्तुत वाक्यों में–**सः कञ्चित् साधुं पश्यति** (वह किसी साधु को देखता है) शुद्ध है। यहाँ 'किम्' शब्द से 'चित्' प्रत्यय करके द्वितीयाविभक्ति एकवचन में 'कञ्चित्' रूप बनेगा जो 'साधुं' का विशेषण है।
अतः विकल्प (B) सही है।

31. ''कार्यं वा साधयेयं देहं वा पातयेयम्' उक्ति है?
(A) पृथ्वीराज की **(B) शिवाजी की**
(C) युधिष्ठिर की **(D) विक्रमादित्य की**

व्याख्या–''कार्यं वा साधयेयं देहं वा पातयेयम्'–अर्थात् 'या कार्य सिद्ध होगा अथवा शरीर नष्ट होगा'–यह **शिवाजी** की सारगर्भित महती प्रतिज्ञा है। –शिवराजविजयम्
अतः विकल्प (B) सही है।

32. भारवि का आश्रयदाता था?
(A) पुलकेशिन का भाई
(B) हर्ष
(C) यशोवर्मा
(D) पुलकेशिन

कवि	राज्याश्रय
(A) **भारवि**	**पुलकेशिन द्वितीय का भाई (विष्णुवर्धन)**
(B) बाणभट्ट	सम्राट् हर्षवर्द्धन
(C) भवभूति	यशोवर्मा
(D) रविकीर्ति	पुलकेशिन द्वितीय

अतः विकल्प (A) सही है।

33. भारवि थे–
(A) दाक्षिणात्य **(B) औदीच्य**
(C) पश्चिमी भारत के **(D) पूर्वी भारत के**

व्याख्या– 'आतपत्र भारवि' दक्षिण भारत के एलिचपुर (अचलपुर) नामक स्थान के निवासी थे। अतः सभी विद्वान् उन्हें एक मत होकर **दाक्षिणात्य** मानते हैं।
अतः विकल्प (A) सही है।

27. (A) 28. (D) 29. (B) 30. (B) 31. (B) 32. (A) 33. (A)

34. 'न खलु धीमतां कश्चिदविषयो नाम' सूक्ति है?
(A) किरातार्जुनीयम् की
(B) शिवराजविजयम् की
(C) शुकनासोपदेश की
(D) अभिज्ञानशाकुन्तलम् की

व्याख्या–
(A) ''न बाधतेऽस्य त्रिगणः परस्परम्'' (किरातार्जुनीयम् 1/11)
(B) ''नाहं मूर्तीःविक्रीणामि; किन्तु भिनद्मि''–शिवराजविजयम्-प्र0नि0)
(C) ''न परिचयं रक्षति''– शुकनासोपदेश
(D) ''न खलु धीमतां कश्चिदविषयो नाम''– **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**,अङ्क-9) अतः विकल्प (D) सही है।

35. 'बाणस्तु पञ्चाननः'' सूक्ति किसने कही?
(A) चन्द्रदेव ने **(B) मल्लिनाथ ने**
(C) जयदेव ने **(D) कृष्णकवि ने**

व्याख्या–
(A) ''बाणस्तु पञ्चाननः'' **चन्द्रदेव** (बाणभट्ट की प्रशंसा में)
(B) ''नारिकेलफलसम्मितं वचो भारवेः सपदि तद् विभज्यते'' मल्लिनाथ (भारवि की प्रशंसा में)
(C) ''कविकुलगुरुः कालिदासो विलासः'' जयदेव (कालिदास की प्रशंसा में)
(D) ''न कालिदासादपरस्य वाणी'' श्री कृष्णकवि (कालिदास की प्रशंसा में)
अतः विकल्प (A) सही है।

36. 'ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रह्मापि नरं न रञ्जयति'' पद्य में अलङ्कार है?
(A) अतिशयोक्ति **(B) व्यतिरेक**
(C) अप्रस्तुतप्रशंसा **(D) दीपक**

व्याख्या–
(A) ''ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रह्मापि नरं न रञ्जयति'' (नीति.-03) –**अतिशयोक्तिऽलंकार** है।
(B) ''क्षीयन्ते खलु भूषणानि सततं वाग्भूषणं भूषणम्'' (नीति.-16) –व्यतिरेक अलङ्कार है।
(C) ''न त्वस्य दुग्धजलभेदविधौ प्रसिद्धां वैदग्ध्यकीर्तिमपहर्तुमसौ समर्थः'' (नीति.-26) –अप्रस्तुतप्रशंसा अलङ्कार
(D) ''मणिः शाणोल्लीढः समरविजयी हेतिदलितो मदक्षीणो नागः शरदि सरिदाश्यानपुलिना'' (नीति.-36) – दीपक अलङ्कार है। अतः विकल्प (A) सही है।

37. लघुत्रयी के अन्तर्गत कौन-कौन से ग्रन्थ आते हैं?
(A) वासवदत्ता, कादम्बरी, दशकुमारचरितम्
(B) कुमारसम्भवम्, मेघदूतम्, रघुवंशम्
(C) किरातार्जुनीयम्, शिशुपालवधम्, नैषधीयचरितम्
(D) कुमारसम्भवम्, मेघदूतम्, कादम्बरी

व्याख्या–
त्रयी **ग्रन्थ**
(A) गद्यत्रयी –वासवदत्ता, कादम्बरी, दशकुमारचरितम्
(B) **लघुत्रयी –कुमारसम्भवम्, मेघदूतम्, रघुवंशम्**
(C) बृहत्त्रयी –किरातार्जुनीयम्, शिशुपालवधम्, नैषधीयचरितम्
अतः विकल्प (B) सही है।

38. 'शुकनासोपदेश' किस ग्रन्थ का अंश है?
(A) रघुवंशम् **(B) नलोपाख्यान**
(C) कादम्बरी **(D) हर्षचरित**

व्याख्या–
(A) रघुवंशम् कालिदास कृत महाकाव्य है।
(B) महाभारत के वनपर्व में 'नलोपाख्यान' की कथा है।
(C) गद्यसम्राट् बाणभट्ट कृत **कादम्बरी का अंश शुकनासोपदेश** है। इस अंश में उज्जयिनी के राजा तारापीड के प्रधान अमात्य शुकनास द्वारा चन्द्रापीड को उपदेश दिया गया है।
(D) हर्षचरित बाणभट्ट कृत आख्यायिका है। जिसमें 8 उच्छ्वास हैं।
अतः विकल्प (C) सही है।

39. किरातार्जुनीयम् का गुप्तचर किस वेष में हस्तिनापुर जाता है?
(A) संन्यासी **(B) मन्त्री**
(C) ब्रह्मचारी **(D) सैनिक**

व्याख्या– ''स वर्णिलिङ्गी विदितः समाययौ युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचरः।'' (किरात0 1/1)
अर्थात् वह **ब्रह्मचारी का वेश** धारण करने वाला सारा वृत्तान्त जानकर द्वैतवन में युधिष्ठिर के पास लौट आया। अतः विकल्प (C) सही है।

34. (D) 35. (A) 36. (A) 37. (B) 38. (C) 39. (C)

40. संस्कृत में कितने लकार होते हैं?
(A) बीस (B) चालीस
(C) सत्रह (D) दस

व्याख्या– संस्कृत में कुल **दस लकार** माने गये हैं जो निम्नवत् हैं–लट्, लिट्, लुट्, ऌट्, लेट्, लोट्, लङ्, लिङ्, (विधिलिङ्/आशीर्लिङ्)। लुङ्, ऌङ्
लेट् लकार का प्रयोग केवल वेद में पाया जाता है।
अतः विकल्प (D) सही है।

41. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में कुल कितने श्लोक हैं?
(A) अड़तालिस (B) बयालिस
(C) छियालिस (D) बाइस

	ग्रन्थ	श्लोक संख्या
(A)	उत्तररामचरितम् (तृतीय अङ्क)	अड़तालिस
(B)	उत्तररामचरितम् (षष्ठ अङ्क)	बयालिस
(C)	किरातार्जुनीयम् (प्रथमसर्ग)	छियालिस
(D)	**अभिज्ञानशाकुन्तलम् (चतुर्थ अङ्क)**	**बाइस**

अतः विकल्प (D) सही है।

42. 'शिशुपालवधम्' की कथावस्तु विभाजित है?
(A) अङ्कों में (B) सर्गों में
(C) अध्यायों में (D) पर्वों में

	ग्रन्थ	विभाजन	
(A)	अभिज्ञानशाकुन्तलम्	अङ्कों में	(7 अङ्क)
(B)	**शिशुपालवधम्**	**सर्गों में**	(20 सर्ग)
(C)	गीता	अध्यायों में	(18 अध्याय)
(D)	महाभारत	पर्वों में	(18 पर्व)

अतः विकल्प (B) सही है।

43. 'होतृ + ऋकारः' में कौन-सी सन्धि है?
(A) वृद्धि (B) गुण
(C) दीर्घ (D) यण्

व्याख्या–
(A) ''वृद्धिरेचि'' (6/1/88) सूत्र से अवर्ण से एच् परे हों तो पूर्व-पर (दोनों) के स्थान में वृद्धि एकादेश होता है। यथा– गङ्गा + ओघः = गङ्गौघः (गङ्गा का प्रवाह)
(B) ''आद्गुणः'' (6/1/87) सूत्र से अवर्ण के बाद स्वर हो तो दोनों के स्थान में गुण आदेश होता है।
यथा–गङ्गा + उदकम् = गङ्गोदकम्
(C) ''अकः सवर्णे दीर्घः'' (6/1/101) सूत्र से ह्रस्व अथवा दीर्घ अ, इ, उ, ऋ, ऌ स्वर के पश्चात् सवर्ण ह्रस्व या दीर्घ आयें तो दोनों के स्थान में **दीर्घ आदेश** होता है यथा– **होतृ + ऋकारः = होतॄकारः**
(D) ''इको यणचि'' (6/1/77) सूत्र से धातृ + अंशः = धात्रंशः में यण्सन्धि है। अतः विकल्प (C) सही है।

44. 'अभितः या सर्वतः' के योग में कौन-सी विभक्ति होती है?
(A) द्वितीया (B) तृतीया
(C) चतुर्थी (D) पञ्चमी

व्याख्या–
(A) अभितः, परितः, समया, निकषा, हा, प्रति, उभयतः, सर्वतः, धिक्, उपर्युपरि, अध्यधि, अधोऽधः, अन्तरा, अन्तरेण शब्दों के योग में द्वितीया विभक्ति होती है।
(B) सह, साकम्, सार्धम्, समम्, प्राय, गोत्र, प्रकृति, पृथक्, विना, नाना, शब्दों के योग में तृतीया विभक्ति होती है।
(C) नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलम्, वषट्, शब्दों के योग में चतुर्थीविभक्ति होती है।
(D) अन्य, आरात्, ऋते, प्राक्, प्रत्यक्, बहिः, दक्षिणा, उत्तरा, पूर्वा, उत्तराहि, दक्षिणाहि, कृच्छ्र, कतिपय, दूर, अन्तिक, आदि शब्दों के योग में पञ्चमी विभक्ति होती है।
अतः विकल्प (A) सही है।

45. ''हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः'' यह किस ग्रन्थ की किसकी उक्ति है?
(A) शिशुपालवधम् (श्रीकृष्ण)
(B) हर्षचरितम् (राज्यश्री)
(C) किरातार्जुनीयम् (वनेचर)
(D) किरातार्जुनीयम् (युधिष्ठिर)

व्याख्या– ''हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः'' (किरात0 1/4) अर्थात् हितकर और प्रियवाणी दुर्लभ होती है। यह उक्ति वनेचर, युधिष्ठिर से कहता है।
अतः विकल्प (C) सही है।

40. (D) 41. (D) 42. (B) 43. (C) 44. (A) 45. (C)

46. निम्नलिखित वाक्यों में कौन-सा वाक्य शुद्ध है?
(A) बालकः अध्यापकेन पुस्तकं पठति।
(B) बालकः अध्यापकात् पुस्तकं पठति।
(C) बालकः अध्यापकात् पुस्तकानि पठन्ति।
(D) बालकाः अध्यापकेन पुस्तकानि पठति।

व्याख्या– * प्रस्तुत वाक्यों में (A) और (B) दोनों सही हैं। आयोग ने सर्वप्रथम (B) को सही उत्तर माना था पुनः विषय-विशेषज्ञों द्वारा संशोधित होकर दोनों को सही माना गया। यहाँ अध्यापक की ''साधकतमं करणम्'' (1/4/42) सूत्र से करणसंज्ञा होकर उसमें तृतीया का विधान हुआ है। यह आयोग के विषय विशेषज्ञों का मत है।
* यहाँ पञ्चमी का प्रयोग नहीं होगा क्योंकि यह नहीं प्रतिलक्षित हो रहा है कि बालक अध्यापक से नियमपूर्वक पढ़ रहा है।
* किन्तु मुझे लगता है कि ''आख्यातोपयोगे'' सूत्र से यहाँ 'अध्यापक' की अपादानसंज्ञा होकर पञ्चमी विभक्ति होगी, और इसका सही उत्तर (B) को माना जाना चाहिए। यही प्रश्नकर्ता को भी अभीष्ट है।

47. ''बालकाय मोदकाः रोचन्ते'' में बालक की सम्प्रदान संज्ञा किस सूत्र से है?
(A) धारेरुत्तमर्णः **(B) रुच्यर्थानां प्रीयमाणः**
(C) स्पृहेरीप्सितः **(D) तुमर्थाच्चभाववचनात्**

व्याख्या–
(A) ''धारेरुत्तमर्णः'' (1/4/35) सूत्र से णिजन्त धृ धातु के योग में उत्तमर्ण (ऋण देने वाला) की सम्प्रदानसंज्ञा होती है यथा–श्यामः अश्वपतये शतं धारयति।
(B) **''रुच्यर्थानां प्रीयमाणः''** (1/4/33) सूत्र से रुच् धातु तथा रुच् के समान अर्थवाली धातुओं के योग में प्रसन्न होने वाले (प्रीयमाण) की सम्प्रदानसंज्ञा होती है यथा– विष्णवे रोचते भक्तिः, बालकाय मोदकाः रोचन्ते।
(C) ''स्पृहेरीप्सितः'' (1/4/36) सूत्र से स्पृह् (चाहना) धातु के योग में जिसे चाहा जाय उस पदार्थ की सम्प्रदानसंज्ञा होकर उसमें चतुर्थी का विधान होता है। यथा–सः पुष्पेभ्यः स्पृहयति।
(D) ''तुमर्थाच्चभाववचनात्'' (2/3/15) सूत्र से तुमुन् प्रत्ययान्त भाववाचक शब्द में चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग होता है यथा–यागाय याति (यष्टुं याति)=यज्ञ के लिए जाता है। शयनाय इच्छति (शयितुम् इच्छति)
अतः विकल्प (B) सही है।

48. यण् सन्धि का उदाहरण है?
(A) विद्या + आलयः = विद्यालयः
(B) गङ्गा + ओघः = गङ्गौघः
(C) गुरु + आदेशः = गुर्वादेशः
(D) महा + इन्द्रः = महेन्द्रः

व्याख्या–
(A) अकः सवर्णे दीर्घः (6/1/101) सूत्र से विद्या + आलयः = विद्यालयः में दीर्घसन्धि है।
(B) ''वृद्धिरेचि'' (6/1/88) सूत्र से गङ्गा + ओघः = गङ्गौघः में वृद्धिसन्धि है।
(C) ''इको यणचि'' (6/1/77) सूत्र से **गुरु + आदेशः = गुर्वादेशः में यणसन्धि है।**
(D) ''आद्गुणः'' (6/1/87) सूत्र से महा + इन्द्रः = महेन्द्रः में गुणसन्धि है।
अतः विकल्प (C) सही है।

49. प्रत्युप्तस्येव दयिते तृष्णादीर्घस्य चक्षुषः।
मर्मच्छेदोपमैर्यत्नैः सन्निकर्षो निरुध्यते॥
इस श्लोक में अलङ्कार है?
(A) उपमा **(B) उत्प्रेक्षा**
(C) रूपक **(D) अतिशयोक्ति**

व्याख्या–
(A) प्रत्युप्तस्येव दयिते तृष्णादीर्घस्य चक्षुषः।
मर्मच्छेदोपमैर्यत्नैः सन्निकर्षो निरुध्यते।।
(उत्तररामचरितम् 3/46)
* प्रस्तुत श्लोक में **उपमा और उत्प्रेक्षा**–'प्रत्युप्तस्येव' में इव उत्प्रेक्षा सूचक है। तथा 'मर्मच्छेदोपमैः' में उपमा है।
* आयोग ने प्रथमदृष्ट्या उपमाऽलङ्कार को सही उत्तर माना था किन्तु बाद में संशोधित करके दोनों उत्तरों को सही माना गया।
(B) ''करुणस्य मूर्तिरथवा शरीरिणी''
विरहव्यथेव वनमेति जानकी'' –उत्प्रेक्षाऽलङ्कार
(C) ''त्वं जीवितं त्वमसि मे हृदयं द्वितीयम्'' –रूपकालङ्कार
(D) ''निष्पीडितेन्दुकरकन्दलजो नु सेकः'' –अतिशयोक्ति
अतः विकल्प (A) और (B) दोनों सही है।

46. (A+B) 47. (B) 48. (C) 49. (A और B)

50. 'अयि कठोर! यशः किल ते प्रियम्' यह कथन किसका है?
(A) सीता का **(B) वासन्ती का**
(C) तमसा का **(D) मुरला का**

व्याख्या–
(A) ''अहमेवैतस्य हृदयं जानामि, ममैषः'' सीता का कथन
(B) ''अयि कठोर! यशः किल ते प्रियम्'' **वासन्ती** का कथन
(C) ''अन्तःकरणतत्त्वस्य दम्पत्योः स्नेहसंश्रयात्'' तमसा का कथन
(D) ''अनिर्भिन्नो गभीरत्वादन्तर्गूढघनव्यथः'' मुरला का कथन
अतः विकल्प (B) सही है।

51. 'नारिकेलफलसम्मितं वचः' सूक्ति किस कवि के लिए है?
(A) कालिदास **(B) भारवि**
(C) श्रीहर्ष **(D) बाणभट्ट**

व्याख्या–
(A) ''निर्गतासु न वा कस्य कालिदासस्य सूक्तिषु''
–कालिदास के विषय में (बाणभट्ट–हर्षचरित में)
(B) ''नारिकेलफलसम्मितं वचः''
–भारवि के विषय में मल्लिनाथ ने कहा
(C) ''नैषधं विद्वदौषधम्''
–श्रीहर्ष कृत नैषधमहाकाव्य के लिए
(D) ''नहि नहि वाणी बाणस्य मधुरशीलस्य''
बाणभट्ट के विषय में (धर्मदास)
अतः विकल्प (B) सही है।

52. 'ओदकान्तं स्निग्धोजनोऽनुगन्तव्यः इति श्रूयते'' यह कथन किसका है?
(A) कण्व का
(B) अनसूया का
(C) प्रियंवदा का
(D) कण्वशिष्य शार्ङ्गरव का

व्याख्या–
(A) ''अर्थो हि कन्या परकीय एव'' –कण्व की उक्ति
(B) ''आत्मनो नगरं प्रविश्यान्तःपुरसमागत इतो गतं वृत्तान्तं स्मरति वा न वेति'' –अनसूया का कथन
(C) ''अग्निशरणं प्रविष्टस्य शरीरं विना छन्दोमय्या वाण्या'' –प्रियंवदा का कथन
(D) ''ओदकान्तं स्निग्धोजनोऽनुगन्तव्यः इति श्रूयते'' – **शार्ङ्गरव** कहता है कि प्रियव्यक्ति का जलाशय तक अनुगमन करना चाहिए।
अतः विकल्प (D) सही है।

53. 'आश्च्योतनं नु हरिचन्दनपल्लवानाम्' में नु किस अलङ्कार का वाचक है?
(A) उत्प्रेक्षा **(B) उपमा**
(C) अतिशयोक्ति **(D) सन्देह**

व्याख्या–
(A) 'आयान्त्या परिदुर्मनायितमिव त्वां वीक्ष्य बद्धस्तया' (उत्तर0 3/37) –उत्प्रेक्षा अलङ्कार
(B) ''अन्तर्व्यापृतविद्युदम्बुद इव द्यामभ्युदस्थादरिः'' (उत्तर0 3/43) –उपमाऽलङ्कार
(C) ''आनन्देन जडतां पुनरातनोति'' (उत्तर0 3/12) –अतिशयोक्ति
(D) ''आश्च्योतनं नु हरिचन्दनपल्लवानाम्'' (उत्तर03/11) **–सन्देहालङ्कार**
अतः विकल्प (D) सही है।

54. नीरन्ध्रबालकदली' में नीरन्ध्र का अर्थ है?
(A) कृपा **(B) केला**
(C) सघन **(D) सीधा**

व्याख्या– ''नीरन्ध्रबालकदलीवनमध्यवर्ति, कान्तासखस्य शयनीयशिलातलं ते।' (उत्तररामचरितम् 3/21)

शब्द	**अर्थ**
(A) अनुक्रोश	दया/कृपा
(B) कदली	केला
(C) **नीरन्ध्र**	**सघन**
(D) अनराल	सीधा

अतः विकल्प (C) सही है।

55. ''वधूद्वितीयः'' का अर्थ है?
(A) दो स्त्रियाँ
(B) दूसरी स्त्री
(C) दूसरे की स्त्री
(D) प्रिया के साथ (पत्नी के साथ)

व्याख्या– ''क्वासौ दुरात्मा यः प्रियायाः पुत्रं वधूद्वितीय-मभिभवति।'' (उत्तररामचरितम्) राम कहते हैं कि वह दुष्ट कहाँ है, जो प्रिया सीता के वधू-युक्त पुत्र पर आक्रमण कर रहा है? वधूद्वितीयः का अर्थ है–**वधूयुक्त (पत्नी के साथ)**
अतः विकल्प (D) सही है।

50. (B) 51. (B) 52. (D) 53. (D) 54. (C) 55. (D)

56. यक्ष का प्रवास कितने दिनों का था?
(A) पाँच वर्ष (B) तीन वर्ष
(C) एक वर्ष (D) तीन मास

व्याख्या– कालिदास कृत मेघदूतम् में यक्ष को कुबेर की राजधानी अलकापुरी में निवास करते समय स्वकार्य में प्रमाद के कारण **एक वर्ष का प्रवास** मिला था।
''शापेनास्तङ्गमितमहिमा वर्षभोग्येण भर्तुः'' (मेघदूतम्-01)
अतः विकल्प (C) सही है।

57. ''कृतप्रणामः'' में कौन-सा समास है?
(A) तत्पुरुष (B) कर्मधारय
(C) द्वन्द्व (D) बहुव्रीहि

	पद	समास
(A)	षड्वर्गः	षष्ठीतत्पुरुष (षण्णां वर्गः)
(B)	सत्क्रिया	कर्मधारय (सती क्रिया)
(C)	नक्तन्दिवम्	द्वन्द्व (नक्तं च दिवा च)
(D)	**कृतप्रणामः**	**बहुव्रीहि (कृतः प्रणामः येन सः)**

अतः विकल्प (D) सही है।

58. 'वनेचरः' में कौन सा प्रत्यय लगा है?
(A) घञ् (B) ष्यञ्
(C) ट (D) मनिन्

व्याख्या–
(A) अनु + भू + घञ् = अनुभावः
(B) ऋ + ण्यत् = आर्यः
(C) **वने + चर् + ट = वनेचरः**
(D) हा + मनिन् = जिह्मः
अतः विकल्प (C) सही है।

59. 'अश्रौषम्' में कौन-सा लकार है?
(A) लुङ्लकार (B) लोट्लकार
(C) लिट्लकार (D) लङ्लकार

व्याख्या–
(A) **अश्रौषम् = श्रु + लुङ् + मिप्**
(B) श्रूयताम् = श्रु + लोट् + कर्मणि + प्र० पु० एक०।
(C) इयेष = इष् = लिट् + तिप्
(D) अभवत् =भू + लङ् + तिप्
अतः विकल्प (A) सही है।
नोट–उपर्युक्त सभी धातुरूप शिवराजविजयम् से हैं।

60. 'वैक्रमः' में कौन-सा प्रत्यय है?
(A) अण् (B) यत्
(C) ईयसुन् (D) मतुप्

व्याख्या–
(A) **विक्रम + अण् = वैक्रमः**
(B) समान + तीर्थ + यत् = सतीर्थ्यः
(C) नेद् + ईयसुन् = नेदीयसि
(D) भग + मतुप् + ङीप् = भगवती
अतः विकल्प (A) सही है।
नोट–उपर्युक्त सभी शब्द शिवराजविजयम् से हैं।

61. 'आठ को पुंलिङ्ग में क्या कहेंगे?
(A) अष्टम् (B) अष्टौ
(C) अष्टाः (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या– 'अष्टन्' का रूप तीनों लिङ्गों में एक समान चलता है। यथा– 1. 'अष्ट/**अष्टौ**, 2. अष्ट/अष्टौ, 3. अष्टभिः/अष्टाभिः, 4. अष्टभ्यः/अष्टाभ्यः, 5. अष्टभ्यः/अष्टाभ्यः, 6. अष्टानाम्/अष्टानाम्, 7. अष्टसु/अष्टासु
अतः विकल्प (B) सही है।

62. 'भवभूति' का सम्बन्ध किस कृति-से नहीं है?
(A) उत्तररामचरितम् (B) महावीरचरितम्
(C) बुद्धचरितम् (D) मालतीमाधवम्

व्याख्या– * उत्तररामचरितम्, महावीरचरितम्, मालतीमाधवम् भवभूति कृत विदूषकरहित नाटक हैं।
* बुद्धचरितम्, अश्वघोष कृत महाकाव्य है। जिसमें कुल 28 सर्ग हैं।
अतः विकल्प (C) सही उत्तर है।

63. दुष्यन्त और शकुन्तला की कथा महाभारत के किस पर्व में प्राप्त होती है?
(A) वनपर्व (B) भीष्मपर्व
(C) आदिपर्व (D) सभापर्व

व्याख्या– दुष्यन्त और शकुन्तला की कथा महाभारत के आदिपर्व शकुन्तलोपाख्यान (अध्याय 67-74 के बीच) में प्राप्त होती है।

	ग्रन्थ	महाभारत का पर्व
(A)	किरातार्जुनीयम्	वनपर्व
(B)	गीता	भीष्मपर्व
(C)	**अभिज्ञानशाकुन्तलम्**	**आदिपर्व**
(D)	शिशुपालवधम्	सभापर्व

अतः विकल्प (C) सही है।

56. (C) 57. (D) 58. (C) 59. (A) 60. (A) 61. (B) 62. (C) 63. (C)

64. किस महाकाव्य के प्रत्येक सर्ग के अन्त में 'लक्ष्मी' शब्द का प्रयोग किया गया है?
(A) रघुवंशम् (B) शिशुपालवधम्
(C) किरातार्जुनीयम् (D) नैषधीयचरितम्

व्याख्या–
(A) कालिदास कृत रघुवंशमहाकाव्य 19 सर्गों तथा 1569 श्लोकों में विभक्त है।
(B) माघ कृत शिशुपालवधमहाकाव्य के प्रत्येक सर्ग का प्रारम्भ 'श्री' शब्द से और अन्त भी 'श्री' शब्द से होता है। इस पर मल्लिनाथ की 'सर्वङ्कषा' नाम की टीका है।
(C) **किरातार्जुनीय महाकाव्य के प्रत्येक सर्ग का आरम्भ 'श्री' शब्द से तथा अन्त 'लक्ष्मी' शब्द से होता है।** अतः इसे 'लक्ष्मीपदाङ्क' भी कहा जाता है। मल्लिनाथ ने इस पर '**घण्टापथ**' नामक टीका लिखी है।
(D) श्रीहर्ष कृत 'नैषधीयचरितम्' 22 सर्गों तथा 2830 श्लोकों में विभक्त है इस महाकाव्य के नायक नल (धीरोदात्त कोटि) के हैं। इसके प्रत्येक सर्ग के अन्त में 'आनन्द' पद का प्रयोग है, अतः इसे ''आनन्दाङ्क महाकाव्य'' भी कहते हैं। अतः विकल्प (C) सही है।

65. 'राजा ब्राह्मणाय गां ददाति' वाक्य में रेखाङ्कित शब्द की संज्ञा है?
(A) कर्म (B) करण
(C) अपादान (D) सम्प्रदान

व्याख्या–
(A) ''अकथितं च'' (1/4/51) सूत्र से अपादान आदि कारक की अविवक्षा में (दुह् याच् आदि 16 धातुओं के योग में) कर्मसंज्ञा होकर द्वितीया विभक्ति होती है यथा– सुधां क्षीरनिधिं मथ्नाति।
(B) 'साधकतमं करणम्' (1/4/42) सूत्र से क्रिया की सिद्धि में जो पदार्थ सबसे अधिक सहायक होता है, उसकी करणकारक संज्ञा होती है यथा–सः कन्दुकेन क्रीडति।
(C) 'ध्रुवमपायेऽपादानम्' (1.4.24) सूत्र से अपादानसंज्ञा का विधान होता है। यथा– सः अश्वात् पतति।
(D) यहाँ ''कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्'' सूत्र से 'ब्राह्मण' पद की सम्प्रदानसंज्ञा होकर ''चतुर्थी सम्प्रदाने'' सूत्र से **चतुर्थी विभक्ति** का विधान हुआ है। यथा– राजा ब्राह्मणाय गां ददाति। अतः विकल्प (D) सही है।

66. अष्टाध्यायी के रचनाकार हैं?
(A) भट्टोजिदीक्षित (B) भर्तृहरि
(C) वरदराज (D) पाणिनि

व्याख्या–

	व्याकरणग्रन्थ	**रचनाकार**
(A)	सिद्धान्तकौमुदी	भट्टोजिदीक्षित
(B)	वाक्यपदीयम्	भर्तृहरि
(C)	मध्यसिद्धान्तकौमुदी	वरदराज
(D)	**अष्टाध्यायी**	**पाणिनि**

अतः विकल्प (D) सही है।

67. मेघदूतम् में यक्ष के शाप के अवसान का दिन था?
(A) वैशाख पूर्णिमा
(B) भाद्रपदकृष्ण अष्टमी
(C) भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी
(D) देवप्रबोधिनी एकादशी

व्याख्या– ''शापान्तो मे भुजगशयनादुत्थिते शार्ङ्गपाणौ'' (उत्तरमेघ/50) भगवान् विष्णु आषाढ़ शुक्ल एकादशी को शेषनाग की शय्या पर सोते हैं और कार्तिक शुक्ल एकादशी को जगते हैं। आषाढ़ शुक्ल एकादशी को 'हरिशयनी एकादशी' भी कहा जाता है। कार्तिक शुक्ल एकादशी को 'हरिप्रबोधनी एकादशी' या देवप्रबोधिनी भी कहा जाता है। उपर्युक्त वाक्यों से यह स्पष्ट होता है कि हरिशयनी एकादशी को यक्ष मेघ को देखता है तथा हरिप्रबोधिनी एकादशी को यक्ष के शाप का अवसान हो जायेगा।
अतः विकल्प (D) सही है।

68. 'अस्मद्' शब्द का स्त्रीलिङ्ग में क्या रूप होगा?
(A) अहम् (B) त्वम्
(C) मया (D) कोई लिङ्ग नहीं होता

व्याख्या– 'अस्मद्' सर्वनाम शब्द का तीनो लिङ्गों में एक समान रूप चलता है।
अतः विकल्प (D) सही है।

69. 'श्री' शब्द के द्वितीया बहुवचन का रूप होगा?
(A) श्रियः (B) श्रीन्
(C) श्रीः (D) श्रियम्

व्याख्या– * 'श्री' ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग का द्वितीया विभक्ति में–''श्रियम् श्रियौ **श्रियः**'' रूप बनता है।
* प्रथमा विभक्ति में– ''श्रीः श्रियौ श्रियः''
* पञ्चमी, षष्ठी एकवचन में भी ''श्रियः'' रूप बनता है।
* 'श्रीन्' रूप सातों विभक्तियों में कहीं नहीं बनता है।
अतः विकल्प (A) सही है।

64. (C) 65. (D) 66. (D) 67. (D) 68. (D) 69. (A)

70. 'मति' शब्द का चतुर्थी एकवचन का रूप है?
(A) मत्यै (B) मतये
(C) मत्यै, मतये (B) मत्यै, मतये दोनों नहीं

व्याख्या– मति (बुद्धि) इकारान्त स्त्रीलिङ्ग का रूप–चतुर्थी विभक्ति में–**मत्यै/मतये**, मतिभ्याम्, मतिभ्यः बनता है। अतः विकल्प (C) सर्वाधिक उपयुक्त है।

71. कादम्बरी और हर्षचरितम् में बाण ने किस देवता की स्तुति की है?
(A) शिव (B) विष्णु
(C) इनमें से दोनों (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या– बाणभट्ट ने हर्षचरितम् में शिव की तथा कादम्बरी के मङ्गलाचरण में ब्रह्मा, विष्णु, महेश (शिव) की स्तुति की है। अतः विकल्प (C) सर्वाधिक उपयुक्त है।

72. भर्तृहरि के अनुसार सर्वोत्कृष्ट आभूषण है?
(A) विनय (B) क्षमा
(C) शील (D) वाक्संयम

व्याख्या– ''सर्वेषामपि सर्वकारणमिदं **शीलं परं भूषणम्।**'' अर्थात् शील सभी का सर्वश्रेष्ठ आभूषण है। (नीतिशतकम्/ धैर्यपद्धति) अतः विकल्प (C) सही है।

73. 'प्रत्यक्षम्' में समास है?
(A) तत्पुरुष (B) द्वन्द्व
(C) बहुव्रीहि (D) अव्ययीभाव

पद	समास	विग्रह
(A) मेघात्यस्तः	तत्पुरुष	(मेघम् अत्यस्तः)
(B) इन्द्राग्नी	द्वन्द्व	(इन्द्रश्च अग्निश्च)
(C) बहुव्रीहिः	बहुव्रीहि	(बहुः व्रीहिः यस्य सः)
(D) प्रत्यक्षम्	**अव्ययीभाव**	(अक्षम् अक्षं प्रति)

अतः विकल्प (D) सही है।

74. शुक के पूर्व जन्म का नाम था?
(A) इन्द्रायुध (B) चन्द्रापीड
(C) पुण्डरीक (D) कपिञ्जल

व्याख्या– * बाणभट्ट की कादम्बरी 'कथा' में शुक के तीन जन्मों का वर्णन है– प्रथमजन्म में–**पुण्डरीक**, द्वितीय जन्म में–वैशम्पायन, तृतीय जन्म में–शुक।
* चन्द्रापीड के क्रमशः तीन जन्मों के नाम–चन्द्रमा, चन्द्रापीड, शूद्रक।
* इन्द्रायुध पूर्व जन्म में कपिञ्जल था। अतः विकल्प (C) सही है।

75. 'वीररस' प्रधानकाव्य है?
(A) उत्तररामचरितम् (B) नैषधीयचरितम्
(C) कुमारसम्भवम् (D) किरातार्जुनीयम्

ग्रन्थ	लेखक	प्रधानरस
(A) उत्तररामचरितम्	भवभूति	करुणरस
(B) नैषधीयचरितम्	श्रीहर्ष	शृङ्गाररस
(C) कुमारसम्भवम्	कालिदास	शृङ्गाररस
(D) **किरातार्जुनीयम्**	भारवि	**वीररस**

अतः विकल्प (D) सही है।

76. 'तेन सुप्यते' किस वाच्य का वाक्य है?
(A) कर्तृवाच्य (B) कर्मवाच्य
(C) भाववाच्य (D) इनमें से दोनों

व्याख्या– * **भाववाच्य** के कर्ता में तृतीयाविभक्ति होती है।
* कर्म होता ही नहीं है।
* क्रिया सदा प्रथमपुरुष एकवचन में होती है। यथा–''तेन सुप्यते, मया सुप्यते, त्वया सुप्यते'' अर्थात् भाववाच्य की क्रिया पर पुरुष का प्रभाव नहीं पड़ता है। अतः विकल्प (C) सही है।

77. कुबेर द्वारा यक्ष को शाप दिये जाने पर वह किस पर्वत पर जाकर रहने लगा–
(A) विन्ध्याचल (B) अरावली
(C) आम्रकूट (D) रामगिरि

व्याख्या– ''स्निग्धच्छाया तरुषु वसतिं रामगिर्याश्रमेषु'' (मेघदूत-1) इससे पता चलता है कि विरही यक्ष अलकापुरी से आकर चित्रकूट के रामगिरि पर्वत पर निवास करने लगा।

78. 'रामः गच्छति' का कर्मवाच्य होगा–
(A) रामः गम्यते (B) रामेण गच्छति
(C) रामेण गम्यते (D) रामः गमयति

व्याख्या– यहाँ राम अनुक्त कर्त्ता है इसलिए 'कर्तृकरणयोस्तृतीया' सूत्र से राम में तृतीया विभक्ति तथा गम् धातु का कर्मणि एकवचन में गम्यते रूप होता है। **'रामेण गम्यते'**। अतः विकल्प (C) सही है।

79. 'कुन्द' का पुष्प होता है?
(A) लाल (B) सफेद
(C) पीला (D) बहुरङ्गी

पुष्प	रंग	ऋतु	पुष्प	रंग	ऋतु
कमल	लाल	ग्रीष्म, शरद्	**कुन्द**	**सफेद**	**हेमन्त**
लोध्र	पीला	शिशिर	कुरबक	लाल	वसन्त
शिरीष	हरा	ग्रीष्म	कदम्ब	पीला	वर्षा
जपापुष्प	लाल		कुमुद	सफेद	

70. (C)	71. (C)	72. (C)	73. (D)	74. (C)	75. (D)	76. (C)	77. (D)
78. (C)	79. (B)						

80. निम्नलिखित में से कौन गीतिकाव्य का ग्रन्थ नहीं है?
(A) कुमारसम्भवम् **(B) ऋतुसंहारम्**
(C) मेघदूतम् **(D) B और C दोनों**

व्याख्या– ऋतुसंहारम् और मेघदूतम् कालिदास कृत गीतिकाव्य एवं खण्डकाव्य है। **कुमारसम्भवम्** 17 सर्गों का महाकाव्य है। अतः विकल्प (A) सही है।

81. 'दुधुक्षसि' में कौन-सी धातु है?
(A) दुधु **(B) दुह्**
(C) धुक्ष् **(D) दुक्ष्**

व्याख्या– * दुधुक्षसि सन् प्रत्ययान्त धातु है।
दुह् + सन् + लट् मध्यमपुरुष, एकचवन।
अतः विकल्प (B) सही है।

82. 'सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ते' सूक्ति किस ग्रन्थ से सम्बद्ध है?
(A) मेघदूतम् **(B) नीतिशतकम्**
(C) शिवराजविजयम् **(D) उत्तररामचरितम्**

व्याख्या–
(A) ''सेविष्यन्ते नयनसुभगं खे भवन्तं बलाकाः'' (पूर्वमेघ/10)
(B) ''सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ते'' (नीतिशतकम्/33)
(C) ''सत्यं न लक्षितो मया समयवेगः'' –(शिवराजविजयम्-प्र0नि0)
(D) ''सीदन्नन्धे तमसि विधुरो मज्जतीवान्तरात्मा'' (उत्तररामचरितम् 3/38)
अतः विकल्प (B) सही है।

83. 'पितुः' पितृ शब्द का कौन-सा रूप है?
(A) षष्ठी एकवचन **(B) द्वितीया बहुवचन**
(C) प्रथमा बहुवचन **(D) सप्तमी एकवचन**

व्याख्या– पितृ (ऋकारान्त) पुंलिङ्ग का रूप–
(A) **षष्ठी विभक्ति** में–**पितुः**, पित्रोः, पितृणाम्।
(B) द्वितीया विभक्ति में–पितरम्, पितरौ, पितॄन्।
(C) प्रथमा विभक्ति में–पिता, पितरौ, पितरः।
(D) सप्तमी विभक्ति में–पितरि, पित्रोः, पितृषु।
अतः विकल्प (A) सही है।

84. 'चतुरशीतिः' किसे कहते हैं?
(A) 84 **(B) 48**
(C) 44 **(D) 480**

व्याख्या–

	संख्या		संस्कृतशब्द
(A)	**84**	–	चतुरशीतिः
(B)	48	–	अष्टचत्वारिंशत्/अष्टाचत्वारिंशत्
(C)	44	–	चतुःचत्वारिंशत्
(D)	480	–	अशीत्यधिकं चतुःशतम्

अतः विकल्प (A) सही है।

85. 'दीपावलिः' का सन्धिविच्छेद होगा?
(A) दीपा + वलिः **(B) दीपा + अवलिः**
(C) दीप + आवलिः **(D) दीप + वलिः**

व्याख्या– ''अकः सवर्णे दीर्घः'' (6/1/101)" सूत्र से **दीप + आवलिः =दीपावलिः** में दीर्घसन्धि है।
अतः विकल्प (C) सही है।

86. ''नैकः' में कौन सा समास है?
(A) नञ्समास **(B) अव्ययीभावसमास**
(C) एकशेषद्वन्द्वसमास **(D) सुप्सुपा समास**

व्याख्या–
(A) ''नञ्'' (2/2/6) सूत्र से 'न निर्भिन्नः = अनिर्भिन्नः' में नञ् तत्पुरुष समास है।
(B) ''नदीभिश्च'' (2/1/20) सूत्र से पञ्चानां गङ्गानां समाहारः = पञ्चगङ्गम् में अव्ययीभावसमास है।
(C) ''सरूपाणामेकशेष एकविभक्तौ'' (1/2/64) सूत्र से दोनों पदों में भिन्नलिङ्ग रहने पर पुंलिङ्ग का विधान करता है। यथा अजश्च अजा च = अजौ में एकशेष द्वन्द्वसमास है।
(D) ''सह सुपा'' (2/1/4) सूत्र से ''न एकः = नैकः'' में **सुप्सुपा समास** है। अतः विकल्प (D) सही है।

87. 'प्रत्यक्षम्' में कौन सा समास है?
(A) केवलसमास **(B) अव्ययीभावसमास**
(C) कर्मधारयसमास **(D) द्वन्द्वसमास**

व्याख्या– इस प्रश्न पत्र के प्रश्न संख्या-73 में यही प्रश्न पूछा गया है। अर्थात् एक ही प्रश्नपत्र में यह प्रश्न दो बार पूछा गया है।

शब्द	समास
(A) भूतपूर्वः	केवलसमास
(B) **प्रत्यक्षम्**	**अव्ययीभाव**
(C) घनश्यामः	कर्मधारय
(D) रामकृष्णौ	द्वन्द्वसमास

80. (A) 81. (B) 82. (B) 83. (A) 84. (A) 85. (C) 86. (D) 87. (B)

88. 'गवाक्षः' पद में कौन-सा समास है?
(A) बहुव्रीहि (B) तत्पुरुष
(C) केवलसमास (D) द्वन्द्वसमास

	पद	समासविग्रह
(A)	द्वित्राः	बहुव्रीहि (द्वौ वा त्रयो वा)
(B)	**गवाक्षः**	**तत्पुरुष** (गोः सदृशः अक्षः)
(C)	वागर्थाविव	केवलसमास
(D)	पितरौ	द्वन्द्वसमास (माता च पिता च)

अतः विकल्प (B) सही है।

89. 'अन्तर् + राष्ट्रियः' का सम्मिलित रूप होगा?
(A) अन्ताराष्ट्रियः (B) अन्तर्राष्ट्रियः
(C) अन्तर्राष्ट्रीयः (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या– अन्तर् + राष्ट्रियः = में ''रो रि'' (8/3/14) सूत्र से पूर्व र् का लोप हुआ–अन्त + राष्ट्रियः पुनः 'ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः' (6/3/111) सूत्र से अकार को दीर्घादेश होकर **'अन्ताराष्ट्रियः'** रूप बना।
अतः विकल्प (A) सही है।

90. 'अलं श्रमेण' इस वाक्य में कौन-सी विभक्ति, किस कारक से है?
(A) 'श्रम' हेतु है इसलिए हेतौ से तृतीया है।
(B) 'श्रम' करण है अतः 'कर्तृकरणयोस्तृतीया' से तृतीया है।
(C) करण कारक है। अतः तृतीया है।
(D) उक्त वाक्य अशुद्ध है।

व्याख्या– 'अलं श्रमेण'–इस वाक्य में क्रिया श्रूयमाण (प्रयुक्त) नहीं है फिर भी अर्थतः साधन क्रिया का बोध हो रहा है यानी–श्रमेण साध्यं नास्ति! इस क्रिया का करण है श्रम। अतः श्रम में कर्तृकरणयोस्तृतीया से तृतीया विभक्ति हुई। अतः विकल्प (B) सही है।

91. शुद्ध शब्द चुनिए–
(A) अम्बरीसः (B) अम्बरीशः
(C) अम्बरिशः (D) अम्बरीषः

व्याख्या– 'अब्' धातु से 'ईषन्' प्रत्यय करके 'अरुड्' आगम होकर 'अम्बरीषः' पद बनेगा। **'अम्बरीषः'** शब्द शुद्ध है। यहाँ तालव्य 'श' नही होगा। क्योंकि यहाँ 'ईश' शब्द नहीं है। अतः विकल्प (D) सही है।

92. अशुद्ध वाक्य चुनिए–
(A) बालः चित्रम् अवलोकते
(B) चिन्तकः आलोचते
(C) तरुणः वस्त्रं धरति
(D) सा स्वयं लेपयति

व्याख्या– इस प्रश्न पर सभी अभ्यर्थियों को अङ्क दिया गया है। चयन बोर्ड द्वारा पूर्व में (D) को सही माना गया था। बाद में विषयविशेषज्ञों द्वारा निर्णय के बाद चारों विकल्पों को सही माना गया। अतः उपर्युक्त चारों विकल्प शुद्ध हैं।

93. शुद्ध शब्द चुनिए–
(A) सहोदरा (B) सहोदरी
(C) दोनों शुद्ध हैं (D) दोनों अशुद्ध हैं

व्याख्या– * **'सहोदरा' शब्द शुद्ध है** इसका उल्लेख शुकनासोपदेश में है–
''अमृतसहोदरापि कटुविपाका''–अर्थात् (लक्ष्मी) अमृत की सगी बहन (सहोदरा) होने पर भी कड़वे फल देने वाली है। अतः विकल्प (A) सही है।
* सहोदरी शब्द अशुद्ध है। क्योंकि यहाँ किसी भी सूत्र से ङीप्, ङीष्, या ङीन् नहीं होगा।

94. 'इनः' से तात्पर्य है–
(A) सेवक (B) स्वामी
(C) गुलाम (D) पापी

व्याख्या– * ''इनश्च दिनस्य'' अर्थात् 'दिन के स्वामी हैं'–सूर्य (शिवराजविजयम्) यहाँ 'इनः' का अर्थ = स्वामी है।
* 'परिजन' का अर्थ सेवकजन है।
* 'क्रीतदासः' का अर्थ गुलाम है। अतः विकल्प (B) सही है।

95. 'दम्भोलिः' शब्द का क्या अर्थ है?
(A) वज्र (B) पाषाण
(C) कमल (D) भ्रमर

व्याख्या–
(A) ''दम्भोलिघटितेयं रसना, या दारुणदानवोदन्तोदीरणैर्न दीर्य्यते।'' अर्थात् यह (मेरी) जिह्वा **वज्र** से बनी है जो कि दारुण दानवों के वृत्तान्त के वर्णन से फट नहीं जाती है। –शिवराजविजयम्/ब्रह्मचारी गुरु
(B) 'दृषद्' का अर्थ पत्थर (पाषाण) है।
(C) 'कुशेशय' का शाब्दिक अर्थ–'कमल' है।
(D) 'षट्पदः' का अर्थ– 'भ्रमर' है।
अतः विकल्प (A) सही है।

88. (B) 89. (A) 90. (B) 91. (D) 92. (*) 93. (A) 94. (B) 95. (A)

96. 'पञ्चबाणस्तु बाणः' कथन किसका है?
(A) जयदेव का
(B) चन्द्रदेव का
(C) गङ्गादेवी का
(D) त्रिविक्रमभट्ट का

व्याख्या–
(A) ''पञ्चबाणस्तु बाणः'' –**जयदेव** (बाणभट्ट के विषय में)
(B) ''बाणस्तु पञ्चाननः''
चन्द्रदेव (बाणभट्ट के विषय में)
(C) ''भट्टबाणस्य भारतीम्''
गङ्गादेवी (बाणभट्ट के विषय में)
(D) ''धनुषेव गुणाढ्येन निःशेषोरञ्जितो जनः''–
त्रिविक्रमभट्ट (बाणभट्ट के विषय में)
अतः विकल्प (A) सही है।

97. 'अधीत' शब्द की व्युत्पत्ति का ठीक विकल्प चुनिए–
(A) अधि + इट् + यत्
(B) अधि + इट् + क्त
(C) अधि + इङ् + क्त
(D) अधि + इट् + क्तवतु

व्याख्या– 'विदित-वेदितव्यस्याधीतसर्वशास्त्रस्य ते नाल्पमप्युपदेष्टव्यमस्ति'–शुकनासोपदेश। **अधि + इङ् + क्त = अधीतः।** अतः विकल्प (C) सही है।

98. 'लघिमा' की व्युत्पत्ति हेतु ठीक विकल्प चुनिए–
(A) लघु + इमनिच् **(B) लघु + मनिन्**
(C) लघु + मतुप् **(D) लघु + वतुप्**

व्याख्या–
(A) **लघु + इमनिच् = लघिमा**
(B) लघु शब्द से 'मनिन्' प्रत्यय नही होगा, क्योंकि 'मनिन्' कृत् प्रत्यय है।
(C) लघु + मतुप् = लघुमान्।
(D) लघु + वतुप् = लघुवान्। अतः विकल्प (A) सही है।

99. 'परभृत' किस पक्षी को कहते हैं?
(A) कौआ **(B) कोयल**
(C) कबूतर **(D) मयूर**

व्याख्या–''परभृतविरुतं कलं यथा प्रतिवचनीकृतमेभिरीदृशम्'' (अभिज्ञान 4/10)

	शब्द	**अर्थ**
(A)	काकः	कौआ
(B)	**परभृतः**	**कोयल**
(C)	कपोतः	कबूतर
(D)	मयूरः	मोर

अतः विकल्प (B) सही है।

100. आरम्भगुर्वी क्षयिणी क्रमेण
लघ्वी पुरा वृद्धिमती च पश्चात्।
दिनस्य पूर्वार्द्धपरार्द्ध भिन्ना
छायेव मैत्री खलसज्जनानाम्।।
इस श्लोक में छन्द है?
(A) इन्द्रवज्रा **(B) उपेन्द्रवज्रा**
(C) उपजाति **(D) वसन्ततिलका**

व्याख्या–
(A) 'अर्थो हि कन्या परकीय एव'–
इन्द्रवज्रा/अभिज्ञानशाकुन्तलम् 4/22
(B) 'अलं महीपाल तव श्रमेण'– उपेन्द्रवज्रा/रघुवंशम् 2/34
(C) **आरम्भगुर्वी....खलसज्जनानाम्''–उपजाति/नीति./50**
(D) ''अन्तर्हिते शशिनि सैव कुमुद्वती मे''
वसन्ततिलका/अभिज्ञानशाकुन्तलम् 4/3
अतः विकल्प (C) सही है।

101. ''उदतूतुलत्'' में कौन-सा लकार है?
(A) लङ् **(B) लिङ्**
(C) लुङ् **(D) लृङ्**

व्याख्या–
* ''महादेवमूर्तावपि, गदामुदतूतुलत्'' अर्थात् महादेव की मूर्ति पर भी (उस महमूद) ने गदा उठाई। –(शिवराजविजयम्)
* **उत् + तुल् + लुङ् (तिप्) = उदतूतुलत्**
अतः विकल्प (C) सही है।

102. 'आदिदेश' में पुरुष वचन है?
(A) प्रथमपुरुष एकवचन
(B) मध्यमपुरुष बहुवचन
(C) उत्तमपुरुष द्विवचन
(D) मध्यमपुरुष एकवचन

व्याख्या– 'आदिदेश' दिश् धातु (उभयपदी) लिट्लकार **प्रथमपुरुष एकवचन** का रूप है।
अतः विकल्प (A) सही है।

96. (A) 97. (C) 98. (A) 99. (B) 100. (C) 101. (C) 102. (A)

103. 'विदित-वेदितव्यः' में कौन-सा समास है?
(A) अव्ययीभाव (B) द्विगु
(C) बहुव्रीहि (D) तत्पुरुष

व्याख्या– ''विदित-वेदितव्यस्याधीतसर्वशास्त्रस्य'' – कादम्बरी शुकानासोपदेश

* विदितं वेदितव्यं येन तस्य = विदित-वेदितव्यः (ज्ञातव्य वस्तुओं का ज्ञाता है जो अर्थात् चन्द्रापीड) **बहुव्रीहि**
* गिरिषु इति–अन्तर्गिरि में अव्ययीभावसमास है
* 'अष्टाध्यायी' मे द्विगुसमास है।
* वाचा युद्धम् = 'वाक्युद्धम्' में तत्पुरुषसमास है।

अतः विकल्प (C) सही है।

104. 'इच्छन्' में कौन-सा प्रत्यय है?
(A) खच् (B) तृच्
(C) यत् (D) शतृ

व्याख्या–

(A) 'प्रियंवदः' में खच् प्रत्यय है।
(B) 'कर्ता' में तृच् प्रत्यय है।
(C) 'गेयम्' में यत् प्रत्यय है
(D) **इच्छन् में शतृ प्रत्यय है।**
अतः विकल्प (D) सही है।

105. अधोलिखित में कौन वर्ण 'झष्' प्रत्याहार में आता है?
(A) ख (B) ज
(C) ट (D) ध

व्याख्या– झष् प्रत्याहार=**झ, भ, घ, ढ, ध** वर्ण आते हैं।
अतः विकल्प (D) सही है।

106. 'सन्तः' में कौन सी धातु है?
(A) सद् (B) अस्
(C) सु (D) तन्

व्याख्या–

(A) सद् धातु का लट्लकार प्रथमपुरुष में–सीदति सीदतः सीदन्ति रूप चलता है।
(B) **अस् + लट् (शतृ) = सन्तः।** अस् धातु का शत्रन्तरूप– सत् सन्तौ सन्तः चलता है।
(C) 'सु (निचोड़ना) लट्लकार प्रथमपुरुष में–सुनोति सुनुतः सुन्वन्ति रूप चलता है।
(D) तन् (फैलाना) लट्लकार प्रथमपुरुष में–तनोति तनुतः तन्वन्ति रूप चलता है।
अतः विकल्प (B) सही है।

107. 'शूली' का अर्थ है?
(A) भाले वाला (B) शिव
(C) काँटेदार (D) कष्टप्रद

व्याख्या–

* ''कुर्वन्सन्ध्याबलिपटहतां शूलिनः श्लाघनीयाम्'' पूर्वमेघ/37
* 'शूलिनः' षष्ठी एकवचन का रूप है जो शङ्कर जी के लिए प्रयुक्त है। अतः **'शूली' का अर्थ 'शिव' है।**
* शूलम् (त्रिशूलम्) अस्य अस्ति इति शूली अर्थात् शिवः।

शूल + इनि = शूलिन् (शूली) अतः विकल्प (B) सही है।

108. 'लुब्धक' का अर्थ है?
(A) लोभी (B) लुभावना
(C) उपलब्ध (D) बहेलिया

व्याख्या– ''लुब्धकधीवरपिशुना निष्कारणमेव वैरिणो भवति'' नीतिशतकम्/दुर्जनपद्धति–51

यहाँ **लुब्धक का अर्थ बहेलिया** है।

धीवरः = मछुआरा, पिशुनः = चुगुलखोर

अतः विकल्प (D) सही है।

109. 'कान्तोदन्त' का अर्थ है?
(A) चमकते दाँत (B) प्रियतम का वृत्तान्त
(C) प्रिया के दाँत (D) प्रिय का अन्त

व्याख्या–

* ''कान्तोदन्तः सुहृदुपनतः सङ्गमात्किञ्चिदूनः'' अर्थात् स्त्रियों के लिए मित्र द्वारा लाया गया **प्रियतम का समाचार** (वृत्तान्त) समागम से कुछ ही कम होता है। उत्तरमेघ/40
* यहाँ 'कान्तोदन्त' का अर्थ 'प्रियतम का समाचार' है।

अतः विकल्प (B) सही है।

110. उज्जयिनी में स्थित शिवलिङ्ग का क्या नाम है?
(A) वैद्यनाथ (B) महाकाल
(C) मार्कण्डेय (D) विश्वनाथ

व्याख्या– ''अप्यन्यस्मिञ्जलधर! महाकालमासाद्य काले'' अर्थात् **महाकाल** मन्दिर में अन्य समय में भी पहुँचकर तुम्हें वहाँ ठहर जाना चाहिए। (पूर्वमेघ/37)

अतः विकल्प (B) सही है।

103. (C)	104. (D)	105. (D)	106. (B)	107. (B)	108. (D)	109. (B)	110. (B)

111. किस काव्य में अलकापुरी का वर्णन प्राप्त होता है?
(A) पवनदूत
(B) मेघदूतम्
(C) रघुवंशम्
(D) किरातार्जुनीयम्

व्याख्या– कालिदास कृत **मेघदूतम् में** अलकापुरी का वर्णन है। ''गन्तव्या ते वसतिरलका नाम यक्षेश्वराणाम्'' (पूर्वमेघ-7)
अतः विकल्प (B) सही है।

112. मेघदूत किस विधा का ग्रन्थ है?
(A) महाकाव्य **(B) खण्डकाव्य**
(C) नाटक **(D) चम्पू**

ग्रन्थ	विधा
(A) जानकीहरणम्	महाकाव्य
(B) **मेघदूतम्**	**खण्डकाव्य**
(C) वेणीसंहारम्	नाटक
(D) नलचम्पू	चम्पू

अतः विकल्प (B) सही है।

113. भारतवर्ष में सर्वप्रथम यवन शासन का बीजारोपण किसने किया?
(A) महमूद गजनवी ने **(B) शहाबुद्दीन ने**
(C) कुतुबुद्दीन ने **(D) अलाउद्दीन ने**

व्याख्या– * अम्बिकादत्तव्यास कृत शिवराजविजयम् उपन्यास में गोर देश का निवासी **शहाबुद्दीन (मो० गोरी) ने भारत में यवनशासन का बीजारोपण किया।**
* महमूद गजनवी 'गजनी' देश का निवासी था जिसने सोमनाथ मन्दिर को लूटा था।
* शहाबुद्दीन (मो० गोरी) का गुलाम कुतुबुद्दीन भारत का प्रथमसम्राट् बना।

अतः विकल्प (B) सही है।

114. पत्रलेखा किसकी पुत्री थी?
(A) गन्धर्वराज की **(B) शुकनास की**
(C) तारापीड की **(D) कुलूतेश्वर की**

	पुत्र/पुत्री		पिता
(A)	कादम्बरी	–	गन्धर्वराज चित्ररथ
(B)	वैशम्पायन	–	शुकनास
(C)	चन्द्रापीड	–	तारापीड
(D)	**पत्रलेखा**	**–**	**कुलूतेश्वर**

अतः विकल्प (D) सही है।

115. कादम्बरी में कितने जन्म की कथा वर्णित है?
(A) दो जन्म
(B) एक जन्म
(C) तीन जन्म
(D) चार जन्म

व्याख्या– बाणभट्ट कृत कादम्बरी में तीन जन्मों की कथा है। यथा–

प्रथम जन्म	द्वितीय जन्म	तृतीय जन्म
चन्द्रमा	चन्द्रापीड	शूद्रक
पुण्डरीक	वैशम्पायन	शुक
लक्ष्मी	–	चाण्डालकन्या
कपिञ्जल	इन्द्रायुध	–
रोहिणी	पत्रलेखा	–

अतः विकल्प (C) सही है।

116. मेघदूतम् की यक्षिणी शापदिवसों की गणना किससे करती है–
(A) पुष्पों से
(B) लेखनी से
(C) मणियों से
(D) अन्नकणों से

व्याख्या– ''शेषान् मासान् विरहदिवसस्थापितस्यावधेर्वा, विन्यस्यन्ती भुवि गणनया **देहलीदत्तपुष्पैः।**'' (उत्तरमेघ/27) अर्थात् वियोग के दिन से निश्चित की हुई अवधि के शेष महीनों को देहली पर रखे हुए **पुष्पों से** गिनकर धरती पर रखती है वह यक्षिणी।
अतः विकल्प (A) सही है।

111. (B) 112. (B) 113. (B) 114. (D) 115. (C) 116. (A)

117. 'कण्ठाश्लेषप्रणयिनि जने किं पुनर्दूरसंस्थे' इनमें 'जन' शब्द किसका बोधक है?
(A) राजहंस (B) मेघ (C) यक्षिणी (D) चातक

व्याख्या– कण्ठ के आलिङ्गन से प्रेम करने वाली मेरी प्रिया रूप जन के दूर होने पर क्या कहा जाय। इस पद में सप्तमी के कारण ऐसे व्यक्ति की ओर संकेत कर रहा है, जो उस यक्ष के कण्ठालिङ्गन का इच्छुक हो और वह व्यक्ति केवल उसकी प्रिया ही हो सकती है जो उससे दूर स्थित है। 'जने' से अर्थ यहाँ पर प्रिया अर्थात् यक्षिणी है। अतः विकल्प (C) सही है।

स्रोत- (i) मेघदूतम् (पूर्वमेघ-3) आर0बी0 शास्त्री
(ii) मेघदूतम्- विजेन्द्र शर्मा, पेज-07

118. 'कृदन्त' की संज्ञा होती है?
(A) प्रत्यय (B) धातु (C) संयोग (D) प्रातिपदिक

व्याख्या–

(A) "प्रत्ययः" (3/1/1) सूत्र से सुप्, क्यच्, सन् आदि की प्रत्यय संज्ञा होती है।

(B) "भूवादयो धातवः" (1/3/1) सूत्र से भू आदि की धातु संज्ञा होती है।

(C) "हलोऽनन्तरा संयोगः" (1/1/7) सूत्र से अच् (स्वर) के व्यवधान से रहित व्यञ्जनों (हल्) की संयोगसंज्ञा होती है।

(D) "कृत्तद्धितसमासाश्च" (1/2/46) सूत्र से कृदन्त, तद्धितान्त तथा समास की **प्रातिपदिक संज्ञा** होती है।

अतः विकल्प (D) सही है।

119. शिवराजविजयम्' के सम्बन्ध में क्या सही नहीं है?
(A) इसके लेखक अम्बिकादत्तव्यास हैं।
(B) इसके नायक शिवाजी हैं।
(C) शिवराजविजयम् में तेरह निःश्वास हैं।
(D) शिवराजविजयम् प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास है।

व्याख्या– * शिवराजविजयम् में बारह निःश्वास एवं तीन विराम है, इसके नायक शिवाजी हैं। अतः विकल्प (C) सही उत्तर है।

120. 'व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवं'–सूक्ति किरातार्जुनीयम् के किस सर्ग से उद्धृत है?
(A) प्रथमसर्ग (B) द्वितीयसर्ग
(C) तृतीयसर्ग (D) चतुर्थसर्ग

व्याख्या– "व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवं" अर्थात् जो कपटीजनों के साथ कपटी नहीं बनते वे मूढबुद्धि पराजय को प्राप्त होते हैं। **(किरात0 1/30)**
अतः विकल्प (A) सही है।

121. रघुवंश में कुल कितने सर्ग हैं?
(A) पचास (B) सत्रह
(C) उन्नीस (D) अट्ठाइस

	महाकाव्य	**सर्ग**
(A)	हरविजयम्	50
(B)	कुमारसम्भवम्	17
(C)	**रघुवंशम्**	**19**
(D)	बुद्धचरितम्	28

अतः विकल्प (C) सही है।

122. 'शिवराजविजयम्' में कितने निःश्वास है।
(A) 10 (B) 36
(C) 3 (D) 12

	ग्रन्थ	**विभाजन**
(A)	साहित्यदर्पण	10 परिच्छेद
(B)	शृङ्गारप्रकाश	36 प्रकाश
(C)	व्यक्तिविवेक	3 विमर्श
(D)	**शिवराजविजयम्**	**3 विराम, 12 निःश्वास**

अतः विकल्प (D) सही है।

123. किसने शकुन्तला को शाप के प्रभाव से मुक्त करने के लिए दुर्वासा से प्रार्थना की?
(A) प्रियंवदा (B) गौतमी
(C) अनसूया (D) मेनका

व्याख्या– 'गच्छ पादयोः प्रणम्य निवर्तयैनं'–अनसूया, प्रियंवदा से कहती है कि जाओ चरणों में प्रणाम करके उन्हें (दुर्वासा को) लौटा लाओ। 'प्रकृतिवक्रः स कस्यानुनयं प्रतिगृह्णाति! किमपि पुनः सानुक्रोशःकृतः' अर्थात् **प्रियंवदा** कहती है कि–स्वभाव से टेढ़े वे (महर्षि दुर्वासा) किसकी प्रार्थना को स्वीकार करते हैं? फिर भी (मैंने) कुछ दयायुक्त कर लिया। इसप्रकार प्रियंवदा ने शकुन्तला की शापमुक्ति के लिए दुर्वासा से प्रार्थना की। अतः विकल्प (A) सही है।

117. (C) 118. (D) 119. (C) 120. (A) 121. (C) 122. (D) 123. (A)

124. रघुवंशियों का कौन-सा कालक्रमानुसार युग्म सही है?
(A) रघु, अज, दशरथ, राम (B) दिलीप, अज, दशरथ, राम
(C) अज, दिलीप, रघु, राम (D) राम, दशरथ, रघु, अज

व्याख्या– कालिदास कृत रघुवंशम् में वर्णित `31' राजाओं का कालक्रम इस प्रकार है?– मनु (वैवस्वत), दिलीप, **रघु, अज, दशरथ, राम,** लव, कुश, अतिथि, निषध, नल, नभ, पुण्डरीक, क्षेमधन्वा, देवानीक, अहीनग, पारियात्र, शिल, उन्नाभ, वज्रणाभ, शंखण, व्युषिताश्व, विश्वसह, हिरण्यनाभ, कौशल्य, ब्रह्मिष्ठ, पुत्र, पुष्य, ध्रुवसन्धि, सुदर्शन, अग्निवर्ण। तत्पश्चात् अग्निवर्ण की पत्नी तथा गर्भस्थ बालक को राज्याधिकार। अतः विकल्प (A) सही है।

125. महाभारत को कहा जाता है।
(A) जयसंहिता (B) आदिकाव्य
(C) सौप्तिक संहिता (D) अरण्यसंहिता

व्याख्या– * महाभारत को **जयसंहिता** के नाम से भी जाना जाता है। इसे **'शतसाहस्त्रीसंहिता'** भी कहते हैं।
* 'आदिकाव्य' वाल्मीकिरामायण को कहते हैं। इसे **'चतुर्विंशति-साहस्त्री-संहिता'** भी कहते हैं।
अतः विकल्प (A) सही है।

124. (A) 125. (A)

प्रशिक्षित-स्नातकशिक्षक-चयनपरीक्षा (TGT)–2013

1. निम्नलिखित में कौन शब्द शुद्ध है?
(A) अक्षतः **(B) दाराः**
(C) लाजः **(D) वर्षा**

व्याख्या–

- **''दाराऽक्षतलाजाऽसूनां बहुत्वं च''**–(पाणिनीयलिङ्गानुशासन 106) दारा, अक्षत तथा लाजा - शब्द पुँल्लिङ्ग होते हैं तथा ये शब्द सदा बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं।
यथा– **दाराः** = पत्नी, **अक्षताः** = बिना टूटे चावल, **लाजाः** = खील, भाड़ में भुने हुए चावल।
- **''अप्सुमनस्समासिकतावर्षाणां बहुत्वं च''** – (पाणिनीयलिङ्गानुशासन–29)
अप्, सुमनस्, समा, सिकता तथा वर्षा–ये शब्द स्त्रीलिङ्ग में होते हैं, तथा बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं।
यथा– **आपः** = जल, **सुमनसः** = फूल, **समाः** = संवत्सर **सिकताः** = बालू, **वर्षाः** = वर्षा, ऋतु विशेष।
- अमरकोश में भी कहा गया है कि–
आपः सुमनसो वर्षा अप्सरः सिकताः समाः।
एते स्त्रियां बहुत्वे स्युरेकत्वेऽप्युत्तरत्रयम्।।
- उपर्युक्त प्रश्न में अक्षतः, लाजः, वर्षा– ये एकवचनान्त रूप में उल्लिखित हैं, जबकि इन्हें नित्य बहुवचनान्त बताया गया है। किन्तु **'दाराः' शब्द नित्यबहुवचनान्त और पुँल्लिङ्ग होने से सही उत्तर है,** अतः विकल्प (B) सही है।

2. कर्ता द्वारा अनीप्सित पदार्थ की क्या संज्ञा होगी?
(A) कर्ता **(B) कर्म**
(C) करण **(D) सम्प्रदान**

व्याख्या–

(A) **''स्वतन्त्रः कर्ता''** (1.4.54) सूत्र से क्रिया की सिद्धि में जो स्वतन्त्ररूपेण अर्थात् प्रमुखतया विवक्षित होता है, वह कर्तासंज्ञक होता है।
जैसे– 'अनुजः पचति' यहाँ पचन क्रिया के निष्पादन में 'अनुज' प्रधानतया विवक्षित है; अतः कर्त्ता हुआ। उक्त कर्ता में **''प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा''** सूत्र से 'अनुजः' में प्रथमा विभक्ति हुई।

(B) **''तथायुक्तं चानीप्सितम्''** (1.4.50) सूत्र से ईप्सिततम (अभीष्टतम) के समान क्रिया से युक्त होने पर अनीप्सित (अनभीष्ट) की भी कर्मसंज्ञा होती है।
जैसे– **'ग्रामं गच्छन् तृणं स्पृशति'** – यहाँ स्पर्श क्रिया से युक्त 'तृण' कर्त्ता को अनीप्सित है, फिर भी उक्तसूत्र से 'तृण' की कर्मसंज्ञा होती है। इसी प्रकार गमनक्रिया के सम्बन्ध से कर्ता का ईप्सिततम 'ग्राम' है जिसकी **''कर्तुरीप्सिततमं कर्म''** (1.4.49) से कर्मसंज्ञा होती है। 'ग्राम' और 'तृण' दोनों में **''कर्मणि द्वितीया''** (2.3.2) सूत्र से द्वितीया विभक्ति हुई। अतः विकल्प `B' सही है।

(C) **''साधकतमं करणम्''** (1.4.42) सूत्र से क्रिया की सिद्धि में जो सबसे अधिक उपकारक (सहायक) हो, उसकी 'करणसंज्ञा' होती है।
जैसे–**'परशुना छिनत्ति'** यहाँ छेदनक्रिया में सबसे अधिक उपकारक (सहायक) 'परशु' है; अतः इसकी करणसंज्ञा होकर **''कर्तृकरणयोस्तृतीया''** (2.3.18) से तृतीया हुई।

(D) **''कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्''** (1.4.32) सूत्र से दान क्रिया के कर्म के द्वारा कर्ता जिसे अच्छी प्रकार से युक्त (लक्षित या सम्बन्धित) करना चाहता है, उसकी सम्प्रदानसंज्ञा होती है।
जैसे– 'छात्रः संस्कृतगङ्गायै पुस्तकं ददाति' यहाँ छात्र (कर्ता) दानक्रिया के कर्म (पुस्तक) के द्वारा 'संस्कृतगङ्गा' को सर्वाधिक लक्षित (सम्बद्ध) करता है। अतः 'संस्कृतगङ्गा' की सम्प्रदान संज्ञा होकर **''चतुर्थी सम्प्रदाने** (2.3.13) सूत्र से चतुर्थी विभक्ति होकर 'संस्कृतगङ्गायै' बन गया।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतव्याकरणम् पेज-90 प्रश्न-22

3. 'वामाः कुलस्याधयः' यह उक्ति किस ग्रन्थ में वर्णित है?
(A) उत्तररामचरितम्
(B) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(C) नीतिशतकम्
(D) किरातार्जुनीयम्

1. (B) 2. (B) 3. (B)

व्याख्या–

	ग्रन्थ		सूक्ति
(A)	यथा स्त्रीणां तथा वाचां साधुत्वे दुर्जनो जनः	–	उत्तररामचरितम् (1/5)
(B)	यान्त्येवं गृहिणीपदं युवतयो **वामाः कुलस्याधयः**	–	अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/18)
(C)	यां चिन्तयामि सततं मयि सा विरक्ता	–	नीतिशतकम् (परिशिष्ट)
(D)	भवादृशेषु प्रमदाजनोदितं भवत्यधिक्षेप इवानुशासनम्	–	किरातार्जुनीयम् (1/28)

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-161 प्रश्न-113

4. 'सुखी' शब्द का तृतीया एकवचन में क्या रूप होता है–
(A) सुख्या (B) सुखिना
(C) सुख्यः (D) सुख्युः

व्याख्या–
- 'सुखम् इच्छति इति = सुखी' शब्द ईकारान्त पुंलिङ्ग शब्द है, जिसका रूप निम्नवत् होगा– 1.सुखीः, 2. सुख्यम्, 3. सुख्या, 4. सुख्ये, 5. सुख्युः, 6. सुख्युः, 7. सुख्यि, सम्बो0 हे सुखीः। अतः विकल्प `A' सही है।
- जबकि 'सुखिन्' इन्नन्त शब्द का रूप 'गुणिन्' की तरह चलेगा– 1. सुखी, 2. सुखिनम्, 3. सुखिना, 4.सुखिने, 5. सुखिनः, 6. सुखिनः, 7. सुखिनि, सम्बो0 हे सुखिन्।

5. किरातार्जुनीयम् प्रथमसर्ग में सर्वाधिक प्रयुक्त छन्द में प्रयुक्त गण है–
(A) जगण तगण जगण रगण
(B) जगण तगण जगण दो गुरुवर्ण
(C) तगण तगण जगण गुरु गुरु
(D) तगण भगण जगण जगण गुरु गुरु

व्याख्या–

(A) किरातार्जुनीयम् प्रथमसर्ग में कुल 46 श्लोक हैं। जिसके अन्तिम 46वें श्लोक में मालिनी छन्द, तथा 45वें श्लोक में पुष्पिताग्रा छन्द है। शेष प्रथम श्लोक से लेकर 44वें श्लोक तक वंशस्थ है। अतः किरातार्जुनीयम् प्रथमसर्ग में **सर्वाधिक प्रयुक्त छन्द 'वंशस्थ'** होगा। जिसका लक्षण है– **''जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ''** अर्थात् ''जगण तगण जगण रगण'' गणों वाला छन्द वंशस्थ कहा जाता है, इसके प्रत्येक चरण में 12 अक्षर होते हैं।
यथा– ''श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीम्'' (किरात0 1/1)
अतः विकल्प `A' सही है।

(B) ''जगण तगण जगण दो गुरुवर्ण'' से युक्त छन्द 'उपेन्द्रवज्रा' कहा जाता है, इसका लक्षण निम्नवत् है–
''उपेन्द्रवज्रा जतजास्ततो गौ''
अर्थात् उपेन्द्रवज्रा के प्रत्येक चरण में जगण, तगण, जगण तथा दो गुरु वर्ण होते हैं। इसके प्रत्येक चरण में 11 वर्ण होते हैं। यथा– ''त्वमेव माता च पिता त्वमेव''

(C) ''तगण, तगण, जगण गुरु गुरु'' – इन गणों से युक्त छन्द 'इन्द्रवज्रा' कहा जाता है–
''स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः''
इसके प्रत्येक चरण में 11वर्ण होते हैं।
यथा– ''अर्थो हि कन्या परकीय एव''

(D) ''तगण भगण जगण जगण गुरु गुरु'' इन गणों से युक्त छन्द को 'वसन्ततिलका' कहते हैं। इसका लक्षण है–
''उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः'' इसके प्रत्येक चरण में 14 वर्ण होते हैं। यथा– ''न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः'' – नीतिशतकम्

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-231 प्रश्न-85

6. 'सत्यनिष्ठ' शब्द में कौन सा समास है?
(A) अव्ययीभाव
(B) तत्पुरुष
(C) बहुव्रीहि
(D) द्वन्द्व

व्याख्या–

सामासिकपद	समासविग्रह	समास का नाम
(A) निर्जनम्	जनानाम् अभावः	अव्ययीभाव
(B) सत्याग्रहः	सत्यस्य आग्रहः/सत्ये आग्रहः	तत्पुरुष
(C) सत्यनिष्ठः	सत्ये निष्ठा यस्य सः	**बहुव्रीहि**
(D) सत्यानृतम्	सत्यं च अनृतं च	द्वन्द्वसमास

अतः विकल्प `C' सही है।
नोट– 'सत्यनिष्ठः, धर्मनिष्ठः, ज्ञाननिष्ठः, कर्मनिष्ठः, संस्कृतनिष्ठः' इत्यादि सभी में बहुव्रीहि समास है।

स्रोत–रचनानुवादकौमुदी पेज–99

4. (A) 5. (A) 6. (C)

7. 'सुप्' प्रत्याहार में कितने प्रत्यय होते हैं?
(A) 20 **(B) 21**
(C) 22 **(D) 24**

व्याख्या– (A) माघ के शिशुपालवधम् में 20 सर्ग हैं।

(B) **सुप् प्रत्याहार में 21 प्रत्यय आते हैं।** यथा– 1. सु औ जस् 2. अम् औट् शस् 3. टा भ्याम् भिस् 4. ङे भ्याम् भ्यस् 5. ङसि भ्याम् भ्यस्, 6. ङस् ओस् आम् 7. ङि ओस् सुप्

(C) उपसर्गों की संख्या 22 है। यथा– प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव, निस्, निर्, दुस्, दुर्, वि, आङ्, नि, अधि, अपि, अति, सु, उद्, अभि, प्रति, परि, उप।

(D) वैशेषिकदर्शन के अनुसार 24 गुण होते है। यथा– रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, संख्या, परिमाण, पृथक्त्व, संयोग, विभाग, परत्व, अपरत्व, गुरुत्व, द्रवत्व, स्नेह, शब्द, बुद्धि, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, धर्म, अधर्म तथा संस्कार–ये चौबीस गुण के भेद हैं।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतव्याकरणम् पेज-38

8. पुंलिङ्ग 'सर्व' शब्द का प्रथमा विभक्ति बहुवचन में क्या रूप होता है?
(A) सर्वाः **(B) सर्वे**
(C) सर्वौ **(D) सर्वः**

व्याख्या–

- 'सर्व' शब्द का (पुंलिङ्ग) प्रथमा विभक्ति में – "**सर्वः सर्वौ सर्वे**" रूप होगा। अतः विकल्प `B' सही है।
- 'सर्व' शब्द (स्त्रीलिङ्ग) प्रथमाविभक्ति में– "सर्वा सर्वे सर्वाः" रूप होगा।
- 'सर्व' शब्द (नपुंसकलिङ्ग) प्रथमा विभक्ति में– "सर्वम् सर्वे सर्वाणि" रूप होगा।

9. शुकनास के उपदेश के पश्चात् प्रसन्न हृदयवाला राजा कहाँ गया?
(A) राजदरबार में **(B) उद्यान में**
(C) अपने भवन में **(D) वन में**

व्याख्या–

- कादम्बरी शुकनासोपदेश के अनुसार प्रसन्न हृदय वाला राजा चन्द्रापीड मन्त्री शुकनास के उपदेश को सुनकर अपने भवन में जाता है– "**उपशान्तवचसि शुकनासे चन्द्रापीडः ताभिः उपदेशवाग्भिः प्रक्षालितः इव.... प्रीतहृदयः मुहूर्तं स्थित्वा स्वभवनम् आजगाम।** (कादम्बरी शुकनासोपदेश)
- कादम्बरी कथामुख के अनुसार राजदरबार में राजा शूद्रक रहता है, जब चाण्डालकन्या वैशम्पायन शुक को लेकर आती है।
- अश्वघोष विरचित बुद्धचरितम् नायक बुद्ध उद्यान में भ्रमण करते हैं।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् नायक राजा दुष्यन्त वन में मृग का शिकार करने जाते हैं।

10. उत्तररामचरितम् में लव कुश के जन्म की किस वर्षगाँठ का वर्णन है–
(A) आठवीं **(B) दसवीं**
(C) बारहवीं **(D) चौदहवीं**

व्याख्या–

- उत्तररामचरितम् के तृतीय अङ्क के विष्कम्भक में भगवती भागीरथी के कथन को तमसा द्वारा मुरला से कुछ इस प्रकार कहा जा रहा है–
  तमसा–उक्तमेव भगवत्या भागीरथ्या–'वत्से देवयजनसम्भवे सीते! अद्य खल्वायुष्मतोः **कुशलवयोर्द्वादशस्य जन्मवत्सरस्य** संख्यामङ्गलग्रन्थिरभिवर्तते।
- यहाँ '**द्वादशस्य जन्मवत्सरस्य**' पद का अर्थ '**बारहवीं वर्षगाँठ**' है, अतः विकल्प `C' सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा साहित्यम् पेज-180 प्रश्न-27

11. उत्तररामचरितम् के तृतीय अङ्क का प्रारम्भ किससे होता है–
(A) नान्दी **(B) आकाशभाषित**
(C) सूत्रधार **(D) विष्कम्भक**

व्याख्या–

- भवभूति विरचित उत्तररामचरितम् के तृतीय अङ्क का प्रारम्भ **शुद्ध विष्कम्भक** द्वारा तमसा और मुरला नामक दो सखियों के परस्पर वार्तालाप से होता है। उत्तररामचरितम् तृतीय अङ्क का प्रारम्भ– (ततः प्रविशति नदीद्वयम्)
  एका–सखि मुरले! किमसि सम्भ्रान्तेव? यहाँ से लेकर मुरला द्वारा कथित पाँचवें श्लोक–"शरदिज इव घर्मः केतकीगर्भपत्रम्।' से होता है। अतः विकल्प `D' सही है।
- उत्तररामचरितम् (प्रथम अङ्क) का प्रारम्भ "इदं कविभ्यः पूर्वेभ्यो नमोवाकं प्रशास्महे" इस द्वादशपदा पत्रावली नामक नान्दी से होता है, इसके बाद सूत्रधार का प्रवेश होता है।
- रूपक के दश भेदों में 'भाण' नामक रूपक में आकाशभाषित

7. (B) 8. (B) 9. (C) 10. (C) 11. (D)

का प्रयोग होता है। अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क का निम्नलिखित श्लोक भी आकाशभाषित का उदाहरण है– ''रम्यान्तरः कमलिनीहरितैः सरोभिः'' अभि0 शा0 4/11

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-24

12. नीतिशतकम् में राजनीति को कितने स्वरूपों को धारण करने वाली कहा गया है?

(A) 8 **(B) 9**
(C) 10 **(D) 11**

व्याख्या–भर्तृहरि विरचित नीतिशतकम् के अर्थपद्धति में राजनीति को वेश्या के समान अनेकरूपों वाली कहा गया है, जिसमें राजनीति के दस रूपों की गणना की गयी है–

सत्यानृता च परुषा प्रियवादिनी च
हिंस्रा दयालुरपि चार्थपरा वदान्या।
नित्यव्यया प्रचुरनित्यधनागमा च
वाराङ्गनेव नृपनीतिरनेकरूपा॥

राजनीति के दस रूप– 1. सत्या (सत्यवादिनी) 2. अनृता (झूठी) 3. परुषा (कठोर) 4. प्रियवादिनी 5. हिंस्रा (क्रूरता) 6. दयालुता 7. अर्थपरा (स्वार्थ परायणता) 8. वदान्या (बहुप्रदा, उदारस्वभाव) 9. नित्यव्यया (नित्य खर्चीली) 10. प्रचुरनित्यधनागमा (अत्यधिक धन देने वाली) इस प्रकार वेश्या के समान राजनीति भी अनेक रूपों वाली होती है। अतः विकल्प `C' सही है।

13. शकुन्तला के अनिष्टनिवारण के लिए महर्षि कण्व कहाँ गये थे?

(A) हिमालय **(B) सोमतीर्थ**
(C) कुरुक्षेत्र **(D) प्रयाग**

व्याख्या–महाकवि कालिदास द्वारा विरचित अभिज्ञानशाकुन्तलम् के प्रथम अङ्क में जब राजा दुष्यन्त मृग का पीछा करते हुए कण्वाश्रम के निकट पहुँचता है और वैखानस के द्वारा मृग को न मारने का अनुरोध स्वीकार करके यह पूँछता है कि– 'क्या कुलपति कण्व आश्रम में विद्यमान हैं।– ''**अपि सन्निहितोऽत्र कुलपतिः**'' तो इसके उत्तर में वैखानस कहता है कि–

वैखानसः– 'इदानीमेव दुहितरं शकुन्तलामतिथिसत्काराय नियुज्य **दैवमस्याः प्रतिकूलं शमयितुं सोमतीर्थं गतः**'

वैखानस के इस कथन से स्पष्ट है कि कण्व शकुन्तला के अनिष्ट निवारण के लिए सोमतीर्थ गये हुए हैं।

अतः विकल्प `B' सही है।

- कालिदासकृत कुमारसम्भवम् में हिमालय का वर्णन है– **''अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा, हिमालयो नाम नगाधिराजः''** – कुमारसम्भवम् (1.1)
- कुरुक्षेत्र (प्रदेश) में कौरवों का शासन था। इसका उल्लेख महाभारत एवं किरातार्जुनीयम् में आया है– **''श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीम्''**– (किरात. 1/1)
- प्रयाग में गङ्गा, यमुना, सरस्वती का सङ्गम है। तथा यहीं दारागञ्ज प्रयाग में संस्कृतगङ्गा का प्रधानकार्यालय भी स्थित है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-21

14. उत्तररामचरितम् नाटक का मङ्गलाचरण किस छन्द में है–

(A) गायत्री **(B) अनुष्टुप्**
(C) उपजाति **(D) वंशस्थ**

व्याख्या–

(A) 'गायत्री छन्द' का प्रयोग प्रायः ऋग्वेद में हुआ है। यह वैदिक छन्द है। इस छन्द में 24 अक्षर होते हैं।

(B) उत्तररामचरितम् के मङ्गलाचरण में **अनुष्टुप् छन्द है**–
इदं कविभ्यः पूर्वेभ्यो नमोवाकं प्रशास्महे।
विन्देम देवतां वाचममृतामात्मनः कलाम्॥
इसमें पथ्यावक्त्र नामक छन्द है, जो अनुष्टुप् छन्द का ही एक भेद है। इस मङ्गलाचरण में द्वादशपदों वाली पत्रावली नामक नान्दी का प्रयोग है। इसमें वाल्मीकि आदि प्राचीन कवियों तथा वाणी (सरस्वती) की वन्दना की गयी है।

(C) उपजाति छन्द के प्रत्येक पाद में 11 वर्ण होते हैं। यह इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा दोनों छन्दों के मिश्रण से बनता है। किसी चरण में इन्द्रवज्रा छन्द होता है और किसी में उपेन्द्रवज्रा। यथा–
विद्या विवादाय धनं मदाय शक्तिः परेषां परपीडनाय।
खलस्य साधोर्विपरीतमेतत् ज्ञानाय दानाय च रक्षणाय॥

(D) किरातार्जुनीयम् के मङ्गलाचरण में 'वंशस्थछन्द' का प्रयोग है। जिसका लक्षण है– ''जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ''
किरातार्जुनीयम् का वस्तुनिर्देशात्मक मङ्गलाचरण है, जो निम्नवत् है– **''श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीम्......युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचरः''**– किरातार्जुनीयम्–1/1

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-250 प्रश्न-23

12. (C) 13. (B) 14. (B)

15. संस्कृतवाङ्मय में गद्य का प्रयोग सर्वप्रथम किस ग्रन्थ में हुआ है?
(A) ऋग्वेद (B) यजुर्वेद
(C) कादम्बरी (D) हर्षचरितम्

व्याख्या–

(A) ऋग्वेद में ऋचाओं का सङ्कलन है, जो पद्यात्मक है। इसमें गायत्री, उष्णिक्, अनुष्टुप्, बृहती, पंक्ति, त्रिष्टुप्, जगती आदि छन्दों का प्रयोग है। अतः संस्कृतवाङ्मय में सर्वप्रथम पद्य का प्रयोग 'ऋग्वेद' में हुआ है, न कि गद्य का।

(B) **'गद्यात्मको यजुः'** अर्थात् गद्य में रचे गये मन्त्रों को 'यजुष्' (√यज् + उसि प्रत्यय) कहते हैं।

- **''अनियताक्षरावसानं यजुः''** अर्थात् जिसमें पद्यों के समान अक्षरों की संख्या निश्चित नहीं होती, अर्थात् गद्यात्मक भाग को यजुष् कहा जाता है। अतः संस्कृतवाङ्मय में गद्य का सर्वप्रथम प्रयोग यजुर्वेद में मानना चाहिए, इसलिए विकल्प `B' सही है।
- इसीतरह यजुर्वेद के बाद ब्राह्मणग्रन्थ, आरण्यकग्रन्थ और उपनिषद्ग्रन्थ भी अधिकांशतः गद्यात्मक हैं।

(C) बाणभट्ट विरचित कादम्बरी कथा में गद्य का प्रयोग है, लेकिन कादम्बरी के पहले यजुर्वेद में गद्य का सर्वप्रथम प्रयोग हो चुका है।

(D) 'हर्षचरितम्' बाणभट्ट विरचित आख्यायिका ग्रन्थ है, यह भी गद्यात्मक है, किन्तु संस्कृतवाङ्मय की सर्वप्रथम गद्य रचना नहीं है।

16. निम्नलिखित शब्दों में कौन शुद्ध है?
(A) भूपत्युः
(B) भूपतेः
(C) भूपत्ये
(D) भूपत्या

व्याख्या–

- ''पतिः समास एव'' (1.4.8) सूत्र से 'पति' शब्द समास में ही 'घि' संज्ञक होता है। यहाँ 'पति' शब्द का 'भू' शब्द के साथ समास होने से 'भूपति' शब्द बना, जिसका इकारान्त पुँल्लिङ्ग 'हरि' शब्द की तरह रूप चलेगा।
  1. भूपतिः, 2. भूपतिम्, 3. भूपतिना, 4. भूपतये,
  5. भूपतेः, 6. भूपतेः, 7. भूपतौ, सम्बो0 हे भूपते!
- इसप्रकार 'पति' शब्द जब किसी शब्द के साथ समास के अन्त में आता है तब उसके रूप 'हरि' के समान होते हैं। अतः **'भूपति' शब्द का पञ्चमी और षष्ठी विभक्ति के एकवचन में 'भूपतेः' रूप बनता है।**
  इसलिए विकल्प `B' सही है।
- 'पति' शब्द का रूप– 1. पतिः, 2. पतिम्, 3. पत्या, 4. पत्ये, 5. पत्युः, 6. पत्युः, 7. पत्यौ, सम्बो0 हे पते!
- अतः विकल्प में दिये गये भूपत्युः, भूपत्ये, भूपत्या– रूप अशुद्ध हैं, जबकि `B' विकल्प ''भूपतेः'' शुद्ध है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतव्याकरणम् पेज-148 प्रश्न-13

17. 'पितृतुल्यः' शब्द में कौन समास है?
(A) अव्ययीभाव
(B) तत्पुरुष
(C) बहुव्रीहि
(D) द्वन्द्व

सामासिक पद	समासविग्रह	समास का नाम
(A) प्रत्यर्थम्	अर्थम् अर्थं प्रति	अव्ययीभाव
(B) पितृतुल्यः	**पित्रा तुल्यः**	**तत्पुरुष**
(C) द्विपात्	द्वौ पादौ यस्य सः	बहुव्रीहि
(D) पितरौ/मातापितरौ	माता च पिता च	द्वन्द्व

अतः विकल्प `B' सही है।

स्रोत–रचनानुवादकौमुदी कपिलदेव द्विवेदी पेज–94

18. ''वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः'' यह उक्ति किस ग्रन्थ में किसने कही है?
(A) शिवराजविजय में, सेनापति ने
(B) किरातार्जुनीय में, वनेचर ने
(C) किरातार्जुनीय में, युधिष्ठिर ने
(D) शिवराजविजय में, शिवाजी ने

व्याख्या–

(A) एहि, एहि, समये समायातोऽसि (शिवराजविजय, चतुर्थनिःश्वास) आओ, आओ, ठीक समय पर आ गये – दुर्गाध्यक्ष (सेनापति)

(B) **वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः** (किरात0-1/8) – **वनेचर**

(D) ''प्राणाः यान्तु न च धर्मः'' (शिवराजविजय द्वितीय निःश्वास) – शिववीरः (शिवाजी) अर्थात् प्राण भले ही चलें जाय, पर धर्म न जाय। अतः विकल्प `B' सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-155

15. (B) 16. (B) 17. (B) 18. (B)

19. किरातार्जुनीयम् (प्रथमसर्ग) के कथानक में किसका वर्णन नहीं है?
(A) द्वैतवन में पाण्डवों का निवास
(B) गुप्तचर द्वारा दुर्योधन का वृत्तान्त
(C) द्रौपदी का क्रोध
(D) द्रौपदी के क्रोध का युधिष्ठिर द्वारा समर्थन

व्याख्या–

(A) **''स वर्णिलिङ्गी विदितः समाययौ युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचरः''** किरातार्जुनीयम् की इस पंक्ति से स्पष्ट है कि युधिष्ठिर आदि पाण्डव द्वैतवन में निवास करते थे।

(B) 'दुरोदरच्छद्मजितां समीहते, नयेन जेतुं जगतीं सुयोधनः' 'तवानुभावोऽयमवेदि यन्मया निगूढतत्त्वं नयवर्त्म विद्विषाम्' आदि पंक्तियों से स्पष्ट है कि वनेचर रूपी गुप्तचर द्वारा युधिष्ठिर दुर्योधन का वृत्तान्त जानते हैं।

(C) (i) नृपस्य मन्युव्यवसायदीपिनीः उदाजहार द्रुपदात्मजा गिरः, (ii) तथापि वक्तुं व्यवसाययन्ति मां निरस्तनारीसमया दुराधयः, इत्यादि कथनों से स्पष्ट है कि दुर्योधन के उत्कर्ष को सुनकर द्रौपदी द्वारा युधिष्ठिर के ऊपर क्रोध किया जाता है।

(D) द्रौपदी के क्रोध करने पर युधिष्ठिर न तो उसके क्रोध का समर्थन करते हैं और न ही विरोध। किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में युधिष्ठिर केवल एक शान्तचित्त श्रोता के रूप में पहले वनेचर द्वारा हस्तिनापुर का समाचार सुनते हैं, बाद में द्रौपदी की क्रोधपूर्ण फटकार। **अतः विकल्प `D' सही है।**

20. महर्षि कण्व किनके साथ शकुन्तला को पतिगृह भेजते हैं?
(A) शार्ङ्गरव
(B) शारद्वत
(C) गौतमी
(D) उपर्युक्त सभी

व्याख्या– 'गौतमि, आदिश्यन्तां शार्ङ्गरवमिश्राः शकुन्तलानयनाय'

- काश्यपः–'वत्से, इमे अपि प्रदेये। न युक्तमनयोस्त्र गन्तुम्। त्वया सह गौतमी यास्यति'।
  अभिज्ञानशाकुन्तलम् (चतुर्थ अङ्क) की इन पंक्तियों से स्पष्ट है कि शकुन्तला को पतिगृह ले जाने के लिए **शार्ङ्गरव, शारद्वत और गौतमी-तीनों हस्तिनापुर तक जाते हैं।** अतः विकल्प `D' सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा TGT व्याख्यात्मक हल पेज-23 प्रश्न-3

21. 'गुरु + आदेशः' में सन्धि होने पर बनता है?
(A) गुरूदेशः **(B) गुरादेशः**
(C) गुर्वादेशः **(D) गुरोदेशः**

व्याख्या– ''इको यणचि'' सूत्र से इक् (इ, उ, ऋ, लृ) के बाद असमान स्वर आने पर यण् (य् व् र् ल्) आदेश होता है। इस नियम के अनुसार– गुरु + आदेशः

गुर् उ + आदेशः
गुर् व् + आदेशः
('इको यणचि' सूत्र से 'उ' के स्थान पर 'व्' आदेश) **गुर्वादेशः**
अतः विकल्प `C' सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतव्याकरणम् पेज-188

22. 'शीतोष्णम्' पद में क्या समास है?
(A) अव्ययीभाव **(B) तत्पुरुष**
(C) बहुव्रीहि **(D) द्वन्द्व**

व्याख्या–

सामासिकपद	समास विग्रह	समास का नाम
A. उपकृष्णम्	कृष्णस्य समीपम्	अव्ययीभाव
B. कवोष्णम्	ईषद् उष्णम्	तत्पुरुष
C. शीतापम्	शीता आपो यस्य तद्	बहुव्रीहि
D. **शीतोष्णम्**	**शीतं च उष्णं च**	**द्वन्द्व**

विशेष–''कवञ्चोष्णे (6.3.107) सूत्र से 'उष्ण' शब्द के परे होने पर तत्पुरुषसमास में ईषद्वाचक 'कु' को 'कव', 'का' और 'कद्' आदेश होता है। यथा– ईषद् उष्णम् = कवोष्णम्, कोष्णम्, कदुष्णं वा। (थोड़ा गरम)

- 'शीतं च उष्णं च' इस लौकिक विग्रह और शीत सु + उष्ण सु इस अलौकिक विग्रह में ''चार्थे द्वन्द्वः'' सूत्र से समास होने पर ''शीतोष्ण'' शब्द बना; ये दोनों शब्द परस्पर विरुद्ध तो हैं ही, अद्रव्यवाची (गुणवाची) भी हैं; अतः **''विप्रतिषिद्धं चानधिकरणवाचि''** (2.4.13) सूत्र द्वारा विकल्प से एकवद्भाव होने पर 'शीतोष्णम्' पद सिद्ध हो जाता है। वैकल्पिक रूप 'शीतोष्णे' भी बनेगा। इसी तरह (i) सुखदुःखम्/सुखदुःखे (ii)जीवितमरणम्/जीवितमरणे (iii) हानिलाभम्/हानिलाभे (iv) जयाजयम्/जयाजये आदि भी द्वन्द्व समास के उदाहरण हैं। अतः विकल्प `D' सही है।
- 'शीतं च उष्णं च = शीतोष्णम्' में विशेषणोभय पद कर्मधारयसमास भी हो सकता है।

19. (D) 20. (D) 21. (C) 22. (D)

23. जब कोई क्रिया कृदन्त रूप से प्रकट की जाती है, तो उस क्रिया के कर्ता अथवा कर्म में कौन सी विभक्ति का प्रयोग होता है?
(A) द्वितीया (B) तृतीया
(C) षष्ठी (D) सप्तमी

व्याख्या–

(A) **''विभाषोपसर्गे''** (2.3.59) सूत्र द्वारा द्यूतार्थक अथवा क्रय विक्रय रूप व्यवहारार्थक 'दिव्' धातु के उपसर्ग युक्त होने पर कर्म में विकल्प से षष्ठी विभक्ति होती है। पक्ष में द्वितीया विभक्ति होती है।
यथा–शतस्य प्रतिदीव्यति (षष्ठी)
शतं प्रतिदीव्यति (द्वितीया)
वह द्यूतक्रीड़ा में सौ रुपये जीतता है।

(B) **''कृत्यानां कर्तरि वा''** (2.3.71) सूत्र से जिन शब्दों के अन्त में कृत्य प्रत्यय लगे रहते हैं, उनका प्रयोग होने पर कर्ता में तृतीया या विकल्प से षष्ठी होती है। जैसे–
(i) गुरुः मया पूज्यः / गुरुः मम पूज्यः — गुरूजी मेरे पूज्य हैं।
(ii) मया सेव्यः हरिः / मम सेव्य हरिः — हरि मेरे सेव्य हैं।
यहाँ 'मया' पद में तृतीया तथा 'मम' पद में षष्ठी विभक्ति है।

(C) **''कर्तृकर्मणोः कृति''** (2.3.65) सूत्र से कृत्प्रत्ययान्त कृदन्त के योग में अनभिहित कर्ता और कर्म में षष्ठी विभक्ति होती है। अतः विकल्प `C' सही है।
जैसे–**(i) कर्ता में षष्ठी**–'कृष्णस्य कृतिः' यहाँ पर क्रिया का बोधक 'कृति' शब्द है जो कि √कृ + क्तिन् प्रत्यय से बना है, और कर्ता 'कृष्ण' है। अतः कृत् प्रत्ययान्त 'कृतिः' शब्द के साथ 'कृष्ण' शब्द में षष्ठी होकर 'कृष्णस्य' रूप बना। अन्य उदाहरण–यानस्य गतिः, शिशूनां रोदनम्, संस्कृतस्य अध्येता आदि।
(ii) कर्म में षष्ठी–'जगतः कर्ता कृष्णः' यहाँ कृत् प्रत्ययान्त कर्ता (कृ + तृच्) पद के योग में कर्मकारक 'जगत्' पद में षष्ठी होकर 'जगतः' रूप बन गया।
अन्य उदाहरण–शत्रूणाम् अघातः, धनस्य प्राप्तिः, विषस्य भोजनम् आदि।

(D) **''षष्ठी चानादरे''** (2.3.38) सूत्र से जहाँ एक की क्रिया से दूसरे की क्रिया लक्षित हो और अनादर अर्थ गम्यमान हो, वहाँ जिसका अनादर किया जाता है उसमें षष्ठी या सप्तमी विभक्ति होती है।
जैसे– (i) रुदति पुत्रे वनं प्राव्राजीत्।
(ii) रुदतः पुत्रस्य वनं प्राव्राजीत्।
रोते हुए पुत्रादि को छोड़कर परिव्राजक अर्थात् संन्यासी बन गया।
यहाँ 'रुदति' में सप्तमी तथा 'रुदतः' में षष्ठी विभक्ति है।

24. निम्नलिखित में शुद्ध शब्द क्या नहीं है?
(A) मञ्चे
(B) अधिमञ्चम्
(C) मञ्चे अधि
(D) मञ्चस्य उपरि

व्याख्या– (A) **आधारोऽधिकरणम्** (1.4.45) सूत्र से 'मञ्च' रूपी आधार की अधिकरणसंज्ञा होकर 'सप्तम्यधिकरणे च' (2.3.36) सूत्र से सप्तमी होकर 'मञ्चे' यह शुद्ध प्रयोग बनेगा।

(B) **अधिशीङ्स्थासां कर्म** (1.4.46) सूत्र से क्रिया के आधार की कर्मसंज्ञा का विधान होने से 'अधिमञ्चम्' प्रयोग भी शुद्ध है। यहाँ अव्ययीभावसमास भी हो सकता है।

(C) **'मञ्चे अधि'** यह शुद्ध प्रयोग नही है क्योंकि 'अधि' उपसर्ग के कारण 'मञ्चम्' ऐसा द्वितीयान्त प्रयोग होना चाहिए था। जबकि यहाँ सप्तम्यन्त प्रयोग है।
अतः विकल्प `C' सही उत्तर होगा।

(D) **षष्ठ्यतसर्थप्रत्ययेन** (2.3.30) सूत्रसे अतसुच् प्रत्ययान्त शब्दों के योग में षष्ठी विभक्ति होती है। यथा–
ग्रामस्य उपरि उपरिष्टात् वा। मञ्चस्य उपरि उपरिष्टात् वा।

25. कादम्बरी का उपजीव्य ग्रन्थ है?
(A) महाभारत (B) अवन्तिसुन्दरी कथा
(C) बृहत्कथा (D) वासवदत्ता

व्याख्या– (A) **महाभारत**–महाभारत के लेखक का नाम कृष्णद्वैपायन वेदव्यास है, वे ऋषि पराशर तथा सत्यवती के पुत्र थे। महाभारत में एक लाख से अधिक श्लोक हैं, इसे 'शतसाहस्रीसंहिता' भी कहते हैं। यह 18 पर्वों में विभक्त है, इसका प्रधानरस 'शान्त' माना गया है। कुछ लोग 'वीररस' को भी इसका प्रधानरस मानते हैं। महाभारत को

23. (C) 24. (C) 25. (C)

उपजीव्य मानकर निम्नलिखित ग्रन्थों की रचना हुई–

ग्रन्थ	लेखक	उपजीव्य
(i) अभिज्ञानशाकुन्तलम्	कालिदास	महाभारत आदिपर्व
(ii) किरातार्जुनीयम्	भारवि	महाभारत वनपर्व
(iii) शिशुपालवधम्	माघ	महाभारत सभापर्व
(iv) नैषधीयचरितम्	श्रीहर्ष	महाभारत वनपर्व
(v) नलचम्पू	त्रिविक्रमभट्ट	महाभारत वनपर्व

- 'श्रीमद्भगवद्गीता' महाभारत के भीष्मपर्व (अध्याय–25-42) से उद्धृत है।

(B) **अवन्तिसुन्दरीकथा**– यह महाकवि दण्डी की रचना है। इसमें मालवनरेश की पुत्री अवन्तिसुन्दरी का प्रणयवृत्तान्त वर्णित है।

(C) **बृहत्कथा**–गुणाढ्य के द्वारा 'बृहत्कथा' पैशाची प्राकृत में लिखी गयी। इसे बाणभट्ट की **कादम्बरी कथा का उपजीव्य** माना जाता है। अतः विकल्प `C' सही है।

(D) **वासवदत्ता**–इस एकमात्र गद्यकाव्य के लेखक सुबन्धु हैं। इसका कथानक पूर्णतः काल्पनिक है। इसमें राजकुमार कन्दर्पकेतु तथा राजकुमारी वासवदत्ता के प्रेम और विवाह का रोचक वर्णन है। यह प्रत्यक्षरश्लेषप्रधान रचना मानी जाती है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-31

26. नियमपूर्वक विद्या स्वीकार करने पर वक्ता में किस विभक्ति का प्रयोग होता है?

(A) तृतीया **(B) चतुर्थी**
(C) पञ्चमी **(D) षष्ठी**

व्याख्या–

(A) **तृतीया**– ''हेतौ'' (2.3.23) सूत्र द्वारा हेतु अर्थ के वाची शब्दों में तृतीया विभक्ति होती है।
यथा–(i) दण्डेन घटः (दण्ड से घड़ा बनता है)
(ii) पुण्येन दृष्टः हरिः (पुण्य के कारण हरि का दर्शन हुआ)
(iii) अध्ययनेन प्रयागे वसति (अध्ययन के कारण प्रयाग में रहता है।

(B) **चतुर्थी**–''तादर्थ्ये चतुर्थी वाच्या'' (वा0) तादर्थ्य में चतुर्थी विभक्ति होती है, अर्थात् जिस प्रयोजन के लिए कोई कार्य किया जाता है, उस प्रयोजन में चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे–मुक्तये हरिं भजति।

(C) **पञ्चमी**–''आख्यातोपयोगे'' (1.4.29) सूत्र से नियमपूर्वक विद्या स्वीकार करने पर वक्ता/आख्याता (पढ़ाने वाला) अपादान संज्ञक होता है, और उसमें **पञ्चमी विभक्ति** होती है। जैसे– उपाध्यायात् अधीते (वह उपाध्याय से नियमपूर्वक पढ़ता है) अतः विकल्प `C' सही है।

(D) **षष्ठी**– ''षष्ठी हेतुप्रयोगे'' (2.3.26) सूत्र द्वारा वाक्य में 'हेतु' शब्द का प्रयोग होने पर हेतु (कारण) में तथा 'हेतु' शब्द में षष्ठीविभक्ति होती है। यथा–अन्नस्य हेतोः वसति।
(वह अन्न के कारण रहता है)

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतव्याकरणम् पेज-99 प्रश्न-49

27. उत्तररामचरितम् में अदृश्यरूप में सीता किसके साथ पञ्चवटी में आती हैं?

(A) गोदावरी **(B) गङ्गा**
(C) तमसा **(D) वासन्ती**

व्याख्या–

- भवभूति विरचित उत्तररामचरितम् (तृतीय अङ्क) में सीता अदृश्य रूप से गङ्गा के साथ पञ्चवटी में आती हैं, क्योंकि तृतीय अङ्क का प्रारम्भ मुरला और तमसा की बातचीत से होता है– **''ततः प्रविशति नदीद्वयम्''** उस समय सीता पञ्चवटी में नहीं थीं।
- गोदावरी के अगाध सरोवर से निकलती हुई सीता को देखकर तमसा एक श्लोक कहती है, जिसमें सीता का वर्णन है– **''परिपाण्डुदुर्बलकपोलसुन्दरं ---- विरहव्यथेव वनमेति जानकी''** (उ.रा.च. 3/4) इससे भी सिद्ध होता है कि सीता के पञ्चवटी में आने से पहले तमसा और मुरला वहाँ उपस्थित हैं। अतः तृतीय अङ्क में अदृश्य रूप से सीता तमसा के साथ रहती तो है, परन्तु पञ्चवटी में आती है गङ्गा के साथ।
- गोदावरी, गङ्गा, तमसा सभी नदी पात्र हैं। वासन्ती, वनदेवी और सीता की सखी है। जो पंचवटी में राम के साथ रहती है।

28. किरातार्जुनीयम् का नायक कौन है?

(A) युधिष्ठिर **(B) अर्जुन**
(C) शिव (किरातवेशधारी) **(D) भीम**

व्याख्या– • किरातार्जुनीयम् महाकाव्य के नायक अर्जुन हैं, क्योंकि पाशुपतास्त्र की प्राप्ति इस ग्रन्थ का प्रयोजन है, और यह अस्त्र किरातवेशधारी शिव से अर्जुन को प्राप्त हुआ है। इन्द्रकील पर्वत पर तपस्या करने भी अर्जुन ही जाते हैं। किरातवेषधारी शिव से युद्ध भी अर्जुन ही करते हैं। इस ग्रन्थ का नामकरण भी किरातवेषधारी शिव और अर्जुन

26. (C) 27. (B) 28. (B)

के नाम पर किया गया है इससे सिद्ध होता है कि **इस महाकाव्य के नायक अर्जुन ही हैं।**

- युधिष्ठिर पाँचों पाण्डवों में सबसे बड़े हैं और प्रथमसर्ग में वनेचर की बातों को सुनते हैं, किन्तु ये नायक नहीं हैं।
- किरातवेषधारी शिव किरातार्जुनीयम् के सहनायक हैं।
- भट्टनारायण विरचित वेणीसंहारम् के भीम धीरोद्धत कोटि के नायक हैं।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-169 प्रश्न-37

29. ''बाणस्तु पञ्चाननः'' यह उक्ति किसकी है?
(A) भामह
(B) राजशेखर
(C) क्षेमेन्द्र
(D) श्रीचन्द्रदेव

व्याख्या–

कवि	**उक्ति**
(A) भामह	शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्
(B) राजशेखर	शब्दार्थौ ते शरीरम् (काव्यपुरुष की कल्पना)
(C) क्षेमेन्द्र	औचित्यं रससिद्धस्य स्थिरं काव्यस्य जीवितम्
(D) **श्रीचन्द्रदेव**	**बाणस्तु पञ्चाननः**

अतः विकल्प `D' सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-192 प्रश्न-37

30. नाट्य में कितने रस होते हैं?
(A) 7 **(B) 8**
(C) 9 **(D) 10**

व्याख्या–

- आचार्य भरत और धनञ्जय के अनुसार नाटक में आठ रस माने गये हैं– **''अष्टौ नाट्ये रसाः स्मृताः''**
अतः विकल्प `B' सही है।
- आचार्य मम्मट आदि ने 'शान्तरस' को नवम रस के रूप में स्वीकार किया है–''काव्ये तु शान्तोऽपि नवमो रसः''
- आचार्य विश्वनाथ ने नवरस के अतिरिक्त 'वात्सल्य' नामक दसवें रस की कल्पना की है।
- रुद्रट ने 'प्रेयान्' नामक दसवें रस की उद्भावना की है, तथा रूपगोस्वामी ने 'मधुर' नामक भक्तिरस को प्रधानरस माना है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-303

31. 'सुश्री' शब्द के पञ्चमी विभक्ति के एकवचन में क्या रूप होता है?
(A) सुश्रीः **(B) सुश्रिये**
(C) सुश्रियः **(D) सुश्रिया**

व्याख्या–'सुश्री' (सुन्दर शोभावाला) ईकारान्त पुंलिङ्ग शब्द का सातों विभक्तियों में एकवचन का रूप निम्नवत् है–

1. सुश्रीः	2. सुश्रियम्
3. सुश्रिया	4. सुश्रिये
5. सुश्रियः	6. सुश्रियः
7. सुश्रियि,	सम्बो० हे सुश्रीः।

अतः विकल्प `C' सही है।

32. शहाबुद्दीन नामक यवन ने निम्नलिखित में क्या नहीं किया?
(A) गजनीदेश पर आक्रमण
(B) महमूद के वंशजों की हत्या
(C) दिल्लीश्वर पृथ्वीराज की हत्या (महमूद गजनवी की हत्या)
(D) दिल्ली पर आक्रमण

व्याख्या–आयोग का यह प्रश्न विवादित हो सकता है, क्योंकि इस प्रश्न में दिये गये सभी विकल्प गलत हैं। मैं कोष्ठक के अन्दर एक विकल्प प्रस्तुत कर रहा हूँ, जो इस प्रश्न का सही उत्तर हो सकता है।

(A) **गजनी देश पर आक्रमण**–''गोरदेशवासी कश्चित् शहाबुद्दीन नामा प्रथमं गजनीदेशमाक्रम्य....."(अर्थात् शहाबुद्दीन नामक किसी गोरदेश के निवासी ने पहले गजिनी देश पर आक्रमण किया)

(B) **महमूद गजनबी के वंशजों की हत्या**–''महामदकुलं धर्मराजलोकाध्वन्यध्वनीनं विधाय सर्वाः प्रजाश्च पशुमारं मारयित्वा........" (महमूद के वंशजों को यमलोक के मार्ग का पथिक बनाकर अर्थात् मारकर)

(C) **दिल्लीश्वर पृथ्वीराज की हत्या**–''ततो दिल्लीश्वरं पृथ्वीराजं कान्यकुब्जेश्वरं जयचन्द्रं च......उभावपि विशस्य'' (दिल्ली के सम्राट् पृथ्वीराज तथा कन्नौज के अधिपति राजा जयचन्द्र........दोनों को मारकर)

(D) **दिल्ली पर आक्रमण**–''पञ्चाशदुत्तर-द्वादशशतमितेऽब्दे (1250) दिल्लीमश्वयाम्बभूव...." (संवत् 1250 में घुड़सवार सेना के साथ दिल्ली पर चढ़ाई कर दी)

नोट– उपर्युक्त सभी उद्धरण शिवराजविजय से है।

29. (D) 30. (B) 31. (C) 32. (C)

विशेष–महमूद गजनबी की हत्या शहाबुद्दीन ने नहीं की थी। बल्कि वह स्वयं अपनी मृत्यु से विक्रमसंवत् 1087में मर गया था– **''अथ कालक्रमेण सप्ताशीत्युत्तरसहस्त्रतमे (1087) वैक्रमाब्दे सशोकं कष्टं च प्राणांस्त्यक्तवति महामदे....''** (विक्रमसंवत् 1087 में शोक एवं कष्ट के साथ महमूद गजनबी की मृत्यु हो जाने पर......) इससे स्पष्ट है कि शहाबुद्दीन ने दिल्लीश्वर पृथ्वीराज की हत्या तो की थी किन्तु महमूद गजनबी की हत्या नही की थी।
अतः कोष्ठक में दिया गया विकल्प `C' सही है।

33. महाकवि भवभूति के राम किस प्रकृति के नायक हैं?
(A) धीरप्रशान्त (B) धीरललित
(C) धीरोद्धत (D) धीरोदात्त

ग्रन्थ	नायक	प्रकृति
(A) मृच्छकटिकम्	चारुदत्त	धीरप्रशान्त
(B) स्वप्नवासवदत्तम्	उदयन	धीरललित
(C) वेणीसंहारम्	भीम	धीरोद्धत
(D) उत्तररामचरितम् और महावीरचरितम्	**राम**	**धीरोदात्त**

अतः विकल्प `D' सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-298

34. कादम्बरी के प्रारम्भ (मङ्गलाचरण) में बाणभट्ट ने कितने श्लोकों की रचना की है–
(A) 10 (B) 15
(C) 20 (D) 25

व्याख्या– कादम्बरी कथा के प्रारम्भ में महाकवि बाणभट्ट ने वंशस्थ छन्दों में **20 श्लोकों** की रचना की है, जो निम्नवत् हैं–

श्लोक	वर्ण्यविषय
1. रजोजुषे जन्मनि सत्त्ववृत्तये	निर्विकार त्रिगुणमय परब्रह्म परमेश्वर की वन्दना
2. जयन्ति बाणासुरमौलिलालिता	शङ्कर के चरणधूलि की वन्दना
3. जयत्युपेन्द्रः स चकार दूरतो	नृसिंह भगवान् की वन्दना
4. नमामि भर्वोश्चरणाम्बुजद्वयम्	गुरु भर्वु की वन्दना
5. अकारणाविष्कृतवैरदारुणात्	दुर्जनों की निन्दा
6. कटु क्वणन्तो मलदायकाः खलाः	दुर्जनों की कटुवाणी की निन्दा और सज्जनों की मधुरवाणी की प्रशंसा।
7. सुभाषितं हारि विशत्यधो गलात्	दुर्जन द्वारा सुन्दर वचनों की उपेक्षा एवं सज्जनों द्वारा सुभाषितों का आदर
8. स्फुरत्कलालाप-विलासकोमला	कथाप्रशंसा
9. हरन्ति कं नोज्ज्वलदीपकोपमैः	कथाप्रशंसा
10. बभूव वात्स्यायनवंशसम्भवो	कविबाणभट्ट का वंशवर्णन
11. उवास यस्य श्रुतिशान्तकल्मषे	कविवंशवर्णन (कुबेर की विद्वत्ता)
12. जगुर्गृहेऽभ्यस्तसमस्तवाङ्मयैः	कविवंशवर्णन (कुबेर की विद्वत्ता)
13. हिरण्यगर्भो भुवनाण्डकादिव	कविवंशवर्णन (अर्थपति)
14. विवृण्वतो यस्य विसारि वाङ्मयम्	कविवंशवर्णन (अर्थपति की विद्वत्ता)
15. विधानसम्पादित दानशोभितैः	कविवंशवर्णन (अर्थपति का यज्ञ)
16. स चित्रभानुं तनयं महात्मनाम्	कविवंशवर्णन (चित्रभानु)
17. महात्मनो यस्य सुदूरनिर्गताः	कविवंशवर्णन (चित्रभानु)
18. दिशामलीकालकभङ्गतां गतः	कविवंशवर्णन (चित्रभानु)
19. सरस्वतीपाणिसरोजसम्पुट	कविवंशवर्णन (बाणभट्ट)
20. द्विजेन तेनाक्षतकण्ठकौण्ठ्यया	कविवंशवर्णन (बाणभट्ट की कादम्बरी कथा की प्रशंसा)

अतः विकल्प `C' सही है।

35. ''एको रसः करुण एव'' – यह उक्ति उत्तररामचरितम् के किस अङ्क से सम्बन्धित है?
(A) प्रथम अङ्क
(B) द्वितीय अङ्क
(C) तृतीय अङ्क
(D) चतुर्थ अङ्क

व्याख्या–
(A) लौकिकानां हि साधूनामर्थं वागनुवर्तते – प्रथम अङ्क
(B) सतां सद्भिः सङ्गः कथमपि हि पुण्येन भवति–द्वितीय अङ्क
(C) **एको रसः करुण एव निमित्तभेदात् – तृतीय अङ्क**
(D) गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः– चतुर्थ अङ्क
अतः विकल्प `C' सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-25

33. (D) 34. (C) 35. (C)

36. किरातार्जुनीयम् की कथा महाभारत के किस पर्व से सम्बन्धित है?
(A) आदिपर्व (B) सभापर्व
(C) वनपर्व (D) भीष्मपर्व

	महाभारतकापर्व	सम्बन्धित ग्रन्थ
(A)	आदिपर्व	अभिज्ञानशाकुन्तलम् (कालिदास)
(B)	सभापर्व	शिशुपालवधमहाकाव्यम् (माघ)
(C)	**वनपर्व**	**किरातार्जुनीयमहाकाव्यम् (भारवि)**
(D)	भीष्मपर्व	श्रीमद्भगवद्गीता (व्यास)

अतः विकल्प `C' सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-168 प्रश्न-14

37. ''पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम्'' यह वचन किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है–
(A) उत्तररामचरितम् (B) नीतिशतकम्
(C) किरातार्जुनीयम् (D) अभिज्ञानशाकुन्तलम्

ग्रन्थ	सूक्ति
(A) उत्तररामचरितम् (2.26)	''पुराभूतः शोको विकलयति मां नूतन इव''
(B) नीतिशतकम् (दैवपद्धति)	''प्रायो गच्छति यत्र भाग्यरहितः तत्रैव यान्त्यापदः''
(C) **किरातार्जुनीयम् (1/41)**	**''पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम्''**
(D) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (7/35)	''प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः, सरस्वती श्रुतमहतां महीयताम्''

अतः विकल्प `C' सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-221 प्रश्न-37

38. कादम्बरी के प्रथम मङ्गलाचरण में किसकी वन्दना की गयी है?
(A) ब्रह्मा (B) विष्णु
(C) महेश (D) त्रिगुणमय परब्रह्म

व्याख्या– बाणभट्ट विरचित कादम्बरी के प्रथमश्लोक के मङ्गलाचरण में त्रिगुणमय परब्रह्म की वन्दना की गयी है।
यथा– रजोजुषे जन्मनि सत्त्ववृत्तये स्थितौ प्रजानां प्रलये तमःस्पृशे।
अजाय सर्गस्थितिनाशहेतवे त्रयीमयाय त्रिगुणात्मने नमः॥
यहाँ 'त्रयीमयाय' और 'त्रिगुणात्मने' पद से स्पष्ट है कि कादम्बरी कथामुख के मङ्गलाचरण में **त्रिगुणमयपरब्रह्म की वन्दना** की गयी है। इस माङ्गलिक पद्य में वंशस्थ छन्द है। अतः विकल्प `D' सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-31

39. निम्नलिखित में कौन शब्द शुद्ध है?
(A) कुमार्यः (B) कुमार्या
(C) कुमार्योः (D) उपर्युक्त सभी

व्याख्या– 'कुमारी' ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द है, जिसका रूप 'नदी' की तरह चलेगा।
(A) प्रथमाविभक्ति का रूप–कुमारी कुमार्यौ कुमार्यः
(B) तृतीया विभक्ति का रूप–कुमार्या कुमारीभ्याम् कुमारीभिः
(C) षष्ठी विभक्ति का रूप–कुमार्याः कुमार्योः कुमारीणाम्
(D) स्पष्ट है कि **'कुमार्यः, कुमार्या, कुमार्योः'** ये सभी 'कुमारी' शब्द के रूप हैं, अतः उपर्युक्त सभी रूप शुद्ध हैं, इसलिए विकल्प `D' सही है।

40. मेघदूतम् में किस छन्द का प्रयोग किया गया है?
(A) उपजाति (B) वंशस्थ
(C) मन्दाक्रान्ता (D) भुजङ्गप्रयात

व्याख्या–
- महाकवि कालिदास द्वारा विरचित मेघदूत नामक खण्डकाव्य (गीतिकाव्य) में प्रारम्भ से लेकर अन्त तक केवल एकमात्र **मन्दाक्रान्ता छन्द** का ही प्रयोग किया गया है। जिसका लक्षण है– **''मन्दाक्रान्ता जलधिषडगैर्म्भौ नतौ ताद् गुरू चेत्''** अर्थात् जिस छन्द के प्रत्येक चरण में मगण भगण नगण तगण तगण गुरु गुरु वर्ण होते हैं, उसे मन्दाक्रान्ता छन्द कहते हैं, इसके चौथे, छठवें एवं सातवें अक्षर पर यति (विराम) होती है। इसके प्रत्येक चरण में 17 वर्ण होते हैं। यथा–**कश्चित् कान्ताविरहगुरुणा स्वाधिकारात् प्रमत्तः**
  अतः विकल्प `C' सही है।
- **उपजाति**–अनन्तरोदीरितलक्ष्मभाजौ, पादौ यदीयावुपजातयस्ताः। इत्थं किलान्यास्वपि मिश्रितासु, स्मरन्ति जातिष्विदमेव नाम।। उपजाति के प्रत्येक पाद में 11 वर्ण होते हैं। यह इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा दोनों छन्दों के मिश्रण से बनता है। किसी चरण में इन्द्रवज्रा छन्द होता है और किसी में उपेन्द्रवज्रा। यथा–
  कर्पूरगौरं करुणावतारं, संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
  सदा वसन्तं हृदयारविन्दे, भवं भवानीसहितं नमामि॥

36. (C) 37. (C) 38. (D) 39. (D) 40. (C)

- **वंशस्थ**– ''जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ''
वंशस्थ छन्द के प्रत्येक चरण में 12 वर्ण होते हैं, इसके प्रत्येक चरण में क्रमशः ''जगण तगण जगण रगण'' होते हैं। बृहत्त्रयी (किरातार्जुनीयम् शिशुपालवधम्, नैषधीयचरितम्) ग्रन्थों के प्रथमसर्ग के अन्तिम कुछ श्लोकों को छोड़कर सम्पूर्ण सर्ग में वंशस्थ छन्द का ही प्रयोग है। यथा–
(i) श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीम् – किरातार्जुनीयम् 1/1
(ii) श्रियः पतिः श्रीमति शासितुं जगत्– शिशुपालवधम् 1/1
(iii) निपीय यस्य क्षितिरक्षिणः कथाम् – नैषधीयचरितम् 1/1
- **भुजङ्गप्रयात**– ''भुजङ्गप्रयातं चतुर्भिर्यकारैः''
भुजङ्गप्रयात छन्द के प्रत्येक चरण में चार यगण होते हैं, इस प्रकार प्रत्येक चरण में 12 वर्ण होते हैं।
यथा– नमस्ते सदा वत्सले मातृभूमे
त्वया हिन्दुभूमे सुखं वर्धितोऽहम्
महामङ्गले पुण्यभूमे त्वदर्थे
पतत्वेष कायो नमस्ते नमस्ते।।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-228 प्रश्न-25

41. ''विपदि धैर्यमथाभ्युदये क्षमा'' यह उक्ति किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है?
(A) उत्तररामचरितम् (B) किरातार्जुनीयम्
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (D) नीतिशतकम्

व्याख्या– ग्रन्थ उक्ति
(A) उत्तररामचरितम्–'सन्तापकारिणो बन्धुजनविप्रयोगा भवन्ति'
(B) किरातार्जुनीयम् (1/33) – ''अबन्ध्यकोपस्य विहन्तुरापदां भवन्ति वश्याः स्वयमेव देहिनः''
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (प्रथम अङ्क) – 'विनीतवेषेण प्रवेष्टव्यानि तपोवनानि नाम' (दुष्यन्त)
(D) **नीतिशतकम् (सुजनपद्धति)** – 'विपदि धैर्यमथाभ्युदये क्षमा' विपत्ति में धैर्य रखना चाहिए। (द्रुतविलम्बित छन्द) अतः विकल्प `D' सही है।

42. निम्नलिखित में सही शब्द क्या है?
(A) उपरोक्त (B) उपर्युक्त
(C) उपरिउक्त (D) उपरूक्त

व्याख्या– उपरि + उक्त = उपर्युक्त
यहाँ ''इको यणचि'' सूत्र से 'इ' के स्थान पर 'य्' आदेश होकर यण् सन्धि होकर **'उपर्युक्त'** यह रूप सिद्ध होगा, अतः विकल्प `B' सही उत्तर है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतव्याकरणम् पेज-161 प्रश्न-82

43. रूपक के भेदक तत्त्व, जिनके आधार पर उनमें अन्तर किया जाता है, वे कितने हैं?
(A) 3 (B) 4
(C) 5 (D) 10

व्याख्या–
(A) ''वस्तु नेता रसस्तेषां भेदकः'' दशरूपक के इस कथन के अनुसार **(i) वस्तु (कथावस्तु) (ii)नायक और (iii) रस**-रूपकों के यही तीन भेदक तत्त्व हैं।
अतः विकल्प `A' सही है।
(B) नाट्यवृत्तियाँ चार है– (i) सात्वती (ii) भारती (iii) कैशिकी, (iv) आरभटी
इनमें 'भारती' शब्दवृत्ति है, शेष तीनों अर्थवृत्तियाँ कहलाती हैं।
(C) अर्थप्रकृतियाँ पाँच हैं–बीज, बिन्दु, पताका, प्रकरी तथा कार्य।
(D) रस पर आश्रित होने वाला रूपक 10 प्रकार का ही होता है–
1. नाटक 2. प्रकरण 3. भाण 4. प्रहसन 5.डिम
6. व्यायोग 7. समवकार 8. वीथी 9. अङ्क 10. ईहामृग
नाटकं सप्रकरणं भाणः प्रहसनं डिमः।
व्यायोगसमवकारौ वीथ्यङ्केहामृगा इति॥
(दशरूपक, प्रथमप्रकाश)

44. क्रिया से कौन उक्त होते हैं?
(A) कर्ता (B) कर्म
(C) भाव (D) उपर्युक्त सभी

व्याख्या– क्रिया से कर्ता, कर्म और भाव सभी उक्त होंगे। जब कर्ता उक्त होगा तो कर्तृवाच्य का वाक्य होगा, जब कर्म उक्त होगा तो कर्मवाच्य और भाव (क्रिया) के उक्त होने पर भाववाच्य होगा। इस प्रकार क्रिया के द्वारा कर्ता, कर्म और भाव सभी उक्त हो सकते हैं।
अतः विकल्प `D' सही है।

45. निम्नलिखित में कौन सा वाक्य शुद्ध है?
(A) शतस्त्रिय पठन्ति
(B) शताः स्त्रीणां कियन्मूल्यम्
(C) विंशतिः फलानि सन्ति
(D) त्रिशताः बालिका पठन्ति

व्याख्या– ● **''शतादिः सङ्ख्या''** (पाणिनीयलिङ्गानुशासनम्–146) सूत्र के अनुसार संख्यावाचक शतम्, सहस्रम् आदि शब्द नपुंसकलिङ्ग में होते हैं।

41. (D) 42. (B) 43. (A) 44. (D) 45. (C)

- ''**विंशत्यादिरानवतेः**'' (पाणिनीयलिङ्गानुशासनम्-13) सूत्र के अनुसार 'विंशति' शब्द से लेकर 'नवति' पर्यन्त संख्यावाची शब्द स्त्रीलिङ्ग में होते हैं। अतः एकोनविंशतिः (19) से नवनवतिः (99) तक के शब्द स्त्रीलिङ्ग एकवचन में होते हैं।
- उक्त नियम के अनुसार 'शतः, शताः, त्रिशताः' रूप नहीं बनेंगे क्योंकि 'शतम्' शब्द नपुंसकलिङ्ग में कहा गया है। इस दृष्टि से विकल्प `C' सही उत्तर होगा।
- किन्तु प्रश्नपत्र में मुद्रणदोष के कारण '**सन्ति**' के स्थान पर '**शन्ति**' रूप छप गया है, कृपया उसे सुधार लिया जाय। साथ ही आयोग से निवेदन है कि संस्कृत के पेपर में मुद्रणदोषों से बचा जाना चाहिए, क्योंकि संस्कृत भाषा में तो एक हलन्त, विसर्ग, अनुस्वार आदि की गलती से भी महान् अनर्थ हो सकता है।

46. क्रुध्, द्रुह्, ईर्ष्य्, असूय् धातुओं तथा इनके समान अर्थ वाली धातुओं के योग में जिस पर क्रोध किया जाता है, उसकी क्या संज्ञा होती है?
(A) करण
(B) सम्प्रदान
(C) अपादान
(D) अधिकरण

व्याख्या– ● **क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः** (1.4.37) सूत्र के अनुसार क्रुध्, द्रुह्, ईर्ष्य्, असूय् धातुओं तथा इनके समान अर्थ वाली धातुओं के योग में जिस पर क्रोध किया जाता है, उसकी **सम्प्रदानसंज्ञा** होती है। यथा– हरये क्रुध्यति, हरये द्रुह्यति, हरये असूयति। अतः विकल्प `B' सही है।

- '**साधकतमं करणम्**' (1.4.42) सूत्र से क्रिया की सिद्धि में जो पदार्थ सबसे अधिक उपकारक (सहायक) होता है, उसकी करणकारक संज्ञा होती है। यथा– बालकः जलेन स्नाति।
- ''**पराजेरसोढः**'' (1.4.26) सूत्र से यदि √जि धातु के पूर्व 'परा' उपसर्ग लगा हो तो जो असह्य पदार्थ होता है, उसकी अपादानसंज्ञा होती है। यथा– अध्ययनात् पराजयते।
- **आधारोऽधिकरणम्** (1.4.45) सूत्र से कर्ता और कर्म में रहने वाली क्रिया का, कर्ता और कर्म के द्वारा, जो आधार होता है, उसकी अधिकरणसंज्ञा होती है। यथा– (i) कटे आस्ते (ii) मोक्षे इच्छा अस्ति (iii) सर्वस्मिन् आत्मा अस्ति।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतव्याकरणम् पेज-98 प्रश्न-38

47. उत्तररामचरितम् में कितने अङ्क है?
(A) 6
(B) 7
(C) 10
(D) 9

व्याख्या–	ग्रन्थ	अङ्कों की संख्या
(A)	स्वप्नवासवदत्तम् (भास)	6
	अभिषेकनाटकम् (भास)	6
	अविमारकम् (भास)	6
	कुन्दमाला (दिङ्नाग)	6
	वेणीसंहारम् (भट्टनारायण)	6
(B)	**उत्तररामचरितम् (भवभूति)**	**7**
	प्रतिमानाटकम् (भास)	7
	अभिज्ञानशाकुन्तलम् (कालिदास)	7
	मुद्राराक्षसम् (विशाखदत्त)	7
	महावीरचरितम् (भवभूति)	7
	अनर्घराघवम् (मुरारि)	7
	प्रसन्नराघवम् (जयदेव)	7
(C)	मृच्छकटिकम् (शूद्रक)	10
	मालतीमाधवम् (भवभूति)	10
	बालरामायणम् (राजशेखर)	10
(D)	शारिपुत्रप्रकरणम् (अश्वघोष)	09

अतः विकल्प `B' सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-183 प्रश्न-84

48. कादम्बरी का प्रधानरस क्या है?
(A) वीर
(B) शृङ्गार
(C) करुण
(D) शान्त

व्याख्या–	ग्रन्थ	प्रधानरस
(A)	किरातार्जुनीयम् (भारवि)	– वीररस
(B)	**कादम्बरी (बाणभट्ट)**	**– शृङ्गार**
(C)	उत्तररामचरितम् (भवभूति)	– करुण
(D)	बुद्धचरितम् (अश्वघोष)	– शान्तरस

अतः विकल्प `B' सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-191 प्रश्न-18

46. (B) 47. (B) 48. (B)

49. तिङ् प्रत्याहार में कितने प्रत्यय होते हैं?

(A) 18 **(B) 12**

(C) 7 **(D) 21**

व्याख्या– (A) तिङ् प्रत्याहार में **18 प्रत्यय** आते हैं–

परस्मैपद	**आत्मनेपद**
तिप् तस् झि	त आताम् झ
सिप् थस् थ	थास् आथाम् ध्वम्
मिप् वस् मस्	इट् वहि महिङ्

(B) सनादि प्रत्यय 12 होते हैं–
1. सन् 2. क्यच् 3. काम्यच् 4. क्यङ् 5. क्यष् 6. क्विप् 7. णिच् 8. यङ् 9. यक् 10. आय 11. ईयङ् 12. णिङ्

(C) कृत्यसंज्ञक प्रत्यय 07 होते हैं।
तव्यत्, तव्य, अनीयर्, यत्, क्यप्, ण्यत्, केलिमर्।

- शतृ और शानच्– इन दो प्रत्ययों की '**सत् संज्ञा**' होती है।
- क्त और क्तवतु – इन दो प्रत्ययों की '**निष्ठासंज्ञा**' होती है।
- तरप् और तमप् – इन दो प्रत्ययों की '**घ संज्ञा**' होती है।

(D) सुप् प्रत्याहार में 21 प्रत्यय आते हैं– सु औ जस्, अम् औट् शस्, टा भ्याम् भिस्, ङे भ्याम् भ्यस्, ङसि भ्याम् भ्यस्, ङस् ओस् आम्, ङि ओस् सुप्।अतः विकल्प `A' सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतव्याकरणम् पेज-50 प्रश्न-211

50. नायक कितने प्रकार के होते हैं?

(A) 3 **(B) 4**

(C) 5 **(D) 6**

व्याख्या–

(A) नायिका तीन प्रकार की होती है– (i) स्वकीया (ii) परकीया (iii) साधारणस्त्री ''**स्वान्या साधारणस्त्रीति तद्गुणा नायिका त्रिधा**'' (दशरूपक, द्वितीय प्रकाश)

- स्वकीया नायिका तीन प्रकार की होती है–
(i) मुग्धा (ii) मध्या (iii) प्रगल्भा

(B) **नायक चार प्रकार के होते हैं–**
(i) धीरललित (ii) धीरप्रशान्त (iii) धीरोदात्त (iv) धीरोद्धत ''**भेदैश्चतुर्धा ललितशान्तोदात्तोद्धतैरयम्**– (दशरूपक द्वितीयप्रकाश) अतः विकल्प `B' सही है।

- शृङ्गार की दृष्टि से नायक के चार भेद किये गये हैं–
(i) दक्षिण नायक (ii) शठनायक
(iii) धृष्टनायक (iv)अनुकूलनायक

(C) नाटक में **पाँच अर्थप्रकृतियाँ** हैं–
1. बीज 2. बिन्दु
3. पताका 4. प्रकरी 5. कार्य

बीजबिन्दुपताकाख्यप्रकरीकार्यलक्षणाः।
अर्थप्रकृतयः पञ्च ता एताः परिकीर्तिताः॥ (दशरूपक)

- नाटक में पाँच कार्यावस्थायें हैं–
1. आरम्भ 2. यत्न
3. प्राप्त्याशा 4. नियताप्ति
5. फलागम

अवस्थाः पञ्च कार्यस्य प्रारब्धस्य फलार्थिभिः।
आरम्भ-यत्न-प्राप्त्याशा-नियताप्ति-फलागमः॥
(दशरूपक, प्रथमप्रकाश)

- नाटक में **पाँच सन्धियाँ** मानी गयी हैं–
1. मुखसन्धि
2. प्रतिमुखसन्धि
3. गर्भसन्धि
4. अवमर्शसन्धि (विमर्शसन्धि)
5. उपसंहृति/निर्वहणसन्धि

''**मुखप्रतिमुखे गर्भः सावमर्शोपसंहृतिः**'' – (दशरूपक)

5 अर्थप्रकृतियाँ + 5 कार्यावस्था = 5 सन्धि

1. बीज	+ आरम्भ	= मुखसन्धि
2. बिन्दु	+ प्रयत्न	= प्रतिमुखसन्धि
3. पताका	+ प्राप्त्याशा	= गर्भसन्धि
4. प्रकरी	+ नियताप्ति	= अवमर्शसन्धि
5. कार्य	+ फलागम	= उपसंहृति

(D) मम्मट के अनुसार **काव्यप्रयोजन 6** होते हैं–
1. यशसे (यश की प्राप्ति)
2. अर्थकृते (धनोपार्जन के लिए)
3. व्यवहारविदे (उचित आचार व्यवहार का ज्ञान)
4. शिवेतरक्षतये (अमंगल के नाश हेतु)
5. सद्यःपरनिर्वृतये (तत्काल परमानन्द की प्राप्ति)
6. कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे (कान्ता/प्रिया के समान उपदेश देने के लिए)।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-303

49. (A) 50. (B)

51. उत्तररामचरितम् के तृतीय अङ्क की घटना किस स्थान पर घटित होती है?
(A) वाल्मीकि आश्रम (B) चित्रकूट
(C) अयोध्या (D) पञ्चवटी

अङ्क	घटना-स्थान
1. प्रथम अङ्क	अयोध्या
2. द्वितीय अङ्क	दण्डकारण्य का जनस्थान प्रदेश
3. तृतीय अङ्क	**दण्डकारण्य का पञ्चवटी प्रदेश**
4. चतुर्थ अङ्क	महर्षि वाल्मीकि के आश्रम का समीपवर्ती स्थान
5. पञ्चम अङ्क	वाल्मीकि के आश्रम का समीपवर्ती स्थान
6. षष्ठ अङ्क	वाल्मीकि के आश्रम का समीपवर्ती स्थान
7. सप्तम अङ्क	वाल्मीकि के आश्रम का समीपवर्ती स्थान

अतः विकल्प `D' सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा TGT व्याख्यात्मक पेज-61 प्रश्न-76

52. प्रसिद्ध टीकाकार मल्लिनाथ के अनुसार मेघदूतम् में कितने पद्य हैं?
(A) 115 (B) 120
(C) 121 (D) 125

व्याख्या– ● मेघदूतम् में 'सञ्जीवनी' नाम की टीका के रचयिता महामहोपाध्याय मल्लिनाथ जी के अनुसार पूर्वमेघ में 63 और उत्तरमेघ में 52 इस प्रकार इसमें कुल 115 श्लोक हैं।

- टीकाकार मल्लिनाथ ने कुल 121 पद्यों में सञ्जीवनी टीका लिखी है किन्तु 06 पद्यों को उन्होंने प्रक्षिप्त मानकर कुल 115 पद्यों को ही प्रामाणिक कहा है।
  अतः विकल्प `A' सही है।
- यद्यपि आयोग ने इसका उत्तर `C' अर्थात् 121 माना है, मुझे लगता है इसमें पुनः विचार किया जाना चाहिए।
- मेघदूत के श्लोकों के विषय में बहुत मतभेद है, कुछ विद्वानों का मत द्रष्टव्य है।

मेघदूत की टीका, टीकाकार और श्लोकसंख्या

1. काश्मीरी टीकाकार वल्लभदेव की टीका में – कुल = 112 श्लोक-1 प्रक्षिप्त = 111 श्लोक प्रामाणिक
2. स्थिरदेव की टीका में – 111 श्लोक
3. दक्षिणावर्त, पूर्णसरस्वती, और परमेश्वर की टीकाओं में – 110 श्लोक
4. विजयसूरि और मेघराज की टीकाओं में – 127 श्लोक
5. जनार्दन, लक्ष्मीनिवास, सुमतिविजय और मेघलता आदि टीका में – 126 श्लोक
6. नेमिदूत, शीलदूत, सारोद्धारिणी, दिवाकर उपाध्याय और कनककीर्तिगण की टीका में – 125 श्लोक
7. सरस्वतीतीर्थ और क्षेमहंसमणि की टीका में–123 श्लोक
8. चारित्रवर्धन की टीका में – 122 श्लोक
9. जिनसेन की टीका में – 120 श्लोक
10. सिंहली अनुवाद में – 118 श्लोक
11. तिब्बती अनुवाद में– 117 श्लोक
12. **मल्लिनाथ की 'सज्जीवनी' टीका में -121-06=115 श्लोक**
13. मकरन्द मिश्र की टीका में – 118 श्लोक
14. रामनाथ तर्कालङ्कार की टीका में – 111 श्लोक
15. शाश्वत, सनातनगोस्वामी, कल्याणमल्ल, कविरत्न चक्रवर्ती और हरगोविन्द वाचस्पति की टीका में– 115 श्लोक
16. भगीरथमिश्र और भरतमलिक की टीका में – 114 श्लोक
17. विल्सन के आलोचनात्मक संस्करण में – 116 श्लोक
18. गिल्डमाइस्टर के अनुसार – 113 श्लोक
19. स्टेन्सलर के अनुसार – 112 श्लोक
20. मैकडॉनल के संस्करण में – 111 श्लोक
21. डॉ. एस. के. डे के विचार में – 110 या 111 श्लोक
22. जे. हर्टेल के अनुसार– 108 श्लोक
23. पार्श्वाभ्युदय के अनुसार– 120 श्लोक

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-198 प्रश्न 25

53. कर्मवाच्य में कर्म में क्या विभक्ति होती है?
(A) प्रथमा (B) द्वितीया
(C) तृतीया (D) षष्ठी

व्याख्या– ● कर्मवाच्य में क्रिया के द्वारा कर्म उक्त होता है, अतः उक्तत्वात् **कर्म में प्रथमा विभक्ति** तथा कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है। अतः विकल्प `A' सही है।

- कर्तृवाच्य में कर्ता उक्त होता है, अतः कर्ता में प्रथमाविभक्ति तथा कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है।
- जहाँ प्रथमादि विभक्तियाँ नहीं होती वहाँ 'शेषे षष्ठी' सूत्र से षष्ठी विभक्ति होती है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् पेज-128 प्रश्न 90

51. (D) 52. (A/C) 53. (A)

54. निम्नलिखित शब्दों में सही क्या है?
(A) अन्तरर्राष्ट्रिय (B) अन्तराराष्ट्रिय
(C) अन्ताराष्ट्रिय (D) अन्तर्राष्ट्रीय

व्याख्या– अन्तर् + राष्ट्रिय
अन्त + राष्ट्रिय (''**रो रि**'' सूत्र से रेफ के बाद
अन्ताराष्ट्रिय रेफ आने से पूर्व रेफ का लोप)
''**ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः**'' सूत्र से ढकार और रेफ के लोप में निमित्तभूत जो ढकार और रेफ, उनके परे होने पर पूर्व अण् के स्थान पर दीर्घ होता है।
अतः विकल्प `C' सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-236 प्रश्न 44

55. मेघदूतम् में मेघ को कितने पदार्थों का सम्मिश्रण कहा गया है?
(A) 3 (B) 4
(C) 5 (D) 6

व्याख्या– महाकवि कालिदास द्वारा विरचित मेघदूतम् नामक खण्डकाव्य (गीतिकाव्य) के पञ्चम श्लोक में लिखा है कि– ''**धूमज्योतिः सलिलमरुतां सन्निपातः क्व मेघः**'' अर्थात् धूम, अग्नि, जल और वायु का सम्मिश्रण कहाँ मेघ? इससे स्पष्ट है कि (i) धूम = धुँआ (ii) ज्योतिः = तेज/अग्नि (iii) सलिलम् = जल (iv) मरुत् = वायु –इन चार पदार्थों का सम्मिश्रण ही मेघ कहलाता है।
अतः विकल्प `B' सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-37

56. 'चुर्' धातु के सम्बन्ध में क्या सही कथन है?
(A) चुर् धातु में णिच् प्रत्यय नहीं लगता है।
(B) चुर् धातु से स्वार्थ में णिच् होता है।
(C) चुर् धातु में णिच् प्रत्यय लगाना ऐच्छिक है
(D) चुर् धातु केवल आत्मनेपदी धातु है।

व्याख्या– ● ''**सत्याप - पाश - रूप - वीणा - तूल - श्लोक - सेना - लोम - त्वच - वर्म - वर्ण - चूर्ण - चुरादिभ्यो णिच्**'' (3.1.25)
सत्याप, पाश, रूप, वीणा, तूल, श्लोक, सेना, लोम, त्वच, वर्म, वर्ण, चूर्ण आदि नामधातुओं और चुर् आदि गणपठित धातुओं से परे **स्वार्थ में णिच् प्रत्यय** होता है।
अतः विकल्प `B' सही है।

- 'चुर्' आदि धातुओं से तो स्वार्थ में णिच् होता ही है, णिच् प्रत्यय ऐच्छिक नहीं अपितु अनिवार्य है और 'चुर्' धातु परस्मैपदी होती है, न कि आत्मनेपदी। इसका रूप होगा– चोरयति, चोरयतः चोरयन्ति। अतः विकल्प A, C,और D असत्यकथन हैं, जबकि विकल्प `B' सही है।

57. 'अष्टन्' शब्द का प्रथमा विभक्ति का क्या रूप होगा?
(A) अष्टः (B) अष्टन्
(C) अष्टौ (D) अष्टाः

व्याख्या– ● 'अष्टन्' शब्द का रूप– 1. अष्टौ 2. अष्टौ 3. अष्टाभिः 4. अष्टाभ्यः 5. अष्टाभ्यः 6. अष्टानाम् 7. अष्टासु
- ''**अष्टन आ विभक्तौ**'' (7.2.84) सूत्र से यदि अष्टन् शब्द के बाद व्यञ्जनवर्ण से आरम्भ होने वाले विभक्ति प्रत्यय जुड़े हों तो 'न्' के स्थान में 'आ' हो जाता है, किन्तु 'न्' के स्थान में 'आ' का होना वैकल्पिक है। 1. अष्ट 2. अष्ट 3. अष्टभिः 4. अष्टभ्यः 5. अष्टभ्यः 6. अष्टानाम् 7. अष्टसु
- इस प्रकार 'अष्टौ' और 'अष्ट' दोनों सही हैं जबकि ''अष्टः, अष्टन्, अष्टाः'' ये रूप कहीं नहीं बनते।

अतः विकल्प `C' सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतव्याकरणम् पेज-129 प्रश्न 01

58. अव्यय शब्दों में किस विभक्ति प्रत्यय का लोप होता है?
(A) प्रथमा का
(B) द्वितीया का
(C) तृतीया का
(D) सभी का

व्याख्या– ''**अव्ययादाप् सुपः**'' (2.4.82) सूत्र से अव्यय से परे 'आप्' तथा 'सुप्' का लोप होता है।
- 'आप्' के द्वारा 'चाप्, टाप्, डाप्' स्त्रीलिङ्ग प्रत्ययों का ग्रहण होता है।
- 'सुप्' के द्वारा इक्कीस विभक्तियों का ग्रहण होता है। इस प्रकार अव्यय से परे सभी विभक्तियों में सभी सुप् प्रत्ययों का लोप होना चाहिए अतः विकल्प `D' सही होना चाहिए। किन्तु आयोग ने इसका उत्तर `A' माना है, मुझे लगता है आयोग को इसके उत्तर में पुनर्विचार करना चाहिए। ऐसा भी हो सकता है कि यह मेरी अज्ञानता हो, और मैं गलत भी हो सकता हूँ।

54. (C) 55. (B) 56. (B) 57. (C) 58. (D/A)

59. 'कादम्बरी' निम्नलिखित में से क्या है?
(A) आख्यायिका (B) कथा
(C) रूपक (D) उपन्यास

काव्यविधा	उदाहरण
(A) आख्यायिका	हर्षचरितम्
(B) **कथा**	**कादम्बरी,** वासवदत्ता आदि
(C) रूपक	अभिज्ञानशाकुन्तलम्, मृच्छकटिकम् आदि
(D) उपन्यास	शिवराजविजय आदि

अतः विकल्प `B' सही है।

विशेष–'धिया निबद्धेयमतिद्वयी कथा' 'कथाजनस्याभिनवावधूरिव' 'नवैः पदार्थैरुपपादिताः कथाः' इत्यादि कथनों से सिद्ध है कि बाणभट्ट ने कादम्बरी के मङ्गलाचरण में इसे स्वयं 'कथा' कहकर सम्बोधित किया है।

- 'कादम्बरीरसज्ञानामाहारोऽपि न रोचते' 'कादम्बरी रसभरेण समस्त एव' सहर्षचरितारब्धाददद्भुतकादम्बरी कथा' इत्यादि कथनों से भी स्पष्ट है कि 'कादम्बरी' कथा ग्रन्थ है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-192 प्रश्न 22

60. 'असज्जनात् कस्य भयं न जायते' यह वचन किस ग्रन्थ का है?
(A) नीतिशतकम् (B) मेघदूतम्
(C) किरातार्जुनीयम् (D) कादम्बरी

व्याख्या–

	ग्रन्थ	सूक्ति
(A)	नीतिशतकम् –	'नास्ति येषां यशःकाये जरामरणजं भयम्'
(B)	मेघदूतम् –	कामार्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु– (पूर्वमेघ-5)
(C)	किरातार्जुनीयम्–	'अमर्षशून्येन जनस्य जन्तुना न जातहार्देन न विद्विषादरः' (1/33)
(D)	**कादम्बरी –**	**'असज्जनात् कस्य भयं न जायते'** (कथामुख-05)

अतः विकल्प `D' सही है।

61. 'हल्'–प्रत्याहार में कितने वर्ण होते हैं?
(A) 33 (B) 34
(C) 35 (D) 36

व्याख्या– ● 'हल्' प्रत्याहार के अन्तर्गत 'हयवरट्' सूत्र से लेकर अन्तिम 'हल्' सूत्र तक के वर्णों की गणना की जायगी, इस प्रकार कुल 34 वर्ण आते हैं।

- किन्तु 'हल्' प्रत्याहार के अन्तर्गत व्यञ्जन वर्ण गिने जाते हैं और संस्कृतवर्णमाला में व्यञ्जनवर्णों की संख्या 33 मानी गयी है, अतः 'हयवरट्' सूत्रस्थ 'ह' वर्ण तथा 'हल्' सूत्रस्थ 'ह' वर्ण की दो बार गिनती करना पुनरावृत्ति मात्र होगी, अतः मेरी दृष्टि में इसका उत्तर `A' अर्थात् 33 वर्ण मानना चाहिए। किन्तु आयोग ने इसका उत्तर `B' माना है। इसका निर्णय सुधी पाठकजन विद्वानों से परामर्श करके स्वयं कर लें।

62. निम्नलिखित में से 'युष्मद्' शब्द के लिए क्या सही कथन है?
(A) मध्यमपुरुषवाची है।
(B) सम्बोधन पद का प्रयोग वर्जित है।
(C) तीनों लिङ्गों में एक समान रूप होते हैं
(D) उपर्युक्त सभी सही है।

व्याख्या– ● 'युष्मद्' (तुम) शब्द मध्यमपुरुषवाचक है, इसके सम्बोधन में रूप नहीं चलते हैं तथा पुंलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग, नपुंसकलिङ्ग तीनों लिङ्गों में इसके रूप एकसमान चलते हैं। अतः विकल्प `D' सही है।

यथा– (i) त्वं युवकः असि –पुंलिङ्ग
(ii) त्वं युवती असि –स्त्रीलिङ्ग
(iii) त्वं मित्रम् असि – नपुंसकलिङ्ग

- युष्मद् शब्द का रूप तीनों लिङ्गों के सातों विभक्तियों के एकवचन में इस प्रकार होंगे– 1. त्वम् 2. त्वाम् 3.त्वया 4. तुभ्यम्, 5. त्वत्, 6. तव, 7. त्वयि
- 'युष्मद्' 'अस्मद्' आदि शब्दों का सम्बोधन रूप नहीं होता।

63. श्रव्यकाव्य के कितने भेद होते हैं?
(A) 1 (B) 3
(C) 5 (D) 6

व्याख्या–
- मुख्यतः काव्य के दो भेद हैं– (i) श्रव्यकाव्य (ii) दृश्यकाव्य **''दृश्यश्रव्यत्वभेदेन पुनः काव्यं द्विधास्मृतम्''** (सा. द.)
- श्रव्यकाव्य के पुनः तीन भेद किये गये हैं–
  (i) गद्यकाव्य
  (ii) पद्यकाव्य
  (iii) चम्पूकाव्य

अतः विकल्प `B' सही है।

59. (B) 60. (D) 61. (A/B) 62. (D) 63. (B)

काव्य
- श्रव्य
  - गद्य
    - कथा
    - आख्यायिका
  - पद्य
    - महाकाव्य
    - खण्डकाव्य
  - चम्पू
- दृश्य
  - रूपक (नाटक आदि 10 भेद)
  - उपरूपक (नाटिका आदि 18 भेद)

64. मेघदूतम् के प्रारम्भ में किस प्रकार का मङ्गलाचरण किया गया है?
(A) आशीर्वादात्मक (B) नमस्कारात्मक
(C) वस्तुनिर्देशात्मक (D) उपर्युक्त सभी

व्याख्या– ● ग्रन्थ की निर्विघ्न समाप्ति के लिए ग्रन्थारम्भ में मङ्गलाचरण किया जाता है। मङ्गलाचरण तीन प्रकार का होता है– (i) आशीर्वादात्मक (ii) नमस्क्रियात्मक, (iii) वस्तुनिर्देशात्मक

''आशीर्नमस्क्रिया वस्तुनिर्देशो वाऽपि तन्मुखम्''

● मेघदूतम् में **वस्तुनिर्देशात्मक मङ्गलाचरण** किया गया है। अतः विकल्प `C' सही है।

ग्रन्थ	मङ्गलाचरण	प्रकृति
1. अभिज्ञानशाकुन्तलम्	या सृष्टिः स्रष्टुराद्या .....(स्रग्धरा)	आशीर्वादात्मक
2. उत्तररामचरितम्	इदं कविभ्यः पूर्वेभ्यो नमो..... (अनुष्टुप्)	नमस्कारात्मक
3. मेघदूतम्	कश्चित् कान्ता विरहगुरुणा (मन्दाक्रान्ता)	वस्तुनिर्देशात्मक

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-202 प्रश्न-96

65. 'ग्रीष्म + ऋतुः' में सन्धि होने पर क्या शब्द बनता है?
(A) ग्रीष्मृतुः
(B) ग्रीष्मरतुः
(C) ग्रीष्मर्तुः
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

व्याख्या– ग्रीष्म + ऋतुः
ग्रीष्म् अ + ऋतुः
ग्रीष्म् अर् तुः ('आद् गुणः' सूत्र से अ + ऋ = अर् हो गया)
ग्रीष्मर्तुः (गुणसन्धि)
अतः विकल्प `C' सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतव्याकरणम् पेज-185

66. 'युवन्' शब्द का प्रथमा बहुवचन में क्या रूप होता है?
(A) युवानः (B) युवा
(C) युवानम् (D) यूनः

व्याख्या– ● 'युवन्' शब्द का प्रथमा विभक्ति का रूप– **''युवा युवानौ युवानः''** अतः विकल्प `A' सही है।

● 'युवन्' शब्द नकारान्त पुंलिङ्ग शब्द का रूप सातों विभक्तियों के एकवचन में इस प्रकार चलेगा– 1. युवा 2. युवानम् 3. यूना 4. यूने 5. यूनः 6. यूनः 7. यूनि, सम्बो0 हे युवन्।

स्रोत–रचनानुवादकौमुदी पेज-137

67. मेघदूतम् के अनुसार अलकापुरी में यक्ष का घर कुबेर के महल से किस दिशा में बताया गया है?
(A) पूर्व (B) उत्तर
(C) पश्चिम (D) दक्षिण

व्याख्या–उत्तरमेघ के 15वें श्लोक में विरही यक्ष, मेघ से अपने घर का परिचय बताते हुए कहता है कि – अलकापुरी में मेरा घर कुबेर के घर के उत्तर में है– **''तत्रागारं धनपतिगृहानुत्तरेणास्मदीयम्''** अतः विकल्प `B' सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-200 प्रश्न-62

68. उत्तररामचरितम् का 'छायाङ्क' नाम से कौन सा अङ्क प्रसिद्ध है?
(A) द्वितीय अङ्क (B) तृतीय अङ्क
(C) चतुर्थ अङ्क (D) पञ्चम अङ्क

उत्तररामचरितम् के अङ्क	अङ्कों के नाम	श्लोक संख्या
प्रथम अङ्क	चित्रदर्शनाङ्क	51
द्वितीय अङ्क	पञ्चवटीप्रवेशाङ्क	30
तृतीय अङ्क	छायाङ्क	48
चतुर्थ अङ्क	कौशल्याजनकयोगाङ्क	29

64. (C) 65. (C) 66. (A) 67. (B) 68. (B)

पञ्चम अङ्क	कुमारविक्रमाङ्क	35
षष्ठ अङ्क	कुमारप्रत्यभिज्ञानाङ्क	42
सप्तम अङ्क	सम्मेलनाङ्क	21
		256

अतः विकल्प `B' सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-234 प्रश्न-05

69. ''बलिं याचते वसुधाम्'' इस वाक्य में 'बलि' में द्वितीया विभक्ति क्यों होती है?
(A) बलि गौण कर्म है
(B) अपादानादि की विशेष विवक्षा नहीं, अपितु अविवक्षा है।
(C) ''अकथितं च'' सूत्र से कर्मसंज्ञा होती है
(D) उपर्युक्त सभी कारणों से

व्याख्या– (A) 'बलिं याचते वसुधाम्' इस उदाहरण में– गौणकर्म–बलिम्, प्रधानकर्म–वसुधा, द्विकर्मकधातु–√याच् = याचते अतः 'अकथितं च' सूत्र से गौणकर्म 'बलि' की भी अपादान की अविवक्षा में कर्मसंज्ञा होकर द्वितीया विभक्ति हो गयी।

(B) इस उदाहरण में अपादान की विवक्षा होने पर वाक्य बनता– 'बलेः याचते वसुधाम्।' यहाँ 'बलि' की अपादान संज्ञा होकर पञ्चमी एकवचन में 'बलेः' रूप बना। किन्तु अपादान की विशेष विवक्षा न होने पर 'अकथितं च' सूत्र से 'बलि' की भी कर्मसंज्ञा हुई और द्वितीया विभक्ति होकर वाक्य बना–बलिं याचते वसुधाम्।

(C) यदि पाणिनीयसूत्र ''अकथितं च'' (1.4.51) नहीं होता तो यहाँ 'बलि' की कर्मसंज्ञा नहीं हो सकती थी, और द्वितीया विभक्ति का विधान भी नहीं हो पाता।

(D) इस प्रकार सिद्ध होता है कि 'बलिं याचते वसुधाम्' इस वाक्य के 'बलिम्' पद में द्वितीयाविभक्ति का विधान उपर्युक्त तीनों कारणों से होता है, अतः विकल्प `D' सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प है।

70. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में श्लोकों की संख्या क्या है?
(A) 34
(B) 18
(C) 22
(D) 24

अभिज्ञानशाकुन्तलम् के अङ्क	श्लोक संख्या
1. प्रथम अङ्क	34
2. द्वितीय अङ्क	18
3. तृतीय अङ्क	24
4. चतुर्थ अङ्क	**22**
5. पञ्चम अङ्क	31
6. षष्ठ अङ्क	32
7. सप्तम अङ्क	35
	196

अतः विकल्प `C' सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-163 प्रश्न-133

71. 'भू' धातु का लोट्लकार मध्यमपुरुष के बहुवचन में क्या रूप होता है?
(A) भवत
(B) भव
(C) भवतम्
(D) भवतु

व्याख्या– 'भू' धातु का लोट्लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र.पु.	भवतु	भवताम्	भवन्तु
म.पु.	भव	भवतम्	**भवत**
उ.पु.	भवानि	भवाव	भवाम

अतः विकल्प `A' सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा TGT व्याख्यात्मक पेज-16 प्रश्न-73

72. उत्तररामचरितम् में निम्नलिखित में से कौन सा पात्र नहीं है?
(A) नायक
(B) विदूषक
(C) नायिका
(D) सूत्रधार

व्याख्या– (A) उत्तररामचरितम् के नायक– राम।

(B) उत्तररामचरितम् में विदूषक पात्र का अभाव है।

(C) उत्तररामचरितम् की नायिका– सीता।

(D) उत्तररामचरितम् के प्रथम अङ्क में नान्दीपाठ के बाद सूत्रधार का प्रवेश होता है।

अतः विकल्प `B' सही है।

69. (D) 70. (C) 71. (A) 72. (B)

73. अकारान्त पुँल्लिङ्ग 'प्रथम' शब्द का तृतीया विभक्ति बहुवचन में क्या रूप होता है?
(A) प्रथमे **(B) प्रथमेन**
(C) प्रथमैः **(D) प्रथमौ**

व्याख्या– ● 'प्रथम' अकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्द का तृतीया विभक्ति में रूप ''प्रथमेन प्रथमाभ्याम् **प्रथमैः''** अतः विकल्प `C' सही है।

● 'प्रथम' शब्द का सातों विभक्तियों के एकवचनान्त रूप–
1. प्रथमः 2. प्रथमम्
3. प्रथमेन 4. प्रथमाय
5.प्रथमात् 6. प्रथमस्य
7. प्रथमे।

74. लौकिक प्रयोग की दृष्टि से कौन अशुद्ध है?
(A) सत्यमेव जयते **(B) धर्मः जयति सर्वदा**
(C) न्यायो जयति सर्वत्र **(D) सत्यं जयति सर्वत्र**

व्याख्या– ● 'जि' धातु परस्मैपदी है, अतः इसके परस्मैपदी रूप ही शुद्ध हैं।

जयति जयतः जयन्ति
जयसि जयथः जयथ
जयामि जयावः जयामः

● **'विपराभ्यां जेः'** (1.3.19) सूत्र द्वारा 'वि' तथा 'परा' उपसर्गपूर्वक 'जि' धातु से आत्मेनपद होता है। यथा–विजयते, पराजयते आदि।
● 'सत्यमेव जयते' इस प्रयोग में 'जि' धातु का आत्मनेपद रूप प्रयुक्त है, जो कि लौकिक प्रयोग की दृष्टि से अशुद्ध है, अतः विकल्प `A' सही है।
● किन्तु ''सत्यमेव जयते'' यह मुण्डकोपनिषद् का वाक्य है, जो कि हमारे भारतवर्ष का ध्येयवाक्य (Motto)भी है, अतः लौकिक प्रयोग की दृष्टि से भले ही अशुद्ध दिखायी पड़ रहा हो, किन्तु उपनिषद्वाक्य होने के कारण यह आर्षप्रयोग है।

75. कर्म के उक्त होने पर कर्ता में कौन विभक्ति होती है?
(A) प्रथमा **(B) द्वितीया**
(C) सम्बोधन **(D) तृतीया**

व्याख्या– ● कर्म के उक्त होने पर कर्ता अनुक्त होगा, और अनुक्त कर्ता में **''कर्तृकरणयोस्तृतीया''** (2.3.18)सूत्र से तृतीया विभक्ति होगी। अतः विकल्प `D' सही है।

● एक वाक्य में क्रिया के द्वारा कोई एक ही उक्त होगा, यदि कर्म उक्त हो गया तो कर्ता अनुक्त हो जायेगा।
● कर्म उक्त होगा तो कर्म में प्रथमा विभक्ति होगी, और वह कर्मवाच्य का वाक्य होगा। वैसे भी कर्मवाच्य का कर्ता तृतीयान्त ही होता है।
● इस प्रकार उक्त कर्म में प्रथमा, अनुक्त कर्म में द्वितीया, अनुक्तकर्ता में तृतीया, तथा सम्बोधन में प्रथमा विभक्ति होती है।

76. ''ध्यानावस्थितैर्भवादृशैर्न ज्ञायते कालवेगः'' यह उक्ति किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है?
(A) उत्तररामचरितम् **(B) कादम्बरी**
(C) शिवराजविजयः **(D) किरातार्जुनीयम्**

व्याख्या– पं. अम्बिकादत्तव्यास विरचित **'शिवराजविजय'** नामक ऐतिहासिक उपन्यास के प्रथम निश्वास में यह कथन ब्रह्मचारिगुरु द्वारा योगिराज के लिए कहा गया है–
''ध्यानावस्थितैर्भवादृशैर्न ज्ञायते कालवेगः''
अर्थात् ध्यानमग्न आप जैसे योगियों को समय की गति का पता नहीं चलता। अतः विकल्प `C' सही है।

	ग्रन्थ	**उक्ति**
(A)	उत्तररामचरितम्	'भगवतः कालप्रियानाथस्य यात्रायामार्यमिश्रान् विज्ञापयामि'
(B)	कादम्बरी (शुकनासोपदेश)	भवादृशा एव भवन्ति भाजनानि उपदेशानाम्।
(C)	**शिवराजविजय**	ध्यानावस्थितैर्भवादृशैर्न ज्ञायते कालवेगः
(D)	किरातार्जुनीयम्	'भवादृशेषु प्रमदाजनोदितं भवत्यधिक्षेप इवानुशासनम्' (किरात0–1/28)

77. जिस कारण या प्रयोजन से कोई कार्य किया जाता है, उसमें क्या विभक्ति होती है?
(A) तृतीया **(B) चतुर्थी**
(C) पञ्चमी **(D) षष्ठी**

व्याख्या–
(A) **''हेतौ''** (2.3.23) सूत्र के अनुसार जिस कारण या प्रयोजन से कोई कार्य किया जाता है, या होता है, उस हेतु अर्थ के वाची शब्दों में **तृतीया विभक्ति** होती है।
यथा– (i) पुण्येन दृष्टो हरिः। (ii) अध्ययनेन वसति।
अतः विकल्प `A' सही है

73. (C) 74. (A) 75. (D) 76. (C) 77. (A)

(B) **'तादर्थ्ये चतुर्थी वाच्या'** (वा0) इस वार्तिक के अनुसार तादर्थ्य में चतुर्थी विभक्ति होती है। अर्थात् जिस प्रयोजन के लिए कोई कार्य किया जाता है, उस प्रयोजन में चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा–मुक्तये हरिं भजति

(C) **अकर्तर्यृणे पञ्चमी** (2.3.24) सूत्र से हेतुभूत ऋणवाचक शब्द से पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा– शताद् बद्धः।

(D) **'षष्ठी हेतुप्रयोगे'** (2.3.26) सूत्र से वाक्य में 'हेतु' शब्द का प्रयोग होने पर हेतु = कारण में तथा 'हेतु' शब्द में षष्ठी विभक्ति होती है। यथा– अन्नस्य हेतोर्वसति।

78. उत्तररामचरितम् में भागीरथी किसकी पूजा करने के बहाने सीता को लाती हैं?
(A) शिव (B) विष्णु
(C) ब्रह्मा (D) सूर्य

व्याख्या–भवभूति विरचित उत्तररामचरितम् (तृतीय अङ्क) में उल्लेख है कि भागीरथी (गङ्गा) सीता को अपने पुरातन श्वसुर **सूर्य की पूजा** करने के बहाने गोदावरी परिसर के पास पञ्चवटी तक लाती हैं– **''आत्मनः पुराणश्वसुरमेतावतो मानवस्य राजर्षिवंशस्य प्रसवितारं सवितारम् अपहतपाप्मानं देवं स्वहस्तापचितैः पुष्पैरुपतिष्ठस्व।''** यहाँ 'सवितारम्' पद का अर्थ 'सूर्य' है। अतः विकल्प `D' सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-24

79. जो बात अन्य विभक्तियों से न कहने की इच्छा हो, उसमें किस विभक्ति का प्रयोग होता है?
(A) द्वितीया (B) तृतीया
(C) पञ्चमी (D) षष्ठी

व्याख्या–

(A) अपादानादि की अविवक्षा में **''अकथितं च''** सूत्र से कर्मसंज्ञा होकर द्वितीया विभक्ति का विधान होता है। यथा–गोपालः गां पयः दोग्धि।

(B) **''अपवर्गे तृतीया''** (2.3.6) सूत्र से अपवर्ग (फलप्राप्ति) द्योतित होने पर काल और मार्गवाची शब्दों से अत्यन्त संयोग गम्यमान होने पर तृतीया विभक्ति होती है। यथा– अह्ना अनुवाकः अधीतः।

(C) अन्य, आरात्, इतर, ऋते आदि शब्दों के योग में पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा– आरात् वनात्।

(D) **''षष्ठी शेषे''** (2.3.50) सूत्र से शेष अर्थों में षष्ठी विभक्ति होती है। शेष अर्थ हैं– कर्म, करण, सम्प्रदान आदि कारकों से भिन्न तथा प्रातिपदिकार्थ से भिन्न।

- इसप्रकार जहाँ प्रथमा से सप्तमी पर्यन्त किसी भी विभक्ति का प्रयोग विहित नही है, ऐसे सम्बन्धमात्र की विवक्षा में षष्ठी विभक्ति होती है– **'कर्मादीनामपि सम्बन्धमात्रविवक्षायां षष्ठ्येव'** यथा–सतां गतम्, मातुः स्मरति आदि।
अतः विकल्प `D' सही है।

80. बाणभट्ट के गद्य की रीति क्या है?
(A) वैदर्भी
(B) गौडी
(C) पाञ्चाली
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

व्याख्या– रीति **कवि**
A. वैदर्भीरीति कालिदास
B. गौडीरीति भवभूति
C. **पाञ्चाली रीति** **बाणभट्ट**
अतः विकल्प `C' सही है।

- पाञ्चाली रीति के विषय में कहा गया है कि–
शब्दार्थयोः समो गुम्फः पाञ्चालीरीतिरुच्यते।
- कवि कालिदास के विषय में प्रसिद्धि है कि–
'वैदर्भीरीतिसन्दर्भे कालिदासो विशिष्यते'
वैदर्भी कविता स्वयं वृतवती श्रीकालिदासं वरम्'

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-191 प्रश्न-01

81. 'सुख + ऋतः' में सन्धि होने पर क्या शब्द बनता है?
(A) सुखार्तः
(B) सुखर्तः
(C) सुखरतः
(D) सुखारतः

व्याख्या–**'ऋते च तृतीया समासे'** इस वार्तिक से यदि पूर्व में अवर्ण हो और पर में 'ऋत' शब्द हो, और दोनों शब्दों में तृतीया तत्पुरुष समास हो गया हो तो (अ + ऋ = आर्) वृद्धिसन्धि होगी। सुखार्तः (सुख से युक्त)
'सुखेन ऋतः' इस विग्रह में तृतीयातत्पुरुषसमास होकर **'सुख + ऋत'** बना। यहाँ पर **'आद्गुणः'** सूत्र से गुणसन्धि हो सकती थी। उसे बाधकर **'ऋते च तृतीया समासे'** इस

78. (D) 79. (D) 80. (C) 81. (A)

वार्तिक से 'सुख' में अकार और 'ऋतः' के ऋकार के स्थान पर **'उरण् रपरः'** सूत्र की सहायता से रपर सहित 'आर्' वृद्धि हुई– **सुख् + आर् + त** बना, वर्णसम्मेलन और रेफ का ऊर्ध्वगमन होकर 'सुखार्तः' सिद्ध हुआ। अतः विकल्प `A' सही है।

- इसीतरह धनेन ऋतः = धनार्तः
  दुःखेन ऋतः = दुःखार्तः
  भयेन ऋतः = भयार्तः आदि भी बनेंगे।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतव्याकरणम् पेज-75 प्रश्न-49

82. निमित्त शब्द का अर्थ रखने वाले शब्दों का प्रयोग होने पर सर्वनाम शब्द में किस विभक्ति का प्रयोग होता है?
(A) द्वितीया
(B) तृतीया
(C) चतुर्थी
(D) द्वितीया से सप्तमी तक सभी का

व्याख्या– **'निमित्तपर्यायप्रयोगे सर्वासां प्रायदर्शनम्'** इस वार्तिक से निमित्त शब्द का अर्थ रखने वाले शब्दों का प्रयोग होने पर सर्वनाम शब्दों में प्रायः सभी विभक्तियाँ होती हैं; जैसे–

1. किं निमित्तम् 2. किं निमित्तम्
3. केन निमित्तेन 4. कस्मै निमित्ताय
5. कस्मात् निमित्तात् 6. कस्य निमित्तस्य
7. कस्मिन् निमित्ते

अतः विकल्प `D' सही है।

83. 'दिव्' धातु का लोट्लकार प्रथमपुरुष के द्विवचन में क्या रूप होता है?
(A) दीव्यतम्
(B) दीव्यतात्
(C) दीव्यताम्
(D) दीव्यत

व्याख्या–दिवादिगणीय 'दिव्' धातु का लोट्लकार का रूप

प्र. पु.	दीव्यतु/दीव्यतात्	**दीव्यताम्**	दीव्यन्तु
म. पु.	दीव्य/दीव्यतात्	दीव्यतम्	दीव्यत
उ. पु.	दीव्यानि	दीव्याव	दीव्याम

स्पष्ट है कि 'दिव्' धातु का लोट्लकार प्र. पु. द्विवचन का रूप **'दीव्यताम्'** बनेगा, अतः विकल्प `C' सही है।

84. बाणभट्ट किस सम्राट् के सभापण्डित थे?
(A) चन्द्रगुप्त (B) यशोवर्मा
(C) हर्षवर्धन (D) शाहजहाँ

	सम्राट्	**सभापण्डित**
A.	चन्द्रगुप्त	चाणक्य
B.	यशोवर्मा	भवभूति
C.	**हर्षवर्धन**	**बाणभट्ट**
D.	शाहजहाँ	पण्डितराजजगन्नाथ

अतः विकल्प `C' सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-12

85. ''नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण' यह वचन किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है?
(A) उत्तररामचरितम्
(B) स्वप्नवासवदत्तम्
(C) किरातार्जुनीयम्
(D) मेघदूतम्

	व्याख्या– ग्रन्थ	**सूक्ति**
A.	उत्तररामचरितम् –	कर्तव्यानि खलु दुःखितैर्दुःखनिर्वापणानि (3/129)
B.	स्वप्नवासवदत्तम् –	चक्रारपंक्तिरिव गच्छति भाग्यपंक्तिः (1/4)
C.	किरातार्जुनीयम् –	''द्विषन्निमित्ता यदियं दशा ततः समूलमुन्मूलयतीव ये मनः'' (1/41)
D.	**मेघदूतम्** –	नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण (उत्तरमेघ–49)

अतः विकल्प `D' सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-207 प्रश्न-82

86. निम्नलिखित वाक्यों में शुद्ध क्या है?
(A) रामेण भार्या त्यज्यते (B) रामेण भार्यां त्यजति
(C) रामः भार्या त्यजति (D) रामेण भार्या त्याजयति

व्याख्या– • 'रामेण भार्या त्यज्यते' यह कर्मवाच्य का शुद्ध वाक्य है।

- कर्ता में तृतीया – रामेण
- कर्म में प्रथमा – भार्या
- क्रिया में यक् प्रत्यय – त्यज् + यक् + त = त्यज्यते
- क्रिया कर्म के अनुसार लट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन (आत्मनेपद) की है, अतः विकल्प `A' सही है।

82. (D) 83. (C) 84. (C) 85. (D) 86. (A)

87. क्रिया अकर्मक होती है, जब....(गलत विकल्प चुनिए)
(A) जब धातु का अर्थ बदल जाए।
(B) जब धातु के अर्थ में कर्म समाविष्ट हो।
(C) जब धातु का कर्म अत्यन्त प्रसिद्ध हो।
(D) जब कर्म शब्दों से लिखा न हो।

व्याख्या– वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी के आत्मनेपदप्रक्रिया में भट्टोजिदीक्षित ने अकर्मकक्रिया की परिभाषा बतायी है–
धातोरर्थान्तरे वृत्तेर्धात्वर्थेनोपसंग्रहात्।
प्रसिद्धेरविवक्षातः कर्मणोऽकर्मिका क्रिया।।
अर्थात् धातु अकर्मक होती है जब–

1. **धातोरर्थान्तरे वृत्तेः**–धातु के अर्थ बदल जाने से
उदाहरण–भारवाहः भारं वहति (भारवाहक भार ढोता है) यहाँ 'भारम्' कर्म है और क्रिया 'वहति' है। यहाँ 'वहति' क्रिया भार ढोने के अर्थ में प्रयुक्त है, अतः यह सकर्मक क्रिया है। किन्तु यदि इस क्रिया का अर्थ बदल जाय तो यही क्रिया अकर्मक हो जायेगी। जैसे–नदी वहति (नदी बहती है) इस तरह यहाँ धातु का अर्थ बदल जाने से सकर्मक धातु भी अकर्मक बन गयी।

2. **धात्वर्थेनोपसंग्रहात्**–धातु के अर्थ में ही कर्म समाविष्ट हो जाने से
उदाहरण–
(i) राजीवः जीवति (राजीव जीवन धारण करता है) यहाँ पर 'जीवति' क्रिया अकर्मक हो गयी है क्योंकि धातु के अर्थ के अन्दर ही कर्म समाविष्ट है, अलग से कोई कर्म लग नहीं सकता।
(ii) नर्तकः नृत्यति (नर्तक नाचता है) इस वाक्य में भी कर्म धातु के अर्थ में ही अन्तर्भूत हो गया है। अतः कर्म लगाने की योग्यता नहीं है। अतः 'नृत्यति' क्रिया भी अकर्मक हो गयी है।

3. **प्रसिद्धेः**–जब धातु का कर्म अत्यन्त प्रसिद्ध हो
उदाहरण–मेघः वर्षति (मेघ बरसता है) यहाँ कर्ता–मेघ, क्रिया–वर्षति तथा 'जल' रूपी कर्म अत्यन्त प्रसिद्ध है। अतः मेघ द्वारा जलवर्षण की प्रसिद्धि होने के कारण यहाँ 'मेघः जलं वर्षति' कहने की कोई आवश्यकता नहीं है। इस तरह 'मेघः वर्षति' में 'वर्षति' क्रिया को अकर्मक माना जाता है।

4. **अविवक्षातः कर्मणः**–वक्ता के द्वारा वाक्य में कर्म की विवक्षा न करने से
उदाहरण–'हितान्न यः संशृणुते स किम्प्रभुः' (हितकारक पुरुष से जो सुनता नहीं वह कुत्सित स्वामी है) यहाँ हितैषी पुरुष से सुने जाने वाले कर्म की अविवक्षा की गयी है, अतः 'संशृणुते' यह अकर्मक क्रिया मानी जाती है। यहाँ 'हितवचनम्' कर्म तो लगाया जा सकता था, किन्तु वक्ता के द्वारा कर्म की विवक्षा नही गयी की है। अतः यह क्रिया भी अकर्मक है।

इस प्रकार चार स्थलों में क्रिया अकर्मक हो जाती है–
(i) धातु का अर्थ बदल जाने से
(ii) धातु के अर्थ में ही कर्म के समाविष्ट हो जाने से
(iii) धातु का कर्म अत्यन्त लोक प्रसिद्ध होने से
(iv) वक्ता के द्वारा वाक्य में कर्म की अविवक्षा होने से
अतः उपर्युक्त प्रश्न में अकर्मकक्रिया के सन्दर्भ में विकल्प A B C सही हैं और विकल्प `D' गलत है। इसलिए सही उत्तर `D' होगा।

88. 'ब्रू' धातु का विधिलिङ् मध्यमपुरुष द्विवचन का क्या रूप होता है?
(A) ब्रूयात् **(B) ब्रूयात**
(C) ब्रूयाव **(D) ब्रूयातम्**

व्याख्या–'ब्रू' धातु अदादिगणीय विधिलिङ्लकार का रूप निम्नवत् है–

प्र. पु.	ब्रूयात्	ब्रूयाताम्	ब्रूयुः
म. पु.	ब्रूयाः	**ब्रूयातम्**	ब्रूयात
उ. पु.	ब्रूयाम्	ब्रूयाव	ब्रूयाम

स्पष्ट है कि 'ब्रू' धातु विधिलिङ्लकार म. पु. द्विवचन का रूप है– **ब्रूयातम्**
अतः विकल्प `D' सही है।

89. 'यथामति' शब्द में कौन समास है?
(A) अव्ययीभाव **(B) तत्पुरुष**
(C) बहुव्रीहि **(D) द्वन्द्व**

व्याख्या–
(A) **अव्ययीभावसमास**– (i) मतिम् अनतिक्रम्य = **यथामति,** (ii) शक्तिम् अनतिक्रम्य = यथाशक्ति, (iii) बुद्धिम् अनतिक्रम्य = यथाबुद्धि, (iv) ज्ञानम् अनतिक्रम्य = यथाज्ञानम्, (v) यथेच्छम्, यथाकामम् आदि।
(B) **तत्पुरुष**– यूपाय दारु = यूपदारु
(C) **बहुव्रीहि**– युक्तः योगः यस्य = युक्तयोगः
(D) **द्वन्द्व**–युधिष्ठिरश्च अर्जुनश्च = युधिष्ठिरार्जुनौ।
अतः विकल्प `A' सही है।

87. (D) 88. (D) 89. (A)

90. उत्तररामचरितम् के मङ्गलाचरण में किसकी वन्दना की गयी है?
(A) शिव (B) शक्ति
(C) विष्णु (D) कवि तथा वाणी

व्याख्या– ● भवभूति विरचित उत्तररामचरितम् का मङ्गलाचरण इस प्रकार है–

इदं कविभ्यः पूर्वेभ्यो नमोवाकं प्रशास्महे।
विन्देम देवतां वाचममृतामात्मनः कलाम्॥

- उपर्युक्त मङ्गलाचरण से स्पष्ट है कि कवि ने प्रथमपंक्ति में प्राचीन वाल्मीकि आदि कवियों की वन्दना करके ब्रह्मा की अंशभूत सनातनी वाणी (सरस्वती) की वन्दना की है। अतः **इस मङ्गलाचरण में कवि तथा वाणी दोनों की वन्दना** है। अतः विकल्प `D' सही है।
- रघुवंशम् में शिव-पार्वती की, अभिज्ञानशाकुन्तलम् में अष्टमूर्तिशिव की वन्दना की गयी है।
- शिवराजविजय में विष्णु की माया का वर्णन है।

91. अच् प्रत्याहार में कितने स्वर होते हैं?
(A) 5 (B) 6
(C) 8 (D) 9

व्याख्या– 'अच्' प्रत्याहार में सभी 09 स्वर आते हैं। इसीलिए स्वरों को 'अच्' भी कहते हैं। ''अइउण् ऋलृक् एओङ् ऐऔच्'' इन चार सूत्रों में कहे गये कुल 09 स्वर हैं।

(A) अक् = अ इ उ ऋ लृ = 05 वर्ण
(B) छव् = छ् ठ् थ् च् ट् त् = 06 वर्ण
(C) इच् = इ उ ऋ लृ ए ओ ऐ औ = 08 वर्ण
(D) **अच्** = अ इ उ ऋ लृ ए ओ ऐ औ = **09 वर्ण**

अतः विकल्प `D' सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतव्याकरणम् पेज-38 क्र.सं.-29

92. किरातार्जुनीयम् का प्रधान रस क्या है?
(A) श्रृङ्गाररस (B) करुणरस
(C) वीररस (D) शान्तरस

व्याख्या–

(A) **श्रृङ्गाररस प्रधानग्रन्थ–** (i) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (ii) नैषधीयचरितम् (iii)मृच्छकटिकम् (iv) स्वप्नवासवदत्तम् (v) रत्नावली

(B) **करुणरस प्रधानग्रन्थ–** (i) उत्तररामचरितम् (ii) कुन्दमाला (iii) वाल्मीकीयरामायणम्

(C) **वीररस प्रधानग्रन्थ–** (i) **किरातार्जुनीयम्** (ii) शिशुपालवधम् (iii) शिवराजविजयः (iv) मुद्राराक्षसम् (v) महावीरचरितम्

(D) **शान्तरस प्रधानग्रन्थ–** (i) महाभारतम् (ii) बुद्धचरितम् (iii) शारिपुत्रप्रकरणम्

अतः विकल्प `C' सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-169 प्रश्न-23

93. अनुष्टुप् छन्द में कितने अक्षर होते हैं?
(A) 24 (B) 28
(C) 32 (D) 36

छन्द	वर्णों की संख्या
(A) गायत्री	24
(B) उष्णिक्	28
(C) **अनुष्टुप्**	**32**
(D) बृहती	36

अतः विकल्प `C' सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-305

94. शिवराजविजय के प्रथमविराम में कितने निःश्वास हैं?
(A) 3 (B) 4
(C) 5 (D) 6

व्याख्या–अम्बिकादत्तव्यास के प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास के शिवराजविजय में कुल तीन विराम हैं, और प्रत्येक विराम में चार-चार निःश्वास हैं। इस प्रकार शिवराजविजय में कुल तीन विराम और 12 निःश्वास हैं।

- इससे स्पष्ट है कि इसके प्रथम विराम में चार निःश्वास हैं। अतः विकल्प `B' सही है।
- दण्डी के काव्यादर्श में तीन परिच्छेद, श्रीहर्ष की रत्नावली में 4 अङ्क, क्षेमेन्द्र के कविकण्ठाभरण में 05 अध्याय, कालिदास के ऋतुसंहारम् में 6 सर्ग हैं।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-229 प्रश्न-53

90. (D) 91. (D) 92. (C) 93. (C) 94. (B)

95. कौस्तुभमणि को कौन धारण करता है?

(A) ब्रह्मा (B) विष्णु

(C) शिव (D) इन्द्र

व्याख्या– महाकवि बाणभट्ट विरचित कादम्बरी के कथामुख के सातवें श्लोक में लिखा है–

'तदेव धत्ते हृदयेन सज्जनो
हरिर्महारत्नमिवातिनिर्मलम्'

जैसे **विष्णु कौस्तुभमणि** को अपने हृदय में धारण करते हैं, उसी प्रकार सज्जन सुभाषित को अपने हृदय में धारण करते हैं। अतः विकल्प `B' सही है।

	देवता	**सम्बद्ध वस्तुयें**
(A)	ब्रह्मा	वेद, सरस्वती
(B)	**विष्णु**	**कौस्तुभमणि,** लक्ष्मी, शंख, चक्र, गदा
(C)	शिव	हालाहलविष, पार्वती, अर्धचन्द्र, सर्प
(D)	इन्द्र	ऐरावत, वज्र, शची

96. अफजल खाँ को मारने के पश्चात् वीर शिवाजी ने रणभूमि की सफाई का कार्य निम्नलिखित में किसे सौंपा?

(A) गौरसिंह (B) सेनापति

(C) माल्यश्रीक (D) सचिव

व्याख्या–अम्बिकादत्तव्यास विरचित शिवराजविजय के द्वितीय निःश्वास के अन्त में लिखा है कि– ''ससेनः शिववीरश्च विजयशङ्खनादैः रोदसी सम्पूर्य **रणाङ्गणशोधनाधिकार-माल्यश्रीकाय समर्प्य** प्रतापदुर्गं प्रविश्य मातुः चरणौ प्रणनाम।'' (शिवराजविजय द्वितीयनिःश्वास) अर्थात् शिवाजी ने अफजलखाँ के मुगल सैनिकों पर विजय प्राप्त करने के बाद रणभूमि की सफाई का काम माल्यश्रीक को सौंपकर प्रतापगढ़ में प्रवेशकर माता के चरणों में प्रणाम किया। अतः विकल्प `C' सही है।

97. 'जलमग्न' शब्द में कौन समास है?

(A) अव्ययीभाव (B) तत्पुरुष

(C) द्वन्द्व (D) बहुव्रीहि

सामासिकपद	**समासविग्रह**	**समास**
(A) उपजरसम्	जरायाः समीपम्	अव्ययीभाव
(B) जलमग्नः	जले मग्नः	सप्तमी तत्पुरुष
(C) अन्नजलम्	अन्नं च जलं च	द्वन्द्व
(D) जलजाक्षी	जलजे इव अक्षिणी यस्याः	बहुव्रीहि

अतः विकल्प `B' सही है।

स्रोत–रचनानुवादकौमुदी पेज-94

98. भारतवर्ष में यवनराज्य का बीजारोपण निम्नलिखित में किसने किया?

(A) महमूद गजनवी

(B) कुतुबुद्दीन

(C) शहाबुद्दीन

(D) मुहम्मद गोरी

व्याख्या– अम्बिकादत्तव्यास विरचित शिवराजविजय के प्रथम निःश्वास में वर्णन है कि महमूद गजनवी की संवत् 1087 में मृत्यु के बाद कोई गोर देशवासी शहाबुद्दीन ने गजिनी देश पर आक्रमण किया, दिल्ली पर चढ़ाई की, पृथ्वीराज चौहान और जयचन्द्र को मारकर भारत में यवनराज्य का बीजारोपण किया– **गोरदेशवासी कश्चित् शहाबुद्दीन नामा प्रथमं गजिनीदेशमाक्रम्य ... दिल्लीमश्वयाम्बभूव। ततो दिल्लीश्वरं पृथ्वीराजं कान्यकुब्जेश्वरं जयचन्द्रं च ... उभावपि विशस्य... स एव प्राधान्येन भारते यावनराज्याङ्कुराऽरोपकोऽभूत्।**

अतः इससे स्पष्ट है कि भारत में यवन राज्य का बीजारोपण शहाबुद्दीन (मु0 गोरी) ने किया। यद्यपि इतिहास में शहाबुद्दीन ही मुहम्मद गोरी है किन्तु शिवराजविजय में शहाबुद्दीन ही नाम मिलता है अतः आयोग को इसका उत्तर `C' मानना चाहिए। यद्यपि आयोग ने इसका उत्तर `D' माना है।

- शहाबुद्दीन और मुहम्मद गोरी ये दोनों विकल्प एक साथ देना उचित नहीं है।
- कुतुबुद्दीन शहाबुद्दीन का क्रीतदास (गुलाम) है, जिसे शहाबुद्दीन ने भारत का प्रथम सम्राट् बनाया।

''तस्यैव च कश्चित् क्रीतदासः कुतुबुद्दीन नामा प्रथमभारत– सम्राट् सञ्जातः'' (शिवराजविजयः)

- महमूद गजनवी ने भारत में 12 बार आक्रमण किया तथा सोमनाथ मन्दिर को लूटा था।

''सः ज्ञातास्वादः पौनःपुन्येन द्वादशवारमागत्य भारतमलुलुण्ठत्''
इतिहासकारों की दृष्टि से इसने भारत में 17 बार आक्रमण किया था।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-36

95. (B) 96. (C) 97. (B) 98. (C)

99. सम्बोधन और प्रथमा विभक्ति के किस वचन में अन्तर होता है?

(A) एकवचन **(B) द्विवचन**
(C) बहुवचन **(D) किसी में भी नहीं**

व्याख्या–

प्रथमाविभक्ति	**सम्बोधन**
• रामः, रामौ, रामाः	राम! रामौ, रामाः
• रमा, रमे, रमाः	रमे! रमे, रमाः
• हरिः, हरी, हरयः	हरे! हरी, हरयः
• गुरुः, गुरू, गुरवः	गुरो! गुरू, गुरवः
• नदी नद्यौ नद्यः	नदि! नद्यौ, नद्यः
• भवान् भवन्तौ भवन्तः	भवन्! भवन्तौ भवन्तः
• पिता पितरौ पितरः	पितः! पितरौ पितरः
• राजा राजानौ राजानः	राजन्! राजानौ राजानः

• इससे स्पष्ट है कि सम्बोधन और प्रथमा विभक्ति के रूपों में केवल एकवचन में ही अन्तर है, शेष द्विवचन और बहुवचन में एकसमान ही रूप चलते हैं। अतः विकल्प `A' सही है।

100. सन्धि निम्नलिखित में से किनमें अवश्य करनी चाहिए?

(A) एकपद में
(B) धातु तथा उपसर्ग के मध्य
(C) समास में
(D) उपर्युक्त सभी में

व्याख्या– संहिता (सन्धि) के विषय में एक कारिका व्याकरणजगत् में अतिप्रसिद्ध है–

संहितैकपदे नित्या नित्या धातूपसर्गयोः।
नित्या समासे वाक्ये तु सा विवक्षामपेक्षते॥

अर्थात् एकपद में, धातु तथा उपसर्ग के मध्य, तथा समास में संहिता (सन्धि) अनिवार्य है। वाक्य में वक्ता या लेखक के इच्छाधीन है।
अतः विकल्प `D' सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतव्याकरणम् पेज-78 प्रश्न-107

101. मेघदूतम् में मेघ के मार्ग में निम्नलिखित में से क्या नहीं है?

(A) नर्मदा नदी **(B) विदिशा**
(C) उज्जयिनी **(D) अयोध्या**

व्याख्या–(A) **नर्मदा नदी**–(रेवा नदी)–मेघदूतम् में आम्रकूट पर्वत के आगे विन्ध्याचल की तलहटी में बिखरी हुई रेवा नदी (नर्मदा) का वर्णन मिलता है–

''रेवां द्रक्ष्यस्युपलविषमे विन्ध्यपादे विशीर्णाम्''

(B) **विदिशा**–मेघमार्ग में दशार्ण देश की राजधानी के रूप में विदिशा का वर्णन मिलता है– **तेषां दिक्षु प्रथितविदिशालक्षणां राजधानीम्' (पूर्वमेघ-25)**

(C) **उज्जयिनी**–मेघमार्ग में विदिशा के आगे उज्जयिनी का विशद वर्णन मिलता है। कवि कालिदास मेघ का रास्ता टेढा होने पर भी उसे उज्जयिनी जाने की सलाह देते हैं–

''वक्रः पन्था यदपि भवतः प्रस्थितस्योत्तराशां सौधोत्सङ्गप्रणयविमुखो मा स्म भूरुज्जयिन्याः। (पूर्वमेघ-28)

(D) **अयोध्या**– सम्पूर्ण मेघदूतम् में मेघ के मार्ग में अयोध्या का कहीं वर्णन नहीं है। अतः विकल्प `D' सही है।

102. निम्नलिखित वाक्यों में कौन सा वाक्य शुद्ध है?

(A) रामः पठति **(B) रामेण पठ्यते**
(C) रामः पाठयति **(D) सभी शुद्ध हैं।**

व्याख्या–(A) **'रामः पठति'** (राम पढ़ता है)– यह कर्तृवाच्य का वाक्य है। कर्ता के अनुसार लट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन की क्रिया का प्रयोग है, अतः यह वाक्य शुद्ध है।

(B) **रामेण पठ्यते** (राम के द्वारा पढ़ा जाता है)– यह कर्मवाच्य का वाक्य है, कर्ता में तृतीया विभक्ति तथा क्रिया में यक् प्रत्यय के बाद आत्मनेपद का प्रयोग है। इसलिए यह वाक्य भी शुद्ध है।

(C) **रामः पाठयति** (राम पढ़ाता है)– यह णिजन्त कर्तृवाच्य का प्रयोग है, अतः यह भी शुद्ध है। यद्यपि प्रश्नपत्र में मुद्रणदोष के कारण 'पाठयति' की जगह 'पाठ्यार्त' छप गया है, इसे सुधार लेना चाहिए। आयोग को ऐसे मुद्रणदोषों से अवश्य बचना चाहिए, अन्यथा छात्रों का नुकसान होता है।

(D) स्पष्ट है इसके सभी प्रयोग शुद्ध हैं।
अतः विकल्प `D' सही है।

103. पठ् धातु का लङ्लकार के मध्यमपुरुष एकवचन का क्या रूप होता है?

(A) अपठन् **(B) अपठत**
(C) अपठः **(D) अपठम्**

व्याख्या– 'पठ्' धातु लङ्लकार का रूप

प्र. पु.	अपठत्	अपठताम्	अपठन्
म. प्र.	**अपठः**	अपठतम्	अपठत
उ. पु.	अपठम्	अपठाव	अपठाम

99. (A) 100. (D) 101. (D) 102. (D) 103. (C)

स्पष्ट है 'पठ्' धातु लङ्लकार (भूतकाल) मध्यमपुरुष एकवचन का रूप–**'अपठः'** बनेगा, अतः विकल्प `C'सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतव्याकरणम् पेज-135 प्रश्न-18

104. भाववाच्य के लिए निम्नलिखित में क्या सही नहीं है?
(A) भाववाच्य तभी होता है, जब क्रिया अकर्मक हो।
(B) कर्ता तृतीयान्त होता है।
(C) क्रिया केवल प्रथमपुरुष एकवचन में प्रयुक्त होती है।
(D) भाववाच्य में क्रिया कर्ता के वचन के अनुसार होती है।

व्याख्या– वाच्य तीन प्रकार के होते हैं–
1. कर्तृवाच्य 2. कर्मवाच्य 3. भाववाच्य

भाववाच्य के नियम–
(i) भाववाच्य में क्रिया अकर्मक होती है।
(ii) कर्ता तृतीयान्त होता है।
(iii) क्रिया केवल प्रथमपुरुष एकवचन में प्रयुक्त होती है।

- विकल्प `D' भाववाच्य के लिए सही नही है। क्योंकि कर्तृवाच्य में क्रिया, कर्ता के पुरुष और वचन के अनुसार होती है, न कि भाववाच्य में। अतः विकल्प `D' सही उत्तर है।

105. अशुद्ध वाक्य बताइये?
(A) कति बालिकाः
(B) कति जनाः पठन्ति
(C) कतयः मुनयः जपन्ति
(D) कति फलानि सन्ति

व्याख्या–
- **'अव्ययं कतियुष्मदः'** (पाणिनीयलिङ्गानुशासनम्-186) सूत्रानुसार अव्ययसंज्ञक शब्द, कति, यति, तति, युष्मद् तथा अस्मद् शब्द–अविशिष्टलिङ्ग अर्थात् तीनों लिङ्गों में समानरूप रहते हैं।
- 'कति' शब्द का रूप नित्यबहुवचनान्त तथा तीनों लिङ्गों में एकसमान चलता है–

1. कति 2. कति
3. कतिभिः 4. कतिभ्यः
5. कतिभ्यः 6. कतीनाम्
7. कतिषु

- स्पष्ट है 'कति' शब्द का 'कतयः' रूप कहीं नहीं बनता अतः विकल्प `C' अशुद्ध है तथा कति बालिकाः, कति जनाः पठन्ति, कति फलानि सन्ति–ये तीनों वाक्य शुद्ध हैं। अतः विकल्प `C' सही उत्तर होगा।

106. नीतिशतकम् के अनुसार धन की कितनी दशायें होती हैं?
(A) 2 (B) 3
(C) 4 (D) 5

व्याख्या– भर्तृहरि विरचित नीतिशतकम् के अर्थपद्धति के अन्तर्गत एक श्लोक में धन की तीन दशायें बतायी गयी हैं–
''दानं भोगो नाशस्तिस्रो गतयो भवन्ति वित्तस्य।
यो न ददाति न भुङ्क्ते तस्य तृतीया गतिर्भवति।।
अर्थात् धन की तीन गतियाँ (दशायें) होती हैं–
(i) दान, (ii) अपने सुखों के लिए उपयोग, (ii) विनाश। जो व्यक्ति न तो धन का दान करता है, और न ही स्वयं उपभोग करता है, उसके धन की तीसरी गति अर्थात् नाश होता है। अतः इसका सही उत्तर विकल्प `B' होगा।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-176 प्रश्न-55

107. राजा शूद्रक की राजधानी का क्या नाम था?
(A) उज्जयिनी (B) विदिशा
(C) हस्तिनापुर (D) थाणेश्वर

व्याख्या– **राजधानी**	**राजा**
(A) उज्जयिनी	तारापीड
(B) विदिशा	**शूद्रक**
(C) हस्तिनापुर	दुष्यन्त
(D) थाणेश्वर	हर्षवर्धन

अतः विकल्प `B' सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-295

108. निम्नलिखित में शुद्ध वाक्य क्या है?
(A) हरिः वैकुण्ठम् उपवसति
(B) हरिः वैकुण्ठम् अनुवसति
(C) हरिः वैकुण्ठे वसति
(D) उपर्युक्त सभी शुद्ध हैं।

व्याख्या–
(A) हरिः वैकुण्ठम् उपवसति।
(B) हरिः वैकुण्ठम् अनुवसति।

104. (D) 105. (C) 106. (B) 107. (B) 108. (D)

- उपान्वध्याङ्वसः (1.4.48) सूत्र से यदि वस् धातु के पूर्व उप, अनु, अधि और आङ् उपसर्ग लगा हो तो उसके आधार की कर्मसंज्ञा होती है।
- यहाँ 'वस्' धातु में 'उप' उपसर्ग लगकर = उपवसति तथा 'वस्' धातु में 'अनु' उपसर्ग लगकर = अनुवसति प्रयोग बना है, इसीलिए 'वैकुण्ठम्' में कर्मसंज्ञा होकर द्वितीया विभक्ति हो गयी है। इसीलिए विकल्प A और B दोनों शुद्ध हैं।

(C) हरिः वैकुण्ठे वसति– यहाँ 'वस्' धातु में उप, अनु अधि, आङ् आदि कोई उपसर्ग नही जुड़ा है, अतः 'आधारोऽधिकरणम् सूत्र से 'वैकुण्ठ' रूपी आधार की अधिकरणसंज्ञा होकर सप्तमी विभक्ति हो गयी। अतः यह वाक्य भी शुद्ध है।

अतः विकल्प `D' इसका सही उत्तर है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतव्याकरणम् पेज-91 प्रश्न-41

109. यक्ष के प्रवास की अवधि क्या थी?

(A) 1 वर्ष (B) 2 वर्ष
(C) 3 वर्ष (D) 4 वर्ष

व्याख्या–मेघदूतम् के प्रथम श्लोक में ही यक्ष के प्रवास की अवधि एक वर्ष बतायी गयी है–**''शापेनास्तङ्गमितमहिमा वर्षभोग्येण भर्तुः''** (पूर्वमेघ – 01)

वर्षभोग्येण = एक वर्ष भोगे जाने योग्य

इससे स्पष्ट है कि विकल्प `A' सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-37

110. किरातार्जुनीयम् महाकाव्य में कितने सर्ग हैं–

(A) 22 (B) 17
(C) 18 (D) 20

व्याख्या– महाकाव्य		**सर्गों की संख्या**
(A) नैषधीयचरितम्	–	22
(B) कुमारसम्भवम्	–	17
(C) किरातार्जुनीयम्	**–**	**18**
(D) शिशुपालवधम्	–	20

अतः विकल्प `C' सही है।

नोट–यह प्रश्न आयोग लगभग हर साल पूछता है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-168 प्रश्न-04

111. 'साधु + इति' में सन्धि होने पर बनता है?

(A) साधोइति (B) साध्विति
(C) साधूति (D) साधुरिति

व्याख्या– साधु + इति
साध् उ + इति
साध् व् + इति ('इको यणचि' सूत्र से 'उ' के
साध्विति स्थान पर 'व्' आदेश)

अतः विकल्प `B' सही है।

नोट– यद्यपि आयोग के प्रश्नपत्र में 'साध्विति' के स्थान पर 'साधिति' छपा है, जिसे मुद्रणदोष मानना चाहिए।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतव्याकरणम् पेज-189

112. गद्यकाव्य के कितने भेद हैं–

(A) 2 (B) 6
(C) 4 (D) 5

व्याख्या– ● गद्यकाव्य के दो मुख्य भेद माने गये हैं–
(i) कथा (ii) आख्यायिका

अतः विकल्प `A' सही है।

- अग्निपुराण में गद्यकाव्य के पाँच भेद बताये गये हैं–
  1. कथा 2. आख्यायिका
  3. खण्डकथा 4. परिकथा
  5. कथानिका
- पं. अम्बिकादत्तव्यास 'उपन्यास' नामक भेद भी मानते हैं।
- समास के प्रयोग की दृष्टि से गद्य के चार प्रकार माने गये हैं–
  1. मुक्तक 2. वृत्तगन्धि
  3. उत्कलिकाप्राय 4.चूर्णक।

113. किरातार्जुनीयम् शब्द में कौन सा तद्धित प्रत्यय लगता है?

(A) फ (B) घ
(C) ख (D) छ

किरातार्जुन + छ
किरातार्जुन + ईय (आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम्'
किरातार्जुनीयम् से 'छ' के स्थान पर 'ईय' आदेश)

अतः विकल्प `D' सही है।

(A) गार्ग्य + फ (आयन) = गार्ग्यायणः
(B) क्षत्र + घ (इय) = क्षत्रियः
(C) ग्राम + खञ् (ईन) = ग्रामीणः
(D) किरातार्जुन + छ (ईय) = किरातार्जुनीयम्

संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-237 प्रश्न-68

109. (A) 110. (C) 111. (B) 112. (A) 113. (D)

114. शुद्ध वाक्य बताइये?
(A) वर्षायां न गन्तव्यः
(B) वर्षायां न गन्तव्यम्
(C) वर्षायां न गमनीयम्
(D) वर्षासु न गन्तव्यम्।

व्याख्या–●'अप् सुमनस्समासिकतावर्षाणां बहुत्वं च' पाणिनीयलिङ्गानुशासनम्-29वें सूत्र के अनुसार **आपः** (जल), **सुमनसः** (फूल), **समाः** (संवत्सर), **सिकताः** (बालू), **वर्षाः** (ऋतुविशेष) ये शब्द स्त्रीलिङ्ग में होते हैं तथा सदा बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं।

- अमरकोश में भी लिखा है–
आपः सुमनसो वर्षा अप्सरः सिकताः समाः।
एतेस्त्रियां बहुत्वे स्युरेकत्वेऽप्युत्तरत्रयम्॥
- गम् + तव्यत् = गन्तव्यः/गन्तव्या/गन्तव्यम्
गम् + अनीयर् = गमनीयः/गमनीया/गमनीयम्।
- इससे स्पष्ट होता है कि विकल्प A, B, C में वर्षा शब्द एकवचनान्त है, जबकि विकल्प `D' में 'वर्षासु' पद सप्तमी बहुवचनान्त है तथा 'गम् + तव्यत् = गन्तव्यम्' भी शुद्ध प्रयोग है। अतः `D' विकल्प शुद्ध है।

115. मेघदूतम् में प्रयुक्त छन्द के प्रत्येक चरण में कितने अक्षर होते हैं?

(A) 14	**(B) 15**
(C) 16	**(D) 17**

व्याख्या– ● मेघदूतम् में आद्यन्त मन्दाक्रान्ता छन्द का प्रयोग है। जिसका लक्षण है– **''मन्दाक्रान्ता जलधिषडगैर्म्भौ नतौ ताद् गुरू चेत्''** मन्दाक्रान्ता छन्द के प्रत्येक चरण में 17 वर्ण होते हैं। इसमें क्रमशः मगण, भगण, नगण तगण, तगण तथा दो गुरु वर्ण होते हैं। इसमें 4-6-7 पर यति होती है अर्थात् चौथे, दसवें और सत्रहवें वर्ण पर यति (विराम) होती है। अतः विकल्प `D' सही है।

- वसन्ततिलका के प्रत्येक चरण में 14 अक्षर, मालिनी छन्द में 15 तथा पञ्चचामर में 16 अक्षर होते हैं।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-237 प्रश्न-55

116. रूपक के कितने भेद होते हैं?
(A) 5
(B) 8
(C) 10
(D) 12

व्याख्या– (A) रूपक में पाँच प्रकार के अर्थोपक्षेपकों का प्रयोग किया जाता है– 1. विष्कम्भक 2. चूलिका 3.अङ्कास्य 4. अङ्कावतार 5. प्रवेशक।

(B) दशरूपक के अनुसार सात्त्विक भाव आठ हैं–

1. स्तम्भ	2. प्रलय
3. रोमाञ्च	4. स्वेद
5. वैवर्ण्य	6. वेपथु (कम्पन)
7. अश्रु	8. वैस्वर्य (स्वरभङ्ग)

(C) **'रूपकं तत्समारोपात् दशधैव रसाश्रयम्'** दशरूपक की इस पंक्ति के अनुसार **रूपक के दश भेद** बताये गये हैं–

1. नाटक	2. प्रकरण
3. भाण	4. प्रहसन
5. डिम	6. व्यायोग
7. समवकार	8. वीथी
9. अङ्क	10. ईहामृग।

अतः विकल्प `C' सही है।

(D) श्रीमद्भागवत महापुराण में 12 स्कन्ध हैं।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-304

117. 'मा ब्रूहि दीनं वचः' यह उक्ति किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है?
(A) उत्तररामचरितम्
(B) वाल्मीकीयरामायणम्
(C) किरातार्जुनीयम्
(D) नीतिशतकम्

व्याख्या–

	ग्रन्थ	सूक्ति
(A)	उत्तररामचरितम्	नैताः प्रियतमाः वाचः
(B)	वाल्मीकीयरामायणम्	नहि निम्बात् स्रवेत् क्षौद्रं लोके निगदितं वचः

114. (D) 115. (D) 116. (C) 117. (D)

(C) किरातार्जुनीयम् — हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः

(D) **नीतिशतकम्** — **यं यं पश्यसि तस्य तस्य पुरतो मा ब्रूहि दीनं वचः**

अतः विकल्प `D' सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-155 क्र.सं.-27

118. आधार कितने प्रकार का होता है, जिसमें सप्तमी विभक्ति का प्रयोग होता है?

(A) 2 **(B) 3**

(C) 4 **(D) 5**

व्याख्या–'औपश्लेषिको वैषयिकोऽभिव्यापकश्च इत्याधारः त्रिधा' इस वृत्ति से स्पष्ट है कि आधार तीन प्रकार का होता है– 1. औपश्लेषिक आधार–कटे आस्ते,
2. वैषयिक आधार– मोक्षे इच्छा अस्ति,
3. अभिव्यापक आधार–सर्वस्मिन् आत्मा अस्ति।
अतः विकल्प `B' सही है।

119. ''कार्यं वा साधयेयं देहं वा पातयेयम्'' यह सारगर्भित प्रतिज्ञा किसकी थी?

(A) राम

(B) दुष्यन्त

(C) अर्जुन

(D) शिवाजी

व्याख्या–

नायक	**प्रतिज्ञा**
(A) **राम–**	स्नेहं दयां च सौख्यं च यदि वा जानकीमपि। आराधनाय लोकस्य मुञ्चतो नास्ति मे व्यथा।। उत्तररामचरितम् 1/12
(B) **दुष्यन्त**	परिग्रहबहुत्वेऽपि द्वे प्रतिष्ठे कुलस्य मे। समुद्ररसना चोर्वी सखी च युवयोरियम्।। अभिशा0 3/17
(C) **अर्जुन–**	'सुदुर्लभाः सर्वमनोरमा गिरः' (किरात0 14/5)
(D) **शिवाजी–**	''कार्यं वा साधयेयं देहं वा पातयेयम्'' (शिवराजविजयम्)

अतः विकल्प `D' सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-186 प्रश्न-34

120. 'शम्भु' शब्द का चतुर्थी विभक्ति एकवचन का क्या रूप होता है?

(A) शम्भवाय **(B) शम्भवायै**

(C) शम्भवे **(D) शम्भव्या**

व्याख्या– 'शम्भु' उकारान्त पुंलिङ्ग का रूप 'गुरु' की तरह चलेगा– 1. शम्भुः, 2. शम्भुम्, 3. शम्भुना, **4.शम्भवे,** 5. शम्भोः, 6. शम्भोः, 7. शम्भौ, सम्बो0 हे शम्भो।
स्पष्ट है विकल्प `C' सही है।

121. महाकवि भवभूति की कितनी रचनायें हैं?

(A) 3 **(B) 4**

(C) 5 **(D) 7**

व्याख्या–

	कवि	**रचनायें**
(A)	महाकविभवभूति	तीन रचनायें– (i) मालतीमाधवम् (प्रकरण) (ii) महावीरचरितम् (नाटक) (iii)उत्तररामचरितम् (नाटक)
(B)	भर्तृहरि	चार रचनायें– 1. शृङ्गारशतकम् (मुक्तक) 2. नीतिशतकम् (मुक्तक) 3. वैराग्यशतकम् (मुक्तक) 4.वाक्यपदीयम् (व्याकरणग्रन्थ)
(C)	बाणभट्ट	पाँच रचनायें– (i) कादम्बरी (कथा) (ii) हर्षचरितम् (आख्यायिका) (iii) चण्डीशतकम् (मुक्तक) (iv) मुकुटताडितक (नाटक) (v) पार्वतीपरिणय (नाटक)।
(D)	कालिदास	सात रचनायें– 1. कुमारसम्भवम् (महाकाव्य) 2. रघुवंशम् (महाकाव्यम्) 3. विक्रमोर्वशीयम् (त्रोटक) 4. मालविकाग्निमित्रम् (नाटक) 5. अभिज्ञानशाकुन्तलम् (नाटक) 6. ऋतुसंहारम् (गीतिकाव्य) 7.मेघदूतम् (खण्डकाव्य)।

अतः विकल्प `A' सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-11

118. (B) 119. (D) 120. (C) 121. (A)

122. 'अस्मद्' शब्द का पञ्चमी एकवचन में क्या रूप होता है?

(A) माम् **(B) मत्**

(C) मम **(D) अस्मत्**

व्याख्या– 'अस्मद्' (मैं) शब्द का सातों विभक्तियों के एकवचन में रूप–

1. अहम् 2. माम्
3. मया 4. मह्यम्
5. मत् 6. मम
7. मयि

स्पष्ट है कि 'अस्मद्' शब्द का पञ्चमी एकवचन में **'मत्'** रूप बनता है, अतः विकल्प `B' सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा TGT व्याख्यात्मक पेज-33 प्रश्न-67

123. पण्डित अम्बिकादत्तव्यास को निम्नलिखित में से किस उपाधि से विभूषित नहीं किया गया है?

(A) घटिकाशतक **(B) साहित्याचार्य**

(C) शतावधान **(D) मीमांसक**

व्याख्या–पं० अम्बिकादत्तव्यास को निम्नलिखित उपाधियों से विभूषित किया गया है–

1. घटिकाशतक (ब्रह्मामृतवर्षिणी सभा द्वारा प्रदत्त)
2. साहित्याचार्य (संस्कृतसाहित्य के विद्वान् होने के कारण)
3. शतावधान (100 प्रश्नों को सुनकर क्रमशः उनका सही उत्तर देने के कारण)
4. सुकवि (भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की काशी कवितावर्धिनी सभा द्वारा प्रदत्त)
5. भारतरत्न (काशी की महासभा द्वारा प्रदत्त)
6. अभिनवबाण/आधुनिकबाण (संस्कृत सीखने के अभिनव प्रणाली के आविष्कार करने के कारण)
7. भारतभूषण
8. महाकवि

स्पष्ट है कि उपर्युक्त सभी उपाधियाँ अम्बिकादत्तव्यास जी की हैं किन्तु 'मीमांसक' उपाधि इनकी नहीं है।
अतः विकल्प `D' सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-284

124. बाणभट्ट की गद्यकृतियाँ कितनी हैं?

(A) 1 **(B) 2**

(C) 3 **(D) 4**

व्याख्या–बाणभट्ट की कुल पाँच कृतियाँ प्रसिद्ध हैं–
(i) कादम्बरी (कथा) गद्यकाव्य
(ii) हर्षचरितम् (आख्यायिका) गद्यकाव्य
यही दो रचनायें इनकी गद्यकृतियाँ हैं।
अतः विकल्प `B' सही है।

- बाण की शेष तीन रचनायें निम्नवत् हैं–
(i) चण्डीशतकम् (मुक्तककाव्य)
(ii) मुकुटताडितक (नाटक)
(iii) पार्वतीपरिणय (नाटक)

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-12

125. 'पुष्पधन्वा' किसे कहा जाता है?

(A) विष्णु **(B) ब्रह्मा**

(C) इन्द्र **(D) कामदेव**

व्याख्या–● अमरकोश में कामदेव के 21 नामों की चर्चा है–
**''मदनो मन्मथो मारः प्रद्युम्नो मीनकेतनः।
पुष्पधन्वा रतिपतिर्मकरध्वज आत्मभूः॥''**

- स्पष्ट है कि पुष्पधन्वा = कामदेव के लिए प्रयुक्त है।
अतः विकल्प `D' सही है।
- विष्णु को 'चतुर्भुजः' ब्रह्मा को 'चतुराननः' तथा इन्द्र को 'पाकशासनः' भी कहते हैं।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा सम्भाषणशब्दकोश पेज-153

नमः संस्कृताय

122. (B)	123. (D)	124. (B)	125. (D)

प्रशिक्षित-स्नातकशिक्षक-चयनपरीक्षा (TGT)–2011

1. ''श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीम्'' किस प्रकार का मङ्गलाचरण है-

(A) आशीर्वादात्मक

(B) नमस्कारात्मक

(C) वस्तुनिर्देशात्मक

(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

ग्रन्थ	उपास्य देवता	मंगलाचरण	छन्द
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम्	अष्टमूर्तिशिव	आशीर्वादात्मक	स्रग्धरा
(B) कादम्बरी	त्रिगुणात्मक ब्रह्म	नमस्कारात्मक	वंशस्थ
(C) किरातार्जुनीयम्	मूलतः शैव	वस्तुनिर्देशात्मक	वंशस्थ

अतः विकल्प (C) सही है।

2. भारवि की शैली में कौन सा तत्त्व प्रधान है –

(A) ओजप्रधान्यता

(B) वैदर्भीरीति की प्रधानता

(C) गौडीरीति की प्रधानता

(D) अर्थगौरवता

	ग्रन्थ/ग्रन्थकार	विशेषताएँ
(A)	अनर्घराघव (मुरारि)	गौडीरीति, ओजगुण
(B)	अभिज्ञानशाकुन्तलम् .	वैदर्भीरीति, प्रसादगुण

''वैदर्भीरीतिसन्दर्भे कालिदासो विशिष्यते''

(C)	वेणीसंहार	गौडीरीति, ओजगुण
(D)	किरातार्जुनीयम्	अर्थगौरवता, रीतिवादी या अलंकृतकाव्यशैली के जन्मदाता **''भारवेरर्थगौरवम्''**

अतः विकल्प (D) सही है।

3. 'अर्थगौरवता' का अर्थ है –

(A) गौरव गरिमा से युक्त बातें कहना

(B) शब्द से ज्यादा अर्थ पर जोर देना

(C) थोड़े से शब्दों में ज्यादा अर्थ कह देना

(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

व्याख्या – समालोचकों ने कवियों की प्रशंसा में कहा है कि–

''उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्।
दण्डिनः पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयो गुणाः।।''

1. उपमा अलङ्कार की दृष्टि से कालिदास अद्वितीय कवि हैं।
2. अर्थगौरव अर्थात् **थोड़े से शब्दों में ज्यादा अर्थ कह देना** यह भारवि की विशेषता है।
3. पदों में लालित्य के लिए दण्डी प्रसिद्ध हैं।
4. महाकवि माघ में उपमा, अर्थगौरव और पदलालित्य–ये तीनों गुण विद्यमान हैं।

अतः विकल्प (C) सही है।

4. 'भारवि' इस शब्द का अर्थ है –

(A) जिसको रवि अर्थात् सूर्य की चमक भाये

(B) भार को ढोने वाला

(C) सूर्य की कान्ति

(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

व्याख्या – 'किरातार्जुनीयम्' भारवि का एकमात्र ग्रन्थ है, 'भारवि' शब्द का अर्थ है –

'भा' दीप्तौ धातु चमकने, प्रकाश या कान्ति अर्थ में होती है,

रवि = सूर्य

अर्थात् भारवि का अर्थ है – **सूर्य की कान्ति या प्रकाश**

अतः विकल्प (C) सही है।

1. (C) 2. (D) 3. (C) 4. (C)

5. 'किरातार्जुनीयम्' रचना साहित्य की किस विधा के अन्तर्गत आती है?

(A) गीतिकाव्य (B) खण्डकाव्य
(C) महाकाव्य (D) स्तोत्रकाव्य

	विधा	ग्रन्थ	ग्रन्थकार
(A)	गीतिकाव्य	गीतगोविन्द	जयदेव
(B)	खण्डकाव्य	मेघदूतम्	कालिदास
(C)	महाकाव्य	किरातार्जुनीयम्	भारवि
(D)	स्तोत्रकाव्य	(i) चण्डीशतक	बाणभट्ट
		(ii) शिवमहिम्नस्तोत्र	पुष्पदन्त

नोट- 'मेघदूतम्' को गीतिकाव्य, दूतकाव्य तथा सन्देशकाव्य भी कहा जाता है।

अतः विकल्प (C) सही है।

6. 'मेघदूतम्' रचना साहित्य की किस विधा के अन्तर्गत आता है-

(A) नाटक (B) महाकाव्य
(C) गीतिकाव्य (D) स्तोत्रकाव्य

विधा	ग्रन्थ	ग्रन्थकार
(A) नाटक	उत्तररामचरितम्	भवभूति
(B) महाकाव्य	शिशुपालवधम्	माघ
(C) गीतिकाव्य	मेघदूतम्	कालिदास
(D) स्तोत्रकाव्य	सौन्दर्यलहरी	शङ्कराचार्य

अतः विकल्प (C) सही है।

7. 'मेघदूतम्' में किस छन्द का प्रयोग हुआ है?

(A) शार्दूलविक्रीडितम् (B) मन्दाक्रान्ता
(C) मालिनी (D) उपर्युक्त सभी का

	ग्रन्थों में प्रयुक्त छन्द	ग्रन्थ
(A)	शार्दूलविक्रीडितम्	अमरुकशतकम्
(B)	मन्दाक्रान्ता	मेघदूतम् (सम्पूर्ण ग्रन्थ में)
(C)	मालिनी	किरातार्जुनीयम् (प्रथमसर्ग के अन्तिम 46 वें श्लोक में)

अतः विकल्प (B) सही है।

8. 'मेघदूतम्' को संस्कृत साहित्य में एक नवीन काव्य प्रकार की उद्भावना का श्रेय प्राप्त होता है, जो इस नाम से विख्यात है –

(A) सन्देशकाव्य (B) खण्डकाव्य
(C) गीतिकाव्य (D) स्तोत्रकाव्य

व्याख्या – * कालिदास की भाषा - शैली, भाव-व्यञ्जना, अलङ्कार निवेश, प्रणयाभिव्यक्ति, मार्मिक सन्देश तथा प्राञ्जल चित्रण कला के माध्यम से मेघदूत ने एक पृथक् साहित्य प्रकार को जन्म दिया जिसे **'दूतकाव्य'** या **'सन्देशकाव्य'** कहा जाता है।

* संस्कृत का स्तोत्र साहित्य बड़ा ही विशाल सरस एवं हृदयस्पर्शी है। संस्कृत में अनेक स्तोत्रकाव्य लिखे गये जैसे – मयूरभट्ट का सूर्यशतक, बाणभट्ट का चण्डीशतक तथा शिवताण्डवस्तोत्र, रामरक्षास्तोत्र आदि।

मेघदूत को संस्कृत साहित्य में एक नवीन काव्य प्रकार की उद्भावना का श्रेय प्राप्त होता है जो 'संदेशकाव्य' के नाम से विख्यात है तथा गीतिकाव्यों में मधुर पदावली के साथ संगीतमय छन्दों का प्रयोग होने के कारण 'गीतिकाव्य' और यक्ष के जीवन के एक अंश का वर्णन होने के कारण 'खण्डकाव्य' भी कहा जाता है।

संस्कृत साहित्य के दूतकाव्य या सन्देशकाव्य -

1. जम्बूकवि –चन्द्रदूत (959ई.)
2. धोयी –पवनदूत (1100 ई.)
3. वेदान्तदेशिक (वेंकटनाथ)–हंससन्देश (1280 ई.)
4. त्रिवेणी – शुकसन्देश, भृंगसन्देश (सत्रहवीं शतब्दी पूर्वार्द्ध)
5. रूपगोस्वामी –हंसदूत (सत्रहवीं शताब्दी)
6. विमलकीर्ति – चन्द्रदूत (1625 ई.)
7. नन्दकिशोरचन्द्र गोस्वामी – शुकदूत
8. नित्यानन्दशास्त्री – हनुमद्दूत

अतः विकल्प (A) सही है।

9. मेघदूतम् के रचयिता हैं –

(A) भारवि (B) कालिदास
(C) भवभूति (D) श्रीहर्ष

5. (C) 6. (C) 7. (B) 8. (A) 9. (B)

व्याख्या –

	रचयिता	रचनाएँ	अनुमानित समय
(A)	भारवि	किरातार्जुनीयम्	छठी शताब्दी ई.
(B)	कालिदास	अभिज्ञानशाकुन्तलम् मेघदूतम्, कुमारसम्भवम् मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोर्वशीयम् , रघुवंशम्, ऋतुसंहारम्	ई.पू. प्रथम शताब्दी
(C)	भवभूति	उत्तररामचरितम् महावीरचरितम् मालतीमाधवम्	सातवीं शताब्दी
(D)	श्रीहर्ष	नैषधीयचरितम्	बारहवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध

अत: उत्तर (B) सही है।

10. कालिदास किसी एक विशिष्ट अलङ्कार के प्रयोग में अतुलनीय हैं, वह अलङ्कार है –

(A) रूपक **(B) श्लेष**

(C) अनुप्रास **(D) उपमा**

	कवि	अलङ्कार
(A)	अश्वघोष –	उपमा, रूपक, अनुप्रास
(B)	सुबन्धु –	श्लेष, विरोधाभास, परिसंख्या, उत्प्रेक्षा
(C)	श्रीहर्ष –	उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति, श्लेष, अनुप्रास,
(D)	कालिदास –	उपमा

संस्कृत जगत् में एक प्रसिद्धि है कि –

उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्।
दण्डिनः पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयो गुणाः।।

अत: विकल्प (D) सही है।

11. 'मेघदूतम्' का नायक है –

(A) देवता **(B) मनुष्य**

(C) यक्ष **(D) किन्नर**

	ग्रन्थनाम	नायक	नायककोटि
(i)	शिशुपालवधम्	श्रीकृष्ण	देवता (धीरोदात्त)
(ii)	उत्तररामचरितम्	श्रीराम	देवता (धीरोदात्त)
(iii)	कुमारसम्भवम्	शिव	देवता (धीरोदात्त)
(iv)	मृच्छकटिकम्	चारुदत्त	मनुष्य (धीरप्रशान्त)
(v)	स्वप्नवासवदत्तम्	उदयन	राजा (धीरललित)
(vi)	नैषधीयचरितम्	नल	राजा (धीरोदात्त)
(vii)	मेघदूतम्	यक्ष	यक्ष (धीरललित)

अत: विकल्प (C) सही है।

12. 'मेघदूतम्' का प्रधान रस है –

(A) शृङ्गाररस **(B) करुणरस**

(C) शान्तरस **(D) वीररस**

रस	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	विभाजन
शृङ्गार	मेघदूतम्	कालिदास	दो भाग (पूर्व, उत्तर)
	रत्नावली	हर्षदेव	चार अङ्क, नाटिका
	प्रियदर्शिका	हर्षदेव	चार अङ्क, नाटिका
करुण	कुन्दमाला	दिङ्नाग	छः अंक, नाटक
	उत्तररामचरितम्	भवभूति	सात अङ्क, नाटक
	प्रसन्नराघव	जयदेव	सात अङ्क, नाटक
शान्त	प्रबोधचन्द्रोदय	कृष्णमिश्र	छः अङ्क, नाटक
	जीमूतवाहन	हर्षदेव	पाँच अङ्क, नाटक
वीररस	वेणीसंहार	भट्टनारायण	छः अङ्क , नाटक
	शिशुपालवधम्	माघ	20 सर्ग , महाकाव्य

अत: विकल्प (A) सही है।

13. 'मेघदूतम्' काव्य कितने भागों में विभक्त है-

(A) दो **(B) तीन**

(C) चार **(D) पाँच**

	ग्रन्थ	विभाजन
(A)	मेघदूतम्	दो खण्डों में – पूर्वमेघ, उत्तरमेघ
	कादम्बरी	पूर्वभाग और उत्तरभाग
(B)	शिवराजविजयम्	तीन विराम, 12 नि:श्वास

10. (D) 11. (C) 12. (A) 13. (A)

	काव्यादर्श	तीन परिच्छेद
(C)	रसगङ्गाधर	चार आनन
	दशरूपक	चार प्रकाश
(D)	काव्यालङ्कारसूत्र	पाँच अधिकरण
	पञ्चतन्त्र	पाँच तन्त्र या पाँच खण्ड

1. मित्रभेद 2. मित्र सम्प्राप्ति 3. काकोलूकीय 4.लब्धप्रणाश 5.अपरीक्षितकारक, अतः विकल्प (A) सही है।

14. 'मेघदूतम्' काव्य में नायक विरही यक्ष को किस कारण से अपनी नायिका से दूर जाना पड़ा ?

(A) पत्नी अपने पिता के घर चली गयी थी

(B) पति-पत्नी में कुछ वैमनस्य हो गया था

(C) अपने कर्तव्यपालन में भूल करने के कारण शापवश

(D) अपने कर्तव्यपालन में परदेश जाने के कारण

व्याख्या – कालिदास विरचित 'मेघदूतम्' खण्डकाव्य में नायक विरही यक्ष को अपने कर्तव्यपालन में भूल करने के कारण कुबेर के शापवश अपनी नायिका यक्षिणी से दूर एक वर्ष के लिए रामगिरि पर्वत में रहना पड़ा।

कश्चित्कान्ताविरहगुरुणा स्वाधिकारात्प्रमत्तः
शापेनाऽस्तङ्गमितमहिमा वर्षभोग्येण भर्तुः
यक्षश्चक्रे जनकतनया स्नानपुण्योदकेषु
स्निग्धच्छाया तरुषु वसतिं रामगिर्याश्रमेषु।।(पूर्वमेघ-1)

मेघदूत के इस प्रथम श्लोक से ही सिद्ध होता है कि अपने कर्त्तव्यपालन में भूल करने के कारण कुबेर के शाप के कारण विरही यक्ष रामगिरि आश्रम में निवास कर रहा था, अतः विकल्प (C) सही है।

15. विरहिणी यक्षिणी कहाँ निवास कर रही थी?

(A) उज्जयिनी में **(B) काशी में**

(C) अलकापुरी में **(D) विदर्भ में**

व्याख्या - * विरही यक्ष मेघ से यक्षों के निवास स्थान अलकापुरी में अपनी यक्षिणी के पास सन्देश ले जाने का निवेदन करता है –

*''**गन्तव्या ते वसतिरलका नाम यक्षेश्वराणाम्**''**(पूर्वमेघ-7)**

*''**तस्योत्सङ्गे प्रणयिन इव स्त्रस्तगङ्गादुकूलां**

* **त्वं दृष्ट्वा न पुनरलकां ज्ञास्यसे कामचारिन् (पूर्वमेघ-66)**

इच्छानुसार विचरण करने वाले हे मेघ! जिस प्रकार कोई कामिनी, जिसकी गंगा जल के समान (श्वेत) साड़ी खिसक गई हो अपने प्रिय के गोद में बैठी हो, उसी प्रकार उस कैलास की गोद में तुम अलका को देखोगे ।

इससे सिद्ध होता है कि यक्षिणी अलकापुरी में निवास कर रही है।

* 'मेघदूतम्' में उज्जयिनी के राजा प्रद्योत एवं महाकाल मन्दिर आदि का भी वर्णन है।

* काशी एवं विदर्भ देश का वर्णन मेघदूत में नहीं है।

अतः विकल्प (C) सही है।

16. मेघदूतम् के कथानक का मूलस्रोत है-

(A) ऐतिहासिक

(B) कविकल्पित

(C) जनश्रुति पर आधारित

(D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या - कविकल्पित- मेघदूतम् कालिदास की प्रौढ एवं परिष्कृत कृति है। इसमें कवि की प्रौढ कल्पना, उदात्त भावना, परिष्कृत शैली एवं कोमलकान्त पदावली का सामञ्जस्य दिखाई देता है। यह कवि की कल्पना का मनोरम प्रसून है, अतएव विश्व के सभी सहृदयों ने इसकी मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है।

ऐतिहासिक- * राजतरङ्गिणी कल्हण की एकमात्र रचना है। इसका विभाजन आठ तरङ्गों में हुआ है। 'राजतरङ्गिणी' में कलियुग के आरम्भ से 1150 ई. तक के कश्मीर का राजनीतिक तथा सांस्कृतिक इतिहास काव्य रूप में वर्णित है। यह एक ऐतिहासिक काव्य है।

* अम्बिकादत्तव्यास विरचित शिवराजविजय एक ऐतिहासिक उपन्यास है।

जनश्रुति पर आधारित- लोककथा या जनश्रुति पर आधारित गुणाढ्य की बृहत्कथा, बृहत्कथामञ्जरी, कथासरित्सागर आदि ग्रन्थ हैं अतः विकल्प (B) सही है।

14. (C) 15. (C) 16. (B)

17. यक्ष को कितनी अवधि के लिए अपनी पत्नी से दूर रहना था?

(A) एक वर्ष **(B) दो वर्ष**

(C) छः वर्ष **(D) आजीवन**

व्याख्या – कालिदास विरचित 'मेघदूतम्' खण्डकाव्य में कुबेर ने यक्ष को अपने कार्य से असावधान होने के कारण अपनी प्रिया से एक वर्ष तक अलग रहने का श्राप दे दिया–

कश्चित्कान्ताविरहगुरुणा स्वाधिकारात्प्रमत्तः

शापेनास्तङ्गमितमहिमा वर्षभोग्येण भर्तुः। (पूर्वमेघ–1)

अतः विकल्प (A) सही है।

18. विरही यक्ष कहाँ निवास कर रहा था?

(A) अलकापुरी **(B) हिमालय पर्वत**

(C) मानसरोवर **(D) रामगिरि पर्वत**

(A) अलका – अलका यक्षों की नगरी तथा कुबेर की राजधानी है। माना जाता है कि 'अलका' कैलास पर्वत पर स्थित है।

(B) हिमालय – हिमालय भारत की उत्तर दिशा में स्थित है। 'मेघदूतम्' में कालिदास ने इसका वर्णन किया है। **'प्रालेयाद्रेरुपतटमतिक्रम्य तांस्तान्विशेषान्** (पूर्वमेघ–61)

(C) मानसरोवर – यह कैलास पर्वत पर स्थित है। यक्ष मेघ से कहता है कि राजहंस मानसरोवर तक आपके साथी बने रहेंगे। **'आकेलासाद् बिसकिलयच्छेदपाथेयवन्तः'** (पूर्व.११)

(D) रामगिरि – कुबेर से शापित यक्ष रामगिरि के आश्रमों में निवास करने लगा। मल्लिनाथ इसे चित्रकूट में मानते हैं।

यक्षश्चक्रे जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु

स्निग्धच्छायातरुषु वसतिं रामगिर्याश्रमेषु।।

(पूर्वमेघ. – 1)

अतः विकल्प (D) सही है।

19. ''नीतिशतकम्'' साहित्य की किस विधा के अन्तर्गत है –

(A) खण्डकाव्य **(B) मुक्तककाव्य**

(C) प्रबन्धकाव्य **(D) नाट्यग्रन्थ**

	काव्यविधा	ग्रन्थ	रस
(A)	खण्डकाव्य	मेघदूतम्	विप्रलम्भ शृङ्गार
(B)	मुक्तककाव्य	नीतिशतकम्	विभिन्न रस
(C)	महाकाव्य	रघुवंशम्	वीररस
(D)	नाट्यग्रन्थ	अभिज्ञानशाकुन्तलम्	शृङ्गार रस

अतः विकल्प (B) सही है।

20. 'नीतिशतकम्' के रचयिता हैं –

(A) भारवि **(B) भवभूति**

(C) भर्तृहरि **(D) भूषणभट्ट**

	रचयिता	रचनाएँ	अनुमानित समय
(A)	भारवि	किरातार्जुनीयम्	पञ्चम–षष्ठ ई.
(B)	भवभूति	उत्तररामचरितम् महावीरचरितम् मालतीमाधवम्	680 ई. 750 ई.
(C)	भर्तृहरि	नीतिशतकम् शृङ्गारशतकम् वैराग्यशतकम्	575-650 ई.
(D)	भूषणभट्ट	कादम्बरी का उत्तरार्द्ध भाग	

अतः विकल्प (C) सही है।

21. विरहिणी यक्षिणी कहाँ निवास कर रही थी?

(A) उज्जयिनी में **(B) काशी में**

(C) अलकापुरी में **(D) विदर्भ में**

(A) **उज्जयिनी –** आधुनिक उज्जैन। इसे 'विशाला' 'अवन्ती' या 'अवन्तिका' भी कहा जाता है। उज्जयिनी आकर वत्स के राजा उदयन ने यहाँ के राजा प्रद्योत की प्रियपुत्री वासवदत्ता का अपहरण किया था।

'प्रद्योतस्य प्रियदुहितरं वत्सराजोऽत्र जह्रे'' (पूर्वमेघ–34)

(B) **काशी –** आधुनिक बनारस, यहाँ भगवान् विश्वनाथ का प्रसिद्ध मन्दिर है जिसकी गणना द्वादश ज्योतिर्लिङ्गों में होती है। इसका वर्णन मेघदूत में नहीं है।

17. (A) 18. (D) 19. (B) 20. (C) 21. (C)

(C) **अलका –** यक्ष मेघ से कहता है कि – **'गन्तव्या ते वसतिरलका नाम यक्षेश्वराणाम् ...।'** (पूर्वमेघ 7)

'तत्रागारं धनपतिगृहानुत्तरेणास्मदीयम् ...।' (उत्तरमेघ 12)

इन श्लोकों से स्पष्ट है कि यक्ष का घर कुबेर के घर से उत्तर दिशा में स्थित है। अतः यक्षिणी अलका में निवास कर रही थी।

(D) **विदर्भ –** विदर्भ दण्डी की जन्मभूमि है इसका वर्णन मेघदूत में नहीं है।

अतः विकल्प (C) सही है।

22. 'नीतिशतकम्' का विषय है –

(A) किसी एक सम्प्रदाय से सम्बन्धित है

(B) विज्ञान पर आधारित है

(C) आध्यात्मिक संचेतना पर आधारित है

(D) मनुष्य मात्र को नीति कुशलता का उपदेश देने वाला है

व्याख्या – 'नीतिशतकम्' में कहीं नीतिपरक अनुभवजन्य उपदेश निर्दिष्ट है तो कहीं रमणियों के रूप विलास का आकर्षण अंकित है और कहीं संसार की असारता चित्रित है। इसमें जिन नीति सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया गया है, वे जगत् की समस्त मानव जाति अथवा धर्म के लिए अनुकरणीय है अर्थात् यह मनुष्यमात्र को नीतिकुशलता का उपदेश देने वाला ग्रन्थ है।

अतः विकल्प (D) सही है।

23. 'नीतिशतकम्' की भाषा –

(A) क्लिष्ट है (B) अलङ्कार प्रधान है

(C) अति सरल सुबोध है (D) अति गम्भीर है

व्याख्या – नीतिशतक की भाषा सरल और स्वाभाविक है। कहीं भी ऐसा प्रतीत नहीं होता कि कोई शब्द अनावश्यक रूप से बलात् प्रयुक्त हो। भाषा इतनी सुबोध है कि कवि के पद्यों में गुम्फित तात्पर्य को समझने में कोई भी कठिनाई नहीं होती। पद्यों की पदावली इतनी सरस है कि स्वयं ही उसमें संगीतात्मकता एवं गेयता आ गई है।

अतः विकल्प (C) सही है।

24. थोड़े से ज्ञान से स्वयं को ज्ञानी मानने वाले मनुष्य को कौन नहीं समझा सकते हैं –

(A) ब्रह्मा (B) विष्णु

(C) महेश (D) गणेश

व्याख्या – अज्ञानी मनुष्य को आसानी से प्रसन्न किया जा सकता है, विशेषज्ञ को तो और भी आसानी से प्रसन्न किया जा सकता है। लेकिन रञ्चमात्र ज्ञान के कारण गर्वित मूढजन को ब्रह्मा भी प्रसन्न नहीं कर सकते।

अज्ञः सुखमाराध्यः सुखतरमाराध्यते विशेषज्ञः।

ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रह्मापि नरं न रञ्जयति।।

(नीतिशतक मूर्खपद्धति श्लोक -3)

अतः विकल्प (A) सही है।

25. अपनी अज्ञता छिपाने के लिए मूढ जनों का एकमात्र उपाय है –

(A) मौनावलम्बन (B) प्रगल्भावलम्बन

(C) हारावलम्बन (D) क्रोधावलम्बन

व्याख्या – भर्तृहरि ने 'नीतिशतकम्' में बताया है कि विधाता ने मूर्खों को अपने हाथ में रहने वाले और अत्यन्त हितकारी मौन को अपनी मूर्खता को छिपाने का साधन बनाया है, जो विद्वानों की सभा में विशेष रूप से आभूषण स्वरूप हो जाता है। **स्वायत्तमेकान्त .... विभूषणं मौनमपण्डितानाम्।** (नीतिशतकम् – 07)

अतः विकल्प (A) सही है।

26. स्वाभिमान और सम्मान के पात्र होते हैं –

(A) राजा (B) धनवान्

(C) विद्वज्जन (D) राज्याधिकार

व्याख्या – 'मानशौर्यपद्धति' में भर्तृहरि अनेक श्लोकों में विद्वानों के स्वाभिमान एवं सम्मान की बात करते हैं जैसे –

'तज्जाड्यं वसुधाधिपस्य सुधियस्त्वर्थं विनापीश्वराः...।' (नीति. 12)

येषां तान्प्रति मानमुज्झत नृपाः। कस्तैः सह स्पर्धते।' (नीति. 13)

अधिगतपरमार्थान्पण्डितान्मावमंस्था-

स्तृणमिव लघुलक्ष्मीर्नैव तान्संरुणद्धि। (नीति. 14)

उपर्युक्त पंक्तियों से स्पष्ट है कि विद्वज्जन स्वाभिमान और

22. (D) 23. (C) 24. (A) 25. (A) 26. (C)

सम्मान के पात्र होते हैं। अतः विकल्प (C) सही है।

27. सत्संगति के प्रभाव से –

(A) मनुष्य की बुद्धि तीव्र होती है

(B) सत्य और सदाचरण में उसकी प्रवृत्ति होती है

(C) मान-मर्यादा और प्रतिष्ठा प्राप्त करता है

(D) पाप आदि से मुक्त होकर उपर्युक्त सभी सद्‌गुण विकसित होते हैं।

व्याख्या – सत्संगति के प्रभाव को आचार्य भर्तृहरि ने इस प्रकार बताया है –

* जाड्यं धियो हरति – सत्संगति बुद्धि की जडता को हरती है।
* सिञ्चति वाचि सत्यम् – वाणी में सत्य का सिञ्चन करती है।
* मानोन्नतिं दिशति – मान की उन्नति करती है।
* पापमपाकरोति – पाप को दूर करती है।
* चेतः प्रसादयति – चित्त को प्रसन्न करती है।
* दिक्षु तनोति कीर्तिम् – दिशाओं में कीर्ति का विस्तार करती है।
* सत्संगतिः कथय किं न करोति पुंसाम्।

भला सज्जनों की संगति मनुष्य का क्या लाभ नहीं करती। अर्थात् सत्संगति से उपर्युक्त सभी गुण विकसित होते हैं।

अतः विकल्प (D) सही है।

28. धन की और कौन सी गति नहीं होती –

(A) दान **(B) भोग**

(C) नाश **(D) सन्तोष प्राप्ति**

व्याख्या- आचार्य भर्तृहरि ने धन की तीन गतियाँ बतायी हैं-

दानं भोगो नाशस्तिस्रो गतयो भवन्ति वित्तस्य।

यो न ददाति न भुङ्क्ते तस्य तृतीया गतिर्भवति।।

(नीतिशतकम्-34)

धन की तीन गतियाँ

दान | भोग | नाश

उपर्युक्त विकल्पों में **सन्तोष प्राप्ति** धन की त्रिविध गतियों में परिगणित नहीं है अतः विकल्प (D) सही है।

29. भारतीय जनश्रुति महाराज भर्तृहरि को –

(A) विक्रमसंवत् के संस्थापक महाराज विक्रमादित्य का बड़ा भाई मानती है।

(B) कालिदास के समकक्ष मानती है।

(C) गुजरात और महाराष्ट्र के समीप स्थित राज्य का राजा मानती है।

(D) विदिशा के राजा का कनिष्ठ भाई मानती है।

व्याख्या – प्राचीन अन्य संस्कृत कवियों की भाँति भर्तृहरि ने भी अपने समय का निर्देश नहीं किया है। शतकत्रय के रचयिता महाकवि भर्तृहरि का जीवन और उनका समय अभी तक निश्चित नहीं है। दन्त कथाओं के आधार पर उन्हें उज्जैन के प्रसिद्ध सम्राट् तथा विक्रमसंवत् के प्रवर्तक महाराज विक्रमादित्य का ज्येष्ठ भाई माना जाता है।

अतः विकल्प (A) सही है।

30. महाराज भर्तृहरि की प्रमुख रचनाएँ हैं –

(A) नीतिशतकम् **(B) श‍ृङ्गारशतकम्**

(C) वैराग्यशतकम् **(D) उपर्युक्त तीनों ही।**

व्याख्या -

भर्तृहरि की प्रमुख रचनाएँ

नीतिशतकम् (111 श्लोक) | श‍ृङ्गारशतकम् (100 श्लोक) | वैराग्यशतकम् (100 श्लोक)

उपर्युक्त तीनों रचनाएँ भर्तृहरि की हैं इन्हें **'शतकत्रय'** भी कहा जाता है। अतः विकल्प (D) सही है।

31. नीतिशतकम् अपनी गेयता के कारण –

(A) गीतिकाव्य है **(B) रीतिकाव्य है**

(C) वक्रोक्तियुक्त है **(D) इनमें से कोई नहीं है**

व्याख्या – भर्तृहरि छन्दों के प्रयोग में भी अन्य संस्कृत कवियों की भाँति सिद्धहस्त थे। उनके छन्दों में अतिशय लालित्य है। एक समर्थ कवि की तरह भाषा की सहज व्यवस्था भी उनके छन्दों में दृष्टिगोचर होती है। भर्तृहरि ने अपने मुक्तकों में बड़ी ही कुशलता से छन्दों का प्रयोग किया है जो गेयात्मकता से परिपूर्ण है। इसलिए इसे गीतिकाव्य की संज्ञा दी गई है।

अतः विकल्प (A) सही है।

27. (D) 28. (D) 29. (A) 30. (D) 31. (A)

32. 'अभिज्ञान' शब्द का अर्थ है –

(A) ज्ञान होना (B) स्मरण होना
(C) पहचान (D) अभियान होना

व्याख्या - अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के चतुर्थ अङ्क में जब दुर्वासा ऋषि शकुन्तला को शाप देकर निर्बाध गति से जा रहे थे तभी प्रियंवदा दुर्वासा को मनाने के लिए जाती है तब दुर्वासा ऋषि कहते हैं कि –

''न मे वचनमन्यथाभवितुमर्हति, किं त्वभिज्ञानाभरणदर्शनेन शापो निवर्तिष्यत इति।''

मेरा वचन असत्य नहीं हो सकता किन्तु पहचान के आभूषण के दिखाने से मेरा शाप समाप्त हो जाएगा। यहाँ **'अभिज्ञान'** शब्द का अर्थ **पहचान** है। इसलिए विकल्प (C) सही है।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज -188

33. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के रचयिता हैं -

(A) भवभूति (B) कालिदास
(C) श्रीहर्ष (D) भास

(A) भवभूति - भवभूति विरचित तीन नाटक उपलब्ध होते हैं-
(1) मालतीमाधव (2) महावीरचरित (3)उत्तररामचरित

* मालतीमाधव दश अङ्कों का प्रकरण है। इसमें मालती और माधव तथा मकरन्द और मदयन्तिका के प्रणय और परिणय का वर्णन है।
* महावीरचरित में अङ्कों की संख्या सात है इसमें राम विवाह से लेकर राम-राज्याभिषेक तक रामायण की कथा वर्णित है।
* उत्तररामचरित में अङ्कों की संख्या सात है, इसमें रामायण के उत्तरकाण्ड की कथा का वर्णन है।

(B) कालिदास - कालिदास विरचित नाटकों की संख्या तीन तथा कुल रचनाएँ सात हैं-

नाटक- 1. मालविकाग्निमित्रम् 2. विक्रमोर्वशीयम् 3. अभिज्ञानशाकुन्तलम्

महाकाव्य- 1. रघुवंशम् 2. कुमारसम्भवम्

गीतिकाव्य एवं खण्डकाव्य- 1. ऋतुसंहारम् 2. मेघदूतम्

अतः विकल्प (B) सही है।

(C) श्रीहर्ष - नैषधीयचरित के सर्गान्त श्लोकों में श्रीहर्ष की निम्न रचनाओं का उल्लेख है-

नैषधीयचरितम् **स्थैर्यविचारप्रकरण**
श्रीविजयप्रशस्ति **खण्डनखण्डखाद्य**
गौडोर्वीशकुलप्रशस्ति **नवसाहसाङ्कचरितचम्पू**
अर्णववर्णन **छिन्दप्रशस्ति**
शिवशक्तिसिद्धि

(D) भास - भास के नाम से सम्प्रति तेरह नाटक प्राप्त होते हैं सन् 1909 ई0 में 'श्री टी0 गणपति शास्त्री' ने ट्रावनकोर राज्य से इन्हें प्राप्त किया था-

1. प्रतिज्ञायौगन्धरायण
2. स्वप्नवासवदत्तम्
   — उदयन कथामूलक
3. ऊरुभंग
4. दूतवाक्यम्
5. पञ्चरात्रम्
6. बालचरित
7. दूतघटोत्कच
8. कर्णभार
9. मध्यमव्यायोग
   — महाभारतमूलक
10. प्रतिमानाटक
11. अभिषेकनाटक
   — रामायणमूलक
12. अविमारक
13. चारुदत्त
   — कल्पनामूलक

34. अभिज्ञानशाकुन्तलम् साहित्य की किस विधा के अन्तर्गत है-

(A) महाकाव्य है (B) नाटक है
(C) नाटिका है (D) चन्द्रकाव्य है

ग्रन्थविधा	ग्रन्थकार	ग्रन्थ	विभाजन
महाकाव्य	कालिदास	रघुवंशम्	19 सर्ग
		कुमारसम्भवम्	17 सर्ग
	भारवि	किरातार्जुनीयम्	18 सर्ग
नाटक	कालिदास	अभिज्ञानशाकुन्तलम्	7 अङ्क
		विक्रमोर्वशीयम्	5 अङ्क

32. (C) 33. (B) 34. (B)

		मालविकाग्निमित्रम्	5 अङ्क
	भवभूति	उत्तररामचरितम्	7 अङ्क
		महावीरचरितम्	7 अङ्क
नाटिका	हर्ष	रत्नावली	4 अङ्क

अत: विकल्प (B) सही है।

35. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के सहित कालिदास ने कितने नाटक लिखे हैं?

(A) दो **(B) तीन**

(C) चार **(D) पाँच**

(A) कालिदास ने दो महाकाव्य लिखे हैं- **रघुवंशम्, कुमारसम्भवम्।**

(B) कालिदास के तीन नाटक हैं- **अभिज्ञानशाकुन्तलम्, विक्रमोर्वशीयम्, मालविकाग्निमित्रम्।**

(C) कालिदास कृत अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक का चतुर्थ अङ्क सर्वश्रेष्ठ है, तथा चतुर्थ अङ्क के चार श्लोक अत्यन्त प्रसिद्ध हैं।

काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला।
तत्रापि च चतुर्थोऽङ्कः तत्र श्लोकचतुष्टयम् ।।

(D) कालिदास कृत विक्रमोर्वशीयम् तथा मालविकाग्निमित्रम् में अङ्कों की संख्या पाँच है।

अत: विकल्प (B) सही है।

36. अभिज्ञानशाकुन्तलम् का कथानक-

(A) ऐतिहासिक है

(B) उत्पाद्य है

(C) ऐतिहासिक होने पर भी कुछ परिवर्तित है

(D) इनमें से कुछ भी नहीं है।

व्याख्या - दुष्यन्त और शकुन्तला की कथा महाभारत के आदिपर्व अध्याय (67 से 74) में प्राप्त होती है। कालिदास ने इसमें पर्याप्त परिवर्तन करके इसे नाटकोपयोगी कथा का रूप दिया। यथा दुर्वासा के शाप, अनसूया, प्रियंवदा गौतमी, दुर्वासा, शार्ङ्गरव, शारद्वत आदि पात्रों की नूतन कल्पना, सानुमती की कल्पना, भ्रमर की कल्पना आदि। पद्मपुराण के स्वर्गखण्ड में भी यह कथा प्राप्त होती है। परन्तु पद्मपुराण की कथा महाभारत और शाकुन्तल की कथा पर निर्भर है, उसे शाकुन्तल की कथा का मूल नहीं माना जा सकता है। पद्मपुराण में वर्णित कथा का अधिकांश भाग शाकुन्तल के वर्णन का अनुवाद मात्र प्रतीत होता है। अभिज्ञानशाकुन्तल का कथानक ऐतिहासिक होने पर भी कुछ परिवर्तित है ।अत: विकल्प (C) सही है।

37. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में कितने अङ्क हैं?

(A) पाँच **(B) छः**

(C) सात **(D) आठ**

A. * **मालविकाग्निमित्रम् -** कालिदास - पाँच अङ्क- नायक धीरोदात्त कोटि का माना जाता है

* **विक्रमोर्वशीयम् -** कालिदास - पाँच अङ्क - चतुर्थ अंक में राजा का विलाप अपभ्रंश छन्दों में किया गया है।

* **बालचरितम् -** भास - पाँच अङ्क - श्रीकृष्ण के जन्म से कंस वध तक की घटना का वर्णन।

B. * **स्वप्नवासवदत्तम् -** भास - छः अङ्क - उदयन, वासवदत्ता तथा रत्नावली की प्रणय कथा।

* **अभिषेकनाटकम् -** भास - छः अङ्क - रामायण कथा का संक्षेप में वर्णन।

* **अविमारकम् -** भास - छः अङ्क - अविमारक तथा कुरंगी की प्रणय कथा।

* **वेणीसंहारम् -** भट्टनारायण - छः अङ्क - नाटक का प्रारम्भ और अन्त दोनों वीर रस से युक्त है।

C. * **अभिज्ञानशाकुन्तलम् -** कालिदास - सात अङ्क - दुर्वासा ऋषि का शाप कवि की मौलिक कल्पना।

* **मुद्राराक्षसम् -** विशाखदत्त - सात अङ्क -नायिका का अभाव

* **उत्तररामचरितम् -** भवभूति - सात अङ्क - विदूषक विहीन

D. * **वाल्मीकिरामायण -** महर्षि वाल्मीकि - सात काण्ड - आदिकाव्य / आर्षकाव्य-रामकथा का वर्णन

अत: विकल्प (C) सही है।

38. अभिज्ञानशाकुन्तलम् का कौन सा अङ्क सर्वश्रेष्ठ माना गया है-

(A) पहला **(B) दूसरा**

(C) तीसरा **(D) चौथा**

व्याख्या - अभिज्ञानशाकुन्तलम् के अङ्कों के नाम- पहला अङ्क - आश्रम प्रवेश, दूसरा अङ्क - आश्रम निवेश तीसरा अङ्क - विवाह, चौथा अङ्क - विदाई ,पाँचवा अङ्क -

35. (B) 36. (C) 37. (C) 38. (D)

प्रत्याख्यान, छठा अङ्क – पश्चाताप, सातवाँ अङ्क – मिलन

शाकुन्तल के विषय में विद्वज्जनों में एक प्रसिद्ध सूक्ति है–

काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला।
तत्रापि च चतुर्थोऽङ्कस्तत्र श्लोकचतुष्टयम्।।

शाकुन्तल के चतुर्थ अङ्क के चार श्लोक अपने भाव कल्पना, कवित्व और अर्थोदात्तता के कारण अत्यन्त प्रसिद्ध हैं। एक श्लोक में पुत्री की विदाई का मार्मिक वर्णन है, दूसरे में पुत्री का पतिग्रह के लिए आदर्श शिक्षा दी गई है, तीसरे में सुकुमार भावनाओं का चित्रण तथा चौथे में ऋषि कण्व का राजा दुष्यन्त के लिए आदर्श सन्देश है। इसलिए **चतुर्थ अङ्क को सर्वश्रेष्ठ अङ्क** माना गया है।

अत: विकल्प (D) सही है।

39. दुर्वासा ऋषि के आश्रम में पदार्पण के समय शकुन्तला किसके ध्यान में मग्न थी?
(A) कण्व ऋषि के
(B) दुष्यन्त के
(C) सद्यः प्रसूता हरिणी के
(D) नवपल्लवयुक्त लता के

व्याख्या – दुर्वासा ऋषि के कण्व आश्रम में पदार्पण के समय शकुन्तला दुष्यन्त के चिन्तन में मग्न थी। यह देखकर ऋषि दुर्वासा शकुन्तला को सम्बोधित करते हुए कहते हैं–

आः, अतिथिपरिभाविनि,

विचिन्तयन्ती . . . प्रथमं कृतामिव।। (अभि.शा.4/1)

अये अतिथि का तिरस्कार करने वाली! मुझ तपस्वी का तुमने अनादर किया है, जिसका (दुष्यन्त का) स्मरण तू कर रही है वह याद दिलाए जाने पर भी तुम्हें स्मरण नहीं करेगा जैसे उन्मत व्यक्ति पहले कही गयी बात को भूल जाता है। वैसे ही वह (दुष्यन्त) तुम्हें भूल जायेगा।

अत: विकल्प (B) सही है।

40. दुर्वासा ऋषि ने शकुन्तला को क्या शाप दिया?
(A) कि तू याद करी विद्या भूल जाएगी
(B) कि तू अस्वस्थ हो जाएगी
(C) कि तेरा पुत्र तुझे भूल जाएगा
(D) कि तू जिसके ध्यान में बैठी है वो भूल जाएगा

व्याख्या – अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के चतुर्थ अङ्क में दुष्यन्त को याद कर रही शकुन्तला को ऋषि दुर्वासा ने नेपथ्य से वंशस्थ छन्द में निम्न शाप दिया–

विचिन्तयन्ती यमनन्यमानसा, तपोधनं वेत्सि न मामुपस्थितम्
स्मरिष्यति त्वां न स बोधितोऽपि सन् कथां प्रमत्तः प्रथमं कृतामिव।।

(अभि0 4\1)

अनन्यहृदय से जिसका चिन्तन करती हुई तू उपस्थित हुए मुझ तपस्वी को नहीं देख रही है, वह तेरे स्मरण दिलाने पर भी तुझको स्मरण नहीं करेगा, जैसे उन्मन्त व्यक्ति पहले कही बात को स्मरण नहीं करता है।

अत : विकल्प (D) सही है।

41. दुर्वासा ऋषि ने शाप मोचन किस तरह बताया?
(A) छः महीने बाद दुष्यन्त को स्वतः शकुन्तला का स्मरण हो जाएगा
(B) बसन्त ऋतु में आम्रमञ्जरी देखकर दुष्यन्त को शकुन्तला की याद आ जाएगी।
(C) किसी अभिज्ञान (पहचान) को देखने से दुष्यन्त को शकुन्तला का स्मरण हो जाएगा।
(D) पुनर्जन्म में दुष्यन्त को शकुन्तला का स्मरण हो जाएगा।

व्याख्या – दुर्वासा ऋषि ने शकुन्तला को अतिथि तिरस्कार करने के लिए शाप देकर तीव्र गति से चले जा रहे थे तभी अनसूया ने प्रियंवदा को मनाने के लिए भेजा, क्षमा याचना करने पर दुर्वासा ऋषि ने कहा–

''ततो मे वचनमन्यथाभवितुं नार्हति। किं त्वभिज्ञानाभरण-दर्शनेन शापो निवर्तिष्यत इति मन्त्रयमाण एवान्तर्हितः।''

(अभि०चतुर्थ अङ्क)

मेरा वचन अन्यथा अर्थात् असत्य नहीं हो सकता है परन्तु पहचान का आभूषण दिखाने से शाप की समाप्ति हो जाएगी ऐसा कहते हुए वह अन्तर्धान हो गए। यह बात प्रियंवदा अनसूया से बताती है।

अत: विकल्प (C) सही है।

39. (B) 40. (D) 41. (C)

42. कण्व ऋषि को इस नाम से भी पुकारते थे-
(A) गौतम ऋषि (B) कश्यप ऋषि
(C) काश्यप ऋषि (D) विश्वामित्र ऋषि

व्याख्या - 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अङ्क में महर्षि कण्व (काश्यप) का प्रवेश होता है– (ततः प्रविशति स्नानोत्तीर्णः काश्यपः) जब अनसूया और प्रियवंदा, शकुन्तला को आभूषण पहनाने का अभिनय करती हैं, उसके बाद स्नान करके आये हुए काश्यप का प्रवेश होता है। यहाँ 'काश्यप' पद कण्व के लिए प्रयुक्त है।

* एक गौतम ऋषि–अहल्या के पति और शतानन्द के पिता भी है, लेकिन उनका वर्णन शाकुन्तलम् में नहीं है।
* गौतम महर्षि का कण्व शिष्य है।
* मारीच (कश्यप) देवों और राक्षसों के पिता हैं।
* विश्वामित्र–शकुन्तला के जन्मदाता पिता हैं।

अतः विकल्प (C) सही है।

43. चतुर्थ अङ्क की विषय वस्तु मानवीय जीवन की किस घटना पर आधारित है?
(A) बच्चे के जन्म के अवसर की
(B) बच्चे के गुरुकुल जाने के अवसर की
(C) बेटी की शादी होने पर विदाई के अवसर की
(D) मृत्यूपरान्त श्मशान जाने के अवसर की।

व्याख्या - कालिदास विरचित 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अङ्क को विशेष रूप से सभी सहृदय एवं विद्वानों ने मुक्त कण्ठ से सराहा है–

काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला।
तत्रापि च चतुर्थोऽङ्कस्तत्र श्लोकचतुष्टयम्।।

शाकुन्तल के चतुर्थ अङ्क के श्लोकों में पुत्री की विदाई का मार्मिक वर्णन है एवं पुत्री को पतिगृह के लिए आदर्शशिक्षा दी गई है–

➔ **यास्यत्यद्य शकुन्तलेति ......(4.6)**
➔ **शुश्रूषस्व गुरून् . . . . वामाः कुलस्याधयः।''(4.18)**
➔ **अस्मान् साधु . . . . वाच्यं वधूबन्धुभिः।। (4/17)**

इत्यादि श्लोको में भावसौन्दर्य की दृष्टि से बेटी की शादी होने पर विदाई के अवसर पर मानवीय जीवन की मार्मिक घटना का वर्णन है।

अतः विकल्प (C) सही है।

44. 'अर्थो हि कन्या परकीय एव' में कन्या की उपमा किस उपमान के साथ दी गयी है?
(A) कमलिनी के साथ (B) चाँदनी के साथ
(C) धरोहर के साथ (D) ब्याज के साथ

व्याख्या - 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अङ्क के 22 वें श्लोक में कण्व ने कन्या की उपमा न्यास (धरोहर) से की है।

अर्थो हि कन्या परकीय एव
तामद्य सम्प्रेष्य परिग्रहीतुः।
जातो ममायं विशदः प्रकामं
प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा।।

(अभि.शा.4/22)

वस्तुतः कन्या पराई सम्पत्ति है। आज उसको पति के पास भेजकर मेरी अन्तरात्मा उसी प्रकार अत्यन्त प्रसन्न हो रही है, जैसे धरोहर को लौटाने पर धरोहर रखने वाले का मन प्रसन्न होता है।

अतः विकल्प (C) सही है।

45. अभिज्ञानशाकुन्तलम् की रचना करते समय कवि कालिदास की किस मौलिकता के कारण दुष्यन्त का चरित्र उदात्त बन पाया?
(A) शकुन्तला जैसी प्रकृति पुत्री को प्रेम करने के कारण
(B) भारतवर्ष के वीर सम्राट् की छवि प्रस्तुत करने के कारण
(C) दुर्वासा ऋषि के शाप की कल्पना के कारण
(D) पहचान के रूप में अँगूठी देने के कारण

व्याख्या - मूलकथा में राजा सारी घटनाएँ याद होने पर भी लोकापवाद के डर से शकुन्तला को स्वीकार नहीं करता है। आकाशवाणी के द्वारा समर्थन होने पर उसे स्वीकार करता है। इससे राजा का चरित्र अत्यन्त निम्न कोटि का ज्ञात होता है, किन्तु अभिज्ञान शाकुन्तल में दुर्वासा के शाप

42. (C) 43. (C) 44. (C) 45. (C)

के कारण राजा दुष्यन्त शकुन्तला को नहीं पहचानता, इससे दुष्यन्त का चरित्र उदात्त बना रहता है। यह कालिदास की मौलिक कल्पना है।

''**विचिन्तयन्ती यमनन्यमानसा**'' इस श्लोक के माध्यम से दुर्वासा शकुन्तला को चतुर्थ अङ्क में शाप देते हैं।

अत: विकल्प (C) सही है।

46. साहित्य की सभी विधाओं में से सर्वाधिक रम्यतापूर्ण विधा है-
(A) महाकाव्य (B) खण्डकाव्य
(C) कथा (D) नाटक

(A) महाकाव्य - सर्गबन्धो महाकाव्यं तत्रैको नायकः सुरः।

(सा.द.6/315)

जिसमें सर्गों का निबन्धन हो, वह महाकाव्य कहलाता है।

(B) खण्डकाव्य - खण्डकाव्यं भवेत्काव्यस्यैकदेशानुसारि च।

(सा.द.6/329)

काव्य के एक अंश का अनुसरण करने वाला खण्डकाव्य होता है।

(C) कथा - कथायां सरसं वस्तु गद्यैरेव विनिर्मितम्।

(सा.द.6/332)

कथा में सरस वस्तु गद्य द्वारा ही बनायी जाती है।

(D) नाटक - नाटकं ख्यातवृत्तं स्यात्पञ्चसन्धिसमन्वितम्।।

(सा.द.6/7-11)

नाटक का वृत्त (कथा) ख्यात अर्थात् रामायणादि इतिहास में प्रसिद्ध होना चाहिए।

इन सभी विधाओं में नाटक सर्वाधिक रम्यतापूर्ण विधा है। विद्वज्जनों में प्रसिद्ध सूक्ति है- '**काव्येषु नाटकं रम्यं ...।**'

अत: विकल्प (D) सही है।

47. उत्तररामचरितम् के रचयिता हैं-
(A) भास (B) कालिदास
(C) विशाखदत्त (D) भवभूति

महाकवि भास की रचनायें

ग्रन्थ	विभाजन
प्रतिज्ञायौगन्धरायण	चार अंक
स्वप्नवासवदत्तम्	छह अंक
ऊरुभङ्ग	एकांकी
दूतवाक्य	एकांकी
पञ्चरात्र	तीन अंक
बालचरित	पाँच अंक
दूत-घटोत्कच	एकांकी
कर्णभार	एकांकी
मध्यमव्यायोग	एकांकी
प्रतिमानाटक	सात अंक
अभिषेक नाटक	छह अंक
अविमारक	छह अंक
चारुदत्त	चार अंक

कालिदास की रचनायें

अभिज्ञानशाकुन्तलम्	सात अंक
विक्रमोर्वशीयम्	पाँच अंक (त्रोटक)
मालविकाग्निमित्रम्	पाँच अंक
रघुवंशम्	उन्नीस सर्ग
कुमारसम्भवम्	सत्रह सर्ग
मेघदूतम्	दो भाग (पूर्व, उत्तर)
ऋतुसंहारम्	छः सर्ग

विशाखदत्त की रचना

मुद्राराक्षसम्	सात अंक

भवभूति की रचनायें

मालतीमाधवम्	दस अंक (प्रकरण)
महावीरचरितम्	सात अंक
उत्तररामचरितम्	सात अंक

अत: विकल्प (D) सही है।

48. निम्नलिखित में से कौन रचना भवभूति की नहीं है-
(A) प्रतिमानाटकम् (B) उत्तररामचरितम्
(C) मालतीमाधवम् (D) महावीरचरितम्

* प्रतिमानाटकम् – भास – सात अङ्क – रामायण कथा का संक्षिप्त वर्णन
* उत्तररामचरितम् – भवभूति – सात अङ्क – रामायण उत्तरकाण्ड की कथा
* मालतीमाधवम् – भवभूति – दस अङ्क – मालती –माधव तथा

46. (D) 47. (D) 48. (A)

मकरन्द और मदयन्तिका का प्रणय और परिणय का वर्णन

*महावीरचरितम् - भवभूति - सात अङ्क - राम विवाह से राम राज्याभिषेक तक रामायण कथा का वर्णन

* प्रतिमानाटकम् महाकवि भास द्वारा रचित है शेष तीनों रचना महाकवि भवभूति द्वारा रचित हैं।

अत: विकल्प (A) सही है।

49. 'उत्तररामचरितम्' नाटक रामायण के-

(A) पूर्वार्द्ध पर आधारित है

(B) उत्तरार्द्ध पर आधारित है

(C) सम्पूर्ण रामायण पर आधारित है

(D) रामायण के एक अंश पर आधारित है।

व्याख्या - * उत्तररामचरितम् भवभूति का अन्तिम और सर्वोत्कृष्ट नाटक है। अंकों की संख्या सात, तथा प्रधानरस करुण है। इसकी कथा **वाल्मीकि रामायण के उत्तरकाण्ड की कथा पर आश्रित है** होने के कारणरा यह नाटक रामायण के उत्तरार्द्ध पर आधारित माना जायेगा।

* उत्तररामचरितम् नाटक के सातवें अंक में 'गर्भनाटक' की योजना भवभूति की मौलिक कल्पना है।

अत: विकल्प (B) सही है

स्रोत- *संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज 403-404*

50. उत्तररामचरितम् का प्रधानरस है-

(A) शृंगार रस **(B) वीर रस**

(C) शान्त रस **(D) करुण रस**

रस	ग्रन्थनाम	विभाजनसंख्या	ग्रन्थप्रकार
A. शृङ्गार	नैषधीयचरितम्	22 सर्ग	महाकाव्य
	मृच्छकटिकम्	10 अंक	प्रकरण
B. वीर	महावीरचरितम्	7 अङ्क	नाटक
	शिशुपालवधम्	20 सर्ग	महाकाव्य
C. शान्त	महाभारत	18 पर्व	ऐतिहासिक महाकाव्य
D. करुण	उत्तररामचरितम्	7 अंक	नाटक
	वाल्मीकिरामायण	7 काण्ड	आदिकाव्य

अत: विकल्प (D) सही है।

51. उत्तररामचरितम् में अङ्कों की गिनती है-

(A) पाँच **(B) छ:**

(C) सात **(D) आठ**

ग्रन्थनाम	कवि	विभाजन
नागानन्दम्	हर्षदेव	पाँच अङ्क
स्वप्नवासवदत्तम्	भास	छ: अङ्क
वेणीसंहारम्	भट्टनारायण	छ: अङ्क
मुद्राराक्षसम्	विशाखदत्त	सात अङ्क

अत: विकल्प (C) सही है।

52. उत्तररामचरितम् के तृतीय अङ्क में कवि की मौलिक कल्पना है-

(A) छाया सीता व राम का दण्डकारण्य में पुनरागमन

(B) लक्ष्मण व सीता का मिलन

(C) वाल्मीकि आश्रम को छोड़कर सीता का दण्डकारण्य में प्रवेश

(D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या - * 'उत्तररामचरितम्' के तृतीय अङ्क में 'छायादृश्य' भवभूति की मौलिक कल्पना है। इसमें सीता अदृश्य रहते हुए राम की दयनीय स्थिति देखती हैं और मूर्छित राम को हस्तस्पर्श से होश में लाती हैं।

* वासन्ती, तमसा और मुरला ये पात्र एवं राम का दण्डकारण्य में पुनरागमन भवभूति की अपनी मौलिक कल्पनायें है।

अत: विकल्प (A) सही है।

53. छाया सीता के साथ दण्डकारण्य में आए राम का दर्शन करने वाला दूसरा पात्र है-

(A) भागीरथी **(B) तमसा**

(C) मुरला **(D) इनमें से कोई नहीं**

(A) भागीरथी - 'उत्तररामचरितम्' में भागीरथी गंगा अधिष्ठात्री देवी के रूप में हैं।

(B) तमसा - छायाङ्क नामक तृतीय अङ्क में सीता और तमसा अदृश्य रहते हुए राम और वासन्ती का वार्तालाप सुनती है। भागीरथी तमसा से कहती हैं-

'तमसे, त्वयि प्रकृष्टप्रेमैव वधूर्जानकी।

अत: त्वमेवास्या: प्रत्यनन्तरीभव'।

49. (B)	50. (D)	51. (C)	52. (A)	53. (B)

इस कथन से सिद्ध है कि छाया सीता के साथ तमसा राम का दर्शन करती हैं।

(C) मुरला – एक नदी की अधिष्ठात्री देवी के रूप में हैं।

अतः विकल्प (B) सही है।

54. दण्डकारण्य में राम कितने वर्ष बाद दुबारा आये थे?

(A) आठ वर्ष बाद (B) दस वर्ष बाद

(C) बारह वर्ष बाद (D) चौदह वर्ष बाद

'उत्तररामचरितम्' के द्वितीय अङ्क में सीता गङ्गा के प्रवाह में दो बच्चों को जन्म देती हैं। गंगा और पृथ्वी उसे बाहर लाती हैं। दूध छोड़ने के बाद बालक वाल्मीकि के पास रहते हैं। रामायण में अन्य प्रसंग में वर्णित क्रौञ्च वध और शम्बूक वध उत्तररामचरितम् के इसी अङ्क में वर्णित हैं। सीता परित्याग के 12 वर्ष बाद शम्बूक के प्रसंग से राम दण्डकारण्य आते हैं और पूर्वानुभूत स्थानों का दर्शन करते हैं।

अतः विकल्प (C) सही है।

55. दुबारा दण्डकारण्य में आये हुए राम के साथ किस पात्र को भवभूति ने तृतीय अङ्क में वर्णित किया है?

(A) तमसा को (B) वासन्ती को

(C) मुरला को (D) भागीरथी को

व्याख्या – उत्तररामचरितम् के तृतीय अङ्क में भवभूति के द्वारा तमसा, वासन्ती, मुरला और भागीरथी आदि पात्रों का वर्णन किया गया है –

तमसा – भागीरथी के आदेश से तमसा सीता के साथ रहती हैं।

अहमप्याज्ञापिता 'तमसे, त्वयि प्रकृष्टप्रेमैव वधूर्जानकी, अतस्त्वमेवास्याः प्रत्यनन्तरीभव' इति।

वासन्ती – वासन्ती वनदेवी हैं, और सीता की प्रियसखी भी हैं। जो पञ्चवटी में आये हुए राम का स्वागत करती हैं–

ददतु तरवः पुष्पैरर्घ्यं फलैश्च मधुश्च्युतः

स्फुटितकमलामोदप्रायाः प्रवान्तु वनानिलाः। (3/24)

वासन्ती हो राम के साथ रहती है।

मुरला – मुरला को लोपामुद्रा के द्वारा गोदावरी नदी के पास सन्देश देने के लिए भेजा जाता है कि–राम पञ्चवटी जायेंगे तो सीता के साथ बिताये गये पल को याद करेगें जिससे उन्हे मूर्च्छा की आशंका रहेगी अतः हे भगवती गोदावरी, पूजनीय आपको सावधान रहना चाहिए।

मुरला – सखि तमसे, प्रेषितास्मि भगवतो अगस्त्यस्य पत्न्या लोपामुद्रया सरिद्वरां गोदावरीमभिधातुम्......

भागीरथी – उक्तमत्र भगवत्या 'वत्से देवयजनसम्भवे सीते, अद्य खल्वायुष्मतोः कुशलवयोर्द्वादशस्य जन्मवत्सरस्य संख्यामङ्गलग्रन्थिरभिवर्तते।

भगवती भागीरथी ने कहा – 'हे यज्ञभूमि से उत्पन्न पुत्री सीता, आज चिरंजीवी कुश और लव की बारहवीं मंगलमयी वर्षगाँठ है।

नोट– तमसा सीता के साथ रहती हैं

वासन्ती वनदेवी है और सीता की प्रियसखी है, वह राम के साथ रहती है। अतः विकल्प (B) सही है।

56. तृतीय अङ्क में सीता वियोगजन्य शोक के कारण मूर्च्छित राम को पुनः चेतना कैसे प्राप्त होती है?

(A) भागीरथी के जल स्पर्श के द्वारा

(B) वासन्ती के सान्त्वना भरे वचनों द्वारा

(C) लव-कुश का दर्शन प्राप्त करने के द्वारा

(D) छाया-सीता के हाथ के स्पर्श द्वारा

व्याख्या – उत्तररामचरितम् नाटक के तृतीय अङ्क में राम के मूर्च्छित होने पर तमसा सीता से कहती हैं–

त्वमेव ननु कल्याणि! सञ्जीवय जगत्पतिम्।
प्रियस्पर्शो हि पाणिस्ते तत्रैष निरतो जनः।। 3/10

हे मंगलमयी सीते! तुम ही अवश्य जगत् के स्वामी राम को होश में लाओ, क्योंकि तुम्हारे हाथ का स्पर्श उन्हें प्रिय है और यह राम उसमें अनुरक्त हैं।

इसके बाद भूमि पर पड़े हुए और अश्रुपूर्ण सीता के हाथ के स्पर्श द्वारा प्रसन्न एवं सचेतन राम का प्रवेश होता है।

अतः विकल्प (D) सही है।

57. '' पूरोत्पीडे तटाकस्य परीवाहः प्रतिक्रिया'' से क्या तात्पर्य है-

(A) तालाब के अधिक भर जाने पर जल को बाहर बहाना ही एकमात्र संरक्षण उपाय होता है।

(B) तालाब को भरने के लिए जल को बाहर से डालना ही उपाय होता है।

(C) तालाब के अधिक भर जाने पर बाहर का पानी रोक देना ही उपाय होता है।

54. (C) 55. (B) 56. (D) 57. (A)

(D) तीनों ही अर्थ सही नहीं है।

व्याख्या - उत्तररामचरितम् के तृतीय अङ्क में तमसा सीता से कह रही हैं-

पूरोत्पीडे तटाकस्य परीवाहः प्रतिक्रिया।
शोकक्षोभे च हृदयं प्रलापैरेव धार्यते।। (3/29)

तालाब में जल प्रवाह की अधिकता होने पर जल को बाहर निकालना ही उसका एकमात्र प्रतीकार है। शोकजन्य क्षोभ में हृदय विलाप के द्वारा ही बचाया जाता है।

अतः विकल्प (A) सही है।

स्रोत - उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-218

58. संस्कृत के संख्यावाचक शब्दों के अनुसार पन्द्रह को कहते हैं-
(A) पञ्चाशत् **(B) पञ्चदश**
(C) पंचापंचे **(D) इनमें से कोई नहीं**

संस्कृत संख्या	
(A) पञ्चाशत् (50)	पचास
(B) पञ्चदश (15)	पन्द्रह
(C) पंचापंचे	रूप नहीं बनता।

अतः विकल्प (B) सही है।

स्रोत- *रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज- 139*

59. अस्सी की संख्या को संस्कृत में कहते हैं-
(A) अशीतिः **(B) अष्टादश**
(C) अष्टाविंशतिः **(D) अष्टाशीतिः**

संस्कृत संख्या	**हिन्दी संख्या**
(A) अशीतिः	अस्सी (80)
(B) अष्टादश	अठारह (18)
(C) अष्टाविंशतिः	अट्ठाइस (28)
(D) अष्टाशीतिः	अठासी (88)

अतः विकल्प (A) सही है।

स्रोत- *रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज- 139*

60. 'एकोनविंशतिः' को हिन्दी में कहते हैं-
(A) एक सौ बीस **(B) इक्कीस**
(C) बीस **(D) उन्नीस**

हिन्दी संख्या	**संस्कृत संख्या**
(A) एक सौ बीस (120)	विंशत्यधिकशतम्
(B) इक्कीस (21)	एकविंशतिः
(C) बीस (20)	विंशतिः
(D) उन्नीस (19)	एकोनविंशतिः,नवदश

अतः विकल्प (D) सही है।

स्रोत- *रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज - 139-140*

61. 'पञ्चाशत्' को हिन्दी में कहते हैं-
(A) पाँच सौ **(B) पचपन**
(C) पचास **(D) पन्द्रह**

	हिन्दी संख्या	**संस्कृत संख्या**
(A)	पाँच सौ (500)	पञ्चशती/पञ्चशतम्
(B)	पचपन (55)	पञ्चपञ्चाशत्
(C)	पचास (50)	पञ्चाशत्
(D)	पन्द्रह (15)	पञ्चदश

अतः विकल्प (C) सही है।

स्रोत- *रचनानुवादकौमुदी–कपिलदेव द्विवेदी, पेज–139*

62. निम्नलिखित शब्दों में से किस शब्द में 'इको यणचि' सूत्र से सन्धि हुई है?
(A) प्रत्येकः **(B) भवनम्**
(C) परोपकारः **(D) अत्रैकः**

पद	**विच्छेद**	**सन्धि/सूत्र**
(A) प्रत्येकः	प्रति+एकः	यण् सन्धि / इको यणचि
(B) भवनम्	भो+अनम्	अयादि सन्धि / एचोऽयवायावः
(C) परोपकारः	पर+उपकारः	गुणसन्धि / आद्गुणः
(D) अत्रैकः	अत्र+एकः	वृद्धिसन्धि / वृद्धिरेचि

अतः विकल्प (A) सही है।

58. (B) 59. (A) 60. (D) 61. (C) 62. (A)

63. 'आद्गुणः' से निम्नलिखित में से किस शब्द में गुण सन्धि हुई है-
(A) गुर्वाज्ञा (B) नायकः
(C) गङ्गौघः (D) गङ्गोदकम्

पद	विच्छेद	सन्धि/सूत्र
(A) गुर्वाज्ञा	गुरु +आज्ञा	यण्सन्धि / इको यणचि
(B) नायकः	नै+अकः	अयादिसन्धि / एचोऽयवायावः
(C) गङ्गौघः	गङ्गा+ओघः	वृद्धिसन्धि / वृद्धिरेचि
(D) गङ्गोदकम्	गङ्गा+उदकम्	गुणसन्धि / आद्गुणः

अतः विकल्प (D) सही है।

64. संस्कृत व्याकरण के अनुसार 'हल्' का अर्थ है-
(A) स्वर (B) व्यञ्जन
(C) अनुनासिक (D) अननुनासिक

व्याख्या- स्वर- स्वरों का दूसरा नाम 'अच्' भी है, क्योंकि पाणिनि के अनुसार सभी स्वर 'अच्' प्रत्याहार के अन्तर्गत आ जाते हैं। अइउण् से ऐऔच् के बीच सभी 9 स्वर कहे गये हैं।

(B) व्यञ्जन- व्यञ्जन का दूसरा नाम 'हल्' भी है। पाणिनि के चतुर्दश सूत्रों में हयवरट् से हल् तक के सभी 33 वर्ण व्यञ्जन हैं।

(C) अनुनासिक- मुखनासिकावचनोऽनुनासिकः(1-1-8) मुख और नासिका से एक साथ उच्चरित होने वाले वर्ण अनुनासिक संज्ञक होते हैं। जैसे – ङ् ञ् ण् न् म्।

(D) अननुनासिक – जो अनुनासिक न हों वे अननुनासिक कहलाते हैं। यथा– क,ख,ग,घ आदि

अतः विकल्प (B) सही है।

65. हल् सन्धि होती है जब –
(A) स्वर के बाद व्यञ्जन आये
(B) स्वर के बाद स्वर आये
(C) व्यञ्जन के बाद व्यञ्जन आये
(D) इनमें से कोई नहीं।

व्याख्या – * जब व्यञ्जन के बाद व्यञ्जन आये तो हल् (व्यञ्जन) सन्धि होती है। जैसे– स्तोः श्चुना श्चुः (8.4.40) जब सकार तवर्ग, शकार या चवर्ग के योग में आता है तो सकार और तवर्ग के स्थान में क्रम से शकार और चवर्ग हो जाता है जैसे – सत्+ चित्=सच्चित् (सत्य और ज्ञान)।

* जब स्वर के बाद स्वर आये तो स्वर (अच्) सन्धि होती है। जैसे – रमा+ईशः=रमेशः ।

अतः विकल्प (C) सही है।

66. 'उज्ज्वलः' शब्द में कौन-कौन वर्ण समीप आने पर सन्धि हुई है-
(A) ज्+ज (B) द्+ज्
(C) छ+ज (D) च्+ज

व्याख्या – स्तोः श्चुना श्चुः (8.4.40) यदि तवर्ग से पहले या बाद में श् या चवर्ग आवे तो स् को श् और तवर्ग को चवर्ग हो जाता है। जैसे–

उत्+ज्वलः = 'झलां जशोऽन्ते' सूत्र से त् को द्

उद्+ज्वलः = 'स्तोः श्चुना श्चुः' सूत्र से 'द्' को ज्

= उज्ज्वलः

अतः विकल्प (B) सही है।

67. समास का अर्थ है-
(A) मास सहित (B) संक्षिप्तीकरण
(C) समान आस वाला (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या – समास एक संज्ञा है **''अनेकपदानामेकपदीभवनं समासः''** अनेक पद मिलकर एक पद होना समास है। समास का विग्रह है – **'समसनं समासः'** अर्थात् संक्षिप्त होने को समास कहते हैं। सम् + अस् + घञ् = समासः

अतः विकल्प (B) सही है।

68. अव्ययीभाव समास का प्रथम पद होता है-
(A) प्रत्यय (B) संख्यावाचक
(C) उपसर्ग (D) अव्यय

63. (D) 64. (B) 65. (C) 66. (B) 67. (B) 68. (D)

व्याख्या - अव्ययीभाव समास - अव्ययीभाव समास में पहला शब्द अव्यय रहता है और दूसरा शब्द संज्ञा, दोनों मिलकर अव्यय हो जाते हैं। अव्ययीभाव समास वाले शब्द के रूप नहीं चलते। अव्ययीभाव समास नपुंसकलिङ्ग के एकवचन में रहता है। इस समास में प्राय: पूर्व पदार्थ प्रधान रहता है। जैसे–

यथाकामम् = कामम् अनतिक्रम्य (जितनी इच्छा हो उतना)

उपसर्ग- जो अव्यय पद धातु या धातु से बने हुए विशेषण, संज्ञा आदि शब्दों के पूर्व जोड़े जाते हैं, उन्हें उपसर्ग कहते हैं। उपसर्गों की संख्या 22 होती है–

प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव, निस् , निर् , दुस् , दुर् , वि, आङ् , नि , अधि, अपि, अति, सु, उद्, अभि, प्रति, परि, उप एते प्रादय:।

प्रत्यय - जो शब्द या धातुओं के अन्तिम में जुड़ते हैं, वह प्रत्यय कहलाते हैं । जैसे– क्त्वा, ल्यप् , तुमुन् , अनीयर् आदि

संख्यावाचक - एकम् द्वे त्रीणि चत्वारि पञ्च आदि संख्यावाचक पद हैं। अत: विकल्प (D) सही है।

69. द्विगु समास का प्रथम पद होता है-

(A) संख्यावाचक **(B) विशेषण**

(C) उपमानवाचक **(D) इनमें से कुछ नहीं**

(A) जब समास में प्रथम शब्द संख्यावाची हो और दूसरा कोई संज्ञा तो उस समास को द्विगु समास कहते हैं। **'' संख्यापूर्वो द्विगु:''**

उदाहरण - **पञ्चानां गवां समाहार: - पञ्चगवम्**

चतुर्णां युगानां समाहार: - चतुर्युगम्।

(B) जब प्रथम शब्द विशेषण हो और दूसरा विशेष्य, तो उस समास को विशेषणपूर्वपद कर्मधारय कहते हैं।

उदाहरण - कृष्ण: सर्प: = कृष्णसर्प:

नीलम् उत्पलम् = नीलोत्पलम्

(C) उपमानवाचक सुबन्त का समान विभक्ति, समानवचन वाले सुबन्तों के साथ कर्मधारय समास होता है।

उदाहरण - घन इव श्याम: = घनश्याम:

कर्पूर इव गौर: = कर्पूरगौर:

अत: विकल्प (A) सही है।

70. अन्यपद प्रधान जिस समास में होता है, उसे कहते हैं-

(A) तत्पुरुष समास **(B) कर्मधारय समास**

(C) बहुव्रीहि समास **(D) अव्ययीभाव समास**

व्याख्या - तत्पुरुष समास - प्रायेण उत्तरपदार्थ–प्रधानस्तत्पुरुष:, तत्पुरुष समास में उत्तरपद प्रधान होता है। कर्मधारय तत्पुरुष समास का भेद है।

बहुव्रीहि समास - अनेकमन्यपदार्थे (2-2-24) जब दो या दो से अधिक सभी समस्त शब्द किसी अन्य शब्द के विशेषण बन जाते हैं तब उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं।

अन्यपदार्थप्रधानो बहुव्रीहि:– बहुव्रीहि समास में समास के दोनों पदों में से किसी में प्रधानत्व नहीं रहता, दोनों मिलकर किसी तीसरे का प्रधानत्व सूचित करते हैं।

अव्ययीभाव - प्रायेण पूर्वपदार्थप्रधान: अव्ययीभाव:– अव्ययीभाव समास में प्राय: पूर्व पद प्रधान रहता है।

अत: विकल्प (C) सही है।

71. समानाधिकरण तथा व्यधिकरण किस समास के भेद हैं-

(A) कर्मधारय **(B) अव्ययीभाव**

(C) बहुव्रीहि **(D) तत्पुरुष**

(A) कर्मधारय - तत्पुरुष समास के दो भेद होते हैं– समानाधिकरण तथा व्यधिकरण। समानाधिकरण तत्पुरुष को कर्मधारय तत्पुरुष भी कहते हैं। कर्मधारय का ही भेद द्विगु समास है। यथा– कृष्णसर्प:, पञ्चवटी आदि।

(B) अव्ययीभाव - अव्ययीभाव समास में प्राय: दो पद होते हैं – इनमें से प्रथम पद प्राय: अव्यय रहता है और दूसरा संज्ञा शब्द। दोनों मिलकर अव्यय हो जाते हैं। इनके रूप नहीं चलते हैं। जैसे– उपकृष्णम् , यथाशक्ति।

(C) बहुव्रीहि - इसमें प्रथम शब्द दूसरे शब्द का विशेषण होता है और दोनों मिलकर किसी तीसरे के विशेषण बनते हैं। उन्हें बहुव्रीहि समास कहते हैं। जैसे– चन्द्रमौलि:, वीणापाणि:।

(D) तत्पुरुष समास- उस समास को कहते हैं जिसमें प्रथम शब्द द्वितीय शब्द की विशेषता बताये। इसमें प्रथम पद विशेषण होता है और द्वितीय पद विशेष्य होता है, और चूँकि विशेष्य प्रधान होता है। इसलिए तत्पुरुष को 'प्रायेण उत्तरपदार्थप्रधानस्तत्पुरुष:' ऐसी व्याख्या की गई है। इसके

69. (A) 70. (C) 71. (D)

मुख्यत: दो भेद हैं – 1. समानाधिकरण तत्पुरुष 2.व्यधिकरण तत्पुरुष

नोट :- समानाधिकरण और व्यधिकरण भेद बहुव्रीहि के भी होते हैं किन्तु प्रधानत्वेन तत्पुरुष ही सही माना जाना चाहिए किन्तु यह प्रश्न विवादित हो सकता है।

अत: विकल्प (D) सही है।

72. 'येनाङ्गविकार:' सूत्र के अनुसार जिस अङ्ग में विकार हो, उसमें किस विभक्ति का प्रयोग होता है?

(A) प्रथमा (B) द्वितीया

(C) तृतीया (D) पञ्चमी

व्याख्या - प्रथमा विभक्ति - प्रथमा विभक्ति करने वाले दो सूत्र हैं–

A. प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा (2.3.46)

प्रातिपदिकार्थमात्र, लिङ्गमात्र, परिमाणमात्र, वचनमात्र में प्रथमा विभक्ति होती है।

प्रातिपदिकार्थ मात्र का उदाहरण – उच्चै:, नीचै:, कृष्ण:, श्री:, ज्ञानम्।

लिङ्गमात्र का उदाहरण – तट:, तटी, तटम्।

परिमाणमात्र का उदाहरण – द्रोणो व्रीहि:।

वचनमात्र का उदाहरण – एक:, द्वौ, बहव:।

* **सम्बोधने च** (2.3.47) सम्बोधन अर्थ में भी प्रातिपदिक से प्रथमा विभक्ति होती है। उदाहरण – हे राम!

B. द्वितीया विभक्ति - कर्मणि द्वितीया (2.3.2) अनुक्ते कर्मणि द्वितीया स्यात्।

अनुक्त कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है। उदा०– हरिं भजति।

C. तृतीया -येनाङ्गविकार: - जिस विकृत अङ्ग से अङ्गी का विकार लक्षित हो, उसके वाचक शब्द से तृतीया होती है।

उदाहरण – पादेन खञ्ज:। यहाँ 'पादेन' में तृतीया विभक्ति है।

D. पञ्चमी- अपादाने पञ्चमी - अपादान में पञ्चमी विभक्ति होती है–

उदाहरण – धावतोऽश्वात् पतति – दौड़ते हुए घोड़े से गिरता है।

अत: विकल्प (C) सही है।

73. 'क्रियान्वयित्वं कारकत्वम्' अर्थात् क्रिया से सम्बन्धित पद कारक की श्रेणी में आता है, इस परिभाषा के अनुसार कौन सी विभक्ति कारक नहीं है-

(A) प्रथमा (B) तृतीया

(C) षष्ठी (D) सप्तमी

व्याख्या - 'क्रियान्वयित्वं कारकत्वम्' अर्थात् क्रिया के साथ जिसका साक्षात् सम्बन्ध होता है उसे कारक कहते हैं। संस्कृत में कारकों की संख्या छ: है–

कर्त्ता कर्म च करणं च सम्प्रदानं तथैव च।

अपादानाऽधिकरणं इत्याहु: कारकाणि षट्।।

अर्थात् कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, अधिकरण ये 6 कारक हैं। किन्तु सम्बन्ध को कारक नहीं माना जाता, क्योंकि क्रिया के साथ इसका साक्षात् सम्बन्ध नहीं होता, सम्बन्ध में षष्ठी विभक्ति का विधान होता है, अत: षष्ठी कारक विभक्ति नहीं है। अत: विकल्प (C) सही है।

* **प्रथमा -** ''प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा''

प्रातिपदिकार्थ से लिङ्ग या परिमाण मात्र के अधिक होने में तथा संख्यामात्र अर्थ में प्रथमा विभक्ति होती है।

* **तृतीया -** ''कर्तृकरणयोस्तृतीया''

अनभिहित (अनुक्त) कर्ता और करण में तृतीया विभक्ति होती है। यथा – रामेण बाणेन हतो बाली। यहाँ 'रामेण'– कर्ता में तृतीया 'बाणेन' – करण में तृतीया।

* **सप्तमी -** ''सप्तम्यधिकरणे च'' अधिकरण कारक में सप्तमी विभक्ति होती है। यथा–

1. कटे आस्ते 2. स्थाल्यां पचति 3. मोक्षे इच्छास्ति ४. सर्वस्मिन् आत्मा अस्ति।

74. 'रुच्यर्थानां प्रीयमाण:' सूत्र के अनुसार रुच् धातु के योग में कौन सी विभक्ति होती है?

(A) द्वितीया (B) तृतीया

(C) चतुर्थी (D) पञ्चमी

(A) **द्वितीया- अधिशीङ्स्थासां कर्म -** शीङ्, स्था, आस् धातुओं के पूर्व यदि अधि उपसर्ग लगा हो, तो क्रिया के आधार की कर्म संज्ञा होती है और कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे- अधिशेते वैकुण्ठं हरि:।

72. (C) 73. (C) 74. (C)

(B) **तृतीया - सहयुक्तेऽप्रधाने -** सह के अर्थवाची शब्दों के योग में अप्रधान में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे- पुत्रेण सह आगतः पिता।

(C) **चतुर्थी - रुच्यर्थानां प्रीयमाणः -** रुचि अर्थ वाली धातुओं के योग में प्रीयमाण व्यक्ति की सम्प्रदान संज्ञा होती है और "चतुर्थी सम्प्रदाने" सूत्र से सम्प्रदान में चतुर्थी विभक्ति होती है। - उदा०- हरये रोचते भक्तिः

(D) **पञ्चमी -'जनिकर्तुः प्रकृतिः' -** जन् धातु के कर्त्ता के कारण की अपादान संज्ञा होती है। जैसे- ब्रह्मणः प्रजाः प्रजायन्ते।

अतः विकल्प (C) सही है।

75. अकारान्त शब्द से आप क्या समझते हैं?

(A) जिस शब्द का अन्तिम वर्ण ह्रस्व अ हो

(B) जिस शब्द का अन्तिम वर्ण दीर्घ आ हो

(C) जिस शब्द का अन्तिम वर्ण ह्रस्व अ अथवा दीर्घ आ हो

(D) इनमें से कोई सही नहीं है।

व्याख्या – जिस शब्द का अन्तिम वर्ण ह्स्व अ हो उसे अकारान्त शब्द कहते हैं। जैसे – राम। यहाँ राम के मकार में ह्स्व अकार है इसलिए 'राम' शब्द अकारान्त पुंलिङ्ग शब्द है। बालक, नायक, चालक, गायक आदि भी अकारान्त पुंलिङ्ग शब्द हैं। इसी प्रकार रमा, शब्द दीर्घ आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द है।

अतः विकल्प (A) सही है।

76. 'बालक' शब्द के सप्तमी विभक्ति एकवचन में रूप बनता है –

(A) रामस्य **(B) रामात्**

(C) रामाय **(D) रामे**

व्याख्या –

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	बालकः	बालकौ	बालकाः
द्वितीया	बालकम्	बालकौ	बालकान्
तृतीया	बालकेन	बालकाभ्याम्	बालकैः
चतुर्थी	बालकाय	बालकाभ्याम्	बालकेभ्यः
पञ्चमी	बालकात्	बालकाभ्याम्	बालकेभ्यः
षष्ठी	बालकस्य	बालकयोः	बालकानाम्
सप्तमी	**बालके**	बालकयोः	बालकेषु
सम्बोधन	हे बालक!	हे बालकौ!	हे बालकाः!

नोट – विकल्प 'राम' का दिया गया है और प्रश्न में 'बालक' का रूप पूछा गया है। यह आयोग की छोटी सी भूल है। कृपया आप अपनी समझदारी से 'D' विकल्प को सही मान लें।

77. 'हरि' शब्द के रूपों में 'हरौ' रूप किस विभक्ति और किस वचन का रूप है?

(A) द्वितीया विभक्ति द्विवचन

(B) प्रथमा विभक्ति का द्विवचन

(C) षष्ठी विभक्ति एकवचन

(D) सप्तमी विभक्ति का एकवचन

हरि (विष्णु) इकारान्त पुंलिङ्ग

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	हरिः	हरी	हरयः
द्वितीया	हरिम्	हरी	हरीन्
तृतीया	हरिणा	हरिभ्याम्	हरिभिः
चतुर्थी	हरये	हरिभ्याम्	हरिभ्यः
पञ्चमी	हरेः	हरिभ्याम्	हरिभ्यः
षष्ठी	हरेः	हर्योः	हरीणाम्
सप्तमी	**हरौ**	हर्योः	हरिषु
सम्बोधन	हे हरे!	हे हरी!	हे हरयः!

अतः विकल्प (D) सही है।

स्रोत-*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज- 123*

78. 'लता' शब्द के सप्तमी विभक्ति के एकवचन का रूप है –

(A) लते **(B) लतौ**

(C) लतायाम् **(D) लतासु**

'लता' शब्द आकारान्त स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्र.वि.	लता	लते	लताः
द्वि.वि.	लताम्	लते	लताः

75. (A) 76. (D) 77. (D) 78. (C)

तृ.वि.	लतया	लताभ्याम्	लताभिः
च.वि.	लतायै	लताभ्याम्	लताभ्यः
पं.वि.	लतायाः	लताभ्याम्	लताभ्यः
ष.वि.	लतायाः	लतयोः	लतानाम्
स.वि.	**लतायाम्**	लतयोः	लतासु
सम्बो०	हे लते!	हे लते!	हे लताः!

अतः विकल्प (C) सही है।

79. 'फलम्' शब्द नपुंसकलिङ्ग में है, इसमें 'फले' रूप निम्न किस विभक्ति में नहीं आता?

(A) प्रथमा (B) द्वितीया
(C) पञ्चमी (D) सप्तमी

फल अकारान्त नपुंसकलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	फलम्	**फले**	फलानि
द्वितीया	फलम्	**फले**	फलानि
तृतीया	फलेन	फलाभ्याम्	फलैः
चतुर्थी	फलाय	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
पञ्चमी	फलात्	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
षष्ठी	फलस्य	फलयोः	फलानाम्
सप्तमी	**फले**	फलयोः	फलेषु
सम्बोधन	हे फल!	हे फले!	हे फलानि!

'फले' रूप प्रथमा, द्वितीया तथा सप्तमी में बनता है जबकि पञ्चमी में 'फले' रूप नहीं बनता है। अतः विकल्प (C) सही है।

***स्रोत**-संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका–बाबूराम सक्सेना, पेज 80-81*

80. 'सर्वम्' सर्वनाम शब्द के रूपों में 'सर्वे' रूप तीनों लिङ्गों में प्रयुक्त होता है निम्नलिखित में गलत कथन को चुनिये -

(A) 'सर्वे' रूप पुँल्लिङ्ग में प्रथमा विभक्ति के बहुवचन में होता है।

(B) 'सर्वे' रूप पुँल्लिङ्ग में सप्तमी विभक्ति के एकवचन में होता है।

(C) 'सर्वे' रूप स्त्रीलिङ्ग के प्रथमा, द्वितीया विभक्ति के द्विवचन में होता है।

(D) 'सर्वे' रूप नपुंसकलिङ्ग के प्रथमा, द्वितीया विभक्ति के द्विवचन में होता है।

* सर्व (सब) शब्द के पुँलिङ्ग प्रथमा विभक्ति बहुवचन में 'सर्वे' रूप बनता है। **सर्वः सर्वौ सर्वे**
* स्त्रीलिङ्ग एवं नपुंसकलिङ्ग के प्रथमा एवं द्वितीया विभक्ति के द्विवचन में 'सर्वे' रूप बनता है।
* **'सर्व'** शब्द का पुँल्लिङ्ग सप्तमी एकवचन में 'सर्वस्मिन्' रूप बनता है 'सर्वे' नहीं बनता, अतः विकल्प (B) सही है।

81. 'अस्मद्' व 'युष्मद्' शब्दों से बनने वाले क्रमशः 'मम' और 'तव' रूप किस विभक्ति किस वचन के रूप हैं?

(A) चतुर्थी विभक्ति एकवचन

(B) द्वितीया विभक्ति बहुवचन

(C) षष्ठी विभक्ति एकवचन

(D) सप्तमी विभक्ति द्विवचन

अस्मद्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम्, मा	आवाम्, नौ	अस्मान्, नः
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यम्, मे	आवाभ्याम्, नौ	अस्मभ्यम्, नः
पञ्चमी	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
षष्ठी	मम, मे	आवयोः, नौ	अस्माकम्, नः
सप्तमी	मयि	आवयोः	अस्मासु

युष्मद्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम्, त्वा	युवाम्, वाम्	युष्मान्, वः
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
चतुर्थी	तुभ्यम्, ते	युवाभ्याम्, वाम्	युष्मभ्यम्, वः
पञ्चमी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
षष्ठी	तव, ते	युवयोः, वाम्	युष्माकम्, वः
सप्तमी	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

अतः विकल्प (C) सही है

79. (C) 80. (B) 81. (C)

82. 'अस्मद्' व 'युष्मद्' में क्रमशः 'आवयोः' व 'युवयोः' किस विभक्ति किस वचन में बनते हैं?

(A) षष्ठी विभक्ति एकवचन

(B) षष्ठी विभक्ति द्विवचन

(C) सप्तमी विभक्ति बहुवचन

(D) चतुर्थी विभक्ति एकवचन

प्रश्न संख्या 81 की व्याख्या से स्पष्ट हैं कि 'अस्मद्' और 'युष्मद्' शब्दों के क्रमशः 'आवयोः' और 'युवयोः रूप षष्ठी विभक्ति द्विवचन में बनते हैं, अतः विकल्प (B) सही है।

83. 'भू' धातु का 'भवामि' रूप है –

(A) लट् लकार का **(B) लोट् लकार का**

(C) लृट् लकार का **(D) लङ् लकार का**

A. भू धातु (होना) लट् लकार

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्र.पु.	भवति	भवतः	भवन्ति
म.पु.	भवसि	भवथः	भवथ
उ.पु.	**भवामि**	भवावः	भवामः

B. लोट्लकार (आज्ञार्थ)

प्र.पु.	भवतु	भवताम्	भवन्तु
म.पु.	भव	भवतम्	भवत
उ.पु.	भवानि	भवाव	भवाम

C. लृट्लकार (सामान्य भविष्य)

प्र.पु.	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
म.पु.	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उ.पु.	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

D. लङ्लकार (अनद्यतनभूत)

प्र.पु.	अभवत्	अभवताम्	अभवन्
म.पु.	अभवः	अभवतम्	अभवत
उ.पु.	अभवम्	अभवाव	अभवाम

अतः विकल्प (A) सही है।

84. 'पठिष्यामि' रूप है –

(A) लट्लकार का

(B) लोट्लकार का

(C) लृट्लकार का

(D) लङ्लकार का

A. 'पठ्' धातु (पढ़ना) लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र.पु.	पठति	पठतः	पठन्ति
म.पु.	पठसि	पठथः	पठथ
उ.पु.	पठामि	पठावः	पठामः

B. लोट् लकार

प्र.पु.	पठतु	पठताम्	पठन्तु
म.पु.	पठ	पठतम्	पठत
उ.पु.	पठानि	पठाव	पठाम

C. लृट् लकार

प्र.पु.	पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति
म.पु.	पठिष्यसि	पठिष्यथः	पठिष्यथ
उ.पु.	**पठिष्यामि**	पठिष्यावः	पठिष्यामः

D. लङ्लकार

प्र.पु.	अपठत्	अपठताम्	अपठन्
म.पु.	अपठः	अपठतम्	अपठत
उ.पु.	अपठम्	अपठाव	अपठाम

अतः विकल्प (C) सही है।

85. लङ्लकार सूचक है –

(A) वर्तमानकाल का **(B) भूतकाल का**

(C) भविष्यत्काल का **(D) आज्ञार्थक लकार का**

* **वर्तमानकाल** – लट् लकार

* **भूतकाल**

आसन्नभूत (लुङ्) | परोक्षभूत (लिट्) | अनद्यतनभूत (लङ्)

82. (B) 83. (A) 84. (C) 85. (B)

* **भविष्यतकाल**

- सामान्य भविष्य (लृट्)
- अनद्यतन भविष्य (लुट्)

* **आज्ञार्थक लकार** – लोट् लकार

विशेष – लट् वर्तमाने लेट् वेदे भूते लुङ् लङ् लिटस्तथा।
विध्याशिषोस्तु लिङ्लोटौ लुट् लृट लृङ् च भविष्यतः।।

अतः विकल्प (B) सही है।

86. 'अददात्' धातुरूप 'दा' धातु के किस लकार का रूप है?
(A) लट् लकार (B) लोट् लकार
(C) लङ् लकार (D) लृट् लकार

दा धातु = देना लट् लकार

प्र.पु.	ददाति	दत्तः	ददति
म.पु.	ददासि	दत्थः	दत्थ
उ.पु.	ददामि	दद्वः	दद्मः

लोट् लकार

प्र.पु.	ददातु	दत्ताम्	ददतु
म.पु.	देहि	दत्तम्	दत्त
उ.पु.	ददानि	ददाव	ददाम

लङ् लकार

प्र.पु.	**अददात्**	अदत्ताम्	अददुः
म.पु.	अददाः	अदत्तम्	अदत्त
उ.पु.	अददाम्	अदद्व	अदद्म

लृट् लकार

प्र.पु.	दास्यति	दास्यतः	दास्यन्ति
म.पु.	दास्यसि	दास्यथः	दास्यथ
उ.पु.	दास्यामि	दास्यावः	दास्यामः

अतः विकल्प (C) सही है।

***स्रोत**-रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज -167*

87. 'बालक मोदकं रोचते' यह अशुद्ध वाक्य है, इसका शुद्ध वाक्य होगा -
(A) बालकेन मोदकं रोचते
(B) बालकाय मोदकं रोचते
(C) बालकात् मोदकं रोचते
(D) बालकः मोदकं रोचते

व्याख्या - रुच्यर्थानां प्रीयमाणः (1.4.33) सूत्र से रुच् तथा रुच्यर्थक धातुओं के योग में प्रसन्न होने वाला सम्प्रदान कहलाता है, उसमें चतुर्थी होती है। जैसे - **बालकाय मोदकं रोचते।** (बालक को लड्डू अच्छा लगता है) यहाँ रुच् धातु होने के कारण 'प्रीयमाण' बालक में चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग किया गया है।

अतः विकल्प (B) सही है

88. 'उभयतः कृष्णस्य गोपाः' अशुद्ध वाक्य का शुद्ध रूप होगा-
(A) उभयतः कृष्ण गोपाः
(B) उभयतः कृष्णं गोपाः
(C) उभयतः कृष्णेन गोपाः
(D) उभयतः कृष्णाय गोपाः

व्याख्या- उभसर्वतसोः कार्या धिगुपर्यादिषु त्रिषु।
द्वितीयाम्रेडितान्तेषु ततोऽन्यत्रापि दृश्यते।। (वा.)

उभयतः, सर्वतः, धिक्, उपर्युपरि, अध्यधि, अधोऽधः-इन छः अव्यय पदों के योग में द्वितीया विभक्ति होती है।

जैसे - उभयतः कृष्णं गोपाः।

अतः विकल्प (B) सही है।

89. 'त्वं पाठं पठतु' का शुद्ध रूप है-
(A) त्वं पाठं पठानि (B) त्वं पाठं पठताम्
(C) त्वं पाठं पठन्तु (D) त्वं पाठं पठ

व्याख्या - कर्तृवाच्य के प्रयोग में कर्ता के अनुसार क्रिया के पुरुष एवं वचन होते हैं। इसलिए 'त्वं पाठं पठतु' को शुद्ध वाक्य बनाने के लिए 'त्वं' मध्यम पुरुष एकवचन कर्ता के साथ आज्ञार्थक होने के कारण लोट्लकार मध्यम पुरुष एकवचन की क्रिया लगेगी तब वाक्य होगा - **त्वं पाठ पठ।** (तुम पाठ पढ़ो।)

अतः विकल्प (D) शुद्ध है।

90. 'अहं ग्रामं गच्छसि' अशुद्ध वाक्य का शुद्ध वाक्य होगा-
(A) अहं ग्रामं गच्छति (B) अहं ग्राममं गच्छति
(C) अहं ग्रामं गच्छामि (D) अहं ग्राम गच्छामः

व्याख्या - 'अहं ग्रामं गच्छसि' कर्तृवाच्य का वाक्य है

86. (C) 87. (B) 88. (B) 89. (D) 90. (C)

किन्तु कर्ता के अनुरूप क्रिया न होने से वाक्य अशुद्ध है। अब इस वाक्य को शुद्ध करने के लिए कर्ता '**अहं**' उत्तम पुरुष एकवचन के साथ क्रिया भी उत्तम पुरुष एकवचन की होगी तब वाक्य होगा – **अहं ग्रामं गच्छामि**। (मैं गाँव जाता हूँ।)

अत: विकल्प (C) सही है।

91. संस्कृत शिक्षण की विधियों में निम्नलिखित विधियों में से कौन सी विधि सम्मिलित नहीं है-

(A) प्राचीन विधि (B) मध्यकालीन विधि

(C) नवीन विधि (D) नवीनतम विधि

व्याख्या- संस्कृत शिक्षण की विधियों में **मध्यकालीन विधि** सम्मिलित नहीं है। जबकि संस्कृत शिक्षण की **प्राचीन विधि** वैदिक काल से ही संस्कृत के अध्ययन-अध्यापन में शामिल है। इसके बाद आधुनिक प्रयोगों एवं अनुसन्धानों के बाद संस्कृत शिक्षणविधि में **नवीन विधि** एवं **नवीनतम उपागम विधि** को भी सम्मिलित किया गया है।

अत: विकल्प (B) सही है।

92. संस्कृत व्याकरण की शिक्षण (पाठन) की प्राचीन व अर्वाचीन इन दोनों विधियों में निम्न में से कौन सी विधियाँ दोनों में सम्मिलित है –

(A) सूत्र विधि अथवा कण्ठस्थीकरण विधि

(B) अन्वय-व्यतिरेक विधि

(C) सहयोग - समवाय विधि

(D) आगमन-निगमन विधि

व्याख्या – आगमनविधि – उदाहरण देकर नियम निर्धारण करना आगमन विधि है। जोसफलेण्डन कहते हैं – 'यदि छात्रों के सामने बहुत उदाहरण, तत्त्व, वस्तुयें आदि प्रस्तुत करने के बाद नियमों का बोध कराया जाय, तो आगमन विधि का अनुसरण करना कहा जाता है।'

लक्ष्य को दिखाकर लक्षण करना – आगमन है। भगवान् पतञ्जलि भी '**लक्ष्यलक्षणं व्याकरणम्**' कहकर आगमनविधि ही स्वीकार करते हैं।

निगमनविधि – जोसफलेण्डन कहते हैं कि – 'शिक्षणं निगमनविधि द्वारा प्रथमं परिभाषा नियमो वा पाठ्यते, ततः सावधानमर्थं व्याख्याय प्रयोगान् प्रदर्श्य तत्त्वानि स्पष्टीक्रियन्ते।' इति

इस विधि के द्वारा अध्यापक सर्वप्रथम नियमों को बताता है, फिर उदाहरण देकर उनका समन्वय सूत्र या नियम के अन्तर्गत करता है। आगमन निगमन पद्धति में विरोध नहीं अपितु आगमन पद्धति के लिए निगमनपद्धति पूरक हो सकती है। निगमन पद्धति को **परम्परागत पद्धति, सूत्रपद्धति** या **लक्षणपद्धति** भी कहते हैं। इस प्रकार संस्कृत व्याकरण शिक्षण पद्धति के प्राचीन एवं अर्वाचीन दोनों पद्धतियों में इनकी गणना होती है, अत: विकल्प (D) सही है।

93. संस्कृत अनुवाद शिक्षण में दुभाषिया विधि से क्या तात्पर्य है –

(A) इसमें पाठ्यपुस्तक के प्रत्येक पाठ के अन्त में अनुवाद हेतु वाक्य दिये जाते हैं।

(B) इसमें एक व्यक्ति मातृभाषा में बोलता है तथा दूसरा व्यक्ति उसका संस्कृत रूपान्तर करता जाता है।

(C) इस विधि में शिक्षक पहले आदर्श अनुवाद प्रस्तुत करता है, उसको समझकर छात्र आदर्श अनुवाद के अनुकरण पर अनुवाद करता है।

(D) इस विधि में अनुवाद को याद करना सिखाया जाता है।

व्याख्या – संस्कृत अनुवाद शिक्षण में दुभाषिया विधि उसे कहते हैं जिसमें एक व्यक्ति मातृभाषा में बोलता है तथा दूसरा व्यक्ति उसका संस्कृत में रूपान्तर करता जाता है। अत: विकल्प (B) सही है।

अनुवाद विधि – इस विधि को परम्परागत विधि अथवा अर्थबोधविधि के नाम से भी जाना जाता है। इसके अनुसार अध्यापक कोई श्लोक स्वयं पढ़कर अर्थ कहता है अथवा छात्र द्वारा श्लोक का वाचन कराते हुए स्वयं सहायक बनकर अर्थ करता है।

अनुवाद विधि के गुण

1. छात्रों का शब्दकोशीय ज्ञान बढ़ता है।
2. वाक्यरचना में दक्षता बढ़ती है।

91. (B) 92. (D) 93. (B)

3. सरलता एवं सुगमता से विषय का ज्ञान बढ़ता है।
4. छात्रों में वैचारिक शक्ति बढ़ती है।
5. कठिन शब्दों का अर्थ स्पष्ट होता है।

अनुवाद विधि के दोष

1. किसी भाषा के मूलभाव की पूर्ण रक्षा करना इस पद्धति से कठिन है।
2. छात्र निष्क्रिय रहते हैं।
3. यह विधि अमनोवैज्ञानिक है।
4. इससे भाषागत सौन्दर्य का ह्रास होता है।

94. संस्कृत पद्य शिक्षण में गीत तथा नाट्यविधि किस स्तर की कक्षाओं के लिए सर्वाधिक उपयुक्त है?
(A) प्रारम्भिक कक्षाएँ
(B) माध्यमिक कक्षाएँ
(C) उच्चतर कक्षाएँ
(D) इनमें से किसी के लिए नहीं

व्याख्या – संस्कृत पद्यशिक्षण में गीत तथा नाट्य विधि **प्राथमिक स्तर** के छात्रों के लिए सर्वाधिक उपयोगी होती है। प्राथमिक स्तर के छात्रों के लिए पाठ्यसहगामी क्रियाओं में संस्कृत शिक्षण अत्यन्त प्रभावी हो जाता है। जैसे –

* प्रात:कालीन प्रार्थना और संस्कृत श्लोकों एवं मन्त्रों का उच्चारण करना।
* संस्कृतभाषा में लघु-लघु कथायें सुनाना।
* शुद्धोच्चारण के लिए लय सहित श्लोकों का व्यक्तिगत एवं सामूहिक ज्ञान कराना।
* छोटे छोटे लघु नाटकों के माध्यम से बच्चों को शिक्षित करना। अत: विकल्प (A) सही है।

95. संस्कृत पद्य-शिक्षण में अन्वय का बहुत महत्त्व है, अन्वय से क्या तात्पर्य है?
(A) पद्य का उच्चारण करना।
(B) पद्य में प्रयुक्त श्लोकों को कर्ता, क्रिया, कर्म के अनुसार क्रम में लगाकर वाक्य बनाना।
(C) पद्य में प्रयुक्त शब्दों में व्याकरण का प्रयोग बनाना।
(D) पद्य में प्रयुक्त भाव, रस, अलंकार आदि की योजना को स्पष्ट करना।

व्याख्या – संस्कृत पद्य शिक्षण में अर्थज्ञान एवं भावज्ञान के लिए कर्ता, कर्म, क्रिया आदि पदों का एक विशेष क्रम आवश्यक होता है, इसी क्रम ज्ञान को जानने के लिए 'अन्वय' आवश्यक होता है।

इसके लिए श्लोक में विद्यमान प्रधान वाक्य खोजना चाहिए प्रधान वाक्य के अन्वेषण के लिए कर्ता, कर्म, क्रिया का ज्ञान आवश्यक है, तदनन्तर क्रियाविशेषण, अव्यय इत्यादि को लिखना चाहिए। यही संस्कृतपद्य शिक्षण में 'अन्वय' कहा जाता है। **अनु+अय: = अन्वय:** अर्थात् एक के बाद क्रम से दूसरे का आना। अत: विकल्प (B) सही है।

96. 'कादम्बरी' शब्द का अर्थ है –
(A) कदम्ब ऋषि की कन्या
(B) कदम्ब के वृक्ष की मञ्जरी
(C) मदिरा
(D) अमृत

व्याख्या – 'कादम्बरी' शब्द का अर्थ है – मदिरा। इसके समान आह्लादक एवं मादक होने के कारण इस कथा का नाम कादम्बरी रखा गया।

* कादम्बरी के उत्तरार्द्ध में भूषणभट्ट ने कहा भी है – **'कादम्बरी रसभरेण समस्त एव मत्तो न किञ्चिदपि चेतयते जनोऽयम्।'**
* कदम्बरस्य प्रिया इयं कादम्बरी, कदम्बर + अण् 'तस्येदम्' इति सूत्रेण, ततो ङीप्।
* कदम्बस्य पुष्पं कदम्बं तेषां समूह: कादम्बं तत् राति लातीति 'आतोऽनुपसर्गे क:' इति सूत्रेण 'क' प्रत्यय: =कादम्बरम्, स्त्रियाम् 'षिद्गौरादिभ्यश्च' इति सूत्रेण ङीषि तु कादम्बरी।
* कादम्बरी गन्धर्वराज की पुत्री है। उसको उद्देश्य करके रची गयी कथा 'कादम्बरी' कहलाती है। क्योंकि **'कादम्बरीमधिकृत्य कृता कथा'** इस अर्थ में कादम्बरी शब्द से **'अधिकृत्य कृते ग्रन्थे'** सूत्र से 'अण्' प्रत्यय होता है। उस अण् का 'लुबाख्यायिकाभ्यो बहुलम्' वार्तिक से लोप हो जाने पर 'लुपि युक्तवद्व्यक्तिवचने' सूत्र से प्रकृतिवत् लिङ्ग और वचन करके 'कादम्बरी' शब्द की सिद्धि होती है।

अत: विकल्प (C) सही है।

94. (A) 95. (B) 96. (C)

97. शुकनासोपदेश में शुकनास 'कादम्बरी' कथा में कौन है?

(A) राजा (B) मन्त्री

(C) युवराज (D) चाण्डालकन्या

व्याख्या – शुकनासोपदेश कादम्बरी–कथा का एक अंश है।

* कादम्बरी में उज्जयिनी के राजा के रूप में तारापीड का वर्णन हुआ है।
* राजा तारापीड के सुयोग्य मन्त्री का नाम ही शुकनास है।
* शुकनास ने ही युवराज चन्द्रापीड को राज्याभिषेक के समय उपदेश दिये थे।
* कादम्बरी–कथा में ही एक चाण्डालकन्या का भी उल्लेख हुआ है, जो राजा शूद्रक के दरबार में शुक को लेकर आती है।

अत: विकल्प (B) सही है।

98. 'शुकनासोपदेश' में शुकनास के अतिरिक्त दूसरा पात्र है –

(A) वैशम्पायन (B) चन्द्रापीड

(C) तारापीड (D) शूद्रक

(A) **वैशम्पायन –** कादम्बरी में वैशम्पायन महाश्वेता के शाप के कारण शुक हो गया जो अपने पूर्व जन्म का वृत्तान्त राजा शूद्रक को बताता है। इसकी चर्चा कादम्बरी कथामुख में आती है।

(B) **चन्द्रापीड –** 'शुकनासोपदेश' में युवराज चन्द्रापीड को राज्याभिषेक के समय शुकनास लक्ष्मी (धन)एवं राजमद के मद से बचने का उपदेश देते हैं चन्द्रापीड ही शुकनासोपदेश में शुकनास के अतिरिक्त दूसरा पात्र है। उपदेशकर्ता -शुकनास एवं श्रोता- चन्द्रापीड है।

(C) चन्द्रापीड के पिता का नाम तारापीड था।

(D) चन्द्रापीड ही तीसरे जन्म में शूद्रक था।

अत: विकल्प (B) सही है।

99. किसके गुणदोषों का वर्णन शुकनास ने किया है-

(A) राजा के (B) युवराज के

(C) लक्ष्मी के (D) प्रजा के

व्याख्या - शुकनासोपदेश में मन्त्री शुकनास ने लक्ष्मी के गुण- दोषों का वर्णन किया है।

* **आलोकयतु तावत् कल्याणाभिनिवेशी लक्ष्मीमेव प्रथमम्.**
(कल्याण के इच्छुक आप पहले लक्ष्मी को ही देखें) इस कथन से स्पष्ट होता है कि शुकनास चन्द्रापीड से सर्वप्रथम लक्ष्मी के गुण–दोषों को बतलाते हैं।
* **विश्वरूपत्वमिव ग्रहीतुमाश्रिता नारायणमूर्तिम्।**
(मानो अनेक प्रकार के रूप धारण करने के लिए विष्णु के शरीर का आश्रय लिया हो।
* **अमृतसहोदरापि कटुविपाका। पुरुषोत्तमरतापि खलजनप्रिया।**
उत्तम पुरुषों में आसक्त होने पर भी दुष्ट जनों से प्रीति करती हैं। मानो लक्ष्मी धूलिमयी भी होकर स्वच्छ को भी मलिन कर देती है।
* **वध्यशाला साधुभावस्य, राहुजिह्वा धर्मेन्दुमण्डलस्य।**
उपर्युक्त पंक्तियों से सिद्ध होता है कि शुकनास चन्द्रापीड से सर्वप्रथम लक्ष्मी के ही गुण–दोषों की सर्वप्रथम चर्चा करता है। अन्त में राजा के भी गुण- दोषों की चर्चा शुकनासोपदेश में की गयी है। विकल्प (C) सही है।

100. राजतन्त्र शासन परम्परा में उपदेश दिए जाते हैं-

(A) विवाह - संस्कार के अवसर पर

(B) राज्याभिषेक के अवसर पर

(C) विद्योपार्जन के अवसर पर

(D) वानप्रस्थ जाने के अवसर पर

व्याख्या - एवं समतिक्रामत्सु दिवसेषु राजा चन्द्रापीडस्य **यौवराज्याभिषेकं चिकीर्षुः** प्रतीहारानुपकरणसम्भारसंग्रहार्थमा दिदेश। समुपस्थितयौवराज्याभिषेकं च तं कदाचित् दर्शनार्थमागतमारूढविनयमपि विनीततरमिच्छञ्शुकनासः सविस्तरमुवाच . . .

उपर्युक्त पंक्तियों में राजा तारापीड राजकुमार चन्द्रापीड को युवराज पद पर अभिषेक करने की इच्छा हुई तो राजा तारापीड ने अभिषेक सम्बन्धी सम्पूर्ण सामग्री एकत्र करने के लिए आदेश दिया।

* अभिषेकसमय एव चैतेषां मङ्गलकलशजललैरिव प्रक्षाल्यते दाक्षिण्यम्, अग्निकार्यधूमेनेव मलिनीक्रियते हृदयम् . . .

इत्यादि पंक्तियों से सिद्ध होता है कि राजतन्त्र शासन परम्परा में उपदेश राज्याभिषेक के समय पर ही दिये जाने चाहिए।

अत: विकल्प (B) सही है।

97. (B) 98. (B) 99. (C) 100. (B)

101. 'कादम्बरी' रचना के लेखक कौन हैं-

(A) भट्टनारायण (B) भट्टोजिदीक्षित

(C) बाणभट्ट (D) दण्डी

रचनाकार - रचनाएँ - अनुमानित काल

(A) भट्टनारायण - वेणीसंहार - सातवीं आठवीं शताब्दी

(B) भट्टोजिदीक्षित–वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी– सोलहवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध

(C) बाणभट्ट - कादम्बरी - सातवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध

(D) दण्डी - दशकुमारचरितम् - छठी शताब्दी ई.

अतः विकल्प (C) सही है।

102. 'कादम्बरी' रचना साहित्य की किस विधा के अन्तर्गत आती है-

(A) चम्पूकाव्य (B) महाकाव्य

(C) कथा (D) आख्यायिका

विधा	ग्रन्थ/ग्रन्थकार	विभाजन
(A) चम्पूकाव्य	नलचम्पू / त्रिविक्रमभट्ट	7 उच्छ्वास
(B) महाकाव्य	किरातार्जुनीयम् / भारवि	18 सर्ग
(C) कथा	कादम्बरी / बाणभट्ट	दो भाग
(D) आख्यायिका	हर्षचरितम् / बाणभट्ट	8 उच्छ्वास

अतः विकल्प (C) सही है।

103. 'कादम्बरी' रचना एक सुन्दर उदाहरण है –

(A) गद्यकाव्य का

(B) पद्यकाव्य का

(C) मिश्रितकाव्य का

(D) उपर्युक्त में से किसी का नहीं

(A) गद्यकाव्य – बाणभट्टकृत 'कादम्बरी' कथा गद्यकाव्य का सुन्दर उदाहरण है। इसमें चन्द्रापीड के तीन जन्मों की कथा वर्णित है।

'कथायां सरसं वस्तु गद्यैरेव विनिर्मितम्। (सा.द.7./332)

कथा में सरसवस्तु गद्य द्वारा ही बनाई जाती है।

(B) पद्यकाव्य – पद्यकाव्य के अन्तर्गत महाकाव्य, गीतिकाव्य, खण्डकाव्य एवं मुक्तककाव्य आदि आते हैं।

(C) मिश्रितकाव्य – जिन काव्यग्रन्थों में गद्य-पद्य मिश्रित हों वे मिश्रितकाव्य (चम्पूकाव्य) कहलाते हैं – जैसे – नलचम्पू।

'गद्यपद्यमयं काव्यं चम्पूरित्यभिधीयते।'

(सा.द. 7/336)

अतः विकल्प (A) सही है।

104. बाणभट्ट की शैली की प्रमुख विशेषता है –

(A) कान्तासम्मित उपदेश की सरस शैली

(B) अलंकारप्रधान शैली

(C) दोनों का सम्मिश्रण

(D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या – काव्यप्रकाशकार मम्मट ने काव्य प्रयोजन के सम्बन्ध में उपदेश की त्रिविध शैली बताते हैं –

1. प्रभुसम्मित या शब्दप्रधान शैली – शब्दप्रधान, वेदादि, जैसे- राजाज्ञाएँ
2. सुहृत् शैली अर्थप्रधान - इतिहास-पुराण आदि
3. कान्तासम्मित रसप्रधान – काव्य (महाकाव्य, खण्डकाव्य, नाटक आदि)। मम्मट की इन शैलियों से स्पष्ट है कि काव्य कान्तासम्मित उपदेश शैली में होता है और कादम्बरी एक गद्यकाव्य है। साथ ही साथ बाणभट्ट ने अलंकारों का चमत्कार दिखाया है– विरोधाभास, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, परिसंख्या आदि।

1. उपमा – क्वचिन्मत्तेव कोकिलकुलप्रलापिनी, क्वचिदुन्मत्तेव वायुवेगकृततालशब्दा, क्वचिद् विधवेव उन्मुक्ततालपत्रा.. आदि

2. विरोधाभास – अपरिमित - बहलपत्रसञ्चयापि सप्तपर्णभूषिता

3. परिसंख्या – रतेषु केशग्रहाः, काव्येषु दृढबन्धाः, शास्त्रेषु चिन्ता ... न प्रजानामासन्।

इससे स्पष्ट होता है कि बाणभट्ट की शैली कान्तासम्मित उपदेशशैली के साथ-साथ अलंकार प्रधान शैली भी है।

अतः विकल्प (C) सही उत्तर है।

105. 'कादम्बरी' के कथानक का मूलस्त्रोत है –

(A) महाभारत

(B) रामायण

(C) उत्पाद्य (कवि-कल्पित)

(D) गुणाढ्य की बृहत्कथा

101. (C) 102. (C) 103. (B) 104. (C) 105. (D)

ग्रन्थनाम	कवि	मूलस्रोत/उपजीव्य
किरातार्जुनीयम्	भारवि	महाभारत, वनपर्व
उत्तररामचरितम्	भवभूति	रामायण, उत्तरकाण्ड
ऋतुसंहारम्	कालिदास	उत्पाद्य (कविकल्पित)
कादम्बरी	बाणभट्ट	**गुणाढ्य की बृहत्कथा** (सुमनस् वृत्तान्त)

अत: विकल्प (D) सही है।

106. शिवराजविजयम् साहित्य की किस विधा के अन्तर्गत आता है –
(A) कथा (B) आख्यायिका
(C) ऐतिहासिक उपन्यास (D) निबन्धसंग्रह

विधा	ग्रन्थ	ग्रन्थकार
(A) कथा	(i) कादम्बरी	बाणभट्ट
	(ii) वासवदत्ता	सुबन्धु
	(iii) दशकुमारचरितम्	दण्डी
(B) आख्यायिका	हर्षचरितम्	बाणभट्ट
(C) ऐतिहासिक उपन्यास	शिवराजविजयम्	अम्बिकादत्तव्यास
(D) निबन्ध संग्रह	निबन्ध शतकम्	कपिलदेव द्विवदी

अत: विकल्प (C) सही है।

107. शिवराजविजयम् के रचनाकार हैं –
(A) बाणभट्ट (B) दण्डी
(C) पण्डिता क्षमाराव (D) अम्बिकादत्त व्यास

ग्रन्थकार ग्रन्थ

(A) **बाणभट्ट -** कादम्बरी, हर्षचरितम्, मुकुटताडितम्, चण्डीशतकम्, पार्वतीपरिणय

(B) **दण्डी-** दशकुमारचरितम् , अवन्तिसुन्दरीकथा

(C) **पण्डिता क्षमाराव -** कथापञ्चकम् , ग्रामज्योति: , कथामुक्तावलि:

(D) **अम्बिकादत्तव्यास -** शिवराजविजयम् , सामवतम् आदि
अत: विकल्प (D) सही है।

108. शिवराजविजयम् रचना के नायक हैं –
(A) महाराष्ट्र केसरी शिवाजी
(B) शिवजी
(C) अवरङ्गजीव (औरंगजेब)
(D) अफजलखान

व्याख्या – अम्बिकादत्तव्यास के ऐतिहासिक उपन्यास 'शिवराजविजयम्' के नायक महाराष्ट्र केशरी शिवाजी हैं क्योंकि साहित्यदर्पणकार विश्वनाथ ने नायक के जो लक्षण बतलाये हैं, वे शिवाजी पर पूर्णत: घटित होता है –
त्यागी कृती कुलीन: सुश्रीको रूपयौवनोत्साही।
दक्षोऽनुरक्तलोकस्तेजोवैदग्ध्यशीलवान्नेता।। (सा०द०3/30)
शिवाजी के दश वर्षों का वर्णन ही शिवराजविजयम् में किया गया है।

1. शिवजी – रुद्र के ग्यारह रूप बतलाये गये हैं, जिनमें एक शिवजी भी हैं, जो निम्नवत् है –
महादेव:, शिव:, रुद्र:, शङ्कर:, नीललोहित:, ईशान:, विजय:, भीम:, देवदेव:, भवोद्भव:, आदित्य:।

2. औरंगजेब – शिवराजविजयम् की कथा के अनुसार 'आलमगीर' उपाधिधारी औरंगजेब अकबर का प्रपौत्र था, और उस समय दिल्ली के सम्राट् पद को कलङ्कित कर रहा था।

3. अफजलखान – बीजापुर के नवाब शाइस्ता खाँ ने अफजल खाँ को शिवाजी को जीतने के लिए भेजा है। यह (अफजल खाँ) प्रतिज्ञा करके आया था कि मैं शिवाजी को जीवित पकड़ लूँगा, किन्तु अन्त में वह वीर शिवाजी के द्वारा मारा जाता है।

अत: विकल्प (A) सही है।

109. शिवराजविजयम् में प्रयुक्त 'ताम्रचूडभक्षणपातकेन' का अर्थ है –
(A) ताँम्बे का चूड़ा चबाना रूपी पाप से
(B) मुर्गा खाने के पाप से
(C) लाल चूड़ी तोड़ना रूपी पाप से
(D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या – ग्रन्थकार ने प्रथम विराम के चार नि:श्वासों में से प्रथम नि:श्वास के अन्तिम वाले भाग में कहा है –
सतत-ताम्रचूडभक्षण-पातकेनेव ...
(मानो निरन्तर मुर्गा खाने के पातक (पाप) से ...)
'शिवराजविजयम्' के कुछ प्रमुख शब्दार्थ –

106. (C) 107. (D) 108. (C) 109. (B)

* पतत्रि — पक्षी
* मरीचिमाली — सूर्य
* रोलम्ब — भ्रमर
* पतङ्ग — सूर्य
* अलि — भ्रमर
* शाखी — वृक्ष

अत: विकल्प: (B) सही है।

110. शिवराजविजयम् में विप्रकन्या का अपहरण किया था –
(A) द्रविणों ने
(B) एक यवन बालक ने
(C) जंगली जाति के लोगों ने
(D) आर्यों ने

व्याख्या – सन्ध्या का समय है। योगिराज, ब्रह्मचारी गुरु की कुटिया पर पधारे हैं। योगिराज से जैसे ही ब्रह्मचारी गुरु ने कुछ कुशलक्षेम पूछने की इच्छा की, तभी बालिका का करुण विलाप सुनाई पड़ा। योगिराज के पूछने पर ब्रह्मचारी गुरु ने कहा कि कल कोई मुसलमान इस कन्या को सुन्दरी समझकर नदी के तट से माता के हाथ से छीनकर रोती हुई बालिका को लेकर भाग गया था।

एनां च सुन्दरीमाकलय्य कोऽपि यवनतनयो नदीतटान्मातुर्हस्तादाच्छिद्य क्रन्दतीं नीत्वाऽपससार।

इस पंक्ति से स्पष्ट होता है कि विप्रकन्या का अपहरण एक यवन बालक ने किया था।

अत: विकल्प (B) सही उत्तर है।

111. विप्र कन्या की उपमा दी गयी है–
(A) लक्ष्मी देवी से (B) पार्वती देवी से
(C) सरस्वती देवी से (D) दुर्गा देवी से

व्याख्या – यां च सप्तवर्षकल्पाम्, यावनत्रासेन नि:शब्दं रुदतीम्, परमसुन्दरीम्, कलितमानवदेहामिव सरस्वतीं सान्त्वयन् मरन्दमधुरा: अप: पाययन् ...

(लगभग सात वर्ष की कन्या यवनों के भय से शब्दरहित रोती हुई, अत्यन्त सुन्दरी, मानव-शरीर धारण किये हुए सरस्वती जैसी ...)

शिवराजविजयम् की इन पंक्तियों से समझा जा सकता है कि विप्र कन्या की उपमा लक्ष्मी, पार्वती, दुर्गा से नहीं बल्कि सरस्वती से दी गयी है।

अत: चारों विकल्पों में से विकल्प (C) सही है।

112. ब्रह्मचारी बालकों ने पहाड़ से उतरकर आने वाले योगी से प्रार्थना की –
(A) विद्याध्ययन कराने की
(B) अपने आश्रम में आने की
(C) उपदेश देने की
(D) राजनीति सिखाने की

व्याख्या – शिवराजविजय में योगिराज के द्वारा पर्वत कन्दरा से नीचे उतरने पर ब्रह्मचारी बालकों (गौर सिंह, श्याम सिंह) ने अपने आश्रम में आने की प्रार्थना की जो कि शिवराजविजय के इस कथन से स्पष्ट होता है –

'इत आगम्यतां सनाथ्यतामेष आश्रम:'
इति सप्रणाममभिगम्य वदत्सु निखिलेषु ...।

अत: विकल्प (B) सही है।

113. महमूद निवासी था –
(A) बुखारा का (B) यरूशलम् का
(C) ताशकन्द का (D) गजिनी का

व्याख्या – 'शिवराजविजयम्' में भारत की दशा का वर्णन करते हुए ब्रह्मचारी गुरु योगिराज से बतलाते हैं कि –

कश्चन गजिनी - स्थाननिवासी महामदो यवन: ससेन: प्राविशद् भारते वर्षे।

उपर्युक्त पंक्तियों से स्पष्ट है कि महमूद गजिनी देश का निवासी है, अत: विकल्प (D) सही उत्तर होगा।

114. महमूद ने भारत पर आक्रमण किया –
(A) भारत की धन सम्पत्ति लूटने के लिए
(B) इस्लाम के प्रचार के लिए
(C) अपने साम्राज्य के विस्तार के लिए
(D) उपर्युक्त तीनों के लिए

* कश्चन गजिनी – स्थाननिवासी महामदो यवन: ससेन: प्राविशद् भारते वर्षे। स च प्रजा: विलुण्ठ्य मन्दिराणि निपात्य, प्रतिमा: विभिद्य ... स्वदेशमनैषीत्।
* एवं स ज्ञातास्वाद: पौन:पुन्येन द्वादशवारमागत्य भारतमलुलुण्ठत्। तस्मिन्नेव च स्वसंरम्भे एकदा गुर्जरदेशचूडायितं सोमनाथतीर्थमपि धूलीचकार।
* नाहं मूर्ती: विक्रीणामि, किन्तु भिनद्मि' इति।
* स मूर्तिखण्डानि च क्रमेलकपृष्ठेष्वारोप्य सिन्धुनदमुत्तीर्य स्वकीयां विजयध्वजिनीं गजिनीं नाम राजधानीं प्राविशत्।

शिवराजविजयम् की इन पंक्तियों से स्पष्ट है कि

110. (B) 111. (C) 112. (B) 113. (D) 114. (A)

महमूद का भारत पर आक्रमण करने का एकमात्र कारण धनसम्पत्ति लूटना था, न कि अन्य कार्य।

अत: ग्रन्थ के अनुसार विकल्प (A) सही होगा।

115. पवित्र भारत के पराधीन होने का कारण था –
(A) पृथ्वीराज चौहान और जयचन्द की आपसी फूट
(B) पृथ्वीराज चौहान का कमजोर होना
(C) जयचन्द द्वारा पृथ्वीराज चौहान को नीचा दिखाने की भावना
(D) यवनों का आक्रामक रुख अपना लेना

* ततो दिल्लीश्वरं पृथ्वीराजं कान्यकुब्जेश्वरं जयचन्द्रं च पारस्परिकविरोधज्वरग्रस्तं विस्मृत-राजनीतिं भारतवर्षदुर्भाग्यायमाणमाकलय्यानायासेनोभावपि विशस्य, वाराणसीपर्यन्तमखण्डमण्डलमकण्ट-कमकीटकिट्टं महारत्नमिव महाराज्यमङ्गीचकार।

* शिवराजविजय के इस कथन में निहित है कि भारत के पराधीन होने का प्रमुख कारण पृथ्वीराज चौहान और जयचन्द्र की आपसी फूट का होना था।

अत: उत्तर विकल्प (A) होगा।

116. पं. अम्बिकादत्तव्यास की अन्य रचनाओं में शामिल है –
(A) बिहारी-बिहार
(B) सामवत (नाटक)
(C) शिव-विवाह
(D) भारत-भारती

व्याख्या – अम्बिकादत्तव्यास जी ने संस्कृत भाषा में 27 ग्रन्थ लिखे हैं। जिनमें संस्कृत में रचित कुछ रचनाएँ प्रमुख हैं –

1. शिवराजविजयम् (ऐतिहासिक-उपन्यास)
2. सामवतनाटकम्
3. गुप्ताशुद्धिप्रदर्शनम्
4. रत्नपुराणम्
5. गणेशशतकम्

* बिहारी-बिहार – यह भी अम्बिकादत्तव्यास की ही रचना है, किन्तु बिहारी के दोहों पर हिन्दी में लिखित है।

* भारत-भारती – यह हिन्दी-साहित्य के कवि मैथिलीशरण गुप्त की रचना है।
यद्यपि उक्त चारों विकल्पों में बिहारी-बिहार और सामवतम् दोनों अम्बिकादत्त व्यास की ही रचना है, किन्तु संस्कृत में सामवतम् (नाटक)है।

अत: विकल्प (B) सही उत्तर होगा।

117. किरातार्जुनीयम् के रचनाकार हैं –
(A) भारवि (B) भवभूति
(C) कालिदास (D) श्रीहर्ष

ग्रन्थकार	ग्रन्थ	शैली
(A) भारवि	किरातार्जुनीयम्	पाण्डित्य प्रधान अलङ्कृत शैली के जन्मदाता
(B) भवभूति	उत्तररामचरितम्	वैदर्भी-उत्तररामचरितम्/ भवभूति गौड़ी रीति के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं।
(C) कालिदास	(i) रघुवंशम् (ii) कुमारसम्भवम्	वैदर्भीरीतिसन्दर्भे कालिदासो विशिष्यते।
(D) श्रीहर्ष	नैषधीयचरितम्	

अत: विकल्प (A) सही है।

118. 'किरातार्जुनीयम्' शीर्षक में प्रयुक्त 'किरात' शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है –
(A) चाण्डाल जाति के लिए
(B) किरात नामक पात्र के लिए
(C) शिव जो किरात वेषधारी हैं
(D) अर्जुन जो किरात वेषधारी हैं।

व्याख्या – 'किरातार्जुनीयम्' शीर्षक में प्रयुक्त 'किरात' शब्द भगवान् शिव के लिए प्रयुक्त हुआ है। नायक अर्जुन किरातवेषधारी भगवान् शिव से अमोघ 'पाशुपत अस्त्र' प्राप्त करता है, जो महाकाव्य का फल भी है।

* किरातश्च अर्जुनश्च इति किरातार्जुनौ (द्वन्द्व समास)

* किरातार्जुन + छ "शिशुक्रन्दयमसभ द्वन्द्वेन्द्रजननादिभ्यश्छः" सूत्र से 'छ' प्रत्यय

* 'आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम्' सूत्र से 'छ' को 'ईय' आदेश होकर किरातार्जुनीय बना। ग्रन्थवाची शब्द होने के कारण नपुंसकलिङ्ग होकर 'किरातार्जुनीयम्' शब्द बना।

* मल्लिनाथ ने 'किरातार्जुनीयम्' की 'घण्टापथ' नामक टीका की है।

* इसका कथानक महाभारत के वनपर्व से लिया गया है।

* कुल 18 सर्ग हैं। 18वें सर्ग में अर्जुन को पाशुपत

115. (A) 116. (B) 117. (A) 118. (C)

अस्त्र की प्राप्ति होती है।

* भारवि दाक्षिणात्य थे। इनका समय छठीं शताब्दी उत्तरार्द्ध या सातवीं शदी का पूर्वार्ध माना जाता है।
* 'स्फुटता न पदैरपाकृता न च न स्वीकृतमर्थगौरवम्' – किरातार्जुनीयम् (2/27)

अत: विकल्प (C) सही है।

119. 'किरातार्जुनीयम्' के प्रथम सर्ग के आधार पर पाण्डव कहाँ निवास कर रहे थे।
(A) खाण्डववन में (B) अद्वैतवन में
(C) वृन्दावन में (D) द्वैतवन में

व्याख्या – भारवि विरचित 'किरातार्जुनीयम्' के प्रथमसर्ग के आधार पर पाण्डव द्वैतवन में निवास कर रहे थे –

श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीं
प्रजासु वृत्तिं यमयुङ्क्तवेदितुम्।
स वर्णिलिङ्गी विदितः समाययौ
युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचरः।। 1/1

अत: विकल्प (D) सही है।

120. 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः' का अर्थ है –
(A) हितकारी वचन दुर्लभ होता है।
(B) मनोहारि वचन दुर्लभ होता है
(C) हितकारी और प्रियवचन दुर्लभ होता है
(D) दुर्लभ वचन ही हितकारी होता है।

व्याख्या – महाकवि भारवि वनेचर से युधिष्ठिर को लक्षित करके कहलवाते हैं कि –

क्रियासु युक्तैर्नृपचारचक्षुषो
न वञ्चनीयाः प्रभवोऽनुजीविभिः।
अतोऽर्हसि क्षन्तुमसाधुसाधु वा
हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः।।(कि. 1/4)

हे राजन्! करणीय कार्यों में स्वामी द्वारा नियुक्त किये गये सेवकों को चाहिए कि वे गुप्तचररूपी नेत्रों वाले प्रभुओं को धोखा न दें। अतएव मेरे अप्रिय अथवा प्रिय कथन को आप सहन करें क्योंकि 'हितकारिणी के साथ ही साथ मनोहारिणी वाणी भी दुर्लभ होती है।'

अत: विकल्प (C) सही है।

121. ब्रह्मचारी विप्र का वेषधारण करने वाला गुप्तचर था –
(A) यक्ष (B) वनेचर
(C) ब्राह्मण (D) वैश्य

व्याख्या – यक्ष – यक्ष कालिदास कृत 'मेघदूतम्' नामक खण्डकाव्य का नायक है।

(B) **वनेचर –** 'किरातार्जुनीयम्' में भारवि ने उस वर्णी या ब्रह्मचारी के लिङ्ग अर्थात् चिह्न (वेशभूषा) से युक्त व्यक्ति को वर्णिलिङ्गी कहा है। यह वनेचर के लिए प्रयुक्त हुआ है, जो युधिष्ठिर के गुप्तचर के रूप में ब्रह्मचारी के वेष में हस्तिनापुर जाता है।

'स वर्णिलिङ्गी विदितः समाययौ
युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचरः।। (कि. 1/1)

(C) ब्राह्मण – संस्कृत रूपकों में विदूषक पात्र ब्राह्मण होता है।

(D) वैश्य – प्रकरण का नायक ब्राह्मण, मन्त्री अथवा वैश्य होता है।

अत: विकल्प (B) सही है।

122. 'वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः' के अनुसार खलजनों के सम्पर्क की अपेक्षा श्रेष्ठ होता है –
(A) साधुजनों का साथ
(B) साधुजनों का विरोध
(C) दुष्टजनों का साथ
(D) मूर्ख लोगों का विरोध

व्याख्या – किरातार्जुनीयम् में वनेचर युधिष्ठिर को बताता है कि कुटिल प्रवृत्तिवाला दुर्योधन आपको जीत लेने की लालसावश अपनी गुण सम्पत्ति से कीर्ति का विस्तार कर रहा है, क्योंकि ऐश्वर्य का अभ्युत्थान करने वाला, महापुरुषों के साथ किया गया विरोधभाव भी दुष्टों के संसर्ग की अपेक्षा अच्छा है।'

अत: विकल्प (B) सही है।

123. राजाओं का स्वभाव होता है –
(A) दुर्विज्ञेय (B) विज्ञेय
(C) अप्रत्यक्ष (D) प्रत्यक्ष

व्याख्या – वनेचर के लिए दुर्योधन की दुरुह नीतियों को समझना कोई सामान्य बात नहीं है, फिर भी इस दुष्कर कार्य को पूरा करने वाला अहङ्कारहीन वह वनेचर विनम्रतापूर्वक इस शत्रु राजनीति को जानने का श्रेय युधिष्ठिर को देता है।

'निसर्गदुर्बोधमबोधविक्लवाः
क्व भूपतीनां चरितं क्व जन्तवः।
तवानुभावोऽयमवेदि यन्मया
निगूढतत्त्वं नयवर्त्म विद्विषाम्।।(कि. 1/6)

119. (D) 120. (C) 121. (B) 122. (B) 123. (A)

कहाँ स्वाभाविक रूप से बहुत कठिनाई पूर्वक समझ में आने वाला राजाओं का चरित्र और अज्ञान से विकल मुझ जैसे प्राणी कहाँ? फिर भी जो मेरे द्वारा गुप्त रहस्यों वाला नीतिमार्ग जान लिया गया वह निश्चित रूप से आपका प्रभाव ही है। अत: ''**निसर्गदुर्बोधं.... भूपतीनां चरितम्** '' से स्पष्ट है कि राजाओं का स्वभाव ही दुर्विज्ञेय होता है।

विकल्प (A) सही है।

124. 'प्रविश्य कृष्णासदनं महीभुजा' में कृष्णा का तात्पर्य है –

(A) कृष्ण से (B) द्रौपदी से

(C) कुन्ती से (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या – वार्ता का निवेदन करने के उपरान्त पारितोषिक लेकर वनेचर के चले जाने पर राजा युधिष्ठिर द्वारा द्रौपदी भवन में प्रवेश करके भाइयों के समीप यह वृत्तान्त वर्णित किया गया–

इतीरयित्वा गिरमात्तसत्क्रिये
गतेऽथ पत्यौ वनसन्निवासिनाम्।
प्रविश्य कृष्णासदनं महीभुजा
तदाचचक्षेऽनुजसन्निधौ वचः।। (कि. 1/26)

यहाँ कृष्णासदनम् = द्रौपदी के भवन में, महीभुजा = युधिष्ठिर के द्वारा, प्रविश्य = प्रवेश करके

अत: विकल्प (B) सही है।

125. 'भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः' पंक्ति का भावसाम्य निम्नलिखित में से किसके साथ बैठता है?

(A) जैसी करनी, वैसी भरनी

(B) जैसे के संग तैसा

(C) जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरत देखी तिन तैसी

(D) इनमें से किसी के साथ नहीं

व्याख्या – द्रौपदी युधिष्ठिर को शत्रुओं के प्रति उत्तेजित करते हुए कहती हैं कि –

मूढबुद्धि वाले वे लोग पराभव प्राप्त करते हैं, जो मायावियों के विषय में स्वयं मायावी नहीं होते।

व्रजन्ति वे मूढधियः पराभवं
भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः।। (कि. 1/30)

स्पष्ट है कि इन पंक्तियों का भावसाम्य ''जैसे के संग तैसा'' से मिलता है, अत: विकल्प (B) सही है।

124. (B) 125. (B)

डिजिटल भारत में डिजिटल संस्कृत

प्रिय संस्कृत मित्रों,

आज पूरी दुनिया में डिजिटलीकरण का दौर चल रहा है, जिसमें भारत भी बढ़-चढ़ कर भूमिका निभा रहा है, मा०प्रधानमन्त्री जी का सपना है कि भारत पूर्णत: डिजिटल भारत हो उसी प्रकार संस्कृतगङ्गा का सपना है कि संस्कृत भी डिजिटलीकरण में पीछे न रहे तो आइये हम सब मिलकर संस्कृत को डिजिटलसंस्कृत बनाने का सङ्कल्प लें-

हमारे डिजिटल उपक्रम-

Sanskritganga online classes
"संस्कृतस्य प्रसाराय"

संस्कृतगङ्गा Online Classes

- ↳ TGT, PGT, UGC संस्कृत की कक्षायें घर बैठे करें।
- ↳ संस्कृत प्रतियोगी परीक्षा सम्बन्धी समाधान (समय निर्धारित)
- ↳ सम्पर्क करें - 7800138404

www.sanskritganga.org

- ↳ यहाँ आप TGT, PGT, UGC आदि कक्षाओं में प्रवेश हेतु ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं।
- ↳ हमारे संस्कृतगंगा प्रकाशन की समस्त पुस्तकें आर्डर कर सकते हैं।
- ↳ संस्कृतगङ्गा के विषय में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

Sanskrit Ganga Channel

YouTube

- ↳ हमारे YouTube चैनल को **Subscribe** करें ताकि आपको मिल सके संस्कृत के विशेष ऑडियो, वीडियो
- ↳ TGT, PGT, UGC संस्कृत से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण वीडियो
- ↳ महत्त्वपूर्ण सूक्तियों की व्याख्या
- ↳ अन्य शैक्षिक प्रेरणात्मक ऑडियो, वीडियो आदि।

वस्तुनिष्ठ संस्कृत-साहित्यम्

TGT, PGT, UGC-NET/JRF, C-TET, UP-TET,
DSSSB, GIC & Degree College Lecturer
M.A, B.Ed & Ph.D Entrance Exam
आदि सभी प्रतियोगी परीक्षाओं में उपयोगी पुस्तक

लेखक
सर्वज्ञभूषण
सचिव
संस्कृतगङ्गा, दारागञ्ज प्रयागराज

सम्पादक
अम्बिकेश प्रतापसिंह
उपसचिव
संस्कृतगङ्गा, दारागञ्ज
प्रयागराज

संस्कृतगङ्गा वस्तुनिष्ठ-संस्कृत-साहित्यम् | कोड – 02

ISBN : 978-93-5254-610-7

* **प्रकाशक**

संस्कृतगङ्गा दारागञ्ज, प्रयाग

मो. नं. – 7800138404, 9839852033

* प्रथम संस्करण – अगस्त - 2013

द्वितीय संस्करण – जनवरी - 2014

तृतीय संस्करण – नवम्बर - 2014

चतुर्थ संस्करण – जनवरी - 2015

पञ्चम संस्करण – जनवरी - 2016

षष्ठ संस्करण – अगस्त - 2017

* सप्तम संशोधित संस्करण जनवरी - 2019

* **मूल्य – ` 230/-** (दो सौ तीस रु० मात्र)

* **मुख्यवितरक**

राजू पुस्तक केन्द्र

अल्लापुर, प्रयागराज (उत्तर प्रदेश)

मो० 9453460552

* **प्रकाशनाधिकारिणी संस्था**

संस्कृतगङ्गा शिक्षा समिति (पञ्जीकृत)

59, मोरी, दारागञ्ज, प्रयागराज

(कोतवाली दारागञ्ज के आगे, गङ्गाकिनारे,

संकटमोचन छोटे हनुमान मन्दिर के पास)

कार्यालय - 7800138404, 9839852033

email-Sanskritganga@gmail.com

बेवसाइट - www.Sanskritganga.org

* पृष्ठविन्यास - **कृष्णा कम्प्यूटर संस्थान**, दारागंज

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

1. राजू पुस्तक भण्डार, अल्लापुर, प्रयागराज
   सम्पर्क सूत्र : 0532-2503638, 9453460552
2. संस्कृतगङ्गा, दारागञ्ज, प्रयागराज - 7800138404
3. गौरव बुक एजेन्सी, कैण्ट, वाराणसी
4. विजय मैग्जीन सेन्टर, बलरामपुर
5. जायसवाल बुक सेन्टर, हरदोई
6. शिवशंकर बुक स्टाल, जौनपुर
7. न्यू पूर्वांचल बुक स्टाल, जौनपुर
8. कृष्णा बुक डिपो बस्ती
9. मौर्या बुक डिपो, पाण्डेयपुर, वाराणसी
10. मनीष बुक स्टोर, गोरखपुर
11. द्विवेदी ब्रदर्स, गोरखपुर
12. विद्यार्थी पुस्तक मन्दिर, गोरखपुर
13. रंजन मिश्रा, गोरखपुर (बस स्टैण्ड)
14. आशीर्वाद बुक डिपो, अमीनाबाद, लखनऊ
15. मालवीय पुस्तक केन्द्र, अमीनाबाद, लखनऊ
16. मॉडर्न मैग्जीन बुक शॉप, कपूरशाला, लखनऊ
17. साहू बुक स्टॉल, अलीगंज, लखनऊ
18. भूमि मार्केटिंग, लखनऊ
19. दुर्गा स्टोर, राजा की मण्डी, आगरा
20. महामाया पुस्तक केन्द्र, बिलासपुर
21. डायमण्ड बुक स्टाल, ज्वालापुर, हरिद्वार
22. कम्पटीशन बुक हाउस, सब्जी मण्डी रोड, बरेली
23. अजय गुप्ता बुक स्टोर, लखीमपुर
24. शिवशंकर बुक स्टाल, रीवा
25. कृष्णा बुक एजेन्सी, वाराणसी
26. गर्ग बुक डिपो, जयपुर
27. अग्रवाल बुक सेन्टर, मुखर्जी नगर, नयी दिल्ली
28. चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी (सभी बुक स्टालों पर)
29. विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक वाराणसी
30. मोतीलाल बनारसी दास, वाराणसी
31. केशवी बुक डिस्ट्रीब्यूटर्स, नयी दिल्ली
32. महावीर बुक स्टाल, खजूरी बाजार, इन्दौर
33. हिन्दी बुक डिपो, मुरादाबाद
34. माँ बुक स्टेशनर्स, शहडोल छत्तीसगढ़

सादरं समर्पणम्

संस्कृतदिवस के शुभावसर पर

संस्कृतगङ्गा

का यह ज्ञानपुष्प समर्पित है–

- *अपने **'गुरूजी'** को, जो*
- *नाथू भैया के **'मास्टर कक्कू'** हैं*
- *द्रोणी एवं विश्वास के **'बब्बा जी'** हैं*
- *'गहनौआ' वासियों के **'शास्त्री जी'** हैं*
- *सरकारी अभिलेखों में **'गोपालप्रसाद त्रिपाठी'** हैं*
- *पैतृकवंशपरम्परा में **'अनन्त'** हैं*
- *संस्कृतजगत् की वह **महान् विभूति** हैं जिन्होंने गुमनामी के अँधेरों में गायब रहकर भी सैकड़ों प्रतिभाओं को प्रकाशित किया।*

–सर्वज्ञभूषण

संस्कृतगङ्गा उवाच

प्रिय संस्कृतबन्धो!

नमः संस्कृताय। संस्कृतगङ्गायां भवतां सर्वेषां हार्दं स्वागतम्।

संस्कृतगङ्गा का यह द्वितीय ज्ञानपुष्प आपके हाथों में संस्कृतदिवस के दिन आ रहा है– इससे अच्छा शुभ अवसर और भला क्या हो सकता है। मेरा मानना है कि संस्कृत का भविष्य तो संस्कृत की युवापीढ़ी है, और इनको प्रामाणिक अध्ययन-सामग्री उपलब्ध कराना हमारी नैतिक जिम्मेवारी है। यह पुस्तक **''प्रशिक्षित-स्नातक-शिक्षक'' (TGT)** के पाठ्यक्रम को ध्यान में रखकर लिखी गयी है, इसके द्वितीयसंस्करण में संस्कृतसाहित्य से सम्बद्ध **PGT** और **UGC** के पाठ्यक्रमों को भी सम्मिलित करने की योजना है। मेरा सोचना है कि संस्कृत-सेवा का इससे बड़ा अवसर और क्या होगा कि आप संस्कृतवालों की सेवा करें, संस्कृतप्रेमियों को कुछ ज्ञान का उपहार दे सकें, और इस **संस्कृत दिवस-2013** के शुभ अवसर पर संस्कृतजगत् को मेरा यह ज्ञानोपहार सादर समर्पित है।

मुझे लगता है कि 21वीं शताब्दी में प्रत्येक भारतीय को अब कुछ इस तरह से सोचना पड़ेगा–

- संस्कृत मेरी मजबूरी नहीं बल्कि मेरे लिए जरूरी है।
- संस्कृत ही मेरी पहचान है, और संस्कृत की पहचान मैं हूँ।
- संस्कृत ही मेरा जीवन, मेरी श्वास, मेरी सोच, मेरा विचार और मेरा सर्वस्व है।
- मैं संस्कृत से अलग नही, और संस्कृत भी मुझसे कभी अलग नहीं।
- संस्कृत में ही संस्कृति, समाज और संस्कार है, और इन सभी में मैं हूँ।
- संस्कृत ही मेरे देश की धड़कन है, पहचान है, स्वाभिमान और सम्मान है।
- संस्कृत को मैं प्यार करता हूँ, और संस्कृत भी मुझे प्यार करती है।

इसी सोच के साथ ''संस्कृतगङ्गा'' नाम से एक संस्था उत्तरप्रदेश सरकार द्वारा पञ्जीकृत करायी गयी है, जिसका संस्कृत और संस्कृति के क्षेत्र में कुछ नया करने का सङ्कल्प है, **'संस्कृतगङ्गा' का प्रधान कार्यालय दारागञ्ज, सङ्गमक्षेत्र, प्रयाग** में है, जहाँ पूरे वर्ष संस्कृत का अध्ययन-अध्यापन होता है, विशेषकर प्रतियोगी परीक्षाओं से जुड़े संस्कृत छात्रों के लिए। ध्यान रहे यह संस्था कोई कोचिंग संस्थान नहीं अपितु संस्कृत, संस्कृति एवं समाज के संवर्धन और पोषण के लिए है, न कि व्यक्तिगत स्वार्थों की पूर्ति के लिए। इस संस्था के विशिष्ट उद्देश्यों की जानकारी हेतु पीछे कवरपृष्ठ को देखा जा सकता है।

संस्कृतगङ्गा प्रयाग में उन सभी युवविद्वानों, संस्कृतप्रेमियों, संस्कृतच्छात्रों एवं संस्कृतकलाकारों का स्वागत है, जो संस्कृत को ही अपने जीवन का चरमलक्ष्य बनाकर काम करना चाहते हैं। अन्ततः सम्पूर्ण संस्कृतजगत् से एक और विनम्र निवेदन है कि आप अपने जीवन में एक बार **''संस्कृतभारती''** से अवश्य जुड़े और उसके द्वारा सञ्चालित कार्यक्रमों में प्रतिभाग करें।

इस पाठ्यसामग्री को तैयार करने में संस्कृतगङ्गा के कई भगीरथों ने भगीरथ प्रयत्न किये हैं, जिनमें से **स्वयंप्रकाश, करुणाशङ्कर** एवं **सुधीर तिवारी** आदि मुख्य हैं। जिनसे इस पुस्तक को लिखने की प्रेरणा मिली उनमें से अग्रज **डॉ. कृष्णकुमार त्रिपाठी, उपेन्द्र त्रिपाठी (रीवा म.प्र.)** जी.आई.सी. बरगढ के प्रधानाचार्य **श्री कपूरचन्द्र शुक्ल**, **विश्वदीपक 'विश्वास'** (नई दिल्ली) सदैव स्मरणीय रहेंगे। टङ्कण कार्य हेतु **जङ्गबहादुर** जी (अल्लापुर, इला.) तथा पुस्तक के शीघ्र प्रकाशन हेतु **राजू पुस्तकभण्डार, अल्लापुर** के स्वामी **राजकुमार गुप्ता (राजू)** जी को बहुत-बहुत धन्यवाद। इस पुस्तक के लेखन में सम्पूर्ण सावधानी बरती गयी है, फिर भी मानवगत कुछ मुद्रणदोष या तथ्यात्मक अशुद्धियाँ हो सकती हैं, जिन्हें क्षमा करते हुए आप अपने सुझाव हमें अवश्य दें।

संस्कृत स्वाध्यायियों के प्रेरणा स्रोत एवं संस्कृत जगत् के लिए एक आदर्शव्यक्तित्व हमारे गुरुवर, मार्गदर्शक एवं शुभचिन्तक **प्रो. ललितकुमार त्रिपाठी (गङ्गानाथ झा परिसर, इला.)** के ललित चरणारविन्दों में मेरा सादर प्रणाम जिनकी प्रेरणा से ही **''संस्कृतकार्यं साधयेयं देहं वा पातयेयम्''** जैसी शिवाजी की शुभ-प्रतिज्ञा हजारों संस्कृतज्ञों के हृदय में अवतरित हुई।

अन्त में अगाधस्नेहवारिधि, **पितामह श्रीगजाननप्रसाद मिश्र** तथा **पिताश्री यादवेन्द्रप्रसाद मिश्र** के श्रीचरणों में सादर प्रणाम करता हूँ, जिन्होंने मुझे केवल संस्कृत ही नहीं, अपितु संस्कृतमय जीवन जीने की कला सिखायी।

॥इति शम्॥

दिनाङ्क –21 अगस्त 2013, संस्कृतदिवस — **सर्वज्ञभूषणः**

दारागञ्ज, प्रयाग — (प्रवक्ता, संस्कृतम्)

ग्राम - शिवपुर (डोडिया), पो. बरगढ़, जिला - चित्रकूट (उ.प्र.) मो. 9839852033, E-mail : **sanskritganga@gmail.com**

षष्ठसंस्करणे संस्कृतगङ्गा उवाच

प्रिय-संस्कृतमित्राणि!

नमः संस्कृताय

आज संस्कृतगङ्गा का यह संस्कृतसाहित्यम् रूपी ज्ञानपुष्प आपके हाथों में समर्पित करते हुए अत्यन्त प्रसन्न हूँ। मित्रो! 21वीं सदी ज्ञानशताब्दी के रूप में देखी जा रही है, अतः वही अग्रगण्य होगा जिसके पास ज्ञान की ताकत होगी, इसमें कोई सन्देह नहीं है कि ज्ञान का अक्षय भण्डार संस्कृत में है और ऐसी संस्कृतज्ञानगङ्गा के नाविक हम संस्कृतज्ञ हैं। यदि ज्ञान का अमूल्य प्रसाद विश्व को चाहिए तो उसके वितरक हम भारतवासी संस्कृतज्ञ होंगे। यह भारतीयों की धरती कपिल, कणाद, यास्क, सायण, पाणिनि, पतञ्जलि, वाल्मीकि, व्यास, भास, कालिदास, शङ्कराचार्य, विवेकानन्द जैसे ज्ञानियों की धरती है। जिन्होंने अपने ज्ञानप्रकाश से ब्रह्माण्ड को प्रकाशित किया है, आज एकबार पुनः ज्ञानालोक से सम्पूर्ण विश्व को प्रकाशित करने का समय आ गया, आओ! संस्कृतज्ञानसूर्य से सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को आलोकित करने का सङ्कल्प लें।

इस संस्करण में UP-TGT पाठ्यक्रम में सम्मिलित सभी साहित्यिक ग्रन्थों की व्याकरणात्मक टिप्पणी के लगभग 80 पृष्ठ और जोड़े जा रहे हैं, जिसमें सन्धि, समास, कारक, क्रियापद और प्रत्ययों की चर्चा की गयी है। विश्वास है कि परिवर्धित और संशोधित संस्करण आपको अच्छा लगेगा।

मित्रों! इस षष्ठ संस्करण को संशोधित एवं परिशुद्ध करने में जिन संस्कृतगङ्गा के भगीरथों ने अपना योगदान दिया उन सभी मित्रों को सस्नेह स्मरण करते हैं, जिनमें **विकाससिंह, राजीवसिंह, मनीष शर्मा, रमाकान्त मौर्य, डॉ. गिरिराज मिश्रा, सत्यप्रकाश साहू, दीपचन्द्र चौरसिया, रवीन्द्रमिश्र, सच्चिदानन्द, अमितसिंह, सुमनसिंह** आदि मुख्य हैं।

मित्राणि! हम सभी मित्रों का यह प्रयास रहा है कि इस पुस्तक में मुद्रणदोष या तथ्यात्मक अशुद्धियाँ न हों, फिर भी कुछ न कुछ मानव प्रमादजन्य दोष अवश्य दिख सकते हैं, उनको उदार हृदय से क्षमा करते हुए हमें अवश्य सूचित करें, ताकि अगले संस्करण में हम उन्हें दूर कर सकें। सम्पर्क करें – 9839852033

दिनाङ्क : 15 अगस्त, 2017 – ***सर्वज्ञभूषण***

संस्कृतगङ्गा, दारागञ्ज, प्रयाग (उत्तर प्रदेश)

अनुक्रमणिका

वस्तुनिष्ठ संस्कृतसाहित्यम्

क. कवि-परिचयः

1. महाकवि कालिदास

- **पत्नी** – विद्योत्तमा
- **श्वसुर** – शारदानन्द
- **मित्र** – लङ्का के राजा कुमारदास
- **समय** – ईसापूर्व प्रथम शताब्दी
- **जन्मस्थान** – उज्जयिनी (काश्मीरी/बंगाली)
- **आश्रयदाता** – चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य
- **जाति/गोत्र** – ब्राह्मण
- **रचनायें कालक्रम की दृष्टि से**– 1. ऋतुसंहार (गीतिकाव्य), 2. कुमारसम्भवम् (महाकाव्य), 3. मालविकाग्निमित्रम् (नाटक), 4. विक्रमोर्वशीयम् (त्रोटक), 5. मेघदूतम् (खण्डकाव्य), 6. रघुवंशम् (महाकाव्य), 7. अभिज्ञानशाकुन्तलम् (नाटक)
- **उपासक** – शिव के
- **प्रिय छन्द** – उपजाति/अनुष्टुप्
- **प्रिय अलङ्कार** – उपमा
- **कालिदास की रीति एवं गुण** – वैदर्भी रीति एवं प्रसादगुण
- **कालिदास का प्रिय रस** – शृङ्गार रस
- **कालिदास की अन्य कृतियाँ**– (i) कालीस्तोत्र, (ii) गङ्गाष्टक, (iii) ज्योतिर्विदाभरण, (iv) राक्षसकाव्य, (v)श्रुतबोध

कालिदासीय जीवन के कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य

- काली देवी की उपासना से विद्या की प्राप्ति।
- विद्याप्राप्ति के बाद कालिदास का कथन–
  'अनावृतकपाटं द्वारं देहि' (दरवाजा खोलो)
- इसके उत्तर में पत्नी **विद्योत्तमा** का कथन–
  'अस्ति कश्चित् वाग्विशेषः' (लगता है कोई विद्वान् है)
- **'अस्ति' से कुमारसम्भवम्** – ''अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा...."
- **'कश्चित्' से मेघदूतम्** – ''कश्चित् कान्ता विरहगुरुणा...."
- **'वाग्' से रघुवंशम्** – ''वागर्थाविव सम्पृक्तौ....."
- **विक्रमादित्य की सभा में 9 रत्न** थे, जिसमें से एक कालिदास भी थे–

धन्वन्तरि-क्षपणकामरसिंह -शङ्कु-
वेतालभट्ट-घटकर्पर-कालिदासाः।
ख्यातो वराहमिहिरो नृपतेः सभायां
रत्नानि वै वररुचिर्नव विक्रमस्य॥

(ज्योतिर्विदाभरण 22-10)

- एक किंवदन्ती के अनुसार धारा के राजा भोज के प्रधानकवि कालिदास थे।
- एक किंवदन्ती के अनुसार कालिदास का अन्तिम समय लंका के महाराज कुमारदास के यहाँ बीता, वहाँ धन के लोभ में एक वेश्या ने उनकी **हत्या करा दी**।
- कालिदास ने वेद, दर्शन, उपनिषद्, रामायण, महाभारत, गीता, पुराण, आयुर्वेद, धनुर्वेद, सङ्गीतशास्त्र, ज्योतिष, व्याकरण, छन्दःशास्त्र, काव्यशास्त्र आदि का गम्भीर अध्ययन किया था।
- बाद में राजकवियों को 'कालिदास' कहने की परम्परा चल पड़ी। **राजशेखर** ने ऐसे तीन कालिदासों का उल्लेख किया है–
  एकोऽपि जीयते हन्त कालिदासो न केनचित्।
  शृङ्गारे ललितोद्गारे कालिदासत्रयी किमु॥
- **कालिदास की उपाधियाँ**–(i) दीपशिखा कालिदास (ii) रघुकार (iii) कविकुलगुरु (iv) कविताकामिनीविलास (v) उपमासम्राट्
- महाकवि कालिदास ने मालविकाग्निमित्र की प्रस्तावना में **''प्रथितयशसां भाससौमिल्ल....."** के द्वारा भास, सौमिल्ल आदि अपने पूर्ववर्ती कवियों को सादर स्मरण किया है।

कालिदास की प्रशस्तियाँ

1. निर्गतासु न वा कस्य कालिदासस्य सूक्तिषु।
   प्रीतिर्मधुरसान्द्रासु मञ्जरीष्विव जायते।
   – बाणभट्ट-हर्षचरित
2. साकूतमधुरकोमलविलासिनीकण्ठकूजितप्राये।
   शिक्षासमयेऽपि मुदे रतलीला-कालिदासोक्ती।।
   – गोवर्धनाचार्य-आर्यासप्तशती–35
3. कविकुलगुरुः कालिदासो विलासः **– जयदेव-प्रसन्नराघवम्**
4. लिप्ता मधुद्रवेणासन् यस्य निर्विषया गिरः।
   तेनेदं वर्त्म वैदर्भं कालिदासेन शोधितम्।।
   – दण्डी-अवन्तिसुन्दरीकथा
5. अस्पृष्टदोषा नलिनीव दृष्टा, हारावलीव ग्रथिता गुणौघैः।
   प्रियाङ्कपालीव प्रकामहृद्या, न कालिदासादपरस्य वाणी।।
   – श्रीकृष्ण
6. ख्यातः कृतीसोऽपि च कालिदासः, शुद्धा सुधा स्वादुमती च यस्य।
   वाणीमिषाच्चन्द्रमरीचिगोत्रसिन्धोः परं पारमवाप कीर्तिः।।
   – सोड्ढल (उदयसुन्दरी कथा)

   अमृतेनेव संसिक्ताश्चन्दनेनैव चर्चिताः।
   चन्द्रांशुभिरिवोद्घृष्टाः कालिदासस्य सूक्तयः।।
   – जयन्त-न्यायमञ्जरी

7. एकोऽपि जीयते हन्त कालिदासो न केनचित्।
शृङ्गारे ललितोद्गारे कालिदासत्रयी किमु।।
–राजशेखर-सूक्तिमुक्तावली
8. वैदर्भी कविता स्वयं वृतवती श्रीकालिदासं वरम्। **–अज्ञात**
9. पुष्पेषु चम्पा नगरीषु काञ्ची, नदीषु गङ्गा नृपरेषु रामः।
नारीषु रम्भा पुरुषेषु विष्णुः, काव्येषु माघः कविकालिदासः।।
– घटखर्पर
10. महिषं दधि सशर्करं पयः कालिदासकविता नवं वयः।
शारदेन्दुरबला च कोमला स्वर्गशेषमुपभुञ्जते जनः।।
– आचार्य उद्भट
11. काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या 'शकुन्तला'।
तत्रापि च चतुर्थोऽङ्कः तत्र श्लोकचतुष्टयम्।। **– अज्ञात**
12. Wouldst thou the young year
blossoms and the fruits of its decline
And all by which the soul is charmed
enraptured, fearted, fed.
Wouldst thou the earth and heaven
itseff in one sole name combine?
I name the, O' Shakuntala
And all atonce is said. – **(Goethe)**

(संस्कृत-अनुवाद)

13. वासन्तं कुसुमं फलञ्च युगपद्, ग्रीष्मस्य सर्वं च यद्
यच्चान्यन्मनसो रसायनमतः सन्तर्पणं मोहनम्।
एकीभूतमभूतपूर्वमथवा स्वर्लोकभूलोकयोः
ऐश्वर्यं यदि वाञ्छसि प्रियसखे! शाकुन्तलं सेव्यताम्।।
– (जर्मन कवि गेटे का अनुवाद) **वी. वी. मिराशी**
14. अस्मिन्निति विचित्रकविपरम्परावाहिनि-संसारे–
कालिदासप्रभृतयो द्वित्राः पञ्चषा वा महाकवय इति गण्यन्ते।
– आचार्य आनन्दवर्धन
15. वैदर्भीरीतिसन्दर्भे कालिदासो विशिष्यते। **– अज्ञात**
16. उपमा कालिदासस्य **– उद्भट**
17. कालिदासस्य सर्वस्वमभिज्ञानशाकुन्तलम्।
तत्रापि च चतुर्थोऽङ्कः यत्र याति शकुन्तला।। **– अज्ञात**
18. श्रीकालिदासकविवर्य-सरस्वतीयं
किं वर्णयाम्यतितरां रसवाहिनीति।
यत् कालिका भगवती शुचिभावयोगाद्
यस्यामहो मुहुरनुग्रहमादधाति।। **– विठोबा अण्णा**
19. पुरा कवीनां गणना-प्रसङ्गे
कनिष्ठिकाधिष्ठित कालिदासः।
अद्यापि तत्तुल्यकवेरभावा-
दनामिका सार्थवती बभूव।। **– मल्लिनाथ**
20. रसभार-भारोद्भिन्नां भारतीममरादृते।
श्रीमतः कालिदासस्य विज्ञातुं कः क्षमः पुमान् **– स्थिरदेव**
21. स विजयतां रविकीर्तिः कविताश्रितकालिदासभारविकीर्तिः।।
– एहोल शिलालेख
22. कालिदासगिरां सारं कालिदासः सरस्वती।
चतुर्मुखोऽथवा साक्षाद् विदुर्नान्ये तु मादृशाः।।**– मल्लिनाथ**
23. सुवशा कालिदासस्य मन्दाक्रान्ता प्रवल्गति।
– क्षेमेन्द्र (सुवृत्ततिलक)
24. भासयत्यपि भासादौ कविवर्गे जगत्त्रयम्।
के न यान्ति निबन्धारः कालिदासस्य दासताम्।। **–अज्ञात**
25. ``Kalidas may be considered as the brightest star in the firmament of indian artificial poetry"
– Prof. Lassen
26. कवयः कालिदासाद्याः कवयो वयमप्यमी।
पर्वते परमाणौ च पदार्थत्वं प्रतिष्ठितम्।। **– अज्ञात**
27. वाल्मीकिमिव सभासं यशःशरीरेण सर्वदा सन्तम्।
रसवद्वचनविकासं नमत कविं कालिदासं तम्।। **– अज्ञात**
28. कविरचलः कविरभिनन्दश्च कालिदासश्च।
अन्ये कवयः कपयश्चापलमात्रं परं दधाति।। **– अज्ञात**
29. कवयः कवयः कवयोऽपि च कालिदासाद्याः।
दृषदो भवन्ति दृषदाश्चिन्तामणयोऽपि हा दृषदः।। **– अज्ञात**
30. मेघे माघे गतं वयः। **– मल्लिनाथ**
31. कालिदासादीनामिव यशः। **– मम्मट**
32. धन्वन्तरिक्षपणकाऽमरसिंहशंकु-बेतालभट्ट घटकर्परकालिदासाः।
– ज्योतिर्विदाभरण
33. महाकविकालिदासं वन्दे वाग्देवतागुरुम्।
यज्ज्ञाने विश्वमाभाति दर्पणे प्रतिबिम्बितम्।। **– हलायुध**
34. क इह रघुकारे न रमते। **– आलोचक**

2. भवभूति

- **पितामह** – भट्टगोपाल
- **पिता** – नीलकण्ठ
- **माता** – जतुकर्णी (जातुकर्णी)
- **भवभूति का मूलनाम** – श्रीकण्ठ या भट्टश्रीकण्ठ
- **गुरु** – (i) ज्ञाननिधि (ii) कुमारिलभट्ट
- **भवभूति का दार्शनिक नाम** – उदुम्बर/उम्बिकाचार्य/उम्बेक
- **जन्मस्थान** – दक्षिणभारत में पद्मपुर नगर
- **उपाधि** – (i) पदवाक्यप्रमाणज्ञ, पद = व्याकरण, वाक्य = मीमांसा, प्रमाण = न्याय
(ii) वश्यवाक्, (iii) परिणतप्रज्ञ, (iv) शिखरिणीकवि
- **वंश/गोत्र** – काश्यप
- **जाति** – कृष्णयजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखापाठी ब्राह्मण
- **आश्रयदाता** – कान्यकुब्जनरेश यशोवर्मा

- **समय**– 650 ई. से 750 ई. के बीच (सातवीं शताब्दी का उत्तरार्ध)
- **रचनायें** – 1. मालतीमाधवम् (प्रकरण)
  2. महावीरचरितम् (नाटक)
  3. उत्तररामचरितम् (नाटक)
- **भवभूति की रीति** – गौडी
  (उत्तररामचरितम् में गौड़ी और वैदर्भी का समन्वय)
- **भवभूति का प्रियरस** – करुण
- **भवभूति के प्रियछन्द** – अनुष्टुप् और शिखरिणी
- **उपासक** – शिव के
- उत्तररामचरितम् में भवभूति अपने आपको **'परिणतप्रज्ञ'** कहते हैं।
- महावीरचरितम् में भवभूति अपने आपको **'वश्यवाक्'** कहते हैं।
- भवभूति के नाटकों में **'अभिधावृत्ति'** मुख्य है।
- भवभूति की कृतियों में **'ओजगुण'** अधिक है।
- **क्षेमेन्द्र ने 'सुवृत्ततिलक'** में भवभूति के शिखरिणी की प्रशंसा में उसे **'निरर्गलतरङ्गिणी'** कहा है –
  भवभूतेः शिखरिणी निरर्गलतरङ्गिणी।
  रुचिरा घनसन्दर्भे या मयूरीव नृत्यति॥ (सु. 3.33)
- भवभूति के तीनों नाटकों में **विदूषक का सर्वथा अभाव** है।

महाकवि भवभूति विषयक प्रशस्तियाँ

1. कवयः कालिदासाद्याः भवभूतिर्महाकविः ।
   – अज्ञात समालोचक
   नाटके भवभूतिर्वा वयं वा वयमेव वा।
2. उत्तरे रामचरिते भवभूतिर्विशिष्यते। **– विक्रमार्क**
3. कारुण्यं भवभूतिरेव तनुते । **– अज्ञात**
4. बभूव वाल्मीकभवः कविः पुरा ततः प्रपेदे भुवि भर्तृमेण्ठताम्।
   स्थितः पुनर्योभवभूतिरेखया स वर्तते सम्प्रति राजशेखरः।।
   – राजशेखर - बालरामायण
5. भवभूतेर्शिखरिणी निरर्गलतरङ्गिणी ।
   रुचिरा घनसन्दर्भे या मयूरीव नृत्यति।।
   – क्षेमेन्द्र - सुवृत्ततिलक
6. भवभूतेः सम्बन्धाद्भूधरभूरेव भारती भाति।
   एतत्कृतकारुण्ये किमन्यथा रोदिति ग्रावा।।
   – गोवर्धनाचार्य - आर्यासप्तशती।
7. स्पष्टभावरसा चित्रैः पादन्यासैः प्रवर्तिता।
   नाटकेषु नटस्त्रीव भारती भवभूतिना।।
   – धनपाल - तिलकमञ्जरी
8. सुकविद्वितयं मन्ये निखिलेऽपि महीतले।
   भवभूतिः शुकश्चायं वाल्मीकिस्त्रितयोऽनयोः ।।
   – भोज - भोजप्रबन्ध
9. रत्नावली पूर्वकमन्यदास्तामसीमभोगस्य वचोमयस्य।
   पयोधरस्येव हिमाद्रिजायाः परं विभूषा भवभूतिरेव।।
   – जल्हण - सूक्तिमुक्तावली
10. भवभूतिमनादृत्य निर्वाणमतिना मया ।
    मुरारिपदचिन्तायामिदमाधीयते मनः।।
    – जल्हण - सूक्तिमुक्तावली।
11. मान्यो जगत्यां भवभूतिरार्या सारस्वते वर्त्मनि सार्थवाहः।
    वाचं पताकामित्रस्य दृष्ट्वा जनः कवीनामनुपृष्ठमेति।।
    – उदयसुन्दरीचम्पू
12. भवभूतिजलधिनिर्गतकाव्यामृतरसकणा इव स्फुरन्ति।
    यस्य विशेषा अद्यापि विकटेषु कथानिवेशेषु।।
    – गौडवहो - वाक्पतिराज
13. जडानामपि चैतन्यं भवभूतेरभूद् गिरा।
    ग्रावाप्यरोदीत् पार्वत्याः हसतः स्म स्तनावपि।।
    – अज्ञात
14. अन्तर्मोदं कमपि भवभूतिर्वितनुते।। **– सदुक्तिकर्णामृत**
15. भव्यां यदि विभूतित्वं तात कामयसे तदा।
    भवभूतिपदे चित्तमविलम्बं निवेशय।।
    – अज्ञात।
16. भवभूतेर्विच्छित्तिव्यभिचारमुचो गिरां गुम्फाः।
    विधिनापि दुर्निवारं तेषां खलु भावभूतत्वम्।।
    – विश्वेश्वर पाण्डेय
17. भवभूतेः कवीन्द्रस्य वाणी कामदुधामता।
    ब्रह्मानन्दसहोदर्या या तनोति मुदं सदा।।
    – कपिलदेव द्विवेदी
18. साऽम्बा पुनातु भवभूतिपवित्रमूर्तिः।
    – भवभूति
19. भवभूतिर्नाम कविर्निसर्गसौहृदेन भरतेषु वर्तमानः।
    – मालतीमाधवस्य प्रस्तावना
20. कविर्वाक्पतिराजश्रीभवभूत्यादिसेवितः।
    जितो ययौ यशोवर्मा तद्गुणस्तुतिवन्दिताम्।।
    – कल्हण राजतरङ्गिणी
21. तपस्वीं कां गतोऽवस्थामिति स्मराननाविव।
    गिरिजायाः स्तनौवन्दे भवभूतिसिताननौ।।
    – भवभूति

3. भर्तृहरि

- विक्रमसंवत् के प्रवर्तक विक्रमादित्य के बड़े भाई।
- **पत्नी** – पिङ्गला
- **गुरु** – (i) गोरखनाथ (ii) वसुरात (बौद्धमत में)

➢ **भाई (अनुज)** – विक्रमादित्य
➢ **पिता** – गन्धर्वसेन (मालवदेश के राजा)
➢ ईत्सिंग के कथन के आधार पर **भर्तृहरि को बौद्ध** कहा जाता है।
➢ भर्तृहरि **वेदान्तोक्त ब्रह्म के उपासक** थे।
➢ **भर्तृहरि का समय** – (i) 57 ई. पू. अथवा (ii) 575 से 650 ई.
➢ **भर्तृहरि की शैली/रीति एवं गुण** – वैदर्भीरीति, प्रसाद और माधुर्यगुण
➢ **मुक्तक काव्य के प्रथमकवि** – भर्तृहरि
➢ **भर्तृहरि के प्रिय छन्द** – शार्दूलविक्रीडित, शिखरिणी
➢ मृत्यु 650 ई. (चीनी यात्री इत्सिंग के अनुसार)
➢ **रचनायें– (i) वाक्यपदीयम्** (व्याकरणग्रन्थ), (ii) **नीतिशतकम्** (मुक्तककाव्य) 111 श्लोक, (iii) **शृङ्गारशतकम्** (मुक्तककाव्य) 103 श्लोक, (iv) **वैराग्यशतकम्** (मुक्तककाव्य) 111 श्लोक

4. बाणभट्ट

बाणभट्ट का वंशवृक्ष

वत्स
।
कुबेर
(कर्मकाण्डी श्रुतिशास्त्र सम्पन्न ब्राह्मण)
।
पाशुपत
।
अर्थपति (इनके 11 पुत्र हुए)
।
चित्रभानु
।
बाणभट्ट
।
भूषणभट्ट (पुलिन्दभट्ट, पुलिनभट्ट)

➢ **निवास** – शोण (सोन) नदी के पास 'प्रीतिकूट' नामक ग्राम। (वर्तमान में शाहाबाद, आरा, बिहार।)
➢ **राज्याश्रय** – सम्राट् हर्ष के सभापण्डित
➢ **पितामह** – अर्थपति
➢ **पिता** – चित्रभानु
➢ **माता** – राजदेवी
➢ **पत्नी** – कवि मयूरभट्ट की बहन
➢ **पुत्र** - भूषणभट्ट (पुलिन या पुलिन्दभट्ट)
➢ **बहन** – मालती
➢ **बाण के दो भाई** – चित्रसेन और मित्रसेन
➢ बाण ने स्वयं हर्षचरितम् के प्रथम तीन उच्छ्वासों तथा कादम्बरी की प्रस्तावना के पद्यों में अपना परिचय दिया है।
➢ **वंश/गोत्र** – वात्स्यायन / वत्स वंश (ब्राह्मण)
➢ **उपासक** – शिव (शैव)
➢ **बाण की रीति** – पाञ्चाली
➢ बाल्यावस्था में ही बाण की माता का स्वर्गवास।
➢ 14 वर्ष की आयु में बाण के पिता का भी स्वर्गवास।
➢ राजा हर्ष ने इन्हें **''महानयं भुजङ्गः''** (बहुत चरित्रभ्रष्ट) कहा।
➢ **हर्ष का राज्याभिषेक** अक्टूबर 606 ई. में हुआ, और उनकी मृत्यु 648 ई. में हुई।
➢ **ह्वेनसांग** ने 629 से 645 ई. तक भारत भ्रमण किया था और वह हर्ष के निकट सम्पर्क में भी आया था।
➢ **बाण का समय** – सातवीं शताब्दी ई. का पूर्वार्द्ध
➢ **बाणभट्ट का विवाह** महाकवि मयूर भट्ट (सूर्यशतकम्) की बहन से हुआ था।
➢ **बाण की रचनायें**– 1. कादम्बरी (कथा), 2. हर्षचरितम् (आख्यायिका), 3. चण्डीशतकम् (मुक्तक), 4.मुकुटताडितक (नाटक), 5. पार्वतीपरिणय (नाटक)
➢ हर्षवर्धन के चचेरे भाई कृष्ण के निमन्त्रण पर बाणभट्ट हर्ष के राजदरबार में पहुँचे।
➢ **उपाधियाँ/कथन**

उपाधि/कथन		वक्ता
वश्यवाणी कविचक्रवर्ती	–	हर्षवर्धन
बाणस्तु पञ्चाननः	–	श्रीचन्द्रदेव
पञ्चबाणस्तु बाणः	–	जयदेव
कविताकामिनीकौतुक	–	जयदेव
गद्यसम्राट्	–	बलदेव उपाध्याय
वाणी बाणो बभूव	–	गोवर्धनाचार्य
कवितातरुगहनविहरणमयूरः	–	वामनभट्टबाण
कविताकाननकेसरी	–	चन्द्रदेव
तुरङ्गबाण	–	आलोचक
बाणः कवीनामिह चक्रवर्ती	–	सोड्ढल
महानयं भुजङ्गः	–	हर्षवर्धन
गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति	–	आलोचक
बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्	–	समालोचक
भट्टबाणस्य भारतीम्	–	गङ्गादेवी
वाणी बाणस्य मधुरशीलस्य	–	धर्मदास

➢ **हर्ष के दरबार में दो अन्य विद्वान्**– (i) मातङ्गदिवाकर, (ii) मयूरभट्ट

महाकवि बाणभट्ट विषयक प्रशस्तियाँ

1. युक्तं कादम्बरीं श्रुत्वा कवयो मौनमाश्रिताः।
   बाणध्वनावनध्यायो भवतीति स्मृतिर्यतः।।
   सोमेश्वर – कीर्तिकौमुदी
2. रुचिरस्वरवर्णपदा रसभाववती जगन्मनो हरति।
   सा किं तरुणी? **नहि नहि वाणी बाणस्य मधुरशीलस्य।।**
   – विदग्धमुखमण्डन - धर्मदास
3. जाता शिखण्डिनी प्राक् यथा शिखण्डी तथावगच्छामि।
   प्रागल्भ्यमधिकमाप्तुं **वाणी बाणो बभूव** ह।।
   – गोवर्धनाचार्य
4. श्लेषे केचन शब्दगुम्फविषये केचिद्रसे चापरे-
   ऽलंकारे कतिचित्सदर्थविषये चान्ये कथावर्णने।
   आः सर्वत्र गभीरधीरकविताविन्ध्याटवी चातुरी-
   सञ्चारी कविकुम्भिकुम्भभिदुरो **बाणस्तु पञ्चाननः।।**
   – चन्द्रदेव
5. **बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्।** **– अज्ञात**
6. वागीश्वरं हन्त भजेऽभिनन्दमर्थेश्वरं वाक्पतिराजमीडे।
   रसेश्वरं स्तौमि च कालिदासं **बाणं तु सर्वेश्वरमानतोऽस्मि।।**
   – सोड्ढल (उदयसुन्दरी)
7. हृदि लग्नेन बाणेन यन्मन्दोऽपि पदक्रमः।
   भवेत्कविकुरङ्गाणां चापलं तत्र कारणम्।। **– त्रिलोचन**
8. शश्वद्बाणद्वितीयेन नमदाकारधारिणा।
   धनुषेव गुणाढ्येन निःशेषो रञ्जितो जनः।। **– त्रिविक्रमभट्ट।**
9. यस्याश्चौरः चिकुरनिकुरः कर्णपूरो मयूरः।
   भासो हासः कविकुलगुरुः कालिदासो विलासः।।
   हर्षो हर्षः हृदयवसतिः **पञ्चबाणस्तु बाणः।**
   केषां नैषा कथय कविताकामिनी कौतुकाय।।
   – जयदेव - प्रसन्नराघव
10. केवलोऽपि स्फुरन् बाणः करोति विमदान् कवीन्।
    किं पुनः क्लृप्तसन्धानः पुलिन्ध्रकृतसन्निधिः।।
    – धनपाल - तिलकमञ्जरी
11. वाणीपाणिपरामृष्टवीणानिक्वाणहारिणीम्।
    भावयन्ति कथं वान्ये भट्टबाणस्य भारतीम्।। **– गङ्गादेवी**
12. सुबन्धुर्बाणभट्टश्च कविराज इति त्रयः।
    वक्रोक्तिमार्गनिपुणाश्चतुर्थो विद्यते न वा।।
    – कविराज - राघवपाण्डवीय
13. दण्डिन्युपस्थिते सद्यः कवीनां कम्पितं मनः।
    प्रविष्टे त्वन्तरे बाणे कण्ठे वागेव रुध्यते।। **– हरिहर**
14. कादम्बरीसहोदर्या सुधया वै बुधे हृदि।
    हर्षाख्यायिकया ख्यातिं बाणोऽब्धिरिव लब्धवान्।।
    – धनपाल (तिलकमञ्जरी)
15. शब्दार्थयोः समो गुम्फः पाञ्चालीरीतिरुच्यते।
    शिलाभट्टारिका वाचि बाणोक्तिषु च सा यदि।।
    – भोज - सरस्वतीकण्ठाभरण
16. प्रतिकविभेदनबाणः **कवितातरुगहनविहरणमयूरः।**
    सहृदयलोकसुबन्धुर्जयति श्रीभट्टबाणकविराजः**– वामनभट्टबाण**
17. बाणस्य हर्षचरिते निशितामुदीक्ष्य।
    शक्तिं न केऽत्र कवितास्त्रमदं त्यजन्ति।। **– सोड्ढल**
18. सहर्षचरितारब्धादद्भुतकादम्बरी कथा।
    बाणस्य गण्यनार्येव स्वच्छन्दा भ्रमति क्षितौ।। **– राजशेखर**
19. परिशीलितैव सरसं कविराजैर्बहुभिरत्र वाग्देवी।
    बाणेन तु वैजात्यात्कथयति नामैव वाणीति।।
    – विश्वेश्वर पाण्डेय
20. कादम्बरीरसभरेण समस्त एव।
    मत्तो न किञ्चिदपि चेतयते जनोऽयम्।। **– भूषणभट्ट**
21. कादम्बरीरसज्ञानामाहारोऽपि न रोचते। **– अज्ञात**
22. नृत्यति यद्रसनायां वेधोन्मुखलासिका वाणी।
    – पार्वतीपरिणय
23. द्विजेन तेनाक्षतकण्ठकौण्ठ्यया महामनोमोहमलीमसान्धया।
    अलब्धवैदग्ध्यविलासमुग्धया धिया निबद्धेयमतिद्वयी कथा।।
    – कादम्बरी कथामुख
24. ''यादृग् गद्यविधौ बाणः पद्यबन्धेऽपि तादृशः'' **– भोजराज**

5. अम्बिकादत्तव्यास

➢ **पितामह** – पं राजाराम
➢ **पिता** – दुर्गादत्त
➢ **चाचा/दादा** – देवीदत्त
➢ **पुत्र** – पं. राधाकुमारव्यास
➢ **गोत्र** – पराशरगोत्रीय यजुर्वेदी/त्रिप्रवर/भीडावंश
➢ **जन्मस्थान** – राज्य - राजस्थान, जिला - जयपुर, ग्राम - रावत जी का धूला, मुहल्ला - सिलावटी
➢ **जन्मसमय** – चैत्र शुक्लपक्ष अष्टमी सं. 1915 (1858 ई.)
➢ **मृत्यु** – मार्ग शीर्ष (अगहन) कृष्णपक्ष त्रयोदशी सोमवार सं. 1957 (सन् 1900 ई.)
➢ **कर्मस्थली** – काशी में अध्ययन - अध्यापन
➢ **कुल रचनाएं** – लगभग 78
➢ **संस्कृत रचनायें**– शिवराजविजयम् (उपन्यास) सामवतम् (नाटक) (22 वर्ष की अवस्था में) रत्नाष्टक, कथाकुसुमम्
➢ **हिन्दी रचनाएं**– बिहारी-विहार (कुण्डलिनी छन्द में)
➢ **पत्रिका**–'पीयूष-प्रवाह' का सम्पादन
➢ **उपाधियाँ**– 1. सुकवि (भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, काशी कवितावर्धिनी सभा)
   2. घटिकाशतक (ब्रह्मामृतवर्षिणी सभा)
   3. शतावधान
   4. भारतरत्न (काशी की 'महासभा')

5. अभिनवबाण/आधुनिकबाण

6. भारतभूषण

7. महाकवि

- प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास के प्रणेता अम्बिकादत्तव्यास।
- 'बिहारी-विहार' में व्यास जी ने अपना संक्षिप्त जीवन-परिचय लिखा है।
- लगभग 12 वर्ष की अवस्था में व्यास जी ने धर्मसभा की परीक्षा में पुरस्कार प्राप्त किया था।
- बिहार में **'संस्कृत-सञ्जीवनी-समाज'** की स्थापना।
- व्यास जी ने 10 वर्ष की अवस्था से ही काव्य रचना आरम्भ कर दी थी।
- व्यास जी ने **'शिवराज-विजयम्'** 1870 ई. में लिखा जो काशी से 1901 ई. में उनकी मृत्यु के बाद प्रकाशित हुआ।
- गवर्नमेण्ट संस्कृत-कॉलेज पटना में प्राध्यापक।
- वक्ता और साहित्यस्रष्टा के साथ ही चित्रकारिता, अश्वारोहण संगीत और शतरंज में भी व्यास जी विशेष रुचि रखते थे।
- सितार, हारमोनियम, जलतरङ्ग और मृदङ्ग इनके प्रिय वाद्य थे।
- व्यास जी हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी और बंगला भाषा के ज्ञाता थे।
- न्याय, व्याकरण, वेदान्त और दर्शन में इनकी अच्छी गति थी।
- एक घड़ी (24 मिनट) में 100 श्लोकों की रचना करने से व्यास जी को **'घटिकाशतक'** की उपाधि दी गयी थी।
- सौ प्रश्नों को एक साथ ही सुनकर उन सभी प्रश्नों का उत्तर उसी क्रम में देने की अद्भुतक्षमता होने से उन्हें **'शतावधान'** की उपाधि दी गयी थी।
- **बयालीस वर्ष की अवस्था** में ही व्यास जी संवत् 1957 (1900 ई.) में अपने पीछे एक नववर्षीयपुत्र, एक कन्या और विधवा पत्नी को असहाय छोड़कर पञ्चतत्व को प्राप्त हो गये।

6. भारवि

- **पिता** – (i) श्रीधर, (ii) नारायणस्वामी (अवन्तिसुन्दरीकथा के अनुसार)
- **माता** – सुशीला
- **पत्नी** – रसिकवती या रसिका
- **पुत्र** – मनोरथ
- **मूल नाम** – दामोदर
- **गोत्र** – कुशिक
- **जन्म स्थान** – (i) दक्षिण भारत में नासिक प्रदेश के **'अचलपुर'** (एलिचपुर), (ii) धारानगरी (अवन्तिसुन्दरी कथा के अनुसार)
- **समय** – छठवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध/सातवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध

भारवि का वंशवृक्ष

भारवि
।
मनोरथ (पुत्र)
।
वीरदत्त - गौरी (पौत्र)
।
दण्डी (प्रपौत्र)

- **सम्प्रदाय** – शैव
- **उपाधि** – 'आतपत्र भारवि'
- **आधत्ते कनकमयातपत्रलक्ष्मीम्'' (किरात. 5.39)** इस श्लोक में **'कनकमय आतपत्र'** (सोने का छाता) की उपमा को अति सुन्दर मानकर आलोचकों ने कवि का नाम ही **'आतपत्र भारवि'** रख दिया।
- **आश्रयदाता** – 1. विष्णुवर्द्धन (पुलकेशिन द्वितीय के अनुज), 2. सिंहविष्णु (अवन्तिसुन्दरीकथा के अनुसार), 3. दुर्विनीत, 4. महेन्द्रविक्रम (सिंहविष्णु का पुत्र)
- राजा दुर्विनीत ने 'किरातार्जुनीयम्' के 15वें सर्ग पर संस्कृतटीका लिखी।
- 'भारवि' **दण्डी के प्रपितामह** हैं।
- भारवि की वाणी को **'प्रकृतिमधुरा'** कहा जाता है।
- भारवि महाकाव्यों में **'अलङ्कृतकाव्यशैली'** या **'रीतिशैली' के जन्मदाता हैं।** इनके काव्यमार्ग को **विचित्रमार्ग** कहते हैं।
- श्री एन. सी. चटर्जी भारवि को **'ट्रावनकोर' का निवासी** सिद्ध करते हैं।
- एक किंवदन्ती के अनुसार पिता द्वारा अपमानित भारवि उनके वध के लिए उद्यत हो गये, परन्तु पिता द्वारा उनके हित के लिए डाँटा गया, यह जानकर उन्हें बहुत पश्चात्ताप हुआ, और पिता ने छः माह तक ससुराल में सेवा करने का आदेश दिया।
- भारवि का जन्म 560 ई. के लगभग तथा रचनाकाल 580 ई. के लगभग अधिकांश आलोचकों ने माना है।
- भारवि **'अर्थगौरव'** के लिए प्रसिद्ध हैं।
- आचार्य मल्लिनाथ ने भारवि के 'किरातार्जुनीयम्' पर **'घण्टापथ'** नाम की टीका लिखी है।
- भारवि राजनीति के प्रकाण्ड पण्डित हैं।
- मल्लिनाथ, भारवि की कविता की उपमा **'नारिकेलफल'** से करते हैं– **'नारिकेलफलसम्मितं वचः'**
- दक्षिण के **'एहोल शिलालेख'** में भारवि का नाम उल्लिखित है।

➢ भारवि के किरातार्जुनीयम् को **'लक्ष्म्यन्त'** महाकाव्य, माघ के शिशुपालवधम् को **'श्र्यन्त'** महाकाव्य तथा श्रीहर्ष के नैषधीय चरितम् को **'आनन्दान्त'** महाकाव्य कहते हैं।

महाकवि 'भारवि' विषयक प्रशस्तियाँ

1. भारवेरर्थगौरवम् । **– उद्भट**
2. वृत्तच्छत्रस्य सा कापि वंशस्थस्य विचित्रता ।
   प्रतिभा भारवेर्येन सच्छायेनाधिकीकृता ।।
   – क्षेमेन्द्र - सुवृत्ततिलक
3. नारिकेलफलसम्मितं वचो भारवेः सपदि तद् विभज्यते ।
   स्वादयन्तु रसगर्भनिर्भरं सारमस्य रसिका यथेप्सितम् ।।
   – मल्लिनाथ
4. प्रदेशवृत्यापि महान्तमर्थं प्रदर्शयन्ती रसमादधाना ।
   सा भारवेः सत्पथदीपिकेव एषा कृतिः कैरिव नोपजीव्या ।।
   – कृष्णकवि
5. तादात्म्यं रसभावयोः भारविः स्पष्टमूचिवान् ।।
   – शारदातनय
6. "प्रकृतिमधुरा भारविगिरः।" **– श्रीधरदास (सदुक्तिकर्णामृत)**
7. वंशस्थवृत्तेन धृतातपत्रो वृत्तेन संदर्शितराजवृत्तिः ।
   अर्थप्रकर्षाहृतराजलक्ष्मीर्नृपायते भारविरात्तकीर्तिः ।।
   – आचार्य कपिलदेव द्विवेदी
8. There is no doubt of the power of Bharvi in describption, his style at its best has a calm dignity which is certainly attractive, while he excels also in the observation and record of the beauties of nature and of maidens.
   हिन्दी अनुवाद – भारवि की वर्णन-शक्ति के विषय में सन्देह को अवसर नहीं है। उनकी शैली उत्कृष्टरूप में शान्त गौरवमयी है जो निश्चय ही आकर्षक है। वे प्रकृति और प्रमदाओं के सौन्दर्य, निरीक्षण और उन्हें चित्रित करने में सर्वश्रेष्ठ हैं।
   – प्रो. ए. बी. कीथ, संस्कृत साहित्य का इतिहास
9. स मेधावी कविर्विद्वान् भारविः प्रभवो गिराम् ।
   अनुसाध्याकरोन्मैत्रीं नरेन्द्रे विष्णुवर्धने ।।
   – ऐहोल शिलालेख - रविकीर्ति ।
10. अर्थदीधितिसंवीता, सन्नीरजसुहासिनी ।
    अङ्गोलूकनिरानन्दा, भा रवेरिव भारवेः ।।
    – आचार्य कपिलदेव द्विवेदी

ख. ग्रन्थपरिचयः

अभिज्ञानशाकुन्तलम्

- **लेखक** – कालिदास
- **विधा** – नाटक
- **अङ्क** – 7 (सात)
- **प्रधानरस** – शृङ्गार (सम्भोगशृङ्गार)
- **कथानक** – राजा दुष्यन्त एवं शकुन्तला का परस्पर प्रेम, विरह एवं मिलन का वर्णन है।
- **प्रमुखपात्र** – दुष्यन्त (नायक), शकुन्तला (नायिका) कण्व, अनसूया, प्रियंवदा, माढव्य (विदूषक), गौतमी, शार्ङ्गरव, शारद्वत, हंसपदिका, वसुमती, मातलि, सानुमती, सर्वदमन (भरत), मारीच ऋषि, अदिति (दाक्षायणी), दुर्वासा, मेनका
- शाकुन्तलम् का उपजीव्य/आधारग्रन्थ है – **1. महाभारत के आदिपर्व का शकुन्तलोपाख्यान (68-74 अध्यायों में), 2. पद्मपुराण के स्वर्गखण्ड में भी यह कथा मिलती है।**
- अभि० शाकुन्तलम् नाटक की रीति – **वैदर्भी रीति**
- वैदर्भीरीतिसन्दर्भे विशिष्यते – **कालिदासः**
- कालिदास के काव्यों में किस वृत्ति का विशेष प्रयोग है– **कैशिकी**
- कालिदास का प्रिय अलङ्कार – **उपमा** (उपमा कालिदासस्य)।
- अभि०शाकु० के प्रथम अङ्क का नाम – **आश्रम प्रवेश**
- द्वितीय अङ्क का नाम – **आश्रम निवेश**
- तृतीय अङ्क का नाम – **मिलन अङ्क**
- चतुर्थ अङ्क का नाम – **विदा अङ्क**
- पञ्चम अङ्क का नाम – **प्रत्याख्यान अङ्क**
- षष्ठ अङ्क का नाम – **पश्चात्ताप अङ्क।**
- सप्तम अङ्क का नाम – **पुनर्मिलन अङ्क।**
- शाकुन्तलम् के **चतुर्थ अङ्क** में करुणरस का प्रयोग है।
- शकुन्तला का हस्तिनापुर (पतिगृह) गमन **चतुर्थ अङ्क में** वर्णित है।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् का नायक – **दुष्यन्त**
- दुष्यन्त **धीरोदात्त** कोटि का नायक है।
- राजा दुष्यन्त कहाँ का राजा है – **हस्तिनापुर**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् की नायिका – **शकुन्तला**
- शकुन्तला किस कोटि की नायिका है – **मुग्धा**
- शकुन्तला है – **शकुन्तभिः पक्षिभिः लालिता पालिता इति शकुन्तला**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् का मङ्गलाचरण है – **आशीर्वादात्मक**
- अभि० शाकुन्तलम् के मङ्गलाचरण में छन्द है – **स्रग्धरा**
- "या सृष्टिः स्रष्टुराद्या....." इत्यादि श्लोक कहाँ का है – **अभि०शाकु० नाटक का मङ्गलाचरण**
- अभि०शाकु० के मङ्गलाचरण में किसकी स्तुति की गयी है – **अष्टमूर्ति शिव की**
- **''तत्रापि च चतुर्थोऽङ्कः''** से सम्बन्धित नाटक – **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**
- **''तत्र श्लोकश्चतुष्टयम्''** किससे सम्बन्धित है – **अभि० शाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क से**
- ''काव्येषु नाटकं रम्यम्'' इस वाक्य में किस नाटक का संकेत है – **अभिज्ञानशाकुन्तलम् का**
- दुष्यन्त का विनोदप्रिय मित्र – **माढव्य**
- अभि० शाकुन्तलम् का विदूषक – **माढव्य**
- शकुन्तला की दोनों सखियाँ – **1. अनसूया. 2. प्रियंवदा।**
- शकुन्तला के माता और पिता– **मेनका और ऋषि विश्वामित्र**
- शकुन्तला के पालक (धर्मपिता) पिता – **महर्षि कण्व**
- महर्षि कण्व के दो प्रमुख शिष्य – **शार्ङ्गरव और शारद्वत**
- दुष्यन्त और शकुन्तला का विवाह हुआ – **गान्धर्व विवाह**
- शकुन्तला को किसने शाप दिया – **ऋषि दुर्वासा ने**
- शकुन्तला को शाप का कारण – **अतिथि रूप में पधारे दुर्वासा ऋषि का तिरस्कार**
- शकुन्तला के शाप को जानने वाली – **प्रियंवदा और अनसूया**
- शकुन्तला को शाप मिला– **अभि०शाकु० के चतुर्थ अङ्क में**
- अभि०शा० में शाप की कल्पना का कारण – **प्रेम के आदर्शस्वरूप की स्थापना**
- शाप का प्रभाव किस अङ्क में दिखायी पड़ता है – **अभि०शा० के पञ्चम अङ्क में**
- राजा दुष्यन्त के पश्चात्ताप का वर्णन – **षष्ठ अङ्क में**
- राजा दुष्यन्त और शकुन्तला का पुनर्मिलन होता है – **अभि०शा० के सप्तम अङ्क में**

- हेमकूट पर्वत में आश्रम है – **महर्षि मारीच का।**
- दुष्यन्त और शकुन्तला का पुनर्मिलन – **हेमकूट पर्वत के मारीच आश्रम में।**
- शकुन्तला की मुद्रिका प्राप्त होती है– **धीवर मीनपालक को**
- दुष्यन्त और शकुन्तला के पुत्र का नाम– **सर्वदमन (भरत)**
- अभि० शा० का प्रारम्भ होता है – **नान्दीपाठ से (या सृष्टिः स्त्रष्टुराद्या)**
- अभि०शा० का समापन होता है – **भरत वाक्य से (प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः....)।**
- कालिदास का सर्वस्वभूतग्रन्थ है – **अभिज्ञानशाकुन्तलम्। ''कालिदासस्य सर्वस्वमभिज्ञानशाकुन्तलम्।''**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के विषय में **पाश्चात्त्य विद्वान् गेटे** का कथन – Wouldst thou the young year's blossoms and the fruits of its decline, and all by which the soul is charmed, enraptured adapted, fed wouldst thou the earth and heaven it self in one name combined? I name the o shakuntala? And all at once is said.

संस्कृतरूपान्तरण

वासन्तं कुसुमं फलञ्च युगपद् ग्रीष्मस्य सर्वं च यद्,
यच्चान्यन्मनसो रसायनमतः सन्तर्पणं मोहनम्।
एकीभूतमभूतपूर्वमथवा स्वर्लोकभूलोकयोः,
ऐश्वर्यं यदि वाञ्छसि प्रियसखे! शाकुन्तलं सेव्यताम्॥

- कालिदास का विश्वप्रसिद्ध नाटक है – **अभिज्ञानशाकुन्तलम्।**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के सर्वप्रथम अंग्रेजी अनुवादक– **विलियम जोन्स**
- विलियम जोन्स ने **The last things** की भूमिका में कालिदास को **'भारत का शेक्सपियर'** कहा।
- **महाकवि गेटे** ने अपने सुप्रसिद्ध नाट्यकाव्य **'फाउस्ट'** में कालिदास के अभिज्ञानशाकुन्तलम् और नायिका शकुन्तला की भूरि भूरि प्रशंसा की।
- कालिदास द्वारा विरचित तीन नाटक हैं – **1. मालविकाऽग्निमित्रम्** (प्रथमनाटक), **2. विक्रमोर्वशीयम्** (द्वितीय नाटक), **3. अभिज्ञानशाकुन्तलम्** (अन्तिम तथा सर्वश्रेष्ठ नाटक)
- कण्व द्वारा पोषित, मेनका और विश्वामित्र की पुत्री – **शकुन्तला**
- कालिदास के सभी नाटक हैं – **सुखान्त।**
- कालिदास की नाट्यकला का सर्वश्रेष्ठ निदर्शन है – **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् कथाविन्यास, चरित्र-चित्रण, संवाद योजना, भाषा – शैली, अलंकार–योजना, रसयोजना, प्रकृतिचित्रण, सभी दृष्टियों से **सर्वश्रेष्ठ नाटक** है।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् में लगभग **196 पद्य** हैं।
- महाकवि कालिदास **रसमयी शैली** के आचार्य हैं।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् में भारतीय संस्कृति की महत्त्वपूर्ण तीन विशेषताओं – **त्याग, तपस्या, और तपोवन** का अच्छा चित्रण किया गया है।
- भरतमुनि के अनुसार नाटक का लक्षण – **''त्रैलोकस्यास्य सर्वस्य नाट्यं भावानुकीर्तनम्।''**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क का प्रारम्भ होता है – **विष्कम्भक से।**
- अनसूया और प्रियंवदा के पुष्पावचयन से प्रारम्भ होता है – **अभिज्ञानशाकुन्तलम् का चतुर्थ अङ्क।**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में वर्णन है – **शकुन्तला की विदाई का।**
- अन्तः प्रकृति और बाह्य प्रकृति का सुन्दर चित्रण किया गया है – **अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में।**
- दुष्यन्त और शकुन्तला की प्रणयगाथा वर्णित है – **अभिज्ञानशाकुन्तलम् में।**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् में लगभग **180 उपमाओं का प्रयोग** किया गया है।
- शकुन्तला **हेमकूट पर्वत पर महर्षि मारीच के आश्रम में** अपनी माता मेनका के साथ वियोग के दिन गुजारती है।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् में दुष्यन्त और शकुन्तला के प्रेम, वियोग और पुनर्मिलन का वर्णन है।
- इस नाटक की कथावस्तु राजा दुष्यन्त के द्वारा शकुन्तला को दिये गये अभिज्ञान (अँगूठी) के आस पास चक्कर लगाती है।
- राजा दुष्यन्त मृग का पीछा करते हुए किस आश्रम में प्रवेश करता है – **महर्षि कण्व के।**
- तीर्थयात्रा पर गए हुए कण्व ऋषि की अनुपस्थिति में ही राजा दुष्यन्त और शकुन्तला का गान्धर्व विवाह आश्रम में ही सम्पन्न हो जाता है।
- शकुन्तला को महर्षि कण्व किसके साथ पतिगृह (हस्तिनापुर) भेजते हैं – **शार्ङ्गरव, शारद्वत, और गौतमी।**
- हस्तिनापुर जाते समय शकुन्तला की अगूँठी कहाँ गिर जाती है – **शचीतीर्थ में।**

- दुष्यन्त, शकुन्तला को पहचानने से क्यों इंकार कर देता है **– दुर्वासा के शापवशात्।**
- शकुन्तला कण्व ऋषि के आश्रम के बाद किस आश्रम में निवास करती है – **ऋषि मारीच के आश्रम में।**
- बालक सर्वदमन (भरत) और शकुन्तला से दुष्यन्त की भेंट कहाँ होती है – **हेमकूटपर्वत स्थित ऋषि मारीच के आश्रम में।**
- महर्षि कण्व का आश्रम था – **मालिनी नदी के तट पर।**
- दुष्यन्त ने जब आश्रम में प्रवेश किया तब महर्षि कण्व कहाँ गए हुए थे – **सोमतीर्थ।**
- शकुन्तला को शाप देने वाले ऋषि थे – **दुर्वासा**
- मारीच ऋषि रहते थे – **हेमकूट पर स्थित आश्रम में**
- दुष्यन्त की कौन रानी संगीत का अभ्यास कर रही है – **हंसपदिका**
- राजा दुष्यन्त की दो रानियाँ – **वसुमती और हंसपदिका**
- राजा दुष्यन्त किस रानी को अधिक प्यार करता है– **वसुमती**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् में किस गुण की प्रधानता है – **प्रसाद गुण**
- कालिदास के नाटकों का प्रतिपाद्य विषय है – **प्रसाद गुण**
- कालिदास के नाटकों का प्रतिपाद्य रस है – **शृङ्गार**
- नाट्यशास्त्र में नान्दी का अर्थ है – **मङ्गलाचरण**
- नाटकों में भरतवाक्य का प्रयोग होता है – **अन्त में**
- शकुन्तला का पालन पोषण हुआ था– **कण्व के आश्रम में**
- शकुन्तला पति के चिन्तन में कहाँ बैठी थी– **कुटिया में**
- राजा की मनःस्थिति जानने के लिए मेनका ने अपनी किस सखी को भेजा था– **सानुमती**
- जर्मनविद्वान् गेटे द्वारा प्रशंसित नाटक है – **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**
- शापनिवृत्ति के लिए ऋषि दुर्वासा से अनुनय विनय करने वाली सखी है– **प्रियंवदा**
- शकुन्तला की अमङ्गलशान्ति के लिए कण्व कहाँ गए थे – **सोमतीर्थ**
- शकुन्तला ने किस तीर्थ में जलवन्दना की थी – **शचीतीर्थ**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् का सर्वश्रेष्ठ अङ्क है – **चतुर्थ**
- वह महिला तपस्विनी जिसके साथ शकुन्तला हस्तिनापुर जाती है – **गौतमी**
- अग्निगर्भा शमी के समान है – **शकुन्तला**
- दुष्यन्त शकुन्तला की वैवाहिक विधि है – **गान्धर्व**
- हस्तिनापुर से शकुन्तला को मारीच आश्रम ले जाने वाली है **– एक दिव्य ज्योति (मेनका)**
- दुष्यन्त को देवासुर संग्राम की सूचना देने वाला है – **इन्द्र का सारथि मातलि**
- वह स्थान जहाँ स्वर्ग से लौटते समय दुष्यन्त रुकता है – **मारीच ऋषि का आश्रम**
- **'अपराजिता रक्षाकरण्डक'** से सम्बद्ध है – **सर्वदमन (भरत)**
- कालिदास के तीनों नाटकों में प्रधानता है – **शृङ्गार रस की।**
- शाकुन्तलम् का प्रारम्भ तथा अन्त होता है – **सम्भोग शृङ्गार से**
- **'राजन् आश्रममृगोऽयं न हन्तव्यो न हन्तव्यः'** किसने कहा – **तपस्वी वैखानस ने**
- भ्रमर से भयभीत शकुन्तला की रक्षा कौन करता है – **राजा दुष्यन्त**
- 'शकुन्तला ऋषि विश्वामित्र एवं मेनका की कन्या हैं' – यह बात राजा दुष्यन्त को किसने बताया **– अनसूया ने**
- हस्तिनापुर से महारानी का संदेश लेकर कण्व के आश्रम राजा दुष्यन्त के पास कौन जाता है – **करभक नाम का एक सेवक**
- शाकुन्तलम् के किस अङ्क में राजा दुष्यन्त विदूषक माढव्य को आश्रम से हस्तिनापुर वापस भेज देता है– **द्वितीय अङ्क में**
- शकुन्तला को राजा दुष्यन्त के लिए एक प्रेमपत्र लिखने की सलाह कौन देती है – **प्रियंवदा**
- शकुन्तला, सखियों के आग्रह से नलिनी पत्र पर नाखूनों से राजा को प्रेमपत्र लिखती है।

तव न जाने हृदयं मम पुनः कामो दिवाऽपि रात्रावपि।
निर्घृण तपति बलीयस्त्वयि वृत्तमनोरथाया अङ्गानि॥

अभि०शा० 3-13।

- शकुन्तला की अस्वस्थता का समाचार पाकर शान्तिजल लिए हुए कौन आती है – **आर्या गौतमी**
- नाटक में दुर्वासा ऋषि का आगमन किस अङ्क में होता है **– चतुर्थ अङ्क में**
- ऋषि कण्व को आकाशवाणी द्वारा मालूम होता है कि शकुन्तला का दुष्यन्त के साथ गान्धर्व विवाह हो गया है, तथा वह आपन्नसत्त्वा (गर्भिणी) है।

दुष्यन्तेनाहितं तेजो दधानां भूतये भुवः।
अवेहि तनयां ब्रह्मन् अग्निगर्भां शमीमिव॥

अभि०शा० 4/4

अभिज्ञानशाकुन्तलम् के मार्मिक प्रसङ्ग

प्रथम अङ्क – भ्रमर वृत्तान्त और शकुन्तला की सखियों से राजा का वार्तालाप।
द्वितीय अङ्क – शकुन्तला के सौन्दर्य का वर्णन।
तृतीय अङ्क – दुष्यन्त और शकुन्तला के विरह दुःख का वर्णन और दोनों के मिलन का वर्णन।
चतुर्थ अङ्क – शकुन्तला की विदाई।
पंचम अङ्क – राजा दुष्यन्त और शार्ङ्गरव का विवाद।
षष्ठ अङ्क – राजा के शोक का वर्णन।
सप्तम अङ्क – पुत्र सर्वदमन का दर्शन और शकुन्तला से मिलन का वर्णन।

अभिज्ञानशाकुन्तलम् के नाटकीय पात्रों का परिचय

पुरुष पात्र

क्र.	नाम	परिचय
1.	सूत्रधार	नाटक का आरम्भ करने वाला प्रधान नट और रंगमच का अध्यक्ष।
2.	दुष्यन्त	नाटक का नायक, हस्तिनापुर का राजा।
3.	सूत	दुष्यन्त का सारथि।
4.	सेनापति भद्रसेन	दुष्यन्त का सेनापति।
5.	विदूषक माढव्य	दुष्यन्त का अन्तरङ्ग मित्र और हास्यकारी।
6.	महर्षिकण्व (काश्यप)	आश्रम के कुलपति, शकुन्तला के पालक और धर्मपिता।
7.	मारीच (कश्यप)	एक महर्षि, देवों और राक्षसों के पिता, एक प्रजापति।
8.	भरत (सर्वदमन)	राजा दुष्यन्त और शकुन्तला का पुत्र।
9.	सोमरात	दुष्यन्त का पुरोहित।
10.	मातलि	इन्द्र का सारथि।
11.	वैखानस, हारीत, नारद, गौतम, शार्ङ्गरव, शारद्वत, शिष्य	सभी कण्व के शिष्य, आश्रम के तपस्वी।
12.	रैवतक (दौवारिक)	राजा का भृत्य, द्वारपाल।
13.	करभक	राजा के पास राजमाता का संदेश पहुँचाने वाला सेवक।
14.	कञ्चुकी (वातायन)	रनिवास की देखभाल करने वाला एक वृद्ध ब्राह्मण।
15.	वैतालिक	स्तुतिपाठक (भाट, चारण)।
16.	श्याल	राजा का साला, नगर रक्षाधिकारी (कोतवाल)।
17.	धीवर (मीनपालक)	मछली पकड़ने वाला।
18. 19.	सूचक, जानुक	पुलिस के दो सिपाही।
20.	गालव	ऋषि मारीच का शिष्य।
21.	पिशुन	दुष्यन्त का मन्त्री

स्त्रीपात्र

क्र.	नाम	परिचय
21.	नटी	सूत्रधार की पत्नी।
22.	शकुन्तला	नाटक की नायिका, कण्व की धर्मपुत्री, दुष्यन्त की पत्नी, मेनका और विश्वामित्र से उत्पन्न एक क्षत्रिय कन्या।
23. 24.	अनसूया, प्रियंवदा	शकुन्तला की अत्यन्त प्रिय और अन्तरङ्ग सखी।

25.	गौतमी	कण्व के आश्रम की अध्यक्षा, एक वृद्धा तापसी।
26.	अदिति (दाक्षायणी)	महर्षि मारीच की पत्नी।
27.	सानुमती	मेनका की सखी, एक अप्सरा।
28.	परभृतिका	राजा की सेविका, उद्यानपालिका।
29.	मधुकरिका	
30.	चतुरिका	राजा की सेविका।
31.	वेत्रवती (प्रतीहारी)	राजा की द्वारपालिका।
32.	यवनी	राजा की एक सेविका।
33.	तापसी (सुव्रता)	मारीच के आश्रम की एक तपस्विनी।

अन्य पात्र

- **मघवा (इन्द्र)** – देवताओं के राजा, दुष्यन्त के मित्र।
- **इन्द्राणी** – इन्द्र की पत्नी।
- **जयन्त** – इन्द्र का पुत्र।
- **कौशिक (विश्वामित्र)** – शकुन्तला के जन्मदाता पिता।
- **मेनका** – शकुन्तला की माता, एक अप्सरा।
- **दुर्वासा** – एक ऋषि, शकुन्तला को शाप देने वाले।

नोट – नाटक में इन पात्रों का केवल नामोल्लेख मात्र हुआ है।

- 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में पुरुवंशी (चन्द्रवंशी) राजा दुष्यन्त तथा विश्वामित्र और मेनका की पुत्री शकुन्तला का प्रेम, वियोग, पुनर्मिलन वर्णित है।
- शाकुन्तलम् की कथा महाभारत के आदिपर्व तथा पद्मपुराण के स्वर्गखण्ड में वर्णित है।
- शाकुन्तलम् का **नायक 'दुष्यन्त'** 'हस्तिनापुर' का राजा है और धीरोदात्त नायक के गुणों से युक्त है।
- 'शाकुन्तलम्' की **नायिका शकुन्तला** महर्षि कण्व (काश्यप) के आश्रम में पली है। 'मुग्धा' नायिका है।
- 'शाकुन्तलम्' का **प्रमुख 'रस' शृङ्गार है।** चतुर्थ अङ्क में **करुण** रस है।
- शाकुन्तल में **24 छन्दों** का प्रयोग हुआ है। सर्वाधिक प्रयुक्त छन्द आर्या (39) है। तत्पश्चात् वसन्ततिलका (30) है।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् में कुल **196 श्लोक** है। सर्वाधिक (35) श्लोक सप्तम अङ्क में हैं।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् में **वैदर्भी रीति** और **माधुर्य गुण** प्रयुक्त है।
- शाकुन्तलम् में साधारणतया **गद्य के लिए शौरसेनी** और पद्यों के लिए **महाराष्ट्री प्राकृत** का प्रयोग हुआ है।
- षष्ठ अङ्क में दोनों सिपाही और धीवर मागधी बोलते हैं।
- शाकुन्तलम् में सर्वाधिक उपमा और 'अर्थान्तरन्यास' अलङ्कारों का प्रयोग है।
- दुष्यन्त की शकुन्तला से पूर्व अन्य दो रानियाँ हंसपदिका और वसुमती हैं।
- शकुन्तला की अनसूया और प्रियंवदा नामक दो सखियाँ हैं।
- दुष्यन्त और शकुन्तला का **पुत्र सर्वदमन (भरत)** है।
- शाकुन्तलम् का **विदूषक 'माढव्य'** दुष्यन्त का मित्र है। पहली बार द्वितीय अङ्क में मंच पर आता है।
- दुष्यन्त का **सेनापति 'भद्रसेन'** और **पुरोहित 'सोमरात'** है।
- इन्द्र का सारथी **'मातलि'** और दुष्यन्त का सारथी **'सूत'** है।
- **'करभक'** नामक दूत द्वितीय अङ्क में दुष्यन्त की माता का सन्देश लेकर आता है।
- शकुन्तला, परित्याग के बाद देवों और राक्षसों के पिता, प्रजापति **'मारीच' (कश्यप)** के आश्रम में रहती है।
- वैखानस, शार्ङ्गरव, शारद्वत, गौतम, नारद, हारीत आदि महर्षि कण्व के शिष्य हैं।
- ऋषि मारीच का एकमात्र शिष्य जो शकुन्तला-दुष्यन्त के मिलन की सूचना कण्व को देने हेतु सातवें अङ्क में भेजा जाता है उसका नाम **'गालव'** है।
- षष्ठ अङ्क में धीवर को पकड़ने वाले **दो सिपाही सूचक व जानुक** हैं और राजा का साला एवं नगर रक्षाधिकारी **श्याल** है।
- राजा का **कञ्चुकी 'वातायन'** है वह षष्ठ अङ्क में 'वसन्तोत्सव' की तैयारी में लगी दो उद्यानपालिकाओं **'परभृतिका'** व **'मधुकरिका'** को ऐसा करने से रोकता है।
- **वेत्रवती** राजा की द्वारपालिका है। यवनी है, एक अन्य सेविका है।
- **अदिति** (दाक्षायणी) मारीच की पत्नी तथा **गौतमी** कण्व के आश्रम की 'एक वृद्धा तापसी' है। गौतमी भी शार्ङ्गरव और शारद्वत के साथ शकुन्तला को छोड़ने हस्तिनापुर जाती है।
- मारीच के आश्रम में सर्वदमन (भरत) के साथ रहने वाली तापसी **'सुव्रता'** थी।
- **'सानुमती'** शकुन्तला की माता मेनका की सखी है जो षष्ठ अङ्क में राजा और विदूषक की बात अदृश्य रूप से सुनती है।
- इन्द्र का पुत्र **जयन्त** तथा पत्नी **इन्द्राणी** (पौलोमी/शची) है।

- सुलभकोप ऋषि दुर्वासा, अत्रि और अनसूया के पुत्र हैं वे चतुर्थ अङ्क के आरम्भ में शकुन्तला को शाप देते हैं।
- महर्षि कण्व का आश्रम **'मालिनी नदी'** के तट पर विश्वामित्र का आश्रम गौतमी नदी के तट पर तथा 'मारीच' का आश्रम **'हेमकूट पर्वत'** पर था।
- दुर्वासा के शाप का असर पञ्चम अङ्क में दिखाई पड़ता है। यह नाटकीयता की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ अङ्क है।
- शकुन्तला ने **'शचीतीर्थ'** जो गङ्गा के तट पर स्थित है, में जलवन्दना की, जहाँ उसकी अँगूठी गिरती है।
- तृतीय अङ्क में 'प्रियंवदा' कमल-पत्र पर 'नाखून' से प्रेम-पत्र लिखने की सलाह शकुन्तला को देती है जिसे वह फूलों में छिपाकर देवता के प्रसाद के बहाने राजा के पास पहुँचाने को कहती है।
- नाटक का आरम्भ **'ग्रीष्म ऋतु'** वर्णन तथा राजा दुष्यन्त द्वारा आश्रम मृग का पीछा करते हुए होता है।
- राजा पञ्चम अङ्क में हंसपदिका के सङ्गीत की प्रशंसा करता है तथा षष्ठ अङ्क में शकुन्तला तथा उसकी सखियों का चित्र बनाता है।
- दुष्यन्त षष्ठ अङ्क में **'धनमित्र'** नामक व्यापारी की मृत्यु पर उसकी सारी सम्पत्ति उसके गर्भस्थ पुत्र को दे देता है।
- दुष्यन्त के लिए इन्द्र अपना आधा सिंहासन छोड़ देते हैं तथा **राजा को मन्दारमाला** पहनाते हैं।
- राजा द्वारा तिरस्कृत शकुन्तला को प्रसव तक अपने घर में रखने को **'सोमरात'** तैयार होते हैं।
- अष्टमूर्ति शिव की उपासना शाकुन्तलम् के नान्दी में की गई है, यह **मङ्गलाचरण आशीर्वादात्मक** है।
- शाकुन्तल के मङ्गलाचरण में **स्त्रग्धरा छन्द** है, जिसके प्रत्येक चरण में **21 वर्ण** होते हैं। यह **पत्रावली नान्दी** है।
- जब तक विद्वान् सन्तुष्ट न हो जाय सूत्रधार अभिनय-कौशल को सफल नहीं समझता। वह ग्रीष्म ऋतु पर नटी से गीत सुनाने को कहता है।
- सूत्रधार आरम्भ में एक छन्द गाता है –> **(सुभगसलिल...)** दूसरा उद्गाथा छन्द में नटी गीत गाती है –> **(ईषदीषच्चुम्बितानि....)**
- सूत प्रथम अङ्क के आरम्भ में धनुष पर बाण चढ़ाये राजा की उपमा 'शिव' से देता है।
- प्रथम अङ्क में वैखानस राजा को चक्रवर्ती पुत्र प्राप्त करने का आशीर्वाद देता है।
- समिधा लाने जाता हुआ 'वैखानस' राजा को बताता है कि शकुन्तला के 'प्रतिकूल भाग्य की शान्ति' के लिए कण्व शकुन्तला पर अतिथि सत्कार का भार सौंप कर **'सोमतीर्थ'** गये हुए हैं।
- आश्रम से सरोवर का मार्ग वल्कलों के अग्रभाग से टपकते जल से रेखांकित है।
- राजा आश्रम में प्रवेश से पूर्व अपने आभूषण और धनुष सारथि (सूत) को देकर सादे वेष में प्रवेश करता है।
- आश्रम-प्रवेश के समय राजा की **'दाहिनी' भुजा फड़कती** है जो सुन्दर स्त्री की प्राप्ति का सूचक है।
- आश्रम-प्रवेश पर राजा वाटिका की दाहिनी ओर वृक्षों का सेंचन कर रही (प्रियंवदा आदि) बालिकाओं को देखता है।
- प्रियंवदा कहती है कि शकुन्तला के समीप रहने पर 'बकुल' (मौलश्री) का वृक्ष लता से युक्त लगता है।
- नवमालिका लता आम के वृक्ष से लिपटी है जिसका **'वनज्योत्स्ना'** नाम शकुन्तला ने रखा है।
- प्रियंवदा 'सप्तपर्ण वृक्ष' की वेदी पर राजा को बैठने हेतु कहती है।
- अनसूया द्वारा परिचय पूँछने पर राजा अपने को पुरुवंशी राजा द्वारा नियुक्त धर्माधिकारी बताता है।
- शकुन्तला के जन्म का वृत्तान्त अनसूया राजा को बताती है।
- कौशिक (विश्वामित्र) गौतमी नदी के किनारे तपस्या कर रहे थे।
- प्रियंवदा दो वृक्षों के सेंचन का ऋण बताकर शकुन्तला को रोकती है राजा अपनी अँगूठी देकर शकुन्तला को ऋण मुक्त करना चाहता है।
- द्वितीय अङ्क का आरम्भ खिन्न विदूषक के प्रवेश के साथ होता है जो राजा के 'मृगया' के व्यसन से दुःखी है।
- द्वितीय अङ्क में सेनापति और विदूषक 'मृगया' (शिकार) के गुण-दोष की चर्चा करते हैं।
- दुष्यन्त, शकुन्तला के प्रति अपने प्रेम को विदूषक से कहता है और कहीं यह अन्तःपुर में न बता दे इसलिए उस बात को हँसी में कही 'बात' कहता है।
- करभक सन्देश लाता है कि चौथे दिन महारानी (दुष्यन्त की माता) के व्रत (जीवित्पुत्रिका/जिउतियाव्रत) का 'पारण' है।
- राजा अपने स्थान पर 'विदूषक' को भेज देता है।
- तृतीय अङ्क का आरम्भ 'शिष्य' के प्रवेश से होती है जो शकुन्तला के अस्वस्थ होने की खबर प्रियंवदा से प्राप्त होने का अभिनय करता है।
- तृतीय अङ्क का आरम्भ 'विष्कम्भक' से होता है।
- तृतीय अङ्क में दुष्यन्त के शकुन्तला के समीप उपस्थित होने पर दोनों सखियाँ मृग-शावक को उसकी माँ से मिलाने के बहाने से हट जाती हैं।

- दुष्यन्त तृतीय अङ्क में **शकुन्तला से गान्धर्व विवाह** करता है। यह विवाह केवल क्षत्रियों के लिए ही स्वीकृत था।
- गौतमी दोनों सखियों के साथ शकुन्तला का स्वास्थ्य जानने आती है।
- चतुर्थ अङ्क का आरम्भ पुष्प चुनती हुई दो सखियों (प्रियंवदा, अनसूया) के प्रवेश के साथ होता है।
- अनसूया, शकुन्तला के 'भाग्यदेवता' के पूजन के लिए अधिक फूल तोड़ने को कहती है।
- शाप देकर जाते हुए **दुर्वासा को मनाने प्रियंवदा** जाती है।
- शकुन्तला कुटिया के द्वार पर बाएँ हाथ पर मुँह रखे चित्रलिखित सी बैठी है।
- शाप का वृत्तान्त केवल अनसूया और प्रियंवदा को ज्ञात रहता है।
- चौथे अङ्क का आरम्भ भी **शुद्ध विष्कम्भक** के साथ होता है।
- विष्कम्भक के पश्चात् सोकर उठे 'शिष्य' का प्रवेश मंच पर होता है। जो काश्यप के आदेशानुसार 'कितनी रात शेष है' यह जानने के लिए बाहर आता है।
- 'शकुन्तला सुखपूर्वक सोई कि नहीं' यह जानने के लिए गयी हुई प्रियंवदा यह समाचार लाती है कि 'कण्व' ने शकुन्तला के विवाह को अनुमति दे दी है।
- शकुन्तला 'गर्भिणी' है यह समाचार कण्व को **'अशरीरधारी छन्दोमयी'** वाणी ने यज्ञशाला में प्रविष्ट होने पर दिया।
- इस घटना को प्रियंवदा, अनसूया से बताती है।
- अनसूया शकुन्तला की विदाई हेतु नारियल के डिब्बे में बकुल (मौलश्री) की माला, केसर आदि आम की डाल पर लटका कर रखती है।
- अनसूया शकुन्तला की विदाई के अवसर पर गोरोचन, तीर्थों की मिट्टी, दूब के अग्रभाग आदि वस्तुएँ इकट्ठा करती है।
- स्वस्तिवाचन के समय तीन तापसियाँ शकुन्तला को आशीर्वाद देती हैं।
- पहली तापसी **'महादेवी'** शब्द प्राप्त करने, दूसरी **'वीर पुत्र'** को प्राप्त करने का और तीसरी **'पति से अधिक सम्मान'** प्राप्त करने का आशीर्वाद देती है।
- दो ऋषि कुमार जिनके नाम **नारद** व **गौतम** हैं, वे वृक्षों द्वारा प्रदत्त वस्त्र-आभूषण आदि शकुन्तला के लिए लाते हैं।
- दोनों सखियाँ चित्रकारी से प्राप्त ज्ञान के आधार पर शकुन्तला का शृङ्गार करती हैं।
- पूरे नाटक में **महर्षि कण्व केवल चौथे अङ्क** में दिखाई पड़ते हैं। वे स्नान के उपरान्त **'यास्यत्यद्य शकुन्तलेति'**..... श्लोक के साथ मंच पर प्रविष्ट होते हैं।
- चतुर्थ अङ्क के **22 श्लोकों में 14 श्लोक महर्षि कण्व** ने कहे हैं। चौथे अङ्क के प्रसिद्ध चार श्लोक भी महर्षि कण्व द्वारा कहे गये हैं।
- **ययाति** चंद्रवंश के संस्थापक राजाओं में थे जिनकी **देवयानी** और **शर्मिष्ठा** नाम की दो पत्नियाँ थीं।
- **देवयानी** दानवों के गुरु **शुक्राचार्य की पुत्री** और ययाति की विवाहिता पत्नी थी।
- दानवों के राजा **'वृषपर्वा' की पुत्री शर्मिष्ठा** देवयानी की सेविका के रूप में आयी थी। ययाति ने उससे गान्धर्व विवाह कर लिया।
- ययाति के 5 पुत्रों में **शर्मिष्ठा का पुत्र 'पुरु'** भी था जिसने शुक्राचार्य के शाप से वृद्ध हुए ययाति की वृद्धावस्था अपने ऊपर ले लिया था।
- अग्निवेदी की परिक्रमा करते हुए कण्व ने ऋग्वैदिक छन्द 'त्रिष्टुप्' में शकुन्तला को आशीर्वाद दिया।
- 'त्रिष्टुप्' के प्रत्येक चरण में 11 वर्ण होते हैं, 4 या 5 वर्ण पर यति होती है।
- वृक्षों के प्रथम 'पुष्पोद्गम' के समय शकुन्तला आश्रम में उत्सव मनाया करती थी।
- 'वृक्षों से' कण्व द्वारा शकुन्तला के जाने हेतु आज्ञा माँगने पर वे 'कोयल' की आवाज में आज्ञा प्रदान करते हैं।
- वृक्षों ने शकुन्तला को कोयल की आवाज में जाने की आज्ञा दे दी है। इस बात की कण्व अपरवक्त्र छन्द में पुष्टि करते हैं।
- आकाशवाणी के द्वारा शकुन्तला यात्रा की जो मङ्गल कामना की गई है वह **शाकुन्तलम् का 'मध्यनान्दी'** है।
- जाती हुई शकुन्तला अपनी **लता-बहिन 'वनज्योत्सना'** से गले मिलकर विदाई लेती है। जो 'आम्रवृक्ष' से लिपटी है। और इसे धरोहर के रूप में सखियों के हाथ में देती है।
- शकुन्तला कण्व से गर्भ के कारण शिथिल हरिणी के कुशलपूर्वक सन्तानोत्पत्ति का समाचार अपने पास भेजने को कहती है।
- कुशाग्रों से विंधे मुखवाले जिस मृग के मुख पर शकुन्तला ने इंगुदी (हिंगोट) का तेल लगाया था तथा साँवा के चावल से पाला था वह शकुन्तला के जाते समय उसका वस्त्र खींचता है। वह उसे पिता कण्व को सौंपती है।
- शकुन्तला के साथ सरोवर के तट तक आये कण्व क्षीरवृक्ष (पीपल) के नीचे बैठ कर दुष्यन्त को भेजने हेतु संदेश देते हैं।
- कमल के पत्ते की ओट में बैठे सहचर (चकवा) को न देख पाने के कारण चकवी रोती (चिल्लाती) है।
- शकुन्तला द्वारा पहले पूजा के रूप में डाले गये 'नीवार' अब कुटी के द्वार पर उगे हैं जो कण्व को उसकी याद दिलायेंगे।

- **''अपराजिता रक्षाकरण्डक''** सिंह शावक के साथ खेलते सर्वदमन के हाथ पर बंधा है जो बालक के माता-पिता के अतिरिक्त अन्य के छूने पर सर्प बनकर डस लेता है।
- षष्ठ अङ्क में इन्द्र-सारथि मातलि राजा में क्रोध या वीरता को जगाने के लिए विदूषक पर आक्रमण करता है।
- मातलि विदूषक पर आक्रमण करके उसे **'मेघप्रतिच्छन्द'** नामक महल के ऊपरी मंजिल पर ले जाता है।
- राजा उस पर आक्रमण हेतु 'यवनी' नामक परिचारिका से धनुष माँगता है।
- मातलि राजा के समक्ष प्रकट होकर राजा को देवासुर संग्राम में इन्द्र के सहायतार्थ चलने हेतु निवेदन करता है।
- **कालनेमि का वंशज 'दुर्जेय'** ने इन्द्र पर आक्रमण किया जिसे केवल दुष्यन्त मार सकता है।
- राजा दुष्यन्त के **मंत्री 'पिशुन'** हैं जिन पर वह देवासुर संग्राम में जाते हुए राज्यभार सौंपता है। विदूषक से यह बात उन्हें बताने के लिए कहता है।
- **हेमकूट किन्नरों का पर्वत** है जहाँ प्रजापति 'मारीच' रहते हैं।
- जब मातलि 'राजा' के आगमन की सूचना (मारीच को) देने जाता है तब राजा अशोक के वृक्ष के नीचे बैठता है।
- 'जातकर्म' 16 संस्कारों में चौथा है। जिस अवसर पर सर्वदमन के हाथ पर **'अपराजिता'** नामक रक्षासूत्र बाँधा गया था।
- मारीच **'वत्स, चिरंजीव। पृथिवीं पालय'** आशीर्वाद राजा को देते हैं तथा दुर्वासा - शाप का वृत्तान्त दोनों को बताते हैं।
- अदृश्य तेजोमयी मूर्ति के रूप में मेनका 'अप्सरास्तीर्थ' से शकुन्तला को लेकर दाक्षायणी (मारीच-पत्नी) के पास गयी।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक का भरतवाक्य (अन्तिम श्लोक) (प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय) **'रुचिरा' छन्द** में है। जिसके प्रत्येक चरण में 13 वर्ण, 4, 9 पर यति होती है।
- जीवों को बलात् वश में कर लेने के कारण भरत का नाम 'सर्वदमन' था।
- पञ्चम अङ्क में अँगूठी के शचीतीर्थ में जलतर्पण के समय गिरने की बात का पता सर्वप्रथम 'गौतमी' के मुख से पता चलता है।

उत्तररामचरितम्

- **लेखक** – भवभूति
- **विधा** – नाटक
- **अङ्क** – 7 (सात)
- **प्रधानरस** – करुण
- **उपजीव्य** (i) वाल्मीकीयरामायण उत्तरकाण्ड (सर्ग 42-97 तक) (ii) पद्मपुराण (पातालखण्ड 1-68 तक)
- **विशेषतायें**– (1) सप्तम अङ्क में **गर्भनाटक** की योजना
  (2) प्रथम अङ्क में **चित्रवीथी** की योजना
  (3) **विदूषक रहित** नाटक
  (4) तृतीय अङ्क में **छायाङ्क** की योजना
- **प्रमुखपात्र** – राम (नायक), सीता (नायिका), गोदावरी, भागीरथी, तमसा, मुरला, वासन्ती (वनदेवता), पृथ्वी, आत्रेयी, वशिष्ठ, कौशल्या, मुनिबालक सौधातकि, गुप्तचरदुर्मुख, लव, कुश, चन्द्रकेतु, वाल्मीकि, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, अष्टावक्र, दण्डायन, सुमन्त्र, अरुन्धती, जनक, कञ्चुकी आदि।
- अनुष्टुप् (84 श्लोक), शिखरिणी (30) वसन्ततिलका (26) शार्दूलविक्रीडित (25) आदि।
- उत्तररामचरितम् में भवभूति ने **38 अलङ्कारों का प्रयोग** किया है; और प्रयोग की दृष्टि से उन्हें–उपमा, उत्प्रेक्षा, काव्यलिङ्ग, रूपक, अर्थान्तरन्यास अत्यन्त **प्रिय अलङ्कार** माने जाते हैं।
- इसमें **7 (सात) अङ्कों में** रामायण के उत्तरकाण्ड की कथा वर्णित है।
- राम के वन-प्रत्यागमन के बाद राजगद्दी पाने से लेकर सीता-मिलन तक की सम्पूर्ण कथाएँ कुछ कल्पना-प्रसूत घटनाओं के साथ दिखाई गई हैं। यह **भवभूति का सर्वश्रेष्ठ नाटक** है।
- सप्तम अंक में **'गर्भाङ्क' की कल्पना** है।
- पद्मपुराण में वर्णित रामकथा से उत्तररामचरित की कथा का अधिक साम्य है।
- उत्तररामचरित में **कुल पात्रों की संख्या 30** है। इनके अतिरिक्त 6 पात्रों का उल्लेख मात्र है।
- भवभूति ने उत्तररामचरित में **19 छन्दों का प्रयोग** किया है।
- उत्तररामचरित में **कुल श्लोकों की संख्या 256** है।
- **अनुष्टुप् के पश्चात् शिखरिणी छन्द** का सर्वाधिक प्रयोग हुआ है। मङ्गलाचरण में अनुष्टुप् छन्द है।
- भवभूति ने उत्तररामचरित में केवल **'शौरसेनी प्राकृत'** का प्रयोग किया है।
- नाटक का आरम्भ **'चित्रदर्शन'** से होता है।
- प्रथम अङ्क में राम के राज्याभिषेक से उत्पन्न प्रतिक्रिया का निरीक्षण करके **'दुर्मुख'** आता है।
- मङ्गलाचरण में प्राचीन कवियों वाल्मीकि आदि को लक्ष्य करके प्रार्थना की गई है।
- 'उत्तररामचरितम्' में **'नमस्कारात्मक' मङ्गलाचरण** किया गया है।

- महाराज **दशरथ की पुत्री शान्ता** के पति ऋष्यशृङ्ग ने बारह वर्ष चलने वाला यज्ञ प्रारम्भ किया है इसकी सूचना प्रथम अङ्क में प्राप्त होती है।
- महर्षि वशिष्ठ का संदेश लेकर **अष्टावक्र** आते हैं। वे 'कहोड़' के पुत्र हैं।
- लक्ष्मण द्वारा सीता के मनोविनोदार्थ लाये गये चित्रवीथी में सीता के अग्निशुद्धि तक की कथा चित्रित है।
- लक्ष्मण की पत्नी का नाम **'उर्मिला'** है।
- चित्रवीथी बनाने वाले **चित्रकार का नाम अर्जुन** है।
- **सौधातकि** और **दण्डायन** वाल्मीकि के दो शिष्य हैं।
- लक्ष्मण के पुत्र का नाम **'चन्द्रकेतु'** है।
- **शम्बूक** एक शूद्र तपस्वी है।
- चन्द्रकेतु के वृद्ध सारथि **'सुमन्त्र'** हैं।
- **वासन्ती** वनदेवता है और सीता की प्रियसखी है।
- **आत्रेयी** एक तपस्विनी ब्रह्मचारिणी है।
- **तमसा** और **मुरला** दो नदी अधिष्ठात्री देवियाँ हैं।
- महर्षि **वशिष्ठ की पत्नी 'अरुन्धती'** हैं तथा **महर्षि अगस्त्य की पत्नी 'लोपामुद्रा'** हैं।
- द्वितीय अङ्क में राम 'शम्बूक वध' करते हैं।
- पञ्चवटी के पास स्थित गोदावरी नदी से राम के जीवन के प्रति सावधान रहने की प्रार्थना 'लोपामुद्रा' द्वारा 'मुरला' के माध्यम से की गई है।
- प्रसवपीड़ा से पीड़ित होकर सीता ने स्वयं को गङ्गा के प्रवाह में डाल दिया और वहीं उनके दोनों पुत्र उत्पन्न हुए।
- देवी गङ्गा ने दोनों बालकों को महर्षि वाल्मीकि को समर्पित किए।
- तृतीय अङ्क में कुश और लव के `12वीं वर्षगाँठ' की चर्चा है।
- 'गङ्गा' ने सीता को आदेश दिया कि वे अपने हाथों से तोड़े गये पुष्पों से अपने पुराण आदिश्वसुर सूर्य की पूजा करें।
- 'गङ्गा' के प्रभाव से सीता को वन देवता भी नहीं देख पाते।
- तृतीय अङ्क के आरम्भ में सीता 'गोदावरी' के जल से निकलती हैं।
- गोदावरी से निकलती सीता करुणा की मूर्ति एवं शरीरधारिणी विरहव्यथा सी प्रतीत होती हैं।
- अदृश्य सीता के साथ तमसा रहती है और वह सीता को देख सकती है।
- तृतीय अङ्क का आरम्भ **'विष्कम्भक'** से होता है।
- 'वासन्ती' सीता-त्याग के लिए राम की भर्त्सना करती है।
- राम तृतीय अङ्क में 'अश्वमेध' यज्ञ की सूचना देते हैं और सीता की स्वर्णमूर्ति प्रतिमा को उन्होंने पत्नी के स्थान पर रखा है।
- तृतीय अङ्क का आरम्भ तमसा-मुरला नामक दो नदियों के वार्तालाप से होता है।
- उत्तररामचरित में **`38 अलङ्कारों'** का प्रयोग है सर्वाधिक प्रयोग **'उपमा' (74 बार)** का है।
- चतुर्थ अङ्क का आरम्भ दाण्डायन और सौधातकि के वार्तालाप से होता है।
- तृतीय अङ्क में श्लोकों की संख्या **`48'** है।
- चतुर्थ अङ्क में कौशल्या के पूछने पर 'लव' अपने को वाल्मीकि का पुत्र बताता है।
- 'रामकथा' के अभिनय के लिए वाल्मीकि ने इस कथा को कुश के संरक्षण में भरतमुनि के पास भेजा।
- चतुर्थ अङ्क में लव यज्ञ का घोड़ा पकड़ता है।
- पञ्चम अङ्क में लव **'जृम्भक अस्त्र'** का प्रयोग करता है।
- लव राम के शौर्य को कुछ नहीं समझता और उन पर आक्षेप करता है।
- षष्ठ अङ्क में **लव और चन्द्रकेतु में** दिव्य अस्त्रों से **घोर युद्ध** होता है।
- चन्द्रकेतु के 'आग्नेय अस्त्र' की प्रतिकार स्वरूप लव 'वारुण' अस्त्र छोड़ता है।
- सप्तम अङ्क में वाल्मीकि की कृति का 'अप्सराओं' द्वारा अभिनय किया गया है।
- 'उत्तररामचरितम्' का **भरतवाक्य शार्दूलविक्रीडित छन्द** में है।
- उत्तररामचरित में **करुणरस प्रधान** है। उसमें वैदर्भी एवं गौडीरीति का प्रयोग है।
- 'उत्तररामचरितम्' सुखान्त नाटक है।
- तृतीय अङ्क में सीता द्वारा पाले गये हाथी, मयूर और कदम्ब की चर्चा आती है।
- मयूर 'कदम्ब' के वृक्ष पर बैठकर मधुर स्वर करता है।
- प्रथम अङ्क में राम ने लोकानुरञ्जन के लिए सीता तक को त्याग देने की बात कही है।

**''स्नेहं दयां च सौख्यं च यदि वा जानकीमपि।
आराधनाय लोकस्य मुञ्चतो नास्ति मे व्यथा।।''**

- प्रथम अङ्क में राम अष्टावक्र से यह प्रसिद्ध श्लोक कहते हैं।

**''लौकिकानां हि साधूनामर्थं वागनुवर्तते।
ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति।।''**

- तृतीय अङ्क का आरम्भ राम के करुण रस के उद्घोष के साथ होता है। जिसे मुरला कहती है–

**अनिर्भिन्नो गभीरत्वादन्तर्गूढघनव्यथः।
पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः।।**

- तृतीय अङ्क में सर्वाधिक **अनुष्टुप् (11) छन्द** का प्रयोग हुआ है। **7 'वसन्ततिलका'** वृत्त प्रयुक्त है।
- तृतीय अङ्क का अन्त भी करुण रस के उद्घोष से होता है जिसे तमसा कहती है – **'एकोरसः करुण एव निमित्तभेदाद्। (वसन्ततिलका)**
- लवणासुर के वध के लिए **'शत्रुघ्न'** जाते हैं।
- मूल कथा में अश्वमेधीय अश्व का रक्षक **भरतपुत्र 'पुष्कल'** है, उत्तररामचरित में **लक्ष्मण पुत्र चन्द्रकेतु** है।
- सप्तम अङ्क में गङ्गा और पृथ्वी द्वारा प्रशंसित सीता के चरित्र की पवित्रता की घोषणा वशिष्ठ पत्नी अरुन्धती करती हैं।
- कवियों ने **'कारुण्यं भवभूतिरेव तनुते'** कहकर भवभूति का यशोगान किया है।
- भवभूति ने चौथे अङ्क में समांस या अमांस मधुपर्क का प्रसंग उठाया है।
- पञ्चवटी में राम का **'शयन-शिलातल'** कदली वन के मध्य में विद्यमान था।
- वासन्ती केवल लक्ष्मण का कुशलक्षेम पूछती है।
- वासन्ती राम को जटायु द्वारा तोड़ा गया काले लोहे का बना रावण का रथ दिखाती है।

किरातार्जुनीयम्

- **लेखक** – भारवि
- **विधा** – महाकाव्य
- **सर्ग** – 18
- **प्रधानरस** – वीर
- **उपजीव्य** – महाभारत का वनपर्व
- **कथानक** – अर्जुन द्वारा भगवान् शिव की तपस्या से पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति।
- **प्रमुखपात्र** – अर्जुन, द्रौपदी, युधिष्ठिर, भीम, नकुल, सहदेव, श्रीकृष्ण, वनेचर, सुयोधन (दुर्योधन), इन्द्र, किरातवेशधारी शिव, व्यास, यक्ष आदि
- भारवि का प्रामाणिक जीवनवृत्त सर्वथा अप्राप्त है, कुछ किंवदन्तियाँ प्रचलित हैं।
- महाकवि दण्डी विरचित 'अवन्तिसुन्दरीकथा' के अनुसार भारवि का जीवनवृत्त निम्नलिखित है।
- भारवि चालुक्यवंशी सम्राट् पुलकेशिन द्वितीय के अनुज विष्णुवर्धन (615 ई0) के मित्र/सभापण्डित/राजकवि थे।

स मेधावी कविर्विद्वान् भारविः प्रभवो गिराम्।
अनुरुध्याकरोन्मैत्रीं नरेन्द्रे विष्णुवर्धने॥

- भारवि का वास्तविक नाम – **दामोदर**
- माता का नाम – **सुशीला**
- पिता का नाम – **नारायण स्वामी (श्रीधर)**
- पत्नी का नाम – **रसिकवती या रसिका**
- उपाधि/उपनाम – **आतपत्र भारवि**
- महाकवि दण्डी के प्रपितामह – **भारवि**
- भारवि **कुशिक/कौशिक गोत्रीय** ब्राह्मण थे।

भारवि की वंशपरम्परा

नारायणस्वामी (श्रीधर) – (भारवि के पिता)
↓
भारवि – (दण्डी के प्रपितामह)
↓
मनोरथ – (दण्डी के पितामह)
↓
वीरदत्त-गौरी – (दण्डी के पिता-माता)
↓
दण्डी – (भारवि के प्रपौत्र)

- दण्डी की रचना – **दशकुमारचरितम्।**
- भारवि का सम्बन्ध कोङ्कण के गङ्गवंशी नरेश दुर्विनीत और काञ्ची के पल्लववंशी नरेश सिंहविष्णु तथा उनके पुत्र महेन्द्रविक्रम के साथ भी था।
- सिंहविष्णु से मिलते समय कवि की अवस्था थी – **बीस वर्ष।**
- किरातार्जुनीयम् के 15वें सर्ग की संस्कृत टीका लिखी थी – **विद्वान् नरेश दुर्विनीत ने।**
- एक अन्य किंवदन्ती के अनुसार भारवि धारानगरी के निवासी थे।

भारवि के समय निर्धारण में प्रमुख स्रोत

- पुलकेशिन द्वितीय का एहोल शिलालेख।
- वामन और जयादित्य की काशिकावृत्ति।
- गुम्मरेड्डीपुर का पत्रलेख।
- महाकवि दण्डी की अवन्तिसुन्दरीकथा और उस पर आधारित 'अवन्तिसुन्दरीकथासार'।
- विष्णुवर्धन, सिंहविष्णु तथा दुर्विनीत की ऐतिहासिकता।
- भारवि का जन्मसमय – **560 ई0 के लगभग।**
- भारवि का रचनाकाल – **615 ई0 के लगभग।**
- भारवि का समय – **600 ई0 के आसपास (555 ई0 से 625 ई0 के मध्य) (छठी शती के उत्तरार्ध से सातवीं शती के पूर्वार्द्ध तक)**

➢ श्री एन0सी0 चटर्जी ने उन्हें **ट्रावनकोर** का निवासी बताया है।

➢ विद्वानों का मानना है कि महाकवि भारवि विष्णुवर्धन, सिंहविष्णु, महेन्द्रविक्रम एवं दुर्विनीत के आश्रय में रहने वाले एक **दाक्षिणात्य कवि** थे।

➢ महाकवि भारवि का जन्म– **नासिक के समीपवर्ती बरारप्रान्त के 'अचलपुर' (एलिचपुर) नामक ग्राम में।**

➢ भारवि **शैवदर्शन** के अनुयायी थे, उन्होंने किरातार्जुनीयम् के 18वें सर्ग में शिवस्तुति की है।

➢ भारवि किस कवि से प्रभावित थे – **कालिदास से**

➢ भारवि से कौन प्रभावित था – **महाकवि माघ**

➢ राजशेखर के अनुसार कालिदास एवं भर्तृमेण्ठ की भाँति भारवि की भी परीक्षा उज्जयिनी में ली गयी थी – **''श्रूयते चोज्जयिन्यां काव्यकारपरीक्षा''**

➢ **उत्फुल्लस्थलनलिनीवनादमुष्मात्.......कनकमयातपत्रलक्ष्मीम् (5/39)** 'किरातार्जुनीयम्' के इस श्लोक की उपमा के कारण ही उन्हें **'आतपत्रभारवि'** की उपाधि मिली।

भारवि की रचना

➢ भारवि की रचना/कृति – **''किरातार्जुनीयमहाकाव्यम्' (एकमात्र कृति)**

➢ सर्ग – **18 (अठारह)**

➢ श्लोक – **1040 (कुछ विद्वानों के अनुसार-1030)**

➢ उपजीव्यग्रन्थ – **महाभारत का वनपर्व**

➢ नायक – **मध्यमपाण्डव अर्जुन (धीरोदात्त)**

➢ प्रतिनायक – **किरातवेशधारी शिव**

➢ नायक की प्रकृति – **धीरोदात्त**

➢ नायिका – **द्रौपदी**

➢ मुख्य/अङ्गी/प्रधानरस – **वीररस**

➢ गौण/अङ्गरस – **शृङ्गार आदि**

➢ रीति एवं गुण – **पाञ्चाली रीति एवं ओजगुण**

➢ किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग में वैदर्भी रीति

➢ अलङ्कार – **3 शब्दालङ्कार, 60 अर्थालङ्कार, 7 चित्राक्षर**

➢ भारवि की शैली – **पाण्डित्यप्रधान अलङ्कृतशैली**

➢ बृहत्त्रयी में प्रथमस्थान पर परिगणित महाकाव्य –
1. भारवि का किरातार्जुनीयम् (सर्ग 18),
2. माघ का शिशुपालवधम् (सर्ग 20),
3. श्रीहर्ष का नैषधीयचरितम् (सर्ग 22)

➢ भारवि के किरातार्जुनीयम् का प्रारम्भ – **'श्री'** – शब्द से तथा प्रत्येक सर्ग के अन्तिम श्लोक में **'लक्ष्मी'** पद का प्रयोग हुआ है।

➢ भारवि के काव्य को कहा जाता है – **''लक्ष्मीपदाङ्क''**

➢ किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग में श्लोक/पद्य हैं – **46**

➢ किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग में छन्द – **वंशस्थ** (1-44 श्लोकों तक)

➢ 45वें श्लोक में (न समयपरिरक्षणं क्षमं ते....) – **पुष्पिताग्रा छन्द**

➢ अन्तिम 46वें श्लोक में (विधिसमयनियोगाद् दीप्तिसंहारजिह्मम्) – **मालिनी छन्द**

➢ अर्थगौरव के लिए प्रसिद्ध हैं – **भारवि** (भारवेरर्थगौरवम्)

➢ नायक अर्जुन और प्रतिनायक किरात (शिव) के नाम पर महाकाव्य का नाम पड़ा – **'किरातार्जुनीयम्'**

➢ श्रीकृष्णमाचारियर ने किरातार्जुनीयम् की कितनी टीकाओं का उल्लेख किया है – **34**

➢ किरातार्जुनीयम् की सर्वाधिक प्रसिद्ध, प्रामाणिक एवं सारवती टीका का नाम – **'घण्टापथ'** – **मल्लिनाथ**

➢ ''घण्टापथ'' का शाब्दिक अर्थ है – **राजमार्ग**

➢ किरात की अन्य टीकाओं में सर्वाधिक लोकप्रिय टीका है – **'शब्दार्थदीपिका'** – **श्री चित्रभानु** (केवल प्रथम तीन सर्गो पर)

➢ किरातार्जुनीयम् के प्रथम तीन सर्गों को कहा जाता है – **'पाषाणत्रय'**

➢ भारवि के आश्रयदाता दुर्विनीत ने संस्कृत टीका लिखी – **किरातार्जुनीयम् के 15वें सर्ग पर।**

➢ 'शब्दावतार' नाम से बृहत्कथा का संस्कृत रूपान्तरण किसने किया – **दुर्विनीत ने**

➢ किरातार्जुनीयम् का 15वाँ सर्ग प्रसिद्ध है – **चित्रकाव्य के लिए**

➢ भारवि का एकाक्षर श्लोक – (केवल नकार का प्रयोग)
न नोननुन्नो नुन्नोनो नाना नानानना ननु।
नुन्नोऽनुन्नो ननुन्नेनो नानेना नुन्ननुन्ननुत्॥
(किरात0 – 15/14)

➢ अर्थगौरव का क्या अर्थ है – अल्पशब्दों में प्रभूत अर्थ का सन्निवेश अर्थात् 'गागर में सागर भरना।'

➢ **''नारिकेलफलसम्मितं वचः''** मल्लिनाथ का यह कथन किसके लिए है – भारवि के लिए।

- **''प्रसन्नगम्भीरपदा सरस्वती''** यह वाक्य किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है – किरातार्जुनीयम् से
- **''स्फुटता न पदैरपाकृता न च न स्वीकृतमर्थगौरवम्''** यह वाक्य किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है – किरातार्जुनीयम् (2/27)
- किरातार्जुनीयम् का मुख्य कथानक है – अर्जुन द्वारा किरातवेशधारी भगवान शङ्कर से पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति।
- अर्जुन पाशुपत अस्त्र के लिए भगवान शङ्कर को प्रसन्न करने के लिए हिमालय (इन्द्रकील) पर्वत की यात्रा व्यास के कहने पर करते हैं।
- किरातार्जुनीयम् में 'किरात' से तात्पर्य है–**किरातवेषधारी शिव**
- 'किरातार्जुनीयम्' का मङ्गलाचरण है – **वस्तुनिर्देशात्मक**
- किरातार्जुनीयम् महाकाव्य का फल है – **नायक अर्जुन को किरातवेशधारी शिव से पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति।**
- युधिष्ठिर बारह वर्षों के वनवास के काल में अपने अनुजों और द्रौपदी के साथ कहाँ रहते थे – **द्वैतवन में।**

किरातार्जुनीयम् का नामकरण

- किरातश्च अर्जुनश्च किरातार्जुनौ **(द्वन्द्वसमास)** तौ अधिकृत्य कृतं काव्यम् इति किरातार्जुनीयम्।
- **किरातार्जुन + 'छ'** ('अधिकृत्य कृते ग्रन्थे' के अर्थ में ''छ'' प्रत्यय)
- **'शिशुक्रन्दयमसभद्वन्द्वेन्द्रजननादिभ्यश्छः'** 'सूत्र से ''छ'' प्रत्यय।
- किरातार्जुन + छ (ईय) = किरातार्जुनीय। (**''आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम्''** से 'छ' के स्थान पर 'ईय' आदेश हो गया)
- ग्रन्थवाची शब्द सदा नपुंसकलिङ्ग में होते हैं, अतः – 'किरातार्जुनीयम्' पद बना।
- इस प्रकार नायक अर्जुन और प्रतिनायक (शिव) के नाम पर महाकाव्य का नाम **'किरातार्जुनीयम्'** पड़ा।

किरातार्जुनीयमहाकाव्य के पात्र

- अर्जुन **(नायक)**, द्रौपदी **(नायिका)**, किरातवेशधारी शिव **(प्रतिनायक)**, श्रीकृष्ण, युधिष्ठिर, भीम, नकुल, सहदेव, वनेचर, दुर्योधन, कर्ण, भीष्म, परशुराम, यक्ष, द्रोण, इन्द्र, व्यास, मूक (शूकर) आदि प्रमुख पात्र हैं।

किरातार्जुनीयमहाकाव्य के टीकाकार आचार्य मल्लिनाथसूरि का जीवनचरित्र

- काश्यपगोत्रीय तेलगू ब्राह्मण – **मल्लिनाथ सूरि**
- मल्लिनाथ के पिता – **कार्दिन**
- मल्लिनाथ के दो पुत्र – **पेडुभट्ट तथा कुमारस्वामी**
- कुमारस्वामी की रचना– **प्रतापरुद्रयशोभूषण** (काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ)
- मल्लिनाथ की आनुवांशिक उपाधि – **कोलाचल**
- मल्लिनाथ की व्यक्तिगत उपाधि – **महामहोपाध्याय**
- मल्लिनाथ का समय – **14वीं शताब्दी का उत्तरार्ध**

मल्लिनाथ की सुप्रसिद्ध संस्कृत टीकायें

1. रघुवंशमहाकाव्यम् (कालिदास) – **सञ्जीवनी टीका**
2. कुमारसम्भवम् (कालिदास) – **सञ्जीवनी टीका**
3. मेघदूतम् (कालिदास) – **सञ्जीवनी टीका**
4. किरातार्जुनीयम् (भारवि) – **घण्टापथ टीका**
5. शिशुपालवधम् (माघ) – **सर्वङ्कषा टीका**
6. रावणवध (भट्टि) – **जीवातु टीका**
7. नैषधीयचरितम् (श्रीहर्ष) – **जीवातु टीका**

- इसके अतिरिक्त तार्किकरक्षा, नलोदयकाव्य, प्रशस्तपादभाष्य, और लघुशब्देन्दुशेखर पर भी मल्लिनाथ ने टीका लिखी है।
- इनका पूरा नाम– **महामहोपाध्याय कोलाचल मल्लिनाथसूरि**
- किरातार्जुनीयम् के दूसरे प्रसिद्ध टीकाकार – **चित्रभानु – ''शब्दार्थदीपिका'' (त्रिसागरिका)** (प्रारम्भ के केवल तीन सर्गों पर)

किरातार्जुनीयम् की संक्षिप्त कथा

- किरातार्जुनीयम् में कौरवों पर विजय प्राप्ति के लिए अर्जुन का हिमालयपर्वत पर जाकर तपस्या करना, किरातवेशधारी शिव से युद्ध और प्रसन्न हुए भगवान् शिव से पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति का वर्णन है।
- **सर्ग – 1.** हस्तिनापुर भेजे गये वनेचर का द्वैतवन में आकर युधिष्ठिर से मिलना, दुर्योधन के शासन प्रबन्ध का वर्णन तथा युधिष्ठिर के लिए/द्रौपदी का उत्तेजनापूर्ण कथन।
- **सर्ग – 2.** युधिष्ठिर–भीम का संवाद, व्यास का आगमन।
- **सर्ग – 3.** युधिष्ठिर – व्यास संवाद, व्यास द्वारा अर्जुन को पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति के लिए हिमालय पर जाकर तपस्या करने का आदेश, अर्जुन का प्रस्थान।
- **सर्ग – 4.** शरद् ऋतु का वर्णन।
- **सर्ग – 5.** हिमालय पर्वत का वर्णन।
- **सर्ग – 6.** हिमालय पर अर्जुन की तपस्या, तपोविघ्न के लिए इन्द्र द्वारा अप्सराओं को भेजना।
- **सर्ग – 7.** इन्द्र द्वारा प्रेषित गन्धर्वों और अप्सराओं के आने और उनके विलासों का वर्णन

➤ **सर्ग – 8.** गन्धर्वों और अप्सराओं का उद्यानविहार और जलक्रीडा।

➤ **सर्ग – 9.** सायंकाल और चन्द्रोदयवर्णन, सुरतवर्णन तथा प्रभातवर्णन।

➤ **सर्ग – 10.** वर्षा आदि का वर्णन, अप्सराओं का चेष्टावर्णन तथा उनका प्रयत्न वैफल्य।

➤ **सर्ग – 11.** मुनिरूप में इन्द्र का आगमन, इन्द्र अर्जुन संवाद, इन्द्र का पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति के लिए अर्जुन को शिवाराधना करने का उपदेश।

➤ **सर्ग – 12.** अर्जुन की तपस्या, शूकर के रूप में मूक नामक दानव का अर्जुन वध के लिए आगमन, तथा किरातवेशधारी शिव का भी आगमन।

➤ **सर्ग – 13.** शूकररूपधारी मूकदानव पर शिव और अर्जुन के बाणों का प्रहार, उस वराह की मृत्यु, बाण के विषय में शिव के अनुचर और अर्जुन का विवाद।

➤ **सर्ग – 14.** सेना सहित शिव का आगमन और सेना के साथ अर्जुन का युद्ध।

➤ **सर्ग – 15.** चित्रयुद्ध वर्णन, (चित्रकाव्य)।

➤ **सर्ग – 16.** शिव और अर्जुन का अस्त्रयुद्ध।

➤ **सर्ग – 17.** शिव की सेना के साथ अर्जुन का युद्ध, शिव और अर्जुन का युद्ध।

➤ **सर्ग – 18.** शिव और अर्जुन का बाहुयुद्ध, शिव का वास्तविक रूप में प्रकट होना, इन्द्रादि का आगमन, अर्जुन को पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति, इन्द्रादि का अर्जुन को विविध अस्त्र देना, सफल मनोरथ अर्जुन का युधिष्ठिर के समीप पहुँचना।

➤ सम्भोग शृङ्गार का सुन्दर वर्णन है – **सर्ग 8 और 9 में।**

➤ युद्ध वर्णन में वीररस का वर्णन है – **सर्ग 13 से 17 तक।**

➤ उपमा अलङ्कार का सुन्दर प्रयोग है – **सर्ग 13 से 17 में।**

➤ प्रमुख वर्णनवैचित्र्य – सर्ग 4 में **शरद् वर्णन।**
– सर्ग 5 में **हिमालय वर्णन।**
– सर्ग 8 में **जलक्रीडा वर्णन।**
– सर्ग 9 में **सन्ध्या, चन्द्रोदय और सुरत वर्णन।**
– सर्ग 12 से 18 तक – **युद्ध वर्णन।**

➤ अर्थगौरव या अर्थगाम्भीर्य के लिए प्रशंसा की जाती है – **महाकवि भारवि की।**

➤ भारवि को कौन सा रस सर्वाधिक प्रिय है – **वीर और शृङ्गार रस**

➤ महाकाव्यों में रीतिशैली के जन्मदाता कवि हैं – **भारवि।**

➤ ग्रन्थ के आरम्भ में **'श्री'** शब्द तथा सर्गान्त श्लोकों में **'लक्ष्मी'** शब्द का प्रयोग किया गया है – **किरातार्जुनीयम् में।**

➤ किस कवि का काव्यसौन्दर्य 'नारिकेलफलसम्मितम्' माना गया है – **भारवि का।**

➤ भारवि की प्रशंसा में कही गयी सूक्तियाँ हैं –
(1) ''भारवेरर्थगौरवम्''
(2) ''भा रवेरिव भारवेः''
(3) ''प्रकृतिमधुरा भारविगिरः''
(4) ''नारिकेलफलसम्मितं वचः''
(5) ''स्फुटता न पदैरपाकृता''

➤ केवल 'न' कार को लेकर सर्वप्रथम एकाक्षरी श्लोक लिखने वाले कवि हैं – **भारवि।**

➤ अपने काव्य में सर्वप्रथम चित्रालङ्कारों का प्रयोग करने वाले कवि हैं – **भारवि** (किरातार्जुनीयम्, सर्ग-15)

➤ भारवि ने विभिन्न सर्गों में 11 छन्दों का प्रयोग किया हैं और सर्गान्त श्लोकों में मालिनी और वसन्ततिलका प्रमुख हैं।

➤ भारवि द्वारा प्रयुक्त मुख्य छन्दो की संख्या है – **13**

➤ भारवि का अत्यन्त प्रिय छन्द है – **वंशस्थ तथा उपजाति।**

➤ क्षेमेन्द्र ने वंशस्थ छन्द के लिए प्रशंसा की है – **भारवि की।**

➤ संस्कृतसाहित्य में रीतिकाव्यपरम्परा के जन्मदाता है – **भारवि।**

➤ किरातार्जुनीयम् में दुर्योधन को किस नाम से वर्णित किया गया है – **सुयोधन।**

➤ 'राजनीतिपरक महाकाव्य' कहा गया है – किरातार्जुनीयम् को

➤ शिव और अर्जुन पर आधारित महाकाव्य है – **किरातार्जुनीयम्**

➤ किरातार्जुनीयम् में एकाक्षर श्लोकों की संख्या है – **7 (सप्त)**

➤ महाकवि भारवि की मित्रता थी – **चालुक्यवंशी राजा विष्णुवर्धन से**

➤ भारवि के तीन पुत्र थे, इनके मध्यम पुत्र मनोरथ के चार पुत्र थे, जिनमें एक पुत्र वीरदत्त था इन्हीं वीरदत्त और गौरी के पुत्र दण्डी हुए।

➤ महाकवि भारवि, दण्डी के प्रपितामह और दण्डी, भारवि के प्रपौत्र थे।

➤ भारवि **शैव** थे, जबकि **माघ वैष्णव** थे।

➤ दक्षिण के एहोल शिलालेख में कालिदास और भारवि का नामोल्लेख हुआ। इस शिलालेख का समय 634 ई0 है – **''कविताश्रित-कालिदास-भारवि-कीर्तिः''।**

- गुम्मरेड्डीपुर के शिलालेखों से हमें पता चलता है कि राजा दुर्विनीत ने किरातार्जुनीयम् के 15वें सर्ग पर टीका लिखी थी। दुर्विनीत का समय 580 ई० के आसपास माना जाता है।
- भारवि के किरातार्जुनीयम् का उद्धरण जयादित्य की 'काशिकावृत्ति' में उपलब्ध होता है। मैक्समूलर 'काशिका' का समय 660 ई० मानते हैं।
- बाणभट्ट (सप्तम शताब्दी) अपने ''हर्षचरित'' में पूर्ववर्ती सभी कवियों का उल्लेख करते हैं, किन्तु उसमें भारवि का नामोल्लेख नहीं है।
- कीथमहोदय भारवि का समय 550 ई० मानते हैं।
- जैकोबी, मैक्डानल, बलदेव उपाध्याय, चन्द्रशेखर पाण्डेय इत्यादि विद्वानों ने भारवि का समय 600 ई० के लगभग मानते हैं।
- शिवजी अर्जुन की तपस्या की परीक्षा के लिए 'किरात' का वेश धारण करते हैं।
- किरातार्जुनीयम् में **मूक दानव** अर्जुन को मारने के लिए मायावी वाराह का रूप धारण करता है।
- महाकाव्यकारों में **कालिदास** और **अश्वघोष** के बाद **भारवि** का नाम लिया जाता है।
- भारवि व्याकरण, वेदान्त, न्याय, धर्म, राजनीति, कामशास्त्र, पुराण, इतिहास आदि के मूर्धन्य विद्वान थे।
- उदात्त एवं सजीव वर्णन, कमनीय कल्पनाओं, अर्थगौरव, हृदयग्राही शब्दयोजना, कोमलकान्त पदावली, हृदयस्पर्शी एवं रोचक संवाद, अलङ्कारों का चमत्कारिक प्रयोग, कलात्मक काव्यशैली, मनोहर प्रकृतिचित्रण, रसपेशलता, सजीव चरित्रचित्रण इत्यादि महनीय गुणों ने भारवि को महाकवियों में अत्यन्त उच्चस्थान पर प्रतिष्ठित किया है।
- भारवि राजनीतिशास्त्र और नीतिशास्त्र के प्रकाण्ड पण्डित थे।
- किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में वनेचर की स्वामिभक्ति, सत्यवादिता, निश्छलता, विनम्रता, साहस, स्पष्टवादिता आदि गुणों का चित्रण है।
- द्रौपदी की मानसिकपीड़ा, व्याकुलता, प्रतिकार की तीव्रभावना का वर्णन है।
- अर्जुन की वीरता, भ्रातृभक्ति, कर्तव्यनिष्ठा का वर्णन है।
- भीम की वीरता, नीतिज्ञता, असहिष्णुता का वर्णन है।
- युधिष्ठिर की नीतिज्ञता, शान्तिप्रियता, धर्मपरायणता इत्यादि का वर्णन है।
- किरातार्जुनीयम् प्रथमसर्ग के प्रारम्भ में वनेचर की उक्तियों का तथा उत्तरार्ध में द्रौपदी की उक्तियों का चित्रण है।
- सम्पूर्ण प्रथमसर्ग युधिष्ठिर को सम्बोधित करके लिखा गया है।
- भारवि का संस्कृतसाहित्य में **'अलङ्कृतकाव्यशैली'** तथा **'विचित्रमार्ग के जनक'** के रूप में विशिष्ट स्थान है।
- विचित्रमार्ग की विशेषता यह है कि इसमें कथानक बहुत कम होता है और वर्णन अधिक।
- भारवि की अलंकृतकाव्यशैली में पाण्डित्यप्रदर्शन और अलङ्कार सन्निवेश को प्रधानता दी गयी है, इसमें कलापक्ष की प्रधानता तथा भावपक्ष (हृदयपक्ष) की अप्रधानता का वर्णन है।
- कालिदास के प्रमुख छन्द 6 हैं, भारवि के 13 और माघ के 16 माने गये हैं।
- भारवि ने **वंशस्थ छन्द** का सर्वाधिक प्रयोग किया है, इसके अतिरिक्त इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, द्रुतविलम्बित, प्रमिताक्षरा, प्रहर्षिणी, स्वागता, पुष्पिताग्रा, आदि का प्रयोग मिलता है।
- भारवि **वीररस** के सिद्धहस्त कवि हैं।
- किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में युधिष्ठिर के मुख से किसी उक्ति (कथन) को नहीं कहलाया गया है।
- महाकवि भारवि की **एकमात्र रचना 'किरातार्जुनीय'** का उपजीव्य महाभारत के वनपर्व की एक घटना है।
- किरातश्च अर्जुनश्च (द्वन्द्व) = किरातार्जुन + 'छ' प्रत्यय लगकर 'किरातार्जुनीय' शब्द बना है। ग्रन्थवाची होने पर नपुंसकलिङ्ग में 'किरातार्जुनीयम्' बना।
- इसमें अर्जुन का हिमालय पर्वत पर जाकर तपस्या करने व किरातवेषधारी भगवान शिव से युद्ध करके उन्हें प्रसन्न कर **'पाशुपत अस्त्र'** प्राप्त करने की कथा है।
- 'किरात' में कुल **18 सर्ग और 1040 श्लोक** हैं।
- 'किरातार्जुनीय' में **कुल 25 छन्दों और मुख्यतः 13 छन्दों का** प्रयोग हुआ है।
- भारवि का **अत्यन्त प्रिय छन्द वंशस्थ** है। तत्पश्चात् उन्होंने **उपजाति** का ज्यादा प्रयोग किया है। 4 सर्गों में वंशस्थ, 3 सर्गों में उपजाति प्रयुक्त है।
- भारवि ने 3 शब्दालंकार, 60 अर्थालंकार और 7 चित्राक्षर अलंकारों का प्रयोग किया है। सर्वाधिक उपमा अलंकार प्रयुक्त है।
- भारवि ने 'किरात' के **15वें सर्ग में** युद्ध प्रसङ्ग में **चित्रालंकारों** का प्रयोग किया है।
- किरातार्जुनीय में **'वीर रस' मुख्य रस** है तथा 'शृंगार' गौण रस है।

- किरात में **'पाञ्चाली रीति'** और 'प्रसाद गुण' है, किन्तु वैदर्भीरीति का भी प्रयोग बाहुल्य है।
- किरात का **नायक 'अर्जुन'** (कहीं-कहीं युधिष्ठिर प्राप्त होता है), **प्रतिनायक किरातवेषधारी 'शिव'** तथा **नायिका द्रौपदी** है।
- 'किरात' के 18वें सर्ग में शिव की अत्यन्त भावुक स्तुति की गई है।
- भारवि का प्रसिद्ध **एकाक्षर श्लोक** (न नोननुन्नो....) 15वें सर्ग में मिलता है।
- भारवि ने मङ्गलाचरण में **'श्री' शब्द** तथा सर्गान्त श्लोकों में **'लक्ष्मी'** शब्द का प्रयोग किया है।
- क्षेमेन्द्र ने भारवि के वंशस्थ वृत्त की प्रशंसा की है और वंशस्थ को राजनीतिक चर्चा के लिए सर्वाधिक उपयुक्त माना है।
- काव्य का आरम्भ **'द्वैतवन'** से होता है जहाँ महाराज युधिष्ठिर द्यूतक्रीड़ा में दुर्योधन से हारकर **'तेरह वर्ष'** का वनवास काट रहे होते हैं।
- युधिष्ठिर द्वारा नियुक्त ब्रह्मचारी वेष वाला गुप्तचर वनेचर लौटकर आता है और दुर्योधन के राज्य की शासन प्रणाली का वर्णन करता है।
- द्रौपदी इस समाचार से अत्यधिक क्रुद्ध हुयी और युधिष्ठिर को युद्ध के लिए प्रोत्साहित करती है।
- द्वितीय सर्ग में महर्षि व्यास आते हैं और अर्जुन को पाशुपत अस्त्र प्राप्त करने की सलाह देते हैं।
- अर्जुन तपस्या हेतु **इन्द्रकील** (हिमालय) पर जाते हैं।
- किरातार्जुनीय के प्रारम्भिक तीन सर्ग विशेष कठिन हैं अतः उन्हें **'पाषाण-त्रय'** के नाम से जाना जाता है।
- अर्जुन को **18वें सर्ग में पाशुपत अस्त्र प्राप्त** होता है।
- प्रथमसर्ग के अन्तिम दो श्लोकों में क्रमशः पुष्पिताग्रा और 'मालिनी' छन्दों का प्रयोग हुआ है। प्रथमसर्ग का अन्तिम श्लोक **'विधिसमयनियोगात् ....'** है।
- **'प्रसन्नगम्भीरपदा सरस्वती'** भारवि की भाषा तथा शैली का द्योतक महनीय मन्त्र है।
- भारवि के किरात के **'प्रथमसर्ग' में कुल 46 श्लोक** हैं।

किरातार्जुनीयम् (प्रथमसर्ग)

- 'किरातार्जुनीयम्' में **'वस्तुनिर्देशात्मक मङ्गलाचरण'** किया गया है।
- दुर्योधन के प्रजाविषयक व्यवहार को जानने के लिए युधिष्ठिर ने वनेचर को नियुक्त किया था।
- युधिष्ठिर को प्रणाम करके उसने शत्रु द्वारा जीती गयी पृथ्वी का वर्णन किया। ऐसा करते हुए किरात का मन खिन्न नहीं हुआ।
- शत्रुओं के नाश के लिए यत्न करने वाले युधिष्ठिर की आज्ञा पाकर वह एकान्त में अपनी बात कहता है।
- वनेचर कहता है कि सेवकों द्वारा गुप्तचर रूपी नेत्र वाले 'स्वामी' को धोखा नहीं दिया जाना चाहिए।
- जो स्वामी को उचित सलाह न दे वह बुरा मित्र है और जो स्वामी हितैषी मित्र की न सुने वह बुरा स्वामी है।
- राजाओं का चरित्र स्वभाव से ही कठिनाई से जानने योग्य होता है। वनेचर जो कुछ जान पाया वह युधिष्ठिर का प्रभाव है।
- दुर्योधन अब 'जुएँ' में जीती गई पृथ्वी को 'नीति' से जीतना चाहता है।
- युधिष्ठिर को जीतने के लिए दुर्योधन अपने गुणों से यश का विस्तार करता है।
- दुर्योधन अपने छः शत्रुओं - काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य पर विजय प्राप्त कर लिया।
- दुर्योधन सेवकों से मित्र जैसा, मित्रों से भाइयों जैसा और भाई-बन्धुओं को शासक मानकर व्यवहार करता है।
- दुर्योधन का मधुर वचन दान के बिना नहीं होता, दान आदर-सत्कार को छोड़कर नहीं होता और विशेष आदर गुणों के अनुराग के बिना नहीं होता।
- जितेन्द्रिय दुर्योधन 'अपना कर्तव्य मानकर धर्म-विप्लव' को दण्ड से रोकता है अन्य कारण से नहीं।
- राजाओं के उपहारस्वरूप प्राप्त हाथियों के मदजल से दुर्योधन का आँगन गीलेपन को प्राप्त है।
- कुरुदेश के निवासी कृषि के लिए वर्षा जल पर निर्भर नहीं रहते। कुरुप्रदेश की कृषि अदेवमातृक है।
- दुर्योधन के 'कुबेर' सदृश गुणों से द्रवित पृथ्वी स्वयं धनरूपी दुग्ध देती है।
- दुर्योधन के धनुर्धर लोग मानरूपी धन वाले, धन से सम्मानित और युद्ध में यश पाने वाले हैं।
- महीपाल लोग दुर्योधन के गुणों में अनुराग के कारण उसके आदेश को 'माला' की भाँति शिरोधार्य करते हैं।
- दुर्योधन ने दुःशासन को 'युवराज' नियुक्त किया है।
- वनेचर प्रथमसर्ग के 25वें श्लोक तक का वक्ता है और उसके चले जाने पर युधिष्ठिर द्रौपदी के आवास में प्रवेश करते हैं।
- 'बुरी मनोव्यथाएँ' द्रौपदी को बोलने के लिए उद्यत करती है।
- द्रौपदी कहती है युधिष्ठिर ने मदस्रावी हाथी के समान पृथ्वी को माला की तरह अपने हाथ से त्याग दिया।
- सफल क्रोध वालों के वश में प्राणी स्वयं हो जाता है।
- **वृकोदर (भीम)** धूलधूसरित होकर पैदल ही पर्वतों में घूमता है।
- इन्द्र के समान पराक्रमी अर्जुन ने 'उत्तरकुरुदेश' को जीतकर प्रचुर धन युधिष्ठिर को दिया था, वह अब **'वल्कल वस्त्र'** संग्रह करता है।

- नकुल और सहदेव का शरीर वन में सोने के कारण कठोर हो गया है और दोनों जुड़वे हाथियों के समान हैं।
- युधिष्ठिर कुशवाली भूमि पर सोकर शृगाली (सियारिनियों) के शब्दों से निद्रा का परित्याग करते हैं।

कादम्बरी

- **लेखक** – बाणभट्ट
- **काव्यविधा** – कथा
- **दो खण्ड** – (i) पूर्वार्द्ध (ii) उत्तरार्द्ध
- **प्रधानरस** – शृङ्गाररस
- **उपजीव्य** – गुणाढ्य की 'बृहत्कथा'
- **नायक** – चन्द्रापीड (शूद्रक)
- **नायिका** – कादम्बरी
- **सहनायक** – वैशम्पायन (पुण्डरीक)
- **सहनायिका** – महाश्वेता
- **वैशिष्ट्य** – तीन जन्मों की कथा
- **प्रमुखपात्र** – चन्द्रापीड, कादम्बरी, पुण्डरीक, महाश्वेता, शूद्रक, तारापीड, विलासवती, शुकनास, मनोरमा, वैशम्पायन, इन्द्रायुध (घोड़ा) पत्रलेखा (दासी) जाबालि, हारीत, चाण्डालकन्या, शबर, कपिञ्जल, शुक, हंस, चित्ररथ
- कादम्बरी उत्तरार्ध की रचना बाण के पुत्र **भूषणभट्ट** (भूषणबाण/पुलिन्द/पुलिनभट्ट/पुलिन्ध्र) ने की।
- **कादम्बरी की रीति** – पाञ्चाली
- **कादम्बरी में अलङ्कार** – विरोधाभास, श्लेष, परिसंख्या, अनुप्रास, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा।
- **कादम्बरी के प्रमुखवर्णन–**
  शूद्रकवर्णन, शुकवर्णन, चाण्डालकन्यावर्णन, विन्ध्याटवीवर्णन, शबरसैन्यवर्णन, शाल्मलीवृक्षवर्णन जाबाल्याश्रमवर्णन, जाबालिवर्णन, उज्जयिनीवर्णन, तारापीडवर्णन, इन्द्रायुधवर्णन, अच्छोदसरोवरवर्णन, महाश्वेतावर्णन, कादम्बरीवर्णन आदि।
- **कादम्बरी में तीन जन्मों की कथा–**

	चन्द्रापीड	वैशम्पायन	पत्रलेखा	इन्द्रायुध	चाण्डालकन्या
प्रथमजन्म	1. चन्द्रमा	पुण्डरीक	रोहिणी	कपिञ्जल	लक्ष्मी
द्वितीयजन्म	2. चन्द्रापीड	वैशम्पायन	पत्रलेखा	इन्द्रायुध	–
तृतीयजन्म	3. शूद्रक	शुक	–	कपिञ्जल	चाण्डालकन्या

- कादम्बरी की कथा एक जन्म से सम्बद्ध न होकर चन्द्रापीड और पुण्डरीक के तीन जन्मों से सम्बन्ध रखती है।
- कादम्बरी के दो भाग हैं– पूर्वार्द्ध व उत्तरार्द्ध।
- 'कादम्बरी' का नायक चन्द्रापीड धीरोदात्त नायक है।
- 'कादम्बरी' की नायिका कादम्बरी विवाह से पूर्व **'परकीया मुग्धा नायिका'** है, किन्तु विवाह के बाद **'स्वकीया मध्या नायिका'** है।
- कादम्बरी का प्रमुख रस **'शृङ्गार'** तथा गुण **'माधुर्य'** है।
- कादम्बरी में **पाञ्चाली रीति** की बहुलता है। **'शब्दार्थयोः समोगुम्फः पाञ्चाली रीतिरुच्यते॥'**
- 'बृहत्कथासरित्सागर' के 'उनसठवें तरङ्ग' मकरन्दिका-वृत्तान्त का अवलम्बन लेकर बाण ने कादम्बरी-कथा की रचना की।
- कादम्बरी का शाब्दिक अर्थ **'मदिरा'** है।
- कादम्बरी के उत्तरार्द्ध में भूषणभट्ट ने कहा – **कादम्बरी रसभरेण समस्त एव, मत्तो न किञ्चिदपि चेतयतो जनोऽयम्॥**
- कादम्बरी के मङ्गलाचरण में त्रिगुण-स्वरूप अजन्मा परमब्रह्म को नमस्कार किया गया है।
- यह ब्रह्म प्राणियों के प्रादुर्भाव में रजोगुण युक्त, स्थितिकाल में सात्विक गुणवाला तथा प्रलयकाल में तमोगुण वाला होता है।
- कादम्बरी का मङ्गलाचरण **नमस्कारात्मक** है।
- कादम्बरी के मङ्गलाचरण में **वंशस्थ छन्द** है।
- कादम्बरी के द्वितीय श्लोक में भगवान् शिव की चरण धूलियों की स्तुति की गयी है।
- चतुर्थ श्लोक में बाण ने अपने गुरु **भर्वु (भत्सु)** के चरणों की वन्दना की।
- बाण ने दो श्लोकों (8, 9) में कादम्बरी कथा की प्रशंसा की है।
- कादम्बरी की रचना में बाण को गुणाढ्य की **बृहत्कथा** तथा सुबन्धु की **वासवदत्ता** से प्रेरणा मिली है, और इन्हें पीछे छोड़ना बाण का लक्ष्य रहा है। इसीलिए बाणभट्ट ने कादम्बरी को **अतिद्वयी** (अर्थात् वासवदत्ता और बृहत्कथा का अतिक्रमण करने वाली) कथा कहा है।
- कादम्बरी कथा का आरम्भ राजा शूद्रक के प्रभाव और उनकी **राजधानी 'विदिशा'** के वैभव वर्णन से होता है।
- शूद्रक के दरबार में एक 'चाण्डालकन्या' 'वैशम्पायन' नामक शुक को लेकर आती है।
- यह तोता मनुष्य की बोली बोलता है और राजा की प्रशंसा में एक आर्या छन्द (दाहिना पैर उठाकर) पढ़ता है –
  स्तनयुगमश्रुस्नातं समीपतरवर्तिहृदयशोकाग्नेः।
  चरति विमुक्ताहारं व्रतमिव भवतो रिपुस्त्रीणाम्॥
- यही शुक राजा शूद्रक के सामने अपने जन्म 'हारीत' के द्वारा महर्षि जाबालि के आश्रम में पहुँचने का वृत्तान्त बताता है।
- मुनि जाबालि उज्जयिनी नरेश तारापीड के पुत्र चन्द्रापीड तथा उसके मित्र मन्त्री शुकनास के पुत्र वैशम्पायन की कथा का वर्णन करते हैं।
- शुक का जन्म 'विन्ध्याटवी' में एक विशाल शाल्मली के वृक्ष पर हुआ था।
- उज्जयिनी मालवा की राजधानी है।
- तारापीड की पत्नी **'विलासवती'** और शुकनास की पत्नी का नाम **'मनोरमा'** है।
- चन्द्रापीड के तीन जन्म क्रमशः **चन्द्रमा, चन्द्रापीड और शूद्रक** हैं।
- पुण्डरीक के तीन जन्म क्रमशः **पुण्डरीक, वैशम्पायन और शुक हैं।**

- चन्द्रापीड की सेविका (ताम्बूलवाहिनी) पत्रलेखा पूर्व जन्म में रोहिणी रहती है।
- चन्द्रापीड का घोड़ा इन्द्रायुध पूर्व जन्म में पुण्डरीक का मित्र 'कपिञ्जल' रहता है।
- चाण्डालकन्या पूर्व जन्म में पुण्डरीक की माता लक्ष्मी रहती है।
- दिग्विजय के लिए निकले चन्द्रापीड किन्नर मिथुन का पीछा करते **'अच्छोद सरोवर'** पहुँच जाता है।
- अच्छोद सरोवर पर तप करती हुई **'महाश्वेता' गन्धर्वराज हंस और गौरी की पुत्री** है।
- पुण्डरीक के कान पर लगी पारिजात की कुसुम-मञ्जरी से महाश्वेता आकर्षित होती है।
- तरलिका महाश्वेता की सहचरी है।
- गन्धर्वराज **चित्ररथ और मदिरा की पुत्री कादम्बरी** है।
- केयूरक कादम्बरी का अनुचर (वीणावाहक) है।
- **पुण्डरीक महर्षि श्वेतकेतु और लक्ष्मी का पुत्र** है।
- पुण्डरीक ने चन्द्रमा को वियोगाग्नि में तड़पने और चन्द्रमा पुण्डरीक को साथ-साथ दुःख भोगने का शाप दिया था।
- पत्रलेखा कुलूताधिपति की पुत्री है।
- कादम्बरी की सहचरी मदलेखा है।
- इन्द्रायुध अश्व का सजीव वर्णन करने के कारण बाण को **'तुरङ्गबाण'** कहा जाता है।

कादम्बरी (शुकनासोपदेश)

- चन्द्रापीड के राज्याभिषेक के अवसर पर तारापीड का मंत्री 'शुकनास' चन्द्रापीड को उपदेश देता है।
- शुकनास चन्द्रापीड के लिए 'तात' सम्बोधन प्रयुक्त करते हैं।
- शुकनास के अनुसार युवावस्था के प्रभाव से उत्पन्न अन्धकार सूर्य से भेदा नहीं जा सकता तथा मणियों एवं दीपक के प्रकाश से दूर नहीं किया जा सकता।
- लक्ष्मी से उत्पन्न मद दारुण होता है तथा वृद्धावस्था में भी शान्त नहीं होता।
- ऐश्वर्य रूपी 'तिमिर' रोग अञ्जन की शलाका से भी ठीक नहीं होता।
- दर्प (अभिमान) की दाहज्वर शीतल उपचारों से ठीक नहीं किया जा सकता।
- राग (अनुराग) का मल स्नान एवं शौच आदि कार्यों से भी दूर नहीं होता।
- राज्य-सुख की निद्रा रात बीत जाने पर भी नहीं टूटती।
- (i) जन्म से प्राप्त ऐश्वर्य, (ii) नयी युवावस्था (iii) अनुपम सौन्दर्य तथा (iv) अलौकिक शक्ति 'चारों' अनर्थ की परम्पराएं हैं।
- 'युवावस्था' के आरम्भ में शास्त्रजल के प्रक्षालन के पश्चात् भी 'बुद्धि' कलुषता को प्राप्त करती है।
- श्वेतता (स्वच्छता) को त्यागे बिना भी युवकों की दृष्टि लालिमा (राग) से युक्त रहती है।
- जिस प्रकार वात्या (बवंडर) सूखे पत्ते को उसी प्रकार रजोगुण से उत्पन्न भ्रान्ति पुरुष को अपनी इच्छा से घुमाती है।
- उपभोगमृगतृष्णा इन्द्रिय-हरिणो को नष्ट कर देती है।
- जिस प्रकार जल के कारण कसैले पदार्थ मीठा स्वाद देते हैं उसी प्रकार युवावस्था के कारण विषय में अनुरक्ति मधुर प्रतीत होती है।
- विषयों में आसक्ति दिग्भ्रमित व्यक्ति की तरह पुरुष को नष्ट करती है।
- चन्द्रापीड जैसे व्यक्ति ही उपदेश के योग्य होते हैं।
- जिस प्रकार स्फटिक मणि में चन्द्रमा की किरणें उसी प्रकार निर्मल हृदय में उपदेश सरलता से प्रविष्ट होता है।
- जिस प्रकार थोड़ा सा पवित्र जल भी कान में पड़ने पर पीड़ा पहुँचाता है उसी प्रकार गुरु का पवित्र उपदेश भी अशिष्ट को कष्ट पहुँचाते हैं।
- शिष्ट व्यक्ति की शोभा को गुरूपदेश हाथी के शंखाभूषण की तरह बढ़ा देते हैं।
- प्रदोष के चन्द्रमा की तरह गुरु-वचन दोषरूपी अन्धकार को दूर करता है।
- काम के बाणों से जर्जर हृदय में उपदेश जल की तरह चू जाता है।
- गुरु का उपदेश 'जलविहीन' स्नान है।
- भय से लोग प्रतिध्वनि की तरह राजा के वचन का अनुसरण करते हैं।
- अभिमानरूपी सूजन से बन्द कान में गुरूपदेश नहीं सुनाई पड़ता।
- शुकनास सर्वप्रथम लक्ष्मी के विषय में चन्द्रापीड को उपदिष्ट करता है।

शुकनासोपदेश में 'लक्ष्मी' हेतु प्रयुक्त प्रमुख विशेषण और संज्ञापद

1. इन्द्रियहरिणहारिणी
2. खड्गमण्डलोत्पलवनविभ्रमभ्रमरी
3. अपरिचिता
4. अनार्या
5. अप्रत्ययबहुला
6. वसुजननी

7. तरङ्गबुद्बुद्चञ्चला 8. तमोबहुला
9. भीमसाहसैकहार्यहृदया 10. अचिरद्युतिकारिणी
11. तोयराशिसम्भवा 12. ईश्वरतामादधाना
13. अमृतसहोदरा, कटुविपाका 14. विग्रहवती, अप्रत्यक्षदर्शना
15. पुरुषोत्तमरता 16. खलजनप्रिया
17. चपला 18. व्याधगीतिः
19. परामर्शधूमलेखा 20. निवासजीर्णवलभी
21. तिमिरोद्गतिः, पुरःपताका 22. उत्पत्तिनिम्नगा, आपानभूमिः
23. सङ्गीतशाला, आवासदरी 24. उत्सारणवेत्रलता, अकालप्रावृड्
25. कपटनाटकस्य प्रस्तावना 26. राहुजिह्वा
27. आलेख्यगता, पुस्तमयी 28. उत्कीर्णा, श्रुता
29. दुराचारा

शुकनासोपदेश में वर्णित लक्ष्मी के गुण/अवगुण

1. रागम् (पारिजातपल्लवेभ्यः) 2. एकान्तवक्रताम् (इन्दुशकलात्)
3. चञ्चलताम् (उच्चैःश्रवसः) 4. मोहनशक्तिम् (कालकूटात्)
5. मदम् (वारुणीमदिरायाः) 6. नैष्ठुर्यम् (कौस्तुभमणेः)
7. न परिचयं रक्षति। 8. नाभिजनमीक्षते।
9. न रूपमालोकयते। 10. न कुलक्रममनुवर्तते।
11. न शीलं पश्यति। 12. न वैदग्ध्यं गणयति।
13. न श्रुतम् आकर्णयति। 14. न धर्ममनुरुध्यते।
15. न त्यागमाद्रियते। 16. न विशेषज्ञतां विचारयति।
17. नाचारं पालयति। 18. न सत्यमनुबुध्यते।
19. न लक्षणं प्रमाणीकरोति। 20. तृष्णां संवर्धयति।
21. अशिवप्रकृतित्वमातनोति। 22. बलोपचयमाहरन्ती।

लक्ष्मी के लिए प्रयुक्त उपमाएँ

1. गन्धर्वनगरलेखेव
2. आरूढमन्दरपरिवर्तावर्तभ्रान्तिजनितसंस्कारेव।
3. कमलिनीसञ्चरणव्यतिकरलग्ननलिननालकण्टकेव।
4. विविधगन्धगजगण्डमधुपानमत्तेव।
5. लतेव, गङ्गेव। 6. पातालगुहेव।
7. हिडिम्बेव। 8. प्रावृडिव।
9. दुष्टपिशाचीव। 10. अनिमित्तमिव।
11. रेणुमयीव। 12. दीपशिखेव।
13. वात्येव।

शिवराजविजय–ऐतिहासिक उपन्यास

➢ **लेखक** – अम्बिकादत्तव्यास
➢ **विधा** – ऐतिहासिक उपन्यास
➢ **विभाजन** – तीन विराम, 12 निःश्वास।
➢ **प्रधानरस** – वीर
➢ **उपजीव्य** – इतिहासप्रसिद्ध
➢ **नायक** – शिवाजी
➢ **कथानक** – शिवाजी का जीवनचरित।
➢ **प्रमुखपात्र** – शिवाजी, गौरसिंह, श्यामसिंह, ब्रह्मचारी गुरु, योगिराज, अफजलखान, शाइस्ताखान, रघुवीरसिंह, यवनयुवक यशवन्तसिंह, औरंगजेब, रसनारी (रोशनआरा)
➢ 'शिवराजविजय' **1870 ई0** में लिखा गया था, जो काशी से **1901 ई. में प्रकाशित** हुआ।
➢ संस्कृतवाङ्मय का **प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास 'शिवराजविजय' है।**
➢ शिवराजविजय की सम्पूर्ण कथा 3 विरामों और 12 निःश्वासों में विभक्त है।
➢ शिवराजविजय में दो समान्तर धाराएँ स्वतन्त्र रूप से प्रवाहित होती हैं – एक के नायक शिवाजी हैं तो दूसरी के नायक रघुवीर सिंह हैं।
➢ शिवराजविजय **'वीर रस' प्रधान काव्य** है। **'विरोधाभास'** व्यास जी का प्रिय अलङ्कार है। शिवराजविजय में पाञ्चालीरीति प्रयुक्त है।
➢ व्यासजी ने 'शिवराजविजय' में मुगलकालीन समाज का सुन्दर चित्रण किया है।

कथानक एवं पात्र-चित्रण

➢ शिवाजी के काल में दो-दो कोस पर आश्रम बने हुए थे, जो मुसलमानों की गतिविधियों पर नजर रखते थे।
➢ बीजापुर-दरबार ने शिवाजी से युद्ध के लिए अफजल खाँ को भेजा। उस समय शिवाजी 'प्रतापदुर्ग' में थे।
➢ अफजल खाँ ने 'भीमा नदी' के तट पर शिविर डाल दिया।
➢ बीजापुर के शासक 'सन्धि' के धोखे से शिवाजी को पकड़ना चाहते थे।
➢ एक यवन गुप्तचर जो बीजापुर दरबार का पत्र ले जा रहा था, उसने मार्ग में एक ब्राह्मण कन्या का अपहरण किया।
➢ एक भालू के आ जाने से वह यवन युवक उस कन्या को छोड़कर 'शाल्मली' वृक्ष पर चढ़ गया।
➢ ब्रह्मचारी गुरु के शिष्य 'गौरसिंह' और श्यामसिंह द्वारा वह कन्या बचा ली गई।

- यवन गुप्तचर 'गौर सिंह' द्वारा मारा गया तथा बीजापुर का गुप्त संदेश उसके वस्त्रों में से गौरसिंह को प्राप्त हुआ।
- गुप्त संदेश को जानकर शिवाजी ने स्वयं अफजल खाँ को छलने की योजना बनायी।
- बीजापुर से सन्धि प्रस्ताव लेकर भेजे गये 'पं. गोपीनाथ' द्वारा प्रतापदुर्ग की तलहटी में अफ़जल खाँ से मिलने का शिवाजी ने प्रबन्ध किया।
- गौर सिंह 'गायक' के वेश में अफ़जल खाँ के शिविर में जाकर सम्पूर्ण भेद निकाल लाया।
- शिवाजी कपड़ों के अन्दर कवच और हाथों में 'बाघनख' नामक हथियार पहन कर अफ़जल खाँ से मिलने गये।
- आलिंगन के समय शिवाजी ने अफ़जल खाँ के कन्धों और गर्दन को फाड़कर मार डाला।
- गौर सिंह द्वारा जिस ब्राह्मण कन्या की रक्षा की गयी थी, उसके संरक्षक एक वृद्ध ब्राह्मण थे।
- वह कन्या गौर सिंह और श्याम सिंह की **बहन सौवर्णी** है और वृद्ध ब्राह्मण उनके **पुरोहित 'देवशर्मा'** हैं।
- ब्रह्मचारी गुरु के अनुरोध पर गौर सिंह ने अपना वृत्तान्त सुनाया।
- वे तीनों (गौर सिंह, श्याम सिंह, सौवर्णी) उदयपुर के जागीरदार **'खड़गसिंह'** के पुत्र-पुत्री थे।
- माता-पिता की मृत्यु के बाद तीनों बहिन भाई पुरोहित की संरक्षता में रहते थे।
- शिकार पर गये हुए वे लुटेरों द्वारा पकड़े गये वहाँ से वे भाग कर हनुमान मंदिर अध्यक्ष की सहायता से भीमा नदी के किनारे शिवाजी से मिले और ब्रह्मचारी गुरु के आश्रम में रहने लगे।
- 'शाइस्ता खाँ' पूना पर अधिकार करके शिवाजी के महल में रहने लगता है।
- शिवाजी ने 'सिंह दुर्ग' से अपना एक संदेश 'रघुवीर सिंह' द्वारा 'तोरण दुर्ग' के अध्यक्ष के पास भेजा।
- रघुवीर सिंह तोरण दुर्ग के अध्यक्ष की आज्ञा से 'हनुमान मंदिर' में ठहरा।
- देवशर्मा 'सौवर्णी' को लेकर उसी हनुमान मन्दिर में रहने लगे थे। जहाँ वाटिका में रघुवीर सिंह सौवर्णी को देखता है।
- शिवाजी के आदेश पर रघुवीर सिंह शाइस्ता खाँ के साथ होने वाले युद्ध का भविष्य पूछने के लिए देवशर्मा के पास गया।
- देवशर्मा ने सौवर्णी द्वारा उसे एक मोदक खिलाकर गले में एक 'माला' डलवाई।
- देवशर्मा ने यवनों के साथ युद्ध में विजय तथा आर्यों के साथ पराजय यह भविष्य बताया।
- शिवाजी ने पंडित के वेश में 'माल्यश्रीक' के साथ शाइस्ता खाँ के निवास पूना जाकर निरीक्षण किया।
- सन्देह होने पर चाँद खाँ ने उनका पीछा किया शिवाजी ने उसका वध कर दिया।
- शिवाजी ने यशवन्त सिंह को पूना से दूर रहने की प्रार्थना कर 'बारात' के बहाने पूना में प्रवेश किया।
- चाँद खाँ और शाइस्ता खाँ के पुत्र रघुवीर सिंह द्वारा मारे गये।
- शाइस्ता खाँ घायल उंगली के साथ भाग गया।
- रघुवीर सिंह ने औरंगजेब की पुत्री 'रोशन आरा' को गिरफ्तार कर लिया।
- ब्रह्मचारी गुरु ने गौरसिंह से अपने पुत्र 'वीरेन्द्र सिंह' का वृत्तान्त बताया।
- सौवर्णी ने क्रूरसिंह द्वारा किये जाने वाले अपमान की बात रघुवीर सिंह से बतायी।
- रोशनआरा शिवाजी के प्रति अपना प्रेम प्रकट करती है। शिवाजी ने पिता द्वारा उसे दिये जाने पर ही स्वीकार करने की बात कही।
- 'जयसिंह' के आक्रमण करने पर शिवाजी मुगलों की कुछ शर्तें मानकर सन्धि करने पर विवश हुए। और उन्हें रोशनआरा और मुअज्जम को वापस करना पड़ा।
- बीजापुर किले पर आक्रमण करके रघुवीर सिंह की सहायता से शिवाजी ने विजय प्राप्त की। और रहमत खाँ को पकड़ लिया गया।
- रहमत खाँ और क्रूरसिंह द्वारा राजद्रोही बताये जाने पर शिवाजी ने रघुवीर सिंह को निष्कासित कर दिया।
- रघुवीर सिंह **'राधास्वामी'** का वेश धारण कर शिवाजी का उपकार करता रहा।
- सौवर्णी का अपहरण की इच्छा रखने वाले क्रूरसिंह का रघुवीर सिंह (राधास्वामी) ने वध कर दिया।
- जयसिंह की सन्धि के अनुसार शिवाजी औरंगजेब के राजदरबार दिल्ली में उपस्थित हुए।
- मार्ग में राधास्वामी (राघवस्वामी, रघुवीर सिंह) के रोकने पर भी वे नहीं माने।
- औरंगजेब ने शिवाजी को नजरबंद करवा दिया। परन्तु 'रघुवीर सिंह' के सहायता से वे भागने में सफल हो गये।
- रघुवीर सिंह को 'मण्डलेश्वर' पद प्रदान किया गया तथा 'सौवर्णी' के साथ उसका विवाह हो गया।

- शिवाजी **सतारा नगर को राजधानी** बनाकर रहने लगे और धीरे-धीरे पूरे महाराष्ट्र पर अधिकार कर लिया।
- औरंगजेब द्वारा प्रेषित सेनापति 'मोहम्मद खाँ' भगा दिया गया।

शिवराजविजय का प्रथमनिःश्वास

- शिवराजविजय का मङ्गलाचरण **''विष्णोर्माया भगवती यया सम्मोहितं जगत्''** से होता है जो 'भागवतपुराण' के दशम स्कन्ध से लिया गया है।
- मङ्गलाचरण में विष्णु की माया को ऐश्वर्यशालिनी बताया गया है, जिसने सम्पूर्ण जगत् को मोह में डाल रखा है।
- दूसरी पंक्ति में कहा गया है कि दुष्ट हिंसक अपने पाप से मारा गया और सज्जन समत्व भाव के कारण बच गये।
- शिवराजविजय का आरम्भ प्रातःकाल एवं सूर्य भगवान के वर्णन से होता है।
- देर से सोकर उठे गौरसिंह को पुष्प चुनने से 'श्यामबटु' रोकता है और बताता है कि उसने गुरु (ब्रह्मचारी) के सन्ध्योपासना की समस्त सामग्री पहुँचा दी है।
- 'शिवराजविजय' का मंगलाचरण **'नमस्कारात्मक'** और **वस्तु निर्देशात्मक** है।
- गौर सिंह केले के पत्ते को तिनकों से जोड़कर उसी में पुष्प तोड़ना आरम्भ करता है।
- गौरबटु लगभग सोलह वर्ष का है उसका साथी (भाई) श्यामबटु भी उसी का समवयस्क है।
- उनकी कुटिया केले के वन से घिरे होने के कारण कुञ्ज के जैसी प्रतीत होती है।
- कुटीर के **चारों ओर पुष्पवाटिका** थी तथा **पूर्व दिशा** में एक तालाब है।
- कुटिया के **'दक्षिण' में झरनों तथा सुंदर कन्दराओं से** युक्त एक **पर्वतखण्ड** विद्यमान है।
- **सात वर्षीय कन्या** को सांत्वना प्रदान करते हुए गौरबटु ने रात्रि के तीन पहर व्यतीत कर दिये जिसे उसने यवन युवक से बचाया था।
- कुटिया के दक्षिण में स्थित पर्वत की कन्दरा में एक महामुनि समाधिरत थे जिनकी ग्राम-प्रधान और ग्रामीण पूजा किया करते थे।
- उन महामुनि को कोई **कपिल** कोई **लोमश** और कोई **जैगीषव्य** और कोई **मार्कण्डेय** समझता था।
- उन महामुनि (योगिराज) को सर्वप्रथम उन दो ब्राह्मण बालकों (गौर, श्याम) के द्वारा शिखर से नीचे उतरते देखा गया।
- योगिराज आश्रम में आकर काष्ठासन पर उदयाचल पर सूर्य के समान आसीन हुए।
- ब्रह्मचारी गुरु ने जैसे ही कुछ बोलना चाहा तभी उस बालिका का करुण क्रन्दन सुनाई पड़ा।
- योगिराज के उस कन्या के सम्बन्ध में पूछने पर 'श्यामबटु' को उसे शान्त करने का आदेश देकर ब्रह्मचारी गुरु ने बोलना आरम्भ किया।
- सर्वप्रथम उस कन्या का करुण क्रन्दन सुनकर 'ब्रह्मचारी' ने पता लगाने हेतु अपने शिष्यों को भेजा था।
- यवन युवक उस कन्या को माता के हाथ से छीनकर भागा था, उसने बालिका को 'छूरा' दिखाकर शान्त करना चाहा।
- अचानक भालू के आ जाने से यवन युवक शाल्मली वृक्ष पर चढ़ गया और कन्या घुणाक्षरन्याय से पलाश वृक्षों के झुरमुट में प्रवेश कर आश्रम की तरफ आयी।
- योगिराज के 'विक्रमराज्य' में ऐसा उपद्रव कहने पर ब्रह्मचारी गुरु ने बताया कि विक्रमादित्य के राज्य को बीते तो **'सत्रह सौ वर्ष'** हो गये।
- ब्रह्मचारी गुरु ने बताया कि आज वेद फाड़कर मार्गों में बिखेरे जाते हैं, 'धर्मशास्त्रों' को उछालकर 'आग' में झोंका जाता है। पुराणों को पीस कर पानी में फेंका जाता है, भाष्य नष्ट करके भाड में झोंके जाते हैं।
- योगिराज विक्रमादित्य द्वारा 'शकों' को जीते जाने को कल की ही बात बताते हैं।
- ब्रह्मचारी गुरु योगिराज से बताते हैं कि 'भगवन्' आपने जिन पुरुषों को देखा था अब उनकी 'पचासवीं' पीढ़ी के पुरुष भी दिखाई नहीं पड़ते।
- योगिराज बताते हैं कि वे **'युधिष्ठिर' के समय समाधि** लगाकर 'विक्रमादित्य' के समय में तथा विक्रमादित्य के समय समाधि लगाकर इस दुराचारमय समय में उठे।
- ब्रह्मचारी गुरु ने बताया कि 'महमूद गजनवी' ने भारत को बारह **(12) बार लूटा** और सैकड़ों ऊँटों पर रत्नों को लाद कर अपने देश ले गया।
- उसने गुजरात देश में स्थित 'सोमनाथ' को भी धूल में मिला दिया।
- सोमनाथ की किवाड़ें वैदूर्य (मूंगा), पद्मराग हीरे, मोतियों से बनी थी।

- सोमनाथ में लटकने वाला महाघण्टा **दो सौ मन सोने की जंजीर** में लटकता था।
- महादेव की मूर्ति पर गदा उठाने पर पुजारियों ने उसे 'दो करोड़ स्वर्ण मुद्राएं' देकर छुड़ाना चाहा परन्तु उसने यह कह कर कि **'वह मूर्ति बेचता नहीं किन्तु तोड़ता है।'** उसने मूर्ति को तोड़ दिया।
- गदा के प्रहार से अनेक 'अरब पद्म मुद्रा' के मूल्य के रत्न बिखरे, उनको लेकर ऊंटों की पीठ पर लाद कर 'सिन्धु' नदी उतर कर महमूद गजनवी 'गजनी' वापस चला गया।
- सं. 1087 में **'गोर देश' निवासी 'शहाबुद्दीन'** नामक यवन पहले गजनी देश पर फिर भारत पर आक्रमण किया। और 1250 में दिल्ली को अश्वारोहियों से घेर लिया।
- उसने वाराणसी में भी हड्डियों के अनेक पहाड़ बना दिये। वाराणसी तक उसने अकण्टक राज्य किया।
- **शहाबुद्दीन (गोरी)** ने ही मुख्यतः **भारत में यवन-शासन का बीजारोपण** किया और उसी ने **'कुतुबुद्दीन'** नामक गुलाम को **दिल्ली का प्रथम सम्राट** बनाया।
- केवल अकबर यद्यपि भारतवर्ष का गूढ शत्रु था तथापि वह शान्तप्रिय और विद्वानों का आदर करने वाला था।
- औरंगजेब ने **'आलमगीर'** उपाधि धारण किया।
- औरंगजेब ने 'शाइस्ता खाँ' को दक्षिण के शासक के रूप में भेजा।
- शिवाजी पूना नगर के निकट **'सिंहदुर्ग'** में रह रहे थे। (विजयपुर = बीजापुर)
- **'या कार्य सिद्ध होगा या शरीर नष्ट होगा'** यह शिवाजी की प्रतिज्ञा थी।
- योगिराज ने **'वीर शिवाजी' विजयी हों और आप के मनोरथ सिद्ध हों'** आशीर्वाद दिया।
- दूसरे प्रश्न के रूप में 'कब देखूँगा उसे पूछने पर' योगिराज ने विवाह के समय देखोगे' ऐसा उत्तर दिया।
- गौरसिंह 'अफजल' के तीन घोड़ों और घुडसवारों को मारकर पाँच ब्राह्मणों को छुड़ाकर ले आया।
- गौरसिंह ने देखा कि गृहवाटिका के केलों के झुरमुट में दो या तीन पेड़ अधिक काँप रहे थे।
- गौर सिंह ने कुटीर की 'बल्ली' में तलवार छिपा रखी थी।
- छिपा हुआ यवनयुवक सिर पर नीले वस्त्र, हरित वर्ण का कञ्चुक और श्याम (नीले) वस्त्र कटितट तक बाँधे था।
- उस यवन युवक की **उम्र लगभग 20 वर्ष** थी।
- श्यामबटु' तलवार लेकर उसी कुटी के द्वार पर 'कन्या' के रक्षणार्थ खड़ा हुआ जिसमें वह थी।
- गौरसिंह ने यवन युवक को मारकर उसके कपड़ों में से एक पत्र निकालकर गणों सहित कुटिया में प्रवेश किया।

मेघदूतम् (खण्डकाव्य/गीतिकाव्य)

- **लेखक** – कालिदास
- **विधा** – खण्डकाव्य/गीतिकाव्य
- **दो भागों में**–(i) पूर्वमेघ (ii) उत्तरमेघ
- **प्रधानरस** – विप्रलम्भशृङ्गार
- **छन्द** – मन्दाक्रान्ता
- **मेघदूतम् की रीति** – वैदर्भी रीति
- **उपजीव्य** – कथानक ब्रह्मवैवर्तपुराण से एवं दूत की कल्पना वाल्मीकीयरामायण से
- **नायक** – यक्ष (हेममाली) ब्रह्मवैवर्तपुराण के अनुसार
- **नायिका** – यक्षिणी (विशालाक्षी)
- **कथानक** – दूतकाव्य के रूप में एक 'गीतिकाव्य' है, जिसमें एक यक्ष का विरह वर्णित है।
- 50 से अधिक संस्कृत टीकायें।
- जर्मन विद्वान् **मैक्समूलर ने मेघदूतम् का जर्मन भाषा में पद्यानुवाद** और **श्वेट्ज ने जर्मनभाषा में गद्यानुवाद** किया है।
- **आर्थर राइडर और एच. जी रूक** ने अंग्रेजी में मेघदूतम् का पद्यानुवाद किया है।
- हिन्दीभाषा में मेघदूतम् के **6 पद्यानुवाद** हो चुके हैं।
- क्षेमेन्द्र ने कालिदास के मन्दाक्रान्ता छन्द की प्रशंसा की– **'सुवशा कालिदासस्य मन्दाक्रान्ता विराजते' –सुवृत्ततिलक**
- मेघदूत में उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक आदि अलङ्कारों का सुन्दर प्रयोग है।
- डॉ. कीथ ने मेघदूत को **Elegy (शोकगीत)** कहा है।
- भारतीय मत में मेघदूत शोकगीत या करुणगीत न होकर **विरहगीत** या **विप्रलम्भगीत** है।
- **प्रमुखपात्र**–यक्ष (हेममाली) यक्षिणी (विशालाक्षी) मेघ (बादल) कुबेर (यक्षाधिपति)
- संस्कृत के गीतिकाव्यों का आदिमग्रन्थ महाकवि कालिदास का मेघदूत है।
- दक्षिणावर्तनाथ और मल्लिनाथ ने मेघदूत लिखने में रामायण से प्रेरणा मानी है।

- यक्ष को अलकाधीश्वर कुबेर ने जो शाप दिया उसका आधार पद्मपुराण है।
- वहाँ के योगिनी नामक आषाढ़-कृष्ण-एकादशी-महात्म्य-प्रसंग में यह कथा संक्षेप में है।
- 'ब्रह्मवैवर्तपुराण' को भी मेघदूत का उपजीव्य माना जाता है।
- मेघदूत में 115 पद्य हैं। यह दो भागों पूर्वमेघ और उत्तरमेघ में विभक्त है।
- पूर्वमेघ में 63 और उत्तरमेघ में 52 पद्य हैं।
- मल्लिनाथ ने 121 पद्य स्वीकार किए हैं किन्तु 6 श्लोकों को प्रक्षिप्त माना है।
- मेघदूत का **मुख्य रस विप्रलम्भ शृङ्गार** है।
- पूरे मेघदूत में **मन्दाक्रान्ता छन्द** प्रयुक्त है।
- यक्षों के अधिपति कुबेर हैं। उन्होंने अपने कार्य में प्रमाद करने के कारण किसी अपने अनुचर 'यक्ष' को शाप दे दिया।
- यद्यपि कालिदास ने मेघदूत में कहीं भी इस यक्ष का नाम नहीं लिया परन्तु ब्रह्मवैवर्तपुराण में इस **यक्ष का नाम हेममाली तथा यक्षिणी का नाम विशालाक्षी** मिलता है।
- यक्ष अपनी पत्नी में आसक्ति के कारण अपने कार्य में प्रमाद करता है इसलिए कुबेर ने एक वर्ष तक अपनी पत्नी से वियुक्त रहने का शाप दिया।
- शाप के कारण नष्ट महिमा वाला **यक्ष रामगिरि में** रहता है।
- मेघदूत के आरम्भ में यक्ष अपने शापावधि के 8 माह काट चुका है और चार माह शेष हैं।
- मेघदूत का नायक **यक्ष धीरललित नायक** है। **यक्षिणी स्वकीया एवं पद्मिनी नायिका** है।
- मेघदूत में **प्रसाद एवं माधुर्य गुण** की प्रधानता है और **वैदर्भीरीति** प्रयुक्त है।
- **मेघः एव दूतः यस्मिन् काव्ये तत् 'मेघदूतम्'।** इस प्रकार 'मेघदूतम्' पद में बहुव्रीहि समास प्राप्त है।
- यक्षों के अधिपति **कुबेर की राजधानी 'अलका'** है। इसकी स्थिति हिमालय पर्वत श्रृंखला के कैलाश नामक शिखर पर बतलायी गयी है।
- **रामगिरि पर्वत** की स्थिति मल्लिनाथ तथा वल्लभ ने **चित्रकूट** मानी है जो बुन्देलखण्ड में है।
- प्रो. विल्सन ने नागपुर से कुछ दूरी पर स्थित रामटेक का प्राचीन नाम रामगिरि माना है।
- रामगिरि सीताजी के स्नान से पवित्र जल वाला तथा घने छायादार वृक्षों से युक्त है।
- आषाढ़ के पहले ही दिन यक्ष पर्वतों से क्रीड़ा करने वाले गजों के तुल्य 'मेघ' को देखता है।
- कश्चित् पद ब्रह्म का वाचक (कः = ब्रह्म, चित् = ब्रह्म) है इस प्रकार दो बार श्रवण होने से मङ्गलाचरण हो जाता है।
- मेघदूत का मङ्गलाचरण **वस्तुनिर्देशात्मक मङ्गलाचरण है।**
- प्रिया के वियोग के कारण दुर्बल यक्ष की कलाई से स्वर्णनिर्मित कङ्गन के गिरने से वह रिक्त कलाई वाला हो गया है।
- अपनी कुशलवार्ता अपनी प्रिया तक पहुँचाने के लिए, अपने निवेदन से पूर्व यक्ष कुटज (गिरिमल्लिका) के पुष्पों से मेघ को अर्घ्य देता है।
- धुआँ, अग्नि, जल एवं वायु से बने जड़ मेघ से भी वह कामार्तता के कारण सन्देश ले जाने का निवेदन करता है।
- यक्ष, मेघ को विश्वविदित **पुष्कर और आवर्तक वंश** में उत्पन्न बताता है।
- यक्ष, मेघ को **इन्द्र का प्रमुख व्यक्ति** और स्वेच्छानुसार आकृति धारण करने में समर्थ बताता है।
- मेघ को सन्तप्तों का एकमात्र शरण बताता है और उसे सन्देश लेकर अलका भेजना चाहता है। अलका के बाहरी उद्यान में स्थित भगवान् शिव के मस्तक पर सुशोभित चन्द्र की चाँदनी से वहाँ के महल धवल हैं।
- चातक (पपीहा) मेघ के बायीं ओर शब्द कर रहा है।
- गर्भाधान उत्सवकाल के परिचय से आकाश में बगुलियाँ पंक्तिबद्ध होकर मेघ का सेवन करती हैं।
- यक्ष को विश्वास है कि वियोग के दिनों की गणना में एकाग्रचित्त यक्षिणी को मेघ अवश्य देखेगा।
- यक्ष मेघ की भाभी (भ्रातृजाया) 'यक्षिणी' को कहता है।
- मानसरोवर जाने को उत्सुक तथा मार्ग में भूख मिटाने के लिए चोंच में मृणाल लिए हुए राजहंस मेघ के साथी होंगे।
- श्रीरामचन्द्र के चरणचिन्हों से युक्त रामगिरि से मेघ विदाई लेता है।
- मेघ 'उत्तरदिशा' की ओर मुख करके अपनी यात्रा का आरम्भ करता है।
- दिङ्नागाचार्य वसुबन्धु के शिष्य थे।
- मल्लिनाथ ने 'दिङ्नाग' को कालिदास का प्रतिद्वन्द्वी माना है। जिन पर कालिदास ने व्यङ्ग्य किया है।
- रामगिरि आश्रम 'गीले स्थल बेतों' से युक्त है।
- इन्द्रधनुष से युक्त श्यामल मेघ की उपमा गोपवेषधारी भगवान् श्रीकृष्ण से की गयी है।
- मेघ की यात्रा में सर्वप्रथम माल प्रदेश पड़ता है।

- थोड़ा पश्चिम में पड़ने वाले माल प्रदेश में वर्षा कर वहाँ की भूमि को सुगन्धित करता हुआ मेघ पुनः उत्तर की ओर चल देता है।
- मेघ ने आम्रकूट पर्वत की दावाग्नि पहले बुझाई थी इसलिए मित्रता के कारण आम्रकूट मेघ को सिर पर (चोटी)धारण करेगा।
- मेघ की यात्रा का **पहला पर्वत आम्रकूट** है। प्रो. विल्सन आधुनिक अमरकण्टक, जो नर्मदा का उद्गम है उसको ही आम्रकूट मानते है।
- आम्रकूट पके हुए आम्र से युक्त आम्र वृक्षों वाला पर्वत है।
- मेघ द्वारा चोटी पर आसीन हो जाने के कारण आम्रकूट पर्वत पृथ्वी के स्तन के समान शोभा प्राप्त करता है। जो देव-दम्पत्तियों द्वारा दर्शनीय है।
- आम्रकूट पर्वत के कुञ्ज वनवासियों की स्त्रियों द्वारा उपभुक्त हैं।
- मेघ के मार्ग में **पहली नदी रेवा (नर्मदा)** मिलती है जो विन्ध्य पर्वत की तलहटी में हाथी के शरीर पर बने चित्र के समान फैली है।
- नर्मदा का जल हाथियों के मदों से सुगन्धित तथा जामुन के कुञ्जों से अवरुद्ध है।
- सिद्ध जनों की स्त्रियाँ मेघ के कम्पन से भयभीत होकर अपने प्रेमियों का आलिङ्गन करेगी।
- रेवा को पार कर मेघ दशार्ण देश पहुँचता है जिसे विल्सन ने आधुनिक छत्तीसगढ़ माना है। यह एक प्राचीन जनपद है। इसकी राजधानी 'विदिशा' थी।
- दशार्ण को **'दशदुर्गों का प्रदेश'** कहा जाता है।
- विदिशा वेत्रवती नदी के तट पर स्थित है।
- वेत्रवती नदी की उपमा भ्रूभङ्गयुक्त नायिका से की गई है।
- आजकल भोपाल से 26 मील पर स्थित मालवा के 'भिलसा' नामक स्थान को ही विदिशा माना जाता है।
- विदिशा में मेघ 'नीचैः' नामक पर्वत पर ठहरता है। यह पर्वत वेश्याओं द्वारा प्रयुक्त सुगन्धित पदार्थों से युक्त गुफाओं वाला है।
- मेघ का मार्ग उज्जयिनी जाते हुए कुछ टेढ़ा होगा परन्तु तब भी यक्ष उसे वहाँ जाने का निवेदन करता है।
- यक्ष का मानना है कि यदि उज्जयिनी की स्त्रियों की चञ्चल कटाक्षों के साथ मेघ ने क्रीड़ा नहीं किया तो वह ठगा गया।
- उज्जयिनी जाते हुए मेघ मार्ग में निर्विन्ध्या नदी से मिलता है जो पक्षियों की पंक्ति रूपी करधनी वाली है।
- निर्विन्ध्या अपनी भँवर रूपी नाभि दिखाती है और उसके द्वारा दिखाया गया विभ्रम ही प्रथम प्रणयवचन है।
- यक्ष कहता है निर्विन्ध्या को पार कर मेघ सिन्धु नदी के समीप पहुँचेगा जो मेघ के विरह में कृश हो गयी है और मेघ को वह उपाय करना चाहिए जिससे वह दुर्बलता त्याग दे।
- 'अवन्ती' में वृद्धजन वत्सराज उदयन की कथा कहा करते हैं।
- उज्जयिनी को **देदीप्यमान स्वर्ग का टुकड़ा** कहा गया है। उज्जयिनी को विशाला भी कहा जाता है।
- वायु को 'शिप्रा नदी' के चाटुकार प्रेमी के रूप में चित्रित किया गया है। इसी नदी के तट पर उज्जयिनी है।
- उज्जयिनी के बाजार को अत्यन्त वैभवशाली बताया गया है।
- उज्जयिनी में उदयन ने **महाराज 'प्रद्योत' की पुत्री वासवदत्ता** का अपहरण किया था।
- उज्जयिनी में प्रद्योत का स्वर्णमय ताल वृक्षों का वन था जिसे प्रद्योत के ही इन्द्र प्रदत्त **'नलगिरि' नामक हाथी** ने नष्ट कर दिया था।
- अलकापुरी के घोड़े पत्तों के समान श्याम वर्ण के हैं और वहाँ के योद्धागण रावण के तलवार से किये गये घावों के निशान को ही आभूषण मानते हैं।
- महाकाल के उद्यान गन्धवती नदी की वायु से कम्पित होते हैं।
- यक्ष महाकाल मंदिर पहुँचे मेघ को शाम के समय तक रुक कर शिव की सन्ध्या पूजन के समय नगाड़े का कार्य करने के लिए कहता है।
- मेघ के सायंकालीन जपाकुसुम के समान लाल रंग की कान्ति से ऐसा प्रतीत होता है जैसे उसने भगवान् शिव की गजासुर के गीले चर्म को धारण करने की इच्छा पूरी कर दी।
- मेघ उज्जयिनी के महल की छतों पर रात्रि व्यतीत करता है।
- उज्जयिनी के पश्चात् मेघ के मार्ग में गम्भीरा नदी आती है।
- **ज्ञातास्वादो विवृतजघनां को विहातुं समर्थः**। प्रसिद्ध सूक्ति गम्भीरा नदी के वर्णन में आती है।
- यक्ष जल को 'गम्भीरा' का वस्त्र, किनारों को नितम्ब तथा बेंत की शाखाओं को उसका हाथ बताता है।
- जङ्गल के गूलरों को पकाने वाली वायु देवगिरि के मार्ग में बहती है।
- **देवगिरि** में निवास करने वाले **स्वामी कार्तिकेय** हैं। जिनका वाहन मयूर है। इनको **स्कन्द भगवान्** भी कहा जाता है।

- महाराजरन्तिदेव का यशरूप **चर्मण्वती (चम्बल)** नदी है।
- चर्मण्वती नदी पार करके मेघ 'दशपुर' की स्त्रियों के उत्सुकता का विषय बनेगा।
- दशपुर से बढ़ते हुए मेघ ब्रह्मवर्त प्रदेश होता हुआ महाभारत की युद्धभूमि कुरुक्षेत्र पहुँचेगा।
- बलराम महाभारत के युद्ध से विमुख रहे। उनकी पत्नी रेवती के आँखों की उपमा सरस्वती नदी से की गयी है। लाङ्गली बलराम का नाम है।
- सरस्वती नदी के जल का सेवन करके अंदर से पवित्र मेघ वर्ण मात्र से श्याम रह जायेगा। बलराम ने भी इसका जलपान किया था।
- कुरुक्षेत्र के आगे कनखल पर्वत के समीप पार्वती जी का उपहास करती सी गङ्गा नदी बहती है।
- गङ्गा का नाम 'जह्नुकन्या' प्रयुक्त है।
- कनखल हरिद्वार का समीपवर्ती माना जाता है।
- कनखल में मेघ की छाया गङ्गा में पड़ने पर प्रयाग के अतिरिक्त वहाँ भी सङ्गम (गङ्गा + यमुना) प्रतीत होगा।
- हिमालय पर मेघ शिव जी के बैल द्वारा उछाले गये कीचड़ की तुल्य शोभा को प्राप्त करेगा।
- हिमालय पर मेघ 'शरभों' को ओलों की वृष्टि से नष्ट-भ्रष्ट कर देता है।
- हिमालय के किसी शिलातल पर भगवान शिव के चरणों की सिद्ध जन पूजा करते हैं मेघ भी उनकी परिक्रमा करता है।
- हिमालय पर मेघ के मृदङ्ग जैसी आवाज से शिव का सङ्गीत पूर्ण हो जायेगा।
- हिमालय पर्वत पर क्रौञ्चरन्ध्र भगवान परशुराम के पराक्रम का प्रमाण है।
- इसी रन्ध्र से हंस मानसरोवर जाते हैं।
- क्रौञ्चरन्ध्र से गुजरता हुआ मेघ राजा बलि को बाँधने के लिए उठाये गये विष्णु के पैर की तरह प्रतीत होगा।
- क्रौञ्चरन्ध्र का दूसरा नाम हंसद्वार है।
- क्रौञ्चरन्ध्र पार करके मेघ हिमालय का अतिथि बनेगा।
- हिमालय पर भ्रमण करती हुई पार्वती जी के लिए मेघ सीढ़ी का कार्य करता है।
- कैलाश पर देवस्त्रियाँ कङ्कणों के अग्रभाग से मेघ को फौव्वारा बना डालेंगी।
- हिमालय पर चीड़ वृक्षों के तनों की रगड़ से लगी आग को मेघ बुझाता है।

उत्तरमेघ

- उत्तरमेघ के प्रथम श्लोक में अलकानगरी की तुलना मेघ के साथ की गयी है।
- मेघ की बिजली की तुलना अलकापुर की स्त्रियों से, इन्द्रधनुष की तुलना सुंदर चित्रों से, मेघ के गर्जन की तुलना अलका में बजाये जाने वाले मृदङ्गों से, जलधारण की मणिजटित फर्शों से तथा मेघ की ऊँचाई की तुलना गगनचुम्बी शिखरों से की गयी है।
- अलका में सदैव छः ऋतुएँ वर्तमान रहती हैं।
- अलका की स्त्रियाँ क्रीड़ा के लिए हाथों में कमल लिए रहती है, बालों में कुन्दपुष्प का तथा मुख पर लोध्रपुष्प का रज लगाये रहती हैं।
- वे जूड़ों में कुरबक का तथा कानों में सुन्दर शिरीष पुष्प लगाकर और माँग में कदम्ब पुष्प सजाती हैं।
- अलका में नित्य फूल खिलते हैं और रात्रियाँ सदैव चाँदनीयुक्त रहती हैं।
- अलका में यक्ष सदैव ही युवावस्था को प्राप्त रहते हैं वहाँ अन्य अवस्थाएँ नहीं हैं।
- कुबेर को रावण का भाई माना जाता है इन्हीं का पुष्पक विमान रावण के पास था।
- कल्पवृक्ष से रतिफल नामक मद्य प्राप्त होता है जिसका सेवन 'यक्षगण' मृदङ्ग आदि के ध्वनि के साथ करते हैं।
- आकाशगङ्गा (मन्दाकिनी) के जल से शीतल तथा किनारे पर मन्दार के वृक्षों से प्राप्त छाया में यक्ष कन्यायें स्वर्णिम बालुका में मणि छिपाने का खेल खेलती है।
- चन्द्रमा की किरणों से पिघलाई गयी झालरों में लटकी चन्द्रकान्त मणि स्त्रियों के सुरतजन्य थकावट को दूर करती है।
- अलका के बाह्य उद्यान का नाम **'वैभ्राज'** है।
- कामदेव भगवान शङ्कर के डर से अपने भौरों की डोरी वाले धनुष का प्रयोग नहीं करता। स्त्रियों के चितवन से काम चलाता है।
- अलका में अलंकरण की समस्त सामग्री एकमात्र कल्पवृक्ष प्रदान करता है।
- यक्ष का घर **कुबेर के घर से उत्तर दिशा में** स्थित है।
- यक्ष के घर में इन्द्रधनुष के सदृश रंग-बिरंगा फाटक लगा है।
- यक्ष के घर के समीप उसकी पत्नी द्वारा दत्तक पुत्र की तरह पाला गया पुष्पगुच्छ से युक्त मन्दारवृक्ष है।

- रावण की तलवार का नाम 'चन्द्रहास' है।
- यक्ष के घर में मरकतमणि की शिलाओं से निर्मित सीढ़ी वाली बावली है।
- यहाँ के हंस वर्षाकाल में भी मानसरोवर नहीं जाते।
- उस बावली के किनारे पर नीलम नामक मणियों से बने शिखरवाला क्रीड़ाशैल है। इस पर सुन्दर केले की बाड़ है।
- क्रीडाशैल पर रक्त अशोक और मौलसिरी (वकुल) नाम के दो वृक्ष हैं।
- क्रीडा शैल पर माधवीलता का कुंज है।
- अशोक यक्षिणी के 'बायें पैर' और बकुल 'मुख की मदिरा' के अभिलाषी हैं।
- दोनों वृक्षों के मध्य में मरकत मणि की वेदी है।
- शैल पर ही स्फटिक के पटरे वाली सोने की वासयष्टि (अड्डा) है जहाँ मोर सायंकाल में बैठता है।
- यह मयूर यक्षिणी की तालियों और कंकणों द्वारा नचाया गया है।
- यक्ष के द्वार के दोनों तरफ **शंख और पद्म का चित्र** बना है।
- 'मेघ' अलकापुरी में यक्ष के घर में बने क्रीड़ा शैल पर बैठता है और जुगनुओं की पंक्ति की सदृश मन्द प्रकाश यक्ष के घर में डालता है।
- यक्ष 'यक्षिणी' को युवतियों की रचना के विषय में ब्रह्मा की प्रथम कृति बताता है।
- यक्ष के घर पर पिंजड़े में **मैना** पाली गयी है।
- यक्ष मेघ से कहता है वह यक्षिणी को देवपूजा करते अथवा यक्ष का चित्र बनाते या मैना से बात करते देखेगा।
- यक्षिणी वीणा बजाते हुए गीत गाने का प्रयत्न करती है।
- यक्षिणी देहली के पुष्पों को भूमि पर रखकर विरह के दिनों की गणना करती है।
- यक्षिणी विरह के दिनों में भूमि पर ही सोती है।
- यक्ष मेघ से खिड़की पर बैठकर यक्षिणी को देखने के लिए कहता है।
- मेघ के पहुँचने पर यक्षिणी की बायीं आँख फड़कती है।
- मेघ अपने जल बिन्दुओं से शीतल बने वायु से यक्षिणी को जगाता है।
- यक्ष के शाप का अंत हरिबोधिनी या देवोत्थान एकादशी के दिन होता है।
- उसी दिन भगवान विष्णु अपनी शेष शय्या से उठेंगे।
- यक्ष मेघ को पहचान चिह्न के रूप में यक्षिणी के साथ घटित एक घटना को बताता है।
- अंतिम श्लोक में यक्ष मेघ के लिये यह कामना करता है कि उसका उसकी पत्नी 'बिजली' के साथ कभी वियोग न हो।
- मेघदूत पर 50 से अधिक टीकाएं लिखी जा चुकी हैं।

नीतिशतकम्

- **लेखक** – भर्तृहरि
- **विधा** – मुक्तककाव्य
- **कुलश्लोक** – 111
- **कुलपद्धतियाँ** – 11 (मङ्गलाचरण सहित)
  1. अज्ञपद्धति (मूर्खनिन्दापद्धति)
  2. विद्वत्पद्धति
  3. मानशौर्यपद्धति
  4. अर्थपद्धति
  5. दुर्जनपद्धति
  6. सुजनपद्धति
  7. परोपकारपद्धति
  8. धैर्यपद्धति
  9. दैवपद्धति
  10. कर्मपद्धति
- मुक्तक का लक्षण–"**पूर्वापरनिरपेक्षेणापि हि येन रसचर्वणा क्रियते तदेव मुक्तकम्**"
  इसप्रकार अर्थप्रकाशन के लिए एक दूसरे की अपेक्षा न रखने वाले स्वतन्त्र पद्य (श्लोक) मुक्तक कहे जाते हैं।
- नीतिशतक में वर्ण्य विषय को ग्यारह पद्धतियों में समाहित किया गया है।
- भर्तृहरि ने नीतिशतक में ब्रह्म की स्तुति के पश्चात् 'मूर्ख-निन्दा' से ग्रन्थ का आरम्भ किया है।
- नीतिशतक में भर्तृहरि की शैली प्रसादगुण से युक्त और मुहावरेदार है।
- नीतिशतक के मङ्गलाचरण में अनन्त, ज्ञानमय स्वानुभवमात्र से जानने योग्य, ज्योतिस्वरूप **ब्रह्म को नमस्कार** किया गया है।
- नीतिशतक का **मङ्गलाचरण नमस्कारात्मक** है।
- मङ्गलाचरण (**दिक्कालाद्यनवच्छिन्नानन्तचिन्मात्रमूर्तये**) में **अनुष्टुप्** छन्द प्रयुक्त है।
- विद्वानों के ईर्ष्याग्रस्त होने तथा राजाओं के राजमद से चूर होने के कारण और शेष लोगों के अज्ञानता के कारण भर्तृहरि का ज्ञान उनके शरीर में ही जीर्ण हो गया।
- अज्ञानी को प्रसन्न किया जा सकता है, विद्वान को आसानी से प्रसन्न किया जा सकता है, परन्तु अल्पज्ञानी को ब्रह्मा भी प्रसन्न नहीं कर सकते।
- घड़ियाल के मुख से मणि निकाली जा सकती है, समुद्र पार किया जा सकता है, सर्प को पुष्प सदृश सिर पे धारण किया जा सकता है परन्तु दुराग्रही मूर्ख को नहीं समझाया जा सकता।

- बालू से तेल, मृगतृष्णा से जल, खरगोश के सिर पर सींग प्राप्त हो सकती है, परन्तु दुराग्रही मूर्ख को प्रसन्न नहीं किया जा सकता।
- विधाता ने मूर्खों के लिए एकमात्र 'मौन' को ही आभूषण बनाया है।
- पंडितों के सम्पर्क में आने पर अल्पज्ञ का दुराभिमान दूर हो जाता है।
- मनुष्य की घृणास्पद हड्डी को चबाता हुआ कुत्ता सामने खड़े देवराज से हड्डी छीने जाने का संदेह करता है।
- गङ्गा स्वर्ग से शिव के मस्तक को, शिव के सिर से हिमालय को, हिमालय से पृथ्वी को और पृथ्वी से समुद्र को प्राप्त हुई।
- इस प्रकार विवेकभ्रष्ट व्यक्ति का पतन सैकड़ों प्रकार से होता है।
- अग्नि जल से, सूर्यताप छाते से, हाथी अंकुश से, बैल व गधे दण्ड से नियन्त्रित किये जा सकते हैं।
- मूर्खता की कोई औषधि (उपाय) नहीं है।
- साहित्य, सङ्गीत एवं कला से विहीन व्यक्ति साक्षात् पशु के समान है।
- विद्या, तप, दान, ज्ञान, शील, गुण और धर्म से विहीन व्यक्ति पृथ्वी के भार स्वरूप हैं और मनुष्य रूप में पशु हैं।
- मूर्खों के साथ इन्द्र के भवन में रहने की अपेक्षा वनचरों के साथ वन में रहना श्रेष्ठ है।
- सत्कवियों के अवमानना से राजा की मूर्खता प्रकट होती है।
- विद्यारूपीधन वाले विद्वान् की तुलना कभी राजा के साथ नहीं हो सकती।
- ब्रह्मा हंस के कमलवन में निवास के सुख को नष्ट कर सकता है, परन्तु उसके नीर-क्षीर विवेक को नष्ट नहीं कर सकता।
- 'वाणी (विद्या)' रूपी आभूषण कभी नष्ट नहीं होता और यही सर्वश्रेष्ठ आभूषण है।
- विद्या ही परदेश गमन पर सर्वश्रेष्ठ धन सिद्ध होती है। यह गुरुओं की भी 'गुरु' है।
- राजागण विद्या की पूजा करते हैं धन की नहीं।
- क्षमा के होने पर कवच की, क्रोध के रहते शत्रु की, बन्धुजनों के रहते अग्नि की, अच्छे मित्र के रहते औषधि की, विद्या के रहते धन की, लज्जा के रहते आभूषण की तथा कवित्व रहने पर राज्य की कोई आवश्यकता नहीं होती।
- बुद्धि की जड़ता को सत्संगति हरती है।
- सत्सङ्गति कीर्ति को सभी दिशाओं में फैलाती है।
- सत्सङ्गति मनुष्य का सब प्रकार से हित करती है।
- तेजहीन होने पर भी आत्मसम्मानी सिंह सूखी घास नहीं खाता।
- कुत्ता अपने स्वामी के सामने भोजन के लिए दीनता प्रकट करता है परन्तु गजराज सैकड़ों अनुनय पर खाता है।
- उसका जन्म धन्य है जिसके जन्म से वंश का अभ्युदय हो।
- आयु निश्चय ही तेजस्विता का हेतु नहीं है।
- 'धन' के समक्ष सभी गुण तिनके के समान हो जाते हैं।
- धनवान् ही सभी गुणों वाला माना जाता है क्योंकि सभी गुण धन में ही शोभा पाते हैं।
- धन की तीन गतियाँ मानी गयी हैं – (i) दान (ii) भोग, और (iii) नाश। जो न दान देता है ओर न ही उपभोग करता है उसके धन का नाश होता है।
- वेश्या की भाँति 'राजनीति' नाना रूपों वाली है।
- राजा को पृथ्वी रूपी गाय को दुहने के लिए प्रजारूपी बछड़े का पालन करना चाहिए। तभी पृथ्वी कल्पतरु की भाँति फलती है।
- दुर्जन व्यक्ति 'विद्या' से युक्त होने पर भी भयंकर होता है।
- 'अपकीर्ति' के रहते मृत्यु की आवश्यकता नहीं होती।
- सेवा धर्म परम कठिन है और यह योगियों के लिए भी दुर्बोध है।
- सज्जनों की मैत्री दिन के उत्तरार्द्ध की तरह और दुर्जनों की पूर्वार्द्ध की तरह होती है।
- शिकारी मृग का, मछुआरा मछली का, दुर्जन सत्पुरुषों के अकारण शत्रु होते हैं।
- विपत्ति में धैर्य, समृद्धि में क्षमा, युद्ध में पराक्रम, सभा में वाक्पटुता तथा कीर्ति और वेदशास्त्र में रुचि आदि गुण महापुरुषों में स्वाभाविक होते हैं।
- सज्जनों के लिए तलवार की धार पर चलने जैसे कठिन सेवा व्रत स्वाभाविक होते हैं।
- अच्छे आचरण वाला पुत्र, पति का हित चाहने वाली पत्नी, विपत्ति तथा सुख में समान व्यवहार करने वाला मित्र पुण्यवानों को प्राप्त होते है।
- सच्चा मित्र दूसरे मित्र को पाप कर्म से दूर करता है हितकारी कार्यों में लगाता है तथा छिपाने योग्य बातों को छिपाता है।
- मनुष्य की तीन कोटियाँ हैं – नीच, मध्यम तथा उत्तम।
- नीच विघ्न के भय से कार्य आरम्भ नहीं करते, मध्यम आरम्भ करते हैं परन्तु विघ्न आने पर छोड़ देते हैं परन्तु उत्तम व्यक्ति विघ्नों के आने पर भी कार्य को पूरा करते हैं।
- मनस्वी कार्यार्थी सुख-दुःख की परवाह नहीं करते।
- 'धैर्यवान् पुरुष' न्यायोचित मार्ग से एक कदम भी विचलित नहीं होते।
- धैर्यशाली पुरुष इस सम्पूर्ण त्रिलोक को जीत लेता है।
- सभी आभूषणों का कारण शील (सदाचार) है और यही सर्वोत्कृष्ट आभूषण है।
- भाग्य ही एकमात्र आश्रय है, पौरुष को धिक्कार है।
- 'भाग्य' ही सबसे बलवान है।
- अत्यंत शीघ्रता में किये गये कार्यों का परिणाम मृत्युपर्यन्त शूल की भाँति हृदय को जलाने वाला होता है।
- पहले की गई तपस्या से संचित भाग्य ही निश्चित ही यथोचित समय पर फल देते हैं। रूप, कुल, शील, विद्या सेवा आदि नहीं।

ग. पात्रों का चरित्र-चित्रण

राजा दुष्यन्त

परिचयः –

➢ अभिज्ञानशाकुन्तलम् का धीरोदात्त नायक

महासत्वोऽतिगम्भीरः क्षमावानविकत्थनः।
स्थिरो निगूढाहङ्कारो धीरोदात्तो दृढव्रतः॥

(दशरूपक – द्वितीयप्रकाश)

अर्थात् वह (राजा दुष्यन्त) स्थिर स्वभाववाला, क्षमाशील, अतिगम्भीर, महाबली, अहङ्कारशून्य, दृढनिश्चयी, स्वयं प्रशंसा न करने वाला, मधुरभाषी, एवं ललित कलाओं का मर्मज्ञ है।

➢ शकुन्तला का प्रेमी/पति।
➢ पुरुवंशी (चन्द्रवंशी) एक क्षत्रिय राजा (राजर्षि)।
➢ हस्तिनापुर के सम्राट्।
➢ विदूषक (माधव्य) के मित्र।
➢ हंसपदिका और वसुमती नामक रानियों के आदर्शपति।
➢ सर्वदमन (भरत) के पिता।

चारित्रिक विशेषतायें

➢ आदर्श प्रेमी।
➢ सुन्दर एवं गम्भीर आकृति।
➢ आदर्श राजा/उत्तम शासक
➢ विनयशील नैतिक एवं धर्मपरायण।
➢ आखेट (मृगया) प्रेमी।
➢ कलाप्रेमी/कुशलचित्रकार/संगीतप्रेमी
➢ आकर्षक व्यक्तित्व एवं सौन्दर्यशाली।
➢ वीरयोद्धा/पराक्रमी/शूरवीर।
➢ वात्सल्यप्रेमी एवं गुणग्राही।
➢ मधुरभाषी एवं उदार।
➢ सहृदय तथा संयमी।
➢ आदर्श पिता।
➢ मातृभक्त तथा आज्ञाकारीपुत्र।
➢ चरित्रवान् नायक।
➢ लोकोत्तर आदर्शचरित्र

दुष्यन्त के महत्वपूर्ण गुण एवं कार्य

➢ दानवों के वधार्थ इन्द्र उसे स्वर्ग में बुलाता है। **(अङ्क-6)**
➢ उसके शारीरिक गठन एवं सौन्दर्य से सभी प्रभावित होते हैं, वह सुन्दर एवं युवा है।
➢ धनुष की टंकार से ही यज्ञ में विघ्न करने वाले राक्षसों को भगा देता है।
➢ प्रियंवदा उसके मधुरभाषण की प्रशंसा करती है। **(अङ्क-1)**
➢ जब तक यह निश्चित नहीं हो जाता है कि शकुन्तला क्षत्रिय कन्या है, तब तक वह अपने विवाह का विचार प्रकट नहीं करता है।
➢ शकुन्तला की प्रेमावस्था देखकर वह उसके पाणिग्रहण और रक्षा की स्वीकृति देता है। **(अङ्क-3)**
➢ वह रुग्ण शकुन्तला को धूप में जाने से रोकता है, और उसकी सेवा-शुश्रूषा करता है।
➢ माता की आज्ञा पाते ही ऋषियों के यज्ञरक्षा रूपी कार्य की विवशता के कारण मित्र विदूषक को तत्काल माता के पास भेजता है। **(अङ्क-2)**
➢ रानी हंसपदिका के संगीत को सुनकर मन्त्रमुग्ध हो जाता है। **(अङ्क-5)**
➢ शकुन्तला तथा उसकी सखियों का चित्र बनाता है। **(अङ्क-6)**
➢ ऋषियों के प्रति बहुत आदरभाव है, उनके कहने से वह मृग पर बाण नही चलाता है।
➢ विनीत वेष में आश्रम में प्रवेश करता है। **(अङ्क-1)**
➢ यज्ञरक्षा हेतु ऋषियों की प्रार्थना सादर स्वीकार करता है।
➢ शार्ङ्गरव के आक्षेपों का उत्तर शान्तिपूर्वक देता है। **(अङ्क-5)**
➢ मारीच ऋषि के दर्शनार्थ उनके आश्रम जाता है। **(अङ्क-7)**
➢ वह धनमित्र नामक व्यापारी की मृत्यु पर शोक प्रकट करता है। उसके गर्भस्थ पुत्र को उसका धन दिलाता है। **(अङ्क-6)**
➢ प्रजा की रक्षा को परमधर्म समझता है।
➢ दुःखियों का दुःख दूर करने को सदा उद्यत रहता है।

- परस्त्री की ओर देखना पाप समझता है – **''अनिर्वर्णनीयं परकलत्रम्''** **(अङ्क-5)**
- संतानहीनता का उसे बहुत दुःख है।
- प्रजा के लिए घोषणा करता है कि बन्धुहीनों का वह बन्धु है। **''येन येन वियुज्यन्ते प्रजाः स्निग्धेन बन्धुना''**
- शाप के कारण शकुन्तला को न पहचानने पर वह अपने पूर्णसंयम का परिचय देता है। **(अङ्क-5)**
- सर्वदमन (भरत) को देखकर वात्सल्य का भाव जाग उठता है। **(अङ्क-7)**
- वह शिकार खेलता हुआ कण्व ऋषि के आश्रम में प्रवेश करता है। **(अङ्क-1)**
- राजा, मृगया को व्यसन नही अपितु शारीरिक स्वास्थ्य एवं मनोविनोद का साधन मानता है, इससे शरीर हल्का फुल्का एवं फुर्तीला रहता है। **(अङ्क-2)**
- राजाद्वारा निर्मित शकुन्तलाके चित्रको देखकर विदूषक और सानुमती मन्त्रमुग्ध हो जाते हैं। **(अङ्क 6)**
- राजा दुष्यन्त के सौन्दर्य एवं व्यक्तित्व से सखियों सहित शकुन्तला प्रभावित होती है।
- दाक्षायणी (अदिति) भी दुष्यन्त के व्यक्तित्व की प्रशंसा करती हैं। **(अङ्क-7)**
- दुष्यन्त की वीरता से प्रभावित होकर इन्द्र अपना आधा इन्द्रासन छोड़ देते हैं, तथा उन्हें मन्दारमाला पहनाते हैं।
- इस प्रकार राजादुष्यन्त कर्त्तव्यपरायण, प्रजाप्रेमी, पराक्रमी, विनीत और अविकत्थन है।

शकुन्तला

परिचय –

- अभिज्ञानशाकुन्तलम् की नायिका।
- विश्वामित्र और अप्सरा मेनका की पुत्री।
- महर्षिकण्व की धर्मपुत्री, (पालिता पुत्री)।
- नाट्यशास्त्रीय दृष्टि से मुग्धा नायिका।
- **''शकुन्तैः परिवारिता परिपालिता वा।''** पक्षियों से आवृत या कुछ समय तक पक्षियों द्वारा परिपालित होने के कारण 'शकुन्तला' यह सार्थक नाम पड़ा।
- मालिनी नदी के तट पर स्थित कण्वाश्रम में निवास।
- राजा द्वारा परित्यक्ता होने के बाद मारीच आश्रम में निवास।
- राजादुष्यन्त की प्रेमिका/तृतीयपत्नी।
- सर्वदमन (भरत) की माँ।
- अनसूया एवं प्रियंवदा की प्रियसखी।

चारित्रिक विशेषतायें

1. अपूर्वसुन्दरी	7. स्वाभिमानिनी
2. प्रकृतिप्रिया	8. कार्यकुशला
3. आदर्शप्रेमिका	9. आदर्शपुत्री
4. आश्रमप्रेमी	10. मधुरभाषिणी
5. पतिव्रता पत्नी/आदर्शनारी	11. सच्ची सखी
6. सुशीला एवं लज्जावती	12. अन्तर्मन की सहजता

शकुन्तला के चारित्रिक गुण एवं कार्य

- शकुन्तला नैसर्गिक सौन्दर्य की प्रतिमूर्ति है –
  - **इदं किलाव्याजमनोहरं वपुः......** **(1-18)**
  - **इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी....** **(1-17)**
  - **सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यम्....** **(1-20)**
  - **अधरः किसलयरागः......** **(1-21)**
  - **मानुषीषु कथं वा स्यात्......** **(1-26)**
  - **अनाघ्रातं पुष्पं.........** **(2-10)**
  - **चित्रे निवेश्य......** **(2-9)**
- शकुन्तला का पालन पोषण कण्व आश्रम में हुआ है, अतः उसमें स्वाभाविक सरलता, सुशीलता एवं मुग्धता है।
- राजा दुष्यन्त को देखते ही उसके हृदय में कामभाव जागृत होता है, परन्तु वह उसे व्यक्त नहीं करती – **किं नु खलु इमं जनं प्रेक्ष्य....। (अङ्क-1)**
- जब राजा दुष्यन्त उसकी प्रशंसा करता है, तो वह लज्जा से सिर नीचा कर लेती है। **'शकुन्तला अधोमुखी तिष्ठति'**। (अङ्क-1)
- प्रकृति से घनिष्ट प्रेम है। वह वृक्षों, वनस्पतियों और मृगादि से सहोदरों जैसा स्नेह करती है – **''अस्ति मे सोदरस्नेहोऽयेतेषु'' (अङ्क-1)**
- आश्रम के वृक्षों को जल देकर ही वह जलपान करती है, प्रियमण्डना होने पर भी वृक्षों के फूल, पत्तें नहीं तोड़ती – **''पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलम्.....।'' (अङ्क-4/9)**
- वह पतिव्रता है, विवाहोपरान्त पति के चिन्तन में ही व्याकुल और अन्यमनस्क है – **विचिन्तयन्ती यमनन्यमानसा।**
- आश्रम से विदाई के समय वृक्षों और मृगादि से भी विदा लेती है। वनज्योत्स्ना से गले मिलती है, आश्रमीय मृगों को स्नेह करती है। **''सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम्।''**

(अङ्क-4/9)।

- राम द्वारा परित्यक्त सीता यथा वाल्मीकि आश्रम में निवास करती हैं, वैसे ही राजा दुष्यन्त द्वारा परित्याग कर दिये जाने पर मारीच ऋषि के आश्रम में वह तपस्विनी के समान जीवन यापन करती रही, वह अपने आपको ही दोष देती है, राजा को नही।
- अपने पूज्यजनों का विशेष आदर करती है, राजा से अपने पैर नही दबवाती है। **(अङ्क-3)**
- शार्ङ्गरव के डॉटने पर उसे प्रत्युत्तर नही देती है। **(अङ्क-5)**
- ऋषि कण्व एवं आश्रमीय ऋषियों के प्रति उसकी अगाध श्रद्धा है, सखियों के प्रति उसका **निश्छल प्रेम है।**
- राजा के प्रति आसक्ति के कारण उसकी मनःस्थिति उद्विग्न हो जाती है, परन्तु अपनी मुँहबोली-सखियों से भी बताने में उसे **संकोच** होता है।
- वह अपनी सखियों के कहने पर राजा को एक प्रेमपत्र लिखती है – **तव न जाने हृदयं**......... **(अङ्क-3/13)**
- आश्रम के बाहर जाने पर कण्व शकुन्तला के ऊपर ही **अतिथिसत्कार का भार** सौंपते हैं।
- आश्रम से उसका विशेष लगाव है, आश्रमीय चोटिल मृग को वह इङ्गुदी का तेल लगाती है, उसे श्यामॉक चावल की मुट्ठियाँ भर-भर कर खिलाती है।

  यस्य त्वया व्रणविरोपणमिङ्गुदीनाम्.......**(अङ्क 4-14)**
- शकुन्तला गर्भमन्थरा मृगवधू के सुखप्रसव का समाचार भेजने के लिए पिता कण्व से कहती है। **(अङ्क-4)।**

महर्षि कण्व

परिचय –

- आश्रम के कुलपति।
- शार्ङ्गरव, शारद्वत, नारद, हारीत, वैखानस आदि के गुरु।
- शकुन्तला के पालक पिता।
- 'काश्यप' नाम से नाटक में वर्णित।
- श्रौतविधि से अग्निहोत्र करने वाले एक ऋषि/साधक/तपस्वी।

चारित्रिक विशेषतायें

1. त्रिकालज्ञ नैष्ठिक ब्रह्मचारी।
2. तपस्वी एवं साधक
3. अत्यन्त दयालु, स्नेही एवं धार्मिक।
4. लौकिकव्यवहार में निपुण/लोकाचारज्ञाता/लौकिकज्ञ।
5. आध्यात्मिक प्रभावशाली व्यक्तित्व/सिद्धपुरुष।
6. वात्सल्यपूर्ण आदर्श पिता।
7. भविष्यवक्ता।
8. सहृदयता।

महर्षिकण्व के चारित्रिक गुण एवं कार्य

- कण्व का तपोबल असाधारण है, वे वर्तमान, भूत और भविष्य को जानने वाले हैं। **''तपःप्रभावात् प्रत्यक्षं सर्वमेव तत्रभवतः'' (अङ्क-7)**
- कण्व को ज्ञात है कि शकुन्तला पर विपत्ति आएगी, अतः उसके निवारणार्थ वे सोमतीर्थ जाते हैं। **''दैवमस्या प्रतिकूलं शमयितुं सोमतीर्थं गतः'' (अङ्क-1)**
- आकाशवाणी द्वारा कण्व को ज्ञात होता है कि दुष्यन्त का तेज (वीर्य) शकुन्तला के गर्भ में पल रहा है, वे इन दोनों के इस गान्धर्वविवाह से सहर्ष सहमत होते हैं। **''दुष्यन्तेनाहितं तेजो......'' (अङ्क-4/4)**
- उनके तपःप्रभाव के कारण शकुन्तला की विदाई के समय वृक्ष आभूषण और रेशमी वस्त्र आदि देते हैं – **''क्षौमं केनचिदिन्दुपाण्डुतरुणा....।'' (अङ्क-4/5)**
- शकुन्तला के प्रति उनका प्रेम निःस्वार्थ है, उसकी विदाई के समय वे सगे माता-पिता के समान व्याकुल होते हैं – **''यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं......।'' (अङ्क 4/6)** **''शममेष्यति मम शोकः......।'' (अङ्क 4-21)**
- ऋषि होते हुए भी लौकिकव्यवहार को अच्छी तरह जानते हैं। **''वनौकसोऽपि सन्तो लौकिकज्ञा वयम्।''** (अङ्क-4)
- ससुराल जाती हुई पुत्री शकुन्तला को सुन्दर उपदेश देते हैं– **''शुश्रूषस्व गुरून् कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीजने।'' (अङ्क 4-18)**
- कण्व द्वारा शार्ङ्गरव के माध्यम से राजा दुष्यन्त को दिया गया सन्देश उनके लौकिकज्ञान की पराकाष्ठा को सूचित करता है – **''अस्मान् साधु विचिन्त्य संयमधनान्।'' (अङ्क 4-17)**
- वे शकुन्तला के साथ अनसूया और प्रियंवदा को हस्तिनापुर नही भेजते, क्योंकि उन दोनों का भी विवाह करना है। विवाहिता के साथ कुमारी कन्याओं को भेजना अनुचित समझते हैं।

➤ कण्व शकुन्तला से कहते हैं कि राजा दुष्यन्त के पास पहुँचने पर वहाँ के कार्यों में व्यस्त होकर तुम मेरे विरह दुःख को भूल जाओगी – **''मम विरहजां न त्वं वत्से शुचं गणयिष्यसि''** (अङ्क 4-19)

➤ वे कन्या को विदा करके तनावमुक्त जीवन का अनुभव करते हैं – **''अर्थो हि कन्या परकीय एव।''** (अङ्क 4-22)

➤ कण्व अपने धर्म, तपस्या, यज्ञ, आदि के अनुष्ठान में लगे रहते हैं, और विभिन्न तीर्थस्थानों की यात्रा करते हैं।

➤ अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में ही कण्व का प्रवेश होता है, किन्तु सम्पूर्ण नाटक में उनका प्रभाव परिलक्षित होता है।

➤ अभिज्ञानशाकुन्तलम् चतुर्थ अङ्क के कुल 22 श्लोकों में से 14 प्रसिद्ध श्लोक महर्षि कण्व (काश्यप) के द्वारा कहे गए हैं –

● यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं.............. (4-6)

(चार प्रसिद्ध श्लोकों में से एक)

● ययातेरिव शर्मिष्ठा भर्तुर्बहुमता भव...... (4-7)
● अमी वेदिं परितः क्लृप्तधिष्ण्याः। (4-8)
● पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलम्। (4-9)

(चार प्रसिद्ध श्लोकों में से एक)

● अनुमतगमना शकुन्तला। (4-10)
● सङ्कल्पितं प्रथममेव मया तवार्थे। (4-13)
● यस्य त्वया व्रणविरोपणमिङ्गुदीनाम्। (4-14)
● उत्पक्ष्मणोर्नयनयोरुपरुद्धवृत्तिम्। (4-15)
● अस्मान् साधु विचिन्त्य संयमधनान्। (4-17)

(चार प्रसिद्ध श्लोकों में से एक)

● शुश्रूषस्व गुरून् कुरु प्रियसखीवृत्तिं....। (4-18)

(चार प्रसिद्ध श्लोकों में से एक)

● अभिजनवतो भर्तुः श्लाघ्ये स्थिता गृहिणीपदे। (4-19)
● भूत्वा चिराय चतुरन्तमहीसपत्नी। (4-20)
● शममेष्यति मम शोकः कथं नु वत्से.....। (4-21)
● अर्थो हि कन्या परकीय एव। (4-22)

➤ अभिज्ञानशाकुन्तलम् चतुर्थ अङ्क के **प्रसिद्ध चारों श्लोक महर्षि कण्व** (काश्यप) द्वारा कहे गये हैं।

➤ अनसूया, प्रियंवदा एवं शकुन्तला तीनों कण्व को **तात** (पिता) कहकर पुकारती हैं।

अनसूया एवं प्रियंवदा

परिचय –

➤ अनसूया और प्रियंवदा दोनों शकुन्तला की प्रिय सखियाँ।

➤ कण्वाश्रम में शकुन्तला के साथ निवास।

दोनों सखियों की चारित्रिक विशेषतायें

● सुन्दररूप एवं समान आयु। ● तपोवन-निवासिनी।
● सामान्य व्यवहारज्ञान से परिचित। ● कामशास्त्र से परिचित।
● आदर्श–सखियाँ। ● शकुन्तला की हितैषिणी।
● सौन्दर्यशालिनी। ● लोकव्यवहारज्ञाता।
● अतिथिसत्कार-निपुणा। ● परिहास/विनोदप्रिया।
● तर्कशीला। ● प्रकृतिप्रेमिका।
● आश्रमप्रिया। ● पारस्परिक स्नेह एवं आत्मीयता।

चारित्रिक गुण एवं कार्य

➤ दोनों सखियाँ शकुन्तला की समवयस्का हैं, और सौन्दर्य में लगभग उसके समान ही हैं – **''अहो समवयोरूपरमणीयं भवतीनां सौहार्दम्।''** (अङ्क-1)

➤ राजा दुष्यन्त तीनों सखियों के परस्पर सौहार्दभाव, समान अवस्था एवं सौन्दर्य की प्रशंसा करता है – **''अहो मधुरमासां दर्शनम्''** (अङ्क-1)

➤ दोनों सखियाँ शकुन्तला के व्यक्तित्व की प्रतिच्छाया सी प्रतीत होती हैं, इनको पृथक् कर शकुन्तला के अस्तित्व एवं व्यक्तित्व की कल्पना कठिन है।

➤ यदि शकुन्तला आश्रमाकाश की चन्द्रलेखा है, तो सखीद्वय तदनुगामी विशाखानक्षत्र **''किमत्र चित्रं यदि विशाखे शशाङ्करेखामनुवर्तेते।''** (अङ्क-3)

➤ प्रथम अङ्क से लेकर चतुर्थ अङ्क तक शकुन्तला के साथ दोनों सखियाँ उपस्थित रहती हैं।

➤ अनसूया एवं प्रियंवदा – ये दोनों पात्र महाकविकालिदास की नाट्यप्रतिभा की निजी कल्पना से प्रादुर्भूत हैं।

➤ सौन्दर्य में शकुन्तला सबसे अधिक सुन्दर है, परन्तु आयु में अनसूया सबसे बड़ी ज्ञात होती है।

➤ सखियों में परस्पर घनिष्ट प्रेम है, तीनों ही एक दूसरे को सदा सुखी देखना चाहती हैं।

➤ दोनों सखियों का नाम सार्थक है। अनसूया **(न असूया इति अनसूया)** सभी के प्रति ईर्ष्या द्वेषादि से सर्वथा रहित है, तथा प्रियंवदा **(प्रियं वदति इति प्रियंवदा)** सदा प्रिय मधुर बोलने वाली है।

➤सुख दुःख–दोनों में सदा शकुन्तला के साथ रहती हैं, और सर्वदा उसका हितचिन्तन करती हैं।

➤ तृतीय अङ्क में शकुन्तला को अस्वस्थ देखकर राजा दुष्यन्त से मिलाने का प्रयास करती हैं।

➤ दोनों सखियाँ कर्मठ, कार्यदक्ष और बुद्धिमती हैं, दोनों आश्रम के वृक्षों को उत्साहपूर्वक सींचती हैं।

➤ चतुर्थ अङ्क में शकुन्तला की विदाई के समय दोनों उसका शृङ्गार करती हैं।

➤ तृतीय अङ्क में अपनी बुद्धिमत्ता से राजा दुष्यन्त से यह वचन लेती हैं कि वह शकुन्तला को सदा सुखी रखेगा – **''परिग्रहबहुत्वेऽपि......सखी च युवयोरियम्।''** (अङ्क 3/17)

➤ दोनों सखियाँ शिष्ट, विनीत, मधुरभाषिणी और वाक्चतुर हैं, प्रथम अङ्क में राजा से मिलने पर अनसूया उनका परिचय पूछती है – **''कतम आर्येण राजर्षिवंशोऽलंक्रियते।''** (अङ्क-1)

➤ शकुन्तला के प्रति दुर्वासा के भीषण शाप को सुनकर दोनों का हृदय विदीर्ण हो जाता है, शापनिवृत्ति के लिए पूरा प्रयास करती हैं, तथा अपनी प्रियसखी शकुन्तला को कुछ भी नही बताती हैं।

➤ दोनों सखियाँ शकुन्तला से निःस्वार्थ प्रेम करती हैं, उसे सब प्रकार से सुखी और प्रसन्न रखना चाहती हैं। शकुन्तला जब कामज्वर से ग्रस्त होती है, तब कमलनाल, कमलपत्र और चन्दनादि के लेप से उसका उपचार करतीं हैं।

➤ दोनों सखियों के लिए शकुन्तला का संयोग जितना मधुर है, उतना ही वियोग दुःखदायी।

➤ राजा दुष्यन्त उनके आतिथ्यसत्कार, लोकव्यवहार, एवं मधुरभाषण से प्रसन्न होता है – **''भवतीनां सुनृतयैव गिरा कृतमातिथ्यम्।''** (अङ्क-1)

➤ अनसूया स्वभाव से वाग्विदग्ध, व्यवहारकुशल एवं प्रौढ है, राजा दुष्यन्त जब आश्रम में प्रवेश करता है, तो अनसूया ही उससे वार्तालाप प्रारम्भ करती है – **''आर्य, न खलु किमप्यत्याहितम् इयं नौ प्रियसखी मधुकरेणाभिभूयमाना कातरीभूता।''** (अङ्क-1)

➤ अनसूया राजा दुष्यन्त से उनका परिचय पूछती है, और अपनी सखी शकुन्तला के जन्म एवं माता पिता के विषय में राजा से बताती है। –**''शृणोत्वार्य अस्ति कोऽपि कौशिक इति गोत्रनामधेयो महाप्रभावो राजर्षिः।''** (अङ्क-1)

➤ प्रियंवदा, अनसूया की अपेक्षा अधिक विनोदप्रिया एवं चपल है। शकुन्तला जब अनसूया से अपने वल्कलों को ढीला करने को कहती है तो प्रियंवदा परिहास करती है कि मुझे उलाहना न देकर पयोधरविस्तारी अपने यौवन को उलाहना दो – **''अत्र पयोधरविस्तारयितृ आत्मनो यौवनमुपालभस्व।''** (अङ्क-1)

➤ शकुन्तला द्वारा वनज्योत्सना और आम्रवृक्ष की युगलजोड़ी को स्नेहदृष्टि से देखने पर प्रियंवदा मजाक करती है कि तुम भी इसी तरह अपने अनुकूल वर को प्राप्त करने की सोच रही हो – **''यथा वनज्योत्स्नाऽनुरूपेण पादपेन सङ्गता..... अहमप्यात्मनोऽनुरूपं वरं लभेयेति।''** (अङ्क-1)

➤ अनसूया में प्रियंवदा की अपेक्षा धैर्य तथा गाम्भीर्य अधिक है। दुर्वासा के शाप को सुनकर जब प्रियंवदा सहसा घबड़ा जाती है – **''हा धिक्, हा धिक् अप्रियमेव संवृत्तम्''** किन्तु अनसूया उसे धैर्यपूर्वक दुर्वासा को मनाने के लिए कहती है – **''गच्छ, पादयोः प्रणम्य निवर्तयैनम्।''** (अङ्क-4)

➤ प्रियंवदा चपलतावश इस दारुण शापवृत्तान्त को शकुन्तला से कहीं बता न दें इसके लिए अनसूया उसको मना करती है – **''प्रियंवदे! द्वयोरेव नौ मुख एष वृत्तान्तस्तिष्ठतु''**।

➤ प्रियंवदा के मन में यह शंका उठती है कि पिता कण्व गान्धर्वविवाह के वृत्तान्त को सुनकर न जाने क्या सोचेगें – **''तात इदानीमिमं वृत्तान्तं श्रुत्वा न जाने किं प्रतिपत्स्यत इति''** (अङ्क-4) तो अनसूया अपने विवेक बुद्धि का परिचय देती हुई कहती है कि –**''यथाऽहं पश्यामि तथा तस्यानुमतं भवेत्। गुणवते कन्यका प्रतिपादनीया इत्ययं तावत् प्रथमः संकल्पः।''**

➤ अनसूया शकुन्तला के भविष्य के प्रति चिन्तित रहती है, वह किसी भी विषय पर सम्यक् उहापोह और विचार-विमर्श करती है। वह चिन्तित है कि राजा दुष्यन्त अपने नगर हस्तिनापुर पहुँचने के बाद शकुन्तला के साथ किये गये गान्धर्व विवाह को स्मरण करेगा या नहीं –**''अद्य स राजर्षिः इतोगतं वृत्तान्तं स्मरति वा न वेति।''** (अङ्क-4)

➤ प्रियंवदा निःशङ्क और निश्चिन्त स्वभाव वाली है। उसे पूरा विश्वास है कि सुन्दर आकृति वाला दुष्यन्त गुणरहित नही हो सकता –**''न तादृशा आकृतिविशेषा गुणविरोधिनो भवन्ति''** (अङ्क-4)

- अनसूया भविष्य के प्रति सचेष्ट और व्यावहारिक बुद्धिवाली है। तृतीय अङ्क में वह राजा से यह वचन लेती है कि अनेक रानियों के बीच शकुन्तला की उपेक्षा न करें। **''वयस्य बहुवल्लभाः राजानः श्रूयन्ते''।** राजा उनकी प्रियसखी शकुन्तला को गौरवपूर्ण स्थान देने का आश्वासन देता है।
- शकुन्तला की विदाई के अवसर पर उसे सजाने के लिए अनसूया आम की डाल पर नारियल के डिब्बे में केसरमालिका को रखे रहती है।
- अनसूया, प्रियंवदा की अपेक्षा तात कण्व के अधिक निकट है, वह पिता के स्वभाव तथा विचारों को ठीक से जानती है, तात कण्व भी शकुन्तला की विदाई के अवसर पर अनसूया को ही बारम्बार सम्बोधित करते हैं।
- प्रियंवदा प्रणयव्यापार के स्वरूप को अच्छी प्रकार जानती है। शकुन्तला और दुष्यन्त के प्रेम में वह सूत्रधार का कार्य करती है। तृतीय अङ्क में शकुन्तला की अस्वस्थता के मूल कारण को प्रियंवदा ठीक से समझती है और उसके उपाय के रूप में शकुन्तला को मदनलेख (प्रेमपत्र) लिखने की प्रेरणा भी प्रियंवदा देती है, और उस प्रेमपत्र को फूलों में छिपाकर देवता के प्रसाद के बहाने राजा तक पहुँचाने का कार्य भी उसी के द्वारा सम्पन्न होता है।
- अनसूया अतिथि सत्कार करने में निपुण है, राजा दुष्यन्त के आश्रम आने पर वह शकुन्तला से कहती है – **''हला शकुन्तले, गच्छोटजम्। फलमिश्रमर्घमुपहर।''**
- श्राप को सुनकर प्रियंवदा दुर्वासा के समीप जाकर शकुन्तला की मङ्गलकामना हेतु क्षमायाचना करती है। (अङ्क-4)
- अनसूया विचारशील और मितभाषिणी है, वह हँसी, मजाक की बातों में विशेष भाग नहीं लेती। वह सशङ्कवृत्ति की है, सहसा किसी बात पर विश्वास नहीं करती। जबकि प्रियंवदा शीघ्र विश्वास करने वाली, परिहासप्रिया एवं वाक्पटु है।
- अनसूया भविष्य के सुख की विशेष चिन्ता करती है, प्रियंवदा वर्तमान को विशेष महत्त्व देती है।
- अनसूया अधिक व्यवहारिक, धीर और परिपक्व बुद्धि की है जबकि प्रियंवदा भावुक एवं चञ्चल है।

विदूषक (माधव्य)

परिचय –

- राजा दुष्यन्त का अन्तरङ्ग मित्र।
- हास्यरस का एक पात्र।
- 'माधव्य' नामक एक ब्राह्मण।

चारित्रिक विशेषतायें

- भोजनपटु।
- डरपोक एवं अकर्मण्य।
- राजा का परमप्रिय मित्र एवं परामर्शदाता।
- भीरु एवं सरल स्वभाव।

विदूषक का लक्षण

कुसुमवसन्ताद्यभिधः कर्मवपुर्वेषभाषाद्यैः।
हास्यकरः कलहरतिर्विदूषकः स्यात् स्वकर्मज्ञः।

विदूषक स्वामिभक्त, मनोविनोद में निपुण, कुपित नायिकाओं को मनाने वाला, एवं सच्चरित्र होता है। वह अपने ऊँटपटाँग कार्यों, विकृत अङ्गों तथा वेषभूषादि के द्वारा हास्य का वातावरण प्रस्तुत करता है। वह नायक का विश्वासपात्र तथा उसके प्रणय सम्बन्धी क्रियाकलापों में सहायता पहुँचाता है।

विदूषक (माधव्य) के गुण एवं कार्य

- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के विदूषक (माढव्य) का सर्वप्रथम दर्शन द्वितीय अङ्क में होता है।
- विदूषक माधव्य भोजनप्रिय एवं पेटू है। राजा दुष्यन्त शकुन्तला के प्रणयव्यापार में उनसे सहायता करने के लिए कहता है तो वह **''किं मोदकखण्डिकायाम्''** कहकर अपनी पेटपूजा पटुता का परिचय देता है।
- इसी प्रकार षष्ठ अङ्क में राजादुष्यन्त शकुन्तला के वियोग में अँगूठी से उपालम्भ देते हैं किन्तु विदूषक को वहाँ भी बुभुक्षा पीड़ित करती है – **''कथं बुभुक्षया खादितव्योऽस्मि''** (अङ्क-6)
- वह स्वभाव से अत्यन्त भीरु एवं डरपोक है। शकुन्तला के दर्शन हेतु वह भी उत्सुक था, पर जब वह राक्षसों का वृत्तान्त सुनता है, तब डर जाता है। (अङ्क-2)
- राजा के मृगयाव्यसन के कारण उसको विश्राम का तनिक भी अवसर प्राप्त नहीं होता है, इससे वह अत्यन्त दुःखी है– **'एतस्य मृगयाशीलस्य राज्ञो वयस्यभावेन निर्विण्णोऽस्मि।''** (अङ्क-2)
- विदूषक अपने प्रत्येक क्रियाकलाप एवं भावभङ्गिमा से सभी को हँसाता है। जब राजा दुष्यन्त के सामने एक ही साथ ऋषियों की यज्ञरक्षा तथा माता की आज्ञा से राजधानी लौटने के दो कार्य उपस्थित होते हैं, तो विदूषक राजा से कहता है कि – **''त्रिशङ्कुरिवान्तरा तिष्ठ।''** (अङ्क-2)
- विदूषक यत्र तत्र अपनी मन्दबुद्धिता का भी परिचय देता है,

परन्तु वैसे बहुत चतुर है। षष्ठ अङ्क में राजा के द्वारा आम्रमञ्जरी को मदनबाण कहने पर वह काष्ठदण्ड लेकर मारने दौड़ता है। उसकी मूर्खता पर खिन्न राजा भी हँस पड़ता है।

➢ विदूषक सरलहृदय का व्यक्ति है, राजा को सन्देह हुआ कि यह राजधानी में जाकर कहीं हमारे प्रणयप्रसङ्ग की चर्चा हमारी रानियों से न कर दे, अतः राजा दुष्यन्त ने उससे कहा कि वे सब मजाक की बातें हैं।

''परिहासविजल्पितं सखे न परमार्थेन गृह्यतां वचः''

(अङ्क-2)

➢ विदूषक राजा की इस बात को सच मान लेता है और रानियों से इसकी कोई चर्चा नहीं करता है।

➢ रानी वसुमती के आने पर वह शकुन्तला का चित्र लेकर भाग जाता है, और राजा को वसुमती के क्रोध से बचाता है।

➢ पञ्चम अङ्क के प्रारम्भ में रूठी रानी हंसपदिका को मनाने के लिए राजा विदूषक को ही भेजता है।

➢ षष्ठ अङ्क में इन्द्र का सारथि मातलि विदूषक को पीटता है जिससे राजा का क्रोध प्रस्फुटित होता है। तभी राजा दानवों के वधार्थ स्वर्ग को जाता है।

➢ वह राजा को समय-समय पर सान्त्वना देता है, उसका मनोरञ्जन करता है, और उचित परामर्श भी देता है।

(अङ्क-6)

गौतमी

➢ **परिचय** – ऋषि कण्व की धर्मभगिनी

➢ कण्वाश्रम की सर्वाधिक वृद्धा तपस्विनी/वरिष्ठ महिला

➢ आश्रम की व्यवस्थापिका/अध्यक्षा

चारित्रिक विशेषताएँ –

➢ सम्मानित महिला

➢ वरिष्ठ तपस्विनी

➢ बुद्धिमती

➢ व्यवहारकुशल एवं लोकव्यवहार की ज्ञाता

➢ अभिभाविका

➢ अतीव सरल एवं निच्छल व्यक्तित्व

➢ ममतामयी एवं वात्सल्य की प्रतिमूर्ति

चारित्रिक गुण एवं कार्य

➢ महर्षि कण्व का गौतमी के प्रति सम्मानभाव है, इसीलिए शकुन्तला के साथ उसे हस्तिनापुर तक भेजा जाता है।

➢ गौतमी में अवस्थानुरूप गाम्भीर्य, सहिष्णुता एवं विवेकशीलता दृष्टिगोचर होती है, राजदरबार में दुष्यन्त जब शकुन्तला के साथ अपने सम्बन्ध को अस्वीकार कर देता है, तब वह शकुन्तला का घूँघट हटाकर स्वयं उसे अपने सम्बन्ध को प्रमाणित करने का आदेश देती है।

➢ गुरुजनों तथा बन्धु-बान्धवों से पूछे बिना दुष्यन्त एवं शकुन्तला के प्रेम सम्बन्धों को वह अनुचित मानती है।

➢ शकुन्तला के प्रति उसका हृदय माँ की वात्सल्यमयी ममता से ओतप्रोत है। वह उसे पुत्रीवत् स्नेह करती है। राजा दुष्यन्त द्वारा अस्वीकार कर दिये जाने पर शकुन्तला जब शार्ङ्गरव आदि के पीछे-पीछे आने लगती है तो उस समय गौतमी का वात्सल्यभाव जाग उठता है – **वत्स शार्ङ्गरव, अनुगच्छतीयं खलु नः करुणपरिदेविनी शकुन्तला........किं वा मे पुत्रिका करोतु।'' (अङ्क 5)**

➢ कण्व के आश्रम में गौतमी अभिभावक की महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है, तापसकन्याओं की देखरेख का उत्तरदायित्व उसी का है।

➢ प्रथम अङ्क में प्रियंवदा के परिहास से परेशान हुई शकुन्तला गौतमी से शिकायत करने को कहती है –

इयम् असम्बद्धप्रलापिनी....गौतम्यै निवेदयिष्यामि (अङ्क-1)

➢ शकुन्तला की अस्वस्थता का समाचार सुनकर गौतमी शान्तिजल लेकर उसके ऊपर छिड़कती है और वात्सल्यभाव से पूछती है–

'जाते, लघुसन्तापानि तेऽङ्गानि' (अङ्क-3)

➢ शकुन्तला की विदाई में विलम्ब होता देख गौतमी महर्षिकण्व से भी वापस लौट जाने का निवेदन करती है –

जाते, परिहीयते गमनवेला....निवर्ततां भवान्। (अङ्क-4)

➢ कण्व द्वारा शकुन्तला को उपदेश दिये जाने पर गौतमी उसे ठीक से स्मरण करने को कहती है –

जाते, एतत् खलु सर्वमवधारय। (अङ्क-4)

➢ गौतमी शकुन्तला को सर्वदा, **'वत्से'**, **'जाते'**, **'पुत्रि'** आदि यही सम्बोधन करती है इससे शकुन्तला के प्रति उसका अगाध स्नेह स्वयं व्यक्त होता है।

➢ शकुन्तला को छोटी-छोटी व्यवहार और शिष्टाचार की बातें भी गौतमी बताती हैं, विदाई के समय कण्व ऋषि के आने पर शकुन्तला को प्रणाम करने को कहती है।

''आचारं तावत् प्रतिपद्यस्व'' (अङ्क-4)

➢ कण्व द्वारा पुत्री शकुन्तला के लिए चक्रवर्ती पुत्र प्राप्त करने का आशीर्वाद सुनकर गौतमी अत्यन्त प्रसन्न होकर कहती है – यह तो केवल आशीर्वाद नहीं, अपितु वरदान है।

भगवन्, वरः खल्वेषः, नाशीः (अङ्क-4)

➢ आश्रम की संरक्षिका, व्यवस्थापिका, अध्यक्षा या वरिष्ठ तपस्विनी

के रूप में गौतमी का सम्मान सभी आश्रमवासी करते हैं। शकुन्तला को हस्तिनापुर ले जाने के लिए शार्ङ्गरव आदि को गौतमी ही आदेश देती है –

'गौतमि, आदिश्यन्तां शार्ङ्गरवमिश्राः शकुन्तलानयनाय' (अङ्क-4)

शार्ङ्गरव और शारद्वत

- **परिचय** – शार्ङ्गरव और शारद्वत दोनों कण्व ऋषि के शिष्य।

चारित्रिक गुण एवं कार्य

- कण्व ऋषि इनके नाम के साथ आदरसूचक 'मिश्र' शब्द का प्रयोग करते हैं –

'आदिश्यन्तां शार्ङ्गरवमिश्राः' (अङ्क-4)

'क्व ते शार्ङ्गरवमिश्राः (अङ्क-4)

- दोनों परिपक्व आयु वाले तथा विद्यानिष्णात हैं
- गुरु कण्व का इन दोनों के ऊपर अटूट विश्वास है, तभी तो उनकी देखरेख में शकुन्तला को पतिगृह (हस्तिनापुर) भेजते हैं।
- राजा दुष्यन्त इन दोनों के गरिमामय व्यक्तित्व को देखकर उन्हें गुरुसमान कहता है –

''गुरुशिष्ये गुरुसमे'' – (अङ्क-6)

- शास्त्रज्ञान के साथ ही साथ इन दोनों ऋषियों में लौकिकज्ञान भी विद्यमान है।
- शकुन्तला की विदाई के समय मार्ग में सरोवर को देखकर शार्ङ्गरव महर्षि कण्व से लौट जाने को कहता है –

''भगवन् ओदकान्तं स्निग्धो जनोऽनुगन्तव्य इति श्रूयते। तदिदं सरस्तीरम्.......।'' (अङ्क-4)

- दोनों ऋषियों को आश्रम के जीवन से प्रेम है और नगर जीवन से घृणा।
- हस्तिनापुर नगर में प्रवेश करते समय एक ओर जहाँ शार्ङ्गरव राजभवन को अग्नि की लपटों से घिरा हुआ समझता है –

जनाकीर्णं मन्ये हुतवहपरीतं गृहमिव' (अङ्क-5)

- वहीं दूसरी ओर शारद्वत नगर के भोगासक्त लोगों को उसी प्रकार समझता है, जिस प्रकार स्नात व्यक्ति तैलासिक्त को, पवित्र व्यक्ति अपवित्र को, प्रबुद्ध व्यक्ति सोये हुए को, और स्वच्छन्दचारी व्यक्ति बन्धनयुक्त को समझता है –

''अभ्यक्तमिव स्नातः शुचिरशुचिमिव'' (अङ्क-5/11)

- इन दोनों में शार्ङ्गरव अधिक आयु का है, ऋषि कण्व को उस पर अधिक विश्वास है, अतः राजा दुष्यन्त के लिए (**अस्मान् साधु विचिन्त्य संयमधनान्----अङ्क-4.17**) रूपी संदेश उसी को देते हैं। शार्ङ्गरव ही शकुन्तला के साथ हस्तिनापुर जाने वाले दल का नेता है, जबकि ऋषि शारद्वत उससे छोटा और शान्तस्वभाव का है।
- शार्ङ्गरव, शारद्वत की अपेक्षा अधिक वाक्पटु एवं लौकिक व्यवहार का ज्ञाता है, जबकि शारद्वत मितभाषी है। उसके विचार दार्शनिक हैं, उसमें दूसरों के प्रति सहानुभूति है।
- शार्ङ्गरव बहुत बोलने वाला, क्रोधी, असहिष्णु, कठोर और अशान्त प्रकृति का है। वह अपने नाम को चरितार्थ करता है, क्योंकि 'शार्ङ्गरव का शाब्दिक अर्थ है – '**धनुष के समान शब्द करने वाला।**' राजा दुष्यन्त जब शकुन्तला को नहीं पहचानता और विवाह को अस्वीकार कर देता है, तो वह उसे शठ, अधार्मिक और ऐश्वर्योन्मत्त आदि कहकर फटकारता है –

''मूर्च्छन्त्यमी विकाराः प्रायेणैश्वर्यप्रमत्तेषु। (अङ्क-5/18)

- शार्ङ्गरव अत्यन्त निर्भय एवं स्पष्टवादी है। दुष्यन्त जब अपने आपको शकुन्तला का पति नहीं मानता, तो शार्ङ्गरव उसे चोर तक कहता है – **''पात्रीकृतो दस्युरिवासि येन'' अङ्क-5/20**
- शारद्वत मितभाषी, अक्रोधी, सहिष्णु तथा शान्त प्रकृति का है, जब राजा दुष्यन्त और शार्ङ्गरव का विवाद उग्र रूप धारण करता है, तब वही उसे शान्त करता है –

''शार्ङ्गरव, विरम त्वमिदानीम्'' (अङ्क-5)

- शारद्वत राजा दुष्यन्त से अन्ततः कहता है कि शकुन्तला तुम्हारी पत्नी है, तुम इसे रखो या छोड़ो, हम लोग जाते हैं –

''तदेषा भवतः कान्ता, त्यज वैनां गृहाण वा'' (अङ्क-5)

- शार्ङ्गरव व्यवहारकुशल नहीं है, वह राजा से झगड़े को बढ़ाता है, जबकि शारद्वत अत्यन्त व्यवहारिक है वह झगड़े को निपटाता है। शारद्वत के कारण ही विवाद शान्त हुआ।
- दुष्यन्त के अपमानजनक व्यवहार से दुखी शकुन्तला जब रोने लगती है, तब शार्ङ्गरव उसे डाँटता है –

''अतः परीक्ष्य कर्त्तव्यं विशेषात् सङ्गतं रहः'' (अङ्क-5/24)

- जब दरबार में शकुन्तला को छोड़कर गौतमी सहित दोनों शिष्य आश्रम लौटने लगते हैं, तब शकुन्तला भी उनके पीछे-पीछे लौटने लगती है, तभी शार्ङ्गरव पुनः शकुन्तला को कठोर शब्दों में डाँटता है– **''किं पुरोभागे, स्वातन्त्र्यमवलम्बसे'' (अङ्क-5)**

किरातार्जुनीयम् के पात्रों का चरित्र-चित्रण

युधिष्ठिर

- सत्य का पालन करने वाले।
- धर्म पर दृढ़ रहने वाले।
- सहनशील और राजनीतिकुशल।
- द्रौपदी और भीम द्वारा उलाहना दिये जाने पर भी उनके मन में विकार उत्पन्न नहीं होता।
- प्रथमसर्ग में युधिष्ठिर एक भी वाक्य नहीं बोलते हैं, केवल श्रोता के रूप में उनका वर्णन है।

➢ जुयें में हारकर वन में निवास करते हुए भी युधिष्ठिर हस्तिनापुर के राजा दुर्योधन के विचारों, उद्देश्यों और कार्यों को जानने के लिए वनेचर को गुप्तचर के रूप में भेजते हैं।

➢ किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में भारवि ने भले ही युधिष्ठिर के मुख से कोई बात नहीं कहलवायी हो, फिर भी वनेचर एवं द्रौपदी के कथनों द्वारा उनके व्यक्तित्व की विशेषताएँ परिलक्षित होती हैं।

➢ भारवि ने पाँचों पाण्डवों के ज्येष्ठ भ्राता युधिष्ठिर को एक कुशल राजनीतिज्ञ, प्रतिज्ञापालक, संयमी एवं धैर्यशाली, सत्यप्रिय, शान्तिप्रिय, धर्मात्मा एवं शास्त्रज्ञ के रूप में चित्रित किया है।

वनेचर

➢ गुप्तचरों के लिए चार प्रकार के गुण बताये गये हैं – अमूढ़ता, अशैथिल्य, सत्यपरता और ठीक प्रकार से अनुमान कर सकने की क्षमता। युधिष्ठिर द्वारा गुप्तचर बनाकर भेजे गए वनेचर में ये सभी गुण विद्यमान थे।

➢ वनेचर ब्रह्मचारी के वेश में हस्तिनापुर जाकर सुयोधन (दुर्योधन) के सभी विचारों, योजनाओं, कार्यों और उद्देश्यों को ठीक प्रकार से समझता है, और द्वैतवन में आकर युधिष्ठिर को सम्पूर्ण वृत्तान्त बताता है।

➢ यद्यपि वनेचर द्वारा लाये गये समाचार युधिष्ठिर के लिए अप्रिय थे, तथापि वह उनको कहने में हिचकिचाया नहीं।

➢ वनेचर कार्यदक्ष था, उसने दुर्योधन की दुरभिसन्धियों, दुःश्चिंतन और युद्ध की पूर्ण तैयारियों को ठीक प्रकार से जान लिया और राजा युधिष्ठिर से सुस्पष्ट और प्रभावशाली ढंग से वहाँ के सभी गूढ़ रहस्यों को व्यक्त किया।

➢ वनेचर की वाणी, सौष्ठव और औदार्य गुणों से युक्त थी, और उसके कथन, प्रमाण और तर्कों से पूर्ण निश्चित अर्थों को व्यक्त करने वाले होते थे –

''स सौष्ठवौदार्यविशेषशालिनीं विनिश्चितार्थामिति वाचमाददे।'' किरात० 1/3

➢ वह राजा युधिष्ठिर का सच्चा हितैषी था, और अप्रिय लगने वाले भी हितकारी वचनों को कहने में कोई संकोच नहीं करता–

''न विव्यथे तस्य मनो न हि प्रियं प्रवक्तुमिच्छन्ति मृषा हितैषिणः'' किरात० 1/2

➢ वनेचर अतिविनम्र था और अपनी सफलता के लिए अपने स्वामी युधिष्ठिर की कृपा को ही श्रेय देता है –

''तवानुभावोऽयमवेदि यन्मया, निगूढतत्त्वं नयवर्त्म विद्विषाम्'' किरात० 1/6

➢ इसप्रकार सम्पूर्ण प्रथमसर्ग में वनेचर को एक कुशल गुप्तचर, सच्चा हितैषी, शिष्टाचारी एवं निरहंकारी, स्वामिभक्त, सत्यवादी, वाक्पटु, निरालस्य, निश्छल, कर्त्तव्यनिष्ठ, विनम्र, निर्भीक, साहसी, स्पष्टवादी, गुणी, कार्यकुशल एवं अत्यन्त बुद्धिमान् के रूप में चित्रित किया गया है।

सुयोधन (दुर्योधन)

➢ महाकवि भारवि ने दुर्योधनको सुयोधन नाम से अभिहित किया है, जो कुरु प्रदेश का राजा है–''**श्रियः कुरूणामधिपस्य**'' **किरात. 1/1**

➢ क्योंकि उसको सुखपूर्वक जीता जा सकता था अथवा उसकी नीतियाँ प्रजा को सुख पहुँचाने वाली थीं।

➢ किरातार्जुनीयम् का 'सुयोधन' कामक्रोधादि रिपुओं को जीतने वाला, प्रजावत्सल एवं आदर्श राजा बनने का दिखावा करता है। – **''स सन्ततं दर्शयते गतस्मयः'' किरात० 1/10**

➢ दुर्योधन के राज्य की स्थिरता और सुख प्रजा और सेवकों की अनुरक्ति पर निर्भर है।

➢ सुयोधन अपने राष्ट्र को धन-धान्य से समृद्ध बनाने के लिए कृषि की उन्नति हेतु कृत्रिम सिंचाई के साधन उपलब्ध कराता है।

''सुखेन लभ्या दधतः कृषीवलैः'' किरात० 1/17

➢ सुयोधन अहंकार से शून्य होकर सेवकों के साथ मित्रों के समान तथा मित्रों के साथ बन्धु-बान्धव की तरह व्यवहार करता था –

''सखीनिव प्रीतियुजोऽनुजीविनः'' – किरात० 1/10

➢ दुर्योधन पराक्रमी शूरवीरों को अपने आस-पास एकत्र किए रहता था जो उसके उत्तम व्यवहार से प्रभावित होकर अपने प्राणों की बाजी लगाकर भी उसका हित करना चाहते थे –

''महौजसो मानधनाः धनार्चिताः....प्रियाणि वाञ्छन्त्यसुभिः समीहितुम्।'' किरात० 1/19

➢ यद्यपि दुर्योधन कुटिल स्वभाव वाला है किन्तु आपको जीतने की इच्छा से वह अपने शुभ्र यश एवं पुरुषार्थ को फैला रहा है और प्रजा को यह दिखलाने का प्रयास करता है कि वह निरहंकारी, निरालस्य तथा युधिष्ठिर से कहीं अधिक गुणवान्, दयावान्, क्षमावान्, सत्यवादी तथा धर्मज्ञ है –

''तथापि जिह्मः स भवज्जिगीषया तनोति शुभ्रं गुणसम्पदा यशः।'' किरात० 1/8

➢ राजाओं द्वारा भय के कारण नहीं, अपितु श्रद्धा और प्रेम के कारण दुर्योधन के आदेशों का पालन किया जाता था –

''गुणानुरागेण शिरोभिरुह्यते'' किरात० 1/21

➢ दुर्योधन को कभी क्रोध करने अथवा शस्त्रों को उठाने की आवश्यकता नहीं होती थी –

''कृतं न वा कोपविजिह्ममाननम्'' (किरात० 1/21)

- राजनीति के छः अंगों – सन्धि, विग्रह, यान, आसन, संशय और द्वैधीभाव का प्रयोग करने में सुयोधन (दुर्योधन) कुशल था।
- साम, दान, दण्ड, भेद– इन चारों उपायों का सुयोधन सफलतापूर्वक प्रयोग करता था –

''निरत्ययं साम न दानवर्जितम्'' (किरात० 1/12)

- न्याय करने में दुर्योधन कभी पक्षपात नहीं करता था –

''गुरूपदिष्टेन रिपौ सुतेऽपि वा निहन्ति दण्डेन स धर्मविप्लवम्'' (किरात० 1/13)

- इसप्रकार सुयोधन नीतिज्ञ एवं कुशल प्रशासक, प्रजावत्सल, कुशल राजनीतिज्ञ, राजाओं के प्रति उदार, कूटनीतिज्ञ, उदारवादी राजा के रूप में किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में चित्रित है।

द्रौपदी

- किरातार्जुनीयम् की सबसे महत्त्वपूर्ण नारीपात्र द्रौपदी है, जो इस **महाकाव्य की नायिका** है।
- प्रथमसर्ग में द्रौपदी की मानसिक पीड़ा एवं अपमानजन्य वेदना अभिव्यक्त होती है।
- वनेचर द्वारा बतायी गयी दुर्योधन की कार्यप्रणालियों एवं सफलता को युधिष्ठिर से सुनकर द्रौपदी का क्रोध उद्दीप्त हो उठता है।
- युधिष्ठिर की नीतियाँ, सत्यप्रतिज्ञा के पालन और शान्तस्वभाव के कारण सबसे अधिक कष्ट द्रौपदी को झेलने पड़ते हैं।
- दुर्योधन से प्रतिशोध लेने की आकांक्षा सबसे अधिक द्रौपदी को है।
- द्रौपदी ओजस्विनी वाणी द्वारा युधिष्ठिर के क्रोध को उद्दीप्त करने का प्रयत्न करती है –

''उदाजहार द्रुपदात्मजा गिरः'' (किरात० 1/27)

- द्रौपदी युधिष्ठिर से कहती है कि तुम जैसा और कौन होगा, जो स्वयं ही अपनी राजलक्ष्मी और कुलवधू को शत्रुओं द्वारा अपहरण करा दे –

''परैस्त्वदन्यः क इवापहारयेत्........'' (किरात० 1/31)

- वह युधिष्ठिर को क्षत्रियों तथा राजाओं के समान आचरण करने का उपदेश करती है, और उसकी सत्यप्रतिज्ञा को ढोंग कहती है।
- द्रौपदी पहले भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव के वन में प्राप्त होने वाले कष्टों का वर्णन करती है और उसके बाद स्वयं युधिष्ठिर को होने वाले दुःखों और अपमानों को बताती है –

''पुराधिरूढः शयनं महाधनम्'' (किरात० 1/38)

- द्रौपदी युधिष्ठिर से कहती है कि जो मनुष्य क्रोध नहीं कर सकता, शत्रु उससे भय नहीं करते और मित्र उसका आदर नहीं करते – **''न जातहार्देन न विद्विषादरः'' (किरात० 1/33)**
- वह युधिष्ठिर से कहती है कि वह किसी बहाने से सन्धि को तोड़ दे और समय की प्रतीक्षा न करके अपने पराक्रम से शत्रुओं को जीत ले– **''न समयपरिरक्षणं क्षमं ते''.......। (किरात० 1/45)**
- शान्ति और क्षमा मुनियों के लिए ही उचित है, राजाओं के लिए नहीं, यदि शान्ति और क्षमा का पालन नही करना है तो उसको राजाओं के चिह्न धनुष को छोड़कर जटाओं को धारण करके अग्नि में आहुति देते रहना ही उचित है। यह बात द्रौपदी युधिष्ठिर से कह रही है– **''जटाधरः सञ्जुहुधीह पावकम्'' (किरात० 1/44)**
- इसप्रकार द्रौपदी को एक वीरक्षत्राणी, कुशल राजनीतिज्ञा, स्वाभिमानिनी, कूटनीतिज्ञा, अपमान से दुखी, सहृदया एवं क्रोधोद्दीपन में दक्ष नारी के रूप में चित्रित किया गया है।

घ. प्रमुख ग्रन्थों का शब्दार्थ

उत्तररामचरितम् (तृतीय अङ्क) के प्रमुख शब्दार्थ

संस्कृतशब्दः	अर्थः	संस्कृतशब्दः	अर्थः
सम्भ्रान्तः	घबड़ाना	**क्षामम्**	दुर्बल
पुटपाकप्रतीकाशः	पुटपाक के समान	**केतकी**	केतकी फूल
अनिर्भिन्नः	अव्यक्त	**दारुणः**	कठोर
प्रतिनिवर्तमानम्	लौटे हुये	**लोलः**	चञ्चल
शीकरक्षोद	जल कण	**सल्लकी**	सल्लकी लता
पद्म	कमल	**करिकलभकः**	हाथी का बच्चा
किञ्जल्क	पराग (केसर)	**द्विरदपतिः**	बड़ा हाथी
वीची	तरङ्ग	**उद्दामः**	घमण्ड (मतवाला)
मोह	मूर्छा	**पयः**	जल
स्वैरं-स्वैरम्	धीरे-धीरे	**ससाध्वसम्**	भय के साथ
दाक्षिण्यम्	उदारता	**उल्लासम्**	हर्ष के साथ
दारकद्वयम्	दो पुत्र	**भरित**	परिपूर्ण
संवेगः	वेग	**मन्थर**	मन्द
प्राचेतः	वाल्मीकि	**स्तनित**	गर्जन
विपाकः	परिणाम	**मांसल**	जोरदार
उपकरणीभावम्	सहायता को	**भारती**	वाणी
सुष्ठु	ठीक	**निर्घोषः**	ध्वनि
व्यापृतः	व्यग्र (व्यस्त)	**स्तनयित्नुः**	मेघ
अभ्युदयः	कल्याणकारी	**अपरिस्फुटः**	अस्पष्ट
अव्यग्रः	व्यस्त न होना	**निक्वाणम्**	शब्द (ध्वनि)
प्रसवितारम्	प्रवर्तक	**व्याहृतम्**	कहना
सविता	सूर्य	**भणति**	बोलना
अवनि	पृथ्वी	**दिष्ट्या**	सौभाग्य से
वर्तिनी	विद्यमान	**द्रुमः**	वृक्ष
ह्रदः	सरोवर (जलाशय)	**गिरिः**	पर्वत
पाण्डुः	पीला	**कन्दरम्**	गुफा
कपोलम्	गाल	**निर्झरम्**	झरना
विलोलम्	चञ्चल	**अन्तर्लीनः**	अन्तःकरण में छिपी
कबरीकम्	केशसमूह	**उद्दामम्**	अधिक
विप्रलूनम्	टूटे हुये	**धरणीपृष्ठः**	भूमि
शरदिजः	शरद् ऋतु से उत्पन्न	**विपर्यस्तः**	गिरना
घर्मः	घाम (धूप)		

संस्कृतशब्दः	अर्थः	संस्कृतशब्दः	अर्थः
पाणिः	हाथ	**पुष्कर**	कमल
निरतः	अनुरक्त	**वासित**	सुगन्धित
हृदि	हृदय में	**गण्डूष**	कुल्ला
सेकः	सींचना	**संक्रान्तयः**	फेंकना (छोड़ना)
निष्पीडितः	निचोड़ना	**शीकर**	जल की बूँद
इन्दुकरः	चन्द्रकिरण	**करेण**	सूँड़ से
कन्दलजः	नवाङ्कुर	**अनरालनाल**	सीधा दण्ड
आतप्त	सन्तापयुक्त	**ईषत्**	थोड़ा
तर्पणः	तृप्त करना	**कुड्मल**	कली
प्रसक्तः	सींचना	**पुण्डरीक**	श्वेतकमल
सपदि	शीघ्र	**काकली**	तोतली
प्रेक्ष्य	देखकर	**अपत्यम्**	सन्तान
सनिर्वेदम्	दुःख के साथ	**बर्हम्**	पङ्ख
तटस्थम्	उदासीन	**शिखण्डी**	मयूर
घटनात्	मिलन से	**नदति**	बोलना
विप्रियवशाद्	अप्रिय कार्य से	**उच्छिखः**	ऊपर उठी हुई
स्तम्भितम्	निश्चेष्ट	**पुटान्तः**	नेत्र कोश
दयितः	प्रिय	**चटुलः**	चञ्चल
सौजन्यात्	सुजनता	**ताण्डवैः**	नृत्यों से
उल्लापाः	विलाप	**करकिसलयः**	पल्लव सदृश हाथों से
प्रत्ययेन	विश्वास से	**वत्सलेन**	स्नेह से
शल्यः	कांटा (कील)	**तिर्यञ्चः**	पशु-पक्षी
मन्दाकिन्याः	गङ्गा (भागीरथी)	**नीरन्ध्रः**	घना
अनुक्रोशः	दयालु	**बाल**	सुकुमार
निरनुक्रोशः	निर्दय	**कदली**	केला
प्रसाद	अनुग्रह	**वर्ति**	स्थित
उद्गच्छत्	निकले हुये	**हरिणकैः**	हरिणों से
बिस	मृणाल	**नवकुवलयः**	नवीन नील कमल
किसलय	पल्लव	**शुचा**	शोक से
स्निग्ध	कोमल	**दृशः**	नेत्रों को
लवली	लवलीलता	**विकलकरणः**	व्याकुल इन्द्रियों वाले
वारणानाम्	हाथियों को	**अतिपूरैः**	अत्यधिक प्रवाहों से
भाजनम्	पात्र	**विलुलितम्**	फैले हुए
वयसि	युवावस्था में	**पक्ष्मलः**	पलक
लीला	अनायास	**उत्तानः**	ऊपर उठी हुई
उत्खात	उखाड़ना	**कुल्या**	नहर
मृणालकाण्ड	मृणालदण्ड	**हृदयेशम्**	राम (हृदय के स्वामी)
कवल	ग्रास (कौर)		
पुष्यत्	खिले हुये		

संस्कृतशब्दः	अर्थः	संस्कृतशब्दः	अर्थः
वनानिलाः	वन की हवा	**रयः**	वेग
रज्यत्कण्ठाः	अनुराग युक्त कण्ठ वाले	**ओघः**	राशि/समूह
कलम्	मधुर	**सैकतम्**	बालू
क्वणन्तु	ध्वनि करें	**कातर्यात्**	कातरता से
अम्बु	जल	**अरविन्द**	कमल
नीवारः	नीवार धान	**कुड्मलः**	कली
शष्पैः	घास से	**ध्वंसते**	शिथिल होना
तरुः	वृक्ष	**स्फुटितः**	विदीर्ण होना
कुरङ्गः	मृग	**देहबन्धः**	शरीर के जोड़
शकुनि	पक्षी	**विष्वक्**	चारो ओर से
मैथिली	सीता	**सीदन्**	दुःखी होता हुआ
कौमुदी	चाँदनी	**तमसि**	अन्धकार में
विपिने	वन में	**विधुरः**	प्रिया रहित (राम)
त्रस्त	भयभीत	**जीवितेश्वरः**	राम
एकहायन	एक वर्ष	**अपरम्**	दूसरा
क्रव्यादि्भः	हिंसक जीव	**परिणयविधौ**	विवाह के समय
अङ्गलतिका	लता के समान अङ्गों वाली	**पादैः**	किरणों से/चरणों से
तटाकः	तालाब	**सुधासूतेः**	चन्द्रमा के
परीवाहः	जल का बाहर निकलना	**लवली**	लवली लता
प्रतिक्रिया	उपाय	**ललितः**	सुन्दर
विलपनम्	विलाप	**कन्दलः**	अङ्कुर
उच्छ्वासः	प्राण (श्वास)	**निमीलितः**	बन्द करना
अन्तर्दाहः	हृदय का सन्ताप	**करपल्लवः**	पल्लव के समान हाथ
विधिः	भाग्य	**परिकम्पिनः**	काँपता हुआ
कायः	शरीर	**स्विद्यतः**	पसीने से युक्त
प्रणष्टम्	नष्ट होना	**मरुत्**	वायु
परिवत्सरः	वर्ष	**अम्भः**	जल
वाचः	वाणी	**स्फुट**	खिली हुई
सविषाः	विषयुक्त	**कोरका**	कली
अलातशल्यम्	जलता हुआ कील	**यष्टिः**	डाली/छडी
सोढः	सहना	**स्वेदः**	पसीना
वेला	मर्यादा/समय	**कम्पिताङ्गी**	कम्पित अङ्गों से युक्त
उल्लोल	लाँघना	**प्रसीद-प्रसीद**	प्रसन्न होइए-प्रसन्न होइए
क्षुभित	स्तब्ध	**विप्रलब्धः**	ठगना
तोय	जल	**पौलस्त्यः**	रावण
अप्रतिहतः	न रोके जाने योग्य	**कार्ष्णायसः**	लौह निर्मित

संस्कृतशब्दः	अर्थः	संस्कृतशब्दः	अर्थः
कङ्काल	हड्डी (अस्थि)	**कपीन्द्रः**	सुग्रीव
पिशाचः	राक्षस	**हरीणाम्**	वानरों का
खड्गः	तलवार	**प्रज्ञा**	बुद्धि
पक्षतिः	पंखों को	**विश्वकर्मतनयः**	नल-नील
अरिः	शत्रु	**पत्रिणाम्**	बाणों के
अम्बुदः	मेघ	**सौमित्रः**	लक्ष्मण
द्याम्	आकाश में	**हिरण्यमयी**	स्वर्णनिर्मित
खरः	गधा	**सन्निकर्षः**	सम्बन्ध/निकट
मन्युः	क्रोध	**आवर्त**	भँवर
अविरल	निरन्तर	**सलिलम्**	जल
तूष्णीम्	चुपचाप	**अमरसिन्धुः**	गङ्गा
प्रविलयः	वियोग	**भद्रम्**	कल्याण
		अवनिः	पृथ्वी

अभिज्ञानशाकुन्तलम् के प्रमुख शब्दार्थ

संस्कृतशब्दः	अर्थः	संस्कृतशब्दः	अर्थः
इष्टिः	यज्ञ	**उष्ण+उदकम्**	गर्म जल
उटज	कुटिया	**नवमालिका**	चमेली
प्रमत्तः	उन्मत्त (पागल)	**भर्ता**	पति (स्वामी)
दुर्वारया	रोका न जाना	**अनुक्रोशः**	दयालुता
हुतवह्	अग्नि	**रजनी**	रात्रि
दग्धम्	जलाना	**परिक्रम्य**	घूमकर
स्खलितम्	लड़खड़ाना	**औषधिपतिः**	चन्द्रमा
निरूप्य	अभिनय करना	**अर्कः**	सूर्य
भाजनम्	पात्र	**लोकः**	जगत् (संसार)
प्रभ्रष्टम्	गिरना	**व्यसनोदयाभ्याम्**	अस्त और उदय
प्रकृतिवक्रः	स्वभाव से टेढ़ा	**वेला**	समय
सस्मितम्	मुस्कुराना	**उपलक्षणार्थम्**	जानने के लिए
दुहिता	पुत्री	**शशिः**	चन्द्रमा
मर्षयितव्यः	माफ करना	**कुमुद्वती**	कुमुदिनी
अभिज्ञान	पहचान	**अबलाजनः**	स्त्री जन
आभरणम्	आभूषण	**दृष्टिम्**	नेत्रों को
अङ्गुलीयकम्	अँगूठी	**अनार्यमाचरणम्**	अशिष्ट व्यवहार
पिनद्धम्	पहनाया	**विषयपराङ्मुखः**	सांसारिक विषयों को न जानना
देवकार्यम्	पूजन कार्य	**प्रतिबुद्धा**	जागकर
पेलवा	कोमल	**निजकरणीयेषु**	दैनिक कार्यों में (करने योग्य कार्य)

संस्कृतशब्दः	अर्थः
असत्यसन्धः	मिथ्याप्रतिज्ञा करने वाला
लेखमात्रम्	पत्र (लेटर)
आपन्नसत्वा	गर्भिणी
परिणीता	विवाहिता
सहर्षम्	हर्ष के साथ
सकाशम्	पास में
पावक	अग्नि
अग्निशरणाम्	यज्ञशाला
तनया	पुत्री
भूः/कुः	पृथ्वी
भूतये	कल्याण के लिए
आहितम्	स्थापित
चूत	आम्र
शाखा	डाली
अवलम्बितः	लटकना
नारिकेलः	नारियल
समुद्गकः	दोना (पुटक)
कालान्तरक्षमा	लम्बे समय से
सुमनसः	फूलों को
शिखामज्जिता	पूर्ण स्नान
मज्जनम्	स्नान
मण्डनम्	अलङ्करण
इन्दु + पाण्डु	चन्द्रमा के समान सफेद
माङ्गल्यम्	माङ्गलिक
क्षौमम्	रेशमी वस्त्र
लाक्षारसः	महावर
निष्ठ्यूतः	टपकाया
आपर्वभाग	कलाई तक
प्रतिद्वन्द्विभिः	प्रतिस्पर्धा करने वाले
उद्भेद	नवीन
अरण्य	वन
वैक्लव्यम्	विकलता (दुख)
सम्राजम्	सम्राट्
ययाति	राजा ययाति
क्लृप्तधिष्ण्या	प्रतिष्ठित
समिद्वन्तः	समिधाओं से युक्त
वैतानाः	यज्ञ की
वह्निः	अग्नि
हव्यः	हवि
दुरितम्	पापों को
प्रान्त	किनारा
संस्तीर्णः	बिछे हुये
भगिनी	बहिन
कुसुमप्रसूति	पुष्पोद्भव
प्रतिवचनम्	प्रत्युत्तर
परभृत	कोयल
विरुतम्	आवाज (ध्वनि)
सरोभिः	तालाबों से
छायाद्रुमैः	घनी छाया वाले वृक्षों से
मयूखतापः	किरणों का ताप
कुशेशयः	कमल
मृदुरेणुः	कोमल धूलि
शिवः	कल्याणकारी
ज्ञातिजन	बन्धुजन
पुरतः	आगे
विरह	वियोग
कातरः	दुःखी
आत्मसदृशम्	अपने अनुरूप
चूतेन	आम से
वीतचिन्तः	चिन्तामुक्त
निक्षेप	सौंपना/धरोहर/न्यास
स्थिरीकर्तव्या	धैर्य बँधाना
मन्थरः	अलसाना
अनघप्रसवा	सकुशल प्रसव
व्रणः	घाव
विरोपण	भरना

शिवराजविजयम् के प्रमुख शब्दार्थ

संस्कृतशब्दः	अर्थः
पुटकम्	दोना
कदलीदलम्	केले के पत्ते
तृणशकलैः	तृण के टुकड़े
सन्धानम्	जोड़कर
कम्बुकण्ठः	शंख के समान गर्दन
आयतः	चौड़ा
ललाटः	मस्तक
सुबाहुः	सुन्दर भुजाएँ
समन्तात्	चारों ओर

संस्कृतशब्दः	अर्थः	संस्कृतशब्दः	अर्थः
पानीयम्	जल वाला	**ग्रामाः**	समूह
पतत्रि	पक्षी	**शिखर**	चोटी
पूरितम्	भरा हुआ	**प्रबुद्धः**	जागना
सरः	तालाब	**निखिल**	सम्पूर्ण
निर्झर	झरना	**काष्ठपीठम्**	चौकी
ध्वनितम्	शब्दायमान	**कर्णपरम्परया**	कानों कान से
दिगन्तरः	दिशाएँ	**सुघटितम्**	सुगठित
चपलितचञ्चुः	चञ्चल चोंच	**सान्द्र**	घनी
पतङ्गः	पक्षी/सूर्य	**ईहितम्**	चेष्टा करना
कुल	समूह	**पृच्छापरवशः**	जिज्ञासा के अधीन
विनत	झुकी हुई	**समीरः**	वायु
शाख	शाखाएँ	**यामिनी**	रात्रि
शाखि	वृक्ष	**कामिनी**	नायिका
कन्दरः	गुफा	**चन्दनबिन्दौ**	चन्दन बिन्दु
अलि	भौंरा	**इन्दु**	चन्द्रमा
पुञ्जः	समूह	**कैरवविकाश**	कुमुदों का खिलना
कोरकाः	कलियाँ	**व्याघ्रः**	सिंह
सतीर्थ्यः	सहपाठी	**आघ्राता**	सूंघी हुई
कस्तूरिका	कस्तूरी	**अङ्के**	गोद में
रेणुः	चूर्ण	**सवेपथुः**	कांपती हुई
रूषितः	व्याप्त	**अन्वेषणः**	खोजना
सुगन्धपटलः	सौरभ समूह	**नवनीतः**	मक्खन
मन्थरः	अलसाना	**मृणालगौरीम्**	कमल नाल के समान गोरी
मिलिन्द	भौंरा	**क्रोड**	गोद
वृन्दानि	समूह	**वाक्पाटव**	बोलने में चतुर
क्षिप्रम्	शीघ्र	**वचनविन्यास**	टूटे हुये शब्द
तडागतटः	सरोवर तट	**नेदीयसि**	समीप में
यावनत्रासेन	यवन के भय से	**आच्छिद्य**	छीनकर
निःशब्दम्	शब्दरहित	**अध्वानः**	मार्ग
मरन्दमधुरः	पुष्प रस	**असिधेनुकाम्**	छूरी को
अपः	जल को	**विभीषिका**	भय
त्रियामा	रात्रि	**शमयितुम्**	शान्त करने के लिए
यामत्रयम्	तीन प्रहर को	**भल्लूकः**	भालू
इयेष	इच्छा करना	**शाल्मलितरुम्**	सेमल वृक्ष
उभय	दोनों	**पलाश पलाशि**	पलाश वृक्ष (किंशुक)
ग्रामणी	ग्राम के प्रधान	**श्रेणी**	पंक्ति
ग्रामीणः	ग्रामवासी		

संस्कृतशब्दः	अर्थः	संस्कृतशब्दः	अर्थः
घुणाक्षरन्याय	संयोग वश	गोष्ठमयः	गोशालाओं से युक्त
सप्तदशशतकानि	1700 वर्ष	यायजूकः	याज्ञिक
वीथीषु	गलियों में	तपांसि	तपस्यायें
पिष्ट्वा	पीसकर	मन्दुरी	घुड़साल
धूमध्वजेषु	अग्नि में	सत्यः	पतिव्रतायें
भ्राष्ट्रेषु	भाड़ों में	विधुरयसि	छोड़ना
तुलसीवनानि	तुलसी के वनों को	तूष्णीम्	मौन
रुधिरधारा	खून की धारा	अवतस्थे	हो गया
पटहः	नगाड़ा	सौख्येन	सुख से
गोमुखः	तुरही	सममेव	साथ ही
कर्णशष्कुली	कर्णछिद्र	भामिनी	कामिनी
जगाद	बोले	भ्रूभङ्ग	कटाक्ष
वाष्पानविगणय्य	आँसुओं की परवाह न करके	भूरि	अत्यधिक
प्रमृज्य	पोंछकर	वितान	फैलाना
उष्णं निःश्वस्य	गरम साँस लेकर	पराभूतः	आधीन
कातरः	दीनता	भटः	वीर
उपक्रमम्	भूमिका को	अमात्यः	मन्त्री
विमनायमानम्	उदास दुःखी	बुधजनः	विद्वान् जन
हरिद्राद्रवः	हल्दी के रस	महामदः	महामदशाली
क्षालितम्	रंगे हुये	ससेनः	सेना सहित
अञ्चितः	रोमाञ्चित	प्राविशत्	प्रवेश किया
अधरः	होंठ	उष्ट्रः	ऊँट
खिद्यते	दुःखी होना	अनैषीत्	ले गया
सकल	सम्पूर्ण	पौनः पुन्येन	बार-बार
कलापः	कलासमूह	द्वादशवारम्	बारह बार
कलनः	रचयिता	गुर्जरदेशः	गुजरात प्रदेश
सकलकालनः	सभी को नष्ट करने वाले	लोकोत्तरम्	अलौकिक
करालः	भीषण	कपाटानि	किवाड़ो को
कालः	महाकाल	स्तम्भान्	स्तम्भों को
पयःपूर	जलप्रवाह	वलभी	छज्जा
पूरितानि	परिपूर्ण	शतद्वयमणः	दो सौ मन
अकूपारतलानि	समुद्र को	सुवर्णशृङ्खला	सोने की जंजीर
गण्डः	गैंड़ा	ग्रहावग्रहणीः	घर की देहलियों के
फेरुः	सियार (शृगाल)	भित्तीः	दीवारों को
शशः	खरगोश	गदाम्	गदा को
प्रासादहर्म्यः	राजमहल	देवमूर्ति	महादेव की मूर्ति
शृङ्गाटकः	चौराहा	आमलम्	स्वच्छ
		मज्जय	डुबाना

संस्कृतशब्दः	अर्थः	संस्कृतशब्दः	अर्थः
कर्तय	काटना	मगधप्रान्तः	दक्षिणबिहार
सुवर्णकोटिद्वयम्	दो करोड़ स्वर्ण मुद्रायें	अङ्गप्रान्तः	पूर्वीबिहार (भागलपुर)
स्प्राक्षीः	स्पर्श करना	बङ्ग	बङ्गालप्रान्त
साम्रेडम्	पुनः पुनः	कलिङ्गः	उड़ीसा
कलकलम्	हा-हाकार की ध्वनि	हस्तयितुम्	अधीन करना
दग्धमुखः	मुँहजला	कृपाणः	तलवार
क्रमेलकः	ऊँट	सीमन्तिनी	नायिका
पृष्ठेषुः	पीठों पर	सीमन्तः	माँग
कालक्रमेण	समय की गति से	दोर्दण्डः	भुजाओं वाले
सप्ताशीत्युत्तरसहस्रतम–	1087	पारावारः	सागर
वैक्रमाब्देः	विक्रमसम्वत्	ग्रहिलः	दृढ़तर
महामदकुलम्	महमूद के वंश को	धृतावतारः	अवतार को धारण करना
धर्मराजलोकः	यमलोक	विजयपुराधीश्वरः	बीजापुर का राजा
अध्वनि	मार्ग का	साम्प्रतम्	इससमय
अध्वनीनम्	पथिक	साधेयम्	सिद्ध करना
अनीकिनी	सेना	सारगर्भितम्	महत्वपूर्ण
शीतलशोणितः	ठण्डा रक्त	त्रैवर्णिकः	ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य
पञ्चाशदुत्तरद्वादशशतम्	पचास उत्तर में	आशासन्तानः	आशासमूह
	1200+50=1250 विक्रमसंवत्	वितानः	विस्तार
अब्देः	विक्रमसम्वत्	गोप्यतम्	गुप्त
कान्यकुब्जेश्वरः	कन्नौज का स्वामी	वृत्तान्तम्	सूचना
अकण्टकः	निष्कण्टक	भासुरः	प्रकाशमान
अकीटकिट्टम्	मलरहित	वदनः	मुख
अस्थिगिरयः	हड्डी का पहाड़	व्याजेन	बहाने से
रिङ्ग	चञ्चल	व्रती	प्रतिज्ञा (सङ्कल्प)
तरङ्ग	लहरें	बद्धकरसम्पुटः	हाथ जोड़ना
भङ्गा	व्याप्त	जटिलमुनौ	जटाधारी मुनि
शोणितः	रक्त	सखिसाहाय्येन	मित्रों की सहायता से
शोणा	लाल	समभाणीत्	कहा
शोणीकृता	सोन नदी कर दिया	उदीर्य	कहकर
क्रीतदासः	गुलाम	ऊरीकृतम्	स्वीकार
प्रपौत्रः	नाती का पुत्र	गण्डशैलान्	पर्वत की शिलाओं
वल्लभताम्	शासन को	शनैः-शनैः	धीरे-धीरे
केकयदेशः	पंजाबप्रान्त	निर्मक्षिकम्	निर्जन (एकान्त)
मत्स्यदेशः	राजस्थान	पादचारध्वनिम्	पैरों के चलने की ध्वनि

संस्कृतशब्दः	अर्थः	संस्कृतशब्दः	अर्थः
मार्जारः	बिडाल	**शृङ्गः**	सींग
राजपुत्रदेशीय	राजपूत देश	**लाङ्गूल**	पूँछ
पादक्षेपः	पैरों का शब्द	**सत्वः**	प्राणी
शिलापीठम्	शिलाखण्ड	**दावदहने**	दावानल
आक्षेप	आहट	**ह्यः**	बीता हुआ कल
एकतानेन	एकाग्रचित्त से	**भुजङ्गिनी**	सर्पिणी
द्वित्राः	दो या तीन	**दंष्टाः**	डँसे गये
गोपयित्वा	छिपाकर	**कलकलम्**	कोलाहल
चक्षुश्चुम्बिनः	नयनों को स्पर्श करना	**बलीकात्**	छप्पर की ओरी से
कुटिलकचः	टेढ़े केश	**विकट**	भयङ्कर
वामकराङ्गुलिभिः	बायें हाथ की अँगुलियों से	**त्सरौ**	मूँठ को
अपसारयन्	दूर हटाना	**कवोष्ण**	कुछ-कुछ गरम
नीलवस्त्रखण्डः	नीले वस्त्र का टुकड़ा	**शोणिततृषित**	खून की प्यासी
वेष्टितमूर्द्धानम्	ढके हुए सिर	**चन्द्रहासः**	तलवार (रावण की)
हरितकञ्चुकम्	हरे रंग का कुर्ता	**उत्फालम्**	उछालना
श्यामवसनानद्धः	काले कपड़े को	**परश्शतान्**	सैकड़ों
कटितटः	कमर तट	**दिनकरकर**	सूर्य की किरणों
कर्बुराधोवसनम्	चितकबरे रंग का अधोवस्त्र	**चतुर्गुणी**	चौगुना
काक+आसनेन	काक आसन से	**चाकचक्यैः**	तलवार के चमत्कार से
रम्भालवालः	केले के थाल पर	**स्वेदजालम्**	पसीने की बूँदों से व्याप्त
लग्नाधोमुखः	नीचे मुखवाली	**कलितक्लेदः**	परिश्रम
हस्तयुगलम्	दोनों हाथ	**दाडिमः**	अनार
विपर्यस्तः	उल्टा	**तरणाच्छन्न**	चादर के ढँकी
श्मश्रुश्रेणि	मूँछ की पंक्ति	**चितायाम्**	चिता में
छलेन	ब्याज से	**शयानम्**	सोते हुये
पङ्क	कीचड़	**ताम्रचूडः**	मुर्गा
विंशतिवर्षकल्पम्	लगभग 20 वर्ष की उम्र	**ताम्रीकृतम्**	रक्तवर्ण को प्राप्त
कोशात्	म्यान से	**छिन्नकन्धरम्**	कटे हुए सिर वाले
आलापाः	बातचीत	**मृतककञ्चुकम्**	मृतक के कुर्ते से
कन्दरि	पहाड़	**उष्णीष**	पगड़ी
		भृत्येन	सेवक से

किरातार्जुनीयम् के प्रमुख शब्दार्थ

संस्कृतशब्दः	अर्थः	संस्कृतशब्दः	अर्थः
श्रियः	लक्ष्मी	**मही**	पृथ्वी
वृत्तिम्	व्यवहार	**महीभुज्**	राजा
वर्णिलिङ्गी	ब्रह्मचारी	**सपत्नी**	सौत
द्वैतवनम्	एक वन का नाम	**मृषा**	झूठ

संस्कृतशब्दः	अर्थः	संस्कृतशब्दः	अर्थः
द्विषाम्	शत्रुओं के	**त्रिगणः**	धर्म, अर्थ, काम
विघात	मारना	**ईयिवान्**	प्राप्त होना
रहसि	एकान्त में	**निरत्ययम्**	बाधारहित (निर्बाध)
भूभृत्	राजा	**अत्यय**	नाश (अतिक्रमण)
औदार्यम्	उदारता	**साम**	मधुरवचन
सौष्ठवम्	सुन्दरता	**भूरि**	अत्यधिक
अनुजीवी	सेवक	**वसु**	धन
क्षन्तुम्	क्षमा करना	**मन्युना**	क्रोध से
अमात्य	मन्त्री	**धर्मविप्लवम्**	धर्म का अतिक्रमण
रतिम्	प्रेम	**परेतरान्**	शत्रुओं से इतर (मित्र)
अधिपः	राजा	**क्रियापवर्गेषु**	कार्य समाप्त होने पर
निसर्गः	स्वभाव	**शङ्कितः**	शङ्कायुक्त
दुर्बोधः	बहुत कठिनाई	**उपायाः**	उपाय
विक्लव	क्षीणता	**परिबृंहितायतीः**	उन्नतियुक्त भविष्य वाली
निगूढम्	गुप्त	**विनियोगसत्क्रिया**	प्रयोग रूपी सत्कार से युक्त
नयवर्त्म	नीतिमार्ग	**उपायन**	उपहार
अवेदि	जाना	**अयुग्मच्छद**	सप्तपर्ण
दुरोदरः	जुँआ	**अजिरम्**	आँगन
छद्म	छल	**आस्थान**	सभाभवन
सुयोधनः	दुर्योधन	**अश्व**	घोड़ा
जगतीम्	पृथ्वी को	**सङ्कुलम्**	व्याप्त
जिह्मः	कुटिल	**भृशम्**	अत्यधिक
भूतिम्	ऐश्वर्य	**दन्ती**	हाथी
वरम्	श्रेष्ठ	**कृषीवलैः**	किसानों के द्वारा
शुभ्रम्	निर्मल	**अकृष्टपच्या**	बिना परिश्रम के फसल का पकना
अरिः	शत्रु	**अदेवमातृकाः**	वर्षा के जल के सहारे न रहना (नदी, नहर की सिंचाई)
षड्वर्ग	छः वर्ग	**क्षेमम्**	कल्याण को
नक्तम्	रात्रि	**वसूनि**	धनों को
तन्द्रा	आलस्य	**मेदिनी**	पृथ्वी
पौरुषम्	पुरुषार्थ	**संयति**	युद्ध में
पदवीम्	मार्ग को	**न संहताः**	इकट्ठा न होना
गतस्मयः	अहंकार का चला जाना	**नभिन्नवृत्तयः**	एक दूसरे से भिन्न व्यवहार न होना
सन्ततम्	निरन्तर	**असुभिः**	प्राणों से
सुहृद्	मित्र	**चरैः**	गुप्तचरों से
भक्त्या	अनुराग से	**निःशेषम्**	पूर्णरूप से
विभज्य	बाँटकर	**धाता**	ब्रह्मा
असक्तम्	अनासक्त भाव से	**ईहितम्**	मन्तव्य

संस्कृतशब्दः	अर्थः	संस्कृतशब्दः	अर्थः
सज्यम्	डोरी	**परिभ्रमन्**	भ्रमण करता हुआ
जिह्मः	कुटिल	**अन्तर्गिरिः**	पर्वतीय प्रदेश
शासनम्	आज्ञा	**वृकोदरः**	भीम
धनुः	धनुष	**प्राज्यम्**	अत्यधिक
प्रलीन	आधीन	**धनञ्जयः**	अर्जुन
आवारिधिः	समुद्रपर्यन्त	**वसु**	धन
एष्यतीः	आने वाली	**अकुप्य**	बहुमूल्य धन
भियः	विपत्तियाँ	**वासव**	इन्द्र
दुरन्ता	दुःखदायी	**वासवोपमः**	अर्जुन
इनः	श्रेष्ठ	**उत्तरान् कुरुन्**	उत्तरकुरु नामक देश
उदाहृतात्	उच्चारित किये गये	**वल्कवासांसि**	वृक्षों की छाल के वस्त्रों को
आखण्डलसूनुः	अर्जुन	**विष्वक्**	सब ओर से
विधेयम्	योग्य	**कचाचितौ**	बालों से व्याप्त
आशु	शीघ्र	**अग**	पर्वत
परप्रणीतानि	दूसरों के द्वारा कही गयी	**गज**	हाथी
ईरयित्वा	कहकर	**कठिनी**	कठोर
कृष्णा	द्रौपदी	**तावकीम्**	तुम्हारी
सदनम्	घर	**प्रसभम्**	बलपूर्वक
अपाकृती	अपमान	**आधिः**	मानसिक व्यथा
विनियन्तुम्	सहन करने में	**धियम्**	बुद्धि को
द्रुपदात्मजा	द्रौपदी	**महाधनम्**	बहुमूल्य
उदाजहार	बोली	**अदभ्रदर्भाम्**	कुशों से व्याप्त
प्रमदा	नारी	**शिवारुतैः**	शृगालियों (सियारिन) की ध्वनि
अधिक्षेपः	अपमान	**अशिवः**	अमङ्गल
दुराधयः	दुष्ट मानसिक व्यथाएँ	**अन्धसा**	अन्न से
अखण्ड	सम्पूर्ण	**उपनीतम्**	प्राप्त होना
धामभिः	तेज से	**वपुः**	शरीर
मतङ्गः	उन्मत्त हाथी	**कार्श्यम्**	कृशता
स्त्रक्	माला	**द्विजातिशेषेण**	ब्राह्मणों के भोजन करने से बचा हुआ
अपवर्जिता	खो देना	**आलूनशिखेषु**	शिखाओं के तोड़ने वाले
निशित	तीक्ष्ण	**बर्हिषाम्**	कुशों से
इषुः	बाण	**स्त्रजाम्**	मालाओं के
कुलजाम्	कुल परम्परा से प्राप्त	**द्विषन्निमित्ता**	शत्रुओं के कारण
उच्छिखः	ऊपर उठी हुई लपटें	**अपर्य्यासित**	अविनष्ट (जो नष्ट न हो)
अबन्ध्यः	जो बाँझ न हो	**धाम**	तेज
अमर्षशून्यः	क्रोधरहित	**प्रसीद**	प्रसन्न होना
विद्विषः	शत्रु	**सन्धेहि**	धारण करना
		निःस्पृहाः	जिसकी ईर्ष्या निकल गयी (निष्काम)

संस्कृतशब्दः	अर्थः
अवधूय	जीत करके
धामवताम्	तेजस्वियों में
पुरःसराः	अग्रणी
सुदुःसहम्	असहनीय
निकारम्	अपमान
क्षामम्	शान्ति
पर्येषि	मानना
कार्मुकम्	धनुष
लक्ष्मीपतिलक्ष्म	राजचिन्ह से युक्त
निकृतिः	अपमान
भूरिधाम्नः	परमपराक्रमी
समयपरिरक्षणम्	प्रतिज्ञा का पालन करना
क्षितीशाः	राजा लोग
सोपधि	छलपूर्वक
सन्धिदूषणानि	किये गये समझौते को भङ्गकर देना
नियोगः	नियोजित
मग्नम्	डूबना
दिनादौ	प्रभातकाल में
रिपुतिमिरम्	शत्रुसदृश अन्धकार को
उदीयमानम्	उगते हुए

मेघदूतम् का शब्दार्थ

संस्कृतशब्दः	अर्थः
जनकतनया	सीता
प्रमत्तः	असावधान
कान्ता	प्रिया
अस्तङ्गमितमहिमा	नष्ट महिमा
स्वाधिकारात्	अपने कार्य से
अद्रौ	पर्वत पर
अबला	प्रिया
विप्रयुक्तः	अलग (वियुक्त)
कनकवलयः	स्वर्णकङ्गन
भ्रंशरिक्तः	गिरने से रिक्त
प्रकोष्ठः	कलाई
आश्लिष्टः	सटा हुआ
सानुम्	चोटी
वप्रकीडापरिणतः	वप्रकीडा में तिरछा प्रहार करना
राजराजः	कुबेर
कौतुकाधानः	उत्कण्ठा से उत्पन्न
अन्यथावृत्तिः	दूसरे प्रकार का व्यवहार

संस्कृतशब्दः	अर्थः
दूरसंस्थे	दूर स्थित होने पर
नभसि	श्रावण मास के
प्रत्यासन्ने	निकट आने पर
दयिता	पत्नी
जीमूतेन	बादल
प्रत्यग्रैः	तत्काल तोड़े गये
कुटज	कुटजपुष्प
व्याजहार	बोलना
धूमज्योतिः	धूम, अग्नि
सलिलमरुतम्	जल, वायु
सन्निपातः	मिश्रण
पटुकरणैः	समर्थ इन्द्रियों वाले
औत्सुक्यम्	उत्कण्ठा
गुह्यकः	यक्ष
कामार्ताः	काम-पीड़ित
चेतनः	चेतन
अचेतनः	जड़
'वैभ्राज'	'वैभ्राज' नामक उद्यान को गन्धर्वों के राजा 'चित्ररथ' ने बनाया था।
प्रकृतिकृपणाः	स्वभाव से दीन
पुष्करावर्तकानाम्	पुष्कर+आवर्तक नाम के वंश
मघोनः	इन्द्र
प्रकृतिपुरुषम्	प्रधानपुरुष
जातम्	उत्पन्न
मोघा	निष्फल
कामरूपम्	इच्छानुसार रूप धारण करने वाले (मेघ)
पयोदः	मेघ
धौतहर्म्या	उज्ज्वल महलों
पवनपदवीम्	वायु मार्ग से (आकाश में)
वनिता	स्त्री
प्रत्ययात्	विश्वास से
आश्वसत्यः	आश्वस्त होकर
अलकम्	बाल
सन्नद्धे	उमड़ने पर
विरहविधुराम्	विरह से व्याकुल

संस्कृतशब्दः	अर्थः	संस्कृतशब्दः	अर्थः
जाया	पत्नी	**वन्द्यैः**	वन्दनीय
एकपत्नीम्	पतिव्रता	**रघुपदपदैः**	रामजी के चरण चिन्हों से
भ्रातृजाया	भाभी	**मेखलासु**	मध्य भाग में
अङ्गनानाम्	स्त्रियों के	**एत्य**	प्राप्त कर
अव्यापन्नाम्	जीवित	**उष्णं बाष्पम्**	गर्म भाप
आशाबन्धः	आशा रूपी तन्तु	**चिर विरहजम्**	बहुत समय का वियोग
सद्यः	शीघ्र	**वल्मीकाग्रात्**	बाँवी के अग्रभाग से
विप्रयोगः	वियोग (विरह)	**श्यामं वपुः**	श्याम रंग का शरीर
नुदति	प्रेरित होना	**स्फुरितरुचिना**	चमकती हुई प्रभा वाले
सगन्धः	गर्व से भरा होना	**बर्हेण**	मोर के पंख
आबद्धमालाः	पंक्तिबद्ध	**अतितराम्**	अत्यधिक
बलाकाः	बगुलियाँ	**आयत्तम्**	अधीन
खे	आकाश में	**कृषिफलम्**	खेती का फल
नदति	बोल रहा है	**जनपदवधूः**	ग्राम-रमणियों के
वामः	बायीं ओर	**मालक्षेत्रम्**	माल नामक क्षेत्र को
शिलीन्ध्र	कुकुरमुत्ता	**सीरोत्कषणः**	हल चलाने के कारण
अबन्ध्याम्	उपजाऊ	**लघुगतिः**	शीघ्र गमन करके
मानसोत्काः	मानसरोवर के लिए उत्सुक	**व्रज**	जाना
बिसकिसलयच्छेद	कमल नाल के अग्र भाग के टुकड़े	**सानुमान्**	पर्वत
पाथेय	मार्ग का भोजन	**प्रशमित**	घोर वर्षा
नभसि	आकाश में	**वनोपप्लवम्**	दावानल (वन की आग)
प्रयाणानुरूपम्	यात्रा के अनुकूल	**अध्वश्रमपरिगतम्**	मार्ग के परिश्रम की थकान
पदं न्यस्य	पैर रखकर	**मूर्ध्ना**	चोटी
स्रोतसाम्	नदियों के	**सुकृतापेक्षया**	उपकार को मानते हुए
परिलघु	हल्के	**अमरमिथुनः**	देवताओं का जोड़ा
उपभुज्य	उपभोग कर	**भुवःस्तन इव**	पृथ्वी के स्तन के समान
शृङ्गम्	चोटी	**स्निग्धवेणीसवर्णे**	चिकनी बालों की चोटी के समान रंग वाले
किंस्वित्	क्या?	**मुहूर्तम्**	कुछ समय
उन्मुखीभिः	ऊपर की ओर मुख करके	**तोयोत्सर्गः**	जल बरसाना
मुग्धः	भोली-भाली	**द्रुततरगतिः**	शीघ्र गमन करना
सिद्धाङ्गनाभिः	सिद्धों की स्त्रियों द्वारा	**उपलविषमे**	पत्थर से ऊंचे नीचे
दिङ्नागः	दिग्गज	**विशीर्णाम्**	बिखरी हुई
स्थूल	मोटी	**रेवाम्**	नर्मदा नदी
हस्तावलेपान्	सूड़ों के प्रहार को	**वान्तवृष्टिः**	वर्षा करने के बाद
सरसनिचुलात्	सरस वेतों के	**वनगजमदैः**	जंगली हाथियों के मद से
उदङ्मुखः	उत्तर की ओर मुख करके	**वासितम्**	सुगन्धित
तुङ्गम्	उन्नत	**जम्बूकुञ्ज**	जामुन का बागीचा

संस्कृतशब्दः	अर्थः	संस्कृतशब्दः	अर्थः
प्रतिहतरयः	जिसका वेग रोका न जा सके (निर्बाधगति)	**सभ्रूभङ्गम्**	भ्रकुटि विकासयुक्त
		नीचैराख्यम्	नीचैः नामक
अनिलः	वायु	**गिरिम्**	पर्वत
रिक्तःसर्वः	सभी रिक्त पदार्थ	**पण्यस्त्री**	वेश्या
नीपम्	कदम्ब का फूल	**शिलावेश्मभिः**	पत्थर गुफाओं के द्वारा
हरितम्	हरा	**नागराणाम्**	नागरिकों के
कपिशम्	काले-लाल	**वननदीतीरजातानि**	पहाड़ी नदियों के किनारे उत्पन्न
सारङ्गाः	भौंरे/मृग/हाथी	**उद्यानानाम्**	बगीचों के
आघ्राय	सूँघकर	**यूथिका**	जूही (समूह)
जललवमुचः	पानी की बूँदों की वर्षा करने वाले	**गण्डस्वेदाऽपनयन**	कपोलों से पसीने को पोंछने से
उर्वी	पृथ्वी	**रुजाक्लान्त**	पीड़ा से मुरझाये
जग्ध्वा	खाकर	**प्रस्थितस्य**	प्रस्थान करके
अम्भोबिन्दुः	वर्षा का जल	**वक्रः**	टेढ़ा
श्रेणीभूताः	पंक्तिबद्ध	**सौधोत्सङ्गः**	ऊँचे महल
परिगणनया	गिनकर	**प्रणयविमुखः**	अनुराग से विमुख
सिद्धाः	सिद्ध लोग	**पौराङ्गनानाम्**	नागरिक स्त्रियों के
स्तनित	गर्जन	**लोलापाङ्गै**	चञ्चल कटाक्षों वाले
आसाद्य	प्राप्तकर	**उत्तराशाम्**	उत्तर दिशा में
द्रुतम्	शीघ्र	**वीचिक्षोभः**	तरङ्गों की हलचल
ककुभसुरभौ	कुटज पुष्पों से सुगन्धित	**स्तनितविहगः**	कूजते हुए पक्षी
कालक्षेपम्	समय के विलम्ब	**श्रेणिकाञ्चीगुणायाः**	पंक्तिरूपी करधनी
शुक्लापाङ्गैः	मयूर	**स्खलित**	लड़खड़ाती
केका	बोली	**तटरुहः**	नदी के किनारे उगे हुए
व्यवस्येत्	प्रयत्न करना	**जीर्णशीर्णः**	पुराने पत्ते
आसन्ने	समीप आने पर	**अतीत**	बहुत दिन
दशार्णाः	दशार्ण देश	**कार्श्यम्**	कृशता
केतकैः	केतकीपुष्पों से	**उपपाद्यः**	उपाय करना
गृहबलिभुजाम्	कौए	**कोविदः**	जानकार
नीडारम्भैः	घोसले बनाने से	**अवन्तीम्**	अवन्ती प्रदेश
आकुलः	व्याप्त	**सुचरितफलैः**	पुण्यफलों के
ग्रामचैत्याः	गाँवों के **चौराहों के वृक्ष**	**स्वल्पीभूतः**	क्षीण होना
परिणतफल	पके फल	**गां गतानाम्**	भूमि पर आये
कतिपयदिनम्	कुछ ही दिन	**दिवःखण्डम्**	स्वर्ग का टुकड़ा
प्रथित	विख्यात	**श्रीविशाला**	सम्पत्तिशाली
सद्यः	तत्काल	**विशालापुरीम्**	उज्जयिनी
कामुकत्वस्य	कामुकता का	**ऊषेषु**	उषाकाल में (प्रातःकाल)
अविकलम्	सम्पूर्ण		
चलोर्मिः	चञ्चल तरङ्ग		
तीरोपान्तः	किनारे के समीप		

संस्कृतशब्दः	अर्थः	संस्कृतशब्दः	अर्थः
पटुः	कुशल	**कुवलय**	कमल
मदकलः	मीठी ध्वनि	**गन्धवत्याः**	गन्धवती
सारसानाम्	सारस पक्षियों के	**त्रिभुवनगुरुः**	शिव
मैत्री	सम्पर्क (मिलन)	**चण्डीश्वरः**	शिव
शिप्रावातः	क्षिप्रा नदी की वायु	**पुण्यं धाम**	महाकाल धाम
सुरतग्लानिम्	रतिक्रीड़ाजन्य थकान	**जलधर!**	बादल
कोटिशः	करोड़ो	**आसाद्य**	प्राप्त करके
विपणिरचितान्	बाजारों में सजाकर	**अविकल**	सम्पूर्ण
तारान्	शुद्ध	**नयनविषयम्**	देखना
हारान्	हारों को	**अत्येति**	छिपना (ओझल)
शंखशुक्तीः	शंख और सीपियों	**श्लाघनीय**	प्रशंसनीय
शष्पश्यामान्	घास के समान हरी	**शूलिनः**	शिव जी के
उन्मयूखः	ऊपर की ओर उठी किरणें	**बलिपटहताम्**	पूजन के समय का बाजा
प्ररोहान्	अंकुर	**आमन्द्राणाम्**	गम्भीर
विद्रुमाणाम्	मूँगे	**पादन्यासैः**	पैरों की गति
भङ्गाः	टुकड़े	**लीला**	विलासपूर्वक
सलिलनिधयः	समुद्र	**अवधूतः**	हिलाना
वत्सराजः	उदयन	**क्वणितरशनाः**	शब्द करती करधनी
हैमम्	स्वर्णमय	**खचितवलिभिः**	चमकते दण्ड से
तालद्रुमवनम्	ताड़ के वृक्षों का वन	**चामरः**	चँवर
नलगिरिः	हाथी का नाम	**क्लान्तः**	थकावट
उत्पाट्य	उखाड़कर	**मधुकरश्रेणि**	भौरों की पंक्ति
आगन्तून्	दूसरे देश से आये हुये	**भवानी**	भवानी (पार्वती)
वाहाः	घोड़े	**पशुपतेः**	शिवजी के
पत्रश्यामाः	हरे रंग के	**सौदामिनी**	बिजली
हयः	घोड़ा	**पारावत**	कबूतर
संयुगे	युद्ध में	**कररुधिः**	किरणरूपी हाथ
तस्थिवांसः	खड़े रहना	**असूया**	दोष (गुणों में दोष निकालना)
चन्द्रहासः	चन्द्रहास तलवार	**अनल्पः**	अत्यधिक
व्रणाङ्कः	घाव का चिन्ह	**चटुलः**	चञ्चल
जालः	झरोखा (खिड़की)	**शफरः**	मछली
उपचितवपुः	बढ़े हुये शरीर वाला	**उद्वर्तन**	उछलना
भवनशिखिभिः	गृहमयूरों से	**मोघः**	विफल
ललितवनिता	सुन्दरियों के	**वानीरशाखा**	बेंत की शाखा
पादरागाङ्कितेषु	चरणों से लगे लाक्षारस से चिह्नित	**सलिलवसनम्**	जलरूपी वस्त्र
अध्वखेदम्	मार्ग की थकान	**उदुम्बरः**	गूलर
नयेथाः	दूर करना	**देवपूर्वगिरिम्**	देवगिरि
		स्कन्दः	कार्तिकेय

संस्कृतशब्दः	अर्थः	संस्कृतशब्दः	अर्थः
व्योमगङ्गा	आकाशगङ्गा	**करका**	ओले
पुष्पासारैः	फूलों की तीव्र वर्षा से	**दृषदि**	शिलापट
स्नपयतु	नहलाना	**अर्धेन्दुमौलिः**	शङ्कर
नवशशिभृत्	शिव	**करणविगमः**	शरीरान्त
वासवीनां चमूनाम्	इन्द्र की सेना	**अनिलैः**	वायु से
हुतवहः	अग्नि	**अनलः**	अग्नि
बर्हम्	पंख	**कीचकाः**	बाँस
शशिरुचा	चन्द्रमा की चाँदनी	**निर्ह्रादः**	गर्जन
नर्तयेथाः	नचाना	**मुरजः**	मृदङ्ग (बाजा)
शरवणभवः	कार्तिकेय	**प्रालेयाद्रिः**	हिमालय पर्वत
सिद्धद्वन्द्वैः	सिद्ध दम्पत्तियों	**भृगुपतिः**	परशुराम
शार्ङ्गिणः	श्रीकृष्ण	**उदीची**	उत्तर दिशा
पृथुम्	मोटी/मोटा	**दशमुखः**	रावण
इन्द्रनीलम्	इन्द्रनीलमणि	**त्रिदशः**	देवता
समरः	युद्ध	**त्रिदशवनिता**	देवताओं की स्त्रियाँ
लाङ्गलीशः	बलराम	**राशीभूतः**	एकत्रित हुए
अभिमतरसाम्	इच्छित स्वाद वाली	**त्रयम्बकः**	शिव
रेवती	बलराम की पत्नी	**द्विरददशनः**	हाथी के दाँत
हाला	मदिरा	**मेचकः**	काला/नीला
शैलराजः	हिमालय	**हलभृतः**	बलराम
जह्नोःकन्या	जह्नु की कन्या (गङ्गा)	**भुजगवलयः**	सर्प रूपी कङ्कण
सुरगजः	ऐरावत हाथी	**गौरी**	पार्वती
तुषारः	बर्फ	**जलौघः**	जल का प्रवाह
निषण्णः	बैठे हुये	**सोपानत्वम्**	सीढ़ी
त्रिनयनः	शिवजी	**यन्त्रधारा**	फव्वारा
पङ्कः	कीचड़	**हेमाम्भोजः**	सुवर्ण कमल
स्कन्धः	तना	**कल्पद्रुमः**	कल्पवृक्ष (देववृक्ष)
उल्काक्षयति	चिनगारियाँ	**धुन्वन्**	हिलाते हुये
दावाग्निः	जङ्गल की आग	**अंशुकानि**	सूक्ष्म वस्त्रों के
आपन्नः	कष्ट	**नगेन्द्रः**	पर्वतराज
प्रशमनः	दूर करना	**अभ्रवृन्दम्**	बादलों का समूह
शरभाः	शरभ (आठ पैरों वाले जन्तु)		

शब्द	अर्थ	पुस्तक
वाराङ्गना	वेश्या	नीतिशतकम्
उपसृष्टा	वेश्या	शुकनासोपदेश
वारमुख्या/पण्यस्त्री	वेश्या	मेघदूतम्
गणिका	वेश्या	मृच्छकटिकम्

कादम्बरी (शुकनासोपदेश) का शब्दार्थ

शब्द	अर्थ
अतिक्रामत्सु	– बीत जाने पर
केषुचित्	– कुछ
सम्भारः	– समूह
विनीततरम्	– अपेक्षाकृत अधिक विनम्र
विदितवेदितव्यस्य	– ज्ञातव्य विषय को जानने वाले
निसर्गतः	– स्वभाव से
अभानुभेद्यम्	– सूर्य द्वारा भेदन करने योग्य नहीं
अरत्नालोकोच्छेद्यम्	– रत्नों के प्रकाश से भी जो छेदन करने योग्य नहीं है।
अतिगहनम्	– अत्यन्त गम्भीर
दारुणः	– दुष्कर/कठोर/भयानक
लक्ष्मीमदः	– धन का घमण्ड
अञ्जनवर्तिसाध्यम्	– काजल लगाने की सलाई।
अशिशिरोपचारहार्यः	– शीतल उपचारों से भी दूर नहीं होने वाला
दर्पदाहज्वरोष्मा	– घमण्ड रूपी तेज बुखार की गर्मी
रागमलावलेपः	– आसक्तिरूपी मल का लेपन
अजस्रम्	– निरन्तर
क्षपा	– रात्रि
इत्यतः	– इसलिए
अभिधीयसे	– कहा जा रहा है
अभिनवयौवनत्वम्	– नयी युवावस्था होना
सर्वाविनयानाम्	– सब उद्दण्डताओं की या सब बुराइयों की
आयतनम्	– निवासस्थान
समवायः	– समूह
कालुष्यम्	– कलुषता अर्थात् दोषयुक्त
उपयाति	– प्राप्त हो जाती है।
यूनाम्	– युवकों को
वात्या	– आँधी
दुरन्ता	– दुष्परिणाम वाली।
मधुरतराणि	– अतिशय मृदु
अपगतमले	– नष्ट हो गए हैं मल या दोष जिसके ऐसे।

शब्द	अर्थ
विशन्ति	– प्रवेश करते हैं
श्रवणस्थितम्	– कानों में विद्यमान
करिणः	– हाथी
आननम्	– मुख
प्रशमहेतुः	– शान्ति का कारण या उपाय
अमलीकुर्वन्	– स्वच्छ करते हुए।
अनलः	– अग्नि
अन्वयः	– वंश या कुल
श्रुतम्	– शास्त्रीय ज्ञान
कुसुमशर	– कामदेव
क्षमम्	– समर्थ
अनारोपितमेदोदोषम्	– नहीं धारण किया है चर्बी के दोष अर्थात् मोटेपन को
अग्राम्यम्	– गवाँरूपन से रहित
अतीतज्योतिः	– आभाशून्य
आलोकः	– प्रकाश
प्रजागरः	– निरन्तर जागते रहना
प्रतिशब्दकः	– प्रतिध्वनि
श्वयथुः	– सूजन (शोध)
पृथुः	– विस्तृत (फैलावदार)
स्थगितः	– रुक गये
विवराः	– छिद्र
गजनिमीलितेन	– हाथी के समान आँख मूँदकर
अवधीरयन्तः	– तिरस्कार करते हुए।
विह्वला	– व्याकुल
अलीकम्	– मिथ्या
तन्द्रा	– आलस्य
अभिनिवेशः	– प्रवृत्ति (लगन)
सुभटः	– वीरयोद्धा
खड्गमण्डलम्	– तलवार समूह
उत्पलवन	– कमलवन
विभ्रमभ्रमरी	– विलास करने वाली भ्रमरी (भौंरी)
पारिजातपल्लवेभ्यः	– मन्दार के पत्तों से
इन्दुशकलात्	– चन्द्रमा के टुकड़े से
मदम्	– नशे को

शब्द	अर्थ
अतिनैष्ठुर्यम्	– अत्यन्त निष्ठुरता
उद्गता	– उत्पन्न हुई
अनार्या	– दुष्टा
लतापञ्जरविधृता	– लताओं के पिंजरे में रखी गयी।
अपक्रामति	– भाग जाती है।
प्रपलायते	– पलायन कर जाती है।
कुलक्रमम्	– वंश परम्परा को
वैदग्ध्यम्	– वाक्पटुता
गन्धर्वनगरलेखा	– मायानगरी की आकृति
विधृता	– धारण की गई
विविधगन्धगजगण्डमधु-पानमत्ता	– अनेक हाथियों के कपोलों के मद का पान करने में मस्त
पारुष्यम्	– कठोरता
अप्रत्ययः	– अविश्वसनीय
भूभुजम्	– राजा को
विटपकान्	– वृक्षशाखाओं को
अध्यारोहति	– अपना आश्रय बनाती है।
संक्रमणम्	– संसर्ग
पातालगुहा	– पातालरूपी गुफा
तमोबहुला	– अत्यधिक अन्धकार वाली
प्रावृड्	– वर्षाॠतु
अभिजातम्	– कुलीन
अहिमिव	– सर्प की भाँति।
परिहरति	– त्याग देती है।
पातकिनमिव	– पापी मनुष्य के समान
उपसर्पति	– पास जाती है।
मनस्विनम्	– महापुरुष को
इन्द्रजालम्	– जादू
ऊष्माणम्	– गर्मी को
आदधानापि	– धारण करने वाली भी
बलोपचयम्	– शक्ति की वृद्धि को
लघिमानम्	– निर्बलता को
दीपशिखा	– दीपक की लौ।
उद्वमति	– उगलती है।
संवर्धनवारिधारा	– पुष्टि हेतु जल की धारा

शब्द	अर्थ
तृष्णाविषवल्लीनाम्	– सांसारिक महत्वाकांक्षी रूपी विषलताओं की
व्याधगीतिः	– शिकारी का गीत
परामर्शधूमलेखा	– मिटाने के लिए धुएँ की रेखा
विभ्रमशय्या	– विलास हेतु स्थापित की गई सेज
निवासजीर्णवलभी	– रहने के लिए अटारी।
तिमिरोद्गतिः	– रतौंधी का प्राकट्य
निम्नगा	– नदी
ग्राहाः	– मगरमच्छ
आपानभूमिः	– मधुशाला
आवासदरी	– निवासार्थ गुफा
आशीविषाः	– विषैले नाग।
उत्सारणवेत्रलता	– हटाने के लिए बेंत की छड़ी
अकालप्रावृट्	– असमय बरसात
विसर्पणभूमिः	– पीड़ास्थली या फैलने की जगह।
विस्फोटकानाम्	– फोड़े-फुंसियों की।
कामकरिणः	– कामदेवरूपी हाथी के लिए।
वध्यशाला	– हत्यागृह
अपरिज्ञातया	– अनजान होने वाली
उपगूढः	– आलिंगित किया गया
विप्रलब्धः	– ठगा गया
प्रस्तावना	– आमुख
कदलिका	– केले का बगीचा
पुस्तमयी अपि	– (मिट्टी या लकड़ी की) गुडिया बने रहने पर भी
इन्द्रजालम्	– जादू
अभिसन्धत्ते	– छल करती है
वञ्चयति	– ठगती है
सम्मार्जनी	– झाड़ू
क्षान्तिः	– क्षमा
उष्णीषः	– पगड़ी
अवच्छाद्यते इव	– मानो ढँक दी जाती है
आतपत्रम्	– छाता
चामरपवनैः	– चँवर की हवा से
उपह्रियते इव	– मानो दूर कर दी जाती है

शब्द	अर्थ
वेत्रदण्डैः	– बेंत की छड़ी से
उत्सार्यन्ते इव	– मानो दूर हटा दिये जाते हैं।
ध्वजपल्लवैः	– ध्वजदण्ड के वस्त्र के पल्ले से
परामृश्यते इव	– मानो पोंछ दी जाती है
शकुनिः	– पक्षी
खद्योतः	– जुगनूँ
दुष्टासृजेव	– दूषित रुधिर के समान
सत्त्वैः	– हिंसक जन्तुओं से
अवष्टभ्यन्ते इव	– मानो हठात् पकड़ लिये जाते हैं
मदनशरैः	– कामदेव के बाणों से
मर्माहताः	– बुरी तरह घायल हुए
धनोष्मणा	– ऐश्वर्य की गर्मी से
कुलीराः	– केकड़ा
तिर्यक्	– टेढ़े
पङ्गवः इव	– लँगड़ों के समान
मृषावादः	– मिथ्याभाषण
जल्पन्ति	– बोलते हैं
सप्तच्छदतरव इव	– 'सप्तपर्ण' के वृक्षों के समान
शिरःशूलम्	– सिरदर्द
आसन्नमृत्यव इव	– नजदीक मृत्यु वाले लोगों के समान
कालदंष्टा इव	– भयङ्कर साँपों से डँसे हुए लोगों के समान
जातुषाभरणानि इव	– लाह से बने गहनों के समान
दुष्टवारणा इव	– मदोन्मत्त हाथियों के समान
कनकमयम्	– स्वर्णमय
इषवः	– बाण
शातयन्ति	– नष्ट कर देते हैं
अकालकुसुमप्रसवा इव	– पुष्पों के असामयिक विकास के समान
तैमिरिका इव	– नेत्र-रोगियों के समान
उपसृष्टा इव	– वेश्या के समान
क्षुद्राधिष्ठितभवनाः	– नीचपुरुषों से युक्त राजप्रसाद वाले
प्रेतपटहा इव	– मृतकों के समीप बजाये जाने वाले बाजे की भाँति
महापातकाध्यवसाया इव	– ब्रह्महत्या आदि महापातकों के प्रयास के समान
अनुदिवसम्	– प्रतिदिन
आध्मातमूर्तयः भवन्ति इव	– मानों फूल जाते हैं (तोंद निकल आती हैं)
वल्मीकिः	– बॉबी
द्यूतम्	– जुआ
प्रमत्तता	– उन्मत्तता
अजितभृत्यता	– भृत्याधीनता अर्थात् गलती करने पर भी नौकरों पर शासन नहीं करना।
पिशितम्	– मांस
आस्थाननलिनीबकैः	– राजपरिषद् रूपी कमलिनीकानन में रहने वाले बँगुले की भाँति
प्रतारणकुशलैः	– ठगने में निपुण
धूर्तैः	– लम्पटों के द्वारा
अलीकाभिमानाः	– झूठे अभिमान
अनुग्रहम्	– अनुकम्पा
मिथ्या	– झूठ
द्विजातीन्	– ब्राह्मणों को
अर्चनीयान्	– पूजनीय लोगों को
अनर्थकायासान्	– व्यर्थ परिश्रम
जरा	– वृद्धावस्था
पार्श्वे	– बगल में
अहर्निशम्	– दिन-रात
अनवरतम्	– निरन्तर
उपरचिताञ्जलिः	– हाथ जोड़कर
अतिनृशम्	– अत्यन्त निष्ठुर
अभिचारक्रिया	– मारण क्रिया
विटैः	– लम्पट कामी पुरुषों के द्वारा
भुजङ्गैः	– लम्पटों के द्वारा
सेवकवृकैः	– सेवकरूपी भेड़ियों के द्वारा
वनिताभिः	– रमणीजनों के
मदनेन	– कामदेव के द्वारा
प्रकृत्या एव	– स्वभाव से ही
धीरम् अपि	– गम्भीर को भी
उपशशाम	– चुप हो गये

नीतिशतकम् का शब्दार्थ

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
दिक्	दिशा	**छेत्तुम्**	काटने का
अनवच्छिन्न	न ढका हुआ या न आवृत किया जाने वाला	**सन्नह्यते**	प्रयास करता है।
		क्षाराम्बुधेः	समुद्र का लवण
चिन्मात्र	ज्ञानस्वरूप	**ईहते**	चाहता है।
तेजसे	ज्योति स्वरूप को	**विधात्रा**	ब्रह्मा जी ने
शान्ताय	विकाररहित/कल्याणकारक को	**स्वायत्तम्**	स्वाधीन
बोद्धारः	जानने वाला (विद्वज्जन)	**एकान्तगुणम्**	अत्यन्त गुणकारी
प्रभवः	स्वामी (समर्थलोग)	**सर्वविदाम्**	विद्वानों के
स्मयदूषिताः	अहंकार में चूर हैं।	**किञ्चिज्ज्ञः**	अल्पज्ञ
अबोधोपहताः	अज्ञान से विनष्ट	**द्विपः**	हाथी
अज्ञः	मूर्खजन	**अवलिप्तम्**	गर्व से प्रयुक्त
विशेषज्ञः	विशेष जानने वाला	**बुधजनसकाशात्**	विद्वानों के संसर्ग से
ज्ञानलवदुर्विदग्धम्	अल्पज्ञान से गर्वित	**व्यपगतः**	दूर हो गया
न रञ्जयति	प्रसन्न नहीं कर सकता	**श्वा**	कुत्ता
दंष्ट्रान्तरात्	दाढों के बीच से	**कृमिकुलचितम्**	कीड़ों का समूह
प्रसह्य	बलपूर्वक	**लालाक्लिन्नम्**	मुख की लार से गीले
उद्धरेत्	निकाल ले	**विगन्धि**	दुर्गन्धपूर्ण
प्रचलदूर्मिमालाकुलम्	चंचल तरंगों की पंक्तियों से व्याप्त	**जुगुप्सितम्**	घिनौने
सन्तरेत्	पार कर ले	**निरामिषम्**	मांसरहित
प्रतिनिविष्टः	हठी	**निरुपमरसप्रीत्या**	अत्यन्त स्वादयुक्त की भाँति।
पीडयन्	दबाता हुआ	**पार्श्वस्थम्**	समीपवर्ती
सिकतासु	बालुओं में	**सुरपतिम्**	इन्द्र को
लभेत	पा ले	**विशङ्कते**	शङ्का करने लगता है।
पिपासार्दितः	प्यास से सताया हुआ	**परिग्रहफल्गुताम्**	स्वीकृत वस्तुओं की निस्सारता को
मृगतृष्णिकासु	मृगमरीचिकाओं में	**न गणयति**	विचार नहीं करता।
पर्यटन्	घूमता हुआ	**शार्वम्**	शिवजी के
शशविषाणम्	खरगोश की सींग को	**पशुपतिशिरस्तः**	शिवजी के शिर से
आसादयेत्	प्राप्त कर ले	**क्षितिधरम्**	(हिमालय) पर्वत पर
प्रतिनिविष्टः	दुराग्रही	**उत्तुङ्गात्**	ऊँचे
सुधास्यन्दिभिः	अमृत बरसाने वाली	**महीध्रात्**	पर्वत से (हिमालय से)
सूक्तैः	सुन्दर उक्तियों द्वारा	**अवनिम्**	पृथ्वी से
असौ	वह व्यक्ति	**अधोऽधः**	नीचे-नीचे
बालमृणालतन्तुभिः	कमल के कोमल रेसों से	**स्तोकम्**	कम (थोड़ा)
व्यालम्	बिगड़े हाथी	**उपगता**	पहुँचकर
रोद्धुम्	रोकने को	**विनिपातः**	पतन
समुज्जृम्भते	अभ्यास करता है।	**हुतभुक्**	आग
शिरीषकुसुमप्रान्तेन	कोमल शिरीष फूल की नोंक से	**समदः**	उन्मत्त

शब्द	अर्थ
निशिताः	तीक्ष्ण
गोगर्दभौ	सांड और गधे को
भेषजसङ्ग्रहैः	औषधि के समूह से।
शास्त्रविहितम्	शास्त्रोक्त
पुच्छविषाणहीनः	पूँछ और सींग से रहित
भागधेयम्	सौभाग्य की बात है।
भुवि	पृथ्वी पर
भारभूताः	भार के रूप में
चरति	विचरण करते हैं।
पर्वतदुर्गेषु	पहाड़ों के दुर्गम स्थानों में।
भ्रान्तम्	घूमना
उपस्कृतः	परिष्कृत
प्रदेयम्	देने योग्य
आगमाः	शास्त्रों के रहस्य वाले
जाड्यम्	मूर्खता
कुपरीक्षकाः	अनुचित परीक्षण करने वाले।
कुत्स्याः	निन्दनीय
अर्घ्यतः	मूल्य से
शम्	आनन्द
पराम्	अत्यन्त
उज्झत	छोड़ दो
अन्तर्धनम्	गुप्तधन
बिसतन्तुः	कमल का रेशा
अभिनव	नई-नई
मदलेखा	मदपंक्ति से
वारणानाम्	हाथियों का
अम्भोजिनी	कमलिनी
वैदग्ध्यकीर्तिम्	चतुरता के यश को
मूर्धजाः	बाल
प्रच्छन्नगुप्तम्	अन्दर छिपा हुआ।
क्षान्तिः	क्षमा
ज्ञातिः	बन्धु-बान्धव
अनवद्या	प्रशंसनीय/निष्कलंक
व्रीडा	लज्जा
शाठ्यम्	कुटिलता
आर्जवम्	सरलता
मानोन्नतिम्	सम्मान की वृद्धि को
विष्टपः	संसार
सूनुः	पुत्र
स्निग्धम्	स्नेहशील
निष्क्लेशलेशम्	जिसमें किसी प्रकार का क्लेश नहीं
विभवः	सम्पत्ति
तृष्णा	प्यास
अनुपहतविधिः	निर्विवाद रूप से कहा हुआ
श्रेयसाम्	कल्याणों का
प्रतिहन्यमानाः	पीड़ित होने पर भी।
अभ्यर्थ्याः	प्रार्थनीय
न याच्यः	माँगने योग्य नहीं।
न्याय्या	उचित
असुकरम्	कठिन है
अनुविधेयम्	अनुसरण किया जाय
असिधाराव्रतम्	तलवार की धार जैसा तीक्ष्ण व्रत
क्षुत्क्षामः	भूख से सताया हुआ
शिथिलप्राणाः	बलहीन
आपन्नः	प्राप्त करने पर
इभेन्द्रः	हाथी
कुम्भः	गण्डस्थल
ग्रासः	खाने में
मानमहताम्	अभिमान से उन्नत व्यक्तियों में
वसा	चर्बी
निर्मांसम्	मांसरहित
अस्थिकम्	हड्डी के टुकड़े
जम्बुकम्	सियार
कृच्छ्रगतः	विपत्तियों में पड़े हुए।
पिण्डदस्य	खिलाने वाले व्यक्ति के
लाङ्गूलम्	पूँछ
गजपुङ्गवः	गजश्रेष्ठ
चाटुशतैः	सैकड़ों बार पुकारने पर
समुन्नतिः	उन्नति को
कुसुमस्तबकस्य	फूल के गुच्छे की
शीर्यते	क्षीण हो जाता है।
शीर्षावशेषाकृतिः	सिर मात्र बची है, आकृति जिसकी
भासुरौ	चमकते हुए
पर्वणि	अमावस्या और पूर्णिमा
भुवनश्रेणिम्	भू आदि लोकों की पङ्क्ति को

शब्द	अर्थ
कमठपतिना	कच्छप राजा के द्वारा
पयोधिः	समुद्र
क्रोडाधीनं कुरुते	अपनी गोद में ले लेता है।
अहह !	आश्चर्य
निःसीमानः	असीम होती है।
तुषाराद्रेः	हिमालय के
उद्गच्छद्वहल-	ऊपर निकलती हुई प्रचण्ड अग्नि-
दहनोद्गारगुरुभिः	की ज्वालाओं से भयंकर।
मघवा	इन्द्र
कुलिशः	वज्र
पक्षच्छेदः	पंखों का कट जाना
क्लेशविवशे	दुःखों से भरे होने पर।
इनकान्तः	सूर्यकान्तमणि
निकृतिम्	अपमान
कपोलभित्तिषु	गण्डस्थलों में
तेजसः	तेजस्विता का
गुणगणः	गुणों का समूह
शैलतटात्	पहाड़ की चोटी से
अभिजनः	कुलीनता
सन्दह्यताम्	जल जावे
तृणलवप्रायाः	तिनके टुकड़े जैसे निरर्थक
अविकलानि	बिना किसी न्यूनता की
अप्रतिहता	अप्रतिहत
अर्थोष्मणा	धन के गर्व से
कुलीनः	ऊँचे कुल का
काञ्चनम्	सुवर्ण को
दौर्मन्त्र्यात्	बुरी मन्त्रणा से
यतिः	संन्यासी
लालनात्	लाड़ प्यार से
खलोपासनात्	दुष्टों की सेवा से
प्रवासाश्रयात्	दूर देश में रहने से
प्रमादात्	अनवधानात्/असावधानी से
शाणः	सान पर
उल्लीढः	रगड़ा गया
हेतिदलितः	शस्त्रों से घायल
श्यानपुलिनाः	सूखे तटों वाली नदियाँ
सुरतमृदिता	रति से शिथिल शरीर वाली स्त्री
गलितविभवाः	नष्ट सम्पत्ति वाले
तनिम्ना	कृशता से भी
परिक्षीणः	निर्धन
कलयति	मानता है।
अनैकान्त्यात्	अनियतता होने से
क्षितिधेनुम्	गोतुल्य पृथ्वी को।
पुषाण	पुष्ट करो
अनिशम्	निरन्तर
अनृता	अयथार्थ
परुषा	कठोर
वदान्या	उदार
वाराङ्गना	वेश्या
पार्थिवोपाश्रयेण	राजाओं का आश्रय लेने से
निजभालपट्टलिखितम्	अपने भाग्य में लिखित
महत्	अधिक
मेरौ	मेरु पर्वत पर
वित्तवत्सु	धनिकों के समान
मा कृथा	मत करो।
अम्भोदाः!	हे श्रेष्ठ मेघ
गोचरः	ज्ञात
कार्पण्योक्तिम्	दीनवचन
अकारणविग्रहः	बिना कारण के लड़ना-झगड़ना
स्पृहा	इच्छा करना
असहिष्णुता	असहनशीलता
प्रकृतिसिद्धम्	स्वभावसिद्ध
परिहर्तव्यः	त्याज्य है।
ह्रीमति	लज्जा
जाड्यम्	मूढ़ता
कैतवम्	धूर्तता
निर्घृणता	क्रूरता
विमतिता	बुद्धिहीनता
मुखरता	वाचाल
न अङ्कितः	कलङ्कित नहीं होता
चेत् (तर्हि)	तो
पिशुनता	चुगलखोरी
सौजन्यम्	सज्जनता

शब्द	अर्थ
दिवसधूसरः	दिन में मलिन
गलितयौवना	क्षीण यौवन
विगतवारिजम्	कमलहीन
नृपाङ्गणगतः	राजा की सभा में समागत
शल्यानि	कण्टक (काँटे)
चण्डकोपानाम्	अति क्रोधी
भूभुजाम्	राजाओं का
पावकः	अग्नि
जुह्वानम्	यज्ञकर्ता
होतारम्	होतृ नामक ऋत्विज् को
मूकः	गूँगा
प्रवचनपटुः	बोलने में चतुर
वातुलः	बातूनी
अप्रगल्भः	प्रतिभाहीन है।
भीरुः	डरपोक
अभिजातः	उच्चकुल में उत्पन्न
अवाप्तविभवस्य	सम्पत्ति को प्राप्त किये गये।
पूर्वार्द्धपरार्धभिन्ना	पूर्वाह्न और अपराह्न से भिन्न रूपवाली
आरम्भगुर्वी	प्रारम्भ में बड़ी
क्षयिणी	क्षय होने वाली।
लघ्वी	छोटी
लुब्धकधीवरपिशुनाः	व्याध मल्लाह और दुर्जन (चुगुलखोर)
वाञ्छा	इच्छा
व्यसनम्	आसक्ति
स्वयोषिति	अपनी स्त्री में
शूली	शिवजी
अभ्युदये	सम्पत्तिकाल में
सदसि	सभा में
प्रच्छन्नम्	गुप्त रखना
गृहमुपगमे	घर आने पर (अतिथि)
सम्भ्रमविधिः	तत्परता से सत्कार करना
अनुत्सेकः	गर्व न होना
निरभिभवसाराः	सर्वथा तिरस्कार रहित वर्ण न करना
असिधाराव्रतम्	तलवार की धार जैसा कठोर व्रत
श्लाघ्यः	प्रशंसनीय
अतुलम्	असीम

शब्द	अर्थ
स्वच्छ	निर्मल
वृत्तिः	भावना (व्यवहार)
अधिगतम्	ज्ञात
मण्डनम्	आभूषणम्
उत्पलकोमलम्	कमल के समान कोमल
आपत्सु	विपत्ति में
कर्कशम्	कठोर
सन्तप्तायसि	अग्नि से सन्तप्त लोहे पर
मुक्ताकारतया	मोती के आकार की भाँति।
भर्तुः	पति का
कलत्रम्	पत्नी
आपदि	आपत्ति में
समक्रियम्	समान व्यवहार वाला हो।
यति	संन्यासी
पत्तने	नगर में
दरी	गुफा (कन्दरा)
नम्रत्वेन	विनयशीलता से
उन्नमन्तः	उन्नति करने वाले
ख्यापयन्तः	प्रख्यात करने वाले,
फलोद्गमैः	फलों के आने से
नवाम्बुभिः	नवीन जल से।
दूरविलम्बिनः	दूर तक लटके
अनुद्धताः	विनीत
विभाति	शोभित
पाणिः	हाथ
कायः	शरीर
निवारयति	रोकता है।
निगूहति	छिपाता है।
अभ्यर्थितः	बिना किसी के प्रार्थना किये हुए।
विकचीकरोति	विकसित करता है।
कैरवम्	कुमुद
जलधरः	मेघ
कृताभियोगाः	प्रयत्न करने वाले
परार्थघटकाः	दूसरों का कार्य साधन करते हैं।
उद्यमभृतः	उद्योग करते हैं।
निघ्नन्ति	नष्ट करते हैं।
अवेक्ष्य	देखकर

शब्द	अर्थ
कृशानौ	अग्नि में
मित्रापदम्	मित्र की आपत्ति को।
स्वपिति	सो रहे हैं।
संवर्तकैः	संवर्तकादि मेघों के
वडवानलः	वडवाग्नि
विततम्	विस्तृत
भरसहम्	भारसहने में समर्थ
छिन्धि	काटो
कृथाः	मत करो
मानय	सम्मान करो
अनुनय	अनुकूल रखा
प्रश्रयम्	नम्रता/विनम्रता
पीयूषम्	अमृत
उपकारश्रेणिभिः	उपकार परम्पराओं के द्वारा।
प्रीणयन्तः	प्रसन्न करने वाले
रजताद्रिणा	रजत पर्वत कैलाश से।
कङ्कोलनिम्बकुटजाः	कङ्कोल (दाल चीनी) नीम और कुटज।
महार्हैः	बहुमूल्य
तुतुषः	सन्तुष्ट
भीमविषेण	भयंकर विष से
न भेजिरे	प्राप्त नहीं हुए।
कार्यार्थी	कार्यसिद्धि चाहने वाला
पर्यङ्कशयनः	पलङ्ग पर सोता है।
शाकाहारः	साक-पात ही खाकर रहता है।
कन्थाधारी	पुराना वस्त्र धारण करने वाला।
दिव्याम्बरधरः	बहुमूल्य वस्त्रों को धारण करने वाला।
वाक्संयमः	वाणी पर संयम
उपशमः	शान्ति
निर्व्याजता	निष्कपटता
स्तुवतु	प्रशंसा करें।
यथेष्टम्	इच्छानुसार
न्याय्यात्	न्याययुक्त
आखुः	चूहा
करण्ड	पिटारी
म्लानेन्द्रियस्य	अशक्त इन्द्रियों वाले।
पिशितम्	मांस

शब्द	अर्थ
नक्तम्	रात
रिपुः	शत्रु
उद्यमसमः	उद्योग के समान
रोहति	फिर उग जाता है।
उपचीयते	फिर बढ़ता है।
विमृशन्तः	ऐसा विचारते हुए।
प्रहरणम्	अस्त्र
दुर्गमः	किला (कठिन मार्ग)
वारणः	हाथी
बलभिद्	इन्द्र
वृथा	व्यर्थ
कर्मायत्तम्	कर्मके आधीन्
भाव्यम्	होना चाहिए।
खल्वाटः	केशरहित शिरवाला (गंजा)
सन्तापितः	आहत
दैवहतकः	भाग्य का मारा हुआ
अनातपम्	धूपविहीन
विधिवशात्	संयोग से
तालस्य	ताल वृक्ष के
आपदः	विपत्तियाँ
गजः	हाथी
भुजङ्गः	साँप
विहङ्गः	पक्षी
गुणाकरम्	गुणों की खान
भुवः	पृथ्वी का
करीरविटपे	करीर के वृक्ष पर
तन्मार्जितुम्	उसे मिटाने के लिए
क्षमः	समर्थ
नमस्यामः	नमस्कार करते हुए
हतविधेः	दुष्ट विधाता के
वशगाः	नियन्त्रण में
वन्द्याः	वन्दना करनी चाहिए।
भाण्डोदरे	पात्र के उदर में
कुलालवत्	कुम्हार की भाँति
क्षिप्तः	डाल दिया
भिक्षाटनं कारितः	भिक्षा के लिए प्रेरित किया
रणे	युद्ध में

शब्द	अर्थ
शत्रुजलाग्निमध्ये	शत्रु जल या अग्नि के बीच में
महार्णवे	विशाल सागर में
प्रमत्तम्	असावधान
खलान्	दुष्टों को
द्वेषिणः	शत्रुओं को
परोक्षः	अतीन्द्रिय विषय/अप्रत्यक्ष
हालाहलम्	विष को
व्यसनैः	दुःखों से
विपुलेषु	अनेक गुणों में
आस्थाम्	प्रयत्न को
अवधार्या	विचार करके समझ लेना चाहिए।
अतिरभसकृतानाम्	अत्यन्त शीघ्रता से किये गये
शल्यतुल्यः	काँटे के समान
विपाकः	परिणाम
आविपत्तेः	मृत्युपर्यन्त
स्थाल्याम्	बटलोई में
इन्धनौघैः	लकड़ियों से
तिलकणान्	तिल के दानों से
अर्कमूलस्य	मदार की जड़ खोदने के लिए
लाङ्गलाग्रैः	हल की फाल से
वसुधा	पृथ्वी
विलिखति	जोतता है
कोद्रवाणाम्	कोदों के कणों से
समन्तात्	चारों ओर
वृत्ति	बाड़ (घेरा)
अम्भसि	जल में
मज्जतु	गोता लगाये
आहवे	युद्ध में
विपुलम्	विस्तृत
अभाव्यम्	अनहोनी
भाव्यस्य	होनी का
उपयाति	हो जाते हैं।
कृत्स्ना	सम्पूर्ण
सन्निधिरत्नपूर्णा	उत्तम निधियों और रत्नों से पूर्ण
प्राज्ञेतरैः	मूर्खों से (बुद्धिमानों से इतर)

शब्द	अर्थ
समयच्युतिः	व्यर्थ समय बिताना
रतिः	अनुराग
अनुव्रता	अनुकूल आचरण करने वाली
अप्रवासगमनम्	परदेश न जाना।
अप्रियवचनदरिद्रैः	कटुवचन न बोलने वाले
प्रियवचनाढ्यैः	मधुर वचनों के धनी (सदामृदुभाषी)
स्वदारपरितुष्टैः	अपनी पत्नी में संतुष्ट रहने वाले
परपरिवादनिवृत्तैः	दूसरों की निन्दा न करने वाले
मण्डिता	सुशोभित होती है।
कदर्थितस्य	सताया हुआ होने पर
प्रमार्ष्टुम्	मिटाना
वह्नेः शिखा	अग्नि की ज्वाला
विशिखा	बाण
लुनन्ति	विदीर्ण करते हैं।
कृशानुः	अग्नि
भूरिविषया	अनेक विषय
कृत्स्नम्	सम्पूर्ण
स्फारस्फुरिततेजसा	अतिशय प्रदीप्त प्रकाश से युक्त
पादाक्रान्तम्	पददलित
समुन्मीलति	शोभायमान है।
वह्निः	आग
कुल्या	नहर
कुरङ्गाः	मृग
माल्यगुणायते	माला की डोरी के समान आचरण करने लगता है।
पीयूष	अमृत
सत्यव्रतव्यसनिनः	सत्यवत पालन में निरत
असून्	प्राणों को
लज्जागुणौघजननीम्	लज्जा, क्षमा आदि गुण समूह को उत्पन्न करने वाली।
अनुवर्तमानाम्	अनुकूल व्यवहार करने वाली।
स्वाम्	अपनी
सन्त्यजन्ति	छोड़ते हैं।

ङ. व्याकरणात्मक टिप्पणियाँ

1. अभिज्ञानशाकुन्तलम् (चतुर्थ अङ्क)

क्र.	शब्द	शब्दार्थ	व्याकरणात्मक-टिप्पणी
1.	**कुसुमावचयम्**	फूलों का चुनना।	कुसुमानाम् अवचयम्। कुसुम+अवचयम् **(दीर्घसन्धि)**
2.	**निर्वृत्तकल्याणा**	जिसका विवाह रूपी मङ्गलकार्य हो गया है।	निर्वृत्तं सम्पन्नं कल्याणं विवाहमङ्गलं यस्याः सा, **(बहु.)**। कल्याण = विवाह
3.	**निवृत्तम्**	सन्तुष्ट, प्रसन्न।	निर् + वृ + क्त
4.	**इष्टिः**	यज्ञ	यज् + क्तिन् (स्त्री)
5.	**आकृतिविशेषाः**	विशेष सुन्दर आकृति वाले।	आकृतीनां विशेषाः **(तत्पु.)**
6.	**गुणविरोधिनः**	1. गुणों से विरोध करने वाले 2. गुणों से विरोध रखने वाले	1. गुणान् विरुन्धन्ति इति, (ताच्छील्य अर्थे ''णिनि'')। 2. गुणैः विरोधिनः। विरोधः अस्ति येषाम् इति विरोधिनः, (मत्वर्थे ''इनि'')
7.	**अनन्यमानसा** (4-1)	केवल एक ओर मन लगाये हुए	न अन्यत् अवलम्बनं यस्य तत् अनन्यम्। अनन्यं मानसं यस्याः सा, **(बहु.)**
8.	**पूजार्हेऽपराद्धा**	पूजनीय व्यक्ति के प्रति अपराध किया है।	पूजाम् अर्हति इति पूजार्हः। पूजा+अर्ह्+अच्। **अपराद्धा**=अप+राध्+क्त+टाप्।
9.	**वेगबलोत्फुल्लया**	अतितीव्र।	वेगस्य बलं तेन उत्फुल्ला, तया। **(तत्पु.)** वेगबल+उत्फुल्लया **(गुण सन्धि)।**
10.	**अर्घोदकम्**	अर्घ और जल। अर्घ+उदकम् **(गुण)**	अर्घश्च उदकं च तयोः समाहारः। **(द्वन्द्व)**
11.	**अग्रहस्तात्**	हाथ से।	अग्रश्चासौ हस्तश्च अग्रहस्तः **(कर्मधा.)**
12.	**प्रकृतिवक्रः**	स्वभाव से कुटिल।	प्रकृत्या वक्रः। **(तत्पु.)**
13.	**सानुक्रोशः**	दयायुक्त।	अनुक्रोशेन दयया सह **(बहु.)** अनुक्रोश=अनु+क्रुश्+घञ्।
14.	**अन्तर्हितः**	अन्तर्धान हो गए।	अन्तर+धा+क्त। **'धा' को 'दधातेर्हिः' सूत्र से 'हि' हो गया।**
15.	**संप्रस्थितेन**	प्रस्थान करते समय।	सम्+प्र+स्था+क्त। (तृतीया, एक.)
16.	**पिनद्धम्**	पहनाया।	अपि+नह्+क्त। अपि के अकार का भागुरि के मतानुसार लोप।
17.	**वामहस्तोपहितवदना**	जिसने बाँए हाथ पर मुँह रखा हुआ है।	वामहस्ते उपहितं वदनं यस्याः सा, **(बहु.)**। वामहस्त+उपहितवदना **(गुण)**

क्र.	शब्द	शब्दार्थ	व्याकरणात्मक-टिप्पणी
18.	**ओषधीनां पतिः** (4-2)	चन्द्रमा (चन्द्रमा की किरणों से वनस्पतियाँ बढ़ती हैं, अतः चन्द्रमा को 'ओषधीश' कहते हैं)	ओषधिः ओषः पाकः दीप्तिर्वा धीयते अस्याम् इति। ओष+धा+कि (इ)।
19.	**अरुणपुरःसरः** (4-2)	अरुण जिसके आगे चल रहा है। अरुण=सूर्य का सारथि	अरुणः पुरःसरः यस्य सः, **(बहु.)**
20.	**युगपद् व्यसनोदयाभ्याम्** (4-2)	एक साथ ही अस्त और उदय होने से। व्यसन+उदयाभ्याम् **(गुण)**	व्यसनं च उदयः च व्यसनोदयौ **(द्वन्द्व)** युगपद् व्यसनोदयौ, ताभ्याम्, **(कर्मधा.)**
21.	**आत्मदशान्तरेषु** (4-2)	अपने दशा विशेषों में नियन्त्रित है।	आत्मनः दशानाम् अन्तराणि, तेषु। **(तत्पु.)** आत्मदशा+अन्तरेषु। **(दीर्घ)**।
22.	**संस्मरणीयशोभा** (4-3)	कुमुदिनी की शोभा अब केवल स्मरण की चीज हो गयी है।	संस्मरणीया शोभा यस्याः सा, **(बहु.)**
23.	**अतिमात्रसुदुःसहानि** (4-3)	अत्यधिक असह्य।	अतिमात्रं सुदुःसहानि। **(कर्मधा.)**
24.	**आपन्नसत्त्वाम्**	गर्भिणी।	सत्त्वम् आपन्ना। **(तत्पु.)**
25.	**सुखशयितप्रच्छिका**	'सुखपूर्वक सोना हुआ या नहीं – यह पूछना।	सुखेन शयितं सुखशयितम्, **(सुप्सुपा)** तत् पृच्छति इति। सुखशयित+प्रच्छ+ण्वुल्। **(स्त्री)**
26.	**लज्जावनतमुखीम्**	लज्जा के कारण नीचे मुँह की हुई।	लज्जया अवनतमुखीम्, **(तत्पु)** लज्जा+अवनतमुखीम्। **(दीर्घ)**
27.	**धूमाकुलितदृष्टेः**	धुएँ से व्याकुल दृष्टि वाले।	धूमेन आकुलिता दृष्टिः यस्य तस्य। **(बहु.)** धूम+आकुलितम् **(दीर्घ)**
28	**अवेहि**	जानो।	अव+आ+इ, लोट्, म0पु0, एक., अव+एहि = अवेहि। ''ओमाङोश्च'' से पररूप।
29.	**नारिकेलसमुद्गके**	नारियल के डिब्बे में। **समुद्गक**=डिब्बा, दोना। (नारियल के ऊपर का थोड़ा हिस्सा काटने से साधारण डिब्बा सा बन जाता है)	समुद्गक=समुद्गच्छति इति। सम्+उद्+गम्+ड। 'ड' के कारण 'अम्' का लोप। स्वार्थ में ''कन्'' प्रत्यय
30.	**शार्ङ्गरवमिश्राः**	(क) शार्ङ्गरव आदि (मिश्र, शब्द मिश्रित या इत्यादि अर्थ में है) (ख) शाङ्र्गरव जिनमें मुख्य हैं। (मिश्र शब्द पूज्य अर्थ में भी आता है।)	शार्ङ्गरवेण मिश्राः **(तत्पु.)** शार्ङ्गरवः प्रधानं पूज्यो वा येषां ते शाङ्र्गरवमिश्राः। (नित्यसमास)
31.	**शब्दायन्ते**	पुकारे जा रहे हैं।	शब्दं करोति शब्दायते।

क्र.	शब्द	शब्दार्थ	व्याकरणात्मक-टिप्पणी
			शब्दाय+णिच्+लट् प्र. पु. बहु.
32.	**वीरप्रसविनी**	वीर पुत्र को जन्म देने वाली।	वीरं प्रसूते इति। वीर+प्र+सू+इनि।
33.	**विप्रकार्यते**	विकृत किया जा रहा है। बिगाड़ा जा रहा है।	वि+प्र+कृ कर्मणि, लट्, प्र.पु. एक. (णिच्)।
34.	**क्षौमम् (4.5)**	रेशमी वस्त्र	क्षुमायाः विकारः क्षौमम्।
35	**माङ्गल्यम्** (4.5)	मंगल=शुभ अवसर पर पहनने के योग्य।	मङ्गलमेव माङ्गलम्, स्वार्थे 'अण्' माङ्गले साधु माङ्गल्यम्। माङ्गल+यत्, साधु अर्थ में 'यत्' प्रत्यय।
36.	**चरणोपरागसुभगः** (4-5)	पैरों को रँगने के योग्य।	चरणयोः उपरागे सुभगः, **(तत्पु)** चरण+उपराग **(गुण)**
37.	**आपर्वभागोत्थितैः** (4-5)	कलाई तक उठे हुए।	पर्वभागं यावत् आपर्वभागम् **(अव्ययी)** आपर्वभागम् उत्थितैः **(सुप्सुपा)** आपर्वभाग+उत्थितैः **(गुण)**
38.	**किसलयोद्भेदप्रतिद्वन्द्विभिः** (4-5)	कोपलों के समान सुन्दर।	किसलयानाम् उद्भेदाः, तेषां प्रतिद्वन्द्विभिः। **(तत्पु.)**
39	**अभिषेकोत्तीर्णाय**	स्नान करके निकले हुए।	**अभिषेक**=अभि+सिच्+घञ्। **उत्तीर्ण**=उद्+तृ+क्त। अभिषेक+उत्तीर्णाय **(गुण)**
40.	**संस्पृष्टम्** (4-6)	व्याप्त है।	सम्+स्पृश्+क्त।
41.	**स्तम्भितबाष्पवृत्तिकलुषः** (4-6)	अश्रुप्रवाह के रोकने से भरा हुआ।	स्तम्भिता बाष्पवृत्तिः, **(कर्मधा)** तया कलुषः। **(तत्पु.)**
42.	**चिन्ताजडम्** (4-6)	चिन्ता से दृष्टि निश्चेष्ट हो गयी है।	चिन्तया जडम्। **(तत्पु.)**
43.	**अरण्यौकसः** (4-6)	जंगल ही है घर जिसका। वनवासी।	अरण्यम् ओकः गृहं यस्य तस्य। **(बहु.)**
44.	**तनयाविश्लेषदुःखैः** (4-6)	पुत्रीवियोग के दुःख से।	तनयानां विश्लेषाद् दुःखं तैः। **(तत्पु.)**
45	**आनन्दपरिवाहिणा**	आनन्द के आँसुओं को बहाता हुआ।	आनन्दं परितः वाहयति इति। आनन्द+परि+वाहि+णिनि+तृतीया।
46.	**प्रान्तसंस्तीर्णदर्भाः** (4-8)	जिनके आस-पास कुश बिछाये गए हैं।	प्रान्तेषु संस्तीर्णाः दर्भाः येषां ते। **(बहु.)**
47.	**क्लृप्तधिष्ण्याः** (4-8)	जिनको यथास्थान स्थापित किया गया है।	क्लृप्तानि धिष्ण्यानि येषां ते। **(बहु.)**
48.	**समिद्वन्तः** (4-8)	समिधाओं से युक्त।	समिध्+मतुप्।
49.	**युष्मास्वपीतेषु** (4-9)	तुम लोगों को बिना जल पिलाये।	"यस्य च भावेन भावलक्षणम्" से सप्तमी। न पीताः अपीताः, तेषु **(नञ्)**
50.	**प्रियमण्डना** (4-9)	प्रिय है अलङ्कार जिसको	प्रियं मण्डनं यस्याः सा। **(बहु.)**

क्र.	शब्द	शब्दार्थ	व्याकरणात्मक-टिप्पणी
		ऐसी, आभूषणप्रिया।	
51.	**कुसुमप्रसूतिसमये** (4-9)	फूलों के निकलने के समय।	कुसुमानां प्रसूतेः समये। **(तत्पु.)**
52.	**अनुमतगमना** (4-10)	जाने के लिए प्राप्त अनुमति वाली।	अनुमतं गमनं यस्याः सा, **(बहु.)**
53.	**वनवासबन्धुभिः** (4-10)	तपोवन के बन्धुबान्धव या साथी।	वनवासस्य बन्धुभिः। **(तत्पु.)**
54.	**परभृतविरुतम्** (4-10)	कोयल की कूक को।	परभृतः विरुतम्। **(तत्पु.)**
55.	**प्रतिवचनीकृतम्** (4-10)	प्रत्युत्तर बनाया गया है।	प्रति+वचन+च्वि+कृ+क्त।
56.	**कमलिनीहरितैः** (4-11)	कमल लताओं से हरे भरे।	कमलिनीभिः हरितैः। **(तत्पु.)**
57.	**रम्यान्तरः** (4-11)	रमणीय मध्यभाग वाला।	रम्यम् अन्तरं यस्य सः। **(बहु.)**
58.	**छायाद्रुमैः** (4-11)	छायादार वृक्षों से।	छायाप्रधानाः द्रुमाः छायाद्रुमाः, तैः **(शाकपार्थिवादिवत् तत्पु.)**
59.	**नियमितार्कमयूखतापः** (4-11)	नियन्त्रित सूर्यकिरणों के ताप वाला।	नियमितः अर्कस्य मयूखानां तापः यस्मिन् सः। **(बहु.)**
60.	**कुशेशयरजोमृदुरेणुः** (4-11)	कमलों के पराग से कोमल धूलि वाला।	कुशेशयानां रजोभिः मृदवः रेणवः यस्मिन् सः। **(बहु.)**
61.	**शान्तानुकूलपवनः** (4-11)	शान्त और अनुकूल वायु वाला।	शान्तः अनुकूलः पवनः यस्मिन् सः। **(बहु.)**
62.	**अनुज्ञातगमना**	जाने की स्वीकृति मिल गयी है।	अनुज्ञातं गमनं यस्याः सा। **(बहु.)**
63.	**उद्गलितदर्भकवलाः** (4-12)	जिन्होंने कुशाओं का कौर उगल दिया है।	उद्गलितः दर्भाणां कवलः याभिः ताः। **(बहु.)**
64.	**परित्यक्तनर्तनाः** (4-12)	जिन्होंने नाचना छोड़ दिया है।	परित्यक्तं नर्तनं यैः। **(बहु.)**
65.	**अपसृतपाण्डुपत्राः** (4-12)	जिनसे पीले पत्ते गिर रहे हैं।	अपसृतानि पाण्डूनि पत्राणि याभ्यः ताः। **(बहु.)**
66.	**आत्मसदृशम्** (4-13)	अपने अनुरुप। या अपने योग्य।	आत्मनः सदृशम्। **(तत्पु.)**
67.	**वीतचिन्तः** (4-13)	चिन्तारहित, निश्चिन्त।	वीता चिन्ता यस्य सः। **(बहु.)**
68.	**अनघप्रसवा**	जब बिना कष्ट के सकुशल बच्चा हो जाय।	अनघः विपत्तिरहितः प्रसवः यस्याः सा। **(बहु.)**
69.	**व्रणविरोपणम्** (4-14)	घावों को भरने वाला।	व्रणानां विरोपणम्। **(तत्पु.)** **विरोपणम्**=वि+रुह्+णिच्+ल्युट्
70.	**न्यषिच्यत** (4-14)	लगाया।	नि+सिच् कर्मणि, लङ्, प्र.पु., एक. नि+अषिच्यत=न्यषिच्यत **(यण्)**
71.	**कुशसूचिविद्धे** (4-14)	कुशों के अग्रभाग से बिंधे हुए।	कुशानां सूचिभिः विद्धे **(तत्पु.)** विद्ध=व्यध्=क्त। 'य' को सम्प्रसारण 'इ'।

क्र.	शब्द	शब्दार्थ	व्याकरणात्मक-टिप्पणी
72.	**श्यामाकमुष्टिपरिवर्धितकः** (4-14)	सावाँ की मुट्ठियों (ग्रासों) से बड़ा किया गया।	श्यामाकानां मुष्टिभिः परिवर्धितकः। **(तत्पु.)**
73.	**सहवासपरित्यागिनीम्**	साथ छोड़ने वाली।	सहवासं परित्यजति इति। सहवास+परि+त्यज्+घिनुण् (इन्), ताम्।
74.	**अचिरप्रसूतया**	जन्म देने के बाद शीघ्र	अचिरं प्रसूता तया, **(कर्मधा.)**
75.	**उत्पक्ष्मणोः** (4-15)	ऊपर की ओर उठी हुई बरौनियों वाले।	उद्गतानि पक्ष्माणि ययोः तयोः। **(बहु.)**
76.	**उपरुद्धवृत्तिम्** (4-15)	नेत्रों की दर्शनशक्ति को रोकने वाले।	उपरुद्धा वृत्तिः येन तम् **(बहु.)** वृत्ति=व्यापार, दर्शनव्यापार या दर्शनशक्ति।
77.	**विरतानुबन्धम्** (4-15)	जिसका प्रवाह रुक गया है, ऐसा। रुके हुए प्रवाह वाला।	विरतः अनुबन्धः यस्य, तम्। **(बहु.)** विरत-वि+रम्+क्त।
78.	**अलक्षितनतोन्नतभूमिभागे** (4-15)	जिसके ऊँचे नीचे भूमिभाग नहीं दिखलाई पड़ रहे हैं, ऐसे मार्ग में।	अलक्षितः नतः उन्नतः भूम्याः भागः यस्मिन् तस्मिन्। **(बहु.)**
79.	**ओदकान्तम्**	जल के किनारे तक।	उदकस्य अन्तः उदकान्तः, आ उदकान्तात्, ओदकान्तम्। यहाँ पर 'आङ् मर्यादाभिविध्योः' से **अव्ययीभावसमास।**
80.	**युक्तरूपम्**	अत्यन्तसुन्दर।	अतिशयेन युक्तम्। **(अव्ययी.)**
81.	**विषाददीर्घतराम्** (4-16)	दुःख के कारण लम्बी।	विषादेन दीर्घतराम्। **(तत्पु.)**
82.	**आशाबन्धः** (4-16)	आशा का बन्धन। आशा के कारण व्यक्ति कठोर से कठोर कष्ट भी सह लेता है।	आशायाः बन्धः। **(तत्पु.)**
83.	**विरहदुःखम्** (4-16)	वियोग के दुःख को।	विरहस्य दुःखम्। **(तत्पु.)**।
84.	**संयमधनान्** (4-17)	संयम ही है धन जिनका, ऐसे संयम रूपी धन वाले।	संयम एव धनं येषां तान्। **(बहु.)** संयम=सम्+यम्+अप्।
85.	**अबान्धवकृताम्** (4-17)	बन्धुओं/सम्बन्धियों के द्वारा न कराये गये।	न बान्धवैः कृताम्। **(तत्पु.)**
86.	**स्नेहप्रवृत्तिम्** (4-17)	प्रेम व्यापार को।	स्नेहस्य प्रवृत्तिम्, ताम्। **(तत्पु.)**
87.	**सामान्यप्रतिपत्तिपूर्वकम्** (4-17)	समान गौरव। आदर के साथ। (सामान्यतया पत्नी के साथ जैसा सद्व्यवहार करना चाहिए, उतना अवश्य करना)	सामान्या प्रतिपत्तिः सामान्यप्रतिपत्तिः, सामान्यप्रतिपत्तिः पूर्वा यस्मिन् तत्। **(बहु.)**
88.	**भाग्यायत्तम्** (4-17)	भाग्य के अधीन है।	भाग्ये आयत्तम्। **(तत्पु.)** आयत्त=आ+यत्+क्त।
89.	**लौकिकज्ञाः**	लौकिक बातों को जानने वाले।	लोके भवं लौकिकम्। लोक+ठञ् **(इक)**, लौकिकं जानन्ति इति लौकिकज्ञाः लौकिक+ज्ञा+क (अ)।
90.	**शुश्रूषस्व** (4-18)	सेवा करना।	श्रु+सन्+लोट्, म.पु., एक.।

क्र.	शब्द	शब्दार्थ	व्याकरणात्मक-टिप्पणी
			'श्रु' धातु से 'सन्' प्रत्यय होने पर ''**ज्ञाश्रुस्मृदृशां सनः**'' सूत्र से धातु आत्मनेपदी हो जाती है।
91.	**प्रियसखीवृत्तिम्** (4-18)	प्रियसखी जैसा व्यवहार।	प्रियायाः सख्याः वृत्तिम्। **(तत्पु.)**
92.	**सपत्नीजने** (4-18)	सौतों के साथ।	सपत्नी=समानः पतिः यस्याः सा, सपत्नी।
93.	**विप्रकृताऽपि** (4-18)	अपमानित होने पर भी।	वि+प्र+कृ+क्त+टाप्। विप्रकृता+अपि **(दीर्घ)**।
94.	**रोषणतया** (4-18)	क्रोध के कारण।	रुष्+युच्। (शील अर्थ में) रोषण+ता (भाव अर्थ में)
95.	**प्रतीपम्** (4-18)	प्रतिकूल, विपरीत।	प्रतिकूलम् अपाम्। प्रति+अप्+अ।
96.	**मास्म गमः** (4-18)	मत जाना आचरण मत करना।	यहाँ 'मा' के कारण 'अगमः' में 'अ' नहीं हुआ। ''**न माङ्योगे**'' सूत्र से अडागम का अभाव।
97.	**भूयिष्ठम्** (4-18)	अत्यधिक।	**भूयिष्ठ**=बहु+इष्ठन्। 'इष्ठस्य यिट् च' सूत्र से 'बहु' के स्थान पर 'भू' तथा 'इ' के स्थान पर 'यि' आदेश।
98.	**युवतयः** (4-18)	तरुण स्त्रियाँ।	युवति='युवन्' शब्द से ''यूनस्ति' सूत्र से 'ति' प्रत्यय। 'युवा' का स्त्रीलिङ्ग 'युवती' है, युवत+ङीष्=युवती, **(पतिवाली)**
99.	**वामाः** (4-18)	विपरीत आचरण करने वाली स्त्रियाँ।	वमति स्नेहं इति वामा। वम्+अण् (अ) = वाम, टाप्।
100.	**आधयः** (4-18)	मानसिक दुःख और विपत्ति का कारण।	अधीयते दुःखम् अनेन इति आधिः। आङ्+धा+कि ''**उपसर्गे घोः किः**'' सूत्रेण 'कि' प्रत्यय
101.	**गृहिणीपदम्** (4-18)	गृहिणी, गृहस्वामिनी।	गृहिण्याः पदम्। **(तत्पु.)**।
102.	**अभिजनवतः** (4-19)	उच्च कुल वाले, अतिकुलीन, अभिजनकुल।	प्रशस्तः अभिजनः=अभिजनवान्, तस्य। प्रशंसा अर्थ में 'मतुप्' प्रत्यय।
103.	**विभवगुरुभिः** (4-19)	ऐश्वर्य के कारण महान्।	विभवेन गुरुभिः। **(तत्पु.)**
104.	**सविता**	सूर्य जो लोगों को कर्म में प्रवृत्त करता है।	सुवति कर्मणि प्रेरयति। सू+तृच्।
105.	**दौष्यन्तिम्** (4-20)	दुष्यन्त के पुत्र को।	दुष्यन्तस्य पुत्रः दौष्यन्तिः, तम् दुष्यन्त+इञ्। ''**अत इञ्**'' सूत्रेण पुत्रार्थे 'इञ्' प्रत्यय।
106.	**अप्रतिरथम्** (4-20)	जिसका प्रतिद्वन्द्वी योद्धा	न विद्यते प्रतिरथः प्रतिद्वन्द्वी

क्र.	शब्द	शब्दार्थ	व्याकरणात्मक-टिप्पणी
		कोई नही है।	यस्य सः, तम्। **(बहु.)**
107.	**निवेश्य** (4-20)	बिठाकर।	नि+विश्+णिच्+ल्यप्।
108.	**तदर्पितकुटुम्बभरेण** (4-20)	जिसके द्वारा उस पुत्र पर कुटुम्ब का भार सौंप दिया गया है, ऐसे।	तस्मिन् अर्पितः कुटुम्बस्य भारः येन, तेन। **(बहु.)**
109.	**परिहीयते**	छोड़ रही है। या बीत रही है।	परि+हा+कर्मणि, लट् प्र.पु. एक.।
110.	**उटजद्वारविरूढम्** (4-21)	कुटी के द्वार पर उगे हुए।	उटजस्य द्वारे विरूढम्, तत्पु.।
111.	**अन्तर्हिता**	ओझल हो गयी है।	अन्तर+धा+क्त+टाप्। 'धा' को 'हि' आदेश होता है – ''**दधातेर्हिः**'' सूत्र से।
112.	**सहचारिणी**	सखी, साथ रहने वाली।	सह चरति इति। सह+चर् + णिनि। (स्त्री) (ताच्छील्यार्थे णिनिः)।
113.	**निगृह्य**	रोककर।	नि+ग्रह+ल्यप्।
114.	**प्रत्यर्पितन्यासः** (4-22)	जिसने धरोहर लौटा दी है।	प्रत्यर्पितः न्यासः येन **(बहु.)**।

अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में प्रयुक्त छन्द एवं अलङ्कार

क्र.	श्लोक (वक्ता)	छन्दः	अलङ्कारः
1.	**विचिन्तयन्ती यमनन्यमानसा.......।** (ऋषि दुर्वासा) (4-1) नेपथ्य से	**वंशस्थ** (प्रत्येक चरण में 12 वर्ण)	● काव्यलिङ्ग, उपमा, और श्लेष अलङ्कार।
2.	**यात्येकतोऽस्तशिखरं पतिरोषधीनाम्.......। (4-2)** (कण्व का शिष्य)	**वसन्ततिलका** (प्रत्येक पाद में 14 वर्ण)	● समासोक्ति, तुल्ययोगिता, यथासंख्य और उत्प्रेक्षा अलंकार।
3.	**अन्तर्हिते शशिनि सैव कुमुद्वती मे।** (4-3) (कण्व का शिष्य)	**वसन्ततिलका** (प्रत्येक पाद में 14 वर्ण)	● समासोक्ति काव्यलिङ्ग, और अर्थान्तरन्यास अलङ्कार ● नाटक में ये तीसरा **पताकास्थानक** है।
	कर्कन्धूनामुपरि तुहिनं रञ्जयत्यग्रसन्ध्या.......। (बँगला संस्करण में प्राप्त प्रक्षिप्त श्लोक)	**मन्दाक्रान्ता** (प्रत्येक पाद में 17 वर्ण)	● स्वभावोक्ति अलङ्कार।
	पादन्यासं क्षितिधरगुरोर्मूर्ध्नि कृत्वा सुमेरोः......। (बँगला संस्करण में प्राप्त प्रक्षिप्त श्लोक)	**मन्दाक्रान्ता** (प्रत्येक पाद में 17 वर्ण)	● समासोक्ति, अर्थान्तरन्यास और श्लेष अलङ्कार।
4.	**दुष्यन्तेनाहितं तेजो दधानां भूतये**	**अनुष्टुप् या श्लोकवृत्त**	● उपमा अलंकार

क्र.	श्लोक (वक्ता)	छन्दः	अलङ्कारः
	भुवः.....। (4-4) (छन्दोमयी आकाशवाणी)	(प्रत्येक पाद में 8 वर्ण)	● इस श्लोक में मार्ग नामक गर्भसन्धि का अङ्ग है।
5.	**क्षौमं केनचिदिन्दुपाण्डु तरुणा माङ्गल्यमाविष्कृतम्......।** (4-5) (कण्व का शिष्य)	**शार्दूलविक्रीडितम्** (प्रत्येक पाद में 19 वर्ण)	उपमालङ्कार।
6.	**यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया......।** (4-6) (महर्षि कण्व)	**शार्दूलविक्रीडितम्** (प्रत्येक पाद में 19 वर्ण)	● व्यतिरेक अलङ्कार। ● **प्रसिद्ध चार श्लोकों में से एक।**
7.	**ययातेरिव शर्मिष्ठा भर्तुर्बहुमता भव।** (4-7) (महर्षि कण्व)	**अनुष्टुप्** (प्रत्येक पाद में 8 वर्ण)	● उपमा अलङ्कार। ● इस श्लोक में क्रम नामक गर्भसन्धि का अङ्ग तथा आशीः नामक नाटकीय अलङ्कार है।
8.	**अमी वेदिं परितः क्लृप्तधिष्ण्याः।** (4-8) (महर्षि कण्व)	**त्रिष्टुप् (वैदिक छन्द)** (प्रत्येक पाद में 11 वर्ण)	● परिकर अलङ्कार।
9.	**पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं युष्मास्वपीतेषु या......। (4-9)** (महर्षि कण्व)	**शार्दूलविक्रीडितम्** (प्रत्येक पाद में 19 वर्ण)	● समासोक्ति, और काव्यलिङ्ग अलङ्कार। ● **प्रसिद्ध चार श्लोकों में से एक।**
10.	**अनुमतगमना शकुन्तला......।** (4-10) (महर्षि कण्व)	**अपरवक्त्रछन्दः** (प्रथम और तृतीय चरण में 11 वर्ण द्वितीय और चतुर्थचरण में 12 वर्ण)	● परिणाम अलङ्कार।
11.	**रम्यान्तरः कमलिनीहरितैः सरोभिः।** (4-11) (देवताओं की आकाशवाणी)	**वसन्ततिलका** (प्रत्येक पाद में 14 वर्ण)	● परिकर, तुल्योगिता, काव्यलिङ्ग और हेतु अलङ्कार।
12.	**उद्गलितदर्भकवला मृग्यः......।** (प्रियंवदा) (4-12)	**आर्या** (प्रथम पाद में 12 वर्ण)	● उत्प्रेक्षा और समासोक्ति अलङ्कार।
13.	**सङ्कल्पितं प्रथममेव मया तवार्थे....।** (4-13) (काश्यप/कण्व)	**वसन्ततिलका** (प्रत्येक पाद में 14 वर्ण)	● समासोक्ति, तुल्ययोगिता सम और काव्यलिङ्ग, अलङ्कार।
14.	**यस्य त्वया व्रणविरोपणमिङ्गुदीनाम्** (4-14) (काश्यप/कण्व)	**वसन्ततिलका** (प्रत्येक पाद में 14 वर्ण)	● स्वभावोक्ति अलङ्कार।
15.	**उत्पक्ष्मणोर्नयनयोरुपरुद्धवृत्तिम्....।** (4-15) (काश्यप/कण्व)	**वसन्ततिलका।** (प्रत्येक पाद में 14 वर्ण)	● काव्यलिङ्ग अलङ्कार।

क्र.	श्लोक (वक्ता)	छन्दः	अलङ्कारः
16.	**एषापि प्रियेण विना गमयति....।** (4-16) **(अनसूया)**	**आर्या** (प्रथम पाद में 12 वर्ण)	● अर्थान्तरन्यास अलङ्कार।
17.	**अस्मान् साधु विचिन्त्य संयमधनानुच्चैः कुलं चात्मनः....।** (4-17) (काश्यप/कण्व)	**शार्दूलविक्रीडितम्** (प्रत्येक पाद में 19 वर्ण)	● अप्रस्तुतप्रशंसा अलङ्कार। ● **प्रसिद्ध चार श्लोकों में से एक।**
18.	**शुश्रूषस्व गुरून् कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीजने....।** (4-18) (काश्यप/कण्व)	**शार्दूलविक्रीडितम्।** (प्रत्येक पाद में 19 वर्ण)	● रूपक, हेतु, और अर्थान्तरन्यास अलङ्कार। ● इस श्लोकों में 'उपदिष्ट' नामक नाटकीय लक्षण है। **प्रसिद्ध चार श्लोकों में से एक।**
19.	**अभिजनवतो भर्तुः श्लाघ्ये स्थिता गृहिणीपदे......।** (4-19) (काश्यप/कण्व)	**हरिणी** (प्रत्येक पाद में 17 वर्ण)	● उपमा, समुच्चय और काव्यलिङ्ग अलङ्कार। ● कुछ लोग ''अस्मान् साधु....'' के स्थान पर इसे प्रसिद्ध चार श्लोकों में गिनते हैं।
20.	**भूत्वा चिराय चतुरन्तमहीसपत्नी।** (4-20) (काश्यप/कण्व)	**वसन्ततिलका** (प्रत्येक पाद में 14 वर्ण)	● मालादीपक अलङ्कार। ● कुछ लोग ''पातुं न प्रथमं.....'' के स्थान पर इसे भी चार प्रसिद्ध श्लोकों में गिनते हैं।
21.	**शममेष्यति मम शोकः कथं नु.....।** (4-21) (काश्यप/कण्व)	**आर्या जातिः**	काव्यलिङ्ग अलङ्कार।
22.	**अर्थो हि कन्या परकीय एव....।** (4-22) (काश्यप/कण्व)	**इन्द्रवज्रा** (प्रत्येक पाद में 11 वर्ण)	उत्प्रेक्षा अलङ्कार।

➢ अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चारों प्रसिद्ध श्लोक महर्षि कण्व ने कहे हैं।

➢ अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में कुल 22 श्लोक हैं, जिसमें 14 श्लोक महर्षि कण्व के द्वारा बोले गए हैं।

➢ चतुर्थ अङ्क में ''**उद्गलितदर्भकवला मृग्यः**'' (4.12) इस श्लोक को प्रियंवदा तथा ''**एषापि प्रियेण विना गमयति रजनी**'' (4.16) इस एक श्लोक को अनसूया बोलती है।

➢ अभिज्ञानशाकुन्तलम् के केवल चतुर्थ अङ्क में महर्षि कण्व का दर्शन होता है।

➢ चतुर्थ अङ्क के बाद अनसूया और प्रियंवदा का वर्णन नहीं मिलता है।

'उत्तररामचरितम्' (तृतीय अङ्क) की महत्त्वपूर्ण व्याकरणात्मक टिप्पणियाँ

- **नदीद्वयम्** – नदीनां द्वयम् – तत्पुरुष समास।
- **सम्भ्रान्ता** – सम् + √भ्रम् + क्त + टाप्।
- **प्रेषिता** – प्र + √इष् + णिच् + क्त + टाप्।
- **सरिद्वराम्** – सरित्सु वराम् (तत्पुरुष समास)।
- **अनिर्भिन्नः** – न निर्भिन्नः। निर्भिन्नः – निर् + √भिद् + क्त।
- **विनिपातः** – वि + नि + √पत् + घञ्।
- ● सन्तान में 'तनु' तथा 'क्षीणः' में 'क्षि' धातु।
- **अवलोक्य** – अव + √लोक् + णिच् + ल्यप्।
- **आकर्षद्भिः** – आङ् + √कृष् + शतृ + तृतीया बहुवचन।
- **तर्पय** – √तृप् + णिच् + लोट् म. पु. एकवचन
- **दाक्षिण्यम्** – दक्षिण + ष्यञ्।
- **संनिहितः** – सम् + नि + √धा + क्त ("दधातेर्हिः" से धा को हि आदेश)।
- **अभ्युपपन्ना** – अभि + उप + √पद् + क्त + टाप्।
- **निक्षिप्तवती** – नि + √क्षिप् + क्तवतु + ङीप्।
- **प्रसूता** – प्र + √सूङ् + क्त + टाप्।
- **व्यापृतस्य** – वि + आङ् + √पृ + क्त + षष्ठी विभक्ति।
- **'प्रसवितारम्'** – प्र + √सूङ् + तृच् + द्वितीया एकवचन।
- **उपतिष्ठस्व** – उप + √'स्था' + लोट् म. पु. एक.।
- **यथादिष्टम्** – आदिष्टम् अनतिक्रम्य (अव्ययीभाव समास।)
- **विप्रलूनम्** – वि + प्र + √लू + क्त
- **ग्लपयति** – √ग्लै (ग्ला) + णिच् + लट् प्र.पु.एक.।
- **क्षामम्** – √क्षै (क्षा) + क्त ('क्षायो' मः से त को म आदेश)।
- **शरदिजः** – शरदि जायते इति शरदिजः (उपपदसमास)।
- **आकर्णयन्ती** – आङ् + √कर्ण् + णिच् + शतृ + ङीप्।
- **व्याहरति** – वि + आङ् + √'हृ' लट् प्र. पु. एकवचन।
- **विहरन्** – वि + √हृ + शतृ + प्रथमा एक.
- **परित्रायस्व** – परि + √त्रै + लोट् म. पु. एक.
- **अनुबध्नन्ति** – अनु + √बन्ध् + लट् प्र. पु. बहु.
- **समाश्वसिहि** – सम् + आङ् + √श्वस् + लोट् म. पु. एकवचन
- **तपस्यतः** – तपस् + क्यङ् + शतृ + षष्ठी एक.
- **अध्यवात्सम्** – अधि + √वस् + लुङ् उ. पु. एक.
- **परिसरः** – परि + √सृ + घञ्
- **ज्वलिष्यतः** – √ज्वल् + शतृ + षष्ठी एक.।
- **आवृणोति** – आङ् + √वृ + लट् प्र. पु. एक.।
- **जीवय** – √जीव् + णिच् + लोट म. पु. एक.।
- **संजीवय** – सम् + √जीव् + णिच् + लोट् म. पु. एक.।
- **ससंभ्रमम्** – संभ्रमेण सहितं यथा स्यात् तथा अव्ययीभाव।
- **परितर्पणः** – परि + √तृप् + ल्यु (अन)।
- ● प्रसक्त में √सञ्ज तथा सेकः में √सिच् धातु।
- **सन्तापजाम्** – सन्तापात् जाताम् उपपद तत्पुरुष। सन्ताप + √जन् + ड (अ) + टाप् + द्वितीया एक.।
- **मार्गिष्यते** – √मार्ग् + लृट् प्र. पु. एक.।
- **अपसराव** – अप + √सृ + लोट् उ. पु. द्विवचन।
- **अनभ्यनुज्ञातेन**–नञ् + अभि + अनु + √ज्ञा + क्त + तृतीया एक.।
- **संनिधानम्** – सम् + नि + √धा + ल्युट्।
- **कोपिष्यति** – √कुप् + लृट् + प्र. पु. एक.।
- **सौजन्यम्** – सुजन + ष्यञ्।
- **अभियुज्यते** – अभि + √युज् + लट् कर्मवाच्य में।
- **वधूद्वितीयम्** – वधू द्वितीया यस्य सः तम्, (बहु.)
- **सम्भावयतु** – सम + √भू + णिच् + लोट् प्र. पु. एक.।
- **कथोद्घाताः** – कथानाम् उद्घाताः (तत्पु.)।
- **हृदयमर्मच्छिदः** – हृदयमर्मन् + √छिद् + क्विप्।
- **विजेता** – वि + √जि + तृच् प्रथमा एक.।
- **अनुवृत्ति** – अनु + √वृत् + क्तिन्।
- **लीलोत्खातः** – लीलया उत्खातः (तृतीया तत्पुरुष)।
- **उज्ज्वलः** – उत् + √ज्वल् + अच्।
- **नित्योज्ज्वलम्** – नित्यमेव उज्ज्वलम् (सप्सुपा समास)।
- **दम्पती** – जाया च पतिः च - (द्वन्द्वसमास)।
- **अवर्धयत्** – √वृध् + णिच् + लङ् प्र. पु. एकवचन।
- **वर्धामहे** – √वृध् + लट् उ. पु. बहु.।
- **नर्त्यमानम्** – √नृत् + णिच् + शानच् + द्वितीया एक.।
- **मण्डयन्त्या** – मण्ड + स्वार्थ में णिच् + शतृ + ङीप् तृतीया एक.।
- **तिर्यञ्चः** – तिरस् + √अञ्च प्रथमा बहु.।
- **परिष्वज्य** – परि + √स्वञ्ज् + ल्यप्।
- **विलुलितम्** – वि + √लुल् + क्त।
- **अवसृजन्ती** – अव + √सृज् + शतृ + ङीप्।
- **अनुरुन्धन्ते** – अनु + √रुध् + लट् प्र. पु. बहु.।
- **नयनोत्सवम्** – नयनयोः उत्सवम् (षष्ठी तत्पु.)।
- **शुचा** – शुच् + क्विप् प्रत्यय। (तृतीया, एक.)
- **प्रवान्तु** – प्र + √वा + लोट् प्र. पु. बहु.।
- **क्वणन्तु** – √क्वण् + लोट् प्र. पु. बहु.।
- **ददतु** – √दा + लोट् प्र. पु. बहु.।
- **एहि** – आ + √इ + लोट् म. पु. एक.।
- **स्थीयताम्** – √स्था + लोट् प्र. पु. एक. भाववाच्य।

- **अपुष्यत्** – √पुष् + लङ् प्र. पु. एक.।
- **प्रलपन्तम्** – प्र + √लप् + शतृ + द्वितीया एक.।
- **प्रलापयसि** – प्र + √लप् + णिच् + लट् म. पु. एक.।
- **दुःखितः** – दुःख + इतच्।
- **सुलभः** – सु + √लभ् + खल् (अ)।
- **पाल्यम्** – √पाल् + णिच् + ण्यत्।
- **भिद्यते** – √भिद् + लट् प्र. पु. एक. (आत्मने०)
- **ज्वलयति** – √ज्वल् + णिच् + लट् प्र. पु. एक.।
- **अन्तर्दाहः** – अन्तः दाह, (सुप्सुपा समास।)
- **प्रनष्टम्** – प्र + √नश् + क्त।
- **अवलम्ब्यताम्** – अव + √लम्ब् + लोट् प्र. पु. एक. (कर्मवाच्य)
- **समाधीयते** – सम् + आङ् + √धा + लट् प्र. पु. एक. (कर्मवाच्य)।
- **अप्रतिहतरयः** – अप्रतिहतः रयः यस्य सः (बहुव्रीहि)
- **उज्जृम्भण** – उत् + जृम्भ् + ल्युट्।
- **तन्मार्गदत्तेक्षणः** – तस्याः मार्गे दत्ते ईक्षणे येन सः, (बहुव्रीहि)
- **कृतकौतुका** – कृतं कौतुकं यया सा। (बहुव्रीहि)
- **आयान्त्या** – आङ् + √या + शतृ (अत्) + ङीप् (ई) = आयन्ती + तृतीया एक.।
- **परिदुर्मनायितम्** – परि + दुर् + मनस् + क्यङ्।
- **विष्वक्**– विषु + √अञ्च् + क्विन् = विष्वञ्च् प्रथमा।
- **मज्जति** – √मस्ज् + लट् प्र. पु. एक.।
- **अविरलज्वालम्** – अविरलाः ज्वालाः यस्मिन् तत् यथा स्यात्तथा (बहुव्रीहि)
- **संस्पर्शः** – शोभनः स्पर्शः संस्पर्शः (कर्मधारय)।
- **जीवयन्** – √जीव् + णिच् + शतृ प्र. पु. एक.।
- **निमीलिताक्षः** – निमीलिते अक्षिणी यस्य सः निमीलिताक्षि + षच् (अ) (बहुव्रीहि)
- **उल्लाघयता** – उत् + लघु + शतृ तृतीया एक.।
- **पर्यस्तव्यापारः** – पर्यस्तः व्यापारः यस्य सः (बहुव्रीहि)।
- **परिणयः** – परि + √नी + अच् (अ)।
- **सुधासूतेः** – सुधायाः सूतिः यस्मात् तस्य (बहुव्रीहि)।
- **औपम्यम्** – उपमायाः भावः, उपमा + ष्यञ्
- **स्फुटकोरका** – स्फुटाः कोरकाः यस्याः सा। (बहुव्रीहि)।
- **संस्तम्भय** – सम् + √स्तम्भ् + णिच् + लोट् म. पु. एक.।
- **लोकोत्तरेण** – लोकाद् उत्तरेण (तत्पुरुष)।
- **कार्ष्णायसः** – कृष्ण + अयस् + टच्। कृष्णायसस्य विकारः– विकार अर्थ में अण् प्रत्यय।
- **अभ्युदस्थात्** – अभि + उत् + √स्था + लुङ् प्र. पु. एक.।
- **पिशाचः** – पिशित (कच्चा मांस) + अश् + अण्।
- **निरवधिः** – निर्गतः अवधिः यस्य सः (बहुव्रीहि)।
- **मुग्धाक्ष्याः** – मुग्धे अक्षिणी यस्याः सा मुग्धाक्षी (बहु.)। मुग्ध + अक्षि + षच् (अ) ङीष् (ई) (षिद्गौरादिभ्यश्च से ङीष्)।
- **अवधिः** – अव् + √धा + कि (इ)।
- **प्रविलयः** – प्र + वि + √ली + अच् (अ)।
- **सौमित्रिः** – सुमित्रायाः अपत्यम्, सुमित्रा + इञ्।
- **रोदयिष्यामि** – √रुद् + णिच् + लृट् उ. पु. एक.।
- **अनुजानीहि** – अनु + √ज्ञा + लोट् उ. पु. एक.।
- **संविधानकम्** – सम् + वि + √धा + ल्युट् (अन) स्वार्थ में 'कन्' (क) प्रत्यय।
- **प्रयोक्ता** – प्र + √युज् + तृच्, प्रथमा एक.।

कादम्बरी (शुकनासोपदेश) में क्रियापद

चिकीर्षुः = √कृ + सन् + उ
आदिदेश = आङ् + √दिश् + लिट्, प्रथमपुरुष, एक0
उवाच = √वच् + लिट्, प्रथमपुरुष, एकवचन
उपयाति = उप + √या + लट्, प्रथमपुरुष, एकवचन
अपहरति = अप + √हृ + लट् प्रथमपुरुष एकवचन
आपतन्ति = आङ् + √पत् + लट् प्रथमपुरुष बहुवचन
नाशयति = √नश् + णिच् + लट् प्रथमपुरुष एकवचन
विशन्ति = √विश् + लट् प्रथमपुरुष बहुवचन
उपजनयति = उप + √जन् + णिच् + लट् प्रथमपुरुष एक0
हरति = √हृ + लट् + प्रथमपुरुष एकवचन
परिणमयति = परि + √नम् + णिच् लट् प्रथमपुरुष एक0
गलति = √गल् + लट् प्रथमपुरुष एकवचन
भवति = √भू + लट् प्रथमपुरुष एकवचन
दहति = √दह् + लट्, प्रथमपुरुष, एक0
अनुगच्छति = अनु + √गम् + लट् प्रथमपुरुष एकवचन
अभिधीयसे = अभि + √धा + लट् मध्यमपुरुष एकवचन
शृण्वन्ति = √श्रु + लट् प्रथमपुरुष बहुवचन
खेदयन्ति = √खिद् + णिच् + लट् प्रथमपुरुष बहुवचन
परिपाल्यते = परि + √पाल् + यक् + लट् प्रथमपुरुष एकवचन
नश्यति = √नश् + लट् + प्रथमपुरुष एकवचन
आलोकयतु = आङ् + √लोक् + लोट् + प्रथमपुरुष एकवचन
अपक्रामति = अप + √क्रम् + लट् + प्रथमपुरुष एकवचन
प्रपलायते = प्र + परा + √अय् + लट् प्रथमपुरुष एक0 (आत्मने0)
रक्षति = √रक्ष् + लट् प्रथमपुरुष एकवचन
ईक्षते = √ईक्ष् + लट् प्रथमपुरुष एकवचन (आत्मनेपदी)
आलोकते = आङ् + √लोक् + लट् + प्रथमपुरुष एक0 (आत्मने0)
अनुवर्तते = अनु + √वृत् + लट् + प्रथमपुरुष एक0 (आत्मने0)
पश्यति = √दृश् + लट् + प्रथमपुरुष एकवचन
अनुरुध्यते = अनु + √रुध् + लट् प्रथमपुरुष एकवचन (दिवादि0)
आद्रियते = आङ् + √दृ + लट् प्रथमपुरुष एकवचन (तुदादि0)
अनुबुध्यते = अनु + √बुध् + यक् + लट्, प्रथमपुरुष, एकवचन
करोति = √कृ + लट् प्रथमपुरुष एकवचन
परिभ्रमति = परि + √भ्रम् + लट्, प्रथमपुरुष एकवचन
परिस्खलति = परि + √स्खल् + लट्, प्रथमपुरुष, एकवचन
निवसति = नि + √वस् + लट्लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन
मुञ्चति = √मुच् + लट्, प्रथमपुरुष, एकवचन
अध्यारोहति = अधि + आङ् + √रुह् + लट् प्रथमपुरुष एक.
आलिङ्गति = आङ् + √लिङ्ग् + लट्, प्रथमपुरुष, एकवचन
स्मरति = √स्मृ + लट् प्रथमपुरुष एकवचन
परिहरति = परि + √हृ + लट् + प्रथमपुरुष एकवचन
उपसर्पति = उप + √सृप् + लट्, प्रथमपुरुष, एकवचन
उपजनयति = उप + √जन् + लट्, प्रथमपुरुष, एकवचन
संवर्धयति = सम् + √वृध् + लट् प्रथमपुरुष एकवचन
आतनोति = आङ् + √तन् + लट् प्रथमपुरुष, एकवचन
आपादयति = आङ् + √पद् + णिच् + लट् प्रथमपुरुष, एकवचन
दीप्यते = √दीप् + लट् प्रथमपुरुष एकवचन (आत्मनेपदी)
उद्वमति = उत् + √वम् + प्रथमपुरुष एकवचन
चलति = √चल् + लट् + प्रथमपुरुष एकवचन
आचरति = आङ् + √चर् + लट् + प्रथमपुरुष एकवचन
वञ्चयति = √वञ्च् + णिच् + लट् प्रथमपुरुष एकवचन
अभिसन्धत्ते = अभि + सम् + √धा लट् प्रथमपुरुष एक0 (आत्मने0)
विप्रलभते = वि + प्र + √लभ् + लट् प्रथमपुरुष एक0 (आत्मने0)
भवन्ति = √भू + लट् + प्रथमपुरुष बहुवचन
गच्छन्ति = √गम् + लट् प्रथमपुरुष बहुवचन
प्रक्षाल्यते = प्र + √क्षाल् + लट् प्रथमपुरुष एक0 (कर्मवाच्य)
क्रियते = √कृ + लट् + प्रथमपुरुष एकवचन (कर्मवाच्य)
आच्छाद्यते = आङ् + √छद् + णिच् + लट् प्र0पु0 एक0 (कर्मवाच्य)
अपसार्यते = अप + √सृ + णिच् + लट् + प्र0पु0 एक0 (कर्मवाच्य)
अपह्रियते = अप् + √हृ + लट् प्रथमपुरुष एक0 (कर्मवाच्य)
उत्सार्यन्ते = उत् + √सृ + णिच् + लट् + प्र0पु0 बहु0 (कर्मवाच्य)
परामृश्यते = परा + √मृश् + यक् + लट् प्रथमपुरुष एकवचन
उपयान्ति = उप + √या + लट् प्रथमपुरुष बहुवचन
गृह्यन्ते = √ग्रह् + लट् प्रथमपुरुष बहुवचन (कर्मवाच्य)
अभिभूयन्ते = अभि + √भू + लट् प्रथमपुरुष बहु0 (वाच्य)
आवेश्यन्ते = आङ् + √विश् + कर्मणि + लट् प्रथमपुरुष बहु0
अवष्टभ्यन्ते = अव + √स्तम्भ् + कर्मणि + लट् प्रथमपुरुष बहुवचन

विडम्ब्यन्ते = वि + √डम्ब् + लट् प्रथमपुरुष बहु० (कर्मणि)
ग्रस्यन्ते = √ग्रस् + लट् प्रथमपुरुष बहुवचन (कर्मणि)
विचेष्टन्ते = वि + √चेष्ट् + लट् प्रथमपुरुष, बहुवचन
सञ्चार्यन्ते = सम् + √चर् + णिच् + लट् प्र०पु० बहु० कर्मणि
जल्पन्ति = √जल्प् + लट् प्रथमपुरुष बहुवचन
उत्पादयन्ति = उत् + √पद् + णिच् लट् प्रथमपुरुष बहुवचन
अभिजानन्ति + अभि + √ज्ञा लट् प्रथमपुरुष बहुवचन
ईक्षन्ते = √ईक्ष् + लट् प्रथमपुरुष बहुवचन (आत्मनेपदी)
प्रतिबुध्यन्ते = √बुध् + लट् प्रथमपुरुष बहुवचन (कर्मणि)
सहन्ते = √सह् + लट् प्रथमपुरुष बहुवचन (आत्मने०)
गृह्णन्ति = √ग्रह् + लट् प्रथमपुरुष बहुवचन
शातयन्ति = √शद्लृ + णिच् + लट् प्रथमपुरुष बहुवचन
उद्वेजयन्ति = उत् + √विज् + लट् + णिच्, + प्र०पु० बहु०
उपजनयन्ति = उप + √जन् + णिच् लट् प्रथमपुरुष बहुवचन
अवगच्छन्ति = अव + √गम् + लट् प्रथमपुरुष बहुवचन
उपयान्ति = उप + √या + पुक् + णिच् + लट् प्रथमपुरुष बहुवचन
अभिनन्दन्ति = अभि + √नन्द् + लट् प्रथमपुरुष बहुवचन
सम्भावयन्ति = सम् + √भू + णिच् लट् प्रथमपुरुष बहुवचन
आशङ्कन्ते = आङ् + √शङ्क्, लट् प्रथमपुरुष बहुवचन (आत्मने०)
गणयन्ति = √गण + णिच् + लट् प्रथमपुरुष बहुवचन
स्थापयन्ति = √स्था + पुक् + णिच् + लट् प्रथमपुरुष बहुवचन
कुर्वन्ति = √कृ + लट् प्रथमपुरुष बहुवचन
मन्यन्ते = √मन्, लट् प्रथमपुरुष बहुवचन आत्मने०
आकलयन्ति = आङ् + √कल् + णिच् + लट् प्रथमपुरुष बहु०
पूजयन्ति = √पूज् + णिच् + लट् प्रथमपुरुष बहुवचन
मानयन्ति = √मान् + णिच् + लट् प्रथमपुरुष बहुवचन
अर्चयन्ति = √अर्च् + णिच् + लट् प्रथमपुरुष बहुवचन
अभिवादयन्ति = अभि + वद् + णिच् + लट् प्रथमपुरुष बहु०
अभ्युत्तिष्ठन्ति = अभि + उत् + √स्था + लट् प्रथमपुरुष बहु०
उपहसन्ति = उप + √हस् + लट् प्रथमपुरुष बहुवचन
कुप्यन्ति = √कुप् + लट् प्रथमपुरुष बहुवचन
अभिनन्दन्ति = अभि + √नन्द् लट् प्रथमपुरुष बहुवचन
आलपन्ति = आङ् √लप् + लट् प्रथमपुरुष बहुवचन

संवर्धयन्ति = सम् + √वृध् + लट् प्रथमपुरुष बहुवचन
अवतिष्ठन्ते = अव + √स्था + लट् प्रथमपुरुष बहु० (आत्मने०)
ददति = √दा + लट् प्रथमपुरुष बहुवचन
उपजनयन्ति = उप + √जन् + णिच् + लट् प्रथमपुरुष बहु०
मन्यन्ते = √मन् + लट् प्रथमपुरुष बहुवचन (आत्मने०)
उद्भावयति = उद् + √भू + णिच् + लट् प्रथमपुरुष एकवचन
प्रयतेथाः = प्र + √यत्, विधिलिङ् मध्यमपुरुष एकवचन (आत्मने०)
उपहस्यसे = उप + √हस् + यक् + लट् मध्यमपुरुष एकवचन
निन्द्यसे = √निन्द् + यक् + कर्मणि + लट् + मध्यमपुरुष एकवचन
धिक्क्रियसे = धिक् + √ कृ + यक् कर्मणि + लट् + म०पु० एक०
उपालभ्यसे = उप + आङ् + √लभ् + लट् म०पु० एक० कर्मणि
शोच्यसे = √शुच् + यक् + कर्मणि लट् मध्यमपुरुष एकवचन
प्रकाश्यसे = प्र + √काश् + यक् + कर्मणि + लट् म०पु० एक०
प्रतार्यसे = प्र + √तृ + यक् + लट् मध्यमपुरुष एकवचन
आस्वाद्यसे = आङ् + √स्वद् + यक् + कर्मणि + लट् म०पु० एक०
अवलुप्यसे = अव + √लुप् + यक् + कर्मणि + म०पु० एक०
वञ्चसे = √वञ्च् + यक् + कर्मणि + लट् + मध्यमपुरुष एकवचन
प्रलोभ्यसे = √प्र + √लुभ् + यक् + कर्मणि + लट् म०पु० एक०
विडम्ब्यसे = वि √डम्ब् + कर्मणि लट् मध्यमपुरुष एकवचन
नर्त्यसे = √नृत् + यक् + कर्मणि लट् मध्यमपुरुष एकवचन
क्रियसे = √कृ + यक् + कर्मणि + लट् मध्यमपुरुष एकवचन
आक्षिप्यसे = आङ् + √क्षिप् + यक् + कर्मणि लट् म०पु० एक०
अवकृष्यसे = अव + √ कृष् + यक् + कर्मणि लट् म०पु० एक०
मदयन्ति = √मद् + णिच् + लट् प्रथमपुरुष बहुवचन
अभिधीयसे = अभि + √ धा + कर्मणि आत्मने० लट् म०पु० एक०
उपशशाम = उप + √शम् + लिट् प्रथमपुरुष एकवचन
अनुभवतु = अनु √भू + लोट् प्रथमपुरुष एकवचन
उद्वह = उत् + √वह् + लोट् मध्यमपुरुष एकवचन
उन्नमय = उत् + √नम् + लोट् मध्यमपुरुष एकवचन
पुनर्विजयस्व = पुनः + वि + √जि + लोट् + म०पु० एक०
आजगाम = आङ् + √गम् + लिट् प्रथमपुरुष एकवचन
अवनमय = अव + √नम् + लोट् मध्यमपुरुष एकवचन

कादम्बरी (शुकनासोपदेश) में कृदन्त

समतिक्रामत्सु = सम् + अति + √क्रम् + शप् + शतृ सप्तमी, बहु0
समुपस्थितः = सम् + उप + √स्था + क्त
आगतम् = आङ् + √गम् + क्त
आरूढः = आङ् + √रुह् + क्त
कर्तुम् = √कृ + तुमुन्
इच्छन् = √इष् + शतृ
विदितम् = √विद् + क्त
वेदितव्यम् = √विद् + तव्यत्
अधीतम् = अधि + √इङ् + क्त
उपदेष्टव्यम् = उप + √दिश् + तव्यत्
भेद्यम् = √भिद् + ण्यत्
उच्छेद्यम् = उत् + √छिद् + यत्
उपनेयम् = उप + √नी + यत्
साध्यम् = √सिध् > सेध् > साध् + णिच् + यत्
हार्यः = √हृ + ण्यत्
गम्यः = √गम् + यत्
वध्यः = √ हन् (वध्) + ण्यत्
प्रबोधः = प्र + √बुध् + घञ्
सन्निपातः = सम् + नि + √पत् + घञ्
समुद्भूता = सम् + उत् + √भू + क्त + टाप्
आस्वाद्यमानानि = आङ् + √स्वद् + यक् + मुक् + शानच्
प्रवर्तकः = प्र + √वृत् + ण्वुल्
अत्यासङ्गः = अति + आङ् + √सञ्ज् + घञ्
अपगतम् = अप + √गम् + क्त
भव्यः = √भू + यत्
स्थितम् = √स्था + क्त
जातम् = √जन् + क्त
अमलीकुर्वन् = अमल + च्वि + √कृ + शतृ
आस्वादितः = आङ् + √स्वद् + णिच् + क्त
उपदिष्टम् = उप + √दिश् + इट् क्त
उपजातम् = उप + √जन् + क्त
करणम् = √कृ + ल्युट्
अतीतम् = अति + √इण् + क्त
उपदेष्टारः = उप + √दिश् + तृच् (प्रथमा बहुवचन)
उपदिश्यमानम् = उप + √दिश् + यक् + मुक् + शानच्
श्रृण्वन्तः = √श्रु + शतृ प्रथमा, बहुवचन
निमीलितम् = नि + √मील् + क्त
अवधीरयन्तः = अव + √धीर् + णिच् + शतृ
अभिनिवेशः = अभि + नि + √विश् + घञ्
गृहीत्वा = √ग्रह + क्त्वा
उद्गता = उद् + √गम् + क्त + टाप्
लब्धः = √लभ् + क्त
उल्लासिता = उत् + √लस् + णिच् + क्त + टाप्
विधृता = वि + √धृ + क्त + टाप्
परिपालिता = परि + √पाल् + इट् + क्त + टाप्
पश्यतः = √दृश् + शतृ + षष्ठी विभक्ति, एक0
विधृता + वि + √धृ + क्त + टाप्
मत्ता = √मद् + क्त + टाप्
उपशिक्षितुम् = उप + √शिक्ष् + तुमुन्
आश्रिता = आङ् + √श्रि + क्त + टाप्
ग्रहीतुम् = √ग्रह् + तुमुन्
समुपचितानि = सम् + उप + √चि + क्त प्रथमा, बहु0
गतिः = √गम् + क्तिन्
प्रकटिता = प्र + √कट् + क्त + टाप्
हार्यम् + √हृ + ण्यत्
दुष्टा = √दुष् + क्त + टाप्
दर्शितः = √दृश् + णिच् + क्त
उच्छ्रायः = उत् + √श्रि + घञ्
उन्मत्तः = उत् + √मद् + क्त
परिगृहीतुम् = परि + √ग्रह् + तुमुन्
अभिजातम् = अभि + √जन् + क्त
दातारम् = √दा + तृच् द्वितीया, एकवचन
विनीतम् = वि + √नी + क्त
दर्शयन्ती = √दृश् + णिच् + शतृ + ङीप्
उपजनयन्ती = उप + √जन् + णिच् + शतृ + ङीप्
उन्नतिम् = उत् + √नम् + क्तिन्, द्वितीया, एक0
आदधाना = आङ् + √धा + शानच् + टाप्

दधाना = √धा + शानच् + टाप्
आहरन्ती = आङ् + √हृ + शतृ + ङीप्
गीतिः = √गै + क्तिन्
उद्गतिः = उद् + √गम् + क्तिन्
उत्सारणम् = उत् + √सृ + णिच् + ल्युट्
प्रस्तावना = प्र + √स्तु + णिच् + युच् (अन) + टाप्
वध्यः = √हन् (वध् आदेश) + यत्
परिचितया = परि + √चि + क्त + टाप्, तृतीया, एक0
उपगूढः = उप + √गूह् + क्त
विप्रलब्धः = वि + प्र + √लभ् + क्त
नियतम् = नि + √यम् + क्त
आलेख्यम् = आङ् + √लिख् + ण्यत्
उत्कीर्णा = उत् + √कॄ + क्त + टाप्
श्रुता = √श्रु + क्त + टाप्
चिन्तिता = √चिन्त् + इट् + क्त + टाप्
परिगृहीता = परि + √ग्रह् + क्त + टाप्
विक्लवाः = वि + √क्लु + अच् प्रथमा, बहुवचन
अधिष्ठानम् = अधि + √स्था + ल्युट्
क्षान्तिः = √क्षम् + क्तिन्
वादाः = √वद् + घञ् + प्रथमा, बहु0
प्रलोभ्यमानाः = प्र + √लुभ् + णिच् + यक् + शानच्
बाध्यमानाः = √बाध् + यक् + शानच्
आयास्यमानाः = आङ् + √यस् + णिच् + यक् + शानच्
लब्धः = √लभ् + क्त
प्रसरः = प्र + √सृ + अप्
क्रियमाणाः = √कृ + यक् + शानच्
आहताः = आङ् + √हन् + क्त
पच्यमाना = √पच् + यक् + शानच्
भग्ना = √भञ्ज् + क्त + टाप्
आसन्नः = आङ् + √सद् + क्त
दंष्ट्राः = √दंश् + क्त, प्रथमा, बहुवचन
कृताः = कृ + क्त प्रथमा बहुवचन
मूर्च्छिताः = √मूर्च्छ् + क्त प्रथमा, बहुवचन
वर्धितम् = √वृध् + क्त

प्रेरिताः = प्र + √ईर् + णिच् + क्त, प्रथमा बहुवचन
स्थितानि = √स्था + क्त, प्रथमा, बहुवचन
प्रसवाः = प्र + √सू + अप् प्रथमा बहुवचन
दूरदर्शिनः = दूर + √दृश् + णिनि प्रथमा, बहुवचन
उपसृष्टाः = उप + √सृज् + क्त प्रथमा बहुवचन
अधिष्ठितानि = अधि + √स्था + क्त प्रथमा, बहुवचन
प्रेतानां = प्र + √इण् + क्त, षष्ठी बहुवचन
श्रूयमाणाः = √श्रु + यक् + शानच्, प्रथमा बहुवचन
अध्यवसायः = अधि + अव + √सो + घञ्
चिन्त्यमानाः = √चिन्त् + यक् + शानच्
आपूर्वमाणाः = आङ् + √पुर्व् + यक् + शानच्
आध्माताः = आङ् + √ध्मा + क्त + टाप्
उपगताः = उप + √गम् + क्त प्रथमा बहुवचन
अवस्थिताः = अव + √स्था + क्त प्रथमा बहुवचन
पतितम् = √पत् + क्त
निष्पादनम् = निस् + √पद् + ल्युट्
आस्थानम् + आङ् + √स्था + ल्युट्
अभिगमनम् = अभि + √गम् + ल्युट्
प्रमत्तताम् = प्र + √मद् + क्त + तल् + टाप् द्वितीया, एकवचन
व्यसनम् = वि + √अस् + ल्युट्
अवधीरणम् = अव + √धीर् + ल्युट्
प्रणेय = प्र + √नी + यत्
उपसेव्यः = उप + √सेव् + ण्यत्
अभिसक्तिम् = अभि + √सञ्ज् +क्तिन्, द्वितीया, एकवचन
अवकर्णनम् = अव + √कर्ण् + णिच् + ल्युट्
अनुभावः = अनु + √भू + घञ्
पराभवसहः = परा + भव + √सह् + अच्
अवमाननम् = अव + √मान् + ल्युट्
ख्यातिम् = √ख्या + क्तिन् द्वितीया, एकवचन
उत्साहः = उत् + √सह् + घञ्
ज्ञः = √ज्ञा + क
विहसद्भिः = वि + √हस् + शतृ तृतीया बहुवचन
प्रतारणे = प्र + √तॄ + णिच् + ल्युट्, सप्तमी, एकवचन।
प्रतार्यमाणाः = प्र + √तॄ + णिच् + यक् + शानच्
आरोपितः = आङ् + √रुह् + णिच् + क्त

अभिमानः = अभि + √मन् + घञ्
दिव्याः = √दिव् + यत् + प्रथमा, बहु0
अवतीर्णम् = अव + √तॄ + क्त
उत्प्रेक्षमाणः = उत् + प्र + √ईक्ष् + शानच्
प्रारब्धा = प्र + आङ् + √ रभ् + क्त + टाप्
उपहास्यः = उप + √हस् + ण्यत्
क्रियमाणा = √कृ + यक् + शानच् + टाप्
अध्यारोपणम् = अधि + आङ् + √रुह् + णिच्, ल्युट्
विप्रतारणा = वि + प्र + √तॄ + णिच् + युच् (अन) + टाप्
सम्भूता = सम् + √भू + क्त + टाप्
सम्भावना = सम् + भू + णिच् + युच् (अन) + टाप्
उपहताः = उप + √हन् + क्त, प्रथमा, बहुवचन
प्रविष्टम् = प्र + √विश् + क्त
दर्शनस्य + √दृश् + ल्युट्, षष्ठी एकवचन
प्रदानम् = प्र + √दा + ल्युट्
दृष्टिपातः = दृष्टि + √पत् + घञ्
सम्भाषणम् = सम् + √भाष् + ल्युट्
संविभागस्य = सम् + वि + √भज् + घञ्, षष्ठी, एक0
स्पर्शम् = √स्पृश् + घञ्, द्वितीया, एकवचन
पावनम् = √पूञ् + णिच् + ल्युट्
जातिः = √जन् + क्तिन्
अर्चनीयान् = √अर्च् + अनीयर्
अभिवादनार्हः = अभिवादन + √अर्ह् + अच्
प्रलपितम् = प्र + √लप् + क्त
परिभवः = परि + √भू + अप्
हितवादी = हित + √वद् + णिनि
आप्तता = √आप् + क्त + तल् + टाप्
उपरचितः = उप + √रच् + क्त
विगतम् = वि + √गम् + क्त
कर्त्तव्यम् = √कृ + तव्यत्
अभिचारस्य = अभि + √चर् + घञ्, षष्ठी, एक0
अभिसन्धाने = अभि + सम् + √धा + ल्युट्, सप्तमी, एक0
उपदेष्टारः = उप + √दिश् + तृच्, प्रथमा, बहु0
भुक्ता = √भुज् + क्त + टाप्
आसक्तिः = आङ् + √सञ्ज् + क्तिन्
मारणम् = √मृ + णिच् + ल्युट्
अभियोगः = अभि + √युज् + घञ्
अनुरक्ताः = अनु + √रञ्ज् + क्त, प्रथमा, बहुवचन
उच्छेद्याः = उत् + √छिद् + ण्यत् प्रथमा, बहुवचन
समारोपिताः = सम् + आङ् + √रुह् + णिच् + क्त
कृतवान् = कृ + क्तवतु
अभिजातम् = अभि + √जन् + क्त
दुर्विनीता = दुर् + वि + √नी + क्त + टाप्
क्रियमाणम् = √कृ + यक् + शानच्, द्वितीया, एकवचन
अभिषेकः = अभि + √सिच् + घञ्
आगतम् = आङ् + √गम् + क्त
ऊढाम् = √वह् + क्त = टाप् द्वितीया, एकवचन
प्रारब्धम् = प्र + आङ् + √रभ् + क्त
परिभ्रमन् = परि + √भ्रम् + शतृ
विजिताम् = वि + √जि + क्त + टाप्, द्वितीया, एक0
प्रतापम् = प्र + √तप् + घञ्, द्वितीया, एक0
आरोपयितुम् = आङ् + √रुह् + णिच् + तुमुन्
आरुढः = आङ् + √रुह् + क्त
प्रतापः = प्र + √तप् + घञ्
त्रैलोक्यदर्शी = त्रैलोक्य + √दृश् + णिनि
सिद्धः = √सिध् + क्त
आदेशः = आङ् + √दिश् + घञ्
अभिधाय = अभि + √धा + ल्यप्
प्रक्षालितः = प्र + √क्षल् + णिच् + क्त
उन्मीलितः = उद् + √मील् + णिच् + क्त
स्वच्छीकृतः = स्वच्छ = च्वि + √कृ + क्त
निर्मृष्टः = निर् + √मृज् + क्त
अभिषिक्तः = अभि + √सिच् + क्त
अभिलिप्तः = अभि + √ लिप् + क्त
अलङ्कृतम् = अलम् + √कृ + क्त
कृतः = √कृ + क्त
उद्भाषितः = उद् + √भास् + णिच् +क्त
स्थित्वा = √स्था + क्त्वा

कादम्बरी (शुकनासोपदेश) में तद्धित

यौवराज्यम् = युवराज + ष्यञ्
निसर्गतः = निसर्ग + तसिल्
ऐश्वर्यम् = ईश्वर + ष्यञ्
अन्धत्वम् = अन्ध + त्व
ईश्वरत्वम् = ईश्वर + त्व
शक्तित्वम् = शक्ति + त्व
कालुष्यम् = कलुष + ष्यञ्
कषायितम् = कषाय + इतच्
अधिकतरम् = अधिक + तरप्
मलिनम् = मल + इनच्
अमलीकुर्वन् = अमल + च्वि + √कृ + शतृ
वैरूप्यम् = विरूप + ष्यञ्
वृद्धत्वम् = वृद्ध + त्व
ग्राम्यः = ग्राम + यत्
प्रचण्डतरीभवति = प्रचण्ड + तरप् + च्वि + √भू + तिप् (लट्)।
चञ्चलताम् = चञ्चल + तल् + द्वितीया, एक0।
नैष्ठुर्यम् = निष्ठुर + ष्यञ् + द्वितीया, एक0।
वैदग्ध्यम् = विदग्ध + ष्यञ् + द्वितीया, एक0।
विशेषज्ञताम् = विशेषज्ञ + तल् + टाप् + द्वितीया, एक0।
प्रमाणीकरोति = प्रमाण + च्वि + √कृ + तिप् + लट्।
पारुष्यम् = परुष + ष्यञ्
विश्वरूपत्वम् = विश्वरूप + त्व
उन्मत्तीकरोति = उन्मत्त + च्वि + √कृ + तिप् (लट्)
सरस्वती = सरस् + मतुप् + ङीप्
गुणवन्तम् = गुण + मतुप् + द्वितीया, एक0
पातकिनम् = पातक + इनि + द्वितीया, एक0
मनस्विनम् = मनस् + विनि, द्वितीया, एक0
जाड्यम् = जड + ष्यञ्
स्वभावताम् = स्वभाव + तल् + द्वितीया, एक0
ईश्वरताम् = ईश्वर + तल् + द्वितीया, एक0
प्रकृतित्वम् = प्रकृति + त्व
लघिमानम् = लघु + इमनिच्, द्वितीया, एक0
विग्रहवती = विग्रह + मतुप् + ङीप्
रेणुमयी = रेणु + मयट् + ङीप्
कलुषीकरोति = कलुष + च्वि + √कृ + तिप् (लट्)
मलिनम् = मल + इनच् + द्वितीया, एक0
करिणः = कर + इनि + षष्ठी, एक0।
पुस्तमयी = पुस्त + मयट् + ङीप्
दाक्षिण्यम् = दक्षिण + ष्यञ्
मलिनीक्रियते = मलिन + च्वि + √कृ + यक् + त (लट्)
मनस्विन् = मनस् + विनि
चञ्चलतया = चञ्चल + तल् + तृतीया, एक0
सहस्रताम् = सहस्र + तल् + द्वितीया, एक0
विह्वलताम् = विह्वल + तल् + द्वितीया, एक0
तेजस्विनः = तेजस् + विनि + प्रथमा, बहु0
निश्चलीकृताः = निश्चल + च्वि + √कृ + क्त, प्रथमा, बहु0
कनकमयम् = कनक + मयट् + द्वितीया, एक0।
तैक्ष्ण्यम् = तीक्ष्ण + ष्यञ्
तैमिरिकाः = तिमिर + ठक् + प्रथमा, बहु0।
शरव्यताम् = शरव्य + तल् + द्वितीया, एक0।
वैदग्ध्यम् = विदग्ध + ष्यञ्
प्रमत्तताम् = प्रमत्त + तल् + टाप् + द्वितीया, एकवचन
शौर्यम् = शूर + ष्यञ्
भृत्यताम् = भृत्य + तल् + टाप् + द्वितीया, एक0।
रसिकता = रसिक + तल् + टाप्
महानुभावता = महानुभाव + तल् + टाप्
स्वच्छन्दताम् = स्वच्छन्द + तल् + टाप् + द्वितीया, एक0।
प्रभुत्वम् = प्रभु + त्व
महासत्त्वता = महासत्त्व + तल् + टाप्
देवता = देव + तल् + टाप्
अन्तरितः = अन्तर + इतच्
वैक्लव्यम् = विक्लव + ष्यञ्
मित्रताम् = मित्र + तल् + टाप् + द्वितीया, एक0
कौटिल्यम् = कुटिल + ष्यञ्
मुखरीकृतवान् = मुखर + च्वि + कृ + क्तवतु
स्वच्छीकृतः = स्वच्छ + च्वि + कृ + क्त

कादम्बरी (शुकनासोपदेश) में सन्धि

- **यौवराज्य + अभिषेकम्** = यौवराज्याभिषेकम् (दीर्घसन्धि)
- **वेदितव्यस्य + अधीतम्** = वेदितव्यस्याधीतम् (दीर्घसन्धि)
- **न + अल्पम्** = नाल्पम् (दीर्घसन्धि)
- **अपि + उपदेष्टव्यम्** = अप्युपदेष्टव्यम् (यण्सन्धि)
- **एव + अभानुभेद्यम्** = एवाभानुभेद्यम् (दीर्घसन्धि)
- **रत्न + आलोकः** = रत्नालोकः (दीर्घसन्धि)
- **आलोक + उच्छेद्यम्** = आलोकोच्छेद्यम् (गुणसन्धि)
- **प्रभा + अपनेयम्** = प्रभापनेयम् (दीर्घसन्धि)
- **अपरिणाम + उपशमः** = अपरिणामोपशमः (गुणसन्धि)
- **तिमिर + अन्धत्वम्** = तिमिरान्धत्वम् (दीर्घसन्धि)
- **अशिशिर + उपचारहार्यः** = अशिशिरोपचारहार्यः (गुणसन्धि)
- **उपचारहार्यः + अतितीव्रः** = उपचारहार्योऽतितीव्रः (विसर्ग + पूर्वरूपसन्धि)
- **ज्वर + ऊष्मा** = ज्वरोष्मा (गुणसन्धि)
- **विष + आस्वादः** = विषास्वादः (दीर्घसन्धि)
- **अक्षपा + अवसानप्रबोधा** = अक्षपावसानप्रबोधा (दीर्घसन्धि)
- **भवति + इति** = भवतीति (दीर्घसन्धि)
- **विस्तरेण + अभिधीयसे** = विस्तरेणाभिधीयसे (दीर्घसन्धि)
- **च + इति** = चेति (गुणसन्धि)
- **महती + इयम्** = महतीयम् (दीर्घसन्धि)
- **खलु + अनर्थम्** = खल्वनर्थम् (यण्सन्धि)
- **सर्व + अविनयानाम्** = सर्वाविनयानाम् (दीर्घसन्धि)
- **एक + एकम्** = एकैकम् (वृद्धिसन्धि)
- **यौवन + आरम्भे** = यौवनारम्भे (दीर्घसन्धि)
- **निर्मला + अपि** = निर्मलापि (दीर्घसन्धि)
- **धवलता + अपि** = धवलतापि (दीर्घसन्धि)
- **सरागा + इव** = सरागेव (गुणसन्धि)
- **वात्या + इव** = वात्येव (गुणसन्धि)
- **दुरन्ता + इयम्** = दुरन्तेयम् (गुणसन्धि)
- **कषायित + आत्मनः** = कषायितात्मनः (दीर्घसन्धि)
- **आत्मनस् + च** = आत्मनश्च (व्यञ्जनसन्धि)
- **सलिलानि + इव** = सलिलानीव (दीर्घसन्धि)
- **तानि + एव** = तान्येव (यण्सन्धि)
- **विषयस्वरूपाणि + आस्वाद्यमानानि** = विषयस्वरूपाण्या-स्वाद्यमानानि (यण्सन्धि)
- **मधुरतराणि + आपतन्ति** = मधुरतराण्यापतन्ति (यण्सन्धि)
- **इव + उन्मार्गः** = इवोन्मार्गः (गुणसन्धि)
- **अति + आसङ्गः** = अत्यासङ्गः (यण्सन्धि)
- **भवादृशाः + एव** = भवादृशा एव (विसर्गसन्धि)
- **भाजनानि + उपदेशानाम्** = भाजनान्युपदेशानाम् (यण्सन्धि)
- **स्फटिकमणौ + इव** = स्फटिकमणाविव (अयादिसन्धि)
- **सुखेन + उपदेशगुणाः** = सुखेनोपदेशगुणाः (गुणसन्धि)
- **शङ्ख + आभरणम्** = शङ्खाभरणम् (दीर्घसन्धि)
- **अपि + अन्धकारम्** = अप्यन्धकारम् (यण्सन्धि)
- **निशाकरः + इव** = निशाकर इव (विसर्गसन्धि)
- **गुरु + उपदेशः** = गुरूपदेशः (दीर्घसन्धि)
- **परिणामः + इव** = परिणाम इव (विसर्गसन्धि)
- **च + अनास्वादितम्** = चानास्वादितम् (दीर्घसन्धि)
- **गलति + उपदिष्टम्** = गलत्युपदिष्टम् (यण्सन्धि)
- **दुष्प्रकृतेः + अन्वयः** = दुष्प्रकृतेरन्वयः (विसर्गसन्धि)
- **वा + अविनयस्य** = वाविनयस्य (दीर्घसन्धि)
- **प्रशमहेतुना + अपि** = प्रशमहेतुनापि (दीर्घसन्धि)
- **वडवा + अनलः** = वडवानलः (दीघसन्धि)
- **गुरूपदेशः (स्) + च** = गुरूपदेशश्च (व्यञ्जनसन्धि)
- **न + उद्वेगकरः** = नोद्वेगकरः (गुणसन्धि)
- **प्रतिशब्दः + इव** = प्रतिशब्द इव (विसर्गसन्धि)
- **जनः + भयात्** = जनो भयात् (उत्वसन्धि, विसर्गसन्धि)
- **श्रवणविवराः (स्) + च** = श्रवणविवराश्च (श्चुत्वसन्धि)
- **च + उपदिश्यमानम्** = चोपदिश्यमानम् (गुणसन्धि)
- **हित + उपदेशदायिनः** = हितोपदेशदायिनः (गुणसन्धि)
- **मूर्च्छा + अन्धकारिता** = मूर्च्छान्धकारिता (दीर्घसन्धि)
- **अलीक + अभिमानम्** = अलीकाभिमानम् (दीर्घसन्धि)
- **अभिमान + उन्मादः** = अभिमानोन्मादः (गुणसन्धि)
- **कल्याण + अभिनिवेशीम्** = कल्याणाभिनिवेशीम् (दीर्घसन्धि)
- **मण्डल + उत्प्लवनम्** = मण्डलोत्प्लवनम् (गुणसन्धि)
- **कौस्तुभमणेः + अतिनैष्ठुर्यम्** = कौस्तुभमणेरतिनैष्ठुर्यम् (विसर्गसन्धि)
- **इति + एतानि** = इत्येतानि (यण्सन्धि)

- **गृहीत्वा + एव** = गृहीत्वैव (वृद्धि)
- **एव + उद्गता** = एवोद्गता (गुण)
- **हि + एवम्** = ह्येवम् (यण्)
- **यथा + इयम्** = यथेयम् (गुण)
- **लब्धा + अपि** = लब्धापि (दीर्घ)
- **कृता + अपि** = कृतापि (दीर्घ)
- **सहस्र + उल्लासितम्** = सहस्रोल्लासितम् (गुण)
- **विधृता + अपि** = विधृतापि (दीर्घ)
- **विधृतापि + अपक्रामति** = विधृताप्यपक्रामति (यण्)
- **दुर्दिन + अन्धकारः** = दुर्दिनान्धकारः (दीर्घ)
- **परिपालिता + अपि** = परिपालितापि (दीर्घ)
- **न + अभिजनम्** = नाभिजनम् (दीर्घ)
- **न + आचारम्** = नाचारम् (दीर्घ)
- **गन्धर्वनगरलेखा + इव** = गन्धर्वनगरलेखेव (गुण)
- **पश्यतः + एव** = पश्यत एव (विसर्ग)
- **अद्य + अपि** = अद्यापि (दीर्घ)
- **अद्यापि + आरूढम्** = अद्याप्यारूढम् (यण्)
- **परिवर्त + आवर्तः** = परिवर्तावर्तः (दीर्घ)
- **कण्टकक्षता + इव** = कण्टकक्षतेव (गुण)
- **विधृता + अपि** = विधृतापि (दीर्घ)
- **परम + ईश्वरः** = परमेश्वरः (गुण)
- **मधुपानमत्ता + इव** = मधुपानमत्तेव (गुण)
- **इव + उपशिक्षितुम्** = इवोपशिक्षितुम् (गुण)
- **दिवस + अन्तम्** = दिवसान्तम् (दीर्घ)
- **लता + इव** = लतेव (गुण)
- **गङ्गा + इव** = गङ्गेव (गुण)
- **वसुजननी + अपि** = वसुजनन्यपि (यण्)
- **दिवसकरगतिः + इव** = दिवसकरगतिरिव (विसर्ग)
- **पातालगुहा + इव** = पातालगुहेव (गुण)
- **हिडिम्बा + इव** = हिडिम्बेव (गुण)
- **साहस + एकहार्यम्** = साहसैकहार्यम् (वृद्धि)
- **प्रावृट् + इव** = प्रावृडिव (व्यञ्जनसन्धि)
- **इव + अचिरद्युतिकारिणी** = इवाचिरद्युतिकारिणी (दीर्घ)
- **पिशाची + इव** = पिशाचीव (दीर्घ)
- **दर्शित + अनेक** = दर्शितानेक (दीर्घ)
- **पुरुष + उच्छ्राया** = पुरुषोच्छ्राया (गुण)
- **ईर्ष्यया + इव** = ईर्ष्ययेव (गुण)
- **न + आलिङ्गति** = नालिङ्गति (दीर्घ)
- **न + उपसर्पति** = नोपसर्पति (गुण)
- **इव + उपहसति** = इवोपहसति (गुण)
- **च + इन्द्रजालम्** = चेन्द्रजालम् (गुण)
- **आरोपयन्ती + अपि** = आरोपयन्त्यपि (यण्)
- **आदधाना + अपि** = आदधानापि (दीर्घ)
- **सम्भवा + अपि** = सम्भवापि (दीर्घ)
- **दधाना + अपि** = दधानापि (दीर्घ)
- **अपि + अशिवः** = अप्यशिवः (यण्)
- **बल + उपचयम्** = बलोपचयम् (गुण)
- **आहरन्ती + अपि** = आहरन्त्यपि (यण्)
- **सहोदरा + अपि** = सहोदरापि (दीर्घ)
- **विग्रहवती + अपि** = विग्रहवत्यपि (यण्)
- **पुरुषोत्तमरता + अपि** = पुरुषोत्तमरतापि (दीर्घ)
- **रेणुमयी + इव** = रेणुमयीव (दीर्घ)
- **च + इयम्** = चेयम् (गुण)
- **दीपशिखा + इव** = दीपशिखेव (गुण)
- **तिमिर + उद्गतिः** = तिमिरोद्गतिः (गुण)
- **सर्व + अविनयानाम्** = सर्वाविनयानाम् (दीर्घ)
- **हि + अपरिचितया** = ह्यपरिचितया (यण्)
- **गता + अपि** = गतापि (दीर्घ)
- **पुस्तमयी + अपि** = पुस्तमय्यपि (यण्)
- **अपि + इन्द्रजालम्** = अपीन्द्रजालम् (दीर्घ)
- **उत्कीर्णा + अपि** = उत्कीर्णापि (दीर्घ)
- **श्रुतापि + अभिसन्धत्ते** = श्रुताप्यभिसन्धत्ते (यण्)
- **चिन्तिता + अपि** = चिन्तितापि (दीर्घ)
- **एवंविधया + अपि** = एवंविधयापि (दीर्घ)
- **च + अनया** = चानया (दीर्घ)
- **एव + एषाम्** = एवैषाम् (वृद्धि)
- **धूमेन + इव** = धूमेनेव (गुण)
- **इव + अपह्रियते** = इवापह्रियते (दीर्घ)
- **इव + आच्छाद्यते** = इवाच्छाद्यते (दीर्घ)
- **मण्डलेन + इव** = मण्डलेनेव (गुण)

- **इव + अपसार्यते** = इवापसार्यते (दीर्घ)
- **पवनैः + इव** = पवनैरिव (विसर्ग)
- **इव + अपह्रियते** = इवापह्रियते (दीर्घ)
- **वेत्रदण्डैः + इव** = वेत्रदण्डैरिव (विसर्ग)
- **इव + उत्सार्यन्ते** = इवोत्सार्यन्ते (गुण)
- **कलकलैः + इव** = कलकलैरिव (विसर्ग)
- **पल्लवैः + इव** = पल्लवैरिव (विसर्ग)
- **खद्योत + उन्मेषः** = खद्योतोन्मेषः (गुण)
- **पञ्चभिः + अपि** = पञ्चभिरपि (विसर्ग)
- **अपि + अनेकाः** = अप्यनेकाः (यण्)
- **संख्यैः + इव** = संख्यैरिव (विसर्ग)
- **इव + इन्द्रियैः** = इवेन्द्रियैः (गुण)
- **इन्द्रियैः + आयास्यमानाः** = इन्द्रियैरायास्यमानाः (विसर्ग)
- **प्रसरेण + एकेन** = प्रसरेणैकेन (वृद्धि)
- **एकेन + अपि** = एकेनापि (दीर्घ)
- **इव + उपगतेन** = इवोपगतेन (गुण)
- **मनसा + आकुलीक्रियमाणा** = मनसाकुलीक्रियमाणा (दीर्घ)
- **ग्रहैः + इव** = ग्रहैरिव (विसर्ग)
- **भूतैः + इव** = भूतैरिव (विसर्ग)
- **इव + अभिभूयन्ते** = इवाभिभूयन्ते (दीर्घ)
- **मन्त्रैः + इव** = मन्त्रैरिव (विसर्ग)
- **इव + आवेश्यन्ते** = इवावेश्यन्ते (दीर्घ)
- **सत्त्वैः + इव** = सत्त्वैरिव (विसर्ग)
- **इव + अवष्टभ्यन्ते** = इवावष्टभ्यन्ते (दीर्घ)
- **वायुना + इव** = वायुनेव (गुण)
- **पिशाचैः + इव** = पिशाचैरिव (विसर्ग)
- **मदनशरैः + मर्माहताः** = मदनशरैर्मर्माहताः (विसर्ग)
- **धन + ऊष्मणा** = धनोष्मणा (गुण)
- **पच्यमानाः + इव** = पच्यमाना इव (विसर्ग)
- **इव + अङ्गानि** = इवाङ्गानि (दीर्घ)
- **कुलीराः + इव** = कुलीरा इव (विसर्ग)
- **पङ्गवः + इव** = पङ्गव इव (विसर्ग)
- **इव + अतिकृच्छ्रेण** = इवातिकृच्छ्रेण (दीर्घ)
- **सप्तच्छदतरवः + इव** = सप्तच्छदतरव इव (विसर्ग)
- **आसन्नमृत्यवः + इव** = आसन्नमृत्यव इव (विसर्ग)
- **न + अभिजानन्ति** = नाभिजानन्ति (दीर्घ)
- **उत्कुपितलोचनाः + इव** = उत्कुपितलोचना इव (विसर्ग)
- **न + ईक्षन्ते** = नेक्षन्ते (गुण)
- **कालदष्टाः + इव** = कालदष्टा इव (विसर्ग)
- **महामन्त्रैः + अपि** = महामन्त्रैरपि (विसर्ग)
- **आभरणानि + इव** = आभरणानीव (दीर्घ)
- **दुष्टवारणाः + इव** = दुष्टवारणा इव (विसर्ग)
- **गृह्णन्ति + उपदेशम्** = गृह्णन्त्युपदेशम् (यण्)
- **इषवः + इव** = इषव इव (विसर्ग)
- **दूरस्थितानि + अपि** = दूरस्थितान्यपि (यण्)
- **फलानि + इव** = फलानीव (दीर्घ)
- **मनोहर + आकृतयः** = मनोहराकृतयः (दीर्घ)
- **आकृतयो + अपि** = आकृतयोऽपि (पूर्वरूप)
- **श्मशान + अग्नयः** = श्मशानाग्नयः (दीर्घ)
- **इव + अतिरौद्रभूतयः** = इवातिरौद्रभूतयः (दीर्घ)
- **इव + अदूरदर्शिनः** = इवादूरदर्शिनः (दीर्घ)
- **क्षुद्र + अधिष्ठितभवनाः** = क्षुद्राधिष्ठितभवनाः (दीर्घ)
- **श्रूयमाणाः + अपि** = श्रूयमाणा अपि (विसर्ग)
- **इव + उद्वेजयन्ति** = इवोद्वेजयन्ति (गुण)
- **इव + उपद्रवम्** = इवोपद्रवम् (गुण)
- **पापेन + इव** = पापेनेव (गुण)
- **अवस्थास् + च** = अवस्थाश्च (श्चुत्वसन्धि)
- **अपि + आत्मानम्** = अप्यात्मानम् (यण्)
- **न + अवगच्छन्ति** = नावगच्छन्ति (दीर्घ)
- **विनोदः + इति** = विनोद इति (विसर्ग)
- **परदारा + अभिगमनम्** = परदाराभिगमनम् (दीर्घ)
- **श्रमः + इति** = श्रम इति (विसर्ग)
- **विलासः + इति** = विलास इति (विसर्ग)
- **अव्यसनिता + इति** = अव्यसनितेति (गुण)
- **सुख + उपसेव्यत्वम्** = सुखोपसेव्यत्वम् (गुण)
- **वेश्या + अभिसक्तिः** = वेश्याभिसक्तिः (दीर्घ)
- **रसिकता + इति** = रसिकतेति (गुण)
- **महानुभावता + इति** = महानुभावतेति (गुण)
- **क्षमा + इति** = क्षमेति (गुण)
- **देव + अवमाननम्** = देवावमाननम् (दीर्घ)

- **महासत्त्वता + इति** = महासत्त्वतेति (गुण)
- **तरलता + उत्साहः** = तरलतोत्साहः (गुण)
- **तथा + एव** = तथैव (वृद्धि)
- **इति + आत्मनि** = इत्यात्मनि (यण्)
- **आत्मनि + आरोपिताः** = आत्मन्यारोपिताः (यण्)
- **आरोपित + अलीकाः** = आरोपितालीकाः (दीर्घ)
- **अलीक + अभिमानाः** = अलीकाभिमानाः (दीर्घ)
- **मर्त्यधर्माणो + अपि** = मर्त्यधर्माणोऽपि (पूर्वरूप)
- **अंश + अवतीर्णम्** = अंशावतीर्णम् (दीर्घ)
- **दिव्य + उचितम्** = दिव्योचितम् (गुण)
- **जनस्य + उपहास्यताम्** = जनस्योपहास्यताम् (गुण)
- **च + अनुजीविनाः** = चानुजीविनाः (दीर्घ)
- **सम्भावना + उपहताः** = सम्भावनोपहताः (गुण)
- **उपहताः (स्) + च** = उपहताश्च (श्चुत्वसन्धि)
- **इव + आत्मा** = इवात्मा (दीर्घ)
- **त्वक् + अन्तरितम्** = त्वगन्तरितम् (व्यञ्जन)
- **अपि + अनुग्रहम्** = अप्यनुग्रहम् (यण्)
- **अपि + उपकारपक्षे** = अप्युपकारपक्षे (यण्)
- **गर्वनिर्भराः (स्) + च** = गर्वनिर्भराश्च (व्यञ्जन)
- **न + अर्चयन्ति** = नार्चयन्ति (दीर्घ)
- **नार्चयन्ति + अर्चनीयान्** = नार्चयन्त्यर्चनीयान् (यण्)
- **न + अभिवादयन्ति** = नाभिवादयन्ति (दीर्घ)
- **अभिवादयन्ति + अभिवादनार्हान्** = अभिवादयन्त्य-भिवादनार्हान् (यण्)
- **वृद्धजन + उपदेशम्** =वृद्धजनोपदेशम् (गुण)
- **इति + असूयन्ति** = इत्यसूयन्ति (यण्)
- **न + अभ्युत्तिष्ठन्ति** = नाभ्युत्तिष्ठन्ति (दीर्घ)
- **अभि + उत्तिष्ठन्ति** = अभ्युत्तिष्ठन्ति (यण्)
- **विषय + उपभोगम्** = विषयोपभोगम् (गुण)
- **इति + उपहसन्ति** = इत्युपहसन्ति (यण्)
- **विद्वत् + जनम्** = विद्वज्जनम् (व्यञ्जन सन्धि)
- **इति + असूयन्ति** = इत्यसूयन्ति (यण्)
- **सचिव + उपदेशाय** = सचिवोपदेशाय (गुण)
- **यो + अहर्निशम्** = योऽहर्निशम् (पूर्वरूप)
- **शास्त्रेषु + अभियोगः** = शास्त्रेष्वभियोगः (यण्)
- **न + उपलभ्यसे** = नोपलभ्यसे (गुण)
- **न + आस्वाद्यसे** = नास्वाद्यसे (दीर्घ)
- **न + अवलुप्यसे** = नावलुप्यसे (दीर्घ)
- **न + उन्मत्तीक्रियसे** = नोन्मत्तीक्रियसे (गुण)
- **न + आक्षिप्यसे** = नाक्षिप्यसे (दीर्घ)
- **न + अपह्रियसे** = नापह्रियसे (दीर्घ)
- **प्रकृत्या + एव** = प्रकृत्यैव (वृद्धि)
- **तथा + अपि** = तथापि (दीर्घ)
- **अभिषेक + अनन्तरम्** = अभिषेकानन्तरम् (दीर्घ)
- **त्रैलोक्यदर्शी + इव** = त्रैलोक्यदर्शीव (दीर्घ)
- **भवति + इति** = भवतीति (दीर्घ)
- **भवतीति + एतावद्** = भवतीत्येतावद् (यण्)
- **अभिधाय + उपशशाम** = अभिधायोपशशाम (गुण)

कादम्बरी (शुकनासोपदेश) में समास

यौवराज्याभिषेकम् = यौवराज्याय अभिषेकः तम् (तत्पुरुष)

उपकरण-सम्भार-संग्रहार्थम् = उपकरणानां सम्भारः तस्य संग्रहः तदर्थम् (षष्ठी तत्पु०)

आरूढविनयम् = आरूढः विनयः येन तम् (बहुव्रीहि)

विदितवेदितव्यस्य = विदितं वेदितव्यं तेन तस्य (बहुव्रीहि)

अधीतसर्वशास्त्रस्य = अधीतानि सर्वाणि शास्त्राणि येन तस्य (बहुव्रीहि)

अभानुभेद्यम् = न भानुना भेद्यः तम् (नञ् तत्पुरुष)

अरत्नालोकोच्छेद्यम् = न रत्नानाम् आलोकेन उच्छेद्यः तम् (नञ् तत्पुरुष)

अप्रदीपप्रभापनेयम् = न प्रदीपस्य प्रभया अपनेयः तम् (नञ् तत्पुरुष)

अतिगहनम् = गहनानि अतिक्रान्तः (अव्ययीभाव)

यौवनप्रभवम् = यौवनात् प्रभवम् (पञ्चमी तत्पु०)

अपरिणामोपशमः = न परिणामेन उपशमः यस्य (नञ् बहुव्रीहि)

लक्ष्मीमदः = लक्ष्म्याः मदः (षष्ठी तत्पुरुष)

अनञ्जनवर्त्तिसाध्यम् = न अञ्जनवर्तिना साध्यः तम् (नञ् तत्पुरुष)

ऐश्वर्यतिमिरान्धत्वम् = ऐश्वर्यमेव तिमिरः तेन अन्धः तस्य भावः (कर्मधारयमूलक तत्पु०)

अशिशिरोपचारहार्यः = न शिशिरैः उपचारैः हार्यः (नञ् तत्पुरुष)

अतितीव्रः = तीव्रम् अतिक्रान्तः (अव्ययीभाव)

दर्पदाहज्वरोष्मा = दर्पेण दाहः तस्मात् ज्वरः तस्य ऊष्मा (तत्पुरुष)

अमूलमन्त्रगम्यः = न मूलमन्त्रेण गम्यः (नञ् तत्पुरुष)

विषयविषास्वादमोहः = विषयाः एव विषः तस्य आस्वादः तेन मोहः (कर्मधारयमूलक तत्पुरुष)

अक्षपावसानप्रबोधा = न क्षपायाः अवसाने प्रबोधः यस्याः सा (नञ्बहुव्रीहि)

राज्यसुखसन्निपातनिद्रा = राज्यसुखमेव सन्निपातः तस्मात् निद्रा (कर्मधारयमूलक-पञ्चमी-तत्पुरुष)

गर्भेश्वरत्वम् = गर्भतः एव ईश्वरत्वम् (तत्पुरुष)

अभिनवयौवनत्वम् = अभिनवश्चासौ यौवनः तस्य भावः (कर्मधा०)

अप्रतिमरूपत्वम् = अप्रतिमः रूपः तस्य भावः (कर्मधा०)

अमानुषशक्तित्वम् = अमानुषी शक्तिः तस्य भावः (कर्मधारय) अथवा न मानुषस्य शक्तिरिति अमानुषशक्तिः, तस्याः भावः (नञ् तत्पुरुष)

अनर्थपरम्परा = अनर्थाणां परम्परा (षष्ठी तत्पुरुष)

सर्वाविनयानां = सर्वे अविनयाः तेषाम् (कर्मधारय)

यौवनारम्भे = यौवनस्य आरम्भः तस्मिन् (षष्ठी तत्पुरुष)

शास्त्रजलप्रक्षालननिर्मला = शास्त्राणि जलानि इव तैः प्रक्षालनं तेन निर्मला (कर्मधारयमूलक-तृतीया तत्पु०)

अनुज्झितधवलता = अनुज्झिता धवलता यस्याः सा (बहुव्रीहि)

शुष्कपत्रम् = शुष्कं च तत्पत्रम् (कर्मधारय)

समुद्भूतरजोभ्रान्तिः = समुद्भूता रजोभ्रान्तिः यस्यां सा (बहु०)

आत्मेच्छया = आत्मनः इच्छा तया (षष्ठी तत्पु०)

यौवनसमये = यौवनस्य समयः तस्मिन् (षष्ठी तत्पु०)

इन्द्रियहरिणहारिणी = इन्द्रियाणि एव हरिणाः तान् हरन्तीति सा इन्द्रियहरिणहारिणी (कर्मधारयमूलक उपपद तत्पु०)

अतिदुरन्ता = दुरन्तान् अतिक्रम्य वर्तते या सा (अव्ययीभाव)

उपभोगमृगतृष्णिका = उपभोग एव मृगतृष्णिका। (कर्मधारय)

नवयौवनकषायितात्मनः = नवयौवनेन कषायितः आत्मा येषां ते (बहुव्रीहि)

विषयस्वरूपाणि = विषयाणां स्वरूपाणि (षष्ठी तत्पु०)

दिङ्मोहः = दिशां मोहः (षष्ठी तत्पु०)

उन्मार्गप्रवर्त्तकः = उन्मार्गस्य प्रवर्त्तकः (षष्ठी तत्पुरुष)

अत्यासङ्गः = आसङ्गमतिक्रान्तः (अव्ययीभाव)

भवादृशाः = भवतः सदृशाः ये ते (बहुव्रीहि)

अपगतमले = अपगतः मलः यस्य तस्मिन् (बहुव्रीहि)

स्फटिकमणौ = स्फटिक एव मणिः तस्याम् (कर्मधा०) अथवा = स्फटिकाख्या मणिः तस्याम् (मध्यमपदलोपी समास)

रजनिकरगभस्तयः = रजनिकरस्य गभस्तयः इत्येते (उपमित कर्म०)

उपदेशगुणाः = उपदेशस्य गुणाः (षष्ठी तत्पु०)

गुरुवचनम् = गुरूणां वचनम् (षष्ठी तत्पु०)

शङ्खाभरणम् = शङ्खानाम् आभरणम् यस्य तम् (बहुव्रीहि)

आननशोभासमुदयम् = आनने शोभायाः समुदयः तम् (तत्पु०)

अतिमलिनम् = मलिनानि अतिक्रम्य वर्तते यः तम् (अव्ययीभाव)

प्रदोषसमयनिशाकरः = प्रदोषसमये निशाकरः (सुप्सुपा)

प्रशमहेतुः = प्रशमस्य हेतुः (षष्ठी तत्पु०)

वयःपरिणामः = वयसः परिणामः (षष्ठी तत्पु०)

शिरसिजजालम् = शिरसि जायन्ते इति शिरसिजाः तेषां जालम् (उपपदमूलक - षष्ठी तत्पु०)

गुणरूपेण = गुण एव रूपं तेन (कर्मधारय)

अनास्वादितविषयरसस्य = न आस्वादितः विषयरसः येन तस्य (बहुव्रीहि)

कुसुमशरप्रहारजर्जरिते = कुसुमशरस्य प्रहारः तेन जर्जरिते (षष्ठी तत्प, तृतीया तत्पु०)

अकारणम् = न कारणमिति (नञ्)

दुष्प्रकृतेः = दुष्टा प्रकृतिर्यस्य सः, तस्य (बहुव्रीहि)

चन्दनप्रभवः = चन्दनः तत्प्रभवो यस्य सः (बहुव्रीहि)

प्रशमहेतुना = प्रशमस्य हेतुः, तेन (षष्ठी तत्पु०)

गुरूपदेशः = गुरूणाम् उपदेशः (षष्ठी तत्पु०)

अखिलमलप्रक्षालनक्षमम् = अखिलानां मलानां प्रक्षालने क्षमः तम् (तत्पु०)

अजलं = न जलं यस्मिन् तत् (नञ्बहुव्रीहि)

अनुपजातपलितादिवैरूप्यम् = न उपजातं पलितादेः वैरूप्यम् यस्मिन् तत् (नञ्बहुव्रीहि)

अनारोपितमेदोदोषम् = न आरोपितः मेदो दोषो यस्मिन् तत् (नञ्बहुव्रीहि)

असुवर्णविरचनम् = न सुवर्णेन विरचनं यस्य तत् (नञ्बहुव्रीहि)

अग्राम्यम् = न ग्राम्यः यः तम् (नञ्बहुव्रीहि)

कर्णाभरणम् = कर्णयोः आभरणम् (षष्ठी तत्पु०)

अतीतज्योतिः = अतीतं ज्योतिर्यस्य सः (बहुव्रीहिः)

अनास्वादितविषयरसस्य = न आस्वादितः विषयरसः येन तस्य (बहुव्रीहि)

अकारणं = न कारणमिति (नञ् समास)

चन्दनप्रभवः = चन्दनात् प्रभवो यस्य सः (बहुव्रीहि)

प्रशमहेतुना = प्रशमस्य हेतुः यः तेन (षष्ठी तत्पु०)

वडवानलः = वडवाख्यः अनलः (मध्यमपदलोपी समास)

अहङ्कारदाहज्वरमूर्च्छान्धकारिता = अहङ्कारः दाहज्वर इव तेन या मूर्च्छा तया अन्धकारिता (कर्मधारयमूलक तृतीया तत्पुरुष)

राजप्रकृतिः = राज्ञां प्रकृतिः (षष्ठी तत्पु०)

अलीकाभिमानोन्मादकारीणि = अलीकश्चासौ अभिमानः तेन उन्मादः तत्कुर्वन्तीति तानि (कर्मधारयमूलक, उपपद समास)

राज्यविषविकारतन्द्राप्रदा = राज्यम् एव विषः तस्य विकारः राज्यविषविकारः तेन तन्द्रा तां प्रददातीति (कर्मधारय-तत्पुरुषमूलक उपपद समास)

राजलक्ष्मीः = राज्ञः लक्ष्मीः (षष्ठी तत्पु०)

कल्याणाभिनिवेशीम् = कल्याणस्य अभिनिवेशः यस्याः ताम्।

सुभटखड्गमण्डलोत्प्लवनविभ्रमभ्रमरी = सुभटानां खड्गमण्डलानि एव उत्प्लवनानि तेषु विभ्रमः यस्याः सा चासौ भ्रमरी (तत्पुरुषमूलक कर्मधारय)

पारिजातपल्लवेभ्यः = पारिजातस्य पल्लवानि तेभ्यः (षष्ठी तत्पु०)

इन्दुशकलात् = इन्दोः शकलं तस्मात् (षष्ठी तत्पु०)

एकान्तवक्रताम् = एकान्ता चासौ वक्रता ताम् (कर्मधारय)

मोहनशक्तिम् = मोहनाय शक्तिः ताम् (चतुर्थी तत्पु०)

कौस्तुभमणेः = कौस्तुभाख्या मणिः तस्याः (मध्यमपदलोपी समास)

अतिनैष्ठुर्यम् = नैष्ठुर्यम् अतिक्रम्य (अव्ययीभाव)

सहवासपरिचयवशात् = सहवासेन परिचयः तद्वशात् (तत्पु०)

विरहविनोदचिह्नानि = विरहस्य विनोदाय चिह्नानि (तत्पु०)

गन्धर्वनगरलेखा = गन्धर्वनगरस्य लेखा (षष्ठी तत्पु०)

आरूढमन्दरपरिवर्त्तावर्तभ्रान्तिजनितसंस्कारा = आरूढेन मन्दरेण यः परिवर्त्तः तस्य आवर्त्तेन या भ्रान्तिः तज्जनिताः संस्काराः यस्याः सा (बहुव्रीहि)

कमलिनीसञ्चरणव्यतिकरलग्ननलिननालकण्टकक्षता = कमलिनीसु सञ्चरणस्य व्यतिकरेण लग्नानां नलिननालानां कण्टकैः क्षता (तत्पुरुष)

अतिप्रयत्नविधृता = अतिप्रयत्नेन विधृता (तृतीया तत्पु०)

परमेश्वरगृहेषु = परमेश्वरस्य गृहं तेषु (षष्ठी तत्पु०)

विविधगन्धगजगण्डमधुपानमत्ता = विविधानां गन्धगजानां गण्डेभ्यः मधुपानेन मत्ता (तत्पु०)

असिधारासु = असीनां धाराः तासु (षष्ठी तत्पु०)

नारायणमूर्तिम् = नारायणस्य मूर्तिः ताम् (षष्ठी तत्पु०)

अप्रत्ययबहुला = न प्रत्ययः बहुलः यस्याः सा (नञ्बहुव्रीहि)

दिवसान्तकमलम् = दिवसान्ते कमलं (सुप्सुपा)

समुपचितमूलदण्डकोशमण्डलम् = समुपचितानि मूलदण्डकोशमण्डलानि यस्य तम् (बहुव्रीहि)

भूभुजम् = भुवं भुनक्ति इति तम् (उपपद०)

वसुजननी = वसूनां जननी (षष्ठी तत्पु०)

तरङ्गबुद्बुदचञ्चला = तरङ्गाणां बुद्बुदैः चञ्चला (तत्पु०)

दिवसकरगतिः = दिवसं करोति इति दिवसकरः तस्य गतिः (उपपदमूलक षष्ठी तत्पुरुषसमास)

प्रकटितविविधसंक्रान्तिः = प्रकटिताः विविधाः संक्रान्तयः यया सा (बहुव्रीहि)

पातालगुहा = पाताले गुहा (सुप्सुपा) अथवा पातालं गुहा इव (कर्मधारय)

तमोबहुला = तमः बहुलः यस्यां सा (बहुव्रीहि)

भीमसाहसैकहार्यहृदया = भीमसाहसैः एकहार्यं हृदयं यस्याः सा (बहुव्रीहि)

अचिरद्युतिकारिणी = अचिरं द्युतिं करोतीति (उपपद तत्पुरुष समास)

दुष्टपिशाची = दुष्टा च सा पिशाची (कर्मधारय)

दर्शितानेकपुरुषोच्छ्राया = दर्शितः अनेकपुरुषाणाम् उच्छ्रायः यया सा (बहुव्रीहि)

स्वल्पसत्वम् = स्वल्पं सत्त्वं यस्य तम् (बहुव्रीहि)

सरस्वतीपरिगृहीतम् = सरस्वत्या परिगृहीतम् (तृतीया तत्पु०)

अपवित्रम् - न पवित्रमिति (नञ्तत्पु०)

उदारसत्त्वम् = उदारं सत्त्वं यस्य तम् (बहुव्रीहि)

अमङ्गलम् = न मङ्गलमिति (नञ्तत्पु०)

सुजनं = शोभनश्चासौ जनः सुजनः तम् (कर्मधारय)

अनिमित्तम् = न निमित्तमिति (नञ्तत्पुरुष)

दुःस्वप्नम् = दुष्टश्चासौ स्वप्नः तम् (कर्मधारय)

पातकिनम् = पातकम् अस्य अस्ति इति तम् (उपपद समास)

परस्परविरुद्धम् = परस्परं विरुद्धमिति (कर्मधारय)

निजचरित्रम् = निजं च तच्चरित्रम् (कर्मधारय)

नीचस्वभावताम् = नीचश्चासौ स्वभावः तस्य भावः ताम् (कर्मधारयमूलक तत्पु० समास)

तोयराशिसम्भवा = तोयराशेः सम्भवः यस्याः सा (बहुव्रीहि)
अशिवप्रकृतित्वम् = न शिवा प्रकृतिः तस्य भावः (नञ्तत्पुरुष)
बलोपचयम् = बलस्य उपचयः तम् (षष्ठी तत्पु0)
अमृतसहोदरा = अमृतं सहोदरः यस्याः सा (बहुव्रीहि)
कटुविपाका = कटुः विपाकः यस्याः सा (बहुव्रीहि)
अप्रत्यक्षदर्शना = न प्रत्यक्षं दर्शनं यस्याः सा (नञ्बहुव्रीहि)
पुरुषोत्तमरता = पुरुषोत्तमे रता (सुप्सुपा)
खलजनप्रिया = खलाश्च ते जनाः (कर्मधारय) तेषां प्रिया (षष्ठी तत्पु0)
दीपशिखा = दीपस्य शिखा (षष्ठी तत्पु0)
कज्जलमलिनम् = कज्जलमिव मलिनम् (उपमितसमास)
संवर्धनवारिधारा = संवर्धनाय वारिणां धारा (तत्पु0)
तृष्णाविषवल्लीनाम् = तृष्णाः विषवल्लयः इव तासाम् (कर्मधा0)
व्याधगीतिः = व्याधस्य गीतिः (षष्ठी तत्पु0)
इन्द्रियमृगाणाम् = इन्द्रियाणि मृगा इव तेषाम् (कर्मधारय)
परामर्शधूमलेखा = परामर्शाय धूमस्य लेखा (तत्पु0)
सच्चरितचित्राणाम् = सच्चरितानि चित्राणि इव तेषाम् (कर्मधारय)
विभ्रमशय्या = विभ्रमः शय्या इव (कर्मधारय)
मोहदीर्घनिद्राणाम् = मोहः दीर्घनिद्रा इव तासाम् (कर्मधारय)
निवासजीर्णवलभी = निवासाय जीर्णा च सा वलभी या (तत्पु0 मूलक कर्मधारय)
धनमदपिशाचिकानाम् = धनमदानि एव पिशाचिकाः तासाम् (कर्मधारय)
तिमिरोद्गतिः = तिमिरस्य उद्गतिः (षष्ठीतत्पु0)
शास्त्रदृष्टीनाम् = शास्त्राणि एव दृष्टयः तासाम् (कर्मधा0)
पुरःपताका = पुरः स्थिता पताका (मध्यमपदलोपी समास)
सर्वाविनयानाम् = सर्वे च ते अविनयाः तेषाम् (कर्मधारय)
उत्पत्तिनिम्नगा = उत्पत्त्येः निम्नगा (चतुर्थी तत्पु0)
क्रोधावेगग्राहाणाम् = क्रोधावेगाः ग्राहाः इव तेषाम् (कर्मधारय)
आपानभूमिः = आपानाय भूमिः (चतुर्थी तत्पु0)
विषयमधूनाम् = विषया मधूनि इव तेषाम् (कर्मधारय)
आवासदरी = आवासाय दरी (चतुर्थी तत्पु0)
दोषाशीविषाणाम् = दोषा आशीविषाः इव तेषाम् (कर्मधा0)
उत्सारणवेत्रलता = उत्सारणाय वेत्रस्य लता (तत्पुरुष)
अकालप्रावृट् = अकाले प्रावृट् (सुप्सुपा)
विसर्पणभूमिः = विसर्पणाय भूमिः (चतुर्थी तत्पु0)
कपटनाटकस्य - कपटं नाटकम् इव तस्य (कर्मधारय)
कामकरिणः = कामः करी इव तस्य (कर्मधारय)
राहुजिह्वा = राहोः जिह्वा (षष्ठी तत्पु0)
धर्मेन्दुमण्डलस्य = धर्मः इन्दुमण्डलम् इव तस्य (कर्मधारय)
आलेख्यगता = आलेख्ये गता (सप्तमी तत्पुरुष)
दुराचारया = दुष्टानि आचारानि यस्याः तया (बहुव्रीहि)
सर्वाविनयाधिष्ठानताम् = सर्वेषाम् अविनयानाम् अधिष्ठानं तस्य भावः सर्वाविनयाधिष्ठानता, ताम् (षष्ठी तत्पु0)
अभिषेकसमये = अभिषेकस्य समयः तस्मिन् (षष्ठी तत्पु0)
मङ्गलकलशजलैः = मङ्गलाय कलशाः तेषां जलैः (तत्पुरुष)
अग्निकार्यधूमेन = अग्निकार्यस्य धूमः तेन (षष्ठी तत्पु0)
पुरोहितकुशाग्रसम्मार्जनीभिः = पुरोहितानां कुशाग्रसम्मार्जन्यः ताभिः (षष्ठी तत्पु0)
उष्णीषपट्टबन्धेन = उष्णीषपट्टस्य बन्धः तेन (षष्ठी तत्पुरुष)
जरागमनस्मरणम् = जरायाः आगमनं तस्य स्मरणम् (षष्ठी तत्पुरुष)
आतपत्रमण्डलेन = आतपत्रस्य मण्डलं तेन (षष्ठी तत्पु0)
परलोकदर्शनम् = परलोकस्य दर्शनम् (षष्ठी तत्पु0)
वेत्रदण्डैः = वेत्रस्य दण्डानि तैः (षष्ठी तत्पु0)
जयशब्दकलैः = जयशब्दानां कलानि तैः (षष्ठी तत्पु0)
साधुवादाः = साधु उच्यते इति (उपपद समास)
ध्वजपटपल्लवैः = ध्वजपटानां पल्लवानि तैः (षष्ठी तत्पु0)
अनेकदोषोपचितेन = अनेकैः दोषैः उपचितः तेन (तृतीयातत्पुरुष)
दुष्टासृजा = दुष्टम् असृक् तेन (कर्मधारय)
रागावेशेन = रागस्य आवेशः तेन (षष्ठी तत्पु0)
विविधविषयग्रासलालसैः = विविधानां विषयाणां ग्रासाय लालसैः (तत्पु0)
अनेकसहस्रसंख्यैः = अनेके सहस्रसङ्ख्यैः (कर्मधारय)
प्रकृतिचञ्चलतया = प्रकृत्या चञ्चलता तया (तृतीया तत्पु0)
मदनशरैः = मदनस्य शरः तैः (षष्ठी तत्पु0)
मर्माहताः = मर्माणि आहतानि एषां ते (बहुव्रीहि)
मुखभङ्गसहस्राणि = मुखभङ्गानां सहस्राणि (षष्ठी तत्पु0)
धनोष्मणा = धनस्य ऊष्मणा (षष्ठी तत्पु0)
गाढप्रहाराहताः = गाढप्रहारैः आहताः (तृतीया तत्पु0)
अधर्मभग्नगतयः = अधर्मेण भग्नगतिः येषां ते (बहुव्रीहि)
अतिकृच्छ्रेण = कृच्छ्रमतिक्रम्य तेन (अव्ययीभाव)
आसन्नवर्तिनां = आसन्नं वर्तते ये तेषाम् (उपपद तत्पु0)
शिरःशूलम् = शिरसि शूलम् (उपपद समास)

बन्धुजनम् = बन्धुश्चासौ जनः तम् (कर्मधारय)
उत्कुपितलोचनाः = उत्कुपितानि लोचनानि येषां ते (बहुव्रीहि)
कालदंष्ट्राः = कालेन दंष्ट्राः (तृतीया तत्पु०)
सोष्माणम् = ऊष्मणा सह वर्तते यः तम् (प्रादितत्पुरुष)
दुष्टवारणाः = दुष्टाश्च ते वारणाः (कर्मधारय)
दूरस्थितानि = दूरे स्थितानि (सुप्सुपा)
महाकुलानि = महन्ति च तानि कुलानि (कर्मधारय)
अकालकुसुमप्रसवाः = अकाले कुसुमानां प्रसवाः (तत्पु०)
मनोहराकृतयः = मनोहरा आकृतिः येषां ते (बहुव्रीहि)
प्रेतपटहाः = प्रेताय पटहाः (चतुर्थी तत्पु०)
अनुदिवसम् = दिवसम् अनु (अव्ययीभाव)
आध्मातमूर्त्तयः = आध्माता मूर्त्तयः येषां ते (बहुव्रीहि)
जलबिन्दवः = जलानां बिन्दवः (षष्ठी तत्पु०)
स्वार्थनिष्पादनपरैः = स्वार्थस्य निष्पादने पराः तैः (तत्पु०)
परदाराभिगमनम् = पराश्च ते दाराः इति परदाराः (कर्मधारय) तेषु अभिगमनम्
देवावमाननम् = देवानाम् अवमाननम् (षष्ठी तत्पु०)
अविशेषज्ञता = न विशेषज्ञः तस्य भावः (नञ्तत्पु०)
दिव्यांशावतीर्णम् = दिव्यैः अंशैः अवतीर्णम् (तृतीया तत्पु०)
आत्मविडम्बनाम् = आत्मनः विडम्बना ताम् (षष्ठी तत्पु०)
स्वललाटम् = स्वस्य ललाटः तम् (बहुव्रीहि)
दर्शनप्रदानम् = दर्शनस्य प्रदानम् (षष्ठी तत्पु०)
द्विजातीनम् = द्वे जाती येषां तान् (बहुव्रीहि)
अभिवादनार्हानम् = अभिवादनाय अर्हाः तान् (चतुर्थी तत्पु०)
विद्वज्जनम् = विद्वांसश्चासौ जनः तम् (कर्मधारय)
हितवादिने = हितं वदन्ति इति तस्मै (उपपदसमास)
अहर्निशम् = अहश्च निशा च इति तत् (द्वन्द्वसमास)
अधिदैवतम् = दैवतम् अधिकृत्य (अव्ययीभाव)
उपरचिताञ्जलिः = उपरचितः अञ्जलिः येन सः (बहुव्रीहि)
विगतकर्त्तव्यः = विगतानि कर्त्तव्यानि यस्य सः (बहुव्रीहि)
कौटिल्यशास्त्रं = कौटिल्यकृतं शास्त्रं (मध्यमपदलोपी समास)
सुहृद्भिः = शोभनं हृद् येषां ते सुहृदः, तैः (बहुव्रीहि)
महामोहान्धकारिणि = महान् चासौ मोहः तेन अन्धः तं करोतीति तस्मिन् (कर्मधारयमूलक तत्पुरुष)
सेवकवृकैः = सेवकाः वृकाः इव तैः (कर्मधारय)
तरलहृदयम् = तरलं हृदयं यस्य तम् (बहुव्रीहि)
अप्रतिबुद्धम् = न प्रतिबुद्धः तम् (नञ्तत्पुरुष)
भवद्गुणसन्तोषः = भवतां गुणेषु सन्तोषः (तत्पु०)
कुलक्रमागता = कुलक्रमेण आगतम् (तृतीया तत्पु०)
पूर्वपुरुषैः = पूर्वं च ते पुरुषाः तैः (कर्मधारय)
अभिषेकानन्तरं = अभिषेकस्य अनन्तरम् (षष्ठी तत्पुरुष)
प्रारब्धदिग्विजयः = प्रारब्धः दिग्विजयः येन सः (बहुव्रीहि)
वसुन्धराम् = वसूनि धरतीति ताम् (उपपद समास)
आरूढप्रतापः = आरूढः प्रतापो यस्य सः (बहुव्रीहि)
सिद्धादेशः = सिद्धः आदेशो यस्य सः (बहुव्रीहि)
उपशान्तवचसि = उपशान्तानि वचांसि यस्य (बहुव्रीहि)
अमलाभिः = न मलं यासु ताभिः (नञ्बहुव्रीहि)
प्रीतहृदयः = प्रीतं हृदयं यस्य सः (बहुव्रीहि)
स्वभवनम् = स्वस्य भवनम् (षष्ठी तत्पु०)

शिवराजविजय (प्रथमनिःश्वास) में क्रियापद

लट्लकार

जनयति – √जन् + णिच् + लट् प्रथमपुरुष एक0
विभनक्ति – वि + √भञ्ज् + लट् प्रथमपुरुष एकवचन
चर्कर्ति – √कृ + यङ् (लुक्) + लट् प्रथमपुरुष एकवचन
बर्भर्ति – √भृञ् + यङ् + (लुक्) + लट् प्रथमपुरुष एकवचन
जर्हर्ति – √हृञ् + यङ् + (लुक्) + लट् प्रथमपुरुष एकवचन
गायति – √गै + लट् + प्रथमपुरुष एकवचन
उपतिष्ठन्ते – उप + √स्था + लट् + प्रथमपुरुष बहुवचन
अवचिनोमि – अव + √चिञ् + लट् + उत्तमपुरुष एकवचन
अवचिनोति – अव + √चिञ् + लट् + प्रथमपुरुष एकवचन
उपासते – उप + √आस् + लट् + प्रथमपुरुष एकवचन (आत्मनेपद)
वेत्ति – √विद् + लट् + प्रथमपुरुष एकवचन
ध्मायन्ते – √ध्मा (शब्दाग्निसंयोगयोः) + लट्भावे
भर्ज्यन्ते – √भृज् (भर्जने) + यक् + लट् (भावे)
भिद्यन्ते – √भिद् + यक् + लट् (भावे)
समुद्धूयन्ते – सम् + उद् + √धूञ् + लट् (आत्मनेपद)
जिग्लापयिषामि – √ग्लै (हर्षक्षये) + पुक् + णिच् + सन् + लट् + उत्तमपुरुष एकवचन
हन्यन्ते – √हन् + यक् + लट् + प्रथमपुरुष बहुवचन
विदीर्यन्ते – वि + √दॄ + यक् + लट् + प्रथमपुरुष बहुवचन
शुश्रूषते – √श्रु + सन् + प्रथमपुरुष एकवचन (आत्मनेपद)
स्मर्यते – √स्मृ + यक् + लट् + प्र.पु. एक. (आत्मने.) कर्मवाच्य में
चिकीर्षसि – √कृ + सन् + लट् + मध्यमपुरुष एकवचन
पिपृच्छिषामि – √प्रच्छ् + सन् + लट् + उत्तमपुरुष एकवचन

लिट्लकार

निश्चक्राम – निर् + √क्रमु (पादविक्षेपे) – लिट्
आरेभे – आ + √रम्भ् + लिट् – प्रथमपुरुष एक0
इयेष – √इष् + लिट् + तिप् – प्रथमपुरुष एक0
निपपात – नि + √पत् + लिट् + प्रथमपुरुष एक0
अपससार – अप् + √सृ + लिट् + प्रथमपुरुष एक0
उपाजगाम – उप + आङ् + √गम् + लिट् + प्रथमपुरुष एक0
आरुरोह – आ + √रुह् + लिट् + प्रथमपुरुष एक0
जगाद – √गद् + लिट् + प्रथमपुरुष एक0
अवतस्थे – अव + √स्था + लिट् – प्रथमपुरुष एक0 (आत्मनेपदी)
धूलीचकार – धूलि + च्वि + √कृ + लिट्
अश्वयाम्बभूव – अश्व + णिच् + आम् + √भू + लिट् + प्रथमपुरुष एक0

लुङ्लकार

अवादीत् – √वद् + लुङ् + प्रथमपुरुष एक0
अजागरीः – √जागृ + लुङ् + मध्यमपुरुष एक0
अनैषीः – √नी + लुङ् + मध्यमपुरुष एक0
अदर्शि – √दृश् + लुङ् + प्रथमपुरुष एक0
भैषीः – √भी + लुङ् + मध्यमपुरुष एक0
कार्षीः – √कृ + लुङ् + मध्यमपुरुष एक0
अरोदीः – √रुद् + लुङ् + मध्यमपुरुष एक0
उदस्थाम् – उत् + √स्था + लुङ् + उत्तमपुरुष एक0
व्ययाजिषत् – वि + √यज् + कर्मणि + लुङ् + प्रथमपुरुष बहु0
अतापिषत – √तप् + लुङ् + प्रथमपुरुष बहु0
अनैषीत् – √णीञ् –(प्रापणे) + लुङ् प्रथमपुरुष एक0
अलुलुण्ठत् – √लुठि स्तेये, चुरादि + णिजन्तात् – लुङ् प्र. पु. एक.
मा स्प्राक्षीः – √स्पृश् + लुङ् मध्यमपुरुष एक0 माङ् के योग में अट् का आगम नहीं हुआ।
अतुत्रुटत् – √त्रुट् छेदने + चुरादि णिजन्तात् + लुङ् प्रथमपुरुष एक0
अकार्षुः – √कृ + लुङ् + प्रथमपुरुष बहु0
अदीदलन् – √दल् (विदारणे) + लुङ् + प्रथमपुरुष बहु0
व्याहार्षीत् – वि + आङ् + √हृ + लुङ् + प्रथमपुरुष एक0
समभाणीत् – सम् + √भण् + लुङ् + प्रथमपुरुष एक0
न्यवेदीत् – नि + √विद् + लुङ् + प्रथमपुरुष एक0
उदतीतरत् – उद् + √तृ + णिच् + लुङ् प्रथमपुरुष एक0
उदतूतुलत् – उत् + अतुतुलत् + √तुल् + लुङ् + प्र0पु0 एक0
अश्रौषम् –√श्रु + लुङ् + उत्तमपुरुष एकवचन

लङ्लकार

आरभत – आङ् + √रभ् + लङ् + प्रथमपुरुष एक0
अवागच्छत् – अव + √गम् + लङ् + प्रथमपुरुष एक0
प्राविशत् – प्र + √विश् + लङ् + प्रथमपुरुष एक0
समतिष्ठत – सम् + √स्था + लङ् + प्रथमपुरुष एक0

शिवराजविजय (प्रथमनिःश्वास) में प्रत्यय

ल्यप्-प्रत्यय

आश्रित्य – आङ् + √श्रि + ल्यप्
आकुञ्च्य – आङ् + √कुञ्च् + ल्यप्
सन्धाय – सम् + √धा + ल्यप्
उद्धूय – उद् + √धूञ् + ल्यप्
समुपसृत्य – सम् + उप + √सृज् + ल्यप्
उद्बुद्ध्य – उद् + √बुध + ल्यप्
संश्रुत्य – सम् + √श्रु + ल्यप्
अभिगम्य – अभि + √गम् + ल्यप्
निःश्वस्य – निः + √श्वस् + ल्यप्
आगत्य – आ + √गम् + ल्यप्
सम्पूज्य – सम् + पूज् + ल्यप्
आदिश्य – आङ् + √दिश् + ल्यप्
निधाय – नि + √धा + ल्यप्
आच्छिद्य – आङ् + √छिद् + ल्यप्
उपवेश्य – उप + √विश् + णिच् + ल्यप्
आकलय्य – आङ् + √कल् + ल्यप्
अतिक्रम्य – अति + √क्रम् + ल्यप्
सन्दर्श्य – सम् + √दृश् + णिच् + ल्यप्
प्रविश्य – प्र + √विश् + ल्यप्
विरहय्य – वि + √रह् + ल्यप्
विच्छिद्य – वि + √छिद् + ल्यप्
उद्धूय – उद् + √धूञ् + ल्यप्
आकर्ण्य – आङ् + √कर्ण् + ल्यप्
विनिर्जित्य – वि + निर् + √जि + ल्यप्
संस्पृश्य – सम् + √स्पृश् + ल्यप्
अविगण्य – अ (न) वि + √गण् + णिच् + ल्यप्
अवलोक्य – अव + √लोक् + ल्यप्
संक्षिप्य – सम् + √क्षिप् + ल्यप्
संश्रुत्य – सम् + √श्रु + ल्यप्
प्रमृज्य – प्र + √मृज् + ल्यप्
निःश्वस्य – निर् + √श्वस् + ल्यप्
संस्मृत्य – सम् + √स्मृ + ल्यप्
विचिन्त्य – वि + √चिन्त् + ल्यप्
विलुण्ठ्य – वि + √लुण्ठ् + ल्यप्
निपात्य – नि + √पत् + णिच् + ल्यप्
विभिद्य – वि + √भिद् + ल्यप्
आरोप्य – आङ् + √रोप् + ल्यप्
निर्मथ्य – निर् + √मथ् + ल्यप्
प्रसह्य – प्र + √सह् + ल्यप्
उत्तीर्य – उत् + √तृ + ल्यप्
आश्लिष्य – आङ् + √श्लिष् + ल्यप्
आक्रम्य – आङ् + √क्रम् + ल्यप्
निर्माय – निर् + √मा + ल्यप्
विशस्य – वि + √शस् + ल्यप्
अभिधाय – अभि + √धा + ल्यप्
निरीक्ष्य – निर् + √ईक्ष् + ल्यप्
अवधार्य – अव + √धृ + णिच् + ल्यप्
समुत्थाय – सम् + उद् + √स्था + ल्यप्
पर्य्यट्य – परि + √अट् + ल्यप्
व्याहृत्य – वि + आङ् + √हृ + ल्यप्
अवलोक्य – अव + √लोक् + ल्यप्
विरम्य – वि + √रम् + ल्यप्
निर्दिश्य – निर् + √दिश् + ल्यप्
आकृष्य – आङ् + √कृष् + ल्यप्
उत्प्लुत्य – उत् + √प्लुङ् + ल्यप्

शतृ प्रत्यय

प्रणमन् – प्र + √णम्, (नम्) + शतृ
चिन्तयन् – √चिन्त् + शतृ
उन्निद्रयन् – उद् + √निद्र् + णिच् + शतृ
निवारयन् – नि + √वृ + णिच् + शतृ
पाययन् – √पा + णिच् + शतृ
रुदतीम् – √रुद् + शतृ (ङीप्)
भोजयन् – √भुज् + णिच् + शतृ
वदत्सु – √वद् + शतृ + (सप्तमी बहु०)
वर्णयन्तः – √वर्ण + णिच् + शतृ
आकलयत्सु – आङ् + √कल् + णिच् + शतृ (सप्तमी बहु०)
वसतः – √वस् + शतृ (षष्ठी एकवचन)
क्रन्दन्तीम् – √क्रन्द् + शतृ + ङीप् (द्वि० एकवचन)
निर्जीवीभवत् – निर् + √जीव + च्वि + √भू + शतृ
कथयत्सु – √कथ् + शतृ (सप्तमी बहु०)
असयन् – √असि + णिच् + शतृ
अपसारयन् – अप् + √सृ + णिच् + शतृ
रुदती – √रुद् + शतृ + (ङीप्)
रक्षन् – √रक्ष् + शतृ
अवतरन् – अव + √तृ + शतृ

उद्गिरन्तम् – उद् + √गिर् + शतृ, द्वितीया, एक0

शानच् प्रत्यय

पूज्यमाने – √पूज् + यक् + शानच्, सप्तमी, एक0
समासीनेषु – सम् + √आस् + शानच् + सप्तमी बहु0
विमनायमानम् – वि + √मन् + क्यच् + शानच्
कम्पमानम् – √कम्प् + शानच्
भज्यमानम् – √भज् + यक् + शानच्
रोरुध्यमानैः – √रुध् + यङ् + शानच् + तृतीया, बहु0
निरीक्षमाणेन – निर् + √ईक्ष् + शानच् + तृतीया, एक0
अनुगम्यमानः – अनु + √गम् + णिच् + शानच्
शयानम् – √शीङ् + शानच्
वियुज्यमानम् – वि + √युज् + शानच्

क्त प्रत्यय

सम्मोहितम् – सम् + √मुह् + क्त
विहिंसितः – वि + √हिंस् + क्त
सुप्तः – √स्वप् + क्त
कुब्जायितम् – √कुब्ज + क्यङ् + क्त
विनत – वि + √नम् + क्त
अवचितानि – अव + √चि + क्त, प्रथमा, बहु0
उत्थापितः – उत् + √स्था + पुक् + णिच् + क्त
संस्थापिता – सम् + √स्था + णिच् + पुक् + क्त + टाप् (स्त्री0)
समापिता – सम् + √आप् + णिच् + क्त + (टाप्)
समायाते – सम् + आङ् + √या + क्त (सप्तमी एक0)
प्रस्तुताषु – प्र + √स्तु + क्त + टाप् + सप्तमी बहुवचन
उत्थितः – उत् + √स्था + क्त
आच्छन्नः – आ + √ छद् + क्त
आयातः – आ + √या + क्त
सञ्जातः – सम् + √जन् + क्त
ईहितम् – √ईह् + क्त
सम्पादितम् – सम् + √पद् + णिच् + क्त
अधिष्ठिते – अधि + √स्था + क्त, सप्तमी, एक0
विसृष्टेषु – वि + √सृज् + क्त, सप्तमी, बहु0
भीता – √भी + क्त + टाप्
स्नाता – √स्ना + क्त + टाप्
समानीता – सम् + आङ् + √नी + क्त + टाप्
प्राप्तः – प्र + √आप् + क्त
अवलीढम् – अव + √लिह् + क्त
समायाता – सम् + आङ् + √या + क्त + टाप्
आनीता – आङ् + √नी + क्त + टाप्
गतस्य – √गम् + क्त + षष्ठी, एकवचन
व्यतीतानि – वि + √अत् + क्त प्रथमा बहु0
निरुद्धः – नि + √रुध् + क्त
सम्पन्नम् – सम् + √पद् + क्त
उत्थितः – उद् + √ स्था + इट् + क्त
चूडायितम् – √चूडा + क्यङ् + क्त
गृहीतम् – √ग्रह् + क्त
सञ्चितम् – सम् + √चि + क्त
बन्दीकृताः – बन्द् + √च्वि + कृ + क्त
प्रचिताः – प्र + √चि + क्त
सञ्जातः – सम् + √जन् + क्त
संवृत्तः – सम् + √वृत् + क्त
अवगतम् – अव + √गम् + क्त
उद्गतैः – उद् + √गम् + क्त (तृतीया बहुवचन)
निर्यातेषु – निर् + √या + क्त (सप्तमी बहुवचन)
संवृत्ते – सम् + √वृत् + क्त (सप्तमी एकवचन)
प्रस्थितस्य – प्र + √स्था + क्त (षष्ठी एकवचन)
दृष्टम् – √दृश् + क्त
आनद्ध – आङ् + √नध् + क्त
पतङ्गायितः – पतङ्ग + क्यङ् + क्त
दंष्टा – √दंश् + क्त
पर्याप्तः – परि + √आप् + क्त
अध्युषित – अधि + √वस् (व = उ सम्प्रसारण) + क्त
कलित – √कल् + क्त

क्तवतु प्रत्यय

पीतवती – √पा + क्तवतु + ङीप्
आरब्धवती – आङ् + √रभ् + क्तवतु + ङीप्
आनीतवान् – आङ् + √नी + क्त + क्तवतु
कृतवान् – √कृ + क्तवतु
त्यक्तवति – √त्यज् + क्तवतु (सप्तमी एकवचन)

क्त्वा

नीत्वा – √नी + क्त्वा
त्यक्त्वा – √त्यज् + क्त्वा
पिष्ट्वा – √पिष् + क्त्वा
भित्त्वा – √भिद् + क्त्वा
स्मित्वा – √ष्मिङ् + क्त्वा
गत्वा – √गम् + क्त्वा

मोचयित्वा – √मुच् + णिच् + क्त्वा
गोपयित्वा – √गुप् + णिच् + क्त्वा

तुमुन् प्रत्यय

वक्तुम् – √वच् + तुमुन्
सान्त्वयितुम् – √सान्त्व + णिच् + तुमुन्
निरोद्धुम् – नि + √रुध् + तुमुन्
शमयितुम् – √शम् + णिच् + तुमुन्
रोदितुम् – √रुद् + इट् + तुमुन्
प्रवक्तुम् – प्र + √ वच् + तुमुन्
योद्धुम् – √युध् + तुमुन्
प्रष्टुम् – √प्रच्छ् + तुमुन्
उपन्यस्तुम् – उप + नि + √अस् + तुमुन्
हन्तुम् – √हन् + तुमुन्
द्रष्टुम् – √दृश् + तुमुन्

ल्युट् प्रत्यय

रोदनम् – √रुद् + भावे ल्युट्
क्रन्दनम् – √क्रदि + भावे ल्युट्
अन्वेषण – अनु + √इष् + ल्युट्
उदीरण – उद् + √इर् + ल्युट् + अन्
कलनः – √कल् + ल्युट्
कालनः – √कल् + णिच् + ल्युट्
उत्फालनम् – उद् + √फाल् + ल्युट्

मेघदूतम् में क्रियापद

लट्लकार

रुणद्धि	√रुध् + लट् प्र0 पु0 एक0 (परस्मै0)
नुदति	√नुद् + लट् प्र0 पु0 एक0 (परस्मै0)
नदति	√नद् + लट् प्र0 पु0 एक0 (परस्मै0)
प्रभवति	प्र √भू + लट् प्र0 पु0 एक0 (परस्मै0)
उत्पश्यामि	उत् √दृश् + लट् उ0 पु0 एक0 (परस्मै0)
अत्येति	अति √इण् + लट् प्र0 पु0 एक0 (परस्मै0)
अर्हसि	√अर्ह् + लट् म0 पु0 एक0 (परस्मै0)
वहति	√वह् + लट् प्र0 पु0 एक0 (परस्मै0)
कथयत्	√कथ् + णिच् + लट् + शतृ
प्रथयति	√प्रथ् + णिच् + लट् प्र0 पु0 एक0 (परस्मै0)
संलक्ष्यन्ते	√सम् √लक्ष् + णिच् लट् प्र0 पु0 बहु0 (आत्मने0)
रमयति	√रम् + णिच् + लट् प्र0 पु0 एक0
गीयते	√गै + लट् प्र0 पु0 एक0 (कर्मणि)
आसेवन्ते	आङ् + √सेव् + लट् प्र0 पु0 बहु0 (आत्मने0)
सेव्यमानाः	√सेव् + लट् + शानच् (कर्मणि)
सङ्क्रीडन्ते	सम् √क्रीड् + लट् प्र0 पु0 बहु0
निष्पतन्ति	निस् √पत् + लट् प्र0 पु0 बहु0
व्यालुम्पन्ति	वि + आङ् √लुप् लट् प्र0 पु0 बहु0
सूच्यते	√सूच् + णिच् + लट् प्र0 पु0 एक0 (कर्मणि)
सूते	√सू + लट् प्र0 पु0 एक0 (आत्मने0)
काङ्क्षति	√काङ्क्ष् + लट् प्र0 पु0 एक0
अध्यास्ते	अधि √आस् लट् प्र0 पु0 एक0
पुष्यति	√पुष् लट् प्र0 पु0 एक0 (परस्मै0)
मन्ये	√मन् + लट् उ0 पु0 एक0 (आत्मने0)
स्मरसि	√स्मृ + लट् म0 पु0 एक0 (परस्मै0)
विस्मरन्ती	वि √स्मृ + शतृ + लट् + ङीप् प्र0पु0 बहु0
आस्वादयन्ती	आङ् √स्वद् + णिच् + शतृ + ङीप्
शङ्के	√शङ्क् + लट् उ0 पु0 एक0 (आत्मने0)
तर्कयामि	√तर्क + णिच् + लट् + उ0 पु0 एक0
त्वरयति	√त्वर् + णिच् + लट् + प्र0 पु0 एक0
आह	√ब्रू + लट् + प्र0 पु0 एक0 (परस्मै0)
आलुप्यते	आङ् √लुप् लट् + प्र0 पु0 एक (कर्म0)
सहते	√सह + लट् + प्र0 पु0 एक0 (आत्मने0)
आलिङ्ग्यन्ते	आङ् √लिङ्ग + लट् + प्र0 पु0 बहु0 (कर्म0)
रुदती	√रुद् + लट् + शतृ + ङीप्
पृच्छतः	√प्रच्छ् + लट् + शतृ + षष्ठी एक0
प्रेमराशीभवन्ति	प्रेमराशि + च्वि √भू + लट् प्र0 पु0 बहु0 (परस्मै0)
कल्पयामि	√क्लृप् + लट् + उ0 पु0 एक0 (परस्मै0)
निर्विशन्ति	निर् √विश् लट् प्र0 पु0 बहु0 (परस्मै0)
जानामि	√ज्ञा + लट् + उ0 पु0 + एक0 (परस्मै0)
अवलम्बे	अव √लम्ब् + लट् उ0पु0 एक0 (आत्मने0)

लोट्लकार

हर	√हृ + लोट् म0पु0 एक0
आपृच्छस्व	आङ् √प्रच्छ् + लोट् म0 पु0 एक0 (परस्मै0)
व्रज	√व्रज् + लोट् म0 पु0 एक0
भव	√भू + लोट् म0 पु0 एक0 (परस्मै0)

अनुसर	अनु + √सृ + लोट् + म0 पु0 एक0 (परस्मै0)
हर	√हृ + लोट् म0 पु0 एक0 (परस्मै0)
दर्शय	√दृश् + णिच् + लोट्, म0 पु0, एक0 (परस्मै0)
कुरु	√कृ + लोट् + म0 पु0, एक0 (परस्मै0)
पश्य	√दृश् + लोट्, म0 पु0, एक0 (परस्मै0)
सहस्व	√सह् + लोट्, म0 पु0, एक0 (परस्मै0)
विद्धि	√विद् + लोट्, म0 पु0, एक0 (परस्मै0)
उत्पत	उत्+√पत्+लोट्, म0 पु0, एक0 (परस्मै0)
स्नपयतु	√स्ना + णिच् + लोट्, म0 पु0, एक0 (परस्मै0)

लिट्लकार

चक्रे	√कृ + लिट्, प्र0 पु0, एक0, आत्मने0
ददर्श	√दृश् + लिट्, प्र0 पु0, एक0 (परस्मै0)
दध्यौ	√ध्यै + लिट्, प्र0 पु0, एक0 (परस्मै0)
व्याजहार	वि + आङ् √हृ + लिट्, प्र0 पु0, एक0 आत्मने0
जह्रे	√हृ + लिट्, उ0 पु0, एक0 (आत्मने0)
सिषेवे	√सेव् + लिट्, प्र0 पु0, एक0 (परस्मै0)
ययाचे	√याच् + लिट्, प्र0 पु0, एक0 आत्मने0

विधिलिङ्

गच्छेः	√गम् + म0 पु0, एक0 (परस्मै0)
व्यवस्येत्	वि + अव + √सो + प्र0पु0, एक0 (परस्मै0)
अधिवसेः	अधि + √वस् + म0 पु0, एक0 (परस्मै0)
नयेथाः	√नी + म0 पु0, एक0 (आत्मने0)
यायाः	√या + म0 पु0, एक0 (आत्मने0)
वाहयेत्	√वह् + णिच् प्र0पु0, एक0 (परस्मै0)
नर्तयेथाः	√नृत् + णिच् म0 पु0, एक0 (आत्मने0)
व्यालम्बेथाः	वि+आङ्+√लम्ब् म0पु0, एक0 (आत्मने0)
भजेथाः	√भज् + म0 पु0, एक0 (आत्मने0)
तर्कयेः	√तर्क् + णिच् म0 पु0, एक0 (परस्मै0)
बाधेत	√बाध् + प्र0 पु0, एक0 आत्मने0
कुर्वीथाः	√कृ + म0 पु0, एक0 (आत्मने0)
लङ्घयेयुः	√लङ्घ् + प्र0 पु0, बहु0 (परस्मै0)
स्युः	√अस् + प्र0 पु0, बहु0 (परस्मै0)
परीयाः	परि + √इण् म0 पु0, एक0
स्याः	√अस् + म0 पु0, एक0 (परस्मै0)
उपेक्षेत	उप + √ईक्ष् + विधिलिङ्, प्रथमपुरुष एकवचन
विचरेत	वि + √चर् + प्र0 पु0, एक0 (आत्मने0)
निर्विशेः	निर् + √विश् + म0 पु0, एक0 (परस्मै0)
लक्षयेथाः	√लक्ष् + णिच् + म0 पु0, एक0 (आत्मने0)
स्यात्	√अस् + प्र0 पु0, एक0 (परस्मै0)
जानीथाः	√ज्ञा + म0 पु0, एक0 (आत्मने0)
उपनमेत्	उप + √नम् + प्र0 पु0, एक0 (परस्मै0)
प्रक्रमेथाः	प्र + √क्रम् + म0 पु0, एक0 (आत्मने0)
ब्रूयाः	√ब्रू + म0 पु0, एक0 (परस्मै0)
संक्षिप्येत	सम + √क्षिप् + प्र0 पु0, एक0 (आत्मने0)
धारयेथाः	√धृ + णिच् + म0 पु0, एक0 (आत्मने0)
अनुसरेः	अनु √सृ + म0 पु0, एक0 (परस्मै0)
भाययेः	√भी + णिच् + म0 पु0, एक0 (परस्मै0)
भवेत्	√भू + प्र0 पु0, एक0 (परस्मै0)

लृट्लकार

प्रेक्षिष्यन्ते	प्र+√ईक्ष् + लृट् + प्र0 पु0, बहु0 (आत्मने0)
द्रक्ष्यसि	√दृश् + लृट् + म0 पु0, एक0 (परस्मै0)
सेविष्यन्ते	√सेव् + लृट् + प्र0 पु0, बहु0 (आत्मने0)
सम्पत्स्यन्ते	सम् + √पद् + लृट् प्र0 पु0, बहु0 (आत्मने0)
श्रोष्यसि	√श्रु + लृट् + म0 पु0, एक0 (परस्मै0)
आपत्स्यते	आ + √पद् + लृट् + प्र0 पु0 (आत्मने0)
वक्ष्यति	√वह् + लृट् + प्र0 पु0, एक0 (परस्मै0)
यास्यति	√या + लृट् + प्र0 पु0, एक0 (परस्मै0)
शक्ष्यति	√शक् + लृट् + प्र0 पु0, एक0 (परस्मै0)
सूचयिष्यन्ति	√सूच् + णिच् लृट् प्र0 पु0, बहु0 (परस्मै0)
मानयिष्यन्ति	√मान् + लृट् + प्र0 पु0, बहु0 (परस्मै0)
लप्स्यसे	√लभ् + लृट् + म0 पु0, एक0 आत्मने0
आमोक्ष्यन्ते	आङ् √मुच् + लृट् प्र0 पु0, बहु0 आत्मने0
वास्यति	√वा + लृट् प्र0 पु0, एक0 (परस्मै0)
प्रेक्षिष्यन्ते	प्र √ईक्ष् + लृट् + प्र0 पु0, बहु0 (आत्मने0)
वक्ष्यसि	√वह् + लृट् + म0 पु0, एक0 (परस्मै0)
कल्पिष्यन्ते	√क्लृप् + लृट् + प्र0 पु0, बहु0 (आत्मने0)
नेष्यन्ति	√नी + लृट् + प्र0 पु0, बहु0 (परस्मै0)
ज्ञास्यसे	√ज्ञा + लृट् + म0 पु0, एक0 (आत्मने0)
आध्यास्यन्ति	आङ्+√ध्यै + लृट् + प्र0पु0, बहु0 (परस्मै0)
मोचयिष्यति	√मुच् + णिच्+लृट्+प्र0पु0, एक0 (परस्मै0)
एष्यति	√इण् + लृट् + प्र0 पु0, एक0 (परस्मै0)
निर्वेक्ष्यावः	निर् √विश् + लृट् + उ0पु0, द्विव0 (परस्मै0)

लङ्लकार

अभ्यवर्षत् अभि √वृष् लङ् प्र0 पु0 एक0 (परस्मै0)
अकरोत् √कृ + लङ् प्र0 पु0 एक0 (परस्मै0)

लुट्लकार

भविता भू + लुट् प्र0 पु0 एक0

लुङ्लकार

मा गमः √गम् + लुङ् +म0 पु0 एक0 (परस्मै0)
अभूत् √भू + लुङ् + प्र0 पु0 एक0 (परस्मै0)

मेघदूतम् में प्रत्यय

'इमनिच्' प्रत्यय

महिमा महत् + इमनिच्

'मनिन्' प्रत्यय

छदमन् छद् + मनिन्

'मयट्' प्रत्यय

स्वकुशलमयीम् स्वकुशल + मयट् (स्त्रियाम्)
नवजलमयम् नवजल + मयट्

'ढक्' प्रत्यय

पाथेयः पथिन् + ढक्

'ण्यत्' प्रत्यय

वन्द्यैः √वन्द् + ण्यत्
प्रेक्ष्यम् प्र √ईक्ष् + ण्यत्
भेद्य √भिद् + ण्यत्
प्राप्य प्र √आप् + ण्यत्
आभाष्यम् आङ् √भाष् + ण्यत्
उपपाद्यः उप √पद् + णिच् + ण्यत्

'यत्'-प्रत्यय

पेयम् √पा + यत्
नेयम् √नी + यत्
उपमेयम् उप √मा + यत्
रम्यम् √रम् + यत्
अक्षय्यम् नञ् (अ) + √क्षि + यत्
लक्ष्यम् √लक्ष् + णिच् + यत्
आद्या आदि + यत् + टाप्
गेयम् √गै + यत्
आद्यम् आदि + यत्
आख्येयम् आङ् √ख्या + यत्
साध्यम् साध् + यत्

'अच्' प्रत्यय

वाहः √वह् + णिच् + अच्
विक्लवा वि √क्लु + अच् + टाप्
देवम् √दिव् + अच्
अपायः अप √इण् + अच् (भावे)

'अप्'-प्रत्यय

प्रभवम् प्र √भू + अप्
परिभवः परि √भू + अप्
विगमः वि √गम् + अप्
सङ्गमः सम् + गम् + अप्
उपप्लवः उप √प्लु + अप्
अपाम् अप् शब्द नित्य स्त्रीलिङ्ग, षष्ठी, बहु0
अभिगमः अभि √गम् + अप्

'क्यप्' प्रत्यय

कृत्या = √कृ + क्यप् + टाप्
मन्दायन्ते √मन्द + क्यष् + लट् + प्रथमपुरुष बहु0
दृश्यः √दृश् + क्यप्

'ल्यु' प्रत्यय

रमणः √रम् + णिच् + ल्यु

'इनि' प्रत्यय

दन्तिन् दन्त + इनि
प्रसविन् प्र + √सू + इनि
कामिनी काम + इनि + ङीप्
मानिनीम् मान + इनि + ङीप्
वैरिण वैर + इनि
नलिनी नल + इनि + ङीप्
गेहिनी गेहे + इनि + ङीप्
शिखरिन् शिखर + इनि
प्रणयिनी प्रणय + इनि
प्राणिनाम् प्राण + इनि + षष्ठी बहुवचन
कुशलिनम् कुशल + इनि

'क' प्रत्यय

रुहः √रुह् + क
अभिज्ञः अभि + √ज्ञा + क
प्रस्थः प्र + √स्था + क
पादपः पाद + √पा + क
आनन्दोत्थम् आनन्द + उद् + √स्था + क

करुहाः कर + √रुह् + क
जलदः जल + √दा + क
स्थः √स्था + क

ट प्रत्यय

सहचरः सह + √चर् + ट
दिनकरः दिन + √कृ + ट

मतुप् प्रत्यय

भास्वत् भास् + मतुप्
आयुष्मत् आयुस् + मतुप्
सानुमान् सानु + मतुप्
विद्युत्वत् विद्युत् + मतुप्
वेत्रवत्याः वेत्र + मतुप् + ङीप्, षष्ठी, एक0
कान्तिमत् कान्ति + मतुप्

खल् प्रत्यय

सुलभा सु √लभ् + खल् + टाप्

कि प्रत्यय

आधिः आङ् √धा + कि
व्याधिः वि + आङ् + √धा + कि

ष्यञ् प्रत्यय

सादृश्यम् सदृश् + ष्यञ्
दैन्यम् दीन + ष्यञ्

खश् प्रत्यय

अभ्रंलिह् अभ्र (बादल) मुम् + √लिह् + खश्

अण्, प्रत्यय

चाटुकारः चाटु + √कृ + अण्
वासवी वासव + अण् + ङीप्
कौरव कुरु + अण्
मैत्री मित्र + अण् + ङीप्
सलिलोद्गारम् सलिल + उद् √गॄ + अण्
अम्बुवाहः अम्बु + √वह् + अण्
मैथिली मिथिला + अण् + ङीप्
हैमैः हेमन् + अण्
सौधम् सुधा + अण्

इतच् प्रत्यय

पुलकितः पुलक + इतच्
सुरभिता सुरभि + इतच् + टाप्

क्विप् प्रत्यय

विद्युत् वि √द्युत् + क्विप्
अग्रणी अग्र + नी + क्विप्
प्रापि प्र + √आप् + क्विप्
मुषः √मुष् + क्विप्
हलभृत् हल √भृ + क्विप्
जलमुच् जल √मुच् + क्विप्

शतृ प्रत्यय

मानयिष्यन् √मान् + णिच् + शतृ
पात्रीकुर्वन् पात्र + च्वि + √कृ + शतृ
उदगायन् उद् √गै + शतृ
यापयन्तीम् √या + णिच् + शतृ + ङीप् (द्वितीया एक0)
छादयन्तीम् √छिद् + णिच् + शतृ + ङीप् (द्वितीया एक0)
विक्षिपन्तीम् वि + √क्षिप् + शतृ + ङीप् (द्वितीया एक0)
आकाङ्क्षन्तीम् आङ् √काङ्क्ष् + शतृ + ङीप् (द्वितीया एक0)
सारयन्तीम् √सृ + णिच् + शतृ + ङीप् (द्वितीया एक0)
धारयन्ती √धृ + णिच् + शतृ + ङीप्
श्राम्यताम् √श्रम + शतृ षष्ठी बहु0
पश्यन्तीनाम् √दृश् + शतृ + ङीप् षष्ठी बहु0
विगणयन् वि √गण् + णिच् + लट् + शतृ
रमयन् √रम् + णिच् + लट् + शतृ
रुदती √रुद् + लट् + शतृ + ङीप्
कथयतः √कथ् +णिच् + लट् + शतृ + षष्ठी एक0
पृच्छतः √प्रच्छ् + लट् + शतृ + षष्ठी एक0

शानच् प्रत्यय

वीक्ष्यमाणः वि √ईक्ष् + शानच्
सेव्यमानाः √सेव + लट् + शानच् (कर्मणि)
दधानः √धा + शानच्
पीयमानः √पा + शानच्
आसीनानाम् √आस् + शानच्, षष्ठी, बहु0
पूर्यमाणाः √पुर् + णिच् + शानच्
मुच्यमानः √मुच् + शानच्
गाहमानः √गाह् + शानच्
आददानः आ √दा + शानच्

णिनि प्रत्यय

पश्चार्धलम्बी पश्चार्ध + √लम्ब् + णिनि
भावि √भू + णिनि
कामिनः √कम् + णिनि + प्रथमा बहुवचन
अभिलाषी अभि √लष् + णिनि

उच्छ्वासि　उत् + √श्वस् + णिनि
ध्वंसिनः　√ध्वंस् + णिनि प्रथमा बहुवचन

ड प्रत्यय

अनुग　अनु √गम् + ड
अम्भोज　अम्भस् √जन् + ड
त्वदुपगमजम्　त्वदुपगम + √जन् + ड

र प्रत्यय

नम्रा　√नम् + र + टाप्
मुखर　मुख + र

आलच् प्रत्यय

वाचाल　वाच् + आलच्

क्तिन् प्रत्यय

वृत्तिः　√वृत् + क्तिन्
उपपत्तिः　उप + √पद् + क्तिन्
ग्लानिः　√ग्लै (थकना) + क्तिन्
दृष्टिः　√दृश् + क्तिन्
कान्तिः　√कम् + क्तिन्
प्रकृतिः　प्र + √कृ + क्तिन्
आर्तिः　आङ् √ऋ + क्तिन्
अनुकृतिः　अनु + √कृ + क्तिन्
सृष्टिः　√सृज् + क्तिन्
स्नुतिः　√स्नु + क्तिन्

तृच् प्रत्यय

परिणमयिता　परि + √नम् + णिच् + तृच्
भवित्रीम्　√भू + तृच् + ङीप् + द्वितीया एक0
नेत्रा　√नी + तृच् + तृतीया एक0
धातुः　√धा + तृच् + षष्ठी एक0
भविता　√भू + तृच्
आगन्तॄन्　आङ् √गम् + तृच् + द्वितीया बहुवचन

तव्यत् प्रत्यय

स्थाव्यतम्　√स्था + तव्यत्
अन्वेष्टव्य　अनु √इष् + तव्यत्

अण् प्रत्यय

विश्रामः　वि + √श्रम + अण् (स्वार्थ में)
चाटुकारः　चाटु √कृ + अण्
हैमम्　हेमन् + अण्
सान्ध्यः　सन्ध्या + अण्
सौदामनी　सुदामन् + अण् + ङीप्
वासवीनाम्　वासव + अण् + ङीप् षष्ठी बहुवचन
कौरवः　कुरु + अण्
नैशः　निशा + अण्
अम्बुवाहः　अम्बु √वह् + अण्
मैथिली　मिथिला + अण् + ङीप्
नागरः　नगर + अण्
पुष्पलावी　पुष्प √लू + अण् + ङीप्

तुमुन् प्रत्यय

कर्तुम्　√कृ + तुमुन्
तुलयितुम्　√तुल् + णिच् + तुमुन्
हन्तुम्　√हन् + तुमुन्
विहातुम्　वि + √हा + तुमुन्
आदातुम्　आङ् + √दा + तुमुन्
पातुम्　√पा + तुमुन्
शमयितुम्　√शम् + णिच् + तुमुन्
सुखयितुम्　√सुख + णिच् + तुमुन्
वक्तुम्　√वच् + तुमुन्
उपकर्तुम्　उप + √कृ + तुमुन्
कथयितुम्　√कथ् + तुमुन्
मोघीकर्तुम्　मोघ + च्वि √कृ + तुमुन्

ल्युट् प्रत्यय

विलसन्　वि √ लस् + ल्युट्
उद्वर्तनम्　उद् √ वृत् + ल्युट्
विनयनम्　वि √ नी + ल्युट्
प्रशमनम्　प्र + √शम् + ल्युट्
नियमनम्　नि √यम् + ल्युट्
उद्घट्टनम्　उद् √ घट्ट + ल्युट्
मण्डनम्　√मण्ड् + ल्युट्
लक्षणम्　√लक्ष् + ल्युट्
अनुसरणम्　अनु √सृ + ल्युट्
अञ्जनम्　√अञ्ज् + ल्युट्
संवाहनम्　सम् + √वह् + णिच् + ल्युट्
लोचनम्　√लुच् + ल्युट्
प्रेक्षणम्　प्र √ईक्ष् + ल्युट्
अभिज्ञानम्　अभि + √ज्ञा + ल्युट्

'क्त्वा' प्रत्यय

स्थित्वा √स्था + क्त्वा
जग्ध्वा √अद् + क्त्वा
गत्वा √गम् + क्त्वा
दृष्ट्वा √दृश् + क्त्वा
नीत्वा √नी + क्त्वा
हृत्वा √हृ + क्त्वा
हित्वा √हा + क्त्वा
कृत्वा √कृ + क्त्वा
मत्वा √मन् + क्त्वा
भित्त्वा √भिद् + क्त्वा
सारयित्वा √सृ + णिच् + क्त्वा
मीलयित्वा √मील् + णिच् + क्त्वा

'ल्यप्' प्रत्यय

एत्य आङ् + √इण् + ल्यप्
न्यस्य नि + √अस् + ल्यप्
उपभुज्य उप + √भुज् + ल्यप्
आरुह्य आङ् + √रुह् + ल्यप्
आदाय आङ् + √दा + ल्यप्
आघ्राय आङ् + √घ्रा + ल्यप्
सन्निपत्य सम् + नि + √पत् + ल्यप्
उत्पात्य उत् + पत् + णिच् + ल्यप्
आसाद्य आङ् + √सद् + णिच् + ल्यप्
आराध्य आङ् + √राध् + ल्यप्
आवर्ज्यः आङ् + √वृज् + णिच् + ल्यप्
विहस्य वि + √हस् + ल्यप्
अतिक्रम्य अति + √क्रम् + ल्यप्
वितव्य वि + √तन् + ल्यप्
प्रेक्ष्य प्र + √ईक्ष् + ल्यप्
निक्षिप्य नि + √क्षिप् + ल्यप्
उत्थाप्य उत् + √स्था + णिच् + ल्यप्
वीक्ष्य वि + √ईक्ष् + ल्यप्
स्वागतीकृत्य स्वागत + च्वि + √कृ + ल्यप्

अनीयर् प्रत्यय

प्रेक्षणीयम् प्र + √ईक्ष् + अनीयर्
प्रापणीयाः प्र √आप् + णिच् + अनीयर्
प्रेक्षणीया प्र + √ईक्ष् + अनीयर + टाप्
श्लाघनीयम् √श्लाघ् + अनीयर्

घञ् प्रत्यय

अधिकारः अधि √कृ + घञ्
शापः √शप् + घञ्
मोक्षः √मुच् + घञ्
भ्रंशः √भ्रंश् + घञ्
कामः √कम् + घञ्
आलोकः आङ् √लोक् + घञ्
सन्निपातः सम् + नि + √पत् + घञ्
संदेशः सम् + √दिश् + घञ्
बन्धः √बन्ध + घञ्
विप्रयोगः वि + प्र + √युज् + घञ्
उत्सर्गः उद् + √सृज् + घञ्
विश्रामः वि + √श्रम् + घञ्
रागः √रञ्ज् + घञ्
खेदः √खिद् + घञ्
न्यासः नि √अस् + घञ्
प्रवेशः प्र √विश् + घञ्
क्षेपः √क्षिप् + घञ्
अभिरामा अभि + √रम् + घञ् + टाप्
संरम्भः सम् √रभ् + घञ्
आरम्भः आङ् + √रभ् + घञ्
निर्ह्लादः निर् + √ह्लाद् + घञ्
हासः √हस् + घञ्
चारः √चर् + घञ्
उत्सङ्गः उद् + √सञ्ज् + घञ्
संयोगः सम् + √युज् + घञ्
निक्षेपः नि + √क्षिप् + घञ्
उद्गारः उद् + √गृ + घञ्
संरोधः सम् + √रुध् + घञ्
आलापः आङ् + √लप् + घञ्
आदेशः आङ् + √दिश् + घञ्
उद्भेदः उत् + √भिद् + घञ्
वासः √वस् + घञ्
उन्मेषः उद् + √मिष् + घञ्
निःश्वासः निर् √श्वस् + घञ्
सङ्गः सञ्ज् + घञ्
वियोगः वि + √युज् + घञ्
व्यापारः वि + आङ् + √पॄ + घञ्
विनोदः वि + √नुद् + घञ्

उत्पीडः उत् √पीड् + घञ्
अवकाशः अव √काश् + घञ्
स्नेहः √स्निह् + घञ्
विलासः वि √लस् + घञ्
क्षोभः क्षुभ् + घञ्
सम्भोगः सम् √भुज् + घञ्
उच्छ्वासः उद् √श्वस् + घञ्
स्पर्शः √स्पृश् + घञ्
लोभः √लुभ् + घञ्
पातः पत् + घञ्
आश्लेषः आङ् √श्लिष् + घञ्
प्रत्यादेशः प्रति + आङ् √दिश् + घञ्
अनुक्रोशः अनु √क्रुश् + घञ्
शेषः शिष् + घञ्

'क्त' प्रत्यय

प्रमत्तः प्र + √मद् + क्त
विप्रयुक्तः वि + प्र + √युज् + क्त
आश्लिष्टः आङ् + √श्लिष् + क्त
प्रत्यासन्नः प्रति + आङ् √सद् + क्त
प्रीतः √प्रीञ् + क्त
सन्तप्तः सम् + √तप् + क्त
विश्लेषितः वि + √श्लिष् + णिच् + क्त
आरूढः आङ् + √रुह् + क्त
सन्नद्धः सम् + √नह् + क्त
व्यापन्नः वि आङ् √पद् + क्त
स्फुरिताः √स्फुर् + क्त + टाप्, प्रथम, बहु0
आयत्तम् आङ् √यत् + क्त
स्निग्धः √स्निह् + क्त
प्रशमितम् प्र + √शम् + णिच् + क्त
परिणतः परि + √नम् + क्त
छन्नः √छद् + क्त
स्निग्धा √स्निह् + क्त + टाप्
भुक्तः √भुज् + क्त
तीर्णः √तृ + क्त
विशीर्णा वि √शॄ + क्त + टाप्
विरचिता वि √रच् + णिच् + क्त + टाप्
वान्ता √वम् + क्त + टाप्
रूढः √ रुह् + क्त
प्रत्युद्यातः प्रति + उद् + √या + क्त
भिन्नम् +भिद् + क्त

विश्रान्तः वि √श्रम् + क्त
क्लान्तः √क्लम् + क्त
प्रस्थितः प्र + √स्था + क्त
स्फुरितः √स्फुर् + क्त
चकितः √चक् + क्त
वेणीभूतः वेणी + च्वि + √भू + क्त
जीर्णः √जॄ + क्त
गतः √गम् + क्त
हृतः √हृ + क्त
उद्दिष्टा उद् √दिश् + क्त + टाप्
कुजितः √कूज् + क्त
स्फुटः √स्फुट् + क्त
उद्भ्रान्तः उद् + √भ्रम् + क्त
प्रत्यादिष्टः प्रति + आङ् √दिश् + क्त
उद्गीर्णः उद् + √गॄ + क्त
उपचितः उप + √चि + क्त
क्वणितः √क्वण् + क्त
अभिलीनः अभि √ली + क्त
खिन्नः √खिद् + क्त
सुप्तः √स्वप् + क्त
अभ्युपेता अभि + उप + √इण् + क्त + टाप्
प्रत्यावृत्तः प्रति + आङ् √वृत् + क्त
प्रसन्नः प्र + √सद् + क्त
प्रेक्षितः प्र + ईक्ष् + क्त
उच्छ्वसितः उत् √श्वस् + क्त
पुष्पमेघीकृतः पुष्पमेघ + च्वि + √कृ + क्त
सम्भृतम् सम् √भृ + क्त
गलितम् √गल् + क्त
गर्जितः √गर्ज् + क्त
उल्लङ्घितः उद् + √लङ्घ् + क्त
अवनतः अव + √नम् + क्त
अवतीर्णः अव + √तॄ + क्त
निषण्णः नि + √सद् + क्त
उत्खातः उद् + √खन् + क्त
क्षपितः √क्षै + णिच् + क्त
आपन्नः आङ् + √पद् + क्त
मुक्तः √मुच् + क्त
अवकीर्णः अव + √कृ + क्त
व्यक्तम् वि + √अञ्ज् + क्त
उपचितः उप + √चि + क्त
उद्धूतः उत् + √धूञ् + क्त

संरक्ता	सम् + √रञ्ज् + क्त + टाप्
अभ्युद्यतः	अभि + उद् + √यम् + क्त
उच्छ्वासितः	उद् + √श्वस् + णिच् + क्त
राशीभूतः	राशि + च्वि + √भू + क्त
स्थितः	√स्था + क्त
भिन्नः	√भिद् + क्त
कृतः	√कृ + क्त
न्यस्तः	नि + √अस् + क्त
स्तम्भितः	√स्तम्भ् + क्त
विरचितः	वि √रच् + णिच् + क्त
लब्धः	√लभ् + क्त
नीता	नी + क्त (कर्मणि) + टाप्
अनुविद्धः	अनु + √व्यध् + क्त
उन्मत्तः	उद् + √मद् + क्त
प्रतिहतः	प्रति + √हन् + क्त
इष्टः	√इष् + क्त
आहतः	आङ् + √हन् + क्त
प्रसूतः	प्र + √सू + क्त
प्रार्थितः	प्र + √अर्थ् + णिच् + क्त (कर्मणि)
गुढः	गुह् + क्त
निभृतः	नि + √भृ + क्त
आलिङ्गितः	आङ् + √लिङ्ग् + क्त
जनितः	√जन् + णिच् + क्त
रक्तः	√रञ्ज् + क्त
सिद्धः	√सिध् + क्त
वर्धितः	√वृध् + इट् + क्त
नमितः	√नम् + इट् + क्त
छन्ना	√छद् + णिच् + क्त (कर्मणि)
सन्निकृष्टः	सम् + नि √कृष + क्त
प्रत्यासन्नः	प्रति + आङ् + √सद् + क्त (कर्तरि)
कान्तः	√कम् + क्त
बद्धा	√बन्ध् + क्त (कर्तरि) + टाप्
नर्तितः	√नृत् + णिच् + क्त
निहितः	नि + √धा + क्त
क्षामा	√क्षै + क्त + टाप्
विलसितम्	वि + √लस् + क्त
दूरीभूतेः	दूर + च्वि + √भू + क्त, सप्तमी, एक0
परिमिता	परि + √मा + क्त + टाप्
मथिता	√मन्थ् + क्त + टाप्
जाता	√जन् + क्त + टाप्
रुदितः	√रुद् + क्त
उच्छूनः	उद् + √श्वि + क्त
क्लिष्टा	√क्लिश् + क्त + टाप्
स्थापितः	√स्था + णिच् + क्त
सन्निषण्णः	सम् + नि + √सद् + क्त
गतम्	गम् + क्त
प्रबुद्धा	प्र + √बुध् + क्त + टाप्
रुद्धः	√रुध् + क्त
बद्धा	√बन्ध् + क्त + टाप्
सम्भृतः	सम् + √भृ + क्त
आसन्नः	आङ् √सद् + क्त
परिचितः	परि + √चि + क्त
त्याजितः	त्यज् + णिच् + क्त
समुचितः	सम् + √उच् + क्त
गाढः	√गाह् + क्त
प्रत्याश्वस्ताम्	प्रति + आङ् + √श्वस् + क्त + टाप्
आगतम्	आङ् + √गम् + क्त
आख्यातम्	आङ् + √ख्या + क्त
अवहितः	अव + √धा + क्त
उपनतः	उप + √नम् + क्त
वियुक्तः	वि + √युज् + क्त
अव्यापन्नः	नञ् (अ) वि + आङ् + √पद् + क्त
तप्तः	√तप् + क्त
उत्कण्ठितः	उद् + √कण्ठ् + क्त
द्रुतः	√द्रु + क्त
चकिता	√चक्र + क्त + टाप्
कुपिता	√कुप् + क्त + टाप्
लब्धा	√लभ् + क्त + टाप्
प्रवृत्ताः	प्र + √वृत् + क्त प्रथमा, बहुवचन, पुंलिङ्ग
स्पृष्टः	√स्पृश् + क्त
उत्थितः	उद् + √स्था + क्त
लग्ना	√लग् + क्त + टाप्
विप्रबुद्धा	वि + प्र + √बुध् + क्त + टाप्
उपचितः	उप + √चि + क्त
उत्खातः	उत् √खन् + क्त
प्रहितम्	प्र + √धा + क्त
व्यवसितम्	वि + अव + √सो + क्त
याचितः	√याच् + क्त
ईप्सितः	√आप् + सन् + क्त
प्रत्युक्तम्	प्रति √वच् + क्त
सम्भृता	सम् √भृ + क्त + टाप्

नीतिशतकम् में क्रियापद

लट्लकार

- **रञ्जयति** = √रञ्ज् + णिच् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **आराध्यते** = आङ् + √राध् + लट् + कर्मवाच्य + प्र. पु. एक.
- **इच्छति** = √इष् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **समुज्जृम्भते** = सम् + उत् + √जृम्भ् + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने.)
- **ईहते** = √ईह् + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने.)
- **सन्नह्यते** = सम् + √नह् + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने.)
- **भवति** = √भू + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **अस्मि** = √अस् + लट् + उ. पु. एक. (परस्मै.)
- **गणयति** = √गण् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **विशङ्कते** = वि + √शङ्क् + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने.)
- **अस्ति** = √अस् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मैपद)
- **चरन्ति** = √चर् + लट् + प्र. पु. बहु. (परस्मै.)
- **वसन्ति** = √वस् + लट् + प्र. पु. बहु. (परस्मैपदी)
- **याति** = √या + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **पुष्णाति** = √पुष् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **प्राप्नोति** = प्र √आप् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **स्पर्धते** = √स्पर्ध् + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने.)
- **संरुणद्धि** = सम् + √रुधिर् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **हन्ति** = √हन् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **भूषयन्ति** = √भूष् + णिच् + लट् + प्र. पु. बहु. (परस्मै.)
- **क्षीयन्ते** = क्षि + लट् + प्र. पु. बहु. (आत्मने)
- **समलङ्करोति** = सम् + अलम् + कृ + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **पूज्यते** = √पूज् + लट् + प्र. पु. एक. (कर्मणि)
- **हरति** = √हृञ् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **सिञ्चति** = √सिञ्च् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **दिशति** = √दिश् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **अपाकरोति** = अपा + कृ + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **प्रसादयति** = प्र + √सद् + णिच् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **तनोति** = √तनु + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **करोति** = √कृ + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **जयन्ति** = √जि + लट् + प्र. पु. बहु.
- **सम्प्राप्यते** = सम् + प्र + √आप् + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने) कर्मवाच्य
- **प्रारभ्यते** = प्र + आ + √रभ् + लट् + प्र. पु. एक. (कर्मवाच्य)
- **विरमन्ति** = वि + √रम् + लट् + प्र. पु. बहु.
- **परित्यजन्ति** = परि + √त्यज् + लट् + प्र. पु. बहु. (परस्मै.)
- **अत्ति** = √अद् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **एति** = √इण् (गतौ) + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **निहन्ति** = नि + √हन् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **वाञ्छति** = √वाञ्छ् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **कुरुते** = √कृ + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने.)
- **विलोकयति** = वि + √लोक् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **भुङ्क्ते** = √भुज् + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने.)
- **जायते** = √जन् + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने.)
- **शीर्यते** = √शॄ + लट् + प्र. पु. एक. (कर्मणि)
- **सन्ति** = √अस् + लट् + प्र. पु. बहु. (परस्मै.)
- **वैरायते** = √वैर् + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने.)
- **ग्रसते** = √ग्रस् + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने.)
- **वहति** = √वह् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **धार्यते** = √धृञ् + लट् + प्र. पु. एक. (कर्मवाच्य)
- **प्रज्वलति** = प्र + √ज्वल् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **सहते** = √सह् + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने.)
- **निपतति** = नि + √पत् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **आश्रयन्ति** = आङ् + √श्रिञ् + लट् + प्र. पु. बहु. (परस्मै.)
- **विनश्यति** = वि + √नश् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **ददाति** = √दा + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **शोभन्ते** = √शोभ् + लट् + प्र. पु. बहु. (आत्मने.)
- **स्पृहयति** = √स्पृह् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **कलयति** = √कल् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **प्रथयति** = √प्रथ् + णिच् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **सङ्कोचयति** = सम् + √कुच् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **दुधुक्षसि** = √दुह् + सन् + लट् + म. पु. एक. (परस्मै.)
- **प्राप्नोति** = प्र + √आप् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **गृह्णाति** = ग्रह् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **असि** = √अस् + लट् + म. पु. एक. (परस्मै.)
- **प्रतीक्षसे** = प्रति + √ईक्ष् + लट् + म. पु. एक. (आत्मने.)
- **पश्यसि** = √दृश् + लट् + म. पु. एक. (परस्मै.)
- **आर्द्रयन्ति** = √आर्द्र + णिच् + लट् + प्र. पु. बहु. (परस्मै.)
- **गर्जन्ति** = √गर्ज् + लट् + प्र. पु. बहु. (परस्मै.)
- **गण्यते** = √गण् + णिच् + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने.)
- **दहति** = √दह् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **वसति** = √वस् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)

- **सहते** = √सह् + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने.)
- **आप्यते** = √आप् + लट् + प्र. पु. एक. (कर्मणि.)
- **ज्ञायते** = √ज्ञा + यक् + लट् + प्र. पु. एक. (कर्मणि.)
- **जायते** = √जन् + लट् + प्र. पु. एक. (कर्मणि.)
- **विभाति** = वि + √भा + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **निवारयति** = नि + √वृ + णिच् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **जहाति** = √हा + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **ददाति** = √दा + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **योजयते** = √युज् + णिच् + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने.)
- **निगूहति** = नि + √गुह् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **निघ्नन्ति** = नि + √हन् + लट् + प्र. पु. बहु. (परस्मै.)
- **जानीमहे** = √ज्ञा, + लट् + उ. पु. बहु. (आत्मने.)
- **शाम्यति** = √शम् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **स्वपिति** = √स्वप् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **शेरते** = √शीङ् + लट् + प्र. पु. बहु. (आत्मने.)
- **विरमन्ति** = वि + √रम् + लट् + प्र. पु. बहु. (परस्मै.)
- **गणयति** = √गण् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **सृजति** = √सृज् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **अवलोकते** = अव + √लोक् + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने.)
- **पतन्ति** = √पत् + लट् + प्र. पु. बहु. (परस्मै.)
- **फलति** = √फल् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **रक्षन्ति** = √रक्ष् + लट् + प्र. पु. बहु. (परस्मै.)
- **कुर्वन्ति** = √कृ + लट् + प्र. पु. बहु. (परस्मै.)
- **चरति** = √चर् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **विलिखति** = वि + √लिख् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **उपयाति** = उप + √या + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **लुनन्ति** = √लूञ् + लट् + प्र. पु. बहु. (परस्मै.)
- **जयति** = √जि + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **क्रियते** = √कृ + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने.)
- **जलायते** = √जल + क्यङ् + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने.)
- **स्वल्पशिलायते** = स्वल्पशिला + क्यङ् + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने.)
- **कुरङ्गायते** = कुरङ्ग + क्यङ् + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने.)
- **माल्यगुणायते** = माल्यगुण + क्यङ् + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने.)
- **पीयूषवर्षायते** = पीयूषवर्षा + क्यङ् + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने.)
- **समुज्जृम्भते** = सम् + उत् + √जृम्भ् + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने.)

विधिलिङ्

- **उद्धरेत्** = उत् + √हृ + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **सन्तरेत्** = सम् + √तृ + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **धारयेत्** = √धृ + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **आराधयेत्** = आ + √राध् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **लभेत** = √लभ् + प्र. पु. एक. (आत्मने.)
- **पिबेत्** = √पा + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **आसादयेत्** = आङ् + √साद् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)

लोट्लकार

- **कथय** = √कथ् + लोट् + म. पु. एक. (परस्मै.)
- **पश्य** = √दृश् + लोट् + म. पु. एक. (परस्मै.)
- **यातु** = √या + लोट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **पततु** = √पत् + लोट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **निपततु** = नि + √पत् + लोट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **अस्तु** = √अस् + लोट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **भव** = √भू + लोट् + म. पु. एक. (परस्मै.)
- **ब्रूहि** = √ब्रू + लोट् + म. पु. एक. (परस्मै.)
- **जहि** = √हन् + लोट् + म. पु. एक. (परस्मै)
- **जयतु** = √जि + लोट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)

लङ्लकार

- **अभवत्** = √भू + लङ् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)

लुङ्लकार

- **माकृथाः** = √कृञ् + लुङ् + म. पु. एक. (आत्मने.)

नीतिशतकम् में प्रत्यय

क्तिन् प्रत्यय

- **मूर्तिः** = √मूर्त् + क्तिन्
- **अनुभूतिः** = अनु + √भू + क्तिन्
- **प्रीतिः** = √प्रीङ् (प्री) + क्तिन्
- **वृद्धिम्** = √वृध् + क्तिन्
- **क्षान्तिः** = √क्षम् + क्तिन्
- **ज्ञातिः** = √ज्ञा + क्तिन्
- **स्थितिः** = √स्था + क्तिन्
- **उन्नतिः** = उद् + √नम् + क्तिन्

- **कीर्तिः** = √कृत् + क्तिन्
- **सङ्गतिः** = सम् + √गम् + क्तिन्
- **निवृत्तिः** = नि + √वृत् + क्तिन्
- **शक्तिः** = √शक् + क्तिन्
- **दीधितिः** = √दीधीङ् + क्तिन्
- **वृत्तिः** = √वृत् + क्तिन्
- **समुन्नतिः** = सम् + उत् + √नम् + क्तिन्
- **आकृतिः** = आङ् + √कृ + क्तिन्
- **विभूतिः** = वि + √भू + क्तिन्
- **निकृतिः** = नि + √कृ + क्तिन्
- **प्रकृतिः** = प्र + √कृ + क्तिन्
- **भित्तिः** = √भिद् + क्तिन्
- **जातिः** = √जन् + क्तिन्
- **यतिः** = √यम् + क्तिन्
- **गतिः** = √गम् + क्तिन्
- **प्रसृतिः** = प्र + √सृ + क्तिन्
- **नीतिः** = √नी + क्तिन्
- **उक्तिः** = √वच् + क्तिन्
- **वृष्टिः** = √वृष् + क्तिन्
- **शान्तिः** = √शम् + क्तिन्
- **मुक्तिः** = √मुच् + क्तिन्
- **उपकृतिः** = उप + √कृ + क्तिन्
- **समृद्धिः** = सम् + √ऋध् + क्तिन्

ल्युट्प्रत्यय

- **छादनम्** = √छाद् + ल्युट्
- **विभूषणम्** = वि + √भूष् + ल्युट्
- **दानम्** = √दा + ल्युट्
- **ज्ञानम्** = √ज्ञा + ल्युट्
- **मानम्** = √मान् + ल्युट्
- **वारणम्** = √वारि + ल्युट्
- **स्नानम्** = √स्ना + ल्युट्
- **विलेपनम्** = वि + √लिप् + ल्युट्
- **भूषणम्** = √भूष् + ल्युट्
- **गमनम्** = √गम् + ल्युट्
- **हरणम्** = √हृ + ल्युट्
- **प्रदानम्** = प्र + √दा + ल्युट्
- **दर्शनम्** = √दृश् + ल्युट्
- **चालनम्** = √चाल् + ल्युट्
- **दहनम्** = √दह् + ल्युट्
- **अचेतनः** = अ + √चित् + ल्यु
- **वचनम्** = √वच् + ल्युट्
- **अध्ययनम्** = अधि + √इङ् + ल्युट्
- **उपासनम्** = उप् + √अस् + ल्युट्
- **अन्वेक्षणम्** = अनु + अव + √ईक्ष् + ल्युट्
- **पालनम्** = √पाल् + ल्युट्
- **संरक्षणम्** = सम् + √रक्ष् + ल्युट्
- **व्यसनम्** = वि + √अस् + ल्युट्
- **शयनम्** = √शी + ल्युट्
- **गमनम्** = गम् + ल्युट्

क्त प्रत्यय

- **शान्तः** = √शम् + क्त
- **दग्धः** = √दह् + क्त
- **कोपितम्** = √कुप् + क्त
- **विनिर्मितम्** = वि + निर् + √मा + क्त
- **स्वायत्तम्** = सु + आङ् + √यत् + क्त
- **अवलिप्तम्** = अव + √लिप् + क्त
- **अवगतम्** = अव + √गम् + क्त
- **चितम्** = √चि + क्त
- **क्लिन्नम्** = √क्लिद् + क्त
- **जुगुप्सितम्** = जु + √गुप् + क्त
- **उपगतः** = उप + √गम् + क्त
- **भ्रष्टः** = √भ्रस्ज् + क्त
- **विनिपातः** = वि + नि + √पत् + घञ्
- **विहितम्** = वि + √धा + क्त ('धा' को 'हि' आदेश)
- **भूतः** = √भू + क्त
- **गुप्तम्** = √गुप् + क्त
- **प्रच्छन्नम्** = प्र + √छद् + क्त
- **विख्यातः** = वि + √ख्या + क्त
- **पतितः** = √पत् + क्त
- **कुपितः** = √कुप् + क्त
- **प्रसिद्धः** = प्र + √सिध् + क्त
- **अलङ्कृतः** = अलम् + √कृ + क्त
- **संस्कृतम्** = सम् + √कृ + क्त ('सुट्' का आगम)
- **विहीनः** = वि + √हा (ओहाक् त्यागे) + क्त
- **सिद्धाः** = √सिध् + क्त
- **तुष्टः** = √तुष् + क्त
- **सच्चरितः** = सत् + √चर् + क्त

- **स्निग्धम्** = √स्निह् + क्त
- **अवदातम्** = अव + √दा + क्त
- **उपहतः** = उप + √हन् + क्त
- **उद्दिष्टम्** = उत् + √दिश् + क्त
- **क्षामः** = √क्षै + क्त
- **आपन्नः** = आङ् + √पद् + क्त
- **विपन्नः** = वि + √पद् + क्त
- **मत्तः** = √मद् + क्त
- **विभिन्नः** = वि + √भिद् + क्त
- **बद्धः** = √बध् + क्त
- **जीर्णः** = √जॄ + क्त
- **आगतम्** = आ + √गम् + क्त
- **गतः** = √गम् + क्त
- **अवपातम्** = अव + √पा + क्त
- **स्थितः** = √स्था + क्त
- **मुक्तः** = √मुच् + क्त
- **स्पृष्टः** = √स्पृश् + क्त
- **कान्तः** = √कम् + क्त
- **कृतः** = √कृ + क्त
- **अप्रतिहतः** = अ + प्रति + √हन् + क्त
- **विरहितः** = वि + √रह् + क्त
- **वित्तम्** = √विद् + क्त
- **उल्लीढः** = उद् + √लिह् + क्त
- **दलितः** = √दल् + क्त
- **सुरतः** = सु + √रम् + क्त
- **मृदिता** = √मृद् + क्त + टाप्
- **गलितः** = √गल् + क्त
- **सम्पूर्णः** = सम् + √पुर् + क्त
- **अनृता** = अन् + √नृ + क्त + टाप्
- **लिखितम्** = √लिख् + क्त
- **सिद्धम्** = √सिध् + क्त
- **विहितः** = वि + √धा + क्त
- **विततः** = वि + √तन् + क्त
- **श्रुतम्** = √श्रु + क्त
- **गूढः** = √गुह् + क्त
- **हुतः** = √हु + क्त
- **युक्तम्** = √युज् + क्त
- **इष्टम्** = √इष् + क्त
- **म्लानः** = √म्लै + क्त
- **छिन्नः** = √छिद् + क्त
- **क्षीणः** = √क्षि + क्त
- **विप्लुतः** = वि + √प्लु + क्त
- **नियमितः** = नि + √यम् + क्त
- **कदर्थितः** = कदर्थ + णिच् + क्त

शतृ प्रत्यय

- **पीडयन्** = √पीड् + णिच् + शतृ
- **पर्यटन्** = परि + √अट् + शतृ
- **खादन्** = √खाद् + शतृ
- **नश्यत्** = √नश् + शतृ
- **उद्गच्छत्** = उद् + √गम् + शतृ
- **ख्यापयन्तः** = √ख्या + णिच् + पुक् + शतृ
- **सन्तः** = √अस् + + शतृ प्रथमा, बहु0

घञ् प्रत्यय

- **विहारः** = वि + √हृ + घञ्
- **विलासः** = वि + √लस् + घञ्
- **क्रोधः** = √क्रुध् + घञ्
- **आकारः** = आङ् + √कृ + घञ्
- **प्रसादः** = प्र + √सद् + घञ्
- **भाव** = √भू + घञ्
- **अवशेष** = अव + √शिष् + घञ्
- **परितोषम्** = परि + √तुष् + घञ्
- **संसारः** = सम् + √सृ + घञ्
- **प्रहारः** = प्र + √हृञ् + घञ्
- **उद्गार** = उत् + √गॄ + घञ्
- **सम्पातः** = सम् + √पत् + घञ्
- **भोगः** = √भुज् + घञ्
- **नाशः** = √नश् + घञ्
- **सर्पः** = √सृप् + घञ्
- **दम्भः** = √दम्भ् + घञ्
- **संसर्ग** = सम् + √सृज् + घञ्
- **त्यागः** = √त्यज् + घञ्
- **संघात** = सम् + √हन् + घञ्
- **आक्षेप** = आङ् + √क्षिप् + घञ्
- **अभियोग** = अभि + √युज् + घञ्
- **उत्तापः** = उद् + तप् + घञ्
- **विराम** = वि + √रम् + घञ्

- **उपशमः** = उप + √शम् + घञ्
- **विपाकः** = वि + √पच् + घञ्
- **लाभः** = √लभ् + घञ्

अन्य प्रत्यय

- **अर्चनीयः** = √अर्च् + अनीयर्
- **पावकः** = √पूञ् + ण्वुल्
- **वाचकः** = √वच् + ण्वुल्
- **जल्पकः** = √जल्प् + ण्वुल् अथवा जल्पति इति जल्प, जल्प् + अच् (पचादित्वात्)
- **भीरूः** = √भी + क्रुक् ("भियः क्रुक्लुकनौ" सूत्र से बना)
- **अभिभवः** = अभि + √भू + अप्
- **पुत्रः** = पुत् + √त्रै + क
- **त्रयम्** = त्रि + तयप्
- **सारः** = √सृ + घञ्
- **मैत्री** = मित्र + अण् + ङीप्
- **श्लाघ्यः** = √श्लाघ् + ण्यत्
- **प्रणयिन्** = प्रणय + इनि = प्रणयिन् + तल् + टाप् = "प्रणयिता"
- **विजयि** = वि + √जि + णिनि
- **ऐश्वर्यम्** = ईश्वर + ष्यञ्
- **ईश्वरः** = √ईश् + वरच्
- **वितत पृथुतरारम्भयत्नाः** = वि + √तन् + क्त = विततः + पृथु + तरप् = पृथुतरः + आङ + √रम् + घञ् = आरम्भ + यत् + न = यत्नः
- **चिन्मात्रम्** = √चिद् + मात्रच्
- **बोद्धारः** = √बुध् + तृच्
- **अज्ञः** = √ज्ञा + क
- **आराध्यः** = आङ् + √राध् + ण्यत्
- **विशेषज्ञः** = विशेष + √ज्ञा + क
- **नरम्** = √नृ + अच्
- **ब्रह्मा** = √बृह् + मनिन् = ब्रह्मन्
- **पुष्पवत्** = √पुष्प + वति
- **यत्नतः** = यत्न + तसिल्
- **माधुर्यम्** = मधुर + ष्यञ्
- **सर्वविदाम्** = सर्व + विद् + क्विप्
- **तनिमानम्** = √तनु + इमनिच्
- **विभवः** = वि + √भू + अच्
- **गुरुलघुता** = गुरु + लघु + तल् + टाप्
- **धरित्री** = √धृ + तृच् + ङीप्
- **परिपोष्यमाण्** = परि + √पुष् + शानच्
- **प्रियवादिनी** = प्रिय + √वद् + णिनि + ङीप्
- **हिंस्रा** = √हिंस् + र + टाप्
- **व्यया** = वि + √इण् + अच् + टाप्
- **आगमा** = आङ् + √गम् + अच् + टाप्
- **सत्या** = √सत् + यत् + टाप्
- **दयालुता** = दया + आलुच् + तल् + टाप्
- **अनृता** = अनृत + अच् + टाप्
- **परुषा** = √पृ + उषन् + टाप्
- **विधाता** = वि + √धा + तृच्
- **विशेषतः** = विशेष + तसिल्
- **मौनम्** = मुनि + अण्
- **किञ्चिज्ज्ञः** = किञ्चित् √ज्ञा + क
- **द्विपः** = द्वि + √पा + क
- **सर्वज्ञः** = सर्व + √ज्ञा + क
- **पार्श्वस्थम्** = पार्श्व + √स्था + क
- **विलोक्य** = वि + √लुक् + ल्यप्
- **शक्यः** = √शक् + यत्
- **व्याधि** = वि + आङ् + √धा + कि
- **जीवमानः** = √जीव् + शानच्
- **साहित्यम्** = सहित + ष्यञ्
- **उपस्कृत** = उप + सुट् + √कृ + क्त
- **कुत्स्याः** = √कुत्स् + ण्यत्
- **प्रतिपाद्यमानम्** = प्रति + पद् + शानच्
- **सर्वदा** (अव्यय) = सर्व + दाच्
- **गोचर** = गो + √चर् + घ
- **विधि** = वि + √धा + कि
- **दैवतम्** = देवता + अण्
- **भोगकरी** = भोग + √कृ + ट + ङीप्
- **विद्या** = √विद् + क्यप् + टाप्
- **देहिनाम्** = देह + इनि + (षष्ठी, बहुवचन)
- **औषधम्** = औषध + अण्
- **नय** = √नी + अच्
- **दाक्षिण्यम्** = दक्षिण + ष्यञ्
- **शाठ्यम्** = शठ + ष्यञ्
- **शौर्य** = शूर + ष्यञ्
- **आर्जवम्** = ऋजु + अण्
- **जाड्यम्** = जड + ष्यञ्

- **ईश्वरः** = √ईश् + वरच्
- **भयम्** = √भी + अच्
- **सुकृतिनः** = सुकृत + इनि (इन्)
- **वञ्चकः** = √वञ्च् + ण्वुल्
- **विष्टपहारिणि** = विष्टप + √हृ + णिनि
- **संयमः** = सम् + √यम् + अप्
- **अनुकम्पा** = अनु + √कम्प् + अच् + टाप्
- **विधि** = वि + √धा + कि
- **विभङ्ग** = वि + √भञ्ज् + क
- **विनयः** = वि + √नी + अच्
- **प्रारभ्य** = प्र + आङ् + √रभ् + ल्यप्
- **हन्यमानः** = √हन् + शानच्
- **अभ्यर्थ्यः** = अभि + अर्थ् + यत्
- **याच्यः** = √याच् + यत्
- **स्थेयम्** = √स्था + यत्
- **उद्गमः** = उद् + √गम् + अप्
- **घनः** = √हन् + अप्
- **उपकरिणः** = उप + √कृ + णिनि
- **विधेयम्** = वि + √धा + यत्
- **सुकरम्** = सु + √कृ + अच्
- **त्यक्त्वा** = √त्यज् + क्त्वा
- **द्विपः** = द्वि + √पा + क
- **लब्ध्वा** = √लभ् + क्त्वा
- **निपत्य** = नि + √पत् + ल्यप्
- **पिण्डदः** = पिण्ड + √दा + क
- **परिवर्ती** = परि + √वृत् + णिनि
- **पयोधिः** = पयः + √धा + कि
- **छेदः** = √छिद् + घञ्
- **स्पृहः** = √स्पृह् + अच्
- **कृशः** = √कृश् + क्त
- **विवशः** = वि + √वश् + अच्
- **श्रोत्रम्** = √श्रु + ष्ट्रन्
- **दिनकर** = दिन + √कृ + ट
- **तेजस्वी** = तेजस् + विनि
- **सत्त्ववान** = सत्त्व + मतुप्
- **शौर्यम्** = शूर + ष्यञ्
- **गुणज्ञः** = गुण + ज्ञा + क
- **वक्ता** = √वच् + तृच्
- **दर्शनीयः** = √दृश् + अनीयर्
- **कुलीनः** = कुल + खञ् (ईन)
- **पण्डितः** = पण्डा + इतच्
- **श्रुतवान्** = श्रुत + मतुप्
- **मद्यम्** = मद् + यत्
- **दौर्मन्त्र्यम्** = दुर्मन्त्र + ष्यञ्
- **मैत्री** = मित्र + अण् + ङीप्
- **वदान्या** = √वद् + आन्य + टाप्
- **नित्यधनागम** = नित्य + धन + आङ् + √गम् + घञ् + टाप्
- **वाराङ्गना** = वार + अङ्ग + न + टाप्
- **आज्ञा** = आङ् + √ज्ञा + अङ् + टाप्
- **उपाश्रयः** = उप + आङ् + √श्रि + अच्
- **धात्रा** = √धा + तृच्
- **मरुः** = √मृ + उ
- **अम्भोदाः** = अम्भस् + √दा + क
- **आधारः** = आ + √धृ + घञ्
- **कार्पण्यम्** = कृपण + ष्यञ्
- **पुरतः** = पुरा + तस्
- **विग्रहः** = वि + √ग्रह् + अप्
- **स्पृहा** = √स्पृह् + अङ् + टाप्
- **होता** = √हु + तृच्
- **असहिष्णुता** = असहिष्णु + तल + टाप्
- **परिहर्तव्यः** = परि + √हृ + तव्यत्
- **भयङ्करः** = भय + √कृ + खश्
- **निर्घृणता** = निर्घृण + तल् + टाप्
- **मुनिः** = √मन् + इनि
- **मुखरता** = मुख + र + तल् + टाप्
- **शशी** = शश् + इनि
- **कामिनी** = काम + इनि = ङीप्
- **वारिजम्** = वारि + जन् + ड
- **यौवन** = युवन् + अण्
- **भूभुजाम्** = √भू + भुज् + क्विप् (ष. वि.)
- **जुह्वान्** = √हु + शानच्
- **रोद्धुम्** = √रुध् + तुमुन्
- **छेत्तुम्** = √छिद् + तुमुन्
- **रचयितुम्** = √रच् + तुमुन्
- **नेतुम्** = नी + तुमुन्
- **वारयितुम्** = वारि + तुमुन्
- **जलधरः** = जल + √धृ + अच्

- **उद्यमः** = उद् + यम + अप्
- **तदीयम्** = तत् + छ (ईय)
- **केशवः** = केश + व (केशाद्वोऽन्यतस्याम् से 'व' प्रत्यय)
- **सहम्** = सह् + अच्
- **लक्ष्मीः** = √लक्ष् + ई (लक्षेर्मुट च, से मुट् का आगम)
- **धीरः** = √धी + ईर् + अच्
- **न्यायः** = नि + √इ + घञ्
- **विष्णुः** = √विश् + नु (उणादि)
- **अवतारः** = अव + तॄ + घञ्
- **अवतरः** = अव + √तॄ + अप्
- **रुद्रः** = √रुद् + र (उणादि)
- **सेवा** = √सेव् + अङ् + टाप्
- **पिण्डिता** = पिण्ड् + इतच् + टाप्
- **म्लान** = √म्लै + क्त
- **इन्द्रिय** = इन्द्र + घ
- **भोगी** = भोग + इनि
- **आखुः** = आ + √खन् + कु
- **आलस्यम्** = अलस् + ष्यञ्
- **शरीरस्थः** = शरीर + √स्था + क
- **तरुः** = तॄ + उ
- **ग्रहः** = √ग्रह् + अच्
- **क्षणभङ्गि** = क्षण + √भञ्ज् + घिनुण्
- **मार्जितुम्** = √मृज् + तुमुन्
- **नमस्यामः** = नमस् + क्यच्
- **वशगाः** = वश + √गम् + ड
- **यत्नतः** = √यत् + नङ् = यत्न + तसिल्
- **वैदूर्यमयी** = वैदूर्य + मयट् + ङीप्
- **चान्दनैः** = चन्दन + अण् तृतीया बहुवचन
- **आह्वः** = आ + √ह्वे + अप्
- **कृषिः** = √कृष् + इनि
- **भाज्यम्** = √भू + ण्यत्
- **धैर्य** = धीर + ष्यञ्
- **भास्करः** = भा + √कृ + ट
- **वल्लभतमम्** = वल्लभ + तमप्

नीतिशतकम् में सन्धि

- **दिक्कालादि** = दिक्काल + आदि (दीर्घसन्धि)
- **अनवच्छिन्नानन्त** = अनवच्छिन्न + अनन्त (दीर्घसन्धि)
- **दिक्कालाद्यनवच्छिन्नानन्त** = दिक्कालादि + अनवच्छिन्नानन्त (यण्सन्धि)
- **चिन्मात्रः** = चित् + मात्रम् (अनुनासिक सन्धि)
- **स्वानुभूतिः** = स्व + अनुभूतिः (दीर्घसन्धि)
- **अनुभूत्यैकमानाय** = अनुभूति + एकमानाय (यण्सन्धि)
- **अबोधोपहताः** = अबोध + उपहताः (गुणसन्धि)
- **चान्ये** = च + अन्ये (दीर्घसन्धि)
- **ब्रह्मापि** = ब्रह्मा + अपि (दीर्घसन्धि)
- **ऊर्मिमालाकुलम्** = ऊर्मिमाला + आकुलम् (दीर्घसन्धि)
- **पुष्पवद्धारयेत्** = पुष्पवत् + धारयेत् (जश्त्वसन्धि)
- **पिबेच्च** = पिबेत् + च (श्चुत्वसन्धि)
- **पिपासार्दितः** = पिपासा + आर्दितः (दीर्घसन्धि)
- **पर्यटञ्छशविषाणम्** = पर्यटन् + शशविषाणम् (श्चुत्व-छत्व सन्धि)
- **तन्तुभिरसौ** = तन्तुभिः + असौ (विसर्गसन्धि)
- **क्षाराम्बुधेरीहते** = क्षारा + अम्बुधेः + ईहते (दीर्घ सन्धि) विसर्गसन्धि
- **मदान्धः** = मद + अन्धः (दीर्घसन्धि)
- **सर्वज्ञोऽस्मि** = सर्वज्ञो + अस्मि (पूर्वरूपसन्धि)
- **ज्वर इव** = ज्वरः + इव (विसर्गसन्धि)
- **नरास्थि** = नर + अस्थि (दीर्घसन्धि)
- **महीध्राद्युत्तुङ्गात्** = महीध्रात् + उत्तुङ्गात् (जश्त्वसन्धि)
- **उत्तुङ्गादवनिम्** = उत्तुङ्गात् + अवनिम् (जश्त्वसन्धि)
- **अवनेश्च** = अवनेः + च (अवनेस् + च) (विसर्गसन्धि श्चुत्वसन्धिः)
- **चापि** = च + अपि (दीर्घसन्धि)
- **अधोऽधः** = अधो + अधः (पूर्वरूपसन्धि)
- **गङ्गेयम्** = गङ्गा + इयम् (गुणसन्धि)
- **सूर्यातपः** = सूर्य + आतपः (दीर्घसन्धि)
- **नागेन्द्रः** = नाग + इन्द्रः (गुणसन्धि)
- **निशिताङ्कुशेन** = निशित + अङ्कुशेन (दीर्घसन्धि)
- **व्याधिर्भेषजसङ्ग्रहैः** = व्याधिः + भेषजसङ्ग्रहैः (विसर्गसन्धि)
- **सङ्ग्रहैश्च** = सङ्ग्रहैः + च (श्चुत्वसन्धि)
- **विविधैर्मन्त्रप्रयोगैः** = विविधैः + मन्त्रप्रयोगैः (विसर्गसन्धि)
- **प्रयोगैर्विषम्** = प्रयोगैः + विषम् (विसर्गसन्धि)
- **सर्वस्यौषधम्** = सर्वस्य + औषधम् (वृद्धिसन्धि)

- **नास्त्यौषधम्** = नास्ति + औषधम् (यण्सन्धि)
- **जीवमानस्तत्** = जीवमानः + तत् (विसर्गसन्धि)
- **मृगाश्चरन्ति** = मृगास् + चरन्ति (श्चुत्वसन्धि)
- **सुरेन्द्रभवनेष्वपि** = सुरेन्द्रभवनेषु + अपि (यण्सन्धि)
- **हर्तुर्याति** = हर्तुः + याति (विसर्गसन्धि)
- **सर्वदापि** = सर्वदा + अपि (दीर्घसन्धि)
- **अप्यर्थिभ्यः** = अपि + अर्थिभ्यः (यण्सन्धि)
- **कल्पान्तेष्वपि** = कल्पान्तेषु + अपि (यण्सन्धि)
- **विद्याख्यम्** = विद्या + आख्यम् (दीर्घसन्धि)
- **कस्तैः** = कः + तैः (विसर्गसन्धि)
- **मावमंस्थाः** = मा + अवमंस्थाः (दीर्घसन्धि)
- **अवमंस्थास्तृणम्** = अवमंस्थाः + तृणम् (विसर्गसन्धि)
- **लक्ष्मीर्न** = लक्ष्मीः + न (विसर्गसन्धि)
- **नैव** = न + एव (वृद्धिसन्धि)
- **तन्तुर्वारणम्** = तन्तुः + वारणम् (विसर्गसन्धि)
- **त्वस्य** = तु + अस्य (यण्सन्धि)
- **चन्द्रोज्ज्वलाः** = चन्द्र + उज्ज्वलाः (गुणसन्धि)
- **नालङ्कृताः** = न + अलङ्कृताः (दीर्घसन्धि)
- **वाण्येका** = वाणी + एका (यण्सन्धि)
- **वाग्भूषणम्** = वाक् + भूषणम् (जश्त्वसन्धि)
- **शान्तिश्चेत्** = शान्तिः + चेत् (श्चुत्वसन्धि)
- **क्रोधोऽस्ति** = क्रोधो + अस्ति (पूर्वरूपसन्धि)
- **चेद्देहिनाम्** = चेत् + देहिनाम् (जश्त्वसन्धि)
- **ज्ञातिश्चेत्** = ज्ञातिस् + चेत् (श्चुत्वसन्धि)
- **चेदनलेन** = चेत् + अनलेन (जश्त्वसन्धि)
- **सुहृद्दिव्य** = सुहृत् + दिव्य (जश्त्वसन्धि)
- **सर्पैर्यदि** = सर्पैः + यदि (विसर्गसन्धि)
- **धनैर्विद्या** = धनैः + विद्या (विसर्गसन्धि)
- **विद्यानवद्या** = विद्या + अनवद्या (दीर्घसन्धि)
- **विद्वज्जने** = विद्वत् + जने (जश्त्वसन्धि)
- **चार्जवम्** = च + आर्जवम् (दीर्घसन्धि)
- **चैवं** = च + एवम् (वृद्धिसन्धि)
- **कुशलास्तेषु** = कुशलाः + तेषु (विसर्गसन्धि)
- **तेष्वेव** = तेषु + एव (यण्सन्धि)
- **मानोन्नतिः** = मान + उन्नतिः (गुणसन्धि)
- **कवीश्वराः** = कवि + ईश्वराः (दीर्घसन्धि)
- **नास्ति** = न + अस्ति (दीर्घसन्धि)
- **सच्चरितः** = सत् + चरितः (श्चुत्वसन्धि)
- **प्रसादोन्मुखः** = प्रसाद + उन्मुखः (गुणसन्धि)
- **स्थिरश्च** = स्थिरः + च (श्चुत्वसन्धि)
- **विद्यावदातम्** = विद्या + अवदातम् (दीर्घसन्धि)
- **प्राणाघातान्निवृत्तिः** = प्राणाघातात् + निवृत्तिः (अनुनासिक सन्धि)
- **शास्त्रेष्वनुपहतविधिः** = शास्त्रेषु + अनुपहतविधिः (यण्सन्धि)
- **पुनरपि** = पुनः + अपि (विसर्गसन्धि)
- **नाऽभ्यर्थ्याः** = न + अभ्यर्थ्याः (दीर्घसन्धि)
- **सुहृदपि** = सुहृत् + अपि (जश्त्वसन्धि)
- **वृत्तिर्मलिनमसुभङ्गेऽप्यसुकरम्** = वृत्तिः + मलिनम् (विसर्ग सन्धि) असुभङ्गे + अपि + सुकरम् (पूर्वरूपसन्धि, यण्सन्धि)
- **विपद्युच्चैः** = विपदि + उच्चैः (यण्सन्धिः)
- **केनोद्दिष्टम्** = केन + उद्दिष्टम् (गुणसन्धिः)
- **क्षुत्क्षामोऽपि** = क्षुत्क्षामः + अपि (विसर्गसन्धिः, पूर्वरूप सन्धिः)
- **जराकृशोऽपि** = जराकृशो + अपि (पूर्वरूपसन्धि)
- **नश्यत्स्वपि** = नश्यत्सु + अपि (यण्सन्धि)
- **ग्रासैक** = ग्रास + एक (वृद्धिसन्धि)
- **वसावसेकः** = वसा + अवसेकः (दीर्घसन्धि)
- **अप्यस्थिकम्** = अपि + अस्थिकम् (यण्सन्धि)
- **कृच्छ्रगतोऽपि** = कृच्छ्रगतो + अपि (पूर्वरूपसन्धि)
- **सत्त्वानुरूपम्** = सत्त्व + अनुरूपम् (दीर्घसन्धि)
- **अधश्चरणः** = अधस् + चरणः (श्चुत्वसन्धि)
- **वदनोदर** = वदन + उदर (गुणसन्धि)
- **गजपुङ्गवस्तु** = गजपुङ्गवः + तु (विसर्गसन्धि)
- **चाटुशतैश्च** = चाटुशतैस् + च (श्चुत्वसन्धि)
- **को वा** = कः + वा (विसर्गसन्धि)
- **जातो येन** = जातः + येन (विसर्गसन्धि)
- **कुसुमस्तबकस्येव** = कुसुमस्तबकस्य + इव (गुणसन्धि)
- **वृत्तिर्मनस्विनाः** = वृत्तिः + मनस्विनः (विसर्गसन्धि)
- **सन्त्यन्ये** = सन्ति + अन्ये (यण्सन्धि)
- **अन्येऽपि** = अन्ये + अपि (पूर्वरूपसन्धि)
- **पञ्चषास्तान्** = पञ्चषाः + तान् (विसर्गसन्धि)
- **प्रत्येषः** = प्रति + एषः (यण्सन्धि)

- **राहुर्न** = राहुः + न (विसर्गसन्धि)
- **द्वावेव** = द्वौ + एव (अयादिसन्धि)
- **शीर्षावशेषाकृतिः** = शीर्ष + अवशेष + आकृतिः (दीर्घसन्धि)
- **पयोधिरनादरात्** = पयोधिः + अनादरात् (विसर्गसन्धि)
- **निःसीमानश्चरित्रविभूतयः** = निःसीमानस् + चरित्रविभूतयः (श्चुत्वसन्धि)
- **प्रहारैरुद्गच्छत्** = प्रहारैः + उद्गच्छत् (विसर्गसन्धि)
- **दहनोद्गार** = दहन + उद्गार (गुणसन्धि)
- **तुषाराद्रेः** = तुषार + अद्रेः (दीर्घसन्धि)
- **सूनोरहह** = सूनोः + अहह (विसर्गसन्धि)
- **चासौ** = च + असौ (दीर्घसन्धि)
- **पत्युरुचितः** = पत्युः + उचितः (विसर्गसन्धि)
- **यदचेतनः** = यत् + अचेतनः (जश्त्वसन्धि)
- **अचेतनोऽपि** = अचेतनो + अपि (पूर्वरूपसन्धि)
- **सवितुरिनकान्तः** = सवितुः + इनकान्तः (विसर्गसन्धि)
- **शिशुरपि** = शिशुः + अपि (विसर्गसन्धि)
- **प्रकृतिरियम्** = प्रकृतिः + इयम् (विसर्गसन्धि)
- **वयस्तेजसः** = वयः + तेजसः (विसर्गसन्धि)
- **अप्यधः** = अपि + अधः (यण्सन्धि)
- **गच्छताच्छीलम्** = गच्छतात् + शीलम् (श्चुत्वसन्धि)
- **पतत्वभिजनः** = पततु + अभिजनः (यण्सन्धि)
- **निपतत्वर्थः** = निपततु + अर्थः (यण्सन्धि)
- **येनैकेन** = येन + एकेन (वृद्धिसन्धि)
- **गुणास्तृणलवप्रायाः** = गुणाः + तृणलवप्रायाः (विसर्गसन्धि)
- **तानीन्द्रियाणि** = तानि + इन्द्रियाणि (दीर्घसन्धि)
- **तदेव** = तत् + एव (जश्त्वसन्धि)
- **बुद्धिरप्रतिहता** = बुद्धिः + अप्रतिहता (विसर्गसन्धि)
- **अर्थोष्मणा** = अर्थ + ऊष्मणा (गुणसन्धि)
- **स एव** = सः + एव (विसर्गसन्धि) विसर्गलोप
- **त्वन्यः** = तु + अन्यः (यण्सन्धि)
- **भवतीति** = भवति + इति (दीर्घसन्धि)
- **यस्यास्ति** = यस्य + अस्ति (दीर्घसन्धि)
- **स नरः** = सः + नरः (विसर्गसन्धि) विसर्गलोप
- **स च** = सः + च (विसर्गसन्धि) विसर्गलोप
- **कुतनयाच्छीलम्** = कुतनयात् + शीलम् (श्चुत्वसन्धि)
- **खलोपासनात्** = खल + उपासनात् (गुणसन्धि)
- **ह्रीर्मद्यात्** = ह्रीः + मद्यात् (विसर्गसन्धि)
- **प्रमादाद्धनम्** = प्रमादात् + धनम् (जश्त्वसन्धि)
- **प्रवासाश्रयान्मैत्री** = प्रवासाश्रयात् + मैत्री (अनुनासिकसन्धि)
- **नाशस्तिस्रः** = नाशः + तिस्रः (विसर्गसन्धि)
- **गतयो भवन्ति** = गतयः + भवन्ति (विसर्गसन्धि)
- **शाणोल्लीढः** = शाण + उल्लीढः (गुणसन्धि)
- **शेषश्चन्द्रः** = शेषस् + चन्द्रः (श्चुत्वसन्धि)
- **विभवाश्च** = विभवास् + च (श्चुत्वसन्धि)
- **अतश्च** = अतः स + च (श्चुत्वसन्धि)
- **चानैकान्त्यात्** = च + अनैकान्त्यात् (दीर्घसन्धि)
- **गुरुलघुतयार्थेषु** = गुरुलघुतया + अर्थेषु (दीर्घसन्धि)
- **तस्मिंश्च** = तस्मिन् + च (व्यञ्जनसन्धि)
- **कल्पलतेव** = कल्पलता + इव (गुणसन्धि)
- **सत्यानृता** = सत्या + अनृता (दीर्घसन्धि)
- **दयालुरपि** = दयालुः + अपि (विसर्गसन्धि)
- **चार्थपरा** = च + अर्थपरा (दीर्घसन्धि)
- **वाराङ्गनेव** = वाराङ्गना + इव (गुणसन्धि)
- **नृपनीतिरनेकरूपा** = नृपनीतिः + अनेकरूपा (विसर्गसन्धि)
- **कोऽर्थः** = कः + अर्थः (विसर्गसन्धिः) को + अर्थः (पूर्वरूपसन्धि)
- **पार्थिवोपाश्रयेण** = पार्थिव + उपाश्रयेण (गुणसन्धि)
- **यद्यस्ति** = यदि + अस्ति (यण्सन्धि)
- **अप्यगम्यः** = अपि + अगम्यः (यण्सन्धि)
- **येष्वेते** = येषु + एते (यण्सन्धि)
- **चाप्युपकृतेः** = चापि + उपकृतेः (यण्सन्धि)
- **भवत्युत्पलकोमलम्** = भवति + उत्पलकोमलम् (यण्सन्धि)
- **मध्यमोत्तमगुणः** = मध्यम + उत्तमगुणः (गुणसन्धि)
- **क्वचिच्छाकाहारः** = क्वचित् + शाकाहारः (श्चुत्वसन्धि)
- **ज्ञानस्योपशमः** = ज्ञानस्य + उपशमः (गुणसन्धि)
- **यथेष्टम्** = यथा + इष्टम् (गुणसन्धि)
- **अद्यैव** = अद्य + एव (वृद्धिसन्धि)
- **यस्यास्ति** = यस्य + अस्ति (दीर्घसन्धि)
- **नास्त्युद्यमसमः** = नास्ति + उद्यमसमः (यण्सन्धि)

नीतिशतकम् में समास

दिक्कालाद्यनवच्छिन्नानन्तचिन्मात्रमूर्तये = दिक् च कालः च, दिक्कालौ (द्वन्द्वः)
दिक्कालौ आदी येषां ते, दिक्कालादयः (बहुव्रीहि)
दिक्कालादिभिः अनवच्छिन्नं, दिक्कालाद्यनवच्छिन्नम् (तृतीया तत्पु.)

- दिक्कालाद्यनवच्छिन्नम् अनन्तं चित् मूर्तिः यस्य सः दिक्कालाद्यनवच्छिन्नानन्तचिन्मात्रमूर्तिः (बहुव्रीहि) तस्मै
- **स्वानुभूत्येकमानाय**–स्वस्य अनुभूतिः, स्वानुभूतिः (षष्ठी तत्पु.) स्वानुभूतिः एव एकं मानं यस्य तत् स्वानुभूत्यैकमानम् (बहुव्रीहि) तस्मै
- **मत्सरग्रस्ताः** = मत्सरेण ग्रस्ताः (तृतीया तत्पु.)
- **स्मयदूषिताः** = स्मयेन दूषिताः (तृतीया तत्पु.)
- **अबोधः** = न बोधः (नञ् तत्पु.)
- **अबोधोपहताः** = अबोधेन उपहताः (तृतीया तत्पु.)
- **अज्ञः** = न ज्ञः अज्ञः (नञ् तत्पु.)
- **विशेषज्ञः** = विशेषं जानाति इति (उपपद तत्पु.)
- **ज्ञानलवदुर्विदग्धं** = ज्ञानस्य लवः ज्ञानलवः (षष्ठी तत्पु.) ज्ञानलवेन दुर्विदग्धं (तृतीया तत्पु.)
- **मकरवक्त्रदंष्ट्रान्तरात्** = मकरस्य वक्त्रं, मकरवक्त्रं (षष्ठी तत्पु.) तस्मिन् दंष्ट्राः (सुप्सुपा समास)
- **प्रचलदूर्मिमालाकुलम्** = प्रचलन्तः ऊर्मयः प्रचलदूर्मयः (कर्मधारयः) प्रचलदूर्मीनां मालाः प्रचलदूर्मिमालाः (षष्ठी तत्पु.) ताभिः मालाभिः आकुलम् (तृतीया तत्पु.)
- **प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्तम्** = प्रतिनिविष्टः च असौ मूर्ख जनः, प्रतिनिविष्टमूर्खजनः (कर्मधारय) प्रतिनिविष्टमूर्खजनस्य चित्तम् (षष्ठी तत्पु.)
- **मृगतृष्णिकासु** = मृगाणां तृष्णा मृगतृष्णा (षष्ठी तत्पु.) तासु
- **शशविषाणम्** = शशस्य विषाणम् (षष्ठी तत्पु.)
- **पिपासार्दितः** = पिपासया अर्दितः (तृतीया तत्पु.)
- **सुधास्यन्दिभिः** = सुधां स्यन्दन्ते तच्छीलानि सुधास्यन्दीनि, तैः (उपपद तत्पुरुष)
- **शिरीषकुसुमप्रान्तेन** = शिरीषकुसुमस्य प्रान्तः शिरीषकुसुम प्रान्तः तेन (तृतीया तत्पु.)
- **मधुबिन्दुना** = मधोः बिन्दुः मधुबिन्दुः तेन (षष्ठी तत्पु.)
- **क्षाराम्बुधेः** = क्षारश्चासौ अम्बुधिश्च क्षाराम्बुधिः (कर्मधारय) तस्य
- **अपण्डितानाम्** = न पण्डिताः अपण्डिताः (नञ् तत्पु.) तेषाम्
- **सर्वविदाम्** = सर्वं विदन्तीति सर्वविदः (नित्यसमास) तेषाम्
- **किञ्चिज्ज्ञः** = किञ्चित् जानाति इति किञ्चिज्ज्ञः (नित्यसमास)
- **सर्वज्ञः** = सर्वं जानाति इति सर्वज्ञः (नित्यसमास)
- **कृमिकुलेन** = कृमीनां कुलं कृमिकुलं (षष्ठी तत्पु.) तेन
- **निरामिषम्** = निर्गतम् आमिषं यस्मात् (बहुव्रीहि) तत्
- **नरास्थि** = नरस्य अस्थि (षष्ठी तत्पु.)
- **निरुपमरसप्रीत्या** = निरुपमो रसः यस्य सः निरुपमरसः (बहुव्रीहि) तस्मिन् निरुपमरसे, निरुपमरसे या प्रीतिः निरुपमरस प्रीतिः (सप्तमी तत्पु.) तया
- **सुरपतिम्** = सुराणां पतिः सुरपतिः (षष्ठी तत्पु.) तम्
- **परिग्रहफल्गुताम्** = परिग्रिहस्य फल्गुता परिग्रिहफल्गुता (षष्ठी तत्पु.) ताम्
- **शास्त्रविहितम्** = शास्त्रेषु विहितम् (सप्तमी तत्पु.)
- **फल्गुता** = फलं गतं यस्मात् सः फल्गुः, तस्य भावः (षष्ठी तत्पु.)
- **शार्वम्** = शर्वस्य इदम् (षष्ठी तत्पु.)
- **पशुपतिशिरस्तः** = पशूनां पतिः पशुपतिः (षष्ठी तत्पु.) पशुपतेः शिरः पशुपतिशिरः (षष्ठी तत्पु.) तस्मात्
- **क्षितिधरम्** = "धरतीति धरः" क्षितेः धरः क्षितिधरः (षष्ठी तत्पु.) तम्
- **विवेकभ्रष्टानां** = विवेकात् भ्रष्टाः विवेकभ्रष्टाः (पञ्चमी तत्पु.) तेषाम्
- **शतमुखः** = शतं मुखानि यस्य सः (बहुव्रीहि)
- **हुतभुक्** = हुतं भुनक्तीति (कर्मधारय)
- **सूर्यातपः** = सूर्यस्य आतपः (षष्ठी तत्पु.)
- **नागेन्द्रः** = नागानाम् इन्द्रः (षष्ठी तत्पु.)
- **निशिताङ्कुशेन** = निशितः अङ्कुशः निशिताङ्कुशः (कर्मधारय) तेन
- **गोगर्दभौ** = गौश्च गर्दभश्च (द्वन्द्वः)
- **भेषजसंग्रहैः** = भेषजानां संग्रहः भेषजसंग्रहः (षष्ठी तत्पु.) तैः
- **साहित्यसङ्गीतकलाविहीनः** = साहित्यसङ्गीतयोः कलाः साहित्यसङ्गीतकलाः (षष्ठी तत्पु.) साहित्यसङ्गीतकलाभिः विहीनः (तृतीया तत्पु.)
- **पुच्छविषाणहीनः** = पुच्छश्च विषाणौ च पुच्छविषाणाः (द्वन्द्व) तैः हीनः (तृतीया तत्पु.)
- **मर्त्यलोके** = मर्त्यानां लोकः मर्त्यलोकः (षष्ठी तत्पु.) तस्मिन्
- **मनुष्यरूपेण** = मनुष्याणां रूपं मनुष्यरूपम् (षष्ठी तत्पु.) तेन
- **पर्वतदुर्गेषु** = पर्वताः दुर्गाणि च पर्वतदुर्गाणि (द्वन्द्व) तेषु
- **वनचरैः** = वने चरन्तीति वनचराः (सप्तमी तत्पु.) तैः
- **मूर्खजनसम्पर्कः** = मूर्खः च असौ जनः मूर्खजनः (कर्मधारय) मूर्खजनानां सम्पर्कः (षष्ठी तत्पु.)

- **सुरेन्द्रभवनेषु** = सुराणाम् इन्द्रः सुरेन्द्रः (षष्ठी तत्पु.) सुरेन्द्रस्य भवनानि (षष्ठी तत्पु.) तेषु
- **शास्त्रोपस्कृतशब्दसुन्दरगिरः** = शास्त्रैः उपस्कृताः शास्त्रोपस्कृताः (तृतीया तत्पु.) शास्त्रोपस्कृतैः शब्दैः सुन्दरा गिरः येषां ते (बहुव्रीहि)
- **निर्धनाः** = निर्गतं धनं येभ्यः ते (बहुव्रीहि)
- **वसुधाधिपस्य** = वसुधायाः अधिपः वसुधाधिपः तस्य (षष्ठी तत्पु.)
- **कुपरीक्षकाः** = कुत्सिताः परीक्षकाः (कर्मधारय)
- **कल्पान्तेषु** = कल्पानाम् अन्तः कल्पान्तः तेषु (षष्ठी तत्पु.)
- **विद्याख्यम्** = विद्या आख्या यस्य तत् (बहुव्रीहि)
- **अधिगतपरमार्थान्** = अधिगतः परमार्थः यैः ते अधिगतपरमार्थाः तान् (बहुव्रीहि)
- **बिसतन्तुः** = बिसस्य तन्तुः (षष्ठी तत्पु.)
- **अभिनवमदलेखाश्यामगण्डस्थलानाम्** = अभिनवा चैव मदलेखा अभिनवमदलेखा (कर्मधारय) अभिनवमदलेखाश्यामानि (तृतीया तत्पु.) अभिनवमदलेखा श्यामानि गण्डस्थलानि येषां ते अभिनवमदलेखाश्यामगण्डस्थलाः, (बहुव्रीहि) तेषाम्
- **अम्भोजिनीवनविहारविलासम्** = अम्भोजिनीनांवनम् (षष्ठी तत्पु.) अम्भोजिनीवनम्, अम्भोजिनीवने विहारः अम्भोजिनीवन विहारस्य विलासः (षष्ठी तत्पु.) तम्
- **दुग्धजलभेदविधौ** = दुग्धं च जलं च दुग्धजले (द्वन्द्वः) दुग्धजलयोः भेदः दुग्धजलभेदः (षष्ठी तत्पु.) दुग्धजलभेदस्य विधिः दुग्धजलभेदविधिः (षष्ठी तत्पु.) तस्मिन्
- **वैदग्ध्यकीर्तिम्**=वैदग्ध्येन कीर्तिः वैदग्ध्यकीर्तिः (तृतीया तत्पु.) ताम्
- **चन्द्रोज्ज्वलाः** = चन्द्रवत् उज्ज्वलाः (कर्मधारय)
- **वाग्भूषणम्** = वाक् एव भूषणम् (कर्मधारय)
- **प्रच्छन्नगुप्तम्** = प्रच्छन्नं च तत् गुप्तं च (कर्मधारय)
- **भोगकरी** = भोगं करोति इति भोगकरी (नित्यसमासः)
- **यशःसुखकरी** = यशः च सुखं च इति यशसुखे, यशः सुखं करोतीति यशःसुखकरी (नित्यसमासः)
- **विदेशगमने** = विदेशेषु गमनं विदेशगमनं (सप्तमी तत्पु.) तस्मिन्
- **बन्धुजनः** = बन्धुः च असौ जनः इति बन्धुजनः (कर्मधारय)
- **विद्याविहीनः** = विद्यया विहीनः, (तृतीया तत्पु.)
- **दिव्यौषधैः** = दिव्यानि च तानि औषधानि, दिव्यौषधानि (वि. पू. कर्मधारय) तैः
- **अनवद्या** = न वद्या अवद्या, न अवद्या अनवद्या (नञ् तत्पु.)
- **सुकविता** = शोभना कविता (अव्ययीभावसमासः)
- **नृपजने** = नृपः च असौ जनः नृपजनः (कर्मधारय) तस्मिन्
- **विद्वज्जने** = विद्वान् च असौ जनः विद्वज्जनः (कर्मधारय) तस्मिन्
- **गुरुजने** = गुरुः च असौ जनः गुरुजनः (कर्मधारय) तस्मिन्
- **नारीजने** = नारी च असौ जनः नारीजनः (कर्मधारय) तस्मिन्
- **लोकस्थितिः** = लोकस्य स्थितिः लोकस्थितिः (षष्ठी तत्पु.)
- **मानोन्नतिम्** = मानस्य उन्नतिः मानोन्नतिः (षष्ठी तत्पु.) ताम्
- **सत्सङ्गतिः** = सतां सङ्गतिः सत्सङ्गतिः (षष्ठी तत्पु.)
- **रससिद्धाः** = रसेषु सिद्धाः रससिद्धाः (सप्तमी तत्पु.) रसैः सिद्धाः, रससिद्धाः (तृतीया तत्पु.)
- **कवीश्वराः** = कवयश्च ते ईश्वराश्च कवीश्वराः (कर्मधारय)
- **यशःकाये** = यशः एव कायः यशःकायः तस्मिन् (कर्मधारय)
- **जरामरणजम्** = जरा च मरणं च जरामरणे (द्वन्द्व) जरामरणाभ्यां जायते इति जरामरणजम् (तृतीया तत्पु.)
- **विष्टपकष्टहारिणि** = विष्टपस्य कष्टं विष्टपकष्टम् (षष्ठी तत्पु.) विष्टपकष्टं हरतीति, विष्टपकष्टहारी (नित्यसमास) तस्मिन्
- **प्रसादोन्मुखः** = प्रसादे उन्मुखः प्रसादोन्मुखः (सप्तमी तत्पु.)
- **निष्क्लेशलेशम्** = क्लेशस्य लेशः, क्लेशलेशः (षष्ठी तत्पु.) निर्गतः क्लेशलेशः यः ताम् (बहुव्रीहि) तत्
- **विद्यावदातम्** = विद्यया अवदातम् (तृतीया तत्पु.)
- **प्राणाघातात्** = प्राणानाम् आघातः प्राणाघातः (षष्ठी तत्पु.) तस्मात्
- **परधनहरणे** = परेषां धनानि परधनानि (षष्ठी तत्पु.) परधनानां हरणं परधनहरणम् (षष्ठी तत्पु.) तस्मिन्
- **सत्यवाक्यम्** = सत्यं च तत् वाक्यं च (कर्मधारय)
- **युवतिजनकथामूकभावः** = युवतिजनानां कथाः युवतिजन–कथाः (षष्ठी तत्पु.), युवतिजनकथासु मूकभावः (सप्तमी तत्पु.)
- **तृष्णास्त्रोतोविभङ्गः** = तृष्णायाः स्त्रोतांसि तृष्णास्त्रोतांसि (षष्ठी तत्पु.) तृष्णास्त्रोतसां विभङ्गः (षष्ठी तत्पु.)
- **सर्वभूतानुकम्पा** = सर्वेषु भूतेषु अनुकम्पा (सप्तमी तत्पु.)
- **सर्वशास्त्रेषु** = सर्वाणि च तानि शास्त्राणि सर्वशास्त्राणि (कर्मधारय) तेषु
- **अनुपहतविधिः** = अनुपहतः विधिः यस्य सः (बहुव्रीहि)
- **विघ्नभयेन** = विघ्नेभ्यः भयं, विघ्नभयम् (पञ्चमी तत्पु.) तेन
- **विघ्नविहताः** = विघ्नैः विहताः (तृतीया तत्पु.)

- **उत्तमजनाः** = उत्तमाः च ते जनाः उत्तमजनाः (कर्मधारय)
- **असन्तः** = न सन्तः (नञ् तत्पुरुष)
- **कृशधनः** = कृशं धनं यस्य सः (बहुव्रीहि)
- **असुभङ्गे** = असूनां भङ्गः असुभङ्गः (षष्ठी तत्पु.) तस्मिन्
- **असुकरम्** = न सुकरम् (नञ् तत्पु.)
- **असिधाराव्रतम्** = असेः धारा असिधारा (षष्ठी तत्पु.) असिधारा इव व्रतम् (कर्मधारय)
- **क्षुत्क्षामः** = क्षुधया क्षामः क्षुत्क्षामः (तृतीया तत्पु.)
- **जराकृशः** = जरया कृशः जराकृशः (तृतीया तत्पु.)
- **शिथिलप्राणः** = शिथिलाः प्राणाः यस्य सः (बहुव्रीहि)
- **विपन्नदीधितिः** = विपन्ना दीधितिः यस्य सः (बहुव्रीहि)
- **मत्तेभेन्द्रविभिन्नकुम्भकवलग्रासैकबद्धस्पृहः** = मत्ताः इभेन्द्राः मत्तेभेन्द्राः (कर्मधारय)
  मत्तेभेन्द्राणां विभिन्नाः (षष्ठी तत्पु.) विभिन्नाः च ते कुम्भाः च विभिन्नकुम्भाः (कर्मधारय) मत्तेभेन्द्रविभिन्नकुम्भानां कवलम् = मत्तेभेन्द्रविभिन्नकुम्भकवलम् (षष्ठी तत्पु.) मत्तेभेन्द्रविभिन्न कुम्भकवलस्य ग्रासः = मत्तेभेन्द्रविभिन्नकुम्भकवलग्रासः (षष्ठी तत्पु.)
  मत्तेभेन्द्रविभिन्नकुम्भकवलग्रासे एकबद्धस्पृहः = मत्तेभेन्द्रविभिन्न-कुम्भकवलग्रासैकबद्धस्पृहः (सप्तमी तत्पु.)
- **मानमहताम्** = मानेन महान्तः मानमहान्तः (तृतीया तत्पु.) तेषां
- **अग्रेसरः** = अग्रेसरतीति, अग्रेसरः (अलुक् समास)
- **स्वल्पस्नायुवसावशेषमलिनम्** = स्नायु च वसा च स्नायुवसे (द्वन्द्व) स्नायुवसयोः अवशेषः, स्नायुवसावशेषः (षष्ठी तत्पु.) स्वल्पश्च असौ स्नायुवसावशेषश्च स्वल्पस्नायुवसावशेषः (कर्मधारय)
  स्वल्पस्नायुवसावशेषेण मलिनम् (तृतीया तत्पु.)
- **निर्मांसम्** = मांसेन रहितम् (अव्ययपूर्वपद – अव्ययीभाव)
- **क्षुधाशान्तये** = क्षुधायाः शान्तिः क्षुधाशान्तिः (षष्ठी तत्पु.) तस्यै
- **सत्त्वानुरूपम्** = सत्त्वस्य अनुरूपम् (षष्ठी तत्पु.)
- **पिण्डदस्य** = पिण्डं ददाति इति पिण्डदः (नित्य समासः) तस्य
- **लाङ्गूलचालनम्** = लाङ्गूलस्य चालनम् (षष्ठी तत्पु.)
- **चरणावपातम्** = चरणयोः अवपातम् (षष्ठी तत्पु.)
- **वदनोदरदर्शनम्** = वदनं च उदरं च वदनोदरे (द्वन्द्वः) तयोः वदनोदरयोः दर्शनम् (षष्ठी तत्पु.)
- **गजपुङ्गवः** = गजानां पुङ्गवः (षष्ठी तत्पु.) अथवा गजेषु पुङ्गवः (सप्तमी तत्पु.)
- **चाटुशतैः** = चाटूनां शतानि, चाटुशतानि (षष्ठी तत्पु.) तैः
- **कुसुमस्तबकस्य** = कुसुमानां स्तबकः कुसुमस्तबकः (षष्ठी तत्पु.) तस्य
- **सर्वलोकस्य** = सर्वः च असौ लोकः सर्वलोकः (कर्मधारय) तस्य
- **विशेषविक्रमरुचिः** = विशेषे विक्रमे रुचिः यस्य सः (बहुव्रीहि)
- **शीर्षावशेषाकृतिः** = शीर्षम् एव अवशेषः यस्याः, तादृशी आकृतिः यस्य असौ (बहुव्रीहि)
- **दानवपतिः** = दानवानां पतिः (षष्ठी तत्पुरुष)
- **दिवाकरनिशाप्राणेश्वरौ** = दिवाकरः च निशाप्राणेश्वरः च (द्वन्द्वसमास)
- **फणाफलकस्थिताम्** = फणा एव फलकम् फणाफलकम् (कर्मधारय) तेषु स्थिता (सप्तमी तत्पुरुष) ताम्
- **भुवनश्रेणिम्** = भुवनानां श्रेणिः भुवनश्रेणिः (षष्ठी तत्पु.) ताम्
- **कमठपतिना** = कमठानां पतिः (षष्ठी तत्पु.) तेन
- **मध्येपृष्ठम्** = पृष्ठस्य मध्ये (अव्ययीभाव)
- **क्रोडाधीनम्** = क्रोडे अधीनम् (सप्तमी तत्पु.)
- **चरित्रविभूतयः** = चरित्रस्य विभूतयः (षष्ठी तत्पु.)
- **तुषाराद्रेः** = तुषारस्य अद्रिः तुषाराद्रिः (षष्ठी तत्पु.) तस्य
- **उद्गच्छद्वहुलदहनोद्गारगुरुभिः** = वहुलश्चासौ दहनश्च वहुलदहनः (वि. पू. कर्म.) वहुलदहनस्य उदगाराः वहुलदहनोदगाराः (षष्ठी तत्पु.) उद्गच्छन्तः ये वहलदहुनोदगाराः उद्गच्छद्वहल-दहनोद्गाराः (वि. पू. कर्म.)उद्गच्छद्वहलदहनोद्गारैः गुरवः, उद्गच्छद्वहलदहनोद्गारागुरवः (तृतीया तत्पु.) तैः
- **समदमघवन्मुक्तकुलिशप्रहारैः** = मदेन सह वर्तमानः इति समदः (बहुव्रीहि) समदः च असौ मघवा च समदमघवा, (वि. पू. कर्म.) समदमघवन्मुक्तं यत् कुशिलम् समदमघवन्मुक्तकुलिशम् समदमघवन्मुक्तकुलिशस्य प्रहाराः समदमघवन्मुक्तकुलिशप्रहाराः (षष्ठी तत्पु.) तैः।
- **पक्षच्छेदः** = पक्षाणां छेदः (षष्ठी तत्पु.)
- **क्लेश विवशे** = क्लेशेन विवशः क्लेश विवशः (तृतीया तत्पु.) तस्मिन्
- **अचेतनः** = नास्ति चैतन्यं यस्य सः (बहुव्रीहि)
- **इनकान्तः** = इनस्य कान्तः इनकान्तः (षष्ठी तत्पु.)
- **परकृतनिकृतिम्** = परैः कृता (तृतीया तत्पु.) परकृता निकृतिः च परकृतनिकृतिः, (वि. पू. कर्म.)ताम्
- **मदमलिनकपोलभित्तिषु** = मदेन मलिनाः मदमलिनाः (तृतीया

तत्पु.) मदमलिनाः कपोलाः भित्तयः येषां ते, मदमलिनकपोलभित्तयः (बहुव्रीहि) एषु
- **गुणगणः** = गुणानां गणः (षष्ठी तत्पु.)
- **शैलतटात्** = शैलस्य तटः शैलतटः (षष्ठी तत्पु.) तस्मात्
- **तृणलवः** = तृणस्य लवः (षष्ठी तत्पु.)
- **अविकलानि** = न विकलानि (नञ् तत्पु.)
- **अप्रतिहता** = न प्रतिहता (नञ् तत्पु.)
- **अर्थोष्मणा** = अर्थस्य ऊष्मा अर्थोष्मा (षष्ठी तत्पु.) तेन
- **दौर्मन्त्र्यात्** = दुष्टो मन्त्रः यस्य सः दुर्मन्त्रः (प्रादि बहुव्रीहि) (दुर्मन्त्रस्य भावः दौर्मन्त्र्यम्) तस्मात्
- **खलोपासनात्** = खलानाम् उपासनं खलोपासनम् (षष्ठी तत्पु.) तस्मात्
- **अनध्ययनात्** = न अध्ययनम् अनध्ययनम् (नञ् तत्पु.) तस्मात्
- **अनवेक्षणात्** = न अवेक्षणम् अनवेक्षणम् (नञ् तत्पु.)
- **प्रवासाश्रयात्** = प्रवासस्य आश्रयः प्रवासाश्रयः (षष्ठी तत्पु.) तस्मात्
- **अप्रणयात्** = न प्रणयः अप्रणयः (नञ् तत्पु.) तस्मात्
- **अनयात्** = न नयः अनयः, (नञ् तत्पु.) तस्मात्
- **नृपतिः** = नृणां पतिः (षष्ठी तत्पु.)
- **शाणोल्लीढः** = शाणे उल्लीढः, शाणोल्लीढः (सप्तमी तत्पु.)
- **समरविजयी** = समरे विजयी, समरविजयी (सप्तमी तत्पु.)
- **हेतिदलितः** = हेतिभिः दलितः, हेतिदलितः (तृतीया तत्पु.)
- **मदक्षीणः** = मदेन क्षीणः, मदक्षीणः (तृतीया तत्पु.)
- **श्यानपुलिनाः** = श्यानानि पुलिनानि यासां ताः (बहुव्रीहि)
- **कलाशेषः** = कला एव शेषः, कलाशेषः (कर्म.)
- **सुरतमृदिता** = सुरते मृदिता, सुरतमृदिता (सप्तमी तत्पु.)
- **बालवनिता** = बाला चासौ वनिता (कर्मधारय)
- **गलितविभवाः** = गलितः विभवः येषां ते (बहुव्रीहि)
- **तृणसमाम्** = तृणेन समा, तृणसमा (तृतीया तत्पु.) ताम्
- **अनैकान्त्यम्** = न ऐकान्त्यम्, अनैकान्त्यम् (नञ् तत्पु.)
- **गुरुलघुतया** = गुरुः च लघुः च गुरुलघूः (द्वन्द्व) गुरुलघ्वोः भावः गुरुलघुता, तया
- **क्षितिधेनुम्** = क्षितिः धेनुः इव क्षितिधेनुः (उप. पू. कर्म) ताम्
- **नित्यव्यया** = नित्यं व्ययः यस्याः सा (बहुव्रीहि)
- **प्रचुरनित्यधनागमा** = प्रचुरः नित्यं धनागमः यस्याः सा (बहुव्रीहि)
- **नृपनीतिः** = नृपाणां नीतिः (षष्ठी तत्पु.)
- **अनेकरूपा** = अनेकानि रूपाणि यस्याः सा (बहुव्रीहि)
- **मित्रसंरक्षणम्** = मित्राणां संरक्षणम् (षष्ठी तत्पु.)
- **पार्थिवोपाश्रयः** = पार्थिवानाम् उपाश्रयः (षष्ठी तत्पु.)
- **निजभालपट्टलिखितम्** = निजं भालपट्टं, निजभालपट्टं (वि. पू. कर्म.) निजभालपट्टे लिखितम् (सप्तमी तत्पु.)
- **पयोनिधौ** = पयसां निधिः, पयोनिधिः (षष्ठी तत्पु.) तस्मिन्
- **अम्भोदः** = अम्भः ददाति इति अम्भोदः (नित्यसमास)
- **चातकाधारः** = चातकानाम् आधारः चातकाधारः (षष्ठी तत्पु.)
- **कार्पण्योक्तिम्** = कार्पण्या च सा उक्तिः = कार्पण्योक्तिः (वि. पू. कर्म.) ताम्
- **सावधानमनसा** = सावधानं च मनः, तेन (कर्मधारय समास)
- **अकारणविग्रहः** = अविद्यमानं कारणं यस्य सः अकारणः (बहुव्रीहि) अकारणः असौ विग्रहः (कर्मधारय)
- **परधने** = परेषां धनं तस्मिन् (षष्ठी तत्पु.)
- **सुजनबन्धुजनेषु** = सुजनाश्च बन्धुजनाश्च येषु (द्वन्द्व)
- **असहिष्णुता** = न सहिष्णुता इति (नञ्)
- **भयङ्करः** = भयं करोति इति (द्वितीया तत्पु.)
- **दुर्जनः** = दुष्टः जनः इति (प्रादितत्पुरुषसमास)
- **ह्रीमति** = ह्रीः विद्यते अस्य तस्मिन् (सप्तमी तत्पु.)
- **व्रतरुचौ** = व्रतेषु रुचिः यस्यासौ सः व्रतरुचिः तस्मिन् (बहुव्रीहि)
- **कैतवम्** = कितवस्य भावः (षष्ठी तत्पु.)
- **निर्घृणता** = निर्गता घृणा अस्य भावः (प्रादिबहुव्रीहि)
- **अगुणेन** = न गुणः अगुणः तेन (नञ् तत्पु.)
- **पिशुनता** = पिशुनस्य भावः (षष्ठी तत्पु.)
- **दिवसधूसरः** = दिवसे धूसरः (सप्तमी तत्पु.)
- **गलितयौवनाः** = गलितं यौवनं यस्याः सा (बहुव्रीहि)
- **विगतवारिजम्** = विगतानि वारिजानि यस्मिन् तत् (बहुव्रीहि)
- **स्वाकृते** = सुष्ठु आकृतिः यस्य, तस्य (बहुव्रीहि)
- **चण्डकोपानाम्** = चण्डः कोपः येषां तेषाम् (बहुव्रीहि)
- **प्रवचनपटुः** = प्रवचने पटुः (सप्तमी तत्पु.)
- **अप्रगल्भः** = न प्रगल्भः इति (नञ्तत्पुरुष)
- **अगम्यः** = न गम्यः इति (नञ् तत्पुरुष)
- **सेवाधर्मः** = सेवा एव धर्मः (कर्मधारय)
- **उद्भासिताऽखिलखलस्य** = उद्भासिताः अखिलाः खलाः येन सः तस्य (बहुव्रीहि)
- **प्राग्जातविस्तृतनिजाधमकर्मवृत्तेः** = प्राग्जातेषु विस्तृतेषु निजेषु अधमेषु कर्मसु वृत्तिः यस्य स, तत् (बहुव्रीहि)
- **आरम्भगुर्वी** = आरम्भे गुर्वी इति (सप्तमी तत्पु.)
- **वृद्धिमती** = वृद्धि अस्ति अस्यां इति (सप्तमी तत्पु.)
- **पूर्वार्द्धपरार्द्धभिन्ना** = पूर्वार्द्धं च परार्द्धं च ताभ्यां, भिन्नाः (द्वन्द्व)
- **लुब्धकधीवरपिशुनाः** = लुब्धकाश्च धीवराश्च पिशुनाश्चेति, ते (द्वन्द्व)

- **तृणजलसन्तोषविहितवृत्तीनाम्** = तृणैः जलैः सन्तोषेण च विहिता वृत्तिः येषां ते, तेषां (बहुव्रीहि)
- **मृगमीनसज्जनानाम्** = मृगाश्च मीनाश्च सज्जनाश्च तेषाम् (द्वन्द्व)
- **सज्जनसङ्गमे** = सज्जनानां सङ्गमे (षष्ठी तत्पु.)
- **परगुणे** = परेषां गुणः, तस्मिन् (षष्ठी तत्पु.)
- **लोकापवादात्** = लोके अपवादः, तस्मात् (षष्ठी तत्पु.)
- **आत्मदमने** = आत्मनः दमने (षष्ठी तत्पु.)
- **संसर्गमुक्तिः** = संसर्गस्य मुक्तिः (षष्ठी तत्पु.)
- **वाक्पटुता** = वाचः पटुता इति (षष्ठी तत्पु.)
- **महात्मनाम्** = महान् आत्मा येषां ते (बहुव्रीहि)
- **खलसज्जनानाम्** =खलाश्च सज्जनाश्च तेषाम् (द्वन्द्व)
- **प्रकृतिसिद्धम्** = प्रकृत्या सिद्धम् इति (तृतीया तत्पु.)
- **सम्भ्रमविधिः** = सम्भ्रमस्य विधिः इति (षष्ठी तत्पु.)
- **अनुत्सेकः** = न उत्सेकः इति (नञ् तत्पु.)
- **परकथाः** = परस्य कथाः इति (षष्ठी तत्पु.)
- **निरभिभवसाराः** = निरभिभवः सारः यासाम् ताः (बहुव्रीहि)
- **प्रकृतिमहताम्** = प्रकृत्या महान्तः, येषाम् (तृतीया तत्पु.)
- **अतुलम्** = न अस्ति तुला यस्य तत् (नञ् तत्पु.)
- **गुरुपादप्रणयिता** = गुरुपादयोः प्रणयिता (सप्तमी तत्पु.)
- **उत्पलकोमलम्** = उत्पलमिव कोमलम् (उपमिति समास)
- **महाशैलशिलासंघातकर्कशम्** = महाश्चासौ शैलः, तस्य शिलानां संघाततत्त्वम् कर्कशम् (उपमितसमास)
- **नलिनीपत्रम्** = नलिन्याः पत्रम् इति (षष्ठी तत्पु.)
- **सागरशुक्तिमध्यपतितम्** = सागरस्य शुक्तिः तस्य मध्ये पतितम् (सप्तमी तत्पु.)
- **अधममध्यमोत्तमगुणाः** = अधमाश्च, मध्यमाश्च उत्तमाश्च ते गुणाः यस्य (बहुव्रीहि)
- **सुचरितैः** = शोभनानि चरितानि, तैः (कर्मधारय)
- **समक्रियम्** = समा क्रिया यस्य तत् (बहुव्रीहि)
- **परगुणकथनैः** = परेषां गुणाः तेषां कथनानि, तैः (षष्ठी तत्पु.)
- **स्वार्थान्** = स्वस्य अर्थाः, तान् (षष्ठी तत्पु.)
- **परार्थे** = परेषां अर्थः, तस्मिन् (षष्ठी तत्पु.)
- **बहुमताः** = बहूनां मताः, इति (षष्ठी तत्पु.)
- **फलोद्गमैः** = फलानां उद्गमाः, तैः (षष्ठी तत्पु.)
- **नवाम्बुभिः** = नवानि अम्बूनिः, तैः (कर्मधारय)
- **दूरविलम्बिनः** = दूरं विलम्बिते तच्छीलाः (उपपदसमास)
- **परोपकारैः** = परेषाम् उपकारः, तैः (षष्ठी तत्पु.)
- **करुणापराणाम्** = करुणानां पराः तेषाम् (षष्ठी तत्पु.)
- **सन्मित्रम्** = सत् च तन्मित्रम् इति (कर्मधारय)
- **आपद्गतम्** = आपदं गतः तम् (कर्मधारय)
- **नाभ्यर्थितः** = न अभ्यर्थितः इति (सुप्सुपा)
- **दिनकरः** = दिनं करोति इति (उपपद तत्पु.)
- **पद्माकरम्** = पद्मानाम् आकरः, तम् (षष्ठी तत्पु.)
- **कैरवचक्रवालम्** = कैरवाणां चक्रवालम् (षष्ठी तत्पु.)
- **परार्थाः** = परेषाम् अर्थाः, तेषां (षष्ठी तत्पु.)
- **सत्पुरुषाः** = सन्तः ते पुरुषाः (कर्मधारय)
- **अविरोधः** = न विरोधः, इति (नञ्, तत्पु.)
- **आत्मगतोदकाय** = आत्मनि गतम् च तद् उदकञ्च, तस्मै (द्वितीया तत्पु.)
- **स्वात्मा** = स्वस्य आत्मा इति (षष्ठी तत्पु.)
- **क्षीरोत्तापम्** = क्षीरस्य उत्तापम्, तम् (षष्ठी तत्पु.)
- **मित्रापदम्** = मित्रस्य आपदम् (षष्ठी तत्पु.)
- **तदीयद्विषः** = तदीयाश्च ते द्विषश्च, तेषाम् (कर्मधारय)
- **शरणार्थिनाम्** = शरणमर्थयन्ते तत् शीलाः तेषाम् (उपपदसमास)
- **शिखरिणाम्** = शिखराणि सन्ति एषां ते, तेषाम् (कर्मधारय)
- **भरसहम्** = भरस्य सहम् इति (षष्ठी तत्पु.)
- **साधुपदवीम्** = साधूनां पदवी, ताम् (षष्ठी तत्पु.)
- **विद्वज्जनम्** = विद्वान् एव जनः (मयूरव्यंसकादिसमास)
- **परगुणपरमाणून्** = परमश्चासौ ते अणवः परमाणवः, परेषां गुणाः परगुणाः (षष्ठी तत्पु.)
- **त्रिभुवनम्** = त्रयाणां भुवनानां समाहारः (द्विगु)
- **उपकारश्रेणिभिः** = उपकारस्य श्रेणयः ताभिः (षष्ठी तत्पु.)
- **हेमगिरिणा** = हेम्नोः गिरिणा (षष्ठी तत्पु.)
- **रजताद्रिणा** = रजतस्य अद्रिणा (षष्ठी तत्पु.)
- **कङ्कोलनिम्बुकुटजाः** = कङ्कोलाश्च निम्बश्च कुटजाश्च, ते (द्वन्द्व)
- **महार्हैः** = महान् अर्हः येषां तानि महार्हाणि, तैः (बहुव्रीहि)
- **भीमविषेण** = भीमं विषं, तेन (कर्मधारय)
- **निश्चयार्थात्** = निश्चितः अर्थः, तस्मात् (कर्मधारय)
- **पृथ्वीशय्यः** = पृथ्वीशय्या यस्य सः (बहुव्रीहि)
- **पर्यङ्कशयनः** = पर्यङ्के शयनं यस्य सः (बहुव्रीहि)
- **दिव्याम्बरधरः** = दिव्याम्बरस्य धरतीति (षष्ठी तत्पु.)
- **कार्यार्थी** = कार्यम् अर्थी इति (सुप्सुपा)
- **सुजनः** = शोभनः जनः इति (प्रादिसमास)
- **शौर्यम्** = शूरस्य भावः इति (षष्ठी तत्पु.)

- **वाक्संयमः** = वाचि संयमः इति (षष्ठी तत्पु.)
- **अक्रोधः** = न क्रोधः, इति (नञ् तत्पु.)
- **नीतिनिपुणाः** = नीतौ निपुणाः इति (सप्तमी तत्पु.)
- **भग्नाशस्य** = भग्नाः आशाः यस्य, तस्य (बहुव्रीहि)
- **म्लानेन्द्रियस्य** = म्लानि इन्द्रियाणि यस्य, तस्य (बहुव्रीहि)
- **करण्डपिण्डिततनोः** = करण्डे पिण्डिता तनुः यस्य, तस्य (सप्तमी तत्पु.)
- **तत्पिशितेन** = तस्य पिशितं, तेन (षष्ठी तत्पु.)
- **शरीरस्थम्** = शरीरं तिष्ठति, इति (उपपद समास)
- **उद्यमसमः** = उद्यमेन समः, इति (तृतीया तत्पु.)
- **बृहस्पतिः** = बृहतां वाचां पतिः, इति (षष्ठी तत्पु.)
- **आश्चर्यबलान्वितः** = आश्चर्यं बलम्, तेन अन्वितः (तृतीया तत्पु.)
- **दिवसेश्वरस्य** = दिवसस्य ईश्वरः, तस्य (षष्ठी तत्पु.)
- **अनातपः** = न आतपः यत्र तम् (नञ् तत्पु.)
- **विधिवशात्** = विधेः वशः, तस्मात् (षष्ठी तत्पु.)
- **भाग्यरहितः** = भाग्येन रहितः (तृतीया तत्पु.)
- **शशिदिवाकरयोः** = शशिश्च दिवाकरश्च शशिदिवाकरौ, तयोः (द्वन्द्व)
- **ग्रहपीडनम्** = ग्रहेण पीडनम्, इति (तृतीया तत्पु.)
- **गजभुजङ्गयोः** = गजश्च भुजङ्गश्च तयोः (द्वन्द्व)
- **अशेषगुणाकारम्** = अशेषाणां गुणानां आकारम् (षष्ठी तत्पु.)
- **पुरुषरत्नम्** = पुरुषेषु रत्नम् इति (सप्तमी तत्पु.)
- **तत्क्षणभङ्गि** = तत्क्षणेन भङ्गि इति (तृतीया तत्पु.)
- **करीरविटपे** = करीरस्य विटपे (षष्ठी तत्पु.)
- **चातकमुखे** = चातकस्य मुखे (षष्ठी तत्पु.)
- **ललाटलिखितम्** = ललाटे लिखितम्, इति (सप्तमी तत्पु.)
- **हतविधेः** = हतश्चासौ विधिः तस्य (कर्मधारय)
- **प्रतिनियतकर्मैकफलदः** = प्रति नियतानि कर्माणि, तेषामेव एकं फलं ददातीति (अव्यय)
- **कर्मायत्तम्** = कर्मणः आयत्तम् (षष्ठी तत्पु.)
- **ब्रह्माण्डभाण्डोदरे** = ब्रह्माण्डं एव भाण्डम्, तस्य उदरे (षष्ठी तत्पु.)
- **भिक्षाटनम्** = भिक्षायै अटनम् (चतुर्थी तत्पु.)
- **दशावतारगहने** = दशभिः अवतारैः गहनं, तस्मिन् (तृतीया तत्पु.)
- **यत्नकृता** = यत्नेन कृता (तृतीया तत्पु.)
- **पूर्वतपसा** = पूर्वं तपः, तेन (कर्मधारय)
- **शत्रुजलाग्निमध्ये** = शत्रवश्च जलञ्च अग्निश्च, तेषां मध्ये (द्वन्द्व)
- **महार्णवे** = महान् अर्णवः, तस्मिन् (कर्मधारय)
- **पर्वतमस्तके** = पर्वतानां मस्तके (षष्ठी तत्पु.)
- **प्रत्यक्षम्** = अक्ष्णोः परमिति इति (अव्ययीभाव)
- **सत्क्रियाम्** = सती क्रिया, ताम् (कर्मधारय)
- **गुणवत्** = गुणाः सन्ति अस्मिन् इति (षष्ठी तत्पु.)
- **अगुणवत्** = न गुणवत् इति (नञ् तत्पु.)
- **कार्यजातम्** = कार्याणां जातम् इति (षष्ठी तत्पु.)
- **अतिरभसकृतानाम्** = अतिरभसेन कृतानि तेषां, इति (तृतीया तत्पु.)
- **मन्दभाग्यः** = मन्दं भाग्यं यस्य सः (बहुव्रीहि)
- **इन्धनौघैः** = इन्धनानाम् ओघाः, इन्धनौघास्तैः (षष्ठी तत्पु.)
- **मेरुशिखरम्** = मेरोः शिखरं येषां ते (षष्ठी तत्पु.)
- **वाणिज्यम्** = वणिजोः भावः कर्म (षष्ठी तत्पु.)
- **कृषिसेवने** = कृषिश्च सेवनं च इति (द्वन्द्व) तस्मिन्
- **सन्निधिरत्नपूर्णा** = निधयश्च रत्नानि च इति निधिरत्नानि (द्वन्द्व) शोभनानि च तानि निधिरत्नानि इति सन्निधिरत्नानि (कर्मधारय) तैः परिपूर्णा (तृतीया तत्पु.)
- **स्वजनताम्** = स्वस्य जनाः तेषां भावः ताम् (प्रादिसमास)
- **गुणसङ्गमः** = गुणिनां सङ्गमः इति (षष्ठी तत्पु.)
- **धर्मतत्त्वे** = धर्मस्य तत्त्वं तस्मिन् (षष्ठी तत्पु.)
- **प्रवासगमनम्** = प्रवासे गमनम् (सप्तमी तत्पु.)
- **धैर्यवृत्तेः** = धैर्येण वृत्तिः तस्य (तृतीया तत्पु.)
- **धैर्यगुणः** = धैर्य एव गुणः (मयूरव्यंसकादिसमास)
- **अधोमुखस्य** = अधः मुखं यस्य तस्य (बहुव्रीहि)
- **कान्ताकटाक्षविशिखाः** = कान्तायाः कटाक्षा एव विशिखाः ते (षष्ठी तत्पु.)
- **लोकत्रयम्** = स्वर्गमर्त्यपातालानां त्रयम् (षष्ठी तत्पु.)
- **भूरिविषयः** = भूरयः विषयाः (कर्मधारय)
- **स्फारस्फुरिततेजसा** = स्फारं यथा स्यात् तथा स्फुरितं तेजो यस्य सः (बहुव्रीहि)
- **भास्करः** = भाः करोति इति (षष्ठी तत्पु.)
- **पादाक्रान्तम्** = पादैः आक्रान्तम् (तृतीया तत्पु.)
- **अखिललोकवल्लभतमम्** = अखिलानां लोकानां वल्लभतमम् (षष्ठी तत्पु.)
- **जलायते** = जलं इव आचरति इति (कर्मधारय)
- **जलनिधिम्** = जलानां निधिः (षष्ठी तत्पु.) तम्
- **मृगपतिः** = मृगाणाम् पतिः (षष्ठी तत्पु.)
- **लज्जागुणौघजननीम्** = लज्जागुणानां ओघः तस्य जननीं ताम् (षष्ठी तत्पु.)

नीतिशतकम् में अलङ्कार एवं छन्द

(1) दिक्काला .... शान्ताय तेजसे ॥
छन्द = अनुष्टुप् अलङ्कार = स्वभावोक्ति

(2) बोद्धारो .... सुभाषितम् ॥
छन्द = अनुष्टुप् अलङ्कार = काव्यलिङ्ग

(3) अज्ञः सुखम्...................................... न रञ्जयति ॥
छन्द = आर्या अलङ्कार = अतिशयोक्ति

(4) प्रसह्यमणिम्....................................... आराधयेत् ॥
छन्द = पृथ्वी अलङ्कार = अर्थान्तरन्यासः, अतिश्योक्ति

(5) लभेत सिकतासु .... चित्तमाराधयेत् ॥
छन्द = पृथ्वी अलङ्कार = अतिशयोक्ति

(6) व्यालं .... सुधास्यन्दिभिः ॥
छन्द = शार्दूलविक्रीडित अलङ्कार = निदर्शना

(7) स्वायत्तमेकान्तगुणं .... मौनमपण्डितानाम् ॥
छन्द = उपजाति अलङ्कार = रूपक निदर्शना

(8) यदा किञ्चिज्ज्ञोऽहं .... मेव्यपगतः ॥
छन्द = शिखरिणी अलङ्कार = उपमा

(9) कृमिकुलचितं .... परिग्रहफल्गुताम् ॥
छन्द = हरिणी अलङ्कार = अर्थान्तरन्यासः

(10) शिरः शार्वं .... शतमुखः ॥
छन्द = शिखरिणी अलङ्कार = अर्थान्तरन्यास

(11) शक्यो वारयितुं .... नास्त्यौषधम् ॥
छन्द=शार्दूलविक्रीडितम् अलङ्कार=व्यतिरेक अर्थान्तरन्यास

(12) साहित्यसङ्गीत ....परमं पशूनाम् ॥
छन्द = उपजाति अलङ्कार = रूपकालङ्कार

(13) येषां न विद्या .... मृगाश्चरन्ति ॥
छन्द = उपजाति अलङ्कार = रूपकालङ्कार

(14) वरं पर्वतदुर्गेषु .... सुरेन्द्रभवनेष्वपि ॥
छन्द = अनुष्टुप् अलङ्कार = काव्यलिङ्गम्

(15) शास्त्रोपस्कृतशब्दसुन्दरगिरः .... पातिताः॥
छन्द = शार्दूलविक्रीडित अलङ्कार = विरोधाभास काव्यलिङ्ग

(16) हर्तुर्याति न .... सहस्पर्धते ॥
छन्द = शार्दूलविक्रीडित अलङ्कार = व्यतिरेक

(17) अधिगतपरमार्थान् .... वारणानाम्
छन्द = मालिनी अलङ्कार = उपमा, दृष्टान्त

(18) अम्भोजिनीवन .... समर्थः ॥
छन्द = वसन्ततिलका, अलङ्कार = अप्रस्तुतप्रशंसा

(19) केयूराणि न भूषयन्ति .... वाग्भूषणं भूषणम् ॥
छन्द = शार्दूलविक्रीडित अलङ्कार = व्यतिरेक

(20) विद्यानामनरस्य .... विद्या विहीनः पशुः ॥
छन्द = शार्दूलविक्रीडित, अलंकार = अनुप्रास

(21) क्षान्तिश्चेत्कवचेन .... राज्येन किम् ॥
छन्द = शार्दूलविक्रीडित, अलङ्कार = प्रतीय रूपक

(22) दाक्षिण्यं स्वजने .... लोकस्थितिः ॥
छन्द = शार्दूलविक्रीडित, अलङ्कार = काव्यलिङ्ग

(23) जाड्यं धियो .... करोतिपुंसाम् ॥
छन्द = वसन्ततिलका, अलङ्कार = समुच्चय

(24) जयन्ति ते .... जरामरणजं भयम् ॥
छन्द = अनुष्टुप्, अलङ्कार = काव्यलिङ्गम्

(25) सूनुः सच्चरितः .... देहिना ॥
छन्द = शार्दूलविक्रीडित, अलङ्कार = अनुप्रास

(26) प्राणाघातान्निवृत्तिः .... श्रेयसामेष पन्थाः ॥
छन्द = स्रग्धरा अलङ्कार = समुच्चय

(27) प्रारभ्यते न खलु .... परित्यजन्ति ॥
छन्द = वसन्ततिलका, अलङ्कार = अनुप्रास

(28) असन्तो .... व्रतमिदम् ॥
छन्द = शिखरिणी, अलङ्कार = रूपकोपमा

(29) क्षुत्क्षामोऽपि .... केसरी ॥
छन्द = शार्दूलविक्रीडित, अलङ्कार = अप्रस्तुतप्रशंसा

(30) स्वल्पस्नायु .... सत्वानुरूपं फलम् ॥
छन्द = शार्दूलविक्रीडित, अलङ्कार = अर्थान्तरन्यास

(31) लाङ्गूलचालनम्.................................. भुङ्क्ते ॥
छन्द = वसन्ततिलका, अलङ्कार = अन्योक्ति स्वभावोक्ति

(32) परिवर्तिनि संसारे .... समुन्नतिम् ॥
छन्द = अनुष्टुप्, अलङ्कार = काव्यलिङ्ग

(33) कुसुमस्तबकस्येव .... वन एव वा ॥
छन्द = अनुष्टुप् अलङ्कार = उपमा

(34) सन्त्यन्येऽपि .... शीर्षावशेषाकृतिः ॥
छन्द = शार्दूलविक्रीडित अलङ्कार = अप्रस्तुतप्रशंसा

(35) वहति भुवन .... चरित्रविभूतयः ॥
छन्द = हरिणी, अलङ्कार = अर्थान्तरन्यास

(36) वरं पक्षच्छेदः .... पत्युरुचितः ॥
छन्द = शिखरिणी अलङ्कार = अप्रस्तुत प्रशंसा

(37) यदचेतनोऽपि पादैः .... कथं सहते ॥
छन्द = आर्या अलङ्कार = दृष्टान्त

(38) सिहः शिशुरपि .... वयस्तेजसो हेतुः ॥
छन्द = आर्या, अलङ्कार = अर्थान्तरन्यास

(39) जातिर्यातु रसातलं .... समस्ता इमे ॥
छन्द = शार्दूलविक्रीडित, अलङ्कार = काव्यलिङ्गउपमा

(40) तानीन्द्रियाण्यविकलानि .... विचित्रमेतत् ॥
छन्द = वसन्ततिलका, अलङ्कार = काव्यलिङ्ग

(41) यस्यास्ति वित्तं .... काञ्चनमाश्रयन्ति ॥
छन्द = उपजाति अलङ्कार = काव्यलिङ्ग अर्थान्तरन्यास

(42) दौर्मन्त्रयान्नृपतिर्विनश्यति .... प्रमादाद् धनम् ॥
छन्द = शार्दूलविक्रीडित, अलङ्कार = काव्यलिङ्ग, तुल्ययोगिता

(43) दानं भोगो .... गतिर्भवति ॥
छन्द = आर्या

(44) मणिःशाणोल्लीढः .... चार्थिषु नराः ॥
छन्द = शिखरिणी, अलङ्कार = दीपक

(45) परिक्षीणः .... सङ्कोचयति च ॥
छन्द = शिखरिणी, अलङ्कार = दीपक, काव्यलिङ्ग

(46) राजन्! दुधुक्षसि .... भूमिः ॥
छन्द = वसन्ततिलका, अलङ्कार = उपमा

(47) सत्यानृता.. अनेकरूपा ॥
छन्द = वसन्ततिलका, अलङ्कार = उपमा

(48) आज्ञा कीर्तिः .... पार्थिवोपाश्रयेण ॥
छन्द = शालिनी, अलङ्कार = अर्थापत्तिः

(49) यद् धात्रा .... तुल्यं जलम् ॥
छन्द = शार्दूलविक्रीडित, अलङ्कार = काव्यलिङ्ग, दृष्टान्त

(50) त्वमेव चातकाधारो .... प्रतीक्षसे॥
छन्द = अनुष्टुप्, अलङ्कार = अर्थापत्ति, अप्रस्तुतप्रशंसा

(51) रे रे चातक .... मा ब्रूहि दीनं वचः ॥
छन्द = शार्दूलविक्रीडित, अलङ्कार = अप्रस्तुतप्रशंसा

(52) अकरुणत्वम् .... दुरात्मनाम् ॥
छन्द = द्रुतविलम्बित, अलङ्कार = अर्थान्तरन्यास

(53) दुर्जनः .... भयङ्करः ॥
छन्द = अनुष्टुप्, अलङ्कार = दृष्टान्त

(54) जाड्यं ह्रीमति .... दुर्जनैर्नाङ्कितः ॥
छन्द = शार्दूलविक्रीडित, अलङ्कार = समुच्चय

(55) लोभश्चेदगुणेन .... किं मृत्युना ॥
छन्द = शार्दूलविक्रीडित, अलङ्कार = प्रतीप

(56) शशीदिवसधूसरो .... सप्तशल्यानि मे ॥
छन्द = पृथ्वी, अलङ्कार = दीपक

(57) न कश्चिच्चण्ड .... पावकः ॥
छन्द = अनुष्टुप्, अलङ्कार = दृष्टान्त

(58) मौनान्मूकः .... योगिनामप्यगम्यः ॥
छन्द = मन्दाक्रान्ता, अलङ्कार = अर्थान्तरन्यास

(59) उद्‌भासिताऽखिल .... सुखमाप्यते कैः ॥
छन्द = वसन्ततिलका, अलङ्कार = काव्यलिङ्ग

(60) आरम्भगुर्वी .... खलसज्जनानाम् ॥
छन्द = उपजाति, अलङ्कार = यथासंख्य, उपमा

(61) मृगमीनसज्जनानां .... जगति ॥
छन्द = आर्या, अलङ्कार = यथासंख्य

(62) वाञ्छासज्जन .... नरेभ्यो नमः ॥
छन्द = शार्दूलविक्रीडित, अलङ्कार = काव्यलिङ्ग

(63) विपदि .... महात्मनाम् ॥
छन्द = द्रुतविलम्बित, अलङ्कार = अर्थान्तरन्यास

(64) प्रदानं प्रच्छन्नं .... धाराव्रतमिदम् ॥
छन्द = शिखरिणी, अलङ्कार = समुच्चय

(65) करे श्लाघ्यस्त्यागः .... मण्डनमिदम् ॥
छन्द = शिखरिणी, अलङ्कार = विभावना

(66) सम्पत्सु महतां .... संघातकर्कशम् ॥
छन्द = अनुष्टुप्, अलङ्कार = उपमा

(67) सन्तप्तायसि .... संसर्गतो जायते॥
छन्द = शार्दूलविक्रीडित, अलङ्कार = समुच्चयः

(68) यः प्रीणयेत् .... लभन्ते ॥
छन्द = वसन्ततिलका, अलङ्कार = समुच्चय

(69) एको देवः .... दरी वा
छन्द = शालिनी, अलङ्कार = अनुप्रास

(70) नम्रत्वेनोन्नमन्तः .... नाभ्यर्चनीयाः ॥
छन्द = स्रग्धरा, अलङ्कार = समुच्चयोदात्त

(71) भवन्ति .... परोपकारिणाम् ॥
छन्द = वंशस्थ, अलङ्कार = अर्थान्तरन्यास

(72) श्रोत्रं श्रुतेनैव .... चन्दनेन ॥
छन्द = उपजातिः, अलङ्कार = दीपक, परिसंख्या

(73) पापान्निवारयति .... प्रवदन्ति सन्तः ॥
छन्द = वसन्ततिलका, अलङ्कार = समुच्चय

(74) पद्माकरं दिनकरो .... कृताभियोगाः ॥
छन्द = वसन्ततिलका, अलङ्कार = अर्थान्तरन्यास

(75) एके सत्पुरुषाः .... न जानीमहे ॥
छन्द = शार्दूलविक्रीडित, अलङ्कार = काव्यलिङ्ग

(76) क्षीरेणात्मगतोदकाय .... मैत्रीपुनस्त्वीदृशी ॥
छन्द = शार्दूलविक्रीडितम्, अलङ्कार = संकर उत्प्रेक्षा, अर्थान्तरन्यास

(77) इतः स्वपिति .... च सिन्धोर्वपुः ॥
छन्द = पृथ्वी, अलङ्कार = अप्रस्तुतप्रशंसा, अर्थान्तरन्यास

(78) तृष्णां छिन्धि .... दयामेतत्सतां लक्षणम् ॥
छन्द = शार्दूलविक्रीडित, अलङ्कार = दीपकः

(79) मनसि वचसि .... सन्तः कियन्तः ॥
छन्द = मालिनी, अलङ्कार = अर्थापत्ति, अनुप्रास

(80) किं तेन .... चन्दना स्युः ॥
छन्द = वसन्ततिलका, अलङ्कार = अनुप्रास, काव्यलिंग

(81) क्वचिद् भूमौ .... न च सुखम् ॥
छन्द = शिखरिणी, अलङ्कार = समुच्चय

(82) रत्नैर्महार्हैः .... धीराः ॥
छन्द = उपजाति, अलङ्कार = अर्थान्तरन्यास

(83) ऐश्वर्यस्य .... शीलं परं भूषणम् ॥
छन्द = शार्दूलविक्रीडित, अलङ्कार = अनुप्रास, समुच्चयः

(84) निन्दन्तु .... पदं न धीराः ॥
छन्द = वसन्ततिलका, अलङ्कार = उदात्त

(85) भग्नाशस्य .... क्षये कारणम् ॥
छन्द = शार्दूलविक्रीडित, अलङ्कार = काव्यलिङ्ग

(86) आलस्यं हि .... नावसीदति ॥
छन्द = अनुष्टुप्, अलङ्कार = रूपक

(87) छिन्नोऽपि .... न लोकेषु।
छन्द = आर्यावृत्तम्, अलङ्कार = दृष्टान्त

(88) नेता यस्य .... धिग्धिग्वृथा पौरुषम् ॥
छन्द = शार्दूलविक्रीडित, अलङ्कार = अर्थान्तरन्यासः, अनुप्रास

(89) कर्मायत्तं फलं .... कुर्वता ॥
छन्द = अनुष्टुप्, अलङ्कार = परिकर

(90) खल्वाटो .... यान्त्यापदः॥
छन्द– शार्दूलविक्रीडित, अलङ्कार–अर्थान्तरन्यास

(91) रविनिशाकर .... बलवानिति मे मतिः॥
छन्द–द्रुतविलम्बित अलङ्कार–अर्थान्तरन्यास, काव्यलिङ्ग

(92) सृजति .... पण्डितता विधेः॥
छन्द–द्रुतविलम्बित, अलङ्कार–काव्यलिङ्ग

(93) पत्रंनैव...कः क्षमः॥
छन्द–शार्दूलविक्रीडित, अलङ्कार–अर्थान्तरन्यास

(94) नमस्यामो .... प्रभवति॥
छन्द–शिखरिणी अलङ्कार–मालादीपक

(95) ब्रह्मा येन...नमः कर्मणे
छन्द–शार्दूलविक्रीडित, अलङ्कार–रूपक, उपमा

(96) नैवाऽऽकृतिः.....................................यथैव वृक्षाः॥
छन्द–वसन्ततिलका, अलङ्कार–दीपक एवं उपमा

(97) वने रणे..................................पुण्यानि पुराकृतानि ॥
छन्द–उपजाति, अलङ्कार–दीपकः

(98) या साधूंश्च...................................वृथा मा कृथाः ॥
छन्द–शार्दूलविक्रीडित, अलङ्कार–काव्यलिङ्ग

(99) गुणवदगुणवद्वा...विपाकः॥
छन्द–मालिनी, अलङ्कार–काव्यलिङ्ग

(100) स्थाल्यां..मन्दभाग्यः॥
छन्द स्रग्धरा, अलङ्कार–काव्यलिङ्ग

(101) मज्जत्वम्भसि................................नाशः कुतः॥
छन्द–शार्दूलविक्रीडित, अलङ्कार–अनुप्रास, यमक, दीपक

(102) भीमं वनं .... विपुलं नरस्य॥
छन्द–वसन्ततिलका, अलङ्कार–काव्यलिङ्ग

(103) को लाभो....................................किमाज्ञाफलम्॥
छन्द–शार्दूलविक्रीडित, अलङ्कार–परिसंख्या

(104) अप्रियवचनदरिद्रैः.....................................वसुधा॥
छन्द–आर्या, अलङ्कार–अनुप्रासः

(105) कदर्थितस्यापि..........................याति कदाचिदेव॥
छन्द–उपजाति, अलङ्कार–दृष्टान्त

(106) कान्ताकटाक्षविशिखा .... कृत्स्नमिदं स धीरः॥
छन्द–वसन्ततिलका, अलङ्कार–काव्यलिङ्ग

(107) एकेनापि हि............................स्फारस्फुरित तेजसा॥
छन्द–अनुष्टुप्, अलङ्कार–उपमा

(108) वह्निस्तस्य जलायते .... शीलं समुन्मीलति।
छन्द–शार्दूलविक्रीडित, अलङ्कार–काव्यलिङ्ग

(109) लज्जा गुणौघजननी .... न पुनः प्रतिज्ञाम्॥
छन्द–वसन्ततिलका, अलङ्कार–उपमा

किरातार्जुनीयम् में क्रियापद

लट्लकार

- **इच्छन्ति** = √इष् (इच्छायाम्) + लट् + प्र. पु. बहु. (परस्मै0)
- **अर्हसि** = √अर्ह् (पूजायाम्) + लट् + म. पु. एक. (परस्मै0)
- **शास्ति** = √शास् (शिक्षा देना) + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै0)
- **संश्रृणुते** = सम् + √श्रु + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने0)
- **कुर्वते** = √कृ (करना) + लट् + प्र. पु. बहु. (आत्मने0)
- **समीहते** = सम् + √ईह् (चेष्टा करना) + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने.)
- **तनोति** = √तन् (विस्तार करना) + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **वितन्यते** = वि + √तन् (विस्तार करना) + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मनेपदी) यहाँ कर्मणि 'त' प्रत्यय हुआ है।
- **दर्शयते** = √दृश् + णिच् + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने.)
- **बाधते** = √बाध् (पीड़ा देना) + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने0)
- **प्रवर्तते** = प्र + √वृत् (होना) + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने0)
- **निहन्ति** = नि + √हन् (मारना) + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै0)
- **उपैति** = उप + √इण् (जाना) + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै0)
- **वदन्ति** = √वद् (बोलना) + लट् + प्र. पु. बहु. (परस्मै0)
- **फलन्ति** = √फल् (फलना) + लट् + प्र. पु. बहु. (परस्मै0)
- **नयति** = √नी (ले जाना) + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै0)
- **चकासति** = √चकासृ + लट् + प्र. पु. बहु. (परस्मै0)

नोट – यहाँ अदादिगण पठित "चकासृ" (दीप्तौ) शोभार्थक धातु से लट्लकार प्र. पु. बहु. में प्राप्त झि प्रत्यय को "**जक्षित्यादयः षट्**" सूत्र से 'चकासृ' के अभ्यस्त होने के कारण "**अति**" आदेश होकर "**चकासति**" रूप निष्पन्न होता है।

लट्लकार में इसका रूप इस प्रकार चलेगा–

चकास्ति	**चकास्तः**	**चकासति**
चकास्सि	**चकास्थः**	**चकास्थ**
चकास्मि	**चकास्वः**	**चकास्मः**

- **प्रदुग्धे** = प्र + √दुह् (दुहना) + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने0)
- **वाञ्छन्ति** = √वाञ्छ् (चाहना) + लट् + प्र. पु. बहु. (परस्मै0)
- **प्रतीयते** = प्रति + √इण् (जाना) + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने0)
- **वेद** = √विद् (जानना) + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै0)

विशेष – अदादिगण की "**विद् ज्ञाने**" धातु से लट्लकार में "**विदो लटो वा**" (3.4.83) सूत्र से, णलादि (णल्, अतुस्, उस्) आदेश होकर "**वेद, विदतुः, विदुः रूप** निष्पन्न होता है, एवं पक्ष में, '**वेत्ति, वित्तः, विदन्ति**' इत्यादि। (णलादि आदेश विकल्प से होते हैं)

- **उह्यते** = √वह् (ढोना) + लट् + प्र. पु. एक. (कर्मवाच्य)
- **धिनोति** = √धिवि + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै0)
- **चिन्तयति** = √चिन्त् (सोचना) + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै0)
- **व्यथते** = √व्यथ् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै0)
- **भवति** = √भू (होना) + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै0)
- **व्यवसाययन्ति** = वि + अव + √षो + लट् प्र. पु. बहु0 (परस्मै0)
- **व्रजन्ति** = √व्रज् (जाना) + लट् + प्र. पु. बहु. (परस्मै0)
- **भवन्ति** = √भू (होना) + लट् + प्र. पु. बहु. (परस्मै0)
- **घ्नन्ति** = √हन् (मारना) + लट् + प्र. पु. बहु. (परस्मै0)
- **ज्वलयति** = √ज्वल् + णिच् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै0)
- **दुनोति** = √दु (पीड़ा) लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै0)
- **करोति** = √कृ (करना) + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै0)
- **उत्सहसे** = उद् + √सह् + लट् + म. पु. एक. (आत्मने0)
- **रुजन्ति** = √रुज् (हिंसा) + लट् + प्र. पु. बहु. (परस्मै0)
- **विबोध्यसे** = वि + √बुध् + णिच् म. पु. एक. (कर्मवाच्य)
- **जहासि** = √ओहाक् (हा) + लट् + म. पु. एक. (परस्मै0)
- **परैति** = परा + √इण् (जाना) + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै0)
- **निषीदतः** = नि + √सद् + लट् + प्र. पु. द्विव. (परस्मै0)
- **उन्मूलयति** = उद् + √मूल् + णिच् + लट् प्र. पु. एक. (परस्मै0)
- **अधिकुर्वते** = अधि + √कृ + लट् + प्र. पु. बहु. (आत्मने0)
- **पर्येषि** = परि + √इण् (जाना) + लट् + म. पु. एकवचन

लङ्लकार

- **अयुङ्क्त** = √युज् + लङ् + प्र. पु. एक. (आत्मने0)
- **अरञ्जयत्** = √रञ्ज् + णिच् + लङ् + प्र. पु. एक. (परस्मै0)
- **अयच्छत्** = √दाण् (यच्छ, आदेश) + लङ् + प्र. पु. एक. (परस्मै0)

लिट्लकार

- **समाययौ** = सम् + आङ् + √या + लिट् प्र. पु. एक. (परस्मै0)
- **विव्यथे** = √व्यथ् (दुःखित होना) + लिट् + प्र. पु. एक. (आत्मने.)
- **आददे** = आङ् + √दा (देना) + लिट् + प्र. पु. एक. (आत्मने0)
- **आचचक्षे** = आङ् + √चक्ष् + लिट् + प्र. पु. एक. (आत्मने.)

लोट्लकार

- **विधीयताम्** = वि + √धा + लोट् + प्र. पु. एक. (कर्मवाच्य)
- **सन्धेहि** = सम् + √धा + लोट् + म. पु. एक. (परस्मै0)
- **प्रसीद** = प्र + √सद् + (बैठना) लोट् + म. पु. एक. (परस्मै0)
- **समभ्येतु** = सम् + अभि + √इण् + लोट् + प्र. पु. एक. (परस्मै0)

लुङ् लकार

अवेदि = √विद् (ज्ञानार्थक) + लुङ् + प्र. पु. एक. (कर्मवाच्य)

विधिलिङ्

अपहारयेत् = अप + √हृ + णिच् + विधिलिङ् + प्र. पु. एक. (परस्मै0)

किरातार्जुनीयम् में प्रत्यय

क्विप्-प्रत्यय

- **श्रियः** = श्रयति पुरुषम् अर्थ में श्री + क्विप् = श्री, ''कर्तृकर्मणोः कृति'' सूत्र से 'श्री' शब्द में कर्म अर्थ में षष्ठी एक.
- **महीभुजे** = महीं भुनक्ति अर्थ में मही + भुज् + क्विप् = (चतुर्थी एक.)
- **द्विषाम्** = द्विषन्ति इस अर्थ में √द्विष् + क्विप् ''कर्तृकर्मणोः कृति'' सूत्र से षष्ठी विभक्ति होकर बहुवचन में 'द्विषाम्' निष्पन्न हुआ।
- **भूभृतः** = भुवं बिभर्ति अर्थ में भू + √भृ + क्विप् (षष्ठी एक.)
- **सम्पदः** = सम् + √पद् + क्विप्, (प्रथमा बहु.)
- **विद्विषाम्** = द्वेष्टि अर्थ में वि + √द्विष् + क्विप्, (षष्ठी बहु.)
- **प्रीतियुजः** = प्रीत्या युज्यन्ते अर्थ में प्रीति + √युज् + क्विप् = प्रीतियुज् (द्वितीया बहु.)
- **धनुर्भृतः** = धनु + √भृ + क्विप् (प्रथमा बहु.)
- **संयति** = सम् + √यम् + क्विप् = संयत् (सप्तमी एक.)
- **महीभृताम्** = मही + √भृ + क्विप् (षष्ठी बहु.)
- **भियः** = √भी + क्विप् = प्रथमा बहु.
- **मादृशः** = अस्मद् + √दृश् + क्विन्
- **मदच्युता** = मद + √च्यु + क्विप् (तृतीया एक.)
- **आपदाम्** = आङ् + √पद् + क्विप् (षष्ठी बहु.)
- **विद्विषा** = वि + √द्विष् + क्विप् (तृतीया एक.)
- **धियम्** = √ध्यै + क्विप् (द्वितीया एक.)
- **आपदम्** = आङ् + √पद् + क्विप् (द्वितीया एक0)
- **दिनकृतम्** = दिनं करोति अर्थ में, दिन + √कृ + क्विप् (द्वितीया एक.)

क–प्रत्यय

- **अधिपस्य** = ''अधि पाति रक्षति'' इस अर्थ में अधि + √पा + क = अधिप, षष्ठी एकवचन
- **नृपासनस्थः** = नृपस्य आसनं नृपासनं सिंहासनम्, तस्मिन् स्थितः अर्थ में नृप + आसन + √स्था + क
- **कृतज्ञताम्** = कृत + √ज्ञा + क = कृतज्ञ + तल् + टाप् द्वितीया, एकवचन
- **सङ्कुलम्** = सम् + कुल + क
- **भवादृशः** = भवत् + √दृश् + कञ्

युच् प्रत्यय

- **सुयोधनः** = सु + √युध् + युच् (अन)
- **दुःशासनम्** = दुर् + √शास् + युच् (अन) दुःशासन (द्वितीया एक.)

ल्युट्-प्रत्यय

- **पालनीम्** = पाल् + ल्युट् + ङीप्, द्वितीया एक.
- **दानम्** = दा + ल्युट् (अन)
- **कारणः** = √कृ + णिच् + ल्युट् (अन)
- **आस्थानम्** = आङ् + √स्था + ल्युट् (अन)
- **निकेतनम्** = नि + √कित् + ल्युट् (अन)
- **उपायनम्** = उप + √इण् + ल्युट् (अन)
- **उपमानम्** = उप + √मा + ल्युट् (अन)
- **आननम्** = आङ् + √अन् + ल्युट् (अन)
- **शासनम्** = √शास् + ल्युट् (अन)
- **अभिधानम्** = अभि + √धा + ल्युट् (अन)
- **सदनम्** = √सद् + ल्युट् (अन)
- **अनुशासनम्** = अनु + √शास् + ल्युट् (अन)
- **साधनम्** = √साध् + ल्युट्
- **चन्दनम्** = √चन्द् + ल्युट् (अन)
- **शयनम्** = √शीङ् + ल्युट् (अन), द्वितीया एक.
- **परिरक्षणम्** = परि + √रक्ष् + ल्युट् (अन)
- **दूषणम्** = √दुष् + णिच् + ल्युट् (अन)

टाप् – प्रत्यय

- **लब्धा** = √लभ् + क्त + टाप्
- **विरोधिता** = विरोधिन् + तल् + टाप्
- **सत्क्रिया** = सत् + √कृ + श + (रिङ् आदेश) + टाप्
- **कृष्णा** = √कृष् + नक् + अच् + टाप्
- **ततस्त्याः** = तद् + तसिल् = ततस्, ''अव्ययात्त्यप्'' सूत्र से त्यप् प्रत्यय, ततस् + त्यप् + टाप् = ततस्त्या, (द्वितीया बहु.)
- **क्षमा** = क्षम् + अङ् + टाप्
- **आत्मजा** = आत्मन् + √जन् + ड + टाप्
- **प्रमदा** = प्र + √मद् + अच् + टाप्
- **अपवर्जिता** = अप + √वृज् + णिच् + क्त + टाप्
- **अनुरक्ता** = अनु + √रञ्ज् + क्त + टाप्
- **कुलजा** = कुल + √जन् + ड + टाप्
- **मनोरमा** = मनस् + √रम् + अच् + टाप्
- **कठिनीकृता** = कठिन + च्वि + कृता। कृ + क्त + टाप् = कृता
- **शय्या** = √शीङ् + क्यप् + टाप्
- **हता** = √हन् + क्त + टाप्
- **स्पृहा** = स्पृह् + अङ् + टाप्
- **मनस्विता** = मनस्विन् + तल् + टाप्
- **प्रजासु** = प्र + √जन् + ड + टाप् (सप्तमी बहु.)
- **जिताम्** = √जि + क्त + टाप् (द्वितीया एक.)
- **अनुज्ञाम्** = अनु + √ज्ञा + अङ् + टाप् (द्वितीया. एक.)
- **जिगीषया** = √जि + सन् + अ + टाप् (तृतीया एक.)

- **उपस्नुता** = उप + √स्नु + क्त + टाप्
- **अगम्यरूपाम्** = अगम्य + √रूपप् + टाप् (द्वितीया एक.)
- **आर्द्रता** = आर्द्र + तल् + टाप्।
- **बन्धुताम्** = बन्धु + तल् + टाप् (द्वितीया एक.)
- **सत्क्रिया** = सत् + √कृ + श + रिङ् + इयङ् + टाप्
- **प्रशान्ताः** = प्र + √शम् + क्त + टाप् (द्वितीया बहु०)
- **अभिरक्षया** = अभि + √रक्ष् + अ + टाप् (तृतीया एक.)

क्तिन् – प्रत्यय

- **वृत्तिम्** = √वृत् + क्तिन् (द्वितीया एक.)
- **रतिम्** = √रम् + क्तिन् (द्वितीया एक.)
- **भूतिम्** = √भू + क्तिन् (द्वितीया एक.)
- **भक्तिम्** = √भज् + क्तिन् (द्वितीया एक.)
- **आयतिः** = आङ् + √यम् + क्तिन्
- **कीर्तिम्** = √कृ + क्तिन् (द्वितीया एक.)
- **प्रवृत्तिः** = प्र + √वृत् + क्तिन्
- **सिद्धिम्** = √सिध् + क्तिन्
- **आकृतिः** = आङ् + √कृ + क्तिन्
- **धृतिः** = √धृ + क्तिन्
- **स्तुतिः** = √स्तु + क्तिन्
- **शान्तिः** = √शम् + क्तिन्
- **गीतिः** = √गै + क्तिन्
- **निकृतिः** = नि + √कृ + क्तिन्
- **क्षितिः** = √क्षि + क्तिन्
- **दीप्तिः** = √दीप् + क्तिन्
- **द्विजातिः** = द्वि + √जन् + क्तिन्

तुमुन्-प्रत्यय

- **वेदितुम्** = √विद् + तुमुन्
- **प्रवक्तुम्** = प्र + √वच् + तुमुन्
- **विधातुम्** = वि + √धा + तुमुन्
- **जेतुम्** = √जि + तुमुन्
- **समीहितुम्** = सम् + √ईह् + तुमुन्
- **कर्तुम्** = √कृ + तुमुन्
- **विनियन्तुम्** = वि + नि + √यम् + तुमुन्
- **बाधितुम्** = √बाध् + तुमुन्

सर्वनाम–रूप

- **यम्** = 'यत्' सर्वनाम से पुंलिङ्ग में द्वितीया एक.
- **तत्र =** तद् सर्वनाम शब्द से सप्तमी के अर्थ में त्रल् प्रत्यय तद् + त्रल् = तत्र
- **ततः** = तद् सर्वनाम शब्द से, पञ्चमी के अर्थ में तसिल् प्रत्यय तद् + तसिल्

इनि-प्रत्यय

- **वर्णिलिङ्गी** = 'वर्णः प्रशस्तः अस्य' अस्ति इस अर्थ में वर्ण + इनि = वर्णिन् । वर्णिनः लिङ्गं चिह्नम् अस्य अस्ति सः वर्णिन् + लिङ्ग + इनि = वर्णिलिङ्गी
- **दन्तिन्** = √दन्त् + इनि
- **वशी** = वश् + इनि = वशिन् (प्रथमा एक.)
- **देहिनः** = देहि + इनि = देहिन् (प्रथमा बहु.)

क्त-प्रत्यय

- **विदितः** = √विद् + क्त (भावे नपुंसके) = विदितम् (वेदनम्) अस्य अस्ति इति विदितः, अर्शादिगण में आने वाले शब्दों के समान होने के कारण 'विदितम्' शब्द से 'अर्शादिभ्योऽच्' से मत्वर्थीय 'अच्' प्रत्यय होकर विदितः शब्द निष्पन्न हुआ।
- **रुतः** = रु + क्त
- **कृतः** = √कृ + क्त
- **निश्चित** = √निस् + चि + क्त
- **युक्तैः** = √युज् + क्त (तृतीया बहु.)
- **हितम्** = √धा + क्त। (नपुंसक लिङ्ग भावे क्त प्रत्यय)
- **उपनीतम्** = उप + √नी + क्त
- **चरितम्** = √चर् + क्त
- **निगूढः** = नि + √गुह् + क्त
- **अस्तम्** = √अस् + क्त
- **सन्ततम्** = सम् + √तन् + क्त
- **सक्तः** = √सञ्ज् + क्त
- **वर्जितम्** = √वृज् + क्त
- **उपदिष्टम्** = उप + √दिश् + क्त
- **निवृत्तम्** = नि + √वृत् + क्त
- **अनारतम्** = नञ् + आङ् + √रम् + क्त
- **लम्भिताः** = √लभ् + णिच् + क्त (प्रथमा बहु.)
- **परिबृंहितः** = परि + √बृह् + णिच् + क्त
- **कृष्टः** = √कृष् + क्त
- **अर्चितः** = √अर्च् + णिच् + क्त, अथवा अर्चा अस्य अस्ति अर्थ में अर्चा + इतच्
- **संहताः** = सम् + √हन् + क्त
- **भिन्नः** = √भिद् + क्त
- **रूषितः** = √रुष् + क्त
- **आलूनः** = आ + √लू + क्त

- **सच्चरितैः** = सत् + √चर् + क्त (तृतीया बहु.)
- **शेषितः** = शेष + णिच् + क्त
- **ईहितम्** = √ईह् + क्त
- **उद्यतम्** = उद् + √यम् + क्त (द्वितीया एक.)
- **उद्धतम्** = उद् + √हन् + क्त
- **इद्धम्** = √इन्ध् + क्त ।
- **खिन्नः** = √खिद् + क्त ।
- **अनुमतः** = अनु + √मन् + क्त
- **अनुस्मृतः** = अनु + √स्मृ + क्त
- **आत्तः** = आङ् + √दा + क्त
- **गते** = √गम् + क्त (सप्तमी एक.)
- **उदितः** = √वद् + क्त
- **निरस्तः** = निर् + √अस् + क्त
- **मूढः** = √मुह् + क्त
- **संवृतः** = सम् + √वृ + क्त
- **निशिताः** = नि + √शो + क्त (प्रथमा बहु.)
- **उदीरितः** = उद् + √ईर् + णिच् + क्त
- **शुष्कम्** = √शुष् + क्त (''शुषः कः'' सूत्र से 'क्त' को 'क' आदेश) (द्वितीया एक0)
- **जातः** = √जन् + क्त
- **आचितम्** = आङ् + √चि + क्त
- **अधिरूढः** = अधि + √रुह् + क्त
- **मग्नम्** = √मस्ज् + क्त

घञ् प्रत्यय

- **प्रणामः** = प्र + √नम् + घञ्
- **सारः** = √सृ + घञ्
- **विघाताय** = वि + √हन् + घञ् = विघात यहाँ ''भाववचनाच्च'' सूत्र द्वारा 'घञ्' प्रत्यय लगकर बने विघातः पद में ''तुमर्थाच्च भाववचनात्'' सूत्र से चतुर्थी वि. एक. ''विघाताय'' निष्पन्न हुआ।
- **निसर्गः** = नि + √सृज् + घञ्
- **बोधः** = √बुध + घञ् (प्रथमा एक.)
- **शेषः** = √शिष् + घञ्
- **अनुभावः** = अनुभूयते अर्थ में अनु + √भू + घञ्
- **अनुबन्धः** = अनु + √बन्ध् + घञ्
- **मानः** = √मन् + घञ्
- **गुणानुरागात्** = गुण + अनु + √रञ्ज् + घञ् (पञ्चमी एक.)
- **अनुरोधः** = अनु + √रुध् + घञ्
- **आकारः** = आङ् + √कृ + घञ्
- **अपवर्गः** = अप + √वृज् + घञ्
- **विनियोगः** = वि + नि + √युज् + घञ्
- **उपायाः** = उप + √अय् + घञ् (प्रथमा बहु.)
- **संघर्षः** = सम् + √घृष् + घञ्
- **उदारः** = उत् + √ऋ + घञ्
- **कोपः** = √कुप् + घञ्
- **प्रसङ्गः** = प्र + √सञ्ज् + घञ्
- **अधिक्षेपः** = अधि + √क्षिप् + घञ्
- **अभिमानः** = अभि + √मन् + घञ्
- **मर्षः** = √मृष् + घञ्
- **निकारम्** = नि + √कृ + घञ् (द्वितीया, एक.)
- **नियोगः** = नि + √युज् + घञ्
- **संहारः** = सम् + √हृ + घञ्
- **गाधः** = √गाध् + घञ्

शतृ-प्रत्यय

- **निवेदयिष्यतः** = नि + √विद् + णिच् + शतृ लृट् लकार के अर्थ में = निवेदयिष्यन् (षष्ठी एक.)
- **इच्छतः** = √इष् + शतृ (षष्ठी एक.)
- **भवतः** = √भू + शतृ (पञ्चमी एक.)
- **समुन्नयन्** = सम् + उत् + √नी + शतृ (प्रथमा एक.)
- **आराधयतः** = आङ् + √राध् + शतृ (षष्ठी एक.)
- **दधतः** = √धा + शतृ (प्रथमा बहु.)
- **वाञ्छन्** = वाञ्छ् + शतृ (प्रथमा एक.)
- **वितन्वति** = वि + √तन् + शतृ (सप्तमी एक.)
- **प्रशासत्** = प्र + √शास् + शतृ
- **चिन्वताम्** = √चि + शतृ (षष्ठी बहु.)
- **परिभ्रमन्** = परि + √भ्रम् + शतृ (प्रथमा एक.)
- **आहरन्** = आङ् + √हृ + शतृ (प्रथमा एक.)
- **विलोकयन्** = वि + √लोक् + शतृ
- **द्विषत्** = √द्विष् + शतृ

णिनि प्रत्यय

- **हितैषिणः** = हितम् इच्छन्ति इस अर्थ में हित + √इष् + णिनि ''सुप्यजातौ णिनिः ताच्छील्ये'' सूत्र से 'णिनि' प्रत्यय लगकर प्रथमा बहु. में ''हितैषिणः'' बनता है।
- **अनुजीविभिः** = अनु जीवितुं शीलं येषां ते अर्थ में अनु + जीव् + णिनि। तृतीया बहुवचन।
- **मनोहारि** = मनः हर्तुं शीलं यस्य तत् अर्थ में, मनस् + √हृ + णिनि, नपुंसकलिङ्ग में प्रथमा एकवचन
- **वनाधिवासिनः** = 'वनम् अधिवसति इति तस्मात्' अर्थ में वन + अधि + √वस् + णिनि, पञ्चमी एकवचन
- **विरोधिनः** = वि + √रुध् + णिनि (प्रथमा, बहु.)
- **वनसन्निवासिनाम्** = वन + सम् + नि + √वस् + णिनि (षष्ठी बहु.)
- **वन्यफलाशिनः** = वन्यफल + √अश् + णिनि (षष्ठी एक.)
- **मणिपीठशायिनौ** = मणिपीठ + √शी + णिनि (द्वितीया, द्वि०)

ल्यप्-प्रत्यय

- **अधिगम्य** = अधि + √गम् + ल्यप्
- **विभज्य** = वि + √भज् + ल्यप्
- **विरहय्य** = वि + √रह् + णिच् + ल्यप्
- **विधाय** = वि + √धा + ल्यप्
- **उपेत्य** = उप + √इण् + ल्यप्
- **निधाय** = नि + √धा + ल्यप्
- **प्रविश्य** = प्र + √विश् + ल्यप्
- **निशम्य** = नि + √शम् + ल्यप्
- **विजित्य** = वि + √जि + ल्यप्
- **अधिशय्य** = अधि + √शी + ल्यप्
- **विहाय** = वि + √हा + ल्यप्
- **अवधूय** = अव + √धू + ल्यप्
- **प्राप्य** = प्र + √आप् + ल्यप्
- **उदस्य** = उत् + √अस् + ल्यप्
- **ईरयित्वा** = √ईर् + णिच् + क्त्वा

ङीप्-प्रत्यय

- **सौष्ठवौदार्यविशेषशालिनीम्** = सौष्ठव + औदार्य + विशेष + शाल् + णिनि + ङीप् (द्वितीया एकवचन)
- **मानवीम्** = मनु + अण् + ङीप् (द्वितीया एक.)
- **विशेषशालिनी** = विशेष + √शाल् + णिनि + ङीप्
- **त्वदेष्यतीः** = √इण् (जाना) धातु से भविष्यत् काल में शतृ प्रत्यय होकर, इ + स्य + शतृ + ङीप् = एष्यतीः (द्वितीया, बहु.)
- **दीपिनी** = √दीप् + णिनि + ङीप् + (द्वितीया बहु०)
- **तावकीम्** = तव इयम् अर्थ में, युष्मद् + अण् + ङीप् युष्मद् शब्द को तवक आदेश होता है।
- **विचिन्तयन्ती** = वि + √चिन्त् + शतृ + ङीप्
- **स्थलीम्** = √स्थल् + अच् + ङीप् (द्वितीया एक.)

अण्

- **सौष्ठव** = सुष्ठु + अण्
- **कुरूणाम्** = कुरूणां निवासाः जनपदाः कुरवः। कुरु जाति के निवास स्थान जनपद कुरु कहलाते हैं, यहाँ जनपद अर्थ में ''तस्य निवासः'' सूत्र से अण् प्रत्यय होकर ''जनपदे लुप्'' सूत्र से उसका लोप हो जाता है। जनपद वाची शब्द बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं। अतः षष्ठी बहुवचन में 'कुरूणाम्''
- **समान** = सम् + अन् + अण्
- **चिराय** = चिर् + अय् + अण्
- **यौवन** = युवन् + अण्
- **हार्दः** = हृदय + अण् (हृदय को हृद आदेश होकर) = हार्द
- **मानसः** = मनस् + अण्

ष्यञ्

- **औदार्यम्** = उदार + ष्यञ्
- **माल्यम्** = माला + ष्यञ्
- **यौवराज्ये** = युवराज + ष्यञ् = यौवराज्य, (सप्तमी एक.)

ण्यत्

- **आर्य** = √ऋ + ण्यत्
- **प्राज्यम्** = प्र + √अज् + ण्यत्

अनीयर् प्रत्यय

- **वञ्चनीयाः** = √वञ्च् + अनीयर् (प्रथमा बहु.)
- **रामणीयकम्** = √रम् + अनीयर्
'रमणीयस्य भावः' अर्थ में, रमणीय + वुञ् (अक) रामणीयकम्

अन्य प्रत्यय

- **अतः** = एतस्माद् अर्थ में एतत् + तसिल्
- **दुर्लभम्** = दुर् + √लभ् + खल्
- **साधु** = साध् + उण्
- **अमात्येषु** = अमा बुद्धिः तया सह वसनि अर्थ में अमा + त्यप् = अमात्य (सप्तमी बहु.)
- **दुर्बोधम्** = दुर् + √बुध् + खल् (कर्मणि)
- **विक्लवः** = वि + √क्लु + अच्
- **नयः** = नी + अच्
- **विशङ्कमानः** = वि + शङ्क् + शानच्
- **पराभवम्** = परा + √भू + अप् (द्वितीया, एक.)
- **सङ्गमः** = सम + गम् + अप्
- **जयः** = √जि + अच्
- **सुखम्** = सुख + अच्
- **पदवीम्** = पद + √अवि + ङीष् = पदवी (द्वितीया एक.)
- **प्रपित्सुना** = प्र + √पद् + सन् + उ = प्रपित्सुः (तृतीया एक.)
- **तन्द्रिः** = तन्द् + क्रिन्
- **सखीन्** = सह समानं ख्यायते अर्थ में सह + ख्या + डिन् = सखि (द्वितीया बहुवचन)
- **बन्धुभिः** = बन्ध् + उ = बन्धु (तृतीया बहु.)
- **स्मयः** = स्मि + अच्
- **सख्यम्** = 'सख्युर्भावः' अर्थ में 'सख्युर्यः'' सूत्र से 'य' प्रत्यय होकर सखि + य
- **ईयिवान्** = √इण् धातु से लिट्लकार में 'क्वसु' प्रत्यय होकर निपातन से ईयिवान् रूप बना।
- **निरत्ययम्** = निर् + अति + इ + अच् (द्वितीया एक.)
- **वसूनि** = √वस् + उ (प्रथमा बहु.)
- **मन्युना** = मन् + युच् (तृतीया एक.)
- **गुरु** = गृ + कु, उत्वम्
- **दण्डः** = दण्ड् + अच्
- **विप्लवः** = वि + प्लु + अप्
- **रक्षान्** = √रक्ष् + अच् (द्वितीया बहु.)
- **परितः** = परि + तस्
- **शङ्कितः** = शङ्का + इतच्
- **राजन्य** = राजन् + यत्
- **अश्वः** = अश्व + क्वन्
- **रथः** = √रम् + क्यन्
- **तदीया** = तद् + छ (ईय)
- **वचांसि** = वचस् शब्द नपुंसकलिङ्ग (द्वितीया बहु.)
- **अजिर** = √अज् + किरन्
- **मदः** = मद + अप्
- **लभ्यः** = √लभ् + यत्
- **कृषीवलैः** = कृषि + वलच् (तृतीया, बहु0)
- **सस्य** = √सस् + क्यप्
- **उदयम्** = उत् + √इ + अच् (द्वितीया, एक0)
- **दयावतः** = दया + मतुप् (षष्ठी एक.)
- **प्रतीय** = प्रति + √इण् + यक्
- **धातुः** = √धा + तृच् (षष्ठी एक.)
- **नरः** = √नृ + अच् ।
- **मखेषु** = मख + घ (सप्तमी बहु.)
- **पुरोधसा** = पुरस् + √धा + असि (तृतीया एक.)
- **भूपालः** = भू + √पाल् + अच्
- **स्थिरः** = √स्था + किरच्
- **आयतिः** = आङ् + √या + इति
- **बलवद्** = बल + मतुप्
- **आखण्डलः** = आङ् + खण्ड् + डलच्
- **सूनुः** = सू + नुक्
- **विक्रमः** = वि + √क्रम + अच्
- **उरगः** = उरस् + √गम् + ड
- **जिह्मः** = 'हा' धातु + मन, औणादिक मन् प्रत्यय का लोप तथा ''ह्'' को जिह् आदेश होकर प्रथमा एक. में जिह्मः पद निष्पन्न होता है।
- **विधेयम्** = वि + √धा + यत्।
- **उत्तरम्** = उद् + √तृ + अप्
- **अनुजः** = अनु + √जन् + ड
- **सन्निधिः** = सम् + नि + √धा + कि
- **वचः** = √वच् + असुन्
- **तथा** = तद् + थाल्
- **नारी** = √नृ + अच् = नर + ङीन्
- **दुराधयः** = √दुर् + आङ् + धा + कि (प्रथमा बहु.)
- **तुल्यम्** = तुला + यत्
- **धामन्** = √धा + मनिन्
- **स्ववंशजः** = स्ववंश + √जन + ड
- **मही** = मह् + अच् + ङीष्
- **मतङ्गजः** = मतङ्ग + √जन + ड
- **मानिनाम्** =मान + इनि (षष्ठी बहु0)

- **स्रक्** = √सृज् + क्विन्
- **पराभवम्** = परा + √भू + अप्
- **मायाविषु** = माया + विनि ''अस्मायामेधास्रजो विनिः'' (5.2.121) सूत्र से विनि प्रत्यय = मायाविन्, (सप्तमी बहु.)
- **मायिनः** = माया + इनि ''माया'' शब्द से ''व्रीह्यादिभ्यश्च'' सूत्र से मत्वर्थीय 'इनि' प्रत्यय (प्रथमा बहु.)
- **इषवः** = √इष् + उ = इषु (प्रथमा बहु.)
- **एतर्हि** = 'अस्मिन् काले' अर्थ में इदम् शब्द से ''इदमोर्हिल्'' (5.3.16) सूत्र से र्हिल् प्रत्यय होकर इदम् + र्हिल् = यहाँ इदम् शब्द को एत आदेश होता है।
- **भवन्तम्** = √भा + डवतु = भवत् (द्वितीया एक.)
- **गर्हितः** = √गर्ह + क्त
- **विवर्तमानम्** = वि + वृत् + शानच्
- **वर्त्मनि** = वृत् + मनिन् = वर्त्मन्, (सप्तमी एक.)
- **मन्युः** = मन् + युच्
- **अग्निः** = अङ्ग + नि
- **बन्ध्यः** = बन्ध् + ण्यत्
- **विहन्तुः** = वि + √हन् + तृच् षष्ठी एक.
- **वश्याः** = वश् + यत्, प्रथमा बहु.
- **शून्यम्** = शूना + यत्
- **आदरः** = आङ् + दृ + अप् = आदर
- **जन्तुः** = √जन् + तुन्
- **लोहितः** = √रुह् + इतन् 'र' को 'ल' आदेश
- **पदातिः** = पाद + अत् + इण्
- **रेणुः** = री + नु
- **सत्यम्** = सत् + यत्
- **अकुप्यम्** = गुप् + क्यप् (ग को क आदेश होकर) कुप्य
- **वासांसि** = वस्यते आच्छाद्यते अनेन अर्थ में वस् + असुन् = वासम्, नपुंसकलिङ्ग में द्वितीया एक. = वासांसि
- **धनञ्जयः** = धनं जयति अर्थ में–धन + जि + खच् (मुम् का आगम)
- **कचः** = √कच् + अच्
- **अगजः** = अग + √जन् + ड
- **अगः** = न + √गम् + ड
- **गजः** = गज् + अच्
- **संयमः** = सम् + यम् + अप्
- **विचित्ररूपः** = विचित्र + रूपप्
- **आश्रयः** = आङ् + √श्रि + अच्
- **आधयः** = आङ् + √धा + कि, प्रथमा बहु.
- **अन्धसा** = अद् + असुन्, नुम् और ध होकर तृतीया एक. अन्धसा
- **कार्श्यम्** = कृष् + ष्यञ्
- **द्विजः** = द्वि + √जन् + ड
- **उत्सवः** = उत् + √सू + अप्
- **धामन्** = धा + मनिन् नपुंसकलिङ्ग - प्रथमा एक
- **शत्रुम्** = शद् + त्रुन् द्वितीया एक.
- **मुनिः** = मन् + इन् (अ को उ आदेश)
- **पुरस्** = पूर्व + असि
- **सरः** = सृ + अच्
- **धामवताम्** = धाम + मतुप् = धामवत्, षष्ठी का बहु.
- **दुस्सहः** = दुर् + सह् + खल्
- **आश्रयः** = आङ् + √श्रि + अच्
- **मनस्विन्** = मनस् + विनि
- **पतिः** = √पा + डति
- **लक्ष्मन्** = √लक्ष् + मनिन्
- **कार्मुकः** = कर्मन् + उकञ्
- **जटाधरः** = जटा + √धृ + अच्
- **पावकम्** = √पू + ण्वुल् (अक) द्वितीया एक.
- **समयः** = सम् + √इ + अच्
- **क्षमः** = क्षम् + अच्
- **अरिषु** = ऋ + इन् सप्तमी बहु.
- **विजयः** = वि + √जि + अच् = विजय
- **अर्थिनः** = अर्थ + इनि प्रथमा बहु.
- **उपधिः** = उप + √धा + कि
- **सन्धिः** = सम् + √धा + कि
- **विधिः** = वि + √धा + कि
- **पयोधिः** = पयस् + √धा + कि
- **रिपुः** = अनिष्टं रपति अर्थ में रप् + कु (अ को इ होकर)
- **तिमिरः** = तिम् + किरच्
- **उदीयमानम्** = उत् + √ईङ् + शानच् = उदीयमान, द्वितीया एक. (उदीयमानम्)
- **लक्ष्मीः** = लक्ष् + ई (मुट् का आगम)
- **भूयः** = बहु + ईयसुन् (बहु को भू आदेश और ईयसुन् को ईकार का लोप होकर) भू + यस्

किरातार्जुनीयम् (प्रथमसर्ग) में सन्धि

- **प्रभवोऽनुजीविभिः** = प्रभवस् + अनुजीविभिः विसर्गसन्धि एवं ''एङः पदान्तादति'' से पूर्वरूपसन्धि।
- **अतोऽर्हसि** = अतस् + अर्हसि, विसर्गसन्धि एवं ''एङःपदान्तादति'' से पूर्वरूपसन्धि।
- **सदानुकूलेषु** = सदा + अनुकूलेषु = दीर्घसन्धि
- **नृपेष्वमात्येषु** = नृपेषु + अमात्येषु = यण्सन्धि (इको यणचि)
- **तवानुभावः** = तव + अनुभावः = दीर्घसन्धि
- **तवानुभावोऽयमवेदि** = तवानुभावस् + अयमवेदि (विसर्ग सन्धि एवं पूर्वरूपसन्धि)
- **व्याख्या** – यहाँ पर ''ससजुषो रुः'' सूत्र से अनुभावस् के अन्त्य सकार को 'रु' आदेश होकर उपदेशेऽजनुनासिक इत् से ''उकार'' की इत्संज्ञा और ''तस्य लोपः'' से लोप, ''र्'' को ''अतो रोरप्लुतादप्लुते'' सूत्र से उकार आदेश, तवानुभाव + उ + अयमवेदि ''आद्गुणः'' से गुण होकर, तवानुभावो + अयमवेदि, पुनः ''एङः पदान्तादति'' सूत्र से पूर्वरूप सन्धि होकर, यहाँ सन्धिकार्य निष्पन्न हुआ अन्यस्थलों पर भी अध्येतागण ऐसा ही समझे।
- **नृपासनस्थोऽपि** = नृपासनस्थस् + अपि, विसर्गसन्धि एवं पूर्वरूपसन्धि।
- **भवज्जिगीषया** = भवत् + जिगीषया, ''झलां जशोऽन्ते'' सूत्र से ''जश्त्वसन्धि'' भवद् + जिगीषया पुनः ''स्तोः श्चुना श्चुः''. से श्चुत्व सन्धि।
- **कृतारिः** = कृत + अरिः (दीर्घसन्धि)
- **कृताधिपत्याम्** = कृत + आधिपत्याम् = (दीर्घसन्धि)
- **असक्तमाराधयतो यथायथम्** = असक्तमाराधयतः + यथायथम्, ''विसर्गसन्धि'' (''हशि च'' से उत्व ''आद्गुणः'' से गुण)
- **गुरूपदिष्टेन** = गुरु + उपदिष्टेन, (दीर्घसन्धिः)
- **क्रियापवर्गेष्वनुजीवि** = क्रियापवर्गेषु + अनुजीवि (यण्सन्धि)
- **फलन्त्युपायाः** = फलन्ति + उपायाः (यण्सन्धि)
- **नयत्ययुग्मः** = नयति + अयुग्मः (यण्सन्धि)
- **कुरवश्चकासति** = कुरवस् + चकासति ''स्तोः श्चुना श्चुः'' (श्चुत्वसन्धि)
- **इत्येव** = इति + एव (यण्सन्धि)
- **वाञ्छन्त्यसुभिः** = वाञ्छन्ति + असुभिः (यण्सन्धि)
- **धातुरिवेहितम्** = धातुरिव + ईहितम् (गुणसन्धि)
- **मखेष्वखिन्नः** = मखेषु + अखिन्नः (यण्सन्धि)
- **चिन्तयत्येव** = चिन्तयति + एव (यण्सन्धि)
- **इवानुशासनम्** = इव + अनुशासनम् (दीर्घसन्धि)
- **त्वयात्महस्तेन** = त्वया + आत्महस्तेन (दीर्घसन्धि)
- **स्रगिवापवर्जिता** = स्रगिव + अपवर्जिता (दीर्घसन्धि)
- **शठास्तथाविधान्** = शठाः + तथाविधान् (विसर्गसन्धि)
- **इवेषवः** = इव + इषवः = गुणसन्धिः (आद् गुणः)
- **परैस्त्वदन्यः** = परैः + त्वदन्यः (विसर्गसन्धिः)
- **परिभ्रमँल्लोहितचन्दनोचितः** = परिभ्रमन् + लोहित - चन्दनोचितः, ''तोर्लि'' सूत्र से परसवर्णसन्धि (हल्सन्धि)
- **तवाधुनाहरन्** = तव + अधुना + आहरन्, (दीर्घसन्धि)
- **विष्वगिवागजौ** = विष्वगिव + अगजौ (दीर्घसन्धि)
- **उन्मूलयतीव** = उन्मूलयति + इव (दीर्घसन्धि)
- **भावादृशाश्चेत्** = भवादृशास् + चेत् ''स्तोः श्चुना श्चुः'' (श्चुत्वसन्धि)
- **उदस्योदीयमानम्** = उदस्य + उदीयमानम् (गुणसन्धि)
- **लक्ष्मीस्त्वाम्** = लक्ष्मीस् + त्वाम् (विसर्गसन्धि)

किरातार्जुनीयम् में समास

- **पालनीम्** = पाल्यतेऽनया इति पालनी, ताम् पालनीम्। (तृतीया तत्पुरुष समास)
- **वर्णिलिङ्गी** = वर्णः अस्य अस्ति वर्णी, तस्य लिङ्गम् अस्यास्तीति वर्णिलिङ्गी।
- **वनेचरः** = वने चरति इति वनेचरः। (सप्तमी अलुक् तत्पुरुषसमास)
- **युधिष्ठिरम्** = युधि स्थिरः तम् युधिष्ठिरम् । (सप्तमी अलुक् तत्पुरुषसमास)
- **कृतप्रणामस्य** = कृतः प्रणामः येन तस्य कृतप्रणामस्य। (बहुव्रीहि समास)
- **सौष्ठवौदार्यविशेषशालिनीम्** = ''सौष्ठवं च औदार्यं च इति सौष्ठवौदार्ये तयोः विशेषः तेन शालते इति सौष्ठवौदार्यविशेषशालिनी ताम्, सौष्ठवौदार्यविशेषशालिनीम्। (इतरेतरद्वन्द्व एवं षष्ठी तत्पुरुषसमास)
- **चारचक्षुषः** = चरन्ति इति चराः त एव चाराः, चाराः चक्षूंषि येषां ते चारचक्षुषः। (बहुव्रीहि समास)
- **किंसखा** = कुत्सितः सखा इति किंसखा (कर्मधारयसमास)
- **किंप्रभुः** = कुत्सितः प्रभुः (कर्मधारयसमास)
- **सर्वसम्पदः** = सर्वाः सम्पदः सर्वसम्पदः (कर्मधारयसमास)
- **अमात्येषु** = अमा सह भवाः अमात्याः तेषु
- **अनुकूलेषु** = कूलम् अनुगताः इत्यनुकूलाः तेषु (प्रादितत्पु. समास)
- **अबोधविक्लवाः** = अबोधेन विक्लवाः (तृतीया तत्पुरुष समास)
- **नयवर्त्म** = नयस्य वर्त्म, नयवर्त्म (षष्ठी तत्पुरुष समास)
- **अनुभावः** = अनुगतो भावः इति (प्रादितत्पुरुष समास)
- **वनाधिवासिनः** = वनम् अधिवसति इति वनाधिवासी तस्मात् वनाधिवासिनः (उपपदतत्पुरुषसमास)

- **दुर्लभम्** = दुःखेन लभ्यते इति दुर्लभम्, (उपपद तत्पु. समास)
- **सुयोधनः** = सुखेन युद्ध्यते इति, सुयोधनः (उपपदतत्पुरुष समास)
- **दुरोदरच्छद्मजिताम्** = दुष्टम् उदरं यस्य तत् दुरोदरम्, तस्य छद्मना जितां तां ''दुरोदरच्छद्मजिताम्''। बहुव्रीहि एवं तृतीया तत्पुरुष समास
- **भवज्जिगीषया** = भवन्तं जेतुम् इच्छया, (द्वितीयातत्पुरुष समास) अथवा ''भवतः जिगीषा इति'' (षष्ठी तत्पुरुष समास)
- **गुणसम्पदा** = गुणानां सम्पत् तया, गुणसम्पदा। (षष्ठीतत्पुरुष समास)
- **षड्वर्गः** = षण्णां वर्गः, षड्वर्गः। अरीणां षड्वर्गः, अरिषड्वर्गः तस्य जयः अरिषड्वर्गजयः, कृतः अरिषड्वर्गजयः येन तेन कृतारिषड्वर्गजयेन।
(षष्ठी तत्पुरुष एवं बहुव्रीहि समास)
- **मानवीम्** = इयम् इति मानवी ताम्, मानवीम्, (षष्ठी तत्पु० समास)
- **अस्ततन्द्रिणा** = अस्ता तन्द्रिः आलस्यं यस्य तेन (बहुव्रीहि समास)
- **गतस्मयः** = गतः स्मयः यस्य सः गतस्मयः। (बहुव्रीहि समास)
- **बन्धुताम्** = बन्धूनां समूहः बन्धुता ताम्, बन्धुताम् (षष्ठी तत्पुरुष समास)
- **सुहृदः** = शोभनं हृदयं येषां ते, तान् सुहृदः (बहुव्रीहि समास)
- **कृताधिपत्याम्** = कृतम् आधिपत्यं यस्याः तां कृताधिपत्याम् (बहुव्रीहि समास)
- **समपक्षपातया** = पक्षे पातः पक्षपातः, समः पक्षपातः यस्यां तया, समपक्षपातया। (सुप्सुपासमास)
- **निरत्ययम्** = निर्गतः अत्ययः यस्मात् तम् निरत्ययम् (बहुव्रीहि समास)
- **निवृत्तकारणः** = निवृत्तं कारणं यस्मात् सः - निवृत्तकारणः। (बहुव्रीहि समास)
- **गुरूपदिष्टेन** = गुरुभिः उपदिष्टः तेन – गुरूपदिष्टेन (तृतीया तत्पुरुष समास)
- **अगम्यरूपाम्** = अगम्यं रूपं यस्याः सा ताम् (बहुव्रीहि समास)
- **धर्मविप्लवम्** = धर्मस्य विप्लवः धर्मविप्लवः तम् (षष्ठी तत्पुरुष समास)
- **कृतज्ञताम्** = कृतं जानाति इति कृतज्ञः, तस्य भावः कृतज्ञता, ताम् कृतज्ञताम् (षष्ठी तत्पुरुषसमास)
- **विनियोगसत्क्रियाः** = विनियोग एव सत्क्रिया येषां ते विनियोगसत्क्रियाः। (बहुव्रीहि समास)
- **अनेकराजन्यरथाश्वसङ्कुलम्** = अनेकेषां राजन्यानां रथाश्वेन सङ्कुलम्, अनेकराजन्यरथाश्वसङ्कुलम् (षष्ठी तत्पुरुष समास)
- **आस्थाननिकेतनाजिरम्** = आस्थानस्य निकेतनम्, आस्थान निकेतनं तस्य अजिरम् = आस्थाननिकेतनाजिरम्। (षष्ठी तत्पुरुष समास)
- **नृपोपायनदन्तिनाम्** = नृपाणाम् उपायनानि ये दन्तिनः तेषाम्। (षष्ठी तत्पुरुष समास)
- **अकृष्टपच्याः** = अकृष्टेन पच्यन्त इति अकृष्टपच्याः। (तृतीया तत्पुरुष समास)
- **अदेवमातृकाः** = देवः पर्जन्यः माता येषां ते देवमातृकाः, ते न भवन्ति इति अदेवमातृकाः। (बहुव्रीहि समास)
- **उदारकीर्तेः** = उदारा कीर्तिः यस्य स उदारकीर्तिः तस्य, उदारकीर्तेः, (बहुव्रीहि समास)
- **महौजसः** = महान्ति ओजांसि येषां ते महौजसः। (बहुव्रीहि समास)
- **मानधनाः** = मान एव धनं येषां ते मानधनाः, (बहुव्रीहि समास)
- **धनार्चिताः** = धनैः अर्चिताः धनार्चिताः। (तृतीया तत्पुरुष समास)
- **लब्धकीर्त्तयः** = लब्धा कीर्तिः यैः ते = लब्धकीर्तयः, बहुव्रीहि समास
- **अशेषितक्रियः** = अशेषिताः क्रियाः येन सः अशेषितक्रियः। (बहुव्रीहि समास)
- **हितानुबन्धिभिः** = हितम् अनुबध्नन्ति इति हितानुबन्धीनि तैः हितानुबन्धिभिः।
(उपपदतत्पुरुष समास)
- **सज्यम्** = सह ज्यया इति सज्यम् (बहुव्रीहि समास)
तृतीयान्त शब्द के साथ तुल्ययोग होने पर ''सह'' शब्द के साथ बहुव्रीहि समास होता है।
- **कोपविजिह्मम्** = कोपेन विजिह्मं, कोपविजिह्म (तृतीया तत्पुरुष समास)
- **नराधिपैः** = नराणाम् अधिपाः तैः, नराधिपैः, (षष्ठी तत्पुरुष समास)
- **नवयौवनोद्धतम्** = नवेन यौवनेन उद्धतः, नवयौवनोद्धतः तम्, = नवयौवनोद्धतम् (तृतीया तत्पुरुष समास)
- **दुःशासनम्** = दुःखेन शास्यते इति दुःशासनः तम् (तृतीया तत्पुरुष समास)
- **इद्धशासनः** = इद्धं शासनं यस्य स इद्धशासनः (बहुव्रीहि समास)
- **हिरण्यरेतसम्** = हिरण्यं रेतो यस्य तं हिरण्यरेतसम् (बहुव्रीहि समास)
- **प्रलीनभूपालम्** = प्रलीनाः भूपालाः यस्मिन् तत् प्रलीनभूपालम् (बहुव्रीहि समास)
- **स्थिरायति** = स्थिरा आयतिः यस्य तत् स्थिरायति। (बहुव्रीहि समास)

- **अनुस्मृताखण्डलसूनुविक्रमः** = आखण्डलस्य सूनुः आखण्डलसूनुः, अनुस्मृतः आखण्डलसूनोः विक्रमो येन सः (षष्ठी तत्पुरुष समास)
- **महोदयैः** = महान् उदयः येभ्यः तानि महोदयानि तैः (बहुव्रीहि समास)
- **तवाभिधानात्** = तश्च वश्च तवौ तयोः अभिधानं यस्मिन् तस्मात् (बहुव्रीहि समास)
- **उरगः** = उरसा गच्छति इति (तृतीया तत्पुरुषसमास)
- **परप्रणीतानि** = परैः प्रणीतानि (तृतीया तत्पुरुषसमास)
- **प्रवृत्तिसाराः** = प्रवृत्तिः एव सारो यासां ताः (बहुव्रीहि)
- **आत्तसत्क्रिये** = आत्ता सत्क्रिया येन स आत्तसत्क्रियः तस्मिन् (बहुव्रीहि समास)
- **मन्युव्यवसायदीपिनी** = मन्युश्च व्यवसायश्च मन्युव्यवसायौ तयोः दीपिनीः ताः (इतरेतरद्वन्द्वसमासः) एवं (षष्ठी तत्पुरुष समास)
- **द्रुपदात्मजा** = आत्मनः जाता आत्मजा, द्रुपदस्य आत्मजा = (षष्ठी तत्पुरुष समास)
- **प्रमदाजनोदितम्** = प्रमदाजनेन उदितम् (तृतीया तत्पुरुष समास)
- **निरस्तनारीसमयाः** = निरस्तः नारीणां समयः याभ्यः ताः (षष्ठी तत्पुरुषसमास एवं बहुव्रीहि समास)
- **आखण्डलतुल्यधामभिः** = आखण्डलतुल्यः धामानि येषां तैः (बहुव्रीहि समास)
- **मदच्युता** = मदं च्योतति इति मदच्युत् तेन। (उपपद तत्पुरुष समास)
- **असंवृताङ्गान्** = न संवृतानि असंवृतानि, असंवृतानि अङ्गानि येषां ते असंवृताङ्गाः तान् (नञ् तत्पु. समास, एवं बहुव्रीहि समास)
- **अनुरक्तसाधनः** = अनुरक्तं साधनं यस्य, सः (बहुव्रीहि समास)
- **नराधिपः** = नराणाम् अधिपः इति नराधिपः (षष्ठी तत्पुरुष)
- **मनस्विगर्हिते** = मनस्विभिः गर्हिते। (तृतीया तत्पु.)
- **शमीतरुम्** = शमी चासौ तरुश्च शमीतरुः तम् (कर्मधारय)
- **उच्छिखः** = उद्गता शिखा यस्य स उच्छिखः। (बहुव्रीहि)
- **अबन्ध्यकोपस्य** = अबन्ध्यः कोपो यस्य तस्य अबन्ध्यकोपस्य (बहुव्रीहि समास)
- **अन्तर्गिरि** = गिरिषु अन्तः (सप्तमी तत्पुरुष समास)
- **रेणुरूषितः** = रेणुभिः रूषितः (तृतीया तत्पुरुष)
- **सत्यधनस्य** = सत्यम् एव धनं यस्य तस्य (बहुव्रीहि समास)
- **वृकोदरः** = वृकस्य उदरम् इव उदरं यस्य सः (षष्ठी तत्पुरुष समास, एवं बहुव्रीहि समास)
- **वासवोपमः** = वासवः उपमा यस्य सः (बहुव्रीहि समास)
- **धनञ्जयः** = धनं जयतीति (द्वितीया तत्पुरुष)
- **वनान्तशय्याकठिनीकृताकृती** = वनान्तः एव शय्या इति वनान्तशय्या तस्यां कठिनीकृते आकृती ययोः तौ, अथवा वनान्तशय्यया कठिनीकृते आकृती ययोः तौ। (कर्मधारयसमास, तृतीया तत्पुरुषसमास, बहुव्रीहि समास)
- **धृतिसंयमौ** = धृतिश्च संयमश्च (द्वन्द्वसमास)
- **विचित्ररूपाः** = विचित्राणि रूपाणि यासां ताः (बहुव्रीहिसमास)
- **चित्तवृत्तयः** = चित्तस्य वृत्तयः (षष्ठी तत्पुरुष)
- **स्तुतिगीतिमङ्गलैः** = स्तुतयश्च गीतयश्च ता एव मङ्गलानि तैः (द्वन्द्वसमास एवं कर्मधारयसमास)
- **अदभ्रदर्भाम्** = अदभ्राः दर्भाः यस्यां सा अदभ्रदर्भा ताम् (बहुव्रीहि समास)
- **द्विजातिशेषेण** = द्विजातिभिः भुक्तं तस्य शेषः तेन (तत्पुरुष समास)
- **राजशिरःस्रजाम्** = राज्ञां शिरः राजशिरः तेषां स्रजः तासाम् (षष्ठी तत्पुरुष समास)
- **मृगद्विजालूनशिखेषु** = मृगाश्च द्विजाश्च मृगद्विजाः तैः आलूनाः शिखाः येषां तेषु (द्वन्द्वसमास एवं तत्पुरुष समास)
- **द्विषन्निमित्ता** = द्विषन्तो निमित्तं यस्याः सा, (बहुव्रीहि समास)
- **अपर्य्यासितवीर्यसम्पदाम्** = अपर्य्यासिता वीर्यसम्पत् येषां तेषाम् (बहुव्रीहि समास)
- **निःस्पृहाः** = निर्गता स्पृहा येभ्यः ते, (बहुव्रीहि समास)
- **पुरःसराः** = पुरः सरन्ति इति
- **यशोधनाः** = यश एव धनं येषां ते, (बहुव्रीहि समास)
- **निराश्रया** = निर्गतः आश्रयः यस्याः सा (बहुव्रीहि समास)
- **निरस्तविक्रमः** = निरस्तः विक्रमः येन सः (बहुव्रीहि समास)
- **जटाधरः** = धरतीति धरो, जटानां धरः (षष्ठी तत्पुरुषसमास)
- **निकृतिपरेषु** = निकृतिः परं येषु तेषु, (बहुव्रीहि समास)
- **भूरिधाम्नः** = भूरि धाम यस्य तस्य (बहुव्रीहि समास)
- **दीप्तिसंहारजिह्मम्** = दीप्तेः संहारः तेन जिह्मः तम् दीप्तिसंहारजिह्मम्'' (षष्ठी तत्पुरुषसमास)
- **शिथिलवसुम्** = शिथिलं वसु यस्य सः तम्, ''शिथिलवसुम्'' (बहुव्रीहि समास)
- **आपत्पयोधौ** = आपत् एव पयोधिः तस्मिन् अथवा आपदः पयोधिः तस्मिन्, ''आपत्पयोधौ'' (उपमित समासः)
- **विधिसमयनियोगः** = विधिश्च समयश्च इति विधिसमयौ (द्वन्द्वसमासः) तयोः नियोगः इति विधिसमयनियोगः (षष्ठी तत्पुरुष)

किरातार्जुनीयम् में कारकप्रयोग

- ''**कुरूणामधिपस्य**'' में ''**षष्ठी शेषे**'' सूत्र से षष्ठी विभक्ति हुई।
- **महीभुजे** – यहाँ पर ''**महीभुजं निवेदयिष्यतः**'' ऐसा प्रयोग होना चाहिए था, किन्तु ऐसा हुआ नहीं, क्योंकि व्याकरण का एक नियम है कि जब तुमुन् प्रत्यय से युक्त धातु का प्रयोग परोक्ष हो तो उसके कर्म में चतुर्थी विभक्ति होती है, उपर्युक्त प्रयोग में ''महीभुजं बोधयितुं निवेदयिष्यतः'' कहने से ही पूरा अर्थ निकलता है, किन्तु ''बोधयितुम्'' का प्रयोग प्रत्यक्षतः नहीं हुआ, फलतः इस क्रिया के कर्म अर्थात् महीभुजम् में चतुर्थी हो गई। सूत्र है –
  ``**क्रियार्थोपपदस्य च कर्मणि स्थानिनः**''
- **द्विषाम्** = यहाँ ''**द्विषां विघाताय**'' में विघातशब्द में आने वाला घञ् प्रत्यय चूँकि कृत् प्रत्ययों में से एक है, तथा 'द्विषः' शब्द मूलतः उसका कर्म है (इसका अर्थ है – द्विषः विहन्तुम्) अतएव ''**कर्तृकर्मणोः कृति**'' सूत्र से कर्मणि षष्ठी का बहुवचन हुआ।
- **विघाताय** = विघाताय = विहन्तुमित्यर्थः यहाँ ''तुमर्थाच्च भाववचनात्'' सूत्र से चतुर्थी विभक्ति।
- **हितात्** – यहाँ पञ्चमी का विधान ''**आख्यातोपयोगे**'' सूत्र से हुआ है।
- **भवज्जिगीषया** = यहाँ पर ''**हेतौ**'' सूत्र से '**तृतीया**' विभक्ति का विधान होता है।
  ''गुणैर्भवन्तमाक्रमितुमिच्छतीत्यर्थः'' "**हेतौ**'' इति **तृतीया**
- **महात्मभिः समम्** = यहाँ पर ''**सहयुक्तेऽप्रधाने**'' सूत्र से समम् के योग में तृतीया विभक्ति का प्रयोग हुआ।
- **बन्धुभिः** = यहाँ सह के अर्थ में ''**सहयुक्तेऽप्रधाने**'' से तृतीया विभक्ति।
- **अनुजीविनः** = यहाँ ''**कर्तुरीप्सिततमं कर्म**'' सूत्र से कर्मसंज्ञा एवं ''**कर्मणि द्वितीया**'' से द्वितीया बहु. का प्रयोग।
- **गुणानुरागात्** = ''**विभाषा गुणेऽस्त्रियाम्**'' इस नियम से यहाँ पञ्चमी विभक्ति हुई, सूत्रार्थ है, स्त्रीलिङ्ग से भिन्न लिङ्ग वाले गुणवाचक शब्दों में हेत्वर्थक पञ्चमी विभक्ति विकल्प से होती है।
- **गुणानुरोधेन विना** = यहाँ ''**पृथग्विनानानाभिस्तृतीयाऽन्यतरस्याम्**'' इस सूत्र से विना के योग में तृतीया विभक्ति का प्रयोग हुआ।
- **मन्युना** = ''**हेतौ**'' सूत्र से तृतीया विभक्ति का प्रयोग हुआ है।
- **दण्डेन** = यहाँ पर ''**हेतौ**'' से तृतीया विभक्ति।
- **क्रियापवर्गेषु** = कर्म समाप्तिषु अर्थात् कार्यों की समाप्ति होने पर ''**यस्य च भावेन भावलक्षणम्**'' सूत्र से सति सप्तमी का प्रयोग हुआ।
- **तस्मिन्** = ''दुर्योधने'', (उस दुर्योधन के द्वारा) इत्यर्थः , यहाँ पर ''**यस्य च भावेन भावलक्षणम्**'' से सति सप्तमी का प्रयोग।
- **सुखेन** = यहाँ ''प्रकृत्यादिभ्यः उपसंख्यानम् (वा)'' से तृतीया विभक्ति का प्रयोग।
- **तवाभिधानात्** = हेतु अर्थ में पञ्चमी विभक्ति
- **द्विषताम्** = यहाँ पर ''**षष्ठी शेषे**'' सूत्र से शेष अर्थ में षष्ठी विभक्ति का प्रयोग हुआ है।
- **भवादृशेषु** = यहाँ अधिकरणे सप्तमी, ''**सप्तम्यधिकरणे च**'' इससे सप्तमी विभक्ति का प्रयोग हुआ।
- **व्यवसाययन्ति माम्** – माम् की यहाँ कर्मसंज्ञा है, और ''**कर्मणि द्वितीया**'' से द्वितीयाविभक्ति का प्रयोग हुआ। **(''गति बुद्धि.......'' सूत्र से कर्मसंज्ञा)**
- **त्वदन्यः** = त्वत् + अन्यः = यहाँ पर ''अन्य'' शब्द के योग में ''अन्यारादितरर्ते.....'' सूत्र से पञ्चमी विभक्ति का विधान होता है।
- **आपदाम्** = यहाँ पर कर्मणि षष्ठी हुई है, सूत्र है, ''**कर्तृकर्मणोः कृति**'' से **षष्ठी** विभक्ति का प्रयोग हुआ।
- **विचिन्तयन्त्याः मम चेतः रुजन्ति** = यहाँ पर ''**रुजार्थानां भाववचनानामज्वरेः**'' सूत्र से विचिन्तयन्त्याः में षष्ठी विभक्ति का प्रयोग।
- **अधिरूढः शयनम्** = यहाँ पर ''**अधिशीङ्स्थासां कर्म**'' सूत्र से कर्म कारक एवं द्वितीया का प्रयोग।
- **अधिशय्य स्थलीम्** = यहाँ पर ''**अधिशीङ्स्थासां कर्म**'' सूत्र से कर्म कारक एवं द्वितीया का प्रयोग।
- **यशसा समम्** = ''**सहयुक्तेऽप्रधाने**'' सूत्र से समम् के योग में '**यशसा**' में तृतीयाविभक्ति का विधान किया गया।
- **वधाय** = ''**क्रियार्थोपपदस्य च कर्मणि स्थानिनः**'' सूत्र से 'वधाय' में **चतुर्थी** विभक्ति हुई।
- **निकृतिपरेषु** = ''सति सप्तमी'' का प्रयोग ''**यस्य च भावेन भावलक्षणम्**'' सूत्र से।
- **अरिषु** = शत्रुषु, शत्रुविषयक, '**विषयाधिकरणे सप्तमी**'।

किरातार्जुनीयम् (प्रथमसर्ग) में छन्द एवं अलङ्कार

किरातार्जुनीयम् में छन्द

- किरातार्जुनीयमहाकाव्य के प्रथमसर्ग में प्रथमश्लोक **''श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीम्''** से लेकर 44वें श्लोक **''अथ क्षमामेव निरस्तविक्रमः''** तक वंशस्थ छन्द है। जिसका लक्षण है– **''जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ''**
  अर्थात् जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः जगण, तगण जगण और रगण आता है, उसे 'वंशस्थ' छन्द कहते हैं। इसके प्रत्येकचरण में 12 वर्ण होते हैं और पादान्त में यति होती है।
- किरातार्जुनीयम् (प्रथमसर्ग) के 45वें श्लोक **''न समयपरिरक्षणं क्षमं ते''** में **पुष्पिताग्रा छन्द** है; जिसका लक्षण है–
  ''अयुजि नयुगरेफतो यकारो, युजि च नजौ जरगाश्च पुष्पिताग्रा''
  अर्थात् जब प्रथम एवं तृतीय चरण में क्रमशः नगण नगण रगण यगण (12 अक्षर) और द्वितीय तथा चतुर्थ चरण में नगण जगण जगण रगण और एक गुरु (13 अक्षर) वर्ण हों तो वहाँ **'पुष्पिताग्रा'** छन्द होता है।
- किरातार्जुनीयम् (प्रथमसर्ग) के अन्तिम 46वें **''विधिसमयनियोगाद् दीप्तिसंहारजिह्मम्''** इस श्लोक में ''मालिनीछन्द'' है; जिसका लक्षण है – **''ननमयययुतेयं मालिनीभोगिलोकैः''**
  अर्थात् जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः नगण नगण मगण यगण और यगण हों, और आठवें तथा सातवें वर्ण में यति (विराम) हो, उसे 'मालिनी छन्द' कहते हैं। इस छन्द के प्रत्येक चरण में 15 वर्ण होते हैं।
- इस प्रकार महाकवि भारवि ने सर्गान्त में छन्दपरिवर्तन करके महाकाव्य के लक्षण का पूर्णतया पालन किया है। **'श्री' शब्द से** इस महाकाव्य का **आरम्भ** तथा **'लक्ष्मी' शब्द से सर्ग का अन्त** करते हुए महाकवि भारवि ने एक नयी परम्परा का प्रारम्भ किया, जो परवर्ती माघ आदि कवियों द्वारा उसका अनुपालन किया गया।

किरातार्जुनीयम् का प्रारम्भ – **'श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीम्'**
किरातार्जुनीयम् का सर्गान्त **'दिनकृतमिव लक्ष्मीस्त्वां समभ्येतु भूयः'**

किरातार्जुनीयम् में अलङ्कार

श्लोक-1 – श्रियः .... वनेचरः॥

प्रस्तुत श्लोक में वृत्यनुप्रास नामक अलङ्कार है, क्योंकि 'पालनीम्' एवं 'प्रजासु' में 'प्' की 'वृत्तिम्' 'वेदितुम्' 'वर्णिलिङ्गी' तथा 'विदितः' में 'व्' की और 'वने वनेचरः' में वने की आवृत्ति हो रही है। इसका लक्षणा है –

अनेकस्यैकधा साम्यमसकृद्वाप्यनेकधा । एकस्य सकृदप्येष वृत्यनुप्रास उच्चते'' (सा. द.)

श्लोक-2 – कृतप्रणामस्य .... हितैषिणः ॥

प्रस्तुत श्लोक में, प्रथम की तीन पंक्तियों में एक विशेष कथन का उपन्यास किया गया है, और चौथी पंक्ति में विद्यमान एक सामान्य बात से उसका समर्थन किया गया है, फलतः यहाँ **अर्थान्तरन्यास अलङ्कार** है। लक्षण इस प्रकार है–

सामान्यं वा विशेषो वा तदन्येन समर्थ्यते,
यत्तु सोऽर्थान्तरन्यासः साधर्म्येणेतरेण वा

श्लोक-3 – द्विषां विघाताय .... वाचमाददे ॥

उपर्युक्त श्लोक में वृत्यनुप्रास नामक अलङ्कार है, क्योंकि 'विघाताय विधातुम् विनिश्चितार्थाम्, विशेषः और वाचम्' इत्यादि में 'व' की आवृत्ति हो रही है। आचार्य मम्मट के अनुसार अनुप्रास का लक्षण है – 'वर्णसाम्यमनुप्रासः'।

श्लोक-4 – क्रियासु .... दुर्लभं वचः ।

प्रस्तुत श्लोक में प्रथम तीन चरण में कही गयी, एक विशेष बात का समर्थन चतुर्थ चरण में कही गयी सामान्य बात से होने के कारण **अर्थान्तरन्यास** अलङ्कार है, काव्यप्रकाश के अनुसार इसका लक्षण श्लोक सं. 2 में देखें।

श्लोक-5 – स किंसखा .... सर्वसम्पदः।

प्रस्तुत श्लोक में राजाओं और अमात्यों को एक दूसरे के अनुकूल रहने रूप कारण का सम्पूर्ण सम्पत्तियों की प्राप्ति रूप कार्य से समर्थन हो रहा है। अतः **''अर्थान्तरन्यास''** अलङ्कार है।

श्लोक-6 – निसर्गदुर्बोध .... विद्विषाम्॥

इस पद्य में 'अज्ञान से युक्त प्राणी' और छिपे हुए रहस्यों वाले नीति मार्ग का प्रयोग करने वाले राजाओं का दुर्बोध चरित इन दोनों परस्पर अत्यन्त भिन्न स्थितियों वाले पदार्थों का एक साथ प्रयोग होने से **विषम अलङ्कार** है, इसका लक्षण है,

''क्वचिद्यदति वैधर्म्यान्नश्लेषो घटनामियात् .... इत्यादि (काव्यप्रकाशः)।

श्लोक-7 – विशङ्कमानो .... सुयोधनः।

इस श्लोक में ''दुरोदरच्छद्मजिताम्'' इस विशेषण पद का अर्थ - जुए के द्वारा छल से जीती गयी पृथ्वी को 'नयेनजेतुम्' के

अर्थ नीति से जीतने के लिए - का कारण होने से **काव्यलिङ्ग** नामक अलङ्कार है।

इसका लक्षण है - हेतोर्वाक्यपदार्थत्वे काव्यलिङ्गं निगद्यते (सा. द.)

श्लोक-8 – तथापि .... महात्मभिः।

इस श्लोक में कुटिल स्वभाव वाले दुर्योधन के द्वारा युधिष्ठिर को जीतने के लिये अपनी निर्मल कीर्ति का विस्तार करना - इस विशेष बात का समर्थन दुष्टों की सङ्गति की अपेक्षा ऐश्वर्य को बढ़ाने वाला महापुरुषों का विरोध श्रेयस्कर है –

इस सामान्य कथन से करने के कारण **''अर्थान्तरन्यास''** नामक अलङ्कार है। इसमें **काव्यलिङ्ग** नामक अलङ्कार भी है, क्योंकि ''भूतिं समुन्नयन् (ऐश्वर्य को बढ़ाने के लिए) इस कारण पद से ''वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः''

(महापुरुषों का विरोध दुष्ट सङ्गति की अपेक्षा कुछ अच्छा होता है)

श्लोक-9 – कृतारिषड् .... पौरुषम्।

उपर्युक्त पद्य में ''नयेन पौरुषं वितन्यते'' (नीति से पौरुष का विस्तार किया जा रहा है) इस अर्थ के ज्ञान का हेतु - 'कृतारिषड्वर्गजयेन अगम्यरूपाम् मानवीं पदवीं प्रपित्सुना' तथा ''नक्तन्दिवं विभज्य अस्ततन्द्रिणा'' आदि है, अतएव इसमें **काव्यलिङ्ग अलङ्कार** है। इसका लक्षण, श्लोक सं. 7 में देखें।

श्लोक-10 – सखीनिव .... बन्धुताम्।

उपर्युक्त पद्य में **''रशनोपमा''** नामक अलङ्कार है, क्योंकि क्रमशः पहले के वाक्यों में वर्णित उपमेय आगे के वाक्यों में उपमान हो जाते हैं, आचार्य विश्वनाथ के अनुसार इसका लक्षण है–

कथिता रशनोपमा यथोर्ध्वमुपमेयस्य यदि स्याद् उपमानता।।

श्लोक 11 – असक्त .... परस्परम्।

इस श्लोक में 'सख्यमीयिवान् इव' इत्यादि शब्दों से उपमेय की उपमान के साथ सम्भावना होने के कारण **उत्प्रेक्षा** अलङ्कार है, जिसका लक्षण है –

''सम्भावनामथोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य समेन यत्'' (काव्यप्रकाशः)

श्लोक-12 – निरत्ययं .... सत्क्रिया।

इस पद्य में पूर्व-पूर्व वाक्य के विशेषण के रूप में उत्तर-उत्तर वाक्य की स्थापना होने के कारण **एकावली** नामक अलङ्कार है, इसका लक्षण इस प्रकार है,

● स्थाप्यतेऽपोह्यते वापि यथापूर्व परं परम्। विशेषणतया वस्तु यत्र सैकावली द्विधा'' (काव्यप्रकाश)

श्लोक-13 – वसूनि वाञ्छन्न .... धर्मविप्लवम्।।

प्रस्तुत श्लोक में 'नकार' का अनेक बार उच्चारण होने से **''वृत्यनुप्रासालङ्कार''** है।

श्लोक-14 – विधाय रक्षान् .... सम्पदः।

इस श्लोक में 'न शङ्कि' तथा 'कृ' इत्यादि की आवृत्ति होने से **अनुप्रास** नामक शब्दालङ्कार है।

श्लोक-15 – अनारतं तेन .... सम्पदः।

यद्यपि साम, दान, दण्ड और भेद, ये परस्पर कभी स्पर्धा नहीं करते, फिर भी प्रस्तुत श्लोक में अर्थ की सुन्दरता को अभिव्यक्त करने के लिए उनमें प्रतिस्पर्धा की सम्भावना की गयी है। अतः इसमें **''उत्प्रेक्षा''** नामक अलङ्कार है, श्लोक का इव शब्द उत्प्रेक्षा को व्यञ्जित कर रहा है।

मन्ये शङ्के ध्रुवं प्रायो नूनमित्येवमादयः, उत्प्रेक्षा व्यञ्जकाः शब्दा इव शब्दोऽपि तादृशः''

श्लोक-16 – अनेकराजन्य .... मदः।

इस श्लोक में 'उदात्त' नामक अलङ्कार है, क्योंकि इसमें दुर्योधन की लोकोत्तर समृद्धि का वर्णन किया गया है। 'अलङ्कारसूत्र' के अनुसार इसका लक्षण है –

''समृद्धिमद्वस्तुवर्णनमुदात्तः''

श्लोक-17 – सुखेन लभ्या .... चकासति।

उपर्युक्त श्लोक में **उत्प्रेक्षा** अलङ्कार है जिसका लक्षण है, ''सम्भावनमथोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य समेन यत् (काव्यप्रकाशः)

श्लोक-18 – उदारकीर्ते .... मेदिनी।

उपर्युक्त पद्य में प्रस्तुत उपमेय ''पृथ्वी'' पर अप्रस्तुत उपमान ''गाय'' के दोहन रूप कार्य का आरोप होने के कारण **समासोक्ति अलङ्कार** है, लक्षण है –

''समासोक्तिः समैर्यत्र कार्यलिङ्गविशेषणैः, व्यवहारसमारोपः प्रस्तुतेऽन्यस्य वस्तुनः (सा. द.)

श्लोक-19 –महौजसो .... समीहितुम्।

इस पद्य में **काव्यलिङ्ग** और **'परिकर'** ये दो अलङ्कार हैं। साथ ही इन दो अलङ्कारों की 'संसृष्टि' भी है।

श्लोक-20 – महीभृतां .... फलैः।

इस पद्य में दुर्योधन के कार्यों की समानता विधाता के कार्यों से करने के कारण **'उपमा'** अलङ्कार है।

श्लोक-21 – न तेन .... शासनम्।।

प्रस्तुत श्लोक में ''माल्यम् इव'' यह अंश दुर्योधन की आज्ञा और माला में साधर्म्य है। अतः **उपमा अलङ्कार** है।

श्लोक-22 – स यौवराज्ये .... हिरण्यरेतसम्।।

प्रस्तुत श्लोक में ''उद्धतम्'' ''निधाय'' ''पुरोधसा'' ''धिनोति'' इत्यादि में ध् वर्ण की, ''दुःशासनः'' ''इद्धशासनः'' में 'श्' वर्ण की तथा ''हव्येन हिरण्यरेतसम्'' में ''ह'' वर्ण की आवृत्ति होने से **अनुप्रास** अलङ्कार है।

श्लोक-23 – प्रलीन .... बलवद्विरोधिता।

इस श्लोक में ''दुरन्ताबलवद्विरोधिता'' इस सामान्य कथन का ''स चिन्तयत्येव भियस्त्वदेष्यतीः'' इस विशेष कथन से समर्थन होने के कारण **अर्थान्तरन्यास** अलङ्कार है,

श्लोक-24 – कथाप्रसङ्गेन .... पदादिवोरगः

इस पद्य में श्लेषानुप्राणित पूर्णोपमा अलङ्कार है ''कथाप्रसङ्गेन'' ''अनुस्मृताखण्डलसूनुविक्रमः'' तवाभिधानात्'' इत्यादि श्लिष्टपद हैं। सः (दुर्योधनः) उपमेय, 'उरगः' उपमान। 'इव' वाचक शब्द तथा ''नताननः व्यथते'' साधारण धर्म सभी स्पष्टतया प्रतिपादित हैं अतः **पूर्णोपमा अलङ्कार** है।

श्लोक-25 – तदाशु कर्तुं .... मादृशां गिरः

उपर्युक्त पद्य में उत्तरार्द्ध के दूसरों के द्वारा कहे गये कथनों का संग्रह करने वाली मुझ जैसों की बातें केवल वृत्तान्त मात्र वाली होती है, इस सामान्य कथन का समर्थन पूर्वार्द्ध के तदाशु कर्तुं त्वयि जिह्ममुद्यते विधीयतां तत्र विधेयमुत्तरम्'' इस विशेष कथन से होने के कारण **''अर्थान्तरन्यास''** नामक अलङ्कार है।

श्लोक-26 – इतीरयित्वा .... सन्निधौ वचः

प्रस्तुत श्लोक में ''अनुप्रास अलङ्कार है, क्योंकि इसके पूर्वार्द्ध में ''न'' वर्ण की तथा चतुर्थ चरण में ''च'' वर्ण की आवृत्ति हुई है।

श्लोक-27 – निशम्य सिद्धिं .... गिरः।

अलङ्कार – उपर्युक्त श्लोक के द्वितीय चरण ''ततस्ततस्त्याः'' में 'त' वर्ण की कई बार आवृत्ति होने से **'अनुप्रास अलङ्कार'** है।

श्लोक-28 – भवादृशेषु .... दुराधयः।

अलङ्कार – उपर्युक्त श्लोक के पूर्वार्द्ध में **''उपमा''** अलङ्कार है, और उत्तरार्द्ध में वाक्यार्थहेतुक ''काव्यलिङ्ग'' अलङ्कार है।

श्लोक-29 – अखण्ड .... वर्जिता।

अलङ्कार – इस श्लोक में उपमेय ''मही'' एवं उपमान ''स्रक्'' के सादृश्य को ''इव'' वाचक शब्द से कहा गया है। इसलिए इसमें **उपमा** अलङ्कार है।

श्लोक-30 – व्रजन्ति ते .... इवेषवः।।

अलङ्कार – इस श्लोक में **उपमा** एवं **अर्थान्तरन्यास** अलङ्कार है, साथ ही दोनों अलङ्कारों की तिलतण्डुलवत् संसृष्टि भी है। ''ये मायाविषु मायिनः न भवन्ति ते पराभवं व्रजन्ति'' इस सामान्य कथन का ''शठा'' ''असंवृताङ्गान् तथाविधान्'' निशिता ''इषवः इव'' प्रविश्य घ्नन्ति हि'' इस विशेष कथन से समर्थन होने के कारण **अर्थान्तरन्यास अलङ्कार** है।

श्लोक-31 – गुणानुरक्ता .... श्रियम्।

अलङ्कार – प्रस्तुत श्लोक में ''आत्मवधू'' उपमेय और ''श्री'' उपमान का 'गुणानुरक्ताम्' आदि समानधर्म से कथन है, ''इव'' उपमा वाचक शब्द है। इस प्रकार इसमें **पूर्णोपमा** अलङ्कार है। इसका लक्षण है, ''साम्यं वाच्यमवैधर्म्यं वाक्यैक्य उपमा द्वयोः'' (सा. द.)

श्लोक-32 – भवन्तमेतर्हि .... रुच्छिखः।

अलङ्कार – इस पद्य में ''सूखे हुए शमी के वृक्ष को प्रज्वलित कर देने वाले अग्नि की तरह आपका क्रोध क्यों नहीं उद्दीप्त होता या भड़क उठता? इस अंश में युधिष्ठिर के क्रोध की उपमा सूखे हुए शमी के वृक्ष के अन्तःस्थित अग्नि से दी गयी है, अतः इसमें **उपमा अलङ्कार** है। ''अग्नि और मन्यु'' में उपमानोपमेय भाव है।

श्लोक-33 – अबन्ध्यकोपस्य .... विद्विषादरः।

अलङ्कार – इस पद्य में व, ज, द और न् वर्णों की बार-बार आवृत्ति होने से **''अनुप्रास''** अलङ्कार है। इसके अतिरिक्त इसमें ''विद्विषादरः'' शब्द का ''विद्विषा + आदरः'' तथा ''विद्विषा + दरः'' इन दो प्रकारों से पदच्छेद होने के कारण **'सभङ्गश्लेष'** अलङ्कार भी है।

श्लोक-34 – परिभ्रमँल्लोहित .... वृकोदरः।

अलङ्कार – 'लोहितचन्दनोचितः' रेणुरूषितः' 'महारथः' 'पदातिः' इत्यादि विशेषण जो वृकोदर अर्थात् भीम के लिए प्रयुक्त हुए हैं, उनका एक विशेष अभिप्राय है। अतः इसमें परिकर नाम अलङ्कार है, जिसका लक्षण है,

''विशेषणैर्यत्साकूतैरुक्तिः परिकरस्तु सः'' इति (काव्यप्रकाश)

श्लोक-35 – ''विजित्य यः .... धनञ्जयः।।

अलङ्कार – प्रस्तुत श्लोक में ''अनुप्रास'' अलङ्कार है।

श्लोक-36 – 'वनान्तशय्या .... न बाधितुम्।

अलङ्कार – ''कृताकृती'' 'कचाचितौ' इत्यादि में **अनुप्रास** तथा ''अगजौ गजौ'' एवं ''धृतिसंयमौ यमौ'' में ''गजौ गजौ'' व ''यमौ यमौ'' अंश में **यमक** अलङ्कार है।

श्लोक-37 – इमामहं वेद .... ममाधयः

प्रस्तुत श्लोक पूर्वार्द्ध में ''विचित्ररूपाः खलुचित्तवृत्तयः'' - इस सामान्य कथन से 'अहं तावकीं धियं न वेद' इस विशेष कथन का समर्थन होने के कारण सामान्य से विशेष का समर्थन रूप **''अर्थान्तरन्यास** अलङ्कार'' है, श्लोक के उत्तरार्द्ध में वाक्यार्थ हेतुक **''काव्यलिङ्ग''** अलङ्कार भी है।

श्लोक-38 – पुराधिरूढः ....शिवारुतैः।

अलङ्कार – ''महाधनं शयनम्'' और अदभ्रदर्भां स्थलीम् अधिशय्य एवं ''स्तुतिगीतिमङ्गलैः विबोध्यसे और ''अशिवैः शिवारुतैः

निद्रां जहासि'' इन विरुद्ध पदार्थों का वर्णन होने से **'विषम' अलङ्कार** है।

श्लोक-39 – पुरोपनीतं .... समं वपुः॥

अलङ्कार – इस पद्य में **''सहोक्ति अलङ्कार''** है जिसका लक्षण है, ''सा सहोक्तिः सहार्थस्य बलादेकं द्विवाचकम्'' (का. प्र.)

श्लोक-40 – अनारतं यौ .... बर्हिषाम्।

अलङ्कार – मणिजटित पीठ पर रहने वाले और राजाओं के शिरोमाल्यों के पराग से रञ्जित होने वाले चरण तथा मृगों और तपस्वियों के द्वारा छिन्न कुशों के वनों में पड़ने वाले चरण इन दो विरुद्ध पदार्थों का प्रयोग होने से **'विषम' नामक अलङ्कार** है,

इसके अतिरिक्त ''मणिपीठशायिनौ'' 'मृगद्विजालूनशिखेषु' इत्यादि पदों के विशेष अभिप्राय से प्रयुक्त होने के कारण यहाँ **परिकर अलङ्कार** भी है।

श्लोक-41 – द्विषन्निमित्ता .... मानिनाम्॥

अलङ्कार – राजा युधिष्ठिर की यह ''दुर्दशा'' उनके दुर्भाग्यवशात् नहीं है, प्रत्युत शत्रुजन्य है, अतः वह असहनीय है, इसके समर्थन में वैधर्म्यपूर्वक सामान्य दिया गया है – ''परैरपर्यासितवीर्यसम्पदां पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम्'' अतः यहाँ **अर्थान्तरन्यास अलङ्कार** है। ''इव'' शब्द के द्वारा मन के उन्मूलन की सम्भावना होने से **उत्प्रेक्षा अलङ्कार** भी है। साथ ही पूर्वार्द्ध में 'म' वर्ण तथा उत्तरार्द्ध में र वर्ण की आवृत्ति होने से **अनुप्रास अलङ्कार** भी है।

श्लोक-42 – ''विहाय शान्तिं .... न भूभृतः''।

अलङ्कार – इस पद्य में **''अर्थान्तरन्यास''** और **''अनुप्रास''** अलङ्कार की संसृष्टि है। शत्रुओं को नष्ट करने के लिए शम को त्याग कर अपने विख्यात तेज को धारण कीजिए - इस विशेष कथन का समर्थन ''शमेन सिद्धिं मुनयो न भूभृतः'' रूपी सामान्य कथन से होने के कारण **अर्थान्तरन्यास** अलङ्कार है। पूर्वार्द्ध में 'वकार' की एवं उत्तरार्द्ध में 'नकार' की आवृत्ति होने से **अनुप्रास** अलङ्कार भी है।

श्लोक-43 – पुरः सरा .... मनस्विता।

अलङ्कार– प्रस्तुत श्लोक में **''अर्थान्तरन्यास''** अलङ्कार है।

श्लोक-44 – अथ क्षमामेव .... पावकम्।

अलङ्कार – प्रस्तुत श्लोक में ''लक्ष्मीपतिलक्ष्म'' में 'ल', 'क्ष्' एवं 'म' की आवृत्ति होने के कारण **छेकानुप्रास** है।

श्लोक-45 – न समय .... सन्धिदूषणानि॥

अलङ्कार – 'ते समय परिरक्षणं न क्षमम्' इस विशेष कथन का 'विजयार्थिनः क्षितीशाः अरिषु सन्धिदूषणानि सोपधि विदधति' इस सामान्य कथन से समर्थन होने के कारण **''अर्थान्तरन्यास''** अलङ्कार है, इसके अतिरिक्त ''परेषु-परेषु'' में **यमक** तथा पूर्वार्द्ध में रकार एवं उत्तरार्द्ध में धकार इत्यादि वर्णों की आवृत्ति होने से **'अनुप्रास'** भी है।

श्लोक-46 – विधिसमय .... समभ्येतु भूयः।

अलङ्कार – इस श्लोक में उपमा के चारों अवयव विद्यमान हैं। अतः **पूर्णोपमा अलङ्कार** है। इसमें द्वितीयान्त पद ''त्वाम्'' (युधिष्ठिर) उपमेय ''दिनकृतम्'' (सूर्य) उपमान ''दीप्तिसंहार- जिह्मम्'' शिथिलवसुम् आपत्पयोधौ, मग्नम् एवम् उदीयमानम् इत्यादि साधारणधर्म तथा ''इव'' वाचक शब्द है।

च. सुभाषित/सूक्तियाँ एवं कथन

अभिज्ञानशाकुन्तलम् के महत्त्वपूर्ण संवाद/कथन/सूक्तियाँ

क्र.	कथन	भावार्थ	वक्ता
01.	आत्मनो नगरं प्रविश्यान्तःपुर समागत इतोगतं वृत्तान्तं स्मरति वा न वेति।	राजा अपने नगर में प्रवेश करके और अन्तःपुर की स्त्रियों से मिलकर यहाँ की बातों को याद करेगा अथवा नहीं।	अनसूया
02.	न तादृशा आकृतिविशेषा गुणविरोधिनो भवन्ति।	उसप्रकार की सुन्दर आकृतियाँ गुणों से रहित नहीं होती हैं।	प्रियंवदा
03.	गुणवते कन्यका प्रतिपादनीयेत्ययं तावत् प्रथमः संकल्पः।	गुणवान् व्यक्ति को कन्या देनी चाहिए, यह (माता-पिता का) प्रथम संकल्प होता है।	अनसूया
04.	ननु सख्याः शकुन्तलायाः सौभाग्यदेवताऽर्चनीया	सखि शकुन्तला के सौभाग्यदेवता (पति) की भी तो पूजा करनी है	अनसूया
05.	सखि, अतिथीनामिव निवेदितम्	सखी! किसी अतिथि की सी यह आवाज है।	अनसूया
06.	ननूटजसन्निहिता शकुन्तला।	शकुन्तला तो कुटी पर उपस्थित है ही।	प्रियंवदा
07.	अद्य पुनर्हृदयेनासंनिहिता।	किन्तु आज वह हृदय से अनुपस्थित है। अर्थात् आज उसका मन कहीं और है।	अनसूया
08.	विचिन्तयन्ती यमनन्यमानसा तपोधनं वेत्सि न मामुपस्थितम् (4.1)	एकाग्रचित्त से जिसका चिन्तन करती हुई तू उपस्थित हुए मुझ तपस्वी को नही देख रही हो।	दुर्वासा (नेपथ्ये)
09.	स्मरिष्यति त्वां न स बोधितोऽपि सन् कथां प्रमत्तः प्रथमं कृतामिव॥ (4.1)	वह तेरे स्मरण दिलाने पर भी तुझको स्मरण नहीं करेगा, जैसे उन्मत्त व्यक्ति पहले कही बात को स्मरण नही करता है।	दुर्वासा (नेपथ्ये)
10.	हा धिक्, हा धिक्। अप्रियमेव संवृत्तं कस्मिन्नपि पूजार्हेऽपराद्धा शून्यहृदया शकुन्तला।	हाय हाय धिक्कार है। अनर्थ हो गया। किसी पूजनीय व्यक्ति के प्रति शून्य हृदयवाली शकुन्तला ने कुछ अपराध कर दिया है।	प्रियंवदा
11.	न खलु यस्मिन् कस्मिन्नपि। एष दुर्वासाः सुलभकोपो महर्षिः	जिस किसी साधारण व्यक्ति के प्रति नही। ये तो शीघ्र कुपित हो जाने वाले महर्षि दुर्वासा हैं।	प्रियंवदा
12.	कोऽन्यो हुतवहाद् दग्धुं प्रभवति।	अग्नि के अतिरिक्त और कौन जला सकता है।	अनसूया
13.	सखि, प्रकृतिवक्रः स कस्यानुनयं प्रतिगृह्णाति	सखी! स्वभाव से टेढ़े वे महर्षि दुर्वासा किसकी प्रार्थना को स्वीकार करते हैं।	प्रियंवदा
14.	भगवन्, प्रथम इति प्रेक्ष्याविज्ञाततपः-प्रभावस्य दुहितृजनस्य भगवतैकोऽपराधो मर्षयितव्य इति।	भगवन्! आपके तप के प्रभाव को न जानने वाली आपकी पुत्रीजन शकुन्तला का यह पहला अपराध है– यह समझकर आपके द्वारा उसका यह एक अपराध क्षमा कर दिया जाना चाहिए।	प्रियंवदा

क्र.	कथन	भावार्थ	वक्ता
15.	**न मे वचनमन्यथा भवितुमर्हति।**	मेरा वचन असत्य नहीं हो सकता	**प्रियंवदा** (दुर्वासा)
16.	**अभिज्ञानाभरणदर्शनेन शापो निवर्तिष्यत इति मन्त्रयमाण एवान्तर्हितः।**	'पहचान के आभूषण को दिखाने से मेरा शाप समाप्त हो जाएगा'–यह कहते कहते ही वे अदृश्य हो गए।	**प्रियंवदा** (दुर्वासा) कथन को बताती है।
17.	**अस्ति तेन राजर्षिणा संप्रस्थितेन स्वनामधेयाङ्कितमङ्गुलीयकं स्मरणीयमिति स्वयं पिनद्धम्**	उस राजर्षि के द्वारा अपने नाम से अङ्कित अँगूठी स्मृति-चिह्न के रूप में शकुन्तला की अंगुली में स्वयं पहनायी गयी थी	**अनसूया**
18.	**वामहस्तोपहितवदनाऽऽलिखितेव प्रियसखी**	बायें हाथ पर मुँह रखी हुई प्रियसखी शकुन्तला चित्रित सी बैठी हुई है।	**प्रियंवदा**
19.	**भर्तृगतया चिन्तयात्मानमपि नैषा विभावयति। किं पुनरागन्तुकम्।**	पति के ध्यान में मग्न होने के कारण उसे अपने आपकी सुध नही है, फिर अतिथि की बात ही क्या है।	**प्रियंवदा**
20.	**प्रियंवदे, द्वयोरेव नौ मुख एव वृत्तान्तस्तिष्ठतु**	प्रियंवदा, यह समाचार हम दोनों के मुख तक ही सीमित रहे।	**अनसूया**
21.	**रक्षितव्या खलु प्रकृतिपेलवा प्रियसखी।**	स्वभाव से ही कोमल प्रियसखी शकुन्तला की रक्षा करनी चाहिए। (अन्यथा यह समाचार सुनकर उसे बहुत आघात पहुँचेगा)	**अनसूया**
22.	**को नामोष्णोदकेन नवमालिकां सिञ्चति**	भला कौन नवमालिका (चमेली) को गर्मजल से सींचेगा।	**प्रियंवदा**
23.	**तेजोद्वयस्य युगपद् व्यसनोदयाभ्यां लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु।**	यह संसार दो तेजों चन्द्रमा और सूर्य के एक साथ अस्त एवं उदित होने से अपनी दशाओं के परिवर्तित होने के विषय में मानो नियंत्रित अर्थात् शिक्षित किया जा रहा है।	**कण्व का शिष्य**
24.	**इष्टप्रवासजनितान्यबलाजनस्य दुःखानि नूनमतिमात्र दुःसहानि (4.3)**	निश्चय ही स्त्रियों को अपने इष्टजन (प्रियतमों) के प्रवास से उत्पन्न दुःख अत्यन्त असह्य होते हैं।	**कण्व का शिष्य**
25.	**तेन राज्ञा शकुन्तलायामनार्यमाचरितम्।**	राजा ने शकुन्तला के साथ अशिष्ट व्यवहार किया है।	**अनसूया**
26.	**काम इदानीं सकामो भवतु येनासत्यसन्धे जने शुद्धहृदया सखी पदं कारिता।**	कामदेव की अब इच्छा पूर्ण हो, जिसने असत्यप्रतिज्ञ व्यक्ति (दुष्यन्त) के प्रति शुद्ध हृदयवाली सखी शकुन्तला का प्रेम कराया है।	**अनसूया**
27.	**दुःखशीले तपस्विजने कोऽभ्यर्थ्यताम्। ननु सखीगामी दोष इति।**	कष्ट सहन करने वाले तपस्वियों में से किससे प्रार्थना करें। हमारी सखी पर दोष आयेगा।	**अनसूया**

क्र.	कथन	भावार्थ	वक्ता
28.	**कथं स राजर्षिस्तादृशानि मन्त्रयित्वैतावतः कालस्य लेखमात्रमपि न विसृजति।**	कैसे वह राजर्षि उस प्रकार की प्रेमभरी मीठी-मीठी बातें करके इतने दिनों से एक पत्र भी नहीं भेज रहे हैं।	**अनसूया**
29.	**न पारयामि प्रवासप्रतिनिवृत्तस्य तातकाश्यपस्य दुष्यन्तपरिणीतामापन्नसत्त्वां शकुन्तलां निवेदयितुम्**	मैं प्रवास से लौटे हुए पिता कण्व को यह समाचार बताने में असमर्थ हूँ कि शकुन्तला का गान्धर्वविवाह दुष्यन्त से हो गया है, और वह गर्भिणी है।	**अनसूया**
30.	**दिष्ट्या धूमाकुलितदृष्टेरपि पावक एवाहुतिः पतिता**	सौभाग्य से धुएँ से व्याकुल दृष्टि वाले भी यजमान की आहुति अग्निकुण्ड में ही गिरी है।	**प्रियंवदा (कण्व का कथन)**
31.	**वत्से, सुशिष्यपरिदत्ता विद्येवा-शोचनीयासि संवृत्ता।**	पुत्री! योग्य शिष्य को दी गयी विद्या की तरह तुम अशोचनीय हो गयी हो।	**प्रियंवदा (कण्व का कथन)**
32.	**एते खलु हस्तिनापुरगामिन ऋषयः शब्दाय्यन्ते।**	ये हस्तिनापुर को जाने वाले ऋषि लोग पुकारे जा रहे हैं।	**प्रियंवदा**
33.	**जाते भर्तुर्बहुमानसूचकं महादेवीशब्दं लभस्व**	पुत्री, पति के बहुत सम्मानसूचक 'महारानी' शब्द को प्राप्त करो।	**एक तपस्विनी**
34.	**वत्से, वीरप्रसविनी भव!**	पुत्री, वीर पुत्र को जन्म देने वाली हो	**दूसरी तापसी**
35.	**वत्से भर्तुर्बहुमता भव।**	बेटी! पति द्वारा बहुत सम्मानवाली हो।	**तृतीया तापसी**
36.	**दुर्लभमिदानीं मे सखीमण्डनं भविष्यति।**	अब मेरे लिए सखियों के द्वारा अलंकृत होना दुर्लभ हो जाएगा।	**शकुन्तला**
37.	**अवेहि तनयां ब्रह्मन् अग्निगर्भां शमीमिव (4.4)**	अपनी पुत्री को अपने अन्दर अग्नि को धारण करने वाले शमीवृक्ष के समान जानो	**प्रियंवदा (आकाशवाणी)**
38.	**आभरणोचितं रूपमाश्रमसुलभैः प्रसाधनैर्विप्रकार्यते।**	आभूषणों के योग्य यह सुन्दर रूप आश्रम में प्राप्य अलंकारों से विकृत किया जा रहा है।	**प्रियंवदा**
39.	**सखि, उचितं न ते मङ्गलकाले रोदितुम्।**	सखी, इस मङ्गलवेला पर तुम्हारा रोना उचित नही है।	**दोनों सखियाँ**
40.	**क्षौमं केनचिदिन्दुपाण्डु तरुणा माङ्गल्यमाविष्कृतम्**	किसी वृक्ष ने चन्द्रमा के तुल्य श्वेत मांगलिक रेशमी वस्त्र दिया।	**कण्व का शिष्य**
41.	**भर्तुर्गेहेऽनुभवितव्या राजलक्ष्मीः।**	तुम पति के घर में राजलक्ष्मी का अनुभव करोगी।	**प्रियंवदा**
42.	**यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्ट-मुत्कण्ठया**	आज शकुन्तला विदा होगी, इसलिए मेरा हृदय दुःख से भर रहा है।	**महर्षि कण्व**
43.	**पीड्यन्ते गृहिणः कथं नु तनया विश्लेषदुःखैर्नवैः**	गृहस्थ लोग पहली बार पुत्री के वियोग के दुःख से कितने अधिक दुःखित होते होंगे।	**महर्षि कण्व**
44.	**ययातेरिव शर्मिष्ठा भर्तुर्बहुमता भव।**	शर्मिष्ठा जिस प्रकार ययाति को अत्यधिकप्रिय थी, उसी तरह तुम भी पति को प्रिय होओ।	**काश्यप (कण्व)**

क्र.	कथन	भावार्थ	वक्ता
45.	वत्से, इतः सद्योहुताग्नीन् प्रदक्षिणीकुरुष्व	पुत्री! अभी हवन की गयी अग्नि की इधर से प्रदक्षिणा करो।	महर्षि कण्व
46.	भगवन्! वरः खल्वेषः नाशीः।	भगवन्! यह तो वरदान है, केवल आशीर्वाद नही।	गौतमी
47.	भो भोः संनिहितास्तपोवनतरवः! सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम्	हे समीपस्थ तपोवन के वृक्षों! वही यह शकुन्तला पति के घर जा रही है, आप सभी लोग अनुमति दें।	महर्षि कण्व
48.	अनुमतगमना शकुन्तला तरुभिरियं वनवासबन्धुभिः। (4.10)	वृक्षों ने इस शकुन्तला को पतिगृह जाने की अनुमति दे दी है।	महर्षि कण्व
49.	शान्तानुकूलपवनश्च शिवश्च पन्थाः।	इस शकुन्तला का मार्ग शान्त और अनुकूल वायु वाला एवं कल्याण करने वाला हो।	आकाश में एक ध्वनि सुनायी पड़ती है।
50.	उद्गलितदर्भकवला मृग्यः परित्यक्तनर्तना मयूराः। (4.12)	मृगियों ने कुश के ग्रास को उगल दिया है, मोरों ने नाचना छोड़ दिया है	प्रियंवदा
51.	अपसृतपाण्डुपत्रा मुञ्चन्त्यश्रूणीव लताः। (4.12)	लतायें पीले पत्तों को गिराकर मानों आँसुओं को छोड़ रही हैं।	प्रियंवदा
52.	तात, लताभगिनीं वनज्योत्स्नां तावदामन्त्रयिष्ये।	हे पिताजी! मैं अपनी लता-बहिन वनज्योत्स्ना से विदाई ले लूँ।	शकुन्तला
53.	अद्यप्रभृति दूरपरिवर्तिनी ते खलु भविष्यामि	आज से मैं तुमसे दूर हो जाऊँगी।	शकुन्तला
54.	अस्यामहं त्वयि च सम्प्रति वीतचिन्तः।	अब मैं इस वनज्योत्स्ना और तुम्हारे विषय में निश्चिन्त हो गया हूँ।	महर्षि कण्व
55.	हला एषा द्वयोर्युवयोर्हस्ते निक्षेपः	सखियों, इस लता को तुम दोनों के ही हाथ में सौंप रही हूँ।	शकुन्तला
56.	अयं जनः कस्य हस्ते समर्पितः।	इस जन (हम दोनों) को किसके हाथ में सौंप रही हो।	दोनों सखियाँ
57.	को नु खल्वेष निवसने मे सज्जते	यह कौन मेरे वस्त्र से लिपट रहा है।	शकुन्तला
58.	सोऽयं न पुत्रकृतकः पदवीं मृगस्ते	पुत्रवत् पाला गया यह मृग तेरा मार्ग नहीं छोड़ रहा है।	महर्षि कण्व
59.	वत्स किं सहवासपरित्यागिनीं मामनुसरसि।	पुत्र, साथ छोड़कर जाने वाली मुझ (शकुन्तला) के पीछे-पीछे क्यों आ रहे हो।	शकुन्तला
60.	वाष्पं कुरु स्थिरतया विरतानुबन्धम् (4.15)	अश्रुप्रवाह को धैर्यपूर्वक रोको।	महर्षि कण्व
61.	मार्गे पदानि खलु ते विषमी भवन्ति।	इस ऊबड़-खाबड़ भूमि में तुम्हारे पैर लड़खड़ा रहे हैं।	महर्षि कण्व
62.	भगवन्, ओदकान्तं स्निग्धो जनोऽनुगन्तव्य इति श्रूयते।	भगवन्, यात्रा के समय प्रियव्यक्ति का जलाशय तक अनुगमन करना चाहिए–ऐसा सुना जाता है।	शार्ङ्गरव

क्र.	कथन	भावार्थ	वक्ता
63.	गुर्वपि विरहदुःखमाशाबन्धः साहयति। (4.16)	आशा का बन्धन असह्य वियोग के दुःख को भी सहन करा देता है।	अनसूया
64.	अस्मान् साधु विचिन्त्य संयमधनानुच्चैः कुलं चात्मनः।.... (4.17)	संयम रूपी धन वाले हम लोगों को तथा अपने ऊँचे कुल को ध्यान में रखते हुए आप कोई व्यवहार करें।	महर्षि कण्व
65.	भाग्यायत्तमतः परं न खलु तद्वाच्यं वधूबन्धुभिः (4.17)	इसके आगे तो भाग्य के अधीन है, वह हम वधू के सम्बन्धियों को नही कहना चाहिए।	महर्षि कण्व
66.	वनौकसोऽपि सन्तो लौकिकज्ञा वयम्	वनवासी होते हुए भी हम लोग लोक व्यवहार को जानने वाले हैं।	महर्षि कण्व
67.	न खलु धीमतां कश्चिदविषयो नाम	वस्तुतः विद्वानों को कुछ भी अज्ञात नहीं है।	शार्ङ्गरव
68.	शुश्रूषस्व गुरून् कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीजने। (4.18)	गुरुजनों = बडों की सेवा करना, सपत्नियों के साथ प्रियसखी जैसा व्यवहार करना।	महर्षि कण्व
69.	यान्त्येवं गृहिणीपदं युवतयो वामाः कुलस्याधयः। (4.18)	इस प्रकार आचरण करने वाली युवतियाँ गृहलक्ष्मी के पद को प्राप्त कर लेती हैं, और इसके प्रतिकूल आचरण करने वाली युवतियाँ कुल के लिए आधि बन जाती हैं।	महर्षि कण्व
70.	वत्से, इमे अपि प्रदेये। न युक्तमनयोः तत्र गन्तुम्।	पुत्री इन दोनों का भी विवाह करना है, इनका वहाँ जाना उचित नहीं है।	महर्षि कण्व
71.	मम विरहजां न त्वं वत्से शुचं गणयिष्यसि। (4.19)	मेरे विरह से उत्पन्न शोक को शीघ्र ही भूल जाओगी।	महर्षि कण्व
72.	तात, कदा नु भूयस्तपोवनं प्रेक्षिष्ये?	पिताजी मैं फिर कब तपोवन को देखूँगी? अर्थात् आप मुझे कब बुलायेंगे।	शकुन्तला
73.	अतिस्नेहः पापशङ्की	अत्यधिक प्रेम पाप (अनिष्ट) की आशङ्का करता है।	दोनों सखियाँ
74.	भूत्वा चिराय चतुरन्तमहीसपत्नी.... शान्ते करिष्यसि पदं पुनराश्रमेऽस्मिन्। (4.20)	बहुत दिनों तक चारों समुद्रों तक फैली हुई पृथ्वी की सपत्नी अर्थात् राजा की पटरानी होकर अपने पति दुष्यन्त के साथ आश्रम आओगी।	महर्षि कण्व
75.	शममेष्यति मम शोकः कथं नु वत्से त्वया रचितपूर्वम् (4.21)	नीवार को देखते हुए मेरा शोक अब कैसे शान्त हो सकेगा।	महर्षि कण्व
76.	गच्छ! शिवास्ते पन्थानः सन्तु।	जाओ। तुम्हारा मार्ग मंगलमय हो।	महर्षि कण्व
77.	तात! शकुन्तलाविरहितं शून्यमिव तपोवनं कथं प्रविशावः।	पिताजी, शकुन्तला से रहित इस सूने तपोवन में हम कैसे प्रवेश करें।	अनसूया एवं प्रियंवदा दोनों सखियाँ
78.	हन्त भोः! शकुन्तलां पतिकुलं विसृज्य लब्धमिदानीं स्वास्थ्यम्।	अहा! शकुन्तला को ससुराल भेजकर अब मुझे मानसिक शान्ति प्राप्त हुई।	महर्षि कण्व
79.	अर्थो हि कन्या परकीय एव। (4.22)	कन्या वस्तुतः दूसरे का ही धन है।	महर्षि कण्व
80.	जातो ममायं विशदः प्रकामं प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा (4.22)	मेरा यह हृदय उसी प्रकार अत्यन्त प्रसन्न हो रहा है, जिस प्रकार धरोहर को लौटाने पर धरोहर रखने वाले व्यक्ति का मन प्रसन्न होता है।	महर्षि कण्व

'उत्तररामचरितम्' की प्रमुख सूक्तियाँ एवं कथनों का विवरण

1. अपिग्रावा रोदित्यपि दलति वज्रस्य हृदयम्।
भावार्थ – निर्जन जनस्थान (दण्डकारण्य) में आपके चरितों से पत्थर भी रो पड़े थे और वज्र का भी हृदय फट गया था।
- **वक्ता** – लक्ष्मण, अङ्क - प्रथम (चित्रदर्शन)
श्रोता – राम एवं सीता।
छन्द – शिखरिणी। अतिशयोक्ति अलङ्कार

2. एते हि हृदयमर्मच्छिदः संसारभावाः।
ये सांसारिक भाव हृदय के मर्मस्थल को भेदन करने वाले हैं।
- **प्रथम अङ्क** – राम का सीता से कथन

3. इयं गेहे लक्ष्मीरियममृतवर्तिर्नयनयोः।
यह (सीता) घर में लक्ष्मी है, यह नेत्रों के लिए अमृत की शलाका है।
- प्रथम अङ्क में राम का कथन
शिखरिणी छन्द और रूपक अलङ्कार।

4. ''दुर्जनोऽसुखमुत्पादयति''
भाव – दुर्जन दुःख उत्पन्न करता है।
प्रथम अङ्क – सीता का कथन, राम और लक्ष्मण के समक्ष।

5. तीर्थोदकं च वह्निश्च नान्यतः शुद्धिमर्हतः।
भाव – तीर्थ, जल और अग्नि, ये अन्य पदार्थों से शुद्धि के योग्य नहीं हैं।
- राम का कथन है। सीता के परिपेक्ष्य में। सीता और लक्ष्मण के सम्मुख प्रथम अङ्क। अनुष्टुप् छन्द। प्रतिवस्तूपमा, दृष्टान्त अलंकार।

6. नैसर्गिकी सुरभिणः कुसुमस्य सिद्धा
मूर्ध्नि स्थितिर्न चरणैरवताडनानि॥
भावार्थ – सुगन्धित फूल का सिर पर रखा जाना स्वभावसिद्ध है, न कि पैरों से कुचला जाना।
- **प्रथम अङ्क** – राम का कथन। सीता को लक्ष्य करके। सीता और लक्ष्मण के सम्मुख।
दृष्टान्त अलङ्कार, वसन्ततिलका वृत्त।

7. सतां केनापि कार्येण लोकस्याराधनं व्रतम्।
भावार्थ – चाहे जो भी हो, जनता को प्रसन्न रखना सज्जनों का कर्त्तव्य है।
- राम का कथन। दुर्मुख के सम्मुख। अनुष्टुप् छन्द। प्रथम अङ्क

8. सन्तापकारिणो बन्धुजनविप्रयोगा भवन्ति।
भावार्थ – बन्धुजनों का वियोग दुःखदायी होता है।
- सीता का कथन (प्रथम अङ्क) राम, लक्ष्मण के सम्मुख।

9. ते हि नो दिवसा गताः।
भावार्थ – हमारे वे दिन बीत गये। अनुष्टुप् छन्द।
- राम का कथन, लक्ष्मण व सीता के सम्मुख (प्रथम अङ्क)

10. ''सतां सद्‌भिः सङ्गः कथमपि हि पुण्येन भवति।
भावार्थ– सज्जनों का सज्जनों से मिलन बड़े पुण्य से होता है।
- द्वितीय अङ्क (प्रथम श्लोक)
वन देवता का कथन, तापसी से। शिखरिणी वृत्त, अर्थान्तरन्यास अलङ्कार

11. वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि
लोकोत्तराणां चेतांसि को हि विज्ञातुमर्हसि।
भावार्थ – वज्र से भी कठोर और फूल से भी कोमल महापुरुषों के चित्त को कौन जान सकता है।
- द्वितीय अङ्क , वासन्ती का कथन आत्रेयी से।
अनुष्टुप् छन्द। विषम, अप्रस्तुतप्रशंसा अर्थापत्ति अलङ्कार।

12. अनिर्भिन्नो गभीरत्वादन्तर्गूढघनव्यथः।
पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः॥
भावार्थ– गम्भीरता के कारण अप्रकट एवं अन्दर छिपी हुई घोर वेदना से युक्त राम का करुण रस (शोक) पुटपाक के तुल्य है।
- तृतीय अङ्क (प्रथम श्लोक)।
मुरला का कथन तमसा से। लोपामुद्रा का सन्देश।
अनुष्टुप् छन्द, उपमा अलङ्कार

13. वीचीवातैः.............प्रेरितैस्तर्पयेति॥
भावार्थ – जल कणों से शीतल, पद्म-पराग की सुगन्ध को लाने वाली, धीरे-धीरे चलने वाली, तरङ्ग-वायुओं से रामचन्द्र की प्रत्येक मूर्च्छा के समय चेतना प्रदान करना।
मुरला द्वारा कहा गया लोपामुद्रा का संदेश 'गोदावरी' के लिए।
तमसा के सम्मुख। शालिनी छन्द, समुच्चय अलङ्कार।

14. उचितमेव दाक्षिण्यं स्नेहस्य। संजीवनोपायस्तु मौलिक एव रामभद्रस्याद्य सन्निहितः।
भावार्थ – स्नेह की उदारता उचित ही है। किन्तु रामचन्द्र को होश में लाने का मौलिक उपाय (सीता) आज समीप ही विद्यमान है।
- तमसा का कथन मुरला से –

15. ईदृशानां विपाकोऽपि जायते परमाद्‌भुतः।
यत्रोपकरणीभावमायात्येवंविधो जनः॥
भाव – ऐसे व्यक्तियों (सीता और राम जैसों) की दुरवस्था भी आश्चर्यजनक होती है, जिसमें ऐसे (पृथ्वी और गङ्गा जैसे) लोग सहायक होते हैं।

● **मुरला का कथन** – तमसा से।
अनुष्टुप् वृत्त, काव्यलिङ्ग अलंकार

16. अव्यग्रस्य पुनरस्य शोकमात्रद्वितीयस्य पञ्चवटीप्रवेशो महाननर्थक इति।
भावार्थ – इस समय कार्यों में अव्यस्त और केवल शोकरूपी साथी से युक्त राम का पञ्चवटी में प्रवेश बहुत अनिष्टकारी है।

● मुरला का तमसा से कथन, राम के प्रति।

17. न त्वामवनिपृष्ठवर्तिनीमस्मत्प्रभावाद् वनदेवता अपि द्रक्ष्यन्ति किमुतमर्त्याः?
भावार्थ – भूतल पर विद्यमान तुमको मेरे प्रभाव से वनदेवता भी नहीं देख सकेंगे, साधारण मनुष्यों की बात ही क्या।

● तमसा मुरला से भागीरथी द्वारा सीता से कही गयी बात को बताती है।

18. करुणस्य मूर्तिरथवा शरीरिणी विरहव्यथेव वनमेति जानकी।
भावार्थ – सीता करुण रस की साक्षात् मूर्ति अथवा शरीरधारिणी 'वियोगव्यथा' के तुल्य वन (पञ्चवटी) में आ रही हैं।

● गोदावरी से निकलती हुयी सीता को देखकर तमसा का मुरला से कथन।
मञ्जुभाषिणी वृत्त उत्प्रेक्षा अलङ्कार।

19. किसलयमिव..........केतकीगर्भपत्रम्।
भावार्थ – हृदयरूपी कमल को सुखाने वाला, कठोर और चिरस्थायी शोक सीता के शरीर को उसी प्रकार मलिन बना रहा है, जैसे शरत्कालीन धूप केतकी के फूल के अंदर के पत्ते को। मालिनी छन्द। उपमा, रूपक अलङ्कार।

● मुरला का तमसा से कथन, सीता के विषय में।

20. अपरिस्फुटनिक्वाणे कुतस्त्येऽपि त्वमीदृशी। स्तनयित्नोर्मयूरीव चकितोत्कण्ठितं स्थिता॥
भावार्थ – मेघ की अस्पष्ट ध्वनि पर मोरनी के तुल्य तुम कहीं से आये हुए अस्पष्ट शब्द को सुनकर इस प्रकार आश्चर्ययुक्त और उत्कण्ठित हो गई हो।

● तमसा का सीता से कथन।
अनुष्टुप् वृत्त, उपमा अलङ्कार

21. यत्र द्रुमा अपि..........गिरेस्तटानि॥
भावार्थ – जहाँ वृक्ष इत्यादि मेरे बन्धु थे, जहाँ प्रिया के साथ बहुत समय रहा, यह वही आश्रमस्थान है। वसन्ततिलका छन्द। अर्थापत्ति अलंकार।

● राम का कथन नेपथ्य से।

22. अहमेवैतस्य हृदयं जानामि, ममैषः।
भावार्थ – मैं ही इनके हृदय को जानती हूँ और ये मेरे हृदय को।

● सीता का कथन तमसा से।

23. निष्कारणपरित्यागिनोऽप्येतस्य दर्शनेनैवंविधेन कीदृशी मे हृदयावस्था।
भाव – अकारण परित्याग करने वाले भी इनके इस प्रकार के दर्शन से मेरे हृदय की कैसी अवस्था हो रही है।

● सीता का कथन तमसा से।

24. श्लोक–तटस्थं नैराश्यादपि च कलुषं विप्रियवशात्
वियोगे दीर्घेऽस्मिञ्झटिति घटनात्स्तम्भितमिव
प्रसन्नं सौजन्याद्दयितकरुणैर्गाढकरुणं
द्रवीभूतं प्रेम्णा तव हृदयमस्मिन्क्षण इव।

भावार्थ – इस समय तुम्हारा हृदय निराशा से उदासीन-सा और अप्रिय कार्य के कारण खिन्न-सा, इस लम्बे विरहकाल में सहसा मिलन के कारण निश्चेष्ट-सा, सज्जनता से प्रसन्न-सा, प्रिय की करुणा से शोकातुर सा और प्रेम से द्रवीभूत सा हो रहा है।
शिखरिणी वृत्त, उत्प्रेक्षा अलंकार।

● तमसा का कथन सीता से।

25. प्रत्ययेन निष्कारणपरित्यागशल्यितोऽपि बहुमतो मम जन्मलाभः।
भाव – अकारण परित्याग रूपी शल्य से विध कर भी मेरा संसार में जन्म लेना मेरे लिए श्लाघनीय है।

● सीता का कथन तमसा से।

26. अन्तःकरणतत्त्वस्य दम्पत्योः स्नेहसंश्रयात्। आनन्दग्रन्थिरेकोऽयमपत्यमिति पठ्यते॥
भावार्थ – पति और पत्नी के हृदयरूपी तत्व के प्रेम का आश्रय होने के कारण 'सन्तान' यह अनुपम सुख की गाँठ कही जाती है। अनुष्टुप् छन्द।

● तमसा का कथन सीता से है।

27. ईदृशो जीवलोकस्य परिणामः संवृतः।
भाव – संसार का यही (दुःखद) परिणाम हुआ।

● सीता का कथन वासन्ती को सम्बोधित करके।

28. स्नपयति हृदयेशं स्नेहनिष्यन्दिनी ते धवलमधुरमुग्धा दुग्धकुल्येव दृष्टिः।
भावार्थ – श्वेत, मधुर एवं मनोहर तुम्हारी दृष्टि दूध की नहर की तरह अपने हृदयेश्वर को स्नान कराती है।
उपमा, उत्प्रेक्षा अलंकार, मालिनी छन्द।

● तमसा का कथन सीता से।

29. पुनरिदमयं देवो रामः स्वयं वनमागतः।
भावार्थ – ये महाराज राम फिर स्वयं इस वन में आए हैं। – हरिणी छन्द

● वासन्ती का कथन राम के सम्मुख वन की वस्तुओं से।

30. पूजार्हः सर्वस्यार्यपुत्रो विशेषतो मम प्रियसख्याः।
भावार्थ – आर्यपुत्र सभी के पूजनीय हैं विशेष रूप से मेरी प्रियसखी (वासन्ती) के।

- **सीता का कथन** – वासन्ती को सम्बोधित करके।

31. त्वं जीवितं............किमतः परेण।

- वासन्ती का कथन राम से। राम द्वारा सीता से पहले कही बातें।
- वसन्ततिलका छन्द। आक्षेप अलंकार दशरूपक में यह श्लोक वाक्केलि के उदाहरणस्वरूप दिया गया है।

32. अयि कठोर! .... मन्यसे।

- वासन्ती का कथन राम से। द्रुतविलम्बित छन्द, उपमा अलङ्कार।

33. यैवं प्रलपन्तं प्रलापयसि।
भावार्थ – जो इस प्रकार विलाप करते हुए (राम) को और रूला रही है।

- सीता का कथन वासन्ती से।

34. पूरोत्पीडे तटाकस्य परीवाहः प्रतिक्रिया।
शोकक्षोभे च हृदयं प्रलापैरेव धार्यते।
भावार्थ – तालाब में जल-प्रवाह की अधिकता होने पर जल को बाहर निकालना ही उसका एकमात्र प्रतीकार है। शोकजन्य क्षोभ में हृदय विलाप के द्वारा ही बचाया जाता है।
अनुष्टुप् छन्द, दृष्टान्त अलंकार।

- तमसा का कथन सीता से।

35. प्रियाशोको जीवं कुसुममिव घर्मो ग्लपयति।
भाव – जिस प्रकार धूप फूल को उसी प्रकार प्रिया का शोक जीवन को सुखाता है। शिखरिणी वृत्त। उपमा अलङ्कार।

- तमसा का कथन सीता से राम के प्रति।

36. ''किमिति किलैषा मंस्यत एष परित्याग एषोऽभिषङ्ग इति।''
भावार्थ – यह (तमसा) क्या सोचेंगी – यह परित्याग और यह आसक्ति?

- सीता का कथन।

37. एकोरसः करुण एव निमित्तभेदाद्।
भावार्थ – एक करुण रस ही है जो कारण-भेद से भिन्न होकर पृथक्-पृथक् परिणामों को प्राप्त कराता सा प्रतीत होता है।
वसन्ततिलका छन्द। उपमा (पूरे श्लोक में)

- तमसा का कथन सीता से।
- तृतीय अङ्क के अन्त में गङ्गा, पृथ्वी, वाल्मीकि और वशिष्ठ की प्रार्थना की गयी है।

38. गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः।
भावार्थ – गुणवानों में गुण ही पूजा के स्थान होते हैं, न कोई चिह्न-विशेष और न आयु।
शिखरिणी वृत्त। अर्थान्तरन्यास अलंकार।

- **चतुर्थ अङ्क** – अरुन्धती का कथन कौशल्या से।

उत्तररामचरितम् की अन्य सूक्तियाँ

- लतायां पूर्वलूनायां प्रसवस्योद्भवः कुतः
- विना सीतादेव्यां किमिव हि न दुःखं रघुपते
- वीराणां समयो हि दारुणरसः स्नेहकमंबाधते।
- वृद्धास्ते न विचारणीयचरिताः
- प्रसवः खलु प्रकर्षपर्यन्तः स्नेहस्य (तमसा का कथन, अङ्क-3)।
- सुलभसौख्यमिदानीं बालत्वं भवति।

शुकनासोपदेश की प्रमुख सूक्तियाँ

1. अतिगहनं तमो यौवनप्रभवम् ।
भावार्थ – युवावस्था में उत्पन्न होने वाला (अज्ञानरूप) अन्धकार अत्यन्त दुर्दमनीय होता है।

- पूरे शुकनासोपदेश का वक्ता शुकनास है और श्रोता चन्द्रापीड है।

2. अपरिणामोपशमो दारुणो लक्ष्मीमदः ।
धन-मद अन्तिम अवस्था में भी शान्त नहीं होता।

3. चन्दनप्रभवो न दहति किमनलः?
क्या चन्दन से उत्पन्न अग्नि जलाती नहीं?

4. तरलहृदयमप्रतिबुद्धं च मदयन्ति धनानि ।
चञ्चल मन वाले तथा अजागरूक बुद्धि वाले व्यक्ति को धन मतवाला बना देता है।

5. दुरन्तेयमुपभोगतृष्णिका ।
उपभोगरूपी मृगतृष्णिका अत्यधिक दुःखदायी अन्तवाली है।

6. प्रतिशब्द इव राजवचनमनुगच्छति जनो भयात् ।
भय से मनुष्य प्रतिध्वनि की तरह राजा के वचन का अनुसरण करते हैं।

7. इयमनार्या (लक्ष्मीः) लब्धापि खलु दुःखेन परिपाल्यते।
नीच स्वभाव वाली (लक्ष्मी) इसको पा लेने पर भी कष्ट से पालन होता है।

8. विह्वला हि राजप्रकृतिः ।
राज-स्वभाव निश्चय ही व्याकुल करने वाला है।

9. राज्यविषविकारतन्द्राप्रदा राजलक्ष्मीः ।
राजलक्ष्मी राज्यरूपी विष से उत्पन्न आलस्य (तन्द्रा) को देने वाली है।

10. सरस्वतीपरिगृहीतमीर्ष्ययेव नालिङ्गति लक्ष्मीः ।
सरस्वती द्वारा स्वीकृत व्यक्ति को लक्ष्मी ईर्ष्या के कारण आलिङ्गन नहीं करती।

मेघदूत की प्रमुख सूक्तियाँ (पूर्वमेघ)

1. कामार्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु । 5 ॥
भावार्थ – काम से व्याकुल (जन) चेतन एवं अचेतन के विषय में स्वभाव से ही दीन हो जाते हैं।

2. याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा ॥ 6 ॥
भावार्थ – अधिक गुण वाले व्यक्ति से की गई याचना फलवती न होने पर भी उत्तम है, नीच व्यक्ति से फलीभूत हुयी याचना भी अच्छी नहीं है।

● यहाँ अधिक गुण वाला 'मेघ' है।

3. आशाबन्धः कुसुमसदृशं प्रायशो ह्यङ्गनानाम्
सद्यः पाति प्रणयि हृदयं विप्रयोगे रुणद्धि ॥ 9 ॥
भावार्थ – आशा का बन्धन ही प्रेम से ओत-प्रोत, पुष्प सदृश कोमल तथा वियोग से शीघ्र टूटने वाले अबलाओं के हृदय को प्रायः रोके रहता है।

4. न क्षुद्रोऽपि प्रथमसुकृतापेक्षया संश्रयाय,
प्राप्ते मित्रे भवति विमुखः किं पुनर्यस्तथोच्चैः ॥ 17 ॥
भावार्थ – नीच व्यक्ति भी पहले किये गये उपकार के कारण मित्र से विमुख नहीं होता फिर जो महान् है वह कैसे (विमुख होगा)?

● आम्रकूट के मित्र मेघ के आम्रकूट पर्वत पर अतिथि रूप में पहुँचने पर। यह सूक्ति कही गयी है।

5. रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय ॥ 20 ॥
भावार्थ – सभी रिक्त पदार्थ हल्के तथा पूर्णता गौरव के लिए होती है।

6. स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु ॥ 29 ॥
भावार्थ – स्त्रियों का प्रिय के प्रति विलास प्रारम्भिक प्रार्थना वाक्य होता है।

● मेघ के प्रति निर्विन्ध्या द्वारा दिखाये गये विभ्रम के संदर्भ में।

7. ज्ञातास्वादो विवृतजघनां को विहातुं समर्थः ॥ 45 ॥
भावार्थ – रस का अनुभव किया हुआ कौन-सा पुरुष जंघा प्रदेश को प्रकट करने वाली स्त्री का परित्याग करने में समर्थ होगा।

● ज्ञातास्वाद से मेघ का और विवृतजघना से गम्भीरा का संकेत।

8. आपन्नार्तिप्रशमनफलाः सम्पदो ह्युत्तमानाम् ॥ 57 ॥
भावार्थ – श्रेष्ठ जनों की सम्पत्तियाँ आर्त्तजनों के कष्टों को दूर कर देने वाली होती है।

● हिमालय की दावाग्नि को मेघ बुझाता है अतः उसे 'उत्तम' कहा गया है।

9. के वा न स्युः परिभवपदं निष्फलारम्भयत्नाः ॥ 58 ॥
भावार्थ – निष्फल कर्म में प्रयत्न करने वाले कौन से व्यक्ति तिरस्कार के पात्र नहीं होते (अर्थात् अवश्य होते हैं)

● मेघ पर आक्रमणरूपी निष्फल प्रयास करने वाले 'शरभों' के संदर्भ में।

उत्तरमेघ की सूक्तियाँ

1. सूर्यापाये न खलु कमलं पुष्यति स्वामभिख्याम् ॥ 20 ॥
भावार्थ – सूर्य के अस्त हो जाने पर कमल निश्चित रूप से अपनी शोभा को धारण नहीं करता।

2. प्रायः सर्वो भवति करुणावृत्तिरार्द्रान्तरात्मा ॥ 35 ॥
भावार्थ – प्रायः सभी कोमल हृदय वाले व्यक्ति दयालु स्वभाव वाले होते हैं।

3. कान्तोदन्तः सुहृदुपगतः सङ्गमात्किञ्चिदूनः ॥ 40 ॥
भावार्थ – मित्र से लिया गया प्रियतम का संदेश स्त्रियों के लिए मिलने से कुछ ही कम होता है।

4. नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण ॥ 49 ॥
भावार्थ – सुखः-दुःख की दशा पहिए की धार (तीलियों) के समान ऊपर-नीचे होती रहती है।

5. प्रत्युक्तं हि प्रणयिषु सतामीप्सितार्थक्रियैव॥ 54 ॥
भावार्थ – प्रेमी याचकों के अभीष्ट प्रयोजन को सिद्ध करना ही सज्जनों का उत्तर होता है।

नीतिशतकम् की महत्त्वपूर्ण सूक्तियाँ

1. विभूषणं मौनमपण्डितानाम् (1.7)
2. विवेकभ्रष्टानां भवति विनिपातः शतमुखः। (1.10)
3. मूर्खस्य नास्त्यौषधम् (1.11)
4. साहित्यसङ्गीतकलाविहीनः साक्षात् पशुः पुच्छविषाणहीनः (1.12)
5. वाग्भूषणं भूषणम् (1.19)
6. विद्याविहीनः पशुः (1.20)
7. सत्सङ्गतिः कथय किं न करोति पुंसाम् (1.22)
8. प्रारब्धमुत्तमजना न परित्यजन्ति (1.27)
9. न खलु वयस्तेजसो हेतुः (1.38)
10. सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ते (1.41)
11. वाराङ्गनेव नृपनीतिरनेकरूपा – (वसन्ततिलका) (38)
12. सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः (1.58)
13. स्वभाव एवैष परोपकारिणाम् (1.71)
14. न निश्चितार्थाद् विरमन्ति धीराः (1.81)
15. मनस्वी कार्यार्थी न गणयति दुःखं न च सुखम् (शिखरिणी) (1.82)
16. शीलं परं भूषणम् (1.83)
17. न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः (वसन्ततिलका) (1.84)

18. विधिरहो बलवानिति मे मतिः (1.92)
19. ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रह्मापि नरं न रञ्जयति (1.3)
20. न तु प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्तमाराधयेत् (4)
21. यदा किञ्चित् किञ्चित् बुधजनसकाशादवगतं तदा मूर्खोऽस्मीति ज्वर इव मदो मे व्यपगतः। (8)
22. न हि गणयति क्षुद्रो जन्तुः परिग्रहफल्गुताम् (9)
23. धिक् तां च तं च मदनं च इमां च मां च।
24. सर्वः कृच्छ्रगतोऽपि वाञ्छति जनः सत्त्वानुरूपं फलम्। (22)
25. तत्तेजस्वी पुरुषः परकृतनिकृतिं कथं सहते (29)
26. नानाफलं फलति कल्पलतेव भूमिः। (वसन्ततिलका) (37)
27. यं यं पश्यसि तस्य तस्य पुरतो मा ब्रूहि दीनं वचः। (शार्दूलविक्रीडित)
28. मणिना भूषितः सर्पः किमसौ न भयङ्करः (अनुष्टुप्) (42)
29. छायेव मैत्री खलसज्जनानाम् (उपजाति) (41)
30. सतां केनोद्दिष्टं विषममसिधाराव्रतमिदम् (शिखरिणी) (57)
31. विभाति कायः करुणापराणां परोपकारेण न तु चन्दनेन। (उपजाति)
32. ये निघ्नन्ति निरर्थकं परहितं ते के न जानीमहे (शार्दूलविक्रीडित)
33. निजहृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः। (मालिनी) (70)
34. प्रायो गच्छति यत्र भाग्यरहितस्तत्रैव यान्त्यापदः। (शार्दूलविक्रीडित) 84)
35. यत्पूर्वं विधिना ललाटलिखितं तन्मार्जितुं कः क्षमः। (शार्दूलविक्रीडित)
36. भाग्यानि पूर्वतपसा खलु सञ्चितानि, काले फलन्ति पुरुषस्य यथैव वृक्षाः। (वसन्ततिलका) (97)
37. आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः। (अनुष्टुप्)

किरातार्जुनीयम् (प्रथमसर्ग) की सूक्तियाँ

- हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः। 1/4
- न हि प्रियं प्रवक्तुमिच्छन्ति मृषा हितैषिणः। 1/2
- सदानुकूलेषु हि कुर्वते रतिं नृपेष्वमात्येषु च सर्वसम्पदः। 1/5
- स किं सखा साधु न शास्ति योऽधिपं हितान्न यः संशृणुते स किं प्रभुः
- वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः। 1/8
- निरत्ययं साम न दानवर्जितम्। 1/12
- न भूरि दानं विरहय्य सत्क्रियाम्। 1/12
- गुणानुरोधेन विना न सत्क्रिया। 1/12
- अहो दुरन्ता बलवद् विरोधिता। 1/23
- तथापि वक्तुं व्यवसाययन्ति मां, निरस्तनारी समयादुराधयः।।
- व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवं भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः।।
- अबन्ध्यकोपस्य विहन्तुरापदां भवन्ति वश्या स्वयमेव देहिनः।
- अमर्षशून्येन जनस्य जन्तुना न जातहार्देन न विद्विषादरः।। 1/33
- विचित्ररूपाः खलु चित्तवृत्तयः। 1/37
- परैरपर्यासितवीर्यसम्पदां पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम्। 1/41
- व्रजन्ति शत्रूनवधूय निःस्पृहा शमेन सिद्धिं मुनयो न भूभृतः।
- निराश्रया हन्त हता मनस्विता। 1/43
- अरिषु हि विजयार्थिनः क्षितीशाः विदधति सोपधि सन्धिदूषणानि।

अभिज्ञानशाकुन्तलम् (वस्तुनिष्ठप्रश्नाः)

1. कालिदास की 'नाट्यकृति' नही है –
(A) विक्रमोर्वशीयम् (B) ऋतुसंहारम्
(C) मालविकाग्निमित्रम् (D) अभिज्ञानशाकुन्तलम्

2. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में अङ्कों की संख्या है –
(A) 5 (B) 7
(C) 8 (D) 6

3. शकुन्तला का पालन-पोषण हुआ था –
(A) विश्वामित्र के आश्रम में (B) कण्व के आश्रम में
(C) दुर्वासा के आश्रम में (D) मारीच के आश्रम में

4. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में प्रधान गुण है –
(A) माधुर्य (B) प्रसाद
(C) ओज (D) कोई नहीं

5. शकुन्तला को शाप दिया था –
(A) कण्व ने (B) मारीच ने
(C) विश्वामित्र ने (D) दुर्वासा ने

6. अभिज्ञानशाकुन्तलम् का नायक है –
(A) कण्व (B) माधव्य
(C) दुर्वासा (D) दुष्यन्त

7. शकुन्तला को विदाई के समय रेशमी वस्त्र दिये थे–
(A) सखियों ने (B) मारीच ऋषि ने
(C) वृक्षों ने (D) कण्व ने

8. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में विदूषक है –
(A) शार्ङ्गरव (B) मातलि
(C) माधव्य (D) वसन्तक

9. अभिज्ञानशाकुन्तलम् की नायिका है –
(A) अनसूया (B) गौतमी
(C) प्रियंवदा (D) शकुन्तला

10. भ्रमर से शकुन्तला की रक्षा कौन करता है –
(A) अनसूया (B) दुष्यन्त
(C) गौतमी (D) कण्व

11. मृग का पीछा करते हुए राजा दुष्यन्त किसके आश्रम में पहुँचे –
(A) मारीच के आश्रम में (B) विश्वामित्र के आश्रम में
(C) कण्व के आश्रम में (D) वाल्मीकि के आश्रम में

12. शकुन्तला की विदाई का वर्णन किस अङ्क में है –
(A) द्वितीय अङ्क में (B) पञ्चम अङ्क में
(C) तृतीय अङ्क में (D) चतुर्थ अङ्क में

13. शकुन्तला पति के चिन्तन में बैठी है –
(A) राजभवन में (B) उपवन में
(C) कुटिया के पास (D) नदी के किनारे

14. शकुन्तला की माता का नाम था –
(A) मेनका (B) गौतमी
(C) हंसपदिका (D) वसुमती

15. शकुन्तला के पुत्र का नाम था –
(A) सर्वदमन (भरत) (B) गौतम
(C) हारीत (D) नारद

16. शकुन्तला की अँगूठी गिरी थी –
(A) शचीतीर्थ में (B) मार्ग में
(C) सोमतीर्थ में (D) प्रभातीर्थ में

17. दुष्यन्त की मनःस्थिति जानने के लिए मेनका ने अपनी किस सखी को भेजा था –
(A) सानुमती को (B) भानुमती को
(C) रम्भा को (D) उर्वशी को

18. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में अङ्गी रस है –
(A) श्रृङ्गार (B) वीर
(C) करुण (D) हास्य

19. ''अर्थो हि कन्या परकीय एव'' किसने कहा –
(A) दुष्यन्त ने (B) गौतमी ने
(C) शार्ङ्गरव ने (D) कण्व ने

20. दुष्यन्त और शकुन्तला का विवाह था –
(A) गान्धर्व (B) प्राजापत्य
(C) ब्रह्म (D) दैव

1. (B)	**2.** (B)	**3.** (B)	**4.** (B)	**5.** (D)	**6.** (D)	**7.** (C)	**8.** (C)	**9.** (D)	**10.** (B)
11. (C)	**12.** (D)	**13.** (C)	**14.** (A)	**15.** (A)	**16.** (A)	**17.** (A)	**18.** (A)	**19.** (D)	**20.** (A)

21. 'गण्डस्योपरि पिण्डकः संवृत्तः' किसने कहा –
(A) दुष्यन्त (B) कण्व
(C) विदूषक (D) शारद्वत

22. नाटक में 'जो बात सुनने योग्य न हो' उसे कहते हैं –
(A) आत्मगतम् (B) प्रकाशम्
(C) नेपथ्य (D) नान्दी

23. नाटकों में भरतवाक्य का प्रयोग होता है –
(A) मध्य में (B) अन्त में
(C) प्रारम्भ में (D) कहीं भी।

24. अभिनेता जहाँ वेशभूषा धारण करते हैं, उसे कहते हैं–
(A) नान्दी (B) पूर्वरङ्ग
(C) नेपथ्य (D) रङ्गमञ्च

25. नाट्यशास्त्र में 'नान्दी' से अभिप्रेत है –
(A) शङ्कर का बैल (B) मङ्गलाचरण
(C) एक देवता (D) अष्टमूर्ति शिव

26. अभिज्ञानशाकुन्तलम् का सर्वप्रथम अंग्रेजी अनुवाद किसने किया –
(A) गेटे (B) विलियम जोन्स
(C) मैक्समूलर (D) शेक्सपियर

27. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के पुरुष पात्रों में नहीं है –
(A) वसन्तक (B) माधव्य
(C) भद्रसेन (D) सोमरात

28. महर्षि कण्व का आश्रम था –
(A) मालिनी नदी के तट पर
(B) गङ्गा नदी के तट पर
(C) यमुना नदी के तट पर
(D) गौतमी नदी के तट पर

29. दुष्यन्त ने जब आश्रम में प्रवेश किया तब महर्षि कण्व कहाँ गये हुए थे –
(A) सोमतीर्थ (B) शचीतीर्थ
(C) माघमेला प्रयाग (D) हरिद्वार

30. अभिज्ञानशाकुन्तलम् का उपजीव्यग्रन्थ है –
(A) भागवतपुराण (B) रामायण
(C) महाभारत (D) वेद

31. मारीच ऋषि का आश्रम है –
(A) हेमकूट पर्वत में (B) विन्ध्याचल में
(C) चित्रकूट रामगिरि में (D) पञ्चवटी में

32. शकुन्तला के जन्मदाता पिता थे –
(A) कण्व (B) विश्वामित्र
(C) दुर्वासा (D) मारीच

33. शकुन्तला की प्रियसखी है –
(A) प्रियंवदा (B) सानुमती
(C) गौतमी (D) मेनका

34. 'अहो रागपरिवाहिणी गीतिः' राजा दुष्यन्त का यह कथन किसकी प्रशंसा में है –
(A) शकुन्तला के गाने पर
(B) गौतमी के गाने पर
(C) हंसपदिका के गाने पर
(D) वसुमती के गाने पर

35. 'कोऽन्यो हुतवहात् दग्धुं प्रभवति' सूक्ति उद्धृत है –
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से (B) नीतिशतकम् से
(C) उत्तररामचरितम् से (D) मेघदूतम् से

36. अभिज्ञानशाकुन्तलम् का पात्र है –
(A) वसन्तक (B) अगस्त्य
(C) अत्रि (D) शारद्वत

37. दुष्यन्त की विशेष रुचि रही है –
(A) द्यूत में (B) मृगया में
(C) मदिरापान में (D) गजारोहण में

38. अनसूया किसकी सखी है –
(A) उर्मिला की (B) सीता की
(C) शकुन्तला की (D) गौतमी की

39. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में सर्वाधिक प्रयुक्त छन्द है–
(A) आर्या (B) वसन्ततिलका
(C) शार्दूलविक्रीडितम् (D) अनुष्टुप्

40. कण्व थे –
(A) तपस्वी (B) भिक्षुक
(C) पर्यटक (D) गृहस्थ

21. (C)	22. (A)	23. (B)	24. (C)	25. (B)	26. (B)	27. (A)	28. (A)	29. (A)	30. (C)
31. (A)	32. (B)	33. (A)	34. (C)	35. (A)	36. (D)	37. (B)	38. (C)	39. (A)	40. (A)

41. अभिज्ञानशाकुन्तलम् विभक्त है –
(A) वर्गों में (B) अध्यायों में
(C) अङ्कों में (D) सर्गों में

42. कालिदास की रचना नही है –
(A) रघुवंशम् (B) विक्रमाङ्कदेवचरितम्
(C) मेघदूतम् (D) अभिज्ञानशाकुन्तलम्

43. ''अतिस्नेहः पापशङ्की'' सूक्ति उद्धृत है –
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से (B) उत्तररामचरितम् से
(C) विक्रमोर्वशीयम् से (D) स्वप्नवासवदत्तम् से

44. अभिज्ञानशाकुन्तलम् की कथा उद्धृत है –
(A) महाभारत (आदिपर्व) (B) महाभारत (वनपर्व)
(C) महाभारत (सभापर्व) (D) महाभारत (शान्तिपर्व)

45. ''अचेतनं नाम गुणं न लक्षयेत्'' यह पंक्ति किसने किससे कही –
(A) दुष्यन्त ने अँगूठी से (B) शकुन्तला ने प्रियंवदा से
(C) गौतमी ने अनसूया से (D) विदूषक ने दुष्यन्त से

46. कालिदास की नाट्यकृतियाँ हैं –
(A) 7 (B) 3
(C) 2 (D) 4

47. कालिदास के सभी नाटक हैं –
(A) दुःखान्त (B) सुखान्त
(C) कल्पनान्त (D) उत्तेजनान्त

48. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में कुल पद्य/श्लोक हैं –
(A) 180 (B) 196
(C) 150 (D) 200

49. कालिदास ने सर्वाधिक किस रीति का प्रयोग किया है –
(A) वैदर्भी (B) लाटी
(C) गौणी (D) पाञ्चाली

50. कालिदास के नाटकों में किस छन्द की प्रमुखता है–
(A) शार्दूलविक्रीडितम् (B) आर्या
(C) वसन्ततिलका (D) मालिनी

51. 'उपमासम्राट्' किस कवि को कहा जाता है –
(A) भारवि को (B) भास को
(C) कालिदास को (D) भवभूति को

52. भ्रमर से शकुन्तला की रक्षा करने का वर्णन किस अङ्क में है –
(A) सप्तम अङ्क में (B) प्रथम अङ्क में
(C) चतुर्थ अङ्क में (D) द्वितीय अङ्क में

53. ''दुर्लभमिदानीं मे सखीमण्डनं भविष्यति'' यह कथन किसका है –
(A) प्रियंवदा का (B) अनसूया का
(C) शकुन्तला का (D) गौतमी का

54. महर्षि मारीच का शिष्य है –
(A) गौतम (B) हारीत
(C) गालव (D) नारद

55. दुष्यन्त के सेनापति का नाम है –
(A) सोमरात (B) भद्रसेन
(C) रैवतक (D) माधव्य

56. ''ईषदीषद्चुम्बितानि भ्रमरैः....'' नटी का यह गायन किस ऋतु से सम्बन्धित है –
(A) ग्रीष्म (B) वर्षा
(C) शरद् (D) बसन्त

57. ''ग्रीवाभङ्गाभिरामं..........स्तोकमुर्व्यां प्रयाति'' यह श्लोक किस रस का उदाहरण है –
(A) वीररस का (B) भयानकरस का
(C) अद्भुतरस का (D) शृङ्गाररस का

58. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के कञ्चुकी का नाम है –
(A) माधव्य (B) शारद्वत
(C) सर्वदमन (D) वातायन

59. 'अपीतेषु' पद में समास है –
(A) अव्ययीभाव (B) द्विगु
(C) नञ् (D) द्वन्द्व

60. ''कामी स्वतां पश्यति'' के 'कामी' पद में प्रत्यय है–
(A) णिनि (B) ङीप्
(C) ङीष् (D) ङीन्

41. (C)	**42. (B)**	**43. (A)**	**44. (A)**	**45. (A)**	**46. (B)**	**47. (B)**	**48. (B)**	**49. (A)**	**50. (B)**
51. (C)	**52. (B)**	**53. (C)**	**54. (C)**	**55. (B)**	**56. (A)**	**57. (B)**	**58. (D)**	**59. (C)**	**60. (A)**

61. ''पश्यामीव पिनाकिनम्'' यह वाक्य किसने कहा–
(A) दुष्यन्त ने सूत से (B) कण्व ने शार्ङ्गरव से
(C) दुर्वासा ने प्रियंवदा से (D) सूत ने दुष्यन्त से

62. ''भवितव्यानां द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र'' यह सूक्ति है –
(A) मेघदूतम् की (B) नीतिशतकम् की
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् की (D) कादम्बरी की

63. ''न तादृशा आकृतिविशेषा गुणविरोधिनो भवन्ति'' किसने कहा –
(A) अनसूया ने (B) प्रियंवदा ने
(C) शकुन्तला ने (D) गौतमी ने

64. ''अस्तशिखरं'' मे समास है –
(A) द्वन्द्वसमास (B) तत्पुरुषसमास
(C) द्विगुसमास (D) बहुव्रीहिसमास

65. ''उचितं न ते मङ्गलकाले रोदितुम्'' किसने किससे कहा–
(A) गौतमी ने शकुन्तला से
(B) कण्व ने शकुन्तला से
(C) दोनों सखियों ने शकुन्तला से
(D) अनसूया ने प्रियंवदा से

66. ''पातुं न .... व्यवस्यति जलम्'' रिक्तस्थान की पूर्ति करें –
(A) सर्वप्रथमं (B) द्वितीयं
(C) प्रथमं (D) प्रथमा

67. ''सोऽयं न पुत्रकृतकः पदवीं मृगस्ते'' यह कथन किसका है –
(A) प्रियंवदा का अनसूया से
(B) कण्व का शकुन्तला से
(C) राजा का शार्ङ्गरव से
(D) गौतमी का शकुन्तला से

68. ''सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम्'' काश्यप (कण्व) का यह कथन किसके लिए है –
(A) राजा के लिए (B) वृक्षों के लिए
(C) ऋषियों के लिए (D) सखियों के लिए

69. ''शुश्रूषस्व गुरून् कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीजने'' में कण्व ने किसे उपदेश दिया –
(A) प्रियंवदा को (B) अनसूया को
(C) शकुन्तला को (D) राजा को

70. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के पञ्चम अङ्क का नाम है –
(A) आश्रमप्रवेश अङ्क (B) प्रत्याख्यान अङ्क
(C) विदा अङ्क (D) पश्चात्ताप अङ्क

71. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में 'अभिज्ञान' शब्द से संकेतित/सम्बन्धित है –
(A) नूपुर (B) कङ्कण
(C) अँगूठी (D) कङ्कतम्

72. राजा दुष्यन्त की प्रथमपत्नी है –
(A) हंसपदिका (B) वसुमती
(C) शकुन्तला (D) मेनका

73. राजा दुष्यन्त की द्वितीय पत्नी (प्रेमिका) थी –
(A) वसुमती (B) शकुन्तला
(C) हंसपदिका (D) प्रियंवदा

74. राजा दुष्यन्त की तृतीय पत्नी/प्रेमिका है –
(A) अनसूया (B) शकुन्तला
(C) वसुमती (D) हंसपदिका

75. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के मङ्गलाचरण में कालिदास ने किसकी वन्दना की –
(A) विष्णु की (B) जल की
(C) अष्टमूर्ति शिव की (D) आकाश की

76. कण्व का शिष्य है –
(A) माधव्य (B) गालव
(C) शारद्वत (D) वसन्तक

77. शार्ङ्गरव किसका शिष्य है –
(A) विश्वामित्र का (B) दुर्वासा का
(C) मारीच का (D) कण्व का।

78. ''सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तःकरणप्रवृत्तयः'' इस सूक्ति का वक्ता कौन है –
(A) कण्व (B) दुष्यन्त
(C) शकुन्तला (D) मारीच

61. (D)	**62. (C)**	**63. (B)**	**64. (B)**	**65. (C)**	**66. (C)**	**67. (B)**	**68. (B)**	**69. (C)**	**70. (B)**
71. (C)	**72. (A)**	**73. (A)**	**74. (B)**	**75. (C)**	**76. (C)**	**77. (D)**	**78. (B)**		

79. शकुन्तला के साथ हस्तिनापुर तक कौन जाती है –
(A) गौतमी (B) अनसूया
(C) प्रियंवदा (D) मेनका

80. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में ''अग्निगर्भा शमीमिव'' कौन है –
(A) गौतमी (B) कण्व
(C) शकुन्तला (D) प्रियंवदा

81. ''किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्'' किसने, किसके लिए कहा –
(A) दुष्यन्त ने शकुन्तला के लिए
(B) कण्व ने शकुन्तला के लिए
(C) दुष्यन्त ने प्रियंवदा के लिए
(D) शकुन्तला ने दुष्यन्त के लिए

82. ययाति की पत्नी थी –
(A) शर्मिष्ठा (B) गौतमी
(C) सानुमती (D) दाक्षायणी

83. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में ''पुत्रकृतकः श्यामाक-मुष्टिपरिवर्धितकः'' कौन है –
(A) सर्वदमनः (B) मृगः (दीर्घापाङ्गः)
(C) वृक्षः (D) शारद्वतः

84. ''गुर्वपि विरहदुःखमाशाबन्धः साहयति'' किसकी उक्ति है–
(A) अनसूया (B) प्रियंवदा
(C) शकुन्तला (D) गौतमी

85. दुष्यन्त द्वारा परित्यक्ता शकुन्तला किस आश्रम में निवास करती है –
(A) कण्वाश्रम में (B) मारीचाश्रम में
(C) विश्वामित्राश्रम में (D) वशिष्ठाश्रम में

86. शकुन्तलापरित्याग की घटना किस अङ्क में है –
(A) चतुर्थ अङ्क में (B) षष्ठ अङ्क में
(C) पञ्चम अङ्क में (D) सप्तम अङ्क में

87. ''अतः परीक्ष्य कर्त्तव्यं विशेषात् सङ्गतं रहः'' किसने कहा–
(A) शार्ङ्गरव ने (B) कण्व ने
(C) राजा ने (D) शारद्वत ने

88. ''संस्पृष्टमुत्कण्ठया'' के 'संस्पृष्टम्' पद में प्रकृति प्रत्यय है –
(A) सम्+पृच्छ्+क्त्वा (B) सम्+स्पृश्+क्त
(C) सम्+पा+ल्युट् (D) सम्+स्पृ+ष्टम्

89. ''समिद्वन्तः'' में प्रत्यय है –
(A) क्त (B) मतुप्
(C) क्तवतु (D) शतृ

90. ''शुश्रूषस्व'' में लकार है –
(A) लट् (B) लङ्
(C) लोट् (D) विधिलिङ्

91. ''भूयिष्ठम्'' पद में प्रत्यय है –
(A) इष्ठन् (B) क्त
(C) क्तिन् (D) ठ

92. ''प्रत्यर्पितन्यासः'' में समास है –
(A) अव्ययीभाव (B) बहुव्रीहि
(C) द्वन्द्व (D) तत्पुरुष

93. 'न्यषिच्यत' में सन्धि है –
(A) गुण (B) वृद्धि
(C) यण् (D) अयादि

94. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में सर्वाधिक सौन्दर्य वर्णित है –
(A) गौतमी का (B) प्रियंवदा का
(C) शकुन्तला का (D) मेनका का

95. तपस्वी होकर भी लौकिक व्यवहारों के ज्ञाता हैं –
(A) विश्वामित्र (B) दुर्वासा
(C) शार्ङ्गरव (D) कण्व

96. कण्वाश्रम की वरिष्ठतपस्विनी है –
(A) प्रियंवदा (B) दाक्षायणी
(C) गौतमी (D) सानुमती

97. द्वितीय अङ्क में राजा को मृगया न खेलने की सलाह कौन देता है –
(A) सेनापति (B) ऋषि कण्व
(C) दौवारिक (D) माधव्य

79. (A)	80. (C)	81. (A)	82. (A)	83. (B)	84. (A)	85. (B)	86. (C)	87. (A)	88. (B)
89. (B)	90. (C)	91. (A)	92. (B)	93. (C)	94. (C)	95. (D)	96. (C)	97. (D)	

98. शकुन्तला की क्षमायाचना के लिए दुर्वासा के पास जाती है –
(A) अनसूया (B) प्रियंवदा
(C) गौतमी (D) मेनका

99. वनज्योत्स्ना और आश्रमवृक्षों के साथ सहोदरों जैसा स्नेह किसका है –
(A) शकुन्तला का (B) प्रियंवदा का
(C) अनसूया का (D) गौतमी का

100. ''या सृष्टिः स्त्रष्टुराद्या'' के 'सृष्टिः' पद में प्रकृति-प्रत्यय है–
(A) सृज्+क्तिन् (B) सृ+ष्टिः
(C) सृ+क्त (D) सृजन्+ल्युट्

101. 'ओदकान्तम्' पद का क्या अर्थ है –
(A) जल के किनारे तक (B) चावल के पास
(C) चन्द्रमा (D) सूर्य का सारथि

102. ''परभृतविरुतं कलं यथा'' यहाँ 'परभृत'' पद का अर्थ है–
(A) कौआ (B) कोयल
(C) दूसरे की सखी (D) पशु

103. 'कुशेशयरजोमृदुरेणुरस्याः' यहाँ 'कुशेशय' पद का अर्थ है –
(A) कमल (B) नवमालिका
(C) शकुन्तला (D) केसरवृक्ष

104. ''अरण्यौकसः'' पद का शब्दार्थ है –
(A) वनवासी (B) गृहस्थ
(C) ब्रह्मचारी (D) तपस्वी

105. ''ओषधीनां पतिः'' कौन है –
(A) सूर्य (B) चन्द्रमा
(C) अरुण (D) आश्विन वैद्य

106. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में 'प्रकृतिवक्रः सः' किसके लिए प्रयुक्त किया गया है –
(A) कण्व के लिए (B) दुष्यन्त के लिए
(C) दुर्वासा के लिए (D) मारीच के लिए

107. 'अनन्यमानसा' किसका विशेषण है –
(A) प्रियंवदा का (B) शकुन्तला का
(C) गौतमी का (D) दुर्वासा का

108. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के नायक दुष्यन्त की प्रकृति है –
(A) धीरललित (B) धीरप्रशान्त
(C) धीरोदात्त (D) धीरोद्धत

109. जर्मन विद्वान् गेटे द्वारा प्रशंसित नाटक है –
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (B) उत्तररामचरितम्
(C) स्वप्नवासवदत्तम् (D) वेणीसंहारम्

110. दुष्यन्त को देवासुरसंग्राम की सूचना देने वाला है–
(A) विदूषक (B) मातलि
(C) मारीच (D) इन्द्र

111. वह स्थान जहाँ स्वर्ग से लौटते समय दुष्यन्त रुकता है–
(A) कण्वाश्रम में (B) मारीच आश्रम में
(C) वशिष्ठ आश्रम में (D) विश्वामित्र आश्रम में

112. 'अपराजिता रक्षाकरण्डक' से सम्बद्ध है –
(A) दुष्यन्त (B) सर्वदमन (भरत)
(C) मारीच (D) कण्व

113. ''वामाः कुलस्याधयः'' यहाँ 'वामाः' का अर्थ है –
(A) प्रतिकूल आचरण वाली स्त्री (B) सुन्दर स्त्री
(C) बायें भाग में स्थित स्त्री (D) तरुणी स्त्री

114. ''भूयिष्ठं भव दक्षिणा परिजने'' यहाँ 'परिजन' पद का अर्थ है –
(A) परिवार जन (B) सेवक जन
(C) पड़ोसी जन (D) आश्रमीय जन

115. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में विष्कम्भक है –
(A) अङ्क के अन्त में (B) अङ्क के प्रारम्भ में
(C) अङ्क के मध्य में (D) कहीं भी नहीं

116. दुष्यन्त के वंश का नाम था –
(A) सूर्यवंश (B) यदुवंश
(C) पुरुवंश (D) कुरुवंश

98. (B)	**99.** (A)	**100.** (A)	**101.** (A)	**102.** (B)	**103.** (A)	**104.** (A)	**105.** (B)	**106.** (C)	**107.** (B)
108. (C)	**109.** (A)	**110.** (B)	**111.** (B)	**112.** (B)	**113.** (A)	**114.** (B)	**115.** (B)	**116.** (C)	

117. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में कण्व ऋषि को किस अन्य नाम से वर्णित किया गया है –

(A) गौतम (B) काश्यप
(C) भारद्वाज (D) मारीच

118. 'शकुन्तला के गर्भ में दुष्यन्त का तेज पल रहा है' – यह बात कण्व को किसने बतायी –

(A) अनसूया एवं प्रियंवदा ने (B) गौतमी ने
(C) अशरीरिणी आकाशवाणी ने (D) शिष्यों ने

119. शकुन्तला ने अपनी विदाई के समय जिस लता का आलिंगन किया, उसका नाम था –

(A) वनज्योत्स्ना (B) केसरलता
(C) सहकारलता (D) लतापत्रिका

120. विदाई के समय कण्व ने किस श्लोक से शकुन्तला को उपदेश दिया –

(A) यास्यत्यद्य शकुन्तलेति....।
(B) पातुं न प्रथमम्.....।
(C) अस्मान् साधु विचिन्त्य.....।
(D) शुश्रूषस्व गुरून्......।

121. दुष्यन्त और शकुन्तला के विवाह की सूचना महर्षि कण्व को किसने दी –

(A) गौतमी ने
(B) अशरीरिणी छन्दोमयी आकाशवाणी ने
(C) सखियों ने
(D) शिष्यों ने

122. ''दिष्ट्या धूमाकुलितदृष्टेरपि यजमानस्य पावक एवाहुतिः पतिता'' – इस वाक्य में 'पावक' शब्द से किसको संकेतित किया गया है –

(A) कण्व को (B) दुष्यन्त को
(C) यज्ञदेवता को (D) यजमान को

123. अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक में वर्णित शार्ङ्गरव है–

(A) दुर्वासा का पुत्र (B) कण्व का भ्राता
(C) कण्व का शिष्य (D) दुष्यन्त का सेवक

124. ''रक्षितव्या खलु प्रकृतिपेलवा प्रियसखी'' यह कथन है –

(A) अनसूया का प्रियंवदा से
(B) अनसूया का गौतमी से
(C) प्रियंवदा का अनसूया से
(D) शकुन्तला का प्रियंवदा से

125. ''अयं जनः कस्य हस्ते समर्पितः'' यह कथन है –

(A) शकुन्तला का (B) अनसूया का
(C) प्रियंवदा का (D) अनसूया प्रियंवदा दोनों का

126. ''अभिज्ञानाभरणदर्शनेन शापो निवर्तिष्यत'' यह उक्ति किसकी है –

(A) गौतमी की (B) कण्व की
(C) दुर्वासा की (D) मारीच की

127. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में अशरीरिणी छन्दोमयीवाणी ने शकुन्तला विषयक वृत्तान्त किसे सुनाया –

(A) कण्व को (B) मेनका को
(C) मारीच को (D) दुष्यन्त को

128. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में शापविषयक वृत्तान्त किस अङ्क में है –

(A) पञ्चम अङ्क में (B) चतुर्थ अङ्क में
(C) तृतीय अङ्क में (D) षष्ठ अङ्क में

129. ''पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं'' यह उक्ति अभिज्ञानशाकुन्तलम् में किसकी है –

(A) शार्ङ्गरव की (B) शारद्वत की
(C) काश्यप (कण्व) की (D) दुर्वासा की

130. अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक में गौतमी है –

(A) शकुन्तला की सखी
(B) एक अप्सरा
(C) तपोवन की वरिष्ठ महिला
(D) मेनका की सखी

131. ''सुलभकोपो महर्षिः'' किसने किसको कहा –

(A) प्रियंवदा ने दुर्वासा को
(B) अनसूया ने दुर्वासा को
(C) गौतमी ने कण्व को
(D) मेनका ने मारीच को

117. (B) 118. (C) 119. (A) 120. (D) 121. (B) 122. (B) 123. (C) 124. (A) 125. (D) 126. (C) 127. (A) 128. (B) 129. (C) 130. (C) 131. (A)

132. मारीच ऋषि की पत्नी है –
(A) गौतमी (B) मेनका
(C) सानुमती (D) दाक्षायणी (अदिति)

133. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में कुल कितने श्लोक हैं –
(A) बयालीस (42) (B) बाइस (22)
(C) छियालीस (46) (D) पच्चीस (25)।

134. ''न खलु धीमतां कश्चिदविषयो नाम'' सूक्ति है–
(A) किरातार्जुनीयम् की (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम् की
(C) शुकनासोपदेश की (B) शिवराजविजयम् की

135. निम्नलिखित में कौन सा कथन असत्य है –
(A) कालिदास वैदर्भी रीति के कवि हैं।
(B) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में सात सर्ग हैं।
(C) शाकुन्तलम् की कथा महाभारत के आदिपर्व से ली गयी है।
(D) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में कण्व, दुर्वासा, मारीच और विश्वामित्र आदि ऋषियों का नाम आया है।

136. कालिदास को किस राजा का आश्रयदाता राजकवि माना जाता है –
(A) पुष्यमित्र (B) चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य
(C) अशोक (D) स्कन्दगुप्त

137. ''अर्थो हि कन्या परकीय एव तामद्य सम्प्रेष्य परिग्रहीतुः'' यह कथन किसका है –
(A) दुर्वासा का (B) काश्यप/कण्व का
(C) मारीच का (D) विश्वामित्र का

138. दुष्यन्त की राजधानी थी –
(A) अयोध्या (B) इन्द्रप्रस्थ
(C) कण्वाश्रम (D) हस्तिनापुर

139. ''कविताकामिनी का विलास'' किस कवि को कहा गया है –
(A) कालिदास को (B) भारवि को
(C) माघ को (D) दण्डी को

140. शकुन्तला के चरित्र की विशेषता नही है –
(A) सुन्दरी (B) प्रकृतिप्रेमी
(C) कटुभाषिणी (D) लज्जाशीलता

141. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में सर्वप्रथम विदूषक का चित्रण किया गया है –
(A) प्रथम अङ्क में (B) द्वितीय अङ्क में
(C) चतुर्थ अङ्क में (D) इनमें से कोई भी नहीं

142. अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक में प्रवेशक का प्रयोग हुआ है–
(A) तृतीय अङ्क में (B) द्वितीय अङ्क में
(C) षष्ठ अङ्क में (D) पञ्चम अङ्क में

143. किस नाट्यकृति में कालिदास की कला मधुरतम फल के रूप में परिणत हुई है –
(A) विक्रमोर्वशीयम् में
(B) मालविकाग्निमित्रम् में
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में
(D) इनमें से किसी में नहीं

144. अभिज्ञानशाकुन्तलम् का 'भरतवाक्य' है –
(A) इमां सागरपर्यन्ताम्....।
(B) प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः....।
(C) या सृष्टिः स्त्रष्टुराद्या....।
(D) पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलम्....।

145. ''लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु'' पद्यांश में अलङ्कार है–
(A) उत्प्रेक्षा (B) उपमा
(C) अर्थान्तरन्यास (D) रूपक

146. ''अतिस्नेहः पापशङ्की'' यह सूक्ति किसने किससे कहा–
(A) सखियों ने शकुन्तला से
(B) गौतमी ने कण्व से
(C) दुष्यन्त ने सखियों से
(D) कण्व ने शकुन्तला से

147. ''रक्षितव्या खलु प्रकृतिपेलवा प्रियसखी'' यहाँ 'प्रकृतिपेलवा प्रियसखी' किसके लिए प्रयुक्त किया गया है।
(A) शकुन्तला के लिए (B) प्रियंवदा के लिए
(C) सानुमती के लिए (D) अनसूया के लिए

132. (D) 133. (B) 134. (B) 135. (B) 136. (B) 137. (B) 138. (D) 139. (A) 140. (C)
141. (B) 142. (C) 143. (C) 144. (B) 145. (A) 146. (A) 147. (A)

148. पतिगृह जाती हुई शकुन्तला को काश्यप/कण्व ऋषि ने आशीर्वाद दिया था –
(A) चक्रवर्ती पुत्र प्राप्त करने का
(B) धन प्राप्त करने का
(C) महादेवी बनने का
(D) पूर्णस्वस्थ रहने का

149. ''मम विरहजां न त्वं वत्से शुचं गणयिष्यसि'' यहाँ 'मम' पद से तात्पर्य है –
(A) कण्व का (B) विश्वामित्र का
(C) दुर्वासा का (D) दुष्यन्त का

150. दुष्यन्त के लिए सन्देश वचन किसने किससे कहा–
(A) कण्व ने शार्ङ्गरव से (B) कण्व ने गौतमी से
(C) कण्व ने प्रियंवदा से (D) कण्व ने शकुन्तला से

151. ''गच्छ, पादयोः प्रणम्य निवर्तयैनम्'' यह कथन है–
(A) अनसूया का प्रियंवदा के प्रति
(B) प्रियंवदा का अनसूया के प्रति
(C) अनसूया का शकुन्तला के प्रति
(D) मेनका का सानुमती के प्रति

152. ''तपोधनं वेत्सि न मामुपस्थितम्'' यहाँ 'तपोधनं' शब्द प्रयुक्त हुआ है –
(A) कण्व के लिए (B) दुर्वासा के लिए
(C) मारीच के लिए (D) शार्ङ्गरव के लिए

153. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में ययाति के किस पुत्र का उल्लेख किया गया है –
(A) यदु का (B) पुरु का
(C) तुर्वसु का (D) द्रुह्यु का

154. सानुमती पात्र है –
(A) उत्तररामचरितम् की (B) किरातार्जुनीयम् की
(C) कादम्बरी की (D) अभिज्ञानशाकुन्तलम् की

155. राजशेखर ने कितने कालिदासों का उल्लेख किया है–
(A) 5 (B) 3
(C) 2 (D) 6

156. अभिज्ञानशाकुन्तलम् की स्त्री-पात्र बोलती हैं –
(A) संस्कृत में (B) शौरसेनी प्राकृत में
(C) पालि में (D) खड़ी हिन्दी में

157. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में सूत्रधार और नटी दोनों ने किस ऋतु का वर्णन किया है –
(A) ग्रीष्म ऋतु का (B) शिशिर ऋतु का
(C) वर्षा ऋतु का (D) हेमन्त ऋतु का

158. ''ग्रीवाभङ्गाभिरामं मुहुरनुपतति स्यन्दने दत्तदृष्टिः'' इस श्लोक में छन्द है –
(A) शार्दूलविक्रीडितम् (B) स्रग्धरा
(C) हरिणी (D) शिखरिणी

159. ''असंशयं क्षत्रपरिग्रहक्षमा'' यहाँ 'क्षत्रपरिग्रहक्षमा' से किसका संकेत है –
(A) प्रियंवदा का (B) अनसूया का
(C) शकुन्तला का (D) क्षत्रियों की क्षमा का

160. ''वत्से, वीर प्रसविनी भव'' शकुन्तला के लिए यह आशीर्वाद किसने दिया –
(A) एक तापसी ने (B) गौतमी ने
(C) मारीच ने (D) कण्व ने

161. ''उद्गलितदर्भकवला मृग्यः परित्यक्तनर्तना मयूराः'' यह कथन किसका है –
(A) प्रियंवदा का (B) अनसूया का
(C) शकुन्तला का (D) गौतमी का

162. ''वामाः कुलस्याधयः'' में 'आधयः' पद का क्या अर्थ है–
(A) मानसिक व्याधि (B) बाधा
(C) मोक्ष (D) आधा

163. ''मा स्म प्रतीपं गमः'' में 'प्रतीपम्' पद का क्या अर्थ है–
(A) प्रतिकूल (विपरीत) (B) अनुकूल
(C) आचरण (D) चरित्र

164. ''तात! कदा नु भूयस्तपोवनं प्रेक्षिष्ये'' यह कथन किसका है –
(A) प्रियंवदा का (B) अनसूया का
(C) शकुन्तला का (D) गौतमी का

148. (A) **149.** (A) **150.** (A) **151.** (A) **152.** (B) **153.** (B) **154.** (D) **155.** (B) **156.** (B) **157.** (A)
158. (B) **159.** (C) **160.** (A) **161.** (A) **162.** (A) **163.** (A) **164.** (C)

165. दुष्यन्त की कौन सी रानी पञ्चम अङ्क में सङ्गीत का अभ्यास कर रही है –

(A) हंसपदिका (B) वसुमती
(C) शकुन्तला (D) दाक्षायणी

166. रानी वसुमती के प्रेम में राजा दुष्यन्त किसे भूल गया है–

(A) हंसपदिका को (B) सानुमती को
(C) प्रियंवदा को (D) शकुन्तला को

167. हंसपदिका अपने गान के माध्यम से किसे उलाहना देती है –

(A) राजा दुष्यन्त को (B) माधव्य को
(C) शकुन्तला को (D) कण्व को

168. कण्व शिष्यों के आने की सूचना राजा दुष्यन्त को किसने दिया –

(A) प्रतीहारी ने (B) कञ्चुकी वातायन ने
(C) विदूषक माधव्य ने (D) पुरोहित सोमरात ने

169. हस्तिनापुर पहुँचकर शकुन्तला का कौन सा नेत्र फड़कने लगा –

(A) बायाँ नेत्र (B) दाहिना नेत्र
(C) दोनों नेत्र (D) कभी बायाँ कभी दायाँ

170. ''भवन्ति नम्रास्तरवः फलागमैः'' यह कथन किसका है –

(A) शार्ङ्गरव का (B) शारद्वत का
(C) कण्व का (D) पुरोहित सोमरात का

171. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में सेनापति का नाम है –

(A) आत्रेय (B) भद्रसेन
(C) मैत्रेय (D) वसन्तक

172. ''स्वभाव एवैष परोपकारिणाम्'' यह कथन किसने किसके लिए कहा है –

(A) शार्ङ्गरव ने राजा दुष्यन्त के लिए
(B) कण्व ने शारद्वत के लिए
(C) दुष्यन्त ने सोमरात के लिए
(D) गौतमी ने दुष्यन्त के लिए

173. शकुन्तला द्वारा पुत्रवत्पालित मृग का क्या नाम है–

(A) दीर्घापाङ्ग (B) मृगानुसारी
(C) मृगाङ्क (D) पिनाकी

174. 'शकुन्तला सन्तानोत्पत्ति तक मेरे घर में ही रहे।' यह वाक्य किसने कहा –

(A) मारीच ने (B) पुरोहित सोमरात ने
(C) कण्व ने (D) दुष्यन्त ने

175. राजा दुष्यन्त की प्रतीहारी (द्वारपालिका) का क्या नाम है–

(A) सानुमती (B) बेतवारानी
(C) वेत्रवती (D) सोमवती

176. ''पाटच्चर, किमस्माभिर्जातिः पृष्टा'' यहाँ 'पाटच्चर' पद का क्या अर्थ है –

(A) चोर (B) श्याल
(C) राजा (D) कोतवाल

177. ''काव्येषु नाटकं रम्यम्'' में किस नाटक का निर्देश है –

(A) उत्तररामचरितम् (B) मालविकाग्निमित्रम्
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (D) वेणीसंहारम्

178. ''इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी'' यहाँ 'तन्वी' पद से किसका सङ्केत किया गया है –

(A) प्रियंवदा का (B) चन्द्रमा का
(C) कमल का (D) शकुन्तला का

179. ''आशङ्कसे यदग्निं तदिदं स्पर्शक्षमं रत्नम्'' यह वाक्य किसने किसके लिए कहा –

(A) राजा ने शकुन्तला के लिए
(B) कण्व ने शिष्य के लिए
(C) शकुन्तला ने राजा के लिए
(D) सखियों ने अग्नि के लिए

180. ''लब्धावकाशो मे मनोरथः'' यह वचन किसका है –

(A) प्रियंवदा का (B) राजादुष्यन्त का
(C) शकुन्तला का (D) कण्व का

165. (A) 166. (A) 167. (A) 168. (B) 169. (B) 170. (A) 171. (B) 172. (A) 173. (A) 174. (B) 175. (C) 176. (A) 177. (C) 178. (D) 179. (A) 180. (B)

181. कौशिकगोत्रनामधेयः राजर्षिः कः अस्ति –
(A) कण्वः (B) मारीचः
(C) विश्वामित्रः (D) दुर्वासाः

182. मेनका के आगमन के समय विश्वामित्र किस नदी के तट पर उग्र तपस्या कर रहे थे –
(A) गौतमी नदी (B) यमुना नदी
(C) मालिनी नदी (D) गङ्गा नदी

183. राजा दुष्यन्त ने शकुन्तला से क्या पूछा –
(A) अपि तपो वर्धते?
(B) कुशलिनी अस्ति वा?
(C) स्वास्थ्यं कथम् अस्ति?
(D) भवत्याः नाम किम्?

184. ''अधरः किसलयरागः कोमलविटपानुकारिणौ बाहू'' राजा का यह कथन किसके लिए है –
(A) शकुन्तला के लिए – अङ्क 1
(B) प्रियंवदा के लिए – अङ्क 4
(C) अनसूया के लिए – अङ्क 4
(D) तपोवन कि लिए – अङ्क 1

185. ''दूरीकृताः खलु गुणैरुद्यानलता वनलताभिः'' यहाँ 'वनलताभिः' से किसका सङ्केत किया गया है –
(A) रानियों का (B) तापसकुमारियों का
(C) जङ्गली पशुओं का (D) उद्यानसेविकाओं का

186. सोमतीर्थ जाते समय अतिथिसत्कार का दायित्व कण्व ने किसको दिया था –
(A) शिष्य शारद्वत को (B) गौतमी को
(C) शकुन्तला को (D) प्रियंवदा को

187. ''आश्रममृगोऽयं न हन्तव्यो न हन्तव्यः'' यह कथन किसने किससे कहा है –
(A) वैखानस ने दुष्यन्त से
(B) कण्व ने शकुन्तला से
(C) राजा ने सूत से
(D) शिष्य ने गुरु से

188. ''सर्वथा चक्रवर्तिनं पुत्रमाप्नुहि'' इस वाक्य से क्या निर्दिष्ट है –
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् के कथानक का प्रयोजन
(B) कालिदास को पुत्रप्राप्ति
(C) कुमार कार्तिकेय का जन्म
(D) दुष्यन्त का शकुन्तला से विवाह होना

189. दुष्यन्त तथा शकुन्तला का पुनर्मिलन किस अङ्क में होता है –
(A) चतुर्थ (B) तृतीय
(C) सप्तम (D) प्रथम

190. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के समालोचकों ने किसे ''निसर्गकन्या'' की उपाधि दी है –
(A) प्रियंवदा (B) शकुन्तला
(C) अनसूया (D) मेनका

191. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के किन अङ्कों में अनसूया एवं प्रियंवदा नहीं दिखलायी पड़ती हैं –
(A) प्रथम एवं षष्ठ अङ्को में
(B) द्वितीय एवं सप्तम अङ्क में
(C) तृतीय एवं सप्तम अङ्क में
(D) पञ्चम, षष्ठ एवं सप्तम अङ्कों में

192. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के किन अङ्कों में शकुन्तला की उपस्थिति नहीं है –
(A) द्वितीय एवं षष्ठ अङ्क में
(B) तृतीय एवं सप्तम अङ्क में
(C) पञ्चम एवं षष्ठ अङ्क में
(D) द्वितीय एवं चतुर्थ अङ्क में

193. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में महर्षि कण्व दिखलाई पड़ते है–
(A) सभी अङ्कों में (B) केवल चतुर्थ अङ्क में
(C) प्रथम अङ्क छोड़कर सभी अङ्कों में
(D) केवल चतुर्थ एवं पञ्चम अङ्क में

194. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में विदूषक (माधव्य) का वर्णन प्राप्त होता है –
(A) द्वितीय, पञ्चम एवं षष्ठ अङ्क में
(B) प्रथम एवं तृतीय अङ्क में
(C) द्वितीय एवं तृतीय अङ्क में
(D) द्वितीय एवं चतुर्थ अङ्क में

**181. (C) 182. (A) 183. (A) 184. (A) 185. (B) 186. (C) 187. (A) 188. (A) 189. (C) 190. (B)
191. (D) 192. (A) 193. (B) 194. (A)**

195. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में राजा की मनःस्थिति जानने के लिए मेनका की सखी सानुमती किस अङ्क में आती है –

(A) पञ्चम अङ्क में (B) षष्ठ अङ्क में
(C) सप्तम अङ्क में (D) इनमें से कोई नहीं

196. ''धर्मारण्यं प्रविशति.......स्यन्दनालोक भीतः'' रिक्तस्थान की पूर्ति करें –

(A) गजः (B) अश्वः
(C) ऋषिः (D) कण्वः

197. वह 'औषधिविशेष' जिसे मारीच ऋषि ने सर्वदमन के हाथ में बाँधी थी –

(A) सञ्जीवनी (B) अमृतवटी
(C) अपराजिता (D) विशल्यकरणी

198. ''वत्स, चिरञ्जीव पृथ्वीं पालय'' यह आशीर्वाद दुष्यन्त को किसने दिया –

(A) कण्व ने (B) महर्षि मारीच ने
(C) दुर्वासा ने (D) ऋषियों ने
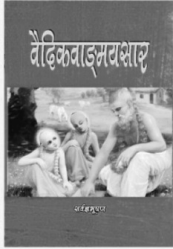
199. मारीच आश्रम में दुष्यन्त और शकुन्तला के पुनर्मिलन की बात महर्षि कण्व को किसने सूचित किया –

(A) गालव ने (B) सर्वदमन ने
(C) शार्ङ्गरव ने (D) गौतम ने

200. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के भरतवाक्य में छन्द है –

(A) मालिनी (B) रुचिरा
(C) वंशस्थ (D) आर्या

195. (B) 196. (A) 197. (C) 198. (B) 199. (A) 200. (B)

किरातार्जुनीयम् (वस्तुनिष्ठप्रश्नाः)

1. ''सहसा विदधीत न क्रियाम्'' यह किस कवि का प्रिय श्लोक है –
(A) भारवि (B) माघ
(C) कालिदास (D) भवभूति

2. भारवि किसके उपासक थे –
(A) ब्रह्मा (B) शिव
(C) विष्णु (D) सूर्य

3. बृहत्त्रयी में कौन सा महाकाव्य नहीं है –
(A) किरातार्जुनीयम् (B) शिशुपालवधम्
(C) रघुवंशमहाकाव्यम् (D) नैषधीयचरितम्

4. किरातार्जुनीयम् में कितने सर्ग हैं –
(A) 17 (B) 18
(C) 19 (D) 20

5. अर्थगौरव के लिए प्रसिद्ध हैं –
(A) कालिदास (B) दण्डी
(C) भारवि (D) माघ

6. ''न नो ननुन्नो नुन्नोनो नाना नानानना ननु'' यह श्लोक किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है –
(A) भारवि के किरातार्जुनीयम् से
(B) माघ के शिशुपालवधम् से
(C) कालिदास के रघुवंशम् से
(D) वाल्मीकि के रामायण से

7. ''व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवम्'' यह सूक्ति किसकी है –
(A) माघ (B) दण्डी
(C) भारवि (D) कालिदास

8. किस महाकाव्य के प्रथम तीन सर्गो को ''पाषाणत्रय'' कहा गया है –
(A) रघुवंशम् (B) किरातार्जुनीयम्
(C) नैषधीयचरितम् (D) कुमारसम्भवम्

9. भारवि का वास्तविक नाम था –
(A) रत्नाकर (B) श्रीधर
(C) दामोदर (D) नारायण स्वामी

10. किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में प्रमुख छन्द है –
(A) मालिनी (B) वंशस्थ
(C) वसन्ततिलका (D) पुष्पिताग्रा

11. किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग के अन्तिमश्लोक में छन्द है–
(A) वंशस्थ (B) पुष्पिताग्रा
(C) मालिनी (D) उपेन्द्रवज्रा

12. किरातार्जुनीयम् मङ्गलाचरण में छन्द प्रयुक्त है –
(A) मालिनी (B) वंशस्थ
(C) पुष्पिताग्रा (D) रुचिरा

13. पाण्डव वन में कितने वर्षों तक निवास किये –
(A) 14 वर्ष (B) 15 वर्ष
(C) 18 वर्ष (D) 13 वर्ष

14. किरातार्जुनीयम् का कथानक लिया गया है –
(A) महाभारत वनपर्व से (B) महाभारत आदिपर्व से
(C) महाभारत सभापर्व से (D) महाभारत भीष्मपर्व से

15. किरातार्जुनीयम् के प्रत्येक सर्ग के अन्त में कौन सा शब्द प्रयुक्त हुआ है –
(A) लक्ष्मीः (B) श्रीः
(C) सरस्वती (D) कुरूणाम्

16. ''आतपत्र'' किस कवि की उपाधि है –
(A) माघ (B) भारवि
(C) कालिदास (D) श्रीहर्ष

17. किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग में कुल कितने श्लोक हैं –
(A) 46 (B) 48
(C) 45 (D) 49

18. ''बृहत्त्रयी'' में कौन सा ग्रन्थ परिगणित है –
(A) रामायणम् (B) महाभारतम्
(C) किरातार्जुनीयम् (D) रघुवंशमहाकाव्यम्

19. भारवि का समय विद्वानों ने क्या माना है –
(A) 600 ई० के आसपास (B) 800 ई० के आसपास
(C) कालिदास के पहले (D) प्रथम शताब्दी के आसपास

1. (A)	2. (B)	3. (C)	4. (B)	5. (C)	6. (A)	7. (C)	8. (B)	9. (C)	10. (B)
11. (C)	12. (B)	13. (D)	14. (A)	15. (A)	16. (B)	17. (A)	18. (C)	19. (A)	

20. कवियों का उत्तरोत्तर सही कालक्रम माना जाता है–
(A) माघ-भारवि-श्रीहर्ष (B) भास-भारवि-अश्वघोष
(C) भास-माघ-कालिदास (D) वाल्मीकि-भास-भारवि

21. भारवि के बाद किसका समय माना जाता है –
(A) कालिदास का (B) माघ का
(C) व्यास का (D) भास का

22. भारवि, पूर्ववर्ती कवि माने जाते हैं –
(A) व्यास के (B) श्रीहर्ष के
(C) कालिदास के (D) अश्वघोष के

23. किरातार्जुनीयम् का मुख्य रस है –
(A) वीररस (B) शृंगाररस
(C) भयानक रस (D) इनमें से कोई नहीं

24. भारवि का प्रिय अलंकार है –
(A) उपमा (B) उत्प्रेक्षा
(C) रूपक (D) अर्थान्तरन्यास

25. पाण्डवों को अज्ञातवास करना पड़ा –
(A) दो वर्ष (B) एक वर्ष
(C) तेरह वर्ष (D) चौदह वर्ष

26. पाण्डवों ने वनवासकाल में निवास किया –
(A) तुलसीवन में (B) विन्ध्यवन में
(C) द्वैतवन में (D) नन्दनवन में

27. द्रौपदी युधिष्ठिर को किसके प्रति उकसाती है –
(A) भीम के प्रति (B) दुर्योधन के प्रति
(C) वनेचर के प्रति (D) कर्ण के प्रति

28. भारवि के काव्य में किस अलङ्कार की प्रमुखता है–
(A) रूपक अलंकार (B) उत्प्रेक्षा अलङ्कार
(C) उपमा अलंकार (D) चित्रालङ्कार

29. भारवि के पिता का नाम था –
(A) श्रीधर (B) महीधर
(C) लक्ष्मीधर (D) कृष्णधर

30. भारवि की माता थी –
(A) रसिका (B) सुशीला
(C) सुनीता (D) सुगीता

31. किरातार्जुनीयम् का पात्र नही है –
(A) भीम (B) दुर्योधन
(C) वनेचर (D) रघु

32. किरातार्जुनीयम् का पात्र है –
(A) दुष्यन्त (B) चारुदत्त
(C) युधिष्ठिर (D) बाली

33. किरातार्जुनीयम् किस विधा का काव्य है –
(A) नाटक (B) चम्पू
(C) आख्यायिका (D) महाकाव्य

34. भारवि की कविता पर प्रभाव पड़ा है –
(A) कालिदास का (B) माघ का
(C) भवभूति का (D) इनमें से किसी का नहीं

35. किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में किस नारी का उदात्त चरित्र वर्णित है –
(A) कुन्ती का (B) द्रौपदी का
(C) गान्धारी का (D) तारा का

36. वनवासकाल में कठोर भूमि में कौन सोते हैं –
(A) अर्जुन-वनेचर (B) नकुल-सहदेव
(C) युधिष्ठिर-कृष्ण (D) दुर्योधन-दुःशासन

37. किरातार्जुनीयम् का नायक है –
(A) अर्जुन (B) वनेचर
(C) दुर्योधन (D) युधिष्ठिर

38. वर्णिलिङ्गी कौन था –
(A) अर्जुन (B) वनेचर
(C) दुर्योधन (D) युधिष्ठिर

39. वनेचर हस्तिनापुर से लौटकर युधिष्ठिर से कहाँ मिला –
(A) विन्ध्यवन में (B) नन्दनवन में
(C) विराटवन में (D) द्वैतवन में

40. वनेचर हस्तिनापुर किस वेष में गया –
(A) राजा के वेष में (B) ब्रह्मचारी के वेश में
(C) मन्त्री के वेष में (D) किसान के वेश में

41. वनेचर हस्तिनापुर का समाचार जानकर किसके पास आता है –
(A) श्रीकृष्ण के पास (B) युधिष्ठिर के पास
(C) दुर्योधन के पास (D) द्रौपदी के पास

20. (D) 21. (B) 22. (B) 23. (A) 24. (D) 25. (B) 26. (C) 27. (B) 28. (D) 29. (A)
30. (B) 31. (D) 32. (C) 33. (D) 34. (A) 35. (B) 36. (B) 37. (A) 38. (B) 39. (D)
40. (B) 41. (B)

42. 'अवन्तिसुन्दरीकथा' के अनुसार भारवि रहने वाले थे –
(A) दक्षिणभारत के (B) उत्तरभारत के
(C) मध्यप्रदेश के (D) पूर्वीभारत के

43. भारवि की कुल कितनी रचनायें हैं –
(A) तीन (B) दो
(C) एक (D) सात

44. द्वैतवन में युधिष्ठिर के पास कौन आता है –
(A) दुर्योधन (B) भीष्म
(C) वनेचर (D) द्रोणाचार्य

45. द्रौपदी की चारित्रिक विशेषता नही है –
(A) वीरक्षत्राणी (B) कुशलराजनीतिज्ञा
(C) तेजस्विनी (D) कुलटा

46. किरातार्जुनीयम् के दुर्योधन को कहते हैं –
(A) सुयोधन (B) दुःशासन
(C) ज्येष्ठभ्राता (D) धनञ्जय

47. वनेचर की चारित्रिक विशेषता नही है –
(A) सच्चा हितैषी (B) स्पष्टवक्ता
(C) गुणवान् (D) नीच अहङ्कारी

48. किरातार्जुनीयम् का प्रारम्भ किस पद से होता है –
(A) श्रियः (B) लक्ष्मीः
(C) वनेचरः (D) कुरूणाम्

49. ''न हि प्रियं प्रवक्तुमिच्छन्ति मृषा हितैषिणः'' यह सूक्ति किस ग्रन्थ से उद्धृत है –
(A) शिशुपालवधम् से (B) किरातार्जुनीयम् से
(C) नैषधीयचरितम् से (D) रघुवंशम् से

50. ''विनिश्चितार्थामिति वाचमाददे'' यह वाक्य किसके लिए प्रयुक्त है –
(A) युधिष्ठिर के लिए (B) वनेचर के लिए
(C) दुर्योधन के लिए (D) द्रौपदी के लिए

51. ''वञ्चनीयाः'' पद में प्रत्यय है –
(A) तव्यत् (B) अनीयर्
(C) ल्यप् (D) तुमुन्।

52. 'शास्ति' में लकार, पुरुष और वचन है –
(A) लट्लकार प्रथम पुरुष एकवचन
(B) लृट्लकार, प्रथमपुरुष एकवचन
(C) लिट् लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन
(D) लोट्लकार, प्रथमपुरुष एकवचन

53. ''अतोर्हसि क्षन्तुमसाधु साधु वा'' में कौन किससे क्षमायाचना कर रहा है –
(A) दुर्योधन युधिष्ठिर से (B) वनेचर युधिष्ठिर से
(C) अर्जुन किरात से (D) द्रौपदी युधिष्ठिर से

54. 'न वञ्चनीयाः प्रभवोऽनुजीविभिः' यह कथन किसका है–
(A) वनेचर का युधिष्ठिर से
(B) द्रौपदी का युधिष्ठिर से
(C) युधिष्ठिर का वनेचर से
(D) सेवक का जनता से

55. ''हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः'' यह सूक्ति कहाँ की है –
(A) किरातार्जुनीयम् प्रथमसर्ग की
(B) शिशुपालवधम् प्रथमसर्ग की
(C) रघुवंशमहाकाव्यम् प्रथमसर्ग की
(D) नैषधीयचरितम् प्रथमसर्ग की

56. ''स किं सखा साधु न शास्ति योऽधिपम्'' इसे किसने कहा –
(A) युधिष्ठिर ने (B) दुर्योधन ने
(C) वनेचर ने (D) द्रौपदी ने

57. ''नयेन जेतुं जगतीं सुयोधनः'' यहाँ 'सुयोधन' पद प्रयुक्त है –
(A) भारवि के लिए (B) श्रीकृष्ण के लिए
(C) दुर्योधन के लिए (D) युधिष्ठिर के लिए

58. ''वितन्यते तेन नयेन पौरुषम्'' में किसके द्वारा अपने पुरुषार्थों का विस्तार किया जा रहा है –
(A) युधिष्ठिर के द्वारा (B) दुर्योधन के द्वारा
(C) वनेचर के द्वारा (D) भीम के द्वारा

59. ''निहन्ति दण्डेन स धर्मविप्लवम्'' किसके लिए कहा गया है –
(A) दुर्योधन (B) युधिष्ठिर
(C) वनेचर (D) द्रौपदी

42. (A)	**43.** (C)	**44.** (C)	**45.** (D)	**46.** (A)	**47.** (D)	**48.** (A)	**49.** (B)	**50.** (B)
51. (B)	**52.** (A)	**53.** (B)	**54.** (A)	**55.** (A)	**56.** (C)	**57.** (C)	**58.** (B)	**59.** (A)

60. ''प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः'' कौन किससे कह रहा है।
(A) वनेचर-द्रौपदी से (B) वनेचर-युधिष्ठिर से
(C) द्रौपदी-युधिष्ठिर से (D) इनमें से कोई नहीं

61. ''भवादृशेषु प्रमदाजनोदितं भवत्यधिक्षेप इवानुशासनम्'' कौन किससे कहता है –
(A) वनेचर-युधिष्ठिर से (B) वनेचर-दुर्योधन से
(C) द्रौपदी-युधिष्ठिर से (D) दुर्वासा-शकुन्तला से

62. ''व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवम्'' किसको सम्बोधित करके कहा गया है –
(A) युधिष्ठिर को (B) वनेचर को
(C) द्रौपदी को (D) दुर्योधन को

63. ''परिभ्रमँल्लोहितचन्दनोचितः'' इसमें द्रौपदी किसकी दुर्दशा का वर्णन करती है –
(A) युधिष्ठिर की (B) दुर्योधन की
(C) वनेचर की (D) भीम की

64. ''दुनोति नो कच्चिदयं वृकोदरः'' यहाँ 'वृकोदरः' पद किसके लिए प्रयुक्त है –
(A) युधिष्ठिर के लिए (B) भीम के लिए
(C) दुर्योधन के लिए (D) वनेचर के लिए

65. वनवासकाल में अर्जुन जङ्गल से क्या लाकर युधिष्ठिर को प्रदान करते हैं –
(A) स्वर्ण (B) चाँदी
(C) धन (D) वल्कलवस्त्र

66. किरातार्जुनीयम् में 'युगलभ्राता' के रूप में वर्णन है–
(A) भीम-अर्जुन (B) दुर्योधन-दुःशासन
(C) नकुल-सहदेव (D) वनेचर-युधिष्ठिर

67. ''क्रियासु युक्तैर्नृप चारचक्षुषो न..... प्रभवोऽनु-जीविभिः'' रिक्तस्थान की पूर्ति करें –
(A) रक्षणीयाः (B) वञ्चनीयाः
(C) प्रेषणीयाः (D) पालनीयाः

68. किरातार्जुनीयम् की सूक्ति नही है –
(A) हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः
(B) प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः
(C) विचित्ररूपाः खलु चित्तवृत्तयः
(D) भवन्ति नम्रास्तरवः फलोद्गमैः

69. ''प्रविश्य हि घ्नन्ति शठास्तथाविधान्'' यहाँ 'घ्नन्ति' पद में धातु है –
(A) घन् (B) हन्
(C) नन् (D) नी

70. 'परिभ्रमन्' पद में प्रत्यय है –
(A) शतृ (B) शानच्
(C) ल्युट् (D) घञ्

71. ''भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः'' किसने किससे कहा –
(A) भीम ने धृतराष्ट्र से (B) वनेचर ने युधिष्ठिर से
(C) द्रौपदी ने युधिष्ठिर से (D) वनेचर ने दुर्योधन से

72. ''कृतप्रणामस्य महीं महीभुजे'' यहाँ 'महीभुजे' पद में विभक्ति है –
(A) सप्तमी (B) चतुर्थी
(C) तृतीया (D) पञ्चमी

73. किरातार्जुनीयम् में 'किरात' शब्द किसका बोधक है –
(A) भीम का (B) शिव का
(C) अर्जुन का (D) दुर्योधन का

74. ''कुरूणामधिपः'' का तात्पर्य है –
(A) दुर्योधन (B) श्रीकृष्ण
(C) अर्जुन (D) वनेचर

75. वनेचर की बातें सुनने के बाद युधिष्ठिर कहाँ पहुँचे–
(A) द्रौपदी के पास (B) व्यास के पास
(C) श्रीकृष्ण के पास (D) दुर्योधन के पास।

76. दुर्योधन की शासनव्यवस्था जानने के लिए हस्तिनापुर किसे भेजा गया था –
(A) वनेचर को (B) भीम को
(C) नकुल को (D) किसी को नहीं

77. किरातार्जुनीयम् में अर्जुन को शिव से कौन सा अस्त्र प्राप्त हुआ था –
(A) पाशुपतास्त्र (B) आग्नेयास्त्र
(C) वायव्यास्त्र (D) ब्रह्मास्त्र

78. ''निगूढतत्त्वं नयवर्त्म विद्विषाम्'' यह उक्ति किसकी है–
(A) वनवासी यक्ष की (B) वनेचर की
(C) युधिष्ठिर की (D) द्रौपदी की

60. (B)	**61. (C)**	**62. (A)**	**63. (D)**	**64. (B)**	**65. (D)**	**66. (C)**	**67. (B)**	**68. (D)**	**69. (B)**
70. (A)	**71. (C)**	**72. (B)**	**73. (B)**	**74. (A)**	**75. (A)**	**76. (A)**	**77. (A)**	**78. (B)**	

79. 'वनेचर' किस ग्रन्थ का पात्र है –
(A) उत्तररामचरितम् (B) कादम्बरी
(C) शिशुपालवधम् (D) किरातार्जुनीयम्

80. किरातार्जुनीयम् में संवाद नहीं है –
(A) युधिष्ठिर-व्यास का (B) वनेचर-युधिष्ठिर का
(C) इन्द्र और अर्जुन का (D) सिंह और दिलीप का

81. भारवि का जन्म स्थान है –
(A) दक्षिणभारत का ज्ञानपुर
(B) दक्षिणभारत का अचलपुर
(C) पूर्वीभारत का सीतापुर
(D) मध्यभारत का शिवपुर

82. किरातार्जुनीयम् में कुशलगुप्तचर के रूप में चित्रित है –
(A) दुर्योधन (B) युधिष्ठिर
(C) वनचेर (D) द्रौपदी

83. किरातार्जुनीयम् निबद्ध है –
(A) अध्यायों में (B) सर्गों में
(C) काण्डों में (D) अङ्कों में

84. किरातार्जुनीयम् (प्रथम सर्ग) में किस पात्र का नाम नही आता है–
(A) वनेचर (B) द्रौपदी
(C) सुयोधन (D) श्रीकृष्ण

85. वनेचर युधिष्ठिर से कहाँ का समाचार बताता है –
(A) हस्तिनापुर के कर्ण का
(B) इन्द्रप्रस्थ के राजा का
(C) हस्तिनापुर के दुर्योधन का
(D) वनाधिराज सिंह का

86. किरातार्जुनीयम् का पात्र नही है –
(A) द्रौपदी (B) युधिष्ठिर
(C) सुयोधन (D) मुरला

87. किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग का आरम्भिक वक्ता है–
(A) वनेचर (B) श्रीकृष्ण
(C) भीम (D) दुर्योधन

88. वनेचर ने हस्तिनापुर का समाचार किससे कहा –
(A) भीम से (B) द्रौपदी से
(C) युधिष्ठिर से (D) अर्जुन से

89. भारवि किरातार्जुनीयम् का मङ्गलाचरण किस पद से करते हैं –
(A) 'श्री' से (B) 'लक्ष्मी' से
(C) 'ॐ' से (D) 'श्रीकृष्ण' से

90. भीम अपने शरीर पर लेपन करते थे –
(A) कमलरस का (B) लालचन्दन का
(C) पीले चन्दन का (D) सुगन्धित इत्र का

91. किरातार्जुनीयमहाकाव्य में कुल श्लोकों की संख्या हैं–
(A) 1050 (B) 1250
(C) 1030 (D) 1150

92. भारवि का आश्रयदाता राजा था –
(A) श्रीहर्ष (B) विक्रमादित्य
(C) पुलकेशिन का भाई विष्णुवर्धन (D) समुद्रगुप्त

93. ''नारिकेलफलसम्मितं वचः'' सूक्ति किस कवि के लिए है–
(A) श्रीहर्ष (B) माघ
(C) भारवि (D) दण्डी

94. ''वनेचरः'' में कौन सा प्रत्यय है –
(A) घञ् प्रत्यय (B) ट प्रत्यय
(C) अण् प्रत्यय (D) णिनि प्रत्यय

95. ''शमेन सिद्धिं मुनयो न भूभृतः'' यह कथन किसका है –
(A) द्रौपदी का (B) युधिष्ठिर का
(C) वनेचर का (D) दुर्योधन का

96. ''द्विषां विघाताय विधातुमिच्छतः'' के 'विघाताय' पद में धातु है –
(A) घ्रा (B) हन्
(C) विघ् (D) घात्

97. अर्जुन ने किस पर्वत पर तपस्या की –
(A) रैवतक (B) इन्द्रकील
(C) विन्ध्याचल (D) चित्रकूट

98. ''किरातश्च अर्जुनश्च'' यहाँ कौन सा समास है –
(A) द्विगु (B) द्वन्द्व
(C) तत्पुरुष (D) बहुव्रीहि

99. किरातार्जुनीयम् में प्रत्यय है –
(A) ढक् (B) छ
(C) अच् (D) घ

100. शिशुपालवधम् का उपजीव्य है –
(A) महाभारत आदिपर्व (B) महाभारत सभापर्व
(C) महाभारत वनपर्व (D) महाभारत शान्तिपर्व

79. (D)	**80.** (D)	**81.** (B)	**82.** (C)	**83.** (B)	**84.** (D)	**85.** (C)	**86.** (D)	**87.** (A)	**88.** (C)
89. (A)	**90.** (B)	**91.** (C)	**92.** (C)	**93.** (C)	**94.** (B)	**95.** (A)	**96.** (B)	**97.** (B)	**98.** (B)
99. (B)	**100.** (B)								

नीतिशतकम् (वस्तुनिष्ठप्रश्नाः)

1. विक्रमसंवत् के प्रवर्तक महाराज विक्रमादित्य का ज्येष्ठ भाई माना जाता है–
(A) भवभूति को (B) भर्तृमेण्ठ को
(C) भट्टि को (D) भर्तृहरि को

2. राजा भर्तृहरि की प्रेमिका (पत्नी) मानी जाती है–
(A) अञ्चला (B) पिङ्गला
(C) मङ्गला (D) चञ्चला

3. भर्तृहरि की रचना मानी जाती है–
(A) वैराग्यशतकम् (B) शृङ्गारशतकम्
(C) नीतिशतकम् (D) उपर्युक्त तीनों

4. 'शतकत्रय' में परिगणित हैं–
(A) शृंङ्गारशतकम्, वैराग्यशतकम्, नीतिसारम्
(B) वैराग्यशतकम्, नीतिसारशतकम्, शृङ्गारशतकम्
(C) शृङ्गारशतकम्, नीतिशतकम्, वैराग्यशतकम्
(D) उपर्युक्त तीनों।

5. भर्तृहरि के पिता माने जाते हैं–
(A) मित्रसेन (B) गन्धर्वसेन
(C) चित्रसेन (D) चित्रभानु

6. महाकवि भर्तृहरि की अन्तिम रचना मानी जाती है–
(A) शृङ्गारशतकम् (B) नीतिशतकम्
(C) वैराग्यसारम् (D) वैराग्यशतकम्

7. नीतिशतक की श्लोक संख्या मानी जाती है–
(A) लगभग 130 (B) लगभग 150
(C) लगभग 111 (D) लगभग 100 से कुछ कम

8. नीतिशतक किस काव्यपरम्परा का ग्रन्थ माना जाता है–
(A) महाकाव्य (B) खण्डकाव्य
(C) मुक्तककाव्य (D) चम्पूकाव्य

9. भर्तृहरि वस्तुतः किस रीति के कवि माने जाते हैं–
(A) पाञ्चाली रीति (B) वैदर्भी रीति
(C) अलङ्कृतकाव्यशैली (D) इनमें कोई नहीं

10. ''नानाफलं फलति कल्पलतेवभूमिः'' इस काव्यांश में अलङ्कार है–
(A) यमक (B) उत्प्रेक्षा
(C) उपमा (D) अर्थान्तरन्यास

11. ''राजन् दुधुक्षसि यदि क्षितिधेनुमेनाम्'' यहाँ ''क्षितिधेनुम्'' पद में अलङ्कार है–
(A) यमक (B) श्लेष
(C) रूपक (D) इनमें से कोई नहीं

12. ''धिक् तां च तं च मदनं च इमां च मां च'' इस वाक्यांश में 'माम्' पद से किसका संकेत किया गया है–
(A) विक्रमादित्य का (B) महामन्त्री का
(C) मदन कामदेव का (D) कवि भर्तृहरि का

13. ''यं यं पश्यसि तस्य तस्य पुरतो मा ब्रूहि दीनं वचः'' इस पंक्ति के माध्यम से कवि किसको समझा रहा है–
(A) मेघों को (B) आकाश को
(C) चातकमित्र को (D) वसुधा को

14. भर्तृहरि का सबसे प्रिय छन्द है–
(A) वसन्ततिलका (B) शिखरिणी
(C) शार्दूलविक्रीडितम् (D) द्रुतविलम्बितम्

15. ''विभूषणं मौनमपण्डितानाम्'' प्रस्तुत सूक्ति किस ग्रन्थ से उद्धृत है–
(A) शृङ्गारशतकम् से (B) नीतिशतकम् से
(C) वैराग्यशतकम् से (D) इनमें से कोई नहीं

16. भर्तृहरि के नीतिशतकम् के मङ्गलाचरण में किस देव की स्तुति है–
(A) विधाता ब्रह्मा की (B) शङ्कर की
(C) दिक्कालादि की (D) ब्रह्म की

1. (D)	**2.** (B)	**3.** (D)	**4.** (C)	**5.** (B)	**6.** (D)	**7.** (C)	**8.** (C)	**9.** (B)	**10.** (C)
11. (C)	**12.** (D)	**13.** (C)	**14.** (C)	**15.** (B)	**16.** (D)				

17. नीतिशतक के मङ्गलाचरण में छन्द है–
(A) आर्या (B) उपजाति
(C) शालिनी (D) अनुष्टुप्

18. ''लभेत सिकतासु तैलम्'' यहाँ 'सिकता' पद का अर्थ है–
(A) पत्थर (B) लोहा
(C) बालू (D) जल

19. ''व्यालं बालमृणालतन्तुभिरसौ'' यहाँ 'व्यालम्' पद का अर्थ है–
(A) दुष्टगज (B) हिरन
(C) व्याघ्र (D) शिकारी

20. ''नहि गणयति क्षुद्रो जन्तुः परिग्रहफल्गुताम्'' यहाँ 'फल्गुता' पद का अर्थ है–
(A) असारता (B) तुच्छता
(C) निःसारता (D) उपर्युक्त तीनों

21. ''हुतभुक्'' पद का शब्दार्थ होगा–
(A) जल (B) अग्नि
(C) आहुति (D) हवनसामग्री

22. ''भवन्ति नम्रास्तरवः फलोद्‌गमैः' यह श्लोक प्राप्त होता है–
(A) नीतिशतकम् में (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में
(C) दोनों में (D) किसी में नही

23. ''भाग्यानि पूर्वतपसा खलु सञ्चितानि, काले फलन्ति पुरुषस्य यथैव वृक्षाः'' इस पंक्ति का वक्ता है–
(A) भर्तृमेण्ठ (B) भट्टनारायण
(C) भवभूति (D) भर्तृहरि

24. ''नेता यस्य बृहस्पतिः'' यहाँ 'यस्य' पद से किसका संकेत किया गया है–
(A) इन्द्र का (B) कुबेर का
(C) रावण का (D) उपर्युक्त सभी का

25. 'न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः' यह सूक्ति उदधृत है–
(A) नीतिचरितम् से (B) नीतिसारसंग्रह से
(C) नीतिशतकम् से (D) नीतिवचनम् से

26. ''प्रारब्धमुत्तमजनाः न परित्यजन्ति'' किसका कथन है–
(A) रावण का (B) भर्तृमेण्ठ का
(C) भवभूति का (D) भर्तृहरि का

27. ''निजहृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः'' यहाँ क्रियापद है–
(A) सन्तः (B) सन्ति
(C) कियन्तः (D) विकसन्तः

28. ''यद्धात्रा निजभालपट्टलिखितम्'' यहाँ 'धात्रा' पद में विभक्ति एवं वचन है–
(A) प्रथमा एकवचन (B) द्वितीया एकवचन
(C) तृतीया एकवचन (D) षष्ठी एकवचन

29. ''गर्जन्ति केचित् वृथा'' यहाँ 'गर्जन्ति' पद का कर्ता है–
(A) सिंहाः (B) अम्भोदाः
(C) गजाः (D) चातकाः

30. 'मा ब्रूहि दीनं वचः' यहां 'ब्रूहि' पद में धातु एवं लकार है–
(A) ब्रृ लोट् म0पु0 एक0
(B) ब्रू लट् म0प्र0 एक0
(C) ब्रू लोट् म0पु0 एक0
(D) ब्रूह् लोट् प्र0पु0 एक0

31. 'शुचौ कैतवम्' में 'कैतवम्' पद का शब्दार्थ है–
(A) कपट (B) निश्छल
(C) पवित्र (D) सज्जन

32. ''पिशुनता यद्यस्ति किं पातकैः'' इस वाक्यांश में 'पिशुनता' पद का अर्थ है–
(A) चुगुलखोरी (B) चोरी
(C) स्त्रीचरित्र (D) पाप की गठरी

33. 'भूभुजाम्' पद में विभक्ति/वचन है–
(A) द्वितीया एकवचन
(B) प्रथमा, एकवचन
(C) षष्ठी, बहुवचन
(D) सप्तमी, एकवचन

17. (D)	**18. (C)**	**19. (A)**	**20. (D)**	**21. (B)**	**22. (C)**	**23. (D)**	**24. (A)**	**25. (C)**	**26. (D)**
27. (B)	**28. (C)**	**29. (B)**	**30. (C)**	**31. (A)**	**32. (A)**	**33. (C)**			

34. ''छायेव मैत्री खलसज्जनानाम्'' यहाँ अलङ्कार है–
(A) रूपक (B) उपमा
(C) यमक (D) उत्प्रेक्षा

35. ''सतां केनोद्दिष्टं विषममसिधाराव्रतमिदम्'' इस श्लोकांश में छन्द है–
(A) शिखरिणी (B) मन्दाक्रान्ता
(C) शार्दूलविक्रीडितम् (D) हरिणी

36. ''एका नारी सुन्दरी वा दरी वा'' यहाँ 'दरी' पद का अर्थ है–
(A) कुरूप (B) गुफा
(C) बिछौना (D) निवासस्थान

37. भर्तृहरि के गुरू माने जाते हैं–
(A) गोवर्धन (B) गोरखनाथ
(C) गयानाथ (D) गन्धर्वसेन

38. 'सङ्गतिः' में प्रत्यय है–
(A) अण् (B) क्त
(C) क्तिन् (D) ङीष्

39. नीतिशतककार के अनुसार सभा में किस उपाय के द्वारा मूर्ख अपनी मूर्खता को छिपा सकता है
(A) विचार पूर्वक बोलकर (B) कम बोलकर
(C) चुप रहकर (D) हँस कर हँसा कर

40. ''मूर्ध्नि वा सर्वलोकस्य'' श्लोकांश में 'मूर्ध्नि' का अर्थ है–
(A) आगे (B) पीछे
(C) नीचे (D) ऊपर

41. प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन कैः?
(A) जनैः (B) बालैः
(C) नीचैः (D) सज्जनैः

42. 'ये परहितं स्वार्थाय निघ्नन्ति' नीतिशतक के अनुसार वे लोग हैं–
(A) उत्तमाः (B) मानुषराक्षसाः
(C) सामान्याः (D) सत्पुरुषाः

43. पर्वत के पंख किसने काटे?
(A) इन्द्र ने (B) विष्णु ने
(C) शिव ने (D) ब्रह्मा ने

44. ''नास्त्युद्यमसमो.....'' रिक्तस्थान की पूर्ति करें–
(A) मित्रम् (B) रिपुः
(C) बन्धुः (D) कर्म

45. 'विद्याविहीनः' होते हैं–
(A) गौः (B) अश्वः
(C) पशुः (D) हस्ती

46. शतकत्रय के रचयिता हैं–
(A) भट्टि (B) भर्तृहरि
(C) अमरुक (D) भवभूति

47. भर्तृहरि किस देश के राजा थे–
(A) गोरखपुर के (B) मालवदेश के
(C) महाराष्ट्र के (D) प्रयाग के

48. 'शतकत्रय' के रचनाकार ने और किस प्रसिद्धग्रन्थ की रचना की थी–
(A) अष्टाध्यायी की (B) महाभाष्यम् की
(C) वाक्यपदीयम् की (D) वैयाकरणभूषणसार की

49. जहाँ अर्थ की दृष्टि से प्रत्येक श्लोक स्वतन्त्र होता है, वह है–
(A) महाकाव्य (B) खण्डकाव्य
(C) चम्पूकाव्य (D) मुक्तककाव्य

50. व्यक्ति धन प्राप्त करता है–
(A) अपने भाग्य से (B) अपने दुष्कर्मों से
(C) वरदान से (D) गुरुकृपा से

51. किसके चित्त को बदला नहीं जा सकता–
(A) सज्जनों के (B) भक्तों के
(C) मूर्ख के (D) योगी के

52. सान (कसौटी) पर तराशी गई मणि–
(A) नष्ट होती है (B) शोभा को प्राप्त होती है
(C) मलिन हो जाती है (D) कुछ नही होती

53. मदक्षीण हाथी–
(A) बलवान् होता है
(B) मोटा हो जाता है
(C) रङ्ग परिवर्तित हो जाता है
(D) सुशोभित होता है

34. (B)	35. (A)	36. (B)	37. (B)	38. (C)	39. (C)	40. (D)	41. (C)	42. (B)	43. (A)
44. (C)	45. (C)	46. (B)	47. (B)	48. (C)	49. (D)	50. (A)	51. (C)	52. (B)	53. (D)

54. मनस्वियों की वृत्ति किसके समान होती है?
(A) सूर्य के समान (B) देवराज इन्द्र के समान
(C) फूलों के समान (D) पृथ्वी के समान

55. धन की गतियाँ होती है–
(A) तीन (B) दो
(C) चार (D) असंख्य

56. भर्तृहरि के अनुसार सभी गुण आश्रय लेते हैं–
(A) साहस का (B) धन का
(C) सज्जन का (D) कर्म का

57. कुल का नाश हो जाता है–
(A) सुपुत्र से (B) कर्म से
(C) कुपुत्र से (D) पुत्रियों से

58. सैकड़ों प्रकार की चाटुकारिता से खाता है–
(A) कुत्ता (B) मनुष्य
(C) निर्धन (D) हाथी

59. कुत्ता भोजन देने वाले के सामने क्या करता है–
(A) पूँछ हिलाता है (B) गुर्राता है
(C) भौंकने लगता है (D) काट लेता है

60. 'कठिन असिधाराव्रत' किसको कहा गया है?
(A) धन को (B) विद्या को
(C) तलवार की धार को (D) सेवा को

61. 'नीतिशतकम्' का मङ्गलाचरण है–
(A) आशीर्वादात्मक (B) नमस्कारात्मक
(C) वस्तुनिर्देशात्मक (D) इनमें से कोई नहीं

62. सदा रहने वाला आभूषण है–
(A) बाजूबन्द
(B) चन्द्रमा जैसा स्वच्छ मोतियों का हार
(C) विधिवत् स्नान
(D) सुसंस्कृता वाणीरूपी आभूषण

63. परिवर्तनशील संसार में जीवन सार्थक होता है–
(A) जो अपने लिए कमाता है
(B) जो सभी के लिए कमाता है
(C) जो अपने वंश (राष्ट्र) की उन्नति करता है
(D) जो दूसरों की उन्नति को सहन नहीं करता है।

64. मनुष्य हाथी के समान मदान्ध कब हो जाता है–
(A) जब सुरापान कर लेता है।
(B) जब धनिकों के सम्पर्क में आता है।
(C) जब थोड़ा ज्ञान पा लेता है।
(D) जब कार्य में सफल हो जाता है।

65. मनुष्य का सर्वज्ञ होने का ज्वर कब उतरता है–
(A) जब कुछ विद्वानों के सम्पर्क में आता है
(B) जब उसे सभा में जाना पड़ता है
(C) जब असफलता मिलती है
(D) जब कार्य करता है

66. नीतिशतक में वर्णन है–
(A) धर्म का (B) नीति का
(C) राजा का (D) पशुओं का

67. 'चाणक्यनीति' के लेखक हैं–
(A) भवभूति (B) भारवि
(C) कौटिल्य (चाणक्य) (D) भर्तृमेण्ठ

68. 'शतकत्रय' में सम्मिलित नहीं है–
(A) नीतिशतक (B) वैराग्यशतक
(C) अमरुकशतक (D) शृङ्गारशतक

69. किस विद्वान् के अनुसार भर्तृहरि को बौद्ध कहा जाता है–
(A) डॉ कीथ (B) मैक्समूलर
(C) ब्रील (D) ईत्सिंग

70. भर्तृहरि लेखक नहीं माने जाते हैं–
(A) नीतिशतकम् के (B) वाक्यपदीयम् के
(C) वैराग्यशतकम् के (D) काव्यालङ्कार के

71. 'वाक्यपदीयम्' और 'नीतिशतकम्' के मङ्गलाचरण की तुलना से ज्ञात होता है कि भर्तृहरि–
(A) शिव के उपासक थे
(B) वेदान्तोक्त ब्रह्म के उपासक थे
(C) विष्णु के उपासक थे
(D) इनमें से कोई नहीं।

72. भर्तृहरि ने अपने शतकों में वर्णन नहीं किया–
(A) आचार शिक्षा का (B) सज्जन प्रशंसा का
(C) युद्ध वर्णन का (D) स्त्रियों की रमणीयता का

54. (C)	**55. (A)**	**56. (B)**	**57. (C)**	**58. (D)**	**59. (A)**	**60. (D)**	**61. (B)**	**62. (D)**	**63. (C)**
64. (C)	**65. (A)**	**66. (B)**	**67. (C)**	**68. (C)**	**69. (D)**	**70. (D)**	**71. (B)**	**72. (C)**	

73. ''निजहृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः'' सूक्ति उद्धृत है–
(A) नीतिसारम् से (B) शृङ्गारशतकम् से
(C) वैराग्यशतकम् से (D) नीतिशतकम् से

74. ''बोद्धारो मत्सरग्रस्ताः प्रभवः स्मयदूषिताः'' यह पंक्ति नीतिशतक की किस पद्धति से उदधृत है–
(A) दुर्जनपद्धति से (B) मूर्खपद्धति से
(C) मानशौर्यपद्धति से (D) परोपकारपद्धति से

75. ''अज्ञः सुखमाराध्यः सुखतरमाराध्यते विशेषज्ञः'' पंक्ति में 'अज्ञः' पद का अर्थ है–
(A) विद्वान् (B) अज्ञानी
(C) सज्जन (D) इनमें से कोई नहीं

76. ''न तु प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्तमाराधयेत्'' यहाँ 'आराधयेत्' पद में लकार है–
(A) लोट् (B) विधिलिङ्
(C) लृट् (D) लङ्

77. ''ब्रह्माऽपि नरं न रञ्जयति'' यह कैसे व्यक्ति के लिए कहा गया है–
(A) विद्वान् के लिए (B) मानी के लिए
(C) परोपकारी के लिए (D) मूर्ख के लिए

78. प्रयत्नपूर्वक पीसता हुआ कोई व्यक्ति बालू के कणों से भी कभी तेल प्राप्त कर सकता है लेकिन–
(A) धन प्राप्त नहीं कर सकता
(B) सम्मान प्राप्त नहीं कर सकता
(C) यश प्राप्त नहीं कर सकता
(D) दुराग्रही मूर्खजन के चित्त को वश में नहीं कर सकता।

79. थोड़े से ज्ञान से स्वयं को पण्डित मानने वाले मनुष्य को नही समझा सकते–
(A) गणेश (B) ब्रह्मा
(C) विष्णु (D) महेश

80. अपनी अज्ञता को छिपाने के लिए मूढ़जनों का एकमात्र उपाय है–
(A) हास्यावलम्बन (B) क्रोधावलम्बन
(C) मौनावलम्बन (D) प्रगल्भावलम्बन

81. मेरी विद्वत्ता का मद–
(A) ज्वर की भाँति उतर गया
(B) ज्वार भाँटे की तरह उतर गया
(C) बाढ़ की भाँति उतर गया
(D) इनमें से कोई नहीं

82. विवेकभ्रष्ट व्यक्तियों का–
(A) अनेक प्रकार से पतन हो जाता है
(B) धन बढ़ जाता है
(C) मान बढ़ जाता है
(D) इनमें से कोई नहीं

83. राजा प्रशंसा प्राप्त करता है–
(A) विद्वानों को अपने राज्य से निर्वासित करके
(B) विद्वानों का सम्मान करके
(C) विद्वानों को माला पहना के
(D) विद्वानों से वार्तालाप करके

84. शत्रुओं के प्रति श्रेयस्कर है–
(A) उनका सहयोग करना
(B) उनका सम्मान करना
(C) उनके कल्याण की कामना करना
(D) वीरता प्रदर्शित करना।

85. ऐसे राजा का विश्वास नहीं करना चाहिए–
(A) जो सज्जन हो (B) जो विद्वान् हो
(C) जो क्रोधी हो (D) जो दयालु हो।

86. स्त्रीजनों के प्रति–
(A) प्रगल्भतापूर्वक व्यवहार करना चाहिए
(B) क्रोधप्रदर्शन करना चाहिए
(C) अपमानपूर्वक व्यवहार करना चाहिए
(C) असहिष्णुतापूर्ण व्यवहार करना चाहिए।

87. गुरुजनों के विषय में–
(A) क्रुद्ध होना चाहिए
(B) अनादर भाव होना चाहिए
(C) क्षमाशीलता और सहिष्णुता होनी चाहिए
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

73. (D) **74.** (B) **75.** (B) **76.** (B) **77.** (D) **78.** (D) **79.** (B) **80.** (C) **81.** (A) **82.** (A)
83. (B) **84.** (D) **85.** (C) **86.** (A) **87.** (C)

88. विद्याधन प्रदान करता है–
(A) सर्वत्र सम्मान समादर
(B) विद्यार्थियों को उत्कृष्ट अभ्युदय
(C) अनिर्वचनीय सुख
(D) उपर्युक्त सभी तत्व

89. परोपकारियों का स्वभाव–
(A) ईर्ष्यालु होता है
(B) अति नम्र होता है
(C) परसम्पत्ति की इच्छा करते हैं
(D) स्वार्थ में लगे रहते हैं।

90. सज्जन की चारित्रिक विशेषता है–
(A) अनुदारता (B) साभिमानिता
(C) स्वाभिमानिता (D) परोपकाराभावः

91. उत्तम व्यक्ति वही है जो–
(A) स्वार्थसिद्धि के साथ-साथ परहित साधन के लिए भी उद्योगशील होते हैं।
(B) जो दूसरे के कार्य में यदा-कदा व्यवधान पैदा नही करते हैं
(C) जो अपना भला चाहते हैं।
(D) इनमें से कोई नहीं।

92. ''वाराङ्गनेव नृपनीतिरनेक.......'' रिक्तस्थान की पूर्ति करें–
(A) भूपा (B) रूपा
(C) रुपाम् (D) स्वरूपा

93. 'विरहितः' इस पद का अर्थ होगा–
(A) वीर हित (B) विरहाग्नि
(C) वीर रस (D) अभाव

94. ''यस्यास्ति वित्तं स नरः कुलीनः, स पण्डितः स श्रुतवान् गुणज्ञः' इस श्लोक में छन्द है–
(A) अनुष्टुप् (B) उपजाति
(C) वंशस्थ (D) मन्दाक्रान्ता

95. नीतिशतक में विषय वर्णन के अनुसार पद्धतियाँ हैं–
(A) 12 (B) 16
(C) 18 (D) 11

96. 'शालिनी' छन्द के प्रत्येक चरण में वर्ण होते हैं–
(A) 9 (B) 17
(C) 11 (D) 12

97. ''रे रे चातक सावधानमनसा.....'' इस श्लोक का भावार्थ है–
(A) अपनी दीनता को प्रकट करना
(B) दीनता को बार बार कहना
(C) कभी कभी दीनता प्रगट करना
(D) हर किसी के सामने दीनता प्रगट न करना

98. ''एते सत्पुरुषाः परार्थघटकाः......ते के न जानीमहे'' नीतिशतकम् के इस श्लोक द्वारा मनुष्यों की श्रेणियाँ हैं–
(A) 3 (B) 2
(C) 4 (D) 5

99. 'सत्यानृता' में सन्धि है–
(A) यण् (B) अयादि
(C) दीर्घ (D) प्रकृतिभाव

100. ''अम्भोजिनीवनविहारविलासमेव'' में 'विहार' पद में धातु, प्रत्यय, एवं उपसर्ग है–
(A) वि + ह + ढक् (B) वि + हृ + घञ्
(C) वि – ह्य + ठक् (D) वि + हृ + अण्

88. (D) **89.** (B) **90.** (C) **91.** (A) **92.** (B) **93.** (D) **94.** (B) **95.** (D) **96.** (C) **97.** (D)
98. (C) **99.** (C) **100.** (B)

उत्तररामचरितम् (वस्तुनिष्ठप्रश्नाः)

1. 'एको रसः करुण एव निमित्तभेदात्'' यह कथन किसका है–
(A) भास का (B) भारवि का
(C) भवभूति का (D) भर्तृहरि का

2. ''स च कुलपतिराद्यश्छन्दसां यः प्रयोक्ता' में 'कुलपति' पद से किसका निर्देश किया गया है–
(A) भवभूति का (B) वशिष्ठ का
(C) अगस्त्य का (D) वाल्मीकि का

3. उत्तररामचरितम् में कुल श्लोक संख्या मानी जाती है–
(A) 244 (B) 266
(C) 256 (D) 334

4. अनुष्टुप् के बाद भवभूति का प्रिय छन्द है–
(A) शिखरिणी (B) मन्दाक्रान्ता
(C) शार्दूलविक्रीडितम् (D) मालिनी

5. वशिष्ठ की पत्नी है–
(A) लोपामुद्रा (B) सुनयना
(C) भागीरथी (D) अरुन्धती

6. 'अमरसिन्धुः' पद का क्या अर्थ है–
(A) अमृतसमुद्रः (B) भागीरथी
(C) यमुना (D) पृथिवी

7. उत्तररामचरितम् का छाया अङ्क है–
(A) प्रथम अङ्क (B) सप्तम अङ्क
(C) चतुर्थ अङ्क (D) तृतीय अङ्क

8. 'यथा कार्यहानिर्न भवति तथा कार्यम्' यह कथन किसका है–
(A) आत्रेयी (B) तमसा
(C) मुरला (D) वासन्ती

9. 'हरिणीदृशः' पद में विभक्ति/वचन है–
(A) प्रथमा एक. (B) द्वितीया द्विव.
(C) षष्ठी एक. (D) चतुर्थी एक.

10. ''अयि कठोर! यशः किल ते प्रियम्'' में छन्द है–
(A) उपजाति (B) द्रुतविलम्बित
(C) इन्द्रवज्रा (D) वंशस्थ

11. पञ्चवटी के कदम्बवृक्ष को किसने रोपित किया था–
(A) वासन्ती ने (B) सीता ने
(C) राम ने (D) तमसा ने

12. अपनी प्रिया को मनाने के लिए नलिनीपत्ररूपी छाते को किसने लगाया–
(A) मयूर ने (B) राम ने
(C) गज ने (D) भवभूति ने

13. उत्तररामचरिते 'वारणानां विजेता' कः अस्ति–
(A) रामः (B) गजः
(C) जटायुः (D) रावणः

14. राम का 'करुणरस' है–
(A) पुटपाकवत् (B) हर्षशोकवत्
(C) स्नेहवत् (D) चञ्चलवत्

15. भवभूति के पिता का नाम है–
(A) भट्टगोपाल (B) श्रीकण्ठ
(C) नीलकण्ठ (D) ज्ञाननिधि

16. भवभूति के आश्रयदाता हैं–
(A) यशोवर्मा (B) राजवर्मा
(C) हर्षवर्धन (D) मित्रवर्मा

17. भवभूति के कितने नाटक उपलब्ध हैं–
(A) चार (B) तीन
(C) दो (D) तेरह

18. भवभूति का एक प्रसिद्ध दार्शनिक नाम है–
(A) उम्बेक (B) ज्ञाननिधि
(C) भट्टगोपाल (D) यशोवर्मा

19. भवभूति का गोत्र है–
(A) वत्स (B) काश्यप
(C) गौतम (D) भारद्वाज

1. (C)	**2.** (D)	**3.** (C)	**4.** (A)	**5.** (D)	**6.** (B)	**7.** (D)	**8.** (D)	**9.** (C)	**10.** (B)
11. (B)	**12.** (C)	**13.** (B)	**14.** (A)	**15.** (C)	**16.** (A)	**17.** (B)	**18.** (A)	**19.** (B)	

20. लोपामुद्रा पत्नी है–
(A) वशिष्ठ की (B) अगस्त्य की
(C) ऋष्यशृङ्ग की (D) वाल्मीकि की

21. उत्तररामचरितम् में नदी के रूप में वर्णन नही है–
(A) तमसा का (B) मुरला का
(C) वासन्ती का (D) भागीरथी का

22. ''पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः'' यह कथन है–
(A) तमसा का (B) मुरला का
(C) वासन्ती का (D) सीता का

23. लव और कुश किसके आश्रम में शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं–
(A) वशिष्ठ के (B) अगस्त्य के
(C) विश्वामित्र के (D) वाल्मीकि के

24. सीता को अदृश्य रहने का वरदान किसने दिया–
(A) भागीरथी ने (B) तमसा ने
(C) लोपामुद्रा ने (D) इनमें से सभी ने

25. ''करुणस्य मूर्तिरथवा शरीरिणी'' किसने किसके लिए कहा–
(A) मुरला ने सीता के लिए
(B) तमसा ने जानकी के लिए
(C) वासन्ती ने वैदेही के लिए
(D) सीता ने तमसा के लिए

26. राम दण्डकारण्य में क्यों आए हैं–
(A) शम्बूक के वध हेतु
(B) सीता से मिलने हेतु
(C) अगस्त्य के दर्शन हेतु
(D) पञ्चवटी में घूमने हेतु

27. कुश और लव की कौन सी वर्षगाँठ मनायी जा रही है–
(A) दसवीं वर्षगाँठ (B) बारहवीं वर्षगाँठ
(C) छठवीं वर्षगाँठ (D) नौवीं वर्षगाँठ

28. ''स्पर्शः पुरा परिचितो नियतं स एव'' कथन है–
(A) राम का (B) सीता का
(C) वासन्ती का (D) तमसा का

29. ''तटस्थं नैराश्यादपि च कलुषं विप्रियवशात्'' इसमें छन्द है–
(A) मन्दाक्रान्ता (B) शिखरिणी
(C) हरिणी (D) शार्दूलविक्रीडितम्

30. 'उल्लापाः' पद का अर्थ है–
(A) उल्लास (B) मदमस्त गज
(C) विलाप (D) मयूर

31. पञ्चवटी में राम के साथ साक्षात् वार्तालाप करती है–
(A) तमसा (B) वनदेवी वासन्ती
(C) प्रिया सीता (D) मुरला

32. लोपामुद्रा गोदावरी से अपना संदेश कहने को किसे भेजती है–
(A) मुरला को (B) तमसा को
(C) भागीरथी को (D) वासन्ती को

33. सीता के कर्णमूल से लवलीलता के पत्ते को कौन खींचता था–
(A) करिशावक (B) मयूर
(C) मृग (D) इनमें से कोई नहीं।

34. व्याकृष्टः में प्रकृति-प्रत्यय है–
(A) व्या+कृष्+क्त (B) वि+आङ्+कृष्+क्त
(C) वि+आङ्+कृ+क्त (D) वि+या+कृ+क्त

35. 'आतपत्र' पद का अर्थ है–
(A) नलिनी का पत्र (B) छाता
(C) केले का पत्ता (D) आधा पत्ता

36. 'अनराल' पद का शब्दार्थ है–
(A) सीधा (B) टेढ़ा
(C) कमल (D) नलिनीनाल

37. 'ईदृश्यस्मि' पद का सन्धिविच्छेद होगा–
(A) ईदृश्+अस्मि (B) ईदृशी+अस्मि
(C) ईदृश+अस्मि (D) ईदृश्+यस्मि

38. 'तावपि' पद का सन्धिविच्छेद होगा–
(A) तो+अपि (B) ताव+अपि
(C) तौ+अपि (D) ताव्+अपि

20. (B) **21.** (C) **22.** (B) **23.** (D) **24.** (A) **25.** (B) **26.** (A) **27.** (B) **28.** (A) **29.** (B)
30. (C) **31.** (B) **32.** (A) **33.** (A) **34.** (B) **35.** (B) **36.** (A) **37.** (B) **38.** (C)

39. 'पति-पत्नी' के अर्थ में अशुद्ध पद है–
(A) दम्पती (B) जम्पती
(C) जायापती (D) इनमें से कोई नहीं।

40. ''प्रसवः खलु प्रकर्षपर्यन्तः स्नेहस्य'' किसने, किससे कहा–
(A) सीता ने तमसा से (B) तमसा ने सीता से
(C) वासन्ती ने राम से (D) तमसा ने मुरला से

41. सीता द्वारा पालित मोर अपनी पत्नी के साथ कहाँ बैठा है–
(A) कदम्ब में (B) पहाड़ में
(C) गोदावरी जल में (D) लताकुञ्ज में

42. 'नीरन्ध्र' पद का अर्थ है–
(A) काला (B) घना
(C) जल (D) बादल

43. 'अदात्' में धातु एवं लकार का सही विकल्प है–
(A) दा+लङ्0+प्र0पु0 एक.
(B) दा+लुङ्+प्र0पु0 बहु.
(C) अद्+लट्+प्र0पु0 एक.
(D) दा+लुङ्+प्र0पु0 एक.

44. ''स्नपयति हृदयेशं स्नेहनिष्यन्दिनी ते'' यहाँ 'हृदयेश' पद से निर्देश है–
(A) सीता का (B) राम का
(C) हृदय का (D) चित्त का

45. ''ददतु तरवः पुष्पैरर्घ्यं फलैश्च मधुश्च्युतः'' यहाँ कौन किसका स्वागत करना चाह रहा है–
(A) राम, वासन्ती का (B) तमसा, राम का
(C) वासन्ती, राम का (D) अगस्त्य, वाल्मीकि का

46. 'शकुनि' पद का अर्थ है–
(A) शगुन (शुभसमय) (B) पक्षी
(C) मृग (D) वृक्ष

47. 'समाश्वसिहि' पद की व्याकरणात्मक प्रकृति है–
(A) सम+आ+श्वास+लोट् मु0पु0एक.
(B) समा+श्वस्+लोट्+म0पु0 द्विव.
(C) सम्+आङ्+श्वस्+लोट् म0पु0 एक.
(D) सम+आ+श्वास+लट् म0पु0 एक.

48. सीता के परित्याग रूपी वनवास को कितने दिन बीत गए हैं–
(A) 12 माह (B) 14 वर्ष
(C) 12 वर्ष (D) 16 वर्ष

49. ''किमभवद् विपिने हरिणीदृशः'' यहाँ 'हरिणीदृशः' पद से किसका निर्देश है–
(A) सीता का (B) हरिणी का
(C) कमललता का (D) नेत्रों का

50. 'उपालम्भः' पद का अर्थ नही है–
(A) ताना मारना (B) शिकायत करना
(C) उलाहना देना (D) उधार देना

51. 'कुरङ्ग' पद का अर्थ है–
(A) मृग (B) पक्षी
(C) वनदेवी (D) वृक्ष

52. भवभूति की अन्तिम तथा सर्वश्रेष्ठ रचना मानी जाती है–
(A) महावीरचरितम् (B) उत्तररामचरितम्
(C) मालतीमाधवम् (D) लवकुशचरितम्

53. उत्तररामचरितम् का प्रधान रस है–
(A) वीररस (B) हास्यरस
(C) करुणरस (D) रौद्ररस

54. ''भवभूतेः शिखरिणी निरर्गलतरङ्गिणी'' यह कथन किसका है–
(A) क्षेमेन्द्र का (B) कालिदास का
(C) बाण का (D) भवभूति का

55. सीता का ज्येष्ठ पुत्र है–
(A) लव (B) कुश
(C) जटायु (D) कुरङ्ग

56. उत्तररामचरितम् में राम की बहन के रुप में उल्लेख है–
(A) मुरला का (B) आत्रेयी का
(C) वासन्ती का (D) शान्ता का

39. (D)	**40. (B)**	**41. (A)**	**42. (B)**	**43. (D)**	**44. (B)**	**45. (C)**	**46. (B)**	**47. (C)**	**48. (C)**
49. (A)	**50. (D)**	**51. (A)**	**52. (B)**	**53. (C)**	**54. (A)**	**55. (B)**	**56. (D)**		

57. ''त्वं जीवितं त्वमसि मे हृदयं द्वितीयम्'' इस पंक्ति में अलङ्कार है–
(A) रूपक (B) उपमा
(C) उत्प्रेक्षा (D) दीपक

58. ''प्रियाशोको जीवं कुसुममिव घर्मो ग्लपयति'' में अलङ्कार है–
(A) उत्प्रेक्षा (B) उपमा
(C) रूपक (D) विभावना

59. 'सोढः' में प्रकृति/प्रत्यय है–
(A) सूङ्+णञ् (B) सह्+क्त
(C) श्रु+ऊढः (D) सृज+क्त

60. 'रयः' पद का अर्थ है–
(A) वेग (B) रेत
(C) भूमि (D) मोर

61. 'काकली' पद का अर्थ है–
(A) तोता (B) तोतली बोली
(C) मयूर (D) घुँघराले बाल

62. 'प्रवान्तु' में धातु एवं लकार है–
(A) प्र+√वा धातु+लोट्+प्र0पु0 एक.
(B) प्र+√वा धातु+लोट् प्र0पु0 बहु.
(C) √प्रवा धातु + लोट् म0पु0 एक.
(D) प्र+√वह् + लोट् + प्र0पु0 बहु.

63. 'पुष्' धातु का लङ्लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन में रूप बनेगा–
(A) अपोष्यत् (B) अपूष्यत्
(C) अपुष्यत् (D) अपोष्यति

64. ''शोकक्षोभे च हृदयं प्रलापैरेव धार्यते'' इसमें किस वाच्य का प्रयोग है–
(A) कर्मवाच्य (B) कर्तृवाच्य
(C) भाववाच्य (D) इनमें से कोई नहीं

65. 'वीक्ष्य' पद में प्रत्यय है–
(A) क्तवतु (B) ल्यप्
(C) यत् (D) ष्यञ्

66. 'कुड्मल' पद का शब्दार्थ है–
(A) कमल (B) कली
(C) समान (D) सुन्दर

67. ''विष्वङ्मोहः स्थगयति कथम्'' में 'विष्वक्' पद का अर्थ है–
(A) विशेष (B) विश्वास
(C) चारों ओर से (D) हृदय

68. ''आलिम्पन्नमृतमयैरिव प्रलेपैः'' में 'अमृतमय' पद में प्रत्यय है–
(A) मयट् (B) म्युट्
(C) यक् (D) मुक्

69. ''करान्मम स्विद्यतः स्विद्यन्'' के 'स्विद्यतः' पद में विभक्ति है–
(A) षष्ठी (B) द्वितीया
(C) प्रथमा (D) पञ्चमी

70. ''कदम्बयष्टिः स्फुटकोरकेव'' में अलङ्कार है–
(A) विभावना (B) विशेषोक्ति
(C) उपमा (D) उत्प्रेक्षा

71. ''द्यामभ्युदस्थादरिः'' यहाँ 'अभ्युदस्थात्' पद में लकार है–
(A) लुङ् (B) लङ्
(D) विधिलिङ् (D) लोट्

72. 'पत्रिणाम्' पद का अर्थ है–
(A) पत्राणाम् (B) खगानाम्
(C) शराणाम् (D) पिशाचानाम्

73. ''अहो ! उत्खातितमिदानी मे परित्यागशल्यम्'' यह कथन किसका है–
(A) सीता का (B) वासन्ती का
(C) तमसा का (D) भागीरथी का

74. 'वर्षर्द्धिः' पद में सन्धि है–
(A) दीर्घ (B) व्यञ्जन
(C) यण् (D) गुण

75. उत्तररामचरितम् के तृतीय अङ्क में कुल श्लोक हैं–
(A) 45 (B) 46
(C) 48 (D) 49

76. भवभूति का निवासस्थान माना जाता है–
(A) पद्मपुर (B) धारानगरी
(C) जतुकर्णीनगर (D) अचलपुर

57. (A)	**58. (B)**	**59. (B)**	**60. (A)**	**61. (B)**	**62. (B)**	**63. (C)**	**64. (A)**	**65. (B)**	**66. (B)**
67. (C)	**68. (A)**	**69. (D)**	**70. (C)**	**71. (A)**	**72. (C)**	**73. (A)**	**74. (D)**	**75. (C)**	**76. (A)**

77. ''पदवाक्यप्रमाणज्ञः'' कहा जाता है–
(A) भट्टि को (B) भारवि को
(C) भवभूति को (D) भर्तृहरि को

78. भवभूति के गुरु का नाम है–
(A) ध्याननिधि (B) ज्ञाननिधि
(C) भट्टगोपाल (D) नीलकण्ठ

79. 'जतुकर्णी' नाम है–
(A) श्रीकण्ठ की माता का (B) भवभूति की माँ का
(C) नीलकण्ठ की पत्नी का (D) उपर्युक्त सभी

80. कुमारिलभट्ट के शिष्य और मीमांसादर्शन के विद्वान् माने जाते हैं–
(A) भवभूति (B) भर्तृहरि
(C) भारवि (D) भास

81. उत्तररामचरितम् के टीकाकार घनश्याम, महाकवि भवभूति को मानते हैं–
(A) तमिल (B) द्राविड
(C) उत्तरभारतीय (D) महाराष्ट्रियन

82. उत्तररामचरितम् में प्रयुक्त 'कालप्रियानाथ' पद का अर्थ है–
(A) काल (यमराज) (B) समय के पाबंद
(C) शिव (D) महाकवि

83. भवभूति का अनुमानित समय माना जाता है–
(A) 650 ई० से 750 ई० तक
(B) 750 ई० से 850 ई० तक
(C) 650 ई० पू० से 750 ई० तक
(D) 850 ई० से 950 ई० तक

84. उत्तररामचरितम् में अङ्क हैं–
(A) 6 (B) 7
(C) 8 (D) 5

85. उत्तररामचरितम् का मूल आधार है–
(A) वाल्मीकीयरामायण (B) तुलसीरामायण
(C) भावार्थरामायण (D) महाभारतम्

86. भवभूति मूलतः किस रीति के कवि माने जाते हैं–
(A) वैदर्भीरीति (B) पाञ्चालीरीति
(C) गौडीरीति (D) उपर्युक्त सभी

87. उत्तररामचरितम् की सम्पूर्ण घटना कितने वर्षों की है–
(A) 14 वर्ष (B) 18 वर्ष
(C) 7 वर्ष (D) 12 वर्ष

88. उत्तररामचरितम् के किस अङ्क में राम-सीता का मिलन होता है–
(A) तृतीय अङ्क में (B) चतुर्थ अङ्क में
(C) षष्ठ अङ्क में (D) सप्तम अङ्क में

89. 'गर्भनाटक' की योजना उत्तररामचरितम् के किस अङ्क में है–
(A) सप्तम अङ्क में (B) प्रथम अङ्क में
(C) तृतीय अङ्क में (D) चतुर्थ अङ्क में

90. विदूषक रहित रचना मानी जाती है–
(A) शाकुन्तलम् (B) स्वप्नवासवदत्तम्
(C) उत्तररामचरितम् (D) इनमें से कोई नहीं

91. उत्तररामचरितम् का पात्र है–
(A) सौधातकि (B) दण्डायन
(C) दुर्मुख (D) उपर्युक्त सभी

92. करुणरस का सर्वोत्तम कवि माना जाता है–
(A) भास को (B) भवभूति को
(C) कालिदास को (D) माघ को

93. चन्द्रकेतु किसका पुत्र है–
(A) लक्ष्मण का (B) राम का
(C) वशिष्ठ का (D) ऋष्यश्रृङ्ग का

94. राम ने स्वर्णमयी सीता के साथ कौन सा यज्ञ किया–
(A) वाजपेय यज्ञ (B) अश्वमेध यज्ञ
(C) पञ्चमहायज्ञ (D) दशपौर्णमासयज्ञ

95. उत्तररामचरितम् के नायक और नायिका हैं–
(A) राम-वासन्ती (B) लव-आत्रेयी
(C) राम-सीता (D) चन्द्रकेतु-तमसा

77. (C)	**78. (B)**	**79. (D)**	**80. (A)**	**81. (B)**	**82. (C)**	**83. (A)**	**84. (B)**	**85. (A)**	**86. (C)**
87. (D)	**88. (D)**	**89. (A)**	**90. (C)**	**91. (D)**	**92. (B)**	**93. (A)**	**94. (B)**	**95. (C)**	

96. ''ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति'' किसकी उक्ति है–
(A) राम की (B) सीता की
(C) तमसा की (D) वाल्मीकि की

97. सीताविषयक लोकापवाद राम से किसने बताया–
(A) वाल्मीकि ने (B) वशिष्ठ ने
(C) अष्टावक्र ने (D) दुर्मुख ने

98. ''गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः'' यह सूक्ति किस नाटक से सम्बन्धित है–
(A) उत्तरसीताचरितम् (B) जानकीजीवनम्
(C) उत्तररामचरितम् (D) सीताचरितम्

99. उत्तररामचरितम् के प्रथम अङ्क का नाम है–
(A) छाया अङ्क (B) चित्रदर्शन अङ्क
(C) गर्भाङ्क (D) पञ्चवटीप्रवेश अङ्क

100. उत्तररामचरितम् के तृतीय अङ्क का प्रारम्भ होता है–
(A) तमसा और मुरला के वार्तालाप से
(B) तमसा और सीता के वार्तालाप से
(C) राम और वासन्ती के मिलने से
(D) गोदावरी और भागीरथी के वार्तालाप से

96. (A) 97. (D) 98. (C) 99. (B) 100. (A)

शिवराजविजय (वस्तुनिष्ठप्रश्नाः)

1. अम्बिकादत्तव्यास जी ने अपना संक्षिप्त निज वृत्तान्त स्वयं लिखा है–
(A) बिहार बिहारिणी में (B) बिहारी शतकम् में
(C) बिहारी बिहार में (D) शिवराजविजयम् में

2. पण्डित अम्बिकादत्तव्यास के पिताजी का नाम था–
(A) देवीदत्त (B) दुर्गादत्त
(C) पं. राजाराम (D) रावत जी

3. पं. अम्बिकादत्त व्यास का विवाह हुआ–
(A) 18 वर्ष (B) 13 वर्ष
(C) 25 वर्ष (D) 20 वर्ष

4. अम्बिकादत्तव्यास जी का जन्म हुआ था–
(A) जयपुर में (B) काशी में
(C) बिहार में (D) महाराष्ट्र में

5. चैत्र शुक्ल अष्टमी संवत् 1915 में किस कवि का जन्म हुआ था–
(A) बाण का (B) पं. अम्बिकादत्तव्यास का
(C) दण्डी का (D) शिवाजी का

6. 'सुकवि' नाम से विख्यात थे–
(A) कालिदास (B) भारवि
(C) अम्बिकादत्तव्यास (D) बाणभट्ट

7. एक घड़ी (24 मिनट) में 100 श्लोक बना लेने के कारण अम्बिकादत्तव्यास को उपाधि मिली–
(A) घटिकाशतक (B) शतकघटी
(C) शतकमहारथी (D) घटशतकी

8. अम्बिकादत्तव्यास ने स्थापना की–
(A) सार्वभौम संस्कृतसमाज की
(B) बिहार-संस्कृत-सञ्जीवनी-समाज की
(C) संस्कृत-भारती-समाज की
(D) संस्कृत कथावाचन समाज की

9. काशी की महासभा ने व्यास जी को किस उपाधि से विभूषित किया–
(A) भारतरत्न (B) साहित्यरत्न
(C) संस्कृतरत्न (D) बिहाररत्न

10. अम्बिकादत्तव्यास की मृत्यु हुई–
(A) संवत् 1957 (B) संवत् 1915
(C) संवत् 1943 (D) संवत् 1944

11. शिवराजविजयम् का कथानक है–
(A) ऐतिहासिक (B) सामाजिक
(C) आर्थिक (D) दार्शनिक

12. 'महाराष्ट्रकेशरी' के रूप में वर्णन है–
(A) गौरसिंह का (B) श्यामबटु का
(C) ब्रह्मचारी गुरु का (D) शिवाजी का

13. संस्कृत साहित्य में बीसवीं शताब्दी का एक सफल 'ऐतिहासिक उपन्यास' है–
(A) शिवाजीविजयम् (B) धर्मश्रीः
(C) शिवराजभूषणम् (D) शिवराजविजयम्

14. संस्कृतवाङ्मय का प्रथम 'ऐतिहासिक उपन्यास' होने का गौरव प्राप्त है–
(A) शिवराजविजयम् को (B) सार्थः को
(C) धर्मश्रीः को (D) आवरणम् को

15. महाराष्ट्रशिरोमणि शिवाजी की दस वर्षों की जीवनी पर आधारित ऐतिहासिक उपन्यास है–
(A) शिवराजभूषणम् (B) शिवाजीयशोविजयम्
(C) शिवराजविजयम् (D) शिवाजीविजयम्

16. गौरसिंह की बहन है–
(A) सौवर्णी (B) देववती
(C) तारामती (D) लीलावती

17. शिवराजविजयम् के सन्दर्भ में असत्य कथन है–
(A) चार निःश्वास; प्रत्येक में तीन विराम
(B) तीन विराम; 12 निःश्वास
(C) तीन विराम; प्रत्येक में चार निःश्वास
(D) कुल 12 निश्वास और चार निःश्वासों में एक विराम

1. (C)	**2.** (B)	**3.** (B)	**4.** (A)	**5.** (B)	**6.** (C)	**7.** (A)	**8.** (B)	**9.** (A)	**10.** (A)
11. (A)	**12.** (D)	**13.** (D)	**14.** (A)	**15.** (C)	**16.** (A)	**17.** (A)			

18. शिवराजविजयम् में किस रस की प्रधानता है–
(A) वीररस की (B) शृङ्गाररस की
(C) करुणरस की (D) अद्‌भुतरस की

19. उदयपुर के एक जागीरदार खड्‌गसिंह की सन्तानें हैं–
(A) श्यामसिंह (B) गौरसिंह
(C) सौवर्णी (D) उपर्युक्त तीनों

20. ''विष्णोर्माया भगवती यया सम्मोहितं जगत्'' श्रीमद्‌भागवत के दशमस्कन्ध का यह श्लोक मङ्गलाचरण के रूप में उल्लिखित है–
(A) मेघदूतम् में (B) कादम्बरी में
(C) वाल्मीकीयरामायणम् में (D) शिवराजविजयम् में

21. शिवाजी किस गद्यकाव्य के नायक हैं–
(A) शिवराजविजयम् के (B) कादम्बरी के
(C) तिलकमञ्जरी के (D) हर्षचरितम् के

22. बीजापुर का नवाब है–
(A) तानरङ्ग (B) शाइस्ता खाँ
(C) अफजल खाँ (D) औरङ्गजेब

23. ''ग्रामणी-ग्रामीण-ग्रामा समागत्य मध्ये मध्ये तं पूजयन्ति प्रणमन्ति स्तुवन्ति च'' यहाँ 'तम्' पद से किसका संकेत किया गया है–
(A) ब्रह्मचारीगुरु का (B) योगिराज का
(C) गौरबटु का (D) सूर्य का

24. ''सः ब्रह्मचारिबटुभ्याम् अदर्शि'' इस पद में वाच्य है–
(A) कर्मवाच्य (B) कर्तृवाच्य
(C) भाववाच्य (D) इनमें से कोई नही

25. 'त्रियामा' पद का अर्थ है–
(A) यामिनी (B) विभावरी
(C) रात्रि (D) उपर्युक्त सभी

26. 'जागृ' धातु का ''अजागरीः'' रूप बनेगा–
(A) लुङ् म.पु एक. (B) लङ् म.पु. द्विव.
(C) लोट् उ.पु. एक. (D) लृट् म.पु. बहु.

27. कन्या के अपहरणकर्ता यवनयुवक को किसने मारा–
(A) गौरसिंह ने (B) श्यामबटु ने
(C) रघुवीरसिंह ने (D) शिवाजी ने

28. 'समतिष्ठत्' में धातु है–
(A) तिष्ठ (B) स्था
(C) दृश् (D) तिस्

29. 'संवत्स्र्यथ' में धातूपसर्ग का सही विकल्प है–
(A) सम्+वृतु+लृट् (B) सम्+वृत्र+लङ्
(C) सम्+वृञ्+लुङ् (D) सम्+वृतृ+लट्

30. वयमपि तु स्वाङ्कागतसत्त्ववृत्तयः शिवस्यगणाः अत्रैव निवसामः' यह कथन किसका है–
(A) श्यामबटु का (B) यवनयुवक का
(C) ब्रह्मचारीगुरु का (D) गौरसिंह का

31. अफजलखान के तीनों अश्वों को मारकर पाँच ब्राह्मणपुत्रों को छुड़ाने वाला वीर है–
(A) गौरसिंह (B) रघुवीरसिंह
(C) श्यामसिंह (D) शिवाजी

32. ''विजयतां शिववीरः सिद्ध्यन्तु भवतां मनोरथाः'' इति कः उक्तवान्?
(A) ब्रह्मचारी गुरु ने (B) योगिराज ने
(C) रघुवीरसिंह ने (D) पुरोहित देवशर्मा ने

33. 'व्यहार्षीत्' में लकार है–
(A) लङ् (B) लुङ्
(C) लिङ् (D) लिट्

34. ''कार्यं वा साधयेयं देहं वा पातयेयम्'' यह सारगर्भित महती प्रतिज्ञा किस वीर की है–
(A) शिवाजी की (B) गौरसिंह की
(C) ब्रह्मचारीगुरु की (D) औरङ्गजेब की

35. शाइस्ता खाँ को दक्षिण देश का शासक बनाकर किसने भेजा–
(A) अकबर ने (B) कुतुबुद्‌दीन ऐबक ने
(C) औरङ्गजेब ने (D) महमूद गजनवी ने

36. शहाबुद्दीन ने भारत का प्रथम सम्राट् बनाया–
(A) कुतुबुद्दीन को (B) बाबर को
(C) औरङ्गजेब को (D) महमूदगजनवी को

18. (A)	**19. (D)**	**20. (D)**	**21. (A)**	**22. (B)**	**23. (B)**	**24. (A)**	**25. (D)**	**26. (A)**	**27. (A)**
28. (B)	**29. (A)**	**30. (D)**	**31. (A)**	**32. (B)**	**33. (B)**	**34. (A)**	**35. (C)**	**36. (A)**	

37. ''मुने! विलक्षणोऽयं भगवान् सकलकलाकलापकलनः सकलकालनः करालः कालः'' यह कथन है–

(A) ब्रह्मचारीगुरु का (B) योगिराज का
(C) गौरसिंह का (D) पुरोहित का

38. ''सत्यं न लक्षितो मया समयवेगः। यौधिष्ठिरे समये कलितसमाधिरहं वैक्रमसमये उदस्थाम्'' यह कथन किसका है–

(A) योगिराज का (B) विक्रमादित्य का
(C) ब्रह्मचारी गुरु का (D) गौरसिंह का

39. ''अद्य न तानि स्रोतांसि नदीनाम्, न सा संस्था नगराणां, न सा आकृतिर्गिरीणाम्।'' यह कथन है–

(A) गौरसिंह का (B) ब्रह्मचारीगुरु का
(C) योगिराज का (D) शिवाजी का

40. विक्रमादित्य को भारतभूमि छोड़कर गए हुए कितना समय बीत गया–

(A) 17 वर्ष (B) 17000 वर्ष
(C) 1700 वर्ष (D) 7000 वर्ष

41. ''विक्रमराज्येऽपि कथमेष पातकमयो दुराचाराणामुपद्रवः'' कस्य कथनमिदम्–

(A) योगिराज का (B) ब्रह्मचारीगुरु का
(C) गौरसिंह का (D) विक्रमादित्य का

42. ''क्वाधुना मन्दिरे मन्दिरे जयजयध्वनिः, क्व सम्प्रति तीर्थे तीर्थे घण्टानादः, क्वाद्यापि मठे मठे वेदघोषः'' यह पंक्तियाँ किस ग्रन्थ से उद्धृत हैं–

(A) हर्षचरितम् से (B) शिवाजीशतकम् से
(C) शिवशतकम् से (D) शिवराजविजयम् से

43. ''अहो! प्रबुद्धो मुनिः! प्रबुद्धो मुनिः! इत एवाऽऽगच्छति इत एवाऽऽगच्छति सत्कार्योऽयं सत्कार्योऽयम्'' यह कथन किसका है–

(A) गौरसिंह का (B) श्यामबटु का
(C) दोनों का (D) इनमें से किसी का नहीं

44. 'पुण्डरीकपटल' पद का अर्थ है–

(A) श्वेतकमल (B) पीतकमल
(C) नीलकमल (D) सरोवर

45. 'अवादीत्' में प्रकृति प्रत्यय है–

(A) वद्+लुङ्+तिप् (B) अव्+वद्+लङ्
(C) अव+दा+लुङ्+तिप् (D) अव्+दा+लट्+झि

46. ''बटुरसौ आकृत्या सुन्दरः, वर्णेन गौरः, जटाभिर्ब्रह्मचारी, वयसा षोडशवर्षदेशीयः'' इन पंक्तियों में वर्णन है–

(A) गौरबटु का (B) श्यामबटु का
(C) दोनों का (D) ब्रह्मचारीगुरु का

47. 'अलं भो अलम्! मयैव पूर्वमवचितानि कुसुमानि त्वं तु चिरं रात्रावजागरीरिति क्षिप्रं नोत्थापितः' यह कथन किसने किससे कहा–

(A) गौरबटु ने श्यामबटु से
(B) श्यामबटु ने ब्रह्मचारीगुरू से
(C) ब्रह्मचारीगुरू ने गौरबटु से
(D) श्यामबटु ने गौरबटु से

48. ''चर्कर्ति बर्भर्ति जर्हर्ति'' प्रयोग है–

(A) यङ्लुक् क्रिया (B) धातुपसर्ग क्रिया
(C) कर्मवाच्य क्रिया (D) सन्नत क्रिया

49. ''नेदीयसि'' पद का अर्थ है–

(A) समीप (B) दूर
(C) नदी के किनारे (D) इनमें से कोई नही

50. यवनयुवक ने नदी के किनारे से जिस कन्या का अपहरण किया था, वह थी–

(A) माँ की गोद में (B) अकेली रास्ते में
(C) अपने बूढे पिता के साथ (D) अपने भाई के साथ

51. योगिराज ने दूसरी बार समाधि कब लगायी थी–

(A) युधिष्ठिर के समय में (B) विक्रमादित्य के समय में
(C) शिवाजी के समय में (D) औरङ्गजेब के समय में

52. भारतवर्ष की वर्तमान दशा को कौन किससे जानना चाह रहा था–

(A) ब्रह्मचारीगुरु, योगिराज से
(B) योगिराज, ब्रह्मचारीगुरु से
(C) गौरबटु, शिवाजी से
(D) आश्रमवासी योगिराज से

37. (B) 38. (A) 39. (B) 40. (C) 41. (A) 42. (D) 43. (C) 44. (A) 45. (A) 46. (A) 47. (D) 48. (A) 49. (A) 50. (A) 51. (B) 52. (B)

53. 'जिग्लापयिषामि' का व्याकरणात्मक विवेचन होगा–
(A) ग्लै हर्षक्षये+पुक्+णिच्+यङ्+लट्+मिप्
(B) गै+पुक्+सन्+लट्+मिप्
(C) ग्लै हर्षक्षये+पुक्+णिच्+सन्+लट्+मिप्
(D) लप्+णिच्+सन्+लिट्+मिप्

54. सोमनाथ मन्दिर को धूलि धूसरित किसने किया–
(A) मोहम्मदगोरी ने (B) महमूद गजनवी ने
(C) कुतुबुद्दीन ऐबक ने (D) औरङ्गजेब ने

55. 'अध्वनीनम्' का अर्थ है–
(A) पथिक (B) रास्ता
(C) रास्ते का पत्थर (D) इनमें से कोई नहीं

56. 'अनीकिनी' पद का अर्थ होगा–
(A) अनेक नही (B) सेना
(C) जो एक न हो (D) एकाकिनी

57. योगिराज विक्रमादित्य के बाद जब समाधि से जगे तो दिल्ली का शासक कौन था–
(A) अकबर (B) औरङ्गजेब
(C) शिवाजी (D) कुतुबुद्दीन ऐबक

58. योगिराज के समाधि से जगने के समय शिवाजी कहाँ निवास कर रहे थे–
(A) सिंहदुर्ग में (B) राजदुर्ग में
(C) विजयपुर में (D) दिल्ली में

59. बीजापुर के शासक की आज्ञा से शिवाजी के साथ युद्ध करने कौन आ रहा था–
(A) अफजल खाँ (B) शाइस्ता खान
(C) औरङ्गजेब (D) कुतुबद्दीन ऐबक

60. 'उष्णीष' पद का अर्थ है–
(A) कटिबन्ध (B) पगड़ी
(C) कुर्ता (D) गर्म कपड़े

61. सोमनाथ मन्दिर कहाँ स्थित है–
(A) महाराष्ट्र में (B) दिल्ली में
(C) जयपुर में (D) गुजरात में

62. 'उदतूतुलत्' में लकार है–
(A) लुङ् (B) लङ्
(C) लृट् (D) लिट्

63. सोमनाथ मन्दिर में लटकने वाला विशाल घण्टा कितने मन के स्वर्ण श्रृंखलाओं में लटकता था–
(A) 200 मन (B) 150 किग्रा
(C) 200 किलो (D) 1000 मन

64. ''नाहं मूर्तीः विक्रीणामि, किन्तु भिनद्मि'' इति कस्य-वचनमिदम्
(A) महमूद गजनवी (B) पुजारी गणों
(C) औरङ्गजेब (D) अफजल खान

65. ब्रह्मचारी गुरु के कुटिया के चारों ओर है–
(A) परमपवित्र जल से पूर्ण सरोवर
(B) सुन्दर पुष्पवाटिका
(C) गुफाओं से युक्त पर्वतखण्ड
(D) पहाड़ी झरने एवं नदियाँ

66. ''कुटीरान्तः कन्यकाऽस्ति, सा च यवनवधव्यसनिनि मयि जीवति न शक्या द्रष्टुमपि, किं नाम स्प्रष्टुम्?'' यह वाक्य किसने किससे कहा–
(A) गौरसिंह ने यवन युवक से
(B) श्यामसिंह ने यवन युवक से
(C) गौरसिंह ने अफजल खान से
(D) यवनयुवक ने गौरसिंह से

67. 'रुद्+शतृ+ङीप्' से रूप सिद्ध होगा–
(A) रूदती (B) रुदन्ती
(C) रोदती (D) रुदती

68. ''आः! वयमपि कुत इति प्रष्टव्याः? भारतीय-कन्दरि-कन्दरेष्वपि वयं विचरामः'' यह कथन है–
(A) गौरसिंह का (B) श्यामबटु का
(C) योगिराज का (D) यवनयुवक का

69. शिवराजविजयम् के अनुसार कन्या के अपहरणकर्ता यवनयुवक की आयु लगभग कितनी रही होगी–
(A) 25 वर्ष (B) 16 वर्ष
(C) 20 वर्ष (D) 30 वर्ष

70. 'असावेव' पद का सन्धि-विच्छेद होगा–
(A) असाव+एव (B) असौ+एव
(C) असा+अव+एव (D) अस+अव+इव

53. (C)	**54. (B)**	**55. (A)**	**56. (B)**	**57. (B)**	**58. (A)**	**59. (A)**	**60. (B)**	**61. (D)**	**62. (A)**
63. (A)	**64. (A)**	**65. (B)**	**66. (A)**	**67. (D)**	**68. (D)**	**69. (C)**	**70. (B)**		

71. ''धिगस्मान्, येऽद्यापि जीवामः, श्वसिमः, विचरामः आत्मन आर्यवंश्यांश्चाऽभिमन्यामहे'' यह कथन किसका है–
(A) योगिराज का (B) ब्रह्मचारीगुरु का
(C) गौरसिंह का (D) श्यामबटु का

72. शिवराजविजयम् के अनुसार गौरसिंह की अवस्था है–
(A) 16 वर्ष (B) 18 वर्ष
(C) 20 वर्ष (D) 30 वर्ष

73. यवनयुवक द्वारा अपहृत कन्या की अवस्था है–
(A) लगभग 17 वर्ष (B) लगभग 7 वर्ष
(C) लगभग 18 वर्ष (D) लगभग 20 वर्ष

74. ''सुघटितं शरीरं सान्द्रां जटाम्, विशालानि अङ्गानि, अङ्गारप्रतिमे नयने, मधुरां गम्भीरां च वाचम्...... इन पंक्तियों में किसका वर्णन है–
(A) गौरसिंह का (B) श्यामबटु का
(C) योगिराज का (D) शिवाजी का

75. जङ्गल में अकस्मात् भालू के आ जाने से यवनयुवक कन्या को छोड़कर किस वृक्ष में चढ़ गया–
(A) शाल्मलीवृक्ष में (B) निम्बवृक्ष में
(C) आम्रवृक्ष में (D) वटवृक्ष में

76. 'अकूपारतलम्' पद का अर्थ है–
(A) नदीतलम् (B) कुआँ का तल
(C) सागरतल (D) तालाब की गहराई

77. 'हरिद्राद्रवक्षालितमिव' यहाँ अलङ्कार है–
(A) उपमा (B) रूपक
(C) निदर्शना (D) उत्प्रेक्षा

78. ''अस्मान् ताडय, मारय, छिन्धि, भिन्धि, पातय, मज्जय, खण्डय, कर्तय, ज्वलय, किन्तु त्यज इमाम् अकिञ्चित्करीं जडां महादेवप्रतिमाम्'' यह वाक्य किसने किससे कहा–
(A) महमूदगजनवी ने पुजारियों से
(B) औरङ्गजेब ने ब्रह्मचारी से
(C) पुजारियों ने महमूद गजनवी से
(D) गौरसिंह ने यवनयुवक से

79. उपर्युक्त गद्यांश की क्रियापदों में लकार, पुरुष एवं वचन का सही प्रयोग है–
(A) लोट् उ०पु०एक० (B) लुङ् उ०पु०एक०
(C) लट् म०पु०द्विव० (D) लोट् म०पु०एक०

80. ''अतुत्रुटत्'' में धातु है–
(A) त्रुट् छेदने, लुङ् (B) त्रुट् छेदने, लङ्
(C) त्रुटिई छेदने, लङ् (D) त्रुट्, लिट्

81. शिवराजविजयम् के अनुसार विक्रम संवत् 1087 में मृत्यु हो गयी–
(A) महमूद गजनवी की (B) अम्बिकादत्तव्यास की
(C) औरङ्गजेब की (B) पृथ्वीराजचौहान की

82. 'अकार्षुः' पद की व्याकरणात्मक टिप्पणी होगी–
(A) कृ+लुङ्+झि (B) क्री+लङ्+तिप्
(C) कृ+लिङ्-झि (D) क्री+लुङ्+झि

83. वि+आङ्+हृ+लुङ् प्रथमपुरुष एकवचन में रूप बनेगा–
(A) व्याहार्षीत् (B) व्यहर्षीत्
(C) व्याहार्यासीत् (D) व्याहर्षित्

84. ''पिपृच्छामि'' प्रयोग है–
(A) सन्नत (B) नामधातु
(C) यङ्लुगन्त (D) इनमें से कोई नहीं

85. ''न्यवेदीत्'' में सन्धि हैं–
(A) गुणसन्धि (B) यण्सन्धि
(C) अयादिसन्धि (D) पूर्वरूपसन्धि

86. 'इयेष' पद में लकार है–
(A) लिट् (B) लुङ्
(C) लङ् (D) लट्

87. ब्रह्मचारीगुरु की कुटिया के पूर्व दिशा की ओर स्थित है–
(A) पुष्पवाटिका (B) सरोवर
(C) झरना (D) पहाड़ी

88. गौरसिंह को फूल तोड़ने से कौन मना करता है–
(A) श्यामबटु (B) ब्रह्मचारीगुरु
(C) योगिराज (D) यवनयुवक

71. (B)	**72.** (A)	**73.** (B)	**74.** (C)	**75.** (A)	**76.** (C)	**77.** (D)	**78.** (C)	**79.** (D)	**80.** (A)
81. (A)	**82.** (A)	**83.** (A)	**84.** (A)	**85.** (B)	**86.** (A)	**87.** (B)	**88.** (A)		

89. ब्रह्मचारीबटु किस पत्ते के दोनों में फूल तोड़ता है–
(A) पलाश के पत्ते में (B) केले के पत्ते में
(C) शाल्मली के पत्ते में (D) पीपल के पत्ते में

90. 'जटाभिर्ब्रह्मचारी' इस प्रयोग में तृतीया विभक्ति का प्रयोग किस सूत्र से है–
(A) इत्थम्भूतलक्षणे (B) प्रकृत्यादिभ्य उपसंख्यानम्
(C) साधकतमं करणम् (D) अपवर्गे तृतीया

91. ''अहो! चिररात्राय सुप्तोऽहम् स्वप्नजालपरतन्त्रेणैव महान् पुण्यमयः समयोऽतिवाहितः'' यह कथन किसका है–
(A) श्यामबटु का (B) योगिराज का
(C) ब्रह्मचारीगुरु का (D) गौरबटु का

92. शिवराजविजयम् का प्रारम्भ होता है–
(A) योगिराज के वर्णन से
(B) सूर्य के वर्णन से
(C) ब्रह्मचारी गुरु के आश्रम वर्णन से
(D) गौरसिंह के फूल तोड़ने से

93. 'रोलम्बकदम्ब' पद का शब्दार्थ है–
(A) चक्रवाकसमूह (B) तारासमूह
(C) भ्रमरसमूह (D) श्वेतकमलसमूह

94. 'आखण्डलदिक्' पद से किस दिशा का संकेत किया गया है–
(A) पूर्व दिशा का (B) पश्चिम दिशा का
(C) उत्तर दिशा का (D) दक्षिण दिशा का

95. हिंस्राः स्वपापेन विहिंसितः खलः'' इत्यादि शिवराजविजयम् का मङ्गलाचरण किस ग्रन्थ से उद्धृत है–
(A) महाभारत से (B) वाल्मीकीयरामायण से
(C) श्रीमद्भागवत दशमस्कन्ध से (D) गीता से

96. शिवाजी के माता-पिता हैं–
(A) जीजाबाई-शाहजी भोसले
(B) सौवर्णी-देवशर्मा
(C) शिवानी-रघुवीरसिंह
(D) रमाबाई-दुर्गादत्त

97. 'कम्बुकण्ठः' पद का अर्थ है–
(A) कौए की तरह गर्दन वाला
(B) शंख की तरह ग्रीवा वाला
(C) छोटी गर्दन वाला
(D) कम कण्ठ वाला

98. 'शाखी' पद का अर्थ है–
(A) तरु
(B) विटप
(C) वृक्ष
(D) उपर्युक्त सभी

99. 'निश्चक्राम कश्चित् गुरुसेवनपटुर्विप्रबटुः' यहाँ 'कश्चित्' पद से किसका सङ्केत है–
(A) श्यामबटु का
(B) गौरसिंह का
(C) ब्रह्मचारीगुरु का
(D) यवनयुवक का

100. निजपर्णकुटीर से निकलता हुआ विप्रवटु और स्वकुटीर में प्रवेश करते हुए ब्रह्मचारीगुरु का वर्णन किस ग्रन्थ में वर्णित है–
(A) शिवराजविजयम् में
(B) कादम्बरी शुकनासोपदेश में
(C) अवन्तिसुन्दरीकथा में
(D) हर्षचरितम् में

नमः संस्कृताय

89. (B) 90. (A) 91. (D) 92. (B) 93. (C) 94. (A) 95. (C) 96. (A) 97. (B) 98. (D) 99. (B) 100. (A)

कादम्बरी-शुकनासोपदेशः (वस्तुनिष्ठप्रश्नाः)

1. बाण की गद्यशैली है–
(A) गौड़ी (B) वैदर्भी
(C) कौशिकी (D) पाञ्चाली

2. बाणभट्ट के पिता का नाम है–
(A) कुबेर (B) चित्रभानु
(C) वत्स (D) अर्थपति

3. बाणभट्ट के पुत्र का नाम है–
(A) मुरारिभट्ट (B) मयूरभट्ट
(C) भूषणभट्ट (पुलिन्द) (D) नयनभट्ट

4. बाणभट्ट किस गोत्र में उत्पन्न हुए–
(A) वत्सगोत्र (B) भृगुगोत्र
(C) काश्यपगोत्र (D) गौतमगोत्र

5. बाणभट्ट का निवास स्थान है–
(A) उज्जयिनी
(B) गया बिहार
(C) अचलपुर
(D) शोणनदी के तट पर प्रीतिकूट ग्राम

6. शुकनास के अनुसार शास्त्रजलप्रक्षालित बुद्धि भी कब कालुष्य को प्राप्त होती है–
(A) वृद्धावस्थायाम् (B) यौवनारम्भे
(C) बाल्यावस्थायाम् (D) इनमें से कोई नहीं

7. तारापीड का पुत्र है–
(A) शुकनास (B) वैशम्पायन
(C) चन्द्रापीड (D) पुण्डरीक

8. वैशम्पायन किसका पुत्र है–
(A) तारापीड का (B) शुकनास का
(C) चन्द्रापीड का (D) पुण्डरीक का

9. तारापीड का मन्त्री है–
(A) शुकनास (B) इन्द्रायुध
(C) अर्थपति (D) चित्रभानु

10. चन्द्रापीड को किससे प्यार है–
(A) महाश्वेता से (B) चाण्डालकन्या से
(C) कादम्बरी से (D) पत्रलेखा से

11. चन्द्रापीड की माता है–
(A) रानी विलासवती (B) पत्रलेखा
(C) महाश्वेता (D) मनोरमा

12. पुण्डरीक के पिता हैं–
(A) चित्रभानु (B) अर्थकेतु
(C) शुकनास (D) श्वेतकेतु

13. महाश्वेता का आश्रम कहाँ स्थित है–
(A) अच्छोदसरोवर में (B) हेमकूट में
(C) मानसरोवर में (D) पम्पासरोवर में

14. कादम्बरी किसकी पुत्री है–
(A) शूद्रक की (B) श्वेतकेतु की
(C) गन्धर्वराज चित्ररथ की (D) शुकनास की

15. कादम्बरी की माता का नाम है–
(A) विलासवती (B) पत्रलेखा
(C) हंसपदिका (D) मदिरा

16. कादम्बरी कथा का उत्तरार्द्धभाग किसकी रचना है–
(A) बाणभट्ट (B) मयूरभट्ट
(C) पुलिन्दभट्ट या भूषणभट्ट (D) केयूरभट्ट

17. तारापीड की राजधानी है–
(A) उज्जयिनी (B) विदिशा
(C) काश्मीर (D) मालवा

18. कादम्बरी कथा का मुख्य रस है–
(A) अद्भुतरस (B) वीररस
(C) करुणरस (D) शृङ्गाररस

19. कादम्बरी कथा का प्रधान नायक है–
(A) चन्द्रापीड (B) वैशम्पायन
(C) जाबालि (D) कपिञ्जल

1. (D)	2. (B)	3. (C)	4. (A)	5. (D)	6. (B)	7. (C)	8. (B)	9. (A)	10. (C)
11. (A)	12. (D)	13. (A)	14. (C)	15. (D)	16. (C)	17. (A)	18. (D)	19. (A)	

20. बाणभट्टस्य मातुः नाम अस्ति–
(A) वसुमतीदेवी (B) राजदेवी
(C) महाश्वेती (D) महादेवी

21. शूद्रक पूर्वजन्म में क्या था–
(A) तारापीड (B) वैशम्पायन
(C) चन्द्रापीड (D) कपिञ्जल

22. बाणभट्ट की कादम्बरी क्या है–
(A) कथा (B) आख्यायिका
(C) मुक्तक (D) महाकाव्य

23. कादम्बरी के कथामुख के प्रारम्भ में किस राजा का वर्णन है–
(A) तारापीड का (B) चन्द्रापीड का
(C) शूद्रक का (D) पुण्डरीक का

24. युवा चन्द्रापीड को सारगर्भित उपदेश किसने दिया–
(A) वैशम्पायन (B) पुण्डरीक
(C) शूद्रक (D) शुकनास

25. ''न परिचयं रक्षति। नाभिजनमीक्षते। न रूपमालोकयते। न कुलक्रममनुवर्तते।'' ये पंक्तियाँ कादम्बरी में किस प्रसङ्ग में आयी हैं–
(A) कादम्बरी सौन्दर्यवर्णन
(B) चाण्डालकन्या वर्णन
(C) लक्ष्मी की निन्दा
(D) महाश्वेता गुणवर्णन

26. यह सारा काव्यजगत् किस कवि का उच्छिष्ट माना जाता है–
(A) बाणभट्ट का (B) कालिदास का
(C) श्रीहर्ष का (D) दण्डी का

27. ''भवादृशा एव भवन्ति भाजनान्युपदेशानाम्'' यहाँ 'भवादृशा' पद से किसका संकेत है–
(A) शूद्रक का (B) चन्द्रापीड का
(C) तारापीड का (D) बाणभट्ट का

28. 'करिणः' पद का अर्थ है–
(A) गजाः (B) अश्वाः
(C) किरणम् (D) हस्ताः

29. पुरुषों के लिए समग्र मलों को धोने में समर्थ बिना जल का स्नान है–
(A) सरस्वती कृपा (B) गुरू का उपदेश
(C) बल-पौरुष (D) देव-दर्शन

30. 'रजनिकरगभस्तयः' में 'गभस्तयः पद का अर्थ है–
(A) गर्भिणी (B) किरणें
(C) अन्धकार (D) प्रकाश

31. हारीत पुत्र था–
(A) महर्षि अगस्त्य का (B) महर्षि जाबालि का
(C) महर्षि श्वेतकेतु का (D) महर्षि विश्वामित्र का

32. शाल्मली वृक्ष का वर्णन किस ग्रन्थ में है–
(A) कादम्बरी शुकनासोपदेश में
(B) कादम्बरी कथामुख में
(C) कादम्बरी महाश्वेतावृत्तान्त में
(D) कादम्बरी उत्तरार्द्ध में

33. ''अतिगहनं तमो यौवनप्रभवम्'' एषा सूक्तिः कुतः उद्धृता अस्ति–
(A) कादम्बरी–कथामुखात्
(B) कादम्बरी-शुकनासोपदेशात्
(C) कादम्बरी-उत्तरार्द्धभागात्
(D) कादम्बर्यां नास्ति

34. चन्द्रापीड के चरित्र की विशेषता नहीं है–
(A) सहृदयप्रेमी (B) विवेकी युवक
(C) अस्पष्टवक्ता (D) पराक्रमी राजपुत्र

35. ''वाणी बाणो बभूव'' इति कथनं कस्य अस्ति–
(A) गोवर्द्धनाचार्यस्य (B) जयदेवस्य
(C) राजशेखरस्य (D) श्रीचन्द्रदेवस्य

36. ''बाणः कवीनामिह चक्रवर्ती'' यह किसका कथन है–
(A) सोड्ढल का (B) त्रिलोचन का
(C) धर्मदास का (D) मङ्खक का

37. ''बाणस्तु पञ्चाननः'' यह किसका कथन है–
(A) मंखक का (B) श्रीचन्द्रदेव का
(C) गोवर्द्धन का (D) राजशेखर का

20. (B)	**21. (C)**	**22. (A)**	**23. (C)**	**24. (D)**	**25. (C)**	**26. (A)**	**27. (B)**	**28. (A)**	**29. (B)**
30. (B)	**31. (B)**	**32. (B)**	**33. (B)**	**34. (C)**	**35. (A)**	**36. (A)**	**37. (B)**		

38. ''अपरिणामोपशमो दारुणो लक्ष्मीमदः'' यह सूक्ति कहाँ से उद्धृत है–
(A) कादम्बरी शुकनासोपदेश से
(B) कादम्बरी कथामुख से
(C) कादम्बरी महाश्वेतावृत्तान्त से
(D) कादम्बरी उत्तरार्द्ध भाग से

39. ''गन्धर्वनगरलेखेव पश्यत एव नश्यति'' यह कथन किसके लिए कहा गया है–
(A) सरस्वती के लिए (B) लक्ष्मी के लिए
(C) दुष्टों के लिए (D) राजधानी के लिए

40. 'दुष्टा, पिशाची, अनार्या, दुराचारिणी' आदि पदों का प्रयोग बाण ने किसके लिए किया है–
(A) दुष्टमहिलाओं के लिए (B) चाण्डालकन्या के लिए
(C) लक्ष्मी के लिए (D) रानी विलासवती के लिए

41. ''यथा यथा चेयं चपला दीप्यते'' यहाँ 'चपला' पद से किसका सङ्केत किया गया है–
(A) भगवती सरस्वती का (B) लक्ष्मी का
(C) अनार्या स्त्रियों का (D) विलासवती का

42. ''कुमार! तथा प्रयतेथाः यथा नोपहस्यसे जनैः, न निन्द्यसे साधुभिः, न धिक्क्रियसे गुरुभिः'' यह कथन किसने किससे कहा–
(A) चन्द्रापीड ने शुकनास से
(B) शुकनास ने चन्द्रापीड से
(C) तारापीड ने शुकनाम से
(D) शुकनास ने तारापीड से

43. बड़े-बूढ़ों के उपदेश को बकवास समझकर उसकी उपेक्षा कर देते हैं–
(A) दुष्ट राजागण (B) सेवकगण
(C) सैनिकगण (D) चन्द्रापीड

44. ''न प्रणमन्ति देवताभ्यः, न पूजयन्ति द्विजातीन् न मानयन्ति मान्यान्, न अभ्युत्तिष्ठन्ति गुरून्'' इन पंक्तियों में किसका वर्णन है–
(A) राजाओं का (B) सेवकों का
(C) विद्वानों का (D) देवताओं का

45. 'इषवः' पद का अर्थ है–
(A) शर (B) बाण
(C) तीर (D) उपर्युक्त सभी

46. 'कुलीराः इव तिर्य्यक् परिभ्रमन्ति' यहाँ 'कुलीर' पद का अर्थ है–
(A) कुम्हार (B) कद्दू
(C) केकड़ा (D) सर्प

47. 'खद्योत' पद का अर्थ है–
(A) आकाश (B) खरगोश
(C) प्राणी (D) जुगनू

48. ''कदलिका कामकरिणः'' यहाँ 'कदलिका' पद का अर्थ है–
(A) एक पुष्प विशेष (B) सरस्वती
(C) केले का बगीचा (D) लक्ष्मी

49. ''राहुजिह्वा धर्मेन्दुमण्डलस्य'' यहाँ 'राहुजिह्वा' पद प्रयुक्त है–
(A) राहुग्रस्त जीभ के लिए
(B) राहुग्रह के लिए
(C) लक्ष्मी के लिए
(D) राजाओं के जिह्वा के लिए

50. 'आशीविषाः' पद का अर्थ है–
(A) आशीर्वाद (B) सर्प
(C) विष (D) रोष

51. भीम किस राक्षसी पर मोहित हुए थे–
(A) शूर्पणखा (B) हिडिम्बा
(C) हेरम्बा (D) हाहाडम्बिका

52. लक्ष्मी कहाँ से पैदा होती है–
(A) विष्णु के पैरों से (B) ब्रह्मा की नाभि से
(C) क्षीरसागर से (D) शिव की जटाओं से

53. लक्ष्मी ने पारिजात के पल्लवों से क्या ग्रहण किया–
(A) कुटिलता (B) अस्थिरता
(C) सम्मोहन शक्ति (D) राग

54. लक्ष्मी 'कर्कशता' कहाँ से ग्रहण करती है–
(A) कौस्तुभमणि से (B) मदिरा से
(C) उच्चैःश्रवा से (D) हालाहल से

38. (A)	**39. (B)**	**40. (C)**	**41. (B)**	**42. (B)**	**43. (A)**	**44. (A)**	**45. (D)**	**46. (C)**	**47. (D)**
48. (C)	**49. (C)**	**50. (B)**	**51. (B)**	**52. (C)**	**53. (D)**	**54. (A)**			

55. पुरुषों में स्थित समस्त दोषों को गुणरूप में परिणत कर देते हैं–
(A) गुरूपदेश (B) लक्ष्मी की प्राप्ति
(C) राज्यप्राप्ति (D) बुद्धिवैभव

56. शुकनास, अनर्थ परम्परा की कड़ी में किसे नहीं मानते हैं–
(A) जन्मजातप्रभुता (B) युवावस्था
(C) अनुपमसौन्दर्य (D) शक्त्यसम्पन्नता

57. ''विदितवेदितव्यस्य अधीतसर्वशास्त्रस्य ते नाल्पम-प्युपदेष्टव्यमस्ति'' यहाँ 'अधीतसर्वशास्त्रस्य' पद किसके लिए प्रयुक्त है–
(A) शुकनास (B) चन्द्रापीड
(C) वैशम्पायन शुक (D) तारापीड

58. 'निम्नगा' पद का अर्थ है–
(A) नदी (B) गङ्गोत्री
(C) सूची (D) समुद्र

59. 'अमृतसहोदरापि कटुविपाका' कौन है–
(A) लक्ष्मी (B) अमृत
(C) जलधि (D) चाण्डालकन्या

60. महाकवि मयूरभट्ट की बहन से विवाह हुआ था–
(A) बाणभट्ट का (B) वामनभट्ट का
(C) भूषणभट्ट का (D) महिमभट्ट का

61. ''परस्परं विरुद्धचेन्द्रजालमिव दर्शयन्ती प्रकटयति जगति निजं चरितम्'' इस पंक्ति में किसका वर्णन है–
(A) शुकनास का (B) लक्ष्मी का
(C) तारापीड का (D) चाण्डालकन्या का

62. 'उपशशाम' में लकार है–
(A) लृट् (B) लुट्
(C) लिट् (D) लङ्

63. 'दातारम्' पद में प्रकृति-प्रत्यय है–
(A) दा+तृच्+ द्वितीया, बहु.
(B) दा+अम्+प्रथमा, एक.
(C) दा+तृच्+द्वितीया, एक.
(D) दाञ्+घञ्+प्रथमा, बहु.

64. 'वारि' शब्द का तृतीया एक. में रूप होगा–
(A) वारेण (B) वारिणा
(C) वारिया (D) वारिसा

65. ''अवधारयन्तः'' में प्रत्यय हैं–
(A) शानच् (B) तृच्
(C) शतृ (D) घञ्

66. ''ग्रहैरिव गृह्यन्ते मन्त्रैरिवावेश्यन्ते, पिशाचैरिव ग्रस्यन्ते'' इत्यादि स्थलों में अलङ्कार है–
(A) रूपक (B) उत्प्रेक्षा
(C) निदर्शना (D) उपमा

67. ''पुरुषोत्तमरतापि खलजनप्रिया, रेणुमयीव स्वच्छमपि कलुषीकरोति'' इन पंक्तियों में अलङ्कार है–
(A) विरोधाभास (B) दीपक
(C) निदर्शना (D) उत्प्रेक्षा

68. '''विग्रहवत्यप्यप्रत्यक्षदर्शना'' इस पद में सन्धि है–
(A) हल्सन्धि (B) गुणसन्धि
(C) वृद्धिसन्धि (D) यण्सन्धि

69. 'अपरिणामोपशमः' का सन्धिविच्छेद होगा–
(A) अपरिणामा+ओपशम् (B) अपरिणाम+उपशमः
(C) अपरिणाम+औपशम (D) अपरीयाम+उपशमः

70. 'राजप्रकृतिः' में समास है–
(A) षष्ठी तत्पु. (B) बहुव्रीहि
(C) द्वन्द्व (D) अव्ययीभाव

71. 'विटान् पान्ति इति' इस व्युत्पत्ति से होगा–
(A) विटपाः (B) विटकाः
(C) विटकान् (D) विटायाः

72. शुकनासोपदेश में मुख्य प्रतिपाद्य विषय है–
(A) द्यूतक्रीडा का
(B) राज्यसञ्चालन का
(C) लक्ष्मी को प्राप्त करने की विधियों का
(D) युवावस्था में लक्ष्मीजन्य मानसिक विकृतियों एवं उनसे होने वाली हानियों का

55. (A)	**56. (D)**	**57. (B)**	**58. (A)**	**59. (A)**	**60. (A)**	**61. (B)**	**62. (C)**	**63. (C)**	**64. (B)**
65. (C)	**66. (B)**	**67. (A)**	**68. (D)**	**69. (B)**	**70. (A)**	**71. (A)**	**72. (D)**		

73. कादम्बरी कथा का नामकरण हुआ है–
(A) नायक के नाम पर (B) नायिका के नाम पर
(C) दासी के नाम पर (D) शुकनास के नाम पर

74. चन्द्रापीड के एक जन्म का नाम था–
(A) वैशम्पायन (B) पुण्डरीक
(C) कपिञ्जल (D) शूद्रक

75. लक्ष्मी, पापी समझकर किसके पास तक नहीं जाती–
(A) विद्वानों के (B) धनहीनों के
(C) विनयशील के (D) राजाओं के

76. ''कुप्यन्ति हितवादिने'' यहाँ 'हितवादिने' में कौन सी विभक्ति किस सूत्र से हुई है–
(A) तृतीया–''हेतौ''
(B) षष्ठी–''षष्ठी शेषे''
(C) चतुर्थी–''क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः''
(D) सप्तमी–''आधारोऽधिकरणम्''

77. ''अकालप्रावृड्गुणकलहंसकानाम्, प्रस्तावना कपटनाटकस्य, पुरः पताका सर्वाविनयानाम्'' इत्यादि पंक्तियों में अलङ्कार है–
(A) उपमा (B) रूपक
(C) उत्प्रेक्षा (D) दीपक

78. समुद्रमन्थन से लक्ष्मी सहित कितने रत्न निकले थे–
(A) 18 (B) 17
(C) 14 (D) 19

79. 'असिधारा' पद का अर्थ है–
(A) तलवार की धार (B) जलधारा
(C) लक्ष्मी की चञ्चलता (D) समुद्र-प्रवाह

80. सरस्वती द्वारा अपनाये गए व्यक्ति को ईर्ष्या के कारण कौन नही अपनाती–
(A) राजागण (B) लक्ष्मी
(C) शुकनास (D) कादम्बरी

81. ''अकाला चासौ प्रावृट् इति अकालप्रावृट्'' यहाँ समास है–
(A) नञ् तत्पुरुष (B) कर्मधारय
(C) अव्ययीभाव (D) बहुव्रीहि

82. विदिशा, किस नदी के किनारे स्थित थी–
(A) वेत्रवती के (B) सरयू के
(C) गङ्गा के (D) महानदी के

83. चाण्डालकन्या किसके समीप आयी–
(A) महाश्वेता के (B) कादम्बरी के
(C) पुण्डरीक के (D) शूद्रक के

84. 'त्रिभुवनप्रसवभूमिरिव विस्तीर्णा'' विशेषता किसके लिए प्रयुक्त है–
(A) विदिशा (B) उज्जयिनी
(C) विन्ध्याटवी (D) हेमकूट

85. वैशम्पायन की प्रेमिका थी–
(A) कादम्बरी (B) महाश्वेता
(C) चाण्डालकन्या (D) विनता

86. कादम्बरी में वर्णन नहीं है–
(A) अच्छोदसरोवर का (B) पम्पासरोवर का
(C) शाल्मलीवृक्ष का (D) देवदारु का

87. वैशम्पायन पूर्व जन्म में था–
(A) शूद्रक (B) पुण्डरीक
(B) कुमारपालित (D) चन्द्रापीड

88. 'तुरङ्गबाण' किसकी उपाधि है–
(A) बाणभट्ट की
(B) अभिनवबाण की
(C) अम्बिकादत्तव्यास की
(D) भवभूति की

89. ''आधुनिक बाण'' के रूप में जाना जाता है–
(A) सुबन्धु को (B) बाण को
(C) अम्बिकादत्त व्यास को (D) दण्डी को

90. बाणभट्ट के भाई थे–
(A) 4 (B) 6
(C) 2 (D) 5

91. ''सम्पत्तिरूपी तिमिर में होने वाला अन्धापन कष्टकर होता है'' किसने कहा–
(A) चन्द्रापीड ने (B) तारापीड ने
(C) द्वारपाल ने (D) शुकनास ने

73. (B)	**74. (D)**	**75. (C)**	**76. (C)**	**77. (B)**	**78. (C)**	**79. (A)**	**80. (B)**	**81. (B)**	**82. (A)**
83. (D)	**84. (A)**	**85. (B)**	**86. (D)**	**87. (B)**	**88. (A)**	**89. (C)**	**90. (C)**	**91. (D)**	

92. ''अहङ्कार से उत्पन्न उष्णता, शीतल औषधियों से भी शान्त नही होती'' यह कथन किसने किससे कहा–
(A) शुकनास ने चन्द्रापीड से
(B) चन्द्रापीड ने शुकनास से
(C) शुकनास ने तारापीड से
(D) चन्द्रापीड ने तारापीड से

93. ''त्रयीमयाय त्रिगुणात्मने नमः'' इस सूक्ति वाक्य में 'नमः' के योग में किस विभक्ति का प्रयोग हुआ है–
(A) चतुर्थी (B) षष्ठी
(C) पञ्चमी (D)प्रथमा

94. राज्याभिषेक के समय किसकी आवश्यकता होती है–
(A) सेना की (B) विश्राम की
(C) धन की (D) उपदेश की

95. कादम्बरी में वर्णित 'इन्द्रायुध' था–
(A) मन्त्री (B) राजा
(C) घोड़ा (D) वज्र

96. कादम्बरी विभक्त है–
(A) एक भाग में (B) तीन भागों में
(C) दो भागों में (D) चार भागों में

97. कादम्बरी की कथा का अन्त होता है–
(A) तारापीड-पत्रलेखा के मिलन से
(B) चाण्डालकन्या-शूद्रक के मिलन से
(C) वैशम्पायन-जाबालि के मिलन से
(D) चन्द्रापीड-कादम्बरी के मिलन से

98. कामपीड़ा में दिवङ्गत हो गया था–
(A) तारापीड (B) वैशम्पायन
(C) पुण्डरीक (D) द्वैपायन

99. चन्द्रापीड पिता के बुलाने पर आता है–
(A) उज्जयिनी में (B) अच्छोदसरोवर में
(C) विदिशा में (D) हेमकूटपर्वत में

100. चन्द्रापीड का राज्याभिषेक करने की इच्छा किसे हुई–
(A) वैशम्पायन को (B) शुकनास को
(C) तारापीड को (D) कादम्बरी को

92. (A) 93. (A) 94. (D) 95. (C) 96. (C) 97. (D) 98. (C) 99. (A) 100. (C)

मेघदूतम् (वस्तुनिष्ठप्रश्नाः)

1. मेघ की पत्नी है–
(A) अभिसारिका (B) विशालाक्षी
(C) विद्युत् (D) उज्जयिनी नगरी

2. ''ऐश्वर्यं यदि वाञ्छसि प्रियसखे! शाकुन्तलं सेव्यताम्'' यह किसके कथन का अनुवाद है–
(A) मैक्समूलर (B) क्षेमेन्द्र
(C) गेटे (D) डॉ० कीथ

3. कालिदास के मन्दाक्रान्ता छन्द की प्रशंसा की है–
(A) मल्लिनाथ ने (B) जयदेव ने
(C) दण्डी ने (D) क्षेमेन्द्र ने

4. 'भासो हासः कविकुलगुरुः कालिदासो विलासः' इति कथनं कस्य अस्ति–
(A) जयदेवस्य (B) बाणस्य
(C) राजशेखरस्य (D) मल्लिनाथस्य

5. सुमेलित करें–

कथनम्	वक्ता
(1) ''पुरा कवीनां गणनाप्रसङ्गे कनिष्ठिकाधिष्ठितकालिदासः''	(क) मल्लिनाथ
(2) 'निर्गतासु न वा कस्य कालिदासस्य सूक्तिषु''	(ख) उद्भट
(3) ''शृङ्गारे ललितोद्गारे कालिदासत्रयी किमु''	(ग) बाणः
(4) ''उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्''	(घ) राजशेखर

(A) (1) क (2) ग (3) ख (4) घ
(B) (1) घ (2) क (3) ख (4) ग
(C) (1) क (2) ग (3) घ (4) ख
(D) (1) क (2) ख (3) घ (4) ग

6. किस नदी समूह का वर्णन मेघदूतम् में नहीं मिलता है–
(A) वेत्रवती, क्षिप्रा, गम्भीरा
(B) रेवा, निर्विन्ध्या, गन्धवती
(C) गङ्गा, यमुना, सरस्वती
(D) चर्मण्वती, कावेरी, ब्रह्मपुत्र

7. पूर्वमेघ में कालिदास किस नगरी का सर्वोत्कृष्ट वर्णन करते हैं–
(A) अलका का (B) उज्जयिनी का
(C) दशपुर का (D) विदिशा का

8. किस पर्वत समूह का वर्णन कालिदास ने अपने मेघदूतम् में नहीं किया है–
(A) आम्रकूट और कैलास (B) हिमालय और विन्ध्य
(C) देवगिरि और रामगिरि (D) नीचैगिरि और उच्चैगिरि

9. सुमेलित करें–

कथनम्	वक्ता
(1) कालिदासगिरां सारं कालिदासः सरस्वती	(क) श्रीकृष्णः
(2) कालिदासकविता नवं वयः	(ख) मम्मटः
(3) कालिदासादीनामिव यशः	(ग) मल्लिनाथः
(4) न कालिदासादपरस्य वाणी	(घ) उद्भटः

(A) (1) ग (2) घ (3) ख (4) क
(B) (1) ग (2) क (3) ख (4) घ
(C) (1) क (2) ख (3) ग (4) घ
(D) (1) घ (2) ग (3) ख (4) क

10. 'स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु' यह सूक्ति है–
(A) पूर्वमेघ में (B) उत्तरमेघ में
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में (B) शृङ्गारशतकम् में

11. 'याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा' यह कथन है–
(A) पूर्वमेघ के 5वें श्लोक में
(B) पूर्वमेघ के 6वें श्लोक में
(C) पूर्वमेघ के 7वें श्लोक में
(D) पूर्वमेघ के चतुर्थ श्लोक में

1. (C) **2.** (C) **3.** (D) **4.** (A) **5.** (C) **6.** (D) **7.** (B) **8.** (D) **9.** (A) **10.** (A) **11.** (B)

12. 'नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण' कालिदास ने इन सुन्दर वचनों को कहा है–
(A) पूर्वमेघ के पूर्वार्द्ध में (B) उत्तरमेघ के उत्तरार्ध में
(C) उत्तरमेघ के पूर्वार्द्ध में (D) पूर्वमेघ के उत्तरार्ध में

13. मेघदूतम् में किस देव का वर्णन नहीं मिलता है–
(A) राम और सीता (B) शिव, पार्वती और कार्तिकेय
(C) विष्णु और बलराम (D) ब्रह्मा, नारद और सन्तोषी

14. यक्ष मेघ का प्रथम दर्शन कहाँ करता है–
(A) रामगिरि में (B) कैलाशपर्वत में
(C) अलकापुरी में (D) विन्ध्यपर्वत में

15. कालिदास का मेघ रूपी दूत की कल्पना प्रेरित है–
(A) महाभारत से (B) वाल्मीकिरामायण से
(C) भागवतपुराण से (D) वेदों से

16. किस ग्रन्थ में एकमात्र मन्दाक्रान्ता छन्द का ही प्रयोग मिलता है–
(A) गीतगोविन्दम् में (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में
(C) मेघदूतम् में (D) रघुवंशम् में

17. सम्पूर्ण मेघदूतम् में किस रस का रसास्वादन होता है–
(A) सम्भोगशृङ्गार का (B) विप्रलम्भशृङ्गार का
(C) करुणरस का (D) शान्तरस का

18. पुराणों में प्राप्त विरही यक्ष के उपयुक्त नाम की कल्पना करें–
(A) विरहदेवः (B) विशालाक्षी
(C) कुमारगन्धर्व (D) हेममाली

19. महाकवि कालिदास ने मेघदूतम् के कथानक को कहाँ से लिया होगा–
(A) भागवतपुराण (B) वायुपुराण
(C) ब्रह्मवैवर्तपुराण (D) इनमें से कोई नहीं

20. रामगिरि पर्वत में यक्ष कितने महीने व्यतीत कर चुका है–
(A) नव माह (B) चार माह
(C) आठ माह (D) दश माह

21. गीतिकाव्य या खण्डकाव्य के रूप में सर्वप्रथम गणना होती है–
(A) गीतगोविन्दम् की (B) वाल्मीकिरामायणम् की
(C) गीता की (D) मेघदूतम् की

22. उदयन या वासवदत्ता की प्रेमकथायें कही जाती हैं–
(A) अलकापुरी में (B) उज्जयिनी में
(C) दशार्ण में (D) विदिशा में

23. मेघदूतम् में सर्वप्रथम किस नदी का वर्णन है–
(A) रेवा (नर्मदा) नदी का (B) वेत्रवती नदी का
(C) निर्विन्ध्या नदी का (D) शिप्रा नदी का

24. शिप्रा नदी के तट पर स्थित महाकाल का मन्दिर किस नगरी में अवस्थित है–
(A) अलकापुरी में (B) उज्जयिनी में
(C) दशार्ण में (D) चित्रकूट में

25. मल्लिनाथ के अनुसार सम्पूर्ण मेघदूतम् में प्रक्षिप्त श्लोकों सहित कुल पद्यों की संख्या है–
(A) लगभग 121 (B) लगभग 132
(C) लगभग 152 (D) लगभग 102

26. कालिदास किस देवता के उपासक माने जाते हैं–
(A) विष्णु के (B) शिव के
(C) शक्ति के (D) राम के

27. भौगोलिक स्थानों के वर्णन से परिपूर्ण ग्रन्थ है–
(A) आभिज्ञानशाकुन्तलम् (B) मेघदूतम्
(C) शिशुपालवधम् (D) किरातार्जुनीयम्

28. ''अनावृतकपाटं द्वारं देहि'' यह कथन है–
(A) कालिदास का (B) विद्योत्तमा का
(C) शारदातनय का (D) कालीदेवी का

29. महाकवि कालिदास के श्वसुर माने जाते हैं–
(A) शारदानन्द (B) ब्रह्मानन्द
(C) शिवानन्द (D) विद्यानन्द

30. ''अस्ति कश्चित् वाग्विशेषः'' विद्योत्तमा का यह कथन किसके लिए कहा गया–
(A) अपने पिता के लिए
(B) शास्त्रार्थ में आए पण्डितों के लिए
(C) मूर्ख कालिदास के लिए
(D) माँ काली की कृपा प्राप्त कालिदास के लिए

12. (B)	**13. (D)**	**14. (A)**	**15. (B)**	**16. (C)**	**17. (B)**	**18. (D)**	**19. (C)**	**20. (C)**	**21. (D)**
22. (B)	**23. (A)**	**24. (B)**	**25. (A)**	**26. (B)**	**27. (B)**	**28. (A)**	**29. (A)**	**30. (D)**	

31. ''मा कौलीनादसितनयने मय्यविश्वासिनी भूः'' यहाँ 'कौलीनात्' पद का अर्थ है–
(A) यक्षिणी (B) कुलीन वर्ग
(C) लोकापवाद (D) कुलपरम्परा

32. ''अङ्गेनाङ्गं प्रतनु तनुना'' यहाँ 'प्रतनु' पद में विभक्ति एवं वचन है–
(A) प्रथमा एकवचन (B) द्वितीया एकवचन
(C) मूलप्रातिपदिक (D) अव्ययपदम्

33. 'अम्बुवाहम्' पद का अर्थ है–
(A) अभ्र (B) जलमुक्
(C) बादल (D) उपर्युक्त सभी

34. 'प्रक्रमेथाः' पद की व्याकरणात्मक टिप्पणी होगी–
(A) प्र + क्रीम् + तिप् + विधिलिङ्
(B) प्र + क्रम् + सिप् + विधिलिङ्
(C) प्र + कृ + थ + लोट्
(D) प्र + की + सिप् + लट्

35. 'सहस्व' पद में प्रकृति प्रत्यय है–
(A) सह+सिप्+विधिलिङ् (B) सह+तिप्+लोट्
(C) सह+सिप्+लोट् (D) सह+सिप्+लृट्

36. ''तस्योत्सङ्गे निहितमसकृद् दुःखदुःखेन गात्रम्'' यहाँ 'असकृत्' पद का अर्थ है–
(A) एक बार (B) बार-बार
(C) कभी-कभी (D) सम्पूर्ण

37. 'पेशलम्' पद का शब्दार्थ है–
(A) सुन्दर अथवा कोमल (B) आँसू
(C) नवीन (D) कठोर

38. 'विगलितशुचा' में विभक्ति एवं वचन है–
(A) तृतीया एकवचन (B) द्वितीया एकवचन
(C) प्रथमा एकवचन (D) प्रथमा बहुवचन

39. 'या शिखा दाम हित्वा' यहाँ 'दाम' शब्द का अर्थ है–
(A) माला (B) मूल्य
(C) सर्प (D) वियोग

40. 'गत्वा सद्यः कलभतनुतां शीघ्रसम्पातहेतोः' यहाँ 'कलभ' शब्द प्रयुक्त है–
(A) सिंह के बच्चे के लिए
(B) गीदड़ के बच्चे के लिए
(C) हाथी के बच्चे के लिए
(D) कमल के फूल के लिए

41. यक्ष के घर में है–
(A) वापी (B) क्रीडाशैल
(C) मन्दारवृक्ष (D) सभी

42. अलकापुरी स्थित कुबेर के उद्यान का नाम है–
(A) नन्दनोद्यान (B) आनन्दोद्यान
(C) कुमुदोद्यान (D) वैभ्राजोद्यान

43. ''हस्ते लीलाकमलमलके बालकुन्दानुविद्धम्'' इस पंक्ति में वर्णन है–
(A) उज्जयिनी की वनिताओं का
(B) अलकापुरी की कामिनियों का
(C) विदिशा की सुन्दरियों का
(D) दशार्ण की कन्याओं का

44. ''प्रायः सर्वो भवति करुणावृत्तिरार्द्रान्तरात्मा'' यह सूक्ति है–
(A) उत्तरमेघ की
(B) पूर्वमेघ की
(C) हंसदूत की
(D) पूर्वमेघ के अन्तिम श्लोक की

45. मेघदूतम् की अन्तिम पंक्ति है–
(A) मा भूदेवं क्षणमपि च ते विद्युता विप्रयोगः
(B) इष्टान् देशान् जलद विचर प्रावृषा संभृतश्रीः
(C) नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण
(D) सूर्यापाये न खलु कमलं पुष्यति स्वामभिख्याम्

46. मेघदूतम् का नायक है–
(A) कुबेर (B) मेघ
(C) यक्ष (D) शिव

47. यक्ष शाप की एक वर्ष की अवधि कहाँ व्यतीत करता है–
(A) देवगिरि में (B) रामगिरि पर्वत में
(C) उज्जयिनी में (D) अलकापुरी में

31. (C) **32.** (B) **33.** (D) **34.** (B) **35.** (C) **36.** (B) **37.** (A) **38.** (A) **39.** (A) **40.** (C)
41. (D) **42.** (D) **43.** (B) **44.** (A) **45.** (A) **46.** (C) **47.** (B)

48. कैलाशपर्वत तक मेघ के सहयात्री कौन होंगे–
(A) राजहंस (B) चातक
(C) यक्ष (D) बलाका

49. मेघदूतम् के अनुसार भगवान् कार्तिकेय का निवास स्थान कहाँ है–
(A) रामगिरि में (B) कैलाशपर्वत में
(C) देवगिरि में (D) विशाला में

50. यक्षिणी शापदिवसों की गिनती किससे करती है–
(A) फलों से (B) पत्तों से
(C) शङ्ख से (D) फूलों से

51. यक्ष के शाप की समाप्ति किस दिन होगी–
(A) कार्तिक देवोत्थान एकादशी को
(B) हरिशयनी एकादशी को
(C) माघशुक्ल सप्तमी को
(D) आषाढ़ कृष्ण प्रतिपदा को

52. मेघदूतम् का मेघ किसका अनुचर था–
(A) कुबेर का (B) वरुण का
(C) यम का (D) इन्द्र का

53. 'धूमज्योतिस्सलिलमरुतां' के संयोग से पैदा होता है–
(A) यक्ष (B) मेघ
(C) जल (D) प्रकाश

54. ''स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु'' यह पंक्ति किस नदी से सम्बद्ध है–
(A) रेवा (B) निर्विन्ध्या
(C) शिप्रा (D) गम्भीरा

55. मेघदूतम् के अनुसार उज्जयिनी में किसका सुप्रसिद्ध मन्दिर है–
(A) श्रीकृष्ण का (B) यक्ष का
(C) उदयन का (D) महाकाल का

56. 'ज्ञातास्वादो विवृतजघनां को विहातुं समर्थः' यह किस नदी से सम्बद्ध है–
(A) निर्विन्ध्या (B) शिप्रा
(C) रेवा (D) गम्भीरा

57. 'अन्तःशुद्धस्त्वमपि भविता वर्णमात्रेण कृष्णः' यहाँ 'त्वम्' पद से किसका सङ्केत है–
(A) यक्ष का (B) यक्षिणी का
(C) मेघ का (D) कुबेर का

58. 'सगरतनयस्वर्गसोपानपंक्तिम्' यह किस नदी का विशेषण है–
(A) रेवाम् (B) जह्नुकन्याम् (गङ्गाम्)
(C) गम्भीराम् (D) यमुनाम्

59. ''सोपानत्वं कुरु मणितटारोहणायाग्रयायी'' इसमें मेघ का सोपानत्व किसके आरोहण के लिए उद्दिष्ट है–
(A) रति-कामदेव (B) शिव-पार्वती
(C) लक्ष्मी-नारायण (D) यक्ष-यक्षिणी

60. कालिदास के अनुसार यक्षों की एकमात्र अवस्था क्या है–
(A) शैशव (B) जरा
(C) कौमार (D) यौवन

61. ''यत्रोन्मत्तभ्रमरमुखराःपादपा नित्यपुष्पाः'' यहाँ 'यत्र' पद से किस नगरी का सङ्केत है–
(A) उज्जयिनी का (B) विदिशा का
(C) अलका का (D) दशपुर का

62. अलका में कुबेर के भवन से किस दिशा में यक्ष का आवास है–
(A) पूर्व (B) पश्चिम
(C) उत्तर (D) दक्षिण

63. यक्ष के घर के सामने कौन सा वृक्ष है–
(A) अशोक का (B) कल्पवृक्ष का
(C) देवदारु का (D) मदार का

64. यक्ष के आवास के सामने का पहाड़ किससे बना है–
(A) मरकत मणि से (B) इन्द्रनील मणि से
(C) पद्मराग से (D) चन्द्रकान्त मणि से

65. यक्ष के द्वार पर किसका चित्र अङ्कित है–
(A) शङ्ख, चक्र का (B) गदा, पद्म का
(C) शङ्ख-पद्म का (D) चक्र-गदा का

48. (A) 49. (C) 50. (D) 51. (A) 52. (D) 53. (B) 54. (B) 55. (D) 56. (D) 57. (C)
58. (B) 59. (B) 60. (D) 61. (C) 62. (C) 63. (D) 64. (B) 65. (C)

66. ''कच्चिद् भर्तुः स्मरसि रसिके त्वं हि तस्य प्रियेति'' यहाँ 'रसिके' पद किसके लिए प्रयुक्त है–
(A) यक्षिणी　(B) मयूरी
(C) सारिका　(D) कोकिला

67. ''भूयो भूयःस्वयमपिकृतां मूर्च्छनां विस्मरन्ति'' यह पंक्ति किस वाद्ययन्त्र से सम्बद्ध है–
(A) वीणा　(B) पखावत
(C) दुन्दुभि　(D) बाँसुरी

68. यक्षों का निवास स्थान है–
(A) रामगिरि　(B) हिमालय
(C) अलका　(D) उज्जयिनी

69. मेघदूतम् में यक्ष का स्वामी कौन है–
(A) शङ्कर　(B) इन्द्र
(C) कुबेर　(D) यम

70. ''रिक्तः सर्वो भवति हि लघुःपूर्णता गौरवाय'' यह पंक्ति यक्ष किसके लिए कहता है–
(A) यक्षिणी के लिए　(B) मेघ के लिए
(C) कुबेर के लिए　(D) अलकापुरी के लिए

71. तस्योत्सङ्गे प्रणयिन इव स्त्रस्तगङ्गादुकूलाम्'' इस पंक्ति में किसका वर्णन है–
(A) गङ्गा का　(B) यक्षिणी का
(C) उज्जयिनी का　(D) अलका का

72. ''गर्जितैर्भाययेस्ताः'' यहाँ 'भाययेः' में लकार है–
(A) लिट्　(B) लुङ्
(C) विधिलिङ्　(D) लोट्

73. ''नेष्यन्ति त्वां सुरयुवतयोयन्त्रधारागृहत्वम्'' यहाँ त्वाम्' पद से किसका सङ्केत है–
(A) मेघ का　(B) यक्ष का
(C) कुबेर का　(D) इन्द्र का

74. कैलाश की चोटी पर जब मेघ पहुँचेगा, तो कैलाश पर्वत की शोभा किसकी तरह हो जायेगी–
(A) कृष्ण　(B) बलराम
(C) नारद　(D) काले मेघ

75. 'प्रालेयाद्रिः' पद का अर्थ है–
(A) कैलाश　(B) हिमालय
(C) विन्ध्य　(D) आम्रकूट

76. 'मोघीकर्तुं चटुलशफरोद्वर्तनप्रेक्षितानि यहाँ 'शफर' पद प्रयुक्त है–
(A) सफेदी के लिए　(B) सुन्दरता के लिए
(C) यक्षिणी के लिए　(D) मछली के लिए

77. 'मा स्म भूर्विक्लवास्ताः' यहाँ 'मा स्म' पद में लकार है–
(A) लट्　(B) लुङ्
(C) लिट्　(D) लङ्

78. ''पुण्यं यायास्त्रिभुवनगुरोर्धाम चण्डीश्वरस्य'' यहाँ 'यायाः' पद में प्रकृति प्रत्यय है–
(A) या + विधिलिङ् म0 पु0 एक0
(B) इण् + लोट् म0 पु0 बहु0
(C) या + लोट् म0 पु0 द्विवचन
(D) या+लृट् उ0 पु0 एकवचन

79. 'दर्शितावर्तनाभेः' पद में विभक्ति है–
(A) पञ्चमी　(B) षष्ठी
(C) द्वितीया　(D) चतुर्थी

80. रास्ता टेढा होने के बाद भी यक्ष मेघ को उत्तर की ओर ले जाकर किसका दर्शन कराना चाहता है–
(A) स्कन्द का　(B) उज्जयिनी का
(C) गम्भीरा का　(D) निर्विन्ध्या का

81. 'प्रकृतिकृपणाः' में समास है–
(A) तृतीया तत्पुरुष　(B) षष्ठी तत्पुरुष
(D) बहुव्रीहि　(D) सप्तमी तत्पुरुष

82. ''प्रत्यासन्ने नभसि दयिता................'' यहाँ 'नभसि' पद का अर्थ है–
(A) आषाढ मास　(B) श्रावण मास
(C) आकाश　(D) मेघ

83. ''अन्तर्वाष्पः चिरमनुचरो'' यहाँ 'अन्तर्वाष्पः' पद में समास है–
(A) षष्ठी तत्पुरुष　(B) कर्मधराय
(C) बहुव्रीहि　(D) अव्ययीभाव

66. (C)	**67. (A)**	**68. (C)**	**69. (C)**	**70. (B)**	**71. (D)**	**72. (C)**	**73. (A)**	**74. (B)**	**75. (B)**
76. (D)	**77. (B)**	**78. (A)**	**79. (B)**	**80. (B)**	**81. (A)**	**82. (B)**	**83. (C)**		

84. मल्लिनाथ 'रामगिरि' पर्वत को कहाँ मानते हैं–
(A) रामगढ़ (मध्यभारत) (B) रामटेक (नागपुर)
(C) चित्रकूट (D) हिमालय पर्वत के पास

85. 'अस्तङ्गमितमहिमा' यहाँ 'महिमा' शब्द में प्रत्यय है–
(A) महत्+इमनिच् (B) महान्+अण्
(C) महा+इतच् (D) महिम+आ

86. 'राजराज' पद में समास होगा–
(A) चतुर्थी तत्पुरुष (B) बहुव्रीहि
(C) तृतीया तत्पुरुष (D) षष्ठी तत्पुरुष

87. 'कनकवलयभ्रंशरिक्तप्रकोष्ठः' यह पद किसका विशेषण है–
(A) सः यक्षः (B) कुबेरः
(C) मेघः (D) उपर्युक्त सभी का

88. ''जानामि त्वां प्रकृतिपुरुषं कामरूपं मघोनः'' यहाँ 'मघोनः' पद किसके लिए और उसमें क्या विभक्ति है–
(A) कुबेर के लिए, पञ्चमी विभक्ति
(B) इन्द्र के लिए, षष्ठी विभक्ति
(C) यक्ष के लिए, द्वितीया विभक्ति
(D) मेघ के लिए, षष्ठी विभक्ति

89. मेघदूतम् के अनुसार सन्तप्त लोगों के लिए एक मात्र सहारा कौन है–
(A) यक्षिणी (B) मेघ
(C) कुबेर (D) यक्ष

90. 'त्वय्युपेक्षेत्' पद में सन्धि है–
(A) हल् सन्धि (B) विसर्ग सन्धि
(C) अयादिसन्धि (D) यण्सन्धि

91. 'द्रक्ष्यसि भ्रातृजायाम्' के अनुसार कौन अपनी भाभी को देखेगा–
(A) यक्ष (B) कुबेर
(C) राजहंस (D) मेघ

92. 'विप्रयोगे रुणद्धि' यहाँ 'रुणद्धि' पद में धातु है–
(A) रुध् (B) रुण्
(C) रोध् (D) रुधृम्

93. ''नूनं यास्यत्यमरमिथुनप्रेक्षणीयामवस्थां, मध्ये श्यामः स्तन इव भुवः शेषविस्तारपाण्डुः'' इस पद्यांश में अलङ्कार है–
(A) रूपक (B) उपमा
(C) उत्प्रेक्षा (D) निदर्शना

94. 'तन्वी श्यामा शिखरिदशना पक्वबिम्बाधरोष्ठी'' यहाँ अलङ्कार है–
(A) उत्प्रेक्षा (B) उपमा
(C) रूपक (D) दीपक

95. ''सृष्टिराद्येव धातुः'' पद से किसका सङ्केत किया गया है–
(A) मेघ का (B) यक्ष का
(C) यक्षिणी का (D) अलका का

96. मेघदूतम् में किस प्रकार का मङ्गलाचरण है–
(A) आशीर्वादात्मक (B) वस्तुनिर्देशात्मक
(C) नमस्क्रियात्मक (D) उपर्युक्त में कोई नहीं

97. मन्दाक्रान्ता छन्द में होते हैं–
(A) मगण भगण नगण तगण रगण दो गुरु–17
(B) भगण मगण नगण तगण तगण एक गुरु–16
(C) मगण भगण नगण तगण तगण दो गुरु–17
(D) भगण भगण मगण तगण नगण दो गुरु–17

98. मेघदूतम् की व्याख्या की जा सकती है–
(A) मेघः एव दूतः, मेघदूतमधिकृत्य कृतं काव्यं मेघदूतम्
(B) मेघः दूतः यस्मिन् काव्ये तत् मेघदूतम्
(C) केवल पहला सही है।
(D) दोनों सही है

99. संस्कृत साहित्य में 'सन्देशकाव्य' या 'दूतकाव्य' का प्रारम्भ माना जा सकता है–
(A) हंसदूतम् से (B) मेघदूतम् से
(C) नेमिदूतम् से (D) गीतगोविन्दम् से

100. ''सेविष्यन्ते नयनसुभगं खे भवन्तं बलाकाः'' यहाँ 'बलाकाः' पद का अर्थ है–
(A) बालिकायें (B) यक्षिणियाँ
(C) बगुलियाँ (D) वेश्यायें

84. (C)	**85. (A)**	**86. (D)**	**87. (A)**	**88. (B)**	**89. (B)**	**90. (D)**	**91. (D)**	**92. (A)**	**93. (C)**
94. (B)	**95. (C)**	**96. (B)**	**97. (C)**	**98. (D)**	**99. (B)**	**100. (C)**			

प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक चयनपरीक्षा (TGT) आदर्शप्रश्नपत्र– 1

1. निम्न में कौन सा अशुद्ध है–
(A) त्रिंशत् (B) द्वात्रिंशत्
(C) द्विचत्वारिंशत् (D) अष्टत्रिंशत्

2. पाँच से लेकर दश तक की संख्याएँ–
(A) तीनों वचनों में होती हैं।
(B) तीनों लिङ्गों एवं तीनों वचनों में पृथक्-पृथक् होती हैं।
(C) तीनों लिङ्गों और एक वचन में होती हैं।
(D) तीनों लिङ्गों में समान और बहुवचन में होती है।

3. 'वारि' शब्द का मूल प्रातिपदिक रूप है–
(A) वारिन् (B) वारिण
(C) वारि (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

4. 'पति' शब्द सप्तमी विभक्ति एकवचन का रूप है–
(A) पतौ (B) पत्यौ
(C) पते (D) पत्याम्

5. 'दधि' षष्ठी विभक्ति बहुवचन का रूप है–
(A) दधिनाम् (B) दधीनाम्
(C) दधनाम् (D) दध्नाम्

6. 'रम्यान्तरः कमलिनीहरितैः सरोभिः' में छन्द है–
(A) मालिनी (B) वसन्ततिलका
(C) हरिणी (D) वंशस्थ

7. 'क्तवतु' प्रत्यय का प्रयोग होता है–
(A) कर्तृवाच्य में (B) कर्मवाच्य में
(C) भाववाच्य में (D) कर्मकर्तृवाच्य में

8. 'ज्ञानम्' पद में है–
(A) लिङ्गाधिक्य में प्रथमा (B) अनियत लिङ्ग में प्रथमा
(C) अलिङ्ग में प्रथमा (D) नियतलिङ्ग में प्रथमा

9. 'तमब्ग्रहणम्' में सन्धि का कौन सा सूत्र प्रयुक्त है–
(A) झलां जशोऽन्ते (B) झलां जश् झशि
(C) खरि च (D) स्तोः श्चुना श्चुः

10. 'वृकभीतिः' में समास है–
(A) कर्मधारय (B) तृतीया तत्पुरुष
(C) पञ्चमी तत्पुरुष (D) षष्ठी तत्परुष

11. 'कार्ष्णः' पद बनता है–
(A) कृष्ण + अण् से (B) कृष्ण + अञ् से
(C) कृष्ण + अप् से (D) कृष्ण + आ से

12. 'सोलहवीं बालिका जाती है'–का अनुवाद होगा–
(A) षोडशी बालिका गच्छति।
(B) षोडशतमी बालिका गच्छति।
(C) षोडशतमा बालिका गच्छति।
(D) षोडशिनी बालिका गच्छति।

13. 'समाययौ' पद में कौन सा लकार है–
(A) लङ्लकार (B) लुङ्लकार
(C) लिट्लकार (D) लुट्लकार

14. 'विघाताय' में कौन सी धातु प्रयुक्त है–
(A) 'धा' धातु (B) 'हा' धातु
(C) 'हन्' धातु (D) घात् धातु

15. 'परेतरान्' का अर्थ है–
(A) दुष्टजन (B) शत्रुजन
(C) आत्मीयजन (D) परतन्त्रजन

16. अम्बिकादत्त व्यास का जन्म हुआ–
(A) चैत्र शुक्ल अष्टमी सं० 1915 (1858 ई.)
(B) बैशाख शुक्ल अष्टमी सं० 1915 (1858 ई.)
(C) चैत्र शुक्ल सप्तमी सं० 1914 (1857 ई.)
(D) बैशाख शुक्ल सप्तमी सं० 1914 (1857 ई.)

1. (D)	**2. (D)**	**3. (C)**	**4. (B)**	**5. (D)**	**6. (B)**	**7. (A)**	**8. (D)**
9. (A)	**10. (C)**	**11. (A)**	**12. (A)**	**13. (C)**	**14. (C)**	**15. (C)**	**16. (A)**

17. 'अतिथिपरिभाविनी' विशेषण प्रयुक्त है–
(A) सीता के लिए (B) तमसा के लिए
(C) आत्रेयी के लिए (D) शकुन्तला के लिए

18. 'विद्युत्' पद में प्रयुक्त प्रत्यय है–
(A) क्विप् (B) क्त
(C) क्तिन् (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

19. 'अस्ति कश्चिद् वाग्विशेषः' वाक्य के 'कश्चिद्' से निर्दिष्ट काव्य है–
(A) कुमारसम्भवम् (B) रघुवंशमहाकाव्यम्
(C) मेघदूतम् (D) नैषधीयचरितम्

20. 'भैषीः' पद में कौन सा लकार है–
(A) लङ्लकार (B) लुङ्लकार
(C) लिट्लकार (D) लोट्लकार

21. 'काम इदानीं सकामो भवतु' यह वाक्य अभिज्ञानशाकुन्तलम् के किस अङ्क में आया है–
(A) द्वितीय अङ्क में (B) तृतीय अङ्क में
(C) चतुर्थ अङ्क में (D) पञ्चम अङ्क में

22. 'गुणवते कन्यका प्रतिपादनीया' यह कथन किसका है–
(A) कण्व का (B) शार्ङ्गरव का
(C) प्रियंवदा का (D) अनसूया का

23. ''आत्मन आर्यवंश्यांश्चाऽभिमन्यामहे'' वाक्य कहा गया है–
(A) प्रशंसा के अर्थ में (B) क्रोध के अर्थ में
(C) गौरव के अर्थ में (D) धिक्कार के अर्थ में

24. अम्बिकादत्तव्यास के पितामह थे–
(A) श्री गोविन्दराम जी (B) पं० राजाराम जी
(C) दुर्गादत्त (D) दलेरसिंह व्यास

25. 'सः पुस्तकानि पठति' वाक्य का कर्मवाच्य रूप है–
(A) सः पुस्तकानि पठ्यते। (B) तेन पुस्तकानि पठ्यन्ते
(C) तेन पुस्तकानि पठ्यते (D) तेन पुस्तके पठयते

26. ''त्वं जीवितं, त्वमसि मे हृदयं द्वितीयम्'' यह वाक्य किसके लिए कहा गया है–
(A) राम के लिए (B) वासन्ती के लिए
(C) तमसा के लिए (D) सीता के लिए

27. 'अपि ग्रावारोदित्यपि दलति वज्रस्य हृदयम्' कथन है–
(A) तमसा का (B) राम का
(C) सीता का (D) लक्ष्मण का

28. 'पदवाक्यप्रमाणज्ञ' में प्रयुक्त 'वाक्य' से तात्पर्य है–
(A) व्याकरण (B) मीमांसा
(C) न्याय (D) प्रमाण

29. 'उत्तररामचरितम्' का वैशिष्ट्य नहीं है–
(A) यह रचना विदूषक रहित है।
(B) इसके प्रारम्भ एवं अन्त में वाणी की स्तुति की गयी है।
(C) सप्तम अङ्क में गर्भांक योजना है।
(D) तृतीय अङ्क में सङ्कीर्ण विष्कम्भक का प्रयोग है।

30. 'प्रवक्तुमिच्छन्ति मृषा हितैषिणः' में 'हितैषिणः' पद से निर्दिष्ट है–
(A) किरात (B) युधिष्ठिर
(C) वनेचर (D) अर्जुन

31. 'भवति हृदयदाही शल्यतुल्यो विपाकः' सूक्ति उद्धृत है–
(A) किरातार्जुनीयम् से (B) उत्तररामचरितम् से
(C) नीतिशतकम् से (D) शिवराजविजयम् से

32. 'सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः' वाक्य सम्बद्ध है–
(A) माघ से (B) भारवि से
(C) दण्डी से (D) कालिदास से

33. 'प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः' यहाँ 'मादृशां' पद से किसका संकेत है–
(A) द्रौपदी का (B) वनेचर का
(C) युधिष्ठिर का (D) दुर्योधन का

17. (D)	**18. (A)**	**19. (C)**	**20. (B)**	**21. (C)**	**22. (D)**	**23. (D)**	**24. (B)**
25. (B)	**26. (D)**	**27. (D)**	**28. (B)**	**29. (D)**	**30. (C)**	**31. (C)**	**32. (B)**
33. (B)							

34. 'अमुष्याः' पद का प्रातिपदिक रूप है–
(A) अस्मद् (B) अदस्
(C) इदम् (D) एतद्

35. 'दुह्' धातु के लट्लकार उ०पु० एकवचन का रूप है–
(A) दुहन्ति (B) धोक्षि
(C) दोग्धि (D) दोह्मि

36. 'क्री' धातु पढ़ी गयी है–
(A) स्वादिगण में (B) रुधादिगण में
(C) क्र्यादिगण में (D) चुरादिगण में

37. 'कृ' धातु पढ़ी गयी है–
(A) स्वादिगण में (B) तनादिगण में
(C) रुधादिगण में (D) दिवादिगण में

38. 'तैमिरिकाः' पद का क्या अर्थ है–
(A) नक्षत्र
(B) अँधेरा
(C) अन्धकार को दूर करने वाले
(D) रतौंधी से ग्रसित जन

39. 'किरातार्जुनीयम्' महाकाव्य का सहनायक है–
(A) अर्जुन (B) युधिष्ठिर
(C) किरात (शिव) (D) दुर्योधन

40. नैषधीयचरितम् महाकाव्य में किस रस की प्रधानता है–
(A) वीररस (B) करुणरस
(C) शान्तरस (D) शृङ्गाररस

41. ''राज्यविषविकारतन्द्राप्रदा राजलक्ष्मीः'' कथन उद्धृत है–
(A) शिवराजविजयम् से (B) किरातार्जुनीयम् से
(C) शुकनासोपदेश से (D) नैषधीयचरितम् से

42. 'विन्ध्याटवी' का वर्णन मिलता है–
(A) कादम्बरी में (B) किरातार्जुनीयम् में
(C) उत्तररामचरितम् में (D) मेघदूतम् में

43. 'कादम्बरी' शब्द का अर्थ है–
(A) सुरा मदिरा (B) औषधि
(C) सुन्दर स्त्री (D) नायिका

44. 'प्रसन्नराघवम्' के रचयिता है–
(A) भवभूति (B) भर्तृहरि
(C) भास (D) जयदेव

45. 'वनेचर' का शाब्दिक अर्थ होगा–
(A) गुप्तचर (B) दूत
(C) सेवक (D) वने चरति इति

46. 'घि' है–
(A) सर्वनाम शब्द (B) व्याकरण का पारिभाषिक शब्द
(C) विधि शब्द (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

47. 'भवभूतिर्विशिष्यते' इस सूक्ति के प्रसिद्धि का कारण है–
(A) उत्तररामचरितम् (B) मालतीमाधवम्
(C) महावीरचरितम् (D) उपर्युक्त तीनों

48. 'अभिज्ञानाभरणदर्शनेन शापो निवर्तिष्यत' यह वास्तविक उक्ति है–
(A) अनसूया की (B) प्रियंवदा की
(C) दोनों की (D) दुर्वासा की

49. चेतन-अचेतन के भेद में सक्षम नहीं होता–
(A) विलासी (B) वैरागी
(C) तपस्वी (D) कामार्त

50. 'पत्रलेखा' नामक स्त्रीपात्र का उल्लेख प्राप्त होता है–
(A) अभिज्ञानशाकुन्तल में (B) शिशुपालवध में
(C) कादम्बरी में (D) शिवराजविजय में

51. टेढी भौहों वाली नदी है–
(A) वेत्रवती (B) निर्विन्ध्या
(C) शिप्रा (D) नर्मदा

52. यक्ष के अनुसार मेघ सर्वप्रथम प्रस्थान करेगा–
(A) पूर्व दिशा की ओर (B) पश्चिम दिशा की ओर
(C) उत्तर दिशा की ओर (D) दक्षिण दिशा की ओर

34. (B)	35. (D)	36. (C)	37. (B)	38. (D)	39. (C)	40. (D)	41. (C)
42. (A)	43. (A)	44. (D)	45. (D)	46. (B)	47. (A)	48. (D)	49. (D)
50. (C)	51. (A)	52. (C)					

53. उत्तररामचरितम् के तृतीय अङ्क में श्लोकों की संख्या है–
(A) 48 (B) 43
(C) 45 (D) 47

54. 'अयि कठोर! यशः किल ते प्रियम्' यह वाक्य है–
(A) आत्रेयी का (B) सीता का
(C) तमसा का (D) वासन्ती का

55. 'करुणस्य मूर्तिरथवा शरीरिणी' किसके लिए प्रयुक्त है–
(A) राम के लिए (B) सीता के लिए
(C) आत्रेयी के लिए (D) वासन्ती के लिए

56. सुमेलित नहीं है–
(A) आनन्दवर्धन - विषमबाणलीला
(B) प्रवरसेन - बालचरितम्
(C) कात्यायन - स्वर्गारोहणम्
(D) पाणिनि - जाम्बवतीविजयम्

57. प्रत्येक चरण में 12 अक्षर नहीं होते हैं–
(A) भुजंगप्रयात छन्द में (B) वंशस्थ छन्द में
(C) द्रुतविलम्बित छन्द में (D) वसन्ततिलका छन्द में

58. 'भवतीः' किस विभक्ति का रूप है–
(A) प्रथमा (B) द्वितीया
(C) तृतीया (D) पञ्चमी

59. शुद्ध नहीं है–
(A) संगठनम् (B) संन्यासी
(C) पुंलिङ्गः (D) पुँल्लिङ्गः

60. शुद्ध है–
(A) पंपा (B) गंगा
(C) शांतः (D) चञ्चूः

61. 'मन्वन्तरः' का सन्धि विच्छेद रूप होगा–
(A) मनो + अन्तरः (B) मनस् + अन्तरः
(C) मनः + अन्तरः (D) मनु + अन्तरः

62. 'तत् + मात्रम्' का सन्धि रूप होगा–
(A) तद्मात्रम् (B) तत्मात्रम्
(C) उपर्युक्त दोनों (D) तन्मात्रम्

63. लोट्लकार का रूप नहीं है–
(A) छिन्धि (B) भिन्धि
(C) कर्तय (D) भुनक्षि

64. 'सुप्तः' पद का मूल प्रातिपदिक रूप है–
(A) सुप् (B) शीङ्
(C) स्वप् (D) सुप्त

65. 'शी + शानच्' से बनने वाला रूप है–
(A) शयमाना (B) शयानः
(C) शयमानः (D) उपर्युक्त सभी

66. सही वाक्य है–
(A) आवां पठाम।
(B) अध्ययनस्य हेतु काश्यां तिष्ठति।
(C) मातुः स्मरति।
(D) गुरुः शिष्यं क्रुध्यति।

67. नम् धातु, लृट् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन का रूप है–
(A) नमिष्यामि (B) नमस्यामि
(C) नंस्यामि (D) नमेष्यामि

68. 'द्रक्ष्यति' किस धातु के लृट्लकार, प्रथमपुरुष एकवचन का रूप है–
(A) पश्य धातु (B) दृश् धातु
(C) दृश्य धातु (D) दृक्ष् धातु

69. स्वर सन्धि में 'अय्' होगा–
(A) ए + अ (B) ऐ + अ
(C) औ + ए (D) ओ + आ

70. 'शशिशेखरः' में समास है–
(A) कर्मधारय (B) तत्पुरुष
(C) बहुव्रीहि (D) अव्ययीभाव

53. (A)	54. (D)	55. (B)	56. (B)	57. (D)	58. (B)	59. (A)	60. (D)
61. (D)	62. (D)	63. (D)	64. (C)	65. (B)	66. (C)	67. (C)	68. (B)
69. (A)	70. (C)						

71. संस्कृत में धातुयें हैं–
(A) लगभग 4000 (B) लगभग 6000
(C) लगभग 10000 (D) लगभग 2000

72. लिट्लकार नहीं है–
(A) इयेष (B) दिदेश
(C) अनैषीः (D) बभूव

73. 'विषमो विषयविषास्वादमोहः' सूक्ति प्रयुक्त है–
(A) उत्तररामचरितम् में (B) नीतिशतकम् में
(C) शिवराजविजयम् में (D) शुकनासोपदेश में

74. ''नैषधं विद्वदौषधम्'' के अनुसार नैषधीयचरितम् विद्वानों के लिए है–
(A) प्रेरणास्रोत (B) उपजीव्य
(C) अनुकरणीय (D) औषधि

75. सही विकल्प नहीं है–
(A) किरातार्जुनीयम् 18 सर्ग (B) शिशुपालवधम् 20 सर्ग
(C) नैषधीयचरितम् 22 सर्ग (D) बुद्धचरितम् 25 सर्ग

76. 'अनर्घराघवम्' रचना है–
(A) मुरारि की (B) अश्वघोष की
(C) बाणभट्ट की (D) प्रवरसेन की

77. अम्बिकादत्त व्यास का जीवन काल रहा है–
(A) 42 वर्ष (B) 43 वर्ष
(C) 44 वर्ष (D) 57 वर्ष

78. 'स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु' ऐसा उल्लेख प्राप्त होता है–
(A) वेत्रवती नदी के वर्णन में
(B) निर्विन्ध्या नदी के वर्णन में
(C) नर्मदा नदी के वर्णन में
(D) गम्भीरा नदी के वर्णन में

79. 'चक्रवर्ती खेचरचक्रस्य' में अलङ्कार है–
(A) यमक (B) उपमा
(C) अनुप्रास (D) रूपक

80. सन्नन्त का रूप है–
(A) लिलेखिषति (B) पिपठिषति
(C) लिप्सति (D) उपर्युक्त तीनों

81. 'दिल्लीवल्लभतां कलङ्कयति कः'–
(A) औरङ्गजेब (B) शहाबुद्दीन
(C) कुतुबुद्दीन (D) अकबर

82. 'नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण' यह सूक्ति उद्धृत है–
(A) नीतिशतक से (B) मृच्छकटिक से
(C) कादम्बरी से (D) मेघदूत से

83. 'अस्' धातु लोट्लकार मध्यमपुरुष एकवचन का रूप है–
(A) एधि (B) स्ताम्
(C) उपर्युक्त दोनों (D) असि

84. 'यां चिन्तयामि सततं मयि सा विरक्ता' यह वाक्य उद्धृत है–
(A) उत्तररामचरितम् से (B) मेघदूतम् से
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से (D) नीतिशतकम् से

85. 'विधिसमयनियोगाद्दीप्तिसंहारजिह्मम्' में प्रयुक्त छन्द है–
(A) वंशस्थ (B) पुष्पिताग्रा
(C) मालिनी (D) मन्दाक्रान्ता

86. गुरू का उपदेश होता है–
(A) बिना जल का स्नान
(B) शीतल जल का स्नान
(C) अमृतमय जल का स्नान
(D) शीतल और निर्मल जल का स्नान

87. राजा सभी प्रकार के अशिष्ट आचरण के मूलाधार हो जाते हैं–
(A) अपनी सुन्दरता के कारण
(B) मद के कारण
(C) लक्ष्मी के कारण
(D) उपर्युक्त सबके कारण

71. (D)	**72. (C)**	**73. (D)**	**74. (D)**	**75. (D)**	**76. (A)**	**77. (A)**	**78. (B)**
79. (C)	**80. (D)**	**81. (A)**	**82. (D)**	**83. (A)**	**84. (D)**	**85. (C)**	**86. (A)**
87. (D)							

88. 'ऊरीकृत्य' में समास है–
(A) तत्पुरुषसमास (B) प्रादि तत्पुरुषसमास
(C) गति तत्पुरुषसमास (D) उपपद तत्पुरुषसमास

89. द्विकर्मक धातु नहीं है–
(A) नी (B) मुष्
(C) पच् (D) क्री

90. 'तेजस्वी पुरुषः परकृतनिकृतिं कथं सहते' यह कथन उद्धृत है–
(A) शुकनासोपदेश से (B) शिवराजविजय से
(C) उत्तररामचरित से (D) नीतिशतक से

91. मेघदूत के कथानक का उपजीव्य है–
(A) रामायण (B) ब्रह्मवैवर्तपुराण
(C) पद्मपुराण (D) उपर्युक्त सभी

92. मेघ के गरजने से डर जायेंगी–
(A) बगुलियाँ (B) सिद्धों की पत्नियाँ
(C) चातकें (D) दशार्ण प्रदेश की स्त्रियाँ

93. महाप्राण ध्वनियाँ हैं–
(A) 14 (B) 16
(C) 19 (D) 11

94. 'सायन्तनम्' पद में प्रयुक्त प्रत्यय है–
(A) ल्युट् (B) अन्
(C) ट्युल् (D) तनम्

95. रामायण से सम्बद्ध कृति नहीं है–
(A) प्रतिमानाटक (B) रघुवंशमहाकाव्य
(C) अभिषेकनाटक (D) वेणीसंहार

96. 'जग्ध्वा' में प्रकृति प्रत्यय है–
(A) अद् + क्त्वा (B) जग् + क्त्वा
(C) जगृ + ध्वा (D) जग् + ध्व + टाप्

97. शिव की स्तुति की गई है–
(A) अभिज्ञानशाकुन्तल के नान्दीपाठ में
(B) अभिज्ञानशाकुन्तल के भरतवाक्य में
(C) दोनों स्थलों में (D) कहीं नहीं

98. अश्वघोष द्वारा रचित महाकाव्यों की संख्या है–
(A) 3 (B) 2
(C) 4 (D) 5

99. मालविकाग्निमित्रम् में कितने अङ्क हैं–
(A) पाँच (B) छः
(C) सात (D) दश

100. मेघदूत के बारे में क्या असत्य है–
(A) यह संयोग शृङ्गार प्रधानकाव्य है
(B) यह खण्डकाव्य है
(C) यह दो भागों में विभक्त है
(D) यक्ष का वियोगकाल अभी चार महीना शेष है।

101. समास के सूत्रों का उल्लेख है, अष्टाध्यायी के–
(A) दूसरे अध्याय में
(B) तीसरे अध्याय में
(C) चौथे अध्याय में
(D) पाँचवें अध्याय में

102. लघुसिद्धान्तकौमुदी के अनुसार समास के भेद हैं–
(A) चार (B) पाँच
(C) छः (D) सात

103. 'तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि' काव्य का यह लक्षण है–
(A) भामह का (B) उद्भट का
(C) रुद्रट का (D) मम्मट का

104. सबसे बड़ा महाकाव्य है–
(A) जानकीहरणम् (B) रावणवधम्
(C) सौन्दरनन्दम् (D) हरविजयम्

105. 'अभिनवबाण' किस कवि को कहते हैं–
(A) जयदेव को (B) बाणभट्ट को
(C) अम्बिकादत्तव्यास को (D) श्रीहर्ष को

106. पाणिनि के पिता थे–
(A) दाक्षी (B) पणिन्
(C) चित्रभानु (D) पृथु

88. (C)	89. (D)	90. (D)	91. (B)	92. (B)	93. (A)	94. (C)	95. (D)
96. (A)	97. (C)	98. (B)	99. (A)	100. (A)	101. (A)	102. (B)	103. (D)
104. (D)	105. (C)	106. (B)					

107. कालिदास की शैली है–
(A) गौडी (B) वैदर्भी
(C) पाञ्चाली (D) उपर्युक्त सभी

108. 'अजागरीः' की व्याकरणात्मक टिप्पणी होगी–
(A) आङ् + जागृ + लुङ् प्र0पु0 एकवचन
(B) जागृ + लुङ् म0पु0 एकवचन
(C) जागृ + लङ् प्र0पु0 बहुवचन
(D) जाग्र + लुङ् म0पु0 बहुवचन

109. भवभूति का गोत्र था–
(A) पराशर (B) कुशिक
(C) कश्यप (D) वत्स

110. शृङ्गाररस के देवता हैं–
(A) विष्णु (B) कामदेव
(C) गन्धर्व (D) प्रमथ

111. शिरीषपुष्प से सम्बन्धित ऋतु है–
(A) शिशिर (B) हेमन्त
(C) वसन्त (D) ग्रीष्म

112. अदादिगण में परिगणित धातुएँ हैं–
(A) 61 (B) 72
(C) 24 (D) 140

113. सूत्र के प्रकार हैं–
(A) चार (B) पाँच
(C) छः (D) सात

114. प्रकृत्यादिबोधक शब्दों के योग में होती है–
(A) तृतीया विभक्ति (B) पञ्चमी विभक्ति
(C) चतुर्थी विभक्ति (D) षष्ठी विभक्ति

115. हेतुमद् भूतकाल के लिए प्रयुक्त लकार है–
(A) लृङ् (B) लिङ्
(C) लुङ् (D) लुट्

116. शुकनास की पत्नी थी–
(A) मनोरमा (B) विलासवती
(C) वासवदत्ता (D) सुदक्षिणा

117. 'पुरु' की माता थी–
(A) देवहूति (B) शर्मिष्ठा
(C) अरुन्धती (D) देवयानी

118. 'भारवेरर्थगौरवम्' यह कथन है–
(A) भारवि का (B) भोज का
(C) मल्लिनाथ का (D) उद्भट का

119. पाणिनि का सम्बन्ध है–
(A) धारानगरी से (B) कश्मीर से
(C) शालातुर ग्राम से (D) विदर्भ से

120. प्रीतिकूट ग्राम से सम्बन्धित कवि हैं–
(A) श्रीहर्ष (B) बाणभट्ट
(C) माघ (D) भारवि

121. कौन सा पद नपुंसकलिङ्ग का नहीं है–
(A) नाम (B) वारि
(C) दधि (D) निधि

122. 'आपः' पद किस विभक्ति का है–
(A) प्रथमा एकवचन (B) प्रथमा बहुवचन
(C) द्वितीया एकवचन (D) द्वितीया बहुवचन

123. कश्मीर से सम्बन्धित नहीं है–
(A) भवभूति (B) भारवि
(C) दण्डी (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

124. 'एक' शब्द का रूप चलता है
(A) पुंलिङ्ग में (B) स्त्रीलिङ्ग में
(C) नपुंसकलिङ्ग में (D) सभी लिङ्गों में

125. सुमेलित करें–

कवि	गुरु
क. भवभूति	**1. भर्वु**
ख. भर्तृहरि	**2. ज्ञाननिधि**
ग. बाणभट्ट	**3. भट्टोजिदीक्षित**
घ. वरदराज	**4. गोरखनाथ**

(A) क 3 ख 2 ग 1 घ 4
(B) क 1 ख 2 ग 3 घ 4
(C) क 4 ख 3 ग 2 घ 1
(D) क 2 ख 4 ग 1 घ 3

107. (B)	**108. (B)**	**109. (C)**	**110. (A)**	**111. (D)**	**112. (B)**	**113. (C)**	**114. (A)**
115. (A)	**116. (A)**	**117. (B)**	**118. (D)**	**119. (C)**	**120. (B)**	**121. (D)**	**122. (B)**
123. (D)	**124. (D)**	**125. (D)**					

प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (TGT) आदर्शप्रश्नपत्र–2

1. भर्तृहरि के अनुसार गङ्गा के धरती पर आने का सही क्रम होगा–
(A) हिमालय, शिव, पृथ्वी, समुद्र
(B) शिव, हिमालय, पृथ्वी, समुद्र
(C) स्वर्ग, शिव, हिमालय, पृथ्वी
(D) स्वर्ग, हिमालय, शिव, पृथ्वी

2. तदर्थ का 'पयः' के साथ सामासिक पद होगा–
(A) द्विजार्थं इदमिति (B) द्विजार्थः अयमिति
(C) द्विजार्था इयमिति (D) द्विजार्थाय अयमिति

3. निम्नलिखित में किस ग्रन्थ के मङ्गलाचरण से भर्तृहरि को वेदान्तोक्त ब्रह्म का उपासक मानते हैं–
(A) नीतिशतकम्, वैराग्यशतकम्
(B) नीतिशतकम्, वाक्यपदीयम्
(C) वाक्यपदीयम्, वैराग्यशतकम्
(D) इनमें से कोई नहीं

4. ''मुक्ताजालमिव प्रयाति झटिति भ्रंश्यत् दिशो दृश्यताम्'' प्रस्तुत पंक्ति किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है–
(A) नीतिशतकम् से (B) मेघदूतम् से
(C) उत्तररामचरितम् से (D) किरातार्जुनीयम् से

5. 'ह्रीमति' शब्द का अर्थ है–
(A) लज्जा (B) बुद्धि
(C) द्विविधा (D) दो प्रकार की सलाह

6. ''तान् प्रत्येष विशेषविक्रमरुची राहुर्न वैरायते'' रेखांकित पद में सन्धि होगी–
(A) विसर्गसन्धि (B) स्वरसन्धि
(C) व्यञ्जनसन्धि (D) प्रकृतिभावसन्धि

7. 'मनस्विन्' में प्रकृति प्रत्यय होगा–
(A) मनस् + विनि (B) मनस् + णिनि
(C) मनस् + इनि (D) मनस् + क्तिन्

8. ''सन्त्यन्येपि बृहस्पतिप्रभृतयः सम्भाविताः पञ्चषाः'' यहाँ 'पञ्चषाः' पद में समास होगा–
(A) प्रादितत्पुरुषसमास (B) द्विगुसमास
(C) बहुव्रीहिसमास (D) द्वन्द्वसमास

9. भर्तृहरि के अनुसार यदि व्यक्ति में श्रेष्ठकाव्य करने का सामर्थ्य है तो किसकी आवश्यकता नही है–
(A) धन की (B) राज्य की
(C) सुख की (D) ख्याति की

10. 'कलत्र' (स्त्री) पद में कौन सा लिङ्ग है–
(A) स्त्रीलिङ्ग (B) पुंलिङ्ग
(C) नपुंसकलिङ्ग (D) इनमें से कोई नहीं

11. 'हस्तावृषिकुमारकौ' में किस सूत्र से सन्धि हुई है–
(A) अकः सवर्णे दीर्घः (B) हलोऽनन्तराः संयोगः
(C) एचोऽयवायावः (D) इको यणचि

12. 'उचितं न ते मङ्गलकाले रोदितुम्' यह कथन किसका है–
(A) गौतमी का (B) प्रियंवदा का
(C) अनसूया का (D) प्रियंवदा अनसूया दोनों का

13. 'अभवः' में लकार एवं वचन होगा–
(A) आशीर्लिङ् म0पु0 एकवचन
(B) लुङ्लकार म0पु0 एकवचन
(C) लोट्लकार म0पु0 एकवचन
(D) लङ्लकार म0पु0 एकवचन

1. (C)	2. (A)	3. (B)	4. (A)	5. (A)	6. (A)	7. (A)	8. (C)
9. (B)	10. (C)	11. (C)	12. (D)	13. (D)			

14. 'अमी वेदिं परितः क्लृप्तधिष्ण्याः' यह पंक्ति शाकुन्तलम् के किस अङ्क की है–

(A) द्वितीय (B) चतुर्थ
(C) पञ्चम (D) षष्ठ

15. ''छायाप्रधानाः द्रुमाः तैः'' इस विग्रह से 'छायाद्रुमैः' में समास होगा–

(A) मध्यमपदलोपी समास (B) कर्मधारय समास
(C) तृतीया तत्पुरुष (D) बहुव्रीहि समास

16. ''कः नु खल्वेष निवसने मे सज्जते'' यहाँ 'निवसने' पद का अर्थ है–

(A) निवास करना (B) वस्त्र
(C) स्थान (D) उपर्युक्त सभी

17. 'गुर्वपि विरहदुःखमाशाबन्धः साहयति' इस सूक्ति का वक्ता है–

(A) यक्ष (B) अनसूया
(C) तमसा (D) प्रियंवदा

18. सुमेलित करें–

पिता	पुत्र
क. गन्धर्वसेन	**(1) भवभूति**
ख. श्रीधर	**(2) भारवि**
ग. नीलकण्ठ	**(3) दण्डी**
घ. वीरदत्त	**(4) भर्तृहरि**

(A) क (3) ख (1) ग (4) घ (2)
(B) क (3) ख (2) ग (1) घ (4)
(C) क (1) ख (4) ग (3) घ (2)
(D) क (4) ख (2) ग (1) घ (3)

19. निम्न में कौन सा युग्म अशुद्ध है–

(A) सामवतम् - अम्बिकादत्तव्यास
(B) वासवदत्ता - भास
(C) जगन्नाथ - भामिनीविलास
(D) काव्यादर्श - दण्डी

20. 'ऐश्वर्यं यदि वाञ्छसि प्रियसखे! शाकुन्तलं सेव्यताम्' गेटे द्वारा शाकुन्तलम् की प्रशंसा का यह संस्कृत अनुवाद किसने किया था–

(A) वासुदेव विष्णु मिराशी ने (B) मल्लिनाथ सूरि ने
(C) स्वयं गेटे ने (D) प्रो. कीथ ने

21. ''कोऽन्यो हुतवहात् दग्धुं प्रभवति'' यहाँ 'हुतवहात्' में पञ्चमी किस सूत्र से हुई है–

(A) ल्यब्लोपे कर्मण्यधिकरणे च
(B) अपादाने पञ्चमी
(C) अन्तर्धौ येनादर्शनमिच्छति
(D) अन्याराादितरर्तेदिक्शब्दाञ्चूत्तरपदाजाहियुक्ते

22. बाण की गद्यरीति है–

(A) पाञ्चाली (B) वैदर्भी
(C) गौडी (D) उपर्युक्त सभी

23. 'हु' धातु के लोट्लकार मध्यमपुरुष एकवचन का रूप होगा–

(A) जुहुधि (B) जुहवान
(C) जुहुत (D) जुहोतु

24. बाण ने कादम्बरी के मङ्गलाचरण में किस सूक्ति को उद्धृत किया है–

(A) जलधिरिव लक्ष्मीप्रसूतिः
(B) चक्रवर्तिलक्षणोपेतः
(C) त्रयीमयाय त्रिगुणात्मने नमः
(D) हर इव जितमन्मथः

25. भारवि का सम्बन्ध किससे नहीं है–

(A) अलङ्कृतकाव्यशैली से (B) बृहत्त्रयी से
(C) पाषाणत्रय से (D) लघुत्रयी से

26. 'शिवराजविजयम्' में प्रधान रस है–

(A) करुणरस (B) रौद्ररस
(C) वीररस (D) वीभत्सरस

14. (B) 15. (A) 16. (B) 17. (B) 18. (D) 19. (B) 20. (A) 21. (D)
22. (A) 23. (A) 24. (C) 25. (D) 26. (C)

27. रघुवीर सिंह, शिवाजी का सन्देश लेकर गया था–
(A) तोरणदुर्ग से सिंहदुर्ग (B) सिंहदुर्ग से तोरणदुर्ग
(C) उदयपुर से बीजापुर (D) सतारा से बीजापुर

28. 'श्रीमानादित्यपदलाञ्छनः' कौन थे–
(A) युधिष्ठिर (B) विक्रमादित्य
(C) शिवाजी (D) औरङ्गजेब

29. ''बद्ध-सिद्धासनैर्निरुद्धनिःश्वासैः प्रबोधितकुण्डलिनीकैर्विजितदशेन्द्रियैरनाहतनादः......'' इस कथन का वक्ता है–
(A) ब्रह्मचारी गुरु (B) योगिराज
(C) गौरसिंह (D) शिवाजी

30. 'विलक्षणोऽयं भगवान् सकल-कला कलाप-कलनः, सकल-कालनः करालः कालः' यह किसका विशेषण है–
(A) विष्णु (B) सूर्य
(C) शिव (D) विक्रमादित्य

31. 'यायजूकैः राजसूयादियज्ञा व्ययाजिषत्' इस वाक्य में वाच्य है–
(A) कर्मवाच्य (B) कर्तृवाच्य
(C) भाववाच्य (D) णिजन्तप्रयोग

32. 'आलमगीर' उपाधिधारी कौन था–
(A) मोहम्मद गौरी (B) महमूद गजनवी
(C) शाइस्ता खाँ (D) औरङ्गजेब

33. 'अस्यैव प्रपौत्रो मूर्तिमदिव कलियुगं, गृहीतविग्रह इव चाधर्मः' इस वाक्य में अलङ्कार है–
(A) उत्प्रेक्षा (B) उपमा
(C) अतिशयोक्ति (D) रूपक

34. 'अकार्षुः' पद में लकार होगा–
(A) लङ्लकार म0पु0 एक0
(B) लिट्लकार प्र0पु0 बहु0
(C) लुङ्लकार प्र0पु0 बहु0
(D) लोट्लकार प्र0पु0 बहु0

35. इनमें से 'महाप्राण' वर्ण नही है–
(A) ग (B) ख
(C) श (D) ह

36. 'नम्' धातु का लृट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप होगा–
(A) नस्यति (B) नंस्यति
(C) नमिष्यति (D) नमेस्यति

37. सुमेलित करें–

क. सिंहविष्णु	**(1) पुष्यभूतिवंश**
ख. हर्ष	**(2) चालुक्यवंश**
ग. दुर्विनीत	**(3) पल्लववंश**
घ. विष्णुवर्धन	**(4) गङ्गवंश**

	क	ख	ग	घ
(A)	3	1	4	2
(B)	2	3	4	1
(C)	4	2	1	3
(D)	1	4	2	3

38. 'उवाच' रूप बनता है–
(A) प्र0पु0 एकवचन में
(B) उ0पु0 एकवचन में
(C) उपर्युक्त दोनों में
(D) केवल प्र0पु0 द्विव0 में

39. 'नाहं मूर्तीर्विक्रीणामि किन्तु भिनद्मि' इस कथन का वक्ता है–
(A) मुहम्मद गौरी (B) महमूद गजनवी
(C) औरङ्गजेब (D) यवनयुवक

40. भारत में यवनराज्य का बीजारोपण किसने किया–
(A) महमूद गजनवी ने (B) मुहम्मद गौरी (शहाबुद्दीन) ने
(C) कुतुबुद्दीन ने (D) औरङ्गजेब ने

41. 'भवती' में प्रत्यय होगा–
(A) ङीप् (B) ङीन्
(C) ङीष् (D) इनमें से कोई नहीं

27. (B)	28. (B)	29. (A)	30. (C)	31. (A)	32. (D)	33. (A)	34. (C)
35. (A)	36. (B)	37. (A)	38. (C)	39. (B)	40. (B)	41. (A)	

42. 'पुमान्' में प्रकृति प्रत्यय होगा–
(A) पूञ् + डवतु (B) पूञ् + मतुप्
(C) पूञ् + शानच् (D) पूञ् + डुम्सुन्

43. निम्न में प्रथमाविभक्ति एकवचन का रूप नही है–
(A) दिशः (B) सुमनाः
(C) जातवेदाः (D) वनौकाः

44. 'दाराः' शब्द किस लिङ्ग में होता है–
(A) नपुंसकलिङ्ग एक. (B) पुंलिङ्ग बहु.
(C) स्त्रीलिङ्ग बहु. (D) इनमें से कोई नहीं

45. 'देवाः समुद्रं सुधां ममन्थुः' इसका कर्मवाच्य होगा–
(A) देवैः समुद्रं सुधा ममन्थे
(B) देवैः समुद्रः सुधा ममन्थे
(C) देवाः समुद्रेन सुधां मन्मथुः
(D) देवः समुद्रेन सुधाः मन्मथ

46. सम् उपसर्गपूर्वक 'ज्ञा' धातु के कर्म में विकल्प से कौन सी विभक्ति होती है–
(A) द्वितीया (B) तृतीया
(C) षष्ठी (D) चतुर्थी

47. 'पृथग्विनानानाभिस्तृतीयाऽन्यतरस्याम्' इस सूत्र से किन विभक्तियों का विधान होता है–
(A) द्वितीया, तृतीया, पञ्चमी
(B) तृतीया, पञ्चमी, सप्तमी
(C) तृतीया, द्वितीया, चतुर्थी
(D) द्वितीया, तृतीया, षष्ठी

48. 'ऊकालोज्झ्रस्वदीर्घप्लुतः' यहाँ किस सूत्र से सन्धि होगी–
(A) झलां जशोऽन्ते
(B) झयो होऽन्यतरस्याम्
(C) उपर्युक्त दोनों
(D) इनमें से कोई नहीं

49. सुमेलित करें–

क. दूरान्तिकार्थेभ्यो	**(1) कर्मणि**
ख. दूरान्तिकार्थैः	**(2) वर्तमाने**
ग. उभयप्राप्तौ	**(3) द्वितीया च**
घ. क्तस्य च	**(4) षष्ठ्यन्यतरस्याम्**

	क	ख	ग	घ
(A)	4	3	1	2
(B)	2	1	4	3
(C)	4	2	3	1
(D)	3	4	1	2

50. 'यजेः कर्मणः करणसंज्ञा सम्प्रदानस्य च कर्मसंज्ञा' इस वार्तिक से किसकी करण संज्ञा होती है–
(A) यज् धातु के करण की
(B) यज् धातु के सम्प्रदान की
(C) यज् धातु के कर्म की
(D) यज् धातु के कर्ता की

51. इनमें से भिन्न पद पहचानिए–
(A) एकोनाशीतिः (B) नवसप्ततिः
(C) एकोनसप्ततिः (D) ऊनाशीतिः

52. '74' का संस्कृत में शुद्ध रूप होगा–
(A) चतुष्सप्ततिः (B) चतुर्सप्ततिः
(C) चतुस्सप्ततिः (D) चतुश्सप्ततिः

53. 'सर्वमहान्' में समास होगा–
(A) तत्पुरुष (B) कर्मधारय
(C) बहुव्रीहि (D) केवलसमास

54. 'गङ्गा च यमुना च' इसका सामासिक पद होगा–
(A) गङ्गायमुनम् (B) गङ्गायमुनौ
(C) गङ्गायमुने (D) यमुनागङ्गम्

55. 'अकृष्टपच्या इव सस्यसम्पदः' इस पंक्ति में अलङ्कार है–
(A) उपमा (B) उत्प्रेक्षा
(C) विरोधाभास (D) अतिशयोक्ति

42. (D)	**43. (A)**	**44. (B)**	**45. (A)**	**46. (B)**	**47. (A)**	**48. (C)**	**49. (D)**
50. (C)	**51. (C)**	**52. (C)**	**53. (A)**	**54. (C)**	**55. (B)**		

56. किस पाश्चात्त्य विद्वान् ने भारवि के किरातार्जुनीयम् की भूरि-भूरि प्रशंसा की है–

(A) मैक्समूलर (B) गेटे

(C) डा0 ए0वी0 कीथ (D) श्री याकोबी

57. ''प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः'' यहाँ 'गिरः' पद में विभक्ति है–

(A) प्रथमा, बहु0 (B) षष्ठी, एक0

(C) प्रथमा, एक0 (D) द्वितीया, बहु0

58. 'वसूपमानस्य वसूनि मेदिनी' यहाँ 'वसूपमानस्य' पद से किसका संकेत है–

(A) अर्जुन का (B) दुर्योधन का

(C) कृष्ण का (D) युधिष्ठिर का

59. ''महौजसो मानधनाः धनार्चिताः धनुर्भृतः संयति लब्धकीर्तयः'' ये किसके विशेषण हैं–

(A) योद्धागणों का (B) दुर्योधन का

(C) पाण्डवों का (D) युधिष्ठिर का

60. ''शमीतरुं शुष्कमिवाग्निरुच्छिखः'' यह सूक्ति किस कवि से सम्बन्धित है–

(A) कालिदास से (B) भवभूति से

(C) भारवि से (D) भर्तृहरि से

61. ''कचाचितौ विष्वगिवागजौ गजौ'' यहाँ 'अगजौ' पद का अर्थ होगा–

(A) दो हाथी (B) नकुल सहदेव

(C) अश्विनीकुमार (D) दो पर्वत

62. ''मृगद्विजालूनशिखेषु बर्हिषाम्'' यहाँ 'बर्हिषाम्' पद का अर्थ है–

(A) मयूर का पंख (B) कुश

(C) मृग (D) पशु

63. 'शमेन सिद्धिं मुनयो न भूभृतः' इस पंक्ति को कौन किससे कह रहा है–

(A) द्रौपदी, युधिष्ठिर से

(B) वनेचर, युधिष्ठिर से

(C) युधिष्ठिर, द्रौपदी सहित सभी भाइयों से

(D) युधिष्ठिर, द्रौपदी से

64. 'निराश्रया हन्त! हता मनस्विता' यह सूक्ति किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है–

(A) उत्तररामचरितम् से

(B) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से

(C) किरातार्जुनीयम् से

(D) मेघदूतम् से

65. अशुद्ध रूप अलग कीजिए–

(A) दोह्मि (B) रोदिमि

(C) दोहामि (D) वेद

66. अशुद्ध रूप पहचानिए–

(A) ब्रवति

(B) ब्रवीति

(C) ब्रूते

(D) आह

67. 'विधिसमयनियोगाद्दीप्तिसंहारजिह्मम्' यह पंक्ति है–

(A) भर्तृहरि की

(B) भारवि की

(C) भवभूति की

(D) भर्तृमेण्ठ की

68. बेतवा नदी का सम्बन्ध किस देश से है–

(A) दशपुर से

(B) दशार्ण देश से

(C) उज्जयिनी से

(D) कुरुक्षेत्र से

56. (C)	57. (A)	58. (B)	59. (A)	60. (C)	61. (D)	62. (B)	63. (A)
64. (C)	65. (C)	66. (A)	67. (B)	68. (B)			

69. सुमेलित करें–

दूतप्रकार	दूत
क. निसृष्टार्थ	(1) मेघ
ख. मितार्त	(2) हनुमान्
ग. सन्देशहारक	(3) यक्षिणी
घ. प्रोषितभर्तृका	(4) वनेचर

	क	ख	ग	घ
(A)	2	4	1	3
(B)	4	2	1	3
(C)	3	1	2	4
(D)	1	2	4	3

70. नायिका प्रमुखतया कितने प्रकार की होती हैं–

(A) 2 (B) 3
(C) 4 (D) 5

71. ''हारांस्तारांस्तरलगुटिकान्कोटिशः शङ्खशुक्तीः'' इस पंक्ति में कहाँ के वैभव का वर्णन है–

(A) अलकापुरी का
(B) दशार्ण देश का
(C) उज्जयिनी की कामिनियों का
(D) उज्जयिनी का

72. सुमेलित करें–

कवि	गुरु
क. बाणभट्ट	(1) गोरखनाथ
ख. भर्तृहरि	(2) भत्सु/भर्वु
ग. कृष्ण	(3) समर्थगुरु रामदास
घ. शिवाजी	(4) सान्दीपनि

	क	ख	ग	घ
(A)	1	2	4	3
(B)	2	1	4	3
(C)	4	3	2	1
(D)	3	4	2	1

73. सुमेलित करें

पुष्प	ऋतुयें
क. कुन्द	(1) वर्षा
ख. लोध्र	(2) हेमन्त
ग. कुरबक	(3) वसन्त
घ. शिरीष	(4) शिशिर
ङ. कदम्ब	(5) ग्रीष्म

	क	ख	ग	घ	ङ
(A)	2	3	5	4	1
(B)	5	1	4	2	3
(C)	3	2	1	5	4
(D)	2	4	3	5	1

74. सूर्य के घोड़ों का रंग होता है–

(A) हरा (B) सफेद
(C) पीला (D) लाल

75. अलकापुरी की स्त्रियाँ कुरबक के पुष्प को कहाँ धारण करती थीं–

(A) जूडे में (B) कान में
(C) माँग में (D) बालों में

76. ''साभ्रेऽह्नीव स्थलकमलिनीं न प्रबुद्धां न सुप्ताम्'' यहाँ 'कमलिनी' पद किसके लिए आया है

(A) सीता के लिए (B) यक्षिणी के लिए
(C) शकुन्तला के लिए (D) अलकापुरी के लिए

77. निम्न में से सूर्य का पर्यायवाची नहीं है

(A) तरणिः (B) हिमांशुः
(C) मरीचिमाली (D) अर्कः

78. 'भवान् प्रकृत्यैव धीरः' यहाँ किस सूत्र से तृतीया हुई है–

(A) इत्थम्भूतलक्षणे
(B) हेतौ
(C) प्रकृत्यादिभ्य उपसंख्यानम्
(D) कर्तृकरणयोस्तृतीया

69. (A) 70. (B) 71. (D) 72. (B) 73. (D) 74. (A) 75. (A) 76. (B) 77. (B) 78. (C)

79. कामदेव के पास कितने बाण हैं–

(A) 3 (B) 5
(C) 7 (D) 9

80. ''कच्चिद्भर्तुः स्मरसि रसिके! त्वं हि तस्य प्रियेति'' यहाँ 'त्वं' पद किसके लिए आया है–

(A) सारिका (B) मेघ
(C) यक्षिणी (D) यक्ष

81. 'केशेषु चमरीं हन्ति' यहाँ 'केशेषु' पद में किस सूत्र से सप्तमी हुई है–

(A) निमित्तात्कर्मयोगे
(B) क्तस्य च वर्तमाने
(C) सप्तमीपञ्चम्यौ कारकमध्ये
(D) यतश्चनिर्धारणम्

82. अभानुभेद्यमरत्नालोकच्छेद्यमप्रदीपप्रभापनेय-मतिगहनं तमः......। उचित पद का चयन करें–

(A) लक्ष्मीमदः (B) राज्यमदः
(C) राज्यसुखसन्निपातनिद्रा (D) यौवनप्रभवम्

83. 'भवादृशा एव भवन्ति भाजनानि उपदेशानाम्' यह सूक्ति किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है–

(A) कादम्बरी से (B) मेघदूतम् से
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से (D) किरातार्जुनीयम् से

84. कादम्बरी शुकनासोपदेश के अनुसार दोषों को गुण में बदल देता है–

(A) गुरु का उपदेश (B) सज्जनों की सङ्गति
(C) सदाचार (D) दृढप्रतिज्ञा

85. शुकनास के अनुसार किनके हृदय में गुरु का उपदेश नही ठहरता है–

(A) युवकों के
(B) मूढव्यक्तियों के
(C) कामदेव के बाणों से घायलों के
(D) समृद्धशालियों के

86. कादम्बरी का प्रधान रस है–

(A) शृङ्गाररस (B) शान्तरस
(C) करुणरस (D) अद्भुतरस

87. संस्कृत गद्यबृहत्त्रयी के कवि हैं–

(A) भारवि, माघ, श्रीहर्ष (B) भास, भवभूति, दण्डी
(C) दण्डी, बाण, भवभूति (D) दण्डी, बाण, सुबन्धु

88. भवभूति का उत्तररामचरित नाटक किस अवसर पर खेला गया था–

(A) शिवरात्रि (B) पूर्णिमा
(C) दीपावली (D) कालप्रियानाथ-यात्रा

89. 'मालतीमाधवम्' की कथा है–

(A) काल्पनिक (B) पौराणिक
(C) महाभारतीय (D) बृहत्कथा से सम्बन्धित

90. अशुद्ध युग्म पहचानिए–

(A) बाणभट्ट - पाञ्चाली
(B) भवभूति - गौड़ी
(C) अम्बिकादत्तव्यास - लाटी
(D) कालिदास - वैदर्भी

91. भवभूति का प्रिय छन्द है–

(A) शार्दूलविक्रीडित (B) वंशस्थ
(C) वसन्ततिलका (D) शिखरिणी

92. 'यादृग् गद्यविधौ बाणः पद्यबन्धेऽपि तादृशः' यह कथन बाण के लिए किसने कहा–

(A) भोजराज ने (B) राजशेखर ने
(C) जयदेव ने (D) उद्भट ने

93. अष्टावक्र किसके पुत्र थे–

(A) शतानन्द (B) कहोड
(C) विभाण्डक (D) वशिष्ठ

94. 'शरदिज इव घर्मः केतकीगर्भपत्रम्' इस सूक्ति का वक्ता है–

(A) राम (B) तमसा
(C) मुरला (D) भागीरथी

79. (B)	80. (A)	81. (A)	82. (D)	83. (A)	84. (A)	85. (C)	86. (A)
87. (D)	88. (D)	89. (A)	90. (C)	91. (D)	92. (A)	93. (B)	94. (C)

95. 'उचितमेव दाक्षिण्यं स्नेहस्य' यह कथन किसका है–
(A) मुरला का (B) लोपामुद्रा का
(C) तमसा का (D) वासन्ती का

96. 'अग्रे लोलः करिकलभको यः पुरा वर्धितोऽभूत्' इस कथन का वक्ता है–
(A) वासन्ती (नेपथ्य) (B) मुरला
(C) तमसा (D) राम

97. 'यत्र द्रुमा अपि मृगा अपि बन्धवो मे' इस पंक्ति का वक्ता है–
(A) राम (B) तमसा
(C) वासन्ती (D) सीता

98. 'अपसराव' में लकार और वचन है–
(A) विधिलिङ् म०पु०द्वि० (B) लोट् म०पु०द्वि०
(C) लोट् उ०पु०द्वि० (D) लट् उ०पु०द्वि०

99. 'चामरपवनैरिवापह्रियते ....।' रिक्तस्थान की पूर्ति करो–
(A) गुणाः (B) सत्यवादिता
(C) साधुवादाः (D) यशः

100. 'गङ्गेव वसुजनन्यपि तरङ्गबुद्बुद्चञ्चला' यह किसका विशेषण है–
(A) लक्ष्मी (B) गङ्गा
(C) मन (D) नेत्र

101. असङ्गत विकल्प छाँटिए–
(A) अन्तर्लीनस्य दुःखाग्नेरद्योद्दामं ज्वलिष्यतः।
(B) ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति
(C) सीता देव्याः स्वकरकलितैः सल्लकीपल्लवाग्रैः।
(D) छायाद्रुमैः नियमितार्कमयूखतापः

102. ''सर्वदेवताभ्यः प्रकृष्टतममैश्वर्यं मन्दाकिन्याः'' यहाँ 'मन्दाकिन्याः' पद में विभक्ति है–
(A) पञ्चमी (B) प्रथमा
(C) षष्ठी (D) तृतीया

103. 'सुतनु' का सामासिक विग्रह होगा–
(A) शोभनम् तनु यस्याः सा (B) शोभना तनो यस्याः सा
(C) शोभना तनूः यस्याः सा (D) शोभना चासौ तनुः

104. 'दम्पती' पद में समास होगा–
(A) कर्मधारय (B) द्वन्द्व
(C) तत्पुरुष (D) सुप्सुपा

105. 'मर्मच्छेदी' पद में सन्धि किस सूत्र से हुई है–
(A) स्तोः श्चुना श्चुः (B) शश्छोऽटि
(C) छे च (D) इनमें से कोई नहीं

106. ''करपल्लवः स तस्याः सहसैव जडो जडात्परिभ्रष्टः'' यहाँ 'सः' पद किसके लिए आया है–
(A) सीता के हाथ के लिए (B) राम के हाथ के लिए
(C) पल्लव के लिए (D) जड़ के लिए

107. 'करान्मम स्विद्यतः स्विद्यन्' यहाँ 'स्विद्यतः' पद में विभक्ति है–
(A) प्रथमा (B) द्वितीया
(C) पञ्चमी (D) षष्ठी

108. ''कटुस्तूष्णीं सह्यो निरवधिरयं तु प्रविलयः'' यह पंक्ति किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है–
(A) नीतिशतकम् से (B) किरातार्जुनीयम् से
(C) उत्तररामचरितम् से (D) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से

109. 'कियच्चिरं वा मेघान्तरेण पूर्णचन्द्रदर्शनम्' यहाँ 'चन्द्र' पद से किसका सङ्केत किया गया है–
(A) रावण का (B) राम का
(C) सीता की सुन्दरता का (D) निशाकर का

110. 'प्रणय एव व्याहरति शोकश्च' इसका वक्ता है–
(A) तमसा (B) सीता
(C) वासन्ती (D) राम

111. 'आश्रममृगोऽयं न हन्तव्यो न हन्तव्यः' यह कथन है–
(A) वैखानस का (B) प्रियंवदा का
(C) सूत का (D) कण्व का

95. (C)	96. (A)	97. (A)	98. (C)	99. (B)	100. (A)	101. (D)	102. (C)
103. (C)	104. (B)	105. (C)	106. (A)	107. (C)	108. (C)	109. (B)	110. (A)
111. (A)							

112. 'आर्तत्राणाय वः शस्त्रं न प्रहर्तुमनागसि' यह अभिज्ञानशाकुन्तलम् के किस अङ्क से सम्बन्धित है–
(A) प्रथम (B) तृतीय
(C) पञ्चम (D) षष्ठ

113. विश्वामित्र किस नदी के किनारे तप कर रहे थे–
(A) मालिनी (B) गोदावरी
(C) गौतमी (D) गङ्गानदी

114 ''अयं स बलभित्सखा दुष्यन्तः'' यहाँ 'बलभित्' पद का अर्थ है–
(A) इन्द्र (B) विदूषक
(C) सेवक (D) कञ्चुकी

115. कालिदास को 'कविकुलगुरुः' किसने कहा है–
(A) जयदेव ने (B) चन्द्रदेव ने
(C) राजशेखर ने (D) क्षेमेन्द्र ने

116. अभिज्ञानशाकुन्तलम् का शचीतीर्थ किस नदी तट पर बताया जाता है–
(A) गङ्गा (B) मालिनी
(C) गोदावरी (D) गौतमी

117. 'असंशयं क्षत्रपरिग्रहक्षमा' यह पंक्ति अभिज्ञान-शाकुन्तलम् के किस अङ्क से है–
(A) द्वितीय (B) तृतीय
(C) प्रथम (D) चतुर्थ

118. 'श्रिया दुरापः कथमीप्सितो भवेत्' यह किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है–
(A) नीतिशतकम् से (B) मेघदूतम् से
(C) उत्तररामचरितम् से (D) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से

119. 'ईप्सितः' में प्रकृति प्रत्यय होगा–
(A) ईप् + सा + क्त (B) ईप् + सि + क्त
(C) आप् + सन् + क्त (D) ईप्स् + क्तिन

120. शकुन्तला दुष्यन्त को किस अङ्क में प्रेमपत्र लिखती है–
(A) द्वितीय (B) तृतीय
(C) प्रथम (D) चतुर्थ

121. 'लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु' यहाँ 'नियम्यत इव' में सन्धि होगी–
(A) स्वरसन्धि (B) व्यञ्जनसन्धि
(C) विसर्गसन्धि (D) इनमें से कोई नहीं

122. 'यजमानस्य पावक एवाहुतिः पतिता' यहाँ 'पावक' पद में किस विभक्ति का बोध हो रहा है–
(A) प्रथमा एकवचन (B) सम्बोधन
(C) षष्ठी एकवचन (D) सप्तमी एकवचन

123. 'मैं देव को नमस्कार करता हूँ' इसका सही अनुवाद होगा–
(A) अहं देवं नमस्करोमि
(B) अहं देवं नमः
(C) अहं देवाः नमः
(D) अहं देवाय नमस्करोमि

124. मुद्राराक्षस कैसा नाटक है–
(A) काल्पनिक (B) राजनीतिविषयक
(C) महाभारत कथाश्रित (D) धर्मपरकनाटक

125. 'अवोचत्' में लकार है–
(A) लङ् (B) लिट्
(C) लुङ् (D) लृङ्

112. (A) 113. (C) 114. (A) 115. (A) 116. (A) 117. (C) 118. (D) 119. (C)
120. (B) 121. (A) 122. (D) 123. (A) 124. (B) 125. (C)

प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक चयनपरीक्षा (TGT) आदर्शप्रश्नपत्र– 3

1. ''कोऽन्यो हुतवहात् दग्धुं प्रभवति'' सूक्ति उद्धृत है?
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से (B) नीतिशतकम् से
(C) उत्तररामचरितम् से (D) मेघदूतम् से

2. 'नाटक में जो सुनने योग्य न हो' उसे कहते हैं?
(A) आत्मगतम् (B) प्रकाशम्
(C) नेपथ्य (D) नान्दी

3. 'प्रकृतिवक्रः' शब्द किसके लिए कहा गया है?
(A) कण्व के लिए (B) दुर्वासा के लिए
(C) विश्वामित्र के लिए (D) मारीच के लिए

4. अभिज्ञानशाकुन्तलम् का उपजीव्य ग्रन्थ है?
(A) भागवत (B) रामायण
(C) महाभारत (D) वेद

5. ''दिष्ट्या धूमाकुलितदृष्टेरपि यजमानस्य पावक एवाहुतिः पतिता'' इस वाक्य में 'पावक' शब्द से किसको संकेतित किया गया है?
(A) कण्व को (B) दुष्यन्त को
(C) यज्ञदेवता को (D) यजमान को

6. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क का प्रारम्भ होता है?
(A) माढव्य से (B) विदूषक से
(C) विष्कम्भक से (D) शारद्वत से

7. ''रक्षितव्या खलु प्रकृतिपेलवा प्रियसखी' यह कथन है?
(A) अनसूया का प्रियंवदा के प्रति
(B) अनसूया का गौतमी के प्रति
(C) प्रियंवदा का अनसूया के प्रति
(D) शकुन्तला का प्रियंवदा के प्रति

8. ''अपराजिता रक्षाकरण्डक'' किसके हाथ में बँधा है?
(A) दुष्यन्त (B) सर्वदमन (भरत)
(C) मारीच (D) कण्व

9. ''एषापि प्रियेण बिना गमयति रजनीं विषाददीर्घत-राम्।'' यह किसके द्वारा कहा गया है?
(A) प्रियंवदा (B) गौतमी
(C) कण्व (D) अनसूया

10. हस्तिनापुर पहुँचकर शकुन्तला का कौन सा नेत्र फड़कने लगा?
(A) बायाँ नेत्र (B) दाहिना नेत्र
(C) दोनों नेत्र (D) कभी बायाँ कभी दायाँ

11. 'संस्पृष्टमुत्कण्ठया' के 'संस्पृष्टम्' पद में प्रकृति प्रत्यय है–
(A) सम् + पृच्छ् + कत्वा (B) सम् + स्पृश् + क्त
(C) सम् + पा + ल्युट् (D) सम् + स्पृ + ष्टम्

12. 'लिखितवान्' में प्रत्यय है?
(A) क्त (B) मतुप्
(C) क्तवतु (D) शतृ

13. 'व्याहृतम्' पद की व्याकरणात्मक टिप्पणी होगी?
(A) वि + आह + क्त
(B) वि + आङ् + क्त
(C) वि + आङ् + हृ + क्त
(D) वि + आ + हृत् + क्त

14. सूर्यवंशी, रघुवंशी तथा इक्ष्वाकुवंशी राजा कौन हैं?
(A) राम (B) दुष्यन्त
(C) हर्ष (D) नल

15. विदेहराजपुत्री कौन है?
(A) सीता (B) शकुन्तला
(C) तमसा (D) वासन्ती

16. राम दण्डकारण्य में क्यों आए हैं–
(A) सीता से मिलने हेतु (B) अगस्त्य के दर्शन हेतु
(C) पञ्चवटी में घूमने हेतु (D) शम्बूक के वध हेतु

1. (A)	2. (A)	3. (B)	4. (C)	5. (B)	6. (C)	7. (A)	8. (B)
9. (D)	10. (B)	11. (B)	12. (C)	13. (C)	14. (A)	15. (A)	16. (D)

17. पञ्चवटी में कदम्बवृक्ष को किसने रोपित किया था–
(A) वासन्ती ने (B) राम ने
(C) सीता ने (D) तमसा ने

18. ''स्पर्शः पुरा परिचितो नियतं स एव'' कथन है–
(A) राम का (B) सीता का
(C) वासन्ती का (D) तमसा का

19. ''अयि कठोर! यशः किल ते प्रियम्'' में छन्द है?
(A) उपजाति (B) द्रुतविलम्बित
(C) इन्द्रवज्रा (D) वंशस्थ

20. 'समाश्वसिहि' पद की व्याकरणात्मक प्रकृति है?
(A) सम + आ + श्वास + लोट् म0पु0 एक0
(B) समा + श्वस + लोट् + म0पु0 द्विव0
(C) सम् + आङ् + श्वस् + लोट् म0पु0 एक0
(D) सम + आ + श्वास + लट् म0पु0 एक0

21. ''प्रियाशोको जीवं कुसुममिव घर्मो ग्लपयति'' में अलङ्कार हैं?
(A) उत्प्रेक्षा (B) उपमा
(C) रूपक (D) विभावना

22. उत्तररामचरितम् के तृतीय अङ्क में कुल श्लोक हैं–
(A) 45 (B) 46
(C) 48 (D) 49

23. उत्तररामचरितम् के टीकाकार घनश्याम, महाकवि भवभूति को मानते है?
(A) तमिल (B) द्राविड
(C) उत्तरभारतीय (D) महाराष्ट्रियन

24. उत्तररामचरितम् के तृतीय अङ्क का प्रारम्भ होता है?
(A) तमसा और मुरला के वार्तालाप से
(B) तमसा और सीता के वार्तालाप से
(C) राम और वासन्ती के मिलने से
(D) गोदावरी और भागीरथी के वार्तालाप से

25. भारवि का समय विद्वानों ने माना है?
(A) 600 ई0 के आस पास
(B) 800 ई0 के आसपास
(C) कालिदास के पहले
(D) प्रथम शताब्दी के आस पास

26. ''नारिकेलफलसम्मितं वचः'' सूक्ति किसने कहा है?
(A) कीथ ने (B) मल्लिनाथ ने
(C) गेटे ने (D) क्षेमेन्द्र ने

27. ''सहसा विदधीत न क्रियाम्'' यह किस कवि का प्रिय श्लोक है?
(A) माघ का (B) कालिदास का
(C) भवभूति का (D) भारवि का

28. ''दुनोति नो कच्चिदयं वृकोदरः'' यहाँ 'वृकोदरः' पद किसके लिए प्रयुक्त है–
(A) युधिष्ठिर (B) भीम
(C) दुर्योधन (D) वनेचर

29. वनवासकाल में अर्जुन जङ्गल से क्या लाकर युधिष्ठिर को प्रदान करते हैं?
(A) स्वर्ण
(B) चाँदी
(C) धन
(D) वल्कलवस्त्र

30. किरातार्जुनीयम् की सूक्ति नहीं हैं?
(A) हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः
(B) प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः
(C) विचित्ररूपाः खलु चित्तवृत्तयः
(D) भवन्ति नम्रास्तरवः फलोद्गमैः

31. ''वञ्चनीयाः'' पद में प्रत्यय है–
(A) तव्यत् (B) अनीयर्
(C) ल्यप् (D) तुमुन्

17. (C)	**18. (A)**	**19. (B)**	**20. (C)**	**21. (B)**	**22. (C)**	**23. (B)**	**24. (A)**
25. (A)	**26. (B)**	**27. (D)**	**28. (B)**	**29. (D)**	**30. (D)**	**31. (B)**	

32. 'शास्ति' में लकार, पुरुष और वचन है–
(A) लट्लकार, प्रथम पुरुष एकवचन
(B) लृट्लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन
(C) लिट्लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन
(D) लोट्लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन

33. ''द्विषां विघाताय विधातुमिच्छतः'' के 'विघाताय' पद में धातु है?
(A) घ्रा (B) हन्
(C) विघ् (D) घात्

34. 'वनेचरः' में कौन सा प्रत्यय है?
(A) घञ् प्रत्यय (B) ट प्रत्यय
(C) अण् प्रत्यय (D) णिनि प्रत्यय

35. ''शमीतरुं शुष्कमिवाग्निरुच्छिखः'' इस सूक्ति में कौन सा अलङ्कार है?
(A) उत्प्रेक्षा (B) रूपक
(C) श्लेष (D) उपमा

36. कवियों का उत्तरोत्तर सही कालक्रम माना जाता है?
(A) माघ - भारवि - श्रीहर्ष
(B) भास - भारवि - अश्वघोष
(C) वाल्मीकि - भास - भारवि
(D) भास - माघ - कालिदास

37. 'पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम्' यह सूक्ति किस ग्रन्थ से उद्धृत है?
(A) मेघदूतम् से (B) शिवराजविजयम् से
(C) नीतिशतकम् से (D) किरातार्जुनीयम् से

38. ''निराश्रया हन्त! हता मनस्विता'' इसका वक्ता कौन है?
(A) द्रौपदी (B) मुरला
(C) अनसूया (D) वनेचर

39. भारवि थे?
(A) जैन (B) शैव
(C) वैष्णव (D) बौद्ध

40. महाकवि कालिदास ने मेघदूतम् के कथानक को कहाँ से लिया है?
(A) भागवतपुराण से (B) वायुपुराण से
(C) ब्रह्मवैवर्तपुराण से (D) इनमें से कोई नहीं

41. 'ज्ञातास्वादो विवृतजघनां को विहातुं समर्थः' यह पंक्ति किस नदी से सम्बन्धित है?
(A) निर्विन्ध्या से (B) शिप्रा से
(C) रेवा से (D) गम्भीरा से

42. गीतिकाव्य या खण्डकाव्य के रूप में सर्वप्रथम गणना होती है?
(A) गीतगोविन्दम् की (B) मेघदूतम् की
(C) गीता की (D) वाल्मीकिरामायण की

43. 'स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु' यह पंक्ति किस नदी से सम्बद्ध है?
(A) रेवा से (B) निर्विन्ध्या से
(C) शिप्रा से (D) गम्भीरा से

44. यक्ष के शाप की समाप्ति किस दिन होगी?
(A) कार्तिक देवोत्थान एकादशी को
(B) हरिशयनी एकादशी को
(C) माघ शुक्लपक्ष सप्तमी को
(D) आषाढ़ कृष्णपक्ष प्रतिपदा को

45. यक्षिणी शापदिवसों की गिनती किससे करती है?
(A) फलों से (B) पत्तों से
(C) शङ्ख से (D) फूलों से

46. ''यत्रोन्मत्तभ्रमरमुखराः पादपा नित्यपुष्पाः'' यहाँ 'यत्र' पद से किस नगरी का सङ्केत है?
(A) उज्जयिनी का (B) विदिशा का
(C) अलका का (D) दशपुर का

32. (A)	33. (B)	34. (B)	35. (D)	36. (C)	37. (D)	38. (A)	39. (B)
40. (C)	41. (D)	42. (B)	43. (B)	44. (A)	45. (D)	46. (C)	

47. 'या शिखा दाम हित्वा' यहाँ 'दाम' शब्द का अर्थ है?
(A) माला (B) मूल्य
(C) सर्प (D) वियोग

48. 'विगलितशुचा' में विभक्ति एवं वचन है?
(A) तृतीया एकवचन (B) द्वितीया एकवचन
(C) प्रथमा एकवचन (D) प्रथमा बहुवचन

49. 'पेशलम्' पद का शब्दार्थ है?
(A) सुन्दर (B) आँसू
(C) नवीन (D) कोमल

50. किस विद्वान् ने मेघदूत को 'शोकगीत' कहा है?
(A) डॉ0 कीथ ने (B) गेटे ने
(C) क्षेमेन्द्र ने (D) राजशेखर ने

51. 'पारावत' पद का शब्दार्थ है–
(A) कबूतर (B) कोयल
(C) कौआ (D) तोता

52. 'लाङ्गली' मेघदूतम् में किसको कहा गया है?
(A) कृष्ण को (B) शिव को
(C) बलराम को (D) कार्तिकेय को

53. चातक (पपीहा) मेघ के किस ओर शब्द कर रहा है?
(A) बाँयी ओर
(B) दाँयी ओर
(C) बाँयी और दाँयी दोनों ओर
(D) किसी ओर नहीं।

54. अलका के बाह्य उद्यान का क्या नाम है?
(A) विदिशा (B) शैलाज
(C) नन्दन (D) वैभ्राज

55. ''बाणः कवीनामिह चक्रवर्ती'' यह किसका कथन है–
(A) सोड्ढल का (B) त्रिलोचन का
(C) धर्मदास का (D) मङ्खक का

56. पुण्डरीक के पिता हैं–
(A) चित्रभानु (B) अर्थकेतु
(C) शुकनास (D) श्वेतकेतु

57. ''रजनिकरगभस्तयः'' में 'गभस्तयः' पद का अर्थ है?
(A) गर्भिणी (B) किरणें
(C) अन्धकार (D) सूर्य

58. 'दातारम्' की व्याकरणात्मक टिप्पणी होगी?
(A) दा + तृच् + द्वितीया, बहुव0
(B) दा + अम् + प्रथमा, एकव0
(C) दा + तृच् + द्वितीया, एकव0
(D) दाञ् + घञ् + प्रथमा, बहुव0

59. लक्ष्मी कर्कशता कहाँ से ग्रहण करती है?
(A) कौस्तुभमणि से (B) मदिरा से
(C) उच्चैश्रवा से (D) हालाहल से

60. 'इषवः' पद का अर्थ है?
(A) शर (B) बाण
(C) तीर (D) उपर्युक्त सभी

61. ''पुरुषोत्तमरतापि खलजनप्रिया रेणुमयीव स्वच्छमपि कलुषीकरोति'' इन पंक्तियों में अलङ्कार है?
(A) विरोधाभास (B) दीपक
(C) निदर्शना (D) उत्प्रेक्षा

62. ''विग्रहवत्यप्यप्रत्यक्षदर्शना'' इस पद में सन्धि हैं–
(A) हल् सन्धि (B) गुणसन्धि
(C) वृद्धि सन्धि (D) यण् सन्धि

63. ''कुप्यन्ति हितवादिने'' यहाँ 'हितवादिने' में कौन सी विभक्ति किस सूत्र से हुई है–
(A) तृतीया–''हेतौ''
(B) षष्ठी–''षष्ठी शेषे''
(C) चतुर्थी–''क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः''
(D) सप्तमी–''आधारोऽधिकरणम्''

47. (A)	48. (A)	49. (A)	50. (A)	51. (A)	52. (C)	53. (A)	54. (D)
55. (A)	56. (D)	57. (B)	58. (C)	59. (A)	60. (D)	61. (A)	62. (D)
63. (C)							

64. कादम्बरी में वर्णित 'इन्द्रायुध' था?
(A) मन्त्री (B) राजा
(C) घोड़ा (D) वज्र

65. कामपीड़ा में दिवङ्गत हो गया था–
(A) पुण्डरीक (B) द्वैपायन
(C) तारापीड (D) वैशम्पायन

66. ''त्रिभुवनप्रसवभूमिरिव विस्तीर्णा'' यह विशेषता किसके लिए प्रयुक्त है?
(A) विदिशा (B) उज्जयिनी
(C) विन्ध्याटवी (D) हेमकूट

67. 'गन्धर्वनगरलेखेव' पद में कौन सा अलङ्कार है?
(A) उत्प्रेक्षा (B) उपमा
(C) रूपक (D) यमक

68. ''गङ्गेव वसुजनन्यपि तरङ्गबुद्बुद्चञ्चला'' किसके विषय में कहा गया है?
(A) सरस्वती के लिए (B) सीता के लिए
(C) लक्ष्मी के लिए (D) पार्वती के लिए

69. निम्न में से कौन सा रूप धातु का नही है?
(A) भवति (B) भवतः
(C) भवन्तः (D) भवताम्

70. विक्रमसंवत् के प्रवर्तक महाराज विक्रमादित्य का ज्येष्ठ भाई माना जाता है?
(A) भवभूति (B) भर्तृमेण्ठ
(C) भट्टि (D) भर्तृहरि

71. नीतिशतकम् किस काव्यपरम्परा का ग्रन्थ माना जाता है–
(A) महाकाव्य (B) खण्डकाव्य
(C) मुक्तककाव्य (D) चम्पूकाव्य

72. भर्तृहरि के नीतिशतकम् के मङ्गलाचरण में किस देव की स्तुति है–
(A) विधाता ब्रह्मा की (B) शङ्कर की
(C) दिक्कालादि की (D) ब्रह्म की

73. ''विभूषणं मौनमपण्डितानाम्'' प्रस्तुत सूक्ति किस ग्रन्थ से उद्धृत है–
(A) श‍ृङ्गारशतकम् से (B) नीतिशतकम् से
(C) वैराग्यशतकम् से (D) इनमें से कोई नहीं

74. 'धिक् तां च तं च मदनं च इमां च मां च' इस पद्यांश में 'माम्' पद से किसका संकेत किया गया है?
(A) विक्रमादित्य का (B) महामन्त्री का
(C) कामदेव का (D) भर्तृहरि का

75. ''राजन् दुधुक्षसि यदि क्षितिधेनुमेनाम्'' यहाँ 'क्षितिधेनुम्' पद में अलङ्कार है–
(A) यमक (B) श्लेष
(C) रूपक (D) इनमें से कोई नहीं

76. ''निजहृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः'' यहाँ क्रियापद है–
(A) सन्तः (B) सन्ति
(C) कियन्तः (D) विकसन्तः

77. ''मा ब्रूहि दीनं वचः' यहाँ 'ब्रूहि' पद में धातु एवं लकार है?
(A) श्रु लोट् म0 पु0 एक0
(B) ब्रू लट् म0 पु0 एक0
(C) ब्रू लोट् म0 पु0 एक0
(D) ब्रूह् लोट् प्र0 पु0 एक0

78. ''पिशुनता यद्यस्ति किं पातकैः'' इस पद्यांश में 'पिशुनता' पद का अर्थ है?
(A) चुगुलखोरी (B) चोरी
(C) स्त्रीचरित्र (D) पाप की गठरी

79. भर्तृहरि के पिता माने जाते हैं?
(A) मित्रसेन (B) गन्धर्वसेन
(C) चित्रसेन (D) चित्रभानु

64. (C)	**65. (A)**	**66. (A)**	**67. (B)**	**68. (C)**	**69. (C)**	**70. (D)**	**71. (C)**
72. (D)	**73. (B)**	**74. (D)**	**75. (C)**	**76. (B)**	**77. (C)**	**78. (A)**	**79. (B)**

80. महाकवि भर्तृहरि की अन्तिम रचना मानी जाती है?
(A) शृङ्गारशतकम् (B) नीतिशतकम्
(C) वैराग्यसारम् (D) वैराग्यशतकम्

81. ''सतां केनोद्दिष्टं विषममसिधाराव्रतमिदम्'' इस श्लोकांश में छन्द है?
(A) शिखरिणी (B) मन्दाक्रान्ता
(C) शार्दूलविक्रीडितम् (D) हरिणी

82. शतकत्रय के रचनाकार भर्तृहरि ने और किस प्रसिद्धग्रन्थ की रचना की थी?
(A) अष्टाध्यायी की (B) महाभाष्यम् की
(C) वाक्यपदीयम् की (D) वैयाकरणभूषणसार की

83. ''बोद्धारो मत्सरग्रस्ताः प्रभवः स्मयदूषिताः'' यह पंक्ति नीतिशतक की किस पद्धति से उद्धृत है–
(A) दुर्जनपद्धति से (B) मूर्खपद्धति से
(C) मानशौर्यपद्धति से (D) परोपकारपद्धति से

84. काशी की महासभा ने व्यास जी को किस उपाधि से विभूषित किया–
(A) भारतरत्न (B) साहित्यरत्न
(C) संस्कृतरत्न (D) बिहाररत्न

85. अम्बिकादत्तव्यास ने स्थापना की?
(A) सार्वभौम-संस्कृतसमाज की
(B) बिहार-संस्कृत-सञ्जीवनी-समाज की
(C) संस्कृत-भारती-समाज की
(D) संस्कृत-कथावाचन-समाज की

86. अम्बिकादत्तव्यास जी ने अपना संक्षिप्त निज वृत्तान्त स्वयं लिखा हैं–
(A) बिहारी बिहारिणी में (B) बिहारी शतकम् में
(C) बिहारी बिहार में (D) शिवराजविजयम् में

87. 'महाराष्ट्रकेशरी' के रूप में वर्णन है?
(A) गौरसिंह का (B) श्यामबटु का
(C) ब्रह्मचारी गुरु का (D) शिवाजी का

88. संस्कृत-साहित्य में बीसवीं शताब्दी का एक सफल ऐतिहासिक उपन्यास है?
(A) शिवाजीविजयम् (B) धर्मश्रीः
(C) शिवराजभूषणम् (D) शिवराजविजयम्

89. ''ग्रामणी-ग्रामीण-ग्रामाः समागत्य मध्ये मध्ये तं पूजयन्ति स्तुवन्ति च'' यहाँ 'तम्' पद से किसका सङ्केत किया गया है?
(A) ब्रह्मचारीगुरु का (B) योगिराज का
(C) गौरबटु का (D) सूर्य का

90. 'त्रियामा' पद का अर्थ है?
(A) यामिनी (B) विभावरी
(C) रात्रि (D) उपर्युक्त सभी

91. 'समतिष्ठत्' में धातु है–
(A) तिष्ठ (B) स्था
(C) दृश् (D) तिस्

92. ''बटुरसौ आकृत्या सुन्दरः, वर्णेन गौरः, जटाभिर्ब्रह्मचारी, वयसा षोडशवर्षदेशीयः'' इन पंक्तियों में वर्णन है?
(A) गौरबटु का (B) श्यामबटु का
(C) दोनों का (D) ब्रह्मचारी गुरु का

93. ''चर्कर्ति बर्भर्ति जर्हर्ति'' प्रयोग है–
(A) यङ्लुक् क्रिया (B) धातुपसर्ग क्रिया
(C) कर्मवाच्य क्रिया (D) सनन्तक्रिया

94. सोमनाथ मन्दिर में लटकने वाला विशाल घण्टा कितने मन की स्वर्ण शृंखलाओं में लटकता था–
(A) 200 मन (B) 150 किग्रा
(C) 200 किलो (D) 1000 मन

95. शिवराजविजयम् के अनुसार कन्या के अपहरणकर्त्ता यवनयुवक की आयु लगभग कितनी रही होगी?
(A) 25 वर्ष (B) 16 वर्ष
(C) 20 वर्ष (D) 30 वर्ष

80. (D)	81. (A)	82. (C)	83. (B)	84. (A)	85. (B)	86. (C)	87. (D)
88. (D)	89. (B)	90. (D)	91. (B)	92. (A)	93. (A)	94. (A)	95. (C)

96. 'अतुत्रुटत्' में धातु है?
(A) त्रुट् छेदने, लुङ् (B) त्रुट् छेदने, लङ्
(C) त्रुटि छेदने, लङ् (D) त्रुट्, लिट्

97. 'आखण्डलदिक्' पद से किस दिशा का सङ्केत है?
(A) पूर्व दिशा (B) पश्चिम दिशा
(C) उत्तर दिशा (D) दक्षिण दिशा

98. इनमें कौन पदसंज्ञा विधायक सूत्र नहीं है–
(A) सुप्तिङन्तं पदम्
(B) "सिति च" और "नः क्ये"
(C) स्वादिष्वसर्वनामस्थाने
(D) अनुदात्तं पदमेकवर्जम्

99. "अल्पाक्षरमसन्दिग्धं सारवद्विश्वतोमुखम् अस्तोभ-मनवद्यं च"–यह किसका लक्षण है?
(A) वार्तिक का (B) सूत्र का
(C) भाष्य का (D) उपर्युक्त सभी का

100. 'स्वप् + क्त = सुप्तः' यहां 'स्वप्' धातु में कौन विधि हुई है?
(A) संयोग (B) सम्प्रसारण
(C) संहिता (D) लोप

101. 'उत्सर्ग' किसे कहते हैं?
(A) विशेष नियम को (B) सामान्य नियम को
(C) वैकल्पिक नियम को (D) इनमें से कोई नहीं को

102. 'इको यणचि' इस सूत्र में कुल कितने पद हैं–
(A) पञ्चपदम् (B) त्रिपदम्
(C) द्विपदम् (D) एकपदम्

103. 'नद्यत्र' में सन्धि है–
(A) गुण (B) यण्
(C) अयादि (D) प्रकृतिभाव

104. "विष्णो + इति"–इसका सन्धियुक्त पद होगा–
(A) विष्ण इति (B) विष्णविति
(C) उपर्युक्त दोनों (D) कोई नहीं

105. "चक्रिन् + ढौकसे = चक्रिण्ढौकसे" यहाँ 'ढौकसे' पद का अर्थ है?
(A) जाना (B) डाँटना
(C) डरना (D) छुपना

106. "एतत् + मुरारिः = एतन्मुरारिः" यहाँ किस सूत्र से सन्धि हुई है?
(A) यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा
(B) अनुनासिकात्परोऽनुस्वारः
(C) अत्रानुनासिकः पूर्वस्य तु वा
(D) मुखनासिकावचनोऽनुनासिकः

107. "तच्छ्लोकेन" इसका सन्धि विच्छेद होगा?
(A) तच् + श्लोकेन (B) तत् + श्लोकेन
(C) तत् + छ्लोकेन (D) तत्व + लोकेन

108. 'पुनारमते' का सन्धि विच्छेद होगा?
(A) पुनः (र्) + रमते (B) पुनो + रमते
(C) पुन + आरमते (D) पुनस् + रमते

109. 'रथिकाश्वारोहम्' में कौन सा समास है?
(A) कर्मधारय (B) द्वन्द्व
(C) बहुव्रीहि (D) षष्ठी तत्पुरुष

110. 'अहिनकुलम्' में समास है?
(A) इतरेतरद्वन्द्व (B) समाहारद्वन्द्व
(C) एकशेषद्वन्द्व (D) अलुक्तत्पुरुष

111. किसमें 'कृत्' से कर्म का अभिधान है?
(A) लक्ष्म्या सेवितः
(B) हरिः सेव्यते
(C) शतेन क्रीतः शत्यः
(D) प्राप्तः आनन्दः यं सः प्राप्तानन्दः

112. अकर्मक धातु के योग में 'अध्यवाचक' शब्द की क्या संज्ञा होती है?
(A) करण (B) अधिकरण
(C) कर्म (D) कर्त्ता

96. (A) 97. (A) 98. (D) 99. (B) 100. (B) 101. (B) 102. (B) 103. (B)
104. (C) 105. (A) 106. (A) 107. (B) 108. (A) 109. (B) 110. (B) 111. (A)
112. (C)

113. "कारयति भृत्येन कटम्" में 'भृत्य' में तृतीया होने का कारण क्या है?

(A) अनुक्ते करणे (B) हेतौ

(C) अपवर्गे (D) अनुक्ते कर्तरि

114. "अक्षान् दीव्यति" में 'अक्ष' की कर्मसंज्ञा किस सूत्र से हुई है?

(A) कर्त्तुरीप्सिततमं कर्म (B) दिवः कर्म च

(C) अकथितं च (D) तथायुक्तं चानीप्सितम्

115. अण्यन्त अवस्था के कर्त्ता की ण्यन्तावस्था में 'कर्मसंज्ञा' करने वाला सूत्र है?

(A) कर्तुरीप्सिततमं कर्म

(B) अधिशीङ्स्थासां कर्म

(C) दिवः कर्म च

(D) गति-बुद्धि-प्रत्यवसानार्थ-शब्द–कर्माकर्मकाणामणि कर्त्ता स णौ।

116. लिङ्गमात्राधिक्य का उदाहरण है?

(A) तटः, तटी, तटम् (B) शुक्लः, शुक्ला, शुक्लम्

(C) कृष्णः, कृष्णा, कृष्णम् (D) उपर्युक्त सभी

117. नाम के बाद जो प्रत्यय आते हैं, उन्हें क्या कहते हैं?

(A) णिच् (B) तद्धित

(C) तिङ् (D) कृत्

118. कुर्वाणः में प्रकृति-प्रत्यय हैं–

(A) कृ + शतृ (B) कृ + ल्यप्

(C) कृ + क्त्वा (D) कृ + शानच्

119. 'मासिक' पद में कौन सा प्रत्यय है?

(A) मास + उक् (B) मास + त्व

(C) मास + ठक् (D) मास + ईक्

120. कौन सा अशुद्ध है?

(A) करिष्यमाणः (B) करिष्यमाणा

(C) करिष्यमाणम् (D) करिष्यतः

121. 'रामः वनम् अगच्छत्'-इसका कर्मवाच्य होगा?

(A) रामेण वनं गम्यते

(B) रामेण वनोऽगम्यत्

(C) रामेण वनः गम्यत

(D) रामेण वनम् अगम्यत

122. पञ्चन् से दशम् तक सभी शब्द किस वचन में होते हैं?

(A) एकवचन (B) द्विवचन

(C) बहुवचन (D) उपर्युक्त सभी

123. 'हु' धातु के लोट्लकार उत्तमपुरुष एकवचन का रूप होगा

(A) जुहुवान (B) हुहोतु

(C) जुह्वानि (D) जुहुत

124. 'युज्' धातु का लट्लकार उत्तमपुरुष द्विवचन का रूप होगा?

(A) युनक्ति (B) युञ्जमः

(C) युञ्जवः (D) युञ्जन्ति

125. 'विद्वस्' शब्द का सप्तमी बहुवचन का रूप होगा?

(A) विद्वषः (B) विद्वत्सु

(C) विद्वांसु (D) विद्यासु

113. (D)	114. (B)	115. (D)	116. (D)	117. (B)	118. (D)	119. (C)	120. (D)
121. (D)	122. (C)	123. (C)	124. (C)	125. (B)			

प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक चयनपरीक्षा (TGT) आदर्शप्रश्नपत्र–4

1. शुद्ध रूप है–
(A) पाश्चात्यः (B) पास्चात्यः
(C) पाश्चात्त्यः (D) पश्चात्यः

2. शुद्ध रूप क्या है–
(A) शास्त्रीमहोदयः अद्य अस्माकं गृहम् आगच्छति
(B) शास्त्रिन्महोदयः अद्य अस्माकं गृहं आगच्छसि
(C) शास्त्रिमहोदयः अद्य अस्माकं गृहम् आगच्छति
(D) शास्त्रीमहोदयः अद्य अस्माकं गृहम् आगच्छन्ति

3. भाषाशिक्षण का उपयुक्त कौशलक्रम है–
(A) भाषणकौशलम्, श्रवणकौशलम्, पठनकौशलम्, लेखनकौशलम्
(B) श्रवणकौशलम्, भाषणकौशलम्, पठनकौशलम्, लेखनकौशलम्
(C) श्रवणकौशलम्, भाषणकौशलम्, लेखनकौशलम्, पठनकौशलम्
(D) भाषणकौशलम् पठनकौशलम्, श्रवणकौशलम्, लेखनकौशलम्

4. संस्कृत में अठारह (18) को कहेंगे–
(A) अष्टदश (B) अष्टौदश
(C) अष्टन्दश (D) अष्टादश

5. कौन सा रूप शुद्ध माना जाता है–
(A) शृणोति (B) श्रृणोति
(C) श्रणोति (D) श्रुणोति

6. 'षण्णवतिः' कहते हैं–
(A) 69 (B) 96
(C) छः और नव को (D) 66

7. 84 (चौरासी) का संस्कृत रूप होगा–
(A) चतुराशीतिः (B) चत्वारिशीतिः
(C) चतुर्थाशीतिः (D) चतुरशीतिः।

8. 'अरुण एष प्रकाशः पूर्वस्यां भगवतो मरीचिमालिनः' यहाँ 'मरीचिमाली' पद का क्या अर्थ है–
(A) फूलों की माला (B) सूर्य
(C) किरणों का सारथी (D) मारीचि ऋषि का माली

9. संस्कृतवाङ्मय का प्रथम 'ऐतिहासिक उपन्यास' है–
(A) कादम्बरी (B) वाल्मीकिरामायणम्
(C) हर्षचरितम् (D) शिवराजविजयम्

10. काशीकवितावर्द्धिनी सभा की ओर से भारतेन्दु जी ने ''सुकवि'' की उपाधि किसे प्रदान की
(A) प्रेमचन्द्र को (B) अम्बिकादत्तव्यास को
(C) बाणभट्ट को (D) रेवाप्रसाद द्विवेदी को

11. यवन गुप्तचर को किसने मारा–
(A) ब्रह्मचारी गुरु ने (B) खड्गसिंह ने
(C) गौरसिंह ने (D) शिवाजी ने

12. ''गायत्री अमुमेव गायति'' इस वाक्य में 'अमुम्' पद से किसका सङ्केत किया गया है–
(A) सूर्य का (B) चन्द्र का
(C) विश्वामित्र का (D) गायत्री का

13. ''प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः'' यह श्लोक नीतिशतकम् के अलावा और किस ग्रन्थ में प्राप्त होता है–
(A) पञ्चतन्त्रम् में (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में
(C) किरातार्जुनीयम् में (D) मुद्राराक्षसम् में

14. 'विना' शब्द के योग में कौन सी विभक्तियाँ होती हैं–
(A) प्रथमा, द्वितीया, चतुर्थी
(B) तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी
(C) द्वितीया, तृतीया, पञ्चमी
(D) द्वितीया, चतुर्थी, षष्ठी

15. निम्नलिखित में से किस शब्द के योग में तृतीया विभक्ति होती है–
(A) परितः (B) नमः
(C) साकम् (D) अभितः

16. 'शतावधान' तथा 'घटिकाशतक' की उपाधि मिली थी–
(A) पं० अम्बिकादत्तव्यास एवं माघ को
(B) पं० दौर्बलप्रभाकरशर्मा एवं भारवि को
(C) बाणभट्ट एवं व्यास को
(D) केवल अम्बिकादत्तव्यास को

1. (C)	2. (C)	3. (B)	4. (D)	5. (A)	6. (B)	7. (D)	8. (B)	9. (D)	10. (B)
11. (C)	12. (A)	13. (D)	14. (C)	15. (C)	16. (D)				

17. ''मनस्वी कार्यार्थी न गणयति दुःखं न च सुखम्'' यह सूक्ति कहाँ प्राप्त होती है–
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में (B) नीतिशतकम् में
(C) विदुरनीति में (D) चाणक्यनीति में

18. ''पदवाक्यप्रमाणज्ञः'' कौन था–
(A) भारवि (B) भवभूति
(C) भास (D) भर्तृहरि

19. ''त्वं जीवितं त्वमसि मे हृदयं द्वितीयम्'' यह पंक्ति कहाँ की है–
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (B) मेघदूतम्
(C) नीतिशतकम् (D) उत्तररामचरितम्

20. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के मङ्गलाचरण में छन्द है–
(A) स्रग्धरा (B) हरिणी
(C) शार्दूलविक्रीडितम् (D) शिखरिणी

21. ''शममेष्यति मम शोकः कथं नु वत्से'' यह कथन किसका है–
(A) दुष्यन्त का (B) कण्व का
(C) राम का (D) यक्ष का

22. 'नायकः' शब्द का सन्धिविच्छेद क्या है–
(A) ने+अकः (B) नौ+अनः
(C) नै+अकः (D) नो+अकः

23. किरातार्जुनीयम् महाकाव्य का उपजीव्यग्रन्थ है–
(A) महाभारत वनपर्व (B) महाभारत आदिपर्व
(C) महाभारत सभापर्व (D) महाभारत भीष्मपर्व

24. ''रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय'' यह सूक्ति कहाँ से उद्धृत है–
(A) ऋतुसंहारम् से (B) रघुवंशम् से
(C) मेघदूतम् से (D) किरातार्जुनीयम् से

25. 'मेघदूतम्' में कौन सा छन्द प्रयुक्त है–
(A) शिखरिणी (B) इन्द्रवज्रा
(C) उपेन्द्रवज्रा (D) मन्दाक्रान्ता

26. मेघदूतम् में ''जह्नुकन्या'' कौन है–
(A) कुबेर की पत्नी (B) यक्ष की पत्नी
(C) रामगिरि की निवासिनी (D) गङ्गानदी

27. ''श्रीकण्ठपदलाञ्छनः'' किस कवि को कहा जाता है–
(A) भारवि को (B) माघ को
(C) बाणभट्ट को (D) भवभूति को

28. महर्षि कण्व का आश्रम था–
(A) मालिनी नदी के तट पर
(B) गोदावरी नदी के तट पर
(C) गङ्गा नदी के तट पर
(D) गौतमी नदी के तट पर

29. 'ममायम्' पद का सन्धिविच्छेद है–
(A) मया+अयम् (B) मम्+अयम्
(C) मम्+आयम् (D) मम+अयम्

30. यक्ष शाप के दिनों में कहाँ निवास करता है–
(A) द्वैतवन में (B) विन्ध्यवन में
(C) रामगिरि में (D) अलकापुरी में

31. मेघदूतम् के यक्ष की पत्नी का नाम है–
(A) कामाक्षी (B) विशालाक्षी
(C) हेममालिनी (D) यशस्विनी

32. ''एकोरसः करुण एव निमित्तभेदात्'' यह किस कवि की उद्घोषणा है–
(A) कालिदास (B) भास
(C) भवभूति (D) भारवि

33. ''कामार्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु'' इस पंक्ति में कौन सा छन्द है–
(A) शिखरिणी (B) शार्दूलविक्रीडितम्
(C) वसन्ततिलका (D) मन्दाक्रान्ता

34. 'तेष्वेव' शब्द का सन्धिविच्छेद क्या है–
(A) तेष+एव (B) तेषु+एव
(C) तेष्व+एव (D) तेष्+एव

35. 'वाक्यपदीयम्' के लेखक हैं–
(A) भवभूति (B) भर्तृहरि
(C) नागेशभट्ट (D) भट्टोजिदीक्षित

36. बाणभट्ट के पिता का नाम है–
(A) भूषणभट्ट (B) अर्थपति
(C) कुबेर (D) चित्रभानु

17. (B)	18. (B)	19. (D)	20. (A)	21. (B)	22. (C)	23. (A)	24. (C)	25. (D)	26. (D)
27. (D)	28. (A)	29. (D)	30. (C)	31. (B)	32. (C)	33. (D)	34. (B)	35. (B)	36. (D)

37. कादम्बरी में किस रीति का प्रयोग हुआ है–
(A) वैदर्भी रीति (B) गौडी रीति
(C) पाञ्चाली रीति (D) इनमें से कोई नहीं

38. राजा तारापीड कहाँ के राजा हैं–
(A) विदिशा (B) उज्जयिनी
(C) कौशाम्बी (D) गन्धर्वनगर

39. ''भवादृशा एव भवन्ति भाजनान्युपदेशानाम्'' यह पंक्ति कहाँ से उद्धृत है–
(A) कादम्बरी शुकनासोपदेश से (B) कादम्बरी कथामुख से
(C) मेघदूतम् से (D) हर्षचरितम् से

40. भर्तृहरि की प्रेमिका का नाम है–
(A) पिङ्गला (B) महिषी
(C) विशालाक्षी (D) रसिकवती

41. मन्त्री शुकनास ने किसे उपदेश दिया–
(A) वैशम्पायन को (B) चन्द्रापीड को
(C) पुण्डरीक को (D) तारापीड को

42. 'अनीयर्' प्रत्यय है–
(A) कृत्प्रत्यय (B) तद्धितप्रत्यय
(C) स्त्रीप्रत्यय (D) उणादिप्रत्यय

43. ''स्थाल्यां पचति'' इस वाक्य में 'स्थाली' पद में है–
(A) अपादान (B) करण
(C) अधिकरण (D) कर्म

44. शुद्धं वाक्यं किम्?
(A) सः वस्त्रं प्रक्षाल्य पठितुम् उद्युक्तः
(B) सः वस्त्रं प्रक्षालयित्वा पठितुम् उद्युक्तः
(C) सः वस्त्रं प्रक्षायित्वा पठितुम् उद्युक्त
(D) सः वस्त्रं प्रक्षालय पठितुम् उद्युक्तः

45. ''अमी वेदिं परितः क्लृप्तधिष्ण्याः'' में प्रयुक्त छन्द है–
(A) वसन्ततिलका (B) इन्द्रवज्रा
(C) त्रिष्टुप् (D) वंशस्थ

46. दुष्यन्त और शकुन्तला के पुनर्मिलन के समय सर्वदमन (भरत) की आयु थी–
(A) 10-12 वर्ष (B) 15-18 वर्ष
(C) 2-3 वर्ष (D) 5-6 वर्ष

47. ''अभिज्ञानम्'' पद में प्रत्यय है?
(A) ल्युट् (B) घञ्
(C) अण् (D) ढक्

48. 'भूत्वा चिराय चतुरन्तमहीसपत्नी' इस वाक्य का वक्ता है–
(A) दुष्यन्त (B) कण्व
(C) शार्ङ्गरव (D) गौतमी

49. ''प्रत्यर्पितन्यासः'' पद में समास है–
(A) तत्पुरुष (B) अव्ययीभाव
(C) बहुव्रीहि (D) द्वन्द्व

50. शुक्राचार्य की पुत्री थी–
(A) देवयानी (B) शर्मिष्ठा
(C) मेनका (D) सानुमती

51. ''वत्से, सुशिष्यपरिदत्ता विद्येवाशोचनीयासि संवृत्ता'' यह कथन किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है–
(A) किरातार्जुनीयम् (B) शिवराजविजयम्
(C) उत्तररामचरितम् (D) अभिज्ञानशाकुन्तलम्

52. ''अहो चिररात्राय सुप्तोऽहम्'' यह वाक्य किस ग्रन्थ से उद्धृत है–
(A) कादम्बरी
(B) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(C) शिवराजविजयम्
(D) उत्तररामचरितम्

53. 'शिवराजविजयम्' में है–
(A) 12 विराम और तीन निःश्वास
(B) तीन विराम और 12 निःश्वास
(C) तीन उच्छ्वास 16 विराम
(D) तीन निःश्वास हैं प्रत्येक में 4 विराम हैं।

54. किरातार्जुनीयम् का मङ्गलाचरण है–
(A) नमस्कारात्मक (B) आशीर्वादात्मक
(C) वस्तुनिर्देशात्मक (D) सकारात्मक

55. 'जिह्मः' इति शब्दस्य कः अर्थः?
(A) कुटिलः (B) सरलः
(C) शुभ्रम् (D) यशः

37. (C)	**38. (B)**	**39. (A)**	**40. (A)**	**41. (B)**	**42. (A)**	**43. (C)**	**44. (A)**	**45. (C)**	**46. (D)**
47. (A)	**48. (B)**	**49. (C)**	**50. (A)**	**51. (D)**	**52. (C)**	**53. (B)**	**54. (C)**	**55. (A)**	

56. 'दुह् धातु, लट्लकार म0पु0 एकवचन का रूप होगा–
(A) दोग्सि (B) धोक्षि
(C) दोग्धि (D) दुग्धोसि

57. 'लभेत' रूप है–
(A) लट् प्र0पु0 एक0 (B) विधिलिङ् प्र0पु0 एक0
(C) विधिलिङ् म0पु0 बहु0 (D) लङ्लकार प्र0पु0 एक0

58. 'गच्छेत्' में धातु है–
(A) गच्छ् धातु (B) गम् धातु
(C) गच् धातु (D) गच्छे धातु

59. 'तिष्ठति' में धातु है–
(A) तिष्ठ (B) तिष्ठ्
(C) स्था (D) अस्

60. 'दुह्' धातु लृट्लकार प्र0पु0 एकवचन का रूप होगा–
(A) दोक्ष्यति (B) धोक्ष्यति
(C) द्रुह्यति (D) दोहिष्यति

61. 'हन्' धातु लट्लकार प्र0पु0 बहुवचन का रूप होगा–
(A) हन्तु (B) हनन्तु
(C) घ्नन्ति (D) हन्यन्ताम्

62. 'ब्रू' धातु लट्लकार प्र0पु0 एकवचन का रूप होगा–
(A) ब्रवीति (B) ब्रवति
(C) ब्रुवति (D) ब्रुवीति

63. 'गुरु' शब्द का चतुर्थी एकवचन में रूप होगा–
(A) गुरवे (B) गुरये
(C) गुराय (D) गुरुवाय

64. 'पितरि' में विभक्ति है–
(A) षष्ठी (B) चतुर्थी
(C) सप्तमी (D) पञ्चमी

65. 'प्रियमण्डना' पद में समास है–
(A) द्वन्द्व (B) बहुव्रीहि
(C) तत्पुरुष (D) अव्ययीभाव

66. 'न्यषिच्यत' पद में सन्धि है–
(A) दीर्घ सन्धि (B) वृद्धि सन्धि
(C) गुण सन्धि (D) यण् सन्धि

67. 'प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः' यह सूक्ति किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है–
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (B) उत्तररामचरितम्
(C) किरातार्जुनीयम् (D) शिवराजविजयम्

68. ''न विव्यथे तस्य मनः'' यहाँ 'विव्यथे' पद में धातु है–
(A) विव्य् धातु (B) व्यथा धातु
(C) व्यथ् धातु (D) विव्या धातु

69. 'ग्रीष्मर्तुः' में सन्धि है–
(A) यण्सन्धि (B) गुणसन्धि
(C) अयादिसन्धि (D) वृद्धिसन्धि

70. 'प्रौढः' रूप किस सूत्र से सिद्ध होता है
(A) प्रादूहोढोढ्येषैष्येषु
(B) अक्षादूहिन्यामुपसंख्यानम्
(C) वृद्धिरेचि
(D) ओमाङोश्च

71. 'राजा सिंहासनम् अध्यास्ते' यहाँ 'सिंहासनम्' में द्वितीयाविभक्ति का विधान किस सूत्र से हुआ–
(A) अभिनिविशश्च (B) अधिशीङ्स्थासां कर्म
(C) उपान्वध्याङ्वसः (D) अकथितं च

72. 'येनाङ्गविकारः' सूत्र का उदाहरण नहीं है–
(A) अक्ष्णा काणः (B) शिरसा खल्वाटः
(C) जटाभिस्तापसः (D) सः पादेन खञ्जः

73. 'नमः' पद के योग में किस विभक्ति का विधान होता है–
(A) तृतीया (B) चतुर्थी
(C) द्वितीया (D) षष्ठी

74. 'इक्' प्रत्याहार का वर्ण नही है–
(A) इ (B) ऋ
(C) उ (D) अ

75. 'पुटपाकप्रतीकाशो.........करुणो रसः' रिक्तस्थान को पूर्ण करें–
(A) राघवस्य (B) रामस्य
(C) श्यामस्य (D) सीतायाः

56. (B)	**57. (B)**	**58. (B)**	**59. (C)**	**60. (B)**	**61. (C)**	**62. (A)**	**63. (A)**	**64. (C)**	**65. (B)**
66. (D)	**67. (C)**	**68. (C)**	**69. (B)**	**70. (A)**	**71. (B)**	**72. (C)**	**73. (B)**	**74. (D)**	**75. (B)**

76. 'जाड्यं धियो हरति सिञ्चति वाचि सत्यम्' यह पद्य किसने कहा–

(A) भास ने (B) भारवि ने
(C) भवभूति ने (D) भर्तृहरि ने

77. ''शास्त्रजलप्रक्षालननिर्मलापि कालुष्यमुपयाति बुद्धिः'' यह पंक्ति किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है–

(A) कादम्बरी कथामुख (B) कादम्बरी शुकनासोपदेश
(C) कादम्बरी उत्तरार्द्ध (D) शिवराजविजयम्

78. यक्ष का सन्देश लेकर मेघ कहाँ जाता है–

(A) अलकनन्दा (B) उज्जयिनी
(C) रामगिरि (D) अलकापुरी

79. 'अतिनिद्रम्' में समास है?

(A) बहुव्रीहि (B) द्वन्द्व
(C) अव्ययीभाव (D) तत्पुरुष

80. 'स्वाहा' शब्द के योग में कौन सी विभक्ति का प्रयोग होता है–

(A) पञ्चमी (B) तृतीया
(C) चतुर्थी (D) इनमें से कोई नहीं

81. 'ते गृहं गच्छन्ति' का कर्मणिप्रयोग होगा–

(A) तेन गृहं गम्यते (B) ते गृहं गम्यन्ते
(C) तैः गृहं गम्यते (D) तेन गृहं गम्यन्ते

82. 'भवनम्' शब्द का सन्धि विच्छेद है–

(A) भौ + अकम् (B) भो + अनम्
(C) भौ + अनम् (D) भव + अनम्

83. 'क' से लेकर 'म' तक के व्यञ्जनवर्ण किस नाम से जाने जाते हैं–

(A) ऊष्मवर्ण (B) अन्तःस्थवर्ण
(C) स्पर्शवर्ण (D) अनुस्वारवर्ण

84. 'हरी' शब्द में कौन सी विभक्ति है–

(A) तृतीया एकवचन (B) सप्तमी द्विवचन
(C) द्वितीया द्विवचन (D) चतुर्थी एकवचन

85. 'जगण तगण जगण रगण' किस छन्द का लक्षण है–

(A) उपजाति (B) वंशस्थ
(C) इन्द्रवज्रा (D) उपेन्द्रवज्रा

86. 'शार्दूलविक्रीडितम्' के प्रत्येक चरण में कितने वर्ण होते हैं–

(A) 18 (B) 17
(C) 19 (D) 21

87. 'नवपलाशपलाशवनं पुरः' में अलङ्कार है–

(A) उपमा (B) अतिशयोक्ति
(C) श्लेष (D) यमक

88. नाटक में अङ्कों की संख्या होनी चाहिए–

(A) 8-12 अङ्क (B) 10-15 अङ्क
(C) 5-10 अङ्क (D) 5 से कम अङ्क

89. द्रौपदी की चारित्रिक विशेषता नहीं है–

(A) वीरक्षत्राणी (B) वाक्पटुता
(C) राजनीतिज्ञा (D) चरित्रहीनता

90. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के त्रिकालज्ञ नैष्ठिक ब्रह्मचारी के रूप में चित्रित है–

(A) कण्व (B) शार्ङ्गरव
(C) विश्वामित्र (D) दुर्वासा

91. 'नदति स एष वधूसखः शिखण्डी' यहाँ 'शिखण्डी' पद का अर्थ है–

(A) मयूर (B) कोयल
(C) कौआ (D) वधू

92. ''जातं वंशे भुवनविदिते पुष्करावर्तकानाम्'' इस पंक्ति में छन्द है–

(A) शार्दूलविक्रीडित (B) शिखरिणी
(C) वसन्ततिलका (D) मन्दाक्रान्ता

93. यक्ष और मेघ के बीच वार्तालाप कहाँ होता है–

(A) अलकापुरी में (B) उज्जयिनी में
(C) रामगिरि में (D) कैलाशपुरी में

94. ''जानामि त्वां प्रकृतिपुरुषं कामरूपं मघोनः'' में 'मघोनः' पद का अर्थ है–

(A) कुबेर (B) मेघ
(C) यक्ष (D) इन्द्र

95. शिवराजविजयम् के मङ्गलाचरणम् में श्लोक उद्धृत है–

(A) विष्णुपुराण से (B) श्रीमद्भागवत से
(C) वाल्मीकिरामायण से (D) इनमें से कोई नहीं

76. (D)	**77. (B)**	**78. (D)**	**79. (C)**	**80. (C)**	**81. (C)**	**82. (B)**	**83. (C)**	**84. (C)**	**85. (B)**
86. (C)	**87. (D)**	**88. (C)**	**89. (D)**	**90. (A)**	**91. (A)**	**92. (D)**	**93. (C)**	**94. (D)**	**95. (B)**

96. 'मम विरहजां न त्वं वत्से शुचं गणयिष्यसि'' किसका कथन है–

(A) कण्व का (B) वनेचर का
(C) श्रीरामभद्र का (D) शिवाजी का

97. ''आविष्कृतोऽरुणपुरःसर एकतोऽर्कः'' यहाँ 'अर्कः' पद का क्या अर्थ है–

(A) दिन (B) चन्द्र
(C) कण्व (D) सूर्य

98. ''दुष्यन्तेनाहितं तेजः'' में 'आहितम्' पद में प्रकृति प्रत्यय है–

(A) आङ्+धा+क्त (B) आङ्+हि+क्त
(C) आङ्+हि+क्तवतु (D) आङ्+दा+क्त

99. ''निहन्ति दण्डेन स धर्मविप्लवम्'' में 'निहन्ति' पद में है–

(A) नि+ हन् धातु लट् प्र0पु0 बहु
(B) नि+हन् धातु लट् प्र0पु0 एक0
(C) निह् धातु लट्, प्र0पु0 बहु0
(D) नि+हन् धातु शतृ प्रत्यय

100. ''चिराय तस्मिन् कुरवश्चकासति'' यहाँ 'चकासति' पद में लकार है–

(A) लट् प्र0पु0 बहु0 (B) लट् प्र0पु0 एक0
(C) लिट् प्र0पु0एक0 (D) लृट् प्र0पु0 एक0

101. ''मतङ्गजेन स्त्रगिवापवर्जिता'' में अलङ्कार है–

(A) उपमा (B) रूपक
(C) उत्प्रेक्षा (D) दीपक

102. ''अखण्डमाखण्डलतुल्यधामभिः'' यहाँ 'आखण्डल' पद का अर्थ है–

(A) वनेचर (B) इन्द्र
(C) दुर्योधन (D) धनुष

103. ''भवन्तमेतर्हि मनस्विगर्हिते'' यहाँ 'भवन्तम्' पद से किसका सङ्केत किया गया है–

(A) अर्जुन का (B) दुर्योधन का
(C) युधिष्ठिर का (D) वनेचर का

104. 'सः मां पश्यति' का कर्मवाच्य होगा–

(A) तेन अहं दृश्यते (B) तेन अहं दृश्ये
(C) तेन मां दृश्ये (D) तेन मया दृश्यते

105. ''ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति'' यह सूक्ति किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है–

(A) उत्तररामचरितम् (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(C) मेघदूतम् (D) नीतिशतकम्

106. ''नत्वा सरस्वतीं देवीं शुद्धां गुण्यां करोम्यहम्'' यह वाक्य किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है–

(A) सिद्धान्तकौमुदी (B) सरस्वतीकण्ठाभरण
(C) लघुसिद्धान्तकौमुदी (D) अष्टाध्यायी

107. 'चार चतुर बालकों को बुलाओ।' संस्कृत में अनुवाद होगा–

(A) चत्वारि चतुरान् बालकान् आह्वयतु
(B) चतुरः चतुरान् बालकान् आह्वयतु
(C) चतस्त्रः चतुराः बालकान् आह्वयतु
(D) चत्वारः चतुरान् बालकान् आह्वयतु

108. कवियों का सही कालक्रम है–

(A) भास-भारवि-भवभूति (B) भारवि-भवभूति-भास
(C) भवभूति-भास-भारवि (D) भर्तृहरि-भास-भारवि

109. महाकवि भवभूति के आश्रयदाता नरेश हैं–

(A) पुलकेशिन द्वितीय
(B) विक्रमादित्य
(C) कान्यकुब्जनरेश यशोवर्मा
(D) विष्णुवर्धन

110. शैक्षिक सफलता के तीन सोपान माने जाते हैं–

(A) अनुशासनम्-अध्ययनम्-अभ्यासः
(B) परिश्रमः-अनुत्साहः-चिन्तनम्
(C) विचार-कार्यम्-असन्तोषः
(D) अध्ययनम्-परिश्रमः-अनभ्यासः

111. 'गङ्गैषा' पद का सन्धि विच्छेद होगा–

(A) गङ्गा+एषा (B) गङ्गा+एषः
(C) गङ्ग+एषा (D) गङ्गा+ऐषा

96. (A) 97. (D) 98. (A) 99. (B) 100. (A) 101. (A) 102. (B) 103. (C) 104. (B) 105. (A) 106. (C) 107. (B) 108. (A) 109. (C) 110. (A) 111. (A)

112. 'भिक्षुकः राजानं वस्त्रं याचते' इस वाक्य में 'राजानम्' पद की कर्मसंज्ञा किस सूत्र से हुई–
(A) कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्
(B) अकथितं च
(C) कर्तुरीप्सिततमं कर्म (D) तथायुक्तं चानीप्सितम्

113. 'खलु+अयम्' में क्या सन्धि बनती है–
(A) खल्वयम् (B) खलुवयम्
(C) खल्ययम् (D) खलूयम्

114. 'हेतौ' सूत्र से किस विभक्ति का विधान होता है–
(A) द्वितीया (B) तृतीया
(C) चतुर्थी (D) पञ्चमी

115. 'अध्यापकात् संस्कृतं पठति' इसमें पञ्चमी विभक्ति का विधान किस सूत्र से हुआ–
(A) पराजेरसोढः (B) भीत्रार्थानां भयहेतुः
(C) आख्यातोपयोगे (D) भुवः प्रभवः

116. संस्कृतभारती की संवादशाला किसलिए विश्वप्रसिद्ध है–
(A) संस्कृत भवन के लिए
(B) संस्कृत फिल्मों के लिए
(C) संस्कृत नाटकों के लिए
(D) संस्कृत सम्भाषण के लिए

117. 'उत्तररामचरितम्' में कुल कितने अङ्क हैं–
(A) 6 (B) 7
(C) 8 (D) 10

118. यूजीसी द्वारा नेट परीक्षा का तृतीय प्रश्नपत्र होगा–
(A) विकल्पात्मक (B) विषयात्मकम्
(C) निबन्धात्मकम् (D) लघूत्तरीयम्

119. ''न तादृशा आकृतिविशेषा गुणविरोधिनो भवन्ति'' यह कथन किसका है–
(A) प्रियंवदा (B) अनसूया
(C) दुष्यन्त (D) शकुन्तला

120. ''वनौकसोऽपि सन्तो लौकिकज्ञा वयम्'' किसने कहा–
(A) शार्ङ्गरव (B) शारद्वत
(C) कण्व (D) मारीच

121. ''आशीर्वचनसंयुक्ता स्तुतिर्यस्मात् प्रयुज्यते'' यह किसका लक्षण है–
(A) नाटक (B) नान्दी
(C) कञ्चुकी (D) सूत्रधार

122. 'कादम्बरी कथा का प्रारम्भ होता है–
(A) चन्द्रापीड वर्णन से (B) शुकनास के उपदेश से
(C) शूद्रक के वर्णन से (D) वैशम्पायन के प्रवेश से

123. शुद्ध रूप का चयन करें–
(A) लिखिष्यति (B) लेखिष्यति
(C) लिखायिष्यति (D) लेखिस्यति

124. ''न नो ननुन्नो नुन्नोनो'' यह एकाक्षर श्लोक किस कवि से सम्बद्ध है–
(A) भास (B) भारवि
(C) कालिदास (D) माघ

125. 'विश्वसंस्कृतपुस्तकमेला' सर्वप्रथम किस स्थान पर सम्पन्न हुआ–
(A) नयीदिल्ली में (B) बंगलौर में
(C) इलाहाबाद में (D) काशी में

क्षणत्यागे कुतो विद्या (एक एक क्षण का दुरुपयोग करने वाले को विद्या नहीं मिलती)
कणत्यागे कुतो धनम् (एक-एक पैसा छोड़ने वाले को धन नहीं मिलता)
संस्कृतगङ्गा, दारागञ्ज, प्रयाग

112. (B) 113. (A) 114. (B) 115. (C) 116. (D) 117. (B) 118. (A) 119. (A) 120. (C) 121. (B) 122. (C) 123. (B) 124. (B) 125. (B)

प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक चयनपरीक्षा (TGT) आदर्शप्रश्नपत्र– 5

1. ''कवीनां कविषु वा कालिदासो श्रेष्ठः'' यह उदाहरण किस सूत्र का है–
(A) यतश्च निर्धारणम् (B) आख्यातोपयोगे
(C) यस्य च भावेन भावलक्षणम् (D) षष्ठी शेषे

2. अष्टाध्यायी का अन्तिम सूत्र है–
(A) अ अ (B) चाऽर्थे द्वन्द्वः
(C) वृद्धिरेचि (D) अनश्च

3. 'रामेण बाणेन हतो बाली मे 'बाण' क्या है–
(A) कर्ता (B) कर्म
(C) करण (D) क्रिया

4. यह आधार का भेद नही है–
(A) औपश्लेषिक (B) अभिव्यापक
(C) यादृच्छिक (D) वैषयिक

5. उत्तररामचरितम् में 'छायाङ्क' कौन है–
(A) द्वितीय (B) तृतीय
(C) चतुर्थ (D) पञ्चम

6. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में 'अभिज्ञान' शब्द से किसका बोध होता है–
(A) मुकुट (B) नूपुर
(C) अङ्गुलीयक (D) हार

7. ''अदेङ्गुणः'' में 'अत्' से ह्रस्व अकार का बोध किस सूत्र से होता है–
(A) अणुदित्सवर्णस्य चाऽप्रत्ययः (B) तस्मादित्युत्तरस्य
(C) अचश्च (D) तपरस्तत्कालस्य

8. इनमें से कौन दो परस्पर सवर्ण हैं–
(A) थ् क् (B) आ इ
(C) उ झ (D) च् ज्

9. ''अचोऽन्त्यादि टि'' सूत्र अष्टाध्यायी के किस अध्याय में है–
(A) द्वितीय (B) प्रथम
(C) तृतीय (D) चतुर्थ

10. ''न वेति विभाषा'' सूत्र के 'वा' से किसका बोध होता है–
(A) विशेष (B) बाधा
(C) विकल्प (D) विषय

11. ''स्मरिष्यति त्वां न स बोधितोऽपि'' यहाँ 'सः' पद से किसका सङ्केत किया गया है–
(A) कण्व का (B) दुर्वासा का
(C) दुष्यन्त का (D) मारीच का

12. कालिदास की पहली रचना मानी जाती है–
(A) कुमारसम्भवम् (B) रघुवंशम्
(C) ऋतुसंहारम् (D) मेघदूतम्

13. किरातार्जुनीयम् ग्रन्थ में युधिष्ठिर का दूत बनकर हस्तिनापुर कौन जाता है–
(A) नकुल (B) कृष्ण
(C) द्रुपद (D) वनेचर

14. विदूषक रहित रचना नहीं है–
(A) मुद्राराक्षसम् (B) मृच्छकटिकम्
(C) उत्तररामचरितम् (D) महावीरचरितम्

15. संस्कृतदिवस कब मनाया जाता है–
(A) होलिकोत्सवे (B) कार्तिक एकादशी को
(C) वसन्तपञ्चमी को (D) श्रावणी पूर्णिमा को

16. शिक्षा का सर्वोत्कृष्ट उद्देश्य क्या है–
(A) धनोपार्जनम् (B) उपाधिलाभ
(C) सुनागरिकनिर्माणम् (D) व्यवसाय करना

17. इसमें से अव्यय पद क्या है–
(A) दिवसः (B) दिनम्
(C) दिवा (D) अहः

18. शुद्ध वाक्य है–
(A) सीतापतये नमः (B) सीतापत्यै नमः
(C) सीतापत्ये नमः (D) सीतापतिने नमः

1. (A)	2. (A)	3. (C)	4. (C)	5. (B)	6. (C)	7. (D)	8. (D)	9. (B)	10. (C)
11. (C)	12. (C)	13. (D)	14. (B)	15. (D)	16. (C)	17. (C)	18. (A)		

19. 'त्वं लिखसि' इसका कर्मवाच्य होगा–
(A) त्वया लिख्यसे (B) त्वं लिख्यसे
(C) त्वया लिख्यते (D) त्वां लिख्यते

20. 'तुम मेरे मित्र हो' इसका संस्कृत में अनुवाद होगा–
(A) त्वं मे मित्रोऽस्ति (B) त्वं मे मित्रमसि
(C) त्वं मे मित्रमस्ति (D) त्वं मे मित्रोऽसि

21. शुद्ध वाक्य है–
(A) पश्य देवस्य महिमाम् (B) पश्य देवस्य महिमानम्
(C) पश्य देवस्य महिम्नम् (D) पश्य देवस्य महिमम्

22. 'सौ रुपये' इसका संस्कृत में अनुवाद होगा
(A) शतं रुप्यकम् (B) शतं रुप्यकाणि
(C) शतानि रुप्यकम् (D) शताः रुप्यकाणि

23. शुद्ध वाक्य होगा–
(A) त्रयाणां बालिकानां परिचयं वद
(B) तिसृणां बालकानां परिचयं वद
(C) त्रिसृणां बालिकानां परिचयः वद
(D) तिसृणां बालिकानां परिचयं वद

24. I love you इसका संस्कृत में सही अनुवाद होगा–
(A) अहं प्रेम करोमि (B) अहं स्नेहं करोमि
(C) अहं त्वां कामये (D) अहं स्निहामि

25. All is well इसका संस्कृत में अनुवाद होगा
(A) सम्यक् सर्वं सर्वत्र (B) सर्वं सुष्ठु वर्तते
(C) सर्वं सम्यक् अस्ति (D) सर्वं शोभनम् अस्ति।

26. 'भुवः प्रभवः' सूत्र का उदाहरण होगा–
(A) संस्कृतगङ्गा प्रयागात् प्रभवति (B) चोरात् बिभेति
(C) बालकः गृहात् विद्यालयं गच्छति (D) गङ्गा प्रवहति

27. 'भवत्' शब्द का पञ्चमी बहुवचन में रूप होगा–
(A) भवन्तम् (B) भवद्भ्यः
(C) भवत्सु (D) भवताम्

28. बहुवचन का रूप नही है–
(A) ददति (B) अदन्ति
(C) हन्ति (D) शासति

29. लट्लकार एकवचन का रूप है–
(A) बिभ्यति (B) जहति
(C) दधति (D) बिभेति

30. 'अहश्च रात्रिश्च' समस्तपद होगा–
(A) अहरात्रम् (B) अहोरात्रम्
(C) अहारात्रम् (D) अहरात्रिः

31. 'सर्वस्मिन् आत्मा अस्ति' यहाँ कैसा आधार है–
(A) वैषयिक (B) अभिव्यापक
(C) औपश्लेषिक (D) इनमें से कोई नहीं

32. इस समूह में असङ्गत कवि है–
(A) भास (B) मुरारि
(C) कालिदास (D) भवभूति

33. सुमेलित करें
(अ) माधव्य — 1. मृच्छकटिकम्
(ब) विदूषकाभाव — 2. अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(स) मैत्रेय — 3. स्वप्नवासवदत्तम्
(द) वसन्तक — 4. उत्तररामचरितम्

	अ	ब	स	द
(A)	1	4	3	2
(B)	4	2	1	3
(C)	2	4	1	3
(D)	2	4	3	1

34. पञ्चमीतत्पुरुष समास होगा–
(A) भूतबलिः (B) रोगमुक्तः
(C) पञ्चपात्रम् (D) अक्षशौण्डः

35. 'द्वित्राः' में समास होगा–
(A) द्वन्द्व (B) द्विगु
(C) कर्मधारय (D) बहुव्रीहि

36. 'पठितुमिच्छति पिपठिषति' यह कैसी धातु है–
(A) सन्नन्तधातु (B) नामधातु
(C) यङन्तधातु (D) इनमें से कोई नहीं

37. 'दा धातु' लट्लकार उत्तमपुरुष बहुवचन में रूप होगा–
(A) ददामः (B) दाद्मः
(C) दद्मः (D) दादमः

38. 'क्रेतुम्' में प्रकृति प्रत्यय है–
(A) क्रि+तुमुन् (B) कृ+तुमुन्
(C) क्री+तुमुन् (D) कृञ्+तुमुन्

19. (C)	20. (B)	21. (B)	22. (B)	23. (D)	24. (C)	25. (A)	26. (A)	27. (B)	28. (C)
29. (D)	30. (B)	31. (B)	32. (C)	33. (C)	34. (B)	35. (D)	36. (A)	37. (C)	38. (C)

39. 'व्याकरणम् अधीते वेद वा' क्या होगा–
(A) व्याकरणकः (B) वेय्याकरणः
(C) व्याकरणिकः (D) वैयाकरणः

40. 'दा+शानच्' क्या रूप होगा
(A) ददानः (B) दानीनः
(C) दानमानः (D) ददन्

41. शुद्ध वाक्य है–
(A) गुरुः छात्राः बिभेति
(B) गुरोः छात्राः बिभेति
(C) गुरुभ्यः छात्राः बिभ्यति
(D) गुरुभ्यः छात्राः बिभेति

42. 'नमस्ते' का सन्धिविच्छेद होगा–
(A) नम् + अस्ते (B) नमः + ते
(C) नम् + ते (D) नम् + स्ते

43. 'भू + ऊर्ध्वम्' होगा–
(A) भूरूर्ध्वम् (B) भूर्ध्वम्
(C) भुर्ध्वम् (D) भूऊर्ध्वम्

44. अन्तर् + राष्ट्रियः = ?
(A) अन्तर्राष्ट्रियः (B) अन्ताराष्ट्रियः
(C) अन्ताराष्ट्रीयः (D) अन्तरराष्ट्रीयः

45. अयादिसन्धि का उदाहरण है–
(A) तावपि (B) विष्णोऽव
(C) भानुरुदेति (D) हृदयौदार्यम्

46. कालिदास के मन्दाक्रान्ता छन्द की प्रशंसा की है–
(A) मल्लिनाथ ने (B) जयदेव ने
(C) राजशेखर ने (D) क्षेमेन्द्र ने

47. सुमेलित करें–

कथनम्	**वक्ता**
(1) पुरा कवीनां गणनाप्रसङ्गे कनिष्ठिकाधिष्ठितकालिदासः	(क) मल्लिनाथ
(2) निर्गतासु न वा कस्य कालिदासस्य सूक्तिषु	(ख) उद्भट
(3) शृङ्गारे ललितोद्गारे कालिदासत्रयी किमु	(ग) बाणः
(4) उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्	(घ) राजशेखर

(A) 1 क, 2 ग, 3 ख, 4 घ
(B) 1 घ, 2 क, 3 ख, 4 ग
(C) 1 क, 2 ग, 3 घ, 4 ख
(D) 1 क, 2 ख, 3 घ, 4 ग

48. किस नदी समूह का वर्णन मेघदूतम् में नहीं मिलता है–
(A) वेत्रवती, शिप्रा, गम्भीरा
(B) रेवा, निर्विन्ध्या, गन्धवती
(C) गङ्गा, यमुना, सरस्वती
(D) झेलम, कावेरी, ब्रह्मपुत्र

49. किस पर्वत युग्म का वर्णन कालिदास ने अपने मेघदूतम् में नही किया है–
(A) आम्रकूट और कैलास (B) हिमालय और विन्ध्य
(C) देवगिरि और रामगिरि (D) नीचैगिरि और उच्चैगिरि

50. मेघदूतम् में किस देव का वर्णन नहीं मिलता है
(A) राम और सीता (B) शिव, पार्वती और कातिकिय
(C) विष्णु और बलराम (D) ब्रह्मा, नारद और संतोषी

51. पुराणों में मेघदूतम् के विरही यक्ष का नाम मिलता है
(A) विरहदेव (B) विशालाक्षी
(C) कुमारगन्धर्व (D) हेममाली

52. महाकवि कालिदास के श्वसुर माने जाते हैं–
(A) शारदानन्द (B) ब्रह्मानन्द
(C) शिवानन्द (D) विद्यानन्द

53. 'अम्बुवाहम्' पद का अर्थ है
(A) अभ्र (B) जलमुचः
(C) बादल (D) उपर्युक्त सभी

54. 'प्रक्रमेथाः' पद की व्याकरणात्मक टिप्पणी होगी–
(A) प्र+कमि+तिप्+विधिलिङ्
(B) प्र+क्रम+सिप्+विधिलिङ्
(C) प्र+कृ+थ+लोट्
(D) प्र+क्री+सिप्+लृट्

39. (D) **40.** (A) **41.** (C) **42.** (B) **43.** (B) **44.** (B) **45.** (A) **46.** (D) **47.** (C) **48.** (D)
49. (D) **50.** (D) **51.** (D) **52.** (A) **53.** (D) **54.** (B)

55. मन्दाक्रान्ता छन्द में होते हैं–
(A) मगण भगण नगण रगण तगण दो गुरू 17
(B) भगण मगण नगण तगण तगण एक गुरू 16
(C) मगण भगण नगण तगण तगण दो गुरू 17
(D) भगण भगण मगण मगण तगण दो गुरू 17

56. संस्कृतगङ्गा प्रथम बार कहाँ से प्रादुर्भूत हुई–
(A) काशी से (B) दिल्ली से
(C) हरिद्वार से (D) प्रयाग से

57. भाषाशिक्षण का कौशल (skill) नहीं माना जाता है–
(A) पठनकौशलम् (B) स्मरणकौशलम्
(C) लेखनकौशलम् (D) श्रवणकौशलम्

58. उन्नीस (19) को संस्कृत में कहते हैं–
(A) नवदश (B) ऊनविंशतिः
(C) एकोनविंशतिः (D) उपर्युक्त सभी

59. ''किं किं न साधयति कल्पलतेव विद्या''–इसका तात्पर्य होगा–
(A) विद्या नौकरी देती है
(B) विद्या ज्ञान देती है
(C) विद्या क्या क्या नहीं देती अर्थात् सबकुछ देती है।
(D) विद्या सामाजिक बनाती है

60. 'तदनन्तरम्' शब्द का सन्धि विच्छेद होगा–
(A) तत्+अन्तरम् (B) तत्+अनन्तरम्
(C) तद+अन्तरम् (D) तदु+अनन्तरम्

61. 'ऊ' वर्ण का उच्चारणस्थान है–
(A) ओष्ठ (B) कण्ठ
(C) तालु (D) मूर्धा

62. एकवचन का रूप है–
(A) अस्मत् (B) त्वत्
(C) युष्मत् (D) अमी

63. पतञ्जलि के अनुसार व्याकरण का प्रयोजन नहीं है–
(A) ऊह (B) आगम
(C) लघु (D) दीर्घ

64. 'उदतीतरत्'–यहाँ लकार है–
(A) लुङ् (B) लृङ्
(C) लृट् (D) लिट्

65. 'कस्तूरिका-रेणु-रूषितः इव श्यामः, चन्दन-चर्चित-भालः' इन पंक्तियों में वर्णन है–
(A) गौरबटु का (B) श्यामबटु का
(C) योगिराज का (D) ब्रह्मचारीगुरु का

66. 'शिवराजविजयम्' का प्रारम्भ किसके वर्णन से होता है–
(A) योगिराजवर्णन से (B) सूर्यवर्णन से
(C) ब्रह्मचारीगुरुवर्णन से (D) शिवाजी के वर्णन से

67. 'न समयपरिरक्षणं क्षमं ते'–यहाँ छन्द है–
(A) पुष्पिताग्रा (B) इन्द्रवजा
(C) उपजाति (D) वंशस्थ

68. 'किरातार्जुनीयम्' इस पद में कौन सा प्रत्यय है–
(A) छ (B) घ
(C) फ (D) ढ

69. संस्कृत साहित्य में 'अलङ्कृतकाव्यशैली' तथा 'विचित्रमार्ग के जनक' के रूप में किस कवि का नाम उल्लेखनीय है–
(A) भवभूति (B) भास
(C) भर्तृहरि (D) भारवि

70. ''युधिष्ठिर भीम का संवाद'' तथा ''व्यास का आगमन'' किरातार्जुनीयम् के किस सर्ग में वर्णित है–
(A) सर्ग-2 (B) सर्ग-3
(C) सर्ग-5 (D) सर्ग-1

71. ''संजीवनौषधिरसो हृदि नु प्रसक्तः'' यह कथन किसका है–
(A) राम का (B) सीता का
(C) वासन्ती का (D) तमसा का

72. ''करुणस्य मूर्तिरथवा शरीरिणी'' इस पंक्ति में किसका वर्णन है–
(A) सीता का (B) वासन्ती का
(C) तमसा का (D) शरीर का

55. (C)	56. (D)	57. (B)	58. (D)	59. (C)	60. (B)	61. (A)	62. (B)	63. (D)	64. (A)
65. (B)	66. (B)	67. (A)	68. (A)	69. (D)	70. (A)	71. (A)	72. (A)		

73. शुद्ध शब्द है–
(A) श्रुतवान् (B) श्रुण्वन्
(C) श्रुत्वा (D) श्रृणोति

74. शुद्ध शब्द है–
(A) गृह्णन् (B) ग्रहीत्वा
(C) ग्रहीतवान् (D) उपर्युक्त सभी

75. 'रुद्' धातु का लट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन में रूप होगा–
(A) रुदति (B) रोदिति
(C) रोदति (D) रोदाति

76. शुद्ध रूप है–
(A) रोदन्ति (B) रोदामि
(C) रुदिमः (D) उपर्युक्त सभी

77. अशुद्ध रूप है–
(A) दोहति (B) दुहति
(C) दोहिष्यति (D) उपर्युक्त सभी

78. 'अच्' प्रत्याहार में आते हैं–
(A) सभी वर्ण (B) सभी व्यञ्जन
(C) सभी स्वर (D) इनमें से कोई नहीं

79. कालिदास किस रीति के कवि माने जाते हैं–
(A) वैदर्भीरीति (B) पाञ्चालीरीति
(C) गौडी रीति (D) इनमें से कोई नहीं

80. 'पुनर्वस्वृक्षः' में सन्धि है–
(A) वृद्धिसन्धि (B) अयादिसन्धि
(C) यण् सन्धि (D) गुणसन्धि

81. ''सुलभकोपो महर्षिः'' किसने किसको कहा–
(A) प्रियंवदा ने दुर्वासा को
(B) अनुसूया ने दुर्वासा को
(C) गौतमी ने कण्व को
(D) मेनका ने मारीच को

82. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में सर्वप्रथम कण्व का चित्रण किया गया है–
(A) प्रथम अङ्क में (B) द्वितीय अङ्क में
(C) चतुर्थ अङ्क में (D) इनमें से कोई भी नहीं

83. 'मा स्म प्रतीपं गमः' में 'प्रतीपम्' पद का क्या अर्थ है–
(A) प्रतिकूल (विपरीत) (B) अनुकूल
(C) आचरण (D) चरित्र

84. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में विदूषक (माधव्य) का वर्णन प्राप्त होता है–
(A) द्वितीय पञ्चम एवं षष्ठ अङ्क में
(B) प्रथम एवं तृतीय अङ्क में
(C) द्वितीय एवं तृतीय अङ्क में
(D) द्वितीय एवं चतुर्थ अङ्क में

85. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के भरतवाक्य में छन्द है–
(A) मालिनी (B) रुचिरा
(C) वंशस्थ (D) आर्या

86. ''अतिगहनं तमो यौवनप्रभवम्'' एषा सूक्तिः कुतः उद्धृता अस्ति–
(A) कादम्बरीकथामुखात्
(B) कादम्बरीशुकनासोपदेशात्
(C) कादम्बरी–उत्तरार्द्धभागात्
(D) कादम्बर्याः नास्ति

87. 'बाणस्तु पञ्चाननः' यह किसका कथन है–
(A) मंखक (B) श्रीचन्द्रदेव
(C) गोवर्द्धन (D) राजशेखर

88. 'आशीविषाः' पद का अर्थ है–
(A) आशीर्वाद (B) सर्प
(C) विष (D) रोष

89. 'धिगस्मान्, येऽद्यापि जीवामः, श्वसिमः, विचरामः आत्मन आर्यवंश्यांश्चाऽभिमन्यामहे' यह कथन किसका है–
(A) योगिराज का (B) ब्रह्मचारीगुरु का
(C) गौरसिंह का (D) श्यामबटु का

90. उत्तररामचरितम् में नदी के रूप में वर्णन नहीं है–
(A) तमसा का (B) मुरला का
(C) वासन्ती का (D) भागीरथी का

73. (D)	74. (A)	75. (B)	76. (C)	77. (D)	78. (C)	79. (A)	80. (C)	81. (A)	82. (C)
83. (A)	84. (A)	85. (B)	86. (B)	87. (B)	88. (B)	89. (B)	90. (C)		

91. उत्तररामचरितम् के अनुसार लव और कुश की कौन सी वर्षगाँठ मनायी जा रही है–
(A) दसवीं (B) बारहवीं
(C) छठवीं (D) नवमी

92. 'कुरङ्गः' पद का अर्थ है–
(A) मृग (B) पक्षी
(C) वनदेवी (D) वृक्ष

93. 'जतुकर्णी' नाम है–
(A) श्रीकण्ठ की माता का
(B) भवभूति की माँ का
(C) नीलकण्ठ की पत्नी का
(D) उपर्युक्त सभी

94. 'परिभ्रमँल्लोहितचन्दनोचितः' इसमें द्रौपदी किसकी दुर्दशा का वर्णन करती है–
(A) युधिष्ठिर की (B) दुर्योधन की
(C) वनेचर की (D) भीम की

95. ''आतपत्र'' किसकी उपाधि है–
(A) माघ की (B) श्रीहर्ष की
(C) भारवि की (D) सूर्य की

96. भर्तृहरि का सबसे प्रिय छन्द है–
(A) वसन्ततिलका (B) शिखरिणी
(C) शार्दूलविक्रीडित (D) द्रुतविलम्बित

97. नीतिशतक के मङ्गलाचरण में छन्द है–
(A) आर्या (B) उपजाति
(C) शालिनी (D) अनुष्टुप्

98. 'प्रारब्धमुत्तमजनाः न परित्यजन्ति' किसका कथन है–
(A) भर्तृहरि का (B) भर्तृमेण्ठ का
(C) भवभूति का (D) भारवि का

99. ''शुश्रूषस्व'' में लकार है–
(A) लट् (B) लङ्
(C) लोट् (D) विधिलिङ्

100. अन्तःस्थ वर्ण हैं–
(A) क् च् ट् त् प् (B) ञ् म् ङ् ण् न्
(C) श् ष् स् ह् (D) य् व् र् ल्

101. माहेश्वर सूत्रों में अन्तिमवर्ण की संज्ञा होती है–
(A) संयोगसंज्ञा (B) सहितासंज्ञा
(C) प्रगृह्यसंज्ञा (D) इत्संज्ञा

102. 'वयम्.......अधितिष्ठामः'–रिक्त स्थान की पूर्ति करें–
(A) आसने (B) आसनात्
(C) आसनम् (D) आसनेन

103. 'पिता............क्रुध्यति' रिक्तस्थान में समुचित विकल्प होगा–
(A) त्वाम् (B) तुभ्यम्
(C) तव (D) त्वया

104. शुद्ध पद है–
(A) उपरोक्तः (B) उपरुक्तः
(C) उपर्युक्तः (D) उपरियुक्तः

105. लेखनदृष्ट्या शुद्धं पदं किम्–
(A) परीच्छोपयोगी (B) परीक्षापयोगी
(C) परीक्षो उपयोगी (D) परीक्षोपयोगी

106. 'चन्द्रमस्' शब्द का प्रथमा विभक्ति एकवचन का रूप होगा–
(A) चन्द्रमसः (B) चन्द्रमा
(C) चन्द्रमाः (D) चन्द्रः

107. 'सिंहः+गर्जति'–इसका सन्धियुक्त रूप होगा–
(A) सिंहः गर्जति (B) सिंहो गर्जति
(C) सिंह गर्जति (D) सिंहर्गर्जति

108. किसमें सप्तमी विभक्ति नहीं है–
(A) ग्रामे (B) नगरे
(C) कवे (D) वने

109. ''भवितव्यानां द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र'' यह सूक्ति किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है–
(A) मेघदूतम् से (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से
(C) पञ्चतन्त्रम् से (D) किरातार्जुनीयम् से

110. ''बुभुक्षितः किं न करोति पापम्'' यह सूक्ति किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है–
(A) हितोपदेश से (B) नीतिशतकम् से
(C) पञ्चतन्त्रम् से (D) भगवद्गीता से

91. (B)	92. (A)	93. (D)	94. (D)	95. (C)	96. (C)	97. (D)	98. (A)	99. (C)	100. (D)
101. (D)	102. (C)	103. (B)	104. (C)	105. (D)	106. (C)	107. (B)	108. (C)	109. (B)	110. (C)

111. कौन सा समूह अन्य तीनों से पृथक् है–
(A) चत्वारो वेदाः, चत्वारो पुरुषार्थाः, चतुराश्रमाः
(B) पञ्चभूतानि, पञ्चवायवः, पञ्चज्ञानेन्द्रियाणि
(C) षड्रिपवः, षड्-ऋतवः, षड्-कर्मेन्द्रियाणि
(D) नवग्रहाः, नवधा–भक्तिः, नवरसाः

112. 'अलकापुरी' किसकी राजधानी है–
(A) शिव की (B) यक्ष की
(C) मेघ की (D) कुबेर की

113. 'शर्मिष्ठा' किसकी पुत्री है–
(A) वृषपर्वा की (B) शुक्राचार्य की
(C) पुरूरवा की (D) ययाति की

114. दसों लकारों में भूतकाल के अर्थ में कितने लकार प्रयुक्त होते हैं–
(A) लिट्, लङ्, लुङ्-तीन (B) लिट्, लुट्, लृट्-तीन
(C) लङ्, लुङ्-दो (D) लृट्, लृङ्-दो

115. 'रामं विना, रामेण विना, रामात् विना'–इनमें से कौन सा प्रयोग शुद्ध है–
(A) रामं विना (B) रामात् विना
(C) सभी प्रयोग (D) रामेण विना

116. कालिदास किस राजा के सभाकवि (राजकवि) माने जाते हैं–
(A) अशोक (B) हर्षवर्धन
(C) समुद्रगुप्त (D) चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य

117. पहली संस्कृतफिल्म का नाम है–
(A) आदिशङ्कराचार्य (B) विवेकानन्द
(C) रामायण (D) महाभारत

118. संस्कृत सहित सभी भारतीय भाषाओं का निन्दक और अंग्रेजी शिक्षा का प्रचारक कौन था–
(A) लार्ड विलियम बैंटिक (B) लार्ड मैकाले
(C) लार्ड डलहौजी (D) कुतुबुद्दीन ऐबक

119. संस्कृत नाटकों में सर्वाधिक सुप्रसिद्ध नाटक है–
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (B) उत्तररामचरितम्
(C) स्वप्नवासवदत्तम् (D) मुद्राराक्षसम्

120. नाटक से सम्बन्धित नहीं है–
(A) पञ्चसन्धियाँ (B) पञ्च-अर्थप्रकृतियाँ
(C) पञ्चकार्यावस्थायें (D) पञ्चज्ञानेन्द्रियाँ

121. रूपक का भेद नहीं है–
(A) ओज (B) वीथी
(C) भाण (D) नाटक

122. ''रसनिष्पत्तिवाद'' के आचार्यों में गणना नहीं होती है–
(A) भट्टलोल्लट की (B) भट्टनायक की
(C) भामह की (D) शङ्कुक की

123. '96' (छियानवे) को संस्कृत में क्या कहेंगे–
(A) षड्नवतिः (B) षण्णवतिः
(C) षोढानवति (D) षष्ठनवतिः

124. काव्य की त्रिविध शब्दशक्तियों में गणना नहीं होती है–
(A) प्रसाद (B) अभिधा
(C) व्यञ्जना (D) लक्षणा

125. 'पञ्चाङ्गव्याकरण' के अन्तर्गत नहीं गिना जाता है–
(A) सूत्रपाठ (B) गणपाठ
(C) धातुपाठ (D) संज्ञापाठ

111. (C) **112.** (D) **113.** (A) **114.** (A) **115.** (C) **116.** (D) **117.** (A) **118.** (B) **119.** (A) **120.** (D)
121. (A) **122.** (C) **123.** (B) **124.** (A) **125.** (D)

प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक चयनपरीक्षा (TGT) आदर्शप्रश्नपत्र–6

1. द्विगुसमास किस वचन में होता है–
(A) एकवचन में (B) द्विवचन में
(C) बहुवचन में (D) सभी वचनों में

2. प्राणी के अङ्गवाची शब्दों के साथ समास होने पर किस वचन का प्रयोग होता है–
(A) एकवचन (B) द्विवचन
(C) बहुवचन (D) कभी द्विवचन कभी बहुवचन

3. कौन सा समास नित्य नपुंसकलिङ्ग में होता है–
(A) तत्पुरुष (B) बहुव्रीहि
(C) द्वन्द्व (D) अव्ययीभाव

4. शुद्ध पद है–
(A) द्विरात्रम् (B) त्रिरात्रम्
(C) सर्वरात्रः (D) उपर्युक्त सभी

5. देवतावाचक 'सूर्या' पद में कौन सा स्त्रीप्रत्यय है–
(A) चाप् (B) टाप्
(C) डाप् (D) उपर्युक्त सभी

6. 'आचार्यस्य पत्नी' इस अर्थ में शुद्ध रूप होगा–
(A) आचार्या (B) आचार्यानी
(C) आचार्यी (D) आचार्ययानी

7. ''गोपी-नारी-कुमारी'' में क्रमशः किन स्त्रीप्रत्ययों का विधान किया गया है–
(A) ङीन्-ङीष्-ङीप् (B) ङीप्-ङीष्-ङीन्
(C) ङीन्-ङीप्-ङीष् (D) ङीष्-ङीन्-ङीप्

8. 'इत्संज्ञा' का निषेध करने वाला सूत्र है–
(A) नाऽज्झलौ (B) न विभक्तौ तुस्माः
(C) नेयङुवङ्स्थानावस्त्री (D) नः क्ये

9. ''आहुः'' किस धातु और किस वचन का रूप है–
(A) ब्रू धातु एकवचन में
(B) ब्रू धातु बहुवचन में
(C) 'आह' धातु एकवचन
(D) आ+हु धातु एकवचन

10. 'धोक्ष्यति' रूप किस धातु एवं किस लकार का है–
(A) धुक्ष् धातु लट् लकार
(B) धुक्ष् धातु लृट् लकार
(C) दुह् धातु लृट्लकार
(D) धोक्षृ धातु लट् लकार

11. 'हन्' धातु का लोट्लकार, प्र0पु0, बहुवचन में रूप होगा–
(A) हनन्तु (B) घनन्तु
(C) हनयन्तु (D) घ्नन्तु

12. 'दा' धातु विधिलिङ् लकार का रूप नहीं है–
(A) दद्यात् (B) दद्यात
(C) ददाम (D) दद्याम

13. एकवचनान्त रूप है–
(A) युष्मत् (B) त्वत्
(C) अस्मत् (D) उपर्युक्त सभी

14. एकवचनान्त रूप नहीं है–
(A) लक्ष्मीः (B) चन्द्रमाः
(C) कति (D) श्रीः

15. 'भूपति' का चतुर्थी एकवचन में रूप होगा–
(A) भूपत्ये (B) भूपतये
(C) भूपत्यै (D) भूपतयै

16. 'चौदहवाँ' शब्द का क्रमवाची रूप क्या होगा–
(A) चतुर्दश (B) चतुर्दशः
(C) चतुर्दशतमः (D) चतुर्दशतमम्

17. 'चार चतुर चञ्चल चालकों को बुलाओ' इसका संस्कृत में शुद्ध अनुवाद होगा–
(A) चत्वारः चतुरं चञ्चलं चालकं आह्वय
(B) चतुरः चतुरान् चञ्चलान् चालकान् आह्वयतु
(C) चत्वारः चतूरान् चञ्चलान् चालकान् आह्वय
(D) चत्वारि चतुर-चञ्चल-चालकान् आह्वयतु

18. 'वक्रोक्ति' को आचार्य विश्वनाथ ने माना है–
(A) गुण (B) रीति
(C) छन्द (D) अलङ्कार

1. (A)	2. (A)	3. (D)	4. (D)	5. (A)	6. (B)	7. (D)	8. (B)	9. (B)	10. (C)
11. (D)	12. (C)	13. (B)	14. (C)	15. (B)	16. (B)	17. (B)	18. (D)		

19. `66' को संस्कृत की संख्या में क्या कहेंगे–
(A) षटषष्टिः (B) षडषष्टिः
(C) षट्षष्टिः (D) षष्ठषष्टिः

20. 'सः त्वां पश्यति'–इसका कर्मवाच्य होगा–
(A) तेन अहं दृश्यते (B) तेन मां दृश्ये
(C) तेन अहं दृश्यसे (D) तेन त्वं दृश्यसे

21. उपध्मानीय वर्णों का उच्चारणस्थान है–
(A) तालु (B) जिह्वामूल
(C) ओष्ठ (D) नासिका

22. वार्तिककार कात्यायन किन वर्णों की परस्पर 'सवर्णसंज्ञा' का विधान करते हैं–
(A) ए-ऐ (B) ओ-औ
(C) ऋ-ॠ (D) ऋ-लृ

23. 'घ' संज्ञक प्रत्यय हैं–
(A) तरप्-तमप् (B) शतृ-शानच्
(C) क्त-क्तवतु (D) तव्यत्-अनीयर्

24. 'अपादान' संज्ञा विधायक सूत्र कितने हैं–
(A) 10 (B) 08
(C) 06 (D) 05

25. 'प्राक्'-इस उपपद के योग में किस विभक्ति का प्रयोग होगा–
(A) पञ्चमी (B) षष्ठी
(C) सप्तमी (D) तृतीया

26. किस सूत्र द्वारा विकल्प से षष्ठी और सप्तमी दोनों विभक्तियों का प्रयोग होता है–
(A) यतश्च निर्धारणम् (B) यस्य च भावेन भावलक्षणम्
(C) उभयप्राप्तौ कर्मणि (D) नक्षत्रे च लुपि

27. 'मुक्तये हरिं भजति' यहाँ 'मुक्तये' में किस वार्तिक से चतुर्थी का विधान किया गया है–
(A) हितयोगे च (B) उत्पातेन ज्ञापिते च
(C) तादर्थ्ये चतुर्थी वाच्या (D) क्लृपि सम्पद्यमाने च

28. 'शी' धातु का शुद्ध तुमुनन्तरूप का चयन करें–
(A) शयितुम् (B) शेतुम्
(C) शयतुम् (D) शीतुम्

29. अल्पप्राण और महाप्राण वर्णों की क्रमशः संख्या है–
(A) 14-19 (B) 18-20
(C) 19-14 (D) 20-13

30. महाकाव्यकार, नाटककार, खण्डकाव्यकार के रूप में संस्कृत साहित्य का प्रसिद्ध महाकवि कौन है–
(A) भवभूति (B) भारवि
(C) वाल्मीकि (D) कालिदास

31. महाकविकालिदास के विषय में असत्य कथन है–
(A) कालिदास सिंहलनरेश कवि कुमारदास के मित्र थे।
(B) विक्रमादित्य के नवरत्नों में एक थे
(C) जन्म से ब्राह्मण तथा धार्मिक दृष्टि से शैव थे
(D) बाल्यकाल में विद्वान् बाद में मूर्ख हो गये

32. षष्ठ अङ्क में राजा दुष्यन्त के शकुन्तलाजन्य वियोग को छिपकर कौन सुनती है–
(A) मेनका (B) सानुमती
(C) अदिति (D) वेत्रवती

33. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के केवल एक अङ्क में किस पात्र का चित्रण है–
(A) गौतमी (B) विदूषक
(C) कण्व (D) शार्ङ्गरव

34. ''भाग्यायत्तमतः परं न खलु तद्वाच्यं वधूबन्धुभिः'' यह कथन किसका है–
(A) कण्व का (B) दुष्यन्त का
(C) प्रियंवदा का (D) शार्ङ्गरव का

35. 'परिहासविजल्पितं सखे! परमार्थेन न गृह्यतां वचः' यह कथन किसने किससे कहा–
(A) राजा दुष्यन्त-शकुन्तला से
(B) विदूषक-राजा दुष्यन्त से
(C) कण्व-शार्ङ्गरव से
(D) राजा दुष्यन्त-विदूषक से

36. 'पीड्यन्ते गृहिणः कथं नु तनया विश्लेषदुःखैर्नवैः' इस पंक्ति में रस है–
(A) भयानकरस (B) शृङ्गाररस
(C) करुणरस (D) रौद्ररस

19. (C)	**20. (D)**	**21. (C)**	**22. (D)**	**23. (A)**	**24. (B)**	**25. (A)**	**26. (A)**	**27. (C)**	**28. (A)**
29. (C)	**30. (D)**	**31. (D)**	**32. (B)**	**33. (C)**	**34. (A)**	**35. (D)**	**36. (C)**		

37. किस कवि को 'भारत का शेक्सपियर' कहा जाता है–

(A) वाल्मीकि को (B) कालिदास को
(C) व्यास को (D) बाणभट्ट को

38. 'यस्य त्वया व्रणविरोपणमिङ्गुदीनाम्' इसमें छन्द है–

(A) वसन्ततिलका (B) इन्द्रवज्रा
(C) वंशस्थ (D) मालिनी

39. 'सोऽयं न पुत्रकृतकः पदवीं मृगस्ते'–यहाँ 'पुत्रकृतकः' में कौन सा प्रत्यय है–

(A) कन् प्रत्यय (B) क्वसु प्रत्यय
(C) क्यङ् प्रत्यय (D) क्यच् प्रत्यय

40. 'भवत्युत्सवः' पद का सन्धिविच्छेद होगा–

(A) भवतु+उत्सवः (B) भवति+उत्सवः
(C) भवत+उत्सवः (D) भवती+ऊत्सवः

41. 'सर्वैरनुज्ञायताम्' में वाच्य है–

(A) कर्मवाच्य (B) कर्तृवाच्य
(C) भाववाच्य (D) उपर्युक्त सभी

42. 'चिराय तस्मिन् कुरवश्चकासति' यहाँ 'चकासति' क्रियापद में कौन सी धातु है–

(A) चक् (B) चकासृ धातु
(C) कास् धातु (D) चकस् धातु

43. 'प्रतीयते धातुरिवेहितं फलैः'-यह पद्यांश किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है–

(A) नीतिशतकम् से (B) उत्तररामचरितम् से
(C) किरातार्जुनीयम् से (D) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से

44. शुकनासोपदेश के अनुसार लक्ष्मी में चञ्चलता का गुण कहाँ से आया–

(A) पारिजातपल्लवों से (B) चन्द्रमा से
(C) उच्चैःश्रवा घोड़े से (D) कौस्तुभमणि से

45. 'न शीलं पश्यति, न वैदग्ध्यं गणयति, न श्रुतमाकर्णयति, न त्यागमाद्रियते'' यहाँ किसका वर्णन है–

(A) गौरसिंह का (B) यवनयुवक का
(C) लक्ष्मी का (D) ब्रह्मचारिगुरु का

46. 'दुष्टपिशाचीव दर्शितानेकपुरुषोच्छाया' यहाँ 'दुष्टपिशाची' पद से किसका सङ्केत है–

(A) लक्ष्मी का (B) चाण्डालकन्या का
(C) वसन्तसेना का (D) पिशाचिनी का

47. 'यथा यथा चेयं चपला दीप्यते, तथा तथा दीपशिखेव कज्जलमलिनमेव कर्म केवलमुद्वमति' यहाँ अलङ्कार है–

(A) रूपक (B) उत्प्रेक्षा
(C) उपमा (D) दीपक

48. ''ग्रहैरिव गृह्यन्ते, भूतैरिवाभिभूयन्ते मन्त्रैरिवावेश्यन्ते''– इन पंक्तियों में कौन सा अलङ्कार है–

(A) उत्प्रेक्षा (B) उपमा
(C) अनन्वय (D) रूपक

''कामं भवान् प्रकृत्यैव धीरः, पित्रा च महता प्रयत्नेन समारोपितसंस्कारः, तरलहृदयमप्रतिबुद्धिञ्च मदयन्ति धनानि, तथापि भवद्गुणसन्तोषो मामेवं मुखरीकृतवान्।''

उपर्युक्त गद्यांश के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर देवें–

49. 'भवान्' पद से किसका सङ्केत किया गया है–

(A) तारापीड का (B) योगिराज का
(C) गौरसिंह का (D) चन्द्रापीड का

50. 'पित्रा' पद से किसका बोध होता है–

(A) ब्रह्मचारीगुरु का (B) योगिराज का
(C) शिवाजी का (D) तारापीड का

51. यहाँ 'माम्' पद किसके लिए प्रयुक्त है–

(A) शुकनास के लिए (B) योगिराज के लिए
(C) ब्रह्मचारीगुरु के लिए (D) चन्द्रापीड के लिए

52. प्रस्तुत गद्यांश किस ग्रन्थ से सम्बद्ध है–

(A) कादम्बरी कथामुख से
(B) शिवराजविजयम् से
(C) कादम्बरी शुकनासोपदेश से
(D) शुकनास-विजयम् से

37. (B)	38. (A)	39. (A)	40. (B)	41. (C)	42. (B)	43. (C)	44. (C)	45. (C)	46. (A)
47. (C)	48. (A)	49. (D)	50. (D)	51. (A)	52. (C)				

53. 'अरे रे वाचाल! ह्यः रात्रौ युष्मत्कुटीरे रुदतीं समायातां ब्राह्मणतनयां सपदि प्रयच्छथ' यह कथन किसका है–
(A) गौरसिंह का (B) श्यामसिंह का
(C) ब्रह्मचारिगुरु का (D) यवनयुवक का

54. 'कार्यं वा साधयेयम्, देहं वा पातयेयम्' यह सूक्ति किस ग्रन्थ से सम्बद्ध है–
(A) शुकनासोपदेश से (B) शिवराजविजयम् से
(C) कादम्बरी कथामुख से (D) शिवाजीचरितम् से

55. दक्षिण प्रदेश के शासक के रूप में औरङ्गजेब द्वारा कौन भेजा गया था–
(A) शाइस्ता खाँ (B) बीजापुर का नवाब
(C) यवनयुवक (D) मानसिंह

56. 'तपांसि अतापिषत'' यहाँ 'अतापिषत' में कौन सा लकार है–
(A) लङ् (B) लुङ्
(C) लृङ् (D) लिङ्

57. ''भगवन्! धैर्येण, प्रसादेन, प्रतापेन, तेजसा, वीर्येण, विक्रमेण, शान्त्या, श्रिया, विद्यया च सममेव परलोकं सनाथितवति.....'' इन पंक्तियों में किसके गुणों का वर्णन किया गया है–
(A) योगिराज के (B) चन्द्रापीड के
(C) विक्रमादित्य के (D) शिवाजी के

58. ''किमधिकं कथयामो भारतवर्षमधुना अन्यादृशमेव सम्पन्नमस्ति'' यह कथन किसका है–
(A) योगिराज का (B) ब्रह्मचारिगुरु का
(C) गौरसिंह का (D) यवनयुवक का

59. ''भवादृशैः न ज्ञायते कालवेगः'' यहाँ 'भवादृशैः' पद से किसका सङ्केत किया गया है–
(A) ब्रह्मचारीगुरु का (B) गौरसिंह का
(C) योगिराज का (D) शिवाजी का

60. 'नेदीयसि' पद का क्या अर्थ है–
(A) अतिसमीप (B) अतिदूर
(C) नदी किनारे (D) इसे न दो

61. 'अपससार' की व्याकरणात्मक टिप्पणी बताओ–
(A) अप + सृज् + लङ् (B) अप + सृ + लिट्
(C) अप + सृज् + लुङ् (D) अप + सृ + लृङ्

62. ''मन्दिराणि मन्दुरीक्रियन्ते'' यहाँ 'मन्दुरी' पद का क्या अर्थ है–
(A) सुन्दरी (B) घुड़साल
(C) नष्ट करना (D) ऊँचा करना

63. भवभूति मूलतः किस रीति के कवि माने जाते हैं–
(A) पाञ्चाली (B) वैदर्भी
(C) गौडी (D) उपर्युक्त सभी

64. किस नाटक में 12 वर्ष की घटनाओं का वर्णन है–
(A) उत्तररामचरितम् (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(C) स्वप्नवासवदत्तम् (D) मृच्छकटिकम्

65. उत्तररामचरितम् के प्रथम अङ्क का नाम है–
(A) छाया अङ्क (B) गर्भाङ्क
(C) चित्रदर्शन अङ्क (D) पञ्चवटीप्रवेश अङ्क

66. ''अस्मिन्नेव लतागृहे त्वमभवस्तन्मार्गदत्तेक्षणः'' इसका वक्ता कौन है–
(A) दुष्यन्त (B) कण्व
(C) शार्ङ्गरव (D) वासन्ती

67. 'पौलस्त्यः' पद किसका वाचक है–
(A) रावण का (B) वाल्मीकि का
(C) अगस्त्य का (D) राम का

68. ''संजीवनौषधिरसो हृदि नु प्रसक्तः'' यह पंक्ति किस कवि से सम्बद्ध है–
(A) कालिदास से (B) भवभूति से
(C) बाणभट्ट से (D) अम्बिकादत्तव्यास से

69. ''यत्र द्रुमा अपि मृगा अपि बन्धवो मे''–इस पंक्ति में छन्द है–
(A) वसन्ततिलका (B) इन्द्रवज्रा
(C) उपेन्द्रवज्रा (D) वंशस्थ

70. 'अवन्तिसुन्दरीकथा' के अनुसार भारवि के पिता का नाम है–
(A) दामोदर (B) नारायणस्वामी
(C) आतपत्र (D) विष्णुवर्धन

53. (D)	54. (B)	55. (A)	56. (B)	57. (C)	58. (B)	59. (C)	60. (A)	61. (B)	62. (B)
63. (C)	64. (A)	65. (C)	66. (D)	67. (A)	68. (B)	69. (A)	70. (B)		

71. किस महाकवि के साथ भारवि का पारिवारिक सम्बन्ध माना जाता है–
(A) बाणभट्ट (B) दण्डी
(C) सुबन्धु (D) मम्मट

72. ''विशङ्कमानो भवतः पराभवम्'' यहाँ 'विशङ्कमानः' पदमें प्रत्यय है–
(A) शतृ (B) शानच्
(C) मतुप् (D) वतुप्

73. 'इमामहं वेद न तावकीं धियम्' यहाँ 'अहम्' पदसे किसका सङ्केत है–
(A) वनेचर (B) द्रौपदी
(C) दुर्योधन (D) युधिष्ठिर

74. 'लक्ष्मी' पदाङ्क महाकाव्य कहा जाता है–
(A) किरातार्जुनीयम् को (B) शिशुपालवधम् को
(C) नैषधीयचरितम् को (D) रघुवंशमहाकाव्यम् को

75. ''श्रियः पतिः श्रीमति शासितुं जगत्''–यह मङ्गलाचरणात्मक पद्यांश किस ग्रन्थ का है–
(A) किरातार्जुनीयम् का (B) नैषधीयचरितम् का
(C) शिशुपालवधम् का (D) रघुवंशम् का

76. कवि कुमारदास की रचना है–
(A) जानकीजीवनम् (B) सीताचरितम्
(C) जानकीहरणम् (D) जाम्बवतीविजयम्

77. ''भवादृशेषु प्रमदाजनोदितम्'' यहाँ 'प्रमदाजन' से किसका बोध हो रहा है–
(A) वनेचर का (B) द्रौपदी का
(C) क्षुद्रजनों का (D) कौरवों का

78. ''तथापि जिह्मः स भवज्जिगीषया'' यहाँ 'जिह्मः' पद किसके लिए प्रयुक्त है–
(A) दुर्योधन के लिए (B) दुःशासन के लिए
(C) धृतराष्ट्र के लिए (D) वनेचर के लिए

79. ''शमेन सिद्धिं मुनयो न भूभृतः'' इसका वक्ता कौन है–
(A) वनेचर (B) द्रौपदी
(C) युधिष्ठिर (D) दुर्योधन

80. किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग में किस छन्द का प्रयोग नही है–
(A) मालिनी (B) वंशस्थ
(C) इन्द्रवज्रा (D) पुष्पिताग्रा

81. सर्वाधिक प्राचीन कवि है–
(A) माघ (B) भारवि
(C) भवभूति (D) श्रीहर्ष (नैषधकार)

82. किस कवि ने अपने जीवन के विषय में अपने ग्रन्थ में स्वयं लिखा है–
(A) भारवि (B) माघ
(C) कालिदास (D) बाणभट्ट

83. गन्धर्वराज चित्ररथ की पुत्री है–
(A) विलासवती (B) महाश्वेता
(C) कादम्बरी (D) चाण्डालकन्या

84. किस ग्रन्थ की रचना पिता-पुत्र दोनों ने की–
(A) दशकुमारचरितम् की (B) काव्यप्रकाश की
(C) कादम्बरीकथा की (D) वासवदत्ता की

85. 'प्रावृट्' पद का क्या अर्थ है–
(A) शरद्ऋतु (B) वर्षा ऋतु
(C) शिशिरऋतु (D) ग्रीष्म ऋतु

86. ''मनोरमाकुचमर्दनम्'' इस ग्रन्थ के रचयिता हैं–
(A) भट्टोजिदीक्षित (B) नागेशभट्ट
(C) पण्डितराज जगन्नाथ (D) वरदराज

87. 'पितेव' में सन्धि है–
(A) यण् (B) पूर्वरूप
(C) गुण (D) पररूप

88. शुद्ध क्रियापद का चयन करें–
(A) रोदन्ति (B) रोदामि
(C) रोदामः (D) रोदिमि

89. अशुद्ध पद का चयन करें–
(A) दधि (B) श्मश्रु
(C) जानु (D) तालुः

90. अशुद्ध पद का चयन करें–
(A) गृह्णन् (B) ग्रहीतुम्
(C) गृहीतवान् (D) गृहीतुम्

71. (B)	72. (B)	73. (B)	74. (A)	75. (C)	76. (C)	77. (B)	78. (A)	79. (B)	80. (C)
81. (B)	82. (D)	83. (C)	84. (C)	85. (B)	86. (C)	87. (C)	88. (D)	89. (D)	90. (D)

91. शुद्ध पद का चयन करें–
(A) सहोदरी (B) सहोदरा
(C) भयङ्करी (D) उपर्युक्त सभी

92. महाभाष्य में पतञ्जलि का प्रथम वाक्य है–
(A) अथ शब्दानुशासनम् (B) अथातो ब्रह्मजिज्ञासा
(C) वृद्धिरादैच् (D) अथातो धर्मजिज्ञासा

93. चीनी यात्री इत्सिंग भर्तृहरि को क्या मानता है–
(A) बौद्ध (B) जैन
(C) शैव (D) वैष्णव

94. एक अन्य मतानुसार भर्तृहरि के गुरु का नाम माना जाता है–
(A) दिङ्नाग (B) वसुराज
(C) पाणिनि (D) हेमचन्द्र

95. भर्तृहरि के 'वाक्यपदीयम्' में कितने काण्ड है–
(A) 3 (B) 4
(C) 5 (D) 6

96. 'संरक्ताभिस्त्रिपुरविजयो गीयते किन्नरीभिः' में कौन सा वाच्य है–
(A) कर्मवाच्य (B) भाववाच्य
(C) कर्तृवाच्य (D) इनमें से कोई नहीं

97. 'अपाम्' में कौन सी विभक्ति है–
(A) द्वितीया (B) षष्ठी
(C) पञ्चमी (D) प्रथमा

98. ''गच्छन्तीनां रमणवसतिं योषितां तत्र नक्तम्''– यहाँ किस नगरी की रमणियों का वर्णन है–
(A) अलकापुरी की (B) दशार्णदेश की
(C) उज्जयिनी की (D) मालवादेश की

99. ''सेविष्यन्ते नयनसुभगं खे भवन्तं बलाकाः''–यहाँ 'भवन्तम्' पद किसके लिए प्रयुक्त है–
(A) यक्ष के लिए (B) कुबेर के लिए
(C) शिव के लिए (D) मेघ के लिए

100. 'सन्देशं मे हर धनपतिक्रोधविश्लेषितस्य' यह किसका किससे निवेदन है–
(A) यक्ष का कुबेर से (B) यक्षिणी का यक्ष से
(C) यक्ष का मेघ से (D) मेघ का यक्ष से

101. भर्तृहरि के अनुसार जो न दान देता है और न उपभोग करता है, उस धन की क्या गति होती है–
(A) नाश (B) भोग
(C) दुगुना (D) बचत

102. भर्तृहरि के अनुसार शास्त्रविहित औषधि किसकी नहीं होती है–
(A) राजा की (B) विद्वानों की
(C) मूर्ख की (D) संस्कृतज्ञों की

103. काश्मीरी लेखकों में सर्वश्रेष्ठ कौन माने जाते हैं–
(A) कल्हण (B) बिल्हण
(C) जल्हण (D) अभिनवगुप्त

104. निम्न में से किसकी ''सार्वधातुक संज्ञा'' होती है–
(A) तिङ्-शित् (B) तिङ्-कृत्
(C) तिङ्-सुप् (D) तिङ्-तद्धित

105. राजा दुष्यन्त ने शकुन्तला के विरह में किस उत्सव के मनाने पर प्रतिबन्ध लगा दिया था–
(A) वसन्तोत्सव (B) शरदोत्सव
(C) वनोत्सव (D) ग्रीष्मोत्सव

106. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में राजा दुष्यन्त की दाहिनी भुजा फड़कने का प्रसङ्ग कितनी बार आया है–
(A) एक बार (B) दो बार
(C) तीन बार (D) चार बार

107. कौन सा युग्म अशुद्ध है–
(A) एभ्यः-एनाम् (B) इमौ-एनौ
(C) अनेन-एनेन (D) इमम्-एनम्

108. दाराशिकोह ने उपनिषदों का अनुवाद किस भाषा में करवाया–
(A) हिन्दी में (B) संस्कृत में
(C) फारसी में (D) उर्दू में

109. कौन सा वाक्य शुद्ध है–
(A) यज्ञस्य अनु देवः वर्षति (B) यज्ञमनु देवः वर्षति
(C) यज्ञम् मनु देवः वर्षति (D) यज्ञेण अनु देवः वर्षति

110. जो देश वर्षा पर निर्भर नहीं रहते हैं, उसे कहा जाता है–
(A) देवमातृक (B) अदेवमातृक
(C) वर्षामातृक (D) देशमातृक

91. (B)	92. (A)	93. (A)	94. (B)	95. (A)	96. (A)	97. (B)	98. (C)	99. (D)	100. (C)
101. (A)	102. (C)	103. (D)	104. (A)	105. (A)	106. (B)	107. (A)	108. (C)	109. (B)	110. (B)

111. वनवासकाल में कठोर भूमि में कौन सोते हैं–
(A) भीम-अर्जुन (B) युधिष्ठिर-द्रौपदी
(C) वनेचर-युधिष्ठिर (D) नकुल-सहदेव

112. निम्नलिखित में से सर्वाधिक प्राचीन माने जाते हैं–
(A) बाणभट्ट (B) त्रिविक्रमभट्ट
(C) नागेशभट्ट (D) अन्नंभट्ट

113. सर्वाधिक अर्वाचीन कवि माने जाते हैं–
(A) भारवि (B) भर्तृहरि
(C) भवभूति (D) भोज

114. 'वाग्देवतावतार' किसकी उपाधि है–
(A) मयूरभट्ट (B) मम्मट
(C) बाणभट्ट (D) माघ

115. संस्कृत कवयित्रियों में सर्वाधिक अर्वाचीन कवयित्री हैं–
(A) गङ्गादेवी
(B) तिरुमलाम्बा
(C) रामभद्राम्बा
(D) पण्डिता क्षमाराव

116. 'अनीकिनी' पद का क्या अर्थ है–
(A) स्वर्ग (B) सेना
(C) वाटिका (D) आश्रम

117. 'प्रक्ष्यति' रूप किस धातु का है–
(A) प्रच्छ् (B) पृच्छ्
(C) पृक्ष्य (D) प्रछ

118. द्वौ वा त्रयो वा = 'द्वित्राः' पद में समास है–
(A) द्वन्द्व (B) बहुव्रीहि
(C) तत्पुरुष (D) द्विगु

119. अव्ययपद नहीं है–
(A) गत्वा (B) द्रष्टुम्
(C) उपकृष्णम् (D) मित्रम्

120. माध्यमिक शिक्षा के उद्देश्य हैं–
(A) नागरिकता की भावना का विकास
(B) जीविकोपार्जन की क्षमता का विकास
(C) व्यक्तित्व एवं नेतृत्वक्षमता का विकास
(D) उपर्युक्त सभी

121. चतुर्दश विद्याओं के अन्तर्गत नहीं गिना जाता है–
(A) चारों वेद
(B) छः वेदाङ्ग
(C) पुराण, न्याय, मीमांसा, धर्मशास्त्र
(D) इनमें से कोई नहीं

122. किस महान् भारतीय शिक्षाशास्त्री का सम्बन्ध इलाहाबाद एवं काशी दोनों स्थानों से रहा है–
(A) स्वामी दयानन्द
(B) स्वामी विवेकानन्द
(C) महामना मदनमोहन मालवीय
(D) रवीन्द्रनाथ ठाकुर

123. भाषा शिक्षण के कितने कौशल (skill) माने गये है–
(A) 5 (B) 4
(C) 3 (D) 6

124. अपदो दूरगामी च साक्षरो न च पण्डितः।
अमुखः स्फुटवक्ता च यो जानाति सः पण्डितः।
इस प्रहेलिका का उपयुक्त उत्तर होगा–
(A) नारियल (B) पत्रम्
(C) यात्री (D) विद्वान्

125. कौन सा स्त्रीवाचक पद नित्य पुंलिङ्ग एवं बहुवचन है–
(A) आपः (B) वर्षाः
(C) दाराः (D) प्राणाः

अतिरिक्त प्रश्न

126. 'संस्कृतगङ्गा' का उद्देश्य नहीं है–
(A) संस्कृत के सुयोग्य शिक्षक तैयार करना।
(B) संस्कृत के भाषिक स्वरूप का जनजन में प्रचार करना।
(C) संस्कृतज्ञों एवं संस्कृतप्रेमियों के संघटन द्वारा संस्कृत, संस्कृति एवं भारतीय संस्कारों का वैश्विक प्रचार प्रसार करना
(D) कोचिंग के द्वारा अपना प्रचार प्रसार करना।

111. (D) 112. (A) 113. (D) 114. (B) 115. (D) 116. (B) 117. (A) 118. (B) 119. (D) 120. (D)
121. (D) 122. (C) 123. (B) 124. (B) 125. (C) 126. (D)

127. यदि आपको भारत का प्रधानमन्त्री बना दिया जाए तो आप संस्कृत के लिए क्या करना चाहेंगे।
(A) सम्पूर्ण भारत में संस्कृत शिक्षा को अनिवार्य करना
(B) संस्कृत की दिशा में नये रोजगार के अवसर उत्पन्न करना
(C) संस्कृत बालीवुड का निर्माण करना
(D) उपर्युक्त सभी

128. संस्कृतगङ्गा में कक्षारम्भ के समय कौन सी प्रार्थना होती है–
(A) वह शक्ति हमें दो दयानिधे! कर्त्तव्यमार्ग पर डट जावें।
(B) ऐसी शक्ति हमें देना दाता, मन का विश्वास कमजोर हो न।
(C) प्रभोऽहं सदा सत्यवादी भवेयम्
(D) या सृष्टिः स्रष्टुराद्या....।

129. संस्कृत भाषा के सुयोग्य शिक्षक बनने हेतु अनिवार्य योग्यता होनी चाहिए–
(A) धाराप्रवाह संस्कृत-सम्भाषण
(B) शुद्ध एवं सुस्पष्ट संस्कृत लेखन एवं संस्कृतोच्चारण
(C) संस्कृतशास्त्रों की जानकारी
(D) उपर्युक्त सभी

130. 'संस्कृतगङ्गा' का प्रधान कार्यालय कहाँ स्थित है–
(A) काशी के राजघाट में
(B) नयी दिल्ली के करोलबाग में
(C) प्रयागराज के सङ्गम तट में
(D) अयोध्या के सरयू तट में

127. (D) 128. (C) 129. (D) 130. (C)

प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक चयनपरीक्षा (TGT) आदर्शप्रश्नपत्र– 7

1. ''अनार्यः परदारव्यवहारः'' यह सूक्ति किस ग्रन्थ से उद्धृत है-
(A) मालविकाग्निमित्रम् से (B) विक्रमोर्वशीयम् से
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से (D) उत्तररामचरितम् से

2. ''आशीरन्या न ते योग्या पौलोमी सदृशी भव'' यहाँ 'पौलोमी' पद का अर्थ है-
(A) शकुन्तला (B) इन्द्राणी
(C) सीता (D) वसन्तसेना

3. ''अपसृतपाण्डुपत्रा मुञ्चन्त्यश्रूणीव लताः'' इस पंक्ति में अलङ्कार है-
(A) उपमा (B) रूपक
(C) उत्प्रेक्षा (D) विभावना

4. शकुन्तला की लताबहिन वनज्योत्स्ना का विवाह किसके साथ हुआ-
(A) पीपल वृक्ष के साथ (B) आम्रवृक्ष के साथ
(C) बरगद वृक्ष के साथ (D) वनदेवता के साथ

5. शकुन्तला 'गर्भमन्थरा' एवं 'अनघप्रसवा' आदि शब्दों का प्रयोग किसके लिए करती है-
(A) प्रियंवदा के लिए (B) अनसूया के लिए
(C) वनज्योत्स्ना के लिए (D) मृगी के लिए

6. चोटिल मृग के मुख में शकुन्तला किसका तेल लगाती है-
(A) ऑवले का (B) नारियल का
(C) इङ्गुदी का (D) बादाम का

7. ''मार्गे पदानि खलु ते विषमीभवन्ति'' यहाँ 'ते' पद में विभक्ति एवं वचन है-
(A) प्रथमा बहुवचन (B) प्रथमा द्विवचन
(C) षष्ठी एकवचन (D) उपर्युक्त सभी

8. ''शुश्रूषष्व गुरून्'' यहाँ 'शुश्रूषष्व' पद की व्याकरणात्मक टिप्पणी होगी-
(A) शुश्रू+लोट्+प्र.पु.एक. (B) श्रु+सन्+लोट् म.पु.एक.
(C) श्रू+लोट्+म.पु.द्विव. (D) सेव्+लोट्+म.पु.बहु.

9. 'बुद्धि' का पर्यायवाची पद नही है-
(A) मनीषा (B) शेमुषी
(C) धिषणा (D) सुकृतिः

10. 'धीमताम्' में प्रत्यय है-
(A) मतुप् (B) वतुप्
(C) तल् (D) टाप्

11. ''मम विरहजां न त्वं वत्से शुचं गणयिष्यसि'' इस पंक्ति में छन्द है-
(A) हरिणी (B) शार्दूलविक्रीडितम्
(C) मन्दाक्रान्ता (D) शिखरिणी

12. 'कविताकाननकेसरी' इस उपाधि से आलोचकों ने किस कवि को सम्बोधित किया-
(A) माघ को (B) भारवि को
(C) बाण को (D) दण्डी को

13. 'प्रसन्नगम्भीरपदासरस्वती' यह किस कवि की भाषा शैली की विशेषता रही है-
(A) भारवि की (B) माघ की
(C) कालिदास की (D) अम्बिकादत्तव्यास की

14. ''सुदुर्लभा सर्वमनोरमा गिरः'' यह सूक्ति किस ग्रन्थ से सम्बद्ध है-
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से (B) उत्तररामचरितम् से
(C) किरातार्जुनीयम् से (D) शिशुपालवधम् से

15. 'श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीम्' यहाँ 'श्रियः' पद में प्रकृति-प्रत्यय है-
(A) श्रिञ् + क्विप् + षष्ठी (B) श्रिञ् + क्विप् + द्वितीया
(C) श्रिय् + कि + प्रथमा (D) श्री + क्तिन् + द्वितीया

16. 'निवेदयिष्यतः' पद में प्रत्यय है-
(A) शतृ (B) शानच्
(C) ष्यञ् (D) ष्वुन्

17. ''तवानुभावोऽयमवेदि यन्मया'' यहाँ 'अवेदि' पद में लकार है-
(A) कर्मणि लुङ् (B) कर्तरि लङ्
(C) भावे लङ् (D) इनमें से कोई नहीं

1. (C)	**2. (B)**	**3. (C)**	**4. (B)**	**5. (D)**	**6. (C)**	**7. (C)**	**8. (B)**	**9. (D)**	**10. (A)**
11. (A)	**12. (C)**	**13. (A)**	**14. (C)**	**15. (A)**	**16. (A)**	**17. (A)**			

18. ''नक्तं च दिवा च'' इस समासविग्रह से सामासिक पद होगा-
(A) नक्तन्दिवौ (B) नक्तन्दिवम्
(C) नक्तन्दिवे (D) नक्तन्दिवः

19. 'भृशम्' पद का क्या अर्थ है-
(A) अत्यधिक (B) अत्यल्प
(C) सुन्दर (D) शान्ति

20. राजा यशोवर्मा के आश्रित कवि माने जाते हैं-
(A) भारवि (B) भवभूति
(C) भास (D) भर्तृमेण्ठ

21. महाकवि भवभूति की प्रथम नाट्यकृति मानी जाती है-
(A) मालतीमाधवम् (B) महावीरचरितम्
(C) उत्तररामचरितम् (D) इनमें से कोई नहीं

22. शृङ्गाररस, वीररस तथा करुणरस-तीनों रसों में किस कवि ने तीन नाटक लिखे-
(A) भास ने (B) कालिदास ने
(C) भवभूति ने (D) अश्वघोष ने

23. उत्तररामचरितम् के मङ्गलाचरण में किस छन्द का प्रयोग है-
(A) आर्या का (B) अनुष्टुप् का
(C) इन्द्रवज्रा का (D) वंशस्थ का

24. 'पदवाक्यप्रमाणज्ञः' भवभूति की इस उपाधि से क्रमशः किन तीन शास्त्रों का संकेत मिलता है-
(A) न्याय-मीमांसा-व्याकरण (B) मीमांसा-व्याकरण-न्याय
(C) व्याकरण-मीमांसा-न्याय (D) व्याकरण-सांख्य-वेदान्त

25. भवभूति के प्रिय छन्द माने जाते हैं-
(A) अनुष्टुप् एवं शिखरिणी (B) वंशस्थ एवं इन्द्रवज्रा
(C) वसन्ततिलका एवं आर्या (D) शिखरिणी एवं उपेन्द्रवज्रा

26. उत्तररामचरितम् में कुल श्लोक हैं-
(A) लगभग 275 (B) लगभग 286
(C) लगभग 256 (D) लगभग 247

27. ''भवभूतेः शिखरिणी निरर्गलतरङ्गिणी'' यहाँ भवभूति के शिखरिणी छन्द की प्रसंशा किसने की है-
(A) गोवर्धन ने (B) क्षेमेन्द्र ने
(C) स्वयं भवभूति ने (D) राजशेखर ने

28. किस पात्र को भवभूति ने अपनी रचनाओं में कोई स्थान नही दिया-
(A) नटी को (B) सूत्रधार को
(C) विदूषक को (D) प्रतीहारी को

29. ''तव न जाने हृदयं मम पुनः कामो दिवाऽपि रात्रावपि'' यह पंक्ति कहाँ की है-
(A) दुष्यन्त के प्रेमपत्र की
(B) शकुन्तला के प्रेमपत्र की
(C) प्रियंवदा के विरहावस्था की
(D) यक्ष के विरहपत्र की

30. 'अमरकोष' के लेखक हैं-
(A) अमरसिंह (B) पाणिनि
(C) तारानाथ वाचस्पति (D) क्षेमेन्द्र

31. निम्नलिखित में भिन्न युग्म का चयन करें-
(A) दुष्यन्त-सर्वदमन (भरत) (B) तारापीड-चन्द्रापीड
(C) शुकनाश-वैशम्पायन (D) कण्व-शार्ङ्गरव

32. भिन्न युग्म का चयन करें-
(A) भवभूति-जतुकर्णी (B) बाणभट्ट-राजदेवी
(C) कालिदास-विद्योत्तमा (D) भारवि-सुशीला

33. सुमेलित करें -

	सूक्ति	ग्रन्थ
क.	गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः	(1) रघुवंशम्
ख.	तेजसां हि न वयः समीक्ष्यते	(2) कुमारसम्भवम्
ग.	न धर्मवृद्धेषु वयः समीक्ष्यते	(3) उत्तररामचरितम्
घ.	बुभुक्षितः किं न करोति पापम्	(4) नीतिशतकम्
ङ.	न खलु वयः तेजसो हेतुः	(5) पञ्चतन्त्रम्

(A) क. (3) ख. (1) ग. (2) घ. (5) ङ. (4)
(B) क. (4) ख. (5) ग. (1) घ. (2) ङ. (3)
(C) क. (1) ख. (2) ग. (3) घ. (5) ङ. (4)
(D) क. (3) ख. (4) ग. (2) घ. (5) ङ. (3)

34. सुमेलित करें - किस ग्रन्थ में किस पर्वत का वर्णन है-

क. हिमालय पर्वत	(1) किरातार्जुनीयम्
ख. इन्द्रकील पर्वत	(2) कुमारसम्भवम्
ग. रैवतक पर्वत	(3) मेघदूतम्
घ. आम्रकूट पर्वत	(4) शिशुपालवधम्

(A) क. (4) ख. (1) ग. (2) घ. (3)
(B) क. (3) ख. (4) ग. (1) घ. (2)
(C) क. (2) ख. (1) ग. (4) घ. (3)
(D) क. (1) ख. (2) ग. (4) घ. (3)

18. (B) 19. (A) 20. (B) 21. (A) 22. (C) 23. (B) 24. (C) 25. (A) 26. (C) 27. (B)
28. (C) 29. (B) 30. (A) 31. (D) 32. (C) 33. (A) 34. (C)

35. कौन सा पद अन्य तीनों से भिन्न है-
(A) पयः (B) मनः
(C) आपः (D) यशः

36. निम्न में से किसकी 'घि' संज्ञा नही होगी -
(A) पतिः (B) भूपतिः
(C) हरिः (D) वारि

37.'सर्वस्मिन् आत्मा अस्ति' यहाँ कैसा आधार है-
(A) अभिव्यापक आधार (B) वैषयिक आधार
(C) औपश्लेषिक आधार (D) इनमें से कोई नहीं

38.'वृक्षम् अवचिनोति फलानि' यहाँ 'वृक्ष' की कर्मसंज्ञा करने वाला सूत्र है-
(A) कर्तुरीप्सिततमं कर्म (B) अधिशीङ्स्थासां कर्म
(C) क्रुधद्रुहोरुपसृष्टयोः कर्म (D) अकथितञ्च

39.'घन इव श्यामः = घनश्यामः' में किस सूत्र से कर्मधारय समास का विधान किया गया है
(A) उपमानानि सामान्यवचनैः
(B) विशेषणं विशेष्येण बहुलम्
(C) तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च
(D) सह सुपा

40. निम्न में भिन्न पद है-
(A) पञ्चगङ्गम् (B) पञ्चगवम्
(C) पञ्चपात्रम् (D) पञ्चवटी

41. 'सा अस्मान् पश्यति' इसका कर्मवाच्य होगा-
(A) तेन वयं दृश्यते । (B) तया अहं दृश्ये।
(C) तया वयं दृश्यामहे । (D) तया वयं दृश्यावहे।

42. अकर्मक क्रियापद नही है-
(A) क्रीडति (B) शेते
(C) भवति (D) गच्छति

43. 'किसी एक बालक को पुस्तक दो' इसका अनुवाद होगा-
(A) केनचित् एकस्मै बालकाय पुस्तक देहि।
(B) कश्चित् एकाय बालकाय पुस्तकं ददातु।
(C) कस्मैचित् एकस्मै बालकाय पुस्तकं देहि।
(D) कञ्चित् एकाय बालकाय पुस्तकं ददातु।

44. किस छन्दसमूह में वर्णो की संख्या समान होती है-
(A) द्रुतविलम्बित-वसन्ततिलका-मालिनी
(B) वंशस्थ-उपजाति-इन्द्रवज्रा
(C) मन्दाक्रान्ता-शिखरिणी-हरिणी
(D) इन्द्रवज्रा-उपेन्द्रवज्रा-द्रुतविलम्बित

45. 'प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः' यह कथन किसका है-
(A) द्रौपदी का (B) वनेचर का
(C) दुर्योधन का (D) युधिष्ठिर का

46. कौन सा शब्दालङ्कार माना जाता है-
(A) यमक (B) रूपक
(C) उत्प्रेक्षा (D) उपमा

47. अधोलिखित में सबसे बडी संख्या है-
(A) अशीतिः (B) नवाशीतिः
(C) एकाशीतिः (D) ऊनाशीतिः

48. 'यह मेरी तीसरी कन्या है' इसका अनुवाद होगा-
(A) सा मम तृतीया कन्या अस्ति
(B) एषा मम तिस्रः कन्या अस्ति
(C) एषा मम त्रीणि कन्या अस्ति
(D) एषा मम तृतीया कन्या अस्ति

49. अधोलिखित मे सबसे छोटी संख्या है-
(A) एकोनचत्वारिंशत् (B) चत्वारिंशत्
(C) एकचत्वारिंशत् (D) नवचत्वारिंशत्

50. सप्तमी विभक्ति का रूप नही है-
(A) भवति (B) विदुषि
(C) जगति (D) चन्द्रमसौ

51. लृट्लकार का शुद्ध रूप नही है-
(A) शक्ष्यति (B) स्पर्क्ष्यति
(C) नंस्यति (D) शयिष्यति

52. ''कथ्यतां का दशा भारतवर्षस्य'' यह कथन किसका है-
(A) ब्रह्मचारिगुरु का (B) योगिराज का
(C) गौरसिंह का (D) यवनयुवक का

53. गौरसिंह द्वारा जिस कन्या की रक्षा की गई थी ,वह उसकी कौन थी-
(A) बुआ (B) बहिन
(C) पत्नी (D) कोई नहीं

54. शिवराजविजयम् में कुल कितने विराम और निःश्वास हैं-
(A) 12 विराम तीन निःश्वास
(B) तीन विराम 12 निःश्वास
(C) 4 निःश्वास तीन विराम
(D) तीन विराम चार निःश्वास

35. (C)	36. (A)	37. (A)	38. (D)	39. (A)	40. (A)	41. (C)	42. (D)	43. (C)	44. (C)
45. (B)	46. (A)	47. (B)	48. (D)	49. (A)	50. (D)	51. (D)	52. (B)	53. (B)	54. (B)

55. गौरसिंह के पिता का नाम है-
(A) उदयवीर (B) खड्गसिंह
(C) रघुवीर सिंह (D) देवशर्मा

56. गौरसिंह ने जिस कन्या की रक्षा यवनयुवक से की थी, उसका नाम है-
(A) सौवर्णी (B) सरस्वती
(C) जीजाबाई (D) इनमें से कोई नहीं

57. 'सतारा नगरी' को किसने अपनी राजधानी बनाया-
(A) रघुवीर सिंह ने (B) शाइस्ता खाँ ने
(C) अफजल खाँ ने (D) शिवाजी ने

58. सुमेलित करें

कवि	उपाधि
क. कालिदास	(1) आतपत्र
ख. अम्बिकादत्तव्यास	(2) श्रीकण्ठ
ग. भारवि	(3) दीपशिखा
घ. भवभूति	(4) घटिकाशतक
ङ. माघ	(5) घण्टा

(A) क. (3) ख. (2) ग. (1) घ. (4) ङ. (5)
(B) क. (3) ख. (4) ग. (1) घ. (2) ङ. (5)
(C) क. (1) ख. (2) ग. (3) घ. (4) ङ. (5)
(D) क. (5) ख. (4) ग. (3) घ. (2) ङ. (1)

59. अम्बिकादत्तव्यास का 'शिवराजविजयम्' सर्वप्रथम कब प्रकाशित हुआ-
(A) 1870 ई0 (B) 1898 ई0
(C) 1901 ई0 (D) 1940 ई0

60. सुमेलित करें-

पात्र	अवस्था
क. गौरसिंह	(1) लगभग 20 वर्ष
ख. यवनयुवक	(2) लगभग 15-16 वर्ष
ग. ब्राह्मणकन्या	(3) लगभग 16 वर्ष
घ. श्यामसिंह	(4) लगभग 7 वर्ष

(A) क. (3) ख. (2) ग. (4) घ. (1)
(B) क. (1) ख. (2) ग. (3) घ. (4)
(C) क. (3) ख. (1) ग. (4) घ. (2)
(D) क. (2) ख. (3) ग. (4) घ. (1)

61. 'व्ययाजिषत्' में लकार है-
(A) लङ् (B) लुङ्
(C) लृङ् (D) लिङ्

62. 'उत्सङ्ग' पद का अर्थ-
(A) वस्त्र (B) चोटी
(C) बादल (D) गोद

63. 'कुलिश' पद का अर्थ है-
(A) कङ्कण (B) कुश
(C) वज्र (D) नोंक

64. ''प्रद्योतस्य प्रियदुहितरं वत्सराजोऽत्र जह्रे'' यहाँ 'वत्सराज' से किसका बोध होता है-
(A) कुबेर का (B) यक्ष का
(C) उदयन का (D) मेघ का

65. ''प्रत्यूषेषु स्फुटितकमलामोदमैत्री कषायः''-यहाँ 'प्रत्यूष' पद का अर्थ है-
(A) प्रभातकाल (B) सन्ध्याकाल
(C) दोपहर का समय (D) रात्रिकाल

66. विन्ध्यपर्वत की तलहटी में बिखरी हुई किस नदी का मेघ सर्वप्रथम दर्शन करता है-
(A) गम्भीरा का (B) नर्मदा का
(C) शिप्रा का (D) निर्विन्ध्या का

67. यक्ष के घर के बाहर क्रीडाशैल पर कौन सा वृक्ष है-
(A) लाल अशोक का (B) मौलश्री का
(C) दोनों (D) इनमें से कोई नही

68. यक्ष भवन के दरवाजे के दोनों ओर कौन सी दो निधियाँ अङ्कित है-
(A) शङ्ख एवं पद्म (B) मुकुन्द एवं कुन्दनील
(C) मकर एवं कच्छप (D) पद्म एवं महापद्म

69. ''प्रायः सर्वो भवति करुणावृत्तिरार्द्रान्तरात्मा'' यह सूक्ति किस ग्रन्थ से उद्धृत है-
(A) उत्तररामचरितम् से (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से
(C) मेघदूतम् से (D) किरातार्जुनीयम् से

70. 'नयेथाः' की व्याकरणात्मक टिप्पणी होगी-
(A) नी + विधिलिङ् + म0पु0 + बहुवचन
(B) नी + लोट् + म0 पु0 + एकवचन
(C) नी + विधिलिङ् + म0पु0 + एकवचन
(D) नी + लोट् + प्र0पु0 + बहुवचन

55. (B)	56. (A)	57. (D)	58. (B)	59. (C)	60. (C)	61. (B)	62. (D)	63. (C)	64. (C)
65. (A)	66. (B)	67. (C)	68. (A)	69. (C)	70. (C)				

71. नपुंसकलिङ्ग पद है-
(A) अक्षि (B) अस्थि
(C) यशः (D) उपर्युक्त सभी

72. 'यह तो मेरी वस्तु है' इसका अनुवाद होगा-
(A) एतत् तु मम वस्तुः अस्ति
(B) एषः तु मम वस्तु अस्ति
(C) अयं तु मम एव वस्तु अस्ति
(D) एतत् तु मम वस्तु अस्ति

73. चतुर्थी विभक्ति एकवचन का रूप नही है-
(A) अमुष्यै (B) शुने
(C) गुणिने (D) इनमें से कोई नही

74. स्त्रीलिङ्ग का रूप नही है-
(A) अस्यै (B) आपः
(C) अमुष्यै (D) जगता

75. एकवचनान्त रूप है-
(A) दृशः (B) अप्सराः
(C) अमूः (D) दिशः

76. कौन सा पद तीनों से लिङ्गभेद के कारण अलग है-
(A) कर्म (B) नाम
(C) शर्म (D) धर्म

77. 'अपृच्छः' रूप किस लकार का है-
(A) लोट् (B) विधिलिङ्
(C) लङ् (D) लृङ्

78. एकवचनान्त रूप है-
(A) शक्नुयाम (B) अशक्नुत
(C) शक्नुयाः (D) शक्नुत

79. कौन सा धातुरूप पुरुष की दृष्टि से अन्य तीनों से पृथक् है-
(A) जानीहि (B) अजानाः
(C) जानीयाः (D) जानीयाम्

80. विधिलिङ् लकार का रूप नही है-
(A) हरेम (B) नयेयम्
(C) लभेत (D) शृणवाम

81. निम्नलिखित में से लोट् लकार का रूप है-
(A) गच्छथ (B) गच्छत
(C) गच्छेत (D) अगच्छत

82. 'संस्कृतम्' इस पद में प्रत्यय है-
(A) अस् (B) घञ्
(C) क्त (D) ल्युट्

83. शुद्ध पद है-
(A) छित्वा (B) भित्वा
(C) कृत्वा (D) दत्वा

84. शुद्ध पद है-
(A) नोदितवान् (B) सिञ्चितवान्
(C) चितवान् (D) उपर्युक्त सभी

85 'मिल् + तुमुन्' के योग से पद निष्पन्न होगा-
(A) मिलितुम् (B) मिलेतुम्
(C) मिलतुम् (D) मेलितुम्

86. शुद्ध वाक्य का चयन करें-
(A) अष्टानि पुस्तकानि आनय (B) अष्टौ पुस्तकानि आनय
(C) अष्टाः पुस्तकानि आनयतु (D) अष्टनि पुस्तकानि आनय

87. 'ढक्' प्रत्यय के स्थान पर आदेश होगा-
(A) आयन् (B) एय्
(C) इय् (D) ईय्

88. 'राष्ट्रियः' में प्रत्यय है-
(A) घ (B) ढ
(C) ख (D) छ

89. 'वटवृक्षः' में सन्धि है-
(A) पूर्वरूप सन्धि (B) पररूप सन्धि
(C) अयादि सन्धि (D) इनमें से कोई नहीं

90. अर्थ की दृष्टि से प्रत्येक श्लोक जहाँ स्वतन्त्र होता है,वह काव्य की कौन सी विधा होती है-
(A) नाटक (B) महाकाव्य
(C) मुक्तककाव्य (D) चम्पूकाव्य

91. भर्तृहरि के विषय में असत्य कथन है-
(A) मालवदेश के राजा भर्तृहरि महाराज गन्धर्वसेन के पुत्र थे।
(B) राजा विक्रमादित्य इनके छोटे भाई थे।
(C) गोरखनाथ की शिष्यता प्राप्त कर योगी हो गये।
(D) 'शतकत्रय' एवं 'वाक्यपदीयम्' के लेखक नहीं हैं।

92. 'येषां न विद्या न तपो ......' रिक्त स्थान की पूर्ति करें-
(A) न ज्ञानम् (B) न दानम्
(C) न गुणो (D) उपर्युक्त सभी

71. (D)	72. (D)	73. (D)	74. (D)	75. (B)	76. (D)	77. (C)	78. (C)	79. (D)	80. (D)
81. (B)	82. (C)	83. (C)	84. (C)	85. (D)	86. (B)	87. (B)	88. (A)	89. (C)	90. (C)
91. (D)	92. (B)								

93. ''वाग्भूषणं भूषणम्'' यह सूक्ति किस कवि से सम्बद्ध है-
(A) भवभूति से (B) भर्तृहरि से
(C) भास से (D) कालिदास से

94. 'वाण्येका' में सन्धि है-
(A) व्यञ्जनसन्धि (B) विसर्गसन्धि
(C) अयादिसन्धि (D) यण्सन्धि

95. ''सत्सङ्गतिः कथय किं न करोति पुंसाम्'' यहाँ 'पुंसाम्' पद में विभक्ति एवं वचन है-
(A) द्वितीया एक० (B) द्वितीया बहु०
(C) षष्ठी एक० (D) षष्ठी बहु०

96. 'सत्सङ्गतिः' पद में कौन सा समास है-
(A) बहुव्रीहि (B) षष्ठी तत्पु०
(C) पञ्चमी तत्पु० (D) कर्मधारय

97. नीतिशतकम् के अनुसार भगवान् विष्णु के प्रसन्न होने पर मानव को क्या मिलता है-
(A) सदाचारी पुत्र (B) पतिव्रता स्त्री
(C) स्नेही मित्र (D) उपर्युक्त सभी

98. 'प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः' यह वाक्य है-
(A) कर्तृवाच्य में (B) कर्मवाच्य में
(C) भाववाच्य में (D) इनमें से कोई नही

99. भर्तृहरि के अनुसार सभी गुण किसमें आश्रित होते हैं-
(A) विद्वानों में (B) गुणी में
(C) वक्ता में (D) धन में

100. 'वश्यवाणीचक्रवर्ती' यह उपाधि किस कवि की है-
(A) कालिदास (B) भारवि
(C) अम्बिकादत्तव्यास (D) बाणभट्ट

101. ''महानयं भुजङ्गः'' बाणभट्ट के लिए यह कथन किसने कहा-
(A) हर्षवर्धन ने (B) कृष्णदेव ने
(C) तेनालीराम ने (D) जयचन्द्र ने

102. बाणभट्ट की क्रमिक वंशपरम्परा का सही क्रम है
(A) पाशुपत-अर्थपति-चित्रभानु-बाणभट्ट-भूषणभट्ट
(B) अर्थपति-पाशुपत-कुबेर-बाणभट्ट-भूषणभट्ट
(C) कुबेर-अर्थपति-चित्रभानु-बाणभट्ट-भूषणभट्ट
(D) वत्स-अर्थपति-कुबेर-बाणभट्ट-भूषणभट्ट

103. बाण के भाई माने जाते हैं-
(A) चित्रसेन (B) मित्रसेन
(C) दोनों (D) इनमें से कोई नहीं

104. गद्यकाव्य है-
(A) उदयसुन्दरीकथा (B) वेमभूपालचरितम्
(C) तिलकमञ्जरी (D) उपर्युक्त सभी

105. जब बाणभट्ट के पिता की मृत्यु हुई, उस समय बाण की अवस्था थी-
(A) 12 वर्ष (B) 18 वर्ष
(C) 14 वर्ष (D) 16 वर्ष

106. ''चरति विमुक्ताहारं व्रतमिव भवतः रिपुस्त्रीणाम्'' यहाँ 'भवतः' पद से किसका बोध हो रहा है-
(A) शुक का (B) शुकनास का
(C) चन्द्रापीड का (D) शूद्रक का

107. एक किंवदन्ती के अनुसार बाणभट्ट का विवाह किसकी बहन से हुआ था-
(A) राजशेखर की (B) मयूरभट्ट की
(C) महिमभट्ट की (D) मम्मट की

108. 'धिया निबद्धेयमतिद्वयी कथा' यहाँ 'कथा' पद से किसका सङ्केत है-
(A) दशकुमारचरितम् (B) अवन्तिसुन्दरीकथा
(C) वासवदत्ता (D) कादम्बरीकथा

109. ''अपरिणामोपशमो दारुणो लक्ष्मीमदः'' यह कथन किसका है-
(A) चन्द्रापीड का (B) शुकनास का
(C) तारापीड का (D) गौरसिंह का

110. ''अनुज्झितधवलतापि सरागैव भवति यूनां दृष्टिः'' यहाँ 'यूनाम्' पद में विभक्ति है-
(A) द्वितीया (B) षष्ठी
(C) प्रथमा (D) सप्तमी

111. शुकनास के अनुसार अनर्थ की परम्परा में परिगणित है-
(A) जन्मजातप्रभुता (B) युवावस्था
(C) अनुपमसौन्दर्य (D) उपर्युक्त सभी

112. समुद्र में लगने वाली आग को कहते हैं-
(A) दावानलः (B) वडवानलः
(C) जठरानलः (D) मुखानलः

93. (B)	94. (D)	95. (D)	96. (B)	97. (D)	98. (C)	99. (D)	100. (D)	101. (A)	102. (A)
103. (C)	104. (D)	105. (C)	106. (D)	107. (B)	108. (D)	109. (B)	110. (B)	111. (D)	112. (B)

113. ''शूरं कण्टकमिव परिहरति, दातारं दुःस्वप्नमिव न स्मरति'' इस वाक्य का कर्तृपद होगा-
(A) लक्ष्मीः
(B) चन्द्रापीडः
(C) राजनीतिः
(D) इनमें से कोई नहीं

114. ''विनीतं पातकिनमिव नोपसर्पति'' इस पंक्ति में अलङ्कार है-
(A) उत्प्रेक्षा (B) उपमा
(C) रूपक (D) यमक

115. 'निम्नगा' पद का अर्थ है-
(A) सर्प (B) नीचे
(C) नदी (D) लक्ष्मी

116. सुमेलित करें-

पति	पत्नी
क. कालिदास	(1) अरुन्धती
ख. भारवि	(2) रसिका
ग. वशिष्ठ	(3) विद्योत्तमा
घ. अगस्त्य	(4) लोपामुद्रा

(A) क. (3) ख. (2) ग. (4) घ. (1)
(B) क. (2) ख. (3) ग. (1) घ. (4)
(C) क. (3) ख. (2) ग. (1) घ. (4)
(D) क. (1) ख. (2) ग. (3) घ. (4)

117. अम्बिकादत्तव्यास की लगभग कितनी रचनायें मानी जाती हैं-
(A) लगभग-70 (B) लगभग-80
(C) लगभग-100 (D) लगभग-50

118. 'अच्छोदसरोवर' का वर्णन किस ग्रन्थ में है-
(A) कादम्बरी में
(B) किरातार्जुनीयम् में
(C) शिशुपालवधम् में
(D) मेघदूतम् में

119. सुमेलित करें -

राजा	राजधानी
क. शूद्रक	(1) हस्तिनापुर
ख. राम	(2) विदिशा
ग. दुष्यन्त	(3) उज्जयिनी
घ. कुबेर	(4) अयोध्या
ङ. तारापीड	(5) अलकापुरी

(A) क. (1) ख. (2) ग. (3) घ. (4) ङ.(5)
(B) क. (3) ख. (2) ग. (5) घ. (4) ङ.(1)
(C) क. (2) ख. (4) ग. (1) घ. (5) ङ.(3)
(D) क. (5) ख. (4) ग. (3) घ. (2) ङ.(1)

120. भर्तृहरि की प्रसिद्धि का कारण है-
(A) एक महान् वैयाकरण
(B) एक नीतिज्ञ राजा
(C) एक शृङ्गारिक और वैरागी कवि
(D) उपर्युक्त सभी

121. ''पयः'' यह कैसा पद है-
(A) सकारान्त नपुं० (B) नकारान्त पु०
(C) अकारान्त पु० (D) अकारान्त नपु.

122. 'व्याकरणम्' पद में कौन सा प्रत्यय है-
(A) अक् (B) ल्युट्
(C) णिनि (D) ष्वुन्

123. संस्कृत शिक्षक से समाज क्या अपेक्षा करता है-
(A) संस्कार की (B) ज्ञान की
(C) उत्तम चरित्र व व्यवहार की (D) उपर्युक्त सभी की

124. शिवराजविजयम् का पात्र नही है–
(A) गौरसिंह (B) शिवाजी
(C) गोकर्ण (D) ब्रह्मचारिगुरु

125. ''नगरे नगरे ग्रामे ग्रामे विलसतु संस्कृतवाणी'' किस संस्था का ध्येयवाक्य है-
(A) संस्कृतगङ्गा का (B) संस्कृतभारती का
(C) राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थान का (D) सम्पूर्णानन्द वि.वि.का

113. (A) 114. (B) 115. (C) 116. (C) 117. (B) 118. (A) 119. (C) 120. (D) 121. (A) 122. (B) 123. (D) 124. (C) 125. (A)

प्रवक्ता चयनपरीक्षा (PGT) आदर्शप्रश्नपत्र–1

01. 'दाशरथिः' में प्रत्यय है-
(A) अण् (B) इञ्
(C) ढक् (D) यञ्

02. 'कन्यायाः अपत्यम्' इस विग्रह वाक्य से सिद्ध होगा-
(A) कन्यकीयः (B) कान्यीयः
(C) कानीनः (D) उपर्युक्त सभी

03. ''राधीक्ष्योर्यस्य विप्रश्नः'' यहाँ 'राधीक्ष्योः' पद का अर्थ है-
(A) राधा का ईक्षण
(B) कृष्ण का समाचार
(C) राधा कृष्ण का प्रेमव्यापार
(D) प्रश्नविषयार्थपर्यालोचन

04. 'संख्यापूर्वो द्विगुः' यह सूत्र किस सूत्र के अधिकार में पढा गया है-
(A) कर्मप्रवचनीयाः (B) कारके
(C) तत्पुरुषः (D) अनभिहिते

05. 'ग्रामजनबन्धुभ्यः' इन पदों से किस प्रत्यय का विधान होगा-
(A) तल् (B) तमप्
(C) तरप् (D) तव्यत्

06. अष्टाध्यायी के त्रिपादी का प्रथम सूत्र है-
(A) अ अ (B) वृद्धिरादैच्
(C) पूर्वत्रासिद्धम् (D) संस्कृतम्

07. अनुस्वार के बाद यय् वर्णों के परे होने पर क्या आदेश होगा-
(A) परसवर्ण (B) पूर्वसवर्ण
(C) अनुस्वार (D) उपर्युक्त सभी

08. अष्टाध्यायी में 'आर्धधातुक संज्ञा' का विधान करने वाले सूत्र कितने हैं-
(A) 4 (B) 5
(C) 3 (D) 9

09. ''सूर्यस्य मानुषी स्त्री = सूरी'' इससे किसका बोध होता है-
(A) उषा का (B) सन्ध्या का
(C) वाग्देवी का (D) कुन्ती का

10. ''यू स्त्र्याख्यौ नदी'' इस सूत्र में 'यू' पद किसका बोधक है-
(A) ई,उ (B) ई,ऊ
(C) इ,उ (D) य,ऊ

11. नटराजराज (शिवजी) ने कितनी बार डमरू बजाया-
(A) नवदशवारम् (B) पञ्चदशवारम्
(C) नवपञ्चवारम् (D) इनमें से कोई नही

12. 'श्वो भविता' यहाँ कौन सा लकार है-
(A) लुट् (B) लृट्
(C) लङ् (D) लुङ्

13. आगम, आदेश आदि विधायक सूत्र कहलाते हैं
(A) संज्ञासूत्र (B) नियमसूत्र
(C) विधिसूत्र (D) परिभाषासूत्र

14. सवर्णग्राहकता का बोध कराने वाला सूत्र है-
(A) तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम्
(B) अणुदित्सवर्णस्य चाप्रत्ययः
(C) मुखनासिकावचनोऽनुनासिकः
(D) आदिरन्त्येन सहेता

15. सांख्य के मत में निष्क्रिय,निर्गुण एवं निर्लिप्त कौन है-
(A) पुरुष (B) प्रकृति
(C) अहङ्कार (D) इनमें से कोई नही

16. महत्तत्व (बुद्धि) मानी जाती है-
(A) प्रकृति (B) विकृति
(C) प्रकृति-विकृति (D) इनमें से कोई नही

17. कर्मेन्द्रिय नही है-
(A) पाणि (B) वाक्
(C) त्वक् (D) पाद

18. 'रसना' ज्ञानेन्द्रिय का विषय माना जाता है-
(A) रस (B) गन्ध
(C) रूप (D) स्पर्श

19. 'रूप' तन्मात्रा से अभिव्यक्त होता है-
(A) वायु (B) तेजस् (अग्नि)
(C) जल (D) पृथिवी

1. (B)	2. (C)	3. (D)	4. (C)	5. (A)	6. (C)	7. (A)	8. (A)	9. (D)	10. (B)
11. (C)	12. (A)	13. (C)	14. (B)	15. (A)	16. (C)	17. (C)	18. (A)	19. (B)	

20. 'ज्ञ' (पुरुष) के अस्तित्व की सिद्धि सांख्य के अनुसार किस प्रमाण से होती है-
(A) आगमप्रमाण से (B) दृष्टप्रमाण से
(C) अनुमानप्रमाण से (D) उपमानप्रमाण से

21. सांख्य मूलप्रकृति को किस प्रमाण से सिद्ध करता है-
(A) आगमप्रमाण से (B) दृष्टप्रमाण से
(C) अनुमानप्रमाण से (D) उपमानप्रमाण से

22. सांख्यमत में अन्तःकरण है-
(A) बुद्धि (B) अहङ्कार
(C) मन (D) उपर्युक्त सभी

23. सांख्य के अनुसार 'न प्रकृतिः न विकृतिः' कौन है-
(A) पुरुष (B) मन
(C) मूलप्रकृति (D) बुद्धि

24. सांख्य मत में प्रकृति विकृति तत्त्व कितने हैं-
(A) 16 (B) 7
(C) 25 (D) केवल एक

25. चार्वाकदर्शन का प्रमाण है-
(A) प्रत्यक्ष (B) अनुमान
(C) शब्द (D) उपर्युक्त सभी

26. ''लिङ्गलिङ्गिपूर्वकम् ....'' यह किस प्रमाण का लक्षण है-
(A) प्रत्यक्षम् (B) अनुमानम्
(C) उपमानम् (D) आगमम्

27. सांख्य के अनुसार जगत् का मूल कारण है-
(A) पुरुष (B) प्रकृति
(C) पञ्चमहाभूत (D) पञ्चवायु

28. ''नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः'' यह पंक्ति किस ग्रन्थ से सम्बद्ध है-
(A) गीता से (B) सांख्यकारिका से
(C) वेदान्तसार से (D) तर्कभाषा से

29. सांख्यदर्शन के अनुसार सूक्ष्मशरीर (लिङ्गशरीर) में कितने अवयव होते हैं-
(A) 18 (B) 17
(C) 16 (D) 25

30. वेदान्तदर्शन के अनुसार लिङ्गशरीर (सूक्ष्मशरीर) में कितने अवयव होते हैं-
(A) 18 (B) 17
(C) 16 (D) केवल एक

31. सप्त अधःलोकों में प्रथम लोक माना जाता है-
(A) अतल (B) वितल
(C) सुतल (D) पाताल

32. ''सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म'' यह वाक्य किस उपनिषद् से उद्धृत है-
(A) बृहदारण्यकोपनिषद् (B) तैत्तिरीयोपनिषद्
(C) ईशावास्योपनिषद् (D) माण्डूक्योपनिषद्

33. ''तत्त्वमसि'' यह महावाक्य किस उपनिषद् का है-
(A) बृहदारण्यकोपनिषद् (B) छान्दोग्योपनिषद्
(C) तैत्तिरीयोपनिषद् (D) ऐतरेयोपनिषद्

34. वेदान्तसार के अनुसार अनुबन्धचतुष्टय में परिगणित नही है-
(A) प्रयोजन (B) उद्देश्य
(C) अधिकारी (D) सम्बन्ध

35. 'रस्सी में भ्रान्तिवश प्रतीत होने वाले सर्प की पुनः रस्सी मात्र के रूप में प्रतीति होना' वेदान्त के अनुसार क्या कहा जायेगा-
(A) अपवाद (B) अज्ञान
(C) अध्यारोप (D) जीवन्मुक्त

36. अद्वैतवाद के प्रवर्तक आचार्य माने जाते हैं-
(A) आदि शङ्कराचार्य (B) गौडपादाचार्य
(C) अद्वैतानन्द (D) अद्वयानन्द

37. वेदान्तानुसार 'मनोमयकोष' का निर्माण होता है-
(A) मन + पञ्चकर्मेन्द्रियाँ (B) मन + पञ्चज्ञानेन्द्रियाँ
(C) बुद्धि + ज्ञानेन्द्रियाँ (D) पञ्चवायु +पञ्चकर्मेन्द्रियाँ

38. वेदान्त के अनुसार 'ब्रह्म' का ज्ञान किस प्रमाण से होगा-
(A) अनुमान प्रमाण से (B) प्रत्यक्ष प्रमाण से
(C) अर्थापत्ति प्रमाण से (D) आगम प्रमाण से

39. निम्न में से प्रकरणग्रन्थ है-
(A) मुद्राराक्षसम् (B) मृच्छकटिकम्
(C) वेणीसंहारम् (D) उपर्युक्त सभी

40. 'शारिपुत्रप्रकरण' के लेखक है-
(A) भट्टनारायण (B) हर्षवर्धन
(C) विशाखदत्त (D) अश्वघोष

20. (A) 21. (C) 22. (D) 23. (A) 24. (B) 25. (A) 26. (B) 27. (B) 28. (A) 29. (A) 30. (B) 31. (A) 32. (B) 33. (B) 34. (B) 35. (A) 36. (A) 37. (B) 38. (D) 39. (B) 40. (D)

41. सुमलित करें-

ग्रन्थ	ग्रन्थकार
क. रसगङ्गाधर	(1) दण्डी
ख. कव्यादर्श	(2) आनन्दवर्धन
ग. चन्द्रालोक	(3) जगन्नाथ
घ. ध्वन्यालोक	(4) राजशेखर
ङ. काव्यमीमांसा	(5) जयदेव

(A) क. (3) ख. (1) ग. (4) घ. (2) ङ. (5)
(B) क. (1) ख. (3) ग. (5) घ. (2) ङ. (4)
(C) क. (3) ख. (1) ग. (5) घ. (2) ङ. (4)
(D) क. (1) ख. (3) ग. (5) घ. (4) ङ. (2)

42. उक्त कर्म में किस विभक्ति का प्रयोग होगा-
(A) प्रथमा (B) द्वितीया
(C) पञ्चमी (D) सप्तमी

43. 'रामेण बाणेन हतो बाली' में करणकारक है-
(A) राम (B) बाण
(C) बाली (D) उपर्युक्त सभी

44. 'पत्ये शेते' यहाँ 'पत्ये' में प्रयुक्त विभक्ति है-
(A) सप्तमी (B) द्वितीया
(C) चतुर्थी (D) पञ्चमी

45. 'गोषु दुह्यमानासु गतः' यहाँ सप्तमी विभक्ति किस सूत्र से हुई है-
(A) निमित्तात् कर्मयोगे (B) साध्वसाधुप्रयोगे
(C) यस्य च भावेन भावलक्षणम् (D) यतश्च निर्धारणम्

46. 'हेतौ' इस सूत्र से किस विभक्ति का विधान होगा-
(A) द्वितीया (B) तृतीया
(C) षष्ठी (D) सप्तमी

47. 'यवेभ्यो गां वारयति' यहाँ 'यवेभ्यो' पद में विभक्ति है-
(A) चतुर्थी (B) पञ्चमी
(C) षष्ठी (D) सप्तमी

48. 'अन्नस्य हेतोर्वसति' में षष्ठी किस सूत्र से हुई है-
(A) षष्ठी शेषे (B) कर्तृकर्मणोः कृति
(C) षष्ठी हेतुप्रयोगे (D) षष्ठ्यतसर्थप्रत्ययेन

49. 'अतसर्थप्रत्यय' के प्रयोग में किस विभक्ति का प्रयोग होगा-
(A) पञ्चमी (B) षष्ठी
(C) चतुर्थी (D) सप्तमी

50. 'अपाय' अर्थ में ध्रुव की क्या संज्ञा होगी-
(A) कर्म (B) सम्प्रदान
(C) अधिकरण (D) अपादान

51. 'ऋते' एवं 'आरात्' के योग में किस विभक्ति का प्रयोग होगा-
(A) सप्तमी (B) षष्ठी
(C) पञ्चमी (D) चतुर्थी

52. 'छन्दःशास्त्र' के प्रवक्ता माने जाते हैं-
(A) पिङ्गल (B) वामन
(C) कुन्तक (D) भरत

53. उपेन्द्रवज्रा तथा इन्द्रवज्रा के मेल से कौन सा छन्द बनेगा-
(A) वंशस्थ (B) उपजाति
(C) मालिनी (D) शालिनी

54. चार यगण वाला छन्द है-
(A) द्रुतविलम्बित (B) भुजङ्गप्रयात
(C) इन्द्रवज्रा (D) उपेन्द्रवज्रा

55. 'भवन्ति नम्रास्तरवः फलोद्गमैः' में छन्द है-
(A) वंशस्थ (B) इन्द्रवज्रा
(C) शालिनी (D) वसन्ततिलका

56. ''अर्थे सत्यर्थभिन्नानां वर्णानां सा पुनः श्रुतिः'' यह किस अलङ्कार का लक्षण है-
(A) अनुप्रास (B) वक्रोक्ति
(C) यमक (D) श्लेष

57. उपमान तथा उपमेय का अभेदारोप होता है-
(A) उत्प्रेक्षा (B) रूपक
(C) यमक (D) उपमा

58. अर्थ के आधार पर काव्य की शोभा बढाते हैं-
(A) छन्द (B) शब्दालङ्कार
(C) अर्थालङ्कार (D) गुण

59. ''लिम्पतीव तमोङ्गानि वर्षतीवाञ्जनं नभः'' इसमें कौन सा अलङ्कार है-
(A) सन्देह (B) उत्प्रेक्षा
(C) रूपक (D) भ्रान्तिमान्

41. (C)	42. (A)	43. (B)	44. (C)	45. (C)	46. (B)	47. (B)	48. (C)	49. (B)	50. (D)
51. (C)	52. (A)	53. (B)	54. (B)	55. (A)	56. (C)	57. (B)	58. (C)	59. (B)	

60. ''नवपलाश-पलाशवनं पुरः''-इसमें कौन सा अलङ्कार है-
(A) रूपक (B) यमक
(C) उत्प्रेक्षा (D) श्लेष

61. गीता महाभारत के किस पर्व में वर्णित है-
(A) आदिपर्व में (B) अनुशासनपर्व
(C) भीष्मपर्व में (D) शान्तिपर्व में

62. गीता में कुल अध्याय एवं श्लोक संख्या है -
(A) 18/650 (B) 18/700
(C) 17/800 (D) 16/750

63. 'पृथापुत्र' कौन है-
(A) कृष्ण (B) द्रोण
(C) दुर्योधन (D) अर्जुन

64. 'काम' से क्या उत्पन्न होता है-
(A) क्रोध (B) लोभ
(C) मोह (D) ध्यान

65. गीता को कर्मप्रधान मानते हैं-
(A) श्रीरामानुजाचार्य (B) शङ्कराचार्य
(C) बालगंगाधरतिलक (D) वल्लभाचार्य

66. गीता का कौन सा अध्याय 'सांख्ययोग' के नाम से प्रसिद्ध है
(A) द्वितीय (B) तृतीय
(C) चतुर्थ (D) पञ्चम

67. अर्जुन के धनुष का क्या नाम है -
(A) पाञ्चजन्य (B) गाण्डीव
(C) पाशुपत (D) पुष्पधन्वा

68. गीता के किस अध्याय में सबसे कम श्लोक हैं-
(A) 12वें (B) 18वें
(C) 10वें (D) 13वें

69. पाण्डवों का सेनापति कौन था-
(A) भीष्म (B) धृष्टद्युम्न
(C) अभिमन्यु (D) युधिष्ठिर

70. ''ऋते .... न मुक्तिः''-रिक्तस्थान की पूर्ति करें-
(A) ज्ञानात् (B) ज्ञानम्
(C) ज्ञानेन (D) ज्ञानस्य

71. 'प्रेमविवाह' का दूसरा नाम है-
(A) आर्ष (B) दैव
(C) ब्राह्म (D) गान्धर्व

72. पाणिनि शिक्षा में कितने वर्ण बताये गये हैं-
(A) 62 (B) 63/64
(C) 61 (D) 60

73. व्याकरण को 'शब्दानुशासन' सर्वप्रथम किसने कहा-
(A) पाणिनि (B) कात्यायन
(C) पतञ्जलि (D) भर्तृहरि

74. पण्डितराज जगन्नाथ ने काव्य की परिभाषा क्या दी है-
(A) वक्रोक्ति काव्यजीवितम्
(B) काव्यस्यात्मा ध्वनिः
(C) वाक्यं रसात्मकं काव्यम्
(D) रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्

75. अष्टाध्यायी के अनुसार धातुओं की संख्या कितनी है-
(A) 4000 (B) 1550
(C) 5020 (D) 1944

76. 'अवस्थानुकृतिर्नाट्यम्' नाटक की यह परिभाषा किसने दी-
(A) भरत ने (B) विश्वनाथ ने
(C) धनञ्जय ने (D) भामह ने

77. शुद्ध प्रयोग है-
(A) अलं विवादः (B) अलं विवादस्य
(C) अलं विवादेन (D) अलं विवादाय

78. भाषा-शिक्षण की विधि है-
(A) अनुकरणविधि (B) अभ्यासविधि
(C) संरचनात्मकविधि (D) उपर्युक्त सभी

79. दूरदर्शन का शिक्षण में उपयोग करते हैं-
(A) शुद्ध उच्चारण में (B) शुद्ध लेखन में
(C) शुद्ध श्रवण में (D) उपर्युक्त सभी

80. वह ऋषिकुमार जो शुक को जाबालि-आश्रम ले जाता है-
(A) कपिञ्जल (B) नारद
(C) हारीत (D) वैशम्पायन

81. शूद्रक की राजधानी विदिशा किस नदी के किनारे स्थित है-
(A) सरयू (B) वेत्रवती
(C) गङ्गा (D) कावेरी

60. (B)	**61. (C)**	**62. (B)**	**63. (D)**	**64. (A)**	**65. (C)**	**66. (A)**	**67. (B)**	**68. (A)**	**69. (B)**
70. (A)	**71. (D)**	**72. (B)**	**73. (C)**	**74. (D)**	**75. (D)**	**76. (C)**	**77. (C)**	**78. (D)**	**79. (D)**
80. (C)	**81. (B)**								

82. वैशम्पायन पूर्वजन्म में था-
(A) कपिञ्जल (B) पुण्डरीक
(C) शूद्रक (D) इन्द्रायुध

83. वह स्थान जहाँ महाश्वेता ने पुण्डरीक को देखा-
(A) हेमकूट (B) आच्छोदसरोवर
(C) विदिशा (D) उज्जयिनी

84. शूद्रक पूर्वजन्म में था-
(A) वैशम्पायन (B) पुण्डरीक
(C) चन्द्रापीड (D) तारापीड

85. 'हर इव जितमन्मथः' में राजा शूद्रक किसकी तरह जितेन्द्रिय है-
(A) विष्णु के समान (B) शिव के समान
(C) इन्द्र के समान (D) ब्रह्मा के समान

86. 'अहो विधातुरस्थाने सौन्दर्यनिष्पादनप्रयत्नः' इस सूक्ति के वक्ता हैं-
(A) शूद्रक (B) चाण्डालकन्या
(C) शुकनास (D) वैशम्पायन

87. 'काव्यं यशसे अर्थकृते' यह कथन किसका है-
(A) मम्मट का (B) विश्वनाथ का
(C) जगन्नाथ का (D) भरत का

88. 'बाणस्तु पञ्चाननः' बाण के लिए यह उपाधि किसने दी-
(A) श्री चन्द्रदेव (B) गोवर्धनाचार्य
(C) जयदेव (D) गङ्गादेवी

89. 'ऋते रवेः क्षालयितुं क्षमेत कः क्षपातमस्काण्डमलीमसं नभः' इस सूक्ति से सम्बद्ध रचना है-
(A) शिशुपालवधम् (B) मृच्छकटिकम्
(C) नलचम्पू (D) किरातार्जुनीयम्

90. किस कवि ने केवल एक रचना की है-
(A) वाल्मीकि ने (B) भारवि ने
(C) माघ ने (D) उपर्युक्त सभी ने

91. शिशुपालवध का उपजीव्यग्रन्थ है-
(A) रामायण (B) महाभारत
(C) शिवपुराण (D) इनमें से कोई नही

92. शिशुपाल पूर्वजन्म में क्या था-
(A) यक्ष (B) गन्धर्व
(C) वृत्रासुर (D) रावण

93. शिशुपालवधम् के अनुसार कृष्ण के पास इन्द्र का संदेश पहुँचाने वाले हैं-
(A) नारद (B) मातलि
(C) जयन्त (D) अर्जुन

94. 'रघुवंशम्' में वर्णित अन्तिम रघुवंशी राजा है-
(A) दिलीप (B) भगीरथ
(C) अग्निवर्ण (D) अग्निमित्र

95. 'दुह्' धातु लोट्लकार प्र0पु0एकवचन का रूप होगा-
(A) दोग्धु (B) दुहतु
(C) दोहतु (D) दोन्धु

96. 'ज्ञा' धातु लोट्लकार उ0पु0 बहुवचन में रूप होगा-
(A) जानामः (B) जानाम
(C) ज्ञाताम (D) जानीमः

97. 'हन्' धातु लङ्लकार प्र0पु0एकवचन का रूप होगा-
(A) अवधीत् (B) अहन्
(C) अहनत् (D) अहनताम्

98. 'बभूव' इसमें कौन सी धातु है-
(A) भू (B) भी
(C) ब्रूम् (D) भृञ्

99. 'शिशु' शब्द का तृतीया एकवचन रूप होगा-
(A) शिशुनेन (B) शिशवेन
(C) शिशुना (D) शिश्वना

100. 'भगवत्' शब्द का 'भगवतः' रूप कहाँ नहीं बनेगा-
(A) द्वितीया बहु0 (B) पञ्चमी एक0
(C) षष्ठी एक0 (D) प्रथमा बहु0

101. 'तेन सह ......भाषितवान्' उपयुक्त पद का चयन करें-
(A) बालिका (B) माता
(C) पिता (D) वयम्

102. '........राजा प्रतिवसति स्म' रिक्तस्थान में उपयुक्त पद का चयन करें-
(A) केनचित् (B) कश्चित्
(C) कतिचित् (D) केचित्

103. 'दधि' शब्द का पञ्चमी एकवचन का रूप होगा-
(A) दध्नः (B) दध्याः
(C) दध्न्यः (D) दध्नोः

104. 'मति' शब्द का षष्ठी बहुवचन का रूप होगा-
(A) मतीनाम् (B) मतीणाम्
(C) मतिनाम् (D) मत्यानाम्

82. (B)	83. (B)	84. (C)	85. (B)	86. (A)	87. (A)	88. (A)	89. (A)	90. (D)	91. (B)
92. (D)	93. (A)	94. (C)	95. (A)	96. (B)	97. (B)	98. (A)	99. (C)	100. (D)	101. (C)
102. (B)	103. (A)	104. (A)							

105. 'मातृ' शब्द का द्वितीया बहुवचन का रूप होगा-
(A) मातृन् (B) मातृः
(C) मातरः (D) माताः

106. 'न खलु धीमतां कश्चिद् अविषयो नाम' यह किसकी उक्ति है-
(A) शकुन्तला (B) अनसूया
(C) काश्यप (D) शार्ङ्गरव

107. दुष्यन्त शकुन्तला की वैवाहिक विधि है-
(A) दैवविवाह (B) आसुरविवाह
(C) ब्राह्मविवाह (D) गान्धर्वविवाह

108. शकुन्तला के शापनिवृत्ति हेतु दुर्वासा से अनुनय विनय करने वाली सखी है-
(A) गौतमी (B) अनसूया
(C) प्रियंवदा (D) सानुमती

109. 'अतिस्नेहः पापशङ्की'-यह सूक्ति अभिज्ञानशाकुन्तलम् के किस अङ्क में है-
(A) पञ्चम (B) षष्ठ
(C) चतुर्थ (D) प्रथम

110. 'डिम' का उदाहरण है-
(A) समुद्रमन्थन (B) त्रिपुरदाह
(C) दूतवाक्यम् (D) अविमारकम्

111. कालिदास द्वारा रचित 'त्रोटक' है-
(A) विक्रमोर्वशीयम्
(B) मालविकाग्निमित्रम्
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(D) ऋतुसंहारम्

112. चारुदत्त की विवाहिता पत्नी है-
(A) धूता (B) वसन्तसेना
(C) मदनिका (D) रदनिका

113. पालक की हत्या करके राजा कौन बनता है-
(A) चारुदत्त (B) शकार
(C) आर्यक (D) मैत्रेय

114. विदूषक युक्त रचना है-
(A) उत्तररामचरितम् (B) मृच्छकटिकम्
(C) मालतीमाधवम् (D) महावीरचरितम्

115. 'बहुदोषा हि सर्वरी' यह सूक्ति किस ग्रन्थ की है-
(A) मृच्छकटिकम् (B) मुद्राराक्षसम्
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (D) नलचम्पू

116. चारुदत्त के घर से बसन्तसेना के आभूषणों की चोरी करने वाला है-
(A) आर्यक (B) पालक
(C) शर्विलक (D) शकार

117. 'प्र' उपसर्ग से बना शब्द नही है-
(A) प्रकारः (B) प्रभेदः
(C) प्रथमः (D) प्रयासः

118. 'स्वागतम्' पद में प्रयुक्त उपसर्ग है-
(A) स्व (B) सु
(C) स्वा (D) इनमें से कोई नही

119. 'यथा गौः तथा गवयः' यह वाक्य किस प्रमाण से सम्बद्ध है-
(A) अनुमान (B) आगम
(C) उपमान (D) प्रत्यक्ष

120. तर्कभाषा किस दर्शन का प्रकरण ग्रन्थ है-
(A) वैशेषिकदर्शन (B) न्यायदर्शन
(C) वेदान्तदर्शन (D) सांख्यदर्शन

121. न्याय के षोडश पदार्थों में परिगणित नही है-
(A) आत्मा (B) प्रमाण
(C) तर्क (D) वितण्डा

122. दमयन्ती कथा के लेखक हैं-
(A) विशाखदत्त (B) शूद्रक
(C) त्रिविक्रमभट्ट (D) श्रीहर्ष

123. दमयन्ती किस राज्य की राजकुमारी थी-
(A) निषधदेश की (B) कुण्डिनपुर की
(C) उज्जयिनी की (D) अलकापुरी की

124. भाषा उत्पत्ति के 'रणन सिद्धान्त' को कहते हैं-
(A) डिंग डांग थ्योरी (B) संकेत सिद्धान्त
(C) आवेग सिद्धान्त (D) सङ्गति सिद्धान्त

125. 'स्थाली-थाली' यहाँ कैसा ध्वनिपरिवर्तन है-
(A) आदि व्यञ्जनलोप (B) आदि स्वरलोप
(C) समाक्षरलोप (D) इनमें से कोई नही

105. (B) 106. (D) 107. (D) 108. (C) 109. (C) 110. (B) 111. (A) 112. (A) 113. (C) 114. (B) 115. (A) 116. (C) 117. (C) 118. (B) 119. (C) 120. (B) 121. (A) 122. (C) 123. (B) 124. (A) 125. (A)

प्रवक्ता चयनपरीक्षा (PGT) आदर्शप्रश्नपत्र– 2

1. 'निष्ठा' प्रत्ययान्त शब्दों का किस समास में पूर्वनिपात होता है-
(A) बहुव्रीहि में (B) द्वन्द्व में
(C) तत्पुरुष में (D) अव्ययीभाव में

2. आनन्दवर्धन के ध्वन्यालोक में कुल कितने उद्योत हैं-
(A) 4 (B) 3
(C) 6 (D) 5

3. राजशेखर की रचना नही है-
(A) बालरामायण (B) काव्यालङ्कार
(C) काव्यमीमांसा (D) कर्पूरमञ्जरी

4. सुमेलित कीजिए-

ग्रन्थकार	ग्रन्थ
(क) मुकुलभट्ट	(i) ध्वन्यालोकलोचन
(ख) अभिनवगुप्त	(ii) औचित्यविचारचर्चा
(ग) जयदेव	(iii) अभिधावृत्तमात्रिका
(घ) क्षेमेन्द्र	(iv) चन्द्रालोक

	क	ख	ग	घ
(A)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(B)	(iii)	(i)	(ii)	(iv)
(C)	(ii)	(iii)	(i)	(iv)
(D)	(iii)	(i)	(iv)	(ii)

5. मम्मट के पिता का नाम माना जाता है-
(A) जैयट (B) कैयट
(C) उव्वट (D) वज्रट

6. 'ये रसस्याङ्गिनो धर्माः शौर्यादय इवात्मनः' इस पंक्ति में किसका लक्षण बताया गया है-
(A) रस का (B) गुण का
(C) दोष का (D) आत्मा का

7. 'निःशेषच्युतचन्दनं स्तनतटं निर्मृष्टरागोऽधरो' यह किस काव्य का उदाहरण है-
(A) गुणीभूतकाव्य का (B) अधमकाव्य का
(C) ध्वनिकाव्य/उत्तमकाव्य का (D) चित्रकाव्य का

8. 'अभिहितान्वयवाद' के समर्थक माने जाते हैं-
(A) कुमारिलभट्ट (B) प्रभाकर गुरू
(C) शालिकनाथ मिश्र (D) क्षेमेन्द्र

9. 'अयं मार्तण्डः किं? स खलु तुरगैः सप्तभिरितः' इस पंक्ति में अलङ्कार है-
(A) स्वाभावोक्ति (B) भ्रान्तिमान्
(C) विरोध (D) ससन्देह

10. गीता में भगवान श्रीकृष्ण द्वारा बजाये गये शङ्ख का क्या नाम है-
(A) पाञ्चजन्य (B) देवदत्त
(C) पौण्ड्र (D) अनन्तविजय

11. गीता के बारहवें अध्याय का नाम है-
(A) विभूतियोग (B) सांख्ययोग
(C) कर्मयोग (D) भक्तियोग

12. पाण्डवों की सेना कितनी थी-
(A) ग्यारह अक्षौहिणी (B) सात अक्षौहिणी
(C) दश अक्षौहिणी (D) बारह अक्षौहिणी

13. पाण्डवपक्षीय योद्धा नही है-
(A) चेकितान (B) काशिराज
(C) विकर्ण (D) पुरुजित्

14. महाभारत युद्ध में सर्वप्रथम शंख किसने बजाया था-
(A) भीष्मपितामह ने (B) श्रीकृष्ण ने
(C) अर्जुन ने (D) दुर्योधन ने

15. गीता में 'गुडाकेश' किसे कहा गया है-
(A) श्रीकृष्ण को (B) भीष्म को
(C) द्रोणाचार्य को (D) अर्जुन को

16. भगवान् श्रीकृष्ण गीता के दशवें अध्याय में स्वयं को समासों में कौन सा समास बताते हैं-
(A) बहुव्रीहि (B) तत्पुरुष
(C) द्वन्द्व (D) अव्ययीभाव

17. 'श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानम्' यह सूक्ति गीता के किस अध्याय में है-
(A) द्वितीय अध्याय (B) तृतीय अध्याय
(C) चतुर्थ अध्याय (D) पञ्चम अध्याय

18. 'निपात एकाजनाङ्' इस सूत्र से किस संज्ञा का विधान किया गया है-
(A) प्रगृह्य (B) निपात
(C) अपृक्त (D) उपसर्ग

1. (A)	2. (A)	3. (B)	4. (D)	5. (A)	6. (B)	7. (C)	8. (A)	9. (D)	10. (A)
11. (D)	12. (B)	13. (C)	14. (A)	15. (D)	16. (C)	17. (C)	18. (A)		

19. 'पति' शब्द की समास में कौन सी संज्ञा होगी-
(A) घि (B) नदी
(C) भ (D) अङ्ग

20. 'षिद्गौरादिभ्यश्च' सूत्र से किस स्त्रीप्रत्यय का विधान किया गया है-
(A) ङीप् (B) ङीष्
(C) ङीन् (D) ऊङ्

21. 'ङीप्' प्रत्ययान्त पद है-
(A) त्रिपादी (B) किशोरी
(C) तरुणी (D) उपर्युक्त सभी

22. 'तरप् और तमप्' प्रत्ययों की क्या संज्ञा होगी-
(A) घि संज्ञा (B) निष्ठा संज्ञा
(C) घ संज्ञा (D) घु संज्ञा

23. कौन सा पद द्विवचनान्त नही है-
(A) उभ (B) उभय
(C) द्वि (D) इनमें से कोई नही

24. 'श्रेयसि केन तृप्यते' यह सूक्ति किस महाकवि से सम्बद्ध है-
(A) माघ (B) कालिदास
(C) भारवि (D) श्रीहर्ष

25. ''धराधरेन्द्रं व्रततीततीरिव' यहाँ 'व्रततीतती:' पद का क्या अर्थ है-
(A) व्रतवीर (B) नारदमुनि
(C) हिमालयपर्वत (D) लताओं का समूह

26. ''नवानधोऽधो बृहत: पयोधरान्'' यहाँ 'बृहत:' में विभक्ति एवं वचन है-
(A) द्वितीया एकवचन (B) प्रथमा बहुवचन
(C) पञ्चमी एकवचन (D) द्वितीया बहुवचन

27. 'अनूरुसारथि:' पद का अर्थ है-
(A) श्रीकृष्ण (B) नारद
(C) सूर्य (D) विष्णुः

28. ''पतत्यधो धाम विसारि सर्वत:'' यहाँ 'धाम' और 'विसारि' पद किस लिङ्ग में प्रयुक्त है-
(A) स्त्रीलिङ्ग (B) पुंलिङ्ग
(C) नपुंसकलिङ्ग (D) अव्ययपदम्

29. 'शिशुपालवधम्' के प्रथम और अन्तिम श्लोक में क्रमशः छन्दों का प्रयोग है-
(A) वंशस्थ-मालिनी (B) वंशस्थ-शिखरिणी
(C) इन्द्रवज्रा-शार्दूलविक्रीडित (D) वंशस्थ-शार्दूलविक्रीडित

30. शिशुपालवधम् के प्रथम सर्ग में कुल श्लोक हैं-
(A) 72 (B) 46
(C) 78 (D) 75

31. ''क्षणे क्षणे यन्नवतामुपैति तदेव रूपं रमणीयताया:'' यह पंक्ति किस कवि से सम्बद्ध है-
(A) कालिदास से (B) त्रिविक्रमभट्ट से
(C) माघ से (D) भारवि से

32. न्यायदर्शन के अनुसार पदार्थो की संख्या कितनी है?
(A) 13 (B) 14
(C) 15 (D) 16

33. न्यायदर्शन के अनुसार हेत्वाभास कितने हैं?
(A) 3 (B) 4
(C) 5 (D) 6

34. नैयायिकों के उपमान प्रमाण का अन्तर्भाव सांख्यदर्शन के किस प्रमाण में होता है-
(A) अनुमानप्रमाण में (B) आप्त प्रमाण में
(C) दृष्ट (प्रत्यक्ष) प्रमाण में (D) इनमें से कोई नही

35. ''रजोजुषे जन्मनि सत्त्ववृत्तये'' यह किस ग्रन्थ का मङ्गलाचरण है-
(A) कादम्बरी का (B) शिशुपालवधम् का
(C) शिवराजविजयम् का (D) हर्षचरितम् का

36. न्यायदर्शन के अनुसार इन्द्रिय और अर्थ का सन्निकर्ष कितने प्रकार का होता है
(A) 6 (B) 7
(C) 9 (D) 8

37. न्याय के अनुसार कारण को कैसा होना चाहिए-
(A) कार्य का सहायक (B) कार्य का उत्तरवर्ती
(C) कार्य का नियतपूर्ववर्ती (D) कार्य का पूर्ववर्ती

38. अन्यथासिद्ध कितने प्रकार का है?
(A) 2 (B) 3
(C) 4 (D) 5

39. नैयायिक अभाव प्रमाण को किसका विषय मानते हैं?
(A) अनुमान का (B) उपमान का
(C) शब्द का (D) प्रत्यक्ष का

40. 'हर इव जितमन्मथ:,कमलयोनिरिव विमानीकृतराज-हंसमण्डल:' यह विशेषण किसका है
(A) चन्द्रापीड का (B) शुकनास का
(C) शूद्रक का (D) तारापीड का

19. (A) 20. (B) 21. (D) 22. (C) 23. (B) 24. (A) 25. (D) 26. (D) 27. (C) 28. (C)
29. (D) 30. (D) 31. (C) 32. (D) 33. (C) 34. (A) 35. (A) 36. (A) 37. (C) 38. (D)
39. (D) 40. (C)

41. 'कुशल' शब्द का अर्थपरिवर्तन क्या कहा जायेगा-
(A) अर्थविस्तार (B) अर्थसंकोच
(C) अर्थादेश (D) इनमें से कोई नही

42. प्रमाण्य को 'स्वतः' और अप्रमाण्य को 'परतः' कौन मानता है?
(A) नैयायिक (B) वेदान्ती
(C) मीमांसक (D) सांख्यवादी

43. 'अ' कौन सा स्वर है-
(A) पश्च स्वर (B) केन्द्रीय स्वर
(C) अग्रस्वर (D) वर्तल स्वर

44. किसके योग में पञ्चमी विभक्ति का प्रयोग नही होगा-
(A) ऋते (B) पृथक्
(C) अन्तरा (D) नाना

45. वेदान्तदर्शनानुसार कौन सी शक्ति परब्रह्म पर जगत् का भ्रम उत्पन्न करती है
(A) अज्ञान (B) आवरण
(C) विक्षेप (D) माया

46. वेदान्तदर्शन किसकी सत्ता स्वीकार करता है?
(A) एकमात्र ब्रह्म की (B) एकमात्र आत्मा की
(C) एकमात्र ईश्वर की (D) एकमात्र परमात्मा की

47. वेदान्त मुख्यतया किस पर आधारित है?
(A) वेदों पर (B) उपनिषदों पर
(C) ब्राह्मण ग्रन्थों पर (D) पुराणों पर

48. जगद्गुरुशङ्कराचार्य के अनुसार जगत् क्या है?
(A) जीव का वैवर्त (B) प्रकृति का वैवर्त
(C) माया का वैवर्त (D) ब्रह्म का वैवर्त

49. वेदान्तदर्शन के अनुसार प्रमाण हैं
(A) 6 (B) 5
(C) 4 (D) 3

50. जगद्गुरुशङ्कराचार्य का मत कौन सा है?
(A) शुद्धवेदान्त (B) द्वैताद्वैतवेदान्त
(C) अद्वैतवेदान्त (D) द्वैतवेदान्त

51. संस्कृत किस परिवार की भाषा है-
(A) द्रविडपरिवार (B) अमेरिकी परिवार
(C) भारोपीय परिवार (D) अफ्रीकी परिवार

52. नलचम्पू की नायिका दमयन्ती की माता का नाम है
(A) प्रियङ्गुमञ्जरी (B) हंसवाहिनी
(C) सारसिका (D) रूपवती

53. गद्यपद्यमय मिश्रशैली में लिखा गया प्रबन्धकाव्य कहलाता है-
(A) महाकाव्य (B) नाटक
(C) चम्पू (D) कथा

54. त्रिविक्रमभट्ट के पिता का नाम था-
(A) नेमादित्य (B) श्रीधर
(C) शाण्डिल्यभट्ट (D) गुणाढ्य

55. राजा नल का महामन्त्री है-
(A) सालङ्कायन (B) श्रुतशील
(C) बाहुक (D) भद्रभूति

56. ''नमस्तस्मै कृता येन रम्या रामायणी कथा'' यहाँ 'तस्मै' शब्द से किसका बोध हो रहा है
(A) त्रिविक्रमभट्ट का (B) भवभूति का
(C) वाल्मीकि का (D) राजा नल का

57. 'किं कवेस्तेन काव्येन किं काण्डेन धनुष्मतः'- यह कथन किस कवि का है-
(A) शूद्रक का (B) कालिदास का
(C) माघ का (D) त्रिविक्रमभट्ट का

58. 'रम्या रामायणी कथा' यह कथन किस ग्रन्थ का है-
(A) वाल्मीकिरामायणम् (B) आनन्दरामायणम्
(C) नलचम्पू (D) भारतचम्पू

59. अर्थोपक्षेपक कितने होते हैं-
(A) 7 (B) 5
(C) 8 (D) 6

60. 'गर्भाङ्क' की योजना किस नाटक में है-
(A) मुद्राराक्षसम् में (B) मृच्छकटिकम् में
(C) उत्तररामचरितम् में (D)अभिज्ञानशाकुन्तलम् में

61. नाटकों की पञ्च कार्यावस्था के अन्तर्गत नही परिगणित है-
(A) यत्न (B) प्राप्त्याशा
(C) नियताप्ति (D) बीज

62. धूर्तों के चरित्र से युक्त एक अङ्कात्मक रचना है-
(A) भाण (B) व्यायोग
(C) समवकार (D) डिम

63. रूपक अलङ्कार का भेद नही है-
(A) साङ्गरूपक (B) परम्परितरूपक
(C) निरङ्गरूपक (D) इनमें से कोई नही

64. कथाकार के रूप में प्रसिद्ध कवि कौन हैं-
(A) भास (B) बाणभट्ट
(C) भामह (D) मयूरभट्ट

65. 'हर्षचरितम्' के कितने उच्छ्वासों में बाण की आत्मकथा वर्णित हैं-
(A) तीन में (B) पाँच में
(C) आठ में (D) चार में

66. हेतु के बिना यदि कार्य की उत्पत्ति का वर्णन हो तो अलङ्कार होगा-
(A) विभावना (B) विशेषोक्ति
(C) कारण (D) परिकर

41. (A)	42. (C)	43. (B)	44. (C)	45. (C)	46. (A)	47. (B)	48. (D)	49. (A)	50. (C)
51. (C)	52. (A)	53. (C)	54. (A)	55. (B)	56. (C)	57. (D)	58. (C)	59. (B)	60. (C)
61. (D)	62. (A)	63. (D)	64. (B)	65. (A)	66. (A)				

67. 'धनिनोऽपि निरुन्मादा युवानोऽपि न चञ्चलाः' यहाँ अलङ्कार है-
(A) विभावना (B) निदर्शना
(C) विशेषोक्ति (D) अप्रस्तुतप्रशंसा

68. 'देवी' शब्द का द्वितीया बहुवचन का रूप है-
(A) देवीन् (B) देवीम्
(C) दैवीः (D) देवीः

69. ''मुख्यार्थहतिः......'' क्या है-
(A) रसः (B) गुणः
(C) दोषः (D) वृत्तिः

70. 'रीतिरात्मा काव्यस्य' यह कथन किसका है-
(A) क्षेमेन्द्र (B) कुन्तक
(C) वामन (D) भामह

71. सुमेलित करें
1. अलङ्कार सम्प्रदाय (क) क्षेमेन्द्र
2. वक्रोक्ति सम्प्रदाय (ख) भरतमुनि
3. औचित्य सम्प्रदाय (ग) आनन्दवर्धन
4. रस सम्प्रदाय (घ) भामह
5. ध्वनि सम्प्रदाय (ङ) कुन्तक
(A) 1.ङ 2.क 3.ग 4.घ 5.ख
(B) 1.क 2.ख 3.ग 4.ङ 5.घ
(C) 1.घ 2.ङ 3.क 4.ख 5.ग
(D) 1.घ 2.ग 3.ख 4.क 5.ङ

72. लक्षणलक्षणा का उदाहरण है-
(A) गङ्गायां घोषः (B) कुन्ताः प्रविशन्ति
(C) आयुर्घृतम् (D) गौर्वाहीकः

73 'गगनं गगनाकारं सागरः सागरोपमः' यह किस अलङ्कार का उदाहरण है-
(A) उपमा (B) अनन्वय
(C) अर्थान्तरन्यास (D) समासोक्ति

74. ''महासत्त्वोऽतिगम्भीरः क्षमावानविकत्थनः'' यह किस नायक का लक्षण है-
(A) धीरललित (B) धीरोदात्त
(C) धीरप्रशान्त (D) धीरोद्धत

75. दशरूपक के अनुसार नायिका के प्रमुख भेद हैं-
(A) 4 (B) 3
(C) 2 (D) 5

76. सात्त्विक भावों की संख्या है-
(A) 8 (B) 7
(C) 6 (D) 33

77. रौद्ररस का 'स्थायीभाव' है-
(A) उत्साह (B) जुगुप्सा
(C) क्रोध (D) विस्मय

78. साहित्यदर्पणकार विश्वनाथ लक्षणा के कितने भेद मानते हैं-
(A) 8 (B) 6
(C) 33 (D) 80

79. संचारी भावों (व्यभिचारीभावों) की कुल संख्या है-
(A) 36 (B) 35
(C) 33 (D) 42

80. 'मृच्छकटिकम्' का नायक चारुदत्त किस कोटि का है-
(A) धीरोदात्त (B) धीरप्रशान्त
(C) धीरललित (D) धीरोद्धत

81. चारुदत्त के पुत्र रोहसेन का मिट्टी की गाडी से खेलना किस अङ्क में वर्णित है-
(A) षष्ठ अङ्क में (B) पञ्चम अङ्क में
(C) दशम अङ्क में (D) सप्तम अङ्क में

82. 'लिम्पतीव तमोऽङ्गानि वर्षतीवाञ्जनं नभः' यह पंक्ति किस ग्रन्थ से उद्धृत है-
(A) नलचम्पू (B) मुद्राराक्षस
(C) मृच्छकटिकम् (D) नीतिशतकम्

83. मृच्छकटिकम् के पञ्चम अङ्क का नाम है-
(A) दुर्दिन (B) प्रवहण-विपर्यय
(C) अलङ्कारन्यास (D) मदनिकाशर्विलक

84. ''अल्पक्लेशं मरणं दारिद्र्यमनन्तकं दुःखम्'' यह कथन किसका है-
(A) वसन्तसेना का (B) धूता का
(C) चारुदत्त का (D) मैत्रेय का

85. 'भाग्यक्रमेण हि धनानि भवन्ति यान्ति'-यह सूक्ति किस ग्रन्थ से सम्बद्ध है-
(A) नीतिशतकम् (B) मृच्छकटिकम्
(C) नलचम्पू (D) गीतगोविन्दम्

86. 'व्यक्तिः' पद किस लिङ्ग में है-
(A) स्त्रीलिङ्ग (B) पुंलिङ्ग
(C) नपुंसकलिङ्ग (D) तीनों लिङ्गों में

87. शुद्ध शब्द का चयन करें -
(A) खातवान् (B) जागृतवान्
(C) गिलितवान् (D) उपर्युक्त सभी

88. 'हितवान्' में कौन सी धातु है-
(A) हा धातु (B) ह्वे धातु
(C) धा धातु (D) ह्वञ् धातु

67. (C)	68. (D)	69. (C)	70. (C)	71. (C)	72. (A)	73. (B)	74. (B)	75. (B)	76. (A)
77. (C)	78. (D)	79. (C)	80. (B)	81. (A)	82. (C)	83. (A)	84. (C)	85. (B)	86. (A)
87. (A)	88. (C)								

89. 'गुरुः त्वाम् आह्वयति' इसका कर्मवाच्य रूप होगा-
(A) गुरुणा त्वाम् आह्वसे (B) गुरुवेण त्वम् आह्वयसे
(C) गुरुणा त्वम् आहूयसे (D) गुरुणा त्वम् आहुयसे

90. कर्मवाच्य की क्रिया नही है-
(A) पठ्येत (B) अपठ्यत
(C) अपाठीत् (D) अपाठि

91. कर्मवाच्य की शुद्ध क्रियापद है-
(A) इच्छ्यते (B) तिष्ठ्यते
(C) यच्छ्यते (D) पीयते

92. 'अध्यापकः छात्रं प्रश्नं पृच्छति' इसका कर्मवाच्य होगा-
(A) अध्यापकेन छात्रं प्रश्नं पृच्छ्यते
(B) अध्यापकेन छात्रः प्रश्नं पृच्छ्यते
(C) अध्यापकेन छात्रं प्रश्नः पृच्छ्यते
(D) अध्यापकेन छात्रः प्रश्नः पृच्छ्यते

93. 'विचिन्तयन्ती यमनन्यमानसा' यहाँ 'विचिन्तयन्ती' पद में कौन सा स्त्रीप्रत्यय है-
(A) ङीप् (B) ङीष्
(C) ङीन् (D) ति

94. 'वैनतेयः' में प्रत्यय है-
(A) अण् (B) यञ्
(C) ढक् (D) छ

95. 'देयम्' में 'यत्' प्रत्यय किस सूत्र से है-
(A) गर्गादिभ्यो यञ् (B) अचो यत्
(C) कृत्याः (D) ऋहलोर्ण्यत्

96. 'कार्यम्-कारकम् -कर्त्ता ' में क्रमशः प्रत्यय है-
(A) यत् -ण्वुल् -तिप् (B) ण्यत् -अक -ति
(C) ण्वुल् -तृच् ण्यत् (D) ण्यत् -ण्वुल्-तृच्

97. 'वाक् +ईशः =वागीशः' में सन्धि किस सूत्र से हुई है-
(A) झलां जशोऽन्ते (B) स्तोः श्चुना श्चुः
(C) यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा (D) खरि च

98. 'अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः' इस सूत्र का उदाहरण है-
(A) शान्तः (B) अङ्कितः
(C) कुण्ठितः (D) उपर्युक्त सभी

99. व्याकरण की पञ्चसन्धियों के अलावा और किस काव्यविधा में पञ्चसन्धि की चर्चा है-
(A) नाटक में (B) महाकाव्य में
(C) चम्पूकाव्य में (D) नीतिकथाओं में

100. 'दुष्टः' का सन्धि विच्छेद होगा-
(A) दुष् +टः (B) दुस् +तः
(C) दुष् +तः (D) दुश् +तः

101. 'र्' के बाद 'र्' हो तो पहले 'र्'का लोप किस सूत्र से हो जाता है-
(A) ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः (B) संयोगान्तस्य लोपः
(C) तस्य लोपः (D) रो रि

102. एकोनसप्ततिः को अङ्कों में क्या कहेंगे-
(A) 69 (B) 79
(C) 71 (D) 70

103. 'त्रि' से लेकर 'अष्टादशन्' तक सारे रूप किस वचन में चलेंगे-
(A) एकवचन में (B) द्विवचन में
(C) बहुवचन में (D) तीनों वचनों में

104. 'इदम्' शब्द का स्त्रीलिङ्ग द्वितीया बहुवचन का रूप होगा-
(A) अमूः (B) इमान्
(C) इमाः (D) अमी

105. तृतीया विभक्ति का रूप नही है-
(A) सरिता (B) वाचा
(C) जगता (D) जनता

106. लोट्लकार का रूप नहीं है-
(A) दोहाम (B) रोदाव
(C) हरत (D) दद्याम

107. बहुवचनान्त रूप है-
(A) कुरुते (B) कुर्वते
(C) कुर्यात् (D) इनमें से कोई नहीं

108. 'गङ्गा के समीप संस्कृतगङ्गा है' इसका अनुवाद होगा-
(A) गङ्गायाः समीपे संस्कृतगङ्गाः अस्ति।
(B) गङ्गा अभितः संस्कृतगङ्गा अस्ति।
(C) गङ्गां निकषा संस्कृतगङ्गा अस्ति।
(D) गङ्गाम् अन्तरा संस्कृतगङ्गा वर्तते।

109. 'संस्कृत के बिना संस्कृति नही है' इसका पद्यात्मक अनुवाद होगा-
(A) विना संस्कृतं नैव संस्कृतिः।
(B) ऋते संस्कृतात् नास्ति संस्कृतिः।
(C) पृथक् संस्कृतं नास्ति संस्कृतिः।
(D) उपर्युक्त सभी

89. (C) 90. (C) 91. (D) 92. (B) 93. (A) 94. (C) 95. (B) 96. (D) 97. (A) 98. (D) 99. (A) 100. (C) 101. (D) 102. (A) 103. (C) 104. (C) 105. (D) 106. (D) 107. (B) 108. (C) 109. (D)

110. 'आशीर्वचनसंयुक्ता स्तुतिर्यस्मात् प्रयुज्यते'' यह लक्षण है-
(A) विषकम्भक का (B) प्रवेशक का
(C) नान्दी का (D) मङ्गलाचरण का

111. दुष्यन्त और शकुन्तला का पुनर्मिलन होता है-
(A) षष्ठ अङ्क में (B) तृतीय अङ्क में
(C) सप्तम अङ्क में (D) द्वितीय अङ्क में

112. 'पश्चात्ताप अङ्क' के नाम से अभिज्ञानशाकुन्तलम् का कौन सा अङ्क प्रसिद्ध है-
(A) षष्ठ (B) पञ्चम
(C) सप्तम (D) तृतीय

113. दुर्वासा के शाप का प्रभाव अभिज्ञानशाकुन्तलम् के किस अङ्क में दिखलाई पडता है-
(A) चतुर्थ अङ्क में (B) पञ्चम अङ्क में
(C) षष्ठ अङ्क में (D) सप्तम अङ्क में

114.'प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः, सरस्वती श्रुतमहतां महीयताम्' यह किस ग्रन्थ का भरतवाक्य है-
(A) मृच्छकटिकम् का (B) उत्तररामचरितम् का
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् का (D) स्वप्नवासवदत्तम् का

115. 'गालव'किसका शिष्य है-
(A) कण्व का (B) विश्वामित्र का
(C) मारीच का (D) वशिष्ठ का

116. सांख्य के अनुसार करण कितने होते हैं-
(A) 11 (B) 13
(C) 25 (D)16

117. सांख्य के अनुसार त्रिगुणों की साम्यावस्था है-
(A) प्रकृति (B) पुरुष
(C) सृष्टि (D) इनमें से कोई नही

118. वेदान्त के 'शमादिषट्कसम्पत्ति' में नही गिना जाता है-
(A) समाधान (B) उपरति
(C) श्रद्धा (D) विश्वास

119. 'ज्योतिष्टोम' आदि कैसा कर्म है-
(A) काम्य कर्म (B) प्रायश्चित्त कर्म
(C) निषिद्ध कर्म (D) उपासना कर्म

120. 'क्षिप्रभाषण' के द्वारा भाषा में होने वाला परिवर्तन है-
(A) इसने-इन्ने (B) स्कूल-इस्कूल
(C) सामाजवादी पार्टी-सपा (D) उपर्युक्त सभी

121. 'राजदन्ताः' यहाँ समास है-
(A) षष्ठी तत्पुरुष (B) बहुव्रीहि
(C) द्वन्द्व (D) केवल समास

122. 'अध्यात्मम्' में समासान्त प्रत्यय है-
(A) टच् (B) अच्
(C) षच् (D) कप्

123. 'अप्रियस्य च पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः' यह सूक्ति किस ग्रन्थ से उदधृत है-
(A) किरातार्जुनीयम् से (B) शिशुपालवधम् से
(C) वाल्मीकिरामायणम् से (D) महाभारतम् से

124. 'ध्वनिनियम' के सन्दर्भ में प्रसिद्ध भाषाशास्त्री नही है-
(A) ग्रिम (B) ग्रासमान
(C) वर्नर (D) रूसो

125. भाषा के उद्भव के विकास में 'संकेत सिद्धान्त' के प्रतिपादक हैं-
(A) रूसो (B) जॉन हॉग
(C) क्रोचे (D) गार्डिनर

110. (C) 111. (C) 112. (A) 113. (B) 114. (C) 115. (C) 116. (B) 117. (A) 118. (D) 119. (A)
120. (A) 121. (A) 122. (A) 123. (C) 124. (D) 125. (A)

प्रवक्ता चयनपरीक्षा (PGT) आदर्शप्रश्नपत्र–3

1. त्रिविक्रमभट्ट का स्थितिकाल माना जाता है-
(A) दशम शताब्दी का पूर्वार्द्ध (B) दशम शताब्दी का उत्तरार्द्ध (C) ग्यारहवीं शताब्दी (D) बारहवीं शताब्दी

2. नलचम्पू काव्य का नायक है-
(A) धीरोदात्त (B) धीरललित
(C) धीरोद्धत (D) धीरप्रशान्त

3. नलचम्पू के मङ्गलाचरण में देव-स्तुति का सही क्रम है-
(A) ब्रह्मा-विष्णु-महेश (B) सरस्वती-शिव-इन्द्र
(C) शिव-पार्वती-सरस्वती (D) शिव-कामदेव-सरस्वती

4. 'पञ्चपात्रम्' पद में समास है-
(A) अव्ययीभाव (B) द्वन्द्व
(C) द्विगु (D) कर्मधारय

5. समास में उपसर्जन का प्रयोग होता है-
(A) पूर्व में (B) मध्य में
(C) अन्त में (D) कहीं भी

6. 'अनुरूपम्' में समास है-
(A) योग्यता अर्थ में (B) वीप्सा अर्थ में
(C) पदार्थाऽनतिवृत्ति अर्थ में (D) सादृश्य अर्थ में

7. 'अपुत्रः' में समास है-
(A) केवल समास (B) नञ् समास
(C) अव्ययीभाव समास (D) बहुव्रीहि समास

8. निम्न में से कौन सा कथन गलत है-
(A) द्वन्द्वसमास में 'च' के चार अर्थ बताये गये हैं।
(B) समुच्चय और अन्वाचय में द्वन्द्वसमास नही होता है।
(C) इतरेतरयोग और समाहार में द्वन्द्वसमास होता है।
(D) द्वन्द्वसमास केवल द्विवचन में होता है।

9. 'आमुक्तेः संसारः' उदाहरण है-
(A) चतुर्थी विभक्ति का (B) द्वितीया विभक्ति का
(C) मर्यादा अर्थ का (D) अभिविधि अर्थ का

10. 'षष्ठी चानादरे' सूत्र का उदाहरण है-
(A) चर्मणि द्वीपिनं हन्ति।
(B) गोषु दुह्यमानासु गतः।
(C) सत्सु तरत्सु असन्त आसते।
(D) रुदति रुदतो वा प्राव्राजीत्

11. 'प्रातिपदिक' में कौन सी विभक्ति आती है-
(A) प्रथमा (B) द्वितीया
(C) तृतीया (D) चतुर्थी

12. कर्म का अभिधान प्रायः कितने प्रकार से होता है-
(A) दो (B) तीन
(C) चार (D) छः

13. 'गां दोग्धि पयः' में अकथित कर्म है-
(A) गाम् (B) पयः
(C) दोनों (D) कोई नहीं

14. 'ब्रह्मणः प्रजाः प्रजायन्ते' में किस सूत्र से 'ब्रह्मणः' की अपादान संज्ञा हुई है-
(A) भुवः प्रभवः (B) ध्रुवमपायेऽपादानम्
(C) जनिकर्तुः प्रकृतिः (D) पराजेरसोढः

15. 'असूया' का अर्थ है-
(A) अमर्ष (B) अपकार
(C) द्रोह (D) गुणों में दोष निकालना

16. निम्न में से कौन सा भिन्न प्रकार का है-
(A) मृच्छकटिकम् -शूद्रक
(B) अभिज्ञानशाकुन्तलम् -कालिदास
(C) शिशुपालवधम् -माघ
(D) उत्तररामचरितम् - भवभूति

17. 'ध्यानयोग' (आत्मसंयमयोग) गीता का कौन सा अध्याय है-
(A) छठवाँ (B) बारहवाँ
(C) सत्रहवाँ (D) पन्द्रहवाँ

18. राजा दुष्यन्त द्वारा शकुन्तला को दी गयी अँगूठी उसे पुनः किस अङ्क में प्राप्त होती है-
(A) पञ्चम अङ्क में (B) द्वितीय अङ्क में
(C) तृतीय अङ्क में (D) षष्ठ अङ्क में

19. 'शकुन्तला को दुर्वासा ने श्राप दिया' यह जानकारी सबसे पहले किसे होती है-
(A) प्रियंवदा को (B) अनसूया को
(C) कण्व को (D) गौतमी को

1. (A)	2. (B)	3. (D)	4. (C)	5. (A)	6. (A)	7. (D)	8. (D)	9. (C)	10. (D)
11. (A)	12. (C)	13. (A)	14. (C)	15. (D)	16. (C)	17. (A)	18. (D)	19. (A)	

20. 'यदि राजा पहचानने से इंकार करे तो उसे उसकी अँगूठी दिखाना' शकुन्तला को ऐसी सलाह कौन देती है-
(A) गौतमी (B) अनसूया
(C) प्रियंवदा (D) अनसूया और प्रियंवदा

21. 'न खलु धीमतां कश्चिदविषयो नाम' यह वाक्य किसके बारे में है-
(A) विश्वामित्र के (B) कण्व के
(C) शकुन्तला के (D) शार्ङ्गरव के

22. 'प्रियङ्गुमञ्जरी' किस ग्रन्थ का स्त्रीपात्र है-
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् की
(B) उत्तररामचरितम् की
(C) मृच्छकटिकम् की
(D) नलचम्पू की

23. 'उत्सवप्रियाः खलु मनुष्याः' किस ग्रन्थ की उक्ति है-
(A) मृच्छकटिकम् की (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम् की
(C) नलचम्पू की (D) शिशुपालवधम् की

24. 'दुष्यन्त द्वारा शकुन्तला को दी गई अँगूठी शचीतीर्थ में गिरी' यह जानकारी प्राप्त होती है-
(A) शकुन्तला के कथन से (B) दुष्यन्त के कथन से
(C)शार्ङ्गरव के कथन से (D) गौतमी के कथन से

25. सांख्य के अनुसार किस प्रमाण की स्वतन्त्र सत्ता नहीं है-
(A) प्रत्यक्ष (B) अनुमान
(C) उपमान (D) शब्द

26. सांख्य के अनुसार 'विकृति' तत्त्व कितने हैं-
(A) पाँच (B) सात
(C) ग्यारह (D) सोलह

27. 'सत्कार्यवाद' की पुष्टि हेतु ईश्वरकृष्ण कितने हेतुओं का उल्लेख करते हैं-
(A) पाँच (B) आठ
(C) तीन (D) छः

28. सांख्यदर्शन का पुरुष नहीं है-
(A) चेतन (B) गुणरहित
(C) प्रसवधर्मी (D) अप्रसवधर्मी

29. ज्ञानेन्द्रियों में गणना नही होती-
(A) बुद्धि की (B) चक्षु की
(C) श्रोत्र की (D) त्वक् की

30. 'मुमुक्षुत्व' की गणना की गयी है-
(A) अनुबन्धचतुष्टय में (B) साधनचतुष्टय में
(C) षट्कसम्पत्ति में (D) पुरुषार्थचतुष्टय में

31. अज्ञान का स्वरूप नहीं है-
(A) अनिर्वचनीय (B) त्रिगुणात्मक
(C) ज्ञानविरोधी (D) अभावरूप

32. सही क्रम में है-
(A) आकाश-वायु-अग्नि-जल-पृथ्वी
(B) आकाश-अग्नि-वायु-जल-पृथ्वी
(C) आकाश-अग्नि-जल-वायु-पृथ्वी
(D) आकाश-जल-अग्नि-वायु-पृथ्वी

33. निम्न में से कौन सा सुमेलित नही है-
(A) प्रज्ञानं ब्रह्म-तैत्तिरीयोपनिषद्
(B) तत्त्वमसि-छान्दोग्योपनिषद्
(C) अहं ब्रह्मास्मि-बृहदारण्यकोपनिषद्
(D) अयमात्मा ब्रह्म-माण्डूक्योपनिषद्

34. भगवद्गीता का प्रारम्भ हुआ है-
(A) धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे .... श्लोक से
(B) क्लैब्यं मा स्म गमः पार्थ .... श्लोक से
(C) तं तथा कृपयाविष्टम् .... श्लोक से
(D) अत्र शूरा महेष्वासा .... श्लोक से

35. भगवद्गीता के द्वितीय अध्याय में श्लोकों की संख्या है-
(A) 72 (B) 73
(C) 74 (D) 75

36. 'भगवद्गीता' महाभारत के किस पर्व का हिस्सा है-
(A) उद्योगपर्व का (B) द्रोणपर्व का
(C) भीष्मपर्व का (D) कर्णपर्व का

37. महाभारत का मुख्य रस है-
(A) शान्तरस (B) वीररस
(C) रौद्ररस (D) करुणरस

38. चारुदत्त की सेविका है-
(A) रदनिका (B) मदनिका
(C) धूता (D) वसन्तसेना

39. 'संवाहक' निवासी है-
(A) अवन्तिका का (B) उज्जयिनी का
(C) काशी का (D) पाटलिपुत्र का

20. (D)	21. (B)	22. (D)	23. (B)	24. (D)	25. (C)	26. (D)	27. (A)	28. (C)	29. (A)
30. (B)	31. (D)	32. (A)	33. (A)	34. (A)	35. (A)	36. (C)	37. (A)	38. (A)	39. (D)

40. मृच्छकटिक है-
(A) शुद्धप्रकरण (B) सङ्कीर्णप्रकरण
(C) नाटक (D) सट्टक

41. शब्दों के एकार्थ नियन्त्रण हेतु भर्तृहरि ने कितने कारण बतायें हैं-
(A) आठ (B) ग्यारह
(C) बारह (D) चौदह

42. 'श्रीपरिचयाज्जडाऽपि भवन्त्यभिज्ञा' उदाहरण है-
(A) गूढव्यङ्ग्य का (B) अगूढव्यङ्ग्य का
(C) रुढिलक्षणा का (D) उपर्युक्त में से किसी का नहीं

43. 'न पर्वताग्रे नलिनी प्ररोहति' यह सूक्ति है-
(A) नीतिशतकम् की (B) मृच्छकटिकम् की
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् की (D) शुकनासोपदेश की

44. 'अभिधावृत्तिमात्रिका' यह ग्रन्थ है-
(A) मम्मट का (B) आनन्दवर्धन का
(C) अभिनवगुप्त का (D) मुकुलभट्ट का

45. 'अनुप्रासः पञ्चधा ततः' यह कथन है-
(A) आचार्य विश्वनाथ का (B) आचार्य मम्मट का
(C) आचार्य दण्डी का (D) पण्डितराजजगन्नाथ का

46. 'शब्दपरिवृत्ति असहत्त्व' धर्म है-
(A) गुणों का (B) अर्थालङ्कारों का
(C) शब्दालङ्कारों का (D) रीतियों का

47. न्यायदर्शन के षोडश पदार्थों में प्रथम परिगणित है–
(A) संशय (B) प्रमेय
(C) तर्क (D) प्रमाण

48. तर्कभाषा के अनुसार हेतु हैं-
(A) त्रिविध (B) द्विविध
(C) पञ्चविध (D) षड्विध

49. 'सूर्या' में प्रत्यय है-
(A) टाप् (B) डाप्
(C) आप् (D) चाप्

50. दस हजार (10000) को कहते हैं-
(A) सहस्त्रम् (B) नियुतम्
(C) प्रयुतम् (D) अयुतम्

51. नारी में प्रत्यय है-
(A) ङीप् (B) ङीष्
(C) ङीन् (D) ईन

52. 'शब्दोऽभिधेयः प्रमेयत्वात्' उदाहरण है-
(A) केवलान्वयी हेतु का (B) केवल व्यतिरेकी हेतु का
(C) अन्वय व्यतिरेकी हेतु का (D) असत्प्रतिपक्ष का

53. 'भवन्ति नापुण्यकृतौ मनीषिणः' सूक्ति का प्रयोग है-
(A) किरातार्जुनीयम् में (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में
(C) शिशुपालवधम् में (D) नीतिशतकम् में

54. महाकवि माघ जाने जाते है-
(A) उपमा के लिए (B) अर्थगौरव के लिए
(C) पदलालित्य के लिए (D) उपर्युक्त सभी के लिए

55. प्रगृह्यसंज्ञा किसकी होती है-
(A) एकवचन की (B) द्विवचन की
(C) स्वर की (D) किसी की नहीं

56. ''न वेति विभाषा'' से 'वा' द्वारा क्या प्रदर्शित होता है-
(A) गुण (B) वृद्धि
(C) बाधा (D) विकल्प

57. 'इदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम्' सूत्र किससे सम्बन्धित है-
(A) पररूपसन्धि से (B) पूर्वरूपसन्धि से
(C) अयादिसन्धि से (D) प्रकृतिभावसन्धि से

58. 'साध्वागच्छ' इसमें कौनसी सन्धि हुई है-
(A) दीर्घ सन्धि (B) यण् सन्धि
(C) गुण सन्धि (D) अयादि सन्धि

59. 'सभैषा' का सन्धिविच्छेद होगा-
(A) सभा + एषा (B) सभै + षाः
(C) सभ + एषाः (D) सभै + एषा

60. कः + गच्छति = होगा-
(A) का गच्छति (B) को गच्छति
(C) कर्गच्छति (D) क गच्छति

61. कर्त्रेषणा का सन्धिविच्छेद होगा-
(A) कर्त्रा + इषणा (B) कर्त्रे + इषणा
(C) कर्तृ + इषणा (D) कर्त्रे + ईषणा

62. चतुर्थी तत्पुरुष समास किसमें होगा -
(A) गोरक्षितम् (B) रामाश्रितः
(C) राजर्षिः (D) राजपुरुषः

63. 'मातृपुत्रौ' यहाँ कौन सा समास होगा-
(A) केवलसमास (B) द्विगुसमास
(C) द्वन्द्वसमास (D) बहुव्रीहिसमास

40. (B)	41. (D)	42. (B)	43. (B)	44. (D)	45. (A)	46. (C)	47. (D)	48. (A)	49. (D)
50. (D)	51. (C)	52. (A)	53. (B)	54. (D)	55. (B)	56. (D)	57. (D)	58. (B)	59. (A)
60. (B)	61. (A)	62. (A)	63. (C)						

64. 'द्वादश' पद में कौन सा समास होगा-
(A) द्वन्द्व (B) अव्ययीभाव
(C) कर्मधारय (D) द्विगु

65. यहाँ 'तद्धितप्रत्यय' का उदाहरण है-
(A) गोमान् (B) शयानः
(C) गतिः (D) पचन्

66. 'पच् + घञ्' क्या होगा-
(A) पाकः (B) पाचः
(C) पचनम् (D) पक्वम्

67. 'सा पत्रं लेखितुम् इच्छति'-इसको कहेंगे-
(A) सा पत्रं लिखिषति (B) सा पत्रं लिखिक्षति
(C) सा पत्रं लेलिखति (D) सा पत्रं लिलिखिषति

68. 'दा + शतृ'- इसका रूप क्या होगा-
(A) ददानः (B) ददन्
(C) ददत् (D) दद्यन्

69. 'लक्ष्मीः अस्य/अस्मिन् वा अस्तीति'-इसका रूप होगा-
(A) लक्ष्मीवान् (B) लक्ष्मीमान्
(C) लक्ष्मीपः (D) लक्ष्मीशः

70. 'ग्रह्' धातोः 'ण्यत्' प्रत्यय युक्त रूप होगा-
(A) ग्राह्यति (B) ग्रह्यम्
(C) ग्राह्यम् (D) ग्रह्यः

71. आचार्य विश्वनाथ शब्दालङ्कारों का वर्णन करते है-
(A) नवें उल्लास में (B) नवें परिच्छेद में
(C) दसवें परिच्छेद में (D) नवें और दसवें परिच्छेद में

72. गुणः अस्य अस्ति इति-
(A) गुणज्ञः (B) गुणीः
(C) गुणवान् (D) गुणिः

73. 'तपस्' शब्द का तृतीया बहुवचन होगा-
(A) तपोभिः (B) तपसाभिः
(C) तपसैः (D) तपसाभ्यां

74. 'वाक्' शब्द का तृतीया एकवचन का रूप होगा-
(A) वाचेन (B) वागेन
(C) वाचा (D) वाच्या

75. 'अप्' शब्द का द्वितीया बहुवचन रूप होगा-
(A) अपाः (B) आपः
(C) अपः (D) अपान्

76. 'वारि' शब्द का द्वितीया बहुवचन रूप होगा-
(A) वारिम् (B) वारीः
(C) वारीन् (D) वारीणि

77. 'महिमन्' शब्द का प्रथमा एकवचन का रूप होगा-
(A) महिमा (B) महिमान्
(C) महिमन् (D) महिमानः

78. 'शिशु' शब्द का सप्तमी एकवचन होगा-
(A) शिशवे (B) शिशुनि
(C) शिशौ (D) शिश्वायाम्

79. चारुदत्त के घर से बसन्तसेना के आभूषणों की चोरी करने वाला है-
(A) आर्यक (B) शर्विलक
(C) पालक (D) चन्दनक

80. यहाँ शुद्ध वाक्य कौन सा होगा-
(A) तौ पठताम् (B) ते पठति
(C) सः पठथः (D) ते पठित

81. 'ज्ञा' धातु लोट् लकार उ.पु. बहुवचन होगा-
(A) जानीत् (B) जानाव
(C) जानाम (D) ज्ञाताम

82. 'दा' धातु लोट्लकार, मध्यमपुरुष एकवचन होगा-
(A) ददातु (B) ददा
(C) देहि (D) दद

83. 'भी' धातु लट्लकार प्रथमपुरुष बहुवचन होगा-
(A) बीभ्यन्ति (B) बिभेति
(C) बिभ्यन्ति (D) बिभ्यति

84. यदि अयं पूर्वमेव जानाति तर्हि सर्वान् ......
(A) ज्ञापयेत्
(B) ज्ञानीयं
(C) ज्ञापितवान्
(D) ज्ञापयिष्यमि

85. 'जुहोमि' हु-धातु का यह किस लकार का रूप है-
(A) लुट् (B) लिट्
(C) लट् (D) लिङ्

86. 'हन्' धातु लोट्लकार म. पु. एकवचन होगा-
(A) हन्तु (B) हतन्तु
(C) जहि (D) हनन्तु

64. (A)	65. (A)	66. (A)	67. (D)	68. (C)	69. (A)	70. (C)	71. (C)	72. (C)	73. (A)
74. (C)	75. (C)	76. (D)	77. (A)	78. (C)	79. (B)	80. (A)	81. (C)	82. (C)	83. (D)
84. (A)	85. (C)	86. (C)							

87. शुद्ध वाक्य क्या है-
(A) भूपत्यै स्वस्ति (B) भूपत्ये स्वस्ति
(C) भूपतिं स्वस्ति (D) भूपतये स्वस्ति

88. शुद्ध वाक्य क्या है-
(A) सिंहेन बालः बिभ्यति (B) सिंहाय बालः बिभ्यति
(C) सिंहात् बालः बिभ्यति (D) सिंहात् बालः बिभेति

89. शुद्ध वाक्य क्या है-
(A) सीतया गीतां पठ्यते (B) सीतया गीता पठति
(C) सीतया गीता पठयते (D) सीतया गीता पठ्यते

90. शुद्ध वाक्य क्या है-
(A) गुरवे प्रश्नं पृच्छति (B) गुरोः प्रश्नं पृच्छति
(C) गुरुं प्रश्नं पृच्छति (D) गुरुणा प्रश्नं पृच्छति

91. शुद्ध कर्मवाच्य होगा-
(A) सर्वे विद्वासं पूजयन्ति (B) सर्वैः विद्वान् पूज्यते
(C) सर्वैः विद्वान् पूज्यन्ते (D) सर्वेण विद्वान् पूज्यन्ते

92. 'अस्माभिः स्मर्यते' कर्तृवाच्य क्या होगा-
(A) अस्माभिः स्मर्यन्ते (B) वयं स्मरामः
(C) अहं भवनं गच्छथ (D) त्वं भवनं गच्छसि

93. सभी लिङ्गों में किसका रूप एकसमान ही रहता है-
(A) प्रातिपादिक (B) पद
(C) धातु (D) अव्यय

94. 'ससखि' में कौन सा अव्यय है-
(A) सह (B) साकम्
(C) समम् (D) सार्धम्

95. 'नीरसम्' शब्द में प्रयुक्त उपसर्ग है-
(A) निर् (B) नि
(C) नीर् (D) निस्

96. 'सर्गबन्धो महाकाव्यं तत्रैको नायकः सुरः' इस महाकाव्य लक्षण के प्रस्तोता आचार्य हैं-
(A) आचार्य दण्डी
(B) विश्वनाथकविराज
(C) आचार्य मम्मट
(D) पण्डितराज जगन्नाथ

97. मेघदूतम् की नायिका है-
(A) साधारण (B) परकीया
(C) अभिसारिका (D) स्वकीया

98. पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति हेतु इन्द्रकील पर तपस्या करने वाला है-
(A) अर्जुन (B) युधिष्ठिर
(C) भीम (D) किरात

99. भारवि की कविता पर प्रभाव पड़ा है-
(A) कालिदास की कविता का (B) माघ की कविता का
(C) बाण की कादम्बरी का (D) श्रीहर्ष के नैषध का

100. भारवि की काव्यप्रतिभा को बाहर से कठोर और अन्दर से रसपेशल किसने कहा है-
(A) मल्लिनाथ (B) धनिक
(C) लक्ष्मीधर (D) विश्वनाथ

101. कठोर भूमि पर कौन सोते हैं-
(A) नकुल-सहदेव (B) भीम-नकुल
(C) दुष्यन्त-शकुन्तला (D) दुर्योधन-दुःशासन

102. बृहत्त्रयी से संकेतित महाकाव्य है-
(A) रामायण, महाभारत, गीता
(B) किरातार्जुनीयम् , शिशुपालवधम् , नैषधम्
(C) रघुवंशम् , मेघदूतम् , कुमारसम्भवम्
(D) नैषधम् , रघुवंशम् , जाम्बवतीविजयम्

103. शिशुपालवधम् की सर्ग/श्लोक संख्या है-
(A) 20/1650 (B) 18/2000
(C) 22/2828 (D) 18/1040

104. शिशुपाल के वधकर्ता हैं-
(A) अर्जुन (B) भीम
(C) श्रीकृष्ण (D) बलराम

105. द्वारकाधीश के पास इन्द्र का सन्देश पहुँचाने वाले हैं-
(A) नारद (B) मातलि
(C) जयन्त (D) अग्नि

106. दमयन्ती के पिता हैं-
(A) कुण्डिननरेश भीम (B) अर्जुन
(C) युधिष्ठिर (D) नल

107. कादम्बरी का उपजीव्य है-
(A) कथासरित्सागर (B) वासवदत्ता
(C) बृहत्कथा (D) शूद्रककथा

108. श्लेष का सर्वोत्कृष्ट गद्यकाव्य है-
(A) कादम्बरी (B) बृहत्कथा
(C) वासवदत्ता (D) इनमें से कोई नहीं

87. (D) 88. (D) 89. (D) 90. (C) 91. (B) 92. (B) 93. (D) 94. (A) 95. (A) 96. (B) 97. (D) 98. (A) 99. (A) 100. (A) 101. (A) 102. (B) 103. (A) 104. (C) 105. (A) 106. (A) 107. (C) 108. (C)

109. कादम्बरी में वर्णन नहीं हैं-
(A) अच्छोद सरोवर का (B) पम्पा सरोवर का
(C) शाल्मली वृक्ष का (D) मारीचि आश्रम का

110. 'कादम्बरी' का पर्याय है-
(A) देवी (B) भगवती
(C) मदिरा (D) सुन्दरी

111. पुण्डरीक की माता है-
(A) लक्ष्मी (B) महालक्ष्मी
(C) गौरी (D) मदिरा

112. बाण की मृत्यु के बाद शेष कादम्बरी की रचना करने वाले कौन हैं-
(A) पुलिन्द (भूषण) (B) चित्रभानु
(C) गणपति (D) पाशुपत

113. उज्जयिनी का वह राजा जिसे चन्द्रापीड का पिता होने का गौरव प्राप्त है-
(A) तारापीड (B) शुकनास
(C) चित्ररथ (D) विक्रमादित्य

114. जरद्द्रविण धार्मिक से सम्बद्ध ग्रन्थ है-
(A) स्वप्नवासवदत्तम् (B) कादम्बरी
(C) दशकुमारचरितम् (D) मृच्छकटिकम्

115. 'नाटकं ख्यातवृत्तं स्यात् पञ्चसन्धिसमन्वितम्' इस नाटक लक्षण के प्रस्तुतकर्ता आचार्य हैं-
(A) मम्मट (B) जगन्नाथ
(C) दण्डी (D) विश्वनाथ

116. किसी नाटक के मध्य अन्य नाटक की योजना है-
(A) महानाटक (B) भरतनाट्यम्
(C) गर्भनाटक (D) नाटकाभास

117. नाट्यशास्त्र में 'नान्दी' से अभिप्रेत है-
(A) बैल (B) नन्दपुत्री
(C) नवनन्द की दासी (D) मङ्गलाचरण

118. अन्तःपुर की रक्षा के लिए नियुक्त सत्यवादी, वृद्ध एवं विवेकशील व्यक्ति है-
(A) प्रतीहारी (B) कञ्चुकी
(C) सदाचारी (D) ब्रह्मचारी

119. 'प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः' इस भरतवाक्य से युक्त रचना है-
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (B) मृच्छकटिकम्
(C) स्वप्नवासवदत्तम् (D) इनमें से कोई नहीं

120. 'अग्निगर्भा शमी' के समान है-
(A) शकुन्तला (B) अनसूया
(C) प्रियंवदा (D) हंसपदिका

121. अभिज्ञानशाकुन्तलम् का विदूषक है-
(A) मैत्रेय (B) माढव्य
(C) वसन्तक (D) इनमें से कोई नहीं

122. 'भवितव्यानां द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र' इस सूक्ति से सम्बद्ध ग्रन्थ है-
(A) मृच्छकटिकम् (B) नैषधम्
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (D) रघुवंशम्

123. दुष्यन्त को देवासुर संग्राम की सूचना देने वाला है-
(A) मातलि (B) इन्द्र
(C) नारद (D) दुर्मुख

124. शर्विलक की पत्नी है-
(A) वसन्तसेना (B) मदनिका
(C) धूता (D) रदनिका

125. 'वेश्या श्मशानसुमना इव वर्जनीयाः' से युक्त है-
(A) नैषधम् (B) शिशुपालवधम्
(C) मृच्छकटिकम् (D) रघुवंशम्

**109. (D) 110. (C) 111. (A) 112. (A) 113. (A) 114. (B) 115. (D) 116. (C) 117. (D) 118. (B)
119. (A) 120. (A) 121. (B) 122. (C) 123. (A) 124. (B) 125. (C)**

संस्कृत-सामान्यज्ञान-प्रश्नाः

1. सुमेलितं क्रियताम्–
ध्येयवाक्यम्-(Motto) संस्था (Institute)

(1) बहुजनहिताय बहुजनसुखाय — (क) सम्पूर्णानन्द-संस्कृत-विश्वविद्यालयः
(2) कृण्वन्तो विश्वमार्यम् — (ख) दूरदर्शनम्
(3) विद्ययाऽमृतमश्नुते — (ग) आर्यसमाजः
(4) श्रुतं मे गोपाय — (घ) काशी-हिन्दू-विश्वविद्यालयः
(5) सत्यं शिवं सुन्दरम् — (ङ) ऑल इण्डिया रेडियो

(A) 1 (ङ) 2 (क) 3 (ग) 4 (ख) 5 (घ)
(B) 1 (क) 2 (ग) 3 (ख) 4 (घ) 5 (ङ)
(C) 1 (ङ) 2 (ग) 3 (घ) 4 (क) 5 (ख)
(D) 1 (ख) 2 (ग) 3 (घ) 4 (क) 5 (ङ)

2. ''नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम्'' कस्य ग्रन्थस्य मङ्गलपद्यम् एतत्?
(A) अष्टाध्याय्याः (B) महाभारतस्य
(C) वाल्मीकिरामायणस्य (D) श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य

3. श्रीमद्भगवद्गीता महाभारते कुत्र वर्णितम्–
(A) भीष्मपर्वणि (25-42 अध्यायेषु)
(B) भीष्मपर्वणि (23-40 अध्यायेषु)
(C) भीष्मपर्वणि (20-37 अध्यायेषु)
(D) भीष्मपर्वणि (40-57 अध्यायेषु)

4. किशोरावस्थायामेव 'पुनरपि जननं पुनरपि मरणं ....' इति संस्कृतगीतस्य रचयिता कः?
(A) आदिशङ्कराचार्यः (B) महर्षि-दयानन्दः
(C) विवेकानन्दः (D) बालगङ्गाधरतिलकः

5. भारतसर्वकारेण ''संस्कृतवर्षम्'' कदा उद्घोषितम्?
(A) सन् 1999-2000 (B) सन् 2002-2003
(C) सन् 2001-2002 (D) सन् 2003-2004

6. 'विश्वसंस्कृतपुस्तकमेला' सर्वप्रथमं कुत्र आयोजितम्?
(A) नवदेहल्याम् (B) बेङ्गलूरुनगरे
(C) काश्याम् (D) कलकत्तानगरे

7. षोडश्यां लोकसभायां कति संसद्सदस्याः संस्कृतेन शपथग्रहणं कृतवन्तः?
(A) 30 (B) 34
(C) 36 (D) 38

8. लोकसभायां कः संस्कृतेन शपथग्रहणं न कृतवान्?
(A) डॉ. हर्षवर्धनः (B) राजनाथसिंहः
(C) सुश्री उमाभारती (D) श्रीमती सुषमास्वराज

9. प्रधानमन्त्री नरेन्द्रमोदी कस्मिन् दिनाङ्के शपथग्रहणं कृतवान्?
(A) 16 मई 2014 (B) 18 मई 2014
(C) 06 मई 2014 (D) 26 मई 2014

10. सुमेलितं करोतु–
देवः उपनाम

(1) श्रीरामः — (क) चक्रपाणिः
(2) बलभद्रः — (ख) कोदण्डपाणिः
(3) यमः — (ग) त्रिशूलपाणिः
(4) शिवः — (घ) पाशपाणिः
(5) विष्णुः — (ङ) मुसलपाणिः

(A) (1) ग (2) घ (3) ङ (4) क (5) ख
(B) (1) ख (2) ङ (3) घ (4) ग (5) क
(C) (1) ङ (2) ख (3) ग (4) क (5) घ
(D) (1) ख (2) ङ (3) घ (4) क (5) ग

11. ''वेदे विज्ञानम् अस्ति'' इति कः वेदभाष्यकरः सर्वप्रथम् उद्घोषितवान्?
(A) महर्षि-दयानन्दः (B) महर्षिः अरविन्दः
(C) विनोबाभावे (D) रविन्द्रनाथटैगोरः

12. सचित्रा बालानां मासिकी पत्रिका का?
(A) लोकसंस्कृतम् (B) संस्कृतमञ्जरी
(C) संस्कृतचन्दमामा (D) सम्भाषणसन्देशः

13. सम्भाषणसन्देशपत्रिका कुतः प्रकाशिता भवति?
(A) नवदेहलीतः (B) बेङ्गलूरुतः
(C) हरिद्वारतः (D) काशीतः

1. (C)	2. (B)	3. (A)	4. (A)	5. (A)	6. (B)	7. (B)	8. (B)	9. (D)	10. (B)
11. (A)	12. (C)	13. (B)							

14. संस्कृतसम्भाषणाय संस्कृतविकासाय च 35 वर्षेभ्यः या समाजे कार्यं करोति सा संस्था का?
(A) संस्कृतभारती (B) राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्
(C) संस्कृतविकाशपरिषद् (D) सार्वभौमसंस्कृतप्रचारसंस्थानम्

15. प्राचीनभारतस्य नालन्दाविश्वविद्यालयः कस्मिन् राज्ये स्थितः आसीत्?
(A) बिहारप्रान्ते (B) गुजरातप्रान्ते
(C) उत्तरप्रदेशे (D) बङ्गालप्रान्ते

16. आद्यशङ्कराचार्येण उत्तरदिशि कः मठः स्थापितः?
(A) बदरीमठः (B) द्वारकामठः
(C) शृङ्गेरीमठः (D) पुरीमठः

17. तत् पवित्रं स्थानं किं यत् इदानीं भारते अस्ति?
(A) मानसरोवरम् (B) कैलाशपर्वतः
(C) केदारनाथः (D) उपर्युक्तं सर्वम्

18. गणितक्षेत्रे विज्ञानक्षेत्रे संस्कृतज्ञानां योगदानं किम्?
(A) शून्यस्य (0) अन्वेषणम्
(B) आयुर्वेदवैद्यपद्धतिः
(C) अणुसिद्धान्तः, योगपद्धतिः च
(D) उपर्युक्तं सर्वम्

19. संस्कृतविश्वविद्यालयेन सह स्थानं योजयतु?

संस्कृतविश्वविद्यालयः	स्थानम्
(1) सम्पूर्णानन्दसंस्कृत-विश्वविद्यालयः	(क) गान्धिनगरम्, गुजरातम्
(2) कालिदाससंस्कृत-विश्वविद्यालयः	(ख) जयपुरम्, राजस्थानम्
(3) जगद्गुरुरामानन्दसंस्कृत-विश्वविद्यालयः	(ग) वाराणसी, उत्तरप्रदेशः
(4) राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्-(मानितविश्वविद्यालयः)	(घ) रामटेक, महाराष्ट्रम्
(5) सोमनाथसंस्कृत-विश्वविद्यालयः	(ङ) नयीदिल्ली

(A) (1) ग (2) घ (3) क (4) ख (5) ङ
(B) (1) ग (2) क (3) ख (4) घ (5) ङ
(C) (1) क (2) ङ (3) ख (4) ग (5) घ
(D) (1) ग (2) घ (3) ख (4) ङ (5) क

20. भगवद्गीतायाः अनुवादः प्रथमतया आंग्लभाषया कः कृतवान्?
(A) सर् चार्ल्स विल्कन्स (B) कीथः
(C) ब्लूमफील्ड् (D) मैक्डानेल

21. अमरकोषस्य प्रथमतया अनुवादः कया भाषया कृतः?
(A) रसियनभाषया (B) जर्मनभाषया
(C) चीनीभाषया (D) अंग्रेजीभाषया

22. कस्यां तिथौ भारतं स्वतन्त्रम् अभवत्?
(A) आषाढ-अमावस्यायाम्
(B) श्रावणीपूर्णिमायाम्
(C) देवप्रबोधिनी-एकादश्याम्
(D) चैत्रप्रतिपदायाम्

23. 'पञ्चाङ्गम्' इत्यत्र पञ्च अङ्गानि कानि?
(A) तिथिः, वासरः, नक्षत्रम्, करणम्, योगः
(B) तिथिः, दिनम्, वर्षम्, नक्षत्रम्, योगः
(C) दिनम्, योगः, वासरः, नक्षत्रम्, ताराः
(D) वर्षम्, मासः, दिनम्, तिथिः, समयः

24. पातञ्जलयोगसूत्रस्य प्रथमं सूत्रं किम्?
(A) अथातो ब्रह्मजिज्ञासा (B) योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः
(C) अथ योगानुशासनम् (D) अथातो धर्मजिज्ञासा

25. 'पाइथागोरस्-सिद्धान्तः' इति प्रसिद्धसिद्धान्तः भारतीयग्रन्थे बहुपूर्वम् एव कुत्र प्रतिपादितः आसीत्?
(A) उपनिषद्ग्रन्थेषु (B) शुल्बसूत्रेषु
(C) व्याकरणग्रन्थेषु (D) निरुक्तग्रन्थेषु

26. सप्तर्षयेषु कः न गण्यते?
(A) भरद्वाजः (B) वशिष्ठः
(C) अगस्त्यः (D) जमदग्निः

27. महाभारतयुद्धं कति दिनानि प्राचलत्?
(A) 18 दिनानि (B) 8 दिनानि
(C) 10 दिनानि (D) 21 दिनानि

28. महाभारतयुद्धे कौरवपाण्डवयोः द्वयोः पक्षयोः सैन्यप्रमाणं किम्?
(A) एकादश अक्षौहिणी
(B) सप्त अक्षौहिणी
(C) अष्टादश अक्षौहिणी
(D) एकविंशतिः अक्षौहिणी

14. (A) 15. (A) 16. (A) 17. (C) 18. (D) 19. (D) 20. (A) 21. (C) 22. (A) 23. (A) 24. (C) 25. (B) 26. (C) 27. (A) 28. (C)

29. सुमेलितं करोतु–

पतिः	पत्नी
(1) याज्ञवल्क्यः	(क) लोपामुद्रा
(2) वशिष्ठः	(ख) मेनका
(3) अगस्त्यः	(ग) अरुन्धती
(4) विश्वामित्रः	(घ) अहल्या
(5) गौतमः	(ङ) मैत्रेयी

(A) (1) ग (2) घ (3) ङ (4) क (5) ख
(B) (1) ङ (2) ग (3) क (4) घ (5) ख
(C) (1) ङ (2) ग (3) क (4) ख (5) घ
(D) (1) ङ (2) ग (3) घ (4) क (5) ख

30. संस्कृतस्य दैनिकसमाचारपत्रं किम्?
(A) सुधर्मा (B) नवप्रभातम्
(C) उपर्युक्तं द्वयमपि (D) किमपि नास्ति

31. भाषाविज्ञानस्य आद्याचार्यः कः स्वीक्रियते?
(A) महर्षियास्कः (B) आचार्यपाणिनिः
(C) पतञ्जलिः (D) कात्यायनः

32. 'संस्कृतदिवसः' कदा आचर्यते?
(A) कार्तिकपूर्णिमायाम्
(B) आषाढप्रतिपदायाम्
(C) देवप्रबोधिनी-एकादश्याम्
(D) श्रावणीपूर्णिमायाम्

33. आधुनिक-संस्कृत-कवयित्री का?
(A) विज्जिका (B) तिरुमलाम्बा
(C) पण्डिता क्षमाराव (D) सुभद्रा

34. इलाहाबाद-विश्वविद्यालयस्य संस्कृतविभागस्य प्राध्यापकः कः, यः सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालयस्य कुलपतिः अपि आसीत्?
(A) बाबूराम-सक्सेना (B) आद्याप्रसादमिश्रः
(C) जगन्नाथः (D) अभिराजराजेन्द्रमिश्रः

35. वर्तमानसम्वत्सरस्य नाम किम्?
(A) वैवस्वतः (B) प्लवङ्गः
(C) दुर्मुखः (D) कीलकः

36. भारतस्य सर्वप्रथमं संस्कृतचलचित्रस्य (film) नाम किम्?
(A) विवेकानन्दः (B) आदिशङ्कराचार्यः
(C) रामलीला (D) कृष्णलीला

37. 2001 जनगणनानुसारं संस्कृतमातृभाषिणां जनानां संख्या का?
(A) प्रायेण 14,000 (B) प्रायेण 16,000
(C) प्रायेण 20,000 (D) प्रायेण 25,000

38. भारतस्य प्रथमसंस्कृतविश्वविद्यालयः कः?
(A) राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्, नवदेहली
(B) कामेश्वरसिंह-दरभंगा-संस्कृतविश्वविद्यालयः, बिहारम्
(C) सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालयः, वाराणसी
(D) कर्णाटक-संस्कृतविश्वविद्यालयः

39. लिङ्गभेदेन पृथक्रूपं अन्विषतु?
(A) घर्मः (B) मर्मः
(C) धर्मः (D) कूर्मः

40. सुमेलितं करोतु

ग्रन्थः	ग्रन्थकारः
(1) लीलावती	(क) महर्षि-भरद्वाजः
(2) वैमानिकशास्त्रम्	(ख) नागार्जुनः
(3) रसरत्नाकरः	(ग) वाग्भटः
(4) अष्टाङ्गसंग्रहः	(घ) महर्षि-पराशरः
(5) वृक्षायुर्वेदः	(ङ) भास्कराचार्यः

(A) (1) ङ (2) क (3) ख (4) ग (5) घ
(B) (1) क (2) ख (3) ग (4) ङ (5) घ
(C) (1) घ (2) ग (3) ख (4) क (5) ङ
(D) (1) ङ (2) घ (3) क (4) ख (5) ग

41. भगवता विष्णुना सह सम्बन्धं सुमेलयतु–

सारणी 1	सारणी 2
(1) मणिः	(क) पाञ्चजन्यः
(2) शङ्खः	(ख) दारुकः
(3) सारथिः	(ग) कौस्तुभम्
(4) वाहनम्	(घ) लक्ष्मीः
(5) भार्या	(ङ) गरुणः

(A) (1) ग (2) क (3) घ (4) ङ (5) ख
(B) (1) क (2) ग (3) घ (4) ङ (5) ख
(C) (1) ग (2) क (3) ख (4) ङ (5) घ
(D) (1) ग (2) ख (3) क (4) ङ (5) घ

29. (C)	**30. (C)**	**31. (A)**	**32. (D)**	**33. (C)**	**34. (D)**	**35. (D)**	**36. (B)**	**37. (A)**	**38. (C)**
39. (C)	**40. (A)**	**41. (C)**							

42. संविधानस्य कः अनुच्छेदः यः संस्कृतस्य विशिष्टं महत्त्वं द्योतयति?
(A) अनुच्छेद-343 (B) अनुच्छेद-351
(C) अनुच्छेद–355 (D) अनुच्छेद-361

43. ''जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी'' इति ध्येयवाक्यं (Motto) कस्य देशस्य अस्ति?
(A) चीनदेशस्य (B) नेपालदेशस्य
(C) रसियनदेशस्य (D) भारतदेशस्य

44. आकाशवाण्यां संस्कृतसमाचार-वाचकः कः?
(A) बलदेवोपाध्यायः (B) चिन्मयानन्दसागरः
(C) बलदेवानन्दसागरः (D) बालेन्द्रशेखरः

45. आकाशवाण्यां प्रातः संस्कृतसमाचारः कदा प्रसारितं भवति?
(A) 6.30 am (B) 6.50 am
(C) 6.45 am (D) 6.55 am

46. कति संस्कृतविश्वविद्यालयाः सन्ति?
(A) 16 (B) 17
(C) 25 (D) 20

47. कति संस्कृतपाठशालाः सन्ति?
(A) प्रायेण 5000 (B) प्रायेण 10,000
(C) प्रायेण 9000 (D) प्रायेण 11,000

48. कति छात्राः संस्कृतं पठन्ति?
(A) प्रायेण 2 कोटिः (दो करोड)
(B) प्रायेण 3 कोटिः (तीन करोड)
(C) प्रायेण 5 कोटिः (पाँच करोड)
(D) प्रायेण 6 कोटिः (छः करोड)

49. संस्कृतशोधच्छात्राः कति सन्ति?
(A) प्रायेण 10,000 छात्राः
(B) प्रायेण 5000 छात्राः
(C) प्रायेण 4000 छात्राः
(D) प्रायेण 11,000 छात्राः

50. कस्य राज्यस्य द्वितीयराजभाषा संस्कृतम् अस्ति?
(A) केरलस्य (B) तमिलनाडुराज्यस्य
(C) उत्तराखण्डस्य (D) मध्यप्रदेशस्य

51. संस्कृतसम्भाषणसमर्थाः कति जनाः स्युः?
(A) प्रायेण एककोटिः (एक करोड)
(B) प्रायेण पञ्चकोटिः (पाँच करोड)
(C) प्रायेण द्विकोटिः (दो करोड)
(D) प्रायेण दशकोटिः (दश करोड)

52. चतुर्दशदेशेषु प्रायेण एकलक्षजनाः प्रतिमासं कां संस्कृतपत्रिकां पठन्ति?
(A) संस्कृतमञ्जरी (B) संस्कृतमञ्जूषा
(C) सम्भाषणसन्देशः (D) जयतु संस्कृतम्

53. कति संस्कृतगृहाणि सन्ति?
(A) प्रायेण 10,000 गृहाणि
(B) प्रायेण 5000 गृहाणि
(C) प्रायेण 1000 गृहाणि
(D) प्रायेण 11,000 गृहाणि

54. 'संस्कृतग्रामः' नास्ति–
(A) कर्नाटके-मत्तूरुः (B) मध्यप्रदेशे-झीरी
(C) उत्तराखण्डे-धनतोला (D) उत्तरप्रदेशे-शिवपुरम्

55. 'संस्कृतसाहित्योत्सवः–2013' कुत्र आयोजितम् आसीत्?
(A) उज्जयिन्याम् (म० प्र०) (B) काश्याम् (उ० प्र०)
(C) नवदेहल्याम् (दिल्ली) (D) अयोध्यायाम् (उ० प्र०)

56. ''षोडशं विश्वसंस्कृतसम्मेलनम्-2015'' कुत्र भविष्यति?
(A) थायलैण्डदेशे (B) भारते
(C) नेपालदेशे (D) अमेरिकायाम्

57. कस्मिन् राज्ये प्रथमकक्षातः पञ्चमकक्षापर्यन्तं संस्कृतम् अनिवार्यम् अस्ति?
(A) छतीसगढे (B) केरले
(C) राज्यद्वये अपि (D) एतेषु किमपि न

58. भगद्गीतायाः प्रथमम् आंग्लसंस्करणं कदा प्रकाशितम्?
(A) 1785 ई० (B) 1885 ई०
(C) 1740 ई० (D) 1845 ई०

59. संस्कृतलेखकः यः ''ज्ञानपीठपुरस्कार-2009'' इत्यस्य विजेता आसीत्?
(A) डॉ० अभिराजराजेन्द्रमिश्रः
(B) डॉ० सत्यव्रतशास्त्री
(C) डॉ० रेवाप्रसादद्विवेदी
(D) डॉ० पी० वी० काणे

60. भारते कति संस्कृतग्रामाः सन्ति, यत्र सर्वे संस्कृतेन वदन्ति?
(A) एकादश (B) दश
(C) नव (D) अष्टौ

42. (B)	43. (B)	44. (C)	45. (D)	46. (A)	47. (A)	48. (C)	49. (C)	50. (C)	51. (A)
52. (C)	53. (B)	54. (D)	55. (A)	56. (A)	57. (C)	58. (A)	59. (B)	60. (D)	

परिशिष्ट-1–''ग्रन्थ एवं ग्रन्थकार''

काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ

ग्रन्थ	ग्रन्थकार	अनुमानित समय
1. नाट्यशास्त्र	आचार्य भरत	ई.पू. द्वितीय शताब्दी
2. काव्यालङ्कार	भामह	500 ई.
3. काव्यादर्श	दण्डी	सातवीं शताब्दी
4. काव्यालङ्कारसारसंग्रह	उद्भट	अष्टमशताब्दी का उत्तरार्द्ध
5. काव्यालङ्कार सूत्र	वामन	800-850 ई. लगभग
6. काव्यालङ्कार	रुद्रट	नवम शताब्दी का पूर्वार्द्ध
7. ध्वन्यालोक	आनन्दवर्धन	नवम शताब्दी का उत्तरार्द्ध
8. काव्यमीमांसा	राजशेखर	दशम शताब्दी
9. अभिधावृत्तमात्रिका	मुकुलभट्ट	दशम शताब्दी का पूर्वार्द्ध
10. काव्यकौतुक	भट्टतौत	दशम शताब्दी का मध्य
11. दशरूपक	धनञ्जय और धनिक	दशम शताब्दी का उत्तरार्द्ध
12. (i) अभिनवभारती ('नाट्यशास्त्र' की टीका)	अभिनवगुप्त	एकादश शताब्दी
(ii) ध्वन्यालोकलोचन ('ध्वन्यालोक' की टीका)	अभिनवगुप्त	
(ii) 'काव्यकौतुकविवरण ('काव्यकौतुक' का विवरण)	अभिनवगुप्त	
13. वक्रोक्तिजीवितम्	कुन्तक	एकादश शताब्दी का पूर्वार्द्ध
14. व्यक्तिविवेक	महिमभट्ट	एकादश शताब्दी का मध्य
15. (i) सरस्वतीकण्ठाभरण	भोजराज	एकादशशताब्दी 1050 ई. लगभग
(ii) शृङ्गारप्रकाश	भोजराज	
16. (i) औचित्यविचारचर्चा	क्षेमेन्द्र	एकादशशताब्दी का उत्तरार्द्ध
(ii) कविकण्ठाभरण	क्षेमेन्द्र	
17. नाटकलक्षणरत्नकोष	सागरनन्दी	एकादश शताब्दी
18. काव्यप्रकाश	मम्मट	1050 ई. (एकादश शताब्दी का उत्तरार्द्ध)
19. अलङ्कारसर्वस्व	रुय्यक	द्वादशशताब्दी
20. वाग्भटालङ्कार	वाग्भट्ट	बारहवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध
21. काव्यानुशासन	हेमचन्द्र	बारहवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध
22. नाट्यदर्पण	रामचन्द्र गुणचन्द्र	बारहवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध
23. भावप्रकाशन	शारदातनय	तेरहवीं शताब्दी
24. चन्द्रालोक	पीयूषवर्ष जयदेव	तेरहवीं शताब्दी का मध्यभाग
25. साहित्यदर्पण	विश्वनाथ कविराज	14वीं शताब्दी
26. एकावली	विद्याधर	1285 ई. से 1325 ई. के मध्य
27. (i) कुवलयानन्द	अप्पयदीक्षित	षोडशशताब्दी
(ii) चित्रमीमांसा	अप्पयदीक्षित	
(iii) वृत्तवार्तिक	अप्पयदीक्षित	
28. रसगङ्गाधर	पण्डितराज जगन्नाथ	17वीं शताब्दी का मध्यभाग

संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख महाकाव्य

महाकाव्य	सर्ग	लेखक
1. कुमारसम्भवम्	17 (अन्यमत 8)	कालिदास
2. रघुवंशम्	19	कालिदास
3. बुद्धचरितम्	28	अश्वघोष
4. सौन्दरनन्द	18	अश्वघोष
5. किरातार्जुनीयम्	18	भारवि
6. शिशुपालवधम्	20	माघ
7. नैषधीयचरितम्	22	श्रीहर्ष
8. भट्टिकाव्य (रावणवधम्)	22	भट्टि
9. जानकीहरणम्	20 से 25 सर्ग (प्राप्त 10-15 सर्ग)	कुमारदास
10. हरविजयम्	50 सर्ग	रत्नाकर (सबसे बड़ा महाकाव्य)
11. धर्मशर्माभ्युदय	21 सर्ग	हरिश्चन्द्र
12. राघवपाण्डवीयम्	13 सर्ग	कविराज (माधवभट्ट)

कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ

रचना	लेखक
1. जाम्बवतीविजयम् (पातालविजयम्)	पाणिनि
2. स्वर्गारोहणम्	कात्यायन (वररुचि)
3. महानन्दकाव्य	पतञ्जलि
4. प्रयागप्रशस्ति	हरिषेण
5. सेतुबन्ध	प्रवरसेन
6. हयग्रीववध	भर्तृमेण्ठ
7. गउडवहो	वाक्पति
8. रामचरित	अभिनन्द
9. नवसाहसाङ्कचरित	पद्मगुप्त
10. पारिजातहरणम्	कविकर्णपूर
11. नरनारायणानन्द	वस्तुपाल
12. रघुनाथचरित	वामनभट्टबाण
13. सेतुकाव्य	मातृगुप्त
14. कादम्बरीसार	अभिनन्द (काश्मीरी कवि)
15. रामायणमञ्जरी	क्षेमेन्द्र (काश्मीरी)
16. भारतमञ्जरी	क्षेमेन्द्र (काश्मीरी कवि)
17. विक्रमाङ्कदेवचरित	बिल्हण (काश्मीरी)
18. श्रीकण्ठचरितम्	मंखक (काश्मीरी)
19. राजतरङ्गिणी	कल्हण (काश्मीरी)
20. जातकमाला	आर्यशूर (बौद्ध कवि)
21. गुरुगोविन्दसिंह महाकाव्यम्	डॉ. सत्यव्रतशास्त्री
22. सीताचरितम्	डॉ. रेवाप्रसाद द्विवेदी
23. जानकीजीवनम्	डॉ. अभिराज राजेन्द्र मिश्र

संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख नाट्यग्रन्थ

ग्रन्थ	अङ्क	लेखक
1. प्रतिज्ञायौगन्धरायण	4	भास
2. स्वप्नवासवदत्तम्	6	भास
3. ऊरुभङ्गम्	एकाङ्की	भास
4. दूतवाक्यम्	एकाङ्की	भास
5. पञ्चरात्रम्	3	भास
6. बालचरितम्	5	भास
7. दूतघटोत्कचम्	एकाङ्की	भास
8. कर्णभारम्	एकाङ्की	भास
9. मध्यमव्यायोगः	एकाङ्की	भास
10. प्रतिमानाटकम्	7	भास
11. अभिषेकनाटकम्	6	भास
12. अविमारकम्	6	भास
13. चारुदत्तम्	4	भास
14. मृच्छकटिकम् (प्रकरण)	10	शूद्रक (शिमुक)
15. मालविकाग्निमित्रम्	5	कालिदास
16. विक्रमोर्वशीयम् (त्रोटक)	5	कालिदास
17. अभिज्ञानशाकुन्तलम्	7	कालिदास
18. मुद्राराक्षसम्	7	विशाखदत्त
19. प्रियदर्शिका (नाटिका)	4	हर्ष (हर्षवर्धन)
20. रत्नावली (नाटिका)	4	हर्ष (हर्षवर्धन)
21. नागानन्द	5	हर्ष (हर्षवर्धन)
22. वेणीसंहारम्	6	भट्टनारायण
23. मालतीमाधवम् (प्रकरण)	10	भवभूति
24. महावीरचरितम्	7	भवभूति
25. उत्तररामचरितम्	7	भवभूति
26. शारिपुत्रप्रकरण् (प्रकरण)	9	अश्वघोष
27. अनर्घराघवम्	7	मुरारि
28. बालरामायणम् (महानाटक)	10	राजशेखर
29. बालभारत (प्रचण्डपाण्डव)	2	राजशेखर
30. विद्धशालभञ्जिका (नाटिका)	4	राजशेखर
31. कर्पूरमञ्जरी (सट्टक)	4	राजशेखर
32. कुन्दमाला	6	दिङ्नाग
33. प्रबोधचन्द्रोदय	6	कृष्ण मिश्र
34. प्रसन्नराघवम्	7	जयदेव

कुछ अन्य नाट्यग्रन्थ

नाट्यग्रन्थ	लेखक
1. आश्चर्यचूडामणि	शक्तिभद्र
2. रामाभ्युदय	यशोवर्मा
3. महानाटक	हनुमान्
4. हनुमन्नाटक	दामोदर मिश्र
5. रुक्मिणीहरणम्	वत्सराज
6. त्रिपुरदाह	वत्सराज
7. समुद्रमन्थन	वत्सराज
8. सौगन्धिकाहरणम्	विश्वनाथ
9. सामवतम्	अम्बिकादत्तव्यास
10. दूताङ्गद (छायानाटक)	सुभट
11. सुभद्रापरिणय (छायानाटक)	व्यासरामदेव
12. पार्वतीपरिणय	बाणभट्ट
13. मुकुटताडितक	बाणभट्ट

संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख गद्यकाव्य

गद्यरचना	लेखक
1. दशकुमारचरितम्	दण्डी
2. अवन्तिसुन्दरी कथा	दण्डी
3. वासवदत्ता (कथा)	सुबन्धु
4. कादम्बरी (कथा)	बाणभट्ट
5. हर्षचरितम् (आख्यायिका)	बाणभट्ट
6. मन्दारमञ्जरी	विश्वेश्वर पाण्डेय
7. शिवराजविजय (ऐतिहासिक उपन्यास)	अम्बिकादत्तव्यास
8. प्रबन्धमञ्जरी	हृषीकेश भट्टाचार्य
9. कथापञ्चकम्	पण्डिता क्षमाराव
10. ग्रामज्योतिः	पण्डिता क्षमाराव
11. कथामुक्तावलिः	पण्डिता क्षमाराव
12. कौमुदीकथाकल्लोलिनी	डॉ. रामशरणत्रिपाठी
13. तिलकमञ्जरी	धनपाल
14. गद्यचिन्तामणि	वादीभसिंह
15. वेमभूपालचरितम्	वामनभट्ट बाण
16. द्वासुपर्णा	डॉ. रामजी उपाध्याय
17. गद्यरामायणम्	वरददेशिक
18. गाँधीचरितम्	चारुदेवशास्त्री
19. रामचरितम्	देवविजयगणी

संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख गीतिकाव्य

गीतिकाव्यम्	लेखक
1. ऋतुसंहारम्	कालिदास
2. मेघदूतम्	कालिदास
3. नीतिशतकम्	भर्तृहरि
4. शृङ्गारशतकम्	भर्तृहरि
5. वैराग्यशतकम्	भर्तृहरि
6. अमरुशतकम्	अमरुक
7. गीतगोविन्दम्	जयदेव
8. गङ्गालहरी/पीयूषलहरी	पण्डितराज जगन्नाथ
9. अमृतलहरी	पण्डितराज जगन्नाथ
10. सुधालहरी	पण्डितराज जगन्नाथ
11. लक्ष्मीलहरी	पण्डितराज जगन्नाथ
12. करुणालहरी	पण्डितराज जगन्नाथ
13. आसफविलास	पण्डितराज जगन्नाथ
14. जगदाभरणम्	पण्डितराज जगन्नाथ
15. प्राणाभरणम्	पण्डितराज जगन्नाथ
16. यमुनावर्णनम्	पण्डितराज जगन्नाथ
17. भामिनीविलास (गीतिकाव्य)	पण्डितराज जगन्नाथ
18. गाथासप्तशती	हाल
19. चौरपञ्चाशिका	बिल्हण
20. आर्यासप्तशती	गोवर्धनाचार्य
21. चाणक्यशतकम्	चाणक्य
22. घटकर्परकाव्यम्	घटकर्पर
23. नीतिसार	घटकर्पर
24. चण्डीशतकम्	बाणभट्ट
25. सूर्यशतकम्	मयूरभट्ट
26. भल्लटशतकम्	भल्लट
27. वक्रोक्तिपञ्चाशिका	रत्नाकर
28. देवीशतकम्	आनन्दवर्धन
29. कुट्टिनीमतम्	दामोदरगुप्त
30. बल्लालशतकम्	बल्लाल
31. चारुचर्या	क्षेमेन्द्र
32. सेव्यसेवकोपदेश	क्षेमेन्द्र
33. समयमातृका	क्षेमेन्द्र
34. कथाविलास	क्षेमेन्द्र
35. दर्पदलन	क्षेमेन्द्र
36. पवनदूत	धोयी
37. नेमिदूतम्	विक्रमकवि
38. शुकसन्देश	लक्ष्मीदास
39. भृङ्गसन्देश	वासुदेव
40. हंसदूतम्	रूपगोस्वामी
41. चन्द्रदूतम्	विमलकीर्ति

संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख स्तोत्रकाव्यम्

1. **शिवताण्डवस्तोत्रम्**	रावण
2. **सौन्दर्यलहरी**	शङ्कराचार्य
3. **चर्पटपञ्जरिकास्तोत्रम्**	शङ्कराचार्य
4. **श्रीकृष्णाष्टकम्**	शङ्कराचार्य
5. **आनन्दलहरी**	शङ्कराचार्य
6. **शिवमहिम्नस्तोत्रम्**	पुष्पदन्त
7. **आलबन्दारस्तोत्रम्**	यामुनाचार्य (आलबन्दार)
8. **गङ्गास्तव**	जयदेव
9. **कृष्णकर्णामृतम्**	बिल्वमङ्गल (कृष्णलीलाशुक)
10. **वरदराजस्तव**	अप्पयदीक्षित
11. **नारायणीयम्**	नारायणभट्ट
12. **आनन्दमन्दाकिनी**	मधुसूदन सरस्वती
13. **गन्धर्वप्रार्थनाष्टकम्**	रूपगोस्वामी

सुभाषितग्रन्थाः

सुभाषितग्रन्थाः	ग्रन्थकारः
1. **कवीन्द्रवचनसमुच्चयः**	विद्याकरपण्डितः
2. **सदुक्तिकर्णामृतम्** (सूक्तिकर्णामृतम्)	श्रीधरदास
3. **सूक्तिमुक्तावली** (सुभाषितमुक्तावली)	सिद्धचन्द्रमणि
4. **सूक्तिरत्नाकरः**	सिद्धचन्द्रमणि
5. **सुभाषित सुधानिधि**	सायण
6. **शार्ङ्गधरपद्धति**	शार्ङ्गधर
7. **सुभाषितरत्नभाण्डागार**	शिवदत्त एवं नारायणराम आचार्य
8. **सूक्तिमुक्तावली**	डॉ. नरेन्द्रदेव शास्त्री
9. **संस्कृतसूक्तिरत्नाकर**	डॉ. रामजी उपाध्याय

ऐतिहासिक काव्य

ऐतिहासिक काव्य	लेखक
1. **बुद्धचरितम्**	अश्वघोष
2. **हर्षचरितम्**	बाणभट्ट
3. **गउडवहो** (गौडवधः)	वाक्पतिराज
4. **नवसाहसाङ्कचरितम्**	पद्मगुप्त (परिमल)
5. **विक्रमाङ्कदेवचरितम्**	बिल्हण
6. **राजतरङ्गिणी**	महाकवि कल्हण
7. **सोमपालविजयम्**	जल्हण
8. **प्रबन्धकोष**	राजशेखर
9. **वेमभूपालचरितम्**	वामनभट्ट बाण

कथासाहित्यम्

कथाग्रन्थः	लेखकः
1. **पञ्चतन्त्रम्**	विष्णुशर्मा
2. **हितोपदेश**	नारायणपण्डित
3. **बृहत्कथा**	गुणाढ्य
4. **बृहत्कथाश्लोकसंग्रह**	बुधस्वामी
5. **बृहत्कथामञ्जरी**	क्षेमेन्द्र
6. **कथासरित्सागर**	सोमदेव
7. **वेतालपञ्चविंशतिका**	शिवदास एवं जम्भलदत्त
8. **सिंहासनद्वात्रिंशिका** **द्वात्रिंशत्पुत्तलिका** **विक्रमचरित** **विक्रमार्कचरित**	लेखक का नाम अज्ञात
9. **शुकसप्ततिः**	अज्ञात
10. **पुरुषपरीक्षा**	विद्यापति
11. **भोजप्रबन्ध**	बल्लाल सेन
12. **जातकमाला**	आर्यशूर
13. **प्रबन्धकोष**	राजशेखर
14. **उदयसुन्दरीकथा**	सोड्ढल

चम्पूकाव्य

चम्पूकाव्य	लेखक
1. **नलचम्पू** (दमयन्तीकथा)	त्रिविक्रमभट्ट
2. **मदालसाचम्पू**	त्रिविक्रमभट्ट
3. **जीवन्धरचम्पू**	हरिश्चन्द्र
4. **यशस्तिलकचम्पू**	सोमदेवसूरि
5. **रामायणचम्पू**	राजाभोज (भोजराज)
6. **भागवतचम्पू**	अभिनवकालिदास
7. **भारतचम्पू**	अनन्तभट्ट
8. **वरदाम्बिकापरिणयचम्पू**	रानी तिरुमलाम्बा
9. **भरतेश्वराभ्युदयचम्पू**	पं. आशाधरसूरि
10. **रुक्मिणीपरिणयचम्पू**	अमलाचार्य (अम्मल)
11. **आनन्दवृन्दावनचम्पू**	कवि कर्णपूर

संस्कृत पत्र-पत्रिकायें

1. साप्ताहिक-पत्रिका

- भवितव्यम् (नागपुर)
- संस्कृतम् (अयोध्या)
- गाण्डीवम् (वाराणसी)
- पण्डितपत्रिका (काशी)

2. पाक्षिक-पत्रिका

- भारतवाणी (पूना)
- शारदा (पूना)
- संस्कृतसाकेत (अयोध्या)

3. मासिक-पत्रिका

- संस्कृतमञ्जूषा (कलकत्ता)
- सूर्योदेव (काशी)
- आनन्दकल्पतरु (कोयम्बटूर)
- गुरुकुलपत्रिका (गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार)
- जयतु संस्कृतम् (काठमाण्डू)
- दिव्यज्योतिः (शिमला)
- बालसंस्कृतम् (मुम्बई)
- भारती (जयपुर)
- भारतीयविद्या (मुम्बई)
- मालवमयूर (मन्दसौर)
- संस्कृतरत्नाकर (दिल्ली)
- सरस्वतीसौरभम् (बड़ौदा)
- संस्कृतसञ्जीवनम् (पटना)
- साहित्यवाटिका (दिल्ली)
- भारतोदयः (हरिद्वार)
- सम्भाषणसन्देशः (बङ्गलोर)
- चन्दमामा (बङ्गलोर)

4. त्रैमासिक-पत्रिका

- सङ्गमनी (प्रयाग)
- सरस्वतीसुषमा (सम्पूर्णानन्द सं. वि. वि. वाराणसी)
- सागरिका (सागर वि. वि. सागर म.प्र.)
- विश्वसंस्कृतम् (होशियारपुर)
- उशती (गङ्गानाथ झा, प्रयाग)
- महाराजसंस्कृतपत्रिका (मैसूर)

5. षाण्मासिक-पत्रिका

- पुराणम् (वाराणसी)
- संस्कृत प्रतिभा (नई दिल्ली)
- विद्वत्कला (ज्वालापुर, हरिद्वार)

6. वार्षिक-पत्रिका

- अमृतवाणी (बङ्गलोर)
- संस्कृतगङ्गा (प्रयाग)

परिशिष्ट-2 ''संस्कृतकविः''

संस्कृतकवियों के माता-पिता

कवि	पिता माता	अन्य
1. **बाणभट्ट**	चित्रभानु–राजदेवी	पितामह-**अर्थपति**
2. **भवभूति**	नीलकण्ठ–जतुकर्णी (जातुकर्णी)	(पितामह–**भट्टगोपाल**)
3. **भारवि**	श्रीधर (नारायणस्वामी)-सुशीला	
4. **माघ**	दत्तक (सर्वाश्रय)-ब्राह्मी	(पितामह–**सुप्रभदेव**)
5. **श्रीहर्ष**	श्रीहीर–मामल्लदेवी	
6. **विशाखदत्त**	पृथु (भास्करदत्त)	पितामह–**वटेश्वरदत्त**)
7. **हर्षवर्धन**	प्रभाकरवर्धन–यशोवती	(बड़े भाई–**राज्यवर्धन,** बहन – **राज्यश्री**)
8. **राजशेखर**	दर्दुक (दुहिक) शीलवती	**अकालजलद** (पितामह)
9. **अम्बिकादत्तव्यास**	दुर्गादत्त	पितामह - श्रीराजाराम
10. **जयदेव (गीतगोविन्दकार)**	भोजदेव–रामादेवी (राधादेवी)	
11. **पण्डितराजजगन्नाथ**	पेरुभट्ट–लक्ष्मीदेवी	
12. **कल्हण**	चम्पक	
13. **त्रिविक्रमभट्ट**	देवादित्य (नेमादित्य)	पितामह-**श्रीधर**
14. **पाणिनि**	पणिन्–दाक्षी	
15. **कात्यायन (वररुचि)**	–	पितामह-**याज्ञवल्क्य**
16. **मम्मट**	जैयट	भाई-**कैय्यट (उव्वट)**
17. **विश्वनाथ**	चन्द्रशेखर	
18. **भर्तृहरि**	गन्धर्वसेन	
19. **अश्वघोष**	सुवर्णाक्षी (माता)	
20. **पतञ्जलि**	गोणिका (माता)	
21. **कालिदास**	शारदानन्द (श्वसुर, विद्योत्तमा के पिता)	
22. **मुरारि**	श्रीवर्धमानभट्ट/तन्तुमती	
23. **भट्टोजिदीक्षित**	लक्ष्मीधर	
24. **वरदराज**	दुर्गातनय	
25. **रत्नाकर**	अमृतभानु	
26. **जयदेव (प्रसन्नराघवकार)**	महादेव–सुमित्रा	
27. **विश्वेश्वर पाण्डेय**	लक्ष्मीधर पाण्डेय	
28. **पण्डिता क्षमाराव**	श्री शङ्करपाण्डुरङ्ग	
29. **दण्डी (भारवि के प्रपौत्र)**	वीरदत्त–गौरी	प्रपितामह–**भारवि**
30. **वेदव्यास**	सत्यवती	

कवियों की उपाधियाँ/उपनाम

क्र.सं.	कवि	उपाधि/उपनाम/कविविषयक कथन
1.	वाल्मीकि	आदिकवि/आर्षकवि
2.	कृष्णद्वैपायन	व्यास या वेदव्यास
3.	कालिदास	(i) दीपशिखा (ii) रघुकार (iii) कविकुलगुरु (iv) कविताकामिनी विलास (v) उपमासम्राट्
4.	अम्बिकादत्तव्यास	(i) घटिकाशतक (ii) सुकवि (iii) शतावधान (iv) अभिनवबाण (v) भारतरत्न
5.	बाणभट्ट	(i) पञ्चबाणस्तु बाणः (ii) बाणस्तु पञ्चाननः (iii) कविताकानन केसरी (iv) वश्यवाणीचक्रवर्ती (v) गद्यसम्राट् (vi) वाणी बाणो बभूव (vii) कविताकामिनीकौतुक (viii) तुरङ्गबाण (ix) गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति (x) बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम् (xi) बाणः कवीनामिह चक्रवर्ती (xii) महानयं भुजङ्गः (xiii) सर्वेश्वर
6.	जयदेव (प्रसन्नराघव एवं 'चन्द्रालोक' के लेखक)	(i) पीयूषवर्ष (ii) कवीन्द्र (iii) वाणी का विलास (iv) असमरसनिष्यन्दमधुर
7.	मल्लिनाथ	(i) कोलाचल (ii) महामहोपाध्याय
8.	त्रिविक्रमभट्ट	यमुनात्रिविक्रम
9.	विश्वनाथ	(i) सन्धिविग्राहक, (ii) अष्टादशभाषा वारविलासिनी (iii) कविराज (iv) कवि सूक्ति रत्नाकर
10.	जगन्नाथ	पण्डितराज
11.	भारवि	(i) आतपत्र (ii) दामोदर (उपनाम) (iii) चक्रकवि
12.	माघ	(i) घण्टामाघ (ii) सर्वाश्रय
13.	भवभूति	(i) श्रीकण्ठ (भट्टश्रीकण्ठ) (ii) पदवाक्यप्रमाणज्ञ (iii) श्रीकण्ठपदलाञ्छनः (iv) उम्बेक/उदम्बर (v) वश्यवाक् (vi) शिखरिणीकवि (vii) परिणतप्रज्ञ
14.	भट्टनारायण	(i) भट्ट (ii) मृगराज (iii) कवि मृगेन्द्र/कवीन्द्र
15.	मम्मट	(i) वाग्देवतावतार (ii) राजानक (iii) ध्वनिप्रस्थापनपरमाचार्य
16.	आनन्दवर्धन	(i) राजानक (ii) ध्वनिप्रतिष्ठापकाचार्य (iii) सहृदय शिरोमणि
17.	कुन्तक	'राजानक' (यह उपाधि काश्मीरी विद्वानों को सम्मानार्थ मिलती थी)
18.	महिमभट्ट	'राजानक'
19.	रुय्यक	'राजानक'
20.	क्षेमेन्द्र	(i) जनकवि (ii) सकलमनीषिशिष्य
21.	भास	(i) कविताकामिनी हास (ii) भासो हासः (iii) अग्निमित्र (ज्वलनमित्र)
22.	अश्वघोष	(i) आर्यभदन्त (ii) बौद्धभिक्षु
23.	मुरारि	(i) बालवाल्मीकि (ii) महाकवि (iii) इन्दु
24.	बिल्हण	विद्यापति
25.	हेमचन्द्र	कलिकालसर्वज्ञ
26.	अभिनवगुप्त	(i) लोचनकार (ii) परम- माहेश्वराचार्य
27.	कणाद	(i) उलूक (ii) कणभुक्
28.	कात्यायन	वररुचि
29.	गौतम	अक्षपाद
30.	दयानन्द सरस्वती	स्वामी
31.	भट्टि	महाकवि
32.	मातृचेट	बौद्धकवि
33.	यामुनाचार्य	आलवन्दार
34.	राजशेखर	(i) यायावर (ii) कविराज (iii) बालकवि
35.	वाचस्पतिमिश्र	(i) सर्वतन्त्रस्वतन्त्र, (ii) तात्पर्याचार्य (iii) द्वादशदर्शनकाननपञ्चानन
36.	वात्स्यायन	मल्लनाग
37.	विद्यापति	(i) षट्तर्कषण्मुख (ii) वादिराज सूरि (iii) मैथिलकोकिल
38.	विद्यारण्यमुनि	माधवाचार्य

39.	क्षमाराव	पण्डिता
40.	पतञ्जलि	शेषनाग, फणिभृत, नागनाथ, भगवान्, तीर्थदर्शी
41.	प्रभाकर मिश्र	(i) गौडमीमांसक (ii) गुरु
42.	माधवभट्ट	(i) कविराज (ii) सूरि (iii) पण्डित
43.	हर्षवर्धन	(i) राजा (ii) कवीन्द्र (iii) गीर्हर्ष (iv) कविता का हर्ष (v) अनङ्ग
44.	जयदेव (गीतगोविन्दकार)	कविराजराज
45.	श्रीहर्ष	कविताकामिनी का हर्ष
46.	आनन्दराय मखी	वेदकवि
47.	रत्नाकर	(i) कांस्यताल, (ii) वागीश्वर
48.	शेषाचलपति	आन्ध्रपाणिनि
49.	आर्यभट्ट	अश्मकाचार्य
50.	मङ्ख	कर्णिकार
51.	शाकटायन	आदिशाब्दिक
52.	पद्मगुप्त	परिमल कालिदास
53.	द्वादशविद्यापति	वदिराज सूरि
54.	दिंगनागाचार्य	तर्कपुंगव
55.	मुकुलभट्ट	(i) साहित्यमुरारि (ii) पदवाक्य-प्रमाण-पारावारपारीण
56.	ब्रह्मगुप्त	गणकचक्रचूडामणि
57.	श्रीनिवासदीक्षित	(i) रत्नखेट (ii) षड्भाषाचतुर
58.	सोमदेव सूरि	(i) कविकुलराजकुञ्जर (ii) तार्किक चक्रवर्ती
59.	धनपाल	सरस्वती
60.	वस्तुपाल	लघुभोजराज
61.	शान्तिसूरि	वादिवेताल
62.	हृषिकेशभट्टाचार्य	अभिनवबाण

कवियों का निवासस्थान (जन्मस्थान)

कवि	निवासस्थान (जन्मस्थान)
1. कालिदास	उज्जयिनी (काश्मीर/बंगाल)
2. बाणभट्ट	'प्रीतिकूट' (शोणनदी के पश्चिमी तट पर आधुनिक–'शाहाबाद')
3. भारवि	अचलपुर (दाक्षिणात्य/धारानगरी)
4. अम्बिकादत्त व्यास	जयपुर राजस्थान, ग्राम-रावतजी का धुला (अध्ययन–काशी में)
5. कल्हण	काश्मीर
6. पाणिनि	शालातुर ग्राम (अटक)
7. पतञ्जलि	गोनर्द (गोण्डा)
8. दण्डी	दक्षिण में विदर्भ (महाराष्ट्र)
9. भवभूति	पद्मपुर (दक्षिणभारत)
10. अश्वघोष	साकेत (अयोध्या)
11. माघ	श्री भिन्नमाल 'भीनमाल' राजस्थान (आबूपर्वत तथा लूनानदी के बीच स्थित)
12. श्रीहर्ष	कन्नौज
13. भट्टि	बल्लभी
14. कुमारदास	श्रीलङ्का
15. शूद्रक	दाक्षिणात्य
16. हर्ष	स्थाणीश्वर (थानेश्वर)
17. भट्टनारायण	कान्यकुब्ज (कन्नौज)
18. राजशेखर	महाराष्ट्र (विदर्भ)
19. जयदेव (प्रसन्नराघवकार)	विदर्भप्रान्त-कुण्डिननगर

20. सुबन्धु	काश्मीर
21. पण्डितराज जगन्नाथ	आन्ध्रप्रदेश (तैलंग)
22. कात्यायन	दाक्षिणात्य
23. आनन्दवर्धन	काश्मीर
24. मम्मट	काश्मीर
25. अभिनवगुप्त	काश्मीर
26. भर्तृहरि	मालवा
27. क्षेमेन्द्र	काश्मीर
28. महिमभट्ट	काश्मीर
29. वाचस्पतिमिश्र	मिथिला (बिहार)
30. विश्वनाथ कविराज	उत्कल (उड़ीसा)
31. त्रिविक्रमभट्ट	मान्यखेट ग्राम (हैदराबाद)
32. रत्नाकर	काश्मीर
33. विश्वेश्वर पाण्डेय	अल्मोडा जिला ग्राम–पटिया
34. अमरुक	काश्मीर
35. गीतगोविन्दकार जयदेव	बंगाल के केन्दुबिल्व नामक ग्राम।
36. सोमदेव (कथासरित्सागर)	काश्मीर

संस्कृत के प्रमुख कवियों, नायकों, तथा ऋषियों का गोत्र एवं वंश

कवि/राजा	गोत्र/वंश/जाति	कवि/राजा	गोत्र/वंश/जाति
1. बाणभट्ट	वत्स/वात्स्यायन	**12. दुष्यन्त**	पुरुवंशी (चन्द्रवंशी)
2. भवभूति	काश्यप	**13. राम**	सूर्यवंश/इक्ष्वाकुवंश/रघुवंश
3. भारवि	कुशिक	**14. दुर्योधन**	कुरुवंशी/चन्द्रवंशी
4. कालिदास	ब्राह्मण जाति	**15. शिवाजी**	मराठा वंश
5. अम्बिकादत्त व्यास	पराशरगोत्रीय यजुर्वेदी ब्राह्मण त्रिप्रवर 'भीडा' वंश	**16. कुतुबुद्दीन**	गुलामवंश
6. विश्वेश्वर पाण्डेय	भारद्वाजगोत्र	**17. औरङ्गजेब**	मुगलवंश
7. मुरारि	मौद्गल्यगोत्र	**18. सिंहविष्णु**	पल्लववंश
8. भट्टनारायण	सारस्वत ब्राह्मण	**19. नरसिंहवर्मन्**	पल्लववंश
9. राजशेखर	यायावर क्षत्रियवंश	**20. विष्णुवर्धन**	चालुक्यवंश
10. पण्डितराजजगन्नाथ	तैलङ्गब्राह्मण	**21. दुर्विनीत**	गङ्गवंश
11. विश्वामित्र	कौशिक	**22. यशोवर्मा**	चन्देलवंश

कवियों का सम्प्रदाय

कवि	सम्प्रदाय	कवि	सम्प्रदाय
1. कालिदास	शैव	**8. कल्हण**	शैव
2. भवभूति	शैव	**9. अभिनवगुप्त**	शैव
3. भारवि	शैव	**10. भट्टनारायण**	वैष्णव (साथ में शिवभक्त भी)
4. माघ	वैष्णव	**11. रूपगोस्वामी**	वैष्णव
5. भर्तृहरि	शैव, ब्रह्म के उपासक	**12. विश्वनाथकविराज**	वैष्णव
6. बाणभट्ट	शैव	**13. राजशेखर**	शैव
7. अम्बिकादत्तव्यास	वैष्णव (शैव)	**14. जयदेव (गीतगोविन्दकार)**	वैष्णव

संस्कृत कवियों का राज्याश्रय

राजकवि	राजा
1. कालिदास	विक्रमादित्य
2. बाणभट्ट	सम्राट् हर्षवर्धन
3. भारवि	पुलकेशिन द्वितीय के अनुज विष्णुवर्धन
4. भवभूति	यशोवर्मा
5. दण्डी	नरसिंह वर्मन प्रथम, पल्लवनरेश सिंहविष्णु
6. 'परिमलकालिदास' या पद्मगुप्त	राजा मुञ्ज और सिन्धुराज (नवसाहसाङ्क)
7. रविकीर्ति	पुलकेशिन द्वितीय
8. उद्भट	काश्मीरनरेश जयादित्य
9. वामन	काश्मीर नरेश जयादित्य के मन्त्री
10. आनन्दवर्धन	काश्मीर नरेश अवन्तिवर्मा
11. राजशेखर	कन्नौज के शासक महेन्द्रपाल और महीपाल
12. धनञ्जय	मालव के परमारवंशी राजा मुञ्ज (वाक्पतिराज)
13. क्षेमेन्द्र	कश्मीर नरेश अनन्तराज
14. नारायण पण्डित	धवलचन्द्र (बंगाल के कोई राजा)
15. श्रीहर्ष (नैषधकार)	कन्नौज नरेश जयचन्द्र
16. अश्वघोष	कनिष्क
17. वाक्पतिराज	यशोवर्मा
18. भट्टि	वल्लभी के राजा श्रीधरसेन
19. रत्नाकर	राजा चिप्पट जयापीड
20. कविराज (माधवभट्ट)	जयन्तपुरी के कदम्बराजा कामदेव
21. कृष्णमिश्र	चन्देलराजा कीर्तिवर्मा
22. जयदेव (गीतगोविन्दकार)	बंगाल के राजा लक्ष्मणसेन
23. पण्डितराजजगन्नाथ	शाहजहाँ
24. विष्णुशर्मा (पञ्चतन्त्र)	महिलारोप्य के राजा अमरसिंह
25. नारायण पण्डित (हितोपदेश)	बंगाल के राजा धवलचन्द्र
26. सोमदेव (कथा सरित्सागर)	काश्मीरी राजा अनन्त
27. हरिषेण	समुद्रगुप्त
28. भर्तृमेण्ठ	मातृगुप्त
29. मंख	राजा जयसिंह
30. गुणाढ्य	सातवाहन राजा हाल
31. गोवर्धनाचार्य	लक्ष्मणसेन

कवियों के प्रिय रस

कवि	प्रिय रस	कवि	प्रिय रस
1. कालिदास	शृङ्गार रस	5. बाणभट्ट	शृङ्गाररस
2. भवभूति	करुण रस	6. श्रीहर्ष	शृङ्गाररस
3. भारवि	वीररस, शृङ्गाररस	7. भास	शृङ्गार और वीररस
4. माघ	वीररस	8. अमरुक	शृङ्गाररस
		9. जयदेव	शृङ्गाररस

कवियों के प्रिय छन्द

कवि	प्रिय छन्द	अतिप्रिय छन्दों की संख्या
1. वाल्मीकि	अनुष्टुप् (श्लोक)	–
2. व्यास	अनुष्टुप्	–
3. कालिदास	आर्या, अनुष्टुप्, उपजाति, मन्दाक्रान्ता	06
4. अश्वघोष	अनुष्टुप्, उपजाति	–
5. भारवि	वंशस्थ, उपजाति	12
6. माघ	वंशस्थ, अनुष्टुप्	16
7. श्रीहर्ष	उपजाति छन्द	19
8. भट्टि	अनुष्टुप्, उपजाति	–
9. भास	अनुष्टुप्, वसन्ततिलका	कुल 24 छन्दों का प्रयोग
10. विशाखदत्त	शार्दूलविक्रीडित, शिखरिणी, स्रग्धरा	–
11. हर्षवर्धन	शार्दूलविक्रीडित, स्रग्धरा, अनुष्टुप्, आर्या	–
12. भट्टनारायण	अनुष्टुप्, वसन्ततिलका, शार्दूलविक्रीडित	–
13. भवभूति	अनुष्टुप्, शिखरिणी	–
14. राजशेखर	शार्दूलविक्रीडितम्	–
15. कृष्णमिश्र	वसन्ततिलका, शार्दूलविक्रीडितम्	–
16. जयदेव	वसन्ततिलका	–
17. अमरुक	शार्दूलविक्रीडितम्	–
18. भर्तृहरि	शार्दूलविक्रीडितम्	

कवियों के प्रिय अलङ्कार

1. कालिदास	उपमा
2. भारवि	चित्रालङ्कार, अर्थालङ्कार
3. माघ	उपमा, उत्प्रेक्षा, अर्थान्तरन्यास, चित्रालङ्कार
4. श्रीहर्ष	उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति, श्लेष, अनुप्रास, यमक
5. अश्वघोष	उपमा, रूपक, अनुप्रास
6. भवभूति	उपमा, उत्प्रेक्षा, काव्यलिङ्ग, रूपक
7. रत्नाकर	उत्प्रेक्षा अलङ्कार
8. विशाखदत्त	उपमा, रूपक, श्लेष
9. हर्षवर्धन	उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक
10. भट्टनारायण	उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा
11. सुबन्धु	श्लेष, विरोधाभास, परिसंख्या, उत्प्रेक्षा।
12. बाणभट्ट	विरोधाभास, श्लेष, परिसंख्या, उत्प्रेक्षा, उपमा, रूपक
13. अम्बिकादत्तव्यास	विरोधाभास

कवियों की प्रिय शैली रीति एवं गुण

कवि	रीति एवं गुण
1. भारवि	रीतिवादी या अलङ्कृत काव्यशैली के जन्मदाता
2. माघ	प्रसाद, माधुर्य एवं ओजगुणों का समन्वय
3. श्रीहर्ष	वैदर्भी एवं गौडीरीति, प्रसाद एवं ओजगुण
4. कालिदास	वैदर्भी, प्रसादगुण
5. बाणभट्ट	पाञ्चाली, ओज, माधुर्य, प्रसाद
6. दण्डी	वैदर्भीरीति, प्रसाद और माधुर्यगुण।
7. अम्बिकादत्तव्यास	वैदर्भी और गौडी रीति का समन्वय।
8. सुबन्धु	गौडीरीति, ओजगुण (श्लेष अलंकार का प्रयोग)
9. भवभूति	गौडी एवं वैदर्भी रीति (i) मालतीमाधवम् और महावीरचरितम् में–गौडी रीति, ओजगुण (ii) उत्तररामचरितम् में–गौडी एवं वैदर्भी रीति, प्रसाद गुण
10. शूद्रक	वैदर्भीरीति एवं प्रसादगुण (कहीं कहीं 'गौडी रीति' भी)
11. अश्वघोष	वैदर्भीरीति, प्रसादगुण
12. भास	वैदर्भी रीति, प्रसाद, माधुर्य
13. मुरारि	गौडीरीति–ओजगुण
14. भट्टि	व्याकरणमूलक काव्यशैली की एक नवीन विधा के जन्मदाता।
15. कुमारदास	वैदर्भीरीति, प्रसाद और माधुर्यगुण।
16. रत्नाकर	रीतिवादी कवि
17. विशाखदत्त	वैदर्भीरीति, प्रसाद और माधुर्यगुण
18. हर्षवर्धन	वैदर्भीरीति, प्रसाद और माधुर्य गुण
19. भट्टनारायण	गौडीरीति एवं ओजगुण
20. राजशेखर	गौडीरीति (यत्र तत्र पाञ्चाली भी)
21. दिङ्नाग (धीरनाग, वीरनाग)	वैदर्भीरीति, प्रसाद और माधुर्यगुण
22. पण्डिता क्षमाराव	वैदर्भीरीति, प्रसाद और माधुर्यगुण।
23. भर्तृहरि	वैदर्भीरीति, प्रसाद और माधुर्यगुण
24. अमरुक	वैदर्भीरीति, प्रसाद और माधुर्यगुण
25. विष्णुशर्मा (पञ्चतन्त्र)	वैदर्भीरीति, प्रसाद और माधुर्यगुण

संस्कृतकवियों की प्रसिद्धि का कारण

कवि	कविप्रसिद्धि
1. कालिदास	(i) उपमा (ii) वैदर्भीरीति
2. भारवि	(i) अर्थगौरव, (ii) अलङ्कृतकाव्यशैली के जनक
3. दण्डी	पदलालित्य
4. माघ	उपमा, अर्थगौरव, पदलालित्य तीनों के लिए
5. भवभूति	करुणरस के प्रयोक्ता
6. अम्बिकादत्तव्यास	ऐतिहासिक उपन्यास के प्रणेता
7. बाणभट्ट	(i) अलङ्कार एवं समास बहुल रचना (ii) कादम्बरी में तीन जन्मों की कथा (ii) पाञ्चाली रीति,
8. त्रिविक्रमभट्ट	(i) श्लेष अलङ्कार के प्रचुर प्रयोक्ता (ii) चम्पूकाव्य के आद्यप्रणेता
9. सुबन्धु	श्लेष प्रधानशैली के प्रयोक्ता

संस्कृत-कवयित्री

कवयित्री	ग्रन्थ	कालक्रम
1. **विज्जिका**	स्फुटपद्य	850 ई.
2. **गङ्गादेवी**	मथुराविजयम्	14वीं शताब्दी
3. **अवन्ति सुन्दरी** (राजशेखर की पत्नी)	देशीशब्दकोष	10वीं शताब्दी
4. **तिरुमलाम्बा** (राजा अच्युतराय की रानी)	वरदम्बिकापरिणयचम्पू	16वीं शताब्दी
5. **रामभद्राम्बा**	रघुनाथाभ्युदय	17वीं शताब्दी
6. **पण्डिता क्षमाराव**	कथामुक्तावली	1890-1954
7. **पुष्पा दीक्षित**	अष्टाध्यायी सहजबोध (व्याकरणग्रन्थ)	इक्कीसवीं शताब्दी
8. **मधुरवाणी**	रामकथा	1590 ई.
9. **सुभद्रा**	स्फुटपद्य	–
10. **विकटनितम्बा**	स्फुटपद्य	–
11. **शीला भट्टारिका**	स्फुटपद्य	–
12. **देवकुमारिका**	स्फुटपद्य	–
अन्य स्त्री लेखिकायें राजम्मा, सुन्दरावली, ज्ञानसुन्दरी आदि।		

परिशिष्ट-3 ''संस्कृतवाङ्मयम्''

संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख लेखकों का अनुमानित कालक्रम

लेखक	प्रमुख ग्रन्थ	अनुमानित काल
1. आचार्य लगध	वेदाङ्गज्योतिष	1400 ई.पू. से 800 ई.पू.
2. यास्क	निरुक्त	800 ई. पू.
3. आचार्य पिङ्गल	छन्दःसूत्रम्	800 ई.पू. से 700 ई.पू.
4. कपिल	सांख्यसूत्र	700 ई.पू.
5. जैमिनि	मीमांसासूत्र	600 ई.पू.
6. कणाद	वैशेषिकसूत्र	500 ई.पू.
7. चरक	चरकसंहिता	500 ई.पू.–200 ई.पू.
8. सुश्रुत	सुश्रुतसंहिता	500 ई.पू.
9. वाल्मीकि	वाल्मीकीयरामायणम्	500 ई.पू.
10. पाणिनि	अष्टाध्यायी	500 ई.पू.
11. महर्षिव्यास (कृष्णद्वैपायन)	महाभारत एवं 18 पुराण	400 ई.पू.
12. कौटिल्य (चाणक्य)	अर्थशास्त्र	400 ई.पू.
13. बादरायण	ब्रह्मसूत्र	300 ई.पू.
14. कात्यायन (वररुचि)	अष्टाध्यायी पर वार्तिक	300 ई.पू.
15. पतञ्जलि	महाभाष्य, योगसूत्र	185 ई.पू.
16. भरतमुनि	नाट्यशास्त्रम्	100 ई.पू. से 300 ई.
17. भास	स्वप्नवासवदत्तम् आदि 13 नाटक	100 ई. पू. से 200 ई. के मध्य
18. मनु	मनुस्मृति	200 ई.पू. से 200 ई. के बीच
19. कालिदास	रघुवंशम्, अभिज्ञानशाकुन्तलम् आदि	ई.पू. प्रथम शताब्दी
20. अश्वघोष	बुद्धचरितम्, सौन्दरानन्द	प्रथम शताब्दी ई.
21. गुणाढ्य	बृहत्कथा	प्रथमशताब्दी ई.
22. शालिवाहन (हाल)	गाहा सतसई (गाथासप्तशती)	प्रथम या द्वितीय शताब्दी ई.
23. वात्स्यायन	न्यायसूत्रभाष्य	द्वितीयशताब्दी ई.
24. शर्ववर्मा	कातन्त्रव्याकरण	द्वितीयशताब्दी ई.
25. शबरस्वामी	शाबरभाष्य	द्वितीयशताब्दी ई.
26. विष्णुशर्मा	पञ्चतन्त्र	दूसरी शताब्दी से छठी शताब्दी के बीच
27. अमरसिंह	नामलिङ्गानुशासनम् (अमरकोष)	तीसरी शताब्दी का पूर्वार्द्ध
28. वात्स्यायन	कामसूत्रम्	तीसरी शताब्दी ई.
29. आर्यशूर	जातकमाला	तीसरी–चौथी शताब्दी ई.
30. शूद्रक	मृच्छकटिकम्	तीसरी–चौथी शताब्दी ई.
31. ईश्वरकृष्ण	सांख्यकारिका	चौथी शताब्दी ई.
32. विशाखदत्त	मुद्राराक्षसम्	पाँचवीं छठी शताब्दी ई.
33. कुमारदास	जानकीहरणम्	छठी शताब्दी ई.

लेखक	प्रमुख ग्रन्थ	अनुमानित काल
34. भारवि	किरातार्जुनीयम्	छठी शताब्दी ई. (560 ई.–615 ई. के बीच)
35. दण्डी	दशकुमारचरितम्	छठी शताब्दी ई.
36. भर्तृहरि	वाक्यपदीयम्	छठी शताब्दी ई.
37. भट्टि	रावणवध/भट्टिकाव्य	500 ई. से 650 ई. के बीच
38. भामह	काव्यालङ्कार	छठी शताब्दी
39. माघ	शिशुपालवधम्	सातवीं शताब्दी ई. (675 ई.)
40. आदि शङ्कराचार्य	शाङ्करभाष्य, सौन्दर्यलहरी	सातवीं शताब्दी ई.
41. बाणभट्ट	कादम्बरी, हर्षचरितम्	सातवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध
42. मयूरभट्ट	सूर्यशतकम्	सातवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध
43. सुबन्धु	वासवदत्ता	सातवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध
44. हर्ष	प्रियदर्शिका, रत्नावली, नागानन्द	सातवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध
45. भवभूति	महावीरचरितम्, उत्तररामचरितम्	सातवीं शताब्दी के आसपास
46. अमरुकवि (अमरुक)	अमरुकशतकम्	सातवीं शताब्दी
47. वाक्पतिराज	गौडवहो	750 ई. के आसपास
48. भट्टनारायण	वेणीसंहारम्	सातवीं आठवीं शताब्दी
49. दामोदरभट्ट	कुट्टनीमतम्	आठवीं शताब्दी ई.
50. मुरारि	अनर्घराघवम्	आठवीं शताब्दी का उत्तरार्ध
51. वामन	काव्यालङ्कारसूत्र	आठवीं शताब्दी
52. आनन्दवर्धन	ध्वन्यालोक	850 ई.
53. वाचस्पतिमिश्र	भामतीटीका, तत्त्वकौमुदी (सांख्य)	नवीं शताब्दी
54. दामोदरमिश्र	हनुमन्नाटक	नवी शताब्दी ई.
55. रत्नाकर	हरविजयम्	नवीं शताब्दी
56. राजशेखर	काव्यमीमांसा	नवीं शताब्दी का उत्तरार्ध
57. जयन्तभट्ट	न्यायमञ्जरी	दसवीं शताब्दी ई.
58. धनपाल	तिलकमञ्जरी	दसवीं शताब्दी
59. त्रिविक्रमभट्ट	नलचम्पू, मदालसाचम्पू	दसवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध
60. कुन्तक	वक्रोक्तिजीवितम्	ग्यारहवीं शताब्दी
61. महिमभट्ट	व्यक्तिविवेक	ग्यारहवीं शताब्दी
62. क्षेमेन्द्र	औचित्यविचारचर्चा, रामायणमञ्जरी	ग्यारहवीं शताब्दी
63. कृष्णमिश्र	प्रबोधचन्द्रोदय	ग्यारहवीं शताब्दी
64. सोमदेव	कथासरित्सागर	ग्यारहवीं शताब्दी
65. रामानुज	श्रीभाष्य	ग्यारहवीं शताब्दी
66. बिल्हण	विक्रमाङ्कदेवचरितम्	ग्यारहवीं शताब्दी का उत्तरार्ध

लेखक	प्रमुख ग्रन्थ	अनुमानित काल
67. भोज	रामायणचम्पू	ग्यारहवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध
68. केशवमिश्र	तर्कभाषा	बारहवीं शताब्दी ई.
69. भास्कराचार्य	लीलावती, बीजगणित	बारहवीं शताब्दी
70. मम्मट	काव्यप्रकाश	बारहवीं शताब्दी (ग्यारहवीं शताब्दी का उत्तरार्ध)
71. कल्हण	राजतरङ्गिणी	बारहवीं शताब्दी
72. मंखक	श्रीकण्ठचरितम्	बारहवीं शताब्दी
73. श्रीहर्ष	नैषधीयचरितम्	बारहवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध
74. गोवर्धनाचार्य	आर्यासप्तशती	बारहवीं शताब्दी
75. जयदेव	गीतगोविन्दम्	बारहवीं शताब्दी
76. विज्ञानभिक्षु	सांख्यप्रवचनभाष्यम्	तेरहवीं शताब्दी
77. गङ्गेशोपाध्याय	तत्त्वचिन्तामणि	तेरहवीं शताब्दी
78. मध्वाचार्य	पूर्णप्रज्ञभाष्यम्	तेरहवीं शताब्दी
79. शार्ङ्गधर	शार्ङ्गधरसंहिता	तेरहवीं शताब्दी
80. गङ्गादास	छन्दोमञ्जरी	तेरहवीं शताब्दी से पन्द्रहवीं शताब्दी के मध्य
81. विद्यापति	पुरुषपरीक्षा	चौदहवीं शताब्दी ई.
82. नारायणपण्डित	हितोपदेश	चौदहवीं शताब्दी
83. विश्वनाथ	साहित्यदर्पण	चौदहवीं शताब्दी
84. अनन्तभट्ट	भारतचम्पू	पन्द्रहवीं शताब्दी
85. वल्लभाचार्य	अणुभाष्यम्	1479 ई. 1544 ई.
86. बल्लालसेन	भोजप्रबन्धम्	सोलहवीं शताब्दी
87. तिरुमलाम्बा	वरदम्बिकापरिणयचम्पू	सोलहवीं शताब्दी
88. भट्टोजिदीक्षित	सिद्धान्तकौमुदी	सोलहवीं शताब्दी
89. अन्नंभट्ट	तर्कसंग्रह	सत्रहवीं शताब्दी
90. कौण्डभट्ट	वैयाकरणभूषणसार	सत्रहवीं शताब्दी
91. नागेशभट्ट	वैयाकरणसिद्धान्तलघुमञ्जूषा	सत्रहवीं शताब्दी
92. सदानन्द	वेदान्तसार	सत्रहवीं शताब्दी
93. पण्डितराज जगन्नाथ	रसगङ्गाधर, गङ्गालहरी	सत्रहवीं शताब्दी (1600–1660 ई.)
94. अम्बिकादत्तव्यास	शिवराजविजयम्	1858–1900 ई.
95. पण्डिता क्षमाराव	कथामुक्तावली	1890–1954 ई.
96. पुष्पादीक्षिता	अग्निशिखा	इक्कीसवीं शताब्दी
97. रेवाप्रसाद द्विवेदी	सीताचरितम्	इक्कीसवीं शताब्दी
98. अभिराजराजेन्द्र मिश्र	जानकीजीवनम्	इक्कीसवीं शताब्दी
99. राधावल्लभ त्रिपाठी	लहरीदशकम्, गीतवीवरम्	इक्कीसवीं शताब्दी
100. ललितकुमार त्रिपाठी	गङ्गालहरी (सम्पादनम्)	इक्कीसवीं शताब्दी

संस्कृतसाहित्य के प्रमुख दम्पती, प्रेमी-प्रेमिका एवं उनकी सन्तानें

पति/प्रेमी	पत्नी/प्रेमिका	पुत्र/पुत्री
1. अगस्त्य	लोपामुद्रा	
2. वशिष्ठ	अरुन्धती	
3. विश्वामित्र	मेनका	शकुन्तला
4. मारीच	अदिति (दाक्षायणी)	इन्द्र
5. ययाति	शर्मिष्ठा, देवयानी	पुरु
6. अत्रि	अनसूया	दुर्वासा
7. इन्द्र	इन्द्राणी/शची/पौलोमी	जयन्त
8. ऋष्यशृङ्ग	शान्ता	
9. दुष्यन्त	शकुन्तला, हंसपदिका, वसुमती	भरत (सर्वदमन)
10. कालिदास	विद्योत्तमा	–
11. भर्तृहरि	पिङ्गला	–
12. भारवि	रसिकवती/रसिका	मनोरथ
13. पण्डितराजजगन्नाथ	(i) लवङ्गी (यवनी प्रेमिका) (ii) भामिनी (पत्नी)	
14. राम	सीता	कुश-लव
15. लक्ष्मण	उर्मिला	चन्द्रकेतु
16. भरत	माण्डवी	पुष्कल
17. शत्रुघ्न	श्रुतिकीर्ति	
18. नल	दमयन्ती	
19. पुरूरवा	उर्वशी	
20. चारुदत्त	धूता/वसन्तसेना	रोहसेन
21. नन्द	सुन्दरी	
22. अविमारक	कुरङ्गी	
23. भीम	हिडिम्बा	घटोत्कच
24. पञ्चपाण्डव	द्रौपदी	
25. अर्जुन	सुभद्रा	अभिमन्यु
26. धृतराष्ट्र	गान्धारी	दुर्योधन
27. पाण्डु	कुन्ती/माद्री	पञ्चपाण्डव
28. कृष्ण	रुक्मिणी/सत्यभामा	प्रद्युम्न
29. शर्विलक	मदनिका	
30. अग्निमित्र	मालविका	
31. उदयन	रत्नावली (सागरिका)	
32. उदयन	वासवदत्ता	
33. माधव	मालती	
34. मकरन्द	मदयन्तिका	
35. तारापीड	विलासवती	चन्द्रापीड
36. चन्द्रापीड	कादम्बरी	
37. पुण्डरीक	महाश्वेता	
38. हंस	गौरी	महाश्वेता
39. चित्ररथ	मदिरा	कादम्बरी
40. श्वेतकेतु	लक्ष्मी	पुण्डरीक
41. हेममाली (यक्ष)	विशालाक्षी (यक्षिणी)	
42. कवि जयदेव (गीतगोविन्दकार)	पद्मावती	
43. राजा दिलीप	सुदक्षिणा	रघु
44. अज	इन्दुमती	दशरथ
45. कामदेव	रति	
46. शिव	पार्वती	गणेश, कार्तिकेय
47. विष्णु	लक्ष्मी	
48. अभिमन्यु	उत्तरा	परीक्षित
49. हिमालय	मैना	पार्वती
50. शुकनास	मनोरमा	वैशम्पायन
51. राजशेखर	अवन्तिसुन्दरी	
52. दुर्योधन	भानुमती	
53. गौतम	अहल्या	शतानन्द
54. याज्ञवल्क्य	मैत्रेयी	

संस्कृतवाङ्मय में गुरु-शिष्य-परम्परा

शिष्य	गुरु
1. जनक	याज्ञवल्क्य, शतानन्द (पुरोहित)
2. भर्तृहरि	गोरखनाथ/वसुरात (बौद्धमत में)
3. भवभूति	ज्ञाननिधि
4. वरदराज	भट्टोजिदीक्षित
5. भट्टोजिदीक्षित	शेषकृष्ण
6. तुलसीदास	नरहर्यानन्द
7. राम	वशिष्ठ, विश्वामित्र, अगस्त्य
8. श्रीकृष्ण	सान्दीपनी
9. चन्द्रगुप्त	चाणक्य
10. देवताओं के	बृहस्पति
11. असुरों के	शुक्राचार्य
12. लव, कुश, सैधातकि, दण्डायन	वाल्मीकि
13. दुष्यन्त	सोमरात (पुरोहित)
14. पाणिनि	वर्ष (उपवर्ष)
15. मंखक	रुय्यक

शिष्य	गुरु	शिष्य	गुरु
16. दाराशिकोह	पण्डितराज जगन्नाथ (संस्कृतशिक्षक)	**32. दुर्योधनादि (कौरवों के)**	द्रोणाचार्य
17. बाणभट्ट	भर्वु	**33. चन्द्रापीड**	शुकनाश (उपदेष्टा)
18. शिवाजी	समर्थगुरुरामदास, कोण्डदेव	**34. जैमिनि**	पराशर
19. कनिष्क	अश्वघोष	**35. पराशर**	व्यास
20. अम्बिकादत्तव्यास	विश्वक्सेन	**36. मण्डनमिश्र**	कुमारिलभट्ट
21. अर्जुन (पञ्चपाण्डव)	द्रोणाचार्य	**37. उम्बेक (भवभूति)**	कुमारिलभट्ट
22. शङ्कराचार्य	आचार्य गोविन्दपाद	**38. प्रभाकरमिश्र**	कुमारिलभट्ट
23. गोविन्दपाद	आचार्य गौडपाद	**39. शालिकनाथ**	प्रभाकरमिश्र
24. महेन्द्रपाल	राजशेखर	**40. आसुरि**	कपिलमुनि
25. अभिनवगुप्त	भट्टतौत	**41. पञ्चशिख**	आसुरि
26. प्रतिहारेन्दुराज	मुकुलभट्ट	**42. हस्तामलक**	शङ्कराचार्य
27. एकलव्य	द्रोणाचार्य	**43. योगीन्द्र सदानन्द**	अद्वयानन्द
28. शार्ङ्गरव, शारद्वत	कण्व	**44. अरस्तू**	प्लेटो
29. गालव	मारीच	**45. प्लेटो**	सुकरात
30. कर्ण	परशुराम	**46. सिकन्दर**	अरस्तू
31. भीष्मपितामह	परशुराम	**47. नागेशभट्ट**	हरिदीक्षित

संस्कृतवाङ्मय में वर्णित राजा और राजधानी

राजा	राजधानी	राजा	राजधानी
1. शूद्रक	विदिशा ('वेत्रवती' नदी के किनारे)	**14. उदयन**	कौशाम्बी/उज्जयिनी
2. तारापीड	उज्जयिनी	**15. भर्तृहरि**	धारानगरी
3. दुष्यन्त	हस्तिनापुर	**16. विक्रमादित्य**	उज्जयिनी
4. राम	अयोध्या (सरयूनदी के किनारे)	**17. दुर्विनीत**	कोंकण
5. रावण	लङ्का ('समुद्र' तट पर)	**18. राजाभोज**	धारानगरी
6. नल	निषधदेश	**19. हर्षवर्धन**	थाणेश्वर
7. कृष्ण	द्वारिका (समुद्र के किनारे)	**20. जयचन्द्र**	कन्नौज
8. शिवाजी	सतारा/रायगढ़	**21. पृथ्वीराज**	दिल्ली
9. दुर्योधन (सुयोधन)	हस्तिनापुर	**22. महमूदगजनवी**	गजनी
10. युधिष्ठिर	इन्द्रप्रस्थ/हस्तिनापुर	**23. मुहम्मद गोरी**	गोरदेश
11. पुरु	हस्तिनापुर	**24. औरङ्गजेब**	दिल्ली
12. प्रद्योत	उज्जयिनी	**25. रन्तिदेव**	दशपुर
13. कुबेर	अलकापुरी		

संस्कृत में वर्णित कुछ प्रसिद्ध आश्रम एवं नगर

आश्रम/नगर	नदी/पर्वत	आश्रम/नगर	नदी/पर्वत
1. कण्व आश्रम	मालिनी नदी	**8. जाबालि आश्रम**	पम्पासरोवर
2. विश्वामित्र आश्रम	गौतमी नदी	**9. महाश्वेता आश्रम**	अच्छोदसरोवर
3. वाल्मीकि आश्रम	गङ्गानदी/तमसानदी	**10. विदिशा**	वेत्रवती (बेतवा)
4. भारद्वाज आश्रम	प्रयाग का सङ्गमतट	**11. उज्जयिनी**	क्षिप्रा नदी
5. अगस्त्य आश्रम	गोदावरी/दण्डकवन	**12. शचीतीर्थ (अप्सरातीर्थ)**	गङ्गा नदी
6. मारीच आश्रम	हेमकूटपर्वत	**13. अयोध्या**	सरयू नदी
7. यक्ष का निवास	रामगिरिपर्वत (चित्रकूट)	**14. हरिद्वार (कनखल)**	गङ्गा नदी

संस्कृत ग्रन्थों का मङ्गलाचरण

रचना	मङ्गलाचरण/(छन्द)	देवता	प्रकार
1. रघुवंशम्	**वागर्थाविव सम्पृक्तौ......।** (अनुष्टुप्)	शिव-पार्वती	नमस्कारात्मक
2. अभिज्ञानशाकुन्तलम्	**या सृष्टिः स्रष्टुराद्या.....।** (स्रग्धरा)	अष्टमूर्तिशिव	आशीर्वादात्मक
3. किरातार्जुनीयम्	**श्रियः कुरुणामधिपस्य पालनीम्** (वंशस्थ)	लक्ष्मी	वस्तुनिर्देशात्मक
4. शिशुपालवधम्	**श्रियः पतिः श्रीमति शासितुं जगत्...।** (वंशस्थ)	लक्ष्मी	वस्तुनिर्देशात्मक
5. नैषधीयचरितम्	**निपीय यस्य (वंशस्थ)**	–	वस्तुनिर्देशात्मक
6. मेघदूतम्	**कश्चित् कान्ता विरह गुरुणा....**(मन्दाक्रान्ता)	–	वस्तुनिर्देशात्मक
7. उत्तररामचरितम्	**इदं कविभ्यः पूर्वेभ्यो नमो वाकं प्रशास्महे** (अनुष्टुप्)	पूर्ववर्ती वाल्मीकि आदिकवि वाल्मीकि	नमस्कारात्मक
8. शिवराजविजय	**विष्णोर्माया भगवती..... (भा.)**	विष्णु	नमस्कारात्मक तथा वस्तुनिर्देशात्मक
9. कादम्बरी कथा	**रजोजुषे जन्मनि सत्त्ववृत्तये....।** (वंशस्थ)	ब्रह्म, विष्णु, शिव रूपी परब्रह्म की	नमस्कारात्मक
10. नीतिशतकम्	**दिक्कालाद्यनवच्छिन्ना.....।** (अनुष्टुप्)	परब्रह्म की	नमस्कारात्मक

संस्कृतग्रन्थों की श्लोकसंख्या

रचना	कुल श्लोक संख्या
1. मेघदूतम्	पूर्वमेघ 67 उत्तरमेघ 54 = 121 इसमें 6 श्लोक प्रक्षिप्त। कुल = 63 + 52 = 115 श्लोक (मल्लिनाथ के अनुसार)
2. उत्तररामचरितम्	लगभग 256 (तृतीय अङ्क में – 48)
3. अभिज्ञानशाकुन्तलम्	लगभग 196 (चतुर्थ अङ्क में– 22)
4. किरातार्जुनीयम्	लगभग 1030 (कुछ विद्वानों के अनुसार– 1040) (प्रथमसर्ग में–46
5. नीतिशतकम्	लगभग 111 (11 पद्धतियाँ)
6. शृङ्गारशतकम्	लगभग 103
7. वैराग्यशतकम्	लगभग–111
8. रघुवंशम्	लगभग 1569
9. वाल्मीकीयरामायणम् (चतुर्विंशतिसाहस्त्रीसंहिता)	लगभग–24000, (7 काण्ड, 500 सर्ग)
10. महाभारतम् (शतसाहस्त्रीसंहिता)	लगभग – एक लाख श्लोक, 18 पर्व
11. शिशुपालवधम्	लगभग 1650 (प्रथम सर्ग में – 75)
12. नैषधीयचरितम्	लगभग 2830 (प्रथम सर्ग में–145)
13. मृच्छकटिकम्	लगभग–380 (दश अङ्क)
14. गीता	लगभग–700, 18 अध्याय
15. भट्टिकाव्यम् (रावणवध)–भट्टि	लगभग–1624 श्लोक, 22 सर्ग
16. हरविजयम् (रत्नाकर)	4321 श्लोक, 50 सर्ग
17. राघवपाण्डवीय-कविराज	668 श्लोक, 13 सर्ग
18. भास के तेरह नाटक	1092 श्लोक
19. मालविकाग्निमित्रम्	96 श्लोक, 5 अङ्क
20. अनर्घराघवम्	567 श्लोक, 7 अङ्क
21. बालरामायणम्	741 पद्य, 10 अङ्क
22. ऋतुसंहारम्	144 श्लोक, 6 सर्ग

संस्कृतग्रन्थों के उपजीव्यग्रन्थ

रचना	उपजीव्यग्रन्थ
1. रघुवंशम् (कालिदास)	वाल्मीकीयरामायण एवं पद्मपुराण
2. मेघदूतम् (कालिदास)	ब्रह्मवैवर्तपुराण से कथानक तथा वाल्मीकि रामायण से दूत की कल्पना
3. किरातार्जुनीयम् (भारवि)	महाभारत का वनपर्व
4. **शिशुपालवधम्** (माघ)	(i) महाभारत का सभापर्व (सर्ग 33 से 45 तक) (ii) श्रीमद्भागवतपुराण (10 वाँ स्कन्ध, 74वाँ अध्याय)
5. नैषधीयचरितम् (श्रीहर्ष)	महाभारत के वनपर्व का नलोपाख्यान
6. अभिज्ञानशाकुन्तलम् (कालिदास)	(i) महाभारत आदिपर्व का शकुन्तलोपाख्यान (अध्याय 67 से 74 तक) (ii) पद्मपुराण
7. उत्तररामचरितम् (भवभूति)	वाल्मीकीयरामायण का उत्तरकाण्ड (सर्ग 42 से 97 तक)
8. वेणीसंहारम् (भट्टनारायण)	महाभारत का सभापर्व
9. मृच्छकटिकम् (शूद्रक)	भासकृत 'चारुदत्तम्' नाटक
10. कादम्बरी (बाणभट्ट)	गुणाढ्य की 'बृहत्कथा' (सुमनस् वृत्तान्त)
11. शिवराजविजयम् (अम्बिकादत्त व्यास)	इतिहासप्रसिद्ध कथानक
12. बुद्धचरितम् (अश्वघोष)	'ललितविस्तर' बौद्धग्रन्थ, इतिहासप्रसिद्ध
13. कुमारसम्भवम् (कालिदास)	श्रीमद्भागवतमहापुराण
14. सौन्दरानन्द (अश्वघोष)	इतिहासप्रसिद्ध
15. स्वप्नवासवदत्तम् (भास)	इतिहासप्रसिद्ध उदयनविषयक लोककथायें
16. प्रतिमानाटकम् (भास)	वाल्मीकीयरामायण (अयोध्याकाण्ड से रावणवध तक)
17. अभिषेकनाटकम् (भास)	वाल्मीकीयरामायणम्
18. पञ्चरात्रम् (भास)	महाभारतम्
19. मध्यमव्यायोग (भास)	महाभारतम्
20. कर्णभारम् (भास)	महाभारतम्
21. दूतघटोत्कचम् (भास)	महाभारतम्
22. बालचरितम् (भास)	महाभारतम्
23. ऊरुभङ्ग (भास)	महाभारतम्
24. प्रतिज्ञायौगन्धरायण (भास)	उदयनकथाश्रित
25. मालविकाग्निमित्रम् (कालिदास)	इतिहासप्रसिद्ध
26. विक्रमोर्वशीयम् (कालिदास)	ऋग्वेद एवं महाभारतम्
27. रत्नावली (हर्ष)	उदयनकथाश्रित/कविकल्पित इतिहासप्रसिद्ध
28. महावीरचरितम् (भवभूति)	वाल्मीकिरामायण
29. प्रसन्नराघवम् (जयदेव)	वाल्मीकिरामायण
30. नलचम्पू (त्रिविक्रमभट्ट)	महाभारत
31. मुद्राराक्षस (विशाखदत्त)	इतिहासप्रसिद्ध, विष्णुपुराण
32. प्रियदर्शिका (हर्ष)	कविकल्पनाप्रसूत
33. मालतीमाधवम् (भवभूति)	कविकल्पनाप्रसूत
34. अनर्घराघवम् (मुरारि)	वाल्मीकिरामायणम्
35. प्रबोधचन्द्रोदय (कृष्णमिश्र)	कविकल्पनाप्रसूत
36. हर्षचरितम् (बाण)	इतिहास प्रसिद्ध
37. ऋतुसंहारम् (कालिदास)	कविकल्पित
38. भट्टिकाव्य/रावणवध (भट्टि)	वाल्मीकिरामायण
39. जानकीहरणम् (कुमारदास)	वाल्मीकि रामायण
40. हरविजयम् (रत्नाकर)	शिशुपालवध का प्रभाव
41. शारिपुत्रप्रकरणम् (अश्वघोष)	इतिहासप्रसिद्ध

संस्कृतग्रन्थों में नायक-नायिका

रचना	नायक	नायिका
1. स्वप्नवासवदत्तम्	उदयन (धीरललित)	वासवदत्ता/पद्मावती
2. मृच्छकटिकम्	चारुदत्त (धीरप्रशान्त)	वसन्तसेना/धूता
3. अभिज्ञानशाकुन्तलम्	दुष्यन्त (धीरोदात्त)	शकुन्तला
4. कुमारसम्भवम्	शिव	पार्वती
5. उत्तररामचरितम्	राम (धीरोदात्त)	सीता
6. किरातार्जुनीयम्	अर्जुन (नायक, धीरोदात्त)	द्रौपदी
	किरात (शिव, सहनायक)	
	दुर्योधन (प्रतिनायक)	
7. मेघदूतम्	यक्ष (हेममाली)	यक्षिणी (विशालाक्षी)
8. शिशुपालवधम्	श्रीकृष्ण (धीरोदात्त)	सत्यभामा/रुक्मिणी
9. नैषधीयचरितम्	नल (धीरोदात्त)	दमयन्ती
10. रत्नावली (नाटिका)	उदयन (धीरललित)	रत्नावली (सागरिका)
11. कादम्बरी कथा	चन्द्रापीड (नायक, धीरोदात्त)	कादम्बरी
	वैशम्पायन (सहनायक)	महाश्वेता (सहनायिका)
12. दशकुमारचरितम्	राजहंस (दस राजकुमार)	विलासवती
	राजवाहन	अवन्तिसुन्दरी
13. वेणीसंहारम्	भीम (धीरोद्धत)	द्रौपदी
14. मालविकाग्निमित्रम्	अग्निमित्र (धीरोदात्त, कुछ विद्वानों के मत में धीरललित)	मालविका
15. विक्रमोर्वशीयम् (त्रोटक)	पुरूरवा (विक्रम)	उर्वशी
16. मुद्राराक्षसम्	चाणक्य और चन्द्रगुप्त	नायिका का अभाव
17. प्रियदर्शिका	राजा उदयन (धीरललित)	आरण्यिका (प्रियदर्शिका)
18. नागानन्द	जीमूतवाहन	मलयवती
19. मालतीमाधवम् (प्रकरण)	(i) माधव (ii) मकरन्द	(i) मालती (ii) मदयन्तिका
20. महावीरचरितम्	राम (धीरोदात्त)	सीता
21. बुद्धचरितम्	भगवान् बुद्ध	–
22. हर्षचरितम्	हर्षवर्धन	–
23. रघुवंशम्	श्रीराम (रघु)	सीता
24. कर्पूरमञ्जरी	चन्द्रपाल	कर्पूरमञ्जरी
25. प्रसन्नराघवम्	श्रीराम	सीता
26. प्रबोधचन्द्रोदय	प्रबोधचन्द्र	
27. ऊरुभङ्गम्	दुर्योधन/भीम	–

संस्कृत-ग्रन्थों में अङ्गी रस

रचना	प्रधान/मुख्य/अङ्गीरस	रचना	प्रधान/मुख्य/अङ्गीरस
1. अभिज्ञानशाकुन्तलम्	शृङ्गार	**17. मुद्राराक्षसम्**	वीररस
2. मेघदूतम्	विप्रलम्भशृङ्गार	**18. प्रियदर्शिका**	शृङ्गाररस
3. उत्तररामचरितम्	करुणरस	**19. रत्नावली**	शृङ्गाररस
4. किरातार्जुनीयम्	वीररस	**20. नागानन्द**	शान्तरस/वीररस
5. नैषधीयचरितम्	शृङ्गार	**21. वेणीसंहारम्**	वीररस
6. शिशुपालवधम्	वीर रस	**22. कुन्दमाला**	करुणरस
7. रघुवंशम्	वीररस	**23. प्रबोधचन्द्रोदय**	करुणरस/वीररस
8. बुद्धचरितम्	शान्तरस	**24. शृङ्गारशतकम्**	शृङ्गाररस
9. मृच्छकटिकम्	शृङ्गाररस	**25. गीतगोविन्दम्**	शृङ्गाररस
10. कुमारसम्भवम्	शृङ्गाररस	**26. रावणवध (भट्टिकाव्यम्)**	वीररस
11. शिवराजविजयम्	वीररस	**27. जानकीहरणम्**	शृङ्गाररस
12. स्वप्नवासवदत्तम्	शृङ्गाररस	**28. कर्पूरमञ्जरी**	शृङ्गाररस
13. मालतीमाधवम् (प्रकरण)	शृङ्गाररस	**29. शारिपुत्रप्रकरणम्**	शान्तरस
14. महावीरचरितम् (नाटक)	वीररस	**30. अनर्घराघवम्**	शृङ्गाररस
15. मालविकाग्निमित्रम्	शृङ्गाररस	**31. रामायणम्**	करुणरस
16. विक्रमोर्वशीयम्	शृङ्गाररस	**32. महाभारतम्**	शान्तरस

संस्कृत-ग्रन्थों में प्रयुक्त छन्द

ग्रन्थ	ग्रन्थों में प्रयुक्त प्रमुख छन्द
1. किरातार्जुनीयम् (प्रथम सर्ग)	वंशस्थ, 45वें में पुष्पिताग्रा, अन्तिम 46वें में–मालिनी (कुल प्रयुक्त छन्द–22)
2. शिशुपालवधम्	वंशस्थ, अनुष्टुप्, उपजाति (कुल प्रयुक्त छन्द – 25)
3. नैषधीयचरितम्	उपजाति (कुल प्रयुक्त छन्द–19)
4. मेघदूतम्	मन्दाक्रान्ता (सम्पूर्ण ग्रन्थ में)
5. रघुवंशम्	उपजाति, अनुष्टुप्
6. अभिज्ञानशाकुन्तलम्	आर्या, वसन्ततिलका, अनुष्टुप् (कुल प्रयुक्त छन्द–24)
7. मृच्छकटिकम्	अनुष्टुप् (कुलप्रयुक्त छन्द–21)
8. उत्तररामचरितम्	अनुष्टुप्, शिखरिणी (कुल प्रयुक्त छन्द 19)
9. बुद्धचरितम्	अनुष्टुप्, उपजाति
10. भट्टिकाव्यम् (रावणवधम्)	अनुष्टुप्, उपजाति, आर्या, और पुष्पिताग्रा आदि अनेकछन्द
11. मुद्राराक्षसम्	शार्दूलविक्रीडित, स्रग्धरा, शिखरिणी
12. वेणीसंहारम्	अनुष्टुप् (62), वसन्ततिलका (38), शार्दूलविक्रीडित (34) (कुलप्रयुक्त छन्द–18)
13. बालरामायणम्	शार्दूलविक्रीडित और स्रग्धरा।
14. प्रसन्नराघवम्	वसन्ततिलका, अनुष्टुप्, शार्दूलविक्रीडित, शिखरिणी।
15. अमरुकशतकम्	शार्दूलविक्रीडितम्
16. कुमारसम्भवम्	अनुष्टुप्
17. सौन्दरानन्द	अनुष्टुप्
18. जानकीहरणम्	अनुष्टुप्
19. हरविजय	शार्दूलविक्रीडित, मन्दाक्रान्ता

संस्कृत ग्रन्थों का विभाजन

ग्रन्थ-ग्रन्थकार	विभाजन
1. काव्यप्रकाश (मम्मट)	दश उल्लास, 142 कारिकायें, 604 उदाहरण।
2. साहित्य दर्पण (विश्वनाथ)	दश परिच्छेद
3. रसगङ्गाधर (जगन्नाथ)	चार आनन
4. दशरूपक (धनञ्जय)	चार प्रकाश
5. काव्यादर्श (दण्डी)	तीन परिच्छेद, 660 पद्य
6. शिवराजविजयम् (अम्बिकादत्तव्यास)	तीन विराम, 12 निःश्वास
7. महाकाव्य	सर्गों में विभक्त (8 से अधिक सर्ग)
8. नाटक	अङ्को में विभक्त (5 अङ्क या इससे अधिक)
9. मेघदूतम् (कालिदास)	दो खण्डों में–पूर्वमेघ, उत्तरमेघ
10. कादम्बरी कथा (बाणभट्ट)	दो भागों में–पूर्वभाग, उत्तरभाग
11. आख्यायिका	उच्छ्वासों में (हर्षचरितम् में 8 उच्छ्वास)
12. वक्रोक्तिजीवितम् (कुन्तक)	चार उन्मेष
13. वाल्मीकीयरामायणम् (वाल्मीकिः)	**7 काण्ड, 500 सर्ग, 24,000 श्लोक**
14. महाभारतम् (वेदव्यासः)	**18 पर्व, 1 लाख श्लोक**
15. श्रीमद्भागवतपुराण (वेदव्यासः)	**12 स्कन्ध, 18000 श्लोक**
16. गीता (वेदव्यासः)	18 अध्याय, 700 श्लोक
17. व्यक्तिविवेक (महिमभट्ट)	तीन **विमर्श**
18. सरस्वतीकण्ठाभरण (भोजराज)	पाँच परिच्छेद
19. शृङ्गारप्रकाश (भोजराज)	36 प्रकाश
20. कविकण्ठाभरण (क्षेमेन्द्र)	पाँच अध्याय 55 कारिकायें।
21. अभिधावृत्तिमात्रिका (मुकुलभट्ट)	15 कारिकायें
22. ध्वन्यालोक (आनन्दवर्धन)	4 उद्योत
23. काव्यालङ्कारसारसंग्रह (उद्भट)	6 वर्गों में
24. काव्यालङ्कार (रुद्रट)	16 अध्याय, 714 आर्यायें
25. काव्यालङ्कारसूत्र (वामन)	5 अधिकरण
26. काव्यालङ्कार (भामह)	6 परिच्छेद
27. काव्यमीमांसा (राजशेखर)	18 अध्याय
28. चन्द्रालोक (जयदेव)	10 मयूख
29. राजतरङ्गिणी (कल्हण)	8 तरङ्ग
30. ऋतुसंहार (कालिदास)	6 सर्ग, 144 श्लोक
31. नाट्यशास्त्र (भरत)	36 अध्याय
32. कथासरित्सागर (सोमदेव)	18 लम्बक, 124 तरङ्ग, 22000 पद्य।
33. हितोपदेश (नारायणपण्डित)	चार परिच्छेद, 43 कहानियाँ
34. पञ्चतन्त्र (विष्णुशर्मा)	पाँच तन्त्र, पाँच मुख्य कथायें, 1003 श्लोक, 75 उपकथायें।
35. कर्पूरमञ्जरी (राजशेखर)	4 जवनिका

संस्कृत ग्रन्थों में प्रमुख वर्णन

वर्णन	ग्रन्थ	वर्णन	ग्रन्थ
1. अच्छोदसरोवर	कादम्बरी	**5. इन्द्रकीलपर्वत**	किरातार्जुनीयम् सर्ग-5
2. पम्पासरोवर	कादम्बरी	**6. शरद्वर्णन**	किरातार्जुनीयम् सर्ग 4
3. शाल्मलीवृक्ष	कादम्बरी	**7. षड्ऋतु वर्णन**	(i) शिशुपालवधम् सर्ग-6
4. रैवतकपर्वत	शिशुपालवधम्-सर्ग 4		(ii) ऋतुसंहारम्

संस्कृतग्रन्थों के अपरनाम

मुख्यग्रन्थ	अपरनाम	मुख्यग्रन्थ	अपरनाम
1. किरातार्जुनीयम्	लक्ष्मीपदाङ्कमहाकाव्यम्	**4. नलचम्पू**	दमयन्तीकथा
2. शिशुपालवधम्	श्र्यङ्कमहाकाव्यम् ('श्री' पदाङ्कमहाकाव्य)	**5. अष्टाध्यायी**	अष्टक
3. नैषधीयचरितम्	आनन्दपदाङ्कमहाकाव्यम्		

संस्कृतवाङ्मय की दशत्रयी

1. बृहत्त्रयी

ग्रन्थ	कवि
1. किरातार्जुनीयम्	भारवि
2. शिशुपालवधम्	माघ
3. नैषधीयचरितम्	श्रीहर्ष

2. लघुत्रयी

ग्रन्थ	कवि
1. रघुवंशम्	कालिदासः
2. कुमारसम्भवम्	कालिदासः
3. मेघदूतम्	कालिदासः

3. गद्यबृहत्त्रयी

कवि	ग्रन्थ
1. सुबन्धु	वासवदत्ता
2. बाणभट्ट	कादम्बरी
3. दण्डी	दशकुमारचरितम्

4. उपजीव्यग्रन्थत्रयी

ग्रन्थः	कविः
1. रामायणम्	वाल्मीकिः
2 महाभारतम्	वेदव्यासः
3. भागवतपुराणम्	वेदव्यासः

5. पुरुषार्थत्रयी

1. धर्म
2. अर्थ
3. काम

6. पाषाणत्रयी

1. किरातार्जुनीयम् का प्रथम सर्ग
2. किरातार्जुनीयम् का द्वितीय सर्ग
3 किरातार्जुनीयम् का तृतीय सर्ग

7. गुणत्रयी

1. सत्त्वगुणः
2. रजोगुणः
3. तमोगुणः

8. मुनित्रयी

मुनिः	व्याकरणग्रन्थः	साहित्यिकग्रन्थः
1. पाणिनिः	अष्टाध्यायी	जाम्बवतीजयम्/पातालविजयम्
2. कात्यायनः	वार्तिकम्	स्वर्गारोहणम्
3. पतञ्जलिः	महाभाष्यम्	महानन्दकाव्यम्

9. प्रस्थानत्रयी

1. ब्रह्मसूत्र
2. उपनिषद्
3. गीता

10. वेदत्रयी

1. ऋग्वेद
2. यजुर्वेद
3. सामवेद

यज्ञ	यज्ञकर्ता
वाजपेय	महाकवि (भवभूति के पूर्वज)
राजसूय	युधिष्ठिर
पुत्रेष्टि	दशरथ
अश्वमेध	राम
गवालम्भ	राजा रन्तिदेव

वीणा	स्वामी	ग्रन्थ
महती	नारद	शिशुपालवधम्
कच्छपी	सरस्वती	–
घोषवती	उदयन	स्वप्नवासवदत्तम्

परिशिष्ट-4 ''काव्यशास्त्रम्''

काव्यशास्त्रीय छः सम्प्रदाय

सम्प्रदाय	प्रवर्तक और प्रमुख आचार्य
1. रससम्प्रदाय	**भरत (प्रवर्तक)** भोजराज, भट्टनायक, विश्वनाथ, राजशेखर, केशवमिश्र, शारदातनय
2. अलङ्कारसम्प्रदाय	**भामह** (प्रवर्तक), दण्डी, उद्भट, प्रतिहारेन्दुराज रुद्रट, जयदेव, अप्पयदीक्षित।
3. रीतिसम्प्रदाय	**वामन** (प्रवर्तक)
4. ध्वनिसम्प्रदाय	**आनन्दवर्धन** (प्रवर्तक), रुय्यक, मम्मट, अभिनवगुप्त, जगन्नाथ
5. वक्रोक्तिसम्प्रदाय	**कुन्तक** (प्रवर्तक)
6. औचित्यसम्प्रदाय	**क्षेमेन्द्र** (प्रवर्तक)
चमत्कार सम्प्रदाय	कुछ आधुनिक काव्यशास्त्री

काव्यलक्षण–तालिका

ग्रन्थ	ग्रन्थकार	काव्यलक्षण
1. काव्यप्रकाश	आचार्य मम्मट	तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि–(का.प्र. प्रथमोल्लास)
2. साहित्यदर्पण	आचार्य विश्वनाथ	वाक्यं रसात्मकं काव्यम्
3. रसगङ्गाधर	पण्डितराज जगन्नाथ	रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्
4. काव्यालङ्कार	भामह	शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्
5. वक्रोक्तिजीवितम्	कुन्तक	वक्रोक्तिः काव्यजीवितम्
6. काव्यालङ्कार सूत्र	वामन	रीतिरात्मा काव्यस्य
7. ध्वन्यालोक	आनन्दवर्धन	काव्यस्यात्मा ध्वनिः
8. काव्यादर्श	दण्डी	शरीरं तावदिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली
9. औचित्यविचारचर्चा	क्षेमेन्द्र	औचित्यं रससिद्धस्य स्थिरं काव्यस्य जीवितम्
10. अग्निपुराण	व्यास	संक्षेपाद्वाक्यमिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली/काव्यं स्फुरदलङ्कारं गुणवद् दोषवर्जितम्।।
11. शृङ्गारप्रकाश	भोज	अदोषं गुणवद्काव्यमलङ्कारैरलङ्कृतम् रसान्वितं कविः कुर्वन् कीर्तिं प्रीतिं च विन्दति।।

काव्यशास्त्र में अलङ्कारों की संख्या

ग्रन्थ–ग्रन्थकार	अलङ्कारों की संख्या	ग्रन्थ–ग्रन्थकार	अलङ्कारों की संख्या
1. नाट्यशास्त्र–भरत	उपमा, रूपक, दीपक और यमक कुल चार अलङ्कार	7. काव्यालङ्कार–रुद्रट	51 अलङ्कार
2. अग्निपुराण	09 शब्दालङ्कार + 08 अर्थालङ्कार + 06 उभयालङ्कार =23 अलङ्कार	8. सरस्वतीकण्ठाभरण–भोजराज	24 शब्दालङ्कार + 24 अर्थालङ्कार + 24 उभयालङ्कार =72 अलङ्कार
3. विष्णुधर्मोत्तर पुराण	18 अलङ्कार	9. काव्यप्रकाश – मम्मट	06 शब्दालङ्कार + 61 अर्थालङ्कार =67 अलङ्कार
4. काव्यालङ्कार–भामह	38 अलङ्कार	10. अलङ्कारसर्वस्व – रुय्यक	78 अलङ्कार
5. काव्यादर्श–दण्डी	38 अलङ्कार	11. साहित्यदर्पण–विश्वनाथ	78 अलङ्कार
6. काव्यालङ्कारसारसंग्रह–उद्भट	41 अलङ्कार	12. चन्द्रालोक–जयदेव	100 अलङ्कार
		13. कुवलयानन्द–अप्पयदीक्षित	120 अलङ्कार

साहित्यशास्त्र में रसों की संख्या

रस	स्थायीभाव	वर्ण	देवता
1. शृङ्गार	रति	श्याम	विष्णु
2. वीररस	उत्साह	सुवर्णवत्	महेन्द्र
3. बीभत्सरस	जुगुप्सा	नील	महाकाल
4. रौद्ररस	क्रोध	रक्त	रुद्र
5. हास्यरस	हास	शुक्ल	प्रमथ
6. अद्भुतरस	विस्मय	पीत	ब्रह्मा
7. भयानक रस	भय	कृष्ण	काल
8. करुणरस	शोक	कपोत	यम
9. शान्तरस	निर्वेद/शम	कुन्दपुष्पवत्	श्रीनारायण

- आचार्य भरत और धनञ्जय के अनुसार नाटक में आठरस माने गये हैं–**''अष्टौ नाट्ये रसाः स्मृताः''–(नाट्यशास्त्र)**
- अभिनव गुप्त एवं आचार्य मम्मट आदि ने 'शान्तरस' को नवम रस के रूप में स्वीकार किया है। **''शान्तोऽपि नवमो रसः''**
- **रुद्रट** ने **'प्रेयान्'** नामक दसवें रस की उद्भावना की है।
- **रूपगोस्वामी** ने **'भक्तिरस'** को प्रधानरस माना है।
- **विश्वनाथ** नवरस के अतिरिक्त **'वात्सल्य'** नामक रस को भी स्वीकार करते हैं।
- **भवभूति** ने **'करुणरस'** को ही एकमात्र मूलरस मानते हैं– **''एको रसः करुण एव''**

आचार्य भरत प्रतिपादित रससूत्र

- आचार्य भरत द्वारा 'नाट्यशास्त्र' में प्रतिपादित रससूत्र– **''विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः''** अर्थात् विभाव, अनुभाव और व्यभिचारिभाव के संयोग से 'रस' की निष्पत्ति होती है।

आचार्य भरत प्रतिपादित 'रससूत्र' के व्याख्याकार

व्याख्याकार	समय	मत	दर्शन
1. भट्टलोल्लट	नवमशताब्दी	उत्पत्तिवाद (उत्पाद्य-उत्पादक)	मीमांसा
2. शङ्कुक	नवमशताब्दी	अनुमितिवाद (अनुमाप्य-अनुमापक)	न्याय
3. भट्टनायक	11वीं शताब्दी	भुक्तिवाद (भोज्य-भोजक)	सांख्य
4. अभिनवगुप्त	11वीं शताब्दी	अभिव्यक्तिवाद (व्यङ्ग्य-व्यञ्जक)	शैव/वेदान्त

शंखों के नाम

देव	शंख
1. श्रीकृष्ण	पाञ्चजन्य
2. युधिष्ठिर	अनन्तविजय
3. भीम	पौण्ड्र
4. अर्जुन	देवदत्त
5. नकुल	सुघोष
6. सहदेव	मणिपुष्पक

नायकों की कोटियाँ

धीरोदात्त – राम, कृष्ण, अर्जुन, चन्द्रापीड, दुष्यन्त, शिवाजी।
धीरोद्धत – भीम, परशुराम, दुर्योधन आदि।
धीरललित – यक्ष, उदयन आदि।
धीरप्रशान्त – चारुदत्त आदि।

नायिकाओं की कोटियाँ

स्वकीया प्रौढा – सीता, द्रौपदी
स्वकीया मध्या – यक्षिणी
स्वकीया मुग्धा – शकुन्तला, कादम्बरी, महाश्वेता

परिशिष्ट-5 ''संस्कृतनाटकम्''

संस्कृत-रूपकों के दशभेद

रूपक	अङ्क-संख्या	उदाहरणम्
1. नाटक	5 से 10 अङ्क	अभिज्ञानशाकुन्तलम्, स्वप्नवासवदत्तम्, उत्तररामचरितम्
2. प्रकरण	10 अङ्क	मृच्छकटिकम्, मालतीमाधवम्, शारिपुत्रप्रकरण पुष्पभूषित
3. भाण	1 अङ्क	लीलामधुकरम्, शृङ्गारशेखर, मर्कटमदलिका, धूर्तसमागम
4. व्यायोग	1 अङ्क	सौगन्धिकाहरणम्, जामदग्न्यजय
5. समवकार	3 अङ्क	समुद्रमन्थनम् (12 नायक), नवग्रहचरितम्
6. डिम	4 अङ्क	त्रिपुरदाह (16 नायक)
7. ईहामृग	4 अङ्क /1 अङ्क	कुसुमशेखरविजयम्
8. अङ्क (उत्सृष्टिकाङ्क)	1 अङ्क	शर्मिष्ठा-ययातिः
9. वीथी	1 अङ्क	मालविका
10. प्रहसन	1 अङ्क	कन्दर्पकेलिः/धूर्तचरितम्
● नाटिका	4 अङ्क	रत्नावली, प्रियदर्शिका
● सट्टक	4 जवनिका	कर्पूरमञ्जरी

संस्कृतनाटकों में विदूषक

नाटक	विदूषक	नाटक	विदूषक
1. अभिज्ञानशाकुन्तलम् (कालिदास)	माढव्य/माधव्य	6. स्वप्नवासवदत्तम् (भास)	वसन्तक
2. विक्रमोर्वशीयम् (कालिदास)	माणवक	7. मालतीमाधवम् (भवभूति)	विदूषक का अभाव
3. मालविकाग्निमित्रम् (कालिदास)	गौतम	8. महावीरचरितम् (भवभूति)	विदूषक का अभाव
4. मृच्छकटिकम् (शूद्रक)	मैत्रेय	9. उत्तररामचरितम् (भवभूति)	विदूषक का अभाव
5. रत्नावली (श्रीहर्ष)	वसन्तक	10. मुद्राराक्षसम् (विशाखदत्त)	विदूषक का अभाव

संस्कृत नाटकों में कञ्चुकी

नाटक	कञ्चुकी का नाम	नाटक	कञ्चुकी का नाम
1. प्रतिज्ञायौगन्धरायण	बादरायण	5. उत्तररामचरितम्	गृष्टि
2. दूतवाक्यम्	बादरायण	6. रत्नावली	बाभ्रव्य
3. स्वप्नवासवदत्तम्	बादरायण	7. वेणीसंहारम्	जयन्धर (युधिष्ठिर का)
4. अभिज्ञानशाकुन्तलम्	वातायन		विनयन्धर (दुर्योधन का)

नाटकीय पञ्चीकरण

पञ्च अर्थप्रकृतियाँ	पञ्च कार्यावस्थायें	पञ्च सन्धियाँ	पञ्च अर्थोपक्षेपक	पञ्चनाटककार
1. बीज	1. आरम्भ	1. मुखसन्धि	1. विष्कम्भक	1. भास
2. बिन्दु	2. यत्न	2. प्रतिमुखसन्धि	2. चूलिका	2. कालिदास
3. पताका	3. प्राप्त्याशा	3. गर्भसन्धि	3. अङ्कास्य	3. शूद्रक
4. प्रकरी	4. नियताप्ति	4. अवमर्श/विमर्शसन्धि	4. अङ्कावतार	4. विशाखदत्त
5. कार्य	5. फलागम	5. उपसंहृति/निर्वहणसन्धि	5. प्रवेशक	5. भवभूति

प्रमुख नाटकों के अङ्कों के नाम

अभिज्ञानशाकुन्तलम् के अङ्कों के नाम

अङ्क	अङ्क का नाम	श्लोकसंख्या
प्रथम	आश्रम प्रवेश	34
द्वितीय	आश्रमनिवेश	18
तृतीय	मिलन	24
चतुर्थ	विदा	22
पञ्चम	प्रत्याख्यान	31
षष्ठ	पश्चात्ताप	32
सप्तम	पुनर्मिलन	35
	योग =	**196**

उत्तररामचरितम् के अङ्कों के नाम

अङ्क	अङ्क का नाम	श्लोकसंख्या
प्रथम	चित्रदर्शन	51
द्वितीय	पञ्चवटीप्रवेश	30
तृतीय	छाया	48
चतुर्थ	कौशल्याजनकयोग	29
पञ्चम	कुमारविक्रम	35
षष्ठ	कुमारप्रत्यभिज्ञान	42
सप्तम	सम्मेलन	21
	योग =	**256**

मृच्छकटिकम् के अङ्कों के नाम

अङ्क	अङ्क का नाम	श्लोक संख्या
प्रथम	अलङ्कारन्यास	58
द्वितीय	द्यूतकरसंवाहक	20
तृतीय	सन्धिच्छेद	30
चतुर्थ	मदनिकाशर्विलक	33
पञ्चम	दुर्दिन	52
षष्ठ	प्रवहणविपर्यय	27
सप्तम	आर्यकापहरण	09
अष्टम	वसन्तसेनामोटन	47
नवम	व्यवहार (न्यायालय)	43
दशम	संहार (उपसंहार)	61
	योग =	**380**

रत्नावली के अङ्कों के नाम

अङ्क	अङ्क का नाम	श्लोकसंख्या
प्रथम अङ्क	मदनमहोत्सव	26
द्वितीय अङ्क	कदलीगृहम्	21
तृतीय अङ्क	सङ्केतक	19
चतुर्थ अङ्क	ऐन्द्रजालिक	20
		86

छन्दों में वर्णों की संख्या

छन्द	वर्णों की संख्या
अनुष्टुप्	$08 \times 4 = 32$
इन्द्रवज्रा	$11 \times 4 = 44$
उपेन्द्रवज्रा	$11 \times 4 = 44$
उपजाति	$11 \times 4 = 44$
रथोद्धता	$11 \times 4 = 44$
शालिनी	$11 \times 4 = 44$
स्वागता	$11 \times 4 = 44$
वंशस्थ	$12 \times 4 = 48$
द्रुतविलम्बित	$12 \times 4 = 48$
तोटक (त्रोटक)	$12 \times 4 = 48$
भुजङ्गप्रयात	$12 \times 4 = 48$
प्रहर्षिणी, अतिरुचिरा	$13 \times 4 = 52$
वसन्ततिलका	$14 \times 4 = 56$
मालिनी	$15 \times 4 = 60$
पञ्चचामर	$16 \times 4 = 64$
शिखरिणी, हरिणी, पृथ्वी, मन्दाक्रान्ता	$17 \times 4 = 68$
शार्दूलविक्रीडित	$19 \times 4 = 76$
स्रग्धरा	$21 \times 4 = 84$

परिशिष्ट-6 ''संस्कृतवाङ्मय का संख्यात्मक महत्त्व''

- **एकम्**

ईश्वरः, ब्रह्म, सूर्यः, चन्द्रः, पृथ्वी, शुक्राचार्यस्य नेत्रम्, गणेशस्य दन्तः।

- **द्वयम्**
- सुखम्-दुःखम् सृष्टिः-लयः
- शुभम्-अशुभम् लाभः-अलाभः
- कारणं-कार्यम् पुण्यम्-पापम्
- सत्यम्-असत्यम् जयः-पराजयः
- **अयनद्वयम्**

1. उत्तरायणम् 2. दक्षिणायनम्

- **पक्षद्वयम्**

1. कृष्णपक्षः 2. शुक्लपक्षः

- **विद्याद्वयम्**

1. परा 2. अपरा

- **त्रयः अग्नयः**

1. वडवाग्निः 2. जठराग्निः 3. दावाग्निः

- **त्रयः कालाः**

1. भूतकालः 2. वर्तमानकालः 3. भविष्यकालः

- **त्रयः जीवाः**

1. जलचरः 2. थलचरः 3. नभचरः

- **त्रीणि दुःखानि**

1. आध्यात्मिकदुःखम् 2. आधिभौतिकदुःखम्, 3. आधिदैविकदुःखम्

- **त्रयः देवाः**

1. ब्रह्मा 2. विष्णुः 3. महेशः।

- **त्रयः दोषाः**

1. वात 2. पित्त 3. कफ

- **त्रयः रामाः**

1. परशुरामः 2. श्रीरामः 3. बलरामः

- **त्रीणि ऋणानि**

1. पितृऋणम् 2. ऋषिऋणम् 3. देवऋणम्

- **भुवनत्रयम्**

1. सुरभुवनम् 2. नरभुवनम् 3. नागभुवनम्

- **मूर्तित्रयम्**

1. ब्रह्मा 2. विष्णुः 3. महेश्वरः

- **त्रिवर्गः**

1. धर्मः 2. अर्थः 3. कामः

- **तिस्त्रः शब्दशक्तयः**

1. अभिधा 2. लक्षणा 3. व्यञ्जना

- **त्रिवेणी**

1. गङ्गा 2. यमुना 3. सरस्वती

- **त्रिविधाः पुरुषाः**

1. उत्तमाः 2. मध्यमाः 3. अधमाः

- **त्रयो गुणाः**

1. सत्त्वगुणः 2. रजोगुणः 3. तमोगुणः

- **त्रिकरणानि**

1. मनः 2. वाक् 3. कायः

- **तिस्रो धनगतयः**

1. दानम् 2. भोगः 3. नाशः

- **पिटकत्रयम्**

1. सूत्रपिटकम् 2. विनयपिटकम् 3. अभिधम्मपिटकम्

- **चत्वारि धामानि**

1. जगन्नाथधाम 2. रामेश्वरधाम
3. द्वारिकाधाम 4. बद्रीनाथधाम

- **चतुर्विधः भक्तः**

1. दुःखी 2. जिज्ञासुः
3. अर्थार्थी 4. ज्ञानी

- **चत्वारि युगानि**

1. सत्ययुगम् 2. त्रेतायुगम्
3. द्वापरयुगम् 4. कलियुगम्

- **चत्वारः वर्णाः**

1. बाह्मणः 2. क्षत्रियः
3. वैश्यः 4. शूद्रः।

- **चत्वारो वेदाः**

1. ऋग्वेदः 2. यजुर्वेदः
3. सामवेदः 4. अथर्ववेदः

- **चत्वारो वेदभागाः**

1. संहिता 2. ब्राह्मणम्
3. आरण्यकम् 4. उपनिषद्

- **चत्वारः पुरुषार्थाः**

1. धर्मः 2. अर्थः
3. कामः 4. मोक्षः

- **चतस्त्रः अवस्थाः**

1. जाग्रदवस्था 2. स्वप्नावस्था
3. सुषुप्त्यवस्था 4. समाध्यवस्था (तुरीयावस्था)

- **चत्वारः आश्रमाः**

1. ब्रह्मचर्याश्रमः 2. गृहस्थाश्रमः
3. वानप्रस्थाश्रमः 4. संन्यासाश्रमः

- **चतस्त्रो वयोऽवस्थाः**
  1. बाल्यम् 2. कौमारम्
  3. यौवनम् 4. वार्धक्यम्
- **चत्वारोपायाः**
  1. साम 2. दाम
  3. दण्डः 4. भेदः
- **चतुरङ्गिणी सेना**
  1. रथः 2. गजः
  3. अश्वः 4. पदातिः
- **पञ्चामृतम्**
  1. दुग्धम् 2. दधि 3. घृतम्
  4. मधु 5. शर्करा।
- **पञ्च विद्यार्थिलक्षणानि**
  1. काकचेष्टा 2. वकोध्यानम् 3. श्वाननिद्रा
  4. अल्पाहारी 5. गृहत्यागी
- **पञ्च यमाः (योगसूत्र के अनुसार)**
  1. अहिंसा 2. सत्यम् 3. अस्तेयः
  4. ब्रह्मचर्यः 5. अपरिग्रहः
- **पञ्च नियमाः (योगसूत्र के अनुसार)**
  1. शौच 2. सन्तोष 3. तप,
  4. स्वाध्याय 5. ईश्वरप्रणिधान
- **पञ्च कर्माणि (तर्कसंग्रह के अनुसार)**
  1. उत्क्षेपण 2. अपक्षेपण 3. आकुञ्चन
  4. प्रसारण 5. गमन।
- **पञ्च क्लेशाः (योगसूत्र के अनुसार)**
  1. अविद्या 2. अस्मिता 3. राग
  4. द्वेष 5. अभिनिवेश
- **पञ्चभूतानि**
  1. पृथ्वी 2. जलम् 3. तेजः
  4. वायुः 5. आकाशम्
- **पञ्च तन्मात्राणि**
  1. गन्धः 2. रसः 3. रूपम्
  4. स्पर्शः 5. शब्दः
- **पञ्च वायवः**
  1. प्राणवायुः 2. अपानवायुः
  3. व्यानवायुः 4. उदानवायुः 5. समानवायुः
- **पञ्च कोषाः**
  1. अन्नमयः 2. प्राणमयः
  3. मनोमयः 4. विज्ञानमयः 5. आनन्दमयः
- **पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि**
  1. श्रोत्रम् 2. त्वक्
  3. चक्षुः 4. जिह्वा 5. घ्राणम् (नासिका)
- **पञ्च कर्मेन्द्रियाणि**
  1. वाक् 2. पाणि
  3. पाद 4. पायु 5. उपस्थ
- **पञ्च सत्यः (सती)**
  1. अनसूया 2. सुलोचना 3. सावित्री
  4. सीता 5. उर्मिला
- **पञ्च कन्याः**
  1. अहल्या 2. द्रौपदी
  3. कुन्ती 4. तारा 5. मन्दोदरी
- **पञ्चाङ्गम्**
  1. तिथिः 2. वासरः
  3. नक्षत्रम् 4. योगः 5. करणम्
- **पञ्चावयववाक्यम्**
  1. प्रतिज्ञा 2. हेतुः
  3. उदाहरणम् 4. उपनयः 5. निगमनम्
- **पञ्चगव्यम्**
  1. दुग्धम् 2. दधि
  3. घृतम् 4. गोमूत्रम् 5. गोमयम्
- **पञ्च यज्ञाः**
  1. देवयज्ञः 2. पितृयज्ञः
  3. भूतयज्ञः 4. मनुष्ययज्ञः 5. ब्रह्मयज्ञः
- **पञ्च पाण्डवाः**
  1. युधिष्ठिरः 2. भीमसेनः
  3. अर्जुनः 4. नकुलः 5. सहदेवः
- **पञ्च महाकाव्यानि**
  1. रघुवंशम् 2. कुमारसम्भवम्
  3. किरातार्जुनीयम् 4. शिशुपालवधम् 5. नैषधीयचरितम्
- **कामदेवस्य पञ्चबाणाः**
  1. अरविन्दम् 2. अशोकः
  3. चूतम् 4. नवमल्लिका 5. नीलोत्पलम्
- **षड् रसाः**
  1. मधुरः 2. अम्लः 3. लवणः
  4. कटुः 5. कषायः 6. तिक्तः
- **ब्राह्मणस्य षट् कर्माणि**
  1. अध्ययनम् 2. अध्यापनम् 3. यजनम्
  4. याजनम् 5. दानम् 6. प्रतिग्रहः

- **षट् रिपवः**
  1. कामः 2. क्रोधः 3. लोभः
  4. मोहः 5. मदः 6. मात्सर्यम्
- **षट् ऋतवः**
  1. ग्रीष्मः 2. वर्षा 3. शरद्
  4. हेमन्तः 5. शिशिरः 6. वसन्तः
- **वेदस्य षट् अङ्गानि (वेदाङ्ग)**
  1. शिक्षा 2. कल्पः 3. निरुक्तम्
  4. छन्दः 5. व्याकरणम् 6. ज्योतिषम्
- **षट्चक्रम्**
  1. मूलाधारचक्रम् 2. अधिष्ठानचक्रम् 3. मणिपूरचक्रम्
  4. अनाहतचक्रम् 5. विशुद्धचक्रम् 6. आज्ञाचक्रम्
- **षड्दर्शनम्**
  1. सांख्यदर्शनम् 2. योगदर्शनम् 3. न्यायदर्शनम्
  4. वैशेषिकदर्शनम् 5. मीमांसादर्शनम् 6. वेदान्तदर्शनम्
- **सप्त स्वराः**
  1. षड्ज 2. ऋषभ 3. गान्धार
  4. मध्यम 5. पञ्चम 6. धैवत
  7. निषाद (सा, रे, ग, म, प, ध, नि)
- **सप्त वासरः**
  1. सोमवासरः 2. मङ्गलवासरः 3. बुधवासरः
  4. गुरुवासरः 5. शुक्रवासरः 6. शनिवासरः
  7.रविवासरः
- **सप्त ऊर्ध्वलोकाः**
  1. भूलोकः 2. भुवर्लोकः
  3. स्वर्लोकः 4. महर्लोकः
  4. जनलोकः 5. तपोलोकः 7. सत्यलोकः
- **सप्त अधोलोकाः**
  1. अतललोकः 2. वितललोकः 3. सुतललोकः
  4. रसातललोकः 5. तलातललोकः 6. महातललोकः
  7. पाताललोकः
- **सप्त पर्वताः**
  1. महेन्द्रपर्वतः 2. मलयपर्वतः 3. सह्यपर्वतः
  4. हिमालयपर्वतः 5. रैवतकपर्वतः 6. विन्ध्यपर्वतः
  7. अरावलिपर्वतः
- **सप्त समुद्राः**
  1. क्षारसमुद्र 2. क्षीरसमुद्रः 3. दधिसमुद्रः
  4. मधुसमुद्रः 5. सुरासमुद्रः 6. इक्षुसमुद्रः
  7. शुद्धोदकसमुद्रः
- **सप्त प्रकृतयः**
  1. राजा 2. अमात्य 3. सुहृत्
  4. कोष 5. राष्ट्र 6. दुर्ग
  7. बल (सेना)
- **सप्त धातवः**
  1. रस 2. रक्त 3. मांस
  4. वसा 5. मज्जा 6. अस्थि
  7. वीर्य
- **सप्तर्षयः**
  1. कश्यपः 2.अत्रिः 3. भारद्वाजः
  4. गौतमः 5. विश्वामित्रः 6. जमदग्निः
  7. वसिष्ठः
- **सप्तकल्पाः**
  1. पार्थिकल्पः 2. कौर्मकल्पः 3. अनन्तकल्पः
  4. नृसिंहकल्पः 5. प्रियाकल्पः 6. श्वेतवराहकल्पः
  7. अमरकल्पः
- **रामायणे सप्तकाण्डानि**
  1. बालकाण्डम् 2. अयोध्याकाण्डम्
  3. अरण्यकाण्डम् 4. किष्किन्धाकाण्डम्
  5. सुन्दरकाण्डम् 6. युद्धकाण्डम् 7. उत्तरकाण्डम्
- **अष्टौ विवाहाः**
  1. ब्राह्मविवाहः 2. दैवविवाहः 3. आर्षविवाहः
  4. प्राजापत्यविवाहः 5. आसुरविवाहः 6.गान्धर्वविवाहः
  7. राक्षसविवाहः 8. पैशाचविवाहः
- **योगाभ्यासे अष्टाङ्गम्**
  1. यम 2. नियम 3. आसन 4. प्राणायाम
  5. प्रत्याहार 6. धारणा 7. ध्यान 8. समाधि
- **अष्टान्नानि**
  1. भोज्यम् 2. पेयम् 3. चोष्यम् 4. लेह्यम्
  5. खाद्यम् 6. चर्व्यम् 7. निपेयम् 8. भक्ष्यम्
- **अष्टौ देहाः**
  1. स्थूलम् 2. सूक्ष्मम्
  3. कारणम् 4. महाकारणम्
  5. विराट् 6. हिरण्यम्
  7. अव्याकृतम् 8. मूलप्रकृतिः
- **अष्टौ नागाः**
  1. अनन्तः 2. वासुकिः 3. तक्षकः
  4. कर्कोटकः 5. शंखः 6. कुलिकः
  7. पद्मः 8. महापद्मः
- **अष्ट दिग्गजाः**
  1. ऐरावतः 2. पुण्डरीकः 3. वामनः
  4. कुमुदः 5. अञ्जनः 6. पुष्पदन्तः
  7. सार्वभौमः 8. सुप्रतीकः
- **अष्ट महासिद्धयः**
  1. अणिमा 2. महिमा 3. लघिमा
  4. गरिमा 5. प्राप्ति 6. प्राकाम्य
  7. ईशिता 8. वशिता

- **अष्टमैथुनम्**
  1. स्मरण 2. कीर्तन 3. केलि 4. प्रेक्षण
  5. गुह्यभाषण 6. संकल्प 7. अध्यवसाय
  8. क्रियानिष्पत्तिः
- **अष्ट दिक्पालाः**
  1. इन्द्रः 2. वह्निः 3. यमः 4. नैर्ऋतः
  5. वरुणः 6. वायुः 7. कुबेरः 8. ईशः
- **साष्टाङ्गनमस्कारः**
  1. पद्भ्याम् 5. जानुभ्याम्
  2. पाणिभ्याम् 6. उरसा
  3. धिया 7. शिरसा
  4. वचसा 8. दृष्ट्या
- **अष्ट मातृकाः**
  1. ब्राह्मी 2. माहेश्वरी
  3. कौमारी 4. वैष्णवी
  5. वाराही 6. इन्द्राणी
  7. कौवेरी 8. चामुण्डा
- **नवद्रव्याणि (तर्कसंग्रह के अनुसार)**
  1. पृथ्वी 2. जल 3. तेज
  4. वायु 5. आकाश 6. काल
  7. दिक् 8. आत्मा 9. मन
- **नव दुर्गा (दुर्गासप्तशती के अनुसार)**
  1. शैलपुत्री 2. ब्रह्मचारिणी 3. चन्द्रघण्टा
  4. कूष्माण्डा 5. स्कन्दमाता 6. कात्यायनी
  7. कालरात्रि 8. महागौरी 9. सिद्धिदात्री
- **नवग्रहाः**
  1. सूर्यः 2. चन्द्रः 3. मंगलः
  4. बुधः 5. बृहस्पतिः 6. शुक्रः
  7. शनैश्चरः 8. राहुः 9. केतुः
- **कुबेरस्य 'नव' निधयः**
  1. महापद्मम् 2. पद्मम् 3. शंखः
  4. मकरः 5. कच्छपः 6. मुकुन्दः
  7. कुन्दः 8. नीलः 9. खर्वः
- **नवरत्नानि**
  1. मुक्ता 2. माणिक्यम् 3. वैदूर्यम्
  4. गोमेदा 5. वज्रः 6. विद्रुमम्
  7. पद्मरागः 8. मरकतम् 9. नीलम्
- **विक्रमस्य नव सभारत्नानि**
  1. धन्वन्तरिः 2. क्षपणकः 3. अमरसिंहः
  4. शङ्कुः 5. वेतालभट्टः 6. घटकर्परः
  7. कालिदासः 8. वराहमिहिरः 9. वररुचिः
- **नवविधा भक्तिः**
  1. श्रवणम् 2. कीर्तनम् 3. स्मरणम्
  4. पादसेवनम् 5. अर्चनम् 6. वन्दनम्
  7. दास्यम् 8. सख्यम् 9. आत्मनिवेदनम्
- **नव योगेश्वर**
  1. कविः 2. हरिः 3. अन्तरिक्षः 4. प्रबुद्धः
  5. पिप्पलायनः 6. अग्निहोत्रिः 7. द्रुमिलः 8. चमसः
  9. करभाजनः
- **नवरसाः**
  1. शृङ्गारः 2. हास्यः 3. करुणः
  4. रौद्रः 5. वीरः 6. भयानकः
  7. बीभत्सः 8. अद्भुतः 9. शान्तः
- **दश धर्मलक्षणानि (मनुस्मृति के अनुसार)**
  1. धृति (धैर्य) 2. क्षमा 3. दम
  4. अस्तेय 5. शौच 6. इन्द्रियनिग्रह
  7. धी (बुद्धि) 8. विद्या 9. सत्य
  10. अक्रोध
- **दशनामी संन्यासी**
  1. तीर्थ 2. आश्रम 3. वन
  4. अरण्य 5. गिरि 6. पर्वत
  7. सागर 8. सरस्वती 9. भारती
  10.पुरी
- **दश महाविद्याः**
  1. काली 2. तारा 3. षोडशी
  4. भुवनेश्वर 5. धूमावती 6. छिन्नमस्ता
  7. त्रिपुरभैरवी 8. बगला 9. मातङ्गी
  10. कमला
- **दशावताराः**
  1. मत्स्यावतारः 2. कूर्मावतारः 3. वराहावतारः
  4. नरसिंहावतारः 5. वामनावतारः 6. परशुरामावतारः
  7. रामावतारः 8. कृष्णावतारः 9. बुद्धावतारः
  10. कल्क्यवतारः
- **दश दिशः**
  1. पूर्वादिक् 2. पश्चिमदिक्
  3. उत्तरदिक् 4. दक्षिणदिक्
  5. आग्नेयदिक् 6. नैर्ऋतिदिक्
  7. वायव्यदिक् 8. ईशानदिक्
  9. ऊर्ध्वम् 10. अधः

- **दश कामावस्थाः**

1. अभिलाषावस्था 2. चिन्तावस्था
3. मृत्युरवस्था 4. गुणकीर्तनावस्था
5. उद्वेगावस्था 6. प्रलापावस्था
7. उन्मादावस्था 8. व्याध्यवस्था
9. जडतावस्था 10. मरणावस्था

- **एकादशोपनिषदः**

1. ईशोपनिषद् 2. केनोपनिषद्
3. कठोपनिषद् 4. प्रश्नोपनिषद्
5. मुण्डकोपनिषद् 6. माण्डूक्योपनिषद्
7. तैत्तिरीयोपनिषद् 8. बृहदारण्यकोपनिषद्
9. ऐतरेयोपनिषद् 10. छान्दोग्योपनिषद्
11. श्वेताश्वतरोपनिषद्

- **एकादश रुद्राः**

1. महादेवः 2. शिवः 3. रुद्रः
4. शङ्करः 5. नीललोहितः 6. ईशानः
7. विजयः 8. भीमः 9. देवदेवः
10. भवोद्भवः 11. आदित्यः

- **द्वादश ज्योतिर्लिङ्गानि**

1. सोमनाथः 2. मल्लिकार्जुनः
3. महाकालः 4. ओंकारेश्वरः
5. केदारनाथः 6. भीमशङ्करः
7. विश्वनाथः 8. त्र्यम्बकेश्वरः
9. वैद्यनाथः 10. नागेश्वरः
11. रामेश्वरः 12. घुश्मेश्वरः

- **द्वादश आदित्याः**

1. मित्रः 2. रविः
3. सूर्यः 4. भानुः
5. खगः 6. पूषा
7. हिरण्यगर्भः 8. मरीचिः
9. आदित्यः 10. सविता
11. अर्कः 12. भास्करः

- **द्वादश मासाः**

1. चैत्रमासः 2. वैशाखमासः
3. ज्येष्ठमासः 4. आषाढमासः
5. श्रावणमासः 6. भाद्रमासः
7. आश्वयुजमासः 8. कार्तिकमासः
9. मार्गशीर्षमासः 10. पुष्यमासः
11. माघमासः 12. फाल्गुनमासः

- **द्वादश राशयः**

राशि	स्वामी	राशि	स्वामी
1. मेष	मंगल	7. तुला	शुक्र
2. वृषभ	शुक्र	8. वृश्चिक	मंगल
3. मिथुन	बुध	9. धनु	गुरु
4. कर्क	चन्द्र	10. मकर	शनि
5. सिंह	सूर्य	11. कुम्भ	शनि
6. कन्या	बुध	12. मीन	गुरु

- **त्रयोदश रत्नानि-**

1. वज्र 2. मुक्ता 3. पद्मराग
4. मरकत 5. इन्द्रनील 6. वैदूर्य
7. पुष्पराग 8. कर्केतन 9. पुलक
10. रुधिराक्षस 11. भीष्म 12. स्फटिक
13. प्रवाल

- **त्रयोदश धर्मपत्न्यः**

1. श्रद्धा 2. मैत्री 3. दया
4. शान्ति 5. तुष्टि 6. पुष्टि
7. क्रिया 8. उन्नतिबुद्धि 9. मेधा
10. तितिक्षा 11. ह्री 12. लज्जा
13. मूर्ति

- **त्रयोदश धर्मस्य पुत्राः**

1. शुभ 2. प्रसाद 3. अभय
4. सुख 5. मोह 6. अहंकार
7. योग 8. दर्प 9. अर्थ
10. स्मृति 11. क्षेय 12. प्रश्रय
13. विनय

- **चतुर्दश रत्नानि**

1. लक्ष्मीः 8. ऐरावतः
2. कौस्तुभमणिः 9. अप्सराः
3. पारिजातकः 10. सप्तमुखः
4. सुरा 11. हलाहलः
5. धन्वन्तरिः 12. हरिधनुः

6. चन्द्रमाः
13. शंखः
7. कामधेनुः
14. अमृतम्

- **चतुर्दश विद्याः**

1. ऋग्वेदः
2. यजुर्वेदः
3. सामवेदः
4. अथर्ववेदः
5. शिक्षा
6. व्याकरणम्
7. छन्दः
8. निरुक्तम्
9. ज्योतिषम्
10. कल्पः
11. मीमांसाशास्त्रम्
12. न्यायशास्त्रम्
13. पुराणम्
14. धर्मशास्त्रम्

- **चतुर्दश मनवः**

1. स्वयंभुवः
2. सावर्णिः
3. स्वारोचिषः
4. दक्षसावर्णिः
5. औत्तमिः
6. ब्रह्मसावर्णिः
7. तामसः
8. धर्मसावर्णिः
9. रैवतः
10. रुद्रसावर्णिः
11. चाक्षुषः
12. रौच्यदेवसावर्णिः
13. वैवस्वतः
14. इन्द्रसावर्णिः

- **चतुर्दश विष्णुपार्षदाः**

1. सुनन्द
2. नन्द
3. जय
4. विजय
5. प्रबल
6. बल
7. कुमुद
8. कुमुदाक्ष
9. विष्वकसेन
10. गरुण
11. जयन्त
12. श्रुतदेव
13. पुष्पदन्त
14. सात्वत

- **षोडश संस्काराः**

1. गर्भाधानसंस्कारः
2. पुंसवनसंस्कारः
3. सीमन्तोन्नयनसंस्कारः
4. जातकर्मसंस्कारः
5. नामकरणसंस्कारः
6. निष्क्रमणसंस्कारः
7. अन्नप्राशनसंस्कारः
8. चूडाकर्मसंस्कारः
9. कर्णवेधसंस्कारः
10. उपनयनसंस्कारः
11. वेदारम्भसंस्कारः
12. केशान्तसंस्कारः
13. समावर्तनसंस्कारः
14. उद्वाहसंस्कारः
15. विवाहसंस्कारः
16. त्रेताग्निसंस्कारः (दाहसंस्कार)

- **षोडश मातृकाः**

1. गौरी
2. पद्मा
3. शची
4. मेधा
5. सावित्री
6. विजया
7. जया
8. देवसेना
9. स्वधा
10. स्वाहा
11. लोकमातृका
12. शान्ति
13. पुष्टि
14. धृति
15. कुलदेवता
16. तुष्टि

- **षोडशोपचार - पूजनम्**

1. पाद्यम्
2. अर्घ्यम्
3. आचमनीयम्
4. स्नानम्
5. वस्त्रम्
6. आभूषणम्
7. गन्धः
8. पुष्पम्
9. धूपः
10. दीपः
11. नैवेद्यम्
12. आसनम्
13. ताम्बूलम्
14. स्तवनम्
15. तर्पणम्
16. नमस्कारः

- **षोडशचन्द्रकलाः**

1. क्षमता
2. चन्द्रिका
3. मानदा
4. कान्तिः
5. पृषा
6. ज्योत्स्ना
7. तुष्टिः
8. श्रीः
9. पुष्टी
10. प्रीतिः
11. रतिः
12. अङ्गदा
13. द्युतिः
14. पूर्णा
15. शशिनी
16. अमृता

- **षोडशचन्द्रकलाः**

1. क्षमता
2. चन्द्रिका
3. मानदा
4. कान्तिः
5. पृषा
6. ज्योत्स्ना
7. तुष्टिः
8. श्रीः
9. पुष्टी
10. प्रीतिः
11. रतिः
12. अङ्गदा
13. द्युतिः
14. पूर्णा
15. शशिनी
16. अमृता

- **सूक्ष्मशरीरस्य सप्तदश अवयवानि (वेदान्तसारे)**

1. पञ्चज्ञानेन्द्रियाँ- श्रोत्र, त्वक्, चक्षु, जिह्वा, घ्राण
2. बुद्धि
3. मन
4. पञ्चकर्मेन्द्रियाँ - वाक्,पाणि, पाद, पायु, उपस्थ
5. पञ्चवायु- प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान

- **महाभारतस्य अष्टादश पर्वाणि**

1. आदिपर्व
2. सभापर्व
3. वनपर्व
4. विराटपर्व
5. उद्योगपर्व
6. भीष्मपर्व
7. द्रोणपर्व
8. कर्णपर्व
9. शल्यपर्व
10. सौप्तिकपर्व
11. स्त्रीपर्व
12. शान्तिपर्व
13. अनुशासनपर्व
14. आश्वमेधिकपर्व
15. आश्रमवासिकपर्व
16. मौसलपर्व
17. महाप्रस्थानपर्व
18. स्वर्गारोहणपर्व

- **भगवद्गीतायाम् अष्टादश अध्यायाः**

1. अर्जुनविषादयोगः
2. सांख्ययोगः
3. कर्मयोगः
4. ज्ञानकर्मसंन्यासयोगः
5. कर्मसंन्यासयोगः
6. आत्मसंयमयोगः (ध्यानयोगः)
7. ज्ञानविज्ञानयोगः
8. अक्षरब्रह्मयोगः
9. राजविद्याराजगुह्ययोगः
10. विभूतियोगः
11. विश्वरूपदर्शनयोगः
12. भक्तियोगः
13. क्षेत्रक्षेत्रज्ञविभागयोगः
14. गुणत्रयविभागयोगः
15. पुरुषोत्तमयोगः
16. दैवासुरसम्पद्विभागयोगः
17. श्रद्धात्रयविभागयोगः
18. मोक्षसंन्यासयोगः

- **चतुर्विंशतिः अवताराः**

1. सनतकुमारादि 2. वाराह 3. नारद
4. नरनारायण 5. कपिल 6. दत्तात्रेय
7. यज्ञपुरुष 8. ऋषभदेव 9. पृथु
10. मत्स्य 11. कूर्म (कच्छप) 12. धन्वन्तरि
13. मोहिनी 14. नृसिंह 15. वामन
16.परशुराम 17. व्यास 18. राम
19. कृष्ण 20 बुद्ध 21 कल्कि
22 हंस 23. हयग्रीव 24. हरि।

- **सप्तविंशतिः नक्षत्राणि**

1. अश्विनी 2. भरणी 3. कृत्तिका
4. रोहिणी 5. मृगशिरा 6. आर्द्रा
7. पुनर्वसु 8. पुष्य 9. आश्लेषा
10. मघा 11. पूर्वाफाल्गुनी 12. उत्तराफाल्गुनी
13. हस्त 14. चित्रा 15. स्वाती
16. विशाखा 17.अनुराधा 18. ज्येष्ठा
19. मूल 20. पूर्वाषाढ 21. उत्तराषाढ
22. श्रवण 23. धनिष्ठा 24. शतभिषा
25.पूर्वाभाद्रपद 26. उत्तराभाद्रपद 27. रेवती

संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख ग्रन्थों के विषय में विशेष कथन

1. रामायण - रम्या रामायणी कथा

2. श्रीमद्भागवत - विद्यावतां भागवते परीक्षा

3. काव्यप्रकाश - काव्यप्रकाशस्य कृता गृहे-गृहे,
टीकास्तथाप्येषः तथैव दुर्गमः

4. अभिज्ञानशाकुन्तलम्

(i) कालिदासस्य सर्वस्वमभिज्ञानशाकुन्तलम् ।

(ii) काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला।

5. उत्तररामचरितम् - उत्तररामचरिते भवभूतिर्विशिष्यते

6. मेघदूत - मेघे माघे गतं वयः

7. किरातार्जुनीयम् -

वृत्तछत्रस्य सा काऽपि वंशस्थास्य विचित्रता।
प्रतिभा भारवेर्येन सच्छायेनाधिकीकृता।

8. नैषधीयचरितम् -

(i) ''नैषधं विद्वदौषधम्''

(ii) तावद् भा भारवेर्भाति यावन्माघस्य नोदयः।
उदिते नैषधे काव्ये क्व माघः क्व च भारविः।।

(iii) ''नैषधे पदलालित्यम्''

9. रावणवध (भट्टिकाव्य) -

(i) 'अष्टाध्यायी जगन्माताऽमरकोशो जगत्पिता।
भट्टिकाव्यं गणेशश्च त्रयीयं सुखदास्तु वः।।'

(ii) व्याकृत्या कोश- छन्दोभ्यालङ्कृत्या रसेन च।
पञ्चकेनान्वितं काव्यं भट्टिकाव्यं विराजते।।

10. जानकीहरणम् -

जानकीहरणं कर्तुं रघुवंशे स्थिते सति।
कविः कुमारदासश्च रावणश्च यदि क्षमः।।

11. हरविजयम् -

हरविजय-महाकवेः प्रतिज्ञां, शृणुत कृत्तप्रणयो मम प्रबन्धे।
अपि शिशुरकविः कविः प्रभावाद् भवित कविश्च महाकविः क्रमेण।।

12. सेतुबन्धमहाकाव्यम् -

''महाराष्ट्राश्रयां भाषां प्राकृष्टं प्रकृतं विदुः।
सागरः सूक्तिरत्नानां सेतुबन्धादि यन्मयम् ।।''

13. गाथासप्तशती -

अविनाशिनमग्राम्यमकरोत्सातवाहनः।
विशुद्धजातिभिः कोषं रत्नैरिव सुभाषितैः।।

14. अमरुकशतक -

''अमरुककवेरेकः श्लोकः प्रबन्धशतायते।''

15. वासवदत्ता -

कवीनामगलद् दर्पो नूनं वासवदत्तया।
शक्त्येव पाण्डुपुत्राणां गतया कर्णगोचरम् ।।

16. कादम्बरी -

(i) 'कादम्बरीरसज्ञानामाहारोऽपि न रोचते।'

(ii) कादम्बरी रसभरेण समस्त एव। मत्तो न किञ्चिदपि चेतयते जनोऽयम् ।।

(iii) 'धिया निबद्धेयमतिद्वयी कथा'।

संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख ग्रन्थों के अपरनाम

ग्रन्थ का नाम	अपरनाम	ग्रन्थ का नाम	अपरनाम
1. ऋग्वेद	दशतयी	23. ब्रह्मपुराण	आदिपुराण
2. शुक्ल यजुर्वेद	माध्यन्दिन संहिता, वाजसनेयी संहिता	24. अग्निपुराण	विश्वकोष
3. सामवेद	उद्गातृ-वेद	25. नारद पुराण	बृहन्नारदीय पुराण
4. अथर्ववेद	ब्रह्मवेद	26. श्रीमद्भागवत पुराण	दशलक्षणी पुराण
5. ताण्ड्य ब्राह्मण	महाब्राह्मण, पंचविश, प्रौढ़	27. वायुपुराण	शिवपुराण
6. छान्दोग्य ब्राह्मण	उपनिषद् ब्राह्मण	28. रामायण	चतुर्विंशतिसाहस्रीसंहिता, आदिमहाकाव्य, आर्षकाव्य
7. छान्दोग्योपनिषद्	तण्डिनाम् उपनिषद्	29. भुशुण्डिरामायण	महारामायण
8. केनोपनिषद्	तवल्कारोपनिषद्	30. योगवाशिष्ठ	आर्षरामायण
9. शांखायन आरण्यक	कौषीतकि आरण्यक	31. महाभारत	शतसाहस्रीसंहिता
10. आरण्यक	रहस्यग्रन्थ	32. सेतुबन्धमहाकाव्य	सूक्तिरत्नाकर
11. ऋक् प्रातिशाख्य	पार्षद् (परिषद् सूत्र)	33. जाम्बवतीजय	पातालविजय
12. निरुक्त	शब्दव्युत्पत्तिशास्त्र, निर्वचन शास्त्र	34. रावणवध	भट्टिकाव्य
13. ज्योतिष	प्रत्यक्षशास्त्र, कालविधानशास्त्र	35. काव्यशास्त्र	साहित्यविद्या
14. हिरण्यकेशी गृह्यसूत्र	सत्याषाढ़ गृह्यसूत्र	36. नाट्यशास्त्र	षट्साहस्री संहिता
15. कातन्त्रसूत्र	कालापव्याकरण	37. कुमारपालितचरित	द्वयाश्रयमहाकाव्य
16. व्याकरण	शब्दशास्त्र	38. नैषधीयचरितम्	शास्त्रकाव्य, श्र्यङ्कमहाकाव्य
17. लघुपाराशरी	उडुदायप्रदीप	39. प्रबन्धकोश	चतुर्विंशतिप्रबन्ध
18. काठक गृह्यसूत्र	लौगाक्षि गृह्यसूत्र	40. नलचम्पू	हरचरणसरोजाङ्क
19. बृहत्संहिता	वाराही संहिता	41. हनुमन्नाटक	महानाटक
20. वेदान्तसूत्र	चतुर्लक्षणी	42. गीतगोविन्द	शृंगारमहाकाव्य, संगीतरूपक,
21. मीमांसासूत्र	द्वादशलक्षणी	43. संस्कृतमहाकोश	पीटर्सबर्ग कोश
22. ब्रह्मसूत्र	शारीरकसूत्र		

संस्कृत में सर्वप्रथम/सर्वप्राचीन/सर्वश्रेष्ठ

1. प्राचीनतम वेद	ऋग्वेद	13. सर्वश्रेष्ठ गद्यकार	बाणभट्ट
2. प्राचीनतम पुराण	ब्रह्मपुराण	14. सर्वश्रेष्ठ वैयाकरण	महर्षि पाणिनि
3. स्मृतिग्रन्थों में प्राचीनतम	मनुस्मृति	15. सर्वश्रेष्ठ नाटककार	कालिदास
4. प्राकृत काव्यों में प्राचीनतम	सेतुबन्ध	16. सर्वश्रेष्ठ प्रतीकात्मक नाटक	प्रबोधचन्द्रोदय
5. आर्य भाषाओं में प्राचीनतम	वैदिक संस्कृत	17. सर्वश्रेष्ठ तान्त्रिक ग्रन्थ	तन्त्रालोक
6. लोककथा प्राचीनतम संग्रह	बृहत्कथा	18. संस्कृत के सर्वश्रेष्ठ कवि	कालिदास
7. शिक्षा के प्राचीनतम ग्रन्थ	प्रातिशाख्य	19. कश्मीरी लेखकों में सर्वश्रेष्ठ	अभिनवगुप्त
8. भाषाशास्त्र का प्राचीनतम ग्रन्थ	निरुक्त	20. शाकुन्तल का सर्वश्रेष्ठ अङ्क	चतुर्थ
9. मनुस्मृति के प्राचीनतम टीकाकार	मेधातिथि	21. रससूत्र के सर्वश्रेष्ठ भाष्यकार	अभिनवगुप्त
10. वेदाङ्ग के प्राचीनतम ग्रन्थ	कल्पसूत्र	22. शङ्करभट्ट के अनुसार सर्वश्रेष्ठ निबन्धकार	विज्ञानेश्वर
11. अमरुकशतक के प्राचीनतम टीकाकार	अर्जुनवर्मदेव	23. संस्कृत साहित्य के सर्वश्रेष्ठ कवि	कालिदास
12. सर्वश्रेष्ठ वेदभाष्यकर्ता	आचार्य सायण	24. राजशेखर के मत में सर्वश्रेष्ठ नाटक	स्वप्नवासवदत्तम्

25. शृङ्गाररस के सर्वश्रेष्ठ कवि	कालिदास
26. करुणरस के सर्वश्रेष्ठ कवि	भवभूति
27. संस्कृत गद्यसाहित्य की सर्वोत्कृष्ट रचना	कादम्बरी
28. ब्राह्मण ग्रन्थों में सर्वश्रेष्ठ देवता	प्रजापति
29. केरलीय राजाओं में सर्वश्रेष्ठ	रामवर्मा
30. सर्वप्रथम नाटककार	भास
31. मीमांसा के सर्वप्रथम भाष्यकार	शबर
32. चम्पूग्रन्थों में सर्वप्रथम	नलचम्पू
33. कालिदास की प्रथम कृति	ऋतुसंहार
34. प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास (संस्कृत)	शिवराजविजय
35. सुभाषित संग्रह का प्रथमग्रन्थ	गाथासप्तशती
36. प्रथम ऐतिहासिक काव्य	नवसाहसाङ्कचरितम्
37. समुपलब्ध प्रथम गद्यकार	दण्डी
38. प्रथम लौकिक खण्डकाव्य	मेघदूतम्
39. प्रथम बौद्ध नाटककार	अश्वघोष
40. संस्कृत का प्रथम महाकाव्य	जाम्बवतीविजय
41. अद्वैत के प्रथम आचार्य	गौडपादाचार्य
42. प्रस्थानत्रयी के प्रथम भाष्यकार	शङ्कराचार्य
43. बाणभट्ट की प्रथम रचना	हर्षचरितम्
44. काव्यप्रकाश की प्रथम टीका	संकेत (माणिक्यचन्द्र कृत)
45. जैनधर्म के प्रथम तीर्थंकर	ऋषभदेव
46. प्राकृत का प्रथम गीतिकाव्य	गाथासप्तशती
47. संस्कृत की प्रथम नाटिका	रत्नावली
48. कलापक्ष (अलङ्कृतशैली) के प्रथम आचार्य	भारवि
49. उपलब्ध प्रथम प्रतीक नाटक	प्रबोधचन्द्रोदय
50. पुराणों में प्रथम	ब्रह्मपुराण
51. महाभारत के प्राचीन टीकाकार	देवबोध
52. भाषाविज्ञान के प्राचीन पण्डित	यास्क
53. सबसे प्राचीन धर्मसूत्र	गौतमधर्मसूत्र
54. सबसे प्राचीन शुल्बसूत्र	बोधायनशुल्बसूत्र
55. अथर्ववेद का प्राचीन नाम	अथर्वाङ्गिरस वेद
56. काव्यशास्त्र का उपलब्ध सबसे प्राचीन ग्रन्थ	नाट्यशास्त्र
57. ज्योतिष का उपलब्ध प्राचीन ग्रन्थ	वेदाङ्गज्योतिष
58. उपजीव्यों में प्रमुख	रामायण, महाभारत
59. पाञ्चरात्र संहिताओं में प्रमुख	अर्हिबुध्न्यसंहिता
60. नास्तिक दर्शनों में सर्वप्राचीन	चार्वाक दर्शन
61. नीतिकथा साहित्य का सर्वप्राचीन ग्रन्थ	पञ्चतन्त्र
62. व्याकरण दर्शन का सर्वोत्तम ग्रन्थ	वाक्यपदीय
63. स्मृति ग्रन्थों में सर्वाधिक प्रसिद्ध	मनुस्मृति
64. वैष्णवपुराणों में सर्वप्रसिद्ध	श्रीमद्भागवतपुराण
65. काव्यों में सर्वाधिक रमणीय	नाटक
66. जैन पुराणों में सर्वाधिक प्रसिद्ध	आदिपुराण
67. सामवेद की लोकप्रिय शाखा	कौथुम शाखा
68. अथर्ववेद की लोकप्रिय शाखा	शौनक शाखा
69. दक्षिण भारत का लोकप्रिय स्तोत्र	नारायणीय स्तोत्र
70. संस्कृत का बृहत्तम महाकाव्य	हरविजय (50 सर्ग)
71. चम्पूकाव्यों में बृहत्तम	वृन्दावनचम्पू
72. विश्वसाहित्य का बृहत्तम ग्रन्थ	महाभारत
73. अष्टविकृति पाठों में सबसे कठिन	घनपाठ
74. सबसे बड़ा शुल्बसूत्र	बोधायन
75. वेद व्याख्याकारों में अग्रगण्य	सायणाचार्य
76. ऐतिहासिक काव्यों में अग्रणी	राजतरंगिणी
77. सर्वाधिक विशाल पुराण	स्कन्दपुराण
78. सर्वाधिक बृहद् उपनिषद्	बृहदारण्यकोपनिषद्
79. ब्राह्मणग्रन्थों में सबसे छोटा	दैवत ब्राह्मण
80. सबसे छोटा उपनिषद्	माण्डूक्योपनिषद्
81. सबसे छोटा पुराण	मार्कण्डेय पुराण
82. अर्वाचीनतम ब्राह्मणग्रन्थ	गोपथ ब्राह्मण
83. अर्वाचीन वेद	अथर्ववेद
84. आदिकाव्य	रामायण
85. ललित कलाओं के आदि आचार्य	भरतमुनि
86. ज्यामिति के आदि ग्रन्थ	शुल्बसूत्र

संस्कृत वाङ्मय के प्रमुख ग्रन्थांश

1. **श्रीमद्भगवद्गीता**	-	**महाभारत** (भीष्मपर्व -अध्याय - 25-42)
2. **हरिवंशपुराण**	-	**महाभारत** (महाभारत का खिलपर्व / हरिवंशपर्व)
3. **रासपञ्चाध्यायी**	-	**भागवतमहापुराण** (दशमस्कन्ध)
4. **दुर्गासप्तशती**	-	**मार्कण्डेयपुराण** (अध्याय-81-93)
5. **हंसगीता**	-	**विष्णुधर्मोत्तरपुराण** (तृतीयखण्ड- अध्याय 227-342)
6. **अध्यात्म-रामायण**	-	**ब्रह्माण्ड पुराण** (उत्तरखण्ड का एक भाग)
7. **पराशर-गीता**	-	**महाभारत** (शान्तिपर्व-अध्याय-290-98)
8. **विष्णुसहस्रनामस्तोत्र**	-	**महाभारत** (अनुशासन पर्व- अध्याय-149)
9. **शिवसहस्रनामस्तोत्र**	-	**महाभारत** (अनुशासनपर्व- अध्याय-17)
10. **हंस-गीता**	-	**महाभारत** (शान्तिपर्व -अध्याय-299)
11. **शकुन्तलोपाख्यान**	-	**महाभारत** (आदिपर्व - अध्याय-68-74)
12. **नलोपाख्यान**	-	**महाभारत** (वनपर्व-अध्याय-53-79)
13. **रामोपाख्यान**	-	**महाभारत** (वनपर्व- अध्याय-274-91)
14. **सावित्र्युपाख्यान**	-	**महाभारत** (वनपर्व-अध्याय -292-99)
15. **शङ्करगीता**	-	**विष्णुधर्मोत्तरपुराण** (प्रथमखण्ड, अध्याय-52-65)

संस्कृत के प्रमुख ग्रन्थों की विशेष संज्ञा

1. ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद	-	**वेदत्रयी**
2. किरातार्जुनीयम् , शिशुपालवधम् , नैषधीयचरितम्	-	**संस्कृत साहित्य की बृहत्त्रयी**
3. ध्वन्यालोक, काव्यप्रकाश, रसगङ्गाधर	-	**काव्यशास्त्र की बृहत्त्रयी**
4. चरकसंहिता, सुश्रुतसंहिता, अष्टांगहृदय	-	**आयुर्वेद की बृहत्त्रयी**
5. कुमारसम्भवम् , रघुवंशम् ,मेघदूतम्	-	**संस्कृत साहित्य की लघुत्रयी**
6. उपनिषद् , गीता, ब्रह्मसूत्र	-	**प्रस्थानत्रयी**
7. पाणिनि, पतञ्जलि, कात्यायन	-	**व्याकरण के मुनित्रय**
8. वेदव्यास, पराशर, शुकदेव	-	**पुराणों के मुनित्रय**
9. शृंगारशतक, नीतिशतक, वैराग्यशतक	-	**शतकत्रय**
10. किरातार्जुनीय महाकाव्य के प्रथम तीन सर्ग	-	**पाषाणत्रय**
11. पञ्चास्तिकायसार, समयसार, प्रवचनसार	-	**जैन सम्प्रदाय के नाटकत्रयी**
12. विनयपिटक, सुत्तपिटक, अभिधम्मपिटक	-	**बौद्धदर्शन के त्रिपिटक**
13. खण्डनखण्डखाद्य, तत्त्वदीपिका, अद्वैतसिद्धि	-	**वेदान्तदर्शन के कठिनत्रयी**
14. उपनिषद् , गीता, ब्रह्मसूत्र, भागवत	-	**प्रस्थान चतुष्टयी**
15. गीता, विष्णुसहस्रनाम, अनुगीता, भीष्मस्तवराज, गजेन्द्रमोक्ष	-	**महाभारत के पञ्चरत्न**
16. शुक्लयजुर्वेद का 40वाँ अध्याय	-	**ईशावास्योपनिषद्**
17. तैत्तिरीयारण्यक का दशम प्रपाठक	-	**महानारायणोपनिषद्**
18. शतपथ ब्राह्मण के अन्तिम 6 अध्याय	-	**बृहदारण्यकोपनिषद्**
19. आपस्तम्बधर्मसूत्र का 8वाँ पटल	-	**अध्यात्मपटल**
20. गीता का 18वाँ अध्याय	-	**एकाध्यायीगीता**
21. किरातार्जुनीयम् का 15वाँ सर्ग	-	**चित्रकाव्य**

कवियों की स्वकाव्य विषयक गर्वोक्तियाँ

1. प्रत्यक्षरश्लेषमयप्रबन्ध - सुबन्धु अपने काव्य वासवदत्ता के विषय में
2. लक्ष्मीपतेश्चरितकीर्तनमात्रचारु - माघ अपने शिशुपालवध के विषय में
3. (i) शृङ्गारामृतशीतगुः - श्रीहर्ष ने नैषधीयचरितम् के विषय में
   (ii) शृङ्गारभङ्ग्या
   (iii) रसैः कथायस्य सुधावधीरणी,
   नलः स भूजानिरभूद् गुणाद्भुतः
4. चन्द्रार्धचूडचरिताश्रयचारु - रत्नाकर स्वयं के काव्य को
5. सन्दर्भशुद्धिं गिरां जानीते जयदेव एव - जयदेव ने गीतगोविन्द के विषय में।

टी.जी.टी./पी.जी.टी. संस्कृत 2013 में चयनित छात्रों की दृष्टि में – संस्कृतगङ्गा

राजीव कुमार सिंह
T.G.T 2013 Rank I[st] Gen.
रोल न.- 020207679

प्रिय संस्कृत मित्रों ,

नमः संस्कृताय

मैं राजीव कुमार सिंह

मित्रों टी0 जी0 टी0 2013 की परीक्षा में मेरा चयन सामान्य वर्ग में प्रथम स्थान पर हुआ है। मैं अपनी सफलता का श्रेय सर्वप्रथम अपने माता-पिता एवं गुरुजनों को देता हूँ। मेरी सफलता में मेरे परिवार के सभी सदस्यों का भी अहम योगदान रहा जिनका हमें समय-समय पर मार्गदर्शन एवं उत्साह वर्धन प्राप्त होता रहा।

मित्रों विशेष रूप से मेरी सफलता संस्कृतगङ्गा से जुड़ी है जहाँ हमें पुस्तकों पर कार्य करने का अवसर मिला और पूज्य गुरूजी **श्री सर्वज्ञ भूषण सर** का विशेष योगदान रहा है। भूषण सर के मार्गदर्शन में प्रारम्भ से ही मैं तैयारी करता रहा और आज मुझे परीक्षा में प्रथम रैंक प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। प्रयाग में मुझे अन्य गुरुजनों का भी मार्गदर्शन प्राप्त हुआ मैं उनके प्रति भी आभार व्यक्त करता हूँ।

मित्रों सफलता प्राप्त करने के लिए सर्वप्रथम आवश्यक है कि सही मार्गदर्शक एवं सही पुस्तकें अर्थात् त्रुटिरहित पुस्तकें, त्रुटि रहित एवं विश्वसनीय पुस्तकों का सर्वथा अभाव है, परन्तु समस्त संस्कृत समाज के लिए सौभाग्य की बात है कि आज संस्कृत के उद्धार के लिए संस्कृतगङ्गा का उदय हुआ है, मित्रों **संस्कृतगङ्गा द्वारा प्रकाशित पुस्तकें संस्कृत प्रतियोगियों के लिए वरदान हैं।** मेरी सफलता में संस्कृतगङ्गा की **'संस्कृतगङ्गा वस्तुनिष्ठ-साहित्यम्' 'संस्कृतगङ्गा वस्तुनिष्ठ-व्याकरणम्'** एवं **'टी0 जी0 टी0 संस्कृत व्याख्यात्मक हल'** का विशेष योगदान है और इन पुस्तकों में प्रूफ रीडिंग, व्याख्या आदि कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ है।

मुझे भूषण सर के रूप में सही मार्गदर्शक भी प्राप्त हुए जिनके सहयोग एवं मार्गदर्शन में मैने सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ी और यह स्थान प्राप्त किया।

अन्त में मै यही कहना चाहूँगा कि समस्त प्रतियोगी छात्र अपना पूरा ध्यान अपनी पढ़ाई में लगायें और संस्कृतगङ्गा की समस्त पुस्तकों का अध्ययन और प्रैक्टिस सेट का अभ्यास नित्य करें ताकि आप भी सफलता को प्राप्त करें।

मेरी ओर से संस्कृतगङ्गा के प्रति हार्दिक आभार एवं समस्त संस्कृत प्रतियोगी छात्रों को शुभकामनाएँ।

धन्यवाद
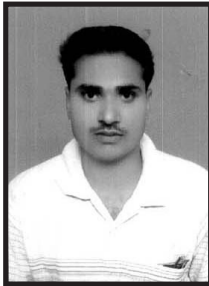
दिलीप कुमार
Rank 4 Gen.
रोल न.- 110200923

भूषण सर मेरे जीवन के सच्चे मार्गदर्शक हैं, मैं उन्हें तथा संस्कृतगङ्गा को कभी नहीं भूल सकता हूँ। मैं अपनी सफलता में अपने परिवार की भूमिका को आजीवन याद रखूँगा। जो कठिन से कठिन परिस्थिति में मेरे साथ रहे।

धन्यवाद

रवीन्द्र कुमार मिश्र
Rank 149 Gen.
रोल न.- 040200809

मित्रों!

संस्कृतगङ्गा की पुस्तकें पूर्णतः शुद्ध एवं पाठ्यक्रम पर आधारित हैं। ये सफलता के उत्तम शिखर की ओर ले जाती हैं। यदि अभ्यर्थी इनका सदुपयोग करें, क्योंकि कठिन परिश्रम से ही सफलता समीप होती है।

धन्यवाद

संस्कृतगङ्गा परिवार मेरे जीवन की वह पुष्पछटा है जिसकी सुगन्ध मेरे सम्पूर्ण जीवन को सुगन्धित एवं क्रियान्वित करती रहेगी। मेरे जीवन में आज जो सफलतारूपी सुगन्धि प्रसारित हुई है यह संस्कृतगङ्गा की कृपा का ही प्रभाव है।

मैं यदि यह कहूँ कि मेरा जीवन संस्कृतगङ्गा से है तो यह अतिशयोक्ति नहीं होगी। अपितु मेरे जीवन का सबसे बड़ा अविस्मरणीय सत्य होगा, जिसको विस्मरण करना अस्तित्व को भूलने जैसा होगा। भूषण सर संस्कृतगङ्गा के सूर्य हैं और संस्कृत के प्रकाश से चहुदिशि सर्वत्र सर्वस्मिन् क्षेत्रों में संस्कृत पाठकों का तिमिर हर रहे हैं। हमारा हर पल कृतज्ञता ज्ञापित करने हेतु समर्पित है।

सुमन सिंह
Rank 18 OBC
रोल न.- 020206496

मेरे पास शब्दों का अभाव है लेकिन जितना लिख रही हूँ ये सब संस्कृतगङ्गा का ही प्रभाव है। संस्कृतगङ्गा की वैभवगाथा यह लेखनी लिख नहीं सकती, वाणी कह नहीं सकती, वह हर पल अनुभूत करने की गौरवगाथा है, जो मेरे जीवन के स्वरूपों को सारगर्भित बनाती है।

''तन समर्पित मन समर्पित और यह जीवन समर्पित।
चाहती हूँ मात संस्कृत मैं तुझे कुछ और भी दूँ।।''

धन्यवाद

पूजा गुप्ता
Rank 5 Gen. वर्ग-2
रोल न.- 020204973

मैं संस्कृतगङ्गा की पुस्तकों का सदैव आभारी रहूँगी। जो मेरी सफलता के रूप में मुझे प्राप्त हुई है। मुझे इनमें कार्य करने का मौका मिला है। भूषण सर का मार्गदर्शन अत्यन्त लाभकारी रहा।

धन्यवाद

संगीता देवी
Rank 13 OBC
रोल न.- 090201612

मैं सर्वप्रथम संस्कृतगङ्गा और सर्वज्ञभूषण सर के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ। उनका मार्गदर्शन एवं संस्कृतगङ्गा पुस्तकालय का मेरी सफलता में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है, जो मेरे जीवन में अविस्मरणीय होगा।

धन्यवाद

संस्कृतगङ्गा के भगीरथ - जिन्होंने अथक परिश्रम कर सफलता प्राप्त की....

नमः संस्कृताय!

मित्रों सफलता के लिए कभी अर्थ बाधक नहीं होता, इसका साक्षात् प्रमाण मैं रमाकान्त मौर्य हूँ, जो अखबार बेंचकर भी PGT-2013 संस्कृत में चयनित हुआ। इसके लिए संस्कृतगङ्गा द्वारा प्रकाशित पुस्तकों में संशोधन प्रूफ एवं व्याख्या आदि का कार्य करना मेरे लिए वरदान साबित हुआ। भूषण सर का मार्गदर्शन और संस्कृतगङ्गा के पुस्तकालय को कभी भुलाया नहीं जा सकता। **- रमाकान्त मौर्य (प्रवक्ता, संस्कृत) जनता इण्टर कालेज, इटावा**

सोना कुमारी वर्मा
Rank 10 Gen.
रोल न.- 020200359

सच्चिदानन्द
Rank 44 Gen.
रोल न.- 020206211

उमापति वर्मा
Rank 19 OBC
रोल न.- 110201742

अमित कुमार सिंह
Rank 76 Gen.
रोल न.- 020201182

राकेश कुमार पाल
Rank 113 Gen.
रोल न.- 020206993

शिवबाबू प्रजापति
Rank 56 Gen.
रोल न.- 020201257

करुणाशंकर भार्गव
Rank 118 Gen.
रोल न.- 020203390

श्रवण कुमार तिवारी
Rank 104 Gen.
रोल न.- 020202833

मृत्युञ्जय मिश्र
Rank 168 Gen.
रोल न.- 050200582

दीनबन्धु शुक्ल
Rank 131 Gen.
रोल न.- 020202938

संस्कृतगङ्गा के सभी सफल अभ्यर्थियों के विचार चित्र सहित स्थानाभाव के कारण नहीं हो पाया। पुनः अगले संस्करण में....

TGT, PGT, UGC, GIC, DSSSB, GDC आदि सभी प्रतियोगी परीक्षाओं हेतु उपयोगी

शाकुन्तलमीमांसा

(परीक्षा दृष्टि)

लेखक एवं सम्पादक
सर्वज्ञभूषण

सह-सम्पादक
शुभम ममगाई
सुमन सिंह

☞ **पुस्तक का नाम** – शाकुन्तलमीमांसा

☞ **सम्पादक एवं व्याख्याकार**– सर्वज्ञभूषण

☞ **प्रकाशक**

संस्कृतगङ्गा (पञ्जीकृत)
59, मोरी, दारागञ्ज, प्रयागराज 211006
(कोतवाली दारागञ्ज के आगे, गङ्गाकिनारे, संकटमोचन छोटे
हनुमान् मन्दिर के पास)
कार्यालय - **8004545095, 8004545096**
email-Sanskritganga@gmail.com
बेवसाइट - www.Sanskritganga.org

☞ **मुद्रक -** एकेडमी प्रेस दारागञ्ज प्रयागराज

☞ **मुख्यवितरक**

राजू पुस्तक केन्द्र
अल्लापुर, प्रयागराज (उत्तर प्रदेश)
मो० 9453460552

☞ **ISBN**– 978-81-952032-9-1

☞ **प्रथमसंस्करण** - 21 जून, 2021
अन्ताराष्ट्रिय योगदिवस

☞ **मूल्य –** **151** /= (एक सौ इक्यावन रुपये मात्र)

संस्कृतगङ्गा उवाच

प्रिय- संस्कृतमित्राणि!

नमः संस्कृताय

➢ 'शाकुन्तलमीमांसा' (परीक्षा दृष्टि) नामक यह पुस्तक संस्कृत की सेवा में समर्पित करते हुए अत्यन्त हर्षित हो रहा हूँ।

➢ अभिज्ञानशाकुन्तलम् एक ऐसा नाटक है जो कि सभी प्रतियोगी परीक्षाओं में जैसे- TGT, PGT, UGC, IAS, PCS आदि के पाठ्यक्रम में सम्मिलित है, इसके अलावा हाईस्कूल से ही यह नाटक B.A, M.A तक हमारे स्कूल के पाठ्यक्रम में भी शामिल रहता है।

➢ यह एक ऐसा अमर ग्रन्थ है जो कि सर्वश्रेष्ठ नाटकों में परिणित है जिसे संस्कृत जगत् के ही लोग नहीं, अपितु सर्वसाधारण भी इस ग्रन्थ से परिचित हैं। इस ग्रन्थ के विषय में कहा गया है कि –

काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला।

तत्रापि च चतुर्थोऽङ्कः तत्र श्लोकचतुष्टयम् ।।

➢ काव्यों में नाटक रमणीय होता है, नाटकों में शाकुन्तल, शाकुन्तल में भी चतुर्थ अङ्क और इस चतुर्थ अङ्क के चार श्लोक अत्यन्त प्रसिद्ध हैं।

➢ इस पुस्तक की विशेषता यह है कि इसमें कालिदास का जीवन परिचय, अभिज्ञानशाकुन्तल का परिचय, अभिज्ञानशाकुन्तलम् से पूछे गये प्रश्नों की व्याख्या और महत्त्वपूर्ण सूक्तियाँ भी संकलित हैं।

➢ पुस्तक के अन्त में लगभग 400 वस्तुनिष्ठ प्रश्न भी पूछे गए हैं; जिनकी आगामी परीक्षा में पूछे जाने की प्रबल सम्भावना है।

➢ यह पुस्तक संस्कृत जगत् की सभी प्रतियोगी परीक्षाओं जैसे- TGT, PGT, UGC, GIC, DSSSB, REET, GDC, हायर एजुकेशन एवम् असिस्टेण्ट प्रोफेसर आदि सभी के लिए रामबाण सिद्ध होगी।

➢ इस पुस्तक की व्याख्या एवं प्रूफ आदि कार्यों में संस्कृतगङ्गा लेखन टीम- **शुभम ममगाई, सुमन जी, शङ्करदत्त त्रिपाठी, नीलोत्पल नाथ त्रिपाठी, विनीत जी, ब्रह्माजी, गौरव पाण्डेय** (बी.एच.यू.) आदि सम्मिलित हैं।

➢ इस पुस्तक के अक्षर संयोजन के लिए **संदीप कुमार, नितिन कुमार** एवं **विनय शाह** जी को साधुवाद तथा मुद्रणकार्य के लिए **राजकुमार गुप्ता (राजू पुस्तक केन्द्र)** को कोटिशः धन्यवाद।

दिनाङ्क- 21 जून 2021

अन्ताराष्ट्रिय योगदिवस

भवदीय

सर्वज्ञभूषण

संस्कृतगङ्गा दारागञ्ज, प्रयागराज

❐❐

अनुक्रमणिका

❒❒

1. महाकवि कालिदास का परिचय

महाकवि कालिदास

- **पत्नी–** विद्योत्तमा
- **श्वसुर–** शारदानन्द
- **मित्र–** लङ्का के राजा कुमारदास
- **समय–** ईसापूर्व प्रथम शताब्दी
- **जन्मस्थान–** उज्जयिनी (काश्मीरी/बंगाली)
- **आश्रयदाता–** चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य
- **जाति/गोत्र–** ब्राह्मण
- **रचनायें कालक्रम की दृष्टि से–** 1. ऋतुसंहार (गीतिकाव्य), 2. कुमारसम्भवम् (महाकाव्य), 3. मालविकाग्निमित्रम् (नाटक), 4. विक्रमोर्वशीयम् (त्रोटक), 5. मेघदूतम् (खण्डकाव्य), 6. रघुवंशम् (महाकाव्य), 7. अभिज्ञानशाकुन्तलम् (नाटक)
- **उपासक–** शिव के
- **प्रिय छन्द–** उपजाति/अनुष्टुप्
- **प्रिय अलङ्कार–** उपमा
- **कालिदास की रीति एवं गुण–** वैदर्भी रीति एवं प्रसादगुण
- **कालिदास का प्रिय रस–** शृङ्गार रस
- **कालिदास की अन्य कृतियाँ–** (i) कालीस्तोत्र, (ii) गङ्गाष्टक, (iii) ज्योतिर्विदाभरण, (iv) राक्षसकाव्य, (v)श्रुतबोध

कालिदासीय जीवन के कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य

- काली देवी की उपासना से विद्या की प्राप्ति।
- विद्याप्राप्ति के बाद कालिदास का कथन– **'अनावृतकपाटं द्वारं देहि'** (दरवाजा खोलो)
- इसके उत्तर में पत्नी **विद्योत्तमा** का कथन– **'अस्ति कश्चित् वाग्विशेषः'** (लगता है कोई विद्वान् है)
- **'अस्ति' से कुमारसम्भवम्**– ''अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा...."
- **'कश्चित्' से मेघदूतम्**– ''कश्चित् कान्ता विरहगुरुणा...."
- **'वाग्' से रघुवंशम्**– ''वागर्थाविव सम्पृक्तौ....."
- **विक्रमादित्य की सभा में 9 रत्न** थे, जिसमें से एक कालिदास भी थे–

धन्वन्तरि-क्षपणकामरसिंह -शङ्कु-
वेतालभट्ट-घटकर्पर-कालिदासाः।
ख्यातो वराहमिहिरो नृपतेः सभायां
रत्नानि वै वररुचिर्नव विक्रमस्य॥

(ज्योतिर्विदाभरण 22-10)

- एक किंवदन्ती के अनुसार धारा के राजा भोज के प्रधानकवि कालिदास थे।
- एक किंवदन्ती के अनुसार कालिदास का अन्तिम समय लंका के महाराज कुमारदास के यहाँ बीता, वहाँ धन के लोभ में एक वेश्या ने उनकी **हत्या करा दी**।
- कालिदास ने वेद, दर्शन, उपनिषद्, रामायण, महाभारत, गीता, पुराण, आयुर्वेद, धनुर्वेद, सङ्गीतशास्त्र, ज्योतिष, व्याकरण, छन्दःशास्त्र, काव्यशास्त्र आदि का गम्भीर अध्ययन किया था।
- बाद में राजकवियों को 'कालिदास' कहने की परम्परा चल पड़ी। **राजशेखर** ने ऐसे तीन कालिदासों का उल्लेख किया है–

  एकोऽपि जीयते हन्त कालिदासो न केनचित्।
  शृङ्गारे ललितोद्गारे कालिदासत्रयी किमु॥
- **कालिदास की उपाधियाँ**–(i) दीपशिखा कालिदास (ii) रघुकार (iii) कविकुलगुरु (iv) कविताकामिनीविलास (v) उपमासम्राट्
- महाकवि कालिदास ने मालविकाग्निमित्र की प्रस्तावना में **"प्रथितयशसां भाससौमिल्ल....."** के द्वारा भास, सौमिल्ल आदि अपने पूर्ववर्ती कवियों को सादर स्मरण किया है।

कालिदास की प्रशस्तियाँ

1. निर्गतासु न वा कस्य कालिदासस्य सूक्तिषु।
   प्रीतिर्मधुरसान्द्रासु मञ्जरीष्विव जायते। – **बाणभट्ट-हर्षचरित**
2. साकूतमधुरकोमलविलासिनीकण्ठकूजितप्राये।
   शिक्षासमयेऽपि मुदे रतलीला-कालिदासोक्ती।। – **गोवर्धनाचार्य-आर्यासप्तशती-35**
3. कविकुलगुरुः कालिदासो विलासः – **जयदेव-प्रसन्नराघवम्**
4. लिप्ता मधुद्रवेणासन् यस्य निर्विषया गिरः।
   तेनेदं वर्त्म वैदर्भं कालिदासेन शोधितम्।। – **दण्डी-अवन्तिसुन्दरीकथा**
5. अस्पृष्टदोषा नलिनीव दृष्टा, हारावलीव ग्रथिता गुणौघैः।
   प्रियाङ्कपालीव प्रकामहृद्या, न कालिदासादपरस्य वाणी।। – **श्रीकृष्ण**
6. ख्यातः कृतीसोऽपि च कालिदासः, शुद्धा सुधा स्वादुमती च यस्य।
   वाणीमिषाच्चन्द्रमरीचिगोत्रसिन्धोः परं पारमवाप कीर्तिः।।
   – सोड्ढल (उदयसुन्दरी कथा)

   अमृतेनेव संसिक्ताश्चन्दनेनैव चर्चिताः।
   चन्द्रांशुभिरिवोद्घृष्टाः कालिदासस्य सूक्तयः।। – **जयन्त-न्यायमञ्जरी**
7. एकोऽपि जीयते हन्त कालिदासो न केनचित्।
   शृङ्गारे ललितोद्गारे कालिदासत्रयी किमु।। – **राजशेखर-सूक्तिमुक्तावली**
8. वैदर्भी कविता स्वयं वृतवती श्रीकालिदासं वरम्। **– अज्ञात**
9. पुष्पेषु चम्पा नगरीषु काञ्ची, नदीषु गङ्गा नृवरेषु रामः।
   नारीषु रम्भा पुरुषेषु विष्णुः, काव्येषु माघः कविकालिदासः।। **– घटखर्पर**
10. महिषं दधि सशर्करं पयः कालिदासकविता नवं वयः।
    शारदेन्दुरबला च कोमला स्वर्गशेषमुपभुञ्जते जनः।। – **आचार्य उद्भट**

11. काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या 'शकुन्तला'।
तत्रापि च चतुर्थोऽङ्कः तत्र श्लोकचतुष्टयम्।। – **अज्ञात**
12. Wouldst thou the young year
blossoms and the fruits of its decline
And all by which the soul is charmed
enraptured, fearted, fed.
Wouldst thou the earth and heaven
itseff in one sole name combine?
I name the, O' Shakuntala
And all atonce is said. – **(Goethe)**

(संस्कृत-अनुवाद)

13. वासन्तं कुसुमं फलञ्च युगपद्, ग्रीष्मस्य सर्वं च यद्
यच्चान्यन्मनसो रसायनमतः सन्तर्पणं मोहनम्।
एकीभूतमभूतपूर्वमथवा स्वर्लोकभूलोकयोः
ऐश्वर्यं यदि वाञ्छसि प्रियसखे! शाकुन्तलं सेव्यताम्।।
–(जर्मन कवि गेटे का अनुवाद) **वी. वी. मिराशी**
14. अस्मिन्निति विचित्रकविपरम्परावाहिनि-संसारे–
कालिदासप्रभृतयो द्वित्राः पञ्चषा वा महाकवय इति गण्यन्ते। – **आचार्य आनन्दवर्धन**
15. वैदर्भीरीतिसन्दर्भे कालिदासो विशिष्यते। – **अज्ञात**
16. उपमा कालिदासस्य – **उद्भट**
17. कालिदासस्य सर्वस्वमभिज्ञानशाकुन्तलम्।
तत्रापि च चतुर्थोऽङ्कः यत्र याति शकुन्तला।। – **अज्ञात**
18. श्रीकालिदासकविवर्य-सरस्वतीयं
किं वर्णयाम्यतितरां रसवाहिनीति।
यत् कालिका भगवती शुचिभावयोगाद्
यस्यामहो मुहुरनुग्रहमादधाति।। – **विठोबा अण्णा**
19. पुरा कवीनां गणना-प्रसङ्गे
कनिष्ठिकाधिष्ठित कालिदासः।
अद्यापि तत्तुल्यकवेरभावा-
दनामिका सार्थवती बभूव।। – **मल्लिनाथ**
20. रसभार-भारोद्भिन्नां भारतीममरादृते।
श्रीमतः कालिदासस्य विज्ञातुं कः क्षमः पुमान् – **स्थिरदेव**
21. स विजयतां रविकीर्तिः कविताश्रितकालिदासभारविकीर्तिः।। – **एहोल शिलालेख**
22. कालिदासगिरां सारं कालिदासः सरस्वती।
चतुर्मुखोऽथवा साक्षाद् विदुर्नान्ये तु मादृशाः।। – **मल्लिनाथ**
23. सुवशा कालिदासस्य मन्दाक्रान्ता प्रवल्गति। – **क्षेमेन्द्र (सुवृत्ततिलक)**
24. भासयत्यपि भासादौ कविवर्गे जगत्त्रयम्।

के न यान्ति निबन्धारः कालिदासस्य दासताम्।। – **अज्ञात**

25. ``Kalidas may be considered as the brightest star in the firmament of indian artificial poetry" – **Prof. Lassen**
26. कवयः कालिदासाद्याः कवयो वयमप्यमी।
    पर्वते परमाणौ च पदार्थत्वं प्रतिष्ठितम्।। – **अज्ञात**
27. वाल्मीकिमिव सभासं यशःशरीरेण सर्वदा सन्तम्।
    रसवद्वचनविकासं नमत कविं कालिदासं तम्।। – **अज्ञात**
28. कविरचलः कविरभिनन्दश्च कालिदासश्च।
    अन्ये कवयः कपयश्चापलमात्रं परं दधाति।। – **अज्ञात**
29. कवयः कवयः कवयोऽपि च कालिदासाद्याः।
    दृषदो भवन्ति दृषदाश्चिन्तामणयोऽपि हा दृषदः।। – **अज्ञात**
30. मेघे माघे गतं वयः। – **मल्लिनाथ**
31. कालिदासादीनामिव यशः। – **मम्मट**
32. धन्वन्तरिक्षपणकाऽमरसिंहशंकु-बेतालभट्ट घटकर्परकालिदासाः। – **ज्योतिर्विदाभरण**
33. महाकविकालिदासं वन्दे वाग्देवतागुरुम्।
    यज्ज्ञाने विश्वमाभाति दर्पणे प्रतिबिम्बितम्।। – **हलायुध**
34. क इह रघुकारे न रमते। – **आलोचक**

---

2. अभिज्ञानशाकुन्तल का परिचय

- **लेखक** – कालिदास
- **विधा** – नाटक
- **अङ्क** – 7 (सात)
- **प्रधानरस** – शृङ्गार (सम्भोगशृङ्गार)
- **कथानक** – राजा दुष्यन्त एवं शकुन्तला का परस्पर प्रेम, विरह एवं मिलन का वर्णन है।
- **प्रमुखपात्र** – दुष्यन्त (नायक), शकुन्तला (नायिका) कण्व, अनसूया, प्रियंवदा, माढव्य (विदूषक), गौतमी, शार्ङ्गरव, शारद्वत, हंसपदिका, वसुमती, मातलि, सानुमती, सर्वदमन (भरत), मारीच ऋषि, अदिति (दाक्षायणी), दुर्वासा, मेनका
- शाकुन्तलम् का उपजीव्य/आधारग्रन्थ है – **1. महाभारत के आदिपर्व का शकुन्तलोपाख्यान (68-74 अध्यायों में), 2. पद्मपुराण के स्वर्गखण्ड में भी यह कथा मिलती है।**
- अभि0 शाकुन्तलम् नाटक की रीति – **वैदर्भी रीति**
- वैदर्भीरीतिसन्दर्भे विशिष्यते – **कालिदासः**
- कालिदास के काव्यों में किस वृत्ति का विशेष प्रयोग है–**कैशिकी**
- कालिदास का प्रिय अलङ्कार – **उपमा** (उपमा कालिदासस्य)।
- अभि0शाकु0 के प्रथम अङ्क का नाम – **आश्रम प्रवेश** (34 श्लोक)
- द्वितीय अङ्क का नाम – **आश्रम निवेश** (18 श्लोक)
- तृतीय अङ्क का नाम – **मिलन अङ्क** (24 श्लोक)
- चतुर्थ अङ्क का नाम – **विदा अङ्क** (22 श्लोक)
- पञ्चम अङ्क का नाम – **प्रत्याख्यान अङ्क** (31 श्लोक)
- षष्ठ अङ्क का नाम – **पश्चात्ताप अङ्क।** (32 श्लोक)
- सप्तम अङ्क का नाम – **पुनर्मिलन अङ्क।** (35 श्लोक)
- सातों अङ्कों में कुल 196 श्लोक है।
- शाकुन्तलम् के **चतुर्थ अङ्क** में करुणरस का प्रयोग है।
- शकुन्तला का हस्तिनापुर (पतिगृह) गमन **चतुर्थ अङ्क में** वर्णित है।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् का नायक – **दुष्यन्त**
- दुष्यन्त **धीरोदात्त** कोटि का नायक है।
- राजा दुष्यन्त कहाँ का राजा है – **हस्तिनापुर**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् की नायिका – **शकुन्तला**

- शकुन्तला किस कोटि की नायिका है – **मुग्धा**
- शकुन्तला है – **शकुन्तभिः पक्षिभिः लालिता पालिता इति शकुन्तला**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् का मङ्‌गलाचरण है – **आशीर्वादात्मक**
- अभि॰ शाकुन्तलम् के मङ्गलाचरण में छन्द है – **स्रग्धरा**
- "या सृष्टिः स्रष्टुराद्या....." इत्यादि श्लोक कहाँ का है – **अभि॰शाकु॰ नाटक का मङ्गलाचरण**
- अभि॰शाकु॰ के मङ्गलाचरण में किसकी स्तुति की गयी है – **अष्टमूर्ति शिव की**
- **"तत्रापि च चतुर्थोऽङ्कः"** से सम्बन्धित नाटक – **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**
- **"तत्र श्लोकश्चतुष्टयम्"** किससे सम्बन्धित है – **अभि॰ शाकु॰ के चतुर्थ अङ्क से**
- "काव्येषु नाटकं रम्यम्" इस वाक्य में किस नाटक का संकेत है – **अभिज्ञानशाकुन्तलम् का**
- दुष्यन्त का विनोदप्रिय मित्र – **माढव्य**
- अभि॰ शाकुन्तलम् का विदूषक – **माढव्य**
- शकुन्तला की दोनों सखियाँ – **1. अनसूया. 2. प्रियंवदा।**
- शकुन्तला के माता और पिता– **मेनका और ऋषि विश्वामित्र**
- शकुन्तला के पालक (धर्मपिता) पिता – **महर्षि कण्व**
- महर्षि कण्व के दो प्रमुख शिष्य – **शार्ङ्गरव और शारद्वत**
- दुष्यन्त और शकुन्तला का विवाह हुआ – **गान्धर्व विवाह**
- शकुन्तला को किसने शाप दिया – **ऋषि दुर्वासा ने**
- शकुन्तला को शाप का कारण – **अतिथि रूप में पधारे दुर्वासा ऋषि का तिरस्कार**
- शकुन्तला के शाप को जानने वाली – **प्रियंवदा और अनसूया**
- शकुन्तला को शाप मिला– **अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में**
- अभि॰शा॰ में शाप की कल्पना का कारण – **प्रेम के आदर्शस्वरूप की स्थापना**
- शाप का प्रभाव किस अङ्क में दिखायी पड़ता है – **अभि॰ शाकु॰ के पञ्चम अङ्क में**
- राजा दुष्यन्त के पश्चात्ताप का वर्णन – **षष्ठ अङ्क में**
- राजा दुष्यन्त और शकुन्तला का पुनर्मिलन होता है – **अभि॰ शाकु॰ के सप्तम अङ्क में**
- हेमकूट पर्वत में आश्रम है – **महर्षि मारीच का।**
- दुष्यन्त और शकुन्तला का पुनर्मिलन – **हेमकूट पर्वत के मारीच आश्रम में।**
- शकुन्तला की मुद्रिका प्राप्त होती है– **धीवर मीनपालक को**
- दुष्यन्त और शकुन्तला के पुत्र का नाम– **सर्वदमन (भरत)**
- अभि॰ शाकु॰ का प्रारम्भ होता है – **नान्दीपाठ से (या सृष्टिः स्रष्टुराद्या)**

- अभि॰शाकु॰ का समापन होता है
  – **भरत वाक्य से (प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः....)।**
- कालिदास का सर्वस्वभूतग्रन्थ है
  – **अभिज्ञानशाकुन्तलम्। ''कालिदासस्य सर्वस्वमभिज्ञानशाकुन्तलम्।''**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के विषय में **पाश्चात्त्य विद्वान् गेटे** का कथन – Wouldst thou the young year's blossoms and the fruits of its decline, and all by which the soul is charmed, enraptured adapted, fed wouldst thou the earth and heaven it self in one name combined? I name the o shakuntala? And all at once is said.

संस्कृतरूपान्तरण

वासन्तं कुसुमं फलञ्च युगपद् ग्रीष्मस्य सर्वं च यद्,
यच्चान्यन्मनसो रसायनमतः सन्तर्पणं मोहनम्।
एकीभूतमभूतपूर्वमथवा स्वर्लोकभूलोकयोः,
ऐश्वर्यं यदि वाञ्छसि प्रियसखे! शाकुन्तलं सेव्यताम्।।

- कालिदास का विश्वप्रसिद्ध नाटक है – **अभिज्ञानशाकुन्तलम्।**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के सर्वप्रथम अंग्रेजी अनुवादक – **विलियम जोन्स**
- विलियम जोन्स ने **The last things** की भूमिका में कालिदास को '**भारत का शेक्सपियर**' कहा।
- **महाकवि गेटे** ने अपने सुप्रसिद्ध नाट्यकाव्य '**फाउस्ट**' में कालिदास के अभिज्ञानशाकुन्तलम् और नायिका शकुन्तला की भूरि भूरि प्रशंसा की।
- कालिदास द्वारा विरचित तीन नाटक हैं – **1. मालविकाऽग्निमित्रम्** (प्रथमनाटक), **2. विक्रमोर्वशीयम्** (द्वितीय नाटक), **3. अभिज्ञानशाकुन्तलम्** (अन्तिम तथा सर्वश्रेष्ठ नाटक)
- कण्व द्वारा पोषित, मेनका और विश्वामित्र की पुत्री – **शकुन्तला**
- कालिदास के सभी नाटक हैं – **सुखान्त।**
- कालिदास की नाट्यकला का सर्वश्रेष्ठ निदर्शन है – **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् कथाविन्यास, चरित्र-चित्रण, संवाद योजना, भाषा – शैली, अलंकार–योजना, रसयोजना, प्रकृतिचित्रण, सभी दृष्टियों से **सर्वश्रेष्ठ नाटक** है।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् में लगभग **196 पद्य** हैं।
- महाकवि कालिदास **रसमयी शैली** के आचार्य हैं।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् में भारतीय संस्कृति की महत्त्वपूर्ण तीन विशेषताओं – **त्याग, तपस्या, और तपोवन** का अच्छा चित्रण किया गया है।

- भरतमुनि के अनुसार नाटक का लक्षण–

''त्रैलोकस्यास्य सर्वस्य नाट्यं भावानुकीर्तनम्।''

- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क का प्रारम्भ होता है – **विष्कम्भक से।**
- अनसूया और प्रियंवदा के पुष्पावचयन से प्रारम्भ होता है –

अभिज्ञानशाकुन्तलम् का चतुर्थ अङ्क।

- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में वर्णन है – **शकुन्तला की विदाई का।**
- अन्तः प्रकृति और बाह्य प्रकृति का सुन्दर चित्रण किया गया है –

अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में।

- दुष्यन्त और शकुन्तला की प्रणयगाथा वर्णित है – **अभिज्ञानशाकुन्तलम् में।**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् में लगभग **180 उपमाओं का प्रयोग** किया गया है।
- शकुन्तला **हेमकूट पर्वत पर महर्षि मारीच के आश्रम में** अपनी माता मेनका के साथ वियोग के दिन गुजारती है।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् में दुष्यन्त और शकुन्तला के प्रेम, वियोग और पुनर्मिलन का वर्णन है।
- इस नाटक की कथावस्तु राजा दुष्यन्त के द्वारा शकुन्तला को दिये गये अभिज्ञान (अँगूठी) के आस पास चक्कर लगाती है।
- राजा दुष्यन्त मृग का पीछा करते हुए किस आश्रम में प्रवेश करता है –
  महर्षि कण्व के।
- तीर्थयात्रा पर गए हुए कण्व ऋषि की अनुपस्थिति में ही राजा दुष्यन्त और शकुन्तला का गान्धर्व विवाह आश्रम में ही सम्पन्न हो जाता है।
- शकुन्तला को महर्षि कण्व किसके साथ पतिगृह (हस्तिनापुर) भेजते हैं –
  शार्ङ्गरव, शारद्वत, और गौतमी।
- हस्तिनापुर जाते समय शकुन्तला की अगूँठी कहाँ गिर जाती है – **शचीतीर्थ में।**
- दुष्यन्त, शकुन्तला को पहचानने से क्यों इंकार कर देता है –
  दुर्वासा के शापवशात्।
- शकुन्तला कण्व ऋषि के आश्रम के बाद किस आश्रम में निवास करती है –
  ऋषि मारीच के आश्रम में।
- बालक सर्वदमन (भरत) और शकुन्तला से दुष्यन्त की भेंट कहाँ होती है –
  हेमकूटपर्वत स्थित ऋषि मारीच के आश्रम में।
- महर्षि कण्व का आश्रम था – **मलिनी नदी के तट पर।**

- दुष्यन्त ने जब आश्रम में प्रवेश किया तब महर्षि कण्व कहाँ गए हुए थे – **सोमतीर्थ।**
- शकुन्तला को शाप देने वाले ऋषि थे – **दुर्वासा**
- मारीच ऋषि रहते थे – **हेमकूट पर स्थित आश्रम में**
- दुष्यन्त की कौन रानी संगीत का अभ्यास कर रही है – **हंसपदिका**
- राजा दुष्यन्त की दो रानियाँ – **वसुमती और हंसपदिका**
- राजा दुष्यन्त किस रानी को अधिक प्यार करता है– **वसुमती**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् में किस गुण की प्रधानता है – **प्रसाद गुण**
- कालिदास के नाटकों का प्रतिपाद्य विषय है – **प्रसाद गुण**
- कालिदास के नाटकों का प्रतिपाद्य रस है – **शृङ्गार**
- नाट्यशास्त्र में नान्दी का अर्थ है – **मङ्गलाचरण**
- नाटकों में भरतवाक्य का प्रयोग होता है – **अन्त में**
- शकुन्तला का पालन पोषण हुआ था– **कण्व के आश्रम में**
- शकुन्तला पति के चिन्तन में कहाँ बैठी थी– **कुटिया में**
- राजा की मनःस्थिति जानने के लिए मेनका ने अपनी किस सखी को भेजा था– **सानुमती**
- जर्मनविद्वान् गेटे द्वारा प्रशंसित नाटक है – **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**
- शापनिवृत्ति के लिए ऋषि दुर्वासा से अनुनय विनय करने वाली सखी है– **प्रियंवदा**
- शकुन्तला की अमङ्गलशान्ति के लिए कण्व कहाँ गए थे – **सोमतीर्थ**
- शकुन्तला ने किस तीर्थ में जलवन्दना की थी – **शचीतीर्थ**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् का सर्वश्रेष्ठ अङ्क है – **चतुर्थ**
- वह महिला तपस्विनी जिसके साथ शकुन्तला हस्तिनापुर जाती है – **गौतमी**
- अग्निगर्भा शमी के समान है – **शकुन्तला**
- दुष्यन्त शकुन्तला की वैवाहिक विधि है – **गान्धर्व**
- हस्तिनापुर से शकुन्तला को मारीच आश्रम ले जाने वाली है – **एक दिव्य ज्योति (मेनका)**
- दुष्यन्त को देवासुर संग्राम की सूचना देने वाला है – **इन्द्र का सारथि मातलि**

- वह स्थान जहाँ स्वर्ग से लौटते समय दुष्यन्त रुकता है –

  मारीच ऋषि का आश्रम
- **'अपराजिता रक्षाकरण्डक'** से सम्बद्ध है – **सर्वदमन (भरत)**
- कालिदास के तीनों नाटकों में प्रधानता है – **शृङ्गार रस की।**
- शाकुन्तलम् का प्रारम्भ तथा अन्त होता है – **सम्भोग शृङ्गार से**
- **'राजन् आश्रममृगोऽयं न हन्तव्यो न हन्तव्यः'** किसने कहा –

  तपस्वी वैखानस ने
- भ्रमर से भयभीत शकुन्तला की रक्षा कौन करता है – **राजा दुष्यन्त**
- 'शकुन्तला ऋषि विश्वामित्र एवं मेनका की कन्या हैं' – यह बात राजा दुष्यन्त को किसने बताया – **अनसूया ने**
- हस्तिनापुर से महारानी का संदेश लेकर कण्व के आश्रम राजा दुष्यन्त के पास कौन जाता है – **करभक नाम का एक सेवक**
- शाकुन्तलम् के किस अङ्क में राजा दुष्यन्त विदूषक माढव्य को आश्रम से हस्तिनापुर वापस भेज देता है– **द्वितीय अङ्क में**
- शकुन्तला को राजा दुष्यन्त के लिए एक प्रेमपत्र लिखने की सलाह कौन देती है–

  प्रियंवदा
- शकुन्तला, सखियों के आग्रह से नलिनी पत्र पर नाखूनों से राजा को प्रेमपत्र लिखती है।

  तव न जाने हृदयं मम पुनः कामो दिवाऽपि रात्रावपि।

  निर्घृण तपति बलीयस्त्वयि वृत्तमनोरथाया अङ्गानि॥

  अभि०शा० 3-13।
- शकुन्तला की अस्वस्थता का समाचार पाकर शान्तिजल लिए हुए कौन आती है–

  आर्या गौतमी
- नाटक में दुर्वासा ऋषि का आगमन किस अङ्क में होता है – **चतुर्थ अङ्क में**
- ऋषि कण्व को आकाशवाणी द्वारा मालूम होता है कि शकुन्तला का दुष्यन्त के साथ गान्धर्व विवाह हो गया है, तथा वह आपन्नसत्त्वा (गर्भिणी) है।

  दुष्यन्तेनाहितं तेजो दधानां भूतये भुवः।

  अवेहि तनयां ब्रह्मन् अग्निगर्भां शमीमिव॥ अभि०शा० 4/4

अभिज्ञानशाकुन्तलम् के मार्मिक प्रसङ्ग

प्रथम अङ्क – भ्रमर वृत्तान्त और शकुन्तला की सखियों से राजा का वार्तालाप।
द्वितीय अङ्क – शकुन्तला के सौन्दर्य का वर्णन।
तृतीय अङ्क – दुष्यन्त और शकुन्तला के विरह दुःख का वर्णन और दोनों के मिलन का वर्णन।
चतुर्थ अङ्क – शकुन्तला की विदाई।
पंचम अङ्क – राजा दुष्यन्त और शार्ङ्गरव का विवाद।
षष्ठ अङ्क – राजा के शोक का वर्णन।
सप्तम अङ्क – पुत्र सर्वदमन का दर्शन और शकुन्तला से मिलन का वर्णन।

अभिज्ञानशाकुन्तलम् के नाटकीय पात्रों का परिचय

पुरुष पात्र

क्र.	नाम		परिचय
1.	सूत्रधार	–	नाटक का आरम्भ करने वाला प्रधान नट और रंगमच का अध्यक्ष।
2.	दुष्यन्त	–	नाटक का नायक, हस्तिनापुर का राजा।
3.	सूत	–	दुष्यन्त का सारथि।
4.	सेनापति भद्रसेन	–	दुष्यन्त का सेनापति।
5.	विदूषक माढव्य	–	दुष्यन्त का अन्तरङ्ग मित्र और हास्यकारी।
6.	महर्षिकण्व (काश्यप)	–	आश्रम के कुलपति, शकुन्तला के पालक और धर्मपिता।
7.	मारीच (कश्यप)	–	एक महर्षि, देवों और राक्षसों के पिता, एक प्रजापति।
8.	भरत (सर्वदमन)	–	राजा दुष्यन्त और शकुन्तला का पुत्र।
9.	सोमरात	–	दुष्यन्त का पुरोहित।
10.	मातलि	–	इन्द्र का सारथि।
11.	वैखानस, हारीत, नारद, गौतम, शार्ङ्गरव, शारद्वत, शिष्य	–	सभी कण्व के शिष्य, आश्रम के तपस्वी।
12.	रैवतक (दौवारिक)	–	राजा का भृत्य, द्वारपाल।
13.	करभक	–	राजा के पास राजमाता का संदेश पहुँचाने वाला सेवक।
14.	कञ्चुकी (वातायन)	–	रनिवास की देखभाल करने वाला एक वृद्ध ब्राह्मण।

15.	वैतालिक	–	स्तुतिपाठक (भाट, चारण)।
16.	श्याल	–	राजा का साला, नगर रक्षाधिकारी (कोतवाल)।
17.	धीवर (मीनपालक)	–	मछली पकड़ने वाला।
18.	सूचक	–	पुलिस के दो सिपाही।
19.	जानुक		
20.	गालव	–	ऋषि मारीच का शिष्य।
21.	पिशुन	–	दुष्यन्त का मन्त्री

स्त्रीपात्र

21.	नटी	–	सूत्रधार की पत्नी।
22.	शकुन्तला	–	नाटक की नायिका, कण्व की धर्मपुत्री, दुष्यन्त की पत्नी, मेनका और विश्वामित्र से उत्पन्न एक क्षत्रिय कन्या।
23.	अनसूया	–	शकुन्तला की अत्यन्त प्रिय और अन्तरङ्ग सखी।
24.	प्रियंवदा		
25.	गौतमी	–	कण्व के आश्रम की अध्यक्षा, एक वृद्धा तापसी।
26.	अदिति (दाक्षायणी)	–	महर्षि मारीच की पत्नी।
27.	सानुमती	–	मेनका की सखी, एक अप्सरा।
28.	परभृतिका	–	राजा की सेविका, उद्यानपालिका।
29.	मधुकरिका		
30.	चतुरिका	–	राजा की सेविका।
31.	वेत्रवती (प्रतीहारी)	–	राजा की द्वारपालिका।
32.	यवनी	–	राजा की एक सेविका।
33.	तापसी (सुव्रता)	–	मारीच के आश्रम की एक तपस्विनी।

अन्य पात्र

- **मघवा (इन्द्र)** – देवताओं के राजा, दुष्यन्त के मित्र।
- **इन्द्राणी** – इन्द्र की पत्नी।
- **जयन्त** – इन्द्र का पुत्र।
- **कौशिक (विश्वामित्र)** – शकुन्तला के जन्मदाता पिता।
- **मेनका** – शकुन्तला की माता, एक अप्सरा।
- **दुर्वासा** – एक ऋषि, शकुन्तला को शाप देने वाले।

नोट – नाटक में इन पात्रों का केवल नामोल्लेख मात्र हुआ है।

- 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में पुरुवंशी (चन्द्रवंशी) राजा दुष्यन्त तथा विश्वामित्र और मेनका की पुत्री शकुन्तला का प्रेम, वियोग, पुनर्मिलन वर्णित है।
- शाकुन्तलम् की कथा महाभारत के आदिपर्व तथा पद्मपुराण के स्वर्गखण्ड में वर्णित है।
- शाकुन्तलम् का **नायक 'दुष्यन्त'** 'हस्तिनापुर' का राजा है और धीरोदात्त नायक के गुणों से युक्त है।
- 'शाकुन्तलम्' की **नायिका शकुन्तला** महर्षि कण्व (काश्यप) के आश्रम में पली है। 'मुग्धा' नायिका है।
- 'शाकुन्तलम्' का **प्रमुख 'रस' शृङ्गार है।** चतुर्थ अङ्क में **करुण** रस है।
- शाकुन्तल में **24 छन्दों** का प्रयोग हुआ है। सर्वाधिक प्रयुक्त छन्द आर्या (39) है। तत्पश्चात् वसन्ततिलका (30) है।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् में कुल **196 श्लोक** है। सर्वाधिक (35) श्लोक सप्तम अङ्क में हैं।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् में **वैदर्भी रीति** और **माधुर्य गुण** प्रयुक्त है।
- शाकुन्तलम् में साधारणतया **गद्य के लिए शौरसेनी** और पद्यों के लिए **महाराष्ट्री प्राकृत** का प्रयोग हुआ है।
- षष्ठ अङ्क में दोनों सिपाही और धीवर मागधी बोलते हैं।
- शाकुन्तलम् में सर्वाधिक उपमा और 'अर्थान्तरन्यास' अलङ्कारों का प्रयोग है।
- दुष्यन्त की शकुन्तला से पूर्व अन्य दो रानियाँ हंसपदिका और वसुमती हैं।
- शकुन्तला की अनसूया और प्रियंवदा नामक दो सखियाँ हैं।
- दुष्यन्त और शकुन्तला का **पुत्र सर्वदमन (भरत)** है।
- शाकुन्तलम् का **विदूषक 'माढव्य'** दुष्यन्त का मित्र है। पहली बार द्वितीय अङ्क में मंच पर आता है।
- दुष्यन्त का **सेनापति 'भद्रसेन'** और **पुरोहित 'सोमरात'** है।
- इन्द्र का सारथी **'मातलि'** और दुष्यन्त का सारथी **'सूत'** है।
- **'करभक'** नामक दूत द्वितीय अङ्क में दुष्यन्त की माता का सन्देश लेकर आता है।
- शकुन्तला, परित्याग के बाद देवों और राक्षसों के पिता, प्रजापति **'मारीच' (कश्यप)** के आश्रम में रहती है।
- वैखानस, शार्ङ्गरव, शारद्वत, गौतम, नारद, हारीत आदि महर्षि कण्व के शिष्य हैं।
- ऋषि मारीच का एकमात्र शिष्य जो शकुन्तला-दुष्यन्त के मिलन की सूचना कण्व को देने हेतु सातवें अङ्क में भेजा जाता है उसका नाम **'गालव'** है।
- षष्ठ अङ्क में धीवर को पकड़ने वाले **दो सिपाही सूचक व जानुक** हैं और राजा का साला एवं नगर रक्षाधिकारी **श्याल** है।
- राजा का **कञ्चुकी 'वातायन'** है वह षष्ठ अङ्क में 'वसन्तोत्सव' की तैयारी में लगी दो उद्यानपालिकाओं **'परभृतिका'** व **'मधुकरिका'** को ऐसा करने से रोकता है।
- **वेत्रवती** राजा की द्वारपालिका है। यवनी है, एक अन्य सेविका है।

- **अदिति** (दाक्षायणी) मारीच की पत्नी तथा **गौतमी** कण्व के आश्रम की 'एक वृद्धा तापसी' है। गौतमी भी शार्ङ्गरव और शारद्वत के साथ शकुन्तला को छोड़ने हस्तिनापुर जाती है।
- मारीच के आश्रम में सर्वदमन (भरत) के साथ रहने वाली तापसी **'सुव्रता'** थी।
- **'सानुमती'** शकुन्तला की माता मेनका की सखी है जो षष्ठ अङ्क में राजा और विदूषक की बात अदृश्य रूप से सुनती है।
- इन्द्र का पुत्र **जयन्त** तथा पत्नी **इन्द्राणी** (पौलोमी/शची) है।
- सुलभकोप ऋषि दुर्वासा, अत्रि और अनसूया के पुत्र हैं वे चतुर्थ अङ्क के आरम्भ में शकुन्तला को शाप देते हैं।
- महर्षि कण्व का आश्रम **'मालिनी नदी'** के तट पर विश्वामित्र का आश्रम गौतमी नदी के तट पर तथा 'मारीच' का आश्रम **'हेमकूट पर्वत'** पर था।
- दुर्वासा के शाप का असर पञ्चम अङ्क में दिखाई पड़ता है। यह नाटकीयता की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ अङ्क है।
- शकुन्तला ने **'शचीतीर्थ'** जो गङ्गा के तट पर स्थित है, में जलवन्दना की, जहाँ उसकी अँगूठी गिरती है।
- तृतीय अङ्क में 'प्रियंवदा' कमल-पत्र पर 'नाखून' से प्रेम-पत्र लिखने की सलाह शकुन्तला को देती है जिसे वह फूलों में छिपाकर देवता के प्रसाद के बहाने राजा के पास पहुँचाने को कहती है।
- नाटक का आरम्भ **'ग्रीष्म ऋतु'** वर्णन तथा राजा दुष्यन्त द्वारा आश्रम मृग का पीछा करते हुए होता है।
- राजा पञ्चम अङ्क में हंसपदिका के सङ्गीत की प्रशंसा करता है तथा षष्ठ अङ्क में शकुन्तला तथा उसकी सखियों का चित्र बनाता है।
- दुष्यन्त षष्ठ अङ्क में **'धनमित्र'** नामक व्यापारी की मृत्यु पर उसकी सारी सम्पत्ति उसके गर्भस्थ पुत्र को दे देता है।
- दुष्यन्त के लिए इन्द्र अपना आधा सिंहासन छोड़ देते हैं तथा **राजा को मन्दारमाला** पहनाते हैं।
- राजा द्वारा तिरस्कृत शकुन्तला को प्रसव तक अपने घर में रखने को **'सोमरात'** तैयार होते हैं।
- अष्टमूर्ति शिव की उपासना शाकुन्तलम् के नान्दी में की गई है, यह **मङ्गलाचरण आशीर्वादात्मक** है।
- शाकुन्तल के मङ्गलाचरण में **स्रग्धरा छन्द** है, जिसके प्रत्येक चरण में **21 वर्ण** होते हैं। यह **पत्रावली नान्दी** है।
- जब तक विद्वान् सन्तुष्ट न हो जाय सूत्रधार अभिनय-कौशल को सफल नहीं समझता। वह ग्रीष्म ऋतु पर नटी से गीत सुनाने को कहता है।

- सूत्रधार आरम्भ में एक छन्द गाता है –> **(सुभगसलिल...)** दूसरा उद्‌गाथा छन्द में नटी गीत गाती है –> **(ईषदीषच्चुम्बितानि....)**
- सूत प्रथम अङ्क के आरम्भ में धनुष पर बाण चढ़ाये राजा की उपमा 'शिव' से देता है।
- प्रथम अङ्क में वैखानस राजा को चक्रवर्ती पुत्र प्राप्त करने का आशीर्वाद देता है।
- समिधा लाने जाता हुआ 'वैखानस' राजा को बताता है कि शकुन्तला के 'प्रतिकूल भाग्य की शान्ति' के लिए कण्व शकुन्तला पर अतिथि सत्कार का भार सौंप कर **'सोमतीर्थ'** गये हुए हैं।
- आश्रम से सरोवर का मार्ग वल्कलों के अग्रभाग से टपकते जल से रेखांकित है।
- राजा आश्रम में प्रवेश से पूर्व अपने आभूषण और धनुष सारथि (सूत) को देकर सादे वेष में प्रवेश करता है।
- आश्रम-प्रवेश के समय राजा की **'दाहिनी' भुजा फड़कती** है जो सुन्दर स्त्री की प्राप्ति का सूचक है।
- आश्रम-प्रवेश पर राजा वाटिका की दाहिनी ओर वृक्षों का सेंचन कर रही (प्रियंवदा आदि) बालिकाओं को देखता है।
- प्रियंवदा कहती है कि शकुन्तला के समीप रहने पर 'बकुल' (मौलश्री) का वृक्ष लता से युक्त लगता है।
- नवमालिका लता आम के वृक्ष से लिपटी है जिसका **'वनज्योत्स्ना'** नाम शकुन्तला ने रखा है।
- प्रियंवदा 'सप्तपर्ण वृक्ष' की वेदी पर राजा को बैठने हेतु कहती है।
- अनसूया द्वारा परिचय पूँछने पर राजा अपने को पुरुवंशी राजा द्वारा नियुक्त धर्माधिकारी बताता है।
- शकुन्तला के जन्म का वृत्तान्त अनसूया राजा को बताती है।
- कौशिक (विश्वामित्र) गौतमी नदी के किनारे तपस्या कर रहे थे।
- प्रियंवदा दो वृक्षों के सेंचन का ऋण बताकर शकुन्तला को रोकती है राजा अपनी अँगूठी देकर शकुन्तला को ऋण मुक्त करना चाहता है।
- द्वितीय अङ्क का आरम्भ खिन्न विदूषक के प्रवेश के साथ होता है जो राजा के 'मृगया' के व्यसन से दुःखी है।
- द्वितीय अङ्क में सेनापति और विदूषक 'मृगया' (शिकार) के गुण-दोष की चर्चा करते हैं।
- दुष्यन्त, शकुन्तला के प्रति अपने प्रेम को विदूषक से कहता है और कहीं यह अन्तःपुर में न बता दे इसलिए उस बात को हँसी में कही 'बात' कहता है।
- करभक सन्देश लाता है कि चौथे दिन महारानी (दुष्यन्त की माता) के व्रत (जीवित्पुत्रिका/ जिउतियाव्रत) का 'पारण' है।
- राजा अपने स्थान पर 'विदूषक' को भेज देता है।

- तृतीय अङ्क का आरम्भ 'शिष्य' के प्रवेश से होती है जो शकुन्तला के अस्वस्थ होने की खबर प्रियंवदा से प्राप्त होने का अभिनय करता है।
- तृतीय अङ्क का आरम्भ 'विष्कम्भक' से होता है।
- तृतीय अङ्क में दुष्यन्त के शकुन्तला के समीप उपस्थित होने पर दोनों सखियाँ मृग-शावक को उसकी माँ से मिलाने के बहाने से हट जाती हैं।
- दुष्यन्त तृतीय अङ्क में **शकुन्तला से गान्धर्व विवाह** करता है। यह विवाह केवल क्षत्रियों के लिए ही स्वीकृत था।
- गौतमी दोनों सखियों के साथ शकुन्तला का स्वास्थ्य जानने आती है।
- चतुर्थ अङ्क का आरम्भ पुष्प चुनती हुई दो सखियों (प्रियंवदा, अनसूया) के प्रवेश के साथ होता है।
- अनसूया, शकुन्तला के 'भाग्यदेवता' के पूजन के लिए अधिक फूल तोड़ने को कहती है।
- शाप देकर जाते हुए **दुर्वासा को मनाने प्रियंवदा** जाती है।
- शकुन्तला कुटिया के द्वार पर बाएँ हाथ पर मुँह रखे चित्रलिखित सी बैठी है।
- शाप का वृत्तान्त केवल अनसूया और प्रियंवदा को ज्ञात रहता है।
- चौथे अङ्क का आरम्भ भी **शुद्ध विष्कम्भक** के साथ होता है।
- विष्कम्भक के पश्चात् सोकर उठे 'शिष्य' का प्रवेश मंच पर होता है। जो काश्यप के आदेशानुसार 'कितनी रात शेष है' यह जानने के लिए बाहर आता है।
- 'शकुन्तला सुखपूर्वक सोई कि नहीं' यह जानने के लिए गयी हुई प्रियंवदा यह समाचार लाती है कि 'कण्व' ने शकुन्तला के विवाह को अनुमति दे दी है।
- शकुन्तला 'गर्भिणी' है यह समाचार कण्व को **'अशरीरधारी छन्दोमयी'** वाणी ने यज्ञशाला में प्रविष्ट होने पर दिया।
- इस घटना को प्रियंवदा, अनसूया से बताती है।
- अनसूया शकुन्तला की विदाई हेतु नारियल के डिब्बे में बकुल (मौलश्री) की माला, केसर आदि आम की डाल पर लटका कर रखती है।
- अनसूया शकुन्तला की विदाई के अवसर पर गोरोचन, तीर्थों की मिट्टी, दूब के अग्रभाग आदि वस्तुएँ इकट्ठा करती है।
- स्वस्तिवाचन के समय तीन तापसियाँ शकुन्तला को आशीर्वाद देती हैं।
- पहली तापसी **'महादेवी'** शब्द प्राप्त करने, दूसरी **'वीर पुत्र'** को प्राप्त करने का और तीसरी **'पति से अधिक सम्मान'** प्राप्त करने का आशीर्वाद देती है।
- दो ऋषि कुमार जिनके नाम **नारद** व **गौतम** हैं, वे वृक्षों द्वारा प्रदत्त वस्त्र-आभूषण आदि शकुन्तला के लिए लाते हैं।
- दोनों सखियाँ चित्रकारी से प्राप्त ज्ञान के आधार पर शकुन्तला का शृङ्गार करती हैं।
- पूरे नाटक में **महर्षि कण्व केवल चौथे अङ्क** में दिखाई पड़ते हैं। वे स्नान के उपरान्त **'यास्यत्यद्य शकुन्तलेति'**...... श्लोक के साथ मंच पर प्रविष्ट होते हैं।

- चतुर्थ अङ्क के **22 श्लोकों में 14 श्लोक महर्षि कण्व** ने कहे हैं। चौथे अङ्क के प्रसिद्ध चार श्लोक भी महर्षि कण्व द्वारा कहे गये हैं।
- **ययाति** चंद्रवंश के संस्थापक राजाओं में थे जिनकी **देवयानी** और **शर्मिष्ठा** नाम की दो पत्नियाँ थीं।
- **देवयानी** दानवों के गुरु **शुक्राचार्य की पुत्री** और ययाति की विवाहिता पत्नी थी।
- दानवों के राजा **'वृषपर्वा' की पुत्री शर्मिष्ठा** देवयानी की सेविका के रूप में आयी थी। ययाति ने उससे गान्धर्व विवाह कर लिया।
- ययाति के 5 पुत्रों में **शर्मिष्ठा का पुत्र 'पुरु'** भी था जिसने शुक्राचार्य के शाप से वृद्ध हुए ययाति की वृद्धावस्था अपने ऊपर ले लिया था।
- अग्निवेदी की परिक्रमा करते हुए कण्व ने ऋग्वैदिक छन्द 'त्रिष्टुप्' में शकुन्तला को आशीर्वाद दिया।
- 'त्रिष्टुप्' के प्रत्येक चरण में 11 वर्ण होते हैं, 4 या 5 वर्ण पर यति होती है।
- वृक्षों के प्रथम 'पुष्पोद्गम' के समय शकुन्तला आश्रम में उत्सव मनाया करती थी।
- 'वृक्षों से' कण्व द्वारा शकुन्तला के जाने हेतु आज्ञा माँगने पर वे 'कोयल' की आवाज में आज्ञा प्रदान करते हैं।
- वृक्षों ने शकुन्तला को कोयल की आवाज में जाने की आज्ञा दे दी है। इस बात की कण्व अपरवक्त्र छन्द में पुष्टि करते हैं।
- आकाशवाणी के द्वारा शकुन्तला यात्रा की जो मङ्गल कामना की गई है वह **शाकुन्तलम् का 'मध्यनान्दी'** है।
- जाती हुई शकुन्तला अपनी **लता-बहिन 'वनज्योत्सना'** से गले मिलकर विदाई लेती है। जो 'आम्रवृक्ष' से लिपटी है। और इसे धरोहर के रूप में सखियों के हाथ में देती है।
- शकुन्तला कण्व से गर्भ के कारण शिथिल हरिणी के कुशलपूर्वक सन्तानोत्पत्ति का समाचार अपने पास भेजने को कहती है।
- कुशाग्रों से विंधे मुखवाले जिस मृग के मुख पर शकुन्तला ने इंगुदी (हिंगोट) का तेल लगाया था तथा साँवा के चावल से पाला था वह शकुन्तला के जाते समय उसका वस्त्र खींचता है। वह उसे पिता कण्व को सौंपती है।
- शकुन्तला के साथ सरोवर के तट तक आये कण्व क्षीरवृक्ष (पीपल) के नीचे बैठ कर दुष्यन्त को भेजने हेतु संदेश देते हैं।
- कमल के पत्ते की ओट में बैठे सहचर (चकवा) को न देख पाने के कारण चकवी रोती (चिल्लाती) है।
- शकुन्तला द्वारा पहले पूजा के रूप में डाले गये 'नीवार' अब कुटी के द्वार पर उगे हैं जो कण्व को उसकी याद दिलायेंगे।
- **''अपराजिता रक्षाकरण्डक''** सिंह शावक के साथ खेलते सर्वदमन के हाथ पर बंधा है जो बालक के माता-पिता के अतिरिक्त अन्य के छूने पर सर्प बनकर डस लेता है।

- षष्ठ अङ्क में इन्द्र-सारथि मातलि राजा में क्रोध या वीरता को जगाने के लिए विदूषक पर आक्रमण करता है।
- मातलि विदूषक पर आक्रमण करके उसे **'मेघप्रतिच्छन्द'** नामक महल के ऊपरी मंजिल पर ले जाता है।
- राजा उस पर आक्रमण हेतु 'यवनी' नामक परिचारिका से धनुष माँगता है।
- मातलि राजा के समक्ष प्रकट होकर राजा को देवासुर संग्राम में इन्द्र के सहायतार्थ चलने हेतु निवेदन करता है।
- **कालनेमि का वंशज 'दुर्जेय'** ने इन्द्र पर आक्रमण किया जिसे केवल दुष्यन्त मार सकता है।
- राजा दुष्यन्त के **मंत्री 'पिशुन'** हैं जिन पर वह देवासुर संग्राम में जाते हुए राज्यभार सौंपता है। विदूषक से यह बात उन्हें बताने के लिए कहता है।
- **हेमकूट किन्नरों का पर्वत** है जहाँ प्रजापति 'मारीच' रहते हैं।
- जब मातलि 'राजा' के आगमन की सूचना (मारीच को) देने जाता है तब राजा अशोक के वृक्ष के नीचे बैठता है।
- 'जातकर्म' 16 संस्कारों में चौथा है। जिस अवसर पर सर्वदमन के हाथ पर **'अपराजिता'** नामक रक्षासूत्र बाँधा गया था।
- मारीच **'वत्स, चिरंजीव। पृथिवीं पालय'** आशीर्वाद राजा को देते हैं तथा दुर्वासा - शाप का वृत्तान्त दोनों को बताते हैं।
- अदृश्य तेजोमयी मूर्ति के रूप में मेनका 'अप्सरास्तीर्थ' से शकुन्तला को लेकर दाक्षायणी (मारीच-पत्नी) के पास गयी।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक का भरतवाक्य (अन्तिम श्लोक) (प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय) **'रुचिरा' छन्द** में है। जिसके प्रत्येक चरण में 13 वर्ण, 4, 9 पर यति होती है।
- जीवों को बलात् वश में कर लेने के कारण भरत का नाम 'सर्वदमन' था।
- पञ्चम अङ्क में अँगूठी के शचीतीर्थ में जलतर्पण के समय गिरने की बात का पता सर्वप्रथम 'गौतमी' के मुख से पता चलता है।

3. पात्रों का चरित्र-चित्रण

राजा दुष्यन्त

परिचयः –

- अभिज्ञानशाकुन्तलम् का धीरोदात्त नायक

महासत्वोऽतिगम्भीरः क्षमावानविकत्थनः।

स्थिरो निगूढाहङ्कारो धीरोदात्तो दृढव्रतः॥

(दशरूपक – द्वितीयप्रकाश)

अर्थात् वह (राजा दुष्यन्त) स्थिर स्वभाववाला, क्षमाशील, अतिगम्भीर, महाबली, अहङ्कारशून्य, दृढनिश्चयी, स्वयं प्रशंसा न करने वाला, मधुरभाषी, एवं ललित कलाओं का मर्मज्ञ है।

- शकुन्तला का प्रेमी/पति।
- पुरुवंशी (चन्द्रवंशी) एक क्षत्रिय राजा (राजर्षि)।
- हस्तिनापुर के सम्राट्।
- विदूषक (माधव्य) के मित्र।
- हंसपदिका और वसुमती नामक रानियों के आदर्शपति।
- सर्वदमन (भरत) के पिता।

चारित्रिक विशेषतायें

- आदर्श प्रेमी।
- आदर्श राजा/उत्तम शासक
- आखेट (मृगया) प्रेमी।
- आकर्षक व्यक्तित्व एवं सौन्दर्यशाली।
- वात्सल्यप्रेमी एवं गुणग्राही।
- सहृदय तथा संयमी।
- मातृभक्त तथा आज्ञाकारीपुत्र।
- लोकोत्तर आदर्शचरित्र
- सुन्दर एवं गम्भीर आकृति।
- विनयशील नैतिक एवं धर्मपरायण।
- कलाप्रेमी/कुशलचित्रकार/संगीतप्रेमी
- वीरयोद्धा/पराक्रमी/शूरवीर।
- मधुरभाषी एवं उदार।
- आदर्श पिता।
- चरित्रवान् नायक।

दुष्यन्त के महत्वपूर्ण गुण एवं कार्य

- दानवों के वधार्थ इन्द्र उसे स्वर्ग में बुलाता है। **(अङ्क-6)**
- उसके शारीरिक गठन एवं सौन्दर्य से सभी प्रभावित होते हैं, वह सुन्दर एवं युवा है।

- धनुष की टंकार से ही यज्ञ में विघ्न करने वाले राक्षसों को भगा देता है।
- प्रियंवदा उसके मधुरभाषण की प्रशंसा करती है। **(अङ्क-1)**
- जब तक यह निश्चित नहीं हो जाता है कि शकुन्तला क्षत्रिय कन्या है, तब तक वह अपने विवाह का विचार प्रकट नहीं करता है।
- शकुन्तला की प्रेमावस्था देखकर वह उसके पाणिग्रहण और रक्षा की स्वीकृति देता है।**(अङ्क-3)**
- वह रुग्ण शकुन्तला को धूप में जाने से रोकता है, और उसकी सेवा-शुश्रूषा करता है।
- माता की आज्ञा पाते ही ऋषियों के यज्ञरक्षा रूपी कार्य की विवशता के कारण मित्र विदूषक को तत्काल माता के पास भेजता है। **(अङ्क-2)**
- रानी हंसपदिका के संगीत को सुनकर मन्त्रमुग्ध हो जाता है। **(अङ्क-5)**
- शकुन्तला तथा उसकी सखियों का चित्र बनाता है। **(अङ्क-6)**
- ऋषियों के प्रति बहुत आदरभाव है, उनके कहने से वह मृग पर बाण नही चलाता है।
- विनीत वेष में आश्रम में प्रवेश करता है। **(अङ्क-1)**
- यज्ञरक्षा हेतु ऋषियों की प्रार्थना सादर स्वीकार करता है।
- शार्ङ्गरव के आक्षेपों का उत्तर शान्तिपूर्वक देता है। **(अङ्क-5)**
- मारीच ऋषि के दर्शनार्थ उनके आश्रम जाता है। **(अङ्क-7)**
- वह धनमित्र नामक व्यापारी की मृत्यु पर शोक प्रकट करता है। उसके गर्भस्थ पुत्र को उसका धन दिलाता है। **(अङ्क-6)**
- प्रजा की रक्षा को परमधर्म समझता है।
- दुःखियों का दुःख दूर करने को सदा उद्यत रहता है।
- परस्त्री की ओर देखना पाप समझता है – ''**अनिर्वर्णनीयं परकलत्रम्**'' **(अङ्क-5)**
- संतानहीनता का उसे बहुत दुःख है।
- प्रजा के लिए घोषणा करता है कि बन्धुहीनों का वह बन्धु है।
  ''**येन येन वियुज्यन्ते प्रजाः स्निग्धेन बन्धुना**''
- शाप के कारण शकुन्तला को न पहचानने पर वह अपने पूर्णसंयम का परिचय देता है। **(अङ्क-5)**
- सर्वदमन (भरत) को देखकर वात्सल्य का भाव जाग उठता है। **(अङ्क-7)**
- वह शिकार खेलता हुआ कण्व ऋषि के आश्रम में प्रवेश करता है। **(अङ्क-1)**
- राजा, मृगया को व्यसन नही अपितु शारीरिक स्वास्थ्य एवं मनोविनोद का साधन मानता है, इससे शरीर हल्का फुल्का एवं फुर्तीला रहता है। **(अङ्क-2)**

- राजाद्वारा निर्मित शकुन्तलाके चित्रको देखकर विदूषक और सानुमती मन्त्रमुग्ध हो जाते हैं। **(अङ्क 6)**
- राजा दुष्यन्त के सौन्दर्य एवं व्यक्तित्व से सखियों सहित शकुन्तला प्रभावित होती है।
- दाक्षायणी (अदिति) भी दुष्यन्त के व्यक्तित्व की प्रशंसा करती हैं। **(अङ्क-7)**
- दुष्यन्त की वीरता से प्रभावित होकर इन्द्र अपना आधा इन्द्रासन छोड़ देते हैं, तथा उन्हें मन्दारमाला पहनाते हैं।
- इस प्रकार राजादुष्यन्त कर्त्तव्यपरायण, प्रजाप्रेमी, पराक्रमी, विनीत और अविकत्थन है।

शकुन्तला

परिचय –

- अभिज्ञानशाकुन्तलम् की नायिका।
- विश्वामित्र और अप्सरा मेनका की पुत्री।
- महर्षिकण्व की धर्मपुत्री, (पालिता पुत्री)।
- नाट्यशास्त्रीय दृष्टि से मुग्धा नायिका।
- **''शकुन्तैः परिवारिता परिपालिता वा।''** पक्षियों से आवृत या कुछ समय तक पक्षियों द्वारा परिपालित होने के कारण 'शकुन्तला' यह सार्थक नाम पड़ा।
- मालिनी नदी के तट पर स्थित कण्वाश्रम में निवास।
- राजा द्वारा परित्यक्ता होने के बाद मारीच आश्रम में निवास।
- राजादुष्यन्त की प्रेमिका/तृतीयपत्नी।
- सर्वदमन (भरत) की माँ।
- अनसूया एवं प्रियंवदा की प्रियसखी।

चारित्रिक विशेषतायें

1. अपूर्वसुन्दरी	2. प्रकृतिप्रिया	3. आदर्शप्रेमिका
4. आश्रमप्रेमी	5. पतिव्रता पत्नी/आदर्शनारी	6. सुशीला एवं लज्जावती
7. स्वाभिमानिनी	8. कार्यकुशला	9. आदर्शपुत्री
10. मधुरभाषिणी	11. सच्ची सखी	12. अन्तर्मन की सहजता

शकुन्तला के चारित्रिक गुण एवं कार्य

- शकुन्तला नैसर्गिक सौन्दर्य की प्रतिमूर्ति है –

- **इदं किलाव्याजमनोहरं वपुः......** **(1-18)**
- **इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी....** **(1-17)**
- **सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यम्....** **(1-20)**
- **अधरः किसलयरागः......** **(1-21)**

- **मानुषीषु कथं वा स्यात्......** **(1-26)**
- **अनाघ्रातं पुष्पं.........** **(2-10)**
- **चित्रे निवेश्य......** **(2-9)**

➢ शकुन्तला का पालन पोषण कण्व आश्रम में हुआ है, अतः उसमें स्वाभाविक सरलता, सुशीलता एवं मुग्धता है।

➢ राजा दुष्यन्त को देखते ही उसके ह्रदय में कामभाव जागृत होता है, परन्तु वह उसे व्यक्त नहीं करती – **किं नु खलु इमं जनं प्रेक्ष्य....। (अङ्क-1)**

➢ जब राजा दुष्यन्त उसकी प्रशंसा करता है, तो वह लज्जा से सिर नीचा कर लेती है। **'शकुन्तला अधोमुखी तिष्ठति'**। (अङ्क-1)

➢ प्रकृति से घनिष्ट प्रेम है। वह वृक्षों, वनस्पतियों और मृगादि से सहोदरों जैसा स्नेह करती है – **''अस्ति मे सोदरस्नेहोऽयेतेषु'' (अङ्क-1)**

➢ आश्रम के वृक्षों को जल देकर ही वह जलपान करती है, प्रियमण्डना होने पर भी वृक्षों के फूल, पत्तें नहीं तोड़ती – **''पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलम्.....।'' (अङ्क-4/9)**

➢ वह पतिव्रता है, विवाहोपरान्त पति के चिन्तन में ही व्याकुल और अन्यमनस्क है – **विचिन्तयन्ती यमनन्यमानसा।**

➢ आश्रम से विदाई के समय वृक्षों और मृगादि से भी विदा लेती है। वनज्योत्स्ना से गले मिलती है, आश्रमीय मृगों को स्नेह करती है। **''सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम्।'' (अङ्क-4/9)।**

➢ राम द्वारा परित्यक्त सीता यथा वाल्मीकि आश्रम में निवास करती हैं, वैसे ही राजा दुष्यन्त द्वारा परित्याग कर दिये जाने पर मारीच ऋषि के आश्रम में वह तपस्विनी के समान जीवन यापन करती रही, वह अपने आपको ही दोष देती है, राजा को नही।

➢ अपने पूज्यजनों का विशेष आदर करती है, राजा से अपने पैर नही दबवाती है। **(अङ्क-3)**

➢ शार्ङ्गरव के डॉटने पर उसे प्रत्युत्तर नही देती है। **(अङ्क-5)**

➢ ऋषि कण्व एवं आश्रमीय ऋषियों के प्रति उसकी अगाध श्रद्धा है, सखियों के प्रति उसका **निश्छल प्रेम है।**

➢ राजा के प्रति आसक्ति के कारण उसकी मनःस्थिति उद्विग्न हो जाती है, परन्तु अपनी मुँहबोली-सखियों से भी बताने में उसे **संकोच** होता है।

➢ वह अपनी सखियों के कहने पर राजा को एक प्रेमपत्र लिखती है – **तव न जाने ह्रदयं**......... **(अङ्क-3/13)**

- आश्रम के बाहर जाने पर कण्व शकुन्तला के ऊपर ही **अतिथिसत्कार का भार** सौंपते हैं।
- आश्रम से उसका विशेष लगाव है, आश्रमीय चोटिल मृग को वह इङ्गुदी का तेल लगाती है, उसे श्यामॉक चावल की मुट्ठियाँ भर-भर कर खिलाती है।
  यस्य त्वया व्रणविरोपणमिङ्गुदीनाम्.......(अङ्क 4-14)
- शकुन्तला गर्भमन्थरा मृगवधू के सुखप्रसव का समाचार भेजने के लिए पिता कण्व से कहती है। **(अङ्क-4)।**

महर्षि कण्व

परिचय –

- आश्रम के कुलपति।
- शार्ङ्गरव, शारद्वत, नारद, हारीत, वैखानस आदि के गुरु।
- शकुन्तला के पालक पिता।
- 'काश्यप' नाम से नाटक में वर्णित।
- श्रौतविधि से अग्निहोत्र करने वाले एक ऋषि/साधक/तपस्वी।

चारित्रिक विशेषतायें

1. त्रिकालज्ञ नैष्ठिक ब्रह्मचारी।
2. तपस्वी एवं साधक
3. अत्यन्त दयालु, स्नेही एवं धार्मिक।
4. लौकिकव्यवहार में निपुण/लोकाचारज्ञाता/लौकिकज्ञ।
5. आध्यात्मिक प्रभावशाली व्यक्तित्व/सिद्धपुरुष।
6. वात्सल्यपूर्ण आदर्श पिता।
7. भविष्यवक्ता।
8. सहृदयता।

महर्षिकण्व के चारित्रिक गुण एवं कार्य

- कण्व का तपोबल असाधारण है, वे वर्तमान, भूत और भविष्य को जानने वाले हैं।
  ''तपःप्रभावात् प्रत्यक्षं सर्वमेव तत्रभवतः'' (अङ्क-7)
- कण्व को ज्ञात है कि शकुन्तला पर विपत्ति आएगी, अतः उसके निवारणार्थ वे सोमतीर्थ जाते हैं। **''दैवमस्या प्रतिकूलं शमयितुं सोमतीर्थं गतः'' (अङ्क-1)**
- आकाशवाणी द्वारा कण्व को ज्ञात होता है कि दुष्यन्त का तेज (वीर्य) शकुन्तला के गर्भ में पल रहा है, वे इन दोनों के इस गान्धर्वविवाह से सहर्ष सहमत होते हैं।
  ''दुष्यन्तेनाहितं तेजो......'' (अङ्क-4/4)

- उनके तपःप्रभाव के कारण शकुन्तला की विदाई के समय वृक्ष आभूषण और रेशमी वस्त्र आदि देते हैं – "**क्षौमं केनचिदिन्दुपाण्डुतरुणा....।**" **(अङ्क-4/5)**
- शकुन्तला के प्रति उनका प्रेम निःस्वार्थ है, उसकी विदाई के समय वे सगे माता-पिता के समान व्याकुल होते हैं – "**यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं......।**" **(अङ्क 4/6)** "**शममेष्यति मम शोकः......।**" **(अङ्क 4-21)**
- ऋषि होते हुए भी लौकिकव्यवहार को अच्छी तरह जानते हैं। "**वनौकसोऽपि सन्तो लौकिकज्ञा वयम्।**" (अङ्क-4)
- ससुराल जाती हुई पुत्री शकुन्तला को सुन्दर उपदेश देते हैं– "**शुश्रूषस्व गुरून् कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीजने।**" **(अङ्क 4-18)**
- कण्व द्वारा शार्ङ्गरव के माध्यम से राजा दुष्यन्त को दिया गया सन्देश उनके लौकिकज्ञान की पराकाष्ठा को सूचित करता है – "**अस्मान् साधु विचिन्त्य संयमधनान्।**" **(अङ्क 4-17)**
- वे शकुन्तला के साथ अनसूया और प्रियंवदा को हस्तिनापुर नही भेजते, क्योंकि उन दोनों का भी विवाह करना है। विवाहिता के साथ कुमारी कन्याओं को भेजना अनुचित समझते हैं।
- कण्व शकुन्तला से कहते हैं कि राजा दुष्यन्त के पास पहुँचने पर वहाँ के कार्यों में व्यस्त होकर तुम मेरे विरह दुःख को भूल जाओगी – "**मम विरहजां न त्वं वत्से शुचं गणयिष्यसि**" **(अङ्क 4-19)**
- वे कन्या को विदा करके तनावमुक्त जीवन का अनुभव करते हैं – "**अर्थो हि कन्या परकीय एव।**" **(अङ्क 4-22)**
- कण्व अपने धर्म, तपस्या, यज्ञ, आदि के अनुष्ठान में लगे रहते हैं, और विभिन्न तीर्थस्थानों की यात्रा करते हैं।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में ही कण्व का प्रवेश होता है, किन्तु सम्पूर्ण नाटक में उनका प्रभाव परिलक्षित होता है।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् चतुर्थ अङ्क के कुल 22 श्लोकों में से 14 प्रसिद्ध श्लोक महर्षि कण्व (काश्यप) के द्वारा कहे गए हैं –

- यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं.............. **(4-6)**

  (चार प्रसिद्ध श्लोकों में से एक)
- ययातेरिव शर्मिष्ठा भर्तुर्बहुमता भव...... **(4-7)**
- अमी वेदिं परितः क्लृप्तधिष्ण्याः। **(4-8)**
- पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलम्। **(4-9)**

  (चार प्रसिद्ध श्लोकों में से एक)

- अनुमतगमना शकुन्तला। **(4-10)**
- सङ्कल्पितं प्रथममेव मया तवार्थे। **(4-13)**
- यस्य त्वया व्रणविरोपणमिङ्गुदीनाम्। **(4-14)**
- उत्पक्ष्मणोर्नयनयोरुपरुद्धवृत्तिम्। **(4-15)**
- अस्मान् साधु विचिन्त्य संयमधनान्। **(4-17)**

(चार प्रसिद्ध श्लोकों में से एक)

- शुश्रूषस्व गुरून् कुरु प्रियसखीवृत्तिं....। **(4-18)**

(चार प्रसिद्ध श्लोकों में से एक)

- अभिजनवतो भर्तुः श्लाघ्ये स्थिता गृहिणीपदे। **(4-19)**
- भूत्वा चिराय चतुरन्तमहीसपत्नी। **(4-20)**
- शममेष्यति मम शोकः कथं नु वत्से.....। **(4-21)**
- अर्थो हि कन्या परकीय एव। **(4-22)**

➢ अभिज्ञानशाकुन्तलम् चतुर्थ अङ्क के **प्रसिद्ध चारों श्लोक महर्षि कण्व** (काश्यप) द्वारा कहे गये हैं।

➢ अनसूया, प्रियंवदा एवं शकुन्तला तीनों कण्व को **तात** (पिता) कहकर पुकारती हैं।

अनसूया एवं प्रियंवदा

परिचय –

➢ अनसूया और प्रियंवदा दोनों शकुन्तला की प्रिय सखियाँ।

➢ कण्वाश्रम में शकुन्तला के साथ निवास।

दोनों सखियों की चारित्रिक विशेषतायें

- सुन्दररूप एवं समान आयु।
- तपोवन-निवासिनी।
- सामान्य व्यवहारज्ञान से परिचित।
- कामशास्त्र से परिचित।
- आदर्श–सखियाँ।
- शकुन्तला की हितैषिणी।
- सौन्दर्यशालिनी।
- लोकव्यवहारज्ञाता।
- अतिथिसत्कार-निपुणा।
- परिहास/विनोदप्रिया।
- तर्कशीला।
- प्रकृतिप्रेमिका।
- आश्रमप्रिया।
- पारस्परिक स्नेह एवं आत्मीयता।

चारित्रिक गुण एवं कार्य

➢ दोनों सखियाँ शकुन्तला की समवयस्का हैं, और सौन्दर्य में लगभग उसके समान ही हैं – **''अहो समवयोरूपरमणीयं भवतीनां सौहार्दम्।''** (अङ्क-1)

- राजा दुष्यन्त तीनों सखियों के परस्पर सौहार्दभाव, समान अवस्था एवं सौन्दर्य की प्रशंसा करता है – "**अहो मधुरमासां दर्शनम्**" (अङ्क-1)
- दोनों सखियाँ शकुन्तला के व्यक्तित्व की प्रतिच्छाया सी प्रतीत होती हैं, इनकों पृथक् कर शकुन्तला के अस्तित्व एवं व्यक्तित्व की कल्पना कठिन है।
- यदि शकुन्तला आश्रमाकाश की चन्द्रलेखा है, तो सखीद्वय तदनुगामी विशाखानक्षत्र "**किमत्र चित्रं यदि विशाखे शशाङ्करेखामनुवर्तेते।**" (अङ्क-3)
- प्रथम अङ्क से लेकर चतुर्थ अङ्क तक शकुन्तला के साथ दोनों सखियाँ उपस्थित रहती हैं।
- अनसूया एवं प्रियंवदा – ये दोनों पात्र महाकविकालिदास की नाट्यप्रतिभा की निजी कल्पना से प्रादुर्भूत हैं।
- सौन्दर्य में शकुन्तला सबसे अधिक सुन्दर है, परन्तु आयु में अनसूया सबसे बड़ी ज्ञात होती है।
- सखियों में परस्पर घनिष्ट प्रेम है, तीनों ही एक दूसरे को सदा सुखी देखना चाहती हैं।
- दोनों सखियों का नाम सार्थक है। अनसूया **(न असूया इति अनसूया)** सभी के प्रति ईर्ष्या द्वेषादि से सर्वथा रहित है, तथा प्रियंवदा **(प्रियं वदति इति प्रियंवदा)** सदा प्रिय मधुर बोलने वाली है।
- सुख दुःख–दोनों में सदा शकुन्तला के साथ रहती हैं, और सर्वदा उसका हितचिन्तन करती हैं।
- तृतीय अङ्क में शकुन्तला को अस्वस्थ देखकर राजा दुष्यन्त से मिलाने का प्रयास करती हैं।
- दोनों सखियाँ कर्मठ, कार्यदक्ष और बुद्धिमती हैं, दोनों आश्रम के वृक्षों को उत्साहपूर्वक सींचती हैं।
- चतुर्थ अङ्क में शकुन्तला की विदाई के समय दोनों उसका शृङ्गार करती हैं।
- तृतीय अङ्क में अपनी बुद्धिमत्ता से राजा दुष्यन्त से यह वचन लेती हैं कि वह शकुन्तला को सदा सुखी रखेगा – "**परिग्रहबहुत्वेऽपि......सखी च युवयोरियम्।**" (अङ्क 3/17)
- दोनों सखियाँ शिष्ट, विनीत, मधुरभाषिणी और वाक्चतुर हैं, प्रथम अङ्क में राजा से मिलने पर अनसूया उनका परिचय पूछती है – "**कतम आर्येण राजर्षिवंशोऽलंक्रियते।**" (अङ्क-1)
- शकुन्तला के प्रति दुर्वासा के भीषण शाप को सुनकर दोनों का ह्रदय विदीर्ण हो जाता है, शापनिवृत्ति के लिए पूरा प्रयास करती हैं, तथा अपनी प्रियसखी शकुन्तला को कुछ भी नही बताती हैं।

- दोनों सखियाँ शकुन्तला से निःस्वार्थ प्रेम करती हैं, उसे सब प्रकार से सुखी और प्रसन्न रखना चाहती हैं। शकुन्तला जब कामज्वर से ग्रस्त होती है, तब कमलनाल, कमलपत्र और चन्दनादि के लेप से उसका उपचार करतीं हैं।
- दोनों सखियों के लिए शकुन्तला का संयोग जितना मधुर है, उतना ही वियोग दुःखदायी।
- राजा दुष्यन्त उनके आतिथ्यसत्कार, लोकव्यवहार, एवं मधुरभाषण से प्रसन्न होता है – ''**भवतीनां सुनृतयैव गिरा कृतमातिथ्यम्।**'' (अङ्क-1)
- अनसूया स्वभाव से वाग्विदग्ध, व्यवहारकुशल एवं प्रौढ है, राजा दुष्यन्त जब आश्रम में प्रवेश करता है, तो अनसूया ही उससे वार्तालाप प्रारम्भ करती है – ''**आर्य, न खलु किमप्यत्याहितम् इयं नौ प्रियसखी मधुकरेणाभिभूयमाना कातरीभूता।**'' (अङ्क-1)
- अनसूया राजा दुष्यन्त से उनका परिचय पूछती है, और अपनी सखी शकुन्तला के जन्म एवं माता पिता के विषय में राजा से बताती है। –''**शृणोत्वार्य अस्ति कोऽपि कौशिक इति गोत्रनामधेयो महाप्रभावो राजर्षिः।**'' (अङ्क-1)
- प्रियंवदा, अनसूया की अपेक्षा अधिक विनोदप्रिया एवं चपल है। शकुन्तला जब अनसूया से अपने वल्कलों को ढीला करने को कहती है तो प्रियंवदा परिहास करती है कि मुझे उलाहना न देकर पयोधरविस्तारी अपने यौवन को उलाहना दो–''**अत्र पयोधरविस्तारयितृ आत्मनो यौवनमुपालभस्व।**'' (अङ्क-1)
- शकुन्तला द्वारा वनज्योत्सना और आम्रवृक्ष की युगलजोड़ी को स्नेहदृष्टि से देखने पर प्रियंवदा मजाक करती है कि तुम भी इसी तरह अपने अनुकूल वर को प्राप्त करने की सोच रही हो–''**यथा वनज्योत्स्नाऽनुरूपेण पादपेन सङ्गता..... अहमप्यात्मनोऽनुरूपं वरं लभेयेति।**'' (अङ्क-1)
- अनसूया में प्रियंवदा की अपेक्षा धैर्य तथा गाम्भीर्य अधिक है। दुर्वासा के शाप को सुनकर जब प्रियंवदा सहसा घबड़ा जाती है –''**हा धिक्, हा धिक् अप्रियमेव संवृत्तम्**'' किन्तु अनसूया उसे धैर्यपूर्वक दुर्वासा को मनाने के लिए कहती है – ''**गच्छ, पादयोः प्रणम्य निवर्तयैनम्।**'' (अङ्क-4)
- प्रियंवदा चपलतावश इस दारुण शापवृत्तान्त को शकुन्तला से कहीं बता न दें इसके लिए अनसूया उसको मना करती है – ''**प्रियंवदे! द्वयोरेव नौ मुख एष वृत्तान्तस्तिष्ठतु**''।
- प्रियंवदा के मन में यह शंका उठती है कि पिता कण्व गान्धर्वविवाह के वृत्तान्त को सुनकर न जाने क्या सोचेगें –''**तात इदानीमिमं वृत्तान्तं श्रुत्वा न जाने किं प्रतिपत्स्यत इति**'' (अङ्क-4) तो अनसूया अपने विवेक बुद्धि का परिचय देती हुई कहती है कि –''**यथाऽहं पश्यामि तथा तस्यानुमतं भवेत्। गुणवते कन्यका**

प्रतिपादनीया इत्ययं तावत् प्रथमः संकल्पः।''

- अनसूया शकुन्तला के भविष्य के प्रति चिन्तित रहती है, वह किसी भी विषय पर सम्यक् उहापोह और विचार-विमर्श करती है। वह चिन्तित है कि राजा दुष्यन्त अपने नगर हस्तिनापुर पहुँचने के बाद शकुन्तला के साथ किये गये गान्धर्व विवाह को स्मरण करेगा या नहीं–''**अद्य स राजर्षिः इतोगतं वृत्तान्तं स्मरति वा न वेति।**''(अङ्क-4)
- प्रियंवदा निःशङ्क और निश्चिन्त स्वभाव वाली है। उसे पूरा विश्वास है कि सुन्दर आकृति वाला दुष्यन्त गुणरहित नही हो सकता – ''**न तादृशा आकृतिविशेषा गुणविरोधिनो भवन्ति**'' (अङ्क-4)
- अनसूया भविष्य के प्रति सचेष्ट और व्यावहारिक बुद्धिवाली है। तृतीय अङ्क में वह राजा से यह वचन लेती है कि अनेक रानियों के बीच शकुन्तला की उपेक्षा न करें। ''**वयस्य बहुवल्लभाः राजानः श्रूयन्ते**''**।** राजा उनकी प्रियसखी शकुन्तला को गौरवपूर्ण स्थान देने का आश्वासन देता है।
- शकुन्तला की विदाई के अवसर पर उसे सजाने के लिए अनसूया आम की डाल पर नारियल के डिब्बे में केसरमालिका को रखे रहती है।
- अनसूया, प्रियंवदा की अपेक्षा तात कण्व के अधिक निकट है, वह पिता के स्वभाव तथा विचारों को ठीक से जानती है, तात कण्व भी शकुन्तला की विदाई के अवसर पर अनसूया को ही बारम्बार सम्बोधित करते हैं।
- प्रियंवदा प्रणयव्यापार के स्वरूप को अच्छी प्रकार जानती है। शकुन्तला और दुष्यन्त के प्रेम में वह सूत्रधार का कार्य करती है। तृतीय अङ्क में शकुन्तला की अस्वस्थता के मूल कारण को प्रियंवदा ठीक से समझती है और उसके उपाय के रूप में शकुन्तला को मदनलेख (प्रेमपत्र) लिखने की प्रेरणा भी प्रियंवदा देती है, और उस प्रेमपत्र को फूलों में छिपाकर देवता के प्रसाद के बहाने राजा तक पहुँचाने का कार्य भी उसी के द्वारा सम्पन्न होता है।
- अनसूया अतिथि सत्कार करने में निपुण है, राजा दुष्यन्त के आश्रम आने पर वह शकुन्तला से कहती है – ''**हला शकुन्तले, गच्छोटजम्। फलमिश्रमर्घमुपहर।**''
- श्राप को सुनकर प्रियंवदा दुर्वासा के समीप जाकर शकुन्तला की मङ्गलकामना हेतु क्षमायाचना करती है। (अङ्क-4)
- अनसूया विचारशील और मितभाषिणी है, वह हँसी, मजाक की बातों में विशेष भाग नहीं लेती। वह सशङ्कवृत्ति की है, सहसा किसी बात पर विश्वास नहीं करती। जबकि प्रियंवदा शीघ्र विश्वास करने वाली, परिहासप्रिया एवं वाक्पटु है।
- अनसूया भविष्य के सुख की विशेष चिन्ता करती है, प्रियंवदा वर्तमान को विशेष महत्त्व देती है।
- अनसूया अधिक व्यवहारिक, धीर और परिपक्व बुद्धि की है जबकि प्रियंवदा भावुक एवं चञ्चल है।

विदूषक (माधव्य)

परिचय –

- राजा दुष्यन्त का अन्तरङ्ग मित्र।
- हास्यरस का एक पात्र।
- 'माधव्य' नामक एक ब्राह्मण।

चारित्रिक विशेषतायें

- भोजनपटु।
- डरपोक एवं अकर्मण्य।
- राजा का परमप्रिय मित्र एवं परामर्शदाता।
- भीरु एवं सरल स्वभाव।

विदूषक का लक्षण

कुसुमवसन्ताद्यभिधः कर्मवपुर्वेषभाषाद्यैः।
हास्यकरः कलहरतिर्विदूषकः स्यात् स्वकर्मज्ञः।

विदूषक स्वामिभक्त, मनोविनोद में निपुण, कुपित नायिकाओं को मनाने वाला, एवं सच्चरित्र होता है। वह अपने ऊँटपटाँग कार्यों, विकृत अङ्गों तथा वेषभूषादि के द्वारा हास्य का वातावरण प्रस्तुत करता है। वह नायक का विश्वासपात्र तथा उसके प्रणय सम्बन्धी क्रियाकलापों में सहायता पहुँचाता है।

विदूषक (माधव्य) के गुण एवं कार्य

- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के विदूषक (माढव्य) का सर्वप्रथम दर्शन द्वितीय अङ्क में होता है।
- विदूषक माधव्य भोजनप्रिय एवं पेटू है। राजा दुष्यन्त शकुन्तला के प्रणयव्यापार में उनसे सहायता करने के लिए कहता है तो वह ''**किं मोदकखण्डिकायाम्**'' कहकर अपनी पेटपूजा पटुता का परिचय देता है।
- इसी प्रकार षष्ठ अङ्क में राजादुष्यन्त शकुन्तला के वियोग में अँगूठी से उपालम्भ देते हैं किन्तु विदूषक को वहाँ भी बुभुक्षा पीड़ित करती है–''**कथं बुभुक्षया खादितव्योऽस्मि**'' (अङ्क-6)
- वह स्वभाव से अत्यन्त भीरु एवं डरपोक है। शकुन्तला के दर्शन हेतु वह भी उत्सुक था, पर जब वह राक्षसों का वृत्तान्त सुनता है, तब डर जाता है। (अङ्क-2)
- राजा के मृगयाव्यसन के कारण उसको विश्राम का तनिक भी अवसर प्राप्त नहीं होता है, इससे वह अत्यन्त दुःखी है–'**एतस्य मृगयाशीलस्य राज्ञो वयस्यभावेन निर्विण्णोऽस्मि।**'' (अङ्क-2)

- विदूषक अपने प्रत्येक क्रियाकलाप एवं भावभङ्गिमा से सभी को हँसाता है। जब राजा दुष्यन्त के सामने एक ही साथ ऋषियों की यज्ञरक्षा तथा माता की आज्ञा से राजधानी लौटने के दो कार्य उपस्थित होते हैं, तो विदूषक राजा से कहता है कि – "**त्रिशङ्कुरिवान्तरा तिष्ठ।**" (अङ्क-2)
- विदूषक यत्र तत्र अपनी मन्दबुद्धिता का भी परिचय देता है, परन्तु वैसे बहुत चतुर है। षष्ठ अङ्क में राजा के द्वारा आम्रमञ्जरी को मदनबाण कहने पर वह काष्ठदण्ड लेकर मारने दौड़ता है। उसकी मूर्खता पर खिन्न राजा भी हँस पड़ता है।
- विदूषक सरलहृदय का व्यक्ति है, राजा को सन्देह हुआ कि यह राजधानी में जाकर कहीं हमारे प्रणयप्रसङ्ग की चर्चा हमारी रानियों से न कर दे, अतः राजा दुष्यन्त ने उससे कहा कि वे सब मजाक की बातें हैं।

  "**परिहासविजल्पितं सखे न परमार्थेन गृह्यतां वचः**" (अङ्क-2)
- विदूषक राजा की इस बात को सच मान लेता है और रानियों से इसकी कोई चर्चा नहीं करता है।
- रानी वसुमती के आने पर वह शकुन्तला का चित्र लेकर भाग जाता है, और राजा को वसुमती के क्रोध से बचाता है।
- पञ्चम अङ्क के प्रारम्भ में रूठी रानी हंसपदिका को मनाने के लिए राजा विदूषक को ही भेजता है।
- षष्ठ अङ्क में इन्द्र का सारथि मातलि विदूषक को पीटता है जिससे राजा का क्रोध प्रस्फुटित होता है। तभी राजा दानवों के वधार्थ स्वर्ग को जाता है।
- वह राजा को समय-समय पर सान्त्वना देता है, उसका मनोरञ्जन करता है, और उचित परामर्श भी देता है। (अङ्क-6)

गौतमी

- **परिचय** – ऋषि कण्व की धर्मभगिनी
- कण्वाश्रम की सर्वाधिक वृद्धा तपस्विनी/वरिष्ठ महिला
- आश्रम की व्यवस्थापिका/अध्यक्षा

चारित्रिक विशेषताएँ –

- सम्मानित महिला
- वरिष्ठ तपस्विनी
- बुद्धिमती
- व्यवहारकुशल एवं लोकव्यवहार की ज्ञाता
- अभिभाविका
- अतीव सरल एवं निच्छल व्यक्तित्व
- ममतामयी एवं वात्सल्य की प्रतिमूर्ति

चारित्रिक गुण एवं कार्य

- महर्षि कण्व का गौतमी के प्रति सम्मानभाव है, इसीलिए शकुन्तला के साथ उसे हस्तिनापुर तक भेजा जाता है।
- गौतमी में अवस्थानुरूप गाम्भीर्य, सहिष्णुता एवं विवेकशीलता दृष्टिगोचर होती है, राजदरबार में दुष्यन्त जब शकुन्तला के साथ अपने सम्बन्ध को अस्वीकार कर देता है, तब वह शकुन्तला का घूँघट हटाकर स्वयं उसे अपने सम्बन्ध को प्रमाणित करने का आदेश देती है।
- गुरुजनों तथा बन्धु-बान्धवों से पूछे बिना दुष्यन्त एवं शकुन्तला के प्रेम सम्बन्धों को वह अनुचित मानती है।
- शकुन्तला के प्रति उसका हृदय माँ की वात्सल्यमयी ममता से ओतप्रोत है। वह उसे पुत्रीवत् स्नेह करती है। राजा दुष्यन्त द्वारा अस्वीकार कर दिये जाने पर शकुन्तला जब शार्ङ्गरव आदि के पीछे-पीछे आने लगती है तो उस समय गौतमी का वात्सल्यभाव जाग उठता है – **वत्स शार्ङ्गरव, अनुगच्छतीयं खलु नः**
  करुणपरिदेविनी शकुन्तला........किं वा मे पुत्रिका करोतु।'' (अङ्क 5)
- कण्व के आश्रम में गौतमी अभिभावक की महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है, तापसकन्याओं की देखरेख का उत्तरदायित्व उसी का है।
- प्रथम अङ्क में प्रियंवदा के परिहास से परेशान हुई शकुन्तला गौतमी से शिकायत करने को कहती है –
  इयम् असम्बद्धप्रलापिनी....गौतम्यै निवेदयिष्यामि (अङ्क-1)
- शकुन्तला की अस्वस्थता का समाचार सुनकर गौतमी शान्तिजल लेकर उसके ऊपर छिड़कती है और वात्सल्यभाव से पूछती है– **'जाते, लघुसन्तापानि तेऽङ्गानि' (अङ्क-3)**
- शकुन्तला की विदाई में विलम्ब होता देख गौतमी महर्षिकण्व से भी वापस लौट जाने का निवेदन करती है –
  जाते, परिहीयते गमनवेला....निवर्ततां भवान्। (अङ्क-4)
- कण्व द्वारा शकुन्तला को उपदेश दिये जाने पर गौतमी उसे ठीक से स्मरण करने को कहती है –
  जाते, एतत् खलु सर्वमवधारय। (अङ्क-4)
- गौतमी शकुन्तला को सर्वदा, **'वत्से', 'जाते', 'पुत्रि'** आदि यही सम्बोधन करती है इससे शकुन्तला के प्रति उसका अगाध स्नेह स्वयं व्यक्त होता है।
- शकुन्तला को छोटी-छोटी व्यवहार और शिष्टाचार की बातें भी गौतमी बताती हैं, विदाई के समय कण्व ऋषि के आने पर शकुन्तला को प्रणाम करने को कहती है।
  ''आचारं तावत् प्रतिपद्यस्व'' (अङ्क-4)

➢ कण्व द्वारा पुत्री शकुन्तला के लिए चक्रवर्ती पुत्र प्राप्त करने का आशीर्वाद सुनकर गौतमी अत्यन्त प्रसन्न होकर कहती है – यह तो केवल आशीर्वाद नहीं, अपितु वरदान है।
भगवन्, वरः खल्वेषः, नाशीः (अङ्क-4)

➢ आश्रम की संरक्षिका, व्यवस्थापिका, अध्यक्षा या वरिष्ठ तपस्विनी के रूप में गौतमी का सम्मान सभी आश्रमवासी करते हैं। शकुन्तला को हस्तिनापुर ले जाने के लिए शार्ङ्गरव आदि को गौतमी ही आदेश देती है –
'गौतमि, आदिश्यन्तां शार्ङ्गरवमिश्राः शकुन्तलानयनाय' (अङ्क-4)

शार्ङ्गरव और शारद्वत

➢ **परिचय** – शार्ङ्गरव और शारद्वत दोनों कण्व ऋषि के शिष्य। **चारित्रिक गुण एवं कार्य**

➢ कण्व ऋषि इनके नाम के साथ आदरसूचक 'मिश्र' शब्द का प्रयोग करते हैं –
'आदिश्यन्तां शार्ङ्गरवमिश्राः' (अङ्क-4)
'क्व ते शार्ङ्गरवमिश्राः (अङ्क-4)

➢ दोनों परिपक्व आयु वाले तथा विद्यानिष्णात हैं

➢ गुरु कण्व का इन दोनों के ऊपर अटूट विश्वास है, तभी तो उनकी देखरेख में शकुन्तला को पतिगृह (हस्तिनापुर) भेजते हैं।

➢ राजा दुष्यन्त इन दोनों के गरिमामय व्यक्तित्व को देखकर उन्हें गुरुसमान कहता है –
''गुरुशिष्ये गुरुसमे'' – (अङ्क-6)

➢ शास्त्रज्ञान के साथ ही साथ इन दोनों ऋषियों में लौकिकज्ञान भी विद्यमान है।

➢ शकुन्तला की विदाई के समय मार्ग में सरोवर को देखकर शार्ङ्गरव महर्षि कण्व से लौट जाने को कहता है –
''भगवन् ओदकान्तं स्निग्धो जनोऽनुगन्तव्य इति श्रूयते। तदिदं सरस्तीरम्.......।'' (अङ्क-4)

➢ दोनों ऋषियों को आश्रम के जीवन से प्रेम है और नगर जीवन से घृणा।

➢ हस्तिनापुर नगर में प्रवेश करते समय एक ओर जहाँ शार्ङ्गरव राजभवन को अग्नि की लपटों से घिरा हुआ समझता है –
जनाकीर्णं मन्ये हुतवहपरीतं गृहमिव' (अङ्क-5)

➢ वहीं दूसरी ओर शारद्वत नगर के भोगासक्त लोगों को उसी प्रकार समझता है, जिस प्रकार स्नात व्यक्ति तैलासिक्त को, पवित्र व्यक्ति अपवित्र को, प्रबुद्ध व्यक्ति सोये हुए को, और स्वच्छन्दचारी व्यक्ति बन्धनयुक्त को समझता है –
''अभ्यक्तमिव स्नातः शुचिरशुचिमिव'' (अङ्क-5/11)

➢ इन दोनों में शार्ङ्गरव अधिक आयु का है, ऋषि कण्व को उस पर अधिक विश्वास है, अतः राजा दुष्यन्त के लिए **(अस्मान् साधु विचिन्त्य संयमधनान्----अङ्क-4.17)** रूपी संदेश उसी को देते हैं। शार्ङ्गरव ही शकुन्तला के साथ हस्तिनापुर जाने

वाले दल का नेता है, जबकि ऋषि शारद्वत उससे छोटा और शान्तस्वभाव का है।

- शार्ङ्गरव, शारद्वत की अपेक्षा अधिक वाक्पटु एवं लौकिक व्यवहार का ज्ञाता है, जबकि शारद्वत मितभाषी है। उसके विचार दार्शनिक हैं, उसमें दूसरों के प्रति सहानुभूति है।
- शार्ङ्गरव बहुत बोलने वाला, क्रोधी, असहिष्णु, कठोर और अशान्त प्रकृति का है। वह अपने नाम को चरितार्थ करता है, क्योंकि 'शार्ङ्गरव का शाब्दिक अर्थ है – **'धनुष के समान शब्द करने वाला।'** राजा दुष्यन्त जब शकुन्तला को नहीं पहचानता और विवाह को अस्वीकार कर देता है, तो वह उसे शठ, अधार्मिक और ऐश्वर्योन्मत्त आदि कहकर फटकारता है –

  ''मूर्च्छन्त्यमी विकाराः प्रायेणैश्वर्यप्रमत्तेषु। (अङ्क-5/18)
- शार्ङ्गरव अत्यन्त निर्भय एवं स्पष्टवादी है। दुष्यन्त जब अपने आपको शकुन्तला का पति नहीं मानता, तो शार्ङ्गरव उसे चोर तक कहता है – **''पात्रीकृतो दस्युरिवासि येन'' अङ्क-5/20**
- शारद्वत मितभाषी, अक्रोधी, सहिष्णु तथा शान्त प्रकृति का है, जब राजा दुष्यन्त और शार्ङ्गरव का विवाद उग्र रूप धारण करता है, तब वही उसे शान्त करता है –

  ''शार्ङ्गरव, विरम त्वमिदानीम्'' (अङ्क-5)
- शारद्वत राजा दुष्यन्त से अन्ततः कहता है कि शकुन्तला तुम्हारी पत्नी है, तुम इसे रखो या छोड़ो, हम लोग जाते हैं –

  ''तदेषा भवतः कान्ता, त्यज वैनां गृहाण वा'' (अङ्क-5)
- शार्ङ्गरव व्यवहारकुशल नहीं है, वह राजा से झगड़े को बढ़ाता है, जबकि शारद्वत अत्यन्त व्यवहारिक है वह झगड़े को निपटाता है। शारद्वत के कारण ही विवाद शान्त हुआ।
- दुष्यन्त के अपमानजनक व्यवहार से दुखी शकुन्तला जब रोने लगती है, तब शार्ङ्गरव उसे डाँटता है –

  ''अतः परीक्ष्य कर्त्तव्यं विशेषात् सङ्गतं रहः'' (अङ्क-5/24)
- जब दरबार में शकुन्तला को छोड़कर गौतमी सहित दोनों शिष्य आश्रम लौटने लगते हैं, तब शकुन्तला भी उनके पीछे-पीछे लौटने लगती है, तभी शार्ङ्गरव पुनः शकुन्तला को कठोर शब्दों में डाँटता है– **''किं पुरोभागे, स्वातन्त्र्यमवलम्बसे'' (अङ्क-5)**

4. शाकुन्तल प्रश्नमीमांसा

1. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के नान्दीपाठ में भगवान् शिव की मूर्तियाँ निर्दिष्ट हैं- **(PGT-2016)**

(A) पाँच **(B) नव**
(C) ग्यारह **(D) आठ**

उत्तर- (D)

व्याख्या- ⇒ महाकवि कालिदास द्वारा विरचित अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के मङ्गलाचरण में अष्टमूर्ति शिव की स्तुति की गयी है-

या सृष्टिः स्त्रष्टुराद्या, वहति विधिहुतं या हविर्या च होत्री,
ये द्वे कालं विधत्तः, श्रुतिविषयगुणा या स्थिता व्याप्य विश्वम्।
यामाहुः सर्वबीजप्रकृतिरिति यया प्राणिनः प्राणवन्तः
प्रत्यक्षाभिः प्रपन्नस्तनुभिरवतु वस्ताभिरष्टाभिरीशः॥ (अभि0-1/1)

1. विधाता की पहली सृष्टि- जलरूपी मूर्ति
2. जो विधिपूर्वक हवन की गई हवि को ले जाती है- अग्नि रूपी मूर्ति
3. जो स्वयं हवन करने वाली यजमान रूपी मूर्ति
4. दिन और रातरूप समय का निर्माण करने वाली- सूर्य और चन्द्र की मूर्ति
5. सम्पूर्ण संसार को व्याप्त करके स्थित है- श्रवणेन्द्रिय के विषयस्वरूप गुणवाली- आकाशरूपी मूर्ति
6. जिसे लोग सभी बीजों का कारण कहते हैं- पृथ्वीरूपी मूर्ति
7. जिसके द्वारा सभी प्राणी प्राणवान् हैं। वायुरूपी मूर्ति प्रत्यक्ष दिखायी देने वाली उन आठ मूर्तियों से युक्त भगवान् शिव आप सबकी रक्षा करें।

⇒ **मृच्छकटिकम्-** महाकवि शूद्रक मृच्छकटिकम् के प्रारम्भ में मङ्गलाचरण में शिव जी की स्तुति किये हैं-

पर्यङ्कग्रन्थिबन्धद्विगुणितभुजगाश्लेष ... ब्रह्मलग्नः समाधिः।

शिव की वह ब्रह्मलीन समाधि आप सभी की रक्षा करें।

⇒ **मुद्राराक्षस-** महाकवि विशाखदत्त द्वारा प्रणीत मुद्राराक्षस के मङ्गलाचरण में शिव की वन्दना की गयी है-

धन्या केयं स्थिता ते शिरसि......सुरसरितं शाठ्यमव्याद्विभोर्वः।। (1/1)

देवी पार्वती से गङ्गा छिपाने के इच्छुक भगवान् शिव की कुटिलता आप सबकी रक्षा करें।

⇒ **नलचम्पू- जयति गिरिसुतायाः.....वाग्विलासाः।** (1/1)

पर्वतपुत्री पार्वती के काम से उत्पन्न सन्ताप को धारण करने वाले, वक्षस्थल पर चन्दन रस की धारा के समान शीतल लगने वाले भगवान् चन्द्रमौलि (शिव) सर्वोत्कृष्ट हैं। शिव के पश्चात् निरन्तर सुधारस को बरसाने वाला यशस्वी कवियों का वाग्विलास भी सर्वोत्कृष्ट है।

⇒ **रघुवंशम्-** महाकवि कालिदास जी ने रघुवंशमहाकाव्य के मङ्गलाचरण में शिवपार्वती की स्तुति की है-

वागर्थाविव सम्पृक्तौ......पार्वतीपरमेश्वरौ॥ (1/1)

शब्द और अर्थ के समान नित्य मिले हुए संसार के माता-पिता उमा और महेश्वर को मैं (कालिदास) शब्द और अर्थ का भलीभाँति से ज्ञान होने के लिये नमस्कार करता हूँ।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि अभिज्ञानशाकुन्तलम् के नान्दीपाठ में अष्टमूर्ति शिव की स्तुति की गयी है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/1)- कपिलदेव द्विवेदी, पेज 01

2. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' का दुष्यन्त नायक है- **(PGT-2000)**

(A) धीरप्रशान्त **(B) धीरोदात्त**

(C) धीरललित **(D) धीरोद्धत**

उत्तर- (B)

व्याख्या-

नायक चार प्रकार

धीरप्रशान्त	धीरोदात्त	धीरललित	धीरोद्धत
(चारुदत्त)	(दुष्यन्त)	(उदयन)	(भीम)

➢ **धीरललित- 'निश्चिन्तो धीरललितः कलासक्तः सुखी मृदुः।'** (दश. 2/3) चिन्ता से मुक्त, कलाओं का प्रेमी, सुखी तथा कोमल प्रकृति का नायक धीरललित कहलाता है। जैसे- रत्नावली का नायक उदयन।

➢ **धीरप्रशान्त- 'सामान्यगुणयुक्तस्तु धीरशान्तो द्विजादिकः।'** (दश. 2/3) सामान्य गुणों से युक्त द्विज आदि नायक धीरप्रशान्त नायक कहा गया है। जैसे- मृच्छकटिकम् का नायक चारुदत्त।

➢ **धीरोदात्त-**

महासत्त्वोऽतिगम्भीरः क्षमावानविकत्थनः।
स्थिरो निगूढाहङ्कारो धीरोदात्तो दृढव्रतः॥ (दश. 2/4)

विशाल एवं अविचल अन्तःकरणवाला, अत्यन्त गम्भीर, क्षमाशील, आत्मप्रशंसा न करने वाला (अर्थात् ढींग न हाँकने वाला), अविचल, अभिमान को दबाकर रखने वाला तथा दृढव्रती नायक धीरोदात्त कहा गया है।

जैसे- उत्तररामचरितम् का नायक राम, अभिज्ञानशाकुन्तलम् का नायक दुष्यन्त, किरातार्जुनीयम् का नायक अर्जुन, नलचम्पू का नायक नल आदि धीरोदात्त नायक हैं।

➢ **धीरोद्धत-**

दर्पमात्सर्यभूयिष्ठो मायाच्छद्मपरायणः।
धीरोद्धतस्त्वहङ्कारी चलश्चण्डो विकत्थनः।। (दश.2/5)

घमण्ड और डाह की अधिकता से युक्त, माया और कपट से भरपूर, अहङ्कारी, अस्थिर, अत्यन्त क्रोधी तथा अपनी प्रशंसा करने वाला नायक धीरोद्धत नायक कहा गया है।

जैसे- वेणीसंहार का नायक भीम धीरोद्धत नायक है। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम्- कपिलदेव द्विवेदी, भू.पेज-86

3. अभिज्ञानशाकुन्तलम् का अङ्गीरस है- **(PGT-2002)**
(A) वीर **(B) शृङ्गार**
(C) करुण **(D) शान्त**

उत्तर- (B)

व्याख्या-

	ग्रन्थ	**ग्रन्थकार**	**अङ्गीरस**
A.	वेणीसंहारम्	भट्टनारायण	वीररस
B.	अभिज्ञानशाकुन्तलम्	कालिदास	शृङ्गाररस
C.	उत्तररामचरितम्	भवभूति	करुणरस
D.	नागानन्द	हर्षवर्धन	शान्तरस

विशेष- आचार्य विश्वनाथ 'साहित्यदर्पण' में 'नाटक' का लक्षण करते हुए कहते हैं कि ''एक एव भवेदङ्गी शृङ्गारो वीर एव वा'' इसप्रकार नाटक होने के कारण अभिज्ञानशाकुन्तलम् का मुख्य/प्रधान/अङ्गीरस''शृङ्गार'' है।

अतः विकल्प (B) सही है।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू.पेज - 60

4. अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक का विदूषक है- **(PGT-2002)**
(A) मैत्रेय **(B) माधव्य**
(C) माणवक **(D) गौतम**

उत्तर- (B)

व्याख्या–

	ग्रन्थ	**लेखक**	**विदूषक**
(A)	मृच्छकटिकम्	शूद्रक	मैत्रेय
(B)	अभिज्ञानशाकुन्तलम्	कालिदास	माधव्य
(C)	विक्रमोर्वशीयम्	कालिदास	माणवक
(D)	मालविकाग्निमित्रम्	कालिदास	गौतम
☆	स्वप्नवासवदत्तम्	भास	वसन्तक
☆	रत्नावली	श्रीहर्ष	वसन्तक

अतः विकल्प (B) सही है।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम्- कपिलदेव द्विवेदी,भू. पेज-90

5. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' का सर्वप्रथम अंग्रेजी अनुवाद किसने किया? **(PGT-2005)**

(A) शेक्सपियर **(B) गेटे**

(C) विलियम जोन्स **(D) मैक्समूलर**

उत्तर- (C)

व्याख्या–

सर विलियम जोन्स द्वारा 1789 ई0 में अंग्रेजी में अभिज्ञानशाकुन्तलम् का अनुवाद किया गया।

* जार्ज फास्टर द्वारा 1791 ई0 में किये गए जर्मन अनुवाद को पढ़कर जर्मन महाकवि गेटे ने अभिज्ञानशाकुन्तलम् की जो समीक्षापूर्ण प्रशस्ति लिखी थी, वह डॉ0 विष्णु मिराशी के शब्दों में इस प्रकार है-

वासन्तं कुसुमं फलं च युगपद् ग्रीष्मस्य सर्वं च यद्
यच्चान्यन्मनसो रसायनमतः सन्तर्पणं मोहनम् ।
एकीभूतमभूतपूर्वमथवा स्वर्लोकभूलोकयोः
ऐश्वर्यं यदि वाञ्छसि प्रियसखे! शाकुन्तलं सेव्यताम्॥

* कालिदास की तुलना शेक्सपियर से करते हुए कुछ आलोचक कालिदास को भारत का शेक्सपियर' कहते हैं। किन्तु मुझे लगता है शेक्सपियर को 'इग्लैण्ड का 'कालिदास' कहना चाहिए और कालिदास को 'विश्व का शेक्सपियर' कहा जाना चाहिए क्योंकि कालिदास ने खण्डकाव्य, गीतिकाव्य,नाटक, महाकाव्य सभी विधाओं में लिखा है जबकि शेक्सपियर ने केवल नाटक लिखे हैं।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-

6. 'प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः' यह भरतवाक्य किस नाटक में प्रयुक्त हुआ है? **(PGT-2016)**

(A) मृच्छकटिकम् में **(B) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में**

(C) नलचम्पू में **(D) उत्तररामचरितम् में**

उत्तर- (B)

व्याख्या- शूद्रक प्रणीत मृच्छकटिकम् दस अङ्कों वाला एक प्रकरण ग्रन्थ है जिसमें चारुदत्त के द्वारा भरतवाक्य कहा गया है- संहार नामक दशवें अङ्क में -

क्षीरिण्यः सन्तु गावो, भवतु वसुमती सर्वसम्पन्नसस्या,
पर्जन्यः कालवर्षी, सकलजनमनोनन्दिनो वान्तु वाताः। (मृच्छ.10/61)

गायें दुधारू हों, हर तरह की फसलों से धरती भरी हो, मेघ समय पर पानी दे, सबके मन को हरने वाली हवा बहे, संसार में जन्म देने वाले सभी प्राणी सुखी हों, लोग सदा सबके समादरणीय एवं सदाचारी हों, लक्ष्मीवान् शत्रुओं का शमन करने वाले हों तथा धार्मिक राजा धरती का शासक हो।

⇒ **अभिज्ञानशाकुन्तलम्-** महाकवि कालिदास द्वारा अभिज्ञानशाकुन्तलम् के सातवें अङ्क के अन्तिम श्लोक में भरतवाक्य राजा दुष्यन्त के द्वारा उद्घोषित हुआ है-

प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः
सरस्वती श्रुतमहतां महीयताम्।
ममापि च क्षपयतु नीललोहितः
पुनर्भवं परिगत-शक्तिरात्मभूः॥ (अभि.7/35)

राजा प्रजा के हित के लिये प्रयत्नशील हों। ज्ञान-गरिष्ठ कवियों की वाणी का पूर्ण सत्कार हो। सर्वशक्तिमान् स्वयं शिव मेरे पुनर्जन्म को निवृत्त कर दें।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (7/35)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 453

7. ''आ परितोषाद् विदुषां न साधु मन्ये प्रयोगविज्ञानम् बलवदपि शिक्षितानामात्मन्यप्रत्ययं चेतः'' यह श्लोक किस काव्य का है? **(PGT-2000)**

(A) उत्तररामचरितम् **(B) अभिज्ञानशाकुन्तलम्**
(C) किरातार्जुनीयम् **(D) शिशुपालवधम्**

उत्तर- (B)

व्याख्या-

A. उत्तररामचरितम्–
भवभूति विरचित उत्तररामचरितम् नाटक के तृतीय अङ्क में सूत्रधार नटी से कहता है कि-

सर्वथा व्यवहर्तव्यं कुतो ह्यवचनीयता।
यथा स्त्रीणां तथा वाचां साधुत्वे दुर्जनो जनः। (उत्तर.1/5)

सभी प्रकार से व्यवहार करना चाहिए। सर्वथा निर्दोषता कैसे सम्भव हो सकती है? मनुष्य जिसप्रकार स्त्रियों के पातिव्रत्य के सम्बन्ध में छिद्रान्वेषी होते हैं उसीप्रकार वाणी की निर्दोषता के विषय में भी छिद्रान्वेषी होते हैं।

B. अभिज्ञानशाकुन्तलम्- कालिदास कृत अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के प्रथम अङ्क में सूत्रधार नटी से कहता है-

आ परितोषाद् विदुषां न साधु मन्ये प्रयोगविज्ञानम्।
बलवदपि शिक्षितानामात्मन्यप्रत्ययं चेतः॥ (अभि.1/2)

विद्वानों के सन्तुष्ट न होनें तक मैं अभिनय के कौशल को पूर्ण नहीं समझता हूँ क्योंकि अत्यधिक शिक्षित मनुष्यों का भी मन अपने विषय में अविश्वासयुक्त होता है।

अतः विकल्प B सही है।

C. **किरातार्जुनीयम्-** भारवि द्वारा रचित किरातार्जुनीयम् महाकाव्य के प्रथमसर्ग में वनेचर नीतिज्ञान में अपनी अल्पज्ञता के विषय में युधिष्ठिर से कहता है कि-

निसर्गदुर्बोधमबोधविक्लवाः
क्व भूपतीनां चरितं क्व जन्तवः?
तवानुभावोऽयमवेदि यन्मया
निगूढतत्त्वं नयवर्त्म विद्विषाम्॥ (किरात.1/6)

स्वाभाव से ही दुर्बोध राजाओं का चरित कहाँ?
और अज्ञान से बोझिल मुझ जैसा जीव कहाँ?
अतः शत्रुओं के अत्यन्त गूढ़ रहस्यों से भरी जो कूटनीति की बातें मुझे ज्ञात हो सकी हैं यह तो केवल आप का अनुग्रह है।

D. **शिशुपालवधम्-** भगवान् श्रीकृष्ण देवर्षि नारद के अवयवों को देखकर क्रमशः समझ पाये कि यह नारद हैं-

चयस्त्विषामित्यवधारितं पुरा
ततः शरीरीति विभाविताकृतिम्।
विभुर्विभक्तावयवं पुमानिति
क्रमादमुं नारद इत्यबोधि सः॥ (शिशु.1/3)

सर्वप्रथम तेजों का समूह, उसके बाद मनुष्य आकार वाला शरीरधारी और फिर हाथ, पैर आदि अङ्ग दिखाई देने के बाद श्रीकृष्ण ने उन्हें क्रमानुसार नारद समझा।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/2)- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-8

8. 'कामी स्वतां पश्यति' यह सूक्ति है- **(PGT-2000)**

(A) दुष्यन्त की **(B) कण्व की**

(C) शकुन्तला की **(D) दुर्वासा की**

उत्तर- (A)

व्याख्या-

A. **दुष्यन्त-** 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के द्वितीय अङ्क में राजा दुष्यन्त शकुन्तला की मनोवृत्तियों एवं हाव-भाव की समीक्षा करके कहते हैं कि वह सब कुछ मुझे ही लक्ष्य करके किया गया था, फिर सोचते हैं कि 'आश्चर्य है कि कामी पुरुष सर्वत्र अपने अभिप्राय को देखता है-

''अहो कामी स्वतां पश्यति।'' (अभि.2/2)

अतः विकल्प A सही है।

B. **कण्व-** अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में काश्यप (कण्व) विदा होती हुई शकुन्तला से कहते हैं कि-

वनौकसोऽपि सन्तो लौकिकज्ञा वयम्। (अभि.अङ्क-4)
वनवासी होते हुये भी हम लौकिक व्यवहार को जानने वाले हैं।

C. **शकुन्तला-** शकुन्तला अपनी सखी अनसूया एवं प्रियंवदा से कहती हैं कि **'दुर्लभमिदानीं मे सखीमण्डनं भविष्यति।'** (अभि.अङ्क-4) ''अब मेरे लिए सखियों के द्वारा अलंकृत होना दुर्लभ हो जायेगा।''

D. **दुर्वासा-** अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में महर्षि दुर्वासा शकुन्तला को शाप देते हुए कहते हैं कि-

विचिन्तयन्ती यमनन्यमानसा
तपोधनं वेत्सि न मामुपस्थितम्।
स्मरिष्यति त्वां न स बोधितोऽपि सन्
कथां प्रमत्तः प्रथमं कृतामिव॥ (अभि.4/1)

'अनन्य हृदय से जिसका चिन्तन करती हुई तू उपस्थित हुए मुझ तपस्वी को नहीं देख रही है, वह तेरे स्मरण दिलाने पर भी तुझको स्मरण नहीं करेगा, जैसे उन्मत्त व्यक्ति पहले कही हुई बात को स्मरण नहीं करता है।

स्रोत-अभिज्ञानशाकुन्तलम् (2/2)- कपिलदेव द्विवेदी, पेज- 95

9. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में शकुन्तला को शाप किसने दिया? **(PGT-2000)**

(A) वसिष्ठ **(B) नारद**
(C) दुर्वासा **(D) विश्वामित्र**

उत्तर- (C)

व्याख्या-

A. **वसिष्ठ-** कालिदासकृत 'रघुवंशमहाकाव्य' के द्वितीयसर्ग में वशिष्ठ की नन्दिनी गाय की सेवा राजा दिलीप एवं सुदक्षिणा द्वारा पुत्र प्राप्ति हेतु की गयी है- यथा-
अथ प्रजानामधिपःप्रभाते जायाप्रतिग्राहितगन्धमाल्याम्।
वनाय पीतप्रतिबद्धवत्सां यशोधनो धेनुमृषेर्मुमोच॥ (रघु. 2/1)

B. **नारद-** माघकृत 'शिशुपालवधम्' के प्रथमसर्ग में इन्द्र का सन्देश लेकर नारद का आगमन एवं श्रीकृष्ण नारद सम्भाषण का वर्णन है-
'क्रमादमुं नारद इत्यबोधि सः' (शिशु. 1/3)

C. **दुर्वासा-** 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अङ्क में अनन्यमानसा शकुन्तला को अतिथि तिरस्कार से क्रोधित होकर दुर्वासा ने शाप दे दिया-
स्मरिष्यति त्वां न स बोधितोऽपि सन्
कथां प्रमत्तः प्रथमं कृतामिव॥ (अभि. 4/1) **अतः विकल्प C सही है।**

D. **विश्वामित्र-** शकुन्तला, विश्वामित्र एवं मेनका की 'औरस' पुत्री है तथा महर्षि कण्व की 'मानस पुत्री' (पालिता या धर्मपुत्री) है।
''अस्ति कोऽपि कौशिक इति गोत्रनामधेयो महाप्रभावो राजर्षिः ....तमावयोः प्रियसख्याः प्रभवमवगच्छ।'' (अभि.अङ्क-1)

स्रोत-अभिज्ञानशाकुन्तलम्-(4.1) कपिलदेव द्विवेदी,पेज-184

10. 'धीवर प्रसङ्ग' अभिज्ञानशाकुन्तलम् के किस अङ्क में है? **(PGT-2000)**

(A) तृतीय **(B) पञ्चम**
(C) षष्ठ **(D) सप्तम**

उत्तर- (C)

व्याख्या-

* **1. प्रथम अङ्क (आश्रम प्रवेश)-** शिकार खेलते हुए दुष्यन्त का कण्व आश्रम में प्रवेश, भ्रमर द्वारा शकुन्तला को पीड़ित किया जाना, उन्मत्त हाथी का प्रवेश।
* **2. द्वितीय अङ्क (आश्रम निवेश)-** विदूषक (माधव्य) का मंच पर प्रथम आगमन,राजा को करभक द्वारा हस्तिनापुर का सन्देश प्राप्त होना।
* **3. तृतीय अङ्क (मिलन)-** दुष्यन्त एवं शकुन्तला का गान्धर्व विवाह एवं मिलन दुष्यन्त द्वारा शकुन्तला को अँगूठी दिया जाना।
* **4. चतुर्थ अङ्क (विदाई)-** दुर्वासा द्वारा शकुन्तला को शाप दिया जाना, केवल चतुर्थ अङ्क में कण्व की उपस्थिति, शार्ङ्गरव, शारद्वत एवं गौतमी के साथ शकुन्तला की विदाई।
* **5. पञ्चम अङ्क (प्रत्याख्यान)-** शार्ङ्गरव, शारद्वत, और गौतमी के साथ शकुन्तला का हस्तिनापुर में प्रवेश, दुष्यन्त द्वारा शकुन्तला को न पहचानना, शार्ङ्गरव, आदि का शकुन्तला को हस्तिनापुर में छोड़कर आश्रम की ओर प्रस्थान।
* **6. षष्ठ अङ्क (पश्चात्ताप)-** धीवर प्रसङ्ग (प्रवेशक), इन्द्र के सारथि मातलि द्वारा दुष्यन्त को स्वर्ग ले जाना, मेनका की सखी सानुमती का प्रवेश। इससे स्पष्ट है कि 'धीवर प्रसङ्ग' अभिज्ञानशाकुन्तलम् के पश्चाताप नामक षष्ठ अङ्क में है। **अतः विकल्प C सही है।**
* **7. सप्तम अङ्क (पुनर्मिलन)-** स्वर्ग से लौटते समय दुष्यन्त का हेमकूट पर्वत पर स्थित मारीच आश्रम में प्रवेश, पुत्र सर्वदमन, शकुन्तला एवं दुष्यन्त का मिलन।

स्त्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम्- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-307

11. 'अविश्रमोऽयं लोकतन्त्राधिकारः। 'इस उक्ति से युक्त नाटक है- **(PGT-2000)**

(A) मुद्राराक्षसम् **(B) अभिज्ञानशाकुन्तलम्**
(C) मृच्छकटिकम् **(D) इनमें से कोई नहीं**

उत्तर- (B)

व्याख्या-

A. **मुद्राराक्षसम्- 'अत्यादरः शङ्कनीयः।'** (अङ्क-1)
चन्दनदास का आत्मगत कथन अत्यधिक आदर शङ्का को उत्पन्न करने वाला होता है।

B. **अभिज्ञानशाकुन्तलम्-**

अविश्रमोऽयं लोकतन्त्राधिकारः। (अङ्क-5)

कण्व शिष्यों की सूचना देने के लिए कञ्चुकी राजा की व्यस्तता को सोचकर कहता है कि मैं सूचना देने का साहस नहीं कर पा रहा हूँ अथवा 'यह लोक की रक्षा करने का अधिकार विश्राम से रहित होता है।**अतः विकल्प B सही है।**

C. **मृच्छकटिकम्-**

बलवता सह को विरोधः। (मृच्छ. 6/2) आर्यक, राजा पालक के विषय में विचार करके कहता है कि- बलवानों से विरोध कौन करना चाहेगा?

स्रोत-अभिज्ञानशाकुन्तलम्(अङ्क-5)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-249

12. ज्वलति चलितेन्धनोऽग्निर्विप्रकृतः पन्नगः फणां कुरुते। **(PGT-2000)**

प्रायः स्वं महिमानं क्षोभात् प्रतिपद्यते हि जनः॥

यह श्लोक निम्नलिखित में किससे सम्बन्धित है- **उत्तर- (B)**

(A) मृच्छकटिकम्/शर्विलक

(B) अभिज्ञानशाकुन्तलम्/मातलि

(C) उत्तररामचरितम्/लव

(D) किरातार्जुनीयम्/द्रौपदी

व्याख्या-

A. मृच्छकटिकम् के चतुर्थ अङ्क में शर्विलक मदनिका से कहता है कि- **साहसे श्रीः प्रतिवसति।** (मृच्छ. अङ्क-4) साहस में लक्ष्मी का निवास होता है।

B. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में इन्द्र का सारथी मातलि राजा दुष्यन्त को क्रोध दिलाने के लिए विदूषक को पीटता है इस पर राजा के क्रोधित होने पर मातलि कहता है कि- **''ज्वलति चलितेन्धनोऽग्निर्विप्रकृतः पन्नगः फणां कुरुते। प्रायः स्वं महिमानं क्षोभात् प्रतिपद्यते हि जनः॥''** (अभि.6/36) अग्नि ईंधन को हिलाने पर जलने लगती है, छेड़ा हुआ सर्प फण फैला लेता है। क्योंकि प्रायः मनुष्य उत्तेजना से अपनी महिमा को प्राप्त कर लेता है। **अतः विकल्प B सही है।**

C. उत्तररामचरितम् के पञ्चम अङ्क में क्रोधित लव चन्द्रकेतु से कहता है -

ऋषयो राक्षसीमाहुर्वाचमुन्मत्तदृप्तयोः।

स योनिः सर्ववैराणां सा हि लोकस्य निष्कृतिः॥ (उत्तर.5/29)

ऋषि लोग उन्मत्त एवं गर्वयुक्त मनुष्यों की वाणी को राक्षसी वाणी कहते हैं वह सारे झगड़ों की जड़ है और वही लोगों के तिरस्कार का कारण है।

D. किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में द्रौपदी युधिष्ठिर से कहती हैं कि- **प्रविश्य हि घ्नन्ति शठास्तथा विधानसंवृताङ्गान्निशिता इवेषवः॥** (किरात.1/30) धूर्त लोग तथाविध सौम्य पुरुषों के आत्मीय बन कर उन्हे मार ही डालते हैं जैसे तीक्ष्ण बाण कवच से अनाच्छादित शरीर वालों के भीतर घुस कर उन्हें मार ही डालते हैं।

स्त्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम्-6/31

13. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में विदूषक का चित्रण हुआ है- **(PGT-2002)**

(A) प्रथम अङ्क में **(B) द्वितीय अङ्क में**

(C) तृतीय अङ्क में **(D) चतुर्थ अङ्क में**

उत्तर- (B)

व्याख्या–

	अङ्क	प्रमुख पात्र
(A)	**प्रथम**	सूत्रधार,नटी, प्रियंवदा, अनसूया, वैखानस, शकुन्तला, दुष्यन्त आदि।
(B)	**द्वितीय**	विदूषक, दुष्यन्त, सेनापति, करभक आदि।
(C)	**तृतीय**	दुष्यन्त, शकुन्तला, अनसूया, प्रियंवदा, गौतमी आदि।
(D)	**चतुर्थ**	कण्व, अनसूया, प्रियंवदा, शकुन्तला, दुर्वासा, शार्ङ्गरव, शारद्वत, गौतमी आदि।
☆	**पञ्चम**	कञ्चुकी (वातायन), विदूषक, दुष्यन्त, शाङ्र्गरव, शारद्वत, गौतमी, सोमरात (पुरोहित), प्रतीहारी (वेत्रवती) आदि।
☆	**षष्ठ**	धीवर, श्यालक, चतुरिका, परभृतिका, मधुकरिका, सानुमती, कञ्चुकी, दुष्यन्तविदूषक, मातलि आदि।
☆	**सप्तम**	मातलि, मारीच, अदिति, दुष्यन्त, शकुन्तला, सर्वदमन (भरत) तापसी (सुव्रता)

विशेष-

☆ 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अङ्क को छोड़कर सभी अङ्कों में दुष्यन्त का वर्णन है।

☆ द्वितीय, पञ्चम, एवं षष्ठ अङ्क में विदूषक का चित्रण हुआ है।

☆ कण्व का चित्रण केवल चतुर्थ अङ्क में हुआ है।

☆ हंसपदिका एवं वसुमती का चित्रण केवल पञ्चम अङ्क में हुआ है।

अतः विकल्प (B) सही है।

स्त्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम्- कपिलदेव द्विवेदी, (द्वितीय अङ्क) पृष्ठ-90

14. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के किस अङ्क के प्रारम्भ में शुद्ध विष्कम्भक का प्रयोग किया गया है? **(PGT-2002)**
(A) प्रथम अङ्क **(B) द्वितीय अङ्क**
(C) पञ्चम अङ्क **(D) चतुर्थ अङ्क**

उत्तर- (D)

व्याख्या–

(A) 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के प्रथम अङ्क के प्रथम श्लोक में स्रग्धरा छन्द में भगवान् शिव की स्तुति एवं 'अष्टपदा-नान्दी' का प्रयोग किया गया है।

(B) द्वितीय अङ्क के प्रारम्भ में मृगया से परिश्रान्त विदूषक (माढव्य) शरीराङ्गों को टेढ़ा-मेढ़ा करके बैठा हुआ एवं शकुन्तला विषयक वार्ता का स्मरण करके राजा से कहता है- **''ततो गण्डस्योपरि पिण्डकः संवृत्तः।''** इस मुहावरे का प्रयोग है।

(C) पञ्चम अङ्क का प्रारम्भ आसन पर बैठे हुए राजा और विदूषक के प्रवेश से होता है।

(D) चतुर्थ अङ्क के प्रारम्भ में पुष्पों का चयन करती हुई दोनों सखियाँ (अनसूया प्रियंवदा) शकुन्तला विषयक चिन्तन करती हुई भूत एवं भावी कथा की सूचना दे 'रहीं हैं।

अतः यहाँ शुद्ध विष्कम्भक है -

''संक्षेपार्थस्तु विष्कम्भो मध्यपात्रप्रयोजितः।'' (दशरूपक 1.59)

अतः विकल्प (D) सही है।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम्- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-134

15. अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक में प्रवेशक का प्रयोग हुआ है- **(PGT-2002)**
(A) तृतीय अङ्क में **(B) द्वितीय अङ्क में**
(C) पञ्चम अङ्क में **(D) षष्ठ अङ्क में**

उत्तर- (D)

व्याख्या–

प्रवेशक- विष्कम्भक की भाँति 'प्रवेशक' भी भूत एवं भावी कथानक को जोड़ने वाला, नीच पात्रों के द्वारा निम्न भाषा (प्राकृत) से प्रयुक्त दो अङ्कों के अन्तराल में, शेष अर्थ का सूचक (अर्थोपक्षेपक) प्रवेशक कहा गया है-

तद्वदेवानुदात्तोक्त्या नीचपात्रप्रयोजितः।
प्रवेशोऽङ्कद्वयस्यान्तः शेषार्थस्योपसूचकः॥ (दश. 1.60)

'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' नाटक में प्रवेशक का प्रयोग षष्ठ अङ्क में हुआ है। प्रवेशक में सभी नीच पात्र होते हैं। इसमें नगर रक्षक श्याल (दुष्यन्त का साला) को दो सिपाहियों के साथ एक अभियुक्त (धीवर) मछुवारे को रस्सी से बाँधे हुए रङ्गमञ्च पर प्रवेश करते हुये दिखाया गया है। इसी से अँगूठी मिलने की जानकारी मिलती है। **अतः विकल्प (D) सही है।**

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम्- कपिलदेव द्विवेदी,पेज-317

16. 'लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु' श्लोकांश स्थित है? (UP-TET-2014)
(A) मृच्छकटिके **(B) रघुवंशे**
(C) मेघदूते **(D) अभिज्ञानशाकुन्तले**

उत्तर- (D)

व्याख्या-

➢ महाकवि कालिदास द्वारा विरचित अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क से यह सूक्ति उद्धृत है- इस सूक्ति को कण्व के शिष्य के द्वारा कहा गया है-
'लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु'
यह संसार दो तेजों के साथ-साथ अस्त और उदय के द्वारा मानो अपने दशा-विशेषों में नियन्त्रित हो रहा है।

➢ मृच्छकटिकम् कवि शूद्रक की रचना है। यह 10 अङ्कों का प्रकरणग्रन्थ है।
शून्यमपुत्रस्य गृहं चिरशून्यं नास्ति यस्य सन्मित्रम्।
मूर्खस्य दिशः शून्याः सर्वं शून्यं दरिद्रस्य। (मृच्छ. 1/8)
पुत्रहीन व्यक्ति का घर सूना है अर्थात् बालक के बिना किसी भी व्यक्ति का घर सूना लगता है, जिस व्यक्ति के सच्चे मित्र नहीं है उसका घर भी सदा सूना रहता है। मूर्ख के लिए सभी दिशाएँ सूनी रहती हैं और निर्धन के लिए सब कुछ सूना है।

➢ महाकवि कालिदास द्वारा रचित रघुवंश महाकाव्य है। इसमें राजा दिलीप द्वारा नन्दिनी की सेवा का वर्णन है **'तदन्तरे सा विरराज धेनुर्दिनक्षपामध्यगतेव सन्ध्या'** (रघुवंशम् 2/20)
वह नन्दिनी सुदक्षिणा और दिलीप के बीच में, दिन और रात्रि के मध्य में स्थित सन्ध्याकाल की भाँति सुशोभित हुई।

➢ मेघदूतम् महाकवि कालिदास जी द्वारा रचित है, इसमें यक्ष-यक्षिणी के विरह का वर्णन है।
'याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा' (मेघदूतम् पूर्व-6)
अर्थात् अधिक गुण वाले से की गयी याचना निष्फल भी अच्छी है, परन्तु निर्गुण से की गयी याचना सफल कामना वाली भी अच्छी नहीं है।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु' यह सूक्ति 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' से उद्धृत है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

17. 'आ परितोषाद् विदुषां न साधु मन्ये प्रयोगविज्ञानम्' सूक्ति किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है? (PGT-2003)
(A) उत्तररामचरितम् **(B) महाभारतम्**
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् **(D) किरातार्जुनीयम्**

उत्तर- (C)

व्याख्या–

A. **उत्तररामचरितम्-** भवभूति विरचित उत्तररामचरितम् नाटक के द्वितीय अङ्क में तापसी आत्रेयी वनदेवता से कहती है कि-
'रहस्यं साधूनामनुपधि विशुद्धं विजयते।' (उ.रा. 2/2)
'निश्छल एवं विशुद्ध सज्जनों का चरित सदा विजय को प्राप्त होता है।'

B. **महाभारत-** महाभारत के द्रोणपर्व में घटोत्कच ने दुर्योधन से अलम्बुष का वध करने के पश्चात् कहा-
'रिक्तपाणिर्न पश्येत राजानं ब्राह्मणं स्त्रियम्।' (महा. द्रोणपर्व 174/43)
राजा, ब्राह्मण एवं स्त्री से खाली हाथ नहीं मिलना चाहिए।

C. **अभिज्ञानशाकुन्तलम्-** कालिदास कृत अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के प्रथम अङ्क में प्रस्तावना प्रसङ्ग में सूत्रधार नटी से कहता है कि-
'आ परितोषाद् विदुषां न साधु मन्ये प्रयोगविज्ञानम्' (अभि. 1/2)
'विद्वानों के सन्तुष्ट न होने तक मैं अभिनय के कौशल को पूर्ण नहीं समझता हूँ।'
अतः विकल्प C सही है।

D. **किरातार्जुनीयम्-** द्रौपदी युधिष्ठिर से कहती है कि-
'शमेन सिद्धिं मुनयो न भूभृतः।' (किरात. 1/42)
'शान्तिपूर्वक मुनि लोग सिद्धि को प्राप्त करते हैं राजा लोग नहीं।'

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/2)- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-8

18. 'गण्डस्योपरि पिण्डकः संवृत्तः' है- **(PGT-2003)**
(A) सूक्ति **(B) काव्यलक्षण**
(C) मुहावरा **(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं**
उत्तर- (C)

व्याख्या-

A. **सूक्ति -** काव्यों में विशेष कथन के लिए सूक्तियों का प्रयोग किया जाता है। मारीच आश्रम पर पहुँचने के उपरान्त राजा दुष्यन्त शुभ शकुन का अभिनय करते हुए कहते हैं कि-
'पूर्वावधीरितं श्रेयो दुःखं हि परिवर्तते।' (अभि. 7/13)
'पहले तिरस्कृत किया हुआ कल्याण दुःख रूप में पुनः परिणत हो जाता है।'

B. **काव्यलक्षण-** मम्मट के अनुसार काव्यप्रकाश के प्रथमोल्लास में काव्यलक्षण निम्नवत् है-
'तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि।' (का.प्र. सूत्र-1)
दोषों से रहित गुणयुक्त और कहीं-कहीं अलङ्कार रहित शब्द और अर्थ की समष्टि काव्य कहलाता है।

C. **मुहावरा-** अपनी बात को विशेष कथन के द्वारा प्रस्तुत करने के लिए मुहावरे का प्रयोग किया जाता है। **जैसे-** 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के द्वितीय अङ्क के आरम्भ में मृगया से परिश्रान्त विदूषक राजा के आने एवं शकुन्तला दर्शन विषयक वृत्तान्त का स्मरण करके कहता है-
'गण्डस्योपरि पिण्डकः संवृत्तः।' (अभि.अङ्क-2)
फोड़े के ऊपर फोड़ा हो गया अर्थात् एक विपत्ति और आ गई।
अतः विकल्प C सही है।

स्रोत - अभिज्ञानशाकुन्तलम् (अङ्क-2)- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-91

19. दुष्यन्त की मनः स्थिति जानने के लिए मेनका ने अपनी किस सखी को भेजा था? **(PGT-2003)**
(A) सानुमती **(B) उर्वशी**
(C) रम्भा **(D) तिलोत्तमा**
उत्तर- (A)

व्याख्या- * अभिज्ञानशाकुन्तल के छठे अङ्क में दुष्यन्त की मनः स्थिति को जानने के लिए मेनका ने सानुमती नामक सखी को भेजा। जो हस्तिनापुर के उद्यानों में छिपकर दो चेटियों के द्वारा उत्सव की बातें सुनकर कहती है-

'उत्सवप्रियाः खलु मनुष्याः' (अभि.शा. अङ्क-6) सभी मनुष्य उत्सवप्रिय होते हैं।

* कालिदासकृत 'विक्रमोर्वशीयम्' त्रोटक में विक्रम (पुरुरवा) नायक तथा उर्वशी नायिका है।
* नाट्यशास्त्र में रम्भा, तिलोत्तमा आदि 24 अप्सराओं का वर्णन मिलता है।

अतः विकल्प (A) सही है।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (अङ्क-6)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-318

20. किस स्थान पर शकुन्तला की अँगूठी गिरी- **(PGT-2003)**

(A) हस्तिनापुर **(B) कण्वाश्रम**
(C) सोमतीर्थ **(D) शचीतीर्थ**

उत्तर- (D)

व्याख्या–

(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के द्वितीय अङ्क में हस्तिनापुर का वर्णन प्राप्त होता है संदेशवाहक 'करभक' संदेश लेकर वन में आता है।

(B) 'राजा दुष्यन्त' मृगया खेलते हुए कण्वाश्रम में प्रवेश करते हैं वहाँ उनका शकुन्तला से प्रेम एवं गान्धर्व विवाह होता है।

(C) महर्षि कण्व शकुन्तला की ग्रह शान्ति के लिए सोमतीर्थ गये हैं-
'शकुन्तलामतिथिसत्काराय नियुज्य दैवमस्याः प्रतिकूलं शमयितुं सोमतीर्थं गतः।' (अभि.अङ्क-1)

(D) पञ्चम अङ्क में राजा दुष्यन्त को विश्वास दिलाने के लिए शकुन्तला अँगूठी दिखाना चाहती है किन्तु अपनी खाली अँगुली को देखकर कहती है- 'हा धिक् हा धिक्! अङ्गुलीयकशून्य मेऽङ्गुलि। तब गौतमी कहती हैं-
''नूनं ते शक्रावताराभ्यन्तरे शचीतीर्थसलिलं वन्दमानायाः प्रभ्रष्टमङ्गुलीयकम्।''
शक्रावतार तीर्थ में शचीतीर्थ के जल की वन्दना करते हुए तेरी अँगूठी गिर गई।

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (अङ्क-5)- कपिलदेव द्विवेदी,पेज- 283

21. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में मातलि कौन था? **(PGT-2003)**

(A) दुष्यन्त का पुरोहित **(B) दुष्यन्त का सेनापति**
(C) इन्द्र का सारथी **(D) कण्व का शिष्य**

उत्तर- (C)

व्याख्या–

अभिज्ञानशाकुन्तलम् के प्रमुख पात्रों के नाम-

	पात्र		नाम
A.	दुष्यन्त का पुरोहित	-	सोमरात
B.	दुष्यन्त का सेनापति	-	भद्रसेन
C.	इन्द्र का सारथी	-	मातलि
D.	कण्व के शिष्य	-	वैखानस, शार्ङ्गरव, शारद्वत, गौतम, हारीत।

अभिज्ञानशाकुन्तलम् के अन्य पात्रों के नाम-

☞ राजा का भृत्य	-	रैवतक, करभक
☞ राजा का कञ्चुकी	-	वातायन
☞ ऋषि मारीच का शिष्य	-	गालव
☞ दुष्यन्त का सारथी	-	सूत
☞ कण्व की धर्मपुत्री	-	शकुन्तला
☞ शकुन्तला की सखियाँ	-	अनसूया, प्रियंवदा
☞ मेनका की सखी	-	सानुमती
☞ द्वारपालिका	-	वेत्रवती

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0 पेज-99

22. अभिज्ञानशाकुन्तलम् की कथा महाभारत के किस पर्व से सम्बन्धित है? **(PGT-2003)**

(A) वनपर्व से **(B) सभापर्व**
(C) आदिपर्व **(D) भीष्मपर्व**

उत्तर- (C)

व्याख्या –

	पर्व	**ग्रन्थ**	**विभाजन**	**कवि**
(A)	वनपर्व	किरातार्जुनीयम्	18 सर्ग	भारवि
(B)	सभापर्व	शिशुपालवधम्	20 सर्ग	माघ
(C)	आदिपर्व	अभिज्ञानशाकुन्तलम्	7 अङ्क	कालिदास
(D)	भीष्मपर्व	भगवद्गीता	18 अध्याय	वेदव्यास

अतः विकल्प (C) सही है।

स्रोत- संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-335

23. 'गण्डस्योपरि पिण्डकः संवृत्तः' है- **(PGT-2004)**

(A) सूक्ति **(B) काव्यलक्षण**
(C) मुहावरा **(D) इनमें से कोई नहीं**

उत्तर- (C)

व्याख्या-

A. **सूक्ति- सुष्ठु उक्तिः सूक्तिः** काव्यों में उक्ति वैचित्र्य अथवा विशेष कथन के लिए सूक्तियों का प्रयोग किया जाता है। **जैसे-** 'न प्रभातरलं ज्योतिरुदेति वसुधातलात्।' (अभि.1/26) कान्ति से देदीप्यमान तेज भूतल से उत्पन्न नहीं होता है।

B. **काव्यलक्षण-** विभिन्न साहित्याचार्यो के द्वारा स्वविवेक से काव्यलक्षण का प्रतिपादन किया गया है। जैसे- आचार्य मम्मट ने काव्यप्रकाश के प्रथम उल्लास में काव्य का लक्षण किया है- **'तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि।'** दोषों से रहित गुणों से युक्त यदि कहीं पर अलङ्कार न भी हो तो शब्द और अर्थ की समष्टि काव्य है।

* आचार्य विश्वनाथ साहित्यदर्पण में ''**वाक्यं रसात्मकं काव्यम्**'' आदि के द्वारा काव्य को परिभाषित किया है।

* पण्डितराज जगन्नाथ ने ''**रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्**'' ऐसा काव्यलक्षण किया है।

C. **मुहावरा-** व्यावहारिक जीवन में अथवा काव्यों में किसी प्रसङ्ग विशेष के प्राप्त होने पर मुहावरे (लोकोक्तियों) का प्रयोग किया जाता है।

जैसे- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (अङ्क-2) में विदूषक राजा दुष्यन्त के विषय में चिन्तन करते हुए कहता है कि-

☆ 'गण्डस्योपरि पिण्डकः संवृतः' (फोड़े पर फुंसी होना) अभिज्ञानशाकुन्तल में प्रयुक्त अन्य मुहावरे-

☆ 'कृतं भवता निर्मक्षिकम्।'

☆ 'वाष्पं विहरतः' आदि

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत-अभिज्ञानशाकुन्तलम् (अङ्क-2)- कपिलदेव द्विवेदी,पेज- 91

24. 'सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तःकरणप्रवृत्तयः' यह कथन किसका है? **(PGT-2004)**

(A) माघ **(B) श्रीहर्ष**

(C) भारवि **(D) कालिदास**

उत्तर- (D)

व्याख्या-

A. **माघ-** शिशुपालवध के प्रथमसर्ग में नारद की विधिपूर्वक पूजा करने के पश्चात् श्रीकृष्ण मन में सोचते हैं कि- **गृहानुपैतुं प्रणयादभीप्सवो भवन्ति नापुण्यकृतां मनीषिणः।** (शिशु. 1/14)

'विद्वान् लोग पुण्य कर्म न करने वाले के घर प्रेम से जाने के लिए इच्छुक नहीं होते हैं।'

B. **श्रीहर्ष-** श्रीहर्ष नैषधीयचरितम् में नल और दमयन्ती के प्रेम-प्रसङ्ग का वर्णन करते हैं- **'झटिति पराशयवेदिनो हि विज्ञाः।'** (नैष. 4/118)

राजा नल ने दमयन्ती को विषमबाण (काम) के रोग से पीड़ित समझ लिया, क्योंकि 'समझदार व्यक्ति शीघ्र ही दूसरे के आशय को जान लेते हैं।'

C. **भारवि-** महाकवि भारवि किरातार्जुनीयम् के द्वितीय सर्ग में कहते हैं-

सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः परमापदां पदम्। (किरात. 2/30)

कोई कार्य सहसा नहीं करना चाहिए क्योंकि अविवेकपूर्वक किया गया कार्य विपत्ति का मार्ग है।

D. **कालिदास-** कालिदास कृत अभिज्ञानशाकुन्तलम् के प्रथम अङ्क में राजा दुष्यन्त शकुन्तला के विषय में शङ्का करते हुये कहता है कि- **'सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तःकरणप्रवृत्तयः।'** (अभि.1/22)

'संदेहशील वस्तुओं के विषय में सज्जनों के अन्तःकरण की प्रवृत्तियाँ ही प्रमाण होती हैं।' इसमें राजा दुष्यन्त के द्वारा शकुन्तला विषयक चिन्तन वर्णित है।

अतः विकल्प (D) सही है।

स्रोत-अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/22)- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-54

25. 'श्रद्धा वित्तं विधिश्चेति त्रितयं तत्समागतम्' किस नाटक का श्लोक है? **(PGT-2004)**

(A) मुद्राराक्षसम् **(B) उत्तररामचरितम्**
(C) विक्रमोर्वशीयम् **(D) अभिज्ञानशाकुन्तलम्**

उत्तर- (D)

व्याख्या-

A. मुद्राराक्षस- मुद्राराक्षस के प्रथम अङ्क में चर (इत) शिष्य से कहता है कि- **'न हि सर्वः सर्वं जानाति।'** (अङ्क-1)
सभी लोग सब कुछ नहीं जानते हैं।

B. उत्तररामचरितम्- उत्तररामचरितम् के प्रथम अङ्क में सीता की पवित्रता के विषय में भवभूति वर्णन करते हुए कहते हैं कि- **'तीर्थोदकं च वह्निश्च नान्यतः शुद्धिमर्हतः।'** (उत्तर.1/13)
श्रीराम सीता जी की पवित्रता का चिन्तन करते हुए कहते हैं कि- तीर्थ, जल और अग्नि, ये अन्य पदार्थों से शुद्धि के योग्य नहीं हैं।

C. विक्रमोर्वशीयम्- विक्रमोर्वशीयम् के पञ्चम अङ्क में कुमार का अपने पिता के प्रति आत्मगत कथन है- **'उत्सङ्गवर्धितानां गुरुषु भवेत् कीदृशः स्नेहः।'** (विक्रम. 5/10)
कुमार मन ही मन सोचता है कि- 'उन बालकों को अपने माता-पिता के प्रति कितना प्रेम होता होगा, जो उन्हीं की गोद में पलकर बड़े होते होंगे।'

D. अभिज्ञानशाकुन्तलम्- अभिज्ञानशाकुन्तल के सातवें अङ्क में जब दुष्यन्त,शकुन्तला और उनके पुत्र का मिलन होता है तो मारीच ऋषि कहते हैं- **'श्रद्धा वित्तं विधिश्चेति त्रितयं तत्समागतम्।'** (अभि.शा. 7/29)
महर्षि मारीच एक-एक को निर्दिष्ट करते हुए कहते हैं कि परिणामतः श्रद्धा (शकुन्तला), वित्त (पुत्र) और विधि (दुष्यन्त) इस प्रकार तीनों मिल गये हैं।
अतः विकल्प D सही है।

स्रोत-अभिज्ञानशाकुन्तलम् (7/29)- कपिलदेव द्विवेदी,पेज- 441

26. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के किस अङ्क में प्रथम 'विष्कम्भक' समाप्त होता है? **(PGT-2004)**

(A) द्वितीय **(B) तृतीय**
(C) चतुर्थ **(D) पञ्चम**

उत्तर- (B)

व्याख्या-

A. द्वितीय अङ्क - द्वितीय अङ्क में मृगया से परिश्रान्त एवं खिन्न विदूषक का राजा दुष्यन्त द्वारा शकुन्तला विषयक वार्तालाप का वर्णन है।

B. तृतीय अङ्क - तृतीय अङ्क में राक्षसों के विघ्न को दूर करने के लिए राजा का आश्रम में प्रस्थान तथा दुष्यन्त और शकुन्तला के गान्धर्व-विवाह का वर्णन है।इसी तृतीय अङ्क में प्रथम विष्कम्भक समाप्त होता है अङ्क के आरम्भ में महर्षि कण्व का शिष्य भूत एवं भावी घटना की सूचना देता है। **अतः विकल्प B सही है।**

C. **चतुर्थ अङ्क-** चतुर्थ अङ्क में अनसूया-प्रियंवदा का फूल चुनते हुए रङ्गमञ्च पर प्रवेश तथा दुष्यन्त के चिन्तन में मग्न शकुन्तला को दुर्वासा द्वारा शाप तक का वृत्तान्त भी विष्कम्भक के अन्तर्गत आता है। यहाँ पर दुर्वासा संस्कृत में तथा अनसूया एवं प्रियंवदा प्राकृत में बोलती हैं सभी पात्र मध्यम श्रेणी के हैं अतः शुद्ध विष्कम्भक है।

वृत्तवर्तिष्यमाणानां कथांशानां निदर्शकः।
संक्षेपार्थस्तु विष्कम्भो मध्यपात्रप्रयोजितः॥ (दश.1/59)

व्यतीत हो चुके और आगे आने वाले कथा के अंशों का सूचक, संक्षिप्त अर्थ वाला तथा मध्यम श्रेणी के पात्रों द्वारा प्रयुक्त विष्कम्भक को शुद्ध विष्कम्भक कहा गया है।

D. **पञ्चम अङ्क-** पञ्चम अङ्क का आरम्भ हंसपदिका के गीत से होता है, तत्पश्चात् कञ्चुकी राजा दुष्यन्त को शकुन्तला शार्ङ्गरव, शारद्वत एवं गौतमी के आने की सूचना देता है।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम्- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-134

27. 'स्त्रीणामशिक्षितपटुत्वममानुषीषु' यह सूक्ति किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है? **(PGT-2004)**
(A) रघुवंशम् **(B) स्वप्नवासवदत्तम्**
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् **(D) शिशुपालवधम्** **उत्तर- (C)**

व्याख्या-

A. **रघुवंशम्**- रघुवंश के सोलहवें सर्ग में जब रात्रि के समय कुश के शयन कक्ष में कोई स्त्री आ गई जो अयोध्या की अधिष्ठात्री देवी थी, से कुश बोले- **'रघूणां मनः परस्त्री विमुखप्रवृत्तिः।'** (रघु.16/8)
रघुवंशियों का चित्त पराई स्त्री की ओर नहीं जाता।

B. **स्वप्नवासवदत्तम्**- भास प्रणीत स्वप्नवासवदत्तम् के चतुर्थ अङ्क में पद्मावती का आत्मगत कथन- **'स्त्री स्वभावस्तु कातरः।'** (स्वप्न.4/9)
अर्थात् नारियों का स्वभाव तो अधीर होता है।

C. **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के पञ्चम अङ्क में जब शकुन्तला राजा दुष्यन्त से विवाह होने की बात याद दिलाती है तो राजा दुष्यन्त तापसी वृद्धा से कहता है कि- **'स्त्रीणामशिक्षितपटुत्वममानुषीषु।'** (अभि.5/22)
स्त्रियों में जो मानवजाति से भिन्न स्त्रियाँ हैं उनमें भी बिना शिक्षा के पटुता देखी जाती है।
अतः विकल्प C सही है।

D. **शिशुपालवधम्- स्फुटमभिभूषयति स्त्रियस्त्रपैव।** (शिशु.7/38)
महाकवि माघ नायिका के सौन्दर्य का वर्णन करते हुए कहते हैं कि 'लज्जा ही स्त्रियों को अलङ्कृत करती है'

स्रोत -अभिज्ञानशाकुन्तलम् (5/22)-कपिलदेव द्विवेदी,पेज - 207

28. 'सर्वः कान्तमात्मीयं पश्यति' यह सूक्ति वाक्य किसके द्वारा कथित है? **(PGT-2004)**

(A) चारुदत्त **(B) चाणक्य**
(C) दुष्यन्त **(D) उदयन**

उत्तर- (C)

व्याख्या-

A. शूद्रक द्वारा रचित मृच्छकटिकम् के प्रथम अङ्क में धन से रहित हुआ चारुदत्त निर्धनता के विषय में विदूषक मैत्रेय से कहता है कि- **'अहो निर्धनता सर्वापदामास्पदम्।'** (मृच्छ.1.14) अर्थात् सारी आपदाओं का (कष्टों) मूल कारण निर्धनता ही है।

B. विशाखदत्त प्रणीत मुद्राराक्षस नाटक के प्रथम अङ्क में चाणक्य चन्दनदास से कहता है कि-
'राजनि अविरुद्धाभिर्वृत्तिभिर्वर्त्तितव्यम्' अर्थात् राजा के अनुकूल ही व्यवहार करना चाहिये। (मुद्रा.अङ्क-1)

C. कालिदास द्वारा रचित अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के द्वितीय अङ्क में राजा दुष्यन्त शकुन्तला के सौन्दर्य की चर्चा विदूषक (माधव्य) से करता है-
'सर्वः कान्तमात्मीयं पश्यति'(अभि.शा. अङ्क-2)
अर्थात् सभी आत्मीय (अपने) जनों को सुन्दर समझते हैं।
अतः विकल्प C सही है।

D. महाकवि भास द्वारा रचित स्वप्नवासवदत्तम् के षष्ठ अङ्क में राजा उदयन पद्मावती की सुन्दरता की तुलना वासवदत्ता से करते हुये कहता है कि -
'परस्परगता लोके दृश्यते रूपतुल्यता' (स्वप्न. 6.14) अर्थात् संसार में परस्पर में रूप की समानता देखी जाती है।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम्- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-111

29. नाटकों में भरतवाक्य का प्रयोग होता है- **(PGT-2004)**

(A) प्रारम्भ में **(B) अन्त में**
(C) मध्य में **(D) कहीं भी**

उत्तर- (B)

व्याख्या-

(A) नाटक के प्रारम्भ में नान्दी का विधान करते हुए आचार्य विश्वनाथ साहित्यदर्पण के षष्ठ परिच्छेद में कहते हैं कि-

आशीर्वचनसंयुक्ता स्तुतिर्यस्मात्प्रयुज्यते।
देवद्विजनृपादीनां तस्मान्नान्दीति संज्ञिता॥ (सा.द.6/24)

देवता, ब्राह्मण तथा राजा आदि की आशीर्वाद युक्ति स्तुति इसमें की जाती है अतः इसे नान्दी कहते हैं।

(B) नाटक के अन्त में प्रयुक्त आशीर्वादात्मक पद्य को भरतवाक्य कहते हैं। महाभाष्यकार पतञ्जलि के अनुसार ग्रन्थ के आदि, मध्य तथा अन्त में मङ्गलाचरण होना चाहिये (मङ्गलादीनि मङ्गलमध्यामानि मङ्गलान्तानि च शास्त्राणि प्रथन्ते....) भरत वाक्य सम्भवतः उसी परम्परा के पालनार्थ अन्तिम मङ्गल के रूप में नाटकों में रखा गया है।

''भरतानां वाक्यम् इति भरतवाक्यम्।'' अर्थात् भरतों अथवा नटों का अशेष अथवा नाट्याचार्य भरत का आशीष।

भरतवाक्य का लक्षण इस प्रकार है-

नाट्यान्ते नायकप्रोक्तं प्रजामङ्गलसूचकम्।
भरतानां प्रियत्वाच्च तद्वाक्यमभिधीयते॥

अतः विकल्प B सही है।

C. धनञ्जय प्रणीत दशरूपक के प्रथम प्रकाश में प्रवेशक का प्रवेश दो अङ्कों के मध्य में होना चाहिये जिसका लक्षण निम्नवत् है-

तद्वदेवानुदात्तोक्त्या नीचपात्रप्रयोजितः।
प्रवेशोऽङ्कद्वयस्यान्तः शेषार्थस्योपसूचकः॥ (दश.1.60-61)

विष्कम्भक की तरह भूत एवं भावी कथानक को जोड़ने वाला नीच पात्रों के द्वारा निम्न भाषा से प्रयुक्त, दो अङ्कों के अन्तराल में स्थित, शेष अर्थ का सूचक प्रवेशक कहा जाता है।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज - 453

30. ''अचेतनं नाम गुणं न लक्षयेत्'' **(PGT-2005)**
यह पंक्ति किसने किससे कही?
(A) दुष्यन्त ने धीवर से (B) विदूषक ने दुष्यन्त से
(C) धीवर ने मन में (D) दुष्यन्त ने अँगूठी से **उत्तर- (D)**

व्याख्या–

कालिदास कृत अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के षष्ठ अङ्क में शचीतीर्थ स्थल पर शकुन्तला के हाथ की अँगुली से गिरी हुई अँगूठी को मछली के पेट से जब धीवर को प्राप्त हुई तो वह राजा दुष्यन्त को देने जाता है, अँगूठी को देखते ही शकुन्तला विषयक सारी बात स्मरण आने पर दुष्यन्त ने अँगूठी से कहा कि-

कथं नु तं बन्धुरकोमलाङ्गुलिं करं विहायासि निमग्नमम्भसि?

अथवा..........

अचेतनं नाम गुणं न लक्षयेन्मयैव कस्मादवधीरिताप्रिया (अभि.6.13)

राजा अँगूठी को देखकर कहता है, अँगूठी! सुन्दर और कोमल अँगुलियों वाली उस हाथ को छोड़कर तुम कैसे जल में गिर पड़ी? अथवा अचेतन वस्तु गुणों की ओर ध्यान न दे, किन्तु मैंने ही क्यों प्रिया का अपमान किया? **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (6/13) कपिलदेव द्विवेदी, पेज-350

31. ....षड्भागमक्षय्यं ददत्यारण्यका हि नः॥ **(PGT-2005)**
उपर्युक्त रिक्तस्थान की पूर्ति के लिए कौन-सा विकल्प उपयुक्त है?
(A) यशः **(B) तपः**
(C) मनः **(D) धनम्** **उत्तर- (B)**

व्याख्या–

(A) उत्तररामचरितम् के तृतीय अङ्क में जब राम दण्डक वन में आते हैं तो राम से सीता विषयक प्रश्न पूछते हुए वासन्ती कहती है कि-
अयि कठोर! यशः किल ते प्रियं,
किमयशो ननु घोरमतः परम् (उत्तररामचरितम् 3.27) वासन्ती राम से कहती है कि हे निष्ठुर, तुम्हें निश्चय ही यश प्यारा है, परन्तु इससे अधिक घोर अपयश और क्या हो सकता है, उस मृगनयनी सीता का वन में क्या हुआ?

(B) अभिज्ञानशाकुन्तलम् के द्वितीय अङ्क में जब विदूषक राजा से तपस्वियों द्वारा छठा भाग कर (टैक्स) देने के लिये कहता है तो राजा विदूषक से कहते हैं कि-
यदुत्तिष्ठति वर्णेभ्यो नृपाणां क्षयि तद् धनम्।
तपः षड्भागमक्षय्यं ददत्यरण्यका हि नः॥ (अभि.2/13)
राजाओं को वर्णों (प्रजाओं)से जो धन (कर) प्राप्त होता है, वह नश्वर है परन्तु ये तपस्वी लोग अपनी तपस्या का षष्ठांश देते हैं जो कि अक्षय है।
अतः विकल्प B सही है।

(C) भर्तृहरि नीतिशतकम् के धैर्यपद्धति में धीर व्यक्ति के सम्बन्ध में कहते हैं-
मनस्वी कार्यार्थी न गणयति दुःखं न च सुखम्॥ (नीति.-74)
अपना काम पूरा करने वाले मनस्वी लोग सुख-दुःख की परवाह नहीं करते।

(D) भर्तृहरि नीतिशतकम् के दुर्जनपद्धति में कहते हैं कि-
सद्विद्या यदि किं धनैरपयशो यद्यस्ति किं मृत्युना॥ (नीति.44)
सुविद्या यदि पास में है तो धन की क्या आवश्यकता? अपयश यदि है तो मृत्यु की क्या आवश्यकता?

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (2/13) कपिलदेव द्विवेदी, पेज-120

32. ''सर्वथा चक्रवर्तिनं पुत्रमाप्नुहि'' से क्या निर्दिष्ट है? **(PGT-2005)**
(A) अभिज्ञानशाकुन्तल के कथानक का प्रयोजन
(B) कालिदास को पुत्रप्राप्ति
(C) कुमार कार्तिकेय का जन्म
(D) इनमें से कोई नहीं **उत्तर- (A)**

व्याख्या–

* कालिदासकृत 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के प्रथम अङ्क में राजा दुष्यन्त कण्वाश्रम में मृगया के लिए प्रवेश करने पर वैखानस द्वारा मृग को मारने से मना करने पर,

वैखानस ने राजा को पुत्रप्राप्ति का आशीर्वाद देते हुये कहते हैं-
''जन्म यस्य पुरोर्वंशे युक्तरूपमिदं तव।
पुत्रमेवंगुणोपेतं चक्रवर्तिनमाप्नुहि।।'' (अभि.शा. 1/12)
वैखानस का समर्थन करते हुए दोनों शिष्य हाथ उठाकर कहते हैं- ''सर्वथा चक्रवर्तिनं पुत्रमाप्नुहि।'' (अवश्य ही चक्रवर्ती पुत्र को प्राप्त करो।)
इस आशीर्वाद से दुष्यन्त को भावी चक्रवर्ती भरत को पुत्ररूप में प्राप्त करने का प्रयोजन निर्दिष्ट है।

* 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के कथानक का प्रयोजन अभिज्ञान (अँगूठी) द्वारा पुनः शकुन्तला की प्राप्ति का प्रयोजन परिलक्षित होना है।
* कालिदासकृत 'कुमारसम्भवम्' महाकाव्य का प्रयोजन तारकासुर के वध के लिए कुमार (कार्तिकेय) का जन्म ही इस महाकाव्य का प्रयोजन है। **अतः विकल्प A सही है।**

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम्- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-28

33. एक प्रसिद्ध नाटक में 'मधुकरिका' कौन है? **(PGT-2005)**
(A) मेनका की सखी
(B) दुष्यन्त की परिचारिका
(C) मारीच के आश्रम की तपस्विनी
(D) इनमें से कोई नहीं
उत्तर- (B)

व्याख्या-

	परिचय		**नाम**
A.	मेनका की सखी	–	सानुमती
B.	दुष्यन्त की परिचारिका	–	मधुकरिका, परभृतिका
C.	मारीच के आश्रम की तपस्विनी	–	तापसी (सुव्रता)
	अभिज्ञानशाकुन्तलम् के अन्य पात्रों के नाम		
	राजा दुष्यन्त का पुत्र	–	भरत (सर्वदमन)
	इन्द्र का सारथि	–	मातलि
	ऋषि मारीच का शिष्य	–	गालव
	ऋषि मारीच की पत्नी	–	अदिति (दाक्षायणी)
	द्वारपालिका	–	वेत्रवती

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम्- कपिलदेव द्विवेदी, भू. पेज-100

34. ''अहो रागपरिवाहिणी गीतिः'' राजा दुष्यन्त का यह कथन किसकी प्रशंसा में है? **(PGT-2005)**
(A) शकुन्तला के गाने पर **(B) प्रियंवदा के गाने पर**
(C) हंसपदिका के गाने पर **(D) गौतमी के गाने पर**
उत्तर- (C)

व्याख्या-

कालिदास रचित अभिज्ञानशाकुन्तलम् के पञ्चम अङ्क में हंसपदिका भ्रमरगीत के माध्यम से राजा के लिये अपरवक्त्र छन्द में श्लोक कहती है-

अभिनवमधुलोलुपस्त्वं तथा परिचुम्ब्य चूतमञ्जरीम्।
कमलवसतिमात्रनिर्वृतो मधुकर विस्मृतोऽस्येनां कथम्॥ (अभि.5.1)

हे भ्रमर, नवीन मधु के इच्छुक तुम आम की मञ्जरी का उस प्रकार रसास्वादन करके, कमल में निवास मात्र से सन्तुष्ट, उसको क्यों भूल गये हो?

इसी गीत की प्रशंसा में राजा कहता है-

अहो, रागपरिवाहिणी गीतिः।

अहो, क्या अनुराग बरसाने वाला सङ्गीत है। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (अङ्क-5)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-243

35. 'स्त्रीणामशिक्षितपटुत्वममानुषीषु'
इस उक्ति से युक्त नाटक है- **(PGT-2009)**
(A) स्वप्नवासवदत्तम् **(B) मालविकाग्निमित्रम्**
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् **(D) मेघदूतम्**

उत्तर- (C)

व्याख्या–

- कालिदास विरचित अभिज्ञानशाकुन्तलम् के पञ्चम अङ्क में राजा दुष्यन्त तपस्विनी गौतमी से कहते हैं कि-

  स्त्रीणामशिक्षितपटुत्वममानुषीषु
  संदृश्यते किमुत याः प्रतिबोधवत्यः। (अभि. 5.22)

  स्त्रियों में जो मनुष्य जाति से भिन्न स्त्रियाँ हैं उनमें भी बिना शिक्षा के ही चतुरता देखी जाती है। **अतः विकल्प C सही है।**

- महाकवि भास विरचित स्वप्नवासवदत्तम् के चतुर्थ अङ्क में राजा का आत्मगत कथन है-
  'स्त्रीस्वभावस्तु कातरः' (स्वप्न.4.8)
  स्त्री का स्वभाव कातर होता है।

- कालिदास विरचित मालविकाग्निमित्रम् नाटक के तृतीय अङ्क में राजा अग्निमित्र बकुलावलिका से कहता है कि –
  'स्थाने प्राणाः कामिनां दूत्यधीनाः।' (माल0 3.14) प्रेमियों के प्राण दूतियों के ही मुट्ठी में रहता है।

- कालिदास विरचित मेघदूतम् के पूर्वमेघ में यक्ष निर्विन्ध्या नदी के विषय में मेघ से कहता है कि –

'स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु' (मेघ.पू.मे.29)

स्त्रियाँ हावभाव के द्वारा ही अपने प्रेमियों को प्रेम की बात बतलाती हैं।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (5/22)- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-287

36. ''अतः परीक्ष्य कर्तव्यं विशेषात् संगतं रहः'' **(PGT-2009)**
अभिज्ञानशाकुन्तलम् में यह उक्ति किसकी है?
(A) कण्व की **(B) मारीच की**
(C) दुष्यन्त की **(D) शार्ङ्गरव की** उत्तर- **(D)**

व्याख्या-

- अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के पञ्चम अङ्क में शार्ङ्गरव शकुन्तला से कहता है कि–

  अतः परीक्ष्य कर्तव्यं विशेषात् संगतं रहः।
  अज्ञातहृदयेष्वेवं वैरीभवति सौहृदम्।। (अभि. 5.24)

  गुप्त मैत्री (गुप्त विवाह-सम्बन्धादि) विशेषरूप से परीक्षा करके ही करनी चाहिए। परस्पर अज्ञात हृदय वाले व्यक्तियों के साथ किया हुआ प्रेम इसीप्रकार वैररूप में परिणत होता है। **अतः विकल्प D सही हैं।**

- काश्यप (कण्व) अभिज्ञानशाकुन्तल के चतुर्थ अङ्क में शकुन्तला की विदाई के अवसर पर कहते हैं कि–

  'पीड्यन्ते गृहिणः कथं नु तनयाविश्लेषदुःखैर्नवैः' (अभि. 4.6)

  गृहस्थ लोग पहली बार पुत्री के वियोग के दुःख से कितने अधिक दुःखित होते होंगे।

- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के प्रथम अङ्क में राजा दुष्यन्त शकुन्तला के विषय में कहता है-

  'सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु
  प्रमाणमन्तःकरणप्रवृत्तयः।' (अभि0 1.22)

  सन्देहास्पद विषयों में सज्जनों के अन्तः करण की प्रवृत्तियाँ ही प्रमाण होती हैं।

- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के सप्तम अङ्क में मारीच शकुन्तला को समझाते हुए कहते हैं–

  छाया न मूर्च्छति मलोपहतप्रसादे
  शुद्धे तु दर्पणतले सुलभावकाशा।। (7.32)

  मैल के कारण जिसकी स्वच्छता नष्ट हो गई, ऐसे शीशे पर प्रतिबिम्ब साफ दिखाई नहीं देता, किन्तु वह स्वच्छ हो तो प्रतिबिम्ब साफ दिखाई देगा।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (5/24)- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-291

37. ''श्रद्धा वित्तं विधिश्चेति त्रितयं तत्समागतम्'' **(PGT-2009)**
किस नाटक का श्लोक है-
(A) मुद्राराक्षसम् **(B) उत्तररामचरितम्**
(C) विक्रमोर्वशीयम् **(D) अभिज्ञानशाकुन्तलम्** उत्तर- **(D)**

व्याख्या-

कालिदास विरचित अभिज्ञानशाकुन्तलम् के सप्तम अङ्क में शकुन्तला, दुष्यन्त और पुत्र सर्वदमन के मिलन पर ऋषि मारीच कहते हैं–

'श्रद्धा वित्तं विधिश्चेति त्रितयं तत् समागतम्।' (अभि.-7.29)

सौभाग्य से श्रद्धा, धन और विधि ये तीनों चीजें यहाँ एकत्र हो गई हैं।

अतः विकल्प D सही है।

- विशाखदत्त प्रणीत मुद्राराक्षस नाटक के तृतीय अङ्क में राजा चन्द्रगुप्त का आत्मगत कथन–

  श्रीर्लब्धप्रसरेव वेशवनिता दुःखोपचर्या भृशम्। (मुद्रा. 3.5) राज्य लक्ष्मी अति प्रसिद्ध वाराङ्गना की भाँति अत्यन्त कष्ट से आराध्य होती हैं।
- उत्तररामचरितम् के प्रथम अङ्क में राम सीता से कहते हैं-

  'श्रितासि चन्दनभ्रान्त्या दुर्विपाकं विषद्रुमम्।' (उत्तरराम0 1.46)

  तुमने चन्दन के भ्रम से दुःखदायी विष का आश्रय लिया है।
- कालिदास विरचित विक्रमोर्वशीयम् नाटक के तृतीय अङ्क में विदूषक राजा से कहता है- 'न खल्वन्यथा ब्राह्मणस्य वचनं भवति' ब्राह्मण का वचन निश्चय ही झूठा नहीं होता है। (विक्रमो0 अङ्क 3)

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (7.29)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-144

38. सत्य विकल्प का चयन करें- **(PGT-2009)**

(A) दुष्यन्त-शकुन्तला का विवाह गान्धर्व था।

(B) दुष्यन्त-शकुन्तला का विवाह दैव था।

(C) दुष्यन्त-शकुन्तला का विवाह प्राजापत्य था।

(D) दुष्यन्त-शकुन्तला का विवाह पैशाची था।

उत्तर- (A)

व्याख्या–

- कालिदास कृत अभिज्ञानशाकुन्तलम् के

  चतुर्थ अङ्क में अनसूया द्वारा प्रियंवदा से कहे गये निम्न कथन से स्पष्ट होता है कि शकुन्तला और दुष्यन्त का विवाह गान्धर्व विधि से हुआ था-

  "हला प्रियंवदे, यद्यपि गान्धर्वेण विधिना निर्वृत्तकल्याणा शकुन्तलाऽनुरूपभर्तृगामिनी संवृत्तेति निर्वृतं मे हृदयम्।"
- याज्ञवल्क्यस्मृति (आचाराध्याय) के श्लोक-58 से 61 तक 8 प्रकार के विवाहों की चर्चा है-

  1. ब्रह्मविवाह 2. दैवविवाह 3. आर्षविवाह 4. प्राजापत्य विवाह 5. आसुरविवाह 6. गान्धर्वविवाह 7. राक्षसविवाह 8. पैशाचविवाह। **अतः विकल्प A सही है।**

स्रोत– अभिज्ञानशाकुन्तलम्–कपिलदेव द्विवेदी, पेज-180

39. 'को नामोष्णोदकेन नवमालिकां सिञ्चति' यह कथन किसका है- **(PGT-2009)**

(A) अनसूया का **(B) प्रियंवदा का**
(C) शार्ङ्गरव का **(D) शकुन्तला का**

उत्तर- **(B)**

व्याख्या–

- अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के चतुर्थ अङ्क में प्रियंवदा सखी अनसूया से कहती है–
  'को नामोष्णोदकेन नवमालिकां सिञ्चति'
  अर्थात् भला कौन नवमालिका को गर्म जल से सींचेगा?
  अतः विकल्प B सही है।
- चतुर्थ अङ्क में ही अनसूया प्रियंवदा से कहती है कि–
  'कोऽन्यो हुतवहाद् दग्धुं प्रभवति।'
  अग्नि के अतिरिक्त और कौन जला सकता है? यह वाक्य दुर्वासा द्वारा शकुन्तला को दिए गए शाप के विषय में है।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के पञ्चम अङ्क में शार्ङ्गरव राजा द्वारा शकुन्तला को पत्नी के रूप में इन्कार कर दिये जाने पर शकुन्तला से कहता है-
  'अथ तु वेत्सि शुचि व्रतमात्मनः
  पतिकुले तव दास्यमपि क्षमम्।' (अभि.-5.27)
  यदि तू अपने आचरण को पवित्र समझती है तो पति के परिवार में तुझे दासता करना भी उचित है।
  अभिज्ञानशाकुन्तलम् के पञ्चम अङ्क में शकुन्तला अँगूठी दिखाने के प्रसङ्ग में राजा से कहती है कि–
  'अत्र तावद् विधिना दर्शितं प्रभुत्वम्।' (अभि.अङ्क-5)
  इस विषय में भाग्य ने अपना बल दिखाया है।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (अङ्क-4)- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-190

40. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के किस अङ्क में 'विष्कम्भक' समाप्त होता है- **(PGT-2009)**

(A) षष्ठ अङ्क **(B) द्वितीय अङ्क**
(C) चतुर्थ अङ्क **(D) प्रथम अङ्क**

उत्तर- **(C)**

व्याख्या–

कालिदास कृत अभिज्ञानशाकुन्तलम् के अनुसार

(A) षष्ठ अङ्क- षष्ठ अङ्क में प्रवेशक की समाप्ति होती है विष्कम्भक के तुल्य यह भी भूत एवं भावी घटनाओं का सूचक होता है इसके पात्र निम्न कोटि के व्यक्ति होते हैं और इनकी भाषा प्राकृत होती है। साहित्यदर्पण में इसका लक्षण निम्न है-

''प्रवेशकोऽनुदात्तोक्त्या नीचपात्रप्रयोजितः।
अङ्कस्यान्तर्विज्ञेयः शेषं विष्कम्भके यथा'' (सा. द. 6/57)

(B) **द्वितीय अङ्क-** द्वितीय अङ्क में बिन्दु अर्थप्रकृति का प्रयोग है –
''माधव्य, अनवाप्त'(2/38) से लेकर 'सर्वः कान्तं शकुन्तला- धिकृत्य ब्रवीमि' (20/40) तक बिन्दु है।

(C) **चतुर्थ अङ्क-** चतुर्थ अङ्क में शुद्ध विष्कम्भक का प्रयोग है। साहित्यदर्पण में विष्कम्भक का लक्षण इसप्रकार दिया है-

''वृत्तवर्तिष्यमाणानां कथांशानां निदर्शकः।
संक्षिप्तार्थस्तु विष्कम्भ आदावङ्कस्य दर्शितः॥
मध्येन मध्यमाभ्यां वा पात्राभ्यां सम्प्रयोजितः।
शुद्धः स्यात्स तु संकीर्णो नीचमध्यमकल्पितः॥ सा.द. (6/55,56)

भूत और भविष्यत् कथाओं का सूचक, कथा का संक्षेप करने वाला अङ्क 'विष्कम्भक' कहा जाता है यह अङ्क के आदि में रहता है जब एक ही मध्यमपात्र अथवा दो मध्यमपात्र बातचीत करते हैं तब इसे शुद्ध विष्कम्भक कहते हैं और यदि नीच तथा मध्यम पात्रों द्वारा प्रयोग किया जाय तो इसे मिश्र विष्कम्भक कहते हैं।
यहाँ पर दुर्वासा संस्कृत में बोलते हैं और अनसूया तथा प्रियंवदा प्राकृत में बोलती हैं। सभी पात्र मध्यम श्रेणी के हैं अतः शुद्ध विष्कम्भक है। **अतः विकल्प C सही है।**

(D) **प्रथम अङ्क-** प्रथम अङ्क में बीज अर्थप्रकृति का प्रयोग है। राघवभट्ट के अनुसार 'इदानीमेव से लेकर सोमतीर्थं गतः' तक वैखानस की उक्ति कथा का बीज है।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम्- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-190

41. ''सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यम्'' **(PGT-2009)**
किस नाटक से उद्धृत है-
(A) उत्तररामचरितम् **(B) अभिज्ञानशाकुन्तलम्**
(C) मालविकाग्निमित्रम् **(D) मृच्छकटिकम्**

उत्तर- (B)

व्याख्या-

- अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के प्रथम अङ्क में राजा दुष्यन्त शकुन्तला के सौन्दर्य का वर्णन करते हुए कहता है–

'सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यं
मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति।
इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी
किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्॥ (अभि0 1.20)

शैवाल से घिरा हुआ कमल मनोहर लगता है काला कलङ्क भी चन्द्रमा की शोभा को बढ़ाता है। यह कृशाङ्गी वल्कल वस्त्रों से भी अति सुन्दर प्रतीत होती है क्योंकि सुन्दर आकृतियों के लिए कौन सी वस्तु अलङ्कार नहीं होती है।
अतः विकल्प B सही है।

➢ उत्तररामचरितम् के प्रथम अङ्क में राम सीता से कहते हैं कि-
'संकटा ह्याहिताग्नीनां प्रत्यवायैर्गृहस्थिता' (उत्तर.1.8)
अग्निहोत्रियों का गृहस्थ जीवन विघ्नों के कारण संकटमय होता है।

➢ कालिदासकृत मालविकाग्निमित्रम् नाटक के प्रथम अङ्क में विदूषक कहता है–
'सुशिक्षितोऽपि सर्वम् उपदेशदर्शनेन निष्णातो भवति।'
सुशिक्षित व्यक्ति भी अपना कौशल दिखाकर ही पण्डित माने जाते हैं।

➢ शूद्रक प्रणीत मृच्छकटिकम् प्रकरण के चतुर्थ अङ्क में शर्विलक मदनिका से कहता है कि–
'साहसे श्रीः प्रतिवसति' (मृच्छ.अङ्क-4)
साहस में लक्ष्मी वास करती है।

स्रोत– अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1.20)- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-46

42. 'अनाघ्रातं पुष्पं किसलयमलूनम्' वचन किसके सम्बन्ध में है- **(PGT-2009)**

(A) प्रियंवदा के **(B) शकुन्तला के**
(C) गौतमी के **(D) अनसूया के**

उत्तर- (B)

व्याख्या-

➢ अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के प्रथम अङ्क में राजा दुष्यन्त शकुन्तला के रूप सौन्दर्य का वर्णन करते हुए विदूषक से कहता है-
'अनाघ्रातं पुष्पं किसलयमलूनं कररुहैः' (अभि.2.10)
अर्थात् उसका सौन्दर्य न सूँघा गया फूल है, नाखूनों से न काटा हुआ कोमल पत्ता है।
अतः विकल्प B सही है।

➢ कालिदास विरचित अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के चतुर्थ अङ्क में प्रियंवदा अनसूया से दुर्वासा ऋषि के शाप के विषय में कहती है–
'प्रकृतिवक्रः स कस्यानुनयं प्रतिगृह्णाति।' (अभि.अङ्क-4)
स्वभाव से टेढ़े वे किसकी प्रार्थना स्वीकार करते हैं।

➢ अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के चतुर्थ अङ्क में काश्यप ऋषि द्वारा शकुन्तला को दिए गए आशीर्वाद के विषय में गौतमी कहती हैं-
'वरः खल्वेषः नाशीः।' (अभि.अङ्क-4)
वस्तुतः यह वर है, आशीर्वाद नहीं।

➢ अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के चतुर्थ अङ्क में अनसूया प्रियंवदा से कहती है-
'रक्षितव्या खलु प्रकृतिपेलवा प्रियसखी' (अभि. अङ्क 4)
स्वभाव से ही कोमल प्रियसखी की रक्षा करनी चाहिए।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (2.10)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज- 115

43. दुर्वासा ऋषि के क्रोधित हो जाने पर किसने उन्हें प्रसन्न किया? **(PGT-2010)**

(A) शकुन्तला (B) अनसूया

(C) प्रियंवदा (D) अनसूया एवं प्रियंवदा दोनों

उत्तर- (C)

व्याख्या-

कालिदास विरचित अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के चतुर्थ अङ्क में महर्षि दुर्वासा आतिथ्य सत्कार न होने से शकुन्तला को शाप देकर अबाध गति से वापस जा रहे थे तभी अनसूया ने प्रियंवदा से कहा-

'गच्छ! पादयोः प्रणम्य निवर्तयैनम्।' (अभि.अङ्क-4)

जाओ उनके चरणों में प्रणाम करके उन्हें वापस ले आओ।

प्रियंवदा वैसा ही करती है तथा दुर्वासा से जाकर क्षमा याचना करती है।

प्रियंवदा- 'भगवन्, प्रथम इति प्रेक्ष्याविज्ञाततपः प्रभावस्य दुहितृजनस्य भगवतैकोऽपराधो मर्षयितव्य इति।'

भगवन् तप के प्रभाव को न जानने वाली आपकी पुत्रियों का यह पहला अपराध है यह समझकर आप इस एक अपराध को क्षमा कर दीजिए।

अतः विकल्प C सही है।

स्त्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी , पेज-187

44. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के अनुसार 'वेत्रवती' है- **(PGT-2010)**

(A) नदी (B) उद्यानपालिका

(C) प्रतिहारी (D) अप्सरा

उत्तर- (C)

व्याख्या-

A. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में महर्षि कण्व का आश्रम मालिनी नदी के तट पर तथा विश्वामित्र ने गौतमी नदी के तट पर तपस्या की थी।

B. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के षष्ठ अङ्क में 'मधुकरिका' एवं 'परभृतिका' इन दो उद्यान पालिकाओं का वर्णन आया है।

C. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के पञ्चम अङ्क में प्रतिहारी वेत्रवती राजा से कहती है कि शकुन्तला, गौतमी, शार्ङ्गरव एवं शारद्वत आपसे मिलना चाहते हैं ।
अतः विकल्प 'C' सही है।

D. शकुन्तला की माता 'मेनका' तथा मेनका की सखी 'सानुमती' नामक दो अप्सराओं का अभिज्ञानशाकुन्तलम् में वर्णन है।

स्त्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम्- कपिलदेव द्विवेदी,भू० पेज-100

45. शर्मिष्ठा के पिता थे - **(PGT-2010)**

(A) ययाति **(B) शुक्राचार्य**

(C) दानवराज वृषपर्वा **(D) पुरु**

उत्तर- **(C)**

व्याख्या-

A. **ययाति-** ययाति चन्द्रवंश के संस्थापक राजाओं में से एक था, उसकी दो पत्नियाँ थीं।

(क) दानवों के गुरु शुक्राचार्य की पुत्री देवयानी

(ख) दानवों के राजा वृषपर्वा की पुत्री शर्मिष्ठा।

B. **शुक्राचार्य-** दैत्यों के गुरु 'शुक्राचार्य' ने अपनी पुत्री देवयानी का विवाह ययाति से किया।

C. **दानवराज वृषपर्वा-** 'दानवराज वृषपर्वा' की पुत्री शर्मिष्ठा देवयानी की सेविका थी परन्तु उसकी सुन्दरता पर मुग्ध होकर ययाति ने उससे गान्धर्व विवाह कर लिया। **अतः विकल्प C सही है।**

D. **पुरु-** ययाति के पाँच पुत्र थे। उनमें शर्मिष्ठा का पुत्र पुरु भी था। ययाति के द्वारा देवयानी के साथ दुर्व्यवहार पर शुक्राचार्य ने उसे शाप दिया कि वह शीघ्र वृद्ध हो जाय। पुरु ने पिता ययाति की वृद्धता अपने ऊपर ले ली और पितृभक्ति के फलस्वरूप पुरुवंश का संस्थापक सम्राट् हुआ।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम्- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-211

46. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' नाटक में विदूषक है- **(PGT-2010)**

(A) वसन्तक **(B) मैत्रेय**

(C) माधव्य **(D) इनमें से कोई नहीं**

उत्तर- **(C)**

व्याख्या-

	विदूषक	नाटक /नाटिका विभाजन	नाटककार
1.	वसन्तक	स्वप्नवासवदत्तम् (6 अङ्क)	भास
2.	मैत्रेय	मृच्छकटिकम् (10अङ्क, प्रकरण)	शूद्रक
3.	माधव्य	अभिज्ञानशाकुन्तलम् (7अङ्क)	कालिदास

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम्- कपिलदेव द्विवेदी, भू० पेज-99

47. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के किस अङ्क में विष्कम्भक समाप्त होता है? **(PGT-2010)**

(A) प्रथम **(B) द्वितीय**
(C) तृतीय **(D) चतुर्थ**

उत्तर- (D)

व्याख्या-

A. **प्रथम अङ्क-** 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के प्रथम अङ्क में मृगया खेलते हुए राजा दुष्यन्त आश्रम में प्रवेश करता है।

B. **द्वितीय अङ्क-** द्वितीय अङ्क में राजा दुष्यन्त विदूषक माधव्य को हस्तिनापुर भेजता है।

C. **तृतीय अङ्क-** तृतीय अङ्क में दुष्यन्त शकुन्तला से गान्धर्व विवाह करके हस्तिनापुर वापस लौट जाता है।

D. **चतुर्थ अङ्क-** आचार्य धनञ्जय दशरूपक के प्रथम प्रकाश में विष्कम्भक का लक्षण करते है 'वृत्तवर्तिष्यमाणानां कथांशानां निदर्शकः। संक्षेपार्थस्तु विष्कम्भो मध्यपात्रप्रयोजितः।।' (दशरूपक 1.59) अर्थात् समाप्त हो चुके और आगे घटित होने वाले कथा के भागों का सूचक, संक्षिप्त अर्थ वाला तथा मध्यम श्रेणी के पात्रों के द्वारा प्रयुक्त अर्थोपक्षेपक विष्कम्भक कहा जाता है।

अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के चतुर्थ अङ्क में यह लक्षण घटित होता है क्योंकि अनसूया तथा प्रियंवदा दोनों ही मध्यम श्रेणी के पात्र हैं जो भूत एवं भावी घटना के सूचक है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

नोट- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के तृतीय अङ्क में प्रथम विष्कम्भक का प्रयोग है वहाँ भी दो पात्र हैं- प्रथम पात्र शिष्य तथा द्वितीय पात्र प्रियंवदा।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम्- कपिलदेव द्विवेदी, पेज- 190

48. 'प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः .....पुनर्भवं परिगतशक्तिरात्मभूः'...यह भरतवाक्य किस ग्रन्थ का है? **(PGT-2010)**

(A) मृच्छकटिकम् **(B) मालविकाग्निमित्रम्**
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् **(D) उत्तररामचरितम्**

उत्तर- (C)

व्याख्या-

नाटक के अन्त में प्रयुक्त आशीर्वादात्मक पद्य को भरतवाक्य कहते हैं। महाभाष्यकार आचार्य पतञ्जलि ने महाभाष्य में कहा है-

'मङ्गलादीनि मङ्गलमध्यानि मङ्गलान्तानि च काव्यानि प्रथन्ते।' अर्थात् ग्रन्थ के आदि, मध्य तथा अन्त में मङ्गलाचरण करना चाहिए। भरतवाक्य सम्भवतः उसी परम्परा के परिपालनार्थ अन्तिम-मङ्गल के रूप में नाटकों में रखा जाता है।

इसका तात्पर्य है- 'भरतानां वाक्यम् इति भरतवाक्यम्' अर्थात् भरतों अथवा नटों का आशीष अथवा नाट्याचार्य भरत का आशीष।

- **अभिज्ञानशाकुन्तलम् में प्रयुक्त भरतवाक्य-**

  प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः, सरस्वती श्रुतमहतां महीयताम्।
  ममापि च क्षपयतु नीललोहितः, पुनर्भवं परिगतशक्तिरात्मभूः।। (अभि0 7/35)
  राजा दुष्यन्त कहते हैं कि- राजा प्रजा के हित के लिए प्रयत्नशील हों। ज्ञान से युक्त कवियों की वाणी का पूर्ण सत्कार हो सर्वशक्तिमान् स्वयंभू शिव मेरे पुनर्जन्म को निवृत्त कर दें। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

- **मृच्छकटिकम् में प्रयुक्त भरतवाक्य-**

  क्षीरिण्यः सन्तु गावो भवतु वसुमती सर्वसम्पन्नसस्या,
  पर्जन्यः कालवर्षी सकलजनमनोनन्दिनो वान्तु वाताः।
  मोदन्तां जन्मभाजः सततमभिमता ब्राह्मणाः सन्तु सन्तः
  श्रीमन्तः पान्तु पृथ्वीं प्रशमितरिपवो धर्मनिष्ठाश्च भूपाः।। (मृच्छ0 10.61)
  चारुदत्त कहता है- गाएँ प्रचुर दूध देने वाली हों, पृथ्वी सब प्रकार से धन-धान्य से पूर्ण हो, मेघ समय से जल बरसाने वाला हो, समस्त जनों के मन को आनन्दित करने वाली वायु चले। प्राणधारी निरन्तर सुखी रहें, पूज्य ब्राह्मण लोग उत्तमशील हों, समृद्धिशाली, शत्रुओं का नाश करने वाले तथा धर्मनिष्ठ राजा पृथ्वी का पालन करें।

- **मालविकाग्निमित्रम् का भरतवाक्य-**

  त्वं मे प्रसादसुमुखी भव देवि नित्यं
  एतावदेव हृदये प्रतिपालनीयम्।
  आशास्यमीतिविगमप्रभृति प्रजानां
  संपत्स्यते न खलु गोप्तरि नाग्निमित्रे।। (माल0 5.20)
  प्रजाओं की कोई इच्छा पूर्ण नहीं होगी, ऐसी बात तो अग्निमित्र के राजत्व में होगी ही नहीं अर्थात् इच्छाएँ पूर्ण होंगी।

- **उत्तररामचरित में प्रयुक्त भरतवाक्य-**

  पाप्मभ्यश्च पुनाति वर्धयति च श्रेयांसि सेयं कथा
  मङ्गल्या च मनोहरा च जगतो मातेव गङ्गेव च।
  तामेतां परिभावयन्त्वभिनयैर्विन्यस्तरूपां बुधाः
  शब्दब्रह्मविदः कवेः परिणतां प्राज्ञस्य वाणीमिमाम्।। (उत्तर0 7.21)
  जगत् की माता की तरह और गङ्गा की तरह मङ्गलकारिणी तथा मनोहर यह कथा पापों से पवित्र करती है और कल्याण को बढ़ाती है वही शब्द ब्रह्मवेत्ता विद्वान् कवि के द्वारा रूपान्तरण को प्राप्त हुई, अभिनयों ने विन्यस्त स्वरूप वाली इस वाणी का विद्वान् लोग परिशीलन करें।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (7/35)- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-453

49. 'न तादृशा आकृतिविशेषा गुणविरोधिनो भवन्ति' प्रियंवदा द्वारा उक्त वाक्य किसके लिये है? **(PGT-2010)**

(A) दुष्यन्त **(B) शकुन्तला**

(C) महर्षि कण्व **(D) इनमें से कोई नहीं**

उत्तर- (A)

व्याख्या-

कालिदास विरचित अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के चतुर्थ अङ्क में अनसूया प्रियंवदा से कहती है कि-

''अद्य स राजर्षिरिष्टिं परिसमाप्य ऋषिभिर्विसर्जित आत्मनो नगरं प्रविश्यान्तः पुरसमागत इतोगतं वृत्तान्तं स्मरति वा न वेति।'' (अभि0 अङ्क 4) आज वह (राजा) राजर्षि यज्ञ की समाप्ति के बाद ऋषियों से विदाई लेकर अपने नगर में प्रवेश करके अन्तःपुर की स्त्रियों से मिलकर यहाँ की बात को याद करेगा अथवा नहीं।

प्रियंवदा अनसूया को इस विषय में आश्वस्त करते हुए कहती है कि- 'न तादृशा आकृतिविशेषा गुणविरोधिनो भवन्ति' (अभि. अङ्क-4) अर्थात् उसप्रकार की सुन्दर आकृतियाँ गुणों से रहित नहीं होती हैं। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

* 'अद्य पुनर्हृदयेनासंनिहिता' (अभिज्ञान0 अङ्क0 4) अनसूया प्रियंवदा से कहती है आज वह (शकुन्तला) हृदय से कहीं और है।
* अनसूया शकुन्तला के विषय में प्रियंवदा से कहती है। 'गुणवते कन्यका प्रतिपादनीयेत्ययं तावत् प्रथमः संकल्पः।' (अभि0 अङ्क- 4) गुणवान् व्यक्ति को कन्या देनी है यह माता-पिता का प्रथम संकल्प (विचार) होता है।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-180

50. ''दुष्यन्तेनाहितं तेजो दधानां भूतये भुवः। अवेहि तनयां ब्रह्मन्नग्निगर्भां शमीमिव॥'' यह सूचना कण्व को किससे प्राप्त हुई? **(PGT-2010)**

(A) गौतमी **(B) अनसूया**

(C) प्रियंवदा **(D) छन्दोमयी वाणी**

उत्तर- (D)

व्याख्या-

* अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के चतुर्थ अङ्क में प्रियंवदा अनसूया से कहती है प्रवास से लौटे हुए महर्षि काश्यप जब यज्ञशाला में प्रवेश करते हैं तो अशरीरधारी छन्दोमयी वाणी से पता चलता है कि शकुन्तला और दुष्यन्त का गान्धर्व विवाह हुआ है तथा इस समय शकुन्तला गर्भधारण की हुई है।

'अग्निशरणं प्रविष्टस्य शरीरं विना छन्दोमय्या वाण्या।'

वह छन्दोमयी वाणी प्रियंवदा अनसूया से बताती है-

दुष्यन्तेनाहितं तेजो दधानां भूतये भुवः।
अवेहि तनयां ब्रह्मन्नग्निगर्भां शमीमिव।। (अभि0 4.4)

हे ब्रह्मन्, दुष्यन्त के द्वारा स्थापित तेज (वीर्य) को पृथ्वी के कल्याण के लिए धारण करने वाली अपनी पुत्री को छिपी हुई अग्नि से युक्त शमीवृक्ष के तुल्य समझो। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/4)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-198

51. 'सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम्' यह किससे कहा गया है? **(PGT-2010)**

(A) सखियों से (B) वन-देवियों से
(C) लता-पादपों से (D)पशु-पक्षियों से

उत्तर- (C)

व्याख्या-

अभिज्ञानशाकुन्तल नाटक के चतुर्थ अङ्क में शकुन्तला की विदाई के अवसर पर महर्षि काश्यप वनवृक्षों के स्नेह को व्यक्त करते हुए कहते हैं-

* पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं युष्मास्वपीतेषु या ....सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम्। (अभि० 4/9)

महर्षि कण्व तपोवन के वृक्षों को सम्बोधित करते हुए कहते हैं कि जो तुम्हें बिना जल पिलाये जल नहीं पीती थी। तुम्हारे प्रति प्रेम के कारण जो अलङ्कारों की प्रेमी होने पर भी तुम्हारे नये पत्ते नहीं तोड़ती थी। तुम्हारे पुष्पोद्गम के समय जिसका उत्सव होता था वह शकुन्तला अब पतिगृह को जा रही है, तुम सब अपनी स्वीकृति दो।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/9)- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-213

52. 'आर्तत्राणाय वः शस्त्रं न प्रहर्तुमनागसि' अभिज्ञानशाकुन्तलम् में यह कथन है- **(PGT-2011)**

(A) गौतमी (B) मातलि
(C) वैखानस (D) राजा का सारथि

उत्तर- (C)

व्याख्या-

- कालिदास विरचित अभिज्ञानशाकुन्तलम् के प्रथम अङ्क में राजा दुष्यन्त द्वारा मृग का शिकार करने के अवसर पर वैखानस कहते हैं-

तत् साधुकृतसन्धानं प्रतिसंहर सायकम्।
आर्तत्राणाय वः शस्त्रं न प्रहर्तुमनागसि॥ (अभि. 1.11)

अच्छे प्रकार से धनुष पर चढ़ाए हुए अपने बाण को उतार लीजिए आपका शस्त्र दुःखितों की रक्षा के लिए है निरपराधों पर प्रहार के लिए नहीं।

- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के षष्ठ अङ्क में राक्षसों के वधार्थ इन्द्र द्वारा दुष्यन्त को बुलाए जाने पर मातलि दुष्यन्त से कहता है-

प्रसादसौम्यानि सतां सुहृज्जने
पतन्ति चक्षूंषि न दारुणाः शराः। (अभि. 6.29)

सज्जनों की अपने मित्रवर्ग पर प्रेम से मनोहर ही दृष्टि पड़ती है, न कि उनके भयंकर बाण उन पर पड़ते हैं।

- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में विदाई के अवसर पर गौतमी शकुन्तला से कहती हैं-

  'जाते, ज्ञातिजनस्निग्धाभिरनुज्ञातगमनाऽसि तपोवनदेवताभिः'

  पुत्री, सम्बन्धि-जनों के तुल्य प्रेम करने वाली तपोवन की देवताओं ने तुझे जाने की स्वीकृति दे दी है।

- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के प्रथम अङ्क में राजा दुष्यन्त द्वारा मृग का पीछा करने के अवसर पर सारथि राजा दुष्यन्त से कहता है-

  कृष्णसारे ददच्चक्षुस्त्वयि चाधिज्यकार्मुके।

  मृगानुसारिणं साक्षात् पश्यामीव पिनाकिनम्॥ (अभि. 1.6)

  मैं इस कृष्णसार मृग और धनुष चढ़ाए हुए आप पर दृष्टिपात करके मृग का पीछा करते हुए साक्षात् मानो शिव को देख रहा हूँ। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत-अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1.11)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-26

53. 'दिष्ट्या धूमाकुलितदृष्टेरपि यजमानस्य पावक एवाहुतिः पतिता।' इस दृष्टान्त द्वारा किसने अपनी कृतार्थता स्वीकार की है- **(PGT-2011)**

(A) कण्व **(B) गौतमी**

(C) मातलि **(D) शकुन्तला**

उत्तर- (A)

व्याख्या-

- महाकवि कालिदास द्वारा अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में महर्षि कण्व द्वारा शकुन्तला से कही गई बात को प्रियंवदा अनसूया से कहती है-

  'दिष्ट्या धूमाकुलितदृष्टेरपि यजमानस्य पावक एवाहुतिः पतिता' (अभि.अङ्क-4)

  सौभाग्य से धुएँ से व्याकुल दृष्टि वाले यजमान की आहुति ठीक अग्नि में पड़ी। यह बात महर्षि कण्व शकुन्तला से कहते हैं। **अतः विकल्प A सही है।**

- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में गौतमी शकुन्तला से कहती हैं-

  'जाते, एष त आनन्दपरिवाहिणा चक्षुषा परिष्वजमान इव गुरुरुपस्थितः। आचारं तावत् प्रतिपद्यस्व' (अभि.अङ्क-4)

  पुत्री, आनन्द के आँसुओं को बहाने वाली आँखों से तुझको गले लगाते हुए तुम्हारे पिता यहाँ उपस्थित हैं अब उचित शिष्टाचार का पालन करो।

- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के सप्तम अङ्क में मातलि राजा दुष्यन्त से मारीचि के आश्रम के विषय में कहता है-

  'एष खलु हेमकूटो नाम किंपुरुषपर्वतस्तपः संसिद्धिक्षेत्रम्।' (अभि.अङ्क-7)

  यह हेमकूट नाम का किन्नरों का पर्वत है। यह तपस्या की सफलता के लिए सर्वोत्तम स्थान है।

- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में राजा यदि तुम्हें पहचानने से इन्कार करे तो उसे अगूँठी दिखा देना दोनों सखियों के ऐसा कहने पर, शकुन्तला कहती है-

  'अनेन सन्देहेन वामाकम्पिताऽस्मि' (अभि.अङ्क-4)

  तुम्हारे इस सन्देह से मुझे घबड़ाहट हो रही है।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (अङ्क-4) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-197

54. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में मातलि कौन है- **(PGT-2011)**
(A) कण्व शिष्य **(B) द्वारपाल**
(C) तपस्वी **(D) इन्द्र-सारथि** **उत्तर- (D)**

व्याख्या-

➢ अभिज्ञानशाकुन्तलम् में प्रयुक्त पात्रों के नाम हैं-

कण्व के शिष्य	- वैखानस, शार्ङ्गरव, शारद्वत, गौतम, हारीत
द्वारपाल	- रैवतक
तपस्वी	- वैखानस
इन्द्र का सारथी	- मातलि
दुष्यन्त का सारथी	- सूत
दुष्यन्त का विदूषक	- माधव्य (माढव्य)
दुष्यन्त का पुत्र	- भरत (सर्वदमन)
शकुन्तला की सखी	- अनसूया, प्रियंवदा
महर्षि मारीच की पत्नी	- अदिति (दाक्षायणी)
मेनका की सखी	- सानुमती

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम्- कपिलदेव द्विवेदी, भू.पेज-99

55. 'अथवाऽनार्यः परदारव्यवहारः' कथन है- **(PGT-2011)**
(A) दुष्यन्त **(B) गौतमी**
(C) मातलि **(D) तापसी** **उत्तर- (A)**

व्याख्या-

➢ कालिदास विरचित अभिज्ञानशाकुन्तलम् के सप्तम अङ्क में तपस्विनी द्वारा कथित वाक्य पर विचार करते हुए राजा अपने मन में कहता है-
'अथवाऽनार्यः परदारव्यवहारः' (अभि.अङ्क-7)
पराई स्त्री के विषय में बात करना अशिष्टता है। **अतः विकल्प A सही है।**

➢ अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में शकुन्तला की विदाई के अवसर पर पिता (काश्यप) को लौटने को कहते हुए गौतमी शकुन्तला एवं काश्यप से कहती हैं-
'जाते, परिहीयते गमनवेला। निवर्तय पितरम्। अथवा चिरेणापि पुनः पुनरेषैवं मन्त्रयिष्यते। (अभि.अङ्क-4)
पुत्री, हमारे प्रस्थान का समय बीतता जा रहा है। अपने पिता को लौटाओ अथवा यह शकुन्तला तो चिरकाल तक बार-बार उसी बात को कहती रहेगी।

➢ अभिज्ञानशाकुन्तलम् के षष्ठ अङ्क में इन्द्र का सारथी (मातलि) राजा दुष्यन्त से कहता है-
'अस्ति कालनेमिप्रसूतिर्दुर्जयो नाम दानवगणः' (अभि.अङ्क-6)
कालनेमि के वंशज दुर्जय नामक राक्षसों का समुदाय है।

➢ अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में शकुन्तला के विदाई के अवसर पर प्रथम तापसी आशीर्वाद देते हुए कहती है-
'जाते, भर्तुर्बहुमानसूचकं महादेवीशब्दं लभस्व' (अभि.अङ्क-4)
पुत्री, पति के बहुत सम्मानसूचक 'महारानी' शब्द को प्राप्त करो।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (अङ्क-7)- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-421

56. ''अर्थो हि कन्या परकीय एव तामद्य संप्रेष्य परिग्रहीतुः जातो ममायं विशदः प्रकामं प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा॥'' इस श्लोक में छन्द है? **(PGT-2011)**

(A) उपजाति **(B) शिखरिणी**

(C) इन्द्रवज्रा **(D) वंशस्थ**

उत्तर- (C)

व्याख्या-

➢ **उपजाति छन्द-**

'अनन्तरोदीरितलक्ष्मभाजौ पादौ यदीयावुपजातयस्ताः' (वृत्त.3.30)

जिस छन्द में एक चरण इन्द्रवज्रा का तथा दूसरा चरण उपेन्द्रवज्रा का हो उसे उपजाति छन्द कहते हैं।

उदाहरण-

कृताभिमर्शामनुमन्यमानः सुतां त्वया नाम मुनिर्विमान्यः।
मुष्टं प्रतिग्राहयता स्वमर्थं पात्रीकृतो दस्युरिवासि येन।। (अभि.5.20)

➢ **शिखरिणी छन्द-**

'रसैः रुद्रैश्छिन्ना यमनसभलागः शिखरिणी' (वृत्त.3.93)

छः तथा ग्यारह अक्षरों की यति वाली तथा क्रमशः यगण, मगण, नगण, सगण, भगण, एक लघु तथा एक गुरु वर्ण से युक्त छन्द को शिखरिणी छन्द कहते हैं।

उदाहरण- चलापाङ्गां दृष्टिं स्पृशसि बहुशो वेपथुमतीं।
रहस्याख्यायीव स्वनसि मृदुकर्णान्तिकचरः।। (अभि.1.24)

➢ **इन्द्रवज्रा छन्द-**

'स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः' (वृत्त.3.28)

जिस छन्द के प्रत्येक चरण में दो तगण, एक जगण, तथा दो गुरु वर्ण क्रमशः हों उसे इन्द्रवज्रा कहते हैं यति प्रत्येक चरण के अन्त में होती है।

उदाहरण-

अर्थो हि कन्या परकीय एव तामद्य सम्प्रेष्य परिग्रहीतुः।
जातो ममायं विशदः प्रकामं प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा।। (अभि.4.22)

अतः विकल्प C सही है।

➢ **वंशस्थ छन्द-**

'जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ' (वृत्त.3.46)

जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः जगण, तगण, जगण, रगण आए उसे वंशस्थ छन्द कहते हैं।

उदाहरण-

विचिन्तयन्ती यमनन्यमानसा तपोधनं वेत्सि न मामुपस्थितम्।
स्मरिष्यति त्वां न स बोधितोऽपि सन्, कथां प्रमत्तः प्रथमं कृतामिव।। (अभि.4.1)

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/22)- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-240

57. 'ओदकान्तं स्निग्धो जनोऽनुगन्तव्यः' कथन है– **(PGT-2011)**

(A) शार्ङ्गरव **(B) शारद्वत**

(C) गौतमी **(D) प्रियंवदा**

उत्तर- (A)

व्याख्या-

A. **शार्ङ्गरव-** कालिदास कृत अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के चतुर्थ अङ्क में शकुन्तला की विदाई के अवसर पर शार्ङ्गरव ऋषि काश्यप से कहता है-
'ओदकान्तं स्निग्धो जनोऽनुगन्तव्य इति श्रूयते' (अभि.अङ्क-4)
अर्थात् प्रिय व्यक्ति का अनुगमन जल के किनारे तक करना चाहिए ऐसा सुना जाता है।
अतः विकल्प A सही है।

B. **शारद्वत-** अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के पञ्चम अङ्क में शारद्वत राजा दुष्यन्त के राजदरबार में शकुन्तला के विषय में कहता है-
तदेषा भवतः कान्ता त्यज वैनां गृहाण वा।
उपपन्ना हि दारेषु प्रभुता सर्वतोमुखी॥ (अभि.5.26)
यह शकुन्तला आपकी पत्नी है इसको चाहे अपने पास रखिए अथवा छोड़िए क्योंकि पत्नी पर पति की सब प्रकार से प्रभुता स्वीकार की गई है।

C. **गौतमी-** अभिज्ञानशाकुन्तलम् के पञ्चम अङ्क में गौतमी दोनों के (शकुन्तला-दुष्यन्त) विवाह के विषय में राजा दुष्यन्त से कहती हैं-
नापेक्षितो गुरुजनोऽनया त्वया पृष्टो न बन्धुजनः।
एकैकस्य च चरिते भणामि किमेकैकम्॥ (अभि.5.16)
विवाह के विषय में शकुन्तला ने अपने गुरुजनों की अनुमति नहीं ली, और तुमने भी अपने सम्बन्धियों की सम्मति नहीं ली। तुम दोनों के परस्पर इस कार्य में तुम दोनों में से प्रत्येक को क्या कहूँ?

D. **प्रियंवदा-** अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में वनस्पतियों द्वारा शकुन्तला के लिए अलङ्करण सामग्री प्रदान किए जाने के कारण प्रियंवदा शकुन्तला से कहती है-
भर्तुर्गेहेऽनुभवितव्या राजलक्ष्मीः (अभि.अङ्क-4)
पति के घर में राजलक्ष्मी का अनुभव करोगी।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (अङ्क-4)- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-225

58. 'को नामोष्णोदकेन नवमालिकां सिञ्चति' कथन है- **(PGT-2011)**

(A) गौतमी **(B) प्रियंवदा**

(C) अनसूया **(D) शार्ङ्गरव**

उत्तर- (B)

व्याख्या-

A. **गौतमी-** अभिज्ञानशाकुन्तलम् के पञ्चम अङ्क में राजा दुष्यन्त द्वारा शकुन्तला को त्याग दिए जाने पर गौतमी शार्ङ्गरव से कहती है कि-
'प्रत्यादेशपरुषे भर्तरि किं वा मे पुत्रिका करोतु?' (अभि.अङ्क-5)
पति ने निर्दयतापूर्वक परित्याग कर दिया है बेचारी मेरी पुत्री क्या करे?

B. **प्रियंवदा-** अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में प्रियंवदा अनसूया से कहती है-
'को नामोष्णोदकेन नवमालिकां सिञ्चति' (अभिज्ञान अङ्क-4)
भला कौन नवमालिका को गर्म जल से सींचेगा। **अतः विकल्प B सही है।**

C. **अनसूया-** कालिदास विरचित अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में दुर्वासा ऋषि द्वारा शकुन्तला को दिए गए शाप के प्रसङ्ग में अनसूया प्रियंवदा से कहती है-
'कोऽन्यो हुतवहाद् दग्धुं प्रभवति।' (अभिज्ञान-अङ्क-4)
अग्नि के अतिरिक्त और कौन जला सकता है।

D. **शार्ङ्गरव-** अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में शार्ङ्गरव ऋषि काश्यप से कहता है-
'ओदकान्तं स्निग्धो जनोऽनुगन्तव्यः।' (अभि.अङ्क-4)
प्रिय व्यक्ति का जल के किनारे तक अनुगमन करना चाहिए।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (अङ्क-4)- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-190

59. 'शान्तानुकूलपवनश्च शिवश्च पन्थाः' उक्ति है- **(PGT-2011)**

(A) गौतमी **(B) कण्व**
(C) आकाशभाषित **(D) प्रियंवदा**

उत्तर- **(C)**

व्याख्या-

A. **गौतमी-** कालिदास कृत अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के पञ्चम अङ्क में राजा दुष्यन्त के राजदरबार में दुष्यन्त द्वारा शकुन्तला को दी हुई अँगूठी को शकुन्तला की अँगुली में न देखकर गौतमी शकुन्तला से कहती है कि-
'नूनं ते शक्रावताराभ्यन्तरे शचीतीर्थसलिलं वन्दमानायाः प्रभ्रष्टमङ्गुलीयकम्' (अभि.अङ्क-5)
निश्चित रूप से शक्रावतार तीर्थ में शचीतीर्थ के जल की वन्दना करते समय तुम्हारी अँगूठी गिर गई।

B. **कण्व-** शकुन्तला की विदाई के अवसर पर अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में ऋषि कण्व कहते हैं-
'सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम्।' (अभि.4/9)
यह शकुन्तला पतिगृह को जा रही है आप सभी अपनी अनुमति प्रदान करें।

C. **आकाशभाषित-** अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में विदाई के समय आकाशवाणी होती है-
'शान्तानुकूलपवनश्च शिवश्च पन्थाः।' (अभि.शा.4/11)
शकुन्तला का मार्ग शान्त और अनुकूल वायु से युक्त तथा कल्याणकारी हो। **अतः विकल्प C सही है।**

D. **प्रियंवदा-** अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में प्रियंवदा दुर्वासा ऋषि के विषय में कहती है कि-
'प्रकृतिवक्रः स कस्यानुनयं प्रतिगृह्णाति।'
स्वभाव से ही टेढ़े वह (दुर्वासा) किसकी प्रार्थना स्वीकार करते हैं।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4.11)- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-216

60. 'अयं जनः कस्य हस्ते समर्पितः' कथन है- **(PGT-2011)**

(A) अनसूया **(B) अनसूया एवं प्रियंवदा**

(C) गौतमी **(D) प्रियंवदा**

उत्तर- **(B)**

व्याख्या-

A. अनसूया- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में अनसूया शकुन्तला से कहती है-

'गुर्वपि विरहदुःखमाशाबन्धः साहयति।' (अभि.4.16)

आशा का बन्धन वियोग के कठोर दुःख को भी सहन करा देता है।

B. अनसूया एवं प्रियंवदा- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में पतिगृह को जाती हुई शकुन्तला जब लता को धरोहर के रूप में अनसूया एवं प्रियंवदा के हाथ में छोड़ती है तो दोनों सखियाँ शकुन्तला से कहती हैं-

'अयं जनः कस्य हस्ते समर्पितः।' (अभि. अङ्क-4)

हम दोनों को किसके हाथ में छोड़ती हो। **अतः विकल्प B सही है।**

C. गौतमी- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के पञ्चम अङ्क में शकुन्तला के विषय में गौतमी राजा दुष्यन्त से कहती हैं-

तपोवनसंवर्धितोऽनभिज्ञोऽयं जनः कैतवस्य।

तपोवन में पाला-पोसा हुआ यह व्यक्ति अर्थात् (शकुन्तला) छल-प्रपंचों से (सर्वथा) अनभिज्ञ है।

D. प्रियंवदा- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में प्रियंवदा दुर्वासा ऋषि के विषय में कहती है-

एष दुर्वासाः सुलभकोपो महर्षिः। यह अतिक्रोधी महर्षि दुर्वासा हैं।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (अङ्क-4)- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-221

61. 'शकुन्तला के गर्भ में दुष्यन्त का तेज पल रहा है'- कण्व को किसके द्वारा पता चला? **(PGT-2011)**

(A) गौतमी द्वारा

(B) अनसूया एवं प्रियंवदा द्वारा

(C) कण्व के तपोबल द्वारा

(D) अशरीरिणी छन्दोमयी वाणी द्वारा

उत्तर- **(D)**

व्याख्या-

A. गौतमी- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में काश्यप ऋषि द्वारा शकुन्तला को आशीर्वाद दिए जाने पर गौतमी कहती हैं-

'भगवन्, वरः खल्वेषः। नाशीः।' (अभि.अङ्क-4)

भगवन्, यह वस्तुतः वर है, केवल आशीर्वाद नहीं।

B. **प्रियंवदा-** अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में प्रियंवदा अनसूया से कहती है-
'को नामोष्णोदकेन नवमालिकां सिञ्चति।' (अभि.अङ्क-4)
भला कौन नवमालिका को गर्म जल से सीचेंगा।

C. **कण्व-** अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में काश्यप शकुन्तला से कहते हैं-
'ययातेरिव शर्मिष्ठा भर्तुर्बहुमता भव।
सुतं त्वमपि सम्राजं सेव पुरूमवाप्नुहि॥' (अभिज्ञान.4.6)
पुत्री, शर्मिष्ठा जिस प्रकार ययाति की (अति प्रिय रानी) थी, उसी प्रकार (तू) पति की अति प्रिय (रानी) हो। उस (शर्मिष्ठा) ने जिस प्रकार (सम्राट् पुत्र) पुरु को (प्राप्त किया) उसी प्रकार तू भी सम्राट् पुत्र को प्राप्त कर।

D. **प्रियंवदा-** अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में प्रियंवदा अनसूया से कहती हैं-
'अग्निशरणं प्रविष्टस्य शरीरं विना छन्दोमय्या वाण्या।' (अभि.अङ्क-4)
यज्ञशाला में प्रविष्ट होने पर (उनको) अशरीरधारी छन्दोमयी वाणी ने ऋषि काश्यप को बताया कि शकुन्तला के गर्भ में दुष्यन्त का तेज पल रहा है।
अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/4)- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-198

62. 'सागरमुज्झित्वा कुत्र वा महानद्यवतरति' यह कथन है- **(PGT-2011)**
(A) रामायणम् **(B) अभिज्ञानशाकुन्तलम्**
(C) रघुवंशम् **(D) मृच्छकटिकम्**
उत्तर- (B)

व्याख्या-

- महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण के सुन्दरकाण्ड में राक्षसियों की बात मानने से इन्कार करके शोक सन्तप्त सीता विलाप करती हुई कहती हैं कि-
'अकाले दुर्लभो मृत्युः स्त्रिया वा पुरुषस्य वा' (वा.रा.5.25.12)
किसी भी स्त्री या पुरुष की मृत्यु बिना समय के नहीं होती।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के तृतीय अङ्क में प्रियंवदा अनसूया से शकुन्तला के विषय में कहती है-
'सागरमुज्झित्वा कुत्र वा महानद्यवतरति' (अभि.अङ्क-3)
बड़ी नदी समुद्र को छोड़कर और कहाँ उतरती है। **अतः विकल्प B सही है।**
- कालिदास कृत रघुवंशम् के द्वितीय सर्ग में सिंह राजा दिलीप से कहता है-
न पादपोन्मूलनशक्तिरंहः शिलोच्चये मूर्च्छति मारुतस्य (रघु.2/34)
वायु का जो वेग वृक्षों को जड़ से उखाड़ देने की शक्ति रखता है वह पर्वत का कुछ भी नहीं बिगाड़ पाता।
- मृच्छकटिकम् के प्रथम अङ्क में चारुदत्त दरिद्रता का स्मरण करते हुए कहता है-
'अल्पक्लेशं मरणं, दारिद्र्यमनन्तकं दुःखम्' (मृच्छ.1.11)
"मृत्यु कम कष्ट वाली होती है किन्तु दरिद्रता कभी न समाप्त होने वाला दुःख है।"

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (अङ्क-3)- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-151

63. अधोलिखित पद्यों में 'शाकुन्तल' के प्रसिद्ध चार पद्यों में किसकी गणना नहीं की जाती- **(PGT-2011)**

(A) पातुं न प्रथमं व्यवस्यति... (B) शुश्रूषस्व गुरून् कुरु....
(C) यास्यत्यद्य शकुन्तलेति..... (D) उद्गलितदर्भकवला मृग्यः....

उत्तर- (D)

व्याख्या-

संस्कृतवाङ्मय में नाटक सर्वश्रेष्ठ रचना है नाटकों में अभिज्ञानशाकुन्तलम् और अभिज्ञानशाकुन्तलम् का चतुर्थ अङ्क और उस चतुर्थ अङ्क में भी चार श्लोक सर्वश्रेष्ठ हैं जो निम्नवत् हैं-

श्लोकचतुष्टयम्

- पातुं न प्रथमं व्यवस्यति......(अभि.4/9)
  कालिदास विरचित इस पद्य में आश्रमवासियों के प्रकृति प्रेम की उत्कृष्ट कल्पना परिलक्षित हो रही है।
- शुश्रूषस्व गुरून् कुरु...... (अभि.4/18)
  इस श्लोक में कण्व का दिया हुआ यह उपदेश आज भी प्रत्येक उस कन्या के लिए हृदयंगम करने के योग्य है जो विवाहित होने के उपरान्त पहले पहल अपने पति के घर जाती हैं।
- यास्यत्यद्य शकुन्तलेति......(अभि.-4/6)
  इस श्लोक में पुत्री के वियोग से उत्पन्न होने वाले दुःखों का हृदयस्पर्शी वर्णन है।
- अस्मान् साधु विचिन्त्य.......(अभि.4/17)
  इस श्लोक में कण्व ने शार्ङ्गरव द्वारा दुष्यन्त को प्रासङ्गिक एवं औचित्यपरक संदेश भिजवाया है।
- उद्गलितदर्भकवला मृग्यः........(अभि.4/12)
  इस श्लोक में शकुन्तला के वियोग से मृग, मयूर एवं लताओं की दयनीय दशा का वर्णन है। विद्वानों ने इसे 'श्लोकचतुष्टयम्' के अन्तर्गत नहीं माना है। **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम्- कपिलदेव द्विवेदी, भू.पेज-68

64. 'न प्रभातरलं ज्योतिरुदेति वसुधातलात्' उक्ति है- **(PGT-2011)**

(A) नैषधीयचरित की (B) मृच्छकटिक की
(C) उत्तररामचरित की (D) अभिज्ञानशाकुन्तल की

उत्तर- (D)

व्याख्या-

A. नैषधीयचरितम्- श्रीहर्ष प्रणीत नैषधीयचरितम् के नवम सर्ग में राजा नल दमयन्ती के विषय में कहते हैं-

न मोघसङ्कल्पधराः किलामराः। (नैष.9/145)

'देव निष्फल संकल्प-धारण तो संशय नहीं करते।'

B. **मृच्छकटिकम्-** शूद्रक प्रणीत मृच्छकटिकम् के प्रथम अङ्क में विट शकार से कहता है-

आलाने गृह्यते हस्ती वाजी वल्गासु गृह्यते। (मृच्छ.1/50)

''हाथी खम्भे में बाँध कर वश मे लाया जाता है, घोड़े को लगाम लगाकर लोग उसे अपने वश में लाते हैं।''

C. **उत्तररामचरितम्-** भवभूति प्रणीत उत्तररामचरितम् के षष्ठ अङ्क में श्रीराम चन्द्रकेतु से कहते हैं कि-

न तेजस्तेजस्वी प्रसृतमपरेषां विषहते। (उत्तर.6/14)

''तेजस्वी पुरुष फैले हुए दूसरों के प्रताप को सहन नहीं करता है।''

D. **अभिज्ञानशाकुन्तलम्-** कालिदास विरचित अभिज्ञानशाकुन्तलम् के प्रथम अङ्क में राजा दुष्यन्त शकुन्तला के विषय में चिन्तन करते हुए कहते हैं-

'न प्रभातरलं ज्योतिरुदेति वसुधातलात्।' (अभि.1/26)

''कान्ति से देदीप्यमान तेज भूतल से उत्पन्न नहीं होता है।''

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/26)- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-73

65. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में शकुन्तला को शाप दिया था- **(PGT-2013)**

(A) नारद ने **(B) दुर्वासा ने**

(C) विश्वामित्र ने **(D) मारीच ने**

उत्तर- (B)

व्याख्या–

(A) **नारद–** नारद महर्षि कण्व का शिष्य है चतुर्थ अङ्क में वृक्षों से प्राप्त आभूषणों को लेकर आने पर गौतमी पूँछती है– **'गौतमी–**वत्स नारद! कुत एतत्?' पुत्र नारद ये कहाँ से मिले हैं?

(B) **दुर्वासा–** अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के चतुर्थ अङ्क में आतिथ्य सत्कार न होने से क्रोधित महर्षि दुर्वासा ने पति चिन्तन में मग्न शकुन्तला को शाप दिया कि जिसका तुम स्मरण कर रही हो वह उन्मत्त व्यक्ति के समान स्मरण कराया जाता हुआ भी तुम्हें स्मरण नहीं करेगा।

विचिन्तयन्ती यमनन्यमानसा
तपोधनं वेत्सि न मामुपस्थितम् ।
स्मरिष्यति त्वां न स बोधितोऽपि सन्
कथां प्रमत्तः प्रथमं कृतामिव।। (अभि.शा. 4/1)

अतः विकल्प B सही है।

(C) विश्वामित्र– शकुन्तला ब्रह्मर्षि विश्वामित्र एवं मेनका की औरस पुत्री है एवं महर्षि कण्व की मानस पुत्री (धर्मपुत्री) है। यह कौशिक गोत्र नाम के प्रभावशाली राजर्षि हैं। यह बात अनसूया राजा को बताती है–

अनसूया– '' शृणोत्वार्य! अस्ति कोऽपि कौशिक इति गोत्रनाम धेयो महाप्रभावो राजर्षिः। .....तम् आवयोः प्रियसख्याः प्रभवमवगच्छ।'' (अभि.अङ्क-1)

(D) मारीच– महर्षि मारीच ने सातवें अङ्क में शकुन्तला को इन्द्राणी के समान होने का आशीर्वाद दिया है-

'आशीरन्या न ते योग्या पौलोमीसदृशी भव।' (अभि.शा.7/28)

स्रोत– अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/1) कपिलदेव द्विवेदी, पेज-184

66. 'किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्' पंक्ति ग्रहण की गयी है- **(PGT-2013)**

(A) 'कादम्बरी' से **(B) 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' से**

(C) 'शिशुपालवधम्' से **(D) 'मृच्छकटिकम्' से**

उत्तर- (B)

व्याख्या-

- कालिदास प्रणीत अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के प्रथम अङ्क में वल्कल वस्त्रधारिणी शकुन्तला को देखकर राजा दुष्यन्त कहते हैं कि–
  'किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्' (अभि. 1.20) ठीक ही कहा गया है कि सुन्दर एवं मनोहारिणी आकृतिवालों के लिए सभी वस्तुएँ शोभाधायक ही होती हैं ठीक इसी प्रकार शैवाल से आच्छादित कमल के समान वल्कलवस्त्र से सन्नद्ध शकुन्तला का शरीर अत्यन्त मनोहारी प्रतीत हो रहा है वस्तुतः मनोहर आकृति वालों के लिए सभी वस्तुएँ निर्बाध अलंकार बन जाती हैं अथवा उनकी शोभा में गुणात्मक वृद्धि कर देती है।
  अतः विकल्प B सही है।
- बाणभट्ट द्वारा रचित कादम्बरी के चाण्डालकन्या वर्णन में राजा शूद्रक चाण्डालकन्या के सौन्दर्य को देखकर कहता है कि– 'विधातुरस्थाने रूपनिष्पादनप्रयत्नः।'
  विधाता ने अनुचित स्थान पर रूप निर्माण का प्रयास किया है।
- शिशुपालवधम् के ग्यारहवें सर्ग में माघ रमणियों का वर्णन करते हुए कहते हैं–
  कामिनां मण्डनश्रीर्व्रजति हि सफलत्वं वल्लभालोकनेन। (शिशु.11.33)
  कामियों के मण्डनों की शोभा प्रिया के दर्शनमात्र से ही सफल हो जाती हैं।
- मृच्छकटिकम् के चतुर्थ अङ्क में शर्विलक मदनिका से कहता है- 'स्त्रियो हि नाम खल्वेता निसर्गादेव पण्डिताः।' (मृच्छ. 4.19)
  व्यवहारिक क्षेत्र में पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियाँ अधिक चतुर होती हैं।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/20)- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-46

67. 'अथवाऽनार्यः परदारव्यवहारः' यह उक्ति है? **(PGT-2016)**

(A) कण्व की (B) माधव्य की

(C) इन्द्र की (D) दुष्यन्त की

उत्तर- **(D)**

व्याख्या- अभिज्ञानशाकुन्तलम् में दुष्यन्त का कथन-

'अथवाऽनार्यः परदारव्यवहारः' (अभि.-7) परस्त्री के विषय में बात करना अशिष्टता है।

(i) **'स्रजमपि शिरस्यन्धः क्षिप्तां धुनोत्यहिशङ्कया'** (अभि॰-7/24) अन्धा आदमी शिर पर डाली हुई फूलों की माला को भी साँप समझकर फेंक देता है।

(ii) **'उदेति पूर्वं कुसुमं ततः फलं घनोदयः प्राक् तदनन्तरं पयः।'** पहले फूल आते हैं, फिर फल होते हैं। पहले बादल आते हैं, तत्पश्चात् वर्षा होती है। (अभि॰7/30)

(iii) **'कुसुममिव लोभनीयं यौवनमङ्गेषु सन्नद्धम्।'** (अभि॰1/21) अंगों में फूल की तरह मनोहर यौवन व्याप्त है।

(iv) **'न प्रभातरलं ज्योतिरुदेति वसुधातलात्'** (अभि॰1/26) कान्ति से देदीप्यमान् तेज (विद्युत्) भूतल से उत्पन्न नहीं होता है।

(v) **'कामी स्वतां पश्यति'** (अभि॰2/2) कामी व्यक्ति सर्वत्र अपनी ही बात देखता है।

(vi) **'ईदृग् विनोदः कुतः'** (अभि॰2/5) इतना मनोरंजन और कहाँ?

कण्व का कथन-

(i) **'सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम्'** यह शकुन्तला पतिगृह को जा रही है, तुम सब अपनी स्वीकृति दो। (अभि॰4/9)

(ii) **'अस्यामहं त्वयि च सम्प्रति वीतचिन्तः।'** अब मैं इसकी और तेरी ओर से निश्चिन्त हो गया हूँ। (अभि॰4/13)

(iii) **'वनौकसोऽपि सन्तो लौकिकज्ञा वयम्'** (अभि॰/4) वनवासी होते हुये भी हम लोग लौकिक व्यवहार को जानते हैं।

(iv) **'शिवास्ते पन्थानः सन्तु।'** (अभि॰4/21) तुम्हारा मार्ग मंगलमय हो।

(v) **'अर्थो हि कन्या परकीय एव'** (अभि॰4/22) कन्या वस्तुतः पराई सम्पत्ति है।

(vi) **'यान्त्येवं गृहिणीपदं युवतयो वामाः कुलस्याधयः।'** (अभि॰4/18) स्त्रियाँ गृहलक्ष्मी के पद पर अधिकृत होती हैं और इसके विपरीत चलने वाली कुल के लिए अभिशाप होती हैं।

माढव्य विदूषक का कथन-

(i) **'अरण्ये मया रुदितमासीत्।'** (अभि॰-अङ्क 2) मैंने अरण्य रोदन ही किया।

(ii) **'गण्डस्योपरि पिण्डकः संवृत्तः।'** (अभि॰ अङ्क 02) फोड़े पर फोड़ा हो गया है।

(iii) **'त्रिशङ्कुरिवान्तरा तिष्ठ'** (अभि॰-अङ्क 02) त्रिशङ्कु की तरह बीच में लटके रहिये।

(iv) **'भवितव्यता खलु बलवती'** (अभि॰-अङ्क 6) होनहार प्रबल होती है।

(v) **'कदापि सत्पुरुषाः शोकवास्तव्या न भवन्ति'** (अङ्क 6) सज्जन व्यक्ति कभी भी शोक के पात्र नहीं होते।

(vi) **'अवश्यमभाव्यचिन्तनीयः समागमो भवति'** (अङ्क-06) अवश्यंभावी मिलन अचानक ही होता है।

मातलि का कथन-

(i) **'अहो, उदाररमणीया पृथ्वी'** (अभि॰-7) अहो, यह पृथिवी कैसी विशाल मनोहर, दिख रही है।

(ii) **'उत्सर्पिणी खलु महतां प्रार्थना'** (अभि॰-7) महात्माओं की इच्छा सदा ऊर्ध्वगामिनी होती है।

(iii) **'अस्ति कालनेमिप्रसूतिर्दुर्जयो नाम दानवगणः।'** (अङ्क-07) कालनेमि के वंशज दुर्जय नामक राक्षसों का एक समुदाय है।

(iv) **'ज्वलति चलितेन्धनोऽग्निर्विप्रकृतः पन्नगः फणां कुरुते।'** (अभि॰7/31) अग्नि लकड़ियों को हिला देने से प्रज्वलित हो जाती है, साँप छेड़ने से फन को फैलाता है। इसी प्रकार मनुष्य भी प्रायः उत्तेजित होने पर अपने पराक्रम को प्राप्त होता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'अथवाऽनार्यः परदारव्यवहारः' यह उक्ति दुष्यन्त की है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत-अभिज्ञानशाकुन्तलम् (अङ्क-07)-कपिलदेव द्विवेदी,पेज 421

68. शकुन्तला की अँगूठी किस स्थान पर गिरी थी? **(PGT-2016)**

(A) सोमतीर्थ **(B) शचीतीर्थ**

(C) कण्वाश्रम **(D) प्रभासतीर्थ** **उत्तर- (B)**

व्याख्या- कालिदास विरचित अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के प्रथम अङ्क में वैखानस द्वारा कण्व के सोमतीर्थ जाने के विषय में दुष्यन्त को बताया जा रहा है-

वैखानस-

इदानीमेव दुहितरं शकुन्तलामतिथिसत्काराय
नियुज्य दैवमस्याः प्रतिकूलं शमयितुं सोमतीर्थं गतः॥

तापस- (कण्व) अभी अपनी पुत्री शकुन्तला को अतिथि-सत्कार के कार्य में नियुक्त करके उसके प्रतिकूल भाग्य को शान्त करने के लिए सोमतीर्थ गए हैं।

⇒ **शचीतीर्थ-** गौतमी- नूनं ते शक्रावताराभ्यन्तरे शचीतीर्थसलिलं वन्दनायाः प्रभ्रष्टमङ्गुलीयकम्।

अवश्य ही शक्रावतार तीर्थ में शचीतीर्थ के जल की वन्दना करते समय तेरी (शकुन्तला की) अंगूठी गिर गई है।

⇒ **कण्वाश्रम-** एष खलु कण्वस्य कुलपतेरनुमालिनीतीरमाश्रमो दृश्यते।

वैखानस कहता है राजा दुष्यन्त से- यह सामने मालिनी नदी के किनारे कुलपति कण्व का आश्रम दिखाई पड़ रहा है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि शकुन्तला की अँगूठी शचीतीर्थ में गिर गयी थी। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज 283

69. 'मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति' **(PGT-2016)**
यहाँ पर 'लक्ष्म' और 'लक्ष्मी' का अर्थ है?
(A) लक्ष्म और लक्ष्मी देवी (B) लाक्षा और विष्णुपत्नी
(C) चिह्न और शोभा (D) अमृत और छवि **उत्तर- (C)**

व्याख्या- महाकवि कालिदास जी द्वारा रचित अभिज्ञानशाकुन्तल नामक नाटक के प्रथमोऽङ्क में यह श्लोक उद्धृत है-

सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यं,
मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति।
इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी,
किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाऽऽकृतीनाम्॥ (अभि0-1/20)

राजा दुष्यन्त-शकुन्तला के विषय में कहता है- कमल का पुष्प यदि शैवाल से भी युक्त हो, तो भी रमणीय व सुन्दर ही लगता है। जैसा चन्द्रमा का कलङ्क मलिन होते हुए भी चन्द्रमा की शोभा को बढ़ाता ही है। इसी प्रकार यह कोमलाङ्गी बाला भी इस वल्कलवस्त्र से अधिक सुन्दर मालूम होती है। ठीक ही है, सुन्दर और मनोहर आकृति वालों के लिये कौन वस्तु शोभादायक नहीं होती? अर्थात् सुन्दर आकृतियों के शरीर पर साधारण सी वस्तु भी अलङ्कार के तुल्य ही मालूम होती है।

शब्दार्थ

सरसिजम् - कमलम् ,रम्यम् - मनोहारि

लक्ष्म - कलङ्क, हिमांशोः - चन्द्रस्य

लक्ष्मीं - शोभाम्, इयं तन्वी - शकुन्तला

मनोज्ञा- मनोहारिणी,मण्डनम् - भूषण

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि लक्ष्म अर्थात् चिह्न और लक्ष्मी का अर्थ 'शोभा' है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्त्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/20) कपिलदेव द्विवेदी, पेज-46-47

70. 'अग्निगर्भां शमीमिव' यह उपमा दी गयी है- **(PGT-2016)**
(A) शकुन्तला की (B) गौतमी की
(C) प्रियंवदा की (D) अनसूया की **उत्तर- (A)**

व्याख्या- महाकवि कालिदास प्रणीत अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में शकुन्तला की उपमा 'अग्निगर्भां शमीमिव' से दी गई है। (कण्व की बात) प्रियंवदा कहती है अनसूया से-

➢ **दुष्यन्तेनाहितं तेजो दधानां भूतये भुवः।**
अवेहि तनयां ब्रह्मन्नग्निगर्भां शमीमिव॥ (4/4)
हे ब्रह्मन्, दुष्यन्त के द्वारा स्थापित तेज को पृथ्वी के कल्याण के लिए धारण करने वाली (अपनी) पुत्री को छिपी हुई अग्नि से युक्त शमीवृक्ष के तुल्य समझो।
शकुन्तला के लिए प्रसिद्ध उपमायें

➢ **ध्रुवं स नीलोत्पलपत्रधारया**
शमीलतां छेत्तुमृषिर्व्यवस्यति॥ (1/18)
वह अवश्य ही नीलकमल के पत्ते की धार से शमी की लता को काटने का यत्न करता है।

➢ **किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्।** (1/20)
क्योंकि सुन्दर आकृतियों के लिए क्या वस्तु अलङ्कार नहीं होती।

➢ यथा वनज्योत्स्नाऽनुरूपेण पादपेन संगता, अपि नामैवम-हमप्यात्मनोऽनुरूपं वरं लभेयेति।
जिस प्रकार वनज्योत्स्ना अपने अनुरूप वृक्ष से मिल गई है, क्या मैं भी अपने अनुरूप वर को पाऊँगी?

➢ **प्रियवंदा- सागरमुज्झित्वा कुत्र वा महानद्यवतरति।**
बड़ी नदी समुद्र को छोड़कर और कहाँ उतरती है? (अभि.अङ्क.-3)
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'अग्निगर्भां शमीमिव' यह उपमा शकुन्तला के लिए दी गई है। **अतः विकल्प A सही है।**

स्त्रोत - अभिज्ञानशाकुन्तलम् - (4/4)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 498

71. 'अतः परीक्ष्य कर्तव्यं विशेषात् संङ्गतं रहः' यह उक्ति है? **(PGT-2016)**
(A) कण्व **(B) मारीच**
(C) दुष्यन्त **(D) शार्ङ्गरव** **उत्तर- (D)**

व्याख्या- महाभारत के आदिपर्व में शृंगाररस प्रधान, सप्त अंक समन्वित, वैदर्भी शैली के कवि कालिदास विरचित अभिज्ञानशाकुन्तलम् एक अद्वितीय नाट्यकृति है।

* अभिज्ञानशाकुन्तलम् के पञ्चम अंक के चौबीसहवें श्लोक में कण्व-शिष्य शार्ङ्गरव, शकुन्तला द्वारा किए गए गान्धर्व विवाह के विषय में अपने विचार प्रकट करते हैं-

➢ **अतः परीक्ष्य कर्तव्यं विशेषात् संगतं रहः।**
अज्ञातहृदयेष्वेव वैरीभवति सौहृदम्॥
अर्थात् किसी भी प्रकार की मित्रता परीक्षा करके ही करनी चाहिए। जैसे- गुप्त मैत्री गुप्त विवाह सम्बन्ध गान्धर्व विवाह आदि विशेष रूप से परीक्षा करके ही करना चाहिए।

➢ आश्रम के कुलाधिपति ऋषि कण्व धर्मपुत्री शकुन्तला को लौकिक व्यवहार का ज्ञान देते हुए कहते हैं-
शुश्रूषस्व गुरून् कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीजने, भर्तुर्विप्रकृतापि रोषणतया मा स्म प्रतीपं गमः। (अभि.4.)

➢ द्वितीय अंक में राजा दुष्यन्त आत्मगत विचार से परिचय कराते हैं-
अकृतार्थेऽपि मनसिजे रतिमुभयप्रार्थना कुरुते॥ (अभि.2.)

➢ सप्तम अंक में ऋषि मातलि माननीय कण्व के प्रति यह शुभ समाचार प्रेषित करते हैं-
पुत्रवती शकुन्तला तच्छापनिवृत्तौ
स्मृतिमता दुष्यन्तेन प्रतिगृहीता इति।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि 'अतः परीक्ष्य कर्तव्यं विशेषात् संगतं रहः' यह उक्ति शार्ङ्गरव की है।

अतः विकल्प 'D' सही है।

स्रोत - अभिज्ञानशाकुन्तलम् (5/24)- कपिलदेव द्विवेदी, पेज 291

72. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में दुष्यन्त की मनःस्थिति जानने के लिए मेनका ने अपनी किस सखी को भेजा था? **(PGT-2016)**

(A) सानुमती **(B) उर्वशी**
(C) रम्भा **(D) तिलोत्तमा**

उत्तर- (A)

व्याख्या- महाकवि कालिदास द्वारा प्रणीत सप्ताङ्कों वाला सर्वश्रेष्ठ नाटक अभिज्ञानशाकुन्तलम् के षष्ठ अङ्क में मेनका अपनी सखी सानुमती को दुष्यन्त की मनःस्थिति को जानने के लिए भेजती है-

* **ततः प्रविशत्याकाशयानेन सानुमती नामाप्सराः।**
तदनन्तर विमान से सानुमती नामक अप्सरा का प्रवेश।

* **मेनकासम्बन्धेन शरीरभूता मे शकुन्तला।**
तया च दुहितृनिमित्तमादिष्टपूर्वाऽस्मि।
.....अनयोरेवोद्यानपालिकयोस्तिरस्करिणीप्रतिच्छिन्ना पार्श्ववर्तिनी भूत्वोपलप्स्ये।
मेनका से उसका (शकुन्तला) का सम्बन्ध होने के कारण शकुन्तला मेरे शरीर के एक भाग के तुल्य है और उसने अपनी पुत्री के लिए मुझसे पहले से कहा हुआ है (कि मैं उसके लिए कुछ करूँ) क्या बात है कि वसन्त ऋतु का उत्सव उपस्थित होने पर भी राजपरिवार में उत्सव का प्रारम्भ दिखाई नहीं पड़ रहा है। मुझे अपनी सखी की प्रार्थना का आदर करना चाहिए।

* **सानुमती के कथन-** उत्सवप्रियाः खलु मनुष्याः।
मनुष्य उत्सवप्रिय होते हैं।
स्थाने खलु प्रत्यादेशविमानिताऽप्यस्य कृते शकुन्तला क्लाम्यतीति।
(राजा को देखकर) परित्याग के द्वारा अपमानित भी शकुन्तला इसके लिए दुःखित रहती है, यह उचित ही है।

* **सानुमती - लतासंश्रिता द्रक्ष्यामि तावत् सख्याः प्रतिकृतिम्।**
ततोऽस्या भर्तुर्बहुमुखमनुरागं निवेदयिष्यामि॥
मैं लता का सहारा लेकर अपनी सखी का चित्र देखती हूँ तत्पश्चात् उसके पति के विविध प्रकार से प्रकट हुए प्रेम को उसे बताऊँगी।

* **सानुमती- अहो, ईदृशी स्वकार्यपरता। अस्य सन्तापेनाहं रमे।**
 ओह अपने स्वार्थ के प्रति प्रेम ऐसा ही होता है कि मैं उसके (दुष्यन्त) दुःख से प्रसन्न हो रही हूँ।
* **सानुमती - सम्मोहः खलु विस्मयनीयो न प्रतिबोधः।**
 (इस राजा का शकुन्तला को) भूलना ही आश्चर्य की बात है, स्मरण करना नहीं।
* **सानुमती- यद्यन्यहस्तगतं भवेत् सत्यमेव शोचनीयं भवेत्।**
 यदि यह किसी और के हाथ पड़ जाती तो वस्तुतः शोक की बात हो जाती।
* **सानुमती- रमणीयः खल्ववधिर्विधिना विसंवादितः।**
 यह बहुत सुन्दर अवधि थी परन्तु भाग्य ने इसे बिगाड़ दिया।
* **सानुमती- अत एव तपस्विन्याः शकुन्तलाया अधर्मभीरोरस्य राजर्षेः परिणये सन्देह आसीत् । अथवेदृशोऽनुरागोऽभिज्ञानमपेक्षते। कथमिवैतत्?**
 इस अधर्म भीरु राजर्षि को बेचारी शकुन्तला के साथ विवाह के विषय में सन्देह हो गया था। अथवा, इस प्रकार का प्रेम अभिज्ञान की अपेक्षा करता है, यह कहाँ तक ठीक है?
* **सानुमती- सदृशमेतत् पश्चात्तापगुरोः स्नेहस्यानवलेपस्य च।**
 पश्चात्ताप के कारण बढ़े हुए स्नेह और निरभिमान के योग्य ही यह वक्तव्य है।
 स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि अभिज्ञानशाकुन्तलम्
 में दुष्यन्त की मनःस्थिति जानने के लिए मेनका ने सानुमती को भेजा था। **अतः विकल्प A सही है।**
 स्रोत - अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज 318

73. 'भवितव्यानां द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र'- यह सूक्ति उद्धृत है- **(PGT-2016)**
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से (B) नलचम्पू से
(C) कादम्बरी से (D) शिशुपालवधम् से **उत्तर- (A)**

व्याख्या- कालिदास विरचित अभिज्ञानशाकुन्तलम् के प्रथम अंक में राजा दुष्यन्त की दाहिनी भुजा का फड़कना सुन्दर स्त्री की प्राप्ति का सूचक माना गया है दुष्यन्त का विचार है कि वन में इसकी प्राप्ति कैसे सम्भव है? अथवा भावी (होनहार) घटनाओं के लिए सर्वत्र ही द्वार (मार्ग) हो जाते हैं। यथा-
शान्तमिदमाश्रमपदं स्फुरति च बाहुः कुतः फलमिहास्य
अथवा भवितव्यानां द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र॥ (1/16।।)

⇒ माघकृत शिशुपालवध के प्रथम अंक में नारदमुनि के आगमन पर श्रीकृष्ण द्वारा उनका स्वागत करते हुए कहा गया है- महात्मा लोग अपुण्य आत्माओं के घर पर प्रेम से आना नहीं चाहते। **यथा- 'गृहानुपैतुं प्रणयादभीप्सवो भवन्ति नापुण्यकृतां मनीषिणः'।- 1/14**

⇒ **कादम्बरी (शुकनासोपदेश)** में शुकनास युवराज चन्द्रापीड को युवावस्था में उत्पन्न होने वाला (अज्ञानरूप) अन्धकार से सावधान रहने की शिक्षा दी है। यथा-

'अतिगहनं तपो यौवनप्रभवम्'

⇒ त्रिविक्रमभट्ट कृत नलचम्पू में बताया गया है कि काव्य और बाण को मर्मस्पर्शी होना चाहिए-

किं कवेस्तेन काव्येन किं काण्डेन धनुष्मतः।
परस्य हृदये लग्नं न घूर्णयति यच्छिरः॥1/5॥

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि **'भवितव्यानां द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र'** यह सूक्ति अभिज्ञानशाकुन्तलम् की है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत - अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/16)- कपिलदेव, पेज 38

74. ''अनाघ्रातं पुष्पं किसलयमलूनं कररुहैः''-यह उक्ति है- **(PGT-2016)**
(A) शकुन्तला की **(B) दुष्यन्त की**
(C) विदूषक की **(D) प्रियंवदा की** उत्तर- **(B)**

व्याख्या- महाकवि कालिदास विरचित 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के द्वितीय अंक में राजा दुष्यन्त शकुन्तला के विषय में अपना विचार व्यक्त करते हैं-

अनाघ्रातं पुष्पं किसलयमलूनं कररुहै-
रनाविद्धं रत्नं मधुनवमनास्वादितरसम्।
अखण्डं पुण्यानां फलमिव च तद्रूपमनघं,
न जाने भोक्तारं कमिह समुपस्थास्यति विधिः॥ (2/10)

अर्थात् अनाघ्रात, अलून, अनाविद्ध इत्यादि गुणों से युक्त शकुन्तला दुष्यन्त को प्रतीत होती है।

⇒ द्वितीय अंक का प्रारम्भ विदूषक के कथन से होता है। दुर्भाग्य से विदूषक शिकार के व्यसनी राजा की मित्रता से खिन्न हो गया है। यथा **('भोः दिष्टम्! एतस्य मृगयाशीलस्य राज्ञो वयस्यभावेन निर्विण्णोऽस्मि'।)**

⇒ तृतीय अंक में प्रियंवदा अपनी सखी अनसूया से शकुन्तला के विषय में वार्ता करती है कि शकुन्तला की आसक्ति पुरुवंशियों में श्रेष्ठ दुष्यन्त पर है। बड़ी नदी समुद्र को छोड़कर और कहाँ उतरती हैं- यथा- **'सागरमुज्झित्वा कुत्र वा महानद्यवतरति'।**

⇒ कालिदास रचित अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में शकुन्तला का कथन है- **हला, पश्य। नलिनी पत्रान्तरितमपि सहचरमपश्यन्त्यातुरा चक्रवाक्यारटति, दुष्करमहं करोमीति।**

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि **'अनाघ्रातं पुष्पं किसलयमलूनं कररुहैः'** यह उक्ति दुष्यन्त की शकुन्तला के प्रति है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत - अभिज्ञानशाकुन्तलम् (2/10)-कपिलदेव, पेज 115

75. ''तेजोद्वयस्य युगपद्व्यसनोदयाभ्यां लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु''–यह किस पात्र का कथन है? **(TGT-1999)**
(A) काश्यप **(B) कण्वशिष्य**
(C) अनसूया **(D) प्रियंवदा** उत्तर- **(B)**

व्याख्या-

A. 'ययातेरिव शर्मिष्ठा भर्तुर्बहुमता भव – काश्यप की उक्ति है।

B. 'तेजोद्वयस्य युगपद्व्यसनोदयाभ्यां लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु' (अभि.शा. 4/2) – प्रस्तुत सूक्ति में कण्व का शिष्य कहता है कि– संसार दो तेजों (सूर्य, चन्द्रमा) का एक साथ अस्त एवं उदित होने से अपनी अवस्थाओं के परिवर्तन से मानों लोक को नियन्त्रित कर रहा है।

C. 'काम इदानीं सकामो भवतु'– अनसूया का कथन

D. 'एष दुर्वासाः सुलभकोपो महर्षिः'– प्रियंवदा का कथन **अतः विकल्प `B' सही है।**

76. ''उद्गलितदर्भकवला मृग्यः परित्यक्तनर्तना मयूराः अपसृतपाण्डुपत्रा मुञ्चन्त्यश्रूणीव लताः।'' **(TGT-1999)**

उपर्युक्त पद्य किस पात्र द्वारा कहा गया है?

(A) काश्यप द्वारा **(B) अनसूया द्वारा**

(C) प्रियंवदा द्वारा **(D) गौतमी द्वारा** उत्तर- **(C)**

व्याख्या-

A. ''मम विरहजां न त्वं वत्से शुचं गणयिष्यसि'' कण्व का कथन है।

B. 'रक्षितव्या खलु प्रकृतिपेलवा प्रियसखी'–अनसूया का कथन।

C. ''उद्गलितदर्भकवला.....मुञ्चन्त्यश्रूणीव लताः'' (अभि. 4/12) प्रस्तुत पद्य में शकुन्तला के विदाई के समय प्रियंवदा कहती है–शकुन्तला के जाने के वियोग में हरिणियों ने कुश के ग्रास को उगल दिया है, मयूरों ने नाचना छोड़ दिया है।

D. 'वरः खल्वेषः नाशीः'–गौतमी का कथन है **अतः विकल्प `C' सही है।**

77. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में ययाति के किस पुत्र का नाम उल्लिखित है? **(TGT-1999)**

(A) यदु **(B) तुर्वशु**

(C) पुरु **(D) द्रुध्यु** उत्तर- **(C)**

व्याख्या-

* ''ययातेरिव शर्मिष्ठा भर्त्तुर्बहुमता भव। सुतं त्वमपि सम्राजं सेव **पूरुमवाप्नुहि**।।'' अभि.शा. (4/7)
* प्रस्तुत श्लोक से यह ज्ञात होता है कि– ययाति के पुत्र का नाम पुरु था। पुरु की माता शर्मिष्ठा थीं।
* राजा दुष्यन्त भी पुरुवंशीय क्षत्रिय थे। **अतः विकल्प `C' सही है।**

78. शकुन्तला से 'भर्तुर्बहुमता भव' यह वाक्य किसने कहा है? **(TGT-1999)**

(A) काश्यप ने **(B) एक तापसी ने**

(C) गौतमी ने **(D) प्रियंवदा ने** उत्तर- **(B)**

व्याख्या-

(A) ''सुतं त्वमपि सम्राजं सेव पूरुमवाप्नुहि''–कण्व, शकुन्तला के लिए कहते हैं।

(B) ''भर्तुर्बहुमता भव''–कण्वाश्रम की एक तापसी, शकुन्तला को आशीर्वाद देते हुए कहती है कि– 'पति द्वारा बहुत सम्मान वाली हो।'

(C) ''वरः खल्वेषः नाशीः''–गौतमी, शकुन्तला के लिए कहती है।

(D) ''भर्तुर्गेहेऽनुभवितव्या राजलक्ष्मीः''–प्रियंवदा, शकुन्तला के लिए कहती है।

उपर्युक्त सभी कथन अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क से उद्धृत है।

अतः विकल्प `B' सही है।

79. ''को नामोष्णोदकेन नवमालिकां सिञ्चति''– (TGT-1999)

यह वाक्य किस ग्रन्थ में आया है?

(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में

(B) मेघदूतम् में

(C) किरातार्जुनीयम् में

(D) अभिज्ञानशाकुन्तलम् चतुर्थ अङ्क के चौथे श्लोक में **उत्तर- (A)**

व्याख्या-

(A) ''को नामोष्णोदकेन नवमालिकां सिञ्चति''– अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में प्रियंवदा अनसूया से शकुन्तला के विषय में कहती है कि–भला कौन नवमालिका (चमेली) को गर्म जल से सींचता है।

(B) ''चूडापाशे नवकुरबकं चारु कर्णे शिरीषम्''–मेघदूतम् में

(C) ''शमीतरुं शुष्कमिवाग्निरुच्छिखः''–किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग में द्रौपदी युधिष्ठिर से कहती है।

(D) ''अवेहि तनयां ब्रह्मन्नग्निगर्भां शमीमिव''–(अभिज्ञान-शाकुन्तलम् के 4/4 श्लोक में) आकाशवाणी के माध्यम से यह श्लोक कण्व को सुनायी पड़ता है।

अतः विकल्प 'A' सही है।

80. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में 'अभिज्ञान' (TGT-1999)

शब्द से किसका बोध होता है?

(A) नथुनी **(B) पायल**

(C) अँगूठी **(D) लॉकेट** **उत्तर- (C)**

व्याख्या-

'तेन राजर्षिणा सम्प्रस्थितेन स्वनामधेयाङ्कितमङ्गुलीयकं स्मरणीयमिति स्वयं पिनद्धम्'– (अभि.शाकु., अङ्क-4) अनसूया के इस कथन से यह ज्ञात होता है कि अभिज्ञान-शाकुन्तलम् में 'अभिज्ञान' का तात्पर्य ''अँगूठी'' से है।

	शब्द	अर्थ
(A)	नासाभरणम् (नपु.)	नथुनी
(B)	नूपुरम् (नपु.)	पायल
(C)	अङ्गुलीयकम् (नपु.)	अँगूठी
(D)	कण्ठभूषा (स्त्री.)	लॉकेट

अतः विकल्प (C) सही है।

81. शकुन्तला की सखी कौन थी? **(TGT-1999)**

(A) गौतमी **(B) मालविका**

(C) उर्वशी **(D) अनसूया और प्रियंवदा**

उत्तर- (D)

व्याख्या-

(A) गौतमी, कण्वाश्रम की अध्यक्षा है।

(B) मालविका, कालिदास कृत मालविकाग्निमित्रम् की नायिका है।

(C) उर्वशी, कालिदासकृत विक्रमोर्वशीयम् की नायिका है।

(D) अनसूया और प्रियंवदा शकुन्तला की सखियाँ हैं।

अतः विकल्प (D) सही है।

82. शकुन्तला के साथ राजदरबार तक कौन गयी थी? **TGT-2001, 2004**

(A) गौतमी **(B) मेनका**

(C) अनसूया **(D) प्रियंवदा**

उत्तर- (A)

व्याख्या-

(A) ''त्वया सह गौतमी यास्यति'' – कण्व के इस कथन से ज्ञात होता है कि शकुन्तला के साथ गौतमी दुष्यन्त के राजदरबार हस्तिनापुर तक जाती है।

* गौतमी के साथ शार्ङ्गरव एवं शारद्वत भी हस्तिनापुर जाते हैं।

(B) मेनका – एक अप्सरा है, जो विश्वामित्र की पत्नी एवं शकुन्तला की जन्मदात्री माता है।

(C) + (D) अनसूया एवं प्रियंवदा, शकुन्तला के साथ हस्तिनापुर नही जाती हैं। ''न युक्तमनयोस्तत्र गन्तुम्'' **अतः विकल्प (A) सही है।**

83. अभिज्ञानशाकुन्तलम् का विदूषक कौन है? **(TGT-2001, 2004)**

(A) माढव्य **(B) मैत्रेय**

(C) वसन्तक **(D) माणवक**

उत्तर- (A)

व्याख्या-

(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् – माढव्य (B) मृच्छकटिकम् – मैत्रेय

(C) रत्नावली – वसन्तक (D) विक्रमोर्वशीयम् – माणवक

अतः विकल्प (A) सही है।

84. किसके आग्रह पर शकुन्तला के प्रति दुर्वासा के शाप में लघुता आयी– **(TGT-2001)**

(A) अनसूया **(B) प्रियंवदा**
(C) कण्व **(D) गौतमी**

उत्तर- (B)

व्याख्या-

(A) ''गच्छ पादयोः प्रणम्य निवर्तयैनम्'' – अनसूया, प्रियंवदा को दुर्वासा ऋषि को मनाने के लिए भेजती है।

(B) ''प्रकृतिवक्रः स कस्यानुनयं प्रतिगृह्णाति! किमपि पुनः सानुक्रोशः कृतः'' प्रियंवदा कहती है कि– स्वभाव से टेढ़े वह (दुर्वासा) भला किसकी प्रार्थना को स्वीकार करते हैं, फिर भी मैंने कुछ दयायुक्त कर लिया है। अर्थात् प्रियंवदा के आग्रह से शाप में कमी आयी। **अतः विकल्प (B) सही है।**

(C) कण्व, दुर्वासा ऋषि के आगमन के समय सोमनाथ तीर्थ गये थे।

(D) गौतमी को इस बात की जानकारी नहीं थी कि ऋषि दुर्वासा आश्रम में आये हैं।

85. 'कथां प्रमत्तः प्रथमं कृतामिव' – यह श्लोकांश है? **(TGT-2001)**

(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में **(B) शुकनासोपदेश में**
(C) शिवराजविजयम् में **(D) मेघदूतम् में**

उत्तर- (A)

व्याख्या-

(A) ''कथां प्रमत्तः प्रथमं कृतामिव'' (अभिज्ञानशाकुन्तलम् 4/1) – ऋषि दुर्वासा नेपथ्य में शकुन्तला को शाप देते हुए कहते हैं कि 'याद दिलाये जाने पर भी वह (दुष्यन्त) तुमको याद नहीं करेगा। जैसे कोई प्रमत्त व्यक्ति पूर्व में किये गये कार्यों को स्मरण नहीं करता।

(B) ''कल्याणाभिनिवेशो लक्ष्मीमेव प्रथमम्''–(शुकनासोपदेश)

(C) ''अरुण एष प्रकाशः पूर्वस्यां भगवतो मरीचिमालिनः'' (शिवराजविजयम्)

(D) ''आषाढस्य प्रथमदिवसे मेघमाश्लिष्टसानुम्'' – (मेघदूतम्)

अतः विकल्प (A) सही है।

86. 'पीड्यन्ते गृहिणः कथं नु तनया विश्लेषदुःखैर्नवैः'– यह उक्ति किसकी है – **(TGT-2001)**

(A) प्रियंवदा की **(B) अनसूया की**
(C) गौतमी की **(D) कण्व की**

उत्तर- (D)

व्याख्या-

(A) 'एते खलु हस्तिनापुरगामिन ऋषयः शब्दायन्ते' – प्रियंवदा

(B) 'यद्यपि गान्धर्वेण विधिना निवृत्तकल्याणा शकुन्तला....' – अनसूया

(C) 'वरः खल्वेषः नाशीः' – गौतमी

(D) 'पीड्यन्ते गृहिणः कथं नु तनया विश्लेषदुःखैर्नवैः' –
प्रस्तुतपद्य में कण्व, शकुन्तला की विदाई के समय कहते हैं कि – जंगल में रहने वाले मेरी भी स्नेह के कारण ऐसी व्याकुलता है तो गृहस्थ लोग पुत्री के वियोग के दुःख में कितना अधिक दुःखी होते होंगे। (अभि. 4/6) **अतः विकल्प (D) सही है।**

87. ''सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं............'' **(TGT-2001)**

रिक्तस्थान की पूर्ति करें –

(A) सर्वैरनुज्ञायताम् **(B) नादत्ते**

(C) अनुमतगमना **(D) स्नेहेन**

उत्तर- (A)

व्याख्या-

(A) 'सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम्' (अभि. 4/9) – कण्व

(B) 'नादत्ते प्रियमण्डनाऽपि भवताम्' – कण्व

(C) 'अनुमतगमना शकुन्तला तरुभिरियं वनवासबन्धुभिः'–कण्व

(D) 'नादत्ते प्रियमण्डनापि भवतां स्नेहेन या पल्लवम्'–कण्व

अतः विकल्प (A) सही है।

88. ''अर्थो हि कन्या परकीय एव'' – **(TGT-2001)**

किसके लिए कहा गया है?

(A) शकुन्तला के लिए **(B) प्रियंवदा के लिए**

(C) अनसूया के लिए **(D) गौतमी के लिए**

उत्तर- (A)

व्याख्या-

(A) 'अर्थो हि कन्या परकीय एव' (अभि. 4/22)– कण्व **शकुन्तला के लिए** कहते हैं कि – ''कन्या वस्तुतः दूसरे का ही धन है''

(B) + (C) ''निगृह्यशोकमनुगच्छतं मां प्रस्थितम्'' – कण्व, अनसूया प्रियंवदा के लिए कहते हैं।

(D) 'कथं वा गौतमी मन्यते' – कण्व गौतमी से कहते हैं।

अतः विकल्प (A) सही है।

89. 'तन्माऽतिमात्रं मम कृत उत्कण्ठस्व' – **(TGT-2001)**

यह कथन किसका है?

(A) काश्यप का **(B) शकुन्तला का**

(C) प्रियंवदा का **(D) अनसूया का**

उत्तर- (B)

(A) 'मम विरहजां न त्वं वत्से शुचं गणयिष्यसि' – काश्यप

(B) 'तन्माऽतिमात्रं मम कृत उत्कण्ठस्व' – शकुन्तला कण्व से कहती है कि मेरे लिए आप अत्यधिक दुःखी मत होइए।

(C) 'को नामोष्णोदकेन नवमालिकां सिञ्चति' – प्रियंवदा

(D) 'काम इदानीं सकामो भवतु' – अनसूया **अतः विकल्प (B) सही है।**

90. अनसूया और प्रियंवदा हैं – **(TGT-2003)**

(A) शकुन्तला की सखियाँ **(B) दुष्यन्त की रानियाँ**

(C) कण्व आश्रम की अध्यक्षा **(D) इनमें से कोई नहीं**

उत्तर- (A)

व्याख्या –

(A) अनसूया और प्रियंवदा शकुन्तला की सखियाँ हैं। अनसूया गम्भीर प्रकृति की है। प्रियंवदा हास्यप्रकृति की है। **अतः विकल्प (A) सही है।**

(B) हंसपदिका और वसुमती राजा दुष्यन्त की रानियाँ हैं। इनमें प्रथम रानी हंसपदिका है।

(C) गौतमी कण्व आश्रम की अध्यक्षा है।

91. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' नाटक में वर्णित गौतमी हैं? **(TGT-2003)**

(A) दुष्यन्त की परिचारिका

(B) कण्व आश्रम की अध्यक्षा

(C) मारीच आश्रम की तपस्विनी

(D) एक अप्सरा

उत्तर- (B)

व्याख्या-

(A) मधुकरिका – दुष्यन्त की परिचारिका है।

(B) गौतमी – कण्व आश्रम की अध्यक्षा हैं।

(C) सुव्रता – मारीच के आश्रम की एक तपस्विनी स्त्री

(D) मेनका – एक अप्सरा (शकुन्तला की माता) **अतः विकल्प (B) सही है।**

92. दुष्यन्त के साथ शकुन्तला का विवाह सम्पन्न होने पर उसकी सखियाँ हो जाती हैं? **(TGT-2003)**

(A) प्रसन्न **(B) चिन्तित**

(C) क्रोधित **(D) ईर्ष्याग्रस्त**

उत्तर- (A)

व्याख्या – 'शकुन्तलाऽनुरूपभर्तृगामिनी संवृत्तेति निर्वृतं मे हृदयम्' – अनसूया चतुर्थ अङ्क के आरम्भ में कहती है कि – शकुन्तला अपने योग्य पति को पा गयी है, इसलिए मेरा हृदय सुखी (प्रसन्न) है। **अतः विकल्प (A) सही है।**

93. ''तपोधनं वेत्सि न मामुपस्थितम्'' – यहाँ 'तपोधन' शब्द प्रयुक्त हुआ है? **(TGT-2003)**

(A) कण्व के लिए **(B) दुष्यन्त के लिए**

(C) दुर्वासा के लिए **(D)जंगल के लिए**

उत्तर- (C)

व्याख्या – * प्रस्तुत पद्य में 'तपोधन' शब्द का प्रयोग ऋषि दुर्वासा के लिए प्रयुक्त है। (अभिज्ञान. 4/1)

* कण्व के लिए 'काश्यप' तथा दुष्यन्त के लिए 'पौरव' शब्द का प्रयोग अभिज्ञानशाकुन्तलम् में हुआ है। **अतः विकल्प (C) सही है।**

94. ''गच्छ, पादयोः प्रणम्य निवर्तयैनं'' – यह कथन है? **(TGT-2003)**

(A) अनसूया का प्रियंवदा के प्रति
(B) प्रियंवदा का अनसूया के प्रति
(C) शकुन्तला का अनसूया के प्रति
(D) अनसूया का शकुन्तला के प्रति **उत्तर- (A)**

व्याख्या – गच्छ, पादयोः प्रणम्य निवर्तयैनं – अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में अनसूया, प्रियंवदा से कहती है कि–जाओ (दुर्वासा) के चरणों में प्रणाम करके इन्हें लौटा लाओ। **अतः विकल्प (A) सही है।**

95. शकुन्तला की शापमुक्ति का कारण है? **(TGT-2003)**

(A) मोतियों की माला **(B) कङ्गन**
(C) बाजूबन्द **(D) अँगूठी** **उत्तर- (D)**

व्याख्या – * ''ततो न मे वचनमन्यथाभवितुमर्हति, किन्त्वभिज्ञानाभरणदर्शनेन शापो निवर्तिष्यत'' अर्थात् – मेरा वचन अन्यथा नहीं हो सकता किन्तु पहचान (अभिज्ञान) के आभूषण (अँगूठी) को दिखलाने से शाप समाप्त हो जायेगा।
* अनसूया कहती है– 'अस्ति तेन राजर्षिणा संप्रस्थितेन स्वनामधेयाङ्कितम् अङ्गुलीयकम्.......''**अतः विकल्प (D) सही है।**

96. अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक में गौतमी है? **(TGT-2003)**

(A) शकुन्तला की सखी **(B) तपोवन की अध्यक्षा**
(C) अप्सरा **(D) दुष्यन्त की प्रतीहारी** **उत्तर- (B)**

(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक में अनसूया और प्रियंवदा शकुन्तला की सखियाँ हैं।
(B) गौतमी तपोवन (कण्वाश्रम) की अध्यक्षा हैं।
(C) मेनका, सानुमती–अप्सरा हैं।
(D) वेत्रवती, दुष्यन्त की प्रतीहारी है। **अतः विकल्प `B' सही है।**

97. राजा दुष्यन्त शकुन्तला को पहचान सकते हैं, जब वे देखेंगे? **(TGT-2004)**

(A) कुण्डल **(B) हार**
(C) अँगूठी **(D) केयूर** **उत्तर- (C)**

व्याख्या–'अभिज्ञानाभरणदर्शनेन शापो निवर्तिष्यत' दुर्वासा के इस कथन से ज्ञात होता है कि जब राजा दुष्यन्त पहचान का आभूषण (अँगूठी) देखेंगे, तब शकुन्तला को पहचान सकेंगे। **अतः विकल्प `C' सही है।**

98. 'सुलभकोपो महर्षिः' हैं? **(TGT-2004)**

(A) कण्व **(B) दुर्वासा**
(C) दुष्यन्त **(D) शकुन्तला** **उत्तर- (B)**

व्याख्या-

(A) कण्व नैष्ठिक ब्रह्मचारी हैं।

(B) दुर्वासा सुलभकोप महर्षि हैं। प्रियंवदा– 'एष दुर्वासाः सुलभकोपो महर्षिः' – (अभि० शाकु० अङ्क-4)

(C) दुष्यन्त पुरुवंशी राजा तथा हस्तिनापुर के सम्राट् हैं।

(D) शकुन्तला अतिथिपरिभाविनी है। जो कण्व की पालिता पुत्री और विश्वामित्र मेनका की जन्मना पुत्री है। **अतः विकल्प `B' सही है।**

99. शकुन्तला को विदाई का सन्देश दिया? **(TGT-2004)**

(A) कण्व ने **(B) दुर्वासा ने**

(C) तपोवन के वृक्षों ने **(D) मृगों ने** **उत्तर- (A)**

व्याख्या-

(A) 'शुश्रूषस्व गुरून् कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीजने' इस श्लोक के माध्यम से कण्व, ससुराल जाती हुई शकुन्तला को उपदेश देते हैं। (अभिज्ञान 4/18)

(B) 'स्मरिष्यति त्वां न स बोधितोऽपि सन्, कथां प्रमत्तः प्रथमं कृतामिव''(अभि० 4/1) प्रस्तुत श्लोक में दुर्वासा कुटिया के पास बैठी हुई शकुन्तला को शाप देते हैं।

(C) ''अनुमतगमना शकुन्तला तरुभिरियं वनवासबन्धुभिः'' (अभि० 4/10) इस श्लोक से यह ज्ञात होता है कि तपोवन के वृक्षों के द्वारा शकुन्तला को पतिगृह जाने की अनुमति प्राप्त हुई।

(D) 'उद्गलितदर्भकवला मृग्यः' (अभि० 4/12) ससुराल जाती हुई शकुन्तला के वियोग में मृगियों ने कुश के ग्रास को उगल दिया है। **अतः विकल्प `A' सही है।**

100.''मम विरहजां न त्वं वत्से! शुचं गणयिष्यसि'' **(TGT-2004)**

यहाँ 'मम' से तात्पर्य है?

(A) कण्व **(B) शकुन्तला**

(C) सर्वदमन भरत **(D) इनमें से कोई नहीं** **उत्तर- (A)**

व्याख्या–'मम विरहजां न त्वं वत्से शुचं गणयिष्यसि (अभिज्ञान 4/19) कण्व शकुन्तला से कहते हैं कि तुम पवित्र और तेजस्वी पुत्र को जन्म देकर, मेरे विरह से उत्पन्न शोक को नहीं गिनोगी।

(A) 'मम' शब्द कण्व के लिए आया है।

(B) 'त्वम्' शब्द शकुन्तला के लिए आया है।

(C) दुष्यन्त और शकुन्तला के पुत्र का नाम भरत (सर्वदमन) है।

अतः विकल्प `A' सही है।

101.दुष्यन्त की मनःस्थिति जानने के लिए मेनका अपनी किस सखी को भेजती है? **(TGT-2004)**

(A) उर्वशी को **(B) तिलोत्तमा को**
(C) सानुमती को **(D) भानुमती को**

उत्तर- **(C)**

व्याख्या – मेनका, दुष्यन्त की मनःस्थिति जानने के लिए अपनी सखी 'अप्सरा सानुमती' को भेजती है। **अतः विकल्प (C) सही है।**

102.शकुन्तला की माता कौन थी? **(TGT-2004)**

(A) मेनका **(B) शर्मिष्ठा**
(C) मदिरा **(D) मैना**

उत्तर- **(A)**

व्याख्या-

	पुत्री/पुत्र		**माता**
(A)	शकुन्तला	–	मेनका
(B)	पुरु	–	शर्मिष्ठा
(C)	कादम्बरी	–	मदिरा
(D)	पार्वती	–	मैना

अतः विकल्प (A) सही है।

103.शकुन्तला-दुष्यन्त के पुत्र का नाम है? **(TGT-2004)**

(A) सर्वदमन (भरत) **(B) चन्द्रापीड**
(C) वैशम्पायन **(D) पुरु**

उत्तर- **(A)**

व्याख्या-

	पुत्र		**माता-पिता**
(A)	सर्वदमन (भरत)	–	शकुन्तला - दुष्यन्त
(B)	चन्द्रापीड	–	विलासवती - तारापीड
(C)	वैशम्पायन	–	मनोरमा - शुकनास
(D)	पुरु	–	शर्मिष्ठा - ययाति

अतः विकल्प (A) सही है।

104.'अभिज्ञानाभरणदर्शनेन शापो निवर्तिष्यत इति' – यह उक्ति किसकी है? **(TGT-2004)**

(A) कण्व की (B) अनसूया की
(C) दुर्वासा की (D) गौतमी की

उत्तर- **(C)**

व्याख्या-

(A) भगिन्यास्ते मार्गमादेशय – कण्व का कथन।

(B) अतिथीनामिव निवेदितम् – अनसूया का कथन।

(C) 'अभिज्ञानाभरणदर्शनेन शापो निवर्तिष्यत इति'– प्रियंवदा के आग्रह पर दुर्वासा ऋषि कहते हैं कि – पहचान (अभिज्ञान) के आभूषण (अँगूठी) को दिखलाने से शकुन्तला का शाप समाप्त हो जायेगा।

(D) वरः खल्वेषः, नाशीः – गौतमी का कथन।

अतः विकल्प (C) सही है।

105.'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' नाटक का उत्स (मूल) है? (TGT-2004)

(A) महाभारत (B) रामायण

(C) श्रीमद्भागवतपुराण (D) कविकल्पित

उत्तर- (A)

व्याख्या-

	ग्रन्थ		उत्स (उपजीव्य)
(A)	**अभिज्ञानशाकुन्तलम्**	–	**महाभारत (आदिपर्व)**
(B)	अभिषेकनाटकम्	–	वाल्मीकिरामायण
(C)	कुमारसम्भवम्	–	श्रीमद्भागवतपुराण
(D)	ऋतुसंहारम्	–	कविकल्पित

अतः विकल्प (A) सही है।

106.'सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम्' उक्ति है? (TGT-2004)

(A) कण्व की (B) शकुन्तला की

(C) अनसूया की (D) प्रियंवदा की

उत्तर- (A)

व्याख्या-

(A) 'सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम्' – **कण्व** तपोवन के वृक्षों को सम्बोधित करते हुए कहते हैं कि – यह शकुन्तला पति के घर (ससुराल) जा रही है, अतः आप सभी लोग अनुमति दें। (अभिज्ञान. 4/9)

(B) 'लताभगिनीं वनज्योत्स्नां तावदामन्त्रयिष्ये' – शकुन्तला का कथन।

(C) 'न मे उचितेष्वपि निजकरणीयेषु कार्येषु हस्तपादं प्रसरति' – अनसूया का कथन

(D) 'उद्गलितदर्भकवला मृग्यः परित्यक्तनर्तना मयूराः' – प्रियंवदा का कथन

अतः विकल्प (A) सही है।

107.'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में सखियों ने शापवृत्तान्त' सर्वप्रथम किसे सुनाया? **(TGT-2004)**

(A) कण्व को **(B) मेनका को**
(C) शकुन्तला को **(D) इनमें से कोई नहीं**

उत्तर- (D)

व्याख्या –

* 'अग्निशरणं प्रविष्टस्य शरीरं विना छन्दोमय्या वाण्या' – अर्थात् यज्ञशाला में गये हुए (कण्व को) शरीर रहित छन्दोमयी वाणी के द्वारा विवाहवृत्तान्त बतलाया गया है।
* 'द्वयोरेव नौ मुख एष वृत्तान्तस्तिष्ठतु' अनसूया के इस कथन से ज्ञात होता है कि सखियों ने शापवृत्तान्त किसी को भी नहीं बताया।

अतः विकल्प (D) सही है।

108.अभिज्ञानशाकुन्तलम् में 'अभिज्ञान' कहाँ पर गिरा था? **(TGT-2004)**

(A) प्रभासखण्ड में **(B) मानसरोवर में**
(C) सरयूनदी में **(D) शचीतीर्थ में**

उत्तर- (D)

व्याख्या – अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक में अभिज्ञान (अँगूठी) शक्रावतार प्रदेश के शचीतीर्थ में गिरी थी। शचीतीर्थ गङ्गा नदी के किनारे अवस्थित है।

अतः विकल्प (D) सही है।

109.'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में शाप वृत्तान्त किस अङ्क में है? **(TGT-2004)**

(A) प्रथम **(B) तृतीय**
(C) चतुर्थ **(D) षष्ठ**

उत्तर- (C)

व्याख्या-

(A) प्रथम अङ्क में राजा दुष्यन्त कण्व के आश्रम में प्रवेश करता है।
(B) तृतीय अङ्क में दुष्यन्त और शकुन्तला का मिलन होता है।
(C) चतुर्थ अङ्क में दुर्वासा शकुन्तला को शाप देते हैं। इसी अङ्क में शकुन्तला की विदाई होती है।
(D) षष्ठ अङ्क में राजा दुष्यन्त पश्चाताप करता है।

अतः विकल्प (C) सही है।

110.'पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलम्' – यह उक्ति किसकी है? **(TGT-2004)**

(A) कण्व की **(B) अनसूया की**
(C) प्रियंवदा की **(D) शकुन्तला की**

उत्तर- (A)

व्याख्या-

(A) 'पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलम्' – प्रस्तुत पंक्ति में **कण्व**, शकुन्तला के विदाई के समय समीपस्थ तपोवन के वृक्षों को सम्बोधित करते हुए कहते हैं कि – आप लोगों को बिना जल पिलाये जो पहले जल पीने का प्रयास नहीं करती थी। वह शकुन्तला आज पतिगृह जा रही है। (अभिज्ञान 4/9)

(B) 'एषापि प्रियेण विना गमयति रजनीं विषाददीर्घतराम्'– अनसूया की उक्ति।

(C) 'अपसृतपाण्डुपत्रा मुञ्चन्त्यश्रूणीव लताः' – प्रियंवदा की उक्ति है।

(D) 'को नु खल्वेष निवसने मे सज्जते' – शकुन्तला की उक्ति है।

अतः विकल्प (A) सही है।

111. ''किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्'' – यह वाक्य किसके बारे में कहा गया है? **(TGT-2004)**

(A) दुर्वासा **(B) शकुन्तला**

(C) कण्व **(D) मेनका**

उत्तर- (B)

व्याख्या-

(A) 'सुलभकोपो महर्षिः' – यह वाक्य प्रियंवदा दुर्वासा के लिए कहती है।

(B) 'किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्' – दुष्यन्त शकुन्तला के लिए कहता है कि सुन्दर आकृतियों के लिए कौन सी वस्तु अलङ्कार नहीं है।

(C) नैष्ठिक ब्रह्मचारी – कण्व के लिए प्रयुक्त है।

(D) मेनका, शकुन्तला की जन्मदात्री माता है।

अतः विकल्प (B) सही है।

112. अनसूया एवं प्रियंवदा ने अपने किस ज्ञान के आधार पर शकुन्तला को आभूषण पहनाया? **(TGT-2005)**

(A) उन्होंने आभूषण पहनाने का प्रशिक्षण लिया था

(B) गौतमी ने उन्हें आभूषण पहनाना बताया था

(C) शकुन्तला ने स्वतः अपने ज्ञान से आभूषण पहना

(D) चित्रकारी में आभूषण प्रयोग से प्राप्त ज्ञान के आधार पर पहनाया।

उत्तर- (D)

व्याख्या– "चित्रकर्मपरिचयेनाङ्गेषु त आभरणविनियोगं कुर्वः।" अर्थात् चित्रकला से प्राप्त ज्ञान के आधार पर हम तुम्हारे अङ्गों में आभूषण पहनाती हूँ। अनसूया एवं प्रियंवदा का यह कथन है।–अभिज्ञानशाकुन्तलम्-अङ्क-4।

अतः विकल्प (D) सही है।

113. 'आमन्त्रयस्व सहचरम्' का अभिप्राय है? **(TGT-2005)**

(A) सहचर से मिल लो **(B) सहचर से बात कर लो**

(C) सहचर को छोड़ दो **(D) सहचर से विदा ले लो**

उत्तर- (D)

व्याख्या– 'आमन्त्रयस्व सहचरम्'–अर्थात् सहचर से विदा ले लो। यह नेपथ्य का कथन है। (अभिज्ञान/अङ्क 3) **अतः विकल्प (D) सही है।**

114. 'शान्तानुकूलपवनश्च शिवश्च पन्थाः' **(TGT-2005)**

यह उक्ति किसकी है।

(A) कण्व की **(B) प्रियंवदा की**

(C) आकाशभाषित **(D) कण्वशिष्य**

उत्तर- (C)

व्याख्या-

(A) 'शान्ते करिष्यसि पदं पुनराश्रमेऽस्मिन्'–कण्व की उक्ति है।

(B) ''अपसृतपाण्डुपत्रा मुञ्चन्त्यश्रूणीव लताः''–प्रियंवदा की उक्ति है।

(C) ''शान्तानुकूलपवनश्च शिवश्च पन्थाः''–शकुन्तला की विदाई के समय आकाशवाणी होती है कि–तुम्हारा मार्ग शान्त और अनुकूल वायु वाला एवं कल्याणकारी हो।–(अभिज्ञान 4/11)

(D) ''क्षौमं केनचिदिन्दुपाण्डुतरुणा माङ्गल्यमाविष्कृतम्''–कण्व शिष्य का कथन है।

अतः विकल्प (C) सही है।

115. विदाई के समय कण्व ने किस श्लोक से शकुन्तला को उपदेश दिया? **(TGT-2005)**

(A) 'शुश्रूषस्व गुरून्'

(B) 'अस्मान् साधु विचिन्त्य'

(C) 'पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलम्'

(D) 'एषापि प्रियेण विना गमयति।'

उत्तर- (A)

व्याख्या-

(A) **'शुश्रूषस्व गुरून् कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीजने'** (अभिज्ञान 4/18) इस श्लोक में कण्व शकुन्तला को उपदेश देते हुए कहते हैं कि–गुरुजनों की सेवा करना, सौतों के साथ प्रियसखी जैसा व्यवहार करना आदि।

अतः विकल्प (A) सही है।

(B) 'अस्मान् साधु विचिन्त्य संयमधनानुच्चैः कुलं चात्मनः' (अभिज्ञान 4/17) इस श्लोक में कण्व, शार्ङ्गरव के माध्यम से दुष्यन्त को संदेश भेजते हैं।

(C) 'पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलम्' (अभिज्ञान 4/9) प्रस्तुत श्लोक में कण्व तपोवन के वृक्षों को सम्बोधित करते हुए शकुन्तला को ससुराल जाने की अनुमति देने को कहते हैं।

(D) 'एषापि प्रियेण विना गमयति'–अनसूया की उक्ति है।

116.'यात्येकतोऽस्तशिखरं पतिरोषधीनाम्' **(TGT-2005)**

यहाँ 'पतिरोषधीनाम्' शब्द प्रयुक्त हुआ है?

(A) चन्द्रमा के लिए **(B) सूर्य के लिए**

(C) कण्व के लिए **(D) विश्वामित्र के लिए** **उत्तर- (A)**

* यात्येकतोऽस्तशिखरं पतिरोषधीना–
  माविष्कृतोऽरुणपुरःसर एकतोऽर्कः''– (अभिज्ञान 4/2)
  अर्थात् एक ओर वनस्पतियों का स्वामी चन्द्रमा अस्ताचल के शिखर को जा रहा है और एक ओर अरुण को आगे किए हुए सूर्य प्रकट (उदय) हो रहा है।
* यहाँ **'पतिरोषधीनाम्' चन्द्रमा के लिए** आया है।
* 'अर्कः' शब्द सूर्य के लिए प्रयुक्त है। **अतः विकल्प (A) सही है।**

117.अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक में वर्णित शार्ङ्गरव है? **(TGT-2005)**

(A) कण्व का शिष्य **(B) मारीच का शिष्य**

(C) दुष्यन्त का पुरोहित **(D) राजा ययाति** **उत्तर- (A)**

व्याख्या-

(A) शार्ङ्गरव तथा शारद्वत-कण्व के शिष्य हैं।

(B) गालव, मारीच का शिष्य है।

(C) सोमरात, दुष्यन्त का पुरोहित है।

(D) पुरु, राजा ययाति का पुत्र है। **अतः विकल्प (A) सही है।**

118.'अयं जनः कस्य हस्ते समर्पितः' यह कथन है। **(TGT-2005)**

(A) शकुन्तला का **(B) अनसूया और प्रियंवदा का**

(C) कण्व का **(D) कण्व शिष्य का** **उत्तर- (B)**

व्याख्या-

(A) 'एषा द्वयोर्युवयोर्हस्ते निक्षेपः' शकुन्तला, दोनों सखियों से कहती है कि ये लता (वनज्योत्सना) तुम दोनों के हाथ में (मेरी) धरोहर है।

(B) 'अयं जनः कस्य हस्ते समर्पितः'–अनसूया एवं प्रियंवदा शकुन्तला से कहती है कि हम दोनों को किसे सौंप रही हो? **अतः विकल्प (B) सही है।**

(C) 'अवैमि ते तस्यां सोदर्यास्नेहम्'–कण्व, शकुन्तला से कहते हैं कि इस (वनज्योत्स्ना) पर तुम्हारा सगी बहन सा प्रेम है।

(D) 'निष्ठ्यूतश्चरणोपरागसुभगो लाक्षारसः केनचित्'–कण्व शिष्य का कथन है। (अभि0 4/5)

119.'रक्षितव्या खलु प्रकृतिपेलवा प्रियसखी' –यह कथन है? **(TGT-2005)**

(A) अनसूया का शकुन्तला के प्रति
(B) प्रियंवदा का शकुन्तला के प्रति
(C) अनसूया का प्रियंवदा के प्रति
(D) कण्व का शकुन्तला के प्रति

उत्तर- (A)

व्याख्या-

(A) रक्षितव्या खलु प्रकृतिपेलवा प्रियसखी'–अनसूया, प्रियंवदा से शकुन्तला के लिए कहती है कि– हमें स्वभाव से कोमल प्रियसखी की रक्षा करनी चाहिए।

(B) 'को नामोष्णोदकेन नवमालिकां सिञ्चति'–प्रियंवदा, शकुन्तला के लिए कहती है कि भला कौन नवमालिका (चमेली) को गर्म जल से सींचता है।

(C) 'गच्छ, पादयोः प्रणम्य निवर्तयैनं'–अनसूया, प्रियंवदा से कहती है।

(D) 'ययातेरिव शर्मिष्ठा भर्तुर्बहुमता भव'–कण्व, शकुन्तला के लिए कहते हैं।

अतः विकल्प (A) सही है।

120.'शकुन्तला के गर्भ में दुष्यन्त का तेज (वीर्य) पल रहा है।' यह बात कण्व को किसने बताई? **(TGT-2005)**

(A) अनसूया एवं प्रियंवदा ने
(B) गौतमी ने
(C) अशरीरिणी वाक्शक्ति (छन्दोमयी आकाशवाणी)
(D) कण्व के तपोबल ने

उत्तर- (C)

''अग्निशरणं प्रविष्टस्य शरीरं विना छन्दोमय्या वाण्या।''

प्रियंवदा के इस कथन से ज्ञात होता है कि–यज्ञशाला में गये हुए कण्व को शरीररहित छन्दोमयी वाणी (आकाशवाणी) के द्वारा यह समाचार बतलाया गया है। (अभिज्ञान/अङ्क-4) **अतः विकल्प (C) सही है।**

121.शकुन्तला ने विदाई के समय जिस लता का आलिङ्गन किया था उसका क्या नाम था? **(TGT-2005)**

(A) वनज्योत्स्ना **(B) नवमालिका (चमेली)**
(C) लताभगिनी **(D) केसरलता**

उत्तर- (C)

व्याख्या– (उपेत्य लतामालिङ्ग्य) 'वनज्योत्स्ने! चूतसङ्गतापि मां प्रत्यालिङ्गेतोगताभिः शाखाबाहुभिः।' शकुन्तला के इस कथन से स्पष्ट है कि विदाई के समय उसने वनज्योत्स्ना लता का आलिङ्गन किया था। (अभिज्ञान/अङ्क-4)

अतः विकल्प (A) सही है।

122.''अर्थो हि कन्या परकीय एव तामद्य सम्प्रेष्य परिग्रहीतुः।'' यह वक्तव्य किसका है? **(TGT-2009)**

(A) गौतमी का **(B) काश्यप का**
(C) दुष्यन्त का **(D) मेनका का**

उत्तर- (B)

व्याख्या– प्रस्तुतपद्य में कण्व (काश्यप) शकुन्तला को विदा करने के पश्चात् कहते हैं कि अर्थो हि...(अभि.4/23) कन्या वस्तुतः पराया धन है, आज उसको प्राप्तकर्त्ता (पति) को दे देने पर मेरी अन्तरात्मा उसी प्रकार प्रसन्न हो रही है जिस प्रकार धरोहर को लौटा देने पर धरोहर को रखने वाले का मन प्रसन्न हो जाता है। (अभिज्ञान 4/22)

अतः विकल्प (B) सही है।

123.दुष्यन्त के वंश का नाम था? **(TGT-2009)**

(A) रघुवंश **(B) पुरु**
(C) काश्यप **(D) कुशिक**

उत्तर- (B)

व्याख्या-

(A) राम रघुवंशी (सूर्यवंशी) (B) दुष्यन्त पुरुवंशी (चन्द्रवंशी)
(C) भवभूति काश्यप (D) भारवि कुशिक

अतः विकल्प (B) सही है।

124.अभिज्ञानशाकुन्तलम् में किस रीति का प्रयोग है? **(TGT-2009)**

(A) वैदर्भी रीति **(B) गौडीरीति**
(C) पाञ्चालीरीति **(D) इनमें से कोई नहीं**

उत्तर- (A)

व्याख्या-

	ग्रन्थ	**मुख्य रीति**
(A)	अभिज्ञानशाकुन्तलम्	वैदर्भी रीति
(B)	उत्तररामचरितम्	गौड़ी एवं वैदर्भी रीति
(C)	कादम्बरी	पाञ्चाली रीति

अतः विकल्प (A) सही है।

125.''कोऽन्यो हुतवहाद् दग्धुं प्रभवति'' कथन है। **(TGT-2009)**

(A) प्रियंवदा का **(B) अनसूया का**
(C) कण्व का **(D) गौतमी का**

उत्तर- (B)

व्याख्या-

(A) 'कस्मिन्नपि पूजार्हेऽपराद्धा शून्यहृदया शकुन्तला'(अभि0,अङ्क-4) –प्रियंवदा का कथन

(B) 'कोऽन्यो हुतवहाद् दग्धुं प्रभवति'–अनसूया का कथन

(C) 'सुतं त्वमपि सम्राजं सेव पूरुमवाप्नुहि'–कण्व का कथन

(D) 'वरः खल्वेषः नाशीः''(अभि0,अङ्क-4)–गौतमी का कथन

अतः विकल्प (B) सही है।

126.'अतिस्नेहः पापशङ्की' यह सूक्ति किस ग्रन्थ में है? (TGT-2009)

(A) नीतिशतकम् में (B) उत्तररामचरितम् में

(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में (D) शिवराजविजयम् में **उत्तर- (C)**

व्याख्या-

(A) 'पापान्निवारयति योजयते हिताय'– (नीतिशतकम्/66)

(B) ''सञ्जीवनौषधिरसो हृदि नु प्रसक्तः''– उत्तररामचरितम्/3/11

(C) 'अतिस्नेहः पापशङ्की'–अभिज्ञानशाकुन्तलम्/अङ्क–4

(D) 'हिंस्रः स्वपापेन विहिंसितः खलः, साधुः समत्वेन भयाह विमुच्यते'-शिवराजवि जयम्

अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क के प्रारम्भ में विष्कम्भक का प्रयोग है।

अतः विकल्प (C) सही हैं।

127.गौतमी कौन थी? (TGT-2009)

(A) शकुन्तला की सखी (B) वृद्धा तापसी

(C) आश्रम की परिचारिका (D) कण्व की पत्नी **उत्तर- (B)**

व्याख्या– कालिदास कृत अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में गौतमी नामक स्त्रीपात्र का उल्लेख है। जो कण्वाश्रम की अध्यक्षा तथा एक वृद्धा तापसी भी है। **अतः विकल्प (B) सही है।**

128.शकुन्तला का दुष्यन्त के साथ विवाह किस विधि से हुआ था? (TGT-2009)

(A) ब्रह्म (B) गान्धर्व

(C) प्राजापत्य (D) दैव **उत्तर- (B)**

व्याख्या– * ''यद्यपि गान्धर्वेण विधिना निर्वृत्तकल्याणा शकुन्तलाऽनुरूपभर्तृगामिनी संवृत्तेति'' अर्थात् गान्धर्व विधि से सम्पन्न विवाह वाली, शकुन्तला अपने योग्य पति को प्राप्त हो गयी है। (अभिज्ञान अङ्क-04)

* अनसूया के इस कथन से स्पष्ट है कि शकुन्तला का दुष्यन्त के साथ गान्धर्व विवाह हुआ था।

नोट–'कल्याण' का शाब्दिक अर्थ 'विवाह' है क्योंकि कालिदास दक्षिण भारत के थे और आज भी दक्षिण भारत में विवाह को ''कल्याणम्'' कहते हैं। गान्धर्वविवाह को हिन्दी में प्रेमविवाह भी कहते हैं और आधुनिक काल में प्रचलित Love marriage भी गान्धर्वविवाह का ही प्रतिरूप है। **अतः विकल्प (B) सही है।**

129.''वामाः कुलस्याधयः'' में 'वामा' का अर्थ है? **(TGT-2005, 2009)**

(A) बायीं ओर स्थित **(B) सुन्दर**
(C) प्रतिकूल **(D) महिला** **उत्तर- (C)**

व्याख्या– * ''यान्त्येवं गृहिणीपदं युवतयो वामाः कुलस्याधयः'' (अभिज्ञान 4/18) प्रस्तुत पंक्ति में कण्व भारतीय संस्कृति के अनुरूप अपनी पालित पुत्री शकुन्तला को आदर्श गृहिणी होने का उपदेश देते हुए कहते हैं कि–इसप्रकार युवतियाँ गृहस्वामिनी पद को प्राप्त कर लेती हैं, और इसके प्रतिकूल आचरण करने वाली युवतियाँ कुल के लिए आधि (मानसिक कष्ट का कारण) बन जाती हैं।

* अतः यहाँ 'वामा' का अर्थ प्रतिकूल है। **अतः विकल्प (C) सही है।**

130.''भूयिष्ठं भव दक्षिणा परिजने'' **(TGT-2009)**
में 'परिजन' का अर्थ है?

(A) सौत **(B) अत्यधिक**
(C) उदार **(D) सेवकजन** **उत्तर- (D)**

व्याख्या– ''भूयिष्ठं भव दक्षिणा परिजने भाग्येष्वनुत्सेकिनी'' (अभिज्ञान0 4/18) अर्थात्–सेवक-सेविकाओं के प्रति अत्यधिक उदार रहना और अच्छे भाग्य पर अभिमान मत करना।

शब्द	**अर्थ**
(A) सपत्नी	सौत
(B) भूयिष्ठम्	अत्यधिक
(C) दक्षिणा	उदार
(D) परिजन	सेवकजन/आश्रितजन

नोट–भूयिष्ठं में 'बहु + इष्ठन्' प्रत्यय है।

अतः विकल्प (D) सही है।

131.अभिज्ञानशाकुन्तलम् का नायक दुष्यन्त है? **(TGT-2010)**

(A) धीरोदात्त **(B) धीरोद्धत**
(C) धीरललित **(D) धीरप्रशान्त** **उत्तर- (A)**

व्याख्या-

नायक	**कोटि**	**ग्रन्थ**
(A) दुष्यन्त	धीरोदात्त	अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(B) भीम	धीरोद्धत	वेणीसंहारम्
(C) उदयन	धीरललित	स्वप्नवासवदत्तम्
(D) चारुदत्त	धीरप्रशान्त	मृच्छकटिकम्

अतः विकल्प (A) सही है।

132.राजा दुष्यन्त की प्रथम पटरानी थी? **(TGT-2010)**

(A) सानुमती **(B) वसुमती**

(C) शकुन्तला **(D) मेनका** **उत्तर- (B)**

व्याख्या– राजा दुष्यन्त की प्रथम पटरानी हंसपदिका है किन्तु आयोग वसुमती को प्रथम पटरानी मानता है। जो कि मेरी दृष्टि में अनुचित है। क्योंकि अभिज्ञानशाकुन्तलम् के पञ्चम अङ्क में हंसपदिका सङ्गीत का अभ्यास करते हुए दुष्यन्त को उलाहना देती है। किन्तु हंसपदिका का चारो विकल्पों में नाम न होने से वसुमती ही ठीक है।

अतः विकल्प (B) सही है।

133.'न खलु धीमतां कश्चिदविषयो नाम' सूक्ति है? **(TGT-2010)**

(A) किरातार्जुनीयम् की

(B) शिवराजविजयम् की

(C) शुकनासोपदेश की

(D) अभिज्ञानशाकुन्तलम् की **उत्तर- (D)**

व्याख्या-

(A) ''न बाधतेऽस्य त्रिगणः परस्परम्'' (किरातार्जुनीयम् 1/11)

(B) ''नाहं मूर्तीःविक्रीणामि; किन्तु भिनद्मि''–शिवराजविजयम्-प्र०नि०)

(C) ''न परिचयं रक्षति''– शुकनासोपदेश

(D) ''न खलु धीमतां कश्चिदविषयो नाम''–अभिज्ञानशाकुन्तलम्,

अतः विकल्प (D) सही है।

134.अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में कुल कितने श्लोक हैं? **(TGT-2010)**

(A) अड़तालिस **(B) बयालिस**

(C) छियालिस **(D) बाइस** **उत्तर- (D)**

व्याख्या-

ग्रन्थ	श्लोक संख्या
(A) उत्तररामचरितम् (तृतीय अङ्क)	अड़तालिस
(B) उत्तररामचरितम् (षष्ठ अङ्क)	बयालिस
(C) किरातार्जुनीयम् (प्रथमसर्ग)	छियालिस
(D) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (चतुर्थ अङ्क)	बाइस

अतः विकल्प (D) सही है।

135.'ओदकान्तं स्निग्धोजनोऽनुगन्तव्यः **(TGT-2010)**

इति श्रूयते'' यह कथन किसका है?

(A) कण्व का **(B) अनसूया का**

(C) प्रियंवदा का **(D) कण्वशिष्य शार्ङ्गरव का** **उत्तर- (D)**

व्याख्या-

(A) ''अर्थो हि कन्या परकीय एव'' – कण्व की उक्ति

(B) ''आत्मनो नगरं प्रविश्यान्तःपुरसमागत इतो गतं वृत्तान्तं स्मरति वा न वेति'' – अनसूया का कथन

(C) ''अग्निशरणं प्रविष्टस्य शरीरं विना छन्दोमय्या वाण्या'' –प्रियंवदा का कथन

(D) ''ओदकान्तं स्निग्धोजनोऽनुगन्तव्यः इति श्रूयते'' –शार्ङ्गरव कहता है कि प्रियव्यक्ति का जलाशय तक अनुगमन करना चाहिए।

अतः विकल्प (D) सही है।

136. दुष्यन्त और शकुन्तला की कथा महाभारत के किस पर्व में प्राप्त होती है? **(TGT-2010)**

(A) वनपर्व **(B) भीष्मपर्व**

(C) आदिपर्व **(D) सभापर्व**

उत्तर- (C)

व्याख्या– दुष्यन्त और शकुन्तला की कथा महाभारत के आदिपर्व शकुन्तलोपाख्यान (अध्याय 67-74 के बीच) में प्राप्त होती है।

ग्रन्थ	**पर्व**
(A) किरातार्जुनीयम्	वनपर्व
(B) गीता	भीष्मपर्व
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम्	आदिपर्व
(D) शिशुपालवधम्	सभापर्व

अतः विकल्प (C) सही है।

137. 'परभृत' किस पक्षी को कहते हैं? **(TGT-2010)**

(A) कौआ **(B) कोयल**

(C) कबूतर **(D) मयूर**

उत्तर- (B)

व्याख्या–''परभृतविरुतं कलं यथा प्रतिवचनीकृतमेभिरीदृशम्'' (अभिज्ञान 4/10)

शब्द	**अर्थ**
(A) काकः	कौआ
(B) परभृतः	कोयल
(C) कपोतः	कबूतर
(D) मयूरः	मोर

अतः विकल्प (B) सही है।

138. किसने शकुन्तला को शाप के प्रभाव से मुक्त करने के लिए दुर्वासा से प्रार्थना की? **(TGT-2010)**

(A) प्रियंवदा **(B) गौतमी**

(C) अनसूया **(D) मेनका**

उत्तर- (A)

व्याख्या– 'गच्छ पादयोः प्रणम्य निवर्तयैनं'–अनसूया, प्रियंवदा से कहती है कि जाओ चरणों में प्रणाम करके उन्हें (दुर्वासा को) लौटा लाओ। 'प्रकृतिवक्रः स कस्यानुनयं प्रतिगृह्णाति! किमपि पुनः सानुक्रोशःकृतः' अर्थात् प्रियंवदा कहती है कि–स्वभाव से टेढ़े वे (महर्षि दुर्वासा) किसकी प्रार्थना को स्वीकार करते हैं? फिर भी (मैंने) कुछ दयायुक्त कर लिया। इसप्रकार प्रियंवदा ने शकुन्तला की शापमुक्ति के लिए दुर्वासा से प्रार्थना की। **अतः विकल्प (A) सही है।**

139.'वामाः कुलस्याधयः' यह उक्ति किस ग्रन्थ में वर्णित है? **(TGT-2013)**

(A) उत्तररामचरितम् **(B) अभिज्ञानशाकुन्तलम्**
(C) नीतिशतकम् **(D) किरातार्जुनीयम्**

उत्तर- (B)

व्याख्या-

	ग्रन्थ	सूक्ति
(A)	यथा स्त्रीणां तथा वाचां साधुत्वे दुर्जनो जनः	– उत्तररामचरितम् (1/5)
(B)	यान्त्येवं गृहिणीपदं युवतयो वामाः कुलस्याधयः	– अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/18)
(C)	यां चिन्तयामि सततं मयि सा विरक्ता	– नीतिशतकम् (परिशिष्ट)
(D)	भवादृशेषु प्रमदाजनोदितं भवत्यधिक्षेप इवानुशासनम्	– किरातार्जुनीयम् (1/28)

अतः विकल्प (B) सही है।

140.शकुन्तला के अनिष्टनिवारण के लिए महर्षि कण्व कहाँ गये थे? **(TGT-2013)**

(A) हिमालय **(B) सोमतीर्थ**
(C) कुरुक्षेत्र **(D) प्रयाग**

उत्तर- (B)

व्याख्या–महाकवि कालिदास द्वारा विरचित अभिज्ञानशाकुन्तलम् के प्रथम अङ्क में जब राजा दुष्यन्त मृग का पीछा करते हुए कण्वाश्रम के निकट पहुँचता है और वैखानस के द्वारा मृग को न मारने का अनुरोध स्वीकार करके यह पूछता है कि– 'क्या कुलपति कण्व आश्रम में विद्यमान हैं।– ''अपि सन्निहितोऽत्र कुलपतिः'' तो इसके उत्तर में वैखानस कहता है कि–

वैखानसः– 'इदानीमेव दुहितरं शकुन्तलामतिथिसत्काराय नियुज्य दैवमस्याः प्रतिकूलं शमयितुं सोमतीर्थं गतः'

वैखानस के इस कथन से स्पष्ट है कि कण्व शकुन्तला के अनिष्ट निवारण के लिए सोमतीर्थ गये हुए हैं। **अतः विकल्प `B' सही है।**

- कालिदासकृत कुमारसम्भवम् में हिमालय का वर्णन है– ''अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा, हिमालयो नाम नगाधिराजः'' – कुमारसम्भवम् (1.1)
- कुरुक्षेत्र (प्रदेश) में कौरवों का शासन था। इसका उल्लेख महाभारत एवं किरातार्जुनीयम् में आया है– ''श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीम्''– (किरात. 1/1)
- प्रयाग में गङ्गा, यमुना, सरस्वती का सङ्गम है। तथा यहीं दारागञ्ज प्रयाग में संस्कृतगङ्गा का प्रधानकार्यालय भी स्थित है।

141.महर्षि कण्व किनके साथ शकुन्तला को पतिगृह भेजते हैं? **(TGT-2013)**

(A) शार्ङ्गरव **(B) शारद्वत**
(C) गौतमी **(D) उपर्युक्त सभी**

उत्तर- (D)

व्याख्या– 'गौतमि, आदिश्यन्तां शार्ङ्गरवमिश्राः शकुन्तलानयनाय'

- काश्यपः–'वत्से, इमे अपि प्रदेये। न युक्तमनयोस्तत्र गन्तुम्। त्वया सह गौतमी यास्यति'। अभिज्ञानशाकुन्तलम् (चतुर्थ अङ्क) की इन पंक्तियों से स्पष्ट है कि शकुन्तला को पतिगृह ले जाने के लिए शार्ङ्गरव, शारद्वत और गौतमी-तीनों हस्तिनापुर तक जाते हैं। **अतः विकल्प `D' सही है।**

142.'अभिज्ञान' शब्द का अर्थ है – **(TGT-2011)**

(A) ज्ञान होना **(B) स्मरण होना**
(C) पहचान **(D) अभियान होना**

उत्तर- (C)

व्याख्या - अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के चतुर्थ अङ्क में जब दुर्वासा ऋषि शकुन्तला को शाप देकर निर्बाध गति से जा रहे थे तभी प्रियंवदा दुर्वासा को मनाने के लिए जाती है, तब दुर्वासा ऋषि कहते हैं कि –

"न मे वचनमन्यथाभवितुमर्हति, किं त्वभिज्ञानाभरणदर्शनेन शापो निवर्तिष्यत इति।"
मेरा वचन असत्य नहीं हो सकता किन्तु पहचान के आभूषण के दिखाने से मेरा शाप समाप्त हो जाएगा। यहाँ 'अभिज्ञान' शब्द का अर्थ पहचान है।

इसलिए विकल्प (C) सही है।

143.अभिज्ञानशाकुन्तलम् के रचयिता हैं - **(TGT-2011)**

(A) भवभूति **(B) कालिदास**
(C) श्रीहर्ष **(D) भास**

उत्तर- (B)

व्याख्या-

(A) **भवभूति -** भवभूति विरचित तीन नाटक उपलब्ध होते हैं-

(1) मालतीमाधव (2) महावीरचरित (3) उत्तररामचरित

* मालतीमाधव दश अङ्कों का प्रकरण है। इसमें मालती और माधव तथा मकरन्द और मदयन्तिका के प्रणय और परिणय का वर्णन है।
* महावीरचरित में अङ्कों की संख्या सात है, इसमें राम विवाह से लेकर राम-राज्याभिषेक तक रामायण की कथा वर्णित है।
* उत्तररामचरित में अङ्कों की संख्या सात है, इसमें रामायण के उत्तरकाण्ड की कथा का वर्णन है।

(B) कालिदास - कालिदास विरचित नाटकों की संख्या तीन तथा कुल रचनाएँ सात हैं-

नाटक- 1. मालविकाग्निमित्रम् 2. विक्रमोर्वशीयम् 3. अभिज्ञानशाकुन्तलम्

महाकाव्य- 1. रघुवंशम् 2. कुमारसम्भवम्

गीतिकाव्य एवं खण्डकाव्य- 1. ऋतुसंहारम् 2. मेघदूतम्

अतः विकल्प (B) सही है।

(C) श्रीहर्ष - नैषधीयचरित के सर्गान्त श्लोकों में श्रीहर्ष की निम्न रचनाओं का उल्लेख है-

(i) नैषधीयचरितम् (ii) स्थैर्यविचारप्रकरण (iii) श्रीविजयप्रशस्ति

(iv) खण्डनखण्डखाद्य (v)गौडोर्वीशकुलप्रशस्ति (vi) नवसाहसाङ्कचरितचम्पू

(vii) अर्णववर्णन (viii) छिन्दप्रशस्ति (ix) शिवशक्तिसिद्धि

(D) भास - भास के नाम से सम्प्रति तेरह नाटक प्राप्त होते हैं सन् 1909 ई0 में 'श्री टी0 गणपति शास्त्री' ने ट्रावनकोर राज्य से इन्हें प्राप्त किया था-

1. प्रतिज्ञायौगन्धरायण
2. स्वप्नवासवदत्तम्
3. ऊरुभंग
4. दूतवाक्यम्
5. पञ्चरात्रम्
6. बालचरित

— उदयन कथामूलक

7. दूतघटोत्कच
8. कर्णभार
9. मध्यमव्यायोग

— महाभारतमूलक

10. प्रतिमानाटक
11. अभिषेकनाटक

— रामायणमूलक

12. अविमारक
13. चारुदत्त

— कल्पनामूलक

144. अभिज्ञानशाकुन्तलम् साहित्य की किस विधा के अन्तर्गत है- **(TGT-2004, 2011)**

(A) महाकाव्य है **(B) नाटक है**

(C) नाटिका है **(D) चन्द्रकाव्य है** **उत्तर- (B)**

व्याख्या-

ग्रन्थविधा	ग्रन्थकार	ग्रन्थ	विभाजन
महाकाव्य	कालिदास	रघुवंशम्	19 सर्ग
		कुमारसम्भवम्	17 सर्ग
भारवि		किरातार्जुनीयम्	18 सर्ग
नाटक	कालिदास	अभिज्ञानशाकुन्तलम्	7 अङ्क
		विक्रमोर्वशीयम्	5 अङ्क
		मालविकाग्निमित्रम्	5 अङ्क
	भवभूति	उत्तररामचरितम्	7 अङ्क
		महावीरचरितम्	7 अङ्क
नाटिका	हर्ष	रत्नावली	4 अङ्क

अतः विकल्प (B) सही है।

145.अभिज्ञानशाकुन्तलम् के सहित कालिदास ने कितने नाटक लिखे हैं? **(TGT-2011)**

(A) दो (B) तीन

(C) चार (D)पाँच **उत्तर- (B)**

(A) कालिदास ने दो महाकाव्य लिखे हैं- रघुवंशम्, कुमारसम्भवम्।

(B) कालिदास के तीन नाटक हैं- अभिज्ञानशाकुन्तलम्, विक्रमोर्वशीयम्, मालविकाग्निमित्रम्।

(C) कालिदास कृत अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक का चतुर्थ अङ्क सर्वश्रेष्ठ है, तथा चतुर्थ अङ्क के चार श्लोक अत्यन्त प्रसिद्ध हैं।

काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला।
तत्रापि च चतुर्थोऽङ्कः तत्र श्लोकचतुष्टयम् ।।

(D) कालिदास कृत विक्रमोर्वशीयम् तथा मालविकाग्निमित्रम् में अङ्कों की संख्या पाँच है।

अतः विकल्प (B) सही है।

146.अभिज्ञानशाकुन्तलम् का कथानक- **(TGT-2011)**

(A) ऐतिहासिक है

(B) उत्पाद्य है

(C) ऐतिहासिक होने पर भी कुछ परिवर्तित है

(D) इनमें से कुछ भी नहीं है। **उत्तर- (C)**

व्याख्या - दुष्यन्त और शकुन्तला की कथा महाभारत के आदिपर्व अध्याय (67 से 74) में प्राप्त होती है। कालिदास ने इसमें पर्याप्त परिवर्तन करके इसे नाटकोपयोगी कथा का रूप दिया। यथा दुर्वासा के शाप, अनसूया, प्रियंवदा, गौतमी, दुर्वासा, शार्ङ्गरव, शारद्वत आदि पात्रों की नूतन कल्पना, सानुमती की कल्पना, भ्रमर की कल्पना आदि। पद्मपुराण के स्वर्गखण्ड में भी यह कथा प्राप्त होती है। परन्तु पद्मपुराण की कथा महाभारत और शाकुन्तल की कथा पर निर्भर है, उसे शाकुन्तल की कथा का मूल नहीं माना जा सकता है। पद्मपुराण में वर्णित कथा का अधिकांश भाग शाकुन्तल के वर्णन का अनुवाद मात्र प्रतीत होता है। अभिज्ञानशाकुन्तल का कथानक ऐतिहासिक होने पर भी कुछ परिवर्तित है। **अतः विकल्प (C) सही है।**

147.अभिज्ञानशाकुन्तलम् में कितने अङ्क हैं? **(TGT-2011)**

(A) पाँच **(B) छः**

(C) सात **(D) आठ** **उत्तर- (C)**

A.∗ मालविकाग्निमित्रम् - कालिदास - पाँच अङ्क-नायक धीरोदात्त कोटि का माना जाता है

∗ विक्रमोर्वशीयम् - कालिदास - पाँच अङ्क - चतुर्थ अंक में राजा का विलाप अपभ्रंश छन्दों में किया गया है।

∗ बालचरितम् - भास - पाँच अङ्क - श्रीकृष्ण के जन्म से कंस वध तक की घटना का वर्णन।

B. ∗ स्वप्नवासवदत्तम् - भास - छः अङ्क - उदयन, वासवदत्ता तथा रत्नावली की प्रणय कथा।

∗ अभिषेकनाटकम्-भास-छः अङ्क - रामायण कथा का संक्षेप में वर्णन।

∗ अविमारकम्-भास-छः अङ्क - अविमारक तथा कुरंगी की प्रणय कथा।

∗ **वेणीसंहारम् – भट्टनारायण – छः अङ्क – नाटक का प्रारम्भ और अन्त दोनों वीर रस से युक्त है।**

C.∗ अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कालिदास - सात अङ्क - दुर्वासा ऋषि का शाप कवि की मौलिक कल्पना।

∗ मुद्राराक्षसम् - विशाखदत्त - सात अङ्क -नायिका का अभाव

∗ उत्तररामचरितम् - भवभूति - सात अङ्क - विदूषक विहीन

D.∗ वाल्मीकिरामायण - महर्षि वाल्मीकि - सात काण्ड - आदिकाव्य / आर्षकाव्य-रामकथा का वर्णन **अतः विकल्प (C) सही है।**

148. अभिज्ञानशाकुन्तलम् का कौन सा अङ्क सर्वश्रेष्ठ माना गया है- **(TGT-2011)**

(A) पहला **(B) दूसरा**

(C) तीसरा **(D) चौथा** **उत्तर- (D)**

व्याख्या – अभिज्ञानशाकुन्तलम् के अङ्कों के नाम-

पहला अङ्क - आश्रम प्रवेश, दूसरा अङ्क - आश्रम निवेश

तीसरा अङ्क - विवाह, चौथा अङ्क - विदाई ,पाँचवा अङ्क - प्रत्याख्यान, छठा अङ्क - पश्चाताप, सातवाँ अङ्क - मिलन शाकुन्तल के विषय में विद्वज्जनों में एक प्रसिद्ध सूक्ति है-

काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला।
तत्रापि च चतुर्थोऽङ्कस्तत्र श्लोकचतुष्टयम्।।

शाकुन्तल के चतुर्थ अङ्क के चार श्लोक अपने भाव कल्पना, कवित्व और अर्थोदात्तता के कारण अत्यन्त प्रसिद्ध हैं। एक श्लोक में पुत्री की विदाई का मार्मिक वर्णन है, दूसरे में पुत्री का पतिग्रह के लिए आदर्श शिक्षा दी गई है, तीसरे में सुकुमार भावनाओं का चित्रण तथा चौथे में ऋषि कण्व का राजा दुष्यन्त के लिए

आदर्श सन्देश है। इसलिए चतुर्थ अङ्क को सर्वश्रेष्ठ अङ्क माना गया है।
अतः विकल्प (D) सही है।

149. दुर्वासा ऋषि के आश्रम में पदार्पण के समय शकुन्तला किसके ध्यान में मग्न थी? **(TGT-2011)**

(A) कण्व ऋषि के **(B) दुष्यन्त के**

(C) सद्यः प्रसूता हरिणी के **(D) नवपल्लवयुक्त लता के** उत्तर- **(B)**

व्याख्या - दुर्वासा ऋषि के कण्व आश्रम में पदार्पण के समय शकुन्तला दुष्यन्त के चिन्तन में मग्न थी। यह देखकर ऋषि दुर्वासा शकुन्तला को सम्बोधित करते हुए कहते हैं–

आः, अतिथिपरिभाविनि,
विचिन्तयन्ती . . . प्रथमं कृतामिव।। (अभि.शा.4/1)

अये अतिथि का तिरस्कार करने वाली! मुझ तपस्वी का तुमने अनादर किया है, जिसका (दुष्यन्त का) स्मरण तू कर रही है वह याद दिलाए जाने पर भी तुम्हें स्मरण नहीं करेगा जैसे उन्मत व्यक्ति पहले कही गयी बात को भूल जाता है। वैसे ही वह (दुष्यन्त) तुम्हें भूल जायेगा। **अतः विकल्प (B) सही है।**

150. दुर्वासा ऋषि ने शकुन्तला को क्या शाप दिया? **(TGT-2011)**

(A) कि तू याद करी विद्या भूल जाएगी

(B) कि तू अस्वस्थ हो जाएगी

(C) कि तेरा पुत्र तुझे भूल जाएगा

(D) कि तू जिसके ध्यान में बैठी है वो भूल जाएगा उत्तर- **(D)**

व्याख्या - अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के चतुर्थ अङ्क में दुष्यन्त को याद कर रही शकुन्तला को ऋषि दुर्वासा ने नेपथ्य से वंशस्थ छन्द में निम्न शाप दिया–

विचिन्तयन्ती यमनन्यमानसा, तपोधनं वेत्सि न मामुपस्थितम्

स्मरिष्यति त्वां न स बोधितोऽपि सन् कथां प्रमत्तः प्रथमं कृतामिव।।

(अभि० 4\1)

अनन्यहृदय से जिसका चिन्तन करती हुई तू उपस्थित हुए मुझ तपस्वी को नहीं देख रही है, वह तेरे स्मरण दिलाने पर भी तुझको स्मरण नहीं करेगा, जैसे उन्मन्त व्यक्ति पहले कही बात को स्मरण नहीं करता है।

अत : विकल्प (D) सही है।

151.दुर्वासा ऋषि ने शाप मोचन किस तरह बताया? (TGT-2011)

(A) छः महीने बाद दुष्यन्त को स्वतः शकुन्तला का स्मरण हो जाएगा

(B) वसन्त ऋतु में आम्रमञ्जरी देखकर दुष्यन्त को शकुन्तला की याद आ जाएगी।

(C) किसी अभिज्ञान (पहचान) को देखने से दुष्यन्त को शकुन्तला का स्मरण हो जाएगा।

(D) पुनर्जन्म में दुष्यन्त को शकुन्तला का स्मरण हो जाएगा। उत्तर- (C)

व्याख्या - दुर्वासा ऋषि ने शकुन्तला को अतिथि तिरस्कार करने के लिए शाप देकर तीव्र गति से चले जा रहे थे तभी अनसूया ने प्रियंवदा को मनाने के लिए भेजा, क्षमा याचना करने पर दुर्वासा ऋषि ने कहा–

"ततो मे वचनमन्यथाभवितुं नार्हति। किं त्वभिज्ञानाभरण–
दर्शनेन शापो निवर्तिष्यत इति मन्त्रयमाण एवान्तर्हितः।" (अभि०चतुर्थ अङ्क)

मेरा वचन अन्यथा अर्थात् असत्य नहीं हो सकता है परन्तु पहचान का आभूषण दिखाने से शाप की समाप्ति हो जाएगी ऐसा कहते हुए वह अन्तर्धान हो गए। यह बात प्रियंवदा अनसूया से बताती है।

अतः विकल्प (C) सही है।

152.कण्व ऋषि को इस नाम से भी पुकारते थे- (TGT-2011)

(A) गौतम ऋषि (B) कश्यप ऋषि

(C) काश्यप ऋषि (D) विश्वामित्र ऋषि उत्तर- (C)

व्याख्या - 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अङ्क में महर्षि कण्व (काश्यप) का प्रवेश होता है– (ततः प्रविशति स्नानोत्तीर्णः काश्यपः) जब अनसूया और प्रियवंदा, शकुन्तला को आभूषण पहनाने का अभिनय करती हैं, उसके बाद स्नान करके आये हुए काश्यप का प्रवेश होता है। यहाँ 'काश्यप' पद कण्व के लिए प्रयुक्त है।

* एक गौतम ऋषि–अहल्या के पति और शतानन्द के पिता भी है, लेकिन उनका वर्णन शाकुन्तलम् में नहीं है।
* गौतम महर्षि का कण्व शिष्य है।
* मारीच (कश्यप) देवों और राक्षसों के पिता हैं।
* विश्वामित्र–शकुन्तला के जन्मदाता पिता हैं।

अतः विकल्प (C) सही है।

153.चतुर्थ अङ्क की विषय वस्तु मानवीय जीवन की किस घटना पर आधारित है? **(TGT-2011)**

(A) बच्चे के जन्म के अवसर की

(B) बच्चे के गुरुकुल जाने के अवसर की

(C) बेटी की शादी होने पर विदाई के अवसर की

(D) मृत्यूपरान्त श्मशान जाने के अवसर की।

उत्तर- **(C)**

व्याख्या - कालिदास विरचित 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अङ्क को विशेष रूप सेसभी सहृदय एवं विद्वानों ने मुक्त कण्ठ से सराहा है -

काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला।
तत्रापि च चतुर्थोऽङ्कस्तत्र श्लोकचतुष्टयम्।।

शाकुन्तल के चतुर्थ अङ्क के श्लोकों में पुत्री की विदाई का मार्मिक वर्णन है एवं पुत्री को पतिगृह के लिए आदर्श शिक्षा दी गई है-

- यास्यत्यद्य शकुन्तलेति ......(4.6)
- शुश्रूषस्व गुरून् . . . . वामाः कुलस्याधयः।"(4.18)
- अस्मान् साधु . . . . वाच्यं वधूबन्धुभिः।। (4/17)

इत्यादि श्लोको में भावसौन्दर्य की दृष्टि से बेटी की शादी होने पर विदाई के अवसर पर मानवीय जीवन की मार्मिक घटना का वर्णन है।

अतः विकल्प (C) सही है।

154.'अर्थो हि कन्या परकीय एव' में कन्या की उपमा किस उपमान के साथ दी गयी है? **(TGT-2011)**

(A) कमलिनी के साथ **(B) चाँदनी के साथ**

(C) धरोहर के साथ **(D) ब्याज के साथ**

उत्तर- **(C)**

व्याख्या - 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अङ्क के 22 वें श्लोक में कण्व ने कन्या की उपमा न्यास (धरोहर) से की है।

अर्थो हि कन्या परकीय एव तामद्य सम्प्रेष्य परिग्रहीतुः।
जातो ममायं विशदः प्रकामं प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा।।

(अभि.शा.4/22)

वस्तुतः कन्या पराई सम्पत्ति है। आज उसको पति के पास भेजकर मेरी अन्तरात्मा उसी प्रकार अत्यन्त प्रसन्न हो रही है, जैसे धरोहर को लौटाने पर धरोहर रखने वाले का मन प्रसन्न होता है। **अतः विकल्प (C) सही है।**

155.अभिज्ञानशाकुन्तलम् की रचना करते समय कवि कालिदास की किस मौलिकता के कारण दुष्यन्त का चरित्र उदात्त बन पाया? (TGT-2011)

(A)शकुन्तला जैसी प्रकृति पुत्री को प्रेम करने के कारण
(B)भारतवर्ष के वीर सम्राट् की छवि प्रस्तुत करने के कारण
(C)दुर्वासा ऋषि के शाप की कल्पना के कारण
(D)पहचान के रूप में अँगूठी देने के कारण **उत्तर- (C)**

व्याख्या - मूलकथा में राजा सारी घटनाएँ याद होने पर भी लोकापवाद के डर से शकुन्तला को स्वीकार नहीं करता है। आकाशवाणी के द्वारा समर्थन होने पर उसे स्वीकार करता है। इससे राजा का चरित्र अत्यन्त निम्न कोटि का ज्ञात होता है। किन्तु अभिज्ञान शाकुन्तल में दुर्वासा के शाप के कारण राजा दुष्यन्त शकुन्तला को नहीं पहचानता, इससे दुष्यन्त का चरित्र उदात्त बना रहता है। यह कालिदास की मौलिक कल्पना है।

"विचिन्तयन्ती यमनन्यमानसा" इस श्लोक के माध्यम से दुर्वासा शकुन्तला को चतुर्थ अङ्क में शाप देते हैं। **अतः विकल्प (C) सही है।**

156.'शमप्रधानेषु तपोधनेषु गूढं हि दाहात्मकमस्ति तेजः।
स्पर्शानुकूला इव सूर्यकान्तास्तदन्यतेजोऽभिभवाद् वमन्ति॥
अत्र 'तत्' पदेन किं द्योतते? (UGC 25, D 2018)

(A)शमः **(B) तपः**
(C) धनम् **(D) तेजः** **उत्तर- (D)**

व्याख्या- महाकवि कालिदास विरचित अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के द्वितीय अङ्क के सातवें श्लोक में राजा दुष्यन्त अपने सेनापति भद्रसेन से कहता है-

'शमप्रधानेषु तपोधनेषु गूढं हि दाहात्मकमस्ति तेजः।
स्पर्शानुकूला इव सूर्यकान्तास्तदन्यतेजोऽभिभवाद् वमन्ति॥'

शब्दार्थ- शमप्रधानेषु = शान्तिप्रधान, तपोधनेषु = तपस्वियों में, दाहात्मकं = जला देने वाला, गूढं = गुप्त, तेजः = तेज, हि = क्योंकि, स्पर्शानुकूलाः = स्पर्श के योग्य, सूर्यकान्ताः इव = सूर्यकान्तमणि के समान, तत् = उस (तेज)

अनुवाद- शान्तिप्रधान तपस्वियों में जला देने वाला गुप्त तेज रहता है। क्योंकि स्पर्श के योग्य सूर्यकान्त मणियों के तुल्य (वे) अन्य तेज से तिरस्कृत होने पर उस (तेज) को प्रकट करते हैं। (अभि. 2.7)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'तत्' शब्द से 'तेज' का अर्थ द्योतित हो रहा है। **अतः विकल्प (D) सही है।**

स्त्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-108

157.''मेदश्छेदकृशोदरं लघुभवत्युत्थानयोग्यं वपुः'' इत्येवं कस्य वैशिष्ट्यं प्रतिपादितम् ? (UGC 25,D2018)

(A) मृगयायाः **(B) पर्यटनस्य**

(C) तपश्चर्यायाः **(D) पादपसिञ्चनस्य** उत्तर- **(A)**

व्याख्या- प्रस्तुत पंक्ति महाकवि कालिदास द्वारा विरचित अभिज्ञानशाकुन्तलम् के द्वितीय अङ्क के पाँचवें श्लोक से उद्धृत है। द्वितीय अङ्क के प्रारम्भ में ''राजा दुष्यन्त और विदूषक मृगया (शिकार) खेलने राजा दुष्यन्त नहीं जायेंगे, क्योंकि माधव्य ने आज विश्राम करने की इच्छा व्यक्त की है।''– यह बात सुनकर सेनापति भद्रसेन महाराज दुष्यन्त के मृगया (शिकार) के लिए उत्साहित करते हुए शिकार करने का लाभ बताते हुए कहता है-

मेदश्छेदकृशोदरं लघु भवत्युत्थानयोग्यं वपुः
सत्त्वानामपि लक्ष्यते विकृतिमच्चित्तं भयक्रोधयोः।
उत्कर्षः स च धन्विनां यदिषवः सिध्यन्ति लक्ष्ये चले
मिथ्यैव व्यसनं वदन्ति मृगयामीदृग्विनोदः कुतः॥

अनुवाद- (मृगया से) शरीर, चर्बी कम होने से घटे हुए पेट वाला, चुस्त और उत्साह के योग्य हो जाता है। जीवों के भय और क्रोध की अवस्था में क्षुब्ध मन का भी ज्ञान होता है। यह धनुर्धारियों के लिए बड़े ही गौरव की बात है कि चंचल लक्ष्य पर (उनके) बाण सफल होते हैं। शिकार खेलने की व्यर्थ ही लोग व्यसन कहते हैं। इतना मनोरंजन और कहाँ?

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि 'मेदश्छेदकृशोदरं लघु भवत्युत्थानयोग्यं वपुः' में मृगया का वैशिष्ट्य प्रतिपादित है। **अतः विकल्प (A) सही है।**

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-104

158.अभिज्ञानशाकुन्तले शकुन्तलायाः प्रतिकूलदैवशमनार्थं कण्वः कुत्र गतः? **(UGC 25, J 2018)**

(A) काशीतीर्थम् **(B) प्रयागतीर्थम्**

(C) काञ्चीतीर्थम् **(D) सोमतीर्थम्** उत्तर- **(D)**

व्याख्या- **''इदानीमेव दुहितरं शकुन्तलामतिथिसत्काराय नियुज्य दैवमस्याः प्रतिकूलं शमयितुं सोमतीर्थं गतः।''**

जब राजा दुष्यंत हिरण का पीछा करते हुए जंगल में महर्षि कण्व के आश्रम के समीप पहुँचते हैं तो कण्व के शिष्य वैखानस से पूछते हैं कि क्या महर्षि कण्व आश्रम में हैं तो वैखानस जवाब देता है कि- अभी ही अपनी पुत्री शकुन्तला को अतिथि सत्कार के लिए नियुक्त करके उसके प्रतिकूल भाग्य को शान्त करने के लिए सोमतीर्थ को गये हुए हैं। अभिज्ञानशाकुन्तलम् नामक नाटक में कुल सात (7) अंक हैं। इसके प्रथम अंक में यह

जानकारी दी गई है कि कण्व शकुन्तला के प्रतिकूल भाग्य को शान्त करने के लिए सोमतीर्थ गये हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि प्रश्न में दिये गये चार विकल्पों में **विकल्प D सही है।**

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (प्रथमोऽङ्कः)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 31

159.''उपपन्ना हि दारेषु प्रभुता सर्वतोमुखी'' **(UGC 25, J 2018)**
अभिज्ञानशाकुन्तले इयमुक्तिर्भवति-

(A) मारीचस्य **(B) शारद्वतस्य**

(C) कण्वस्य **(D) शार्ङ्गरवस्य** **उत्तर- (B)**

व्याख्या-

* कालिदासकृत अभिज्ञानशाकुन्तलम् न केवल भारतवर्ष अपितु विश्व का सर्वोत्तम नाटक रत्न है। इसमें कुल सात अङ्क हैं।
* कालिदास को भारत का शेक्सपियर भी कहा जाता है।
* अभिज्ञानशाकुन्तलम् शृंगार रस प्रधान नाटक है।
* इसका नायक दुष्यन्त धीरोदात्त प्रकृति का है।
* नायिका शकुन्तला राजर्षि विश्वामित्र और मेनका अप्सरा की पुत्री है। जन्म से परित्यक्त शकुन्तला का पालन-पोषण कण्व ऋषि ने किया है।
* अभिज्ञानशाकुन्तलम् के अन्य प्रमुख पात्रों में कण्व अथवा कश्यप ऋषि, विदूषक, अनसूया और प्रियंवदा (शकुन्तला की सहेलियाँ), शार्ङ्गरव और शारद्वत, महर्षि मारीच आदि हैं।

प्रमुख उक्तियाँ (कण्व का कथन)

(1) पीड्यन्ते गृहिणः कथं नु तनयाविश्लेषदुःखैर्नवैः-
अर्थ- गृहस्थ लोग नवीन (पहली बार) पुत्री वियोग से कितना अधिक दुःखित होते होंगे।

(2) 'सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम्-
अर्थ- वह यह शकुन्तला (सम्प्रति) अपने पतिगृह को जा रही है, तुम सब अपनी स्वीकृति दो।

(3) 'वाष्पं कुरु स्थिरतया विरतानुबन्धम्' (काश्यप)
अर्थ- नेत्रों की दर्शनशक्ति को रोकने वाले अश्रु (प्रवाह) को धैर्यपूर्वक रोको।

(4) 'मार्गे पदानि खलु ते विषमी भवन्ति'
अर्थ- इस मार्ग में तुम्हारे पैर वस्तुतः लड़खड़ा रहे हैं।

(5) 'सोऽयं न पुत्रकृतकः पदवीं मृगस्ते'-
अर्थ- पुत्र के समान पाला गया यह हरिण तुम्हारे मार्ग को नहीं छोड़ रहा है।

शार्ङ्गरव का कथन-

(1)- 'जनाकीर्णं मन्ये हुतवहपरीतं गृहमिव'-

अर्थ- लोगों (भीड़) से संकुल (युक्त) इस राजगृह को अग्नि से घिरे हुए घर के समान समझ रहा हूँ।

(2)- "चिरस्य वाच्यं न गतः प्रजापतिः"-

अर्थ- प्रजापति चिरकाल के पश्चात् निन्दा के पात्र नहीं हुए।

(3)- "शकुन्तला मूर्तिमती च सत्क्रिया।"-

अर्थ- और शकुन्तला शरीरधारिणी सत्क्रिया (पूजा) है।

(4)- "किं कृतकार्यद्वेषो धर्मं प्रति विमुखता कृतावज्ञा?" (5.18)

अर्थ- क्या आप अपने किये हुए कार्य से घृणा करते हैं? या धर्म के प्रति विमुख हो रहे हैं अथवा किये हुए (कार्य) का निरादर कर रहे हैं।

शारद्वत का कथन- (1) 'स्थाने भवान् पुरप्रवेशादित्थंभूतः संवृत्तः।'-

अर्थ- यह उचित ही है कि आप नगर में प्रवेश करने से इस प्रकार के हो गये हैं।

(2)- "अभ्यक्तमिव स्नातः शुचिरशुचिमिव प्रबुद्ध इव सुप्तम्।"

अर्थ- नहाया हुआ (व्यक्ति) तेल लगाये हुए को, पवित्र (व्यक्ति) अपवित्र को, जागा हुआ (व्यक्ति) सोये हुए को (समझता है)।

(3) "उपपन्ना हि दारेषु प्रभुता सर्वतोन्मुखी।"

अर्थ- क्योंकि पत्नी पर (पति की) सब प्रकार की प्रभुता (अधिकार) स्वीकार की गई है।

मारीच का कथन- (1)- "तत्कोटिमत्कुलिशमाभरणं मघोनः"-

अर्थ- वह वज्र इन्द्र का आभूषण हो गया है।

(2)- "दुष्यन्त इत्यभिहितो भुवनस्य भर्ता।"-

अर्थ- यह दुष्यन्त इस नाम से प्रसिद्ध पृथ्वी का स्वामी है।

(2) "आशीरन्या न ते योग्या पौलोमी सदृशी भव।"-

अर्थ- तुम इन्द्राणी के समान होओ, अन्य कोई आशीर्वाद तुम्हारे योग्य नहीं है।

(3)- "श्रद्धा वित्तं विधिश्चेति त्रितयं तत् समागतम्"- अर्थ- (सौभाग्य से) श्रद्धा, धन और विधि ये तीनों यहाँ एकत्र हो गए हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'उपपन्ना हि दारेषु....।' उक्ति शारद्वत ने कही है। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (5/26)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 294

160. सानुमत्याः उपाख्यानम् अभिज्ञानशाकुन्तले कस्मिन् अङ्के अस्ति? **(UGC 25, J 2017)**

(A) सप्तमे **(B) षष्ठे**

(C) पञ्चमे **(D) चतुर्थे**

उत्तर- (B)

व्याख्या-

सप्त अङ्कात्मक, शृङ्गाररसप्रधान, महाभारत आदिपर्व के शकुन्तलोपाख्यान पर आधारित, महाकवि कालिदास द्वारा विरचित, दुष्यन्त शकुन्तला की प्रणय कथा से समन्वित, विश्वविख्यात नाटक का नाम है- **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**। जिस नाटक की अङ्कवार प्रमुख घटनाएँ निम्नवत् हैं-

* **प्रथम अङ्क-** मृग का अनुसरण करते हुए दुष्यन्त कण्व ऋषि के आश्रम पहुँचता है और शकुन्तला को देखकर मोहित हो जाता है, शकुन्तला भी उस पर आसक्त होती है। ग्रीष्म ऋतु का वर्णन।

* **द्वितीय अङ्क-** शकुन्तला पर आसक्त राजा का कामी अवस्था में प्रवेश। भाग्यवश ऋषि कुमारों का प्रवेश और राजा द्वारा राक्षसों से यज्ञ की सुरक्षा के लिये राजा को आश्रम में रुकने की स्वीकृति। माता द्वारा दुष्यन्त को बुलाया जाना।

* **तृतीय अङ्क-** राजा के द्वारा गान्धर्व विवाह का प्रस्ताव। शान्ति -जल लेकर आश्रम की स्वामिनी गौतमी का प्रवेश, यज्ञ में राक्षसों के विघ्न को दूर करने के लिए राजा का प्रस्थान। शकुन्तला का गर्भिणी होना।

* **चतुर्थ अङ्क-** शकुन्तला का पतिगृह हस्तिनापुर के लिए गमन अर्थात्- विदाई, दुर्वासा के द्वारा शकुन्तला को शाप मिलना, कण्व का सोमतीर्थ से आगमन।

* **पञ्चम अङ्क-** शार्ङ्गरव, शारद्वत और गौतमी का शकुन्तला को लेकर राजद्वार पर आगमन। दुर्वासा के शाप के प्रभाव के कारण शकुन्तला का तिरस्कार, राजा द्वारा शकुन्तला को पहचानने से इनकार करना। अँगूठी का न मिलना, शचीतीर्थ में अँगूठी के गिर जाने का पता चलना।

* **षष्ठ अङ्क-** धीवर वृत्तान्त, **सानुमती उपाख्यान**, अँगूठी के मिलने से राजा को शकुन्तला सम्बन्धी वृत्तान्त याद आना और राजा का पश्चात्ताप करना, मातलि का आगमन और इन्द्र का सन्देश प्राप्त होना।

* **सप्तम अङ्क-** राजा की दानवों पर विजय। इन्द्र के द्वारा राजा को स्वर्ग से विदा करना। लौटते समय राजा का हेमकूट पर्वत पर मारीच ऋषि का आश्रम देखना। मारीच ऋषि से मिलना। शकुन्तला और पुत्र सर्वदमन (भरत) से मिलन होना।

* **षष्ठ अङ्क में वर्णित सानुमती के प्रमुख कथन-**

* **सानुमती- निर्वर्तितं मया पर्यायनिर्वर्तनीयमप्सरस्तीर्थ-**
  सांनिध्यं यावत् साधुजनस्याभिषेककाल इति।

सानुमती- जब तक सज्जनों के स्नान का समय है, तब तक अप्सरातीर्थ पर बारी-बारी से वहाँ उपस्थित रहने का जो नियम है, वह मैंने पूरा कर लिया है।

* **सानुमती- उत्सवप्रियाः खलु मनुष्याः। गुरुणा कारणेन भवितव्यम्।** मनुष्य उत्सवप्रिय होते हैं। यह कोई बड़ा कारण होगा।

सानुमती- लतासंश्रिता द्रक्ष्यामि तावत् सख्याः प्रतिकृतिम्।
ततोऽस्या भर्तुर्बहुमुखमनुरागं निवेदयिष्यामि।

मैं लता का सहारा लेकर अपनी सखी का चित्र देखती हूँ, तत्पश्चात् उसके पति के विविध प्रकार से प्रकट हुए प्रेम को उसे बताऊँगी।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि अभिज्ञानशाकुन्तल का सानुमती उपाख्यान षष्ठ अङ्क में वर्णित है। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (अङ्क 6)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 375

161. शाकुन्तले दुष्यन्तपुत्रस्य प्रथमं नाम किम् आसीत्? **(UGC 25, J 2017)**

(A) भरतः **(B) सर्वदमनः**
(C) गौतमः **(D) वातायनः**

उत्तर- **(B)**

व्याख्या- अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के सप्तम अङ्क में दुष्यन्तपुत्र के द्वारा शेर के दाँत गिने जाने के अवसर पर पहली तापसी कहती है कि- **'किं नोऽपत्यनिर्विशेषाणि सत्त्वानि विप्रकरोषि? हन्त, वर्धते ते संरम्भः। स्थाने खलु ऋषिजनेन सर्वदमन इति कृतनामधेयोऽसि'** अर्थात् पितृतुल्य प्रिय इन प्राणियों को तू क्यों तंग (परेशान) कर रहा है? हाय तेरा क्रोध बढ़ता ही जा रहा है ऋषियों ने ठीक ही तेरा नाम सर्वदमन रखा है। इसी क्रम में दुष्यन्त पुत्र के विषय में ऋषि मारीच दुष्यन्त से कहते हैं-

इहायं सत्त्वानां प्रसभदमनात् सर्वदमनः।
पुनर्यास्यत्याख्यां भरत इति लोकस्य भरणात्॥(अभि.7.33)

आप इसको वंशप्रतिष्ठा स्वरूप चक्रवर्ती सम्राट् समझें। अद्वितीय महारथी यह अस्खलित और शान्त गति वाले रथ से समुद्रों को पार करके भविष्य में सातद्वीपों से युक्त सारी पृथ्वी पर विजय करेगा। यहाँ पर जीवों को बलात् वश में करने के कारण इसका नाम सर्वदमन था। भविष्य में यह संसार का पालन करेगा अतः इसका नाम 'भरत' पड़ेगा। इसप्रकार दुष्यन्त के पुत्र का प्रथम नाम सर्वदमन एवं द्वितीय नाम भरत है।

अतः विकल्प B सही है।

अभिज्ञानशाकुन्तलम् के कुछ प्रमुख पात्रों का नाम-	
सेनापति	- भद्रसेन
विदूषक	- माधव्य (माढव्य)
कञ्चुकी	- वातायन
ऋषिकुमार	- गौतम एवं नारद
कण्व शिष्य	- शार्ङ्गरव, शारद्वत
राजा का भृत्य	- रैवतक, करभक, कञ्चुकी,
दो पुलिस वाले	- सूचक, जानुक।
मारीच का शिष्य	- गालव

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् -कपिलदेव द्विवेदी, पेज 448

162. अभिज्ञानशाकुन्तलं षष्ठाङ्कगतः धीवरवृत्तान्तः कस्य उदाहरणं भवति? (UGC 25, D 2015)

(A) प्रवेशकस्य **(B) विष्कम्भकस्य**

(C) अङ्कावतारस्य **(D) प्रस्तावनायाः** उत्तर- **(A)**

व्याख्या- * अर्थोपक्षेपक - ये पाँच होते हैं -

(1) विष्कम्भक (2) चूलिका (3) अङ्कास्य (4) अङ्कावतार (5) प्रवेशक।

➢ **विष्कम्भक -** बीते हुए और आगे होने वाले कथा भागों का सूचक, संक्षिप्त अर्थ वाला तथा मध्यम पात्रों द्वारा प्रयुक्त जो अर्थोपक्षेपक है, वह विष्कम्भक कहलाता है।

''वृत्तवर्तिष्यमाणानां कथांशानां निदर्शकः।
संक्षेपार्थस्तु विष्कम्भो मध्यपात्रप्रयोजितः॥''

अभिज्ञानशाकुन्तल के 4 अंक में **'गान्धर्वेण विधिना निवृत्तकल्याणा शकुन्तला'** से सम्पन्न हो चुके हुए दुष्यन्त और शकुन्तला के गान्धर्व विवाह की सूचना दी है तथा **'अभिज्ञानाभरण- दर्शनेन शापो निवर्तिष्यते'** से भविष्य में घटित होने वाले शाप निवृत्ति की ओर संकेत किया गया है। अतः यह **'शुद्ध विष्कम्भक'** है।

➢ **अङ्कावतार -** प्रथम अङ्क की कथा का विच्छेद किये बिना द्वितीय अङ्क अवतरित होता है। वह अङ्कावतार कहलाता है।

'अङ्कावतारस्त्वङ्कान्ते पातोऽङ्कस्याविभागतः।'

अभिज्ञानशाकुन्तल के **द्वितीय अंक** में प्रथम अंक के राजा के कथन -

'मन्दौत्सुक्योऽस्मि नगरगमनं प्रति। न खलु शक्नोमि शकुन्तलाव्यापारादात्मनं निवर्तयितुम् ।' से राजा द्वारा नगर जाने की उत्सुकता मन्द पड़ जाने की कथा आगे द्वितीय अङ्क में विदूषक के कथन -

'ह्यः किलास्मास्ववहीनेषु तत्रभवतो मृगानुसारेणाश्रमपदं प्रविष्टस्य तापसकन्यका शकुन्तला ममाधन्यताया दर्शिता। साम्प्रतं नगरगमनाय मनः कथमपि न करोति।' से प्रथम अङ्क की कथा का विच्छेद हुए बिना द्वितीय अङ्क अवतरित हुआ है। अतः यह **'अङ्कावतार'** का उदाहरण है।

➢ **प्रवेशक -** भूत और भविष्य के कथांशों का सूचक, नीचपात्रों द्वारा अनुदात्त उक्तियों से प्रयुक्त, दो अंकों के बीच में स्थित शेष (अप्रदर्शनीय) अर्थ का सूचक प्रवेशक कहलाता है।

''तद्वदेवानुदात्तोक्त्या नीचपात्रप्रयोजितः।''
प्रवेशोऽङ्कद्वयस्यान्तः शेषार्थस्योपसूचकः॥

अभिज्ञानशाकुन्तल के **पञ्चम अङ्क** में भूतकाल की घटना शक्रावतार में गिरकर अंगूठी खोने - **'नूनं ते शक्रावताराभ्यन्तरे शचीतीर्थसलिलं वन्दमानायाः प्रभ्रष्टमङ्गुलीयकम्'** यह गौतमी का कथन एवं **षष्ठ अङ्क** में उसके मिल जाने पर दुष्यन्त के भावी वियोग की सूचना- **'तस्य दर्शनेन भर्तुरभिमता जनः स्मारितः। मुहूर्तं**

प्रकृतिगम्भीरोऽपि पर्यश्रुनयन आसीत् ।' श्याल का कथन है। अतः यहाँ प्रवेशक है।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि अभिज्ञानशाकुन्तलम् के षष्ठ अङ्क में प्रवेशक है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**
स्त्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज 317

163.''तीव्राघातप्रतिहततरुः स्कन्धलग्नैकदन्तः''- **(UGC 25, D 2015)**
केन छन्दसा विनिर्मितोऽयं श्लोकपादः?
(A) हरिणी **(B) शिखरिणी**
(C) मन्दाक्रान्ता **(D) मालिनी** **उत्तर- (C)**

व्याख्या- 'महाकवि कालिदास' द्वारा विरचित **'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' 7 अङ्कों** का विश्वविख्यात नाटक है।
इस नाटक का उपजीव्य- महाभारत के आदिपर्व का शकुन्तलोपाख्यानम् (68-74 अध्याय) है।

सातों अङ्कों के नाम

(1) आश्रमप्रवेश	(2) आश्रमनिवेश	(3) मिलन
(4) विदाई	(5) प्रत्याख्यान	(6) पश्चात्ताप
(7) पुनर्मिलन		

➤ **हरिणी छन्द -** जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः नगण, सगण, मगण, रगण, सगण, लघु तथा गुरु वर्ण होते हैं और 6, 4, 7 पर यति होती है। उसे **हरिणी** छन्द कहते हैं -
'नसमरसलागः षड्वेदैर्हयैर्हरिणी मता'
यथा-
'इदमशिशिरैरन्तस्तापाद् विवर्णमणीकृतं
निशि निशि भुजन्यस्तापाङ्गप्रसारिभिरश्रुभिः।
अनभिलुलितज्याघाताङ्कं मुहुर्मणिबन्धनात्
कनकवलयं स्रस्तं स्रस्तं मया प्रतिसार्यते॥ (3/10॥)

➤ **शिखरिणी छन्द -** शिखरिणी छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः दो यगण, एक मगण, नगण, सगण तथा भगण, लघु तथा गुरु वर्ण होता है और 6 एवं 11 पर यति होती है।
'रसै रुद्रैश्छिन्ना यमनसभलागः शिखरिणी'।
यथा- यदालोके सूक्ष्मं व्रजति सहसा तद् विपुलतां ....
...... न मे दूरे किञ्चित् क्षणमपि न पार्श्वे रथजवात्। (अभि. 1-9)

➤ **मन्दाक्रान्ता छन्द -** इस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः मगण, भगण, नगण, दो तगण, दो गुरु वर्ण होते हैं एवं 4, 6, 7 पर यति होती है।
''मन्दाक्रान्ता जलधिषडगैः म्भौ नतौ ताद्गुरू चेत्॥''

यथा -

'तीव्राघातप्रतिहततरुस्कन्धलग्नैकदन्तः
पादाकृष्टव्रततिवलयासङ्गसञ्जातपाशः।
मूर्तो विघ्नस्तपस इव नो भिन्नसारङ्गयूथो
धर्मारण्यं प्रविशति गजः स्यन्दनालोकभीतः॥' (अभि. 1-33)

मालिनी छन्द - इस छन्द के प्रत्येक चरण में दो नगण, मगण, दो गुरु वर्ण एवं 7, 8 पर यति होती है।

'ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः।'

यथा- सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यं ....
.... किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम् ॥ (अभि. 1-20)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरणों से स्पष्ट है कि प्रस्तुत श्लोक में मन्दाक्रान्ता छन्द है।

अतः विकल्प 'C' सही है।

स्त्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् - (1/33)

4. अभिज्ञानशाकुन्तल के सम्भावित प्रश्न

1. अभिज्ञानशाकुन्तलस्य रचयिता अस्ति?
   (A) बाणभट्टः (B) वेदव्यासः
   (C) कालिदासः (D) भवभूतिः

2. अभिज्ञानशाकुन्तलं साहित्यस्य कस्यां विधौ आयाति?
   (A) महाकाव्यविधौ
   (B) व्याकरणग्रन्थे
   (C) नाटकविधौ
   (D) गद्यकाव्यविधौ

3. कति अङ्काः अभिज्ञानशाकुन्तले सन्ति?
   (A) अष्ट (8) (B) पञ्च (5)
   (C) षट् (6) **(D) सप्त (7)**

4. 'शाकुन्तलकथायाः' वास्तव्यमुपजीव्यमस्ति-
   (A) ऋग्वेदः (B) धर्मशास्त्रम्
   (C) सामवेदः **(D) महाभारतम्**

5. अभिज्ञानशाकुन्तले अङ्गीरसः अस्ति?
   (A) वीररसः **(B) शृङ्गाररसः**
   (C) करुणरसः (D) शान्तरसः

6. अभिज्ञानशाकुन्तले का रीतिः प्रयुक्ता?
   (A) वैदर्भीरीतिः
   (B) गौडीरीतिः
   (C) पाञ्चालीरीतिः
   (D) एतासु न किमपि

7. अभिज्ञानशाकुन्तले दुष्यन्तः कीदृशः नायकः?
   (A) धीरप्रशान्तः (B) धीरोद्धतः
   (C) धीरललितः **(D) धीरोदात्तः**

8. अभिज्ञानशाकुन्तलस्य कथा महाभारतस्य कस्मिन् पर्वणि प्राप्यते?
   (A) वनपर्वणि (B) सभापर्वणि
   (C) आदिपर्वणि (D) शान्तिपर्वणि

9. अभिज्ञानशाकुन्तलस्य सर्वप्रथमं आंग्लानुवादः केन कृतः?
   (A) शेक्सपियरमहोदयेन
   (B) गेटेमहोदयेन
   (C) विलियमजोन्समहोदयेन
   (D) मैक्समूलरमहोदयेन

10. अभिज्ञानशाकुन्तलस्य कथा कुत्र प्राप्यते?
    (A) महाभारते
    (B) पद्मपुराणे
    (C) वायुपुराणे
    (D) महाभारते पद्मपुराणे उभयत्रापि

11. महाभारताश्रितं नाटकमस्ति?
    (A) रत्नावली
    (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
    (C) स्वप्नवासवदत्तम्
    (D) मालतीमाधवम्

12. एकाभरणलोपे सति कुत्र कथायाः स्थितिः परिवर्तिता?
   (A) रत्नावल्याम्
   (B) स्वप्नवासवदत्ते
   (C) बुद्धचरिते
   (D) अभिज्ञानशाकुन्तले

13. अभिज्ञानशाकुन्तले 'अभिज्ञान' शब्देन किं ज्ञायते?
   (A) नासाभूषणम् (B) नूपुरम्
   (C) मुद्रिका (D) माला

14. 'अभिज्ञान' शब्दस्य अर्थः भवति?
   (A) ज्ञान (B) स्मरण
   (C) पहचान (D) अभियान

15. शाकुन्तलमङ्गलाचरणे कीदृशः शिवः वर्णितः?
   (A) दशमूर्तिः (B) नवमूर्तिः
   (C) अष्टमूर्तिः (D) पञ्चमूर्तिः

16. अभिज्ञानशाकुन्तलस्य कथानक-मस्ति?
   (A) ऐतिहासिकमस्ति
   (B) उत्पाद्यमस्ति
   (C) ऐतिहासिके सत्यपि किञ्चित् परिवर्तितम्
   (D) एतेषु न किमपि

17. अभिज्ञानशाकुन्तलस्य जर्मनभाषायां प्रथमः अनुवादकः आसीत्?
   (A) गेटे
   (B) विलियमजोन्सः
   (C) मैक्समूलरः
   (D) जॉर्जफोस्टरः

18. अभिज्ञानशाकुन्तलस्य प्रारम्भे नान्दीपद्ये स्रष्टुः आद्या सृष्टिः का?
   (A) पृथ्वी **(B) जलम्**
   (C) अग्निः (D) वायुः

19. अभिज्ञानशाकुन्तले शकुन्तलां कः अशपत्?
   (A) वशिष्ठः (B) नारदः
   (C) दुर्वासाः (D) विश्वामित्रः

20. अभिज्ञानशाकुन्तले विदूषकस्य नाम किम्?
   (A) मैत्रेयः **(B) माढव्यः**
   (C) माणवकः (D) गौतमः

21. दुष्यन्तस्य मनसः स्थितिं ज्ञातुं मेनकया का प्रेषिता?
   (A) सानुमती (B) उर्वशी
   (C) रम्भा (D) तिलोत्तमा

22. अभिज्ञानशाकुन्तले मातलिः कः अस्ति?
   (A) दुष्यन्तस्य पुरोहितः
   (B) दुष्यन्तस्य सेनापतिः
   (C) इन्द्रस्य सारथिः
   (D) कण्वस्य शिष्यः

23. एकस्मिन् प्रसिद्धे नाटके 'मधुकरिका' अस्ति?
   (A) मेनकायाः सखी
   (B) दुष्यन्तस्य परिचारिका
   (C) मारीचाश्रमस्य तपस्विनी
   (D) एतासु न काऽपि

24. शापानन्तरं दुर्वाससं का प्रसन्नम् अकरोत्?
(A) शकुन्तला
(B) अनसूया
(C) प्रियंवदा
(D) अनसूया एवं प्रियंवदा उभावपि

25. अभिज्ञानशाकुन्तले वेत्रवती अस्ति?
(A) नदी
(B) उद्यानपालिका
(C) प्रतीहारी
(D) अप्सरा

26. 'शर्मिष्ठायाः' पिता आसीत्?
(A) ययातिः
(B) शुक्राचार्यः
(C) दानवराजवृषपर्वः
(D) पुरुः

27. 'सानुमती' कस्मिन् काव्ये पात्ररूपेण वर्णिता?
(A) किरातार्जुनीये
(B) उत्तररामचरिते
(C) शिशुपालवधे
(D) अभिज्ञानशाकुन्तले

28. 'शारद्वतः' कस्मिन् नाटके पात्ररूपेण वर्णितः?
(A) उत्तररामचरिते
(B) अभिज्ञानशाकुन्तले
(C) मृच्छकटिके
(D) मुद्राराक्षसे

29. 'अभिज्ञानशाकुन्तलस्य नायकः कः–
(A) यौगन्धरायणः **(B) दुष्यन्तः**
(C) वसन्तकः (D) उदयनः

30. कस्मिन् नाटके अनसूया पात्ररूपेण वर्णिता?
(A) मालविकाग्निमित्रे
(B) विक्रमोर्वशीये
(C) अभिज्ञानशाकुन्तले
(D) उत्तररामचरिते

31. 'सर्वदमनः' कस्मिन् नाटके पात्ररूपेण वर्णितः?
(A) अभिज्ञानशाकुन्तले
(B) उत्तररामचरिते
(C) प्रतिमानाटके
(D) अभिषेकनाटके

32. मारीचः, काश्यपः विश्वामित्रः, दुर्वासाः- एते ऋषयः कुत्र उल्लिखिताः –
(A) शिशुपालवधे
(B) मेघदूते
(C) कुमारसम्भवे
(D) अभिज्ञानशाकुन्तले

33. 'करभकः' कस्य ग्रन्थस्य पात्रम् –
(A) कादम्बर्याः
(B) अभिज्ञानशाकुन्तलस्य
(C) कुमारसम्भवस्य
(D) महावीरचरितस्य

34. अभिज्ञानशाकुन्तले ययातेः कस्य पुत्रस्य नाम उल्लिखितम्?
(A) यदोः (B) तुर्वशस्य
(C) पुरोः (D) द्रुध्योः

35. शकुन्तलायाः सखी काऽस्ति?
(A) गौतमी
(B) मालविका
(C) उर्वशी
(D) अनसूया/प्रियंवदा

36. अभिज्ञानशाकुन्तलानुसारं शकुन्तलया सह पतिगृहं हस्तिनापुरम् अगच्छत्?
(A) गौतमी
(B) मेनका
(C) अनसूया
(D) प्रियंवदा

37. कस्य आग्रहकारणात् शकुन्तलां प्रति दत्ते शापे लघुता आगता?
(A) अनसूयायाः
(B) प्रियंवदायाः
(C) कण्वस्य
(D) गौतम्याः

38. दुर्वासाः आश्रमं समायाते शकुन्तला कुत्र दत्तचित्ता आसीत्?
(A) कण्वऋषौ
(B) दुष्यन्ते
(C) सद्यः प्रसूतायां मृग्याम्
(D) नवपल्लवयुक्तलतायाम्

39. अनसूयाप्रियंवदे स्तः-
(A) शकुन्तलायाः सख्यौ
(B) दुष्यन्तपत्न्यः
(C) कण्वाश्रमस्य अध्यक्षे
(D) एतेषु न किमपि

40. दुर्वाससा शापः शकुन्तलायै प्रदत्तः?
(A) स्मृतां विद्यां विस्मरिष्यति
(B) त्वमस्वस्था भविष्यति
(C) तव पुत्रः त्वां विस्मरिष्यति
(D) त्वं यं स्मरसि सः त्वां विस्मरिष्यति

41. दुर्वासाऋषिः शापमोचनं कथमकथयत्?
(A) षड्मासानन्तरं दुष्यन्तः शकुन्तलां स्वतः स्मरिष्यति।
(B) वसन्तऋतौ स्मरणं करिष्यति।
(C) कञ्चिदभिज्ञानं दृष्ट्वा शकुन्तलां स्मरिष्यति।
(D) पुनर्जन्मनि दुष्यन्तः शकुन्तलां स्मरिष्यति।

42. अभिज्ञानशाकुन्तले दुर्वाससः शापः कस्य उदाहरणं भवति–
(A) प्रवेशकस्य
(B) चूलिकायाः
(C) विष्कम्भकस्य
(D) अङ्कावतारस्य

43. चतुर्थाङ्कस्य कथावस्तु मानवीयजीवनस्य कां घटनां सूचयति?
(A) बालकस्य जन्मनः
(B) बालकस्य गुरुकुल-गमनस्य
(C) पुत्र्याः विवाहानन्तरं पतिगृहगमनस्य
(D) मृत्युपरान्त-श्मशानगमनस्य

44. अभिज्ञानशाकुन्तले वर्णिता गौतमी वर्तते?
(A) दुष्यन्तस्य परिचारिका
(B) कण्वाश्रमस्य अध्यक्षा
(C) मारीचाश्रमस्य तपस्विनी
(D) एका अप्सरा

45. गौतमी का आसीत्?
(A) शकुन्तलायाः सखी
(B) वृद्धा तापसी
(C) आश्रमस्य परिचारिका
(D) कण्वस्य पत्नी

46. अभिज्ञानशाकुन्तलनाटके तापसी सुव्रता अस्ति?
(A) शकुन्तलायाः सखी
(B) अप्सरा
(C) तपोवनस्य अध्यक्षा
(D) मारीचाश्रमस्य एका तपस्विनी

47. शार्ङ्गरवशारद्वतपात्राणां वर्णनं कस्मिन्नाटके अस्ति?
(A) उत्तररामचरिते
(B) मृच्छकटिके
(C) अभिज्ञानशाकुन्तले
(D) मुद्राराक्षसे

48. 'तपोधनं वेत्सि न मामुपस्थितम्' अत्र 'तपोधनम्' शब्दः प्रयुक्तः अस्ति?
(A) कण्वस्य कृते
(B) दुष्यन्तस्य कृते
(C) दुर्वाससः कृते
(D) वनेचरस्य कृते

49. 'अस्यामहं त्वयि च सम्प्रति वीतचिन्तः' कः?
(A) दुष्यन्तः (B) शार्ङ्गरवः
(C) कण्वः (D) मारीचः

50. शकुन्तलायै पतिगृहगमनस्य सन्देशः केन प्रदत्तः?
(A) कण्वेन (B) दुर्वाससा
(C) तपोवनवृक्षैः(D) मृगैः

51. "मम विरहजां न त्वं वत्से! शुचं गणयिष्यसि" अत्र 'मम' इत्यनेन शब्देन कः प्रकाशितः?
(A) कण्वः
(B) शकुन्तला
(C) सर्वदमनः (भरतः)
(D) एतेषु न कोऽपि

52. शकुन्तलायाः माता आसीत्?
(A) मेनका (B) शर्मिष्ठा
(C) मदिरा (D) मैना

53. शकुन्तलादुष्यन्तयोः पुत्रस्य नाम?
(A) सर्वदमनः (भरतः)
(B) हारीतः
(C) गौतमः
(D) पुरुः

54. अभिज्ञानशाकुन्तले सर्वप्रथमं सखीभ्यां शापवृत्तान्तं कस्मै निवेदितम्?
(A) कण्वाय
(B) मेनकायै
(C) शकुन्तलायै
(D) एतेषु न कस्मैचित्

55. महर्षिकण्वाय शकुन्तलादुष्यन्तयोः विवाहस्य सूचना केन प्रदत्ता?
(A) गौतम्या
(B) अनसूयाप्रियम्वदाभ्याम्
(C) अशरीरिणी-छन्दोमयीवाण्या
(D) सानुमत्या

56. अभिज्ञानशाकुन्तले नाटके शार्ङ्गरवः अस्ति?
(A) कण्वस्य शिष्यः
(B) मारीचस्य शिष्यः
(C) दुष्यन्तस्य पुरोहितः
(D) ययातेः पुत्रः

57. अभिज्ञानशाकुन्तलनाटके मारीचस्य शिष्यः कः अस्ति–
(A) गालवः (B) शार्ङ्गरवः
(C) मालवः (D) शारद्वतः

58. अभिज्ञानशाकुन्तले कण्वऋषिः केनापरनाम्ना ज्ञायते?
(A) दुर्वासाः (B) मारीचः
(C) कश्यपः **(D) काश्यपः**

59. राज्ञः दुष्यन्तस्य द्वितीया पटराज्ञी आसीत्?
(A) सानुमती **(B) वसुमती**
(C) शकुन्तला (D) मेनका

60. 'मधुकरिका' कस्मिन् नाटके अस्ति?
(A) मेघदूते
(B) अभिषेकनाटके
(C) मृच्छकटिके
(D) शाकुन्तले

61. पुरुः कस्य पुत्रः आसीत्?
(A) देवयान्याः
(B) मेनकायाः
(C) शकुन्तलायाः
(D) शर्मिष्ठायाः

62. इन्द्रस्य सकाशात् केन सह मनुष्यलोकमवतरति दुष्यन्तः?
(A) जानुकेन (B) माधव्येन
(C) गौतमेन **(D) मातलिना**

63. अभिज्ञानशाकुन्तले ऋषि-पात्रं नास्ति-
(A) कण्वः (B) मारीचः
(C) सोमरातः (D) दुर्वासाः

64. मातलिः कस्मिन्नाटके पात्रभूतः अस्ति?
(A) प्रतिमानाटके
(B) मृच्छकटिके
(C) अभिज्ञानशाकुन्तले
(D) मध्यमव्यायोगे

65. महर्षिकण्वः केन सार्धं शकुन्तलां पतिगृहं प्रेषयति?
(A) शार्ङ्गरवेण
(B) शारद्वतेन
(C) गौतम्या
(D) उपर्युक्ताभिः सर्वैः सार्धम्

66. कालिदासः 'सुलभकोपमहर्षिः' इति कमुक्तवान्?
(A) दुर्वाससम्
(B) विश्वामित्रम्
(C) परशुरामम्
(D) वशिष्ठम्

67. शाकुन्तले दुष्यन्तपुत्रस्य प्रथमं नाम (बाल्यकालस्य) किम् आसीत्–
(A) भरतः (B) दौष्यन्तिः
(C) सर्वदमनः (D) गौतमः

68. 'गण्डस्योपरि पिण्डकः संवृत्तः' अस्ति?
(A) सूक्तिः
(B) काव्यलक्षणम्
(C) कथनम् (मुहावरा)
(D) एतेषु विकल्पेषु न किमपि

69. 'सर्वथा चक्रवर्तिनं पुत्रमाप्नुहि' अनेन किं निर्दिष्टम्?
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलस्य कथानकस्य प्रयोजनम्
(B) कालिदासस्य पुत्रप्राप्तिः
(C) कुमारकार्तिकेयस्य जन्म
(D) एतेषु न किमपि

70. सत्यकथनं चिनुत?
(A) शकुन्तलादुष्यन्तयोः विवाहः गान्धर्वः अस्ति।
(B) शकुन्तलादुष्यन्तयोः विवाहः देवः अस्ति।
(C) शकुन्तलादुष्यन्तयोः विवाहः प्राजापत्यः अस्ति।
(D) शकुन्तलादुष्यन्तयोः विवाहः पैशाचः अस्ति।

71. ''................ षड्भागमक्षय्यं ददत्यारण्यका हि नः।।'' रिक्ते स्थले समुचितं किम्?
(A) यशः **(B) तपः**
(C) मनः (D) धनम्

72. शकुन्तलां प्रति 'भर्तुर्बहुमता भव' वाक्यमिदं केनोक्तम् ?
(A) कश्यपेन
(B) एकया तापस्या
(C) गौतम्या
(D) प्रियंवदया

73. 'अरण्ये मया रुदितमासीत्'- शाकुन्तले कस्य वचनमिदम्?
(A) राज्ञः
(B) विदूषकस्य
(C) कण्वस्य
(D) शारद्वतस्य

74. 'वामाः कुलस्याधयः' अत्र 'वामाः' इति पदस्य कोऽर्थः?
(A) कटाक्षः
(B) सुन्दरी
(C) वामभागे स्थिता
(D) विपरीता

75. 'दिष्ट्या धूमाकुलितदृष्टेरपि यजमानस्य पावक एवाहुतिः पतिता' अनेन दृष्टान्तेन कः स्वकृतार्थताम् अङ्गीकृतवान्?
(A) कण्वः (B) गौतमी
(C) मातलिः (D) शकुन्तला

76. ''दिष्ट्या धूमाकुलितदृष्टेरपि यजमानस्य पावक एवाहुतिः पतिता'' एतस्मिन् वाक्ये 'पावक' इति शब्देन कः सङ्केतितः?
(A) शकुन्तला **(B) दुष्यन्तः**
(C) कण्वः (D) यज्ञशाला

77. 'आमन्त्रयस्व सहचरम्' इत्यस्याभिप्रायोऽस्ति?
(A) सहचरेण आह्वानम्
(B) सहचरेण सार्धं वार्तालापः
(C) सहचरं त्यजतु
(D) सहचरात् दूरे गमनाय स्वीकृतिः

78. पतिगृहगमनसमये शकुन्तलायै कण्वेन केन श्लोकेन उपदिष्टः?
(A) शुश्रूषस्व गुरून्................
(B) अस्मान् साधु विचिन्त्य.........
(C) पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलम्..........
(D) एषापि प्रियेण विना गमयति....

79. 'यात्येकतोऽस्तशिखरं पतिरोषधीनाम्' अत्र 'ओषधीनां पतिः' कः?
(A) चन्द्रः (B) सूर्यः
(C) कण्वः (D) विश्वामित्रः

80. "भूयिष्ठं भव दक्षिणा परिजने" अत्र 'परिजन' इत्यस्य अर्थः भवति?
(A) आत्मीयजनः
(B) बन्धुजनः
(C) उदारः
(D) सेवकजनः

81. 'आ परितोषाद् विदुषां न साधु मन्ये .... विज्ञानम्' रिक्तस्थाने कः शब्दः उपयुक्तः?
(A) प्रबन्ध (B) प्रमाण
(C) प्रयोग (D) प्रसाद

82. अथवा भवितव्यानां .... भवन्ति सर्वत्र।
(A) पात्राणि (B) सूत्राणि
(C) द्वाराणि (D) तन्त्राणि

83. गच्छति पुरः शरीरं धावति पश्चादसंस्तुतं चेतः। चीनांशुकमिव केतोः ..... नीयमानस्य–
(A) प्रतिकूलं (B) प्रतिभवनं
(C) सुरनगरीं **(D) प्रतिवातं**

84. "सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु .... मन्तःकरण-प्रवृत्तयः।"
(A) प्रधान **(B) प्रमाण**
(C) सन्धान (D) सिद्धान्त

85. "अतः परीक्ष्य कर्तव्यं विशेषात् सङ्गतं रहः। .... हृदयेष्वेवं वैरीभवति सौहृदम्।।"
(A) अदृष्ट (B) अनिष्ट
(C) अमित्र **(D) अज्ञात**

86. येन येन वियुज्यन्ते प्रजाः स्निग्धेन बन्धुना। स स ...... तासां दुष्यन्त इति घुष्यताम्।।
(A) शापादृते (B) कोपादृते
(C) पापादृते (D) दोषादृते

87. "तेजोद्वयस्य युगपद् व्यसनोदयाभ्यां लोको .... इवात्मदशान्तरेषु।"
(A) नियुज्यत **(B) नियम्यत**
(C) विभज्यत (D) विबोध्यत

88. "तत्र श्लोकचतुष्टयम्" इत्युक्तौ 'तत्र' इति पदेन आशयोऽस्ति।
(A) उत्तररामचरितस्य तृतीयोऽङ्कः
(B) अभिज्ञानशाकुन्तलस्य चतुर्थोऽङ्कः
(C) मृच्छकटिकस्य प्रथमोऽङ्कः
(D) उक्तेषु न किमपि

89. 'धीवर-प्रसङ्गः' अभिज्ञान-शाकुन्तलस्य कस्मिन् अङ्के वर्णितः?
(A) तृतीये (B) पञ्चमे
(C) षष्ठे (D) सप्तमे

90. अभिज्ञानशाकुन्तले सर्वप्रथमं विदूषकस्य चित्रणमस्ति?
(A) प्रथमाङ्के **(B) द्वितीयाङ्के**
(C) तृतीयाङ्के (D) चतुर्थाङ्के

91. अभिज्ञानशाकुन्तलस्य कस्य अङ्कस्य प्रारम्भे सर्वप्रथमं शुद्धविष्कम्भकस्य प्रयोगः कृतः?
(A) प्रथमाङ्के (B) द्वितीयाङ्के
(C) तृतीये अङ्के(D) चतुर्थे अङ्के

92. अभिज्ञानशाकुन्तलनाटके प्रवेशकस्य प्रयोगः जातः?
(A) तृतीये अङ्के
(B) द्वितीये अङ्के
(C) पञ्चमे अङ्के
(D) षष्ठे अङ्के

93. अभिज्ञानशाकुन्तलस्य कस्मिन् अङ्के विष्कम्भकः समाप्तः?
(A) द्वितीये
(B) तृतीये
(C) चतुर्थे
(D) पञ्चमे

94. अभिज्ञानशाकुन्तले शापवृत्तान्तः कस्मिन् अङ्के अस्ति?
(A) प्रथमे (B) तृतीये
(C) चतुर्थे (D) पञ्चमे

95. अभिज्ञानशाकुन्तले कविकालिदासः कस्याः मौलिकतायाः कारणात् दुष्यन्तस्य चरित्रम् उदात्तं कृतवान्?
(A) शकुन्तलावत्प्रकृतिपुत्री प्रेमकारणात्
(B) भारतवर्षस्य वीररसचरित्रप्रस्तु-तिकारणात्
(C) दुर्वाससः शापकल्पनाकारणात्
(D) अभिज्ञाने कारणभूता 'अङ्गुलीयकमिति' कारणात्

96. अभिज्ञानशाकुन्तलस्य चतुर्थे अङ्के विष्कम्भकमस्ति ?
(A) अङ्कस्य अन्ते
(B) अङ्कस्य प्रारम्भे
(C) अङ्कस्य मध्ये
(D) एतेषु न किमपि

97. कालिदासकृते 'अभिज्ञानशाकुन्तले' कस्य अङ्कस्य सर्वाधिकं महत्त्वम्?
(A) द्वितीयस्य
(B) चतुर्थस्य
(C) पञ्चमस्य
(D) सप्तमस्य

98. कस्मिन् अङ्के शकुन्तला मनोगतं गीतवस्तु नलिनीपत्रे नखैर्निक्षिप्तवर्णं करोति?
(A) प्रथमे **(B) तृतीये**
(C) द्वितीये (D) पञ्चमे

99. आकाशयानेन सानुमती नामाप्सराः कस्मिन् अङ्के प्रविशति?
(A) चतुर्थे **(B) षष्ठे**
(C) पञ्चमे (D) सप्तमे

100. शकुन्तलायाः हस्तात् परिभ्रष्टम् अङ्गुलीयकं पुनः कस्मिन्नङ्के राज्ञा आसादितम्?
(A) चतुर्थे **(B) षष्ठे**
(C) पञ्चमे (D) सप्तमे

101. अभिज्ञानशाकुन्तलस्य कस्मिन्नङ्के कण्वः शकुन्तलामुपदिशति?
(A) द्वितीये (B) तृतीये
(C) चतुर्थे (D) पञ्चमे

102. अभिज्ञानशाकुन्तले वायोः विभिन्नस्तरेषु परिभ्रमणं कस्मिन्नङ्के वर्तते–
(A) चतुर्थे (B) पञ्चमे
(C) षष्ठे **(D) सप्तमे**

103. अभिज्ञानशाकुन्तले षष्ठाङ्कगतः धीवरवृत्तान्तः कस्य उदाहरणं भवति?
(A) प्रवेशकस्य
(B) विष्कम्भकस्य
(C) अङ्कावतारस्य
(D) प्रस्तावनायाः

104. कस्मिन् स्थाने शकुन्तलायाः अङ्गुलीयकं पतितम्?
(A) मार्गे
(B) शचीतीर्थे
(C) प्रभासतीर्थे
(D) कण्वाश्रमे

105. 'मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति'-अत्र काव्यादर्शकाराभिप्रेतः गुणः कः?
(A) सौकुमार्यम् (B) श्लेषः
(C) माधुर्यम् (D) प्रसादः

106. शकुन्तलायाः शापमुक्तेः कारणमस्ति?
(A) मुक्तानां माला
(B) वलयम्
(C) बाहुबन्धः
(D) अङ्गुलीयकम्

107. राजा दुष्यन्तः शकुन्तलां तदा परिचेष्यति यदा सः द्रक्ष्यति?
(A) कर्णकुण्डलम्
(B) कण्ठाहारम्
(C) अङ्गुलीयकम्
(D) केयूरम्

108. अनसूयाप्रियंवदाभ्यां कथं शकुन्तला आभूषणैः सज्जीकृता?
(A) आभूषणस्थापनाय प्रशिक्षणं प्राप्तम्
(B) गौतम्या प्रशिक्षणं प्राप्तम्
(C) शकुन्तला स्वयमेव आधत्ते
(D) चित्राभरणदर्शनेन

109. शकुन्तलायाः गर्भे दुष्यन्तेन तेजः (वीर्यं) संस्थापितमिति कण्वेन कथं ज्ञातम्?
(A) अनसूयाप्रियंवदाभ्याम्
(B) गौतम्या
(C) छन्दोमयी-वाण्या
(D) कण्वशिष्यैः

110. शकुन्तलया पतिगृहगमनसमये यस्याः लतायाः आलिङ्गनं कृतं तस्याः नाम किम् ?
(A) वनज्योत्स्ना
(B) नवमालिका
(C) लताभगिनी
(D) केसरलता

111. दुष्यन्तस्य वंशस्य नाम किम्?
(A) रघुवंशः **(B) पुरुवंशः**
(C) सूर्यवंशः (D) कुशिकवंशः

112. शकुन्तलायाः अनिष्टनिवारणाय महर्षिकण्वः कुत्र गतः?
(A) शचीतीर्थम्
(B) सोमतीर्थम्
(C) हेमकूटम्
(D) हस्तिनापुरम्

113. अभिज्ञानशाकुन्तलस्य चतुर्थाङ्कस्य कति श्लोकाः प्रसिद्धाः?
(A) पञ्च (B) त्रयः
(C) सप्त **(D) चत्वारः**

114. अधोऽङ्कितेषु पद्येषु शाकुन्तलस्य प्रसिद्धश्लोकश्चतुष्ट्यां न गण्यते–
(A) पातुं न प्रथमं व्यवस्यति........
(B) शुश्रूषस्व गुरून् कुरु...........
(C) यास्यत्यद्य शकुन्तलेति.........
(D) अनाघ्रातं पुष्पं.............

115. ग्रीवाभङ्गाभिरामं मुहुरनुपतति स्यन्दने दत्तदृष्टिः, पश्चार्द्धेन प्रविष्टः शरपतनभयाद् भूयसा पूर्वकायम्। दर्भैरर्धावलीढैः श्रमविवृतमुखभ्रंशिभिः कीर्णवर्त्मा, पश्योदग्रप्लुतत्त्वाद् वियति बहुतरं स्तोकमुर्व्यां प्रयाति।।'' इत्यस्मिन् श्लोके कोऽलङ्कारः?
(A) निदर्शना **(B) स्वभावोक्तिः**
(C) व्यतिरेकः (D) दीपकम्

116. अभिज्ञानशाकुन्तले चतुर्थे अङ्के 'लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु' पद्यांशे कः अलङ्कारः?
(A) उत्प्रेक्षा
(B) अतिशयोक्तिः
(C) उपमा
(D) अर्थान्तरन्यासः

117. अभिज्ञानशाकुन्तलस्य प्रसिद्धेषु चतुर्षु श्लोकेषु अयं श्लोकः गण्यते?
(A) यस्य त्वया व्रणविरोपण........
(B) यास्यत्यद्य शकुन्तलेति......
(C) विचिन्तयन्ती यमनन्यमानसा ....
(D) उद्गलितदर्भकवला मृग्यः .....

118. शाकुन्तलश्लोकचतुष्टये एष श्लोकः न परिगण्यते?
(A) यास्यत्यद्य शकुन्तलेति .....
(B) शुश्रूषस्व गुरून् ......
(C) अस्मान् साधु विचिन्त्य ....
(D) अस्यास्सर्गविधौ प्रजापतिरभूत्.......

119. पक्षिभिः पालिता नायिका का?
(A) शकुन्तला (B) उर्वशी
(C) मालविका (D) रत्नावली

120. शकुन्तलायाः पालकपिता कः?
(A) भारद्वाजः (B) जमदग्निः
(C) कण्वः (D) अग्निः

121. शक्रावतारतीर्थस्य निवासी कः?
(A) धीवरः (B) माधव्यः
(C) शार्ङ्गरवः (D) उदयनः

122. 'बलवदपि शिक्षितानामात्मन्यप्रत्ययं चेतः' अत्र अलङ्कारः अस्ति?
(A) उपमा
(B) अर्थान्तरन्यासः
(C) उत्प्रेक्षा
(D) रूपकः

123. अभिज्ञानशाकुन्तलस्य चतुर्थाङ्के वर्णितम्?
(A) गौतम्याः जीवनम्
(B) दुष्यन्तस्य पराक्रमः
(C) शकुन्तलायाः भरतेन सह संवादः
(D) शकुन्तलायाः विदावेलायां पितुः सन्देशम्

124. मारीचस्य पत्नी का?
(A) **दाक्षायणी** (B) सानुमती
(C) मेनका (D) सुव्रता

125. 'परभृतविरुतं कलं यथा' इत्यत्र 'परभृत' कस्य कृते उक्तम्?
(A) काकः (कौआ)
(B) पिकः (कोयल)
(C) कपोतः (कबूतर)
(D) मयूरः (मोर)

126. 'अभिज्ञानशाकुन्तल'-नाटकस्य (खड़ी बोली) भाषायां गद्यानुवादः केन कृतः?
(A) राजाशिवप्रसादसितारे-हिन्द-महोदयेन
(B) राजा-लक्ष्मणेन
(C) भारतेन्दुहरिश्चन्द्रेण
(D) गिरिधरदासेन

127. राजा-लक्ष्मणसिंहेन 'अभिज्ञान-शाकुन्तलस्य' अनुवादः कदा कृतः?
(A)1863ई0 (B) 1880ई0
(C) 1876ई0 (D) 1881ई0

128. हंसपदिकायाः गीतमस्ति?
(A) मृच्छकटिके(B) अभिषेके
(C) शाकुन्तले(D) मुद्राराक्षसे

129. गृहिणी किमुच्यते?
(A) वनम् **(B) गृहम्**
(C) धनम् (D) उद्यानम्

130. निम्नलिखितेषु कथनेषु किं कथनमसत्यम्?
(A) अभिज्ञानशाकुन्तले सप्त (7) अङ्काः सन्ति
(B) शाकुन्तलमित्यस्य कथा महाभारत-आदिपर्वणि वर्णिता
(C) कालिदासः वैदर्भी-रीतेः कविरस्ति
(D) मालविकाग्निमित्रे सप्ताङ्काः सन्ति

131. दुष्यन्तशकुन्तलयोः विवाहानन्तरं सख्योः मनसि किं भवति?
(A) प्रसन्नता (B) चिन्ता
(C) क्रोधः (D) ईर्ष्या

132. "अविश्रमोऽयं लोकतन्त्राधिकारः" सूक्तिरियं कुत्र प्राप्यते?
(A) मुद्राराक्षसे
(B) अभिज्ञानशाकुन्तले
(C) मृच्छकटिके
(D) एतेषु न किमपि

133. "अहो रागपरिवाहिणी गीतिः" राज्ञः दुष्यन्तस्य कस्याः प्रशंसायामिदं कथनम्?
(A) शकुन्तलायाः गाने
(B) प्रियंवदायाः गाने
(C) हंसपदिकायाः गाने
(D) गौतम्याः गाने

134. स्त्रीणामशिक्षितपटुत्वममानुषीषु सन्दृश्यते' इति उक्तिः कुत्र–
(A) उरुभङ्गे
(B) मालविकाग्निमित्रे
(C) अभिज्ञानशाकुन्तले
(D) विक्रमाङ्कचरिते

135. "श्रद्धावित्तं विधिश्चेति त्रितयं तत्समागतम्" श्लोकोऽयं कस्य नाटकस्य?
(A) मुद्राराक्षसस्य
(B) उत्तररामचरितस्य
(C) विक्रमोर्वशीयस्य
(D) अभिज्ञानशाकुन्तलस्य

136. "श्रिया दुरापः कथमीप्सितो भवेत्" इदं वाक्यमस्ति?
(A) स्वप्नवासवदत्ते
(B) मुद्राराक्षसे
(C) अभिज्ञानशाकुन्तले
(D) मृच्छकटिके

137. ''यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया''– कस्य वचनमिदम्?
(A) दुष्यन्तस्य **(B) कण्वस्य**
(C) शारद्वतस्य (D) गौतम्याः

138. ''भवितव्यानां द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र'' उक्तिः वर्तते?
(A) महाभारते
(B) किरातार्जुनीये
(C) अभिज्ञानशाकुन्तले
(D) हितोपदेशे

139. ''राजरक्षितव्यानि तपोवनानि नाम'' एतद् वाक्यं कस्मिन्नाटके?
(A) अभिज्ञानशाकुन्तले
(B) रत्नावल्याम्
(C) वेणीसंहारे
(D) प्रतिमानाटके

140. ''पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलम्'' कस्य काव्यस्य उक्तिः?
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलस्य
(B) शिशुपालवधस्य
(C) किरातार्जुनीयस्य
(D) उत्तररामचरितस्य

141. अभिज्ञानशाकुन्तलस्य नान्दीपाठः कस्मिन् छन्दसि भवति–
(A) शिखरिणी
(B) स्रग्धरा
(C) मन्दाक्रान्ता
(D) शार्दूलविक्रीडित

142. 'अर्थो हि कन्या परकीय एव' अत्र कन्यायाः उपमा केनोपमानेन?
(A) कुमुदिन्या सार्धम्
(B) चन्द्रिकया सार्धम्
(C) निक्षेपणेन (धरोहर) सार्धम्
(D) फलेन सार्धम्

143. ''अनिर्वर्णनीयं परकलत्रम्'' एषा उक्तिः कुत्र?
(A) प्रतिमानाटके
(B) रघुवंशे
(C) अभिज्ञानशाकुन्तले
(D) वेणीसंहारे

144. ''अतिस्नेहः पापशङ्की'' एषा सूक्तिः कस्य ग्रन्थस्य?
(A) नीतिशतकस्य
(B) अभिज्ञानशाकुन्तलस्य
(C) उत्तररामचरितस्य
(D) शिवराजविजयस्य

145. ''न खलु धीमतां कश्चिदविषयो नाम'' सूक्तिः अस्ति?
(A) किरातार्जुनीये
(B) शिवराजविजये
(C) शुकनासोपदेशे
(D) अभिज्ञानशाकुन्तले

146. ''किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्'' इति कस्य पंक्तिः?
(A) विक्रमोर्वशीयस्य
(B) नैषधीयचरितस्य
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलस्य
(D) महाभारतस्य

147. ''न प्रभातरलं ज्योतिरुदेति वसुधातलात्'' इत्युक्तिः वर्तते–
(A) उत्तररामचरिते
(B) मृच्छकटिके
(C) अभिज्ञानशाकुन्तले
(D) नैषधीयचरिते

148. ''लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु'' श्लोकांशोऽयं तिष्ठति–
(A) मृच्छकटिके
(B) मेघदूते
(C) रघुवंशे
(D) अभिज्ञानशाकुन्तले

149. ''भावस्थिराणि जननान्तर्सौहृदानि'' एषा उक्तिः अस्ति?
(A) मालविकाग्निमित्रे
(B) मेघदूते
(C) अभिज्ञानशाकुन्तले
(D) विक्रमोर्वशीये

150. ''तेजोद्वयस्य युगपद्व्यसनोदयाभ्यां लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु'' एषः श्लोकः अभिज्ञानशाकुन्तलस्य कस्मिन्नङ्के अस्ति?
(A) प्रथमे (B) द्वितीये
(C) तृतीये **(D) चतुर्थे**

151. ''को नामोष्णोदकेन नवमालिकां सिञ्चति'' एतद् कथनं कस्य?
(A) शकुन्तलायाः
(B) प्रियंवदायाः
(C) अनसूयायाः
(D) गौतम्याः

152. ''कुसुममिव.........यौवनमङ्गेषु सन्नद्धम्'' पूरयत -
(A) लोभनीयं (B) दर्शनीयं
(C) वर्णनीयं (D) रूपरम्यं

153. अथवा .... द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र पूरयत -
(A) देवदत्तानां
(B) भवितव्यानां
(C) प्रार्थितव्यानां
(D) धर्मकृत्यानां

154. ''अये, लब्धं नेत्रनिर्वाणम्'' इति कः कथयति अभिज्ञानशाकुन्तले?
(A) दुष्यन्तः
(B) शकुन्तला
(C) मातलिः
(D) विदूषकः

155. ''सरस्वती श्रुतमहतां महीयताम्'' इति कस्य नाटकस्य भरतवाक्यमस्ति-
(A) उत्तररामचरितस्य
(B) अभिज्ञानशाकुन्तलस्य
(C) विक्रमोर्वशीयस्य
(D) मालविकाग्निमित्रस्य

156. ''इष्टप्रवासजनितान्यबलाजनस्य दुःखानि नूनमतिमात्रसुदुःसहानि'' इति सूक्तिः अस्ति–
(A) कालिदासस्य
(B) भवभूतेः
(C) बाणभट्टस्य
(D) श्रीहर्षस्य

157. ''गुर्वपि विरहदुःखमाशाबन्धः साहयति'' इति श्लोकः लभ्यते–
(A) मालविकाग्निमित्रे
(B) उत्तररामचरिते
(C) अभिज्ञानशाकुन्तले
(D) मेघदूते

158. ''आ परितोषाद् विदुषां न साधु मन्ये प्रयोगविज्ञानम्। बलवदपि शिक्षितानामात्मन्यप्रत्ययं चेतः'' एषः श्लोकः कस्य काव्यस्य?
(A) उत्तररामचरितस्य
(B) किरातार्जुनीयस्य
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलस्य
(D) शिशुपालवधस्य

159. ''कामी स्वतां पश्यति'' एषा सूक्तिः अस्ति?
(A) दुष्यन्तस्य
(B) विदूषकस्य
(C) शारद्वतस्य
(D) शार्ङ्गरवस्य

160. शकुन्तलायाः एकस्याः सख्याः नाम आसीत्–
   (A) प्रियंवदा (B) उर्वशी
   (C) महाश्वेता (D) उर्मिला

161. अभिज्ञानशाकुन्तले कयोः रसयोरपूर्वसम्मेलनं विद्यते?
   (A) शृङ्गार-वीरयोः
   (B) शृङ्गार-हास्ययोः
   (C) शृङ्गार-करुणयोः
   (D) शृङ्गार-शान्तयोः

162. ''ज्वलति चलितेन्धनोऽग्निर्विप्रकृतः पन्नगः फणां कुरुते।
   प्रायः स्वं महिमानं क्षोभात् प्रतिपद्यते हि जनः।।''
   अयं श्लोकः निम्नलिखितेषु केन सम्बन्धितः अस्ति-
   (A) मृच्छकटिकम्/शूद्रकः
   (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम्/मातलिः
   (C) उत्तररामचरितम्/लवः
   (D) किरातार्जुनीयम्/द्रौपदी

163. ''अचेतनं नाम गुणं न लक्षयेत्'' एषा पंक्तिः केन उक्ता?
   (A) दुष्यन्तेन धीवराय
   (B) विदूषकेन दुष्यन्ताय
   (C) धीवरेण स्वमनसे
   (D) दुष्यन्तेन अङ्गुलीयकाय

164. ''अतः परीक्ष्य कर्त्तव्यं विशेषात् सङ्गतं रहः'' अभिज्ञानशाकुन्तले कस्येयमुक्तिः?
   (A) कण्वस्य (B) मारीचस्य
   (C) दुष्यन्तस्य **(D) शार्ङ्गरवस्य**

165. 'सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यम्' कस्मात् नाटकात् उद्धृता?
   (A) उत्तररामचरितात्
   (B) अभिज्ञानशाकुन्तलात्
   (C) मालविकाग्निमित्रात्
   (D) विक्रमोर्वशीयात्

166. ''अनाघ्रातं पुष्पं किसलयमलूनं'' वचनमिदं केन कस्य कृते उक्तम्?
   (A) दुष्यन्तेन धीवराय
   (B) दुष्यन्तेन विदूषकाय
   (C) धीवरेण स्वमनसे
   (D) दुष्यन्तेन अङ्गुलीयकाय

167. ''प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय-पार्थिवः............पुनर्भवं परिगतशक्तिरात्मभूः'' एतद् भरतवाक्यं कुत्र प्राप्यते?
   (A) मृच्छकटिके
   (B) मालविकाग्निमित्रे
   (C) अभिज्ञानशाकुन्तले
   (D) उत्तररामचरिते

168. ''न तादृशा आकृतिविशेषा गुणविरोधिनो भवन्ति'' प्रियंवदया कस्य कृते उक्तम्?
   (A) दुष्यन्तस्य कृते
   (B) शकुन्तलायाः कृते
   (C) महर्षिकण्वस्य कृते
   (D) एतेषु न किमपि

169. ''दुष्यन्तेनाहितं तेजो दधानां भूतये भुवः। अवेहि तनयां ब्रह्मन्नग्निगर्भां शमीमिव।।'' एषा सूचना कण्वेन कुतः प्राप्ता?
   (A) गौतम्या
   (B) अनसूयया
   (C) प्रियंवदया
   (D) छन्दोमय्या वाण्या

170. ''सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम्''एतद् कस्य कृते उक्तम्?
(A) वनदेवीनां कृते
(B) तपोवनतरूणां कृते
(C) सखीनां कृते
(D) पशु-पक्षिणां कृते

171. ''यान्त्येवं गृहिणीपदं युवतयो वामाः कुलस्याधयः'' सूक्तिरियं कस्मिन्नाटके?
(A) उत्तररामचरिते
(B) अभिज्ञानशाकुन्तले
(C) मुद्राराक्षसे
(D) वेणीसंहारे

172. ''शुश्रूषस्व गुरून्'' श्लोकोऽस्ति?
(A) अभिज्ञानशाकुन्तले
(B) रघुवंशे
(C) उत्तररामचरिते
(D) मुद्राराक्षसे

173. 'अर्थो हि कन्या परकीय एव' एषा उक्तिः कुत्र प्राप्यते?
(A) वेणीसंहारे
(B) मृच्छकटिके
(C) अभिज्ञानशाकुन्तले
(D) रत्नावल्याम्

174. ''तत्राऽपि च चतुर्थोऽङ्कस्तत्र श्लोकचतुष्टयम्'' इत्युक्तिः सङ्गच्छते–
(A) मृच्छकटिके
(B) वेणीसंहारे
(C) अभिज्ञानशाकुन्तले
(D) उत्तररामचरिते

175. ''आ परितोषाद्विदुषां न साधु मन्ये प्रयोगविज्ञानम्'' इति वाक्यं वर्तते–
(A) भासस्य
(B) भारवेः
(C) भवभूतेः
(D) कालिदासस्य

176. ''अनिर्वर्णनीयं परकलत्रम्'' इति वाक्यं अस्ति–
(A) भरतस्य **(B) दुष्यन्तस्य**
(C) युधिष्ठिरस्य (D) रघोः

177. 'वत्से! सुशिष्यपरिदत्ता विद्येवाशोचनीयासि संवृत्ता'' कस्येयमुक्तिः–
(A) दुष्यन्तस्य **(B) कण्वस्य**
(C) गौतम्याः (D) शकुन्तलायाः

178. 'आर्तत्राणाय वः शस्त्रं न प्रहर्तुमनागसि' अभिज्ञानशाकुन्तले कस्य वचनमिदम्?
(A) वैखानसस्य
(B) दुष्यन्तस्य
(C) कण्वस्य
(D) अनसूयायाः

179. 'गच्छति पुरः शरीरं धावति पश्चादसंस्तुतं चेतः'' कस्य उक्तिरियम्–
(A) कण्वस्य
(B) दुष्यन्तस्य
(C) गौतम्याः
(D) शार्ङ्गरवस्य

180. अभिज्ञानशाकुन्तले ''मृगानुसारिणं साक्षात्पश्यामीव पिनाकिनम्''?
(A) विदूषकेन (B) कण्वेन
(C) सूतेन (D) तापसेन

181. केनोक्तम् 'अस्ति कालनेमि-प्रसूतिर्दुर्जयो नाम दानवगणः?
(A) दुष्यन्तेन (B) विदूषकेन
(C) शार्ङ्गरवेण **(D) मातलिना**

182. ''तेजोद्वयस्य युगपद्व्यसनोद-याभ्यां लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु'' एतद् कस्य पात्रस्य कथनम्?
(A) काश्यपस्य
(B) कण्वशिष्यस्य
(C) अनसूयायाः
(D) प्रियंवदायाः

183. ''उद्गलितदर्भकवला मृग्यः परित्यक्तनर्तना मयूराः अपसृतपाण्डुपत्रा मुञ्चन्त्यश्रूणीव लताः।।'' उपर्युक्तं पद्यं केन पात्रेणोक्तम्?
(A) काश्यपेन (B) अनसूयया
(C) प्रियंवदया (D) गौतम्या

184. ''कथां प्रमत्तः प्रथमं कृतामिव'' श्लोकः प्राप्यते?
(A) अभिज्ञानशाकुन्तले
(B) शुकनासोपदेशे
(C) शिवराजविजये
(D) मेघदूते

185. ''पीड्यन्ते गृहिणः कथं नु तनयाविश्लेषदुःखैर्नवैः'' एषा कस्योक्तिः?
(A) प्रियंवदायाः
(B) अनसूयायाः
(C) गौतम्याः
(D) कण्वस्य

186. 'सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं.......' रिक्तस्थानं पूर्यताम्?
(A) सर्वैरनुज्ञायताम्
(B) नादत्ते
(C) अनुमतगमना
(D) स्नेहेन

187. ''अर्थो हि कन्या परकीय एव'' कस्य कृते उक्तम्?
(A) शकुन्तलायाः कृते
(B) प्रियंवदायाः कृते
(C) अनसूयायाः कृते
(D) गौतम्याः कृते

189. ''गच्छ पादयोः प्रणम्य निवर्तयैनम्' इति का वदति?
(A) अनसूया प्रियंवदां प्रति
(B) प्रियंवदा अनसूयां प्रति
(C) शकुन्तला अनसूयां प्रति
(D) अनसूया शकुन्तलां प्रति

190. ''अभिज्ञानाभरणदर्शनेन शापो निवर्तिष्यत'' इत्युक्तिः अस्तिः?
(A) कण्वस्य
(B) शकुन्तलायाः
(C) अनसूयायाः
(D) प्रियंवदायाः

191. ''सेयं याति शकुन्तलापतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम्'' उक्तिरस्ति?
(A) कण्वस्य
(B) शकुन्तलायाः
(C) अनसूयायाः
(D) प्रियंवदायाः

192. ''किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्'' वाक्यं कस्य कृते उक्तम्?
(A) प्रियंवदायाः कृते शकुन्तलया
(B) शकुन्तलायाः कृते दुष्यन्तेन
(C) कण्वस्य कृते गौतम्या
(D) मेनकायाः कृते विश्वामित्रेण

193. 'मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति' इत्यत्र 'लक्ष्म' शब्दस्य कोऽर्थः?
(A) चिह्नम् (B) पुष्पम्
(C) लयः (D) शोभा

194. 'अथवाऽनार्यः परदारव्यवहारः' कस्य कथनम्?
(A) तापस्याः
(B) गौतम्याः
(C) मातलेः
(D) दुष्यन्तस्य

195. ''शान्तानुकूलपवनश्च शिवश्च पन्थाः'' एषा उक्तिः कस्य?
(A) कण्वस्य
(B) प्रियंवदायाः
(C) आकाशभाषितस्य
(D) कण्वशिष्यस्य

196. 'अयं जनः कस्य हस्ते समर्पितः' एतद् कथनं कस्य?
(A) शकुन्तलायाः
(B) अनसूयाप्रियंवदयोः
(C) कण्वस्य
(D) कण्वशिष्यस्य

197. ''अर्थो हि कन्या परकीय एव तामद्य सम्प्रेष्य परिग्रहीतुः'' एतद् वक्तव्यमस्ति?
(A) गौतम्याः (B) दुष्यन्तस्य
(C) काश्यपस्य(D) मेनकायाः

198. ''कोऽन्यो हुतवहाद् दग्धुं प्रभवति'' कस्य कथनम्?
(A) प्रियंवदायाः
(B) अनसूयायाः
(C) कण्वस्य
(D) गौतम्याः

199. ''ओदकान्तं स्निग्धोजनोऽनुगन्तव्य इति श्रूयते'' एतद् कथनं कस्य अस्ति?
(A) कण्वस्य
(B) अनसूयायाः
(C) प्रियंवदायाः
(D) कण्वशिष्यशार्ङ्गरवस्य

200. अभिज्ञानशाकुन्तले परित्यागानन्तरं शकुन्तला कुत्र न्यवसत्?
(A) कण्वाश्रमे
(B) अत्र्याश्रमे
(C) वसिष्ठाश्रमे
(D) मारीचाश्रमे

201. ''श्रद्धा वित्तं विधिश्चेति त्रितयं तत्समागतम्'' इति को निरूपयति–
(A) अदितिः (B) मातलिः
(C) मारीचः (D) कण्वः

202. ''मनोरथा नाम तटप्रपाताः'' इयम् उक्तिः उपलभ्यते–
(A) रत्नावल्याम्
(B) वेणीसंहारे
(C) अभिज्ञानशाकुन्तले
(D) मृच्छकटिके

203. निम्नलिखितपंक्तौ छन्दसः नाम निर्दिशतु-
''असंशयं क्षत्रपरिग्रहक्षमा,
यदार्यमस्यामभिलाषि मे मनः।।''
(A) वंशस्थम्
(B) द्रुतविलम्बितम्
(C) शालिनी
(D) वसन्ततिलका

204. 'प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः'' इति भरतवाक्यांशः कस्यास्ति–
(A) भवभूतेः
(B) कविकर्णपूरस्य
(C) महिमभट्टस्य
(D) कालिदासस्य

205. सागरमुज्झित्वा कुत्र वा महानद्यवतरति कस्य वचनमिदम् –
(A) रामायणस्य
(B) अभिज्ञानशाकुन्तलस्य
(C) रघुवंशस्य
(D) मृच्छकटिकस्य

206. 'रम्याणि वीक्ष्य मधुरांश्च निशम्य शब्दान्' सूक्तिरस्ति कस्य?
(A) मेघदूतस्य
(B) कादम्बर्याः
(C) रत्नावल्याः
(D) अभिज्ञानशाकुन्तलस्य

207. ''स्वप्नो नु माया नु मतिभ्रमो नु''– निम्नाङ्कितेषु कतस्मिन् समुपलभ्यते–
(A) स्वप्नवासवदत्ते
(B) हर्षचरिते
(C) अभिज्ञानशाकुन्तले
(D) मेघदूते

208. 'परमार्थेन न गृह्यतां वचः'-कं प्रत्युक्तिरियम्–
(A) राजानम् (B) सेनापतिम्
(C) जयन्तम् (D) विदूषकम्

209. 'पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं युष्मास्वपीतेषु या'–उक्तिरियं कस्य पात्रस्य अस्ति–
(A) काश्यपस्य
(B) शार्ङ्गरवस्य
(C) प्रियंवदायाः
(D) दुष्यन्तस्य

210. 'स्त्रीणामशिक्षितपटुत्वममानुषीषु सन्दृश्यते किमुत याः प्रतिबोधवत्यः' अभिज्ञानशाकुन्तले इयमुक्तिः कस्य?
(A) शार्ङ्गरवस्य
(B) शारद्वतस्य
(C) दुष्यन्तस्य
(D) सोमरातस्य

211. ''अहिणवमहुलोलुवो तुमं तह परिचुम्बिअ''–इत्यादिसङ्गीतं भवति–
(A) हंसपदिकायाः
(B) अनसूयायाः
(C) शकुन्तलायाः
(D) प्रियंवदायाः

212. ''सतीमपि ज्ञातिकुलैकसंश्रयां जनोऽन्यथा भर्तृमतीं विशङ्कते''- कस्येयमुक्तिः?
(A) दुष्यन्तस्य
(B) शारद्वतस्य
(C) शार्ङ्गरवस्य
(D) कण्वस्य

213. देवयानी .... पत्नी आसीत्?
(A) शुक्राचार्यस्य (B) विचित्रवीर्यस्य
(C) धृष्टद्युम्नस्य **(D) ययातेः**

214. 'शुश्रूषस्व गुरून् कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीजने' अस्यां पंक्तौ किं छन्दः?
(A) स्रग्धरा
(B) शार्दूलविक्रीडितम्
(C) पुष्पिताग्रा
(D) वियोगिनी

215. 'तीव्राघातप्रतिहततरुः स्कन्धलग्नैकदन्तः' केन छन्दसा विनिर्मितोऽयं श्लोकपादः?
(A) हरिणी (B) शिखरिणी
(C) मन्दाक्रान्ता (D) मालिनी

216. "भावस्थिराणि जननान्तरसौहृदानि" इति केनोक्तम्?
(A) कण्वेन
(B) दुष्यन्तेन
(C) शारद्वतेन
(D) कञ्चुकिना

217. 'कालिदासस्य नाट्यकृतिः' नास्ति?
(A) विक्रमोर्वशीयम्
(B) ऋतुसंहारम्
(C) मालविकाग्निमित्रम्
(D) अभिज्ञानशाकुन्तलम्

218. शकुन्तलायाः पालन-पोषणं जातमासीत्?
(A) विश्वामित्रस्य आश्रमे
(B) कण्वस्याश्रमे
(C) दुर्वाससः आश्रमे
(D) मारीचस्य आश्रमे

219. अभिज्ञानशाकुन्तले प्रधानगुणोऽस्ति?
(A) माधुर्यम् (B) प्रसादः
(C) ओजः (D) न कोऽपि

220. शकुन्तलायै पतिगृहगमनसमये कैः रेशमी-वस्त्राणि प्रदत्तानि?
(A) सखिभिः (B) मारीचऋषिणा
(C) वृक्षैः (D) कण्वेन

221. अभिज्ञानशाकुन्तले नायिका अस्ति?
(A) अनसूया (B) गौतमी
(C) प्रियंवदा **(D) शकुन्तला**

222. भ्रमरात् बिभीतां शकुन्तलां कः रक्षति?
(A) अनसूया **(B) दुष्यन्तः**
(C) गौतमी (D) कण्वः

223. मृगानुसरणं कुर्वन् राजा कम् आश्रमं प्राप्नोति?
(A) मारीचस्य आश्रमम्
(B) विश्वामित्रस्य आश्रमम्
(C) कण्वस्य आश्रमम्
(D) वाल्मीके आश्रमम्

224. शकुन्तलायाः पतिगृहगमनस्य वर्णनं कस्मिन्नङ्के अस्ति?
(A) द्वितीये (B) पञ्चमे
(C) तृतीये **(D) चतुर्थे**

225. अरण्ये मया रुदितमासीत्- शाकुन्तले कस्य वचनमिदम्?
(A) राज्ञः
(B) विदूषकस्य
(C) कण्वस्य
(D) शारद्वतस्य

226. "अर्थो हि कन्या परकीय एव" केनोक्तम्?
(A) दुष्यन्तेन (B) गौतम्या
(C) शार्ङ्गरवेण **(D) कण्वेन**

227. 'गण्डस्योपरि पिण्डकः संवृत्तः' केन उक्तम्?
(A) दुष्यन्तेन (B) कण्वेन
(C) विदूषकेन (D) शारद्वतेन

228. नाटके "या वार्ता श्रोतुम् अयोग्या" तस्य कृते किं शब्दः?
(A) आत्मगतम् (B) प्रकाशम्
(C) नेपथ्यम् (D) नान्दी

229. नाटकेषु भरतवाक्यं प्रयुक्तमस्ति?
(A) मध्ये **(B) अन्ते**
(C) प्रारम्भे (D) त्रिषु

230. अभिनेतारः यत्र आरोपं (वेशभूषां) धारयन्ति तत् किम्?
(A) नान्दी (B) पूर्वरङ्गः
(C) नेपथ्यम् (D) रङ्गमञ्चम्

231. नाट्यशास्त्रे 'नान्दीति' शब्देन अभिप्रेतमस्ति?
(A) शिवस्य वृषभः
(B) मंगलाचरणम्
(C) एका देवता
(D) अष्टमूर्तिशिवः

232. अभिज्ञानशाकुन्तलस्य पात्रं नास्ति?
(A) वसन्तकः (B) माधव्यः
(C) भद्रसेनः (D) सोमरातः

233. महर्षेः कण्वस्य आश्रमोऽस्ति ?
(A) मालिनीनद्याः तटे
(B) गंगानद्याः तटे
(C) यमुनानद्याः तटे
(D) गौतमीनद्याः तटे

234. दुष्यन्तः यदा आश्रमं प्रविष्टः तदा कण्वः कुत्र गतः आसीत्?
(A) सोमतीर्थम्
(B) शचीतीर्थम्
(C) माघमेलाप्रयागम्
(D) हरिद्वारम्

235. **मारीचऋषेः आश्रमोस्ति?**
(A) हेमकूटपर्वते
(B) विन्ध्याचले
(C) चित्रकूटे रामगिरौ
(D) पञ्चवट्याम्

236. शकुन्तलायाः जन्मदाता पिता अस्ति?
(A) कण्वः
(B) विश्वामित्रः
(C) दुर्वासाः
(D) मारीचः

237. "अहो रागपरिवाहिणी गीतिः" कस्याः प्रशंसायामिदं दुष्यन्तस्य कथनम्?
(A) शकुन्तलायाः गायने
(B) गौतम्याः गायने
(C) हंसपदिकायाः गायने
(D) वसुमत्याः गायने

238. 'कोऽन्यो हुतवहात् दग्धुं प्रभवति' सूक्तिरियमुद्धृता?
(A) **अभिज्ञानशाकुन्तलात्**
(B) नीतिशतकात्
(C) उत्तररामचरितात्
(D) मेघदूतात्

239. अभिज्ञानशाकुन्तलस्य पात्रमस्ति?
(A) दर्दुरकः (B) अगस्त्यः
(C) अत्रिः **(D) शारद्वतः**

240. दुष्यन्तस्य विशेषा रुचिरस्ति?
(A) द्यूते
(B) मृगयायाम्
(C) मदिरापाने
(D) गजारोहणे

241. अनसूया कस्याः सखी?
(A) उर्मिलायाः
(B) सीतायाः
(C) शकुन्तलायाः
(D) गौतम्याः

242. अभिज्ञानशाकुन्तले सर्वाधिकं किं छन्दः प्रयुक्तम्?
(A) आर्या
(B) वसन्ततिलका
(C) शार्दूलविक्रीडितम्
(D) अनुष्टुप्

243. कण्वः आसीत् ?
(A) तपस्वी
(B) भिक्षुकः
(C) पर्यटकः
(D) गृहस्थः

244. अभिज्ञानशाकुन्तलं विभक्तमस्ति ?
(A) वर्गेषु (B) अध्यायेषु
(C) अङ्केषु (D) सर्गेषु

245. कालिदासस्य रचना नास्ति ?
(A) रघुवंशम्
(B) विक्रमाङ्कदेवचरितम्
(C) मेघदूतम्
(D) अभिज्ञानशाकुन्तलम्

246. अभिज्ञानशाकुन्तलस्य कथा वर्तते?
(A) महाभारते आदिपर्वणि
(B) महाभारते वनपर्वणि
(C) महाभारते सभापर्वणि
(D) महाभारते शान्तिपर्वणि

247. कालिदासस्य नाट्यकृतयः सन्ति?
(A) 7 **(B) 3**
(C) 2 (D) 4

248. कालिदासस्य सर्वे नाटकग्रन्थाः सन्ति?
(A) दुःखान्ताः **(B) सुखान्ताः**
(C) कल्पनान्ताः (D) उत्तेजनान्ताः

249. अभिज्ञानशाकुन्तले आहत्य श्लोकाः सन्ति?
(A) 180 **(B) 196**
(C) 150 (D) 200

250. कालिदासेन सर्वाधिकं कस्याः रीतेः प्रयोगः कृतः?
(A) वैदर्भी (B) लाटी
(C) गौणी (D) पाञ्चाली

251. कालिदासस्य नाटकेषु कस्य छन्दसः प्रामुख्यमस्ति-
(A) शार्दूलविक्रीडितस्य
(B) आर्यायाः
(C) वसन्ततिलकायाः
(D) मालिन्याः

252. 'उपमासम्राट्' कस्य कवेः कृते उक्तम्?
(A) भारवेः कृते
(B) भासस्य कृते
(C) कालिदासस्य कृते
(D) भवभूतेः कृते

253. भ्रमरात् शकुन्तलारक्षणं कस्मिन् अङ्के अस्ति?
(A) सप्तमे **(B) प्रथमे**
(C) चतुर्थे (D) द्वितीये

254. ''दुर्लभमिदानीं मे सखीमण्डनं भविष्यति'' एतद् कथनं कस्य अस्ति?
(A) प्रियंवदायाः
(B) अनसूयायाः
(C) शकुन्तलायाः
(D) गौतम्याः

255. दुष्यन्तस्य सेनापतेः नाम अस्ति?
(A) सोमरातः **(B) भद्रसेनः**
(C) रैवतकः (D) माधव्यः

256. ''ईषदीषच्चुम्बितानि भ्रमरैः'' ....नट्याः गायनं कम् ऋतुं सूचयति?
(A) ग्रीष्मऋतुम्
(B) वर्षाऋतुम्
(C) शरद्ऋतुम्
(D) वसन्तऋतुम्

257. ''ग्रीवाभङ्गाभिरामं.....स्तोकमुर्व्यां प्रयाति'' श्लोकोऽयं कस्य रसस्योदाहरणमस्ति?
(A) वीररसस्य
(B) भयानकरसस्य
(C) अद्भुतरसस्य
(D) शृङ्गाररसस्य

258. अभिज्ञानशाकुन्तलस्य कञ्चुक्याः नाम अस्ति?
(A) माधव्यः
(B) शारद्वतः
(C) सर्वदमनः
(D) वातायनः

259. 'अपीतेषु' पदे समासः अस्ति?
(A) अव्ययीभावः
(B) द्विगुः
(C) नञ्-समासः
(D) द्वन्द्वः

260. ''कामी स्वतां पश्यति'' अत्र 'कामी' पदे प्रत्ययः अस्ति?
(A) णिनि-प्रत्ययः
(B) ङीप्-प्रत्ययः
(C) ङीष्-प्रत्ययः
(D) ङीन्-प्रत्ययः

261. ''पश्यामीव पिनाकिनम्'' एतद् वाक्यं केन उक्तम्?
(A) दुष्यन्तेन सूताय
(B) कण्वेन शार्ङ्गरवाय
(C) दुर्वाससा प्रियंवदायै
(D) सूतेन दुष्यन्ताय

262. ''भवितव्यानां द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र'' एषा सूक्ति अस्ति?
(A) मेघदूतस्य
(B) नीतिशतकस्य
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलस्य
(D) कादम्बर्याः

263. ''न तादृशा आकृतिविशेषा गुणविरोधिनो भवन्ति'' कया उक्तम्?
(A) अनसूयया
(B) प्रियंवदया
(C) शकुन्तलया
(D) गौतम्या

264. ''अस्तशिखरं'' पदेऽस्मिन् समासः अस्ति?
(A) द्वन्द्वसमासः
(B) तत्पुरुषसमासः
(C) द्विगुसमासः
(D) बहुव्रीहिसमासः

265. ''उचितं न ते मङ्गलकाले रोदितुम्'' कः कमुक्तवान्?
(A) अनसूया शकुन्तलाम्
(B) प्रियंवदा शकुन्तलाम्
(C) उभावपि शकुन्तलाम्
(D) गौतमी शकुन्तलाम्

266. ''पातुं न..........व्यवस्यति जलम्'' रिक्तस्थानं पूरयतु?
(A) सर्वप्रथमम्
(B) द्वितीयम्
(C) प्रथमम्
(D) प्रथमा

267. ''सोऽयं न पुत्रकृतकः पदवीं मृगस्ते'' एतद् कथनं कस्य?
(A) प्रियंवदायाः अनसूयायै
(B) कण्वस्य शकुन्तलायै
(C) राज्ञः शार्ङ्गरवाय
(D) गौतम्याः शकुन्तलायै

268. ''सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम्'' कण्वस्य एतद् कथनं कस्य कृते?
(A) राज्ञः कृते
(B) वृक्षाणां कृते
(C) ऋषीणां कृते
(D) सख्योः कृते

269. ''शुश्रूषस्व गुरून् कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीजने'' अत्र कण्वऋषिः कामुपदिशति?
(A) प्रियंवदाम्
(B) अनसूयाम्
(C) शकुन्तलाम्
(D) राजानम्

270. अभिज्ञानशाकुन्तलस्य पञ्चमाङ्कस्य नामास्ति?
(A) आश्रमप्रवेशः
(B) प्रत्याख्यानाङ्कः
(C) विदा-अङ्कः
(D) पश्चात्ताप-अङ्कः

271. राज्ञः दुष्यन्तस्य प्रथमा पत्नी अस्ति?
(A) हंसपदिका
(B) वसुमती
(C) शकुन्तला
(D) मेनका

272. राज्ञः दुष्यन्तस्य द्वितीया पत्नी अस्ति?
(**A) वसुमती** (B) शकुन्तला
(C) हंसपदिका (D) प्रियंवदा

273. राज्ञः दुष्यन्तस्य तृतीया पत्नी (प्रेमिका) अस्ति-
(A) अनसूया **(B) शकुन्तला**
(C) वसुमती (D) हंसपदिका

274. अभिज्ञानशाकुन्तलस्य मङ्गलाचरणे कालिदासेन कस्य वन्दना कृता?
(A) विष्णोः
(B) जलस्य
(C) अष्टमूर्तिशिवस्य
(D) आकाशस्य

275. कण्वस्य शिष्यः अस्ति?
(A) माधव्यः
(B) गालवः
(C) शारद्वतः
(D) वसन्तकः

276. शार्ङ्गरवः कस्य शिष्यः अस्ति?
(A) विश्वामित्रस्य
(B) दुर्वाससः
(C) मारीचस्य
(D) कण्वस्य

277. ''सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तःकरणप्रवृत्तयः'' अस्य वक्ता अस्ति-
(A) कण्वः **(B) दुष्यन्तः**
(C) शकुन्तला (D) मारीचः

278. अभिज्ञानशाकुन्तले ''अग्निगर्भां शमीमिव'' अस्ति-
(A) गौतमी
(B) कण्वः
(C) शकुन्तला
(D) प्रियंवदा

279. ''किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्'' केन कस्य कृते उक्तम्?
(A) दुष्यन्तेन शकुन्तलायै
(B) कण्वेन शकुन्तलायै
(C) दुष्यन्तेन प्रियंवदायै
(D) शकुन्तलया दुष्यन्ताय

280. ययातेः पत्नी आसीत्?
(A) शर्मिष्ठा
(B) गौतमी
(C) सानुमती
(D) दाक्षायणी

281. अभिज्ञानशाकुन्तले ''पुत्रकृतकः श्यामाकमुष्टिपरिवर्धितकः'' अस्ति-
(A) सर्वदमनः
(B) मृगः (दीर्घापाङ्गः)
(C) वृक्षः
(D) मयूरः

282. ''गुर्वपि विरहदुःखमाशाबन्धः साहयति'' कस्य उक्तिः?
(A) अनसूयायाः
(B) प्रियंवदायाः
(C) शकुन्तलायाः
(D) गौतम्याः

283. दुष्यन्तपरित्यक्ता शकुन्तला कस्मिन् आश्रमे निवसति?
(A) कण्वाश्रमे
(B) मारीचस्य आश्रमे
(C) विश्वामित्रस्य आश्रमे
(D) वशिष्ठाश्रमे

284. शकुन्तलापरित्यागस्य घटना कस्मिन् अङ्के अस्ति?
(A) चतुर्थे (B) षष्ठे
(C) पञ्चमे (D) सप्तमे

285. ''संस्पृष्टमुत्कण्ठया'' अत्र 'संस्पृष्टम्' पदे प्रकृति-प्रत्ययः अस्ति-
(A) सम् + पृच्छ् + क्त्वा
(B) सम् + स्पृश् + क्त
(C) सम् + पा + ल्युट्
(D) सम् + स्पृ + ष्टम्

286. ''समिद्वन्तः'' अत्र प्रत्ययः अस्ति-
(A) क्त **(B) मतुप्**
(C) क्तवतु (D) शतृ

287. ''शुश्रूषस्व'' अत्र लकारः अस्ति-
(A) लट्-लकारः
(B) लङ्-लकार
(C) लोट्-लकारः
(D) विधिलिङ्लकारः

288. 'भूयिष्ठम्'' पदे प्रत्ययः अस्ति-
(A) इष्ठन् (B) क्त
(C) क्तिन् (D) ठ

289. ''प्रत्यर्पितन्यासः'' अत्र समासः अस्ति-
(A) अव्ययीभावः
(B) बहुव्रीहिः
(C) द्वन्द्वः
(D) तत्पुरुषः

290. 'न्यषिच्यत' अत्र सन्धिः अस्ति?
(A) गुणसन्धिः
(B) वृद्धिसन्धिः
(C) यण्सन्धिः
(D) अयादिसन्धिः

291. अभिज्ञानशाकुन्तले सर्वाधिकं सौन्दर्यं वर्णितमस्ति-
(A) गौतम्याः
(B) प्रियंवदायाः
(C) शकुन्तलायाः
(D) मेनकायाः

292. तपस्विनो भूत्वाऽपि लौकिकज्ञः?
(A) विश्वामित्रः (B) दुर्वासाः
(C) शार्ङ्गरवः **(D) कण्वः**

293. कण्वाश्रमस्य वरिष्ठतपस्विनी अस्ति-
(A) प्रियंवदा (B) दाक्षायणी
(C) गौतमी (D) मेनका

294. द्वितीयाङ्के राज्ञे मृगयायाः निषेधः केन कृतः?
(A) सेनापतिना
(B) ऋषिकण्वेन
(C) दौवारिकेन
(D) माधव्येन

295. शकुन्तलायाः क्षमायाचनायै दुर्वाससः समीपं का गता?
(A) अनसूया
(B) प्रियंवदा
(C) गौतमी
(D) मेनका

296. वनज्योत्स्नया तथा आश्रमवृक्षैः सार्धं कस्याः सहोदर इव व्यवहारः?

(A) शकुन्तलायाः

(B) प्रियंवदायाः

(C) अनसूयायाः

(D) गौतम्याः

297. ''या सृष्टिः स्रष्टुराद्या'' इत्यत्र 'सृष्टिः' पदे प्रकृति-प्रत्ययः अस्ति?

(A) सृज् + क्तिन्

(B) सृ + ष्टिः

(C) सृ + क्त

(D) सृजन् + ल्युट्

298. 'ओदकान्तम्' पदस्य कोऽर्थः?

(A) जलसमीपपर्यन्तम्

(B) कन्यायाः समीपम्

(C) चन्द्रमाः

(D) वृक्षस्य समीपम्

299. ''परभृतविरुतं कलं यथा'' अत्र ''विरुतम्'' पदस्य कोऽर्थः अस्ति-

(A) काकः

(B) ध्वनिः (आवाज)

(C) सखा

(D) पशवः

300. ''कुशेशयरजोमृदुरेणुरस्याः'' अत्र ''मृदु'' पदस्य अर्थः अस्ति-

(A) कोमलम्

(B) नवमालिका

(C) शकुन्तला

(D) केसरवृक्षः

301. ''अरण्यौकसः'' पदस्य शब्दार्थः अस्ति?

(A) वनम् (B) तपस्वी

(C) वनवासी (D) उपर्युक्तं सर्वम्

302. ''ओषधीनां पतिः'' कः?

(A) सूर्यः

(B) चन्द्रः

(C) अरुणः

(D) आश्विनवैद्यः

303. अभिज्ञानशाकुन्तले 'प्रकृतिवक्रः' कस्य कृते प्रयुक्तम् ?

(A) कण्वस्य कृते

(B) दुष्यन्तस्य कृते

(C) दुर्वाससः कृते

(D) मारीचस्य कृते

304. 'अनन्यमानसा' कस्य विशेषणमिदम्?

(A) प्रियंवदायाः

(B) शकुन्तलायाः

(C) गौतम्याः

(D) दुर्वाससः

305. जर्मनविदुषा गेटेमहोदयेन प्रशंसितनाटकमस्ति-

(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम्

(B) उत्तररामचरितम्

(C) स्वप्नवासवदत्तम्

(D) वेणीसंहारम्

306. दुष्यन्ताय केन देवासुरसंग्रामस्य सूचना दत्ता?

(A) विदूषकेन

(B) मातलिना

(C) मारीचेण

(D) इन्द्रेण

307. तत् स्थानं यत्र स्वर्गात् प्रत्यागमन-समये दुष्यन्तः तिष्ठति-
(A) कण्वाश्रमे
(B) मारीचस्य आश्रमे
(C) वशिष्ठस्य आश्रमे
(D) विश्वामित्रस्य आश्रमे

308. 'अपराजिता रक्षाकरण्डक' इत्यनेन सम्बद्धः अस्ति-
(A) दुष्यन्तः
(B) सर्वदमनः (भरतः)
(C) मारीचः
(D) कण्वः

309. दुष्यन्तस्य वंशस्य नामासीत्–
(A) सूर्यवंशम्
(B) यदुवंशम्
(C) पुरुवंशम्
(D) कुरुवंशम्

310. अभिज्ञानशाकुन्तले कण्वऋषिः केनान्येन नाम्ना परिगणितः ?
(A) गौतमः
(B) काश्यपः
(C) भारद्वाजः
(D) मारीचः

311. शकुन्तलया पतिगृहगमनकाले कस्याः लतायाः आलिङ्गनं कृतम् ?
(A) वनज्योत्स्नायाः
(B) केसरलतायाः
(C) सहकारलतायाः
(D) लतापत्रिकायाः

312. दुष्यन्तशकुन्तलयोः विवाहस्य सूचना महर्षिकण्वाय केन प्रदत्ता ?
(A) गौतम्या
(B) अशरीरिणी छन्दोमयी-आकाशवाण्या
(C) सखिभिः
(D) शिष्यैः

313. 'रक्षितव्या खलु प्रकृतिपेलवा प्रियसखी' एतत् कथनमस्ति-
(A) अनसूयायाः प्रियंवदायै
(B) अनसूयायाः गौतम्यै
(C) प्रियंवदायाः अनसूयायै
(D) शकुन्तलायाः प्रियंवदायै

314. 'अयं जनः कस्य हस्ते समर्पितः' कथनमस्ति-
(A) शकुन्तलायाः
(B) अनसूयायाः
(C) प्रियंवदायाः
(D) B, C उभयोः सख्योः

315. 'अभिज्ञानाभरणदर्शनेन शापो निवर्तिष्यत' एषा उक्तिः अस्ति-
(A) गौतम्याः (B) कण्वस्य
(C) दुर्वाससः (D) सख्योः

316. अभिज्ञानशाकुन्तले अशरीरिणी-छन्दोमयीवाण्या शकुन्तलाविषयकं वृत्तान्तं कस्मै श्रावितम्-
(A) कण्वाय
(B) मेनकायै
(C) मारीचाय
(D) दुष्यन्ताय

317. 'पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं' एषा उक्तिः अभिज्ञानशाकुन्तले कस्य अस्ति-
(A) शार्ङ्गरवस्य
(B) शारद्वतस्य
(C) काश्यपस्य
(D) दुर्वाससः

318. 'सुलभकोपो महर्षिः' केन उक्तम्-
(A) प्रियंवदया दुर्वाससे
(B) अनसूयया दुर्वाससे
(C) गौतम्या कण्वाय
(D) मेनकया मारीचाय

319. मारीचऋषेः पत्नी अस्ति-
(A) गौतमी
(B) मेनका
(C) सानुमती
(D) दाक्षायणी (अदिति)

320. अभिज्ञानशाकुन्तलस्य चतुर्थे अङ्के कति श्लोकाः सन्ति-
(A) 42 **(B) 22**
(C) 46 (D) 25

321. निम्नलिखितेषु किं कथनम् असत्यमस्ति?
(A) कालिदासः वैदर्भीरीतेः कविः अस्ति।
(B) अभिज्ञानशाकुन्तले सप्तसर्गाः सन्ति।
(C) शाकुन्तलस्य कथा महाभारतस्य आदिपर्वणः स्वीकृता।
(D) अभिज्ञानशाकुन्तले कण्वः, दुर्वासाः, मारीचः, विश्वामित्रः एतेषाम् ऋषीणां नाम आगतम्।

322. कालिदासः कस्य राज्ञः राजकविः अस्ति-
(A) पुष्यमित्रस्य
(B) चन्द्रगुप्तविक्रमादित्यस्य
(C) अशोकस्य
(D) स्कन्दगुप्तस्य

323. दुष्यन्तस्य राजधानी आसीत्–
(A) अयोध्या
(B) इन्द्रप्रस्थः
(C) कण्वाश्रमः
(D) हस्तिनापुरम्

324. 'कविताकामिनीविलासः' कः कविः?
(A) कालिदासः (B) भारविः
(C) माघः (D) दण्डी

325. शकुन्तलायाः चरित्रस्य विशेषता नास्ति-
(A) सुन्दरी
(B) प्रकृतिप्रेमी
(C) कटुभाषिणी
(D) लज्जाशीलता

326. अभिज्ञानशाकुन्तले सर्वप्रथमं विदूषकस्य चित्रणं कृतमस्ति-
(A) प्रथमे अङ्के
(B) द्वितीये अङ्के
(C) चतुर्थे अङ्के
(D) एतेषु न कुत्रापि

327. कस्यां नाट्यकृतौ कालिदासस्य कला मधुरतमफलरूपेण परिणता-
(A) विक्रमोर्वशीये
(B) मालविकाग्निमित्रे
(C) अभिज्ञानशाकुन्तले
(D) एतेषु न कुत्रापि

328. अभिज्ञानशाकुन्तलस्य भरतवाक्य-मस्ति-
(A) इमां सागरपर्यन्ताम् ....।
(B) प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः..।
(C) या सृष्टिः स्रष्टुराद्या ....।
(D) पातुं न प्रथमं व्यवस्यति ...।

329. 'लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु' पद्यांशे अलङ्कारः अस्ति-
(A) उत्प्रेक्षा
(B) उपमा
(C) अर्थान्तरन्यासः
(D) रूपकः

330. 'अतिस्नेहः पापशङ्की' एषा सूक्तिः केन कस्य कृते उक्ता?
(A) सखीभ्यां शकुन्तलायै
(B) गौतम्या कण्वाय
(C) दुष्यन्तेन सखिभ्यः
(D) कण्वेन शकुन्तलायै

331. 'रक्षितव्या खलु प्रकृतिपेलवा प्रियसखी' अत्र 'प्रकृतिपेलवा प्रियसखी' कस्य कृते प्रयुक्तम्?
(A) शकुन्तलायै
(B) प्रियंवदायै
(C) सानुमत्यै
(D) अनसूयायै

332. पतिगृहं गच्छन्त्यै शकुन्तलायै किमुक्तवान् ऋषि-कण्वः?
(A) चक्रवर्तिपुत्रमवाप्नुहि
(B) धनस्य प्राप्तिः भवतु
(C) महादेवीशब्दं लभस्व
(D) वीरप्रसविनी भव

333. 'अद्यप्रभृति दूरपरिवर्तिनी ते खलु भविष्यामि' केन कस्मै उक्तम्-
(A) शकुन्तलया सखिभ्यः
(B) शकुन्तलया मृगाय
(C) शकुन्तलया अनसूयायै
(D) शकुन्तलया वनज्योत्स्नायै

334. दुष्यन्ताय सन्देशवचनं केन कस्य कृते उक्तम्?
(A) कण्वेन शार्ङ्गरवाय
(B) कण्वेन गौतम्यै
(C) कण्वेन प्रियंवदायै
(D) कण्वेन शकुन्तलायै

335. अभिज्ञानशाकुन्तले ययातेः कस्य पुत्रस्य उल्लेखः?
(A) यदोः **(B) पुरोः**
(C) तुर्वसोः (D) द्रुह्योः

336. सानुमती पात्रभूता अस्ति-
(A) उत्तररामचरिते
(B) किरातार्जुनीये
(C) कादम्बर्याम्
(D) अभिज्ञानशाकुन्तले

337. राजशेखरेण कति कालिदासाः उल्लिखिताः-
(A) 5 **(B) 3**
(C) 2 (D) 6

338. अभिज्ञानशाकुन्तले स्त्री-पात्राणि वदन्ति-
(A) संस्कृतम्
(B) शौरसेनी-प्राकृतम्
(C) पालिभाषाम्
(D) (खड़ी) हिन्दीम्

339. 'ग्रीवाभङ्गाभिरामं मुहुरनुपतति स्यन्दने दत्तदृष्टिः' श्लोकेऽस्मिन् किं छन्दः?
(A) शार्दूलविक्रीडितम्
(B) स्रग्धरा
(C) हरिणी
(D) शिखरिणी

340. 'असंशयं क्षत्रपरिग्रहक्षमा' अत्र 'क्षत्रपरिग्रहक्षमा' इत्यनेन कस्य सङ्केतः?
(A) प्रियंवदायाः
(B) अनसूयायाः
(C) शकुन्तलायाः
(D) क्षत्रियाणां क्षमायाः

341. 'वत्से, वीर-प्रसविनी भव' आशीर्वादोऽयं शकुन्तलायै केन दत्तः?
(A) तापस्या (B) गौतम्या
(C) मारीचेण (D) कण्वेन

342. 'वामाः कुलस्याधयः' इत्यत्र 'आधयः' पदस्य अर्थः अस्ति-
(A) मानसिकव्याधिः
(B) बाधा
(C) मोक्षम्
(D) अर्धम्

343. 'मा स्म प्रतीपं गमः' अत्र 'प्रतीपं' पदस्य कोऽर्थः?
(A) प्रतिकूलम् (विपरीत)
(B) अनुकूलम्
(C) आचरणम्
(D) चरित्रम्

344. 'तात! कदा नु भूयस्तपोवनं प्रेक्षिष्ये' एतद् कथनं कस्याः?
(A) प्रियंवदायाः
(B) अनसूयायाः
(C) शकुन्तलायाः
(D) गौतम्याः

345. दुष्यन्तस्य का राज्ञी पञ्चमाङ्के संगीतस्य अभ्यासं करोति?
(A) हंसपदिका
(B) वसुमती
(C) शकुन्तला
(D) दाक्षायणी

346. राज्ञीवसुमत्याः रतौ राजा दुष्यन्तः कां विस्मरति?
(A) हंसपदिकाम्
(B) सानुमतीम्
(C) प्रियंवदाम्
(D) शकुन्तलाम्

347. हंसपदिका स्वगायनमाध्यमेन कम् अभिलक्षयति?
(A) दुष्यन्तम्
(B) माधव्यम्
(C) शकुन्तलाम्
(D) कण्वम्

348. कण्व-शिष्याणाम् आगमनस्य सूचना राज्ञे दुष्यन्ताय केन प्रदत्ता?
(A) प्रतिहारिणा
(B) कञ्चुकी-वातायनेन
(C) विदूषकमाधव्येन
(D) पुरोहित-सोमरातेन

349. हस्तिनापुरं गत्वा शकुन्तलायाः किं नेत्रं स्फुरति?
   (A) वामनेत्रम्
   (B) दक्षिणनेत्रम्
   (C) उभावपि
   (D) एतेषु न किमपि

350. 'भवन्ति नम्रास्तरवः फलागमैः' एतद् कथनं कस्य?
   (A) शार्ङ्गरवस्य
   (B) शारद्वतस्य
   (C) कण्वस्य
   (D) पुरोहितसोमरातस्य

351. अभिज्ञानशाकुन्तले सेनापतेः नाम किम्?
   (A) आत्रेयः
   (B) भद्रसेनः
   (C) मैत्रेयः
   (D) वसन्तकः

352. 'स्वभाव एवैष परोपकारिणाम्' एतद् कथनं केन कस्य कृते उक्तम्?
   (A) शार्ङ्गरवेण दुष्यन्तस्य कृते
   (B) कण्वेन शारद्वतस्य कृते
   (C) दुष्यन्तेन सोमरातस्य कृते
   (D) गौतम्या दुष्यन्तस्य कृते

353. शकुन्तलायाः पुत्रवत्पालितस्य मृगस्य नाम किम्?
   (A) दीर्घापाङ्गः
   (B) मृगानुसारी
   (C) मृगाङ्कः
   (D) पिनाकी

354. 'शकुन्तला सन्तानोत्पत्तिपर्यन्तं मम गृहे निवसतु' एतद् वाक्यं केनोक्तम्?
   (A) मारीचेण
   (B) पुरोहितसोमरातेन
   (C) कण्वेन
   (D) दुष्यन्तेन

355. राजा दुष्यन्तस्य प्रतिहार्याः (द्वारपालिकायाः) नाम किम्?
   (A) सानुमती (B) बेतवारानी
   (C) वेत्रवती (D) सोमवती

356. 'पाटच्चर, किमस्माभिर्जातिः पृष्टा' अत्र 'पाटच्चर' पदस्य अर्थः अस्ति-
   (A) चौरः (B) श्यालः
   (C) राजा (D) कोतवालः

357. 'काव्येषु नाटकं रम्यम्' अत्र कस्य नाटकस्य उपदेशः?
   (A) उत्तररामचरितस्य
   (B) मालविकाग्निमित्रस्य
   (C) अभिज्ञानशाकुन्तलस्य
   (D) वेणीसंहारस्य

358. 'इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी' अत्र 'तन्वी' पदेन का सङ्केतिता?
   (A) प्रियंवदा (B) चन्द्रः
   (C) अनसूया **(D) शकुन्तला**

359. 'आशङ्कसे यदग्निं तदिदं स्पर्शक्षमं रत्नम्' एतद् वाक्यं केन कस्य कृते उक्तम्?
   (A) दुष्यन्तेन शकुन्तलायाः कृते
   (B) कण्वेन शिष्यस्य कृते
   (C) शकुन्तलया राज्ञः कृते
   (D) सखिभिः अग्नेः कृते

360. 'लब्धावकाशो मे मनोरथः' एतद् वचनं कस्य?
(A) प्रियंवदायाः
(B) राज्ञः दुष्यन्तस्य
(C) शकुन्तलायाः
(D) कण्वस्य

361. कौशिकगोत्रनामधेयः राजर्षिः कः अस्ति-
(A) कण्वः (B) मारीचः
(C) विश्वामित्रः (D) दुर्वासाः

362. मेनकायाः आगमनसमये विश्वामित्रः कस्याः नद्याः तटे उग्रतपस्यां करोति स्म?
(A) गौतमीनद्याः तटे
(B) यमुनानद्याः तटे
(C) मालिनीनद्याः तटे
(D) गङ्गानद्याः तटे

363. राजा दुष्यन्तः शकुन्तलां किं पृष्टवान्?
(A) अपि तपो वर्धते?
(B) कुशलिनी अस्ति वा?
(C) स्वास्थ्यं कथमस्ति?
(D) भवत्याः नाम किम् ?

364. 'अधरः किसलयरागः कोमलविटपानुकारिणौ बाहू' राज्ञः एतद् कथनं कस्य कृते?
(A) शकुन्तलायाः कृते-अङ्क 1
(B) प्रियंवदायाः कृते - अङ्क 4
(C) अनसूयायाः कृते - अङ्क 4
(D) तपोवनस्य कृते - अङ्क 1

365. 'दूरीकृताः खलु गुणैरुद्यानलता वनलताभिः' अत्र 'वनलताभिः' इत्यनेन कस्य सङ्केतः कृतः-
(A) राज्ञीनां
(B) तापस-कुमारीणां
(C) अरण्य-पशूनां
(D) उद्यानसेविकानां

366. सोमतीर्थगमनसमये अतिथि-सत्कारस्य दायित्वं कण्वः कस्यै अददात्?
(A) शिष्यशारद्वताय
(B) गौतम्यै
(C) शकुन्तलायै
(D) प्रियंवदायै

367. 'आश्रममृगोऽयं न हन्तव्यो न हन्तव्यः' एतत् कथनं केन कस्य कृते उक्तम्?
(A) वैखानसेन दुष्यन्तस्य कृते
(B) कण्वेन शकुन्तलायाः कृते
(C) राज्ञा सूतस्य कृते
(D) शिष्येण गुरोः कृते

368. दुष्यन्तशकुन्तलयोः पुनर्मेलनं कमिन्नङ्के भवति?
(A) चतुर्थे (B) तृतीये
(C) सप्तमे (D) प्रथमे

369. अभिज्ञानशाकुन्तले समालोचकैः कस्यै 'निसर्गकन्या' इति उपाधिः प्रदत्तः?
(A) प्रियंवदायै
(B) शकुन्तलायै
(C) अनसूयायै
(D) मेनकायै

370. अभिज्ञानशाकुन्तलस्य कयोः अङ्कयोः अनसूयाप्रियंवदयोः उपस्थितिः नास्ति?
(A) प्रथमे षष्ठे च
(B) द्वितीये सप्तमे च
(C) तृतीये सप्तमे च
(D) पञ्चमे, षष्ठे, सप्तमे च

371. अभिज्ञानशाकुन्तलस्य कयोः अङ्कयोः शकुन्तलायाः उपस्थितिः नास्ति-
(A) द्वितीये षष्ठे च
(B) तृतीये सप्तमे च
(C) पञ्चमे षष्ठे च
(D) द्वितीये चतुर्थे च

372. अभिज्ञानशाकुन्तले महर्षि- कण्वः कुत्र दृश्यते?
(A) सर्वेषु अङ्केषु
(B) केवलं चतुर्थे अङ्के
(C) प्रथमाङ्कं त्यक्त्वा सर्वेषु अङ्केषु
(D) केवलं चतुर्थे पञ्चमे च अङ्के

373. अभिज्ञानशाकुन्तले विदूषकस्य माधव्यस्य वर्णनं प्राप्यते-
(A) द्वितीये, पञ्चमे, षष्ठे च
(B) प्रथमे, तृतीये च
(C) द्वितीये, तृतीये च
(D) द्वितीये, चतुर्थे च

374. अभिज्ञानशाकुन्तले राज्ञः मनः स्थितिं ज्ञातुं मेनकायाः सखी सानुमती कस्मिन्नङ्के समायाता?
(A) पञ्चमे अङ्के
(B) षष्ठे अङ्के
(C) सप्तमे अङ्के
(D) एतेषु न किमपि

375. 'धर्मारण्यं प्रविशति .... स्यन्दनालोकभीतः' रिक्तस्थानं पूरयतु?
(A) गजः (B) अश्वः
(C) ऋषिः (D) कण्वः

376. तस्य 'औषधिविशेषस्य' नाम किम्? या ऋषि-मारीचेण सर्वदमनस्य हस्ते बन्धीकृतः?
(A) सञ्जीवनी
(B) अमृतवटी
(C) अपराजिता
(D) विशल्यकरणी

377. 'वत्स, चिरञ्जीव पृथ्वीं पालय' एष आशीर्वादः दुष्यन्ताय कः दत्तवान्?
(A) कण्वः **(B) महर्षिमारीचः**
(C) दुर्वासाः (D) ऋषिभिः

378. मारीचाश्रमे दुष्यन्तशकुन्तलयोः पुनर्मेलनस्य वार्ता महर्षि-कण्वं कः सूचयति?
(A) गालवः (B) सर्वदमनः
(C) शार्ङ्गरवः (D) गौतमः

379. अभिज्ञानशाकुन्तलस्य भरतवाक्ये किं छन्दः?
(A) मालिनी **(B) रुचिरा**
(C) वंशस्थ (D) आर्या

380. भारतीयनाटकानाम् उत्पत्तिः ऋग्वेदस्य संवादसूक्तेभ्यः कः न मन्यते?
(A) प्रो. मैक्समूलरः
(B) प्रो. सिल्वालेवी
(C) प्रो. फाँन श्रोएडर
(D) प्रो. ल्युडर्स

381. महाभारतस्य कथानुसारेण दुष्यन्तशकुन्तलयोः पुत्रस्य भरतस्य 'सर्वदमनः' इति नाम केन दत्तम्?
(A) काश्यपेन **(B) मारीचेन**
(C) गौतम्या (D) अदित्या

382. राजा दुष्यन्तः कया घटनया निश्चयं करोति यत् एषः बालकः सर्वदमनः तस्य एव पुत्रः-
(A) अजेयता नामधेय - औषधिकारणात्
(B) जेयता नामधेय - औषधिकारणात्
(C) अपराजिता नामधेय - औषधिकारणात्
(D) पराजिता नामधेय - औषधिकारणात्

383. कालिदासेन अभिज्ञानशाकुन्तले कति छन्दांसि प्रयुक्तानि?
(A) 18 (B) 19
(C) 20 **(D) 24**

384. कालिदासेन अभिज्ञानशाकुन्तले साधारणतया गद्यपद्ययोः कृते का प्राकृतभाषा प्रयुक्ता?
(A) शौरसेनी, मागधी, प्राकृतञ्च
(B) शौरसेनी, महाराष्ट्री, प्राकृतञ्च
(C) मागधी, महाराष्ट्री, प्राकृतञ्च
(D) महाराष्ट्री, शौरसेनी, प्राकृतञ्च

385. अभिज्ञानशाकुन्तलस्य प्रथमाङ्कस्य कथायाः प्रारम्भः कस्मिन् ऋतौ भवति-
(A) वसन्तऋतौ (B) हेमन्तऋतौ
(C) ग्रीष्मऋतौ (D) शरद्ऋतौ

386. 'गुणवते कन्यका प्रतिपादनीयेत्ययं तावत् प्रथमः संकल्पः' एतद् कथनं कस्य?
(A) कण्वस्य
(B) दुष्यन्तस्य
(C) अनसूयायाः
(D) प्रियंवदायाः

387. 'पादयोः प्रणम्य निवर्तयैनं यावदहमर्घोदकमुपकल्पयामि' अत्र प्रयुक्ते 'अर्घशब्दे' कति वस्तूनि भवन्ति?
(A) 6 **(B) 8**
(C) 7 (D) 12

388. 'सखि, सुखमञ्जनं ते भवतु' एतद् कथनमस्ति-
(A) अनसूयायाः शकुन्तलां प्रति
(B) प्रियंवदायाः शकुन्तलां प्रति
(C) तपस्विन्याः शकुन्तलां प्रति
(D) प्रियंवदानुसूययोः शकुन्तलां प्रति

389. 'भगिन्यास्ते मार्गमादेशय' केन उक्तम्?
(A) कश्यपेन गालवाय
(B) राज्ञा सारथिने
(C) काश्यपेन शार्ङ्गरवाय
(D) इन्द्रेण मातलिने

390. वैखानसः अस्ति-
(A) मारीचस्य शिष्यः
(B) कण्वस्य शिष्यः
(C) इन्द्रस्य सेवकः
(D) दुष्यन्तस्य सेवकः

391. 'अनुमतगमना' पदस्य अर्थ अस्ति-
(A) यः स्वयं ज्ञानी अभवत्
(B) येन गन्तुम् आज्ञा दत्ता
(C) या गमनाय आज्ञप्ता अस्ति
(D) यस्य गमनं जातमस्ति

392. उचितं मेलयतु-
(अ) सट्टकम् 1. त्रयो अङ्काः
(ब) प्रहसनम् 2. चत्वारो अङ्काः
(स) डिमः 3. चतस्रः जवनिकाः
(द) समवकारः 4. एकोऽङ्कः

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	4	3	2	1
(B)	3	1	2	4
(C)	3	4	1	2
(D)	**3**	**4**	**2**	**1**

393. नाट्यस्य कृते ब्रह्मणा यजुर्वेदात् किं वस्तु गृहीतम्?
(A) अभिनयः
(B) संगीतम्
(C) रसः
(D) पाठ्यसामग्री

394. कण्वः (काश्यपः) सोमतीर्थं गतः?
(A) शकुन्तलायाः बुद्धिशुद्धये
(B) शकुन्तलायाः मनोकामनासिद्ध्यर्थम्
(C) शकुन्तलायाः अनिष्टनिवारणाय
(D) सोमनाथमन्दिरदर्शनाय

395. प्रख्यातकथावस्तु भवति यत्-
(A) यत् इतिहासादिषु अवलम्बितं भवति
(B) कविकल्पितम्
(C) केचन अंशाः इतिहासावलम्बिताः अधिकांशाः कविकल्पिताः
(D) एतेषु न किमपि

396. अवान्तरकथायाः मूलकथा-मभङ्गकारणात् यत् तां योजयति अग्रे वर्धयति च तत् किम्?
(A) बीजम् **(B) बिन्दुः**
(C) पताका (D) प्रकरी

397. प्राप्त्याशा अस्ति-
(A) जब अनुकूल परिस्थितियों के कारण फलप्राप्ति की सम्भावना होती है और विघ्नों के कारण वह असम्भव दिखती है।
(B) जब इष्ट फल की प्राप्ति हो जाती है।
(C) जब विघ्नों के हट जाने के कारण फल की प्राप्ति निश्चित जान पड़ती है।
(D) मुख्यफल की सिद्धि के लिए नायक में जो उत्सुकता होती है।

398. विपरीतमुखेन (मुँह फेरकर) कस्यचित् अन्यपात्रस्य गुप्तवार्ता किमुच्यते?
(A) जनान्तिकम्
(B) अपवारितम्
(C) आकाशभाषितम्
(D) एतेषु न किमपि

399. 'अस्ति कश्चिद् वाग्विशेषः' विद्योत्तमायाः एतद्कथनेन कालिदासस्य कस्य ग्रन्थस्य अवबोधः न भवति?
(A) रघुवंशस्य
(B) मेघदूतस्य
(C) कुमारसम्भवस्य
(D) अभिज्ञानशाकुन्तलस्य

400. उज्जैनस्थितस्य महाकालमन्दिरस्य निर्माणं केन कारितम्?
(A) सातवाहनराजाहालमहोदयेन
(B) विक्रमादित्येन
(C) अश्वघोषेण
(D) मेरुतुंगाचार्येण

401. 'मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्मलक्ष्मीं तनोति' इत्यत्र 'हिमांशुः' शब्दस्य कोऽर्थः
(A) चन्द्रः (B) पुष्पम्
(C) लयः (D) शोभा

402. 'उत्पक्ष्मणोर्नयनयोरुपरुद्धवृत्तिं, वाष्पं कुरु स्थिरतया विरतानुबन्धम् ' श्लोकेऽस्मिन् किं छन्दः?
(A) इन्द्रवज्रा
(B) वसन्ततिलका
(C) शार्दूलविक्रीडितम्
(D) अपरवक्त्रम्

403. समुचितमेलनं कुरुत-

(क) वीरप्रसविनी भव (1) प्रथमा तापसी
(ख) महादेवीशब्दं लभस्व (2) काश्यपः
(ग) भर्तुर्बहुमता भव (3) तृतीया तापसी
(घ) भर्तुः श्लाघ्ये स्थिता गृहिणीपदे (4) द्वितीया तापसी लभस्व

	क	ख	ग	घ
(A)	(4)	(1)	(2)	(3)
(B)	**(4)**	**(1)**	**(3)**	**(2)**
(C)	(3)	(1)	(2)	(4)
(D)	(1)	(2)	(4)	(3)

404. अभिज्ञानशाकुन्तले निवृत्तकल्याणा का?
(A) शकुन्तला (B) प्रियंवदा
(C) मेनका (D) गौतमी

405. 'तेजोद्वयस्य युगपद्वयसनोदयाभ्याम्' इत्यत्र वर्णनमस्ति।
(A) प्रभातरजन्योः
(B) दुष्यन्तशकुन्तलयोः
(C) चन्द्रसूर्ययोः
(D) शिष्यद्वयोः

406. चतुर्षु किं न अनसूयायाः कथनम्?
(A) शकुन्तलाया अपि सौभाग्यदेवता अर्चनीया
(B) गुणवते कन्यका प्रतिपादनीया
(C) कस्मिन्नपि पूजार्हे अपराद्धा शून्यहृदया शकुन्तला
(D) गुर्वपि विरहदुःखमाशाबन्धः साहयति

407. वामहस्तोपहितवदना का?
(A) तापसी (B) अनसूया
(C) शकुन्तला (D) मेनका

408. 'शिवास्ते पन्थानः सन्तु' सूक्तिरियं कस्य?
(A) काश्यपस्य
(B) मारीचस्य
(C) इन्द्रस्य
(D) तापस्याः

409. प्रकाशः निर्गतस्तावदव लोकयामि कियदवशिष्टं ....?
(A) शर्वरी (B) प्रभातम्
(C) रजन्या (D) रात्रिः

410. शाकुन्तलस्य चतुर्थाङ्के संस्मरणीयशोभा कस्याः विशेषणमस्ति?
(A) दृष्ट्याः
(B) कुमुद्वत्याः
(C) शकुन्तलायाः
(D) प्रियंवदायाः

411. शकुन्तलागमनवेलायाम् उटजपटले दर्भं कः मुञ्चति?
(A) पिकः
(B) मयूरः
(C) मृगः
(D) नारिकेलम्

412. 'कुशेशयः' शब्दस्यार्थः-
(A) विरहयुक्तः
(B) कमलम्
(C) खिन्नः
(D) त्याज्यमानः

413. हस्तिनापुरगामिन जनाः के?
(A) शार्ङ्गरवः, शारद्वतः, गौतमी
(B) शार्ङ्गरवः,शारद्वतः, मेनका
(C) शार्ङ्गरवः,शारद्वतः, परिचारिका
(D) शार्ङ्गरवः, शारद्वतः सानुमती

414. क्षौमयुगलवसना का?
(A) शकुन्तला (B) गौतमी
(C) अनसूया (D) प्रियंवदा

415. 'उपरुध्यते मे तपोऽनुष्ठानम्' वचनमिदं कस्य?
(A) मारीचस्य **(B) कण्वस्य**
(C) मेनकायाः (D) गौतम्याः

416. असमीचीनं चिनुत?
(A) अचेतनं नाम गुणं न लक्षयेत् – दुष्यन्तः
(B) अतिस्नेहः पापाशंकी – सख्यौ
(C) अनिर्वर्णनीयं परकलत्रम् – माधव्यः
(D) अनार्यः परदारव्यवहारः – दुष्यन्तः

417. असङ्गतं वर्तते?
(A) अहो कामी स्वतां पश्यति – दुष्यन्तः
(B) उत्सवप्रियाः खलु मनुष्याः – सानुमती
(C) ओदकान्तं स्निग्धो जनोऽनुगन्तव्यः – शार्ङ्गरवः
(D) अरण्ये मया रुदितम् – दुष्यन्तः

418. 'यान्त्येवं गृहिणीपदं युवतयो' अत्र 'यान्त्येवम्' पदे कः सन्धिः?
(A) गुणसन्धिः
(B) यण्सन्धिः
(C) अयादिसन्धिः
(D) पररूपसन्धिः

419. 'मा स्म प्रतीपं गमः' इत्यत्र 'प्रतीपम्' इत्यस्य कोऽर्थः –
(A) प्रतिकूलम्
(B) अनुकूलम्
(C) दीपकः
(D) प्रकाशः

420. 'अस्मान् साधु विचिन्त्य संयमधनान्' अत्र 'अस्मान्' पदेन कस्य बोधः?
(A) कण्वादीन् ऋषीन्
(B) दुष्यन्तादीन्
(C) रामादीन्
(D) गालवादीन्

421. 'इयं दारेषु दृश्या त्वया' किं वाच्यम्-
(A) भाववाच्यम्
(B) कर्तृवाच्यम्
(C) कर्मवाच्यम्
(D) एतेषु न किमपि

5. अभिज्ञानशाकुन्तलम् की सूक्तियाँ

- **अकृतार्थेऽपि मनसिजे रतिमुभयप्रार्थना कुरुते।** (अभि.2/1)

  भावार्थ- राजा दुष्यन्त मन में सोचता है कि- काम भाव के सफल न होने पर भी दोनों ओर की इच्छा प्रेम को उत्पन्न करती है।

- **अतनुषु विभवेषु ज्ञातयः सन्तु नाम।** (अभि. 5/8)

  भावार्थ- विशाल वैभव होने पर बहुत से सम्बन्धी हो जाते हैं।

- **अत्यारूढिर्भवति महतामप्यपभ्रंशनिष्ठा।** (अभि. अङ्क-4)

  भावार्थ- बड़ों का भी अति ऊँचे स्थान पर चढ़ना पतन में ही परिवर्तित होता है।

- **अरण्ये मया रुदितम्।** (अभि. अङ्क-2)

  भावार्थ- विदूषक राजा से कहता है कि- 'मैंने अरण्यरोदन ही किया।'

- **अहो चेष्टाप्रतिरूपिका कामिजनमनोवृत्तिः** (अभि. अङ्क-1)

  भावार्थ- राजा दुष्यन्त कहता है कि- 'अहो कामिजनों की मनोवृत्ति उनकी चेष्टाओं के अनुकूल ही होती है।'

- **अचेतनं नाम गुणं न लक्षयेत्।** (अभि.6/13)

  भावार्थ- राजा दुष्यन्त अँगूठी को देखकर कहता है कि- 'अचेतन वस्तु गुणों की ओर ध्यान नहीं देती।'

- **अतिस्नेहः पापशंकी।** (अभि.अङ्क-4)

  भावार्थ- अनसूया और प्रियंवदा- शकुन्तला से कहती हैं कि- 'अत्यधिक प्रेम पाप (अनिष्ट) की आशंका करता है।'

- **अनतिक्रमणीयानि श्रेयांसि।** (अभि.अङ्क-7)

  भावार्थ- राजा दुष्यन्त मातलि से कहता है- 'कल्याण की चीजों को छोड़कर नहीं जाना चाहिए।'

- **अनार्यः परदारव्यवहारः।** (अभि. अङ्क-7)

  भावार्थ- राजा दुष्यन्त मन में सोचता है- 'परस्त्री के विषय में बात करना अशिष्टता है।'

- **'अनियन्त्रणानुयोगस्तपस्विजनो नाम।'** (अभि. अङ्क-1)

  भावार्थ- प्रियंवदा राजा दुष्यन्त से कहती है- 'तपस्विजनों से निःसंकोच कोई भी प्रश्न पूछा जा सकता है।'

- **'अनिर्वर्णनीयं परकलत्रम्।'** (अभि. अङ्क-5)

  भावार्थ- राजा दुष्यन्त प्रतीहारी की बात सुनकर कहता है- 'पर स्त्री की ओर ध्यान से देखना उचित नहीं है।'

- **'अर्थो हि कन्या परकीय एव।'** (अभि.4/22)

  भावार्थ- काश्यप शकुन्तला को विदा करने के बाद कहते हैं- 'कन्या वस्तुतः पराई सम्पत्ति है।'

- **अवश्यम्भाव्यचिन्तनीयः समागमो भवति।** (अभि.अङ्क-6)

  भावार्थ- विदूषक माढव्य राजा दुष्यन्त से कहता है कि- अवश्यम्भावी मिलन अचानक ही होता है।

- **अवसरोपसर्पणीया राजानः।** (अभि.अङ्क-6)

  भावार्थ- राजा दुष्यन्त का सिपाही जानुक दूसरे सिपाही से कहता है- 'राजाओं से वस्तुतः (उनके) अवकाश के समय ही मिला जाता है।'

- **अविश्रमोऽयं लोकतन्त्राधिकारः।** (अभि. अङ्क-5)

  भावार्थ- कञ्चुकी कहता है कि- 'राजा को प्रजापालन के अधिकार में विश्राम कहाँ है।'

- **आपन्नस्य विषयनिवासिनो जनस्यार्तिहरेण राज्ञा भवितव्यमित्येष वो धर्मः।** (अभि. अङ्क-3)

  भावार्थ- प्रियंवदा राजा दुष्यन्त से कहती है- राजाओं का कर्त्तव्य है कि वह अपने राज्य के अन्दर रहने वाले आपत्तिग्रस्त व्यक्ति की आपत्ति को दूर करें।

- **आशङ्कसे यदग्निं तदिदं स्पर्शक्षमं रत्नम्** (अभि. 1.28)

  भावार्थ- राजा दुष्यन्त शकुन्तला के विषय में सोचता है कि- 'तू जिसको अग्नि समझ रहा था वह स्पर्श के योग्य रत्न है।'

- **आपन्नाभयसत्रेषु दीक्षिताः खलु पौरवाः।** (अभि. अङ्क-2/16)

  भावार्थ- दो ऋषि कुमार राजा से कहते हैं- वस्तुतः पुरुवंशी राजा आपत्तिग्रस्तों के लिए अभयदान-रूपी यज्ञ की दीक्षा लिये हुए हैं।

- **इष्टप्रवासजनितान्यबलाजनस्य दुःखानि नूनमतिमात्रसुदुःसहानि।** (अभि.4/3)

भावार्थ- कण्व का शिष्य कहता है- वस्तुतः स्त्रियों को अपने इष्ट व्यक्ति के प्रवास से उत्पन्न दुःख अत्यन्त असह्य होते हैं।

- **उचितं नः पर्युपासनमतिथीनाम्।** (अभि. अङ्क-1)

भावार्थ- अनसूया शकुन्तला से कहती है- यह हमारे लिए उचित है कि अतिथि के पास बैठें।

- **उत्सर्पिणी खलु महतां प्रार्थना।** (अभि. अङ्क-7)

भावार्थ- मातलि कहते हैं- 'महात्माओं की इच्छा सदा ऊर्ध्वगामिनी होती है अर्थात् उनका लक्ष्य सदा उच्च ही होता है।'

- **उत्सवप्रियाः खलु मनुष्याः।** (अभि. अङ्क-6)

भावार्थ- सानुमती कहती है- 'मनुष्य उत्सव-प्रिय होते हैं।'

- **उपपन्ना हि दारेषु प्रभुता सर्वतोमुखी।** (अभि.5/26)

भावार्थ- शारद्वत राजा दुष्यन्त से कहता है- 'पत्नी पर पति की सब प्रकार से प्रभुता स्वीकार की गयी है।'

- **ओदकान्तं स्निग्धो जनोऽनुगन्तव्यः।** (अभि.अङ्क-4)

भावार्थ- शार्ङ्गरव काश्यप से कहता है- भगवन् प्रिय व्यक्ति का जल के किनारे तक अनुगमन करना चाहिए, ऐसी श्रुति है।

- **औत्सुक्यमात्रमवसाययति प्रतिष्ठा।** (अभि.05/06)

भावार्थ- राजा दुष्यन्त कहता है- 'प्रतिष्ठा (उच्चपद) की प्राप्ति केवल उत्सुकता को समाप्त करती है।'

- **कदापि सत्पुरुषाः शोकवास्तव्या न भवन्ति।** (अभि.अङ्क-6)

भावार्थ- विदूषक राजा से कहता है- 'सज्जन व्यक्ति कभी भी शोक के पात्र नहीं होते हैं। प्रचण्डवायु में भी पहाड़ विचलित नहीं होते हैं।'

- **'किमत्र चित्रं यदि विशाखे शशाङ्कलेखामनुवर्तेते'** (अभि.- अङ्क-3)

भावार्थ- राजा दुष्यन्त कहता है कि- इसमें आश्चर्य की क्या बात है, यदि दोनों विशाखा-नक्षत्र (अनसूया, प्रियंवदा) चन्द्रलेखा (शकुन्तला) का अनुसरण करते हैं।

- **किमीश्वराणां परोक्षम्** (अभि. अङ्क-7)

भावार्थ- मातलि- मुस्कराकर कहता है कि- ऐश्वर्यशालियों के लिए कौन-सी बात परोक्ष (छिपी हुई) है?

- **कष्टं खल्वनपत्यता।** (अभि.अङ्क-6)

भावार्थ- राजा दुष्यन्त प्रतीहारी से कहता है- 'सन्तान हीनता वस्तुतः बहुत कष्ट की बात है।'

- **कामी स्वतां पश्यति।** (अभि. 02/02)

भावार्थ- राजा दुष्यन्त विदूषक से कहता है- 'कामी व्यक्ति सर्वत्र अपनी ही बात देखता है।'

- **किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्।** (अभि.1/20)

भावार्थ- राजा दुष्यन्त ने शकुन्तला के सौन्दर्य का वर्णन करते हुए कहा- 'सुन्दर आकृतियों के लिए क्या वस्तु अलङ्कार नहीं होती है।'

- **को नामोष्णोदकेन नवमालिकां सिञ्चति।** (अभि.अङ्क-4)

भावार्थ- दुर्वासा द्वारा प्रदत्त शाप शकुन्तला को न पता चले अतः प्रियंवदा अनसूया से कहती है- 'भला कौन नवमालिका को गर्म जल से सींचेगा'?

- **कोऽन्यो हुतवहाद् दग्धुं प्रभवति।** (अभि.अङ्क-4)

भावार्थ- प्रियंवदा द्वारा कहने पर कि अतिक्रोधी महर्षि दुर्वासा के द्वारा शकुन्तला को शाप दिया गया तब अनसूया ने प्रियंवदा से कहा- अग्नि के अतिरिक्त भला और कौन जला सकता है?

- **गण्डस्योपरि पिण्डकः संवृत्तः।** (अभि.अङ्क-2)

भावार्थ- राजा दुष्यन्त के शिकार खेलने तथा आश्रम में शकुन्तला को देखने के बाद हस्तिनापुर वापस न जाने से खिन्न विदूषक एक मुहावरा कहता है- 'यह और फोड़े पर फोड़ा हो गया है।'

- **ग्लापयति यथा शशाङ्कं न तथा हि कुमुद्वतीं दिवसः।** (अभि. 3/14)

भावार्थ- राजा (सहसा पास में जाकर) शकुन्तला को सम्बोधित करते हुए कहता है- दिन जितना चन्द्रमा को निष्प्रभ बना देता है, उतना कुमुदिनी को नहीं।

- **गुणवते कन्यका प्रतिपादनीया।** (अभि. अङ्क-4)

भावार्थ- शकुन्तला द्वारा किये गये गान्धर्व विवाह के विषय में पिता काश्यप क्या सोचेंगे ऐसा प्रियंवदा के कहने पर अनसूया कहती है- गुणवान् (सुयोग्य) व्यक्ति को कन्या देनी है, यह माता-पिता का मुख्य विचार होता है।

- **गुर्वपि विरहदुःखमाशाबन्धः साहयति।** (अभि.अङ्क-4)

भावार्थ- शकुन्तला के विदाई के समय अनसूया शकुन्तला से कहती है- आशा का बन्धन विरह के कठोर दुःख को भी सहन करा देता है।

- **चूतकलिकां दृष्ट्वोन्मत्ता परभृतिका भवति।** (अभि.अङ्क-6)

भावार्थ- वसन्त मास के आगमन पर प्रसन्नचित राजा दुष्यन्त की दो सेविका आपस में बातचीत करती हैं- परभृतिका मधुरिका से कहती है- परभृतिका (कोयल) आम की कली को देखकर मतवाली हो जाती है। (मैं परभृतिका भी मतवाली हो रही हूँ।)

- **छाया न मूर्च्छति मलोपहतप्रसादे शुद्धे तु दर्पणतले सुलभावकाशा।** (अभि. 7/32)

भावार्थ- दुर्वासा के शाप के समाप्त हो जाने के पश्चात् राजा दुष्यन्त द्वारा शकुन्तला को पहचान लेने पर मारीच ऋषि शकुन्तला से कहते हैं- मैल के कारण जिसकी स्वच्छता नष्ट हो गई, ऐसे शीशे पर प्रतिबिम्ब साफ दिखाई नहीं देता, किन्तु वह स्वच्छ हो तो प्रतिबिम्ब साफ दिखाई देगा।

- **ज्वलति चलितेन्धनोऽग्निर्विप्रकृतः पन्नगः फणां कुरुते।**
प्रायः स्वं महिमानं क्षोभात् प्रतिपद्यते हि जनः। (अभि.6/31)

भावार्थ- विदूषक के प्रति किये गये मातलि के व्यवहार के विषय में राजा दुष्यन्त के प्रश्न करने पर मातलि दुष्यन्त से कहता है- 'अग्नि लकड़ियों को हिला देने से प्रज्वलित हो जाती है। साँप छेड़ने पर अपने फन को फैलाता है। इसी प्रकार मनुष्य भी प्रायः उत्तेजित होने पर अपने पराक्रम को प्राप्त होता है।'

- **तमस्तपति घर्मांशौ कथमाविर्भविष्यति।** (अभि. 5/14)

भावार्थ- ऋषि लोग राजा दुष्यन्त से कहते हैं कि- सूर्य के तपते हुए होने पर अन्धकार कैसे प्रकट हो सकता है।

- **तेजोद्वयस्य युगपद्व्यसनोदयाभ्यां, लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु।** (अभि. 4/2)

भावार्थ- तदन्तर सोकर उठा हुआ शिष्य प्रवेश करके कहता है- यह संसार दो तेजों के एक साथ अस्त और उदय के द्वारा मानों दशा-विशेष में नियन्त्रित हो रहा है।

- **तपः षड्भागमक्षय्यं ददत्यारण्यका हि नः।** (अभि. 2/13)

भावार्थ- राजा विदूषक से कहता है- ये तपस्वी लोग अपनी तपस्या का षष्ठांश देते हैं, जो कि अक्षय है।

- **त्रिशङ्कुरिवान्तरा तिष्ठ** (अभि. अंक-2)

भावार्थ- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के द्वितीय अंक में विदूषक कहता है- त्रिशंकु की तरह बीच में लटके रहिए।

- **दूरीकृताः खलु गुणैरुद्यानलता वनलताभिः।** (अभि.1/17)

  भावार्थ- राजा दुष्यन्त द्वारा कण्व ऋषि के आश्रम में प्रवेश करने पर वृक्ष वाटिका में तपस्वी बालिकाओं की सुन्दरता देखकर सोचता है- 'अवश्य ही उपवन की लताएँ वन की लताओं से (सुन्दरता,सुकुमारता आदि) गुणों में तिरस्कृत हो गई।'

- **धूमाकुलितदृष्टेरपि यजमानस्य पावक एवाहुतिः पतिता।** (अभि.अङ्क-4)

  भावार्थ- प्रियंवदा द्वारा अनसूया को बताया जा रहा है कि पिता काश्यप द्वारा शकुन्तला का गान्धर्व विवाह स्वीकार कर लिया गया तथा काश्यप ने उसका अभिनन्दन करते हुये कहा- 'सौभाग्य से धुएँ से व्याकुल दृष्टि वाले यजमान की भी आहुति ठीक अग्नि में ही पड़ी।'

- **न खलु धीमतां कश्चिदविषयो नाम।** (अभि.अङ्क-4)

  भावार्थ- वनवासी होते हुए भी हम लोग लौकिक व्यवहारों को जानते हैं काश्यप के ऐसे वचनो को सुनकर शार्ङ्गरव कहते हैं- 'विद्वानों के लिए वस्तुतः कोई चीज अज्ञात नहीं होती है।'

- **न प्रभातरलं ज्योतिरुदेति वसुधातलात्।** (अभि.1/26)

  भावार्थ- शकुन्तला के सौन्दर्य को देखकर राजा दुष्यन्त अनसूया से कहते हैं- 'कान्ति से देदीप्यमान तेज (विद्युत्) भूतल से उत्पन्न नहीं होता है।'

- **ननु प्रवातेऽपि निष्कम्पा गिरयः।** (अभि. अङ्क-6)

  भावार्थ- विदूषक राजा से कहता है- प्रचण्ड वायु (आँधी) में भी पहाड़ विचलित नहीं होते हैं।

- **पूर्वावधीरितं श्रेयो दुःखं हि परिवर्तते।** (अभि. 7/13)

  भावार्थ- राजा शुभ शकुन का अभिनय करके कहते हैं- कल्याणकारी वस्तु का पहले तिरस्कार कर दिया जाता है तो वह दुःखरूप में ही पुनः प्राप्त होती है।

- **बलवदपि शिक्षितानामात्मन्यप्रत्ययं चेतः।** (अभि.अङ्क-1)

  भावार्थ- अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक को प्रारम्भ करते हुये सूत्रधार नटी से कहता है- 'अत्यधिक शिक्षित लोगों का भी चित्त अपने विषय में विश्वास रहित होता है।'

- **बहुवल्लभा राजानः** (अभि. अङ्क- 3)

  भावार्थ- अनसूया राजा दुष्यन्त से कहती है- सुना है कि राजाओं की बहुत सी स्त्रियाँ होती हैं।

- **भवन्ति नम्रास्तरवः फलोद्गमैः नवाम्बुभिर्दूरविलम्बिनो घनाः।**

(अभि. 5/12)

भावार्थ- राजा दुष्यन्त के पुरोहित द्वारा शार्ङ्गरव इत्यादि ऋषि को बताया गया कि महाराज आप सब से मिलने के लिए आसन छोड़कर खड़े है इस पर शार्ङ्गरव बोले हम लोग उदासीन हैं- वृक्ष फलों के आने पर नम्र हो जाते हैं। बादल नये जल से पूर्ण होने पर बहुत नीचे लटक आते हैं।

- **भाग्यायत्तमतः परं न खलु तद्वाच्यं वधूबन्धुभिः।** (अभि. 4/17)

भावार्थ- काश्यप (कण्व) कहते हैं- इससे आगे भाग्य के अधीन है, वह हम वधू के सम्बन्धियों को नहीं कहना चाहिए।

- **मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति।** (अभि. 1/20)

भावार्थ- राजा, शकुन्तला के सौन्दर्य का वर्णन करता हुआ कहता है- काला कलंक भी चन्द्रमा की शोभा को बढ़ाता है।

- **मूर्च्छन्त्यमी विकाराः प्रायेणैश्वर्यमत्तेषु।** (अभि. 5/18)

भावार्थ- शार्ङ्गरव राजा से कहता है- समृद्धि के कारण प्रमत्त व्यक्तियों में प्रायः ये मन के विकार वृद्धि को प्राप्त होते हैं।

- **मनोरथा नाम तटप्रपाताः।** (अभि. 6/10)

भावार्थ- राजा शकुन्तला के मिलन को स्मरण करके कहता है- ये मनोरथ नदी के किनारे के पतन के तुल्य हैं।

- **भवितव्यता खलु बलवती।** (अभि.अङ्क-6)

भावार्थ- जब राजा दुष्यन्त विदूषक से कहता है कि तुमने मुझे शकुन्तला का नाम स्मरण क्यों नहीं कराया तब विदूषक कहता है- 'होनहार प्रबल होती है।'

- **भवितव्यानां द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र।** (अभि.अङ्क-1/16)

भावार्थ- आश्रम में प्रवेश के समय राजा दुष्यन्त की दाहिनी भुजा फड़कने लगती है इस पर राजा सोचता है कि आश्रम में इसकी सफलता कहाँ? भावी (होनहार) घटनाओं के लिए सर्वत्र ही मार्ग हो जाते हैं।

- **रमणीयः खल्ववधिर्विधिना विसंवादितः।** (अभि.अङ्क-6)

भावार्थ- राजा दुष्यन्त को अँगूठी से बात करते देख तथा शकुन्तला को याद करते देख सानुमती सोचती है- 'यह बहुत सुन्दर अवधि थी, (परन्तु) भाग्य ने इसे बिगाड़ दिया।'

- **राजरक्षितव्यानि तपोवनानि नाम।** (अभि.अङ्क-1)

भावार्थ- जब शकुन्तला को भ्रमर परेशान कर रहा था तो वह अपनी दोनों सखियों को बुलाती है तो दोनों सखियाँ बोलती हैं- 'तपोवन राजा के द्वारा रक्षणीय होते हैं।'

- **राज्ञां तु चरितार्थता दुःखोत्तरैव** (अभि.अङ्क-5)

भावार्थ- राजा दुष्यन्त अपने अधिकार के दुःख का अभिनय करता हुआ कहता है- 'राजाओं की चरितार्थता (सफलता) मुख्यतः दुःख के लिए ही है।'

- **लभेत वा प्रार्थयिता न वा श्रियं-**
श्रिया दुरापः कथमीप्सितो भवेत्। (अभि.-3/11)

भावार्थ- शकुन्तला राजा दुष्यन्त को पत्र लिखने से डरती है कि कहीं उसका तिरस्कार न हो जाये ये सुनकर राजा दुष्यन्त सोचता है- 'प्रार्थी व्यक्ति लक्ष्मी को पावे या न पावे, किन्तु लक्ष्मी के द्वारा प्रार्थित व्यक्ति (लक्ष्मी के लिए) कैसे दुर्लभ हो सकता है?'

- **विनीतवेषेण प्रवेष्टव्यानि तपोवनानि नाम।** (अभि.अङ्क-1)

भावार्थ- राजा दुष्यन्त आश्रम में प्रवेश करते समय अपने सारथि से कहता है- 'तपोवन में सादे वेष में ही जाना चाहिए।'

- **वयं तत्वान्वेषान्मधुकर हतास्त्वं खलु कृतीः।** (अभि. 1/24)

भावार्थ- राजा दुष्यन्त भ्रमर से कहता है कि- हम तथ्य के अनुसन्धान में ही मारे गए, तू वस्तुतः कृतकृत्य है।

- **विवक्षितं ह्यनुक्तमनुतापं जनयति।** (अभि. अङ्क-3)

भावार्थ- अभिज्ञानशाकुन्तल के तृतीय अंक में राजा कहता है कि- क्योंकि जो बात कहना चाहते हैं, वह न कही जाय तो पश्चाताप का कारण होती है।

- **श्रुतं श्रोतव्यम्।** (अभि.अङ्क-3)

भावार्थ- जब शकुन्तला राजा दुष्यन्त के प्रति प्रेम के विषय में अपनी दोनों सखियों को बताती है वही राजा उनकी बातों को सुनकर कहते हैं- जो सुनना था, (वह मैनें) सुन लिया।

- **सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तःकरणप्रवृत्तयः।** (अभि.1/22)

भावार्थ- राजा दुष्यन्त शकुन्तला के जन्म के विषय में सन्देह करता है कि क्या वह ब्राह्मण कन्या है या क्षत्रिय? 'सन्देहास्पद विषयों में सज्जनों के अन्तःकरण की प्रवृत्तियाँ ही प्रमाण होती है।'

- **सर्वः कान्तमात्मीयं पश्यति।** (अभि. अङ्क-2)

  भावार्थ- राजा दुष्यन्त कहता है- सभी आत्मीय (अपने जनों) को सुन्दर समझते हैं।

- **सर्वः सगन्धेषु विश्वसिति।** (अभि. अङ्क-5)

  भावार्थ- शकुन्तला पञ्चम अङ्क में कहती है- सभी अपने साथियों पर विश्वास करते हैं।

- **स्निग्धजनसंविभक्तं हि दुःखं सह्यवेदनं भवति।** (अभि. अङ्क-3)

  भावार्थ- दोनों सखियाँ कहती हैं- प्रियजनों में बँटा हुआ दुःख सहन हो जाता है।

- **स्त्रजमपि शिरस्यन्धः क्षिप्तां धुनोत्यहिशंकया।** (अभि. 7/24)

  भावार्थ- राजा दुष्यन्त कहता है- अन्धा आदमी शिर पर डाली हुई फूलों की माला को भी साँप समझकर फेंक देता है।

- **सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यं मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति।**

  (अभि. 1/20)

  भावार्थ- वल्कलवस्त्र पहनी शकुन्तला के सौन्दर्य को देख राजा दुष्यन्त बोले- 'शेवाल (काई) से घिरा हुआ भी कमल मनोहर लगता है। काला कलंक भी चन्द्रमा की शोभा बढ़ाता है।'

- **सर्वः प्रार्थितमर्थमधिगम्य सुखी सम्पद्यते जन्तुः।** (अभि.अङ्क-5)

  भावार्थ- राजा दुष्यन्त अपने अधिकार के दुःख का अभिनय करते हुए बोले- 'सभी प्राणी अपनी अभीष्ट वस्तु को प्राप्त करके सुखी हो जाते हैं, किन्तु राजाओं की चरितार्थता (सफलता) मुख्यतः दुःख के लिए होती है।'

- **सर्वः सगन्धेषु विश्वसिति।** (अभि. अङ्क-5)

  भावार्थ- शकुन्तला राजा दुष्यन्त से कहती है- 'सभी अपने साथियों पर विश्वास करते हैं।'

- **सर्वास्ववस्थासु रमणीयत्वमाकृतिविशेषाणाम्।** (अभि.अङ्क-6)

  भावार्थ- कञ्चुकी राजा दुष्यन्त को देख कर कहता है- 'सुन्दर आकृति वालों के सभी अवस्थाओं में सुन्दरता विद्यमान रहती है।'

- **सहजं किल यद्विनिन्दितं न खलु तत्कर्म विवर्जनीयम्।**
  पशुमारणकर्मदारुणाऽनुकम्पामृदुरेव श्रोत्रियः। (अभि. 6/1)

  भावार्थ- धीवर श्याल (कोतवाल) को बताता है- निन्दित भी जो काम वस्तुतः वंश परम्परागत है, उसको नहीं छोड़ना चाहिए। यज्ञ में पशु हत्यारूपी कार्य से क्रूर भी वेदपाठी ब्राह्मण वस्तुतः दयाभाव से कोमल-हृदय होता ही है।

- **सागरमुज्झित्वा कुत्र वा महानद्यवतरति।** (अभि.अङ्क-3)

  भावार्थ- प्रियंवदा शकुन्तला से कहती है- 'बड़ी नदी समुद्र को छोड़कर और कहाँ उतरती है (जाती है)'

- **स्त्रीणामशिक्षितपटुत्वममानुषीषु**
  सन्दृश्यते किमुत या प्रतिबोधवत्यः।
  प्रागन्तरिक्षगमनात् स्वमपत्यजातं
  अन्यैर्द्विजैः परभृताः खलु पोषयन्ति। (अभि.5/22)

  भावार्थ- राजा दुष्यन्त वृद्ध तपस्विनी गौतमी से बोले- 'स्त्रियों में जो मनुष्य जाति से भिन्न स्त्रियाँ हैं उनमें भी बिना शिक्षा के ही चतुरता देखी जाती है। जो ज्ञान सम्पन्न हैं उनका तो कहना ही क्या? कोयल आकाश में उड़ने की सामर्थ्य होने तक अपने बच्चों का अन्य पक्षियों (कौओं) से ही पालन करवाती हैं।'

- **स्वाधीनकुशलाः सिद्धिमन्तः।** (अभि.अङ्क-5)

  भावार्थ- राजा दुष्यन्त द्वारा काश्यप ऋषि की कुशलता पूछने पर शार्ङ्गरव ने कहा- 'सिद्धियों से सम्पन्न महात्मा लोगों की कुशलता उनके अपने अधीन होती है।'

- **हंसी हंसं परित्यज्य वायसं समुपस्थिता।** (अभि.अङ्क-6)

सर्वज्ञभूषण द्वारा सम्पादित एवं संस्कृतगंगा प्रकाशन से प्रकाशित पुस्तकों का विवरण

क्र. पुस्तक का नाम	पेज	मूल्य
1.**वस्तुनिष्ठ संस्कृत–साहित्यम्** (TGT, PGT, UGC, NET हेतु)	320	230
2.**वस्तुनिष्ठ संस्कृत–व्याकरणम्** (TGT, PGT, UGC-NET हेतु)	312	240
3.**प्रतियोगितागंगा भाग-1** (TGT, PGT, UGC-NET हेतु)	448	360
4.**प्रतियोगितागंगा भाग-2** (TGT, PGT, UGC-NET हेतु)	576	425
5.**आख्यातास्मि** (UGC-NET संस्कृत कोड-25 हेतु)	304	230
6.**प्राख्याता** (UGC–NET संस्कृत कोड-25 हेतु)	352	260
7.**वैदिकवाङ्मय परीक्षा दृष्टि** UGC-NET एवं हायर Exam तथा GIC हेतु)	232	145
8.**भारतीयदर्शनसार** (PGT/UGC-NET तथा GIC प्रवक्ता हेतु)	160	135
9.**आचार्योऽहम्** (UGC-NET संस्कृत कोड- 73 हेतु)	216	175
10.**असिस्टेण्ट प्रोफेसर संस्कृत** (Higher Education GDC/GIC हेतु)	124	105
11. **SUPER-30 GK/GS** (असिस्टेण्ट प्रोफेसर तथा GIC प्रवक्ता हेतु)	176	130
12. **प्रवक्तास्मि** (PGT प्रवक्ता संस्कृत हेतु)	208	145
13. **व्याख्यास्मि** (PGT प्रवक्ता संस्कृत हेतु)	380	275
14. **TGT प्रश्न!अस्मि** (TGT/ L. T. संस्कृत हेतु)	232	145
15. **प्रश्नमीमांसा संस्कृत** (TGT/LT हेतु)	296	150
16. **TGT व्याख्यात्मिका संस्कृत**(TGT/ L. T. हेतु)	276	190
17. **मिशन L. T. संस्कृत** (L. T. एवं TGT हेतु)	400	325
18. **L. T. प्रश्नोत्तरी संस्कृत** (L. T. एवं TGT हेतु)	328	250
19. **गुरुमन्त्र** (UP-TET/Super TET संस्कृत हेतु)	120	120
20. **विजयीभव** (UP-TET संस्कृत हेतु)	215	145
21. **विजयपथ प्रैक्टिस सेट** (UP-TET संस्कृत हेतु)	196	130
22. **C-TET, शिक्षकोऽहम्** (C-TET हेतु)	216	140
23. **मिशन हरियाणा** (H-TET लेवल-2 TGT एवं लेवल-3 PGT हेतु)	300	240
24. **जय हो** (MP वर्ग- 1,2 हेतु)	324	260
25. **लक्ष्य झारखण्ड** (PGT संस्कृत झारखण्ड के लिए)	284	250
26. **TGT झारखण्ड संस्कृत**	252	250
27. **सम्भाषण शब्दकोश** (संस्कृत सम्भाषण हेतु)	208	120
28. **सप्तगङ्गम्** (TGT मूलपाठ)	184	151
29. **शिवराजविजयः** (TGT,UP-PCS, GIC हेतु)	192	151
30. **जय जय GIC** (GIC प्रवक्ता हेतु)	340	275
31. **शाकुन्तलमीमांसा** (सभी प्रतियोगी परीक्षा हेतु)	176	151
32. **जय जूनियर** (जूनियर एडेड भर्ती परीक्षा हेतु)	184	125

संस्कृतगङ्गा

वस्तुनिष्ठ

संस्कृत-व्याकरणम्

TGT, PGT, UGC-NET/JRF, C-TET, UP-TET,
DSSSB, GIC & Degree College Lecturer
M.A, B.Ed & Ph.D Entrance Exam
आदि सभी प्रतियोगी परीक्षाओं में उपयोगी पुस्तक

लेखकः
सर्वज्ञभूषणः
सचिवः
संस्कृतगङ्गा दारागञ्जः, प्रयागः

संस्कृतगङ्गा वस्तुनिष्ठ-संस्कृत-व्याकरणम् | कोड – 01
ISBN : 978-81-932244-0-3

* **प्रकाशक**
संस्कृतगङ्गा दारागञ्ज, प्रयाग
मो.नं. – 7800138404, 9839852033

* प्रथम संस्करण – मार्च - 2013
* द्वितीय संस्करण – जून - 2013
* तृतीय संस्करण – जनवरी - 2014
* चतुर्थ संस्करण – जनवरी - 2015
* पञ्चम संशोधित संस्करण – जनवरी - 2016

* **मूल्य – ` 198/-** (एक सौ अट्ठानबे रू० मात्र)

* **मुख्यवितरक**
राजू पुस्तक केन्द्र
अल्लापुर, इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश)
मो० 9453460552

* **प्रकाशनाधिकारिणी संस्था**
संस्कृतगङ्गा शिक्षा समिति (पञ्जीकृत)
59, मोरी, दारागञ्ज, इलाहाबाद
(कोतवाली दारागञ्ज के आगे, गङ्गाकिनारे,
संकटमोचन छोटे हनुमान मन्दिर के पास)
कार्यालय - 7800138404, 9839852033
email-Sanskritganga@gmail.com
बेवसाइट - www.Sanskritganga.org

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

1. **मुख्य वितरक**
   राजू पुस्तक भण्डार, अल्लापुर, इलाहाबाद
   सम्पर्क सूत्र : 0532-2503638, 9453460552
2. संस्कृतगङ्गा, दारागञ्ज, इलाहाबाद
   सम्पर्क सूत्र : 7800138404, 9839852033
3. गौरव बुक एजेन्सी, कैण्ट, वाराणसी
4. विजय मैग्जीन सेन्टर, बलरामपुर
5. जायसवाल बुक सेन्टर, हरदोई – 9415414569
6. शिवशंकर बुक स्टाल, जौनपुर
7. न्यू पूर्वांचल बुक स्टाल, जौनपुर – 9235743254
8. कृष्णा बुक डिपो बस्ती – 8182854095
9. मनीष बुक स्टोर, गोरखपुर – 9415848788
10. द्विवेदी ब्रदर्स, गोरखपुर – 0551-344862
11. विद्यार्थी पुस्तक मन्दिर, गोरखपुर – 9838172713
12. आशीर्वाद बुक डिपो, अमीनाबाद, लखनऊ
13. मालवीय पुस्तक केन्द्र, अमीनाबाद, लखनऊ – 9918681824
14. मॉडर्न मैग्जीन बुक शॉप, कपूरशाला, लखनऊ
15. साहू बुक स्टॉल, अलीगंज, लखनऊ – 9838640164
16. भूमि मार्केटिंग, लखनऊ – 9450520503
17. दुर्गा स्टोर, राजा की मण्डी, आगरा – 9927092063
18. महामाया पुस्तक केन्द्र, बिलासपुर – 09907418171
19. डायमण्ड बुक स्टाल, ज्वालापुर, हरिद्वार
20. कम्पटीशन बुक हाउस, सब्जी मण्डी रोड, बरेली
    सम्पर्क सूत्र : 9897529906
21. अजय गुप्ता बुक स्टोर, लखीमपुर – 809062054
22. शिवशंकर बुक स्टाल, रीवा – 9616355944
23. कृष्णा बुक एजेन्सी, वाराणसी – 9415820103
24. गर्ग बुक डिपो, जयपुर
25. अग्रवाल बुक सेन्टर, मुखर्जी नगर, नयी दिल्ली

समर्पणम्

करुणा-स्नेह-वात्सल्य की प्रतिमूर्ति

श्री अनन्तप्रसाद त्रिपाठी

गहनौआ, सिरमौर, रीवा (मध्यप्रदेश)

को

- *जिनकी गोद में बैठकर मैंने संस्कृत का ज्ञान प्राप्त किया।*
- *जिनके लिए सम्बोधन तो '**गुरूजी**' का है, पर मुझे स्वयं पता नही, वे मेरे कौन हैं?*

त्वमेव माता च पिता त्वमेव

त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव

त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव

त्वमेव सर्वं मम देव देव।।

—सर्वज्ञभूषणः

शुभाशंसा

'संस्कृतगङ्गा' के रूप में **सर्वज्ञभूषण जी** ने एक सराहनीय, स्तुत्य एवं स्वागतयोग्य कार्य किया है, संस्कृतच्छात्रों को विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं हेतु व्याकरण को लेकर काफी परेशान होना पड़ता था, यह पुस्तक सभी प्रतियोगी छात्रों के लिए एक वरदान सिद्ध होगी।

''संस्कृतगङ्गा'' यह नाम जितना पावन एवं पवित्र है, उसी तरह यह पुस्तक भी परिशुद्ध परिमार्जित एवं परम पवित्र है। भूषण जी का कठिन परिश्रम इस पुस्तक में सर्वत्र दृष्टिगोचर होता है। इतना ही नही 'संस्कृतगङ्गा' इस नाम से दारागंज, इलाहाबाद में गङ्गाकिनारे छोटे हनुमान् जी मन्दिर के पास संस्कृतजगत् के लिए अद्भुत अनुपम एवं अद्वितीय शिक्षण कार्य जो आपकी देखरेख में किया जा रहा है, वह भारतीय संस्कृति, संस्कृत और समाज को चरमोत्कर्ष तक पहुँचायेगा - ऐसा विश्वास है। तीर्थराज प्रयाग में महाकुम्भ 2013 के पावनपर्व पर गङ्गा, यमुना, सरस्वती के सङ्गमस्थल से यह पुस्तक प्रादुर्भूत हुई है, तो निश्चित रूप से इन सभी की कृपा इस संस्कृतगङ्गा को प्राप्त होगी, और यह ग्रन्थ संस्कृत विद्वानों, संस्कृत प्रेमियों, एवं संस्कृतछात्रों के लिए ज्ञानाय विद्यादात्री, परीक्षायै मोक्षदात्री, तथा उद्योगार्थं धनदात्री सिद्ध होगी।

अन्त में **''वसुन्धरायां पुनरवतीर्णा संस्कृतगङ्गाधारा''** इस मङ्गलकामना के साथ 'संस्कृतगङ्गा' के यशस्वी होने की शुभाशंसा करता हूँ। प्रथम संस्करण के कुछ दोषों को दूर करने के बाद यह द्वितीय संस्करण और भी पवित्र और पावन हो गया है। अब इसका **'संस्कृतगङ्गा'** यह नाम पूरी तरह सार्थक हो गया है।

।। इति शम् ।।

महाशिवरात्रिः कुम्भमेला, प्रयाग
दिनाङ्क 10 मार्च 2013

विशुद्धानन्द ब्रह्मचारी
अध्यक्ष– संस्कृतगङ्गा, दारागञ्ज, प्रयाग
निवास– ब्रह्मनिवास, अलोपीबाग, इलाहाबाद

संशोधित एवं परिवर्द्धित द्वितीय संस्करण

सर्वप्रथम इस पुस्तक के लेखन, संशोधन एवं परिवर्धन में जिन महानुभावों एवं मित्रों का परामर्श, प्रेरणा एवं प्रोत्साहन मिला, उन सभी का मैं कृतज्ञ हूँ, विशेषकर प्रतियोगी परीक्षाओं से जुड़े छात्रों एवं संस्कृत के युवविद्वानों का। मात्र एकमाह में प्रथमसंस्करण की 1100 प्रतियों का बिक जाना– यह इस पुस्तक की लोकप्रियता एवं संस्कृतच्छात्रों के संस्कृतप्रेम की सूचना देता है। संस्कृतगङ्गा, दारागञ्ज प्रयाग में पिछले दो वर्षो से संस्कृत के भाविवकर्णधारों के साथ पढ़ने-पढ़ाने का जो अवसर मिला, उससे तो मेरे जीवन की दिशा और दशा ही बदल गयी।

अन्त में सभी संस्कृतप्रेमियों से निवेदन है कि इस पुस्तक के विषय में जो भी संशोधन, परिवर्तन एवं परिवर्धन का विचार हो, हमें तत्काल सूचित करें। वह बहुत ही कृतज्ञतापूर्वक स्वीकार किया जाएगा।

इस पुस्तक एवं संस्कृतगङ्गा के व्यवस्थापन में **राकेशकुमार (प्रबन्धक, संस्कृतगङ्गा) अनीता वर्मा (संयोजिका संस्कृतगङ्गा) एवं सतीशसारस्वत (प्रचारमन्त्री, संस्कृतगङ्गा)** का अविस्मरणीय योगदान था, है और सदैव रहेगा।

दिनाङ्क – 18 जून, 2013
गङ्गादशहरा, प्रयाग

सर्वज्ञभूषणः
सचिवः
संस्कृतगङ्गा, दारागञ्ज, इलाहाबाद

संस्कृतप्रेमियों से संस्कृतगङ्गा की बात

प्रिय संस्कृतबन्धो!

नमः संस्कृताय।

विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में सम्मिलित होने से एतत् अनुभूतं यत् बहुत कुछ पढ़ लेने के बाद भी परीक्षाओं में जब कोई प्रश्न बहुविकल्पीय के रूप में हमारे सामने आता है, तो कदाचित् अस्माकं मनसि संशयः उत्पद्यते। कई बार तो यही नहीं समझ में आता कि जो अहं पठन् अस्मि उससे किस तरह का सवाल पूछा जा सकता है, कई बार तो एवं अनुभूयते कि जैसे एक से ज्यादा उत्तर सही हैं, कदाचित् एवं लगति कि जैसे इन विकल्पों में कोई भी उत्तर सही नहीं है, और कभी-कभी तो ऐसा लगने लगता है जैसे सभी विकल्प सही हैं, हद तो तब हो जाती है, जब पूछा गया सवाल वयं समझ ही नही पाते, तत्र सही गलत का कोई क्या निर्णय करेगा। इन सभीप्रकार के संशयात्मक ज्ञान को दूरीकर्तुं एकः भगीरथः प्रयासः इस संस्कृतगङ्गा में किया गया है। और अहं विश्वसिमि कि जैसे गङ्गा सभी को मोक्ष प्रदान करती है, भवसागर से पार करती है, निष्पाप करती हैं, तथैव संस्कृतगङ्गा हमें परीक्षा रूपी भवसागर से पारं कृत्वा, मोक्ष प्रदान करेगी, और अस्माकं अज्ञानरूपी पापं प्रक्षाल्य हमें निष्पाप करेगी।

यथा गङ्गा को इस धराधाम में लाने के लिए भगीरथ के कई पूर्वजों ने तपस्या की थी, तथैव संस्कृतगङ्गा में भी कई भगीरथों ने अथक और अनवरत साधना की है, जिसका प्रतिफल इस महाकुम्भ के महापर्व पर गङ्गा, यमुना, के साथ साथ संस्कृतसरस्वती का सङ्गम इस ''संस्कृतगङ्गा'' के रूप में हो सका है। विशेष रूप से गङ्गा को अपनी जटाओं में धारण करके भगवान शंकर ने भगीरथ के ऊपर महती कृपा और करुणा प्रदर्शित की थी, तथैव इस संस्कृतगङ्गा को भी संस्कृतजगत् में लाने का भार **करुणाशंकर जी** ने अपने शिर पर धारण किया।

साथ ही इस संस्कृतगङ्गा को शुद्ध, परिमार्जित एवं पवित्र बनानें में जिन संस्कृतसाधकों का सत्प्रयास रहा, उनमें से सर्वश्री **पं. अजयकृष्णशास्त्री, (भागवत कथाव्यास) डॉ. शिवानन्द शुक्ल, मूलचन्द्रशुक्ल, राघवेन्द्र शुक्ल, गोविन्द द्विवेदी, राकेशपाल, रमाकान्त, परमानन्द, राजीव भैया, शैलेन्द्रपाल, श्रवण जी, रेखा, सुरेखा, नेगमदेवी, साधना जी** तथा मेरे प्रिय **पञ्चपाण्डव वीरेन्द्र, राकेशकुमार, रामप्रसाद, महेन्द्रकुमार, श्यामजी** आदि मुख्य हैं। फिर भी कुत्रचित् मुद्रणदोष होने की संभावना होगी, तदर्थं सहृदयविद्वानों से क्षमायाचना पूर्वक दोषों को सूचित करने का निवेदन करता हूँ।

इस लेखनकार्य में हमारे मित्र **ब्रह्मानन्द मिश्र** तथा **आशीषकुमार द्विवेदी** (गङ्गानाथ झा परिसर, इला.)**, स्वयंप्रकाश, अनुज मिश्र, अमित, सुधीर तिवारी** का भी योगदान अविस्मरणीय रहा जो लगातार मुझे इस कार्य के लिए प्रेरित करते रहे।

संगणक प्रतिकृति को यथासमय अतिशीघ्र सम्पादित करने हेतु **जंगबहादुर** (अल्लापुर, इला.) **वीरेन्द्र चतुर्वेदी (पं. माठा)**, तथा पृष्ठ विन्यास हेतु **चन्द्र दीप** जी का योगदान अविस्मरणीय रहेगा।

मुद्रण कार्य हेतु त्रिवेणी ऑफसेट, अल्लापुर तथा प्रकाशन हेतु युनिवर्सल बुक्स, अल्लापुर के स्वामी **राजू जी** का हृदय से आभारी हूँ।

अन्त में अनन्तवात्सल्यवारिधि गुरूजी के **ललित** श्रीचरणों में प्रणाम निवेदित करते हुए आशीर्वादं कामयमानः-

दिनाङ्क – 10 मार्च 2013
महाशिवरात्रि, महाकुम्भमेला, प्रयाग

सर्वज्ञभूषणः
ग्राम - शिवपुर (डोडिया), पो. बरगढ़,
जिला - चित्रकूट (उ.प्र.) मो. 9839852033
E-mail : **sanskritganga@gmail.com**
Visit us : **www.sanskritseva.com**

विषयानुक्रमणी

संस्कृत व्याकरण के कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य

- पाणिनिना प्रोक्तं **पाणिनीयं** व्याकरणशास्त्रम् ।
- (वैयाकरणानां) सिद्धान्तानां कौमुदी सिद्धान्तकौमुदी ,लघ्वी च असौ सिद्धान्तकौमुदी लघुसिद्धान्तकौमुदी। **(षष्ठीतत्पुरुषगर्भकर्मधारय)**
- लघुसिद्धान्तकौमुदी में **''नत्वा सरस्वतीं देवीं शुद्धां गुण्यां करोम्यहम्''** इस वाक्य में नमस्कारात्मकमङ्गलाचरण एवं **''पाणिनीयप्रवेशाय लघुसिद्धान्तकौमुदीम्''** में वस्तुनिर्देशात्मक मङ्गलाचरण हुआ है।
- सृष्टिकाल से आज तक उपलब्ध व्याकरणों में **पाणिनीयव्याकरण** ही सर्वोत्कृष्ट है।
- वेदों की रक्षा के लिए व्याकरणशास्त्र का अध्ययन करना चाहिए -**'रक्षार्थं वेदानामध्येयं व्याकरणम्'**
- 'व्याकरण' के लिए शब्दानुशासन शब्द का भी प्रयोग होता है -**''अथ शब्दानुशासनम्''**
- पाणिनीय व्याकरण के अन्तर्गत आचार्य पाणिनि प्रोक्त **पञ्चपाठी** (सूत्रपाठ,धातुपाठ,गणपाठ,उणादिपाठ, तथा लिङ्गानुशासन) कात्यायन रचित **वार्तिक** तथा महर्षि पतञ्जलि का **महाभाष्य** सम्मिलित है ।

व्याकरणम् - वि+आङ्+कृ+ल्युट्

- **व्याक्रियन्ते व्युत्पाद्यन्ते शब्दाः अनेन इति व्याकरणम्**
- **अनुशिष्यन्ते संस्क्रियन्ते वा शब्दाः अनेन इति शब्दानुशासनम्**
- महर्षि पतञ्जलि ने भी 'व्याकरण' की परिभाषा की है- **''लक्ष्यलक्षणे व्याकरणम्''**
  अर्थात् लक्ष्य के लक्षण का कथन करने वाले शास्त्र को **'व्याकरण'** कहा जाता है।
- **''मुखं व्याकरणं स्मृतम्''** अर्थात् व्याकरण, वेदरूपी शरीर का मुख है।
- महाभाष्यकार पतञ्जलि व्याकरणाध्ययन की अनिवार्यता स्पष्ट करते हुए कहते हैं-**''ब्राह्मणेन निष्कारणो धर्मः षडङ्गो वेदोऽध्येयो ज्ञेयश्च''** ।
- **षट्वेदाङ्ग** हैं- 1.शिक्षा 2.कल्प 3.निरुक्त 4.ज्योतिष 5.छन्द 6.व्याकरणम् ।
- **''प्रधानं च षट्स्वङ्गेषु व्याकरणम्''** वेद के षडङ्गो (वेदाङ्ग) में व्याकरण की प्रधानता है।
- व्याकरणाध्ययन की अनिवार्यता के सन्दर्भ में एक और सूक्ति प्रसिद्ध है-
  यद्यपि बहु नाधीषे , तथापि पठ पुत्र व्याकरणम् ।
  स्वजनः श्वजनो माभूत् , सकलं शकलं सकृच्छकृत् ॥
  अर्थात् बहुत ज्यादा नही पढ़ सकते तो कम से कम व्याकरण तो पढ़ो ही। अन्यथा कहीं **स्वजनः (अपने जन)** की जगह **श्वजनः (कुत्ता जन)** न बन जाय। इसी तरह **सकलम् (सम्पूर्ण)** की जगह **शकलम् (टुकड़ा)** न हो जाय। और **सकृत् (एकबार)** के स्थान पर **शकृत् (विष्टा)** न हो जाय।
- महाभाष्य के अनुसार शब्दशास्त्र (व्याकरणशास्त्र) के **आदिप्रवक्ता 'ब्रह्मा'** हैं-
  ''ब्रह्मा बृहस्पतये प्रोवाच, बृहस्पतिरिन्द्राय, इन्द्रो भरद्वाजाय,भरद्वाज ऋषिभ्यः, ऋषयो ब्राह्मणेभ्यः।''
  (महाभाष्य)
- संस्कृत इतिहासविद् प्रायः **नौ व्याकरण परम्पराओं** की चर्चा करते हैं-
  ऐन्द्रं चान्द्रं काशकृत्स्नं कौमारं शाकटायनम्।
  सारस्वतं चापिशलं शाकलं पाणिनीयकम् ॥

1. ऐन्द्रव्याकरण
2. चान्द्रव्याकरण
3. काशकृत्स्नव्याकरण
4. कौमारव्याकरण
5. शाकटायनव्याकरण
6. सारस्वतव्याकरण
7. आपिशलव्याकरण
8. शाकलव्याकरण
9. पाणिनीयव्याकरण

अष्टाध्यायी

- पाणिनीयव्याकरण का प्रतिनिधिग्रन्थ **''अष्टाध्यायी''** के रचयिता **महर्षि पाणिनि** हैं।
- अष्टाध्यायी में कुल **आठ अध्याय** है। प्रत्येक अध्याय में **चार-चार पाद** हैं। इस प्रकार सम्पूर्ण अष्टाध्यायी में **8×4=32 पाद** हैं।
- सम्पूर्ण पाणिनीयशब्दानुशासन को आठ अध्यायों में विभक्त होने से **'अष्टाध्यायी'** या **'अष्टक'** भी कहते हैं।
- अष्टाध्यायी **सूत्रशैली** में लिखा गया ग्रन्थ है।
- अष्टाध्यायी का प्रथम सूत्र **''वृद्धिरादैच्''** तथा अन्तिम सूत्र **''अ अ''** है।

- स्वरसिद्धान्तचन्द्रिका के अनुसार पाणिनि ने **3995** सूत्रों की, निर्णयसागर संस्करण के अनुसार **3985**,तथा तारानाथ वाचस्पति के अनुसार **3965** सूत्रों की रचना की है। इस प्रकार अष्टाध्यायी में लगभग **चार हजार** सूत्र हैं। यहाँ सूत्रों की संख्या में मतभेद है, क्योंकि कहीं कहीं योग विभाग करके एक ही सूत्र को दो सूत्र भी माना गया है।
- पाणिनीयधातुपाठ में लगभग **2000 (दो हजार)** धातुयें परिगणित हैं।
- पाणिनि के सूत्रों में जो न्यूनतायें दृष्टिगोचर हुई, उनकी पूर्ति हेतु **कात्यायन (वररुचि)** ने लगभग **5000 (पाँच हजार)** वार्तिकों की रचना की ।
- सूत्र और वार्तिकों की व्याख्या के रूप में **महर्षि पतञ्जलि** ने **84 आह्निकों** में **'व्याकरणमहाभाष्यम्'** लिखा।
- 'महाभाष्य' के प्रथम आह्निक का नाम **'पस्पशाह्निक'** तथा उसका प्रथमवाक्य **'अथ शब्दानुशासनम्'** है।
- पाणिनि , कात्यायन और पतञ्जलि व्याकरण के **'मुनित्रय'** कहे जाते है। उक्तं च - **''मुनित्रयं नमस्कृत्य.........''**
- प्रक्रियाग्रन्थों में **भट्टोजिदीक्षित** की रचना **'वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी'** अतिप्रसिद्ध है ,जिसमें पाणिनि के समस्त **4000 सूत्रों** का समावेश है ।
- भट्टोजिदीक्षित के शिष्य **वरदराजाचार्य** ने **सारसिद्धान्तकौमुदी**, **मध्यसिद्धान्तकौमुदी**,**एवं लघुसिद्धान्तकौमुदी** की रचना की ।
- लघुसिद्धान्तकौमुदी में पाणिनीय अष्टाध्यायी के लगभग **1275 सूत्रों** का समावेश है

सूत्र का लक्षण

अल्पाक्षरमसन्दिग्धं सारवद्विश्वतोमुखम् ।
अस्तोभमनवद्यं च सूत्रं सूत्रविदो विदुः॥

अल्प अक्षरों से अधिक अर्थ बताने की क्षमता, सन्देह रहित विषय की प्रस्तुति, सारतम प्रक्रियासरणी, आवश्यक सभी जगहों पर प्रवृत्त होने की क्षमता, दोषों का अभाव होना, और अनिन्दनीय रहना- ये **सूत्रों के छह लक्षण** हैं।

- सूत्रों की अल्पाक्षरता के विषय में वैयाकरणों में यह उक्ति बहुत प्रसिद्ध है- **''अर्धमात्रालाघवेन पुत्रोत्सवं मन्यन्ते वैयाकरणाः''**

वार्तिक की परिभाषा

उक्तानुक्तदुरुक्तानां चिन्ता यत्र प्रवर्तते।
तं ग्रन्थं वार्तिकं प्राहुर्वार्तिकज्ञा मनीषिणः॥

वार्तिक में उक्त, अनुक्त (जो छूट गया है) तथा दुरुक्त (प्रमादजन्य दोष) इन तीनों के विषय में चिन्तन होता है।

वार्तिक की एक अन्य परिभाषा

यद् विस्मृतमदृष्टं वा सूत्रकारेण तत्स्फुटम्।
वाक्यकारो ब्रवीत्येव तेनाऽदृष्टं च भाष्यकृत् ॥

अर्थात् जो सूत्रकार आचार्य पाणिनि से छूट गया, उसे आचार्य कात्यायन ने वार्तिक के द्वारा कह दिया है।

भाष्य का लक्षण

सूत्रार्थो वर्ण्यते यत्र पदं सूत्रानुसारिभिः।
स्वपदानि च वर्ण्यन्ते भाष्यं भाष्यविदो विदुः॥

अर्थात् जो सूत्रों के अर्थों का वर्णन सूत्रों के अनुसार अपने शब्दों में उनकी व्याख्या करें; उसें **''भाष्य''** कहते हैं।

सूत्रों के छह प्रकार

संज्ञा च परिभाषा च विधिर्नियम एव च।
अतिदेशोऽधिकारश्च षड्विधं सूत्रमुच्यते॥

1. संज्ञासूत्र 2. परिभाषासूत्र 3. विधिसूत्र 4. नियमसूत्र 5. अतिदेशसूत्र 6. अधिकारसूत्र

1. संज्ञा सूत्र- ''संज्ञाकरणं व्यवहारार्थं लोके''

- व्याकरणशास्त्र के व्यवहार के लिए 'संज्ञा' की आवश्यकता होती है। जो सूत्र संज्ञाओं का विधान करते हैं, ऐसे सूत्र **'संज्ञासूत्र'** या **'संज्ञाविधायक सूत्र'** कहलाते हैं।
- अष्टाध्यायी में लगभग **280 संज्ञासूत्र** हैं।
- यथा- **वृद्धिरादैच्** , **अदर्शनं लोपः**, **अदेङ्गुणः**, आदि।
- महर्षिपाणिनि ने अनेक प्रकार की संज्ञाओं का प्रयोग किया है-
- **अन्वर्थसंज्ञा-** सर्वनाम, सम्प्रदान, अपादान, अव्यय आदि अन्वर्थ संज्ञायें हैं।
- **कृत्रिमसंज्ञा- टि, घु , घ,** तथा **भ** इत्यादि कृत्रिम संज्ञायें हैं।
- **परम्परागतसंज्ञा-**सर्वनामस्थान, प्रातिपदिक, आर्धधातुक, सार्वधातुक, अङ्ग इत्यादि परम्परागत संज्ञायें हैं।

2. परिभाषासूत्र-''अनियमे नियमकारित्वं परिभाषात्वम्''

- अर्थात् नियम न रहने पर नियम (व्यवस्था) किया जाय, उसे **'परिभाषा'** कहते हैं।
- **'परितः सर्वतो भाष्यन्ते नियमाः यया सा परिभाषा'** अर्थात् जिसके द्वारा नियमों की स्थिरता की जाय, उसे 'परिभाषा' कहते हैं।

- इन्हें **निर्णयकर्त्ता सूत्र** भी कहा जाता है।
- परिभाषासूत्र स्वयं विधायक न होकर विधिसूत्रों के सहायक के रूप में पठित हैं।
- विधिसूत्रों की प्रवृत्ति में जहाँ सन्देहात्मक स्थिति उत्पन्न हो जाती है, वहाँ '**परिभाषासूत्र**' उपस्थित होकर उस सन्देह की निवृत्ति करता है। यथा- **यथासंख्यमनुदेशः समानाम्, स्थानेऽन्तरतमः, अनेकाल्शित् सर्वस्य** आदि।
- पाणिनीयव्याकरण में **सबसे अधिक विधिसूत्र** तथा उसके बाद संज्ञासूत्र हैं। सबसे कम परिभाषासूत्र तथा अधिकारसूत्र हैं।
- अष्टाध्यायी में **लगभग 36 परिभाषासूत्र** हैं।

3. विधिसूत्र- ''येन विधीयते स विधिः'' अर्थात् जिसके द्वारा यण् , गुण, वृद्धि, दीर्घ आदि का विधान किया जाता है, उसे **विधिसूत्र** कहा जाता है।

- अष्टाध्यायी में विधिसूत्रों की संख्या सर्वाधिक है। यथा- **इको यणचि, आद्गुणः, वृद्धिरेचि, अकः सवर्णे दीर्घः** आदि।
- विधिसूत्रों के द्वारा प्रत्ययविधान, लोप, आगम, वर्णविकार आदि अनेक कार्य सिद्ध होते हैं।

4. नियमसूत्र- ''नियम्यन्ते निश्चीयन्ते प्रयोगाः येन सः''।

- अर्थात् जिसके द्वारा प्रयोगों का नियमन किया जाय, उसे '**नियम**' कहते हैं।
- अष्टाध्यायी में लगभग **217 नियमसूत्र** प्राप्त होते हैं।
- किसी सूत्र के द्वारा कार्य सिद्ध होते हुए, उसी कार्य के लिए यदि किसी अन्य सूत्र को पढ़ा गया हो, तो वह सूत्र **नियमसूत्र** कहलाता है।

''सिद्धे सत्यारम्भमाणो विधिः नियमाय भवति''

- अर्थात् सिद्ध होने पर भी पुनः विधान करने से एक विशेष नियम का सङ्केत उससे प्राप्त होता है। यथा- **पतिः समास एव, एच इग्घ्रस्वादेशे, कृत्तद्धितसमासाश्च**

5. अतिदेशसूत्र

- **''अतिदिश्यन्ते तुल्यतया विधीयन्ते कार्याणि येन सोऽतिदेशः''** अर्थात् जिसके द्वारा समानता प्रदान की जाय, अथवा आरोप किया जाय, उसे अतिदेश कहते हैं।
- अष्टाध्यायी में लगभग **118 अतिदेशसूत्र** हैं ।
- वैयाकरणो ने 7 प्रकार का ''अतिदेश'' माना है -

1. निमित्तादिदेश 2. व्यपदेशातिदेश 3. तादात्म्यातिदेश 4. शास्त्रातिदेश 5. कार्यातिदेश 6. रूपातिदेश 7. अर्थातिदेश

- जो वैसा नही है उसे वैसा मानना ''**अतिदेश**'' है जैसे कि शिष्य जो गुरु नही है अब उसे गुरु के तुल्य माना जाय । सूत्र भी कई स्थानों पर ऐसा कार्य करते हैं ,ऐसे सूत्रों को **अतिदेशसूत्र** कहा जाता है।
- **जैसे- अन्तादिवच्च, गोतो णित्**

6. अधिकार सूत्र

- **''एकत्र उपान्तस्य अन्यत्र व्यापारः अधिकारः''** एक स्थान पर प्राप्त का अन्यत्र व्यापार ही '**अधिकार**' कहलाता है। कुछ सूत्र ऐसे होते हैं, जो अपने क्षेत्र में कोई कार्य नही करते, किन्तु अन्य सूत्रों के क्षेत्र में अपना अधिकार रखते हैं, उसके सहायक बनते हैं, ऐसे सूत्र '**अधिकारसूत्र**' हैं।
- अधिकारसूत्र अपने क्षेत्र में पड़ने वाले सभी सूत्रों के साथ अनुवृत्त होता है।
- 'अधिकार' और 'अनुवृत्ति' दोनो पर्याय ही हैं,अधिक विस्तृत क्षेत्र तक अनुवर्तन को '**अधिकार**' कहते हैं, तथा स्वल्प स्थानों तक अनुवर्तन को '**अनुवृत्ति**' कहते हैं।
- सम्पूर्ण सूत्र का पादपर्यन्त या अध्यायपर्यन्त अनुवर्तन '**अधिकार**' कहलाता हैं।
- अष्टाध्यायी में लगभग **48 अधिकार सूत्र** हैं। यथा- **कारके, ङ्याप्प्रातिपदिकात् , धातोः, प्रत्ययः, परश्च** आदि।
- पाणिनि ने अधिकार की सूचना स्वरित चिन्ह के द्वारा दी है। यथा- **स्वरितेनाधिकारः**।
- प्रवृत्ति के आधार पर **अधिकार तीन प्रकार** का कहा गया है-

'सिंहावलोकितं चैव मण्डूकप्लुतमेव च ।
गङ्गाप्रवाहवच्चाऽपि अधिकारास्त्रिधा मताः।

अनुवृत्ति और अधिकार में अन्तर

- **अधिकारसूत्र** अपने क्षेत्र में कोई काम नही करता किन्तु उत्तर सूत्र मे उसकी सहायता के लिए उपस्थित होता है, और अनुवृत्ति में वह शब्द अपने क्षेत्र में काम करते हुए उत्तरसूत्र के सहायतार्थ उपस्थित होता है।
- **अनुवृत्ति-** पूर्वसूत्र से जो पद अगले सूत्र में अपेक्षित होता है, उसका पाणिनि ने अगले सूत्र में साक्षात् पाठ न करके पूर्वसूत्र से उस पद का अनुवर्तन कर लिया है, व्याकरणशास्त्र में इसी को '**अनुवृत्ति**' कहते हैं।

➢ **अनुबन्ध- ''इत्संज्ञकत्वमनुबन्धत्वम्'' अथवा ''इत्संज्ञायोग्यत्वम् अनुबन्धत्वम्''**
➢ अनुबन्धों की इत्संज्ञा करके उनका लोप कर दिया जाता है।

आदेश- शत्रुवदादेशः

➢ किसी के स्थान पर उसे हटाकर जो शब्द होता है, उसे '**आदेश**' कहा जाता है।
➢ जिस प्रकार शत्रु किसी को हटाकर उसके स्थान पर अधिकार कर लेता है, उसी प्रकार **आदेश** अपने स्थानी को वहाँ से पूर्णतः हटा देता है।
➢ 'इको यणचि' में 'इक्' के स्थान पर 'यण्' आदेश होता है। यहाँ '**यण्' आदेश** है, 'इक्' स्थानी है।
➢ **'आदेश' दो प्रकार** का होता है-

1. **सर्वादेश- ''अनेकाल्शित्सर्वस्य''** 'अनेकाल्' (जिसमें अनेक वर्ण हों) तथा 'शित्' (जिसका 'शकार' इत् हो) आदेश समग्र स्थानी को हटाकर होते हैं।

➢ **''अस्तेर्भूः''** के द्वारा होने वाला 'भू' आदेश समग्र 'अस्' धातु के स्थान पर होता है।

2. **एकादेश- 'एकः पूर्वपरयोः'** जो पूर्व व पर दोनों स्थानियों के स्थान पर अकेला आदेश होता है, उसे **एकादेश** कहते हैं।

➢ 'आद्गुणः' सूत्र से 'अ+इ' के स्थान पर 'ए' यह एकादेश होता है।
➢ **आगम- ''मित्रवदागमः''** जैसे मित्र हमारे घर आता है, उसी प्रकार वर्णों के बीच आगम बिना किसी वर्ण को हटाये आकर बैठ जाता है।
➢ **स्थानी-** जिसके स्थान पर आदेश किया जाता है, उसे **''स्थानी''** कहा जाता है। **''इको यणचि''** सूत्र के द्वारा **'यण्'** आदेश **'इक्'** के स्थान पर होता है। अतः **'इक्'** स्थानी हुआ।
➢ **प्रत्याहार- ''प्रत्याह्रियन्ते संक्षिप्यन्ते वर्णाः यत्र स प्रत्याहारः''** वर्णों या पदों के संक्षेपीकरण को **'प्रत्याहार'** कहा जाता है।
➢ **''आदिरन्त्येन सहेता''** सूत्र में प्रत्याहार निर्माण विधि बतायी गयी है।
➢ प्रत्याहार केवल वर्णों का ही नहीं, अपितु प्रत्यय, आगम तथा धातुओं का भी होता है।
➢ **'अच्' 'अक्' 'हल्'** आदि **42 या 43 वर्ण प्रत्याहार** हैं।
➢ **'सुप्' 'तिङ्'** तथा **'तङ्'** आादि **प्रत्यय-प्रत्याहार** हैं।
➢ **'ङमुट्'** आदि **आगम-प्रत्याहार** हैं।

क्र.	प्रत्याहारः	वर्णाः	कुलवर्णाः	सूत्रों में प्रत्याहार का प्रयोग	
01.	**अण्**	अ, इ, उ	03 वर्ण	उर**ण्** रपरः	1.1.51
02.	**अक्**	अ, इ, उ,ऋ, ऌ	05 वर्ण	**अकः** सवर्णे दीर्घः	6.1.101
03.	**अच्**	अ,इ,उ,ऋ,ऌ,ए,ओ,ऐ,औ **(सम्पूर्ण स्वरवर्ण)**	09 वर्ण	**अचो**ऽन्त्यादि टि	1.1.64
04.	**अट्**	अ,इ,उ,ऋ,ऌ,ए,ओ,ऐ,औ, ह,य,व,र	13 वर्ण	शश्छो**ऽटि**	8.4.63
05.	**अण्**	अ,इ,उ,ऋ,ऌ,ए,ओ,ऐ,औ, ह,य,व,र,ल	14 वर्ण	**अणु**दित्सवर्णस्य चाऽप्रत्ययः	1.1.69
06.	**अम्**	अ,इ,उ,ऋ,ऌ,ए,ओ,ऐ,औ, ह,य,व,र,ल,ञ,म,ङ,ण,न	19 वर्ण	पुमः खय्य**म्**परे	8.3.6
07.	**अश्**	अ,इ,उ,ऋ,ऌ,ए,ओ,ऐ,औ, ह,य,व,र,ल,ञ,म,ङ,ण,न, झ,भ,घ,ढ,ध,ज,ब,ग,ड,द	29 वर्ण	"भो भगो-अघो-अपूर्वस्य योऽशि"	8.3.17
08.	**अल्**	अ,इ,उ,ऋ,ऌ,ए,ओ,ऐ,औ, ह,य,व,र,ल ञ,म,ङ,ण,न,झ,भ,	42 वर्ण	**अलो**ऽन्त्यात्पूर्व उपधा	1.1.65

क्र.	प्रत्याहारः	वर्णाः	कुलवर्णाः	सूत्रों में प्रत्याहार का प्रयोग	
		घ,ढ,ध,ज,ब,ग,ड,द,ख,फ,छ,ठ, थ,च,ट,त,क,प,श,ष,स,ह **(सम्पूर्ण वर्णमाला)**			
09.	**इक्**	इ,उ,ऋ,ऌ	04 वर्ण	**इको** गुणवृद्धी	1.1.3
10.	**इच्**	इ,उ,ऋ,ऌ,ए,ओ,ऐ,औ	08 वर्ण	**इच** एकाचोऽम्प्रत्ययवच्च	6.3.68
11.	**इण्**	इ,उ,ऋ,ऌ,ए,ओ,ऐ,औ, ह,य,व,र,ल	13 वर्ण	**इण्**कोः	8.3.57
12.	**उक्**	उ,ऋ,ऌ	03 वर्ण	**उगि**तश्च	4.1.6
13.	**एङ्**	ए,ओ **(गुणसंज्ञकवर्ण)**	02 वर्ण	**एङि** पररूपम्	6.1.94
14.	**एच्**	ए,ओ,ऐ,औ	04 वर्ण	**एचो**ऽयवायावः	6.1.78
15.	**ऐच्**	ऐ,औ **(वृद्धिसंज्ञकवर्ण)**	02 वर्ण	वृद्धिरा**दैच्**	1.1.1
16.	**हश्**	ह,य,व,र,ल,ञ,म,ङ,ण,न, झ,भ,घ,ढ,ध,ज,ब,ग,ड,द	20 वर्ण	**हशि** च	6.1.114
17.	**हल्**	ह,य,व,र,ल,ञ,म,ङ,ण,न, झ,भ,घ,ढ, ध,ज,ब,ग,ड,द, ख,फ,छ,ठ,थ,च,ट, त,क, प,श,ष,स, (ह) **(सम्पूर्ण व्यञ्जनवर्ण)**	33 वर्ण	**हलो**ऽनन्तराः संयोगः	1.1.7
18.	**यण्**	य,व,र,ल, **(अन्तःस्थवर्ण)**	04 वर्ण	इको **यण**चि	6.1.77
19.	**यम्**	य,व,र,ल,ञ,म,ङ,ण,न	09 वर्ण	हलो **यमां** यमि लोपः	8.4.64
20.	**यञ्**	य,व,र,ल,ञ,म,ङ,ण,न,झ,भ	11 वर्ण	अतो दीर्घो **यञि**	7.3.101
21.	**यय्**	य,व,र,ल,ञ,म,ङ,ण,न,झ, भ,घ,ढ,ध,ज,ब,ग,ड,द,ख, फ,छ,ठ,थ,च,ट,त,क,प	29 वर्ण	अनुस्वारस्य **ययि** परसवर्णः	8.4.58
22.	**यर्**	य,व,र,ल,ञ,म,ङ,ण,न,झ, भ,घ,ढ,ध,ज,ब,ग,ड,द,ख, फ,छ,ठ,थ,च,ट,त,क,प,श,ष,स	32 वर्ण	**यरो**ऽनुनासिकेऽनुनासिको वा	8.4.45
23.	**वश्**	व,र,ल,ञ,म,ङ,ण,न,झ,भ, घ,ढ,ध,ज,ब,ग,ड,द	18 वर्ण	नेड् **वशि** कृति	7.2.8
24.	**वल्**	व,र,ल,ञ,म,ङ,ण,न,झ,भ, घ,ढ,ध,ज,ब,ग,ड,द,ख,फ,छ, ठ,थ,च,ट,त,क,प,श,ष,स,ह	32 वर्ण	लोपो व्यो**र्वलि**	6.1.66

क्र.	प्रत्याहारः	वर्णाः	कुलवर्णाः	सूत्रों में प्रत्याहार का प्रयोग	
25.	रल्	र,ल,ञ,म,ङ,ण,न,झ,भ,घ,ढ, ध,ज,ब,ग,ड,द,ख,फ,छ,ठ, थ,च,ट,त,क,प,श,ष,स,ह	31 वर्ण	"**रलो** व्युपधाद्धलादेः सँश्च"	1.2.26
26.	रँ	र,ल	02 वर्ण	उरण् **रपरः**	1.1.51
27.	ञम्	ञ,म,ङ,ण,न **(वर्गों के पञ्चमवर्ण)**	05 वर्ण	**ञमन्ताड्डः**	(उणादि.1.114)
28.	मय्	म,ङ,ण,न,झ,भ,घ,ढ,ध, ज,ब,ग,ड,द,ख,फ,छ,ठ, थ,च,ट,त,क,प	24 वर्ण	**मय** उञो वो वा	8.3.33
29.	ङम्	ङ,ण,न	03 वर्ण	**ङमो** ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्	8.3.32
30.	झष्	झ,भ,घ,ढ,ध **(वर्गों के चतुर्थ वर्ण)**	05 वर्ण	एकाचो बशो भष् **झष**न्तस्य स्ध्वोः	8.2.37
31.	झश्	झ,भ,घ,ढ,ध,ज,ब,ग,ड,द	10 वर्ण	झलां जश् **झशि**	8.4.53
32.	झय्	झ,भ,घ,ढ,ध,ज,ब,ग,ड,द, ख,फ,छ,ठ,थ,च,ट,त,क,प	20 वर्ण	**झयो** होऽन्यतरस्याम्	8.4.62
33.	झर्	झ,भ,ध,ढ,ध,ज,ब,ग,ड,द, ख,फ,छ,ठ,थ,च,ट,त,क, प,श,ष,स,	23 वर्ण	**झरो** झरि सवर्णे	8.4.65
34.	झल्	झ,भ,घ,ढ,ध,ज,ब,ग,ड, द,ख,फ,छ,ठ,थ,च,ट, त,क,प,श,ष,स,ह	24 वर्ण	**झलो** झलि	8.2.26
35.	भष्	भ,घ,ढ,ध	04 वर्ण	एकाचो बशो **भष्** झषन्तस्य स्ध्वोः	8.2.37
36.	जश्	ज,ब,ग,ड,द **(वर्गों के तृतीय अक्षर)**	05 वर्ण	झलां **जशो**ऽन्ते	8.2.39
37.	बश्	ब,ग,ड,द	04 वर्ण	एकाचो **बशो** भष् झषन्तस्य स्ध्वोः	8.2.37
38.	खय्	ख,फ,छ,ठ,थ,च,ट,त,क,प **(वर्गों के द्वितीय एवं प्रथम वर्ण)**	10 वर्ण	पुमः **खय्य**म्परे	8.3.6
39.	खर्	ख,फ,छ,ठ,थ,च, ट,त,क,प,श,ष,स	13 वर्ण	**खरि** च	8.4.54
40.	छव्	छ,ठ,थ,च,ट,त	06 वर्ण	नश्**छव्य**प्रशान्	8.3.7
41.	चय्	च,ट,त,क,प **(वर्गों के प्रथम अक्षर)**	05 वर्ण	**चयोः द्वितीयाः शरि** पौष्करशादेः वार्त्तिक-	8.4.47
42.	चर्	च,ट,त,क,प,श,ष,स	08 वर्ण	अभ्यासे **चर्च**	8.4.54
43.	शर्	श,ष,स	03 वर्ण	वा **शरि**	8.3.36
44.	शल्	श,ष,स,ह **(ऊष्मवर्ण)**	04 वर्ण	"**शल** इगुपधादनिटः क्सः"	3.1.45

प्रत्याहारों के विषय में कुछ विशेष तथ्य

- कुछ विद्वान् **''रँ''** और **'ञम्'** प्रत्याहारों की गणना नही करते हैं; अतः प्रत्याहारों की कुल संख्या 42 तथा कुछ विद्वान् 43 या 44 भी मानते हैं।
- **'अच्'** प्रत्याहार में समस्त **9 स्वरवर्ण** आते हैं; ये **चार सूत्रों** में कहे गये हैं।
- **'हल्'** प्रत्याहार में समस्त **33 व्यञ्जन वर्ण** आते हैं; ये **दश सूत्रों** में कहे गये हैं।
- वर्णों के सभी पाँचवे वर्ण **'ञम्'** प्रत्याहार में आते हैं,जो **'ञमङणनम्'** इस एक सूत्र में कहे गये हैं। इसमें कुल **05 वर्ण** आयेंगे।
- **'झष्'** प्रत्याहार में वर्गों के चौथे वर्ण आते हैं, जो **'झभञ् और घढधष्'** इन दो सूत्रों में कहे गये हैं। इसमें कुल **5 वर्ण** आते हैं।
- **'जश्'** प्रत्याहार में वर्गों के तीसरे वर्ण आते हैं, जो **'जबगडदश्'** इस एकसूत्र में कहे गये हैं, इसमें कुल **05 वर्ण** हैं।
- **'खय्'** प्रत्याहार में वर्गों के दूसरे और पहले वर्ण आते हैं, जो **''खफछठथचटतव् कपय्''** इन दो सूत्रों में कहे गए हैं। इसमें कुल **10 वर्ण** आते हैं।
- **'चय्'** प्रत्याहार में वर्गों के प्रथम वर्ण आते हैं। इसमें कुल **05 वर्ण** आयेंगे।
- **'शल्'** प्रत्याहार में **चारों ऊष्मवर्ण** आते हैं।
- **'यण्'** प्रत्याहार में चारों अन्तःस्थवर्ण आयेंगे; जो **हयवरट्** और **लण्** इन दो सूत्रों में कहे गये हैं।

संज्ञाप्रकरणम्

- अइउण् ,ऋऌक् आदि ये **चौदह सूत्र** हैं, इसलिए उन्हे **''चतुर्दशसूत्र''** कहते हैं। इन सूत्रों से प्रत्याहार बनाये जाते हैं; अतः इन्हें **''प्रत्याहार-सूत्र''** भी कहते हैं। भगवान शिव के डमरू से निकलकर पाणिनि को प्राप्त हुए हैं अतः इन्हें **''शिवसूत्र''** या **''माहेश्वरसूत्र''** कहते हैं। इन सूत्रों में संस्कृत की वर्णमाला है, अतः इन्हें **''वर्णसमाम्नाय''** भी कहते हैं।
- इन चतुर्दशसूत्रों का प्रयोजन अण् ,अच् आदि **प्रत्याहारों की सिद्धि** है।
- अइउण् ऋऌक् आदि चतुर्दश सूत्रों के अन्त में लगे हुए ''ण्, क्, ङ्, च्, ट्, ण्, म्, ञ्, ष्, श्, व्, य्, र् , ल्'' इन **चौदह वर्णों की इत्संज्ञा** की जाती है- **''एषामन्त्याः इतः''**
- **स्वरों** को **'अच्'** तथा **व्यञ्जनों** को **'हल्'** कहते हैं।
- 'हयवरल' आदि में ह् ,य् ,व् ,र् ,ल् इन वर्णों का अकार के साथ उच्चारण किया गया है; यह अकार केवल उच्चारण के लिए है- **''हकारादिषु अकारः उच्चारणार्थः'**
- **''हलन्त्यम्''** सूत्र में **''उपदेशेऽजनुनासिक इत्''** इस सूत्र से **'उपदेशे'** और **'इत्'** इन दो पदों की अनुवृत्ति आती है।
- **''हलन्त्यम्''** इत्संज्ञाविधायक संज्ञासूत्र है। अर्थात् इस सूत्र का कार्य है **हल् अक्षरों की इत्संज्ञा करना।**
- **उपदेश-** पाणिनि, कात्यायन एवं पतञ्जलि ने जिसका प्रथम उच्चारण या प्रथम पाठ किया है, उसे 'उपदेश' कहते हैं।- **''उपदेश आद्योच्चारणम्''**
- **'उपदेश'** के सम्बन्ध में एक पद्य भी अतिप्रसिद्ध है-
  धातुसूत्रगणोणादिवाक्यलिङ्गानुशासनम् ।
  आगमप्रत्ययादेशा उपदेशाः प्रकीर्तिताः॥
  भू आदि धातु , अइउण् आदि सूत्र,गणपाठ, उणादिसूत्र, वार्तिक,लिङ्गानुशासन,आगम,प्रत्यय,आदेश,-ये उपदेश माने जाते हैं।
- **''सूत्रेष्वदृष्टं पदं सूत्रान्तरादनुवर्तनीयं सर्वत्र''**
  सूत्रों का सूत्रार्थ करने के लिए उसमें जो पद कम हों, उसे आवश्यकतानुसार अन्यसूत्रों से ले लेना चाहिए। जैसे- **''हलन्त्यम्''** इस सूत्र का अर्थ करने के लिए **'उपदेशे'** और **'इत्'** ये दो पद पूर्व सूत्र से ले लिए गये हैं।
- उणादि सूत्रों की संख्या लगभग 750 है।
- कात्यायन ने पाणिनि के लगभग 1500 सूत्रों के ऊपर 5000 वार्तिक लिखे हैं।
- सम्पूर्ण व्याकरण में इत्संज्ञा के बाद लोप करने के लिए एकमात्र **''तस्य लोपः''** सूत्र ही है।
- अइउण् , ऋऌक् आदि चौदह सूत्रों के अन्त्य में जो णकार,ककार आदि हल् वर्ण लगे हुए हैं; उनका प्रयोजन प्रत्याहार की सिद्धि है- **'णादयोऽणाद्यर्थाः'**

स्वरों की मात्रा

एकमात्रा भवेत्ह्रस्वं द्विमात्रो दीर्घमुच्यते।
त्रिमात्रस्तु प्लुतो ज्ञेयं व्यञ्जनं चार्धमात्रिकम्

- अर्थात् **अ,इ,उ,ऋ,ऌ**- इन ह्रस्व स्वरों की **एकमात्रा**,आ,ई,ऊ,ॠ,ए,ओ,ऐ,औ-इन **दीर्घस्वरों की दो मात्रा, प्लुतवर्णों की तीन मात्रा**, तथा **व्यञ्जनवर्णों की अर्धमात्रा** मानी जाती है। प्लुतवर्णों को दिखाने के लिए वर्ण के बाद ३ का अङ्क लिखा जाता है; जैसे- इ ३। उदात्त, अनुदात्त और स्वरित को समझने के लिए वैदिकग्रन्थों में विशेष चिह्नों का प्रयोग किया गया है। अनुदात्त अक्षर के नीचे पडी लाइन (-) तथा स्वरित के ऊपर खडी लाइन (।) होती है, और उदात्त के लिए कोई चिह्न नही होता है।

समास

- समास का अर्थ है - संक्षेप
- समस्यते एकीक्रियते प्रयोक्तृभिः इति समासः (कर्मपक्ष)
- समस्यते = एकीभवति कर्त्ता सुबन्तेन सह इति समासः (कर्तृपक्ष)

'समास' की परिभाषा

- **''विभक्तिर्लुप्यते यत्र तदर्थस्तु प्रतीयते । पदानां चैकपद्यं च समासः सोऽभिधीयते ।**
- अर्थात् जहाँ विभक्तियों का लोप हो जाता है, परन्तु उनका अर्थ प्रतीत होता रहता है, अनेक पद मिलकर एक पद बन जाता है, उसे **'समास'** कहते हैं।
- **'अनेकपदानामेकपदीभवनं समासः'** अनेकपदों का मिलकर एकपद होना 'समास' है।
- **''समसनं समासः'' (सम् + अस् +घञ्)** अर्थात् पास-पास रखना।
- संस्कृत भाषा में जब दो या दो से अधिक पद पास पास रखे जाय, तो वे अपनी स्वतन्त्र सत्ता खो देते हैं। फलतः जिस विभक्ति के कारण उनकी पदसंज्ञा थी, उसका लोप हो जाता है । इस प्रकार एक पृथक् पद के रूप में समस्त पद अभिव्यक्त होते हैं।
- इसप्रकार दो या दो से अधिक शब्द जहाँ एक जगह, एक पद, एक अर्थ वाले बन जाते हैं, उसे **'समास'** कहते हैं।

समास के प्रकार

- समास पाँच प्रकार का होता है- **'समासः पञ्चधा'**
  1. केवलसमास (सुप्सुपा समास) यथा- **भूतपूर्वः**
  2. अव्ययीभावसमास - **उपकृष्णम्**
  3. तत्पुरुषसमास - **राजपुरुषः**
  4. द्वन्द्वसमास - **रामलक्ष्मणौ**
  5. बहुव्रीहिसमास - **पीताम्बरः**

नोट– भट्टोजिदीक्षित एवं बाबूराम सक्सेना केवल समास को अव्ययीभाव के अन्तर्गत मानते हुए समास के चार भेद ही मानते हैं।

1. केवलसमासः- विशेषसंज्ञा-विनिर्मुक्तः केवल समासः

- जब व्याकरणशास्त्र में किसी समास की विशेष संज्ञा नहीं की जाती है, तो वह केवल समास कहलाता है, इसे ही **'सुप्सुपासमास'** भी कहते हैं । यथा- पूर्वं भूतः **'भूतपूर्वः'**
- **'भूतपूर्वे चरट्'** (5.3.53) इस सूत्र से 'भूत' शब्द का पूर्व में प्रयोग होता है।
- केवल समास विधायक सूत्र- **''सह सुपा''** 2.1.4
- **'इवेन समासो विभक्त्यलोपश्च' (वा.)** 'इव' के साथ समास होने पर विभक्ति का लोप न हो । यथा- **जीमूतस्येव, वागर्थाविव।**

2. अव्ययीभाव-'प्रायेण पूर्वपदार्थप्रधानः अव्ययीभावः'

- इसमें पूर्वपद का अर्थ प्रायः प्रधान होता है, पूर्वपद प्रायः अव्यय होता है, तथा समस्तपद भी अव्यय के रूप में व्यवहृत होता है । **यथा- हरौ इति =अधिहरि**

समासविधायकसूत्र

- **''अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि-व्यृद्ध्यर्था-भावात्ययासम्प्रति-शब्दप्रादुर्भाव-पश्चाद्यथानुपूर्व्य -यौगपद्य-सादृश्य-सम्पत्ति-साकल्यान्तवचनेषु''** 2.1.6

3. तत्पुरुष - प्रायेण उत्तरपदार्थप्रधानः तत्पुरुषः

- इसका उत्तरपद प्रधान होता है। यह अनेक प्रकार का होता है-
- **विभक्ति तत्पुरुष-** द्वितीयान्त से सप्तम्यन्त पर्यन्त जिस जिसका उत्तरपद के साथ समास होता है, वह तत् तत् विभक्ति के नाम से जाना जाता है-

- **द्वितीया तत्पुरुष**- कूपं पतितः = **कूपपतितः**
- **तृतीया तत्पुरुष**- शङ्कुलया खण्डः = **शङ्कुलाखण्डः**
- **चतुर्थी तत्पुरुष**- यूपाय दारु = **यूपदारु**
- **पञ्चमी तत्पुरुष**- चोरात् भयम् = **चोरभयम्**
- **षष्ठी तत्पुरुष**- राज्ञः पुरुषः = **राजपुरुषः**
- **सप्तमी तत्पुरुष**- अक्षेषु शौण्डः = **अक्षशौण्डः**
- **कर्मधारय**- इसके दोनों पद समान विभक्ति में होते हैं-
  कृष्णः सर्पः = कृष्णसर्पः

- **द्विगुसमासः- 'संख्यापूर्वो द्विगुः' 2.1.51**
- जब पूर्वपद संख्यावाचक होता है, तो 'द्विगुसमास' कहलाता है। **यथा**- त्रयाणां लोकानां समाहारः **त्रिलोकी**
- यह कर्मधारय का भेद है।

4. द्वन्द्व समास- 'प्रायेण उभयपदार्थप्रधानः द्वन्द्वः'

- प्रायः दोनों या सभी पदों का अर्थ प्रधान होता है।
- 'च' के अर्थ में समास का विधान होता है।
  यथा- कृष्णश्च अर्जुनश्च = **कृष्णार्जुनौ**
- समास विधायक सूत्र- **चार्थे द्वन्द्वः' 2.2.29**

5. बहुव्रीहि समास- प्रायेण अन्यपदार्थप्रधानः बहुव्रीहिः

- इसमें प्रायः अन्यपद प्रधान होता है।
  यथा- पीतानि अम्बराणि यस्य सः **पीताम्बरः**
- समासविधायक सूत्र - **अनेकमन्यपदार्थे 2.2.24**

समास से सम्बन्धित कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य

अन्तर्वर्तिनी विभक्ति

- समास में जो-जो पद समस्यमान होते हैं, उन सभी से कोई न कोई विभक्ति अवश्य होती है। वे **'अन्तर्वर्तिनी विभक्ति'** कहलाती है ।
- ये विभक्तियाँ समस्तपद के मध्य में आती हैं। अतः इनका लोप हो जाता है।
- **दशरथस्य पुत्रः = 'दशरथ ङस् पुत्र सु'** यहाँ अन्तर्वर्तिनी विभक्तियों ('ङस्' तथा 'सु') का लोप होकर 'दशरथपुत्र' एक समस्तपद बनता है। प्रातिपदिक संज्ञा होकर पुनः 'सु' आदि विभक्तियाँ आती हैं ।

वृत्ति-''परार्थाभिधानं वृत्तिः''

- समास आदि में जब पद अपने स्वार्थ को पूर्णतया या अंशतः छोड़कर एक विशिष्ट अर्थ को कहने लग जाते हैं, तो उसे 'वृत्ति' कहा जाता है ।
- 'वृत्ति' में एकार्थीभाव सामर्थ्य हो जाता है। यथा- दशरथस्य पुत्रः = दशरथपुत्रः (एकार्थीभूत पद)
- वृत्ति में पद मिलकर एकाकार हो जाते हैं; इसे ही **'पदविधि'** कहा जाता है ।
- **'वृत्ति' पाँच प्रकार की है-**
  (1) कृदन्तवृत्ति (2) तद्धितवृत्ति (3) समासवृत्ति
  (4) एकशेषवृत्ति (5) सनाद्यन्तधातुवृत्ति

विग्रह

''वृत्त्यर्थावबोधकं वाक्यं विग्रहः''

- वृत्ति के अर्थ का बोध कराने के लिए जो वाक्य होता है, उसे **'विग्रह'** कहते हैं ।
- विग्रह दो प्रकार का होता है-

(i) लौकिक विग्रह- जो लोक में व्यवहृत होता है, अर्थात् लोक के समझने लायक विग्रह को 'लौकिक विग्रह' कहते हैं । **यथा- 'दशरथपुत्रः'** का लौकिक विग्रह होगा- **दशरथस्य पुत्रः।**

(ii) अलौकिक विग्रह- जो व्याकरणशास्त्र की प्रक्रिया दर्शाने हेतु अर्थात् शास्त्रीयनिर्वाह के लिए विग्रह होता है, उसे 'अलौकिक विग्रह' कहते हैं ।

- अलौकिक विग्रह में ही समास करने वाला सूत्र लगता है । **यथा- दशरथ ङस् पुत्र सु ।**

'समास' सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण तथ्य

- समास हमेशा समर्थ अर्थात् परस्पर आकांक्षा वाले पदों में ही होता है।
- समास करने के लिए किसी सूत्र या वार्तिक की प्रवृत्ति होती है।
- समास करने के बाद सम्पूर्ण पद की **''कृत्तद्धितसमासाश्च''** सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा होती है।
- समास के बाद दो शब्दों में किसका पूर्वनिपात अर्थात् पूर्व में प्रयोग हो, इसके लिए उपसर्जन संज्ञक आदि से निर्णय किया जाता है।
- अन्त में समास के प्रातिपदिकसंज्ञक होने के कारण पुनः 'सु' आदि प्रत्ययों की उत्पत्ति होती है।
- समास अधिकतर सुबन्त का सुबन्त के साथ होता है, तिङन्त के साथ नहीं।
- समास में दो या उससे अधिक पदों के मध्य रहने वाली **विभक्तियों का लोप** हो जाता है, तथा सभी पद मिलकर एक समस्तपद के रूप में परिणत हो जाते हैं।
- जिन समस्तपदों का विग्रहवाक्य देना सम्भव न हो, ऐसे समास को **'नित्यसमास'** कहते हैं। उसी का दूसरा नाम **'अस्वपद विग्रह'** है।
- **'प्राक्कडारात् समासः'** (2.1.3) अर्थात् 'कडाराः कर्मधारये' (2.2.38) से पूर्व समास संज्ञा का अधिकार है।
- **''सह सुपा''** (2.1.4) अर्थात् सुबन्त शब्दों के साथ समर्थ सुबन्त शब्दों का समास हो।
- **'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः'** धातु और प्रातिपदिक के अवयव 'सुप्' का लोप होता है।
- समासों के विग्रह के लिए एक पद्य प्रसिद्ध है–
  चकारबहुलो द्वन्द्वः, स चासौ कर्मधारयः।
  यस्य येषां बहुव्रीहिः, शेषस्तत्पुरुषो मतः॥
- जिसके विग्रह में 'च' का प्रयोग हो, वह **द्वन्द्व** है। जिसमें 'स चासौ' विग्रह हो वह **कर्मधारय** है। जिसके विग्रह में **'यस्य या येषाम्'** आदि पदों का प्रयोग किया जाय, वह **'बहुव्रीहि'** है। इनके अतिरिक्त शेष **'तत्पुरुष'** है।
- **''अव्ययीभावः''** (2.1.5) यह अधिकार सूत्र है। इसका अधिकार क्षेत्र ''तत्पुरुषः'' (2.1.22) सूत्र के पूर्व तक है। अतः **''अन्य पदार्थे च संज्ञायाम्''** (2.1.21) सूत्र पर्यन्त होने वाले समास **'अव्ययी भाव'** संज्ञक होंगे।
- अव्ययीभाव समास की अव्ययसंज्ञा होती है।
- **'अनव्ययम् अव्ययः सम्पद्यते इति अव्ययीभावः'** अर्थात् जो शब्द समास होने के पूर्व तो अव्यय न हो, किन्तु समास होने पर 'अव्यय' हो जाय–वही **'अव्ययीभावसमास'** है। जैसे–शक्तिम् अनतिक्रम्य **यथाशक्ति**। यहाँ 'शक्ति' शब्द

अव्यय नही है, किन्तु अव्यय के साथ समास होने के कारण 'यथा' की तरह वह भी अव्यय हो जाता है।

- विभक्ति आदि **16 अर्थों** में विद्यमान अव्ययों का समर्थ सुबन्त के साथ **'नित्यसमास'** होगा और वह अव्ययीभावसंज्ञक होता है।
- **'अव्ययं विभक्ति-समीप......'** इत्यादि सूत्र से **'नित्यसमास'** होता है; नित्य समास का प्रायः लौकिक विग्रह नही होता, यदि विग्रह होता भी है, तो जिसका समास करना है उसके अर्थ के प्रकट करने वाले पर्यायवाची शब्द से सम्भव होता है। अतः प्राचीन आचार्यों ने इसे **''अस्वपदविग्रह''** कहा है।
- **''प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्''** अर्थात् समास में प्रथमाविभक्ति से निर्देश किया हुआ पद **'उपसर्जनसंज्ञक'** होता है।
- **''अव्ययीभावश्च''** (2.4.18) अर्थात् अव्ययीभाव समास भी नपुंसकलिङ्ग में हो। यथा–उपकृष्णम्
- **'अव्ययीभावे चाकाले'** (6.3.81) सूत्र में अव्ययीभाव में 'सह' को 'स' आदेश होता है, किन्तु काल अर्थ में नहीं होता। जैसे–सचक्रम्, ससखि, सक्षत्रम्, सतृणम्, साग्नि आदि।
- काल अर्थ में 'सह' को 'स' आदेश नही होता। जैसे–सहपूर्वाह्णम्।

समास में पूर्वनिपात या परनिपात

- **''उपसर्जनं पूर्वम्''** सूत्र से समास में उपसर्जनसंज्ञक शब्द का प्रयोग पहले होता है।
- **''राजदन्तादिषु परम्''** सूत्र से राजदन्तादिगणपठित शब्दों में उपसर्जन संज्ञक पद का परे (बाद में) प्रयोग होता है। यथा– **'राजदन्तः'** यहाँ 'दन्त' शब्द की उपसर्जनसंज्ञा, तथा प्रकृतसूत्र से परनिपात हुआ।
- **''धर्मादिष्वनियमः''** (गणसूत्र) अर्थात् 'धर्म' आदि शब्दों में पूर्वनिपात व परनिपात के सम्बन्ध में कोई नियम नही होता। यथा–**धर्मार्थौ, अर्थधर्मौ। कामार्थौ, अर्थकामौ।**
- **''द्वन्द्वे घि''** सूत्र से द्वन्द्व समास में 'घिसंज्ञक' का पहले प्रयोग होता है– यथा–हरिहरौ। यहाँ 'हरि' घि संज्ञक है, अतः इस सूत्र से पूर्वनिपात हो गया।
- **''अनेकत्र प्राप्तावेकत्र नियमोऽनियमः''** इस वार्तिक से 'यदि द्वन्द्व समास में कई घिसंज्ञक पद हों तो, एक घिसंज्ञक पद का पूर्वनिपात करके अन्य घिसंज्ञक पदों को कहीं पर भी रखा जा सकता है। जैसे–**हरिश्च हरश्च गुरुश्च हरिहरगुरवः/ हरिगुरुहराः**
- द्वन्द्व समास में ही घिसंज्ञक का पूर्वनिपात होता है, अन्यत्र नही। जैसे–विस्पष्टं पटुः = **विस्पष्टपटुः**।
- **''अजाद्यदन्तम्''** सूत्र से जो शब्द अजादि भी हो, और अदन्त भी हो, उसका द्वन्द्वसमास में पूर्वनिपात होता है। जैसे– **ईशकृष्णौ, उष्ट्रखरम्** यहाँ 'ईश' पद अजादि है तथा अदन्त भी है; अतः पूर्वनिपात हो गया। **अजादि** = जिसके आदि में अच् = स्वर वर्ण हो। **अदन्त** = जिसके अन्त में ह्रस्व 'अकार' हो।
- द्वन्द्व समास में एक से अधिक अजादि व अदन्त पद हों, तो किसी एक पद का पूर्वनिपात करके शेष के विषय में स्वेच्छाचारिता होती है। जैसे– अश्वश्च इन्द्रश्च रथश्च = **अश्वेन्द्ररथाः। अश्वरथेन्द्राः। इन्द्राश्वरथाः।**
- यदि द्वन्द्वसमास में घिसंज्ञक व अजादि एवं अदन्त पद का एक साथ प्रयोग हो तो **''विप्रतिषेधे परं कार्यम्''** इस नियम के आधार पर अजाद्यदन्त पद का पूर्वनिपात होता है। जैसे– (i) अग्निश्च इन्द्रश्च = **इन्द्राग्नी** (ii) वायुश्च इन्द्रश्च = **इन्द्रवायू**
- अजादि व अदन्त = ह्रस्व अकारान्त शब्द का ही पूर्वनिपात होता है–अश्वा च वृषा च = **अश्वावृषे/वृषाश्वे**। यहाँ 'अश्वा' पद अजादि तो है, परन्तु अदन्त नही है; अतः **'अश्वा'** पद के पूर्वनिपात के विषय में स्वेच्छाचारिता है।
- **''अल्पाच्तरम्''** सूत्र से द्वन्द्वसमास में अपेक्षाकृत कम अचों (स्वरों) वाले पद का पूर्वप्रयोग होता है। जैसे–(i) शिवश्च केशवश्च = **शिवकेशवौ** (ii) उमा च महेश्वरश्च = **उमामहेश्वरौ।** यहाँ 'शिव', 'केशव' की अपेक्षा अल्पाच् है; अतः 'शिव' का पूर्वनिपात हुआ।
- **''ऋतुनक्षत्राणां समानाक्षराणामानुपूर्व्येण'' (वा.)** अर्थात् जिन शब्दों में अचों की संख्या समान हो, ऐसे ऋतुवाचक या नक्षत्रवाचक शब्दों के द्वन्द्वसमास में उनके आनुपूर्वी क्रम के अनुसार पूर्वनिपात होता है। यथा– (1) वसन्तश्च हेमन्तश्च शिशिरश्च = **हेमन्तशिशिरवसन्ताः** (ii) रोहिणी च कृत्तिका च = **कृत्तिकारोहिण्यौ।** यहाँ आनुपूर्वी क्रम से 'रोहिणी' से पूर्व 'कृत्तिका' नक्षत्र होता है, अतः 'कृत्तिका' का पूर्वनिपात हुआ।
- **''लघ्वक्षरञ्च पूर्वम्''** इस वार्तिक से द्वन्द्व समास में लघु (ह्रस्व) अच् = स्वर वाले शब्दों का पूर्वनिपात होता है। यथा– (i) कुशश्च काशश्च = **कुशकाशौ** (ii) शरश्च चापश्च = **शरचापम्**
- **''अभ्यर्हितञ्च पूर्वं निपततीति वक्तव्यम्''** इस वार्तिक से द्वन्द्वसमास में अधिकपूज्य का पूर्वनिपात होता है–(i) पिता च माता च = **मातापितरौ** (ii) अर्जुनश्च वासुदेवश्च = **वासुदेवार्जुनौ**
- **''भ्रातुश्च ज्यायसः पूर्वनिपातो वक्तव्यः''** इस वार्तिक से 'द्वन्द्वसमास में बड़े भाई के नाम का पूर्वनिपात होता है। यथा–अर्जुनश्च युधिष्ठिरश्च = **युधिष्ठिरार्जुनौ**
- **'वर्णानामानुपूर्व्येण पूर्वनिपातः'** इस वार्तिक से 'ब्राह्मण आदि वर्णवाचक (जातिवाचक) शब्दों का द्वन्द्व समास होने पर श्रेष्ठता के क्रम से पूर्वनिपात होता है।' जैसे– शूद्रश्च ब्राह्मणश्च विट् च क्षत्रियश्च = **ब्राह्मणक्षत्रियविट्शूद्राः**

- ''**संख्याया अल्पीयस्याः पूर्वनिपातो वक्तव्यः**'' इस वार्तिक से समास में छोटी संख्या का पूर्वनिपात होता है। जैसे–पञ्च वा षड् वा = **पञ्चषाः।** द्वौ च दश च = **द्वादश।** यहाँ छः से छोटी संख्या पाँच है, अतः 'पञ्च' का पूर्वनिपात हुआ।
- ''**सप्तमी विशेषणे बहुव्रीहौ**'' सूत्र से 'बहुव्रीहिसमास में सप्तम्यन्त पद और विशेषणवाची पद का पूर्वनिपात होता है। जैसे–(i) **कण्ठे स्थितः कालः यस्य सः = कण्ठेकालः।** यहाँ सप्तम्यन्त 'कण्ठे' पद का इस सूत्र से पूर्वनिपात। **(ii) चित्रा गावो यस्य सः = चित्रगुः।** यहाँ विशेषणवाची 'चित्र' शब्द का इसी सूत्र से पूर्वनिपात हुआ।
- ''**सर्वनामसंख्ययोरुपसंख्यानम्**'' (वा0) अर्थात् सर्वनाम तथा संख्यावाचक शब्द का बहुव्रीहिसमास में पूर्वप्रयोग होता है। यथा– **(i) सर्वः श्वेतः यस्य सः = सर्वश्वेतः।** यहाँ 'सर्व' शब्द सर्वनामसंज्ञक है, अतः इसका पूर्वनिपात हुआ। **(ii) द्वौ शुक्लौ यस्य सः = द्विशुक्लः।** संख्यावाची 'द्वि' शब्द का पूर्वनिपात हुआ।
- '**वा प्रियस्य पूर्वनिपातः**' (वा0) इस वार्तिक से बहुव्रीहि समास में 'प्रिय' शब्द के पूर्वनिपात के सन्दर्भ में स्वेच्छाचारिता होती है। यथा– **गुडः प्रियः यस्य सः = गुडप्रियः, प्रियगुडः।**
- ''**निष्ठा**'' सूत्र से 'बहुव्रीहि समास में निष्ठा प्रत्ययान्त पद का पूर्वनिपात होता है। जैसे–**कृतकटः, कृतकृत्यः।** यहाँ प्रकृतसूत्र द्वारा 'कृत' इस निष्ठाप्रत्ययान्त पद का पूर्वनिपात हुआ।
- ''**वाऽऽहिताग्न्यादिषु**'' सूत्र से 'आहिताग्न्यादिगण में निष्ठा प्रत्ययान्त शब्दों का बहुव्रीहि समास में विकल्प से पूर्वनिपात होता है; पक्ष में परनिपात भी होता है।' जैसे– आहिताः अग्नयः येन सः– (i) पूर्वनिपात पक्ष में– **आहिताग्निः** (ii) परनिपात पक्ष में–**अग्न्याहितः**
- ''**कडाराः कर्मधारये**'' सूत्र से 'कर्मधारय समास में 'कडारा' आदि शब्दों का विकल्प से पूर्वनिपात होता है।'' जैसे– **कडारजैमिनिः। जैमिनिकडारः।**

समासविधायकसूत्र-तालिका

क्र.	समास	समासविधायक सूत्रम्		उदाहरणम्
1.	**केवलसमास**	(i) 'सह सुपा'	2.1.4	पूर्वं भूतः = **भूतपूर्वः**
2.	**अव्ययीभाव समास**	(ii) इवेन समासो विभक्त्यलोपश्च		जीमूतस्य इव = **जीमूतस्येव**
		(i) 'अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि व्यृद्ध्यर्थाभावाऽत्ययासम्प्रति शब्दप्रादुर्भावपश्चाद्यथानुपूर्व्य यौगपद्य-सादृश्य-सम्पत्ति-साकल्यान्त-वचनेषु'	2.1.6	वागर्थौ इव = **वागर्थाविव** (i) हरौ इति = **अधिहरि** (ii) कृष्णस्य समीपम् = **उपकृष्णम्**
		(ii) 'नदीभिश्च'	2.1.19	सप्तगङ्गम्, पञ्चगङ्गम्, द्वियमुनम्
3.1	**द्वितीयातत्पुरुषसमास**	'द्वितीया श्रितातीतपतितगतात्यस्त प्राप्तापन्नैः'	2.1.24	कूपं पतितः = **कूपपतितः**
3.2	**तृतीयातत्पुरुष**	'तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन'	2.1.30	शङ्कुलया खण्डः = **शङ्कुलाखण्डः**
3.3	**चतुर्थीतत्पुरुष**	'चतुर्थी तदर्थार्थबलिहित सुख-रक्षितैः'	2.1.36	यूपाय दारु = **यूपदारु**
3.4	**पञ्चमीतत्पुरुष**	'पञ्चमी भयेन'	2.1.37	चौराद् भयम् = **चौरभयम्**
3.5	**षष्ठीतत्पुरुष**	'षष्ठी'	2.1.38. 2.2.8	राज्ञः पुरुषः = **राजपुरुषः**
3.6	**सप्तमीतत्पुरुष'**	सप्तमी शौण्डैः'	2.1.40	अक्षेषु शौण्डः = **अक्षशौण्डः**
3.7	**कर्मधारय**	(i) 'उपमानानि सामान्यवचनैः	2.1.54	घन इव श्यामः = **घनश्यामः**
		(ii) विशेषणं विशेष्येण बहुलम्'	2.1.56	नीलम् उत्पलम् = **नीलोत्पलम्**
3.8	**द्विगुसमास**	(i) ''तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च''	2.1.50	अष्टानाम् अध्यायानां समाहारः
		तथा 'संख्यापूर्वो द्विगुः'	2.1.51	= **अष्टाध्यायी**
3.9	**नञ्तत्पुरुष**	नञ्	2.2.6	न ब्राह्मणः = **अब्राह्मणः**
3.10	**गतितत्पुरुष**	कुगतिप्रादयः	2.2.18	कुत्सितः पुरुषः = **कुपुरुषः**
3.11	**उपपद तत्पुरुष**	उपपदमतिङ्	2.2.19	कुम्भं करोति इति = **कुम्भकारः**
4.	**बहुव्रीहिसमास**	अनेकमन्यपदार्थे	2.2.24	प्राप्तम् उदकं यं सः =**प्राप्तोदकः (ग्रामः)**
5.	**द्वन्द्वसमास**	चाऽर्थे द्वन्द्वः	2.2.29	रामश्च लक्ष्मणश्च = **रामलक्ष्मणौ**

कारक विभक्ति तालिका

कारक	विभक्ति	विभक्तिविधायक सूत्रम्
कर्त्ता	तृतीया	कर्तृकरणयोस्तृतीया
कर्म	द्वितीया	कर्मणि द्वितीया
करण	तृतीया	कर्तृकरणयोस्तृतीया
सम्प्रदान	चतुर्थी	चतुर्थी सम्प्रदाने
अपादान	पञ्चमी	अपादाने पञ्चमी
अधिकरण	सप्तमी	सप्तम्यधिकरणे च
सम्बोधन	प्रथमा	सम्बोधने च
सम्बन्ध	षष्ठी	षष्ठी शेषे
प्रातिपदिकार्थ	प्रथमा	प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा

विशेष–उक्त कारक में प्रथमा विभक्ति तथा अनुक्त कारकों में उपर्युक्त विभक्तियाँ होंगी।

उच्चारणस्थान-तालिका

क्र.	सूत्रम्	वर्णाः	उच्चारणस्थानम्
1.	**अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः**	अठारह प्रकार के सभी अकार, कवर्ग = क् ख् ग् घ् ङ् ह, विसर्ग (**कण्ठ्यवर्ण**)	कण्ठ
2.	**इचुयशानां तालु**	अठारह प्रकार के सभी इकार, चवर्ग = च्, छ्, ज्, झ्, ञ्, य्, श् (**तालव्यवर्ण**)	तालु
3.	**ऋटुरषाणां मूर्धा**	अठारह प्रकार के सभी ऋकार, टवर्ग = ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण् रेफ, ष् (**मूर्धन्य वर्ण**)	मूर्धा
4.	**ऌतुलसानां दन्ताः**	बारह प्रकार के सभी ऌकार, तवर्ग = त् थ् द् ध् न् ल् स् (**दन्त्यवर्ण**)	दन्त
5.	**उपूपध्मानीयानाम् ओष्ठौ**	अठारह प्रकार के उकार, पवर्ग = प् फ् ब् भ् म्। ᳵपᳵफ (**ओष्ठ्यवर्ण**)	ओष्ठ
6.	**ञमङणनानां नासिका च**	ञ् म् ङ् ण् न् (**अनुनासिक वर्ण**)	नासिका
7.	**एदैतोः कण्ठतालु**	ए, ऐ (**कण्ठतालव्यवर्ण**)	कण्ठतालु
8.	**ओदौतोः कण्ठोष्ठम्**	ओ, औ (**कण्ठोष्ठ्यवर्ण**)	कण्ठोष्ठ
9.	**वकारस्य दन्तोष्ठम्**	व (**दन्तोष्ठ्यवर्ण**)	दन्तोष्ठ
10.	**जिह्वामूलीयस्य जिह्वामूलम्**	ᳵकᳵख (**जिह्वामूलीयवर्ण**)	जिह्वामूल
11.	**नासिकाऽनुस्वारस्य**	अनुस्वार (ं)	नासिका

- उच्चारणस्थान और प्रयत्न को अष्टाध्यायी सूत्रों में नहीं बताया गया, अपितु पाणिनीय शिक्षा आदि ग्रन्थों में इसका वर्णन है।
- पाणिनीयशिक्षा के अनुसार उच्चारणस्थान आठ माने गए हैं–

अष्टौ स्थानानि वर्णानाम्
उरः कण्ठः शिरस्तथा।
जिह्वामूलं च दन्तश्च
नासिकोष्ठौ च तालु च॥ – पाणिनीयशिक्षा-13

संज्ञा-सूत्र-तालिका (अष्टाध्यायी क्रमानुसार)

क्र.	संज्ञा	संज्ञाविधायक सूत्र	सूत्रार्थ	उदाहरणम्
01.	वृद्धिसंज्ञा	**वृद्धिरादैच्** 1.1.1	आ, ऐ, औ इन तीन वर्णों की **वृद्धिसंज्ञा** होती है।	त्यागः, – **आ** सदैव – **ऐ** महौषधिः – **औ**
02.	गुणसंज्ञा	**अदेङ् गुणः** 1.1.2	अ, ए, ओ, इन तीन वर्णों की **गुणसंज्ञा** होती है।	रमेशः – **ए** सूर्योदयः – **ओ** महर्षिः – **अ (र्)**
03.	संयोगसंज्ञा	**हलोऽनन्तराः संयोगः** 1.1.7	अच् (स्वर) के व्यवधान से रहित व्यञ्जनों (हलों) की **'संयोगसंज्ञा'** होती है।	(i) 'राष्ट्रम्' में **'ष्ट्र' की संयोग संज्ञा** (ii) 'अग्निः' में 'ग्न' की संयोगसंज्ञा।
04.	अनुनासिकसंज्ञा	**मुखनासिकावचनोऽनुनासिकः** 1.1.8	जो वर्ण मुख तथा नासिका दोनों की सहायता से उच्चरित हों उसकी **'अनुनासिकसंज्ञा'** होती है।	अँ, ङ्, ञ्, ण्, न्, म् यँ, वँ, लँ आदि
5.1	सवर्णसंज्ञा	**तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम्** 1.1.9	जिन दो या दो से अधिक वर्णों के पारस्परिक कण्ठताल्वादि उच्चारणस्थान तथा आभ्यन्तरप्रयत्न दोनों समान हों, वे परस्पर **''सवर्णसंज्ञक''** होते हैं।	अ - आ इ - ई उ - ऊ आदि परस्पर सवर्णी हैं। रमापि, मुनीशः भानूदयः आदि।
●	सवर्णसंज्ञा का निषेध	**नाज्झलौ** 1.1.10	स्थान और प्रयत्न का साम्य होने पर भी अच् (स्वर) और हल् (व्यंजन) की परस्पर सवर्णसंज्ञा नही होती।	**दण्ड हस्त** डकारोत्तरवर्ती अकार तथा हकार की सवर्णसंज्ञा होकर दीर्घ नहीं हुआ।
5.2	सवर्णसंज्ञा	**ऋलृवर्णयोः मिथः सावर्ण्यं वाच्यम्** (वा.)	ऋ और लृ की परस्पर **सवर्ण संज्ञा** होती है	होतृ + लृकारः =होतॄकारः
6.1	प्रगृह्यसंज्ञा	**ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम्** 1.1.11	दीर्घ ईकारान्त, दीर्घ ऊकारान्त, तथा दीर्घ एकारान्त द्विवचन की **'प्रगृह्यसंज्ञा'** होती है।	हरी एतौ, विष्णू इमौ गङ्गे अमू, अग्नी इति वायू इति
6.2	प्रगृह्यसंज्ञा	**अदसो मात्** 1.1.12	'अदस्' शब्द के मकार से परे 'ईत्' तथा 'ऊत्' प्रगृह्य संज्ञक होते हैं।	अमी ईशाः, अमू आसाते अमू, अत्र, अमी अश्वाः
6.3	प्रगृह्यसंज्ञा	**शे** 1.1.13	'शे' इस सुबादेश की **प्रगृह्यसंज्ञा** होती है। (प्रायशः वेदों में)	युष्मे इति, त्वे इति, मे इति।
6.4	प्रगृह्यसंज्ञा	**निपात एकाजनाङ्** 1.1.14	'आङ्' को छोड़कर एक 'अच्' स्वरूप निपात की **'प्रगृह्यसंज्ञा'** होती है।	अ अपेहि इ इन्द्रम्। उ उत्तिष्ठ आ एवं नु मन्यसे

क्र.	संज्ञा	संज्ञाविधायक सूत्र	सूत्रार्थ	उदाहरणम्
6.5	**प्रगृह्यसंज्ञा**	**ओत्** 1.1.15	ओकारान्त निपात की **प्रगृह्यसंज्ञा** होती है।	उताहो अनिष्टम् अहो अद्य शीतम्। अहो ईशाः
6.6	**प्रगृह्यसंज्ञा** (विकल्प से)	**सम्बुद्धौ शाकल्यस्येतावनार्षे** 1.1.16	सम्बुद्धिनिमित्तक ओकार की अवैदिक 'इति' शब्द के परे रहते विकल्प से '**प्रगृह्यसंज्ञा**' होती है।	'विष्णो इति'
6.7	**प्रगृह्यसंज्ञा**	**उञः ऊँ** 1.1.17	अवैदिक 'इति' शब्द परे रहते शाकल्य आचार्य के मत में (क) उञ् की **प्रगृह्यसंज्ञा** होती है। (ख) 'उञ्' के स्थान पर 'ऊँ' आदेश होता है, जो **प्रगृह्यसंज्ञक** होता है।	'उ इति' 'ऊँ इति'
6.8	**प्रगृह्यसंज्ञा**	**ईदूतौ च सप्तम्यर्थे इति प्रगृह्यम्** 1.1.19	सप्तमी के अर्थ में ईकारान्त व ऊकारान्त की **प्रगृह्यसंज्ञा** होती है।	तनू इति गौरी अधिश्रितः
07.	**घु-संज्ञा**	**दाधा घ्वदाप्** 1.1.20	दारूप वाले तथा धारूप वाले धातुओं की '**घु' संज्ञा** होती है; 'दाप्लवने' तथा 'दैप शोधने' धातुओं को छोड़कर	दाञ्, दाण् डुधाञ्, धेट् आदि।
8.	**घ-संज्ञा**	**तरप्तमपौ घः** 1.1.22	तरप् तथा तमप् – ये दो प्रत्यय '**घ' संज्ञक** होते हैं।	कुमारितरा कुमारितमा
9.	**संख्यासंज्ञा**	**बहुगणवतुडति संख्या** 1.1.23	'बहु' व 'गण' शब्द की तथा 'वतु' व 'डति' प्रत्ययान्त शब्दों की ''**संख्यासंज्ञा**'' होती है।	बहुधा, बहुशः गणशः, तावत्कः, कतिधा, कतिशः।
10.1	**षट्-संज्ञा**	**ष्णान्ता षट्** 1.1.24	षकारान्त और नकारान्त संख्या वाची शब्दों की 'षट्' संज्ञा होती है।	षट्, (षकारान्त) पञ्च, सप्त, नव, दश (नकारान्त)
10.2	**षट्संज्ञा**	**डति च** 1.1.25	डति प्रत्ययान्त संख्यावाची शब्द की ''**षट्संज्ञा**'' होती है।	कति तिष्ठन्ति कति पश्य
11.	**निष्ठासंज्ञा**	**क्तक्तवतू निष्ठा** 1.1.26	'क्त' तथा 'क्तवतु' प्रत्यय की '**निष्ठासंज्ञा**'' होती है।	मुक्तः (क्त) भुक्तवान् (क्तवतु)
12.	**सर्वनाम-संज्ञा**	**सर्वादीनि सर्वनामानि** 1.1.27	'सर्व' आदि शब्दों की सर्वनामसंज्ञा होती है।	सर्वे इत्यादि।
13.1	**अव्ययसंज्ञा**	**स्वरादि निपातमव्ययम्** 1.1.37	स्वरादिगण में पठित शब्दों की तथा निपात शब्दों की '**अव्यय' संज्ञा** होती है।	प्रातर्, च, वा, ह इत्यादि
13.2	**अव्ययसंज्ञा**	**तद्धितश्चासर्वविभक्तिः** 1.1.38	जिससे सारी विभक्तियाँ उत्पन्न न हों, ऐसे तद्धित प्रत्ययान्त शब्द की '**अव्यय' संज्ञा** होती है।	ततः, तत्र, तदा विना इत्यादि।
13.3	**अव्ययसंज्ञा**	**कृन्मेजन्तः** 1.1.39	मकारान्त कृत् प्रत्ययान्त तथा एजन्त कृत् प्रत्ययान्त शब्द की '**अव्यय' संज्ञा** होती है।	स्वादुङ्कारम् वक्षे। पठितुम्
13.4	**अव्ययसंज्ञा**	**क्त्वातोसुन्कसुनः** 1.1.40	'क्त्वा' 'तोसुन्' तथा 'कसुन्' प्रत्ययान्त शब्दों की '**अव्यय' संज्ञा** होती है।	गत्वा, उदेतोः, विसृपः

क्र.	संज्ञा	संज्ञाविधायक सूत्र	सूत्रार्थ	उदाहरणम्
13.5	अव्ययसंज्ञा	**अव्ययीभावश्च** 1.1.40	अव्ययीभावसमास की **अव्ययसंज्ञा** होती है।	अधिहरि, अध्यात्मम्, प्रत्यग्नि।
14.1	सर्वनामस्थान	**शि सर्वनामस्थानम्** 1.1.41	'शि' की **सर्वनामस्थान संज्ञा** होती है।	वनानि, दधीनि मधूनि।
14.2	सर्वनामस्थान	**सुडनपुंसकस्य** 1.1.42	नपुंसकलिङ्ग से भिन्न 'सुट्' (सु, औ, जस्, अम्, औट्–इन पाँच) प्रत्ययों की **'सर्वनामस्थान'** संज्ञा होती है।	राजा (सु) राजानौ (औ) राजानः (जस्) राजानम् (अम्) राजानौ (औट्)
15.	विभाषासंज्ञा	**न वेति विभाषा** 1.1.43	'न' का अर्थ है–निषेध 'वा' का अर्थ है–विकल्प निषेध तथा विकल्प– इन दो अर्थों की **'विभाषा' संज्ञा** होती है।	''विभाषा श्वेः'' 6.1.30
16.	सम्प्रसारणम्	**इग्यणः सम्प्रसारणम्** 1.1.44	'यण्' के स्थान पर होने वाले 'इक्' की **''सम्प्रसारण'' संज्ञा** होती है।	यज् + क्त = इष्टः वप् + क्त = उप्तः
17.	लोप-संज्ञा	**अदर्शनं लोपः** 1.1.59	विद्यमान के अदर्शन = अश्रवण की **''लोप'' संज्ञा** होती है।	शाला + छ = शालीयः 'आकार' की लोपसंज्ञा ''यस्येति च'' से लोप
18.	लुक् श्लु लुप्	**प्रत्ययस्य लुक्श्लुलुपः** 1.1.60	(क) लुक् शब्द से कराया गया प्रत्ययादर्शन 'लुक्संज्ञक' होता है। (ख) श्लु शब्द से कराया गया प्रत्ययादर्शन **'श्लुसंज्ञक'** होता है। (ग) 'लुप्' शब्द से कराया गया प्रत्ययादर्शन **'लुप्संज्ञक'** होता है।	विशाखः (लुक्संज्ञा) जुहोति (श्लु संज्ञा) वरणाः (लुप् संज्ञा)
19.	टि-संज्ञा	**अचोऽन्त्यादि टि** 1.1.63	अचों के मध्य में जो अन्त्य अच्, वह है आदि में जिसके, उस समुदाय की **''टिसंज्ञा''** होती है।	मनस् में – 'अस्' राजन् में – 'अन्' दधि में – 'इ' की टिसंज्ञा।
20.	उपधासंज्ञा	**अलोऽन्त्यात् पूर्व उपधा** 1.1.64	अन्त्य अल् से पूर्व वर्ण की **''उपधा''** संज्ञा होती है।	गम् में – अ मुच् में – उ भिद् में – इ की उपधा संज्ञा।
21.	प्रत्याहारसंज्ञा	**आदिरन्त्येन सहेता** 1.1.70	आदिवर्ण अन्त्य इत्संज्ञक वर्ण के साथ मिलकर अपने स्वरूप का तथा मध्य में स्थित वर्णों का बोध कराता है। यही **''प्रत्याहार''** है।	अण् = अ, इ, उ इक् = इ, उ, ऋ, ऌ इत्यादि।
22.1	वृद्धसंज्ञा	**वृद्धिर्यस्याचामादिस्तद् वृद्धम्** 1.1.72	जिस समुदाय के अचों के मध्य आदि अच् वृद्धिसंज्ञक हो, उस समुदाय की **'वृद्ध' संज्ञा** होती है।	'शालीयः' में 'शाला' शब्द की वृद्ध संज्ञा।
22.2	वृद्धसंज्ञा	**त्यदादीनि च** 1.1.73	त्यादिगण में पठित शब्दों की **''वृद्धसंज्ञा''** होती है।	'त्यदीयम्' में 'त्यद्' शब्द की वृद्धसंज्ञा।

क्र.	संज्ञा	संज्ञाविधायक सूत्र	सूत्रार्थ	उदाहरणम्
22.3	**वृद्धसंज्ञा**	**एङ् प्राचां देशे** 1.1.74	जिस समुदाय के अचों का आदि अच् 'एङ्' हो; उसकी '**वृद्धसंज्ञा**' होती है, पूर्व दिशा को कहने के विषय में।	'गोनर्दीयः' में 'गोनर्द' शब्द की वृद्धसंज्ञा।
23.	**ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत**	**ऊकालोऽज्झ्रस्वदीर्घप्लुतः** 1.2.27	'ऊकाल' का अर्थ है–उकाल एकमात्रिक ऊकाल द्विमात्रिक, तथा उ ३ काल त्रिमात्रिक। एकमात्रिक, द्विमात्रिक, त्रिमात्रिक अच् की यथासंख्य करके **ह्रस्व, दीर्घ और प्लुतसंज्ञा** होती है।	दधिच्छत्रम् (ह्रस्व) गौरी (दीर्घ) देवदत्त ३ (प्लुत)
24.	**उदात्तसंज्ञा**	**उच्चैरुदात्तः** 1.2.29	ताल्वादि स्थानों से वर्णों का उच्चारण होता है; उन स्थानों के ऊर्ध्वभागों से उच्चरित अच् '**उदात्तसंज्ञक**' होता है।	उदात्त के लिए प्रायः कोई चिह्न नही होता।
25.	**अनुदात्तसंज्ञा**	**नीचैरनुदात्तः** 1.2.30	ताल्वादि स्थानों के निम्नभागों से उच्चरित 'अच्' ''**अनुदात्तसंज्ञक**'' होता है।	अनुदात्त के लिए वर्ण के नीचे पड़ी रेखा (–) अंकित की जाती है।
26.	**स्वरितसंज्ञा**	**समाहारः स्वरितः** 1.2.31	उदात्तत्व और अनुदात्तत्व ये दोनों जिस अच् में विद्यमान हो, वह ''**स्वरितसंज्ञक**'' होता है।	स्वरित के लिए वर्ण के ऊपर (।) खड़ी रेखा होती है।
27.	**अपृक्तसंज्ञा**	**अपृक्त एकाल् प्रत्ययः** 1.2.41	एकाल् = एक अल्/वर्ण जो प्रत्यय एक वर्णरूप हो, या एक वर्ण रूप हो गया हो, उसकी ''**अपृक्त**'' संज्ञा होती है।	'वाच् सु 'अनुबन्ध लोप। ''वाच् स्'' यहाँ 'स्' एक वर्ण रूप प्रत्यय है, अतः अपृक्तसंज्ञक है।
28.1	**उपसर्जनसंज्ञा**	**प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्** 1.2.43	समास विधायक शास्त्र में प्रथमा से निर्दिष्ट जो पद, उसके द्वारा बोध्य शब्द की ''**उपसर्जनसंज्ञा**'' होती है।	'उपकृष्णम्' में 'उप' की उपसर्जन संज्ञा।
28.2	**उपसर्जनसंज्ञा**	**एकविभक्तिक चाऽपूर्वनिपाते** 1.2.44	समास विग्रह में जो नियतविभक्तिक हो, उस पद की '**उपसर्जनसंज्ञा**' हो परन्तु उसका पूर्वनिपात न हो।	'अतिमाला' यहाँ 'माला' पद एक विभक्तिक है; अतः यह 'उपसर्जनसंज्ञक' है।
29.1	**प्रातिपदिक**	**अर्थवदधातुरप्रत्ययः** प्रातिपदिकम् 1.2.45	धातुरहित, प्रत्यय व प्रत्ययान्तरहित सार्थक शब्दस्वरूप की **प्रातिपदिक संज्ञा** होती है।	राम, कृष्ण, लता आदि।
29.2	**प्रातिपदिक**	**कृत्तद्धितसमासाश्च** 1.2.46	कृत् प्रत्ययान्त, तद्धित प्रत्ययान्त तथा समास भी ''**प्रातिपदिकसंज्ञक**'' होते हैं।	कारकः (कृत्) शालीयः (तद्धित) राजपुरुषः (समास)
30.1	**धातुसंज्ञा**	**भूवादयो धातवः** 1.3.1	क्रिया के वाचक 'भू' आदि तथा 'वा' के प्रकार वाले शब्दों की **धातुसंज्ञा** होती है।	भू, पठ्, गम्, वा आदि।

क्र.	संज्ञा	संज्ञाविधायक सूत्र	सूत्रार्थ	उदाहरणम्
30.2	धातुसंज्ञा	**सनाद्यन्ता धातवः** 3.1.32	सन् आदि प्रत्ययान्त समुदाय की **'धातुसंज्ञा'** होती है।	जुगुप्सते (सन्) पुत्रीयति (क्यच्)
31.1	इत्संज्ञा	**उपदेशेऽजनुनासिक इत्** 1.3.2	उपदेश अवस्था में अनुनासिक अच् वर्ण की **''इत्'' संज्ञा** होती है।	''एधँ''–यहाँ धकारोत्तरवर्ती अकार अनुनासिक होने से इत्संज्ञक है।
31.2	इत्संज्ञा	**हलन्त्यम्** 1.3.3	उपदेश में अन्तिम हल् **''इत्संज्ञक''** होता है।	अइउण् में 'णकार' की इत्संज्ञा है।
31.3	इत्संज्ञा	**आदिर्ञिटुडवः** 1.3.5	उपदेश अवस्था में धातु के आदि में वर्तमान ञि, टु, तथा डु –इनकी **''इत्संज्ञा''** होती है।	ञिमिदा टुवेपृ, डुकृञ् में ञि, टु तथा डु इत्संज्ञक हैं।
31.4	इत्संज्ञा	**षः प्रत्ययस्य** 1.3.6	उपदेश अवस्था में प्रत्यय के आदि में स्थित 'षकार' की **''इत्संज्ञा''** होती है।	नृत् + ष्वुन् यहाँ 'षकार' इत्संज्ञक है।
31.5	इत्संज्ञा	**चुटू** 1.3.7	उपदेश अवस्था में प्रत्यय के आदि में वर्तमान चवर्ग और टवर्ग की **''इत्संज्ञा''** होती है।	'ब्राह्मण + जस् = ब्राह्मणाः में 'ज्' की इत्संज्ञा वाच् + टा = वाचा में 'ट्' की इत्संज्ञा।
31.6	इत्संज्ञा	**लशक्वतद्धिते** 1.3.8	उपदेश अवस्था में प्रत्यय के आदि में स्थित लकार, शकार, तथा कवर्ग की **इत्संज्ञा** होती है। किन्तु तद्धित प्रत्ययों में नही।	चि + ल्युट् = चयनम् 'ल्' की इत्संज्ञा भुज् + क्त = भुक्तः 'क्' की इत्संज्ञा भू + शप् + तिप् = भवति श् की इत्संज्ञा
●	इत्संज्ञा निषेधक सूत्र	**न विभक्तौ तुस्माः** 1.3.4	विभक्ति में वर्तमान तवर्ग, सकार और मकार जो अन्त्य हल्, उनकी **इत्संज्ञा नहीं** होती है।	रामात्, जस्, आम्
32.1	नदीसंज्ञा	**यू स्त्र्याख्यौ नदी** 1.4.3	**'यू'** = (ई+ऊ) का अर्थ है– ईकारान्त व ऊकारान्त। **'स्त्र्याख्यौ'** का अर्थ है= नित्यस्त्रीलिङ्ग शब्द। ईदन्त तथा ऊदन्त नित्यस्त्रीलिङ्ग शब्दों की **''नदीसंज्ञा''** होती है।	नदी, गौरी, वधू आदि।
32.2	नदीसंज्ञा	**प्रथमलिङ्गग्रहणञ्च** (वा.)	जो शब्द पहले नित्यस्त्रीलिङ्ग है, तथा बाद में समास की दशा में गौण होकर अन्य लिङ्ग में चला गया हो, उसकी भी पहले के स्त्रीलिङ्ग के आधार पर **'नदीसंज्ञा'** हो जाती है।	बह्व्यः श्रेयस्यो यस्य स 'बहुश्रेयसी'
●	नदीसंज्ञा निषेधक सूत्र	**नेयङुवङ्स्थानावस्त्री** 1.4.4	जिन ईकार व ऊकार के स्थान पर क्रमशः इयङ् व उवङ् आदेश होते हैं, उन स्त्रीवाची पदों की **''नदीसंज्ञा''**	हे श्रीः! हे भ्रूः।

क्र.	संज्ञा	संज्ञाविधायक सूत्र	सूत्रार्थ	उदाहरणम्
			नही होती है। 'स्त्री' शब्द को छोड़कर	
32.3	नदीसंज्ञा	**वाऽऽमि** 1.4.5	इयङ् उवङ् स्थानी, स्त्रीवाची ईकारान्त व ऊकारान्त शब्दों की 'आम्' परे रहते विकल्प से **''नदीसंज्ञा''** होती है। 'स्त्री' शब्द को छोड़कर।	श्रियाम् श्रीणाम्
32.4	नदीसंज्ञा	**ङिति ह्रस्वश्च** 1.4.6	ह्रस्व इकारान्त, उकारान्त स्त्रीवाची शब्दों तथा इयङ् उवङ् स्थानी ईकारान्त, उकारान्त स्त्रीवाची शब्दों की ङित् विभक्ति में विकल्प से **नदी संज्ञा** होती है; 'स्त्री' शब्द को छोड़कर।	(i) मत्यै, मतये। (ii) धेन्वै, धेनवे (iii) श्रियै, श्रिये।
33.1	घिसंज्ञा	**शेषो घ्यसखि** 1.4.7	जिनकी नदी संज्ञा नही है, ऐसे ह्रस्व इकार और ह्रस्व उकार हैं अन्त में जिनके, उन शब्दों की **'घि' संज्ञा** होती है, 'सखि' शब्द को छोड़कर।	(i) हरिः, (ii) भानुः, (iii) वारि (iv) मधु
33.2	घिसंज्ञा	**पतिः समास एव** 1.4.8	'पति' शब्द समास में ही **''घि'' संज्ञक** होता है।	(i) भूपतिः (ii) सीतापतिः
33.3	घिसंज्ञा	**षष्ठीयुक्तश्छन्दसि वा** 1.4.9	षष्ठ्यन्त शब्द से युक्त जो पति शब्द, उसकी वेदों में **''घि'' संज्ञा** होती है।	(i) क्षेत्रस्य पतिना (ii) दिशां च पतये।
34.	लघुसंज्ञा	**ह्रस्वं लघु** 1.4.10	ह्रस्व वर्ण की **''लघु'' संज्ञा** होती है।	भिद् + तृच् = भेत्ता
35.1	गुरुसंज्ञा	**संयोगे गुरु** 1.4.11	संयोग परे रहते ह्रस्ववर्ण की **''गुरुसंज्ञा''** होती है।	'शिक्षा'–यहाँ 'इकार' की गुरुसंज्ञा
35.2	गुरुसंज्ञा	**दीर्घञ्च** 1.4.12	दीर्घवर्ण की **''गुरुसंज्ञा''** होती है।	'ईहाञ्चक्रे' यहाँ 'ईकार' की गुरुसंज्ञा।
36.	अङ्गसंज्ञा	**यस्मात्प्रत्ययविधिस्तदादि प्रत्ययेऽङ्गम्** 1.4.13	'प्रत्ययविधि' का अर्थ है–प्रत्यय का विधान। जिस प्रकृति (धातु या प्रातिपदिक) से प्रत्यय का विधान किया जाय, उस प्रत्यय के परे रहते उस प्रकृति का आदि वर्ण है आदि जिसका, उस सम्पूर्ण समुदाय की **''अङ्ग'' संज्ञा** होती है।	कृ + तृच् = कर्त्ता यहाँ 'कृ' की अङ्ग संज्ञा।
37.1	पदसंज्ञा	**सुप्तिङन्तं पदम्** 1.4.14	सुबन्त (सुप् अन्त वाला) तथा तिङन्त (तिङ् अन्त वाला) शब्द की **''पद'' संज्ञा** होती है। 'सु औ जश्' आदि **21 सुप्प्रत्यय** तथा 'तिप् तस् झि' आदि **18 तिङ्प्रत्यय** हैं।	(i) देवः (सुबन्त) (ii) पठति (तिङन्त)

क्र.	संज्ञा	संज्ञाविधायक सूत्र	सूत्रार्थ	उदाहरणम्
37.2	पदसंज्ञा	**नः क्ये** 1.4.15	नकारान्त शब्द की क्यच्, क्यङ् व क्यष् प्रत्यय परे रहते ''**पदसञ्ज्ञा**'' होती है।	(i) राजीयति। (ii) राजायते।
37.3	पदसंज्ञा	**सिति च** 1.4.16	सित् प्रत्यय परे रहते पूर्व की ''**पद**'' **संज्ञा** होती है।	भवत् + छस् = भवदीयः यहाँ 'भवत्' की पद संज्ञा।
37.4	पदसंज्ञा	**स्वादिष्वसर्वनामस्थाने** 1.4.17	सर्वनामस्थान भिन्न 'सु' आदि प्रत्ययों के परे रहते पूर्व शब्दसमुदाय की ''**पद**'' **संज्ञा** होती है।	राजन् + भ्याम् = राजभ्याम् यहाँ 'राजन्' की पद संज्ञा।
38.1	भसंज्ञा	**यचि भम्** 1.4.18	सर्वनामसंज्ञक पाँच प्रत्ययों (सु, औ, जस्, अम्, औट्) को छोड़कर 'सु' से लेकर 'कप्' प्रत्यय पर्यन्त यकारादि तथा अजादि प्रत्यय परे रहते पूर्व की '**भ**' **संज्ञा** होती है।	(i) गर्ग + यञ् = गार्ग्यः (ii) दक्ष + इञ् = दाक्षिः
38.2	भ संज्ञा	**तसौ मत्वर्थे** 1.4.19	तकारान्त और सकारान्त शब्दों की मत्वर्थ प्रत्ययों के परे रहते '**भ**' **संज्ञा** होती है।	(i) विद्युत् सु + मतुप् विद्युत्वान् (iii) तपस् सु विनि = तपस्वी
38.3	भ-संज्ञा	**अयस्मयादीनि छन्दसि** 1.4.20	वेदों में 'अयस्मय' इत्यादि शब्द साधु होते हैं यहाँ भी '**भ**' **संज्ञा** होती है।	अयस्मयम् मनस्मयम्
39.1	अपादान	**ध्रुवमपायेऽपादानम्** 1.4.24	पार्थक्य होने पर अवधिभूत अर्थात् अचल की ''**अपादान**'' **संज्ञा** होती है।	**वृक्षात्** पत्रं पतति
39.2	अपादान	**भीत्रार्थानां भयहेतुः** 1.4.25	भय अर्थ वाले तथा रक्षा अर्थ वाले धातुओं के योग में, जो भय का हेतु होता है, उसकी '**अपादान**' **संज्ञा** होती है।	(i) बालकः **सिंहात्** बिभेति। (ii) **चौरात्** रक्षति देवः।
39.3	अपादान	**पराजेरसोढः** 1.4.26	'परा' उपसर्ग पूर्वक 'जि' धातु के योग में जो सहन न किया जा सके, ऐसे शब्द की **अपादानसंज्ञा** होती है।	अध्ययनात् पराजयते।
39.4	अपादान	**वारणार्थानामीप्सितः** 1.4.27	वारण (रोकना) अर्थ वाले धातुओं के प्रयोग में जिससे रोकना अभीष्ट है, उसकी '**अपादान**' **संज्ञा** होती है।	**यवेभ्यो** गां वारयति।
39.5	अपादान	**अन्तर्धौ येनादर्शनमिच्छति** 1.4.28	ओट के होने पर छिपने वाला जिससे अपना छिपाव चाहता है, उसकी '**अपादान**' **संज्ञा** होती है।	(i) **आरक्षकात्** चोरः निलीयते। (ii) **मातुर्निलीयते** कृष्णः
39.6	अपादान	**आख्यातोपयोगे** 1.4.29	नियमपूर्वक विद्याग्रहण करने में पढ़ाने वाले की '**अपादान**' **संज्ञा** होती है।	**आचार्यात्** व्याकरणम् अधीते।
39.7	अपादान	**जनिकर्तुः प्रकृतिः** 1.4.30	जन्म के कर्त्ता की प्रकृति	**गोमयात्**

क्र.	संज्ञा	संज्ञाविधायक सूत्र	सूत्रार्थ	उदाहरणम्
			अर्थात् उत्पन्न होने वाले के कारण की **'अपादान' संज्ञा** होती है।	वृश्चिको जायते
39.8	अपादान	**भुवः प्रभवः** 1.4.31	भू धातु के कर्त्ता के उत्पत्तिस्थान की **'अपादान' संज्ञा** होती है।	गङ्गा **हिमालयात्** प्रभवति।
●	अपादान	**जुगुप्साविराम प्रमादार्थाना-मुपसंख्यानम्** (वा0)	जुगुप्सा, विराम, तथा प्रमाद अर्थ वाली धातुओं के योग में **अपादान संज्ञा** होती है।	**पापात्** जुगुप्सते। **पापात्** विरमति। **अध्ययनात्** प्रमाद्यति
40.1	सम्प्रदान	**कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्** 1.4.32	दान क्रिया के कर्म के द्वारा कर्त्ता जिसे अच्छी प्रकार युक्त या लक्षित करना चाहता है, उसकी **सम्प्रदानसंज्ञा** होती है।	नृपः **विप्राय** धनं ददाति।
●	सम्प्रदान	**क्रियया यमभिप्रैति सोऽपि सम्प्रदानम्** (वा0)	क्रिया के द्वारा कर्ता जिसे लक्षित करता है, उसकी भी **सम्प्रदान संज्ञा** होती है।	**पत्ये** शेते।
40.2	सम्प्रदान	**रुच्यर्थानां प्रीयमाणः** 1.4.33	रुचि अर्थात् अभिलाषा अर्थवाली धातुओं के योग में, जिसे वह वस्तु प्रिय हो, उसकी **'सम्प्रदान' संज्ञा** होती है।	**बालकाय** दुग्धं रोचते। **बालकाय** मोदकं स्वदते।
40.3	सम्प्रदान	**श्लाघह्नुङ्स्थाशपां ज्ञीप्स्यमानः** 1.4.34	श्लाघ्, ह्नुङ्, स्था, शप् धातुओं के योग में जो जनाये जाने की इच्छा वाला है, उसकी **'सम्प्रदान' संज्ञा** होती है।	गोपी स्मरात् **कृष्णाय** श्लाघते। ह्नुते, तिष्ठति, शपते वा।
40.4	सम्प्रदान	**धारेरुत्तमर्णः** 1.4.35	धारि (धृ + णिच्) इस णिजन्त धातु के योग में उत्तमर्ण की **'सम्प्रदान' संज्ञा** होती है। नोट–ऋण देने वाला–उत्तमर्ण ऋण लेने वाला–अधमर्ण	मोहनः **श्यामाय** शतं धारयति।
40.5	सम्प्रदान	**स्पृहेरीप्सितः** 1.4.36	'स्पृह ईप्सायाम्' धातु के योग में ईप्सित = अभीष्ट की **'सम्प्रदान' संज्ञा** होती है।	कन्या **पुष्पेभ्यः** स्पृहयति।
40.6	सम्प्रदान	**क्रुधद्रुहेर्ष्याऽसूयार्थानां यं प्रति कोपः** 1.4.37	क्रुध्, द्रुह्, ईर्ष्य, तथा असूय– इन धातुओं के योग में जिसके प्रति कोप किया जाय, उसकी **'सम्प्रदान' संज्ञा** होती है।	राजा **चोराय** क्रुध्यति
407.	सम्प्रदान	**राधीक्ष्योर्यस्य विप्रश्नः** 1.4.39	'राध्' और 'ईक्ष्' धातुओं के योग में जिसके विषय में विविध प्रश्न हों, उस कारक की **सम्प्रदान संज्ञा** होती है। 'राध्' व 'ईक्ष्' का अर्थ है–''शुभाशुभ विचार करना।''	(i) **श्यामाय** राध्यति (ii) **श्यामाय** ईक्षते।

क्र.	संज्ञा	संज्ञाविधायक सूत्र	सूत्रार्थ	उदाहरणम्
40.8	**सम्प्रदान**	**प्रत्याङ्भ्यां श्रुवः पूर्वस्य कर्त्ता** 1.4.40	'प्रति' तथा 'आङ्' पूर्वक 'श्रु' धातु के योग में पूर्व का जो कर्त्ता है, उसकी ''**सम्प्रदान**'' **संज्ञा** होती है।	राजा **ब्राह्मणाय** गां प्रतिशृणोति आशृणोति वा।
40.9	**सम्प्रदान**	**अनुप्रतिगृणश्च** 1.4.41	'अनु' तथा 'प्रति' उपसर्ग पूर्वक ''गृ'' धातु के प्रयोग में पूर्व का जो कर्त्ता है, उसकी ''**सम्प्रदान**'' **संज्ञा** होती है।	(i) **होत्रे** अनुगृणाति (ii) **होत्रे** प्रतिगृणाति
40.10	**करण तथा सम्प्रदानसंज्ञा** (विकल्प से)	**परिक्रयणे सम्प्रदानमन्यतरस्याम्** 1.4.44	परिक्रयण में साधकतम कारक की विकल्प से ''**सम्प्रदान**'' **संज्ञा** तथा पक्ष में यथाप्राप्त ''**करण**'' **संज्ञा** होती है।	(i) **शतेन** परिक्रीतः। (ii) **शताय** परिक्रीतः (सम्प्रदानसंज्ञा विकल्प से)
41.1	**करण**	**साधकतमं करणम्** 1.4.42	क्रिया की सिद्धि में जो सबसे अधिक उपकारक = सहायक हो, उसकी ''**करण**'' **संज्ञा** होती है।	**परशुना** छिनत्ति।
41.2	**कर्म तथा करणसंज्ञा**	**दिवः कर्म च** 1.4.43	'दिव्' धातु का जो साधकतम कारक उसकी ''**कर्म**'' तथा ''**करण**'' **संज्ञा** होती है।	(i) **अक्षान्** दीव्यति (ii) **अक्षैः** दीव्यति
42.	**अधिकरण**	**आधारोऽधिकरणम्** 1.4.45	आधार की ''**अधिकरण**'' **संज्ञा** होती है। 'अधिकरण' तीन प्रकार का होता है– (i) अभिव्यापक (ii) औपश्लेषिक (iii) वैषयिक	(i) **तिलेषु** तैलम् (अभिव्यापक) (ii) कटे आस्ते (औपश्लेषिक) (iii) मोक्षे इच्छा अस्ति (वैषयिक)
43.	(अ) **कर्मसंज्ञा**	**अधिशीङ्स्थासां कर्म** 1.4.46 (आधार की कर्मसंज्ञा)	'अधि' उपसर्गपूर्वक 'शीङ्' धातु, अधि पूर्वक 'स्था' धातु, तथा अधि पूर्वक 'आस्' धातु के आधार की ''**कर्म**'' **संज्ञा** होती है।	(i) हरिः **वैकुण्ठम्** अधिशेते। (ii) मुनिः **शिलापट्टम्** अधितिष्ठति (iii) सः **पर्वतम्** अध्यास्ते।
	(इ) **कर्मसंज्ञा**	**अभिनिविशश्च** 1.4.47 (आधार की कर्मसंज्ञा)	'अभि' तथा 'नि' उपसर्ग पूर्वक 'विश्' धातु के आधार की ''**कर्मसंज्ञा**'' होती है।	सन्मार्गम् अभिनिविशते।
	(उ) **कर्मसंज्ञा**	**उपान्वध्याङ्वसः** 1.4.48 (आधार की कर्मसंज्ञा)	उप, अनु, अधि, तथा आङ् उपसर्ग पूर्वक ''वस्'' धातु के आधार की ''**कर्मसंज्ञा**'' होती है।	(i) सेना **ग्रामम्** उपवसति (ii) सेना **पर्वतम्** अनुवसति (iii) सेना **ग्रामम्** अधिवसति (iv) सेना **ग्रामम्** आवसति
	(ऋ) **कर्मसंज्ञा**	**क्रुधद्रुहोरुपसृष्टयोः कर्म** 1.4.38	उपसर्गयुक्त क्रुध, द्रुह् धातुओं के योग में जिसके प्रति कोप किया जाता है, उसकी ''**कर्मसंज्ञा**'' होती है।	(i) बालकम् अभिक्रुध्यति। (ii) **बालकम्** अभिद्रुह्यति
	(ए) **कर्मसंज्ञा**	**कर्तुरीप्सिततमं कर्म** 1.4.49	कर्त्ता को अपनी क्रिया के द्वारा जो अत्यधिक ईप्सित हो, उसकी ''**कर्मसंज्ञा**'' होती है।	बालकः **ग्रामं** गच्छति
	(ओ) **कर्मसंज्ञा**	**तथायुक्तं चाऽनीप्सितम्** 1.4.50	अभीष्टतम के समान क्रिया से युक्त	ग्रामं गच्छन्

क्र.	संज्ञा	संज्ञाविधायक सूत्र	सूत्रार्थ	उदाहरणम्
			होने पर अनभीष्ट की भी ''**कर्मसंज्ञा**'' होती है।	**तृणं** स्पृशति।
	(ऐ) कर्मसंज्ञा	**अकथितञ्च** 1.4.51 **''दुह्याच्पच्दण्ड्रुधिप्रच्छि चिब्रूशासुजिमथ्मुषाम्। कर्मयुक् स्यादकथितं तथा स्यान्नीहृकृष्वहाम्॥**	अकथित अर्थात् अपादानादि के द्वारा न कहे गए कारक की भी ''**कर्मसंज्ञा**'' होती है। दुह् आदि कुल सोलह तथा इनके समान अर्थ वाली धातुओं के योग में ''**कर्मसंज्ञा**'' होती है। ●मुख्य कर्म में ''कर्तुरीप्सिततमं कर्म'' से तथा गौणकर्म में ''अकथितञ्च'' सूत्र से **कर्मसंज्ञा** होती है।	(i) वामनः **बलिं** वसुधां याचते। (ii) **तण्डुलान्** ओदनं पचति (iii) **गर्गान्** शतं दण्डयति (iv) **गां व्रजम्** अवरुणद्धि (v) **माणवकं** पन्थानं पृच्छति (vi) **वृक्षम्** अवचिनोति फलानि। (vii) **माणवकं** धर्मं ब्रूते शास्ति, भाषते, वक्ति, अभिधत्ते वा। (viii) **देवं** शतं जयति। (ix) **क्षीरनिधिं** सुधां मथ्नाति। (x) **देवं** शतं मुष्णाति (xi) देवः **ग्रामम्** अजां नयति, हरति कर्षति वहति
	(औ) कर्मसंज्ञा	**गतिबुद्धिप्रत्यवसानार्थशब्दकर्मा-कर्मकाणामणि कर्त्ता स णौ** 1.4.52	गमनार्थक, ज्ञानार्थक, भक्षणार्थक, तथा शब्दकर्मक, और अकर्मक धातुओं के अण्यन्त अवस्था के कर्त्ता की ण्यन्तावस्था में ''**कर्मसंज्ञा**'' होती है।	बालकः **ग्रामं** गच्छति (अण्यन्त अवस्था) **बालकं** ग्रामं गमयति (ण्यन्त अवस्था)
	(ह) कर्मसंज्ञा	**हृक्रोरन्यतरस्याम्** 1.4.53	'हृ', तथा 'कृ' धातु के अण्यन्त दशा के कर्त्ता की ण्यन्तदशा में विकल्प से ''**कर्मसंज्ञा**'' होती है।	माणवको भारं हरति (अण्यन्त) **माणवकं** भारं हारयति (ण्यन्त) माणवकेन भारं हारयति (ण्यन्त)
44.1	कर्तृसंज्ञा	**स्वतन्त्रः कर्त्ता** 1.4.54	क्रिया की सिद्धि में जो स्वतन्त्ररूपेण अर्थात् प्रमुखतया विवक्षित होता है, वह ''**कर्त्ता**'' **संज्ञक** होता है।	**सा** पचति। यहाँ उक्तकर्त्ता में 'प्रातिपदिकार्थ.....' से प्रथमा हुई।
44.2	कर्तृसंज्ञा	**तत्प्रयोजको हेतुश्च** 1.4.55	स्वतन्त्रतया विवक्षित कारक के प्रेरक की **'कर्त्ता' व 'हेतु' संज्ञायें** होती हैं।	**श्यामेन** देवः कटं कारयति। यहाँ 'श्याम' की 'कर्त्ता' व 'हेतु' दो संज्ञायें हुई।
45.1	निपातसंज्ञा	**प्राग्रीश्वरान्निपाताः** 1.4.56	'अधिरीश्वरे' (पा० 1.4.97) सूत्र पर्यन्त कहे गए शब्दों की **'निपात' संज्ञा** होती है।	
45.2	निपातसंज्ञा	**चादयोऽसत्त्वे** 1.4.57	द्रव्य अर्थ न होने पर 'च' आदि शब्दों की ''**निपात**'' **संज्ञा** होती है।	च, वा, ह आदि।

क्र.	संज्ञा	संज्ञाविधायक सूत्र	सूत्रार्थ	उदाहरणम्
46.	**निपात एवं उपसर्ग संज्ञा**	**प्रादय उपसर्गाः क्रियायोगे** 1.4.58	प्रादिगण में पठित असत्त्वार्थक शब्दों की ''**निपातसंज्ञा**'' होती है, तथा क्रिया के योग में उनकी ''**उपसर्गसंज्ञा**'' भी होती है। उक्त दोनों संज्ञायें होती है।	प्र, परा, अप, सम् अनु, अव, निस्, निर् दुस्, दुर्, वि, आङ्, नि, अधि, अपि, अति, सु, उद्, अभि, प्रति, परि उप। ये प्रादिगण में पठित **22 उपसर्ग** हैं।
47.	**गतिसंज्ञा उपसर्गसंज्ञा और निपातसंज्ञा**	**गतिश्च** 1.4.59	क्रिया के योग में 'प्र' आदि की। ''**गतिसंज्ञा**'' और ''**उपसर्गसंज्ञा**'' ''**निपातसंज्ञा**'' भी होती है।	प्रणीतम् यहाँ 'प्र' की ''गति'' एवं ''उपसर्ग'' दोनों संज्ञायें हैं।
48.1	**गति और निपातसंज्ञा**	**ऊर्यादिच्विडाचश्च** 1.4.60	ऊर्यादि शब्द, च्व्यन्त, और डाजन्त शब्दों की क्रियायोग में ''**गति और निपात**'' संज्ञा होती है।	ऊरीकृत्य शुक्लीकृत्य पटपटाकृत्य
48.2	**गति और निपातसंज्ञा**	**अनुकरणं चानितिपरम्** 1.4.61	'इति' शब्द नही है जिससे परे, ऐसे अनुकरणवाची शब्द की क्रियायोग में ''**गति और निपात**'' संज्ञा होती है।	खाट्कृत्य
48.3	**गति और निपातसंज्ञा**	**आदरानादरयोः सदसती** 1.4.62	आदर और अनादर अर्थों में यथासंख्य 'सत्' तथा 'असत्' शब्दों की ''**गति और निपात**'' संज्ञा होती है।	सत्कृत्य असत्कृत्य
48.4	**गति और निपातसंज्ञा**	**भूषणेऽलम्** 1.4.63	भूषण अर्थ में 'अलम्' शब्द की क्रियायोग में ''**गति तथा निपात**'' संज्ञा होती है।	अलङ्कृत्य
48.5	**गति और निपातसंज्ञा**	**अन्तरपरिग्रहे** 1.4.64	'अपरिग्रह' अर्थ में 'अन्तर्' शब्द की ''**गति और निपात**'' संज्ञा होती है।	अन्तर्हत्य
48.6	**गति और निपातसंज्ञा**	**कणेमनसी श्रद्धाप्रतीघाते** 1.4.65	श्रद्धा के प्रतिघात अर्थ में 'कणे' और 'मनस्' शब्दों की क्रियायोग में ''**गति और निपात**'' संज्ञा होती है।	कणेहत्य मनोहत्य
48.7	**गति व निपातसंज्ञा**	**पुरोऽव्ययम्** 1.4.66	क्रियायोग में '**पुरस्**' अव्यय की ''**गति व निपात**'' संज्ञा होती है।	पुरस्कृत्य (आगे करके)
48.8	**गति तथा निपातसंज्ञा**	**अस्तञ्च** 1.4.67	क्रिया के योग में 'अस्तम्' अव्यय की ''**गति तथा निपात**'' संज्ञा होती है।	अस्तङ्गत्य (अस्त होकर)
48.9	**गति तथा निपातसंज्ञा**	**अच्छ गत्यर्थवदेषु** 1.4.68	गमनार्थक धातु तथा वद् धातु के योग में 'अच्छ' अव्यय की ''**गति तथा निपात**'' संज्ञा होती है।	अच्छगत्य (सामने आकर)
48.10	**गति तथा निपातसंज्ञा**	**अदोऽनुपदेशे** 1.4.69	किसी की कही हुई बात को 'उपदेश' तथा जो स्वयं सोचा जाय, उसे 'अनुपदेश' कहते हैं। 'अनुपदेश' विषय में 'अदः' शब्द क्रियायोग में ''**गति और निपात**'' संज्ञक होता है।	अदःकृत्य (स्वयं विचारकर)

क्र.	संज्ञा	संज्ञाविधायक सूत्र	सूत्रार्थ	उदाहरणम्
48.11	गति तथा निपातसंज्ञा	**तिरोऽन्तर्धौ** 1.4.70	अन्तर्द्धि का अर्थ है–व्यवधान। व्यवधान अर्थ में 'तिरस्' शब्द की क्रियायोग में ''**गति और निपात**'' संज्ञा होती है।	तिरोभूय (छिपकर)
48.12	गति तथा निपातसंज्ञा	**विभाषा कृञि** 1.4.71	छिपने अर्थ में 'तिरः' शब्द की 'कृ' धातु के योग में विकल्प से ''**गतिसंज्ञा**'' और ''**निपातसंज्ञा**'' नित्य होती है।	तिरस्कृत्य तिरःकृत्य तिरःकृत्वा
48.13	गति तथा निपातसंज्ञा	**उपाजेऽन्वाजे** 1.4.72	'उपाजे' तथा 'अन्वाजे' शब्दों की 'कृ' धातु के योग में विकल्प से ''**गतिसंज्ञा**'' और ''**निपातसंज्ञा**'' नित्य होती है।	उपाजेकृत्य उपाजे कृत्वा (निर्बल की सहायता करके) अन्वाजेकृत्य, अन्वाजे कृत्वा (निर्बल की सहायता करके)
48.14	गतिसंज्ञा (विकल्प से) निपातसंज्ञा (नित्य)	**साक्षात्प्रभृतीनि च** 1.4.73	'साक्षात्' इत्यादि शब्दों की 'कृ' धातु के योग में विकल्प से ''**गतिसंज्ञा**'' और नित्य ''**निपातसंज्ञा**'' होती है।	साक्षात्कृत्य साक्षात् कृत्वा मिथ्याकृत्य मिथ्या कृत्वा
48.15	गतिसंज्ञा (विकल्प से) निपातसंज्ञा (नित्य)	**अनत्याधान उरसिमनसी** 1.4.74	उपश्लेषण को 'अत्याधान' कहते हैं। जहाँ चिपकाकर न रखना–यह अर्थ हो तो 'उरसि' तथा 'मनसि' शब्दों की 'कृ' धातु के योग में विकल्प से ''**गतिसंज्ञा**'' तथा नित्य ''**निपातसंज्ञा**'' होती है।	उरसिकृत्य उरसि कृत्वा मनसिकृत्य मनसि कृत्वा
48.16	गति और निपातसंज्ञा	**मध्ये पदे निवचने च** 1.4.75	मध्ये, पदे तथा निवचने शब्दों की 'कृ' धातु के योग में अनत्याधान विषय में ''**गति और निपातसंज्ञा**'' विकल्प से होती है।	मध्ये कृत्य मध्ये कृत्वा पदे कृत्य पदे कृत्वा निवचने कृत्य निवचने कृत्वा
48.17	गति और निपातसंज्ञा	**नित्यं हस्ते पाणावुपयमने** 1.4.76	'उपयमन' का अर्थ है–विवाह 'हस्ते' तथा 'पाणौ' शब्दों की विवाह के विषय में 'कृ' के योग में नित्य ''**गति और निपात संज्ञा**'' होती है।	हस्तेकृत्य पाणौकृत्य (विवाह करके)
48.18	गति तथा निपातसंज्ञा	**प्राध्वं बन्धने** 1.4.77	आनुकूल्य अर्थ में बन्धन के विषय में 'कृ' के योग में 'प्राध्वम्' की नित्य ''**गति तथा निपातसंज्ञा**'' होती है।	प्राध्वङ्कृत्य
48.19	गति तथा निपात संज्ञा	**जीविकोपनिषदावौपम्ये** 1.4.78	जीविका और उपनिषद् शब्दों की उपमा के विषय में 'कृ' के योग में नित्य ''**गति और निपातसंज्ञा**'' होती है।	जीविकाकृत्य (जीविका के समान करके) उपनिषत्कृत्य (रहस्य के समान करके)
49.1	कर्मप्रवचनीय	**कर्मप्रवचनीयाः** 1.4.82	● यह संज्ञासूत्र एवं अधिकारसूत्र दोनों	

क्र.	संज्ञा	संज्ञाविधायक सूत्र	सूत्रार्थ	उदाहरणम्
			है। इस सूत्र से आगे जिनका कथन किया जायेगा, उनकी '**कर्मप्रवचनीय**' संज्ञा जाननी चाहिए। ● 'विभाषा कृञि' (1.4.97) इस सूत्र तक 'कर्मप्रवचनीयसंज्ञा' का अधिकार जानना चाहिए। ● कर्म अर्थात् क्रिया के द्वारा निरूपित सम्बन्ध विशेष को कहने के कारण इन्हें 'कर्मप्रवचनीय' कहा जाता है। ● ये उपसर्ग से भिन्न होते हैं, परन्तु उपसर्गों की तरह ये क्रिया से पूर्व आते हैं। ● उपसर्गों का स्वतन्त्र प्रयोग नहीं होता है, परन्तु कर्मप्रवचनीय का स्वतन्त्र प्रयोग होता है। इनके योग में द्वितीया आदि विभक्तियाँ होती हैं।	
49.2	**कर्मप्रवचनीय तथा निपातसंज्ञा**	**अनुर्लक्षणे** 1.4.83	लक्षण अर्थ में 'अनु' निपात की '**कर्मप्रवचनीयसंज्ञा**' होती है।	जपम् अनु प्रावर्षत्।
49.3	**कर्मप्रवचनीय और निपातसंज्ञा**	**तृतीयार्थे** 1.4.84	तृतीया का अर्थ विवक्षित होने पर 'अनु' की ''**कर्मप्रवचनीय और निपात**'' संज्ञा होती है।	नदीमन्ववसिता सेना।
49.4	**कर्मप्रवचनीय और निपातसंज्ञा**	**हीने** 1.4.85	'हीन' अर्थ द्योतित होने पर 'अनु' शब्द की '**कर्मप्रवचनीय और निपात**' संज्ञा होती है।	(i) अनुशाकटायनं वैयाकरणाः। (ii) अनु हरिं सुराः।
49.5	**कर्मप्रवचनीय तथा निपातसंज्ञा**	**उपोऽधिके च** 1.4.86	अधिक तथा न्यून अर्थों में 'उप' शब्द की ''**कर्मप्रवचनीय तथा निपात**'' संज्ञा होती है।	(i) उपशाकटायनं वैयाकरणाः (ii) उप सुरेषु हरिः
49.6	**कर्मप्रवचनीय तथा निपातसंज्ञा**	**अपपरी वर्जने** 1.4.87	वर्जन अर्थ के विषय में 'अप' और 'परि' शब्दों की ''**कर्मप्रवचनीय तथा निपात संज्ञा**'' होती है।	(i) अप हरेः संसारः (ii) परि हरेः संसारः (हरि से बिना संसार)
49.7	**कर्मप्रवचनीय तथा निपातसंज्ञा**	**आङ्मर्यादावचने** 1.4.88	'मर्यादा' और 'अभिविधि' अर्थों में 'आङ्' की ''कर्मप्रवचनीय तथा निपात'' संज्ञा होती है।	आ मुक्तेः संसारः (मर्यादा) आ सकलाद् ब्रह्म (अभिविधि)
49.8	**कर्मप्रवचनीय तथा निपातसंज्ञा**	**लक्षणेत्थम्भूताख्यान-भागवीप्सासु प्रतिपर्यनवः** 1.4.89	लक्षण, इत्थम्भूताख्यान, भाग और वीप्सा अर्थों में प्रति, परि तथा अनु की ''**कर्मप्रवचनीय तथा निपात**'' संज्ञा होती है।	(i) लक्षण अर्थ में– वृक्षं प्रति परि अनु वा विद्योतते विद्युत् (ii) इत्थम्भूताख्यान अर्थ में– भक्तः विष्णुं प्रति परि अनु वा

क्र.	संज्ञा	संज्ञाविधायक सूत्र	सूत्रार्थ	उदाहरणम्
				(iii) भाग अर्थ में– लक्ष्मीः हरिं प्रति परि अनु वा (iv) 'वीप्सा' अर्थ में– वृक्षं वृक्षं प्रति परि अनु वा सिञ्चति।
49.9	**कर्मप्रवचनीय तथा निपातसंज्ञा**	**अभिरभागे** 1.4.91	'भाग' अर्थ को छोड़कर लक्षणादि पूर्वोक्त अर्थों में 'अभि' की **''कर्मप्रवचनीय तथा निपात''** संज्ञा होती है।	(i) लक्षण-हरिम् अभिवर्तते। (ii) इत्थम्भूताख्यान-भक्तः **हरिम्** अभि (iii) वीप्सा-देवं देवम् अभिसिञ्चति
49.10	**कर्मप्रवचनीय तथा निपातसंज्ञा**	**प्रतिः प्रतिनिधिप्रतिदानयोः** 1.4.92	प्रतिनिधि और प्रतिदान अर्थ में 'प्रति' शब्द की **''कर्मप्रवचनीय तथा निपातसंज्ञा''** होती है।	(i) प्रतिनिधि अर्थ में– प्रद्युम्नः कृष्णात् प्रति। (ii) प्रतिदान अर्थ में– तिलेभ्यः प्रतियच्छति माषान्
49.11	**कर्मप्रवचनीय तथा निपातसंज्ञा**	**अधिपरी अनर्थकौ** 1.4.93	'अधि' तथा 'परि' शब्दों की अन्य अर्थ के द्योतक न होने पर **''कर्मप्रवचनीय तथा निपात''** संज्ञा होती है।	(i) कुतः अध्यागच्छति (ii) कुतः पर्यागच्छति।
49.12	**कर्मप्रवचनीय तथा निपातसंज्ञा**	**सुः पूजायाम्** 1.4.94	'पूजा' अर्थ में 'सु' की **कर्मप्रवचनीय तथा निपातसंज्ञा** होती है।	सुसिक्तं भवता।
49.13	**कर्मप्रवचनीय तथा निपातसंज्ञा**	**अतिरतिक्रमणे च** 1.4.95	'अतिक्रमण' अर्थात् उल्लंघन अर्थ और पूजा अर्थ में 'अति' की **''कर्मप्रवचनीय और निपात''** संज्ञा होती है।	अति देवान् कृष्णः।
49.14	**कर्मप्रवचनीय तथा निपातसंज्ञा**	**अपिः पदार्थसम्भावनान्ववसर्ग-गर्हासमुच्चयेषु** 1.4.96	पदार्थ, सम्भावन, कामचार, निन्दा, तथा समुच्चय-इन अर्थों में 'अपि' की **''कर्मप्रवचनीय तथा निपात''** संज्ञा होती है।	(i) पदार्थ सर्पिषः अपि स्यात्। (ii) सम्भावन– अपि स्तुयात् विष्णुम् (iii) अन्ववसर्ग– अपि स्तुहि (v) गर्हा–धिक् देवदत्तम् अपि स्तुयात् वृषलम् (v) समुच्चय– अपि सिञ्च, अपि स्तुहि।
49.15	**कर्मप्रवचनीय और निपातसंज्ञा**	**अधिरीश्वरे** 1.4.97	'ईश्वर' अर्थात् स्वस्वामिभाव अर्थ में 'अधि' की **''कर्मप्रवचनीय और निपात''** संज्ञा होती है।	(i) अधि पाञ्चालेषु ब्रह्मदत्तः। (iii) उप परार्धे हरेर्गुणाः।

क्र.	संज्ञा	संज्ञाविधायक सूत्र	सूत्रार्थ	उदाहरणम्
49.16	**कर्मप्रवचनीय और निपातसंज्ञा**	**विभाषा कृञि** 1.4.97	'अधि' शब्द की 'कृ' धातु के परे विकल्प से **'कर्मप्रवचनीय और निपात'** संज्ञा होती है।	यदत्र माम् अधिकरिष्यति।
50.	**परस्मैपदसंज्ञा**	**लः परस्मैपदम्** 1.4.98	धातु से विहित 'ल्' के स्थान पर होने वाला आदेश ''**परस्मैपद**'' संज्ञक होता है। अर्थात् 'तिप्' से लेकर ''मस्'' पर्यन्त नौ प्रत्ययों, शतृ तथा क्वसु–इन प्रत्ययों की ''**परस्मैपद संज्ञा**'' होती है।	तिप्, तस्, झि सिप्, थस्, थ मिप्, वस्, मस्
51.	**आत्मनेपद**	**तङानावात्मनेपदम्** 1.4.99	'त' से लेकर 'महिङ्' पर्यन्त नौ प्रत्ययों, शानच् तथा कानच् इन प्रत्ययों की ''**आत्मनेपद**'' संज्ञा होती है।	त, आताम् झ थास्, आथाम्, ध्वम् इट्, वहि, महिङ्
52.	**प्रथम, मध्यम तथा उत्तमपुरुष संज्ञा**	**तिङस्त्रीणि त्रीणि प्रथममध्यमोत्तमाः** 1.4.100	'तिङ्' के आत्मनेपद और परस्मैपद दोनों पदों के तीन-तीन अर्थात् त्रिक की क्रमशः ''**प्रथम, मध्यम तथा उत्तम**'' संज्ञा होती है। इसी तरह आत्मनेपद में भी।	प्र. पु.-तिप् तस् झि म.पु.-सिप् थस् थ उ.पु.-मिप् वस् मस्
53.1	**एकवचन, द्विवचन बहुवचन संज्ञा**	**तान्येकवचनद्विवचन बहुवचनान्येकशः** 1.4.101	उन तिङ् प्रत्ययों के प्रत्येक त्रिक अर्थात् तीन-तीन की एक-एक करके क्रमशः **एकवचन, द्विवचन** तथा **बहुवचन संज्ञा** होती है।	(i) 'तिप्' की एकवचन संज्ञा (ii) 'तस्' की द्विवचन संज्ञा (iii) 'झि' की बहुवचन संज्ञा होती है। इसी प्रकार मध्यम तथा उत्तम पुरुष की भी होगी।
53.2	**एकवचन द्विवचन एवं बहुवचन संज्ञा**	**सुपः** 1.4.102	'सुप्' विभक्ति के प्रत्येक त्रिक् अर्थात् तीन-तीन की एक-एक करके क्रमशः **एकवचन, द्विवचन, बहुवचन** संज्ञा होती है। 'सुप्' के द्वारा 'सु' आदि 21 प्रत्ययों का ग्रहण होता है।	सु एकवचन औ-द्विवचन जस्-बहुवचन आदि।
54.1	**विभक्तिसंज्ञा**	**विभक्तिश्च** 1.4.103	सुप् और तिङ् के तीन-तीन की ''**विभक्तिसंज्ञा**'' होती है।	देवाः अपठत्।
54.2	**विभक्तिसंज्ञा**	**प्राग्दिशो विभक्तिः** 5.3.1	''दिक्शब्देभ्यः सप्तमी'' (पा० 5.3.27) इस सूत्र से पहले जो जो प्रत्यय कहें जायेंगे, उन उन की ''**विभक्ति संज्ञा**'' होती है।	
55.	**संहितासंज्ञा**	**परः सन्निकर्षः संहिता** 1.4.108	वर्णों के अत्यधिक सामीप्य की ''**संहिता**'' संज्ञा होती है।	मधु अपि = मध्वपि रमा ईशः = रमेशः
56.	**अवसानसंज्ञा**	**विरामोऽवसानम्** 1.4.109	अन्तिम वर्ण के पश्चात् उच्चारण	राम सु–रामस्

क्र.	संज्ञा	संज्ञाविधायक सूत्र	सूत्रार्थ	उदाहरणम्
			के अभाव की **'अवसानसंज्ञा'** होती है।	राम–रु–रामर् इस दशा में 'र्' की अवसान संज्ञा।
57.	**समाससंज्ञा**	**प्राक्कडारात् समासः** 2.1.3	'कडाराः कर्मधारये' (2.2.38) सूत्र से पूर्व समाससंज्ञा का अधिकार जानना चाहिए।	–
58.	**अव्ययीभाव**	**अव्ययीभावः** 2.1.5	''तत्पुरुषः'' (2.1.22) सूत्र तक सभी सूत्रों के द्वारा कहे गए समास की **'अव्ययीभाव' संज्ञा** होती है।	अधिहरि अध्यात्मम् पञ्चगङ्गम्
59.1	**तत्पुरुष**	**तत्पुरुषः** 2.1.22	यह अधिकार एवं संज्ञासूत्र दोनों है। यहाँ से लेकर ''शेषो बहुव्रीहिः (2.2.23) के पहले तक जो समास कहा जाएगा, उसकी **''तत्पुरुष'' संज्ञा** होगी।	राजपुरुषः
59.2	**तत्पुरुष**	**द्विगुश्च** 2.1.23	द्विगुसमास की भी ''तत्पुरुषसंज्ञा'' होती है।	पञ्चराजम्
60.	**द्विगु**	**संख्यापूर्वो द्विगुः** 2.1.52	यदि पूर्वपद संख्यावाचक हो तो उसकी **''द्विगु'' संज्ञा** होती है।	पञ्चकपालः
61.	**तत्पुरुष**	**नञ्** 2.2.6	'नञ्' अव्यय समर्थ सुबन्त के साथ विकल्प से समास को प्राप्त होता है, और वह समास **''तत्पुरुषसंज्ञक''** होता है।	न ब्राह्मणः अब्राह्मणः
62.	**बहुव्रीहि**	**शेषो बहुव्रीहिः** 2.2.23	शेष जो समास, उसकी **'बहुव्रीहि'** संज्ञा होती है।	वीणापाणिः
63.	**आमन्त्रितसंज्ञा**	**साऽऽमन्त्रितम्** 2.3.48	सम्बोधन में जो प्रथमा होती है, उसकी **''आमन्त्रितसंज्ञा''** होती है।	अग्ने।
64.	**सम्बुद्धिसंज्ञा**	**एकवचनं सम्बुद्धिः** 2.3.49	आमन्त्रितसंज्ञक प्रथमाविभक्ति के एकवचन की **''सम्बुद्धिसंज्ञा''** होती है।	साधो! हरे!
65.	**प्रत्ययसंज्ञा**	**प्रत्ययः** 3.1.1	पञ्चम अध्याय की समाप्ति तक सुप्, क्यच्, सन् आदि जिन शब्दस्वरूपों का विधान किया गया है, उनकी **''प्रत्यय'' संज्ञा** होगी।	कर्त्तव्यम् करणीयम् यहाँ 'तव्यत्' एवं 'अनीयर्' की ''प्रत्ययसंज्ञा'' है।
66.	**कृत्संज्ञा**	**कृदतिङ्** 3.1.93	धात्वाधिकार में 'तिङ्' से भिन्न प्रत्यय की **'कृत्' संज्ञा** होती है।	कृ+तृच् = कर्त्ता कृ + ण्वुल् = कारकः
67.	**कृत्यसंज्ञा**	**कृत्याः** 3.1.95	इस सूत्र से लेकर ''ण्वुल्तृचौ'' (3.1.133) पर्यन्त जितने प्रत्ययों का विधान किया गया है, उनकी **''कृत्य'' संज्ञा** होती	तव्यत्, तव्य अनीयर्, यत् क्यप्, ण्यत् केलिमर् – ये सात

क्र.	संज्ञा	संज्ञाविधायक सूत्र	सूत्रार्थ	उदाहरणम्
			है। अतः 'कृत्य' के साथ 'कृत्' संज्ञा भी होती है।	प्रत्यय कृत्यसंज्ञक हैं।
68.	सत्संज्ञा	**तौ सत्** 3.2.127	शतृ व शानच् – इनकी ''**सत्संज्ञा**'' होती है।	करिष्यन् करिष्यमाणः
69.	सार्वधातुक संज्ञा	**तिङ्शित्सार्वधातुकम्** 3.4.113	धातु के अधिकार में पठित तिङ् व शित् प्रत्ययों की ''**सार्वधातुकसंज्ञा**'' होती है। 'तिङ्' का अर्थ है–तिप् आदि 18 प्रत्यय। जिसका 'श्' इत् है, उसे 'शित्' कहते हैं, जैसे–शप्, श्यन्, श्नु, श्ना आदि।	भू शप् ति भो अति भवति।
70.1	आर्धधातुक संज्ञा	**आर्धधातुकं शेषः** 3.4.114	तिङ् व शित् से अतिरिक्त प्रत्यय जो धात्वाधिकार में पठित हैं, उनकी '**आर्धधातुक संज्ञा**' होती है। आर्धधातुकसंज्ञा के दो कार्य हैं– (i) आर्धधातुकस्येड्वलादेः'' से इट् का आगम (ii) ''सार्वधातुकार्धधातुकयोः'' से गुण	तृच्, तुमुन्, तव्यत् आदि की आर्धधातुक संज्ञा। जैसे– कर्त्ता, पठितुम् आदि।
70.2	आर्धधातुक संज्ञा	**लिट् च** 3.4.115	लिट् के स्थान पर विहित आदेश तिङ् की ''**आर्धधातुक**'' संज्ञा होती है।	पेचिथ। जग्ले।
70.3	आर्धधातुक संज्ञा	**लिङाशिषि** 3.4.116	आशीर्वाद में लिङ् के स्थान पर विहित 'तिङ्' की ''**आर्धधातुक**'' संज्ञा होती है।	भूयात्
70.4	आर्धधातुक संज्ञा	**छन्दस्युभयथा** 3.4.117	वेद में सार्वधातुक व आर्धधातुक दोनों संज्ञायें होती हैं। अर्थात् क्वचित् आर्धधातुक के स्थान पर सार्वधातुक तथा सार्वधातुक के स्थान पर आर्धधातुक संज्ञा देखी जाती है।	वर्धन्तु (ऋ. 7.99.7) उपस्थेयाम (ऋ. 7.15.5)
71.	तद्धित	**तद्धिताः** 4.1.76	यह अधिकारसूत्र है। यहाँ से लेकर पञ्चम अध्याय की समाप्ति तक जिस जिस प्रत्यय का विधान किया जाएगा, उस उसकी **तद्धितसंज्ञा** होती है।	
72.	गोत्रसंज्ञा	**अपत्यं पौत्रप्रभृति गोत्रम्** 4.1.162	पौत्र अर्थात् तीसरी पीढ़ी तथा उससे आगे सभी अपत्य की ''**गोत्र संज्ञा**'' होती है।	

क्र.	संज्ञा	संज्ञाविधायक सूत्र	सूत्रार्थ	उदाहरणम्
73.	युवासंज्ञा	**जीवति तु वंश्ये युवा** 4.1.163	वंश में होने वाले पिता, पितामह आदि के जीवित रहते पौत्र आदि के अपत्य अर्थात् चतुर्थ पीढ़ी व उससे आगे की **''युवा संज्ञा''** होती है।	
74.	तद्राजसंज्ञा	**ते तद्राजाः** 4.1.174	'जनपदशब्दात् क्षत्रियादञ्' (4.1.168) सूत्र से विहित 'अञ्' प्रत्यय से लेकर यहाँ तक जिन जिन प्रत्ययों का विधान किया गया है, उन सभी की **''तद्राज''** संज्ञा होती है। 'तद्राज' संज्ञा का फल है– बहुवचन में प्रत्यय का लुक् हो जाता है।	अञ्, अण् ङ्यण्, ण्य तथा ञ्यङ् प्रत्ययों की ''तद्राज'' संज्ञा होती है।
75.	अभ्याससंज्ञा	**पूर्वोऽभ्यासः** 6.1.4	'एकाचो द्वे प्रथमस्य (6.1.1) के प्रकरण में पूर्व की **अभ्याससंज्ञा** होती है।	पच् पच् अ। प पच् अ = पपाच (लिट् प्र. पु. एक.)
76.	अभ्यस्तसंज्ञा	**उभे अभ्यस्तम्** 6.1.5	षष्ठाध्याय के द्वित्वप्रकरण में द्वित्व के द्वारा जिन दो शब्दस्वरूपों का विधान है, उन दोनों की समुदित रूप से **''अभ्यस्तसंज्ञा''** होती है।	द द् अत् ददत् सु ददत्।
77.	आम्रेडितसंज्ञा	**तस्य परमाम्रेडितम्** 8.1.2	द्वित्व किये हुए के पर वाले शब्द की **'आम्रेडितसंज्ञा'** होती है।	चौर-चौर भुङ्क्ते-भुङ्क्ते
78.	कर्मधारयसंज्ञा	**तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः** 1.2.42	जिस समास में पूर्वपद और उत्तरपद एक ही विभक्ति के हों, उस समास की **'कर्मधारयसंज्ञा'** होती है।	कृष्णः सर्पः = कृष्णसर्पः

संज्ञा विधायक सूत्रों की संख्या

संज्ञा	सूत्र/वार्तिकों की संख्या
➢ **'प्रातिपदिक'** संज्ञाविधायकसूत्र	- 02
➢ **'पद'** संज्ञाविधायकसूत्र	- 04
➢ **'इत्'** संज्ञाविधायकसूत्र	- 06
➢ **'इत्संज्ञा'** निषेधकसूत्र	- 01 **न विभक्तौ तुस्माः**

संज्ञा	सूत्र/वार्तिकों की संख्या
➢ **'आर्धधातुक'** संज्ञाविधायकसूत्र	- 04
➢ **'अव्यय'** संज्ञाविधायकसूत्र	- 05
➢ **'प्रगृह्य'** संज्ञाविधायकसूत्र	- 08
➢ **'धातु'** संज्ञाविधायकसूत्र	- 02
➢ **'करण'** संज्ञा विधायकसूत्र	- 02

संज्ञा		सूत्र/वार्तिकों की संख्या
➢ '**कर्मसंज्ञा**' विधायकसूत्र	-	9+02(वा0)
➢ '**सम्प्रदान**' संज्ञाविधायकसूत्र	-	10+01(वा0)
➢ '**अपादान**' संज्ञाविधायकसूत्र	-	8+01(वा0)
➢ '**कर्तृ**' संज्ञाविधायकसूत्र	-	02
➢ '**षट्**' संज्ञाविधायकसूत्र	-	02
➢ '**सर्वनामस्थान**' संज्ञाविधायकसूत्र	-	02
➢ '**वृद्ध**' संज्ञाविधायकसूत्र	-	03
➢ '**उपसर्जन**' संज्ञाविधायकसूत्र	-	02
➢ '**नदी**' संज्ञाविधायकसूत्र	-	03+01
➢ '**नदीसंज्ञा**' निषेधकसूत्र	-	01 '**नेयङुवङ्स्थानावस्त्री**
➢ '**घि**' संज्ञाविधायकसूत्र	-	03
➢ '**गुरु**' संज्ञाविधायकसूत्र	-	02
➢ '**भ**' संज्ञाविधायकसूत्र	-	03
➢ '**सवर्णसंज्ञा**' विधायकसूत्र हैं	-	01+01 (वा0)
➢ '**विभक्तिसंज्ञा**' विधायकसूत्र हैं	-	02
➢ कितने प्रत्ययों की '**कृत्यसंज्ञा**' होती है	-	07

(तव्यत् , तव्य, अनीयर् , यत् , क्यप् , ण्यत् ,केलिमर्)

➢ कितने प्रत्ययों की '**सत्संज्ञा**' होती है - 02 **(शतृ+शानच्)**

➢ कितने प्रत्ययों की '**घ**' **संज्ञा** होती है - 02 **(तरप् + तमप्)**

➢ कितने प्रत्ययों की '**निष्ठा**' **संज्ञा** होती है - 02 **(क्त + क्तवतु)**

➢ निम्नलिखित संज्ञाओं का विधान केवल एक-एक सूत्र में किया गया है-
गुण,वृद्धि, लोप, सार्वधातुक, टि, उपधा, प्रत्याहार, अपृक्त, अङ्ग, अधिकरण, परस्मैपद, आत्मनेपद, संहिता, अवसान, संयोग, अनुनासिक, घु, घ, संख्या, निष्ठा, सत् , सर्वनाम, विभाषा, सम्प्रसारण, उदात्त, अनुदात्त, स्वरित, लघु, सम्बुद्धि, अभ्यास, आम्रेडितसंज्ञा आदि।

वर्णों के भेद

क्र.	वर्ण	प्रकार (भेद)	विवरणम्
01	अ	18	अ-इ-उ-ऋ एषां
02	इ	18	वर्णानां प्रत्येकं
03	उ	18	अष्टादश भेदाः।
04	ऋ	18	
05	ऌ	12	ऌ वर्णस्य द्वादश, तस्य दीर्घाभावात्
06	ऋ + ऌ	18+12=30	ऋकारस्त्रिंशतः। एवं ऌकारोऽपि
07	ए	12	एचामपि द्वादश,
08	ओ	12	तेषां ह्रस्वाभावात् ।
09	ऐ	12	
10	औ	12	
11	य	02	अनुनासिकानुना-
12	व	02	सिकभेदेन यवला
13	ल	02	द्विधा

1. **सवर्णसंज्ञा विधायक सूत्र- 'तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम्'**
2. **सवर्णसंज्ञा वार्तिक- 'ऋऌवर्णयोर्मिथः सावर्ण्यं वाच्यम्**
3. **सवर्णियों का बोधक सूत्र- 'अणुदित्सवर्णस्य चाऽप्रत्ययः'**

व्याकरण-पदावली-तालिका

क्र.	व्याकरणपदावली	प्रकार	विवरणम्
1.	**वचन**	03	एकवचन, द्विवचन, बहुवचन
2.	**लिङ्ग**	03	पुंलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग, नपुंसकलिङ्ग
3.	**पुरुष**	03	प्रथमपुरुष, मध्यमपुरुष, उत्तमपुरुष
4.	**वाच्य**	03	कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य, भाववाच्य
5.	**क्रिया**	02	सकर्मक, अकर्मक
6.	**धातु-पद**	02	परस्मैपद, आत्मनेपद, (उभयपद)
7.	**धातु (इट् व्यवस्था)**	02	सेट्, अनिट्, (वेट्)
8.	**कारक**	06	कर्त्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान अपादान, अधिकरण।
9.	**विभक्ति**	07	प्रथमा (सम्बोधन), द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी षष्ठी, सप्तमी।
10.	**लकार**	10	लट्, लिट्, लुट्, लृट्, लेट्, लोट्, लङ्, लिङ्, लृङ्, लुङ्। ('लेट्' का प्रयोग प्रायशः वेदों में)

क्र.	व्याकरणपदावली	प्रकार	विवरणम्
11.	**धातु-गण**	10	भ्वादि, अदादि, जुहोत्यादि, दिवादि, स्वादि, तुदादि, रुधादि, तनादि, क्र्यादि, चुरादिगण
12.	**सूत्र**	06	संज्ञा, परिभाषा, विधि, नियम, अतिदेश, अधिकार।
13.	**सन्धि**	05	स्वर (अच्) व्यञ्जन (हल्), विसर्ग, स्वादि, प्रकृतिभाव।
14.	**समास**	05	केवल समास (सुप्सुपा), अव्ययीभाव, तत्पुरुष, द्वन्द्व, बहुव्रीहि।
15.	**प्रत्यय**	05	सुप्, तिङ्, कृत्, तद्धित, स्त्रीप्रत्यय।
16.	**सुप्प्रत्यय**	21	सु औ जस्, अम् औट् शस्, टा भ्याम् भिस्, ङे भ्याम् भ्यस्, ङसि भ्याम् भ्यस्, ङस् ओस् आम्, ङि ओस् सुप्
17.	**तिङ्प्रत्यय**	18	**परस्मैपद-9** तिप् तस् झि, सिप् थस् थ, मिप् वस् मस् **आत्मनेपद-9** त आताम् झ, थास् आथाम् ध्वम्, इट् वहि महिङ्
18.	**स्त्रीप्रत्यय**	08	चाप्, टाप्, डाप्, ङीप्, ङीष्, ङीन्, ऊङ्, ति।
19.1	**पद (यास्क के अनुसार)**	04	नाम, आख्यात, उपसर्ग, निपात।
19.2	**पद (पाणिनि के अनुसार)**	02	सुबन्त, तिङन्त।
20.	**प्रयत्न**	02	आभ्यन्तर, बाह्य
21.	**आभ्यन्तर प्रयत्न**	05	स्पृष्ट, ईषत्स्पृष्ट, विवृत, ईषत्विवृत, संवृत।
22.	**बाह्यप्रयत्न**	11	विवार, संवार, श्वास, नाद, घोष, अघोष, अल्पप्राण, महाप्राण, उदात्त, अनुदात्त, स्वरित।
23.	**स्पृष्टवर्ण (स्पर्शवर्ण)**	25	क से म तक
24.	**अन्तःस्थवर्ण**	04	य् व्, र्, ल्।
25	**ऊष्मवर्ण**	04	श्, ष्, स्, ह्।
26	**व्यञ्जन (हल्)**	33	स्पृष्ट + अन्तःस्थ + ऊष्मवर्ण
27.	**अल्पप्राण वर्ण**	19	क, ग, ङ, च, ज, ञ, ट, ड, ण, त, द, न, प, ब, म, य, व, र, ल।
28.	**महाप्राणवर्ण**	14	ख, घ, छ, झ, ठ, ढ, थ, ध, फ, भ, श, ष, स, ह।
29.	**स्वर (अच्)**	09	अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ।
30.	**मूलस्वर (ह्रस्वस्वर)**	05	अ, इ, उ, ऋ, लृ।
31.	**दीर्घस्वर (संयुक्तस्वर)**	04	ए, ओ, ऐ, औ
32.	**घोषवर्ण**	20	ह, य, व, र, ल, ञ, म, ङ, ण, न, झ, भ, घ, ढ, ध, ज, ब, ग, ड, द
33.	**अघोषवर्ण**	13	ख, फ, छ, ठ, थ, च, ट, त, क, प, श, ष, स।
34.	**अनुनासिक (पञ्चमाक्षर)**	05	ङ, ञ, ण, न, म।
35.	**जिह्वामूलीय**	02	ᳵक ᳵख
36.	**उपध्मानीय**	02	ᳵप ᳵफ
37.	**पाणिनीय पञ्चाङ्गव्याकरण**	05	सूत्रपाठ, गणपाठ, उणादिपाठ, धातुपाठ लिङ्गानुशासनम्
38.	**उच्चारणस्थान**	08	शिरः, कण्ठः, तालु, उरः, जिह्वामूलम्, दन्ताः, नासिका, ओष्ठ, (पा. शि.)
39.	**माहेश्वरसूत्र**	14	अइउण् से हल् तक।
40.	**प्रत्याहार**	42/43	अण्, अक्, इक् यण् आदि।

1. संज्ञागङ्गा (भाग-एक)

1. 'नत्वा सरस्वतीं देवीं शुद्धां गुण्यां करोम्यहम्' यह किस ग्रन्थ का मङ्गलाचरण है–
(अ) सारसिद्धान्तकौमुदी (इ) मध्यसिद्धान्तकौमुदी
(उ) लघुसिद्धान्तकौमुदी (ऋ) ऋजुसिद्धान्तकौमुदी

2. ''पाणिनीयप्रवेशाय लघुसिद्धान्तकौमुदीम्'' यह कथन किसका है?
(अ) भट्टोजिदीक्षित (इ) वरदराज
(उ) कात्यायन (ऋ) पतञ्जलि

3. वरदराज ने लघुसिद्धान्तकौमुदी के मङ्गलाचरण में किस देवता की स्तुति की है ?
(अ) शिव की (इ) विष्णु की
(उ) लक्ष्मी की (ऋ) सरस्वती की

4. मङ्गलाचरण कितने प्रकार का होता है–
(अ) 5 (इ) 4
(उ) 6 (ऋ) 3

5. लघुसिद्धान्तकौमुदी में किस प्रकार का मङ्गलाचरण किया गया है–
(अ) नमस्कारात्मक (इ) वस्तुनिर्देशात्मक
(उ) उपर्युक्त दोनों (ऋ) आशीर्वादात्मक

6. माहेश्वर सूत्रों (प्रत्याहार सूत्रों) की सङ्ख्या है–
(अ) 14 (इ) 16
(उ) 18 (ऋ) 15

7. 'अण्' आदि प्रत्याहारों की सिद्धि के लिए पाणिनीय-व्याकरण में कितने सूत्रों का प्रयोग हुआ है?
(अ) लगभग 4000 (इ) केवल एक
(उ) केवल 14 (ऋ) केवल 43

8. पाणिनि को चतुर्दश 'प्रत्याहार सूत्र' किससे प्राप्त हुए?
(अ) शिव (इ) ब्रह्मा
(उ) सरस्वती (ऋ) वृहस्पति

9. 'अइउण्' आदि सूत्रों का मुख्य प्रयोजन है–
(अ) धातुसिद्धि (इ) रूपसिद्धि
(उ) अण् आदि प्रत्याहारों की सिद्धि
(ऋ) केवल उच्चारणार्थ

10. चतुर्दश माहेश्वर सूत्रों में स्थित अन्त्य वर्ण की संज्ञा होती है–
(अ) लोपसंज्ञा (इ) इत् संज्ञा
(उ) हलन्त संज्ञा (ऋ) कोई संज्ञा नहीं

11. 'हयवरट्'- आदि सूत्रों के 'हकारादि' में स्थित 'अकार' का क्या प्रयोजन है?
(अ) उच्चारणार्थ (इ) दर्शनार्थ
(उ) मनोरञ्जनार्थ (ऋ) लेखनार्थ

12. 'लण्' सूत्र में पठित 'अकार' है–
(अ) प्लुतसंज्ञक (इ) इत्संज्ञक
(उ) प्रगृह्यसंज्ञक (ऋ) गुणसंज्ञक

13. भगवान् शंकर के डमरू से निकलकर पाणिनि को कितने सूत्र प्राप्त हुए?
(अ) 18 (इ) 14
(उ) 16 (ऋ) 20

14. 'अइउण्' आदि सूत्रों का नाम नहीं है–
(अ) चतुर्दश सूत्र (वर्णसमाम्नाय सूत्र)
(इ) शिवसूत्र (माहेश्वरसूत्र)
(उ) प्रत्याहार सूत्र (अक्षरसमाम्नाय)
(ऋ) धातु सूत्र

15. व्याकरणशास्त्र में स्वरों को कहते हैं–
(अ) हल् (इ) अच्
(उ) अल् (ऋ) इनमें से कोई नहीं

16. व्याकरणशास्त्र में व्यञ्जनवर्णों को कहते हैं–
(अ) अच् (इ) आगम
(उ) हल् (ऋ) उपदेश

17. हल् अक्षरों की इत्संज्ञा किस सूत्र से होती है–
(अ) आदिरन्त्येन सहेता (इ) हलन्त्यम्
(उ) उपदेशेऽजनुनासिक इत् (ऋ) तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम्

उत्तरमाला - 1. (उ), 2. (इ), 3. (ऋ), 4. (ऋ), 5. (उ), 6. (अ), 7. (उ) 8. (अ), 9. (उ) 10. (इ), 11. (अ), 12. (इ), 13. (इ), 14. (ऋ),15.(इ) 16. (उ), 17. (इ)

18. 'हलन्त्यम्' सूत्र किन वर्णों की इत्संज्ञा करता है–
(अ) अच् (स्वरों) की
(इ) स्वर युक्त हल् वर्णों की
(उ) अच् और हल् दोनों की
(ऋ) अन्तिम हल् वर्णों की

19. पाणिनि, कात्यायन और पतञ्जलि के प्रथम उच्चारण को क्या कहते हैं–
(अ) आगम (इ) आदेश
(उ) उपदेश (ऋ) लोप

20. 'उपदेश' के अन्तर्गत आते हैं–
(अ) 'भू' आदि धातु पाठ एवं 'अइउण्' (अष्टाध्यायी) सूत्रपाठ
(इ) उणादिसूत्र, गणपाठ एवं लिङ्गानुशासन
(उ) आगम, प्रत्यय एवं आदेश
(ऋ) उपर्युक्त सभी

21. 'संहिता संज्ञा' किस सूत्र से होती है–
(अ) संहितायाम्
(इ) स्वरितात् संहितायामनुदात्तानाम्
(उ) परः सन्निकर्षः संहिता
(ऋ) तयोर्य्वाविचि संहितायाम्

22. 'गुणसंज्ञा' विधायक सूत्र है–
(अ) आद्गुणः (इ) अदेङ्गुणः
(उ) गुणो यङ्लुकोः (ऋ) मिदेर्गुणः

23. 'वृद्धिसंज्ञा' विधायक सूत्र है–
(अ) मृजेर्वृद्धिः
(इ) वृद्धिरेचि
(उ) वृद्धिरादैच्
(ऋ) वृद्धिर्यस्याचामादिस्तद् वृद्धम्

24. ''प्रातिपदिक'' संज्ञा विधायक सूत्र है–
(अ) अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्
(इ) ङ्याप्प्रातिपदिकात्
(उ) प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा
(ऋ) प्रातिपदिकान्तनुँम्विभक्तिषु च

25. अष्टाध्यायी में प्रातिपदिकसंज्ञा विधायक सूत्र कितने हैं–
(अ) एक (इ) दो
(उ) तीन (ऋ) चार

26. ''कृत्तद्धितसमासाश्च'' सूत्र से किस संज्ञा का विधान किया जाता है–
(अ) कृत् (इ) तद्धित
(उ) समास (ऋ) प्रातिपदिक

27. 'नदी संज्ञा' विधायक सूत्र है–
(अ) आण् नद्याः (इ) नद्यृतश्च
(उ) यू स्त्र्याख्यौ नदी
(ऋ) अम्बार्थनद्योर्ह्रस्वः

28. 'ङिति ह्रस्वश्च' सूत्र से किस संज्ञा का विधान होता है–
(अ) घि (इ) भ
(उ) नदी (ऋ) पद

29. 'घि' संज्ञा किस सूत्र से होती है–
(अ) द्वन्द्वे घि (इ) शेषो घ्यसखि
(उ) अच्च घेः (ऋ) घेर्ङिति

30. 'उपधा संज्ञा' विधायक सूत्र है–
(अ) अलोऽन्त्यात्पूर्व उपधा (इ) अत उपधायाः
(उ) उपधायां च (ऋ) उपधायाश्च

31. 'अपृक्त संज्ञा' विधायक सूत्र है–
(अ) अस्तिसिचोऽपृक्ते (इ) अपृक्त एकाल् प्रत्ययः
(उ) वेरपृक्तस्य (ऋ) गुणोऽपृक्ते

32. 'गति संज्ञा' विधायक सूत्र है–
(अ) नित्यं कौटिल्ये गतौ (इ) गतिश्च
(उ) गतिर्गतौ (ऋ) गतिरनन्तरः

33. 'पदसंज्ञा' विधायक सूत्र कितने हैं–
(अ) 1 (इ) 2
(उ) 3 (ऋ) 4

34. इनमें कौन पदसंज्ञा विधायक सूत्र नहीं है–
(अ) सुप्तिङन्तं पदम् (इ) ''सिति च'' और ''नः क्ये''
(उ) स्वादिष्वसर्वनामस्थाने (ऋ) अनुदात्तं पदमेकवर्जम्

उत्तरमाला - 18. (ऋ), 19. (उ), 20. (ऋ) 21. (उ), 22. (इ), 23. (उ), 24. (अ), 25. (इ) 26. (ऋ), 27. (उ), 28. (उ), 29. (इ), 30. (अ), 31. (इ), 32. (इ), 33. (ऋ), 34. (ऋ)

35. 'विभाषा संज्ञा' विधायक सूत्र है–
(अ) विभाषा दिक्समासे बहुव्रीहौ (इ)विभाषा छन्दसि
(उ) विभाषा जसि (ऋ) न वेति विभाषा

36. 'सवर्ण संज्ञा' विधायक सूत्र है–
(अ) अकः सवर्णे दीर्घः
(इ) अणुदित्सवर्णस्य चाप्रत्ययः
(उ) तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम्
(ऋ) झरो झरि सवर्णे

37. 'टि' संज्ञा विधायक सूत्र है–
(अ) टित आत्मनेपदानां टेरे
(इ) तच्च टेः
(उ) अचोऽन्त्यादि टि
(ऋ) अव्ययसर्वनाम्नामकच् प्राक्टेः

38. 'प्रगृह्यसंज्ञा' विधायक सूत्र है–
(अ) प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम् (इ) ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम्
(उ) ऋत्यकः (ऋ) अप्लुतवदुपस्थिते

39. 'निष्ठा संज्ञा' विधायक सूत्र है–
(अ) निष्ठा
(इ) क्तक्तवतू निष्ठा
(उ) निष्ठा च द्व्यजनात्
(ऋ) निष्ठा शीङ्स्विदिमिदिक्ष्विदिधृषः

40. 'सम्प्रसारण संज्ञा' विधायक सूत्र है–
(अ) सम्प्रसारणस्य
(इ) इग्यणः सम्प्रसारणम्
(उ) ह्वः सम्प्रसारणं च न्यभ्युपविषु
(ऋ) न सम्प्रसारणे सम्प्रसारणम्

41. 'अ, ए, ओ'- इन तीन वर्णों की संज्ञा होती है–
(अ) वृद्धि (इ) गुण
(उ) अपृक्त (ऋ) सर्वनाम

42. 'आ, ऐ, औ'– इन तीनों वर्णों की संज्ञा होगी–
(अ) लघु (इ) गुण
(उ) संहिता (ऋ) वृद्धि

43. 'कृदन्त' की संज्ञा क्या है–
(अ) धातु (इ) प्रातिपदिक
(उ) प्रत्यय (ऋ) संयोग

44. इनमें से किसकी प्रातिपदिक संज्ञा नहीं है–
(अ) कृदन्त (इ) तद्धित
(उ) समास (ऋ) पठ्

45. क्रिया के योग में 'प्र' आदि की क्या संज्ञा होगी–
(अ) अपृक्त (इ) गति
(उ) निष्ठा (ऋ) सर्वनाम

46. 'सुबन्त और तिङन्त' को कहा जाता है–
(अ) धातु (इ) प्रातिपदिक
(उ) पद (ऋ) प्रत्यय

47. निषेध एवं विकल्प को क्या कहा जाता है–
(अ) विभाषा (इ) प्रत्यय
(उ) निष्ठा (ऋ) संयोग

48. 'अ–आ' तथा 'उ-ऊ' परस्पर क्या हैं–
(अ) संहिता (इ) संयोग
(उ) सवर्ण (ऋ) प्रातिपदिक

49. 'राजन्' में 'अन्' की क्या संज्ञा होगी–
(अ) निष्ठा (इ) गुण
(उ) लघु (ऋ) टि

50. 'क्त' एवं 'क्तवतु' प्रत्ययों की संज्ञा है–
(अ) उपधा (इ) अपृक्त
(उ) निष्ठा (ऋ) भ

51. 'यण्' के स्थान पर 'इक्' के विधान को क्या कहा जाता है–
(अ) संहिता (इ) संयोग
(उ) सम्प्रसारण (ऋ) लोप

52. ईकारान्त, ऊकारान्त, एकारान्त द्विवचन की क्या संज्ञा होगी–
(अ) प्लुत (इ) टि
(उ) लघु (ऋ) प्रगृह्य

53. 'हरी एतौ'– यहाँ 'हरी' की कौन संज्ञा है–
(अ) प्लुत (इ) प्रगृह्य
(उ) गति (ऋ) गुरू

35. (ऋ), 36. (उ), 37. (उ), 38. (इ), 39. (इ), 40. (इ), 41. (इ), 42. (ऋ) 43. (इ), 44. (ऋ), 45. (इ), 46. (उ), 47. (अ) 48. (उ), 49. (ऋ), 50. (उ), 51. (उ), 52.(ऋ) 53. (इ)

54. ''आम्रेडितसंज्ञा'' विधायक सूत्र है–
(अ) तस्य परमाम्रेडितम् (इ) कानाम्रेडिते
(उ) आद्यन्तौ टकितौ (ऋ) उपर्युक्त सभी

55. ''दाधा घ्वदाप्'' यह सूत्र किस संज्ञा का विधान करता है–
(अ) 'भ' संज्ञा (इ) 'घु' संज्ञा
(उ) 'घि' संज्ञा (ऋ) 'घ' संज्ञा

56. 'भ' संज्ञा करने वाला सूत्र नहीं है–
(अ) यचि भम् (इ) तसौ मत्वर्थे
(उ) अयस्मयादीनिच्छन्दसि (ऋ) इनमें से कोई नहीं

57. ''यस्मात्प्रत्ययविधिस्तदादिप्रत्ययेऽङ्गम्'' यह सूत्र किस संज्ञा का विधान करता है–
(अ) सम्बुद्धि संज्ञा (इ) अङ्गसंज्ञा
(उ) अवसान संज्ञा (ऋ) 'भ' संज्ञा

58. 'अभ्यास' संज्ञा विधायक सूत्र है–
(अ) पूर्वोभ्यासः (इ) अभ्यासे चर्च
(उ) अभ्यासाच्च (ऋ) अभ्यासस्यासवर्णे

59. 'ऋ' और 'लृ' वर्णो की परस्पर 'सवर्ण संज्ञा' करने वाला वार्तिक है–
(अ) ऋवर्णान्निस्य णत्वं वाच्यम्
(इ) ऋलृवर्णयोर्मिथः सावर्ण्यं वाच्यम्
(उ) ऋते च तृतीया समासे
(ऋ) उपर्युक्त सभी

60. स्वरों (अचों) और व्यञ्जनों (हलों) की परस्पर ''सवर्ण संज्ञा'' का निषेध करने वाला सूत्र है–
(अ) नादिचि (इ) नश्छव्यप्रशान्
(उ) नश्च (ऋ) नाज्झलौ

61. 'घि' संज्ञा करने वाला सूत्र नहीं है–
(अ) शेषोघ्यसखि (इ) पतिः समास एव
(उ) षष्ठी युक्तश्छन्दसि वा (ऋ)घेर्ङिति

62. ''धातुसंज्ञा'' करने वाला सूत्र है–
(अ) भूवादयो धातवः (इ) सनाद्यन्ता धातवः
(उ) उपर्युक्त दोनों (ऋ) इनमें से कोई नहीं

63. 'अवसान' संज्ञा करने वाला सूत्र है–
(अ) विरामोऽवसानम् (इ) अवयवे च
(उ) आ सर्वनाम्नः (ऋ) खरवसानयोर्विसर्जनीयः

64. 'सर्वनामस्थान' करने वाला सूत्र है–
(अ) शि सर्वनामस्थानम् (इ) सुडनपुंसकस्य
(उ) उपर्युक्त दोनों (ऋ) केवल 'अ'

65. 'घ' संज्ञा विधायक सूत्र है–
(अ) घेर्ङिति (इ) द्वन्द्वे घि
(उ) धि च (ऋ) तरप्तमपौ घः

66. 'सार्वधातुक' संज्ञा का विधान किस सूत्र से होता है–
(अ) तिङ्शित्सार्वधातुकम् (इ) सार्वधातुकार्धधातुकयोः
(उ) सार्वधातुके यक् (ऋ) सार्वधातुकमपित्

67. 'आर्धधातुक' संज्ञा किस सूत्र से होती है–
(अ) सार्वधातुकार्द्धधातुकयोः (इ)आर्धधातुकं शेषः
(उ) आर्धधातुके (ऋ) आर्द्धधातुकस्येड् वलादेः

68. 'अव्यय' संज्ञा करने वाला सूत्र है–
(अ) स्वरादिनिपातमव्ययम् (इ) अव्ययादाप्सुपः
(उ) अव्ययात्त्यप् (ऋ) उपर्युक्त सभी

69. 'प्रत्याहार' संज्ञा विधायक सूत्र है–
(अ) आदिरन्त्येन सहेता (इ) प्रत्ययः
(उ) प्रत्ययलोपे प्रत्ययलक्षणम् (ऋ) सभी

70. 'गुरु' संज्ञा किस सूत्र से होती है–
(अ) संयोगे गुरु (इ) दीर्घं च
(उ) दोनों (ऋ) इनमें से कोई नहीं

71. 'लघु' संज्ञा का विधान करता है–
(अ) ह्रस्वं लघु (इ) ह्रस्वः
(उ) अतो हलादेर्लघोः (ऋ) उपर्युक्त सभी

72. 'नदी' संज्ञा का निषेधक सूत्र है–
(अ) यू स्त्र्याख्यौ नदी (इ) ङिति ह्रस्वश्च
(उ) वाऽऽमि (ऋ) नेयङुवङ्स्थानावस्त्री

73. 'सुप्' और 'तिङ्' की ''विभक्ति संज्ञा'' करने वाला सूत्र है–
(अ) विभक्तिश्च (इ) न विभक्तौ तुस्माः
(उ) उपर्युक्त दोनों (ऋ) इनमें से कोई नहीं

54. (अ), 55. (इ), 56. (ऋ), 57. (इ) 58. (अ), 59. (इ), 60. (ऋ), 61. (ऋ), 62.(उ) 63. (अ), 64. (उ), 65. (ऋ), 66. (अ), 67.(इ), 68. (अ), 69. (अ), 70. (उ), 71. (अ),72. (ऋ), 73. (अ)

74. ''एकवचनं सम्बुद्धिः''– इस सूत्र से सम्बोधन में एकवचन की क्या संज्ञा होगी–
(अ) विभक्ति संज्ञा (इ) अव्यय संज्ञा
(उ) सम्बुद्धिसंज्ञा (ऋ) प्लुतसंज्ञा

75. स्वरों की ह्रस्व, दीर्घ एवं प्लुत संज्ञा करने वाला सूत्र है–
(अ) ऊकालोऽज्झ्रस्वदीर्घप्लुतः (इ) दीर्घं च
(उ) ह्रस्वः (ऋ) वाक्यस्य टेः प्लुत उदात्तः

76. ''उच्चैरुदात्तः'' इस सूत्र से कण्ठ, तालु आदि उच्चारणस्थानों के ऊपरी भाग से उच्चरित 'अच्' की क्या संज्ञा होगी–
(अ) उदात्त संज्ञा (इ) अनुदात्त संज्ञा
(उ) स्वरित संज्ञा (ऋ) सभी

77. ''अनुदात्तसंज्ञा' विधायक सूत्र है–
(अ) अनुदात्तङित आत्मनेपदम्
(इ) नीचैरनुदात्तः
(उ) अनुदात्तस्य चर्दुपधस्यान्यतरस्याम्
(ऋ) अनुदात्तं पदमेकवर्जम्

78. 'स्वरितसंज्ञा' विधायक सूत्र है–
(अ) स्वरितञितः कर्त्रभिप्राये क्रियाफले
(इ) समाहारः स्वरितः
(उ) उपर्युक्त दोनों
(ऋ) इनमें से कोई नहीं

79. ''अल्पाक्षरमसान्दिग्धं सारवद्विश्वतोमुखम् अस्तोभमनवद्यं च''– यह किसका लक्षण है–
(अ) वार्तिक का (इ) सूत्र का
(उ) भाष्य का (ऋ) उपर्युक्त सभी का

80. ''इत् संज्ञा' करने वाला सूत्र है–
(अ) ''षः प्रत्ययस्य' और ''चुटू''
(इ) ''हलन्त्यम्'' और ''लशक्वतद्धिते''
(उ) ''आदिर्ञिटुडवः'' ''उपदेशेऽजनुनासिक इत्''
(ऋ) उपर्युक्त सभी

81. 'इत्संज्ञा' का निषेध करने वाला सूत्र है–
(अ) न विभक्तौ तुस्माः (इ) विभक्तिश्च
(उ) नश्च (ऋ) उपदेशेऽजनुनासिक इत्

82. 'माहेश्वराणि' इस पद में प्रत्यय है–
(अ) अण् (इ) इण्
(उ) ठक् (ऋ) ण्वुल्

83. ''आदिरन्त्येन सहेता'' इस सूत्र से किस संज्ञा का विधान किया जाता है–
(अ) उपधा (इ) प्रत्याहार संज्ञा
(उ) नदी (ऋ) टि

84. 'प्रत्याहार' कितने होते हैं–
(अ) 40 (इ) 41
(उ) 42-43 (ऋ) 45

85. 'श्री' शब्द की षष्ठी विभक्ति के बहुवचन में कौन संज्ञा विकल्प से होती है–
(अ) घि (इ) नदी
(उ) पद (ऋ) प्रातिपदिक

86. 'भूपति' शब्द की 'घि' संज्ञा विधायक सूत्र क्या है–
(अ) शेषोघ्यसखि (इ) पतिः समास एव
(उ) घेर्ङिति (ऋ) अच्च घेः

87. समास में 'पति' शब्द की कौन संज्ञा होती है–
(अ) नदी (इ) भ
(उ) घ (ऋ) घि

88. 'पति' शब्द की 'घि' संज्ञा नहीं होगी क्योंकि–
(अ) यह इकारान्त है
(इ) यह समासयुक्त नहीं है
(उ) यह पुंलिङ्ग वाचक है
(ऋ) यह 'सखि' शब्द से भिन्न है

89. 'प्रत्याहार' संज्ञा करने वाले सूत्र कितने हैं–
(अ) 1 (इ) 3
(उ) 2 (ऋ) 4

90. इनमें से कौन 'पदसंज्ञा' विधायक (करने वाला) सूत्र है–
(अ) 'सुप्तिङन्तं पदम्'
(इ) 'सिति च' एवं 'नः क्ये'
(उ) 'स्वादिष्वसर्वनामस्थाने'
(ऋ) उपर्युक्त सभी

74.(उ), 75.(अ), 76.(अ), 77.(इ), 78.(इ), 79.(इ), 80.(ऋ), 81.(अ), 82.(अ), 83.(इ), 84.(उ), 85.(इ), 86.(इ), 87.(ऋ), 88.(इ), 89.(अ), 90.(ऋ)

91. ''भवत् + छ = भवदीयः'' में 'भवत्' शब्द की किस सूत्र से 'पद' संज्ञा होती है ?
(अ) सुप्तिङन्तं पदम् (इ) नः क्ये
(उ) सिति च (ऋ) स्वादिष्वसर्वनामस्थाने

92. 'राजभ्याम्' में 'राजन्' की कौन संज्ञा होती है–
(अ) प्रातिपदिक (इ) भ
(उ) घि (ऋ) सर्वनामस्थान

93. अष्टाध्यायी में 'सर्वनामस्थान' संज्ञा विधायक (करने वाले) सूत्र कितने हैं–
(अ) 1 (इ) 2
(उ) 3 (ऋ) 4

94. 'सर्वनामस्थान' संज्ञा करने वाला सूत्र कौन है–
(अ) पथिमथोः सर्वनामस्थाने
(इ) सुडनपुंसकस्य
(उ) उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः
(ऋ) इतोऽत् सर्वनामस्थाने

95. 'स्वप् + क्त = सुप्तः' यहाँ 'स्वप्' धातु में कौन विधि हुई है–
(अ) संयोग (इ) सम्प्रसारण
(उ) संहिता (ऋ) लोप

96. ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द की कौन संज्ञा होती है–
(अ) घि (इ) नदी
(उ) लघु (ऋ) वृद्धि

97. 'मुनि' शब्द की पाणिनिप्रदत्त संज्ञा क्या होगी–
(अ) घि (इ) नदी
(उ) इत् (ऋ) टि

98. 'वधू' शब्द की पाणिनिप्रदत्त संज्ञा क्या होगी–
(अ) अपृक्त (इ) तद्धित
(उ) नदी (ऋ) गुण

99. धात्वादि में अन्त्यवर्ण से पूर्व वर्ण की संज्ञा क्या होगी–
(अ) अपृक्त (इ) टि
(उ) उपधा (ऋ) निष्ठा

100. पुंलिङ्ग एवं स्त्रीलिङ्ग में सु, औ, जस्, अम् एवं औट् इन विभक्तियों की संज्ञा क्या होगी–
(अ) सर्वनामस्थान (इ) सर्वनाम
(उ) संयोग (ऋ) संहिता

101. 'राजन् + अम्' – यहाँ 'अम्' की क्या संज्ञा होगी–
(अ) निष्ठा (इ) तद्धित
(उ) सर्वनामस्थान (ऋ) सर्वनाम

102. प्रातिपदिक से किन प्रत्ययों का विधान किया जाता है–
(अ) तिङ् (इ) कृत्
(उ) सुप् (ऋ) तद्धित

103. मूलधातु से क्रियापद बनाने हेतु किन प्रत्ययों का विधान होता है–
(अ) कृत् (इ) तिङ्
(उ) सुप् (ऋ) तद्धित

104. किन वर्णों की 'उदात्त-अनुदात्त-स्वरित संज्ञा' होती है–
(अ) स्वरवर्णों की (इ) व्यञ्जनवर्णों की
(उ) दोनों की (ऋ) केवल संयुक्त वर्णों की

105. 'अ, इ, उ, ऋ'– इन प्रत्येक वर्णों के कितने भेद होते हैं–
(अ) सत्रह (इ) चौदह
(उ) अठारह (ऋ) नव

106. 'ए, ओ, ऐ, औ'– इनमें से प्रत्येक वर्ण कितने प्रकार का होता है–
(अ) अठारह (इ) चौदह
(उ) अडतालिस (ऋ) बारह

107. ''तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम्'' इस सूत्र से कौन सी संज्ञा होगी–
(अ) पद संज्ञा (इ) प्रयत्न संज्ञा
(उ) सवर्ण संज्ञा (ऋ) संहिता संज्ञा

108. अ, आ, क वर्ग, ह, विसर्ग- इन वर्णों का उच्चारणस्थान है –
(अ) तालु (इ) दन्त
(उ) कण्ठ (ऋ) ओष्ठ

91. (उ), 92.(अ), 93. (इ), 94. (इ), 95. (इ), 96. (इ), 97. (अ), 98. (उ), 99. (उ), 100. (अ), 101. (उ), 102. (उ), 103. (इ), 104. (अ), 105. (उ), 106. (ऋ), 107. (उ), 108. (उ)

109. ऋ, ॠ, ट वर्ग, र, ष– इन वर्णों का उच्चारणस्थान है–

(अ) कण्ठ (इ) मूर्धा
(उ) दन्त (ऋ) ओष्ठ

110. ऌ, तवर्ग, ल, स– इन वर्णों का उच्चारणस्थान है–

(अ) कण्ठ (इ) मूर्धा
(उ) तालु (ऋ) दन्त

111. उ, ऊ, प वर्ग, ᳲप, ᳲफ उपध्मानीय– इन वर्णों का उच्चारण स्थान है–

(अ) ओष्ठ (इ) तालु
(उ) मूर्धा (ऋ) कण्ठ

112. ओ, औ– इन वर्णों का उच्चारणस्थान है–

(अ) कण्ठतालु (इ) कण्ठ-नासिका
(उ) कण्ठौष्ठम् (ऋ) कण्ठ-मूर्धा

113. ए, ऐ- इन वर्णों का उच्चारणस्थान होगा–

(अ) कण्ठ तालु (इ) कण्ठोष्ठम्
(उ) कण्ठ-मूर्धा (ऋ) कण्ठ-दन्त

114. ञ म ङ ण न– इन वर्णों का एक विशेष उच्चारणस्थान भी माना जाता है–

(अ) तालु (इ) कण्ठ
(उ) मूर्धा (ऋ) नासिका

115. ᳲक ᳲख– इन जिह्वामूलीय वर्णों का उच्चारणस्थान माना जाता है–

(अ) जिह्वामूलम् (इ) तालु
(उ) कण्ठ-तालु (ऋ) कण्ठतालु

116. पाणिनीय शिक्षा के अनुसार उच्चारणस्थान कितने होते हैं–

(अ) 7 (इ) 8
(उ) 6 (ऋ) 5

117. प्रयत्न कितने प्रकार का होता है–

(अ) 4 (इ) 8
(उ) 7 (ऋ) 2

118. आभ्यन्तर प्रयत्न कितने प्रकार का होता है–

(अ) 6 (इ) 5
(उ) 7 (ऋ) 4

119. बाह्यप्रयत्न कितने प्रकार का होता है–

(अ) 11 (इ) 14
(उ) 18 (ऋ) 15

120. आभ्यन्तर प्रयत्न का भेद नहीं है–

(अ) स्पृष्ट (इ) विवृत
(उ) संवृत (ऋ) संवार

121. बाह्य प्रयत्न का भेद नहीं है–

(अ) विवार, संवार, श्वास, नाद
(इ) घोष, अघोष, अल्पप्राण, महाप्राण
(उ) उदात्त, अनुदात्त, स्वरित
(ऋ) स्पृष्ट, विवृत, संवृत

122. ''क से म'' तक के वर्णों को कहते हैं–

(अ) अन्तःस्थवर्ण (इ) ऊष्मवर्ण
(उ) स्पर्श वर्ण (ऋ) स्वर वर्ण

123. ''अन्तःस्थ वर्ण'' कहे जाते हैं–

(अ) श् ष् स् ह् (इ) य् व् र् ल्
(उ) ञ् म् ङ् ण् न् (ऋ) अ इ उ ऋ ऌ

124. ''ऊष्मवर्ण'' कहते हैं–

(अ) ए, ओ, ऐ, औ (इ) ज् ब् ग् ड् द्
(उ) श् ष् स् ह् (ऋ) य् व् र् ल्

125. वर्गों के द्वितीय चतुर्थ एवं शल् प्रत्याहार के वर्ण कहे जाते हैं–

(अ) अन्तस्थ वर्ण (इ) स्पर्श वर्ण
(उ) अल्पप्राण (ऋ) महाप्राण

126. वर्गों के प्रथम, तृतीय, पञ्चम एवं यण् प्रत्याहार के वर्ण कहे जाते हैं–

(अ) महाप्राण (इ) अल्पप्राण
(उ) उदात्त (ऋ) अनुदात्त

127. 'खर्' प्रत्याहार के वर्णों का बाह्य प्रयत्न होगा–

(अ) विवार श्वास अघोष (इ) संवार नाद घोष
(उ) विवार संवार घोष (ऋ) नाद, अघोष, विवार

128. 'हश्' प्रत्याहार के वर्णों का बाह्य प्रयत्न होगा–

(अ) विवार अघोष घोष (इ) संवार नाद घोष
(उ) विवार श्वास अघोष (ऋ) नाद, अघोष, विवार

109.(इ), 110.(ऋ), 111.(अ), 112.(उ), 113.(अ), 114.(ऋ), 115.(अ), 116.(इ), 117.(ऋ), 118.(इ), 119.(अ), 120.(ऋ), 121.(ऋ), 122.(उ), 123.(इ), 124.(उ), 125.(ऋ), 126.(इ), 127.(अ), 128.(इ)

129. 'हलन्त्यम्' सूत्र के अर्थ को पूरा करने के लिए किन पदों की अनुवृत्ति आती है–
(अ) उपदेशे (इ) इत्
(उ) दोनों की (ऋ) इनमें से कोई नहीं

130. 'लोपसंज्ञा' विधायक संज्ञा सूत्र है–
(अ) तस्य लोपः (इ) अदर्शनं लोपः
(उ) हलन्त्यम् (ऋ) आदिरन्त्येन सहेता

131. 'अइउण्, ऋलृक्' इत्यादि सूत्रों में 'ण्, क्, ङ्' इत्यादि हल् वर्णों की इत्संज्ञा किस सूत्र से होगी–
(अ) उपदेशेऽजनुनासिक इत्
(इ) अदर्शनं लोपः
(उ) हलन्त्यम्
(ऋ) तस्य लोपः

132. इत्संज्ञक वर्णों का लोप करने वाला विधिसूत्र है–
(अ) अदर्शनं लोपः (इ) तस्य लोपः
(उ) न वेति विभाषा (ऋ) हलन्त्यम्

133. 'अइउण्' आदि चौदह सूत्रों के अन्त्य में जो 'ण्' आदि वर्ण लगे हुए हैं, उनका क्या प्रयोजन है–
(अ) उच्चारणार्थ (इ) दर्शनार्थ
(उ) गणनार्थ (ऋ) प्रत्याहारनिर्माणार्थ

134. अच् प्रत्याहारस्थ वर्ण (स्वर वर्ण) कितने सूत्रों में कहे गए हैं–
(अ) 6 (इ) 14
(उ) 4 (ऋ) 5

135. हल् प्रत्याहारस्थ वर्ण (व्यञ्जन वर्ण) कितने सूत्रों में कहे गए हैं–
(अ) 10 (इ) 14
(उ) 11 (ऋ) 12

136. 'ञम्' (उणादिसूत्र में प्रयुक्त) प्रत्याहार के अन्तर्गत वर्ण आते हैं–
(अ) वर्गों के प्रथम द्वितीय वर्ण
(इ) वर्गों के तृतीय चतुर्थ वर्ण
(उ) वर्गों के सभी पाँचवे वर्ण
(ऋ) ञ म च ट त

137. 'झष्' प्रत्याहार के अन्तर्गत आते हैं–
(अ) वर्गों के चतुर्थ वर्ण (इ) वर्गों के तृतीय वर्ण
(उ) वर्गों के प्रथम वर्ण (ऋ) वर्गों के द्वितीय वर्ण

138. 'जश्' प्रत्याहार के अन्तर्गत वर्ण आते हैं–
(अ) वर्गों के प्रथम वर्ण (इ) वर्गों के द्वितीय वर्ण
(उ) वर्गों के तृतीय वर्ण (ऋ) वर्गों के चतुर्थ वर्ण

139. वर्गों के दूसरे एवं पहले वर्ण किस प्रत्याहार के अन्तर्गत आते हैं–
(अ) छव् (इ) झर्
(उ) खर् (ऋ) खय्

140. दीर्घ संज्ञक स्वर होते हैं–
(अ) एकमात्रिक (इ) द्विमात्रिक
(उ) त्रिमात्रिक (ऋ) इनमें से कोई नहीं

141. ह्रस्वसंज्ञक स्वरों की कितनी मात्रा होती है–
(अ) एकमात्रा (इ) द्विमात्रा
(उ) त्रिमात्रा (ऋ) अर्धमात्रा

142. प्लुतसंज्ञक स्वर होते हैं–
(अ) एकमात्रिक (इ) द्विमात्रिक
(उ) त्रिमात्रिक (ऋ) अर्धमात्रिक

143. व्यञ्जन (हल्) वर्णों की मात्रा होती है–
(अ) एकमात्रा (इ) द्विमात्रा
(उ) त्रिमात्रा (ऋ) अर्धमात्रा

144. ''प्रगृह्यसंज्ञा'' विधायक सूत्र है–
(अ) ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम्
(इ) अदसो मात्
(उ) ''निपात एकाजनाङ्'' तथा ''ओत्''
(ऋ) उपर्युक्त सभी

145. अ इ उ ऋ लृ– इन पाँच स्वरों को माना जाता है–
(अ) मूल स्वर (इ) ह्रस्व स्वर
(उ) उपर्युक्त दोनों (ऋ) संयुक्त स्वर

146. दीर्घ स्वर नहीं है–
(अ) आ, ई, ऊ (इ) ॠ, ए, ऐ
(उ) ओ, औ (ऋ) अ, इ, लृ

129. (उ), 130. (इ), 131. (उ), 132. (इ), 133. (ऋ), 134. (उ)135. (अ), 136. (उ), 137. (अ), 138. (उ)139. (ऋ), 140. (इ), 141. (अ), 142. (उ)143. (ऋ), 144. (ऋ), 145. (उ), 146. (ऋ)

147. ''ऊकालोऽज्झ्रस्वदीर्घप्लुतः'' यह सूत्र किस संज्ञा का विधान करता है–

(अ) प्रत्याहार संज्ञा (इ) इत्संज्ञा
(उ) ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत संज्ञा (ऋ) लोप संज्ञा

148. उदात्तसंज्ञा विधायक ''उच्चैरुदात्तः'' सूत्र किस कोटि का सूत्र है–

(अ) संज्ञा सूत्र (इ) परिभाषा सूत्र
(उ) विधि सूत्र (ऋ) नियम सूत्र

149. 'अनुदात्त संज्ञा' करने वाला संज्ञासूत्र है–

(अ) उच्चैरुदात्तः (इ) नीचैरनुदात्तः
(उ) समाहारः स्वरितः (ऋ) अदर्शनं लोपः

150. ''समाहारः स्वरितः'' सूत्र से होती है–

(अ) उदात्त संज्ञा (इ) स्वरित संज्ञा
(उ) अनुदात्त संज्ञा (ऋ) समाहार संज्ञा

151. मुख और नासिका से एक साथ उच्चरित होने वाले वर्ण कहे जाते हैं–

(अ) अननुनासिक (इ) अनुनासिक
(उ) निरनुनासिक (ऋ) नासिक

152. किस स्वर वर्ण का दीर्घ नही होता–

(अ) ऋ (इ) लृ
(उ) अ (ऋ) उ

153. निम्न में कौन ह्रस्व स्वर हैं–

(अ) ए, ओ (इ) ऐ, औ
(उ) आ, ई (ऋ) ऋ, लृ

154. कण्ठ, तालु आदि उच्चारणस्थान और आभ्यन्तर प्रयत्न जिन वर्णों का समान हो, वे आपस में होते हैं–

(अ) सवर्णी (इ) सवर्णसंज्ञक
(उ) सावर्ण्य (ऋ) उपर्युक्त सभी

155. 'सवर्णसंज्ञक' वर्ण नहीं हैं–

(अ) ऋ, लृ (इ) क् च्
(उ) क् घ् (ऋ) ज् झ्

156. ''ए, ऐ तथा ओ औ'' की आपस में सवर्ण संज्ञा कब होती है–

(अ) सर्वदा (इ) कभी नहीं
(उ) सन्धि में (ऋ) यदा-कदा

157. क से म तक स्पर्शवर्णों का आभ्यन्तर प्रयत्न होगा–

(अ) स्पृष्ट प्रयत्न (इ) ईषत्स्पृष्ट प्रयत्न
(उ) विवृत प्रयत्न (ऋ) संवृत प्रयत्न

158. ईषत्स्पृष्ट प्रयत्न होता है–

(अ) स्वरों का
(इ) श् ष् स् ह् ऊष्म वर्णों का
(उ) हल् वर्णों का
(ऋ) य् व् र् ल् अन्तःस्थ वर्णों का

159. स्वर वर्णो का प्रयत्न है–

(अ) विवृत (इ) ईषत्विवृत
(उ) संवृत (ऋ) स्पृष्ट

160. ईषत्विवृत प्रयत्न माना जाता है–

(अ) श् ष् स् ह् (शल्) (इ) य् व् र् ल् (यण्)
(उ) स्वरों का (अच्) (ऋ) इनमें से कोई नही

161. प्रक्रियावस्था (प्रयोगसिद्धि) में ह्रस्व अकार का प्रयत्न माना जाता है–

(अ) विवृत (इ) संवृत
(उ) स्पृष्ट (ऋ) ईषत्विवृत

162. प्रयोग अवस्था अर्थात् उच्चारणावस्था में संवृत प्रयत्न माना जाता है–

(अ) इ (इ) अ
(उ) ए (ऋ) ओ

163. ''जिह्वामूलीय'' वर्ण माने जाते हैं–

(अ) ᳲप ᳲफ (इ) अं अः
(उ) ᳲक ᳲख (ऋ) ᳲक ᳲप

164. व्याकरणशास्त्र में ''उपध्मानीय'' वर्ण हैं–

(अ) ᳲक ᳲख (इ) ᳲप ᳲफ
(उ) ᳲकु ᳲचु (ऋ) अं अः

165. ''कु चु टु तु पु'' की संज्ञा है–

(अ) घि (इ) नदी
(उ) उपधा (ऋ) उदित्

147. (उ), 148. (अ), 149. (इ), 150. (इ) 151. (इ), 152. (इ), 153. (ऋ), 154. (ऋ) 155. (इ), 156. (इ), 157. (अ), 158. (ऋ), 159. (अ), 160. (अ), 161. (अ), 162. (इ), 163. (उ), 164. (इ), 165. (ऋ)

166. ''अणुदित्सवर्णस्य चाप्रत्ययः'' यह सूत्र बोध कराता है–
(अ) अपने सवर्णियों का
(इ) केवल ह्रस्व वर्णों का
(उ) केवल अ, इ, उ वर्णों का
(ऋ) केवल प्रत्ययों का

167. ''अणुदित्सवर्णस्य चाप्रत्ययः'' इस पद में 'अण्' प्रत्याहारस्थ 'ण्' किससे सम्बद्ध है–
(अ) अइउण् के ण् से (पूर्व णकार)
(इ) लण् के ण् से (पर णकार)
(उ) यण् के ण् से
(ऋ) इनमें से कोई नही

168. ''हलोऽनन्तराः संयोगः'' सूत्र किस संज्ञा का विधान करता है–
(अ) पद संज्ञा (इ) संहिता संज्ञा
(उ) संयोग संज्ञा (ऋ) सवर्ण संज्ञा

169. व्याकरणशास्त्र में सूत्र कितने प्रकार के होते हैं–
(अ) 6 (इ) 14
(उ) 42 (ऋ) 5

170. ''स्थानेऽन्तरतमः'' सूत्र किस प्रकार का है–
(अ) संज्ञा सूत्र (इ) परिभाषा सूत्र
(उ) विधिसूत्र (ऋ) नियम सूत्र

171. ''इको यणचि'' सूत्र है–
(अ) संज्ञा सूत्र (इ) अतिदेश सूत्र
(उ) अधिकार सूत्र (ऋ) विधि सूत्र

172. ''पतिः समास एव'' किस कोटि का सूत्र है–
(अ) विधि सूत्र (इ) नियम सूत्र
(उ) अतिदेश सूत्र (ऋ) अधिकार सूत्र

173. ''अन्तादिवच्च'' सूत्र किस प्रकार का है–
(अ) संज्ञा सूत्र (इ) परिभाषा सूत्र
(उ) विधि सूत्र (ऋ) अतिदेश सूत्र

174. ''कारके''– यह सूत्र है–
(अ) अधिकार सूत्र (इ) विधि सूत्र
(उ) नियम सूत्र (ऋ) परिभाषा सूत्र

175. 'अहो ईशाः'– यहाँ 'अहो' इस पद की किस सूत्र से ''प्रगृह्यसंज्ञा'' हो गयी–
(अ) निपात एकाजनाङ् (इ) ओत्
(उ) अदसो मात् (ऋ) इदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम्

176. ''सुप्तिङन्तं पदम्'' पद संज्ञा करने वाला यह सूत्र है–
(अ) विधिसूत्र (इ) नियम सूत्र
(उ) संज्ञा सूत्र (ऋ) अधिकार सूत्र

177. ''अदर्शनं लोपः'' इस सूत्र में 'अदर्शन' पद का व्याकरणिक अर्थ है–
(अ) नष्ट होना
(इ) अश्रवण (न सुनायी पड़े, न दिखायी पड़े)
(उ) उड़ जाना
(ऋ) इनमें से कोई नहीं

178. ऋ और लृ वर्ण के परस्पर कुल कितने भेद माने गए हैं–
(अ) 18 (इ) 12
(उ) 30 (ऋ) 14

179. 'लण्' सूत्रस्थ लकारोत्तरवर्ती 'अकार' की किस सूत्र से इत्संज्ञा होती है–
(अ) हलन्त्यम्
(इ) तस्य लोपः
(उ) उपदेशेऽजनुनासिक इत्
(ऋ) उरण् रपरः

180. अ, इ, उ– इन प्रत्येक वर्णों के भेद माने गए हैं–
(अ) 19 (इ) 18
(उ) 17 (ऋ) 54

181. संज्ञाप्रकरण के सभी सूत्र अष्टाध्यायी के किस अध्याय के हैं–
(अ) प्रथम (इ) द्वितीय
(उ) तृतीय (ऋ) चतुर्थ

182. व्याकरण के त्रिमुनि के अन्तर्गत नहीं गिने जाते हैं–
(अ) पाणिनि (इ) कात्यायन
(उ) पतञ्जलि (ऋ) भट्टोजिदीक्षित

166. (अ), 167. (इ), 168. (उ), 169. (अ), 170. (इ) 171. (ऋ), 172. (इ), 173. (ऋ), 174. (अ) 175. (इ), 176. (उ), 177. (इ), 178. (उ) 179. (उ), 180. (इ), 181. (अ), 182. (ऋ)

183. पाणिनीय अष्टाध्यायी में लगभग कितने सूत्र हैं–
(अ) 4000 (इ) 5000
(उ) 7000 (ऋ) 9000

184. ''सुबन्त और तिङन्त'' को कहते हैं–
(अ) संयोग (इ) आगम
(उ) संहिता (ऋ) पद

185. सन्धि करने के पहले कौन-सी संज्ञा होती है–
(अ) पदसंज्ञा (इ) संयोगसंज्ञा
(उ) संहिता संज्ञा (ऋ) उपधा संज्ञा

186. ''उपदेशेऽजनुनासिक इत्'' यह सूत्र किन वर्णों की इत्संज्ञा करता है–
(अ) हल् वर्णों की
(इ) अच् वर्णों की
(उ) संयुक्त वर्णों की
(ऋ) अनुस्वार युक्त वर्णों की

187. माहेश्वर सूत्रों में कौन सा वर्ण दो बार आया है–
(अ) अ (इ) क
(उ) ह (ऋ) ल

188. य् व् ल् – के कितने भेद हैं–
(अ) 5 (इ) 2
(उ) 3 (ऋ) केवल एक

189. माहेश्वर सूत्रों में कौन सा ''इत्संज्ञकवर्ण'' दो बार पठित है –
(अ) ङ् (इ) ण्
(उ) क् (ऋ) च्

190. इनमें से किसकी परस्पर ''सवर्ण संज्ञा'' नहीं होती–
(अ) अ-आ (इ) उ ऊ
(उ) ऋ-ऌ (ऋ) ए-ऐ

191. इनमें से किसकी परस्पर सवर्ण संज्ञा पाणिनीय व्याकरण को अभीष्ट नहीं है–
(अ) इ - ई (इ) ऋ - ॠ
(उ) ऋ - ऌ (ऋ) ओ – औ

192. इनमें से किसकी परस्पर सवर्णसंज्ञा होती है–
(अ) ए - ऐ (इ) ओ - औ
(उ) ऋ - ऌ (ऋ) अ - इ

193. माहेश्वर सूत्र में मूल स्वरवर्ण कितने हैं–
(अ) 6 (इ) 5
(उ) 9 (ऋ) 14

194. किस माहेश्वर सूत्र का अकार उच्चारणमात्र न होकर 'इत्संज्ञक' है ?
(अ) हयवरट् (इ) लण्
(उ) झभञ् (ऋ) घढधष्

195. ''लण्'' सूत्रस्थ अकार की इत्संज्ञा स्वीकार करने का प्रयोजन क्या है–
(अ) 'अण्' प्रत्याहार का निर्माण
(इ) 'र' प्रत्याहार का निर्माण
(उ) 'लण्' सूत्र का वैशिष्ट्यप्रतिपादन
(ऋ) स्वरों से भिन्नता प्रतिपादन

196. ''र'' प्रत्याहार के अन्तर्गत कौन से दो वर्ण आते हैं–
(अ) ल् अ (इ) इ र्
(उ) र् ल् (ऋ) य् र्

197. सभी स्वरों और व्यञ्जनों का बोध कराने वाला प्रत्याहार है–
(अ) अच् (इ) हल्
(उ) झष् (ऋ) अल्

198. 'अच्' प्रत्याहार के अन्तर्गत आते हैं–
(अ) सभी व्यञ्जन (इ) सभी दीर्घ स्वर
(उ) सभी स्वर (ऋ) केवल ह्रस्व स्वर

199. 'हल्' प्रत्याहार के अन्तर्गत वर्ण आते हैं–
(अ) सभी स्वर और व्यञ्जन वर्ण
(इ) केवल स्वर वर्ण
(उ) सभी व्यञ्जन वर्ण
(ऋ) व्यञ्जन वर्णों के पञ्चमाक्षर

200. वर्णों के पञ्चमाक्षरों को कहा जाता है–
(अ) निरनुनासिक (इ) अननुनासिक
(उ) अनुनासिक (ऋ) मुखनासिक

183. (अ), 184. (ऋ), 185. (उ), 186. (इ) 187. (उ), 188. (इ), 189. (इ), 190. (ऋ) 191. (ऋ), 192. (उ), 193. (इ), 194. (इ) 195. (इ), 196. (उ), 197. (ऋ), 198. (उ) 199. (उ), 200. (उ),

201. माहेश्वर सूत्रों में 'हकार' का दो बार ग्रहण क्यों किया गया है–
(अ) ''अट्'' और ''शल्'' प्रत्याहार में 'ह' को शामिल करने के लिए
(इ) ''अर्हेण'' प्रयोग की सिद्धि
(उ) ''अधुक्षत'' प्रयोग की सिद्धि
(ऋ) उपर्युक्त सभी

202. किसको 'आदिवैयाकरण' माना जाता है–
(अ) इन्द्र (इ) बृहस्पति
(उ) वायु (ऋ) शिव

203. वृद्धिसंज्ञक वर्ण नहीं है–
(अ) आ (इ) ऐ
(उ) औ (ऋ) अर्

204. गुणसंज्ञक वर्ण नहीं है–
(अ) अ (इ) ए
(उ) ओ (ऋ) आर्

205. 'इ, ई, च वर्ग, य, श' – इन वर्णों का उच्चारण स्थान है–
(अ) तालु (इ) मूर्धा
(उ) कण्ठ (ऋ) ओष्ठ

206. ''उपधासंज्ञा'' होती है–
(अ) पदों के अन्तिम वर्ण की
(इ) पदों के आदि वर्ण की
(उ) स्वर सहित अन्तिम व्यञ्जन की
(ऋ) अन्तिम वर्ण से पूर्व वर्ण की

207. प्रातिपदिक संज्ञा नहीं होती है–
(अ) धातु (इ) अधातु
(उ) अर्थवद् (ऋ) अप्रत्यय

208. प्रातिपदिक संज्ञा नहीं होती है–
(अ) कृत (इ) तद्धित
(उ) समास (ऋ) ण्यन्त

209. 'सुप्'- प्रत्यय नहीं जोड़े जाते हैं–
(अ) समासान्त से (इ) तद्धित से
(उ) प्रातिपदिक से (ऋ) ण्यन्त से

210. सुप् प्रत्ययों की संख्या है–
(अ) 9 (इ) 18
(उ) 21 (ऋ) 24

211. तिङ् प्रत्ययों की संख्या होती है–
(अ) 9 (इ) 18
(उ) 27 (ऋ) 90

212. 'सर्वनामस्थान' कितने प्रत्यय कहलाते है–
(अ) 5 (इ) 6
(उ) 9 (ऋ) 21

213. 'घ' संज्ञा किन प्रत्ययों की होती है–
(अ) तरप् - तमप् (इ) सन् - यङ्
(उ) क्त - क्तवतु (ऋ) शतृ - शानच्

214. ''विभाषा'' का क्या अभिप्राय है–
(अ) परिभाषा (इ) संशय
(उ) निश्चय (ऋ) विकल्प

215. 'निष्ठा' संज्ञा किन प्रत्ययों की होती है–
(अ) अनीयर्-तव्यत् (इ) शतृ-शानच्
(उ) क्त-क्तवतु (ऋ) क्त्वा-ल्यप्

216. किसकी ''प्रगृह्यसंज्ञा'' नहीं होती है–
(अ) ईकारान्त द्विवचन (इ) ऊकारान्त द्विवचन
(उ) एकारान्त द्विवचन (ऋ) ओकारान्त द्विवचन

217. ''सार्वधातुक संज्ञा'' होती है–
(अ) तिङ् - शित् (इ) तिङ् - सुप्
(उ) तिङ् - तद्धित (ऋ) तिङ् - कृत्

218. ''अनुनासिक वर्णों'' का उच्चारणस्थान है–
(अ) कण्ठ (इ) ओष्ठ
(उ) दन्त (ऋ) मुखनासिका

219. वर्गों के कौन से वर्ण अनुनासिक कहलाते हैं–
(अ) प्रथम (इ) द्वितीय
(उ) तृतीय (ऋ) पञ्चम

220. ''अपृक्त संज्ञा'' किस वर्ण की होती है–
(अ) प्रत्यय से शेष बचे एक स्वर या व्यञ्जन की
(इ) प्रत्यय से शेष बचे दो व्यञ्जनों की
(उ) प्रत्यय से शेष बचे दो स्वरों की
(ऋ) संयुक्त स्वर व्यञ्जन की

201.(ऋ), 202.(ऋ) 203.(ऋ), 204.(ऋ), 205.(अ), 206.(ऋ) 207.(अ), 208.(ऋ), 209.(ऋ), 210.(उ)
211.(इ), 212.(अ), 213.(अ), 214.(ऋ) 215.(उ), 216.(ऋ), 217.(अ), 218.(ऋ) 219.(ऋ), 220.(अ),

221. किस वैयाकरण के बनाये नियम वार्तिक कहलाते हैं–
(अ) पाणिनि (इ) वरदराज
(उ) भट्टोजिदीक्षित (ऋ) कात्यायन

222. ''उत्सर्ग'' किसे कहते हैं–
(अ) विशेष नियम (इ) साधारण नियम
(उ) वैकल्पिक नियम (ऋ) इनमें से कोई नहीं

223. 'ष' वर्ण को कहते हैं–
(अ) मूर्धन्य (इ) तालव्य
(उ) दन्त्य (ऋ) इनमें से कोई नहीं

224. दन्त्यवर्ण हैं–
(अ) ऋटुरष् (इ) इचुयश्
(उ) उपूपध्मानीय (ऋ) लृतुलस्

225. व्याकरण में गतिसंज्ञक कहे जाते हैं–
(अ) नाम (इ) आख्यात
(उ) उपसर्ग (ऋ) निपात

226. संस्कृत में उपसर्गों की संख्या कितनी मानी जाती हैं–
(अ) 20 (इ) 22
(उ) 24 (ऋ) 25

227. व्याकरणशास्त्र में ''उपदेश'' कहा जाता है–
(अ) आद्योच्चारणम् (इ) मध्योच्चारणम्
(उ) सर्वोच्चारणम् (ऋ) अन्त्योच्चारणम्

228. ''तस्य लोपः'' सूत्र में किसके लोप की बात कही गयी है–
(अ) कित् (इ) ञित्
(उ) णित् (ऋ) इत्

229. अनुनासिक चिह्नयुक्त वर्ण हैं–
(अ) कं (इ) कँ
(उ) कः (ऋ) र्क

230. क्रमशः अनुस्वार - विसर्ग हैं–
(अ) अं अः (इ) अँ अं
(उ) अः अँ (ऋ) अः अं

231. निम्न में से किस वर्ण के 18 भेद नहीं है–
(अ) इ (इ) उ
(उ) ऋ (ऋ) लृ

232. 'उपसर्जन' संज्ञा विधायक सूत्र है–
(अ) प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्
(इ) उपसर्जनं पूर्वम्
(उ) उपाच्च
(ऋ) उपसर्या काल्या प्रजने

233. क्रिया के योग में 'प्र' आदि होते हैं–
(अ) गति संज्ञक (इ) उपसर्गसंज्ञक
(उ) दोनों (ऋ) इनमें से कोई नहीं

234. क्रियावाचक 'भू' आदि की 'धातुसंज्ञा' किस सूत्र से होती है–
(अ) उपसर्गादृति धातौ (इ) भूवादयो धातवः
(उ) धातोः (ऋ) धात्वादेः षः सः

235. 'अदस्' शब्द के मकार से परे ईकार और 'ऊकार' की क्या संज्ञा होगी–
(अ) प्रगृह्यसंज्ञा (इ) प्लुतसंज्ञा
(उ) दीर्घ संज्ञा (ऋ) वृद्धिसंज्ञा

236. 'अमी ईशाः' – यहाँ 'अमी' की किस सूत्र से प्रगृह्यसंज्ञा होगी–
(अ) प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम् (इ) दूराद्धूते च
(उ) अदसो मात् (ऋ) ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम्

237. ''अदसो मात्'' इस सूत्र से किसकी प्रगृह्यसंज्ञा होती है–
(अ) अमू (इ) अमी
(उ) दोनों की (ऋ) इनमें से कोई नहीं

238. ''प्रादयः''– इस सूत्र से कौन-सी संज्ञा होती है–
(अ) प्रगृह्यसंज्ञा (इ) निपातसंज्ञा
(उ) प्लुतसंज्ञा (ऋ) इनमें से कोई नहीं

239. ''निपात एकाजनाङ्''– इस सूत्र से एक अच् वाले निपात की कौन-सी संज्ञा होती है–
(अ) प्रगृह्यसंज्ञा (इ) निपात संज्ञा
(उ) प्लुत संज्ञा (ऋ) दीर्घ संज्ञा

240. ''निपातसंज्ञा'' विधायक सूत्र है–
(अ) प्रादयः (इ) चादयोऽसत्त्वे
(उ) दोनों (ऋ) इनमें से कोई नहीं

221. (ऋ), 222. (इ) 223. (अ), 224. (ऋ), 225. (उ), 226. (इ) 227. (अ), 228. (ऋ), 229. (इ), 230. (अ)
231. (ऋ), 232. (अ), 233. (उ), 234. (इ) 235. (अ), 236. (उ), 237. (उ), 238. (इ) 239. (अ), 240. (उ)

संज्ञा–गङ्गा (भाग-दो)

1. किसमें संहिता नित्य नहीं मानी जाती है–
(अ) एकपद (इ) धातु-उपसर्ग
(उ) समास (ऋ) वाक्य

2. ''दैत्यानां अरिः = दैत्य + अरिः = दैत्यारिः'' में सवर्ण दीर्घ एकादेश हुआ, क्योंकि–
(अ) यहाँ संहिता विवक्षा के अधीन है
(इ) समास में संहिता नित्य है
(उ) 'दैत्य' पद अकारान्त है
(ऋ) यह अखण्ड पद है

3. ''अकः सवर्णे दीर्घः'' सूत्र में किस सूत्र का अधिकार है–
(अ) स्त्रियाम् (इ) कारके
(उ) संहितायाम् (ऋ) ङ्याप्प्रातिपदिकात्

4. किसमें 'संहितायाम्' का अधिकार नहीं है–
(अ) एचोऽयवायावः (इ) आद्गुणः
(उ) वृद्धिरेचि (ऋ) अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि

5. 'गण + ईशः = गणेशः' में कौन विधि है–
(अ) वृद्धि (इ) पूर्वरूप
(उ) पररूप (ऋ) गुण

6. 'गुण विधि' किसकी होती है–
(अ) अच् (इ) हल्
(उ) इक् (ऋ) अण्

7. 'चि + तव्यत् = चेतव्यम्' – यहाँ धातु में कौन-सी विधि हुई है–
(अ) वृद्धि (इ) दीर्घ
(उ) गुण (ऋ) पररूप

8. ''उप - भुज् + तुमुन् = उपभोक्तुम्'' में धातु के किस अंश को 'गुण' हुआ है–
(अ) आदि (इ) अन्त
(उ) उपधा (ऋ) उपसर्ग

9. ''भिद् + तव्य = भेतव्यम्'' में गुण विधायक सूत्र कौन है–
(अ) आद्गुणः (इ) अदेङ्गुणः
(उ) गुणोऽपृक्तेः (ऋ) पुगन्तलघूपधस्य च

10. ''स्मृ + अनीयर् = स्मरणीयम्'' में गुणविधि का सूत्र क्या है–
(अ) पुगन्तलघूपधस्य च (इ) आद्गुणः
(उ) गुणोऽपृक्तेः (ऋ) सार्वधातुकार्धधातुकयोः

11. हे प्रभो! – यहाँ 'प्रभो' शब्द में कौन विधि है–
(अ) दीर्घ (इ) गुण
(उ) वृद्धि (ऋ) सम्प्रसारण

12. ''हस् + ण्यत् = हास्यम्''– यहाँ धातु में कौन विधि हुई है–
(अ) वृद्धि (इ) दीर्घ
(उ) गुण (ऋ) लोप

13. ''पठ् + घञ् = पाठः'' यहाँ धातु में कौन विधि हुई है–
(अ) गुण (इ) वृद्धि
(उ) सम्प्रसारण (ऋ) पूर्वरूप

14. ''दशरथ + इञ् = दाशरथिः'' यहाँ दशरथ के आदिस्वर की वृद्धि किस सूत्र से हुई है–
(अ) तद्धितेष्वचामादेः (इ) किति च
(उ) अत उपधायाः (ऋ) वृद्धिरादैच्

15. ''संस्कृतगङ्गा + ओघः = संस्कृतगङ्गौघः'' में किस सूत्र से वृद्धि एकादेश हुआ है –
(अ) एचोऽयवायावः (इ) वृद्धिरादैच्
(उ) वृद्धिरेचि (ऋ) इको गुणवृद्धी

16. वृद्धिसंज्ञाविधायक सूत्र ''वृद्धिरादैच्'' में 'ऐच्' से किन दो वर्णों का बोध होता है–
(अ) ए ऐ (इ) ऐ औ
(उ) ए ओ (ऋ) ओ औ

1. (ऋ), 2. (इ), 3. (उ), 4. (ऋ), 5. (ऋ), 6. (उ), 7. (उ) 8. (उ), 9. (ऋ) 10. (ऋ), 11. (इ), 12. (अ), 13. (इ), 14. (अ),15.(उ) 16. (इ),

17. गुणसंज्ञाविधायक सूत्र 'अदेङ्गुणः' में 'एङ्' प्रत्याहार से किन दो वर्णों का बोध होता है–
(अ) ए, औ (इ) ए, ऐ
(उ) ओ, औ (ऋ) ए, ओ

18. 'अदेङ्गुणः' सूत्र में विद्यमान 'अत्' से ह्रस्व अकार का बोध किस सूत्र से होता है–
(अ) अणुदित्सवर्णस्य चाप्रत्ययः (इ) तस्मादित्युत्तरस्य
(उ) अचश्च (ऋ) तपरस्तत्कालस्य

19. 'वृद्धिरादैच्'' में स्थित 'आत्' से दीर्घ 'आ' का बोध किस सूत्र से होता है–
(अ) अकः सवर्णे दीर्घः (इ) तस्मादित्युत्तरस्य
(उ) तपरस्तत्कालस्य (ऋ) उरण् रपरः

20. ''उप + ऋच्छति = उपार्च्छति'' में विहित वृद्धि किस विधि का अपवाद है-
(अ) गुण (इ) वृद्धि
(उ) पररूप (ऋ) पूर्वरूप

21. 'सुखेन ऋतः = सुख + ऋतः = सुखार्तः' में कौन विधि है-
(अ) गुण (इ) वृद्धि
(उ) पररूप (ऋ) पूर्वरूप

22. 'दाशरथि' की प्रातिपदिक संज्ञा होती है, क्योंकि-
(अ) यह कृदन्त है (इ) यह तद्धितान्त है
(उ) यह समासान्त है (ऋ) यह सुबन्त है

23. ''कारक'' की प्रातिपदिक संज्ञा होती है, क्योंकि–
(अ) यह तद्धितान्त है (इ) यह कृदन्त है
(उ) यह समासान्त है (ऋ) यह सुबन्त है

24. 'पीताम्बरः' की प्रातिपदिक संज्ञा होती है, क्योंकि–
(अ) यह कृदन्त है (इ) यह समासान्त है
(उ) यह तद्धितान्त है (ऋ) यह तिङन्त है

25. 'डित्थ' की प्रातिपदिक संज्ञा किस सूत्र से होती है–
(अ) कृत्तद्धितसमासाश्च
(इ) अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्
(उ) ङ्याप्प्रातिपदिकात्
(ऋ) प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा

26. प्रातिपदिक से किन प्रत्ययों का विधान होता है–
(अ) तिङ् (इ) सुप्
(उ) कृत् (ऋ) तद्धित

27. 'प्रातिपदिकार्थ' में कौन विभक्ति होती है–
(अ) द्वितीया (इ) सप्तमी
(उ) चतुर्थी (ऋ) प्रथमा

28. 'राजन्' से प्रथमा विभक्ति एकवचन में 'सु' विभक्ति आती है, क्योंकि–
(अ) 'राजन्' व्यञ्जनान्त है
(इ) 'राजन्' पुँल्लिङ्गवाचक है
(उ) 'राजन्' एक प्रातिपादिक है
(ऋ) 'राजन्' एक राजा का वाचक है

29. 'अस्मद्' से तृतीया एकवचन में 'टा' विभक्ति आती है, क्योंकि–
(अ) 'अस्मद्' - सर्वनाम है
(इ) 'अस्मद्' का रूप तीनों लिङ्गो में समान है
(उ) अस्मद् - व्यञ्जनान्त है
(ऋ) अस्मद् - प्रातिपदिक है

30. 'फल' से प्रथमा बहुवचन में 'जश्' विभक्ति आती है, क्योंकि–
(अ) 'फल' - अकारान्त है
(इ) 'फल' - प्रातिपदिक है
(उ) 'फल' - नपुंसकलिङ्ग है
(ऋ) 'फल' - आम आदि फलों का वाचक है

31. 'दशरथ' से ''अतइञ्'' सूत्र से अपत्यार्थ में 'इञ्' प्रत्यय आता है, क्योंकि–
(अ) 'दशरथ' - पुंलिङ्गवाचक है
(इ) 'दशरथ' - राम के पिता हैं
(उ) 'दशरथ' - प्रातिपदिक है
(ऋ) 'दशरथ' - अयोध्या के राजा हैं

32. 'अस्माकीनम्' में किस प्रातिपदिक से 'खञ्' प्रत्यय आया है–
(अ) अस्माकम् (इ) अस्मद्
(उ) अदस् (ऋ) एतद्

17. (ऋ), 18. (ऋ) 19. (उ),20. (अ) 21. (इ), 22. (इ), 23. (इ), 24. (इ), 25. (इ) 26. (इ), 27. (ऋ), 28. (उ), 29. (ऋ), 30. (इ), 31. (उ), 32. (इ),

33. 'राजकीयः' में किस प्रातिपदिक से 'छ' प्रत्यय आया है–
(अ) राजक (इ) रजक
(उ) राजन् (ऋ) राजका

34. प्रातिपदिक से चतुर्थी एकवचन में कौन विभक्ति आती है–
(अ) भ्यस् (इ) भ्याम्
(उ) ङसि (ऋ) ङे

35. प्रातिपदिक से सप्तमी एकवचन में कौन विभक्ति आती है–
(अ) ङि (इ) ङे
(उ) ङसि (ऋ) ङस्

36. प्रातिपदिक से तृतीया बहुवचन में कौन विभक्ति आती है–
(अ) भ्यस् (इ) भिस्
(उ) आम् (ऋ) शस्

37. प्रातिपदिक से पञ्चमी एकवचन में कौन विभक्ति आती है–
(अ) भ्यस् (इ) भिस्
(उ) ङे (ऋ) ङसि

38. प्रातिपदिक से षष्ठी एकवचन में विभक्ति आती है–
(अ) ङि (इ) ङे
(उ) ङसि (ऋ) ङस्

39. प्रातिपदिक से चतुर्थी पञ्चमी के बहुवचन में कौन विभक्ति आती है–
(अ) आम् (इ) भिस्
(उ) भ्यस् (ऋ) जश्

40. प्रातिपदिक से तृतीया, चतुर्थी एवं पञ्चमी के द्विवचन में विभक्ति आती है–
(अ) ओस् (इ) भ्याम्
(उ) भ्यस् (ऋ) भिस्

41. प्रातिपदिक से षष्ठी बहुवचन में कौन-सी विभक्ति आती है –
(अ) अम् (इ) आम्
(उ) भ्यस् (ऋ) भिस्

42. प्रातिपदिक से 'शस्' विभक्ति आती है–
(अ) द्वितीया एकवचन (इ) प्रथमा बहुवचन
(उ) द्वितीया बहुवचन (ऋ) तृतीया एकवचन

43. प्रातिपदिक से 'अम्' विभक्ति कहाँ आती है–
(अ) द्वितीया एकवचन (इ) प्रथमा द्विवचन
(उ) द्वितीया द्विवचन (ऋ) चतुर्थी एकवचन

44. प्रातिपदिक से षष्ठी एवं सप्तमी द्विवचन में कौन विभक्ति आती है–
(अ) भ्याम् (इ) औ
(उ) भ्यस् (ऋ) ओस्

45. प्रातिपदिक से 'सु' विभक्ति आती है–
(अ) प्रथमा द्विवचन (इ) प्रथमा बहुवचन
(उ) सप्तमी बहुवचन (ऋ) प्रथमा एकवचन

46. प्रातिपदिक से सप्तमी बहुवचन में विभक्ति आती है–
(अ) सु (इ) शस्
(उ) भ्याम् (ऋ) सुप्

47. ''यू स्त्र्याख्यौ नदी'' में 'यू' से किस वर्णद्वय का बोध होता है–
(अ) ई ऊ (इ) इ उ
(उ) इ अ (ऋ) ई उ

48. ''शेषो घ्यसखि'' सूत्र अष्टाध्यायी के किस अध्याय का है–
(अ) द्वितीय (इ) प्रथम
(उ) चतुर्थ (ऋ) सप्तम

49. समास में ही किस शब्द की 'घि' संज्ञा होती है–
(अ) सखि (इ) मति
(उ) पति (ऋ) सम्पति

50. इनमें से किसकी 'घि' संज्ञा नहीं है–
(अ) भूपति (इ) नरपति
(उ) वसुधापति (ऋ) सम्मति

51. ''रम् + घञ् = रामः''– यहाँ धातु के 'अकार' की कौन संज्ञा है–
(अ) पद (इ) टि
(उ) उपधा (ऋ) भ

33. (उ), 34. (ऋ), 35. (अ), 36. (इ), 37. (ऋ),38. (ऋ), 39. (उ), 40. (इ), 41. (इ), 42. (उ) 43. (अ), 44. (ऋ), 45. (ऋ), 46. (ऋ), 47. (अ) 48. (इ), 49. (उ), 50. (ऋ), 51. (उ),

52. 'पठ् + ण्वुल् = पाठकः' में धातु की उपधा को किस सूत्र से वृद्धि होती है–
(अ) अतो गुणे (इ) अत उपधायाः
(उ) पुगन्तलघूपधस्य च (ऋ) अचोञ्णिति

53. ''अलोऽन्त्यात् पूर्व उपधा'' में 'अल्' से किसका बोध है–
(अ) स्वरवर्ण (इ) व्यञ्जनवर्ण
(उ) अयोगवाह (ऋ) सम्पूर्ण वर्णसमाम्नाय

54. सभी 'उपधा' कार्य किससे सम्बद्ध हैं–
(अ) स्वर (इ) व्यञ्जन
(उ) संयुक्त वर्ण (ऋ) इनमें से कोई नहीं

55. 'राजन्' में उपधा कौन है–
(अ) अन् (इ) अ
(उ) आ (ऋ) जन्

56. 'गुणिन्' में उपधा कौन है–
(अ) इन् (इ) इ
(उ) उ (ऋ) णिन्

57. 'वस्' धातु का 'अकार' क्या है–
(अ) टि (इ) गुरु
(उ) भ (ऋ) उपधा

58. 'इ' वर्ण को वृद्धि से क्या होगा–
(अ) ऐ (इ) ओ
(उ) औ (ऋ) ए

59. 'उ' वर्ण को वृद्धि से क्या होगा–
(अ) ऐ (इ) ओ
(उ) औ (ऋ) ए

60. 'इ' वर्ण को गुण क्या होगा–
(अ) ए (इ) ऐ
(उ) ओ (ऋ) औ

61. 'उ' वर्ण को गुण क्या होगा–
(अ) ओ (इ) औ
(उ) ऐ (ऋ) ऐ

62. पाणिनीय व्यवस्था में 'उपधा' क्या है–
(अ) विधि (इ) निषेध
(उ) धातु (ऋ) संज्ञा

63. ''अपृक्त एकाल् प्रत्ययः'' में 'एकाल्' का क्या अर्थ है–
(अ) एक धातु (इ) एक वर्ण
(उ) एक प्रातिपदिक (ऋ) एक उपसर्ग

64. इनमें किस अव्यय की 'गति संज्ञा' होती है–
(अ) अहो (इ) पुरा
(उ) पुरः (ऋ) अर्थ

65. ''सुप्तिङन्तं पदम्'' अष्टाध्यायी के किस अध्याय का सूत्र है–
(अ) प्रथम (इ) द्वितीय
(उ) तृतीय (ऋ) चतुर्थ

66. ''न वेति विभाषा'' सूत्र के 'वा' से किसका बोध होता है–
(अ) विशेष (इ) बाधा
(उ) विकल्प (ऋ) विषय

67. इनमें से किन दोनों का सम्बन्ध 'विभाषा संज्ञा' से है–
(अ) च वा (इ) न वा
(उ) अथ वा (ऋ) न, एव

68. इनमें से सवर्ण संज्ञा का निषेध करने वाला सूत्र कौन है–
(अ) न विभक्तौ तुस्माः (इ) न यदि
(उ) नाऽज्झलौ (ऋ) न निर्धारणे

69. ''परि + ईक्षा = परीक्षा'' में ''अकः सवर्णे दीर्घः'' सूत्र से दीर्घ एकादेश हुआ है, क्योंकि–
(अ) पूर्व 'इ' के बाद एक स्वर है
(इ) धातु एवं उपसर्ग में दीर्घ एकादेश अभीष्ट हैं
(उ) पूर्व 'इ' एवं पर 'ई' परस्पर सवर्ण है
(ऋ) परवर्ती 'ईक्षा' शब्द स्त्रीलिङ्ग में है।

70. 'क्' के सवर्णी कौन हैं –
(अ) अ, आ, इ (इ) च् ट् त् प्
(उ) ख् ग् घ् ङ् (ऋ) स् च् प् छ्

52. (इ) 53. (ऋ), 54. (अ), 55. (इ), 56. (इ), 57. (ऋ) 58. (अ), 59. (उ), 60. (अ), 61. (अ), 62.(ऋ) 63. (इ), 64. (इ), 65. (अ), 66. (उ), 67.(इ), 68. (उ), 69. (उ), 70. (उ),

71. 'अ' कार किस सूत्र से अपने सवर्णियों का ग्राहक होता है–
(अ) तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम्
(इ) अणुदित्सवर्णस्य चाप्रत्ययः
(उ) झरो झरि सवर्णे
(ऋ) अकः सवर्णे दीर्घः

72. इनमें कौन दो वर्ण परस्पर सवर्ण हैं–
(अ) थ् प् (इ) आ ई
(उ) अ ऋ (ऋ) च् ज्

73. इनमें कौन दो परस्पर सवर्ण नहीं हैं –
(अ) उ ऊ (इ) ऋ लृ
(उ) क् च् (ऋ) प् भ्

74. ''थ् - ध्'' परस्पर क्या हैं–
(अ) संयोग (इ) संहिता
(उ) सवर्ण (ऋ) प्रत्याहार

75. ''अचोऽन्त्यादि टि'' सूत्र अष्टाध्यायी के किस अध्याय में है–
(अ) प्रथम (इ) तृतीय
(उ) पञ्चम (ऋ) सप्तम

76. इनमें से कौन 'प्रगृह्य' है–
(अ) देवौ (इ) मुनिः
(उ) बालिके (ऋ) गुरुः

77. इनमें से कौन 'प्रगृह्य' नहीं है–
(अ) साधू (इ) मुनी
(उ) रामौ (ऋ) लते

78. ''अमी अत्र'' में 'अमी' की प्रगृह्य संज्ञा किस सूत्र से होती है–
(अ) ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम्
(इ) अदसो मात्
(उ) निपात एकाजनाङ्
(ऋ) प्लुतप्रगह्या अचि नित्यम्

79. अष्टाध्यायी के किस अध्याय में 'प्रगृह्यसंज्ञा' विधायक सूत्र हैं–
(अ) प्रथम (इ) द्वितीय
(उ) तृतीय (ऋ) चतुर्थ

80. इनमें से किसकी 'सर्वनामस्थान' संज्ञा होती है–
(अ) इन् (इ) शि
(उ) ऐस् (ऋ) य्

81. ''शि सर्वनामस्थानम्'' सूत्र के ''शि'' का किन दोनों विभक्तियों से सम्बन्ध है–
(अ) सु औ (इ) भिस् भ्यस्
(उ) आम् सुप् (ऋ) जस् शस्

82. किन दो कृत् प्रत्ययों की ''निष्ठा'' संज्ञा होती है–
(अ) शतृ-शानच् (इ) क्त-क्तवतू
(उ) ण्वुल्-तृच् (ऋ) तव्य-तव्यत्

83. ''छिद् + क्त = छिन्नः'' किस सूत्र से नत्व हुआ है–
(अ) रदाभ्यां निष्ठातो नः पूर्वस्य च दः
(इ) झलां जशोऽन्ते
(उ) ल्वादिभ्यः
(ऋ) संयोगादेरातो धातोर्यण्वतः

84. सम्प्रसारण में 'य् व् र् ल्' को क्या होगा–
(अ) अ आ ऊ ऋ (इ) इ उ ऋ ऌ
(उ) ए ओ ऐ औ (ऋ) ऋ लृ अ इ

85. निम्नलिखित में कौन पाँच अनुनासिक हैं–
(अ) ञ् म् ङ् ण् न् (इ) त् थ् द् ध् न्
(उ) ट् ठ् ड् ढ् ण् (ऋ) क् ख् ग् घ् ङ्

86. अनुनासिक में किन दोनों का साहचर्य रहता है–
(अ) नासिका एवं मूर्धा (इ) नासिका श्रोत्र
(उ) मुख एवं नासिका (ऋ) कण्ठ एवं नासिका

87. निम्नलिखित में स्वरों का 'बाह्य प्रयत्न' कौन नही है–
(अ) उदात्त (इ) अनुदात्त
(उ) स्वरित (ऋ) महाप्राण

88. संस्कृत में 'अन्तःस्थ वर्ण' कितने हैं–
(अ) 4 (इ) 6
(उ) 8 (ऋ) 10

89. संस्कृत में 'ऊष्मवर्ण' कितने हैं–
(अ) 6 (इ) 5
(उ) 4 (ऋ) 7

71. (इ), 72. (ऋ), 73. (उ), 74. (उ), 75. (अ), 76. (उ), 77. (उ), 78. (इ), 79. (अ), 80. (इ), 81. (अ), 82.(इ), 83. (अ), 84. (इ), 85. (अ), 86. (उ), 87. (ऋ), 88. (अ), 89. (उ),

90. 'स्पर्श वर्ण' कितने हैं–
(अ) 33 (इ) 25
(उ) 40 (ऋ) 39

91. इनमें से किस समूह की अल्पप्राण संज्ञा है–
(अ) क् द् प् (इ) ठ् ध् भ
(उ) भ् ख् क् (ऋ) ध् झ् ढ्

92. इनमें से किस समूह की अल्पप्राण संज्ञा नही है–
(अ) च् ट् त् (इ) द् ब् ग्
(उ) ख् थ् फ् (ऋ) म् न् ञ्

93. इनमें से 'तालव्यवर्ण' कौन है–
(अ) श् (इ) ब्
(उ) स् (ऋ) ह्

94. इनमें से 'दन्त्यवर्ण' कौन है–
(अ) ष् (इ) स्
(उ) श् (ऋ) ह्

95. इनमें से 'मूर्धन्यवर्ण' कौन है–
(अ) श् (इ) ष्
(उ) स् (ऋ) य्

96. इनमें से किसका ह्रस्व नहीं होता–
(अ) आ (इ) ई
(उ) ए (ऋ) ऊ

97. 'ऐ' का ह्रस्व स्वर कौन है–
(अ) ए (इ) इ
(उ) उ (ऋ) इनमें से कोई नही

98. ए, ओ, ऐ, औ– क्या हैं–
(अ) केन्द्रीय स्वर (इ) मूलस्वर
(उ) अर्धस्वर (ऋ) संयुक्तस्वर

99. 'अपृक्त'– कौन हैं–
(अ) एकाल् प्रत्यय (इ) तद्धितान्त
(उ) कृदन्त (ऋ) ईकारान्त शब्द

100. 'वृद्धिसंज्ञक वर्ण' कितने होते हैं–
(अ) 5 (इ) 4
(उ) 3 (ऋ) 5

101. 'गुणसंज्ञक वर्ण' कितने हैं–
(अ) 5 (इ) 4
(उ) 3 (ऋ) 2

102. पाणिनीय अष्टाध्यायी का प्रथम सूत्र है–
(अ) अदेङ् गुणः (इ) आद्गुणः
(उ) वृद्धिरेचि (ऋ) वृद्धिरादैच्

103. अष्टाध्यायी का अन्तिम सूत्र है–
(अ) वृद्धिरादैच् (इ) अ अ
(उ) वृद्धिरेचि (ऋ) तच्च टेः

104. ऋकार के स्थान पर प्राप्त 'अण्' में रपर का विधान करने वाला सूत्र है–
(अ) ऋत्यकः (इ) उरण् रपरः
(उ) ऋत उत् (ऋ) रो रि

105. 'उरण् रपरः' सूत्र में कितने पद हैं–
(अ) 2 (इ) 3
(उ) 6 (ऋ) 4

106. 'सन्धिः'– इस पद में कौन-सा लिङ्ग है–
(अ) स्त्रीलिङ्ग (इ) पुँल्लिङ्ग
(उ) उभयलिङ्गी (ऋ) नपुंसकलिङ्ग

107. अष्टाध्यायी प्रथम अध्याय का वर्ण्य विषय है–
(अ) संज्ञा, परिभाषा (इ) सन्धिः
(उ) समासः (ऋ) कारकम्

108. अष्टाध्यायी के द्वितीय अध्याय में वर्णित है–
(अ) सन्धिः (इ) समास, कारक
(उ) संज्ञाप्रकरणम् (ऋ) कृत्प्रत्यय

109. अष्टाध्यायी के तृतीय अध्याय में वर्णित है–
(अ) तिङन्तप्रकरणम्
(इ) सन्धिः, स्वरनियम
(उ) कृत्यप्रत्यय, कृत् प्रत्यय
(ऋ) समास

110. अष्टाध्यायी के चतुर्थ और पञ्चम अध्यायों में वर्णित है–
(अ) कारकप्रकरण (इ) सन्धिप्रकरण
(उ) संज्ञाप्रकरण (ऋ) स्त्रीप्रत्यय एवं तद्धितप्रकरण

90.(इ), 91.(अ), 92.(उ), 93.(अ) 94.(इ), 95.(इ), 96.(उ), 97.(ऋ), 98.(ऋ), 99.(अ), 100.(उ), 101.(उ), 102.(ऋ), 103.(इ), 104.(इ), 105.(इ), 106.(इ), 107.(अ), 108.(इ), 109.(उ), 110.(ऋ),

111. अष्टाध्यायी के छठवें अध्याय में वर्णित है–
(अ) सन्धिप्रकरणम् (इ) सुबन्तप्रकरणम्
(उ) कारकप्रकरणम् (ऋ) समासप्रकरणम्

112. अष्टाध्यायी के सातवें अध्याय में वर्णित है–
(अ) स्वर वैदिक प्रक्रिया (इ) सुबन्त तिङन्त
(उ) समास, कारक (ऋ) संज्ञा परिभाषा

113.अष्टाध्यायी के अष्टम अध्याय का विवेच्य विषय है–
(अ) द्वित्व विधान, स्वरवैदिकी प्रक्रिया, बल, णत्व, विधान
(इ) सुबन्त तिङन्त
(उ) समास, सन्धि
(ऋ) तद्धित प्रकरण

2. सन्धि–गङ्गा (i) स्वरसन्धिः (अच्-सन्धिः)

1. 'पूर्व' शब्द के अन्त में अच् और पर शब्द के आदि में अच् हो, तो उस सन्धि को कहेंगे–
(अ) अच् सन्धि (इ) हल् सन्धि
(उ) विसर्ग सन्धि (ऋ) इनमें से कोई नही

2. प्रायशः सम्पूर्णसन्धि प्रकरण में किसका अधिकार रहता है–
(अ) ''हलोऽनन्तराः संयोगः'' का
(इ) ''संहितायाम्'' का
(उ) ''सुप्तिङन्तं पदं'' का
(ऋ) ''इको यणचि'' का

3. ''इको यणचि'' इस सूत्र में कुल कितने पद हैं–
(अ) पञ्चपदम् (इ) त्रिपदम्
(उ) द्विपदम् (ऋ) एकं पदम्

4. संहिता के विषय में अच् परे रहते 'इक्' के स्थान पर होगा–
(अ) अण् (इ) यर्
(उ) यण् (ऋ) इण्

5. ''इ उ ऋ लृ''- ये चार वर्ण किस प्रत्याहार के अन्तर्गत आते हैं–
(अ) अण् (इ) इण्
(उ) इक् (ऋ) इच्

6. 'यण्' प्रत्याहार के अन्तर्गत आते हैं–
(अ) ह् य् व् र् (इ) य् र् ल् श्
(उ) य् व् ल् ह् (ऋ) य् व् र् ल्

7. 'यण् सन्धि' में 'इ उ ऋ लृ' के स्थान पर क्रमशः आदेश होगा–
(अ) ह् य् व् र् (इ) य् व् ल् र्
(उ) य् र् ल् व् (ऋ) य् व् र् ल्

8. अनियम होने पर नियम करने वाले सूत्र को कहते हैं–
(अ) विधि सूत्र (इ) नियम सूत्र
(उ) परिभाषा सूत्र (ऋ) अधिकार सूत्र

9. सूत्र में सप्तमी विभक्ति के द्वारा निर्दिष्ट कार्य व्यवधान रहित किस वर्ण के स्थान पर होता है–
(अ) पूर्व वर्ण के (इ) पर वर्ण के
(उ) मध्य वर्ण के (ऋ) अन्त्य वर्ण के

10. परिभाषा सूत्र नहीं है–
(अ) तस्मिन्निति निर्दिष्टे पूर्वस्य
(इ) स्थानेऽन्तरतमः
(उ) यथासंख्यमनुदेशः समानाम्
(ऋ) झलां जश् झशि

11. ''इको यणचि'' सूत्र के ''इकः'' पद में विभक्ति है–
(अ) पञ्चमी (इ) षष्ठी
(उ) प्रथमा (ऋ) द्वितीया

12. ''इको यणचि'' सूत्रस्थ 'यण्' और 'अचि' पद में क्रमशः विभक्ति हैं–
(अ) प्रथमा, सप्तमी (इ) द्वितीया, सप्तमी
(उ) प्रथमा, षष्ठी (ऋ) इनमें से कोई नही

111. (अ), 112. (इ), 113. (अ) । 1. (अ), 2. (इ), 3. (इ), 4. (उ), 5. (उ), 6. (ऋ), 7. (ऋ) 8. (उ), 9. (अ) 10. (ऋ), 11. (इ), 12. (अ)

13. ''द्वित्व'' विधायक विधि सूत्र हैं–
(अ) तच्च टेः (इ) अनचि च
(उ) अलोऽन्त्यस्य (ऋ) पूर्वत्रासिद्धम्

14. 'झश्' वर्ण परे रहने पर 'झल्' के स्थान पर आदेश होगा–
(अ) झष् (इ) जश्
(उ) झर् (ऋ) झय्

15. ''प्रसंग प्राप्त होने पर स्थानादि की समानता से सदृशतम आदेश हो'' यह बात किस सूत्र में कही गयी है–
(अ) यथासङ्ख्यमनुदेशः समानाम्
(इ) स्थानेऽन्तरतमः
(उ) अन्तादिवच्च
(ऋ) अनेकाल्शित्सर्वस्य

16. संयोग के अन्त में विद्यमान वर्णों का लोप करता है–
(अ) तस्य लोपः (इ) अदर्शनं लोपः
(उ) संयोगान्तस्य लोपः (ऋ) लोपः शाकल्यस्य

17. ''नद्यत्र'' में सन्धि है–
(अ) गुण (इ) यण्
(उ) अयादि (ऋ) प्रकृतिभाव

18. 'अस्त्यात्मा' का सन्धिविच्छेद होगा–
(अ) अस्ती + आत्मः (इ) अस्ति + आतमा
(उ) अस्ति + आत्मा (ऋ) अस्ति + यात्मा

19. 'गुरु + आज्ञा' का सन्धियुक्त पद होगा–
(अ) गौराज्ञा (इ) गुरुज्ञा
(उ) गुर्वाज्ञा (ऋ) गुरोज्ञा

20. 'अच्' परे होने पर 'एच्' के स्थान पर कौन-सा आदेश नहीं होगा–
(अ) अय् (इ) अव्
(उ) अत् (ऋ) आव्

21. संहिता की स्थिति में ''ए, ओ, ऐ, औ'' के स्थान पर क्रमशः आदेश होते हैं–
(अ) अय् अव् आय् आत् (इ) अव् अय् आय् आव्
(उ) अय् अव् आव् आय् (ऋ)अय् अव् आय् आव्

22. 'नायकः' में सन्धि है–
(अ) अयादि (इ) गुण
(उ) वृद्धि (ऋ) पूर्वरूप

23. 'पावकः' में किस सूत्र से सन्धिकार्य हुआ–
(अ) पूर्वत्रासिद्धम् (इ) एचोऽयवायावः
(उ) पदान्तस्य (ऋ) वान्तो यि प्रत्यये

24. 'हरये' का सन्धि विच्छेद होगा–
(अ) हरि + ए (इ) हरे + ऐ
(उ) हरौ + ये (ऋ) हरे + ए

25. अयादि सन्धि का सूत्र है–
(अ) एच इग्घ्रस्वादेशे (इ) एको गोत्रे
(उ) एचोऽयवायावः (ऋ) एत्येधत्यूठ्सु

26. 'गुणसन्धि' का सूत्र है–
(अ) अदेङ् गुणः (इ) आद्गुणः
(उ) ओर्गुणः (ऋ) गुणो यङ्लुकोः

27. 'वृद्धिसन्धि' का सूत्र है–
(अ) वृद्धिरेचि
(इ) वृद्धिरादैच्
(उ) वृद्धाच्छः
(ऋ) वृद्धिर्यस्याचामादिस्तद् वृद्धम्

28. 'दीर्घसन्धिः' का सूत्र है–
(अ) दीर्घ इणः किति (इ) अकः सवर्णे दीर्घः
(उ) दीर्घोऽकितः (ऋ) दीर्घं च

29. 'पूर्वरूपसन्धि' का सूत्र है–
(अ) एङि पररूपम् (इ) पूर्वत्रासिद्धम्
(उ) एङः पदान्तादति (ऋ) पूर्वपदात् सञ्ज्ञायामगः

30. 'पररूप' विधायक सूत्र है–
(अ) परश्च (इ) एङः पदान्तादति
(उ) परेर्मृषः (ऋ) एङि पररूपम्

31. 'यण्सन्धि' का सूत्र है–
(अ) इको झल्
(इ) इको यणचि
(उ) इकोऽचि विभक्तौ
(ऋ) इकोऽसवर्णे शाकल्यस्य ह्रस्वश्च

13. (इ), 14. (इ),15.(इ) 16. (उ), 17. (इ), 18. (उ), 19. (उ), 20. (उ) 21. (ऋ), 22. (अ), 23. (इ), 24. (ऋ), 25. (उ) 26. (इ), 27. (अ), 28. (इ), 29. (उ), 30. (ऋ), 31. (इ),

32. 'प्रकृतिभाव' करने वाला सूत्र है–
(अ) सर्वत्र विभाषा गोः
(इ) प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम्
(उ) प्रकृत्यैकाच्
(ऋ) उपर्युक्त सभी

33. ''वान्तो यि प्रत्यये'' इस सूत्र का उदाहरण है–
(अ) गव्यम् (इ) नाव्यम्
(उ) उपर्युक्त दोनों (ऋ) इनमें से कोई नही

34. 'उपेन्द्रः' और 'गङ्गोदकम्' किस सन्धि के उदाहरण हैं–
(अ) वृद्धिसन्धि के (इ) गुण सन्धि के
(उ) अयादि सन्धि के (ऋ) यण् सन्धि के

35. पूर्व में 'अवर्ण' तथा पर में 'अश्' प्रत्याहार हो, तो पदान्त य्-व् का वैकल्पिक लोप किस सूत्र से होता है–
(अ) तस्य लोपः (इ) संयोगान्तस्य लोपः
(उ) लोपः शाकल्यस्य (ऋ) अदर्शनं लोपः

36. अष्टाध्यायी में ''त्रिपादी'' कहा जाता है–
(अ) प्रथम अध्याय का प्रथम, द्वितीय तृतीय पाद
(इ) अष्टम अध्याय का प्रथम द्वितीय एवं तृतीय पाद
(उ) सात अध्याय तथा अष्टम अध्याय का प्रथम पाद
(ऋ) अष्टम अध्याय का द्वितीय तृतीय चतुर्थ पाद

37. अवर्ण से एच् परे होने पर पूर्व और पर के स्थान पर आदेश होता है–
(अ) गुण (इ) वृद्धि
(उ) दीर्घ (ऋ) यण्

38. 'आद्गुणः' सूत्र का बाधक (अपवाद) सूत्र है–
(अ) एचोऽयवायावः (इ) इको यणचि
(उ) वृद्धिरेचि (ऋ) उरण् रपरः

39. ''एत्येधत्यूठ्सु'' सूत्र के उदाहरण है–
(अ) उपैति (इ) उपैधते
(उ) प्रष्ठौहः (ऋ) उपर्युक्त सभी

40. ''अक्षादूहिन्यामुपसंख्यानम्'' इस वार्तिक से प्रयोग सिद्ध होता है–
(अ) अक्षोहिणी (इ) अक्षौहिणी
(उ) अक्षाहिणी (ऋ) अक्षैहिणी

41. ''अक्ष + ऊहिनी = अक्षौहिणी'' प्रयोग में आदेश हुआ है–
(अ) गुण (इ) दीर्घ
(उ) वृद्धि (ऋ) इनमें से कोई नहीं

42. ''सुख + ऋतः = सुखार्तः'' यहाँ किस वार्तिक से वृद्धि हुई है–
(अ) ऋते च तृतीया समासे
(इ) एत्येधत्यूठ्सु
(उ) ऋवर्णान्नस्य णत्वं वाच्यम्
(ऋ) सामान्ये नपुंसकम्

43. ''प्रादूहोढोढ्येषैष्येषु'' इस वार्तिक के उदाहरण है–
(अ) प्रौहः, प्रौढः (इ) प्रौढिः
(उ) प्रैषः, प्रैष्यः (ऋ) सभी

44. वृद्धि विधान करने वाला वार्तिक है–
(अ) प्रादूहोढोढ्येषैष्येषु
(इ) ऋते च तृतीया समासे
(उ) प्रवत्सतरकम्बलवसनार्णदशानामृणे
(ऋ) उपर्युक्त सभी

45. 'प्रार्णम्', 'वसनार्णम्'– आदि में किस वार्तिक से वृद्धि का विधान किया गया है–
(अ) प्रवत्सतर-कम्बल-वसनार्णदशानामृणे
(इ) प्रादूहोढोढ्येषैष्येषु
(उ) प्रादिभ्यो धातुजस्य वाच्ये
(ऋ) प्रादयो गताद्यर्थे प्रथमया

46. ''प्रार्च्छति' में वृद्धि आदेश किस सूत्र से हुआ है–
(अ) वृद्धिरेचि (इ) वृद्धिरादैच्
(उ) उपसर्गादृति धातौ (ऋ) एत्येधत्यूठ्सु

47. ''उपसर्गादृति धातौ'' इस सूत्र द्वारा अवर्णान्त उपसर्ग से ऋकारादि धातु के परे होने पर क्या आदेश होता है–
(अ) गुण (इ) दीर्घ
(उ) वृद्धि (ऋ) पूर्वरूप

48. पदान्त एङ् से ह्रस्व अकार के परे होने पर पूर्व और पर के स्थान पर क्या आदेश होता है–
(अ) पूर्वरूप (इ) पररूप
(उ) वृद्धि (ऋ) गुण

32. (ऋ), 33. (उ), 34. (इ), 35. (उ), 36. (ऋ), 37. (इ), 38. (उ), 39. (ऋ), 40. (इ), 41. (उ), 42. (अ) 43. (ऋ), 44. (ऋ), 45. (अ), 46. (उ), 47. (उ) 48. (अ)

49. 'वृद्धिरेचि'' सूत्र का बाधक (अपवाद) सूत्र है–
(अ) एङः पदान्तादति (इ) एङि पररूपम्
(उ) एचोऽयवायावः (ऋ) इको यणचि

50. 'मनस्' में टिसंज्ञा होगी–
(अ) नस् (इ) अस्
(उ) स् (ऋ) मन

51. ''ओमाङोश्च'' सूत्र किसका विधान करता है–
(अ) पूर्वरूप (इ) पररूप
(उ) सवर्णसंज्ञा (ऋ) अव्यय (निपात)

52. ''अकः सवर्णे दीर्घः'' यह किन सूत्रों का अपवाद (बाधक) है –
(अ) ''आद्गुणः'' का (इ) ''इको यणचि'' का
(उ) दोनों का (ऋ) इनमें से किसी का नही

53. ''गो + अग्रम्''– इस स्थिति में रूप सिद्ध हो सकता है–
(अ) गवाग्रम् (इ) गोअग्रम्
(उ) गोऽग्रम् (ऋ) उपर्युक्त सभी

54. 'अवङ्' आदेश के सन्दर्भ में पाणिनि ने किस ऋषि का नाम अपने सूत्र में उल्लेख करते हैं–
(अ) शाकटायन (इ) शाकल्य
(उ) स्फोटायन (ऋ) शार्ङ्गरव

55. 'गो' शब्द के बाद 'इन्द्र' शब्द के आने पर क्या आदेश होगा–
(अ) अवङ् (इ) अग्र
(उ) आ (ऋ) ए

56. 'प्लुत' वर्ण को समझने के लिए कौन सा चिह्न प्रयुक्त होता है–
(अ) ऽ (इ) ३
(उ) ः (ऋ) ँ

57. ''दूराद्धूते च'' सूत्र से क्या आदेश होता है–
(अ) प्रकृतिभाव (इ) प्रगृह्य
(उ) प्लुत (ऋ) दीर्घ

58. ''प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम्'' यह सूत्र 'अच्' के परे होने पर 'प्लुत' और 'प्रगृह्य' को क्या विधान करता है–
(अ) प्रकृतिभाव (इ) पूर्वरूप
(उ) पररूप (ऋ) इनमें से कोई नहीं

59. प्रकृतिभाव के उदाहरण है–
(अ) हरी एतौ (इ) विष्णू इमौ
(उ) गङ्गे अमू (ऋ) उपर्युक्त सभी

60. ''प्रगृह्यसंज्ञा'' विधायक सूत्र है–
(अ) ओत् (इ) निपात एकाजनाङ्
(उ) अदसो मात् (ऋ) उपर्युक्त सभी

61. 'ओकारान्त' निपात की कौन-सी संज्ञा होगी–
(अ) प्रगृह्यसंज्ञा (इ) उपसर्गसंज्ञा
(उ) निपातसंज्ञा (ऋ) प्लुतसंज्ञा

62. वैकल्पिक द्वित्त्व विधायक सूत्र है–
(अ) ऋत्यकः (इ) द्वितीयायां च
(उ) द्विर्वचनेऽचि (ऋ) अचोरहाभ्यां द्वे

63. ह्रस्व ऋकार के परे होने पर पदान्त 'अक्' को किस सूत्र से ह्रस्व होता है–
(अ) ऋत्यकः (इ) उपसर्गादृति धातौ
(उ) ह्रस्वस्य गुणः (ऋ) ऋत उत्

64. ''ब्रह्मा + ऋषिः'' यहाँ सन्धियुक्त पद होगा–
(अ) ब्रह्मर्षिः (इ) ब्रह्म ऋषिः
(उ) उपर्युक्त दोनों (ऋ) केवल 'अ'

65. ''चक्री + अत्र = चक्रि अत्र'' – यहाँ पदान्त में विद्यमान 'ई' को किस सूत्र से ह्रस्व हुआ है–
(अ) इकोऽसवर्णे शाकल्यस्य ह्रस्वश्च
(इ) ह्रस्वः
(उ) ह्रस्वस्य गुणः
(ऋ) ह्रस्वं लघु

66. ''गो + इन्द्रः'' – इसका सन्धियुक्त रूप होगा–
(अ) गावेन्द्रः (इ) गो इन्द्रः
(उ) गवेन्द्रः (ऋ) गायेन्द्रः

49. (इ), 50. (इ), 51. (इ), 52. (उ) 53. (ऋ), 54. (उ), 55. (अ), 56. (इ), 57. (उ) 58. (अ), 59. (ऋ), 60. (ऋ), 61. (अ), 62. (ऋ), 63. (अ), 64. (उ), 65. (अ), 66. (उ)

67. ''आगच्छ कृष्ण 3 अत्र गौश्चरति'' यहाँ किस सूत्र से प्रकृतिभाव हुआ–
(अ) प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम्
(इ) सर्वत्र विभाषा गोः
(उ) निपात एकाजनाङ्
(ऋ) दूराद्धूते च

68. ''गो + अग्रम् = गो अग्रम्'' यहाँ किस सूत्र से प्रकृतिभाव हुआ–
(अ) प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम्
(इ) सर्वत्र विभाषा गोः
(उ) प्रकृत्यैकाच्
(ऋ) अवङ् स्फोटायनस्य

69. ''गो + अग्रम् = गोऽग्रम्'' किस सूत्र से सिद्ध होगा–
(अ) सर्वत्र विभाषा गोः (इ) एङः पदान्तादति
(उ) अवङ् स्फोटायनस्य (ऋ) एङि पररूपम्

70. ''गो + अग्रम् = गवाग्रम्''– यहाँ किस सूत्र से 'अवङ्' आदेश हुआ है–
(अ) अवङ् स्फोटायनस्य (इ) सर्वत्र विभाषा गोः
(उ) एचोऽयवायावः (ऋ) अवयवे च

71. ''हरे + अव = हरेऽव''– यहाँ क्या आदेश हुआ है–
(अ) पररूप (इ) पूर्वरूप
(उ) गुण (ऋ) दीर्घ

72. पूर्वरूप का उदाहरण है–
(अ) विष्णोऽव (इ) कोऽस्ति
(उ) नमोऽस्तु (ऋ) उपर्युक्त सभी

73. दीर्घ सन्धि के उदाहरण हैं–
(अ) दैत्यारिः (इ) श्रीशः
(उ) विष्णूदयः (ऋ) सभी

74. ''होतृ + ऋकारः = होतृकारः'' यहाँ सन्धि है–
(अ) यण् सन्धि (इ) अयादि सन्धि
(उ) दीर्घ सन्धि (ऋ) पूर्वरूप सन्धि

75. ''शिवायों नमः'' यहाँ पररूप का विधान किस सूत्र से हुआ है–
(अ) एङि पररूपम् (इ) ओमाङोश्च
(उ) शिवादिभ्योऽण् (ऋ) परश्च

76. ''शकन्ध्वादिषु पररूपं वाच्यम्''– यह वार्तिक क्या आदेश करता है–
(अ) पूर्वरूप (इ) पररूप
(उ) दीर्घ (ऋ) गुण

77. ''शक + अन्धुः = शकन्धुः''– यहाँ पूर्वपद के किस वर्ण को पररूप हुआ–
(अ) टिसंज्ञक 'अ' को (इ) अन्त्य वर्ण 'क' को
(उ) उक्त दोनों को (ऋ) इनमें से कोई नहीं

78. ''शकन्ध्वादिषु पररूपं वाच्यम्'' इस वार्तिक से पररूप आदेश हुआ है–
(अ) कर्कन्धुः (इ) मनीषा
(उ) मार्तण्डः (ऋ) उपर्युक्त सभी

79. 'मनीषा' का सन्धि विच्छेद होगा–
(अ) मन + ईषा (इ) मनस् + ईषा
(उ) मनः + इषा (ऋ) मनी + ईषा

80. ''मार्तण्डः'' का सन्धिविच्छेद होगा–
(अ) मृत + आण्डः (इ) मार्त + ण्डः
(उ) मार्त + अण्डः (ऋ) मर्त + अण्डः

81. क्रिया के योग में 'प्र'- आदि की 'उपसर्गसंज्ञा' किस सूत्र से होती है–
(अ) उपसर्गाः क्रियायोगे (इ) उपसर्गादृति धातौ
(उ) प्रादयः (ऋ) उपसर्गे घोः किः

82. ''प्र + एजते'' इसका सन्धियुक्त रूप होगा–
(अ) प्रैजते (इ) प्रेजते
(उ) प्र एजते (ऋ) प्रऽजते

83. 'उपोषति' का सन्धिविच्छेद होगा–
(अ) उप + औषति (इ) उप + ओषति
(उ) उपो + षति (ऋ) उप + ऐषति

84. पररूप सन्धि का उदाहरण नहीं है–
(अ) प्रेषयति (इ) अवेजते
(उ) प्रोषति (ऋ) नैजते

85. 'प्रार्च्छति' का सन्धि विच्छेद होगा–
(अ) प्र + ऋच्छति (इ) प्र + अर्च्छति
(उ) प्रा + र्च्छति (ऋ) प्रात् + छति

67.(अ), 68. (इ), 69. (इ), 70. (अ), 71. (इ), 72. (ऋ), 73. (ऋ), 74. (उ), 75. (इ), 76. (इ), 77. (अ), 78. (ऋ), 79. (इ), 80. (उ), 81. (अ), 82.(इ), 83. (इ), 84. (ऋ), 85. (अ)

86. 'कम्बल + ऋणम्' – सन्धियुक्त पद होगा–
(अ) कम्बलार्णम् (इ) कम्बलृणम्
(उ) कम्बलेणम् (ऋ) कम्बलर्णम्

87. 'ऋणार्णम्' का सन्धि विच्छेद होगा–
(अ) ऋण + अर्णम् (इ) ऋणार् + ऋर्णम्
(उ) ऋण + ऋणम् (ऋ) ऋण् +आर्णम्

88. 'दश + ऋणम्' = क्या होगा–
(अ) दशर्णम् (इ) दशार्णम्
(उ) दशृणम् (ऋ) दर्शाणम्

89. ''वसन + ऋणम् = वसनार्णम्'' यहाँ सन्धि है–
(अ) वृद्धि (इ) गुण
(उ) दीर्घ (ऋ) यण्

90. ''प्र + ऋणम्''= क्या होगा–
(अ) प्रर्णम् (इ) प्रैणम्
(उ) प्रोर्णम् (ऋ) प्रार्णम्

91. 'ऋणार्णम्' पद का क्या अर्थ है–
(अ) ऋण देने वाला (इ) ऋण लेने वाला
(उ) ऋण के लिए ऋण (ऋ) बहुत अच्छा ऋण

92. ''प्र + ऊहः =प्रौहः'' यहाँ सन्धि है–
(अ) गुण (इ) वृद्धि
(उ) दीर्घ (ऋ) इनमें से कोई नहीं

93. 'प्रौढः' का सन्धि विच्छेद होगा–
(अ) प्र + ओढः (इ) प्र + औढः
(उ) प्र + ऊढः (ऋ) प्र + ऊहः

94. 'प्र + ऊढिः' – इसका सन्धियुक्त रूप होगा–
(अ) प्रूढिः (इ) प्रौढिः
(उ) प्रोढिः (ऋ) प्राढिः

95. 'प्रैषः और 'प्रैष्यः'– यहाँ किस वार्तिक से वृद्धि का विधान किया गया है–
(अ) प्रवत्सतरकम्बलवसनार्णदशानामृणे
(इ) प्रादूहोढोढ्येषैष्येषु
(उ) प्रादयो गताद्यर्थे प्रथमया
(ऋ) प्रादिभ्यो धातुजस्य वाच्यो

96. ''कृष्ण + एकत्वम्''– यहाँ सन्धियुक्त पद होगा–
(अ) कृष्णेकत्वम् (इ) कृष्णोकत्वम्
(उ) कृष्णैकत्वम् (ऋ) कृष्णौकत्वम्

97. 'देवैश्वर्यम्' का सन्धिविच्छेद होगा–
(अ) देवे + ईश्वर्यम् (इ) देवै + ऐश्वर्यम्
(उ) देव + एर्श्यम् (ऋ) देव + ऐश्वर्यम्

98. ''कृष्ण + औत्कण्ठ्यम्= कृष्णौत्कण्ठ्यम्'' यहाँ 'अ + औ' इन दोनों वर्णों के स्थान पर वृद्धिसंज्ञक किस वर्ण का आदेश हुआ है–
(अ) ओ (इ) औ
(उ) ऐ (ऋ) आर्

99. ''आद्गुणः'' सूत्र का अपवाद सूत्र है–
(अ) इको यणचि (इ) एचोऽयवायावः
(उ) वृद्धिरेचि (ऋ) इनमें से कोई नही

100.''कृष्ण + ऋद्धिः = कृष्णर्द्धिः'' यहाँ कौन सन्धि है–
(अ) वृद्धि (इ) गुण
(उ) दीर्घ (ऋ) यण्

101. 'तवल्कारः' का सन्धि विच्छेद है–
(अ) तव + लृकारः (इ) तव + लकारः
(उ) तव + अल्कारः (ऋ) तवल् + कारः

102. 'आद्गुणः' सूत्र में 'आत्' पद से क्या तात्पर्य है–
(अ) 'तपरस्तत्कालस्य' सूत्र से यहाँ तपरग्रहण है
(इ) 'अ' शब्द का पञ्चमी एकवचन है
(उ) 'आङ्' उपसर्ग का सूचक है
(ऋ) केवल दीर्घ 'आ' का बोधक है

103. ''किमु + उक्तम् = किम्वुक्तम्'' किस सूत्र से सन्धि हुई–
(अ) मय उञो वो वा
(इ) सम्बुद्धौ शाकल्यस्येतावनार्षे
(उ) इकोऽसवर्णे शाकल्यस्य ह्रस्वश्च
(ऋ) अचो रहाभ्यां द्वे

104. ''विष्णो + इति''– इसका सन्धियुक्त पद होगा–
(अ) विष्ण + इति (इ) विष्णविति
(उ) उपर्युक्त दोनों (ऋ) कोई नहीं

86. (अ), 87. (उ), 88. (इ), 89. (अ), 90. (ऋ), 91. (उ), 92.(इ), 93. (उ) 94. (इ), 95. (इ), 96. (उ), 97. (ऋ), 98. (इ), 99. (उ), 100. (इ), 101. (अ), 102. (इ), 103. (अ), 104. (उ),

105. 'चक्री + अत्र'–इसका सन्धियुक्त पद होगा–
(अ) चक्रि अत्र (इ) चक्र्यत्र
(उ) उपर्युक्त दोनों (ऋ) इनमें से कोई नहीं

106. 'ब्रह्मा + ऋषिः'– इसका सन्धि होकर रूप बनेगा–
(अ) ब्रह्मर्षिः (इ) ब्रह्म ऋषिः
(उ) दोनों (ऋ) कोई नहीं

107. ''इ इन्द्रः'' 'उ उमेशः''– यहाँ किस सूत्र से प्रगृह्यसंज्ञा होकर प्रकृतिभाव हो गया–
(अ) प्रादयः (इ) चादयोऽसत्त्वे
(उ) ओत् (ऋ) निपात एकाजनाङ्

108. हरे + इह'' – इसका सन्धियुक्त रूप होगा–
(अ) हरयिह (इ) हर इह
(उ) दोनों (ऋ) कोई नहीं

109. ''विष्णाविह''–रूप का सन्धिविच्छेद होगा–
(अ) विष्णौ +इह (इ) विष्णौ + इह
(उ) विष्णो + विह (ऋ) विष्णो + इह

110. 'गव्यम्' का सन्धिविच्छेद होगा–
(अ) गौ+ यम् (इ) गो + अम्
(उ) गौ + अम् (ऋ) गो + यम्

111. ''गो +यूतिः = गव्यूतिः'' – प्रयोग किस वार्तिक से सिद्ध होगा–
(अ) वान्तो यि प्रत्यये (इ) अध्वपरिमाणे च
(उ) एचोऽयवायावः (ऋ) गोपसयोर्यत्

112. अवर्णान्त उपसर्ग से एङादि धातु के परे रहने पर पूर्व और पर के स्थान पर क्या आदेश होता है-
(अ) वृद्धि (इ) गुण
(उ) पूर्वरूप (ऋ) पररूप

113. 'नौ +यम्' – इसका सन्धियुक्त रूप होगा–
(अ) नाव्यम् (इ) नव्यम्
(उ) नौयम् (ऋ) नावम्

114. 'वान्तो यि प्रत्यये' – यहाँ 'यि' पद में कौन सी विभक्ति है –
(अ) द्वितीया (इ) सप्तमी
(उ) चतुर्थी (ऋ) पञ्चमी

115. 'दीर्घ' एकादेश किसके स्थान में होता है –
(अ) पूर्व वर्ण के
(इ) परवर्ण के
(उ) पूर्व और पर दोनों वर्णों के
(ऋ) इनमें से कोई नहीं

नोट - सन्धि के उदाहरणों की सूची पीछे परिशिष्ट भाग पेज नं. 177 में देखें।

- अल्पप्राण वर्ण हैं – 19 (उन्नीस)
  (वर्गों के प्रथम, तृतीय, पञ्चम वर्ण और यण्)
- महाप्राण वर्ण हैं – 14 (चौदह)
  (वर्गों के द्वितीय, चतुर्थ वर्ण और शल्)
- अघोष वर्ण हैं – 13 (तेरह)
- घोष वर्ण हैं – 20 (बीस)
- स्पर्शवर्ण हैं – 25 (क से म तक)
- अन्तःस्थ वर्ण हैं – 04 **यण्** = य् व् र् ल्।
- ऊष्मवर्ण हैं– 04 **शल्** = श् ष् स् ह्।
- आभ्यन्तरप्रयत्न – 05 (i) स्पृष्ट, (ii) ईषत् स्पृष्ट, (iii) ईषत् विवृत, (iv) विवृत, (v) संवृत
- बाह्यप्रयत्न – 11
- स्वर वर्ण हैं– 09 **अच्** = अ इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ
- ह्रस्वस्वर हैं– 05 **अक्** = अ, इ, उ, ऋ, ऌ
- दीर्घ या संयुक्तस्वर हैं– 04 **एच्** = ए, ओ, ऐ, औ
- संवार, नाद और घोष वर्ण हैं– 20 (**हश्**)
- विवार, श्वास, अघोष वर्ण हैं– 13 (**खर्**)
- जिह्वामूलीय वर्ण हैं– ≍क ≍ख
- उपध्मानीयवर्ण हैं– ≍प ≍फ
- उदित् हैं– कु चु टु तु पु
- अनुस्वार (ं) यथा – अं
- हलन्त (्) यथा– क्
- विसर्ग (ः) यथा– अः

105. (उ), 106. (उ), 107. (ऋ), 108. (उ), 109. (ऋ), 110. (ऋ), 111. (इ), 112. (ऋ), 113. (अ), 114. (इ), 115. (उ)।

(ii) व्यञ्जनसन्धिः (हल्-सन्धिः)

1. ''हल् सन्धि'' कहलाती है–
(अ) हल् से हल् परे (इ) हल् से अच् परे
(उ) उपर्युक्त दोनों (ऋ) इनमें से कोई नहीं

2. 'श्चुत्व' विधायक सूत्र है–
(अ) स्तोः श्चुना श्चुः (इ) ष्टुना ष्टुः
(उ) स्तोकान्तिकदूरार्थकृच्छ्राणि क्तेन
(ऋ) पञ्चम्याः स्तोकादिभ्यः

3. ''स्तोः श्चुना श्चुः''– यहाँ 'स्तोः' पद में विभक्ति है–
(अ) पञ्चमी (इ) षष्ठी
(उ) सप्तमी (ऋ) द्वितीया

4. ''स्तोः श्चुना श्चुः''– इस सूत्र में कुल कितने पद हैं–
(अ) द्विपदम् (इ) एकं पदम्
(उ) त्रिपदम् (ऋ) अपदम्

5. 'सकार' और 'तवर्ग' के स्थान पर 'शकार' और 'चवर्ग' का योग होने पर क्या आदेश होगा–
(अ) 'स' और चवर्ग (इ) 'स' और तवर्ग
(उ) 'श' और चवर्ग (ऋ) 'श' और तवर्ग

6. ''रामस् + शेते = रामश्शेते''– यहाँ किस सूत्र से सन्धिकार्य हुआ है–
(अ) पञ्चम्याः स्तोकादिभ्यः
(इ) स्तोः श्चुना श्चुः
(उ) स्वादिभ्यः श्नुः
(ऋ) ष्टुना ष्टुः

7. ''रामस् + चिनोति'' का सन्धियुक्त पद होगा–
(अ) रामाचिनोति (इ) रामस्चिनोति
(उ) रामश्चिनोति (ऋ) रामं चिनोति

8. ''सच्चित्'' का सन्धिविच्छेद होगा–
(अ) सत् + चित् (इ) सच् + चित्
(उ) सम् + चित् (ऋ) सञ् + चित्

9. ''शार्ङ्गिन् +जयः = शार्ङ्गिञ्जयः'' में सन्धि है–
(अ) ष्टुत्व सन्धि (इ) जश्त्व सन्धि
(उ) चर्त्व सन्धि (ऋ) श्चुत्व सन्धि

10. श्चुत्वनिषेधक सूत्र है–
(अ) न पदान्ताट्टोरनाम् (इ) शात्
(उ) नादिचि (ऋ) नश्च

11. ''विश् + नः''- सन्धियुक्त पद होगा-
(अ) विस्नः (इ) विशनः
(उ) विश्नः (ऋ) इनमें से कोई नही

12. 'प्रश्नः' का सन्धिविच्छेद होगा–
(अ) प्रश् + नः (इ) प्रस् + नः
(उ) प्र + श्नः (ऋ) प्रशन् + ञः

13. ''विश्नः'' और ''प्रश्नः'' इत्यादि स्थानों में किस सूत्र से 'श्चुत्व' का निषेध किया जाता है–
(अ) नश्च (इ) नादिचि
(उ) स्तोः श्चुना श्चुः (ऋ) शात्

14. 'विश्नः' पद का अर्थ होगा–
(अ) सवाल (इ) गमन
(उ) शयन (ऋ) विष्णु

15. ष्टुत्व विधायक विधिसूत्र है–
(अ) तोः षि (इ) ष्टुना ष्टुः
(उ) ष्णान्ता षट् (ऋ) षः प्रत्ययस्य

16. ''रामस् + षष्ठः = रामष्षण्ठः''– यहाँ किस सूत्र से सन्धिकार्य हुआ है–
(अ) 'ष्टुना ष्टुः' से (इ) 'ष्णान्ता षट्' से
(उ) 'षष्ठी शेषे' से (ऋ) 'षः प्रत्ययस्य' से

17. 'रामष्टीकते' का अर्थ है–
(अ) राम सोता है (इ) राम देखता है
(उ) राम जाता है (ऋ) राम रुकता है

18. 'रामष्टीकते' का सन्धिविच्छेद होगा–
(अ) रामष् + टीकते (इ) रामश् + टिकते
(उ) रामो + टीकते (ऋ) रामस् + टीकते

19. ''पेष् + ता'' – यहाँ सन्धियुक्त रूप होगा–
(अ) पेष्ता (इ) पेष्टा
(उ) पेष्ठा (ऋ) पेस्टा

1.(उ), 2.(अ), 3.(इ), 4.(उ), 5.(उ), 6.(इ), 7.(उ) 8.(अ), 9.(ऋ) 10.(इ), 11.(उ), 12.(अ), 13.(ऋ), 14.(इ),15.(इ) 16.(अ), 17. (उ), 18.(ऋ), 19.(इ),

20. ''तत् + टीका = तट्टीका''– यहाँ सन्धि है–
(अ) श्चुत्वसन्धि (इ) ष्टुत्व सन्धि
(उ) जश्त्व सन्धि (ऋ) चर्त्व सन्धि

21. ''चक्रिन् + ढौकसे = चक्रिण्ढौकसे'' यहाँ 'ढौकसे' पद का अर्थ है–
(अ) जाना (इ) डाँटना
(उ) डरना (ऋ) छुपना

22. 'षट् सन्तः' और 'षट् ते' यहाँ ष्टुत्व का निषेध किस सूत्र से किया गया–
(अ) नेटि (इ) नेर्विशः
(उ) नस्तद्धिते (ऋ) न पदान्ताट्टोरनाम्

23. ''षड् + नाम्''– इसका सन्धियुक्त पद होगा–
(अ) षट्नाम् (इ) षोणाम्
(उ) षण्णाम् (ऋ) षड्नाम्

24. ''षड् + नवतिः' – इसका सन्धियुक्त रूप होगा–
(अ) षड्णवतिः (इ) षण्णवतिः
(उ) उपर्युक्त दोनों (ऋ) इनमें से कोई नहीं

25. ''षड् + नगर्यः = षण्णगर्यः'' यहाँ ''न पदान्ताट्टोरनाम्'' इस सूत्र से प्राप्त ष्टुत्व निषेध को किस वार्तिक से रोका गया–
(अ) अनाम्नवतिनगरीणामिति वाच्यम्
(इ) नलोपश्च वा वाच्यः
(उ) न समासे (ऋ) पालकान्तान्न

26. ''सन् + षष्ठः = सन्षष्ठः'' यहाँ ''ष्टुना ष्टुः'' सूत्र से प्राप्त ष्टुत्व का निषेध किस सूत्र से किया गया–
(अ) न पदान्ताट्टोरनाम् (इ) शात्
(उ) तोः षि (ऋ) नलोपश्च वा वाच्यः

27. पद के अन्त में विद्यमान 'झल्' के स्थान पर ''झलां जशोऽन्ते'' सूत्र से क्या आदेश होगा–
(अ) झष् (इ) जश्
(उ) झर् (ऋ) झश्

28. 'वाक् + ईशः''– इसका सन्धियुक्त रूप होगा–
(अ) वाकीशः (इ) वाग्धीशः
(उ) वागीशः (ऋ) वाक्ईशः

29. 'अजन्तः'– का सन्धिविच्छेद होगा–
(अ) अच् + अन्तः (इ) अज् + अन्तः
(उ) अज + अन्तः (ऋ) अच + अन्तः

30. ''जगत् + ईशः = जगदीशः''– में सन्धि है–
(अ) छत्व सन्धि (इ) चर्त्व सन्धि
(उ) जश्त्व सन्धि (ऋ) श्चुत्व सन्धि

31. ''जश्त्व सन्धि'' नही है–
(अ) वागत्र (इ) सुबन्तः
(उ) कृदन्तः (ऋ) तल्लयः

32. यदि पर में कोई अनुनासिक वर्ण हो और पूर्व पद के अन्त में 'यर्' प्रत्यहार के वर्ण हों, तो विकल्प से क्या आदेश होगा–
(अ) अननुनासिक (इ) अनुनासिक
(उ) अन्तःस्थ (ऋ) ऊष्म

33. ''एतत्+ मुरारिः = एतन्मुरारिः'' यहाँ किस सूत्र से सन्धि हुई है–
(अ) यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा
(इ) अनुनासिकात्परोऽनुस्वारः
(उ) अत्रानुनासिकः पूर्वस्य तु वा
(ऋ) मुखनासिकावचनोऽनुनासिकः

34. ''तत् + मात्रम् = तन्मात्रम्'' – यहाँ अनुनासिक नकार का आदेश कैसा है–
(अ) वैकल्पिक (इ) नित्य
(उ) दोनों
(ऋ) कभी वैकल्पिक, कभी नित्य

35. 'यर्' के स्थान पर नित्य अनुनासिक आदेश कब होता है–
(अ) अनुनासिक वर्ण आदि में हो, ऐसे प्रत्ययों के परे होने पर
(इ) 'मात्रच्' 'मयट्' आदि प्रत्यय परे होने पर
(उ) ''प्रत्यये भाषायां नित्यम्'' इस वार्तिक के आधार पर
(ऋ) उपर्युक्त सभी

20. (इ) 21. (अ), 22. (ऋ), 23. (उ), 24. (उ), 25. (अ) 26. (उ), 27. (इ), 28. (उ), 29. (अ), 30. (उ), 31. (ऋ), 32. (इ) 33. (अ), 34. (इ), 35. (ऋ),

36. ''चित् + मयम्''– इसका सन्धियुक्त रूप होगा–
(अ) चिद्मयम् (इ) चित्मयम्
(उ) चिन्मयम् (ऋ) चिदामयम्

37. 'वाङ्मयम्' का सन्धिविच्छेद होगा–
(अ) वाक् + मयम् (इ) वाङ् + मयम्
(उ) वाक + मयम् (ऋ) वाङ्म + यम्

38. ''किञ्चित् + मात्रम्'' – सन्धियुक्त रूप होगा–
(अ) किञ्चित्मात्रम् (इ) किञ्चिन्मात्रम्
(उ) किञ्चिदमात्रम् (ऋ) किञ्चिल्मात्रम्

39. ''तोर्लि'' सूत्र से लकार के परे होने पर तवर्ग के स्थान पर क्या आदेश होता है–
(अ) अनुस्वार (इ) विसर्ग
(उ) परसवर्ण (ऋ) इनमें से कोई नहीं

40. ''तत् + लयः = तल्लयः'' यहाँ किस सूत्र से सन्धि का विधान किया गया है–
(अ) खरि च (इ) आदेः परस्य
(उ) झरो झरि सवर्णे (ऋ) तोर्लि

41. ''विद्वाल्लिँखति'' – इसका सन्धि विच्छेद होगा–
(अ) विद्वान् + लिखति (इ) विद्वाल् + लिखति
(उ) विद्वाँन + लिखति (ऋ) विद्वान्न + लिखति

42. 'उत्थानम्' – का सन्धि विच्छेद होगा–
(अ) उत् + थानम् (इ) उद् + थानम्
(उ) उत् + स्थानम् (ऋ) उत्थ + आनम्

43. 'उत् + स्तम्भनम्' – इसका सन्धियुक्त रूप होगा–
(अ) उत्तम्भनम् (इ) उत्स्तम्भनम्
(उ) उदस्तम्भनम् (ऋ) इनमें से कोई नहीं

44. ''खरि च'' इस सूत्र से चर्त्व होने पर 'श् ष् स्' के स्थान पर क्या आदेश होंगे–
(अ) अ ब स (इ) च् ट् त्
(उ) श् ष् स् (ऋ) ह् य् व्

45. ''झयो होऽन्यतरस्याम्'' इस सूत्र से 'झय्' से परे हकार के स्थान पर विकल्प से क्या आदेश होता है–
(अ) विसर्ग (इ) पूर्वसवर्ण
(उ) परसवर्ण (ऋ) उपर्युक्त सभी

46. ''वाक् + हरिः'' – इसका सन्धियुक्त रूप होगा–
(अ) वाग्घरिः (इ) वाग्हरिः
(उ) उपर्युक्त दोनों (ऋ) केवल 'इ'

47. 'समुद्धर्ता' का सन्धि विच्छेद होगा–
(अ) समुद् + हर्ता (इ) समुद्ध + हर्ता
(उ) समृद्धि + हर्ता (ऋ) समुद् + आहर्ता

48. ''अच् + हीनम्'' – इसका सन्धियुक्त रूप होगा–
(अ) अच्हीनम् (इ) अद्घीनम्
(उ) अज्झीनम् (ऋ) अज्जीनम्

49. ''दूराद्धूते च''– इसका सन्धिविच्छेद होगा–
(अ) दूराद् + हूते च (इ) दूरात् + आहूते च
(उ) दूराद् + धूते च (ऋ) दूराध् + धूते च

50. पूर्व में 'झय्' प्रत्याहार का वर्ण हो और पर में 'अट्' प्रत्याहार का वर्ण हो, तथा मध्य में 'शकार' हो, तो ''शश्छोऽटि'' सूत्र से 'शकार' के स्थान पर क्या वैकल्पिक आदेश होगा–
(अ) छकार (इ) तकार
(उ) पञ्चमाक्षर (ऋ) सकार

51. ''तत् + शिवः'' – इसका सन्धियुक्त रूप होगा–
(अ) तच्छिवः (इ) तच्शिवः
(उ) दोनों (ऋ) कोई नहीं

52. ''तच्छ्लोकेन'' इसका सन्धि विच्छेद होगा–
(अ) तच् + श्लोकेन (इ) तत् + श्लोकेन
(उ) तत् + छ्लोकेन (ऋ) तत्च + लोकेन

53. 'अनुस्वार' विधायक सूत्र है–
(अ) मोऽनुस्वारः (इ) नश्चापदान्तस्य झलि
(उ) अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः
(ऋ) केवल 'अ' और 'इ'

54. ''हरिम् + वन्दे''– इसका सन्धियुक्त रूप होगा–
(अ) हरिः वन्दे (इ) हरिन् वन्दे
(उ) हरिं वन्दे (ऋ) उपर्युक्त सभी

55. ''मोऽनुस्वारः'' इस सूत्र के उदाहरण हैं–
(अ) शत्रुं जयति (इ) भारतं वन्दे
(उ) मातरं पृच्छसि (ऋ) उपर्युक्त सभी

36.(उ), 37.(अ), 38.(इ), 39.(उ), 40.(ऋ), 41.(अ), 42.(उ) 43.(अ), 44.(उ), 45.(इ), 46.(उ), 47.(अ) 48.(उ), 49.(अ), 50.(अ), 51.(उ), 52.(इ) 53.(ऋ), 54.(उ), 55.(ऋ),

56. ''यशान् + सि'' – ऐसी स्थिति में सन्धियुक्त रूप होगा–
(अ) यशांसि (इ) यशान्सि
(उ) यशोसि (ऋ) यशोंसिः

57. ''नश्चापदान्तस्य झलि'' – इस सूत्र का उदाहरण है–
(अ) नंस्यति, हंसि
(इ) मनांसि, पयांसि, यशांसि
(उ) आक्रंस्यते, श्रेयांसि
(ऋ) उपर्युक्त सभी

58. ''परसवर्ण'' विधायक विधि सूत्र है–
(अ) अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः
(इ) मोऽनुस्वारः (उ) परश्च
(ऋ) अनुनासिकात्परोऽनुस्वारः

59. 'शान्तः' – इस पद का ''अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः'' इस सूत्र से सन्धिविच्छेद होगा–
(अ) शाम् + तः (इ) शान् + तः
(उ) शान्त + अः (ऋ) शात् + तः

60. ''वा पदान्तस्य''– इस वैकल्पिक परसवर्णविधायक विधिसूत्र द्वारा 'त्वम् + करोषि'– ऐसी स्थिति में सन्धियुक्त रूप क्या होगा–
(अ) त्वं करोषि (इ) त्वङ्करोषि
(उ) दोनों (ऋ) कोई नहीं

61. ''अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः'' इस सूत्र का उदाहरण नहीं है
(अ) अङ्कितः, अञ्चितः (इ) कुण्ठितः, गुम्फितः
(उ) दान्तः, गन्ता (ऋ) इनमें से कोई नहीं

62. ''सम् + राट्'' – इसका सन्धियुक्त रूप होगा–
(अ) समराट् (इ) सम्राट
(उ) सम्राट (ऋ) सम्राट्

63. ''सम् + राट्'' – यहाँ 'सम्' के मकार के स्थान पर अनुस्वार न होकर 'मकार' ही रह जाता है। किस सूत्र से–
(अ) मो राजि समः क्वौ (इ) हे मपरे वा
(उ) मोऽनुस्वारः (ऋ) समः सुटि

64. 'वृक्षात् + लगुडम्'– यहाँ ''तोर्लि'' सूत्र से सन्धि होगी–
(अ) वृक्षादलगुडम् (इ) वृक्षाल्लगुडम्
(उ) वृक्षोलगुडम् (ऋ) वृक्षलगुडम्

65. ''उद् + कीर्णः'' का ससन्धिरूप होगा–
(अ) उद्कीर्णः (इ) उतकीर्णः
(उ) उन्कीर्णः (ऋ) उत्कीर्णः

66. ''सुहृत्क्रीडति''–इसका सन्धि विच्छेद होगा–
(अ) सुहृद् + क्रीडति (इ) सुहृत + क्रीडति
(उ) सुहद + अक्रीडति (ऋ) सुहृत् + अक्रीडत्

67. ''गम् + य + ते'' – इसका रूप होगा–
(अ) गंयते (इ) गम्यते
(उ) गंस्यते (ऋ) गच्छति

68. ''मन् + यते'' इसका रूप होगा–
(अ) मानयते (इ) मंस्यते
(उ) मन्यते (ऋ) मंयते

69. ''चतुर् + नाम्'' – इसका णत्व युक्तरूप होगा–
(अ) चतुर्णाम् (इ) चतुर्नाम्
(उ) चत्वारणाम् (ऋ) चतुरणाम्

70. ''पूष् + ना''– इसका णत्व विधान होकर रूप होगा–
(अ) पूस्ना (इ) पूश्णा
(उ) पूष्णा (ऋ) प्रुष्णा

71. ''पितॄणाम्'' – इसका सन्धिविच्छेद होगा–
(अ) पितृ + णाम् (इ) पितॄ + नाम्
(उ) पित + ऋणाम् (ऋ) पितॄ + णाम्

72. व्याकरणशास्त्र में जो वर्ण किसी वर्ण को हटाकर, शत्रु की तरह बैठते हैं, वे कहे जाते हैं–
(अ) आदेश (इ) आगम
(उ) अनुबन्ध (ऋ) इत्संज्ञा

73. व्याकरणशास्त्र में जो वर्ण किसी वर्ण के पास मित्र की तरह आकर बैठते हैं, उन्हें कहते हैं–
(अ) आदेश (इ) इत्संज्ञक
(उ) आगम (ऋ) अनुबन्ध

56. (अ), 57. (ऋ) 58. (अ), 59. (अ), 60. (उ), 61. (ऋ), 62. (ऋ), 63. (अ), 64. (इ), 65. (ऋ), 66. (अ), 67.(इ), 68. (उ), 69. (अ), 70. (उ), 71. (इ), 72. (अ), 73. (उ),

74. समेलित करें–

(अ)	शत्रुवद्	(1)	आगमः
(ब)	मित्रवद्	(2)	अनुबन्धत्वम्
(स)	इत्संज्ञायोग्यत्वम्	(3)	आदेशः
(द)	उपदेशेऽजनुनासिक	(4)	इत्

(अ) अ-3 ब-1 स-2 द-4
(इ) अ-1 ब-2 स-3 द-4
(उ) अ-2 ब-1 स-4 द-3
(ऋ) अ-4 ब-2 स-3 द-4

75. ''सम् + स्कर्ता''– इसका शुद्ध रूप होगा–
(अ) सँस्कर्ता (इ) संस्स्कर्ता
(उ) संस्कर्ता (ऋ) उपर्युक्त सभी

76. 'सन् + शम्भुः – इसका सन्धियुक्त रूप होगा–
(अ) सञ्छम्भुः/सञ्च्छम्भुः
(इ) सञ्चशम्भुः/सञ्शम्भुः
(उ) उपर्युक्त चारों रूप सही
(ऋ) केवल 'अ' सही है

77. 'शकार' के परे पदान्त 'नकार' को विकल्प से 'तुक्' का आगम होता है– यह बात किस सूत्र में कही गयी–
(अ) शि तुक् (इ) नश्च
(उ) तोः षि (ऋ) शात्

78. 'प्रत्यङ् + आत्मा'– इसका सन्धियुक्त रूप होगा–
(अ) प्रत्यगात्मा (इ) प्रत्यकात्मा
(उ) प्रत्यङ्ङात्मा (ऋ) उपर्युक्त सभी

79. ''ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्'' इस सूत्र से किसका आगम होता है–
(अ) 'ङमुट्' का (इ) 'ङ' का
(उ) ह्रस्व 'अ' का (ऋ) 'ङम्' का

80. 'सुगण्णीशः'– इसका सन्धिविच्छेद होगा–
(अ) सुगण् + णीशः (इ) सुगणु + ईशः
(उ) सुगण् + ईशः (ऋ) सुगण + इशः

81. ''सन् + अच्युतः= सन्नच्युतः''– यहाँ किसका आगम हुआ है–
(अ) 'नुट्' का (इ) 'सुट्' का
(उ) 'तुक्' का (ऋ) 'धुट्' का

82. 'खर्' परे रहते अथवा अवसान में स्थित 'रेफ' को ''खरवसानयोर्विसर्जनीयः'' इस सूत्र से क्या आदेश होगा–
(अ) अनुस्वार (इ) विसर्ग
उ) अनुनासिक (ऋ) उपर्युक्त सभी

83. सिद्धान्तकौमुदी में ''सँस्स्कर्ता'' के कितने रूपों की सिद्धि दिखायी गयी है–
(अ) 100 (इ) 118
(उ) 111 (ऋ) 108

84. ''पुम् + कोकिलः'' इसका सन्धियुक्त रूप होगा–
(अ) पुँस्कोकिलः (इ) पुंस्कोकिलः
(उ) उपर्युक्त दोनों (ऋ) इनमें से कोई नहीं

85. 'चक्रिन् + त्रायस्व' – इसका सन्धियुक्त रूप होगा–
(अ) चक्रिँस्त्रायस्व (इ) चक्रिंस्त्रायस्व
(उ) दोनों (ऋ) इनमें से कोई नहीं

86. 'कान् + कान्' – इसका सन्धियुक्त रूप होगा–
(अ) कांस्कान् (इ) काँस्कान्
(उ) कान्कान् (ऋ) केवल 'अ' और 'इ'

87. ''शिव + छाया = शिवच्छाया'' – यहाँ किस सूत्र से 'तुक्' का आगम हुआ है–
(अ) छे च (इ) पदान्ताद्वा
(उ) शि तुक् (ऋ) समः सुटि

88. 'लक्ष्मी + छाया' – इसका सन्धियुक्त रूप होगा–
(अ) लक्ष्मीछाया (इ) लक्ष्मीच्छाया
(उ) दोनों (ऋ) लक्ष्मिछाया

89. 'कान् + कान्' – ऐसी स्थिति में ''तस्य परमाम्रेडितम्'' इस सूत्र से किस पद की 'आम्रेडितसंज्ञा' हो गयी–
(अ) पूर्व 'कान्' की (इ) द्वितीय 'कान्' की
(उ) दोनों की (ऋ) केवल प्रथम 'कान्' की

90. हल् सन्धि युक्त पद नही है-
(अ) तच्छिवः (इ) तच्शिवः
(उ) तच्छ्लोकेन (ऋ) प्रार्णम्

74.(अ), 75.(ऋ), 76.(उ), 77.(अ), 78.(उ), 79.(अ), 80.(उ), 81.(अ), 82.(इ), 83.(ऋ), 84.(उ), 85.(उ), 86.(ऋ), 87.(अ), 88.(उ), 89.(इ), 90.(ऋ)

(iii) विसर्गसन्धिः

1. 'विष्णुः + त्राता' का ससन्धि रूप होगा–

(अ) विष्णुत्राता (इ) विष्णूत्राता
(उ) विष्णुःत्राता (ऋ) विष्णुस्त्राता

2. ''विसर्जनीयस्य सः'' इस सूत्र के अनुसार 'खर्' प्रत्याहार परे होने पर विसर्ग के स्थान पर क्या आदेश होता है–

(अ) रेफ (इ) सकार
(उ) उकार (ऋ) इनमें से कोई नहीं

3. रुत्वविधायक सूत्र है–

(अ) स-सजुषो रुः (इ) अतो रोरप्लुतादप्लुते
(उ) रो रि (ऋ) रोः सुपि

4. 'उकार' आदेश विधायक सूत्र है–

(अ) अतो रोरप्लुतादप्लुते (इ) हशि च
(उ) उपर्युक्त दोनों (ऋ) इनमें से कोई नही

5. विसर्ग सन्धि में यकार का लोप करने वाला सूत्र है–

(अ) रोऽसुपि (इ) हलि सर्वेषाम्
(उ) रो रि (ऋ) हशि च

6. ''भो भगोअघोअपूर्वस्य योऽशि'' इस सूत्र के अनुसार 'अश्' प्रत्याहार परे होने पर भो, भगो, अघो तथा अवर्ण पूर्व वाले 'रु' के स्थान पर क्या आदेश होता है–

(अ) यकार (इ) सकार
(उ) रेफ (ऋ) विसर्ग

7. 'अहन्' शब्द के अन्त्य 'नकार' के स्थान पर रेफ आदेश विधायक सूत्र है–

(अ) रो रि (इ) रोः सुपि
(उ) रोऽसुपि (ऋ) रि च

8. रेफ के परे रेफ होने पर किस सूत्र से पूर्व रेफ का लोप होता है–

(अ) रोः सुपि (इ) रि च
(उ) रोऽसुपि (ऋ) रो रि

9. ''ढो ढे लोपः'' सूत्र से किसका लोप होता है–

(अ) पूर्व ढकार का (इ) पर ढकार का
(उ) रेफ का (ऋ) सभी का

10. ''ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः'' यह सूत्र क्या विधान करता है–

(अ) गुण (इ) वृद्धि
(उ) दीर्घ (ऋ) लोप

11. ''हरिः + शेते'' का सन्धि रूप होगा–

(अ) हरिश्शेते (इ) हरिः शेते
(उ) उपर्युक्त दोनों (ऋ) केवल 'अ'

12. 'शिवस् + अर्च्यः' – इसका ससन्धिरूप होगा–

(अ) शिवार्च्यः (इ) शिवरर्च्यः
(उ) शिवोचर्यः (ऋ) शिवोऽर्च्यः

13. ''शिवो वन्द्यः'' का सन्धि विच्छेद होगा–

(अ) शिव + वन्द्यः (इ) शिवः + वन्द्यः
(उ) शिवो + वद्यः (ऋ) शिवु + वन्द्यः

14. 'देवाः + इह' – इसका सन्धिरूप होगा–

(अ) देवा इह (इ) देवायिह
(उ) उपर्युक्त दोनों (ऋ) कोई नहीं

15. 'भोः + देवाः' का ससन्धि रूप होगा–

(अ) भोः देवाः (इ) भोस देवाः
(उ) भोगदेवा (ऋ) भो देवाः

1. (ऋ), 2. (इ), 3. (अ), 4. (उ), 5. (इ), 6. (अ), 7. (उ) 8. (ऋ), 9. (अ) 10. (उ), 11. (उ), 12. (ऋ), 13. (इ), 14. (उ),15. (ऋ)

16. **''भोभगोअघोअपूर्वस्य योऽशि'' इस सूत्र से 'यकार' आदेश तथा ''हलि सर्वेषाम्'' इस सूत्र से 'यकार' का लोप किन उदाहरणों में हुआ है–**

(अ) भो देवाः (इ) भगो नमस्ते
(उ) अघो याहि (ऋ) उपर्युक्त सभी में

17. **''रो रि'' सूत्र से रेफ का लोप तथा ''ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः'' सूत्र से अण् को दीर्घ हुआ है–**

(अ) पुना रमते (इ) हरी रम्यः
(उ) शम्भू राजते (ऋ) सभी में

18. **''पुना रमते' का सन्धि विच्छेद होगा–**

(अ) पुनः (र्) + रमते (इ) पुनो रमते
(उ) पुन + आरमते (ऋ) पुनस् + रमते

19. **''मनः (स्) + रथः = मनोरथः'' – यहाँ सन्धि है–**

(अ) अच् सन्धि (इ) हल् सन्धि
(उ) विसर्ग सन्धि (ऋ) 'अ' और 'इ' दोनों

20. **'हरिर् + रम्यः' का सन्धियुक्त रूप होगा–**

(अ) हरिर् रम्यः (इ) हरी रम्यः
(उ) हर्रिरम्यः (ऋ) हरिरम्यः

21. **'शम्भुर् + राजते' का ससन्धिरूप होगा–**

(अ) शम्भू राजते (इ) शम्भु + राजते
(उ) शम्भुस्राजते (ऋ) शम्भुरु राजते

22. **''रो रि'' और 'ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः' सूत्र का उदाहरण है–**

(अ) कवी रचयति (इ) शिशू रोदिति
(उ) गुरू रुष्टः (ऋ) उपर्युक्त सभी

23. **''रामः + टङ्कारयति'' – इसका ससन्धिरूप होगा–**

(अ) रामःटङ्कारयति (इ) रामष्टङ्कारयति
(उ) रामर्टङ्कारयति (ऋ) रामोटङ्कारयति

24. **'हरिश्चलति' का सन्धि विच्छेद होगा–**

(अ) हरिः + चलति (इ) हरि + चलति
(उ) हरौ + चलति (ऋ) हरे + चलति

25. **'नमः + करोति' – इसका ससन्धिरूप होगा–**

(अ) नमस्करोति (इ) नमः करोति
(उ) उपर्युक्त दोनों (ऋ) केवल 'अ' सही

26. **'पुरः + करोति'– इसका सन्धियुक्त रूप होगा–**

(अ) पुरस्करोति (इ) पुरःकरोति
(उ) पुरोकरोति (ऋ) पुरकरोति

27. **'तिरः + करोति' – इसका ससन्धिरूप होगा–**

(अ) तिरस्करोति (इ) तिरःकरोति
(उ) उपर्युक्त दोनों (ऋ) इनमें से कोई नहीं

28. **'सः + अपि' = क्या होगा–**

(अ) साऽपि (इ) सस्ऽपि
(उ) सोऽपि (ऋ) सेऽपि

29. **'रामः + अस्ति'– इसका ससन्धिरूप होगा–**

(अ) रामाऽस्ति (इ) रामस्ति
(उ) रामेस्ति (ऋ) रामोऽस्ति

30. **बालः + गच्छति'– क्या होगा–**

(अ) बालो गच्छति (इ) बालर्गच्छति
(उ) बाल गच्छति (ऋ) सभी रूप

31. **हरः + याति = क्या होगा–**

(अ) हर याति (इ) हरो याति
(उ) हरौ याति (ऋ) हरोर्याति

32. **'वृक्षो वर्धते' का सन्धि विच्छेद होगा–**

(अ) वृक्षर् + वर्धते (इ) वृक्षः + वर्धते
(उ) वृक्ष + वर्धते (ऋ) वृक्षो + वर्धते

16. (ऋ), 17. (ऋ), 18. (अ), 19. (उ), 20. (इ) 21. (अ), 22. (ऋ), 23. (इ), 24. (अ), 25. (उ)
26. (अ), 27. (उ), 28. (उ), 29. (ऋ), 30. (अ), 31. (इ), 32. (इ),

33. 'नराः + आगच्छन्ति'– इसका ससन्धिरूप होगा–
(अ) नरा आगच्छन्ति (इ) नरायागच्छन्ति
(उ) उक्त दोनों (ऋ) कोई नहीं

34. ''रामः + एति''= क्या होगा–
(अ) राम एति (इ) रामयेति
(उ) रामेति (ऋ) केवल 'अ' और 'इ'

35. ''जनः + इच्छति''– क्या होगा–
(अ) जन इच्छति (इ) जनयिच्छति
(उ) उपर्युक्त दोनों (ऋ) कोई नही

36. 'शत्रवः + आपतन्ति''= क्या होगा–
(अ) शत्रव आपतन्ति (इ) शत्रवयापतन्ति
(उ) दोनों (ऋ) कोई नहीं

37. ''मुनयः + आप्नुवन्ति''– क्या होगा–
(अ) मुनय आप्नुवन्ति (इ) मुनययाप्नुवन्ति
(उ) दोनों (ऋ) कोई नहीं

38. ''ऋषयः + एते''– क्या होगा–
(अ) ऋषय एते (इ) ऋषययेते
(उ) दोनों (ऋ) कोई नही

39. ''अहन् + अहन्'' = क्या होगा–
(अ) अहोऽहः (इ) अहन्हः
(उ) अहरहः (ऋ) अहर्हः

40. ''अहर्गणः''– इसका सन्धि विच्छेद होगा–
(अ) अहन् + गणः (इ) अहम् + गणः
(उ) अहर् + गणः (ऋ) अहो+ गणः

41. ''अहन् +भ्याम्'' = क्या होगा–
(अ) अहभ्यमि (इ) अहोभ्याम्
(उ) अहःभ्याम् (ऋ) अहोर्भ्याम्

42. ''अलिः + अयम्''– क्या होगा–
(अ) अलिः अयम् (इ) अलिरुयम्
(उ) अलिरयम् (ऋ) आलिरायम्

43. ''भानुः + उदेति'' = किम् ?
(अ) भानुरुदेति (इ) भानोदेति
(उ) भानूदेति (ऋ) भानवेदेति

44. ''सुधीः + एति'' = क्या होगा–
(अ) सुधीरैति (इ) सुधीरति
(उ) सुधीयैति (ऋ) सुधीरेति

45. ''गौः + अयम्'' = क्या होगा–
(अ) गौरुयम् (इ) गौरयम्
(उ) गौरोयम् (ऋ) गौऽयम्

46. ''कविः + वर्णयति'' = क्या होगा–
(अ) कविर्वर्णयति (इ) कवीवर्णयति
(उ) कविरावर्णयति (ऋ) कविर्वर्णयति

47. ''गुरुः + गच्छति'' – इसका सन्धियुक्त रूप होगा–
(अ) गुरुगच्छति (इ) गुरोगच्छति
(उ) गुरुर्गच्छति (ऋ) गुरावगच्छति

48. ''नौः + याति''– इसका ससन्धि रूप क्या होगा–
(अ) नौःयाति (इ) नौयति
(उ) नौर्याति (ऋ) नौरोयाति

49. ''लक्ष्मीः + याति''– क्या होगा–
(अ) लक्ष्मीयाति (इ) लक्ष्मीरुयाति
(उ) लक्ष्मिर्याति (ऋ) लक्ष्मीर्याति

50. ''सः + शम्भुः'' = सन्धि होगी–
(अ) स शम्भुः (इ) सो शम्भुः
(उ) सस्शम्भुः (ऋ) सु शम्भुः

51. ''एषः + विष्णुः''– इसका सन्धियुक्त रूप होगा–
(अ) एषो विष्णुः (इ) एष विष्णुः
(उ) एषय् विष्णुः (ऋ) कोई नहीं

52. ''सः + एष दाशरथी रामः''– इसका पद्य की पादशर्ति हेतु क्या रूप बनेगा–
(अ) सोष दाशरथी रामः (इ) सैष दाशरथी रामः
(उ) सेष दाशरथी रामः (ऋ) सौष दाशरथी रामः

53. 'श्रीः + एषा' = क्या होगा–
(अ) श्रीरैषा (इ) श्रीरेषा
(उ) श्रीर्षा (ऋ) श्रीरुषा

33. (उ), 34. (ऋ), 35. (उ), 36. (उ), 37. (उ), 38. (उ), 39. (उ), 40. (अ), 41. (इ), 42. (उ) 43. (अ), 44. (ऋ), 45. (इ), 46. (ऋ), 47. (उ) 48. (उ), 49. (ऋ), 50. (अ), 51. (इ), 52. (इ), 53. (इ)।

(iv) सन्धि-सङ्गमः

1. दीर्घसन्धि का उदाहरण है–
(अ) प्रत्येकम् (इ) एकैकः
(उ) उपेन्द्रः (ऋ) भानूदयः

2. ''इतोऽपि'' – इस पद में सन्धि है–
(अ) पूर्वरूपसन्धिः (इ) पररूपसन्धिः
(उ) प्रकृतिभावसन्धिः (ऋ) गुणसन्धिः

3. 'गुणसन्धि' का उदाहरण है–
(अ) दयार्थी (इ) यथैव
(उ) जलोर्मिः (ऋ) अद्यैव

4. वृद्धिसन्धि है–
(अ) प्रार्च्छति (इ) ऋणार्णम्
(उ) अक्षौहिणी (ऋ) सभी में

5. अयादिसन्धि का उदाहरण है–
(अ) भानुरुदेति (इ) सूर्योदयः
(उ) भवति (ऋ) यद्यपि

6. व्यञ्जनसन्धि का उदाहरण है–
(अ) वागीशः (इ) देवैश्वर्यम्
(उ) नायकः (ऋ) एकैकम्

7. विसर्गसन्धि का उदाहरण है–
(अ) विष्णोऽव (इ) बालो हसति
(उ) वाङ्महिमा (ऋ) देवर्णम्

8. पररूपसन्धि का उदाहरण है–
(अ) उपोषति (इ) कोऽपि
(उ) गङ्गैषा (ऋ) ममैव

9. ''चमू + उदधिः = चमूदधिः''– यहाँ सन्धि है–
(अ) गुणसन्धिः (इ) अयादिसन्धिः
(उ) पररूप सन्धिः (ऋ) दीर्घसन्धिः

10. ''तव + एव = तवैव'' में कौन सन्धि है–
(अ) गुणसन्धिः (इ) वृद्धिसन्धिः
(उ) यण् सन्धिः (ऋ) अयादिसन्धिः

11. ''पश्याम्यहम्''– इसका सन्धि विच्छेद होगा–
(अ) पश्याम् + अहम् (इ) पश्यामि + अहम्
(उ) पश्याम + अहम (ऋ) पश्य + अहम्

12. ''ह्यासनम्''– इस यण्सन्धि का विच्छेद होगा–
(अ) ह्य + आसनम्
(इ) ह्य + असनम्
(उ) हि + आसनम्
(ऋ) हि + आ + आसन

13. ''खल्वेषः'' – इस यण् सन्धि का विच्छेद होगा–
(अ) खल्व् + एषः (इ) खलु + ऐषः
(उ) खल + एषः (ऋ) खलु + एषः

14. ''इवावभाति''– इस दीर्घसन्धि का विच्छेद होगा–
(अ) इवाव् + अभाति (इ) इवावः + भाति
(उ) इव + अवभाति (ऋ) इव + आबभाति

15. ''तदैतदर्थम्''– इसका विच्छेद होगा–
(अ) तद् + ऐतदर्थम्
(इ) तत् + एतद् + अर्थम्
(उ) तत् + एतदर्थम्
(ऋ) तदा + एतत् + अर्थम्

16. ''मध्वास्वादनम्''– इस यण् सन्धि का विच्छेद होगा–
(अ) मधु + वा + स्वादनम्
(इ) मध्व + स्वादनम्
(उ) मधु + आस्वादनम्
(ऋ) मध्वा + स्वादनम्

17. ''देवर्णम्'' – इस गुणसन्धि का विच्छेदः क्रियताम् ?
(अ) देव + ऋणम् (इ) देव + अर्णम्
(उ) देव + ॠणम् (ऋ) देवर् + णम्

18. ''दिक् + गजः''– इसका हल् सन्धि युक्त रूप होगा–
(अ) दिक्गजः (इ) दिग्गजः
(उ) दिध्गजः (ऋ) दिङ्गजः

1. (ऋ), 2. (अ), 3. (उ), 4. (ऋ), 5. (उ),6. (अ), 7. (इ) 8. (अ), 9. (ऋ) 10. (इ),
11. (इ), 12. (उ), 13. (ऋ), 14. (उ),15.(ऋ), 16. (उ), 17. (अ), 18. (इ),

19. ''कार्याणि + एव = कार्याण्येव'' यहाँ किस सूत्र से यण् सन्धि हुई है–
(अ) इको गुणवृद्धी
(इ) इग्यणः सम्प्रसारणम्
(उ) इको यणचि
(ऋ) इकोऽसवर्णे शाकल्यश्च

20. ''यावज्जीवम्''– इसका विच्छेद होगा–
(अ) यावद् + जीवम् (इ) यावन् + जीवम्
(उ) यावज् + जीवम् (ऋ) यावच् + जीवम्

21. ''भूयसोक्तम्''– इस गुणसन्धि का विच्छेद होगा–
(अ) भूयस् + ओक्तम् (इ) भूयसा + अक्तम्
(उ) भूय + सोक्तम् (ऋ) भूयसा + उक्तम्

22. ''महच्चित्रम्'' – इसका सन्धिविच्छेद करें–
(अ) महद् + चित्रम् (इ) महत् + चित्रम्
(उ) महस् + चित्रम् (ऋ) महच् + चित्रम्

23. ''मत्यायाशा''– इस अयादिसन्धि का विच्छेद करें–
(अ) मत्याय + आशा (इ) मत्यै + आशा
(उ) मत्यो + याशा (ऋ) मत्ये + आशा

24. ''विद्वज्जनः''– इसका सन्धिविच्छेद होगा–
(अ) विद्वज् + जनः (इ) विद्वस् + जनः
(उ) विद्वद् + जनः (ऋ) विद्वान् + जनः

25. ''हृदयौदार्यम्''– इस वृद्धि सन्धि का विच्छेद होगा–
(अ) हृदय + उदार्यम् (इ) हृदि + औदार्यम्
(उ) हृदय + औदार्यम् (ऋ) हृदयौ + दार्यम्

26. ''हरेश्शयनम्'' का विच्छेद होगा–
(अ) हरेश + शयनम् (इ) हरेश् + शयनम्
(उ) हरेः + शयनम् (ऋ) हरेः + श्यनम्

27. ''गोपी + उवाच''– इसका सन्धियुक्त रूप होगा–
(अ) गोपीवाच (इ) गोपोवाच
(उ) गोपीयवाच (ऋ) गोप्युवाच

28. 'देवौ + आसाते''– इसका सन्धियुक्त रूप होगा–
(अ) देवौसाते (इ) देवौ आसाते
(उ) देवावासतौ (ऋ) देवावासाते

29. ''अश्वः + तिष्ठति''– इसका सन्धिरूप होगा–
(अ) अश्वो तिष्ठति (इ) अश्वस्तिष्ठति
(उ) अश्व तिष्ठति (ऋ) अश्वः तिष्ठति

30. ''पयः + समुद्रः''– इसका सन्धिरूप होगा–
(अ) पयोसमुद्रः (इ) पयसमुद्रः
(उ) पयस्समुद्रः (ऋ) पयंसमुद्रः

31. ''शिष्यः + नमति''– इसका सन्धियुक्त रूप होगा–
(अ) शिष्यः नमति (इ) शिष्यस्नमति
(उ) शिष्य नमति (ऋ) शिष्यो नमति

32. ''रामम् + नमामि''– इसका ससन्धि रूप होगा–
(अ) रामम् नमामि (इ) रामं नमामि
(उ) रामाय नमामि (ऋ) रामम्नमामि

33. ''कृष्णः + गच्छति''– इसका सन्धियुक्त रूप होगा–
(अ) कृष्णो गच्छति (इ) कृष्णः गच्छति
(उ) कृष्णस्गच्छति (ऋ) कृष्ण गच्छति

34. ''रामः + इच्छति'' – इसका सन्धिरूप होगा–
(अ) रामो इच्छति (इ) रामेच्छति
(उ) रामः इच्छति (ऋ) राम इच्छति

35. ''कस्मात् + चित्''– इसका सन्धिरूप होगा–
(अ) कस्मिश्चित् (इ) कश्मश्चित्
(उ) कस्माच्चित् (ऋ) कस्मात्चित्

36. ''विभो + अवेहि''– इसका सन्धिरूप होगा–
(अ) विभोऽवेहि (इ) विभोवेहि
(उ) विभौवेहि (ऋ) विभावेहि

37. ''सम्राट् + गच्छति''– इसका सन्धिरूप होगा–
(अ) सम्राट्गच्छति (इ) सम्राटगच्छति
(उ) सम्राड्गच्छति (ऋ) सम्राडगच्छति

38. ''अमी + ईशाः''– यहाँ सन्धियुक्त पद होगा–
(अ) अमीशाः (इ) अमी ईशाः
(उ) अम्यीशाः (ऋ) अम्योशाः

39. ''महा + ऋषिः''– इसका सन्धियुक्त पद होगा–
(अ) महार्षिः (इ) महर्षिः
(उ) महाऋषिः (ऋ) महेर्षि

19. (उ),20. (अ) 21. (ऋ), 22. (इ), 23. (इ), 24. (उ), 25. (उ) 26. (उ), 27. (ऋ), 28. (ऋ), 29. (इ), 30. (उ), 31. (ऋ), 32. (इ), 33. (अ), 34. (ऋ), 35. (उ), 36. (अ), 37. (उ),38. (इ), 39. (इ),

40. ''तव + लृकारः'' इसका गुण सन्धिरूप होगा–
(अ) तवलृकारः (इ) तवोल्कारः
(उ) तवल्कारः (ऋ) तवालृकारः

41. 'प्र + एजते' – यहाँ पररूप होकर पद सिद्ध होगा–
(अ) प्रैजते (इ) प्रेजते
(उ) प्रोजते (ऋ) प्रयजते

42. ''सु + उक्तिः''– यहाँ दीर्घसन्धियुक्त पद होगा–
(अ) सुक्तिः (इ) सूक्तिः
(उ) स्वक्तिः (ऋ) स्वोक्तिः

43. 'गायकः' इस अयादि सन्धि का विच्छेद होगा–
(अ) गो + अकः (इ) गौ + अकः
(उ) गै + अकः (ऋ) गे + अकः

44. 'वर्षर्तुः' – इस गुणसन्धि का सही विच्छेद होगा–
(अ) वर्षा + ऋतुः (इ) वर्षम् + ऋतु
(उ) वर्ष + अर्तुः (ऋ) वर्षु + ऋतु

45. ''संस्कृतगङ्गोर्मिः''– इस गुणसन्धि का विच्छेदः क्रियताम् ?
(अ) संस्कृगङ्ग + ओर्मिः
(इ) संस्कृत + गङ्गा + ओर्मिः
(उ) संस्कृतगङ्गा + ऊर्मिः
(ऋ) संस्कृत + गङ्गे + उर्मिः

46. ''द्वावपि''– इस अयादिसन्धि का समीचीनं सन्धिविच्छेदः किम् ?
(अ) द्वा + अपि (इ) द्वो + अपि
(उ) द्वाव् + अपि (ऋ) द्वौ + अपि

47. ''नमस्ते'' – इसका सन्धि विच्छेद होगा–
(अ) नम + अस्ते (इ) नमः + ते
(उ) नम् + ते (ऋ) नम + नस्ते

48. 'अन्वयः' – इस यण् सन्धि का विच्छेद होगा–
(अ) अनो + अयः (इ) अनु + इयः
(उ) अनु + अयः (ऋ) अनि + अयः

49. ''सुखार्तः''– इस वृद्धिसन्धि का विच्छेद होगा–
(अ) सुख + आर्तः (इ) सुख + अर्तः
(उ) सुखो + ऋतः (ऋ) सुख + ऋतः

50. 'अनु + अभवत्'– इसका यणसन्धियुक्त रूप होगा–
(अ) अन्वभवत् (इ) अनवाभवत्
(उ) अनुऽभवत् (ऋ) अन्वाभवत्

51. ''भू + ऊर्ध्वम्''– इसका दीर्घ सन्धि युक्त रूप होगा–
(अ) भूर्ध्वम् (इ) भूरुर्ध्वम्
(उ) भूर्धम् (ऋ) भोर्ध्वम्

52. 'सत् + आचारः'– इसका सन्धियुक्त रूप है–
(अ) सत्याचारः (इ) सदाचारः
(उ) सताचारः (ऋ) सद् आचारः

53. 'महा + औषधम्'– वृद्धिसन्धियुक्त रूप होगा–
(अ) महोषधम् (इ) मह्योषधम्
(उ) महौषधम् (ऋ) महाषधम्

54. 'भो + अनम्'– इसका अयादि सन्धियुक्त रूप होगा–
(अ) भोवनम् (इ) भवनम्
(उ) भोऽनम् (ऋ) भावनम्

55. ''जगत् + जालम्''– इसका ससन्धिरूप होगा–
(अ) जगतजालम् (इ) जगद्जालम्
(उ) जगज्जालम् (ऋ) जगत्जालम्

56. 'तत् + ज्ञानम्'– इसका ससन्धिरूप होगा–
(अ) तत्ज्ञानम् (इ) तद्ज्ञानम्
(उ) तदज्ञानम् (ऋ) तज्ज्ञानम्

57. 'उत् + ज्वलः' – इसका सन्धियुक्त रूप होगा–
(अ) उज्जवलः (इ) उत्ज्वलः
(उ) उद्जवलः (ऋ) उज्ज्वलः

58. 'आशीः + वादः'– इसका सन्धियुक्त रूप होगा–
(अ) आर्शिवादः (इ) आशीवादः
(उ) आशीर्वादः (ऋ) आशीरवादः

59. 'महत्' + लावण्यम्'– इसका ससन्धि रूप होगा–
(अ) महत्लावण्यम् (इ) महद्लावण्यम्
(उ) महालावण्यम् (ऋ) महल्लावण्यम्

40. (उ), 41. (इ), 42. (इ) 43. (उ), 44. (अ), 45. (उ), 46. (ऋ), 47. (इ) 48. (उ), 49. (ऋ), 50. (अ), 51. (अ), 52. (इ) 53. (उ), 54. (इ), 55. (उ), 56. (ऋ), 57. (ऋ) 58. (उ), 59. (ऋ),

60. 'चम् + चलः'– इसका सन्धियुक्तरूप होगा–
(अ) चंचलः (इ) चम्चलः
(उ) चन्चलः (ऋ) चञ्चलः

61. 'कस्मिन् + चित्' – इसका ससन्धिरूप होगा–
(अ) काश्मिश्चित् (इ) कस्मिस्चित्
(उ) कस्मिंश्चित् (ऋ) कस्मिन्शिचत्

62. ''लिढ् + ढः'' – इसका सन्धियुक्तरूप होगा–
(अ) लढ्ढिः (इ) लिढः
(उ) लीढः (ऋ) लीड्ढः

63. ''षट् + आननः''– इसका सन्धियुक्त रूप होगा–
(अ) षटाननः (इ) षोडाननः
(उ) षढाननः (ऋ) षडाननः

64. 'शोध + छात्रः'– इसका ससन्धिरूप होगा–
(अ) शोधछात्रः (इ) शोधश्छात्रः
(उ) शोधच्छात्रः (ऋ) शोधस्छात्रः

65. प्रकृतिभाव सन्धि का उदाहरण है–
(अ) प्रत्येकम् (इ) मुनी इमौ
(उ) इन्द्राग्निः (ऋ) मुनि इमौ

66. 'पृथक् + विना'– इसका सन्धियुक्त रूप होगा–
(अ) पृथग्विना (इ) पृथक्विना
(उ) पृथाविना (ऋ) पृथगविना

67. दीर्घसन्धि का उदाहरण है–
(अ) मातृणम् (इ) ऋणार्णम्
(उ) दशानार्णम् (ऋ) उपर्युक्त सभी

68. 'तत्रैवोक्तम्'– इसका सन्धिविच्छेद होगा–
(अ) तत्र + एव + उक्तम्
(इ) तत्र + एव + ओक्तम्
(उ) तत्रै + वोक्तम्
(ऋ) तत्र + इव + उक्तम्

69. 'राज्याधिपतिः' – क्या यहाँ दीर्घसन्धि है–
(अ) न (इ) आम्
(उ) किञ्चित् अस्ति (ऋ) कदाचित् न भवति

70. 'संस्कृतोपयोगी''– यहाँ कौन सन्धि है–
(अ) अयादिसन्धि (इ) गुणसन्धि
(उ) दीर्घसन्धिः (ऋ) पूर्वरूप सन्धि

71. ''चैव''– इस वृद्धिसन्धि का विच्छेद होगा–
(अ) च + इव (इ) च + एव
(उ) चे + एव (ऋ) चि + एव

72. ''तत् + लिखति''– इसका ससन्धिरूप होगा–
(अ) तद्लिखति (इ) तल्लिखति
(उ) तत्लिखति (ऋ) तंलिखति

73. 'यथाह'– इसका सन्धिविच्छेद होगा–
(अ) यथा + ह (इ) यथा + अह
(उ) यथ + आह (ऋ) यथा + आह

74. 'न + इमे = नेमे'– यहाँ सन्धि है–
(अ) वृद्धिसन्धि (इ) गुणसन्धि
(उ) यण् सन्धि
(ऋ) सन्धि नही, केवल संयोग है

75. 'पुनः + अपि'– इसका ससन्धि रूप होगा–
(अ) पुनाऽपि (इ) पुनोऽपि
(उ) पुनरपि (ऋ) पुनारपि

76. भ्रातृ + ऋद्धिः = भ्रातृद्धिः– यहाँ सन्धि है–
(अ) गुणसन्धि (इ) वृद्धिसन्धि
(उ) दीर्घसन्धि (ऋ) इनमें से कोई नही

77. 'एतांस्तथा'– इसका विच्छेद होगा–
(अ) एताः + तथा (इ) एताभि + तथा
(उ) एताम् + तथा (ऋ) एतान् + तथा

78. 'विधुरुदेति'– यहाँ कौन सी सन्धि है–
(अ) गुणसन्धि (इ) यण् सन्धि
(उ) विसर्गसन्धि (ऋ) हल् सन्धि

79. ''देवौ + अवलोक्य = देवावलोक्य'' यहाँ सन्धि है–
(अ) गुण (इ) वृद्धि
(उ) अयादि (ऋ) दीर्घ

80. 'गुरुः + आद्रियते'– इसका ससन्धिरूप होगा–
(अ) गुर्वाद्रियते (इ) गुरुराद्रियते
(उ) गुरोऽर्द्रियते (ऋ) गुरूर्द्रियते

81. 'शक + अन्धुः = शकन्धुः'– अत्र किं वाच्यम्?
(अ) पूर्वरूपं वाच्यम् (इ) पररूपं वाच्यम्
(उ) दीर्घः वाच्यः (ऋ) गुणः वाच्यः

60. (ऋ), 61. (उ), 62.(उ) 63. (ऋ), 64. (उ), 65. (इ), 66. (अ), 67.(अ), 68. (अ), 69. (इ), 70. (इ), 71. (इ), 72. (इ), 73. (ऋ), 74. (इ), 75. (उ), 76. (उ), 77. (ऋ), 78. (उ), 79. (उ), 80. (इ), 81. (इ),

82. 'शुचावृषिः' – सन्धि विच्छेद होगा–
(अ) शुचा + वृषिः (इ) शुचौ + ऋषिः
(उ) शुचौ + वृषिः (ऋ) शुचाव् + ऋषिः

83. 'नैवम् नैनम्'– यहाँ सन्धि है–
(अ) गुण (इ) वृद्धि
(उ) पररूप (ऋ) अयादि

84. ''एत्येधत्यूठ्सु'' – इस सूत्र से क्या आदेश होता है–
(अ) गुणादेशः (इ) अयादेशः
(उ) दीर्घादेशः (ऋ) वृद्ध्यादेशः

85. ''वद + इति = वदेति''– यहाँ सन्धि है–
(अ) वृद्धि (इ) गुण
(उ) पररूप (ऋ) पूर्वरूप

86 ''नील + उत्पलम्– नीलोत्पलम्'' यहाँ सन्धि है–
(अ) वृद्धि (इ) दीर्घ
(उ) यण् (ऋ) गुण

87. 'षड् + नवतिः – षण्णवतिः'– यहाँ सन्धि है–
(अ) विसर्ग सन्धि (इ) हल् सन्धि
(उ) यण् सन्धि
(ऋ) यान्तावान्तादेश सन्धि

88. वृद्धिसन्धि का उदाहरण है–
(अ) प्रथमैकवचनम् (इ) द्वितीयैकवचनम्
(उ) तृतीयैकवचनम् (ऋ) सभी

89. ''रमैक्यम्''– का सन्धि विच्छेद है–
(अ) रमा + ऐक्यम् (इ) रम + एक्यम्
(उ) रम् + ऐक्यम् (ऋ) राम + ऐक्यम्

90. अयादिसन्धि का उदाहरण है–
(अ) इत्यादि (इ) विष्णवे
(उ) सुध्युपास्यः (ऋ) इनमें से कोई नहीं

91. प्रकृतिभाव सन्धि का उदाहरण है–
(अ) इति अपि (इ) शिव इन्द्रः
(उ) बालकौ अत्र (ऋ) विष्णू इमौ

92. छत्वसन्धि का उदाहरण है–
(अ) संयमः (इ) तथैव
(उ) तच्छिवः (ऋ) सच्चित्

93. 'पुना रमते'– यहाँ कौन-सा सूत्र प्रयुक्त है–
(अ) रो रि (इ) हशि च
(उ) रोऽसुपि (ऋ) अनचि च

94. ''वटो + ऋक्षः = वटवृक्षः'' यहाँ सन्धि है–
(अ) अयादि सन्धि (इ) गुणसन्धि
(उ) वृद्धिसन्धि (ऋ) पूर्वरूप सन्धिः

95. 'शिवेहि'– का सन्धि विच्छेद होगा–
(अ) शिव + हि (इ) शिव + हि
(उ) शिव + आ + इहि (ऋ) शिवो + हि

96. ''सम् + यमः''– इसका ससन्धिरूप होगा–
(अ) संय्यमः (इ) संयमः
(उ) सोयमः (ऋ) सङ्गयमः

97. 'सञ्जयः + उवाच'– यहाँ ससन्धिरूप होगा–
(अ) सञ्जयोवाच (इ) सञ्जय उवाच
(उ) सञ्जयुवाच (ऋ) अत्र सन्धिः न भवति

98. 'संस्कृत + उदकम्'– संस्कृतोदकम् यहाँ सन्धि है–
(अ) वृद्धि (इ) गुण
(उ) दीर्घ (ऋ) अयादि

99. ''न + अत्र''– इसका सन्धियुक्तं पदं किम्–
(अ) नाऽत्र (इ) नत्र
(उ) नात्र (ऋ) नैत्र

100. 'भोज्योष्णम्' इसका सन्धि विच्छेदः क्रियताम् –
(अ) भोज्यु + उष्णम् (इ) भोजी + उष्णम्
(उ) भोजो + ओष्णम् (ऋ) भोज्य + उष्णम्

101. 'गृहेऽपि' – इसका सन्धिविच्छेद होगा–
(अ) गृहे + अपि (इ) गृहे + पि
(उ) गृहा + अपि (ऋ) गृहम् + अपि

102. ''सन्धिः'' – इस पद में प्रत्यय है–
(अ) क्तिन् (इ) णिनि
(उ) क्विप् (ऋ) कि

103. वाक्य में सन्धिकार्य होता है–
(अ) अनिवार्य (इ) विवक्षाधीन
(उ) दोनों (ऋ) इनमें से कोई नही

82.(इ), 83. (इ), 84. (ऋ), 85. (इ), 86. (ऋ), 87. (इ), 88. (ऋ), 89. (अ), 90. (इ), 91. (ऋ), 92.(उ), 93. (अ) 94. (अ), 95. (उ), 96. (इ), 97. (इ), 98. (इ), 99. (उ), 100. (ऋ), 101. (अ), 102. (ऋ), 103. (इ),

104. सन्धियाँ कितनी मानी जाती हैं–
(अ) 4 (इ) 3
(उ) 5 (ऋ) 6

105. सन्धि के भेदों में नही गिना जाता है–
(अ) अच् सन्धि, हल् सन्धि, विसर्ग सन्धि
(इ) प्रकृतिभाव सन्धि
(उ) स्वादिसन्धि
(ऋ) उणादिसन्धि

106. छः प्रकार के व्याकरणिक सूत्रों में नहीं गिना जाता है–
(अ) संज्ञासूत्र, परिभाषा सूत्र
(इ) विधिसूत्र, नियम सूत्र
(उ) अतिदेशसूत्र, अधिकार सूत्रम्
(ऋ) कामसूत्र, रेखीय सूत्र

107. संहिता नित्य (अनिवार्य) मानी जाती है–
(अ) एक पद में (इ) धातूपसर्ग से
(उ) समास में (ऋ) उपर्युक्त सभी में

108. कौन-सा वेदाङ्ग वेद पुरुष का मुख माना जाता है–
(अ) निरुक्त (इ) कल्प
(उ) शिक्षा (ऋ) व्याकरण

109. 'लुक् संज्ञा' किसकी होती है–
(अ) प्रत्यय की (इ) प्रत्यय लोप की
(उ) प्रत्याहार की (ऋ) प्रयत्न की

110. 'पूर्वत्रासिद्धम्' अष्टाध्यायी के अष्टम अध्याय के किस पाद का कौन सा सूत्र है–
(अ) द्वितीय पाद का प्रथम सूत्र
(इ) द्वितीय पाद का द्वितीय सूत्र
(उ) प्रथम पाद का प्रथम सूत्र
(ऋ) तृतीय पाद का प्रथम सूत्र

111. ''वां काल इव कालः'' यहाँ वाम् पद में विभक्ति है–
(अ) तृतीया एकवचन (इ) द्वितीया एकवचन
(उ) षष्ठी एकवचन (ऋ) षष्ठी बहुवचन

112. 'अल्' प्रत्याहार में कितने वर्ण हैं–
(अ) 40 (इ) 41
(उ) 42 (ऋ) 43

113. अनुस्वार, विसर्ग, जिह्वामूलीय, उपध्मानीय तथा यम वर्णो को क्या कहा जाता है –
(अ) यम (इ) विसर्ग
(उ) अयोगवाह (ऋ) इनमें से कोई नहीं

114. किस वर्ग के वर्णो के उच्चारण में जिह्वा का स्पर्श नही होता है–
(अ) तवर्ग (इ) टवर्ग
(उ) चवर्ग (ऋ) पवर्ग

115. दन्तस्थानीय और ओष्ठस्थानीय वर्ण माना जाता है–
(अ) ट (इ) व
(उ) ऐ (ऋ) ओ

116. निम्न में कौन सा आगम नित्य होता है–
(अ) कुक्-टुक् (इ) तुक्
(उ) धुट् (ऋ) ङमुट्

117. अन्तस्थ वर्ण 'र' को किस नाम से जाना जाता है–
(अ) रेफ (इ) रिफ्
(उ) रकार (ऋ) इनमें से कोई नहीं

118. ल, श और कवर्ग की इत्संज्ञा किस सूत्र से होती है–
(अ) चुटू (इ) हलन्त्यम्
(उ) लशक्वतद्धिते (ऋ) अदर्शनं लोपः

104. (उ), 105. (ऋ), 106. (ऋ), 107. (ऋ), 108. (ऋ), 109. (इ), 110. (अ) 111. (ऋ), 112. (उ), 113. (उ), 114. (ऋ) 115. (इ), 116. (ऋ), 117. (अ), 118. (उ)

3. समास–गङ्गा (भाग-एक)

1. परार्थाभिधान क्या है–
(अ) वृत्ति (इ) विग्रह
(उ) कारक (ण्) क्रिया

2. 'वृत्त्यर्थावबोधकं वाक्यं' क्या है–
(अ) प्रतिपदिक (इ) कारक
(उ) विग्रह (ण्) क्रिया

3. 'भूतपूर्वः' में कौन समास है–
(अ) तत्पुरुष (इ) कर्मधारय
(उ) अव्ययीभाव (ण्) सुप्सुपा

4. 'अधिहरि' का अलौकिक विग्रह क्या है–
(अ) हरि ङि अधि (इ) हरि सु अधि
(उ) हरि ङस् अधि (ण्) हरि अम् अधि

5. समास में 'प्रथमानिर्दिष्ट' की संज्ञा क्या है–
(अ) नपुंसक (इ) अव्ययीभाव
(उ) उपसर्जन (ण्) उपसर्ग

6. 'उपकृष्णम्' में 'उप' का अर्थ है–
(अ) विभक्ति (इ) समीप
(उ) समृद्धि (ण्) अत्यय

7. 'मद्राणां समृद्धिः' का सामासिक पद होगा–
(अ) मद्रम् (इ) मद्रसमृद्धिः
(उ) सुमद्रम् (ण्) सुमद्रायाम्

8. 'दुर्यवनम्' में कौन समास है–
(अ) कर्मधारय (इ) बहुव्रीहि
(उ) अलुक् (ण्) अव्ययीभाव

9. 'मक्षिकाणाम् अभावः' का सामासिक पद होगा–
(अ) मसिकाभावः (इ) निर्मक्षिकम्
(उ) निर्माक्षकाणाम् (ण्) निर्मक्षिका

10. 'अतिहिमम्' में 'अति' अव्यय का अर्थ होगा–
(अ) समीप (इ) समृद्धि
(उ) अभाव (ण्) अत्यय

11. ''विष्णोः पश्चात्'' = क्या होगा –
(अ) पश्चविष्णुः (इ) अनुविष्णु
(उ) अन्तविष्णू (ण्) अनुविष्णोः

12. 'प्रत्यर्थम्' में समास है-
(अ) केवल समास (इ) अव्ययीभाव
(उ) द्विगुसमास (ण्) तत्पुरुषसमास

13. 'शक्तिम् अनतिक्रम्य'– इसका सामासिक पद होगा–
(अ) यथाशक्तिः (इ) यथाशक्तिम्
(उ) यथाशक्ति (ण्) अनतिक्रान्तशक्तिः

14. ''हरेः सादृश्यम्'' = 'सहरि' में समासविधायक सूत्र है–
(अ) ''अव्ययीभावे चाकाले''
(इ) ''अव्ययीभावश्च''
(उ) ''अव्ययीभावः''
(ण्) ''अव्ययं विभक्ति-समीप------''

15. ''क्षत्राणां सम्पत्तिः = सक्षत्रम्'' में 'सह' को 'स' आदेश किस सूत्र से हुआ है –
(अ) ''अव्ययं विभक्तिसमीप....''
(इ) ''अव्ययीभावे चाकाले''
(उ) ''तृतीया सप्तम्योर्बहुलम्''
(ण्) ''अव्ययीभावः''

16. 'सचक्रम्' में अव्ययं का अर्थ क्या है–
(अ) समृद्धि (इ) अत्यय
(उ) यौगपद्य (ण्) पश्चात्

17. 'पञ्चगङ्गम्' में कौन समास है–
(अ) द्विगु (इ) अव्ययीभाव
(उ) तत्पुरुष (ण्) द्वन्द्व

18. 'द्वयोर्मुनयोः समाहारः द्वियमुनम्' यहाँ कौन समास है–
(अ) अव्ययीभाव (इ) तत्पुरुष
(उ) द्विगु (ण्) बहुव्रीहि

1. (अ), 2. (उ), 3. (ण्), 4. (अ), 5. (उ),6. (इ), 7. (उ) 8. (ण्), 9. (इ) 10. (ण्), 11. (इ), 12. (इ), 13. (उ), 14. (ण्),15.(इ) 16. (उ), 17. (इ), 18. (अ),

19. ''आत्मनि अधि'' का समस्तपद होगा–
(अ) अध्यात्मा (इ) अध्यात्मः
(उ) अध्यात्मम् (ण्) अध्यात्मनि

20. 'उपशरदम्' में समासान्त प्रत्यय क्या है–
(अ) अ (इ) टच्
(उ) ट (ण्) इनमें से कोई नहीं

21. 'उपराजम् में 'टि' का लोप किस सूत्र से होता है–
(अ) अनश्च (इ) ऋयः
(उ) नस्तद्धिते (ण्) अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्यः

22. 'तत्पुरुषः' यह कैसा सूत्र है–
(अ) विधि (इ) परिभाषा
(उ) नियम (ण्) अधिकार

23. ''कृष्णश्रितः'' में कौन सा समास है–
(अ) द्वितीया तत्पुरुष (इ) तृतीया तत्पुरुष
(उ) चतुर्थीतत्पुरुष (ण्) षष्ठीतत्पुरुष

24. किसके साथ द्वितीयान्त का समास नहीं होता है–
(अ) श्रित (इ) पतित
(उ) भय (ण्) प्राप्त

25. ''शङ्कुलया खण्डः= शङ्कुलाखण्डः'' में समास विधायक सूत्र कौन है–
(अ) कर्तृकरणे कृता बहुलम्
(इ) तत्पुरुषः
(उ) तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन
(ण्) सह सुपा

26. 'हरिणा त्रातः – हरित्रातः' में समास विधायक सूत्र कौन है–
(अ) सह सुपा
(इ) तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन
(उ) कर्तृकरणे कृता बहुलम्
(ण्) तत्पुरुषः

27. 'नखभिन्नः' में कौन समास है–
(अ) पञ्चमी तत्पुरुष (इ) बहुव्रीहि
(उ) सप्तमी तत्पुरुष (ण्) तृतीया तत्पुरुष

28. चतुर्थ्यन्त का किसके साथ समास होता है–
(अ) अतीत (इ) बलि
(उ) भय (ण्) आपन्न

29. 'चतुर्थ्यन्त' पद का किसके साथ समास नहीं होता है–
(अ) हित (इ) सुख
(उ) अतीत (ण्) रक्षित

30. ''यूपदारु'' में कौन समास है–
(अ) चतुर्थी तत्पुरुष (इ) षष्ठी तत्पुरुष
(उ) पञ्चमी तत्पुरुष (ण्) कर्मधारय

31. इनमें 'चतुर्थी तत्पुरुष' समास किसमें है–
(अ) शङ्कुलाखण्डः (इ) कृष्णश्रितः
(उ) राजपुरुषः (ण्) गोरक्षितम्

32. इनमें 'चतुर्थी तत्पुरुष' समास किसमें नहीं है–
(अ) चोरभयम् (इ) भूतबलिः
(उ) गोहितम् (ण्) द्विजार्थः

33. 'पञ्चम्यन्त' पद का किसके साथ समास होता है–
(अ) हित (इ) भय
(उ) अतीत (ण्) पतित

34. 'चोरभयम्' में कौन समास है–
(अ) षष्ठी तत्पुरुष (इ) सप्तमी तत्पुरुष
(उ) पञ्चमी तत्पुरुष (ण्) बहुव्रीहि

35. ''राज्ञः पुरुषः = राजपुरुषः'' में समासविधायक सूत्र है–
(अ) प्राक्कडारात् समासः (इ) सह सुपा
(उ) तत्पुरुषः (ण्) षष्ठी

36. 'पूर्वं कायस्य' का समस्तपद होगा–
(अ) कायपूर्वम् (इ) पूर्वकायः
(उ) प्राक्कायम् (ण्) पूर्वकायम्

37. 'अर्धं पिप्पल्याः' = क्या होगा–
(अ) पिपल्ल्यर्धम् (इ) अधिपिप्पली
(उ) अर्धपिप्पली (ण्) पिपल्ल्यर्धः

38. 'सप्तम्यन्त' का किसके साथ समास होता है–
(अ) भय (इ) श्रित
(उ) सुख (ण्) शौण्ड

19. (उ),20. (इ) 21. (उ), 22. (ण्), 23. (अ), 24. (उ), 25. (उ) 26. (उ), 27. (ण्), 28. (इ), 29. (उ), 30. (अ), 31. (ण्), 32. (अ), 33. (इ), 34. (उ), 35. (ण्), 36. (इ), 37. (उ),38. (ण्),

39. 'अक्षशौण्डः' में कौन समास है–
(अ) षष्ठी तत्पुरुष (इ) सप्तमी तत्पुरुष
(उ) तृतीया तत्पुरुष (ण्) कर्मधारय

40. 'सप्तर्षयः' में कौन समास है–
(अ) तत्पुरुष (इ) अव्ययीभाव
(उ) बहुव्रीहि (ण्) द्वन्द्व

41. 'सप्त च ते ऋषयः = सप्तर्षयः' में समासविधायक सूत्र है–
(अ) विशेषणं विशेष्येण बहुलम्
(इ) तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः
(उ) दिक्संख्ये संज्ञायाम्
(ण्) तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च

42. 'पौर्वशालः' पद का विग्रह क्या होगा–
(अ) पौर्व एव शालः (इ) पूर्वशाला यस्य सः
(उ) शालायाः पूर्वम् (ण्) पूर्वस्यां शालायां भवः

43. 'पञ्चगवधनः' में समासविधायक सूत्र है–
(अ) दिक्संख्ये संज्ञायाम्
(इ) तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च
(उ) विशेषणं विशेष्येण बहुलम्
(ण्) तत्पुरुषः

44. 'पञ्चगवम्' में कौन समास है–
(अ) बहुव्रीहि (इ) द्विगु
(उ) द्वन्द्व (ण्) अव्ययीभाव

45. 'पञ्चगवम्' का विग्रह क्या है–
(अ) पञ्च गावः यस्य सः
(इ) पञ्चानां गवां समाहारः
(उ) पञ्च एव गावः
(ण्) पञ्चभिः गोभिः युक्तम्

46. 'नीलम् उत्पलम् = नीलोत्पलम्' में किस सूत्र से समास हुआ है–
(अ) तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः
(इ) तत्पुरुषः
(उ) विशेषणं विशेष्येण बहुलम्
(ण्) सह सुपा

47. 'नीलोत्पलम्' में कौन समास है–
(अ) द्विगु (इ) द्वन्द्व
(उ) कर्मधारय (ण्) बहुव्रीहि

48. 'घन इव श्यामः = घनश्यामः' में समास विधायक सूत्र कौन है–
(अ) विशेषणं विशेष्येण बहुलम्
(इ) तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः
(उ) तत्पुरुषः
(ण्) उपमानानि सामान्यवचनैः

49. 'घनश्यामः' में कौन समास है–
(अ) बहुव्रीहि (इ) कर्मधारय
(उ) द्वन्द्व (ण्) द्विगु

50. 'शाकपार्थिवः' का विग्रह क्या है–
(अ) शाकेन पार्थिवः (इ) शाके पार्थिवः
(उ) शाकस्य पार्थिवः (ण्) शाकप्रियः पार्थिवः

51. 'न ब्राह्मणः अब्राह्मणः' इसमें समास-विधायक सूत्र कौन है–
(अ) नञ्
(इ) विशेषणं विशेष्येण बहुलम्
(उ) बहुलम् (ण्) सह सुपा

52. ''अनश्वः'' में कौन समास है–
(अ) पञ्चमी तत्पुरुष (इ) षष्ठी तत्पुरुष
(उ) नञ् तत्पुरुष (ण्) कर्मधारय

53. यहाँ 'नञ् तत्पुरुष' समास है–
(अ) अनुदरा (इ) अनुगतः
(उ) अपकारः (ण्) अधिकृतम्

54. यहाँ 'नञ् तत्पुरुष' समास नहीं है–
(अ) अनागतः (इ) अनधिकारः
(उ) अमावस्या (ण्) अलक्षणम्

55. 'कुत्सितः पुरुषः' का समस्तपद होगा–
(अ) कुत्सितपुरुषः (इ) कुपुरुषः
(उ) पुरुषकुत्सा (ण्) पुरुषकुत्सनम्

39. (इ), 40. (अ), 41. (उ), 42. (ण्) 43. (इ), 44. (इ), 45. (इ), 46. (उ), 47. (उ) 48. (ण्), 49. (इ), 50. (ण्), 51. (अ), 52. (उ) 53. (अ), 54. (उ), 55. (इ),

56. ''प्राचार्यः'' में कौन सा समास होगा–
(अ) षष्ठी तत्पुरुष (इ) प्रादितत्पुरुष
(उ) चतुर्थीतत्पुरुष (ण्) बहुव्रीहि

57. 'अतिक्रान्तः मालाम्' का समस्त पद होगा–
(अ) अतिमालः (इ) अतिमाला
(उ) क्रान्तमाला (ण्) अतिमालम्

58. 'द्व्यङ्गुलम्' में कौन समास है–
(अ) कर्मधारय (इ) षष्ठीतत्पुरुष
(उ) द्विगु (ण्) द्वन्द्व

59. 'परमराजः' में कौन समासान्त प्रत्यय है–
(अ) अ (इ) क
(उ) ट (ण्) टच्

60. 'महाराजः' में कौन सा समास है–
(अ) द्विगु (इ) द्वन्द्व
(उ) कर्मधारय (ण्) बहुव्रीहि

61. 'कर्मधारयसमास' नही है–
(अ) अतिमालः (इ) परमराजः
(उ) महाराजः (ण्) नीलोत्पलम्

62. 'द्वादश' में कौन समास है–
(अ) बहुव्रीहि (इ) तत्पुरुष
(उ) द्वन्द्व (ण्) अव्ययीभाव

63. द्वन्द्व एवं तत्पुरुष समासों का लिङ्ग कैसा होता है–
(अ) पूर्ववत् (इ) परवत्
(उ) उभयवत् (ण्) अन्यवत्

64. प्राप्तोदकः (ग्रामः) का विग्रह होगा–
(अ) प्राप्तम् उदकम्
(इ) प्राप्तवान् उदकं यः सः
(उ) प्राप्ते उदके
(ण्) प्राप्तम् उदकं यं सः

65 'पीताम्बरः' में समासविधायक सूत्र कौन है–
(अ) शेषो बहुव्रीहिः (इ) अनेकमन्यपदार्थे
(उ) सह सुपा
(ण्) सप्तमी विशेषणे बहुव्रीहौ

66. 'वीरपुरुषको (ग्रामः)' में कौन समास है–
(अ) तत्पुरुष (इ) द्वन्द्व
(उ) अव्ययीभाव (ण्) बहुव्रीहि

67. यह बहुव्रीहि समास नहीं है–
(अ) द्वादश (इ) कण्ठेकालः
(उ) चित्रगुः (ण्) ऊढरथः

68. बहुव्रीहि समास में किस पदार्थ की प्रधानता रहती है–
(अ) पूर्वपदार्थ (इ) उभयपदार्थ
(उ) परपदार्थ (ण्) अन्यपदार्थ

69. ''चित्रा गौर्यस्य = चित्रगुः'' में 'गो' को ह्रस्व किस सूत्र से होता है–
(अ) गोस्त्रियोरुपसर्जनस्य
(इ) ह्रस्वः
(उ) ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य
(ण्) इनमें से कोई नहीं

70. ''रूपवती भार्या यस्य सः = रूपवद्भार्यः'' में पुंवद्भाव का सूत्र कौन है–
(अ) शेषो बहुव्रीहि
(इ) हलदन्तात् सप्तम्याः संज्ञायाम्
(उ) स्त्रियाः पुंवद्भाषित पुंस्कादनूङ्समानाधिकरणे स्त्रियामपूरणीप्रियादिषु
(ण्) अनेकमन्यपदार्थे

71. 'कल्याणी पञ्चमा (रात्रयः)' में समासान्त प्रत्यय कौन है–
(अ) ट (इ) टच्
(उ) अ (ण्) अप्

72. 'जलजाक्षी' में समासान्त प्रत्यय कौन है–
(अ) अप् (इ) अ
(उ) टच् (ण्) षच्

73. 'जलजाक्षी' का विग्रह वाक्य क्या है–
(अ) जलजम् इव अक्षि यस्याः सा
(इ) जलजे इव अक्षिणी यस्याः सा
(उ) अक्षिणी जलजे इव
(ण्) अक्षि जलजम् इव

56. (इ), 57. (अ) 58. (उ), 59. (ण्), 60. (उ), 61. (अ), 62.(उ) 63. (इ), 64. (ण्), 65. (इ), 66. (ण्), 67.(अ), 68. (ण्), 69. (अ), 70. (उ), 71. (ण्), 72. (ण्), 73. (इ),

74. बहुव्रीहि में 'अन्तर्' एवं 'बहिर्' से परे किस शब्द से समासान्त 'अप्' प्रत्यय होता है–
(अ) उरस् (इ) अहन्
(उ) लोमन् (ण्) सुहृद्

75. 'व्याघ्रस्येव पादौ अस्य'– सामासिक पद होगा–
(अ) व्याघ्रपादः (इ) व्याघ्रपदः
(उ) व्याघ्रपद् (ण्) व्याघ्रपात्

76. 'द्वौ पादौ यस्य सः' – समस्त पद होगा–
(अ) द्विपादः (इ) द्विपात्
(उ) द्विपदी (ण्) द्विपदः

77. 'सुहृत्' में कौन समास है–
(अ) बहुव्रीहि (इ) कर्मधारय
(उ) द्वन्द्व (ण्) अव्ययीभाव

78. किसमें बहुव्रीहि समास है–
(अ) अष्टाध्यायी (इ) यथाशक्ति
(उ) व्यूढोरस्कः (ण्) त्रयोदश

79 बहुव्रीहि में निष्ठा प्रत्ययान्त को क्या होता है–
(अ) पूर्वप्रयोग (इ) परप्रयोग
(उ) लोप (ण्) दीर्घविधि

80. 'महायशस्कः' का वैकल्पिक रूप क्या है–
(अ) महायशस्वी (इ) महायशी
(उ) महायशाः (ण्) महायशः

81. इस विग्रह में द्वन्द्वसमास होता है–
(अ) संज्ञा च परिभाषा च तयोः समाहारः
(इ) विशालम् उरो यस्य सः
(उ) कुत्सितः पुरषः
(ण्) पञ्चानां गङ्गानां समाहारः

82. 'अर्थधर्मौ' में कौन समास है–
(अ) बहुव्रीहि (इ) द्वन्द्व
(उ) द्विगु (ण्) कर्मधारय

83. द्वन्द्वसमास में इसका पूर्वप्रयोग होता है–
(अ) नदी संज्ञक (इ) निष्ठा संज्ञक
(उ) भ संज्ञक (ण्) घि संज्ञक

84. 'शिवश्च केशवश्च' इसका समस्तपद होगा–
(अ) शिवकेशवौ (इ) केशवशिवौ
(उ) शिवाकेशवौ (ण्) केशवाशिवौ

85. 'पितरौ' में किस सूत्र से समास हुआ–
(अ) विशेषणं विशेष्येण बहुलम्
(इ) चाऽर्थे द्वन्द्वः
(उ) अनेकमन्यपदार्थे
(ण्) सह सुपा

86. 'पाणी च पादौ च एषां समाहारः' का समस्त पद होगा–
(अ) पाणिपादौ (इ) पाणिपादाः
(उ) पाणिपादम् (ण्) पाणीपादम्

87. 'रथिकाश्वारोहम्' में कौन-सा समास है–
(अ) द्वन्द्व (इ) कर्मधारय
(उ) बहुव्रीहि (ण्) षष्ठी तत्पुरुष

88. 'समास' पद में प्रकृति प्रत्यय है–
(अ) सम् + अस् + घञ् (इ) सम् + आस् + अप्
(उ) समा + आसु + सु (ण्) सम + आसु + धस्

89. 'समास' की सामान्य परिभाषा है–
(अ) समसनम् (इ) समास्यायते
(उ) समा आसते (ण्) समेन असनम्

90. ''अनेकस्य पदस्य एकपदीभवनं'' क्या होगा–
(अ) सन्धिः (इ) समासः
(उ) कारकम् (ण्) प्रातिपदिकम्

91. समासः भवति–
(अ) सुबन्तानाम् (इ) तिङन्तानाम्
(उ) प्रत्ययानाम् (ण्) सर्वेषां पदानाम्

92. बहुत से पदों का एक साथ समास होता है–
(अ) बहुव्रीहि समास में (इ) तत्पुरुष समास में
(उ) द्वन्द्व समास में (ण्) द्विगु समास में

93. 'समास विग्रह' कितने प्रकार का होता है–
(अ) 5 (इ) 2
(उ) 3 (ण्) 4

74. (उ), 75. (ण्), 76. (इ), 77. (अ), 78. (उ), 79. (अ), 80. (उ), 81. (अ), 82.(इ), 83. (ण्), 84. (अ), 85. (इ), 86. (उ), 87. (अ), 88. (अ), 89. (अ), 90. (इ), 91. (अ), 92.(उ), 93. (इ)

94. समास कितने प्रकार का होता है–

(अ) 4 (इ) 5
(उ) 6 (ण्) 7

95. केवल समास होता है–

(अ) उभयपदार्थप्रधानः (इ) पूर्वपदार्थप्रधानः
(उ) उत्तरपदप्रधानः (ण्) विशेषसंज्ञा-विनिर्मुक्तः

96. 'अन्यपदार्थप्रधानः' समास होगा –

(अ) द्वन्द्वः (इ) अव्ययीभावः
(उ) बहुव्रीहिः (ण्) द्विगुः

97. 'उत्तरपदार्थप्रधानः' समास है–

(अ) तत्पुरुषः (इ) बहुव्रीहिः
(उ) द्वन्द्वः (ण्) अव्ययीभावः

98. 'पूर्वपदार्थप्रधानः' समास होता है –

(अ) द्वन्द्वः (इ) तत्पुरुषः
(उ) अव्ययीभावः (ण्) कर्मधारयः

99. 'उभयपदार्थप्रधानः'– कौन-सा समास होगा–

(अ) अव्ययीभावः (इ) केवलसमासः
(उ) कर्मधारयः (ण्) द्वन्द्वः

100. तत्पुरुष समास के अन्तर्गत परिगणित है–

(अ) कर्मधारय (इ) द्विगु
(उ) द्वन्द्व (ण्) अ और इ दोनों

101. परार्थाभिधानं किं भवति–

(अ) वृत्तिः (इ) विग्रहः
(उ) समासः (ण्) कारकम्

102. वृत्तियाँ कितनी होती है–

(अ) 4 (इ) 5
(उ) 6 (ण्) 4

103. पूर्वपद यदि संख्यावाचक हो तो समास होता है–

(अ) द्वन्द्व (इ) द्विगु
(उ) कर्मधारय (ण्) बहुव्रीहि

104. सुबन्त का किसके साथ समास होता है–

(अ) सुबन्त के साथ (इ) तिङन्त के साथ
(उ) प्रत्ययों के साथ (ण्) धातु के साथ

105. 'केवल समास' का उदाहरण नहीं है–

(अ) वागर्थाविव (इ) भूतपूर्वः
(उ) नैकः (ण्) यथाशक्ति

106. समास होने पर समस्त पद अव्यय बन जाता है–

(अ) द्वन्द्व में (इ) अव्ययीभाव में
(उ) द्विगु में (ण्) कर्मधारय में

107. 'च' के अर्थ में किस समास का विधान किया जाता है–

(अ) बहुव्रीहि (इ) द्वन्द्व
(उ) द्विगु (ण्) तत्पुरुष

108. ''प्राक्कडारात् समासः''- यह कैसा सूत्र है–

(अ) परिभाषा सूत्र (इ) संज्ञासूत्र
(उ) अधिकार सूत्र (ण्) विधिसूत्र

109. 'पूर्व अम् + भूत सु = भूतपूर्वः– यहाँ किस सूत्र से 'भूत' शब्द का पूर्वप्रयोग होता है–

(अ) समर्थः पदविधिः (इ) सह सुपा
(उ) भूतपूर्वे चरट् (ण्) प्राक्कडारात् समासः

110. 'एक सुबन्त दूसरे सुबन्त के साथ समस्त होता है'– यह बात किस सूत्र में कही गयी है–

(अ) समर्थः पदविधिः (इ) प्राक्कडारात् समासः
(उ) सह सुपा (ण्) उपसर्जनं पूर्वम्

111. 'अव्ययीभाव' कैसा समास है–

(अ) नित्यसमास (इ) वैकल्पिक समास
(उ) केवल समास (ण्) इनमें से कोई नहीं

94. (इ), 95. (ण्), 96. (उ), 97. (अ), 98. (उ), 99. (ण्), 100. (ण्), 101. (अ), 102. (इ), 103. (इ), 104. (अ), 105. (ण्), 106. (इ), 107. (इ), 108. (उ), 109. (उ), 110. (उ), 111. (अ)।

समास–गङ्गा (भाग-दो)

1. 'पितरौ' इस समस्त पद में कौन सा समास है ? ***P.G.T.2010***

(अ) इतरेतरद्वन्द्वसमास (इ) समाहारद्वन्द्वसमास
(उ) एकशेषद्वन्द्वसमास (ऋ) केवलसमास

2. 'कम्बुकण्ठः' इस समस्त पद का सही विग्रह होगा–

(अ) कम्बु कण्ठः यस्य सः
(इ) कम्बोः कण्ठः
(उ) कम्बुश्चासौ कण्ठःश्च
(ऋ) कम्बु इव कण्ठो यस्य सः

3. कर्मधारय समास, किस समास का एक भेद है -

(अ) अव्ययीभाव (इ) तत्पुरुष
(उ) बहुव्रीहि (ऋ) द्विगु

4. 'परस्मैपदम्' में कौन समास है ?

(अ) अव्ययीभाव (इ) कर्मधारय
(उ) अलुक् समास (ऋ) केवलसमास

5. व्यधिकरण तत्पुरुष समास के कितने भेद हैं ?

(अ) चार (इ) पाँच
(उ) छः (ऋ) सात

6. 'कृताधिपत्याम्' में समास है ?

(अ) अव्ययीभाव (इ) बहुव्रीहि
(उ) समानाधिकरण तत्पुरुष (ऋ) व्यधिकरण तत्पुरुष

7. 'चन्द्रशेखरः' में कौन सा समास है ? ***P.G.T.2009***

(अ) तत्पुरुष (इ) बहुव्रीहि
(उ) द्विगु (ऋ) कर्मधारय

8. 'चित्रगुः' का विग्रह वाक्य है ?

(अ) चित्रा चासौ गौः (इ) चित्रा गावो यस्य सः
(उ) चित्राणां गवां समाहारः (ऋ) चित्रायाः गौः

9. जिस समास में प्रथमपद प्रधान रहता है उसे कहते हैं–

(अ) तत्पुरुष समास (इ) बहुव्रीहि समास
(उ) अव्ययीभाव समास (ऋ) द्वन्द्व समास

10. 'पाणिपादम्' में समास है ? ***P.G.T.2005***

(अ) इतरेतरद्वन्द्व (इ) समाहारद्वन्द्व
(उ) एकशेषद्वन्द्व (ऋ) अलुक्तत्पुरुष

11. 'हरिहरौ' में कौन सा समास है ? ***P.G.T.2000***

(अ) तत्पुरुष (इ) बहुव्रीहि
(उ) द्वन्द्व (ऋ) उपर्युक्त में से कोई नहीं

12. 'स्त्रीप्रमाणः' में समास है– ***P.G.T.2005***

(अ) अव्ययीभाव (इ) द्विगु
(उ) द्वन्द्व (ऋ) बहुव्रीहि

13. 'नखभिन्नः' का लौकिकविग्रह है ?

(अ) नखः भिन्नः (इ) नखैः भिन्नः
(उ) नखे भिन्नः (ऋ) नखात् भिन्नः

14. 'अहिनकुलम्' में समास है ?

(अ) इतरेतरद्वन्द्व (इ) समाहारद्वन्द्व
(उ) एकशेषद्वन्द्व (ऋ) अलुक्तत्पुरुष

15. 'निर्मक्षिकम्' में समास है ? ***P.G.T.2004***

(अ) तत्पुरुष (इ) अव्ययीभाव
(उ) द्वन्द्व (ऋ) बहुव्रीहि

16. 'रूपवद्भार्यः' में कौन सा समास है ?

(अ) अव्ययीभाव (इ) द्विगु
(उ) बहुव्रीहि (ऋ) द्वन्द्व

17. 'चक्रपाणिः' में समास है ? ***P.G.T.2003***

(अ) तत्पुरुष (इ) बहुव्रीहि
(उ) द्विगु (ऋ) द्वन्द्व

18. 'हरिहरौ' शब्द का विग्रह होगा ?

(अ) हरि च हरौ च (इ) हरिश्च हरश्च
(उ) हरि च हरौ (ऋ) हरि हरौ च

1. (उ), 2. (ऋ), 3. (इ), 4. (उ), 5. (उ), 6. (इ), 7. (इ) 8. (इ), 9. (उ) 10. (इ), 11. (उ), 12. (ऋ), 13. (इ), 14. (इ),15.(इ), 16. (उ), 17. (इ), 18. (इ),

19. 'सहरि' में कौन सा समास है ?
(अ) अव्ययीभाव (इ) तत्पुरुष
(उ) बहुव्रीहि (ऋ) द्वन्द्व

20. 'उपराजम्' में कौन सा समास है ?
(अ) बहुव्रीहि (इ) तत्पुरुष
(उ) अव्ययीभाव (ऋ) द्वन्द्व

21. 'कुपुरुषः' में कौन सा समास है ?
(अ) नञ् तत्पुरुष (इ) प्रादि तत्पुरुष
(उ) गति तत्पुरुष (ऋ) उपपद तत्पुरुष

22. 'रामकृष्णौ' में कौन सा समास है ?
(अ) एकशेषद्वन्द्व (इ) समाहारद्वन्द्व
(उ) इतरेतरद्वन्द्व (ऋ) उपर्युक्त में से कोई नहीं

23. 'चन्द्रमौलिः' में कौन सा समास है ?
(अ) समानाधिकरण बहुव्रीहि
(इ) व्यधिकरण बहुव्रीहि
(उ) तत्पुरुष (ऋ) द्वन्द्व

24. 'पितरौ' शब्द का विग्रह है ?
(अ) मातृ पिता च (इ) पितरौ मातरौ च
(उ) माता च पिता च (ऋ) माता पिताश्च

25. 'हरित्रातः' में कौन सा समास है ?
(अ) द्वितीयातत्पुरुष (इ) तृतीयातत्पुरुष
(उ) चतुर्थीतत्पुरुष (ऋ) षष्ठीतत्पुरुष

26. 'अब्राह्मणः' में कौन सा समास है ?
(अ) अव्ययीभाव (इ) बहुव्रीहि
(उ) द्वन्द्व (ऋ) नञ्तत्पुरुष

27. पीताम्बरः में समास है ?
(अ) द्विगु (इ) बहुव्रीहि
(उ) अव्ययीभाव (ऋ) द्वन्द्व

28. 'प्राप्तोदकः' में समास है ?
(अ) अव्ययीभाव (इ) बहुव्रीहि
(उ) तत्पुरुष (ऋ) द्वन्द्व

29. 'सुमद्रम्' में कौन सा समास है ?
(अ) कर्मधारय (इ) बहुव्रीहि
(उ) अव्ययीभाव (ऋ) षष्ठी तत्पुरुष

30. 'उपसर्जन संज्ञा' किसकी होती है ?
(अ) समास विधायक सूत्र के प्रथमान्त पद द्वारा निर्दिष्ट शब्द की
(इ) समास विधायक सूत्र के द्वितीय पद द्वारा निर्दिष्ट शब्द की
(उ) समास विधायक सूत्र के द्वारा निर्दिष्ट शब्द की
(ऋ) उपर्युक्त सभी की

31. 'उपसर्जन संज्ञा' विधायक सूत्र है–
(अ) उपसर्जनं पूर्वम्
(इ) प्रथमा निर्दिष्टं समास उपसर्जनम्
(उ) उपसर्गे घोः किः (ऋ) उपसर्गस्यायतौ

32. 'उपसर्जन संज्ञक' का प्रयोग होता है–
(अ) पूर्व में (इ) पर में
(उ) दोनों ओर (ऋ) कहीं नहीं

33. 'सुमद्रम्' का लौकिक विग्रह होगा–
(अ) मद्राणां समृद्धिः (इ) सुन्दरं मुद्रम्
(उ) शोभनं समुद्रम् (ऋ) शुचं मुद्रणम्

34. 'अतिहिमम्' का अलौकिक विग्रह होगा–
(अ) अति हिम् सु (इ) हिम जस् अति
(उ) हिम ङस् अति (ऋ) अति हिम् औ

35. ''शीतस्य अत्ययः'' इस लौकिकविग्रह का सामासिक पद होगा–
(अ) शीतातीतः (इ) अतिशीतम्
(उ) शीतात्यः (ऋ) अतिशीतः

36. किस सूत्र से 'पञ्चगङ्गम्' में अव्ययीभाव समास होता है -
(अ) अव्ययं – विभक्ति - समीप - समृद्धि -------''
(इ) अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्यः
(उ) अव्ययीभावे चाकाले
(ऋ) नदीभिश्च

19. (अ),20. (उ), 21. (इ), 22. (उ), 23. (इ), 24. (उ), 25. (इ), 26. (ऋ), 27. (इ), 28. (इ), 29. (उ), 30. (अ), 31. (इ), 32. (अ), 33. (अ), 34. (उ), 35. (इ), 36. (ऋ),

37. 'उपराजम्' का अलौकिकविग्रह है–
(अ) राजन् सु उप (इ) उप राजन अम्
(उ) राजन् ङस् उप (ऋ) राजन जस् उप

38. 'द्विगुश्च' सूत्र में 'च' पद क्या है ?
(अ) संयोगसूचक (इ) सर्वनामपद
(उ) अव्ययपद (ऋ) इनमें कोई नहीं

39. 'कृष्णं श्रितः' में किस सूत्र से समास हुआ है ?
(अ) तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन
(इ) द्वितीया श्रितातीत – पतित – गतात्यस्त – प्राप्तापन्नैः
(उ) कर्तृकरणे कृता बहुलम्
(ऋ) प्रथमा निर्दिष्टं समास उपसर्जनम्

40. शुद्ध पद का चयन करें–
(अ) नखभिन्नः (इ) नखनिर्भिन्नः
(उ) दोनों (ऋ) कोई भी नहीं

41. 'नखभिन्नः' में समास विधायक सूत्र क्या है ?
(अ) कर्तृकरणे कृता बहुलम्
(इ) तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन
(उ) कृद्ग्रहणे गतिकारकपूर्वस्यापि ग्रहणम्
(ऋ) पञ्चमी भयेन

42. 'गोहितम्' में कौन समास है ?
(अ) द्वितीया तत्पुरुष (इ) अव्ययीभाव
(उ) तृतीया तत्पुरुष (ऋ) चतुर्थी तत्पुरुष

43. 'वृकभीः' में किस सूत्र से समास हुआ है–
(अ) पञ्चम्या स्तोकादिभ्यः
(इ) स्तोकान्तिकदूरार्थकृच्छ्राणि क्तेन
(उ) पञ्चमी भयेन
(ऋ) उपर्युक्त में किसी से नहीं

44. 'राजपुरुषः' का अलौकिक विग्रह क्या होगा ?
(अ) राजन् सु पुरुष सु (इ) राजन् ङस् पुरुष सु
(उ) राजन् सु पुरुष ङस् (ऋ) राजन् ङस् पुरुष ङस्

45. 'कृच्छ्रादागतः' का क्या अर्थ है ?
(अ) कच्छ्र प्रदेश से आया हुआ
(इ) समीप से आया हुआ
(उ) दूर से आया हुआ
(ऋ) कष्ट से आया हुआ

46. 'मनोविकारः' का समास विधायक सूत्र है–
(अ) पञ्चमी भयेन (इ) षष्ठी
(उ) पञ्चम्याः स्तोकादिभ्यः (ऋ) अर्धं नपुंसकम्

47. 'अक्षशौण्डः' का लौकिक विग्रह होगा–
(अ) अक्षाणां शौण्डः (इ) अक्षात् शौण्डः
(उ) अक्षेषु शौण्डः (ऋ) अक्षस्य शौण्डः

48. 'निर्मलगुणाः' का लौकिक विग्रह है–
(अ) निर्मलस्य गुणाः (इ) निर्मलम् गुणाः
(उ) निर्मलाय गुणाः (ऋ) निर्मलश्च ते गुणाः

49. 'कर्पूरगौरः' का क्या अर्थ है–
(अ) सफेद कपूर
(इ) कपूर की तरह गौर (श्वेत) वर्ण वाला
(उ) कपूर से गोरा (ऋ) कपूर का चूर्ण

50. 'शाकपार्थिवः' का लौकिक विग्रह होगा–
(अ) शाकस्य पार्थिवः (इ) शाकात् पार्थिवः
(उ) शाकप्रियः पार्थिवः (ऋ) पार्थिवप्रियः शाकः

51. 'अब्राह्मणः' का अलौकिक विग्रह होगा -
(अ) अ ब्राह्मण सु (इ) न ब्राह्मण सु
(उ) अब्राह्मण सु (ऋ) अ ब्राह्मण जस्

52. 'ऊरीकृत्य' का क्या अर्थ है ?
(अ) उड़ा करके (इ) उपर करके
(उ) स्वीकार करके (ऋ) अस्वीकार करके

53. 'पटपटाकृत्य' में कृत्वा के योग में पटपटा की कौन सी संज्ञा हुई है ?
(अ) टि संज्ञा (इ) घि संज्ञा
(उ) गति संज्ञा (ऋ) नदी संज्ञा

37. (उ),38. (उ), 39. (इ), 40. (उ), 41. (अ), 42. (ऋ) 43. (उ), 44. (इ), 45. (ऋ), 46. (इ), 47. (उ) 48. (ऋ), 49. (इ), 50. (उ), 51. (इ), 52.(उ) 53. (उ),

54. **''ऊरीकृत्य'' में ऊरी पद की 'गतिसंज्ञा' किस सूत्र से होगी–**

(अ) कुगतिप्रादयः (इ) ऊर्यादिच्विडाचश्च

(उ) प्रादयो गताद्यर्थे प्रथमया

(ऋ) इनमें से कोई नहीं

55. 'प्रादिसमास' का उदाहरण है–

(अ) सुपुरुषः (इ) वीरपुरुषः

(उ) स्त्रीपुरुषः (ए) युद्धपुरुषः

56. 'प्राचार्यः' का अर्थ है–

(अ) दूर गया हुआ आचार्य

(इ) श्रेष्ठ आचार्य

(उ) अपने विषय में दक्ष आचार्य

(ऋ) उपर्युक्त सभी

57. 'अवकोकिलः' का अलौकिक विग्रह है–

(अ) अव कोकिल सु (इ) कोकिला टा अव

(उ) कोकिला सु अव (ऋ) अव कोकिल जस्

58. 'सूत्रकारः' का लौकिक विग्रह होगा–

(अ) सूत्रस्य कर्त्ता (इ) सूत्रस्य कारः

(उ) सूत्रं करोति इति सूत्रकारः

(ऋ) उपर्युक्त सभी

59. 'निरङ्गुलम्' में किस सूत्र से समास होता है–

(अ) निरादयः क्रान्ताद्यर्थे पञ्चम्याः

(इ) संख्यापूर्वं रात्रं क्लीबम्

(उ) 'रात्राह्नाहाः' पुंसि

(ऋ) तत्पुरुषस्याङ्गुलेः संख्याव्ययादेः

60. 'सर्वरात्रः' का अलौकिक विग्रह है–

(अ) सर्वा जस् रात्रि सु (इ) सर्वा सु रात्रि जस्

(उ) सर्वा सु रात्रि सु (ऋ) सर्वा जस् रात्रि जस्

61. 'संख्यातरात्रः' में किस सूत्र से समास हुआ है–

(अ) संख्यापूर्वं रात्रं क्लीबम्

(इ) पूर्वकालैकसर्वजरत्पुराणनवकेवलाः समानाधिकरणेन

(उ) अहः सर्वैकदेशसंख्यातपुण्याच्च रात्रेः

(ए) तत्पुरुषस्याङ्गुलेः संख्याव्ययादेः

62. 'व्यधिकरणतत्पुरुष' कितने प्रकार का होता है ?

(अ) 5 (इ) 7

(उ) 6 (ऋ) 8

63. **''श्यामोज्ज्वलवपुः'' किस समास का उदाहरण है ?**

(अ) अव्ययीभाव (इ) तत्पुरुष

(उ) बहुव्रीहि (ऋ) द्वन्द्व

64. 'वागर्थाविव' का लौकिक विग्रह है–

(अ) वागर्थाविव (इ) वागर्थौ इव

(उ) वाक् अर्थाविव (ऋ) वागर्था इव

65. 'वागर्थाविव' में कौन सा समास है ?

(अ) द्वन्द्व (इ) द्विगु

(उ) केवलसमास (ऋ) तत्पुरुष

66. 'अक्षतशरीरः' इत्यस्य विग्रहवाक्यं भविष्यति–

(अ) न क्षतं यस्य

(इ) अक्षतश्चासौ शरीरम्

(उ) अक्षतच्च शरीरच्च

(ऋ) अक्षतं शरीरं यस्य सः

67. ''त्रयाणां भुवनानां समाहारः त्रिभुवनम्'' कस्य समासस्य उदाहरणम् ?

(अ) द्वन्द्व (इ) अव्ययीभाव

(उ) द्विगु (ऋ) कर्मधारय

68. 'चोरभयम्' का लौकिकविग्रह होगा–

(अ) चोरस्य भयम् (इ) चोरेण भयम्

(उ) चोरात् भयम् (ऋ) चोराय भयम्

54. (इ), 55. (अ), 56. (ऋ), 57. (इ) 58. (ऋ), 59. (अ), 60. (उ), 61. (इ), 62.(उ) 63. (उ), 64. (इ), 65. (उ), 66. (ऋ), 67.(उ), 68. (उ)।

4. कारक-गङ्गा (भाग-एक)

1. 'प्रातिपदिकार्थमात्र' में विभक्ति होती है ?
(अ) प्रथमा (इ) तृतीया
(उ) चतुर्थी (ण्) षष्ठी

2. 'कृष्णः' में प्रथमाविभक्ति का कारण क्या है ?
(अ) लिङ्गमात्राधिक्य (इ) परिमाणमात्र
(उ) प्रातिपदिकार्थमात्र (ण्) वचनमात्र

3. 'परिमाणमात्र' में विभक्ति होती है–
(अ) पञ्चमी (इ) द्वितीया
(उ) तृतीया (ण्) प्रथमा

4. अलिङ्ग ''उच्चैः'' आदि में प्रथमा विभक्ति का कारण क्या है ?
(अ) कर्तृकारक (इ) लिङ्गमात्राधिक्य
(उ) प्रातिपदिकार्थमात्र (ण्) वचनमात्र

5. 'तटः, तटी, तटम्' में प्रथमा विभक्ति का कारण क्या है–
(अ) लिङ्गमात्राधिक्य (इ) प्रातिपदिकार्थमात्र
(उ) वचनमात्र (ण्) परिमाणमात्र

6. किसमें 'वचनमात्र' में प्रथमा हुई है ?
(अ) श्रीः (इ) ज्ञानम्
(उ) द्रोणो व्रीहिः (ण्) द्वौ

7. 'नियतोपस्थितिक' क्या है ?
(अ) हेतु (इ) कर्त्ता
(उ) प्रातिपदिकार्थ (ण्) वचन

8. 'सम्बोधने च' सूत्र से विभक्ति होती है–
(अ) सप्तमी (इ) प्रथमा
(उ) चतुर्थी (ण्) षष्ठी

9. हे राम! में विभक्ति है ?
(अ) द्वितीया (इ) षष्ठी
(उ) प्रथमा (ण्) कोई विभक्ति नहीं

10. 'कारके' यह कैसा सूत्र है?
(अ) विधि (इ) अधिकार
(उ) नियम (ण्) परिभाषा

11. कर्त्ता का इष्टतम कारक कौन सा है–
(अ) कर्म (इ) करण
(उ) सम्प्रदान (ण्) अपादान

12. 'हरिं भजति' में ''हरि'' क्या है ?
(अ) कर्त्ता (इ) करण
(उ) कर्म (ण्) अधिकरण

13. 'माषेषु अश्वं बध्नाति'– यहाँ 'माष' कर्म नहीं है, क्योंकि–
(अ) यह कर्म को इष्ट नही है
(इ) यह निर्जीव है
(उ) यह सप्तमी बहुवचन में है
(ण्) यह कर्त्ता का इष्टतम कारक नहीं है

14. 'अनुक्त कर्म' में विभक्ति होती है–
(अ) प्रथमा (इ) द्वितीया
(उ) षष्ठी (ण्) तृतीया

15. ''कर्मणि द्वितीया'' सूत्र में किस सूत्र का अधिकार है ?
(अ) स्वतन्त्रः कर्त्ता (इ) अनभिहिते
(उ) कर्मप्रवचनीयाः (ण्) इनमें से कोई नहीं

16. 'अभिहित कर्म' में विभक्ति होती है ?
(अ) तृतीया (इ) द्वितीया
(उ) षष्ठी (ण्) प्रथमा

17. 'अभिहित कर्म' में किस सूत्र से प्रथमा विभक्ति होती है ?
(अ) सम्बोधने च
(इ) प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा
(उ) स्वतन्त्रः कर्ता
(ण्) कारके

1. (अ), 2. (उ), 3. (ण्), 4. (उ), 5. (अ), 6. (ण्), 7. (उ) 8. (इ), 9. (उ) 10. (इ), 11. (अ), 12. (उ), 13. (ण्), 14. (इ),15.(इ) 16. (ण्), 17. (इ),

18. 'हरिः सेव्यते' में किससे कर्म का अभिधान किया गया है–
(अ) कृत् (इ) धातु
(उ) कर्त्ता (ण्) तिङ्

19. किसमें 'कृत्' से कर्म का अभिधान है–
(अ) लक्ष्म्या सेवितः
(इ) हरिः सेव्यते
(उ) शतेन क्रीतः शत्यः
(ण्) प्राप्तः आनन्दः यं सः प्राप्तानन्दः

20. कारक कितने होते हैं–
(अ) 4 (इ) 6
(उ) 5 (ण्) 8

21. 'ग्रामं गच्छन् तृणं स्पृशति' में 'तृण' की किस सूत्र से कर्मसंज्ञा हुई है –
(अ) कर्त्तुरीप्सिततमं कर्म (इ) तथायुक्तं चानीप्सितम्
(उ) अकथितं च (ण्) कर्मप्रवचनीयाः

22. ''तथायुक्तं चानीप्सितम्'' सूत्र से कौन सी संज्ञा होती है–
(अ) करण (इ) सम्प्रदान
(उ) कर्त्ता (ण्) कर्म

23. ''ओदनं भुञ्जानो विषं भुङ्क्ते'' में 'ओदन' की कर्मसंज्ञा किस सूत्र से हुई है–
(अ) तथायुक्तं चानीप्सितम्
(इ) कर्त्तुरीप्सिततमं कर्म
(उ) कर्मणि द्वितीया
(ण्) अकथितं च

24. अकथित कर्म की गिनती में यह धातु नहीं है–
(अ) दुह् (इ) पच्
(उ) पठ् (ण्) दण्ड्

25. अकथित कर्म की परिगणना में किस धातु की गिनती है–
(अ) लिख् (इ) रम्
(उ) क्री (ण्) चि

26. 'गां दोग्धि पयः' में 'गो' की कर्मसंज्ञा किस सूत्र से हुई है–
(अ) अकथितं च (इ) कर्त्तुरीप्सिततमं कर्म
(उ) तथायुक्तं चानीप्सितम् (ण्) कर्मणि द्वितीया

27. ''बलिं याचते वसुधाम्'' में 'बलि' की कर्मसंज्ञा किस सूत्र से हुई है–
(अ) तथायुक्तं चानीप्सितम् (इ) कर्त्तुरीप्सिततमं कर्म
(उ) अकथितं च (ण्) कर्मणि द्वितीया

28. 'वृक्षमवचिनोति फलानि' में 'वृक्ष' की कर्मसंज्ञा किस सूत्र से हुई है–
(अ) अकथितं च (इ) तथायुक्तं चानीप्सितम्
(उ) कर्त्तुरीप्सिततमं कर्म (ण्) कर्मणि द्वितीया

29. ''अकथितं च'' यह कैसा सूत्र है–
(अ) विधि (इ) परिभाषा
(उ) नियम (ण्) संज्ञा

30. ''अकथितं च'' सूत्र में 'चकार' से किसका बोध होता है–
(अ) द्वितीया (इ) कर्म
(उ) करण (ण्) कर्त्ता

31. अकर्मक धातु के योग में 'देशवाचक' शब्द की क्या संज्ञा होगी–
(अ) कर्ता (इ) अधिकरण
(उ) कर्म (ण्) सम्बन्ध

32. ''मासम् आस्ते'' में 'मास' की कर्मसंज्ञा किस सूत्र से हुई है–
(अ) अकर्मकधातुभिर्योगे देशः कालो भावो गन्तव्योऽध्वा च कर्मसंज्ञक इति वाच्यम्
(इ) अकथितं च
(उ) कर्त्तुरीप्सिततमं कर्म
(ण्) तथायुक्तं चानीप्सितम्

33. अकर्मक धातु के योग में 'अध्ववाचक' शब्द की क्या संज्ञा होती है–
(अ) करण (इ) अधिकरण
(उ) कर्म (ण्) कर्त्ता

18. (ण्), 19. (अ), 20. (इ) 21. (इ), 22. (ण्), 23. (इ), 24. (उ), 25. (ण्) 26. (अ), 27. (उ), 28. (अ), 29. (ण्), 30. (इ), 31. (उ), 32. (अ), 33. (उ),

34. 'शत्रून् अगमयत् स्वर्गम्' में 'शत्रु' की कर्मसंज्ञा किस सूत्र से हुई है–
(अ) अकथितं च
(इ) तथायुक्तं चानीप्सितम्
(उ) गतिबुद्धिप्रत्यवसानार्थ-शब्द-कर्माकर्मकाणामणि कर्त्ता स णौ
(ण्) कर्त्तुरीप्सिततमं कर्म

35. गत्यर्थक धातु के अणिजन्त के कर्त्ता की णिजन्त में कौन संज्ञा होती है–
(अ) कर्म (इ) करण
(उ) कर्त्ता (ण्) अधिकरण

36. ''गतिबुद्धिप्रत्यवसानार्थशब्दकर्माकर्मकाणामणि कर्त्ता स णौ'' सूत्र से कौन सी संज्ञा होती है–
(अ) कर्त्ता (इ) कर्म
(उ) करण (ण्) अधिकरण

37. ''आसयत् सलिले पृथ्वीम्'' में 'पृथ्वी' में किस सूत्र से द्वितीया आयी है–
(अ) गतिबुद्धि..........स णौ
(इ) कर्त्तुरीप्सिततमं कर्म
(उ) तथायुक्तं चानीप्सितम्
(ण्) कर्मणि द्वितीया

38. ''हारयति भृत्यं कटम्'' में 'भृत्य' की कर्मसंज्ञा किस सूत्र से हुई है–
(अ) गतिबुद्धि.........स णौ
(इ) कर्त्तुरीप्सिततमं कर्म
(उ) हृक्रोरन्यतरस्याम्
(ण्) तथायुक्तं चानीप्सितम्

39. ''कारयति भृत्येन कटम्'' में 'भृत्य' में तृतीया होने का कारण क्या है–
(अ) अनुक्ते करणे (इ) हेतौ
(उ) अपवर्गे (ण्) अनुक्ते कर्तरि

40. ''अधि + स्था'' धातु के आधार की क्या संज्ञा होगी–
(अ) अधिकरण (इ) कर्म
(उ) कर्ता (ण्) करण

41. ''अधितिष्ठति वैकुण्ठं हरिः'' में 'वैकुण्ठ' की कर्मसंज्ञा किस सूत्र से हुई है –
(अ) कर्त्तुरीप्सिततमं कर्म
(इ) तथायुक्तं चानीप्सितम्
(उ) अकथितं च
(ण्) अधिशीङ्स्थासां कर्म

42. ''अधिशीङ्स्थासां कर्म'' सूत्र में किसका अनुवर्तन है ?
(अ) आधारः (इ) अन्यतरस्याम्
(उ) अकथितम् (ण्) अनीप्सितम्

43.''अभिनिविशश्च'' सूत्र से कौन संज्ञा होती है–
(अ) करण (इ) कर्म
(उ) अधिकरण (ण्) कर्त्ता

44. ''अभिनिविशते सन्मार्गम्'' में कर्मसंज्ञा किस सूत्र से हुई है–
(अ) कर्त्तुरीप्सिततमं कर्म (इ) अधिशीङ्स्थासां कर्म
(उ) अकथितं च (ण्) अभिनिविशश्च

45. 'उप + वस्' के आधार की कौन संज्ञा होती है–
(अ) अधिकरण (इ) कर्म
(उ) सम्प्रदान (ण्) करण

46. 'आवसति वैकुण्ठं हरिः' में 'वैकुण्ठ' की कर्मसंज्ञा किस सूत्र से हुई है–
(अ) अकथितं च (इ) अधिशीङ्स्थासां कर्म
(उ) कर्त्तुरीप्सिततमं कर्म (ण्) उपान्वध्याङ्वसः

47. ''वने उपविशति'' में 'वन' की कर्मसंज्ञा का निषेध किस सूत्र से हुआ है–
(अ) आदिखाद्योर्न (इ) भक्षेरहिंसार्थस्य न
(उ) नीवह्योर्न (ण्) अभुक्त्यर्थस्य न

48. ''सर्वतः'' के योग में कौन सी विभक्ति आती है–
(अ) द्वितीया (इ) तृतीया
(उ) चतुर्थी (ण्) पञ्चमी

49. ''अभितः'' के योग में कौन-सी विभक्ति आती है–
(अ) तृतीया (इ) प्रथमा
(उ) द्वितीया (ण्) चतुर्थी

34. (उ), 35. (अ), 36. (इ), 37. (ण्), 38. (उ), 39. (ण्), 40. (इ), 41. (ण्), 42. (अ) 43. (इ), 44. (ण्), 45. (इ), 46. (ण्), 47. (ण्) 48. (अ), 49. (उ),

50. 'अन्तरा' के योग में कौन-सी विभक्ति प्रयुक्त होगी–
(अ) पञ्चमी (इ) चतुर्थी
(उ) तृतीया (ण्) द्वितीया

51. ''जपमनु प्रावर्षत्'' में 'जप' में द्वितीया का विधान किस सूत्र से हुआ–
(अ) कर्मणि द्वितीया
(इ) उभसर्वतसोः कार्या
(उ) कर्मप्रवचनीययुक्ते द्वितीया
(ण्) अभितः-परितः-समया-निकषा-हा-प्रति–योगेऽपि

52. अत्यन्तसंयोग में कालवाचक शब्द से कौन सी विभक्ति आती है –
(अ) द्वितीया (इ) तृतीया
(उ) चतुर्थी (ण्) प्रथमा

53. ''मासम् अधीते'' में 'मास' में द्वितीया विभक्ति का विधान किस सूत्र से हुआ है–
(अ) कर्मणि द्वितीया
(इ) उभसर्वतसोः कार्या
(उ) कर्मप्रवचनीययुक्ते द्वितीया
(ण्) कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे

54. ''मासस्य द्विः अधीते'' में 'मास' में द्वितीया नहीं है, क्योंकि–
(अ) 'मास' कालवाचक है
(इ) 'मास' एक वचन में है
(उ) 'अत्यंतसंयोग' अर्थ नही है
(ण्) यहाँ 'अपवर्ग' अर्थ नही है

55. अत्यन्त संयोग में अपवर्ग (फलप्राप्ति) द्योत्य होने पर कौन सी विभक्ति आती है–
(अ) द्वितीया (इ) तृतीया
(उ) प्रथमा (ण्) सप्तमी

56. क्रियासिद्धि में प्रकृष्टोपकारक कारक कौन है–
(अ) कर्म (इ) कर्त्ता
(उ) करण (ण्) अधिकरण

57. 'रामेण बाणेन हतो बाली' में 'रामेण' में तृतीया किस कारण से हुई–
(अ) अनुक्ते करणे (इ) उक्ते करणे
(उ) अनुक्ते कर्तरि (ण्) उक्ते कर्तरि

58. 'रामेण बाणेन हतो बाली' में करण क्या है–
(अ) बाण (इ) राम
(उ) बाली (ण्) हनन

59. ''गोत्रेण गार्ग्यः'' में 'गोत्र' में तृतीया विभक्ति का विधान किस सूत्र से किया गया–
(अ) कर्तृकरणयोस्तृतीया (इ) हेतौ
(उ) अपवर्गे तृतीया (ण्) प्रकृत्यादिभ्य उपसंख्यानम्

60. ''अक्षान् दीव्यति'' में 'अक्ष' की कर्मसंज्ञा किस सूत्र से हुई है–
(अ) कर्तुरीप्सिततमं कर्म (इ) दिवः कर्म च
(उ) अकथितं च (ण्) तथायुक्तं चानीप्सितम्

61. 'अह्ना अनुवाकोऽधीतः'' यहाँ 'अहन्' में किस सूत्र से तृतीया आयी–
(अ) प्रकृत्यादिभ्य उपसंख्यानम्
(इ) अपवर्गे तृतीया
(उ) कर्तृकरणयोस्तृतीया
(ण्) कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे

62. 'मासम् अधीतः नायातः'' यहाँ 'मास' पद में तृतीया नहीं लगी, क्योंकि–
(अ) 'मास' कालवाचक है
(इ) वाक्य में अत्यंत संयोग का अर्थ है
(उ) वाक्य में अपवर्ग द्योतित नही होता
(ण्) वाक्य अतीत काल में है

63. 'सह' अर्थ वाले शब्दों के योग में अप्रधान में कौन-सी विभक्ति लगेगी–
(अ) द्वितीया (इ) तृतीया
(उ) प्रथमा (ण्) पञ्चमी

50. (ण्), 51. (उ), 52. (अ) 53. (ण्), 54. (उ), 55. (इ), 56. (उ), 57. (उ) 58. (अ), 59. (ण्), 60. (इ), 61. (इ), 62. (उ), 63. (इ),

64. ''अक्ष्णा काणः'' यहाँ 'अक्षि' पद में किस सूत्र से तृतीया विभक्ति आयी–

(अ) प्रकृत्यादिभ्य उपसंख्यानम् (इ) हेतौ
(उ) अपवर्गे तृतीया (ण्) येनाङ्गविकारः

65. ''इत्थंभूतलक्षणे'' इससे कौन-सी विभक्ति आती है–

(अ) तृतीया (इ) द्वितीया
(उ) पञ्चमी (ण्) प्रथमा

66. ''जटाभिः तापसः'' यहाँ 'जटा' में किस सूत्र से तृतीया विभक्ति आयी–

(अ) येनाङ्गविकारः (इ) अपवर्गे तृतीया
(उ) इत्थंभूतलक्षणे (ण्) हेतौ

67. यह द्रव्यादि साधारण और निर्व्यापार साधारण है–

(अ) करण (इ) हेतु
(उ) कारक (ण्) कर्मप्रवचनीय

68. ''दण्डेन घटः'' यहाँ 'दण्ड' में किस सूत्र से तृतीया विभक्ति आयी–

(अ) अपवर्गे तृतीया (इ) कर्तृकरणयोस्तृतीया
(उ) हेतौ (ण्) प्रकृत्यादिभ्य उपसंख्यानम्

69. ''कर्मणा यमभिप्रैति सः.........'' क्या है ?

(अ) कर्ता (इ) सम्प्रदानम्
(उ) अधिकरणम् (ण्) करणम्

70. ''विप्राय गां ददाति'' में 'विप्र' क्या है ?

(अ) कर्ता (इ) कर्म
(उ) सम्प्रदान (ण्) करण

71. 'उपपद विभक्ति' का उदाहरण नहीं है–

(अ) रामाय नमः (इ) अभितः ग्रामं नदी अस्ति
(उ) इन्द्राय स्वाहा (ण्) भक्तः हरिं भजति

72. 'रुच्यर्थ' धातु के योग में 'प्रीयमाण' की क्या संज्ञा होती है–

(अ) करण (इ) कर्ता
(उ) कर्म (ण्) सम्प्रदान

73. ''हरये रोचते भक्तिः'' में 'हरि' शब्द में किस सूत्र से चतुर्थी विभक्ति हुई–

(अ) चतुर्थी सम्प्रदाने
(इ) रुच्यर्थानां प्रीयमाणः
(उ) नमः-स्वस्ति-स्वाहा-स्वधा-अलं-वषट्-योगाच्च
(ण्) तुमर्थाच्च भाववचनात्

74. ''धारेरुत्तमर्णः'' सूत्र से कौन-सी संज्ञा होती है–

(अ) अपादान (इ) करण
(उ) सम्प्रदान (ण्) कर्म

75. ''स्पृहेरीप्सितः'' सूत्र से कौन-सी संज्ञा होगी–

(अ) अपादान (इ) करण
(उ) सम्प्रदान (ण्) कर्म

76. ''क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः'' इस सूत्र से किस संज्ञा का विधान होगा–

(अ) सम्प्रदान (इ) कर्म
(उ) करण (ण्) कर्ता

77. 'हरये क्रुध्यति' में ''हरि'' क्या है–

(अ) कर्त्ता (इ) सम्प्रदान
(उ) करण (ण्) इनमें से कोई नहीं

78. 'क्रुध धातु' के योग में जिसके प्रति कोप हो, उसकी क्या संज्ञा है–

(अ) सम्प्रदान (इ) कर्म
(उ) करण (ण्) अधिकरण

79. ''मुक्तये हरिं भजति''– 'मुक्ति' में चतुर्थी किस सूत्र से आयी–

(अ) चतुर्थी सम्प्रदाने
(इ) तुमर्थाच्च भाववचनात्
(उ) तादर्थ्ये चतुर्थी वाच्या
(ण्) नमः–स्वस्ति-स्वाहा-स्वधा-अलं-वषट्-योगाच्च

80. ''उत्पातेन ज्ञापिते च'' इस वार्तिक से कौन-सी विभक्ति आती है–

(अ) तृतीया (इ) द्वितीया
(उ) पञ्चमी (ण्) चतुर्थी

64. (ण्), 65. (अ), 66. (उ), 67.(इ), 68. (उ), 69. (इ), 70. (उ), 71. (ण्), 72. (ण्), 73. (अ), 74. (उ), 75. (उ), 76. (अ), 77. (इ), 78. (अ), 79. (उ), 80. (ण्),

81. 'फलेभ्यो याति' यहाँ 'फल' में किस सूत्र से चतुर्थी विभक्ति हुई–
(अ) तादर्थ्ये चतुर्थी वाच्या
(इ) क्रियार्थोपपदस्य च कर्मणि स्थानिनः
(उ) तुमर्थाच्च भाववचनात्
(ण्) चतुर्थी सम्प्रदाने

82.''तुमर्थाच्च भाववचनात्'' इस सूत्र से किस विभक्ति का विधान किया जाता है–
(अ) द्वितीया (इ) पञ्चमी
(उ) तृतीया (ण्) चतुर्थी

83. 'स्वाहा' के योग में कौन सी विभक्ति होती है–
(अ) चतुर्थी (इ) द्वितीया
(उ) पञ्चमी (ण्) तृतीया

84. ''नमस्करोति देवान्'' में 'देव' पद में ''नमः स्वस्ति-स्वाहा.........'' इस वार्तिक से चतुर्थी विभक्ति नहीं हुई; क्योंकि–
(अ) देव से चतुर्थी विभक्ति आती ही नही
(इ) यहाँ 'नमः' पद का योग है ही नही
(उ) उपपद विभक्ति से कारक विभक्ति बलवती होती है
(ण्) देव शब्द बहुवचन में है।

85. अपाय में 'ध्रुव' की क्या संज्ञा होती है–
(अ) अधिकरण (इ) सम्प्रदान
(उ) करण (ण्) अपादान

86. ''गवां कृष्णा बहुक्षीरा''– यहाँ 'गो' पद में षष्ठी विभक्ति किस सूत्र से हुई–
(अ) षष्ठी शेषे (इ) षष्ठी चानादरे
(उ) यतश्च निर्धारणम् (ण्) षष्ठ्यतसर्थ प्रत्ययेन

87. 'ग्रामात् आयाति' यहाँ 'ग्राम' की अपादान संज्ञा किस सूत्र से हुई–
(अ) जनिकर्तुः प्रकृतिः (इ) ध्रुवमपायेऽपादानम्
(उ) भुवः प्रभवः (ण्) आख्यातोपयोगे

88. 'भयार्थक धातु' के प्रयोग में भय के हेतु की क्या संज्ञा होगी–
(अ) करण (इ) अधिकरण
(उ) अपादान (ण्) कर्म

89. ''अध्ययनात् पराजयते'' यहाँ 'अध्ययन' की अपादान संज्ञा किस सूत्र से हुई है–
(अ) पराजेरसोढः (इ) आख्यातोपयोगे
(उ) ध्रुवमपायेऽपादानम् (ण्) भुवः प्रभवः

90. ''मातुर्निलीयते कृष्णः'' यहाँ किस सूत्र से 'मातृ' की अपादान संज्ञा हुई –
(अ) जनिकर्तुः प्रकृतिः (इ) अन्तर्धौ येनादर्शनमिच्छति
(उ) ध्रुवमपायेऽपादानम् (ण्) आख्यातोपयोगे

91. 'जायमान' के हेतु की क्या संज्ञा होगी–
(अ) करण (इ) सम्प्रदान
(उ) अपादान (ण्) कर्म

92. ''हिमवतो गङ्गा प्रभवति'' यहाँ 'हिमवत्' की अपादान संज्ञा किस सूत्र से हुई–
(अ) जनिकर्तुः प्रकृतिः (इ) ध्रुवमपायेऽपादानम्
(उ) वारणार्थानामीप्सितः (ण्) भुवः प्रभवः

93. 'भुवः प्रभवः' इस सूत्र से किसमें पञ्चमी विभक्ति का विधान किया गया है–
(अ) प्रयागात् संस्कृतगङ्गा प्रभवति
(इ) संस्कृतगङ्गातः गृहं गच्छति
(उ) संस्कृतबालः व्याकरणात् बिभेति
(ण्) संस्कृतज्ञः मल्लात् पराजयेत्

94. 'ऋते' 'आरात्' तथा 'अन्य' पद के योग में कौन-सी विभक्ति आती है–
(अ) पञ्चमी (इ) षष्ठी
(उ) सप्तमी (ण्) प्रथमा

95. ''जाड्यात् बद्धः'' यहाँ 'जाड्य' पद में पञ्चमी विभक्ति किस सूत्र से हुई है–
(अ) ल्यब्लोपे कर्मण्यधिकरणे च
(इ) अन्यारादितरर्ते........युक्ते
(उ) विभाषा गुणेऽस्त्रियाम्
(ण्) प्रतिनिधिप्रतिदाने च यस्मात्

81. (इ), 82.(ण्), 83. (अ), 84. (उ), 85. (ण्), 86. (उ), 87. (इ), 88. (उ), 89. (अ), 90. (इ), 91. (उ), 92.(ण्), 93. (अ) 94. (अ), 95. (उ),

96. ''पृथक्, विना, नाना''– इन पदों के योग में कौन-सी विभक्ति नहीं आती–
(अ) पञ्चमी (इ) चतुर्थी
(उ) द्वितीया (ण्) तृतीया

97. ''अन्नस्य हेतोर्वसति'' यहाँ षष्ठी विभक्ति किस सूत्र से आयी है–
(अ) षष्ठी हेतुप्रयोगे (इ) षष्ठी शेषे
(उ) कर्तृकर्मणोः कृति (ण्) षष्ठ्यतसर्थप्रत्ययेन

98. 'अतसर्थ प्रत्यय' के योग में कौन-सी विभक्ति आती है–
(अ) पञ्चमी (इ) चतुर्थी
(उ) षष्ठी (ण्) सप्तमी

99. 'इदम् एषाम् आसितम्''– यहाँ 'एतत्' में किस सूत्र से षष्ठी विभक्ति हुई है–
(अ) कर्तृकर्मणोः कृति (इ) क्तस्य च वर्त्तमाने
(उ) अधिकरणवाचिनश्च (ण्) षष्ठी शेषे

100. वर्तमानार्थ 'क्त' के योग में कौन-सी विभक्ति होती है–
(अ) तृतीया (इ) द्वितीया
(उ) प्रथमा (ण्) षष्ठी

101. 'कृत्' के योग में कर्त्ता में कौन-सी विभक्ति आती है–
(अ) द्वितीया (इ) षष्ठी
(उ) चतुर्थी (ण्) सप्तमी

102. 'जगतः कर्त्ता कृष्णः' यहाँ 'जगत्' में किस सूत्र से षष्ठी विभक्ति हुई–
(अ) षष्ठी शेषे (इ) षष्ठ्यतसर्थप्रत्ययेन
(उ) षष्ठी हेतुप्रयोगे (ण्) कर्त्तृकर्मणोः कृति

103. 'कुर्वन् सृष्टिं हरिः'– यहाँ 'कुर्वन्' में षष्ठी का निषेध किस सूत्र से होता है–
(अ) न लोकाव्ययनिष्ठाखलर्थतृनाम्
(इ) अकेनोर्भविष्यदाधमर्ण्ययोः
(उ) कमेरनिषेधः
(ण्) तुल्यार्थैरतुलोपमाभ्याम् तृतीयान्यतरस्याम्

104. 'आधार' की क्या संज्ञा होती है–
(अ) कर्म (इ) करण
(उ) सम्प्रदान (ण्) अधिकरण

105. 'कटे आस्ते'– यहाँ 'कट' कैसा अधिकरण है–
(अ) वैषयिक (इ) अभिव्यापक
(उ) औपश्लेषिक (ण्) इनमें से कोई नहीं

106. यहाँ 'अभिव्यापक' अधिकरण है–
(अ) कटे आस्ते
(इ) मोक्षे इच्छा अस्ति
(उ) स्थाल्यां पचति
(ण्) सर्वस्मिन् आत्मा अस्ति

107. 'मोक्षे इच्छा अस्ति' यहाँ कौन-सा आधार है–
(अ) अभिव्यापक (इ) वैषयिक
(उ) औपश्लेषिक (ण्) उपर्युक्त तीनों

108. अधिकरण (आधार) कितने प्रकार का होता है–
(अ) 4 (इ) 3
(उ) 5 (ण्) 7

109. 'चर्मणि द्वीपिनं हन्ति' - यहाँ 'चर्मन्' पद में किस सूत्र से सप्तमी विभक्ति हुई–
(अ) सप्तम्यधिकरणे च (इ) निमित्तात् कर्मयोगे
(उ) यस्य च भावेन भावलक्षणम्
(ण्) साध्वसाधुप्रयोगे च

110. ''गोषु दुह्यमानासु गतः'' - यहाँ सप्तमी का विधान करने वाला सूत्र कौन है–
(अ) निमित्तात् कर्मयोगे (इ) सप्तम्यधिकरणे च
(उ) यस्य च भावेन भावलक्षणम्
(ण्) साध्वसाधु प्रयोगे च

111. 'रुदति प्राव्राजीत्' यहाँ सप्तमी विभक्ति किस सूत्र से हुई–
(अ) यस्य च भावेन भावलक्षणम्
(इ) षष्ठी चानादरे
(उ) निमित्तात् कर्मयोगे
(ण्) सप्तम्यधिकरणे च

96. (इ), 97. (अ), 98. (उ), 99. (उ), 100. (ण्), 101. (इ), 102. (ण्), 103. (अ), 104. (ण्), 105. (उ), 106. (ण्), 107. (इ), 108. (इ), 109. (इ), 110. (उ), 111. (इ)।

कारकगङ्गा (भाग-दो)

1. 'कारक' कहा जाता है-
(अ) क्रियां निर्वर्तयति करोतीति कारकम्
(इ) क्रियाजनकत्वं कारकत्वम्
(उ) क्रियान्वयित्वं कारकत्वम्
(ऋ) उपर्युक्त सभी

2. 'प्रातिपदिकार्थमात्र' का उदाहरण नहीं है-
(अ) उच्चैः, नीचैः (इ) कृष्णः, श्रीः
(उ) ज्ञानम्, फलम् (ऋ) तटः, तटम्

3. 'नियतलिङ्गक प्रातिपदिकार्थ' के उदाहरण हैं-
(अ) श्रीः (इ) कृष्णः
(उ) ज्ञानम् (ऋ) उपर्युक्त सभी

4. 'अलिङ्ग प्रातिपदिकार्थमात्र' का उदाहरण है-
(अ) उच्चैः (इ) नीचैः
(उ) दोनों (ऋ) इनमें से कोई नहीं

5. 'लिङ्गमात्राधिक्य' का उदाहरण नहीं है-
(अ) तटः (इ) तालः
(उ) तटी (ऋ) तटम्

6. 'परिमाणमात्र' का उदाहरण है-
(अ) द्रोणो व्रीहिः (इ) द्रोणाचार्यः
(उ) द्रोणी (द्रोणपुत्रः) (ऋ) द्रोणशिष्यः

7. 'वचनमात्र' का उदाहरण नहीं है-
(अ) एकलव्यः (इ) एकः
(उ) द्वौ (ऋ) बहवः

8. 'हे राजन् ! सार्वभौमो भव।' – यहाँ 'राजन्' पद में किस सूत्र से प्रथमा विभक्ति हुई-
(अ) प्रातिपदिकार्थ-लिङ्ग परिमाणवचनमात्रे प्रथमा
(इ) राजनि युधि-कृञः
(उ) सम्बोधने च
(ऋ) राल्लोपः

9. ''इत्याहुः कारकाणि षट्'' के अन्तर्गत परिगणित नहीं है-
(अ) सम्बोधन (इ) सम्बन्ध
(उ) दोनों (ऋ) इनमें से कोई नहीं

10. 'प्रातिपदिकार्थमात्र' का उदाहरण कहा जाता है-
(अ) अलिङ्ग और नियतलिङ्ग
(इ) लिङ्गमात्राधिक्य
(उ) वचनमात्र (ऋ) उपर्युक्त सभी

11. ''नियतोपस्थितिकः प्रातिपदिकार्थः'' यह कथन किसका है-
(अ) पाणिनि का (इ) पतञ्जलि का
(उ) भट्टोजिदीक्षित का (ऋ) वरदराज का

12. ''प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा''- इस सूत्र में कितने पद हैं-
(अ) षड्पदम् (इ) पञ्चपदम्
(उ) त्रिपदम् (ऋ) द्विपदम्

13. प्रथमा विभक्ति विधायक सूत्र है-
(अ) प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा
(इ) सम्बोधने च (उ) उपर्युक्त दोनों
(ऋ) केवल 'अ' सही है

14. ''कर्तुरीप्सिततमं कर्म'' – यहाँ 'कर्तुः' पद में विभक्ति है-
(अ) पञ्चमी (इ) षष्ठी
(उ) सप्तमी (ऋ) चतुर्थी

15. ''विभक्तिः द्विविधा'' – इसके अन्तर्गत परिगणित है-
(अ) कारकविभक्तिः (इ) उपपदविभक्तिः
(उ) उपर्युक्त दोनों (ऋ) इनमें से कोई नहीं

16. अण्यन्त अवस्था के कर्त्ता की ण्यन्तावस्था में 'कर्मसंज्ञा' करने वाला सूत्र है-
(अ) कर्तुरीप्सिततमं कर्म
(इ) अधिशीङ्स्थासां कर्म
(उ) दिवः कर्म च
(ऋ) गति–बुद्धि–प्रत्यवसानार्थ–शब्दकर्माकर्मकाणामणि कर्त्ता स णौ

1. (ऋ), 2. (ऋ), 3. (ऋ), 4. (उ), 5. (इ),6. (अ), 7. (अ) 8. (उ), 9. (उ) 10. (अ), 11. (उ), 12. (ऋ), 13. (उ), 14. (इ),15. (उ), 16. (ऋ),

17. 'नी' और 'वह्' धातुओं के अण्यन्त कर्त्ता की ण्यन्तावस्था में 'कर्मसंज्ञा' का निषेध करने वाला वार्त्तिक है-
(अ) आदिखाद्योर्न (इ) नीवह्योर्न
(उ) भक्षेरहिंसार्थस्य न (ऋ) दृशेश्च

18. 'आधार' की कर्मसंज्ञा करने वाला सूत्र है-
(अ) अधिशीङ्स्थासां कर्म
(इ) अभिनिविशश्च
(उ) उपान्वध्याङ्वसः (ऋ) उपर्युक्त सभी

19. किस उपसर्ग के योग में 'शीङ्' 'स्था' और 'आस्' धातु के आधार की कर्मसंज्ञा हो जाती है-
(अ) उप (इ) परा
(उ) अधि (ए) अनु

20. 'अभि' और 'नि' उपसर्गपूर्वक किस धातु के आधार की 'कर्मसंज्ञा' होती है-
(अ) शीङ् (इ) विश्
(उ) स्था (ऋ) आस्

21. ''उपान्वध्याङ्वसः'' इस सूत्र में कितने उपसर्ग परिगणित हैं-
(अ) 3 (इ) 4
(उ) 5 (ऋ) 2

22. किन अव्ययों के योग में द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है-
(अ) अन्तरा (इ) अन्तरेण
(उ) धिक् (ऋ) उपर्युक्त सभी

23. अत्यन्त संयोग अर्थ होने पर कालवाचक तथा मार्गवाचक शब्दों से फलप्राप्ति न होने पर कौन विभक्ति होती है-
(अ) प्रथमा (इ) द्वितीया
(उ) तृतीया (ऋ) चतुर्थी

24. किस पद के योग में द्वितीया विभक्ति नहीं होती है-
(अ) अभितः, परितः (इ) समया, निकषा
(उ) हा, प्रति (ऋ) अयि, भोः

25. ''अभितः केशवं गोपाः,
गावस्तं परितः स्थिताः।
समया तं स्थिता राधा
निकषा तां सखीजनः॥''
यहाँ किस वार्तिक से द्वितीया विभक्ति हुई है-
(अ) उभसर्वतसोः कार्या धिगुपर्यादिषु त्रिषु
(इ) अभितः-परितः-समया-निकषा-हा-प्रति-योगेऽपि
(उ) आदिखाद्योर्न
(ऋ) इनमें से कोई नहीं

26. सह, साकम्, सार्धम्, समं, सत्रा आदि के योग में अप्रधान में किस विभक्ति का विधान किया जाता है-
(अ) द्वितीया (इ) तृतीया
(उ) चतुर्थी (ऋ) पञ्चमी

27. ''येनाङ्गविकारः'' सूत्र का उदाहरण है-
(अ) अक्ष्णा काणः (इ) पादेन खञ्जः
(उ) पृष्ठेन कुब्जः (ऋ) उपर्युक्त सभी

28. ''इत्थम्भूतलक्षणे'' सूत्र से तृतीयाविभक्ति का विधान किया गया है-
(अ) 'जटाभिस्तापसः' में (इ) 'आकृत्या शूरः' में
(उ) 'वेषेण यतिः' में (ऋ) उपर्युक्त सभी

29. ''हेतौ'' सूत्र से हेतु अर्थात् कारण में कौन सी विभक्ति होती है-
(अ) तृतीया (इ) द्वितीया
(उ) चतुर्थी (ऋ) पञ्चमी

30. 'पुण्येन दृष्टो हरिः' में किस सूत्र से तृतीया विभक्ति का विधान है-
(अ) अपवर्गे तृतीया (इ) इत्थंभूतलक्षणे
(उ) हेतौ (ए) कर्तृकरणयोस्तृतीया

31. ''अपवर्गे तृतीया'' – इस सूत्र का उदाहरण नहीं है-
(अ) मासम् अधीते
(इ) मासेन अधीतः अनुवाकः
(उ) क्रोशेन अधीतः अनुवाकः
(ऋ) इनमें से कोई नहीं

17. (इ), 18. (ऋ), 19. (उ),20. (इ), 21. (इ), 22. (ऋ), 23. (इ), 24. (ऋ), 25. (इ), 26. (इ),
27. (ऋ), 28. (ऋ), 29. (अ) 30. (उ), 31. (अ),

32. ''हेतौ'' सूत्र से तृतीया विभक्ति का विधान नहीं हुआ है-
(अ) जटाभिस्तापसः (इ) दण्डेन घटः
(उ) पुण्येन दृष्टः हरिः (ऋ) अध्ययनेन वसति

33. ''प्रकृत्यादिभ्य उपसंख्यानम्'' इस वार्तिक से तृतीया विभक्ति का विधान नहीं हुआ है-
(अ) प्रकृत्या चारुः (इ) गोत्रेण गार्ग्यः
(उ) सुखेन याति (ऋ) अक्षैः दीव्यति

34. ''पृथक् संस्कृतं नैव संस्कृतिः
विना संस्कृतिं नैव भारतम् ।
नाना भारतात् नेयं सृष्टिः,
अतः संस्कृतम्, अतः संस्कृतम् ॥''
यहाँ किन पदों के योग में द्वितीया और पञ्चमी विभक्ति का विधान किया गया है-
(अ) पृथक् (इ) विना
(उ) नाना (ऋ) उपर्युक्त सभी

35. ''धारेरुत्तमर्णः'' इस सूत्र में 'उत्तमर्ण' पद का क्या अर्थ है-
(अ) ऋण लेने वाला (इ) ऋण देने वाला
(उ) ऋण न देने वाला (ऋ) ऋण दिलाने वाला

36. 'उत्तमर्ण' की संज्ञा होती है-
(अ) करण (इ) अपादान
(उ) सम्प्रदान (ऋ) कर्म

37. 'पुष्पेभ्यः स्पृहयति' – यहाँ 'पुष्प' में चतुर्थी विभक्ति किस सूत्र से हुई -
(अ) रुच्यर्थानां प्रीयमाणः (इ) स्पृहेरीप्सितः
(उ) धारेरुत्तमर्णः (ऋ) हेतौ

38. 'क्रुध्, द्रुह्, ईर्ष्य, असूय' या इनके समानार्थक धातुओं के प्रयोग में, जिसके प्रति कोप किया जाय, उसकी क्या संज्ञा होगी -
(अ) सम्प्रदान (इ) करण
(उ) अपादान (ऋ) कर्म

39. ''तादर्थ्ये चतुर्थी वाच्या'' इस वार्तिक से किसमें चतुर्थी का विधान हुआ है-
(अ) काव्यं यशसे (इ) यूपाय दारु
(उ) मुक्तये हरिं भजति (ऋ) उपर्युक्त सभी में

40. जुगुप्सा, विराम और प्रमाद अर्थवाली धातुओं के प्रयोग में जिससे घृणा की जाय, जिससे रोका जाय, और जहाँ प्रमाद किया जाय, उसकी क्या संज्ञा होगी-
(अ) करण (इ) कर्म
(उ) अपादान (ऋ) सम्प्रदान

41. ''जुगुप्सा-विराम-प्रमादार्थानामुपसंख्यानम्'' इस वार्त्तिक का उदाहरण है-
(अ) पापात् जुगुप्सते (इ) पापात् विरमति
(उ) धर्मात् प्रमाद्यति (ऋ) उपर्युक्त सभी

42. 'डरना' और 'रक्षा करना' अर्थवाली धातुओं के प्रयोग में जिससे डरा जाय या जिससे रक्षा करनी हो, उसकी क्या संज्ञा होगी-
(अ) अपादानसंज्ञा (इ) सम्प्रदानसंज्ञा
(उ) करणसंज्ञा (ऋ) कर्मसंज्ञा

43. 'अपादानसंज्ञा' किस सूत्र से होगी-
(अ) भीत्रार्थानां भयहेतुः (इ) जनिकर्तुः प्रकृतिः
(उ) भुवः प्रभवः (ऋ) उपर्युक्त सभी

44. ''भीत्रार्थानां भयहेतुः'' इस अपादान-संज्ञक सूत्र का उदाहरण है-
(अ) चौरात् बिभेति (इ) चौरात् त्रायते
(उ) उपर्युक्त दोनों (ऋ) इनमें से कोई नहीं

45. ''वारणार्थानामीप्सितः'' इस सूत्र से 'रोकना' अर्थवाली धातुओं के प्रयोग में ईप्सित् अर्थात् जिससे रोकना अभीष्ट है उसकी क्या संज्ञा होगी-
(अ) अपादान (इ) सम्प्रदान
(उ) करण (ऋ) कर्म

46. 'यवेभ्यो गां वारयति' – यहाँ 'यव' शब्द की अपादान संज्ञा किस सूत्र से हुई-
(अ) ध्रुवमपायेऽपादानम् (इ) जनिकर्तुः प्रकृतिः
(उ) भुवः प्रभवः (ऋ) वारणार्थानामीप्सितः

47. 'मातुर्निलीयते कृष्णः' – यहाँ ''मातुः'' में किस विभक्ति का प्रयोग है-
(अ) चतुर्थी (इ) सप्तमी
(उ) पञ्चमी (ऋ) द्वितीया

32. (अ), 33. (ऋ), 34. (ऋ), 35. (इ), 36. (उ), 37. (इ),38. (अ), 39. (ऋ), 40. (उ), 41. (ऋ), 42. (अ) 43. (ऋ), 44. (उ), 45. (अ), 46. (ऋ), 47. (उ)

48. ''अन्तर्धौ येनादर्शनमिच्छति'' इस सूत्र से 'छिपने वाला जिससे अपना अदर्शन चाहता है', उसकी क्या संज्ञा होगी-
(अ) करण (इ) अधिकरण
(उ) सम्प्रदान (ऋ) अपादान

49. ''आख्यातोपयोगे'' सूत्र द्वारा नियमपूर्वक विद्याग्रहण के विषय में आख्याता पढ़ाने वाले व्याख्याता की क्या संज्ञा होगी -
(अ) करणसंज्ञा (इ) कर्मसंज्ञा
(उ) कर्त्ता संज्ञा (ऋ) अपादानसंज्ञा

50. ''आख्यातोपयोगे'' – यह कैसा सूत्र है -
(अ) विधिसूत्रम् (इ) संज्ञासूत्रम्
(उ) अधिकारसूत्रम् (ऋ) परिभाषासूत्रम्

51. ''आख्यातोपयोगे'' सूत्र का उदाहरण है -
(अ) उपाध्यायात् अधीते
(इ) गुरोः अधीते
(उ) संस्कृतभूषणात् अधीते
(ऋ) उपर्युक्त सभी

52. ''आख्यातोपयोगे'' सूत्र में 'आख्याता' पद का क्या अर्थ है-
(अ) अध्यापयिता (इ) व्याख्याता
(उ) प्रवक्ता (ऋ) उपर्युक्त सभी

53. ''जनिकर्तुः प्रकृतिः'' इस सूत्र का उदाहरण है-
(अ) ब्रह्मणः प्रजाः प्रजायन्ते
(इ) गोमयात् वृश्चिकः जायते
(उ) कामात् क्रोधः अभिजायते
(ऋ) उपर्युक्त सभी

54. ''जनिकर्तुः प्रकृतिः'' – इस सूत्र के 'जनिकर्तुः' पद में किस विभक्ति का प्रयोग है-
(अ) पञ्चमी (इ) षष्ठी
(उ) द्वितीया (ऋ) चतुर्थी

55. 'अपादानसंज्ञा' करने वाला सूत्र है-
(अ) जनिकर्तुः प्रकृतिः (इ) रुच्यर्थानां प्रीयमाणः
(उ) यस्य च भावेन भावलक्षणम्
(ऋ) इनमें से कोई नहीं

56. 'प्र + भू' धातु के कर्त्ता का 'प्रभव' अर्थात् प्रथम प्रकट होने के स्थान की क्या संज्ञा होगी-
(अ) अपादानसंज्ञा (इ) करणसंज्ञा
(उ) अधिकरण संज्ञा (ऋ) कर्मसंज्ञा

57. 'भुवः प्रभवः' इस अपादानसंज्ञक सूत्र का उदाहरण नहीं होगा -
(अ) हिमवतः गङ्गा प्रभवति
(इ) प्रयागात् संस्कृतगङ्गा प्रभवति
(उ) अमरकण्टकात् नर्मदा प्रभवति
(ऋ) पङ्कात् पङ्कजः जायते।

58. ''भुवः प्रभवः'' सूत्र में 'प्रभवः' पद का क्या अर्थ है -
(अ) जन्मदाता (उत्पत्तिस्थान) (इ) हिमालय
(उ) कारण (ऋ) उपर्युक्त सभी

59. ''भुवः प्रभवः'' सूत्र में 'भुवः' पद में किस विभक्ति का प्रयोग है -
(अ) पञ्चमी (इ) षष्ठी
(उ) प्रथमा (ऋ) द्वितीया

60. किस पद के योग में पञ्चमी विभक्ति का प्रयोग होगा -
(अ) अन्य, आरात् (इ) इतर, ऋते
(उ) दिक्शब्द (ऋ) उपर्युक्त सभी

61. वर्जन (छोड़ना) अर्थ में 'अप' और 'परि' उपसर्गों की क्या संज्ञा होगी -
(अ) अपादानसंज्ञा (इ) कर्मप्रवचनीयसंज्ञा
(उ) गतिसंज्ञा (ऋ) धातुसंज्ञा

62. 'कर्मप्रवचनीयसंज्ञक' हैं -
(अ) अप (इ) आङ्
(उ) परि (ऋ) उपर्युक्त सभी

63. 'अप, परि, आङ्' – इन कर्मप्रवचनीयों के योग में किस विभक्ति का प्रयोग होता है -
(अ) द्वितीया (इ) पञ्चमी
(उ) षष्ठी (ऋ) चतुर्थी

48. (ऋ), 49. (ऋ), 50. (इ), 51. (ऋ), 52.(ऋ) 53. (ऋ), 54. (इ), 55. (अ), 56. (अ), 57. (ऋ), 58. (अ), 59. (इ), 60. (ऋ), 61. (इ), 62.(ऋ) 63. (इ),

64. प्रतिनिधि (स्थानापन्न) या प्रतिदान (बदले में देना) अर्थों में 'प्रति' की कर्मप्रवचनीयसंज्ञा किस सूत्र से होगी -
(अ) प्रतिः प्रतिनिधि-प्रतिदानयोः
(इ) प्रतिनिधिप्रतिदाने च यस्मात्
(उ) प्रतिजनादिभ्यः
(ऋ) प्रतिपथमेति

65. ''कर्तृकर्मणोः कृति'' सूत्र द्वारा कृत् प्रत्ययान्त के साथ अर्थ द्वारा योग होने पर कर्त्ता या कर्म में किस विभक्ति का प्रयोग होता है -
(अ) पञ्चमी (इ) षष्ठी
(उ) चतुर्थी (ऋ) तृतीया

66. ''कर्तृकर्मणोः कृति'' सूत्र से षष्ठी विभक्ति किसमें हुई है -
(अ) जगतः कर्त्ता कृष्णः (इ) कृष्णस्य कृतिः
(उ) सूत्रकारस्य कृतिः (ऋ) उपर्युक्त सभी में

67. ''क्तस्य च वर्त्तमाने'' सूत्र द्वारा वर्तमानकाल में विहित 'क्त प्रत्यय' के योग में किस विभक्ति का विधान किया जाता है -
(अ) पञ्चमी (इ) षष्ठी
(उ) चतुर्थी (ऋ) तृतीया

68. राज्ञां मतः, राज्ञां बुद्धः, राज्ञां पूजितः - इन उदाहरणों में षष्ठी का विधान किस सूत्र से हुआ है -
(अ) कर्तृकर्मणोः कृति (इ) कृत्यानां कर्त्तरि वा
(उ) क्तस्य च वर्त्तमाने (ऋ) अधिकरणवाचिनश्च

69. ''हेतौ'' सूत्र द्वारा हेतु में प्राप्त तृतीया विभक्ति का बाधक/अपवाद सूत्र है -
(अ) षष्ठी हेतुप्रयोगे (इ) हेतुमति च
(उ) हेतुहेतुमतोर्लिङ् (ऋ) उपर्युक्त सभी

70. ''अन्नस्य हेतोर्वसति'' इस उदाहरण में 'अन्न' शब्द में षष्ठीविभक्ति का प्रयोग किस सूत्र से हुआ है -
(अ) हेतौ (इ) षष्ठी शेषे
(उ) षष्ठी हेतुप्रयोगे (ऋ) हेतुमति च

71. ''निमित्तपर्यायप्रयोगे सर्वासां प्रायदर्शनम्'' इस वार्तिक द्वारा किस विभक्ति का विधान किया गया है-
(अ) प्रथमा (इ) द्वितीया
(उ) षष्ठी (ऋ) सभी विभक्तियों का

72. जिसकी प्रसिद्ध क्रिया से किसी अन्य की दूसरी क्रिया लक्षित होती है, वहाँ किस विभक्ति का प्रयोग होता है
(अ) षष्ठी (इ) सप्तमी
(उ) पञ्चमी (ऋ) चतुर्थी

73. ''गोषु दुह्यमानासु गतः'' यहाँ 'गो' शब्द में सप्तमी का विधान किस सूत्र से हुआ -
(अ) यस्य च भावेन भावलक्षणम्
(इ) यतश्च निर्धारणम्
(उ) आधारोऽधिकरणम्
(ऋ) यस्य विभाषा

74. ''यतश्च निर्धारणम्'' सूत्र से निर्धारण में समुदायवाचक शब्द से किस विभक्ति का विधान होता है -
(अ) षष्ठी (इ) सप्तमी
(उ) पञ्चमी (ऋ) केवल 'अ' और 'इ'

75. 'यतश्च निर्धारणम्'' सूत्र का उदाहरण है -
(अ) गवां गोषु वा कृष्णा बहुक्षीरा ।
(इ) नृणां नृषु वा ब्राह्मणः श्रेष्ठः ।
(उ) छात्राणां छात्रेषु वा राकेशः पटुः
(ऋ) उपर्युक्त सभी

76. मर्यादा और अभिविधि अर्थ में 'आङ्' की क्या संज्ञा होगी -
(अ) उपसर्जनसंज्ञा (इ) कर्मप्रवचनीयसंज्ञा
(उ) संहितासंज्ञा (ऋ) गतिसंज्ञा

77. अभिव्यापक आधार का उदाहरण है -
(अ) तिलेषु तैलम् (इ) सर्वस्मिन् आत्मा
(उ) पयसि घृतम् (ऋ) उपर्युक्त सभी

78. 'वैषयिक आधार' का उदाहरण है -
(अ) मोक्षे इच्छा अस्ति
(इ) व्याकरणे रुचिः अस्ति
(उ) संस्कृते जिज्ञासा अस्ति
(ऋ) उपर्युक्त सभी

79. 'औपश्लेषिक आधार' का उदाहरण है -
(अ) कटे आस्ते (इ) स्थाल्यां पचति
(उ) गङ्गायां घोषः (ऋ) उपर्युक्त सभी

64. (अ), 65. (इ), 66. (ऋ), 67.(इ), 68. (उ), 69. (अ), 70. (उ), 71. (ऋ),72. (इ), 73. (अ), 74. (ऋ), 75. (ऋ), 76. (इ), 77.(ऋ), 78. (ऋ), 79. (ऋ),

80. 'अधिकरण' में किस विभक्ति का प्रयोग होता है -
(अ) पञ्चमी (इ) सप्तमी
(उ) षष्ठी (ऋ) द्वितीया

81. 'अपादाने पञ्चमी' सूत्र से पञ्चमीविभक्ति का विधान हुआ है -
(अ) ग्रामाद् आयाति (इ) वृक्षात् पर्णं पतति
(उ) धावतोऽश्वात् पतति (ऋ) उपर्युक्त सभी में

82. ''नमःस्वस्तिस्वाहास्वधाऽलंवषड्योगाच्च'' इस सूत्र से किसमें चतुर्थी विभक्ति का विधान हुआ है -
(अ) हरये नमः, प्रजाभ्यः स्वस्ति
(इ) अग्नये स्वाहा, पितृभ्यः स्वधा
(उ) इन्द्राय वषट्, दैत्येभ्यो हरिः अलम्
(ऋ) उपर्युक्त सभी में

83. अपाय (विश्लेष/वियोग) में जो अवधि बना हो, वह कारक क्या कहलाता है -
(अ) अपादान (इ) सम्प्रदान
(उ) करण (ऋ) अधिकरण

84. अनुक्त सम्प्रदान में किस विभक्ति का प्रयोग होता है -
(अ) तृतीया (इ) चतुर्थी
(उ) पञ्चमी (ऋ) षष्ठी

85. 'विप्राय गां ददाति' में 'विप्र' शब्द से चतुर्थी का विधान क्यों किया गया -
(अ) क्योकि विप्र निर्धन है ।
(इ) क्योकि विप्र अकारान्त पुँल्लिङ्ग है ।
(उ) क्योंकि विप्र सम्प्रदान कारक है ।
(ऋ) क्योंकि विप्र गाय चाहता है ।

86. अनुक्त कर्त्ता और करण में किस विभक्ति का विधान होता है -
(अ) प्रथमा (इ) द्वितीया
(उ) तृतीया (ऋ) चतुर्थी

87. ''साधकतमम्'' किस कारक का लक्षण है -
(अ) सम्प्रदान (इ) करण
(उ) कर्म (ऋ) अधिकरण

88. जब किसी कारक की अपादान आदि विशेष संज्ञा न कहनी हो तो ''अकथितं च'' सूत्र से उसकी कौन सी संज्ञा होगी -
(अ) कर्मसंज्ञा (इ) करणसंज्ञा
(उ) सम्प्रदानसंज्ञा (ऋ) अधिकरणसंज्ञा

89. ''अकथितं च'' इस सूत्र के सन्दर्भ में कितनी द्विकर्मक धातुओं का परिगणन किया गया है -
(अ) 12 (इ) 16
(उ) 18 (ऋ) 20

90. द्विकर्मक धातुओं में प्रथम परिगणित धातु कौन है -
(अ) याच् (इ) पच्
(उ) दुह् (ऋ) दण्ड्

91. षोडश द्विकर्मक धातुओं में परिगणित नहीं है -
(अ) प्रच्छ (इ) पच्
(उ) व्रज (ऋ) ब्रू

92. ''विषवृक्षोऽपि संवर्ध्य स्वयं छेत्तुमसाम्प्रतम्'' यहाँ 'विषवृक्ष' में द्वितीया विभक्ति क्यों नहीं हुई -
(अ) यहाँ 'असाम्प्रतम्' निपात के कारण कर्म उक्त है ।
(इ) 'विषवृक्ष' से द्वितीया होती ही नहीं है ।
(उ) क्योंकि वृक्ष विषैला है ।
(ऋ) 'विषवृक्ष' कर्म है ही नहीं।

93. तद्धित प्रत्यय द्वारा कर्म के उक्त हो जाने का उदाहरण है -
(अ) लक्ष्म्या सेवितो हरिः
(इ) शतेन क्रीतः शत्यः अश्वः
(उ) प्राप्तः आनन्दः यं सः प्राप्तानन्दो जनः
(ऋ) उपर्युक्त सभी

94. अभिहित (उक्त) कर्म में किस विभक्ति का विधान होता है -
(अ) द्वितीया (इ) प्रथमा
(उ) चतुर्थी (ऋ) पञ्चमी

95. अनभिहित (अनुक्त) कर्म में किस सूत्र से द्वितीया विभक्ति होती है -
(अ) कर्तुरीप्सिततमं कर्म (इ) कर्मणि द्वितीया
(उ) द्वितीयायां च (ऋ) द्वितीया ब्राह्मणे

80. (इ), 81. (ऋ), 82.(ऋ), 83. (अ), 84. (इ), 85. (उ), 86. (उ), 87. (इ), 88. (अ), 89. (इ), 90. (उ), 91. (उ), 92.(अ), 93. (इ), 94. (इ), 95. (इ),

96. 'लक्ष्म्या हरिः सेव्यते' – इस उक्त कर्म 'हरि' में प्रथमा विभक्ति किस सूत्र से आयी -
(अ) प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्
(इ) प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा
(उ) प्रथमयोः पूर्वसवर्णः
(ऋ) प्रथमायाश्च

97. तिङ् के द्वारा कर्म के उक्त होने का उदाहरण है -
(अ) लक्ष्म्या हरिः सेव्यते
(इ) लक्ष्म्या सेवितः हरिः
(उ) शतेन क्रीतः शत्यः अश्वः
(ऋ) इनमें से कोई नहीं

98. कृत् प्रत्यय द्वारा कर्म के उक्त होने का उदाहरण है -
(अ) प्राप्तम् आनन्दः यं सः प्राप्तानन्दो जनः
(इ) शतेन क्रीतः शत्यः अश्वः
(उ) लक्ष्म्या सेवितः हरिः
(ए) लक्ष्म्या हरिः सेव्यते

99. 'पयसा ओदनं भुङ्क्ते' यहाँ 'पयस्' की कर्मसंज्ञा क्यों नहीं हुई -
(अ) क्योंकि 'पयस्' कर्त्ता का ईप्सिततम नहीं है
(इ) क्योंकि 'पयस्' की कर्मसंज्ञा होती नहीं
(उ) क्योंकि 'पयस्' नपुंसकलिङ्ग है
(ऋ) क्योंकि 'पयस्' चावल के साथ मिला है

100. 'माषेषु अश्वं बध्नाति' – यहाँ 'माष' पद की कर्म संज्ञा क्यों नहीं हुई–
(अ) क्योंकि माष (उड़द) को खाकर घोड़ा बीमार हो जायेगा
(इ) क्योंकि 'बध्नाति' क्रिया के कर्त्ता को 'अश्व' अभीष्टतम है, 'माष' नहीं
(उ) क्योंकि अश्व उड़द खाना चाह रहा है
(ऋ) क्योंकि 'माष' पद की कर्मसंज्ञा होती ही नहीं

101. कर्त्ता क्रिया के द्वारा जिसे प्राप्त करना चाहता है उस कारक की क्या संज्ञा होगी -
(अ) करणसंज्ञा (इ) कर्मसंज्ञा
(उ) सम्प्रदानसंज्ञा (ऋ) अपादानसंज्ञा

102. 'द्रोणो व्रीहिः' इस उदाहरण में 'द्रोणः' पद का क्या अर्थ है -
(अ) गुरु द्रोणाचार्य (इ) एक माप विशेष
(उ) एक जंगली वृक्ष (ऋ) 'द्रोण' नामक औषधि

103. 'द्रोणो व्रीहिः' के 'व्रीहिः' पद में प्रथमाविभक्ति किस अर्थ में हैं -
(अ) 'परिमाण अर्थ' में (इ) 'प्रातिपदिकार्थ' में
(उ) 'वचनमात्र' में (ऋ) 'लिङ्गमात्राधिक्य' में

104. 'द्रोण' रूप विशेष परिमाण का 'सु' रूप सामान्य परिमाण से किस सम्बन्ध से अन्वय है -
(अ) अभेद सम्बन्ध से
(इ) सामान्य सम्बन्ध से
(उ) अविनाभाव सम्बन्ध से
(ऋ) इनमें से कोई नहीं

105. 'द्रोण' का 'व्रीहि' के साथ किस सम्बन्ध से अन्वय है -
(अ) परिच्छेद्य–परिच्छेदक भाव सम्बन्ध
(इ) प्रतिपाद्य–प्रतिपादक सम्बन्ध
(उ) उपर्युक्त दोनों
(ऋ) इनमें से कोई नहीं

106. 'द्रोणो व्रीहिः' इस उदाहरण में 'द्रोण' पद में प्रथमा विभक्ति किस अर्थ में हुई है -
(अ) लिङ्गमात्राधिक्ये (इ) प्रातिपदिकार्थमात्रे
(उ) परिमाणमात्रे (ए) वचनमात्रे

107. प्रथमा विभक्ति का विधान किया गया है-
(अ) प्रातिपदिकार्थमात्रे
(इ) लिङ्गमात्राधिक्ये
(उ) परिमाणमात्रे, वचनमात्रे
(ऋ) उपर्युक्त सभी में

108. लिङ्गमात्राधिक्य का उदाहरण है-
(अ) तटः तटी, तटम्
(इ) शुक्लः, शुक्ला, शुक्लम्
(उ) कृष्णः, कृष्णा, कृष्णम्
(ऋ) उपर्युक्त सभी

96. (इ), 97. (अ), 98. (उ), 99. (अ), 100. (इ), 101. (इ), 102. (इ), 103. (इ), 104. (अ), 105. (अ), 106. (उ), 107. (ऋ), 108. (ऋ),

109. ''सम्बोधने च'' सूत्र में 'सम्बोधन' पद का अर्थ है-
(अ) अभिमुखीकरणम् (इ) सम्यक् बोधनम्
(उ) आह्वानम् (ध्यानाकर्षणम्)
(ऋ) उपर्युक्त सभी

110. 'प्रातिपदिकार्थ' पद में समास है -
(अ) पञ्चमी तत्पुरुष (इ) षष्ठी तत्पुरुष
(उ) द्वन्द समास (ऋ) बहुव्रीहि

111. द्वितीया विभक्ति विधायक सूत्र है -
(अ) कर्मणि द्वितीया (इ) द्वितीयायां च
(उ) द्वितीया श्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नैः
(ऋ) द्वितीयाटौस्स्वेनः

112. ''कर्मणि द्वितीया'' सूत्र में किस पद की अनुवृत्ति आ रही है -
(अ) अनभिहिते (इ) द्वितीया
(उ) आधारः (ऋ) कर्मप्रवचनीयाः

113. तृतीयाविभक्ति विधायक सूत्र है-
(अ) तृतीया सप्तम्योर्बहुलम्
(इ) तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन
(उ) कर्तृकरणयोस्तृतीया
(ऋ) उपर्युक्त सभी

114. चतुर्थी विभक्ति विधायक सूत्र है-
(अ) चतुर्थी सम्प्रदाने
(इ) चतुर्थी तदर्थार्थबलि-हित-सुखरक्षितैः
(उ) उपर्युक्त दोनों (ऋ) इनमें से कोई नहीं

115. षष्ठी विभक्ति का विधान करने वाला सूत्र है-
(अ) षष्ठी (इ) षष्ठी शेषे
(उ) ष्णान्ता षट् (ऋ) उपर्युक्त सभी

116. सप्तमी विभक्ति विधायक सूत्र है-
(अ) सप्तमी शौण्डैः (इ) सप्तम्यधिकरणे च
(उ) सप्तम्यास्त्रल् (ऋ) सप्तमीविशेषणे बहुव्रीहौ

117. यदि कर्ता के ईप्सिततम की 'कर्मसंज्ञा' तो उसी तरह अनीप्सित की क्या संज्ञा होगी-
(अ) करणसंज्ञा (इ) सम्प्रदानसंज्ञा
(उ) अधिकरणसंज्ञा (ऋ) कर्मसंज्ञा

118. ''तथायुक्तं चानीप्सितम्'' इस सूत्र का उदाहरण है-
(अ) ग्रामं गच्छन् तृणं स्पृशति
(इ) ओदनं भुञ्जानो विषं भुङ्क्ते
(उ) उपर्युक्त दोनों
(ऋ) इनमें से कोई नहीं

119. ''नमःस्वस्तिस्वाहास्वधाऽलंवषट्योगाच्च'' इस सूत्र से कौन सी विभक्ति होती है -
(अ) द्वितीया (इ) तृतीया
(उ) चतुर्थी (ऋ) षष्ठी

120. 'कृते' शब्द के योग में किस विभक्ति का प्रयोग होता है - ***T.G.T.-1999***
(अ) द्वितीया (इ) तृतीया
(उ) चतुर्थी (ऋ) षष्ठी

121. 'धिक्' के योग में कौन सी विभक्ति होती है- ***T.G.T.-1999***
(अ) षष्ठी (इ) पञ्चमी
(उ) द्वितीया (ऋ) तृतीया

122. 'जटाभिस्तापसः' में तृतीया विभक्ति विधायक सूत्र है - ***T.G.T.-1999***
(अ) हेतौ (इ) अपवर्गे तृतीया
(उ) येनाङ्गविकारः (ऋ) इत्थंभूतलक्षणे

123. 'इत्थंभूतलक्षणे'' सूत्र से सम्बद्ध विभक्ति है -
(अ) पञ्चमी (इ) द्वितीया
(उ) तृतीया (ऋ) चतुर्थी

124. ''अभितः संस्कृतं गङ्गा
वयं तां परितः स्थिताः।
मां समया स्थिता देवी
निकषा तां मे भारती ॥''
यहाँ किन पदों के योग में द्वितीया विभक्ति का विधान हुआ है -
(अ) अभितः (इ) परितः
(उ) समया, निकषा (ऋ) उपर्युक्त सभी

125. कर्ता का इष्टतमकारक है -
(अ) कर्म (इ) करण
(उ) सम्प्रदान (ऋ) अपादान

109. (ऋ), 110. (इ), 111. (अ), 112. (अ), 113. (उ), 114. (अ), 115. (इ), 116. (इ), 117. (ऋ), 118. (उ), 119. (उ), 120. (ऋ), 121. (उ), 122. (ऋ), 123. (उ), 124. (ऋ), 125. (अ),

126. ''छात्रेभ्यः स्वस्ति'' में चतुर्थी विभक्ति का कारण है -
(अ) रुच्यर्थानां प्रीयमाणः
(इ) ''नमःस्वस्तिस्वाहास्वधाऽलंवषट्योगाच्च''
(उ) चतुर्थी सम्प्रदाने
(ऋ) चतुर्थी तदर्थार्थबलिहितसुखरक्षितैः

127. 'चौरात् बिभेति' में पञ्चमी विभक्ति का कारण है –
(अ) अपादाने पञ्चमी (इ) भीत्रार्थानां भयहेतुः
(उ) आख्यातोपयोगे (ऋ) ध्रुवमपायेऽपादानम्

128. 'अनुक्त कर्म' में विभक्ति होती है -
(अ) प्रथमा (इ) द्वितीया
(उ) तृतीया (ऋ) पञ्चमी

129. ''पादेन खञ्जः'' में तृतीया विभक्ति है -
(अ) 'येनाङ्गविकारः' सूत्र से
(इ) 'सहयुक्तेऽप्रधाने' सूत्र से
(उ) 'साधकतमं करणं' सूत्र से
(ऋ) 'कर्तृकरणयोस्तृतीया' सूत्र से

130. ''गुरुं याचते विद्यां'' यहाँ 'गुरु' की कर्मसंज्ञा विधायक सूत्र है -
(अ) अकथितं च (इ) दिवः कर्म च
(उ) तथायुक्तं चानीप्सितम् (ऋ) अभिनिविशश्च

131. ''अन्तराऽन्तरेण युक्ते'' सूत्र है - ***T.G.T.-1999***
(अ) अधिकरणकारक का (इ) कर्मकारक का
(उ) करणकारक का (ऋ) सम्प्रदानकारक का

132. 'स्पृहा' के योग में विभक्ति होती है -
(अ) द्वितीया (इ) तृतीया
(उ) चतुर्थी (ऋ) पञ्चमी

133. ''चर्मणि द्वीपिनं हन्ति'' यहाँ 'चर्मणि' पद में विभक्ति है - ***T.G.T.-2004***
(अ) सप्तमी (इ) चतुर्थी
(उ) तृतीया (ऋ) प्रथमा

134. ''यस्य च भावेन भावलक्षणम्'' यह सूत्र है - ***T.G.T-2004***
(अ) करणकारक में (इ) कर्मकारक में
(उ) अधिकरणकारक में (ऋ) अपादानकारक में

135. 'तस्मै श्रीगुरवे नमः' – इस वाक्य के 'श्रीगुरवे' पद में विभक्ति है -
(अ) द्वितीया (इ) पञ्चमी
(उ) षष्ठी (ऋ) चतुर्थी

136. ''भीत्रार्थानां भयहेतुः'' सूत्र है -
(अ) कर्मकारक का (इ) अपादानकारक का
(उ) करणकारक का (ऋ) सम्प्रदानकारक का

137. ''भीत्रार्थानां भयहेतुः'' सूत्र किस कारक का विधान करता है -
(अ) सम्प्रदान (इ) अपादान
(उ) करण (ऋ) अधिकरण

138. ''हनुमते नमः'' – यहाँ 'हनुमते' पद में किस विभक्ति का प्रयोग है -
(अ) चतुर्थी (इ) तृतीया
(उ) पञ्चमी (ऋ) सप्तमी

139. 'रामेण बाणेन हतो बाली' में 'बाली' कौन सा कारक है -
(अ) कर्त्ताकारक (इ) कर्मकारक
(उ) करणकारक (ऋ) सम्प्रदानकारक

140. चतुर्थी विभक्ति कहाँ होती है -
(अ) उभयतः योगे (इ) अङ्गविकार में
(उ) क्रुधद्रुह् आदि के योग में
(ऋ) जुगुप्सादौ

141. 'वयम् -------अधितिष्ठामः' उपयुक्त विकल्प का चयन करें -
(अ) आसने (इ) आसनात्
(उ) आसनेन (ऋ) आसनम्

142. 'पृथक्, विना, नाना' पदों के योग में विभक्ति होती है -
(अ) द्वितीया, चतुर्थी, षष्ठी
(इ) तृतीया, षष्ठी, सप्तमी
(उ) द्वितीया, तृतीया, पञ्चमी
(ऋ) पञ्चमी, षष्ठी, सप्तमी

126. (इ), 127. (इ), 128. (इ), 129. (अ), 130. (अ), 131. (इ), 132. (उ), 133. (अ), 134. (उ), 135. (ऋ), 136. (इ), 137. (इ), 138. (अ), 139. (इ), 140. (उ), 141. (ऋ), 142. (उ)

143. दानस्य कर्मणः यम् अभिप्रैति सः किं स्यात्-

(अ) अपादानसंज्ञः (इ) सम्प्रदानसंज्ञः
(उ) करणसंज्ञः (ऋ) कर्मसंज्ञः

144. 'कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्, किन्तु क्रियया यम् अभिप्रैति सः किं भवति -

(अ) सम्प्रदानम् (इ) अपादानम्
(उ) करणम् (ऋ) कर्म

145. ''पत्ये शेते'' – यहाँ 'पति' की क्या संज्ञा होगी -

(अ) अपादान (इ) करण
(उ) अधिकरण (ऋ) सम्प्रदान

146. ''रुच्यर्थानां प्रीयमाणः'' सूत्र से रुच्यर्थक धातुओं के प्रयोग में 'प्रीयमाण' की क्या संज्ञा होगी -

(अ) अपादान (इ) करण
(उ) सम्प्रदान (ऋ) अधिकरण

147. श्लाघ्, ह्नुङ्, स्था, और शप् – इन चार धातुओं के प्रयोग में ज्ञीप्स्यमान की क्या संज्ञा होगी -

(अ) कर्म (इ) करण
(उ) सम्प्रदान (ऋ) अपादान

148. ''धारेरुत्तमर्णः'' सूत्र द्वारा 'धृ' धातु के प्रयोग में उत्तमर्ण (ऋणदाता) की क्या संज्ञा होगी -

(अ) सम्प्रदान (इ) करण
(उ) अपादान (ऋ) कर्म

149. ''क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः'' यहाँ सूत्रस्थ 'असूया' पद का क्या अर्थ है -

(अ) गुणेषु दोषाविष्करणम्
(इ) दोषे अपि गुणान्वेषणम्
(उ) अपकारः
(ऋ) अमर्षः

150. ''क्रुध्, द्रुह्, ईर्ष्य, असूय'' इन धातुओं के प्रयोग में जिसके प्रति कोप प्रदर्शित हो, उसकी क्या संज्ञा होगी-

(अ) करण (इ) सम्प्रदान
(उ) अधिकरण (ऋ) कर्त्ता

151. उपसर्गसहित 'क्रुध्, द्रुह्' इन धातुओं के प्रयोग में जिसके प्रति कोप किया जाय उसकी क्या संज्ञा होगी -

(अ) कर्मसंज्ञा (इ) करणसंज्ञा
(उ) सम्प्रदानसंज्ञा (ऋ) अधिकरणसंज्ञा

152. 'अनु' और 'प्रति' उपसर्गपूर्वक 'गृ' धातु के कारण जो पूर्वव्यापार प्रेरणा का कर्त्ता हो, उसकी ''अनुप्रतिगृणश्च'' सूत्र द्वारा क्या संज्ञा होगी -

(अ) करण (इ) कर्म
(उ) अधिकरण (ऋ) सम्प्रदान

153. 'मुक्तये हरिं भजति' यहाँ चतुर्थी का विधान किस वार्तिक से हुआ है -

(अ) तादर्थ्ये चतुर्थी वाच्या
(इ) क्लृपि सम्पद्यमाने च
(उ) हितयोगे च
(ऋ) उत्पातेन ज्ञापिते च

154. ''उपपदविभक्तेः कारकविभक्तिर्बलीयसी'' इस नियम का उदाहरण है -

(अ) नमस्करोति देवान् (इ) प्रजाभ्यः स्वस्ति
(उ) हरये नमः (ऋ) अग्नये स्वाहा

155. ''दानीयः विप्रः'' – यहाँ 'विप्र' पद में सम्प्रदान होने पर भी चतुर्थी क्यों नहीं हुई -

(अ) क्योंकि सम्प्रदान अनीयर् प्रत्यय से उक्त है ।
(इ) क्योंकि 'विप्र' पद में चतुर्थी होती ही नहीं ।
(उ) क्योंकि 'विप्र' पद में प्रातिपदिकार्थमात्र में प्रथमा हुई है ।
(ऋ) क्योंकि 'विप्र' दान लेता ही नहीं ।

156. 'पृथक्, विना, नाना' – इन पदों के योग में किस विभक्ति का प्रयोग नहीं होता है -

(अ) द्वितीया (इ) तृतीया
(उ) चतुर्थी (ऋ) पञ्चमी

157. 'दूर' एवं 'अन्तिक' (समीप) अर्थवाले शब्दों से कौन सी विभक्ति नहीं होगी-

(अ) द्वितीया (इ) तृतीया
(उ) चतुर्थी (ऋ) पञ्चमी

143. (इ), 144. (अ), 145. (ऋ), 146. (उ)147. (उ), 148. (अ), 149. (अ), 150. (इ) 151. (अ), 152. (ऋ), 153. (अ), 154. (अ), 155. (अ), 156. (उ), 157. (उ),

158. 'नटस्य गाथां शृणोति' यहाँ 'नट' पद में पञ्चमी विभक्ति का प्रयोग क्यों नहीं हुआ -
(अ) क्योंकि यहाँ नियमपूर्वक शिक्षाप्राप्ति नहीं है ।
(इ) क्योंकि 'नट' गुरु नहीं है ।
(उ) क्योंकि 'नट' में षष्ठीविभक्ति है ।
(ऋ) क्योंकि 'नट' नाटक करता है ।

159. 'वृक्षस्य पर्णं पतति' – यहाँ 'वृक्ष' शब्द से पञ्चमी विभक्ति क्यों नहीं हुई-
(अ) क्योंकि 'वृक्ष' का पतनक्रिया के साथ सम्बन्ध नहीं, अपितु 'पर्ण' के साथ है ।
(इ) क्योंकि 'वृक्ष' अपादानसंज्ञक नहीं है ।
(उ) क्योंकि 'अपादान' के अभाव में पञ्चमी नहीं होती है ।
(ऋ) उपर्युक्त सभी सही हैं ।

160. गति और उपसर्ग संज्ञा का अपवाद (बाधक) सूत्र है -
(अ) अनुर्लक्षणे (इ) अन्तराऽन्तरेण युक्ते
(उ) कर्मप्रवचनीयाः (ऋ) आधारोऽधिकरणम्

161. किसकी कर्मप्रवचनीयसंज्ञा होती है -
(अ) अनु, उप, प्रति, परि
(इ) अभि, अधि, सु, अति
(उ) अपि, अप, आङ्
(ऋ) उपर्युक्त सभी की

162. ''सप्तम्यधिकरणे च'' – यहाँ सूत्रस्थ 'च' पद से गृहीत है -
(अ) सप्तमी (इ) दूर और अन्तिक अर्थ
(उ) अधिकरण (ऋ) इनमें से कोई नहीं

163. दूर और अन्तिक शब्दों से किस विभक्ति का विधान होता है -
(अ) द्वितीया, तृतीया (इ) पञ्चमी
(उ) सप्तमी (ऋ) उपर्युक्त सभी

164. ''नक्षत्रे च लुपि'' सूत्र से किस विभक्ति का विधान होता है -
(अ) तृतीया (इ) सप्तमी
(उ) दोनों (ऋ) इनमें से कोई नहीं

165. कृत् प्रत्यय के योग में कर्त्ता और कर्म दोनों में यदि षष्ठी विभक्ति प्राप्त हो तो ''उभयप्राप्तौ कर्मणि'' इस सूत्र से किसमें षष्ठी का विधान होगा -
(अ) कर्त्ता में (इ) कर्म में
(उ) दोनों में (ऋ) किसी में नहीं

166. किस सूत्र द्वारा षष्ठी और सप्तमी दोनों विभक्तियों का प्रयोग होता है -
(अ) यस्य च भावेन भावलक्षणम्
(इ) यतश्च निर्धारणम्
(उ) आधारोऽधिकरणम्
(ऋ) उभयप्राप्तौ कर्मणि

167. सिद्धान्तकौमुदी कारक प्रकरण का प्रथम सूत्र है -
(अ) कर्तुरीप्सिततमं कर्म
(इ) सम्बोधने च
(उ) प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा
(ऋ) विभाषा कृञि

168. सिद्धान्तकौमुदी कारकप्रकरण का अन्तिम सूत्र है -
(अ) सप्तम्यधिकरणे च
(इ) आधारोऽधिकरणम्
(उ) यस्य च भावेन भावलक्षणम्
(ऋ) विभाषा कृञि

169. पञ्चमी विभक्ति विधायक सूत्र है -
(अ) पञ्चम्यास्तसिल्
(इ) अपादाने पञ्चमी
(उ) पञ्चमी भयेन
(ऋ) पञ्चम्याः स्तोकादिभ्यः

170. ''राध्'' और 'ईक्ष्' धातु के योग में जिसके विषय में शुभाशुभविषयक प्रश्न पूछा जाय, उसकी ''राधीक्ष्योर्यस्य विप्रश्नः'' इस सूत्र से क्या संज्ञा होती है -
(अ) करण (इ) सम्प्रदान
(उ) कर्म (ऋ) अधिकरण

158. (अ), 159. (ऋ), 160. (अ), 161. (ऋ), 162. (इ), 163. (ऋ), 164. (उ), 165. (इ) 166. (इ), 167. (उ), 168. (ऋ), 169. (इ), 170. (इ)।

5. प्रत्ययगङ्गा (भाग-1)

1. **'गच्छन्' इस पद में प्रत्यय है–**
(अ) तुमुन् (इ) शतृ
(उ) शानच् (ऋ) क्त

2. **'निक्षिप्य' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) नि+ क्षिप् + ल्यप्
(इ) नि + क्षिपु + ल्यप्
(उ) निक्षिप + ल्यप्
(ऋ) क्षिप् + ल्यप्

3. **'तापः' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) तप् + घञ् (इ) ताप् + यञ्
(उ) तप् + ष्यञ् (ऋ) तप् + ण्यत्

4. **'एधनीयम्' में कौन सा प्रत्यय है ?**
(अ) तव्यत् (इ) यत्
(उ) अनीयर् (ऋ) ण्यत्

5. **'आदिष्टः' में प्रत्यय है–**
(अ) तुमुन् (इ) क्त्वा
(उ) ल्यप् (ऋ) क्त

6. **'पठनीयः में कौन सा प्रत्यय है ?**
(अ) क्त्वा (इ) क्त
(उ) शतृ (ऋ) अनीयर्

7. **'चेयम्' में प्रत्यय जुड़ा है–**
(अ) छ (इ) यत्
(उ) ण्यत् (ऋ) टाप्

8. **'हस्तयितुम्' में प्रत्यय है–**
(अ) तुमुन् (इ) क्त्वा
(उ) क्त (ऋ) ल्यप्

9. **नाम के बाद जो प्रत्यय आते हैं, उन्हें क्या कहते हैं ?**
(अ) णिजन्त (इ) तद्धित
(उ) तिङ् (ऋ) कृदन्त

10. **'भू' धातु में 'क्त' प्रत्यय का योग करने पर बनेगा–**
(अ) भूत्वा (इ) भूतः
(उ) भूयः (ऋ) भूतिः

11. **'कृ' धातु में 'तव्यत्' प्रत्यय का योग करने पर रूप बनेगा–**
(अ) कर्त्तव्यम् (इ) कृतव्यम्
(उ) कृर्तव्यम् (ऋ) करणीयम्

12. **'पठित्वा' में प्रकृति एवं प्रत्यय है–**
(अ) पठ् + क्त (इ) पठ् + अनीयर्
(उ) पठ् + क्त्वा (ऋ) पठ् + शतृ

13. **'नयमानः' में प्रकृति एवं प्रत्यय है–**
(अ) नी + क्तिन् (इ) नी + शानच्
(उ) नी + शतृ (ऋ) नय + मानः

14. **'लभ्यः' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) लभ् + यत् (इ) लभ् + शानच्
(उ) लाभ् + ल्यप् (ऋ) लभ + क्त्वा

15. **'करणीयम्' में प्रकृति प्रत्यय है–**
(अ) कृ + अनीयर् (इ) कृ + शानच्
(उ) कृ + शतृ (ऋ) कृ + कत्वा

16. **'ज्ञातुम्' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) ज्ञा + तुमुन् (इ) ज्ञान + तुमुन्
(उ) ज्ञा + ल्यप् (ऋ) ज्ञा + अनीयर्

17. **'ढक्' प्रत्यय का सूत्र है–**
(अ) स्त्रीभ्यो ढक् (इ) रसादिभ्यः च
(उ) शिवादिभ्योऽण् (ऋ) इनमें से कोई नहीं

1. (इ), 2. (अ), 3. (अ), 4. (उ), 5. (ऋ), 6. (ऋ), 7. (इ) 8. (अ), 9. (इ) 10. (इ),
11. (अ), 12. (उ), 13. (इ), 14. (अ),15.(अ) 16. (अ), 17. (अ),

18. **निम्नलिखित तालिका–1 में उदाहरण तथा तालिका–2 में प्रत्ययों के नाम दिए गए हैं– सुमेलित कीजिए–**

तालिका–1	**तालिका–2**
a. भवनीयः	I. शतृ
b. चेयम्	II. क्तवतु
c. पठितवान्	III. अनीयर्
d. पठन्ती	IV. यत्

	(a)	**(b)**	**(c)**	**(d)**
(अ)	III	IV	II	I
(इ)	IV	II	III	I
(उ)	III	I	IV	II
(ऋ)	II	III	IV	I

19. **'गत्वा' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) गम् +क्त (इ) गम् + क्त्वा
(उ) गम् + अनीयर् (ऋ) गम् + क्तिन्

20. **'कुर्वाणः' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) कृ + शतृ (इ) कृ + ल्यप्
(उ) कृ + क्त्वा (ऋ) कृ + शानच्

21. **'नेयः' में प्रकृति प्रत्यय है–**
(अ) नी + ल्यप् (इ) नी + शानच्
(उ) नी + यत् (ऋ) नी + अनीयर्

22. **'अजा' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) अजा + ल्युट् (इ) अजा + टाप्
(उ) अज + अ (ऋ) अज + टाप्

23. **'ग्रहणम्' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) ग्रह + ल्यप् (इ) ग्रह + ल्युट्
(उ) ग्रह् + क्तिन् (ऋ) ग्रह + तुमुन्

24. **'लिख्' धातु में 'शतृ' प्रत्यय के प्रयोग से स्त्रीलिङ्ग शब्द बनता है–**
(अ) लिखत् (इ) लेखनम्
(उ) लिखन् (ऋ) लिखन्ती

25. **निम्नलिखित तालिका–1 में उदाहरण तथा तालिका–2 में प्रत्ययों के नाम दिए गए हैं– सुमेलित कीजिए–**

तालिका-1	**तालिका-2**
A. **आश्वः**	I. **अण्**
B. **विद्यावान्**	II. **ढक्**
C. **भागिनेयः**	III. **वतुप्**
D. **गार्ग्यायणः**	IV. **फक्**

	A	**B**	**C**	**D**
(अ)	I	II	III	IV
(इ)	I	III	II	IV
(उ)	III	II	I	IV
(ऋ)	IV	III	II	I

26. **'विहाय' में उपसर्ग प्रकृति एवं प्रत्यय है–**
(अ) वि + हा + क्तिन्
(इ) वि + हा + क्त
(उ) वि + हा + ल्यप्
(ऋ) वि + हा + शतृ

27. **'पा' धातु में 'क्त्वा' प्रत्यय के योग से रूप बनता है–**
(अ) पीत्वा (इ) पायित्वा
(उ) पिबित्वा (ऋ) पात्वा

28. **'दानम्' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) दा + ल्युट् (इ) दा + ल्यप्
(उ) दा + शानच् (ऋ) दा + शतृ

29. **'पठितः' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) पठ् + क्तवतु (इ) पठ् + ल्यप्
(उ) पठ् + क्त (ऋ) पठ् + क्त्वा

30. **'शयितुम्' शब्द में प्रकृति प्रत्यय है–**
(अ) शि + तुमुन् (इ) शे + तुमुन्
(उ) शा + तुमुन् (ऋ) शी + तुमुन्

31. **'लब्धवान्' रूप किस प्रत्यय से बना है ?**
(अ) क्त्वा से (इ) शतृ से
(उ) क्त से (ऋ) क्तवतु से

18. (अ), 19. (इ), 20. (ऋ) 21. (उ), 22. (ऋ), 23. (इ), 24. (ऋ), 25. (इ) 26. (उ), 27. (अ), 28. (अ), 29. (उ), 30. (ऋ), 31. (ऋ),

32. निम्नलिखित तालिका–1 में उदाहरण तथा तालिका–2 में प्रत्यय के नाम दिए गए हैं, सुमेलित कीजिए–

तालिका–1	तालिका–2
A. आसीनः	I. यत्
B. हसितुम्	II. तृच्
C. हर्तृ	III. तुमुन्
D. शक्यः	IV. शानच्

	A	B	C	D
(अ)	IV	II	III	I
(इ)	I	II	III	IV
(उ)	IV	III	II	I
(ऋ)	I	IV	III	II

33. 'प्राप्य' में उपसर्ग प्रकृति एवं प्रत्यय है–
(अ) प्र + आप् + क्त्वा
(इ) प्र + आप् + क्तिन्
(उ) प्र + आप् + ल्युट्
(ऋ) प्र + आप् + ल्यप्

34. 'नेतुम्' में प्रकृति-प्रत्यय है–
(अ) नी + अनीयर् (इ) नी + शतृ
(उ) नी+ तुमुन् (ऋ) नी + क्त्वा

35. 'दर्शनीयः' में प्रकृति-प्रत्यय है–
(अ) दृश + ल्युट् (इ) दृश + तुमुन्
(उ) दृश + अनीयर् (ऋ) दृश + ल्यप्

36. 'पतितम्' में प्रकृति-प्रत्यय है–
(अ) पा + क्तवतु (इ) पा + ल्युट्
(उ) पत् + क्त (ऋ) पा + क्त्वा

37. 'प्रच्छ्' धातु में 'क्त्वा' प्रत्यय से बनता है–
(अ) प्रछ्वा (इ) प्रष्ट्वा
(उ) प्रिछ्वा (ऋ) पृष्ट्वा

38. 'भवन्' में प्रकृति-प्रत्यय है–
(अ) भू + क्त (इ) भू + ल्यप्
(उ) भू + शानच् (ऋ) भू + शतृ

39. 'भवितुम्' में प्रत्यय है–
(अ) शानच् (इ) तुमुन्
(उ) शतृ (ऋ) क्त्वा

40. पानीयम्' में प्रकृति-प्रत्यय है–
(अ) पा + ल्यप् (इ) पा + अनीयर्
(उ) पा + शानच् (ऋ) पा + क्त्वा

41. 'ज्ञा' धातु में 'ल्युट्' प्रत्यय लगने से बनता है–
(अ) ज्ञातम् (इ) ज्ञानः
(उ) ज्ञानम् (ऋ) ज्ञातुम्

42. 'भोक्तुम्' में प्रकृति-प्रत्यय है–
(अ) भुज् + तुमुन् (इ) भृज् + तुमुन्
(उ) भोग + तुमुन् (ऋ) भोज + तुमुन्

43. 'ग्रह' धातु में 'क्त्वा' प्रत्यय से बनता है–
(अ) गहीत्वा (इ) ग्राहीत्वा
(उ) ग्रहीत्वा (ऋ) गृहीत्वा

44. 'धनवान्' में कौन सा प्रत्यय है–
(अ) क्तवतु (इ) अण्
(उ) मतुप् (ऋ) क्त

45. 'दृश' धातु में 'तुमुन्' के योग से बनता है–
(अ) दृष्ट्वा (इ) द्रष्टुम्
(उ) द्रष्टुतुम् (ऋ) पश्यितुम्

46. 'स्थातुम्' में प्रकृति-प्रत्यय है–
(अ) स्था + शानच् (इ) स्था + तुमुन्
(उ) स्था + क्त्वा (ऋ) स्था + शतृ

47. 'नयनम्' में प्रकृति-प्रत्यय है–
(अ) ने + ल्युट् (इ) नयन + ल्युट्
(उ) नी + ल्युट् (ऋ) नय + ल्युट्

48. 'गुप् + ण्यत्' मिलकर कौन सा रूप बनता है ?
(अ) गौप्यम् (इ) गोप्यम्
(उ) गोपनीयम् (ऋ) गोपनम्

49. 'सेव्' में शानच् प्रत्यय के योग से बनता है–
(अ) सेवा (इ) सेवायमान
(उ) सेवमानः (ऋ) सेवकः

32. (उ), 33. (ऋ), 34. (उ), 35. (उ), 36. (उ), 37. (ऋ), 38. (ऋ), 39. (इ), 40. (इ), 41. (उ), 42. (अ) 43. (ऋ), 44. (उ), 45. (इ), 46. (इ), 47. (उ) 48. (इ), 49. (उ)

50. **'पातुम्' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) पा + शानच् (इ) पा + शतृ
(उ) पा + क्त्वा (ऋ) पा + तुमुन्

51. **'यजमानाः' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) यज् + शानच् (इ) यज् + क्तिन्
(उ) यज + मानः (ऋ) यजम् + आनः

52. **वे शब्दांश जो किसी शब्द या धातु के पीछे लगकर उसके अर्थ को बदल देते हैं, क्या कहलाते हैं–**
(अ) उपसर्ग (इ) प्रत्यय
(उ) वाच्य (ऋ) अव्यय

53. **'हन्' धातु से 'क्त' प्रत्यय लगाने पर क्या रूप बनता है ?**
(अ) हन्तः (इ) हतः
(उ) हम्तः (ऋ) हंतः

54. **'रक्षणीयः' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) रक्ष + णीयः (इ) रक्ष् + अनीयः
(उ) रक्ष् + अनीयर् (ऋ) रक्ष + अणीयरी

55. **'प्र + विश् + ल्यप्' जोड़ने पर बनता है–**
(अ) पृविश्य (इ) प्रविशय
(उ) प्रविश्य (ऋ) प्राविश्य

56. **'हसित्वा' पद में कौन सा प्रत्यय है ?**
(अ) हस् + क्त्वा (इ) हसि + क्त्वा
(उ) हस + क्त्वा (ऋ) हसित् + क्त्वा

57. **'भक्ष् + तुमुन्' जोड़ने पर रूप बनेगा–**
(अ) भक्षयितुम् (इ) भक्षितुम्
(उ) भक्षयतुम् (ऋ) भक्षतुम्

58. **'ज्ञातुम्' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) ज्ञा + तुमुन् (इ) ज्ञा + तुम्
(उ) ज्ञात् + तुम् (ऋ) ज्ञान + तुमुन्

59. **'उत्थाय' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) उत् + थाय
(इ) उत् + स्थाय्
(उ) उत् + था + ल्यप्
(ऋ) उत् + स्था + ल्यप्

60. **'विलोक्य' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) वि + लोक् + ल्यप् (इ) वि + लोक्य
(उ) वी + लोक् + ल्यप् (ऋ) विलोक् + ल्यप्

61. **'प्र + नम् + ल्यप्' जोड़ने पर क्या रूप बनता है–**
(अ) प्रणम्य (इ) प्रणित्वा
(उ) प्रणत्वा (ऋ) प्रनत्वा

62. **'इह्' तद्धितान्त में मूल शब्द क्या है ?**
(अ) इदम् (इ) एतत्
(उ) अदस् (ऋ) तत्

63. **'विप्रयुक्तः' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) वि + युक् +त
(इ) वि + युन् + क्त
(उ) वि + प्र + युज् + क्तिम्
(ऋ) वि + प्र + युज् + क्त

64. **'नी + शानच्' के योग से यह रूप बनेगा–**
(अ) नयानः (इ) नयमानः
(उ) नीयमानः (ऋ) नीयानः

65. **'ब्रूञ् + णिच्' के योग से यह रूप बनता है–**
(अ) वाचयति (इ) वक्तुम्
(उ) विवक्षति (ऋ) वचनम्

66. **प्रत्ययान्त पद को प्रत्यय से मिलान कीजिए–**

1. जग्ध्वा A. सन्नतम्
2. प्रक्षाल्य B. क्त्वान्तम्
3. दिदृक्षते C. णिजन्तम्
4. ज्ञापयति D. ल्यबन्तम्

	1	2	3	4
(अ)	B	D	A	C
(इ)	D	C	A	B
(उ)	C	A	B	D
(ऋ)	A	B	C	D

67. **प्रातिपदिक से किसका विधान होता है ?**
(अ) तिङ् (इ) कृत्
(उ) तद्धित (ऋ) णिच्

50. (ऋ), 51. (अ), 52. (इ) 53. (इ), 54. (उ), 55. (उ), 56. (अ), 57. (अ) 58. (अ), 59. (ऋ), 60. (अ), 61. (अ), 62. (अ), 63. (ऋ), 64. (इ), 65. (अ), 66. (अ), 67.(उ),

68. 'वद् + घञ्= वादः' में धातु के अकार की 'वृद्धि' किस सूत्र से होती है ?
(अ) अत उपधायाः (इ) तद्धितेष्वचामादेः
(उ) अचोञ्णिति (ऋ) किति च

69. 'नमयति-नाशयति-पाठयति' इनमें प्रत्यय है–
(अ) सन् प्रत्ययः (इ) तृच् प्रत्ययः
(उ) ल्युट् प्रत्ययः (ऋ) णिच् प्रत्ययः

70. 'रक्ष् + णिच्' के योग से यह रूप बनता है–
(अ) रिरक्षिषति (इ) रक्षयति
(उ) रक्ष्ययते (ऋ) रक्षिता

71. 'हस्' धातु में 'तुमुन्' प्रत्यय जोड़ने पर रूप बनता है–
(अ) हस्तुमु (इ) हस्तुम्
(उ) हसितुम् (ऋ) हसतुम्

72. 'क्री + तुमुन्' जोड़ने पर क्या बनता है–
(अ) क्रतुम् (इ) कर्तुम्
(उ) क्रीतुम् (ऋ) क्रेतुम्

73. 'वि + भज् + ल्यप्' से क्या रूप बनता है ?
(अ) विभज्य (इ) विभाज्या
(उ) विभाज्य (ऋ) विभज्या

74. 'विलिख्य' में प्रकृति-प्रत्यय है–
(अ) वि + लिख् + यत्
(इ) वि + लेख् + ल्यप्
(उ) वि + लिख + ल्यु
(ऋ) वि + लिख् + ल्यप्

75. 'घ्राणीयः' में प्रकृति-प्रत्यय है–
(अ) घ्रा + अनीयर् (इ) घ्रा + अवीयर्
(उ) घ्रा + अनीयः (ऋ) घ्रा + णीयः

76. 'पा + अनीयर्' से क्या रूप बनता है ?
(अ) पानीयः (इ) पानीयुः
(उ) पाणीयः (ऋ) पानीयर्

77. 'गम् + तव्यत्' से क्या रूप बनता है ?
(अ) गणयितव्यः (इ) गन्तव्यः
(उ) गणतव्यः (ऋ) गणितव्यः

78. 'गम्' धातु से 'तुमुन्' प्रत्यय लगने पर क्या रूप बनता है ?
(अ) गंनुम् (इ) गम्तुम्
(उ) गन्तुम् (ऋ) इनमें से कोई नहीं

79. 'श्रोतुम्' में प्रकृति-प्रत्यय है–
(अ) श्रो + तुमुन् (इ) श्रो + तुम्
(उ) श्रु + तुम् (ऋ) श्रु + तुमुन्

80. 'आ + दा + ल्यप्' से क्या रूप बनता है ?
(अ) अदाप्य (इ) आदाल्य
(उ) अदाय (ऋ) आदाय

81. 'नृत् + अनीयर्' से क्या रूप बनता है–
(अ) नृनीयः (इ) नृतनीयः
(उ) नृर्तअनीयः (ऋ) नर्तनीयः

82. 'कृ + अनीयर्' से क्या रूप बनता है ?
(अ) कृनीयः (इ) करणीयः
(उ) करनीयः (ऋ) कृणीयः

83. 'वि + कृ + ल्यप्' से क्या रूप बनता है ?
(अ) विक्रीय (इ) विकीर्य
(उ) विकृय (ऋ) विकार्य

84. 'नी + क्त' जोड़ने पर क्या रूप बनता है ?
(अ) नतः (इ) नितः
(उ) नीतः (ऋ) नेतः

85. 'नम् + क्त्वा' से रूप बनता है–
(अ) नेत्वा (इ) नत्वा
(उ) नमत्वा (ऋ) नीत्वा

86. 'आप्तः' में प्रकृति-प्रत्यय है–
(अ) आप् + क्त (इ) आप + क्त
(उ) आप + ल्यप् (ऋ) आप् + यत्

87. 'हस्' धातु में 'क्त' प्रत्यय से कौन सा रूप बनता है ?
(अ) हस्तः (इ) हसतः
(उ) हसितः (ऋ) हसति

88. 'रक्ष् + क्त' से बनता है–
(अ) रक्षिक्तः (इ) रक्षितिः
(उ) रक्षतः (ऋ) रक्षितः

68. (अ), 69. (ऋ), 70. (इ), 71. (उ), 72. (ऋ), 73. (अ), 74. (ऋ), 75. (अ), 76. (अ), 77. (इ), 78. (उ), 79. (ऋ), 80. (ऋ), 81. (ऋ), 82.(इ), 83. (इ), 84. (उ), 85. (इ), 86. (अ), 87. (उ), 88. (ऋ),

89. **'नि + वस् + तिप्' जोड़ने पर क्या रूप बनता है ?**
(अ) निवसित (इ) निवसिति
(उ) निवसति (ऋ) निवास

90. **'श्रु + क्त' के योग से कौन सा रूप बनता है ?**
(अ) श्रूतः (इ) श्रुतः
(उ) श्रुतिः (ऋ) श्रुक्तः

91. **'प्रच्छ् + अनीयर्' के योग से कौन सा रूप बनता है ?**
(अ) पृश्नीयः (इ) प्रश्नीयः
(उ) पृच्छनीयः (ऋ) प्रच्छनीयः

92. **'जि + क्तवतु' के योग से कौन सा रूप बनता है ?**
(अ) जितवतु (इ) जतवान्
(उ) जितवान् (ऋ) जीतवान्

93. **'मृ + क्त' के योग से कौन सा रूप बनता है ?**
(अ) मृक्तः (इ) मृतः
(उ) मर्त (ऋ) म्रतः

94. **'दातुम्' में कौन सा प्रत्यय है ?**
(अ) दा + तुम् (इ) दा +तुमुन्
(उ) दा +अतुम् (ऋ) दा + तुम

95. **'गै + क्तवतु' के योग से कौन सा रूप बनता है ?**
(अ) गैतवान् (इ) गतवान्
(उ) गैतवतु (ऋ) गीतवान्

96. **'लब्धव्यः' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) लब् + तव्यत् (इ) लभु + तव्यत्
(उ) लभ् + तव्यत् (ऋ) लब्ध + तव्यत्

97. **'अनुभूय' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) अनु + भू + ल्यप्
(इ) अनु + भूय
(उ) अनु + भु + ल्यप्
(ऋ) अनु + भूय + ल्यप्

98. **'हस् + क्तवतु' के योग से कौन सा रूप बनता है ?**
(अ) हसितवान् (इ) हस्वान्
(उ) हस्तवान् (ऋ) हस्तवतु

99. **'वस् + तिप्' के योग से कौन सा रूप बनता है ?**
(अ) वशति (इ) वसोति
(उ) वस्ति (ऋ) वसति

100. **'मोदितव्यः' में प्रकृति-प्रत्यय है ?**
(अ) मोद् + तव्यत् (इ) मोदी + तव्यत्
(उ) मुद् + तव्यत् (ऋ) मोदि + तव्यः

101. **'आग्रहीतुम्' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) आग्रही + तुमुन्
(इ) आ + ग्रह् + तुमुन्
(उ) आ + गृह् + तुमुन्
(ऋ) आ + ग्रही + तुमुन्

102. **'प्रच्छ् + क्तवतु' के योग से कौन सा रूप बनता है–**
(अ) पृच्छ्वान् (इ) प्रच्छवान्
(उ) पृष्टवान् (ऋ) प्रष्टवान्

103. **जो प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण तथा संख्यावाचक शब्दों के साथ जुड़कर उनके अर्थ को बदल देते हैं, वे क्या कहलाते हैं ?**
(अ) कृत् (इ) तद्धित
(उ) कृदन्त (ऋ) तद्धितान्त

104. **'अग्निमत्' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) अग्नि + मत् (इ) अग्नि + मतुप्
(उ) अग्नि + शानच् (ऋ) अग्नि + वतुप्

105. **'मधुर + त्व' के योग से क्या रूप बनता है ?**
(अ) मधुरता (इ) मधुरत्व
(उ) मधुरम् (ऋ) मधुरत्वम्

106. **'मासिक' पद में कौन सा प्रत्यय है ?**
(अ) मास + इक् (इ) मास + त्व
(उ) मास + ठक् (ऋ) मास + ईक्

107. **'पण्डित + त्व' के योग से कौन सा रूप बनता है ?**
(अ) पण्डित्व (इ) पण्डितम्
(उ) पाण्डित्त्वम् (ऋ) पण्डितत्वम्

108. **सज्जन + तल्' के योग से कौन सा रूप बनता है ?**
(अ) सज्जनता (इ) सज्जनतल्
(उ) सजनता (ऋ) सजन्ता

109. **'पौराणिक' में प्रकृति प्रत्यय है–**
(अ) पौराण + इक् (इ) पौरा + णिक्
(उ) पौरान् + णिक् (ऋ) पुराण + ठक्

89. (उ), 90. (इ), 91. (ऋ), 92. (उ), 93. (इ) 94. (इ), 95. (ऋ), 96. (उ), 97. (अ), 98. (अ), 99. (ऋ), 100. (उ), 101. (इ), 102. (उ), 103. (इ), 104. (इ), 105. (ऋ), 106. (उ), 107. (उ), 108. (अ), 109. (ऋ)

110. **'दुष्ट + तल्' के योग से कौन सा रूप बनता है ?**
(अ) दुष्टता (इ) दुष्टम्
(उ) दुष्टतल् (ऋ) दुश्टता

111. **'नागरिक' में प्रकृति–प्रत्यय क्या है ?**
(अ) नगर + इक् (इ) नागर + इक्
(उ) नगरि + ठक् (ऋ) नगर + ठक्

112. **'धीमत्' में प्रकृति-प्रत्यय है ?**
(अ) धी + मतुप् (इ) धी + मत्
(उ) धी + वतुप् (ऋ) धी + शानच्

113. **'हीनता' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) हीन + ता (इ) हीन + ठक्
(उ) हीन + त्व (ऋ) हीन + तल्

114. **'मूर्खता' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) मूर्ख + तल् (इ) मूर्ख + त्व
(उ) मूर्ख + ता (ऋ) मूर्ख + टाप्

115. **'श्री + मतुप्' में कौन सा रूप बनता है ?**
(अ) श्रीमान् (इ) श्रीमत्
(उ) श्रीवत् (ऋ) श्रीमतुप्

116. **'भानुमत्' में प्रकृति प्रत्यय है–**
(अ) भानुः + मत् (इ) भानु + मतुप्
(उ) भानु + मत् (ऋ) भानू + मतुप्

117. **'वीरता' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) वीर + त्व (इ) वीर + टाप्
(उ) वीर + तल् (ऋ) वीर + ता

118. **'वर्ष + ठक्' के योग से कौन सा रूप बनता है ?**
(अ) वर्षठक् (इ) वर्षिक
(उ) वार्षिक (ऋ) इनमें से कोई नहीं

119. **'शब्द + ठक्' के योग से कौन सा रूप बनता है ?**
(अ) शाब्दकी (इ) शब्दकम्
(उ) शाब्दिकः (ऋ) शाब्दक

120. **'गो + मतुप्' के योग से कौन सा रूप बनता है ?**
(अ) गोवान् (इ) गोम्त
(उ) गोमत (ऋ) गोमत्

121. **'वार्षिकः' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) वार्ष + इक् (इ) वर्ष + शक
(उ) वर्ष + ठक् (ऋ) वर्षि + ठक्

122. **'दुर्जनता' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) दुर्जन + तल् (इ) दूर्जन + त्व
(उ) द्रुजन + ता (ऋ) दुर्जन + त्व

123. **'वैदिकः' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) वेद + इक् (इ) वैद + इक्
(उ) वेद + ठक् (ऋ) वेद + इक

124. **'कठोरता' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) कठोर + त्व (इ) कठोर + ता
(उ) कठोर + तल् (ऋ) कठोर + ठक्

125. **'प्रियता' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) प्रिय + त्व (इ) प्रिय + ता
(उ) प्रिय + तल् (ऋ) इनमें से कोई नहीं

126. **'मात्रिकः' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) मात्रा + ठक् (इ) मात्री + इक्
(उ) मात्रा + इक् (ऋ) मात्रु + ठक्

127. **'स्थूल + त्व' के योग से कौन सा रूप बनता है–**
(अ) स्थूलता (इ) स्थूलतव
(उ) स्थूल्तम् (ऋ) स्थूलत्वम्

128. **'ऐतिहासिकः' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) ऐतिहास + ठक् (इ) ऐतिहास + इक्
(उ) इतिहास + ठक् (ऋ) इति + हासिक

129. **'साप्ताहिकः' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) सप्ता + हिक (इ) सप्ताह + ठक्
(उ) सप्ताह + इक् (ऋ) उपर्युक्त सभी

130. **'देव + त्व' के योग से कौन सा रूप बनता है ?**
(अ) देवत्वम् (इ) देवता
(उ) देवीत्वम् (ऋ) उपर्युक्त सभी

131. **'शूद्र + त्व' के योग से कौन सा रूप बनता है ?**
(अ) शूद्रत्वम् (इ) शूद्रता
(उ) शूद्रत्व (ऋ) शूद्रतम्

110. (अ), 111. (ऋ) 112. (अ), 113. (ऋ), 114. (अ), 115. (इ), 116. (इ), 117. (उ), 118. (उ), 119. (उ), 120. (ऋ), 121. (उ), 122. (अ), 123. (उ) 124. (उ), 125. (उ), 126. (अ), 127. (ऋ), 128. (उ), 129. (इ), 130. (अ), 131. (अ),

132. **'नाविकः' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) नो + इक् (इ) ना + वक्
(उ) नौ + ठक् (ऋ) नाव् + उक्

133. **'लिख् + तृच्' के योग से यह रूप बनता है–**
(अ) लेखिता (इ) लेखितव्यः
(उ) लेखितुम् (ऋ) लेखः

134. **'वैतनिक' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) वैतन + इक् (इ) वैतन + ठक्
(उ) वेतन + ठक् (ऋ) वेतन + ईक्

135. **'गुरुता' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) गुरु + त्व (इ) गुरुता + ता
(उ) गुरु + तल् (ऋ) इनमें से कोई नहीं

136. **'बन्धु + त्व' के योग से कौन सा रूप बनता है ?**
(अ) बन्धुता (इ) बन्धुत्वाम्
(उ) बन्धुत्वम् (ऋ) इनमें से कोई नहीं

137. **'दृढ + तल्' के योग से कौन सा रूप बनता है ?**
(अ) दृढता (इ) दृढताम्
(उ) दृढतल् (ऋ) दृढत्व

138. **'हनुमत्' में प्रकृति-प्रत्यय है ?**
(अ) हनु + मतुप् (इ) हनु + त्व
(उ) हनु + मत् (ऋ) इनमें से कोई नहीं

139. **'वधू + मतुप्' के योग से कौन सा रूप बनता है ?**
(अ) वधूवत् (इ) वधूमान्
(उ) वधूमत् (ऋ) वधूवान्

140. **'रस + त्व' के योग से कौन सा रूप बनता है?**
(अ) रसतम् (इ) रस्त्वम्
(उ) रसत्वम् (ऋ) रसत्व

141. **'शक्ति + मतुप्' के योग से कौन रूप बनता है ?**
(अ) शक्तिवान् (इ) शक्तिमान्
(उ) शक्तिमत् (ऋ) शक्तिम्त्

142. **'पठितवत्' में प्रत्यय है–*P.G.T. –2000***
(अ) क्तवतु (इ) वतुप्
(उ) मतुप् (ऋ) क्त

143. **'कुम्भकार' में प्रत्यय है–*P.G.T. –2002***
(अ) ल्यप् (इ) शतृ
(उ) शानच् (ऋ) घञ्

144. **'देयः' में प्रत्यय है– *P.G.T. –2003***
(अ) शानच् (इ) तव्य
(उ) शतृ (ऋ) यत्

145. **'गणपति + अण्' का रूप होगा–**
P.G.T.–2000
(अ) गणपत्यण् (इ) गणपतिम्
(उ) गाणपत्यम् (ऋ) गाणपतम्

146. **'वैनतेयः' पद में किस प्रत्यय का विधान है ?**
(अ) मयट् (इ) वतुप्
(उ) मतुप् (ऋ) ढक्

147. **'मणिमयः' में प्रकृति-प्रत्यय है ?**
(अ) मणि + घञ् (इ) मणि + मयट्
(उ) मणि +ल्यप् (ऋ) मणि + शानच्

148. **'वर्णयन्तः' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) वर्ण + णिच् + शतृ + प्रथमा बहुवचन
(इ) वर्ण + णिच् + क्त + प्रथमा बहुवचन
(उ) वर्ण + णिच् + शतृ + प्रथमा एकवचन
(ऋ) वर्ण + णिच् + शानच् + प्रथमा एकवचन

149. **'गूढः' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) गुह् + क्तिन् (इ) गुह् + क्त
(उ) गुह + यत् (ऋ) गुह् + ण्यत्

150. **'पठ् + घञ् = पाठः' में कौन सी विधि है ?**
(अ) पूर्वरूप (इ) गुण
(उ) सम्प्रसारण (ऋ) वृद्धि

151. **'शुद्धिमत्तरः' में किस प्रत्यय का प्रयोग किया गया है ?**
(अ) तरप् प्रत्यय (इ) तुमुन् प्रत्यय
(उ) ण्युल् प्रत्यय (ऋ) यत् प्रत्यय

152. **'उद्धूय' का प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) उत् + धूम् + ल्यप्
(इ) उत् + धूम् + क्त्वा
(उ) उत् + धूम् + ण्यत्
(ऋ) उत् + धूम् + घञ्

132. (उ), 133. (अ), 134. (उ), 135. (उ) 136. (उ), 137. (अ), 138. (अ), 139. (अ), 140. (उ), 141. (उ), 142. (अ), 143. (ऋ), 144. (ऋ), 145. (ऋ), 146. (ऋ), 147. (इ) 148. (अ), 149. (इ), 150. (ऋ), 151. (अ), 152. (अ),

153. **'निर्माय' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) निर् + मा + ल्यप् (इ) निर् + मा + क्त्वा
(उ) निर् + मा +ण्यत् (ऋ) नि + मा + घञ्

154. **'प्रस्तावना' की प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) प्र + स्तु + णिच् + युच् + टाप्
(इ) प्र + स्तु + शानच्
(उ) प्र + स्तु + शत्
(ऋ) प्र + स्तु + णिच् + टाप्

155. **'विद्यावान्' में प्रत्यय है–**
(अ) वतुप् (इ) तल्
(उ) टाप् (ऋ) क्त्वा

156. **प्रत्यय क्या होते हैं ?**
(अ) अन्तसर्गाः (इ) मध्यसर्गाः
(उ) पूर्वसर्गाः (ऋ) संयोगसर्गाः

157. **'स्तवनीयम्' में कौन सा प्रत्यय है ?**
(अ) केलिमर् (इ) ल्युट्
(उ) अनीयर् (ऋ) तव्यत्

158. **'ग्रह्' धातु के 'ण्यत्' प्रत्यय से कौन सा रूप बनता है–**
(अ) ग्राह्यम् (इ) ग्राह्यति
(उ) गृह्यः (ऋ) ग्रह्यम्

159. **'कृ + तृच्' के योग से कौन सा रूप बनता है–**
(अ) कर्तृ (इ) कारकः
(उ) कारिका (ऋ) कृतः

160. **'जीनः' में कौन सा प्रत्यय है ?**
(अ) क्तवतु (इ) क्त
(उ) तव्य (ऋ) क्यच्

161. **'स्तोव्य' पद में कौन सा प्रत्यय है–**
(अ) क्त (इ) वः
(उ) क्तवतु (ऋ) तव्य

162. **'गै' धातु के अनीयर् से कौन सा रूप बनता है–**
(अ) गानीयः (इ) गौनियम्
(उ) गौनीयः (ऋ) गनीयम्

163. **'दर्शकः' में प्रत्यय है–**
(अ) तव्यत् (इ) ण्वुल्
(उ) ल्युट् (ऋ) ण्यत्

164. **'शुष्' धातु में क्त प्रत्यय लगने से कौन सा रूप बनता है ?**
(अ) शुक्तः (इ) शुकः
(उ) शुष्कः (ऋ) शुस्तः

165. **'देयः- देया - देयम्' इन पदों में प्रत्यय है–**
(अ) ल्यप् (इ) यत्
(उ) क्यत् (ऋ) क्यप्

166. **'जि + अच्' के योग में पद निष्पन्न होगा–**
(अ) ज्यच् (इ) जियः
(उ) जेयः (ऋ) जयः

167. **'मृतवती' में कौन प्रत्यय है ?**
(अ) क्तवतु (इ) वतुप्
(उ) मतुप् (ऋ) क्त

168. **'कृ + तृच्' के योग से कौन सा रूप बनता है ?**
(अ) कृतम् (इ) कृतृन्
(उ) कर्तुम् (ऋ) कर्ता

169. **'भावः' में कौन सा प्रत्यय है ?**
(अ) क (इ) घञ्
(उ) अच् (ऋ) अष्ट

170. **'भयम्' में प्रत्यय है–**
(अ) अण् (इ) क
(उ) अच् (ऋ) घञ्

171. **'जातिः' में प्रत्यय है–**
(अ) केलिमर् (इ) ल्यु
(उ) णिनि (ऋ) क्तिन्

172. **'केलिमर्' है–**
(अ) कृदन्तप्रत्ययः (इ) सुबन्तप्रत्ययः
(उ) तद्धितप्रत्ययः (ऋ) तिङन्तप्रत्ययः

173. **'शप्यम्' में 'शप्' धातु में कौन सा प्रत्यय है ?**
(अ) ल्युट् (इ) ल्युप्
(उ) अच् (ऋ) यत्

153. (अ), 154. (अ), 155. (अ), 156. (अ), 157. (उ), 158. (अ), 159. (अ) 160. (इ), 161. (ऋ), 162. (अ), 163. (इ), 164. (उ), 165. (इ), 166. (ऋ), 167. (अ), 168. (ऋ), 169. (इ), 170. (उ), 171. (ऋ), 172. (अ), 173. (ऋ),

174. **'छिदेलिमः, छिदेलिमा, छिदेलिमम्' इन पदों में प्रत्यय है–**
(अ) एलिमर् (इ) केलिमर्
(उ) ण्यत् (ऋ) अनीयर्

175. **'स्थायी' में प्रत्यय है–**
(अ) णिनि (इ) क्विप्
(उ) शतृ (ऋ) ल्युट्

176. **'ईक्षमाणः' में प्रत्यय है–**
(अ) केलिमर् (इ) शानच्
(उ) कानच् (ऋ) शतृ

177. **'प्रियः' इसमें प्रत्यय है–**
(अ) अण् (इ) क
(उ) ल्यप् (ऋ) ष्ट्रन्

178. **'कुम्भं + कृ + अण्' से कौन सा रूप बनता है ?**
(अ) कुम्भकारः (इ) कुम्भिकः
(उ) कुम्भिन् (ऋ) कुम्भा

179. **'यू + क्तिन्' से कौन सा रूप बनता है ?**
(अ) यूतिः (इ) युवा
(उ) युवतिः (ऋ) यूवा

180. **'ईहा' में प्रत्यय है–**
(अ) अच् (इ) क
(उ) अ (ऋ) ल्यु

181. **'रामः' में प्रत्यय है–**
(अ) घञ् (इ) अण्
(उ) अच् (ऋ) क

182. **'अवतारः' में प्रत्यय है–**
(अ) क (इ) घञ्
(उ) क्विप् (ऋ) खश्

183. **'आश्वपत्यम्' अपत्यर्थ प्रत्यय कौन सा है ?**
(अ) यञ् (इ) रञ्
(उ) अण् (ऋ) ण्यत्

184. **'शयनम्' में कौन सा प्रत्यय है ?**
(अ) युच् (इ) अच्
(उ) ण्वुल् (ऋ) ल्युट्

185. **'द्विमातृ + अण्' मिलकर रूप बनेगा–**
(अ) द्विमातृन् (इ) विमाता
(उ) द्वैमातुरः (ऋ) द्विमात

186. **'रेवती + ठक्' मिलकर रूप बनेगा–**
(अ) रैवतिकः (इ) रेवत्ठक
(उ) रैवतः (ऋ) ऐरावतः

187. **'दाक्षिः' में प्रत्यय है–**
(अ) इञ् (इ) घ
(उ) अण् (ऋ) घञ्

188. **'गुण + वतुप्' मिलकर रूप बनेगा–**
(अ) गुणवतु (इ) गुणज्ञः
(उ) गुणवत् (ऋ) गुणी

189. **'उत्स + अञ्' मिलकर रूप बनेगा–**
(अ) उत्सः (इ) उत्सवः
(उ) औत्सः (ऋ) उत्साहः

190. **'दैत्यः' में प्रत्यय है–**
(अ) ण्य (इ) घञ्
(उ) अञ् (ऋ) इञ्

191. **'खसुर्पः' में प्रत्यय है–**
(अ) ल्यप् (इ) ठक्
(उ) यञ् (ऋ) इञ्

192. **'कुरु + ण्य' से रूप बनेगा–**
(अ) कुर्यात् (इ) कौरवः
(उ) कौरव्यः (ऋ) कुरुव्यः

193. **'अनुभूय' में प्रत्यय है–**
(अ) णमुल् (इ) ण्यत्
(उ) णिनि (ऋ) ल्यप्

194. **'लिख् + णिच् + तिप्' से कौन सा रूप बनेगा–**
(अ) लिख्यते (इ) लेखयति
(उ) लिख्यतु (ऋ) लेखः

195. **'ज्ञा + सन् + तिप्' से कौन सा रूप बनता है ?**
(अ) ज्ञास्यन् (इ) ज्ञायते
(उ) ज्ञास्यति (ऋ) जिज्ञासते

174. (इ), 175. (अ), 176. (इ), 177. (इ), 178. (अ), 179. (अ), 180. (अ), 181. (अ), 182. (इ), 183. (उ), 184. (ऋ),
185. (उ), 186. (अ), 187. (अ), 188. (उ), 189. (उ), 190. (अ), 191. (उ), 192. (उ), 193. (ऋ), 194. (इ), 195. (ऋ),

196. **'शुष्कः' में प्रत्यय है–**
(अ) अक् (इ) कः
(उ) अण् (ऋ) क्त

197. **'हित्वा' में प्रत्यय है–**
(अ) क्त (इ) अण्
(उ) क्त्वा (ऋ) ल्यप्

198. **'पाकः' में प्रत्यय है–**
(अ) ण्वुल् (इ) क्त
(उ) ण्यल् (ऋ) घञ्

199. **'भोक्तुम्' में प्रत्यय है–**
(अ) तुमुन् (इ) क्तवतु
(उ) क्त (ऋ) अण्

200. **'अध्यायः' में प्रत्यय है–**
(अ) अक् (इ) घञ्
(उ) क (ऋ) क्त

201. **'वैयाकरणः' में प्रत्यय है–**
(अ) अ (इ) अण्
(उ) क (ऋ) अक्

202. **'बान्धवः' में प्रत्यय है–**
(अ) वुन (इ) व
(उ) अण् (ऋ) अक्

203. **'राष्ट्र +घ' मिलकर कौन सा रूप बनता है ?**
(अ) राष्ट्रीयः (इ) राष्ट्रियः
(उ) राष्ट्रः (ऋ) राष्टम्

204. **'पण्डा + इतच्' मिलकर कौन सा रूप बनता है ?**
(अ) पिण्डः (इ) पण्डितः
(उ) पाण्डेयः (ऋ) पण्डा

205. **'पाणिनि + छ' मिलकर कौन सा रूप बनता है ?**
(अ) पाणिनीयम् (इ) पाणिनियम
(उ) पाणिनेः (ऋ) पाणिनिः

206. **'दा + शानच्' मिलकर कौन सा रूप बनता है ?**
(अ) ददान् (इ) ददानः
(उ) दामानः (ऋ) देयः

207. **'मन् + क्त्वा' मिलकर कौन सा रूप बनता है ?**
(अ) मन्तुम् (इ) मन्यमानः
(उ) मत्वा (ऋ) मत्तः

208. **'चि + तव्यत्' मिलकर कौन सा रूप बनता है ?**
(अ) चितव्याम् (इ) चयनीयम्
(उ) चेत्यम् (ऋ) चेतव्यम्

209. **'शी + तुमुन्' मिलकर कौन सा रूप बनता है ?**
(अ) शेतुम् (इ) शायनीयम्
(उ) शयितुम् (ऋ) शयानः

210. **'कृ + ण्यत्' मिलकर कौन सा रूप बनता है ?**
(अ) कारणम् (इ) कार्यम्
(उ) करणीयम् (ऋ) कारणीयम्

211. **'भिद् + अनीयर्' मिलकर कौन सा रूप बनता है ?**
(अ) भेदितव्यम् (इ) भेदनम्
(उ) भेद्यम् (ऋ) भेदनीयम्

212. **'त्यज् + क्त' मिलकर कौन सा रूप बनता है ?**
(अ) त्यजितः (इ) त्यजतः
(उ) त्यक्त्वा (ऋ) त्यक्तः

213. **'श्रु + णमुल्' मिलकर कौन सा रूप बनता है ?**
(अ) श्रावम् (इ) श्रवणम्
(उ) श्रव्यम् (ऋ) श्रोवणम्

214. **'कृ + क्तिन्' मिलकर कौन सा रूप बनता है ?**
(अ) कीर्तिः (इ) करोति
(उ) कृतिः (ऋ) कृत्वा

215. **'तिङ्' प्रत्ययों की संख्या है ?**
(अ) 90 (इ) 9
(उ) 36 (ऋ) 18

216. **'सर्वनामस्थान' कितने प्रत्यय कहलाते है ?**
(अ) 9 (इ) 5
(उ) 6 (ऋ) 21

217. **'सुप्' प्रत्ययों की संख्या कितनी है ?**
(अ) 21 (इ) 9
(उ) 24 (ऋ) 18

196. (ऋ), 197. (उ), 198. (ऋ), 199. (अ), 200. (इ), 201. (इ), 202. (उ), 203. (इ), 204. (इ), 205. (अ), 206. (इ), 207. (उ), 208. (ऋ), 209. (उ), 210. (इ), 211. (ऋ), 212. (ऋ), 213. (अ), 214. (उ), 215. (ऋ), 216. (इ), 217. (अ)

218. **'घ' संज्ञा किन प्रत्ययों की होती है ?**
(अ) क्त-क्तवतु (इ) सन्-यङ्
(उ) शतृ-शानच् (ऋ) तरप्-तमप्

219. **'णिच्' प्रत्यय जोड़ने से अकर्मक धातुएं हो जाती है–**
(अ) उभयविध (इ) सकर्मक
(उ) अकर्मक (ऋ) सेट्

220. **कौन सा पद शतृ प्रत्ययान्त नही है–**
(अ) गायन्ती (इ) गायन्
(उ) गायत् (ऋ) गायकः

221. **कौन सा तद्धितरूप अशुद्ध है–**
(अ) पृथिता (इ) पृथुत्वम्
(उ) प्रथिमन् (ऋ) पृथुता

222. **कौन सा रूप शतृ प्रत्यय की दृष्टि से अशुद्ध है–**
(अ) गर्जन्ती (इ) गर्जन्
(उ) गर्जन्ति (ऋ) गर्जत्

223. **'क्त्वा' के सम्बन्ध में असत्य है ?**
(अ) कित् है
(इ) क्त्वा प्रत्ययान्त अव्यय होते हैं
(उ) त्वा शेष रहता है
(ऋ) अपूर्वकालिक प्रत्यय है

224. **वायु में कौन सा प्रत्यय है ?**
(अ) यक् (इ) उण्
(उ) युच् (ऋ) यु

225. **कौन सा अशुद्ध है ?**
(अ) करिष्यमाणः (इ) करिष्यमाणा
(उ) करिष्यमाणम् (ऋ) करिष्यतः

226. **'णमुल्' प्रत्यय के सम्बन्ध में असत्य है–**
(अ) शब्द को द्वित्व होता है
(इ) पूर्व स्वर की वृद्धि होती है
(उ) अम् शेष होता है
(ऋ) पूर्व स्वर का गुण होता है

227. **'प्रयोजन'** (5-1-109) **इस सूत्र से किस तद्धित प्रत्यय का विधान होता है ?**
(अ) ठण् (इ) ठञ्
(उ) ठिन् (ऋ) ठक्

228. **किस प्रत्यय के जुड़ने पर, पद पुँल्लिङ्ग में होते हैं ?**
(अ) तल् (इ) टाप्
(उ) क्तिन् (ऋ) कि

229. **किस प्रत्यय के अन्त में होने पर, निर्मित पद पुँल्लिङ्ग में नही होते हैं–**
(अ) अच् (इ) घ
(उ) घञ् (ऋ) यत्

230. **'घ्रा + शतृ' के योग से कौन सा रूप बनता है ?**
(अ) जिघ्रायन् (इ) घ्रायन
(उ) घ्रान् (ऋ) जिघ्रन्

231. **'अधि + स्था + ल्यप्'– शुद्ध रूप है–**
(अ) अध्याय (इ) अध्यस्थाय
(उ) अधिस्थास (ऋ) अधिष्ठाय

232. **'पीडितः' में प्रत्यय है–**
(अ) शानच् (इ) शतृ
(उ) क्तवतु (ऋ) क्त

233. **इनमें 'यत्' प्रत्यय युक्त पद है–**
(अ) सह्यम् (इ) सोढव्यम्
(उ) हरणीयम् (ऋ) वृध्वम्

234. **'भवितव्यम्-कर्तव्यम्-जनितव्यम्' इनमें प्रत्यय है–**
(अ) अनीयर्प्रत्ययः (इ) तव्यत्प्रत्ययः
(उ) ल्यप्प्रत्ययः (ऋ) ण्यत्प्रत्ययः

235. **'गरीयान्-गरिष्ठः' इन दोनों में प्रत्यय है–**
(अ) ईयसुन् + इष्ठन् (इ) मतुप् + ष्ठन्
(उ) क्तवतु + क्त (ऋ) यत् + क्यच्

236. **'मृ + शानच्' से कौन सा रूप बनता है–**
(अ) म्रियाणः (इ) म्रियमाणः
(उ) मरियमाणः (ऋ) मर्यमाणः

237. **'अधि + इ + शानच्' शुद्ध रूप है–**
(अ) अध्ययनमानः (इ) अधीयः
(उ) अधीयानः (ऋ) अधीयम्

218. (ऋ), 219. (इ), 220. (ऋ), 221. (ऋ), 222. (उ), 223. (ऋ), 224. (इ), 225. (ऋ), 226. (ऋ), 227. (इ),
228. (ऋ), 229. (ऋ), 230. (ऋ), 231. (ऋ), 232. (ऋ), 233. (अ), 234. (इ), 235. (अ), 236. (इ), 237. (उ),

238. 'मार्ग्यम्-ज्ञेयम्-गन्तव्यम् - पठनीयम्' इनमें यह प्रत्यय नहीं है–
(अ) यत् (इ) ण्वुल्
(उ) तव्यत् (ऋ) अनीयर्

239. 'अर्च् + क्तवतु' रूप बनता है–
(अ) अर्चकः (इ) अर्चितः
(उ) अर्च्यम् (ऋ) अर्चितवान्

240. 'जन + यत्' से रूप बनता है–
(अ) जननम् (इ) जन्यम्
(उ) जन्यः (ऋ) जन्म

241. 'आ + चि + क्त' से रूप बनता है–
(अ) अचितः (इ) अर्चितः
(उ) आचिताः (ऋ) अप्तः

242. 'प्रति + भा + ल्युट्' के योग से कौन सा रूप बनता है ?
(अ) प्रतिभा (इ) प्रतिभानम्
(उ) प्रतिभाति (ऋ) प्रतिभेति

243. 'वृत्तिः - वृद्धिः - वृष्टिः' इनमें प्रत्यय है–
(अ) क्तिन् प्रत्ययः (इ) इनि प्रत्ययः
(उ) ण्यत् प्रत्ययः (ऋ) क्त प्रत्ययः

244. 'स्वप् + क्त' के योग से बनता है–
(अ) स्वपितः (इ) सुप्तवान्
(उ) सुप्तः (ऋ) स्वपितम्

245. 'अधि + स्था + तृच्' के योग से रूप बनता है–
(अ) अधिष्टिः (इ) अध्ययस्थः
(उ) अधिष्ठाता (ऋ) अधिष्ठात्

246. 'प्र + वस् + ल्यप्' के योग से रूप बनता है–
(अ) प्रोष्य (इ) प्रैष्य
(उ) प्रेष्य (ऋ) प्रौस्य

247. 'उप + पद + क्त' प्रत्यय के योग से बनता है–
(अ) उपपन्नः (इ) उपाक्तः
(उ) उपपदः (ऋ) उपपक्तः

248. 'दा + शतृ' के योग से बनता है–
(अ) ददत् (इ) ददन
(उ) दद्यन् (ऋ) ददानः

249. 'प्रतिहन्यमानाः' में प्रकृति-प्रत्यय है–
(अ) प्रति + हन् + शानच्
(इ) प्रति + हिंस + शानच्
(उ) प्रति + हन् + क्त (बहुवचन)
(ऋ) प्रति + हन् + त (बहुवचन)

250. 'उत्प्लुत्य' - उपसर्ग-प्रकृति-प्रत्यय है–
(अ) उत् + प्लु + क्त्वा
(इ) उत् + प्लु + क्त
(उ) उत् + प्लु + ल्यप्
(ऋ) उत् + प्लु + यत्

251. 'उक्तवान्' - क्रियापद में प्रकृति-प्रत्यय है–
(अ) गद् + क्तवतु (इ) वद् + क्तवत्
(उ) वच् + क्तवतु (ऋ) ब्रु + क्तवतु

252. 'अभि + षिच् + तुमुन्' के योग से कौन सा रूप बनता है–
(अ) अभिविक्तुम् (इ) अभिषेकयितुम्
(उ) अभिषेक्तुम् (ऋ) अभिषपितुम्

253. 'स्मृ + णमुल्' से यह रूप बनता है–
(अ) स्मारम् (इ) स्मरणम्
(उ) स्मरन् (ऋ) स्मर्तव्यम्

254. 'समुदाचारः' में प्रकृति-प्रत्यय है–
(अ) सम् + उत् + चर् + क्त
(इ) समुद् + आचर् + खर्
(उ) सम् + उत् + आ + चर् + घञ्
(ऋ) समुत् + आ + चर् + त

255. 'समारूढः' में प्रकृति-प्रत्यय है–
(अ) सम् + आ + रुह् + त
(इ) सम् + आ + रुह् + घञ्
(उ) सम् + आ + रुह् + घ
(ऋ) सम् + आ + रुह् + क्त

256. 'समुन्नतिम्' में प्रकृति प्रत्यय है–
(अ) सम् + उ + नति + क्त
(इ) सम् + उत् + नम् + क्तिन्
(उ) समु + न + क्त – (कर्म)
(ऋ) समु + न + क्त

238. (इ), 239. (ऋ), 240. (इ) 241. (उ), 242. (इ), 243. (अ), 244. (उ), 245. (उ), 246. (उ), 247. (अ), 248. (अ), 249. (अ), 250. (उ), 251. (उ), 252. (उ), 253. (अ), 254. (उ), 255. (ऋ), 256. (इ),

257. **'निधानम्' में प्रकृति प्रत्यय है–**
(अ) निधा + अम्
(इ) निधा + क्त
(उ) निध् + आ + घञ्
(ऋ) नि + धा + ल्युट्

258. **'श्रद्धधानः' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) श्रत् + धा + यम्
(इ) श्रत् + धा + शतृ
(उ) श्रत् + धा + शानच्
(ऋ) श्रत् + धा + क्त

259. **'सन्दीपनम्' में प्रत्यय है–**
(अ) क्तिन् (इ) अम्
(उ) ल्युट् (ऋ) शानच्

260. **'परिभ्रमन्' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) परि + भ्रम् + क्तिन्
(इ) परि + भ्रम् + अन्
(उ) परि + भ्रम् + शतृ
(ऋ) परिभ्रम् + ल्युट्

261. **'परीक्षितुम्' में प्रत्यय है–**
(अ) क्त (इ) क्तवतु
(उ) क्तिन् (ऋ) तुमुन्

262. **'प्र + विश् + ण्वुल्' के योग से रूप बनता है–**
(अ) प्रवेशः (इ) प्रवेशयिता
(उ) प्रवेशकः (ऋ) प्रावेशिकः

263. **'दिश् + क्त्वा' के योग से यह रूप बनता है–**
(अ) दिशित्वा (इ) दिशेत्वा
(उ) दिष्ट्वा (ऋ) दिश्य

264. **'चुर् + तुमुन्' के योग से बनता है–**
(अ) चुरितुम् (इ) चुर्यतुम्
(उ) चोरयितुम् (ऋ) चोरितुम्

265. **'शक् + शतृ' से यह रूप बनता है–**
(अ) शकन् (इ) शक्नुवन्
(उ) शक्यत् (ऋ) शक्तवान्

266. **'भू + णिच्' के योग से रूप बनता है–**
(अ) भाययति (इ) भूयते
(उ) भावयति (ऋ) बभूयति

267. **'उन्मूलनम्' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) उत् + मूल् + ल्युट्
(इ) उत् + मूल् + अम्
(उ) उत् + मूल् + घञ्
(ऋ) उत् + मूल् + क्तिन्

268. **'प्र + हस् + ल्युट्' का शुद्ध रूप है–**
(अ) प्रासनम् (इ) प्रहासः
(उ) प्रहसनम् (ऋ) प्राहासनम्

269. **'प्र + भिद् + ल्यप्' के योग से यह रूप बनता है–**
(अ) प्रभौद्य (इ) प्रभिद्य
(उ) प्रभोद्य (ऋ) प्रभेद्य

257. (ऋ) 258. (उ), 259. (उ), 260. (उ), 261. (ऋ) 262. (उ), 263. (उ), 264. (उ), 265. (इ), 266. (उ), 267. (अ), 268. (उ), 269. (इ)

प्रत्ययगङ्गा (भाग-दो)

1. **किन प्रत्ययों की ''निष्ठा'' संज्ञा होती है–**
   (अ) शतृ-शानच् (इ) क्त-क्तवतू
   (उ) क्त्वा-ल्यप् (ऋ) उपर्युक्त सभी की

2. **निष्ठासंज्ञक 'क्त-क्तवतू' प्रत्यय किस अर्थ में प्रयुक्त होते हैं–**
   (अ) वर्तमानकाल के अर्थ में
   (इ) भूतकाल के अर्थ में
   (उ) भविष्यकाल के अर्थ में
   (ऋ) सभी अर्थों में

3. **'क्तवतु'- प्रत्यय का कर्ता किस विभक्ति में होता है–**
   (अ) प्रथमा (इ) तृतीया
   (उ) दोनों में (ऋ) इनमें से कोई नही

4. **'भाव' और 'कर्म' में ''क्त'' प्रत्यय के होने से इसका कर्ता किस विभक्ति में होता है–**
   (अ) प्रथमा (इ) द्वितीया
   (उ) तृतीया (ऋ) षष्ठी

5. **'भाव' अर्थ में 'क्त' प्रत्यय का उदाहरण है–**
   (अ) स्तुतः त्वया विष्णुः
   (इ) पठितः मया पाठः
   (उ) स्नातं मया प्रातः
   (ऋ) उपर्युक्त सभी

6. **'विश्वं कृतवान् विष्णुः' - यहाँ 'कृतवान्' पद में धातु और प्रत्यय है–**
   (अ) क्री + क्तवतु
   (इ) कृ + क्तवतु
   (उ) क्रमु + क्तवतु
   (ऋ) कृञ् + क्तवतु

7. **''कृ + क्तवतु + ङीप्''– इसका रूप सिद्ध होगा–**
   (अ) कृतवति (इ) कृतवती
   (उ) कृतवन्नी (ऋ) कृतोवती

8. **''रदाभ्यां निष्ठातो नः पूर्वस्य च दः'' इस सूत्र द्वारा 'रेफ' या 'दकार' से परे निष्ठा प्रत्यय के 'तकार' को क्या आदेश होगा–**
   (अ) णकार (इ) नकार
   (उ) धकार (ऋ) दकार

9. **''शृ + क्त''- इसका शुद्ध रूप होगा–**
   (अ) शीर्तः (इ) शृतः
   (उ) शीर्णः (ऋ) शृन्नः

10. **''छिद् + क्त'' – इसका रूप सिद्ध होगा–**
    (अ) छित्तः (इ) छिन्नः
    (उ) छिदः (ऋ) छिद्रः

11. **''भिद् + क्त''– इसका सही रूप होगा–**
    (अ) भिन्नः (इ) भित्तः
    (उ) भीतः (ऋ) भितः

12. **'क्तवतु'– प्रत्ययान्त रूप नहीं है–**
    (अ) शीर्णवान् (इ) भिन्नवान्
    (उ) छिन्नवान् (ऋ) धनवान्

13. **निष्ठा प्रत्ययों के 'तकार' के स्थान पर 'नकार' आदेश विधायक सूत्र नहीं है–**
    (अ) ''रदाभ्यां निष्ठातो नः पूर्वस्य च दः''
    (इ) ''संयोगादेरातो धातोर्यण्वतः''
    (उ) ''ल्वादिभ्यः'' और ''ओदितश्च''
    (ऋ) ''हलः'' और ''शुषः कः''

14. **'द्रा' धातु से निष्ठासंज्ञक 'क्त' और 'क्तवतु' प्रत्ययों के जुड़ने पर क्रमशः रूप होगा–**
    (अ) द्रातः, द्रातवान्
    (इ) द्रुतः, द्रुतवान्
    (उ) द्रानः, द्रानवान्
    (ऋ) द्राणः, द्राणवान्

1. (इ), 2. (इ), 3. (अ), 4. (उ), 5. (उ), 6. (इ), 7. (इ) 8. (इ), 9. (उ) 10. (इ), 11. (अ), 12. (ऋ), 13. (ऋ), 14. (ऋ),

15. ''ग्लै + क्त'' – इसका रूप होगा–
(अ) ग्लैतः (इ) ग्लातः
(उ) ग्लानः (ऋ) ग्लाणः

16. ''ग्लानवान्''– यहाँ 'ग्लै' धातु से किस प्रत्यय का विधान किया गया है–
(अ) क्त (इ) क्तवतु
(उ) वतुप् (ऋ) मतुप्

17. ''लूञ् + क्त = लूनः''– यहाँ 'क्त' प्रत्यय के 'तकार' के स्थान पर 'नकार' आदेश किस सूत्र से हुआ–
(अ) ल्वादिभ्यः (इ) ओदितश्च
(उ) रदाभ्यां निष्ठातो नः पूर्वस्य च दः
(ऋ) रषाभ्यां नो णः समानपदे

18. 'ज्या' वयोहानौ धातु से 'क्त' प्रत्यय होने पर रूप सिद्ध होगा–
(अ) ज्यातः (इ) जीनः
(उ) जीतः (ऋ) ज्योतिः

19. ''ज्या + क्तवतु = जीनवान्''– यहाँ किस सूत्र से 'क्तवतु' प्रत्यय का विधान किया गया है–
(अ) क्तक्तवतू निष्ठा (इ) निष्ठा
(उ) क्त्वातोसुन्कसुनः (ऋ) क्यचि च

20. 'भुज्' धातु से ''निष्ठा'' सूत्र से 'क्त' प्रत्यय होकर क्या रूप बनेगा–
(अ) भुक्तः (इ) भूग्नः
(उ) भुञ्तः (ऋ) भुग्नः

21. 'टुओश्वि गतिवृद्ध्योः' इस धातु से 'क्त' प्रत्ययान्त रूप होगा–
(अ) उच्छूनः (इ) टुओश्वः
(उ) ओश्नः (ऋ) ट्यूश्नः

22. ''शुष्'' धातु परे निष्ठा के 'तकार' के स्थान पर 'ककार' आदेश करने वाला सूत्र है–
(अ) शुषः कः (इ) शेषे प्रथमः
(उ) षढोः कः सि (ऋ) शि तुक्

23. ''शुष् + क्त'' इसका शुद्धरूप होगा–
(अ) शुष्तः (इ) शुष्कः
(उ) शुष्टः (ऋ) शुस्कः

24. 'पच्' धातु से परे 'क्त' प्रत्यय के 'तकार' के स्थान पर 'वकार' आदेश करने वाला सूत्र है–
(अ) पदान्तस्य (इ) पचो वः
(उ) पङ्क्तोश्च (ऋ) पदान्ताद्वा

25. 'पच् + क्त'' – इसका शुद्ध रूप होगा–
(अ) पचितः (इ) पक्तः
(उ) पक्वः (ऋ) पच्तः

26. 'पक्ववान्' में किस धातु से 'क्तवतु' प्रत्यय लगा है–
(अ) पूञ् (इ) पा
(उ) पद (ऋ) पच्

27. 'क्तवतु' प्रत्ययान्त पद नही है–
(अ) उच्छूनवान् (इ) शुष्कवान्
(उ) क्षामवान् (ऋ) क्षमावान्

28. ''क्षै'' धातु से परे निष्ठासंज्ञक 'क्त-क्तवतू' प्रत्यय के 'तकार' के स्थान पर मकार आदेश किस सूत्र से होता है–
(अ) क्षत्राद् घः (इ) मो नो धातोः
(उ) क्षुभ्नादिषु च (ऋ) क्षायो मः

29. 'क्षै + क्त' – इसका सही रूप होगा–
(अ) क्षितः (इ) क्षातः
(उ) क्षामः (ऋ) क्षैतः

30. 'धा' धातु के स्थान पर 'हि' आदेश विधायक सूत्र है–
(अ) दधातेर्हि (इ) दो दद् घोः
(उ) धि च (ऋ) दादेर्धातोर्घः

31. 'धा + क्त' – इसका सही रूप होगा–
(अ) धत्तः (इ) धातः
(उ) हितः (ऋ) धाक्तः

32. ''दा + क्त''– इसका रूप सिद्ध होगा–
(अ) दत्तः (इ) दात्तः
(उ) दातः (ऋ) दातुम्

15.(उ) 16. (इ), 17. (अ), 18. (इ), 19. (इ),20. (अ) 21. (अ), 22. (अ), 23. (इ), 24. (इ), 25. (उ) 26. (ऋ), 27. (उ), 28. (ऋ), 29. (उ), 30. (अ), 31. (उ), 32. (अ)।

6. वाच्य-गङ्गा

1. **'सः ग्रामं गच्छति' इसका कर्म-वाच्य होगा–**
   (अ) तेन ग्रामः गम्यते (इ) तेन ग्रामं गम्यते
   (उ) सः ग्रामं गम्यते (ऋ) सः ग्रामं गच्छते
2. **'त्वं किं पठसि' ? इसका कर्मवाच्य होगा–**
   (अ) त्वं पठ्यते (इ) त्वया पठ्यसे
   (उ) त्वया किं पठ्यते (ऋ) त्वया किं पठ्यसे
3. **'त्वं मां नमसि' – का कर्मवाच्य होगा–**
   (अ) त्वां मां नम्यसे (इ) त्वया मां नम्यते
   (उ) त्वं अहं नम्ये (ऋ) त्वया अहं नम्ये
4. **'शिष्यः गुरून् वन्दते' इसका कर्मवाच्य होगा–**
   (अ) शिष्येण गुरवः वन्द्यन्ते
   (इ) शिष्येण गुरवः वन्द्यते
   (उ) शिष्येण गुरवः वन्दते
   (ऋ) शिष्येण गुरवः वन्दन्ते
5. **'गुरुः शिष्यं प्रश्नं पृच्छति' इसका कर्मवाच्य होगा–**
   (अ) गुरुणा शिष्यं प्रश्न पृच्छयते
   (इ) गुरुणा शिष्यः प्रश्नं पृच्छ्यते
   (उ) गुरुणा शिष्ये प्रश्नं पृच्छ्यते
   (ऋ) गुरुणा शिष्यः प्रश्नः पृच्छ्यते
6. **'अहमस्मिन् गृहे वसामि' इसका भाववाच्य होगा–**
   (अ) अहम् अस्मिन् गृहे उष्ये
   (इ) मया अस्मिन् गृहे उष्यते
   (उ) मया अस्मिन् गृहे वस्यते
   (ऋ) मया अस्मिन् गृहे वसामि
7. **'गुरुः शिष्यं तत्त्वं ब्रूते' इसका कर्मवाच्य होगा–**
   (अ) गुरुणा शिष्यः तत्त्वं उच्यते
   (इ) गुरुणा शिष्यः तत्त्वं ब्रूयते
   (उ) गुरुणा शिष्यं तत्त्वं उच्यते
   (ऋ) गुरुणा शिष्यः तत्त्वः उच्यते
8. **'बालाः क्रीडन्ति' – इसका भाववाच्य होगा–**
   (अ) बालाः क्रीड्यन्ते (इ) बालैः क्रीड्यते
   (उ) बालैः क्रीड्यन्ते (ऋ) बालैः क्रीडन्ते
9. **'मया त्वं पाठ्यसे' इसका कर्तृवाच्य होगा–**
   (अ) मया त्वं पाठयामि (इ) अहं त्वं पठसि
   (उ) अहं त्वं पाठये (ऋ) अहं त्वां पाठयामि
10. **'त्वं चिरादिव चिन्तयन् दृश्यसे'– इसका कर्तृवाच्य होगा–**
   (अ) त्वं चिरादिव चिन्तयन् दृश्यसे
   (इ) त्वां चिरादिव चिन्तयन् पश्यसि
   (उ) त्वां चिरादिव चिन्तयन्तं पश्यामि
   (ऋ) त्वं चिरादिव चिन्तयन् पश्यामि
11. **'पिपासितैः काव्यरसो न पीयते' इसका कर्तृवाच्य होगा–**
   (अ) पिपासिताः काव्यरसः न पिबन्ति
   (इ) पिपासिताः काव्यरसं न पिबति
   (उ) पिपासितः काव्यरसः न पिबन्ति
   (ऋ) पिपासिताः काव्यरसं न पिबन्ति
12. **'अहं त्वां लेखनप्रकारं शिक्षयामि' का कर्मवाच्य होगा–**
   (अ) अहेन त्वां लेखनप्रकारं शिक्ष्यसे
   (इ) मया त्वां लेखनप्रकारं शिक्षयते
   (उ) मया त्वां लेखनप्रकारं शिक्षयते
   (ऋ) मया त्वं लेखनप्रकारः शिक्ष्यसे
13. **'पिता पुत्रम् अनुगतवान्' इसका कर्मवाच्य होगा–**
   (अ) पिता पुत्रम् अनुगतः (इ) पिता पुत्रेण अनुगतः
   (उ) पितेन पुत्रः अनुगतः (ऋ) पित्रा पुत्रः अनुगतः
14. **'निर्गुणेष्वपि सत्त्वेषु साधवः दयां कुर्वन्ति' इसका कर्मवाच्य होगा–**
   (अ) निर्गुणेष्वपि सत्वेषु साधुभिः दया क्रियते
   (इ) निर्गुणेष्वपि सत्वेषु साधवैः दयां क्रियन्ते
   (उ) निर्गुणेष्वपि सत्वेषु साधैः दया क्रियते
   (ऋ) निर्गुणेषु सत्वेषु साधवः दयां क्रियन्ते

1. (अ), 2. (उ), 3. (ऋ), 4. (अ), 5. (इ), 6. (इ), 7. (अ) 8. (इ), 9. (ऋ) 10. (उ), 11. (ऋ), 12. (ऋ), 13. (ऋ), 14. (अ),

15. **'गजाः गुरुतरान् भारान् वहन्ति' इसका कर्मवाच्य होगा–**
(अ) गजभिः गुरुतरा भारा उह्यन्ते
(इ) गजैः गुरुतराः भाराः उह्यन्ते
(उ) गजाभिः गुरुतरा भाराः वोह्यन्ते
(ऋ) गजैः गुरुतरा भाराः उक्ष्यन्ते

16. **'रामः वनम् अगच्छत्' – इसका कर्मवाच्य होगा–**
(अ) रामेण वनं गम्यते (इ) रामेण वनोऽगम्यत्
(उ) रामेण वनः गम्यत (ऋ) रामेण वनम् अगम्यत

17. **'सर्वं खलस्य चरितं मशकः करोति'– का कर्मवाच्य होगा–**
(अ) सर्वं खलस्य चरितं मशकेन क्रियते
(इ) सर्वं खलस्य चरितः मशकेन क्रियते
(उ) सर्वः खलस्य चरितः मशकेन क्रियते
(ऋ) सर्वं खलस्य चरितं मशकेन कुर्वते

18. **'सा गीताम् अपठत्'– इसका कर्मणि प्रयोग होगा–**
(अ) तया गीता अपठ्यत (इ) तया गीतां पठितम्
(उ) तया गीता पठ्यते (ऋ) तया गीतां पठ्यत

19. **'गावः क्षीरं यच्छन्ति'– का कर्मणि प्रयोग होगा–**
(अ) गाभिः क्षीरः यच्छयन्ते
(इ) गोभिः क्षीरं यच्छते
(उ) गोभिः क्षीरः यच्छयते
(ऋ) गोभिः क्षीरं दीयते

20. **'मेषपालः मेषान् नयति'– का कर्मवाच्य होगा–**
(अ) मेषपालेन मेषाः नयन्ते
(इ) मेषपालेन मेषा नीयते
(उ) मेषपालेन मेषा नयते
(ऋ) मेषपालेन मेषाः नीयन्ते

21. **'त्वं पितरौ नमसि' – इसका कर्मवाच्य होगा–**
(अ) त्वया पितरौ नम्येते (इ) त्वं पितरौ नम्यसे
(उ) त्वया पितरौ नम्यन्ते (ऋ) त्वया पितरौ नम्यन्ते

22. **'पिता पुत्रं पश्यति'– इसका कर्मवाच्य होगा–**
(अ) पित्रा पुत्रः पश्यते (इ) पित्रेण पुत्रः पश्यते
(उ) पित्रा पुत्रः दृश्यते (ऋ) पित्रेण पुत्रः दृश्यते

23. **'बालाः वृक्षम् आरोहन्ति'– इसका कर्मवाच्य होगा–**
(अ) बालैः वृक्षः आरुह्यते
(इ) बालैः वृक्षम् आरोह्यते
(उ) बालैः वृक्षः आरुहति
(ऋ) बालैः वृक्षम् आरुह्यति

24. **'कुम्भकारः कुम्भान् करोति'– इसका कर्मवाच्य होगा–**
(अ) कुम्भकारैः कुम्भाः क्रियते
(इ) कुम्भकारेण कुम्भाः क्रियन्ते
(उ) कुम्भकारेण कुम्भान् क्रियन्ते
(ऋ) कुम्भकारेण कुम्भाः क्रियते

25. **'वयं क्षीरं पिबामः'– इसका कर्मवाच्य होगा–**
(अ) वयं क्षीरः पीयते
(इ) अस्माभिः क्षीरं पीयते
(उ) वयं क्षीरं पास्यते
(ऋ) अस्माभिः क्षीरः पास्यते

26. **'येन विद्वांसः सेव्यन्ते तेन विद्या लभ्यते' इसका कर्तृवाच्य होगा–**
(अ) यः विदुषः सेवते सः विद्यां लभते
(इ) यः विदुषः सेवते तेन विद्या लभति
(उ) यः विद्वान् सेवति सः विद्यां लभते
(ऋ) यः विद्वान् सेवते सः विद्यां लभते

27. **'सज्जनैः निन्दितं कर्म न क्रियते' इसका कर्तृवाच्य होगा–**
(अ) सज्जनाः निन्दितं कर्मं न क्रियन्ते
(इ) सज्जनाः निन्दितं कर्मं न कुर्वन्ति
(उ) सज्जनाः निन्दितः कर्मः न कुर्वन्ति
(ऋ) सज्जनाः निन्दितं कर्म न कुर्वन्ति

28. **'सत्यं जयति' इसका भाववाच्य होगा–**
(अ) सत्यं जीयति (इ) सत्येन जीयते
(उ) सत्येन जीयति (ऋ) सत्येन जयते

29. **'ईश्वरः अस्ति'– इसका भाववाच्य होगा–**
(अ) ईश्वरेण भूयते (इ) ईश्वरेण आसते
(उ) ईश्वरेण स्थीयते (ऋ) ईश्वरेण सीयते

30. **'भयं नास्ति'– इसका भाववाच्य होगा–**
(अ) भयेन न स्थीयते (इ) भयेन भूयते
(उ) भयेन न आसते (ऋ) भयेन न भूयते

15.(इ), 16. (ऋ), 17. (अ), 18. (अ), 19. (ऋ),20. (ऋ), 21. (अ), 22. (उ), 23. (अ), 24. (इ), 25. (इ), 26. (अ), 27. (ऋ), 28. (ऋ), 29. (अ), 30. (ऋ),

31. **'चन्द्रः रात्रौ शोभते'– इसका भाववाच्य होगा–**
(अ) चन्द्रेण रात्रीः शुभ्यते (इ) चन्द्रेण रात्रौ शोभ्यते
(उ) चन्द्रेण रात्रिं शुभ्यते (ऋ) चन्द्रेण रात्रौ शुभ्यते

32. **'सर्वे भवन्तु सुखिनः'– इसका भाववाच्य होगा–**
(अ) सर्वैः भूयतां सुखिनः (इ) सर्वे भवन्तु सुखिभिः
(उ) सर्वैः भूयतां सुखिभिः (ऋ) सर्वैः भवन्तु सुखिभिः

33. **'बालिका फलं खादति'– इसका वाच्यपरिवर्तन होगा–**
(अ) बालिका फलेन खाद्यते
(इ) बालिकया फलेन खादति
(उ) बालिकया फलं खाद्यते
(ऋ) बालिकया फलेन खाद्यते

34. **'माता पुत्रे स्निह्यति'– इसका भाववाच्य होगा–**
(अ) मात्रा पुत्रे स्निह्यति (इ) मात्रा पुत्रेण स्निह्यति
(उ) माता पुत्रे स्निह्यते (ऋ) मात्रा पुत्रे स्निह्यते

35. **'गच्छति'– इसका कर्मवाच्य में रूप होगा–**
(अ) गच्छति (इ) गच्छते
(उ) गम्यति (ऋ) गम्यते

36. **'अस्ति उत्तरस्यां दिशि देवतात्मा'– यह किस वाच्य का है ?**
(अ) कर्तृवाच्य (इ) भाववाच्य
(उ) कर्मवाच्य (ऋ) कर्मभाववाच्यम्

37. **'बिभेति सर्पादपि पक्षिराजः' कर्मवाच्य क्या होगा–**
(अ) भीयते सर्पादपि पक्षिराजः
(इ) बिभ्यते सर्पादपि पक्षिराजेन
(उ) भीयते सर्पादपि पक्षिराजेन
(ऋ) बिभ्यते सर्पादपि पक्षिराजा

38. **'के यूयम् ? इसका वाच्यपरिवर्तन होगा–**
(अ) कैर्युष्माभिः (इ) कैः यूयम्
(उ) युष्माभिः के (ऋ) के युष्माभिः

39. **'यानम् अस्मान् नयति'– इसका कर्मवाच्य होगा–**
(अ) यानेन अस्माकं नीयामहे
(इ) यानेन वयं नीयामहे
(उ) यानेन अस्मान् नीयते
(ऋ) यानम् अस्मान् नीयते

40. **'रमेशः त्वां पाठयति'– इसका वाच्यपरिवर्तन होगा–**
(अ) रमेशेन त्वं पाठ्यते (इ) रमेशः त्वां पाठ्यसे
(उ) रमेशेन त्वं पाठ्यसे (ऋ) रमेशेन त्वं पाठयसे

41. **'कृतज्ञः केन हन्यताम्'– इसका कर्तृवाच्य है–**
(अ) कृतज्ञेन कः हन्यताम् (इ) कृतज्ञः कः हन्तु
(उ) कृतज्ञः कः हन्यात् (ऋ) कृतज्ञं कः हन्तु

42. **'भज गोविन्दम्'– इसका कर्मवाच्य होगा –**
(अ) भज्यतां गोविन्दम् (इ) भज गोविन्दः
(उ) भज्यतां गोविन्दः (ऋ) भज्येत गोविन्दः

43. **'शिशवः पित्रा चाल्यन्ते'– इसका कर्तृवाच्य होगा–**
(अ) शिशून् पित्रा चाल्यन्ते
(इ) शिशून् पिता चालयति
(उ) शिशून् पिता चाल्यते
(ऋ) शिशवः पित्रा चालयन्ति

44. **'वसेम'– इसका भाववाच्य होगा–**
(अ) वसन्तु (इ) उष्येत
(उ) वस्येत (ऋ) उष्येत्

45. **'विप्राय देहि'– इसका वाच्य परिवर्तन होगा–**
(अ) विप्राय देह्यताम् (इ) विप्राय दीयेत
(उ) विप्राय दायते (ऋ) विप्राय दीयताम्

46. **'सर्वैः अनुज्ञायताम्' इसका कर्तृवाच्य होगा–**
(अ) सर्वे अनुज्ञायताम् (इ) सर्वे अनुज्ञायन्ताम्
(उ) सर्वैः अनुजानन्तु (ऋ) सर्वे अनुजानन्तु

47. **'रामः इव राजा भवेत्'– इसका वाच्यपरिवर्तन होगा–**
(अ) राम इव राजा भूयताम्
(इ) रामेण इव राजा भूयताम्
(उ) रामेण इव राज्ञा भूयेत
(ऋ) रामेण इव राज्ञा भवेत्

48. **'लता विलसेत्'– इसका भाववाच्य होगा–**
(अ) लतया विलस्यताम् (इ) लतया विलस्येत
(उ) लतया विल्सयात् (ऋ) लतया विलस्यतात्

49. **निम्नलिखित पदों में कर्मवाच्य का कर्ता है–**
(अ) एतौ (इ) तौ
(उ) युष्माभिः (ऋ) एषः

50. **'लिम्पतीव तमोऽङ्गानि'– इसका कर्मवाच्य होगा–**
(अ) लिप्यन्ते इव तमः अङ्गानि
(इ) लिम्पतीव तमोऽङ्गैः
(उ) लिप्यन्ते इव तमसा अङ्गानि
(ऋ) लिप्यन्ते इव तमसा अङ्गैः

31. (ऋ), 32. (उ), 33. (उ), 34. (ऋ), 35. (ऋ), 36. (अ), 37. (इ),38. (अ), 39. (इ), 40. (उ), 41. (ऋ), 42. (उ) 43. (इ), 44. (इ), 45. (ऋ), 46. (ऋ), 47. (उ) 48. (इ), 49. (उ), 50. (उ),

51. **'पुरोहितः सोमेन यजति'– इसका कर्मवाच्य होगा–**
(अ) पुरोहितेन सोमेन यजते
(इ) पुरोहितेन सोमेन यजति
(उ) पुरोहितेन सोमः यजति
(ऋ) पुरोहितेन सोमेन इज्यते

52. **यूयं दूरभाषं श्रोष्यथ'– इसका वाच्य परिवर्तन है–**
(अ) युष्माभिः दूरभाषं श्रोष्यध्वे
(इ) युष्माभिः दूरभाषः श्रोष्यते
(उ) युष्माभिः दूरभाषः श्रोषिष्यते
(ऋ) युष्माभिः दूरभाषं श्रोष्यति

53. **'मम्मटः काव्यलक्षणं विहितवान्'– इसका कर्मवाच्य होगा–**
(अ) मम्मटेन काव्यलक्षणं विहितम्
(इ) मम्मटेन काव्यलक्षणं विधेयम्
(उ) मम्मटः काव्यलक्षणं विदधाति
(ऋ) मम्मटेन काव्यलक्षणं विहितवान्

54. **'किरातः रामाय फलं ददौ'– इसका कर्मवाच्य होगा–**
(अ) किरातेन रामाय फलम् अदीयत
(इ) किरातेन रामाय फलं दत्तम्
(उ) किरातेन रामाय फलं ददे
(ऋ) किरातः रामाय फलं दत्तः

55. **'निनिन्द रूपं हृदयेन पार्वती'– इसका कर्मवाच्य होगा–**
(अ) अनिन्द्यत रूपं हृदयेन पार्वत्या
(इ) निन्दिता रूपं हृदयेन पार्वती
(उ) निन्दितं रूपं हृदयेन पार्वती
(ऋ) निनिन्दे रूपं हृदयेन पार्वत्या

56. **'दिशो न जाने'– इसका कर्मवाच्य होगा–**
(अ) दिशो न ज्ञायन्ते (इ) दिशो न जानामि
(उ) दिशो न ज्ञायते (ऋ) दिशो न जान्यन्ते

57. **'गन्धवहः प्रयाति'– इसका भाववाच्य होगा–**
(अ) गन्धवहेन प्रप्यते (इ) गन्धवहेन प्रयायते
(उ) गन्धवहेन प्रगम्यते (ऋ) गन्धवाहेन प्रययते

58. **कर्मवाच्य में किसकी प्रधानता रहती है ?**
(अ) कर्ता (इ) क्रिया
(उ) कर्म (ऋ) करण

59. **कर्तृवाच्य में किसकी प्रधानता रहती है–**
(अ) कर्ता (इ) कर्म
(उ) क्रिया (ऋ) करण

60. **भाववाच्य में किसकी प्रधानता रहती है–**
(अ) कर्ता (इ) कर्म
(उ) करण (ऋ) भाव

61. **कर्मवाच्य में कर्ता किस विभक्ति में होता है–**
(अ) तृतीया विभक्ति (इ) प्रथमा विभक्ति
(उ) चतुर्थी विभक्ति (ऋ) द्वितीया विभक्ति

62. **वाच्य कितने प्रकार का होता है ?**
(अ) 3 (इ) 2
(उ) 1 (ऋ) 7

63. **'मुकुन्दः युवां पाठयति'– इसका कर्मवाच्य क्या होगा–**
(अ) मुकुन्देन युवां पाठ्येथे
(इ) मुकुन्देन युवां पाठ्यते
(उ) मुकुन्दः त्वं पाठ्येथे
(ऋ) मुकुन्देनः युवां पाठ्येते

64. **'तेन अहं दृश्ये'– का कर्तृवाच्य होगा–**
(अ) सः अहं पश्यामि (इ) सः मां पश्यति
(उ) तेन अहं पश्ये (ऋ) सः मां दृश्यते

65. **'यूयं स्मरथ'– इसका भाववाच्य होगा–**
(अ) युष्माभिः स्मर्यसे (इ) त्वया स्मर्यते
(उ) युष्माभिः स्मर्यते (ऋ) उपर्युक्त में से कोई नहीं

66. **कर्तृवाच्य में कर्ता किस विभक्ति में होता है ?**
(अ) प्रथमा (इ) तृतीया
(उ) द्वितीया (ऋ) चतुर्थी

67. **भाववाच्य में कौन-सी क्रियाएँ होती हैं–**
(अ) सकर्मक क्रिया (इ) अकर्मक क्रिया
(उ) द्विकर्मक क्रिया (ऋ) इनमें से कोई नहीं

68. **भाववाच्य के कर्ता में कौन सी विभक्ति आती है ?**
(अ) प्रथमा (इ) द्वितीया
(उ) तृतीया (ऋ) सम्बोधन

69. **कर्मवाच्य की क्रिया में कौन-सा प्रत्यय होता है ?**
(अ) यक् (इ) ण्यत्
(उ) घञ् (ऋ) क्त

51. (ऋ), 52.(इ) 53. (अ), 54. (उ), 55. (ऋ), 56. (अ), 57. (इ) 58. (उ), 59. (अ), 60. (ऋ), 61. (अ), 62.(अ) 63. (अ), 64. (इ), 65. (उ), 66. (अ), 67.(इ), 68. (उ), 69. (अ)

70. **'पठ्' धातु का लृट् लकार कर्मवाच्य में क्रिया होगी–**
(अ) पठिष्यसि (इ) पठिष्यते
(उ) पठ्यते (ऋ) षठ्यमानः

71. **'दा' धातु में विधिलिङ्ग उत्तमपुरुष एकवचन में कर्मवाच्य की क्रिया होगी–**
(अ) दीयताम् (इ) दास्यते
(उ) दीयेत (ऋ) दीयेय

72. **निम्नलिखित में कर्मवाच्य का वाक्य है ?**
(अ) सः पुस्तकानि पठति (इ) देवदत्तेन फलं खाद्यते
(उ) हरिः त्वां ताडयति (ऋ) सः ग्रामं गच्छति

73. **निम्नलिखित में कौन सा वाक्य भाववाच्य में है–**
(अ) सा हसति (इ) यूयं स्मरथ
(उ) गोविन्दः रोदिति (ऋ) मया स्थीयते

74. **निम्नलिखित में कर्तृवाच्य का वाक्य कौन सा है ?**
(अ) तौ फलानि खादतः
(इ) युष्माभिः कुत्र अगम्यत ?
(उ) तेन निबन्धः पठ्यते
(ऋ) तया पत्राणि गण्यताम्

75. **निम्नलिखित में कर्तृवाच्य होगा–**
(अ) तेन श्लोकः रच्यते (इ) सा शृणोति
(उ) तया कथा लिख्यते (ऋ) अनया दुग्धं पीयते

76. **निम्नलिखित में कर्मवाच्य कौन-सा है?**
(अ) भवान् गीतं गायतु (इ) गुरुः माम् उपदिशतु
(उ) भवता गीतं गीयताम् (ऋ) बालिका आवां पश्यतु

77. **निम्नलिखित में कर्मवाच्य कौन-सा है ?**
(अ) छात्रः विद्यालयं गमिष्यति
(इ) छात्रौ पत्रे पठिष्यतः
(उ) छात्रः मां चेष्यति
(ऋ) छात्रेण विद्यालयः गमिष्यते

78. **निम्नलिखित में भाववाच्य होगा–**
(अ) तया श्रूयते (इ) अहं जीवामि
(उ) सः हसति (ऋ) अहं तिष्ठामि

79. **निम्नलिखित में भाववाच्य की धातु कौन सी है ?**
(अ) पठ् (इ) लिख्
(उ) रुच् (ऋ) पच्

80. **'ते तत्र हसन्ति'– इसका भाववाच्य है–**
(अ) तैः तत्र हस्यते (इ) तै तत्र हसते
(उ) तैः तत्रैः हस्यते (ऋ) ताभ्यां तत्र हस्यते

81. **'प्रणवः ग्रन्थं पठति'– इसका कर्मवाच्य होगा–**
(अ) ग्रन्थः प्रणवः पठितः (इ) प्रणवेन ग्रन्थाः पठ्यन्ते
(उ) प्रणवेन ग्रन्थः पठ्येते (ऋ) प्रणवेन ग्रन्थः पठ्यते

82. **अश्वेन भारः उह्यते – इसका कर्तृवाच्य होगा–**
(अ) अश्वः भारं वहति (इ) अश्वेन भारं उह्यते
(उ) अश्वाः भारं वहन्ति (ऋ) अश्वः भारः उह्यते

83. **'त्वया भवनं गम्यते'– इसका कर्तृवाच्य होगा –**
(अ) त्वया भवनः गच्छसि (इ) त्वया भवने गम्यते
(उ) त्वं भवनं गच्छसि (ऋ) त्वं भवनं गच्छथ

84. **'अस्माभिः स्मर्यते'– इसका कर्तृवाच्य होगा–**
(अ) वयं स्मरामः (इ) अहं स्मरामि
(उ) अस्माभिः स्मर्यन्ते (ऋ) अहं स्मरामः

85. **'त्वं मां नमसि'– इसका कर्मवाच्य होगा–**
(अ) त्वं मां नम्यसे (इ) त्वया अहं नम्ये
(उ) त्वया मां नम्यते (ऋ) त्वया मां नम्यसे

86. **'मया त्वं पाठ्यसे'– इसका कर्तृवाच्य होगा–**
(अ) मया त्वं पाठ्यसि (इ) अहं त्वां पाठ्ये
(उ) अहं त्वां पाठयामि (ऋ) अहं त्वं पठसि

87. **रात्रिर्गमिष्यति भविष्यति सुप्रभातम्'– इसका भाववाच्य होगा–**
(अ) रात्रिर्गमिष्यन्ते भविष्यते सुप्रभातम्
(इ) रात्र्या गस्यन्ते भविष्यति सुप्रभातेन
(उ) रात्र्या गमिष्यति सुप्रभातेन भविष्यते
(ऋ) रात्र्या गंस्यते सुप्रभातेन भविष्यते

88. **'तेन सुप्यते'– किस वाच्य का वाक्य है ?**
(अ) कर्तृवाच्य (इ) कर्मवाच्य
(उ) दोनों (ऋ) भाववाच्य

89. **कर्तृवाच्य में 'कर्म' कौन सी विभक्ति में आता है ?**
(अ) प्रथमा (इ) द्वितीया
(उ) तृतीया (ऋ) चतुर्थी

70. (इ), 71. (ऋ),72. (इ) , 73. (ऋ), 74. (अ), 75. (इ), 76. (उ), 77.(ऋ), 78. (अ), 79. (उ), 80. (अ), 81. (ऋ), 82.(अ), 83. (उ), 84. (अ), 85. (इ), 86. (उ), 87. (ऋ), 88. (ऋ), 89. (इ)

90. **कर्मवाच्य में 'कर्म' कौन सी विभक्ति में आता है ?**
(अ) प्रथमा (इ) द्वितीया
(उ) तृतीया (ऋ) चतुर्थी

91. **जहाँ क्रिया कर्म का अनुसरण करे, उसे कहते हैं–**
(अ) कर्तृवाच्य (इ) कर्मवाच्य
(उ) भाववाच्य (ऋ) तीनों वाच्य

92. **'कृ' धातु का लृट् लकार मध्यम पुरुष द्विवचन में कर्मवाच्य में क्या होगा–**
(अ) करिष्यते (इ) करिष्यसे
(उ) करिष्येथे (ऋ) करिष्यध्वे

93. **'धृञ्' धातु का लोट् लकार प्रथमपुरुष एकवचन कर्मवाच्य में रूप होगा–**
(अ) ध्रियताम् (इ) ध्रियेताम्
(उ) ध्रियन्ताम् (ऋ) इनमें से कोई नही

94. **'चुर्' धातु का लङ्लकार प्रथमपुरुष बहुवचन का कर्मवाच्य में रूप होगा–**
(अ) अचोर्यत (इ) अचोर्येताम्
(उ) अचोर्यन्त (ऋ) चोरयिष्यन्ते

95. **अधोलिखित वाक्यों में कर्मवाच्य है–**
(अ) सः माम् अताडयिष्यत्
(इ) अमितः गीताम् अपठिष्यत्
(उ) अमितेन गीता अपठिष्यत
(ऋ) इनमें से कोई नहीं

96. **'रामः पदवीम् अलभत'– इसका कर्मवाच्य में रूप होगा–**
(अ) रामेण पदवीं अलभ्यत
(इ) रामेण पदव्या अलभ्यत
(उ) रामः पदव्या अलभ्यत
(ऋ) रामेण पदवी अलभ्यत

97. **अधोलिखित वाक्यों में भाववाच्य का वाक्य हैं –**
(अ) सा श्रृणोति (इ) सः हसति
(उ) सीतया शीयते (ऋ) गोविन्दः रोदिति

98. **अधोलिखित वाक्यों में कर्मवाच्य का वाक्य है–**
(अ) रमेशः फलं खादति
(इ) मोहनः त्वां सूचयति
(उ) छात्राः अस्मान् स्मरन्ति
(ऋ) इनमें से कोई नहीं

99. **निम्नलिखित वाक्यों में लोट् लकार में कर्मवाच्य का वाक्य है–**
(अ) बालकेन विद्यालयः गम्येत्
(इ) शिशुना चन्द्रः अदृश्यत
(उ) भवता गीतं गीयताम्
(ऋ) मुनिभिः तपः आचर्येत

100. **निम्नलिखित वाक्यों में लृट् लकार का कर्तृवाच्य है–**
(अ) अर्चकः पूजां करिष्यति
(इ) भवन्तौ आसन्दौ नयताम्
(उ) माता अस्मान् पालयतु
(ऋ) कविः काव्यानि रचयेत्

90. (अ), 91. (इ), 92.(उ), 93. (अ), 94. (उ), 95. (उ), 96. (ऋ), 97. (उ), 98. (ऋ), 99. (उ), 100. (अ)।

7. सङ्ख्यागङ्गा

1. 'आठ' को पुँल्लिङ्ग में क्या कहेंगे–
(अ) अष्टम् (इ) अष्टौ
(उ) अष्टाः (ऋ) इनमें से कोई नहीं

2. '99' का संस्कृत शब्दात्मक रूप होगा–
(अ) नवनवतिः (इ) नौनवतिः
(उ) नवानवतिः (ऋ) नवतिः

3. संस्कृत में 'दस हजार' होगा–
(अ) युतम् (इ) सहस्रम्
(उ) अयुतम् /दशसहस्रम् (ऋ) लक्षम्

4. '91' का संस्कृत शब्दात्मक रूप होगा–
(अ) एकसप्ततिः (इ) एकनवतिः
(उ) नवनवतिः (ऋ) एकाशीतिः

5. '96' का संस्कृत रूप होगा–
(अ) षनवतिः (इ) षण्नवतिः
(उ) षट्नवतिः (ऋ) षण्णवतिः

6. '25' का संस्कृत शब्दात्मक रूप होगा–
(अ) पविंशतिः (इ) पञ्चवती
(उ) पञ्चाशत् (ऋ) पञ्चविंशतिः

7. '32' का संस्कृत शब्दात्मक रूप होगा–
(अ) द्वित्रिंशत् (इ) द्वयंशत्
(उ) द्वात्रिंशत् (ऋ) द्विंशत्

8. 'एकोनसप्ततिः' कौन सी संख्या है–
(अ) 70 (इ) 71
(उ) 79 (ऋ) 69

9. जिन शब्दों से वस्तुओं की संख्या का पता चलता है, वे क्या कहलाते हैं ?
(अ) बहुवचन शब्द (इ) संख्यावाची शब्द
(उ) क्रमवाची शब्द (ऋ) द्विवचन

10. कौन से संख्या शब्द के तीनों लिङ्गों में एक समान रूप चलते हैं–
(अ) सप्त (इ) एक
(उ) द्वि (ऋ) त्रि

11. '4' (चार) संख्या का पुँल्लिङ्ग में क्या शब्द बनता है ?
(अ) चत्वारि (इ) चत्वारः
(उ) चतस्रः (ऋ) चतुरम्

12. कौन सी संख्या सदा एकवचन में रहती है ?
(अ) चतुर (इ) द्वि
(उ) त्रि (ऋ) एक

13. '20' (बीस) का संस्कृत शब्दात्मक रूप होगा–
(अ) विंशः (इ) विंशती
(उ) विंशतिः (ऋ) विशत्

14. '100' का संस्कृत भाषा में रूप होगा–
(अ) शततिः (इ) शततीः
(उ) शतम् (ऋ) शतति

15. संस्कृत भाषा में '80' का वाचक शब्द है–
(अ) आशीतिः (इ) अशीः
(उ) अशीतिः (ऋ) अशीतीः

16. संस्कृत में '70' का संख्यावाचक शब्द है ?
(अ) सप्तती (इ) सप्तिः
(उ) सप्ततिः (ऋ) सप्ततः

17. 'एक' का नपुंसकलिङ्ग में शब्द बनता है–
(अ) एकः (इ) एक
(उ) एकम् (ऋ) एका

18. 'पचास' का संस्कृत शब्द होगा–
(अ) पंचषत् (इ) पञ्चाशत्
(उ) पञ्चासत (ऋ) पञ्चशत्

19. 'तीन' संख्या का स्त्रीलिङ्ग शब्द है–
(अ) त्रि (इ) त्रीणि
(उ) त्रयः (ऋ) तिस्रः

20. '3' (तीन) संख्या का पुँल्लिङ्ग शब्द है–
(अ) त्रयः (इ) त्रि
(उ) त्रीणि (ऋ) तिस्रः

1. (इ), 2. (अ), 3. (उ), 4. (इ), 5. (ऋ), 6. (ऋ), 7. (उ) 8. (ऋ), 9. (इ) 10. (अ), 11. (इ), 12. (ऋ), 13. (उ), 14. (उ),15.(उ), 16. (उ), 17. (उ), 18. (इ), 19. (ऋ),20. (अ),

21. **कौन सी संख्या सदा बहुवचन में होती है ?**
(अ) एक (इ) चतुर्
(उ) द्वि (ऋ) इनमें से कोई नहीं

22. **'60' का संस्कृत शब्द होगा–**
(अ) षष्टिः (इ) सष्टी
(उ) सष्टिः (ऋ) शष्टिः

23. **'95' का संस्कृत शब्द क्या होगा ?**
(अ) पंचानवतिः (इ) पञ्चनवः
(उ) पञ्चनविः (ऋ) पञ्चनवतिः

24. **'चार' संख्या का नपुंसकलिङ्ग शब्द होगा–**
(अ) चतुर (इ) चतस्रः
(उ) चत्वारः (ऋ) चत्वारि

25. **'नब्बे' का संस्कृत में शब्दात्मक रूप होगा–**
(अ) नवतिः (इ) नवितीः
(उ) नवितिः (ऋ) नवीतिः

26. **संस्कृत भाषा में '30' का वाचक शब्द है–**
(अ) त्रिंशत् (इ) त्रिंसत्
(उ) त्रिंषत् (ऋ) त्रिंशतिः

27. **'4' का स्त्रीलिङ्ग में क्या शब्द होगा–**
(अ) चतुर् (इ) चत्वारः
(उ) चत्वारि (ऋ) चतस्रः

28. **'तीन' का नपुंसकलिङ्ग में शब्द होगा–**
(अ) त्रि (इ) त्रयः
(उ) त्रीणि (ऋ) तिस्रः

29. **'चालीस का संस्कृत भाषा में शब्द है–**
(अ) चत्वारिः (इ) चत्वारिशत
(उ) चत्वारितिः (ऋ) चत्वारिंशत्

30. **'तैंतीस' का संस्कृत में शब्द क्या होगा–**
(अ) त्रित्रिंशत् (इ) त्रयितिंशत्
(उ) त्रयीत्रिशत् (ऋ) त्रयस्त्रिंशत्

31. **पञ्चन् से दशन् शब्द तक सभी शब्द किस वचन में होते हैं–**
(अ) एकवचन (इ) द्विवचन
(उ) बहुवचन (ऋ) उपर्युक्त सभी

32. **कौन सी संख्या सदा द्विवचन में रहती है ?**
(अ) एक (इ) त्रि
(उ) द्वि (ऋ) चतुर्

33. **'दो' का स्त्रीलिङ्ग शब्द क्या होगा–**
(अ) द्वि (इ) द्वौ
(उ) द्वा (ऋ) द्वे

34. **'दस' का संस्कृत में रूप होगा–**
(अ) दस (इ) दश
(उ) दष (ऋ) दशतिः

35. **'66' को संस्कृत में लिखते हैं–**
(अ) षटषष्टि (इ) सट्षष्टिः
(उ) षडषष्टिः (ऋ) षट्षष्टिः

36. **'दो' को पुँल्लिङ्ग में लिखते हैं–**
(अ) द्वे (इ) द्वौ
(उ) द्वि (ऋ) द्वा

37. **'एक लाख' को संस्कृत में कहते हैं–**
(अ) कोटिः (इ) लक्षम्
(उ) अयुतम् (ऋ) सहस्रम्

38. **'एक हजार' को संस्कृत में क्या कहेंगे ?**
(अ) सहस्रीः (इ) सहस्रतिः
(उ) सहस्रम् (ऋ) सहस्रिः

39. **'एक' का स्त्रीलिङ्ग में शब्द क्या होगा ?**
(अ) एक (इ) एकः
(उ) एका (ऋ) एकम्

40. **'89' का संस्कृत में संख्या शब्द क्या होगा–**
(अ) नवशीतिः (इ) नवाशीतिः
(उ) नवेशीतिः (ऋ) नवशीतीः

41. **'एक' का पुँल्लिङ्ग शब्द क्या होगा–**
(अ) एक (इ) एकः
(उ) एका (ऋ) एकम्

42. **'19' को संस्कृत में कहते हैं–**
(अ) एकोनविंशतिः (इ) एकोविंशतिः
(उ) एकनविंशतिः (ऋ) एकविंशतिः

43. **'दो' को नपुंसकलिङ्ग में कहते हैं–**
(अ) द्वे (इ) द्वौ
(उ) द्वा (ऋ) द्वि

21. (इ), 22. (अ), 23. (ऋ), 24. (ऋ), 25. (अ), 26. (अ), 27. (ऋ), 28. (उ), 29. (ऋ), 30. (ऋ), 31. (उ), 32. (उ), 33. (ऋ), 34. (इ), 35. (ऋ), 36. (इ), 37. (इ), 38. (उ), 39. (उ), 40. (इ), 41. (इ), 42. (अ)43. (अ),

44. 'एक करोड़' को संस्कृत भाषा में लिखते हैं–
(अ) कोटितः (इ) अयुतम्
(उ) कोटिः (ऋ) कोटीः

45. '53' का संस्कृत में रूप होगा–
(अ) त्रिपञ्चाशत् (इ) त्रयपञ्चाशत्
(उ) त्रीणिपञ्चाशत् (ऋ) त्रीपञ्चाशत्

46. 'पहला' शब्द का नपुंसकलिङ्ग में क्रमवाची रूप क्या है ?
(अ) प्रथमम् (इ) प्रथमतः
(उ) प्रथमः (ऋ) प्रथमा

47. 'चौथा' शब्द का स्त्रीलिङ्ग में क्रमवाची रूप क्या है ?
(अ) चतुर्थः (इ) चतुर्थी
(उ) चतुर्था (ऋ) चतुर्थम्

48. नपुंसकलिङ्ग में क्रमवाची शब्द बनाने में किस प्रत्यय का प्रयोग होता है–
(अ) तमप् (इ) तमः
(उ) तमी (ऋ) तमन्

49. '30 वें' क्रम का पुँल्लिङ्ग में संस्कृत क्रमवाची रूप क्या होता है ?
(अ) त्रिंशत्तमः (इ) त्रिंशतत्मी
(उ) त्रिंशत्तः (ऋ) त्रिंशतिः

50. 'उन्नीसवाँ' शब्द का पुँल्लिङ्ग में क्रमवाची रूप क्या है ?
(अ) नवदशतमम् (इ) नवदशतमी
(उ) नवदशतमा (ऋ) नवदशः

51. '29' (उन्तीसवें) क्रम का पुँल्लिङ्ग में संस्कृत क्रमवाची रूप होगा–
(अ) एकोनत्रिंशततमः (इ) एकोत्रिंशततमम्
(उ) एकोत्रिंशतीतमः (ऋ) एकोनत्रिंशत्तमः

52. क्रमवाचक शब्द बनाने के लिए पुँल्लिङ्ग में कौन सा पद प्रयुक्त होता है ?
(अ) तमम् (इ) तमी
(उ) तमीम् (ऋ) तमः

53. '21वें' क्रम का स्त्रीलिङ्ग में संस्कृत क्रमवाची रूप क्या होगा–
(अ) एकोविंशतमी (इ) एकविंशतितमी
(उ) एकविंशतमी (ऋ) एकाविंशीतमी

54. '16वें' क्रम का नपुंसकलिङ्ग में संस्कृत भाषा में क्रमवाची शब्द होगा–
(अ) षोडशम् (इ) षोडषम्
(उ) षोडसम् (ऋ) षोडशी

55. क्रमवाचक शब्द बनाने के लिए स्त्रीलिङ्ग में कौन सा प्रत्यय लगता है ?
(अ) तम (इ) तमम्
(उ) तमी (ऋ) तमीम्

56. '24वें' क्रम का नपुंसकलिङ्ग में संस्कृत क्रमवाची रूप क्या होता है ?
(अ) चतुविंशतितमम् (इ) चतुर्विंशतितमम्
(उ) चतुःविंशतितमः (ऋ) चतुर्विंशतितमः

57. क्रमवाची शब्द किन-किन लिङ्गों में बनते हैं ?
(अ) पुँल्लिङ्ग में (इ) नपुंसकलिङ्ग में
(उ) स्त्रीलिङ्ग में (ऋ) तीनों में

58. '19वें' क्रम का स्त्रीलिङ्ग में संस्कृत में क्रमवाची रूप बनेगा–
(अ) एकोनविंशि (इ) एकोनविंशिः
(उ) एकोनविंशः (ऋ) एकोनविंशी

59. संस्कृत में 'चत्वारिंशत्' किस संख्या का वाचक है ?
(अ) 400 (इ) 104
(उ) 40 (ऋ) 44

60. 'अष्टाविंशतिः' शब्द का क्या अर्थ है–
(अ) 18 (इ) 38
(उ) 28 (ऋ) 48

61. '55' संख्या का वाचक संस्कृत शब्द कौन सा है ?
(अ) पञ्चपञ्चशत् (इ) पञ्चपञ्चाशत्
(उ) पञ्चापञ्चशत् (ऋ) पञ्चापञ्चाशत्

62. संख्यावाची शब्द 'षण्णवतिः' किस अङ्क का वाचक है ?
(अ) 69 (इ) 79
(उ) 96 (ऋ) 66

63. '49' का शब्दात्मक रूप होगा–
(अ) एकोनचत्वारिशत् (इ) नौचत्वारिंशत्
(उ) नवचत्वारिंशत् (ऋ) नवचत्वारिः

44. (उ), 45. (अ), 46. (अ), 47. (इ) 48. (अ), 49. (अ), 50. (ऋ), 51. (ऋ), 52.(ऋ) 53. (इ), 54. (अ), 55. (उ), 56. (इ), 57. (ऋ) 58. (ऋ), 59. (उ), 60. (उ), 61. (इ), 62.(उ) 63. (उ),

64. **'षट्सप्ततिः' का अर्थ है–**
(अ) 670 (इ) 607
(उ) 67 (ऋ) 76

65. **'तेरह' के लिए संस्कृत में शब्द है–**
(अ) त्रयदशम् (इ) त्रिदशः
(उ) त्रयोदश (ऋ) इनमें से कोई नहीं

66. **'त्रि' शब्द का स्त्रीलिङ्ग द्वितीया बहुवचन का रूप होगा–**
(अ) तिसृन् (इ) त्रीन्
(उ) तिस्रः (ऋ) तिष्टः

67. **'षट्' शब्द का षष्ठी बहुवचन का रूप है–**
(अ) षट्नाम (इ) षट्णाम्
(उ) षण्णाम् (ऋ) षटाणाम्

68. **'तीन' शब्द का स्त्रीलिङ्ग में षष्ठी विभक्ति बहुवचन का रूप है–**
(अ) तिसृणाम् (इ) त्रयाणाम्
(उ) तिसणाम् (ऋ) तिस्रणाम्

69. **'32' को संस्कृत में कहते हैं–**
(अ) द्वौत्रिंशत् (इ) द्वात्रिंशत्
(उ) द्वित्रिंशत् (ऋ) द्वेत्रिंशत्

70. **'चतुरशीतिः' किसे कहते हैं ?**
(अ) चालाक (इ) 84
(उ) 48 (ऋ) 480

71. **'अठारह' (18) को संस्कृत में कहते हैं–**
(अ) अष्टदश (इ) अष्टादस
(उ) अष्टादश (ऋ) अष्टदष

72. **'38' को संस्कृत में शब्दरूप होता है–**
(अ) अष्टत्रिंशत् (इ) अष्टत्रिंशम्
(उ) अष्टात्रिंशत् (ऋ) अष्टात्रिंसत्

73. **'तिरासी' (83) को संस्कृत में कहते हैं–**
(अ) त्रयशीतिः (इ) त्र्यशीतिः
(उ) त्रयशीतीः (ऋ) त्र्यशीतिः

74. **'त्रयोविंशतिः' को अङ्क में लिखा जाता है–**
(अ) 33 (इ) 63
(उ) 32 (ऋ) 23

75. **'एकोनपञ्चाशत्' को अङ्क में लिखा जाता है–**
(अ) 59 (इ) 39
(उ) 48 (ऋ) 49

76. **'84' को संस्कृत शब्द रूप में कहते हैं ?**
(अ) चतुराशीतिः (इ) चतुर्शीतिः
(उ) चतुशीतिः (ऋ) चतुरशीतिः

77. **'त्रिंशत्' को अङ्कों में लिखा जाता है–**
(अ) 30 (इ) 34
(उ) 33 (ऋ) 43

78. **'7' का सप्तमी विभक्ति बहुवचन का रूप होगा–**
(अ) सप्तानाम् (इ) सप्तसु
(उ) सप्त (ऋ) सप्तषु

79. **'3' का स्त्रीलिङ्ग में सप्तमी विभक्ति बहुवचन में रूप होगा–**
(अ) तिस्रः (इ) तिसृणाम्
(उ) तिसृषु (ऋ) त्रयाणाम्

80. **'6' (छह) को संस्कृत में कहते हैं–**
(अ) षट् (इ) षड्
(उ) षट (ऋ) षड

81. **'त्रि' शब्द किस वचन में प्रयोग किया जाता है ?**
(अ) एकवचन (इ) द्विवचन
(उ) बहुवचन (ऋ) इनमें से कोई नहीं

82. **`4' (चतुर्) शब्द का पुँल्लिङ्ग द्वितीया बहुवचन में रूप होगा ?**
(अ) चतुरान् (इ) चतुरः
(उ) चतुस्रः (ऋ) चत्वारि

83. **क्रमवाची संख्या का शुद्धतम रूप है-**
(अ) षष्ठः (इ) एकादशः
(उ) द्वादशः (ऋ) उपर्युक्त सभी

64. (ऋ), 65. (उ), 66. (उ), 67.(उ), 68. (अ), 69. (इ), 70. (इ), 71. (उ),72. (उ) , 73. (ऋ) 74. (ऋ), 75. (ऋ), 76. (ऋ), 77.(अ), 78. (इ), 79. (उ), 80. (अ), 81. (उ), 82. (इ), 83. (ऋ),

84. **'आठ' को संस्कृत में कहेंगे–**
(अ) अष्ट (इ) अष्टौ
(उ) दोनों (ऋ) इनमें से कोई नहीं

85. **'पञ्च' शब्द किस वचन में प्रयोग किया जाता है-**
(अ) एकवचन (इ) द्विवचन
(उ) बहुवचन (ऋ) उपर्युक्त सभी गलत

86. **अधोलिखित संख्यावाची का शुद्धरूप–**
(अ) द्विचत्वारिंशत् (इ) द्वाचत्वारिंशत्
(उ) दोनों (ऋ) इनमें से कोई नहीं

87. **'62' को संस्कृत में कहेंगे-**
(अ) द्विषष्टिः (इ) द्वाषष्टिः
(उ) दोनों (ऋ) इनमें से कोई नहीं

88. **अधोलिखित में अशुद्ध रूप है-**
(अ) अष्टषष्टिः (68) (इ) एकोनसप्ततिः (69)
(उ) चतःसप्ततिः (74) (ऋ) षोडश (16)

89. **'69' को संस्कृत में कहा जाता है-?**
(अ) नवषष्टिः (इ) एकोनसप्ततिः
(उ) दोनों (ऋ) इनमें से कोई नहीं

90. **'द्विपञ्चाशत्' को कहा जाता है-**
(अ) 25 (इ) 62
(उ) 52 (ऋ) 72

91. **अधोलिखित संख्यावाची शब्द का शुद्धतम रूप है–**
(अ) द्विनवतिः (इ) द्वानवतिः
(उ) इनमें से कोई नहीं (ऋ) 'अ' और 'इ' दोनों

92. **अधोलिखित में अशुद्धरूप है–**
(अ) त्रयाणाम् (इ) तिसृणाम्
(उ) तिसृणाम् (ऋ) चतसृणाम्

93. **'त्रि से अष्टादशन्' तक के संख्या शब्दों का किस वचन में प्रयोग किया जाता है–**
(अ) एकवचन (इ) द्विवचन
(उ) बहुवचन (ऋ) तीनों वचनों में

94. **एकोनविंशतिः से नवविंशतिः तक की संख्या का किस लिङ्ग में प्रयोग किया जाता है–**
(अ) पुँल्लिङ्ग (इ) स्त्रीलिङ्ग
(उ) नपुंसकलिङ्ग (ऋ) तीनों लिङ्गों में

95. **अधोलिखित संख्यावाची शब्द का अशुद्धरूप है–**
(अ) सप्तानाम् (इ) पञ्चसु
(उ) चतसृषु (ऋ) षण्णाम्

96. **'नव' शब्द का षष्ठी बहुवचन में रूप बनता है–**
(अ) नवसु (इ) नवानाम्
(उ) नवभ्यः (ऋ) नवभिः

97. **`10 लाख' को संस्कृत में कहा जाता है–**
(अ) लक्षम् (इ) प्रयुतम्
(उ) नियुतम् (ऋ) इ और उ दोनों

98. **`53' को संस्कृत में कहते हैं–**
(अ) त्रिपञ्चाशत् (इ) त्रयःपञ्चाशत्
(उ) इनमें से कोई नहीं (ऋ) अ और इ दोनों

99. **अधोलिखित संख्यावाची का शुद्धरूप है–**
(अ) नवनवतिः (इ) एकोनशतम्
(उ) दोनों (ऋ) इनमें से कोई नहीं

100. **कौन से संख्या शब्द सदा एकवचनान्त नपुंसकलिङ्ग में रूप बनता है–**
(अ) शतम्, सहस्रम् (इ) अयुतम्, लक्षम्
(उ) नियुतम्, प्रयुतम् (ऋ) उपर्युक्त सभी

101. **`102' को संस्कृत में कहेंगें–**
(अ) द्व्यधिकं शतम् (इ) द्विशतम्
(उ) शतद्वयम् (ऋ) उपर्युक्त में कोई नहीं

नोट– संख्याएँ पेज क्रमाङ्क 255 पर देखें।

84. (उ), 85. (उ),86. (उ), 87. (उ), 88. (उ), 89. (उ), 90. (उ), 91. (ऋ), 92. (उ), 93. (उ) 94. (इ), 95. (उ), 96. (इ), 97. (ऋ), 98. (ऋ), 99. (उ), 100. (ऋ), 101. (अ)।

8. धातुरूप-गङ्गा

1. 'भू' धातु का लट्लकार प्रथमपुरुष बहुवचन का रूप होगा-
(अ) भविष्यन्ति (इ) भवन्ति
(उ) भवति (ऋ) भवन्तु

2. 'भू' धातु का लट्लकार उत्तमपुरुष बहुवचन का रूप होगा-
(अ) भवावः (इ) भवामि
(उ) भवामः (ऋ) भवन्ति

3. 'भू' धातु का लृट्लकार मध्यमपुरुष द्विवचन का रूप होगा-
(अ) भविष्यति (इ) भविष्यथः
(उ) भविष्यन्ति (ऋ) भविष्यसि

4. 'भू' धातु का लोट्लकार उत्तमपुरुष बहुवचन का रूप होगा-
(अ) भवाम (इ) भवानि
(उ) भवामः (ऋ) भवावः

5. 'भू' धातु का लोट्लकार प्रथमपुरुष बहुवचन का रूप होगा-
(अ) भवन्तु (इ) भवन्ति
(उ) भवसि (ऋ) भवसि

6. 'भू' धातु का लृट्लकार प्रथमपुरुष बहुवचन का रूप होगा-
(अ) भविष्यति (इ) भविष्यतः
(उ) भवसि (ऋ) भविष्यन्ति

7. 'भू' धातु का लोट्लकार मध्यमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) भवत (इ) भवतम्
(उ) भवतु (ऋ) भव

8. 'भू' धातु का लङ्लकार प्रथमपुरुष द्विवचन का रूप होगा -
(अ) अभवतम् (इ) अभवः
(उ) अभवत् (ऋ) अभवताम्

9. 'पठ्' धातु का लृट्लकार उत्तमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) पठिष्यामः (इ) पठिष्यावः
(उ) पष्ठियन्ति (ऋ) पठिष्यामि

10. 'भू' धातु का लङ्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) भवानि (इ) भवताम्
(उ) अभवन् (ऋ) अभवत्

11. 'पठ्' धातु का लृट्लकार मध्यमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) पठिष्यसि (इ) पठिष्यन्ति
(उ) पठिष्यामि (ऋ) पठिष्यति

12. 'पठ्' धातु का लृट्लकार प्रथमपुरुष द्विवचन का रूप होगा -
(अ) पठिष्यामि (इ) पठिष्यतः
(उ) पठिष्यन्ति (ऋ) पष्ठियसि

13. 'पठ्' धातु का लङ्लकार प्रथमपुरुष द्विवचन का रूप होगा -
(अ) अपठताम् (इ) अपठन्
(उ) अपठत् (ऋ) अपठाव

14. 'पठ्' धातु का विधिलिङ्लकार में प्रथमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) पठेत (इ) पठेत्
(उ) पठेतम् (ऋ) पठेयुः

15. 'पठ्' धातु का लोट्लकार मध्यमपुरुष द्विवचन का रूप होगा -
(अ) पठाम (इ) पठताम्
(उ) पठ (ऋ) पठतम्

16. 'पठ्' धातु का लङ्लकार उत्तमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) अपठावः (इ) अपठाम
(उ) अपठः (ऋ) अपठन्

1. (इ), 2. (उ), 3. (इ), 4. (अ), 5. (अ), 6. (ऋ), 7. (ऋ), 8. (ऋ), 9. (ऋ), 10. (ऋ), 11. (अ), 12. (इ), 13. (अ), 14. (ऋ), 15. (ऋ), 16. (इ),

17. 'पठ्' धातु का लङ्लकार प्रथमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) अपठत (इ) अपठन्
(उ) अपठताम् (ऋ) अपठाम

18. 'पठ्' धातु का लङ्लकार मध्यमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) अपठावः (इ) अपठामि
(उ) अपठः (ऋ) अपठन्

19. 'पठ्' धातु का लोट्लकार उत्तमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) पठत (इ) पठ
(उ) पठतु (ऋ) पठानि

20. 'पठ्' धातु का लङ्लकार उत्तमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) अपठम् (इ) अपठाव
(उ) अपठत (ऋ) अपठः

21. 'पठ्' धातु का लोट्लकार प्रथमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) अपठम् (इ) पठ
(उ) पठतम् (ऋ) पठन्तु

22. 'पठ्' धातु का उत्तमपुरुष विधिलिङ्लकार एकवचन का रूप होगा -
(अ) पठेः (इ) पठेत
(उ) पठेयम् (ऋ) पठेव

23. 'गम्' धातु का लट्लकार मध्यमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) गच्छावः (इ) गच्छन्ति
(उ) गच्छथ (ऋ) गच्छसि

24. 'गम्' धातु का लोट्लकार मध्यमपुरुष द्विवचन का रूप होगा -
(अ) गच्छ (इ) गच्छताम्
(उ) गच्छतम् (ऋ) गच्छाव

25. 'वद्' धातु का लोट्लकार मध्यमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) वदत (इ) वदन्तु
(उ) वद (ऋ) वदतु

26. 'गम्' धातु का लङ्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) अगच्छत् (इ) अगच्छः
(उ) अगच्छन् (ऋ) अगच्छताम्

27. 'गम्' धातु का विधिलिङ्लकार उत्तमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) गच्छेयम् (इ) गच्छेतम्
(उ) गच्छेत् (ऋ) गच्छेः

28. 'गम्' धातु का लृट्लकार उत्तमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) गमिष्यथः (इ) गमिष्यसि
(उ) गमिष्यन्ति (ऋ) गमिष्यामः

29. 'वद्' धातु का विधिलिङ्लकार उत्तमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) वदेयम् (इ) वदेः
(उ) वदेत् (ऋ) वदेम

30. 'हस्' धातु का उत्तमपुरुष लङ्लकार एकवचन का रूप होगा -
(अ) अहसतम् (इ) अहसम्
(उ) अहसः (ऋ) अहसाम्

31. 'तुद' धातु का लट्लकार मध्यमपुरुष द्विवचन का रूप होगा -
(अ) तुदथः (इ) तदुतः
(उ) तुदति (ऋ) तुदसि

32. 'वद्' धातु का लङ्लकार मध्यमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) अवदत् (इ) अवदन्
(उ) अवदाव (ऋ) अवदः

33. 'हस्' धातु का लोट्लकार मध्यमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) हस (इ) हसत
(उ) हसताम् (ऋ) हसतु

34. 'हस्' धातु का उत्तमपुरुष विधिलिङ्लकार एकवचन का रूप होगा -
(अ) हसेयम् (इ) हसेः
(उ) हसेत् (ऋ) हसेव

17. (इ), 18. (उ), 19. (ऋ), 20. (अ), 21. (ऋ), 22. (उ), 23. (उ), 24. (उ), 25. (अ), 26. (अ), 27. (अ), 28. (ऋ), 29. (ऋ), 30. (इ), 31. (अ), 32. (ऋ), 33. (इ), 34. (अ),

35. 'वद्' धातु का लङ्लकार प्रथमपुरुष द्विवचन का रूप होगा -
(अ) अवदताम् (इ) अवदन्
(उ) अवदत् (ऋ) अवदाम्

36. 'हस्' धातु के लङ्लकार प्रथमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) अहसताम् (इ) अहसन्
(उ) अहसत् (ऋ) अहसः

37. 'खाद्' धातु के लोट्लकार उत्तमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) खादानि (इ) खादतम्
(उ) खादताम् (ऋ) खादतु

38. 'तुद्' धातु का लोट्लकार मध्यमपुरुष द्विवचन का रूप होगा -
(अ) तुदतम् (इ) तुदत
(उ) तुदाव (ऋ) तुदामि

39. 'तुद्' धातु का उत्तमपुरुष विधिलिङ्लकार द्विवचन का रूप होगा -
(अ) तुदेयम् (इ) तुदेम
(उ) तुदेव (ऋ) तुदेत

40. 'चुर्' धातु के लोट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) चोरयताम् (इ) चोरय
(उ) चोरयन्तु (ऋ) चोरयतु

41. 'चुर्' धातु का लोट्लकार उत्तमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) चोरयन्तु (इ) चोरयतु
(उ) चोरयताम् (ऋ) चोरयाम

42. 'तुद्' धातु के विधिलिङ्लकार प्रथमपुरुष द्विवचन का रूप होगा -
(अ) तुदेम (इ) तुदेयुः
(उ) तुदेताम् (ऋ) तुदेतम्

43. 'तुद्' धातु का लङ्लकार मध्यमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) अतुदन् (इ) अतुदाव
(उ) अतुदत (ऋ) अतुदः

44. 'चुर्' धातु का लट्लकार मध्यमपुरुष द्विवचन का रूप होगा -
(अ) चोरयथः (इ) चोरयामि
(उ) चोरयति (ऋ) चोरयसि

45. 'चुर्' धातु का लोट्लकार मध्यमपुरुष द्विवचन का रूप होगा -
(अ) चोरय (इ) चोरयस्व
(उ) चोरयतम् (ऋ) चोरयताम्

46. 'चुर्' धातु का लङ्लकार प्रथमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) अचोरयताम् (इ) अचोरयन्
(उ) अचोरयः (ऋ) अचोरयाव

47. 'चुर्' धातु का लङ्लकार उत्तमपुरुष द्विवचन का रूप होगा -
(अ) अचोरयाव (इ) अचोरयाम
(उ) अचोरयः (ऋ) अचोरयत

48. 'चुर्' धातु का विधिलिङ्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) चोरयेयुः (इ) चोरयेः
(उ) चोरयेव (ऋ) चोरयेत्

49. 'तुद्' धातु का मध्यमपुरुष लट्लकार बहुवचन का रूप होगा -
(अ) तुदसि (इ) तुदथ
(उ) तुदन्ति (ऋ) तुदति

50. 'चुर्' धातु के लङ्लकार मध्यमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) अचोरयम् (इ) अचोरयत्
(उ) अचोरयः (ऋ) अचोरयत

51. 'चुर्' धातु के विधिलिङ्लकार प्रथमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) चोरयेः (इ) चोरयेव
(उ) चोरयेत् (ऋ) चोरयेयुः

35. (अ), 36. (इ), 37. (अ), 38. (अ), 39. (उ), 40. (ऋ), 41. (ऋ), 42. (उ), 43. (उ), 44. (अ), 45. (उ), 46. (इ), 47. (अ), 48. (ऋ), 49. (इ), 50. (ऋ), 51. (ऋ),

52. 'चुर्' धातु का विधिलिङ्लकार मध्यमपुरुष द्विवचन का रूप होगा -
(अ) चोरयेतम् (इ) चोरयेयुः
(उ) चोरयेः (ऋ) चोरयेत्

53. 'तुद्' धातु का लट्लकार उत्तमपुरुष द्विवचन का रूप होगा -
(अ) तुदथ (इ) तुदथः
(उ) तुदावः (ऋ) तुदामः

54. 'तुद्' धातु का लोट्लकार प्रथमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) तुदन्तु (इ) तुदतु
(उ) तुदतम् (ऋ) तुद

55. 'तुद्' धातु का लङ्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) अतुदत् (इ) अतुदम्
(उ) अतुदः (ऋ) अतुदताम्

56. 'तुद्' धातु के विधिलिङ्लकार मध्यमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) तुदेताम् (इ) तुदेः
(उ) तुदेत् (ऋ) तुदेयुः

57. 'कृष्' धातु का लट्लकार मध्यमपुरुष द्विवचन का रूप होगा -
(अ) कर्षथ (इ) कृषथः
(उ) कर्षतः (ऋ) कर्षति

58. 'तुद्' धातु का लोट्लकार मध्यमपुरुष द्विवचन का रूप होगा -
(अ) तुदतम् (इ) तुद्
(उ) तुदतु (ऋ) तुदन्तु

59. 'तुद्' धातु का लङ्लकार मध्यमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) अतुदत् (इ) अतुदत
(उ) अतुदन् (ऋ) अतुदः

60. 'तुद्' धातु का लोट्लकार उत्तमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) तुदावः (इ) तुदानि
(उ) तुदामः (ऋ) तुद

61. 'तुद्' धातु का लङ्लकार उत्तमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) अतुदः (इ) अतुदाव
(उ) अतुदतम् (ऋ) अतुदम्

62. 'तुद्' धातु का विधिलिङ्लकार मध्यमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) तुदेत (इ) तुदेयुः
(उ) तुदेत् (ऋ) तुदेव

63. 'कृष्' धातु का लङ्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) अकृषत् (इ) अकर्षः
(उ) अकर्षत (ऋ) अकर्षम्

64. 'कृष्' धातु का लङ्लकार मध्यमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) अकर्षम् (इ) अकृषः
(उ) अकर्षाव (ऋ) अकर्षत्

65. 'कृष्' धातु का विधिलिङ्लकार मध्यमपुरुष द्विवचन का रूप होगा -
(अ) कर्षेव (इ) कर्षेत
(उ) कर्षेम (ऋ) कृषेतम्

66. 'कृष्' धातु का लट्लकार उत्तमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) कर्षावः (इ) कृषामि
(उ) कर्षसि (ऋ) कर्षति

67. 'कृष्' धातु का लङ्लकार मध्यमपुरुष द्विवचन का रूप होगा -
(अ) अकृषतम् (इ) अकर्षम्
(उ) अकर्षत् (ऋ) अकर्षः

68. 'कृष्' धातु का विधिलिङ्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) कर्षेताम् (इ) कर्षेत
(उ) कर्षेयुः (ऋ) कृषेत्

69. 'कृष्' धातु का विधिलिङ्लकार उत्तमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) कर्षेत् (इ) कर्षेत
(उ) कर्षेः (ऋ) कृषेयम्

52. (अ), 53. (उ), 54. (अ), 55. (अ), 56. (इ), 57. (इ), 58. (अ), 59. (इ), 60. (इ), 61. (ऋ), 62. (अ), 63. (अ), 64. (इ), 65. (ऋ), 66. (इ), 67. (अ), 68. (ऋ), 69. (ऋ),

70. 'कृष्' धातु का लोट्लकार मध्यमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) कर्षताम् (इ) कर्ष
(उ) कर्षतु (ऋ) कृषत

71. 'कृष्' धातु का लङ्लकार उत्तमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) अकर्षन् (इ) अकर्षाव
(उ) अकृषाम् (ऋ) अकर्षत

72. 'वह्' धातु का लोट्लकार उत्तमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) वहतु (इ) वहाव
(उ) वहन्तु (ऋ) वहाम

73. 'वह्' धातु का विधिलिङ्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) वहेयुः (इ) वहेः
(उ) वहेत् (ऋ) वहेत

74. 'वह्' धातु का लट्लकार उत्तमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) वहति (इ) वहन्ति
(उ) वहसि (ऋ) वहामः

75. 'वह्' धातु का लङ्लकार उत्तमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) अवहाव (इ) अवहाम
(उ) अवहत् (ऋ) अवहः

76. 'वह्' धातु का लोट्लकार मध्यमपुरुष द्विवचन का रूप होगा -
(अ) वहतम् (इ) वहः
(उ) वहन्तु (ऋ) वहत

77. 'वह्' धातु का लोट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) वहताम् (इ) वहतु
(उ) वहः (ऋ) वहन्तु

78. 'वह्' धातु का लङ्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) अवहताम् (इ) अवहत्
(उ) अवहत (ऋ) अवहन्

79. 'वह्' धातु का लङ्लकार मध्यमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) अवहतम् (इ) अवहत
(उ) अवहताम् (ऋ) अवहः

80. 'वह्' धातु का विधिलिङ्लकार मध्यमपुरुष द्विवचन का रूप होगा -
(अ) वहेत् (इ) वहेः
(उ) वहेतम् (ऋ) वहेत

81. 'क्षिप्' धातु का लोट्लकार मध्यमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) क्षिपाणि (इ) क्षिप
(उ) क्षिपतम् (ऋ) क्षिपतु

82. 'क्षिप्' धातु का विधिलिङ्लकार मध्यमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) क्षिपेत (इ) क्षिपेतम्
(उ) क्षिपेः (ऋ) क्षिपेम

83. 'वह्' धातु का विधिलिङ्लकार उत्तमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) वहेम (इ) वहेयुः
(उ) वहेत (ऋ) वहेयम्

84. 'क्षिप्' धातु का विधिलिङ्लकार प्रथमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) क्षिपेताम् (इ) क्षिपेम
(उ) क्षिपेयुः (ऋ) क्षिपेत्

85. 'वह्' धातु का विधिलिङ्लकार उत्तमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) वहेत (इ) वहेयुः
(उ) वहेव (ऋ) वहेम

86. 'क्षिप्' धातु का लट्लकार प्रथमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) क्षिपति (इ) क्षिपथ
(उ) क्षिपन्ति (ऋ) क्षिपावः

87. 'क्षिप्' धातु का लोट्लकार मध्यमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) क्षिपत (इ) क्षिपति
(उ) क्षिपताम् (ऋ) क्षिपाव

70. (ऋ), 71. (उ), 72. (ऋ), 73. (उ), 74. (ऋ), 75. (इ), 76. (अ), 77. (इ), 78. (इ), 79. (ऋ), 80. (उ), 81. (इ), 82. (उ), 83. (ऋ), 84. (उ), 85. (ऋ), 86. (उ), 87. (अ),

88. 'क्षिप्' धातु का लङ्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) अक्षिपाव (इ) अक्षिपत
(उ) अक्षिपत् (ऋ) अक्षिपाम

89. 'क्षिप्' धातु के विधिलिङ्लकार में उत्तमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) क्षिपाणि (इ) अक्षिपम्
(उ) क्षिपेः (ऋ) क्षिपेयम्

90. 'गण्' धातु का लोट्लकार प्रथमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) गणयन्तु (इ) गणयताम्
(उ) गणय (ऋ) गणयतु

91. 'गण्' धातु का लङ्लकार उत्तमपुरुष द्विवचन का रूप होगा -
(अ) अगणयाव (इ) अगणयत
(उ) अगणयताम् (ऋ) अगणयतम्

92. 'गण्' धातु के लोट्लकार उत्तमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) गणयानि (इ) गणयति
(उ) गणयन्तु (ऋ) गणयत

93. 'गण्' धातु के विधिलिङ्लकार उत्तमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) गणयेत (इ) गणयेयम्
(उ) गणयेः (ऋ) गणयेत्

94. 'गण्' धातु के लङ्लकार में प्रथमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) अगणयत (इ) अगणयत्
(उ) अगणयताम् (ऋ) अगणयाव

95. 'गण्' धातु का विधिलिङ्लकार में प्रथमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) गणयेताम् (इ) गणयेत्
(उ) गणयेः (ऋ) गणयेम

96. 'गण्' धातु का विधिलिङ्लकार मध्यमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) गणयेयुः (इ) गणयेत्
(उ) गणयेत (ऋ) गणयेः

97. 'दुह्' धातु का लट्लकार प्रथमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) दोग्धि (इ) दुग्धः
(उ) धोक्षि (ऋ) दुहन्ति

98. 'दुह्' धातु का लोट्लकार में उत्तमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) दुग्धाम् (इ) दुहामि
(उ) दोहानि (ऋ) दोग्धु

99. 'दुह्' धातु का लोट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) दुग्ध (इ) दुहन्तु
(उ) दुग्धाम् (ऋ) दोग्धु

100. 'दुह्' धातु का लट्लकार मध्यमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) दुहन्ति (इ) दोग्धि
(उ) दुग्धः (ऋ) धोक्षि

101. 'दुह्' धातु के लोट्लकार मध्यमपुरुष द्विवचन का रूप होगा -
(अ) दोग्धु (इ) दुग्धाम्
(उ) दुग्धि (ऋ) दुग्धम्

102. 'दुह्' धातु का लट्लकार उत्तमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) दोग्धि (इ) धोक्षि
(उ) दुग्ध (ऋ) दोह्मि

103. 'दुह्' धातु का लङ्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) अधोक् (इ) अदुहन्
(उ) अदोहम् (ऋ) अदुग्ध

104. 'दुह्' धातु का लङ्लकार मध्यमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) दोग्धि (इ) अदोहम्
(उ) दुग्ध (ऋ) अदुग्ध

105. 'दुह्' धातु के लृटलकार मध्यमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) धोक्ष्यन्ति (इ) धोक्ष्यथ
(उ) धोक्ष्यति (ऋ) धोक्ष्यसि

88. (उ), 89. (ऋ), 90. (अ), 91. (अ), 92. (अ), 93. (इ), 94. (इ), 95. (इ), 96. (उ), 97. (ऋ), 98. (उ), 99. (ऋ), 100. (ऋ), 101. (ऋ), 102. (ऋ), 103. (अ), 104. (ऋ), 105. (इ),

106. 'दुह्' धातु के लङ्लकार में उत्तमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) दोग्धि (इ) दुहन्ति
(उ) अदोहम् (ऋ) दुग्ध

107. 'दुह्' धातु के लृट्लकार प्रथमपुरुष द्विवचन का रूप होगा -
(अ) धोक्ष्यतः (इ) धोक्ष्यन्ति
(उ) धोक्ष्यथ (ऋ) धोक्ष्यति

108. 'दुह्' धातु के लृट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) धोक्ष्यति (इ) धोक्ष्यथः
(उ) धोक्ष्यन्ति (ऋ) धोक्ष्यथ

109. 'गम्' धातु के लृट्लकार मध्यमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) गमिष्यामि (इ) गमिष्यथः
(उ) गमिष्यसि (ऋ) गमिष्यति

110. 'गम्' धातु लङ्लकार प्रथमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) अगच्छन् (इ) अगच्छ
(उ) अगच्छत् (ऋ) अगच्छताम्

111. 'दुह्' धातु का लृट्लकार में मध्यमपुरुष द्विवचन का रूप होगा -
(अ) धोक्ष्यथ (इ) धोक्ष्यतः
(उ) धोक्ष्यथः (ऋ) धोक्ष्यन्ति

112. 'गम्' धातु का लट्लकार उत्तमपुरुष द्विवचन का रूप होगा -
(अ) गच्छति (इ) गच्छामः
(उ) गच्छावः (ऋ) अगच्छत्

113. 'दुह्' धातु का लृट्लकार उत्तमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) धोक्ष्यथः (इ) धोक्ष्यति
(उ) धोक्ष्यथ (ऋ) धोक्ष्यामि

114. 'दुह्' धातु का लृट्लकार मध्यमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) धोक्ष्यथ (इ) धोक्ष्यन्ति
(उ) धोक्ष्यथः (ऋ) धोक्ष्यामि

115. 'युज्' धातु का लट्लकार उत्तमपुरुष द्विवचन का रूप होगा -
(अ) युनक्ति (इ) युञ्ज्मः
(उ) युञ्ज्वः (ऋ) युञ्जन्ति

116. 'अद्' धातु के मध्यमपुरुष लट्लकार एकवचन का रूप होगा -
(अ) अद्मः (इ) अत्तः
(उ) अद्वः (ऋ) अत्सि

117. 'अद्' धातु के लट्लकार प्रथमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) अदन्ति (इ) अत्ति
(उ) असि (ऋ) अत्तः

118. 'अद्' धातु के विधिलिङ्लकार में उत्तमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) अद्याम (इ) अद्याव
(उ) अद्याम् (ऋ) अद्यात्

119. 'अद्' धातु के लट्लकार उत्तमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) अद्मि (इ) अत्थः
(उ) असि (ऋ) अद्मः

120. 'अद्' धातु का लङ्लकार उत्तमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) आद्व (इ) आदव
(उ) आदम् (ऋ) आत्ताम्

121. 'अद्' धातु के लृट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) अत्स्यथः (इ) अत्स्यसि
(उ) अत्स्यतः (ऋ) अत्स्यति

122. 'तन्' धातु के लोट्लकार मध्यमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) तनु (इ) तनुवः
(उ) तनुमः (ऋ) तनोतु

123. 'तन्' धातु के लट्लकार मध्यमपुरुष द्विवचन का रूप होगा -
(अ) तनुतः (इ) तनुथ
(उ) तनोति (ऋ) तनुथः

106. (उ), 107. (अ), 108. (अ), 109. (उ), 110. (अ), 111. (उ), 112. (उ), 113. (ऋ), 114. (अ), 115. (उ), 116. (ऋ), 117. (अ), 118. (उ), 119. (अ), 120. (उ), 121. (ऋ), 122. (अ), 123. (ऋ),

124. 'तन्' धातु के लोट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) तनोतु/तनुतात् (इ) तनुथ
(उ) तनुमः (ऋ) तनुवः

125. 'तन्' धातु के लट्लकार उत्तमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) तनुवः (इ) तनोमि
(उ) तनुमः (ऋ) तनुतः

126. 'युज्' धातु के लट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) युनक्ति (इ) युञ्जवः
(उ) युनक्षि (ऋ) युनज्मि

127. 'तन्' धातु के लृट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) तनिष्यति (इ) तनिष्यन्ति
(उ) तनिष्यथ (ऋ) तनिष्यामि

128. 'तन्' धातु के लृट्लकार मध्यमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) तनिष्यामि (इ) तनिष्यसि
(उ) तनिष्यथः (ऋ) तनिष्यति

129. 'तन्' धातु के विधिलिङ्लकार प्रथमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) तनुमः (इ) तनुयात
(उ) तनुवः (ऋ) तनुयुः

130. 'तन्' धातु के लङ्लकार में प्रथमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) अनुतम् (इ) अतनुत
(उ) अतनोत् (ऋ) अतनोः

131. 'तन्' धातु के विधिलिङ्लकार मध्यमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) तनुयात् (इ) तनुयात
(उ) तनुयाव (ऋ) तनुयुः

132. 'तन्' धातु के लङ्लकार में मध्यमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) तनुवः (इ) अतनुत
(उ) तनोतु (ऋ) तनुमः

133. 'तन्' धातु के विधिलिङ्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) तनुयाः (इ) तनुयात
(उ) तनुयात् (ऋ) तनुयुः

134. 'हु' धातु के लट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) जुहोति (इ) जुहूतः
(उ) जुहुमः (ऋ) जहोषि

135. 'क्री' धातु के लट्लकार में प्रथमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) क्रीणाति (इ) क्रीणन्ति
(उ) क्रीणीतः (ऋ) क्रीणासि

136. 'हु' धातु का लट्लकार उत्तमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) हुजुमः (इ) जुहुवः
(उ) जुहुत (ऋ) जुहोमि

137. 'क्री' धातु के लट्लकार मध्यमपुरुष द्विवचन का रूप होगा -
(अ) क्रीणीतः (इ) क्रीणीथः
(उ) क्रीणाति (ऋ) क्रीणीथ

138. 'हु' धातु के लोट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) जुहुवाम (इ) जुहुथि
(उ) जुहुत (ऋ) जुहोतु

139. 'क्री' धातु के लट्लकार उत्तमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) क्रीणीवः (इ) क्रीणामि
(उ) क्रीणीथ (ऋ) क्रीणीमः

140. 'हु' धातु के लोट्लकार उत्तमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) जुहुवान (इ) हुहोतु
(उ) जुहवानि (ऋ) जुहुत

141. 'क्री' धातु के लोट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) क्रीणानि (इ) क्रीणाम
(उ) क्रीणातु (ऋ) क्रीणाव

124. (अ), 125. (इ), 126. (अ), 127. (अ), 128. (इ), 129. (ऋ), 130. (उ), 131. (इ), 132. (इ), 133. (उ), 134. (अ), 135. (अ), 136. (ऋ), 137. (इ), 138. (ऋ), 139. (इ), 140. (उ), 141. (उ),

142. 'क्री' धातु के लोट्लकार मध्यमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) क्रीणाव (इ) क्रीणीत
(उ) क्रीणीत् (ऋ) क्रीणाम

143. 'हु' धातु के लोट्लकार मध्यमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) जुहुधि (इ) जुहवान
(उ) जुहुत (ऋ) जुहोतु

144. 'क्री' धातु के लोट्लकार उत्तमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) क्रीणाव (इ) क्रीणातु
(उ) क्रीणानि (ऋ) क्रीणाम

145. 'क्री' धातु के लोट्लकार उत्तमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) क्रीणाव (इ) क्रीणातु
(उ) क्रीणानि (ऋ) क्रीणाम

146. 'क्री' धातु के लङ्लकार मध्यमपुरुष द्विवचन का रूप होगा -
(अ) अक्रीणीताम् (इ) अक्रीणाः
(उ) अक्रीणीतम् (ऋ) अक्रीणाव

147. 'क्री' धातु के लङ्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) अक्रीणाम् (इ) अक्रीणम्
(उ) अक्रीणाः (ऋ) अक्रीणीत्

148. 'क्री' धातु के लङ्लकार मध्यमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) अक्रीणन (इ) अक्रीणाः
(उ) अक्रीणीत (ऋ) अक्रीणीम्

149. धातुओं में जुड़ने वाले प्रत्ययों को कहा जाता है-
(अ) तिङ् (इ) तद्धित
(उ) लकार (ऋ) सुप्

150. 'पच्' धातु लट्लकार उत्तमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) पचन्ति (इ) पचसि
(उ) पचामि (ऋ) पचति

151. 'पिबन्तु' क्रियापद में कौन सी धातु है ?
(अ) पिब (इ) पा
(उ) पिब् (ऋ) पीब

152. निम्न में से कौन सी धातु आत्मनेपदी है ?-
(अ) लभ् (इ) लिख्
(उ) पा (ऋ) स्था

153. 'सेवते' क्रियापद लट्लकार के किस पुरुष में बनता है? -
(अ) उत्तमपुरुष (इ) प्रथमपुरुष
(उ) मध्यमपुरुष (ऋ) किसी में नही

154. 'पठिष्यति' क्रियापद में कौन सा लकार है ?
(अ) लट् (इ) लृट्
(उ) लोट् (ऋ) लङ्

155. 'पा' धातु को किस लकार में 'पिब्' आदेश नहीं होता-
(अ) लङ् (इ) लोट्
(उ) लट् (ऋ) लृट्

156. 'भवेत्' क्रियापद में कौन सी धातु है? -
(अ) भू (इ) भव्
(उ) भु (ऋ) भाव

157. 'पच्' धातु का लृट्लकार उत्तमपुरुष एकवचन का शुद्ध रूप क्या है ?
(अ) पचिष्यामि (इ) पचयिष्यामि
(उ) पक्ष्यामि (ऋ) पचष्यामि

158. 'अगच्छः' क्रियापद में कौन सा लकार है ?
(अ) लोट् (इ) लृट्
(उ) लङ् (ऋ) लट्

159. 'भक्षयतु' क्रियापद किस लकार में बनता है?
(अ) लोट् (इ) विधिलिङ्
(उ) लट् (ऋ) लृट्

160. 'प्रच्छ्' धातु का लङ्लकार प्रथमपुरुष एकवचन में शुद्ध रूप कौन सा है -
(अ) अपृच्छत (इ) अपृच्छत्
(उ) अप्रच्छत् (ऋ) अप्रिच्छत्

142. (इ), 143. (अ), 144. (ऋ), 145. (उ), 146. (उ), 147. (ऋ), 148. (इ), 149. (अ), 150. (उ), 151. (इ), 152. (अ), 153. (इ), 154. (इ), 155. (ऋ), 156. (अ), 157. (उ), 158. (उ), 159. (अ), 160. (इ),

161. 'नमेत्' क्रियापद किस लकार में बनता है ?
(अ) लट् (इ) लोट्
(उ) ऌट (ऋ) विधिलिङ्

162. 'पठानि' क्रियापद में कौन सा पुरुष है ?
(अ) प्रथमपुरुष (इ) मध्यमपुरुष
(उ) उत्तमपुरुष (ऋ) अन्यपुरुष

163. 'हसतु' क्रियापद में कौन सा लकार है ?
(अ) लट् (इ) लोट्
(उ) लङ् (ऋ) ऌट्

164. 'नम्' धातु का ऌट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) नंस्यति (इ) नमिष्यति
(उ) नमति (ऋ) नमेष्यति

165. 'अपचम्' क्रियापद लङ्लकार के किस पुरुष में बनता है ?
(अ) प्रथमपुरुष (इ) मध्यमपुरुष
(उ) उत्तमपुरुष (ऋ) अन्यपुरुष

166. 'भू' धातु का ऌट्लकार मध्यमपुरुष द्विवचन में उचित उत्तर क्या है ?
(अ) भविष्यथः (इ) भविष्यथ
(उ) भविष्यतः (ऋ) भविष्यावः

167. 'नंस्यति' क्रियापद में कौन सी धातु है ?
(अ) नाम् (इ) गम्
(उ) नम् (ऋ) नन्

168. 'सेवावहे' क्रियापद किस लकार में बनता है ?
(अ) ऌट् (इ) लट्
(उ) लोट् (ऋ) लङ्

169. 'पठिष्यामि' क्रियापद में कौन सा पुरुष है?
(अ) प्रथमपुरुष (इ) मध्यमपुरुष
(उ) उत्तमपुरुष (ऋ) अन्यपुरुष

170. 'प्रच्छ्' धातु का ऌट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन में शुद्ध रूप कौन सा है ? -
(अ) प्रच्छस्यति (इ) प्रक्षिस्यति
(उ) प्रच्छिष्यति (ऋ) प्रक्ष्यति

171. निम्न में से कौन सी धातु परस्मैपदी है?
(अ) सेव् (इ) पच्
(उ) वृत् (ऋ) लभ्

172. 'लिखेः' क्रियापद में कौन सा वचन है ? -
(अ) एकवचन (इ) द्विवचन
(उ) बहुवचन (ऋ) इनमें से कोई नही

173. 'तिष्ठति' क्रियापद में कौन सी धातु है ?
(अ) तिष्ठ् (इ) तिष्ठ
(उ) स्था (ऋ) इनमें से कोई नहीं

174. 'लेखिष्यसि' क्रियापद में कौन सा पुरुष है ? -
(अ) प्रथमपुरुष (इ) मध्यमपुरुष
(उ) अन्यपुरुष (ऋ) उत्तमपुरुष

175. 'भविष्यति' क्रियापद में कौन सा पुरुष है ?
(अ) प्रथमपुरुष (इ) मध्यमपुरुष
(उ) तत्पुरुष (ऋ) उत्तमपुरुष

176. 'स्था' धातु का ऌट्लकार मध्यमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) तिष्ठसि (इ) स्थायिष्यसि
(उ) स्थास्यसि (ऋ) स्थाष्यसि

177. 'पृच्छति' क्रियापद में कौन सी धातु है ?
(अ) पृच्छ् (इ) पृच्छ
(उ) प्रछ् (ऋ) प्रच्छ्

178. 'स्थास्यति' क्रियापद में कौन सा लकार है ?
(अ) लट् (इ) ऌट्
(उ) लङ् (ऋ) लोट्

179. 'पच्' धातु का ऌट्लकार प्रथमपुरुष बहुवचन में शुद्ध रूप कौन सा है?
(अ) पचन्ति (इ) पचिष्यन्ति
(उ) पक्ष्यन्ति (ऋ) पचष्यन्ति

180. 'हसिष्यतः' क्रियापद में कौन सा पुरुष है ? -
(अ) प्रथमपुरुष (इ) तत्पुरुष
(उ) उत्तमपुरुष (ऋ) अन्यपुरुष

161. (ऋ), 162. (उ), 163. (इ), 164. (अ), 165. (उ), 166. (अ), 167. (उ), 168. (इ), 169. (उ), 170. (ऋ), 171. (इ), 172. (अ), 173. (उ), 174. (इ), 175. (अ), 176. (उ), 177. (ऋ), 178. (इ), 179. (उ), 180. (अ),

181. 'पास्यति' क्रियापद में कौन सी धातु है? -
(अ) पत् (इ) पच्
(उ) पिब् (ऋ) पा

182. 'अहसन्' क्रियापद में कौन सा वचन है ?
(अ) एकवचन (इ) द्विवचन
(उ) बहुवचन (ऋ) इनमें से कोई नहीं

183. 'स्था' धातु का लट्लकार प्रथमपुरुष बहुवचन में शुद्ध रूप होता है -
(अ) स्थास्यति (इ) स्थास्यन्ति
(उ) तिष्ठन्ति (ऋ) तिष्ठति

184. 'लेखिष्यति' क्रियापद में कौन सी धातु है?
(अ) लेख (इ) लेख्
(उ) लख् (ऋ) लिख्

185. 'तिष्ठतु' क्रियापद में कौन सा लकार है?
(अ) लट् (इ) लोट्
(उ) लृट (ऋ) लङ्

186. 'जिघ्रति' क्रियापद में कौनसी धातु है ?-
(अ) घ्रा (इ) जिघ्र
(उ) जिघ्र् (ऋ) घ्राण्

187. 'पा' धातु का लृट्लकार प्रथमपुरुष बहुवचन में क्या रूप बनता है?
(अ) पिबिष्यन्ति (इ) पास्यन्ति
(उ) पासिष्यन्ति (ऋ) पाष्यन्ति

188. 'घ्रा' धातु का लृट्लकार प्रथमपुरुष बहुवचन में क्या रूप बनता है? -
(अ) जिघ्रन्ति (इ) जिघ्रिष्यन्ति
(उ) घ्राणन्ति (ऋ) घ्रास्यन्ति

189. 'गच्छति' क्रियापद में कौन सी धातु है?
(अ) गच्छ् (इ) गच्छ
(उ) गछ् (ऋ) गम्

190. 'पतिष्यन्ति' क्रियापद में कौन सा लकार है?
(अ) लृट् (इ) लोट्
(उ) लट् (ऋ) लङ्

191. 'पत्' धातु का लृट्लकार मध्यमपुरुष एकवचन में शुद्ध रूप क्या है ?
(अ) पतिष्यामि (इ) पतसि
(उ) पतिष्यति (ऋ) पतिष्यसि

192. 'पच्' धातु है?
(अ) आत्मनेपदी (इ) परस्मैपदी
(उ) उभयपदी (ऋ) इनमें से कोई नहीं

193. 'भू' धातु का लोट्लकार प्रथमपुरुष बहुवचन में शुद्ध रूप कौन सा है? -
(अ) भवन्तु (इ) भवति
(उ) भवताम् (ऋ) भवन्ति

194. 'सेवै' क्रियापद में कौन सा लकार है? -
(अ) विधिलिङ् (इ) लट्
(उ) लोट् (ऋ) लृट्

195. 'हस्' धातु का विधिलिङ् प्रथमपुरुष बहुवचन में क्या रूप बनता है ? -
(अ) हसेयुः (इ) हसेयम्
(उ) हसेत् (ऋ) हसेः

196. 'घ्रास्यति' क्रियापद में कौन सा लकार है ?
(अ) लृट् (इ) लङ्
(उ) लट् (ऋ) लोट्

197. 'दृश्' धातु के लृट्लकार एकवचन प्रथमपुरुष में होगा-
(अ) पश्यति (इ) द्रक्ष्यति
(उ) दृश्यति (ऋ) पश्यामि

198. निम्न में से कौन सा रूप धातु का नही है?
(अ) भवति (इ) भवतः
(उ) भवन्तः (ऋ) भवताम्

199. 'तौ बालकौ हसतः' में लकार, पुरुष तथा वचन है-
(अ) लोट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन
(इ) विधिलिङ् प्रथमपुरुष द्विवचन
(उ) लट्लकार प्रथमपुरुष द्विवचन
(ऋ) लृट्लकार प्रथमपुरुष द्विवचन

181. (ऋ), 182. (उ), 183. (उ), 184. (ऋ), 185. (इ), 186. (अ), 187. (इ), 188. (ऋ), 189. (ऋ), 190. (अ), 191. (ऋ), 192. (उ), 193. (अ), 194. (उ), 195. (अ), 196. (अ), 197. (इ), 198. (उ), 199. (उ),

200. 'अवोचत्' में लकार है -
(अ) लङ् (इ) लिट्
(उ) लुङ् (ऋ) लृङ्

201. 'भ्वादिगण' की प्रतिनिधि धातु है-
(अ) चुर् (इ) दिव्
(उ) भू (ऋ) अद्

202. 'अकुरुथाः' का लकार पुरुष वचन है -
(अ) लङ्लकार मध्यमपुरुष एकवचन
(इ) लट्लकार मध्यमपुरुष एकवचन
(उ) लट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन
(ऋ) लृट्लकार मध्यमपुरुष एकवचन

203. 'अपठत्' रूप है -
(अ) लङ्लकार मध्यमपुरुष एकवचन का
(इ) लट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का
(उ) लोट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का
(ऋ) लङ्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का

204. 'एधताम्' रूप है-
(अ) लङ्लकार का (इ) लोट्लकार का
(उ) लिट्लकार का (ऋ) लुङ्लकार का

205. 'हन्' धातु का लङ्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप है -
(अ) अहन् (इ) अवधः
(उ) अवधीत् (ऋ) वधः

206. 'भवानि' में लकार है -
(अ) लट् (इ) विधिलिङ्
(उ) लङ् (ऋ) लोट्

207. 'आसीत्' क्रिया का लकार है -
(अ) लुङ् (इ) लङ्
(उ) लिट् (ऋ) लृङ्

208. 'अस्' धातु का लृट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप है-
(अ) भविष्यति (इ) असि
(उ) अस्मि (ऋ) सन्ति

209. श्यन्, शः तथा श्नुः प्राप्त होते है-
(अ) दिवादि, तुदादि एवं स्वादि में
(इ) तुदादि, जुहोत्यादि एवं दिवादि में
(उ) अदादि, चुरादि एवं स्वादि में
(ऋ) भ्वादि, दिवादि एवं तुदादि में

210. 'रुधिर्' आवरणे का लट्लकार अन्यपुरुष एकवचन का रूप है-
(अ) रुणद्धि (इ) रून्धे
(उ) दोनों ही (ऋ) दोनों नहीं

211. 'दुह्' धातु के लट्लकार मध्यमपुरुष बहुवचन का रूप है-
(अ) दुहथ (इ) दुहथः
(उ) दोहथ (ऋ) दुग्ध

212. विधिलिङ्लकार के रूप किस वर्ग में हैं-
(अ) भवतु, पठताम्,
(इ) भवेत्, भवेत
(उ) लभताम् , सेवन्ताम्
(ऋ) वुदते, रूणद्धि

213. 'हन्' धातु के लङ्लकार के प्रथमपुरुष एकवचन में क्या रूप होगा -
(अ) अहन्यात् (इ) अहत्
(उ) अहन् (ऋ) अहनन्

214. नीचे लिखे धातु रूपों में आत्मनेपद के रूप किस वर्ग में हैं-
(अ) लभै, लभावहै, लभामहै
(इ) पास्यामि, पास्यावः, पास्यामः
(उ) ब्रूयात्, ब्रूयाताम्, ब्रूयुः
(ऋ) गच्छेत्, गच्छेताम्, गच्छेयुः

215. 'दा' धातु के मध्यमपुरुष के रूप किस वर्ग में हैं ?-
(अ) ददाति, दत्तः, ददति (इ) दत्ते, ददाते, ददते
(उ) दद्याः, दद्यातम्, दद्यात (ऋ) ददे, ददावहे, ददामहे

216. 'चुर्' धातु का 'चोरयतम्' रूप होगा -
(अ) लट्लकार, मध्यमपुरुष, द्विवचन
(इ) लोट्लकार मध्यमपुरुष, द्विवचन
(उ) विधिलिङ्लकार मध्यमपुरुष, द्विवचन
(ऋ) लङ्लकार मध्यमपुरुष, द्विवचन

200. (उ), 201. (उ), 202. (अ), 203. (ऋ), 204. (इ), 205. (अ), 206. (ऋ), 207. (इ), 208. (अ), 209. (अ), 210. (अ), 211. (ऋ), 212. (इ), 213. (उ), 214. (अ), 215. (उ), 216. (इ),

217. संस्कृत में धातुरूप कहते है -
(अ) संज्ञा पद को (इ) कर्मपद को
(उ) क्रियापद को (ऋ) विशेषण पद को

218. इनमें से कौन सी धातु सकर्मक नहीं है -
(अ) पठ् (इ) हन्
(उ) अक्ष (ऋ) नृत्

219 'भू' धातु णिजन्त का लट्लकार, उत्तमपुरुष एकवचन में रूप होगा -
(अ) भावयामि (इ) भावयमि
(उ) भवयामि (ऋ) भवयमि

220. 'अस्' धातु का लट्लकार उत्तमपुरुष बहुवचन में रूप होगा -
(अ) स्मः (इ) अस्मः
(उ) असि (ऋ) अस्ति

221. 'अस्' धातु का लोट्लकार मध्यमपुरुष एकवचन में रूप होगा-
(अ) असि (इ) एधि
(उ) स्तः (ऋ) स्थः

222. 'हन्ति' रूप कहाँ बनता है ?
(अ) प्रथमपुरुष बहुवचन में (इ) उत्तमपुरुष बहुवचन में
(उ) प्रथमपुरुष एकवचन में (ऋ) मध्यमपुरुष एकवचन में

223. 'ददति' रूप बनता है -
(अ) उत्तमपुरुष बहुवचन में (इ) प्रथमपुरुष एकवचन में
(उ) प्रथमपुरुष बहुवचन में (ऋ) प्रथमपुरुष द्विवचन में

224. 'भी' धातु परस्मैपद लट्लकार मध्यमपुरुष एकवचन का रूप है -
(अ) बिभीत (इ) बिभेतु
(उ) बिभेषि (ऋ) बिभेमि

225. 'चिकीर्षुः' किस धातु से बना है ?
(अ) चि (इ) कृष्
(उ) सु (ऋ) कृ

226. 'उवाच' किस लकार का रूप है? -
(अ) लिङ् (इ) लिट्
(उ) लङ् (ऋ) लट्

227. 'विघाताय' में कौन सी धातु है ? -
(अ) या (इ) धा
(उ) हन् (ऋ) तन्

228. 'अपजिहीर्षुः' में कौन सी धातु है?
(अ) हृ (इ) जि
(उ) आप् (ऋ) हृष्

229. 'उह्यते' में कौन सी धातु है? -
(अ) ऊह् (इ) या
(उ) हा (ऋ) वह्

230. 'भी' धातु के लोट्लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन का रूप होगा-
(अ) भयतु (इ) विभीतु
(उ) बिभेतु (ऋ) बभयतु

231. 'लभ्' धातु आत्मनेपदी का विधिलिङ् मध्यमपुरुष बहुवचन का रूप है -
(अ) लभेत् (इ) लभध्वम्
(उ) लभेध्वम् (ऋ) लभेः

232. 'ब्रू' धातु के लोट्लकार अन्यपुरुष एकवचन का रूप है-
(अ) ब्रवीतु (इ) ब्रूहि
(उ) ब्रवतु (ऋ) वदतु

233. 'जन्' धातु आत्मनेपदी के विधिलिङ्लकार, उत्तमपुरुष, एकवचन का रूप है -
(अ) जायेय (इ) जाये
(उ) जायेयम् (ऋ) जायेत

234. संस्कृत में कितने लकार हैं -
(अ) 17 (इ) 20
(उ) 10 (ऋ) 40

235. लट्लकार किस काल को कहा जाता है?
(अ) भूत (इ) वर्तमान
(उ) भविष्य (ऋ) इनमें से कोई नही

236. सकर्मक, अकर्मक, द्विकर्मक यह विभाजन किसका है-
(अ) धातुओं का (इ) पदों का
(उ) वाक्यों का (ऋ) सभी का

217. (उ), 218. (ऋ), 219. (अ), 220. (अ), 221. (इ), 222. (उ), 223. (उ), 224. (उ), 225. (ऋ), 226. (इ), 227. (उ), 228. (अ), 229. (ऋ), 230. (उ), 231. (उ), 232. (अ), 233. (अ), 234. (उ), 235. (इ), 236. (अ),

237. परस्मैपदी, आत्मनेपदी, उभयपदी- यह विभाजन किसका है-
(अ) सुबन्ध का (इ) तिङन्त का
(उ) लकार का (ऋ) धातु का

238. सेट्, अनिट्, वेट् - इसप्रकार का विभाजन कहाँ मिलता है-
(अ) लकारों में (इ) पुरुषों में
(उ) वचन में (ऋ) धातु में

239. भ्वादिगण, अदादिगण, तनादिगण - इसप्रकार 10 गणों में विभाजित हैं -
(अ) धातुयें (इ) सुबन्त
(उ) वाक्य (ऋ) इनमें से कोई भी

240. पाणिनीय धातुपाठ में कुल कितनी धातुयें है -
(अ) लगभग 4000 (इ) लगभग 2000
(उ) लगभग 5000 (ऋ) लगभग 10,000

241. 'गण्' धातु के लोट्लकार मध्यमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) गणय (इ) गणयाम
(उ) गणयतु (ऋ) गणयत

242. 'अद्' धातु के लोट्लकार प्रथमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) अदाम (इ) अन्तु
(उ) अदाव (ऋ) अदन्तु

243. 'अद्' धातु के लङ्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) आदः (इ) आत्तम्
(उ) आत्ताम् (ऋ) आदत्

244. 'अद्' धातु के लृट्लकार उत्तमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) अत्स्यसि (इ) अत्स्यामः
(उ) अत्स्यामि (ऋ) अत्स्यावः

237. (ऋ), 238. (ऋ), 239. (अ), 240. (इ), 241. (अ), 242. (ऋ), 243. (ऋ), 244. (उ)।

9. शब्दरूप-गङ्गा

1. सर्वनाम शब्द 'इदम्' स्त्रीलिङ्ग षष्ठी विभक्ति, बहुवचन का रूप होगा -
(अ) एषाम् (इ) एतेसाम्
(उ) एतासाम् (ऋ) आसाम्

2. 'सखि' शब्द द्वितीया विभक्ति, एकवचन का रूप है -
(अ) सखिम् (इ) सखीन्
(उ) सखी (ऋ) सखायम्

3. 'युष्मद्' सर्वनाम शब्द, पञ्चमी विभक्ति, बहुवचन का रूप होगा -
(अ) युष्मत् (इ) युष्मभ्यम्
(उ) युष्माभिः (ऋ) युष्मात्

4. 'असौ, अमू, अमी' ये किस प्रातिपदिक के रूप हैं -
(अ) 'इदम्' शब्द पुँल्लिङ्ग (इ) 'अदस्' शब्द पुँल्लिङ्ग
(उ) 'इदम्' शब्द स्त्रीलिङ्ग
(ऋ) 'इदम्' शब्द के नपुंसकलिङ्ग

5. निम्नलिखित वर्गों में केवल पुँल्लिङ्ग शब्द किस वर्ग में हैं?
(अ) सखा, हरि, दारा (इ) महिमा, सविता, अञ्जलिः
(उ) राम, भार्या, सीता (ऋ) मधुरम्, आम्र, फलम्

6. निम्नलिखित में चतुर्थी विभक्ति एकवचन का कौन सा रूप है ?
(अ) भानौ (इ) ज्ञाने
(उ) दध्ने (ऋ) हरे

7. निम्नलिखित वर्गों में चतुर्थी विभक्ति के रूप किस वर्ग में है-
(अ) कः, का (इ) तम्, ताम्
(उ) तस्याम्, तस्याः (ऋ) तस्मै, ताभ्यः

8. 'माता' रूप का मूल शब्द है ?
(अ) आकारान्त है (इ) अकारान्त है
(उ) इकारान्त है (ऋ) ऋकारान्त है

9. निम्नलिखित में से स्त्रीलिङ्ग तृतीयाविभक्ति का रूप कौन सा है ?
(अ) नद्यः (इ) रमया
(उ) धेनोः (ऋ) स्त्रियै

10. 'अप्' (जल) शब्द के रूप कितने वचनों में चलते हैं?
(अ) केवल एकवचन (इ) केवल बहुवचन
(उ) केवल द्विवचन (ऋ) एकवचन और द्विवचन

11. सर्वनाम शब्द 'तद्' पुँल्लिङ्ग , प्रथमा विभक्ति बहुवचन का रूप होगा -
(अ) तानि (इ) ताः
(उ) ते (ऋ) तैः

12. 'सखि' शब्द का प्रथमा बहुवचन का रूप है -
(अ) सखयः (इ) सख्यः
(उ) सख्याः (ऋ) सखायः

13. 'भूपति' शब्द का षष्ठी एकवचन का रूप है -
(अ) भूपत्याः (इ) भूपत्युः
(उ) भूपतेः (ऋ) भूपतयः

14. 'विश्वा' (स्त्री) शब्द का सप्तमी एकवचन का रूप है -
(अ) विश्वायाम् (इ) विश्वस्याम्
(उ) विश्वये (ऋ) विश्वयौ

15. 'तद्' शब्द का पुँल्लिङ्ग द्वितीया बहुवचन का रूप है -
(अ) तौ (इ) ते
(उ) तान् (ऋ) तेषाम्

16. 'तद्' शब्द का स्त्रीलिङ्ग षष्ठी बहुवचन का रूप बनता है-
(अ) तेषाम् (इ) तस्याम्
(उ) तासाम् (ऋ) ताषाम्

17. 'नदी' शब्द का द्वितीया बहुवचन का रूप है -
(अ) नदीः (इ) नद्यः
(उ) नदीन् (ऋ) नदीभिः

1. (ऋ), 2. (ऋ), 3. (अ), 4. (इ), 5. (अ), 6. (उ), 7. (ऋ), 8. (ऋ), 9. (इ), 10. (इ), 11. (उ), 12. (ऋ), 13. (उ), 14. (इ), 15. (उ), 16. (उ), 17. (अ),

18. 'सर्व' शब्द का स्त्रीलिङ्ग सप्तमी एकवचन का रूप है-
(अ) सर्वस्मिन् (इ) सर्वासम्
(उ) सर्वायै (ऋ) सर्वस्याम्

19. 'गो' शब्द का षष्ठी बहुवचन का रूप होगा -
(अ) गोनाम् (इ) गोवाम्
(उ) गवाम् (ऋ) गवानाम्

20. 'युष्मद्' शब्द के षष्ठी एकवचन का रूप होगा -
(अ) तव (इ) युष्मस्य
(उ) युष्मत् (ऋ) त्वत्

21. 'अस्मद्' शब्द चतुर्थी बहुवचन में रूप चलता है -
(अ) अस्मभ्यम् (इ) अस्माभ्यः
(उ) असमभ्यः (ऋ) अस्मेभ्यः

22. 'बालक' शब्द का द्वितीया बहुवचन का रूप है -
(अ) बालकाः (इ) बालकान्
(उ) बालकेन (ऋ) बालकैः

23. 'षष्ठी विभक्ति' में 'दधि' का सही रूप होगा -
(अ) दध्नोः (इ) दधीनि
(उ) दधनस्य (ऋ) दध्न

24. 'स्वयम्भुवि' किस विभक्ति का रूप है ?
(अ) तृतीया (इ) चतुर्थी
(उ) षष्ठी (ऋ) सप्तमी

25. 'कवि' शब्द का पञ्चमी एकवचन का रूप है -
(अ) कवेः (इ) कवयः
(उ) कवये (ऋ) कवीन्

26. 'फलानाम्' किस विभक्ति का रूप है -
(अ) चतुर्थी (इ) षष्ठी
(उ) पञ्चमी (ऋ) सप्तमी

27. 'सुधियम्' किस विभक्ति का रूप है ?
(अ) द्वितीया (इ) पञ्चमी
(उ) तृतीया (ऋ) चतुर्थी

28. 'पञ्चमी' विभक्ति में 'भानु' का सही रूप है -
(अ) भानवे (इ) भानोः
(उ) भानू (ऋ) भानुना

29. 'तत्' सर्वनाम का षष्ठी विभक्ति का रूप है -
(अ) तेन (इ) तस्मात्
(उ) तस्य (ऋ) तत्

30. 'त्वत्' किस सर्वनाम का रूप है ?
(अ) युष्मद् (इ) तत्
(उ) अस्मद् (ऋ) इदम्

31. 'मह्यम्' किस सर्वनाम का रूप है ?
(अ) अदस् (इ) युष्मद्
(उ) अस्मद् (ऋ) इदम्

32. तृतीया विभक्ति में 'कवि' शब्द का सही रूप होगा -
(अ) कविना (इ) कवीनाम्
(उ) कवौ (ऋ) कवये

33. 'मधुनी' किस विभक्ति का रूप है ?
(अ) चतुर्थी (इ) षष्ठी
(उ) पञ्चमी (ऋ) द्वितीया

34. 'नदीः' किस विभक्ति का रूप है -
(अ) तृतीया (इ) प्रथमा
(उ) पञ्चमी (ऋ) द्वितीया

35. 'मालायाम्' किस विभक्ति का रूप है ?
(अ) पञ्चमी (इ) षष्ठी
(उ) सप्तमी (ऋ) द्वितीया

36. 'पति' का चतुर्थी विभक्ति में रूप होगा -
(अ) पतये (इ) पत्यै
(उ) पत्या (ऋ) पत्ये

37. 'जलमुच्' शब्द का प्रथमा विभक्ति एकवचन का रूप है-
(अ) जलमुचि (इ) जलमुक्
(उ) जलमुचे (ऋ) जलमुचौ

38. 'अस्मद्' शब्द का चतुर्थी विभक्ति एकवचन का रूप होगा-
(अ) आवाम् (इ) अस्मभ्यम्
(उ) मे/मह्यम् (ऋ) मयि

18. (ऋ), 19. (उ), 20. (अ), 21. (अ), 22. (इ), 23. (अ), 24. (ऋ), 25. (अ), 26. (इ), 27. (अ), 28. (इ), 29. (उ), 30. (अ), 31. (उ), 32. (अ), 33. (ऋ), 34. (ऋ), 35. (उ), 36. (ऋ), 37. (इ), 38. (उ),

39. 'हन्' धातु का रूप लोट्लकार मध्यमपुरुष एकवचन होगा -

(अ) हन्ति (इ) हतवान्

(उ) जहि (ऋ) हतः

40. 'विद्वस्' शब्द का सप्तमी बहुवचन का रूप होगा -

(अ) विद्वषः (इ) विद्वत्सु

(उ) विद्वांसु (ऋ) विद्यासु

41. 'युवन्' शब्द का षष्ठी विभक्ति एकवचन का रूप होगा -

(अ) युने (इ) युवनि

(उ) युनानि (ऋ) यूनः

42. 'द्याम्' 'द्यो' शब्द की किस विभक्ति का रूप है ?

(अ) प्रथमा (इ) चतुर्थी

(उ) द्वितीया (ऋ) तृतीया

43. 'गुणिन्' किस विभक्ति का रूप है ?

(अ) पञ्चमी (इ) तृतीया

(उ) द्वितीया (ऋ) सम्बोधन

44. 'अदस्' (नपुंसकलिङ्ग) शब्द का द्वितीया बहुवचन का रूप होगा -

(अ) अमूनि (इ) असौ

(उ) अदः (ऋ) असूनि

45. 'युष्मद्' शब्द का सप्तमी बहुवचन का रूप होता है-

(अ) युष्मत्सु (इ) युष्माकम्

(उ) युष्मासु (ऋ) त्वयि

46. 'पति' शब्द का सप्तमी एकवचन का रूप है -

(अ) पत्यौ (इ) पत्युः

(उ) पतीन् (ऋ) पत्ये

47. 'बालक' शब्द का षष्ठी बहुवचन का रूप है -

(अ) बालकेभ्यः (इ) बालकान्

(उ) बालकैः (ऋ) बालकानाम्

48. 'अक्षिषु' किस विभक्ति का रूप है? -

(अ) चतुर्थी (इ) सप्तमी

(उ) षष्ठी (ऋ) तृतीया

49. 'महीभुजे' किस विभक्ति का रूप है ? -

(अ) सप्तमी (इ) षष्ठी

(उ) चतुर्थी (ऋ) प्रथमा

50. 'बालक' शब्द का चतुर्थी एकवचन का रूप है -

(अ) बालकात् (इ) बालकान्

(उ) बालकाय (ऋ) बालके

51. 'अस्मद्' शब्द का सप्तमी एकवचन का रूप है-

(अ) मया (इ) मम

(उ) मयि (ऋ) मत्

52. 'पितृ' शब्द का सप्तमी एकवचन में रूप क्या होगा ?

(अ) पितरि (इ) पित्रौ

(उ) पितुः (ऋ) पित्रे

53. 'राजन्' शब्द का सप्तमी एकवचन में रूप होगा -

(अ) राजि (इ) राजौ

(उ) राज्ञि एवं राजनि (ऋ) राज्ञौ

54. 'युष्मद्' शब्द के चतुर्थी बहुवचन का रूप होगा -

(अ) युष्मेभ्यः (इ) वः/युष्मभ्यम्

(उ) तुभ्यः (ऋ) युष्मेभ्यम्

55. 'अस्मद्' के स्त्रीलिङ्ग में क्या रूप बनता है ?

(अ) अहम् (इ) मया

(उ) अहमा

(ऋ) कोई लिङ्ग नहीं होता; तीनों लिङ्गों में समान रूप होगा।

56. 'श्री' शब्द के द्वितीया बहुवचन का रूप होगा -

(अ) श्री (इ) श्रियः

(उ) श्रीन् (ऋ) श्रियम्

57. 'मति' शब्द का चतुर्थी एकवचन है -

(अ) मतौ (इ) मतायै

(उ) मत्यै तथा मतये दोनों

(ऋ) मत्यै तथा मतये ये दोनों नहीं

58. 'पितुः' 'पितृ' शब्द का कौन सा रूप है ? -

(अ) सप्तमी एकवचन (इ) षष्ठी एकवचन

(उ) द्वितीया बहुवचन (ऋ) प्रथमा बहुवचन

39. (उ), 40. (इ), 41. (ऋ), 42. (उ), 43. (ऋ), 44. (अ), 45. (उ), 46. (अ), 47. (ऋ), 48. (इ), 49. (उ), 50. (उ), 51. (उ), 52. (अ), 53. (उ), 54. (इ), 55. (ऋ), 56. (इ), 57. (उ), 58. (इ),

59. 'सरित्' शब्द का सप्तमी विभक्ति एकवचन का रूप है-
(अ) सरितोः (इ) सरिति
(उ) सरिताम् (ऋ) सरिते

60. 'मातृ' शब्द के सप्तमी विभक्ति एकवचन में रूप होगा -
(अ) मातरि (इ) मातुः
(उ) मातरम् (ऋ) मातोः

61. 'हनुमते नमः' हनुमते किस विभक्ति का रूप है ?
(अ) चतुर्थी (इ) सप्तमी
(उ) द्वितीया (ऋ) पञ्चमी

62. 'फल' के द्वितीया विभक्ति का तीनों वचनों के रूप हैं -
(अ) फलम्, फले, फलानि
(इ) फलेन, फलाभ्याम्, फलैः
(उ) फलाय, फलाभ्याम्, फलैः
(ऋ) इनमें से कोई नहीं

63. 'अस्माकम्' का मूल प्रातिपदिक है -
(अ) राम (इ) युष्मद्
(उ) अदस् (ऋ) अस्मद्

64. 'साधु' शब्द का सप्तमी विभक्ति एकवचन का रूप होगा-
(अ) साधुषु (इ) साधुभ्याम्
(उ) साधूनाम् (ऋ) साधौ

65. 'एतत् एने एनानि' किस शब्द के वैकल्पिक रूप हैं -
(अ) इदम् (इ) यत्
(उ) एतत् (ऋ) अदस्

66. किस शब्द का रूप द्विवचन में नही चलता है -
(अ) उभ (इ) अधर
(उ) पूर्व (ऋ) उभय

67. 'भवत्' के साथ किस पुरुष की क्रिया प्रयुक्त होती है -
(अ) प्रथमपुरुष (इ) मध्यमपुरुष
(उ) उत्तमपुरुष (ऋ) प्रथम तथा मध्यम

68. अत्यधिक समीपस्थ वस्तु के लिए प्रयुक्त होता है -
(अ) इदम् (इ) अदस्
(उ) एतद् (ऋ) तद्

69. 'चन्द्रमस्' शब्द का प्रथमा द्विवचन में रूप होगा -
(अ) चन्द्रमाः (इ) चन्द्रमसौ
(उ) चन्द्रमसम् (ऋ) चन्द्रमस्सु

70. 'विद्वस्' शब्द का तृतीया एकवचन में रूप होगा -
(अ) विदुषि (इ) विदुषा
(उ) विद्वांसौ (ऋ) विद्वान्

71. 'राजन्' शब्द का द्वितीया बहुवचन में रूप बनेगा -
(अ) राज्ञः (इ) राजानः
(उ) राजा (ऋ) राज्ञाम्

72. 'वारि' शब्द का षष्ठी द्विवचन में रूप है ?
(अ) वारिणोः (इ) वारिषु
(उ) वारि (ऋ) वारिणी

73. 'भानु' शब्द का प्रथमा बहुवचन में रूप होगा -
(अ) भानवः (इ) भानुषु
(उ) भानू (ऋ) भान्वोः

74. 'पति' शब्द का षष्ठी द्विवचन में रूप होगा ?
(अ) पतयः (इ) पत्या
(उ) पत्योः (ऋ) पतीन्

75. 'धेनु' शब्द का पञ्चमी एकवचन का रूप इनमें से कौन है?
(अ) धेनुम् (इ) धेनुभ्यः
(उ) धेन्वाः (ऋ) धेनु

76. 'राजन्' शब्द का तृतीया एकवचन का रूप इनमें से कौन है -
(अ) राज्ञा (इ) राज्ञाम्
(उ) राजानः (ऋ) राजभिः

77. 'नदी' शब्द का प्रथमा बहुवचन में रूप निम्न में से कौन है?
(अ) नद्यः (इ) नद्याः
(उ) नद्या (ऋ) नदीः

78. 'भवत्' शब्द का षष्ठी बहुवचन में रूप होगा -
(अ) भवन्तौ (इ) भवन्तः
(उ) भवताम् (ऋ) भवतः

59. (इ), 60. (अ), 61. (अ), 62. (अ), 63. (ऋ), 64. (ऋ), 65. (उ), 66. (ऋ), 67. (अ), 68. (उ), 69. (इ), 70. (इ), 71. (अ), 72. (अ), 73. (अ), 74. (उ), 75. (उ), 76. (अ), 77. (अ), 78. (उ),

79. 'भानु' शब्द का षष्ठी बहुवचन में रूप होगा -
(अ) भानुभिः (इ) भानूनाम्
(उ) भानून् (ऋ) भानोः

80. 'रमा' शब्द का तृतीया बहुवचन में रूप होगा -
(अ) रमाणाम् (इ) रमासु
(उ) रमाभिः (ऋ) रमाः

81. 'मति' शब्द का तृतीया एकवचन में रूप होगा -
(अ) मत्याः (इ) मतया
(उ) मतिना (ऋ) मत्या

82. 'आत्मन्' शब्द का प्रथमा द्विवचन में रूप होगा -
(अ) आत्मभिः (इ) आत्मानो
(उ) आत्मनौ (ऋ) आत्मानौ

83. 'भवत्' शब्द का तृतीया एकवचन में रूप होगा -
(अ) भवतोः (इ) भवन्तः
(उ) भवतः (ऋ) भवता

84. 'कवि' शब्द का तृतीया द्विवचन में रूप होगा -
(अ) कवयः (इ) कविभ्याम्
(उ) कवीभ्याम् (ऋ) कवभ्याम्

85. 'युष्मद्' शब्द का चतुर्थी द्विवचन में रूप होगा -
(अ) यूयम् (इ) युवोभ्याम्
(उ) युवाभ्याम् (ऋ) यूभ्याम्

86. 'एतद्' का चतुर्थी एकवचन में रूप होगा -
(अ) एतेभ्यः (इ) एतायै
(उ) एताय (ऋ) एतस्मै

87. 'पितृ' शब्द का प्रथमा द्विवचन का रूप होगा -
(अ) पितौ (इ) पितरौ
(उ) पितरम् (ऋ) पितरः

88. 'युष्मद्' शब्द का प्रथमा एकवचन का रूप होगा -
(अ) युष्माषु (इ) त्वम्
(उ) असौ (ऋ) अहम्

89. 'अस्मद्' शब्द का प्रथमा एकवचन में रूप होगा -
(अ) असौ (इ) आवाम्
(उ) अहम् (ऋ) अयम्

90. 'एतद्' शब्द का पुँलिङ्ग में द्वितीया बहुवचन का रूप होगा -
(अ) एषः (इ) एतान्
(उ) एतत् (ऋ) एते

91. 'युष्मद्' का प्रथमा द्विवचन में रूप होगा -
(अ) त्वाम् (इ) युष्मान्
(उ) युवाम् (ऋ) यूयम्

92. 'एतद्' नपुंसकलिङ्ग में तृतीया एकवचन का रूप होगा -
(अ) एतानि (इ) एतैः
(उ) एतत् (ऋ) एतेन

93. 'पति' शब्द का सम्बोधन का रूप होगा -
(अ) हे पते ! (इ) हे पितः !
(उ) हे पत्यौ ! (ऋ) हे पतिः!

94. 'वारि' शब्द का तृतीया बहुवचन में रूप होगा -
(अ) वारिभिः (इ) वारिषु
(उ) वारिभ्याम् (ऋ) वारीणि

95. 'राजन्' शब्द का षष्ठी द्विवचन में रूप होगा -
(अ) राजानः (इ) राज्ञोः
(उ) राजभ्याम् (ऋ) राज्ञे

96. 'आत्मन्' शब्द का चतुर्थी एकवचन का रूप होगा -
(अ) आत्मानाम् (इ) आत्मने
(उ) आत्मनौ (ऋ) आत्मानाय

97. 'सर्व' शब्द का प्रथमा द्विवचन का रूप होगा -
(अ) सर्वयोः (इ) सर्वान्
(उ) सर्वौ (ऋ) सर्वैः

98. 'सर्व' शब्द का (स्त्री.) प्रथमा बहुवचन का रूप होगा-
(अ) सर्वाषु (इ) सर्वाः
(उ) सर्वे (ऋ) सर्वाणि

99. 'सर्व' शब्द (नपु.) का तृतीया एकवचन का रूप है -
(अ) सर्वया (इ) सर्वाम्
(उ) सर्वा (ऋ) सर्वेण

100. 'तत्' शब्द (स्त्री.) का पञ्चमी विभक्ति एकवचन का रूप होगा-
(अ) तस्यै (इ) तेभ्यः
(उ) तस्याः (ऋ) तस्मात्

101. 'तत्' शब्द (पुँ.) द्वितीया एकवचन का रूप होगा -
(अ) तस्मात (इ) तेन
(उ) तत् (ऋ) तम्

79. (इ), 80. (उ), 81. (ऋ), 82. (ऋ), 83. (ऋ), 84. (इ), 85. (उ), 86. (ऋ), 87. (इ), 88. (इ), 89. (उ), 90. (इ), 91. (उ), 92. (ऋ), 93. (अ), 94. (अ), 95. (इ), 96. (इ), 97. (उ), 98. (इ), 99. (ऋ), 100. (उ), 101. (ऋ),

102. 'तत्' शब्द (नपुं.) का चतुर्थी बहुवचन का रूप होगा -
(अ) तस्याः (इ) तेभ्यः
(उ) ताम् (ऋ) तयोः

103. 'किम' (पुँ.) शब्द का पञ्चमी एकवचन का रूप होगा -
(अ) केन (इ) काम्
(उ) कस्याः (ऋ) कस्मात्

104. 'किम् (स्त्री.) का द्वितीया बहुवचन का रूप होगा -
(अ) केभ्यः (इ) कस्मै
(उ) काः (ऋ) कान्

105. 'किम्' (नपुं.) शब्द का द्वितीया बहुवचन का रूप होगा-
(अ) काभ्याम् (इ) कानि
(उ) कयोः (ऋ) काः

106. 'रवि' शब्द का चतुर्थी एकवचन का रूप है -
(अ) रवेः (इ) रवे
(उ) रवये (ऋ) रवै

107. 'नृ' शब्द का षष्ठी बहुवचन का रूप है -
(अ) नारूणाम् (इ) नृणाम्
(उ) नाराणाम् (ऋ) नराणाम्

108. 'अक्षि' शब्द के इकारान्त नपुंसकलिङ्ग के तृतीया एकवचन होगा -
(अ) अक्ष्णा (इ) अक्षणा
(उ) अक्षिणा (ऋ) अक्षेन

109. 'दधि' शब्द का सप्तमी विभक्ति का रूप होगा -
(अ) दध्नि-दध्न्योः-दधीसु (इ) दध्नि-दध्न्योः-दधिसु
(उ) दध्नि, दधनि-दध्नोः-दधिषु
(ऋ) दध्नि-दध्योः-दधीषु

110. 'एनाम् - एने - एनाः' यह किस सर्वनाम का वैकल्पिक रूप है-
(अ) इदम् शब्द पुँल्लिङ्ग (इ) इदम् शब्द स्त्रीलिङ्ग
(उ) एतत् शब्द स्त्री. (ऋ) अयम् शब्द

111. 'अदस्' शब्द के (स्त्री.) चतुर्थी एकवचन का रूप होगा-
(अ) अमायै (इ) अमुने
(उ) अमुष्यै (ऋ) अमुष्मै

112. 'अदस्' शब्द का नपुंसकलिङ्ग में रूप होगा-
(अ) अदः - अमू -अमूनि (इ) असौ - अमू - अमूनि
(उ) असौ - अमू - अमी (ऋ) असौ - अमू- अमूः

113. 'अस्मद्' शब्द में 'नः' कितने बार आया है-
(अ) चतुर्वारम् (इ) त्रिवारम्
(उ) द्विवारम् (ऋ) इनमें से कोई नहीं

114. 'विद्वस्' शब्द का 'विदुषः' रूप कितनी विभक्तियों में आया है?
(अ) द्वितीया - पञ्चमी - षष्ठी
(इ) प्रथमा - तृतीया - पञ्चमी
(उ) द्वितीया - तृतीया -चतुर्थी
(ऋ) द्वितीया - पञ्चमी - सप्तमी

115. 'भवत्' शब्द का पुँल्लिङ्ग में 'भवतः' रूप कितनी बार और कहाँ आया है -
(अ) त्रिवारम् -द्वि. बहु., च. प. एकवचन
(इ) त्रिवारम् - द्वि. बहु., प. ष. एकवचन
(उ) द्विवारम् - द्वि. बहु., ष. एकवचन
(ऋ) चतुर्वारम् - प्र. द्वि. बहु., च. ष. एकवचन

116. 'केषाम् , कासाम् , केषाम्' यह रूप नहीं है -
(अ) 'यत्' शब्द का (इ) किं शब्द (नपु.)
(उ) किं शब्द पु. (ऋ) किं शब्द त्रिलिङ्गेषु

117. इकारान्त 'मति' शब्द का द्वितीया बहुवचन का रूप होगा -
(अ) मतयः (इ) मत्यः
(उ) मतीः (ऋ) मतीन्

118. 'वधू' शब्द का चतुर्थी एकवचन का रूप होगा-
(अ) वध्वायै (इ) वध्वै
(उ) वध्वे (ऋ) वध्वौ

102. (इ), 103. (ऋ), 104. (उ), 105. (इ), 106. (उ), 107. (इ), 108. (अ), 109. (उ), 110. (उ), 111. (उ), 112. (अ), 113. (इ), 114. (अ), 115. (इ), 116. (अ), 117. (उ), 118. (इ),

119. 'आत्मन्' शब्द का लिङ्ग क्या है ?
(अ) अकारान्त नपुंसकलिङ्ग
(इ) नकारान्त पुँल्लिङ्ग
(उ) नकारान्त नपुंसकलिङ्ग
(ऋ) नकारान्त स्त्रीलिङ्ग

120. 'चन्द्रमस्' शब्द किस लिङ्ग में है ?
(अ) सकारान्तपुँल्लिङ्गे (इ) अकारान्तनपुंसके
(उ) सकारान्तस्त्रीलिङ्गे (ऋ) सकारान्तनपुंसके

121. 'चन्द्रमस्' शब्द का तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी द्विवचन का रूप है -
(अ) चन्द्रमोभ्याम्, चन्द्रमोभ्याम्, चन्द्रमोभ्याम्
(इ) चन्द्राभ्याम्, चन्द्राभ्याम्, चन्द्राभ्याम्
(उ) चनद्रमाभ्याम्, चन्द्रमाभ्याम्, चन्द्रमाभ्याम्
(ऋ) चन्द्रमाभ्याम्, चन्द्रोभ्याम्, चन्द्रभ्याम्

122. क्या 'नाम' शब्द नपुंसकलिङ्ग में है -
(अ) स्त्रीलिङ्गे अस्ति (इ) पुँल्लिङ्गे अस्ति
(उ) नास्ति (ऋ) सत्यम्

123. 'कति' शब्द किस लिङ्ग में है -
(अ) नित्यमेकवचनान्तः (इ) नित्यं बहुवचनान्तः
(उ) नित्यं द्विवचनान्तः (ऋ) त्रिवचनान्तः

124. 'मातृ' शब्द के द्वितीया बहुवचन का रूप होगा-
(अ) मातॄः (इ) मातरः
(उ) मातृन् (ऋ) मातॄन्

125. 'रवि' शब्द का सप्तमी द्विवचन होगा-
(अ) रव्योः (इ) रविभ्याम्
(उ) रवियोः (ऋ) रवो

126. 'शिशु' शब्द का सप्तमी एकवचन का रूप होगा -
(अ) शिशवे (इ) शिशौ
(उ) शिशे (ऋ) शिशो

127. 'नभस्' शब्द के द्वितीया द्विवचन का रूप होगा -
(अ) नभसी (इ) नभः
(उ) नभौ (ऋ) नभे

128. 'अदस्' शब्द के (स्त्री.) तृतीया विभक्ति बहुवचन का रूप होगा -
(अ) अमुष्यै (इ) अमाभिः
(उ) अमीभिः (ऋ) अमूभिः

129. 'इदम्' शब्द के (स्त्री.) चतुर्थी बहुवचन का रूप होगा-
(अ) अस्यै (इ) अस्मात्
(उ) अमीभ्यः (ऋ) आभ्यः

130. 'पथिन्' शब्द के द्वितीया बहुवचन का रूप होगा -
(अ) पन्थाः (इ) पन्थान्
(उ) पथीन् (ऋ) पथः

131. 'आत्मन्' शब्द का द्वितीया द्विवचन का रूप होगा -
(अ) आत्मनम् (इ) आत्मानौ
(उ) आत्मनौ (ऋ) आत्मने

132. 'चन्द्रमस्' शब्द का प्रथमा एकवचन का रूप होगा -
(अ) चन्द्राः (इ) चन्द्रमाः
(उ) चन्द्रमसः (ऋ) चन्द्रः

133. 'जन्म' शब्द का प्रथमा बहुवचन का रूप होगा -
(अ) जन्मानि (इ) जन्म
(उ) जन्माः (ऋ) जन्मः

134. 'कर्मन्' शब्द का पञ्चमी एकवचन का रूप होगा -
(अ) कर्माणः (इ) कर्मस्याः
(उ) कर्मात् (ऋ) कर्मणः

135. 'भवत्' शब्द का पुंसि द्वितीया विभक्ति का बहुवचन रूप होगा -
(अ) भवन्तान् (इ) भवता
(उ) भवतः (ऋ) भवता

136. 'नारी' शब्द का सम्बोधन प्रथमा एकवचन का रूप होगा -
(अ) हे नार्यः! (इ) हे नारीन्!
(उ) हे नारी! (ऋ) हे नारि!

137. 'गौरी' शब्द के द्वितीया बहुवचन का रूप होगा -
(अ) गौरीम् (इ) गौरीः
(उ) गौरीन् (ऋ) गौरी

138. 'कर्तृ' शब्द का सप्तमी एकवचन का रूप होगा -
(अ) कर्त्रा (इ) कर्त्रौ
(उ) कर्त्रे (ऋ) कर्तरि

119. (इ), 120. (अ), 121. (अ), 122. (ऋ), 123. (इ), 124. (अ), 125. (अ), 126. (इ), 127. (अ), 128. (ऋ), 129. (ऋ), 130. (ऋ), 131. (इ), 132. (इ), 133. (अ), 134. (ऋ), 135. (उ), 136. (ऋ), 137. (इ), 138. (ऋ),

139. 'तपस्' शब्द का तृतीया बहुवचन का रूप होगा -
(अ) तपसाभ्याम् (इ) तपोभ्यः
(उ) तपसा (ऋ) तपोभिः

140. 'दधि' शब्द का प्रथमा द्विवचन का रूप होगा -
(अ) दध्ना (इ) दधीनि
(उ) दधिनि (ऋ) दधिनी

141. 'करिन्' शब्द का षष्ठी द्विवचन का रूप होगा -
(अ) करिणौ (इ) करिणोः
(उ) करिभ्याम् (ऋ) करिणौः

142. 'राजन्' शब्द का 'राज्ञः' रूप कितनी विभक्तियों में आता है? -
(अ) द्वितीया, षष्ठी, सप्तमी
(इ) द्वितीया, तृतीया, पञ्चमी
(उ) द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी
(ऋ) द्वितीया, पञ्चमी, षष्ठी

143. 'इदम्' शब्द का (स्त्री.) पञ्चमी एकवचन का रूप होगा-
(अ) अस्यै (इ) अस्मात्
(उ) अस्याम् (ऋ) अस्याः

144. 'मर्माणि' इस शब्दरूप का 'मूल शब्द' क्या है?
(अ) मर्म (इ) मर्मत्
(उ) मर्मन् (ऋ) मर्मा

145. 'जन्मन्' शब्द के प्रथमा, द्वितीया बहुवचन का रूप होगा -
(अ) जन्मनि, जन्मानि (इ) जन्मानि, जन्मानि
(उ) जन्मानि, जन्मनः (ऋ) जन्म, जन्मानि

146. 'महत्' शब्द का सम्बोधन एकवचन का रूप होगा -
(अ) महान्तः (इ) महत्!
(उ) महन्! (ऋ) महान्!

147. 'भानु' शब्द का तृतीया एकवचन का रूप होगा -
(अ) भानेन (इ) भानुना
(उ) भान्वा (ऋ) भानुभिः

148. 'शम्भु' शब्द का सम्बोधन द्विवचन का रूप होगा -
(अ) हे शम्भौ (इ) हे शम्भू
(उ) हे शम्भ्वौ (ऋ) हे शम्भो

149. 'सन्धि' शब्द का द्वितीया बहुवचन का रूप होगा -
(अ) सन्ध्यः (इ) सन्धीन्
(उ) सन्धीः (ऋ) सन्धयः

150. 'अग्नि' शब्द का सप्तमी द्विवचन का रूप होगा -
(अ) अग्निभ्याम् (इ) अग्नेः
(उ) अग्नियोः (ऋ) अग्न्योः

151. 'भूपति' शब्द का षष्ठी एकवचन का रूप होगा -
(अ) भूपतयः (इ) भूपतेः
(उ) भूपत्युः (ऋ) भूपत्या

152. 'नदी' शब्द का तृतीया बहुवचन का रूप होगा -
(अ) नदीन् (इ) नदीभिः
(उ) नद्यः (ऋ) नदीः

153. 'मातुः' किस विभक्ति का रूप है-
(अ) पञ्चमी विभक्ति (इ) चतुर्थी विभक्ति
(उ) प्रथमा विभक्ति (ऋ) द्वितीया विभक्ति

154. 'पति' शब्द का तृतीया एकवचन का रूप होगा -
(अ) पत्या (इ) पतौ
(उ) पताम् (ऋ) पतिना

155. 'धातृ' शब्द का षष्ठी द्विवचन का रूप है -
(अ) धात्रा (इ) धात्रोः
(उ) धात्रयोः (ऋ) धातरोः

156. 'मति' शब्द का षष्ठी बहुवचन का रूप होगा -
(अ) मत्याम् (इ) मतीणाम्
(उ) मतीनाम् (ऋ) मतिनाम्

157. 'श्री' शब्द का प्रथमा एकवचन का रूप है -
(अ) श्री (इ) श्रीः
(उ) श्रियः (ऋ) श्रिः

158. 'युष्मद्' शब्द का पञ्चमी एकवचन का रूप होगा -
(अ) युष्मस्य (इ) तव
(उ) त्वत् (ऋ) युष्मत्

159. 'भवत्' शब्द का द्वितीया बहुवचन का रूप होगा-
(अ) भवान् (इ) भवन्तः
(उ) भवतान् (ऋ) भवतः

160. 'भगवत्' शब्द का षष्ठी बहुवचन का रूप होगा -
(अ) भगवानानाम् (इ) भगवतानाम्
(उ) भगवताम् (ऋ) भगवानाम्

139. (ऋ), 140. (ऋ), 141. (इ), 142. (ऋ), 143. (ऋ), 144. (उ), 145. (इ), 146. (उ), 147. (इ), 148. (इ), 149. (इ), 150. (ऋ), 151. (इ), 152. (इ), 153. (अ), 154. (अ), 155. (इ), 156. (उ), 157. (इ), 158. (उ), 159. (ऋ), 160. (उ)।

10. अशुद्धिपरिमार्जन-गङ्गा

निर्देश - कृपया प्रश्न क्र. 01 से 102 तक शुद्धवाक्य का चयन करें -

1. शुद्धवाक्य का चयन करें -

(अ) त्वं मे मित्रोऽस्ति (इ) त्वं मे मित्रमस्ति

(उ) त्वं मे मित्रमसि (ऋ) त्वं मे मित्रोऽसि

2. शुद्धवाक्य का चयन करें-

(अ) वृद्धः प्राणान् अत्यजत् (इ) वृद्धाः प्राणं अत्यजन्

(उ) वृद्धं प्राणं अत्यजन् (ऋ) वृद्धः प्राणान् अत्यजन्

3. शुद्धवाक्यस्य चयनं करोतु -

(अ) मातरः बालिकान् पोषयन्ति

(इ) मात्रः बालिकाः पोषयन्ति

(उ) मातरः बालिकाः पोषयन्ति

(ऋ) मातरः बालिकाः पोषयति

4. किं शुद्धम्?

(अ) बालकेन चन्द्रमाः पश्यते

(इ) बालकः चन्द्रमाः दृश्यते

(उ) बालकेन चन्द्रमसं दृश्यते

(ऋ) बालकेन चन्द्रमाः दृश्यते

5. शुद्धतमं वाक्यं किम् ?

(अ) जानकी तस्य दारा (इ) जानकी तस्य दाराः

(उ) जानकी तेषां दारा (ऋ) जानकी तेषां दारः

6. शुद्ध वाक्य का चयनं करोतु ?

(अ) खाद्यं देहि बुभुक्षुम् (इ) खाद्य ददातु बुभुक्षुम्

(उ) खाद्यं देहि बुभुक्षषे (ऋ) खाद्यं देहि बुभुक्षिणे

7. किमस्ति शुद्धम् ?

(अ) आपृच्छस्व प्रियसखममुम्

(इ) आपृच्छस्व प्रियसखाममुम्

(उ) आपृच्छस्व प्रियसखामिमम्

(ऋ) आपृच्छस्व प्रियसखमिदम्

8. एकं शुद्धं वाक्यं चिनोतु ?

(अ) शशिनः सह याति कौमुदी

(इ) शशिनि सह याति कौमुदी

(उ) शशिना सह याति कौमुदी

(ऋ) शशेः सह याति कौमुदी

9. सही वाक्य का चयन करें -

(अ) दैवायत्तं कुले जन्म (इ) दैवायत्तं कुले जन्मम्

(उ) दैवायतः कुले जन्मः (ऋ) दैवायत्तः कुले जन्मः

10. कौन सा वाक्य सही है -

(अ) पश्य देवस्य महिमानम् (इ) पश्य देवस्य महिमाम्

(उ) पश्य देवस्य महिम्नम् (ऋ) पश्य देवस्य महिमम्

11. सोचो तो जानें, कौन सही है -

(अ) पश्य लीलां महात्मस्य (इ) पश्य लीलां महात्मनः

(उ) पश्य लीलां महात्मायाः (ऋ) पश्य लीलां महात्मोनम्

12. क्या आप सही वाक्य पहचानते हैं -

(अ) बालकोऽसौ श्रिया हीनः

(इ) बालकोऽसो श्रीया हीनः

(उ) बालकोऽसो श्रीणा हीनः

(ऋ) बालकोऽसो श्रीसा हीः

13. बताओ तो सही -

(अ) प्रसादय मनानि नः (इ) प्रसादय मनास्तु नः

(उ) प्रसादय मनांसि नः (ऋ) प्रसादय मनं तु नः

14. "सीतापति को नमस्कार" तो करो, पर वाक्य शुद्ध हो -

(अ) सीतापतये नमः (इ) सीतापत्यै नमः

(उ) सीतापत्ये नमः (ऋ) सीतापतिने नमः

15. सौ रुपये चाहिए, तो शुद्धवाक्य बताओ -

(अ) शतं रुप्यकम् (इ) शतं रुप्यकाणि

(उ) शतानि रुप्यकम् (ऋ) शताः रुप्यकानि

1. (उ), 2. (अ), 3. (उ), 4. (ऋ), 5. (इ), 6.(ऋ), 7. (अ), 8. (उ), 9. (अ) 10. (अ), 11. (इ), 12. (अ), 13. (उ), 14. (अ), 15. (इ),

16. 'आपका क्या नाम है' इसी वाक्य को शुद्ध संस्कृत में क्या कहोगे जी -
(अ) किम् अभिधानं भवानस्य?
(इ) किमं अभिधानं भवास्य?
(उ) किम् अभिधानं भवतस्य?
(ऋ) किम् अभिधानं भवतः?

17. 'इस पुस्तक को पढो'- लेकिन सही वाक्य तो बोलो -
(अ) इयं पुस्तकं पठतु (इ) इदं पुस्तकं पठतु
(उ) अयं पुस्तकं पठतु (ऋ) इयं पुस्तक पठतु

18. ''तुम्हारे द्वारा लिखा जाता है'' परन्तु सही लिखा जाय-
(अ) त्वया लिख्यसे (इ) त्वया लिख्यते
(उ) त्वं लिख्यते (ऋ) त्वां लिख्यते

19. शुद्ध वाक्य का चयन करें -
(अ) ब्रह्मणः प्रजा प्रजायते (इ) ब्रह्मणा प्रजा प्रजायन्ते
(उ) ब्रह्मणः प्रजाः प्रजायन्ते (ऋ) ब्रह्मण प्रजाः प्रजायन्ते

20. 'श्रीशुकदेव बोले'- इसका सही वाक्य होगा-
(अ) श्रीशुक उवाच। (इ) श्री शुकोवाच।
(उ) श्रीशुकयोवाच। (ऋ) श्रीशुकयुवाच।

21. 'ये घोड़े दौड़ते हैं' - जरा आप भी अपना दिमागी घोडे दौड़ायें और सही वाक्य ढूँढें-
(अ) अम्यश्वाः धावन्ति (इ) अम्यः अश्वाः धावन्ति
(उ) अमी अश्वाः धावन्ति (ऋ) अम् अश्वाः धावन्ति

22. 'राम! आयेंगें'- पर वाक्य तो सही खोजो -
(अ) राम! आयाहि (इ) रामयाहि
(उ) रामाः आयाहि (ऋ) रामो आयहि

23. सही वाक्य बोलो, तो जानें-
(अ) दशरथः रामम् अविसृजत्
(इ) दशरथः रामम् अविसर्जत्
(उ) दशरथः रामं व्यसृजत्
(ऋ) दशरथः राम व्यसर्जयत्

24. 'वाह! क्या बात है '- '' बालक संस्कृत बोलता है'' आप भी बोलो-
(अ) सो बालः संस्कृतं वदति
(इ) सः बालः संस्कृतेन वदति
(उ) सो बालो सर्वदा वदति
(ऋ) सर्बालः संस्कृतं वदति

25. अरे मित्र! वाक्य तो सही करो-
(अ) हे विभा! इहागच्छ (इ) हे विभेहागच्छ
(उ) हे विभे! इह आगच्छ (ऋ) हे विभयेहागच्छ

26. तीन गलत है, एक सही है, ढूढ़ो तो जानें -
(अ) वधूः पितृवालयं गच्छति
(इ) वधूः पित्रालयं गच्छति
(उ) वधूः पितरालयं गच्छति
(ऋ) वधूः पित्र्यालयं गच्छति

27. सही वाक्य को खोजा क्या -
(अ) सर्वाणां प्रियो माधवः (इ) सर्वणां प्रियो माधवः
(उ) सर्वेषां प्रियो माधवः (ऋ) सर्वेसां प्रियो माधवः

28. 'तीन लड़कियों का परिचय बोलो'- पर वाक्य सही हो -
(अ) त्रयाणां बालिकानां परिचयं वद
(इ) तिसृणां बालिकानां परिचयं वद
(उ) तिसृणां बालिकानां परिचयं वद
(ऋ) त्रीणां बालिकानां परिचयं वद

29. चलो, सुन्दर अबला समूह को ही खोजो; पर दृष्टि गलत न हो-
(अ) सुन्दरः अबलासमूहः याति
(इ) सुन्दरी अबलासमूहः याति
(उ) सुन्दरः अबलासमूहा याति
(ऋ) सुन्दरी अबलासमूहा याति

30. 'कर्म का महान् फल होता है'- पर जब काम सही हो तो -
(अ) कर्मस्य इदं महान् फलम्
(इ) कर्मणः इदं महत् फलम्
(उ) कर्मणः अयं महत् फलः
(ऋ) कर्मणः अयं महान् फलः

31. 'वह महान् विपत्ति में है' क्योंकि संस्कृत नही पढाता-
(अ) सः महति विपदि वर्तते
(इ) सः महति विपदे वर्तते
(उ) सः महत्यां विपदे वर्तते
(ऋ) सः महत्यां विपदि वर्तते

32. सच बताओ; - क्या ये सही है -
(अ) मां जननी वृद्धा (इ) मम जननी वृद्धा
(उ) मे जननी वृद्धाः (ऋ) मया जननी वृद्धः

16. (ऋ), 17. (इ), 18. (इ), 19. (उ), 20. (अ), 21. (उ), 22. (अ), 23. (उ), 24. (इ), 25. (उ), 26. (इ), 27. (उ), 28. (उ), 29. (अ), 30. (इ), 31. (ऋ), 32. (इ),

33. ''बालक झूठ बोलता है'' पर क्या आप सही बोलोगे -
(अ) बालः मिथ्या वदति (इ) बालः मिथ्याया वदति
(उ) बालः मिथ्यां वदति (ऋ) बालः मित्यायां वदति

34. क्या सच में 'तुम धन देते हो' - तो सही बोलो न -
(अ) त्वया धनं दीयसे (इ) त्वया धनं दीयते
(उ) त्वया धनं दीये (ऋ) त्वया धनं दायसे

35. 'मैं तो पुस्तक पढ़ता हूँ' - सच बोलो तुम क्या करती हो -
(अ) अहं पुस्तकं पठनं करोमि
(इ) अहं पुस्तकः पठनं करोमि
(उ) अहं पुस्तकस्य पठनं करोमि
(ऋ) अहं पुस्तकस्य पठनस्य करोमि

36. अपनी नाराज पत्नी को भोजन करने को संस्कृत में बोलो - क्या कहोगे -
(अ) भोजनं खादतु (इ) भोजनं खादनं करोतु
(उ) भोजनं खाद्यतु (ऋ) भोजनं करोतु

37. शुद्धं वाक्यं चयनीयम्-
(अ) सिंहेन बालः बिभ्यति (इ) सिंहात् बालः बिभ्यति
(उ) सिंहाय बालः बिभ्यति (ऋ) सिंहात् बालः बिभेति

38. 'यह आत्मा शाश्वत है'- क्या सत्य है -
(अ) इयम् आत्मा शाश्वती अस्ति
(इ) इयम् आत्माः शाश्वतम् अस्ति।
(उ) अयम् आत्मन् शाश्वतः अस्ति
(ऋ) अयम् आत्मा शाश्वतोऽस्ति

39. क्या सचमुच कृष्ण का वस्त्र पीला है -
(अ) कृष्णस्य अम्बरं पीतम् अस्ति
(इ) कृष्णस्य अम्बरः पीतः अस्ति
(उ) कृष्णस्य अम्बरः पीता अस्ति
(ऋ) कृष्णस्य अम्बरः पीतोमोऽस्ति

40. ''चार पुस्तके वहाँ हैं''- जरा देखो तो सही -
(अ) चत्वारः पुस्तकानि तत्र सन्ति
(इ) चत्वारि पुस्तकानि तत्र सन्ति
(उ) चतस्रः पुस्तकानि तत्र सन्ति
(ऋ) चत्वारि पुस्तकं तत्र अस्ति

41. ''बच्चा अम्मा को याद करता है''- क्या सत्य है-
(अ) मातरं स्मरति शिशुः (इ) शिशुः मातुः स्मरति
(उ) मात्रे स्मरति शिशुः (ऋ) मातः शिशुः स्मरति।

42. ''काम से ही क्रोध पैदा होता है''- बोलो तो सही-
(अ) कामं क्रोधः जायते (इ) कामात् क्रोधः जायते
(उ) कामाय क्रोधः जायते (ऋ) कामस्य जायते क्रोधः

43. क्या सही है कि - ''शिष्य गुरु का अनुसरण करता है''-
(अ) शिष्यः गुरुम् अनुगच्छति
(इ) शिष्येण गुरौ अनुगच्छति
(उ) शिष्येण गुरुः अनुगच्छति
(ऋ) शिष्यः गुरोः अनुगच्छति

44. ''वह कलम से लिखती है''- जरा सही वाक्य ढूढ़ों -
(अ) सा लेखनिना लिखति (इ) सा लेखनिना लिखति
(उ) सा लेखनीं लिखति (ऋ) सा लेखन्या लिखति

45. बड़ा मजा आता है जब '' बालक बड़ों के साथ खेलता है''
(अ) बालकः ज्येष्ठैः सह क्रीडति
(इ) बालकाः ज्येष्ठेभ्याः सह क्रीडति
(उ) बालकाः ज्येष्ठानां सह क्रीडति
(ऋ) बालकाः ज्येष्ठात् सह क्रीडति

46. पुस्तक का लेन देन तो होना ही चाहिए -
(अ) राकेशः महेन्द्रात् पुस्तकं ददाति
(इ) वीरेन्द्रः रामप्रसादं पुस्तक ददाति
(उ) श्यामः चन्दनाय पुस्तकं ददाति
(ऋ) अञ्जू सुमनां पुस्तकं दादाति

47. ''तुम्हें क्या अच्छा लगता है'' - बोलो तो सही -
(अ) तव किं रोचते (इ) त्वत् किं रोचते
(उ) तुभ्यं किं रोचते (ऋ) त्वया किं रोचते

48. सोचो जरा क्या 'गुरु से छात्र डरते हैं -
(अ) गुरुः छात्राः बिभेति (इ) गुरोः छात्राः बिभेति
(उ) गुरुभ्यः छात्राः बिभ्यति (ऋ) गुरुभ्यः छात्राः बिभेति

49. 'पिता पुत्र पर क्रोधित होता है'-लेकिन जमाना उलट गया है-
(अ) पिता पुत्रात् क्रध्यति (इ) पिताः पुत्राय क्रुध्यति
(उ) पिता पुत्रं क्रध्यति (ऋ) पिता पुत्राय क्रुध्यति

33. (उ), 34. (इ), 35. (उ), 36. (ऋ), 37. (ऋ), 38. (ऋ), 39. (अ), 40. (इ), 41. (इ), 42. (इ), 43. (अ), 44. (ऋ), 45. (अ), 46. (उ), 47. (उ), 48. (उ), 49. (ऋ)

50. 'लालच करना चाहिए' कि नहीं आप बताओ-
(अ) लोभे कर्त्तव्य (इ) लोभम् कर्त्तव्यः
(उ) लोभः कर्त्तव्यः (ऋ) लोभः कर्त्तव्यम्

51. 'उनके बड़े-बड़े घर हैं'- भई ये तो वही जानें -
(अ) तयोः गृहे विशालौ स्तः (इ) तयोः गृहे विशाले स्तः
(उ) तयोः गृहौ विशालौ स्तः (ऋ) तयोः गृहाणि विशालौ स्तः

52. अजी, अब तो भिखारी दान लेते नहीं, दान करने लगे -
(अ) भिक्षुकाय धनं वस्त्रं च ददाति
(इ) भिक्षुके धनं वस्त्रं च ददाति
(उ) भिक्षुकात् धनं वस्त्रं च ददाति
(ऋ) भिक्षुकेन धनं वस्त्रं च दादाति

53. ''दुष्ट सज्जन से द्रोह करता है'' पर सज्जन भी कुछ कम नही वो भी चुपचाप रहता है-
(अ) दुष्टः सज्जनात् द्रुह्यति (इ) दुष्टेन सज्जनात् दुह्यति
(उ) दुष्टः सज्जनाय द्रुह्यति (ऋ) दुष्टाय सज्जानाय द्रुह्यति

54. 'मनुष्य ज्ञान के बिना पशु है, तब तो पशु की जनसंख्या बढ जायेगी
(अ) मनुष्यः ज्ञानस्य विना पशुः
(इ) मनुष्यः ज्ञाने विना पशुः
(उ) मनुष्यः ज्ञानेन विना पशुः
(ऋ) मनुष्यः ज्ञानाय विना पशुः

55.. 'उद्यान के चारो ओर वृक्ष हैं' और वृक्षों के चारों ओर युगल जोडे हैं-
(अ) उद्यानस्य सर्वतः वृक्षाणि सन्ति
(इ) उद्यानं सर्वतः वृक्षाणि सन्ति
(उ) उद्यानात् सर्वतः वृक्षा सन्ति
(ऋ) उद्यानं सर्वतः वृक्षाः सन्ति

56. 'मैं देव को नमस्कार करता हूँ ' क्योंकि उसने मुझे संस्कृत पढाया-
(अ) अहं देवं नमस्करोमि (इ) अहं देवं नमः
(उ) अहं देवं नमः (ऋ) अहं देवाय नमस्करोमि

57. पिताजी आज भी पत्र लिखते हैं, मै तो sms करता हूँ -
(अ) पिता लेखन्यैः पत्राणि लिखति
(इ) पिता लेखन्याभिः पत्राणि लिखति
(उ) पिता लेखनीः पत्राणि लिखति
(ऋ) पिता लेखनीभिः पत्राणि लिखति

58. प्रिये! मैं आपके साथ चलता हूँ, पर आपके साथ कौन चलता है?
(अ) अहं भवताभिः सह चलामि
(इ) अहं भवतैः सह चलाभि
(उ) अहं भवतीभिः सह चलामि
(ऋ) अहं भवतीः सह चलानि

59. 'पं. माठागुरु को क्या अच्छा लगता है'- चलो पूछते हैं -
(अ) पं. माठागुरुः भक्तिः रोचते
(इ) पं. माठागुरुं संस्कृतं रोचते
(उ) पं. माठागुरवे सत्यनारायणकथा रोचते
(ऋ) पं.माठागुरोः ताम्बूलं रोचते

60. 'एक महीने पहले आना'- क्यों जी ससुराल चलना है क्या?
(अ) मासेन पूर्वम् आगन्तव्यम्
(इ) मासाय पूर्वम् आगन्तव्यम्
(उ) मासात् पूर्वम् आगन्तव्यम्
(ऋ) मासस्य पूर्वम् आगन्तव्यम्

61. पं. ननकू जी! क्या यह सच है कि आप सूर्योदय से ही काम शुरु कर देते हैं ।
(अ) पं. ननकू! सूर्योदयस्य आरभ्य कार्यं करोति?
(इ) पं. ननकू! सूर्योदयम् आरभ्य कार्यं करोति?
(उ) पं. ननकू! सूर्योदयात् आरभ्य कार्यं करोति?
(ऋ) पं. ननकू! सूर्योदयाय आरभ्य कार्यं करोति?

62. 'संस्कृतगङ्गा के बाहर क्या है' यह तो वहीं चलकर देखो -
(अ) संस्कृतगङ्गां बहिः उद्यानम् अस्ति
(इ) संस्कृतगङ्गा बहिः माघमेला अस्ति
(उ) संस्कृतगङ्गायाः बहिः गङ्गानदी अस्ति
(ऋ) संस्कृतगङ्गायां बहिः वाटिका अस्ति

63. संस्कृत कोयल अब केवल वृक्षों में नही घर मे कूजेगी-
(अ) तासु वृक्षासु ते संस्कृतकोकिलाः कूजान्ति
(इ) तेषु वृक्षेषु ताः संस्कृतकोकिलाः कूजन्ति
(उ) तासु वृक्षेसु ते संस्कृतकोकिलाः कूजन्ति
(ऋ) तेषु वृक्षाषु तान् संस्कृतकोकिलाः कूजन्ति

50. (उ), 51. (इ), 52. (अ), 53. (उ), 54. (उ), 55. (ऋ), 56. (अ), 57. (ऋ), 58. (उ), 59. (उ), 60. (उ), 61. (उ), 62. (उ), 63. (इ),

64. 'भौरा कमलों से मधु पीता है' संस्कृत का भौंरा तो शकुन्तला का रस पीता है -
(अ) भ्रमराः कमलैः मधुं पिबन्ति
(इ) भ्रमराः कमलेषु मधुं पिबन्ति
(उ) भ्रमराः कमलेभ्यः मधुं पिबन्ति
(ऋ) भ्रमराः कमलेभ्यः मधु पिबन्ति

65. 'हाथी को दूर से देखता हूँ' - बहुत डरपोक हो क्या?
(अ) अहं दूरेण गजं पश्यामि
(इ) अहं दूरात् गजं पश्यामि
(उ) अहं दूरस्य गजं पश्यामि
(ऋ) अहं दूरः गजं पश्यामि

66. 'बालक हाथ से पुस्तक लाते हैं' तो क्या तुम पैर से लाते हो -
(अ) बालौ हस्तैः पुस्तकानि आनयति
(इ) बालौ हस्ताभ्यां पुस्तकानि आनयतः
(उ) बालौ हस्तयोः पुस्तकानि आनयन्ति
(ऋ) बालौ हस्तौ पुस्ताकानि आनयथः

67. 'ब्रह्मानन्द ग्रन्थों का अध्ययन करते हैं'- और गुरूजी ब्रह्मानन्द का अनुभव करते हैं-
(अ) ब्रह्मानन्दः सदा ग्रन्थान् परिशीलनं करोति
(इ) ब्रह्मानन्दः सदा ग्रन्थेभ्यः परिशीलनं करोति
(उ) ब्रह्मानन्दः सदा ग्रन्थानां परिशीलनं करोति
(ऋ) ब्रह्मानन्दः सदा ग्रन्थैः परिशीलनं करोति

68. पाठक जी! शत्रु का गला पकडते है; किसी मित्र का नहीं -
(अ) पाठकः शत्रोः कण्ठं गृहीतवान्
(इ) पाठकः शत्रुभ्यः कण्ठं ग्रहीतवान्
(उ) पाठकः शत्रुणा कण्ठ गहीतवान्
(ऋ) पाठकः शत्रुं कण्ठं गहितवान्

69. 'पं. चम्मच मुझको बहुत मानते हैं' तो चमचाइन को कौन मानता है-
(अ) पं. चम्मचः महतं वात्सल्यं प्रदर्शयति
(इ) पं. चम्मचः मयि वात्सल्यं प्रदर्शयति
(उ) पं. चम्मचः मया वात्सल्यं प्रदर्शयति
(ऋ) पं. चम्मचः मम वात्सल्यं प्रदर्शति

70. 'छात्र संस्कृत का आदर करते हैं? क्योंकि छात्रों का आदर भी तो संस्कृत से ही है-
(अ) छात्राः संस्कृते आदरं प्रदर्शयन्ति
(इ) छात्राः संस्कृतेन आदरं प्रदर्शयति
(उ) छात्राः संस्कृतेभ्यः आदरं प्रदर्शयति
(ऋ) छात्राः संस्कृतम् आदरं प्रदर्शयन्ति

शुद्ध वाक्यानि परशीलयतु

71. PGT-2000
(अ) त्वया सह अहं चित्रं द्रक्षिष्यामि।
(इ) तव सह अहं चित्रं द्रक्षष्यामि।
(उ) त्वया सह अहं चित्रं द्रक्ष्यामि।
(ऋ) त्वया सः अहं चित्रं पश्यिष्यामि।

72. PGT-2000
(अ) नमस्कृत्वा हरि गच्छति।
(इ) नमस्कृत्य हरये गच्छति।
(उ) नमस्कृत्य हरिः गच्छति।
(ऋ) नमस्कृत्वा हरिं गच्छति।

73. PGT-2000
(अ) रामाः दीनाय धनं ददन्ति।
(इ) रामः दीनान् धनं ददन्ति।
(उ) रामः दीनाय धनं ददति।
(ऋ) रामः दीनाय धनं ददाति।

74. PGT-2000
(अ) अध्ययनात् पराजयते ।
(इ) अध्ययनां पराजयते।
(उ) अध्ययनाय पराजये।
(ऋ) अध्ययनस्य पराजयते।

75. PGT-2004
(अ) आवां पठावः (इ) अहं पठावः
(उ) वयं पठावः (ऋ) यूयं पठावः

76. PGT-2004
(अ) अध्ययनं हेतु काश्यां तिष्ठति ।
(इ) अध्ययनं हेतोः काश्यां तिष्ठति।
(उ) अध्ययनस्य हेतोः काश्यां तिष्ठति।
(ऋ) अध्ययनस्य हेतु काश्यां तिष्ठति।

64. (ऋ), 65. (इ), 66. (इ), 67. (उ), 68. (अ), 69. (इ), 70. (अ), 71. (उ), 72. (उ), 73. (ऋ), 74. (अ), 75. (अ), 76. (उ),

77. PGT-2004
(अ) मया चन्द्रः पश्यति।
(इ) मया चन्द्रः पश्यते।
(उ) मया चन्द्रः दृश्यते।
(ऋ) मया चन्द्रः पश्यामि।

78. TGT-1999
(अ) ग्रामस्य बहिः विद्यालयः अस्ति।
(इ) ग्रामात् बहिः विद्यालयः अस्ति।
(उ) ग्रामेण बहिः विद्यालयः अस्ति।
(ऋ) ग्रामम् बहिः विद्यालयः अस्ति।

79. TGT-1999
(अ) उभयतः कृष्णस्य गोपालाः सन्ति।
(इ) उभयतः कृष्णं गोपालाः सन्ति।
(उ) उभयतः कृष्णेन गोपालाः सन्ति।
(ऋ) उभयतः कृष्णात् गोपालः सन्ति।

80. TGT-1999
(अ) कविषु कालिदासः श्रेष्ठः ।
(इ) कवीनां कालिदासः श्रेष्ठः।
(उ) कविभ्यः कालिदासः श्रेष्ठः।
(ऋ) केवल 'अ' और 'इ' सही है।

81. TGT-1999
(अ) मातरं स्मरति। (इ) मातुः स्मरति।
(उ) मातरि स्मरति। (ऋ) मात्रा स्मारति।

82. TGT-1999
(अ) उपरोक्त (इ) उपर्युक्त
(उ) उपरियुक्त (ऋ) इनमें से कोई नही

83. TGT-1999
(अ) महानता (इ) महान्ता
(उ) महनता (ऋ) महोनता

84. TGT-1999
(अ) गुरुः शिष्याय क्रुध्यति
(इ) गुरुः शिष्यं क्रुध्यति
(उ) गुरुः शिष्ये क्रुध्यति
(ऋ) गुरुः शिष्यस्य क्रुध्यति

85.
(अ) राजीवः मम मित्रम् अस्ति
(इ) राजीवः मां मित्रोमोस्ति
(उ) राजीवः मम मित्रोऽस्ति
(ऋ) राजीवः मे मित्रः अस्ति

86. TGT-1999
(अ) अचिराय देवदत्तः गमिस्यति ।
(इ) अचिरे देवदत्तो गमिष्यति।
(उ) अचिरात् देवदत्तः गमिष्यति।
(ऋ) अचिरेण देवदत्तः गमिस्यति।

87. TGT-1999
(अ) एकविंशतयः छात्राः कक्षायाम् ।
(इ) एकविंशतिः छात्राः कक्षायाम् ।
(उ) एकविंशताः छात्राः कक्षायाम् ।
(ऋ) एकविंशतानि छात्राः कक्षायाम् ।

88. TGT-1999
(अ) तत्र पञ्च जनाः निवसन्ति।
(इ) तत्र पञ्चाः जनाः निवसन्ति।
(उ) तत्र पञ्चाः जनानां निवसन्ति।
(ऋ) तत्र पञ्चसु जनेभ्यः निवसन्ति।

89. TGT-1999
(अ) अष्टानि फलानि आनय।
(इ) अष्टौ फलानि आनय।
(उ) अष्टाः फलानि आनय।
(ऋ) अष्टे फलानि आनय।

90. TGT-1999
(अ) विपदि ददातु मे धनं भवान् ।
(इ) विपदे देहि में धनं भवान।
(उ) धनं यच्छतु विपन्नेभवान ।
(ऋ) ददनु मां धनं विपदौ ।

91. TGT-2009
(अ) युवां पुस्तकं पठथ। (इ) यूयं पुस्तकं पठथ।
(उ) आवां पुस्तकं पठथ । (ऋ) त्वं पुस्तकं पठथ।

77. (उ), 78. (इ), 79. (इ), 80. (ऋ), 81. (इ), 82. (इ), 83. (अ), 84. (अ), 85. (अ), 86. (उ), 87. (इ), 88. (अ), 89. (इ), 90. (अ), 91. (इ),

92. TGT-2009

(अ) बालिका जलात् मुखं प्रक्षालयति।
(इ) बालिका जले मुखं प्रक्षालयति।
(उ) बालिका जलेन मुखं प्रक्षालयति।
(ऋ) बालिका जलं मुखं प्रक्षालयति।

93. TGT-2010

(अ) श्रान्ताः जनाः शीघ्रं शयन्ते।
(इ) श्रान्ताः जनाः शीघ्रं शेरते।
(उ) श्रान्ताः जनाः शीघ्रं शयन्ति।
(ऋ) श्रान्ताः जनाः शीघ्रं शयनन्ति।

94. TGT-2010

(अ) सः कोचित् साधूं पश्यति।
(इ) सः कोञ्चित् साधूं पश्यति।
(उ) सः कञ्चित् साधून् पश्यति।
(ऋ) सः कञ्चन साधुं पश्यति।

95.

(अ) बालकः अध्यापकेन पुस्तकं पठति।
(इ) बालकः अध्यापकात् पुस्तकं पठन्ति।
(उ) बालकः अध्यापकात् पुस्तकं पठति।
(ऋ) बालकाः अध्यापकेन पुस्तकानि पठन्ति।

96. TGT-2010

(अ) अम्बरीसः (इ) अम्बरीशः
(उ) अम्बरिशः (ऋ) अम्बरीषः

97.

(अ) बालः चित्रम् अवलोकति
(इ) चिन्तकः आलोचति
(उ) तरुणः वस्त्रं धरति
(ऋ) सा स्वयं लेपयति

98. TGT-2010

(अ) सहोदरा (इ) सहोदरी
(उ) सहदरा (ऋ) उपर्युक्त सभी

99.

(अ) सः पुष्पं चितवान् ।
(इ) सः पुष्पाणि चयितवान् ।
(उ) सः पुष्पं चेतवान् ।
(ऋ) सः पुष्पं चैतवान् ।

100.

(अ) सः वस्त्रं प्रक्षाययित्वा पठति।
(इ) सः वस्त्रं प्रक्षाल्य पठति।
(उ) सः वस्त्राणि प्रक्षाल्य पठन्ति।
(ऋ) सः वस्त्रे प्रक्षाल्य पठतः।

101.

(अ) किम् प्रच्छितुम् इच्छति।
(इ) किं प्रष्टुम् इच्छति।
(उ) किं प्रच्छयितुम् इच्छति।
(ऋ) किं प्राष्टुम् इच्छति।

102. TGT-1999

(अ) मयि मोदकं रोचते
(इ) मां मोदकं रोचते
(उ) मया मोदकं रोचते
(ऋ) मह्यं मोदकं रोचते।

92. (उ), 93. (इ), 94. (ऋ), 95. (उ), 96. (ऋ), 97. (उ), 98. (अ), 99. (अ), 100. (इ), 101. (इ), 102. (ऋ)।

‘तुमुन्’-प्रत्ययगत-दोषाः

अधोनिर्दिष्टानां क्रियापदानां शुद्धं तुमुनन्तरूपं चेतव्यम् -

1. उत्तिष्ठति -
(अ) उत्थिष्ठितुम् (इ) उत्थातुम्
(उ) उत्थितुम् (ऋ) उत्थयितुम्

2. उपन्यस्यति -
(अ) उपन्यस्तुम् (इ) उपन्यसितुम्
(उ) उपन्यासितुम् (ऋ) उपन्यस्यतुम्

3. इच्छति -
(अ) इच्छितुम् (इ) एच्छितुम्
(उ) एष्टुम् (ऋ) ऐच्छितुम्

4. आकर्षति -
(अ) आक्रष्टुम् (इ) आकर्ष्टुम्
(उ) आकर्षितुम् (ऋ) आकर्षतुम्

5. गिलति -
(अ) गिलितुम् (इ) गलितुम्
(उ) गीर्णितुम् (ऋ) गलतुम्

6. चिनोति -
(अ) चिनोतुम् (इ) चयितुम्
(उ) चेतुम् (ऋ) चयतुम्

7. तरति -
(अ) तरितुम् (इ) तर्तुम्
(उ) तर्तितुम् (ऋ) ततर्तुम्

8. दशति -
(अ) दंष्टुम् (इ) दष्टुम्
(उ) दशितुम् (ऋ) दंशितुम्

9. सन्तुष्यति -
(अ) सन्तुष्यितुम् (इ) सन्तोष्टुम्
(उ) सन्तोषितुम् (ऋ) सन्तोषतुम्

10. गृह्णाति -
(अ) ग्रहीतुम् (इ) गृहीतुम्
(उ) ग्रह्णीतुम् (ऋ) गृह्णीतुम्

11. पृच्छति -
(अ) प्रष्टुम् (इ) पृष्टुम्
(उ) पृच्छितुम् (ऋ) प्रच्छतुम्

12. मिलति -
(अ) मिलितुम् (इ) मेलितुम्
(उ) मिलेतुम् (ऋ) मिलतुम्

13. प्रयतते -
(अ) प्रयतितुम् (इ) प्रयत्तुम्
(उ) प्रयत्तितुम् (ऋ) प्रयततुम्

14. वसति -
(अ) वसितुम् (इ) उषितुम्
(उ) वस्तुम् (ऋ) वसतुम्

15. स्पृशति -
(अ) स्प्रष्टुम् (इ) स्पर्षितुम्
(उ) स्पृष्टुम् (ऋ) स्पर्शतुम्

16. बध्नाति -
(अ) बध्नातुम् (इ) बद्धुम्
(उ) बन्धुम् (ऋ) बन्धतुम्

17. सृजति -
(अ) सृजितुम् (इ) सृष्टुम्
(उ) स्रष्टुम् (ऋ) सर्जितुम्

18. आह्वयति -
(अ) आह्वयितुम् (इ) आह्वातुम्
(उ) आह्वानितुम् (ऋ) आह्वतुम्

19. निर्वहति -
(अ) निर्वोढुम् (इ) निर्वर्हितुम्
(उ) निरूढम् (ऋ) निरोढुम्

20. विमृशति -
(अ) विमर्शितुम् (इ) विम्रष्टुम्
(उ) विमृष्टुम् (ऋ) विमर्शतुम्

1. (इ), 2. (इ), 3. (उ), 4. (अ), 5. (इ), 6. (उ), 7. (अ), 8. (अ), 9. (इ), 10. (अ), 11. (अ), 12. (इ), 13. (अ), 14. (उ), 15. (अ), 16. (इ), 17. (उ), 18. (इ), 19. (अ), 20. (इ)

21. जपति -
(अ) जप्तुम् (इ) जपितुम्
(उ) जम्पतुम् (ऋ) जपतुम्

22. जिघ्रति -
(अ) जिघ्रितुम् (इ) घ्रणितुम्
(उ) घ्रातुम् (ऋ) जिघातुम्

23. भक्षयति -
(अ) भक्षितुम् (इ) भक्षयितुम्
(उ) भक्षीतुम् (ऋ) भक्षतुम्

24. शेते -
(अ) शयितुम् (इ) शय्यितुम्
(उ) शेतुम् (ऋ) शोतुम्

25. विवृणोति -
(अ) विवरीतुम् (इ) विवृतुम्
(उ) विवृणोतुम् (ऋ) विवर्तुम्

26. भिनत्ति -
(अ) भेदितुम् (इ) भन्तुम्
(उ) भेन्तुम् (ऋ) भेतुम्

शुद्ध पदों को छाँटियें -

27.
(अ) शते जनेषु (इ) शतं जनेषु
(उ) शतेषु जनेषु (ऋ) शतासु जनेषु

28.
(अ) शतं सन्ति (इ) शतं स्तः
(उ) शतानि सन्ति (ऋ) शताः सन्ति

29.
(अ) पञ्च अस्ति (इ) पञ्च स्तः
(उ) पञ्च सन्ति (ऋ) पञ्चाः सन्ति

30.
(अ) पञ्चदशतमे (इ) पञ्चदशे
(उ) पञ्चे (ऋ) पञ्चदशौ

31.
(अ) विंशतितमा (इ) विंशतितमी
(उ) विंशतितम्या (ऋ) विंशती

32.
(अ) षष्ट्यब्दिः (इ) षष्ट्यब्दः
(उ) षष्ट्याब्दः (ऋ) षष्ट्यब्दी

33.
(अ) चतुःपञ्चेषु (इ) चतुःपञ्चे
(उ) चतुःपञ्चषु (ऋ) चतुर्पञ्चे

34.
(अ) परसहस्रम् (इ) परस्सहस्रम्
(उ) परस्साहस्री (ऋ) परस्सहस्राः

35.
(अ) उपचत्वारिंशाः (इ) उपचत्वारिंशः
(उ) उपचत्वारिंशत् (ऋ) उपचत्वारिंशतः

36.
(अ) कतिसमये (इ) कतिवादने
(उ) कतिबजे (ऋ) कस्मिन् समये

37.
(अ) विंशतिः जनैः (इ) विंशत्या जनैः
(उ) विंशतिभिः जनैः (ऋ) विशत् जनैः

21. (इ), 22. (उ), 23. (इ), 24. (अ), 25. (अ), 26. (ऋ), 27. (अ), 28. (अ), 29. (उ), 30. (इ), 31. (इ), 32. (इ), 33. (अ), 34. (ऋ), 35. (अ), 36. (ऋ), 37. (इ)।

समासगत-दोषाः

अशुद्धम्	शुद्धम्
1. अर्जुनः भगवतः **विराट्रूपं** दृष्टवान्।	1. अर्जुनः भगवतः **विराड्रूपम्** दृष्टवान्।
2. कक्ष्यायां **षड्सप्ततिः** जनाः सन्ति।	2. कक्ष्यायां **षट्सप्ततिः** जनाः सन्ति।
3. **सार्धं एकादशवादने** मम विद्यालयस्य आरम्भः।	3. **सार्धैकादशवादने** मम विद्यालयस्य आरम्भः।
4. रघुः **मृण्मयेन** पात्रेण कौत्साय अर्घ्यं दत्तवान् ।	4. रघुः **मृन्मयेन** पात्रेण कौत्साय अर्घ्यं दत्तवान्।
5. रमेशः **संशोधन तथा अभिवृद्धिविभागे** कार्यं करोति।	5. रमेशः **संशोधनाभिवृद्धिविभागे** कार्यं करोति।
6. **मासपर्यन्तम्** एतत् कार्यं समाप्तं भविष्यति।	6. **मासाभ्यन्तरे** एतत् कार्यं समाप्तं भविष्यति।
7. विकासः मातरं **न उक्त्वा** विद्यालयं गतवान् ।	7. विकासः मातरम् **अनुक्त्वा** विद्यालयं गतवान्।
8. कटम् इदानीं **पुटी न करोतु**।	8. कटम् इदानीं **न पुटीकरोतु**।
9. **शास्त्रीमहोदयः** अद्य अस्माकं गृहम् आगच्छति।	9. **शास्त्रिमहोदयः** अद्य अस्माकं गृहम् आगच्छति।
10. **महात्मागान्धिवर्येण** श्रेष्ठः आचारः दर्शितः।	10. **महात्मगान्धिवर्येण** श्रेष्ठः आचारः दर्शितः।
11. विकाशः **शास्त्रीपरीक्षाम्** उत्तीर्णः अस्ति।	11. विकाशः **शास्त्रिपरीक्षाम्** उत्तीर्णः अस्ति।
12. संस्कृतस्य केवलेन **महिमावर्णनेन** न किमपि प्रयोजनम्	12. संस्कृतस्य केवलेन **महिमवर्णनेन** न किमपि प्रयोजनम्।
13. अद्य **संस्कृतछात्राः** नाटकं प्रदर्शयन्ति।	13. अद्य **संस्कृतच्छात्राः** नाटकं प्रदर्शयन्ति।
14. गीतायाः **पतये** मया धनं दत्तम् ।	14. गीतायाः **पत्ये** मया धनं दत्तम् ।
15. **सीतापत्ये** मया धनं दातव्यम् ।	15. **सीतापतये** मया धनं दातव्यम्
16. त्रिविक्रमः **मध्यरात्रौ** श्मशानभूमौ सञ्चरति स्म।	16. त्रिविक्रमः **मध्यरात्रे** श्मशानभूमौ सञ्चरति स्म।
17. **नवरात्र्यसवदिने** सर्वे आनन्दम् अनुभवन्ति।	17. **नवरात्रोत्सवदिने** सर्वे आनन्दम् अनुभवन्ति।
18. अहश्च रात्रिश्च इति विग्रहे **अहोरात्रम्** इति रूपम् ।	18. 'अहश्च रात्रिश्च' इति विग्रहे **अहोरात्रः** इति रूपम्
19. भवता **महदुपकारः** अनुष्ठितः।	19. भवता **महोपकारः** अनुष्ठितः
20. **देवशर्मराज्ञः** शासनम् अत्युत्तमम् आसीत्।	20. **देवशर्मराजस्य** शासनम् अत्युत्तमम् आसीत्।
21. वत्स **पाणिपादान्** प्रक्षाल्य भोजनार्थम् आगच्छ।	21. वत्स! **पाणिपादम्** प्रक्षाल्य भोजनार्थम् आगच्छ।
22. **पिताकार्यकर्तारौ** इह न आगतौ।	22. **पितृकार्यकर्तारौ** इह न आगतौ।
23. कार्यक्रमे संस्कृतज्ञाः आसन् **तदितराः** अपि आसन्।	23. कार्यक्रमे संस्कृतज्ञाः आसन् **तदितरे** अपि आसन्।
24. एतत् **सविवरं** ज्ञातुम् इच्छामि अहम्।	24. एतत् **सविवरणं** ज्ञातुम् इच्छामि अहम् ।
25. तस्य कृषिकस्य **गोविन्दः इति नामकः** पुत्रः आसीत् ।	25. तस्य कृषिकस्य **गोविन्दनामकः** पुत्रः आसीत्।
26. सर्वे कार्यकर्तारः **सोत्साहेन** कार्यं कृतवन्तः।	26. सर्वे कार्यकर्तारः **सोत्साहं** कार्यं कृतवन्तः।
27. **उदारचेतः** सः दीनानां साहाय्यं करोति।	27. **उदारचेताः** सः दीनानां साहाय्यं करोति।
28. **बहुदिनारभ्य** एतत् एवमेव प्रचलति।	28. **बहुभ्यः दिनेभ्यः** आरभ्य एतत् एवमेव प्रचलति।
29. **पतिपत्नी** नगरम् अगच्छताम्।	29. **पतिपत्न्यौ** नगरम् अगच्छताम्।
30. अहं **व्याख्यातारूपेण** कार्यं करोमि।	30. अहं **व्याख्यातृरूपेण** कार्यं करोमि।
31. **महामना मालवीयस्य** कार्यम् असाधारणम् ।	31. **महामनसः मालवीयस्य** कार्यम् असाधारणम्।
32. वत्स! अलं त्वरया **उदरपूर्णं** भोजनं कुरु।	32. वत्स! अलं त्वरया **पूर्णोदरं** भोजनं कुरु।
33. सः **अर्शव्याधिना** ग्रस्तः अस्ति।	33. सः **अर्शोव्याधिना** ग्रस्तः अस्ति।
34. अत्र उपस्थितस्य **प्रत्येकस्यापि** जनस्य परिचयः मम नास्ति।	34. अत्र उपस्थितस्य **एकैकस्य** जनस्य परिचयः मम नास्ति।

अशुद्धम्	शुद्धम्
35. एषः **निरपराधी** अस्ति	35. एषः **निरपराधः** अस्ति।
36. पतिपत्न्यौ गृहं **प्रत्यागतवन्तौ ।**	36. पतिपत्न्यौ गृहं **प्रत्यागतवत्यौ**।
37. **दशमकक्ष्योत्तीर्णः** सः उद्योगान्वेषणं करोति	37. **दशमकक्ष्याम् उत्तीर्णः** सः उद्योगान्वेषणं करोति।

सङ्ख्यागत-दोषाः

अशुद्धम्	शुद्धम्
1. षष्ठकक्ष्यायां **विंशतयः** जनाः सन्ति।	1. षष्ठकक्ष्यायां **विंशतिः** जनाः सन्ति।
2. **शतं जनेभ्यः** भोजनं व्यवस्थापनीयम् अस्ति।	2. **शतजनेभ्यः** भोजनं व्यवस्थापनीयम् अस्ति।
3. अहं **पञ्चदिनात्** भवतः प्रतीक्षां कुर्वन् अस्मि् ।	3. अहं **पञ्चदिनेभ्यः** भवतः प्रतीक्षां कुर्वन् अस्मि।
4. **अष्टादशतमे** सर्गे एतं श्लोकं पश्यतु।	4. **अष्टादशे** सर्गे एतं श्लोकं पश्यतु।
5. भोः **षष्ठम!** त्वं उत्तिष्ठ	5. भोः **षष्ठ!** त्वम् उत्तिष्ठ।
6. **चतुर्थायां पङ्क्तौ** कश्चन मुद्रणदोषः अस्ति।	6. **चतुर्थ्यां पङ्क्तौ** कश्चन मुद्रणदोषः अस्ति।
7. **एतस्मिन् शताब्दे** सर्वे अर्थपराः एव दृश्यन्ते।	7. **एतस्यां शताब्द्यां** सर्वे अर्थपराः एव दृश्यन्ते।
8. अद्य विद्यालये **शताब्दीकार्यक्रमः** अस्ति।	8. अद्य विद्यालये **शताब्दकार्यक्रमः** अस्ति।
9. एतस्मिन् **शतमाने** बहवः संस्कृतकवयः अभूवन् ।	9. एतस्मिन् **शतके** बहवःसंस्कृतकवयः अभूवन्
10. **द्वित्रिक्षणान्तरं** सः ततः निर्जगाम।	10. **द्वित्राः क्षणानन्तरं** सः ततः निर्जगाम।
11. मम गृहे **पञ्चषड्यानानि** सन्ति।	11. मम गृहे **पञ्चषाणि यानानि** सन्ति।
12. **त्रिचतुर्वारं** सः माम् आहूतवान् ।	12. **त्रिचतुरवारं** सः माम् आहूतवान् ।
13. अद्य कार्यक्रमे **उपविंशतिः जनाः** आसन् ।	13. अद्य कार्यक्रमे **उपविंशाः जनाः** आसन् ।
14. अद्य कार्यक्रमः **कतिवादने** अस्ति ?	14. अद्य कार्यक्रमः **कस्मिन् समये** अस्ति।
15. **कति गुरुदक्षिणा** देया।	15. **कियती गुरुदक्षिणा** देया।
16. **चतसृणाम्** अपि बालिकानां नाम अहं जानामि।	16. **चतसृणाम्** अपि बालिकानां नाम अहं जानामि।
17. अनीता **प्रथमापङ्क्तौ** स्थितवती।	17. अनीता **प्रथमपङ्क्तौ** स्थितवती।
18. कार्यक्रमः **पञ्चजूनदिनाङ्के** भविष्यति।	18. कार्यक्रमः **जूनमासस्य पञ्चमे दिनाङ्के** भविष्यति।
19. **एकशतदश** = 110	19. **दशाधिकशतम्** = 110
20. **सार्धैकसहस्रवर्षात्** पूर्वं एषा घटना प्रवृत्ता।	20. **सार्धैकसहस्रवर्षेभ्यः** पूर्वं एषा घटना प्रवृत्ता।

लिङ्गगत-दोषाः

अशुद्धम्	शुद्धम्
1. दीपचन्द्रः **मम मित्रः** अस्ति।	1. दीपचन्द्रः **मम मित्रम्** अस्ति।
2. मूषकः गणेशस्य **वाहनः** अस्ति।	2. मूषकः गणेशस्य **वाहनम्** अस्ति।
3. सः **व्याध्या ग्रस्तः** अस्ति।	3. सः **व्याधिना ग्रस्तः** अस्ति।
4. संस्कृतस्य **परिधिः का**?	4. संस्कृतस्य **परिधिः कः** ?
5. कुत्रचित् **सन्धिः न कृता**।	5. कुत्रचित् **सन्धिः न कृतः**।
6. मया **ध्वनिः श्रुता**।	6. मया **ध्वनिः श्रुतः**।
7. वानरैः **सेतुः निर्मिता**	7. वानरैः **सेतुः निर्मितः**।
8. बीजेभ्यः **अङ्कुराणि** उत्पद्यन्ते।	8. बीजेभ्यः **अङ्कुराः** उत्पद्यन्ते।

अशुद्धम्	शुद्धम्
9. यथा **बीजः** तथा अङ्कुरः।	9. यथा **बीजं** तथा अङ्कुरः।
10. प्रयागः विदुषाम् **आगारः** अस्ति।	10. प्रयागः विदुषाम् **आगारम्** अस्ति।
11. **कारागारः** एव श्रीकृष्णस्य जन्मस्थानम् आसीत् ।	11. **कारागारम्** एव श्रीकृष्णस्य जन्मस्थानम् आसीत्।
12. संस्कृतगङ्गायाः **पुस्तकभण्डारः** अत्युत्तमः अस्ति।	12. संस्कृतगङ्गायाः **पुस्तकभाण्डारम्** अत्युत्तमः अस्ति।
13. संस्कृतस्य **महिमा** वर्णयितुं न **शक्या**।	13. संस्कृतस्य **महिमा** वर्णयितुं न **शक्यः**।
14. दर्पणं **भग्नम्**।	14. दर्पणः **भग्नः**।
15. कालिदासः **कविरत्नः** अस्ति।	15. कालिदासः **कविरत्नम्** अस्ति।
16. **'अहोरात्रं'** दिनम् इति उच्यते।	16. **'अहोरात्रः'**- दिनम् इति उच्यते।
17. हिमालये सर्वत्र **हिमः** एव दृश्यते।	17. हिमालये सर्वत्र **हिमम्** एव दृश्यते।
18. संस्कृताध्यापने **बहूनि विघ्नानि** आगतानि।	18. संस्कृताध्यापने **बहवः विघ्नाः** आगताः।
19. राजीवस्य **एकमात्रः पुत्रः** अस्ति।	19. राजीवस्य **एकमात्रं पुत्रः** अस्ति।
20. सरोवरं **सुन्दरम्** अस्ति।	20. सरोवरः **सुन्दरः** अस्ति।
21. सः अद्यैव **प्राणम्** अत्यजत्।	21. सः अद्यैव **प्राणान्** अत्यजत्।
22. प्रजाः राजानं स्वकष्टं **निवेदितवन्तः**।	22. प्रजाः राजानं स्वकष्टं **निवेदितवत्यः**।
23. दशरथस्य **दारा** कौशल्या।	23. दशरथस्य **दाराः** कौशल्या।
24. **इयम् आपः**।	24. **इमाः आपः**।
25. **वर्षायां** बालाः क्रीडन्ति।	25. **वर्षासु** बालाः क्रीडन्ति।
26. अहं **पादेन** गच्छामि।	26. अहं **पादाभ्यां** गच्छामि।
27. अद्य संस्कृतं पठितुं **दम्पती आगता** आसीत्।	27. अद्य संस्कृतं पठितुं **दम्पती आगतौ** आस्ताम्।

सुबन्तगत-दोषाः

अशुद्धम्	शुद्धम्
1. ''आतङ्कवादः''-एका **राष्ट्रीया** समस्या अस्ति।	1. 'आतङ्कवादः'- एका **राष्ट्रिया** समस्या अस्ति।
2. श्यामः **अत्रतः** तत्र गतवान्।	2. श्यामः **इतः** तत्र गतवान्।
3. राकेशः **तत्रतः** अन्यत्र गतवान्।	3. राकेशः **ततः** अन्यत्र गतवान्।
4. प्रदीपः **उपरितः** पतितः।	4. प्रदीपः **उपरिष्टात्** पतितः।
5. अजयं **बहिस्तात्** अन्तः आनय।	5. अजयं **बहिर्भागतः** अन्तः आनय।
6. **पाश्चिमात्याः** अपि संस्कृतगङ्गाम् आगच्छन्ति।	6. **पाश्चात्त्याः** अपि संस्कृतगङ्गाम् आगच्छन्ति।
7. **औत्तरेयाः** संस्कृतं पठन्ति।	7. **औत्तराहाः** संस्कृतं पठन्ति।
8. **महाराष्ट्रियाः** मराठीभाषया वदन्ति।	8. **महाराष्ट्रीयाः** मराठीभाषया वदन्ति।
9. आतङ्कवादिना जनानां **हत्या कृता**।	9. आतङ्कवादिना जनानां **हननं कृतम्**।
10. कृपया संस्कृतस्य **सहायं** करोतु मित्र!	10. कृपया संस्कृतस्य **साहाय्यं** करोतु मित्र!
11. राकेशः मम **सहाय्यकः**।	11. राकेशः मम **सहायकः**।
12. अद्यतनं **गायनम्** अत्युत्तमम् आसीत्।	12. अद्यतनं **गानम्** अत्युत्तमम् आसीत्।
13. अद्य **शारीरिकाध्यापकः** अनुपस्थितः।	13. अद्य **शारीरकाध्यापकः** अनुपस्थितः।
14. भवता **कतमं पुस्तकम्** इष्यते।	14. भवता **कतमत् पुस्तकम्** इष्यते।
15. विकाशमहोदयः **उदारी अस्ति**।	15. विकाशमहोदयः **उदारः अस्ति**।
16. केनचित् '**सीतायणम्**' इति ग्रन्थः लिखितः।	16. केनचित् '**सीतायनम्**' इति ग्रन्थः लिखितः।

अशुद्धम्	शुद्धम्
17. **कार्यक्रमोपरान्तम्**।	17. **कार्यक्रमानन्तरम्**।
18. संस्कृतगङ्गायां छात्राणां **आवागमनं** विशेषतः दृश्यते।	18. संस्कृतगङ्गायां छात्राणां **गमनागमनं** विशेषतः दृश्यते।
19. **पत्रवितरकः** पत्रं वितरति।	19. **पत्रवितारकः** पत्रं वितरति।
20. **दुर्वासः** कोपशीलः मुनिः।	20. **दुर्वासाः** कोपशीलः मुनिः।
21. अस्माकं **माताश्री** सम्यक् पाठयति।	21. अस्माकं **मातृश्रीः** सम्यक् पाठयति।
22. भाषाक्षेत्रे संस्कृतस्य **महत्त्वं स्थानम्** अस्ति।	22. भाषाक्षेत्रे संस्कृतस्य **महत्त्वभूतं स्थानम्** अस्ति।
23. निरुद्योगः भारतस्य **ज्वलन्तसमस्या** अस्ति।	23. निरुद्योगः भारतस्य **महती समस्या** अस्ति।
24. ह्यः मम मित्रम् **आगतवान्** आसीत्।	24. ह्यः मम मित्रम् **आगतवत्** आसीत्।

विभक्तिगत-दोषाः

अशुद्धम्	शुद्धम्
1. मम **छात्रः पण्डितः** भवितव्यः।	1. मम **छात्रेण पण्डितेन** भवितव्यम्।
2. त्वया **सतीशः इव** पण्डितेन भवितव्यम्।	2. त्वया **सतीशेन इव** पण्डितेन भवितव्यम्।
3. **अनुजः इव** चन्दनाय अपि दुग्धं देहि।	3. **अनुजाय इव** चन्दनाय अपि दुग्धं देहि।
4. दुष्टानां **नाशः भाव्यः**।	4. दुष्टानां **नाशेन भाव्यम्**।
5. केषाञ्चित् **दिनानन्तरं** सः प्रयागात् प्रत्यागतः।	5. केषाञ्चित् **दिनानाम् अनन्तरम्** सः प्रयागात् प्रत्यागतः।
6. **सः मित्रं नगरं** प्रेषयित्वा आगतवान्।	6. सः **मित्रं नगरं प्रति** प्रेषयित्वा आगतवान्।
7. यदि सन्देहः तर्हि **मां प्रष्टव्यम्** आसीत्।	7. यदि सन्देहः तर्हि **अहं प्रष्टव्यः** आसम्।
8. एतानि वाक्यानि **संस्कृतभाषायाम्** अनुवदत।	8. एतानि वाक्यानि **संस्कृतभाषया** अनुवदत।
9. **लोकयाने** प्रयागं गच्छामि वा?	9. **लोकयानेन** प्रयागं गच्छामि वा?
10. **मह्यं** महती शिरोवेदना।	10. **मम** महती शिरोवेदना।
11. सः मां **मूर्खमिति** भावयति।	11. सः मां **मूर्ख इति** भावयति।
12. **विकाशं विपिनम्** इत्यादीन् आह्वय।	12. **विकाशः विपिनः** इत्यादीन् आह्वय।
13. **रामे कृष्णे** इत्यादिषु मम स्नेहः।	13. **रामः कृष्णः** इत्यादिषु मम स्नेहः।
14. एषः **महान्** सन्तोषस्य विषयः।	14. एषः **महतः** सन्तोषस्य विषयः।
15. **विश्वाशभ्रात**! अत्र आगच्छ।	15. **विश्वासभ्रातः**! अत्र आगच्छ।
16. सन्धिः समासः **इत्यादिनाम्** अर्थः तेन बोधितः।	16. सन्धिः समासः **इत्यादीनाम्** अर्थः तेन बोधितः।
17. अध्यापिका **विद्यार्थिन्यः** आहूतवती।	17. अध्यापिका **विद्यार्थिनीः** आहूतवती।
18. करुणाशङ्करः **लेखन्यः** क्रीतवान्।	18. करुणाशङ्करः **लेखनीः** क्रीतवान्।
19. प्रियङ्का **अङ्कन्यः** दत्तवती।	19. प्रियङ्का **अङ्कनीः** दत्तवती।
20. महेन्द्रः **मातरः** नमस्कृतवान्।	20. महेन्द्रः **मातॄः** नमस्कृतवान्।
21. रामप्रसादः **चत्वारः बालिकाः** आहूतवान्।	21. रामप्रसादः **चतस्रः बालिकाः** आहूतवान्
22. वीरेन्द्रः **भगिन्यः** सूचितवान्	22. वीरेन्द्रः **भगिनीः** सूचितवान्।
23. ह्यः श्यामस्य सखी **मां** मिलितवती।	23. ह्यः श्यामस्य सखी **मया** मिलितवती।
24. 'संस्कृतगङ्गा' इति पुस्तकम् आपणे **मिलति**।	24. 'संस्कृतगङ्गा' इति पुस्तकम् आपणे **प्राप्यते**।
25. राकेशः श्वः **मिलिष्यति**।	25. राकेशः श्वः **मेलिष्यति**।
26. कपूरः पत्रं **लिखिष्यति**।	26. कपूरः पत्रं **लेखिष्यति**।

अशुद्धम्	शुद्धम्
27. प्रिये! आवयोः पुनः **मिलनं** कदा भवेत्।	27. प्रिये! आवयोः पुनः **मेलनं** कदा भवेत्।
28. श्रमः एव **जयते**।	28. श्रमः एव **जयति**।
29. कृषकः कूपं **खनितवान्**।	29. कृषकः कूपं **खातवान्**।
30. अञ्जूः वस्त्रं **प्रक्षालयित्वा** पठति।	30. अञ्जूः वस्त्रं **प्रक्षाल्य** पठति।

मकारलेखने-दोषाः

अशुद्धम्	शुद्धम्
1. चन्दनः **गृहं** आगच्छति।	1. चन्दनः **गृहम्** आगच्छति।
2. राकेशः **फलं** इच्छति।	2. राकेशः **फलम्** इच्छति।
3. अनुजेन कार्यं **कृतं** ।	3. अनुजेन कार्यं **कृतम्** ।
4. गोविन्देन पत्रं **पठितं** ।	4. गोविन्देन पत्रं **पठितम्** ।

परसवर्णलेखने-दोषाः

अशुद्धम्	शुद्धम्
1. अंगणम्	**1. अङ्गणम्**
2. चंचूः	**2. चञ्चूः**
3. अंडम्	**3. अण्डम्**
4. शांतः	**4. शान्तः**
5. पंपा	**5. पम्पा**

अनुस्वार-गत-दोषाः

अशुद्धम्	शुद्धम्
1. सन्यासी	**1. संन्यासी**
2. पुल्लिङ्गः	**2. पुँल्लिङ्गः**
3. पुंल्लिङ्गः	**3. पुंलिङ्गः**
4. संगठनम्	**4. सङ्गटनम् / संघटनम्**
5. संग्या	**5. संज्ञा**

द्वित्त्वलेखने-दोषाः

अशुद्धम्	शुद्धम्
1. महत्वम्	**1. महत्त्वम्**
2. सत्वम्	**2. सत्त्वम्**
3. तत्वम्	**3. तत्त्वम्**
4. सात्विकम्	**4. सात्त्विकम्**
5. उज्वलः	**5. उज्ज्वलः**
6. पाश्चात्यः	**6. पाश्चात्त्यः**
7. कार्तिकमासः	**6.कार्त्तिकमासः**
8. तज्ञः	**8. तज्ज्ञः**
9. कित्वम्	**9. कित्त्वम्**
10. प्रवृत्या	**10. प्रवृत्त्या**

पदगत-दोषाः

अशुद्धम्	शुद्धम्
1. प्राधान्यता	**1. प्राधान्यम्**
2. वैशिष्ट्यता	**2. वैशिष्ट्यम्**
3. ऐक्यता	**3. ऐक्यम्**
4. दार्ढ्यता	**4. दार्ढ्यम्**
5. मौर्ख्यता	**5. मौर्ख्यम्**
6. काठिन्यता	**6. काठिन्यम्**
7. शौर्यता	**7. शौर्यम्**
8. वैरस्यता	**8. वैरस्यम्**
9. नैपुण्यता	**9. नैपुण्यम्**
10. प्रामुख्यता	**10. प्रामुख्यम्**
11. वैविध्यता	**11. वैविध्यम्**
12. साफल्यता	**12. साफल्यम्**
13. प्रावीण्यता	**13. प्रावीण्यम्**
14. नावीन्यता	**14. नावीन्यम्**
15. प्रामाण्यता	**15. प्रामाण्यम्**
16. कोसः	**16. कोषः/कोशः**
17. कृसकः	**17. कृषकः/कृषिकः**
18. मूसकः	**18. मूषकः/ मूषिकः**
19. नारियलः	**19. नारिकेलः/नालिकेरः**
20. प्रतकारः	**20. प्रतिकारः/प्रतीकारः**
21. हनुमान	**21. हनूमान् /हनुमान्**
22. अंगुली	**22. अङ्गुलिः/अङ्गुली**
23. प्रतिनित्यम्	**23. प्रतिदिनम्**
24. कनीयः	**24. कनीयान्**
25. प्रश्नोत्तरीस्पर्धा	**25. प्रश्नोत्तरस्पर्धा**

शब्दरूप-गत-दोषाः

अशुद्धम्	शुद्धम्
1. ग्यानम्।	**1. ज्ञानम्**
2. उट्टङ्कणम् ।	**2. उट्टङ्कनम्**
3. प्रकटणम् ।	**3. प्रकटनम्**
4. मनम्	**4. मनः**
5. दुखम्	**5. दुःखम्**
6. ब्रम्हा	**6. ब्रह्मा**
7. आल्हादः	**7. आह्लादः**
8. लक्ष्मी	**8. लक्ष्मीः**
9. श्री	**9.श्रीः**
10. चञ्चू	**10. चञ्चूः**
11. वधू	**11. वधूः**
12. दधिः	**12. दधि**
13. श्मश्रुः	**13. श्मश्रु**
14. जानुः	**14. जानु**
15. स्यालः	**15.श्यालः**
16. स्वशुरः	**16. श्वसुरः**
17. स्वश्रू	**17. श्वश्रूः**
18. स्मशानम्	**18. श्मशानम्**
19. ह्रस्वः	**19. ह्रस्वः**
20. बहुर्वीहिः	**20. बहुव्रीहिः**
21. प्रभोदनम्	**21. प्रबोधनम्**
22. अघादः	**22. अगाधः**
23. घर्जनम्	**22. गर्जनम्**
24. निश्वस्य	**24. निःश्वस्य**
25. शत्रुप्रत्ययः	**25. शतृप्रत्ययः**
26. नाण्यकम्	**26. नाणकम्**
27. कोट्याधिपतिः	**27. कोट्यधिपतिः**
28. भानुमतिः	**28. भानुमती**
29. सुमती	**29. सुमतिः**
30. सन्मानः	**30. सम्मानः**
31. मध्यन्तरम्	**31. मध्यान्तरम्**
32. उच्छाटनम्	**32. उच्चाटनम्**
33. उच्चिष्टम्	**33. उच्छिष्टम्**
34. कलियुगः	**34. कलियुगम्**
35. दोषाणि	**35. दोषाः**
36. तालुः	**36. तालु**
37. साम्राट्	**37. सम्राट्**
38. फलितकेशः	**38. पलितकेशः**
39. पारितोषकम्	**39. पारितोषिकम्**
40. पित्थम्	**40. पित्तम्**
41. जञ्झावातः	**41. झञ्झावातः**
42. जर्झरितः	**42. झर्झरितः/जर्जरितः**
43. मार्ताण्डः	**43. मार्तण्डः**
44. अक्षोहिणी सेना	**44. अक्षौहिणी सेना**
45. जोतिषिकः	**45. ज्यौतिषिकः/ज्योतिषिकः**
46. वैय्याकरणः	**46. वैयाकरणः**
47. जनार्धनः	**47. जनार्दनः**
48. सिन्धूरम्	**48. सिन्दूरम्**
49. अम्बरीशः	**49. अम्बरीषः**
50. पौर्णिमा	**50. पूर्णिमा**

धातुरूप-गत-दोषाः

अशुद्धम्	शुद्धम्
1. श्रुणोति/श्रृणोति	**1. शृणोति**
2. गृहीष्यति	**2. ग्रहीष्यति**
3. रुदति/रोदति	**3. रोदिति**
4. लिखिष्यति	**4. लेखिष्यति**
5. मिलिष्यति	**5. मेलिष्यति**
6. जानति	**6. जानाति**
7. जानतु	**7. जानातु**
8. प्रतिजानाति	**8. प्रतिजानीते**
9. क्रयति	**9. क्रीणाति**
10. विक्रयति	**10. विक्रीणीते**
11. बन्धयति	**11. बध्नाति**
12. मन्थति	**12. मथ्नाति**
13. तनति	**13. तनोति**
14. तनतु	**14. तनोतु**
15. भोजते	**15. भुङ्क्ते**
16. भोजसे	**16. भुङ्क्षे**
17. भोजति	**17. भुनक्ति**
18. रोधति	**18. रुणद्धि**
19. रोधेत्	**19. रुन्ध्यात्**
20. छेदति	**20. छिनत्ति**
21. भेदति	**21. भिनत्ति**

अशुद्धम्	शुद्धम्
22. मरति	**22. म्रियते**
23. मरिष्यते	**23. मरिष्यति**
24. उड्डयति	**24. उड्डीयते/उड्डयते**
25. जिज्ञासति	**25. जिज्ञासते**
26. शुश्रूषति	**26. शुश्रूषते**
27. दिदृक्षति	**27. दिदृक्षते**
28. गामयति	**28. गमयति**
29. घनयति	**29. घातयति**
30. हनति	**30. हन्ति**
31. हनामि	**31. हन्मि**
32. हंस्यति	**32. हनिष्यति**
33. दायते	**33. दीयते**
34. पायते	**34. पीयते**
35. कृयते	**35. क्रियते**
36. वच्यते	**36. उच्यते**
37. दोहति/दुहति	**37. दोग्धि**
38. दोहिष्यति	**38. धोक्ष्यति**
39. ब्रवसि	**39. ब्रवीषि**
40. ब्रव	**40. ब्रूहि**
41. ब्रवेत्	**41. ब्रूयात्**
42. ब्रूष्यति	**42. वक्ष्यति**
43. तिष्ठियसि	**43. स्थास्यसि**
44. स्थामि	**44. तिष्ठामि**
45. दृश्यति	**45. पश्यति**
46. घ्रामः	**46. जिघ्राम**
47. मोदति	**47. मोदते**
48. जानिष्यमि	**48. ज्ञास्यामि**
49. ग्रहणाति	**49. गृह्णाति**
50. मोचते	**50. मुञ्चति**
51. स्पर्शति	**51. स्पृशति**
52. प्रच्छति	**52. पृच्छति**
53. प्रक्षिष्यति	**53. प्रक्ष्यति**
54. इच्छिष्यति	**54. एषिष्यति**
55. शक्नोसि	**55. शक्नोषि**
56. शक्नोष्यति	**56. शक्ष्यति**
57. नर्तति	**57. नृत्यति**
58. ददान्ति	**58. ददति**
59. शयति	**59. शेते**
60. हनन्ति	**60. घ्नन्ति**

अशुद्धम्	शुद्धम्
61. रोदन्ति	**61. रुदन्ति**
62. रोदामि	**62. रोदिमि**
63. स्वपति	**63. स्वपिति**
64. रोदामः	**64. रुदिमः**
65. दुहसि/दोहसि	**65. धोक्षि**
66. दोहिष्यति	**66. धोक्ष्यति**
67. ब्रवति	**67. ब्रवीति**
68. अदति	**68. अत्ति**
69. नयिष्यति	**69. नेष्यति**
70. लभति	**70. लभते**
71. वसिष्यति	**71. वत्स्यति**
72. श्रुणोमि	**72. शृणोमि**
73. जयते	**73. जयति**
74. जयिष्यति	**74. जेष्यति**
75. पिबिष्यति	**75. पास्यति**
76. जिघ्राष्यति	**76. घ्रास्यति**
77. पश्यिष्यति	**77. द्रक्ष्यति**
78. गच्छिष्यति	**78. गमिष्यति**
79. नमिष्यति	**79. नंस्यति**
80. पचिष्यति	**80. पक्ष्यति**
81. लभन्ति	**81. लभन्ते**
82. लेखापयति	**82. लेखयति**
83. खिद्यति	**83. खिद्यते**
84. वञ्चयति	**84. वञ्चयते**
85. विक्रीणाति	**85. विक्रीणीते**
86. शुध्यते	**86. शुध्यति**
87. भापयति	**87. भाययति**
88. आश्रियते	**88. आश्रीयते**
89. प्रस्थास्यामः	**89. प्रस्थास्यामहे**
90. निहन्ति	**90. निघ्नन्ति**
91. चर्चिष्यामः	**91. चर्चयिष्यामः**

कृत्-प्रत्ययगत-दोषाः

अशुद्धम्	शुद्धम्
1. शृतवान्	**1. श्रुतवान्**
2. श्रुण्वन्	**2. शृण्वन्**
3. ग्रहणन्	**3. गृह्णन्**
4. शृत्वा	**4. श्रुत्वा**

अशुद्धम्	शुद्धम्
5. गृहीतुम्	**5. ग्रहीतुम्**
6. गृहीतव्यम्	**6. ग्रहीतव्यम्**
7. ग्रहीतवान्	**7. गृहीतवान्**
8. आपृच्छनम्	**8. आप्रच्छनम्**
9. बद्धव्यम्	**9. बन्धव्यम्**
10. बद्धुम्	**10. बन्धुम्**
11. उत्तीर्त्वा	**11. उत्तीर्य**
12. आह्वाय	**12. आहूय**
13. वक्तवा	**13. उक्त्वा**
14. दुहित्वा	**14. दुग्ध्वा**
15. तरित्वा	**15. तीर्त्वा**
16. ग्रहीत्वा	**16. गृहीत्वा**
17. लिखितुम्	**17. लेखितुम्**
18. दुग्धुम्	**18. दोग्धुम्**
19. सहितुम्	**19. सोढुम्**
20. प्रच्छितुम्	**20. प्रष्टुम्**
21. शयन्ती	**21. शयाना**
22. अधीयती	**22. अधीयाना**
23. गायती	**23. गायन्ती**
24. आगच्छती	**24. आगच्छन्ती**
25. रुदन्ती	**25. रुदती**
26. पक्तम्	**26. पक्वम्**
27. शुषितः	**27. शुष्कः**
28. वप्तम्	**28. उप्तम्**
29. छित्वा	**29. छित्त्वा**
30. भित्वा	**30. भित्त्वा**
31. दत्वा	**31. दत्त्वा**
32. नोदितवान्	**32. नुन्नवान्**
33. सिञ्चितवान्	**33. सिक्तवान्**
34. खनितवान्	**34. खातवान्**
35. आकर्षितवान्	**35. आकृष्टवान्**
36. गिलितवान्	**36. गीर्णवान्**
37. प्रयतितवान्	**37. प्रयत्तवान्**
38. चयितवान्	**38. चितवान्**
39. जागृतः	**39. जागरितः**
40. अपक्तम्	**40. अपक्वम्**
41. उषितुम्	**41. वस्तुम्**
42. उपन्यस्तुम्	**42. उपन्यसितुम्**
43. तर्तुम्	**43. तरितुम्/तरीतुम्**

अशुद्धम्	शुद्धम्
44. आह्वयितव्यः	**44. आह्वातव्यः**
45. जाप्यव्यम्	**45. जपितव्यम्**
46. इच्छितव्यम्	**46. एष्टव्यम्**
47. ददन्	**47. ददत्**
48. कुर्वन्ती	**48. कुर्वती**
49. निधत्तवान्	**49. निहितवान्**
50. ताडितव्याः	**50. ताडयितव्यः**
51. वितरितानि	**51. वितीर्णानि**
52. छेदितवान्	**52. छिन्नवान्**
53. प्रक्षालयित्वा	**53. प्रक्षाल्य**
54. परिवर्तयित्वा	**54. परिवर्त्य**
55. समापयित्वा	**55. समाप्य**
56. परिवेषयित्वा	**56. परिवेष्य**
57. प्रकटयित्वा	**57. प्रकटय्य**
58. उत्पादयित्वा	**58. उत्पाद्य**
59. प्रदर्शयित्वा	**59. प्रदर्श्य**
60. सङ्कटयित्वा	**60. सङ्कटय्य**
61. सम्मार्जयित्वा	**61. सम्मार्ज्य**
62. उद्घाटयित्वा	**62. उद्घाटय्य**
63. प्रार्थयित्वा	**63. प्रार्थ्य**
64. अज्ञाय	**64. अज्ञात्वा**
65. विरच्य	**65. विरचय्य**
66. मुद्राप्य	**66. मुद्रयित्वा**
67. परिवृत्य	**67. परिवर्त्य**
68. लक्षीकृत्य	**68. लक्ष्यीकृत्य**
69. प्रजवाल्य	**69. प्रज्वाल्य**
70. गीतं गात्वा	**70. गीतं गीत्वा**
71. आज्ञप्य	**71. आज्ञाप्य**
72. प्रतिदत्वा	**72. प्रतिदाय**
73. मिलतुम्	**73. मेलितुम्**
74. गम्तुम्	**74. गन्तुम्**
75. पठतुम्	**75. पठितुम्**

स्त्रीप्रत्यय-गत-दोषाः

अशुद्धम्	शुद्धम्
1. अध्यापकी	**1. अध्यापिका**
2. लेखकी	**2. लेखिका**

अशुद्धम्	शुद्धम्	अशुद्धम्	शुद्धम्
3. उपन्यासकी	**3. उपन्यासिका**	17. षाण्मासिका	**17. षाण्मासिकी**
4. नायकी	**4. नायिका**	18. प्राचीनी	**18. प्राचीना**
5. उद्घोषकी	**5. उद्घोषिका**	19. नवीनी	**19. नवीना**
6. सेवकी	**6. सेविका**	20. नूतनी	**20. नूतना**
7. अनुवादकी	**7. अनुवादिका**	21. भयङ्करी	**21. भयङ्करा**
8. विभूषकी	**8. विभूषिका**	22. सहोदरी	**22. सहोदरा**
9. अध्यक्षिणी	**9. अध्यक्षा**	23. युवती	**23. युवतिः**
10. सिंहिणी	**10. सिंही**	24. स्वाभाविका	**24. स्वाभाविकी**
11. सुन्दरा	**11. सुन्दरी**	25. पावना	**25. पावनी**
12. सनातना	**12. सनातनी**	26. शूर्पणखी	**26. शूर्पणखा**
13. पुरातना	**13. पुरातनी**	27. पिशाचा	**27. पिशाची**
14. आधुनिका	**14. आधुनिकी**	28. नैजा आकृतिः	**28. नैजी आकृतिः**
15. इदानीन्तना	**15. इदानीन्तनी**	29. जनगणतिः	**29. जनगणना**
16. वार्षिका	**16. वार्षिकी**	30. नर्तकिः	**30. नर्तकी**

महत्त्वपूर्ण तथ्य

*	अष्टाध्यायी में प्रगृह्यसंज्ञासूत्र हैं	**8**
*	आर्धधातुकसंज्ञा सूत्र हैं	**4**
*	अव्ययसंज्ञासूत्र हैं	**5**
*	प्रातिपदिकसंज्ञासूत्र हैं	**2**
*	इत्संज्ञा सूत्र हैं	**6**
*	पदसंज्ञासूत्र हैं	**4**
*	अपादानसंज्ञासूत्र हैं	**8**
*	सम्प्रदानसंज्ञासूत्र हैं	**10**
*	'कारके' (1.4.23) के अधिकार में सूत्र पठित हैं	**32**
*	''कर्मप्रवचनीयाः'' के अधिकार में सूत्र पठित हैं	**15**
*	अष्टाध्यायी के त्रिपादी का प्रथमसूत्र है	**पूर्वत्रासिद्धम् (8.2.1)**
*	भर्तृहरि के वाक्यपदीय में तीन काण्ड हैं -	**वाक्यकाण्ड, पदकाण्ड, ब्रह्मकाण्ड**
*	स्वरसन्धि के आठ भेद -	**यण्, अयादि, गुण, वृद्धि, दीर्घ, पररूप, पूर्वरूप, प्रकृतिभाव**
*	आठ स्त्रीप्रत्यय -	**टाप्, डाप्, चाप्, ङीप्, ङीष्, ङीन्, ऊङ्, ति**
*	स्फोट कितने हैं -	**8**
*	महाभाष्य में पतञ्जलि का प्रथमवाक्य है -	**''अथ शब्दानुशासनम्''**
*	''संग्रह'' ग्रन्थ के प्रणेता -	**व्याडिः**
*	व्याकरणशास्त्र के प्रथम प्रवक्ता -	**ब्रह्मा**
*	पाँच दार्शनिक वैयाकरण -	**स्फोटायन, औदुम्बरायण, व्याडि, पतञ्जलि, भर्तृहरिः**
*	पाणिनि की निधनतिथि मानी जाती है -	**त्रयोदशी**
*	**अष्टाध्यायी-**अष्टानाम् अध्यायानां समाहारः (समाहारद्विगुः)	

11. व्याकरणस्य सामान्य-परिचयः

1. पाणिनि के पिता का नाम है -
(अ) शालंक (इ) वाभ्रव्य
(उ) पणिन् (पणिन) (ऋ) शाकल्य

2. पाणिनि की माता का नाम है -
(अ) दाक्षायणी (इ) दाक्षी
(उ) आर्या (ऋ) लोपामुद्रा

3. पाणिनि के गुरु का नाम है -
(अ) वर्ष (इ) उपोवर्ष
(उ) माहेश्वर (ऋ) शाकटायन

4. पाणिनि कहाँ के निवासी माने जाते हैं -
(अ) शालातुर (इ) गोनर्द
(उ) वाहीक (ऋ) कटक

5. पाणिनि के पितामह माने जाते हैं -
(अ) शलंक (इ) पणि
(उ) शाकल्य (ऋ) वाभ्रव्य

6. 'पाणिनि को विद्वानों ने किस अपर नाम से सम्बोधित किया है -
(अ) शालङ्किः, आहिकः (इ) शालातुरीयः
(उ) दाक्षीपुत्रः, पणिपुत्रः (ऋ) उपर्युक्त सभी

7. ''व्याक्रियन्ते व्युत्पाद्यन्ते शब्दाः अनेन इति'' इस व्युत्पत्ति से सम्बद्ध है -
(अ) वेद (इ) पुराण
(उ) व्याकरण (ऋ) शिक्षा

8. वेद पुरूष का मुख माना जाता है -
(अ) शिक्षा (इ) निरुक्त
(उ) ज्योतिष (ऋ) व्याकरण

9. 'व्याकरण' का दूसरा नाम है -
(अ) शब्दानुशासनम् (इ) वाक्यानुशासनम्
(उ) लिङ्गानुशासनम् (ऋ) धात्वानुशासनम्

10. 'नृत्तावसाने नटराजराजो
ननाद ढक्कां नवपञ्चवारम् ।
उद्धर्तुकामः सनकादिसिद्धान्
एतद्विमर्शे शिवसूत्रजालम्'' – यह किसका कथन है -
(अ) पतञ्जलिः (इ) नन्दिकेश्वरः
(उ) कात्यायनः (ऋ) नागेशभट्टः

11. व्याकरण प्रयोजन के विषय में ''रक्षोहागमलघ्वसन्देहाः प्रयोजनम्'' यह कथन किसका है -
(अ) पतञ्जलिः (इ) पाणिनिः
(उ) कात्यायनः (ऋ) भट्टोजिदीक्षितः

12. व्याकरण के मुख्य प्रयोजन कितने माने जाते हैं -
(अ) 14 (इ) 5
(उ) 13 (ऋ) 42

13. व्याकरण के गौण प्रयोजनों की संख्या है -
(अ) 13 (इ) 18
(उ) 14 (ऋ) 42

14. 'अष्टाध्यायी' के अतिरिक्त पाणिनि की रचना मानी जाती है -
(अ) जाम्बवतीजयम् (इ) स्वर्गारोहणम्
(उ) पार्वतीविजयम् (ऋ) त्रिपुरविजयम्

15. पाणिनीय ''पञ्चाङ्गव्याकरण'' के अन्तर्गत नहीं गिना जाता है -
(अ) सूत्रपाठ, गणपाठ (इ) धातुपाठ, उणादिपाठ
(उ) लिङ्गानुशासनम् (ऋ) वाक्यपाठ, घनपाठ

16. अष्टाध्यायी के ऊपर लिखे गये वार्तिकों की संख्या लगभग कितनी मानी जाती है–
(अ) 4000 (इ) 5000
(उ) 8000 (ऋ) 1000

17. अष्टाध्यायी का अपरनाम (पर्यायनाम) क्या है -
(अ) शब्दानुशासन (इ) अष्टक
(उ) वृत्तिसूत्र (ऋ) उपर्युक्त सभी

1. (उ), 2. (इ), 3. (अ), 4. (अ), 5. (अ), 6. (ऋ), 7. (उ) 8. (ऋ), 9. (अ) 10. (इ), 11. (अ), 12. (इ), 13. (अ), 14. (अ),15.(ऋ), 16. (इ), 17. (ऋ),

18. संस्कृत के कौन से दो ग्रन्थ 'जगन्माता' और 'जगत्पिता' के नाम से विख्यात हैं -
(अ) अष्टाध्यायी – अमरकोष
(इ) कादम्बरी - महाभारत
(उ) गीता – भागवत
(ऋ) काशिका – महाभाष्य

19. धातु के भेद माने जाते हैं -
(अ) परस्मैपद (इ) आत्मनेपद
(उ) उभयपद (ऋ) उपर्युक्त सभी

20. ''दधाति धारयति विविधान् क्रियार्थान् इति'' – इससे सम्बद्ध है -
(अ) वाक्यम् (इ) पदम्
(उ) धातुः (ऋ) लिङ्गम्

21. परस्मैपद धातुओं का प्रत्यय नहीं है -
(अ) तिप् तस् झि (इ) सिप् थस् थ
(उ) मिप् वस् मस् (ऋ) इड् वहि महिङ्

22. आत्मनेपद धातुओं का प्रत्यय नहीं है–
(अ) मिप् वस् मस् (इ) त आताम् झ
(उ) थास् आथाम् ध्वम् (ऋ) इट् वहि महिङ्

23. संस्कृत में लकार कितने माने जाते हैं -
(अ) 5 (इ) 10
(उ) 14 (ऋ) 3

24. पद के चार प्रकारों में नहीं गिना जाता है -
(अ) सुबन्त (इ) तिङन्त
(उ) उपसर्ग, निपात (ऋ) लकार

25. 'प्रत्याहार' शब्द में प्रकृति/प्रत्यय है -
(अ) प्रति आङ् हृ घञ् (इ) प्रति आहृ ण्वुल्
(उ) प्रति आह तृच् (ऋ) प्रति हञ् तृच्

26. ''सिंहो व्याकरणस्य कर्तुरहरत् प्राणान् प्रियान् पाणिनेः'' – इस श्लोकांश से क्या सिद्ध होता है -
(अ) पाणिनि को सिंह ने मारा था
(इ) सिंह को पाणिनि ने मारा था
(उ) पाणिनि ने सिंह को भी व्याकरण पढ़ाया था
(ऋ) पाणिनि सिंह के साथ रहते थे

27. युधिष्ठिर मीमांसक पाणिनि का काल (समय) क्या मानते हैं -
(अ) 2700 विक्रमपूर्व (इ) 2900 विक्रमपूर्व
(उ) 1200 विक्रमपूर्व (ऋ) 1800 विक्रमपूर्व

28. महर्षि पतञ्जलि का काल माना जात है -
(अ) 2700 विक्रमपूर्व (इ) 2900 विक्रमपूर्व
(उ) 2000 विक्रमपूर्व (ऋ) 1200 विक्रमपूर्व

29. ''यथोत्तरं मुनीनां प्रामाण्यम्'' के अनुसार व्याकरण में किसे अन्तिम प्रमाण माना जाता है -
(अ) पाणिनि (इ) पतञ्जलि
(उ) कात्यायन (ऋ) भट्टोजिदीक्षित

30. महर्षि पतञ्जलि की जन्मभूमि मानी जाती है -
(अ) शालातुर (इ) गोनर्द (गोण्डा)
(उ) महाराष्ट्र (ऋ) वाहीक

31. भट्टोजिदीक्षित के पिता का नाम है -
(अ) रङ्गोजिभट्ट (इ) लक्ष्मीधर
(उ) शेषकृष्ण (ऋ) भानुजिदीक्षित

32. सिद्धान्तकौमुदीकार भट्टोजिदीक्षित के गुरू माने जाते हैं -
(अ) लक्ष्मीधर (इ) भानुजीदीक्षित
(उ) रङ्गोजिभट्ट (ऋ) शेषकृष्ण

33. वार्तिककार वररुचि कात्यायन का काल माना जाता है -
(अ) 1800 विक्रमपूर्व (इ) 2700 विक्रमपूर्व
(उ) 1200 विक्रमपूर्व (ऋ) 2900 विक्रमपूर्व

18. (अ), 19. (ऋ),20. (उ), 21. (ऋ), 22. (अ), 23. (इ), 24. (ऋ), 25. (अ) 26. (अ), 27. (इ), 28. (ऋ), 29. (इ), 30. (इ), 31. (इ), 32. (ऋ), 33. (इ)।

व्याकरणस्य केचन प्रमुखग्रन्थाः

ग्रन्थः	ग्रन्थकारः
1. अष्टाध्यायी	पाणिनिः
2. महाभाष्यम्	पतञ्जलि
3. सिद्धान्तकौमुदी	भट्टोजिदीक्षितः
4. प्रौढमनोरमा	भट्टोजिदीक्षितः
5. प्रक्रियाकौमुदी	रामचन्द्रः
6. लिङ्गानुशासनम्	व्याडिः
7. वाक्यपदीयम्	भर्तृहरिः
8. मनोरमाकुचमर्दनम्	पण्डितराजजगन्नाथः
9. लघुसिद्धान्तकौमुदी	वरदराजः
10. मध्यसिद्धान्तकौमुदी	वरदराजः
11. सारसिद्धान्तकौमुदी	वरदराजः
12. शब्देन्दुशेखर	नागेशभट्टः
13. परिभाषेन्दुशेखर	नागेशभट्टः
14. वैयाकरणसिद्धान्तमञ्जूषा	नागेशभट्टः
15. लघुमञ्जूषा	नागेशभट्टः
16. परमलघुमञ्जूषा	नागेशभट्टः
17. सरस्वतीकण्ठाभरणम्	भोजदेवः
18. महाभाष्य की ''प्रदीप'' नाम्नी व्याख्या	कैयटः
19. काशिकावृत्तिः	जयादित्य एवं वामन
20. काशिकाविवरण पञ्जिका	जिनेन्द्रबुद्धिः
21. काशिका की ''पदमञ्जरी'' व्याख्या	हरदत्तः
22. वैयाकरणभूषण	कौण्डभट्टः
23. वैयाकरणभूषणसार	कौण्डभट्टः
24. महाभाष्यप्रत्याख्यानसंग्रहः	नागेशभट्टः
25. कातन्त्रव्याकरण	शर्ववर्मा (कौमार)
26. शिवशब्दानुशासनम्	शिवस्वामी
27. सिद्धान्तकौमुदी की व्याख्या ''तत्त्वबोधिनी''	ज्ञानेन्द्र सरस्वती
28. सिद्धान्तकौमुदी की ''बालमनोरमा'' व्याख्या	वासुदेवदीक्षितः
29. जाम्बवतीविजयम्	पाणिनिः
30. स्वर्गारोहणम्	कात्यायनः (वररुचिः)
31. रूपावतारः	धर्मकीर्तिः
32. व्याकरणसिद्धान्तसुधानिधिः	विश्वेश्वर पाण्डेयः
33. स्फोटवाद	नागेशभट्टः
34. अष्टाध्यायीभाष्यवृत्तिः	दयानन्द सरस्वती
35. रूपमाला	विमलसरस्वती
36. प्रक्रियासर्वस्वम्	नारायणभट्टः
37. महाभाष्यदीपिका	भर्तृहरिः
38. महाभाष्यप्रदीप की 'उद्योत' टीका	नागेशभट्टः
39. मुग्धबोधव्याकरणम्	वोपदेवः
40. सारस्वतव्याकरणम्	अनुभूतिस्वरूपाचार्य
41. प्राकृतप्रकाशः	वररुचिः
42. शब्दानुशासनम्	हेमचन्द्रः
43. दुर्घटवृत्ति	मैत्रेयरक्षित
44. शब्दकौस्तुभम्	भट्टोजिदीक्षित
45. चान्द्रव्याकरणम्	चन्द्रगोमी
46. महानन्दकाव्य	पतञ्जलिः
47. भट्टिकाव्य (रावणवध)	भट्टिकवि

परिशिष्टभागः

स्वरसन्धि-उदाहरणम् (अकारादि क्रम से)

दीर्घ-सन्धिः

सूत्रम् = 'अकः सवर्णे दीर्घः

अ/आ + सवर्ण अच् = आ

अत्र + आसीत् = **अत्रासीत्**
अस्त + अचलः = **अस्ताचलः**
अन्त्य + आदिः = **अन्त्यादिः**
अमित + आनन्दः = **अमितानन्दः**
अल्प + अल्पः = **अल्पाल्पः**
अन्त + आरोपितः = **अन्तारोपितः**
अद्य + अपि = **अद्यापि**
अद्य + अस्माभिः = **अद्यास्माभिः**
अन्य + आरात् = **अन्यारात्**
अवसान + अर्थः = **अवसानार्थः**
अम्बा + अर्थः = **अम्बार्थः**
अधर + अधरः = **अधराधरः**
अत्र + अनुनासिकः = **अत्रानुनासिकः**
अष्ट + अशीतिः = **अष्टाशीतिः**
अद्य + आगतः = **अद्यागतः**
अन्न + अभावः = **अन्नाभावः**
अङ्गेन + अङ्गम् = **अङ्गेनाङ्गम्**
अल्प + अर्धः = **अल्पार्धः**
अलीक + अभिमानी = **अलीकाभिमानी**
आम्रेडित + अन्तेषु = **आम्रेडितान्तेषु**
आज्ञा + अनुसारः = **आज्ञानुसारः**
आदर + अनादरः = **आदरानादरः**
आनन्द + अवसरः = **आनन्दावसरः**
इव + अत्र = **इवात्र**
इव + आत्मा = **इवात्मा**
इव + अस्य = **इवास्य**
इव + अपहारयेत् = **इवापहारयेत्**
उत्तम + अङ्गः = **उत्तमाङ्गः**
उत्तर + अवकाशः = **उत्तरावकाशः**
उच्चारण + अर्थः = **उच्चारणार्थः**
उदात्त + अनुनासिकः = **उदात्तानुनासिकः**
ऊर्ध्व + अधरः = **ऊर्ध्वाधरः**
एक + अजनाङ् = **एकाजनाङ्**
एव + आहुतिः = **एवाहुतिः**
एकेन + अपि = **एकेनापि**
कर + अग्रम् = **कराग्रम्**
कमल + आकरः = **कमलाकरः**
कर्म + अकर्म = **कर्माकर्म**
कच + अचितौ = **कचाचितौ**
कल्याण + अभिनिवेशः = **कल्याणाभिनिवेशः**
कषायित + आत्मनः = **कषायितात्मनः**
कमल + आमोदः = **कमलामोदः**
कक्षा + अस्ति = **कक्षास्ति**
कल्प + अन्तः = **कल्पान्तः**
करुणा + अवतारः = **करुणावतारः**
कदा + आगतः = **कदागतः**
कदा + अत्र = **कदात्र**
कंस + अरिः = **कंसारिः**
कार्य + अर्थी = **कार्यार्थी**
कार्य + आलयः = **कार्यालयः**
कार्य + आरम्भः = **कार्यारम्भः**
काव्य + आदर्शः = **काव्यादर्शः**
किरात + अर्जुनीयम् = **किरातार्जुनीयम्**
क्रिया + अपवर्गे = **क्रियापवर्गे**
कुल + अभिमानी = **कुलाभिमानी**
कुश + आसनम् = **कुशासनम्**
कृत + आकृती = **कृताकृती**
कृत + आधिपत्याम् = **कृताधिपत्याम्**
क्रोध + अग्निः = **क्रोधाग्निः**
क्रोड + अधीनम् = **क्रोडाधीनम्**
गङ्गा + अवतरणम् = **गङ्गावतरणम्**
गच्छ + अरण्यम् = **गच्छारण्यम्**
जग्ध्वा + अरण्येषु = **जग्ध्वारण्येषु**
जाल + अवलम्बा = **जालावलम्बा**
तव + अनुकम्पा = **तवानुकम्पा**
तव + आकारः = **तवाकारः**
तथा + अपि = **तथापि**
तद्धित + अर्थः = **तद्धितार्थः**

सन्धिविच्छेदः	सन्धिपदम्
तव + अनुभावः	= **तवानुभावः**
तव + अभिधानम्	= **तवाभिधानम्**
तदर्थ + अर्थः	= **तदर्थार्थः**
तव + अर्थे	= **तवार्थे**
तव + अधुना	= **तवाधुना**
तत्र + आगारम्	= **तत्रागारम्**
तत्र + अवश्यम्	= **तत्रावश्यम्**
तत्र + आसीत्	= **तत्रासीत्**
तया + अल्पार्धः	= **तयाल्पार्धः**
तेन + अद्य	= **तेनाद्य**
दश + अवतारः	= **दशावतारः**
दण्ड + आघातः	= **दण्डाघातः**
दया + अर्थी	= **दयार्थी**
दया + अर्णवः	= **दयार्णवः**
दण्ड + अग्रम्	= **दण्डाग्रम्**
दिव्य + अम्बरः	= **दिव्याम्बरः**
दिवा + आकरः	= **दिवाकरः**
दिवस + अन्तः	= **दिवसान्तः**
दिन + आदौ	= **दिनादौ**
द्वितीया + आम्रेडितम्	= **द्वितीयाम्रेडितम्**
दीर्घ + अभावात्	= **दीर्घाभावात्**
दुष्यन्तेन + आहितम्	= **दुष्यन्तेनाहितम्**
दूर + अन्तिकः	= **दूरान्तिकः**
दूर + अर्थः	= **दूरार्थः**
देव + आलोकः	= **देवालोकः**
देश + अधिपतिः	= **देशाधिपतिः**
देह + अन्तः	= **देहान्तः**
देव + आलयः	= **देवालयः**
देव + अरिः	= **देवारिः**
देव + आश्रमः	= **देवाश्रमः**
दैत्य + अरिः	= **दैत्यारिः**
धन + आदेशः	= **धनादेशः**
धन + आगमः	= **धनागमः**
धन + अर्चिता	= **धनार्चिता**
न + अभवत्	= **नाभवत्**
नव + अशीतिः	= **नवाशीतिः**
न + अवगच्छन्ति	= **नावगच्छन्ति**
न + अवसीदति	= **नावसीदति**

सन्धिविच्छेदः	सन्धिपदम्
न + अधमे	= **नाधमे**
नाम + अपि	= **नामापि**
नित्य + आनन्दः	= **नित्यानन्दः**
निज + अधमः	= **निजाधमः**
निशित + अङ्कुशेन	= **निशिताङ्कुशेन**
नील + आकाशः	= **नीलाकाशः**
नील + अञ्चलः	= **नीलाञ्चलः**
नैव + आकृतिः	= **नैवाकृतिः**
परम + अर्थः	= **परमार्थः**
पञ्च + अशीतिः	= **पञ्चाशीतिः**
परम + आनन्दः	= **परमानन्दः**
परम + आवश्यकः	= **परमावश्यकः**
परम + आत्मा	= **परमात्मा**
पद्म + आसनम्	= **पद्मासनम्**
प्र + आदयः	= **प्रादयः**
प्रत्यय + आदेशः	= **प्रत्ययादेशः**
प्रमाद + अर्थानाम्	= **प्रमादार्थानाम्**
प्रत्यय + आदीनाम्	= **प्रत्ययादीनाम्**
प्रणाम + अञ्जलिः	= **प्रणामाञ्जलिः**
प्रहार + आहता	= **प्रहाराहता**
प्रदेश + आगमः	= **प्रदेशागमः**
प्राप्य + अवन्ती	= **प्राप्यावन्ती**
प्रायेण + अधमः	= **प्रायेणाधमः**
प्राप्त + आपन्नः	= **प्राप्तापन्नः**
प्रातिपदिक + अर्थः	= **प्रातिपदिकार्थः**
पुष्कर + आवर्तकः	= **पुष्करावर्तकः**
पुस्तक + अर्थी	= **पुस्तकार्थी**
पुष्प + अञ्जलिः	= **पुष्पाञ्जलिः**
पूर्वत्र + असिद्धम्	= **पूर्वत्रासिद्धम्**
पूर्व + अवकाशः	= **पूर्वावकाशः**
प्रेम + आकर्षणम्	= **प्रेमाकर्षणम्**
प्रेम + अभिलाषा	= **प्रेमाभिलाषा**
फल + आशयः	= **फलाशयः**
बिम्ब + अधरः	= **बिम्बाधरः**
भ्रष्ट + आचारः	= **भ्रष्टाचारः**
भ्राता + आदिशति	= **भ्रातादिशति**
भय + आक्रान्तः	= **भयाक्रान्तः**
भ्रूविलास + अनभिज्ञैः	= **भ्रूविलासानभिज्ञैः**
भूतैरिव + अभिभूयन्ते	= **भूतैरिवाभिभूयन्ते**
मदन + अन्तकः	= **मदनान्तकः**

सन्धिविच्छेदः	सन्धिपदम्
मम + आधयः	= **ममाधयः**
मम + अयम्	= **ममायम्**
मज्जतीव + अन्तरात्मा	= मज्जतीवान्तरात्मा
मन्द + आक्रान्ता	= **मन्दाक्रान्ता**
मम + आज्ञा	= **ममाज्ञा**
मर्कट + आसनम्	= **मर्कटासनम्**
मम + अनुमत्या	= **ममानुमत्या**
मद्गोत्र + अङ्कः	= **मद्गोत्राङ्कः**
महा + आलयः	= **महालयः**
महा + अर्णवः	= **महार्णवः**
महा + आत्मा	= **महात्मा**
महा + अनुभावः	= **महानुभावः**
माया + अधीनः	= **मायाधीनः**
महा + आशयः	= **महाशयः**
मृग + अङ्कः	= **मृगाङ्कः**
मेघ + आलोके	= **मेघालोके**
यदा + अभवत्	= **यदाभवत्**
यथा + आह	= **यथाह**
यथा + अर्थः	= **यथार्थः**
यदा + आसीत्	= **यदासीत्**
युग + आदिः	= **युगादिः**
युवा + अवस्था	= **युवावस्था**
युग + आगमनम्	= **युगागमनम्**
येन + अदर्शनम्	= **येनादर्शनम्**
येन + अङ्गः	= **येनाङ्गः**
योग + अभ्यासः	= **योगाभ्यासः**
यौवन + आरम्भे	= **यौवनारम्भे**
रक्त + अशोकः	= **रक्ताशोकः**
रत्न + आकरः	= **रत्नाकरः**
रस + आस्वादः	= **रसास्वादः**
रक्षा + अर्थः	= **रक्षार्थः**
राम + आलयः	= **रामालयः**
राम + अनुचरः	= **रामानुचरः**
राम + अनुजः	= **रामानुजः**
राम + अयनम्	= **रामायणम्**
राम + अवतारः	= **रामावतारः**
राम + आधारः	= **रामाधारः**
राम + आगमनम्	= **रामागमनम्**
लिङ्ग + अनुशासनम्	= **लिङ्गानुशासनम्**

सन्धिविच्छेदः	सन्धिपदम्
लोक + अपवादः	= **लोकापवादः**
लोचन + अङ्कः	= **लोचनाङ्कः**
वन + अनिलाः	= **वनानिलाः**
विस्तरेण + अभिधीयसे	= **विस्तरेणाभिधीयसे**
विजय + अर्थिनः	= **विजयार्थिनः**
विद्या + अनवद्या	= **विद्यानवद्या**
विना + अपि	= **विनापि**
विद्या + आलयः	= **विद्यालयः**
विद्या + अभ्यासः	= **विद्याभ्यासः**
विद्या + अर्थी	= **विद्यार्थी**
विद्या + आतुरः	= **विद्यातुरः**
विद्या + आनन्दः	= **विद्यानन्दः**
वेद + अभ्यासः	= **वेदाभ्यासः**
वेद + अन्तः	= **वेदान्तः**
शश + अङ्कः	= **शशाङ्कः**
शब्द + अर्थः	= **शब्दार्थः**
शरण + अर्थी	= **शरणार्थी**
शस्त्र + आगारः	= **शस्त्रागारः**
शाप + अन्तः	= **शापान्तः**
शान्त + आकारः	= **शान्ताकारः**
शिक्षा + अर्थः	= **शिक्षार्थः**
शिक्षा + आलयः	= **शिक्षालयः**
शिव + आलयः	= **शिवालयः**
शिव + आनय	= **शिवानय**
शिष्ट + आचारः	= **शिष्टाचारः**
शिष्य + आयुष्यम्	= **शिष्यायुष्यम्**
शुभ + अशुभम्	= **शुभाशुभम्**
शुष्कमिव + अग्निः	= **शुष्कमिवाग्निः**
शेष + आकृतिः	= **शेषाकृतिः**
श्रद्धा + अस्ति	= **श्रद्धास्ति**
श्रित + अतीतम्	= **श्रितातीतम्**
श्रुत + अपि	= **श्रुतापि**
स्वर्ण + अवसरः	= **स्वर्णावसरः**
स्वर्ण + आकारः	= **स्वर्णाकारः**
सप्त + अध्यायी	= **सप्ताध्यायी**
सर्व + अविनयः	= **सर्वाविनयः**
सत्य + आग्रहः	= **सत्याग्रहः**
सत्त्व + अनुरूपम्	= **सत्त्वानुरूपम्**
सदा + आनन्दः	= **सदानन्दः**

सन्धिविच्छेदः	सन्धिपदम्
सन्निपत्य + अभियुक्तः	= **सन्निपत्याभियुक्तः**
समान + अधिकरणम्	= **समानाधिकरणम्**
सचिव + आलयः	= **सचिवालयः**
स्तोक + अन्तिकः	= **स्तोकान्तिकः**
सनक + आदिः	= **सनकादिः**
संग्रह + आलयः	= **संग्रहालयः**
संयोग + अन्तः	= **संयोगान्तः**
सन्देश + अर्थः	= **सन्देशार्थः**
स्रगिव + अपवर्जिता	= **स्रगिवापवर्जिता**
साहित्य + आकाशः	= **साहित्याकाशः**
सुख + अर्थः	= **सुखार्थः**
सुवर्ण + अवसरः	= **सुवर्णावसरः**
सूर्य + अस्तः	= **सूर्यास्तः**
सूर्य + अपाये	= **सूर्यापाये**
सेवा + अर्थः	= **सेवार्थः**
हकार + आदिः	= **हकारादिः**
ह्रश्व + अभावः	= **ह्रश्वाभावः**
हृदय + अनुरक्ता	= **हृदयानुरक्ता**
हिम + आलयः	= **हिमालयः**
हिम + अचलः	= **हिमाचलः**

इ/ई + सवर्ण अच् = ई

अति + इव	= **अतीव**
अपि + ईक्षते	= **अपीक्षते**
अपि + इच्छसि	= **अपीच्छसि**
अभि + इष्टः	= **अभीष्टः**
अति + इन्द्रियम्	= **अतीन्द्रियम्**
अस्ति + इदम्	= **अस्तीदम्**
इति + इव	= **इतीव**
इति + इह	= **इतीह**
इति + ईरयित्वा	= **इतीरयित्वा**
इति + इदम्	= **इतीदम्**
कवि + इन्द्रः	= **कवीन्द्रः**
कवि + ईशः	= **कवीशः**
कपि + ईशः	= **कपीशः**
कवि + इच्छा	= **कवीच्छा**
कुमारी + ईहते	= **कुमारीहते**
गिरि + ईशः	= **गिरीशः**
गिरि + इन्द्रः	= **गिरीन्द्रः**

सन्धिविच्छेदः	सन्धिपदम्
जानीहि + इति	= **जानीहीति**
गौरी + इन्द्रः	= **गौरीन्द्रः**
देवी + इति	= **देवीति**
नदी + ईशः	= **नदीशः**
नदी + इदानीम्	= **नदीदानीम्**
परि + ईक्षा	= **परीक्षा**
पार्वती + ईशः	= **पार्वतीशः**
प्रति + ईहते	= **प्रतीहते**
प्रति + ईक्षते	= **प्रतीक्षते**
पृथ्वी + ईशः	= **पृथ्वीशः**
फलानि + इमानि	= **फलानीमानि**
भगवती + इति	= **भगवतीति**
भगवती + इच्छा	= **भगवतीच्छा**
भवामि + इति	= **भवामीति**
भूमि + ईशः	= **भूमीशः**
मही + ईशः	= **महीशः**
महती + इच्छा	= **महतीच्छा**
मुनि + इन्द्रः	= **मुनीन्द्रः**
मुनि + ईशः	= **मुनीशः**
रजनी + ईशः	= **रजनीशः**
रवि + इन्द्रः	= **रवीन्द्रः**
रवि + ईश्वरः	= **रवीश्वरः**
राज्ञी + इह	= **राज्ञीह**
लक्ष्मी + इति	= **लक्ष्मीति**
लक्ष्मी + ईशः	= **लक्ष्मीशः**
श्री + ईशः	= **श्रीशः**
शची + इन्द्रः	= **शचीन्द्रः**
सती + ईशः	= **सतीशः**
हरि + ईशः	= **हरीशः**
हरि + इन्द्रः	= **हरीन्द्रः**
क्षिति + ईशः	= **क्षितीशः**

उ/ऊ + उ/ऊ = ऊ

उपु + उपध्मानीयम्	= **उपूपध्मानीयम्**
कटु + उक्तिः	= **कटूक्तिः**
कुरु + उपचारम्	= **कुरूपचारम्**
कुरु + उपवासम्	= **कुरूपवासम्**
गुरु + उत्तमम्	= **गुरूत्तमम्**
गुरु + उपदेशः	= **गुरूपदेशः**
गुरु + उत्साहः	= **गुरूत्साहः**

सन्धिविच्छेदः	सन्धिपदम्
गुरु + ऊहः	= **गुरूहः**
चमू + उदधिः	= **चमूदधिः**
चमू + उत्साहः	= **चमूत्साहः**
चमू + ऊर्जः	= **चमूर्जः**
तरु + उपेतः	= **तरूपेतः**
तरु + ऊर्ध्वम्	= **तरूर्ध्वम्**
तरु + ऊर्ध्वता	= **तरूर्ध्वता**
धातु + उपसर्गयोः	= **धातूपसर्गयोः**
पिबतु + उदकम्	= **पिबतूदकम्**
बहु + उन्नतिः	= **बहून्नतिः**
भानु + उदयः	= **भानूदयः**
भू + ऊर्ध्वम्	= **भूर्ध्वम्**
भू + ऊष्मा	= **भूष्मा**
भू + उपरि	= **भूपरि**
मधु + उत्तमम्	= **मधूत्तमम्**
रघु + उत्तमम्	= **रघूत्तमम्**
लघु + उक्तिः	= **लघूक्तिः**
लघु + उलूकः	= **लघूलूकः**
लघु + उपहारः	= **लघूपहारः**
लघु + उद्यानम्	= **लघूद्यानम्**
लघु + ऊर्मिः	= **लघूर्मिः**
वधू + उत्सवः	= **वधूत्सवः**
वधू + उक्तिः	= **वधूक्तिः**
वधू + ऊहनम्	= **वधूहनम्**
वधू + ऊरू	= **वधूरू**
विधु + उदयः	= **विधूदयः**
विष्णु + उदयः	= **विष्णूदयः**
वधू + उपहारः	= **वधूपहारः**
वधू + उल्लासः	= **वधूल्लासः**
शिशु + उपहारः	= **शिशूपहारः**
शिशु + उक्तिः	= **शिशूक्तिः**
साधु + उक्तिः	= **साधूक्तिः**
साधु + उदयः	= **साधूदयः**
साधु + ऊचुः	= **साधूचुः**
सिन्धु + ऊर्मिः	= **सिन्धूर्मिः**
सिन्धु + उदकम्	= **सिन्धूदकम्**
सु + उक्तिः	= **सूक्तिः**

ऋ/ॠ + ऋ/ॠ = ॠ

ऋ + ऌ = ॠ

सन्धिविच्छेदः	सन्धिपदम्
कर्तृ + ऋणि	= **कर्तॄणि**
कर्तृ + ऋजुः	= **कर्तॄजुः**
कृ + ऋकारः	= **कॄकारः**
कर्तृ + ऋद्धिः	= **कर्तॄद्धिः**
पक्तृ + ऋजीषम्	= **पक्तॄजीषम्**
पितृ + ऋणम्	= **पितॄणम्**
पितृ + ऋषभः	= **पितॄषभः**
भर्तृ + ऋद्धिः	= **भर्तॄद्धिः**
मातृ + ऋकारः	= **मातॄकारः**
मातृ + ऋद्धिः	= **मातॄद्धिः**
होतृ + ऋश्यः	= **होतॄश्यः**
होतृ + ऋकारः	= **होतॄकारः**
होतृ + ऌकारः	= **होतॄकारः**

गुणसन्धिः

सूत्र - ''आद् गुणः''

अ/आ + इ/ई = ए

सन्धिविच्छेदः	सन्धिपदम्
अलिखिता + इव	= **अलिखितेव**
अजिन + इच्छाम्	= **अजिनेच्छाम्**
अत्र + इदम्	= **अत्रेदम्**
इव + इषवः	= **इवेषवः**
ईर्ष्या + इव	= **ईर्ष्येव**
उमा + ईशः	= **उमेशः**
उप + इन्द्रः	= **उपेन्द्रः**
एव + इदानीम्	= **एवेदानीम्**
कमल + ईशः	= **कमलेशः**
कमल + इन्दुः	= **कमलेन्दुः**
कान्ता + इव	= **कान्तेव**
कुल्या + इव	= **कुल्येव**
कुरुष्व + इति	= **कुरुष्वेति**
क्षमस्व + इति	= **क्षमस्वेति**
खग + इन्द्रः	= **खगेन्द्रः**
खग + ईशः	= **खगेशः**
गण + ईशः	= **गणेशः**
गज + इन्द्रः	= **गजेन्द्रः**
गङ्गा + ईशः	= **गङ्गेशः**
च + इयम्	= **चेयम्**
च + इन्द्रजालम्	= **चेन्द्रजालम्**
छाया + इव	= **छायेव**
जित + इन्द्रियः	= **जितेन्द्रियः**
जीवित + ईश्वरः	= **जीवितेश्वरः**

सन्धिविच्छेदः	सन्धिपदम्
तस्य + इव	= **तस्येव**
तव + इति	= **तवेति**
तथा + इति	= **तथेति**
दत्त +ईक्षणः	= **दत्तेक्षणः**
दिन +ईशः	= **दिनेशः**
दीपशिखा + इव	= **दीपशिखेव**
देव + इति	= **देवेति**
देव + इन्द्रः	= **देवेन्द्रः**
देव + ईशः	= **देवेशः**
धन + इच्छा	= **धनेच्छा**
धर्म + इन्दुः	= **धर्मेन्दुः**
धर्म + इन्द्रः	= **धर्मेन्द्रः**
नर + इन्द्रः	= **नरेन्द्रः**
नर + ईशः	= **नरेशः**
न + इयम्	= **नेयम्**
न + इदम्	= **नेदम्**
नवमालिका + इयम्	= **नवमालिकेयम्**
न + इति	= **नेति**
न + इच्छति	= **नेच्छति**
नाग + इन्द्रः	= **नागेन्द्रः**
परम + ईश्वरः	= **परमेश्वरः**
पदस्य + इति	= **पदस्येति**
परिस्फुट + इति	= **परिस्फुटेति**
प्र + इतः	= **प्रेतः**
प्रतिकूल + इदानीम्	= **प्रतिकूलेदानीम्**
पातालगुहा + इव	= **पातालगुहेव**
पापेन + इव	= **पापेनेव**
पिता + इव	= **पितेव**
प्रिया + इति	= **प्रियेति**
भारत + इन्दुः	= **भारतेन्दुः**
भारत + ईश्वरः	= **भारतेश्वरः**
भाष्यकार + इष्टिः	= **भाष्यकारेष्टिः**
भुवन + ईश्वरः	= **भुवनेश्वरः**
महा + ईश्वरः	= **महेश्वरः**
महा + इन्द्रः	= **महेन्द्रः**
महा + ईशः	= **महेशः**
महा + इष्वासः	= **महेष्वासः**
म्लान + इन्द्रियः	= **म्लानेन्द्रियः**
महाराज + इति	= **महाराजेति**

सन्धिविच्छेदः	सन्धिपदम्
मध्य + इन्द्रनीलम्	= **मध्येन्द्रनीलम्**
मृग + इन्द्रः	= **मृगेन्द्रः**
माता + इव	= **मातेव**
माता + इति	= **मातेति**
मान + इच्छा	= **मानेच्छा**
मोहिता + इव	= **मोहितेव**
यथा + इष्टः	= **यथेष्टः**
यथा + इच्छा	= **यथेच्छा**
यथा + इयम्	= **यथेयम्**
यथा + ईप्सितम्	= **यथेप्सितम्**
राम + इति	= **रामेति**
रमा + ईशः	= **रमेशः**
रमा + इच्छाम्	= **रमेच्छाम्**
राम + इन्द्रः	= **रामेन्द्रः**
राम + ईश्वरः	= **रामेश्वरः**
राज + ईश्वरः	= **राजेश्वरः**
राम + इतिहासः	= **रामेतिहासः**
राजा + इन्द्रः	= **राजेन्द्रः**
राका + ईशः	= **राकेशः**
लता + इव	= **लतेव**
लङ्का + ईशः	= **लङ्केशः**
लेखा + इव	= **लेखेव**
वृत्तान्ता + इयम्	= **वृत्तान्तेयम्**
व्यथा + इव	= **व्यथेव**
वाराङ्गना + इव	= **वाराङ्गनेव**
वा + इति	= **वेति**
वात्या + इव	= **वात्येव**
वायुना + इव	= **वायुनेव**
विना + इदम्	= **विनेदम्**
विद्या + इव	= **विद्येव**
विकल + इन्द्रियः	= **विकलेन्द्रियः**
वीर + इन्द्रः	= **वीरेन्द्रः**
शब्दाख्या + इयम्	= **शब्दाख्येयम्**
शैल + ईशः	= **शैलेशः**
सर्व + ईशः	= **सर्वेशः**
सखा + इति	= **सखेति**
सह + इता	= **सहेता**
सत्य + इन्द्रः	= **सत्येन्द्रः**
सा +इन्द्रचापः	= **सेन्द्रचापः**

सन्धिविच्छेदः	सन्धिपदम्
सा + इयम्	= **सेयम्**
सख्या + इव	= **सख्येव**
सा + इव	= **सेव**
सुर + ईशः	= **सुरेशः**
हिडिम्बा + इव	= **हिडिम्बेव**

अ/आ +उ/ऊ = ओ

सन्धिविच्छेदः	सन्धिपदम्
अपरिणाम + उपशमः	= **अपरिणामोपशमः**
अशिशिर + उपचारः	= **अशिशिरोपचारः**
अभिषेक + उत्तीर्णः	= **अभिषेकोत्तीर्णः**
अस्थान + उपशमः	= **अस्थानोपशमः**
अस्थान + उपगतः	= **अस्थानोपगतः**
अत्र + उद्भ्रान्तः	= **अत्रोद्भ्रान्तः**
अत्यन्त + ऊर्ध्वम्	= **अत्यन्तोर्ध्वम्**
आभरण + उचितम्	= **आभरणोचितम्**
आनेय + ऊर्ध्वम्	= **आनेयोर्ध्वम्**
इव + उन्मुखी	= **इवोन्मुखी**
इव + उन्मार्गः	= **इवोन्मार्गः**
इव + उच्छिखः	= **इवोच्छिखः**
उष्ण + उदकम्	= **उष्णोदकम्**
उष्ण + उदकेन	= **उष्णोदकेन**
एषा + उटजा	= **एषोटजा**
एक + ऊनविंशतिः	= **एकोनविंशतिः**
एव + उत्तरेण	= **एवोत्तरेण**
कविना + उक्तम्	= **कविनोक्तम्**
कस्य + उद्धारकः	= **कस्योद्धारकः**
कृष्ण + ऊरुः	= **कृष्णोरुः**
कथा + उद्घाताः	= **कथोद्घाताः**
कानन + उदुम्बरः	= **काननोदुम्बरः**
कानन + उद्देश्यः	= **काननोद्देश्यः**
किसलय + उद्भेदः	= **किसलयोद्भेदः**
किमत्र + उच्यते	= **किमत्रोच्यते**
कुसुम + उद्गमः	= **कुसुमोद्गमः**
केन + उपदिष्टः	= **केनोपदिष्टः**
केका + उत्कण्ठा	= **केकोत्कण्ठा**
गङ्गा + उदकम्	= **गङ्गोदकम्**
खद्योत + उन्मेषः	= **खद्योतोन्मेषः**
जन + उपदेशः	= **जनोपदेशः**
ज्वर + ऊष्मा	= **ज्वरोष्मा**
जन + उदितम्	= **जनोदितम्**

सन्धिविच्छेदः	सन्धिपदम्
जल + ऊर्मिः	= **जलोर्मिः**
जाल + उद्गीर्णः	= **जालोद्गीर्णः**
जीवन + उपायः	= **जीवनोपायः**
तट + उपरि	= **तटोपरि**
तट + उन्मूलिता	= **तटोन्मूलिता**
तस्य + उत्सङ्गे	= **तस्योत्सङ्गे**
तथा + उपदिष्टम्	= **तथोपदिष्टम्**
तथा + उद्दिष्टम्	= **तथोद्दिष्टम्**
तव + उत्साहः	= **तवोत्साहः**
तव + उपालम्भः	= **तवोपालम्भः**
त्वया + उपपाद्यः	= **त्वयोपपाद्यः**
तीर + उपान्तः	= **तीरोपान्तः**
तोय + उत्सङ्गे	= **तोयोत्सङ्गे**
दया + उदयः	= **दयोदयः**
दर्शन + उत्सुकः	= **दर्शनोत्सुकः**
दहन + उद्गारः	= **दहनोद्गारः**
दया + उदयः	= **दयोदयः**
दयोदय + उज्ज्वलः	= **दयोदयोज्ज्वलः**
दीर्घ + उपलः	= **दीर्घोपलः**
देश + उपकारः	= **देशोपकारः**
धन + उपयोगः	= **धनोपयोगः**
धन + ऊष्मा	= **धनोष्मा**
धूम + उद्गारः	= **धूमोद्गारः**
नय + उपरि	= **नयोपरि**
नर + उत्तमः	= **नरोत्तमः**
नव + उदयः	= **नवोदयः**
नव + ऊढा	= **नवोढा**
नत + उन्नतः	= **नतोन्नतः**
नयन + उत्सवः	= **नयनोत्सवः**
न + उद्वेगकरः	= **नोद्वेगकरः**
न + उपलब्धिः	= **नोपलब्धिः**
नृत्य + उपहारः	= **नृत्योपहारः**
नित्य + उज्ज्वलः	= **नित्योज्ज्वलः**
निम्न + ऊर्ध्वम्	= **निम्नोर्ध्वम्**
नील + उत्पलम्	= **नीलोत्पलम्**
पश्य + ऊर्ध्वम्	= **पश्योर्ध्वम्**
परम + उत्तमः	= **परमोत्तमः**
पर + उपदेशः	= **परोपदेशः**
परम + उत्कृष्टः	= **परमोत्कृष्टः**

सन्धिविच्छेदः	सन्धिपदम्
परीक्षा + उत्सुकः	= **परीक्षोत्सुकः**
परम + उत्सवः	= **परमोत्सवः**
पर + उपकारः	= **परोपकारः**
पदादिव + उरगः	= **पदादिवोरगः**
पक्ष्म + उत्क्षेपः	= **पक्ष्मोत्क्षेपः**
परिमल + उद्गारः	= **परिमलोद्गारः**
पक्ष्मल + उत्तानः	= **पक्ष्मलोत्तानः**
पत्र + उज्ज्वलाः	= **पत्रोज्ज्वलाः**
प्रसव + उद्भेदः	= **प्रसवोद्भेदः**
प्रस्थितस्य + उत्तरः	= **प्रस्थितस्योत्तरः**
प्रसाद + उन्मुखः	= **प्रसादोन्मुखः**
पार्थिव + उपाश्रयः	= **पार्थिवोपाश्रयः**
पाटव + उपादानम्	= **पाटवोपादानम्**
पुरुष + उत्तमः	= **पुरुषोत्तमः**
पुत्रस्य + उपरि	= **पुत्रस्योपरि**
पुर + उत्पीडे	= **पुरोत्पीडे**
पूर्व + उदयः	= **पूर्वोदयः**
फल + उद्गमः	= **फलोद्गमः**
बन्ध + उच्छ्वसितः	= **बन्धोच्छ्वसितः**
बल + उपचयः	= **बलोपचयः**
भगवता + उक्तम्	= **भगवतोक्तम्**
भाग + उत्थिते	= **भागोत्थिते**
भाण्ड + उदरे	= **भाण्डोदरे**
भुज + उच्छ्वसितः	= **भुजोच्छ्वसितः**
मम + उपालम्भः	= **ममोपालम्भः**
महा + उत्सवः	= **महोत्सवः**
महा + उदधिः	= **महोदधिः**
महा + उदयः	= **महोदयः**
महा + उपदेशः	= **महोपदेशः**
महा + ऊर्जस्वी	= **महोर्जस्वी**
महा + ऊरुः	= **महोरुः**
मस्तक + ऊर्ध्वम्	= **मस्तकोर्ध्वम्**
मण्डल + उत्पलम्	= **मण्डलोत्पलम्**
मया + उद्वेष्टम्	= **मयोद्वेष्टम्**
मध्यम + उत्तमः	= **मध्यमोत्तमः**
मान + उन्मादः	= **मानोन्मादः**
मात्र + उन्मादः	= **मात्रोन्मादः**
मानस + उत्सुकः	= **मानसोत्सुकः**
मायया + ऊर्जस्विनः	= **माययोर्जस्विनः**
मानव + उत्तमः	= **मानवोत्तमः**
मीन + ऊरुः	= **मीनोरुः**
मुख + उल्लासिनी	= **मुखोल्लासिनी**
मोक्ष + उत्सुकानि	= **मोक्षोत्सुकानि**
यत्र + उपकरणम्	= **यत्रोपकरणम्**
यत्र + उन्मत्तः	= **यत्रोन्मत्तः**
यवन + उद्धतः	= **यवनोद्धतः**
यमुना + उदकम्	= **यमुनोदकम्**
यज्ञ + उपवीतम्	= **यज्ञोपवीतम्**
यथा + उचितम्	= **यथोचितम्**
येन + उद्गच्छत्	= **येनोद्गच्छत्**
रथ + उद्धता	= **रथोद्धता**
राष्ट्र + उद्धारकः	= **राष्ट्रोद्धारकः**
रुदित + उच्छूनः	= **रुदितोच्छूनः**
रेफस्य + ऊर्ध्वगमनम्	= **रेफस्योर्ध्वगमनम्**
लग्न + ऊर्मिः	= **लग्नोर्मिः**
लाभ + उपदेशः	= **लाभोपदेशः**
लीला + उत्खात्	= **लीलोत्खात्**
लोक + उक्तिः	= **लोकोक्तिः**
लोक + उपयोगः	= **लोकोपयोगः**
वसन्त + उत्सवः	= **वसन्तोत्सवः**
वन + उपकरणम्	= **वनोपकरणम्**
वन + उपवनम्	= **वनोपवनम्**
वदन + उदरः	= **वदनोदरः**
वृष + उत्खात्	= **वृषोत्खात्**
वृक + उदरः	= **वृकोदरः**
वृक्ष + उपरि	= **वृक्षोपरि**
वंश + उद्धारकः	= **वंशोद्धारकः**
वार्षिक + उत्सवः	= **वार्षिकोत्सवः**
वासव + उपमः	= **वासवोपमः**
बाण + उच्छिष्टम्	= **बाणोच्छिष्टम्**
विवाह + उत्सवः	= **विवाहोत्सवः**
विद्या + उन्नतिः	= **विद्योन्नतिः**
विरह + उदग्रम्	= **विरहोदग्रम्**
विषय + उपभोगः	= **विषयोपभोगः**
विशेष + उक्तिः	= **विशेषोक्तिः**
वीर + उचितः	= **वीरोचितः**
वेद + उद्धारकः	= **वेदोद्धारकः**
वेग + उत्फुल्लया	= **वेगोत्फुल्लया**

सन्धिविच्छेदः	सन्धिपदम्
शफर + उद्वर्तनम्	= **शफरोद्वर्तनम्**
शकुन्तला + उत्थाय	= **शकुन्तलोत्थाय**
श्रीकृष्ण + उपदिष्टम्	= **श्रीकृष्णोपदिष्टम्**
शैल + उदग्रः	= **शैलोदग्रः**
शोक + उद्वेगः	= **शोकोद्वेगः**
सह + उदरः	= **सहोदरः**
सलिल + उद्गारः	= **सलिलोद्गारः**
सलिल + उत्पीडे	= **सलिलोत्पीडे**
सर्व + उपहासः	= **सर्वोपहासः**
सहस्र + उल्लासितः	= **सहस्रोल्लासितः**
सरल + उपायः	= **सरलोपायः**
स्वच्छ + उदकम्	= **स्वच्छोदकम्**
स्वभाव + उक्तिः	= **स्वभावोक्तिः**
समुद्र + ऊर्मिः	= **समुद्रोर्मिः**
सतत + उद्यतः	= **सततोद्यतः**
संजीवन + उपायः	= **संजीवनोपायः**
सूर्य + ऊर्जा	= **सूर्योर्जा**
सौध + उत्सङ्गः	= **सौधोत्सङ्गः**
हस्त + उपहितः	= **हस्तोपहितः**
हित + उपदेशः	= **हितोपदेशः**
ज्ञानस्य + उपशमः	= **ज्ञानस्योपशमः**

अ/आ + ऋ = अर्

सन्धिविच्छेदः	सन्धिपदम्
अधम + ऋणः	= **अधमर्णः**
उत्तम + ऋणः	= **उत्तमर्णः**
कृष्ण + ऋद्धिः	= **कृष्णर्द्धिः**
ग्रीष्म + ऋतुः	= **ग्रीष्मर्तुः**
देव + ऋषिः	= **देवर्षिः**
नारद + ऋषिः	= **नारदर्षिः**
पुण्य + ऋद्धिः	= **पुण्यर्द्धिः**
पाप + ऋद्धिः	= **पापर्द्धिः**
भरत + ऋषभः	= **भरतर्षभः**
महा + ऋषिः	= **महर्षिः**
राजा + ऋषिः	= **राजर्षिः**
वन + ऋषयः	= **वनर्षयः**
वसन्त + ऋतुः	= **वसन्तर्तुः**
ब्रह्मा + ऋषिः	= **ब्रह्मर्षिः**
ब्रह्मा + ऋषिः	= **ब्रह्म ऋषिः**

सूत्र - ऋत्यकः

सन्धिविच्छेदः	सन्धिपदम्
शिशिर + ऋतुः	= **शिशिरर्तुः**
शीत + ऋतुः	= **शीतर्तुः**
सप्त + ऋषिः	= **सप्तर्षिः**
वेद + ऋकः	= **वेदर्कः**
हेमन्त + ऋतुः	= **हेमन्तर्तुः**

अ/आ + ऌ = अल्

सन्धिविच्छेदः	सन्धिपदम्
तव + ऌकारः	= **तवल्कारः**
तव + ऌदन्तः	= **तवल्दन्तः**
मम + ऌकारः	= **ममल्कारः**
मम + ऌवर्णः	= **ममल्वर्णः**

यण् सन्धिः ''इको यणचि''

इ/ई + असमान स्वर = य्

सन्धिविच्छेदः	सन्धिपदम्
अति + अधिकम्	= **अत्यधिकम्**
अति + अन्तम्	= **अत्यन्तम्**
अति + आनन्दः	= **अत्यानन्दः**
अति + आचारः	= **अत्याचारः**
अति + अधिकम्	= **अत्यधिकम्**
अस्ति + आत्मा	= **अस्त्यात्मा**
अति + उत्तमः	= **अत्युत्तमः**
अति + ऊर्ध्वम्	= **अत्यूर्ध्वम्**
अति + औचित्यः	= **अत्यौचित्यः**
अति + औदार्यः	= **अत्यौदार्यः**
अति + ओजः	= **अत्योजः**
अति + आवश्यकः	= **अत्यावश्यकः**
अति + उक्तः	= **अत्युक्तः**
अस्ति + उज्जयिन्याम्	= **अस्त्युज्जयिन्याम्**
अति + अन्धकारः	= **अत्यन्धकारः**
अस्ति + अनुभवः	= **अस्त्यनुभवः**
अधि + आपतति	= **अध्यापतति**
अधि + एषणम्	= **अध्येषणम्**
अधि + आदेशः	= **अध्यादेशः**
अधि + अयनम्	= **अध्ययनम्**
अनुभूति + एकम्	= **अनुभूत्येकम्**
अपश्यन्ति + आतुराः	= **अपश्यन्त्यातुराः**
अपि + आश्रमः	= **अप्याश्रमः**
अद्यापि + आरूढः	= **अद्याप्यारूढः**
अपि + एवम्	= **अप्येवम्**
अहमपि + आज्ञापिता	= **अहमप्याज्ञापिता**
अद्यापि + आनन्दयति	= **अद्याप्यानन्दयति**
अद्यापि + उच्छ्वासः	= **अद्याप्युच्छ्वासः**

सन्धिविच्छेदः	सन्धिपदम्
अपि + एतत्	= **अप्येतत्**
अपि + एतेषु	= **अप्येतेषु**
अपि + एषाम्	= **अप्येषाम्**
अपि + आसु	= **अप्यासु**
अभि + उदयः	= **अभ्युदयः**
अपि + एषु	= **अप्येषु**
अभि + उद्यतः	= **अभ्युद्यतः**
अहमपि + अपह्रिये	= **अहमप्यपह्रिये**
अर्चयन्ति + अर्चनीयान्	= **अर्चयन्त्यर्चनीयान्**
अपि + अगम्यः	= **अप्यगम्यः**
अभि + अग्निः	= **अभ्यग्निः**
अभि + आगतः	= **अभ्यागतः**
आदि + अन्तौ	= **आद्यन्तौ**
आत्मनि + आरोपितम्	= **आत्मन्यारोपितम्**
आयाति + एवम्	= **आयात्येवम्**
आदि + अन्तम्	= **आद्यन्तम्**
इति + अवदत्	= **इत्यवदत्**
इति + आह	= **इत्याह**
इति + आचरति	= **इत्याचरति**
इति + आदिशत्	= **इत्यादिशत्**
इति + अपि	= **इत्यपि**
इति + आदिः	= **इत्यादिः**
इति + आकर्ण्य	= **इत्याकर्ण्य**
इति + आधारः	= **इत्याधारः**
इति + अर्थः	= **इत्यर्थः**
इति + एवम्	= **इत्येवम्**
इति + अलम्	= **इत्यलम्**
इति + आश्चर्यः	= **इत्याश्चर्यः**
इति + उत्कण्ठा	= **इत्युत्कण्ठा**
इति + उवाच	= **इत्युवाच**
इति + अतः	= **इत्यतः**
इति + असूयन्ति	= **इत्यसूयन्ति**
इति + उत्तरम्	= **इत्युत्तरम्**
इति + उत्तिष्ठति	= **इत्युत्तिष्ठति**
इति + उन्नेतव्यः	= **इत्युन्नेतव्यः**
इति + औत्सुक्यात्	= **इत्यौत्सुक्यात्**
इति + असन्धानम्	= **इत्यसन्धानम्**
उपरि + उक्तः	= **उपर्युक्तः**
ऋति + अकः	= **ऋत्यकः**

सन्धिविच्छेदः	सन्धिपदम्
एति + आत्मनि	= **एत्यात्मनि**
एति + एधति	= **एत्येधति**
एत्येधति + ऊठ्सु	= **एत्येधत्यूठ्सु**
करोमि + अहम्	= **करोम्यहम्**
कर्मणि + अनादरे	= **कर्मण्यनादरे**
कर्मणि + अधिकरणे	= **कर्मण्यधिकरणे**
कर्मणि + उपसंख्यानम्	= **कर्मण्युपसंख्यानम्**
करोति + अयम्	= **करोत्ययम्**
कान्ति + आभा	= **कान्त्याभा**
कामिनी + उदयः	= **कामिन्युदयः**
कामिनी + आयाति	= **कामिन्यायाति**
किमिति + आर्यपुत्रः	= **किमित्यार्यपुत्रः**
कौमुदी + आयाति	= **कौमुद्यायाति**
गच्छति + अत्र	= **गच्छत्यत्र**
गलति + उपदिष्टम्	= **गलत्युपदिष्टम्**
गृह्णन्ति + उपदेशम्	= **गृह्णन्त्युपदेशम्**
गोपी + उवाच	= **गोप्युवाच**
चिन्तयति + एवम्	= **चिन्तयत्येवम्**
चापि + उपकृते	= **चाप्युपकृते**
जननी + आह	= **जनन्याह**
जननी + आगच्छति	= **जनन्यागच्छति**
जानासि + एव	= **जानास्येव**
जुहोति + आदयः	= **जुहोत्यादयः**
झटिति + उत्सुकयति	= **झटित्युत्सुकयति**
तथापि + एतावत्	= **तथाप्येतावत्**
त्वयि + अस्याः	= **त्वय्यस्याः**
त्वयि + उपेक्षेत्	= **त्वय्युपेक्षेत्**
त्वयि + आसन्ने	= **त्वय्यासन्ने**
त्वयि + आदातुम्	= **त्वय्यादातुम्**
त्रि + अशीतिः	= **त्र्यशीतिः**
त्रिपादी + असिद्धा	= **त्रिपाद्यसिद्धा**
दधि + अत्र	= **दध्यत्र**
दधि + आनय	= **दध्यानय**
दधि + ओदनः	= **दध्योदनः**
दर्वी + असौ	= **दर्व्यसौ**
द्वि + अशीतिः	= **द्व्यशीतिः**
देवी + ऐश्वर्यम्	= **देव्यैश्वर्यम्**
देवी + उवाच	= **देव्युवाच**
देवी + उक्तिः	= **देव्युक्तिः**

सन्धिविच्छेदः	सन्धिपदम्
देवी + अर्थः	= **देव्यर्थः**
देवी + अङ्गम्	= **देव्यङ्गम्**
देवी + ओजः	= **देव्योजः**
देवी + आलयः	= **देव्यालयः**
देवी + आगमः	= **देव्यागमः**
देवी + औदार्यम्	= **देव्यौदार्यम्**
नदी + अत्र	= **नद्यत्र**
नदी + अम्भः	= **नद्यम्भः**
नदी + आवहति	= **नद्यावहति**
नदी + ऊर्मिः	= **नद्यूर्मिः**
नदी + आमुखम्	= **नद्यामुखम्**
नदी + आगमनम्	= **नद्यागमनम्**
नदी + अर्पणः	= **नद्यर्पणः**
नदी + आवेगः	= **नद्यावेगः**
नदी + उदकम्	= **नद्युदकम्**
नयति + अयुग्मः	= **नयत्ययुग्मः**
नहि + एवम्	= **नह्येवम्**
नश्छवि + अप्रशान्	= **नश्छव्यप्रशान्**
नास्ति + एव	= **नास्त्येव**
नि + ऊनम्	= **न्यूनम्**
पति + आदेशः	= **पत्यादेशः**
परि + आवरणम्	= **पर्यावरणम्**
पश्यामि + अहम्	= **पश्याम्यहम्**
पतति + अभिजनः	= **पतत्यभिजनः**
पत्राणि + आदाय	= **पत्राण्यादाय**
पतितमपि + आत्मानम्	= **पतितमप्यात्मानम्**
पश्यन्ति + एव	= **पश्यन्त्येव**
प्रकृति + एव	= **प्रकृत्येव**
प्रति + आङ्	= **प्रत्याङ्**
प्रति + अभिज्ञेयम्	= **प्रत्यभिज्ञेयम्**
प्रभवामि + अहम्	= **प्रभवाम्यहम्**
प्रति + ऊषः	= **प्रत्यूषः**
प्रति + आलिङ्गम्	= **प्रत्यालिङ्गम्**
प्रति + एकः	= **प्रत्येकः**
प्रति + उपकारः	= **प्रत्युपकारः**
प्रति + आदेशात्	= **प्रत्यादेशात्**
फलन्ति + उपायाः	= **फलन्त्युपायाः**
भवति + उत्सवः	= **भवत्युत्सवः**
भणसि + अपरिस्फुटः	= **भणस्यपरिस्फुटः**

सन्धिविच्छेदः	सन्धिपदम्
भाति + अम्बरे	= **भात्यम्बरे**
मही + आरुढः	= **मह्यारूढः**
मन्दभागिनी + अहम्	= **मन्दभागिन्यहम्**
मयि + अनुक्रोशः	= **मय्यनुक्रोशः**
मयि + अविश्वासिनी	= **मय्यविश्वासिनी**
मधुरतराणि + आपतन्ति	= **मधुरतराण्यापतन्ति**
मति + आशा	= **मत्याशा**
मुनि + आदिः	= **मुन्यादिः**
मुञ्चन्ति + अश्रूणीव	= **मुञ्चन्त्यश्रूणीव**
यदि + अपि	= **यद्यपि**
यदि + एवम्	= **यद्येवम्**
यदि + अस्ति	= **यद्यस्ति**
यान्ति + आपदम्	= **यान्त्यापदम्**
याति + एकतः	= **यात्येकतः**
यास्यति + अद्य	= **यास्यत्यद्य**
यास्यति + ऊरुः	= **यास्यत्यूरुः**
रीति + अनुसारम्	= **रीत्यनुसारम्**
वंशी + आयाति	= **वंश्यायाति**
वाणी + औचित्यम्	= **वाण्यौचित्यम्**
वाणी + ऊर्मिः	= **वाण्यूर्मिः**
वाञ्छन्ति + असुभिः	= **वाञ्छन्त्यसुभिः**
वारि + एति	= **वार्येति**
वि + आप्तः	= **व्याप्तः**
वि + ऊहः	= **व्यूहः**
वि + अपगतः	= **व्यपगतः**
विनश्यति + आशुः	= **विनश्यत्याशुः**
विगतानि + अकर्त्तव्यः	= **विगतान्यकर्त्तव्यः**
शशी + उदियाय	= **शश्युदियाय**
श्रुतापि + अभिसन्धत्ते	= **श्रुताप्यभिसन्धत्ते**
श्रोष्यति + अस्मात्	= **श्रोष्यत्यस्मात्**
सखी + ऐक्यम्	= **सख्यैक्यम्**
सखी + आगमनम्	= **सख्यागमनम्**
सरस्वती + आराधनम्	= **सरस्वत्याराधनम्**
सन्ति + अन्ये	= **सन्त्यन्ये**
सम्प्रति + अतितराम्	= **सम्प्रत्यतितराम्**
सप्तमी + अधिकरणे	= **सप्तम्यधिकरणे**
स्मृति + आदेशः	= **स्मृत्यादेशः**
स्त्री + उत्सवः	= **स्त्र्युत्सवः**
स्वरूपाणि + आस्वाद्यमानानि	= **स्वरूपाण्यास्वाद्यमानानि**

सन्धिविच्छेदः	सन्धिपदम्
सुपि + आपिशलः	= **सुप्यापिशलः**
सुधी + उपास्यः	= **सुध्युपास्यः**
हरि + आगच्छति	= **हर्यागच्छति**
हरि + आशा	= **हर्याशा**
हि + एकम्	= **ह्येकम्**
हि + एतस्मिन्	= **ह्येतस्मिन्**
हि + अङ्गनानाम्	= **ह्यङ्गनानाम्**
हि + उत्तमानाम्	= **ह्युत्तमानाम्**
हि + अयम्	= **ह्ययम्**
क्षिपति + एषः	= **क्षिपत्येषः**

ऊ + असमान स्वर = व्

सन्धिविच्छेदः	सन्धिपदम्
अनु + इति	= **अन्विति**
अनु + एषणः	= **अन्वेषणः**
अनु + अयः	= **अन्वयः**
अनु + आदेशः	= **अन्वादेशः**
अनु + अर्थः	= **अन्वर्थः**
अनु + इष्टः	= **अन्विष्टः**
अपवर्गेषु + अनुजीविनः	= **अपवर्गेष्वनुजीविनः**
अनु + अगच्छत्	= **अन्वगच्छत्**
अनु + अभवत्	= **अन्वभवत्**
अरण्येषु + अधिकम्	= **अरण्येष्वधिकम्**
अनु + अवसिता	= **अन्ववसिता**
अनु + ईक्षणः	= **अन्वीक्षणः**
अट्कुपु + आङ्	= **अट्कुप्वाङ्**
आगच्छतु + अत्र	= **आगच्छत्वत्र**
उचितेषु + अपि	= **उचितेष्वपि**
कल्पान्तेषु + अपि	= **कल्पान्तेष्वपि**
किन्तु + अस्ति	= **किन्त्वस्ति**
किन्तु + अद्यैव	= **किन्त्वद्यैव**
किन्तु + अङ्गीकृतम्	= **किन्त्वङ्गीकृतम्**
कुरु + इदम्	= **कुर्विदम्**
खलु + इदम्	= **खल्विदम्**
खलु + अत्र	= **खल्वत्र**
खलु + अमी	= **खल्वमी**
खलु + एषः	= **खल्वेषः**
खलु + अनर्थः	= **खल्वनर्थः**
खलु + एतत्	= **खल्वेतत्**
खलु + एहि	= **खल्वेहि**
गुरु + आदेशः	= **गुर्वादेशः**
गुरु + आज्ञा	= **गुर्वाज्ञा**
गुरु + अवस्था	= **गुर्ववस्था**
गुरु + आस्था	= **गुर्वास्था**
गुरु + औदार्यम्	= **गुर्वौदार्यम्**
गृहेषु + आसक्तः	= **गृहेष्वासक्तः**
घु + अदाप्	= **घ्वदाप्**
चित्रगु + अग्रम	= **चित्रग्वग्रम्**
चारु + अङ्गी	= **चार्वङ्गी**
चित्रगु + इन्द्रः	= **चित्रग्विन्द्रः**
जन्मान्तेषु + अपि	= **जन्मान्तेष्वपि**
जातु + असौ	= **जात्वसौ**
ननु + अङ्गम्	= **नन्वङ्गम्**
ननु + अप्रयासेन	= **नन्वप्रयासेन**
ननु + इतः	= **नन्वितः**
पततु + अभिजनः	= **पतत्वभिजनः**
पुष्करेषु + आहतेषु	= **पुष्करेष्वाहतेषु**
पुनर्वसु + ऋक्षः	= **पुनर्वस्वृक्षः**
बहु + एतत्	= **बह्वेतत्**
भवतु + अत्र	= **भवत्वत्र**
भानु + आभा	= **भान्वाभा**
भवनेषु + अपि	= **भवनेष्वपि**
भाग्येषु + अनुत्सेकिनी	= **भाग्येष्वनुत्सेकिनी**
भू + आदयः	= **भ्वादयः**
भू + आदिः	= **भ्वादिः**
मधु + अरिः	= **मध्वरिः**
मधु + अस्ति	= **मध्वस्ति**
मधु + आनय	= **मध्वानय**
मनु + अन्तरः	= **मन्वन्तरः**
मधु + आलयः	= **मध्वालयः**
मखेषु + अखिन्नः	= **मखेष्वखिन्नः**
मनु + आदिः	= **मन्वादिः**
यच्छतु + औषधम्	= **यच्छत्वौषधम्**
मृदु + अस्थिः	= **मृद्वस्थिः**
यातु + आहवे	= **यात्वाहवे**
युष्मासु + अपीतेषु	= **युष्माष्वपीतेषु**
लघु + ओष्ठः	= **लघ्वोष्ठः**
लशकु + अतद्धिते	= **लशक्वतद्धिते**
वधू + आनयनम्	= **वध्वानयनम्**
वधू + अलङ्कारः	= **वध्वलङ्कारः**

सन्धिविच्छेदः	सन्धिपदम्
वधू + अर्थः	= **वध्वर्थः**
वधू + इष्टः	= **वध्विष्टः**
वस्तु + अस्ति	= **वस्त्वस्ति**
वृणु + इदम्	= **वृण्विदम्**
शकन्धु + आदिषु	= **शकन्ध्वादिषु**
शिशु + अङ्गम्	= **शिश्वङ्गम्**
शिशु + ऐक्यम्	= **शिश्वैक्यम्**
शिशु + अङ्कः	= **शिश्वङ्कः**
स्वादिषु + असर्वनामस्थाने	= **स्वादिष्वसर्वनामस्थाने**
साधु + इति	= **साध्विति**
साधु + अवदत्	= **साध्ववदत्**
साधु + अनाकर्ण्य	= **साध्वनाकर्ण्य**
साधु + असाधुः	= **साध्वसाधुः**
सिध्यतु + एतत्	= **सिध्यत्वेतत्**
सु + आगतम्	= **स्वागतम्**
सु + अस्ति	= **स्वस्ति**
सु + आदिषु	= **स्वादिषु**
हर्मेषु + अस्याः	= **हर्मेष्वस्याः**
हकारादिषु + अकारादिः	= **हकारादिष्वकारादिः**

ऋ + असमान स्वर = र्

कर्तृ + आयुः	= **कर्त्रायुः**
तृ + असौ	= **त्रसौ**
त्वष्टृ + आकांक्षा	= **त्वष्ट्राकांक्षा**
दातृ + उपदेशः	= **दात्रुपदेशः**
दुहितृ + ईशः	= **दुहित्रीशः**
धातृ + एतत्	= **धात्रेतत्**
धातृ + अंशः	= **धात्रंशः**
नृ + आत्मजः	= **न्रात्मजः**
पातृ + एतत्	= **पात्रेतत्**
पितृ + आकृतिः	= **पित्राकृतिः**
पितृ + आदेशः	= **पित्रादेशः**
पितृ + आह्वानम्	= **पित्राह्वानम्**
पितृ + अर्चा	= **पित्रर्चा**
पितृ + आज्ञा	= **पित्राज्ञा**
पितृ + अधीनम्	= **पित्रधीनम्**
पितृ + अनुमतिः	= **पित्रनुमतिः**
भर्तृ + आदेशः	= **भर्त्रादेशः**
भ्रातृ + उक्तः	= **भ्रात्रुक्तः**
भ्रातृ + आशा	= **भ्रात्राशा**

सन्धिविच्छेदः	सन्धिपदम्
भ्रातृ + आज्ञा	= **भ्रात्राज्ञा**
भ्रातृ + आगमनम्	= **भ्रात्रागमनम्**
मातृ + उपदेशः	= **मात्रुपदेशः**
मातृ + इच्छा	= **मात्रिच्छा**
मातृ + अनुमतिः	= **मात्रनुमतिः**
मातृ + आनन्दः	= **मात्रानन्दः**
मातृ + अर्थः	= **मात्रर्थः**
मातृ + आज्ञा	= **मात्राज्ञा**
सवितृ + उदयः	= **सवित्रुदयः**

ऌ + असवर्ण स्वर = ल्

ऌ + आकृतिः	= **लाकृतिः**
ऌ + आकारः	= **लाकारः**
ऌ + आदेशः	= **लादेशः**
ऌ + अनुबन्धः	= **लनुबन्धः**
ऌ + अङ्गः	= **लङ्गः**
गम्ऌ + आदेशः	= **गम्लादेशः**
घस्ऌ + आदेशः	= **घस्लादेशः**

वृद्धिसन्धि

सूत्र = 'वृद्धिरेचि'

अ/आ + ए/ऐ = ऐ

अद्य + एव	= **अद्यैव**
अनेन + एव	= **अनेनैव**
अथ + एकदा	= **अथैकदा**
अधुना + एव	= **अधुनैव**
अनया + एव	= **अनयैव**

सूत्र 'एत्येधत्यूठ्सु'

अव + एधते	= **अवैधते**
अव + एति	= **अवैति**
उप + एति	= **उपैति**
उप + एधते	= **उपैधते**
उप + एडकीयति	= **उपैडकीयति** (विकल्प से)
उप + एता	= **उपैता**

अत्र + एव	= **अत्रैव**
अत्र + एकदा	= **अत्रैकदा**
एक + एकम्	= **एकैकम्**
कृष्ण + ऐक्यम्	= **कृष्णैक्यम्**

सन्धिविच्छेदः	सन्धिपदम्
कृष्ण + एकदा	= **कृष्णैकदा**
गङ्गा + एषा	= **गङ्गैषा**
च + एतत्	= **चैतत्**
चित्त + एकाग्रम्	= **चित्तैकाग्रम्**
जन + एकदा	= **जनैकदा**
जनस्य + एतत्	= **जनस्यैतत्**
त्वया + एव	= **त्वयैव**
तथा + एव	= **तथैव**
तव + एव	= **तवैव**
तस्य + एषः	= **तस्यैषः**
तदा + एव	= **तदैव**
तव + ऐश्वर्यम्	= **तवैश्वर्यम्**
तत्र + एव	= **तत्रैव**
त्रस्त + एकहायनम्	= **त्रस्तैकहायनम्**
दिन + एकम्	= **दिनैकम्**
दृष्ट्वा + एव	= **दृष्ट्वैव**
दीर्घ + एकारः	= **दीर्घैकारः**
देवता + एकात्म्यम्	= **देवतैकात्म्यम्**
न + एवम्	= **नैवम्**
न + एजते	= **नैजते**
न + एव	= **नैव**
न + एका	= **नैका**
न + एताः	= **नैताः**
न + एतत्	= **नैतत्**
नव + ऐश्वर्यम्	= **नवैश्वर्यम्**
नृप + ऐश्वर्यम्	= **नृपैश्वर्यम्**
धन + ऐक्यम्	= **धनैक्यम्**
पञ्च + एते	= **पञ्चैते**
पुत्र + एषणा	= **पुत्रैषणा**

सूत्र ''प्रादूहोढोढ्येषैष्येषु''

प्र + एषः	= **प्रैषः**
प्र + एष्यः	= **प्रैष्यः**

प्रथमा + एकवचनम्	= **प्रथमैकवचनम्**
बाला + एषा	= **बालैषा**
बाला + एका	= **बालैका**
मम + एव	= **ममैव**
मया + एव	= **मयैव**
यदा + एव	= **यदैव**
यथा + एव	= **यथैव**

सन्धिविच्छेदः	सन्धिपदम्
या + एवम्	= **यैवम्**
येन + एतादृशम्	= **येनैतादृशम्**
राम + ऐश्वर्यम्	= **रामैश्वर्यम्**
राष्ट्र + ऐक्यम्	= **राष्ट्रैक्यम्**
राजा + एषः	= **राजैषः**
विश्व + ऐक्यम्	= **विश्वैक्यम्**
वीर + एकम्	= **वीरैकम्**
स्थूल + एषः	= **स्थूलैषः**
संहिता + एकपदे	= **संहितैकपदे**
सर्वदा + ऐक्यम्	= **सर्वदैक्यम्**
सदा + एव	= **सदैव**

सूत्र - एत्येधत्यूठ्सु

सम + एति	= **समैति**
सम + एधते	= **समैधते**

सदा + एव	= **सदैव**
सा + एव	= **सैव**
सदा + ऐक्यम्	= **सदैक्यम्**
संज्ञा + एव	= **संज्ञैव**

वार्तिक-'स्वादीरेरिणोः'

स्व + ईरिणी	= **स्वैरिणी**
स्व + ईरः	= **स्वैरः**
स्व + ईरम्	= **स्वैरम्**

आ/आ+ओ/औ=औ

अस्य + औचित्यः	= **अस्यौचित्यः**
अधर + ओष्ठः	= **अधरोष्ठः/अधरौष्ठः (विकल्प से)**

वार्तिक- 'अक्षादूहिन्यामुपसंख्यानम्'

अक्ष + ऊहिनी	= **अक्षौहिणी**

उष्ण + ओदनम्	= **उष्णौदनम्**
कर + औपम्यः	= **करौपम्यः**
कण्ठ + औत्सुक्यम्	= **कण्ठौत्सुक्यम्**
कृष्ण + औत्कण्ठ्यम्	= **कृष्णौत्कण्ठ्यम्**
गङ्गा + ओघः	= **गङ्गौघः**
जल + ओघः	= **जलौघः**
जल + औषधम्	= **जलौषधम्**
तव + ओष्ठः	= **तवौष्ठः**
तण्डुल + ओदनम्	= **तण्डुलौदनम्**
तव + औदार्यम्	= **तवौदार्यम्**
तव + ओषति	= **तवौषति**

सन्धिविच्छेदः	सन्धिपदम्
तस्य + औषधम्	= **तस्यौषधम्**
तीव्र + औषधम्	= **तीव्रौषधम्**
दर्शन + औत्सुक्यम्	= **दर्शनौत्सुक्यम्**
दिव्य + औषधम्	= **दिव्यौषधम्**
धन + ओघः	= **धनौघः**
परम + औषधिः	= **परमौषधिः**
परम + औदार्यम्	= **परमौदार्यम्**
प्र + ओधीयति	= **प्रौधीयति**

वार्तिक - 'प्रादूहोढोढ्येषैष्येषु'

प्र + ऊढिः	= **प्रौढिः**
प्र + ऊढः	= **प्रौढः**
प्र + ऊहः	= **प्रौहः**

भव + औषधम्	= **भवौषधम्**
भृत्य + औद्धत्यम्	= **भृत्यौद्धत्यम्**
भार + ऊहः	= **भारौहः**
महा + ओजसः	= **महौजसः**
महा + औषधिः	= **महौषधिः**
महा + औदार्यम्	= **महौदार्यम्**
महा + ओजस्वी	= **महौजस्वी**
मम + औत्सुक्यम्	= **ममौत्सुक्यम्**
मम + औदासीन्यम्	= **ममौदासीन्यम्**
मम + ओष्ठः	= **ममौष्ठः**
महा + औष्ठ्यम्	= **महौष्ठ्यम्**
मेघ + ओघः	= **मेघौघः**
यमुना + ओघः	= **यमुनौघः**
विश्व + ओहः	= **विश्वौहः**
विद्या + ओघः	= **विद्यौघः**
वन + ओकः	= **वनौकः**
शर्करा + ओदनम्	= **शर्करौदनम्**
शुद्ध + ओदनम्	= **शुद्धौदनम्**
श्रिया + औत्सुक्यम्	= **श्रियौत्सुक्यम्**
संजीवन + औषधिः	= **संजीवनौषधिः**
सुर + ओकः	= **सुरौकः**
सुख + औपयिकः	= **सुखौपयिकः**
सौष्ठव + औदार्यम्	= **सौष्ठवौदार्यम्**
हृदय + औदार्यम्	= **हृदयौदार्यम्**
ज्ञात + औषधिः	= **ज्ञातौषधिः**

वृद्धि-सन्धिः

सूत्र - 'उपसर्गादृति धातौ'

अव + ऋञ्जते	= **अवार्ञ्जते**
अप + ऋच्छति	= **अपार्च्छति**
उप + ऋच्छति	= **उपार्च्छति**
प्र + ऋच्छति	= **प्रार्च्छति**
प्र + ऋषभीयति	= **प्रार्षभीयति (विकल्प से)**

वार्तिक 'प्रवत्सतरकम्बलवसनार्णदशानामृणे'

ऋण + ऋणम्	= **ऋणार्णम्**
कम्बल + ऋणम्	= **कम्बलार्णम्**
दश + ऋणम्	= **दशार्णम्**
वसन + ऋणम्	= **वसनार्णम्**
प्र + ऋणम्	= **प्रार्णम्**
वत्सतर + ऋणम्	= **वत्सतरार्णम्**

वार्तिक = 'ऋते च तृतीयासमासे'

सुख + ऋतः	= **सुखार्तः**
दुःख + ऋतः	= **दुःखार्तः**
भय + ऋतः	= **भयार्तः**
प्रमोद + ऋतः	= **प्रमोदार्तः**

अयादिसन्धिः सूत्र - 'एचोऽयवायावः'

ए + स्वर	**= अय्**
आसने + आस्ते	= **आसनयास्ते**
कवे + ए	= **कवये**
क्रे + अनम्	= **क्रयणम्**
गणे + अति	= **गणयति**
गृहे + आसीत्	= **गृहयासीत्**
चे + अनम्	= **चयनम्**
चे + अः	= **चयः**
चोरे + अति	= **चोरयति**
जे + अः	= **जयः**
ते + आगच्छन्ति	= **तयागच्छन्ति**
ने + अनम्	= **नयनम्**
ने + अति	= **नयति**
ने + अः	= **नयः**
पे + असि	= **पयसि**
प्रजापतये + इदम्	= **प्रजापतयियिदम्**
मुने + ए	= **मुनये**
ये + इह	= **ययिह**
शे + अनम्	= **शयनम्**
शे + आनः	= **शयानः**

सन्धिविच्छेदः	सन्धिपदम्
हरे + ए	= **हरये**
हरे + एहि	= **हरयेहि**
हरे + इह	= **हरयिह**
स्थले + इदानीम्	= **स्थलयिदानीम्**
क्षे + अः	= **क्षयः**
ऐ + अच्	**=** आय्
कै + इकः	= **कायिकः**
कस्मै + अयच्छत्	= **कस्माययच्छत्**
कस्यै + अददात्	= **कस्यायददात्**
गै + अकः	= **गायकः**
गै + अनम्	= **गायनम्**
गै + इका	= **गायिका**
गै + अति	= **गायति**
गै + अन्ति	= **गायन्ति**
ग्लै + अति	= **ग्लायति**
चिक्षै + अः	= **चिक्षायः**
चै + अकः	= **चायकः**
तस्मै + एतत्	= **तस्मायेतत्**
तस्यै + इमानि	= **तस्यायिमानि**
तस्मै + अदात्	= **तस्मायदात्**
त्रै + अते	= **त्रायते**
दै + अकः	= **दायकः**
नै + अकः	= **नायकः**
नै + इका	= **नायिका**
पार्वत्यै + आगतायै	= **पार्वत्यायागतायै**
रै + अकः	= **रायकः**
लै + अकः	= **लायकः**
विनै + अकः	= **विनायकः**
श्रियै + औत्सुक्यम्	= **श्रियायौत्सुक्यम्**
श्रियै + इच्छा	= **श्रियायिच्छा**
श्रियै + उत्सुकः	= **श्रियायुत्सुकः**
सखै + औ	= **सखायौ**
सै + अकः	= **सायकः**
ओ + अच्	**= अव्**
गो + अनम्	= **गवनम्**
गो + ईश्वरः	= **गवीश्वरः**
गो + इच्छा	= **गविच्छा**
गो + उदयः	= **गवुदयः**
गो + ऋद्धिः	= **गवृद्धिः**

सन्धिविच्छेदः	सन्धिपदम्
गो + ईशः	= **गवीशः**
द्रो + अति	= **द्रवति**
स्तो + अनम्	= **स्तवनम्**
पो + इत्रः	= **पवित्रः**
भो + अनम्	= **भवनम्**
भो + अति	= **भवति**
मनो + ए	= **मनवे**
लो + अनः	= **लवणः**
लो + इत्रम्	= **लवित्रम्**
वटो + ऋक्षः	= **वटवृक्षः**
विष्णो + ए	= **विष्णवे**
विष्णो + इह	= **विष्णविह**
श्रो + अनः	= **श्रवणः**
साधो + ए	= **साधवे**
औ + स्वर	**= आव्**
अग्नौ + इह	= **अग्नाविह**
अम्बौ + इह	= **अम्बाविह**
असौ + उत्तुङ्गः	= **असावुत्तुङ्गः**
असौ + अयम्	= **असावयम्**
इन्दौ + उदिते	= **इन्दावुदिते**
उभौ + एतौ	= **उभावेतौ**
ऋतौ + अन्नम्	= **ऋतावन्नम्**
करौ + एतौ	= **करावेतौ**
गतौ + उभौ	= **गतावुभौ**
गुरौ + उत्कः	= **गुरावुत्कः**
गोपालौ + आयातः	= **गोपालावायातः**
ग्लौ + औ	= **ग्लावौ**
तौ + अपि	= **तावपि**
तौ + उभौ	= **तावुभौ**
तौ + एकदा	= **तावेकदा**
तौ + अत्र	= **तावत्र**
तौ + ईश्वरौ	= **तावीश्वरौ**
द्वौ + अपि	= **द्वावपि**
द्वौ + इव	= **द्वाविव**
द्वौ + एव	= **द्वावेव**
धौ + अनम्	= **धावनम्**
धौ + इकः	= **धाविकः**
धौ + इतम्	= **धावितम्**

सन्धिविच्छेदः	सन्धिपदम्
नौ + इकः	= **नाविकः**
नरौ + उदारौ	= **नरावुदारौ**
प्रस्तौ + अकः	= **प्रस्तावकः**
पौ + अकः	= **पावकः**
पौ + अनः	= **पावनः**
पपावसौ + इह	= **पपावसाविह**
पूजार्हौ + अरिसूदनः	= **पूजार्हावरिसूदनः**
बालौ + आयातौ	= **बालावायातौ**
बालौ + अत्र	= **बालावत्र**
बालौ + ओजस्विनौ	= **बालावोजस्विनौ**
भानौ + अपि	= **भानावपि**
भ्रातरौ + आजग्मतुः	= **भ्रातरावाजग्मतुः**
भौ + उकः	= **भावुकः**
भौ + अयति	= **भावयति**
रात्रौ + आगतौ	= **रात्रावागतौ**
रात्रौ + आगतः	= **रात्रावागतः**
रात्रौ + अस्ताचलः	= **रात्रावस्ताचलः**
रौ + अनः	= **रावणः**
रामकृष्णौ + अमू	= **रामकृष्णावमू**
लोकनाथौ + उभौ	= **लोकनाथावुभौ**
वागर्थौ + इव	= **वागर्थाविव**
विधौ + उदिते	= **विधावुदिते**
स्फटिकमणौ + इव	= **स्फटिकमणाविव**
स्तौ + अकः	= **स्तावकः**

सूत्र - 'लोपः शाकल्यस्य'
('यकार' और 'वकार' का लोप हो)

हरे + एहि	= **हर एहि**
विष्णो + इह	= **विष्ण इह**
तस्यै + इमानि	= **तस्या इमानि**
श्रियै + उत्सुकः	= **श्रिया उत्सुकः**
गुरौ + उत्कः	= **गुरा उत्कः**
रात्रौ + आगतः	= **रात्रा आगतः**
ऋतौ + अन्नम्	= **ऋता अन्नम्**

सूत्र - 'वान्तो यि प्रत्यये'

गो + यम्	= **गव्यम्**
नौ + यम्	= **नाव्यम्**

वार्तिक - 'अध्वपरिमाणे च'

गो + यूतिः	= **गव्यूतिः**

सन्धि - पररूपसन्धिः सूत्र - 'एङि पररूपम्'
अ + एकारादि ओकारादि धातु = पररूप

अव + एहि	= **अवेहि**
प्र + एजते	= **प्रेजते**
उप + एजते	= **उपेजते**
उप + ओषति	= **उपोषति**
प्र + ओषति	= **प्रोषति**
उप + एडकीयति	= **उपेडकीयति**
	= **उपैडकीयति** (विकल्प से)
प्र + ओधीयति	= **प्रोधीयति**
	= **प्रौधीयति** (विकल्प से)

'शकन्ध्वादिषु पररूपं वाच्यम्' (वा०)

शक + अन्धुः	= **शकन्धुः**
कर्क + अन्धुः	= **कर्कन्धुः**
कुल + अटा	= **कुलटा**
मनस् + ईषा	= **मनीषा**

(संज्ञा-सूत्र **'अचोऽन्त्यादि टि'** से मनस् के 'अस्' की टि संज्ञा हुई है)

हल + ईषा	= **हलीषा**
लाङ्गल + ईषा	= **लाङ्गलीषा**
पतत् + अञ्जलिः	= **पतञ्जलिः**
सार + अङ्गः	= **सारङ्गः**
सीम + अन्तः	= **सीमन्तः**
मार्त + अण्डः	= **मार्तण्डः**

विधिसूत्र = 'ओमाङोश्च'

शिवाय + ओम् + नमः = **शिवायोंनमः**

अतिदेशसूत्र + 'अन्तादिवच्च'

शिव + आङ् + इहि, या शिव + एहि = **शिवेहि**

सूत्र = ''एङः पदान्तादति'' पूर्वरूपसन्धिः

ए + अ	= **पूर्वरूप**
अमुके + अत्र	= **अमुकेऽत्र**
अग्ने + अत्र	= **अग्नेऽत्र**
अन्ते + अपि	= **अन्तेऽपि**
अनुनासिके + अनुनासिकः	= **अनुनासिकेऽनुनासिकः**
उपदेशे + अजनुनासिकः	= **उपदेशेऽजनुनासिकः**
के + अत्र	= **केऽत्र**
गृहे + अहम्	= **गृहेऽहम्**

सन्धिविच्छेदः	सन्धिपदम्
ग्रामे + अस्मिन्	= **ग्रामेऽस्मिन्**
गृहे + अतिथिः	= **गृहेऽतिथिः**
गते + अपि	= **गतेऽपि**
ते + अहम्	= **तेऽहम्**
ते + अद्य	= **तेऽद्य**
ते + अत्र	= **तेऽत्र**
ते + अपि	= **तेऽपि**
ते + अकर्मकाः	= **तेऽकर्मकाः**
ते + अमी	= **तेऽमी**
दीर्घे + अस्मिन्	= **दीर्घेऽस्मिन्**
देशे + अस्मिन्	= **देशेऽस्मिन्**
ध्रुवमपाये + अपादानम्	= **ध्रुवमपायेऽपादानम्**
नगरे + अस्मिन्	= **नगरेऽस्मिन्**
नमो + अस्तु	= **नमोऽस्तु**
पुस्तके + अस्मिन्	= **पुस्तकेऽस्मिन्**
पचेते + असौ	= **पचेतेऽसौ**
बालके + अस्मिन्	= **बालकेऽस्मिन्**
बालके + अपि	= **बालकेऽपि**
ब्रह्मणे + अस्तु	= **ब्रह्मणेऽस्तु**
मार्गे + अन्यः	= **मार्गेऽन्यः**
मात्रे + अर्पितः	= **मात्रेऽर्पितः**
मार्गे + अत्र	= **मार्गेऽत्र**
मे + अन्तिके	= **मेऽन्तिके**
मे + अपि	= **मेऽपि**
मुने + अर्चः	= **मुनेऽर्चः**
लोके + अत्र	= **लोकेऽत्र**
वने + अत्र	= **वनेऽत्र**
वने + अस्मिन्	= **वनेऽस्मिन्**
विशेषे + अनुरक्तः	= **विशेषेऽनुरक्तः**
वृक्षे + अस्मिन्	= **वृक्षेऽस्मिन्**
सखे + अत्र	= **सखेऽत्र**
सुन्दरे + अम्बरे	= **सुन्दरेऽम्बरे**
संसारे + अस्मिन्	= **संसारेऽस्मिन्**
सहयुक्ते + अप्रधाने	= **सहयुक्तेऽप्रधाने**
संसारे + अधुना	= **संसारेऽधुना**
सर्वे + अपि	= **सर्वेऽपि**
समुद्रे + अपि	= **समुद्रेऽपि**
स्थाने + अन्तरतमः	= **स्थानेऽन्तरतमः**

सन्धिविच्छेदः	सन्धिपदम्
हरे + अव	= **हरेऽव**
क्षुद्रे + अपि	= **क्षुद्रेऽपि**
ओ + अ	= **पूर्वरूपसन्धि**
अन्धो + असौ	= **अन्धोऽसौ**
अपूर्वो + अपि	= **अपूर्वोऽपि**
अपूर्वो + अहम्	= **अपूर्वोऽहम्**
अभ्यासो + अत्र	= **अभ्यासोऽत्र**
आधारो + अधिकरणम्	= **आधारोऽधिकरणम्**
इको + असवर्णे	= **इकोऽसवर्णे**
उपो + अधिके	= **उपोऽधिके**
एचो + अयवायावः	= **एचोऽयवायावः**
कार्यालयो + अयम्	= **कार्यालयोऽयम्**
को + अपि	= **कोऽपि**
कोषो + अयम्	= **कोषोऽयम्**
को + असि	= **कोऽसि**
को + अयम्	= **कोऽयम्**
गुरवो + अधुना	= **गुरवोऽधुना**
गुरो + अहम्	= **गुरोऽहम्**
गो + अग्रम्	= **गोऽग्रम्**
गुरो + अत्र	= **गुरोऽत्र**
गोविन्दो + अतिथिः	= **गोविन्दोऽतिथिः**
चादयो + असत्वे	= **चादयोऽसत्वे**
जशो + अन्ते	= **जशोऽन्ते**
ततो + अत्र	= **ततोऽत्र**
ततो + अन्यः	= **ततोऽन्यः**
ततो + अन्यत्र	= **ततोऽन्यत्र**
दीर्घो + अणः	= **दीर्घोऽणः**
दासो + अहम्	= **दासोऽहम्**
दोषो + अस्ति	= **दोषोऽस्ति**
नमो + अस्तु	= **नमोऽस्तु**
पण्डितो + अपि	= **पण्डितोऽपि**
प्रथमो + अङ्कः	= **प्रथमोऽङ्कः**
प्रभो + अहम्	= **प्रभोऽहम्**
प्रभो + अनुगृहाण	= **प्रभोऽनुगृहाण**
पुरुषो + अत्र	= **पुरुषोऽत्र**
बहवो + अत्र	= **बहवोऽत्र**
बहवो + अद्य	= **बहवोऽद्य**
मो + अनुस्वारः	= **मोऽनुस्वारः**

सन्धिविच्छेदः सन्धिपदम्

ब्राह्मणो + अब्रवीत् = **ब्राह्मणोऽब्रवीत्**

यरो + अनुनासिकः = **यरोऽनुनासिकः**

यो + अशि = **योऽशि**

रामो + अहसत् = **रामोऽहसत्**

वटो + अयम् = **वटोऽयम्**

विरामो + अवसानम् = **विरामोऽवसानम्**

विप्रो + अहम् = **विप्रोऽहम्**

वचनो + अनुनासिकः = **वचनोऽनुनासिकः**

वायो + अत्र = **वायोऽत्र**

सर्पो + अहम् = **सर्पोऽहम्**

संज्ञो + अन्यतरस्याम् = **संज्ञोऽन्यतरस्याम्**

सो + अवदत् = **सोऽवदत्**

सो + अयम् = **सोऽयम्**

हो + अन्यतरस्याम् = **होऽन्यतरस्याम्**

विधिसूत्र = ''सर्वत्र विभाषा गोः''

गो + अग्रम् = **गोअग्रम्**

विधिसूत्र = ''अवङ् स्फोटायनस्य''

गो + अग्रम् = **गवाग्रम्**

गो + अधिपः = **गवाधिपः**

गो + अक्षः = **गवाक्षः**

गो + अनृतम् = **गवानृतम्**

गो + ईशः = ग् अवङ् ईशः = **गवेशः**

गो + ईश्वरः = ग् अवङ् + ईश्वरः = **गवेश्वरः**

गो + ऋद्धिः = ग् अवङ् ऋद्धिः =ग् अव ऋद्धिः = **गवर्द्धिः**

गो + इच्छा = **गवेच्छा**

'नित्य अवङ्' आदेश

विधि सूत्र - ''इन्द्रे च''

गो + इन्द्रः = ग् अवङ् इन्द्रः=ग् अव इन्द्रः=**गवेन्द्रः**

सन्धि = प्रकृतिभाव

आगच्छ कृष्ण३ अत्र गौश्चरति

सूत्र - ''दूराद्धूते च''

सन्धिविच्छेदः सन्धिपदम्

सूत्र - ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम्

हरी + एतौ = **हरी एतौ**

विष्णू + इमौ = **विष्णू इमौ**

गङ्गे + अमू = **गङ्गे अमू**

भानू + एतौ = **भानू एतौ**

प्रकृतिभाव

इ + इन्द्र = **इ इन्द्र**

1. ''**चादयोऽसत्त्वे**'' से निपात संज्ञा

2. '**निपात एकाजनाङ्**' से प्रगृह्यसंज्ञा

3. प्रगृह्य संज्ञा का फल 'प्रकृतिभाव'

नोट - इसी प्रकार नीचे के अन्य उदाहरणों में भी प्रकृतिभाव है।

उ + उमेशः = **उ उमेशः**

आ + एवं नु मन्यसे = **आ एवं नु मन्यसे**

सूत्र-ओत्

अहो + ईशाः = **अहो ईशाः**

''**चादयोऽसत्वे**'' से 'ओ' की निपातसंज्ञा,'ओत्' सूत्र से प्रगृह्यसंज्ञा प्रगृह्यसंज्ञा का फल है प्रकृतिभाव -

विष्णो + इति = विष्णो इति

प्रकृतिभाव ''**सम्बुद्धौ शाकल्यस्येतावनार्षे**'' सूत्र से

विष्णो + इति = **विष्ण इति**

वकार का लोप ''**लोपः शाकल्यस्य**'' सूत्र से

विष्णो + इति = **विष्णविति**

सूत्र = ''एचोऽयवायावः'' सूत्र से

प्रकृतिभाव विकल्प से

सूत्र '' मय उञो वो वा''

किमु + उक्तम् = **किम् + उ + उक्तम्**

उकार की '**निपात एकाजनाङ्**' से प्रगृह्यसंज्ञा

प्रकृतिभाव को बाधकर उकार को वकार आदेश हुआ।

किम् + व् + उक्तम् = **किम्वुक्तम्**

''**मय उञो वो वा**'' को न लगाने पर प्रकृतिभाव होकर = **किमु उक्तम्** बनेगाा।

व्यञ्जन-सन्धि-उदाहरणम्

सन्धिविच्छेदः सन्धिपदम् सूत्रम्

अग्निचित् + नयति = **अग्निचिन्नयति** ''यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा''
अधिष् + थाता = **अधिष्ठाता** ''ष्टुना ष्टुः''
एकस्मिन् + अहीनः = **एकस्मिन्नहीनः** ''ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्''
अप्रज्ञावान् + संशेते = **अप्रज्ञावान्स्संशेते** ''नश्च''
अस्मिन् + समये= **अस्मिन्त्समये/अस्मिन्समये** ''नश्च''
अग्निचित् + ङकारः = **अग्निचिन्ङकारः** ''यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा''
अश् + नित्यम् = **अश्नित्यम्** ''शात्''
असकृद् + डयनम् = **असकृड्डयनम्** ''ष्टुना ष्टुः''
अप् + मात्रम् = **अम्मात्रम्** ''प्रत्यये भाषायां नित्यम्''
अप् + हस्ती = **अब्भस्ती** ''झयो होऽन्यतरस्याम्''
अज् + ह्रस्वः = **अज्झ्रस्वः** ''झयो होऽन्यतरस्याम्''
अस्मिन् + उद्याने = **अस्मिन्नुद्याने** ''ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्''
अप् + ह्रासः = **अब्भ्रासः** ''झयो होऽन्यतरस्याम्''
अप् + ह्रदौ = **अब्ह्रदौ / अब्भ्रदौ** ''झयो होऽन्यतरस्याम्''
अनम् + सीत् = **अनंसीत्** ''नश्चापदान्तस्य झलि''
अहं + कारः = **अहङ्कारः** ''अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः''
अन्यत् + च = **अन्यच्च** ''स्तोः श्चुना श्चुः''
अप् + जम् = **अब्जम्** ''झलां जशोऽन्ते''
अच् + अन्तः = **अजन्तः** ''झलां जशोऽन्ते''
अच् + वर्णः = **अज्वर्णः** ''झलां जशोऽन्ते''
अनुष्टुप् + एव = **अनुष्टुबेव** ''झलां जशोऽन्ते''
अस्मात् + वचनात् = **अस्माद्वचनात्** ''झलां जशोऽन्ते''
अप् + धिः = **अब्धिः** ''झलां जशोऽन्ते''
अच् + हीनम् = **अज्झीनम्** ''झलां जशोऽन्ते'' + झयो होऽन्यतरस्याम्
अप् + नदी = **अब्नदी** ''झलां जशोऽन्ते''
अप् + जः = **अब्जः** ''झलां जशोऽन्ते''
अस्मत् + देशः =**अस्मद्देशः** ''झलां जशोऽन्ते''
असकृत् + डयनम् = **असकृड्डयनम्** ''झलां जशोऽन्ते''
अस्मद् + पुत्रः = **अस्मत्पुत्रः** ''खरि च''
अपरस्मिन् + औषधे = **अपरस्मिन्नौषधे** ''ङमुडागमः''
अस्मान् + तारय = **अस्मांस्तारय** ''नश्छव्यप्रशान्''
अनु + छेदः = **अनुच्छेदः** ''छे च''
अं + कितः = **अङ्कित** ''अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः''
अहम् + गच्छामि =**अहं गच्छामि** ''मोऽनुस्वारः''
अहम् + पठामि = **अहं पठामि** ''मोऽनुस्वारः''
मातरम् + वन्दे = **मातरं वन्दे** ''मोऽनुस्वारः''
अप् + इन्धनम् = **अबिन्धनम्** ''झलां जशोऽन्ते''
अट् + आगमः = **अडागमः** ''झलां जशोऽन्ते''
अस्मद् + श्वसुरः = **अस्मच्छ्वसुरः/अस्मच्श्वसुरः** ''शश्छोऽटि'' + ''स्तोः श्चुना श्चुः''
अप् + हविः = **अब्भविः/ अब्हविः** ''झयो होऽन्यतरस्याम्''
अहम् + वेद = **अहंवेद** ''मोऽनुस्वारः''
अं + गम् = **अङ्गम्** ''अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः''

सन्धिविच्छेदः सन्धिपदम् सूत्रम्

अवाक् + मुखः = **अवाङ्मुखः/अवाग्मुखः** ''यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा'' + ''झलां जशोऽन्ते''
अप् + नदी = **अम्नदी** ''यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा''
अं + चित् = **अञ्चित्** ''अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः''
अप् + मयम् = **अम्मयम्** ''प्रत्यये भाषायां नित्यम्''
अं + बरम् = **अम्बरम्** ''अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः''
अं + कनम् = **अङ्कनम्** ''अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः''
अं + घ्रिः = **अङ्घ्रिः** ''अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः''
अज् + हलौ = **अज्झलौ/अज्हलौ** ''पूर्व सवर्ण'' ''झयो होऽन्यतरस्याम्''
आकृष् + तः = **आकृष्टः** ''ष्टुना ष्टुः''
आपणम् + गत्वा = **आपणं गत्वा** ''मोऽनुस्वारः''
आक्रम् + स्यते = **आक्रंस्यते** ''नश्चापदान्तस्य झलि''
आ + छिद्यते = **आच्छिद्यते** ''दीर्घात्''
आ + छादयति = **आच्छादयति** ''आङ्माङोश्च''
आ + छादनम् = **आच्छादनम्** ''आङ्माङोश्च''
आरिभ् + सते = **आरिप्सते** ''खरि च''
इट् + निषेधः = **इण्निषेधः** ''यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा''
इ + छति = **इच्छति** ''छे च''
इ + छा = **इच्छा** ''छे च''
इत्थम् + कृत्वा = **इत्थङ्कृत्वा** ''अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः''
इम् + गितम् = **इङ्गितम्** ''अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः''
इष् + तः = **इष्टः** ''ष्टुना ष्टुः''
इट् + तः = **इट्टः** ''ष्टुना ष्टुः''
ईश्वराद् + जयते = **ईश्वराज्जयते** ''स्तोः श्चुना श्चुः''
ईट् + ते = **ईट्टे** ''ष्टुना ष्टुः''
ईश्वरात् + आगतः = **ईश्वरादागतः** ''झलां जशोऽन्ते''
उत् + स्थानम् = **उत्थानम्** ''उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य''
उत् + चारणम् = **उच्चारणम्** ''स्तोः श्चुना श्चुः''
उत् + लेखः = **उल्लेखः** ''तोर्लि''
उत् + हारः = **उद्धारः** ''झयो होऽन्यतरस्याम्''
उद् + डयनम् = **उड्डयनम्** ''ष्टुना ष्टुः''
उत् + योगः = **उद्योगः** ''झलां जशोऽन्ते''
उद् + डीयताम् = **उड्डीयताम्** ''ष्टुना ष्टुः''
उत् + हृतम् = **उद्धृतम्** ''झलां जशोऽन्ते''+ ''झयो होऽन्यतरस्याम्''
उत् + ज्वलः = **उज्ज्वलः** ''स्तोः श्चुना श्चुः''
उत् + टलति = **उट्टलति** ''ष्टुना ष्टुः''
उत् + टङ्कनम् = **उट्टङ्कनम्** ''ष्टुना ष्टुः''
उत् + गमः = **उद्गमः** ''झलां जशोऽन्ते '
उद् + पतति = **उत्पतति** ''खरि च''
उत् + स्थातुम् = **उत्थातुम्** ''उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य''
उत् + स्तम्भितः = **उत्थ्तम्भितः/उत्तम्भितः** ''उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य''

सन्धिविच्छेदः सन्धिपदम् सूत्रम्

उत् + स्थितिः = **उत्थितिः** "उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य"
उद् + स्थाप्य =**उत्थाप्य** "खरि च" + "उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य"
उत् + स्तम्भनीयः = **उत्थ्तम्भनीयः** "उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य"
उद् + जीवनम् = **उज्जीवनम्** "स्तोः श्चुना श्चुः"
उद् + स्थातव्यम् = **उत्थातव्यम्** "खरि च' + "उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य"
उत् + छेदः = **उच्छेदः** "स्तोः श्चुना श्चुः"
उद् + स्तम्भते = **उत्तम्भते** "खरि च" + "उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य"
उद् + स्थापयति = **उत्थापयति** "खरि च"+"उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य"
उद् + स्थापकः = **उत्थापकः** "खरि च" + "उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य"
उद् + स्थितः = **उत्थितः** "खरि च" + "उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य"
उद् + प्रस्थानम् = **उत्प्रस्थानम्** "खरि च"
ऊर्ध्वं + डीयते = **उर्ध्वण्डीयते** "वा पदान्तस्य"
एतद् + जयति = **एतज्जयति** "स्तोः श्चुना श्चुः"
एतत् + टीकते = **एतट्टीकते** "ष्टुना ष्टुः"
एतत् + श्रुत्वा = **एतच्छुत्वा** "स्तोः श्चुना श्चुः" + शश्छोऽटि
एतद् + डामरः = **एतड्डामरः** "ष्टुना ष्टुः"
एतद् + मुरारिः = **एतन्मुरारिः** "यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा"
एतद् + मनोहरः = **एतन्मनोहरः** "यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा"
एतद् + ज्ञात्वा = **एतज्ज्ञात्वा** "स्तोः श्चुना श्चुः"
एतद् + कृतम् = **एतत्कृतम्** "खरि च"
एतत् + शरीरम् = **एतच्छरीरम्** "शश्छोऽटि"
एतद् + ढक्का = **एतड्ढक्का** "ष्टुना ष्टुः"
एकस्मिन् + अम्बुजे = **एकस्मिन्नम्बुजे** "ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्"
काम् + तिः = **कान्तिः** "अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः"
किम् + चित् = **किञ्चित** "अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः"
किम् + करोषि = **किङ्करोषि** "वा पदान्तस्य"
कष्टम् + सहते = **कष्टं सहते** "मोऽनुस्वारः"
कस् + चित् = **कश्चित्** "स्तोः श्चुना श्चुः"
कतमस् + टकारः = **कतमष्टकारः** "ष्टुना ष्टुः"
कार्य + छलम् = **कार्यच्छलम्** "छे च"
कामधुग् + खादति = **कामधुक्खादति** "खरि च"
कृष्णस् + चपलः = **कृष्णश्चपलः** "स्तोः श्चुना श्चुः"
ककुभ् + ईशः = **ककुबीशः** "झलां जशोऽन्ते"
ककुब् + नायकः = **ककुम्नायकः** "यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा"
कश्चित् + लभते = **कश्चिल्लभते** "तोर्लि"
कुशान् + लुनाति = **कुशाल्ँलुनाति** "तोर्लि"
कश्चित् + शेते = **कश्चिच्शेते** "स्तोः श्चुना श्चुः"
किम् + ह्यः = **किंह्यः/कियँह्यः** "यवलपरे यवला वा"
कान् + लेढि = **काँल्लेढि** "तोर्लि"
कं + टकम् = **कण्टकम्** "अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः"
किम् + करोति = **किं करोति/किङ्करोति** 'मोऽनुस्वारः' "वा पदान्तस्य"
किम् + ह्लयति=**किंह्लयति/किवँह्लयति** "यवलपरे यवला वा"
किम् + ह्लादयति=**किंह्लायदति/किलँह्लादयति** "यवलपरे यवला वा"
किम् + ह्वयतु = **किवँह्वयतु** "यवलपरे यवला वा"

सन्धिविच्छेदः सन्धिपदम् सूत्रम्

किम् + ह्नुते = **किंह्नुते/किन्ह्नुते** "नपरे नः"
कथम् + ह्नुते = **कथन्ह्नुते** "नपरे नः"
कुर्वन् + आस्ते = **कुर्वन्नास्ते** "ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्"
कस्मिन् + चित् = **कस्मिंश्चित्** "नश्छव्यप्रशान्"
कान् + कान् = **काँस्कान्** "कानाम्रेडितम्"
काले + छिद्यते = **कालेच्छिद्यते** "दीर्घात् पदान्ताद् वा"
ककुब् + हस्ती = **ककुब्भस्ती** "झयो होऽन्यतरस्याम्"
कुशान् + लाति = **कुशाल्ँलाति** "तोर्लि"
कतिचित् + दिनानि = **कतिचिद्दिनानि** "झलां जशोऽन्ते"
कुं + तः = **कुन्तः** "अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः"
कस्मिन् + इह = **कश्मिन्निह** "ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्"
कथम् + चलसि = **कथं चलसि** "मोऽनुस्वारः"
कुलटा + छिन्नासिका = **कुलटाच्छिन्नासिका** "दीर्घात् पदान्ताद् वा"
कृषीस् + टः = **कृषीष्टः** "ष्टुना ष्टुः"
कां + तः = **कान्तः** "अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः"
क्लिश् + नाति = **क्लिश्नाति** "शात्"
कृष् + तवती = **कृष्टवती** "ष्टुना ष्टुः"
कृद् + तद्वितौ = **कृत्तद्वितौ** "खरि च"
गरुत्मान् + डयते = **गरुत्माण्डयते** "ष्टुना ष्टुः"
गुच्छ +छेदः = **गुच्छच्छेदः** "छे च"
गुढा + छेकोक्तिः = **गुढाच्छेकोक्तिः** "दीर्घात् पदान्ताद् वा"
गुणिन् + जयः = **गुणिञ्जयः** "स्तोः श्चुना श्चुः"
गृहम् + गत्वा = **गृहङ्गत्वा** "वा पदान्तस्य"
गच्छन् + अस्ति = **गच्छन्नस्ति** "ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्"
गच्छद् + हूणः = **गच्छद्धूणः** "झयो होऽन्यतरस्याम्"
गुप् + शूरता = **गुप्छूरता** "शश्छोऽटि"
गृहम् + गच्छति = **गृहं गच्छति** "मोऽनुस्वारः"
गुरुम् + नमति =**गुरुं नमति** "मोऽनुस्वारः"
गुं + जति = **गुञ्जति** "अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः"
गुं + फितः = **गुम्फितः** "अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः"
गं + ता = **गन्ता** "अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः"
ग्रामात् + चलितः = **ग्रामाच्चलितः** "स्तोः श्चुना श्चुः"
गच्छन् + अवोचत् = **गच्छन्नवोचत्** "ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्"
गच्छन् + लक्ष्मणः = **गच्छल्ँलक्ष्मणः** "तोर्लि"
गर्जन् + लङ्केश्वरः = **गर्जल्ँलङ्केश्वरः** "तोर्लि"
गम् + स्यति = **गंस्यति** "नश्चापदान्तस्य झलि"
चि + छेदः = **चिच्छेदः** "छे च"
चलत् + लाङ्लनम् = **चलल्लाङ्नम्** "तोर्लि"
चलन् + टिट्टिभः = **चलं ष्टिट्टिभः** "नश्छव्यप्रशान्"
चञ्चुमान् + टिट्टिभः = **चञ्चुमाँष्टिट्टिभः/चञ्चुमांष्टिट्टिभः** "नश्छव्यप्रशान्"
चं + चुः = **चञ्चुः** "अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः"
चलत् + शुकः = **चलच्छुकः** "शश्छोऽटि"
चक्रिन् + त्रायस्व = **चक्रिंस्त्रायस्व** "नश्छव्यप्रशान्"
चित् + आनन्दः =**चिदानन्दः** "झलां जशोऽन्ते"
चित् + लीनः = **चिल्लीनः** "तोर्लि"

सन्धिविच्छेदः सन्धिपदम् सूत्रम्

चक्रिन् + ढौकसे = **चक्रिण्ढौकसे** “ष्टुना ष्टुः”
चे + छिद्यते = **चेच्छिद्यते** “दीर्घात् पदान्ताद् वा”
चित् + मयः = **चिन्मयः** “ प्रत्यये भाषायां नित्यम्”
चतुर् + नाम् = **चतुर्णाम्** “रषाभ्यां नो णः समानपदे”
छेद् + तव्यम् = **छेत्तव्यम्** “खरि च”
छेद् + तुम् = **छेत्तुम्** “खरि च”
जगत् + ईशः = **जगदीशः** “झलां जशोऽन्ते”
जगत् + नाथः = **जगन्नाथः** “यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा”
जगत् + अन्तः = **जगदन्तः** “झलां जशोऽन्ते”
जगत् + आदिः = **जगदादिः** “झलां जशोऽन्ते”
जयत् + रथः = **जयद्रथः** “झलां जशोऽन्ते”
जगत् + गुरुः =**जगद्गुरुः** “झलां जशोऽन्ते”
जगद् + नियामकः =**जगन्नियामकः** “यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा”
जाग्रत् + नागरिकः=**जाग्रन्नागरिकः** “यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा”
जलं + पिबति = **जलम्पिबति** “वा पदान्तस्य”
जहत् + लक्षणा = **जहल्लक्षणा** “तोर्लि”
जगत् + लयः = **जगल्लयः** “तोर्लि”
जनान् + लब्ध्वा = **जनाल्ँलब्ध्वा** “तोर्लि”
जगत् + हितः = **जगद्धितः** “झयो होऽन्यतरस्याम्”
जगत् + लीयते = **जगल्लीयते** “तोर्लि”
जगत् + धाता = **जगद्धाता** “झलां जशोऽन्ते”
जगत् + शान्तिः = **जगच्छान्तिः** “शश्छोऽटि” + “स्तोः श्चुना श्चुः”
जानन् + अपि = **जानन्नपि** “ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्”
जश् + त्वम् = **जश्त्वम्** “शात्”
जलमुक् + गर्जति = **जलमुग्गर्जति** “झलां जशोऽन्ते”
झं + झावातः = **झञ्झावातः** “अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः”
टित् + ढाणञ् = **टिड्ढाणञ्** “झलां जशोऽन्ते”
टवर्गस् + टादिः = **टवर्गष्टादिः** “ष्टुना ष्टुः”
ठक्करात् +उत्पन्नः = **ठक्करादुत्पन्नः** “झलां जशोऽन्ते”
डिण्डिमात् + आगतः = **डिण्डिमादागतः** “झलां जशोऽन्ते”
तपस् + चर्या = **तपश्चर्या** “स्तोः श्चुना श्चुः”
तत् + चिन्त्यम् = **तच्चिन्त्यम्** “स्तोः श्चुना श्चुः”
तत् + च = **तच्च** “स्तोः श्चुना श्चुः”
तत् + टीका = **तट्टीका** “ष्टुना ष्टुः”
तद् + डमरुः = **तड्डमरुः** “ष्टुना ष्टुः”
तत् + लीनः = **तल्लीनः** “तोर्लि”
तत् + लयः = **तल्लयः** “तोर्लि”
तत् + मात्रम् = **तन्मात्रम्** “प्रत्यये भाषायां नित्यम्”
तत् + शिवः = **तच्छिवः** “स्तोः श्चुना श्चुः” + “शश्छोऽटि”
तान् + साध्यान् = **तान्त्साध्यान्** “नश्च”
तान् + तान् = **ताँस्तान्** “नश्छव्यप्रशान्”
तत् + शरणम् = **तच्शरणम्/तच्छरणम्** “स्तोः श्चुना श्चुः” “शश्छोऽटि”
तद् + शरीरम् = **तच्छरीरम्** “स्तोः श्चुना श्चुः” “शश्छोऽटि”
तद् + हेयम् = **तद्धेयम्** “झयो होऽन्यतरस्याम्”
तत् + ऋणम् = **तदृणम्** “झलां जशोऽन्ते”

सन्धिविच्छेदः सन्धिपदम् सूत्रम्

तत् + यथा = **तद्यथा** “झलां जशोऽन्ते”
तत् + श्लोकेन = **तच्छ्लोकेन** “शश्छोऽटि” + “स्तोः श्चुना श्चुः”
तावत् + एनम् = **तावदेनम्** “झलां जशोऽन्ते”
तत् + अपि = **तदपि** “झलां जशोऽन्ते”
तादृग् + कर्म = **तादृक्कर्म** “खरि च”
तत् + नयति = **तन्नयति** “यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा”
तद् + मङ्गलम् = **तन्मङ्गलम्** “यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा”
तस्माद् + नागरिकः = **तस्मान्नागरिकः** “यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा”
त्वग् + मोचनम् = **त्वङ्मोचनम्** “यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा”
त्वं + करोषि = **त्वङ्करोषि** “वा पदान्तस्य”
तिर्यङ् + अत्र = **तिर्यङ्ऽत्र** “ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्”
तपस्विन् + एहि = **तपस्विन्नेहि** “ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्”
तस्मिन् + एतस्मिन् = **तस्मिन्नेतस्मिन्** “ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्”
तद् + हेतुकम् = **तद्धेतुकम्** “झयो होऽन्यतरस्याम्”
तद् + हि = **तद्धि** “झयो होऽन्यतरस्याम्”
तत् + श्मश्रुः = **तच्छ्मश्रुः** ‘शश्छोऽटि”
तत् + श्नाप्रत्ययः = **तच्छ्नाप्रत्ययः** “शश्छोऽटि”
तत् + शुभम् = **तच्छुभम्/तत्शुभम्** “शश्छोऽटि”
तत् + श्लाघनम् = **तच्छ्लाघनम्** “शश्छोऽटि”
तान् + च = **ताँश्च/तांश्च** “नश्छव्यप्रशान्”
तिप् + अन्तः = **तिबन्तः** “झलां जशोऽन्ते”
तद् + न = **तन्न** “यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा”
तरन् + अन्तः = **तरन्नन्तः** “ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्”
तद् + लीला = **तल्लीला** “तोर्लि”
तत् + जानाति = **तज्जानाति** “स्तोः श्चुना श्चुः”
तुक् + आगमः = **तुगागमः** “झलां जशोऽन्ते”
तत् + हितम् = **तद्धितम्** “झयो होऽन्यतरस्याम्”
तद् + हानिः = **तद्धानिः** “झयो होऽन्यतरस्याम्”
तत् + श्रुत्वा = **तच्छ्रुत्वा** “शश्छोऽटि”
तद् + श्लक्ष्णः = **तच्छ्लक्ष्णः** “शश्छोऽटि”
त्वग् + मनसी = **त्वङ्मनसी** “यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा”
दयुत् + शलेन = **दयुच्छलेन** “स्तोः श्चुना श्चुः” + “शश्छोऽटि”
दानम् + यच्छति =**दानं यच्छति** “वा पदान्तस्य”
दन्त + छदः = **दन्तच्छदः** “छे च”
दृष् + तः = **दृष्टः** “ष्टुना ष्टुः”
दांम् + तः =**दांतः/दान्तः** “अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः”
दिक् + गजः = **दिग्गजः** “झलां जशोऽन्ते”
दिग् + पालः = **दिक्पालः** “खरि च”
देवी + छाया = **देवीच्छाया** “दीर्घात्”
दिक् + भाग = **दिग्भागः** “झलां जशोऽन्ते”
दिग् + मध्ये = **दिङ्मध्ये** “यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा”
दुःखम् + सहते =**दुःखं सहते** “मोऽनुस्वारः”
देशम् + रक्षति = **देशं रक्षति** “मोऽनुस्वारः”
दिक् + विजयः = **दिग्विजयः** “झलां जशोऽन्ते”
दिग् + हस्ते = **दिग्घस्ते** “झयो होऽन्यतरस्याम्”

सन्धिविच्छेदः सन्धिपदम् सूत्रम्

दिग् + हस्ती = **दिग्घस्ती** "झयो होऽन्यतरस्याम्"
दूरात् +हूते = **दूराद्धूते** "झयो होऽन्यतस्याम्"
ददत् + हसति = **दददधसति** "झयो होऽन्यतरस्याम्"
दिव्यम् + सरः = **दिव्यं सरः** "मोऽनुस्वारः"
दं + डः = **दण्डः** "अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः"
धनम् + यच्छ = **धनं यच्छ** "मोऽनुस्वारः"
धर्मम् + चर = **धर्मं चर** "मोऽनुस्वारः"
धावन् + अपतत् = **धावन्नपतत्** "ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्"
धनुस् + टङ्कारः = **धनुष्टङ्कारः** "ष्टुना ष्टुः"
धनवान् + शूद्रः = **धनवाञ्शूद्रः** "स्तोः श्चुना श्चुः"
धिक् + मूर्खम् = **धिङ्मूर्खम्** "यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा"
धीमान् + लिखति = **धीमाँल्लिखति** "तोर्लि"
धिक् + याचकम् = **धिग्याचकम्** "झलां जशोऽन्ते"
धान्यम् + मीयते = **धान्यं मीयते/धान्यम्मीयते** "वा पदान्तस्य"
निविष् + तः = **निविष्टः** "ष्टुना ष्टुः"
नम् + दति = **नन्दति** "अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः"
नृन् + पाहि = **नृँपाहि/नृंपाहि, नृँःपाहि/नृंःपाहि** "नृन् पे"
नो + छेदः = **नोच्छेदः** "दीर्घात् पदान्तात् वा"
नृँः + पाहि = **नृ॒पाहि** "कुप्वोः॒क॒पौ च"
नृँ + पश्य = **नृ॒पश्य** "कुप्वोः॒क॒पौ च"
नृँ + पाठयति = **नृँ पाठयति** "कुप्वोः॒क॒पौ च"
नृन् + पिपर्ति =**नृँपिपर्ति/नृंपिपर्ति, नृँःपिपर्ति/नृंःपिपर्ति** "नृन् पे"
नारदस् + शशापः = **नारदश्शशापः** "स्तोः श्चुना श्चुः"
नव + छिद्राणि = **नवच्छिद्राणि** "छे च"
नमन् + शाखी = **नमञ्छशाखी** "शि तुक्"
परिव्राट् + साधुः = **परिव्राट्साधुः** "न पदान्ताट्टोरनाम्"
पठन् + साख्यम् = **पठन्साख्यम्** "नश्च"
प्राक् + नमस्कारः = **प्राङ्नमस्कारः** "यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा"
पुमान् + श्रूयते = **पुमाञ्छ्रूयते** "शि तुक्"
पयान् + सि = **पयांसि** "नश्चापदान्तस्य झलि"
पठन् + अपतत् = **पठन्नपतत्** "ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्"
पुम् + कोकिलः = **पुँस्कोकिलः/पुंस्कोकिलः** "पुमः खय्यम्परे"
पुम् + पुत्रः = **पुँस्पुत्रः/पुंस्पुत्रः** "पुमः खय्यम्परे"
पुम् + फेरुः = **पुँस्फेरुः/पुंस्फेरुः** "पुमः खय्यम्परे"
पुम् + चरित्रः = **पुँश्चरित्रः/पुंश्चरित्रः** "पुमः खय्यम्परे"
पुम् + क्रोधः = **पुँस्क्रोधः/पुंस्क्रोधः** "पुमः खय्यम्परे"
पद + छेदः = **पदच्छेदः** "छे च"
प्रश् + नः = **प्रश्नः** "शात्"
प्रष् + ता = **प्रष्टा** "ष्टुना ष्टुः"
पदार्थास् +षट् = **पदार्थाष्षट्** "ष्टुना ष्टुः"
प्राङ् + शूरः = **प्राङ्क्शूरः** "ङ्णोःकुक्टुक्शरि"
पुत्रान्+शाययति=**पुत्राञ्शाययति/पुत्राञ्छाययति/पुत्राञ्शाययति** "शि तुक्"
पुम् + टिट्टिभिः = **पुँष्टिट्टिभिः/पुंष्टिट्टिभिः** "पुमः खय्यम्परे"
पक्षिन् + टिट्टिभिः = **पक्षिण्टिट्टिभिः** "ष्टुना ष्टुः"

सन्धिविच्छेदः सन्धिपदम् सूत्रम्

पतद् + डिम्भः =**पतड्डिम्भः** "ष्टुना ष्टुः"
पुस्तकम् + पश्य = **पुस्तकं पश्य** "मोऽनुस्वारः"
पापम् + शान्तम् = **पापं शान्तम्** "मोऽनुस्वारः"
प्रें + खा = **प्रेङ्खा** "अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः"
पं + जरम् = **पञ्जरम्** "अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः"
पिं + डम् = **पिण्डम्** "अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः"
पठन् + लिखति = **पठल्लिँखति** "तोर्लि"
पतत् + लेखनी =**पतल्लेखनी** "तोर्लि"
पचन् + अस्ति = **पचन्नस्ति** "ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्"
पूर्वस्मिन् + ईश्वरे = **पूर्वस्मिन्नीश्वरे** "ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्"
प्राग् + हसित्वा = **प्राग्घसित्वा** "झयो होऽन्यतरस्याम्"
पतत् + हितम् = **पतद्धितम्** " झयो होऽन्यतरस्याम्"
पदवी + छात्रा =**पदवीच्छात्रा** "दीर्घात्"
परि + छेदः = **परिच्छेदः** "छे च"
पश्यन् + चकितः = **पश्यंश्चकितः/पश्यँश्चकितः** "नश्छव्यप्रशान्"
प्राक् + मुखः = **प्राङ्मुखः** "यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा"
पृष् + तः = **पृष्टः** "ष्टुना ष्टुः"
पृष् + थः = **पृष्ठः** "ष्टुना ष्टुः"
पेष् + ता = **पेष्टा** "ष्टुना ष्टुः"
पुस्तकम् + पठति = **पुस्तकं पठति** "मोऽनुस्वारः"
पूष् + ना = **पूष्णा** "रषाभ्यां नो णः समानपदे"
पेष् + तुम् = **पेष्टुम्** "ष्टुना ष्टुः"
बृहत् + छादनम् = **बृहच्छादनम्** "स्तोः श्चुना श्चुः"
बुद्धिमान् + छात्रः = **बुद्धिमाँश्छात्रः** "नश्छव्यप्रशान्"
बृहत् + छिद्रम् = **बृहच्छिद्रम्** "स्तोः श्चुना श्चुः"
बृहत् + चित्रम् = **बृहच्चित्रम्** "स्तोः श्चुना श्चुः"
बृहत् + छत्रम् = **बृहच्छत्रम्** "स्तोः श्चुना श्चुः"
बृहद् + ढक्का = **बृहड्ढक्का** "ष्टुना ष्टुः"
बृहत् + टीका = **बृहट्टीका** "ष्टुना ष्टुः"
बृहत् + नदी = **बृहन्नदी** "यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा"
बृहद् + डिण्डिमः = **बृहड्डिण्डिमः** "ष्टुना ष्टुः"
भवद् + डमरुः = **भवड्डमरुः** "ष्टुना ष्टुः"
भीष्मात् + षाड्गुण्यं शिक्षते = **भीष्मात्षाड्गुण्यं शिक्षते** "तोः षि"
भेद् + तव्यम् = **भेत्तव्यम्** "खरि च"
भारतम् + वहति = **भारतं वहति** "मोऽनुस्वारः"
भुं + क्ते = **भुङ्क्ते** "अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः"
भवान् + चलति = **भवांश्चलति** "नश्छव्यप्रशान्"+"विसर्जनीयस्य सः"
भूमिं +खनति = **भूमिङ्खनति** "वा पदान्तस्य"
भवद् + हितरक्षकः = **भवद्धितरक्षकः** "झयो होऽन्यतरस्याम्"
भेद् + तुम् = **भेत्तुम्** "खरि च"
भ्राजद् + हिरण्यम् = **भ्राजद्धिरण्यम्** "झयो होऽन्यतरस्याम्"
भूभृत् + चलति = **भूभृच्चलति** "स्तोः श्चुना श्चुः"
भगवत् + शक्तिः = **भगवच्छक्तिः** "स्तोः श्चुना श्चुः" + "शश्छोऽटि"
भास्वान् + चरति = **भास्वांश्चरति** "नश्छव्यप्रशान्"
भृद् + जौ = **भृज्जौ** "स्तोः श्चुना श्चुः"

सन्धिविच्छेदः	सन्धिपदम्	सूत्रम्
भूभृत् + श्लाघा	**भूभृच्छ्लाघा**	''स्तोः श्चुना श्चुः'' ''छत्वमीति वाच्यम्'' (वा.)
भवान् + सखा	**भवान्त्सखा**	''नश्च''
भगवन् + अत्र	**भगवन्नत्र**	''ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्''
भूपति + छाया	**भूपतिच्छाया**	''छे च''
भजन् + शिवम्	**भजञ्छिवम्**	''शि तुक्'' + ''शश्छोऽटि''
मत् + टीका	**मट्टीका**	''ष्टुना ष्टुः''
मानवान् + लोभयित्वा	**मानवाँल्लोभयित्वा**	''तोर्लि''
मनाक् + हसति	**मनाग्हसति**	''झलां जशोऽन्ते''
मद् + नीतिः	**मन्नीतिः**	''यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा''
मृड् + मयम्	**मृण्मयम्**	''प्रत्यये भाषायां नित्यम्''
मधुरं + गायति	**मधुरङ्गायति**	''वा पदान्तस्य''
महान् + तिरस्कारः	**महांस्तिरस्कारः**	''नश्छव्यप्रशान्''
महान् + लाभः	**महाँल्लाभः**	''तोर्लि''
महान् + डमरुः	**महाण्डमरुः**	''ष्टुना ष्टुः''
मधुलिट् + हसति	**मधुलिड्ढसति**	''झयो होऽन्यतरस्याम्''''ष्टुना ष्टुः''
मधुलिट् + शेते	**मधुलिट्छेते**	''शश्छोऽटि''
महान् + तुन्दिलः	**महास्तुन्दिलः**	''नश्छव्यप्रशान्''
मनान् + सि	**मनांसि**	''नश्चापदान्तस्य झलि''
मन्दम् + हसति	**मन्दं हसति**	''मोऽनुस्वारः''
मङ्गल + छाया	**मङ्गलच्छाया**	''छे च''
मूषक + छेदः	**मूषकच्छेदः**	''छे च''
मा + छित्वा	**माच्छित्वा**	''आङमाङोश्च''
मधु + छन्दस्	**मधुच्छन्दस्**	''छे च''
महाविद्यालय + छात्रः	**महाविद्यालयच्छात्रः**	''छे च''
महान् + तारकः	**महाँःतारकः/महांःतारकः**	''नश्छव्यप्रशान्''
महत् + शरण्यम्	**महच्छरण्यम्**	''शश्छोऽटि''
मतिमान् + श्लाघते	**मतिमाञ्श्लाघते**	''शि तुक्''
मित्वाद् + ह्रस्वः	**मित्वाद्घ्रस्वः**	''झयो होऽन्यतरस्याम्''
मुनीन् + जितवान्	**मुनीञ्जितवान्**	''स्तोः श्चुना श्चुः''
यज् + नः	**यज्ञः**	''स्तोः श्चुना श्चुः'' (यज् धातु से नङ् प्रत्यय)
यद् + लक्षणम्	**यल्लक्षणम्**	''तोर्लि''
यशान् + सि	**यशांसि**	''नश्चापदान्तस्य झलि''
यद् + लाभः	**यल्लाभः**	''तोर्लि''
यज्ञ + छागः	**यज्ञच्छागः**	''छे च''
य + छति	**यच्छति**	''छे च ''
यद् + मण्डलम्	**यन्मण्डलम्**	''यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा''
युयुद् + सवः	**युयुत्सवः**	''खरि च''
यावत् + शक्यम्	**यावच्छक्यम्**	''स्तोः श्चुना श्चुः''+''शश्छोऽटि''
यस्मिन् + लीयते	**यस्मिँल्लीयते**	''तोर्लि''
रम् + स्यते	**रंस्यते**	''नश्चापदान्तस्य झलि''
राजन् + जागृहि	**राजञ्जागृहि**	''स्तोः श्चुना श्चुः''
राज् + नी	**राज्ञीः**	''स्तोः श्चुना श्चुः''
राज + छत्रम्	**राजच्छत्रम्**	''छे च''
राजन् + जयः	**राजञ्जयः**	''स्तोः श्चुना श्चुः''

सन्धिविच्छेदः	सन्धिपदम्	सूत्रम्
रामस् + षष्ठः	**रामष्षष्ठः**	''ष्टुना ष्टुः''
रामस् + टीकते	**रामष्टीकते**	''ष्टुना ष्टुः''
रामस् + शेते	**रामश्शेते**	''स्तोः श्चुना श्चुः''
रामस् + चिनोति	**रामश्चिनोति**	''स्तोः श्चुना श्चुः''
रामस् + छात्रः	**रामश्छात्रः**	''स्तोः श्चुना श्चुः''
रामस् + च	**रामश्च**	''स्तोः श्चुना श्चुः''
रामम् + वन्दे	**रामं वन्दे**	''मोऽनुस्वारः''
रत्नमुड् + हरति	**रत्नमुड्ढरति**	''झयो होऽन्यतरस्याम्''
राट् + नगरी	**राण्णगरी**	''अनाम्नवतिनगरीणामिति वाच्यम्''
रत्नमुट् + धावति	**रत्नमुड्धावति**	''झलां जशोऽन्ते''
राज् + नः	**राज्ञः**	''स्तोः श्चुना श्चुः''
लिड् + सु	**लिट्त्सु**	''डः सि धुट्''
लुन् + ठति	**लुण्ठति**	''ष्टुना ष्टुः''
लिं + पति	**लिम्पति**	''अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः''
लक्ष्मी + छाया	**लक्ष्मीच्छाया**	''दीर्घात् पदान्ताद् वा''
लिभ् + सा	**लिप्सा**	''खरि च''
लिड् + निमित्तः	**लिण्निमित्तः**	''यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा''
लिड् + सु	**लिट्सु**	''न पदान्ताट्टोरनाम्''
वाणिम् + वन्दे	**वाणिं वन्दे**	''मोऽनुस्वारः''
वाक्यम् + शृणोति	**वाक्यं शृणोति**	''मोऽनुस्वारः''
वाक् + मूलम्	**वाङ्मूलम्**	''यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा''
वाग् + नियमः	**वाङ्नियमः**	''यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा''
वाक् + ईशः	**वागीशः**	''झलां जशोऽन्ते''
वाक् + व्यवहारः	**वाग्व्यवहारः**	''झलां जशोऽन्ते''
वाक् + देवता	**वाग्देवता**	''झलां जशोऽन्ते''
विपद् + कालः	**विपत्कालः**	''खरि च''
विराड् + पुरुषः	**विराट्पुरुषः**	''खरि च''
विश्वाराड् + कुत्र	**विश्वाराट्कुत्र**	''खरि च''
विपद् + प्रतीकारः	**विपत्प्रतीकारः**	''खरि च''
विद्युत् + नगरी	**विद्युन्नगरी**	''यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा''
वीणाम् + वादयति	**वीणां वादयति**	''मोऽनुस्वारः''
वदन् + लज्जितः	**वदँल्लज्जितः**	''तोर्लि''
विलसत् + लङ्का	**विलसल्लङ्का**	''तोर्लि''
वणिग् + हसति	**वणिग्घसति**	''झयो होऽन्यतरस्याम्''
वाग् + हीनः	**वाग्घीनः**	''झयो होऽन्यतरस्याम्''
विड् + हसति	**विड्ढसति**	''झयो होऽन्यतरस्याम्''
वियत् + चरः	**वियच्चरः**	''स्तोः श्चुना श्चुः''
वाक् + शरः	**वाक्छरः/वाक्शरः**	''शश्छोऽटि''
वाक् + शास्त्रम्	**वाक्छास्त्रम्**	''शश्छोऽटि''
वाक् + शस्त्रम्	**वाक्छस्त्रम्**	''शश्छोऽटि''
विट् + शङ्करः	**विट्छन्करः/विट्शङ्करः**	''शश्छोऽटि''
विद्वत् + श्रद्धा	**विद्वच्छ्रद्धा/विद्वच्श्रद्धा**	''शश्छोऽटि''
वृक्ष + छाया	**वृक्षच्छाया**	''छे च''
विश् + नः	**विश्नः**	''शात्''
वाक् + अत्र	**वागत्र**	''झलां जशोऽन्ते''

सन्धिविच्छेदः सन्धिपदम् सूत्रम्

वाग् + कलहः = **वाक्कलहः** "खरि च"
वत्सान् + लेढि = **वत्साँल्लेढि** "तोर्लि"
वचान् + सि = **वचांसि** "नश्चापदान्तस्य झलि"
विद्वान् + सौ = **विद्वांसौ** "नश्चापदान्तस्य झलि"
विरम् + स्यति = **विरंस्यति** "नश्चापदान्तस्य झलि"
विद्युत् + गच्छति = **विद्युद्गच्छति** "झलां जशोऽन्ते"
वाक् + मयम् = **वाङ्मयम्** "प्रत्यये भाषायां नित्यम्"
वाक् + मात्रम् = **वाङ्मात्रम्** "प्रत्यये भाषायां नित्यम्"
विद्वान् + लिखति = **विद्वाल्लिँखति** "तोर्लि"
वस्त्रम् + हरति = **वस्त्रं हरति** "मोऽनुस्वारः"
वाक् + हरिः = **वाग्घरि** "झयो होऽन्यतरस्याम्"
वि + छेदः = **विच्छेदः** "छे च"
विपद् + हेतुः =**विपद्धेतुः** "झयो होऽन्यतरस्याम्"
वाक् + जालम् =**वाग्जालम्** "झलां जशोऽन्ते"
वाक् + दानम् = **वाग्दानम्** "झलां जशोऽन्ते"
वाक् + रोधः = **वाग्रोधः** "झलां जशोऽन्ते"
वाक् + मलम् = **वाङ्मलम्** "यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा"
वाक् + शूरः = **वाक्शूरः/वाक्छूरः** "शश्छोऽटि"
विश्वसृट् + शेते = **विश्वसृट्छेते** "शश्छोऽटि"
विपद् + लीनः = **विपल्लीनः** "तोर्लि"
वृध् + धः = **वृद्धः** "झलां जश् झशि"
वृच्छात् + लगुडम् = **वृक्षाल्लगुडम्** "तोर्लि"
विद्युत् + लेखा = **विद्युल्लेखा** "तोर्लि"
विद्वान् + सहते = **विद्वान्त्सहते** "नश्च"
विद्वान्+शोभते=**विद्वाञ्छोभते/विद्वाञ्चछोभते,विद्वाञ्चशोभते/ विद्वान्शोभते** "शि तुक्"
विद्वान् + च्यवनः = **विद्वांश्च्यवनः** "नश्छव्यप्रशान्"
विरप्+शिन्=**विरफ्शिन्/विरप्शिन्** "चयोः द्वितीयाः शरि पौष्करशादेरिति"
वैदिक + छन्दांसि = **वैदिकच्छन्दांसि** "छे च'
शत्रुम् + जहि = **शत्रुं जहि/शत्रुञ्जहि** " वा पदान्तस्य"
शिशुस् + शेते = **शिशुश्शेते** "स्तोः श्चुना श्चुः"
शार्ङ्गिन् + जयः = **शर्ङ्गिञ्जयः** "स्तोः श्चुना श्चुः"
शत्रुन् + जय =**शत्रुञ्जयः** "स्तोः श्चुना श्चुः"
श् + तिप् = **श्तिप्** "शात्"
शिव + छाया = **शिवच्छाया** "छे च"
शश् + नाथः = **शश्नाथः** "शात्"
शरद् + डम्बरः = **शरड्डम्बरः** "ष्टुना ष्टुः"
शं + करः = **शङ्करः** "अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः"
शत्रुम् + जयति = **शत्रुं जयति** "मोऽनुस्वारः"
शंखं + धमति = **शंखन्धमति** "वा पदान्तस्य"
शिवं + भजति = **शिवम्भजति** "वा पदान्तस्य"
श्वसन् + शेते = **श्वसञ्छेते** "शश्छोऽटि" +"स्तोः श्चुना श्चुः"
शर्मन् + अधीहि = **शर्मन्नधीहि** "ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्"
शां + तः = **शान्तः** "अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः"
श्लोकान् + टीकाभिः = **श्लोकाँष्टीकाभिः** "नश्छव्यप्रशान्"

सन्धिविच्छेदः सन्धिपदम् सूत्रम्

शिखरिणी + छन्दः = **शिखरिणीच्छन्दः** "दीर्घात्"
श्वेत + छत्रम् =**श्वेतच्छत्रम्** "छे च"
शुभ्र + छविः = **शुभ्रच्छविः** "छे च"
श्रीमन् + झटिति = **श्रीमञ्झटिति** "स्तोः श्चुना श्चुः"
शार्ङ्गिन् + छिन्धि = **शार्ङ्गिंश्छिन्धि** "नश्छव्यप्रशान्"
षट् + नाम् = **षण्णाम्** "प्रत्यये भाषायां नित्यम्"
षट् + नवतिः = **षण्णवतिः** "अनाम्नवतिनगरीणामिति वाच्यम्"
षड् + नगर्यः = **षण्णगर्यः** "अनाम्नवतिनगरीणामिति वाच्यम्"
षट् + आननः = **षडाननः** "झलां जशोऽन्ते"
षष् + थः = **षष्ठः** "ष्टुना ष्टुः"
षट् + मुखः = **षण्मुखः/षड्मुखः** "यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा"
षट् + दर्शनानि = **षड्दर्शनानि** "झलां जशोऽन्ते"
षड् + खाद्यानि = **षट्खाद्यानि** "खरि च"
षड् + मयूखाः = **षण्मयूखाः** "यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा"
षड् + हयाः = **षड्ढयाः** "झयो होऽन्यतरस्याम्"
षड् + हर्म्याणि = **षड्ढर्म्याणि** "झयो होऽन्यतरस्याम्"
षट् + भ्रातरः = **षड्भ्रातरः** "झलां जशोऽन्ते"
षट् + मासः = **षण्मासः** "यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा"
षट् + होतारः = **षड्होतारः/षड्ढोतारः** "झलां जशोऽन्ते"
षट् + सन्तः = **षट्सन्तः** "न पदान्ताट्टोरनाम्"
षट् + आगच्छति = **षडागच्छति** "झलां जशोऽन्ते"
षट् + सन्ततयः = **षट्त्सन्ततयः** "डः सि धुट्"
षट् + समस्याः = **षट्त्समस्याः** "डः सि धुट्"
षट् + सन्निकर्षाः = **षट्त्सन्निकर्षाः** "डः सि धुट्"
सोमसुद् + झकारः = **सोमसुज्झकारः** "स्तोः श्चुना श्चुः"
सन् + सः = **सन्त्सः** "नश्च"
सत् + छात्रः = **सच्छात्रः** "स्तोः श्चुना श्चुः"
सन् + शम्भुः = **सञ्चछम्भुः** "शि तुक्" + शश्छोऽटि
समन्ताद् + जिघ्रति = **समताज्जिघ्रति** "स्तोः श्चुना श्चुः"
सुगण् + आलयः = **सुगण्णालयः** "ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्"
सर्पिस् + तम् = **सर्पिष्टम्** "इसिसोः सामर्थ्ये"
सत् + छागः = **सच्छागः** "स्तोः श्चुना श्चुः"
सोमसुद् + ढौकसे = **सोमसुड्ढौकसे** "ष्टुना ष्टुः"
सच्चित् + आनन्दः = **सच्चिदानन्दः** "झलां जशोऽन्ते"
स्याद् + णौ = **स्याण्णौ** "ष्टुना ष्टुः"
सत् + जनः = **सज्जनः** "झलां जशोऽन्ते" + "स्तोः श्चुना श्चुः"
स्व + छन्दः = **स्वच्छन्दः** "छे च"
सुप् + अन्तः = **सुबन्तः** "झलां जशोऽन्ते"
सत्वरम् + याति = **सत्वरं याति** "मोऽनुस्वारः"
समिध् + अत्र = **समिदत्र** "झलां जशोऽन्ते"
सत् + ठकारः = **सट्ठकारः** "ष्टुना ष्टुः"
सम्राट् + इच्छति = **सम्राडिच्छति** "झलां जशोऽन्ते"
सम्यक् + उक्तम् = **सम्यगुक्तम्** "झलां जशोऽन्ते"
सम्पद् + हर्षः = **सम्पद्धर्षः** "झयो होऽन्यतरस्याम्"
सन्नध् + धः = **सन्नद्धः** "झलां जश् झशि"

सन्धिविच्छेदः सन्धिपदम् सूत्रम्

समुद् + हर्ता = **समुद्धर्ता** "झयो होऽन्यतरस्याम्"
सुहृद् + क्रीडति = **सुहृत्क्रीडति** "खरि च"
सकृत् + श्लेष्मा=**सकृच्छ्लेष्मा** "छत्वममीतिवाच्यम्"+"स्तोः श्चुना श्चुः"
सन् + ति = **सन्ति** "नश्चापदान्तस्य झलि"
सत् + चित् = **सच्चित्** "स्तोः श्चुना श्चुः"
सुगण् + षष्ठः = **सुगण्ट्षष्ठः** "ड्णोः कुक्टुक् शरि"
सत् + चरित्रम् = **सच्चरित्रम्** "स्तोः श्चुना श्चुः"
सुगण् + शेते = **सुगण्ट्शेते** "ड्णोः कुक्टुक्शरि"
सूर्यस् + छत्रः = **सूर्यश्छत्रः** "स्तोः श्चुना श्चुः"
सुगण् + सरति = **सुगण्ट्सरति** "ड्णोः कुक्टुक्शरि"
सन् + षष्ठः = **सन्षष्ठः** "तोः षि"
सद् + मार्ग = **सन्मार्गः** "यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा"
सुहृद् + जगाम = **सुहृज्जगाम** "स्तोः श्चुना श्चुः"
सम् + स्कर्ता = **सँस्स्कर्ता/ सँस्कर्ता** "सम्परिभ्यां करोतौ भूषणे" "समः सुटि"
सत् + चिद्रूपम् = **सच्चिद्रूपम्** "स्तोः श्चुना श्चुः"
सम् + स्कृतम् = **सँस्स्कृतम् / संस्कृतम्** "सम्परिभ्यां करोतौ भूषणे" "समः सुटि"
सम्राट् + गच्छति = **सम्राड्गच्छति** "झलां जशोऽन्ते"
सुखम् + शेते = **सुखं शेते** "मोऽनुस्वारः"
सकृत् + चर्वणम् = **सकृच्चर्वणम्** "स्तोः श्चुना श्चुः"
सत् + टिप्पणी = **सट्टिप्पणी** "ष्टुना ष्टुः"
संस्कृत + छात्र = **संस्कृतच्छात्रः** "छे च"
सुप् + विभक्तिः = **सुब्विभक्तिः** "झलां जशोऽन्ते"
सूक्ष्म + छिद्रम् = **सूक्ष्मच्छिद्रम्** "छे च"
सम्यक् + अभिहितम् = **सम्यगभिहितम्** "झलां जशोऽन्ते"
सम्पद् + पुत्रः = **सम्पत्पुत्रः** "खरि च"
सम् + कारः = **संस्कारः** "नश्चापदान्तस्य झलि"
सम्पद् + कुमारः = **सम्पत्कुमारः** "खरि च"
सम् + धिः = **सन्धिः** "अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः"
सत्यम् + वद् = **सत्यं वद** "मोऽनुस्वारः"
सम् + तोषः = **सन्तोषः** "अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः"
सज्जनम् + मानय = **सज्जनं मानय** "मोऽनुस्वारः"
सम् + सारः = **संसारः** "नश्चापदान्तस्य झलि"
सर्वम् + स्थानम् = **सर्वंस्थानम्** "मोऽनुस्वारः"
सम्राट्+हरिद्राम्=**सम्राड्ढरिद्राम्** "झयो होऽन्यतरस्याम्"+"झलां जशोऽन्ते"
सं + पृक्तौ = **सम्पृक्तौ** "अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः"
सुहृद् + हृष्टः = **सुहृद्धृष्टः** "झयो होऽन्यतरस्याम्"
सम् + यमः = **संय्यमः** "अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः"
सं + ख्या = **सङ्ख्या** "अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः"
सं + वत्सरः = **सँव्वत्सरः/संवत्सरः** "अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः"
संरं + भः = **संरम्भः** "अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः"
सं + लापः = **सलँल्लापः/ संलापः** तोर्लि "अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः"
सं + भ्रमः = **सम्भ्रमः** "अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः"
सं + भवः = **सम्भवः** "अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः"
सम् + बन्धः = **सम्बन्धः** "अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः"
सुगण् + ईशः = **सुगण्णीशः** "ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्"

सन्धिविच्छेदः सन्धिपदम् सूत्रम्

सर्वस्मिन् + अपि = **सर्वस्मिन्नपि** "ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्"
सर्वस्मिन् + एव = **सर्वस्मिन्नेव** "ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्"
हरिस् + छत्रधरः = **हरिश्छत्रधरः** "स्तोः श्चुना श्चुः"
हरिस् + शेते = **हरिश्शेते** "स्तोः श्चुना श्चुः"
हरिस् + षडङ्गमधीते = **हरिष्षडङ्गमधीते** "ष्टुना ष्टुः"
हेतुमत् + णौ = **हेतुमण्णौ** "ष्टुना ष्टुः"
हनुमान् + लङ्कादहति = **हनुमाल्ँलङ्कादहति** "तोर्लि"
हसन् + लेढि = **हसल्ँलेढि** "तोर्लि"
हन् + सि = **हंसि** "नश्चापदान्तस्य झलि"
हसन् + आगच्छति = **हसन्नागच्छति** "ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्"
हरिम् + वन्दे = **हरिं वन्दे** "मोऽनुस्वारः"
हे! गुणिन् + जानातु = **हे! गुणिञ्जानातु** "स्तोः श्चुना श्चुः"
हसन् + अत्ति = **हसन्नत्ति** "ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्"
क्षेत्रम् + लुनाति = **क्षेत्रं लुनाति** "मोऽनुस्वारः"
त्रिष्टुप् + आदिः = **त्रिष्टुबादिः** "झलां जशोऽन्ते"
त्रिष्टुप् + छन्दः = **त्रिष्टुप्छन्दः** "खरि च"
ज्ञानात् + मुक्तिः = **ज्ञानान्मुक्तिः** "यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा"

विसर्गसन्धि-उदाहरणम् (अकारादि क्रम से)

सन्धिविच्छेदः सन्धिपदम् सूत्रम्

अयः + करः = **अयस्करः** "कस्कादिषु च"
अहन् + अहः = **अहरहः** "रोऽसुपि"
अहन् + अदः = **अहरदः** "रोऽसुपि"
अहन् + गणः = **अहर्गणः** "रोऽसुपि"
अहन् + भाति = **अहर्भाति** "रोऽसुपि"
अधः + पदम् = **अधस्पदम्** "अधःशिरशीपदे"
अन्तर् + राष्ट्रियः = **अन्ताराष्ट्रियः** "रो रि" "ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः"
अलिढ् + ढः = **अलीढः** "ढो ढे लोपः" + "ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः"
अहर् + रम्यः = **अहारम्यः** "रो रि" + "ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः"
अशस् + शिवः =**अशःशिवः/अशश्शिवः** "अनञ्समासे"
अहन् + गच्छति = **अहर्गच्छति** "रोऽसुपि"
अर्कः + सेव्यः = **अर्कःसेव्यः/अर्कस्सेव्यः** "वा शरि"
अयः + कुशा = **अयस्कुशा** "अतः कृकमिकंस........"
अयः + कामः = **अयस्कामः** "अतः कृकमिक............"
अयः + कान्तः = **अयस्कान्तः** "कस्कादिषु च"
अन्तर् + करणम् = **अन्तःकरणम्** "खरवसानयोर्विसर्जनीयः"
अहन् + अहन् + गच्छति = **अहरहर्गच्छति** "रोऽसुपि"
अपिपर् + अयम् = **अपिपोऽयम्** "अतोरोरप्लुतादप्लुते"
अकुतः + भयः = **अकुतोभयः** "हशि च"
अहन् + अहन् + अत्र = **अहरहरत्र** "रोऽसुपि"
अन्तर् + करोति = **अन्तःकरोति** "खरवसानयोर्विसर्जनीयः"
अहन् + इदानीम् = **अहरिदानीम्** "रोऽसुपि"
अतीतः + मासः = **अतीतोमासः** "हशि च"
अयः + कारः = **अयस्कारः** "अतःकृकमिकंसकुम्भपात्रकुशाकर्णीष्वनव्ययस्य"
अयः + पात्रम् = **अयस्पात्रम्** "अतःकृकमिकंसकुम्भपात्रकुशाकर्णीष्वनव्ययस्य"

सन्धिविच्छेदः सन्धिपदम् सूत्रम्

अयः + कामः = **अयस्कामः** ''अतःकृकमिकंसकुम्भपात्रकुशाकर्णीष्वनव्ययस्य''
अयः + केशः = **अयस्केशः** ''अतःकृकमिकंसकुम्भपात्रकुशाकर्णीष्वनव्ययस्य''
अयः + कुम्भः = **अयस्कुम्भः** ''अतःकृकमिकंसकुम्भपात्रकुशाकर्णीष्वनव्ययस्य''
अयः + कर्णी = **अयस्कर्णी** ''अतःकृकमिकंसकुम्भपात्रकुशाकर्णीष्वनव्ययस्य''
अहन् + इदम् = **अहरिदम्** ''रोऽसुपि''
अहन् + रूपम् = **अहोरूपम्** ''रूपरात्रिरथन्तरेषु रुत्वं वाच्यम्'' हशि च
अहन् + रथन्तरम्=**अहोरथन्तरम्** ''रूपरात्रिरथन्तरेषु रुत्वं वाच्यम्'' हशि च
अहन् + रात्रः = **अहोरात्रः** ''रूपरात्रिरथन्तरेषु रुत्वं वाच्यम्'' हशि च
अहन् + भ्याम् = **अहोभ्याम्** ''हशि च''
अहर् + पति = **अहर्पतिः** ''अहरादीनां पत्यादिषु वा रेफः''
अश्वास् + धावान्ति =**अश्वा धावन्ति** ''हलि सर्वेषाम्''
अगदस् + ज्वरम् = **अगदोज्वरम्** ''हशि च''
अघोस् + याति = **अघोयाति** ''भो-भगो-अघो-अपूर्वस्य योऽशि''
अगदः + ज्वरघ्नः = **अगदोज्वरघ्नः** ''हशि च''
आविः + कारः =**आविष्कारः** ''इदुदुपधस्य चाप्रत्ययस्य''
आविः + कृतम् = **आविष्कृतम्** ''इदुदुपधस्य चाप्रत्ययस्य''
इतः + ततः = **इतस्ततः** ''विसर्जनीयस्य सः''
ईश्वरस् + रचयति = **ईश्वरोरचयति** ''विप्रतिषेधे परं कार्यम्''+''हशि च''
उन्नतः + तरुः = **उन्नतस्तरुः** ''विसर्जनीयस्य सः''
उच्चैस् + करोति = **उच्चैः करोति** ''खरवसानयोर्विसर्जनीयः''
उन्नतः + शीलः = **उन्नतश्शीलः** ''विसर्जनीयस्य सः'' स्तोः श्चुना श्चुः
उढ् + ढः =**ऊढः** ''ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः''
एषः + लुनाति = **एष लुनाति** ''एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि''
एषः + धावति = **एष धावति** ''एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि''
एषः + रमते = **एष रमते** ''एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि''
एषः + जयति = **एष जयति** ''एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि''
एषः + विष्णुः = **एष विष्णुः** ''एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि''
एषः + बध्नाति = **एष बध्नाति** ''एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि''
एषः + अत्र = **एषोऽत्र** ''अतो रोरप्लुतादप्लुते''
एषः + गच्छति = **एष गच्छति** ''एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि''
एषः + लिखति = **एष लिखति** ''एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि''
एषस् + गच्छति = **एष गच्छति** ''एतत्तदोःसुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि''
एषस् + हसति = **एष हसति** ''एतत्तदोःसुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि''
एषः + घोषः = **एष घोषः** ''एतत्तदोःसुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि''
एषः + याति = **एष याति** ''एतत्तदोःसुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि''
एषः + झलत्कारः = **एष झलत्कारः** ''एतत्तदोःसुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि''
एषः + वमति = **एष वमति** ''एतत्तदोःसुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि''
एषः + भाति = **एष भाति** ''एतत्तदोःसुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि''
ए + साम् = **एषाम्** ''अपदान्तस्य मूर्धन्यः इण्को आदेशप्रत्यययोः''
एषः + ञकारः =**एष ञकारः** ''एतत्तदोःसुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि''
एषः + मुह्यति = **एष मुह्यति** ''एतत्तदोःसुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि''
एषः + गकारः = **एष गकारः** ''एतत्तदोःसुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि''
एषः + णकारः = **एष णकारः** ''एतत्तदोःसुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि''
एषः + नमति = **एष नमति** ''एतत्तदोःसुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि''
एषः + डिड्ये = **एष डिड्ये** ''एतत्तदोःसुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि''

सन्धिविच्छेदः सन्धिपदम् सूत्रम्

एषः + ददाति = **एष ददाति** ''एतत्तदोःसुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि''
एषः + खनति = **एष खनति** ''एतत्तदोःसुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि''
एषः + फलति = **एष फलति** ''एतत्तदोःसुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि''
एषः + छादयति = **एष छादयति** ''एतत्तदोःसुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि''
एषः + ढक्कुरः = **एष ढक्कुरः** ''एतत्तदोःसुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि''
एषः + थूत्करोति = **एष थूत्करोति** ''एतत्तदोःसुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि''
एषः + चलति = **एष चलति** ''एतत्तदोःसुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि''
एषः + तरति = **एष तरति** ''एतत्तदोःसुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि''
एषः + करोति = **एष करोति** ''एतत्तदोःसुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि''
एषः + पठति = **एष पठति** ''एतत्तदोःसुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि''
एषः + शेते = **एष शेते** ''एतत्तदोःसुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि''
एषः + षष्ठः = **एष षष्ठः** ''एतत्तदोःसुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि''
एषः + सर्पति = **एष सर्पति** ''एतत्तदोःसुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि''
कृष्ण + स् = **कृष्णः** ''ससजुषो रुः''+''खरवसानयोर्विसर्जनीयः''
कवेस् + कृतिः = **कवेर्कृतिः** ''ससजुषो रुः''
कः + चित् = **कश्चित्** ''विसर्जनीयस्य सः''
कः + करिष्यति = **कः करिष्यति/कᳵकरिष्यति** ''कुप्वोःᳵकᳵपौ च''
कः + त्सरुः = **कःत्सरुः** ''सर्परे विसर्जनीयः''
कः + चलति = **कश्चलति** ''विसर्जनीयस्य सः''
कः + कः = **कस्कः** ''कस्कादिषु च''
काकः + रौति = **काको रौति** ''हशि च''
कः + त्वम् = **कस्त्वम्** ''विसर्जनीयस्य सः''
कः + अयम् = **कोऽयम्** ''अतोरोरप्लुतादप्लुते''
कः + बालः = **को बालः** ''हशि च''
कः + अदात् = **कोऽदात्** ''अतोरोरप्लुतादप्लुते''
कविस् + करोति = **कविःकरोति** ''खरवसानयोर्विसर्जनीयः''
कृतस् + अत्र = **कृतोऽत्र** ''अतोरोरप्लुतादप्लुते''
कृष्णमेघः + तिरस् = **कृष्णमेघस्तिरस्** ''विसर्जनीयस्य सः''
कदागुरोकसस् + भवन्तः =**कदागुरोकसोभवन्तः** ''हशि च''
कविः + शृणोति = **कविःशृणोति/कविश्शृणोति** ''वा शरि''
कस् + करोति = **कः करोति** ''खरवसानयोर्विसर्जनीयः''
कुतः + अत्र = **कुतोऽत्र** ''अतोरोरप्लुतादप्लुते''
कुतः + लोभः = **कुतो लोभः** ''हशि च''
कः + एषः = **क एषः** ''लोपः शाकल्यस्य, भो-भगो-अघो-अपूर्वस्य योऽशि''
कः + आयाति = **क आयाति** ''लोपः शाकल्यस्य''
कृष्णः + जयति = **कृष्णो जयति** ''हशि च''
कः + णोपदेशः = **को णोपदेशः** ''हशि च''
काकः + डिड्ये = **काकोडिड्ये** ''हशि च''
गतिः + इयम् = **गतिरियम्** ''ससजुषो रुः''
गजः + चलति = **गजश्चलति** ''विसर्जनीयस्य सः''
गजः + तिष्ठति = **गजस्तिष्ठति** ''विसर्जनीयस्य सः''
गुणाः + षड् = **गुणाष्षड्/गुणाःषड्** ''वा शरि''
ग्रामः + अभ्यर्णः = **ग्रामोऽभ्यर्णः** ''अतोरोरप्लुतादप्लुते''
गजः + चलति = **गजश्चलति** ''विसर्जनीयस्य सः'' स्तोः श्चुना श्चुः
गौस् + गच्छति = **गौर्गच्छति** ''ससजुषो रुः''

सन्धिविच्छेदः सन्धिपदम् सूत्रम्

गीर् + पतिः = **गीर्पतिः/गीष्पतिः** "अहरादिनांपत्यादिषु वा रेफः"
गुरुर् + रुष्टः = **गुरूरुष्टः** रो रि + "ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः"
गो + सु = गोषु "अपदान्तस्यमूर्धन्यः इण्कोः आदेशप्रत्यययोः"
ग्लौ + सु = **ग्लौषु** "अपदान्तस्य मूर्धन्य इण्कोः आदेशप्रत्यययोः"
गुरोस् + भाषणम् = **गुरोर्भाषणम्** "ससजुषो रुः'
गौः + चरति =**गौश्चरति** "विसर्जनीयस्य सः" + स्तोः श्चुना श्चुः
घोराघोणिनः + घोणाः = **घोराघोणिनोघोणाः** "हशि च"
चाण्डालः + अभिजायते = **चाण्डालोऽभिजायते** "अतोरोरप्लुतादप्लुते"
चतुः + पठति = **चतुष्पठति** "द्विस्त्रिस्चतुरिति कृत्वोऽर्थे"
चतुः + पुत्री = **चतुष्पुत्री** "इसुसोः सामर्थ्ये"
चतसृ + नाम् = **चतसृणाम्** "रषाभ्यां नो णः समानपदे"
चतुस् + भुजः = **चतुर्भुजः** "ससजुषो रुः"
चतुर् + नाम् = **चतुर्णाम्** "रषाभ्यां नो णः समानपदे"
चतुः + तयम् = **चतुष्टयम्** "इसुसोः सामर्थ्ये"
चक्रिन् + त्रायस्व=**चक्रिंस्त्रायस्व** "नश्छव्यप्रशान्"+"विसर्जनीयस्य सः"
छात्राः + सन्ति = **छात्राःसन्ति/छात्रास्सन्ति** "वा शरि"
छात्रः + अयम् = **छात्रोऽयम्** "अतोरोरप्लुतादप्लुते"
छात्रः + अस्ति = **छात्रोस्ति** "अतोरोरप्लुतादप्लुते"
छात्रास् + हसन्ति = **छात्रा हसन्ति** "भो-भगो-अघो-अपूर्वस्य योऽशि"
ज्योतिः + चक्रम् = **ज्योतिश्चक्रम्** "विसर्जनीयस्य सः"
ज्येष्ठः +अनुजः = **ज्येष्ठोऽनुजः** "अतोरोरप्लुतादप्लुते"
जनः + ङादिशब्दं न विन्दन्ति=**जनोङादिशब्दं न विन्दन्ति** "हशि च"
तिरः + कर्ता = **तिरःकर्ता/तिरस्कर्ता** "तिरसोऽन्यतरस्याम्"
ताराः + उदिताः = **तारा उदिताः** "भो-भगोअघोऽपूर्वस्य योऽसि"
तिरः + कृत्य = **तिरःकृत्य/तिरस्कृत्य** "वा शरि"
तरोः + छात्रा = **तरोश्छात्रा** "विसर्जनीयस्य सः"
तिरः + करोति = **तिरःकरोति/तिरस्करोति** "तिरसोऽन्यतरस्याम्"
तिरः + कारः = **तिरस्कारः** "तिरसोऽन्यतरस्याम्"
तमः + काण्डः = **तमष्काण्डः** " विसर्जनीयस्य सः"
ततः + अन्यथा = **ततोऽन्यथा** "अतोरोरप्लुतादप्लुते"
तिरः + कृतम् = **तिरस्कृतम्** "तिरसोऽन्यतरस्याम्"
तृतीयः + अध्यायः = **तृतीयोध्यायः** "अतोरोरप्लुतादप्लुते"
ततः + अन्यथा = **ततोऽन्यथा** "अतोरोरप्लुतादप्लुते"
तृढ् + ढः = **तृढः** "ढो ढे लोपः" + "ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः"
तन्त्रस् + आसुव = **तन्त्रआसुव/तन्नयासुव** "भो-भगो-अघो-अपूर्वस्य योऽशि"
तपः + तप्त्वा = **तपस्तप्त्वा** "विसर्जनीयस्य सः"
देवः + वन्द्यः = **देवोवन्द्यः** "हशि च"
देवास् + इह = **देवा इह/देवायिह** "भो-भगो-अघो-अपूर्वस्य योऽशि"
देवाः + नम्याः = **देवा नम्याः** "लोपःशाकल्यस्य"+"हलि सर्वेषाम्"
देवदत्तः + मन्यते = **देवदत्तो मन्यते** "हशि च"
देवः + अधुना = **देवोऽधुना** "अतोरोरप्लुतादप्लुते"
द्विः + करोति = **द्विस्करोति/द्विःकरोति** "द्विस्त्रिस्चतुरितिकृत्वोऽर्थे"
दुः + कृतम् = **दुष्कृतम्** "इदुदुपधस्य चाप्रत्ययस्य"
देवः + आयाति=**देव आयाति/देवयायाति** "भो-भगो-अघो-अपूर्वस्य योऽशि"

सन्धिविच्छेदः सन्धिपदम् सूत्रम्

दुः + शासनम् = **दुश्शासनम्/दुःशासनम्** "वा शरि"
देवः + अपि = **देवोऽपि** "अतोरोरप्लुतादप्लुते"
देवदत्तः + पचति = **देवदत≍पचति/देवदतःपचति** "कुप्वोः≍क≍पौ च"
दाशरथिर् + रामः=**दाशरथीरामः** रो रि + "ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः"
देवः + ऋषिः = **देवऋषिः** "भो-भगो-अघो-अपूर्वस्य योऽशि"
देवः + राजते = **देवोराजते** "विप्रतिषेधे परं कार्यम्"+"हशि"
दर्पे + न = **दर्पेण** "अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि"
देवः + ठक्कुरः = **देवष्ठक्कुरः** "विसर्जनीयस्य सः"
दुष्टः + जिम्हः = **दुष्टोजिम्हः** "हशि च"
दुः + कर्म = **दुष्कर्म** "इदुदुपधस्य चाप्रत्ययस्य"
धनुः + टङ्कारः = **धनुष्टंकारः** "विसर्जनीयस्य सः"
धनुः + करोति = **धनुष्करोति/धनुःकरोति** "इसुसोः सामर्थ्ये"
धर्मः + रक्षति = **धर्मोरक्षति** "विप्रतिषेधे परं कार्यम्"+"हशि च"
धेनुः + सु = **धेनुषु** "अपदान्त स्मूर्धन्यः इण्कोः आदेशप्रत्यययोः"
धनुः + सि = **धनूंसि** "नुम् विसर्जनीयशर्व्यवायेऽपि"
धूः + पतिः = **धूर्पतिः/धूष्पतिः** "अहरादिनां पत्यादिषु वा रेफः"
धनुः + कपालः = **धनुष्कपालः** "कस्कादिषु च"
धीरः + न शोचति = **धीरो न शोचति** "हशि च"
नमः + कारः = **नमस्कारः/नमःकार** "नमस्पुरसोर्गत्योः"
निः + कुलम् = **निष्कुलम्** "इदुदुपधस्य चाप्रत्ययः"
नमः + ते = **नमस्ते** "विसर्जनीयस्य सः"
निः + फलम् = **निष्फलम्** "इदुदुपधस्य चाप्रत्ययः"
निः + करम् = **निस्करम्** "विसर्जनीयस्य सः"
नमः + षडाननाय = **नमः षडाननाय/नमष्षडाननाय** "वा शरि"
निः + रोगः = **नीरोगः** रो रि + "ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः"
निः + रसः = **नीरसः** रो रि + "ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः"
नराः + यान्ति = **नरायान्ति** "हलि सर्वेषाम्"
नृपस् + अस्ति = **नृपोस्ति** "अतोरोरप्लुतादप्लुते"
नृपास् + ददति = **नृपा ददति** "हलि सर्वेषाम्"
निः + चयः = **निश्चयः** "विसर्जनीयस्य सः" + स्तोः श्चुनाश्चुः
नद्याः + तीरम् = **नद्यास्तीरम्** "विसर्जनीयस्य सः"
निः + सृतः = **निःसृत/निस्सृतः** "वा शरि"
नृपः + षष्ठः = **नृपष्षष्ठः/नृपःषष्ठः** "वा शरि" + "ष्टुना ष्टुः"
नराः + गच्छति = **नरागच्छति** "हलि सर्वेषाम्"
नृपः + पाति = **नृपःपाति/नृप≍पाति** "कुप्वोः≍क≍पौ च"
नमः + करोति = **नमस्करोति/नमःकरोति** "नमस्पुरसोर्गत्योः"
नदी + सु = **नदीषु** "अपदान्तस्य मर्धून्यः इण्कोः आदेशः"
निः + प्रत्युहम् = **निष्प्रत्युहम्** "इदुदुपधस्य चाप्रत्ययस्य"
नृपः + अवदत् = **नृपोऽवदत्** "अतोरोरप्लुतादप्लुते"
नरः + हन्ति = **नरो हन्ति** "हशि च"
नरः + गच्छति = **नरो गच्छति** "हशि च"
नृपः + गच्छति = **नृपो गच्छति** "हशि च"
नूतनः + अभ्यासः = **नूतनोऽभ्यासः** "अतोरोरप्लुतादप्लुते"
न्यूनः + अस्ति = **न्यूनोस्ति** "अतोरोरप्लुतादप्लुते"
नरः + खादति = **नर≍खादति/ नरःखादति** "कुप्वोः ≍क≍पौ च"

सन्धिविच्छेदः	सन्धिपदम्	सूत्रम्

नूतनः + अभ्यागतः = **नूतनोऽभ्यागतः** ''अतोरोरप्लुतादप्लुते''
नर् + रम्यः =**नारम्यः** रो रि + ''ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः''
निर् + रुक् = **नीरुक्** रो रि + ''ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः''
नार्थस् + ऌकारोपदेशेन = **नार्थोऌकारोपदेशेन** ''हशि च''
पुनर् + रमते = **पुनारमते** रो रि + ''ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः''
पुष् + नाति = **पुष्णाति** ''रषाभ्यां नो णः समानपदे''
प्रातः + पठति = **प्रातᳲपठति** ''कुप्वोःᳲकᳲपौ च''
प्रातः + कालः = **प्रातᳲकालः** ''कुप्वोःᳲकᳲपौ च''
पुनर् + खादति = **पुनᳲखादति/पुनर्खादति** ''कुप्वोःᳲकᳲपौ च''
पुनस् + आगतः = **पुनरागतः** ''ससजुषो रुः''
पूर्णः + चन्द्रः =**पूर्णश्चन्द्रः** ''विसर्जनीयस्य सः''
पयः + धरः = **पयोधरः** ''हशि च''
पुरः + कारः = **पुरस्कारः** ''नमस् पुरसोर्गत्योः''
पुनर् + रमते = **पुनारमते** रो रि + ''ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः''
पुनर् + पृच्छति = **पुनःपृच्छति** ''खरवसानयोर्विसर्जनीयः''
पितुस् + इच्छा = **पितुरिच्छा** ''ससजुषो रुः''
पर्वतः + धौतः = **पर्वतोधौतः** ''हशि च''
परमशिरः + पदम् = **परमशिरःपदम्** ''अधःशिरशि पदे''
प्रातः + अत्र = **प्रातरत्र** ''ससजुषो रुः''
पुनर् + हसति = **पुनोहसति** ''हशि च''
प्रातः + गच्छ = **प्रातर्गच्छ** ''ससजुषो रुः''
पुरुषः + शेते = **पुरुषःशेते/पुरुषश्शेते** ''वा शरि''
पुरुषः + चिनोति = **पुरुषश्चिनोति** 'विसर्जनीयस्य सः' 'स्तोः श्चुना श्चुः'
पुरः + करोति = **पुरस्करोति** ''नमस्पुरसोर्गत्योः''
पदार्थाः + सप्त = **पदार्थास्सप्त** ''विसर्जनीयस्य सः''
पुरुषः + अधुना = **पुरुषोऽधुना** ''अतोरोरप्लुतादप्लुते''
पण्डिताः + भाग्यवन्तः = **पण्डिताभाग्यवन्तः** ''हलि सर्वेषाम्''
पुत्रः + सेवते = **पुत्रःसेवते/पुत्रस्सेवते** ''वा शरि''
फेरुर् + रौति = **फेरूरौति** रो रि + ''ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः''
बालः + रोदिति = **बालोरोदिति** ''हशि च''
बालः + हसति = **बालोहसति** ''हशि च''
बालाः + आगच्छन्ति = **बाला आगच्छन्ति** ''लोपः शाकल्यस्य''
बालः + अत्र = **बालोऽत्र** ''अतोरोरप्लुतादप्लुते''
बालः + थूत्करोति = **बालस्थूत्करोति** ''विसर्जनीयस्य सः''
बालः + करोति = **बालᳲकरोति/बालःकरोति** ''कुप्वोःᳲकᳲपौ च''
बालः + चलति = **बालश्चलति** ''विसर्जनीयस्य सः''
बालः + तिष्ठति = **बालस्तिष्ठति** ''विसर्जनीयस्य सः''
बालः + स्वपिति = **बालस्वपिति/बालःस्वपिति** '' वा शरि''
बालः + अस्ति = **बालोऽस्ति** ''अतोरोरप्लुतादप्लुते''
बालकः + अयम् = **बालकोऽयम्** ''अतोरोरप्लुतादप्लुते''
बालः + अकारपश्यति = **बालोऽकारपश्यति** ''अतोरोरप्लुतादप्लुते''
बुधः + लिखति = **बुधोलिखति** ''हशि च''
बालः + याति = **बालोयाति** ''हशि च''
बालः + रौति = **बालोरौति** ''हशि च''
बालः + तावत् = **बालस्तावत्** ''विसर्जनीयस्य सः''
भूभृतस् + रोषः = **भूभृतोरोषः** ''विप्रतिषेधे परं कार्यम्''+''हशि च''
शम्भुर् + राजते = **शम्भूराजते** रो रि + ''ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः''
भूयस् + रमते = **भूयोरमते** ''विप्रतिषेधे परं कार्यम्''+''हशि च''
भीतः + टलति = **भीतष्टलति** ''विसर्जनीयस्य सः'' + ''ष्टुना ष्टुः''
भूपतिर् + रक्षति = **भूपतीरक्षति** रो रि + ''ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः''
भाः + करः = **भास्करः** ''कस्कादिषु च''
भोस् + देवा = भोय् देवा = **भो देवाः** ''भो-भगो-अघो-अपूर्वस्य योऽशि''+''हलि सर्वेषाम्''
भगोस्+नमस्ते=**भगोय्नमस्ते=भगोनमस्ते** ''भो-भगो-अघो-अपूर्वस्य योऽशि''+ ''हलि सर्वेषाम्''
भूयः + खादति = **भूयःखादति/भूयᳲखादति** ''कुप्वोःᳲकᳲपौ च''
भक्तः + नमतीश्वरम् = **भक्तोनमतीश्वरम्** ''हशि च''
भक्तास् + भजन्ति = **भक्ताभजन्ति** ''हलि सर्वेषाम्''
भ्रातुस् + कन्यका = **भ्रातुःकन्यका** ''खरवसानयोर्विसर्जनीयः''
मूर्खः + मुह्यति = **मूर्खोमुह्यति** ''हशि च''
मः + अनुस्वारः = **मोऽनुस्वारः** ''अतोरोरप्लुतादप्लुते''
मानुषः + अधः = **मानुषोऽधः** ''अतोरोरप्लुतादप्लुते''
मनस् + रथः = **मनोरथः** ''विप्रतिषेधे परं कार्यम्''+''हशि च''
मृगः + एति = **मृग एति/मृगयेति** ''लोपःशाकल्यस्य''
मनः + कामः = **मनस्कामः** ''विसर्जनीयस्य सः''
मेघः + पिण्डः = **मेघस्पिण्डः** ''विसर्जनीयस्य सः''
मृगे + न = **मृगेण** ''अट्-कु-प्वाङ्-नुम्-व्यवायेऽपि''
मूर्खे + न = **मूर्खेण** ''अट्-कु-प्वाङ्-नुम्-व्यवायेऽपि''
मुनि + सु = **मुनिषु** ''अपदान्तस्य मूर्धन्यः इण्कोः आदेशप्रत्यययोः''
मनः + चञ्चलम् = **मनश्चञ्चलम्** ''विसर्जनीयस्य सः''
मातृ + सु = **मातृषु** ''अपदान्तस्य मूर्धन्यः इण्कोः आदेशप्रत्यययोः''
मनः + कामना = **मनस्काना** ''अतः कृकमिकंस........''
यशः+कल्पम्=**यशस्कल्पम्** ''सोऽपदादौ''+''पाशकल्पककाम्येष्विति वाच्यम्''
यशः + कम = **यशस्कम्** ''सोऽपदादौ''+''पाशकल्पककाम्येष्विति वाच्यम्''
यशः + चिनोति = **यशश्चिनोति** ''विसर्जनीयस्य सः''
यशः + तनोति = **यशस्तनोति** ''विसर्जनीयस्य सः''
याज्ञिकाः + यजन्ति = **याज्ञिकायजन्ति** ''भो-भगो-अघो-अपूर्वस्य योऽशि''+''हलि सर्वेषाम्''
यः + अपि = **योऽपि** ''अतोरोरप्लुतादप्लुते''
रविस् + उदेति = **रविरुदेति** ''ससजुषो रुः''
रामः + अस्मि = **रामोऽस्मि** ''अतोरोरप्लुतादप्लुते''
राज्ञः + अभिषेकः = **राज्ञोऽभिषेकः** ''अतोरोरप्लुतादप्लुते''
रामः + त्राता = **रामस्त्राता** ''विसर्जनीयस्य सः''
रामः + षष्ठः = **रामष्षष्ठः** ''विसर्जनीयस्य सः''
रामः + शेते = **रामश्शेते** ''विसर्जनीयस्य सः''
रामः + करोति = **रामᳲकरोति/ रामस्करोति** ''कुप्वोःᳲकᳲपौ च''
रामः + अयम् = **रामोऽयम्** ''अतोरोरप्लुतादप्लुते''
रामस् + पठति = **रामःपठति** ''खरवसानयोर्विसर्जनीयः''
रामः+स्थाता=**रामःस्थाता/रामस्थ्थाता** ''वा शरि'' उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य
रामस् + अब्रवीत् = **रामोऽब्रवीत्** ''अतोरोरप्लुतादप्लुते''
रामः + टीकते = **रामष्टीकते** ''विसर्जनीयस्य सः'' + ष्टुना ष्टुः

सन्धिविच्छेदः	सन्धिपदम्	सूत्रम्
रामः + वदति =	**रामोवदति**	"हशि च"
रामे + सु =	**रामेषु**	"अपदान्तस्य मूर्धन्य इण्कोः आदेशप्रत्यययोः"
लिढ् + ढाम् =	**लीढाम्**	ढो ढे लोपः + "ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः"
लिढ् + ढ =	**लीढः**	ढो ढे लोपः + "ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः"
लिढ् + ढे =	**लीढे**	ढो ढे लोपः + "ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः"
लतास् + आकम्पन्ते =	**लताआकम्पन्ते/लतायाकम्पन्ते**	"लोपः शाकल्यस्य"
लक्ष्मीस् + इच्छति =	**लक्ष्मीरिच्छति**	"ससजुषो रुः"
लोकः + तदनु =	**लोकस्तदनु**	"विसर्जनीयस्य सः"
विप्रास् + आगता =	**विप्राआगता/विप्रायागता**	"लोपःशाकल्यस्य"
विष्णुः + त्राता =	**विष्णुस्त्राता**	"विसर्जनीयस्य सः"
विष्णुः + टीकते =	**विष्णुष्टीकते**	"विसर्जनीयस्य सः" + ष्टुना ष्टुः
वधूस् + एषा =	**वधूरेषा**	"ससजुषो रुः"
विष्णुः + त्रायते =	**विष्णुस्त्रायते**	"विसर्जनीयस्य सः"
वीराः + शेरते =	**वीराःशेरते/वीराश्शेरते**	"वा शरि"
बहिः + कृतम् =	**बहिष्कृतम्**	"इसुसोः सामर्थ्ये"
वेदः + अधीतः =	**वेदोऽधीतः**	"अतोरोरप्लुतादप्लुते"
वचनः + अनुनासिकः =	**वचनोऽनुनासिकः**	"अतोरोरप्लुतादप्लुते"
वृक्षः + झग्झयापतितः =	**वृक्षोझग्झयापतितः**	"हशि च"
शिशुस् + आगच्छत् =	**शिशुरागच्छत्**	"ससजुषो रुः"
शीतः + वायुः =	**शीतोवायुः**	"हशि च "
शिवः + अर्च्यः =	**शिवोऽर्च्यः**	"अतोरोरप्लुतादप्लुते"
शिवः + वन्द्यः =	**शिवोवन्द्यः**	"हशि च"
शान्तः + रोषः =	**शान्तो रोषः**	"हशि च"
शोभनः + गन्धः =	**शोभनोगन्धः**	"हशि च"
शिशुर् + रोदिति =	**शिशूरोदिति**	"ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः"
शुद्धः + अहम् =	**शुद्धोऽहम्**	"अतोरोरप्लुतादप्लुते"
शम्भुर् + राजते =	**शम्भू राजते**	रो रि + "ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः"
श्रेयः + करः =	**श्रेयस्करः**	"अतः कृकमिकं........"
शान्तः + अनलः =	**शान्तोऽनलः**	"अतोरोरप्लुतादप्लुते"
सः + धावति =	**स धावति**	"एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि"
सः + जयति =	**स जयति**	"एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि"
सर्पिः + कुण्डिका =	**सर्पिष्कुण्डिका**	"कस्कादिषु च"
सः + बध्नाति =	**स बध्नाति**	"एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि"
सः + डिड्ये =	**स डिड्ये**	"एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि"
सः + ददाति =	**स ददाति**	"एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि"
सः + फलति =	**स फलति**	"एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि"
सर्पिः + करोति =	**सर्पिष्करोति**	"इदुदुपधस्य चाप्रत्ययस्य"
सः + खनति =	**स खनति**	"एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि"
सः + इच्छति =	**स इच्छति**	"लोपः शाकल्यस्य"
सः + घोषः =	**स घोषः**	"एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि"
सः + भाति =	**स भाति**	"एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि"
सः + षष्ठः =	**स षष्ठः**	"एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि"

सन्धिविच्छेदः	सन्धिपदम्	सूत्रम्
सः + पठति =	**स पठति**	"एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि"
सः + शेते =	**स शेते**	"एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि"
सः + सर्पति =	**स सर्पति**	"एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि"
सः + करोति =	**स करोति**	"एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि"
सस् + शम्भू =	**स शम्भू**	"एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि"
सस् + ब्रवीति =	**स ब्रवीति**	"एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि"
सः + हसति =	**स हसति**	"एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि"
सः + याति =	**स याति**	"एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि"
सः + वमति =	**स वमति**	"एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि"
सः + रमते =	**स रमते**	"एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि"
सः + लुनाति =	**स लुनाति**	"एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि"
सः + ञकारः =	**स ञकारः**	"एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि"
सः + मुह्यति =	**स मुह्यति**	"एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि"
सः + ङकारः =	**स ङकारः**	"एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि"
सः + णकार =	**स णकारः**	"एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि"
सः + नमति =	**स नमति**	"एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि"
सः+झणत्कारः=	**स झणत्कारः**	"एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि"
सः+छादयति =	**स छादयति**	"एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि"
सः + ठक्कुरः =	**स ठक्कुरः**	"एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि"
सर्पः + सरति =	**सर्पःसरति/सर्पस्सरति**	"वा शरि"
सुतः + आगच्छति =	**सुत आगच्छति**	"लोपः शाकल्यस्य"
सः + अपि =	**सोऽपि**	"अतोरोरप्लुतादप्लुते"
सः + अपवादः =	**सोपवादः**	"अतोरोरप्लुतादप्लुते"
समाचारः + अस्ति =	**समाचारोऽस्ति**	"अतोरोरप्लुतादप्लुते"
सः + अत्र =	**सोऽत्र**	"अतोरोरप्लुतादप्लुते"
हसन् + नुदति =	**हसन्नुदति**	"ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्"
हरिः + अवदत् =	**हरिरवदत्**	'ससजुषो रुः'
हरिः + त्राता =	**हरिस्त्राता**	"विसर्जनीयस्य सः"
हरेः + द्रव्यम् =	**हरेर्द्रव्यम्**	"ससजुषो रुः"
हरिस् + भ्राता =	**हरिर्भ्राता**	"ससजुषो रुः"
हरिः + शेते =	**हरिश्शेते/हरिःशेते**	"वा शरि" + स्तोः श्चुना श्चुः
हयास् + हेसन्ति =	**हया हेसन्ति**	"हलि सर्वेषाम्"
हस्तः + अस्य =	**हस्तोऽस्य**	"अतोरोरप्लुतादप्लुते"
हरिर् + रम्यः =	**हरीरम्यः**	रो रि + "ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः"
हरिः + जयति =	**हरिर्जयति**	"ससजुषो रुः"
हरिः + चरति =	**हरिस्चरति**	"विसर्जनीयस्य सः"
हरिः + तिष्ठति =	**हरिस्तिष्ठति**	"विसर्जनीयस्य सः"
हयास् + धावन्ति =	**हया धावन्ति**	"हलि सर्वेषाम्"
क्षिप्रः + थुत्कारः =	**क्षिप्रस्थुत्कारः**	"विसर्जनीयस्य सः"
त्रिः + खादति =	**त्रिस्खादति/त्रिःखादति**	"द्वित्रिश्चतुरिति कृत्वोऽर्थे"
त्रैगुण्यविषयाः + वेदाः =	**त्रैगुण्यविषया वेदाः**	"हलि सर्वेषाम्"
ज्ञानः + अस्ति =	**ज्ञानोस्ति**	"अतोरोरप्लुतादप्लुते"

❑❑

स्त्रीप्रत्यय–गङ्गा

1. 'टाप्'–प्रत्यय–विधायक–सूत्रम्

सूत्रम्–अजाद्यतष्टाप् 4.1.4
प्रत्यय – 'टाप्'
सूत्रार्थ–अजादिगण में पढ़े गए शब्द अथवा ह्रस्व अकारान्त शब्दों से स्त्रीत्व की विवक्षा में **'टाप्' प्रत्यय** होता है।
उदाहरण–अजा, एडका, अश्वा, चटका, मूषिका, बाला, वत्सा, होडा, मन्दा, विलाता, मेधा, गङ्गा, सर्वा, त्रिफला, त्र्यनीका, एता, रोहिता, गोपालिका, प्रजापालिका, पशुपालिका, भूपालिका, द्वारपालिका, बहुपरिव्राजका, अर्या, क्षत्रिया, अतिकेशा, चन्द्रमुखा, सुगुल्फा, कल्याणक्रोडा, सुजघना, शूर्पणखा, गौरमुखा, ताम्रमुखा, मुण्डा, धनक्रीता, शूद्रा।

2. 'ङीप्' प्रत्यय विधायक सूत्र/वार्तिक

सूत्रम्–1. ''उगितश्च'' 4.1.6
प्रत्यय–'ङीप्'
सूत्रार्थ–जिसमें उक् = उ, ऋ, लृ की इत्संज्ञा हो गयी हो, ऐसे प्रातिपदिकों से स्त्रीत्व की विवक्षा में **'ङीप्' प्रत्यय** होता है।
उदाहरण–भवती, भवन्ती, पचन्ती, दीव्यन्ती।

सूत्रम्–2. **''टिड्ढाणञ्द्वयसज्दघ्नञ्मात्रच्तयप्-ठक्-ठञ्-कञ्-क्वरपः''** 4.1.15
प्रत्यय–'ङीप्'
सूत्रार्थ–अनुपसर्जन जो टित् प्रत्यय, ढ, अण्, अञ्, द्वयसच्, दघ्नञ्, मात्रच्, तयप्, ठक्, ठञ्, कञ् और क्वरप् ये प्रत्यय जिनके अन्त में हों, ऐसे प्रधान व अदन्त प्रातिपदिकों से स्त्रीत्व की विवक्षा में 'ङीप्' होता है। **'टित्' का अर्थ है**–ऐसा प्रत्यय जिसका टकार इत् है।
उदाहरण–
- **टित्** – कुरुचरी, नदी, चोरी, देवी, मद्रचरी, स्तनन्धयी
- **'ढ' प्रत्ययान्त**–सौपर्णेयी,
- **'अण्' प्रत्ययान्त**–ऐन्द्री, कुम्भकारी
- **'अञ्' प्रत्ययान्त**–औत्सी
- **'द्वयसच्' प्रत्ययान्त**–ऊरुद्वयसी
- **'दघ्नञ्' प्रत्ययान्त**–ऊरुदघ्नी
- **'मात्रच्' प्रत्ययान्त**–ऊरुमात्री
- **'तयप्' प्रत्ययान्त**–पञ्चतयी
- **'ठक्' प्रत्ययान्त**–आक्षिकी
- **'ठञ्' प्रत्ययान्त**–प्रास्थिकी, लावणिकी
- **'कञ्' प्रत्ययान्त**–यादृशी
- **'क्वरप्' प्रत्ययान्त**–इत्वरी

वार्तिक 3. ''नञ्स्नञीकक्ख्युँस्तरुणतलुनानामुपसंख्यानम्''
प्रत्यय–'ङीप्'
वार्तिकार्थ–नञ्-प्रत्ययान्त, स्नञ् प्रत्ययान्त, ईकक्-प्रत्ययान्त, और ख्युन्-प्रत्ययान्त प्रातिपदिकों से तथा 'तरुण' व 'तलुन' प्रातिपदिकों से स्त्रीत्व की विवक्षा में **'ङीप्' प्रत्यय** होता है।
उदाहरण–
- **'नञ्'-प्रत्ययान्त** – स्त्रैणी
- **'स्नञ्'-प्रत्ययान्त** – पौंस्नी
- **'ईकक्'-प्रत्ययान्त** – शाक्तीकी, याष्टीकी
- **'ख्युन्'-प्रत्ययान्त** – आढ्यङ्करणी
- **'तरुण'-प्रातिपदिक** – तरुणी
- **'तलुन'-प्रातिपदिक** – तलुनी

सूत्रम् 4. यञश्च 4.1.16
प्रत्यय–'ङीप्'
सूत्रार्थ–'यञ्' प्रत्ययान्त प्रातिपदिक से **'ङीप्'** प्रत्यय होता है; स्त्रीत्व की विवक्षा में।
उदाहरण–गर्ग + यञ् = गार्ग्य। गार्ग्य + ङीप् = गार्गी

सूत्रम् 5. ''वयसि प्रथमे'' 4.1.20
प्रत्यय – 'ङीप्'
सूत्रार्थ – प्रथम अवस्था अर्थात् कौमार अवस्था के सूचक शब्दों से स्त्रीत्व की विवक्षा में **'ङीप्' प्रत्यय** होता है।
उदाहरण–कुमारी, किशोरी

सूत्रम् 6. द्विगोः 4.1.21
प्रत्यय–'ङीप्'
सूत्रार्थ–अदन्त द्विगु समास से स्त्रीलिङ्ग की विवक्षा में **'ङीप्'** प्रत्यय होता है।
उदाहरण–त्रिलोकी, त्रिपादी, पञ्चमूली, अष्टाध्यायी, पञ्चवटी, चतुःसूत्री, सप्तश्लोकी, दशरथी

सूत्रम् 7. ''वर्णादनुदात्तात्तोपधात्तो नः'' 4.1.39
प्रत्यय–'ङीप्'
सूत्रार्थ–वर्णवाची जो अनुदात्तान्त तकारोपध (जिसकी उपधा 'तकार' है) तदन्त अनुपसर्जन प्रातिपदिक से स्त्रीत्व की विवक्षा में **'ङीप्'** प्रत्यय तथा तकार को नकारादेश विकल्प से होते हैं। 'ङीप्' होने के पक्ष में नकारादेश होता है, अन्यथा नहीं होता है। यहाँ 'वर्ण' शब्द सफेद, लाल, पीला आदि रंगों का वाचक है।
उदाहरण–एनी, रोहिणी, श्येनी, हरिणी

'ङीष्'-प्रत्यय विधायक सूत्र/वार्तिक

सूत्रम् 1. ''षिद्गौरादिभ्यश्च'' 4.1.41

प्रत्यय– 'ङीष्'

सूत्रार्थ–'षित्' = जिनका षकार इत् है; तथा गौरादिगण पठित अनुपसर्जन प्रातिपदिकों से स्त्रीत्व की विवक्षा में **'ङीष्' प्रत्यय** होता है।

उदाहरण–नर्तकी, गार्ग्यायणी, गौरी, अनड्वाही, अनडुही, खनकी, रजकी, वात्स्यायनी, मत्सी, सुन्दरी, कटी, शुनी

सूत्र 2. वोतो गुणवचनात् 4.1.44

प्रत्यय– ङीष्

सूत्रार्थ–ह्रस्व उकारान्त शब्दों से स्त्रीत्व-विवक्षा में वैकल्पिक **'ङीष्' प्रत्यय** होता है।

उदाहरण–

ङीष्	**विकल्प**
मृद्वी	मृदुः
पट्वी	पटुः
लघ्वी	लघुः
गुर्वी	गुरुः
तन्वी	तनुः
पृथ्वी	पृथुः
साध्वी	साधुः
ऋज्वी	ऋजुः

सूत्रम् 3. ''बह्वादिभ्यश्च'' 4.1.45

प्रत्यय– **'ङीष्'**

सूत्रार्थ–'बहु' आदि गण में पठित प्रातिपदिकों से स्त्रीत्व की विवक्षा में विकल्प से 'ङीष्' प्रत्यय होता है।

उदाहरण– बह्वी/बहुः, पद्धती/पद्धतिः, शक्ती/शक्तिः, कपी/कपिः

वार्तिक 4. 'कृदिकारादक्तिनः'

प्रत्यय– 'ङीष्'

वार्तिकार्थ–'कृत्' से सम्बन्धित इकारान्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व की विवक्षा में विकल्प से **'ङीष्'** प्रत्यय होता है; परन्तु 'क्तिन्' प्रत्ययान्त से नहीं होता है।

उदाहरण–रात्री/रात्रिः

वार्तिक 5. सर्वतोऽक्तिन्नर्थादित्येके

प्रत्यय–'ङीष्'

वार्तिकार्थ–'क्तिन्' प्रत्ययान्त से भिन्न सभी इदन्त प्रातिपदिकों से स्त्रीत्व की विवक्षा में विकल्प से **'ङीष्'** होता है। कुछ आचार्य ऐसा भी मानते हैं।

उदाहरण–शकटी/शकटिः

सूत्र 6. पुंयोगादाख्यायाम् 4.1.48

प्रत्यय–'ङीष्'

सूत्रार्थ–पुरुष के साथ सम्बन्ध के कारण पुंवाचक अदन्त शब्द से स्त्रीत्व की विवक्षा में 'ङीष्' होता है। स्त्री, वह पत्नी भी हो सकती है, और पुत्री, बहन आदि भी हो सकती है।

उदाहरण–(i) गोपस्य पत्नी, भगिनी, पुत्री **गोपी**।

(ii) बकस्य पत्नी **बकी**।

(iii) गणकस्य पत्नी **गणकी**,

(iv)महापात्रस्य पत्नी **महापात्री,**

(v) सूर्यस्य स्त्री मानुषी **सूरी (कुन्ती)**,

(vi) केकयस्य अपत्यं स्त्री **केकयी**,

(vii) देवकस्य दुहिता **देवकी**,

(viii) रेवतस्य दुहिता **रेवती**,

(ix) यमस्य भगिनी **यमी**

सूत्र 7. ''इन्द्र - वरुण - भव - शर्व - रुद्र - मृड - हिमाऽरण्य-यव - यवन - मातुलाऽऽचार्याणामानुक्'' 4.1.49

प्रत्यय–ङीष्

सूत्रार्थ–इन्द्र, वरुण, भव, शर्व, रुद्र, मृड, हिम, अरण्य, यव, यवन, मातुल, और आचार्य–इन बारह शब्दों से स्त्रीत्व की विवक्षा में **''ङीष्'' प्रत्यय** तथा इन शब्दों से **'आनुक्' आगम** होता है।

उदाहरण–इन्द्राणी, वरुणानी, भवानी, शर्वाणी, रुद्राणी, मृडानी, हिमानी, अरण्यानी, यवानी, यवनानी, मातुलानी, आचार्यानी

वार्तिक–'हिमारण्ययोर्महत्त्वे

वार्तिकार्थ–'हिम' और 'अरण्य' इन दो प्रातिपदिकों से 'महत्त्व' अर्थ में ही **'ङीष्'** प्रत्यय और **'आनुक्'** आगम होता है।

उदाहरण–(i) महत् हिमं = **हिमानी**

(ii) महत् अरण्यम् = **अरण्यानी**

वार्तिक–''यवाद् दोषे''

वार्तिकार्थ–दोष अर्थ द्योत्य होने पर 'यव' इस प्रातिपदिक से **'ङीष्'** प्रत्यय और **'आनुक्'** आगम होता है।

उदाहरण–दुष्टो यवो = **यवानी**

वार्तिक–'यवनाल्लिप्याम्'

वार्तिकार्थ–'यवन' इस प्रातिपदिक से लिपि विशेष अर्थ होने पर

ही **'ङीष्' प्रत्यय** तथा 'आनुक्' आगम होता है।
उदाहरण–यवनानां लिपिः = **यवनानी**

वार्तिक–'मातुलोपाध्याययोरानुग् वा'
वार्तिकार्थ–'मातुल' और 'उपाध्याय' शब्दों से स्त्रीत्वविवक्षा में पुंयोग में 'आनुक्' आगम विकल्प से होता है।
उदाहरण–मातुली/मातुलानी। उपाध्यायी/उपाध्यायानी

वार्तिक–''आचार्यादणत्वं च''
वार्तिकार्थ–'आचार्य' इस प्रातिपदिक से परे 'आनुक्' के नकार को णत्व नही होता है।
उदाहरण–आचार्यस्य स्त्री = आचार्यानी

वार्तिक–''अर्यक्षत्रियाभ्यां वा स्वार्थे''
वार्तिकार्थ–'अर्य' और 'क्षत्रिय' – इन दो प्रातिपदिकों से स्वार्थ में **'ङीष्'** प्रत्यय और 'आनुक्' का आगम विकल्प से होता है।
उदाहरण–(i) अर्याणी/अर्या, (ii) क्षत्रियाणी/क्षत्रिया

सूत्रम् 8. ''क्रीतात् करणपूर्वात्'' 4.1.50
प्रत्यय–'ङीष्'
सूत्रार्थ– 'क्रीत' शब्द जिसके अन्त में हो तथा करणवाचक जिसका पूर्वावयव हो, ऐसे अदन्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व की विवक्षा में **'ङीष्' प्रत्यय** होता है।
उदाहरण–वस्त्रक्रीती
विशेष–यह सूत्र कहीं कहीं नही भी लगता है। यथा–**धनक्रीता।**

सूत्रम्–9. ''स्वाङ्गाच्चोपसर्जनादसंयोगोपधात्'' 4.1.54
प्रत्यय–''ङीष्'' (वैकल्पिक)
सूत्रार्थ–उपधा में संयोग न हो ऐसे उपसर्जन-संज्ञक स्वाङ्गवाची शब्द अन्त में हों तो ऐसे अदन्त प्रातिपदिकों से स्त्रीत्व की विवक्षा में विकल्प से **'ङीष्'** प्रत्यय होता है।

उदाहरण– ङीष्	**टाप्**
चन्द्रमुखी	चन्द्रमुखा
अतिकेशी	अतिकेशा
पीनस्तनी	पीनस्तना
सुकेशी	सुकेशा
ताम्रमुखी	ताम्रमुखा

सूत्रम् 10. ''जातेरस्त्रीविषयादयोपधात्'' 4.1.63
प्रत्यय–'ङीष्'
सूत्रार्थ–जो नित्यस्त्रीलिङ्ग न हो, और यकार भी उपधा में न हो, ऐसे जातिवाचक प्रातिपदिक से स्त्रीत्व की विवक्षा में **'ङीष्'** होता है।
उदाहरण–मयूरी, वृषली, तटी, सूकरी, बह्वृची, औपगवी, कठी

वार्तिक 11. ''योपधप्रतिषेधे हयगवयमुकयमनुष्यमत्स्यानामप्रतिषेधः।''
प्रत्यय–''ङीष्''
वार्तिकार्थ–हय, गवय, मुकय, मनुष्य, तथा मत्स्य – इन यकारोपध प्रातिपदिकों से भी **'ङीष्'** प्रत्यय होता है।
उदाहरण–हयी, गवयी, मुकयी, मनुषी, मत्सी।

वार्तिक–'मत्स्यस्य ङ्याम्'
वार्तिकार्थ–'ङी' के परे होने पर ही 'मत्स्य' शब्द के उपधाभूत 'यकार' का लोप हो।
यथा–मत्स्य + ङीष् (यकार का लोप) = **मत्सी**

सूत्रम् 12. ''इतो मनुष्यजातेः'' 4.1.65
प्रत्यय–'ङीष्'
सूत्रार्थ–मनुष्यजातिवाचक ह्रस्व इकारान्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व की विवक्षा में 'ङीष्' प्रत्यय होता है।
उदाहरण–दाक्षी (दक्षस्य अपत्यं स्त्री)। प्लाक्षी (प्लक्षस्य अपत्यं स्त्री)

'ऊङ्'–प्रत्यय-विधायक-सूत्राणि

सूत्रम्–01. **''ऊङुतः''** 4.1.66
प्रत्यय–'ऊङ्'
सूत्रार्थ–जिसकी उपधा में 'यकार' न हो, ऐसे मनुष्य जातिवाची, ह्रस्व उकारान्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व की विवक्षा में **'ऊङ्' प्रत्यय** होता है।
उदाहरण–कुरूः

सूत्रम् 2. ''पङ्गोश्च'' 4.1.68
प्रत्यय–'ऊङ्'
सूत्रार्थ–'पङ्गु' इस प्रातिपदिक से स्त्रीत्व की विवक्षा में 'ऊङ्' प्रत्यय होता है।
उदाहरण–पङ्गूः

वार्तिक 3. ''श्वशुरस्योकाराकारलोपश्च''
प्रत्यय–''ऊङ्''
वार्तिकार्थ–'श्वशुर' शब्द से स्त्रीत्व विवक्षा में 'ऊङ्' प्रत्यय के साथ उकार और अकार का लोप होता है।
उदाहरण्–श्वश्रूः (सास)

सूत्रम् 4. ''ऊरूत्तरपदादौपम्ये'' 4.1.69
प्रत्यय–'ऊङ्'
सूत्रार्थ–जिसका पूर्वपद उपमानवाची तथा उत्तरपद 'ऊरु' हो तो उससे स्त्रीत्व की विवक्षा में 'ऊङ्' प्रत्यय होता है।
उदाहरणम्–करभोरूः, रम्भोरूः, कदलीस्तम्भोरूः, गजनासोरूः, नागनासोरूः, सुन्दरोरूः स्त्री, पीवरोरूः स्त्री।

सूत्रम् 05. ''संहितशफलक्षणवामादेश्च'' 4.1.70

प्रत्यय–'ऊङ्'

सूत्रार्थ–संहित, शफ, लक्षण और वाम–ये शब्द हैं पूर्वपद में जिसके तथा 'ऊरु' शब्द है उत्तरपद में जिसके, ऐसे प्रातिपदिक से स्त्रीत्व की विवक्षा में 'ऊङ्' प्रत्यय होता है।

उदाहरणम्– (i) संहितौ ऊरू यस्याः सा **संहितोरूः**,
(ii) शफौ ऊरू यस्याः सा **शफोरूः**,
(iii) लक्षणौ ऊरू यस्याः सा **लक्षणोरूः**,
(iv) वामौ ऊरू यस्याः सा **वामोरूः**

वार्तिक–संहितसहाभ्यां चेति वक्तव्यम्

वार्तिकार्थ–'संहित' और 'सह' शब्द से उत्तरवर्ती 'ऊरु' शब्द वाले प्रातिपदिक से 'ऊङ्' होता है।

उदाहरणम्–संहितोरूः, सहोरूः

'ङीन्'-प्रत्यय-विधायक-सूत्राणि

सूत्रम् 01. ''शार्ङ्गरवाद्यञो ङीन्'' 4.1.73

प्रत्यय–'ङीन्'

सूत्रार्थ–'शार्ङ्गरव' आदि गणपठित शब्दों तथा **'अञ्'** प्रत्यय अन्त में हों–ऐसे जातिवाचक प्रातिपदिकों से स्त्रीत्व की विवक्षा में **'ङीन्'** प्रत्यय होता है।

उदाहरण्–शार्ङ्गरवी, ब्राह्मणी, बैदी

वार्तिक 02. ''नृनरयोर्वृद्धिश्च''

प्रत्यय–'ङीन्'

वार्तिकार्थ–'नृ' तथा 'नर'–इन दो जातिवाचक प्रातिपदिकों से स्त्रीत्व की विवक्षा में **'ङीन्'** प्रत्यय होता है; तथा इन शब्दों को वृद्धि आदेश होता है।

उदाहरणम्– (i) नृ + ङीन् = नारी (ii) नर + ङीन् = नारी

'ति'-प्रत्यय-विधायक-सूत्रम्

सूत्रम्–''यूनस्तिः'' 4.1.77

प्रत्यय–'ति'

सूत्रार्थ–'युवन्' शब्द से स्त्रीत्व की विवक्षा में 'ति' प्रत्यय होता है।

उदाहरणम्–युवन् + ति = युवतिः

'चाप्'–प्रत्यय-विधायक-वार्तिक

वार्तिक–''सूर्याद् देवतायां चाब् वाच्या''

प्रत्यय–'चाप्'

वार्तिकार्थ–देवता अर्थ में 'सूर्य' शब्द से 'चाप्' प्रत्यय होता है।

उदाहरणम्–सूर्यस्य स्त्री देवता = सूर्या (सूर्य + चाप्)

स्त्री-प्रत्यय-तालिका

क्र0	शब्द	अर्थ	मूलपद + स्त्रीप्रत्यय	प्रत्यय-विधायक-सूत्र
01.	● **अजा**	बकरी	**अज + टाप्**	अजाद्यतष्टाप्
02.	● **एडका**	मादा भेड	**एडक + टाप्**	अजाद्यतष्टाप्
03.	● **अश्वा**	घोड़ी	**अश्व + टाप्**	अजाद्यतष्टाप्
04.	● **चटका**	चिड़िया	**चटक + टाप्**	अजाद्यतष्टाप्
05.	● **मूषिका**	चुहिया	**मूषक + टाप्**	अजाद्यतष्टाप्
06.	● **बाला**	बालिका	**बाल + टाप्**	अजाद्यतष्टाप्
07.	● **वत्सा**	बछिया	**वत्स + टाप्**	अजाद्यतष्टाप्
08.	● **होडा**	कन्या	**होड + टाप्**	अजाद्यतष्टाप्
09.	● **मन्दा**	कन्या	**मन्द + टाप्**	अजाद्यतष्टाप्
10.	● **विलाता**	कन्या	**विलात + टाप्**	अजाद्यतष्टाप्
11.	● **मेधा**	बुद्धि	**मेध + टाप्**	अजाद्यतष्टाप्
12.	● **गङ्गा**	नदी विशेष	**गङ्ग + टाप्**	अजाद्यतष्टाप्
13.	● **सर्वा**	सभी (स्त्री)	**सर्व + टाप्**	अजाद्यतष्टाप्
14.	● **भवती**	आप (स्त्री)	**भवत् + ङीप्**	उगितश्च
15.	● **भवन्ती**	होती हुई	**भवत् + ङीप्**	उगितश्च
16.	● **पचन्ती**	पकाती हुई	**पचत् + ङीप्**	उगितश्च
17.	● **दीव्यन्ती**	चमकती हुई	**दीव्यत् + ङीप्**	उगितश्च
18.	● **शूद्रा**	शूद्र स्त्री	**शूद्र + टाप्**	अजाद्यतष्टाप्

क्र0	शब्द	अर्थ	मूलपद + स्त्रीप्रत्यय	प्रत्यय-विधायक-सूत्र
19.	• **कुरुचरी**	कुरु देश में विचरण करने वाली स्त्री	**कुरुचर + ङीप्**	''टिड्ढाणञ्-द्वयसज्-दघ्नञ्-मात्रच्-तयप्-ठक्-ठञ्-कञ्-क्वरपः''
20.	• **नदी**	दरिया, सरिता	**नद + ङीप्**	''टिड्ढाणञ्-द्वयसज्-दघ्नञ्-मात्रच्-तयप्-ठक्-ठञ्-कञ्-क्वरपः''
21.	• **सौपर्णेयी**	सुपर्णी की कन्या, गरुड़ की बहन	**सौपर्णेय + ङीप्**	''टिड्ढाणञ्-द्वयसज्-दघ्नञ्-मात्रच्-तयप्-ठक्-ठञ्-कञ्-क्वरपः''
22.	• **ऐन्द्री**	इन्द्र देवता है जिसका, ऐसी पूर्वदिशा	**ऐन्द्र + ङीप्**	''टिड्ढाणञ्-द्वयसज्-दघ्नञ्-मात्रच्-तयप्-ठक्-ठञ्-कञ्-क्वरपः''
23.	• **औत्सी**	झरने में उत्पन्न होने वाली मछली आदि	**औत्स + ङीप्**	''टिड्ढाणञ्-द्वयसज्-दघ्नञ्-मात्रच्-तयप्-ठक्-ठञ्-कञ्-क्वरपः''
24.	• **ऊरुद्वयसी**	ऊरु प्रमाण है जिसका, ऐसी नदी	**ऊरुद्वयस + ङीप्**	''टिड्ढाणञ्-द्वयसज्-दघ्नञ्-मात्रच्-तयप्-ठक्-ठञ्-कञ्-क्वरपः''
25.	• **ऊरुदघ्नी**	ऊरु (जंघा) पर्यन्त जल है, जिस नदी में	**ऊरुदघ्न + ङीप्**	''टिड्ढाणञ्-द्वयसज्-दघ्नञ्-मात्रच्-तयप्-ठक्-ठञ्-कञ्-क्वरपः''
26.	• **ऊरुमात्री**	ऊरु (जंघा) पर्यन्त जल है, जिस नदी में	**ऊरुमात्र + ङीप्**	''टिड्ढाणञ्-द्वयसज्-दघ्नञ्-मात्रच्-तयप्-ठक्-ठञ्-कञ्-क्वरपः''
27.	• **देवी**	देव स्त्री	**देव + ङीप्**	''टिड्ढाणञ्-द्वयसज्-दघ्नञ्-मात्रच्-तयप्-ठक्-ठञ्-कञ्-क्वरपः''
28.	• **पञ्चतयी**	पञ्च अवयवाः अस्याः (पाँच अवयव वाली स्त्री)	**पञ्चतय + ङीप्**	''टिड्ढाणञ्-द्वयसज्-दघ्नञ्-मात्रच्-तयप्-ठक्-ठञ्-कञ्-क्वरपः''
29.	• **आक्षिकी**	अक्षैर्दीव्यति (पाँसों से जुआ खेलने वाली स्त्री)	**आक्षिक + ङीप्**	''टिड्ढाणञ्-द्वयसज्-दघ्नञ्-मात्रच्-तयप्-ठक्-ठञ्-कञ्-क्वरपः''
30.	• **प्रास्थिकी**	प्रस्थेन क्रीता (एक प्रस्थ में खरीदी गयी स्त्री)	**प्रास्थिक + ङीप्**	''टिड्ढाणञ्-द्वयसज्-दघ्नञ्-मात्रच्-तयप्-ठक्-ठञ्-कञ्-क्वरपः''
31.	• **लावणिकी**	लवणं पण्यम् अस्याः (नमक का व्यापार करने वाली स्त्री)	**लावणिक + ङीप्**	''टिड्ढाणञ्-द्वयसज्-दघ्नञ्-मात्रच्-तयप्-ठक्-ठञ्-कञ्-क्वरपः''
32.	• **यादृशी**	यत् प्रमाणम् अस्य (जिस प्रकार थी)	**यादृश + ङीप्**	''टिड्ढाणञ्-द्वयसज्-दघ्नञ्-मात्रच्-तयप्-ठक्-ठञ्-कञ्-क्वरपः''
33.	• **इत्वरी**	यात्रा करने वाली स्त्री	**इत्वर + ङीप्**	''टिड्ढाणञ्-द्वयसज्-दघ्नञ्-मात्रच्-तयप्-ठक्-ठञ्-कञ्-क्वरपः''
34.	• **स्त्रैणी**	स्त्रियों की प्रकृति (स्त्रीत्व)	**स्त्रैण + ङीप्**	नञ् स्नञीकक्ख्युँस्तरुणतलुनानामुपसङ्ख्यानम् (वा0)
35.	• **पौंस्नी**	पुरुषार्थिनी स्त्री	**पौंस्न + ङीप्**	नञ्स्नञीकक्ख्युँस्तरुणतलुनानामुपसङ्ख्यानम् (वा0)
36.	• **शाक्तीकी**	बर्छी रखने वाली (भाला धारिणी स्त्री)	**शाक्तीक + ङीप्**	नञ्स्नञीकक्ख्युँस्तरुणतलुनानामुपसङ्ख्यानम् (वा0)
37.	• **याष्टीकी**	लाठी से सुसज्जित स्त्री	**याष्टीक + ङीप्**	नञ्स्नञीकक्ख्युँस्तरुणतलुनानामुपसङ्ख्यानम् (वा0)

क्र0	शब्द	अर्थ	मूलपद + स्त्रीप्रत्यय	प्रत्यय-विधायक-सूत्र
38.	• **आढ्यङ्करणी**	धनसम्पन्न स्त्री	**आढ्यङ्करण + ङीप्**	नञ्स्नञीकक्ख्युँस्तरुणतलुनानामुपसङ्ख्यानम् (वा0)
39.	• **तरुणी**	युवती	**तरुण + ङीप्**	नञ्स्नञीकक्ख्युँस्तरुणतलुनानामुपसङ्ख्यानम् (वा0)
40.	• **तलुनी**	सुन्दर तलवों वाली स्त्री	**तलुन + ङीप्**	नञ्स्नञीकक्ख्युँस्तरुणतलुनानामुपसङ्ख्यानम् (वा0)
41.	• **गार्गी**	गर्गस्य गोत्रापत्यं स्त्री (गर्ग गोत्र की सन्तति कन्या)	**गार्ग्य + ङीप्**	यञश्च
42.	• **गार्ग्यायणी**	गर्ग गोत्र की स्त्री	**गार्ग्यायण + ङीष्**	षिद्गौरादिभ्यश्च
43.	• **नर्तकी**	नाचने वाले स्त्री	**नर्तक + ङीष्**	षिद्गौरादिभ्यश्च
44.	• **गौरी**	पार्वती	**गौर + ङीष्**	षिद्गौरादिभ्यश्च
45.	• **अनड्वाही**	गाय	**अनडुह् + ङीष्**	षिद्गौरादिभ्यश्च
46.	• **अनडुही**	गाय	**अनडुह् + ङीष्**	षिद्गौरादिभ्यश्च
47.	• **कुमारी**	कौमार अवस्था की स्त्री	**कुमार + ङीप्**	वयसि प्रथमे
48.	• **किशोरी**	किशोरावस्था की स्त्री	**किशोर + ङीप्**	वयसि प्रथमे
49.	• **त्रिलोकी**	त्रयाणां लोकानां समाहरः (तीनों लोकों का स्वामी)	**त्रिलोक + ङीप्**	द्विगोः
50.	• **त्रिफला**	त्रयाणां फलानां समाहार (तीनों फलों का समाहार, औषधि विशेष)	**त्रिफल + टाप्**	अजाद्यतष्टाप्
51.	• **त्र्यनीका**	त्रयाणाम् अनीकानां समाहरः (तीन तरह की सेनाओं का समूह)	**त्र्यनीक + टाप्**	अजाद्यतष्टाप्
52.	• **एनी**	चितकबरी (अनेक रंगों वाली)	**एत + ङीप्**	वर्णादनुदात्तात्तोपधात्तो नः
53.	• **एता**	चितकबरी (अनेक रंगों वाली)	**एत + टाप्**	अजाद्यतष्टाप्
54.	• **रोहिणी**	लाल रंगों वाली	**रोहित + ङीप्**	वर्णादनुदात्तोत्तापधात्तो नः
55.	• **रोहिता**	लाल रंगों वाली	**रोहित + टाप्**	अजाद्यतष्टाप्
56.	• **मृद्वी (मृदुः)**	कोमल	**मृदु + ङीष्**	वोतो गुणवचनात्
57.	• **पट्वी (पटुः)**	चतुर स्त्री	**पटु + ङीष्**	वोतो गुणवचनात्
58.	• **बह्वी (बहुः)**	बहुत स्त्री	**बहु + ङीष्**	बह्वादिभ्यश्च
59.	• **रात्री (रात्रिः)**	रात	**रात्रि + ङीष्**	कृदिकारादक्तिनः (वा0)
60.	• **शकटी (शकटिः)**	छोटी गाड़ी	**शकटि + ङीष्**	सर्वतोऽक्तिन्नर्थादित्येके (वा0)
61.	• **गोपी**	गोपस्य स्त्री, पत्नी भगिनी पुत्री वा	**गोप + ङीष्**	पुंयोगादाख्यायाम्
62.	• **गोपालिका**	गाय पालने वाली स्त्री	**गोपालक + टाप्**	अजाद्यतष्टाप्
63.	• **सर्विका**	सब कुछ करने वाली स्त्री	**सर्वक + टाप्**	अजाद्यतष्टाप्

क्र0	शब्द	अर्थ	मूलपद + स्त्रीप्रत्यय	प्रत्यय-विधायक-सूत्र
64.	● **कारिका**	व्याकरण, सांख्यदर्शन आदि से संबद्ध पद्यसंग्रह	**कारक + टाप्**	अजाद्यतष्टाप्
65.	● **अश्वपालिका**	घोड़े पालने वाली स्त्री	**अश्वपालक + टाप्**	अजाद्यतष्टाप्
66.	● **बहुपरिव्राजका**	संन्यासिनी स्त्री	**बहुपरिव्राजक + टाप्**	अजाद्यतष्टाप्
67.	● **सूर्या**	सूर्यस्य देवता स्त्री (सन्ध्या)	**सूर्य + चाप्**	सूर्याद् देवतायां चाब्वाच्यः (वा0)
68.	● **सूरी**	सूर्यस्य मानुषी स्त्री (कुन्ती)	**सूर्य + ङीष्**	पुंयोगादाख्यायाम् ''सूर्यागस्त्योश्छे च'' ङ्यां च'' (वा) से 'यकार' का लोप
69.	● **इन्द्राणी**	इन्द्रस्य स्त्री (इन्द्र की पत्नी)	**इन्द्र + आनुक् + ङीष्**	''इन्द्र-वरुण-भव-शर्व-रुद्र-मृड-हिमारण्य-यव-यवन-मातुलाचार्याणाम् आनुक्''
70.	● **वरुणानी**	वरुण की स्त्री या पत्नी	**वरुण + आनुक् + ङीष्**	''इन्द्र-वरुण-भव-शर्व-रुद्र-मृड-हिमारण्य-यव-यवन-मातुलाचार्याणाम् आनुक्''
71.	● **शर्वाणी**	शर्वस्य स्त्री	**शर्व + आनुक + ङीष्**	''इन्द्र-वरुण-भव-शर्व-रुद्र-मृड-हिमारण्य-यव-यवन-मातुलाचार्याणाम् आनुक्''
72.	● **रुद्राणी**	रुद्रस्य स्त्री	**रुद्र + आनुक् + ङीष्**	''इन्द्र-वरुण-भव-शर्व-रुद्र-मृड-हिमारण्य-यव-यवन-मातुलाचार्याणाम् आनुक्''
73.	● **भवानी**	भवस्य स्त्री	**भव + आनुक् + ङीष्**	''इन्द्र-वरुण-भव-शर्व-रुद्र-मृड-हिमारण्य-यव-यवन-मातुलाचार्याणाम् आनुक्''
74.	● **मृडानी**	मृडस्य स्त्री	**मृड + आनुक् + ङीष्**	''इन्द्र-वरुण-भव-शर्व-रुद्र-मृड-हिमारण्य-यव-यवन-मातुलाचार्याणाम् आनुक्''
75.	● **हिमानी**	महद्धिमं हिमानी (बड़ी बर्फ)	**हिम + आनुक् + ङीष्**	''हिमारण्ययोर्महत्त्वे'' (वा0) ''इन्द्र-वरुण-भव............."
76.	● **अरण्यानी**	महद् अरण्यम् (बड़ा जंगल)	**अरण्य + आनुक् + ङीष्**	''हिमारण्ययोर्महत्त्वे'' (वा0) ''इन्द्र-वरुण-भव............"
77.	● **यवानी**	दुष्टो यवो यवानी (दूषित जौ, अथवा अजवाइन	**यव + आनुक् + ङीष्**	''यवाद् दोषे'' (वा0)
78.	● **यवनानी**	यवनानां लिपिः यवनानी (यवनों की लिपि, उर्दू, फारसी आदि)	**यवन + आनुक् + ङीष्**	यवनाल्लिप्याम् (वा0) (इन्द्र-वरुण-भव....)
79.	● **मातुलानी**	मातुलस्य पत्नी (मामी)	**मातुल + आनुक्+ङीष्**	''मातुलोपाध्याययोरानुग् वा'' ''इन्द्र-वरुण-भव..."
80.	● **मातुली**	मामा की पत्नी, मामी	मातुल + ङीष्	''मातुलोपाध्याययोरानुग् वा'' (वा0) ('आनुक्' का आगम विकल्प से)
81.	● **उपाध्यायानी**	उपाध्याय की पत्नी	**उपाध्याय+आनुक् + ङीष्**	इन्द्र-वरुण-भव-शर्व-रुद्र-मृड-हिमारण्य यव-यवन-मातुलाचार्याणाम्-आनुक्''
82.	● **उपाध्यायी**	उपाध्याय की पत्नी	**उपाध्याय + ङीष्**	''मातुलोपाध्याययोरानुग् वा'' (वा0) (आनुक् का आगम विकल्प से)
83.	● **आचार्यानी**	आचार्यस्य स्त्री	**आचार्य+आनुक्+ङीष्**	''इन्द्र-वरुण-भव-शर्व.... ''आचार्यदणत्वं च'' वार्तिक से णत्व का निषेध।

क्र0	शब्द	अर्थ	मूलपद + स्त्रीप्रत्यय	प्रत्यय-विधायक-सूत्र
84.	• अर्याणी	अर्य अर्थात् वैश्य जाति की स्त्री	अर्य + आनुक् + ङीष्	''अर्यक्षत्रियाभ्यां वा स्वार्थे'' (वा0) इन्द्र-वरुण-भव– ('आनुक्' और 'ङीष्' दोनों वैकल्पिक)
85.	• अर्या	वैश्य जाति की स्त्री	अर्य + टाप्	अजाद्यतष्टाप्
86.	• क्षत्रियाणी	क्षत्रिय जाति की स्त्री	क्षत्रिय+आनुक्+ङीष्	''अर्यक्षत्रियाभ्यां वा स्वार्थे'' (वा0) इन्द्र-वरुण-भव..... ('आनुक्' और 'ङीष्' दोनों वैकल्पिक)
87.	• क्षत्रिया	क्षत्रिय जाति की स्त्री	क्षत्रिय + टाप्	अजाद्यतष्टाप्
88.	• वस्त्रक्रीती	वस्त्रों के द्वारा खरीदी गयी वस्तु, भूमि स्त्री आदि।	वस्त्रक्रीत + ङीष्	''क्रीतात् करणपूर्वात्''
89.	• अतिकेशी	केशों को लाँघने वाली (लम्बी माला आदि)	अतिकेश + ङीष्	''स्वाङ्गाच्चोपसर्जनादसंयोगोपधात्''
90.	• अतिकेशा	केशो को लाँघने वाली (लम्बी माला आदि)	अतिकेश + टाप्	अजाद्यतष्टाप्
91.	• चन्द्रमुखी	चन्द्र के समान मुख वाली स्त्री	चन्द्रमुख + ङीष्	''स्वाङ्गाच्चोपसर्जनादसंयोगोपधात्''
92.	• चन्द्रमुखा	चन्द्र के समान मुखवाली स्त्री	चन्द्रमुख + टाप्	अजाद्यतष्टाप्
93.	• सुगुल्फा	सुन्दर गुल्फों वाली स्त्री	सुगुल्फ + टाप्	अजाद्यतष्टाप्
94.	•कल्याणक्रोडा	अच्छी छाती वाली स्त्री, (घोड़ी)	कल्याणक्रोड + टाप्	अजाद्यतष्टाप् ''न क्रोडादिबह्वचः'' सूत्र से 'ङीष्' प्रत्यय का निषेध
95.	• सुजघना	अच्छी जघनों वाली स्त्री	सुजघन + टाप्	अजाद्यतष्टाप् ''न क्रोडादिबह्वचः'' सूत्र से 'ङीष्' प्रत्यय का निषेध
96.	• शूर्पणखा	रावण की बहन, जिसके नख शूपे की तरह होते हैं	शूर्पनख + टाप्	अजाद्यतष्टाप् ''नखमुखात् सञ्ज्ञायाम्'' से 'ङीष्' प्रत्यय का निषेध
97.	• गौरमुखा	'गौरमुख' नाम वाली स्त्री या गोरे मुख वाली स्त्री	गौरमुख + टाप्	अजाद्यतष्टाप् ''नखमुखात् सञ्ज्ञायाम्'' से 'ङीष्' प्रत्यय का निषेध
98.	• ताम्रमुखी	ताम्रमुख वाली स्त्री	ताम्रमुख + ङीष्	''स्वाङ्गाच्चोपसर्जनादसंयोगोपधात्'' (विकल्प से 'ङीष्')
99.	• ताम्रमुखा	ताम्रमुख वाली स्त्री	ताम्रमुख + टाप्	अजाद्यतष्टाप्
100.	• तटी	नदी का किनारा	तट + ङीष्	जातेरस्त्रीविषयादयोपधात्
101.	• बह्वृची	बहुत ऋचाओं का अध्ययन करने वाली स्त्री	बह्वृच + ङीष्	जातेरस्त्रीविषयादयोपधात्
102.	• मुण्डा	मुण्डितशिर वाली स्त्री	मुण्ड + टाप्	अजाद्यतष्टाप्
103.	• हयी	घोड़ी	हय + ङीष्	''जातेरस्त्रीविषयादयोपधात्'' ''योपधप्रतिषेधे हयगवयमुकयमनुष्यमत्स्यानामप्रतिषेधः'' (वा0)

क्र०	शब्द	अर्थ	मूलपद + स्त्रीप्रत्यय	प्रत्यय-विधायक-सूत्र
104.	• **गवयी**	नीलगाय	**गवय + ङीष्**	''जातेरस्त्रीविषयादयोपधात्'' ''योपधप्रतिषेधे हयगवयमुकयमनुष्यमत्स्यानामप्रतिषेधः'' (वा०)
105.	• **मुकयी**	खच्चरी	**मुकय + ङीष्**	''जातेरस्त्रीविषयादयोपधात्'' ''योपधप्रतिषेधे हयगवयमुकयमनुष्यमत्स्यानामप्रतिषेधः'' (वा०)
106.	• **मनुषी**	मनुष्य जाति की स्त्री	**मनुष्य + ङीष्**	''जातेरस्त्रीविषयादयोपधात्'' ''योपधप्रतिषेधे......"
107.	• **मत्सी**	मादा मछली	**मत्स्य + ङीष्**	''जातेरस्त्रीविषयादयोपधात्'' ''योपधप्रतिषेधे....." ''मत्स्यस्य ङ्याम्'' (वा०)
108.	• **दाक्षी**	दक्षस्य अपत्यं स्त्री (दक्ष की कन्या)	**दाक्षि + ङीष्**	''इतो मनुष्यजातेः''
109.	• **कुरूः**	कुरोः अपत्यं स्त्री कुरु की सन्तान स्त्री	**कुरु + ऊङ्**	''ऊङुतः''
110.	• **पङ्गूः**	लँगडी स्त्री	**पङ्गु + ऊङ्**	''पङ्गोश्च''
111.	• **श्वश्रूः**	श्वशुरस्य स्त्री (सास)	**श्वशुर + ऊङ्**	''श्वशुरस्योकाराकारलोपश्च'' (वा०)
112.	• **करभोरूः**	करभ के समान अर्थात् मांसल जंघा वाली स्त्री	**करभोरु + ऊङ्**	''ऊरूत्तरपदादौपम्ये''
113.	• **संहितोरूः**	सटी हुई जाँघों वाली स्त्री	**संहितोरु + ऊङ्**	''संहितशफलक्षणवामादेश्च''
114.	• **लक्षणोरूः**	सुलक्षण जाँघों वाली स्त्री	**लक्षणोरु + ऊङ्**	''संहितशफलक्षणवामादेश्च''
115.	• **वामोरूः**	सुन्दर जाँघों वाली स्त्री	**वामोरु + ऊङ्**	''संहितशफलक्षणवामादेश्च''
116.	• **शफोरूः**	जिसकी जाँघे मिली हुई हो ऐसी स्त्री	**शफोरु + ऊङ्**	''संहितशफलक्षणवामादेश्च''
117.	• **शार्ङ्गरवी**	शृङ्गरोः अपत्यं स्त्री (शृङ्गरु की कन्या)	**शार्ङ्गरव + ङीन्**	''शार्ङ्गरवाद्यञो ङीन्''
118.	• **बैदी**	बिदस्य अपत्यं स्त्री (बैद ऋषि की कन्या)	**बैद + ङीन्**	''शार्ङ्गरवाद्यञो ङीन्''
119.	• **ब्राह्मणी**	ब्राह्मण की पत्नी, कन्या	**ब्राह्मण + ङीन्**	''शार्ङ्गरवाद्यञो ङीन्''
120.	• **नारी**	स्त्री जाति	**नृ + ङीन्** **नर + ङीन्**	''नृनरयोर्वृद्धिश्च''
121.	• **युवतिः**	जवान, स्त्री	**युवन् + ति**	''यूनस्तिः''
122.	• **धनक्रीता**	धन द्वारा खरीदी गयी स्त्री	**धनक्रीत + टाप्**	अजाद्यतष्टाप्

तव्यत्-अनीयर्-तालिका

क्रमाङ्क	धातुः	धात्वर्थः	तव्यत्	अनीयर्
1.	अट्	घूमना	**अटितव्यः**	**अटनीयः**
2.	अद्	खाना	**अत्तव्यः**	**अदनीयः**
3.	अर्च्	पूजा करना	**अर्चितव्यः**	**अर्चनीयः**
4.	अर्थ्	माँगना	**अर्थयितव्यः**	**अर्थनीयः**
5.	अस्	होना	**भवितव्यः**	**भवनीयः**
6.	प्र√आप्	पाना	**प्राप्तव्यः**	**प्रापणीयः**
7.	अधि√इ (ङ्)	पढ़ना	**अध्येतव्यः**	**अध्ययनीयः**
8.	इष्	चाहना	**एषितव्यः, एष्टव्यः**	**एषणीयः**
9.	निर्√ईक्ष्	देखना	**निरीक्षितव्यः**	**निरीक्षणीयः**
10.	एध्	बढ़ना	**एधितव्यः**	**एधनीयः**
11.	कथ्	कहना	**कथयितव्यः**	**कथनीयः**
12.	कम्प्	कांपना	**कम्पितव्यः**	**कम्पनीयः**
13.	कूज्	कूजना	**कूजितव्यः**	**कूजनीयः**
14.	कृ	करना	**कर्तव्यः**	**करणीयः**
15.	क्रन्द्	चिल्लाना	**क्रन्दितव्यः**	**क्रन्दनीयः**
16.	क्री	खरीदना	**क्रेतव्यः**	**क्रयणीयः**
17.	क्रीड्	खेलना	**क्रीडितव्यः**	**क्रीडनीयः**
18.	क्रुध्	क्रोध करना	**क्रोद्धव्यः**	**क्रोधनीयः**
19.	क्षल्	धोना	**क्षालयितव्यः**	**क्षालनीयः**
20.	क्षिप्	फेंकना	**क्षेप्तव्यः**	**क्षेपणीयः**
21.	खन्	खोदना	**खनितव्यः**	**खननीयः**
22.	खाद्	खाना	**खादितव्यः**	**खादनीयः**
23.	खेल्	खेलना	**खेलितव्यः**	**खेलनीयः**
24.	गण्	गिनना	**गणयितव्यः**	**गणनीयः**
25.	गम्	जाना	**गन्तव्यः**	**गमनीयः**
26.	गर्ज्	गर्जना	**गर्जितव्यः**	**गर्जनीयः**
27.	गर्ह्	निन्दा करना	**गर्हितव्यः**	**गर्हणीयः**
28.	गै	गाना	**गातव्यः**	**गानीयः**
29.	ग्रह्	ग्रहण करना	**ग्रहीतव्यः**	**ग्रहणीयः**
30.	चर्	घूमना	**चरितव्यः**	**चरणीयः**
31.	चल्	चलना	**चलितव्यः**	**चलनीयः**
32.	चि	चुनना	**चेतव्यः**	**चयनीयः**
33.	चिन्त्	चिन्ता करना	**चिन्तयितव्यः**	**चिन्तनीयः**
34.	चुर्	चुराना	**चोरयितव्यः**	**चोरणीयः**

क्रमाङ्क	धातुः	धात्वर्थः	तव्यत्	अनीयर्
35.	चुष्ट्	चेष्टा करना	**चेष्टितव्यः**	**चेष्टनीयः**
36.	छिद्	काटना	**छेत्तव्यः**	**छेदनीयः**
37.	जन्	पैदा होना	**जनितव्यः**	**जननीयः**
38.	जागृ	जागना	**जागरितव्यः**	**जागरणीयः**
39.	जि	जीतना	**जेतव्यः**	**जयनीयः**
40.	ज्ञा	जानना	**ज्ञातव्यः**	**ज्ञानीयः**
41.	तृ	तैरना	**तरितव्यः/तरीतव्यः**	**तरणीयः**
42.	त्यज्	छोड़ना	**त्यक्तव्यः**	**त्यजनीयः**
43.	दण्ड्	दण्ड देना	**दण्डयितव्यः**	**दण्डनीयः**
44.	दह्	जलाना	**दग्धव्यः**	**दहनीयः**
45.	दा	देना	**दातव्यः**	**दानीयः**
46.	दुह्	दोहना	**दोग्धव्यः**	**दोहनीयः**
47.	आ√दृ	आदर करना	**आदर्तव्यः**	**आदरणीयः**
48.	दृश्	देखना	**द्रष्टव्यः**	**दर्शनीयः**
49.	धाव्	भागना	**धावितव्यः**	**धावनीयः**
50.	ध्यै	ध्यान करना	**ध्यातव्यः**	**ध्यानीयः**
51.	नम्	झुकना	**नन्तव्यः**	**नमनीयः**
52.	निन्द्	निन्दा करना	**निन्दितव्यः**	**निन्दनीयः**
53.	नी	ले जाना	**नेतव्यः**	**नयनीयः**
54.	नृत्	नाँचना	**नर्तितव्यः**	**नर्तनीयः**
55.	पच्	पकाना	**पक्तव्यः**	**पचनीयः**
56.	पठ्	पढ़ना	**पठितव्यः**	**पठनीयः**
57.	पत्	गिरना	**पतितव्यः**	**पतनीयः**
58.	पा	पीना	**पातव्यः**	**पानीयः**
59.	पा	रक्षा करना	**पातव्यः**	**पानीयः**
60.	पुष्	पुष्ट करना	**पोष्टतव्यः**	**पोषणीयः**
61.	पू	पवित्र करना	**पवितव्यः**	**पवनीयः**
62.	पूज्	पूजना	**पूजयितव्यः**	**पूजनीयः**
63.	प्रच्छ्	पूँछना	**प्रष्टव्यः**	**प्रच्छनीयः**
64.	ब्रू	कहना	**वक्तव्यः**	**वचनीयः**
65.	भक्ष्	खाना	**भक्षयितव्यः**	**भक्षणीयः**
66.	भाष्	भाषण करना	**भाषितव्यः**	**भाषणीयः**
67.	भिद्	तोड़ना	**भेतव्यः**	**भेदनीयः**
68.	भुज्	खाना	**भोक्तव्यः**	**भोजनीयः**
69.	भू	होना	**भवितव्यः**	**भवनीयः**
70.	भूष्	सजाना	**भूषयितव्यः**	**भूषणीयः**
71.	भृ	धारण करना	**भर्तव्यः**	**भरणीयः**
72.	भ्रम्	घूमना	**भ्रमितव्यः**	**भ्रमणीयः**

क्रमाङ्क	धातुः	धात्वर्थः	तव्यत्	अनीयर्
73.	मन्	मानना	**मन्तव्यः**	**मननीयः**
74.	मिल्	मिलना	**मेलितव्यः**	**मेलनीयः**
75.	मुच्	छोड़ना	**मोक्तव्यः**	**मोचनीयः**
76.	यत्	यत्न करना	**यतितव्यः**	**यतनीयः**
77.	याच्	मांगना	**याचितव्यः**	**याचनीयः**
78.	रक्ष्	रक्षा करना	**रक्षितव्यः**	**रक्षणीयः**
79.	रुद्	रोना	**रोदितव्यः**	**रोदनीयः**
80.	रुध्	रोकना	**रोद्धव्यः**	**रोधनीयः**
81.	लभ्	पाना	**लब्धव्यः**	**लम्भनीयः**
82.	लिख्	लिखना	**लेखितव्यः**	**लेखनीयः**
83.	लिह्	चाटना	**लेढव्यः**	**लेहनीयः**
84.	वद्	बोलना	**वदितव्यः**	**वदनीयः**
85.	वन्द्	नमस्कार करना	**वन्दितव्यः**	**वन्दनीयः**
86.	वप्	काटना -बोना	**वप्तव्यः**	**वपनीयः**
87.	वस्	रहना	**वस्तव्यः**	**वसनीयः**
88.	वाञ्छ्	चाहना	**वाञ्छितव्यः**	**वाञ्छनीयः**
89.	विद्	जानना	**वेदितव्यः**	**वेदनीयः**
90.	विद्	पाना	**वेतव्यः**	**वेदनीयः**
91.	प्र√विश्	प्रवेश करना	**प्रवेष्टव्यः**	**प्रवेशनीयः**
92.	वृत्	वर्तना	**वर्तितव्यः**	**वर्तनीयः**
93.	वृध्	बढ़ना	**वर्धितव्यः**	**वर्धनीयः**
94.	शी	सोना	**शयितव्यः**	**शयनीयः**
95.	श्रु	सुनना	**श्रोतव्यः**	**श्रवणीयः**
96.	सिच्	सींचना	**सेक्तव्यः**	**सेचनीयः**
97.	सृज्	छोड़ना/ पैदा करना	**स्त्रष्टव्यः**	**सर्जनीयः**
98.	सेव्	सेवा करना	**सेवितव्यः**	**सेवनीयः**
99.	स्तु	स्तुति करना	**स्तोतव्यः**	**स्तवनीयः**
100.	स्था	ठहरना	**स्थातव्यः**	**स्थानीयः**
101.	स्मृ	स्मरण करना	**स्मर्तव्यः**	**स्मरणीयः**
102.	हन्	मारना	**हन्तव्यः**	**हननीय**
103.	हस्	हंसना	**हसितव्यः**	**हसनीयः**
104.	हृ	चुराना	**हर्तव्यः**	**हरणीयः**
105.	आ√ह्वे	बुलाना	**आह्वतव्यः**	**आह्वनीयः**

क्त-क्तवतु-प्रत्यय-तालिका

क्रमाङ्कः	धातुः	अर्थः	क्त	क्तवतु
1.	अर्च्	पूजा करना	**अर्चितः**	**अर्चितवान्**
2.	अस्	होना	**भूतः**	**भूतवान्**
3.	आप्	पाना	**प्राप्तः**	**प्राप्तवान्**
4.	आस्	बैठना	**आसितः**	**आसितवान्**
5.	इङ्	पढ़ना	**अधीतः**	**अधीतवान्**
6.	इष्	चाहना	**इष्टः**	**इष्टवान्**
7.	ईक्ष्	देखना	**ईक्षितः**	**ईक्षितवान्**
8.	एध्	बढ़ना	**एधितः**	**एधितवान्**
9.	कथ्	कहना	**कथितः**	**कथितवान्**
10.	कम्प्	कांपना	**कम्पितः**	**कम्पितवान्**
11.	कृ	करना	**कृतः**	**कृतवान्**
12.	क्री	खरीदना	**क्रीतः**	**क्रीतवान्**
13.	क्रीड्	खेलना	**क्रीडितः**	**क्रीडितवान्**
14.	क्षिप्	फेंकना	**क्षिप्तः**	**क्षिप्तवान्**
15.	खाद्	खाना	**खादितः**	**खादितवान्**
16.	ख्या	कहना	**ख्यातः**	**ख्यातवान्**
17.	गण्	गिनना	**गणितः**	**गणितवान्**
18.	गम्	जाना	**गतः**	**गतवान्**
19.	गर्ज्	गरजना	**गर्जितः**	**गर्जितवान्**
20.	गर्ह्	निन्दा करना	**गर्हितः**	**गर्हितवान्**
21.	गॄ	निगलना	**गीर्णः**	**गीर्णवान्**
22.	गै	गाना	**गीतः**	**गीतवान्**
23.	ग्रह्	ग्रहण करना	**गृहीतः**	**गृहीतवान्**
24.	घुष्	घोषणा करना	**घोषितः**	**घोषितवान्**
25.	चल्	चलना	**चलितः**	**चलितवान्**
26.	चि	चुनना	**चितः**	**चितवान्**
27.	चिन्त्	सोचना	**चिन्तितः**	**चिन्तितवान्**
28.	चुम्ब्	चूमना	**चुम्बितः**	**चुम्बितवान्**
29.	चुर्	चुराना	**चोरितः**	**चोरितवान्**
30.	छिद्	काटना	**छिन्नः**	**छिन्नवान्**
31.	जन्	पैदा होना	**जातः**	**जातवान्**
32.	जागृ	जागना	**जागरितः**	**जागरितवान्**
33.	जि	जीतना	**जितः**	**जितवान्**
34.	ज्ञा	जानना	**ज्ञातः**	**ज्ञातवान्**
35.	तर्ज्	झिड़कना	**तर्जितः**	**तर्जितवान्**

क्रमाङ्कः	धातुः	अर्थः	क्त	क्तवतु
36.	तृष्	प्यासा होना	**तृषितः**	**तृषितवान्**
37.	तृ	पार करना	**तीर्णः**	**तीर्णवान्**
38.	त्यज्	छोडना	**त्यक्तः**	**त्यक्तवान्**
39.	त्रुट्	टूटना	**त्रुटितः**	**त्रुटितवान्**
40.	दण्ड्	दण्ड देना	**दण्डितः**	**दण्डितवान्**
41.	दह्	जलाना	**दग्धः**	**दग्धवान्**
42.	दा	देना	**दत्तः**	**दत्तवान्**
43.	दुह्	दुहना	**दुग्धः**	**दुग्धवान्**
44.	दृश्	देखना	**दृष्टः**	**दृष्टवान्**
45.	धा	धारण करना	**हितः**	**हितवान्**
46.	धाव्	भागना	**धावितः**	**धावितवान्**
47.	धृ	धारण करना	**धृतः**	**धृतवान्**
48.	नन्द्	प्रसन्न होना	**नन्दितः**	**नन्दितवान्**
49.	नम्	झुकना	**नतः**	**नतवान्**
50.	नश्	नष्ट होना	**नष्टः**	**नष्टवान्**
51.	निन्द्	निन्दा करना	**निन्दितः**	**निन्दितवान्**
52.	नी	ले जाना	**नीतः**	**नीतवान्**
53.	पच्	पकाना	**पक्वः**	**पक्ववान्**
54.	पठ्	पढ़ना	**पठितः**	**पठितवान्**
55.	पत्	गिरना	**पतितः**	**पतितवान्**
56.	पा	पीना	**पीतः**	**पीतवान्**
57.	पीड्	पीडा देना	**पीडितः**	**पीडितवान्**
58.	पूज्	पूजा करना	**पूजितः**	**पूजितवान्**
59.	प्रच्छ्	पूछना	**पृष्टः**	**पृष्ट्वान्**
60.	बन्ध्	बांधना	**बद्धः**	**बद्धवान्**
61.	ब्रू	कहना	**उक्तः**	**उक्तवान्**
62.	भक्ष्	खाना	**भक्षितः**	**भक्षितवान्**
63.	भञ्ज्	तोड़ना	**भग्नः**	**भग्नवान्**
64.	भाष्	कहना	**भाषितः**	**भाषितवान्**
65.	भी	डरना	**भीतः**	**भीतवान्**
66.	भुज्	पालना	**भुक्तः**	**भुक्तवान्**
67.	भू	होना	**भूतः**	**भूतवान्**
68.	मिल्	मिलना	**मिलितः**	**मिलितवान्**
69.	मुच्	छोडना	**मुक्तः**	**मुक्तवान्**
70.	मुष्	लूटना	**मुषितः**	**मुषितवान्**
71.	मृ	मरना	**मृतः**	**मृतवान्**
72.	यज्	पूजा करना	**इष्टः**	**इष्टवान्**
73.	या	जाना	**यातः**	**यातवान्**
74.	याच्	मांगना	**याचितः**	**याचितवान्**

क्रमाङ्कः	धातुः	अर्थः	क्त	क्तवतु
75.	रक्ष्	बचाना	**रक्षितः**	**रक्षितवान्**
76.	रट्	रटना	**रटितः**	**रटितवान्**
77.	रुद्	रोना	**रुदितः**	**रुदितवान्**
78.	रुह्	चढ़ना	**आरूढः**	**आरूढवान्**
79.	लभ्	पाना	**लब्धः**	**लब्धवान्**
80.	लिख्	लिखना	**लिखितः**	**लिखितवान्**
81.	लिह्	चाटना	**लीढः**	**लीढवान्**
82.	वच्	कहना	**उक्तः**	**उक्तवान्**
83.	वद्	बोलना	**उदितः**	**उदितवान्**
84.	वन्द्	वन्दना करना	**वन्दितः**	**वन्दितवान्**
85.	वस्	रहना	**उषितः**	**उषितवान्**
86.	वह्	ले जाना	**ऊढः**	**ऊढवान्**
87.	वाञ्छ्	चाहना	**वाञ्छितः**	**वाञ्छितवान्**
88.	विद्	जानना	**विदितः**	**विदितवान्**
89.	विद्	पाना	**विन्नः**	**विन्नवान्**
90.	शक्	समर्थ होना	**शक्तः**	**शक्तवान्**
91.	शङ्क्	शंका करना	**शङ्कितः**	**शङ्कितवान्**
92.	शास्	उपदेश देना	**शिष्टः**	**शिष्टवान्**
93.	शिक्ष्	सीखना	**शिक्षितः**	**शिक्षितवान्**
94.	शी (ङ्)	सोना	**शयितः**	**शयितवान्**
95.	शुभ्	शोभा पाना	**शोभितः**	**शोभितवान्**
96.	शुष्	सूखना	**शुष्कः**	**शुष्कवान्**
97.	श्रम्	थकना	**श्रान्तः**	**श्रान्तवान्**
98.	श्रि (ञ्)	सेवन करना	**श्रितः**	**श्रितवान्**
99.	श्रु	सुनना	**श्रुतः**	**श्रुतवान्**
100.	सह्	सहना	**सोढः**	**सोढवान्**
101.	सिच्	सींचना	**सिक्तः**	**सिक्तवान्**
102.	सूच्	सूचित करना	**सूचितः**	**सूचितवान्**
103.	स्तु	स्तुति करना	**स्तुतः**	**स्तुतवान्**
104.	स्था	ठहरना	**स्थितः**	**स्थितवान्**
105.	स्ना	नहाना	**स्नातः**	**स्नातवान्**
106.	स्पृश्	छूना	**स्पृष्टः**	**स्पृष्टवान्**
107.	स्मृ	याद करना	**स्मृतः**	**स्मृतवान्**
108.	स्वप्	सोना	**सुप्तः**	**सुप्तवान्**
109.	हन्	मारना	**हतः**	**हतवान्**
110.	हृ	हरना	**हृतः**	**हृतवान्**
111.	हस्	हँसना	**हसितः**	**हसितवान्**

क्त्वान्त-ल्यबन्त-तालिका

क्रमाङ्कः	धातुः	धात्वर्थः	क्त्वान्त-पदम्	ल्यबन्त-पदम्
1.	अट्	घूमना	**अटित्वा**	**पर्यट्य**
2.	अर्च्	पूजना	**अर्चित्वा**	**समर्च्य**
3.	अर्जि	कमाना	**अर्जयित्वा**	**उपार्ज्य**
4.	अर्थि	मांगना	**अर्थयित्वा**	**प्रार्थ्य**
5.	अस्	होना	**भूत्वा**	**अनुभूय**
6.	आप्	पाना	**आप्त्वा**	**प्राप्य**
7.	इ (ङ्)	पढ़ना	**-**	**अधीत्य**
8.	ईक्ष्	देखना	**ईक्षित्वा**	**निरीक्ष्य**
9.	कम्प्	कांपना	**कम्पित्वा**	**प्रकम्प्य**
10.	काङ्क्ष्	चाहना	**काङ्क्षित्वा**	**अभिकाङ्क्ष्य**
11.	कुर्द्	कूदना	**कूर्दित्वा**	**संकूर्द्य**
12.	कृ	करना	**कृत्वा**	**अधिकृत्य**
13.	कृष्	खींचना	**कृष्ट्वा**	**आकृष्य**
14.	क्रन्द्	चिल्लाना	**क्रन्दित्वा**	**आक्रन्द्य**
15.	क्री	खरीदना	**क्रीत्वा**	**विक्रीय**
16.	क्रीड्	खेलना	**क्रीडित्वा**	**संक्रीड्य**
17.	क्षिप्	फेंकना	**क्षिप्त्वा**	**प्रक्षिप्य**
18.	खन्	खोदना	**खनित्वा/खात्वा**	**उत्खन्य/उत्खाय**
19.	खाद्	खाना	**खादित्वा**	**संखाद्य**
20.	खेल्	खेलना	**खेलित्वा**	**संखेल्य**
21.	गम्	जाना	**गत्वा**	**अवगत्य/अवगम्य**
22.	गर्ज्	गरजना	**गर्जित्वा**	**संगर्ज्य**
23.	गर्ह्	निन्दा करना	**गर्हित्वा**	**विगर्ह्य**
24.	गै	गाना	**गीत्वा**	**प्रगाय**
25.	ग्रह्	ग्रहण करना	**गृहीत्वा**	**विगृह्य**
26.	घ्रा	सूंघना	**घ्रात्वा**	**विघ्राय**
27.	चर्	चलना	**चरित्वा**	**आचर्य**
28.	चि	चुनना	**चित्वा**	**संचित्य**
29.	चुम्ब्	चूमना	**चुम्बित्वा**	**संचुम्ब्य**
30.	चुर्	चुराना	**चोरयित्वा**	**संचोर्य**
31.	छिद्	काटना	**छित्त्वा**	**विच्छिद्य**
32.	जन्	पैदा होना	**जनित्वा**	**संजाय/संजन्य**
33.	जागृ	जागना	**जागरित्वा**	**प्रजागर्य**
34.	जि	जीतना	**जित्वा**	**विजित्य**
35.	ज्ञा	जानना	**ज्ञात्वा**	**विज्ञाय**
36.	तर्ज्	धमकाना	**तर्जित्वा**	**प्रतर्ज्य**
37.	तॄ	पार करना	**तीर्त्वा**	**सन्तीर्य**
38.	त्यज्	छोड़ना	**त्यक्त्वा**	**परित्यज्य**

क्रमाङ्कः	धातुः	धात्वर्थः	क्त्वान्त-पदम्	ल्यबन्त-पदम्
39.	त्रुट्	टूटना	**त्रुटित्वा**	**प्रत्रुट्य**
40.	दह्	जलाना	**दग्ध्वा**	**सन्दह्य**
41.	दा	देना	**दत्त्वा**	**प्रदाय**
42.	दुह्	दोहना	**दुग्ध्वा**	**संदुह्य**
43.	दृश्	देखना	**दृष्ट्वा**	**सन्दृश्य**
44.	धा	धारण करना	**हित्वा**	**सन्धाय**
45.	धाव्	दौड़ना	**धावित्वा**	**प्रधाव्य**
46.	ध्यै	ध्यान करना	**ध्यात्वा**	**सन्ध्याय**
47.	नद्	गरजना	**नदित्वा**	**निनद्य**
48.	नम्	झुकना	**नत्वा**	**प्रणत्य/प्रणम्य**
49.	नी	ले जाना	**नीत्वा**	**आनीय**
50.	नृत्	नाचना	**नर्तित्वा**	**प्रनृत्य**
51.	पच्	पकाना	**पक्त्वा**	**प्रपच्य**
52.	पठ्	पढ़ना	**पठित्वा**	**प्रपठ्य**
53.	पत्	गिरना	**पतित्वा**	**निपत्य**
54.	पा	पीना	**पीत्वा**	**प्रपाय**
55.	पा	बचाना	**पात्वा**	**परिपाय**
56.	पूज्	पूजना	**पूजयित्वा**	**सम्पूज्य**
57.	प्रच्छ्	पूछना	**पृष्ट्वा**	**आपृच्छ्य**
58.	फल्	फलना	**फलित्वा**	**संफल्य**
59.	बन्ध्	बाँधना	**बद्ध्वा**	**अनुबध्य**
60.	ब्रू	कहना	**उक्त्वा**	**प्रोच्य**
61.	भक्ष्	खाना	**भक्षयित्वा**	**आभक्ष्य**
62.	भज्	सेवा करना	**भक्त्वा**	**विभज्य**
63.	भाष्	कहना	**भाषित्वा**	**संभाष्य**
64.	भिक्ष्	मांगना	**भिक्षित्वा**	**संभिक्ष्य**
65.	भी	डरना	**भीत्वा**	**विभीय**
66.	भुज्	पालना,खाना	**भुक्त्वा**	**उपभुज्य**
67.	भू	होना	**भूत्वा**	**अनुभूय**
68.	मार्ग	ढूंढना	**मार्गयित्वा**	**संमार्ग्य**
69.	मिल्	मिलना	**मिलित्वा/मेलित्वा**	**सम्मिल्य**
70.	मुच्	छोडना	**मुक्त्वा**	**विमुच्य**
71.	मुद्	प्रसन्न होना	**मुदित्वा/मोदित्वा**	**प्रमुद्य**
72.	यज्	यज्ञ करना	**इष्ट्वा**	**प्रेज्य**
73.	या	जाना	**यात्वा**	**प्रयाय**
74.	याच्	मांगना	**याचित्वा**	**उपयाच्य**
75.	रक्ष्	बचाना	**रक्षित्वा**	**संरक्ष्य**
76.	रट्	रटना	**रटित्वा**	**संरट्य**
77.	रुद्	रोना	**रुदित्वा**	**प्ररुद्य**
78.	लिख्	लिखना	**लिखित्वा/लेखित्वा**	**आलिख्य**
79.	लोक्	देखना	**लोकित्वा**	**विलोक्य**

क्रमाङ्कः	धातुः	धात्वर्थः	क्त्वान्त-पदम्	ल्यबन्त-पदम्
80.	वच्	कहना	**उक्त्वा**	**निरूच्य**
81.	वद्	बोलना	**उदित्वा**	**अनूद्य**
82.	वस्	रहना	**उषित्वा**	**प्रोष्य**
83.	वह्	ढोना	**ऊढ्वा**	**प्रोह्य**
84.	वाञ्छ्	चाहना	**वाञ्छित्वा**	**अभिवाञ्छ्य**
85.	विद्	जानना	**विदित्वा**	**संविद्य**
86.	विद्	होना	**वित्त्वा**	**संविद्य**
87.	विश्	घुसना	**विष्ट्वा**	**प्रविश्य**
88.	शक्	समर्थ होना	**शक्त्वा**	**अतिशक्य**
89.	शिक्ष्	सीखना	**शिक्षित्वा**	**प्रशिक्ष्य**
90.	शी	सोना	**शयित्वा**	**उपशय्य**
91.	श्रु	सुनना	**श्रुत्वा**	**संश्रुत्य**
92.	सह्	सहना	**सहित्वा**	**प्रसह्य**
93.	सृ	सरकना	**सृत्वा**	**अनुसृत्य**
94.	सेव्	सेवा करना	**सेवित्वा**	**आसेव्य**
95.	स्था	ठहरना	**स्थित्वा**	**प्रस्थाय**
96.	स्ना	नहाना	**स्नात्वा**	**प्रस्नाय**
97.	स्पृश्	छूना	**स्पृष्ट्वा**	**संस्पृश्य**
98.	स्मृ	स्मरण करना	**स्मृत्वा**	**विस्मृत्य**
99.	स्वप्	सोना	**सुप्त्वा**	**प्रसुप्य**
100.	हन्	मारना	**हत्वा**	**निहत्य**
101.	हस्	हंसना	**हसित्वा**	**विहस्य**
102.	हा	छोडना	**हित्वा**	**विहाय**
103.	हु	यज्ञ करना	**हुत्वा**	**आहुत्य**
104.	हृ	हरना	**हृत्वा**	**आहृत्य**
105.	ह्वे	बुलाना	**हूत्वा**	**आहूय**
106.	चल्	चलना	**चलित्वा**	**संचल्य**

तुमुन् प्रत्ययान्त–तालिका

क्र0	धातु	तुमुनन्त	अर्थ
1.	अट्	**अटितुम्**	घूमने के लिए
2.	अद्	**अत्तुम्**	खाने के लिए
3.	अर्च्	**अर्चितुम्**	पूजने के लिए
4.	अर्ज्	**अर्जितुम्**	कमाने के लिए
5.	अर्थ्	**प्रार्थयितुम्**	मांगने के लिए
6.	अश्	**अशितुम्**	खाने के लिए
7.	अस्	**भवितुम्**	होने के लिए
8.	आप्	**प्राप्तुम्**	पाने के लिए
9.	इङ्	**अध्येतुम्**	पढ़ने के लिए
10.	इष्	**एषितुम्, एष्टुम्**	चाहने के लिए

क्र0	धातु	तुमुनन्त	अर्थ
11.	ईक्ष्	**निरीक्षितुम्**	निरीक्षण करने के लिए
12.	ऊह्	**ऊहितुम्**	अनुमान करने के लिए
13.	एध्	**एधितुम्**	बढने के लिए
14.	कथ्	**कथयितुम्**	कहने के लिए
15.	कम्प्	**कम्पितुम्**	कांपने के लिए
16.	काङ्क्ष्	**काङ्क्षितुम्**	चाहने के लिए
17.	कूज्	**कूजितुम्**	कूकने के लिए
18.	कृ	**कर्तुम्**	करने के लिए
19.	क्रन्द्	**क्रन्दितुम्**	चिल्लाने के लिए
20.	क्री	**क्रेतुम्**	खरीदने के लिए
21.	क्रीड्	**क्रीडितुम्**	खेलने के लिए
22.	क्षम्	**क्षमितुम्/क्षन्तुम्**	सहने के लिए
23.	क्षल्	**क्षालयितुम्**	धोने के लिए
24.	क्षिप्	**क्षेप्तुम्**	फेकने के लिए
25.	खन्	**खनितुम्**	खोदने के लिए
26.	खाद्	**खादितुम्**	खाने के लिए
27.	खेल्	**खेलितुम्**	खेलने के लिए
28.	ख्या	**ख्यातुम् /आख्यातुम्**	कहने के लिए
29.	गण्	**गणयितुम्**	गिनने के लिए
30.	गम्	**गन्तुम्**	जाने के लिए
31.	गर्ज्	**गर्जितुम्**	गरजने के लिए
32.	गर्ह्	**गर्हितुम्**	निन्दा करने के लिए
33.	गै	**गातुम्**	गाने के लिए
34.	ग्रह्	**ग्रहीतुम्**	ग्रहण करने के लिए
35.	घ्रा	**घ्रातुम्**	सूंघने के लिए
36.	चर्	**चरितुम्**	घूमने के लिए
37.	चर्व्	**चर्वितुम्**	चबाने के लिए
38.	चल्	**चलितुम्**	चलने के लिए
39.	चि	**चेतुम्**	चुनने के लिए
40.	चित्	**चेतितुम्**	चेतने के लिए
41.	चिन्त्	**चिन्तयितुम्**	सोचने के लिए
42.	चुम्ब्	**चुम्बितुम्**	चूमने के लिए
43.	चुर्	**चोरयितुम्**	चुराने के लिए
44.	छिद्	**छेत्तुम्**	काटने के लिए
45.	जन्	**जनितुम्**	पैदा होने के लिए
46.	जप्	**जपितुम्**	जपने के लिए
47.	जागृ	**जागरितुम्**	जागने के लिए
48.	जि	**जेतुम्**	जीतने के लिए
49.	जीव्	**जीवितुम्**	जीने के लिए
50.	ज्ञा	**ज्ञातुम्**	जानने के लिए
51.	ज्वल्	**ज्वलितुम्**	जलने के लिए

क्र0	धातु	तुमुनन्त	अर्थ
52.	डी	**उड्डयितुम्**	उडने के लिए
53.	तड्	**ताडयितुम्**	पीटने के लिए
54.	तप्	**तप्तुम्**	तपाने के लिए
55.	तृ	**तरितुम् / तरीतुम्**	पार करने के लिए
56.	त्यज्	**त्यक्तुम्**	छोडने के लिए
57.	त्रै ,	**त्रातुम्**	बचाने के लिए
58.	दंश्	**दंष्टुम्**	डसने के लिए
59.	दह्	**दग्धुम्**	जलाने के लिए
60.	दा	**दातुम्**	देने के लिए
61.	दुह्	**दोग्धुम्**	दोहने के लिए
62.	दृश्	**द्रष्टुम्**	देखने के लिए
63.	धाव्	**धावितुम्**	दौडने के लिए
64.	धृ	**धर्तुम्**	धारण करने के लिए
65.	नन्द्	**नन्दितुम्**	खुश होने के लिए
66.	नश्	**नशितुम् / नंष्टुम्**	नष्ट होने के लिए
67.	निन्द्	**निन्दितुम्**	निन्दा करने के लिए
68.	नी	**नेतुम्**	ले जाने के लिए
69.	नृत्	**नर्तितुम्**	नाचने के लिए
70.	पच्	**पक्तुम्**	पकाने के लिए
71.	पठ्	**पठितुम्**	पढने के लिए
72.	पत्	**पतितुम्**	गिरने के लिए
73.	पा	**पातुम्**	पीने के लिए
74.	पाल्	**पालयितुम्**	पालने के लिए
75.	पूज्	**पूजयितुम्**	पूजने के लिए
76.	प्रच्छ्	**प्रष्टुम्**	पूछने के लिए
77.	फल्	**फलितुम्**	फलने के लिए
78.	बन्ध्	**बन्द्धुम्**	बांधने के लिए
79.	बाध्	**बाधितुम्**	रोकने के लिए
80.	बुध्	**बोधितुम्**	जानने के लिए
81.	ब्रू	**वक्तुम्**	कहने के लिए
82.	भञ्ज्	**भङ्क्तुम्**	तोड़ने के लिए
83.	भाष्	**भाषितुम्**	बोलने के लिए
84.	भिक्ष्	**भिक्षितुम्**	मांगने के लिए
85.	भिद्	**भेत्तुम्**	तोड़ने के लिए
86.	भी	**भेतुम्**	डरने के लिए
87.	भुज्	**भोक्तुम्**	खाने के लिए
88.	भू	**भवितुम्**	होने के लिए
89.	भ्रम्	**भ्रमितुम्**	घूमने के लिए
90.	मन्	**मन्तुम्**	मानने के लिए
91.	मन्त्र्	**मन्त्रयितुम्**	सलाह करने के लिए
92.	मार्ग	**मार्गयितुम्**	ढूँढने के लिए

क्र0	धातु	तुमुनन्त	अर्थ
93.	मिल्	**मेलितुम्**	मिलाने के लिए
94.	मुच्	**मोक्तुम्**	छोड़ने के लिए
95.	मुर्च्छ्	**मूर्च्छितुम्**	बेहोश होने के लिए
96.	मृ	**मर्तुम्**	मरने के लिए
97.	यज्	**यष्टुम्**	यज्ञ करने के लिए
98.	यत्	**यतितुम्**	यत्न करने के लिए
99.	या	**यातुम्**	जाने के लिए
100.	याच्	**याचितुम्**	मांगने के लिए
101.	युज्	**योक्तुम्**	जोड़ने के लिए
102.	युध्	**योद्धुम्**	युद्ध करने के लिए
103.	रक्ष्	**रक्षितुम्**	रक्षा करने के लिए
104.	रच्	**रचयितुम्**	बनाने के लिए
105.	रुद्	**रोदितुम्**	रोने के लिए
106.	रुध्	**रोद्धुम्**	रोकने के लिए
107.	रुह्	**अरोढुम्**	चढ़ने के लिए
108.	लभ्	**लब्धुम्**	पाने के लिए
109.	लिख्	**लेखितुम्**	लिखने के लिए
110.	वच्	**वक्तुम्**	कहने के लिए
111.	वद्	**वदितुम्**	कहने के लिए
112.	वप्	**वप्तुम्**	बोने के लिए
113.	वस्	**वस्तुम्**	रहने के लिए
114.	वह्	**वोढुम्**	ले जाने के लिए
115.	विद्	**वेदितुम्**	जानने के लिए
116.	विश्	**प्रवेष्टुम्**	प्रवेश करने के लिए
117.	वृत्	**वर्तितुम्**	होने के लिए
118.	वृध्	**वर्धितुम्**	बढ़ने के लिए
119.	शक्	**शक्तुम्**	सकने के लिए
120.	शप्	**शप्तुम्**	शाप देने के लिए
121.	शास्	**शासितुम्**	शिक्षा देने के लिए
122.	शिक्ष्	**शिक्षितुम्**	सीखने के लिए
123.	शुच्	**शोचितुम्**	शोक करने के लिए
124.	श्रु	**श्रोतुम्**	सुनने के लिए
125.	सिच्	**सेक्तुम्**	सींचने के लिए
126.	सिव्	**सेवितुम्**	सीने के लिए
127.	सूच्	**सूचयितुम्**	सूचना देने के लिए
128.	सृ	**सर्तुम्**	सरकने के लिए
129.	सेव्	**सेवितुम्**	सेवा करने के लिए
130.	स्था	**स्थातुम्**	ठहरने के लिए
131.	स्ना	**स्नातुम्**	नहाने के लिए
132.	स्पृश्	**स्प्रष्टुम्/स्पर्ष्टुम्**	छूने के लिए
133.	स्मृ	**स्मर्तुम्**	याद करने के लिए
134.	स्वप्	**स्वप्तुम्**	सोने के लिए
135.	हन्	**हन्तुम्**	मारने के लिए

सन्धिविधायक सूत्र

सन्धि	सन्धिसूत्र
1. यण्सन्धि	इको यणचि
2. दीर्घसन्धि	अकः सवर्णे दीर्घः
3. गुणसन्धि	आद् गुणः
4. वृद्धिसन्धि	वृद्धिरेचि
5. अयादिसन्धि	एचोऽयवायावः
6. पूर्वरूपसन्धि	एङः पदान्तादति
7. पररूपसन्धि	एङि पररूपम्
8. प्रगृह्यसन्धि	प्लुतप्रगृह्याचि नित्यम्
9. श्चुत्वसन्धि	स्तोः श्चुना श्चुः
10. ष्टुत्वसन्धि	ष्टुना ष्टुः
11. जश्त्वसन्धि	झलां जशोऽन्ते
12. अनुनासिकसन्धि	यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा
13. लत्वसन्धि	तोर्लि
14. अनुस्वारसन्धि	मोऽनुस्वारः
15. परसवर्णसन्धि	अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः
16. छत्वसन्धि	शश्छोऽटि
17. विसर्गसन्धि	खरवसानयोर्विसर्जनीयः

क्र0	धातु	तुमुनन्त	अर्थ
136.	हस्	**हसितुम्**	हंसने के लिए
137.	हा	**हातुम्**	छोड़ने के लिए
138.	हृ	**हर्तुम्**	हरने के लिए
139.	ह्वे	**आह्वातुम्**	बुलाने के लिए
140.	वन्द्	**वन्दितुम्**	नमस्कार करने के लिए
141.	वाञ्छ्	**वाञ्छितुम्**	चाहने के लिए
142.	शङ्क्	**शङ्कितुम्**	शंका करने के लिए
143.	शी	**शयितुम्**	सोने के लिए
144.	सह्	**सहितुम्/सोढुम्**	सहने के लिए

शतृ-प्रत्ययान्त-तालिका

क्रमाङ्कः	धातुः	पु0	स्त्री0	नपु0	अर्थः
1.	अट्	**अटन्**	**अटन्ती**	**अटत्**	घूमता हुआ
2.	अद्	**अदन्**	**अदती**	**अदत्**	खाता हुआ
3.	अर्च्	**अर्चन्**	**अर्चन्ती**	**अर्चत्**	पूजता हुआ
4.	अर्ज्	**अर्जयन्**	**अर्जयन्ती**	**अर्जयत्**	कमाता हुआ
5.	अश्	**अश्नन्**	**अश्नती**	**अश्नत्**	खाता हुआ
6.	इष्	**इच्छन्**	**इच्छती/इच्छन्ती**	**इच्छत्**	चाहता हुआ
7.	कथ्	**कथयन्**	**कथयन्ती**	**कथयत्**	कहता हुआ
8.	काङ्क्ष्	**काङ्क्षन्**	**काङ्क्षन्ती**	**काङ्क्षत्**	चाहता हुआ
9.	कुप्	**कुप्यन्**	**कुप्यन्ती**	**कुप्यत्**	क्रोध करता हुआ
10.	कूज्	**कूजन्**	**कूजन्ती**	**कूजत्**	गूंजता हुआ
11.	कृ	**कुर्वन्**	**कुर्वती**	**कुर्वत्**	करता हुआ
12.	कृष्	**कर्षन्**	**कर्षन्ती**	**कर्षत्**	खींचता हुआ
13.	कृष्	**कृषन्**	**कृषती/कृषन्ती**	**कृषत्**	हल चलाता हुआ
14.	क्रन्द्	**क्रन्दन्**	**क्रन्दन्ती**	**क्रन्दत्**	चिल्लाता हुआ
15.	क्री	**क्रीणन्**	**क्रीणती**	**क्रीणत्**	खरीदता हुआ
16.	क्रीड्	**क्रीडन्**	**क्रीडन्ती**	**क्रीडत्**	खेलता हुआ
17.	क्रुध्	**क्रुध्यन्**	**क्रुध्यन्ती**	**क्रुध्यत्**	क्रोध करता हुआ
18.	क्षर्	**क्षरन्**	**क्षरन्ती**	**क्षरत्**	झरता हुआ
19.	क्षल्	**क्षालयन्**	**क्षालयन्ती**	**क्षालयत्**	धोता हुआ
20.	क्षि	**क्षयन्**	**क्षयन्ती**	**क्षयत्**	घटता हुआ
21.	क्षिप्	**क्षिपन्**	**क्षिपती/क्षिपन्ती**	**क्षिपत्**	फेंकता हुआ
22.	क्षुध्	**क्षुध्यन्**	**क्षुध्यन्ती**	**क्षुध्यत्**	भूखा होता हुआ
23.	खन्	**खनन्**	**खनन्ती**	**खनत्**	खोदता हुआ
24.	खाद्	**खादन्**	**खादन्ती**	**खादत्**	खाता हुआ
25.	खेल्	**खेलन्**	**खेलन्ती**	**खेलत्**	खेलता हुआ
26.	गण्	**गणयन्**	**गणयन्ती**	**गणयत्**	गिनता हुआ
27.	गम्	**गच्छन्**	**गच्छन्ती**	**गच्छत्**	जाता हुआ
28.	गर्ज्	**गर्जन्**	**गर्जन्ती**	**गर्जत्**	गरजता हुआ
29.	गुञ्ज्	**गुञ्जन्**	**गुञ्जन्ती**	**गुञ्जत्**	गूंजता हुआ

क्रमाङ्कः	धातुः	पु०	स्त्री०	नपु०	अर्थः
30.	गै	**गायन्**	**गायन्ती**	**गायत्**	गाता हुआ
31.	ग्लै	**ग्लायन्**	**ग्लायन्ती**	**ग्लायत्**	दुःखी होता हुआ
32.	घ्रा	**जिघ्रन्**	**जिघ्रन्ती**	**जिघ्रत्**	सूंघता हुआ
33.	चर्	**चरन्**	**चरन्ती**	**चरत्**	चरता हुआ
34.	चल्	**चलन्**	**चलन्ती**	**चलत्**	चलता हुआ
35.	चि	**चिन्वन्**	**चिन्वती**	**चिन्वत्**	चुनता हुआ
36.	चिन्त्	**चिन्तयन्**	**चिन्तयन्ती**	**चिन्तयत्**	सोचता हुआ
37.	चुर्	**चोरयन्**	**चोरयन्ती**	**चोरयत्**	चुराता हुआ
38.	छिद्	**छिन्दन्**	**छिन्दती**	**छिन्दत्**	काटता हुआ
39.	जप्	**जपन्**	**जपन्ती**	**जपत्**	जप करता हुआ
40.	जागृ	**जाग्रन्**	**जाग्रती**	**जाग्रत्**	जागता हुआ
41.	जि	**जयन्**	**जयन्ती**	**जयत्**	जीतता हुआ
42.	जीव्	**जीवन्**	**जीवन्ती**	**जीवत्**	जीता हुआ
43.	ज्ञा	**जानन्**	**जानती**	**जानत्**	जानता हुआ
44.	तुद्	**तुदन्**	**तुदती/तुदन्ती**	**तुदत्**	चुभोता हुआ
45.	तुल्	**तोलयन्**	**तोलयन्ती**	**तोलयत्**	तोलता हुआ
46.	तॄ	**तरन्**	**तरन्ती**	**तरत्**	तैरता हुआ
47.	त्यज्	**त्यजन्**	**त्यजन्ती**	**त्यजत्**	छोड़ता हुआ
48.	दण्ड्	**दण्डयन्**	**दण्डयन्ती**	**दण्डयत्**	दण्ड देता हुआ
49.	दह्	**दहन्**	**दहन्ती**	**दहत्**	जलाता हुआ
50.	दा	**ददन्**	**ददती**	**ददत्**	देता हुआ
51.	दिव्	**दीव्यन्**	**दीव्यन्ती**	**दीव्यत्**	चमकता हुआ
52.	दुह्	**दुहन्**	**दुहती**	**दुहत्**	दोहता हुआ
53.	दृश्	**पश्यन्**	**पश्यन्ती**	**पश्यत्**	देखता हुआ
54.	धा	**दधन्**	**दधती**	**दधत्**	धारण करता हुआ
55.	धाव्	**धावन्**	**धावन्ती**	**धावत्**	दौड़ता हुआ
56.	धृ	**धरन्**	**धरन्ती**	**धरत्**	धारण करता हुआ
57.	नम्	**नमन्**	**नमन्ती**	**नमत्**	नमस्कार करता हुआ
58.	नश्	**नश्यन्**	**नश्यन्ती**	**नश्यत्**	नष्ट होता हुआ
59.	निन्द्	**निन्दन्**	**निन्दन्ती**	**निन्दत्**	निन्दा करता हुआ
60.	नी	**नयन्**	**नयन्ती**	**नयत्**	ले जाता हुआ
61.	नृत	**नृत्यन्**	**नृत्यन्ती**	**नृत्यत्**	नाचता हुआ
62.	पच्	**पचन्**	**पचन्ती**	**पचत्**	पकाता हुआ
63.	पठ्	**पठन्**	**पठन्ती**	**पठत्**	पढ़ता हुआ
64.	पत्	**पतन्**	**पतन्ती**	**पतत्**	गिरता हुआ
65.	पा	**पिबन्**	**पिबन्ती**	**पिबत्**	पीता हुआ
66.	पाल्	**पालयन्**	**पालयन्ती**	**पालयत्**	पालता हुआ
67.	पीड्	**पीडयन्**	**पीडयन्ती**	**पीडयत्**	दुःख देता हुआ
68.	पूज्	**पूजयन्**	**पूजयन्ती**	**पूजयत्**	पूजता हुआ
69.	प्रच्छ्	**पृच्छन्**	**पृच्छती/पृच्छन्ती**	**पृच्छत्**	पूँछता हुआ
70.	भक्ष्	**भक्षयन्**	**भक्षयन्ती**	**भक्षयत्**	खाता हुआ
71.	भज्	**भजन्**	**भजन्ती**	**भजत्**	भजता हुआ
72.	भिद्	**भिन्दन्**	**भिन्दती**	**भिन्दत्**	तोड़ता हुआ

क्रमाङ्कः	धातुः	पु0	स्त्री0	नपु0	अर्थः
73.	भी	**बिभ्यन्**	**बिभ्यती**	**बिभ्यत्**	डरता हुआ
74.	भ्रम्	**भ्रमन्**	**भ्रमन्ती-भ्राम्यन्ती**	**भ्रमत्-भ्राम्यत्**	घूमता हुआ
75.	मिल्	**मिलन्**	**मिलती-मिलन्ती**	**मिलत्**	मिलता हुआ
76.	मुच्	**मुञ्चन्**	**मुञ्चती-मुञ्चन्ती**	**मुञ्चत्**	छोड़ता हुआ
77.	यज्	**यजन्**	**यजन्ती**	**यजत्**	यज्ञ करता हुआ
78.	या	**यान्**	**याती - यान्ती**	**यात्**	जाता हुआ
79.	याच्	**याचन्**	**याचन्ती**	**याचत्**	मांगता हुआ
80.	रक्ष्	**रक्षन्**	**रक्षन्ती**	**रक्षत्**	रक्षा करता हुआ
81.	रच्	**रचयन्**	**रचयन्ती**	**रचयत्**	बनाता हुआ
82.	रुद्	**रुदन्**	**रुदती**	**रुदत्**	रोता हुआ
83.	रुध्	**रुन्धन्**	**रुन्धती**	**रुन्धत्**	रोकता हुआ
84.	लिख्	**लिखन्**	**लिखती-लिखन्ती**	**लिखत्**	लिखता हुआ
85.	लिह्	**लिहन्**	**लिहती**	**लिहत्**	चाटता हुआ
86.	वद्	**वदन्**	**वदन्ती**	**वदत्**	बोलता हुआ
87.	वस्	**वसन्**	**वसन्ती**	**वसत्**	रहता हुआ
88.	वह्	**वहन्**	**वहन्ती**	**वहत्**	ढोता हुआ
89.	वाञ्छ्	**वाञ्छन्**	**वाञ्छन्ती**	**वाञ्छत्**	चाहता हुआ
90.	विद्	**विन्दन्**	**विन्दती-विन्दन्ती**	**विन्दत्**	पाता हुआ
91.	श्रि	**श्रयन्**	**श्रयन्ती**	**श्रयत्**	आश्रय करता हुआ
92.	श्रु	**शृण्वन्**	**शृण्वती**	**शृण्वत्**	सुनता हुआ
93.	सिच्	**सिञ्चन्**	**सिञ्चती- सिञ्चन्ती**	**सिञ्चत्**	सीचता हुआ
94.	सृज्	**सृजन्**	**सृजती-सृजन्ती**	**सृजत्**	पैदा करता हुआ
95.	स्था	**तिष्ठन्**	**तिष्ठन्ती**	**तिष्ठत्**	ठहरता हुआ
96.	स्पृश्	**स्पृशन्**	**स्पृशती-स्पृशन्ती**	**स्पृशत्**	छूता हुआ
97.	स्मृ	**स्मरन्**	**स्मरन्ती**	**स्मरत्**	याद करता हुआ
98.	स्वप्	**स्वपन्**	**स्वपती**	**स्वपत्**	सोता हुआ
99.	हन्	**घ्नन्**	**घ्नती**	**घ्नत्**	मारता हुआ
100.	हस्	**हसन्**	**हसन्ती**	**हसत्**	हँसता हुआ
101.	हा	**जहन्**	**जहती**	**जहत्**	छोड़ता हुआ
102	हृ	**हरन्**	**हरन्ती**	**हरत्**	हरता हुआ

शानच्-प्रत्ययान्त-तालिका

क्रमाङ्कः	धातुः	पु0	स्त्री0	नपु0	अर्थः
1.	प्र + अर्थ्	**प्रार्थयमानः**	**प्रार्थयमाना**	**प्रार्थयमानम्**	प्रार्थना करता हुआ
2.	इङ्	**अधीयानः**	**अधीयाना**	**अधीयानम्**	पढ़ता हुआ
3.	ईक्ष्	**ईक्षमाणः**	**ईक्षमाणा**	**ईक्षमाणम्**	देखता हुआ
4.	एध्	**एधमानः**	**एधमाना**	**एधमानम्**	बढ़ता हुआ
5.	कथ्	**कथयमानः**	**कथयमाना**	**कथयमानम्**	कहता हुआ
6.	कम्	**कामयमानः**	**कामयमाना**	**कामयमानम्**	चाहता हुआ
7.	कम्प्	**कम्पमानः**	**कम्पमाना**	**कम्पमानम्**	काँपता हुआ
8.	कृ	**कुर्वाणः**	**कुर्वाणा**	**कुर्वाणम्**	करता हुआ

क्रमाङ्कः	धातुः	पु0	स्त्री0	नपु0	अर्थः
9.	क्री	**क्रीणानः**	**क्रीणाना**	**क्रीणानम्**	खरीदता हुआ
10.	गण्	**गणयमानः**	**गणयमाना**	**गणयमानम्**	गिनता हुआ
11.	गर्ह्	**गर्हमाणः**	**गर्हमाणा**	**गर्हमाणम्**	निन्दा करता हुआ
12.	घट्	**घटमानः**	**घटमाना**	**घटमानम्**	घटित होता हुआ
13.	चि	**चिन्वानः**	**चिन्वाना**	**चिन्वानम्**	चुनता हुआ
14.	चिन्त्	**चिन्त्यमानः**	**चिन्त्यमाना**	**चिन्त्यमानम्**	सोचा जाता हुआ
15.	चुर्	**चोर्यमाणः**	**चोर्यमाणा**	**चोर्यमाणम्**	चुराया जाता हुआ
16.	चेष्ट्	**चेष्टमानः**	**चेष्टमाना**	**चेष्टमानम्**	चेष्टा करता हुआ
17.	जन्	**जायमानः**	**जायमाना**	**जायमानम्**	पैदा होता हुआ
18.	दय्	**दयमानः**	**दयमाना**	**दयमानम्**	दया करता हुआ
19.	दाञ्	**ददानः**	**ददाना**	**ददानम्**	देता हुआ
20.	दीप्	**दीप्यमानः**	**दीप्यमाना**	**दीप्यमानम्**	चमकता हुआ
21.	दुह्	**दुहानः**	**दुहाना**	**दुहानम्**	दोहता हुआ
22.	धा	**दधानः**	**दधाना**	**दधानम्**	धारण करता हुआ
23.	नी	**नयमानः**	**नयमाना**	**नयमानम्**	ले जाता हुआ
24.	पच्	**पचमानः**	**पचमाना**	**पचमानम्**	पकाता हुआ
25.	पीड्	**पीड्यमानः**	**पीड्यमाना**	**पीड्यमानम्**	पीड़ा देता हुआ
26.	पू	**पुनानः**	**पुनाना**	**पुनानम्**	पवित्र करता हुआ
27.	पूज्	**पूजयमानः**	**पूजयमाना**	**पूजयमानम्**	पूजा जाता हुआ
28.	बुध्	**बुध्यमानः**	**बुध्यमाना**	**बुध्यमानम्**	जागा हुआ
29.	भज्	**भजमानः**	**भजमाना**	**भजमानम्**	भजता हुआ
30.	भाष्	**भाषमाणः**	**भाषमाणा**	**भाषमाणम्**	बोलता हुआ
31.	भिक्ष्	**भिक्षमाणः**	**भिक्षमाणा**	**भिक्षमाणम्**	मांगता हुआ
32.	मुच्	**मुञ्चमानः**	**मुञ्चमाना**	**मुञ्चमानम्**	छोड़ता हुआ
33.	मुद्	**मोदमानः**	**मोदमाना**	**मोदमानम्**	प्रसन्न होता हुआ
34.	याच्	**याचमानः**	**याचमाना**	**याचमानम्**	मांगता हुआ
35.	युध्	**युध्यमानः**	**युध्यमाना**	**युध्यमानम्**	युद्ध करता हुआ
36.	रच्	**रचयमानः**	**रचयमाना**	**रचयमानम्**	रचता हुआ
37.	रम्	**रममाणः**	**रममाणा**	**रममाणम्**	रमण करता हुआ
38.	राज्	**राजमानः**	**राजमाना**	**राजमानम्**	शोभा पाता हुआ
39.	रुच्	**रोचमानः**	**रोचमाना**	**रोचमानम्**	पसन्द आता हुआ
40.	रुध्	**रुन्धानः**	**रुन्धाना**	**रुन्धानम्**	रोकता हुआ
41.	लू	**लुनानः**	**लुनाना**	**लुनानम्**	काटता हुआ
42.	वन्द्	**वन्दमानः**	**वन्दमाना**	**वन्दमानम्**	झुकता हुआ
43.	विद्	**विद्यमानः**	**विद्यमाना**	**विद्यमानम्**	होता हुआ
44.	वृध्	**वर्धमानः**	**वर्धमाना**	**वर्धमानम्**	बढ़ता हुआ
45.	शिक्ष्	**शिक्षमाणः**	**शिक्षमाणा**	**शिक्षमाणम्**	सीखता हुआ
46.	शी	**शयानः**	**शयाना**	**शयानम्**	सोता हुआ
47.	शुभ्	**शोभमानः**	**शोभमाना**	**शोभमानम्**	शोभा पाता हुआ
48.	सह्	**सहमानः**	**सहमाना**	**सहमानम्**	सहता हुआ
49.	हृ	**ह्रियमाणः**	**ह्रियमाणा**	**ह्रियमाणम्**	हरता हुआ

❑❑

कारक-सूत्रोदाहरण-तालिका

सूत्रम् / वार्तिकम्	उदाहरण
प्रथमाविभक्तिः	
1. **प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा**	प्रथमाविभक्ति
क. अलिङ्ग प्रातिपदिकार्थमात्र	**उच्चैः, नीचैः**
ख. नियतलिङ्गप्रातिपदिकार्थमात्र	**कृष्णः, श्रीः, ज्ञानम्**
ग. अनियतलिङ्ग/लिङ्गमात्राधिक्य	**तटः, तटी, तटम्**
घ. परिमाणमात्र	**द्रोणो** ब्रीहिः
ङ़. वचनमात्र	**एकः, द्वौ, बहवः**
2. **सम्बोधने च**	**हे देवदत्त!** अत्र आगच्छ
द्वितीयाविभक्तिः	
3. **(क) कर्तुरीप्सिततमं कर्म**	कर्म संज्ञा
(ख) कर्मणि द्वितीया	**हरिं** भजति
4. **तथायुक्तं चानीप्सितम्**	ग्रामं गच्छन् **तृणं** स्पृशति। ओदनं भुञ्जानो **विषं** भुङ्क्ते
5. **अकथितं च**	
दुह्	**गां** दोग्धि पयः
याच्	**बलिं** याचते वसुधाम्
	अविनीतं विनयं याचते
पच्	**तण्डुलान्** ओदनं पचति
दण्ड	**गर्गान्** शतं दण्डयति
रुध्	**व्रजम्** अवरुणद्धि गाम्
प्रच्छ	**माणवकं** पन्थानं पृच्छति
चि	**वृक्षम**वचिनोति फलानि
ब्रू, शास्	**माणवकं** धर्मं ब्रूते, शास्ति वा
जि	शतं जयति **देवदत्तम्**
मथ्	**सुधां** क्षीरनिधिं मथ्नाति
मुष्	**देवदत्तं** शतं मुष्णाति
नी, हृ, कृष् वह्	**ग्रामम्** अजां नयति, हरति, कर्षति, वहति वा
भिक्ष्	**बलिं** भिक्षते वसुधाम्
भाष्	**माणवकं** धर्मं भाषते अभिधत्ते वक्ति वा।
6. **अकर्मकधातुभिर्योगे देशः कालो भावो गन्तव्योऽध्वा च कर्मसंज्ञक इति वाच्यम् (वार्तिक)**	(क). कुरून् स्वपिति (ख). मासम् आस्ते (ग). गोदोहम् आस्ते (घ). क्रोशम् आस्ते

सूत्र	उदाहरण
7. गतिबुद्धि-प्रत्यवसानार्थ-शब्द-कर्माकर्मकाणामणि कर्ता स णौ	
अण्यन्त अवस्था	**ण्यन्त अवस्था**
(क). शत्रवः स्वर्गम् अगच्छन्	**शत्रून्** स्वर्गम् अगमयत् ।
(ख). स्वे वेदार्थम् अविदुः ।	**स्वान्** वेदार्थम् अवेदयत् ।
(ग). देवा अमृतम् आश्नन् ।	**देवान्** अमृतम् आशयत् ।
(घ). विधिः वेदम् अध्यैत्	**वेदम्** अध्यापयत् विधिम्
(ङ). पृथ्वी सलिले आस्ते।	आसयत् सलिले **पृथ्वीम् ।**
9. नीवह्योर्न (वा0)	नाययति वाहयति वा **भारं भृत्येन।**
10. नियन्तृकर्तृकस्य वहेरनिषेधः (वा0)	वाहयति रथं वाहान् सूतः
11. आदिखाद्योर्न (वा0)	आदयति खादयति वा अन्नं वटुना।
12. भक्षेरहिंसार्थस्य न (वा0)	भक्षयति अन्नं **वटुना**
13. जल्पतिप्रभृतीनामुपसङ्ख्यानम् (वा0)	जल्पयति भाषयति वा **धर्मं पुत्रं** देवदत्तः ।
14. दृशेश्च (वा0)	दर्शयति **हरिं भक्तान्**
15. शब्दायतेर्न (वा0)	शब्दाययति **देवदत्तेन**
16. हृक्रोरन्यतरस्याम्	हारयति कारयति वा **भृत्यं भृत्येन** वा कटम्
17. अभिवादिदृशोरात्मनेपदे वेति वाच्यम् (वा0)	अभिवादयते दर्शयते देवं **भक्तं भक्तेन** वा।
18. अधिशीङ्स्थासां कर्म	अधिशेते अधितिष्ठति अध्यास्ते वा **वैकुण्ठं** हरिः ।
19. अभिनिविशश्च	अभिनिविशते **सन्मार्गम्**
20. उपान्वध्याङ्वसः	उपवसति अनुवसति अधिवसति आवसति वा **वैकुण्ठं** हरिः
21. अभुक्त्यर्थस्य न (वा0)	**वने** उपवसति

उपपद- द्वितीया विभक्तिः

सूत्र	उदाहरण
22. उभसर्वतसोः कार्या	(क) **उभयतः** कृष्णं गोपाः।
धिगुपर्यादिषु त्रिषु	(ख) **सर्वतः** कृष्णम् ।
द्वितीयाऽऽम्रेडितान्तेषु	(ग) **धिक्** कृष्णाऽभक्तम्
ततोऽन्यत्रापि दृश्यते (वा0)	(घ) **उपर्युपरि** लोकं हरिः
	(ङ) **अध्यधि** लोकम् ।
	(च) **अधोऽधः** लोकम् ।
23. अभितः-परितः-समया-निकषा-हा-प्रति-योगेऽपि (वा.)	(क) **अभितः** कृष्णम्
	(ख) **परितः** कृष्णम्
	(ग) **ग्रामं** समया
	(घ) **निकषा** लङ्काम्
	(ङ) **हा** कृष्णाऽभक्तम्
	(च) बुभुक्षितं न **प्रति**भाति किञ्चित् ।
24. अन्तराऽन्तरेण युक्ते	(क) **अन्तरा** त्वां मां हरिः।
	(ख) **अन्तरेण** हरिं न सुखम् ।
25 (क) अनुर्लक्षणे	
(ख) कर्मप्रवचनीययुक्ते द्वितीया	जपमनु प्रावर्षत्

26. **तृतीयार्थे**	**नदीम्** अन्ववसिता सेना।
27. **हीने**	अनु **हरिं** सुराः
28. **उपोऽधिके च**	उप **हरिं** सुराः
29. **लक्षणेत्थंभूताख्यानभागवीप्सासु प्रतिपर्यनवः**	
(क) लक्षणे	**वृक्षं** प्रति परि अनु वा विद्योतते विद्युत्
(ख) इत्थंभूताख्याने	भक्तो **विष्णुं** प्रति परि अनु वा
(ग) भागे	लक्ष्मीः **हरिं** प्रति परि अनु वा
(घ) वीप्सायाम्	**वृक्षं वृक्षं** प्रति परि अनु वा सिञ्चति।
30. **अभिरभागे**	
(क) लक्षणे	**हरिम**भिवर्तते।
(ख) इत्थंभूताख्याने	भक्तो **हरिम**भि।
(ग) वीप्सायाम्	**देवं देवम**भिसिञ्चति।
31. **अधिपरी अनर्थकौ**	(क) कुतोऽध्यागच्छति।
	(ख) कुतः पर्यागच्छति।
32. **सुः पूजायाम्**	(क). **सुसिक्तम्**
	(ख). **सुस्तुतम्**
33. **अतिरतिक्रमणे च**	**अतिदेवान्** कृष्णः
34. **अपिः पदार्थसम्भावनाऽन्ववसर्गगर्हासमुच्चयेषु**	
(क) पदार्थ	सर्पिषोऽपि स्यात् ।
(ख) सम्भावनम्	अपि स्तुयात् विष्णुम्
(ग) अन्ववसर्ग	अपि स्तुहि।
(घ) गर्हा	धिक् देवदत्तम् अपि स्तुयात् वृषलम्
(ङ) समुच्चय	अपि सिञ्च अपि स्तुहि
35. **कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे**	(क) **मासं** कल्याणी
	(ख) **मासम्** अधीते
	(ग) **क्रोशं** कुटिला नदी
	(घ). **क्रोश**मधीते
	(ङ) **क्रोशं** गिरिः

तृतीया विभक्ति

36. **(क) साधकतमं करणम्**	करणसंज्ञा
(ख) कर्तृकरणयोस्तृतीया	रामेण **बाणेन** हतो बालिः।
37. **प्रकृत्यादिभ्य उपसंख्यानम् (वा0)**	क. **प्रकृत्या** चारुः
	ख. **प्रायेण** याज्ञिकः
	ग. **गोत्रेण** गार्ग्यः
	घ. **समेन** एति, विषमेण एति।
	ङ. **द्विद्रोणेन** धान्यं क्रीणाति।
	च. **सुखेन दुःखेन** वा याति।
38. **दिवः कर्म च (कर्म और करणसंज्ञा)**	**अक्षैः अक्षान्** वा दीव्यति।
39. **अपवर्गे तृतीया**	

क. कालवाचक	**अह्ना** अनुवाकः अधीतः
ख. मार्गवाचक	क्रोशेन अनुवाकः अधीतः
40. **सहयुक्तेऽप्रधाने**	**पुत्रेण** सह आगतः पिता।
41. **येनाङ्गविकारः**	**अक्ष्णा** काणः
42. **इत्थम्भूतलक्षणे**	**जटाभि**स्तापसः
43. **सञ्ज्ञोऽन्यतरस्यां कर्मणि**	**पित्रा पितरं** वा सञ्जानीते।
44. **हेतौ** (क) द्रव्य के प्रति हेतु	(क) **दण्डेन** घटः
(ख) क्रिया के प्रति हेतु	(ख) **पुण्येन** दृष्टः हरिः **अध्ययनेन** वसति।
45. **अशिष्टव्यवहारे दाणः प्रयोगे चतुर्थ्यर्थे तृतीया (वा०)**	**दास्या** संयच्छते कामुकः

चतुर्थी विभक्तिः

46. **(क) कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्**	सम्प्रदानसंज्ञा
(ख) चतुर्थी सम्प्रदाने	**विप्राय** गां ददाति
47. **क्रियया यमभिप्रैति सोऽपि सम्प्रदानम् (वा०)**	**पत्ये** शेते
48. **यजेः कर्मणः करणसंज्ञा सम्प्रदानस्य च कर्मसंज्ञा**	पशुना रुद्रं यजते। पशुं रुद्राय ददाति इत्यर्थः।
49. **रुच्यर्थानां प्रीयमाणः**	**हरये** रोचते भक्तिः।
50. **श्लाघह्नुङ्स्थाशपां ज्ञीप्स्यमानः**	गोपी स्मरात् **कृष्णाय** श्लाघते ह्नुते तिष्ठते शपते वा।
51. **धारेरुत्तमर्णः**	**भक्ताय** धारयति मोक्षं हरिः
52. **स्पृहेरीप्सितः**	**पुष्पेभ्यः** स्पृहयति
53. **क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः**	**हरये** क्रुध्यति द्रुह्यति ईर्ष्यति असूयति वा ।
54. **क्रुधद्रुहोरुपसृष्टयोः कर्म**	**क्रूरम्** अभिक्रुध्यति अभिद्रुह्यति वा
55. **राधीक्ष्योर्यस्य विप्रश्नः**	**कृष्णाय** राध्यति ईक्षते वा ।
56. **प्रत्याङ्भ्यां श्रुवः पूर्वस्य कर्ता**	**विप्राय** गां प्रतिशृणोति आशृणोति वा।
57. **अनुप्रतिगृणश्च**	**होत्रे** अनुगृणाति प्रतिगृणाति वा।
58. **परिक्रयणे सम्प्रदानमन्यतरस्याम्**	**शतेन शताय** वा परिक्रीतः
59. **तादर्थ्ये चतुर्थी वाच्या (वा०)**	**मुक्तये** हरिं भजति।
60. **क्लृपि सम्पद्यमाने च (वा०)**	भक्तिः **ज्ञानाय** कल्पते, सम्पद्यते, जायते।
61. **उत्पातेन ज्ञापिते च (वा०)**	**वाताय** कपिला विद्युत् ।
62. **हितयोगे च (वा०)**	**ब्राह्मणाय** हितम्
63. **क्रियार्थोपपदस्य च कर्मणि स्थानिनः**	क. **फलेभ्यो** याति। ख. नमस्कुर्मो **नृसिंहाय**। ग. **स्वयंभुवे** नमस्कृत्य
64. **तुमर्थाच्च भाववचनात्**	**यागाय** याति।
65. **नमः स्वस्ति-स्वाहा-स्वधाऽलं वषड्योगाच्च** (उपपद-चतुर्थी-विभक्तिः)	क. **हरये** नमः ख. **प्रजाभ्यः** स्वस्ति। ग. **अग्नये** स्वाहा घ. **पितृभ्यः** स्वधा ङ. **दैत्येभ्यः** हरिः अलम्

सूत्र	उदाहरण
	च. **इन्द्राय** वषट् ।
66. **अलमिति पर्याप्त्यर्थग्रहणम् (वा0)**	**दैत्येभ्यो** हरिः अलम्, प्रभुः, समर्थः, शक्तः ।
67. **मन्यकर्मण्यनादरे विभाषाऽप्राणिषु**	न **त्वां** तृणं मन्ये **तृणाय** वा।
68. **अप्राणिष्वित्यपनीय नौकाकान्न-शुकशृगाल वर्जेष्विति वाच्यम् (वा0)**	(क) न **त्वां** नावम् अन्नं वा मन्ये। (ख) न **त्वां** शुने मन्ये।
69. **गत्यर्थकर्मणि द्वितीयाचतुर्थ्यौ चेष्टायामनध्वनि**	**ग्रामं ग्रामाय** वा गच्छति।

पञ्चमी विभक्तिः

सूत्र	उदाहरण
70. **क. ध्रुवमपायेऽपादानम्**	(क) **ग्रामात्** आयाति।
ख. अपादाने पञ्चमी	(ख) **धावतोऽश्वात्** पतति।
71. **जुगुप्साविरामप्रमादार्थानामुपसङ्ख्यानम् (वा.)**	(क) **पापात्** जुगुप्सते। (ख) **पापात्** विरमति। (ग) **धर्मात्** प्रमाद्यति ।
72. **भीत्रार्थानां भयहेतुः**	(क) **चोरात्** बिभेति। (ख) **चोरात्** त्रायते।
73. **पराजेरसोढः**	**अध्ययनात्** पराजयते।
74. **वारणार्थानामीप्सितः**	**यवेभ्यो** गां वारयति।
75. **अन्तर्धौ येनादर्शनमिच्छति**	**मातुः** निलीयते कृष्णः।
76. **आख्यातोपयोगे**	**उपाध्यायात्** अधीते।
77. **जनिकर्तुः प्रकृतिः**	**ब्रह्मणः** प्रजाः प्रजायन्ते।
78. **भुवः प्रभवः**	**हिमवतः** गङ्गा प्रभवति।
79. **'ल्यब्लोपे कर्मण्यधिकरणे च' (वा0)**	(क) **प्रासादात्** प्रेक्षते। (ख) **आसनात्** प्रेक्षते। (ग) **श्वसुरात्** जिह्रेति।
80. **(क) गम्यमानाऽपि क्रिया कारकविभक्तीनां निमित्तम्।**	क. **कस्मात्** त्वम् ? नद्याः
(ख) यतश्चाध्वकालनिर्माणं तत्र पञ्चमी (वा0)	ख. **वनात्** ग्रामो योजनं योजने वा
(ग) तदुक्तादध्वनः प्रथमासप्तम्यौ	ग. **कार्तिक्या** आग्रहायणी मासे।
(घ) कालात् सप्तमी च वक्तव्या (वा0)	
81. **अन्यारादितरर्तेदिक्शब्दाञ्चूत्तरपदाजाहियुक्ते** (उपपद पञ्चमीविभक्तिः)	क. अन्यः भिन्नः इतरः वा **कृष्णात्** ख. आरात् **वनात्** ग. ऋते **कृष्णात्** घ. पूर्वो **ग्रामात्** ङ. **चैत्रात्** पूर्वः फाल्गुनः च. प्राक् प्रत्यक् वा **ग्रामात्** छ. दक्षिणाहि **ग्रामात्** ज. दक्षिणा **ग्रामात्** झ. भवात् प्रभृति आरभ्य वा सेव्यः हरिः ञ. ग्रामात् बहिः
82. **(क) अपपरी वर्जने**	क. अपहरेः संसारः

सूत्र	उदाहरण
(ख) आङ्मर्यादावचने	ख. परिहरेः संसारः
(ग) पञ्चम्यपाङ्परिभिः	ग. आमुक्तेः संसारः
83. (क) प्रतिः प्रतिनिधिप्रतिदानयोः	क. प्रद्युम्नः **कृष्णात्** प्रति।
(ख) प्रतिनिधिप्रतिदाने च यस्मात्	ख. **तिलेभ्यः** प्रतियच्छति माषान्
84. अकर्तर्यृणे पञ्चमी	**शतात्** बद्धः।
85. विभाषा गुणेऽस्त्रियाम्	(क) **जाड्यात्** जाड्येन वा बद्धः।
	(ख) **धूमादग्निमान्** ।
	(ग) नास्ति घटो**ऽनुपलब्धेः**
86. पृथग्विनानानाभिस्तृतीयाऽन्यतरस्याम्	(क) पृथक् **रामेण रामात् रामं** वा।
	(ख) विना **रामेण रामात् रामं** वा।
	(ग) नाना **रामेण रामात् रामं** वा ।
87. करणे च स्तोकाल्पकृच्छ्रकतिपयस्यासत्त्ववचनस्य	**स्तोकेन स्तोकात्** वा मुक्तः
88. दूरान्तिकार्थेभ्यो द्वितीया च	क. ग्रामस्य **दूरं दूरात् दूरेण** वा
(द्वितीया, तृतीया, पञ्चमी का विधान)	ख. ग्रामस्य **अन्तिकम् अन्तिकात् अन्तिकेन** वा।

षष्ठीविभक्तिः

सूत्र	उदाहरण
89. षष्ठी शेषे	
(क) स्वस्वामिभावसम्बन्धः	(क) **राज्ञः** पुरुषः
(ख) कर्तृकारक के शेषत्व विवक्षा में षष्ठी	(ख) **सतां** गतम्
(ग) करणकारक से शेषत्व की विवक्षा में षष्ठी	(ग) **सर्पिषो** जानीते।
(घ) कर्मकारक के शेषत्व की विवक्षा में षष्ठी	(घ) **मातुः** स्मरति।
(ङ) कर्मकारक के शेषत्व की विवक्षा में षष्ठी	(ङ) **एधोदकस्यो**पस्कुरुते।
(च) कर्मत्व के शेष की विवक्षा में षष्ठी	(च) भजे **शम्भो**श्चरणयोः
(छ) करणत्व की शेषत्व विवक्षा में षष्ठी	(छ) **फलानां** तृप्तः ।
90. षष्ठी हेतुप्रयोगे	**अन्नस्य** हेतोर्वसति।
("हैतो" सूत्र द्वारा प्राप्त तृतीया का अपवाद)	
91. सर्वनाम्नस्तृतीया च	(क) **केन हेतुना** वसति।
(विकल्प से तृतीया एवं षष्ठी का विधान)	(ख) **कस्य हेतोः** वसति।
92. निमित्तपर्यायप्रयोगे सर्वासां प्रायदर्शनम् (वा०)	(क) किं निमित्तं वसति। केन निमित्तेन। कस्मै निमित्ताय।
(प्रायशः सभी विभक्तियों का प्रयोग)	(ख) किं कारणम् ,को हेतुः, किं प्रयोजनम्।
	(ग) ज्ञानेन निमित्तेन हरिः सेव्यः।
	(घ) ज्ञानाय निमित्ताय हरिः सेव्यः।
93. षष्ठ्यतसर्थप्रत्ययेन	(क) **ग्रामस्य** दक्षिणतः।
(पञ्चमी का अपवाद)	(ख) **ग्रामस्य** पुरः।
	(ग) **ग्रामस्य** पुरस्तात् ।
	(घ) **ग्रामस्य** उपरि।
	(ङ) **ग्रामस्य** उपरिष्टात्
94. एनपा द्वितीया	(क) दक्षिणेन **ग्रामं ग्रामस्य** वा।
(विकल्प से द्वितीया, एवं षष्ठी का विधान)	(ख) उत्तरेण **ग्रामं ग्रामस्य** वा।

95. **दूरान्तिकार्थैः षष्ठ्यन्यतरस्याम्** (विकल्प से पञ्चमी और षष्ठी का विधान)	(क) दूरं **ग्रामस्य ग्रामात्** वा। (ख) निकटं **ग्रामस्य ग्रामात्** वा।
96. **ज्ञोऽविदर्थस्य करणे**	**सर्पिषः** ज्ञानम्
97. **अधीगर्थदयेशां कर्मणि**	क. **मातुः** स्मरणम् ख. **सर्पिषः** दयनम् ग. **सर्पिषः** इशनम्
98. **कृञः प्रतियत्ने**	एधोदकस्य उपस्करणम्
99. **रुजार्थानां भाववचनानामज्वरेः**	चौरस्य रोगस्य रुजा।
100. **अज्वरिसन्ताप्योरिति वाच्यम् (वा०)**	(क) **रोगस्य** चौरज्वरः (ख) **रोगस्य** चौरसन्तापः
101. **आशिषि नाथः**	**सर्पिषः** नाथनम्
102. **जासिनिप्रहणनाटक्राथपिषां हिंसायाम्** (कर्म से शेषत्व विवक्षा में षष्ठी प्रणिहननम्, निहननम्, प्रहणनम्	(क) **चौरस्य** उज्जासनम् (ख) **चौरस्य** निप्रहणनम् (ग) **चौरस्य** उन्नाटनम् (घ) **चौरस्य** क्राथनम् (ङ) **वृषलस्य** पेषणम् ।
103. **व्यवहृपणोः समर्थयोः**	(क) **शतस्य** व्यवहरणम् (ख) **शतस्य** पणनम्
104. **दिवस्तदर्थस्य (कर्म में षष्ठी)**	**शतस्य** दीव्यति
105. **विभाषोपसर्गे (कर्म में षष्ठी विभक्ति विकल्प से)**	**शतस्य** शतं वा प्रतिदीव्यति।
106. **प्रेष्यब्रुवोर्हविषो देवतासम्प्रदाने**	अग्नये छागस्य हविषः वपायाः मेदसः प्रेष्य अनुब्रूहि वा।
107. **कृत्वोऽर्थप्रयोगे कालेऽधिकरणे** (कालवाचक अधिकरण में शेषत्व की विवक्षा में षष्ठी)	(क) पञ्चकृत्वोऽह्नो भोजनम् (ख) द्विरह्नो भोजनम्
108. **कर्तृकर्मणोः कृति** (अनुक्त कर्त्ता और कर्म में षष्ठी)	(क) **कृष्णस्य** कृतिः। (ख) **जगतः** कर्त्ता कृष्णः।
109. **गुणकर्मणि वेष्यते** (वा.)	नेता **अश्वस्य** स्रुघ्नस्य स्रुघ्नं वा
110. **उभय प्राप्तौ कर्मणि** (कृत् प्रत्यय के योग में कर्त्ता और कर्म दोनों में यदि षष्ठी प्राप्त हो, तो कर्म में ही षष्ठी हो)	आश्चर्यो गवां दोहः अगोपेन
111. **स्त्रीप्रत्यययोरकाकारयोर्नायं नियमः** (वा०)	भेदिका बिभित्सा वा रुद्रस्य जगतः।
112. **शेषे विभाषा** (वा०)	(क) विचित्रा जगतः कृतिः हरेः हरिणा वा। (ख) शब्दानाम् अनुशासनम् आचार्येण आचार्यस्य वा।
113. **क्तस्य च वर्तमाने**	**राज्ञां** मतः बुद्धः पूजितः वा।
114. **अधिकरणवाचिनश्च** (अधिकरणवाचक क्त प्रत्यय के योग में अनुक्त कर्त्ता और कर्म में षष्ठी विभक्ति)	(क) **इदम्** एषाम् आसितम् (ख) **इदम्** एषां शयितम् (ग) इदम् **एषां** गतम् (घ) इदम् **एषां** भुक्तम्
115. **न लोकाव्ययनिष्ठाखलर्थतृनाम् ।**	(क) कुर्वन् कुर्वाणो वा सृष्टिं हरिः।

सूत्र	उदाहरण
	(ख) हरिं दिदृक्षुः।
	(ग) हरिम् अलङ्करिष्णुः।
	(घ) दैत्यान् घातुकः हरिः।
116. कमेरनिषेधः (वा.)	(क) लक्ष्म्याः कामुकः हरिः।
	(ख) जगत्सृष्ट्वा सुखं कर्तुम् ।
	(ग) विष्णुना हता दैत्याः ।
	(घ) दैत्यान् हतवान् विष्णुः ।
	(ङ) ईषत्करः प्रपञ्चः हरिणः।
	(च) सोमं पवमानः
	(छ) आत्मानं मण्डयमानः
	(ज) वेदमधीयन्
	(झ) कर्त्ता लोकान् ।
117. द्विषः शतुर्वा (वा.) (षष्ठी का निषेध विकल्प से)	मुरस्य मुरं वा द्विषन् ।
118. अकेनोर्भविष्यदाधमर्ण्ययोः (षष्ठी का निषेध)	(क) सतः पालकोऽवतरति।
	(ख) व्रजं गामी
	(ग) शतं दायी
119. कृत्यानां कर्त्तरि वा (अनुक्त कर्त्ता मे षष्ठी विकल्प से)	(क) मया मम वा सेव्यः हरिः।
	(ख) नेतव्याः व्रजं गावः कृष्णेन ।
120. तुल्यार्थैरतुलोपमाभ्यां तृतीयान्यतरस्याम् । (तृतीया और षष्ठी विकल्प से)	तुल्यः सदृशः समो वा कृष्णस्य कृष्णेन वा ।
121. चतुर्थी चाशिष्यायुष्यमद्रभद्रकुशलसुखार्थहितैः (चतुर्थी और षष्ठी)	आयुष्यं चिरञ्जीवितं कृष्णाय कृष्णस्य वा भूयात्

सप्तमी विभक्तिः

सूत्र	उदाहरण
122. आधारोऽधिकरणम् सप्तम्यधिकरणे च। (सप्तमी विभक्ति)	(क) **कटे** आस्ते। (औपश्लेषिक आधार)
	(ख) **स्थाल्यां** पचति। (औपश्लेषिक आधार)
	(ग) **मोक्षे** इच्छा अस्ति। (वैषयिक आधार)
	(घ) **सर्वस्मिन्** आत्मा अस्ति। (अभिव्यापक आधार)
	(ङ) **तिलेषु** तैलम् (अभिव्यापक आधार)
	(च) **दध्नि** सर्पिः (अभिव्यापक आधार)
	(छ) वनस्य **दूरे अन्तिके** वा ।
123. क्तस्येन्विषयस्य कर्मण्युपसंख्यानम् (वा.)	(क) अधीती **व्याकरणे** ।
124. साध्वसाधुप्रयोगे च (वा.)	(क) साधुः कृष्णः **मातरि**
	(ख) असाधुः कृष्णः **मातुले**
125. निमित्तात् कर्मयोगे (वा.)	**चर्मणि** द्वीपिनं हन्ति ।
	दन्तयोर्हन्ति कुञ्जरम् ।
	केशेषु चमरीं हन्ति ।
	सीम्नि पुष्कलको हतः ।

सूत्र	उदाहरण
126. **यस्य च भावेन भावलक्षणम्**	(क) **गोषु** दुह्यमानासु गतः ।
(सति सप्तमी, भावे सप्तमी)	(ख) **ब्राह्मणेषु** अधीयानेषु गतः ।
127. **अर्हाणां कर्तृत्वे अनर्हाणामकर्तृत्वे**	(क) सत्सु तरत्सु असन्तः आसते ।
तद्वैपरीत्ये च (वा.)	(ख) असत्सु तिष्ठत्सु सन्तः तरन्ति ।
	(ग) सत्सु तिष्ठत्सु असन्तः तरन्ति ।
	(घ) असत्सु तरत्सु सन्तः तिष्ठन्ति ।
128. **षष्ठी चानादरे**	**रुदति रुदतः** वा प्राव्राजीत् ।
(षष्ठी और सप्तमी)	
129. **स्वामीश्वराधिपतिदायादसाक्षिप्रतिभूप्रसूतैश्च** (षष्ठी और सप्तमी)	(क) **गवां** स्वामी; **गोषु** स्वामी ।
	(ख) **गवाम्** ईश्वरः ; **गोषु** ईश्वरः
	(ग) **गवाम्** अधिपतिः, **गोषु** अधिपतिः
	(घ) **गवां** दायादः ; **गोषु** दायादः ।
	(ङ) **गवां** साक्षी, **गोषु** साक्षी ।
	(च) **गवां** प्रतिभूः **गोषु** प्रतिभूः ।
	(छ) **गवां** प्रसूतः **गोषु** प्रसूतः ।
130. **आयुक्तकुशलाभ्यां चासेवायाम् ।** (षष्ठी और सप्तमी)	आयुक्तः कुशलः वा **हरिपूजने** हरिपूजनस्य वा।
131. **यतश्च निर्धारणम्** (षष्ठी और सप्तमी)	
(जाति)	(क) **नृणां नृषु** वा द्विजः श्रेष्ठः।
(गुण)	(ख) **गवां गोषु** वा कृष्णा बहुक्षीरा।
(क्रिया)	(ग) **गच्छतां गच्छत्सु** वा धावन् शीघ्रः।
(संज्ञा)	(घ) **छात्राणां छात्रेषु** वा मैत्रः पटुः।
132. **पञ्चमी विभक्ते**	माथुराः **पाटलिपुत्रकेभ्यः** आढ्यतराः।
133. **साधुनिपुणाभ्यामर्चायां सप्तम्यप्रतेः**	**मातरि** साधुः निपुणः वा।
134. **अप्रत्यादिभिरिति वक्तव्यम् (वा0)**	साधुः निपुणः वा मातरं प्रति परि अनु वा।
(प्रति, परि, अनु के योग में सप्तमी का निषेध)	
135. **प्रसितोत्सुकाभ्यां तृतीया च** (तृतीया और सप्तमी)	प्रसितः उत्सुकः **हरिणा हरौ** वा.
136. **नक्षत्रे च लुपि** (तृतीया और सप्तमी)	मूलेन आवाहयेत् देवीं श्रवणेन विसर्जयेत्
137. **सप्तमी पञ्चम्यौ कारकमध्ये** (सप्तमी और पञ्चमी)	(क) अद्य भुक्त्वा अयं द्व्यहाद् वा भोक्ता।
	(ख) अयम् इहस्थः क्रोशे क्रोशाद् वा लक्ष्यं विध्येत् ।
	(ग) लोके लोकाद् वा अधिको हरिः
138. **क. अधिरीश्वरे**	(क) उप **परार्धे** हरेर्गुणाः।
ख. **यस्मादधिकं यस्य चेश्वरवचनं तत्र सप्तमी**	(ख) अधि **भुवि** रामः।
(कर्मप्रवचनीय के योग में सप्तमी)	(ग) अधि**रामे** भूः।
139. **विभाषा कृञि**	यदत्र माम् अधिकरिष्यति।

कारक-संज्ञासूत्र-तालिका

'कर्तृसंज्ञा' विधायकसूत्र

1. **स्वतन्त्रः कर्त्ता** (क्रिया के साथ स्वतन्त्र रूप में जिसकी विवक्षा हो, उसे कर्त्ता कहते है)
2. **तत्प्रयोजको हेतुश्च**

'कर्मसंज्ञा' विधायकसूत्र

1. **कर्तुरीप्सिततमं कर्म** (ईप्सिततम की कर्मसंज्ञा)
2. **तथायुक्तं चानीप्सितम्** (अनीप्सित की कर्मसंज्ञा)
3. **अकथितं च** (अपादानादि कारकों की अविवक्षा में कर्मसंज्ञा)
4. **अकर्मकधातुभिर्योगे देशः कालो भावो गन्तव्योऽध्वा च कर्मसंज्ञक इति वाच्यम् (वार्तिक)**
5. **गति-बुद्धि-प्रत्यवसानार्थ-शब्द कर्माकर्मकाणामणि कर्ता स णौ (** अण्यन्तावस्था के कर्ता की ण्यन्तावस्था में कर्मसंज्ञा)
6. **हृक्रोरन्यतरस्याम्** (ण्यन्तावस्था में कर्ता की विकल्प से कर्मसंज्ञा)
7. **अभिवादिदृशोरात्मनेपदे वेति वाच्यम् (वार्तिक)** (विकल्प से कर्मसंज्ञा)
8. **अधिशीङ्स्थासां कर्म** ('आधार' की कर्मसंज्ञा)
9. **अभिनिविशश्च** ('आधार' की कर्मसंज्ञा)
10. **उपान्वध्याङ्वसः** ('आधार' की कर्मसंज्ञा)
11. **क्रुधद्रुहोरुपसृष्टयोः कर्म** (उपसर्ग युक्त 'क्रुध्' और द्रुह धातु के योग में, जिसके प्रति कोप किया जाय,उसकी 'कर्मसंज्ञा)

'करणसंज्ञा' विधायकसूत्र

1. **साधकतमं करणम्** (क्रिया की सिद्धि में अत्यन्त उपकारक कारक की 'करणसंज्ञा')
2. **दिवः कर्म च।** ('कर्मसंज्ञा' और 'करणसंज्ञा')
3. **परिक्रयणे संप्रदानमन्यतरस्याम् ।**
   (परिक्रयण = पारिश्रमिक देकर खरीद लेना, में प्रकृष्ट उपकारक की संप्रदानसंज्ञा विकल्प से। पक्ष में 'करणसंज्ञा')

'सम्प्रदानसंज्ञा' विधायकसूत्र

1. **कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्** (कर्त्ता जिसके साथ सम्बन्ध बनाना चाहता है, उसकी 'सम्प्रदानसंज्ञा')
2. **रुच्यर्थानां प्रीयमाणः** (प्रीयमाण की 'सम्प्रदानसंज्ञा')
3. **श्लाघ-ह्नुङ्-स्था-शपां ज्ञीप्स्यमानः** (ज्ञीप्स्यमान की 'सम्प्रदानसंज्ञा')
4. **धारेरुत्तमर्णः** (उत्तमर्ण = उधार देने वाले की 'सम्प्रदानसंज्ञा')
5. **स्पृहेरीप्सितः** (ईप्सित की 'सम्प्रदानसंज्ञा')
6. **क्रुधद्रुहेर्ष्याऽसूयार्थानां यं प्रति कोपः** (जो कोप का विषय हो, उसकी सम्प्रदानसंज्ञा)
7. **राधीक्ष्योर्यस्य विप्रश्नः** (जिसके विषय में विविध प्रश्न किये जाय, उसकी 'सम्प्रदानसंज्ञा')
8. **प्रत्याङ्भ्यां श्रुवः पूर्वस्य कर्ता** (पूर्व प्रेरणा रूप व्यापार के कर्ता की सम्प्रदानसंज्ञा')
9. **अनुप्रतिगृणश्च** (जो पूर्व व्यापार प्रेरणा का कर्ता हो, उसकी 'सम्प्रदानसंज्ञा')
10. **क्रियया यमभिप्रैति सोऽपि सम्प्रदानम् (वा0)**

'अपादानसंज्ञा' विधायकसूत्र

1. **ध्रुवमपायेऽपादानम्** (ध्रुव या अवधिभूत की अपादानसंज्ञा)
2. **भीत्रार्थानां भयहेतुः** (भय के हेतु की अपादानसंज्ञा)
3. **पराजेरसोढः** (असह्य पदार्थ की अपादानसंज्ञा)
4. **वारणार्थानामीप्सितः** (ईप्सित की अपादानसंज्ञा)
5. **अन्तर्धौ येनादर्शनमिच्छति** (जिससे स्वयं को छिपाना चाहता है,उसकी अपादानसंज्ञा)
6. **आख्यातोपयोगे** (गुरु की अपादानसंज्ञा)

7. **जनिकर्तुः प्रकृतिः** (जनिकर्तुः हेतुरूपकारकस्य अपादानसंज्ञा)
8. **भुवः प्रभवः** (प्रकट होने के स्थान की अपादानसंज्ञा)

'अधिकरणसंज्ञा' विधायक सूत्र

1. **आधारोऽधिकरणम्**
(कर्त्ता और कर्म द्वारा उनमें क्रिया का जो आधार हो,उसकी 'अधिकरणसंज्ञा')

उपपद - द्वितीया विभक्तिः

(क) उभयतः (ख) सर्वतः (ग) धिक्
(घ) उपरि,उपरि (ङ) अध्यधि (च) अधोऽधो
(छ) अभितः (ज) परितः (झ) समया
(ञ) निकषा (ट) हा (ठ) प्रति
(ड) अन्तरा (ढ़) अन्तरेण (ण) पृथक्
(त) विना (थ) नाना

किन कर्मप्रवचनीय के योग में द्वितीया होती है ?

(क) अनु (ख) उप (ग) प्रति
(घ) परि (ड) अभि (च) अधि
(छ) सु (ज) अति (झ) अपि

उपपद-तृतीया विभक्तिः

1. सह, साकम्, सार्धम्, समम्, सत्रा।
2. फल प्राप्ति होने पर कालवाचक, मार्गवाचक, अह्न, क्रोश आदि पदों से तृतीया।
3. प्रकृति आदि गण के शब्दों से तृतीया। जैसे -
प्रकृति, प्राय, गोत्र, सम, विषम, द्विद्रोण, सुखम्, दुःखम्
4. पृथक् , विना, नाना
5. स्तोक, अल्प, कृच्छ्र, कतिपय

उपपद - चतुर्थी-विभक्तिः

(क) नमः (ख) स्वस्ति (ग) स्वाहा (घ) स्वधा (ङ) अलम् (च) वषट्

उपपद - पञ्चमी-विभक्तिः

(क) अन्य (ख) आरात् (ग) इतर (घ) ऋते (ङ) दिक्शब्द
(च) प्राक् (छ) प्रत्यक् (ज) पूर्वम् (झ) दक्षिणा (ज) दक्षिणाहि
(ट) प्रभृति (ठ) आरभ्य (ड) पृथक् (ढ) विना (ण) नाना (त) स्तोक
(थ) अल्प (द) कृच्छ्र (ध) कतिपय
(न) दूर एव अन्तिक (समीप) अर्थ वाले शब्दों से
इन कर्मप्रवचनीय के योग में पञ्चमी विभक्ति होती है– अप, परि, आङ्, और प्रति।

उपपद-षष्ठी विभक्तिः

दक्षिणतः, पुरः पुरस्तात् उपरि, उपरिष्टात् दक्षिणेन
दूर और अन्तिक (निकट) अर्थ वाले शब्दों के योग में षष्ठीविभक्ति।
तुल्यार्थक शब्द - तुल्य, सदृश, सम आदि के योग में षष्ठीविभक्ति

उपपद - सप्तमी विभक्तिः

साधु, निपुण

केवलसमासः ''विशेषसंज्ञा-विनिर्मुक्तः केवलसमासः''

क्र०	सामासिक-पदम्	अर्थः	लौकिकविग्रहः	अलौकिक-विग्रहः	समासविधायक सूत्रम्
1.	भूतपूर्वः वागर्थाविव	जो पहले हुआ हो वाणी और अर्थ की तरह	पूर्वं भूतः वागर्थौ इव	पूर्व अम् भूत सु वागर्थ औ इव	''सह सुपा'' इवेन समासो विभक्त्यलोपश्च (वा०)

1. पूर्वम् अदृष्टः = अदृष्टपूर्वः
2. पूर्वम् अभूतः = अभूतपूर्वः
3. न एकः = नैकः
4. नैकधा, नसंहत्ताः, नभिन्नवृत्तयः
5. आजन्मशुद्धानाम्, आसमुद्रक्षितीशानाम्
6. उत्तम ऋणे = उत्तमर्णः (ऋण देने वाला)
7. अधम ऋणे = अधमर्णः (ऋण लेने वाला)
8. निसर्गेण निपुणः = निसर्गनिपुणः (स्वभाव से चतुर)
9. प्रकृत्या वक्रः = प्रकृतिवक्रः (स्वभाव से टेढ़ा)
10. विस्पष्टं कटुकम् = विस्पष्टकटुकम् (स्पष्ट रूप से कटु)
11. अवश्यं स्तुत्यः = अवश्यस्तुत्यः
12. जीमूतस्य इव = जीमूतस्येव

अव्ययीभावसमासः (पूर्वपदार्थप्रधानः अव्ययीभावः)

सूत्रम्–

''अव्ययं विभक्ति - समीप - समृद्धि - व्यृद्ध्यर्थाभावात्ययासम्प्रति - शब्दप्रादुर्भाव - पश्चाद्यथानुपूर्व्य - यौगपद्य - सादृश्य - सम्पत्ति - साकल्यान्तवचनेषु''

क्र०	सामासिकदपदम्	अर्थ	लौकिकविग्रहः	अलौकिकविग्रहः	विशेषः
1.	**अधिहरि**	हरि में (विभक्ति अर्थ में)	हरौ इति	हरि ङि अधि	**अतिमालम्**
2.	**अधिगोपम्**	गोप में (विभक्ति अर्थ में)	गोपि इति	गोपा ङि अधि	**अतिखट्वम्**
3.	**उपकृष्णम्**	कृष्ण के समीप (समीप अर्थ में)	कृष्णस्य समीपम्	कृष्ण ङस् उप	**उपकूपम्, उपवृक्षम्**
4.	**सुमद्रम्**	मद्रदेशवासियों की समृद्धि ('समृद्धि' के अर्थ में)	मद्राणां समृद्धिः	मद्र आम् सु	भिक्षाणां समृद्धिः **सुभिक्षम्**
5.	**दुर्यवनम्**	यवनों की समृद्धि का अभाव (वृद्धि का अभाव अर्थ में)	यवनानां व्यृद्धिः	यवन आम् दुर्	शकानां व्यृद्धिः **दुःशकम्**
6.	**निर्मक्षिकम्**	मक्खियों का अभाव (अभाव अर्थ में)	मक्षिकाणाम् अभावः	मक्षिका आम् निर्	मशकानाम् अभावः **निर्मशकम्,** विघ्नानाम् अभावः **निर्विघ्नम्**
7.	**अतिहिमम्**	हिम का अत्यय = नाश (अत्यय अर्थ में)	हिमस्य अत्ययः	हिम ङस् अति	शीतस्य अत्ययः **अतिशीतम्**
8.	**अतिनिद्रम्**	निद्रा इस समय उचित नहीं है 'असम्प्रति' इस समय उचित नहीं अर्थ में)	निद्रा सम्प्रति न युज्यते	निद्रा ङस् अति	कम्बलं सम्प्रति न युज्यते **अतिकम्बलम्**
9.	**इतिहरि**	हरि नाम की प्रसिद्धि 'शब्दप्रादुर्भाव' (नाम की प्रसिद्धि अर्थ में)	हरिशब्दस्य प्रकाशः	हरि ङस् इति	(i) पाणिनि शब्दस्य प्रकाशः-**इतिपाणिनि** (ii) ज्ञानशब्दस्य प्रकाशः-**इतिज्ञानम्**
10.	**अनुविष्णु**	विष्णु के पीछे ('पश्चात्' अर्थ में)	विष्णोः पश्चात्	विष्णु ङस् अनु	**अनुरथम्, अनुशिष्यम्, अनुगोपालम्**
11.	**अनुरूपम्**	रूप के योग्य ('यथा' के योग्यता अर्थ में समास)	रूपस्य योग्यम्	रूप ङस् अनु	**अनुगुणम् अनुलेखम् अनुविद्यालयम्**
12.	**प्रत्यर्थम्**	प्रत्येक अर्थ के प्रति ('यथा' के वीप्सा अर्थ में समास)	अर्थम् अर्थं प्रति	अर्थ अम् प्रति	(i) छात्रं छात्रं प्रति **प्रतिच्छात्रम्** (ii) जनं जनं प्रति **प्रतिजनम्** (iii) गृहं गृहं प्रति **प्रतिगृहम्**

क्र0	सामासिकदपदम्	अर्थ	लौकिकविग्रहः	अलौकिकविग्रहः	विशेषः
13.	**यथाशक्ति**	शक्ति के अनुसार अर्थात् शक्ति के उल्लंघन के बिना (पदार्थानतिवृत्ति अर्थात् पद के अर्थ का उल्लंघन न करना - इस अर्थ में समास)	शक्तिम् अनतिक्रम्य	शक्ति अम् यथा	(i) बुद्धिम् अनतिक्रम्य **यथाबुद्धि** (ii) ज्ञानम् अनतिक्रम्य **यथाज्ञानम्**
14.	**सहरि**	हरि के सदृश (यथा के सदृश अर्थ में)	हरेः सादृश्यम्	हरि ङस् सह	''अव्ययं विभक्तिसमीप ...." इस सूत्र से समास
15.	**अनुज्येष्ठम्**	ज्येष्ठ के क्रम से (आनुपूर्व्य अर्थ में)	ज्येष्ठस्य आनुपूर्व्येण	ज्येष्ठ ङस् अनु	वृद्धस्य आनुपूर्व्येण अनुवृद्धम्
16.	**सचक्रम्**	चक्र के साथ एक ही काल में ('यौगपद्य' एक साथ-एक ही काल में-इस अर्थ में समास)	चक्रेण युगपत्	चक्र टा सह	''अव्ययं विभक्ति समीप ....." इस सूत्र से समास
17.	**ससखि**	सखा के समान (सादृश्य अर्थात् समान अर्थ में समास)	सदृशः सख्या	सखि टा सह	''अव्ययं विभक्ति....." सूत्र से समास
18.	**सक्षत्रम्**	क्षत्रियों के अनुरूप ('सम्पत्ति' अर्थ में समास)	क्षत्राणां सम्पत्तिः	क्षत्र आम् सह	''अव्ययं विभक्ति...." सूत्र से समास
19.	**सतृणम् (अत्ति)**	तिनके को भी छोड़े बिना सम्पूर्ण खाता है ('साकल्य' अर्थात् सम्पूर्ण अर्थ में समास)	तृणम् अपि अपरित्यज्य	तृण टा सह	''अव्ययं विभक्ति....." सूत्र से समास
20.	**साग्नि (अधीते)**	अग्निग्रन्थ की समाप्ति तक पढ़ता है ('अन्त' अर्थात् यहाँ तक-इस अर्थ में समास)	अग्निग्रन्थ-पर्यन्तम्	अग्नि टा सह	''अव्ययं विभक्ति....." सूत्र से समास
21.	**पञ्चगङ्गम्**	पाँच गङ्गाओं का समूह	पञ्चानां गङ्गानां समाहारः	पञ्चन् आम् गङ्गा आम्	**''नदीभिश्च''** सूत्र से समास
22.	**द्वियमुनम्**	दो यमुना नदी धाराओं का समूह	द्वयोर्यमुनयोः समाहारः	द्वि ओस् यमुना ओस्	**''नदीभिश्च''** सूत्र से समास
23.	**उपशरदम्**	शरद् ऋतु के समीप वाली ऋतु ('समीप' अर्थ में समास)	शरदः समीपम्	शरद् ङस् उप	''अव्ययं विभक्ति-समीप-...." सूत्र से समास
24.	**प्रतिविपाशम्**	विपाशा नदी के सम्मुख ('सम्मुख' इस अर्थ में समास)	विपाशं विपाशं प्रति (विपशायाः अभिमुखम्)	विपाश अम् प्रति	''अव्ययं विभक्ति-समीप..." इस सूत्र समास
25.	**उपजरसम्**	बुढ़ापे के निकट ('समीप' अर्थ में समास)	जरायाः समीपम्	जरा ङस् उप	''अव्ययं विभक्ति...." इस सूत्र से समास
26.	**उपराजम्**	राजा के समीप ('समीप' अर्थ में समास)	राज्ञः समीपम्	राजन् ङस् उप	''अव्ययं विभक्ति....." इस सूत्र से समास
27.	**अध्यात्मम्**	आत्मा में, आत्मा के विषय में ('विभक्ति' अर्थ में समास)	आत्मनि	आत्मन् ङि अधि	''अव्ययं विभक्ति...." सूत्र से समास
28.	**उपचर्मम्/उपचर्म**	चमड़े के समीप ('समीप' अर्थ में (समास)	चर्मणः समीपम्	चर्मन् ङस् उप	''अव्ययं विभक्ति...." 'टच्' प्रत्यय होने पर उपचर्मम्
29.	**उपसमिधम्/ उपसमित्**	समिधा के पास = समिधा हवन की लकड़ी ('समीप' इस अर्थ में समास)	समिधः समीपम्	समिध ङस् उप	'टच्' प्रत्यय न होने पर उपसमित्

तत्पुरुषसमासः ''उत्तरपदार्थप्रधानः तत्पुरुषः''

क्र0	सामासिकपदम्	अर्थः	लौकिकविग्रहः	अलौकिक विग्रहः	सामासिक-सूत्रम्
1.	**कृष्णाश्रितः (हरिश्रितः) (लक्ष्मीश्रितः)**	कृष्ण का आश्रय लिया हुआ	कृष्णं श्रितः	कृष्ण अम् + श्रित सु	**''द्वितीया श्रितातीतपतितगतात्यस्त प्राप्तापन्नैः''** सूत्र से द्वितीया तत्पुरुष
2.	**अरण्यातीतः**	वन को पार किया हुआ	अरण्यम् अतीतः	अरण्य अम् + अतीत सु	**''द्वितीया श्रितातीत....''** सूत्र से द्वितीया तत्पुरुषसमास
3.	**कूपपतितः**	कुएँ में गिरा हुआ	कूपं पतितः	कूप अम् + पतित सु	**''द्वितीया श्रितातीतपतित.....''** सूत्र से द्वितीयातत्पुरुष
4.	**ग्रामगतः**	गाँव गया हुआ	ग्रामं गतः	ग्राम अम् + गत सु	**''द्वितीया श्रितातीत....''** सूत्र से द्वितीयातत्पुरुष
6.	**दुःखापन्नः**	दुःख को प्राप्त हुआ	दुःखम् आपन्नः	दुःख अम् + आपन्न सु	**''द्वितीया श्रितातीत .....''** सूत्र से द्वितीयातत्पुरुष
7.	**शङ्कुलाखण्डः**	सरोते से किया गया टुकड़ा	शङ्कुलया खण्डः	शङ्कुला टा + खण्ड सु	**''तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन''** सूत्र से तृतीया तत्पुरुष
8.	**सुखप्राप्तः**	सुख को पाया हुआ	सुखं प्राप्तः	सुख अम् + प्राप्त सु	''द्वितीया श्रितातीत......''
9.	**विद्यार्थः**	विद्या से प्रयोजन	विद्यया अर्थः	विद्या टा + अर्थ सु	**''तृतीया तत्कृतार्थेन....''** सूत्र से तृतीया तत्पुरुष (**धनार्थः, हिरण्यार्थः**)
10.	**हरित्रातः**	हरि के द्वारा रक्षित	हरिणा त्रातः	हरि टा + त्रात सु	**''कर्तृकरणे कृता बहुलम्''** इस सूत्र से तृतीयातत्पुरुष
11.	**नखभिन्नः**	नाखूनों से चीरा गया	नखैः भिन्नः	नख भिस् + भिन्न सु	**''कर्तृकरणे कृता बहुलम्''** इस सूत्र से तृतीयातत्पुरुष
12.	**नखनिर्भिन्नः**	नखों से फाडा गया	नखैः निर्भिन्नः	नख भिस् + निर्भिन्न सु	**'कृद्ग्रहणे गतिकारक-पूर्वस्यापि ग्रहणम्'** इससे नि उपसर्ग लगने पर भी समास का ग्रहण हुआ
13.	**यूपदारु (गृहदारु, कङ्कण-सुवर्णम्)**	खम्भे के लिए लकड़ी	यूपाय दारु	यूप ङे + दारु सु	**''चतुर्थी तदर्थार्थबलिहित सुखरक्षितैः''** इस सूत्र से चतुर्थीतत्पुरुष
14.	**द्विजार्थः**	ब्राह्मण के लिए (दान)	द्विजाय अयम्	द्विज ङे + अर्थ सु	**''चतुर्थी तदर्थार्थ....''** सूत्र से विकल्प तथा **''अर्थेन नित्य समासो विशेष्यलिङ्गता चेति वक्तव्यम्''** इस वार्तिक से नित्यसमास।
15.	**भूतबलिः**	भूतों के लिए बलि	भूतेभ्यो बलिः	भूत भ्यस् + बलि सु	**''चतुर्थी तदर्थार्थबलिहित सुखरक्षितैः''** सूत्र से चतुर्थी तत्पुरुष
16.	**गोहितम्**	गायों का हित	गोभ्यो हितम्	गो भ्यस् + हित सु	**''चतुर्थी तदर्थार्थबलिहित सुखरक्षितैः''** सूत्र से समास। इसी तरह **'गोसुखम्''गोरक्षितम्** आदि
17.	**चोरभयम्**	चोर से डर	चोरात् भयम्	चोर ङसि + भय सु	**'पञ्चमी भयेन'** सूत्र से समास। **वृकभीः, भयभीतः, सिंहभीतिः।**

क्र0	सामासिकपदम्	अर्थ	लौकिकविग्रहः	अलौकिक विग्रहः	सामासिक-सूत्रम्
18.	**स्तोकान्मुक्तः**	थोड़े से मुक्त हुआ	स्तोकात् मुक्तः	स्तोक ङसि + मुक्त सु	"**स्तोकान्तिकदूरार्थकृच्छ्राणि क्तेन**" सूत्र से अलुक् समास।
19.	**अन्तिकादागतः**	समीप से आया हुआ	अन्तिकाद् आगतः	अन्तिक ङसि + आगत सु	"**स्तोकान्तिकदूरार्थकृच्छ्राणि क्तेन**" सूत्र से अलुक् समास।
20.	**अभ्याशादागतः**	समीप से आया हुआ	अभ्याशात् आगतः	अभ्याश ङसि + आगत सु	"**स्तोकान्तिकदूरार्थकृच्छ्राणि क्तेन**" सूत्र से अलुक् समास।
21.	**दूरादागतः**	दूर से आया हुआ	दूरात् आगतः	दूर ङसि + आगत सु	'**स्तोकान्तिकदूरार्थ....**' सूत्र से अलुक् समास
22.	**कृच्छ्रादागतः**	कष्ट से आया हुआ	कृच्छ्रात् आगतः	कृच्छ्र ङसि + आगत सु	"**स्तोकान्तिक......**" सूत्र से समास
23.	**राजपुरुषः**	राजा का आदमी/सेवक	राज्ञः पुरुषः	राजन् ङस् + पुरुष सु	'**षष्ठी**' सूत्र से षष्ठी तत्पु0 समास।
24.	**आत्मज्ञानम्**	आत्मा का ज्ञान	आत्मनः ज्ञानम्	आत्मन् ङस् + ज्ञान सु	'**षष्ठी**' सूत्र से षष्ठी तत्पु0 समास।
25.	**मनोविकारः**	मन का विकार	मनसः विकारः	मनस् ङस् + विकार सु	'**षष्ठी**' सूत्र से षष्ठी तत्पु0 समास
26.	**सत्सङ्गतिः**	सज्जनों की सङ्गति	सतां सङ्गतिः	सत् आम् + सङ्गति सु	'**षष्ठी**' सूत्र से षष्ठी तत्पु0 समास
27.	**पूर्वकायः**	शरीर का अगला आधा भाग	पूर्वं कायस्य	काय ङस् + पूर्व सु	'**पूर्वापराधरोत्तरमेकदेशिनै-काधिकरणे**' सूत्र से तत्पुरुष समास।
28.	**अपरकायः**	शरीर का दूसरा आधा भाग	अपरं कायस्य	काय ङस् + अपर सु	"**पूर्वापरा.....**" सूत्र से समास
29.	**अर्धपिप्पली**	पिप्पली का आधा भाग	अर्धं पिप्पल्याः	पिप्पली ङस् + अर्ध सु	"**अर्धं नपुंसकम्**" सूत्र से समास। इसी तरह "**आसनार्धम् शरीरार्धम् पणार्धम्**" आदि।
30.	**अक्षशौण्डः**	पासाओं से खेलने में चतुर	अक्षेषु शौण्डः	अक्ष् सुप् + शौण्ड सु	"**सप्तमी शौण्डैः**" सूत्र से सप्तमीतत्पुरुष।
31.	**काव्यनिपुणः**	काव्यशास्त्र में निपुण	काव्ये निपुणः	काव्य ङि + निपुण सु	"**सप्तमी शौण्डैः**" सूत्र से सप्तमीतत्पुरुष समास
32.	**वेदविद्वान्**	वेद को जानने वाला	वेदं विद्वान्	वेद अम् + विद्वस् सु	द्वितीया समास करके वेद-विद्वान् शब्द बना है (द्वि. त.)
33.	**मदान्धः**	मद से अन्धा	मदेन अन्धः	मद टा + अन्ध सु	तृतीया तत्पुरुष समास
34.	**धर्मनियमः**	धर्म के लिए नियम	धर्माय नियमः	धर्म ङे + नियम सु	चतुर्थी तत्पुरुष
35.	**द्विजेतरः**	ब्राह्मण से अलग	द्विजाद् इतरः	द्विज ङसि + इतर सु	पञ्चमी तत्पुरुष
37.	**पूर्वेषु-कामशमी**	पूर्वेषुकामशमी नामक प्राचीन एक गाँव	पूर्वा चासौ इषुकामशमी	पूर्वा सु + इषुकामशमी सु	दिशावचक तथा संज्ञावाचक होने के कारण "**दिक्सङ्ख्ये संज्ञायाम्**" से समास हुआ।

क्र०	सामासिकपदम्	अर्थ	लौकिकविग्रहः	अलौकिकविग्रहः	सामासिक-सूत्रम्
38.	**सप्तर्षयः**	सात ऋषियों की संज्ञा	सप्त च ते ऋषयः	सप्तन् जस् + ऋषि जस्	**''दिक्सङ्ख्ये संज्ञायाम्''** से तत्पुरुष हुआ।
39.	**पौर्वशालः**	पूर्व दिशा वाली शाला में होने वाली	पूर्वस्यां शालायां भवः	पूर्वा ङि + शाला ङि	**'तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च'** से समास
40.	**पञ्चगवधनः** (द्विगु + बहुव्रीहि)	पाँच गाय धन हैं जिसका वह व्यक्ति	पञ्च गावो धनं यस्य	पञ्चन् जस् + गो जस् धन सु।	**'अनेकमन्यपदार्थे'** सूत्र से बहुव्रीहि
41.	**पञ्चगवम्**	पाँच गायों का समूह	पञ्चानां गवां समाहारः	पञ्चन् आम् + गो आम्	**'तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च'** सूत्र से समास **''संख्यापूर्वो द्विगुः''** से द्विगुसंज्ञा
42.	**नीलोत्पलम्**	नील कमल	नीलम् उत्पलम्/ नीलं च तद् उत्पलम्	नील सु + उत्पल सु	**''विशेषणं विशेष्येण बहुलम्''** से कर्मधारय समास।
43.	**निर्मलगुणाः**	निर्मल गुण	निर्मलाः गुणाः अथवा निर्मलाश्च ते गुणाः	निर्मल जस् + गुण जस्	**'विशेषणं विशेष्येण बहुलम्'** से कर्मधारय समास।
44.	**कृष्ण-चतुर्दशी**	कृष्णपक्ष वाली चतुर्दशी	कृष्णा चतुर्दशी या कृष्णा चासौ चतुर्दशी	कृष्णा सु + चतुर्दशी सु	**'विशेषणं विशेष्येण बहुलम्'** से कर्मधारय समास।
45.	**अखिल-भूषणानि**	सारे आभूषण	'अखिलानि भूषणानि' या अखिलानि च तानि भूषणानि	अखिल जस् + भूषण जस्	**'विशेषणं विशेष्येण बहुलम्'** से कर्मधारय समास।
46.	**कृष्णसर्पः**	काला सर्प	कृष्णः सर्पः या कृष्णश्चासौ सर्पः	कृष्ण सु + सर्प सु	**'विशेषणं विशेष्येण बहुलम्'** से बहुलता के अर्थ में 'नित्य' समास
47.	**घनश्यामः**	बादल की तरह श्याम वर्ण वाले श्रीकृष्ण	घन इव श्यामः	घन सु + श्याम सु	**'उपमानानि सामान्यवचनैः'** सूत्र से समास
48.	**कर्पूरगौरः**	कपूर की तरह श्वेत वर्ण वाला	कर्पूर इव गौरः	कर्पूर सु + गौर सु	**'उपमानानि सामान्यवचनैः'** सूत्र से समास
49.	**शाकपार्थिवः**	शाक को प्रिय मानने वाला राजा	शाकप्रियः पार्थिवः	शाकप्रिय सु + पार्थिव सु	मध्यमपदलोपी समास
50.	**देवब्राह्मणः**	देवता का पूजन करने वाला ब्राह्मण	देवपूजको ब्राह्मणः	देवपूजक सु + ब्राह्मण सु	मध्यमपदलोपी समास
51.	**अब्राह्मणः**	ब्राह्मण से भिन्न, ब्राह्मण जैसा, क्षत्रिय आदि	न ब्राह्मणः	न ब्राह्मण सु	**'नञः' से नञ् तत्पुरुष** समास हुआ
52.	**अनश्वः**	घोड़े से भिन्न घोड़े जैसा गधा, खच्चर आदि	न अश्वः	न अश्व सु	**'नञः'** से नञ् तत्पुरुष समास हुआ
53.	**कुपुरुषः(कुमाता, कुदृष्टिः)**	निन्दित पुरुष	कुत्सितः पुरुषः	कु पुरुष सु	**''कुगतिप्रादयः''** से समास
54.	**ऊरीकृत्य**	स्वीकार करके	ऊरी कृत्वा		**''कुगतिप्रादयः''** से समास
55.	**शुक्लीकृत्य**	सफेद करके या अशुक्ल को शुक्ल करके	अशुक्लं शुक्लं कृत्वा	शुक्ल अम् कृत्वा	**''कुगतिप्रादयः''** से समास

क्र0	सामासिकपदम्	अर्थ	लौकिकविग्रहः	अलौकिक विग्रहः	सामासिक-सूत्रम्
56.	**पटपटाकृत्य**	पटत् पटत् इस प्रकार शब्द करके	पटत् पटत् इति कृत्वा	पटत् पटत् कृ + क्त्वा + डाच्	**'कुगतिप्रादयः'** से समास
57.	**सुपुरुषः**	सुन्दर पुरुष	शोभनः पुरुष	सु पुरुष सु	**''कुगतिप्रादयः''** से 'प्रादिसमास' होगा (ऐसे ही सुराजा, दुर्जनः, दुर्दिनम्)
58.	**प्राचार्यः** (प्रादितत्पुरुष)	दूर गया हुआ आचार्य, श्रेष्ठ आचार्य, अपने विषय में दक्ष या आचार्य का भी आचार्य	प्रगतः आचार्यः	प्र आचार्य सु	**'प्रादयो गताद्यर्थे प्रथमया'** से समास। (इसीतरह प्रपितामहः, विपक्षः, प्रवीरः आदि)
59.	**अतिमालः**	माला का अतिक्रमण करने वाला या सुगन्ध से माला आदि को मात दे चुका कोई पदार्थ	मालाम् अतिक्रान्तः	माला अम् अति	**''अत्यादयः क्रान्ताद्यर्थे द्वितीया'** से समास, (अतिमानुषः अत्यर्थः इत्यादि)
60.	**अवकोकिलः** आदि	कोयली से कूजित प्रदेश	अवक्रुष्टः कोकिलया	कोकिला टा + अव	**''अवादयः क्रुष्टाद्यर्थे तृतीया''** से समास
61.	**पर्यध्ययनः**	अध्ययन से थका हुआ या घबराया हुआ	परिग्लानः अध्ययनाय	अध्ययन ङे + परि	**''पर्यादयो ग्लानाद्यर्थे चतुर्थ्या''** से समास
62.	**निष्कौशाम्बिः**	कौशाम्बी नगरी से निकला हुआ	निष्क्रान्तः कौशाम्ब्याः	कौशाम्बी ङसि + निर्	**'निरादयः क्रान्ताद्यर्थे पञ्चम्या'** इस वा0 से समास
63.	**कुम्भकारः**	घड़े को बनाने वाला	कुम्भं करोति	कुम्भ अम् + कृ	**उपपदमतिङ्** से समास। इसी तरह सूत्रकारः आदि बनता है
64.	**व्याघ्री**	विशेष रूप से सूँघने वाली	विशेषेण जिघ्रती		**'उपपदमतिङ्'** सूत्र से समास
65.	**अश्वक्रीती**	घोड़े के द्वारा खरीदी गई वस्तु भूमि आदि	अश्वेन क्रीता	अश्व टा क्रीत	**'कर्तृकरणे कृताबहुलम्'** से तृतीया तत्पुरुष
66.	**कच्छपी**	कच्छ से पीने वाली	कच्छेन पिबति	कच्छ टा + पा	**उपपदमतिङ्** से समास होता है
67.	**द्वयङ्गुलम्**	दो अंगुल के बराबर नापवाली लकड़ी आदि	द्वे अङ्गुली प्रमाणम् अस्य	द्वि औ + अङ्गुलि औ	**''तद्धितार्थोत्तरपद-समाहारे च''** सूत्र से द्विगुसमास
68.	**निरङ्गुलम्**	निकल गई अंगुली से जो, अंगूठी आदि	निर्गत अङ्गुलिभ्यः	निर् + अङ्गुलि + भ्यस्	**''निरादयः क्रान्ताद्यर्थे पञ्चम्या''** से प्रादि तत्पुरुष
69.	**अहोरात्रः**	दिन - रात	अहन् च रात्रिश्च, अनयोः समाहारः	अहन् सु + रात्रि सु	**'चार्थे द्वन्द्वः'** से द्वन्द्व समास
70.	**सर्वरात्रः**	सारी रात	सर्वा चासौ रात्रिः	सर्वा सु + रात्रि सु	**''विशेषणं विशेष्येण बहुलम्''** से कर्मधारय समास
71.	**पूर्वरात्रः**	रात का पहला भाग	पूर्वं रात्रेः	पूर्व सु + रात्रि ङस्	**पूर्वापराधरोत्तरमेकदेशिनै–काधिकरणे'** से समास हुआ है
72.	**सङ्ख्यातरात्रः**	गिनी गई रात	सङ्ख्याता चासौ रात्रिः	सङ्ख्याता सु + रात्रि सु	**''पूर्वकालैकसर्व जरत्पुराणनवकेवलाः समानाधिकरणेन''** से समास हुआ
73.	**द्विरात्रम्**	दो रातों का समूह	द्वयोः रात्र्योः समाहारः	द्वि ओस् + रात्रि ओस्	**''तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे-च''** से समास हुआ

बहुव्रीहिः ''अन्यपदार्थप्रधानः बहुव्रीहिः''

क्र0	सामासिकपदम्	अर्थः	लौकिकविग्रहः	अलौकिकविग्रहः	सामासिक-सूत्रम्
1.	**कण्ठेकालः**	कण्ठ में काल या नील वर्ण है जिसका वह, (शंकर जी या नीलकण्ठ पंक्षी)	कण्ठे कालो यस्य सः	कण्ठ ङि + काल सु	**'अनेकमन्यपदार्थे'** सूत्र से बहुव्रीहि समास
2.	**प्राप्तोदकः**	प्राप्त हो गया है जल जिसको = ग्राम	प्राप्तं उदकं यं (ग्रामम्)	प्राप्त सु + उदक सु	**''अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
3.	**ऊढरथः**	ढो चुका है रथ जिसने (घोड़े ने)	ऊढः रथः येन	ऊढ सु + रथ सु	**'अनेकमन्यपदार्थे'** सूत्र से बहुव्रीहि समास
4.	**उपहृतपशुः**	जिसको पशु भेंट चढ़ाया गया है वह, (शम्भू के अर्थ में)	उपहृतः पशुः यस्मै (शम्भवे)	उपहृत सु + पशु सु	**'अनेकमन्यपदार्थे'** सूत्र से बहुव्रीहि समास
5.	**दत्तद्रव्यः**	जिसको द्रव्य दिया गया है वह	दत्तं द्रव्यं यस्मै (जनाय)	दत्त सु + द्रव्य सु	**'अनेकमन्यपदार्थे'** सूत्र से बहुव्रीहि समास
6.	**उद्धृतौदना**	निकाल लिया गया है भात जिससे वह (बटलोई)	उद्धृतः ओदनः यस्याः (स्थाल्याः)	उद्धृत सु + ओदन सु	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
7.	**पीताम्बरः**	पीले वस्त्र हैं जिसके वह (विष्णु)	पीतम् अम्बरम् अस्ति यस्य सः (विष्णुः)	पीत सु + अम्बर सु	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
8.	**वीरपुरुषः**	वीर पुरुष है जिस (ग्राम) के	वीराः पुरुषाः सन्ति यस्मिन् (ग्रामे)	वीर जस् + पुरुष जस्	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
9.	**समृद्धपुरुषाणि**	समृद्धपुरुष हैं, जिन नगरों में, वे नगर	समृद्धाः पुरुषाः सन्ति येषु (नगरेषु)	समृद्ध जस् + पुरुष जस्	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
10.	**प्रपतितः**	जिसके पत्ते अच्छी तरह झड़ चुके हैं, वह (वृक्ष)	प्रपतितानि पर्णानि यस्मात् (सः वृक्षः)	प्रपतित जस् + पर्ण जस्	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास (ऐसे ही - विधवा, निर्जनः, निर्गुणः, निष्फलं, निरर्थकः आदि)
11.	**अपुत्रः**	जिसका पुत्र नहीं है वह पुत्रहीन पुरुष	अविद्यमानः पुत्रो यस्य	अविद्यमान सु + पुत्र सु	**नञोऽस्त्यर्थानां वाच्यो वा चोत्तरपद-लोपः** (वा0) (अनाथः, अक्रोधः आदि)
12.	**चित्रगुः**	चितकबरी गायों वाला व्यक्ति	चित्राः गावः यस्य	चित्रा जस् + गो जस्	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
13.	**रूपवद्भार्यः**	रूपवती स्त्री वाला पुरुष	रूपवती भार्या अस्ति यस्य	रूपवती सु + भार्या सु	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
14.	**दीर्घजङ्घः**	लम्बी जाँघ वाला पुरुष	दीर्घे जङ्घे स्तः यस्य (पुरुषस्य)	दीर्घा औ + जङ्घा औ	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास

क्र0	सामासिकपदम्	अर्थः	लौकिकविग्रहः	अलौकिकविग्रहः	सामासिक-सूत्रम्
15.	**सुन्दरभार्यः**	सुन्दरी स्त्री वाला पुरुष	सुन्दरी भार्या अस्ति यस्य	सुन्दरी सु + भार्या सु	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
16.	**कल्याणीपञ्चमाः** (रात्रयः)	जिन रातों में पाँचवीं रात कल्याणदायिनी है, ऐसी सभी रातें	कल्याणी पञ्चमी यासां रात्रीणाम्	कल्याणी सु + पञ्चमी सु	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
17.	**स्त्रीप्रमाणः**	स्त्री जिसके लिए प्रमाण हो, वह पुरुष	स्त्री प्रमाणी यस्य सः	स्त्री सु + प्रमाणी सु	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
18.	**दीर्घसक्थः**	दीर्घ ऊरुओं वाला पुरुष	दीर्घे सक्थिनी स्तः यस्य (पुरुषस्य)	दीर्घ औ + सक्थि औ	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
19.	**जलजाक्षी**	कमल की तरह सुन्दर आँख वाली स्त्री	जलजे इव अक्षिणी यस्याः	जलजा औ + अक्षि औ	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
20.	**द्विमूर्धः**	दो सिर है जिसके वह पुरुष	द्वौ मूर्धानौ यस्य सः	द्वि औ + मूर्धन् औ	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
21.	**त्रिमूर्धः**	तीन सिर हैं जिसके वह पुरुष	त्रयो मूर्धानो यस्य सः	त्रि जस् + मूर्धन् जस्	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
22.	**अन्तर्लोमः**	अन्दर रोम है जिसके ऐसा पुरुष	अन्तर्लोमानि यस्य सः	अन्तर् + लोमन् जस्	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
23.	**बहिर्लोमः**	बाहर रोम है जिसके ऐसा वस्त्र	बहिर्लोमानि यस्य सः	बहिस् + लोमन् जस्	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
24.	**व्याघ्रपात्**	बाघ के पैरों की तरह पैर वाला	व्याघ्र पादौ इव पादौ यस्य सः	व्याघ्रपाद औ + पाद औ	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
25.	**द्विपात्**	दो पैरों वाला पुरुष	द्वौ पादौयस्य सः	द्वि औ पाद औ	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
26.	**सुपात्**	सुन्दर पैरों वाला पुरुष	सु शोभनौ पादौ यस्य सः	सु पाद + औ	**'अनेकमन्य पदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
27.	**उत्काकुत्**	उठे हुए तालु वाला	उद्गतं काकुदं यस्य सः	उत् + काकुद् सु	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
28.	**विकाकुत्**	विकृत तालु वाला पुरुष	विकृतं काकुदं यस्य सः	वि + काकुद् सु	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
29.	**पूर्णकाकुत्, पूर्णकाकुदः**	पूर्ण तालु वाला	पूर्णं काकुदं यस्य सः	पूर्ण सु+काकुद् सु	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
30.	**सुहृत् (सुहृद्मित्रम्)**	शोभन हृदय वाला मित्र	सु शोभनं हृदयं यस्य	सु + हृदय सु	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
31.	**दुर्हृत् (दुहृद्मित्रम्)**	दुष्ट हृदय वाला शत्रु	दुर् दुष्टं हृदयं यस्य	दुर् + हृदय सु	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
32.	**व्यूढोरस्कः**	चौड़ी छाती वाला पुरुष	व्यूढम् उरो यस्य	व्यूढ सु + उरस् सु (पुरुषस्य)	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
33.	**प्रियसर्पिष्कः**	जिसको घी प्रिय हो अर्थात् घी का प्रेमी व्यक्ति	प्रियं सर्पिः यस्य (पुरुषस्य)	प्रिय सु + सर्पिस् सु	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास

क्र0	सामासिकपदम्	अर्थः	लौकिकविग्रहः	अलौकिकविग्रहः	सामासिक-सूत्रम्
34.	**युक्तयोगः**	सफल हुआ है योग जिसका	युक्तो योगो यस्य	युक्त सु + योग सु	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
35.	**कृतकृत्यः**	कर लिया है अपना कर्तव्य जिसने	कृतं कृत्यं येन	कृत सु + कृत्य सु	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
36.	**महायशस्कः, महायशाः**	बड़े यश वाला व्यक्ति	महद् यशः यस्य (पुरुषस्य)	महत् सु + यशस् सु	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास

द्वन्द्व-समासः ''उभयपदार्थप्रधानः द्वन्द्वः''

क्र0	सामासिकपदम्	अर्थः	लौकिकविग्रहः	अलौकिकविग्रहः	सामासिक-सूत्रम्
1.	**धवखदिरौ**	धव और खदिर के वृक्ष	धवश्च खदिरश्च	धव सु खदिर सु	**'चार्थे द्वन्द्वः'** से द्वन्द्वसमास
2.	**रामकृष्णौ**	राम और कृष्ण	रामश्च कृष्णश्च	राम सु कृष्ण सु	**'चार्थे द्वन्द्वः'** से द्वन्द्वसमास
3.	**हरिकृष्णरामाः**	हरि कृष्ण और राम	हरिश्च कृष्णश्च रामश्च	हरि सु कृष्ण सु राम सु	**'चार्थे द्वन्द्वः'** से द्वन्द्वसमास
4.	**संज्ञापरिभाषम्**	संज्ञा और परिभाषा का समूह	संज्ञा च परिभाषा च अनयोः समाहारः	संज्ञा सु परिभाषा सु	**'चार्थे द्वन्द्वः'** से द्वन्द्वसमास
5.	**हस्तचरणम्**	हाथ और पैर	हस्तश्च चरणश्च या हस्तौ च चरणौ च एतेषां समाहारः	हस्त सु चरण सु या हस्त औ चरण औ	**'चार्थे द्वन्द्वः'** से द्वन्द्वसमास
6.	**राजदन्ताः**	दाँतो का राजा अर्थात् ऊपर सामने के दाँत	दन्तानां राजा	दन्त आम् राजन् सु	**'षष्ठी'** सूत्र से तत्पुरुष समास
7.	**धर्मार्थौ/ अर्थधर्मौ**	धर्म और अर्थ	धर्मश्च अर्थश्च	धर्म सु अर्थ सु	**'चार्थे द्वन्द्वः'** से द्वन्द्वसमास
8.	**हरिहरौ**	हरि और हर (विष्णु और शिव)	हरिश्च हरश्च	हरि सु हर सु	**'चार्थे द्वन्द्वः'** से द्वन्द्वसमास
9.	**हरिहरगुरवः**	हरि (विष्णु), हर (शिव) और गुरु	हरिश्च हरश्च गुरुश्च	हरि सु हर सु गुरु सु	**'चार्थे द्वन्द्वः'** से द्वन्द्वसमास
10.	**ईशकृष्णौ**	ईश और कृष्ण	ईशश्च कृष्णश्च	ईश सु कृष्ण सु	**'चार्थे द्वन्द्वः'** से द्वन्द्वसमास
11.	**शिवकेशवौ**	शिव और केशव	शिवश्च केशवश्च	शिव सु केशव सु	**'चार्थे द्वन्द्वः'** से द्वन्द्वसमास
12.	**पितरौ मातापितरौ**	माता और पिता	माता च पिता च	मातृ सु पितृ सु	**'चार्थे द्वन्द्वः'** से द्वन्द्वसमास
13.	**पाणिपादम्**	हाथ और पैर का समूह	पाणी च पादौ च तेषां समाहारः	पाणी औ पाद औ	**'चार्थे द्वन्द्वः'** से द्वन्द्वसमास
14.	**मार्दङ्गिकवैणविकम्**	मृदङ्गवादक और वेणुवादकों का समूह	मार्दङ्गिकाश्च वैणविकाश्च	मार्दङ्गिक जस् + वैणविक जस्	**'चार्थे द्वन्द्वः'** से द्वन्द्व समास
15.	**रथिकाश्वारोहम्**	रथिकों और घुड़सवारों का समूह	रथिकाश्च अश्वारोहाश्च तेषां समाहारः	रथिक जस् अश्वारोह जस्	**'चार्थे द्वन्द्वः'** से द्वन्द्वसमास

क्र0	सामासिकपदम्	अर्थः	लौकिकविग्रहः	अलौकिकविग्रहः	सामासिक-सूत्रम्
16.	**वाक्त्वचम्**	वाणी और त्वचा का समुदाय	वाक् च त्वक् च तयोः समाहारः	वाच् सु त्वच् सु	'**चार्थे द्वन्द्वः**' से द्वन्द्वसमास
17.	**त्वक्स्त्रजम्**	त्वचा और माला का समुदाय	त्वक् च स्त्रक् च तयोः समाहारः	त्वच् सु स्त्रक् सु	'**चार्थे द्वन्द्वः**' से द्वन्द्वसमास
18.	**शमीदृषदम्**	शमी और पत्थर का समुदाय	शमी च दृषत् च तयोः समाहारः	शमी सु दृषद् सु	'**चार्थे द्वन्द्वः**' से द्वन्द्वसमास
19.	**वाक्त्विषम्**	वाणी और कान्ति का समुदाय	वाक् च त्विट् च तयोः समाहारः	वाच् सु त्विष् सु	'**चार्थे द्वन्द्वः**' से द्वन्द्वसमास
20.	**छत्रोपानहम्**	छाते और जूते का समुदाय	छत्रं च उपानहौ च तेषां समाहारः	छत्र सु उपानह् औ	'**चार्थे द्वन्द्वः**' से द्वन्द्वसमास
21.	**प्रावृट्शरदौ**	बिजली और ठण्डी	प्रावृट् च शरच्च	प्रावृट् सु शरत् सु	द्वन्द्वसमास

समासान्ताः

क्र0	सामासिकपदम्	अर्थः	लौकिकविग्रहः	अलौकिकविग्रहः	सामासिक-सूत्रम्
1.	**अर्धर्चः**	ऋचा का आधा भाग	ऋचः अर्धम्	ऋच् ङस् अर्ध सु	'**अर्धं नपुंसकम्**' से समास
2.	**विष्णुपुरम्**	विष्णु की नगरी	विष्णोः पूः	विष्णु ङस् पुर् सु	'**षष्ठी**' से तत्पुरुषसमास
3.	**विमलापं सरः**	निर्मल जल है जिसका ऐसा तालाब	विमला आपो यस्य	विमला जस् अप् जस्	'**अनेकमन्यपदार्थे**' सूत्र से बहुव्रीहि-समास
4.	**राजाधुरा**	राजा का कार्यभार	राज्ञः धूः	राजन् ङस् धुर् सु	'**षष्ठी**' से तत्पुरुष समास
5.	**सखिपथः**	मित्र का रास्ता	सख्युः पन्थाः	सखि ङस् पथिन् सु	'**षष्ठी**' से तत्पुरुष समास
6.	**राम्यपथो देशः**	सुन्दर रास्ता है, जिसका, ऐसा देश	रम्याः पन्थानो यस्य सः	रम्य जस् पथिन् जस्	'**अनेकमन्यपदार्थे**' से बहुव्रीहिसमास
7.	**गवाक्षः**	गाय की आखों जैसी खिड़की, झरोखा	गवाम् अक्षि इव	गो आम् अक्षि सु	'**षष्ठी**' से तत्पुरुष समास
8.	**प्राध्वो रथः**	वह रथ जो मार्ग पर चल पड़ा	प्रगतः अध्वानम्	प्र + अध्वन् अम्	'**अत्यादयः क्रान्ताद्यर्थे द्वितीयया**'' (वा0) से समास
9.	**सुराजा**	अच्छा राजा	शोभनो राजा	सु + राजन् सु	''**कुगतिप्रादयः**'' से तत्पुरुष समास
10.	**अतिराजा**	अच्छा राजा	अतिशयितो राजा	अति + राजन् सु	'**कुगतिप्रादयः**' से तत्पुरुष समास
11.	**परमराजः**	अच्छा राजा या महान् राजा	परमश्चासौ राजा	परम सु + राजन् सु	टच् प्रत्यय से 'परमराजः' बनेगा

समासान्त-प्रत्ययः

क्रं0	समस्तपदम्	समासान्तप्रत्ययः	सूत्रम्	अष्टाध्यायी सन्दर्भ
1.	**प्रतिविपाशम्**	**टच्**	अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्यः	5.4.107
2.	**उपजरसम्**	**टच्**	अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्यः	5.4.107
3.	**उपराजम्**	**टच्**	अनश्च	5.4.108
4.	**अध्यात्मम्**	**टच्**	अनश्च	5.4.108
5.	**उपचर्मम्**	**टच्** (विकल्पेन)	नपुंसकादन्यतरस्याम्	5.4.109
6.	**उपसमिधम्**	**टच्** (विकल्पेन)	झयः	5.4.111
7.	**पौर्वशालः**	**ञ**	दिक्पूर्वपदादसंज्ञायां ञः	4.2.106
8.	**पञ्चगवधनः**	**टच्**	गोरतद्धितलुकि	5.4.92
9.	**पञ्चगवम्**	**टच्**	गोरतद्धितलुकि	5.4.92
10.	**द्व्यङ्गुलम्**	**अच्**	"तत्पुरुषस्याङ्गुलेः संख्याव्ययादेः	5.4.86
11.	**निरङ्गुलम्**	**अच्**	"तत्पुरुषस्याङ्गुलेः संख्याव्ययादेः	5.4.86
12.	**अहोरात्रः**	**अच्**	"अहः सर्वैकदेशसंख्यातपुण्याच्च रात्रेः	5.4.87
13.	**सर्वरात्रः**	**अच्**	"अहः सर्वैकदेशसंख्यातपुण्याच्च रात्रेः"	5.4.87
14.	**संख्यातरात्रः**	**अच्**	"अहः सर्वैकदेशसंख्यातपुण्याच्च रात्रेः"	5.4.87
15.	**द्विरात्रम्**	**अच्**	"अहः सर्वैकदेशसंख्यातपुण्याच्च रात्रेः"	5.4.87
16.	**त्रिरात्रम्**	**अच्**	"अहः सर्वैकदेशसंख्यातपुण्याच्च रात्रेः"	5.4.87
17.	**परमराजः**	**टच्**	"राजाहःसखिभ्यष्टच् "	5.4.91
18.	**महाराजः**	**टच्**	"राजाहःसखिभ्यष्टच् "	5.4.91
19.	**अर्धर्चः**	**अ**	"ऋक्पूरब्धूः पथामानक्षे	5.4.74
20.	**वीरपुरुषकः**	**कप्**	"शेषाद्विभाषा"	5.4.154
21.	**कल्याणीपञ्चमाः(रात्रयः)**	**अप्**	"अप्पूरणीप्रमाण्योः"	5.4.116
22.	**स्त्रीप्रमाणः**	**अप्**	"अप्पूरणीप्रमाण्योः"	5.4.116
23.	**दीर्घसक्थः**	**षच्**	"बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णोः स्वाङ्गात् षच्"	5.4.113
24.	**जलजाक्षी**	**षच्**	"बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णोः स्वाङ्गात् षच्"	5.4.113
25.	**द्विमूर्धः**	**ष**	"द्वित्रिभ्यां ष मूर्ध्नः"	5.4.115
26.	**त्रिमूर्धः**	**ष**	"द्वित्रिभ्यां ष मूर्ध्नः"	5.4.115
27.	**अन्तर्लोमः**	**अप्**	"अन्तर्बहिर्भ्यां च लोम्नः"	5.4.117
28.	**बहिर्लोमः**	**अप्**	"अन्तर्बहिर्भ्यां च लोम्नः"	5.4.117
29.	**व्यूढोरस्कः**	**कप्**	"उरः प्रभृतिभ्यः कप्"	5.4.151
30.	**प्रियसर्पिष्कः**	**कप्**	"उरः प्रभृतिभ्यः कप्"	5.4.151
31.	**महायशस्कः**	**कप्** (विकल्पेन)	'शेषाद्विभाषा"	5.4.154
32.	**वाक्त्वचम्**	**टच्**	"द्वन्द्वाच्चुदषहान्तात् समाहारे"	5.4.106
33.	**त्वक्स्त्रजम्**	**टच्**	"द्वन्द्वाच्चुदषहान्तात् समाहारे"	5.4.106
34.	**शमीदृषदम्**	**टच्**	"द्वन्द्वाच्चुदषहान्तात् समाहारे"	5.4.106
35.	**वाक्त्विषम्**	**टच्**	"द्वन्द्वाच्चुदषहान्तात् समाहारे"	5.4.106
36.	**प्राध्वः**	**अच्**	"उपसर्गादध्वनः	5.4.85
37.	**छत्रोपानहम्**	**टच्**	"द्वन्द्वाच्चुदषहान्तात्समाहारे"	5.4.106
38.	**विष्णुपुरम्**	**अ**	"ऋक्पूरब्धूः पथामानक्षे"	5.4.74
39.	**विमलापम्**	**अ**	"ऋक्पूरब्धूः पथामानक्षे"	5.4.74

क्रं०	समस्तपदम्	समासान्तप्रत्ययः	सूत्रम्	अष्टाध्यायी सन्दर्भ
40.	**राजधुरा**	**अ**	''ऋक्पूरब्धूः पथामानक्षे''	5.4.74
41.	**अक्षधूः**	**अ**	''ऋक्पूरब्धूः पथामानक्षे''	5.4.74
42.	**दृढधूः (अक्षः)**	**अ**	''ऋक्पूरब्धूः पथामानक्षे''	5.4.74
43.	**सखिपथः**	**अ**	''ऋक्पूरब्धूः पथामानक्षे''	5.4.74
44.	**रम्यपथः**	**अ**	''ऋक्पूरब्धूः पथामानक्षे''	5.4.74
45.	**गवाक्षः**	**अच्**	''अक्ष्णोऽदर्शनात्	5.4.76
46.	**सुराजा**	**टच्**	''राजाहःसखिभ्यष्टच् '' **''न पूजनात्''**सूत्र से टच् प्रत्यय का निषेध	5.4.91
47.	**अतिराजा**	**टच्**	''राजाहःसखिभ्यष्टच् '' **''न पूजनात्''**सूत्र से टच् प्रत्यय का निषेध	5.4.91

अव्ययीभावसमास-सूत्रार्थ-तालिका

''अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धिव्यृद्ध्यर्थाभावात्ययासम्प्रतिशब्दप्रादुर्भाव-पश्चाद्यथानुपूर्व्य-यौगपद्य-सादृश्य-सम्पत्तिसाकल्यान्तवचनेषु''

	अर्थ	समास-विग्रह	समासपदम्
*	विभक्त्यर्थे	हरौ इति	**अधिहरि**
*	समीपार्थे	कृष्णस्य समीपम्	**उपकृष्णम्**
*	समृद्ध्यर्थे	मद्राणां समृद्धिः	**सुमद्रम्**
*	व्यृद्ध्यर्थे	यवनानां व्यृद्धिः	**दुर्यवनम्**
*	अर्थाभावार्थे	मक्षिकाणाम् अभावः	**निर्मक्षिकम्**
*	अत्ययार्थे	हिमस्य अत्ययः	**अतिहिमम्**
*	असम्प्रत्यर्थे	निद्रा सम्प्रति न युज्यते	**अतिनिद्रम्**
*	शब्दप्रादुर्भावार्थे	हरि शब्दस्य प्रकाशः	**इतिहरि**
*	पश्चादर्थे	विष्णोः पश्चात्	**अनुविष्णु**
*	यथार्थश्चतुर्धा		
	(क) योग्यतार्थे	रूपस्य योग्यम्	**अनुरूपम्**
	(ख) वीप्सार्थे	अर्थम् अर्थं प्रति	**प्रत्यर्थम्**
	(ग) पदार्थानतिवृत्यर्थे	शक्तिम् अनतिक्रम्य	**यथाशक्ति**
	(घ) सादृश्यार्थे	हरेः सादृश्यम्	**सहरि**
*	आनुपूर्व्यार्थे	ज्येष्ठस्य आनुपूर्व्येण	**अनुज्येष्ठम्**
*	यौगपद्यार्थे	चक्रेण युगपत्	**सचक्रम्**
*	सादृश्यार्थे	सख्या सदृशः	**ससखि**
*	सम्पत्त्यर्थे	क्षत्राणां सम्पत्तिः	**सक्षत्रम्**
*	साकल्यार्थे	तृणम् अपि अपरित्यज्य	**सतृणम्**
*	अन्तार्थे	अग्निग्रन्थपर्यन्तम् (अधीते)	**साग्नि**
*	अवधारणार्थे	यावन्ति नामानि	**यावन्नाम**
*	मर्यादार्थे	आ हिमालयात् (तेन विना इति मर्यादा)	**आहिमालयम्** **(चीन देशः)**
*	अभिविध्यर्थे	आ हिमालयात् (तेन, सह, इति, अभिविधिः)	**आहिमालयम्** **(भारतदेशः)**
*	आभिमुख्यार्थे	अग्निं प्रति	**प्रत्यग्नि**

❑❑

संख्याएँ

1	एकः, एकम् ,एका
2	द्वौ ,द्वे, द्वे
3	त्रयः ,त्रीणि ,तिस्रः
4	चत्वारः, चत्वारि ,चतस्रः
5	पञ्च
6	षट्
7	सप्त
8	अष्ट/अष्टौ
9	नव
10	**दश**
11	एकादश
12	द्वादश
13	त्रयोदश
14	चतुर्दश
15	पञ्चदश
16	षोडश
17	सप्तदश
18	अष्टादश
19	नवदश
20	**विंशतिः**
21	एकविंशतिः
22	द्वाविंशतिः
23	त्रयोविंशतिः
24	चतुर्विंशतिः
25	पञ्चविंशतिः
26	षड्विंशतिः
27	सप्तविंशतिः
28	अष्टाविंशतिः
29	नवविंशतिः
30	**त्रिंशत्**
31	एकत्रिंशत्
32	द्वात्रिंशत्
33	त्रयस्त्रिंशत्
34	चतुस्त्रिंशत्
35	पञ्चत्रिंशत्
36	षट्त्रिंशत्
37	सप्तत्रिंशत्
38	अष्टात्रिंशत्
39	नवत्रिंशत् , एकोनचत्वारिंशत्
40	**चत्वारिंशत्**

41	एकचत्वारिंशत्
42	द्विचत्वारिंशत् , द्वाचत्वारिंशत्
43	त्रिचत्वारिंशत् , त्रयश्चत्वारिंशत्
44	चतुश्चत्वारिंशत्
45	पञ्चचत्वारिंशत्
46	षट्चत्वारिंशत्
47	सप्तचत्वारिंशत्
48	अष्टचत्वारिंशत्, अष्टाचत्वारिंशत्
49	नवचत्वारिंशत् एकोनपञ्चाशत्
50	**पञ्चाशत्**
51	एकपञ्चाशत्
52	द्विपञ्चाशत् , द्वापञ्चाशत्
53	त्रिपञ्चाशत् , त्रयःपञ्चाशत्
54	चतुःपञ्चाशत्
55	पञ्चपञ्चाशत्
56	षट्पञ्चाशत्
57	सप्तपञ्चाशत्
58	अष्टपञ्चाशत्, अष्टापञ्चाशत्
59	नवपञ्चाशत् , एकोनषष्टिः
60	**षष्टिः**
61	एकषष्टिः
62	द्विषष्टिः, द्वाषष्टिः
63	त्रिषष्टिः , त्रयःषष्टिः
64	चतुःषष्टिः
65	पञ्चषष्टिः
66	षट्षष्टिः
67	सप्तषष्टिः
68	अष्टषष्टिः, अष्टाषष्टिः
69	नवषष्टिः , एकोनसप्ततिः
70	**सप्ततिः**
71	एकसप्ततिः
72	द्विसप्ततिः , द्वासप्ततिः
73	त्रिसप्ततिः , त्रयःसप्ततिः
74	चतुःसप्ततिः
75	पञ्चसप्ततिः
76	षट्सप्ततिः
77	सप्तसप्ततिः
78	अष्टसप्ततिः, अष्टासप्ततिः
79	नवसप्ततिः, एकोनाशीतिः
80	**अशीतिः**

81	एकाशीतिः
82	द्व्यशीतिः
83	त्र्यशीतिः
84	चतुरशीतिः
85	पञ्चाशीतिः
86	षडशीतिः
87	सप्ताशीतिः
88	अष्टाशीतिः
89	नवाशीतिः , एकोननवतिः
90	**नवतिः**
91	एकनवतिः
92	द्विनवतिः, द्वानवतिः
93	त्रिनवतिः, त्रयोनवतिः
94	चतुर्नवतिः
95	पञ्चनवतिः
96	षण्णवतिः
97	सप्तनवतिः
98	अष्टनवतिः , अष्टानवतिः
99	नवनवतिः , एकोनशतम्
100.	**शतम्**

एक हजार	-	सहस्रम्
दस हजार	-	अयुतम्
एक लाख	-	लक्षम्
दस लाख	-	नियुतम्, प्रयुतम्।
एक करोड	-	कोटिः
दस करोड	-	दशकोटिः
एक अरब	-	अर्बुदम्
दस अरब	-	दशार्बुदम्
एक खरब	-	खर्वम्
दस खरब	-	दशखर्वम्
एक नील	-	नीलम्
दस नील	-	दशनीलम्
एक पद्म	-	पद्मम्
दशपद्म	-	दशपद्मम्
एक शंख	-	शंखम्
दस शंख	-	दशशंखम्
महाशंख	-	महाशंखम्

संख्या सम्बन्धी कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य

➢ 101 = एकाधिकं शतम्
102 = द्व्यधिकं शतम्
103 = त्र्यधिकं शतम्
104 = चतुरधिकं शतम्
105 = पञ्चाधिकं शतम् आदि।

➢ 200 = द्विशती/शतद्वयम्
300 = त्रिशती/शतत्रयम्
400 = चतुःशती
500 = पञ्चशती
600 = षट्शती
700 = सप्तशती आदि।

➢ त्रि (3) से लेकर अष्टादशन् (18) तक सभी शब्दों के रूप केवल बहुवचन में चलते हैं।

➢ ''**विंशत्यादिरानवतेः**'' एकोनविंशतिः (19) से नवनवतिः (99) तक सभी शब्द एकवचनान्त स्त्रीलिङ्ग हैं। इनके रूप हमेशा एकवचन में ही चलेंगे।

➢ इकारान्त विंशति, षष्टि, सप्तति, अशीति, नवति – जिन पदों के अन्त में ये पद आयें उनके रूप 'मति' के समान चलेंगे।

➢ तकारान्त त्रिंशत्, चत्वारिंशत्, पञ्चाशत् आदि शब्दों के रूप 'सरित्' के समान चलेंगे।

➢ शतम्, सहस्रम्, अयुतम्, लक्षम्, नियुतम्, प्रयुतम्, आदि शब्द सदा एकवचनान्त नपुंसकलिङ्ग में होते हैं। इनके रूप 'फल' की तरह चलेंगे।

संख्येयशब्दाः/पूरणी-संख्या/क्रमवाचिका संख्या

संख्याशब्दाः	पुँल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
1.	प्रथमः	प्रथमा	प्रथमम्
2.	द्वितीयः	द्वितीया	द्वितीयम्
3.	तृतीयः	तृतीया	तृतीयम्
4.	चतुर्थः	चतुर्थी	चतुर्थम्
	तुरीयः	तुरीया	तुरीयम्
	तुर्यः	तुर्या	तुर्यम्
5.	पञ्चमः	पञ्चमी	पञ्चमम्
6.	षष्ठः	षष्ठी	षष्ठम्
7.	सप्तमः	सप्तमी	सप्तमम्
8.	अष्टमः	अष्टमी	अष्टमम्
9.	नवमः	नवमी	नवमम्
10.	दशमः	दशमी	दशमम्
11.	एकादशः	एकादशी	एकादशम्
12.	द्वादशः	द्वादशी	द्वादशम्
13.	त्रयोदशः	त्रयोदशी	त्रयोदशम्
14.	चतुर्दशः	चतुर्दशी	चतुर्दशम्
15.	पञ्चदशः	पञ्चदशी	पञ्चदशम्
16.	षोडशः	षोडशी	षोडशम्
17.	सप्तदशः	सप्तदशी	सप्तदशम्
18.	अष्टादशः	अष्टादशी	अष्टादशम्
19.	नवदशः	नवदशी	नवदशम्
	एकोनविंशः	एकोनविंशी	एकोनविंशम्
	एकान्नविंशः	एकान्नविंशी	एकान्नविंशम्
	ऊनविंशः	ऊनविंशी	ऊनविंशम्
20.	विंशः	विंशी	विंशम्
	विंशतितमः	विंशतितमी	विंशतितमम्
21.	एकविंशः	एकविंशी	एकविंशम्
	एकविंशतितमः	एकविंशतितमी	एकविंशतितमम्
22.	द्वाविंशः	द्वाविंशी	द्वाविंशम्
	द्वाविंशतितमः	द्वाविंशतितमी	द्वाविंशतितमम्
23.	त्रयोविंशः	त्रयोविंशी	त्रयोविंशम्
	त्रयोविंशतितमः	त्रयोविंशतितमी	त्रयोविंशतितमम्
24.	चतुर्विंशः	चतुर्विंशी	चतुर्विंशम्
	चतुर्विंशतितमः	चतुर्विंशतितमी	चतुर्विंशतितमम्
25.	पञ्चविंशः	पञ्चविंशी	पञ्चविंशम्
	पञ्चविंशतितमः	पञ्चविंशतितमी	पञ्चविंशतितमम्
26.	षड्विंशः	षड्विंशी	षड्विंशम्
	षड्विंशतितमः	षड्विंशतितमी	षड्विंशतितमम्
27.	सप्तविंशः	सप्तविंशी	सप्तविंशम्
	सप्तविंशतितमः	सप्तविंशतितमी	सप्तविंशतितमम्
28.	अष्टाविंशः	अष्टाविंशी	अष्टाविंशम्
	अष्टाविंशतितमः	अष्टाविंशतितमी	अष्टाविंशतितमम्

संख्याशब्दाः	पुँल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
29.	नवविंशः	नवविंशी	नवविंशम्
	नवविंशतितमः	नविंशतितमी	नवविंशतितमम्
	एकोनत्रिंशः	एकोनत्रिंशी	एकोनत्रिंशम्
	एकोनत्रिशत्तमः	एकोनत्रिशत्तमी	एकोनत्रिंशत्तमम्
	ऊनत्रिंशः	ऊनत्रिंशी	ऊनत्रिंशम्
	ऊनत्रिंशत्तमः	ऊनत्रिंशत्तमी	ऊनत्रिंशत्तमम्
	एकान्नत्रिंशः	एकान्नत्रिंशी	एकान्नत्रिंशम्
	एकान्नत्रिंशत्तमः	एकान्नत्रिंशत्तमी	एकान्नत्रिंशतितमम्
30.	त्रिंशः	त्रिंशी	त्रिंशम्
	त्रिंशत्तमः	त्रिंशत्तमी	त्रिंशत्तमम्
31.	एकत्रिंशः	एकत्रिंशी	एकत्रिंशम्
	एकत्रिंशत्तमः	एकत्रिंशत्तमी	एकत्रिंशत्तमम्
32.	द्वात्रिंशः	द्वात्रिंशी	द्वात्रिंशम्
	द्वात्रिंशत्तमः	द्वात्रिंशत्तमी	द्वात्रिंशत्तमम्
33.	त्रयस्त्रिंशः	त्रयस्त्रिंशी	त्रयस्त्रिंशम्
	त्रयस्त्रिंशत्तमः	त्रयस्त्रिंशत्तमी	त्रयस्त्रिंशत्तमम्
34.	चतुस्त्रिंशः	चतुस्त्रिंशी	चतुस्त्रिंशम्
	चतुस्त्रिंशत्तमः	चतुस्त्रिंशत्तमी	चतुस्त्रिंशत्तमम्
35.	पञ्चत्रिंशः	पञ्चत्रिंशी	पञ्चत्रिंशम्
	पञ्चत्रिंशत्तमः	पञ्चत्रिंशत्तमी	पञ्चत्रिंशत्तमम्
36.	षट्त्रिंशः	षट्त्रिंशी	षट्त्रिंशम्
	षट्त्रिंशत्तमः	षट्त्रिंशत्तमी	षट्त्रिंशत्तमम्
37.	सप्तत्रिंशः	सप्तत्रिंशी	सप्तत्रिंशम्
	सप्तत्रिंशत्तमः	सप्तत्रिंशत्तमी	सप्तत्रिंशत्तमम्
38.	अष्टात्रिंशः	अष्टात्रिंशी	अष्टात्रिंशम्
	अष्टात्रिंशत्तमः	अष्टात्रिंशत्तमी	अष्टात्रिंशत्तमम्
39.	नवत्रिंशः	नवत्रिंशी	नवत्रिंशम्
	नवत्रिंशत्तमः	नवत्रिंशत्तमी	नवत्रिंशत्तमम्
	एकोनचत्वारिंशः	एकोनचत्वारिंशी	एकोनचत्वारिंशम्
	एकोनचत्वारिंशत्तमः	एकोनचत्वारिंशत्तमी	एकोनचत्वारिंशत्तमम्
	ऊनचत्वारिंशः	ऊनचत्वारिंशी	ऊनचत्वारिंशम्
	ऊनचत्वारिंशत्तमः	ऊनचत्वारिंशत्तमी	ऊनचत्वारिंशत्तमम्
	एकान्नचत्वारिंशः	एकान्नचत्वारिंशी	एकान्नचत्वारिंशम्
	एकान्नचत्वा- रिंशत्तमः	एकान्नचत्वा- रिंशत्तमी	एकान्नचत्वा- रिंशत्तमम्
40.	चत्वारिंशः	चत्वारिंशी	चत्वारिंशम्
	चत्वारिंशत्तमः	चत्वारिंशत्तमी	चत्वारिंशत्तमम्
41.	एकचत्वारिंशः	एकचत्वारिंशी	एकचत्वारिंशम्
	एकचत्वारिंशत्तमः	एकचत्वारिंशत्तमी	एकचत्वारिंशत्तमम्
42.	द्वाचत्वारिंशः	द्वाचत्वारिंशी	द्वाचत्वारिंशम्
	द्वाचत्वारिंशत्तमः	द्वाचत्वारिंशत्तमी	द्वाचत्वारिंशत्तमम्
	द्विचत्वारिंशः	द्विचत्वारिंशी	द्विचत्वारिंशम्
	द्विचत्वारिंशत्तमः	द्विचत्वारिंशत्तमी	द्विचत्वारिंशत्तमम्

संख्याशब्दाः	पुँल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
43.	त्रयश्चत्वारिंशः	त्रयश्चत्वारिंशी	त्रयश्चत्वारिंशम्
	त्रयश्चत्वारिंशत्तमः	त्रयश्चत्वारिंशत्तमी	त्रयश्चत्वारिंशत्तमम्
	त्रिचत्वारिंशः	त्रिचत्वारिंशी	त्रिचत्वारिंशम्
	त्रिचत्वारिंशत्तमः	त्रिचत्वारिंशत्तमी	त्रिचत्वारिंशत्तमम्
44.	चतुश्चत्वारिंशः	चतुश्चत्वारिंशी	चतुश्चत्वारिंशम्
	चतुश्चत्वारिंशत्तमः	चतुश्चत्वारिंशत्तमी	चतुश्चत्वारिंशत्तमम्
45.	पञ्चचत्वारिंशः	पञ्चचत्वारिंशी	पञ्चचत्वारिंशम्
	पञ्चचत्वारिंशत्तमः	पञ्चचत्वारिंशत्तमी	पञ्चचत्वारिंशत्तमम्
46.	षट्चत्वारिंशः	षट्चत्वारिंशी	षट्चत्वारिंशम्
	षट्चत्वारिंशत्तमः	षट्चत्वारिंशत्तमी	षट्चत्वारिंशत्तमम्
47.	सप्तचत्वारिंशः	सप्तचत्वारिंशी	सप्तचत्वारिंशम्
	सप्तचत्वारिंशत्तमः	सप्तचत्वारिंशत्तमी	सप्तचत्वारिंशत्तमम्
48.	अष्टाचत्वारिंशः	अष्टाचत्वारिंशी	अष्टाचत्वारिंशम्
	अष्टाचत्वारिंशत्तमः	अष्टाचत्वारिंशत्तमी	अष्टाचत्वारिंशत्तमम्
49.	नवचत्वारिंशः	नवचत्वारिंशी	नवचत्वारिंशम्
	नवचत्वारिंशत्तमः	नवचत्वारिंशत्तमी	नवचत्वारिंशत्तमम्
	एकोनपञ्चाशः	एकोनपञ्चाशी	एकोन्नपञ्चाशम्
	एकोनपञ्चाशत्तमः	एकोनपञ्चाशत्तमी	एकोन्नपञ्चाशत्तमम्
	ऊनपञ्चाशः	ऊनपञ्चाशी	ऊनपञ्चाशम्
	ऊनपञ्चाशत्तमः	ऊनपञ्चाशत्तमी	ऊनपञ्चाशत्तमम्
	एकान्नपञ्चाशः	एकान्नपञ्चाशी	एकान्नपञ्चाशम्
	एकान्नपञ्चाशत्तमः	एकान्नपञ्चाशत्तमी	एकान्नपञ्चाशत्तमम्
50.	पञ्चाशः	पञ्चाशी	पञ्चाशम्
	पञ्चाशत्तमः	पञ्चाशत्तमी	पञ्चाशत्तमम्
51.	एकपञ्चाशः	एकपञ्चाशी	एकपञ्चाशम्
	एकपञ्चाशत्तमः	एकपञ्चाशत्तमी	एकपञ्चाशत्तमम्
52.	द्वापञ्चाशः	द्वापञ्चाशी	द्वापञ्चाशम्
	द्वापञ्चाशत्तमः	द्वापञ्चाशत्तमी	द्वापञ्चाशत्तमम्
53.	त्रयःपञ्चाशः	त्रयःपञ्चाशी	त्रयःपञ्चाशत्तमम्
	त्रयःपञ्चाशत्तमः	त्रयःपञ्चाशत्तमी	त्रयःपञ्चाशत्तमम्
54.	चतुःपञ्चाशः	चतुःपञ्चाशी	चतुःपञ्चाशम्
	चतुःपञ्चाशत्तमः	चतुःपञ्चाशत्तमी	चतुःपञ्चाशत्तमम्
55.	पञ्चपञ्चाशः	पञ्चपञ्चाशी	पञ्चपञ्चाशम्
	पञ्चपञ्चाशत्तमः	पञ्चपञ्चाशत्तमी	पञ्चपञ्चाशत्तमम्
56.	षट्पञ्चाशः	षट्पञ्चाशी	षट्पञ्चाशम्
	षट्पञ्चाशत्तमः	षटपञ्चाशत्तमी	षट्पञ्चाशत्तमम्

संख्याशब्दाः	पुँल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
57.	सप्तपञ्चाशः	सप्तपञ्चाशी	सप्तपञ्चाशम्
	सप्तपञ्चाशत्तमः	सप्तपञ्चाशत्तमी	सप्तपञ्चाशत्तमम्
58.	अष्टपञ्चाशः	अष्टपञ्चाशी	अष्टपञ्चाशम्
	अष्टपञ्चाशत्तमः	अष्टपञ्चाशत्तमी	अष्टपञ्चाशत्तमम्
59.	नवपञ्चाशः	नवपञ्चाशी	नवपञ्चाशम्
	नवपञ्चाशत्तमः	नवपञ्चाशत्तमी	नवपञ्चाशत्तमम्
	एकोनषष्टः	एकोनषष्ठी	एकोनषष्टम्
	एकोनषष्टितमः	एकोनषष्टितमी	एकोनषष्टितमम्
	ऊनषष्टः	ऊनषष्टी	ऊनषष्टम्
	ऊनषष्टितमः	ऊनषष्टितमी	ऊनषष्टितमम्
	एकान्नषष्टितमः	एकान्नषष्टितमी	एकान्नषष्टितमम्
	एकान्नषष्टिः	एकान्नषष्टी	एकान्नषष्टम्
60.	षष्टितमः	षष्टितमी	षष्टितमम्
61.	एकषष्टः	एकषष्टी	एकषष्टम्
	एकषष्टितमः	एकषष्टितमी	एकषष्टतमम्
62.	द्वाषष्टः	द्वाषष्टी	द्वाषष्टम्
	द्वाषष्टितमः	द्वाषष्टितमी	द्वाषष्टितमम्
	द्विषष्टः	द्विषष्टी	द्विषष्टम्
	द्विषष्टितमः	द्विषष्टितमी	द्विषष्टितमम्
63.	त्रयष्षष्टः	त्रयष्षष्टी	त्रयष्षष्टम्
	त्रयष्षष्टितमः	त्रयष्षष्टितमी	त्रयष्षष्टितमम्
	त्रिषष्टः	त्रिषष्टी	त्रिषष्टम्
	त्रिषष्टितमः	त्रिषष्टितमी	त्रिषष्टितमम्
64.	चतुष्षष्टः	चतुष्षष्टी	चतुष्षष्टम्
	चतुष्षष्टितमः	चतुष्षष्टितमी	चतुष्षष्टितमम्
65.	पञ्चषष्टः	पञ्चषष्टी	पञ्चषष्टम्
	पञ्चषष्टितमः	पञ्चषष्टितमी	पञ्चषष्टितमम्
66.	षट्षष्टः	षट्षष्टी	षट्षष्टम्
	षट्षष्टितमः	षट्षष्टितमी	षट्षष्टितमम्
67.	सप्तषष्टः	सप्तषष्टी	सप्तषष्टम्
	सप्तषष्टितमः	सप्तषष्टितमी	सप्तषष्टितमम्
68.	अष्टाषष्टः	अष्टाषष्टी	अष्टाषष्टम्
	अष्टषष्टितमः	अष्टषष्टितमी	अष्टषष्टितमम्
69.	नवषष्टः	नवषष्टी	नवषष्टम्
	नवषष्टितमः	नवषष्टितमी	नवषष्टितमम्
	एकोनसप्ततः	एकोनसप्तती	एकोनसप्ततम्
	एकोनसप्ततितमः	एकोनसप्ततितमी	एकोनसप्ततितमम्
	ऊनसप्ततः	ऊनसप्तती	ऊनसप्ततम्
	ऊनसप्ततितमः	ऊनसप्ततितमी	ऊनसप्ततितमम्
	एकान्नसप्ततः	एकान्नसप्तती	एकान्नसप्ततम्
	एकान्नसप्ततितमः	एकान्नसप्ततितमी	एकान्नसप्ततितमम्
70.	सप्ततः	सप्तती	सप्ततम्
	सप्ततितमः	सप्ततितमी	सप्ततितमम्
71.	एकसप्ततः	एकसप्तती	एकसप्ततम्
	एकसप्ततितमः	एकसप्ततितमी	एकसप्ततितमम्

संख्याशब्दाः	पुँल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
72.	द्वासप्ततः	द्वासप्तती	द्वासप्ततम्
	द्वासप्ततितमः	द्वासप्ततितमी	द्वासप्ततितमम्
	द्विसप्ततः	द्विसप्तती	द्विसप्ततम्
	द्विसप्ततितमः	द्विसप्ततितमी	द्विसप्ततितमम्
73.	त्रयस्सप्ततः	त्रयस्सप्तती	त्रयस्सप्ततमम्
	त्रयस्सप्ततितमः	त्रयस्सप्ततितमी	त्रयस्सप्ततितमम्
	त्रिसप्ततः	त्रिसप्तती	त्रिसप्ततम्
	त्रिसप्ततितमः	त्रिसप्ततितमी	त्रिसप्ततितमम्
74.	चतुस्सप्ततः	चतुस्सप्तती	चतुस्सप्ततम्
	चतुस्सप्ततितमः	चतुस्सप्ततितमी	चतुस्सप्ततितमम्
75.	पञ्चसप्ततः	पञ्चसप्तती	पञ्चसप्ततम्
	पञ्चसप्ततितमः	पञ्चसप्ततितमी	पञ्चसप्ततितमम्
76.	षट्सप्ततः	षट्सप्तती	षट्सप्ततम्
	षट्सप्ततितमः	षट्सप्ततितमी	षट्सप्ततितमम्
77.	सप्तसप्ततः	सप्तसप्तती	सप्तसप्ततम्
	सप्तसप्ततितमः	सप्तसप्ततितमी	सप्तसप्ततितमम्
78.	अष्टासप्ततः	अष्टासप्तती	अष्टासप्ततम्
	अष्टासप्ततितमः	अष्टासप्ततितमी	अष्टासप्ततितमम्
	अष्टसप्ततः	अष्टसप्तती	अष्टसप्ततम्
	अष्टसप्ततितमः	अष्टसप्ततितमी	अष्टसप्ततितमम्
79.	नवसप्ततः	नवसप्तती	नवसप्ततम्
	नवसप्ततितमः	नवसप्ततितमी	नवसप्ततितमम्
	एकोनाशीतः	एकोनाशीती	एकोनाशीतम्
	ऊनाशीतः	ऊनाशीती	ऊनाशीतम्
	ऊनाशीतितमः	ऊनाशीतितमी	ऊनाशीतितमम्
	एकान्नाशीतः	एकान्नाशीती	एकान्नाशीतम्
	एकान्नाशीतितमः	एकान्नाशीतितमी	एकान्नाशीतितमम्
80.	अशीतितमः	अशीतितमी	अशीतितमम्
81.	एकाशीतः	एकाशीती	एकाशीतम्
	एकाशीतितमः	एकाशीतितमी	एकाशीतितमम्
82.	द्व्यशीतः	द्व्यशीती	द्व्यशीतम्
	द्व्यशीतितमः	द्व्यशीतितमी	द्व्यशीतितमम्
83.	त्र्यशीतः	त्र्यशीती	त्र्यशीतम्
	त्र्यशीतितमः	त्र्यशीतितमी	त्र्यशीतितमम्
84.	चतुरशीतः	चतुरशीती	चतुरशीतम्
	चतुरशीतितमः	चतुरशीतितमी	चतुरशीतितमम्
85.	पञ्चाशीतः	पञ्चाशीती	पञ्चाशीतम्
	पञ्चाशीतितमः	पञ्चाशीतितमी	पञ्चाशीतितमम्
86.	षडशीतः	षडशीती	षडशीतम्
	षडशीतितमः	षडशीतितमी	षडशीतितमम्
87.	सप्ताशीतः	सप्ताशीती	सप्ताशीतम्
	सप्ताशीतितमः	सप्ताशीतितमी	सप्ताशीतितमम्
88.	अष्टाशीतः	अष्टाशीती	अष्टाशीतम्
	अष्टाशीतितमः	अष्टाशीतितमी	अष्टाशीतितमम्

संख्याशब्दाः	पुँल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
89.	नवाशीतः	नवाशीती	नवाशीतम्
	नवाशीतितमः	नवाशीतितमी	नवाशीतितमम्
	एकोननवतः	एकोननवती	एकोननवतम्
	एकोननवतितमः	एकोननवतितमी	एकोननवतितमम्
	ऊननवतः	ऊननवती	ऊननवतम्
	ऊननवतितमः	ऊननवतितमी	ऊननवतितमम्
	एकान्ननवतः	एकान्ननवती	एकान्ननवतम्
	एकान्ननवतितमः	एकान्ननवतितमी	एकान्ननवतितमम्
90.	नवतितमः	नवतितमी	नवतितमम्
91.	एकनवतः	एकनवती	एकनवतम्
	एकनवतितमः	एकनवतितमी	एकनवतितमम्
92.	द्वानवतः	द्वानवती	द्वानवतम्
	द्वानवतितमः	द्वानवतितमी	द्वानवतितमम्
	द्विनवतः	द्विनवती	द्विनवतम्
	द्विनवतितमः	द्विनवतितमी	द्विनवतितमम्
93.	त्रयोनवतः	त्रयोनवती	त्रयोनवतम्
	त्रयोनवतितमः	त्रयोनवतितमी	त्रयोनवतितमम्
	त्रिनवतः	त्रिनवती	त्रिनवतम्
	त्रिनवतितमः	त्रिनवतितमी	त्रिनवतितमम्
94.	चतुर्नवतः	चतुर्नवती	चतुर्नवतम्
	चतुर्नवतितमः	चतुर्नवतितमी	चतुर्नवतितमम्
95.	पञ्चनवतः	पञ्चनवती	पञ्चनवतम्
	पञ्चनवतितमः	पञ्चनवतितमी	पञ्चनवतितमम्
96.	षण्णवतः	षण्णवती	षण्णवतम्
	षण्णवतितमः	षण्णवतितमी	षण्णवतितमम्
97.	सप्तनवतः	सप्तनवती	सप्तनवतम्
	सप्तनवतितमः	सप्तनवतितमी	सप्तनवतितमम्
98.	अष्टानवतः	अष्टानवती	अष्टानवतम्
	अष्टानवतितमः	अष्टानवतितमी	अष्टानवतितमम्
	अष्टनवतः	अष्टनवती	अष्टनवतम्
	अष्टनवतितमः	अष्टनवतितमी	अष्टनवतितमम्
99.	नवनवतः	नवनवती	नवनवतम्
	नवनवतितमः	नवनवतितमी	नवनवतितमम्
100.	शततमः	शततमी	शततमम्
200.	द्विशततमः	द्विशततमी	द्विशततमम्
300.	त्रिशततमः	त्रिशततमी	त्रिशततमम्
400.	चतुश्शततमः	चतुश्शततमी	चतुश्शततमम्
500.	पञ्चशततमः	पञ्चशततमी	पञ्चशततमम्
1000.	सहस्रतमः	सहस्रतमी	सहस्रतमम्
10,000.	अयुततमः	अयुततमी	अयुततमम्
10,0000.	लक्षतमः	लक्षतमी	लक्षतमम्
10,00000.	प्रयुततमः	प्रयुततमी	प्रयुततमम्
10,000000	कोटितमः	कोटितमी	कोटितमम्

व्याकरणात्मक-टिप्पणी

संस्कृतम् = सम् + कृ + क्त ('सुट्' का आगम)
व्याकरणम् = वि + आङ् + कृ + ल्युट्
श्लोकः = श्लोक् + अच्
सञ्ज्ञा = सम् + ज्ञा + अङ्+ टाप्
सूत्र = सूत्र् + अच्
गणः = गण् + अच्
अतिदेशः = अति + दिश् + घञ्
लिङ्ग = लिङ्ग् + अच्
अनुशासनम् = अनु + शास् + ल्युट्
आगमः = आ + गम् + घञ्
प्रत्यादेशः = प्रति + आङ् + दिश् + घञ्
प्रत्याहारः = प्रति + आङ् + हृ + घञ्
सिद्धिः = सिध् + क्तिन्
प्रकरणम् = प्र + कृ + ल्युट्
उपदेशः = उप + दिश् + घञ्
उच्चारणम् = उत् + चर् + णिच् + ल्युट्
दर्शनम् = दृश् + ल्युट्
अधिकारः = अधि + कृ + घञ्
प्रयत्नः = प्र + यत् + नङ्
नित्यम् = नि + त्यप्
निषेधः = नि + सिध् + घञ्
निपातः = नि + पत् + घञ्
विकल्पः = वि + क्लृप् + घञ्
विकारः = वि + कृ + घञ्
विभाषा = वि + भाष् + अङ् + टाप्
विधायकः = वि + धा + ण्वुल्
स्पर्शः = स्पृश् + घञ्
विवृतम् = वि + वृ + क्त
संवृतम् = सम् + वृ + क्त
संवारः = सम् + वृ + घञ्
विवारः = वि + वृ + घञ्
श्वासः = श्वस् + घञ्
नादः = नद् + घञ्
घोषः = घुष् + घञ्
प्राणः = प्र + अन् + घञ्
उच्चैः = उत् + चि + डैस्
ह्रस्वः = ह्रस् + वत्
दीर्घः = दॄ + घञ्
प्लुतः = प्लु + क्त
विसर्गः = वि + सृज् + घञ्
संयोगः = सम् + युज् + घञ्
सन्निकर्षः = सम् + नि + कृष् + घञ्
संहिता = सम् + धा + क्त + टाप्
निर्दिष्टम् = निर् + दिश् + क्त
प्रकृतिभावः = प्र + कृ + क्तिन् + भू + घञ्
प्रगृह्य = प्र + गृह् + ल्यप्
अभ्यासः = अभि + आङ् + अस् + घञ्
सन्धिः = सम् + धा + कि
अभिहितः = अभि + धा + क्त
अभिप्रायः = अभि + प्र + इ + अच्
अपवादः = अप् + वद् + घञ्
अन्वितः = अनु + इ + क्त
अन्वयः = अनु + इ + अच्
अनुस्वारः = अनु + स्वृ + घञ्
अनुवृत्तिः = अनु + वृत् + क्तिन्
अनुवादः = अनु + वद् + घञ्
अध्याहारः = अधि + आङ् + हृ + घञ्
प्रत्ययः = प्रति + इ + अच्
समासः = सम् + अस् + घञ्
कारकः = कृ + ण्वुल्
कर्त्ता (कर्तृ) = कृ + तृच्
क्रिया = कृ + श् + रिङ् आदेश +इयङ्
कर्म = कृ + मनिन्
करण = कृ + ल्युट्
सम्प्रदानम् = सम् + प्र+दा + ल्युट्
अपादानम् = अप + आङ् + दा + ल्युट्
सम्बन्धः = सम् + बन्ध् + क्त
अधिकरणम् = अधि + कृ + ल्युट्
सम्बोधन = सम् + बुध् + णिच् + ल्युट्
विभक्तिः = वि + भज् + क्तिन्
ईप्सितः = आप् + सन् + क्त
समाहारः = सम् + आङ् + हृ +घञ्
उपसर्जनम् = उप + सृज् + ल्युट्
उपसर्गः = उप + सृज् + घञ्
सर्गः = सृज् + घञ्
उपन्यासः = उप + नि + अस् + घञ्
विरामः = वि + रम् + घञ्
निःश्वासः = निर् + श्वस् + घञ्
अङ्कः = अङ्क + अच्
उच्छ्वासः = उत् + श्वस् + घञ्
उद्योतः = उद् + द्युत् + घञ्
प्रकाशः = प्र + काश् + अच्
रसः = रस् + अच्
अलङ्कारः = अलम् + कृ + घञ्
अनुप्रासः = अनु + प्र + अस् + घञ्
यमकः = यम + कन्

संस्कृत में लिङ्गज्ञान

- पाणिनीय व्याकरण **पञ्चाङ्गव्याकरण** अथवा '**पञ्चपाठी**' के नाम से जाना जाता है। पाणिनीय व्याकरण के पाँच अङ्ग निम्नवत् हैं– 1. सूत्रपाठ 2. धातुपाठ 3. गणपाठ 4. उणादिपाठ तथा 5. लिङ्गानुशासन।
- इन पाँच पाठों में सूत्रपाठ प्रमुख है, तथा शेष चार गौण हैं। इन चारों को '**खिलपाठ**' भी कहा जाता है।
- संस्कृतभाषा में लिङ्गज्ञान अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है, इसीलिए महर्षि पाणिनि अष्टाध्यायी के सूत्रपाठ की तरह ही लिङ्गानुशासन की रचना भी सूत्रात्मक शैली में की। इसमें कुल **191 सूत्र** तथा **6 प्रकरण** है। यथा– 1. स्त्रीलिङ्गप्रकरण 2. पुँल्लिङ्गप्रकरण 3. नपुंसकलिङ्गप्रकरण 4. स्त्रीपुंसप्रकरण 5. पुन्नपुंसकप्रकरण 6. अविशिष्टलिङ्गप्रकरण। आइये संक्षेप में कुछ प्रमुख सूत्रों को हम समझने का प्रयास करते हैं–

सूत्र– 1. **''ऋकारान्ता मातृदुहितृस्वसृयातृननान्दरः''**

सूत्रार्थ– मातृ, दुहितृ, स्वसृ, यातृ तथा ननान्दृ–ये पाँच ऋकारान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं। यातृ के स्थान पर 'पोतृ' पाठ भी प्राप्त होता है।

उदाहरण–

मूलशब्द	प्रथमान्त-रूप		अर्थ
1. मातृ	माता	=	माँ
2. दुहितृ	दुहिता	=	बेटी
3. स्वसृ	स्वसा	=	बहन
4. यातृ	याता	=	देवरानी
5. ननान्दृ	ननान्दा	ननद	

सूत्र– 2. **''अन्यूप्रत्ययान्तो धातुः''**

सूत्रार्थ– अनिप्रत्ययान्त तथा ऊप्रत्ययान्त धातु से निष्पन्न शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं।

उदाहरण– **क. 'अनि' प्रत्ययान्त शब्द**

अवनिः = भूमि तरणिः = नौका, सूर्य
सरणिः = पद्धति रजनिः = रात
धरणिः = पृथिवी आशुशुक्षणिः = अग्नि
धमनिः = नाडी क्षिपणिः = शस्त्र
अशनिः = वज्र भरणिः = एक नक्षत्र

ख. 'ऊ' प्रत्ययान्त शब्द–

चमूः = सेना
तनूः = शरीर
खर्जूः = खाज
वधूः = नवोढास्त्री

सूत्र– 3. **''अशनिभरण्यरणयः पुंसि च''**

सूत्रार्थ– **अशनि, भरणि** तथा **अरणि** शब्द पुँल्लिङ्ग व स्त्रीलिङ्ग दोनों होते हैं। पूर्वसूत्र के द्वारा स्त्रीत्व प्राप्त था। इस सूत्र के द्वारा पुँल्लिङ्ग विधान किया गया।

उदाहरण– अशनिः = वज्र
भरणिः = एक नक्षत्र
अरणिः = अग्नि उत्पन्न करने में प्रयुक्त एक मॅथनी

सूत्र– 4. **''मिन्यन्तः''**

सूत्रार्थ– मि प्रत्ययान्त तथा नि प्रत्ययान्त धातुज शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं।

उदाहरण– नेमिः = पहिए का भाग पार्ष्णिः = एडी
ऊर्मिः = जलतरंग वेणिः = केशविन्यास
भूमिः = पृथिवी श्रेणिः =पंक्ति
रश्मिः = किरण श्रोणिः = कटिप्रदेश
योनिः = स्त्रीजननेन्द्रिय हानिः = हानि

सूत्र 5. **''वह्निवृष्ण्यग्नयः पुंसि''**

सूत्रार्थ– धातु से निष्पन्न निप्रत्ययान्त वह्नि, वृष्णि, तथा अग्नि शब्द पुँल्लिङ्ग होते हैं। इन्हें ''मिन्यन्तः'' सूत्र से स्त्रीत्व प्राप्त था किन्तु इस सूत्र के द्वारा पुँल्लिङ्ग का विधान किया गया।

उदाहरण– वह्निः = आग
अग्निः = आग
वृष्णिः = क्षत्रिय या वैश्य

सूत्र 6. **''श्रोणियोन्यूर्मयः पुंसि च''**

सूत्रार्थ– निप्रत्ययान्त श्रोणि, योनि तथा मिप्रत्ययान्त 'ऊर्मि' शब्द पुँल्लिङ्ग तथा स्त्रीलिङ्ग दोनों होते हैं। यह पूर्वसूत्र का अपवाद है।

उदाहरण– अयं श्रोणिः, इयं श्रोणिः/श्रोणी
अयं योनिः, इयं योनिः/योनी
अयं ऊर्मिः, इयं ऊर्मिः/ऊर्मी

सूत्र– 7. **''क्तिन्नन्तः''**

सूत्रार्थ– 'क्तिन्' प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं।

उदाहरण– कृतिः = रचना
बुद्धिः = बुद्धि
दृष्टिः = दृष्टि
भक्तिः = भक्ति
मतिः = मति

सृष्टिः = संसार
मुक्तिः = मुक्ति
सिद्धिः = सिद्धि
लब्धिः = प्राप्ति

सूत्र –8. ''ईकारान्तश्च''

सूत्रार्थ– ईप्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं।

उदाहरण– तन्त्रीः = वीणा
लक्ष्मीः = लक्ष्मी
तरीः = नौका
पपीः = सूर्य, चन्द्रमा
अवीः = रजस्वला स्त्री

सूत्र –9. ''ऊङ्ङ्याबन्तश्च''

सूत्रार्थ– ऊङ्प्रत्ययान्त, ङीप्रत्ययान्त (ङीप्, ङीष्, ङीन्) तथा आप्प्रत्ययान्त (टाप्, डाप्, चाप्) शब्द स्त्रीलिङ्ग में होते हैं।

उदाहरण– **ऊङ्-प्रत्ययान्त शब्द**

(क) कुरूः = कुरुपत्नी
कर्कन्धूः = बदरी
अलाबूः = तुम्बी
पङ्गूः = लंगड़ी स्त्री
श्वश्रूः = सास

(ख) ङीप्-प्रत्ययान्त–
कर्त्री = करने वाली
हर्त्री = हरण करने वाली
ब्रह्मचारिणी = ब्रह्मचारी स्त्री
योगिनी = योगी स्त्री
दण्डिनी = दण्ड धारण करने वाली स्त्री

(ग) ङीष्-प्रत्ययान्त–
नर्तकी = नाचने वाली
खनकी = खोदने वाली
रजकी = धोबिन
गौरी = गौर (शिव) की पत्नी

(घ) ङीन्-प्रत्ययान्त–
शार्ङ्गरवी = शार्ङ्गरव की पत्नी
कापटवी = कापटव की पत्नी
बैदी = बैद की पत्नी
और्वी = और्व पत्नी
ब्राह्मणी = ब्राह्मण पत्नी

(ङ) टाप्-प्रत्ययान्त–
अजा = बकरी
कोकिला = मादा कोयल
एडका = घोड़ी
चटका = चिड़िया

डाप्-प्रत्ययान्त–
पामा = खुजली
सीमा = सीमा
बहुराजा = अनेक राजाओं वाली
बहुतक्षा = अनेक बढई वाली

चाप्-प्रत्ययान्त–
आम्बष्ठ्या = आम्बष्ठ्य की पत्नी
सौवीर्या = सौवीर्य की स्त्री
कारीषगन्ध्या = करीषगन्ध्य की स्त्री
वाराह्या = वाराह्य की स्त्री
आवट्या = आवट्य की स्त्री
कौसल्या = कोसल जनपद की स्त्री

सूत्र– 10. ''य्वन्तमेकाक्षरम्''

सूत्रार्थ– एकाक्षर जो ईकारान्त अथवा ऊकारान्त शब्द, वह स्त्रीलिङ्ग होता है। ई च यू च – यू (इतरेतरयोगद्वन्द्व) यू अन्ते अस्य य्वन्तम् (बहु0)

उदाहरण– श्रीः = लक्ष्मी भूः = पृथिवी
स्त्रीः = स्त्री भ्रूः = भौंह
धीः = बुद्धि
भीः = भय

सूत्र 11. ''विंशत्यादिरानवतेः''

सूत्रार्थ– 'विंशति' शब्द से लेकर 'नवति' पर्यन्त संख्यावाची शब्द स्त्रीलिङ्ग में होते हैं। अर्थात् ऊनविंशतिः (19) से नवनवतिः (99) तक शब्द स्त्रीलिङ्ग होंगे।

उदाहरण– (i) इयं विंशतिः (ii) इयं त्रिंशत् (iii) इयं चत्वारिंशत् (iv) इयं पञ्चाशत् (v) इयं षष्टिः (vi) इयं सप्ततिः (vii) इयं अशीतिः (viii) इयं नवतिः (ix) इयं नवनवतिः

सूत्र –12. ''तलन्तः''

सूत्रार्थ– 'तल्' प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग में होते हैं, स्त्रीत्व की विवक्षा में 'अजाद्यतष्टाप्' से 'टाप्' प्रत्यय होता है।

उदाहरण– ● इयं शुक्लता ● इयं जडता ● इयं जनता
● इयं देवता ● इयं बन्धुता ● इयं ग्रामता

सूत्र –13. **''भूमिविद्युत्सरिल्लतावनिताभिधानानि''**

सूत्रार्थ– भूमि, विद्युत्, सरित्, लता तथा वनिता– ये शब्द तथा इनके वाचक शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं।

उदाहरण– **(क) भूमि–** भूः, पृथिवी, अनन्ता, विश्वम्भरा, धरा, धरित्री, धरणिः, जया, क्षितिः, सर्वसहा, वसुधा, उर्वी, वसुन्धरा, गोत्रा, कुः, क्ष्मा, मेदिनी

(ख) **विद्युत्**–सौदामिनी, तडित्, चपला, चञ्चला

(ग) **सरित्** – नदी, तरङ्गिणी, शैवालिनी, तटिनी, ह्लादिनी, धुनी, स्रोतस्विनी, द्वीपवती, निम्नगा, अपगा, स्रवन्ती आदि।

(घ) **लता**– वल्ली, वल्लरी, व्रततिः आदि

(ङ) **वनिता**– योषित्, अबला, नारी, सीमन्तिनी, वधूः, वामा, महिला, अङ्गना, कामिनी, प्रमदा, कान्ता, ललना, नितम्बिनी, सुन्दरी, रमणी, रामा, कोपना, भामिनी, मत्तकाशिनी, उत्तमा आदि।

सूत्र 14. **''भास्स्रुक्स्रग्दिगुष्णिगुपानहः''**

सूत्रार्थ– भास्, स्रुक्, स्रज्, दिश्, उष्णिक्, तथा उपानह् ये शब्द स्त्रीलिङ्ग में होते हैं।

उदाहरण– भाः = दीप्ति
स्रुक् = यज्ञपात्रविशेष
स्रक् = माला
दिक् = दिशा
उष्णिक् = छन्द का नाम
उपानत् = पादत्राण, जूता

सूत्र 15. **''प्रावृड्विप्रुड्रुट्तृड्विट्त्विषः''**

सूत्रार्थ– प्रावृष्, विप्रुष्, रुष्, तृष्, विष्, त्विष्– ये शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं।

उदाहरण– प्रावृट् = वर्षा
विप्रुट् = बिन्दु
रुट् = क्रोध
त्विट् = प्रभा
विट् = विष्ठा
तृट् = प्यास

सूत्र 16. **''दर्विविदिवेदिखनिशान्यश्रिवेशिकृष्योषधिकट्यङ्गुलयः''**

सूत्रार्थ– दर्वि, विदि, वेदि, खनि, शानि, अश्रि, वेशि कृषि, ओषधि, कटि और अङ्गुलि– ये शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं।

उदाहरण– दर्विः = कड़छी
वेदिः = चबूतरा
खनिः = खान
शानिः = कसौटी
अश्रिः = किनारा
कृषिः = कृषि
औषधिः = दवाई
कटिः = कमर
अङ्गुलिः = अङ्गुलि

सूत्र 17. **''तिथि-नाडि-रुचि-वीचि-नालि-धूलि-किकि-केलिच्छविरात्र्यादयः''**

सूत्रार्थ– तिथि, नाडि, रुचि, वीचि, नालि, धूलि, किकि, केलि, छवि– ये शब्द तथा रात्रि के वाचक शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं। रात्रि के पर्याय शब्दों में 'नक्तम्' तथा 'दोषा' शब्दों का ग्रहण नहीं होता है।

उदाहरण– तिथिः = दिनमान
नाडिः = धमनी
रुचिः = प्रभा
वीचिः = तरंग
नालिः = नाडी
धूलिः = धूल
किकिः = नीलकण्ठ पक्षी की आवाज
केलिः = क्रीडा
धूलिः = धूल
छविः = कान्ति
रात्रिः= रात

रात्रिवाचक शब्द– रात्रिः, निशा, शर्वरी, विभावरी, निशीथिनी, त्रियामा, क्षणदा, क्षपा, रजनी, यामिनी, तमिस्रा, तामसी, तमी, तमस्विनी

सूत्र 18. **''शष्कुलिराजिकुट्यवन्तिवर्तिभ्रुकुटि-त्रुटि-वलिपङ्क्तयः''**

सूत्रार्थ– शष्कुलि, राजि, कुटि, अवन्ति, वर्ति, भ्रुकुटि, त्रुटि, वलि, पङ्क्ति– ये शब्द स्त्रीलिङ्ग में होते हैं।

उदाहरण– शष्कुलिः = कर्णछिद्र या पूड़ी
राजिः = पंक्ति
कुटिः = कुटिया
अवन्तिः = उज्जयिनी
भ्रुकुटिः = भौंह
त्रुटिः = मात्रा

वलिः = प्राण्यङ्गज, झुरी
पंक्तिः = श्रेणी
वर्तिः = बाती

सूत्र 19. **''प्रतिपदापद्विपत्सम्पच्छरत्संसत्परिषदुषः संवित्क्षुत्पुन्मुत्समिधः''**

सूत्रार्थ– प्रतिपद्, आपद्, विपद्, सम्पद्, शरद्, संसद्, परिषद्, उषाः, संविद्, क्षुद्, पुद्, मुद् व समिद्– ये शब्द स्त्रीलिङ्ग में होते हैं।

उदाहरण– प्रतिपद् = एक तिथि
आपद् = संकट
विपद् = विपत्ति
सम्पद् = धन
शरद् = ऋतुविशेष
संसद् = सभा
परिषद् = सभा
उषाः = प्रातः
संविद् = बुद्धिः
क्षुद् = छींक
पुद् = नरक
मुद् = प्रीति
समिध् = हवन में प्रयुक्त ईंधन

सूत्र 20. **''आशीर्धूःपूर्गीर्द्वारः''**

सूत्रार्थ– आशिष्, धुर्, पुर्, गिर्, तथा द्वार्– ये शब्द स्त्रीलिङ्ग में होते हैं।

उदाहरण– आशीः = आशीर्वचन
धूः = गाडी का धुरा
पूः = नगरी
गीः = वाणी
द्वाः = द्वार

सूत्र 21. **''अप्सुमनस्समासिकतावर्षाणां बहुत्वं च''**

सूत्रार्थ– अप्, सुमनस्, समा, सिकता तथा वर्षा– ये शब्द स्त्रीलिङ्ग में होते हैं तथा सदा बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं।

उदाहरण– इमाः आपः = जल
सुमनसः = फूल
समाः = संवत्सर वर्ष
सिकताः = बालू
वर्षाः = वर्षा, ऋतुविशेष
अमरकोश में भी कहा गया है–
आपः सुमनसो वर्षा अप्सरः सिकताः समाः।
एते स्त्रियां बहुत्वे स्युरेकत्वेऽप्युत्तरत्रयम्।।

सूत्र 22. **''स्रक्त्वग्ज्योग्वाग्यवागूनौस्फिजः''**

सूत्रार्थ– स्रक्, त्वक्, वाग्, यवागू, नौ, तथा स्फिच्– ये शब्द स्त्रीलिङ्ग में होते हैं।

उदाहरण– स्रक् = माला
त्वक् = त्वचा
वाक् = वाणी
यवागूः = लप्सी
नौः = नौका
स्फिक् = कटिप्रोथ

सूत्र 23. **''ताराधाराज्योत्स्नादयश्च''**

सूत्रार्थ– तारा, धारा तथा ज्योत्स्ना के वाचक (पर्यायवाची) शब्द स्त्रीलिङ्ग में होते हैं।

उदाहरण– तारा = नक्षत्र
धारा = जलप्रवाह
ज्योत्स्ना = चन्द्रिका

सूत्र 24. **''शलाका स्त्रियां नित्यम्''**

सूत्रार्थ– 'शलाका' शब्द नित्य स्त्रीलिङ्ग में होता है।

उदाहरण– इयं शलाका

पुँल्लिङ्ग-प्रकरणम्

सूत्र 25. **घञबन्तः**

सूत्रार्थ– घञ् प्रत्ययान्त तथा अप्-प्रत्ययान्त शब्द पुँल्लिङ्ग में होते हैं।

घञ्-प्रत्ययान्त शब्द

उदाहरण– रागः = राग
पाकः = पाक
त्यागः = त्याग

अप्-प्रत्ययान्त शब्द

स्तवः = स्तुति
करः = हाथ
गरः = रोग, शरबत
पवः = पवनः
निश्चयः = निश्चय

सूत्र 26. **''घाऽजन्तश्च''**

सूत्रार्थ– घप्रत्ययान्त तथा अच्प्रत्ययान्त शब्द पुँल्लिङ्ग होते हैं।

घ प्रत्ययान्त शब्द

उदाहरण– गोचरः = चारागाह
सञ्चरः = मार्ग

घटः = घडा
आकरः = खजाना
आलयः = गृह

अच् प्रत्ययान्त शब्द

जयः = जय
अयः = शुभ दैव
चयः = चयन
क्षयः = नाश

सूत्र 27. ''भयलिङ्गभगपदानि नपुंसके''

सूत्रार्थ–
- भय, लिङ्ग, भग तथा पद–ये शब्द नपुंसकलिङ्ग में प्रयुक्त होते हैं।
- भय, पद, लिङ्ग– ये तीनों अच्प्रत्ययान्त शब्द हैं।
- 'भग' शब्द घप्रत्ययान्त है।
- पूर्वसूत्र से पुँल्लिङ्ग प्राप्त था, इस सूत्र से नपुंसकत्व कहा गया है।

उदाहरण– भयम् = डर
लिङ्गम् = पुरुषजननेन्द्रिय
भगम् = स्त्रीयोनि
पदम् = पैर, स्थान

सूत्र 28. ''नङन्तः''

सूत्रार्थ– नङ् प्रत्ययान्त शब्द पुँल्लिङ्ग होते हैं।

उदाहरण– यज्ञः = यज्ञ
यत्नः = यत्न
प्रश्नः = प्रश्न

सूत्र 29. ''याच्ञा स्त्रियाम्''

सूत्रार्थ–
- नङ् प्रत्ययान्त 'याच्ञा' शब्द स्त्रीलिङ्ग में होता है।
- नङ्प्रत्ययान्त होने से यहाँ पूर्वसूत्र से पुंस्त्व प्राप्त था।

सूत्र 30. ''क्यन्तो घुः''

सूत्रार्थ– 'कि' प्रत्ययान्त घुसंज्ञक शब्द पुँल्लिङ्ग होते हैं।

उदाहरण– आधिः = मानसिक कष्ट
व्याधिः = शारीरिक रोग
निधिः = खजाना
उदधिः = समुद्र
विधिः = दैव, भाग्य, ब्रह्मा
शेवधिः = निधि
प्रधिः = नेमि
उपधिः = छल
सन्निधिः = समीपता

सूत्र 31. ''देवासुरात्मस्वर्गगिरिसमुद्रनखकेशदन्तस्तनभुजकण्ठखड्गशरपङ्काभिधानानि''

सूत्रार्थ– देव, असुर, आत्मा, स्वर्ग, गिरि, समुद्र, नख, केश, दन्त, स्तन, भुज, कण्ठ, खड्ग, शर, पङ्क– ये शब्द तथा इनके पर्यायवाची शब्द पुँल्लिङ्ग में होते हैं।

उदाहरण–

(क) देवः– अमरः, निर्जरः, त्रिदशः, विबुधः, सुरः, सुपर्वा, दिवौकः, आदितेयः, दिविषद्, अदितिनन्दनः, आदित्यः, ऋभुः, अमर्त्यः, अमृतान्धाः, बहिर्मुखः, क्रतुभुज्, गीर्वाणः, दानवारिः, वृन्दारकः

(ख) असुरः– दैत्यः, दैतेयः, दनुजः, इन्द्रारिः, दानवः, शुक्रशिष्यः, दितिसुतः, सुरद्विष्

(ग) आत्मा– आत्मा, क्षत्रज्ञः, पुरुषः

(घ) स्वर्गः– स्वर्गः, नाकः, त्रिदिवः, त्रिदशालयः, सुरलोकः

(ङ) गिरिः– महीध्रः, शिखरी, क्ष्माभृत्, पर्वतः, सानुमान्, भूभृत्, अद्रिः, ग्रावाः, अचलः, शैलः, शिलोच्चयः

(च) समुद्रः– अब्धिः, अकूपारः, पारावारः, सरित्पतिः, उदन्वान्, उदधिः, सिन्धुः, सरस्वान्, सागरः, अर्णवः, रत्नाकरः, जलनिधिः, अपाम्पतिः

(छ) नखः– पुनर्भवः, कररुहः, नखरः

(ज) केशाः– शिरोरुहः, चिकुरः, कुन्तलः, बालः, कचः

(झ) दन्ताः– दशनाः, रदनाः, रदाः

(ञ) स्तनः– कुचः, वक्षोरुहः

(ट) भुजः– दोः, बाहुः

(ठ) कण्ठः– गलः

(ड) खड्गः– खड्गः, करवालः, चन्द्रहासः, असिः, कौक्षेयकः, निस्त्रिंशः, मण्डलाग्रः, कृपाणः

(ढ) शरः– शरः, पृषत्कः, बाणः, विशिखः, मार्गणः, कलम्बः, खगः, आशुगः, अयं पत्री, रोपः

(ण) पङ्कः– पङ्कः, कर्दमः, शादः, जम्बालः

सूत्र 32. ''त्रिविष्टपत्रिभुवने नपुंसके''

सूत्रार्थ–
- त्रिविष्टप तथा त्रिभुवन शब्द नपुंसकलिंग होते हैं।
- इन्हे स्वर्गवाची होने से पुँल्लिङ्ग होना चाहिए था। इसलिए यह पूर्वसूत्र का अपवाद है।

उदाहरण– (i) त्रिविष्टपम् (ii) त्रिभुवनम्

सूत्र 33. **''द्यौः स्त्रियाम्''**

सूत्रार्थ– 'दिव्' शब्द स्त्रीलिङ्ग होता है। स्वर्गवाची होने से पुंस्त्व प्राप्त था।

उदाहरण– इयं द्यौः

सूत्र 34. **''बाणकाण्डौ नपुंसके च''**

सूत्रार्थ– 'बाण' तथा 'काण्ड' शब्द नपुंसकलिंग व पुँल्लिङ्ग दोनों में प्रयुक्त होते हैं।

उदाहरण– (i) अयं बाणः (ii) इदं बाणम्
(i) अयं काण्डः (ii) इदं काण्डम्

सूत्र 35. **''नन्तः''**

सूत्रार्थ– नकारान्त शब्द पुँल्लिङ्ग होता है।

उदाहरण–

प्रातिपदिक	रूप	अर्थ
राजन्	राजा	राजा
श्वन्	श्वा	कुत्ता
वृषन्	वृषा	इन्द्र
उक्षन्	उक्षा	वृषभ
मघवन्	मघवा	इन्द्र
तक्षन्	तक्षा	बढई
ऋभुक्षन्	ऋभुक्षा	इन्द्र
वृत्रहन्	वृत्रहा	इन्द्र

सूत्र 36. **''क्रतुपुरुषकपोलगुल्फमेघाभिधानानि''**

सूत्रार्थ– क्रतु, पुरुष, कपोल, गुल्फ, मेघ– ये शब्द तथा इनके पर्यायवाची शब्द पुँल्लिङ्ग होते हैं।

उदाहरण– (क) **क्रतुः (यज्ञ)–** क्रतुः, यज्ञः, यागः, सवः, मखः, सप्ततन्तुः, अध्वरः
(ख) **पुरुषः (पुरुष)–** पुरुषः, पूरुषः, नरः, मानवः, मनुजः, मर्त्यः, मानुषः, मनुष्यः
(ग) **कपोलः (कपोल)–** कपोलः, गण्डः
(घ) **गुल्फः** (टखना) गुल्फः, प्रपदः
(ङ) **मेघः (बादल)** मेघः, नीरदः, वारिवाहः, स्तनयित्नुः, बलाहकः, धाराधरः, जलधरः, तडित्वान्, वारिदः, अम्बुभृत्, घनः, जीमूतः, मुदिरः, जलमुक्, धूमयोनिः

सूत्र 37. **''अभ्रं नपुंसकम्''**

सूत्रार्थ– 'अभ्र' शब्द नपुंसकलिङ्ग में होता है। 'अभ्र' शब्द के मेघवाची होने से यहाँ पुंस्त्व प्राप्त था, इस सूत्र से नपुंसकलिङ्ग हुआ।

उदाहरण– अभ्रम् = मेघ

सूत्र 38. **''उकारान्तः''**

सूत्रार्थ– उकारान्तशब्द पुँल्लिङ्ग होता है।

उदाहरण– प्रभुः = स्वामी इक्षुः = ईख, गुरुः = गुरु

सूत्र 39. **''धेनुरज्जुकुहुसरयुतनुरेणुप्रियङ्गवः स्त्रियाम्''**

सूत्रार्थ– धेनु, रज्जु, कुहु, सरयु, तनु, रेणु, तथा प्रियङ्गु–ये शब्द स्त्रीलिङ्ग में होंगे

उदाहरण– धेनुः = नयी ब्याही गाय
रज्जुः = रस्सी
कुहुः = अमावस्या
सरयुः = नदी विशेष
तनुः = शरीर
रेणुः = धूल
प्रियङ्गुः = लताविशेष

सूत्र 40. **''श्मश्रुजानुवसुस्वाद्वश्रुजतुत्रपुतालूनि नपुंसके''**

सूत्रार्थ–
- श्मश्रु, जानु, वसु, स्वादु, अश्रु, जतु, त्रपु, तथा तालु– ये शब्द नपुंसकलिङ्ग में प्रयुक्त होते हैं।
- सभी शब्द उकारान्त हैं, अतः यहाँ पुंस्त्व प्राप्त था, इस सूत्र से नपुंसकलिङ्ग होता है।
- अमरकोश के अनुसार 'जानु' उभयलिङ्ग है। किरण, अग्नि, तथा कुबेर– इन अर्थों में 'वसु' पुँल्लिङ्ग है।

उदाहरण– श्मश्रु = मूँछ
जानु = घुटना
वसु = धन
स्वादु = मधुर
अश्रु = आँसू
जतु = लाख
त्रपु = टिन
तालु = काकुद

सूत्र 41. **''रुत्वन्तः''**

सूत्रार्थ– 'रु' तथा 'तु' हैं अन्त में जिसके ऐसा शब्द पुँल्लिङ्ग होता है।

उदाहरण– मेरुः = पर्वत का नाम
सेतुः = पुल

सूत्र 42. **''दारुकशेरुजतुवस्तुमस्तूनि नपुंसके''**

सूत्रार्थ– 'दारु' तथा 'कशेरु' शब्द रुत्वन्त हैं, जतु, वस्तु, मस्तु शब्द तुकारान्त हैं, अतः यहाँ पुंस्त्व प्राप्त था। किन्तु ये शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं।

उदाहरण– दारु = लकड़ी
कशेरु = रीढ की हड्डी

जतु = लाख
वस्तु = पदार्थ
मस्तु = दही का खट्टा पानी

सूत्र 43. **''कोपधः''**

सूत्रार्थ– जिसकी उपधा में 'क्' वर्ण हो, उसे कोपध शब्द कहते हैं। 'अलोऽन्त्यात् पूर्व उपधा' से अन्त्य अल् से पूर्व की उपधा संज्ञा होती है। कोपध जो अकारान्त शब्द, वह पुँल्लिङ्ग होता है।

उदाहरण– स्तबकः = पुष्पगुच्छ
कल्कः = खली, मैल, धोखा, चूर्ण
कोरकः = कली

सूत्र 44. **''चिबुक-शालूक–प्रातिपदिकांशुकोल्मुकानि नपुंसके''**

सूत्रार्थ– अकारान्त कोपध चिबुक, शालूक, प्रातिपदिक, अंशुक तथा उल्मुक शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं। सभी शब्द कोपध व अकारान्त हैं; अतः यहाँ पुंस्त्व प्राप्त था।

उदाहरण– चिबुकम् = ठोडी
शालूकम् = सिंघाडा
प्रातिपदिकम् = अर्थवान् शब्द, पाणिनीयव्याकरण में एक संज्ञा
अंशुकम् = वस्त्र
उल्मुकम् = अंगार

सूत्र 45. **''कण्टक - अनीक - सरक - मोदक - चषक - मस्तक - पुस्तक - तडाक - निष्क - शुष्क - वर्चस्क - पिनाक - भाण्डक - पिण्डक - कटक - शण्डक - पिटक - तालक - फलक - पुलाकानि नपुंसके च''**

सूत्रार्थ– सूत्रोक्त सभी शब्द कोपध तथा अकारान्त हैं, अतः पुंस्त्व प्राप्त था, इस सूत्र से नपुंसकत्व का भी विधान कर दिया गया। अतः उपर्युक्त शब्द पुँल्लिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग दोनों होंगे।

उदाहरण– कण्टकम्/कण्टकः = काँटा
अनीकम्/अनीकः = सेना, समूह
सरकम्/सरकः = मद्य, मद्यपान, पानपात्र
मोदकम्/मोदकः = लड्डू
चषकम्/चषकः = मद्यपानपात्र
मस्तकम्/मस्तकः = माथा
पुस्तकम्/पुस्तकः = किताब
तडाकम्/तडाकः = तालाब
निष्कम्/निष्कः = सोना
शुष्कम्/शुष्कः = सूखा
वर्चस्कम्/वर्चस्कः = कूडा, विष्ठा
पिनाकम्/पिनाकः = शिव का धनुष
भाण्डकम्/भाण्डकः = कटोरा
पिण्डकम्/पिण्डकः = स्फोटक, फोड़ा
कटकम्/कटकः = मेखला, सेना
शण्डकम्/शण्डकः = नपुंसक
पिटकम्/पिटकः = पेटी
तालकम्/तालकः = ताला
फलकम्/फलकः = ढाल
पुलाकम्/पुलाकः = तुच्छ धान्य

सूत्र 46. **''टोपधः''**

सूत्रार्थ– 'ट्' वर्ण है उपधासंज्ञक जिसका, ऐसा अकारान्त शब्द पुँल्लिङ्ग होता है।

उदाहरण– घटः = घड़ा
पटः = वस्त्र

सूत्र– 47. **''किरीट - मुकुट - ललाट - वट - विट - शृङ्गाट - कराट - लोष्टानि नपुंसके''**

सूत्रार्थ– सूत्रोक्त सभी पद नपुंसकलिङ्ग में होंगे। यह 'टोपधः' सूत्र का अपवाद है। सूत्रोक्त सभी शब्द टोपध तथा अकारान्त हैं, अतः पुंस्त्व प्राप्त था। इस सूत्र के द्वारा नपुंसकत्व का विधान किया गया है।

उदाहरण– किरीटम् = मुकुट
मुकुटम् = मुकुट
ललाटम् = माथा
वटम् = बड़ का वृक्ष
विटम् = दुष्ट
शृङ्गाटम् = चतुष्पथ
लोष्टम् = मिट्टी का ढेला

सूत्र 48. **''कुट - कूट - कपट - कवाट - तर्पट - नट - निकट - कीट - कटानि नपुंसके च''**

सूत्रार्थ–
- सूत्रोक्त सभी शब्द पुँल्लिङ्ग व नपुंसकलिङ्ग होते हैं।
- सूत्रोक्त सभी शब्द टोपध तथा अकारान्त हैं; इन्हें 'टोपधः' सूत्र से पुंस्त्व प्राप्त था; इस सूत्र के द्वारा विकल्प से नपुंसकत्व भी कहा गया।

उदाहरण– कुटः/कुटम् = पर्वत
कूटः/कूटम् = शिखर

कपटः/कपटम् = छल
कवाटः/कवाटम् = कपाट
तर्पटः/तर्पटम् = वर्ष
नटः/नटम् = नर्तक
निकटः/निकटम् = पास
कीटः/कीटम् = क्षुद्रजन्तु
कटः/कटम् = चटाई

सूत्र– 49. ''णोपधः''
सूत्रार्थ– 'ण्' वर्ण है उपधा में जिसके ऐसा अकारान्त शब्द पुँल्लिङ्ग होता है।
उदाहरण– गुणः = गुण
गणः = समूह
पाषाणः = पत्थर
पणः = शर्त

सूत्र 50. ''ऋण - लवण - पर्ण - तोरण - रणोष्णानि नपुंसके''
सूत्रार्थ–
- सूत्रोक्त सभी शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं।
- यह 'गोपधः' सूत्र का अपवाद है। क्योंकि सूत्रोक्त सभी शब्द णोपध तथा अकारान्त हैं अतः पुंस्त्व होना चाहिए किन्तु इस सूत्र से नपुंसकत्व का विधान किया गया।

उदाहरण– ऋणम् = कर्ज
लवणम् = नमक
तोरणम् = बन्दनवार
पर्णम् = पत्ता
रणम् = युद्ध
उष्णम् = गरम

सूत्र 51. ''कार्षापण - स्वर्ण - सुवर्ण - व्रण - चरण - वृषण - विषाण - चूर्ण - तृणानि नपुंसके च''
सूत्रार्थ– सूत्रोक्त शब्द पुँल्लिङ्ग व नपुंसकलिङ्ग दोनों होते हैं।
उदाहरण– कार्षापणः/कार्षापणम् = एक सिक्का
स्वर्णः/स्वर्णम् = सोना
सुवर्णः/सुवर्णम् = सोना
व्रणः/व्रणम् = घाव
चरणः/चरणम् = पैर
वृषणः/वृषणम् = अण्डकोष
विषाणः/विषाणम् = सींग
चूर्णः/चूर्णम् = चूर्ण
तृणः/तृणम् = तिनका

सूत्र 52. ''थोपधः''
सूत्रार्थ– 'थ्' वर्ण है उपधा संज्ञक जिसका, ऐसा अकारान्त शब्द पुँल्लिङ्ग होता है।
उदाहरण– रथः = रथ
अर्थः = धन

सूत्र 53. ''काष्ठ - पृष्ठ - सिक्थोक्थानि नपुंसके''
सूत्रार्थ– सूत्रोक्त शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं। यह 'थोपधः' सूत्र का अपवाद है।
उदाहरण– काष्ठम् = लकड़ी
पृष्ठम् = पीठ
सिक्थम् = मोम
उक्थम् = स्तोत्र

सूत्र 54. ''काष्ठा दिगर्था स्त्रियाम्''
सूत्रार्थ– दिशावाची 'काष्ठा' शब्द स्त्रीलिङ्ग होता है।
उदाहरण– काष्ठा = दिशा

सूत्र 55. ''तीर्थ - प्रोथ - यूथ - गाथानि नपुंसके च''
सूत्रार्थ– ये शब्द पुँल्लिङ्ग व नपुंसकलिङ्ग दोनों होते हैं।
उदाहरण– तीर्थः/तीर्थम् = तीर्थ/गुरु
प्रोथः/प्रोथम् = सुअर नासिका
यूथः/यूथम् = झुण्ड
गाथः/गाथम् = गीत/भजन

सूत्र 56. ''नोपधः''
सूत्रार्थ– 'न' वर्ण है उपधासंज्ञक जिसका, ऐसा अकारान्त शब्द पुँल्लिङ्ग होता है।
उदाहरण– इनः = स्वामी, सूर्य
केनः = झाग

सूत्र 57. ''जघनाऽजिन - तुहिन - कानन - वन - वृजिन - विपिन - वेतन - शासन - सोपान - मिथुन - श्मशान - रत्न - निम्न - चिह्नानि - नपुंसके''
सूत्रार्थ– सूत्रोक्त नोपध तथा अकारान्त शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं। यह सूत्र 'नोपधः' का अपवाद है।
उदाहरण– जघनम् = स्त्री की कमर का अगला भाग
अजिनम् = चर्म
तुहिनम् = बर्फ/पाला
काननम् = वन
वनम् = वन
वृजिनम् = पाप
विपिनम् = जंगल

वेतनम् = वृत्ति
शासनम् = आदेश
सोपानम् = सीढ़ी
मिथुनम् = युगल
श्मशानम् = शव का दाहस्थान
रत्नम् = मणि
निम्नम् = नीच
चिह्नम् = लक्षण

सूत्र 58. ''मान - यानाभिधान - नलिन - पुलिनोद्यान शयनासनस्थानचन्दनाऽऽलान - समान - भवन - वसन - सम्भावन - विभावन - विमानानि नपुंसके च''

सूत्रार्थ– ये नोपध तथा अकारान्त शब्द नपुंसकलिङ्ग व पुँल्लिङ्ग दोनों होते हैं।

उदाहरण– मानः/मानम् = प्रमाण
यानः/यानम् = वाहन
अभिधानः/अभिधानम् = नाम
नलिनः/नलिनम् = कमल
पुलिनः/पुलिनम् = तट
उद्यानः/उद्यानम् = उपवन
शयनः/शयनम् = पलंग
आसनः/आसनम् = पीठ
स्थानः/स्थानम् = स्थान, घर
चन्दनः/चन्दनम् = चन्दन
आलानः/आलानम् = खूँटा
समानः/समानम् = सदृश
भवनः/भवनम् = घर
वसनः/वसनम् = वस्त्र
सम्भावनः/सम्भावनम् = सम्भावना
विभावनः/विभावनम् = कल्पना
विमानः/विमानम् = देवरथ

सूत्र 59. ''पोपधः''

सूत्रार्थ– 'प्' वर्ण है उपधा में जिसके ऐसा अकारान्त शब्द पुँल्लिङ्ग होता है

उदाहरण– यूपः = स्तम्भः
दीपः = दीपक
सर्पः = साँप
निपः = घडा

सूत्र 60. ''पापरूपोडुप - तल्प - शिल्प - पुष्प- शष्प - समीपान्तरीपाणि नपुंसके''

सूत्रार्थ– सूत्रोक्त सभी शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं।

उदाहरण– पापम् = पाप
रूपम् = सौन्दर्य
उडुपम् = नौका
तल्पम् = शय्या
शिल्पम् = कलाकौशल
पुष्पम् = फूल
शष्पम् = ताजा घास
समीपम् = पास
अन्तरीपम् = द्वीप

सूत्र 61. ''शूर्प - कुतप - कुणप - द्वीप - विटपानि नपुंसके च''

सूत्रार्थ– सूत्रोक्त ये सभी शब्द नपुंसकलिङ्ग व पुँल्लिङ्ग दोनों होते हैं।

उदाहरण– शूर्पः/शूर्पम् = छाज
कुतपः/कुतपम् = दिन का आठवाँ भाग
कुणपः/कुणपम् = शव
द्वीपः/द्वीपम् = टापू
विटपः/विटपम् = पेड़, शाखा

सूत्र 62. ''भोपधः''

सूत्रार्थ– 'भ्' वर्ण है उपधासंज्ञक जिसका, ऐसा अकारान्त शब्द पुँल्लिङ्ग होता है।

उदाहरण– स्तम्भः = खम्भा
कुम्भः = घड़ा

सूत्र 63. ''मोपधः''

सूत्रार्थ– 'म्' वर्ण है उपधासंज्ञक जिसका, ऐसा अकारान्त शब्द पुँल्लिङ्ग होता है।

उदाहरण– सोमः= सोम
स्तोमः = स्तुति
भीमः = भयंकर
होमः = हवन

सूत्र 64. ''सङ्ग्राम - दाडिम - कुसुमाश्रम - क्षेम - क्षौम - होमोद्दामानि नपुंसके च''

सूत्रार्थ– सूत्रोक्त सभी शब्द नपुंसकलिङ्ग तथा पुँल्लिङ्ग होते हैं।

उदाहरण– सङ्ग्रामः/सङ्ग्रामम् = युद्ध
दाडिमः/दाडिमम् = अनार
कुसुमः/कुसुमम् = फूल
आश्रमः/आश्रमम् = आश्रम

क्षेमः/क्षेमम् = कुशल मंगल
क्षौमः/क्षौमम् = दुकूल (रेशमीवस्त्र)
होमः/होमम् = हवन
उद्दामः/उद्दामम् = स्वतन्त्र

सूत्र 65. **''योपधः''**
सूत्रार्थ– 'य्' वर्ण है उपधासंज्ञक जिसका, ऐसा अकारान्त शब्द पुँल्लिङ्ग होता है।
उदाहरण– समयः = काल
हयः = घोड़ा

सूत्र 66. **''किसलय - हृदयेन्द्रियोत्तरीयाणि नपुंसके''**
सूत्रार्थ– सूत्रोक्त सभी शब्द नपुंसकलिङ्ग में होते हैं। यह 'योपधः' सूत्र का अपवाद है।
उदाहरण– किसलयम् = नया पत्ता
हृदयम् = हृदय
इन्द्रियम् = इन्द्रिय
उत्तरीयम् = प्रावार

सूत्र 67. **''गोमय - कषाय - मलयाऽन्वयाऽव्ययानि नपुंसके च''**
सूत्रार्थ– सूत्रोक्त सभी शब्द पुँल्लिङ्ग व नपुंसकलिङ्ग दोनों होते हैं। यह 'योपधः' सूत्र का वैकल्पिक विधान करता है।
उदाहरण– गोमयः/गोमयम् = गोबर
कषायः/कषायम् = कसैला
मलयः/मलयम् = एक पर्वत
अन्वयः/अन्वयम् = वंश
अव्ययः/अव्ययम् = नित्य, अव्यय एक पद विशेष

सूत्र 68. **''रोपधः''**
सूत्रार्थ– रेफ है उपधासंज्ञक जिसका, ऐसा अकारान्त शब्द पुँल्लिङ्ग होता है।
उदाहरण– क्षुरः = छुरा, उस्तरा
अङ्कुरः = कोंपल

सूत्र 69. **''द्वार - अग्र - स्फार - तक्र - वक्र - वप्र - क्षिप्र - क्षुद्र - नार - तीर - कृच्छ्र - रन्ध्र - अस्त्र - श्वभ्र - भीर - गभीर - क्रूर - विचित्र - केयूर - केदार - उदार - अजस्त्र - शरीर - कन्दर - मन्दार - पञ्जर - अजर - जठर - अजिर - वैर - चामर - पुष्कर - गह्वर - कुहर - कुटीर - कुलीर - चत्वर - काश्मीर - नीर - अम्बर - शिशिर - तन्त्र - यन्त्र - क्षत्र - क्षेत्र - मित्र - कलत्र - चित्र - मूत्र - सूत्र - वक्त्र - नेत्र - गोत्र - अङ्गुलित्र - भलत्र - शस्त्र - शास्त्र - वस्त्र - पत्र - पात्र - छत्राणि नपुंसके''**
सूत्रार्थ– सूत्रोक्त सभी पद नपुंसकलिङ्ग होंगे। यह 'रोपधः' सूत्र का अपवाद है।
उदाहरण– द्वारम् = द्वार   अग्रम् = अगला
स्फारम् = बाहुल्य   तक्रम् = मट्ठा
वक्रम् = टेढ़ा   वप्रम् = टीला
क्षिप्रम् = मूहूर्त का 1/15वाँ अंश, शीघ्र
क्षुद्रम् = रजकण
नारम् = लोगों का समूह, ज्ञान
तीरम् = किनारा   दूरम् = दूर
कृच्छ्रम् = कठिन   रन्ध्रम् = छिद्र
अश्रम् = आँसू   श्वभ्रम् = रन्ध्र
भीरम् = पटह   गभीरम् = दुन्दुभि
क्रूरम् = उबाला हुआ चावल
विचित्रम् = विस्मय   केयूरम् = बाजूबन्द
केदारम् = आलवाल   उदरम् = पेट
अजस्त्रम् = निरन्तर   शरीरम् = शरीर
कन्दरम् = गुफा   मन्दारम् = मन्दारपुष्प
पञ्जरम् = पिंजरा   अजरम् = वृद्धत्वरहित
जठरम् = तोंद   अजिरम् = झोपड़ी
चामरम् = चँवर   पुष्करम् = कमल
गह्वरम् = गुफा   कुहरम् = छिद्र
कुटीरम् = झोंपडी   कुलीरम् = केंकडा
चत्वरम् = स्थण्डिवल   काश्मीरम् = केसर
नीरम् = जल   अम्बरम् = वस्त्र
शिशिरम् = एक ऋतु   तन्त्रम् = तन्तु
यन्त्रम् = यन्त्र   क्षत्रम् = क्षत्रियजाति
क्षेत्रम् = खेत   मित्रम् = मित्र
कलत्रम् = पत्नी   चित्रम् = चित्र
मूत्रम् = मूत्र   सूत्रम् = धागा
वक्त्रम् = मुख   नेत्रम् = आँख
गोत्रम् = कुल   अंगुलित्रम् = दस्ताना
शस्त्रम् = शस्त्र   शास्त्रम् = शास्त्र
वस्त्रम् = वस्त्र   पत्रम् = पत्ता
पात्रम् = पात्र   छत्रम् = आतपत्र
वैरम् = वैर

सूत्र 70. **''षोपधः''**

सूत्रार्थ– 'ष्' वर्ण उपधासंज्ञक है जिसका, ऐसा अकारान्त शब्द पुँल्लिङ्ग होता है।

उदाहरण– वृक्षः = वृक्ष
वृषः = बैल
मेषः = मेढा

सूत्र 71. **''सोपधः''**

सूत्रार्थ– 'स्' वर्ण है उपधासंज्ञक जिसका, ऐसा अकारान्त शब्द पुँल्लिङ्ग होता है।

उदाहरण– वत्सः = बच्चा
महानसः = रसोईघर
वायसः = कौआ

सूत्र 72. **''चमस - अंस - रस - निर्यास - उपवास - कार्पास - वास - मास - कास - कंस - मांसानि नपुंसके च''**

सूत्रार्थ– ये शब्द नपुंसकलिङ्ग व पुँल्लिङ्ग दोनों होते हैं।

उदाहरण– चमसः/चमसम् = चम्मच
अंसः/अंसम् = कंधा
रसः/रसम् = रस
निर्यासः/निर्यासम् = वृक्ष से प्राप्त गोंद
उपवासः/उपवासम् = व्रत
कार्पासः/कार्पासम् = कपास
वासः/वासम् = गन्ध, निवास
मासः/मासम् = महीना
कासः/कासम् = खाँसी
कंसः/कंसम् = मद्य का प्याला
मांसः/मांसम् = मांस

सूत्र 73. **''रश्मिदिवसाभिधानानि''**

सूत्रार्थ– रश्मिवाची तथा दिवसवाची शब्द पुँल्लिङ्ग होते हैं।

उदाहरण– रश्मिः, किरणः, अस्रः, मयूखः, अंशुः, गभस्तिः, घृणिः, मरीचिः,
दिवसः, वासरः, धस्रः

सूत्र 74. **''दिनाऽहनी नपुंसके''**

सूत्रार्थ– 'दिन' तथा 'अहन्' शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं।

सूत्र 75. **''दाराऽक्षतलाजाऽसूनां बहुत्वं च''**

सूत्रार्थ– दारा, अक्षत तथा लाजा - शब्द पुँल्लिङ्ग होते हैं, तथा ये शब्द सदा बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं।

उदाहरण– दाराः = पत्नी
लाजाः = खील
अक्षताः = बिना टूटे चावल

सूत्र 76. **''ऋषि - राशि - दृति - ग्रन्थि - क्रिमि - ध्वनि - बलि - कौलि - मौलि - रवि - कवि - कपि - मुनयः''**

सूत्रार्थ– सूत्रोक्त सभी शब्द पुँल्लिङ्ग होते हैं।

उदाहरण– ऋषिः = ऋषि
राशिः = राशि
दृतिः = मसक
ग्रन्थिः = गाँठ
क्रिमिः = जन्तु
ध्वनिः = ध्वनि
बलिः = बलि
मौलिः = मस्तक
रविः = सूर्य
कविः = कवि
कपिः = बन्दर
मुनिः = मुनि

सूत्र 77. **''ध्वज - गज - मुञ्ज - पुञ्जाः''**

सूत्रार्थ– सूत्रोक्त सभी शब्द पुँल्लिङ्ग होते हैं।

उदाहरण– ध्वजः = पताका
गजः = हाथी
मुञ्जः = मूँज
पुञ्जः = समूह

सूत्र 78. **''हस्त - कुन्त - अन्त - वात - व्रात - दूत - धूर्त - सूत - चूत - मुहूर्ताः''**

सूत्रार्थ– सूत्रोक्त सभी शब्द पुँल्लिङ्ग होते हैं।

उदाहरण– हस्तः = हाथ
कुन्तः = भाला
अन्तः = अन्त
वातः = वायु
व्रातः = नीच जाति
दूतः = दूत
धूर्तः = ठग
सूतः = सारथि
चूतः = आम्रवृक्ष
मुहूर्तः = कालखण्ड

सूत्र 79. **''पल्लव - पल्वल - कफ - रेफ - कटाह - निर्व्यूह - मठ - मणि - तरङ्ग - तुरङ्ग - गन्ध - स्कन्ध - मृदङ्ग - सङ्ग - समुद्गपुङ्खाः''**

सूत्रार्थ– सूत्रोक्त शब्द पुँल्लिङ्ग होते हैं।

उदाहरण– पल्लवः = किसलय
पल्वलः = सरोवर
कफः = श्लेष्मा
रेफः = रकार
कटाहः = कडाही
निर्व्यूहः = द्वार, खूँटी
मठः = छात्रावास
मणिः = रत्न
तरङ्गः = तरंग
तुङ्गः = घोडा
गन्धः = गन्ध
स्कन्धः = कन्धा
मृदङ्गः = एक वाद्य
सङ्गः = संयोग
समुद्गः = सन्दूक
पुङ्खः = बाण का वह भाग जिसमें पंख लगे होते हैं।

सूत्र 80. **''सारथि - अतिथि - कुक्षि - बस्ति - पाणि - अञ्जलयः''**
सूत्रार्थ– ये शब्द पुँल्लिङ्ग होते हैं।
उदाहरण– सारथिः = सारथि
अतिथिः = अतिथि
कुक्षिः = उदरपार्श्व
बस्तिः = मूत्राशय
पाणिः = हाथ
अञ्जलिः = करसम्पुट

नपुंसकलिङ्ग प्रकरण

सूत्र 81. **''भावे ल्युडन्तः''**
सूत्रार्थ– भाव अर्थ में विहित जो ल्युट् प्रत्यय, तदन्त शब्द नपुंसकलिङ्ग होता है।
उदाहरण– गमनम् = जाना
हसनम् = हँसना
श्रवणम् = सुनना
भक्षणम् = खाना

सूत्र 82. **''निष्ठा च''**
सूत्रार्थ– भाव अर्थ में विहित जो निष्ठासंज्ञक 'क्त' प्रत्यय, तदन्त प्रातिपदिक नपुंसकलिङ्ग होता है।
उदाहरण– हसितम्, गीतम्, विलसितम्, गतम्।

सूत्र 83. **''त्वष्यञौ तद्धितौ''**
सूत्रार्थ– भाव अर्थ में विहित जो 'त्व' तथा 'ष्यञ्' तद्धित प्रत्यय, तदन्त शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं।
उदाहरण– **'त्व' - प्रत्ययान्त शब्द**– शुक्लत्वम्, निपुणत्वम्, उचितत्वम्
'ष्यञ्' प्रत्ययान्त शब्द– चातुर्यम्, नैपुण्यम्, शौक्ल्यम्,
माधुर्यम्, सौख्यम्, सामीप्यम्

सूत्र 84. **''अव्ययीभावः''**
सूत्रार्थ– अव्ययीभावसमास नपुंसकलिङ्ग होता है।
उदाहरण– यथाशक्ति = शक्ति के अनुसार
उपकृष्णम् = कृष्ण के पास
प्रत्येकम् = प्रत्येक

सूत्र 85. **''द्वन्द्वैकत्वम्''**
सूत्रार्थ– समाहार अर्थ में जो द्वन्द्व समास, वह नपुंसकलिङ्ग होगा।
उदाहरण– पाणिपादम् = हाथ और पैरों का समाहार
काकोलूकम् = काक और उलूकों का समाहार
गवाश्वम् = गायों तथा अश्वों का समाहार
शिरोग्रीवम् = शिर तथा ग्रीवा का समाहार

सूत्र 86. **''रात्राह्नाहाः पुंसि''**
सूत्रार्थ– रात्र, अह्न तथा अह– ये शब्द हैं अन्त में जिसके, ऐसा तत्पुरुष समास पुँल्लिङ्ग होता है।
उदाहरण– अपररात्रः = रात का अगला भाग
पूर्वरात्रः = रात का पूर्व का भाग
पूर्वाह्णः = दिन का पूर्व का भाग
अपराह्णः = दिन का अगला भाग
द्व्यहः = दो दिन
त्र्यहः = तीन दिन

सूत्र 87. **''सङ्ख्यापूर्वा रात्रिः''**
सूत्रार्थ– संख्या है पूर्वपद में जिसके, ऐसा द्विगु तत्पुरुष संज्ञक रात्रि शब्द नपुंसकलिङ्ग होता है।
उदाहरण– द्विरात्रम् = दो रात
त्रिरात्रम् = तीन रात
पञ्चरात्रम् = पाँच रात
नवरात्रम् = नौ रात

विशेष– 'रात्रि' शब्द को समासान्त होकर 'रात्र' बन जाता है 'संख्या' पूर्वपद में न होगा तो पुँल्लिङ्ग ही होगा जैसे– सर्वरात्रः।

सूत्र 88. **''द्विगुः स्त्रियां च व्यवस्थया''**
सूत्रार्थ– द्विगुसंज्ञक शब्द नपुंसकलिङ्ग तथा स्त्रीलिङ्ग होता है।

उदाहरण– त्रिलोकी = तीनों लोक
पञ्चमूली = पाँच मूल
पञ्चखट्वी = पाँच खाट
त्रिभुवनम् = तीनों लोक
पञ्चपात्रम् = पाँच पात्र

सूत्र 89. **''इसुसन्तः''**

सूत्रार्थ– इस्-प्रत्ययान्त तथा उस्-प्रत्ययान्त शब्द नपुंसकलिङ्ग होता है।

उदाहरण– हविः = आहुति
धनुः = धनुष

सूत्र 90. **''मुख - नयन - लोह - वन - मांस - रुधिर - कार्मुक - विवर - जल - हल - धनान्नाभिधानानि''**

सूत्रार्थ– सूत्रोक्त शब्द तथा इनके पर्यायवाची शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं।

उदाहरण–
(क) **'मुख' के पर्याय नाम**– मुखम्, आस्यम्, वक्त्रम्, वदनम्, तुण्डम्, आननम्, लपनम्।
(ख) **'नयन' के पर्याय नाम**– नयनम्, नेत्रम्, लोचनम्, अक्षि, चक्षुः, ईक्षणम्।
(ग) **'लोह' के पर्याय नाम**– लोहम्, कालायसम्, अयः
(घ) **'वन' के पर्याय नाम**– वनम्, विपिनम्, काननम्, अरण्यम्
(ङ) **'मांस' के पर्याय नाम**– मांसम्, आमिषम्, पिशितम्, कव्यम्, पललम्
(च) **'रुधिर' के पर्याय नाम**– रुधिरम्, रक्तम्, शोणितम्, क्षतजम्।
(छ) **'कार्मुक' के पर्याय नाम**– कार्मुकम्, चापम्, धनुः, शरासनम्।
(ज) **'विवर' के पर्याय नाम**– विवरम्, रन्ध्रम्, श्वभ्रम्, बिलम्।
(झ) **'जल' के पर्याय नाम**– जलम्, नीरम्, अम्बु, तोयम्, वारि, पयः, सलिलम्, अर्णः।
(ञ) **'हल' के पर्याय नाम**– हलम्, लाङ्गलम्, गोदारणम्
(ट) **'धन' के पर्याय नाम**– धनम्, वित्तम्, द्रविणम्, निधानम्
(ठ) **'अन्न' के पर्याय नाम**– अन्नम्, अशनम्, भक्ष्यम्।

सूत्र 91. **''अटवी स्त्रियाम्''**

सूत्रार्थ– 'अटवी' शब्द स्त्रीलिङ्ग में प्रयुक्त होता है, यह शब्द वनवाची है, अतः पूर्वसूत्र से नपुंसकत्व प्राप्त था।

सूत्र 92. **''लोपधः''**

सूत्रार्थ– 'ल्' वर्ण है उपधासंज्ञक जिसका, ऐसा अकारान्त शब्द नपुंसकलिङ्ग होता है।

उदाहरण– कुलम् = वंश
कूलम् = तट
स्थलम् = स्थल
मूलम् = मूल

सूत्र 93. **''तूल - उपल - ताल - कुसूल - तरल - कम्बल देवल - वृषलाः पुंसि''**

सूत्रार्थ– सूत्रोक्त ये शब्द पुँल्लिङ्ग होते हैं।
सूत्रोक्त सभी शब्द लोपध तथा अकारान्त हैं; अतः इन्हें 'लोपधः' सूत्र से नपुंसकत्व प्राप्त था। यह पूर्वसूत्र का अपवाद है।

उदाहरण– तूलः = रुई
उपलः = रत्न
तालः = एक वृक्ष
कुसूलः = कोठला
तरलः = हार का मध्यमणि
कम्बलः = कम्बल
देवलः = एक महर्षि
वृषलः = नीच

सूत्र 94. **''शील - मूल - मङ्गल - साल - कमल - तल - मुसल - कुण्डल - पलल - मृणाल - बाल - निगल - पलाल - बिडाल - खिल - शूलाः पुंसि च''**

सूत्रार्थ– सूत्रोक्त ये शब्द पुँल्लिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग होते हैं। सूत्रोक्त सभी शब्द लोपध तथा अकारान्त हैं, अतः इन्हें 'लोपधः' से नपुंसकत्व प्राप्त था; यहाँ पुंस्त्व भी कह दिया गया।

उदाहरण– शीलः/शीलम् = स्वभाव
मूलः/मूलम् = मूल
मङ्गलः/मङ्गलम् = शुभ
सालः/सालम् = एक वृक्ष
कमलः/कमलम् = एक पुष्प
तलः/तलम् = ऊपरी भाग
मुसलः/मुसलम् = मूसल
कुण्डलः/कुण्डलम् = कर्णाभूषण
पललः/पललम् = मांस
मृणालः/मृणालम् = कमलनाल

बालः/बालम् = बाल
निगलः/निगलम् = निगड़
पलालः/पलालम् = काण्ड, नाल
बिडालः/बिडालम् = बिलाव (बिलार)
खिलः/खिलम् = परिशिष्टांश
शूलः/शूलम् = आयुध, तीव्र वेदना

सूत्र 95. ''शतादिः सङ्ख्या''
सूत्रार्थ– संख्यावाचक शत आदि शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं।
उदाहरण– शतम् = सौ
सहस्रम् = हजार

सूत्र 96. ''लक्षाकोटी स्त्रियाम्''
सूत्रार्थ– संख्यावाची 'लक्ष' तथा 'कोटि' शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं।
उदाहरण– लक्षा = लाख
कोटिः = करोड

सूत्र 97. ''शङ्कुः पुंसि च''
सूत्रार्थ– संख्यावाची 'शङ्कु' शब्द पुँल्लिङ्ग होता है।
उदाहरण– शङ्कुः = दस करोड़

सूत्र 98. ''नामरोमणी नपुंसके''
सूत्रार्थ– 'मन्' प्रत्ययान्त, दो अच् वाले 'नामन्' तथा 'रोमन्' शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं।
उदाहरण– नाम = नाम
रोम = रोम

सूत्र 99. ''असन्तोद्व्यच्कः''
सूत्रार्थ– 'अस्' प्रत्ययान्त दो अच् वाला प्रातिपदिक, वह नपुंसकलिङ्ग होता है।
उदाहरण– पयस् - पयः = दूध
तपस् - तपः = तपस्या
यशस् - यशः = यश, कीर्ति
तेजस् - तेजः = तेज
मनस् - मनः = मन
वर्चस् - वर्चः = तेज

विशेष– 'चन्द्रमस्' शब्द 'अस्' - प्रत्ययान्त तो है परन्तु दो अच् वाला न होने से नपुंसकत्व नहीं हुआ। यथा– चन्द्रमस् - चन्द्रमाः = चन्द्रमा (पु0)

सूत्र 100. ''अप्सराः स्त्रियाम्''
सूत्रार्थ– 'असु' प्रत्ययान्त जो 'अप्सरस्' शब्द, वह स्त्रीलिङ्ग होता है।
उदाहरण– अप्सराः = देवांगना

सूत्र 101. ''त्रान्तः''
सूत्रार्थ– 'त्र' प्रत्ययान्त के अकारान्त प्रातिपदिक, वह नपुंसकलिङ्ग होता है।
उदाहरण– पत्रम् = पत्ता
छत्रम् = छाता
दात्रम् = हँसिया
नेत्रम् = आँख
शस्त्रम् = शस्त्र
योत्रम् = रस्सी
योक्त्रम् = रस्सी
तोत्रम् = आर
स्तोत्रम् = स्तुति
सेत्रम् = बेड़ी
सेक्त्रम् = डोलची
मेढ्रम् = लिङ्ग

सूत्र 102. ''यात्रा - मात्रा - भस्त्रा - दंष्ट्रा - वरत्राः स्त्रियामेव''
सूत्रार्थ– 'त्र' - प्रत्ययान्त यात्रा, मात्रा, भस्त्रा, दंष्ट्रा, तथा वरत्रा शब्द स्त्रीलिङ्ग ही होते हैं। यह 'त्रान्तः' सूत्र का अपवाद है।
उदाहरण– यात्रा = यात्रा
मात्रा = मात्रा
भस्त्रा = धौंकनी
दंष्ट्रा = दाढ
वरत्रा = चर्मपेटिका जो अश्व आदि पशुओं की छाती के नीचे बाँधी जाती है।

सूत्र 103. ''भृत्र - अमित्र - छात्र - पुत्र - मन्त्र - वृत्र - मेढ्र - उष्ट्राः पुंसि''
सूत्रार्थ– सूत्रोक्त 'त्र' प्रत्ययान्त शब्द पुँल्लिङ्ग होते हैं। इन्हें 'त्रान्तः' सूत्र से नपुंसकत्व प्राप्त था।
उदाहरण– भृत्रः = पालक
अमित्रः = शत्रु
छात्रः = छात्र
पुत्रः = पुत्र
मन्त्रः = ईश्वरवचन
वृत्रः = मेघ
मेढ्रः = पुरुष (इन्द्रिय)
उष्ट्रः = ऊँट

सूत्र 104. ''पत्र - पात्र - पवित्र - सूत्र - छत्राः पुंसि च''
सूत्रार्थ– सूत्रोक्त शब्द पुँल्लिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग होते हैं।

उदाहरण– पत्रः/पत्रम् = पत्ता, पंख, वाहन
पात्रः/पात्रम् = पात्र, भाजन, अर्ह
पवित्रः/पवित्रम् = शुद्ध
सूत्रः/सूत्रम् = यज्ञोपवीत
छत्रः/छत्रम् = छाता, कुकुरमुत्ता

सूत्र 105. ''बल - कुसुम - शुल्ब - पत्तन - रण - अभिधानानि''

सूत्रार्थ– बल, कुसुम, शुल्ब, पत्तन तथा रण – ये शब्द तथा इनके वाचक शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं।

उदाहरण– **(क) 'बल' के पर्याय नाम–** बलम्, द्रविणम्, तरः, सहः, शौर्यम्, शुष्मम्
(ख) 'कुसुम' के पर्याय नाम – कुसुमम्, पुष्पम्, प्रसूनम्
(ग) 'शुल्ब' के पर्याय नाम– शुल्बम्, ताम्रकम्, म्लेच्छमुखम्, उदुम्बरम्
(घ) 'पत्तन' के पर्याय नाम– पत्तनम्, नगरम्
(ङ) 'रण' के पर्याय नाम– युद्धम्, आयोधनम्, जन्यम्, प्रघनम्, मृधम्, आस्कन्दनम्, सङ्ख्यम्, समीकम्, साम्परायिकम्।

सूत्र 106. ''फलजातिः''

सूत्रार्थ– फलवाची शब्द नपुंसकलिङ्ग होता है।

उदाहरण– आमलकम् = आँवले का फल
आम्रम् = आम्र का फल

सूत्र 107. ''वियत् - जगत् - सकृत् - शकन् - पृषत् - शकृद् - यकृत् - उदश्वितः''

सूत्रार्थ– सूत्रोक्त शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं।

उदाहरण– वियत् = आकाश
जगत् = संसार
सकृत् = एकबार
शकन् = गोबर
पृषत् = बिन्दु
शकृत् = विष्ठा
यकृत् = जिगर
उदश्वित् = लस्सी

सूत्र 108. ''नवनीत - अवतान - अनृत - अमृत - निमित्त - वित्त - चित्त - पित्त - व्रत - रजत - वृत्त - पलितानि''

सूत्रार्थ– सूत्रोक्त सभी शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं।

उदाहरण– नवनीतम् = मक्खन
अवतानम् = फैलाव
अनृतम् = झूठ
अमृतम् = अमृत
निमित्तम् = शकुन
वित्तम् = धन
चित्तम् = चित्त
पित्तम् = पित्त
व्रतम् = व्रत
रजतम् = चाँदी
वृत्तम् = वर्तुल
पलितम् = बालों की सफेदी

सूत्र 109. ''श्राद्ध - कुलिश - दैव - पीठ - कुण्ड - भाण्ड - अङ्क - अङ्ग - दधि - सक्थि - अक्षि - आस्य - आस्पद - आकाश - कण्व - बीजानि''

सूत्रार्थ– सूत्रोक्त सभी शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं।

उदाहरण– श्राद्धम् = श्राद्ध
कुलिशम् = वज्र
दैवम् = भाग्य
पीठम् = कुशासन
कुण्डम् = भिक्षापात्र
भाण्डम् = पात्र
अङ्कम् = गोद, चिह्न
अङ्गम् = अंग
दधि = दही
सक्थि = जंघा, हड्डी
अक्षि = आँख
आस्यम् = मुख
आस्पदम् = स्थान
आकाशम् = आकाश
कण्वम् = निर्मलीफल
बीजम् = बीज

सूत्र 110. ''धान्य - आज्य - सस्य - रुप्य - कुप्य - पण्य - वर्ण्य - धृष्य - हव्य - कव्य - काव्य - सत्य - अपत्य - मूल्य - शिक्य - कुड्य - मद्य - हर्म्य - तूर्य - सैन्यानि''

सूत्रार्थ– सूत्रोक्त शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं।

उदाहरण– धान्यम् = अनाज
आज्यम् = घी

सस्यम् = कृषि
रुप्यम् = रजत
कुप्यम् = धातु
पण्यम् = विक्रेय
वर्ण्यम् = केसर
धृष्यम् = स्थान
हव्यम् = हवि
कव्यम् = बलि अन्न
काव्यम् = काव्य
सत्यम् = सत्य
अपत्यम् = सन्तति/सन्तान
मूल्यम् = मूल्य
शिक्यम् = छिक्का
कुड्यम् = भित्ति
मद्यम् = शराब, मदिरा
हर्म्यम् = महल
तूर्यम् = मृदंग
सैन्यम् = सेना

सूत्र 111. ''**द्वन्द्व - बर्ह - दुःख - बडिश - पिच्छ - बिम्ब - कुटुम्ब - कवच - वर - शर - वृन्दारकाणि**''

सूत्रार्थ– सूत्रोक्त सभी शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं।

उदाहरण– द्वन्द्वम् = कलह
बर्हम् = मयूरपुच्छ
दुःखम् = दुःख
बडिशम् = मछली काँटा
पिच्छम् = मोर का चँदा
बिम्बम् = प्रतिच्छाया
कुटुम्बम् = परिवार
कवचम् = कवच
वरम् = श्रेष्ठ
शरम् = जल
वृन्दारकम् = देवता, श्रेष्ठ

स्त्रीलिङ्ग-पुँल्लिङ्ग-प्रकरण

सूत्र 112. ''**गो - मणि - यष्टि - मुष्टि - पाटलि - वस्ति - शाल्मलि - त्रुटि - मसि - मरीचयः**''

सूत्रार्थ– सूत्रोक्त ये शब्द स्त्रीलिङ्ग व पुँल्लिङ्ग दोनों होते हैं।

उदाहरण– गौः = बैल, गाय
मणिः = रत्न
यष्टिः = लाठी
मुष्टिः = मुट्ठी
पाटलिः = श्वेत रक्त पुष्प विशेष
वस्तिः = मूत्राशय
शाल्मलिः = सेमल
त्रुटिः = मात्रा, कण
मसिः/मषी = स्याही
मरीचिः = किरण

सूत्र 113. ''**मृत्यु - सीधु - कर्कन्धु - किष्कु - कण्डु - रेणवः**''

सूत्रार्थ– सूत्रोक्त सभी शब्द स्त्रीलिङ्ग तथा पुँल्लिङ्ग दोनों होते हैं–

उदाहरण– मृत्युः = मृत्यु
सीधुः = मदिरा
कर्कन्धुः = बदरी
किष्कुः = प्रकोष्ठ
कण्डुः = खुजली
रेणुः = धूलि

सूत्र 114. ''**गुणवचनमुकारान्तं नपुंसकं च**''

सूत्रार्थ– गुणवाची जो उकारान्त शब्द, वह तीनों लिङ्गों में होता है।

उदाहरण– 1. अयं पटुः 2. इदं पटु 3. इयं पट्वी = चतुर

सूत्र 115. ''**अपत्यार्थस्तद्धिते**''

सूत्रार्थ– तद्धित प्रकरण में विहित जो अपत्यार्थक प्रत्यय, तदन्त प्रातिपदिक पुँल्लिङ्ग तथा स्त्रीलिङ्ग दोनों होते हैं।

उदाहरण– औपगवः = उपगु का पुत्र
औपगवी = उपगु की कन्या

जरत्कारवः = जरत्कारु का पुत्र
जरत्कारवी = जरत्कारु की कन्या

कापटवः = कपटु का पुत्र
कापटवी = कपटु की कन्या

पुँल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग प्रकरण

सूत्र 116. ''**शृङ्ग - अघ - निदाघ - उद्यम - शल्य- दृढाः**''

सूत्रार्थ– सूत्रोक्त सभी शब्द पुँल्लिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग दोनों होते हैं।

उदाहरण– शृङ्गः/शृङ्गम् = सींग
अघः/अघम् = पाप, दुःख, कष्ट
निदाघः/निदाघम् = ग्रीष्म
उद्यमः/उद्यमम् = श्रम
शल्यः/शल्यम् = काँटा
दृढः/दृढम् = स्थिर

सूत्र 117. ''व्रज - कुञ्ज - कुथ - कूर्च - प्रस्थ - दर्प - अर्भ - अर्ध - दर्भ - पुच्छाः''

सूत्रार्थ– सूत्रोक्त सभी शब्द पुँल्लिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग दोनों होते हैं।

उदाहरण– व्रजः/व्रजम् = गोष्ठ, समूह
कुञ्जः/कुञ्जम् = लतागृह
कुथः/कुथम् = हाथी की शोभा के लिए चित्रित वस्त्र
कूर्चः/कूर्चम् = गुच्छा, दाढी
प्रस्थः/प्रस्थम् = पर्वत शिखर
दर्पः/दर्पम् = घमण्ड
अर्भः/अर्भम् = बच्चा
अर्धर्चः/अर्धर्चम् = अर्धऋचा
दर्भः/दर्भम् = कुशा
पुच्छः/पुच्छम् = पूँछ

सूत्र 118. ''कबन्ध - औषध - आयुध - अन्ताः''

सूत्रार्थ– सूत्रोक्त शब्द पुँल्लिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग दोनों होते हैं।

उदाहरण– कबन्धः/कबन्धम् = जल, सिर कटा धड़
औषधः/औषधम् = औषधि/दवा
आयुधः/आयुधम् = शस्त्र
अन्तः/अन्तम् = समाप्ति

सूत्र 119. ''दण्ड - मण्ड - खण्ड - शव - सैन्धव - पार्श्व - आकाश - कुश - काश - अङ्कुश - कुलिशाः''

सूत्रार्थ– सूत्रोक्त सभी शब्द पुँल्लिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग दोनों होते हैं।

उदाहरण– दण्डः/दण्डम् = लाठी
मण्डः/मण्डम् = मॉड
खण्डः/खण्डम् = भाग
शवः/शवम् = मुर्दा
सैन्धवः/सैन्धवम् = घोड़ा/नमक
पार्श्वः/पार्श्वम् = पास
आकाशः/आकाशम् = आकाश
कुशः/कुशम् = एक घास विशेष
काशः/काशम् = एक घास विशेष
अङ्कुशः/अङ्कुशम् = अंकुश
कुलिशः/कुलिशम् = वज्र

सूत्र 120. ''गृह - मेह - देह - पट्ट - पटह - अष्टापद - अम्बुद - ककुदाश्च''

सूत्रार्थ– सूत्रोक्त शब्द पुँल्लिङ्ग व नपुंसकलिङ्ग दोनों होते हैं।

उदाहरण– गृहः/गृहम् = घर
मेहः/मेहम् = प्रमेहरोग
देहः/देहम् = शरीर
पट्टः/पट्टम् = पीठ
पटहः/पटहम् = नगाड़ा
अष्टापदः/अष्टापदम् = स्वर्ण
अम्बुदः/अम्बुदम् = बादल
ककुदः/ककुदम् = बैल का कुहीन, श्रेष्ठ, प्रधान

अविशिष्टलिङ्ग-प्रकरणम्

सूत्र 121. ''अव्ययं कतियुष्मदः''

सूत्रार्थ– अव्ययसंज्ञक 'कति' तथा 'युष्मद्' शब्द अविशिष्टलिङ्ग (सभी लिङ्गों) में होते हैं।

- 'कति' शब्द 'यति' तथा 'तति' शब्दों का उपलक्षण है।
- 'युष्मद्' शब्द 'अस्मद्' का उपलक्षण है।

उदाहरण– **(क) अव्ययशब्दाः**–श्वः, उच्चैः, शनैः, सम्प्रति, नीचैः।
(ख) (i) कति–कति पुरुषाः, कति स्त्रियः, कति फलानि
(ii) यति–यति बालकाः, यति बालिकाः, यति फलानि
(iii) तति–तति बालकाः, तति बालिकाः, तति पुष्पाणि
(ग) (i) युष्मद् – यूयं बालकाः, यूयं कन्याः
(ii) अस्मद् – वयं बालकाः, वयं कन्याः

सूत्र 122. ''ष्णान्ता सङ्ख्या''

सूत्रार्थ– षकारान्त और नकारान्त जो संख्यावाची शब्द, वह अविशिष्टलिङ्ग (सभी लिङ्ग) में होते हैं।

उदाहरण– **(क) षष्** – षकारान्त सङ्ख्या– षट् बालकाः, षट् बालिकाः, षट् पुस्तकानि।
(ख) पञ्चन्– नकारान्त सङ्ख्या – पञ्च बालकाः, पञ्च बालिकाः, पञ्च पुस्तकानि

सूत्र 123. ''गुणवचनं च''

सूत्रार्थ– गुणवाची शब्द विशेष्य के लिङ्ग और वचन का अनुसरण करते हैं।

उदाहरण– (क) शुक्लः पटः, शुक्ला पटी, शुक्लं पटम्।
(ख) चतुरः बालः, चतुरा बाला, चतुरं मित्रम्।

सूत्र 124. ''कृत्याश्च''

सूत्रार्थ– कृत्यसंज्ञक जो प्रत्यय, तदन्त शब्द अविशिष्टलिङ्ग (सभी लिङ्ग) में होते हैं।

उदाहरण– **(क) कर्तरि कृत्याः**– (i) गेयः गेया, गेयम्, (ii) पाठकः, पाठिका, पाठकम्
(ख) कर्मणि कृत्याः– (i) गन्तव्यः ग्रामः, गन्तव्या नगरी, गन्तव्यं नगरम्, (ii) पठनीयः, पठनीया, पठनीयम्

सूत्र 125. ''सर्वादीनि सर्वनामानि''

सूत्रार्थ– सर्वनामसंज्ञक 'सर्व' आदि शब्द अविशिष्टलिङ्ग में होते हैं।

उदाहरण– (i) सर्वः, सर्वा, सर्वम्, (ii) अयम्, इयम्, इदम्, (ii) सः, सा, तत्, (iv) कः, का, किम् आदि।

संस्कृत सम्बद्ध सभी प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए

प्रतियोगितागङ्गा

भाग- 1

वैदिकवाङ्मय
संस्कृतव्याकरण
भाषाविज्ञान

5500 प्रश्नों का स्त्रोत सहित हल

सम्पादक
सर्वज्ञभूषण

सह-सम्पादिका
अनीता वर्मा
सुमन सिंह

प्रकाशक
संस्कृतगङ्गा
दारागञ्ज, प्रयाग

अधिकृत विक्रेता
युनिवर्सल बुक्स
1519 अल्लापुर
इलाहाबाद

ISBN : 978-81-932244-1-0

* **प्रकाशनाधिकारिणी संस्था**

संस्कृतगङ्गा (पञ्जीकृत)
59, मोरी, दारागञ्ज, इलाहाबाद
(कोतवाली दारागञ्ज के आगे, गङ्गाकिनारे,
संकटमोचन छोटे हनुमान् मन्दिर के पास)
कार्यालय - 7800138404, 9839852033
email-Sanskritganga@gmail.com
वेबसाइट- www.Sanskritganga.org
www.Sanskritganga.in

* **प्रकाशक**

संस्कृतगंगा
दारागंज, इलाहाबाद

* **वितरक**

राजू पुस्तक केन्द्र
अल्लापुर, इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश)
मो० 9453460552

* पुस्तकें डाक द्वारा आर्डर करें–**7800138404**
(गोपेश मिश्र)

* प्रथमसंस्करण – सितम्बर - 2016

* **मूल्य –** ` **350/-** (तीन सौ पचास रुपये मात्र)

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

1. **मुख्य वितरक**
   राजू पुस्तक भण्डार, अल्लापुर, इलाहाबाद
   सम्पर्क सूत्र : 0532-2503638, 9453460552
2. संस्कृतगङ्गा, दारागञ्ज, इलाहाबाद
   सम्पर्क सूत्र : 7800138404, 9839852033
3. गौरव बुक एजेन्सी, कैण्ट, वाराणसी
4. विजय मैग्जीन सेन्टर, बलरामपुर
5. जायसवाल बुक सेन्टर, हरदोई – 9415414569
6. शिवशंकर बुक स्टाल, जौनपुर
7. न्यू पूर्वांचल बुक स्टाल, जौनपुर – 9235743254
8. कृष्णा बुक डिपो बस्ती – 8182854095
9. मनीष बुक स्टोर, गोरखपुर – 9415848788
10. द्विवेदी ब्रदर्स, गोरखपुर – 0551-344862
11. विद्यार्थी पुस्तक मन्दिर, गोरखपुर – 9838172713
12. आशीर्वाद बुक डिपो, अमीनाबाद, लखनऊ
13. मालवीय पुस्तक केन्द्र, अमीनाबाद, लखनऊ – 9918681824
14. मॉडर्न मैग्जीन बुक शॉप, कपूरशाला, लखनऊ
15. साहू बुक स्टॉल, अलीगंज, लखनऊ – 9838640164
16. भूमि मार्केटिंग, लखनऊ – 9450520503
17. दुर्गा स्टोर, राजा की मण्डी, आगरा – 9927092063
18. महामाया पुस्तक केन्द्र, बिलासपुर – 09907418171
19. डायमण्ड बुक स्टाल, ज्वालापुर, हरिद्वार
20. कम्पटीशन बुक हाउस, सब्जी मण्डी रोड, बरेली
    सम्पर्क सूत्र : 9897529906
21. अजय गुप्ता बुक स्टोर, लखीमपुर – 809062054
22. शिवशंकर बुक स्टाल, रीवा – 9616355944
23. कृष्णा बुक एजेन्सी, वाराणसी – 9415820103
24. गर्ग बुक डिपो, जयपुर
25. अग्रवाल बुक सेन्टर, मुखर्जी नगर, नयी दिल्ली

संस्कृतगङ्गा उवाच

प्रिय संस्कृतमित्राणि! नमः संस्कृताय।

- संस्कृतगङ्गा दारागञ्ज प्रयाग द्वारा "**प्रतियोगितागङ्गा**" (भाग-1) आप सभी संस्कृतमित्रों की सेवा में समर्पित है, इस पुस्तक में वैदिक वाङ्मय, संस्कृतव्याकरण एवं भाषाविज्ञान से सम्बद्ध विगत सभी प्रतियोगी परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नों का सप्रमाण हल प्रस्तुत है।
- इसके बाद प्रतियोगितागङ्गा (भाग-2) जिसमें भारतीयदर्शन एवं संस्कृतसाहित्य से सम्बद्ध सभी बहुविकल्पीय प्रश्नों का संग्रह है, यह कार्य भी लगभग पूर्ण हो चुका है, शीघ्र ही आपकी सेवा में उसे भी प्रस्तुत करने का प्रयास होगा।
- मित्रों! इस पुस्तक का लेखनकार्य जुलाई 2014 से प्रारम्भ किया गया था, तब से लेकर आज सितम्बर 2016 तक लगभग दो वर्ष से अधिक अनवरत परिश्रम के बाद पुस्तक का यह स्वरूप आपके सामने आ सका है, तो इसमें कोई सन्देह नहीं कि इस पुस्तक को तैयार करने में काफी समय लगा, परन्तु कोई भी जिज्ञासु प्रतियोगी छात्र इसे पढ़कर इसके श्रम का अनुभव कर सकता है– "**जानाति हि पुनः सम्यक् कविरेव कवेः श्रमम्**" (नलचम्पू 1/23) कहने को तो यह भी कहा जा सकता है कि इस पुस्तक में प्रश्नों का ही तो संग्रह है और क्या मौलिक सर्जना है, परन्तु मित्रों यह तो इसके स्वाध्याय से ही पता चलेगा कि इसमें लगातार 2 वर्षों तक लगभग 25 संस्कृतमित्रों के सहयोग से क्या विशेष कार्य किया गया है। इस कार्य को तो कोई जिज्ञासु, स्वाध्यायी तथा गुणी पाठक ही बता सकता है, कि पुस्तक का कार्य कितना गुरुतर, श्रमसाध्य एवं भगीरथप्रयास से ही सम्भव था, क्योंकि– "**जानन्ति हि गुणान् वक्तुं तद्विधा एव तादृशाम्**"
- प्रतियोगी परीक्षाओं के विषय में हम सभी लोगों की यह आम धारणा रही है कि TGT, PGT, UGC आदि किसी भी प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी करने के पूर्व प्रत्येक छात्र उस परीक्षा की मूल प्रकृति को जानने समझने के लिए उस परीक्षा के विगतवर्षों में पूछे गये प्रश्नों को देखना समझना चाहता है, ताकि उसी के अनुसार वह योजनाबद्ध तरीके से अपनी तैयारी कर सके। इस दृष्टि से यह पुस्तक संस्कृत प्रतियोगी परीक्षार्थियों के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगी, तथा संस्कृत से जुड़ी सभी प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए प्रथम एवं अनिवार्य पुस्तक होगी। क्योंकि इसमें भारत में सम्पन्न संस्कृत-सम्बद्ध किसी भी परीक्षा का प्रश्न यथासम्भव सही सन्दर्भ, स्रोत एवं उत्तर के साथ संकलित है। इस पुस्तक की यही विशिष्टता रही है कि इसमें केवल विगत परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्नों का ही संग्रह किया गया है न कि स्वनिर्मित प्रश्नों का। प्रश्नों की प्रकृति के साथ किसी भी तरह की छेड़छाड़ नहीं की गयी है, और प्रत्येक प्रश्न के आगे उस परीक्षा का नाम और वर्ष भी अङ्कित किया गया है।
- मित्रों! इस पुस्तक का यह स्वरूप बनाने में कुछ बड़ी चुनौतियाँ संस्कृतगङ्गा के सामने थीं, जैसे–

  (i) प्रश्नपत्रों की उपलब्धता

  (ii) प्रश्नों का सही उत्तर खोजना

  (iii) उत्तरों का प्रामाणिक ग्रन्थों से सही स्रोत लिखना

  (iv) प्रश्नों की पुनरावृत्ति रोकना

  (v) सभी प्रश्नों का सही सन्दर्भ लिखना

  (vi) किसी भी तरह के मुद्रणदोष से पुस्तक को बचाना

  (vii) प्रश्नों को सही क्रम में व्यवस्थित करते हुए उचित स्थान पर संकलित करना

  इन सभी चुनौतियों को संस्कृतगंगा की सम्पादक टीम ने अथक परिश्रम करके आसान बना दिया।

आइये इस पुस्तक की कुछ खास विशेषताओं से हम आपको परिचित करायें–

1. विगत सभी प्रतियोगी परीक्षाओं के संस्कृतसम्बद्ध प्रश्नों का संग्रह–

- मित्रों! इस पुस्तक में भारतवर्ष में सम्पन्न किसी भी प्रतियोगी परीक्षा में यदि कोई भी संस्कृतवाङ्मय से सम्बद्ध बहुविकल्पीय प्रश्न पूछा गया है, तो उसका संकलन किया गया है; वह परीक्षा चाहे IAS, PCS, UGC, TGT, PGT या किसी विश्वविद्यालय BHU, JNU या DU आदि की प्रवेश परीक्षा से ही सम्बद्ध क्यों न हो। इस प्रकार से 400 से अधिक प्रश्नपत्रों से लगभग 12000 (बारह हजार) से अधिक प्रश्न प्रतियोगितागङ्गा के दोनों भागों में संगृहीत किये गये हैं।
- इस पुस्तक में वैदिकवाङ्मय से लगभग 2000 (दो हजार) प्रश्न तथा संस्कृतव्याकरण एवं भाषाविज्ञान से लगभग 3500 (तीन हजार पाँच सौ) प्रश्नों का संग्रह है। इसप्रकार प्रतियोगितागङ्गा (भाग-1) में वेद, व्याकरण और भाषाविज्ञान से सम्बद्ध लगभग 5500 बहुविकल्पीय प्रश्नों का संग्रह है।
- विगत वर्षों में सन् 1990 से अब तक की किसी भी प्रतियोगी परीक्षा में यदि एक भी प्रश्न संस्कृतसम्बद्ध था तो उसका संकलन 'प्रतियोगितागङ्गा' में करने का पूरा प्रयास किया गया है; वह परीक्षा संस्कृतविषय से ही पूर्णतया सम्बद्ध हो, ऐसा नहीं है, बहुत सारे प्रश्न IAS, PCS, RPSC, MPPSC के प्रथम प्रश्नपत्र (सामान्यज्ञान) से भी संकलित हैं, विशेषकर वैदिकवाङ्मय में। जैसे– (i) **सबसे पुराना वेद कौन-सा है? (ii) ऋग्वेद की मूल लिपि थी, (iii) गायत्रीमन्त्र किस पुस्तक में मिलता है आदि।**

इसीप्रकार प्राचीन इतिहास, सामाजिक विज्ञान और हिन्दी साहित्य की TGT, PGT, UGC आदि परीक्षाओं में संस्कृत से जुड़े बहुत प्रश्न पूछे जाते हैं, उन सभी प्रश्नों को यथासम्भव संकलित करने का पूरा प्रयास किया गया है। हाँ, जो प्रश्नपत्र उपलब्ध नहीं हो पाये थे उनके प्रश्न इस संस्करण में संकलित नहीं हैं। आगामी संस्करण में उनको भी संगृहीत करने का प्रयास होगा।

2. प्रश्नों का विषयवार विभाजन–

इस पुस्तक में सर्वप्रथम सभी प्रश्नों को पाँच भागों में विभाजित किया गया है–

1. वैदिकवाङ्मय, 2. संस्कृतव्याकरण, 3. भाषाविज्ञान, 4. भारतीयदर्शन, 5. संस्कृतसाहित्य

अब यदि प्रश्न वेद से सम्बद्ध है तो उसे वैदिकवाङ्मय में और यदि व्याकरण, दर्शन, साहित्य और भाषाविज्ञान से हैं तो उन्हें उनके सही स्थान पर संकलित किया गया।

पुनः वैदिकवाङ्मय को **ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्, वैदिकसूक्तियाँ, वैदिकग्रन्थ-ग्रन्थकार** आदि **17 अध्यायों** में विभाजित किया गया। अब जो प्रश्न जिस अध्याय से सम्बद्ध था उस प्रश्न को उसी अध्याय में संकलित किया गया, अर्थात् ऋग्वेद से सम्बद्ध सभी प्रश्न ऋग्वेद में, यजुर्वेद से सम्बद्ध प्रश्न यजुर्वेद नामक अध्याय में संकलित किये गये। इसप्रकार वैदिकवाङ्मय से सम्बद्ध सभी प्रश्न तत्तत् अध्यायों में विभाजित करने से एक विषय के प्रश्न एक ही स्थान पर एकत्रित हो गये। साथ ही इसका भी ध्यान रखा गया है कि कौन-सा प्रश्न पहले होगा, कौन बाद में।

इसीप्रकार व्याकरण सम्बद्ध प्रश्नों को **संज्ञा, सन्धि, समास, कारक, प्रत्यय, शब्दरूप, धातुरूप आदि 16 अध्यायों** में विभाजित करके संकलित किया गया। अतः इस पुस्तक में सभी प्रतियोगी परीक्षाओं के संज्ञा, सन्धि, समास आदि से सम्बद्ध प्रश्न एकस्थान पर आपको एक साथ मिलेंगे।

3. प्रश्नों का सही सन्दर्भ–

इस पुस्तक में प्रत्येक प्रश्न के आगे परीक्षा का नाम और परीक्षा वर्ष का सन्दर्भ मोटे-मोटे (Bold) अक्षरों में लिखा गया है; जैसे– **TGT–2010, PGT–2011, UGC J–2000** आदि। इससे पाठकों को यह पता चलेगा कि यह प्रश्न किस परीक्षा में किस वर्ष और कहाँ पूछा गया था।

4. प्रश्नों की पुनरावृत्ति का अभाव–

विभिन्न प्रश्नपत्रों से प्रश्नों को संकलित करते समय देखा गया कि एक ही प्रश्न कई परीक्षाओं में बार-बार पूछा जा रहा है, तो उसे एक ही बार लिखकर उसका सन्दर्भ उस प्रश्न के आगे लिख दिया गया। कई बार ऐसा भी देखा गया कि वही प्रश्न किसी दूसरी शैली से पूछा गया है, भाव साम्य है, और उत्तर भी समान है तो ऐसे भी प्रश्नों को एक ही जगह संकलित किया गया है। जैसे– ऋग्वेद नामक अध्याय के प्रश्न क्र-39 को देखें–

(i) सर्वप्राचीनवेदः कः? **BHU AET–2011**

(ii) सबसे पुराना वेद कौन सा है? **BHU MET–2012, UKPCS–2009**

(iii) संसारस्य प्राचीनतमः ग्रन्थः कः? **UK TET–2014, CCSUM Ph.D–2016**

(iv) पाश्चात्य विद्वानों के अनुसार प्राचीनतम वेद कौन है? **UPPCS–1995**

(A) ऋग्वेद (B) यजुर्वेद (C) सामवेद (D) अथर्ववेद

स्पष्ट है कि यह प्रश्न 6 अगल-अलग परीक्षाओं में पूछा गया है, यहाँ प्रश्न की प्रकृति समान थी, उत्तर भी समान था, अतः इसे 6 बार न लिखकर एक ही जगह संकलित किया गया। इससे एक ही प्रश्न की पुनरावृत्ति नहीं हुई।

5. स्रोत सहित प्रामाणिक उत्तर–

इस पुस्तक में संकलित प्रत्येक प्रश्न का उत्तर स्रोत के साथ दिया गया है; उत्तरों की प्रामाणिकता के लिए विद्वान् लेखकों की पुस्तकों, इण्टरनेट या आप्तपुरुष गुरुजनों की सलाह को वरीयता दी गयी है। पुस्तकों का चयन करते समय यह ध्यान रखा गया है कि जिन पुस्तकों से उत्तरों की जाँच पड़ताल की जा रही है, वे प्रामाणिक हों। साथ ही जिन प्रश्नों के नीचे स्रोत के रूप में किसी पुस्तक या लेखक का नाम नहीं है उसे विद्वज्जनों की सलाह के आधार पर सही उत्तर माना गया है; जैसे ज्योतिषवेदाङ्ग की उत्तरों की प्रामाणिकता के लिए **प्रो0 गिरिजाशंकर शास्त्री** तथा व्याकरण के उत्तरों की शुचिता के लिए **प्रो0 ललितकुमार त्रिपाठी** गुरुजी का सतत मार्गदर्शन मिलता रहा है। साथ ही बहुत सारे प्रश्नों का उत्तर ठीक वैसे ही नहीं मिल पा रहा था, जैसा प्रश्न में पूछा है, पर उसी नियम या सूत्र से वह उत्तर सही माना गया है। खासकर वाच्यपरिवर्तन, शब्दरूप या धातुरूप आदि में।

6. मुद्रणदोष और गलत उत्तरों की सम्भावना नगण्य–

मित्रों! इस पुस्तक को पाँच बार प्रूफ किया गया है, सामान्यतया किसी भी पुस्तक की तीन बार प्रूफ रीडिंग की जाती है, किन्तु इस पुस्तक को अलग-अलग व्युत्पन्न प्रतियोगी छात्रों एवं योग्य शिक्षकों द्वारा पाँच बार प्रूफ किया गया है; अतः इस पुस्तक में मुद्रणगत दोष या उत्तरों के गलत होने की सम्भावना न के बराबर है, फिर भी **''पुस्तक 100% शुद्ध, सत्य एवं सरल है''** ऐसा प्रथमसंस्करण में ही कहना वाचालता होगी।

7. स्रोत ग्रन्थसूची–

इस पुस्तक के अन्त में उन सभी प्रामाणिक पुस्तकों की सूची (लेखक, प्रकाशक एवं प्रकाशनवर्ष के साथ) दी जा रही है, जिनका उपयोग उत्तरों का सही स्रोत खोजने में किया गया है।

कृतज्ञता-ज्ञापनम्

अन्त में उन सभी संस्कृतगंगा के भगीरथों को नमन, जिन्होंने प्रतियोगिता रूपी गङ्गा को इस पृथ्वी में लाने में 2 वर्षों की अखण्ड साधना की। विशेषकर जिन्हें यह जिम्मेदारी सौंपी गयी थी; अपनी सम्पादकीय टीम से जुड़ी **अनीतावर्मा, सुमनसिंह, अमितासिंह** एवं **नेगमदेवी** को। इनके साथ जो छाया की तरह इनका साथ देती रहीं उनमें **कविता सिंह, प्रियंका उमराव, रचनासिंह, शफीनाबेगम, नीलमगुप्ता, पूजागुप्ता, कुसुम, पूजा तिवारी** एवं **रागिनी शुक्ला** को हार्दिक धन्यवाद।

जिन्होंने तीर्थराज प्रयाग के गङ्गातट पर स्थित संस्कृतगङ्गा से प्रादुर्भूत इस प्रतियोगिता रूपी गङ्गा को निर्मल बनाने में अपना सर्वस्व समर्पण कर दिया, जिनमें से सभी को नाम्ना स्मरण करने में तो शायद कागज कम पड़ जाय किन्तु कुछ मित्रों को नाम से स्मरण करना मेरा परम कर्त्तव्य हैं जिनमें **अम्बिकेशप्रताप सिंह, राघवकुमार झा, सुशीलसिंह (चञ्चल), रमाकान्तमौर्य, मनीषशर्मा, रामबिहारी दुबे, सत्यप्रकाश साहू, अमितसिंह 'कोरॉव', ज्ञानसिंह, राजीवशुक्ल, अरुणपाण्डेय 'बजरंगी', अरुणपाण्डेय 'निर्मोही', श्रीकान्त, दिनेश दुबे, शेषमणि उपाध्याय, सितर्जनपाल, चन्द्रकान्तमिश्र, अमितयादव, सुभाषचन्द्र पाल, दीपचन्द्रयादव, सुनीलचौरसिया, दीपचन्द्र चौरसिया, महेन्द्र मिश्र, वीरेन्द्र यादव, श्रीकृष्ण मिश्र, अमित सिंह (बाराबंकी), मनमोहन मिश्र, प्रभाकर पाण्डेय, उपमन्यु मिश्र, अशोक सिंह, विमलेश कुमार, रंजीत कुमार वर्मा, करुणाशंकर भार्गव, उमापति वर्मा, केदारनाथ तिवारी, डॉ0 सुनीलसिंह, राजीवसिंह, प्रवीण शास्त्री, रवीन्द्रमिश्र, सच्चिदानन्द शुक्ल, रामकृष्ण पाल, दीपकशास्त्री, नितिन शुक्ला, दिवाकर चतुर्वेदी, अनिल सिंह** को हार्दिक धन्यवाद।

प्रतियोगितागङ्गा में संकलित प्रश्नपत्रों की सूची

परीक्षा	वर्ष	प्रश्नपत्रों की संख्या
AWES TGT	2008–2013	06
BHUAET	2010–2013	34
BHU B.ed	2011–2015	05
BHU MET	2008–2016	09
BHU RET	2008–2012	02
BHU Sh.ET	2008–2013	03
CCSUM (H) Ph.D	2016	01
CCSUM Ph.D	2016	01
BPSC	1992–2011	12
Chh. PSC	2003–2012	06
CLP (चकबन्दी लेखपाल परीक्षा)	2015	01
C-TET	2012–15	11
CVVET	2015	01
DL (डायट प्रवक्ता संस्कृत)	2015	01
DL (H) (डायट प्रवक्ता हिन्दी)	2015	01
DSSSB PGT	2014	01
DSSSB TGT	2014	01
G-GIC	2015	01
HE (हायर एजुकेशन)	2015	01
H-TET	2013–2015	04
IAS	1994–2013	24
Jh. PSC	2003–2013	06
JNU MET (M.A. प्रवेश परीक्षा)	2014–2015	02
JNU M.Phil/Ph.D	2014–015	02
MP वर्ग-I PGT	2012	01
MP-PSC	1990-2012	19
MP-TET	2011	01
REET (राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा)	2016	01
RLP (राजस्व लेखपाल परीक्षा)	2015	01
RPSC	1992–2013	13
RPSC ग्रेड-I, II, III	2010-2014	04
UGC कोड-25 (संस्कृत)	1994–2015	50
UGC कोड-73 (संस्कृत परम्परागत विषय)	1991-2015	41
UGC कोड-20 (हिन्दी)	2007-2015	26
UGC कोड-06 (इतिहास)	2012-2015	20
UGC कोड-09 (शिक्षाशास्त्र)	2005-2013	09
UK-TET	2011	03
UK SLET	2012–2015	04
UK PCS	2002–2011	05
UP GDC	2008–2014	03
UP GDC (हिन्दी)	2012	01

परीक्षा	वर्ष	प्रश्नपत्रों की संख्या
UP GIC	2009–2015	02
UP PGT (संस्कृत)	2000–2013	08
UP PGT (समाजशास्त्र)	2010–2013	02
UP PGT (हिन्दी)	2000-2013	08
UP PCS	1999–2013	20
UP TET	2013–2016	07
UP TGT (संस्कृत)	1999–2013	09
UP TGT (हिन्दी)	2001-2013	09
UP TGT (सामाजिक विज्ञान)	2001–2013	07
		कुल योग = 409

सङ्केताक्षर सूची

AWES TGT– Army Welfare Educational Society (आर्मी स्कूल संस्कृत शिक्षक परीक्षा)
BHU AET– Banaras Hindu University Aachary Entrance Test (काशी हिन्दू विश्वविद्यालय आचार्य प्रवेश परीक्षा)
BHU B.Ed – Banaras Hindu University Bachelor of Education (काशी हिन्दू विश्वविद्यालय शिक्षाशास्त्री प्रवेश परीक्षा)
BHU MET– Banaras Hindu University Master of Art Entrance Test (काशी हिन्दू विश्वविद्यालय स्नातकोत्तर प्रवेश परीक्षा)
BHU RET– Banaras Hindu University Research Entrance Test (काशी हिन्दू विश्वविद्यालय अनुसन्धान प्रवेश परीक्षा)
BHU Sh.ET– Banaras Hindu University Shastri Entrance Test (काशी हिन्दू विश्वविद्यालय शास्त्री प्रवेश परीक्षा)
BPSC– Bihar Public Sarvice Commisson (बिहार लोक सेवा आयोग)
CCSUM Ph.D– Chaudhari Charan Singh University Merath Doctor of Philosophy (चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ शोध प्रवेश परीक्षा)
CCSUM (H) Ph.D– Chaudhari Charan Singh University Merath Hindi Doctor of Philosophy (चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ हिन्दी शोध प्रवेश परीक्षा)
Chh. PSC– Chhattisgarh Public Sarvice Commisson (छत्तीसगढ़ लोक सेवा आयोग)
C-TET– Central Teacher Eligibility Test (केन्द्रीय शिक्षक पात्रता परीक्षा)
CVVET – Combind Vidya Varidhi Entrance Test (संयुक्त विद्या वारिधि प्रवेश परीक्षा)
DL– Diet Lecturer डायट प्रवक्ता (संस्कृत)
DL (H)– Diet Lecturer (Hindi) डायट प्रवक्ता (हिन्दी)
DSSSB PGT– Delhi Subordinate Services Selection Board Post Graduate Teacher (दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड) प्रवक्ता परीक्षा
DSSSB TGT– Delhi Subordinate Services Selection Board Trained Graduate Teacher (दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड) प्रशिक्षित स्नातक
G-GIC– Goverment Girls Inter College (राजकीय बालिका इण्टर कालेज)
HE – Higher Education (असिस्टेन्ट प्रोफेसर परीक्षा, उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग)
H-TET– Hariyana Teacher Eligibility Test (हरियाणा शिक्षक पात्रता परीक्षा)
IAS– Indian Administrative Service (भारतीय प्रशासनिक सेवा)
Jh.-PSC – Jharakhand Public Service Commission (झारखण्ड लोक सेवा आयोग)
JNU MET– Jawahar Lal Nehru University Master of Art Entrance Test. (जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय स्नातकोत्तर प्रवेश परीक्षा)
JNU M.Phil-Ph.D– Jawaher Lal Nehru University Master of Philosophy. Doctor of philosophy
MP वर्ग-I PGT– Madhya Pradesh Prawakta Pareeksha (मध्य प्रदेश प्रवक्ता परीक्षा)
MP PSC– Madhya Pradesh Public Service Commission (मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग)
MP TET– Madhya Pradesh Teacher Eligibility Test (मध्य प्रदेश शिक्षक पात्रता परीक्षा)

REET– Rajsthan Eligibility Examination for Teacher (राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा)
RLP – Rajasva Lekhapal Pareeksha (राजस्व लेखपाल परीक्षा)
RPSC– Rajasthan Public service Commission (राजस्थान लोक सेवा आयोग)
RPSC ग्रेड-I PGT– Rajasthan Public service Commission Post Graduate Teacher (राजस्थान लोक सेवा आयोग वरिष्ठ अध्यापक परीक्षा)
RPSC ग्रेड-II TGT– Rajasthan Public Service Commission Trained Graduate Teacher (राजस्थान लोक सेवा आयोग वरिष्ठ अध्यापक परीक्षा)
RPSC ग्रेड-III– Rajasthan Public Service Commision (राजस्थान लोक सेवा आयोग कनिष्ठ अध्यापक परीक्षा)
UGC 25 J– University Grant Commission Code-25 Sanskrit June (विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा आयोजित कोड-25 संस्कृत जून)
UGC 25 D– University Grant Commission Code-25 Sanskrit December (विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा आयोजित कोड-25 संस्कृत दिसम्बर)
UGC 25 S– University Grant Commission Code-25 Sanskrit September (विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा आयोजित कोड-25 संस्कृत सितम्बर)
UGC 73 J– University Grant Commission Code-73 Sanskrit June (विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा आयोजित कोड-73 संस्कृत परम्परागत विषय जून)
UGC 73 D– University Grant Commission Code-73 Sanskrit December (विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा आयोजित कोड-73 संस्कृत परम्परागत विषय दिसम्बर)
UGC 73-S– University grant Commission Code-73 Sanskrit September (विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा आयोजित कोड-73 संस्कृत सितम्बर)
UGC (H) J– University Grant Commission (Hindi) June (विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा आयोजित कोड 20 हिन्दी जून)
UGC (H) D– University Grant Commission (Hindi) December (विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा आयोजित कोड 20 हिन्दी दिसम्बर)
UGC 06 J– University Grant Commission Code-06 June (विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा आयोजित कोड 06 (इतिहास) जून)
UGC 06 D– University Grant Commission Code-06 December. (विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा आयोजित कोड 06 (इतिहास) दिसम्बर)
UGC 09 J– University Grant Commission code - 09 June (विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा आयोजित कोड 09 (शिक्षाशास्त्र) जून)
UGC 09 D– University Grant Commission Code - 09 December (विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा आयोजित कोड-09 (शिक्षाशास्त्र) दिसम्बर)
UK TET– Uttarakhand Teacher Eligibility Test (उत्तराखण्ड शिक्षक पात्रता परीक्षा)
UK SLET– Uttarakhand State Lecturer Eligibility Test (उत्तराखण्ड राज्यस्तरीय प्रवक्ता अर्हता परीक्षा)
UK PCS– Uttarakhand Provincial Civil Service-es. (उत्तराखण्ड प्रान्तीय लोक सेवा)
UP GDC– Uttar Pradesh Government Degree College (उत्तर प्रदेश राजकीय महा-विद्यालय (स्क्रीनिंग परीक्षा)
UP GDC (H)– Uttar Pradesh Government Degree College (उत्तर प्रदेश राजकीय महाविद्यालय स्क्रीनिंग परीक्षा (हिन्दी)
UP GIC– Uttar Pradesh Government Inter College (उत्तर प्रदेश राजकीय इण्टर कालेज प्रवक्ता)
UP PGT– Uttar Pradesh Post Graduate Teacher (उत्तर प्रदेश प्रवक्ता परीक्षा संस्कृत)
UP PGT (S.S.)– Uttar Pradesh Post Graduate Teacher (Sociology) (समाजशास्त्र (उत्तर प्रदेश प्रवक्ता परीक्षा)
UP PGT (H)– Uttar Pradesh Post Graduate Teacher (Hindi) (उत्तर प्रदेश प्रवक्ता परीक्षा, (हिन्दी)
UP PCS– Uttar Pradesh Provincial Civil Service-es (उत्तर प्रदेश प्रान्तीय लोक सेवा)
UP TET– Uttar Pradesh Teacher Eligibility Test (उत्तर प्रदेश शिक्षक पात्रता परीक्षा)
UP TGT– Uttar Pradesh Trained Graduate Teacher (Sanskrit) (उत्तर प्रदेश प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक चयन परीक्षा (संस्कृत)
UP TGT (H)– Uttar Pradesh Trained Graduate Teacher (Hindi) (उत्तर प्रदेश प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक चयन परीक्षा (हिन्दी)
UP TGT (S.S.)– Uttar Pradesh Trained Graduate Teacher Social Science (उत्तर प्रदेश प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक चयन परीक्षा (सामाजिक विज्ञान)

अनुक्रमणिका

भाग-1
वैदिकवाङ्मय

भाग-2
संस्कृत व्याकरण

भाग-1

वैदिकवाङ्मय

1. ऋग्वेद

1. वेदः अस्ति– UGC-73 D–2004

(A) श्रुतिः (B) स्मृतिः

(C) सदाचारः (D) धर्मः

स्रोत–*मनुस्मृति (2/10)–शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पेज–119*

2. (i) 'श्रुति' किसे कहते हैं– BHU MET–2010

(ii) 'श्रुति' का दूसरा नाम– BHU AET–2011

(A) स्मृति (B) वेद

(C) सूक्ति (D) ब्रह्मसूत्र

स्रोत–*मनुस्मृति (2/10)–शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पेज–119*

3. वेदः कः– UGC 25 J–2015, BHU-AET–2011

(A) अपौरुषेयं वाक्यम्

(B) अङ्ग-प्रधान-सम्बन्ध-बोधकं वाक्यम्

(C) कर्मबोधकं वाक्यम्

(D) समभिव्यवहारः वाक्यम्

स्रोत–अर्थसंग्रह – राजेश्वरशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज–58

4. (i) वेदों की संख्या है?

(ii) कति वेदाः सन्ति–

BHU B.ed–2014, 2015, UK TET–2011

(A) त्रयः (B) चत्वारः

(C) पञ्च (D) षट्

स्रोत– *वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–03*

5. (i) वेदों को किसने विभाजित किया है?

(ii) वेदानां विभाजनं कः कृतवान्?

(iii) वेदस्य चतुर्धा विभागः केन कृतः?

BHU-AET-2010, 2012, MP PSC–2005

(A) यास्कः (B) विश्वामित्रः

(C) महीधरः (D) कृष्णद्वैपायनः (व्यासः)

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–04*

6. (i) 'वेद' शब्द का अर्थ है?

(ii) 'वेद' शब्द से अभिप्रेत है?

UGC 25 J–1994, MP PSC–1991

(A) दर्शन (B) ऋषिमत

(C) ज्ञान (D) सिद्धान्त

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–02*

7. (i) 'वर्ण' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग किया गया?

(ii) वर्ण व्यवस्था का प्रथम उल्लेख होता है?

UP PGT (S.S.)–2010, 2013

(A) ऋग्वेद में (B) सामवेद में

(C) यजुर्वेद में (D) अथर्ववेद में

स्रोत–*(i) ऋग्वेद (10.90.12)*

(ii) ऋक्सूक्तसंग्रह-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–401

8. 'श्रुति' शब्दः कस्यार्थस्य बोधकोऽस्ति–

BHU AET–2010

(A) वेदस्य (B) स्मृतिग्रन्थस्य

(C) निरुक्तस्य (D) व्याकरणस्य

स्रोत–*मनुस्मृति (2/10)-शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पेज–119*

9. 'वेदा अपौरुषेयाः' इति स्वीकुर्वन्ति– UK SLET–2015

(A) बौद्धाः (B) जैनाः

(C) चार्वाकाः (D) मीमांसकाः

स्रोत– *अर्थसंग्रह - राजेश्वरशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज–58*

10. मीमांसा की दृष्टि से वेद के प्रकार हैं–BHU MET–2015

(A) विधि-मन्त्र-नामधेय-निषेध-अर्थवाद

(B) मन्त्र एवं ब्राह्मण

(C) द्रव्य एवं देवता

(D) चारों वेद एवं वेदाङ्ग

स्रोत– *अर्थसंग्रह - राजेश्वरशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज–20*

1. (A)	2. (B)	3. (A)	4. (B)	5. (D)	6. (C)	7. (A)	8. (A)	9. (D)	10. (A)

11. 'श्रुतिः' पद का व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ है? H TET–2014

(A) शृणोति धर्मं यः (B) श्रूयते धर्मोऽनया इति
(C) श्रूयते धर्ममनेन इति (D) इनमें से कोई नहीं

12. श्रुति है– UGC 73D–2013

(A) द्विविधा (B) त्रिविधा
(C) चतुर्विधा (D) पञ्चविधा

स्रोत–*अर्थसंग्रह - दयाशंकर शास्त्री, पेज–43*

13. वेदाः कस्याः प्रतीकभूतज्ञानराशयः सन्ति? AWES TGT–2013

(A) प्रतीकस्य (B) सभ्यतायाः
(C) दिशायाः (D) मानवसंस्कृतेः

स्रोत– *वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–01*

14. इतिहासपुराणाभ्यां ..... समुपबृंहयेत्– UGC 73D–2012

(A) संस्कृतम् (B) धर्मम्
(C) वेदम् (D) स्मृतिम्

स्रोत–*संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–41*

15. अपौरुषेयाः वेदाः भवन्ति? UGC73 D–2012

(A) अनित्याः (B) ईश्वरकर्तृकाः
(C) नित्याः (D) व्यासनिर्मिताः

स्रोत– *वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–17*

16. (i) वेदशब्देन किमभिप्रेतम्
(ii) वेद इन्हें कहते हैं?
UGC 25 D-1997, 2001, BHU AET–2012

(A) धर्मसूत्र-उपनिषद् (B) शिक्षा-प्रातिशाख्य
(C) श्रौत-गृह्यसूत्र (D) मन्त्र-ब्राह्मण

स्रोत– *वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–02*

17. मन्त्राणां समुदायस्य किं नाम अस्ति? BHU AET–2010

(A) संहिता (B) ब्राह्मण
(C) आरण्यक (D) उपनिषद्

स्रोत–*संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज–33*

18. वेदों के काव्यात्मक हिस्से को कहा जाता है? UP TGT (S.S.)–2014

(A) ब्राह्मण (B) आरण्यक
(C) संहिता (D) उपनिषद्

स्रोत– *वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–77*

19. संहितापाठानन्तरं क्रियते? UGC 25 D–2010, 2014

(A) सन्धिपाठः (B) समासपाठः
(C) पदपाठः (D) क्रमपाठः

स्रोत– *वैदिकसूक्तसंग्रह – विजयशङ्कर पाण्डेय, पेज–13*

20. सुमेलित कीजिए? MP PSC–1999

(अ) अथर्ववेद 1. ईश्वर महिमा
(ब) ऋग्वेद 2. बलिदान विधि
(स) यजुर्वेद 3. औषधियों से सम्बन्धित
(द) सामवेद 4. संगीत

	अ	ब	स	द
(A)	3	1	2	4
(B)	2	3	4	1
(C)	1	2	3	4
(D)	3	4	1	2

स्रोत– *वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–06*

21. (i) 'वेदत्रयी' पदस्य अभिप्रायोऽस्ति
(ii) 'वेदत्रयी' समूह क्या है?
BHU MET–2012, MP PGT–2012

(A) ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद
(B) ऋग्वेद, सामवेद, अथर्ववेद
(C) अथर्ववेद, सामवेद, यजुर्वेद
(D) ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद

स्रोत– *वैदिक साहित्य का इतिहास – पारसनाथ द्विवेदी, पेज–03*

22. 'त्रयी' इति संज्ञा– BHU AET–2010

(A) वेदस्य (B) वर्णस्य
(C) गुणस्य (D) मन्त्रस्य

स्रोत– *वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–03*

23. अपौरुषेयग्रन्थः को विद्यते? BHU AET–2010

(A) वेदः (B) पुराणम्
(C) रामायणम् (D) महाभारतम्

स्रोत– *वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–77*

11. (A) **12.** (B) **13.** (D) **14.** (C) **15.** (C) **16.** (D) **17.** (A) **18.** (C) **19.** (C) **20.** (A)
21. (D) **22.** (A) **23.** (A)

24. (i) वेदारम्भः कुतः प्रारभ्यते? UGC 25 S–2013
(ii) वेदारम्भो विधीयते? UK SLET–2012
(A) संहितातः (B) पदपाठतः
(C) जटापाठतः (D) घनपाठतः
स्रोत– *वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–08*

25. सायणमते वेदस्य स्वरूपं किम्– BHU AET–2011
(A) दिव्यज्ञानम्
(B) लोकोत्तरपदम्
(C) अलौकिकप्रतिष्ठा
(D) 'इष्टप्राप्त्यनिष्टपरिहारस्यालौकिकोपायभूतं ज्ञानम्'
स्रोत– *वैदिक साहित्य एवं संस्कृति – कपिलदेव द्विवेदी, पेज–01*

26. (i) आर्षेयपरम्परा के अनुसार वेद हैं–
(ii) वेदः कोऽस्ति– BHU AET–2011, UGC 25 D–2003
(A) रचितः (B) पौरुषेयः
(C) लिखितः (D) अपौरुषेयः
स्रोत– *अर्थसंग्रह - कामेश्वरनाथ मिश्र, पेज–47*

27. वेदस्य स्वतः प्रामाण्यत्वे किं मानम्– BHU AET–2011
(A) ईश्वरप्रोक्तम् (B) प्रमाणाभावः
(C) अग्निवर्णनम् (D) दुःखनिवृत्तिसाधनम्
स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-13*

28. 'वेदत्रयी' में किसकी गणना नहीं होती है– UGC 25 D–1999
(A) ऋग्वेद (B) यजुर्वेद
(C) सामवेद (D) अथर्ववेद
स्रोत– *वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–03*

29. वेदशब्दस्य निष्पत्तौ का निष्पत्तिः समीचीना नास्ति– BHU AET–2012
(A) विद्ज्ञाने (B) विद्सत्तायाम्
(C) विद्निवारणे (D) विद्विचारणे
स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–02*

30. कः कथ्यते वेदनिन्दकः– BHU AET–2010
(A) वेदवित् (B) नास्तिकः
(C) आस्तिकः (D) नैयायिकः
स्रोत–*मनुस्मृति (2/11) - शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पेज–120*

31. (i) धर्म का मूल प्रमाण है–
(ii) धर्म का मूल स्रोत है–UGC 73J–1991, 2007
(A) वेद (श्रुति) (B) चार्वाकदर्शन
(C) लोकाचार (D) याज्ञवल्क्य
स्रोत–*मनुस्मृति (2/6) - शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पेज–118*

32. 'वेदेन प्रयोजनमुद्दिश्यविधीयमानोऽर्थः धर्मः' एतल्लक्षणं केन कृतम्? BHU-AET–2011
(A) भास्करेण (B) खण्डदेवेन
(C) कृष्णयज्वना (D) आपदेवेन

33. आद्युदात्तः वेदशब्दः कस्य वाचकः? BHU-AET–2012
(A) सूर्यवाचकः (B) संख्यावाचकः
(C) ग्रन्थवाचकः (D) 'ख'-वाचकः
स्रोत– *संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (प्रथम खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/ब्रजबिहारी चौबे, भू. पेज–49*

34. अन्त्योदात्तः वेदशब्दः कस्य वाचकः? BHU AET-2012
(A) ग्रन्थवाचकः (B) कुशमुष्टिवाचकः
(C) जलवाचकः (D) हस्तवाचकः
स्रोत– *संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (प्रथम खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/ब्रजबिहारी चौबे, भू. पेज– 49*

35. 'ऋक्-प्रातिशाख्य' सम्बन्धित है– UGC 25 J–2001
(A) सामवेद से (B) अथर्ववेद से
(C) ऋग्वेद से (D) यजुर्वेद से
स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–197*

36. ऋग्वेदीयः ऋत्विक्– BHU AET–2010
(A) ब्रह्मा (B) उद्गाता
(C) अध्वर्युः (D) होता
स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–07*

37. 'होता' कस्य वेदस्य मन्त्रैः देवानामाह्वानं करोति? BHU AET–2010
(A) ऋग्वेदस्य (B) यजुर्वेदस्य
(C) सामवेदस्य (D) अथर्ववेदस्य
स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–07*

24. (A) 25. (D) 26. (D) 27. (A) 28. (D) 29. (C) 30. (B) 31. (A) 32. (D) 33. (C) 34. (B) 35. (C) 36. (D) 37. (A)

38. छन्दोबद्धः वेदोऽस्ति? RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011

(A) यजुर्वेदः (B) ऋग्वेदः
(C) सामवेदः (D) धनुर्वेदः

स्रोत– वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज– 48

39. (i) सर्वप्राचीनवेदः कः?
(ii) सबसे पुराना वेद कौन सा है?
(iii) संसारस्य प्राचीनतमः ग्रन्थः कः?
(iv) पाश्चात्त्य विद्वानों के अनुसार प्राचीनतम वेद कौन है? BHU AET-2011, BHU MET-2012 UP PCS–1995, UK PCS–2009, UP TET–2014 CCSUM-Ph. D–2016

(A) ऋग्वेद (B) यजुर्वेद
(C) सामवेद (D) अथर्ववेद

स्रोत–वैदिकसूक्तसंग्रह - विजयशङ्कर पाण्डेय, पेज–04

40. (i) ऋग्वेद का दूसरा नाम है– UGC 25 D–1997,
(ii) ऋग्वेदस्य नामान्तरम्– J–2007

(A) दशाध्यायी (B) दशतयी
(C) दशमण्डली (D) गानवेद

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - कर्णसिंह, पेज–36

41. (i) 'दशतयी' पदेन कस्य बोधो जायते –
(ii) 'दशतयी' से किस वेद को जाना जाता है?
(iii) कः वेदः 'दशतयी' इति नाम्नापि ज्ञायते–
(iv) 'दशतयी' शब्देन उच्यते– BHU MET–2011 BHU AET-2012 HE-2015 UGC 25 J–2005, 2009, 2010

(A) ऋग्वेद (B) सामवेद
(C) आयुर्वेद (D) अथर्ववेद

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - कर्णसिंह, पेज–36

42. आयुर्वेदः कस्य वेदस्योपवेदः– BHU AET-2011

(A) ऋक् (B) साम
(C) यजुः (D) अथर्व

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–10

43. होतुः सम्बद्धः वेदः कः– BHU-AET–2011

(A) सामवेदः (B) यजुर्वेदः
(C) ऋग्वेदः (D) अथर्ववेदः

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–07

44. मण्डलक्रमः केन वेदेन सम्बद्धः – UGC 25 J–2015

(A) अथर्ववेदेन (B) ऋग्वेदेन
(C) यजुर्वेदेन (D) सामवेदेन

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - कर्णसिंह, पेज–36

45. (i) ऋग्वेद की सृष्टि किससे हुयी है? BHU AET–2010
(ii) ऋग्वेदः सम्प्राप्तः– UGC 25 S–2013

(A) वायु से (B) अग्नि से
(C) जल से (D) आकाश से

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–39

46. (i) ऋग्वेद का प्रथमसूक्त है–
(ii) ऋग्वेदे प्रथममण्डलस्य प्रथमसूक्तं किम्? BHU MET-2015, RPSC ग्रेड-I PGT–2014

(A) अग्निसूक्त (B) रुद्रसूक्त
(C) पर्जन्यसूक्त (D) सवितृसूक्त

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्त शास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–55

47. (i) ऋग्वेद में सूक्तों की संख्या– MP PSC–1992
(ii) ऋग्वेदे सूक्तसंख्या वर्तते–RPSC ग्रेड-I PGT–2011
(iii) ऋग्वेद में .... सूक्त हैं? Chh. PSC–2010

(A) 1008 (B) 1018
(C) 1028 (D) 1038

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–06

48. (i) महाभाष्ये ऋग्वेदस्य कति शाखाः स्वीकृताः सन्ति?
(ii) ऋग्वेदस्य कियत्यः शाखाः सन्ति–
(iii) पतञ्जलि के अनुसार ऋग्वेद की शाखाओं की संख्या है–
(iv) पातञ्जलमहाभाष्यानुसार ऋग्वेद की शाखा संख्या है? BHU AET–2011, 2012 BHU MET–2008, 2009, 2012, UGC 73 J–2015

(A) सहस्रम् (1000) (B) शतम् (100)
(C) एकविंशतिः (21) (D) नव (9)

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–46

38. (B) 39. (A) 40. (B) 41. (A) 42. (A) 43. (C) 44. (B) 45. (B) 46. (A) 47. (C) 48. (C)

49. प्रसिद्ध ऋग्वेद सम्बद्ध है– BHU MET–2011
(A) शाकलशाखा से (B) वाष्कलशाखा से
(C) आश्वलायनशाखा से (D) शांखायनशाखा से
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–46

50. 'शाकलसंहिता' किस वेद की है– BHU MET–2008
(A) अथर्ववेद (B) ऋग्वेद
(C) सामवेद (D) शुक्लयजुर्वेद
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–46

51. 'वाष्कलसंहिता' वर्तते– UGC 25 D – 2010
(A) शुक्लयजुर्वेदस्य (B) सामवेदस्य
(C) ऋग्वेदस्य (D) कृष्णयजुर्वेदस्य
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–46

52. माण्डूकायनशाखा से सम्बन्धित है– BHU MET–2014
(A) ऋग्वेद (B) सामवेद
(C) यजुर्वेद (D) अथर्ववेद
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–29

53. ऋग्वेद के दशम मण्डल में कितने सूक्त हैं? UGC 73 D–2015
(A) 43 (B) 191
(C) 62 (D) 58
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–30

54. ऋग्वेद की मूल लिपि थी– UP PCS–2004
(A) देवनागरी (B) खरोष्ठी
(C) पाली (D) ब्राह्मी
स्रोत– भाषाविज्ञान-डॉ0 कर्णसिंह, पेज– 314

55. स्कन्दस्वामी का भाष्य किससे सम्बद्ध है– BHU MET–2011
(A) ऋग्वेद से (B) यजुर्वेद से
(C) सामवेद से (D) अथर्ववेद से
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–10

56. ऋग्वेदस्य शाखाः– CVVET–2015
(A) 5 (B) 6
(C) 8 (D) 7
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–29

57. (i) ऋग्वेद के पदपाठकार हैं–
(ii) ऋग्वेदस्य पदपाठस्य कर्ता कः आसीत्–
UGC 25 D–2007, BHU MET–2014
(A) सायणाचार्यः (B) स्कन्दस्वामी
(C) यास्कः (D) शाकल्यः
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–22

58. (i) वंशीयमण्डल विभक्त हैं– UGC 25 D–2002,
(ii) वंशीयमण्डलानि उपलभ्यन्ते– 2007
(A) यजुर्वेदे (B) ऋग्वेदे
(C) सामवेदे (D) अथर्ववेदे
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–30

59. दानस्तुतिसूक्तानि संहितायां सन्ति–
UGC 73 J–2012, UGC 25 D–2015
(A) माध्यन्दिन-संहिता (B) तैत्तिरीय-संहिता
(C) ऋग्वेद-संहिता (D) काण्व-संहिता
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–55

60. (i) पुरुषसूक्त आता है– UGC 25 J–1994, 2001
(ii) पुरुषसूक्त का सम्बन्ध है–
(A) शतपथ-ब्राह्मण से (B) सामवेद से
(C) ऋग्वेद से (D) अथर्ववेद से
ऋक्सूक्तसंग्रह ऋग्वेद (10/90)- हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–392

61. पुरुषसूक्त ऋग्वेद के .... मण्डल में है– MP PSC–2003
(A) प्रथममण्डल (B) नवममण्डल
(C) दशममण्डल (D) सप्तममण्डल
वैदिकसूक्तसंग्रह ऋग्वेद (10/90)- विजयशङ्कर पाण्डेय, पेज–18

62. ऋग्वेदे स्वरितस्वरः प्रदर्श्यते– UGC 25 J–2014
(A) अधः (B) उपरिष्यत्
(C) तिर्यक् (D) परितः
स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, भू. पेज–36

63. (i) शाकलशाखा कस्य वेदस्य– UGC 25 J–1995
(ii) शाकलशाखा से सम्बद्ध वेद है– 1999
(iii) शाकलशाखा केन वेदेन सम्बद्धा अस्ति–
UK SLET–2015, BHU AET–2011, 2012
(A) अथर्ववेद (B) सामवेद
(C) यजुर्वेद (D) ऋग्वेद
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–46

49. (A)	50. (B)	51. (C)	52. (A)	53. (B)	54. (D)	55. (A)	56. (A)	57. (D)	58. (B)
59. (C)	60. (C)	61. (C)	62. (B)	63. (D)					

64. (i) ऋग्वेद में मन्त्रों की संज्ञा है– AWES TGT–2010
(ii) ऋग्वेदस्य मन्त्रः कथ्यते? 2013, UK SLET–2015
UGC 25 D–1996

(A) साम (B) ऋचा
(C) यजुः (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–28*

65. (i) आयुर्वेद किस वेद का उपवेद है– UGC 25 D–
(ii) आयुर्वेद इस वेद का विषय है– 1996, J–2003

(A) ऋग्वेद (B) यजुर्वेद
(C) सामवेद (D) अथर्ववेद

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–10*

66. पुरूरवा-उर्वशी संवाद किस वेद में है–
UGC 25 D–1996, 1999, 2001, J–2009
UP GDC–2008, BHU MET–2014

(A) ऋग्वेद में (B) यजुर्वेद में
(C) सामवेद में (D) अथर्ववेद में

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–55*

67. ऋग्वेद में 'पारिवारिक-मण्डल' कहे गये हैं–
UGC 25 D–1997

(A) एक (B) दस
(C) आठ-नौ (D) दो से सात

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–30*

68. 'समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः' किस वेद का अन्तिम मन्त्र है? UGC 25 J–2004

(A) यजुर्वेद (B) सामवेद
(C) कृष्णयजुर्वेद (D) ऋग्वेद

स्रोत–*ऋग्वेद (10.191.04) भाग-4 - वेदान्ततीर्थ, पेज–577*

69. 'ऋक्'-शब्दस्यार्थः भवति– BHU AET–2011

(A) अभिमर्शनम् (B) स्तुतिः
(C) शंसनम् (D) यज्ञः

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–44*

70. ''पावका नः सरस्वती'' इति मन्त्रः वर्तते–
BHU AET–2011

(A) प्रथमसूक्तस्य (B) द्वितीयसूक्तस्य
(C) तृतीयसूक्तस्य (D) चतुर्थसूक्तस्य

स्रोत–*ऋग्वेद (1.3.10) भाग-1 - वेदान्ततीर्थ, पेज–25*

71. (i) गायत्रीमन्त्र किस पुस्तक में मिलता है–
(ii) प्रसिद्ध गायत्रीमन्त्र किस धर्म-ग्रन्थ में हैं–
(iii) गायत्रीमन्त्र के नाम से प्रसिद्ध मन्त्र सर्वप्रथम किस ग्रन्थ में मिलता है–
(iv) गायत्रीमन्त्रः वर्णितः– UP PCS–2013,
MP PSC–1997, 1999, BPSC–1994, JNU MET–2015

(A) भगवद्गीता (B) अथर्ववेद
(C) ऋग्वेद (D) मनुस्मृति

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–37*

72. निम्नलिखित में से किसका संकलन ऋग्वेद पर आधारित है? UP PCS–1997

(A) यजुर्वेद (B) सामवेद
(C) अथर्ववेद (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–88*

73. ऋग्वैदिककाल के प्रारम्भ में निम्न में से किसे महत्त्वपूर्ण मूल्यवान् सम्पत्ति समझा जाता था– UP PCS–2015

(A) भूमि को (B) गाय को
(C) स्त्रियों को (D) जल को

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–47

74. ऋग्वेद संहिता का नवम मण्डल पूर्णतः किसको समर्पित है? BPSC–1995

(A) इन्द्र और उनका हाथी
(B) उर्वशी का स्वर्ग
(C) पौधों और जड़ी-बूटियों से सम्बन्धित देवतागण
(D) सोम और इस पेय पर नामांकित देवता

स्रोत–*ऋग्वेद (भाग-4) - वेदान्ततीर्थ, पेज–07*

64. (B) 65. (A) 66. (A) 67. (D) 68. (D) 69. (B) 70. (C) 71. (C) 72. (B) 73. (B) 74. (D)

75. ऋग्वेद का कौन सा मण्डल पूर्णतः 'सोम' को समर्पित है– BPSC–1997

(A) 7वाँ मण्डल (B) 8वाँ मण्डल
(C) 9वाँ मण्डल (D) 10वाँ मण्डल

***स्रोत**–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–49*

76. (i) 'बालखिल्यसूक्त' ऋग्वेद के किस मण्डल में है–
(ii) ऋग्वेद के ...... मण्डल में 'बालखिल्य सूक्त' है– BHU MET–2011

(A) अष्टम (B) प्रथम
(C) तृतीय (D) दशम

***स्रोत**–ऋग्वेद (8/49) भाग-3 - वेदान्ततीर्थ, पेज–177, 350*

77. बालखिल्यसूक्तानि विद्यन्ते– UGC 25 J–2007

(A) ऋग्वेदे (B) सामवेदे
(C) अथर्ववेदे (D) यजुर्वेदे

***स्रोत**–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–47*

78. (i) ऋग्वेद में 'बालखिल्य सूक्त' कितने हैं–
(ii) ऋग्वेद में बालखिल्य सूक्त कितने हैं? BHU MET–2009, 2013

(A) चार (B) ग्यारह
(C) बारह (D) तेरह

***स्रोत**–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–29*

79. ऋग्वेद का कौन-सा मण्डल सबसे अर्वाचीन है– BHU MET–2010

(A) दशम (B) अष्टम
(C) द्वितीय (D) सप्तम

***स्रोत**–ऋग्वेद (भाग-4) - वेदान्ततीर्थ, पेज–08*

80. अवेस्ता की तुलना किस वेद से की जाती है– BHU MET–2012, 2013

(A) ऋग्वेद (B) अथर्ववेद
(C) आयुर्वेद (D) धनुर्वेद

***स्रोत**–वैदिक माइथोलाजी - रामकुमार राय, पेज–12*

81. सामगान का जिस वेद पर गायन किया जाता है, वह वेद है– BHU MET–2014

(A) यजुर्वेद (B) ऋग्वेद
(C) अथर्ववेद (D) शुक्लयजुर्वेद

***स्रोत**–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–88*

82. प्रसिद्ध 'शुनःशेपाख्यान' जिसमें मिलता है, वह वेद है– BHU MET–2014

(A) ऋग्वेद (B) शुक्लयजुर्वेद
(C) सामवेद (D) अथर्ववेद

***स्रोत**–वैदिक साहित्य और संस्कृति-बलदेव उपाध्याय, पेज–264*

83. सामवेद के मन्त्र सबसे अधिक किस वेद से लिये गये है– UP GDC–2008

(A) शुक्लयजुर्वेद से (B) कृष्णयजुर्वेद से
(C) ऋग्वेद से (D) अथर्ववेद से

***स्रोत**–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–88*

84. ऋग्वेदेऽग्निसूक्तेऽग्निरुच्यते– UP GDC–2014

(A) सुतपा (B) पुरोहितः
(C) यज्ञः (D) सर्वकल्याणः

***स्रोत**–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्त शास्त्री, पेज–55*

85. 'ऋक्'–शब्दस्य दार्शनिकः अर्थः कः– BHU AET–2011

(A) अध्वर्युः (B) यज्ञः
(C) दानम् (D) ब्रह्म

***स्रोत**–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–45*

86. यागे शस्त्रं केन पठ्यते– BHU AET–2012

(A) होत्रा (B) ब्रह्मणा
(C) आग्नीध्रेण (D) उद्‌गात्रा

***स्रोत**–वैदिक साहित्य और संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–45*

87. कः ऋग्वेदस्य मन्त्रैः देवानामाह्वानं करोति– BHU AET–2012

(A) होता (B) अध्वर्युः
(C) उद्‌गाता (D) ब्रह्मा

***स्रोत**–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–04*

75. (C) 76. (A) 77. (A) 78. (B) 79. (A) 80. (A) 81. (B) 82. (A) 83. (C) 84. (B) 85. (D) 86. (A) 87. (A)

88. ऋग्वेद की रचना कहाँ हुयी थी– MP PSC–1990
(A) दक्षिणभारत (B) पंजाब
(C) मध्यभारत (D) सप्तसैन्धव प्रदेश
स्रोत–*संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (प्रथम-खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/व्रजबिहारी चौबे, पेज–10*

89. ऋग्वेदस्य कस्य मण्डलस्य नाम पवमानमण्डलम् अस्ति– BHU AET–2012
(A) प्रथमस्य (B) द्वितीयस्य
(C) पञ्चमस्य (D) नवमस्य
स्रोत–*वैदिक साहित्य और संस्कृति-बलदेव उपाध्याय, पेज–112*

90. कः वेदः अभ्यर्हितः– BHU AET–2011
(A) ऋक् (B) यजुः
(C) साम (D) अथर्व
वैदिक साहित्य का इतिहास-गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज–52

91. 'अस्यवामीयसूक्त' मिलता है– UGC 73-J–1999
(A) कृष्णयजुर्वेद में (B) ऋग्वेद में
(C) सामवेद में (D) अथर्ववेद में
स्रोत–*संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्करशर्मा 'ऋषि' पेज–42*

92. ऋग्वेदस्य मुख्यविषयः अस्ति– AWES TGT–2010, 2012
(A) उपासना (B) कर्म
(C) ज्ञानम् (D) विज्ञानम्
स्रोत–*ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–38*

93. (i) वर्णव्यवस्था का सर्वप्रथम विवरण कहाँ प्राप्त होता है–
(ii) चारों वर्णों का प्रथमबार उल्लेख किस वेद में किया गया है–
MP PSC–1990, 1997, 1999, 2005, 2010
(A) ऋग्वेद के अन्तिम मण्डल में (पुरुषसूक्त में)
(B) महाभारत में
(C) छठीं शताब्दी ई० पू० के ग्रन्थों में
(D) तृतीय शताब्दी ई० पू० के ग्रन्थों में
स्रोत–*ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–401*

94. ऋग्वेदकाल में जनता निम्न में से मुख्यतया किसमें विश्वास करती थी– UP PCS–1993
(A) मूर्तिपूजा (B) एकेश्वरवाद
(C) देवीपूजा (D) बलि एवं कर्मकाण्ड
स्रोत–*ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–38*

95. ऋग्वेद में वर्णित धर्म का आधार था– MP PSC–1996
(A) शिव-पूजा (B) मूर्ति-पूजा
(C) प्रकृति-पूजा (D) नाग-पूजा
स्रोत–*ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–40*

96. वेद में वर्णित सबसे सामान्य अपराध निम्नलिखित में से क्या था– MP PSC–1999
(A) अपहरण (B) पशुओं की चोरी
(C) डकैती (D) हत्या
संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज–44

97. 'होतृगणे' कति ऋत्विजः भवन्ति– BHU AET–2012
(A) षट् (B) सप्त
(C) अष्ट (D) चत्वारः
स्रोत–*वैदिक शब्द-मीमांसा - गीताञ्जलि पाण्डेय, पेज–238*

98. आर्य-अनार्य युद्ध का वर्णन मिलता है– MP PSC–1991
(A) ऋग्वेद में (B) उपनिषद् में
(C) स्मृति में (D) ब्राह्मणग्रन्थ में
स्रोत–*वैदिक साहित्य और संस्कृति-बलदेव उपाध्याय, पेज–413*

99. स्तुतिप्रधान वेद है– BHU MET–2008
(A) ऋग्वेद (B) यजुर्वेद
(C) अथर्ववेद (D) सामवेद
स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–31*

100. ऋग्वेद के किस मण्डल में सोमयज्ञ के मन्त्र उपलब्ध होते हैं– BHU MET–2010
(A) प्रथम (B) द्वितीय
(C) नवम (D) सप्तम
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–35

88. (D) 89. (D) 90. (A) 91. (B) 92. (A) 93. (A) 94. (D) 95. (C) 96. (B) 97. (D) 98. (A) 99. (A) 100. (C)

101. 'आश्वलायन श्रौतसूत्र' से सम्बन्धित वेद है– **BHU MET–2015**

(A) ऋग्वेद (B) शुक्लयजुर्वेद
(C) सामवेद (D) अथर्ववेद

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–194

102. 'Langlois' ने ऋग्वेद का जिस भाषा में अनुवाद किया है वह है– **BHU MET–2015**

(A) English (अंग्रेजी) (B) French (फ्रेंच)
(C) Germon (जर्मन) (D) Italian (इटली)

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–16

103. 'अग्निमीळे पुरोहितम्' इति मन्त्रांशं कस्य वेदस्यास्ति? **UP GIC–2015**

(A) ऋग्वेदस्य (B) यजुर्वेदस्य
(C) सामवेदस्य (D) अथर्ववेदस्य

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्त शास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–55

104. (i) यम-यमी-संवादः कुत्र वर्तते? CCSUM Ph. D–2016
(ii) यम-यमी-संवादसूक्त किस वेद में है–
(iii) यम-यमी-संवादस्य प्रस्तोता वेदः–
UGC 25 J–1995, 1999, 2002, D–2003, 2004

(A) सामवेदे (B) ऋग्वेदे
(C) यजुर्वेदे (D) अथर्ववेदे

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–56

105. यम-यमी–संवादे 'यमी' आसीत् यमस्य– **UGC 25 J–2007**

(A) कन्या (B) माता
(C) भगिनी (D) जाया

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–56

106. ''किं भ्रातासद्यनाथम्'' इति कस्मिन् सूक्ते पठ्यते– **UGC 25 J–2014**

(A) नासदीयसूक्ते
(B) पृथ्वीसूक्ते
(C) विश्वामित्र-नदी-संवादसूक्ते
(D) यम-यमी-संवादसूक्ते

स्रोत–ऋग्वेद (10.10.11) भाग-4 - वेदान्ततीर्थ, पेज–226

107. विश्वामित्र-नदी-संवाद किसमें मिलता है– **UGC 25 J–1998**

(A) ऋग्वेद में (B) सामवेद में
(C) अथर्ववेद में (D) कृष्णयजुर्वेद में

स्रोत–(i) ऋग्वेद (3/33) भाग-2 - वेदान्ततीर्थ, पेज–82
(ii) वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–57

108. 'विश्वामित्रनदीसंवादः' कुत्र वर्तते–

(A) ऋग्वेदस्य दशममण्डले (B) ऋग्वेदस्य तृतीयमण्डले
(C) यजुर्वेदस्य पञ्चमाध्याये (D) अथर्ववेदस्य द्वितीयकाण्डे

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–57

109. (i) 'सरमा-पणि-संवाद' किस वेद में मिलता है–
(ii) सरमा-पणिसंवादः वर्णितः अस्ति–
UP GIC–2015, UGC 25 D–1998

(A) ऋग्वेदे (B) सामवेदे
(C) अथर्ववेदे (D) कृष्णयजुर्वेदे

स्रोत–(i) ऋग्वेद (10.108) भाग-4 - वेदान्ततीर्थ, पेज–463
(ii) वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–57

110. 'पुरूरवा-उर्वशी' संवादसूक्त ऋग्वेद के किस मण्डल में है– **UGC 25 J–2000, 2010**

(A) दशम (B) प्रथम
(C) तृतीय (D) पञ्चम

स्रोत–ऋग्वेद (10/95) भाग-4 - वेदान्ततीर्थ, पेज–428

111. 'नासदीयसूक्त' है– **UGC 25 J–2003**

(A) ऋग्वेद में (B) सामवेद में
(C) अथर्ववेद में (D) कृष्णयजुर्वेद में

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–430

112. (i) 'यम-यमी-संवाद' ऋग्वेद के किस मण्डल में है–
(ii) ऋग्वेदे यमयमीसंवादः उपलभ्यते–
UGC 25 D–2003, J– 2008, UK SLET–2015

(A) दशम (B) अष्टम
(C) नवम (D) सप्तम

स्रोत–ऋग्वेद (10/10) भाग-4 - वेदान्ततीर्थ, पेज–224

101. (A) 102. (B) 103. (A) 104. (B) 105. (C) 106. (D) 107. (A) 108. (B) 109. (A) 110. (A) 111. (A) 112. (A)

113. ''न वै स्त्रैणानि सख्यानि सन्ति'' इति वर्तते UGC 25 J–2006

(A) सरमा-पणिसंवादे (B) यम-यमी-संवादे
(C) पुरूरवा-उर्वशी-संवादे (D) विश्वामित्र-नदी-संवादे

स्रोत–ऋग्वेद (10.95.15) भाग-4 - वेदान्ततीर्थ, पेज–431

114. ''मा नो नि कः पुरुषत्रा नमस्ते'' वर्तते– UGC 25 D–2006

(A) सरमा-पणि-संवादे (B) यम-यमी-संवादे
(C) पुरूरवा-उर्वशी-संवादे (D) विश्वामित्र-नदी-संवादे

स्रोत–ऋग्वेद (3.33.8) भाग-2 - वेदान्ततीर्थ, पेज–83

115. ''नाहं वेद भ्रातृत्वं नो स्वसृत्वम्'' इति मन्त्रपादः कुत्र विराजते– UGC 25 D–2008

(A) यम-यमी-संवादे (B) सरमा-पणि-संवादे
(C) विश्वामित्र-नदी-संवादे (D) पुरूरवा-उर्वशी-संवादे

स्रोत–ऋग्वेद (10.108.10) भाग-4 - वेदान्ततीर्थ, पेज–465

116. 'यमी' प्रतीक है– UGC 25 J–2004

(A) दिन की (B) रात्रि की
(C) सूर्य की (D) ऊषा की

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–44

117. 'विपाशा शुतुद्री' इति नाम्नोः नद्योः वर्णनं कस्मिन् संवादसूक्ते विद्यते– UGC 25 D–2000

(A) यम-यमी-सूक्ते (B) सरमा-पणि-सूक्ते
(C) विश्वामित्र-नदी-सूक्ते (D) पुरूरवा-उर्वशी-सूक्ते

स्रोत–ऋग्वेद (3.33.01) भाग-2 - वेदान्ततीर्थ, पेज–82

118. विश्वामित्र नदी संवाद सूक्त में ऋषिका नदियाँ कौन है? UGC 73 D–2015

(A) गङ्गायमुने (B) विपाट्छुतुद्री
(C) सरस्वतीनर्मदे (D) गोदावरी

स्रोत–ऋग्वेद (3.33.01) भाग-2 - वेदान्ततीर्थ, पेज–82

119. ''एना वयं पयसा पिन्वमाना अनुयोनिं देवकृतं चरन्तीः'' इति ऋचायाः केन संवाद-सूक्तेन सम्बन्धः– UGC 25 D–2000

(A) यम-यमी-संवादसूक्तेन (B) विश्वामित्र-नदी-सूक्तेन
(C) पुरूरवा-उर्वशी-सूक्तेन (D) सरमा-पणि-संवादसूक्तेन

स्रोत–ऋग्वेद (3.33.04) भाग-2 - वेदान्ततीर्थ, पेज–83

120. ''आ घा ता गच्छा'' इति पठ्यते– UGC 25 D–2012

(A) इन्द्रसूक्ते (B) वरुणसूक्ते
(C) विश्वामित्र-नदी-संवादे (D) यम-यमी-संवादे

स्रोत–ऋग्वेद (10.10.10) भाग-4 - वेदान्ततीर्थ, पेज–226

121. ''तस्य वयं प्रसवे याम् उर्वीः'' मन्त्रांशोऽयं कस्य सूक्तस्य वर्तते– UGC 25 J–2013

(A) रुद्रसूक्तस्य (B) यम-यमी-सूक्तस्य
(C) विश्वामित्र-नदी-सूक्तस्य (D) सरमा-पणि-सूक्तस्य

स्रोत–ऋग्वेद (3.33.6) भाग-2 - वेदान्ततीर्थ, पेज–83

122. ऋग्वेद के किस मण्डल में विश्वामित्र-नदी-संवाद सूक्त है–UGC 25 D–2010, BHU MET–2008, 2009, 2013

(A) प्रथम मण्डल (B) तृतीय मण्डल
(C) अष्टम मण्डल (D) नवम मण्डल

स्रोत–ऋग्वेद (3/33) भाग-2 - वेदान्ततीर्थ, पेज–82

123. 'इन्द्रेषिते प्रसवं भिक्षमाणे अच्छा समुद्रं रथ्येव याथः' से सम्बन्धित सूक्त है– BHU MET–2014

(A) विश्वामित्र-नदी-संवाद (B) रुद्रसूक्त
(C) वरुणसूक्त (D) सवितासूक्त

स्रोत–ऋग्वेद (3.33.2) भाग-2 - वेदान्ततीर्थ, पेज–82

124. 'सरमा-पणि' संवादसूक्तस्य मण्डलक्रमः कः– BHU AET–2011

(A) 10/10 (B) 10/121
(C) 10/95 (D) 10/108

स्रोत–ऋग्वेद (10/108) भाग-4 - वेदान्ततीर्थ, पेज–463

125. ''कदा सूनुः पितरं जात इच्छात्'' मन्त्रांशोऽयं वर्तते– UGC 25 D–2013

(A) विश्वामित्र-नदी-सूक्ते (B) यम-यमी-सूक्ते
(C) पुरूरवा-उर्वशी-सूक्ते (D) सरमा-पणि-सूक्ते

स्रोत–ऋग्वेद (10.95.12) भाग-4 - वेदान्ततीर्थ, पेज–430

126. 'आ वो वृणे सुमतिं यज्ञियानाम्'' मन्त्रांशोऽयं कस्य सूक्तस्य वर्तते– UGC 25 D–2013

(A) पुरूरवा-उर्वशी-सूक्तस्य (B) यम-यमी-सूक्तस्य
(C) सरमा-पणि-सूक्तस्य (D) विश्वामित्र-नदी-सूक्तस्य

स्रोत–ऋग्वेद (3.33.11) भाग-2 - वेदान्ततीर्थ, पेज–84

113. (C) 114. (D) 115. (B) 116. (B) 117. (C) 118. (B) 119. (B) 120. (D) 121. (C) 122. (B) 123. (A) 124. (D) 125. (C) 126. (D)

127. 'न वै स्त्रैणानि सख्यानि सन्ति' इयमुक्तिर्भवति– UGC 25 D–2007

(A) विश्वामित्रस्य (B) सरमायाः
(C) उर्वश्याः (D) यम्याः

स्रोत–ऋग्वेद (10.95.15) भाग-4 - वेदान्ततीर्थ, पेज–431

128. सृष्ट्युत्पत्तिविषयकं विवेचनं वर्तते– UGC 25 D–2013

(A) अग्निसूक्ते (B) इन्द्रसूक्ते
(C) नासदीयसूक्ते (D) पृथिवीसूक्ते

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–430

129. ऋग्वेद के किन दो मण्डलों में सूक्तों की संख्या समान है– BHU MET–2011

(A) प्रथम और दशम (B) प्रथम और द्वितीय
(C) प्रथम और चतुर्थ (D) प्रथम और नवम

वैदिक साहित्य का इतिहास-गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज–54

130. ''पयसा जवेते'' से सम्बन्धित सूक्त है– BHU MET–2015

(A) इन्द्रसूक्त (B) वरुणसूक्त
(C) विश्वामित्र-नदी-संवादसूक्त (D) पृथिवीसूक्त

स्रोत–ऋग्वेद (3.33.1) भाग-2 - वेदान्ततीर्थ, पेज–82

131. ''स्वसारं त्वा कृणवै मा पुनर्गा, अप ते गवां सुभगे भजाम'' इति मन्त्रांशः कुतः उद्धृतः? UGC 25 J–2015

(A) पुरूरवा-उर्वशी-संवादात्
(B) यम-यमी-संवादात्
(C) सरमा-पणि-संवादात्
(D) विश्वामित्र-नदी-संवादात्

स्रोत–ऋग्वेद (10.108.9) भाग-4 - वेदान्ततीर्थ, पेज–465

132. वेदानुसारेण ''चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत'' इयं पंक्तिः अस्ति– RPSC ग्रेड-II TGT–2010

(A) अग्निसूक्तस्य (B) विष्णुसूक्तस्य
(C) पुरुषसूक्तस्य (D) इन्द्रसूक्तस्य

स्रोत–ऋग्वेद (10.90.13) भाग-4 - वेदान्ततीर्थ, पेज–415

133. 'नासदीयसूक्त' का सम्बन्ध है– UGC 73 D–1992

(A) अथर्ववेद से (B) यजुर्वेद से
(C) ऋग्वेद से (D) गान्धर्ववेद से

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–430

134. 'स देवाँ एह वक्षति' इति कस्मिन् सूक्ते उपलभ्यते– UK SLET–2015

(A) वरुणसूक्ते (B)अग्निसूक्ते
(C) उषस्सूक्ते (D) रुद्रसूक्ते

स्रोत–ऋग्वेद (1.1.2) भाग-1 - वेदान्ततीर्थ, पेज–21

135. कस्मिन् सूक्ते चतुर्ण्णां वर्णानामुल्लेखोऽस्ति– UK SLET–2015

(A) हिरण्यगर्भसूक्ते (B) पुरुषसूक्ते
(C) नासदीयसूक्ते (D) श्रीसूक्ते

स्रोत–ऋग्वेद (10.90.12) भाग-4 - वेदान्ततीर्थ, पेज–414

136. 'आ कृष्णेन रजसा' इति कस्मिन् सूक्ते पठ्यते– UGC 25 S–2013

(A) नवग्रहसूक्ते (B) सवितृसूक्ते
(C) उषस्सूक्ते (D) रात्रिसूक्ते

स्रोत–ऋग्वेद (1.35.2) भाग-1 - वेदान्ततीर्थ, पेज–88

137. 'तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु' से सम्बन्धित सूक्त है– UP PGT–2003, BHU MET–2014

(A) विष्णुसूक्त (B) अग्निसूक्त
(C) शिवसङ्कल्पसूक्त (D) पवमानसूक्त

स्रोत–वेदचयनम् - विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी, पेज–239

138. (i) ऋक्सामच्छन्दोयजूंषि कस्मात् समुत्पन्नानि– UGC 25 D–2014

(A) पुरुषविशेषात् (B) यज्ञ-विशेषात्
(C) वाचः (D) पृथिव्याः

स्रोत– ऋग्वेद (10.90.9) भाग-4 - वेदान्ततीर्थ, पेज–414

138. (ii) 'सृष्टि-स्थिति-प्रलय' विषयकं विवेचनम् उपलभ्यते– UGC 25 D–2014

(A) नासदीयसूक्ते (B) इन्द्रसूक्ते
(C) पृथिवीसूक्ते (D) कालसूक्ते

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–430

127. (C) 128. (C) 129. (A) 130. (C) 131. (C) 132. (C) 133. (C) 134. (B) 135. (B) 136. (B) 137. (C) 138. (i) (A) 138. (ii) (A)

139. ''संविदाना दिवा कवे श्रियां मा धेहि भूत्याम्'' मन्त्रांशोऽयं वर्तते– UGC 25 D–2013

(A) वाक्सूक्ते (B) हिरण्यगर्भसूक्ते
(C) पृथिवीसूक्ते (D) पुरुषसूक्ते

***स्रोत**–अथर्ववेद (12.1.63) भाग-2 - वेदान्ततीर्थ, पेज–101*

140. राजन्तमध्वः .... निति पठ्यते– UGC 25 J–2012

(A) पृथिवीसूक्ते (B) अग्निसूक्ते
(C) विष्णुसूक्ते (D) वाक्सूक्ते

ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 1.1.8)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–60

141. 'अग्निमीळे पुरोहितम्' इत्यस्मिन् मन्त्रे 'ईळे' पदस्य अर्थः अस्ति– UP GDC–2012

(A) गच्छामि (B) स्तौमि
(C) करोमि (D) प्रज्वालयामि

***स्रोत**–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्त शास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–55*

142. विराट्पुरुषस्य कस्मादङ्गात् वैश्यो जातः– BHU AET–2010

(A) मुखतः (B) ऊरुतः
(C) पादतः (D) बाहुतः

ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 10.90.12)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–401

143. ब्राह्मण की उत्पत्ति ब्रह्मा के किस अङ्ग से हुयी है– BHU AET–2011

(A) उदर (B) मुख
(C) जानु (D) बाहु

***स्रोत**–ऋग्वेद (10.90.12) भाग-4 - वेदान्ततीर्थ, पेज–414*

144. ब्रह्मा के ऊरु से किसकी उत्पत्ति हुयी है– BHU AET–2011

(A) ब्राह्मण (B) क्षत्रिय
(C) वैश्य (D) चाण्डाल

ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 10.90.12)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–401

145. सबसे पहले किसकी सृष्टि हुयी– BHU AET–2010

(A) अग्नि (B) वायु
(C) पृथिवी (D) जल

***स्रोत**–(i) ऋग्वेद-नासदीय सूक्त (10.90.12)*
(ii) ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–434

146. पुरुषसूक्त में हमें मिलता है– MP PSC–2003

(A) नारी मुक्ति का सिद्धान्त
(B) सम्पत्ति के उत्तराधिकार का सिद्धान्त
(C) चातुर्वर्ण्य का सिद्धान्त
(D) नियोग का सिद्धान्त

ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 10.10.12)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–401

147. ''नि षसाद धृतव्रत'' इति कस्मिन् सूक्ते पठ्यते– UGC 25 J–2015

(A) वाक्सूक्ते (B) वरुणसूक्ते
(C) सूर्यसूक्ते (D) नदीसूक्ते

ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 1.25.10)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–74

148. (i) जलेन उत्पत्तेः सिद्धान्तं कस्मिन् सूक्तेऽस्ति–
(ii) जल से उत्पत्ति का सिद्धान्त किस सूक्त में है– UGC 25 D–1997, 2000

(A) शिवसङ्कल्पसूक्त में (B) पुरुषसूक्त में
(C) नासदीयसूक्त में (D) विश्वकर्मासूक्त में

ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 10.129.3)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–433-434

149. 'नासत्या वृक्तबर्हिषा'–यह किस सूक्त में है– UGC 25 J–1998

(A) अग्निसूक्त (B) विष्णुसूक्त
(C) इन्द्रसूक्त (D) अश्विनौसूक्त

150. 'रोहितसूक्त' किस वेद में उपलब्ध होता है– UGC 25 J–1998

(A) अथर्ववेद (B) ऋग्वेद
(C) सामवेद (D) यजुर्वेद

***स्रोत**–वैदिक साहित्य का इतिहास -कर्ण सिंह, पेज–79*

151. 'यो जात एव प्रथमो मनस्वान्' यह मन्त्रांश किस सूक्त का है– UGC 25 D–1998

(A) अग्निसूक्त (B) रुद्रसूक्त
(C) वरुणसूक्त (D) इन्द्रसूक्त

वैदिकसूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 2.12.1) - विजयशङ्कर पाण्डेय, पेज–65

139. (C) 140. (B) 141. (B) 142. (B) 143. (B) 144. (C) 145. (D) 146. (C) 147. (B) 148. (C) 149. (D) 150. (A) 151. (D)

152. (i) 'स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव' इति मन्त्रांशः कस्मिन् सूक्ते लभ्यते– UGC 25 J–2000
(ii) 'स नः पितेव सूनवे... सूपायनो भव' यह सूक्त है– BHU MET–2009, 2012, UP GDC–2014
(A) उषःसूक्त (B) वरुणसूक्त
(C) बृहस्पतिसूक्त (D) अग्निसूक्त
वैदिकसूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 1.1.9) - विजयशङ्कर पाण्डेय, पेज–37

153. संज्ञानसूक्तं कस्मिन् मण्डले प्राप्यते– BHU AET–2011
(A) 3 (B) 8
(C) 9 (D) 10
वैदिकसूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 10.191)-विजयशङ्कर पाण्डेय, पेज–27

154. ''देवानां चक्षुः सु भगा वहन्ती'' इति मन्त्रांशः कस्य सूक्तस्य– UGC 25 D–2008
(A) इन्द्रसूक्तस्य (B) उषस्-सूक्तस्य
(C) अश्विन-सूक्तस्य (D) अग्नि-सूक्तस्य
वैदिकसूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 7.77.3) - विजयशङ्कर पाण्डेय, पेज–82

155. नासदीयसूक्तस्य प्रतिपाद्यं किम्– BHU AET–2011
(A) दानम् (B) स्तुतिः
(C) सृष्टिः (D) संहारः
***स्रोत**–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–430*

156. 'अहेडमानः' इति वर्तते– UGC 25 J–2010
(A) वरुणसूक्ते (B) रुद्रसूक्ते
(C) विष्णुसूक्ते (D) बृहस्पतिसूक्ते

157. ''मध्या कर्तोर्विततं सञ्जभार'' इति पठ्यते– UGC 25 J–2012
(A) अग्निसूक्ते (B) इन्द्रसूक्ते
(C) सूर्यसूक्ते (D) उषस्सूक्ते
***स्रोत**–वैदिकसूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 1.115.4) - गीताप्रेस, पेज–91*

158. ''पर्जन्यः पिता'' इति कस्मिन् सूक्ते प्रतिपाद्यते– UGC 25 D–2012
(A) पृथिवीसूक्ते (B) इन्द्रसूक्ते
(C) हिरण्यगर्भसूक्ते (D) पुरुषसूक्ते
वेदचयनम् (अथर्ववेद 12.1.12)-विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी, पेज–264

159. ''श्रिये गावो न धेनवोऽनवन्त'' मन्त्रांशोऽयं वर्तते– UGC 25 J–2013
(A) विश्वामित्र-नदी-सूक्ते (B) यम-यमी-सूक्ते
(C) पुरूरवा-उर्वशी-सूक्ते (D) सरमा-पणि-सूक्ते
***स्रोत**–ऋग्वेद (10.95.6) भाग-4 - वेदान्ततीर्थ, पेज–429*

160. सृष्ट्युत्पत्तिविषयं विवेचनं वर्तते– UGC 25 J–2013
(A) पुरुष-सूक्ते (B) अग्नि-सूक्ते
(C) इन्द्र-सूक्ते (D) पृथिवी-सूक्ते
ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 10.90)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–24

161. ''अहमस्मि सहमान उत्तरो नाम भूम्याम्'' मन्त्रांशोऽयं वर्तते– UGC 25 J–2013
(A) पृथिवीसूक्ते (B) वाक्सूक्ते
(C) पुरुषसूक्ते (D) हिरण्यगर्भसूक्ते
अथर्ववेद भाग-2 (12.1.1.54) - वेदान्ततीर्थ, पेज–99

162. (i) 'वाक्सूक्तम्' ऋग्वेदस्य कस्मिन् मण्डले विद्यते?
(ii) 'वाक्सूक्तम्' ऋग्वेद के किस मण्डल में आता है– BHU MET–2008, 2011, 2012, UGC 25 D–2015
(A) द्वितीय (B) चतुर्थ
(C) षष्ठ (D) दशम
ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 10.125) - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–416

163. किस सूक्त में प्राप्त होता है– 'मया सो अन्नमत्ति यो विपश्यति'– BHU MET–2011, 2012, UGC 73 D–2015
(A) उषा (B) अग्नि
(C) पृथ्वी (D) वाक्
***स्रोत**–ऋग्वेद (10.125.4) भाग-4 - वेदान्ततीर्थ, पेज–496*

164. 'कृषिमित्कृषस्व' किस सूक्त का है– BHU MET–2008, 2011
(A) प्रथम (B) नवम
(C) तृतीय (D) दशम
***स्रोत**–(i) वेदचयनम् - विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी, पेज–301*
(ii) ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 10.34.13)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–390

152. (D) **153.** (D) **154.** (B) **155.** (C) **156.** (A) **157.** (C) **158.** (A) **159.** (C) **160.** (A) **161.** (A)
162. (D) **163.** (D) **164.** (D)

165. ऋग्वेद में कौन दार्शनिक सूक्त है– BHU MET-2011

(A) पुरुष (B) अग्नि
(C) सूर्य (D) पर्जन्य

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - कर्णसिंह, पेज–53*

166. 'ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्' यह किस सूक्त में उपनिबद्ध है– BHU MET–2010

(A) पूषासूक्त (B) पुरुषसूक्त
(C) हिरण्यगर्भसूक्त (D) इन्द्रसूक्त

वेदचयनम् (ऋग्वेद 10.90.12)-विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी, पेज–216

167. रिक्तस्थान की पूर्ति के लिए सर्वाधिक उपयुक्त अंश क्या है– 'स्वस्ति नो........' BHU MET–2013

(A) पूषा विश्ववेदाः (B) तार्क्ष्यो अरिष्टनोमिः
(C) इन्द्रो वृद्धश्रवाः (D) बृहस्पतिर्दधातु

वैदिकसूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 1.89.6)-विजयशङ्कर पाण्डेय, पेज–45

168. 'स जातो अत्यरिच्यत' में 'सः' पद का अर्थ– BHU MET–2013

(A) पुरुष (B) प्रजापति
(C) अग्नि (D) विष्णु

वेदचयनम् (ऋग्वेद 10.90.5) - विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी, पेज–202

169. किस सूक्त को सर्वेश्वरवाद का मूल माना जाता है– BHU MET–2009, 2013

(A) हिरण्यगर्भ (B) पुरुष
(C) वाक् (D) नासदीय

स्रोत–*वैदिक साहित्य और संस्कृति-बलदेव उपाध्याय, पेज–118*

170. (i) नासदीयसूक्तम् अस्ति? BHU MET–2014
(ii) नासदीयसूक्त है, एक– UP GDC–2008
CCSUM Ph. D–2016

(A) विवाह-सूक्त (B) श्रद्धा-सूक्त
(C) सौमनस्य-सूक्त (D) दार्शनिक-सूक्त

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - कर्णसिंह, पेज–43*

171. ''वृषायमाणोऽवृणीत सोमम्'' से सम्बन्धित सूक्त है– BHU MET–2014

(A) रुद्र (B) पर्जन्य
(C) अग्नि (D) इन्द्र

ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 1.32.3)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–86

172. 'को अद्धा वेद क इह प्र वोचत' इत्यादयः प्रश्नाः कस्मिन् सूक्ते लभ्यते– UP GDC–2014

(A) अग्निसूक्ते (B) हिरण्यगर्भसूक्ते
(C) वरुणसूक्ते (D) नासदीयसूक्ते

स्रोत–*ऋग्वेद (10.129.62) भाग-4 - वेदान्ततीर्थ, पेज–504*

173. नासदीयसूक्तं बोधयति– BHU AET–2010

(A) सामवेदः (B) ऋग्वेदः
(C) यजुर्वेदः (D) अथर्ववेदः

स्रोत–*ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–430*

174. कस्मिन् सूक्ते सृष्टिप्रक्रिया वर्णितास्ति– BHU AET–2011

(A) शिवसङ्कल्पे (B) पुरुषसूक्ते
(C) रुद्रसूक्ते (D) इन्द्रसूक्ते

स्रोत–*वैदिकसाहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–53*

175. मन्त्राः कस्मात्– BHU AET–2012

(A) विवेचनात् (B) मननात्
(C) श्रवणात् (D) बोधनात्

स्रोत–*निरुक्त - छज्जूराम शास्त्री, पेज–172*

176. अक्षसूक्तं कस्मिन् मण्डले प्राप्यते– BHU AET–2011

(A) तृतीयमण्डले (B) अष्टममण्डले
(C) नवममण्डले (D) दशममण्डले

स्रोत–*वेदचयनम् - विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी, पेज–284*

177. ''हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्'' अस्मिन् मन्त्रे 'हिरण्यगर्भः' इति पदस्य कः अर्थः– UGC 25 D–2000

(A) हिरण्यस्य गर्भः (B) हिरण्यः इव
(C) हिरण्यगर्भः प्रजापतिः (D) गर्भ हिरण्यः

वेदचयनम् (ऋग्वेद 10.121.1)-विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी, पेज–141

178. 'कृषिमित्कृषस्व' किस सूक्त का है? BHU MET–2011, 2012

(A) अक्षसूक्त (B) पुरुषसूक्त
(C) भूमिसूक्त (D) श्रीसूक्त

वेदचयनम् (ऋग्वेद 10.34.13)-विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी, पेज–301

165. (A) 166. (B) 167. (D) 168. (A) 169. (B) 170. (D) 171. (D) 172. (D) 173. (B) 174. (B)
175. (B) 176. (D) 177. (C) 178. (A)

179. 'भूमिसूक्त' (पृथिवीसूक्त) किस वेद में है? UP GDC–2008

(A) ऋग्वेद में (B) सामवेद में
(C) यजुर्वेद में (D) अथर्ववेद में

स्रोत–*अथर्ववेद (12.1) - वेदान्ततीर्थ भाग-2, पेज–89*

180. ''सह वामेन'' से सम्बद्ध सूक्त है– BHU MET–2015

(A) उषासूक्त (B) पुरुषसूक्त
(C) शिवसङ्कल्पसूक्त (D) नासदीयसूक्त

स्रोत–*ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–115*

181. 'एतावानस्य महिमा' से सम्बन्धित सूक्त है– BHU MET–2015

(A) पुरुषसूक्त (B) उषासूक्त
(C) वरुणसूक्त (D) इन्द्रसूक्त

स्रोत–*वेदचयनम् - विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी, पेज–196*

182. ऋग्वेदस्य (1.154) सूक्ते विष्णुदेवाय मन्त्राणां संख्या अस्ति– UP GIC–2015

(A) 5 (B) 7
(C) 8 (D) 6

वेदचयनम् (ऋग्वेद 1.154)-विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी, पेज–90-106

183. '..... समवर्तताग्रे' मन्त्रस्य रिक्तांशे प्रयोज्यमस्ति– UP GIC–2015

(A) हिरण्यगर्भः (B) ब्रह्मा
(C) विराड् (D) इन्द्रः

वेदचयनम् (ऋग्वेद 10.121.1)-विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी, पेज–141

184. 'यस्यामापः परिचराः समानीरहोरात्रे अप्रमादं क्षरन्ति।' मन्त्रांशोऽयं केन सूक्तेन सम्बद्धः? UGC 25 J–2015

(A) अग्निसूक्तेन (B) नासदीयसूक्तेन
(C) पृथिवीसूक्तेन (D) हिरण्यगर्भसूक्तेन

वेदचयनम् (अथर्ववेद 12.1) - विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी, पेज–259

185. अग्नि की कितने सूक्तों में स्तुति की गयी है? UGC 25 J–2003

(A) 200 (B) 250
(C) 400 (D) 100

स्रोत–*वैदिकसूक्तसंग्रह - विजयशङ्कर पाण्डेय, पेज–22*

186. ऋग्वेद के कितने सूक्तों में बृहस्पति देवता की स्वतन्त्र रूप में उपासना की गयी है? UGC 25 J–2004

(A) 11 सूक्तों में (B) 15 सूक्तों में
(C) 13 सूक्तों में (D) 10 सूक्तों में

स्रोत–*ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–26*

187. 'विश्वामित्र-नदी संवादः' ऋग्वेदस्य कस्मिन् मण्डले उपलभ्यते– UGC 25 J–2005

(A) प्रथममण्डले (B) तृतीयमण्डले
(C) दशममण्डले (D) अष्टममण्डले

स्रोत–*ऋग्वेद (3.33) (भाग-2) - वेदान्ततीर्थ, पेज–82*

188. 'विश्वामित्र-नदी-संवादो' वर्तते– UGC 25 D–2009, 2010, J–2012

(A) ऋग्वेदस्य दशममण्डले
(B) ऋग्वेदस्य तृतीयमण्डले
(C) यजुर्वेदस्य पञ्चमाध्याये
(D) अथर्ववेदस्य द्वितीयकाण्डे

स्रोत–*ऋग्वेद (3.33) (भाग-2) - वेदान्ततीर्थ, पेज–82*

189. शाकलशाखा अस्ति– UGC 25 J–2006

(A) ऋग्वेदस्य (B) सामवेदस्य
(C) यजुर्वेदस्य (D) अथर्ववेदस्य

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–29*

190. शांखायनशाखा कस्य वेदस्य– UGC 25 J–2011, 2012

(A) कृष्णयजुर्वेदस्य (B) ऋग्वेदस्य
(C) शुक्लयजुर्वेदस्य (D) अथर्ववेदस्य

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–29*

191. शांखायन-गृह्यसूत्रस्य सम्बन्धः अस्ति? JNU M. Phil/Ph. D–2015

(A) ऋग्वेदीयशाकलशाखातः
(B) ऋग्वेदीयाश्वलायनशाखातः
(C) ऋग्वेदीयवाष्कलशाखातः
(D) यजुर्वेदीय-वाजसनेयिशाखातः

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–227*

179. (D) 180. (A) 181. (A) 182. (D) 183. (A) 184. (C) 185. (A) 186. (A) 187. (B) 188. (B) 189. (A) 190. (B) 191. (C)

192. (i) ऋग्वेद में मण्डलों की संख्या है–
(ii) ऋग्वेदे कति मण्डलानि सन्ति–
RPSC ग्रेड-II TGT–2010, MP PSC–2005
BHU AET–2010, 2011, AWES TGT–2010
UGC 73 J–1999, 2006, UK SLET–2015
UGC 25 J–1994, 1999 D-2005, 2012
G GIC–2015, UP GDC–2008

(A) नव (9) (B) विंशतिः (20)
(C) दश (10) (D) द्वादश (12)

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास- कर्णसिंह, पेज–36*

193. किस वेद का अष्टक और मण्डल दो प्रकार का विभाजन है? BHU MET–2009, 2013

(A) ऋग्वेद (B) शुक्लयजुर्वेद
(C) कृष्णयजुर्वेद (D) सामवेद

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज–46*

194. 'पुरुषसूक्त' ऋग्वेद के किस मण्डल में आता है?
BHU MET–2009, 2012

(A) प्रथम (B) तृतीय
(C) नवम (D) दशम

वेदचयनम् (ऋग्वेद 10.90) - विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी, पेज–187

195. (i) ऋग्वेद में कितने अष्टक हैं?
(ii) ऋग्वेदे कति अष्टकाः सन्तिः?
BHU MET–2008, 2011, 2012, BHU AET–2010
UGC 73 D–2004, UGC 25 D–2009, J–2008

(A) दश (10) (B) नव (9)
(C) पाँच (5) (D) आठ (8)

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास- पारसनाथ द्विवेदी, पेज–29*

196. ऋग्वेदे कति मन्त्राः सन्ति? DSSSB TGT–2014

(A) 1552 (B) 8552
(C) 10552 (D) 11552

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज–47*

197. खिलसूक्तैः सह ऋग्वेदे कति सूक्तानि सन्ति?
BHU–AET–2010

(A) 1000 (B) 1028
(C) 1100 (D) 1300

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास- पारसनाथ द्विवेदी, पेज–30*

198. (i) कति विकृतयः– UGC 73 D–2014
(ii) वेद विकृतियाँ हैं– UGC 25 D–2013, J-2010

(A) 8 (आठ) (B) 9 (नौ)
(C) 6 (छः) (D) 5 (पाँच)

स्रोत–*वेदचयनम्- विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी, पेज– 32 (परिशेष)*

199. ऋग्वेद का विभाजन क्रम है? UGC 25 D–2003

(A) वर्ग (B) काण्ड
(C) मण्डल (D) अध्याय

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज–46*

200. ऋग्वेदस्य प्रत्येकम् अष्टकेषु कति अध्यायाः भवन्ति?
BHU AET–2010

(A) चत्वारः (B) पञ्च
(C) सप्त (D) अष्ट

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज–46*

201. ऋग्वेद के अक्षसूक्त में कितने मन्त्र हैं?
BHU MET–2011, 2012

(A) एकादश (B) द्वादश
(C) त्रयोदश (D) चतुर्दश

स्रोत–*(i) ऋग्वेद (10.34) (भाग-4) - वेदान्ततीर्थ, पेज–277*
(ii) वेदचयनम्- विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी, पेज–284

202. वेदाध्ययने प्रकृतिपाठः कतिविधो भवति?
BHU AET–2010

(A) पञ्चविधः (B) सप्तविधः
(C) नवविधः (D) त्रिविधः

स्रोत–*वैदिक साहित्य एव संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–198*

203. (i) वेदाध्ययने विकृतिपाठः कतिविधो विद्यते?
(ii) विकृतिपाठः कतिधा– BHU AET–2010

(A) पञ्चविधः (B) अष्टविधः
(C) नवविधः (D) दशविधः

स्रोत–*वेदचयनम्- विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी , पेज–32 (परिशेष)*

204. (i) अष्टकक्रमे ऋग्वेदे कति अध्यायाः सन्ति?
(ii) ऋग्वेदे अध्यायाः सन्ति– BHU AET–2012
CCSUM Ph. D–2016

(A) 20 (B) 40
(C) 64 (D) 100

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–47*

192. (C) 193. (A) 194. (D) 195. (D) 196. (C) 197. (B) 198. (A) 199. (C) 200. (D) 201. (D) 202. (D) 203. (B) 204. (C)

205. 'ऋग्वेदीयपुरुषसूक्ते' कति मन्त्राः सन्ति? UGC 25 J–2014

(A) सप्तदश (B) षोडश
(C) द्वाविंशतिः (D) विंशतिः

स्रोत–*(i) ऋग्वेद (10.90) (भाग-4)-वेदान्ततीर्थ, पेज–413-415*
(ii) वेदचयनम्- विश्वम्भरनाथ द्विवेदी, पेज–187

206. 'नासदीयसूक्ते' कति मन्त्राः सन्ति? UGC 25 S–2013

(A) सप्त (B) दश
(C) सप्तदश (D) विंशतिः

स्रोत–*(i) ऋग्वेद (10.129) (भाग-4) - वेदान्ततीर्थ, पेज–504*
(ii) ऋक्सूक्तसंग्रह- हरिदत्तशास्त्री, पेज–430-438

207. 'अष्टकक्रम' में विभक्त ग्रन्थ है? BHU MET–2015

(A) कृष्णयजुर्वेद (B) शुक्लयजुर्वेद
(C) ऋग्वेद (D) सामवेद

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज–46*

208. ऋग्वेद के प्रथमसूक्त में मन्त्रों की संख्या है? BHU MET–2015

(A) 9 (B) 14
(C) 11 (D) 15

स्रोत–*(i) ऋग्वेद (1.1) (भाग-1) - वेदान्ततीर्थ, पेज–21*
(ii) वेदचयनम्- विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी, पेज–22

209. ऋग्वेद की सूक्तव्यवस्था निम्न में से किसके अनुसार है? UGC 25 J–1995

(A) मण्डल (B) प्रपाठक
(C) अष्टक (D) सर्ग

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज–47*

210. किस वेद का विभाजन अष्टकों में किया गया है– UGC 25 J–2000

(A) अथर्ववेद (B) सामवेद
(C) यजुर्वेद (D) ऋग्वेद

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज–46*

211. 'दाशुषे' का अर्थ है– BHU MET–2009, 2013

(A) दक्षिणा के लिए (B) हविर्दाता यजमान के लिए
(C) आहुति के लिए (D) पुरोहित के लिए

स्रोत–*ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋ0 1.1.6) - हरिदत्तशास्त्री, पेज–58*

212. (i) 'रोदसी' का क्या अर्थ है? BHU MET–2009,
(ii) 'रोदसी' पदस्य कोऽर्थः? 2011, 2013
UGC 25–2015, BHU AET–2012

(A) द्यावापृथिवी (B) रात-दिन
(C) रुद्र (D) अन्तरिक्ष

स्रोत–*ऋक्सूक्तसंग्रह (2.12.1) - हरिदत्तशास्त्री, पेज–177*

213. 'मृगो न भीमः' मे 'न' पद का क्या अर्थ है? BHU MET–2009, 2011, 2013

(A) न वर्णः (B) निषेध
(C) इव (D) एव

स्रोत– *वेदचयनम् (1.15.42) - विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी, पेज–96*

214. 'कर्मण्यपसो मनीषिणः' में 'अपसः' का क्या अर्थ है? BHU MET–2009, 2013

(A) जलयुक्त (B) पापयुक्त
(C) कर्मनिष्ठ (D) निष्पाप

स्रोत–*वेदचयनम् (शिवसङ्कल्पसूक्त 1.6.2)-विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी, पेज–241*

215. (i) 'रायः' शब्दस्य कोऽर्थः– BHU MET–2009, 2013
(ii) 'रयिम्' पद का अर्थ है– BHU AET–2012

(A) रात्रि (B) दान
(C) दक्षिणा (D) धन

स्रोत–*वेदचयनम् (ऋग्वेद 1.1.1) - विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी, पेज–12*

216. 'चन्द्रा' इस वैदिक पद का क्या अर्थ है? BHU MET–2011, 2012, UGC 73 D–2015

(A) आह्लादिनी (B) चन्द्रा
(C) पृथिवी (D) सोम

ऋक्सूक्तसंग्रह (10.121.9) - *हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–414*

217. 'मेदिनी' किसे कहते हैं? BHU MET–2009, 2013

(A) सिंह (B) आकाश
(C) पृथ्वी (D) नदी

स्रोत–*संस्कृत-हिन्दी-कोश - वामनशिवराम आप्टे, पेज–817*

218. ऋग्वैदिकसूक्तविशेषे 'दोषावस्तर्' इति पदस्य कोऽर्थः– UGC 25D–2014

(A) प्रतिदिनम् (B) रात्रिन्दिवा
(C) अन्धकारः (D) अन्धकारनाशकः

ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 1.1.7)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–59

205. (B) 206. (A) 207. (C) 208. (A) 209. (A) 210. (D) 211. (B) 212. (A) 213. (C) 214. (C) 215. (D) 216. (A) 217. (C) 218. (B)

नोट– 'दोषावस्तः' पद का सायणभाष्य के अनुसार अर्थ है– रात्रिन्दिवम् किन्तु मैक्डॉनल ने इसका अर्थ किया है– Illuminer of gllom (अन्धकारनाशकः)

219. वृत्रस्य 'मेघ' इत्यर्थः केषां पक्षतः कृतः? UP GDC–2014

(A) मीमांसकानाम् (B) वैयाकरणानाम्
(C) नैरुक्तानाम् (D) बौद्धानाम्

स्रोत–*वेदचयनम् - विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी, पेज–41*

220. यास्कमते 'वृत्रम्' कस्य प्रतीकः अस्ति– BHU AET–2011

(A) मेघः (B) शब्दः
(C) अन्धकारः (D) अज्ञानम्

स्रोत–*वेदचयनम् - विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी, पेज–41*

221. 'क्रतुः' इत्यस्य कोऽर्थः? BHU AET–2010

(A) यज्ञः (B) कृत्या
(C) क्रमः (D) कण्डनम्

स्रोत–*वेदचयनम् - विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी, पेज–16*

222. शुल्बशब्दस्य कोऽर्थः– BHU AET–2012

(A) रज्जुः (B) निरञ्छन्
(C) वंशः (D) सर्पणम्

संस्कृत–हिन्दी शब्दकोश - वामन शिवरामआप्टे, पेज–1026

223. कौन-सा मात्र वैदिक पद है? BHU MET–2011

(A) उग्रस्य (B) अहस्तासः
(C) वर्तन्ते (D) सविता

ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 1.34.9) - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–388

224. 'देवासः' इति प्रयोगः? UGC 25 D–2012, J–2014, UK SLET–2015

(A) तान्त्रिकः (B) वार्तिकः
(C) छान्दसः (D) ऐतिहासिकः

ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 8.30.4)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–343

225. 'सान्नाय्य' शब्द का अर्थ है– UGC 73 D–2014

(A) पयः (B) दधि
(C) घृतम् (D) दधिपयसी

स्रोत–*भारतीय संस्कृति - दीपक कुमार, पेज–430*

226. 'संहिता' शब्दस्य निष्पत्तिः भवति– BHU AET–2011

(A) √पठ् (B) √गम्
(C) √अस् (D) √धा

स्रोत–*संस्कृत-हिन्दी शब्दकोश-वामन शिवरामआप्टे, पेज–1053*

227. 'मृड्याकुः' का सायण सम्मत अर्थ है– BHU MET–2015

(A) सुखयिता (B) मर्दयिता
(C) उपहास (D) पालयिता

स्रोत–*ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋ0 2.33.7)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–199*

228. 'वश्मि' का सायण सम्मत अर्थ है– BHU MET–2015

(A) वशीकरणम् (B) कामये
(C) निवासः (D) दीप्तिः

स्रोत–*ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋ0 2.33.13)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–204*

229. 'इष्टापूर्तेन' का सायण ने अर्थ किया है– BHU MET–2015

(A) श्रौतस्मार्तदानफलेन (B) कर्मफलेन
(C) अध्यात्मफलेन (D) त्यागफलेन

स्रोत–*ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋ0 10.14.8)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–362*

230. 'मधुवाता ऋतायते' यहाँ 'ऋतु' शब्द का अर्थ होता है? UGC 73 S–2013

(A) कल्पितम् (B) यज्ञः
(C) स्वर्गः (D) लौकिकम्

स्रोत–*शुक्लयजुर्वेद (13/27) - रामकृष्ण शास्त्री, पेज–316*

231. सायण सम्मत 'स्वधा' का अर्थ है– BHU MET–2015

(A) अन्न (B) वायु
(C) जल (D) आकाश

स्रोत–*ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋ0 10.129.5) - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–436*

232. 'पृषदाज्यम्' नाम वाला पदार्थ है? BHU MET–2015

(A) दधिमिश्रित आज्य (B) मधु-लाजा-मिश्रण
(C) सोम-दुग्धमिश्रण (D) जल-घी मिश्रण

स्रोत–*ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋ0 10.90.8) - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–398*

219. (C) 220. (A) 221. (A) 222. (A) 223. (B) 224. (C) 225. (D) 226. (D) 227. (A) 228. (B) 229. (A) 230. (B) 231. (A) 232. (A)

233. प्रकरणानुसार 'सूपायनः' का अर्थ है– **BHU MET–2015**

(A) शोभनरूप से प्राप्ति (B) सुपान

(C) सुयान (D) सुन्दरप्राण

स्रोत–*ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋ0 1.1.9) - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–60*

234. 'ग्मा' जिसका पर्यायवाची शब्द है, वह है– **BHU MET–2015**

(A) पृथ्वी (B) आकाश

(C) वाणी (D) सामगान

ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 1.25.20)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–82

235. 'भर्म' का अर्थ है– **BHU MET–2015**

(A) मृत्तिका (B) हिरण्य

(C) अयस् (D) रजत

स्रोत–*संस्कृत हिन्दी शब्दकोश- वामनशिवराम आप्टे, पेज–732*

236. 'अश्वमघा' का अर्थ है? **BHU MET–2015**

(A) अश्वधन वाला (B) अश्व का अभिषेक

(C) अश्व का मूल्य (D) अश्वपालक

ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 7.71.1)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–310

233. (A) 234. (A) 235. (B) 236. (A)

2. यजुर्वेद

1. गद्यात्मक वेद है? BHU MET–2014

(A) सामवेद (B) अथर्ववेद

(C) यजुर्वेद (D) ऋग्वेद

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–93*

2. जिस वेद की रचना गद्य और पद्य दोनों में की गयी है उसका नाम है? UP TGT (S.S.)–2005

(A) ऋग्वेद (B) सामवेद

(C) यजुर्वेद (D) अथर्ववेद

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–93*

3. (i) यजुर्वेद का प्रतिपाद्य विषय है?

(ii) यजुर्वेद का प्रमुख विषय है?

(iii) यजुर्वेदस्य प्रतिपाद्यविषयः कः?

UGC 73, J–1991, D–1994, BHU AET–2011 MP PSC–1999, CCSUM-Ph. D–2016

(A) ज्ञान (B) कर्मकाण्ड

(C) भक्ति (D) उपासना

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–06*

4. (i) कः वेदः 'अध्वर्युवेद' नाम्नाऽपि ज्ञायते?

(ii) 'अध्वर्युवेदः' कस्य वेदस्यापरं नाम अस्ति?

BHU AET–2010, 2012

(A) ऋग्वेदस्य (B) सामवेदस्य

(C) यजुर्वेदस्य (D) अथर्ववेदस्य

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–63*

5. वेदव्यासः यजुर्वेदस्य ज्ञानं कस्मै दत्तवान्?

BHU AET–2010

(A) श्रीकृष्णाय (B) वैशम्पायनाय

(C) याज्ञवल्क्याय (D) सुमन्तवे

संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (प्रथम खण्ड)–बलदेव उपाध्याय, पेज–223

6. 'यजुर्वेदः' सम्प्राप्तः– UGC 25 D–2012

(A) अग्नेः (B) वायोः

(C) इन्द्रात् (D) वरुणात्

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–39*

7. 'धनुर्वेदः' कस्य वेदस्योपवेदः– BHU AET–2011

(A) ऋग्वेदस्य (B) यजुर्वेदस्य

(C) सामवेदस्य (D) अथर्ववेदस्य

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–10*

8. पतञ्जलि के अनुसार यजुर्वेद की कितनी शाखायें हैं–

BHU MET–2011

(A) इक्कीस (21) (B) नौ (9)

(C) एक सौ (100) (D) एक हजार (1000)

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–93*

9. कः यजुषां वमनं कृतवानासीत्– BHU AET–2010

(A) याज्ञवल्क्यः (B) महीधरः

(C) कुमारिलभट्टः (D) सायणः

स्रोत–*(i) वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–65*

(ii) वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–95

10. कः यज्ञस्य नेता– BHU AET–2012

(A) होता (B) अध्वर्युः

(C) ब्रह्मा (D) उद्गाता

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–66*

11. यजुर्वेदः केषां योनिः? BHU AET–2012

(A) वैश्यानाम् (B) क्षत्रियाणाम्

(C) ब्राह्मणानाम् (D) श्रमिकाणाम्

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–64*

1. (C) 2. (C) 3. (B) 4. (C) 5. (B) 6. (B) 7. (B) 8. (C) 9. (A) 10. (B) 11. (B)

12. ब्रह्मा वायोः सकाशात् किं प्रकाशितवान्– BHU AET–2011

(A) ऋग्वेदम् (B) यजुर्वेदम्

(C) सामवेदम् (D) अथर्ववेदम्

***स्रोत**–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–39*

13. (i) अध्वर्युः कस्य वेदस्य ऋत्विक्?

(ii) अध्वर्यु किस वेद का पुरोहित है?

(iii) अध्वर्युनामकस्य ऋत्विजः सम्बन्धः केन वेदेन वर्तते– BHU RET–2008, BHU MET–2008 BHU AET–2010

(A) ऋग्वेदेन (B) यजुर्वेदेन

(C) सामवेदेन (D) अथर्ववेदेन

***स्रोत**–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–66*

14. 'अध्वर'-शब्दस्यार्थो भवति– BHU AET–2010

(A) ऋत्विक् (B) यज्ञः

(C) अग्निः (D) यमः

***स्रोत**–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–66*

15. (i) यजुर्वेदाध्यायी भवति BHU AET–2010, 2012

(ii) यजुर्वेदीयः ऋत्विक्–

(A) यजमानः (B) उद्गाता

(C) अध्वर्युः (D) होता

***स्रोत**–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–66*

16. आध्वर्यकर्मणः कृते कः वेदः भवति? BHU AET–2010

(A) ऋग्वेदः (B) सामवेदः

(C) यजुर्वेदः (D) अथर्ववेदः

***स्रोत**–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–63*

17. अध्वर्युः कस्य वेदस्य प्रातिनिध्यं करोति? BHU AET–2010

(A) ऋग्वेदस्य (B) यजुर्वेदस्य

(C) सामवेदस्य (D) अथर्ववेदस्य

***स्रोत**–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–63*

18. (i) अध्वर्युना युक्तः वेदः कः– BHU AET–2011

(ii) अध्वर्यु से युक्त वेद है? UP PGT–2003

(A) ऋग्वेदः (B) सामवेदः

(C) यजुर्वेदः (D) अथर्ववेदः

***स्रोत**–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–63*

19. श्रौतयागेषु भित्तिस्थानीयो वेदः को विद्यते? BHU AET–2010

(A) ऋग्वेदः (B) यजुर्वेदः

(C) सामवेदः (D) अथर्ववेदः

***स्रोत**–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–64*

20. यजुर्मन्त्रः कीदृशो भवति– BHU AET–2010

(A) गद्यात्मकः (B) पद्यात्मकः

(C) गानात्मकः (D) वादनात्मकः

***स्रोत**–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–63*

21. शुक्लत्वकृष्णत्वभेदः कस्य वेदस्य विद्यते? BHU AET–2010

(A) ऋग्वेदस्य (B) यजुर्वेदस्य

(C) सामवेदस्य (D) अथर्ववेदस्य

***स्रोत**–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–64*

22. यजुर्वेदे यजुषां संग्रहः किमर्थम् अस्ति? BHU AET–2011

(A) उदातृत्वम् (B) गानत्वम्

(C) अध्वर्युत्वम् (D) युद्धत्वम्

***स्रोत**–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - बलदेव उपाध्याय, पेज–128*

23. ''देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्'' इति मन्त्रः कस्मिन् वेदे अस्ति– BHU AET–2011

(A) ऋग्वेदे (B) यजुर्वेदे

(C) सामवेदे (D) अथर्ववेदे

***स्रोत**–यजुर्वेद (1/10)- वेदान्ततीर्थ, पेज–20*

12. (B) 13. (B) 14. (B) 15. (C) 16. (C) 17. (B) 18. (C) 19. (B) 20. (A) 21. (B) 22. (C) 23. (B)

24. कः वेदः अनियताक्षरावसानात्मको भवति– **BHU AET–2012**

(A) ऋग्वेदः (B) यजुर्वेदः
(C) सामवेदः (D) अथर्ववेदः

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–63

25. सायणाचार्यः प्रथमतया कस्य वेदस्य व्याख्यां कृतवान्? **BHU AET–2012**

(A) ऋग्वेदस्य (B) यजुर्वेदस्य
(C) सामवेदस्य (D) अथर्ववेदस्य

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–13

26. 'विद्ययाऽमृतमश्नुते' शुक्लयजुर्वेदस्य कस्मिन् अध्याये प्राप्यते? **BHU AET–2012**

(A) दशमे (B) एकादशे
(C) त्रिंशे (D) चत्वारिंशे

स्रोत–यजुर्वेद (20/14) - वेदान्ततीर्थ, पेज–487

27. माध्यन्दिनसंहितायाः अपरं नाम किमस्ति? **BHU AET–2012**

(A) वाजसनेयिसंहिता (B) गर्गसंहिता
(C) काण्वसंहिता (D) कर्कसंहिता

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–65

28. शुक्लयजुर्वेद से सम्बन्धित है– **UGC 73 J–1998**

(A) ताण्ड्यमहाब्राह्मण (B) ऐतरेयब्राह्मण
(C) शतपथब्राह्मण (D) कौषीतकिब्राह्मण

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–130

29. 'वाजसनेयी-संहिता' नाम है– **UGC 73 J–1998**

(A) ऋग्वेदस्य (B) कृष्णयजुर्वेदस्य
(C) सामवेदस्य (D) शुक्लयजुर्वेदस्य

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–65

30. 'परमावटिक' शाखीय वेद है? **BHU AET–2015**

(A) कृष्णयजुर्वेद (B) शुक्लयजुर्वेद
(C) सामवेद (D) अथर्ववेद

वैदिक साहित्य का इतिहास - गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज–78

31. माध्यन्दिनसंहितायाम् अनुदात्तस्वरचिह्नं कुत्र दीयते? **UGC 25 S–2013**

(A) उपरिष्टात् (B) तिर्यक्
(C) अधः (D) सर्वतः

संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास, (प्रथम खण्ड)– बलदेव उपाध्याय, पेज–269

32. 'माध्यन्दिनम्' शाखा कस्य वेदस्य? **UGC 25 D–2013**

(A) यजुर्वेदस्य (B) ऋग्वेदस्य
(C) अथर्ववेदस्य (D) कस्यापि न

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–65

33. ईशावास्योपनिषद् किस संहिता से सम्बद्ध है? **BHU AET–2011**

(A) गर्गसंहिता से (B) काण्वसंहिता से
(C) पराशरसंहिता से (D) ऋग्वेदसंहिता से

स्रोत–ईशावास्योपनिषद् - दीपक कुमार, भूमिका पेज-11

34. याज्ञवल्क्य का सम्बन्ध किस वेद से है– **BHU AET–2011**

(A) ऋग्वेद से (B) शुक्लयजुर्वेद से
(C) कृष्णयजुर्वेद से (D) सामवेद से

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–64

35. **(i) शुक्लयजुर्वेदस्य शाखा अस्ति**
(ii) शुक्लयजुर्वेदेन सम्बद्धा अस्ति–
(iii) शुक्लयजुषः शाखा वर्तते–
UGC 73 J–2006, 2010, D–2011, 2012

(A) शांखायन (B) शौनक
(C) माध्यन्दिन (D) राणायनीय

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति–कपिलदेव द्विवेदी, पेज–64-65

36. **(i) माध्यन्दिनशाखा से सम्बद्ध वेद है–**
(ii) 'माध्यन्दिन-संहिता' किस वेद से सम्बद्ध है?
(iii) माध्यन्दिनवाजसनेयिशाखया सम्बद्धः अस्ति–
UGC 25 D–1998, BHU AET–2010, BHU MET–2015

(A) कृष्णयजुर्वेदः (B) शुक्लयजुर्वेदः
(C) सामवेदः (D) अथर्ववेदः

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–65

24. (B) 25. (B) 26. (D) 27. (A) 28. (C) 29. (D) 30. (B) 31. (C) 32. (A) 33. (B) 34. (B) 35. (C) 36. (B)

37. 'ईशोपनिषद्' कस्य वेदस्यान्तिमोऽध्यायः?

RPSC ग्रेड-I (PGT)–2014

(A) ऋग्वेदस्य (B) सामवेदस्य

(C) अथर्ववेदस्य (D) यजुर्वेदस्य

स्रोत–*(i) वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–174*

(ii) ईशावास्योपनिषद् - दीपक कुमार, भूमिका पेज-11

38. शुक्लयजुर्वेद की शाखा है– UGC 73 D–2006

(A) वाष्कलीया (B) काण्वी

(C) राणायनीया (D) शौनकीया

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–65*

39. कस्मिन् वेदे मन्त्रैः सह विनियोगवाक्यानां संग्रहो नास्ति?

BHU AET–2010

(A) ऋग्वेदे (B) शुक्लयजुर्वेदे

(C) कृष्णयजुर्वेदे (D) अथर्ववेदे

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–64*

40. वाजसनेयिसंहिता कस्य वेदस्य संहिताऽस्ति?

BHU AET–2010

(A) ऋग्वेदस्य (B) शुक्लयजुर्वेदस्य

(C) कृष्णयजुर्वेदस्य (D) अथर्ववेदस्य

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–65*

41. माध्यन्दिनशाखा मुख्यतः कुत्र उपलभ्यते?

BHU AET–2010

(A) महाराष्ट्रे (B) केरले

(C) उत्तरभारते (D) आन्ध्रप्रदेशे

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–66*

42. महीधरभाष्य से सम्बन्धित वेद है?

BHU MET–2014

(A) ऋग्वेद (B) शुक्लयजुर्वेद

(C) अथर्ववेद (D) सामवेद

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–24*

43. कात्यायनश्रौतसूत्र किस वेद से सम्बद्ध है–

BHU MET–2008, 2015

(A) शुक्लयजुर्वेद (B) सामवेद

(C) अथर्ववेद (D) ऋग्वेद

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–09*

44. (i) 'शिवसङ्कल्पसूक्त' किस वेद से सम्बन्धित है?

(ii) 'शिवसङ्कल्प'-सूक्तस्य आकरः वेदोऽस्ति–

UP GDC–2014, UGC 73D–1996, J–1998

G GIC–2015

(A) शुक्लयजुर्वेदः (B) सामवेदः

(C) ऋग्वेदः (D) अथर्ववेदः

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–67*

45. वाजसनेयिसंहितायाः चत्वारिंशे अध्याये किमस्ति–

BHU AET–2010

(A) ईशावास्योपनिषद् (B) कठोपनिषद्

(C) गीता (D) शिवसङ्कल्पोपनिषद्

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–67*

46. यज्ञानां रक्षार्थं प्रार्थना वाजसनेयिसंहितायाः कस्मिन् अध्याये अस्ति? BHU AET–2010

(A) प्रथमे (B) द्वितीये

(C) तृतीये (D) सप्तमे

स्रोत–*यजुर्वेद (द्वितीय अध्याय) - वेदान्ततीर्थ, पेज–31*

47. वाजसनेयिसंहितायाः कस्मिनध्याये हविष्यान्नविभागस्य वर्णनमस्ति– BHU AET–2010

(A) प्रथमे (B) द्वितीये

(C) तृतीये (D) सप्तमे

स्रोत–*यजुर्वेद (प्रथम अध्याय) - वेदान्ततीर्थ, पेज–20, 21*

48. पितृयज्ञस्य वर्णनं वाजसनेयि-संहितायाः कस्मिन् अध्याये प्राप्यते? BHU AET–2010

(A) प्रथमे (B) द्वितीये

(C) तृतीये (D) सप्तमे

संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (प्रथम खण्ड)-बलदेव उपाध्याय, पेज–267, 268

37. (D) 38. (B) 39. (B) 40. (B) 41. (C) 42. (B) 43. (A) 44. (A) 45. (A) 46. (B) 47. (A) 48. (B)

49. वाजसनेयिसंहितायाः कस्मिन् अध्याये अग्निहोत्रस्य वर्णनमस्ति– BHU AET–2010

(A) प्रथमे (B) द्वितीये
(C) तृतीये (D) सप्तमे

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–66

50. वाजसनेयिसंहितायाः कस्मिन् अध्याये सोमस्तुतिः कृतास्ति? BHU AET–2010

(A) प्रथमे (B) द्वितीये
(C) चतुर्थे (D) पञ्चमे

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–66

51. हस्तेन त्रैस्वर्यं प्रदर्श्यते– UGC 25 J–2014

(A) पैप्पलादसंहितायाम् (B) अथर्ववेदे
(C) कृष्णयजुर्वेदे (D) माध्यन्दिनसंहितायाम्

स्रोत–संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (प्रथम खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/व्रजबिहारी चौबे, पेज–270

52. हस्तस्वर होता है– UGC 73 D–2014

(A) शुक्लयजुर्वेदे (B) गोपथब्राह्मणे
(C) धनुर्वेदे (D) सामवेदे

स्रोत–संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (प्रथम खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/व्रजबिहारी चौबे, पेज–328

53. (i) शुक्लयजुर्वेदस्य नामान्तरमस्ति?
(ii) शुक्लयजुर्वेद इस नाम से भी जाना जाता है–
(iii) शुक्लयजुर्वेद संहिता का नामान्तर होता है–
UGC 73 D–2008, 2010, J–2006, BHU MET–2010

(A) कठसंहिता (B) शाकलसंहिता
(C) वाजसनेयिसंहिता (D) मैत्रायणीसंहिता

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–64

54. वाजसनेयिसंहितायाः कस्मिन् अध्याये सोमकुण्डस्य वर्णनमस्ति? BHU AET–2010

(A) प्रथमे (B) तृतीये
(C) पञ्चमे (D) नवमे

वैदिक साहित्य का इतिहास - गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज–82-83

55. दक्षिणहोमस्य वर्णनं वाजसनेयिसंहितायाः कस्मिन् अध्याये? BHU AET–2010

(A) प्रथमे (B) सप्तमे
(C) नवमे (D) द्वादशे

स्रोत–यजुर्वेद (7/45, 46, 47, 48) - वेदान्ततीर्थ, पेज–98, 99

56. वाजसनेयिसंहितायाः कस्मिन् अध्याये प्रायश्चित्त-मन्त्राणामुल्लेखोऽस्ति? BHU AET–2010

(A) अष्टमे (B) दशमे
(C) सप्तदशे (D) अष्टादशे

स्रोत–यजुर्वेद (8/13) - वेदान्ततीर्थ, पेज–103

57. वाजपेययज्ञस्य वर्णनं वाजसनेयिसंहितायाः कस्मिन् अध्याये प्राप्यते? BHU AET–2010

(A) अष्टमे (B) नवमे
(C) सप्तदशे (D) अष्टादशे

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–67

58. (i) माध्यन्दिनसंहिता में 'शतरुद्रीयहोममन्त्र' किस अध्याय में कहे गये हैं?
(ii) वाजसनेयिसंहितायाः कस्मिन् अध्याये शतरुद्रीयमन्त्राः सन्ति? UGC 73 J–2015, BHU AET–2010

(A) अष्टमे (B) दशमे
(C) षोडशे (D) नवदशे

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–74

59. वाजसनेयिसंहितायाः कस्मिन् अध्याये अग्न्याधानस्य वर्णनमस्ति? BHU AET–2010

(A) अष्टमे (B) दशमे
(C) षोडशे (D) अष्टादशे

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–67

60. अश्विनीकुमारयोः स्तवनं वाजसनेयिसंहितायाः कस्मिन् अध्याये विद्यते? BHU AET–2010

(A) विंशे (B) द्वाविंशे
(C) त्रिंशे (D) एकत्रिंशे

स्रोत–यजुर्वेद (अध्याय-20) - वेदान्ततीर्थ, पेज–300

49. (C) 50. (C) 51. (D) 52. (A) 53. (C) 54. (C) 55. (B) 56. (A) 57. (B) 58. (C) 59. (D) 60. (A)

61. वाजसनेयिसंहितायाः कस्मिन् अध्याये सौत्रामणे उपसंहारोऽस्ति? BHU AET–2010

(A) विंशे　　(B) एकविंशे
(C) त्रिंशे　　(D) एकत्रिंशे

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–67*

62. वाजसनेयिसंहितायाः कस्मिन् अध्याये अश्वमेध-स्योल्लेखोऽस्ति? BHU AET–2010

(A) विंशे　　(B) एकविंशे
(C) द्वाविंशे　　(D) त्रिंशे

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–67*

63. वाजसनेयिसंहितायाः कस्मिन् अध्याये शिवसङ्कल्पोपनिषद् अस्ति? BHU AET–2010

(A) त्रिंशे　　(B) एकत्रिंशे
(C) द्वात्रिंशे　　(D) चतुस्त्रिंशे

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–67*

64. अन्त्येष्टिसंस्कारस्य वर्णनं वाजसनेयिसंहितायाः कस्मिन् अध्याये विद्यते? BHU AET–2010

(A) त्रिंशे　　(B) द्वात्रिंशे
(C) पञ्चत्रिंशे　　(D) नवत्रिंशे

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–67*

65. आदित्यसम्प्रदायस्य प्रातिनिध्यं कः करोति? BHU AET–2010, 2011

(A) ऋग्वेदः　　(B) शुक्लयजुर्वेदः
(C) सामवेदः　　(D) अथर्ववेदः

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–64*

66. 'वाजसनेयि' इति पदे 'वाज' इति पदस्य कोऽर्थः? BHU AET–2010

(A) अन्नम्　　(B) जलम्
(C) वायुः　　(D) आकाशः

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–130*

67. 'वाजसनेयि' इति पदे 'सनि' इति पदस्य कोऽर्थः? BHU AET–2010

(A) यजनम्　　(B) दानम्
(C) कथनम्　　(D) पठनम्

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–130*

68. (i) 'काण्वशाखा' कस्य वेदस्य?
(ii) काण्वसंहिता किस वेद से सम्बन्धित है?
(iii) काण्वसंहिता कस्य वेदस्य शाखा अस्ति?
(iv) काण्वसंहिता वर्तते?
BHU AET–2011, UGC 73 D–1997
BHU MET–2014, UGC 25 J–1998, 2009, 2013

(A) ऋग्वेदस्य　　(B) शुक्लयजुर्वेदस्य
(C) कृष्णयजुर्वेदस्य　　(D) सामवेदस्य

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–65*

69. माध्यन्दिनशाखायाः कः अध्यायः रुद्राध्यायः कथ्यते? BHU AET–2012

(A) षोडशः　　(B) अष्टादशः
(C) विंशः　　(D) एकत्रिंशः

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–74*

70. माध्यन्दिनशाखायाः कस्मिन् अध्याये पुरुषसूक्तमस्ति? BHU AET–2012, UGC 73 J–2005

(A) विंशे　　(B) पञ्चविंशे
(C) एकत्रिंशे　　(D) चत्वारिंशे

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–67*

71. माध्यन्दिनशाखायाः कस्मिन् अध्याये शिवसङ्कल्प–सूक्तमस्ति? BHU AET–2012

(A) त्रिंशे　　(B) चतुस्त्रिंशे
(C) पञ्चत्रिंशे　　(D) चत्वारिंशे

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–67*

72. माध्यन्दिनशाखायाः कस्मिन् अध्याये 'पितृमेधस्य' वर्णनमस्ति? BHU AET–2012

(A) पञ्चत्रिंशे　　(B) षट्त्रिंशे
(C) सप्तत्रिंशे　　(D) चत्वारिंशे

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–67*

61. (B)　62. (C)　63. (D)　64. (D)　65. (B)　66. (A)　67. (B)　68. (B)　69. (A)　70. (C)　71. (B)　72. (A)

73. माध्यन्दिनशाखायाः कस्मिन् अध्याये 'नरमेधस्य' वर्णनमस्ति? BHU AET–2012

(A) पञ्चत्रिंशे (B) षट्त्रिंशे
(C) त्रिंशे (D) चत्वारिंशे

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–67

74. काण्वशाखायाः प्रचारः विशेषतया कस्मिन् प्रदेशे वर्तते? BHU AET–2012

(A) आन्ध्रप्रदेशे (B) महाराष्ट्रे
(C) केरले (D) कश्मीरे

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–66

75. वाजसनेयिसंहितायाः प्रथमाध्याये कस्य यज्ञस्य वर्णनमस्ति? BHU AET–2011

(A) सोमस्य (B) दर्शपौर्णमासस्य
(C) श्येनस्य (D) पुरुषमेधस्य

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–66, 131

76. (i) यजुर्वेदः भागेषु विभक्तः– UGC 25 D–2000
(ii) यजुर्वेद के कितने प्रकार हैं? UGC 73 D–1996
(iii) यजुर्वेद की मुख्यतया कितनी शाखायें हैं? BHU MET–2010

(A) द्वि (B) त्रि
(C) पञ्च (D) अष्ट

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–64

77. यजुर्वेदेन सम्बद्धे वेदाङ्गज्योतिषे कति श्लोकाः सन्ति? BHU AET–2010

(A) द्वादश (B) चतुःचत्वारिंशत् (44)
(C) पञ्चपञ्चाशत् (D) सप्ततिः

स्रोत–संस्कृत शास्त्रों का इतिहास - बलदेव उपाध्याय, पेज–63

78. ब्रह्मगणे कति ऋत्विजो भवन्ति? BHU AET–2012

(A) दश (B) पञ्च
(C) चत्वारः (D) षट्

स्रोत–वैदिक शब्दमीमांसा - गीताञ्जलि पाण्डेय, पेज–238

79. यजुर्वेदस्य आहत्य कति शाखाः स्वीक्रियन्ते? BHU AET–2012

(A) 20 (B) 86
(C) 47 (D) 100

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–93

80. यजुर्वेदस्य मैत्रायणीशाखायां कति काण्डानि सन्ति? BHU AET–2012

(A) चत्वारः (B) विंशतिः
(C) दश (D) चत्वारिंशत्

स्रोत–संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (प्रथम खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/व्रजबिहारी चौबे, पेज–243

81. शुक्लयजुर्वेदमाध्यन्दिनसंहितायां मन्त्रसंख्या वर्तते? UGC 25 J–2009

(A) 1975 (B) 2000
(C) 1852 (D) 1900

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–65

82. शिवसङ्कल्पसूक्तं कस्यां शाखायाम् उपदिष्टम्? UGC 25 D–2012

(A) शाकलशाखायाम् (B) शौनकशाखायाम्
(C) माध्यन्दिनीयशाखायाम् (D) राणायनीयशाखायाम्

स्रोत–वेदचयनम् - विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी, पेज–239

83. शुक्लयजुर्वेदीय शिवसङ्कल्पसूक्त का अध्याय है? BHU MET–2014

(A) 34 (B) 30
(C) 40 (D) 20

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–67

84. (i) शुक्लयजुर्वेद की माध्यन्दिनसंहिता में कितने अध्याय हैं?
(ii) माध्यन्दिनसंहितायां कति अध्यायाः सन्ति–
(iii) शुक्लयजुर्वेद में कितने अध्याय हैं?
(iv) यजुर्वेदे कति अध्यायाः सन्ति–
UGC 73 D–1997, J–2006, 2008, 2011, 2012
BHU MET–2008, 2012, 2015, UP GDC–2008
BHU AET–2012, CCSUM - Ph. D–2016

(A) 5 (पञ्च) (B) 10 (दश)
(C) 40 (चत्वारिंशत्) (D) 20 (विंशतिः)

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–65

73. (C) 74. (B) 75. (B) 76. (A) 77. (B) 78. (C) 79. (B) 80. (A) 81. (A) 82. (C) 83. (A) 84. (C)

85. वाजसनेयिसहितायां कति अध्यायाः सन्ति?

BHU AET–2010, 2011
UGC 73 D–2006, 2009, J–2010

(A) 10 (B) 20
(C) 30 (D) 40

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–65

86. प्रधानतया वाजसनेयिसंहितायाः कति शाखाः सन्ति?

BHU AET–2010

(A) 02 (B) 03
(C) 04 (D) 08

संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (प्रथम खण्ड) - बलदेव उपाध्याय, पेज–261

87. शुक्लयजुःप्रातिशाख्ये कति अध्यायाः सन्ति?

BHU AET–2010

(A) सप्त (B) अष्ट
(C) द्वादश (D) नवदश

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–197

88. कात्यायनस्य अनुक्रमणीग्रन्थे कति अध्यायाः सन्ति?

BHU AET–2010

(A) त्रयः (B) पञ्च
(C) सप्त (D) दश

स्रोत–वैदिक साहित्य और संस्कृति - बलदेव उपाध्याय, पेज–379

89. अध्वर्युगणे कति ऋत्विजो भवन्ति? BHU AET–2010

(A) पञ्च (B) षट्
(C) त्रयः (D) चत्वारः

स्रोत–वैदिक शब्दमीमांसा - गीताञ्जलि पाण्डेय, पेज–238

90. वाजसनेयिसंहितायां प्रथमाध्याये कियन्तः मन्त्राः राराजन्ते? BHU AET–2011

(A) 32 (B) 39
(C) 35 (D) 31

स्रोत–यजुर्वेद - वेदान्ततीर्थ, पेज–7

91. (i) शुक्लयजुर्वेद की शाखाएं हैं–
(ii) सम्प्राति शुक्लयजुर्वेदस्य कति शाखाः समुपलभ्यन्ते?
(iii) वर्तमान में शुक्लयजुर्वेद की कितनी शाखायें उपलब्ध हैं?
(iv) शुक्लयजुर्वेदस्य कति शाखाः?

UGC 73 D–1997, 2012, J–2007

(A) 5 (B) 2
(C) 8 (D) 4

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–9

92. शुक्लयजुर्वेद का चालीसवाँ अध्याय है–

UGC 73 D–2014, BHU AET–2011

(A) ईशोपनिषत् (B) ऐतरेयोपनिषत्
(C) केनोपनिषत् (D) माण्डूक्योपनिषत्

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–65

93. '40 अध्याय' हैं– UGC 73 D–2014

(A) तैत्तिरीयसंहितायाम् (B) वाजसनेयिसंहितायाम्
(C) सामगेयभागे (D) छान्दोग्योपनिषदि

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–65

94. इष्टौ कति ऋत्विजो भवन्ति– BHU AET–2012

(A) पञ्च (B) चत्वारः
(C) षट् (D) त्रयः

स्रोत–श्रौतयज्ञ-परिचय - श्रीवेणीरामशर्मा गौड, पेज–10

95. शुक्लयजुर्वेदे रुद्राध्यायाः सन्ति? UGC 73 D–2004

(A) त्रयः (B) पञ्च
(C) सप्त (D) अष्ट

(i) वैदिक साहित्य का इतिहास –गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज–82, 83
(ii) वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–67

96. शुक्लयजुर्वेदीय शिवसङ्कल्पसूक्ते कति मन्त्राः सन्ति?

UGC 25 J–2014

(A) षट् (6) (B) सप्त (7)
(C) अष्ट (8) (D) दश (10)

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–67

85. (D) 86. (A) 87. (B) 88. (B) 89. (D) 90. (D) 91. (B) 92. (A) 93. (B) 94. (B) 95. (D) 96. (A)

97. माध्यन्दिनशाखायां कति अध्यायाः खिलरूपेण सन्ति?

BHU AET–2012

(A) पञ्च (B) द्वादश

(C) पञ्चदश (D) त्रिंशत्

वैदिक साहित्य का इतिहास-गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज–82

98. (i) वाजसनेयी शाखा के कितने भेद हैं?

(ii) वाजसनेयियों के भेद हैं–

UGC 73 J–2005, 2008

(A) एकादश (B) द्वादश

(C) त्रयोदश (D) पञ्चदश

संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास (प्रथम खण्ड)-बलदेव उपाध्याय, पेज–261

99. माध्यन्दिनशतपथस्य कस्मिन् काण्डे अग्निरहस्यं वर्णितमस्ति– BHU AET–2010

(A) दशमे (B) द्वादशे

(C) चतुर्दशे (D) विंशे

स्रोत–*वैदिक साहित्य और संस्कृति - बलदेव उपाध्याय, पेज–204*

100. (i) मैत्रायणी शाखा सम्बन्धित है–

(ii) मैत्रायणी शाखा से सम्बन्धित वेद है–

(iii) मैत्रायणी संहिता सम्बन्धित है–

(iv) मैत्रायणी-संहिता केन वेदेन सह सम्बद्धा वर्तते–

(v) मैत्रायणीसंहिता केन वेदेन सम्बद्धा अस्ति?

UGC 25 J–2012, BHU MET–2014, 2015
BHU AET–2010, UGC 25 J–2002, D–2009, 2010

(A) सामवेदेन (B) अथर्ववेदेन

(C) शुक्लयजुर्वेदेन (D) कृष्णयजुर्वेदेन

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–69*

101. कृष्णयजुर्वेदस्य कति शाखाः सम्प्रति उपलभ्यन्ते?

BHU AET–2010

(A) 02 (B) 04

(C) 06 (D) 08

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–68*

102. तैत्तिरीयशाखायां कति अष्टकाः खण्डाः वा सन्ति?

BHU AET–2010

(A) 03 (B) 05

(C) 06 (D) 07

स्रोत–*(i) वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–68*
(ii) यजुर्वेद - वेदान्ततीर्थ, पेज–13

103. (i) तैत्तिरीयसंहितायां कति काण्डानि सन्ति?

(ii) तैत्तिरीयसंहितायां काण्डसंख्या अस्ति?

BHU MET–2012, CVVET–2015, BHU AET–2015
BHU AET–2012, UK SLET–2012

(A) षट् (B) सप्त

(C) अष्ट (D) दश

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–98*

104. तैत्तिरीयसंहितायां कति प्रपाठकाः सन्ति?

BHU AET–2012

(A) अशीतिः (B) पञ्चाशत्

(C) चतुश्चत्वारिंशत् (D) एकोनपञ्चाशत्

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–68*

105. तैत्तिरीयप्रातिशाख्ये कत्यध्यायाः सन्ति?

BHU AET–2012

(A) चत्वारिंशत् (B) विंशतिः

(C) द्वाविंशतिः (D) चतुर्विंशतिः

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–198*

106. (i) काण्वशाखा किस वेद की है? UGC 73 D–1999

(ii) काण्वशाखा कस्य वेदस्य? UGC 25 D–2014

(A) सामवेद (B) अथर्ववेद

(C) ऋग्वेद (D) यजुर्वेद

(i) वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–65
(ii) वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–98

107. काण्वसंहितायां कति मन्त्राः प्राप्यन्ते?

BHU AET–2012

(A) 1000 (B) 2000

(C) 2086 (D) 3000

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–65*

97. (C) 98. (D) 99. (A) 100. (D) 101. (B) 102. (D) 103. (B) 104. (C) 105. (D) 106. (D) 107. (C)

108. तैत्तिरीयसंहितायां कति अनुवाकाः स्वीक्रियन्ते?
BHU AET–2012
(A) 250 (B) 270
(C) 470 (D) 631
स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–68*

109. कृष्णयजुर्वेदे कति काण्डानि सन्ति?
BHU AET–2012
(A) पञ्च (B) षट्
(C) सप्त (D) विंशतिः
स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–68*

110. मैत्रायणी उपनिषद् कुल कितने अध्यायों में विभक्त हैं?
UGC 25 J–2004
(A) 5 (B) 10
(C) 8 (D) 7
स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–188*

111. 'कठशाखा' सम्बन्धित है– UGC 25 D–2003
(A) ऋग्वेद से (B) सामवेद से
(C) अथर्ववेद से (D) यजुर्वेद से
स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–68*

112. 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' इति मन्त्रः कस्मिन् वेदे दृक्पथमुपयाति– UGC 25 J–2005
(A) कृष्णयजुर्वेदे (B) ऋग्वेदे
(C) अथर्ववेदे (D) शुक्लयजुर्वेदे
स्रोत–*(i) वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–75*
(ii) यजुर्वेद (32/8) - वेदान्ततीर्थ, पेज–426

113. मन्त्रब्राह्मणयोः सम्मिश्रणं वर्तते– UGC 25 J–2009
(A) ऋग्वेदे (B) कृष्णयजुर्वेदे
(C) सामवेदे (D) अथर्ववेदे
स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–68, 69*

114. कस्मात् कृष्णयजुर्वेदः कथ्यते– UGC 25 J–2010
(A) वैशम्पायनप्रणीतत्वात् (B) मन्त्रब्राह्मणयोः साङ्कर्यात्
(C) दक्षिणदेशप्रसिद्धत्वात् (D) पाठभेदात्
स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–68, 69*

115. तित्तिररूपेण शिष्याः कं वेदं स्वीकृतवन्तः?
BHU AET–2010
(A) ऋग्वेदम् (B) सामवेदम्
(C) कृष्णयजुर्वेदम् (D) अथर्ववेदम्
स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–65*

116. काण्वशाखा मुख्यतः कुत्र उपलभ्यते?
BHU AET–2010
(A) महाराष्ट्रे (B) केरले
(C) उत्तरभारते (D) आन्ध्रप्रदेशे
वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–66

117. कृष्णयजुर्वेद की प्रसिद्ध–शाखा किस नाम से जानी जाती है– BHU MET–2011
(A) आर्षेय (B) तैत्तिरीय
(C) ताण्ड्य (D) काण्व
स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–68*

118. कृष्णयजुर्वेद में है– BHU MET–2011
(A) केवल मन्त्र (B) केवल ब्राह्मण
(C) मन्त्र और ब्राह्मण (D) गीत
स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–68, 69*

119. तैत्तिरीयसंहितायाः अध्यायानां प्रश्नानां वा अपरमभिधानं किमस्ति? BHU AET–2010
(A) वाचकः (B) समयः
(C) प्रपाठकः (D) सम्पादकः
स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–136*

120. कृष्णयजुर्वेदस्य का शाखा सम्प्रत्यपि सम्पूर्णतया न प्राप्यते? BHU AET–2010
(A) तैत्तिरीयसंहिता (B) मैत्रायणीसंहिता
(C) काठकसंहिता (D) कठकापिष्ठलसंहिता
स्रोत–*संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास (प्रथम खण्ड)–बलदेव उपाध्याय/व्रजबिहारी चौबे, पेज–227*

121. ब्रह्मसम्प्रदायस्य प्रातिनिध्यं कः करोति?
BHU AET–2010
(A) ऋग्वेदः (B) सामवेदः
(C) कृष्णयजुर्वेदः (D) अथर्ववेदः
स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–64*

108. (D) 109. (C) 110. (D) 111. (D) 112. (D) 113. (B) 114. (B) 115. (C) 116. (A) 117. (B)
118. (C) 119. (C) 120. (D) 121. (C)

122. (i) तैत्तिरीयशाखा केन वेदेन सम्बद्धा?
(ii) तैत्तिरीयसंहिता सम्बन्धित है–
UGC 73 J–1999, D–2006, BHU AET–2010
UGC 25 J–2014

(A) ऋग्वेदेन (B) अथर्ववेदेन
(C) सामवेदेन (D) कृष्णयजुर्वेदेन

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–68*

123. प्राजापत्यकाण्डं कस्यां संहितायां विद्यते?
BHU AET–2010

(A) माध्यन्दिनसंहितायाम् (B) शाकलसंहितायाम्
(C) तैत्तिरीयसंहितायाम् (D) कौथुमसंहितायाम्

स्रोत–*संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास (प्रथम खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/व्रजबिहारी चौबे, पेज–229*

124. कृष्णयजुर्वेदः केन सम्प्रदायेन सम्बध्यते–
BHU AET–2010

(A) आदित्यसम्प्रदायेन (B) ब्रह्मसम्प्रदायेन
(C) इन्द्रसम्प्रदायेन (D) चन्द्रसम्प्रदायेन

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–64*

125. मन्त्रब्राह्मणवाक्ययोर्मिश्रणं बाहुल्येन कुत्र प्राप्यते?
BHU AET–2010

(A) ऋग्वेदे (B) अथर्ववेदे
(C) सामवेदे (D) कृष्णयजुर्वेदे

स्रोत–*संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास (प्रथम खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/व्रजबिहारी चौबे, पेज–232*

126. काण्वसंहिता कस्मिन् वेदे अन्तर्भावो भवेत्?
BHU AET–2011

(A) साम्नि (B) यजुसि
(C) आथर्वणि (D) ऋचि

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–65*

127. मैत्रायणीशाखायाः कस्मिन् वेदे अन्तर्भावः भवति?
BHU AET–2011

(A) ऋग्वेदे (B) शुक्लयजुर्वेदे
(C) सामवेदे (D) कृष्णयजुर्वेदे

स्रोत–*(i) वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–68*
(ii) संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास (प्रथम खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/व्रजबिहारी चौबे, पेज–242

128. मैत्रायणी-संहिता कस्य वेदस्य वर्तते?
BHU AET–2012

(A) कृष्णयजुर्वेदस्य (B) सामवेदस्य
(C) अथर्ववेदस्य (D) ऋग्वेदस्य

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–68*

129. मन्त्रैः सह ब्राह्मणस्य नियोजनमस्ति?
BHU AET–2011

(A) ऋग्वेदे (B) सामवेदे
(C) कृष्णयजुर्वेदे (D) शुक्लयजुर्वेदे

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–69*

130. कस्मात् कृष्णयजुर्वेदः? BHU AET–2012

(A) कृष्णद्वैपायनेन प्रवर्तितत्वात् (B) कृष्णत्वात्
(C) मन्त्रब्राह्मणयोः साङ्कर्यात् (D) कृष्णपक्षे पठनात्

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–68, 69*

131. कृष्णयजुर्वेदेन सह सम्बद्धमस्ति?
BHU AET–2012

(A) पारस्करगृह्यसूत्रम् (B) बौधायनगृह्यसूत्रम्
(C) गोभिलगृह्यसूत्रम् (D) कौशिकगृह्यसूत्रम्

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–229*

132. तैत्तिरीयसंहितायाः तृतीयकाण्डस्य किं नाम?
BHU AET–2012

(A) वैश्वानरीयकाण्डम् (B) आग्नेयकाण्डम्
(C) शौमिककाण्डम् (D) प्राजापत्यकाण्डम्

स्रोत–*संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास (प्रथम खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/व्रजबिहारी चौबे, पेज–229*

122. (D) 123. (C) 124. (B) 125. (D) 126. (B) 127. (D) 128. (A) 129. (C) 130. (C) 131. (B) 132. (B)

133. तैत्तिरीयसंहितायाः नामान्तरमस्ति– UGC 73, D–2012

(A) कृष्णयजुर्वेदः (B) माध्यन्दिनसंहिता

(C) काण्वसंहिता (D) अथर्वसंहिता

स्रोत–*संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास (प्रथम खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/व्रजबिहारी चौबे, पेज–228, 229*

134. कौन सी संहिता ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्, धर्मसूत्रादि से सर्वाङ्गपूर्ण है– UGC 25 D–1998

(A) अथर्ववेद–संहिता (B) सामवेद-संहिता

(C) तैत्तिरीय-संहिता (D) वाजसनेयी-संहिता

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–68*

135. कृष्णयजुर्वेद की प्रसिद्ध शाखा किस नाम से जानी जाती है? BHU MET–2011

(A) आर्षेय (B) तैत्तिरीय

(C) ताण्ड्य (D) काण्व

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–68*

136. 'आपस्तम्बगृह्यसूत्र' से सम्बन्धित वेद है– BHU MET–2015

(A) अथर्ववेद

(B) कृष्णयजुर्वेद

(C) सामवेद

(D) ऋग्वेद

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–68*

137. 'मन्त्र तथा ब्राह्मण' की सम्मिलित संज्ञा क्या है? H TET–2014

(A) नामधेय (B) निघण्टु

(C) निरुक्त (D) वेद

स्रोत– *(i) संस्कृतवाङ्मय का बृहद् इतिहास (प्रथम खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/व्रजबिहारी चौबे, पेज–376*

(ii) वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–113

(iii) आपस्तम्ब श्रौतसूत्र (1.33)

133. (A) 134. (C) 135. (B) 136. (B) 137. (D)

3. यज्ञमीमांसा

1. वाजपेययाग का अनुष्ठान करने वाला होता है– UGC 73 D–2013

(A) राजा (B) महाराजा
(C) सम्राट् (D) सेनापतिः

स्रोत–*वैदिक शब्दमीमांसा - गीताञ्जलि पाण्डेय, पेज–110*

2. अश्वमेध यज्ञ में अश्व के साथ सोती है– UGC 73 D–2013

(A) वावाता (B) अनुचरी
(C) महिषी (D) पालागली

स्रोत–*श्रौतयज्ञ-परिचय - वेणीरामशर्मा गौड, पेज–64*

3. अग्निष्टोम याग में ऋत्विज होते हैं– UGC 73 J–2014

(A) द्वादश (B) षोडश
(C) दश (D) अष्टौ

स्रोत–*श्रौतयज्ञ-परिचय - वेणीरामशर्मा गौड, पेज–27, 28*

4. दर्शपूर्णमासयागस्य का दक्षिणा– UGC 25 J–2014

(A) पूर्णपात्रम् (B) गौः
(C) अन्वाहार्यम् (D) सुवर्णम्

स्रोत–*श्रौतयज्ञ-परिचय - वेणीरामशर्मा गौड, पेज–14*

5. (i) इष्टौ कति प्रयाजाः–
(ii) प्रयाजाः भवन्ति–
(iii) पौर्णमासेष्टौ कति प्रयाजाः भवन्ति–
UK SLET–2012, UGC 25 J–2012, BHU AET–2011

(A) सप्त (B) दश
(C) अष्ट (D) पञ्च

स्रोत–*वैदिक-शब्दमीमांसा - गीताञ्जलि पाण्डेय, पेज–71*

6. 'पञ्च महायज्ञाः' किमर्थम् अनुष्ठीयन्ते– UGC 25 J–2012

(A) ज्वरशान्तये (B) वास्तुदोषविनिवृत्तये
(C) पञ्चसूनादोषनाशाय (D) धनलाभाय

स्रोत–*यज्ञमीमांसा - वेणीरामशर्मा गौड, पेज–30*

7. अग्निष्टोमयागो वर्तते– UGC 25 J–2012

(A) पाकयज्ञः (B) हविर्यज्ञः
(C) सोमयज्ञः (D) स्मार्तयज्ञः

स्रोत–*श्रौतयज्ञ-परिचय - वेणीरामशर्मा गौड, पेज–29*

8. 'दर्शयागः' कदानुष्ठीयते– UGC 25 D–2012

(A) चतुर्दश्याम् (B) प्रतिपदि
(C) अष्टम्याम् (D) पूर्णमास्याम्

स्रोत–*वैदिक-शब्दमीमांसा - गीताञ्जलि पाण्डेय, पेज–75*

9. 'अग्निहोत्रम्' अनुष्ठीयते– UGC 25 D–2012

(A) प्रतिमासम् (B) प्रतिवर्षम्
(C) प्रतिदिनम् (D) प्रतिपक्षम्

स्रोत–*वैदिक-शब्दमीमांसा - गीताञ्जलि पाण्डेय, पेज–57*

10. आध्यात्मिकव्याख्यापद्धतौ वेदे प्रयुक्तस्य 'अग्नि' शब्दस्य अयमर्थः– UGC 25 J–2013

(A) श्रोताग्निः (B) विद्युत्
(C) परमात्मा (D) स्मार्ताग्निः

स्रोत–*संस्कृतवाङ्मय का बृहद् इतिहास (द्वितीय खण्ड)-बलदेव उपाध्याय/ओमप्रकाश पाण्डेय, पेज–224*

11. महामखाः कति? HE–2015

(A) पञ्च (B) चत्वारः
(C) षट् (D) सप्त

स्रोत–*यज्ञमीमांसा - वेणीरामशर्मा गौड, पेज–31*

12. दर्शपूर्णमासाभ्यां कति वर्षाणि यजेत्– BHU AET–2012

(A) त्रिंशद्वर्षाणि (B) पञ्चदशवर्षाणि
(C) पञ्चाशद्वर्षाणि (D) षष्टिवर्षाणि

स्रोत–*श्रौतयज्ञ-परिचय - वेणीरामशर्मा गौड, पेज–14*

1. (C) 2. (C) 3. (B) 4. (C) 5. (D) 6. (C) 7. (C) 8. (B) 9. (C) 10. (C) 11. (A) 12. (A)

13. स एष यज्ञः कतिविधः? BHU AET–2012

(A) पञ्चविधः (B) षड्विधः
(C) दशविधः (D) एकादशविधः

स्रोत–*श्रौतयज्ञ-परिचय - वेणीरामशर्मा गौड, पेज–1*

14. पिण्डपितृयज्ञोऽनुष्ठीयते– BHU AET–2012

(A) प्रतिपदि (B) चतुर्दश्याम्
(C) अमावस्यायाम् (D) पूर्णिमायाम्

स्रोत–*भारतीय संस्कृति - दीपक कुमार, पेज–410*

15. दर्शपूर्णमासवेदिर्भवति– BHU AET–2012

(A) त्र्यङ्गुलखाता (B) स्थण्डिलाकारा
(C) पञ्चङ्गुलखाता (D) खातरहिता

16. अग्निर्नित्यो भवति– BHU AET–2012

(A) दक्षिणाग्नौ (B) आहवनीये
(C) गार्हपत्ये (D) चयने

स्रोत–*(i) संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (द्वितीय-खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/ओमप्रकाश पाण्डेय, पेज–223*
(ii) वैदिक साहित्य और संस्कृति - बलदेव उपाध्याय, पेज–508

17. वेदाभ्यासेन व्यवह्रियते– BHU AET–2012

(A) भूतयज्ञः (B) पितृयज्ञः
(C) ब्रह्मयज्ञः (D) स्मार्तयज्ञः

स्रोत–*यज्ञमीमांसा - वेणीरामशर्मा गौड, पेज–33*

18. दर्शेष्टिः कस्मिन् दिवसे भवति– BHU AET–2010

(A) शुक्लपक्षप्रतिपदि (B) अमावस्यायाम्
(C) पूर्णिमायाम् (D) कृष्णपक्षप्रतिपदि

स्रोत–*वैदिक-शब्द मीमांसा - गीताञ्जलि पाण्डेय, पेज–75*

19. पूर्णमासेष्टिः कस्मिन् दिवसे भवति– BHU AET–2010

(A) पूर्णिमायाम् (B) कृष्णपक्षप्रतिपदि
(C) अमावस्यायाम् (D) शुक्लपक्षप्रतिपदि

स्रोत–*वैदिक-शब्द मीमांसा - गीताञ्जलि पाण्डेय, पेज–75*

20. चातुर्मास्ययागस्य प्रथमपर्वणः किं नामधेयम्– BHU AET–2010

(A) अग्निहोत्रम् (B) आग्रयणम्
(C) सौत्रामणी (D) साकमेधीयम्

स्रोत–*श्रौतयज्ञ-परिचय - वेणीरामशर्मा गौड, पेज–15*

21. दर्शेष्टौ कति ऋत्विजो भवन्ति– UGC 25 S–2013

(A) चत्वारः (B) षोडशः
(C) अष्टौ (D) दश

स्रोत–*श्रौतयज्ञ-परिचय - वेणीरामशर्मा गौड, पेज–10*

22. दर्शपूर्णमासयज्ञे 'दर्श'–शब्दस्य अर्थोऽस्ति– UGC 25 D–2013

(A) पयस्या (B) दर्विः
(C) शूर्पम् (D) अमावस्या

स्रोत–*श्रौतयज्ञ-परिचय - वेणीरामशर्मा गौड, पेज–8*

23. चातुर्मास्ययागे वर्तते– UGC 25 D–2013

(A) शुनासीरीयम् (B) अग्निहोत्रम्
(C) आग्रयणम् (D) सौत्रामणी

स्रोत–*श्रौतयज्ञ-परिचय - वेणीरामशर्मा गौड, पेज–15*

24. कः ब्रह्मयज्ञः– BHU AET–2010

(A) देवार्चनम् (B) अतिथिसत्कारः
(C) अध्ययनम् (D) अग्निहोत्रम्

स्रोत–*यज्ञमीमांसा - वेणीरामशर्मा गौड, पेज–33*

25. दर्शपूर्णमासयज्ञे प्रथमा इष्टिका– HE–2015

(A) दर्शेष्टिः (B) पौर्णमासेष्टिः
(C) पवमानेष्टिः (D) अवभृथेष्टिः

स्रोत–*श्रौतयज्ञ-परिचय - वेणीरामशर्मा गौड, पेज–10*

26. 'स्वरवः' का प्रासंगिक अर्थ है– BHU MET–2014

(A) ग्रह (B) पात्र
(C) हवि (D) यज्ञीय यूप

27. पाकयज्ञाः भवन्ति– UGC 73 D–2012

(A) पञ्च (B) चत्वारः
(C) षट् (D) सप्त

स्रोत–*श्रौतयज्ञ-परिचय - वेणीरामशर्मा गौड, पेज–1*

13. (A)	**14. (C)**	**15. (A)**	**16. (C)**	**17. (C)**	**18. (A)**	**19. (B)**	**20. (D)**	**21. (A)**	**22. (D)**
23. (A)	**24. (C)**	**25. (B)**	**26. (D)**	**27. (D)**					

28. (i) महायज्ञस्य संख्या का–

(ii) कति महायज्ञाः? BHU AET–2010, 2011

(A) 3 (B) 4

(C) 5 (D) 6

स्रोत–*(i) श्रौतयज्ञ-परिचय - वेणीरामशर्मा गौड, पेज–4*

(ii) यज्ञमीमांसा - वेणीरामशर्मा गौड, पेज–31

29. यज्ञ सम्बन्धी विधि-विधानों का पता चलता है– RPCS–1999

(A) ऋग्वेद में (B) सामवेद में

(C) ब्राह्मण ग्रन्थों में (D) यजुर्वेद में

स्रोत–*संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा ऋषि, पेज–48*

30. 'अध्वरः' इति शब्दस्य कोऽर्थः– BHU AET–2010

(A) यज्ञः (B) ध्वनिः

(C) धनम् (D) धेनुः

स्रोत–*संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशंकर शर्मा ऋषि, पेज–33*

31. होतुः किं कर्म भवति– BHU AET–2010

(A) हननम् (B) हवनम्

(C) आह्वानम् (D) हसनम्

स्रोत–*(i) संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा ऋषि, पेज–33*

(ii) वैदिक-शब्दमीमांसा - गीताञ्जलि पाण्डेय, पेज–149

32. 'पुरोडाश' इति शब्दस्य कोऽर्थः– BHU AET–2010

(A) द्रव्यम् (B) पूर्वम्

(C) परम् (D) दोहनम्

स्रोत–*श्रौतयज्ञ-परिचय - वेणीरामशर्मा गौड, पेज–38*

33. 'व्रीहि' इति शब्दस्य कोऽर्थः– BHU AET–2010

(A) वसतिः (B) द्रव्यम्

(C) वनम् (D) वर्तनिः

स्रोत–*वैदिक-शब्दमीमांसा - गीताञ्जलि पाण्डेय, पेज–151*

34. ब्रह्मा यागे किं वदति– BHU AET–2010

(A) याज्याम् (B) अनुवाक्याम्

(C) अनुज्ञाम् (D) प्रज्ञाम्

35. श्रौतयागेषु प्रधानर्त्विकः को विद्यते– BHU AET–2010

(A) अध्वर्युः (B) होता

(C) उद्गाता (D) ब्रह्मा

स्रोत–*श्रौतयज्ञ-परिचय - वेणीरामशर्मा गौड, पेज–28*

36. श्रौतयागेषु याज्या कः पठति– BHU AET–2010

(A) अध्वर्युः (B) होता

(C) ब्रह्मा (D) आग्नीध्रः

स्रोत–*वैदिक-शब्दमीमांसा - गीताञ्जलि पाण्डेय, पेज–161*

37. श्रौतयागेषु अनुवाक्यां कः पठति– BHU AET–2010

(A) आग्नीध्रः (B) ब्रह्मा

(C) होता (D) अध्वर्युः

स्रोत–*वैदिक-शब्दमीमांसा - गीताञ्जलि पाण्डेय, पेज–149*

38. वेदे यागस्य स्वरूपं कति अक्षरात्मकं गण्यते– BHU AET–2010

(A) पञ्च (B) दश

(C) पञ्चदश (D) सप्तदश

39. गार्हपत्याग्निः कस्यां दिशि प्रकल्प्यते– BHU AET–2010

(A) पश्चिमायाम् (B) पूर्वस्याम्

(C) उत्तरस्याम् (D) दक्षिणस्याम्

स्रोत–*संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास (द्वितीय-खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/ओमप्रकाश पाण्डेय, पेज–224*

40. आह्वनीयाग्निः कस्यां दिशि भवति– BHU AET–2010

(A) उत्तरस्याम् (B) दक्षिणस्याम्

(C) पूर्वस्याम् (D) पश्चिमायाम्

स्रोत–*संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास (द्वितीय-खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/ओमप्रकाश पाण्डेय, पेज–223*

41. दक्षिणाग्निः कस्यां दिशि भवति– BHU AET–2010

(A) उतरस्याम् (B) दक्षिणस्याम्

(C) पूर्वस्याम् (D) पश्चिमायाम्

स्रोत–*संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास (द्वितीय-खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/ओमप्रकाश पाण्डेय, पेज–223*

28. (C) 29. (D) 30. (A) 31. (C) 32. (A) 33. (B) 34. (C) 35. (A) 36. (B) 37. (C) 38. (D) 39. (A) 40. (C) 41. (B)

42. अग्निहोत्रहोमस्य कालः को विद्यते–BHU AET–2010
(A) सायं प्रातः (B) पाक्षिकः
(C) मासिकः (D) अयनात्मकः
स्रोत–श्रौतयज्ञ-परिचय - वेणीरामशर्मा गौड, पेज–6, 7

43. सोमयज्ञस्य प्रधानहविः किं भवति–BHU AET–2010
(A) पुरोडाशः (B) वाजिनम्
(C) सोमः (D) चरुः
स्रोत–वैदिक-शब्द-मीमांसा - गीताञ्जलि पाण्डेय, पेज–92

44. दीक्षा कस्य यागस्य अङ्गं विद्यते– BHU AET–2010
(A) अग्निहोत्रस्य (B) दर्शस्य
(C) पौर्णमासस्य (D) सोमयागस्य
स्रोत–श्रौतयज्ञ-परिचय - वेणीरामशर्मा गौड, पेज–27, 28

45. दीक्षासंस्कारः कस्य भवति– BHU AET–2010
(A) यजमानस्य (B) अध्वर्योः
(C) होतुः (D) ब्राह्मणस्य
स्रोत–श्रौतयज्ञ-परिचय - वेणीरामशर्मा गौड, पेज–28

46. महायज्ञाः कति परिगणिताः भवन्ति–BHU AET–2010
(A) दश (B) नव
(C) पञ्च (D) सप्त
स्रोत– (i) यज्ञमीमांसा - वेणीरामशर्मा गौड, पेज–31
(ii) श्रौतयज्ञ-परिचय - वेणीरामशर्मा गौड, पेज–4

47. चातुर्मास्ययागे कति पर्वाणि भवन्ति–BHU AET–2010
(A) चत्वारि (B) पञ्च
(C) सप्त (D) नव
स्रोत–श्रौतयज्ञ परिचय - वेणीरामशर्मा गौड, पेज–15

48. ऋतवः कति परिगणिताः सन्ति– BHU AET–2010
(A) दश (B) नव
(C) षट् (D) अष्टौ
स्रोत–श्रौतयज्ञ-परिचय - वेणीरामशर्मा गौड, पेज–52

49. अग्निष्टोमयागः कस्य प्रकृतिः विद्यते– BHU AET–2010
(A) सोमयागस्य (B) पशुयागस्य
(C) इष्टियागस्य (C) स्मार्तयागस्य
स्रोत–श्रौतयज्ञ-परिचय - वेणीरामशर्मा गौड, पेज–27

50. दर्शपूर्णमास्ययागः कस्य प्रकृतिर्विद्यते– BHU AET–2010
(A) सोमयागस्य (B) पशुयागस्य
(C) इष्टियागस्य (D) स्मार्तयागस्य
स्रोत–श्रौतयज्ञ-परिचय - वेणीरामशर्मा गौड, पेज–10

51. दर्शे कति प्रधानयागाः भवन्ति– BHU AET–2010
(A) त्रयः (B) पञ्च
(C) सप्त (D) नव
स्रोत–श्रौतयज्ञ-परिचय - वेणीरामशर्मा गौड, पेज–8, 9

52. पौर्णमासे कति प्रधानयागाः भवन्ति– BHU AET–2010
(A) पञ्च (B) सप्त
(C) नव (D) त्रयः
स्रोत–श्रौतयज्ञ परिचय - वेणीरामशर्मा गौड, पेज–8-9

53. (i) दर्शपौर्णमासेष्टियागे प्रयाजानां संख्या विद्यते?
(ii) दर्शपूर्णमासयागे कति प्रयाजाः भवन्ति–
BHU AET–2010, UGC 25 D–2015
(A) पञ्च (B) सप्त
(C) नव (D) दश
स्रोत–श्रौतयज्ञ-परिचय - वेणीरामशर्मा गौड, पेज–13

54. दर्शपूर्णमासयागे कति अनुयाजाः भवन्ति– BHU AET–2010
(A) चत्वारः (B) त्रयः
(C) सप्त (D) नव

55. (i) हविर्यज्ञसंस्थाः कति भवन्ति– UGC 73 D–2013
(ii) हविर्यागानां प्रकाराः सन्ति– BHU AET–2010
(A) पञ्च (B) सप्त
(C) नव (D) दश
स्रोत–श्रौतयज्ञ-परिचय - वेणीरामशर्मा गौड, पेज–1

42. (A)	**43. (C)**	**44. (D)**	**45. (A)**	**46. (C)**	**47. (A)**	**48. (C)**	**49. (A)**	**50. (C)**	**51. (A)**
52. (D)	**53. (A)**	**54. (B)**	**55. (B)**						

56. पाकयज्ञसंस्थाः कति भवन्ति– BHU AET–2010

(A) नव (B) दश
(C) पञ्च (D) सप्त

स्रोत–*श्रौतयज्ञ-परिचय - वेणीरामशर्मा गौड, पेज–1*

57. सोमयज्ञसंस्थाः कति भवन्ति– BHU AET–2010

(A) पञ्च (B) सप्त
(C) नव (D) दश

स्रोत–*श्रौतयज्ञ-परिचय - वेणीरामशर्मा गौड, पेज–1*

58. रथन्तर है, एक– BHU MET–2015

(A) साम (B) प्रयाज
(C) अनुयाज (D) ऋत्विज्

स्रोत–*(i) श्रौतयज्ञ-परिचय - वेणीरामशर्मा गौड, पेज–67*
(ii) वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–82

59. 'वैराज' है एक– BHU MET–2015

(A) छन्द (B) साम
(C) हवनकुण्ड (D) अध्वर्यु

स्रोत–*श्रौतयज्ञ-परिचय - वेणीरामशर्मा गौड, पेज–67*

60. याग के जो दो रूप हैं, वे हैं– BHU MET–2015

(A) द्रव्य एवं देवता (B) ईश्वर एवं जीव
(C) ज्ञान एवं कर्म (D) अग्नि एवं वेद

स्रोत–*श्रौतयज्ञ-परिचय - वेणीरामशर्मा गौड, पेज–6, 7*

61. सभी इष्टियों की प्रकृति है? BHU MET–2015

(A) अतिथ्येष्टि (B) प्रवर्ग्य
(C) प्रयाज (D) दर्शपूर्णमासेष्टि

स्रोत–*श्रौतयज्ञ-परिचय - वेणीरामशर्मा गौड, पेज–10*

62. दर्शमासयागः कदा विधीयते– UK SLET–2012

(A) प्रतिपदायाम् (B) अमावस्यायाम्
(C) पूर्णिमायाम् (D) चतुर्दश्याम्

स्रोत–*श्रौतयज्ञ-परिचय - वेणीरामशर्मा गौड, पेज–9*

63. दर्शयागस्य आधानकालः– UK SLET–2015

(A) पञ्चमी (B) अष्टमी
(C) नवमी (D) अमावस्या

64. प्रयाज कितने हैं– UGC 73 D–2010

(A) चत्वारः (B) पञ्च
(C) सप्त (D) नव

स्रोत–*(i) वैदिक-शब्द मीमांसा - गीताञ्जलि पाण्डेय, पेज–71*
(ii) श्रौतयज्ञ-परिचय - वेणीरामशर्मा गौड, पेज–1

65. चातुर्मासाख्ययागः भवति– UGC 73 J–2013

(A) पर्वत्रयात्मकः (B) पर्वषडात्मकः
(C) पर्वचतुष्टयात्मकः (D) पर्वनवात्मकः

स्रोत–*वैदिक साहित्य और संस्कृति - बलदेव उपाध्याय, पेज–513*

66. पवमानेष्टयः सन्ति– UGC 73 J–2013

(A) तिस्रः (B) चतस्रः
(C) पञ्च (D) नव

स्रोत–*वैदिक-शब्दमीमांसा - गीताञ्जलि पाण्डेय, पेज–195*

67. वैदिकधर्म आधारित था– MP PSC–2003

(A) मूर्तिपूजा पर (B) यज्ञ पर
(C) अहिंसा पर (D) आर्य अष्टांगिक मार्ग पर

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–72*

नगरे नगरे ग्रामे ग्रामे विलसतु संस्कृतवाणी
सदने सदने जनजनवदने जयतु चिरं कल्याणी

56. (D) 57. (B) 58. (A) 59. (B) 60. (A) 61. (D) 62. (A) 63. (D) 64. (B) 65. (C) 66. (A) 67. (B)

4. सामवेद

1. सामवेद का दूसरा नाम है? UGC 25 J–1999

(A) स्तुतिवेद (B) कर्मवेद
(C) गानवेद (D) धनुर्वेद

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–87-88

2. उत्तरार्चिक किस वेद से सम्बद्ध है–BHU MET–2011

(A) ऋग्वेद (B) यजुर्वेद
(C) सामवेद (D) अथर्ववेद

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–80

3. सङ्गीत का प्राचीनतम ग्रन्थ है? UGC 25 J–2003

(A) सामवेद (B) यजुर्वेद
(C) ऋग्वेद (D) अथर्ववेद

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–87

4. (i) 'उद्गाता' कस्य वेदस्य प्रातिनिध्यं करोति?
(ii) 'उद्गाता' का सम्बन्ध किस वेद से है?
(iii) 'उद्गाता' ऋत्विक्– BHU AET–2010
BHU MET–2008

(A) ऋग्वेद (B) अथर्ववेद
(C) सामवेद (D) यजुर्वेद

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–88

5. सामवेदीयः ऋत्विक्– BHU AET–2010, 2011

(A) अध्वर्युः (B) ब्रह्मा
(C) उद्गाता (D) होता

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–88

6. सामवेदः सम्प्राप्तः– UGC 25 J–2014

(A) रवेः (B) अग्नेः
(C) वायोः (D) वरुणात्

स्रोत–(i) वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–39
(ii) मनुस्मृति (1/23)-शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पेज–85-86

7. सामवेद संहिता का उपवेद कौन है?
BHU MET–2010

(A) गान्धर्ववेद (B) आयुर्वेद
(C) धनुर्वेद (D) अथर्ववेद

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–10

8. सामवेदस्य शाखाः सन्ति? AWES TGT–2010

(A) 2 (B) 3
(C) 6 (D) 4

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–83-84

9. साम्प्रतं सामवेदस्य उपलभ्यमानायाः शाखायाः संख्या–
BHU AET–2010

(A) 3 (B) 4
(C) 1000 (D) 100

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–88-89

10. सहस्रशाखो वेदः– BHU AET–2010

(A) यजुर्वेदः (B) ऋग्वेदः
(C) सामवेदः (D) अथर्ववेदः

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–88-89

11. 'राणायनीयशाखा' कस्य वेदस्य?
UGC 25 S–2013, CVVET–2015

(A) ऋग्वेदस्य (B) यजुर्वेदस्य
(C) सामवेदस्य (D) अथर्ववेदस्य

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–89

12. 'जैमिनिशाखा' किस वेद से सम्बन्धित हैं?
UP PGT–2003, BHU MET–2014

(A) ऋग्वेद (B) यजुर्वेद
(C) सामवेद (D) अथर्ववेद

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–89

1. (C) 2. (C) 3. (A) 4. (C) 5. (C) 6. (A) 7. (A) 8. (B) 9. (A) 10. (C) 11. (C) 12. (C)

13. (i) 'कौथुमशाखा' किस वेद से है?
(ii) 'कौथुम-शाखा' से सम्बद्ध वेद है
UGC 25 J–2000, D–2001, 2008

(A) ऋग्वेद (B) यजुर्वेद
(C) सामवेद (D) अथर्ववेद

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–89*

14. सामवेदः केषां प्रसूतिः? BHU AET–2012

(A) क्षत्रियाणाम् (B) नक्षत्राणाम्
(C) ब्राह्मणानाम् (D) वैश्यानाम्

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–140*

15. उद्गातृगणे कति ऋत्विजो भवन्ति–
BHU AET–2012

(A) त्रयः (B) चत्वारः
(C) षट् (D) पञ्च

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–82*

16. (i) गानस्य प्राधान्यमस्ति–
(ii) वह वेद जिसमें सङ्गीत का उल्लेख है?
(iii) गानप्रधानो वेदः–
(iv) निम्न में से कौन-सा वेद सङ्गीतशास्त्र से सम्बन्धित है?
UGC 25 J–2007, BHU AET–2010
UGC 06 D–2004, CCSUM (H) Ph.D–2016

(A) सामवेदे (B) यजुर्वेदे
(C) अथर्ववेदे (D) ऋग्वेदे

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–77*

17. सामवेदे गानं कतिधा भवति– BHU AET–2011

(A) 3 (B) 5
(C) 8 (D) 9

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–91*

18. ऋक्तन्त्रं कस्य वेदस्य कृते– BHU AET–2011

(A) ऋग्वेदस्य (B) यजुर्वेदस्य
(C) सामवेदस्य (D) अथर्ववेदस्य

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–180*

19. सामवेदस्य प्रमुख–प्रतिपाद्यविषयोऽस्ति–
UGC 25 D–2005

(A) गानम् (B) ज्ञानम्
(C) स्तुति (D) यागयज्ञादिकम्

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–87*

20. सामवेदस्य पूर्वार्चिकस्य अपरा संज्ञा का अस्ति?
BHU AET–2010

(A) व्यासिका (B) छन्दसंहिता
(C) पवमाना (D) श्रूयमाणा

संस्कृतवाङ्मय का बृहद्, इतिहास (प्रथम-खण्ड)-बलदेव उपाध्याय, पेज–286

21. सामवेद में 'साम' का अर्थ है– BHU MET–2010

(A) उपासना (B) कर्म
(C) गायन (D) ज्ञान

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–87*

22. 'रथन्तर' जिसका प्रकार है, वह है– BHU MET–2014

(A) सामगान (B) स्तुति
(C) यज्ञ (D) रथस्तुति

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–82*

23. 'साम्नः' व्यवहारिकोऽर्थोऽस्ति– UP GDC–2014

(A) वाचनम् (B) सान्त्वनम्
(C) गायनम् (D) संस्कारः

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–87*

24. स्तोमस्य प्रधानता– BHU AET–2010

(A) ऋग्वेदे (B) यजुर्वेदे
(C) सामवेदे (D) अथर्ववेदे

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–90-91*

25. 'तत्त्वमसि' श्रुतिः– BHU AET–2010

(A) यजुर्वेदे (B) सामवेदे
(C) ऋग्वेदे (D) अथर्ववेदे

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–181*

13. (C) 14. (C) 15. (B) 16. (A) 17. (B) 18. (C) 19. (A) 20. (B) 21. (C) 22. (A)
23. (C) 24. (C) 25. (B)

26. कः सामवेदस्य मन्त्राणां गायनं करोति– BHU AET–2012

(A) होता (B) अध्वर्युः
(C) उद्गाता (D) ब्रह्मा

***स्रोत**–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–88*

27. 'संहितोपनिषद् ब्राह्मणं' कस्मिन् वेदे विद्यते– BHU AET–2010

(A) सामवेदे (B) ऋग्वेदे
(C) यजुर्वेदे (D) अथर्ववेदे

***स्रोत**–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–10*

28. ऋग्वेदात् उद्धृतानाम् ऋचां संख्या सामवेदे– BHU AET–2010

(A) 1292 (B) 1225
(C) 1581 (D) 1504

***स्रोत**–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–81*

29. सामाख्या कुत्र भवति? BHU AET–2012

(A) सूत्रेषु (B) मन्त्रेषु
(C) गीतिषु (D) प्रयोगेषु

***स्रोत**–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–77*

30. 'गीतिषु सामाख्या' इति कस्मिन् ग्रन्थे उक्तमस्ति BHU AET–2012

(A) महाभाष्ये (B) निरुक्ते
(C) जैमिनीयसूत्रे (D) वेदान्तसूत्रे

***स्रोत**–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–87*

31. अङ्गुलीषु स्वरसञ्चालनं क्रियते– UGC 25 S–2013

(A) ऋग्वेदे (B) यजुर्वेदे
(C) सामवेदे (D) अथर्ववेदे

***स्रोत**–संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास (द्वितीय खण्ड) बलदेव उपाध्याय/ओमप्रकाश पाण्डेय, पेज–40*

32. 'उपद्रव' जिसकी विधा है, वह है– BHU MET–2015

(A) कर्मकाण्ड (B) सामगान
(C) इष्टि (D) सोमयाग

***स्रोत**–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–92*

33. 'दैवतब्राह्मण' से सम्बन्धित वेद का नाम है– BHU MET–2014

(A) शुक्लयजुर्वेद (B) सामवेद
(C) अथर्ववेद (D) ऋग्वेद

***स्रोत**–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–138*

34. 'मशकसूत्र' से सम्बन्धित वेद है– BHU MET–2014

(A) ऋग्वेद (B) सामवेद
(C) यजुर्वेद (D) अथर्ववेद

***स्रोत**–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–219*

35. सामवेदस्य कति ब्राह्मणानि सन्ति–UK SLET–2012

(A) 09 (B) 08
(C) 11 (D) 15

***स्रोत**–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–135*

नोट– आचार्य सायण ने सामवेदीय ब्राह्मणों की संख्या 8 मानी है।

36. सामसंज्ञा भवति– UGC 25 J–2008

(A) ऋचाम् (B) गानानाम्
(C) ब्राह्मणानाम् (D) उपनिषदाम्

***स्रोत**–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–87*

37. साममन्त्राणां गायने कति स्वराणां प्रयोगो भवति? BHU AET–2010

(A) पञ्च (B) सप्त
(C) दश (D) पञ्चदश

***स्रोत**–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–88*

38. माधव ने जिस वेद की व्याख्या की है, वह है– BHU MET–2014

(A) अथर्ववेद (B) सामवेद
(C) यजुर्वेद (D) ऋग्वेद

***स्रोत**–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–14*

39. सत्यव्रतसामश्रमी कस्य वेदस्य प्रकाण्डविद्वान् आसीत्? BHU AET–2011

(A) ऋग्वेदस्य (B) यजुर्वेदस्य
(C) सामवेदस्य (D) अथर्ववेदस्य

***स्रोत**–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–29*

26. (C)	**27. (A)**	**28. (D)**	**29. (C)**	**30. (C)**	**31. (C)**	**32. (B)**	**33. (B)**	**34. (B)**	**35. (B)**
36. (B)	**37. (B)**	**38. (B)**	**39. (C)**						

40. (i) पतञ्जलिमतानुसारं सामवेदस्य शाखाः सन्ति–
(ii) महाभाष्यानुसारं सामवेदस्य शाखाः
BHU AET–2010, 2011, UGC 25 D–1996
(A) 1000 (B) 800
(C) 950 (D) 990
स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–83*

41. 'जैमिनीयशाखा' कस्य वेदस्य? UGC 25 D–2012
(A) ऋग्वेदस्य (B) यजुर्वेदस्य
(C) सामवेदस्य (D) अथर्ववेदस्य
स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–89*

42. उत्तरार्चिके प्रपाठकस्य संख्या– BHU MET–2010
(A) 5 (B) 6
(C) 9 (D) 13
स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–90*

43. ऋक्तन्त्रं सामवेदस्य कस्यां शाखायामन्तर्भवति?
BHU AET–2010
(A) कौथुमशाखायाम् (B) राणायनीयशाखायाम्
(C) जैमिनीयशाखायाम् (D) अनुपलभ्यमानशाखायाम्
स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–180*

44. पूर्वार्चिक-उत्तरार्चिक-भेदेन विभक्तो वेदः–
BHU AET–2010
(A) यजुर्वेदः (B) ऋग्वेदः
(C) अथर्ववेदः (D) सामवेदः
स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–80*

45. सामवेदस्य भागाः कति? BHU AET–2010
(A) 2 (B) 3
(C) 4 (D) 5
स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–80*

46. सामवेदस्य मन्त्राणां (ऋचाणां) संख्या–
BHU AET–2010
(A) 1500 (B) 1549
(C) 1600 (D) 1700
स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–90*

47. सामवेदे कति ऋचः स्वतन्त्ररूपेण सन्ति?
BHU AET–2010
(A) 20 (B) 25
(C) 75 (D) 100
स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–90*

48. सामसंहिता कति भागेषु विभक्ताऽस्ति?
BHU AET–2010
(A) भागद्वये (B) भागत्रये
(C) भागचतुष्टये (D) भागदशके
स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–80*

49. पूर्वार्चिक में प्रपाठकों की संख्या है–
BHU MET–2015
(A) 4 (B) 5
(C) 6 (D) 10
स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–80*

50. (i) उत्तरार्चिक में कितने भाग (प्रपाठक) हैं?
(ii) सामवेदीयोत्तरार्चिके सर्वसाकल्यं कियन्तः प्रपाठकाः? BHU AET–2011, UGC 25 J–2001
(A) 1 (B) 5
(C) 9 (D) 13
स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–81*

51. (i) सामवेदीयपूर्वार्चिके कियन्तः मन्त्राः विलसन्ति?
(ii) पूर्वार्चिके मन्त्राणां संख्या– BHU AET–2010, 2011
(A) 650 (B) 1771
(C) 227 (D) 450
स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–80*

52. ऋग्वेदात् संकलित-सर्वसाकल्य-सामवेदीयमन्त्राणां संख्या का? BHU AET–2011
(A) 1504 (B) 104
(C) 1875 (D) 1250
स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–81*

40. (A) 41. (C) 42. (C) 43. (A) 44. (D) 45. (A) 46. (B) 47. (C) 48. (A) 49. (C)
50. (C) 51. (A) 52. (A)

53. सामवेदीयशिक्षाग्रन्थाः– BHU AET–2010

(A) 4 (B) 5
(C) 3 (D) 6

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज–254

54. जैमिनीयशाखायां मन्त्रसंख्या– BHU AET–2010

(A) 1587 (B) 1787
(C) 1687 (D) 1887

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–86

55. जैमिनीयगानसंख्या– BHU AET–2010

(A) 2242 (B) 3681
(C) 4222 (D) 3806

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–86

56. "सङ्गीत के अनुकूल जो शाब्दिक परिवर्तन होता है, उसे सामविकार कहते है।" निम्न विकल्पों में से जो सामविकार नही है, उसे छाँटिए– H-TET–2015

(A) विकार (B) विश्लेषण
(C) विकर्षण (D) निधन

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–92

57. सामविकाराः परिगणिताः सन्ति–UGC 25 D–2015

(A) सप्त (B) षट्
(C) चत्वारः (D) त्रयः

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–92

53. (C) 54. (C) 55. (B) 56. (D) 57. (B)

5. अथर्ववेद

1. कः ऋषिः अथर्वसंहितायाः द्रष्टा अस्ति– BHU AET–2010

(A) अथर्वः (B) सुमन्तुः
(C) वैशम्पायनः (D) कात्यायनः

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज–119

2. (i) 'ब्रह्मवेद' का अर्थ है–
(ii) किस संहिता को 'ब्रह्मवेद' कहा गया है? BHU MET–2015, MP PSC–2000

(A) ऋग्वेद (B) यजुर्वेद
(C) सामवेद (D) अथर्ववेद

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज–119

3. 'अथर्वाङ्गिरस' नाम्ना कः वेदः ज्ञायते? BHU AET–2012

(A) ऋग्वेदः (B) धनुर्वेदः
(C) सामवेदः (D) अथर्ववेदः

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–97

4. (i) ब्रह्मणा सह सम्बन्धः कः वेदः–
(ii) 'ब्रह्मा' किस वेद से सम्बद्ध ऋत्विक् हैं? BHU MET–2008, BHU AET–2011

(A) कृष्णयजुर्वेद (B) ऋग्वेद
(C) अथर्ववेद (D) शुक्लयजुर्वेद

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–103

5. वेदों में सबसे अर्वाचीन वेद है? BHU MET–2010

(A) ऋग्वेद (B) सामवेद
(C) अथर्ववेद (D) यजुर्वेद

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–114

6. 'भैषज्यवेद' यह किसका नामान्तर है? UGC 73 J–2015

(A) ऋग्वेदस्य (B) सामवेदस्य
(C) यजुर्वेदस्य (D) अथर्ववेदस्य

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–98

7. (i) भैषज्यसूक्तानि वर्तन्ते UGC 25 D–2007
(ii) भैषज्यमन्त्राः लभ्यन्ते–

(A) सामवेदे (B) ऋग्वेदे
(C) यजुर्वेदे (D) अथर्ववेदे

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–98

8. वैतानश्रौतसूत्रमस्ति– JNU MET–2015

(A) ऋग्वेदीयम् (B) यजुर्वेदीयम्
(C) सामवेदीयम् (D) अथर्ववेदीयम्

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–10

9. (i) सम्प्रति प्रचलित अथर्ववेद सम्बद्ध है?
(ii) प्रसिद्ध अथर्ववेद सम्बद्ध है– BHU MET–2011, 2012

(A) शौनकशाखा से (B) शाकलशाखा से
(C) कौथुमशाखा से (D) मैत्रायणीशाखा से

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–99

10. इस समय प्रचलित अथर्ववेद किस शाखा का है? UGC 73 D–2015

(A) शौनकशाखा (B) शाकलशाखा
(C) जाजलशाखा (D) स्तौदशाखा

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–99

11. 'जाजलशाखा' जिस वेद की शाखा है, वह है– BHU MET–2014

(A) शुक्लयजुर्वेद (B) अथर्ववेद
(C) ऋग्वेद (D) सामवेद

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–98

1. (A) 2. (D) 3. (D) 4. (C) 5. (C) 6. (D) 7. (D) 8. (D) 9. (A) 10. (A) 11. (B)

12. (i) 'पैप्पलादशाखा' जिस वेद की है, वह है–
(ii) 'पैप्पलाद-संहिता' केन वेदेन सम्बद्धा–
BHU MET–2014, BHU AET–2011
UGC 25 S–2013, D–1997, J–2005

(A) सामवेद (B) यजुर्वेद
(C) ऋग्वेद (D) अथर्ववेद

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–99

13. कौन सा वेद वेदत्रयी का भाग नही है– BHU MET–2015

(A) सामवेद (B) ऋग्वेद
(C) यजुर्वेद (D) अथर्ववेद

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–101

14. कालसूक्तं युज्यते.......... UGC 25 J–2014

(A) मूलवेदे (B) सामवेदे
(C) अथर्ववेदे (D) कुत्रापि न हि

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–109

15. अभिचारसूक्तानि दृश्यन्ते– UP GDC–2012

(A) ऋग्वेदे (B) सामवेदे
(C) कृष्णयजुर्वेदे (D) अथर्ववेदे

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–106

16. (i) पृथिवीसूक्तम्– UGC 25 D–1996,2004, 2005,
(ii) 'भूमिसूक्त' किस वेद में है– J–2003
(iii) 'भूमिसूक्तम्' कं वेदं विषयीकरोति–
(iv) 'पृथ्वीसूक्तम्' कस्य वेदस्य अस्ति–

(A) अथर्ववेद (B) सामवेद
(C) यजुर्वेद (D) ऋग्वेद

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–109

17. पृथिवी की पूजा इसमें है– UGC 25 D–1997

(A) तैत्तिरीयब्राह्मण (B) सामवेद
(C) अथर्ववेद (D) गृह्यसूत्र

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–109

18. निम्नलिखित चार वेदों में से किस एक में जादुई माया और वशीकरण का वर्णन है–
IAS–2004, JPSC–2010

(A) ऋग्वेद (B) सामवेद
(C) अथर्ववेद (D) यजुर्वेद

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–106

19. आयुर्वेद अर्थात् 'जीवन का विज्ञान' का उल्लेख सर्वप्रथम मिलता है– UP PSC–1994

(A) आरण्यक (B) सामवेद
(C) यजुर्वेद (D) अथर्ववेद

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–105

20. (i) 'व्रात्यकाण्ड' पाया जाता है?
(ii) 'व्रात्य' का वर्णन किस वेद में पाया जाता है?
BHU MET–2011, 2012, UGC 73 D–2015

(A) ऋग्वेद में (B) सामवेद में
(C) यजुर्वेद में (D) अथर्ववेद में

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–110

21. अथर्ववेद में स्कम्भ के रूप में कौन वर्णित है?
BHU MET–2011

(A) आत्मा (B) ब्रह्म
(C) जीव (D) माया

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–111

22. पैप्पलादशाखा जिस लिपि में प्राप्त हुई थी, उसका नाम है? BHU MET–2014

(A) देवनागरी (B) खरोष्ठी
(C) मलयालम (D) शारदा

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–99

23. 'स्कम्भ' का वर्णन कहाँ प्राप्त होता है–
BHU MET–2009, 2013, UGC 73 J–2015

(A) रामायण में (B) महाभारत में
(C) अथर्ववेद में (D) सामवेद में

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–111

12. (D) 13. (D) 14. (C) 15. (D) 16. (A) 17. (C) 18. (C) 19. (D) 20. (D) 21. (B) 22. (D) 23. (C)

24. अथर्ववेद का गृह्यसूत्र कौन है? BHU MET–2012

(A) खादिर गृह्यसूत्र (B) वैखानस गृह्यसूत्र
(C) कौशिक गृह्यसूत्र (D) पारस्कर गृह्यसूत्र

स्रोत–*संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास (द्वितीय खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/ओम्प्रकाश पाण्डेय, पेज–154*

25. अथर्ववेद से सम्बद्ध कौन सी शिक्षा है? UGC 73 D–2015

(A) लोमशी शिक्षा (B) माण्डूकी शिक्षा
(C) गौतमी शिक्षा (D) केशवी शिक्षा

स्रोत–*वैदिक साहित्य और संस्कृति-बलदेव उपाध्याय, पेज–306*

26. प्रचुर आयुर्वेदिक सामग्री किस वेद में है– UP GDC–2008

(A) सामवेद में (B) यजुर्वेद में
(C) ऋग्वेद में (D) अथर्ववेद में

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–105*

27. अभिचारक्रियाणां वर्णनं मुख्यतया कस्मिन् वेदे प्राप्यते? BHU AET–2010

(A) ऋग्वेदे (B) यजुर्वेदे
(C) सामवेदे (D) अथर्ववेदे

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–106*

28. अथर्ववेद में पाया जाता है– UGC 73 D–1999

(A) कर्मकाण्ड (B) ज्ञानकाण्ड
(C) विज्ञानकाण्ड (D) अर्घ्यकाण्ड

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–110*

29. औषधि वनस्पतियों के विषय में सूचना किस वेद में मिलती है– MP PSC–2003

(A) ऋग्वेद (B) यजुर्वेद
(C) सामवेद (D) अथर्ववेद

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–106*

30. 'कौशिकगृह्यसूत्र' से सम्बन्धित वेद है– BHU MET–2015

(A) अथर्ववेद (B) ऋग्वेद
(C) सामवेद (D) शुक्लयजुर्वेद

स्रोत–*संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास (द्वितीय खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/ओम्प्रकाश पाण्डेय, पेज–154*

31. लौकिकविषयस्य सर्वाधिकं वर्णनं कस्मिन् वेदे विद्यते? UP GIC–2015

(A) यजुर्वेदे (B) अथर्ववेदे
(C) ऋग्वेदे (D) सामवेदे

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–96*

32. (i) शौनक व पिप्पलादशाखा का सम्बन्ध किस वेद से है?
(ii) 'शौनकशाखा' केन वेदेन सम्पृक्ता– UGC 25 D–2006, H-TET–2015

(A) सामवेदेन (B) ऋग्वेदेन
(C) अथर्ववेदेन (D) यजुर्वेदेन

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–99*

33. (i) महाभाष्यकार के अनुसार अथर्ववेद की शाखाओं की संख्या है?
(ii) चरणव्यूहानुसारम् अथर्ववेदस्य कति शाखाः–
(iii) अथर्ववेद संहिता की कितनी शाखायें प्राप्त हैं–
(iv) पातञ्जलमहाभाष्यानुसारम् अथर्ववेदस्य शाखाः सन्ति? UGC 25 D–2008, UGC 73 J–2015

(A) षट् (B) सप्त
(C) नव (D) दश

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–98*

34. (i) अथर्ववेद कितने काण्डों में विभाजित है–
(ii) अथर्ववेदे कति काण्डानि सन्ति? UGC 25 D–2008, 2010, UP GDC–2008

(A) विंशतिः (B) दश
(C) षट् (D) अष्टादश

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–100*

24. (C) 25. (B) 26. (D) 27. (D) 28. (C) 29. (D) 30. (A) 31. (B) 32. (C) 33. (C) 34. (A)

35. राष्ट्राभिवर्धनसूक्तं कस्यां शाखायां विद्यते? UGC 25 J–2012

(A) शाकलशाखायाम् (B) काण्वशाखायाम्
(C) जैमिनीयशाखायाम् (D) शौनकशाखायाम्

***स्रोत**–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–104*

36. अथर्वसंहिता कति खण्डेषु विभक्ताऽस्ति? BHU AET–2010

(A) 10 (B) 20
(C) 30 (D) 40

***स्रोत**–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–100*

37. अथर्वसंहितायाः खण्डानां किं नामास्ति? BHU AET–2010

(A) पाठकः (B) अनुवाकः
(C) काण्डः (D) उल्लासः

***स्रोत**–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–103-104*

38. अथर्ववेदे कति प्रपाठकाः सन्ति? BHU AET–2010

(A) 20 (B) 34
(C) 40 (D) 80

वैदिक साहित्य का इतिहास-गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज–123

39. अथर्ववेदे कति अनुवाकाः सन्ति– BHU AET–2010

(A) 10 (B) 11
(C) 111 (D) 444

***स्रोत**–संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास (प्रथमखण्ड) - बलदेव उपाध्याय/व्रजबिहारी चौबे, पेज–343*

40. अथर्ववेदे कति सूक्तानि सन्ति? BHU AET–2010

(A) 200 (B) 400
(C) 700 (D) 731

***स्रोत**–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–104*

41. अथर्ववेदे कति मन्त्राः सन्ति? BHU AET–2010, 2011

(A) 5987 (B) 10580
(C) 1875 (D) 18000

***स्रोत**–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–103-04*

42. अथर्ववेदस्य विभाजनं प्राप्यते– JNU MET–2014

(A) सूक्तेषु (B) काण्डेषु
(C) सर्गेषु (D) अध्यायेषु

***स्रोत**–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–103-04*

43. विलुप्ता 'मौद'–शाखा कस्य वेदस्य वर्तते? UGC 25 D–2015

(A) सामवेदस्य
(B) अथर्ववेदस्य
(C) ऋग्वेदस्य
(D) शुक्लयजुर्वेदस्य

***स्रोत**– वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–98*

44. 'सुमन्तु' – ऋषये व्यासः कं वेदं प्रोक्तवान्? UGC 25 D–2015

(A) यजुर्वेदम् (B) ऋग्वेदम्
(C) अथर्ववेदम् (D) सामवेदम्

***स्रोत**–संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास (प्रथम खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/व्रजबिहारी चौबे, पेज–341*

45. 'आग्नीध्र' – नाम्ना ऋत्विक् कस्य गणस्य वर्तते– UGC 25 D–2015

(A) ब्रह्मगणस्य (B) अध्वर्युगणस्य
(C) होतृगणस्य (D) उद्गातृगणस्य

***स्रोत**–श्रौतयज्ञपरिचय - वेणीरामशर्मा गौड़, पेज–28*

।। नमः संस्कृताय ।।

35. (D) 36. (B) 37. (C) 38. (B) 39. (C) 40. (D) 41. (A) 42. (B) 43. (B) 44. (C) 45. (A)

6. ब्राह्मणग्रन्थ

1. 'नैरुक्त्यं यस्य मन्त्रस्य विनियोगः प्रयोजनम्। प्रतिष्ठानं विधिश्चैव.......... तदिहोच्यते' इति पूरयत॥ UGC 25 D–2014

(A) आरण्यकम् (B) पुराणम्
(C) ब्राह्मणम् (D) सूक्तम्

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–113

2. (i) ग्रन्थवाचकः ब्राह्मणलक्षणं कतिधा प्रतिपाद्यते?
(ii) कति लक्षणात्मकः ब्राह्मणग्रन्थो भवति? UGC 25 D–2009, J–2012, S–2013

(A) नव (B) दश
(C) द्वादश (D) पञ्चदश

स्रोत–(i) वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–117
(ii) वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–115-116

3. विधिवाक्यम् वर्तते– BHU AET–2012

(A) मन्त्रः (B) नामधेयम्
(C) निषेधः (D) ब्राह्मणः

संस्कृतवाङ्मय का बृहद् इतिहास (प्रथम खण्ड)-बलदेव उपाध्याय, पेज–73

4. ब्राह्मणं नाम– BHU AET–2010

(A) शास्त्रम् (B) यज्ञविधिप्रकाशनम्
(C) सामगानम् (D) प्रायश्चित्तविधानम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–73

5. ब्राह्मणग्रन्थों का विषय नहीं है– UGC 73 J–2013

(A) छन्दविवेचनम् (B) विधिः
(C) पुराकल्पः (D) प्रशंसा

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–117

6. वह कौन सा वेद है, जिसके दो ब्राह्मण लगभग समान नाम वाले हैं? BHU MET–2014

(A) ऋग्वेद (B) कृष्णयजुर्वेद
(C) शुक्लयजुर्वेद (D) सामवेद

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज–68

7. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिये–

(अ) ऋग्वेद 1. गोपथ
(ब) सामवेद 2. शतपथ
(स) अथर्ववेद 3. ऐतरेय
(द) यजुर्वेद 4. पञ्चविंश R–PSC–2013

	अ	ब	स	द
(A)	4	2	3	1
(B)	2	4	3	1
(C)	3	4	1	2
(D)	1	2	4	3

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–74, 75

8. ऋग्वेद के कितने ब्राह्मणग्रन्थ हैं? BHU MET–2010

(A) 3 (B) 2
(C) 5 (D) 4

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–74

9. (i) सायणानुसारेण सामवेदे विद्यमानब्राह्मणानां संख्या–
(ii) सामवेद-सम्बद्धानि कति ब्राह्मणानि सन्ति?
(ii) सायणभाष्यमतेन सामवेदीयानां ब्राह्मणानां संख्या? BHU AET–2010, UGC 25 D–2008, 2010

(A) नव (B) अष्टौ
(C) पञ्च (D) एकादश

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–135

नोट– कुछ विद्वानों के अनुसार सामवेद के नव ब्राह्मणग्रन्थ माने गये हैं। किन्तु सायण के अनुसार 'अष्टौ हि ब्राह्मणग्रन्थाः' (सायण-भाष्य)

10. 'चरैवेति-चरैवेति' उपदेशः कुत्र लभ्यते? HE–2015

(A) शुनःशेपाख्याने (B) यम-यमी-संवादे
(C) सरमा-पणि-संवादे (D) वाङ्मनस्-संवादे

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–75

1. (C)	2. (B)	3. (D)	4. (B)	5. (A)	6. (C)	7. (C)	8. (B)	9. (B)	10. (A)

11. विधिभागरूपेण स्वीक्रियते– UGC 25 D–2012

(A) ब्राह्मणग्रन्थः (B) उपनिषद्ग्रन्थः
(C) धर्मशास्त्रम् (D) आरण्यकम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–73

12. 'हेतुर्निर्वचनं निन्दा प्रशंसा संशयो विधिः' जिसको परिभाषित करता है, वह ग्रन्थ है– BHU MET–2015

(A) कठोपनिषद् (B) ब्राह्मण
(C) आरण्यक (D) गीता

***स्रोत**–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–117*

13. ब्राह्मणग्रन्थानां प्रतिपाद्यविषयस्य कति प्रकाराः? UGC 25 J–2015

(A) द्वादश (B) षोडश
(C) चत्वारः (D) दश

संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज–62

14. ब्राह्मणग्रन्थाः कस्य विस्तृतवर्णनं कुर्वन्ति? RPSC ग्रेड-I TGT–2010

(A) वनस्पतेः (B) ब्राह्मणवर्गस्य
(C) महापुरुषाणाम् (D) यज्ञानुष्ठानस्य

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–73

15. (i) ऐतरेयब्राह्मणे कति अध्यायाः सन्ति?
(ii) ऐतरेय ब्राह्मण में अध्यायों की संख्या कितनी है?
BHU AET–2012, BHU MET–2008, 2009, 2013

(A) दश (B) विंशतिः
(C) त्रिंशत् (D) चत्वारिंशत्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–75

16. (i) ऐतरेयब्राह्मणं केन वेदेन सम्पृक्तम्?
(ii) ऐतरेयब्राह्मण किस वेद से सम्बद्ध है?
(iii) ऐतरेयब्राह्मणस्य कस्मिन् वेदे अन्तर्भावः स्यात्?
UGC 25 J–2008, BHU AET–2011, 2012
BHU MET–2008, 2010, 2014

(A) ऋग्वेदे (B) यजुर्वेदे
(C) सामवेदे (D) अथर्ववेदे

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–74

17. ऋग्वेदस्य ब्राह्मणम्–
BHU AET–2010, UGC 25 J–2010

(A) ऐतरेयब्राह्मणम् (B) तैत्तिरीयब्राह्मणम्
(C) आर्षेयब्राह्मणम् (D) गोपथब्राह्मणम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–74

18. 'नामनेदिष्ठोपाख्यानम्' कस्मिन् ब्राह्मणे समुपलभ्यते? UGC 25 J–2008

(A) ऐतरेयब्राह्मणे (B) शतपथब्राह्मणे
(C) गोपथब्राह्मणे (D) तैत्तिरीयब्राह्मणे

19. (i) 'चरैश्चरैवेति' इति कस्मिन् ब्राह्मणे अस्ति?
(ii) 'चरैवेति चरैवेति' इति वाक्यांशोऽस्मिन् ग्रन्थे अस्ति?
UGC 25 J–2011, BHU AET–2011

(A) शतपथब्राह्मणे (B) ऐतरेयब्राह्मणे
(C) तैत्तिरीयब्राह्मणे (D) गोपथब्राह्मणे

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–75

20. 'हरिश्चन्द्रोपाख्यानं' कस्मिन् ब्राह्मणे उपलभ्यते? UGC 25 D–2005

(A) ऐतरेयब्राह्मणे (B) गोपथब्राह्मणे
(C) शतपथब्राह्मणे (D) पञ्चविंशब्राह्मणे

***स्रोत**–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज–68*

21. (i) शुनःशेपाख्यानं वर्ततेऽस्मिन् ब्राह्मणे?
(ii) 'शुनःशेप आख्यान' किस ब्राह्मण में है?
(iii) 'शुनःशेपाख्यान' सर्वप्रथम कहाँ प्राप्त होता है?
(iv) शुनःशेपकथा कस्मिन् ब्राह्मणे प्राप्यते?
UGC 25 J–1995, 2000, 2001, D–2006
BHU AET–2010, 2011, BHU MET–2009, 2011, 2013, UP GDC–2012

(A) ऐतरेय (B) तैत्तिरीय
(C) गोपथ (D) शतपथ

***स्रोत**–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–126*

11. (A) 12. (B) 13. (D) 14. (D) 15. (D) 16. (A) 17. (A) 18. (A) 19. (B) 20. (A) 21. (A)

22. 'अग्निर्वैदेवानामवमः' का उल्लेख जिसमें है, वह है? BHU MET–2014

(A) शतपथ ब्राह्मण (B) ऐतरेय ब्राह्मण
(C) गोपथ ब्राह्मण (D) छान्दोग्य ब्राह्मण

स्रोत–वैदिक साहित्य और संस्कृति-बलदेव उपाध्याय, पेज–509

23. 'शांखायनब्राह्मणं' कस्य वेदस्य? BHU AET–2011

(A) ऋग्वेदस्य (B) यजुर्वेदस्य
(C) सामवेदस्य (D) अथर्ववेदस्य

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–74

24. शांखायनब्राह्मणे कियन्तोऽध्यायाः विद्यन्ते? BHU AET–2011

(A) 15 (B) 25
(C) 30 (D) 42

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–75

25. शांखायनब्राह्मणस्य अपरं नाम किम् अस्ति? BHU AET–2012

(A) आख्यानम् (B) ताण्ड्यम्
(C) कौषीतकि (D) कौथुमम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–75

26. एतेषु यजुर्वेदस्य ब्राह्मणग्रन्थो नास्ति? JNU MET–2014

(A) कौषीतकिः (B) तैत्तिरीयः
(C) काठकः (D) मैत्रायणी

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–74

27. (i) शतपथब्राह्मणः कस्य वेदस्य अस्ति?
(ii) शतपथब्राह्मण किस वेद से सम्बन्धित है?
(iii) 'शतपथब्राह्मणं' केन वेदेन सम्बद्धम्?
UP GIC–2015, BHU MET–2010, 2011
UP GDC–2008 UGC 25 J–1995, 2002, 2005, D–1999

(A) सामवेदेन (B) शुक्लयजुर्वेदेन
(C) ऋग्वेदेन (D) अथर्ववेदेन

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–129

28. (i) माध्यन्दिनशाखायाः शतपथब्राह्मणे कति काण्डानि सन्ति?
(ii) शतपथ-ब्राह्मण में काण्डों की संख्या है?
(iii) माध्यन्दिनशतपथब्राह्मण में काण्ड हैं?
BHU AET–2010, 2012, UGC 73 S–2013
BHU MET–2014

(A) दश (10) (B) नव (9)
(C) पञ्चदश (15) (D) चतुर्दश (14)

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–129-130

29. (i) शुक्लयजुर्वेद के शतपथब्राह्मण में कितने अध्याय हैं?
(ii) माध्यन्दिन शतपथब्राह्मण में कितने अध्याय हैं?
BHU MET–2011, UGC 73D–2008, J–2009

(A) 64 (B) 10
(C) 13 (D) 100

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–129

30. (i) काण्वशाखायाः ब्राह्मणग्रन्थस्य नाम किम्?
(ii) काण्वसंहितायाः ब्राह्मणस्य किं नाम अस्ति?
(iii) शुक्लयजुर्वेद की काण्वशाखा का ब्राह्मण है?
(iv) शुक्लयजुर्वेद की काण्वशाखा का ब्राह्मण कौन सा है?
(v) शुक्लयजुर्वेदस्य ब्राह्मणमस्ति........
UGC 73 D–2005, J–2008, 2012
UGC 25 D–1996, 2004, BHU AET–2010
UK SLET–2015, UGC 73 J–2014

(A) गोपथब्राह्मणम् (B) तैत्तिरीयब्राह्मणम्
(C) शांखायनब्राह्मणम् (D) शतपथब्राह्मणम्

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–129

31. शतपथ ब्राह्मण कितने हैं? UGC 73 J–2005

(A) 1 (B) 4
(C) 2 (D) 5

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–129

22. (B)	23. (A)	24. (C)	25. (C)	26. (A)	27. (B)	28. (D)	29. (D)	30. (D)	31. (C)

32. (i) बृहदारण्यकोपनिषद् कस्मिन् ब्राह्मणे प्राप्यते?
(ii) 'बृहदारण्यकोपनिषद्' किस ब्राह्मण में है?
UGC 73 D–1999, D–2004 J–2005
BHU AET–2010

(A) तैत्तिरीये (B) शतपथे
(C) ऐतरेये (D) गोपथे

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–130*

33. जिस ग्रन्थ में 'पुरुषमेध' का उल्लेख हुआ है, वह है? UP PCS–2008

(A) कृष्णयजुर्वेद (B) शुक्लयजुर्वेद
(C) शतपथब्राह्मण (D) पञ्चविंशब्राह्मण

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–130*

34. 'शतपथब्राह्मण' के किस काण्ड में दर्शयाग वर्णित है? BHU MET–2011

(A) प्रथमकाण्ड में (B) एकादशकाण्ड में
(C) द्वितीयकाण्ड में (D) त्रयोदशकाण्ड में

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–129*

35. 'शतं पन्थानो यत्र.......' इत्युक्त्या यस्य ग्रन्थस्य परिचयो भवति सोऽस्ति? UP GDC–2014

(A) 'ऐतरेय' ब्राह्मण (B) 'गोपथ' ब्राह्मण
(C) 'तैत्तिरीय' ब्राह्मण (D) 'शतपथ' ब्राह्मण

स्रोत–*संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास (प्रथम खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/व्रजबिहारी चौबे, पेज–399*

36. शतपथब्राह्मण में उल्लिखित राजा विदेह माधव से सम्बन्धित ऋषि थे? UP Lower PCS–2015

(A) ऋषिभारद्वाज (B) ऋषि वशिष्ठ
(C) ऋषि विश्वामित्र (D) ऋषि गौतम राहुगण

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–131*

37. शतपथब्राह्मणं कया संहितया संयुक्तमस्ति? BHU AET–2010

(A) माध्यन्दिनसंहितया (B) सामसंहितया
(C) अथर्वसंहितया (D) गोपथसंहितया

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–129*

38. शतपथ ब्राह्मण के त्रयोदश काण्ड में किस यज्ञ का विधान किया गया? UGC 73 D–2015

(A) दर्शस्य (B) पौर्णमासस्य
(C) अश्वमेधस्य (D) अग्निहोत्रस्य

स्रोत–*संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास (प्रथम खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/व्रजबिहारी चौबे, पेज–400*

39. 'मनुमत्स्यकथा' किस ब्राह्मणग्रन्थ में उपलब्ध होती है? UGC 73 J–2015

(A) पञ्चविंशब्राह्मणे (B) शांखायनब्राह्मणे
(C) संहितोपनिषद्ब्राह्मणे (D) शतपथब्राह्मणे

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–76

40. माध्यन्दिनशतपथे कति प्रपाठकाः सन्ति– BHU AET–2010

(A) दश (B) द्वादश
(C) अष्टषष्टिः (D) सप्तसप्ततिः

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–129*

41. 'यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म' इति वाक्यं कुत्र प्राप्यते– BHU AET–2012

(A) महाभारते (B) ऋग्वेदे
(C) महाभाष्ये (D) शतपथब्राह्मणे

स्रोत–*संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास (प्रथम खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/व्रजबिहारी चौबे, पेज–403*

42. ''स्वाध्यायोऽध्येतव्यः'' इति वाक्यं कुत्र प्राप्यते? BHU AET–2010

(A) शतपथब्राह्मणे (B) रघुवंशे
(C) श्लोकवार्तिके (D) ईशावास्योपनिषदि

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–135*

43. 'शतपथब्राह्मणस्य' आंग्लानुवादः कुतो वर्तते– UGC 25 D–2015

(A) जी. थीबोमहोदयेन (B) जे. एग्लिंगमहोदयेन
(C) एम. विलियम्समहोदयेन (D) डब्लू. कैलेण्डमहोदयेन

स्रोत–*संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (प्रथम खण्ड) - बलदेव उपाध्याय, पेज–655*

32. (B) 33. (C) 34. (A) 35. (D) 36. (D) 37. (A) 38. (C) 39. (D) 40. (C) 41. (D) 42. (A) 43. (B)

44. (i) ताण्ड्यब्राह्मणं वेदस्यास्य सम्बद्धं भवति?
(ii) ताण्ड्य ब्राह्मण किस वेद से सम्बन्धित है?
UGC 25 J–1999, 2001, D–2001, 2004
BHU AET–2010, 2011

(A) ऋग्वेद से (B) यजुर्वेद से
(C) सामवेद से (D) अथर्ववेद से

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–135*

45. 'प्रौढब्राह्मण' सम्बन्धित है? BHU MET–2014

(A) सामवेद (B) अथर्ववेद
(C) यजुर्वेद (D) ऋग्वेद

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–135*

46. सामवेदीयं ब्राह्मणम्– BHU AET–2010

(A) ऐतरेयम् (B) ताण्ड्यम्
(C) शतपथम् (D) तैत्तिरीयम्

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–135*

47. पञ्चविंशः ब्राह्मणम्– BHU AET–2010

(A) ऐतरेयम् (B) षड्विंशः
(C) ताण्ड्यम् (D) वंशः

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–135*

48. ताण्ड्यब्राह्मणस्य मुख्यविषयः– BHU AET–2010

(A) देवस्तुतिः (B) राजसूययागविधानम्
(C) अश्वमेधयागविधानम् (D) सामविधानं सोमयागविधानं च

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–136*

49. पञ्चविंशब्राह्मणं कस्य ब्राह्मणस्य अपरं नाम अस्ति?
BHU AET–2012

(A) शतपथस्य (B) ताण्ड्यस्य
(C) ऐतरेयस्य (D) वंशस्य

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–135*

50. अद्भुतब्राह्मण से सम्बन्धित वेद है?
BHU MET–2015

(A) ऋग्वेद (B) यजुर्वेद
(C) सामवेद (D) अथर्ववेद

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–137*

51. (i) 'षड्विंशब्राह्मणम्' कस्य वेदस्य–
(ii) षड्विंश ब्राह्मण किस वेद से सम्बद्ध है?
BHU MET–2009, 2013, UK SLET–2012
UGC 73 J–2015

(A) ऋग्वेद से (B) सामवेद से
(C) यजुर्वेद से (D) अथर्ववेद से

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–135*

52. आर्षेयब्राह्मणं केन वेदेन सम्बद्धम्?
UGC 25 J–2013

(A) सामवेदेन (B) अथर्ववेदेन
(C) ऋग्वेदेन (D) यजुर्वेदेन

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–76

53. देवताध्यायब्राह्मणम्? BHU AET–2010

(A) अथर्ववेदस्य (B) यजुर्वेदस्य
(C) ऋग्वेदस्य (D) सामवेदस्य

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–76

54. संहितोपनिषद्ब्राह्मण से सम्बद्ध वेद है–
BHU MET–2015

(A) शुक्लयजुर्वेद (B) ऋग्वेद
(C) अथर्ववेद (D) सामवेद

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–76

55. 'जैमिनीयब्राह्मणं' केन वेदेन सम्पृक्तम्?
UGC 25 D–2005

(A) ऋग्वेदेन (B) यजुर्वेदेन
(C) सामवेदेन (D) अथर्ववेदेन

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–76

56. पञ्चविंशब्राह्मणम्? CVVET–2015

(A) ऋग्वेदीयम् (B) सामवेदीयम्
(C) यजुर्वेदीयम् (D) अथर्ववेदीयम्

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–135*

44. (C) 45. (A) 46. (B) 47. (C) 48. (D) 49. (B) 50. (C) 51. (B) 52. (A) 53. (D)
54. (D) 55. (C) 56. (B)

57. (i) अथर्ववेदीयं ब्राह्मणं किम्? BHU MET–2012
(ii) अथर्ववेदस्य ब्राह्मणं विद्यते? BHU AET–2011
(iii) ..... अथर्ववेद का ब्राह्मणग्रन्थ है? UGC 73 J–1991, UGC 25 D–2012, 2015

(A) ऐतरेय (B) गोपथ
(C) शांखायन (D) ताण्ड्य

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–77

58. (i) 'गोपथब्राह्मणम्' इति ग्रन्थः कया वेदसंहितया सम्बद्धः
(ii) गोपथब्राह्मणं सम्बद्धमस्ति?
(iii) गोपथब्राह्मण सम्बद्ध है?
(iv) गोपथब्राह्मण केन वेदेन सम्बद्धः अस्ति?
UGC 73 D–2004, BHU AET–2012 HE–2015, UGC 25 D–1999, 2002, 2006, 2008, J–2001, 2007, RO–2015, BHU MET–2010 UP GIC–2015, JNU MET–2015

(A) ऋग्वेद से (B) यजुर्वेद से
(C) सामवेद से (D) अथर्ववेद से

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–77

59. गोपथ ब्राह्मण के अनुसार 'सर्पवेद' जिसका उपवेद है, वह है? BHU MET–2014

(A) अथर्ववेद
(B) सामवेद
(C) ऋग्वेद
(D) यजुर्वेद

स्रोत–*संस्कृत साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–10*

60. निम्नलिखित में से कौन सा एक युग्म सही सुमेलित नहीं है? UGC 06 D–2014

वेद	**ब्राह्मण**
(A) ऋग्वेद	ऐतरेयब्राह्मण
(B) सामवेद	तैत्तिरीयब्राह्मण
(C) यजुर्वेद	शतपथब्राह्मण
(D) अथर्ववेद	गोपथब्राह्मण

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–75-76

57. (B) 58. (D) 59. (A) 60. (B)

7. आरण्यक

1. सायणमतानुसारम् अरण्ये पठनीयाः सन्ति– UGC 25 D–2011

(A) वेदाः (B) आरण्यकाः
(C) उपनिषदः (D) ब्राह्मणग्रन्थाः

स्रोत–*संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–77*

2. को नाम आरण्यकस्य मुख्यविषयः– UGC 25 J–2008

(A) ज्ञानम् (B) उपासनादिकम्
(C) गानम् (D) स्तुतिः

स्रोत–*वैदिकसाहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–143*

3. (i) आरण्यकानि सम्बद्धानि सन्ति
(ii) आरण्यकं केन आश्रमेण सम्बद्धम्– UGC 25 J–2012, D–2014

(A) गृहस्थाश्रमेण (B) वानप्रस्थाश्रमेण
(C) ब्रह्मचर्याश्रमेण (D) लोकाश्रमेण

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–77

4. सामवेदीय आरण्यकों की संख्या है– UGC 25 J–2004

(A) पाँच (B) चार
(C) दो (D) तीन

संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–78

5. माध्यन्दिनशतपथस्य कः काण्डः आरण्यकनाम्ना प्रसिद्धोऽस्ति? BHU AET–2010

(A) द्वादशः (B) त्रिंशः
(C) विंशः (D) चतुर्दशः

स्रोत–*(i) संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास (प्रथम-खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/व्रजबिहारी चौबे, पेज–400*
(ii) वैदिक साहित्य एवं संस्कृत - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–132

6. 'आरण्यकञ्च वेदेभ्यः औषधिभ्योऽमृतं यथा' इति उक्तम्– UGC 25 J–2015

(A) सायणेन (B) कृष्णद्वैपायनेन
(C) यास्केन (D) मनुना

स्रोत–*वैदिक साहित्य और संस्कृति-बलदेव उपाध्याय, पेज–234*

7. के ग्रन्थाः वनेषु रचिताः AWES TGT–2012

(A) वाल्मीकिरामायणम् (B) उपनिषदः
(C) अष्टादशपुराणानि (D) आरण्यकाः

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–77

8. (i) **ऐतरेय आरण्यक है– UGC 25 D–2001**
(ii) **ऐतरेय आरण्यक सम्बन्धित है– BHU MET–2008**

(A) ऋग्वेद से (B) यजुर्वेद से
(C) सामवेद से (D) अथर्ववेद से

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–78

9. 'बृहदारण्यकं' कया शाखया संयुक्तमस्ति– BHU AET–2010

(A) शाकलशाखया (B) वाष्कलशाखया
(C) काण्वशाखया (D) राणायनीयशाखया

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–78

10. (i) 'बृहदारण्यकम्' किस वेद का है?
(ii) 'बृहदारण्यकम्' कस्य वेदस्य वर्तते? UGC 73 J–2015, UGC 25 D–2015

(A) यजुर्वेदस्य (B) अथर्ववेदस्य
(C) ऋग्वेदस्य (D) सामवेदस्य

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–78

11. (i) तैत्तिरीयारण्यकं कं वेदमवलम्ब्यते
(ii) तैत्तिरीय-आरण्यक किस वेद से सम्बद्ध है– BHU MET–2008, UGC 25 J–2005

(A) ऋग्वेद से (B) कृष्णयजुर्वेद से
(C) सामवेद से (D) अथर्ववेद से

स्रोत–*संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–78*

12. पञ्चमहायज्ञ इसमें होता है– UGC 25 D–1997

(A) बृहदारण्यकोपनिषद् (B) तैत्तिरीयारण्यक
(C) ऋग्वेद (D) पैप्पलादशाखा

स्रोत–*संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–78*

1. (B) 2. (A) 3. (B) 4. (C) 5. (D) 6. (B) 7. (D) 8. (A) 9. (C) 10. (A) 11. (B) 12. (B)

13. 'तैत्तिरीयारण्यकस्य' कस्मिन् प्रपाठके तैत्तिरीयोपनिषद् विद्यते– BHU AET–2010

(A) प्रथमे (B) सप्तमे
(C) तृतीये (D) चतुर्थे

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–144*

14. (i) तैत्तिरीयारण्यके कति काण्डानि (प्रपाठकाः) सन्ति?
(ii) तैत्तिरीयारण्यकस्य प्रपाठकसंख्या का विद्यते– BHU AET–2010, 2012

(A) सप्त (B) दश
(C) नव (D) पञ्च

स्रोत–*संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–78*

15. (i) कृष्णयजुर्वेदस्य आरण्यकम् अस्ति?
(ii) यजुर्वेदेन सम्बद्धस्य आरण्यकस्य किं नाम अस्ति– BHU AET–2010, UGC 25 D–2014

(A) ऐतरेयारण्यकम् (B) तैत्तिरीयारण्यकम्
(C) तलवकारारण्यकम् (D) छान्दोग्यारण्यकम्

स्रोत–*संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–78*

16. तैत्तिरीयारण्यकं कस्य ब्राह्मणस्य शेषांशरूपेणास्ति? BHU AET–2012

(A) ऐतरेयस्य (B) शतपथस्य
(C) तैत्तिरियस्य (D) ताण्ड्यस्य

स्रोत–*संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–78*

17. 'तैत्तिरीयारण्यकस्य' प्रथम-प्रपाठकः केन मन्त्रेण आरभ्यते? BHU AET–2010

(A) समिधाग्निम् (B) ऋचं वाचम्
(C) भद्रं कर्णेभिः (D) द्यौः शान्तिः

स्रोत–*संस्कृत–वाङ्मय का बृहद् इतिहास (प्रथम-खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/व्रजबिहारी चौबे, पेज–453*

18. 'तैत्तिरीयारण्यकस्य' द्वितीये प्रपाठकेऽस्ति– UP GDC–2012

(A) स्वाध्यायपुरस्सरं पञ्चमहायज्ञानां प्रतिपादनम्।
(B) आरुणकेतुनामकस्य अग्नेः उपासनावर्णनम्।
(C) चातुर्होत्रचितेः उपयोगिनां मन्त्राणां सङ्कलनम्।
(D) अभिचारमन्त्राणां संग्रहः।

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–144*

19. 'तैत्तिरीयारण्यके' पञ्चयज्ञानां वर्णनं कस्मिन् प्रपाठके विद्यते– BHU AET–2010

(A) प्रथमे (B) द्वितीये
(C) तृतीये (D) चतुर्थे

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–144*

20. 'महानारायणीय उपनिषद्' कस्मिन्नारण्यके अस्ति– BHU AET–2012

(A) ऐतरेये (B) शतपथे
(C) ताण्ड्ये (D) तैत्तिरीये

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–144-145*

21. मैत्रायणी आरण्यक में कितने प्रपाठक हैं? UGC 25 J–2004

(A) 5 (B) 7
(C) 10 (D) 8

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–78

22. सामवेदस्य आरण्यकम् अस्ति– UGC 25 J–2014, BHU AET–2010

(A) तलवकारः (B) जैमिनीयम्
(C) नारदीयम् (D) प्रौष्ठपदीयम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–78

23. 'तलवकार आरण्यक' सम्बन्धित है– BHU MET–2014

(A) ऋग्वेद से (B) यजुर्वेद से
(C) सामवेद से (D) अथर्ववेद से

स्रोत–*संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–78*

24. तलवकारारण्यकस्य नामान्तरम्– BHU AET–2010

(A) जैमिनीयोपनिषद् ब्राह्मणम् (B) गोपथब्राह्मणम्
(C) तैत्तिरीयब्राह्मणम् (D) ऐतरेयब्राह्मणम्

स्रोत–*संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–78*

25. तलवकारारण्यके अध्यायाः– BHU AET–2010

(A) 6 (B) 10
(C) 4 (D) 2

स्रोत–*संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–79*

13. (B)	14. (B)	15. (B)	16. (C)	17. (C)	18. (A)	19. (B)	20. (D)	21. (B)	22. (A)
23. (C)	24. (A)	25. (C)							

26. 'छान्दोग्य आरण्यक' किस वेद से सम्बन्धित है–

UGC 25 J–2003

(A) ऋग्वेद से (B) सामवेद से
(C) अथर्ववेद से (D) यजुर्वेद से

स्रोत–*संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–79*

27. कस्य वेदस्यारण्यकं नोपलभ्यते–

UGC 25 J–2014

(A) ऋग्वेदस्य (B) यजुर्वेदस्य
(C) सामवेदस्य (D) अथर्ववेदस्य

स्रोत–*संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–79*

26. (B) 27. (D)

8. उपनिषद्

1. 'उपनिषद्' शब्द का अर्थ है– UGC 73 S–2013

(A) महाविद्या (B) आत्मविद्या
(C) संवर्गविद्या (D) अग्निविद्या

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–147

2. ज्ञानकाण्ड इनका विषय है– UGC 73 J–1994

(A) शुक्लयजुर्वेद (B) प्रातिशाख्य
(C) उपनिषद् (D) ब्राह्मणग्रन्थ

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–170

3. सुमेलित करें– UGC 73 D–2007

(क) प्राचीन गद्योपनिषद् (1) कठोपनिषद्
(ख) प्राचीन पद्योपनिषद् (2) बृहदारण्यकोपनिषद्
(ग) उत्तरकालिक गद्योपनिषद् (3) मुण्डकोपनिषद्
(घ) आथर्वणोपनिषद् (4) प्रश्नोपनिषद्

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(A)	4	2	1	3
(B)	3	4	2	1
(C)	4	3	2	1
(D)	2	1	4	3

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–171

4. उपनिषदों का प्रथम भाषान्तर फारसी भाषा में कब हुआ– UGC 25 D–2003

(A) 15 वीं सदी में (B) 16वीं सदी में
(C) 17वीं सदी में (D) 18वीं सदी में

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–148

5. जिसके द्वारा ब्रह्म की समीपता निश्चित रूप से प्राप्त हो, उसे कहते है– UGC 25 J–2003

(A) वेद (B) ब्राह्मण
(C) उपनिषद् (D) आरण्यक

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–167

6. भगवान् आद्यशङ्कराचार्यः कियतीनामुपनिषदां भाष्यं कृतवान्– BHU AET–2011

(A) 7 (B) 10
(C) 13 (D) 15

स्रोत–(i) वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–169

7. उपनिषद् शब्दे कः धातुरस्ति– BHU AET–2011, BHU MET–2009, 2013

(A) सद् (B) गम्
(C) पठ् (D) पा

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–167

8. उपनिषदा प्रतिपाद्यते– UGC 25 D–2009

(A) कर्मकाण्डम् (B) ज्ञानकाण्डम्
(C) यन्त्रज्ञानम् (D) वास्तुज्ञानम्

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–170

9. उपनिषद् पुस्तकें हैं– UP PCS–2002

(A) धर्म पर (B) योग पर
(C) विधि पर (D) दर्शन पर

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–169

10. 'उपनिषदों' की विषयवस्तु है? UP TGT (S.S.)–2001

(A) दर्शन (B) कर्मकाण्ड
(C) भक्ति (D) उपर्युक्त सभी

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–146

11. यह एक उपनिषद् का नाम नहीं है– BHU MET–2010

(A) छान्दोग्य (B) बृहदारण्यक
(C) शांखायन (D) प्रश्न

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–149

1. (B) 2. (C) 3. (D) 4. (C) 5. (C) 6. (B) 7. (A) 8. (B) 9. (D) 10. (A) 11. (C)

12. निम्नाङ्कित में से कौन प्रस्थानत्रयी में सम्मिलित है– BHU MET–2009, 2013

(A) वेद (B) रामायण
(C) उपनिषद् (D) रघुवंश

स्रोत–*वेदान्तसार - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–10*

13. उपनिषदों में क्या वर्णित है– BHU MET–2010, BHU AET–2012

(A) मारणविद्या (B) मोहनविद्या
(C) कर्मकाण्डविद्या (D) ब्रह्मविद्या

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–167*

14. वेदानाम् अन्तिमभागं .... इत्युच्यते– BHU B.ed–2012

(A) धर्मः (B) उपनिषद्
(C) उत्तमः (D) ब्राह्मणः

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–147*

15. वैदिकसाहित्यस्य कः भागः वेदान्तनाम्ना कथ्यते– BHU AET–2010

(A) संहिता (B) ब्राह्मणम्
(C) आरण्यकम् (D) उपनिषद्

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–147*

16. उपनिषद् इति पदे कः प्रत्ययो अस्ति– BHU AET–2012

(A) यत् (B) क्विप्
(C) ण्यत् (D) क्यप्

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–167*

17. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत–

(अ) आत्मनस्तु कामाय सर्वप्रियं भवति। (1) कठोपनिषद्
(ब) मैत्रायणी-संहिता (2) तैत्तिरीयोपनिषद्
(स) सत्यं वद धर्मं चर (3) कृष्णयजुर्वेद
(द) नचिकेतोपाख्यानम् (4) बृहदारण्यकोपनिषद्

UK SLET–2015

	अ	ब	स	द
(A)	2	3	1	4
(B)	4	1	2	3
(C)	4	3	2	1
(D)	3	2	4	1

स्रोत–*(i) वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–184*
(ii) ईशादि नौ उपनिषद् - गीताप्रेस, पेज–362, 75

18. उपनिषदनुसारं कया मृत्युः तीर्यते– UK SLET–2015

(A) विद्यया (B) अविद्यया
(C) कर्मणा (D) तपसा

स्रोत–*(i) वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–173*
(ii) ईशादि नौ उपनिषद् - गीताप्रेस, पेज–36

19. समीचीनम् उत्तरं चिनुत– UGC 25 D–2014

(a) प्रश्नोपनिषद् 1. शुक्लयजुर्वेदः
(b) शिक्षावल्ली 2. अथर्ववेदस्य पैप्पलादशाखा
(c) ईशावास्योपनिषद् 3. कृष्णयजुर्वेदः
(d) श्वेताश्वतरोपनिषद् 4. तैत्तिरीयोपनिषद्

	a	b	c	d
(A)	1	2	4	3
(B)	2	4	1	3
(C)	2	4	3	1
(D)	1	4	2	3

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–150, 155, 162*

20. अधस्तनयुग्मानां समीचीनमुत्तरं चिनुत–UGC 25 D–2013

(a) काण्वसंहिता 1. बृहदारण्यकोपनिषद्
(b) शतपथब्राह्मणम् 2. मैत्रेयी
(c) वाजश्रवाः 3. ईशोपनिषद्
(d) याज्ञवल्क्यः 4. नचिकेता

	a	b	c	d
(A)	1	4	2	3
(B)	3	4	2	1
(C)	3	1	4	2
(D)	2	1	3	4

स्रोत–*(i) ईशादि नौ उपनिषद् - गीताप्रेस, पेज–27, 76*
(ii) वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–183

12. (C) 13. (D) 14. (B) 15. (D) 16. (B) 17. (C) 18. (B) 19. (B) 20. (C)

21. उपनिषदों का मुख्य प्रतिपाद्य क्या रहा है– MP PSC–1990

(A) धार्मिक विषय　(B) दार्शनिक विषय
(C) सामाजिक परिवेश (D) सामाजिक व राजनीतिक विवेचन

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–170*

22. उत्तरवैदिककाल में धार्मिक क्रियाओं में मुख्य था– MP PSC–1992

(A) यज्ञ　(B) मूर्तिपूजा
(C) कर्मकाण्ड　(D) तान्त्रिक अनुष्ठान

स्रोत–*संस्कृतवाङ्मय का बृहद् इतिहास (प्रथम खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/व्रजबिहारी चौबे, पेज–554*

23. महानारायणोपनिषद् कस्मिन् ग्रन्थे प्राप्यते? BHU AET–2010

(A) बृहदारण्यके　(B) छान्दोग्ये
(C) तैत्तिरीयारण्यके　(D) ऐतरेयारण्यके

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–164*

24. छान्दोग्योपनिषदः तृतीयाध्यायस्य प्रथमप्रपाठके प्रयुक्तस्य मधुविद्याशब्दस्य शाङ्करभाष्यानुसारम् अर्थः– BHUAET–2010

(A) भक्तिः　(B) ज्ञानम्
(C) ब्रह्मविद्या　(D) निरुक्तम्

स्रोत–*छान्दोग्योपनिषद् (शाङ्करभाष्य) - गीताप्रेस, पेज–222-253*

25. मुख्योपनिषदः .... सन्ति– AWES TGT–2010

(A) अष्टादश　(B) चत्वारः
(C) एकादश　(D) षोडश

स्रोत–*तैत्तिरीयोपनिषद् - चुन्नीलाल शुक्ल, पेज–भूमिका-03*

26. सांख्य-योग शैवदर्शन प्रतिपादक उपनिषद् ग्रन्थ है– UGC 73 J–2015

(A) कठोपनिषद्　(B) केनोपनिषद्
(C) प्रश्नोपनिषद्　(D) श्वेताश्वतरोपनिषद्

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–185*

27. भारतीय संस्कृति का आध्यात्मिक साहित्य है– UGC 73 J–2015

(A) कथासाहित्यम्　(B) शुल्बसूत्रसाहित्यम्
(C) उपनिषत्साहित्यम्　(D) निरुक्तम्

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–168*

28. (i) कौषीतक्युपनिषद् कस्य वेदस्य–
(ii) कौषीतकि-उपनिषद् किस वेद से सम्बन्धित है?
BHU MET–2009, 2011, 2012, 2013
BHU AET–2011

(A) ऋग्वेद से　(B) यजुर्वेद से
(C) सामवेद से　(D) अथर्ववेद से

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–150*

29. (i) ईशावास्योपनिषद् किस वेद से सम्बन्धित है?
(ii) ईशावास्योपनिषद् इस वेद का भाग है?
(iii) ईशावास्योपनिषद् कस्य वेदस्य सम्बन्धिनी?
(iv) 'ईशावास्योपनिषद्' किस वेद में है–
(v) ईशोपनिषद् अस्य सम्बन्धम् अस्ति–
UGC 73 J–1998,2008, 2015 D–1999
UGC 25 J–2010, 2012, D–2013
BHU MET–2008, 2009, 2010, 2013
BHU AET–2010, DSSSB TGT–2014
AWES TGT–2011

(A) ऋग्वेद　(B) शुक्लयजुर्वेद
(C) कृष्णयजुर्वेद　(D) सामवेद

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–150*

30. ईशावास्योपनिषद् है– UGC 73 D–2005

(A) काण्वसंहितायाम्　(B) कौथुमसंहितायाम्
(C) शाकलसंहितायाम्　(D) पैप्पलादसंहितायाम्

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–153*

31. 'ईशावास्यम्' इस शब्द का व्याख्यान माध्वरीत्या होता है– UGC 73 J–2011

(A) ईशावास्यम्　(B) ईशस्य आवासयोग्यम्
(C) ईशेन वास्यम्　(D) ईशे वास्यम्

21. (B)　22. (C)　23. (C)　24. (C)　25. (C)　26. (D)　27. (C)　28. (A)　29. (B)　30. (A)　31. (C)

32. ईशावास्यदिशा कथममृतमश्नुते– UGC 25 J–2014

(A) एकत्वेन (B) सम्भवात्
(C) सम्भूत्या (D) सत्येन

स्रोत–(i) ईशावास्योपनिषद् - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–66, 67
(ii) ईशादि नौ उपनिषद् - गीताप्रेस, पेज–40

33. माध्यन्दिन शुक्लयजुर्वेद का अन्तिम अध्याय क्या कहलाता है– BHU MET–2011

(A) ईशोपनिषद् (B) बृहदारण्यकोपनिषद्
(C) कठोपनिषद् (D) प्रश्नोपनिषद्

स्रोत–ईशावास्योपनिषद् - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–18

34. विद्यया किम् अश्नुते– RPSC ग्रेड-II TGT–2010

(A) क्षीरम् (B) जलम्
(C) विषम् (D) अमृतम्

स्रोत–ईशादि नौ उपनिषद् - गीताप्रेस, पेज–36

35. 'न कर्म लिप्यते नरे' इत्यत्र कस्य कर्मणः वर्णनमस्ति– RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014

(A) अनासक्तकर्म (B) ज्ञानकर्म
(C) यज्ञकर्म (D) आसक्तकर्म

स्रोत–ईशादि नौ उपनिषद् - गीताप्रेस, पेज–28 मन्त्र-02

36. माध्यन्दिनशाखायाः कस्मिन्नध्याये 'ईशावास्योपनिषद्' अस्ति– BHU AET–2012

(A) दशमे (B) द्वादशे
(C) पञ्चदशे (D) चत्वारिंशे

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–153

37. ईशावास्योपनिषदनुसारं कया रीत्या अमृतत्त्वस्य प्राप्तिर्जायते– BHU AET–2010

(A) विद्यया (B) अविद्यया
(C) असत्ये (D) सत्येन

स्रोत–ईशादि नौ उपनिषद् - गीताप्रेस, पेज–36

38. केन प्रकारेण जिजीविषेत्– UK SLET–2015

(A) हसन् (B) धावन्
(C) कर्म कुर्वन् (D) चिन्तयन्

स्रोत–ईशादि नौ उपनिषद् - गीताप्रेस, पेज–28

39. ईशावास्यदिशा कथं मृत्युं तरति– UGC 25 S–2013

(A) ज्ञानेन (B) विनाशेन
(C) सम्भूत्या (D) विद्यया

स्रोत–ईशादि नौ उपनिषद् - गीताप्रेस, पेज–40, 41

40. अधोलिखितेषु का 'संहितोपनिषदि' गण्यते– JNU MET–2014

(A) बृहदारण्यकोपनिषद् (B) केनोपनिषद्
(C) प्रश्नोपनिषद् (D) ईशोपनिषद्

स्रोत–संस्कृत–वाङ्मय का बृहद् इतिहास (प्रथम-खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/व्रजबिहारी चौबे, पेज–500

41. 'ईशावास्योपनिषद्' के अनुसार पूर्ण क्या है– BHU AET–2011

(A) मनुष्य (B) समुद्र
(C) परब्रह्म (D) माया

स्रोत–ईशादि नौ उपनिषद् - गीताप्रेस, पेज–27

42. मनुष्य को शास्त्रनियत कर्म का पालन करते हुये कितनी आयु की कल्पना करनी चाहिए– BHU AET–2011

(A) सौ वर्ष (B) पचहत्तर वर्ष
(C) साठ वर्ष (D) पचास वर्ष

स्रोत–ईशादि नौ उपनिषद् - गीताप्रेस, पेज–28

43. (i) अमृत की प्राप्ति में हेतु कौन है?
(ii) अमृतत्व की प्राप्ति किससे होती है– BHU AET–2010, 2011

(A) अविद्या से (B) विद्या से
(C) क्षमा से (D) वैराग्य से

स्रोत–ईशादि नौ उपनिषद् - गीताप्रेस, पेज–36

44. विद्या एवं अविद्या को एक साथ प्राप्त करने वाला प्राप्त करता है– BHU AET–2011

(A) अमृत को (B) सत्य को
(C) वस्त्र को (D) धन को

स्रोत–ईशादि नौ उपनिषद् - गीताप्रेस, पेज–36

32. (C) 33. (A) 34. (D) 35. (A) 36. (D) 37. (A) 38. (C) 39. (B) 40. (D) 41. (C) 42. (A) 43. (B) 44. (A)

45. ईशावास्योपनिषद् में प्रयुक्त 'सुपथा' शब्द का अर्थ है– BHU AET–2011

(A) उत्तरायण (B) दक्षिणायन

(C) संक्रान्ति (D) ग्रहण

स्रोत–*ईशादि नौ उपनिषद् - गीताप्रेस, पेज–45*

46. 'यः सर्वज्ञः सर्वविद्यस्य ज्ञानमयं तपः'–इत्यस्मिन् मन्त्रांशे 'सर्वज्ञः' 'सर्वविद्' इत्यनयोः पदयोः अर्थः अस्ति (शाङ्करभाष्यानुसारम्)– JNU M. Phil/Ph.D–2015

(A) सर्वं सामान्यरूपेण जानाति सर्वं च विशेषरूपेण जानाति

(B) सर्वं जानाति सर्वं च जानाति

(C) सर्वं सामान्यरूपेण जानाति सर्वं च सामान्यरूपेण जानाति

(D) सर्वं विशेषरूपेण जानाति सर्वं च विशेषरूपेण जानाति

स्रोत–*ईशादि नौ उपनिषद् (शाङ्करभाष्यसहित)-गीताप्रेस, पेज–472*

47. 'ईशोपनिषद्' क्या कहलाता है– BHU AET–2011

(A) आरण्यक (B) वेदान्त

(C) ब्राह्मण (D) कल्प

स्रोत–*वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–07*

48. यह समस्त जगत् किससे व्याप्त है–BHU AET–2010

(A) वेद से (B) ईश्वर से

(C) मनुष्य से (D) पशुओं से

स्रोत–*ईशादि नौ उपनिषद् - गीताप्रेस, पेज–28*

49. अविद्या का अर्थ है– BHU AET–2010

(A) अज्ञान (B) ज्ञान

(C) कर्मानुष्ठान (D) शयन

स्रोत–*ईशादि नौ उपनिषद् - गीताप्रेस, पेज–36*

50. अज्ञानरूप घोर अन्धकार में कौन नहीं प्रवेश करता है– BHU AET–2010

(A) देवता का उपासक (B) पितरों का उपासक

(C) मनुष्यों का उपासक (D) परमेश्वर का उपासक

स्रोत–*ईशादि नौ उपनिषद् - गीताप्रेस, पेज–38*

51. सत्यस्वरूप परमात्मा का मुख कैसे पात्र से ढका है– BHU AET–2010

(A) सुवर्णमय (B) रजतमय

(C) ताम्रमय (D) लौहमय

स्रोत– *ईशादि नौ उपनिषद् (मन्त्र-15)-गीताप्रेस, पेज–41, 42*

52. काण्व-संहिता का भाग है– BHU AET–2010

(A) ईशावास्योपनिषद् (B) केनोपनिषद्

(C) मुण्डकोपनिषद् (D) ऐतरेयोपनिषद्

स्रोत–*संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास (प्रथम-खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/व्रजबिहारी चौबे, पेज–499*

53. 'ईशावास्योपनिषद्' किस विषय से सम्बन्धित है– BHU AET–2010

(A) कर्मकाण्ड (B) आचार

(C) अज्ञान (D) ज्ञानकाण्ड और कर्मनिष्ठा

स्रोत–*(i) ईशादि नौ उपनिषद् - गीताप्रेस, पेज–27*

(ii) संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास (प्रथम-खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/व्रजबिहारी चौबे, पेज–500

54. 'अविद्या' का अर्थ ईशावास्योपनिषद्' में क्या है– BHU AET–2010

(A) ज्ञान (B) आत्मा

(C) कर्म (D) वैराग्य

स्रोत–*ईशादि नौ उपनिषद् - गीताप्रेस, पेज–36*

55. 'सम्भूति' शब्द का अर्थ होता है– BHU AET–2010

(A) अविनाशी परमेश्वर (B) विनाशी पुरुष

(C) विनाशी पक्षी (D) वायु

स्रोत–*ईशादि नौ उपनिषद् - गीताप्रेस, पेज–40*

56. शुक्लयजुर्वेद से सम्बन्धित उपनिषद् है– UGC 73 D–1997

(A) ईशावास्योपनिषद् (B) कठोपनिषद्

(C) मुण्डकोपनिषद् (D) केनोपनिषद्

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–66, 67*

45. (A) 46. (A) 47. (B) 48. (B) 49. (C) 50. (D) 51. (A) 52. (A) 53. (D) 54. (C) 55. (A) 56. (A)

57. शुक्लयजुर्वेद सम्बद्ध उपनिषद् हैं– UGC 73 S–2013

(A) उनविंशतिः (19) (B) दश (10)
(C) द्वात्रिंशत् (32) (D) एकत्रिंशत् (31)

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–168*

58. ईशावास्योपनिषदि किं वर्णनमस्ति– BHU AET–2011

(A) गानम् (B) नाट्यम्
(C) काव्यम् (D) ब्रह्मचिन्तनम्

स्रोत–*संस्कृतवाङ्मय का बृहद् इतिहास (प्रथम खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/ब्रजबिहारी चौबे, पेज–500-501*

59. 'विद्ययाऽमृतमश्नुते' से सम्बन्धित ग्रन्थ है– BHU MET–2015

(A) ईशावास्योपनिषद् (B) छान्दोग्योपनिषद्
(C) कठोपनिषद् (D) केनोपनिषद्

स्रोत–*ईशादि नौ उपनिषद् - गीताप्रेस, पेज–36*

60. (i) ईशावास्योपनिषदि माध्यन्दिनशाखायां कियन्तः मन्त्राः सन्ति?
(ii) 'ईशावास्योपनिषदि' कति मन्त्राः सन्ति?
BHU AET–2010, 2011, RPSC ग्रेड-I PGT–2011

(A) 10 (B) 18
(C) 28 (D) 40

स्रोत–*ईशावास्योपनिषद् - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–18*

61. ईशावास्योपनिषदि कियन्तः अध्यायाः सन्ति– BHU AET–2011

(A) 2 (B) 4
(C) 6 (D) एतेषु नास्ति

स्रोत–*ईशादि नौ उपनिषद् - गीताप्रेस, पेज–27*

62. ईशावास्योपनिषद् शुक्लयजुर्वेदस्य कतमोऽध्यायो वर्तते– RPSC ग्रेड-II TGT–2014

(A) 20 (B) 40
(C) 30 (D) 35

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–153*

63. 'बृहदारण्यक' उपनिषद् सम्बद्ध है–
UGC 25 J–1994, BHU AET–2012, JNU MET–2014

(A) ऋग्वेद से (B) शुक्लयजुर्वेद से
(C) अथर्ववेद से (D) सामवेद से

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–183*

64. बृहदारण्यकोपनिषदस्ति– UGC 73 D–2004

(A) ऐतरेयब्राह्मणे (B) तैत्तिरीयब्राह्मणे
(C) शतपथब्राह्मणे (D) ताण्ड्यब्राह्मणे

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–183*

65. बृहदारण्यकोपनिषद् है– UGC 73 D–2012

(A) अथर्ववेदस्य (B) शुक्लयजुर्वेदस्य
(C) कृष्णयजुर्वेदस्य (D) ऋग्वेदस्य

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–183*

66. 'श्रीमन्थ-विद्या' का उपदेश है– UGC 73 D–2013

(A) कठोपनिषद् (B) बृहदारण्यकोपनिषद्
(C) छान्दोग्योपनिषद् (D) प्रश्नोपनिषद्

स्रोत–*उपनिषद् अंक - गीताप्रेस, पेज–525*

67. 'मैत्रेयी-याज्ञवल्क्य-संवादः' कस्यामुपनिषदि उपलभ्यते?
UGC 25 D–2005, 2010, J–2006

(A) कठोपनिषदि (B) केनोपनिषदि
(C) ईशोपनिषदि (D) बृहदारण्यकोपनिषदि

स्रोत–*(i) बृहदारण्यकोपनिषद् (चतुर्थ ब्राह्मण)-गीताप्रेस, पेज–536*
(ii) वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–184

68. 'आत्मनस्तु कामाय सर्वं प्रियं भवति' इति उक्तं कुत्र?
UGC 25 D–2009

(A) कठोपनिषद् (B) मुण्डकोपनिषद्
(C) बृहदारण्यकोपनिषद् (D) छन्दोग्योपनिषद्

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–184*

69. शुनःशेपस्य पितुर्नामास्ति– JNU MET–2014

(A) हरिश्चन्द्रः (B) नारायणः
(C) प्रजापतिः (D) अजीगर्तः

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–126*

57. (A) 58. (D) 59. (A) 60. (B) 61. (D) 62. (B) 63. (B) 64. (C) 65. (B) 66. (B) 67. (D) 68. (C) 69. (D)

70. याज्ञवल्क्य के जीवन पर किस उपनिषद् में प्रकाश डाला गया है– MP PSC–2003

(A) ईश　(B) केन
(C) कठ　(D) बृहदारण्यक

स्रोत–*बृहदारण्यकोपनिषद् (चतुर्थ ब्राह्मण) - गीताप्रेस, पेज–536*

71. नचिकेतस अग्नेः उपदेष्टाऽभवत्– UP GDC–2014

(A) यमः　(B) ब्रह्मा
(C) विश्वेदेवाः　(D) बृहस्पतिः

स्रोत–*कठोपनिषद् (शाङ्करभाष्य) - गीताप्रेस, पेज–26*

72. कठोपनिषदनुसारं महतः परं किमस्ति– UGC 25 J–2014

(A) मनः　(B) अव्यक्तम्
(C) पुरुषः　(D) आत्मा

स्रोत–*कठोपनिषद् (शाङ्करभाष्य) - गीताप्रेस, पेज–82*

73. नवकृत्वोपदेश करता है– UGC 73 J–2013

(A) उद्दालकेन　(B) श्वेतकेतुना
(C) इन्द्रेण　(D) नारदेन

74. (i) 'रथ-रूपकं' कुत्र विद्यते– UGC 25 D–2007
(ii) रथरूपकमुपलभ्यते– GGIC–2015

(A) छान्दोग्ये　(B) बृहदारण्यके
(C) श्वेताश्वतरे　(D) कठे

स्रोत–*ईशादि नौ उपनिषद् - गीताप्रेस, पेज–123*

75. एतेषु 'सारथिः' कः उच्यते? UGC 25 J–2012

(A) आत्मा　(B) शरीरम्
(C) मनः　(D) बुद्धिः

स्रोत–*ईशादि नौ उपनिषद् - गीताप्रेस, पेज–123, 124*

76. कृष्णयजुर्वेदः सम्बद्धः अस्ति–
RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011, UGC 25 D–2012

(A) छान्दोग्योपनिषद्　(B) कठोपनिषद्
(C) ऐतरेयोपनिषद्　(D) ईशावास्योपनिषद्

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–175*

77. (i) कठोपनिषद् सम्बद्ध है–
(ii) कठोपनिषद् केन वेदेन सम्बद्धा–
(iii) 'कठोपनिषद्' किस वेद से सम्बन्धित है?
UGC 25 D–2012, 2014, J–2013
BHU AET–2010, BHU MET–2008, 2010
UP GDC–2008, MP PGT–2012

(A) ऋग्वेदेन　(B) कृष्णयजुर्वेदेन
(C) शुक्लयजुर्वेदेन　(D) अथर्ववेदेन

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–175*

78. कस्मिन् वरे यमस्त्रिणाचिकेतसम् अग्निम् अदात्– UGC 25 D–2012

(A) प्रथमवरे　(B) द्वितीयवरे
(C) तृतीयवरे　(D) चतुर्थवरे

स्रोत–*ईशादि नौ उपनिषद् - गीताप्रेस, पेज–88, 89*

79. कठोपनिषदि नचिकेता द्वितीयवररूपेण किं लब्धवान्? RPSC ग्रेड-I PGT–2014

(A) पितुः प्रसन्नताम्　(B) अग्निविद्याम्
(C) जीवनकौशलम्　(D) आत्मविद्याम्

स्रोत–*(i) ईशादि नौ उपनिषद् (शाङ्करभाष्य)-गीताप्रेस, पेज–209*
(ii) ईशादि नौ उपनिषद् - गीताप्रेस, पेज–88, 89

80. (i) यम-नचिकेता संवाद से सम्बद्ध उपनिषद् है–
(ii) नचिकेता और यम के बीच सुप्रसिद्ध संवाद किस उपनिषद् में उल्लिखित है?
(iii) यमनचिकेतसोः संवादः कस्यामुपनिषदि वर्तते–
UK SLET–2015, IAS–1997
UGC 25 J–1995, 1998 D–1999, 2002

(A) कठोपनिषद्　(B) केनोपनिषद्
(C) ऐतरेयोपनिषद्　(D) छान्दोग्योपनिषद्

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–175*

81. आध्यात्मिक ज्ञान के विषय में नचिकेता और यम के संवाद किस उपनिषद् में प्राप्त होता है– UP PCS–1999

(A) बृहदारण्यक उपनिषद् में (B) छान्दोग्य उपनिषद् में
(C) कठोपनिषद् में　(D) केनोपनिषद् में

स्रोत–*उपनिषद् अंक - गीताप्रेस, पेज–191*

70. (D)	71. (A)	72. (B)	73. (A)	74. (D)	75. (D)	76. (B)	77. (B)	78. (B)	79. (B)
80. (A)	81. (C)								

82. (i) नचिकेतसः जनकः कस्य यज्ञस्य आयोजनं कृतवान्? BHU MET–2009, 2013

(ii) कठोपनिषद् में नचिकेता के पिता ने कौन सा यज्ञ किया था– BHU AET–2011

(iii) कठोपनिषदि नचिकेतसः पिता कं यागमनुष्ठितवान्? UGC 25 D–2015

(A) अश्वमेध (B) सर्वमेध
(C) सर्वजित् (विश्वजित्) (D) पितृमेध

***स्रोत**–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–175*

83. (i) कठोपनिषदि कति अध्यायाः भवन्ति–

(ii) कठोपनिषद् में कितने अध्याय हैं?

BHU MET–2011, 2012, BHU AET–2011

(A) 2 (B) 3
(C) 4 (D) 6

***स्रोत**–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–175*

84. कठोपनिषद् के अनुसार आत्मा किस प्रकार से प्राप्तव्य है– BHU MET–2012

(A) श्रवण द्वारा (B) प्रवचन द्वारा
(C) मेधा द्वारा (D) परमेश्वर के अनुग्रह द्वारा

***स्रोत**–कठोपनिषद् (ज्ञानकाण्ड)-श्रीरामशर्मा आचार्य, पेज–35-36*

85. कठोपनिषद् के अनुसार बुद्धिमान् व्यक्ति किसका वरण करता है– UP GDC–2008

(A) श्रेय का (B) प्रेय का
(C) श्रेय और प्रेय दोनों का (D) न श्रेय न प्रेय का

***स्रोत**–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–176*

86. कठोपनिषद् में 'सृङ्का' का अर्थ है– UP GDC–2008

(A) प्रवालजटितमाला (B) तुलसीमाला
(C) रुद्राक्षमाला (D) अकुत्सितकर्ममयीगति

***स्रोत**–कठोपनिषद् (शाङ्करभाष्य) - गीताप्रेस, पेज–29*

87. कठशाखायाः उपनिषदः किं नाम अस्ति– BHU AET–2010

(A) प्रश्नोपनिषद् (B) ईशावास्योपनिषद्
(C) कठोपनिषद् (D) केनोपनिषद्

***स्रोत**–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–175*

88. कठोपनिषद् कस्याः शाखायाः प्रातिनिध्यं करोति– BHU AET–2010

(A) कठशाखायाः (B) राणायनीयशाखायाः
(C) कौथुमशाखायाः (D) काण्वशाखायाः

***स्रोत**–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–175*

89. 'नचिकेतोपाख्यानं' कस्मिन्नुपनिषदि प्राप्यते– BHU AET–2012

(A) ऐतरेयोपनिषदि (B) केनोपनिषदि
(C) कठोपनिषदि (D) बृहदारण्यके

***स्रोत**– ईशादि नौ उपनिषद् (कठोपनिषद् 1.3.16) - गीताप्रेस, पेज–133*

90. नचिकेतसः पिता कस्मै तं प्रादात्– UK SLET–2015

(A) शम्भवे (B) विष्णवे
(C) मृत्यवे (D) वरुणाय

***स्रोत**–ईशादि नौ उपनिषद् (कठोपनिषद् 1.1.4) - गीताप्रेस, पेज–78*

91. कठोपनिषदनुसारं प्राणेन सम्भवति– UGC 25 S–2013

(A) अदितिः (B) आत्मा
(C) बुद्धिः (D) मनः

***स्रोत**–ईशादि नौ उपनिषद् - गीताप्रेस, पेज–140*

92. मन से अधिक गति वाला कौन है– BHU AET–2010

(A) परमेश्वर (B) वायु
(C) अग्नि (D) देवता

***स्रोत**–ईशादि नौ उपनिषद् - गीताप्रेस, पेज–82*

93. कठोपनिषदि नचिकेतसा किं प्राप्तम्– UGC 25 J–2007

(A) हिरण्यादिकम् (B) वरत्रयम्
(C) स्त्रीरत्नम् (D) पुत्रपरिजनादिकम्

***स्रोत**–ईशादि नौ उपनिषद् - गीताप्रेस, पेज–82*

82. (B)	**83. (A)**	**84. (D)**	**85. (A)**	**86. (D)**	**87. (C)**	**88. (A)**	**89. (C)**	**90. (C)**	**91. (A)**
92. (A)	**93. (B)**								

94. यमेन श्रेयप्रेयविवेचनं कस्याम् उपनिषदि विद्यते? UP GIC–2015

(A) बृहदारण्यके (B) छान्दोग्ये
(C) ईशावास्ये (D) कठोपनिषदि

स्रोत–*ईशादि नौ उपनिषद् (कठोपनिषद् 1.2.2)-गीताप्रेस, पेज–99*

95. ''इन्द्रियेभ्यः परा ह्यर्था अर्थेभ्यश्च परं मनः'' इत्यंशो वर्तते– UP GIC–2012

(A) अग्निसूक्ते (B) ईशावास्योपनिषदि
(C) कठोपनिषदि (D) प्रजापतिसूक्ते

स्रोत–*ईशादि नौ उपनिषद् (कठोपनिषद् 1.3.10)-गीता प्रेस, पेज–128*

96. (i) 'उत्तिष्ठत जाग्रत' – के पाठ वाला ग्रन्थ है–
(ii) 'उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान् निबोधत' इति कुत्र उपदिष्टम्? UP GIC–2015
(iii) 'उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत' इति कस्मिन् उपनिषदि विद्यते? UGC 25 J–2015 BHU MET–2015

(A) मुण्डकोपनिषदि (B) प्रश्नोपनिषदि
(C) कठोपनिषदि (D) छान्दोग्योपनिषदि

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–176*

97. नचिकेता कस्मात् वरत्रयं लब्धवान्? UP GIC–2015

(A) इन्द्रात् (B) वशिष्ठात्
(C) यमात् (D) सूर्यात्

वैदिक साहित्य एवं संस्कृति (कठोपनिषद् 1.1.9)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–175

98. विद्यया कं लोकं प्राप्यते– UK SLET–2012

(A) देवलोकम् (B) भूलोकम्
(C) सत्यलोकम् (D) पृथ्वीलोकम्

स्रोत–*ईशावास्योपनिषद् - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–59*

99. 'न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यः' इत्ययं श्लोकांशः अस्ति– G GIC–2015

(A) ईशावास्योपनिषदि (B) छान्दोग्योपनिषदि
(C) तैत्तिरीयोपनिषदि (D) कठोपनिषदि

स्रोत–*ईशादि नौ उपनिषद् (कठोपनिषद् 1.1.27)-गीताप्रेस, पेज–96*

100. 'तैत्तिरीय उपनिषद्' का वेद है– UGC 25 J–2000

(A) ऋग्वेद (B) यजुर्वेद
(C) सामवेद (D) अथर्ववेद

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–155*

101. भृगु के प्रति वरुणोपदेश है– UGC 73 S–2013

(A) छान्दोग्योपनिषदि (B) तैत्तिरीयोपनिषदि
(C) बृहदारण्यकोपनिषदि (D) प्रश्नोपनिषदि

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–156*

102. ''रसो वै सः। रसं ह्येवायं लब्ध्वानन्दी भवति'' इति वाक्यं कस्यामुपनिषदि अस्ति? JNU M.Phil/Ph.D–2015

(A) तैत्तिरीयोपनिषदि (B) ऐतरेयोपनिषदि
(C) छान्दोग्योपनिषदि (D) प्रश्नोपनिषदि

स्रोत–*ईशादि नौ उपनिषद् (तैत्तिरीयोपनिषद् 2.7) -गीताप्रेस, पेज–391*

103. 'तैत्तिरीयोपनिषद्' कस्मिन् ग्रन्थे प्राप्यते– BHU AET–2010

(A) बृहदारण्यके (B) तैत्तिरीयारण्यके
(C) गोपथे (D) ऐतरेयब्राह्मणे

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–155*

104. तैत्तिरीयोपनिषदि केन वेदेन सम्बद्धा– UGC 25 S–2013

(A) शुक्लयजुर्वेदेन (B) कृष्णयजुर्वेदेन
(C) सामवेदेन (D) अथर्ववेदेन

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–155*

105. तैत्तिरीयोपनिषदि कत्यनुवाकाः सन्ति? BHU AET–2012

(A) द्वादश (B) षोडश
(C) अष्ट (D) पञ्चदश

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–155*

106. शिक्षावल्ली प्राप्यते– JNU MET–2014

(A) कठोपनिषदि (B) केनोपनिषदि
(C) तैत्तिरीयोपनिषदि (D) रामायणे

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–155*

94. (D) 95. (C) 96. (C) 97. (C) 98. (A) 99. (D) 100. (B) 101. (B) 102. (A) 103. (B) 104. (B) 105. (A) 106. (C)

107. 'मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्यदेवो भव' इत्यादि वाक्य किस उपनिषद् से उद्धृत है? H-TET–2015

(A) कठोपनिषद् (B) प्रश्नोपनिषद्
(C) माण्डूक्योपनिषद् (D) तैत्तिरीयोपनिषद्

स्रोत–*ईशादि नौ उपनिषद् - गीताप्रेस, पेज–364*

108. 'अथ शीक्षां व्याख्यास्यामः' इति उक्तिः कुतः उद्धृता– UGC 25 J–2015

(A) कठोपनिषदः (B) तैत्तिरीयोपनिषदः
(C) पाणिनीयशिक्षातः (D) याज्ञवल्क्यशिक्षातः

स्रोत–*ईशादि नौ उपनिषद् (तैत्तिरीयोपनिषद् 1.2)-गीताप्रेस, पेज–333*

109. 'श्वेताश्वतरोपनिषद्' केन वेदेन सम्बद्धा– BHU AET–2010, UGC 25 J–2006, 2015

(A) ऋग्वेदेन (B) सामवेदेन
(C) अथर्ववेदेन (D) कृष्णयजुर्वेदेन

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–157*

110. (i) प्रमुख दश उपनिषदों में परिगणित नहीं है–
(ii) दस उपनिषदों के अन्तर्गत किस उपनिषद् की गणना नहीं की गई है–
BHU MET – 2008, 2009, 2011, 2013
UGC 73 J–2015

(A) मुण्डकोपनिषद् (B) छान्दोग्योपनिषद्
(C) श्वेताश्वतरोपनिषद् (D) ऐतरेयोपनिषद्

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–168*

111. (i) 'नारद-सनत्कुमारसंवाद' आता है–
(ii) 'नारद–सनत्कुमारव्याख्यानं' कस्याम् उपनिषदि प्राप्यते–
UGC 25 J–1994, BHU AET–2011

(A) केनोपनिषद् (B) तैत्तिरीयोपनिषद्
(C) छान्दोग्योपनिषद् (D) प्रश्नोपनिषद्

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–181*

112. 'उद्दालक-श्वेतकेतु-संवाद' किस उपनिषद् में है– UGC 25 D–1998

(A) कठ में (B) केन में
(C) ईश में (D) छान्दोग्य में

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–160*

113. (i) छान्दोग्योपनिषद् केन सम्बद्धम्?
(ii) छान्दोग्योपनिषदि कस्य वेदस्य–
(iii) 'छान्दोग्योपनिषद्' किस वेद से सम्बन्धित है–
UGC 25 D–1998, 2002, 2010, 2014, J–2001
BHU MET–2009, 2012, 2013, BHU AET–2010

(A) ऋग्वेद से (B) सामवेद से
(C) शुक्लयजुर्वेद से (D) अथर्ववेद से

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–159*

114. (i) 'सत्यकामस्य-जाबालेः' वर्णनं प्रकटयति?
(ii) 'सत्यकाम-जाबालि कथा' किस उपनिषद् में है–
UGC 25 J–1999, 2000, D–2001
BHU AET–2010

(A) श्वेताश्वतर में (B) छान्दोग्य में
(C) बृहदारण्यक में (D) केन में

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–181*

115. छान्दोग्योपनिषदः अध्यायानां संख्या– BHU AET–2010

(A) 4 (B) 3
(C) 8 (D) 16

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–181*

116. श्वेतकेतुकथां छान्दोग्योपनिषदः कस्मिन् अध्याये विद्यते– BHU AET–2010

(A) द्वितीये (B) पञ्चमे
(C) षष्ठे (D) अष्टमे

स्रोत–*(i) वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–181*
(ii) वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–160

117. सत्यकामस्य जाबालेः कथा छान्दोग्योपनिषदि कस्मिन् अध्याये विद्यते– BHU AET–2010

(A) षष्ठे (B) तृतीये
(C) प्रथमे (D) चतुर्थे

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–160*

107. (D) 108. (B) 109. (D) 110. (C) 111. (C) 112. (D) 113. (B) 114. (B) 115. (C) 116. (C) 117. (D)

118. निम्न में से किस ग्रन्थ में सर्वप्रथम देवकी के पुत्र कृष्ण का वर्णन किया गया है–

RPCS–1999, MP PSC–1994

(A) महाभारत में (B) छान्दोग्य में

(C) अष्टाध्यायी में (D) भागवतपुराण में

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–160*

119. कौन सा उपनिषद् सामवेद का अंश है–

BHU MET–2008

(A) कठोपनिषद् (B) छान्दोग्योपनिषद्

(C) ईशोपनिषद् (D) केनोपनिषद्

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–159*

120. छान्दोग्योपनिषदि कयोः भूतयोः सृष्टिः नोक्ता–

DSSSB PGT–2014

(A) वाय्वाकाशयोः (B) वायुतेजसोः

(C) वायुपृथिव्योः (D) अप्पृथिव्योः

121. आरुणेः शिष्यः आसीत्–

RPSC-ग्रेड-II TGT–2010, 2011

(A) ध्रुवः (B) श्वेतकेतुः

(C) सत्यकामः (D) उद्दालकः

स्रोत–*(i) वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–181*

(ii) वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–160

122. उपनिषद् ब्राह्मणम्– BHU AET–2010

(A) ऐतरेयोपनिषद् (B) केनोपनिषद्

(C) छान्दोग्योपनिषद् (D) कठोपनिषद्

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–159*

123. (i) निम्न में से सामवेद से सम्बद्ध उपनिषद् कौन है?

(ii) सामवेदेन सम्बद्धा अस्ति?

UGC 25 D–2014, H TET–2014

(A) छान्दोग्योपनिषद् (B) कठोपनिषद्

(C) ईशावास्योपनिषद् (D) ऐतरेयोपनिषद्

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–159*

124. 'तत्त्वमसि' इति महावाक्यं विद्यते?

G GIC–2015

(A) कठोपनिषदि (B) छान्दोग्योपनिषदि

(C) बृहदारण्यकोपनिषदि (D) ईशावास्योपनिषदि

स्रोत–*(i) वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–181*

(ii) वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–160

(iii) संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज–84

125. 'तलवकारोपनिषद्' का सम्बन्ध है– UGC 73 S–2013

(A) ऋग्वेदेन (B) यजुर्वेदेन

(C) सामवेदेन (D) अथर्ववेदेन

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–161*

126. 'केनोपनिषद्' केन वेदेन सम्बद्धा–

UGC 25 J–1998, 2002, 2014
BHU MET–2014, BHU AET–2010
JNU MET–2015

(A) कृष्णयजुर्वेदेन (B) सामवेदेन

(C) ऋग्वेदेन (D) अथर्ववेदेन

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–161*

127. 'यक्ष और देवता' का संवाद है– UGC 73 J–2013

(A) केनोपनिषद् (B) ईशावास्योपनिषद्

(C) कठोपनिषद् (D) ऐतरेयोपनिषद्

स्रोत–*ईशादि नौ उपनिषद् (शाङ्करभाष्य) - गीताप्रेस, पेज–144*

128. 'तपो दमः कर्मेति प्रतिष्ठा' अयं विचारः कुत्रोपदिश्यते–

UGC 73 J–2014

(A) केनोपनिषद् (B) कठोपनिषद्

(C) तैत्तिरीयोपनिषद् (D) बृहदारण्यकोपनिषद्

स्रोत–*ईशादि नौ उपनिषद् (केनोपनिषद् 4.8) - गीताप्रेस, पेज–72*

129. 'प्रतिबोधविदितं मतम् अमृतत्वं हि विन्दते' इति पद्यांशः अस्ति? JNU M.Phil/Ph.D–2015

(A) केनोपनिषदि (B) बृहदारण्यकोपनिषदि

(C) मुण्डकोपनिषदि (D) ईशावास्योपनिषदि

स्रोत–*ईशादि नौ उपनिषद् (केनोपनिषद् 2.4)-गीताप्रेस, पेज–57*

118. (B) 119. (B) 120. (D) 121. (B) 122. (C) 123. (A) 124. (B) 125. (C) 126. (B) 127. (A) 128. (A) 129. (A)

130. 'उमा हेमवती कथा' किस उपनिषद् में वर्णित है– UGC 25 D–1997, 2012, J–2001

(A) श्वेताश्वतर (B) छान्दोग्य
(C) केन (D) मुण्डक

***स्रोत**–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–161*

131. जानुश्रुतेरुपाख्यानं कुत्र वर्तते– UGC 25 J–2007

(A) केनोपनिषदि (B) छान्दोग्योपनिषदि
(C) कठोपनिषदि (D) बृहदारण्यकोपनिषदि

***स्रोत**–छान्दोग्योपनिषद् शांकरभाष्य (4.1) - गीताप्रेस, पेज–324*

132. सामवेदोपनिषद् कौन है– BHU MET–2011, 2012

(A) प्रश्नोपनिषद् (B) ईशावास्योपनिषद्
(C) मुण्डकोपनिषद् (D) केनोपनिषद्

***स्रोत**–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–150*

133. केनोपनिषद् केन ब्राह्मणग्रन्थेन सम्बद्धा– HE –2015

(A) शतपथब्राह्मणेन (B) पञ्चविंशब्राह्मणेन
(C) तलवकारब्राह्मणेन (D) गोपथब्राह्मणेन

***स्रोत**–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–10*

134. यक्षरूपधारिणः परब्रह्मणः आख्यायिका उपलभ्यते– UGC 25 J–2015

(A) ईशावास्योपनिषदि
(B) केनोपनिषदि
(C) कठोपनिषदि
(D) तैत्तिरीयोपनिषदि

***स्रोत**–ईशादि नौ उपनिषद् (शाङ्करभाष्य) - गीताप्रेस, पेज–144*

135. केनोपनिषदः सम्बन्धः अस्ति– AWES TGT–2011

(A) यजुर्वेदेन
(B) सामवेदस्य तवलकारशाखया
(C) अथर्ववेदेन
(D) ऋग्वेदेन

***स्रोत**–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–10*

136. सम्यक् मेलनं कर्तव्यम्– JNU MET–2015

संहिता	उपनिषद्
(क) ऋक्	(a) माण्डूक्योपनिषद्
(ख) यजुः	(b) छान्दोग्योपनिषद्
(ग) साम	(c) ईशावास्योपनिषद्
(घ) अथर्व	(d) ऐतरेयोपनिषद्

	क	ख	ग	घ
(A)	d	c	b	a
(B)	c	b	c	d
(C)	a	b	c	d
(D)	b	a	c	d

***स्रोत**–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–168*

137. 'प्राणाग्निहोत्र-विद्या' किस उपनिषद् में है– UGC 25 J–1994

(A) ईशावास्योपनिषद् (B) मुण्डकोपनिषद्
(C) प्रश्नोपनिषद् (D) छान्दोग्योपनिषद्

***स्रोत**–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–168-177*

138. प्रश्नोपनिषद्– CVVET–2015

(A)ऋग्वेदीया (B) यजुर्वेदीया
(C) सामवेदीया (D) अथर्ववेदीया

***स्रोत**–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–162*

139. अथर्ववेदीय उपनिषद् है– UGC 25 J–2003

(A) मुण्डकोपनिषद् (B) ईशावास्योपनिषद्
(C) बृहदारण्यकोपनिषद् (D) केनोपनिषद्

***स्रोत**–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–150*

140. मुण्डकोपनिषद् से सम्बन्धित वेद है? BHU MET–2015

(A) अथर्ववेद (B) यजुर्वेद
(C) सामवेद (D) ऋग्वेद

***स्रोत**–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–162*

130. (C) 131. (B) 132. (D) 133. (C) 134. (B) 135. (B) 136. (A) 137. (C) 138. (D) 139. (A) 140. (A)

141. ओंकारस्य व्याख्या विशेषरूपेण कस्मिन् उपनिषदि भवति? **AWES TGT–2011**

(A) मुण्डकोपनिषदि　(B) माण्डूक्योपनिषदि
(C) कठोपनिषदि　(D) ऐतरेयोपनिषदि

***स्रोत**–ईशादि नौ उपनिषद् (शाङ्करभाष्य) - गीताप्रेस, पेज–514*

142. अथर्ववेदीया– **CVVET–2015**

(A) कौषीतक्युपनिषत्　(B) छान्दोग्योपनिषत्
(C) माण्डूक्योपनिषत्　(D) ऐतरेयोपनिषत्

***स्रोत**–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–163*

143. सबसे पहले चार आश्रमों का वर्णन आया है, वह उपनिषद् है? **UP TGT (S.S.)–2013**

(A) ईश
(B) बृहदारण्यक
(C) छान्दोग्य
(D) जबालोपनिषद्

***स्रोत**–108 उपनिषद् (ब्रह्मविद्या खण्ड)-श्रीरामशर्मा आचार्य, पेज–191, 192*

144. वाजश्रवसः पुत्रस्य नाम अस्ति– **CCSUM-Ph.D–2016**

(A) उपमन्युः　(B) सत्यकामः
(C) नचिकेता　(D) जाबालः

***स्रोत**–कठोपनिषद् (1.1.1) - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–26*

145. इन्द्र-विरोचनस्य कथा कस्यामुपनिषदि प्राप्यते– **CCSUM-Ph.D–2016**

(A) छान्दोग्ये　(B) बृहदारण्यके
(C) माण्डूक्ये　(D) मुण्डके

***स्रोत**–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–181*

146. 'भक्ति' शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख कहाँ मिलता है? **CCSUM (H)-Ph.D–2016**

(A) वेद
(B) पुराण
(C) उपनिषद्
(D) रामायण

141. (A)　142. (C)　143. (D)　144. (C)　145. (A)　146. (C)

9. वेदाङ्ग

1. (i) वेदाङ्गानि सन्ति– UGC 73 D–2004, 2007, 2011
(ii) वेदाङ्गानां संख्या भवति– J–1999, 2005
UGC 73 D–1992, BHU AET–2010, 2011, 2012
BHU MET–2012, MP PGT–2012
AWES TGT–2008, G GIC–2015

(A) त्रीणि (B) पञ्च
(C) षड् (D) सप्त

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–190

2. वेदार्थबोधे अधोलिखित–वेदाङ्गेषु कस्योपयोगः नास्ति? DL–2015

(A) कल्पः (B) निरुक्तम्
(C) व्याकरणम् (D) छन्दः

3. उपाङ्गानि कति सन्ति– BHU AET–2010

(A) दश (10) (B) पञ्च (5)
(C) सप्त (7) (D) चत्वारि (4)

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–10

4. वेदाङ्गं नास्ति– BHU AET–2010

(A) व्याकरणम् (B) ज्योतिषम्
(C) कल्पशास्त्रम् (D) साहित्यम्

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–190

5. सुमेलयतु– UGC 25 D–2011

(क) शिक्षा **1. पादः**
(ख) व्याकरणम् **2. नासिका**
(ग) छन्दः **3. मुखम्**
(घ) निरुक्तम् **4. श्रोत्रम्**

	क	ख	ग	घ
(A)	1	2	3	4
(B)	2	3	4	1
(C)	2	3	1	4
(D)	3	2	4	1

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–190

6. शब्दप्रक्रियाशास्त्र का मूल कौन सा वेदाङ्ग है– UGC 25 J–1994

(A) शिक्षा (B) कल्प
(C) व्याकरण (D) निरुक्त

स्रोत–वैदिक साहित्य और संस्कृति - बलदेव उपाध्याय, पेज–347

शिक्षा-वेदाङ्ग

7. 'प्रातिशाख्य' किस वेदाङ्ग से सम्बद्ध है? UGC 25 J–1998

(A) व्याकरण से (B) ज्योतिष से
(C) शिक्षा से (D) कल्प से

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–86

8. (i) वेदाङ्ग शिक्षा का सम्बन्ध है– UGC 25 J–1999
(ii) शिक्षा का विषय है? D–2003

(A) वर्णोत्पत्ति तथा उच्चारण से
(B) दण्डनीति से
(C) सामाजिक नियम से
(D) कर्मकाण्ड से

स्रोत–(i) वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–190
(ii) संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–85

9. शिक्षावेदाङ्गस्य को विषयः? UGC 25 J–2013

(A) यज्ञः (B) उपासना
(C) मोक्षः (D) उच्चारणम्

संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–85

10. (i) वेदपुरुष का शिक्षा है? UGC 25 J–2001
(ii) वेदाङ्गेषु शिक्षा उपमीयते D–2006
BHU AET–2011, CCSUM-Ph.D–2-16

(A) घ्राण (B) नासिका
(C) हस्त (D) पाद

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–85

1. (C) 2. (A) 3. (D) 4. (D) 5. (C) 6. (C) 7. (C) 8. (A) 9. (D) 10. (A)

11. ऋग्वेदस्य शिक्षा का– BHU AET–2011

(A) नारदीया (B) पाणिनीया

(C) वैयासिकी (D) पाराशरी

संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–86

12. 'शिक्षाग्रन्थेषु' प्रतिपाद्यते– UGC 25 J–2009

(A) वेदार्थनिर्णयधर्मः (B) कालज्ञानम्

(C) उच्चारणधर्मः (D) शब्दसाधुत्वम्

संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–86

13. (i) वेदस्य नासिकात्वेनोपमीयते–

(ii) वेदपुरुषस्य घ्राणत्वेनोपमीयते–

(iii) वेदस्य घ्राणस्थानीयमङ्गं किमुच्यते?

UGC 25 D–2010, BHU AET–2012

UK SLET–2015

(A) निरुक्तम् (B) छन्दः

(C) शिक्षा (D) कला

संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–85

14. शिक्षाङ्गस्य विषयाः कियन्तः उपदिष्टाः–

UGC 25 D–2012

(A) त्रयः (B) चत्वारः

(C) पञ्च (D) षट्

संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–86

15. 'माण्डव्यशिक्षा' सम्बद्ध है– BHU MET–2008

(A) ऋग्वेद (B) शुक्लयजुर्वेद

(C) सामवेद (D) अथर्ववेद

संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास (द्वितीय-खण्ड)-बलदेव उपाध्याय, पेज–44

16. 'शिक्षा' वेदाङ्ग का प्रतिपाद्य विषय क्या है–

BHU MET–2012

(A) उच्चारण (B) स्वर

(C) समास (D) ध्वनि

संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–85

17. पाणिनीय-शिक्षायां वर्णानाम् उच्चारणस्थानानि सन्ति–

UP GDC–2014, UGC 25 D–2013

(A) पञ्च (B) सप्त

(C) अष्ट (D) त्रीणि

पाणिनीयशिक्षा (श्लोक-13)-शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पेज–18

18. प्रातिशाख्यं नाम– BHU AET–2010

(A) व्याकरणम् (B) शिक्षा

(C) छन्दः (D) निरुक्तम्

संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–86

19. शिक्षायाम् उद्देश्यम्– BHU AET–2010

(A) वर्णस्वरादिविधानम्

(B) प्रत्ययशिक्षणम्

(C) आख्यानं प्रकाशनं

(D) निर्वचनप्रकटनम्

संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–85

20. 'बलम्' इत्यनेन किं गृह्यते– BHU AET–2010

(A) स्थानप्रयत्नौ (B) बर्हिः

(C) वनम् (D) बाह्यम्

संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–87

21. 'भारद्वाजशिक्षा' केन सम्बद्धा विद्यते–

BHU AET–2010

(A) ऋग्वेदेन (B) शुक्लयजुर्वेदेन

(C) कृष्णयजुर्वेदेन (D) सामवेदेन

***स्रोत**–संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास, (द्वितीय-खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/ओमप्रकाश पाण्डेय, पेज–52*

22. शिक्षायाः प्रतिपाद्यो विषयः को विद्यते–

BHU AET–2010

(A) उच्चारणविधिः (B) प्रयोगविधिः

(C) निर्वचनविधिः (D) छन्दोविधिः

संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–85

11. (B) 12. (C) 13. (C) 14. (D) 15. (B) 16. (A) 17. (C) 18. (B) 19. (A) 20. (A) 21. (C) 22. (A)

23. याज्ञवल्क्यशिक्षायां वर्ण्यविषयः कः?

BHU AET–2011

(A) यज्ञविधिः (B) दानविधिः

(C) वर्णोच्चारणविधिः (D) प्रायश्चित्तविधिः

स्रोत–*(i) संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास, (द्वितीय-खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/ओमप्रकाश पाण्डेय, पेज–41*

(ii) याज्ञवल्क्य-शिक्षा - नरेश झा, पेज–80

24. शुक्लयजुर्वेदेन सम्बद्धा शिक्षा का अस्ति?

BHU AET–2010

(A) पाणिनीयशिक्षा (B) याज्ञवल्क्यशिक्षा

(C) कैवल्यशिक्षा (D) शौनकशिक्षा

स्रोत–*संस्कृतवाङ्मय का बृहद् इतिहास, (द्वितीय-खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/ओमप्रकाश पाण्डेय, पेज–41*

25. शिक्षाग्रन्थेषु कः शिक्षाग्रन्थः यजुर्वेदेन सम्बद्धो नास्ति?

BHU AET–2010

(A) वाशिष्ठीशिक्षा (B) कात्यायनीशिक्षा

(C) पाराशरीशिक्षा (D) नारदीयशिक्षा

वैदिक साहित्य का इतिहास-गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज–253/254

26. कस्य वेदाङ्गस्य प्रतिपादनं वेदपुरुषस्य घ्राणरूपेणास्ति?

BHU AET–2010

(A) शिक्षायाः (B) निरुक्तस्य

(C) व्याकरणस्य (D) कल्पस्य

संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–85

27. शिक्षावेदाङ्गे कस्य विषयस्य वर्णनमस्ति?

BHU AET–2010

(A) छन्दसाम् (B) ज्योतिषस्य

(C) वर्णानाम् (D) शब्दानुशासनस्य

संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–86

28. कस्मिन् वेदाङ्गे मुख्यतया उच्चारण–प्रक्रियायाः वर्णनमस्ति? BHU AET–2012

(A) शिक्षायाम् (B) व्याकरणे

(C) निरुक्ते (D) ज्योतिषे

संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–85

29. याज्ञवल्क्यशिक्षा केन वेदेन सम्बद्धा अस्ति?

BHU AET–2012, UGC 25 D–2013, 2014

(A) ऋग्वेदेन (B) शुक्लयजुर्वेदेन

(C) कृष्णयजुर्वेदेन (D) अथर्ववेदेन

स्रोत–*संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–86*

30. याज्ञवल्क्यशिक्षानुसारं कति विवृत्तयः?

UGC 25 D–2015

(A) चतस्रः (B) तिस्रः

(C) पञ्च (D) षट्

स्रोत–*याज्ञवल्क्यशिक्षा (वर्णप्रकरण, श्लोक-10) - नरेश झा, पेज–89*

31. वाजसनेयिसंहिताया सम्बद्धः शिक्षाग्रन्थः कोऽस्ति?

BHU AET–2012

(A) नारदीयशिक्षा (B) माण्डूकीशिक्षा

(C) पाणिनीयशिक्षा (D) माण्डव्यशिक्षा

स्रोत–*संस्कृतवाङ्मय का बृहद् इतिहास (द्वितीय-खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/ओमप्रकाश पाण्डेय, पेज–44*

32. वासिष्ठीशिक्षा केन वेदेन सम्बद्धा अस्ति?

BHU AET–2012

(A) ब्रह्मवेदेन (B) शुक्लयजुर्वेदेन

(C) सामवेदेन (D) अथर्ववेदेन

स्रोत–*संस्कृतवाङ्मय का बृहद् इतिहास, (द्वितीय-खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/ओमप्रकाश पाण्डेय, पेज–42*

33. पाणिनीयशिक्षा केन वेदेन सम्बद्धा अस्ति?

BHU AET–2012

(A) ऋग्वेदेन (B) यजुर्वेदेन

(C) सामवेदेन (D) अथर्ववेदेन

संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–86

34. वर्णस्वराद्युच्चारण प्रकार नहीं है– UGC 73 D–2014

(A) वेदे (B)शिक्षायाम्

(C) कल्पे (D) तैत्तिरीयब्राह्मणे

संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–85-86

23. (C) 24. (B) 25. (D) 26. (A) 27. (C) 28. (A) 29. (B) 30. (A) 31. (D) 32. (B) 33. (A) 34. (C)

35. सामवेदस्य शिक्षा भवति– UGC 73 D–2014

(A) बादरायणीया (B) गौतमी
(C) भारद्वाजीया (D) वासिष्ठी

***स्रोत**– संस्कृतवाङ्मय का बृहद् इतिहास, (द्वितीय-खण्ड)-बलदेव उपाध्याय/ओमप्रकाश पाण्डेय, पेज–38*

36. शिक्षाग्रन्थाः वेदानां निरूपकाः सन्ति– UGC 73 D–2011

(A) निर्वचनम् (B) उच्चारणम्
(C) व्याकरणम् (D) कालनिर्धारणम्

***स्रोत**–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–85*

37. नारदीयशिक्षा सम्बद्धा वर्तते– UGC 25 J–2013, S–2013

(A) सामवेदेन (B) ऋग्वेदेन
(C) कृष्णयजुर्वेदेन (D) शुक्लयजुर्वेदेन

***स्रोत**–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–193*

38. माण्डूकीशिक्षा कस्य वेदस्य? UGC 25 D–2013

(A) अथर्ववेदस्य (B) यजुर्वेदस्य
(C) सामवेदस्य (D) ऋग्वेदस्य

***स्रोत**–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–86*

39. पाणिनीयशिक्षानुसारं लिखितपाठकः कः भवति? UGC 25 J–2012

(A) उत्तमः (B) उत्तमोत्तमः
(C) अधमः (D) श्रेष्ठः

***स्रोत**–पाणिनीयशिक्षा (श्लोक-32)-शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पेज–43*

40. वृत्तिसमवायार्थः अनुबन्धकरणार्थः इष्टबुध्यर्थश्च केषाम् उपदेशः भवति? UGC 25 D–2012

(A) प्रत्ययानाम् (B) धातूनाम्
(C) सन्धीनाम् (D) वर्णानाम्

***स्रोत**–महाभाष्य (पश्पशाह्निक) - जयशङ्करलाल त्रिपाठी, पेज–135*

41. मैत्रेयी शिक्षामवाप– UGC 25 D–2004

(A) याज्ञवल्क्यात् (B) पैलात्
(C) जैमिनेः (D) कौत्सात्

***स्रोत**–ईशावास्योपनिषद् - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–9*

42. 'अक्षरं न क्षरति' इति कुत्र उक्तमस्ति– BHU AET–2012

(A) अष्टाध्याय्याम् (B) निरुक्ते
(C) ऋग्वेदे (D) सामवेदे

***स्रोत**–निरुक्त - छज्जूराम शास्त्री, पेज–531*

43. कः भावविकारः नास्ति? UK SLET–2015

(A) जायते (B) अस्ति
(C) विपरिणमते (D) लिख्यते

***स्रोत**–हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज–23*

44. 'आचार्यश्चिद् इदं ब्रूयात्' इत्यत्र 'चित्' निपातस्य अर्थः कः? UGC 25 D–2013

(A) पादपूरणः (B) उपमा
(C) पूजा (D) धनम्

***स्रोत**–हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज–35*

45. औदुम्बरायणाचार्यमते वचनं कीदृशम्? JNU MET–2014

(A) नित्यम् (B) अनित्यम्
(C) इन्द्रियनित्यम् (D) सर्वव्यापकम्

***स्रोत**–हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज–18*

46. 'ऋक्प्रातिशाख्य' किस वेदाङ्ग से सम्बन्धित है? UP GDC–2008

(A) व्याकरण से (B) कल्प से
(C) निरुक्त से (D) शिक्षा से

***स्रोत**–संस्कृतवाङ्मय का बृहद् इतिहास, (द्वितीय-खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/ओमप्रकाश पाण्डेय, पेज– भू. 13*

47. शिक्षावेदाङ्गस्य सम्बन्धोऽस्ति UP GIC–2015

(A) वैदिकयज्ञेन (B) पदनिर्वचनेन
(C) मन्त्रोच्चारणेन (D) ज्योतिषशास्त्रेण

***स्रोत**–संस्कृतवाङ्मय का बृहद् इतिहास, (द्वितीय-खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/ओमप्रकाश पाण्डेय, पेज–1*

35. (B) 36. (B) 37. (A) 38. (A) 39. (C) 40. (D) 41. (A) 42. (B) 43. (D) 44. (C) 45. (C) 46. (D) 47. (C)

कल्पवेदाङ्ग

48. ऋग्वेद का गृह्यसूत्र है– UGC 73 J–2013

(A) आश्वलायनगृह्यसूत्रम् (B) पारस्करगृह्यसूत्रम्
(C) बौधायनगृह्यसूत्रम् (D) कात्यायनगृह्यसूत्रम्

***स्रोत**–संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास, (द्वितीय-खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/ओमप्रकाश पाण्डेय, पेज–122*

49. (i) 'आश्वलायन-गृह्यसूत्र' किससे सम्बद्ध है–
(ii) ''आश्वलायनगृह्यसूत्रं'' केन सम्बद्धम्?
UGC 25 J–2014
BHU MET–2008, 2009, 2013, 2015

(A) अथर्ववेदेन (B) सामवेदेन
(C) यजुर्वेदेन (D) ऋग्वेदेन

***स्रोत**–संस्कृत-साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–92*

50. गौतमधर्मसूत्र के अनुसार संस्कार होता है– UGC 73 D–2013

(A) अष्टचत्वारिंशत् (B) षोडश
(C) चत्वारिंशत् (D) त्रयोदश

***स्रोत**–हिन्दू-संस्कार - राजबली पाण्डेय, पेज–22*

51. दारिल वृत्ति है– UGC 73 D–2013

(A) आश्वलायनगृह्यसूत्रे (B) कौशिकगृह्यसूत्रे
(C) कात्यायनगृह्यसूत्रे (D) जैमिनीयगृह्यसूत्रे

***स्रोत**–संस्कृतवाङ्मय का बृहद् इतिहास (द्वितीय-खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/ओमप्रकाश पाण्डेय, पेज–154*

52. शुक्लयजुर्वेद का गृह्यसूत्र है– UGC 73 J–2012, S–2013

(A) बौधायनगृह्यसूत्रम् (B) शांखायनगृह्यसूत्रम्
(C) आश्वलायनगृह्यसूत्रम् (D) पारस्करगृह्यसूत्रम्

***स्रोत**–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–92*

53. सामवेदीय श्रौतसूत्र है– UGC 73 J–2014

(A) कात्यायनश्रौतसूत्रम् (B) वाधूलश्रौतसूत्रम्
(C) लाट्यायनश्रौतसूत्रम् (D) मानवश्रौतसूत्रम्

***स्रोत**–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–92*

54. आश्वलायन-गृह्यसूत्र में संस्कार हैं– UGC 73 J–2014

(A) षोडश (B) द्वादश
(C) एकादश (D) पञ्चविंशतिः

***स्रोत**–हिन्दू-संस्कार - राजबली पाण्डेय, पेज–21*

55. कत्यङ्गुलखातावेदिर्भवति– UGC 25 J–2014

(A) षडङ्गुला (B) सप्ताङ्गुला
(C) द्वादशाङ्गुला (D) त्र्यङ्गुला

56. वेदीनिर्माण की प्रक्रिया यहाँ उपलब्ध है– UGC 25 D–1998

(A) श्रौतसूत्र (B) गृह्यसूत्र
(C) शुल्बसूत्र (D) धर्मसूत्र

***स्रोत**–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–92*

57. 'गृह्यसूत्र' किसके भाग हैं– UGC 25 J–2000

(A) शिक्षा के (B) कल्प के
(C) निरुक्त के (D) ज्योतिष के

***स्रोत**–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–91*

58. कल्पसूत्र का विषय है– UGC 25 D–2001

(A) यज्ञ-वेदी-निर्माण
(B) मन्त्रों के शुद्धातिशुद्ध उच्चारण का ज्ञान
(C) वैदिकपदों का निर्वचन
(D) भावबोधक हेतु

***स्रोत**–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–91*

59. श्रौतसूत्रों का वर्ण्य विषय है– UGC 25 D–2003

(A) आश्रमकर्त्तव्य (B) यज्ञवेदीनिर्माण
(C) वैदिकयज्ञ (D) संस्कार

***स्रोत**–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–91*

60. इनमें से 'वेदाङ्ग' है– UGC 25 J–2004

(A) ऋग्वेद (B) कल्प
(C) सामवेद (D) कृष्णयजुर्वेद

***स्रोत**–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–85*

48. (A) 49. (D) 50. (C) 51. (B) 52. (D) 53. (C) 54. (C) 55. (D) 56. (C) 57. (B)
58. (A) 59. (C) 60. (B)

61. 'धर्मसूत्रम्' आयाति– UGC 25 D–2004

(A) शिक्षायाम् (B) छन्दसि
(C) कल्पे (D) निरुक्ते

***स्रोत**–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–91*

62. 'श्रौतसूत्रं' किं वेदाङ्गं विषयीकरोति– UGC 25 J–2005

(A) कल्पम् (B) निरुक्तम्
(C) ज्योतिषम् (D) व्याकरणम्

संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–91

63. कः कल्पसूत्रविषयः– UGC 25 J–2010

(A) यागप्रयोगक्रमप्रतिपादनम् (B) शब्दार्थनिरूपणम्
(C) पाठभेदनिरूपणम् (D) वेदार्थनिरूपणम्

संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–91

64. कल्पग्रन्थेषु किं न गण्यते– UGC 25 J–2013

(A) आपस्तम्बश्रौतसूत्रम् (B) कात्यायनश्रौतसूत्रम्
(C) बौधायनधर्मसूत्रम् (D) उणादिसूत्रम्

संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–92

65. कात्यायनश्रौतसूत्र किससे सम्बद्ध है– BHU MET–2008

(A) ऋग्वेद से (B) शुक्लयजुर्वेद से
(C) सामवेद से (D) अथर्ववेद से

संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–92

66. निम्न में से कौन कल्प वेदाङ्ग से सम्बद्ध है– BHU MET–2009

(A) बृहद्देवता (B) चाणक्यसूत्र
(C) बौधायनशुल्बसूत्र (D) मनुस्मृति

***स्रोत**–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–92*

67. 'पारस्करगृह्यसूत्र' की गणना किस वेदाङ्ग में की जाती है? BHU MET–2009, 2013

(A) शिक्षा (B) व्याकरण
(C) कल्प (D) निरुक्त

***स्रोत**–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–92*

68. शुल्बसूत्रकार 'कात्यायन' किस वेद से सम्बद्ध है– BHU MET–2010

(A) ऋग्वेद से (B) यजुर्वेद से
(C) सामवेद से (D) अथर्ववेद से

***स्रोत**–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–92*

69. 'गौतमधर्मसूत्र' किस वेद से सम्बद्ध है– BHU MET–2010

(A) ऋग्वेद (B) कृष्णयजुर्वेद
(C) शुक्लयजुर्वेद (D) सामवेद

***स्रोत**–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–92*

70. कल्पः वेदस्य– CVVET–2015

(A) पादौ (B) चक्षुः
(C) हस्तौ (D) श्रोत्रम्

***स्रोत**–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–85*

71. सुमेलित कीजिए– UGC 06 D–2011

(क) श्रौतसूत्र 1. धार्मिक तथा लौकिक विधि एवं प्रशासन
(ख) गृह्यसूत्र 2. महाबलिदानों को सम्पन्न करने के नियम
(ग) धर्मसूत्र 3. दैनिक जीवन से सम्बन्धित समारोहों के लिए निर्देश
(घ) शुल्बसूत्र 4. बलिवेदियों तथा अग्निवेदियों के माप तथा निर्माण सम्बन्धी नियम

	क	ख	ग	घ
(A)	1	2	3	4
(B)	3	2	4	1
(C)	4	3	2	1
(D)	2	3	1	4

***स्रोत**–वैदिक साहित्य और संस्कृति - बलदेव उपाध्याय, पेज–307-308*

72. 'वशिष्ठ-धर्मसूत्र' किस वेद से सम्बद्ध है– BHU MET–2010

(A) ऋग्वेद (B) यजुर्वेद
(C) सामवेद (D) अथर्ववेद

***स्रोत**–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–92*

61. (C) 62. (A) 63. (A) 64. (D) 65. (B) 66. (C) 67. (C) 68. (B) 69. (D) 70. (C) 71. (D) 72. (A)

73. 'अथर्ववेद' का गृह्यसूत्र है– BHU MET–2011

(A) खादिरगृह्यसूत्र (B) वैखानसगृह्यसूत्र
(C) कौशिकगृह्यसूत्र (D) पारस्करगृह्यसूत्र

स्रोत–*संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–92*

74. 'धर्मसूत्र' किस वेदाङ्ग में गिना जाता है– BHU MET–2011, 2012, 2014

(A) व्याकरण (B) कल्प
(C) छन्द (D) ज्योतिष

स्रोत–*संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–91*

75. निम्नलिखित में से 'कल्प वेदाङ्ग' से सम्बद्ध है– BHU MET–2013

(A) बृहद्देवता (B) चाणक्यसूत्र
(C) कात्यायनश्रौतसूत्र (D) मनुस्मृति

स्रोत–*संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–92*

76. 'बौधायनधर्मसूत्र' में प्रश्नों (अध्यायों) की संख्या है– BHU MET–2014, BHU AET–2012

(A) तीन (3) (B) चार (4)
(C) पाँच (5) (D) छह (6)

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–236*

77. सुमेलित कीजिए– UGC 06 J–2014

(क) श्रौतसूत्र (i) यज्ञवेदी को मापना
(ख) गृह्यसूत्र (ii) बलि सम्बन्धी नियम
(ग) धर्मसूत्र (iii) घरेलू अधिकार
(घ) शुल्बसूत्र (iv) धर्म अथवा विधि

	क	ख	ग	घ
(A)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)
(B)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(C)	(iii)	(iv)	(ii)	(i)
(D)	(iv)	(i)	(ii)	(iii)

स्रोत–*वैदिक साहित्य और संस्कृति - बलदेव उपाध्याय, पेज–307-308*

78. 'तृतीय-शिष्टागमः' का उल्लेख है, वह ग्रन्थ है– BHU MET–2014

(A) याज्ञवल्क्यस्मृति (B) बौधायनधर्मसूत्र
(C) मनुस्मृति (D) गौतमधर्मसूत्र

स्रोत–*बौधायन-धर्मसूत्रम् - उमेशचन्द्र पाण्डेय, पेज–02*

79. (i) पारस्करगृह्यसूत्रं केन वेदेन सम्बद्धमस्ति?
(ii) 'पारस्करगृह्यसूत्र' जिस वेद का है, वह वेद है– BHU MET–2014, BHU AET–2012

(A) ऋग्वेद (B) शुक्लयजुर्वेद
(C) सामवेद (D) अथर्ववेद

स्रोत–*संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–92*

80. (i) शुल्बसूत्रों की जिसमें गणना होती है, वह है?
(ii) शुल्बसूत्राणि कस्य वेदाङ्गस्य अङ्गभूतानि सन्ति?
(iii) शुल्बसूत्रं कस्मिन् वेदाङ्गे अन्तर्भवति?
(iv) शुल्बसूत्रं केन वेदाङ्गेन सम्बद्धम्– HE–2015, BHU AET–2010, 2011 BHU MET–2015, UGC 25 J–2015

(A) शिक्षा (B) कल्पः
(C) व्याकरणम् (D) छन्दः

स्रोत–*संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–91*

81. श्रौतसूत्राणां प्रतिपाद्यो विषयः– BHU AET–2010

(A) वैदिकयागविधानम् (B) वेदिनिर्माणम्
(C) संस्कारविधानम् (D) आश्रमकर्तव्यविधानम्

स्रोत–*संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–91*

82. प्राचीनतमं धर्मसूत्रम्– BHU AET–2010

(A) हारीतकृतम् (B) आपस्तम्बकृतम्
(C) गौतमकृतम् (D) बौधायनकृतम्

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–236*

83. 'गौतमधर्मसूत्रस्य' मूलग्रन्थो वेदः– BHU AET–2010

(A) यजुर्वेदः (B) ऋग्वेदः
(C) सामवेदः (D) अथर्ववेदः

स्रोत–*संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–92*

73. (C) 74. (B) 75. (C) 76. (B) 77. (A) 78. (B) 79. (B) 80. (B) 81. (A) 82. (C) 83. (C)

84. (i) 'रेखागणित' मिलता है?

(ii) सूत्रमिदं रेखागणित–विज्ञानं बोधयति–

BHU AET–2010, UGC 73 D–1994

(A) श्रौतसूत्रम् (B) शुल्बसूत्रम्

(C) धर्मसूत्रम् (D) गृह्यसूत्रम्

***स्रोत**–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–92*

85. शुल्बसूत्राणां प्रतिपाद्यो विषयः– BHU AET–2010

(A) आश्रमविधानम् (B) स्वरपाठः

(C) वेदिनिर्माणम् (D) प्रकृतिप्रत्ययविधानम्

***स्रोत**–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–92*

86. 'बौधायनश्रौतसूत्रं' कया शाखया सम्बद्धम्–

BHU AET–2010

(A) शाकलशाखया (B) तैत्तिरीयशाखया

(C) काण्वशाखया (D) शौनकशाखया

***स्रोत**–संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास, (द्वितीय-खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/ओमप्रकाश पाण्डेय, पेज–61*

87. 'बौधायनश्रौतसूत्रे' कति प्रश्नाः सन्ति–

BHU AET–2010

(A) दश (B) त्रिंशत्

(C) विंशतिः (D) चत्वारिंशत्

संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास, (द्वितीय-खण्ड)-बलदेव उपाध्याय, पेज–62

88. 'बौधायनश्रौतसूत्रे' द्वितीयप्रश्नस्य प्रतिपाद्यो विषयः कः? BHU AET–2010

(A) अग्निहोत्रम् (B) आग्रयणम्

(C) अग्न्याधेयम् (D) याजमानम्

संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास, (द्वितीय-खण्ड)-बलदेव उपाध्याय, पेज–62

89. 'बौधायनश्रौतसूत्रस्य' अष्टादशे प्रश्ने को यागो वर्ण्यते?

BHU AET–2010

(A) वाजपेयः (B) अग्न्याधेयः

(C) अतिरात्रः (D) राजसूयः

संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास, (द्वितीय-खण्ड)-बलदेव उपाध्याय, पेज–62

90. 'बौधायनश्रौतसूत्रस्य' त्रिंशत्तमे प्रश्ने किं वर्ण्यते–

BHU AET–2010

(A) प्रवरः (B) पशुबन्धः

(C) दर्शः (D) चातुर्मास्यः

***स्रोत**–संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास, (द्वितीय-खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/ओमप्रकाश पाण्डेय, पेज–62*

91. (i) 'आपस्तम्बश्रौतसूत्रं' केन सम्बध्यते–

(ii) 'आपस्तम्बश्रौतसूत्रं' केन वेदेन सह सम्बद्धम्?

BHU AET–2010, 2011, UGC 25 J–2014

(A) ऋग्वेदेन (B) शुक्लयजुर्वेदेन

(C) कृष्णयजुर्वेदेन (D) सामवेदेन

संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–92

92. कल्पे सूत्रग्रन्थाः कतिविधाः भवन्ति–

BHU AET–2010

(A) दशविधाः (B) सप्तविधाः

(C) पञ्चविधाः (D) चतुर्विधाः

संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–91

93. श्रौतकर्म कस्मिन् अग्नौ क्रियते? BHU AET–2010

(A) वैतानिकाग्नौ (B) गृह्याग्नौ

(C) लौकिकाग्नौ (D) सम्याग्नौ

***स्रोत**–संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास (द्वितीय-खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/ओमप्रकाश पाण्डेय, पेज–223*

94. स्मार्तकर्म कस्मिन् अग्नौ क्रियते– BHU AET–2010

(A) श्रौताग्नौ (B) गृह्याग्नौ

(C) लौकिकाग्नौ (D) सम्याग्नौ

***स्रोत**–संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास (द्वितीय-खण्ड) - बलदेव उपाध्याय, पेज–222*

95. पुष्पसूत्रं कस्मिन् वेदेऽन्तर्भावः भवति–

BHU AET–2011

(A) ऋग्वेदः (B) यजुर्वेदः

(C) सामवेदः (D) अथर्ववेदः

***स्रोत**–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–198*

84. (B) 85. (C) 86. (B) 87. (B) 88. (C) 89. (C) 90. (A) 91. (C) 92. (D) 93. (A) 94. (C) 95. (C)

96. शुक्लयजुर्वेदस्य श्रौतसूत्राणि कति? BHU AET–2011

(A) एकम् (B) द्वे

(C) त्रीणि (D) चत्वारि

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–92

97. यजुर्वेदसम्बद्धं श्रौतसूत्रम्? CVVET–2015

(A) हिरण्यकेशीयम् (B) वैतानम्

(C) शाङ्खायनम् (D) लाट्यायनम्

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–92

98. अथर्ववेदीयं श्रौतसूत्रं किम्? BHU AET–2011

(A) लाट्यायनम् (B) बौधायनम्

(C) आश्वलायनम् (D) वैतानम्

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–92

99. शुल्बसूत्रे शुल्बशब्दस्यार्थः कोऽस्ति? BHU AET–2011

(A) परिमाण (B) लेखनम्

(C) पठनम् (D) ज्ञानम्

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–239

100. कात्यायनश्रौतसूत्रस्य प्रथमाध्यायस्य विषयः कः? BHU AET–2011

(A) दर्शपौर्णमासनिरूपणम् (B) परिभाषा

(C) विश्वजित् (D) सौत्रामणिः

स्रोत–संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास (द्वितीय-खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/ओमप्रकाश पाण्डेय, पेज–99

101. षोडशसंस्कारः कस्य विषयः? BHU AET–2011

(A) धर्मसूत्रम् (B) श्रौतसूत्रम्

(C) गृह्यसूत्रम् (D) शुल्बसूत्रम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–92

102. धर्मसूत्रेषु कस्य प्राचीनत्वं स्वीकरोति– BHU AET–2011

(A) आपस्तम्बीयम् (B) बौधायनीयम्

(C) हारीतीयम् (D) गौतमीयम्

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–236

103. यजुर्वेदस्य श्रौतसूत्रं किमस्ति? BHU AET–2010

(A) पारस्करश्रौतसूत्रम् (B) आपस्तम्बश्रौतसूत्रम्

(C) शौनकश्रौतसूत्रम् (D) कात्यायनश्रौतसूत्रम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–92

104. कृष्णयजुर्वेदस्य कति गृह्यसूत्राणि– BHU AET–2012

(A) दश (B) नौ

(C) पञ्चदश (D) द्वादश

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–229

105. आपस्तम्बश्रौतसूत्रे कति प्रश्नाः सन्ति? BHU AET–2012

(A) षट् (B) नव

(C) चतुर्विंशति (D) दश

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–217

106. कल्पान्तर्गतो वर्तते? BHU AET–2012

(A) छन्दःसूत्रम् (B)गृह्यसूत्रम्

(C) वर्णसूत्रम् (D) प्रातिशाख्यम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–91

107. बौधायनशुल्बसूत्रं केन वेदेन सह सम्बद्धं वर्तते– BHU AET–2012

(A) ऋग्वेदेन (B) यजुर्वेदेन

(C) सामवेदेन (D) अथर्ववेदेन

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–92

108. कल्पसूत्रान्तर्गतं न वर्तते– UK SLET–2015

(A) गृह्यसूत्रम् (B) शुल्बसूत्रम्

(C) श्रौतसूत्रम् (D) ब्रह्मसूत्रम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–91

109. मुख्यतया कर्मकाण्डं कतमद् वेदाङ्गं प्रतिपादयति? UK SLET–2015

(A) निरुक्तम् (B) कल्पः

(C) छन्दः (D) शिक्षा

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–91

96. (A) 97. (A) 98. (D) 99. (A) 100. (B) 101. (C) 102. (D) 103. (D) 104. (B) 105. (C) 106. (B) 107. (B) 108. (D) 109. (B)

110. 'कल्पसूत्रम्' इति पारिभाषिकी संज्ञा अस्ति–

UGC 25 D–2014

(A) श्रौतसूत्राणाम् (B) गृह्यसूत्राणाम्

(C) धर्मसूत्राणाम् (D) श्रौत-गृह्य-धर्मशुल्बसूत्राणाम्

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–214

111. 'गौतमधर्मसूत्रम्' केन सम्बद्धम्– UGC 25 D–2014

(A) ऋग्वेदेन (B) यजुर्वेदेन

(C) सामवेदेन (D) अथर्ववेदेन

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–92

112. कल्पग्रन्थेषु कः गण्यते? UGC 25 D–2013

(A) कात्यायनश्रौतसूत्रम् (B) उणादिसूत्रम्

(C) जैमिनीयसूत्रम् (D) सांख्यसूत्रम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–92

113. कौशिकगृह्यसूत्रं केन सम्बद्धम्? UGC 25 S–2013

(A) ऋग्वेदेन (B) कृष्णयजुर्वेदेन

(C) सामवेदेन (D) अथर्ववेदेन

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–92

114. एतेषु वेदाङ्गेषु भाषाविज्ञान-विषयः किं नास्ति?

JNU MET–2014

(A) कल्पः (B) शिक्षा

(C) व्याकरणम् (D) निरुक्तम्

115. ऋग्वेदस्य शुल्बसूत्रस्य नाम किम्? JNU MET–2014

(A) बौधायनः (B) आपस्तम्बः

(C) मानवः (D) न कोऽपि

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–92

116. 'बौधायनश्रौतसूत्रे' तृतीयप्रश्नस्य प्रतिपाद्यो विषयः कः?

BHU AET–2010

(A) पिण्डपितृयज्ञः (B) इष्टिकल्पः

(C) पशुबन्धः (D) अग्निचयनम्

स्रोत–संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास (द्वितीय-खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/ओमप्रकाश पाण्डेय, पेज–62

117. 'बौधायनश्रौतसूत्रे' पञ्चमप्रश्नगतोविषयः कः–

BHU AET–2010

(A) होत्रम् (B) पुनराधेयम्

(C) अग्निहोत्रम् (D) पौर्णमासीयम्

स्रोत–संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास (द्वितीय-खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/ओमप्रकाश पाण्डेय, पेज–62

118. 'बौधायनश्रौतसूत्रे' दशमप्रश्ने को विषयो वर्णितः–

BHU AET–2010

(A) अग्निचयनम् (B) दर्शः

(C) ब्रह्मत्वम् (D) अयनम्

स्रोत–संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास (द्वितीय-खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/ओमप्रकाश पाण्डेय, पेज–62

119. 'बौधायनश्रौतसूत्रस्य' षोडशप्रश्ने को यागो वर्ण्यते?

BHU AET–2010

(A) दर्शः (B) द्वादशाहः

(C) पौर्णमासः (D) पशुबन्धः

स्रोत–संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास (द्वितीय-खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/ओमप्रकाश पाण्डेय, पेज–62

120. 'बौधायनश्रौतसूत्रस्य' अष्टादशे प्रश्ने को यागो वर्ण्यते?

BHU AET–2010

(A) वाजपेयः (B) अग्न्याधेयः

(C) अतिरात्रः (D) राजसूयः

स्रोत–संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास (द्वितीय-खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/ओमप्रकाश पाण्डेय, पेज–62

121. 'वाधूलशुल्बसूत्रम्' केन वेदेन सम्बद्धमस्ति?

UGC 25 D–2015

(A) अथर्ववेदेन (B) सामवेदेन

(C) ऋग्वेदेन (D) यजुर्वेदेन

स्रोत–संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास (द्वितीय-खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/ओमप्रकाश पाण्डेय, पेज–232

110. (D) 111. (C) 112. (A) 113. (D) 114. (A) 115. (D) 116. (A) 117. (C) 118. (A) 119. (B) 120. (C) 121. (D)

122. (i) 'वाधूलश्रौतसूत्रम्' कस्य वेदस्य वर्तते?
(ii) 'वाधूलश्रौतसूत्रं' केन सम्बद्धं विद्यते?
BHU AET–2010, UGC 25 D–2015

(A) ऋग्वेदेन (B) शुक्लयजुर्वेदेन
(C) कृष्णयजुर्वेदेन (D) सामवेदेन

स्रोत–*संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास (द्वितीय-खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/ओमप्रकाश पाण्डेय, पेज–75*

123. शुक्लयजुर्वेद का श्रौतसूत्र है–
UGC 73 D–2005 J–2013

(A) आपस्तम्बश्रौतसूत्रम् (B) बौधायनश्रौतसूत्रम्
(C) मानवश्रौतसूत्रम् (D) कात्यायनश्रौतसूत्रम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–92

124. 'वैतानश्रौतसूत्र' से सम्बन्धित है– BHU MET–2015

(A) अथर्ववेद (B) शुक्लयजुर्वेद
(C) सामवेद (D) कृष्णयजुर्वेद

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–92

125. कल्पसूत्रं किम्– UK SLET–2012

(A) श्रौतसूत्रम् (B) शुल्बसूत्रम्
(C) गृह्यसूत्रम् (D) उपर्युक्तं सर्वम्

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–214*

व्याकरण-वेदाङ्ग

126. (i) 'प्रधानञ्च षट्स्वङ्गेषु' किम्? UGC 73 D–2011
(ii) षट् वेदाङ्ग में प्रधान है– UGC 25 J–2015

(A) शिक्षा (B) कल्प
(C) व्याकरणम् (D) ज्योतिष

वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–, पेज–180

127. वेद का मुख है– UGC 73 S–2013, UGC 25 J–1994 2000, 2011, D–1998, 1999, 2001, 2002

(A) ज्योतिषम् (B) छन्दः
(C) निरुक्तम् (D) व्याकरणम्

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–194*

128. (i) व्याकरण को वेद का .... कहते हैं।
(ii) वेदाङ्गेषु 'व्याकरणम्' उपमीयते–
UGC 25 J–2006, 2007, BHU MET–2011, 2012

(A) हस्तेन (B) मुखेन
(C) पादेन (D) चक्षुषा

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–194*

129. (i) वेदशरीरे व्याकरणशास्त्रस्य स्थानमस्ति–
(ii) व्याकरणं वेदपुरुषस्य कीदृशम् अङ्गं भवति–
BHU AET–2012, JNU MET–2015

(A) हस्तः (B) मुखम्
(C) पादः (D) नासिका

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–194*

130. ''ऊहः खल्वपि'' इति कस्य प्रयोजनम् अस्ति–
UGC 25 J–2011

(A) कल्पवेदाङ्गस्य (B) ज्योतिषवेदाङ्गस्य
(C) निरुक्तवेदाङ्गस्य (D) व्याकरणवेदाङ्गस्य

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–194*

131. पदानां प्रकृतेः प्रत्ययस्य च उपदेशकं वेदाङ्गम् अस्ति–
UGC 25 D–2011

(A) कल्पम् (B) शिक्षा
(C) व्याकरणम् (D) छन्दः

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–193*

132. (i) वेदभगवतः मुखत्वेनोपमीयते?
(ii) वेदपुरुष का 'मुख' किसे कहते हैं?
BHU MET–2011, 2012

(A) छन्द (B) कल्प
(C) व्याकरण (D) ज्योतिष

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–194*

133. वेदाङ्गेषु किं शास्त्रं शब्दशास्त्रं कथ्यते–
BHU AET–2012

(A) निरुक्तम् (B) ज्योतिषम्
(C) छन्दः (D) व्याकरणम्

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–193*

122. (C) 123. (D) 124. (A) 125. (D) 126. (C) 127. (D) 128. (B) 129. (B) 130. (D) 131. (C) 132. (C) 133. (D)

134. 'वेदाङ्गेषु' कस्य मुख्यत्वम्? BHU AET–2012

(A) व्याकरणस्य (B) शिक्षायाः
(C) निरुक्तम् (D) कल्पस्य

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–194*

135. वैदिकवाङ्मये ध्वनिविज्ञानस्य प्राचीनं नाम अस्ति– UP GIC–2015

(A) शिक्षा (B) व्याकरणम्
(C) निरुक्तम् (D) कल्पः

स्रोत–*(i) वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–193*
(ii) भाषाविज्ञान - कर्णसिंह, पेज–134

निरुक्त-वेदाङ्ग

136. निरुक्त होता है–
निरुक्त का प्रतिपाद्य विषय है– UGC 73 J–2014, BHU AET–2011

(A) दशविधम् (B) त्रिविधम्
(C) नवविधम् (D) पञ्चविधम्

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–206*

137. निरुक्ते एकस्य पदस्य बह्वर्थमादाय किं काण्डं प्रवर्तते– UGC 25 J–2014

(A) नैघण्टुकम् (B) दैवतम्
(C) नैगमम् (D) उत्तरषट्कम्

स्रोत–*हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज–(भू0) 11*

138. निघण्टु-शब्देनोच्यते– UGC 25 J–2014

(A) वैदिकशब्दकोशः (B) निरुक्तम्
(C) निधानम् (D) कारकम्

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–204*

139. निरुक्तानुसारं द्वितीयो भावविकारः कः– UGC 25 J–2014

(A) अस्ति (B) विपरिणमते
(C) अपक्षीयते (D) विनश्यति

स्रोत–*हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज–23*

140. अग्रणीर्भवति इति निरुक्त्या क उच्यते– UGC 25, J–2014

(A) वीरः (B) आदित्यः
(C) अश्वः (D) अग्निः

स्रोत–*हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज–301*

141. 'निरुक्त' किसका अङ्ग है– UGC 25 J–2002

(A) व्याकरण का (B) वेद का
(C) उपनिषद् का (D) भाषा का

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–190*

142. (i) परिशिष्टभाग को छोड़कर निरुक्त में कितने अध्याय हैं– UGC 25 D–2013, BHU AET–2011
(ii) निरुक्तग्रन्थे कियन्तः अध्यायाः सन्ति (परिशिष्टं विहाय)– BHU MET 2008, 2009, 2013

(A) 6 (B) 12
(C) 14 (D) 17

स्रोत–*हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज–भू0 25*

143. निरुक्तेऽस्ति– UGC 25 D–2004

(A) वेदमन्त्राणां सङ्ग्रहः (B) वैदिकयज्ञानां प्रक्रिया
(C) वेदमन्त्राणां स्वरविवेचनम् (D) वैदिकशब्दानां निर्वचनम्

स्रोत–*हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज–165*

144. निरुक्तशब्दे को धातुरस्ति– BHU AET–2011

(A) सिद् (B) अद्
(C) वच् (D) नी

स्रोत–*संस्कृत-हिन्दी-कोश - वामन शिवराम आप्टे, पेज–535*

145. (i) श्रौतस्थानीयं वेदाङ्गं निरूपितमस्ति–
(ii) वेदपुरुषस्य' श्रोत्रं किमस्ति– BHU AET–2011, UGC 25 D–2013, 2015

(A) गृह्यसूत्रम् (B) प्रातिशाख्यम्
(C) निरुक्तम् (D) कल्पसूत्रम्

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–190*

134. (A) 135. (A) 136. (D) 137. (C) 138. (A) 139. (A) 140. (D) 141. (B) 142. (B) 143. (D) 144. (C) 145. (C)

146. यास्कमते पदभेदाः सन्ति? JNU MET–2015

(A) चत्वारः (B) पञ्च
(C) त्रिविधः (D) द्वौ

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–206

147. यास्कमते कति पदजातानि सन्ति– UGC 25 D–2005

(A) पञ्च (B) त्रीणि
(C) चत्वारि (D) सप्त

वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–206

148. 'नैगमकाण्डं' कुत्र वर्तते– UGC 25 J–2006

(A) कल्पे (B) निरुक्ते
(C) ज्योतिषे (D) व्याकरणे

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–204

149. आख्यातस्य लक्षणं कुत्र वर्तते– UGC 25 J–2007

(A) शिक्षायाम् (B) ज्योतिषे
(C) छन्दसि (D) निरुक्ते

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–207

150. देवतानां स्थानानि वर्णितानि सन्ति– UGC 25 D–2007

(A) व्याकरणे (B) शिक्षायाम्
(C) कल्पे (D) निरुक्ते

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–204

151. वेदाङ्गेषु निरुक्तं भवति– UGC 25 D–2007

(A) मुखम् (B) श्रोत्रम्
(C) घ्राणम् (D) पादः

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–190

152. नैघण्टुकं काण्डं वर्तते– UGC 25 J–2012

(A) शिक्षायाम् (B) शुल्बसूत्रे
(C) छन्दःसूत्रे (D) निघण्टुग्रन्थे

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–205

153. अर्थप्रधानं वर्तते– UGC 25 J–2012

(A) निरुक्तम् (B) छन्दः
(C) शिक्षा (D) कल्पः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज–93

154. निरुक्तानुसारं पञ्चमो भावविकारः कः? UGC 25 J–2012

(A) जायते (B) अपक्षीयते
(C) वर्धते (D) विनश्यति

स्रोत–हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज–23

155. 'समुद्द्रवन्त्यस्मादापः' इत्यनेन को निर्दिश्यते– UGC 25 J–2012

(A) मेघः (B) ह्रदः
(C) समुद्रः (D) नदी

स्रोत–हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज–214

156. (i) यास्कीय–निरुक्तग्रन्थे काण्डानि विद्यते?
(ii) निरुक्तग्रन्थे काण्डसंख्या वर्तते– UGC 25 D–2012, 2015

(A) चतुर्दश (B) द्वादश
(C) पञ्च (D) त्रीणि

स्रोत–हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज–भूमिका-11

157. निरुक्तानुसारं तृतीयो भावविकारः कः– UGC 25 D–2012

(A) अस्ति (B) वर्धते
(C) विनश्यति (D) विपरिणमते

स्रोत–हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज–23

158. 'अक्नोपनः' कः भवति– UGC 25 D–2012

(A) आदित्यः (B) अश्वः
(C) अग्निः (D) आचार्यः

स्रोत–हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज–301

159. (i) व्याकरण का कात्स्न्र्य है–
(ii) ''व्याकरणस्य कात्स्न्र्यम्'' किमस्ति– UGC 25 J–2013, UGC 73 J–2013

(A) छन्दशास्त्रम् (B) निरुक्तम्
(C) ज्योतिषम् (D) कल्पसाहित्यम्

स्रोत–हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज–125

146. (A) 147. (C) 148. (B) 149. (D) 150. (D) 151. (B) 152. (D) 153. (A) 154. (B) 155. (C) 156. (D) 157. (D) 158. (C) 159. (B)

160. निघण्टु में कितने काण्ड हैं? BHU MET–2009

(A) 2 (B) 3
(C) 4 (D) 5

***स्रोत**–संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज–93*

161. ''इन्द्रियनित्यं वचनमौदुम्बरायणः'' का पाठ जिसमें है, वह ग्रन्थ है? BHU MET–2014

(A) वाक्यपदीय (B) महाभाष्य
(C) निरुक्त (D) अष्टाध्यायी

***स्रोत**–हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज–18*

162. वेदाङ्गेषु किं व्याकरणस्य पूरकं भवति– HE–2015

(A) शिक्षा (B) कल्पः
(C) निरुक्तम् (D) ज्योतिषम्

***स्रोत**–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–185*

163. निरुक्ते 'षड्भावविकाराः' कस्य सिद्धान्तः–HE–2015

(A) कौत्सस्य (B) शाकपूणेः
(C) वार्ष्यायणेः (D) गार्ग्यस्य

***स्रोत**–हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज–23*

164. 'आचार्य'-शब्दनिर्वचनेषु कतमं निर्वचनं निरुक्तसम्मतं नास्ति– HE–2015

(A) आचारं ग्रहृणाति (B) आचारं ग्राहयति
(C) आचिनोत्यर्थान् (D) आचिनोति बुद्धिम्

***स्रोत**–हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज–35*

165. निरुक्तकारः 'समुद्र'-पदस्य कतिविधं निर्वचनं करोति? HE–2015

(A) त्रिविधम् (B) चतुर्विधम्
(C) पञ्चविधम् (D) सप्तविधम्

***स्रोत**–हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज–214*

166. यास्कानुसारं पदं– BHU AET–2010

(A) षड्विधम् (B) पञ्चविधम्
(C) त्रिविधम् (D) चतुर्विधम्

***स्रोत**–हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज–100*

167. निरुक्ते कीदृशो विधिः स्वीकृतः– BHU AET–2010

(A) सन्धिः (B) व्युत्पत्तिः
(C) समासः (D) निर्वचन

***स्रोत**–हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज–165*

168. (i) निरुक्तं नाम– BHU AET–2010
(ii) निरुक्तमस्ति– CCSUM-Ph.D–2016

(A) व्याकरणम् (B) प्रमाणम्
(C) निर्वचनविज्ञानम् (D) वचनम्

***स्रोत**–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–203*

169. यास्कानुसारेण 'निरुक्तस्य' मूलग्रन्थः– BHU AET–2010

(A) संग्रहः (B) संहिता
(C) सञ्चयनम् (D) निघण्टुः

***स्रोत**–हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज–भू0-23*

170. 'निघण्टु'-ग्रन्थे विद्यमानाः काण्डाः– BHU AET–2010

(A) 3 (B) 4
(C) 6 (D) 2

***स्रोत**–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज–93*

171. निरुक्ते विषयान् प्रतिपादयति– BHU AET–2010

(A) कात्यायनः (B) यास्कः
(C) पाणिनिः (D) गौतमः

***स्रोत**–हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज–भू0-13*

172. निघण्टुग्रन्थे कति अध्यायाः सन्ति? BHU AET–2011, 2012, 2015

(A) 5 (B) 7
(C) 10 (D) 12

***स्रोत**–हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज–भू0-25*

173. निरुक्तस्य वर्ण्यविषयः कः? BHU AET–2011

(A) निर्वचनम् (B) दानम्
(C) अश्वमेधः (D) पितृमेधः

***स्रोत**–हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज–165*

174. कौत्सानुसारेण मन्त्राः कीदृशाः– BHU AET–2012

(A) अर्थवन्तः (B) अनर्थकाः
(C) उभयम् (D) निरर्थकाः

***स्रोत**–निरुक्त - छज्जूराम शास्त्री, पेज–42*

160. (B) 161. (C) 162. (C) 163. (C) 164. (A) 165. (C) 166. (D) 167. (D) 168. (C) 169. (D) 170. (A) 171. (B) 172. (A) 173. (A) 174. (B)

175. यास्कमते आख्यातलक्षणं किं?
BHU AET– 2010, 2011, 2012

(A) भावप्रधानः (B) सत्त्वप्रधानः
(C) धातुप्रधानः (D) शब्दप्रधानः

स्रोत–हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज–10

176. (i) यास्कानुसारं 'नाम' कीदृशं भवति–
(ii) यास्कमते 'नाम्नः' लक्षणं किम्–
BHU AET–2011, 2012

(A) भावप्रधानः (B) सत्त्वप्रधानः
(C) धातुप्रधानः (D) शब्दप्रधानः

स्रोत–हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज–10

177. अधोलिखितेषु सन्दर्भेषु निर्वचनं नास्ति–
BHU AET–2011

(A) समुद्द्रवन्ति अस्मादापः (B) समभिद्रवन्ति एनमापः
(C) समुद्यन्ति एनमापः (D) समुदको भवति

हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज–214

178. जातवेदाः इत्यस्य निर्वचनं नास्ति– BHU AET–2011

(A) जातं वेदयति (B) जातानि वेद
(C) जातानि एनं विदुः (D) जाते-जाते विद्यते

स्रोत–हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज–309

179. 'विश्वान् नरान् नयति' कस्य निर्वचनम् अस्ति?
BHU AET–2011

(A) विश्वकर्मा (B) विश्वामित्रः
(C) वैश्यः (D) वैश्वानरः

स्रोत–निरुक्त - छज्जूराम शास्त्री, पेज–362

180. निरुक्तं कस्य ग्रन्थस्य व्याख्यारूपेणास्ति?
BHU AET–2010, 2012

(A) निघण्टोः (B) गीतायाः
(C) अष्टाध्याय्याः (D) ऋक्प्रातिशाख्यम्

स्रोत–हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज–भू-23

181. निघण्टुग्रन्थः कीदृशोऽस्ति– BHU AET–2010

(A) छन्दसंकलनात्मकः (B) अर्थसंकलनात्मकः
(C) शब्दसंकलनात्मकः (D) पद्यसंकलनात्मकः

स्रोत–हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज–भू-23

182. कस्मिन् वेदाङ्गे निर्वचनं प्राप्यते? BHU AET–2012

(A) कल्पे (B) व्याकरणे
(C) ज्योतिषे (D) निरुक्ते

स्रोत–हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज–165

183. सामान्यतया निरुक्ताध्यायानां संख्या कति मन्यते?
BHU AET–2012

(A) दश (B) चतुर्दश
(C) विंशतिः (D) एकविंशतिः

स्रोत–हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज–भू0-25

184. यास्करचितस्य निरुक्तस्य आधारग्रन्थः कोऽस्ति?
BHU AET–2012

(A) संहिता (B) ब्राह्मणम्
(C) निघण्टुः (D) कल्पः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज–93

185. निरुक्तानुसारं चत्वारि 'शृङ्गा' इत्यस्य कोऽभिप्रायः?
BHU AET–2012

(A) चत्वारो देवाः (B) चत्वारो पुरुषार्थाः
(C) चत्वारो वेदाः (D) चत्वारो जनाः

स्रोत–निरुक्त - छज्जूराम शास्त्री, पेज–587

186. 'निरुक्तं' किमस्ति– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011

(A) वेदः (B) महाकाव्यम्
(C) वेदाङ्गम् (D) उपनिषद्

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–190

187. निरुक्तेऽस्ति– UK SLET–2015

(A) वेदमन्त्राणां संग्रहः (B) वैदिकशब्दानां निर्वचनम्
(C) वेदमन्त्राणां स्वरविवेचनम् (D) वैदिकयज्ञानां प्रक्रिया

स्रोत–हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज–165

175. (A) 176. (B) 177. (C) 178. (A) 179. (D) 180. (A) 181. (C) 182. (D) 183. (B) 184. (C) 185. (C) 186. (C) 187. (B)

188. 'आचारं ग्राह्यति' कस्य निर्वचनम्– UK SLET–2015

(A) वीरस्य (B) आचार्यस्य
(C) आदित्यस्य (D) अग्नेः

स्रोत–*हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज–35*

189. भाव-काल-कारक-संख्याश्च इति चत्वारः अर्थाः भवन्ति– UGC 25 D–2014

(A) नाम्नः (B) निपातस्य
(C) उपसर्गस्य (D) आख्यातस्य

स्रोत–*हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज–12*

190. वैदिकशब्दानां सविस्तरं विवेचनं कुत्र उपलभ्यते? UGC 25 D–2014

(A) व्याकरणे (B) कल्पे
(C) निरुक्ते (D) शिक्षायाम्

स्रोत–*हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज–165*

191. अर्थावबोधे निरपेक्षतया पदजातं यत्रोक्तं तत्– UGC 25 D–2014

(A) निरुक्तम् (B) व्याकरणम्
(C) छन्दः (D) ज्योतिषम्

स्रोत–*हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज–भू.-11*

192. 'निघण्टु' इति वैदिककोशस्य भाष्यरूपेण अस्ति– UGC 25 D–2014

(A) छन्दसूत्रम् (B) महाभाष्यम्
(C) निरुक्तम् (D) शिक्षासूत्रम्

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–183*

193. 'उनत्तीति' निरुक्त्या अभिधीयते– UGC 25 D–2014

(A) उदक् (B) उषस्
(C) आदित्यः (D) अग्निः

स्रोत–*निरुक्त - छज्जूराम शास्त्री, पेज–107*

194. उच्छतीति निरुक्त्या उच्यते? UGC 25 S–2013

(A) वाक् (B) उषाः
(C) उदकम् (D) आदित्यः

स्रोत–*निरुक्त - छज्जूराम शास्त्री, पेज–99*

195. (i) कति भावविकाराः? UGC 25 D–2014, S–2013
(ii) यास्कमतेन कति भावविकाराः UGC 25 J–2008
(ii) भावविकार कितने हैं– UGC 73D–2008, 2010

(A) पञ्च (B) षट्
(C) सप्त (D) नव

स्रोत–*हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज–23*

196. यास्कीय-निरुक्तानुसारम् अस्य पदत्वेन स्वीकारः नास्ति? UGC 25 J–2013

(A) नाम्नः (B) उपसर्गस्य
(C) आख्यातस्य (D) प्रत्ययस्य

स्रोत–*हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज–8*

197. यजुर्यजतेः इति निरुक्तिः केन प्रदत्ता अस्ति– BHU AET–2011

(A) पाणिनिना (B) यास्केन
(C) कात्यायनेन (D) इन्द्रेण

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–63*

198. निरुक्तानुसारं चतुर्थो भावविकारः कः? UGC 25 S–2013

(A) अस्ति (B) विनश्यति
(C) अपक्षीयते (D) वर्धते

स्रोत–*हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज–23*

199. शुद्धं क्रमं चिनुत JNU MET–2014

(A) जायते-अस्ति-विपरिणमते-वर्धते
(B) वर्धते-जायते-विपरिणमते-अस्ति
(C) जायते-अस्ति-वर्धते-विपरिणमते
(D) अस्ति-जायते-विपरिणमते-वर्धते

स्रोत–*हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज–23*

200. यास्कमते पदभेदाः सन्ति– JNU MET–2014

(A) चत्वारः (B) पञ्च
(C) षट् (D) त्रयः

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–206*

188. (B) 189. (D) 190. (C) 191. (A) 192. (C) 193. (A) 194. (B) 195. (B) 196. (D) 197. (B) 198. (D) 199. (A) 200. (A)

201. वेदशरीरे निरुक्तशास्त्रस्य स्थानमस्ति– JNU MET–2014

(A) श्रोत्रवत् (B) चक्षुवत्
(C) घ्राणवत् (D) मुखवत्

***स्रोत**–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–190*

202. दुर्गाचार्य की व्याख्या से सम्बन्धित ग्रन्थ है? BHU MET–2015

(A) निरुक्त (B) योगसूत्र
(C) न्यायसूत्र (D) पाणिनिसूत्र

***स्रोत**–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–205*

203. 'समाम्नायः समाम्नातः' जिस ग्रन्थ का पहला वाक्य है, वह है? BHU MET–2015

(A) शतपथब्राह्मण (B) मनुस्मृति
(C) निरुक्त (D) शुक्लयजुर्वेद

***स्रोत**–हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज–01*

204. 'अध्वरं युनक्ति, अध्वरस्य नेता' इति वाक्यं कुत्र प्राप्यते? BHU AET–2012

(A) यजुर्वेदे (B) कठोपनिषदि
(C) अष्टाध्याय्याम् (D) निरुक्ते

***स्रोत**–हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज–73*

205. निघण्टोः शब्दराशेः निर्वचनाय वेदाङ्गोऽस्ति– UP GIC–2015

(A) व्याकरणम् (B) निरुक्तम्
(C) कल्पः (D) शिक्षा

***स्रोत**–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–184*

206. 'सत्त्वप्रधानम्' इति मन्यते– UGC 25 J–2015

(A) उपसर्गः (B) नाम
(C) आख्यातम् (D) निपातः

***स्रोत**–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–207*

207. ''तदिदं विद्यास्थानं व्याकरणस्य कात्स्न्र्यम्'' इत्यनेन लक्षितम्– UGC 25 J–2015

(A) कल्पः (B) छन्दः
(C) निरुक्तम् (D) ज्योतिष

***स्रोत**–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–185*

208. यास्कस्य उक्तिः अस्ति– UK SLET–2012

(A) तदिदं व्याकरणस्य कात्स्न्र्यम् (B) अथ शब्दानुशासनम्
(C) नियतिकृतनियमरहिताम् (D) पूर्णमदः पूर्णमिदम्

***स्रोत**–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–185*

209. 'यद् दूरङ्गता भवति' इति निरुक्त्या किम् उपलक्ष्यते? UGC 25 J–2015

(A) गौः (B) समुद्रः
(C) नदी (D) मेघः

***स्रोत**–हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज–193*

210. निरुक्तशास्त्रे 'अर्थनित्यः परीक्षेत' इति प्राप्यते– JNU M.Phil/Ph.D–2015

(A) प्रथमाध्याये (B) द्वितीयाध्याये
(C) तृतीयाध्याये (D) द्वादशाध्याये

***स्रोत**–निरुक्त - छज्जूराम शास्त्री, पेज–61*

211. भावप्रधानं भवति– UGC 25 J–2014

(A) व्याख्यानम् (B) आख्यातम्
(C) कारकम् (D) क्रियापदम्

***स्रोत**–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–207*

212. निघण्टोः चतुर्थाध्यायः केन नाम्ना ज्ञायते– BHU AET–2012

(A) नैघण्टुकनाम्ना (B) दैवतनाम्ना
(C) नैगमनाम्ना (D) नैरुक्तनाम्ना

***स्रोत**–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–205*

213. निघण्टोः पञ्चमाध्यायाः केन नाम्ना ज्ञायते? BHU AET–2012

(A) नैघण्टुकनाम्ना (B) नैगमनाम्ना
(C) दैवतनाम्ना (D) नैरुक्तनाम्ना

***स्रोत**–निरुक्तम्-आचार्य विश्वेश्वर, पेज–02*

214. 'चित्' इति निपातो वर्तते– UGC 25 D–2012, J–2012

(A) कुत्सार्थे (B) निषेधार्थे
(C) अभावार्थे (D) विकल्पार्थे

***स्रोत**–हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज–40*

201. (A) 202. (A) 203. (C) 204. (D) 205. (B) 206. (B) 207. (C) 208. (A) 209. (A) 210. (B) 211. (B) 212. (C) 213. (C) 214. (A)

215. पादपूरणार्थकः निपातः अस्ति– UGC 25 J–2015

(A) इत् (B) च
(C) ननु (D) इव

स्रोत–*हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज–93*

216. 'वा' इति निपातो वर्तते– UGC 25 S–2013

(A) निषेधार्थे (B) उपमार्थे
(C) विचारणार्थे (D) प्रयोगार्थे

स्रोत–*हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज–48*

217. षड्भावविकाराणां चर्चामकरोत्– UP GDC–2012

(A) शाकटायनः (B) भागुरिः
(C) यास्कः (D) वार्ष्यायणिः

स्रोत–*हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज–23*

218. यास्कः– BHU AET–2010

(A) निरुक्तकारः (B) सूत्रकारः
(C) भाष्यकारः (D) कविः

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–183*

219. यास्क का सम्बन्ध है? UP PGT–2005

(A) निरुक्त से (B) प्रातिशाख्य से
(C) महाभाष्य से (D) प्राचीनव्याकरण से

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–183*

220. निर्वचनसिद्धान्त-प्रतिपादकं वेदाङ्गं विद्यते– UGC 25 D–2015

(A) कल्पशास्त्रम् (B) छन्दःशास्त्रम्
(C) शिक्षा (D) निरुक्तम्

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–184*

221. निरुक्तशास्त्रसम्मताः देवताः सन्ति?– JNU M.Phil/Ph. D–2014

(A) एकादश (B) त्रयस्त्रिंशत्
(C) कोटिशः (D) तिस्रः

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–186*

छन्द-वेदाङ्ग

222. निम्न में से कौन सा वेदाङ्ग है– UGC 25 D–1998

(A) आरण्यक (B) छन्दस्
(C) ब्राह्मण (D) उपनिषद्

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–190*

223. वेदाङ्ग 'छन्दस्' के प्रणेता हैं– UGC 25 D–1999

(A) वेदव्यास (B) श्वेतकेतु
(C) पिङ्गल (D) जैमिनि

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–199*

224. किस वेदाङ्ग को पाद कहा गया है– BHU MET–2008, 2010

(A) छन्द (B) ज्योतिष
(C) कल्प (D) व्याकरण

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–190*

225. (i) वेदाङ्ग में 'छन्दस्' कहलाता है?
(ii) छन्दशास्त्रं वेदस्य किमङ्गं विद्यते?
(iii) वेदाङ्गेषु छन्दः उपमीयते–
BHU AET–2010, DSSSB TGT–2014
UGC 25 J–1998, 2012, D–2009

(A) पादः (B) हस्तः
(C) नासिका (D) मुखम्

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–190*

226. पिङ्गलच्छन्दःसूत्रे वर्ण्यविषयः कः? BHU AET–2011

(A) छन्दः (B) यज्ञः
(C) अर्थवादः (D) मन्त्रः

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–199, 200*

227. (i) परम्परानुसारं कः देवः छन्दशास्त्रस्य प्रवर्तको मन्यते?
(ii) छन्दसूत्रम् इति वेदाङ्गग्रन्थस्य प्रणेता विद्यते–
BHU AET–2012, UGC 25 D–2015

(A) शिवः (B) वरुणः
(C) पिङ्गलः (D) कालिदासः

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–199*

215. (A) 216. (C) 217. (D) 218. (A) 219. (A) 220. (D) 221. (D) 222. (B) 223. (C) 224. (A)
225. (A) 226. (A) 227. (C)

228. किं शास्त्रं वृत्तशास्त्रं कथ्यते? BHU AET–2012

(A) व्याकरणम् (B) ज्योतिषम्
(C) छन्दः (D) निरुक्तम्

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–199*

229. वैदिकमन्त्रोच्चारणप्रयोजनार्थं कस्य वेदाङ्गस्य अध्ययनम् अनिवार्यम्? UGC 25 D–2015

(A) छन्दसः (B) कल्पस्य
(C) ज्योतिषस्य (D) निरुक्तस्य

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–199-200*

230. प्रसिद्धानि वैदिकछन्दांसि कति सन्ति? BHU AET–2010

(A) सप्त (B) चतुर्दश
(C) पञ्चदश (D) विंशतिः

स्रोत–*ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–28*

231. छन्दःशास्त्रे कस्य तत्त्वस्य गणना क्रियते? BHU AET–2010

(A) कालपरिमाणस्य (B) वर्णपरिमाणस्य
(C) अर्थपरिमाणस्य (D) अङ्कपरिमाणस्य

स्रोत–*ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–28*

232. गायत्री छन्द का सर्वाधिक प्रयोग किस वेद में हुआ है? H-TET–2015

(A) ऋग्वेद (B) सामवेद
(C) यजुर्वेद (D) अथर्ववेद

स्रोत–*ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–28*

233. (i) गायत्रीछन्दसि वर्णाः भवन्ति–
(ii) गायत्रीवृत्ते कति वर्णाः भवन्ति?
(iii) गायत्रीछन्दसि कति अक्षराणि भवन्ति?
(iv) गायत्रीछन्द में अक्षर होते हैं–
UGC 25 J–2003, 2012, BHU AET–2010
AWES TGT–2010, 2011

(A) 24 (चतुर्विंशतिः) (B) 32 (द्वात्रिंशत्)
(C) 36 (षट्त्रिंशत्) (D) 40 (चत्वारिंशत्)

स्रोत–*ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–28*

234. 'अग्निमीळे-----' इति सूक्तस्य छन्दः किम्? BHU AET–2011

(A) आसुरी (B) गायत्री
(C) प्रजापति (D) शक्वरी

स्रोत–*ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–55*

235. अस्यवामीयसूक्तस्य छन्दः किम्? BHU AET–2011

(A) गायत्री (B) प्रस्तारपंक्तिः
(C) आस्तारपंक्तिः (D) ज्योतिष्मती

संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (प्रथम-खण्ड) - बलदेव उपाध्याय, पेज–195, 199

236. गायत्रीच्छन्दः वर्तते– BHU AET–2011

(A) प्रथमसूक्तस्य (B) द्वितीयसूक्तस्य
(C) तृतीयसूक्तस्य (D) चतुर्थसूक्तस्य

स्रोत–*ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–55*

237. वरुणसूक्ते छन्दः वर्तते? RPSC ग्रेड-I PGT–2014

(A) गायत्री (B) अनुष्टुप्
(C) उद्गीथः (D) त्रिष्टुप्

स्रोत–*ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–68*

238. त्रिपादविराड्गायत्री-छन्दसि प्रतिपादं कत्यक्षराणि भवन्ति? BHU AET–2012

(A) एकादश (B) त्रयोदश
(C) पञ्चदश (D) अष्टादश

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–203*

239. गायत्री-छन्दसि कति पादाः भवन्ति? BHU AET–2012

(A) पञ्च पादाः (B) षट् पादाः
(C) सप्त पादाः (D) त्रयः पादाः

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–203*

240. वेदे 'गायत्री' एकम्– AWES TGT–2009

(A) मन्त्रः (B) स्त्रीपात्रः
(C) छन्दः (D) ऋषिः

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–203*

228. (C) 229. (A) 230. (A) 231. (B) 232. (A) 233. (A) 234. (B) 235. (A) 236. (A) 237. (A) 238. (A) 239. (D) 240. (C)

241. गायत्री कस्याभिधानम्– AWES TGT–2012

(A) मन्त्रस्य (B) छन्दसः

(C) प्रार्थनायाः (D) सन्ध्यायाः

***स्रोत**–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–203*

242. उष्णिक्वृत्ते कति वर्णाः भवन्ति?

BHU AET–2010, UGC 25 S–2013 D–2013

(A) 16 (B) 18

(C) 20 (D) 28

***स्रोत**–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–203*

243. अनुष्टुप्-छन्दसि प्रतिपादं कत्यक्षराणि– UGC 25 J–2008

(A) पञ्च (B) अष्ट

(C) दश (D) द्वादश

***स्रोत**–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–203*

244. अनुष्टुप्-छन्दसि कति पादाः भवन्ति– BHU AET–2010

(A) पञ्च (B) त्रयः

(C) चत्वारः (D) सप्तः

***स्रोत**–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–203*

245. निम्नलिखित में से कौन सा वेदाङ्ग पद्य रचना से जुड़ा है? UGC 06 J–2015

(A) शिक्षा (B) निरुक्त

(C) कल्प (D) छन्द

***स्रोत**–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–203*

246. (i) अनुष्टुप् छन्द में अक्षरों की संख्या कितनी है?

(ii) अनुष्टुप्वृत्ते कति वर्णाः भवन्ति–

BHU AET–2010, BHU MET–2012, UGC 73 J–2015

(A) 24 (B) 32

(C) 38 (D) 48

***स्रोत**–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–203*

247. द्वात्रिंशत् अक्षराणि भवन्ति– UGC 25 J–2015

(A) बृहतीछन्दसि (B) पंक्तिछन्दसि

(C) जगतीछन्दसि (D) अनुष्टुप्-छन्दसि

***स्रोत**–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–203*

248. (i) बृहती-छन्दसि कानि अक्षराणि भवन्ति?

(ii) बृहती छन्दसः अक्षरसंख्या–

BHU AET–2010, 2011, UGC 25 J–2013

(A) 28 (B) 32

(C) 36 (D) 40

***स्रोत**–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–203*

249. (i) त्रिष्टुप्-छन्दसि अक्षराणि कानि?

(i) त्रिष्टुप्-छन्दसि कियन्तो वर्णाः भवन्ति?

UGC 25 J–2005, 2014, D–2006, D–2015

BHU AET–2010, 2011

(A) 28 (B) 36

(C) 44 (D) 48

***स्रोत**–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–203*

250. वैदिकछन्दः– BHU AET–2010

(A) त्रिष्टुप् (B) उपेन्द्रवज्रा

(C) वसन्ततिलका (D) आर्या

***स्रोत**–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्त शास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–28, 29*

251. इन्द्रसूक्ते प्रयुक्तं छन्दो वर्तते–

RPSC ग्रेड-II TGT–2014

(A) गायत्री (B) त्रिष्टुप्

(C) जगती (D) अनुष्टुप्

***स्रोत**–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–83*

252. विष्णु (1.154) सूक्ते किं छन्दः प्रयुक्तः–

RPSC ग्रेड-I PGT–2014

(A) जगती (B) त्रिष्टुप्

(C) पंक्तिः (D) बृहती

***स्रोत**–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–164*

253. हिरण्यगर्भ-सूक्तस्य किं छन्दः? UGC 25 D–2013

(A) आर्षीनिचृद् (B) आसुरीगायत्री

(C) त्रिष्टुप् (D) पंक्तिः

***स्रोत**–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–405*

241. (B) 242. (D) 243. (B) 244. (C) 245. (D) 246. (B) 247. (D) 248. (C) 249. (C) 250. (A) 251. (B) 252. (B) 253. (C)

254. सरमा-पणि-सूक्तस्य छन्दो वर्तते– UGC 25 J–2009

(A) त्रिष्टुप् (B) जगती

(C) बृहती (D) विराड्गायत्री

स्रोत–*ऋग्वेद (भाग-4) - वेदान्ततीर्थ, पेज–463*

255. जगती-छन्दसि प्रतिपादं कति अक्षराणि भवन्ति? UGC 25 J–2006, 2014, D–2010

(A) दश (B) द्वादश

(C) षोडश (D) अष्ट

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–203*

256. जगती-वृत्ते कति वर्णाः भवन्ति? BHU AET–2010

(A) 24 (B) 28

(C) 32 (D) 48

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–203*

257. अतिजगती-वृत्ते कति वर्णाः भवन्ति– BHU AET–2010

(A) 24 (B) 32

(C) 52 (D) 70

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–203*

258. वैदिकछन्दसि कस्मिन्नपि पादे एकाक्षरन्यूनता अधिकतां कथयति– BHU AET–2011

(A) निचृत्/भुरिक् (B) विराड्/स्वरात्

(C) भुरिक्/विराड् (D) निचृत्/स्वराट्

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–203*

259. निपातस्य लक्षणमस्ति? CCSUM–Ph.D–2016

(A) उच्चावयाः पदार्था भवन्ति (B) भावप्रधानम्

(C) सत्त्वप्रधानानि (D) उच्चावचेष्वर्थेषु

स्रोत–*हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज–33*

260. 'इन्द्रियनित्यम्' वचनमस्ति– CCSUM–Ph.D–2016

(A) कौत्सस्य (B) औदुम्बरायणस्य

(C) वार्ष्यायणेः (D) शाकपूणेः

स्रोत–*हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज–18*

261. यज्ञयागादिविधानानि प्राप्यन्ते वेदाङ्गे– CCSUM–Ph.D–2016

(A) व्याकरणे (B) कल्पे

(C) निरुक्ते (D) ज्योतिषशास्त्रे

स्रोत–*संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–91*

254. (A) 255. (B) 256. (D) 257. (C) 258. (A) 259. (D) 260. (B) 261. (B)

10. ज्योतिष

1. (i) वेद का नेत्र है– UGC 73 D–2004, J–2012, 2015
(ii) वेदपुरुषस्य नेत्रमस्ति– UGC 25 D–1996
(ii) किस वेदाङ्ग को 'चक्षु' कहा जाता है– 2004, J–2003, BHU AET–2011
(A) शिक्षा (B) कल्पः
(C) ज्योतिषम् (D) निरुक्तम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–85

2. (i) वेदाङ्गेषु ज्योतिषमस्ति– UGC 25 D–2008
(ii) वेदाङ्गेषु ज्योतिषमुपमीयते– BHU AET–2012
(A) हस्तेन (B) मुखेन
(C) पादेन (D) चक्षुषा

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–85

3. यज्ञकालनिर्णयार्थं कस्य वेदाङ्गस्य उपयोगः– UGC 25 D–2008
(A) कल्पस्य (B) ज्योतिषस्य
(C) शिक्षायाः (D) निरुक्तस्य

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–90

4. (i) वेदपुरुषस्य चक्षुः किम्?
(ii) वेद का 'चक्षु' कहा जाने वाला वेदाङ्ग कौन है?
BHU MET–2010, UP TGT–2002, BHU AET–2011
(A) व्याकरण (B) निरुक्त
(C) ज्योतिष (D) शिक्षा

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–85

5. कालविधानशास्त्रं किं कथ्यते– BHU AET–2010
(A) कल्पः (B) निरुक्तम्
(C) व्याकरणम् (D) ज्योतिषम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–90

6. ज्योतिषशास्त्रस्य स्कन्धाः सन्ति– BHU AET–2012
(A) त्रयः (B) चत्वारः
(C) षट् (D) सप्त

स्रोत*–मुहूर्तचिन्तामणि - विन्ध्येश्वरीप्रसाद द्विवेदी, पेज–659*

7. वेदस्य किं नयनम्– BHU Sh.ET–2011
(A) ज्योतिषम् (B) छन्दः
(C) व्याकरणम् (D) कल्पः

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–85

8. चन्द्रस्योच्चराशिः अस्ति– UGC 73 D–2004, 2008, J–1998
(A) मेषः (B) वृषः
(C) मिथुनः (D) कर्कः

स्रोत*–बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् - सुरेशचन्द्र मिश्र, पेज–33*

9. अष्टोत्तरीदशायां वर्षसंख्या भवति? UGC 73 D–1997, 1999, 2004
(A) 80 (B) 108
(C) 100 (D) 120

स्रोत*–ज्योतिषशास्त्र-प्रशिक्षक - गिरिजाशङ्कर शास्त्री, पेज–56*

10. गृहप्रवेशः अस्मिन् वारे न भवति? UGC 73 D–2004
(A) चन्द्रवारे (B) बुधवारे
(C) भौमवारे (D) गुरुवारे

स्रोत*–मुहूर्तचिन्तामणि - विन्ध्येश्वरीप्रसाद द्विवेदी, पेज–26*

11. मुहूर्तचिन्तामणेः कर्ताऽस्ति। UGC 73 D–2004
(A) नीलकण्ठदैवज्ञः (B) गणेशदैवज्ञः
(C) रामदैवज्ञः (D) अनन्तदैवज्ञः

स्रोत*–मुहुर्तचिन्तामणि - विन्ध्येश्वरीप्रसाद द्विवेदी, पेज–भूमिका 7*

1. (C) 2. (D) 3. (B) 4. (C) 5. (D) 6. (A) 7. (A) 8. (B) 9. (B) 10. (C) 11. (C)

12. (i) चन्द्रग्रहणं कदा भवति? UGC 73 D–1992, 1994,
(ii) चन्द्रग्रहणं सम्भवति। 2004, 2005, 2008, 2011, J–2006, BHU AET–2010

(A) अमावस्यायाम्
(B) पूर्णिमायाम्
(C) संक्रान्तौ
(D) पूर्णिमायां शराभावे (पूर्णिमायां प्रतिपत्सन्धौ)

***स्रोत**–संस्कृतपरम्परागतविषय - शत्रुघ्न त्रिपाठी, पेज–26*

13. सौरवर्षे दिनानि भवन्ति– UGC 73 D–2004

(A) 354 (B) 360
(C) 358 (D) 365

***स्रोत**–संस्कृतपरम्परागतविषय - शत्रुघ्न त्रिपाठी, पेज–25*

14. गणेशः कस्य तिथेः स्वामी भवति– UGC 73 D–2004

(A) प्रतिपदायाः (B) द्वितीयायाः
(C) तृतीयायाः (D) चतुर्थ्याः

मुहूर्तचिन्तामणि (शुभाशुभप्रकरणम्) - विन्ध्येश्वरीप्रसाद द्विवेदी, पेज–11

15. उत्तरमन्वेषणीयम्– UGC 73 D–2004

R-जन्माङ्गचक्रस्य नवमभावाद् भाग्यविचारः क्रियते
S-जन्माङ्गचक्रस्य द्वादशभावात् सन्ततिविचारः क्रियते

(A) R अशुद्धः, S शुद्धः (B) R शुद्धः, S अशुद्धः
(C) उभावशुद्धौ (D) उभौ शुद्धौ

***स्रोत**–ज्योतिषशास्त्रप्रशिक्षक - गिरिजाशङ्कर शास्त्री, पेज–176*

16. (i) नक्षत्राणि कति स्वीकृतानि? UGC 73 J–2005, 2007
(ii) नक्षत्राणां संख्याऽस्ति– D–2012, BHU Sh-ET–2013

(A) द्वादश (12) (B) विंशतिः (20)
(C) सप्तविंशतिः (27) (D) चतुर्दश (14)

***स्रोत**–ज्योतिषशास्त्रप्रशिक्षक - गिरिजाशङ्कर शास्त्री, पेज–11*

17. बुधस्योच्चराशिरस्ति– UGC 73 J–2005, D–1994

(A) कन्या (B) मिथुनः
(C) धनुः (D) मीनः

***स्रोत**–संस्कृतपरम्परागतविषय - शत्रुघ्न त्रिपाठी, पेज–1*

18. नियतसमये संस्कारो भवति– UGC 73 J–2005

(A) उपनयनम् (B) नामकरणम्
(C) चूडाकरणम् (D) विवाहः

***स्रोत**–मुहुर्तचिन्तामणि - विन्ध्येश्वरीप्रसाद द्विवेदी, पेज–239*

19. चन्द्रग्रहणस्य मोक्षः कस्यां दिशि भवति– UGC 73 J–2005

(A) पश्चिमायाम् (B) पूर्वस्याम्
(C) उत्तरस्याम् (D) दक्षिणस्याम्

***स्रोत**–संस्कृतपरम्परागतविषय - शत्रुघ्न त्रिपाठी, पेज–35*

20. सूर्यग्रहणे छादको भवति– UGC 73 J–2005, UGC 73 D–2013

(A) पृथिवी (B) भौमः
(C) राहुः (D) चन्द्रः

***स्रोत**–मुहूर्तचिन्तामणि - विन्ध्येश्वरीप्रसाद द्विवेदी, पेज–37*

21. सावनदिवसस्य स्वरूपं किम्? UGC 73 J–2005

(A) सूर्यस्यैकांशभोगकालमितम्
(B) सूर्योदयादपरसूर्योदयं यावत्
(C) सूर्यचन्द्रयोर्द्वादशांशान्तरमितम्
(D) षष्टिघट्यात्मकम्

***स्रोत**–संस्कृतपरम्परागतविषय - शत्रुघ्न त्रिपाठी, पेज–32*

22. शनेरधः कस्य ग्रहस्य कक्षास्ति? UGC 73 J–2005

(A) शुक्रस्य (B) बुधस्य
(C) सूर्यस्य (D) गुरोः

***स्रोत**–मुहूर्तचिन्तामणि - विन्ध्येश्वरीप्रसाद द्विवेदी, पेज–13*

23. स्थिरराशयो भवन्ति– UGC 73 J–2005

(A) कन्यातुलामकरमीनराशयः
(B) वृषमिथुनधनुमकरराशयः
(C) वृषसिंहवृश्चिककुम्भराशयः
(D) मेषमिथुनधनुकर्कराशयः

***स्रोत**–ज्योतिषशास्त्रप्रशिक्षक - गिरिजाशङ्कर शास्त्री, पेज–91*

12. (D) 13. (D) 14. (D) 15. (B) 16. (C) 17. (A) 18. (B) 19. (A) 20. (D) 21. (B) 22. (D) 23. (C)

24. नक्षत्रेषु हस्तनक्षत्रस्य संख्या कतमा? UGC 73 D–2005

(A) एकादशी (B) द्वादशी
(C) त्रयोदशी (D) चतुर्दशी

स्रोत–*मुहुर्तचिन्तामणि - विन्ध्येश्वरीप्रसाद द्विवेदी, पेज–77*

25. गोपालस्य राशिः कः? UGC 73 D–2005

(A) मकरः (B) मीनः
(C) कुम्भः (D) मेषः

स्रोत–*मुहुर्तचिन्तामणि - विन्ध्येश्वरीप्रसाद द्विवेदी, पेज–363*

26. वैदिककाले नक्षत्रगणना कस्मात् नक्षत्रात् प्रारभ्यते स्म? UGC 73 D–2005

(A) कृत्तिकायाः (B) स्वातीतः
(C) अश्विनीतः (D) चित्रातः

स्रोत–*भारतीय ज्योतिष का इतिहास - गोरखप्रसाद, पेज–31*

27. अभिजिन्नक्षत्रसंख्या का? UGC 73 D–2005

(A) सप्तविंशतिः (B) षड्विंशतिः
(C) अष्टाविंशतिः (D) पञ्चविंशतिः

स्रोत–*ज्योतिषशास्त्र-प्रशिक्षक - गिरिजाशङ्कर शास्त्री, पेज–68*

28. ग्रहणे स्पर्शकालतो मध्यग्रहणं यावत् कालस्य नाम किम्? UGC 73 D–2005

(A) स्थित्यर्धघटी (B) विमर्दघटी
(C) स्थितिघटी (D) विमर्दार्धघटी

स्रोत–*सूर्यसिद्धान्त - रामचन्द्र पाण्डेय, पेज–172*

29. महायुगानां सौरवर्षात्मकं कियन्मितम्? UGC 73 D–2005

(A) 432000 (B) 4320000
(C) 43200000 (D) 43200

स्रोत–*संस्कृतपरम्परागतविषय - शत्रुघ्न त्रिपाठी, पेज–34*

30. दिव्यमहोरात्रम्भवति– UGC 73 D–2005

(A) षण्मासात्मकम् (B) सौरवर्षात्मकम्
(C) सूर्यसङ्क्रान्तिमितम् (D) चन्द्रवर्षमितम्

स्रोत–*संस्कृतपरम्परागतविषय - शत्रुघ्न त्रिपाठी, पेज–25*

31. सूर्यस्य उच्चराशिः अस्ति– BHU AET–2012, UGC 73 J–2006, 2012 D–2015

(A) मेषः (B) वृषः
(C) मिथुनः (D) कर्कः

स्रोत–*बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् - सुरेशचन्द्र मिश्र, पेज–33*

32. विंशोत्तरी-दशायां वर्षाणि भवन्ति– UGC 73 J–1999, 2006, 2011, D–1994, 2008

(A) 36 (B) 100
(C) 108 (D) 120

स्रोत–*ज्योतिषशास्त्र-प्रशिक्षक - गिरिजाशङ्कर शास्त्री, पेज–57*

33. गुरुः पश्यति– UGC 73 J–2006

(A) तृतीयं दशमञ्च स्थानम्
(B) चतुर्थमष्टमञ्च स्थानम्
(C) पञ्चमं नवमञ्च स्थानम्
(D) लग्नस्थानम्

स्रोत–*लघुपाराशरी (उडुदायप्रदीप)-सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पेज–24*

34. दिनरात्रिमाने समाने भवति– UGC 73 J–1999, 2006, D–1999, 1997

(A) अयनदिने (B) विषुवद्दिने
(C) संक्रान्तौ (D) पूर्णिमायाम्

स्रोत–*सूर्यसिद्धान्त - रामचन्द्र पाण्डेय, पेज–348*

35. कस्य कक्षा ग्रहेषु सर्वोपरि वर्तते– UGC 73 J–2006

(A) बुधस्य (B) बृहस्पतेः
(C) शुक्रस्य (D) शनैश्चरस्य

स्रोत–*मुहुर्तचिन्तामणि - विन्ध्येश्वरीप्रसाद द्विवेदी, पेज–भू. 13*

36. बुधोऽस्य स्वामी वर्तते– UGC 73 D–2006

(A) मेषस्य (B) मिथुनस्य
(C) वृषस्य (D) कर्कस्य

स्रोत–*मुहुर्तचिन्तामणि - विन्ध्येश्वरीप्रसाद द्विवेदी, पेज–365*

37. रविदशावर्षाणि– CVVET–2015

(A) 8 (B) 20
(C) 9 (D) 6

स्रोत–*बृहद्अबकहड़ाचक्रम् - एस0 के0 झा सुमन, पेज–73*

24. (C)	25. (C)	26. (A)	27. (C)	28. (A)	29. (A)	30. (B)	31. (A)	32. (D)	33. (C)
34. (B)	35. (D)	36. (B)	37. (D)						

38. अस्य कोऽपि ग्रहः शत्रुर्न भवति– UGC 73 D–2006

(A) सूर्यस्य (B) भौमस्य
(C) चन्द्रस्य (D) बुधस्य

स्रोत–बृहद् अबकहड़ाचक्रम्-एस0 के0 झा 'सुमन', पेज–102

39. विवाहमुहूर्ते कतिविधाः दोषाः भवन्ति– UGC 73 D–2006

(A) 2 (B) 4
(C) 8 (D) 10

स्रोत–ज्योतिशास्त्रप्रशिक्षक - गिरिजाशङ्कर शास्त्री, पेज–129

40. दिनमानं वर्धते– UGC 73 D–2006

(A) उत्तरायणे (B) दक्षिणायणे
(C) वर्षारम्भे (D) वर्षमध्ये

स्रोत–संस्कृतपरम्परागतविषय - शत्रुघ्न त्रिपाठी, पेज–27

41. कस्य कक्षा भूमेः निकटमस्ति– UGC 73 D–2006, J–2007

(A) सूर्यस्य (B) चन्द्रस्य
(C) भौमस्य (D) बुधस्य

स्रोत–मुहूर्तचिन्तामणि - विन्ध्येश्वरी प्रसाद द्विवेदी, पेज–भू. 13

42. (i) सूर्यग्रहण होता है? UGC 73 D–2006, 2012
(ii) सूर्यग्रहणं भवति– J–1998, 2008, 2012, 1999

(A) पूर्णिमायाम् (B) अमायाम्
(C) संक्रान्तौ (D) अमायां शराभावे

स्रोत–संस्कृतपरम्परागतविषय - शत्रुघ्न त्रिपाठी, पेज–35

43. उत्तरम् अन्वेषणीयम्– UGC 73 J–2007

R-जन्माङ्गचक्रस्य द्वितीयभावाद् धनविचारः क्रियते।
S-जन्माङ्गचक्रस्य पञ्चमभावाद् व्ययविचारः क्रियते

(A) R शुद्धः S अशुद्धः (B) R अशुद्धः A शुद्धः
(C) उभौ शुद्धौ (D) उभौ अशुद्धौ

स्रोत–ज्योतिषशास्त्रप्रशिक्षक - गिरिजाशङ्कर शास्त्री, पेज–175

44. सूर्यस्य संक्रमणे उत्तरगोलः भवति– UGC 73 J–2007, D–2012

(A) मेषे (B) मिथुने
(C) वृषभे (D) सिंहे

स्रोत–ज्योतिषशास्त्रप्रशिक्षक - गिरिजाशङ्कर शास्त्री, पेज–7

45. पापग्रहः अस्ति– UGC 73 J–2007

(A) बुधः (B) शुक्रः
(C) रविः (D) चन्द्रः

स्रोत–मुहूर्तचिन्तामणि - विन्ध्येश्वरीप्रसाद द्विवेदी, पेज–37

46. अधिमासो भवति– UGC 73 J–1998, 2007, 2012, D–1996, 1999

(A) ससंक्रान्तिमासः (B) द्विसंक्रान्तिमासः
(C) असंक्रान्तिमासः (D) अन्यः मासः

स्रोत–मुहूर्तचिन्तामणि - विन्ध्येश्वरीप्रसाद द्विवेदी, पेज–193

47. एकस्मिन् कल्पे महायुगानि भवन्ति– UGC 73 J–2007

(A) 10 (B) 100
(C) 500 (D) 1000

स्रोत–संस्कृत-परम्परागतविषय - शत्रुघ्न त्रिपाठी, पेज–25

48. भूभ्रमणसिद्धान्त अनेन प्रतिपादितः– UGC 73 J–1991, 2007, D–1992, 1996

(A) भास्करेण (B) भट्टकमलाकरेण
(C) आर्यभट्टेन (D) गणेशदैवज्ञेन

स्रोत–संस्कृत शास्त्रों का इतिहास - बलदेव उपाध्याय, पेज–69

49. समुचितमुत्तरं देयम्– UGC 73 D–2007

(a) त्रिकोणेश–स्वदशायां शुभं फलं प्रयच्छति।
(b) त्रिषडायधीश–स्वदशायां शुभं फलं प्रयच्छति।
(c) त्रिकोणेश–स्वदशायां पापं फलं प्रयच्छति।
(d) त्रिकोणेश–स्वदशायां स्वभुक्तौ शुभं फलं प्रयच्छति।

(A) शुद्ध (B) शुद्ध
(C) शुद्ध (D) शुद्ध

स्रोत–लघुपाराशरी (उडुदायप्रदीप)-सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पेज–83

50. भवननिर्माणाय शोककरः मासः अस्ति– UGC 73 D–2007

(A) माघः (B) फाल्गुनः
(C) चैत्रः (D) वैशाखः

स्रोत–बृहद् अबकहडाचक्रम् - एस0 के झा 'सुमन', पेज–128

38. (C) 39. (D) 40. (A) 41. (B) 42. (D) 43. (A) 44. (A) 45. (C) 46. (C) 47. (D) 48. (C) 49. (A) 50. (C)

51. मलमासः भवति प्रति– UGC 73 D–2007

(A) पञ्चमवर्षे (B) सप्तमवर्षे
(C) द्वादशवर्षे (D) तृतीयवर्षे

स्रोत–*बृहद् अबकहड़ाचक्रम् - एस0 के झा 'सुमन', पेज–23*

52. जन्मकुण्डल्यां निरीक्ष्यते विवाहविषयः केन भावेन– UGC 73 D–2007

(A) द्वितीयेन (B) चतुर्थेन
(C) पञ्चमेन (D) सप्तमेन

स्रोत–*भारतीय ज्योतिष - नेमिचन्द्र शास्त्री, पेज–315*

53. क्षयमासो भवति– UGC 73 D–1997, 2007, S–2013

(A) असंक्रान्तिमासः (B) द्विसंक्रान्तिमासः
(C) ससंक्रान्तिमासः (D) अन्यः मासः

स्रोत–*ज्योतिषशास्त्र प्रशिक्षक - गिरिजाशङ्कर शास्त्री, पेज–8*

54. भूमेः दूरतमा कक्षा वर्तते अस्य– UGC 73 D–2007

(A) बुधस्य (B) शुक्रस्य
(C) बृहस्पतेः (D) शनैश्चरस्य

स्रोत–*मुहूर्तचिन्तामणि - विन्ध्येश्वरी प्रसाद द्विवेदी, पेज–भूमिका 13*

55. एकस्मिन् मन्वन्तरे महायुगानि भवन्ति– UGC 73 D–2007

(A) 31 (B) 51
(C) 71 (D) 81

स्रोत–*संस्कृतपरम्परागतविषय - शत्रुघ्न त्रिपाठी, पेज–25*

56. उदयान्तरसंस्कारः अनेनाविष्कृतः– UGC 73 D–2007

(A) ब्रह्मगुप्तेन (B) भास्करेण
(C) श्रीपतिना (D) भट्टकमलाकरेण

स्रोत–*संस्कृतवाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-16) - श्रीनिवासरथ/ रामचन्द्र पाण्डेय, पेज–364*

57. भौमस्य नीचराशिः अस्ति– UGC 73 J–2008, 2012

(A) मेषः (B) वृषः
(C) मिथुनम् (D) कर्कः

स्रोत–*संस्कृतपरम्परागतविषय - शत्रुघ्न त्रिपाठी, पेज–01*

58. सन्तानभावः कथ्यते– UGC 73 J–2008

(A) प्रथमभावः (B) द्वितीयभावः
(C) तृतीयभावः (D) पञ्चमभावः

स्रोत–*भारतीय ज्योतिष - नेमिचन्द्र शास्त्री, पेज–307*

59. बृहस्पतिः फलदायी अस्ति– UGC 73 J–2008

(A) लग्ने (B) पाताले
(C) व्यये (D) अष्टमे

स्रोत–*मानसागरी - सीताराम झा, पेज–104*

60. कुम्भराशेः स्वामी अस्ति– UGC 73 D–2008

(A) गुरुः (B) सूर्यः
(C) शुक्रः (D) शनिः

स्रोत–*वृहद् अवकहडा चक्र - डा0 एस0 के0 झा, पेज–95*

61. प्रतिष्ठादि-शुभकार्याणां प्रारम्भः भवति– UGC 73 D–2008

(A) दक्षिणायने (B) संक्रान्तौ
(C) उत्तरायणे (D) पौर्णमास्याम्

स्रोत–*बृहदवकहडाचक्रम् - अवधबिहारी त्रिपाठी, पेज–03*

62. सूर्यस्य मकरराशौ संक्रमणे का संक्रान्तिः भवति– UGC 73 D–2008

(A) मेषसंक्रान्तिः (B) वृषभसंक्रान्तिः
(C) मिथुनसंक्रान्तिः (D) मकरसंक्रान्तिः

स्रोत–*बृहद्वकहडाचक्रम् - एस0 के0 झा 'सुमन', पेज–62*

63. भाग्यस्थानं वर्तते– UGC 73 J–2009

(A) पञ्चमभावः (B) सप्तमभावः
(C) दशमभावः (D) नवमभावः

स्रोत–*भारतीय ज्योतिष - नेमिचन्द्र शास्त्री, पेज–328*

64. चन्द्रः नीचस्थो भवति– UGC 73 J–2009

(A) वृश्चिकराशौ (B) धनुराशौ
(C) मिथुनराशौ (D) मकरराशौ

स्रोत–*संस्कृत-परम्परागतविषय - शत्रुघ्न त्रिपाठी, पेज–01*

51. (D) 52. (D) 53. (B) 54. (D) 55. (C) 56. (B) 57. (D) 58. (D) 59. (A) 60. (D)
61. (C) 62. (D) 63. (D) 64. (A)

65. काकिणीविचारः क्रियते– UGC 73 J–2009, D–2010
(A) हस्तमेलापके (B) गृहनिर्माणे
(C) द्विरागमने (D) विदेशगमने
स्रोत–मुहूर्तचिन्तामणि - विन्ध्येश्वरीप्रसाद द्विवेदी, पेज–574-575

66. उत्तरगोलः भवति– UGC 73 J–2009
(A) मेषात् (B) वृषभात्
(C) मिथुनात् (D) कर्कात्
स्रोत–ज्योतिषशास्त्र-प्रशिक्षक - गिरिजाशङ्कर शास्त्री, पेज–07

67. द्वयभानुभोगात् भवति– UGC 73 J–2009
(A) मासः (B) पक्षः
(C) ऋतुः (D) वर्षः
स्रोत–बृहदवकहडाचक्रम् - अवधबिहारी त्रिपाठी, पेज–03

68. चन्द्रः पापफलं ददाति– UGC 73 D–2009
(A) पञ्चमे (B) तृतीये
(C) द्वितीये (D) अष्टमे
स्रोत–मानसागरी - सीताराम झा, पेज–98

69. नाडीदोषः विचार्यते– UGC 73 D–2009
(A) विवाहे (B) चूडाकरणे
(C) पुंसवने (D) उपनयने
स्रोत–मुहूर्तचिन्तामणि - विन्ध्येश्वरीप्रसाद द्विवेदी, पेज–355

70. नक्षत्रमालायां चतुर्थस्थानं वर्तते– UGC 73 D–2009
(A) अश्विनीनक्षत्रस्य (B) भरणीनक्षत्रस्य
(C) हस्तनक्षत्रस्य (D) रोहिणीनक्षत्रस्य
स्रोत–मुहूर्तचिन्तामणि - विन्ध्येश्वरीप्रसाद द्विवेदी, पेज–77

71. शनिः सूर्यं परिक्रमते– UGC 73 J–2008, D–2009
(A) विंशतिवर्षाणि (B) त्रिंशत्वर्षाणि
(C) चत्वारिंशत्वर्षाणि (D) द्वादशवर्षाणि
स्रोत–बृहद् अबकहडाचक्रम् - एस0 के0 झा 'सुमन', पेज–74

72. गुरोः उच्चराशिः अस्ति– UGC 73 J–2010
(A) मेषः (B) वृषभः
(C) कर्कः (D) कन्या
स्रोत–लघुजातकम् -कमलाकान्त पाण्डेय, पेज–13

73. जन्मकुण्डल्यां गृहविचारः कुतः क्रियते? UGC 73 J–2010
(A) प्रथमभावात् (B) तृतीयभावात्
(C) नवभावात् (D) चतुर्थभावात्
स्रोत–भारतीय ज्योतिष - नेमिचन्द्र शास्त्री, पेज–304

74. सूर्यस्य शत्रुः कः? UGC 73 J–2010
(A) बुधः (B) बृहस्पतिः
(C) शुक्रः (D) मङ्गलः
स्रोत–बृहद्अबकहडाचक्रम् - एस0 के0 झा 'सुमन', पेज–102

75. सर्वप्रथमं भूमेश्चलत्वं केन स्वीकृतम्? UGC 73 J–2010
(A) आर्यभट्टेन (B) श्रीपतिना
(C) लल्लेन (D) भास्कराचार्येण
स्रोत–संस्कृत शास्त्रों का इतिहास-आचार्य बलदेव उपाध्याय, पेज–69

76. चन्द्रमासमानं किम्? UGC 73 J–2010
(A) रवीन्दोर्युतेः संयुतिर्यावदन्या
(B) पौर्णमासीतः अपरसंक्रान्तिं यावत्
(C) संक्रान्तितः अपरसंक्रान्तिं यावत्
(D) त्रिंशद्दिनात्मकम्
स्रोत–संस्कृत-परम्परागतविषय - शत्रुघ्न त्रिपाठी, पेज–32

77. परमक्रान्तिज्यामानं भवति? UGC 73 J–2010
(A) त्रिज्यामितम् (B) `120' कलात्मकम्
(C) `24' कलात्मकम् (D) `1397' कलापरिमितम्

78. कर्कः कस्य ग्रहस्य नीचराशिः अस्ति? UGC 73 D–2010
(A) शुक्रस्य (B) बुधस्य
(C) भौमस्य (D) शनेः
स्रोत–संस्कृत-परम्परागतविषय - शत्रुघ्न त्रिपाठी, पेज–01

79. जातके कः पापग्रहोऽस्ति– UGC 73 D–2010
(A) मङ्गलः (B) शुक्रः
(C) बुधः (D) बृहस्पतिः
स्रोत–संस्कृत-परम्परागतविषय - शत्रुघ्न त्रिपाठी, पेज–03

65. (B)	66. (A)	67. (C)	68. (D)	69. (A)	70. (D)	71. (B)	72. (C)	73. (D)	74. (C)
75. (A)	76. (A)	77. (D)	78. (C)	79. (A)					

80. चन्द्रग्रहणे चन्द्रसूर्यान्तरं भवति–UGC 73 D–2010

(A) 90° (B) 270°

(C) 180° (D) 360°

स्रोत–*संस्कृत परम्परागत विषय - शत्रुघ्न त्रिपाठी, पेज–35*

81. देवानां दिनार्द्धं दैत्यानाञ्च रात्र्यर्द्धं कदा भवति? UGC 73 D–2010

(A) मेषराशिस्थिते सूर्ये (B) कर्कराशिस्थिते सूर्ये

(C) मिथुनान्ते रविस्थिते (D) मकरान्ते रविस्थिते

स्रोत–*बृहद्अबकहडाचक्रम् - एस0 के0 झा 'सुमन', पेज–20*

82. लम्बनाभावः कुत्र जायते? UGC 73 D–2010

(A) क्षितिजे (B) खमध्ये

(C) वित्रिभे (D) उन्मण्डले

स्रोत–*गोलपरिभाषा - कमलाकान्त शुक्ल, पेज–16*

83. शुक्रस्य नीचराशिरस्ति– UGC 73 J–2011

(A) वृषः (B) कन्या

(C) मकरः (D) कर्कः

स्रोत–*संस्कृत-परम्परागतविषय - शत्रुघ्न त्रिपाठी, पेज–01*

84. आजीविकाविचारस्य प्रधानभावः– UGC 73 J–2011

(A) दशमः (B) द्वादशः

(C) षष्ठः (D) प्रथमः

स्रोत–*भारतीय ज्योतिष - नेमिचन्द्र शास्त्री, पेज–332*

85. ध्रुवोन्नतिः कथ्यते? UGC 73 J–2011

(A) नतांश (B) लम्बांश

(C) अक्षांश (D) विषुवांश

स्रोत–*सूर्यसिद्धान्त - रामचन्द्र पाण्डेय, पेज–317*

86. अहर्गणमानं भवति– UGC 73 J–2011

(A) कल्पात्मकः (B) वर्षात्मकः

(C) मासात्मकः (D) दिनात्मकः

स्रोत–*भारतीय ज्योतिष - नेमिचन्द्र शास्त्री, पेज–220*

87. 'आकृष्यते तत्पततीव भाति' इत्युक्तिरस्ति– UGC 73 J–2011

(A) भास्कराचार्यस्य (B) आर्यभट्टस्य

(C) सुधाकरस्य (D) महावीराचार्यस्य

स्रोत–*संस्कृतवाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-16) - श्रीनिवासरथ/ रामचन्द्र पाण्डेय, पेज–350*

88. विवाहमेलापके अष्टवर्गगुणसंख्या– UGC 73 D–2011

(A) 18 (B) 8

(C) 108 (D) 36

स्रोत–*मुहूर्तचिन्तामणि - विन्ध्येश्वरीप्रसाद द्विवेदी, पेज–362*

89. पञ्चमभावकारकोऽस्ति– UGC 73 D–2011

(A) बुधः (B) गुरुः

(C) चन्द्रः (D) शनिः

स्रोत–*ज्योतिषशास्त्र-प्रशिक्षक - गिरिजाशङ्कर शास्त्री, पेज–101*

90. मारकस्थानमस्ति– UGC 73 D–2011

(A) दशम (B) चतुर्थ

(C) सप्तम (D) द्वादश

स्रोत–*लघुपाराशरी (उडुदायप्रदीप) - सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पेज–37*

91. कस्मिन् वृत्ते सूर्यस्य कक्षा? UGC 73 D–2011

(A) क्षितिजवृत्ते (B) कदम्बवृत्ते

(C) क्रान्तिवृत्ते (D) नाडीवृत्ते

स्रोत–*गोलपरिभाषा - कमलाकान्त पाण्डेय, पेज–10*

92. अहर्गणोऽस्ति? UGC 73 D–2011

(A) वर्षगणः (B) दिनगणः

(C) मासगणः (D) ऋतुगणः

स्रोत–*भारतीय ज्योतिष - नेमिचन्द्र शास्त्री, पेज–220*

93. सूर्यस्य संक्रमणे ऋतुपरिवर्तनं भवति– UGC 73 J–2012

(A) राशिद्वये (B) राशित्रये

(C) एकराशौ (D) पञ्चराशौ

स्रोत–*संस्कृत परम्परागत विषय - शत्रुघ्न त्रिपाठी, पेज–10*

80. (C) 81. (C) 82. (B) 83. (B) 84. (A) 85. (C) 86. (D) 87. (A) 88. (D) 89. (B) 90. (C) 91. (C) 92. (B) 93. (A)

94. ......राशिः भवति– UGC 73 J–2012

(A) नक्षत्रद्वयात् (B) सपादनक्षत्रद्वयात्

(C) नक्षत्रत्रयात् (D) पादोनत्रयात्

स्रोत–*ज्योतिषशास्त्र-प्रशिक्षक - गिरिजाशङ्करशास्त्री, पेज–89*

95. सप्तमस्थाने मंगल-शुक्र-शनिगृहाणां युतौ ..... भवति– UGC 73 J–2012

(A) राजयोगः (B) केमद्रुमयोगः

(C) द्विभार्ययोगः (D) सन्तानयोगः

स्रोत–*भारतीय ज्योतिष - नेमिचन्द्र शास्त्री, पेज–316*

96. वेदस्य चक्षुर्भवति– UGC 73 J–2012

(A) धर्मशास्त्रम् (B) ज्योतिषम्

(C) व्याकरणम् (D) छन्दः

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–85

97. शनिः द्वादशराशिं .... भुङ्क्ते– UGC 73 J–2012

(A) एकवर्षम् (B) विंशतिवर्षाणि

(C) त्रिंशत्वर्षाणि (D) द्वादशवर्षाणि

स्रोत–*ज्योतिषशास्त्र-प्रशिक्षक - गिरिजाशङ्कर शास्त्री, पेज–103*

98. सूर्यस्य संक्रमणे .... दक्षिणगोलो भवति– UGC 73 J–2012

(A) मेषराशौ (B) वृषभराभौ

(C) तुलाराशौ (D) वृश्चिकराशौ

स्रोत–*ज्योतिषशास्त्र-प्रशिक्षक - गिरिजाशङ्कर शास्त्री, पेज–07*

99. भौमः .... नीचस्थो भवति– UGC 73 J–2012

(A) मेषराशौ (B) वृषभराशौ

(C) कर्कराशौ (D) सिंहराशौ

स्रोत–*संस्कृत-परम्परागतविषय - शत्रुघ्न त्रिपाठी, पेज–01*

100. (i) बृहस्पति की उच्चराशि कौन सी है–

(ii) बृहस्पतिः .... उच्चस्थो भवति– UGC 73 J–2012, 2015

(A) मेषराशौ (B) वृषभराशौ

(C) कर्कराशौ (D) सिंहराशौ

स्रोत–*बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् - सुरेशचन्द्र मिश्र, पेज–33*

101. भौमस्य राशिः .... वर्त्तते– UGC 73 J–2012

(A) मेषः (B) मिथुनः

(C) कर्कः (D) कन्या

स्रोत–*मुहूर्तचिन्तामणि - विन्ध्येश्वरीप्रसाद द्विवेदी, पेज–365*

102. सूर्यः कस्य राशेः स्वामी वर्त्तते– UGC 73 D–2012

(A) कर्कस्य (B) मेषस्य

(C) सिंहस्य (D) मकरस्य

स्रोत–*मुहूर्तचिन्तामणि - विन्ध्येश्वरीप्रसाद द्विवेदी, पेज–365*

103. सुखं विचार्यते– UGC 73 D–2012

(A) प्रथमस्थानात् (B) द्वितीयस्थानात्

(C) तृतीयस्थानात् (D) चतुर्थस्थानात्

स्रोत–*भारतीय ज्योतिष - नेमिचन्द्र शास्त्री, पेज–302*

104. पापग्रहः अस्ति– UGC 73 D–2012

(A) शुक्रः (B) बृहस्पतिः

(C) भौमः (D) चन्द्रः

स्रोत–*ज्योतिषशास्त्र-प्रशिक्षक - गिरिजाशङ्कर शास्त्री, पेज–95*

105. राशिः भवति– UGC 73 D–2012

(A) एकनक्षत्रस्य (B) नक्षत्रद्वयस्य

(C) नक्षत्रत्रयस्य (D) सपादनक्षत्रद्वयस्य

स्रोत–*ज्योतिषशास्त्र-प्रशिक्षक - गिरिजाशङ्कर शास्त्री, पेज–89*

106. कालविज्ञापकं शास्त्रमस्ति? UGC 73 D–2012

(A) वेदान्तः (B) पुराणम्

(C) भूगोलम् (D) ज्योतिषम्

स्रोत–*संस्कृत शास्त्रों का इतिहास - बलदेव उपाध्याय, पेज–54*

107. भौमः सूर्यं .... यावत् परिक्रमते– UGC 73 D–2012

(A) त्रिंशत्दिनानि (B) चत्वारिंशत्दिनानि

(C) पञ्चचत्वारिंशत्दिनानि (D) सार्द्ध-एकमासम्

स्रोत–*ज्योतिषशास्त्र-प्रशिक्षक - गिरिजाशङ्कर शास्त्री, पेज–103*

94. (B) 95. (C) 96. (B) 97. (C) 98. (C) 99. (C) 100. (C) 101. (A) 102. (C) 103. (D) 104. (C) 105. (D) 106. (D) 107. (D)

108. पारस्करगृह्यसूत्रानुसारेण निष्क्रमणसंस्कारः .... मासे भवति– **UGC 73 D–2012**

(A) पञ्चमे (B) तृतीये
(C) चतुर्थे (D) प्रथमे

स्रोत–भारतीय संस्कृति - दीपक कुमार, पेज–118

109. त्रिक्-भावोऽस्ति– **UGC 73 J–2013**

(A) द्वितीयः (B) सप्तमः
(C) षष्ठः (D) एकादशः

स्रोत–ज्योतिषशास्त्र-प्रशिक्षक - गिरिजाशङ्कर शास्त्री, पेज–177

110. प्रतिपत्-तिथेः स्वामी– **UGC 73 J–2013**

(A) ब्रह्मा (B) गौरी
(C) वह्निः (D) गणेशः

स्रोत–मुहूर्तचिन्तामणि (श्लोक-3)-विन्ध्येश्वरीप्रसाद द्विवेदी, पेज–11

111. अभुक्तमूलं भवति? **UGC 73 J–2013**

(A) रेवत्याश्विनीयोगे (B) श्लेषामघायोगे
(C) ज्येष्ठामूलयोगे (D) वैधृतिसंयोगे

स्रोत–ज्योतिषशास्त्र-प्रशिक्षक - गिरिजाशङ्कर शास्त्री, पेज–70

112. सूर्योदयान्तराले भवति– **UGC 73 J–2013**

(A) चान्द्रदिनम् (B) सौरदिनम्
(C) सावनदिनम् (D) नाक्षत्रदिनम्

स्रोत–संस्कृत-परम्परागतविषय - शत्रुघ्न त्रिपाठी, पेज–32

113. सूर्यग्रहणं भवति– **UGC 73 J–2013**

(A) अमादौ (B) पूर्णिमादौ
(C) प्रतिपदादौ (D) प्रतिपदान्ते

स्रोत–संस्कृत-परम्परागतविषय - शत्रुघ्न त्रिपाठी, पेज–35

114. उपनयनेऽब्जभार्गवौ न शुभौ स्याताम्– **UGC 73 J–2013**

(A) चतुर्थभावे (B) अष्टमभावे
(C) दशमभावे (D) द्वादशभावे

स्रोत–मुहूर्तचिन्तामणि - विन्ध्येश्वरीप्रसाद द्विवेदी, पेज–279

115. नामकरणं कुर्यात्– **UGC 73 J–2013**

(A) अश्विन्याम् (B) मघायाम्
(C) आश्लेषायाम् (D) विशाखायाम्

स्रोत–मुहूर्तचिन्तामणि - विन्ध्येश्वरीप्रसाद द्विवेदी, पेज–241

116. तिथिर्भवति– **UGC 73 J–2013**

(A) सौरमासः (B) नाक्षत्रमासः
(C) चान्द्रमासः (D) सावनमासः

स्रोत–संस्कृत-परम्परागतविषय - शत्रुघ्न त्रिपाठी, पेज–32

117. 'मनूनकाः स्यात् ग्रहणस्य सम्भवः' उक्तिरस्ति– **UGC 73 J–2013**

(A) वराहस्य (B) आर्यभट्टस्य
(C) कमलाकरस्य (D) भास्करस्य

118. बृहत्तमा कक्षाऽस्ति– **UGC 73 J–2013**

(A) बृहस्पतेः (B) मन्दस्य
(C) सितस्य (D) रवेः

स्रोत–संस्कृत-परम्परागतविषय - शत्रुघ्न त्रिपाठी, पेज–36

119. ध्रुवसंज्ञकनक्षत्रमस्ति– **UGC 73 J–2013**

(A) कृत्तिका (B) रोहिणी
(C) मृगशीर्षः (D) आर्द्रा

मुहूर्तचिन्तामणि (नक्षत्रप्रकरणम्)-विन्ध्येश्वरीप्रसाद द्विवेदी, पेज–111

120. सूर्यस्य मूलत्रिकोणराशिरस्ति? **UGC 73 D–2013**

(A) सिंहः (B) तुला
(C) कन्या (D) वृश्चिकः

स्रोत–बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् - सुरेशचन्द्र मिश्र, पेज–34

121. मेषराशौ सूर्यः स्यात् तर्हि ऋतुः भवति– **UGC 73 D–2013**

(A) शिशिरः (B) ग्रीष्मः
(C) बसन्तः (D) वर्षाः

स्रोत–ज्योतिषशास्त्रप्रशिक्षक - गिरिजाशङ्कर शास्त्री, पेज–7

122. षष्ठीतिथेरधिपतिरस्ति– **UGC 73 D–2013**

(A) सूर्यः (B) शिवः
(C) कार्तिकेयः (D) विष्णुः

स्रोत–मुहूर्तचिन्तामणि (श्लोक-3)-विन्ध्येश्वरीप्रसाद द्विवेदी, पेज–10

108. (C) 109. (C) 110. (C) 111. (C) 112. (C) 113. (C) 114. (D) 115. (A) 116. (C) 117. (D) 118. (B) 119. (B) 120. (A) 121. (C) 122. (C)

123. दिगंशाः भवन्ति? UGC 73 D–2013
(A) क्षितिजे (B) अभयवृत्ते
(C) छग्वृत्ते (D) क्रान्तिवृत्ते

124. विषुवांशाः भवन्ति– UGC 73 D–2013
(A) क्रान्तिवृत्ते (B) कदम्बवृत्ते
(C) विषुवद्वृत्ते (D) कोणवृत्ते
स्रोत–*भारतीय ज्योतिष - नेमिचन्द्र शास्त्री, पेज–63*

125. सूर्यग्रहणस्य स्पर्शो भवति– UGC 73 D–2013, S–2013
(A) पूर्वतः (B) सौम्यतः
(C) पश्चिमतः (D) याम्यतः
स्रोत–*संस्कृत-परम्परागतविषय - शत्रुघ्न त्रिपाठी, पेज–35*

126. ''कविज्यचन्द्रलग्नपा'' व्रतबन्धेऽधमाः भवन्ति– UGC 73 D–2013
(A) तनौ (B) रिपौ
(C) धने (D) व्यये
मुहूर्तचिन्तामणि (संस्कारप्रकरणम्)-विन्ध्येश्वरीप्रसाद द्विवेदी, पेज–279

127. त्रिज्येष्ठमुपयुक्तं न भवति– UGC 73 D–2013
(A) व्रतबन्धे (B) विवाहे
(C) द्विरागमने (D) चौले
स्रोत–*बृहद्अबकहडाचक्रम् - एस0 के0 झा 'सुमन', पेज–25*

128. नक्षत्रमानं भवति– UGC 73 D–2013
(A) 13°20' (B) 13°10'
(C) 13°00' (D) 30°00'
स्रोत–*बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् - सुरेशचन्द्र मिश्र, पेज–25*

129. कीटराशिरस्ति– UGC 73 D–2013
(A) धनुः (B) कर्कः
(C) मकरः (D) मीनः
स्रोत–*लघुजातकम् - कमलाकान्त पाण्डेय, पेज–9*

130. आयुर्दायार्थं यो ग्रहः स्वोच्चे स्यात्तदा कर्त्तव्यम्– UGC 73 D–2013
(A) द्विगुणम् (B) त्रिगुणम्
(C) चतुर्गुणम् (D) षडघ्नम्
स्रोत–*बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् - सुरेशचन्द्र मिश्र, पेज–317*

131. जन्मनि चरराशिषु सर्वैर्ग्रहैर्भवति– UGC 73 D–2013
(A) रज्जुयोगः (B) मुसलयोगः
(C) नलयोगः (D) चापयोगः
स्रोत–*बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् - सुरेशचन्द्र मिश्र, पेज–252*

132. सूर्येन्दु-भगणयोरन्तरम्भवति– UGC 73 D–2013
(A) चान्द्रमासः (B) सौरमासः
(C) अधिमासः (D) क्षयमासः
स्रोत–*संस्कृत-परम्परागतविषय - शत्रुघ्न त्रिपाठी, पेज–32*

133. गुरुवासरे तृतीयहोरेशो भवति– UGC 73 D–2013
(A) सूर्यः (B) शुक्रः
(C) चन्द्रः (D) बुधः
स्रोत–*बृहद्अबकहडाचक्रम् - एस0 के0 झा 'सुमन', पेज–36*

134. तिथ्यन्तसूर्योदयोर्मध्ये सदैव तिष्ठति– UGC 73 D–2013
(A) अवमशेषम् (B) तिथिशेषम्
(C) क्षयशेषम् (D) अधिशेषम्
स्रोत–*सूर्यसिद्धान्त - रामचन्द्र पाण्डेय, पेज–138*

135. एकस्मिन् वर्षे चन्द्रार्कग्रहणानामधिकतमा संख्या भवति– UC 73 D–2013
(A) 3 (B) 5
(C) 9 (D) 7

136. सर्वप्रथमं भूभ्रमणं सिद्धान्तं कथितम्? UGC 73 D–2013
(A) भास्करेण (B) आर्यभट्टेन
(C) वराहमिहिरेण (D) कात्यायनेन
स्रोत–*भारतीय ज्योतिष - नेमिचन्द्र शास्त्री, पेज–83*

137. शनेः मूलत्रिकोणराशिरस्ति? UGC 73 S–2013, J–2014
(A) वृषभराशिः (B) मकरराशिः
(C) तुलाराशिः (D) कुम्भराशिः
स्रोत–*बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् - सुरेशचन्द्र मिश्र, पेज–34*

138. 'हेली' संज्ञास्ति? UGC 73 S–2013
(A) अर्कस्य (B) शनेः
(C) भौमस्य (D) राहोः
स्रोत–*बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् - सुरेशचन्द्र मिश्र, पेज–27*

123. (A)	124. (C)	125. (C)	126. (B)	127. (B)	128. (A)	129. (B)	130. (A)	131. (A)	132. (A)
133. (A)	134. (A)	135. (D)	136. (B)	137. (D)	138. (A)				

139. केन्द्रत्रिकोणयोः सम्बन्धेन भवति– UGC 73 S–2013

(A) सुनफायोगः (B) वेशियोगः
(C) राजयोगः (D) दरिद्रयोगः

लघुपाराशरी (उडुदायप्रदीप) - सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पेज–102

140. गोलपरिवर्तनं भवति– UGC 73 S–2013

(A) मेषतुलाराशौ (B) मकरकर्कराशौ
(C) तुलावृश्चिकराशौ (D) कर्कसिंहराशौ

स्रोत–*ज्योतिषशास्त्रप्रशिक्षक - गिरिजाशङ्कर शास्त्री, पेज–07*

141. एकस्मिन् कल्पे मनूनां संख्या भवति? UGC 73 S–2013

(A) विंशतिः (B) चतुर्दश
(C) एकसप्ततिः (D) पञ्चदश

स्रोत–*संस्कृत-परम्परागतविषय - शत्रुघ्न त्रिपाठी, पेज–25*

142. क्षिप्रसंज्ञकनक्षत्रमस्ति? UGC 73 S–2013

(A) श्रवणः (B) हस्तः
(C) मूलम् (D) चित्रा

मुहूर्तचिन्तामणि (नक्षत्रप्रकरणम्)-विन्ध्येश्वरीप्रसाद द्विवेदी, पेज–80

143. मध्यनाडी भवति– UGC 73 S–2013

(A) मघायाः (B) पुष्यस्य
(C) हस्तस्य (D) विशाखायाः

स्रोत–*मुहूर्तचिन्तामणि - विन्ध्येश्वरीप्रसाद द्विवेदी, पेज–359*

144. विवाहलग्नेऽशुभं भवति– UGC 73 S–2013

(A) व्यये शनिः (B) तृतीये चन्द्रः
(C) चतुर्थे भृगुः (D) पञ्चमे भौमः

स्रोत–*बृहद् अबकहडाचक्रम् - एस0 के0 झा 'सुमन', पेज–115*

145. चन्द्रवासरे तृतीयहोरेशो भवति– UGC 73 S–2013

(A) गुरुः (B) शुक्रः
(C) शनिः (D) भौमः

स्रोत–*बृहद्अबकहडाचकम् - एस0 के0 झा 'सुमन', पेज–36*

146. लम्बनस्याभावो भवति– UGC 73 S–2013

(A) पृष्ठीयक्षितिजे (B) अस्तक्षितिजे
(C) गर्भीयक्षितिजे (D) खमध्ये

स्रोत–*गोलपरिभाषा - कमलाकान्त पाण्डेय, पेज–16*

147. कन्याराशौ सूर्यः स्यात् तर्हि ऋतुः भवति– UGC 73 J–2014

(A) वर्षा (B) शरदः
(C) हेमन्तः (D) शिशिरः

स्रोत–*ज्योतिषशास्त्र-प्रशिक्षक - गिरिजाशङ्कर शास्त्री, पेज–07*

148. दशमीतिथेरधिपतिरस्ति– UGC 73 J–2014

(A) धर्मराजः (B) विश्वेदेवाः
(C) शिवः (D) कामदेवः

मुहूर्तचिन्तामणि (शुभाशुभप्रकरणम्-3)-विन्ध्येश्वरीप्रसाद द्विवेदी, पेज–10

149. कालवृत्तं भवति– UGC 73 J–2014

(A) नाडीवृत्तम् (B) अयनवृत्तम्
(C) क्रान्तिवृत्तम् (D) कोणवृत्तम्

स्रोत–*(i) बृहदवकहडाचक्रम् - एस0 के0 झा 'सुमन', पेज–14*
(ii) गोलपरिभाषा - कमलाकान्त पाण्डेय, पेज–07

150. षड्भिः प्राणैः भवति– UGC 73 J–2014

(A) नाडी (B) घटिका
(C) विनाडी (D) लवाः

स्रोत–*ज्योतिषशास्त्र-प्रशिक्षक - गिरिजाशङ्कर शास्त्री, पेज–03*

151. युगानां सप्ततिः सैका ..... भवति– UGC 73 J–2014

(A) मन्वन्तरम् (B) कल्पः
(C) कृतयुगम् (D) मनोरहोरात्रम्

स्रोत–*संस्कृत-परम्परागतविषय - शत्रुघ्न त्रिपाठी, पेज–25*

152. स्थिरसंज्ञकवारोऽस्ति– UGC 73 J–2014

(A) शनिवारः (B) सोमवारः
(C) शुक्रवारः (D) रविवारः

स्रोत–*मुहूर्तचिन्तामणि (नक्षत्रप्रकरणम्-2)-विन्ध्येश्वरीप्रसाद द्विवेदी, पेज–78*

139. (C) 140. (A) 141. (B) 142. (B) 143. (B) 144. (A) 145. (A) 146. (D) 147. (B) 148. (A) 149. (A) 150. (C) 151. (A) 152. (D)

153. जन्मतः एकादशाह्ने भवति– UGC 73 J–2014

(A) नामकरणम् (B) उपनयनम्
(C) चूडाकरणम् (D) कर्णवेधः

स्रोत–मुहूर्तचिन्तामणि - विन्ध्येश्वरीप्रसाद द्विवेदी, पेज–239

154. अर्कवासरे हस्तनक्षत्रं स्यात्तर्हि भवति– UGC 73 J–2014

(A) रवियोगः (B) सर्वार्थसिद्धियोगः
(C) सिद्धियोगः (D) राजयोगः

मुहूर्तचिन्तामणि (शुभाशुभप्रकरणम् -28)-विन्ध्येश्वरीप्रसाद द्विवेदी, पेज–30

155. पापसंदृष्टः चन्द्रोऽष्टमे भवति– UGC 73 J–2014

(A) मरणाय (B) रक्षणाय
(C) कष्टाय (D) महद्दुःखाय

स्रोत–बृहदवकहडाचक्रम् - एस0 के0 झा 'सुमन', पेज–75

156. यो ग्रहो वर्गोत्तमः स्यात् तदायुदायो भवति– UGC 73 J–2014

(A) तदैव (B) द्विगुणम्
(C) चतुर्गुणम् (D) दशहघ्न

स्रोत–लघुजातकम् - कमलाकान्त पाण्डेय, पेज–54

157. भानोरुदयादुदयं भवति– UGC 73 J–2014

(A) चान्द्रदिनम् (B) सावनदिनम्
(C) सौरदिनम् (D) नाक्षत्रदिनम्

स्रोत–संस्कृत-परम्परागतविषय - शत्रुघ्न त्रिपाठी, पेज–33

158. सूर्यतनयादधोऽधः पञ्चमः होरेशो भवति– UGC 73 J–2014

(A) गुरुः (B) सूर्यः
(C) शुक्रः (D) बुधः

स्रोत–बृहदवकहडाचक्रम् - एस0 के0 झा 'सुमन', पेज–36

159. चन्द्रग्रहणं कदा भवति– UGC 73 J–2014

(A) पूर्णिमादौ (B) प्रतिपदादौ
(C) अमान्ते (D) अमादौ

स्रोत–संस्कृत-परम्परागतविषय - शत्रुघ्न त्रिपाठी, पेज–35

160. चान्द्रक्षयदिनानामन्तरम्भवति– UGC 73 J–2014

(A) सावनदिनानि (B) चान्द्रदिनानि
(C) नाक्षत्रदिनानि (D) सौरदिनानि

स्रोत–सूर्यसिद्धात - रामचन्द्र पाण्डेय, पेज–23

161. मध्यमस्पष्टभुजयोरन्तरम्भवति– UGC 73 J–2014

(A) मध्यमान्तरम् (B) भुजान्तरम्
(C) स्पष्टान्तरम् (D) देशान्तरम्

स्रोत–सूर्यसिद्धात - रामचन्द्र पाण्डेय, पेज–80

162. 'चन्द्रमा' किस राशि का स्वामी है? UGC 73 J–1991

(A) मेष का (B) कर्क का
(C) मिथुन का (D) सिंह का

स्रोत–मुहूर्तचिन्तामणि - विन्ध्येश्वरीप्रसाद द्विवेदी, पेज–365

163. केन्द्रेश एवं त्रिकोणेश राजयोगकारक होते हैं– UGC 73 J–1991

(A) मिथः सम्बन्ध से (B) मिथः दृष्टि से
(C) मिथः असम्बन्ध से (D) किसी से नहीं

स्रोत–लघुपाराशरी (उडुदायप्रदीप)-सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पेज–46

164. 'अष्टमेश शुभफलद' होता है– UGC 73 J–1991

(A) लग्नाधीशे (B) बलवति
(C) दृष्टे (D) उच्चे

स्रोत–बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् - सुरेशचन्द्र मिश्र, पेज–161

165. सौरवर्ष में सावन दिन होते हैं? UGC 73 J–1991, D–1992

(A) 360 (B) 365
(C) 354 (D) 320

स्रोत–संस्कृत-परम्परागतविषय - शत्रुघ्न त्रिपाठी, पेज–25

166. 'अहर्गण' में दिन होते हैं– UGC 73 J–1991

(A) चान्द्र दिन (B) सावन दिन
(C) सौर दिन (D) नाक्षत्र दिन

स्रोत–संस्कृतपरम्परागतविषय - शत्रुघ्न त्रिपाठी, पेज–25

167. 'देशान्तर' होता है– UGC 73 J–1991

(A) पूर्वापर अन्तर (B) याम्योत्तर अन्तर
(C) दोनों में (D) सम्पात से

स्रोत–ज्योतिषशास्त्रप्रशिक्षक - गिरिजा शङ्कर शास्त्री, पेज–18

**153. (A) 154. (B) 155. (A) 156. (B) 157. (B) 158. (C) 159. (B) 160. (A) 161. (B) 162. (B)
163. (A) 164. (A) 165. (B) 166. (B) 167. (A)**

168. तुला के स्वामी हैं? UGC 73 D–1992

(A) शुक्र (B) शनि
(C) सूर्य (D) बुध

स्रोत–*मुहूर्तचिन्तामणि - विन्ध्येश्वरीप्रसाद द्विवेदी, पेज–365*

169. भावों की संख्या है? UGC 73 D–1992, 1996

(A) 13 (B) 12
(C) 5 (D) 10

स्रोत–*ज्योतिषशास्त्रप्रशिक्षक - गिरिजाशङ्कर शास्त्री, पेज–175*

170. अरिष्ट योगों का भङ्ग होता है– UGC 73 D–1992

(A) शुभाभावे (B) शुभग्रहयुते
(C) अशुभाभावे (D) शुभग्रह के देखने पर

स्रोत–*बृहत्पाराशर-होराशास्त्रम् - सुरेशचन्द्र मिश्र, पेज–123*

171. प्रत्यक्ष और स्नेहदा दृष्टि होती है– UGC 73 D–1994

(A) प्रश्न में (B) ताजिकशास्त्र में
(C) जातक में (D) सिद्धान्त में

स्रोत–*ज्योतिषशास्त्र-प्रशिक्षक - गिरिजाशङ्कर शास्त्री, पेज–212*

172. कल्प में दिव्यवर्षों की संख्या होती है? UGC 73 D–1994

(A) 12000 वर्ष (B) 10000 वर्ष
(C) 20000 वर्ष (D) 13000 वर्ष

स्रोत–*संस्कृत-परम्परागतविषय - शत्रुघ्न त्रिपाठी, पेज–25*

173. चन्द्र को स्पष्ट करने के लिए संस्कार होता है? UGC 73 D–1994

(A) मन्दफल (B) शीघ्रफल
(C) कर्णफल (D) मन्दफल, शीघ्रफल

स्रोत–*भारतीय ज्योतिष - नेमिचन्द्र शास्त्री, पेज–157*

174. सूर्य की राशि है? UGC 73 D–1996

(A) सिंह (B) वृष
(C) मकर (D) मेष

स्रोत–*मुहूर्तचिन्तामणि - विन्ध्येश्वरीप्रसाद द्विवेदी, पेज–365*

175. 'चान्द्रमास' होता है? UGC 73 D–1996

(A) 28 दिन (B) $29\frac{1}{2}$ दिन
(C) 30 दिन (D) 31 दिन

स्रोत–*ज्योतिषशास्त्र-प्रशिक्षक - गिरिजाशङ्कर शास्त्री, पेज–61*

176. कर्क राशि किस अङ्ग का प्रतिनिधित्व करती है? UGC 73 D–1997

(A) पेट (B) हृदय
(C) उरु (D) पाद

स्रोत–*ज्योतिषशास्त्र-प्रशिक्षक - गिरिजाशङ्कर शास्त्री, पेज–90*

177. शुक्र की राशि है– UGC 73 D–1997

(A) मेष (B) तुला
(C) कर्क (D) मकर

स्रोत–*मुहूर्तचिन्तामणि - विन्ध्येश्वरीप्रसाद द्विवेदी, पेज–365*

178. छः मास का दिन होता है? UGC 73 D–1997

(A) ध्रुव में (B) उत्तरगोल में
(C) विषुवत् रेखा पर (D) दक्षिणगोल में

स्रोत–*गोलपरिभाषा - कमलाकान्त शुक्ल, पेज–5*

179. योगिनी दशा में वर्ष संख्या होती है? UGC 73 J–1998

(A) षट्त्रिंशत् (B) पञ्चाशत्
(C) अष्टोत्तरशत (D) विंशतिः

स्रोत–*ज्योतिषशास्त्र-प्रशिक्षक - गिरिजाशङ्कर शास्त्री, पेज–56*

180. चान्द्रवर्ष में सावन दिन होते हैं? UGC 73 J–1998

(A) पञ्चाशदुत्तरत्रिशतम् (B) चतुःपञ्चाशदुत्तरत्रिशतम्
(C) षष्ठ्युत्तरत्रिशतम् (D) पञ्चषष्ठ्युत्तरत्रिशतम्

स्रोत–*ज्योतिषशास्त्र-प्रशिक्षक - गिरिजाशङ्कर शास्त्री, पेज–61*

181. (i) राशीनां संख्या कति – UGC 73 J–1998
(ii) राशियों की संख्या होती है? BHU Sh.ET–2008

(A) अष्टौ (8) (B) दश (10)
(C) द्वादश (12) (D) पञ्च (5)

स्रोत–*ज्योतिषशास्त्र-प्रशिक्षक - गिरिजाशङ्कर शास्त्री, पेज–89*

168. (A) 169. (B) 170. (D) 171. (B) 172. (A) 173. (A) 174. (A) 175. (B) 176. (B) 177. (B) 178. (A) 179. (A) 180. (B) 181. (C)

182. मीनराशि किस अङ्ग का प्रतिनिधित्व करती है? UGC 73 J–1999

(A) शिर (B) हृदय
(C) ऊरु (D) पाद

स्रोत–*ज्योतिषशास्त्र-प्रशिक्षक - गिरिजाशङ्कर शास्त्री, पेज–90*

183. बुध की राशि होती है? UGC 73 J–1999, D–1999

(A) मेष (B) वृष
(C) मिथुन (D) कर्क

स्रोत–*मुहूर्तचिन्तामणि - विन्ध्येश्वरीप्रसाद द्विवेदी, पेज–365*

184. परमाक्रान्ति होती है? UGC 73 J–1999

(A) 20° (B) 22.30°
(C) 25° (D) 24°

स्रोत–*संस्कृत-परम्परागतविषय - शत्रुघ्न त्रिपाठी, पेज–26*

185. किस दिन की 12 अङ्गुल की छाया 'पलभा' होती है? UGC 73 D–1999

(A) सायन मेष (B) सायन कर्क
(C) सायन वृष (D) सायन मीन

स्रोत–*भारतीय ज्योतिष - नेमिचन्द्रशास्त्री, पेज–142*

186. दक्षिणायन का आरम्भ होता है? UGC 73 D–1999

(A) कुम्भ से (B) मकर से
(C) कर्क से (D) धनु से

स्रोत–*ज्योतिषशास्त्र-प्रशिक्षक - गिरिजाशङ्कर शास्त्री, पेज–6*

187. व्यय में अब्ज-भार्गव अशुभ होते हैं? UGC 73 D–2014

(A) व्रतबन्धे (B) द्विरागमने
(C) विवाहे (D) गृहप्रवेशे

188. मिश्र संज्ञकनक्षत्र है– UGC 73 D–2014

(A) स्वाती (B) धनिष्ठा
(C) विशाखा (D) अनुराधा

मुहूर्तचिन्तामणि (नक्षत्रप्रकरणम्-5) - विन्ध्येश्वरी प्रसाद द्विवेदी, पेज–79

189. अधस्था कक्षा है? UGC 73 D–2014

(A) गुरोः (B) भौमस्य
(C) चन्द्रस्य (D) बुधस्य

स्रोत–*सूर्यसिद्धान्त - रामचन्द्र पाण्डेय, पेज–327*

190. सूर्येन्दु भगणान्तर होता है? UGC 73 D–2014

(A) सौरमासः (B) चान्द्रमासः
(C) सावनमासः (D) नाक्षत्रमासः

स्रोत–*सूर्यसिद्धान्त - रामचन्द्र पाण्डेय, पेज–346*

191. अर्कग्रहण में छादक होता है– UGC 73 D–2014

(A) भूमा (B) राहु
(C) चन्द्र (D) मेघ

स्रोत–*मुहूर्तचिन्तामणि - विन्ध्येश्वरी प्रसाद द्विवेदी, पेज–37*

192. चार स्थानों में ग्रह हों तो होता है? UGC 73 D–2014

(A) हसयोगः (B) केदारयोगः
(C) अमलयोगः (D) मालव्ययोगः

स्रोत–*भारतीयज्योतिष - नेमिचन्द्रशास्त्री, पेज–281*

193. योगिनी में संकटादशा का मान होता है? UGC 73 D–2014

(A) त्रिवर्षाणि (B) पञ्चवर्षाणि
(C) सप्तवर्षाणि (D) अष्टवर्षाणि

स्रोत–*बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् - सुरेशचन्द्र मिश्र, पेज–481*

194. दिग्ज्या होती है? UGC 73 D–2014

(A) क्षितिजवृत्ते (B) दृग्वृत्ते
(C) अहोरात्रवृत्ते (D) क्रमनिवृत्ते

स्रोत–*गोलपरिभाषा - कमलाकान्त शुक्ल, पेज–27*

195. भूभा भ्रमण करती है– UGC 73 D–2014

(A) चन्द्रविमण्डले (B) नाडीमण्डले
(C) क्षितिजवृत्ते (D) क्रान्तिमण्डले

स्रोत–*सूर्यसिद्धान्त - रामचन्द्र पाण्डेय, पेज–309*

196. तिथ्यन्त और सूर्योदय के मध्य में रहता है? UGC 73 D–2014

(A) अधिशेषम् (B) तिथिशेषम्
(C) अवमशेषम् (D) भशेषम्

स्रोत–*सूर्यसिद्धान्त - रामचन्द्र पाण्डेय, पेज–138*

182. (D) 183. (C) 184. (D) 185. (A) 186. (C) 187. (A) 188. (C) 189. (C) 190. (A) 191. (C) 192. (B) 193. (D) 194. (A) 195. (A) 196. (C)

197. सुख का विचार किया जाता है? UGC 73 D–2014

(A) चतुर्थस्थानात् (B) पञ्चमस्थानात्

(C) नवमस्थानात् (D) दशमस्थानात्

स्रोत–*भारतीय ज्योतिष - नेमिचन्द्र शास्त्री, पेज–302*

198. भरणी नक्षत्र का अधिपति है? UGC 73 D–2014

(A) इन्द्रः (B) यमः

(C) विष्णुः (D) कार्त्तिकेयः

स्रोत–*मुहूर्तचिन्तामणि - विन्ध्येश्वरीप्रसाद द्विवेदी, पेज–77*

199. षष्ठी घटी का होता है? UGC 73 D–2014

(A) सौरदिनम् (B) चान्द्रदिनम्

(C) सावनदिनम् (D) नाक्षत्रदिनम्

स्रोत–*सूर्यसिद्धान्त - रामचन्द्र पाण्डेय, पेज–353*

200. उत्तरगोल में महद्दिन होता है? UGC 73 D–2014

(A) मेषारम्भे (B) कर्कारम्भे

(C) मकरारम्भे (D) मिथुनारम्भे

स्रोत–*ज्योतिषशास्त्र प्रशिक्षक - गिरिजाशङ्कर शास्त्री, पेज–07*

201. 'नतकाल' सर्वाधिक होता है? UGC 73 D–2014

(A) मध्यदिने (B) मध्यरात्रौ

(C) सूर्योदये (D) सूर्यास्ते

स्रोत–*सूर्यसिद्धान्त - रामचन्द्र पाण्डेय, पेज–137*

202. हेमन्त में सूर्य होता है? UGC 73 D–2014

(A) पाण्डुरः (B) श्वेतः

(C) लोहितः (D) ताम्रवर्णः

स्रोत–*संस्कृत-परम्परागतविषय - शत्रुघ्न त्रिपाठी, पेज–22*

203. अभिजित-नक्षत्र होता है? UGC 73 J–2012

(A) विशाखायाः प्रथमचरणम्

(B) अनुराधायाः प्रथमचरणम्

(C) धनिष्ठायाः तृतीयचरणम्

(D) उत्तराषाढायाः चतुर्थचरणम्

स्रोत–*ज्योतिषशास्त्र-प्रशिक्षक - गिरिजाशङ्कर शास्त्री, पेज–68*

204. राहु की पूर्णदृष्टि होती है? UGC 73 J–2012

(A) प्रथमस्थाने (B) द्वितीयस्थाने

(C) तृतीयस्थाने (D) पञ्चमस्थाने

स्रोत–*ज्योतिषशास्त्र-प्रशिक्षक - गिरिजाशङ्कर शास्त्री, पेज–108*

205. सावनमास में दिन होते हैं? UGC 73 J–2012

(A) त्रिंशत् (B) एकोनत्रिंशत्

(C) एकत्रिंशत् (D) अष्टाविंशति

स्रोत–*संस्कृत-परम्परागतविषय - शत्रुघ्न त्रिपाठी, पेज–32*

206. सूर्यः परमनीचस्थो .... भवति। UGC 73 D–2012

(A) मेषराशौ दशमे अंशे

(B) वृषभराशौ पञ्चमे अंशे

(C) तुलाराशौ दशमे अंशे

(D) कर्कराशौ नवमे अंशे

स्रोत–*संस्कृत परम्परागत विषय - शत्रुघ्न त्रिपाठी, पेज–1*

207. .... जलराशि है– UGC 73 D–2012

(A) मेषः (B) वृषभः

(C) मिथुनम् (D) कर्कः

स्रोत–*ज्योतिषशास्त्र-प्रशिक्षक - गिरिजाशङ्कर शास्त्री, पेज–90*

208. कालपुरुष का आत्मा है? UGC 73 D–2012

(A) सूर्यः (B) चन्द्रमा

(C) बुधः (D) बृहस्पतिः

स्रोत–*ज्योतिषशास्त्र-प्रशिक्षक - गिरिजाशङ्कर शास्त्री, पेज–98*

209. राहु का उच्चराशि है? UGC 73 D–2012

(A) मेषः (B) वृषभः

(C) कर्कः (D) सिंहः

स्रोत–*बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् - सुरेशचन्द्र मिश्र, पेज–502*

210. .... क्षत्रिय राशि है? UGC 73 D–2012

(A) मेषराशिः (B) वृषभराशिः

(C) मिथुनराशिः (D) कर्कराशिः

स्रोत–*जातकपारिजात - कपिलेश्वरशास्त्री, पेज–11*

197. (A) 198. (B) 199. (C) 200. (A) 201. (C) 202. (D) 203. (D) 204. (D) 205. (A) 206. (C) 207. (D) 208. (A) 209. (B) 210. (A)

211. कालपुरुष का मन .... है? UGC 73 D–2012

(A) शुक्रः (B) चन्द्रः
(C) भानुः (D) बुधः

स्रोत–ज्योतिषशास्त्र-प्रशिक्षक - गिरिजाशङ्करशास्त्री, पेज–98

212. अर्थभाव से विवर्तित होता है? UGC 73 D–2012

(A) जगत् (B) शब्दब्रह्म
(C) ध्वनिः (D) वैखरी

213. लग्न से सप्तम भाव तक सभी ग्रहों के रहने पर होता है? UGC 73 J–2013

(A) चापयोगः (B) छत्रयोगः
(C) नौकायोगः (D) कूटयोगः

स्रोत–भारतीय ज्योतिष - नेमिचन्द्र शास्त्री, पेज–280

214. एक नक्षत्र होने पर पाद भेद हो तो शुभ होता है? UGC 73 J–2013

(A) व्रतबन्धः (B) गृहप्रवेशः
(C) विवाहः (D) गृहारम्भः

स्रोत–भारतीय ज्योतिष - नेमिचन्द्र शास्त्री, पेज–405

215. सप्तम में भौम रहने पर होता है? UGC 73 J–2013

(A) दारिद्र्ययोगकारकः (B) वैधव्ययोगकारकः
(C) क्रूरयोगकारकः (D) बहुभार्यायोगकारकः

स्रोत–मानसागरी - सीताराम झा, पेज–101

216. राशिलिप्ता का आठवाँ भाग होता है? UGC 73 J-2013

(A) प्रथमं ज्यार्धम् (B) मध्यमान्तरम्
(C) चरान्तरम् (D) भुजान्तरम्

217. मन्दस्पष्ट और शीघ्रगतिफल में भेद होता है? UGC 73 J–2013

(A) मध्यमागतिः (B) मन्दस्पष्टागतिः
(C) स्पष्टागतिः (D) शीघ्रस्पष्टागतिः

स्रोत–सूर्यसिद्धान्त - रामचन्द्र पाण्डेय, पेज–84

218. वृषराशि के लङ्कोदयासु हैं? UGC 73 J–2013

(A) 1793 (B) 1795
(C) 1670 (D) 1930

स्रोत–भारतीय ज्योतिष - नेमिचन्द्र शास्त्री, पेज–142

219. (i) लगध का सम्बन्ध किस शास्त्र से है?
(ii) लगधः कस्मिन् शास्त्रे प्रसिद्धः?
(iii) लगधाचार्य हैं? CVVET–2015, UGC-73 D–2015 UGC 73 S–2013

(A) ज्यौतिषे (B) निरुक्ते
(C) छन्दसि (D) वेदान्ते

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–57

220. बालारिष्ट योग होता है? UGC 73 S–2013

(A) षष्ठाष्टमे सपापचन्द्रः (B) द्वादशे सपापगुरुः
(C) द्वितीये शुभः (D) दशमे पापः

स्रोत–भारतीय ज्योतिष - नेमिचन्द्र शास्त्री, पेज–290

221. विंशोत्तरीमहादशायां वर्षसंख्या भवति? UGC 73 S–2013

(A) विंशतिः (B) शतोत्तरविंशतिः
(C) अष्टोत्तरशतम् (D) षट्त्रिंशत्

स्रोत–ज्योतिषशास्त्र-प्रशिक्षक - गिरिजाशङ्कर शास्त्री, पेज–57

222. आद्यैकनाडी करता है? UGC 73 S–2013

(A) संयोगम् (B) वियोगम्
(C) रवियोगम् (D) विवाहयोगम्

स्रोत–मुहूर्तचिन्तामणि - विन्ध्येश्वरी प्रसाद द्विवेदी, पेज–362

223. सुर्येन्दुभगणान्तर होता है? UGC 73 S–2013

(A) अधिमासः (B) सौरमासः
(C) चान्द्रमासः (D) क्षयमासः

स्रोत–सूर्यसिद्धान्त - रामचन्द्र पाण्डेय, पेज–9

224. ग्रहों की गति कितने प्रकार की है? UGC 73 S–2013

(A) द्विधा (B) अष्टधा
(C) पञ्चधा (D) त्रिधा

स्रोत–ज्योतिषशास्त्र-प्रशिक्षक - गिरिजाशङ्कर शास्त्री, पेज–98

225. काम्यश्राद्ध में वैश्वदेव होते हैं? UGC 73 S–2013

(A) पुरुखाद्रवौ (B) कालकामौ
(C) सत्यवसू (D) धुरिरोचनौ

211. (B) 212. (B) 213. (C) 214. (C) 215. (B) 216. (A) 217. (C) 218. (B) 219. (A) 220. (A) 221. (B) 222. (B) 223. (A) 224. (B) 225. (D)

226. क्रान्तिवृत्तीय नाडीवृत्तीयमध्यमार्कान्तर होता है– UGC 73 S–2013

(A) उदयान्तरम् (B) मध्यमान्तरम्
(C) वेलान्तरम् (D) परमान्तरम्

स्रोत–गोलपरिभाषा - कमलाकान्त पाण्डेय, पेज–10

227. त्रिविधास्तत्र नीचमध्योच्च के भेद से होते हैं– UGC 73 D–2014

(A) अमुक्ताः (B) देवाः
(C) मृगाः (D) जडाः

228. रोहिणीनक्षत्रस्य राशिः? CVVET–2015

(A) मेषः (B) मिथुनम्
(C) वृषभः (D) सिंहः

स्रोत–ज्योतिषशास्त्र-प्रशिक्षक - गिरिजाशंकर शास्त्री, पेज–75

229. देवानां दिनं भवति UGC 25 J–2013

(A) कृष्णपक्षः (B) शुक्लपक्षः
(C) उत्तरायणम् (D) दक्षिणायनम्

स्रोत–बृहद्अबकहडाचक्रम् - अवधबिहारी त्रिपाठी, पेज–3

230. द्विजनक्षत्रीयः मासः कः? BHU Sh.ET–2011

(A) वैशाखः (B) माघः
(C) आषाढः (D) आश्विनम्

स्रोत–भारतीय ज्योतिष - नेमिचन्द्रशास्त्री, पेज–58

231. सूर्यस्य कस्मिन् राशौ विषुवसंक्रमणं भवति? BHU Sh.ET–2011

(A) कर्कटे (B) मीने
(C) मेषे (D) वृषे

स्रोत–सूर्यसिद्धान्त - रामचन्द्र पाण्डेय, पेज–348

232. लग्नेशः कुत्र शुभफलदाः भवन्ति? BHU Sh.ET–2011

(A) पञ्चमे (B) दशमे
(C) एकादशे (D) चतुर्थे

स्रोत–भारतीय ज्योतिष - नेमिचन्द्रशास्त्री, पेज–290

233. रोहिणीनक्षत्रस्य स्वामी कः अस्ति? BHU RET–2008

(A) चन्द्रमाः (B) ब्रह्मा
(C) अन्तकः (D) अर्यमा

स्रोत–ज्योतिषशास्त्र प्रशिक्षक - गिरिजाशङ्कर शास्त्री, पेज–69

234. ''कात्तिकेति'' नाम्नि कस्य नक्षत्रस्य सम्बन्धः? BHU Sh.ET–2008

(A) रोहिण्याः (B) मृगशिरायाः
(C) कृत्तिकायाः (D) पूर्वफाल्गुन्याः

स्रोत–मुहूर्तचिन्तामणि - विन्ध्येश्वरीप्रसाद द्विवेदी, पेज–363

235. एषु कः कालो दक्षिणायने परिगणितः? BHU Sh.ET–2013

(A) मेषस्य सूर्यभ्रमणकालः
(B) कर्कस्य सूर्यभ्रमणकालः
(C) मिथुनस्य सूर्यभ्रमणकालः
(D) कुम्भस्य सूर्यभ्रमणकालः

स्रोत–बृहदवकहडाचक्रम् - अवधबिहारी त्रिपाठी, पेज–3

236. चन्द्रग्रहस्य शत्रुः? CVVET–2015

(A) नास्ति (B) बुधः
(C) शुक्रः (D) रविः

स्रोत–लघुजातकम् - कमलाकान्त पाण्डेय, पेज–24

237. यमः कस्य नक्षत्रस्य स्वामी? BHU Sh.ET–2013

(A) भरणी (B) आर्द्रा
(C) चित्रा (D) आश्लेषा

मुहूर्तचिन्तामणि (नक्षत्रप्रकरणम्-1) - विन्ध्येश्वरी प्रसाद द्विवेदी, पेज–77

238. बृहस्पतिः कस्य राशेः स्वामी? BHU Sh.ET–2013

(A) वृश्चिकस्य (B) कुम्भस्य
(C) कन्यायाः (D) मीनराशेः

स्रोत–मुहूर्तचिन्तामणि - विन्ध्येश्वरीप्रसाद द्विवेदी, पेज–365

239. श्राद्ध (पितृ) पक्षः कदा भवति? BHU Sh.ET–2013

(A) श्रावणे (B) भाद्रपदे
(C) आश्विने (D) फाल्गुने

स्रोत–निर्णयसिन्धु - कमलाकरभट्ट

226. (A)	227. (D)	228. (C)	229. (C)	230. (A)	231. (C)	232. (B)	233. (B)	234. (C)	235. (B)
236. (A)	237. (A)	238. (D)	239. (C)						

240. पश्चिमदिग्यात्रायां दिक्शूलं कदा भवति? BHU Sh.ET–2013

(A) बुधवासरे (B) रविवासरे
(C) भौमवासरे (D) सोमवासरे

मुहूर्तचिन्तामणि (यात्राप्रकरण-10)-विन्ध्येश्वरी प्रसाद द्विवेदी, पेज–474

241. जन्मकुण्डली में विवाहविषय किस भाव से विचार करना चाहिये? UGC 73 D–2007

(A) पञ्चमेन (B) चतुर्थेन
(C) तृतीयेन (D) सप्तमेन

***स्रोत**–भारतीयज्योतिष - नेमिचन्द्र शास्त्री, पेज–316*

242. का रिक्तातिथिः? BHU AET–2013

(A) द्वितीया (B) चतुर्थी
(C) षष्ठी (D) अष्टमी

***स्रोत**–मुहूर्तचिन्तामणि - विन्ध्येश्वरीप्रसाद द्विवेदी, पेज–14*

243. शुक्रस्य शत्रुरस्ति– BHU AET–2010

(A) कुजः (B) गुरुः
(C) शनिः (D) चन्द्रः

***स्रोत**–बृहद्अबकहडाचक्रम् - एस0 के0 झा 'सुमन', पेज–102*

244. ज्योतिषस्य प्रवर्त्तकाचार्याः सन्ति– BHU AET–2010

(A) 18 (B) 14
(C) 22 (D) 25

***स्रोत**–मुहूर्तचिन्तामणि - विन्ध्येश्वरीप्रसाद द्विवेदी, भू. पेज–09*

245. विशाखानक्षत्रस्य राशिर्विद्यते– BHU AET–2010

(A) तुला (B) धनुः
(C) सिंहः (D) मिथुनम्

***स्रोत**–ज्योतिषशास्त्र-प्रशिक्षक - गिरिजाशङ्कर शास्त्री, पेज–75*

246. कन्याराश्यधिपतिः? CVVET–2015

(A) कुजः (B) चन्द्रः
(C) शुक्रः (D) बुधः

***स्रोत**–संस्कृत-परम्परागतविषय - शत्रुघ्न त्रिपाठी, पेज–1*

247. षण्मासात्मकं दिनं भवति– BHU AET–2010

(A) देवानाम् (B) ऋषीणाम्
(C) पितृणाम् (D) नराणाम्

***स्रोत**–बृहदवकहडाचक्रम् - अवधबिहारी त्रिपाठी, पेज–03*

248. बुधो बली भवति– BHU AET–2010

(A) रात्रौ (B) सर्वदा
(C) सन्ध्यायाम् (D) दिने

***स्रोत**–ज्योतिषशास्त्र-प्रशिक्षक - गिरिजाशङ्कर शास्त्री, पेज–97*

249. 'लघुजातकम्' केन रचितम्? BHU AET–2012

(A) पाराशरेण (B) लल्लेन
(C) वराहमिहिरेण (D) कालिदासेन

***स्रोत**–संस्कृत-परम्परागतविषय - शत्रुघ्न त्रिपाठी, पेज–02*

250. पूर्णिमातिथेः स्वामी वर्तते– BHU AET–2011

(A) सूर्यः (B) चन्द्रः
(C) पितरः (D) गणेशः

मुहूर्तचिन्तामणि (श्लोक/3)-विन्ध्येश्वरी प्रसाद द्विवेदी, पेज–10

251. हस्तनक्षत्रस्य स्वामी वर्तते– BHU AET–2011

(A) ब्रह्मा (B) स्कन्दः
(C) शुक्रः (D) रविः

मुहूर्तचिन्तामणि (नक्षत्रप्रकरणम्-1)-विन्ध्येश्वरी प्रसाद द्विवेदी, पेज–77

252. पञ्चमभावस्य कारकग्रहो वर्तते– BHU AET–2011

(A) गुरुः (B) सूर्यः
(C) चन्द्रः (D) शुक्रः

***स्रोत**–ज्योतिषशास्त्र-प्रशिक्षक - गिरिजाशङ्करशास्त्री, पेज–101*

253. प्राचीन भारत में ज्योतिषशास्त्र का पहला प्रसिद्ध विद्वान् था– MP PSC–2005

(A) बाणभट्ट (B) आर्यभट्ट
(C) विशाखदत्त (D) कात्यायन

***स्रोत**–संस्कृतवाङ्मय का बृहद् इतिहास-रामचन्द्र पाण्डेय, पेज–379*

254. एकस्मिन् राशौ कति अंशाः विद्यन्ते? UGC 73 J–2015

(A) 27° (B) 30°
(C) 24° (D) 25°

***स्रोत**–ज्योतिषशास्त्र-प्रशिक्षक - गिरिजाशङ्कर शास्त्री, पेज–04*

255. वर्तमान नक्षत्रप्रणाली में अन्तिम नक्षत्र कौन सा है? UGC 73 J–2015

(A) उत्तराभाद्रपदम् (B) रेवती
(C) मृगशिरा (D) अनुराधा

***स्रोत**–मुहूर्तचिन्तामणि - विन्ध्येश्वरीप्रसाद द्विवेदी, पेज–77*

240. (B) 241. (D) 242. (B) 243. (D) 244. (A) 245. (A) 246. (D) 247. (A) 248. (B) 249. (C) 250. (B) 251. (D) 252. (A) 253. (B) 254. (B) 255. (B)

256. नाम का प्रथमाक्षर किसके द्वारा निर्धारित किया जाता है? UGC 73 J–2015

(A) वारेण (B) योगेन

(C) नक्षत्रेण (D) करणेन

स्रोत–*मुहूर्तचिन्तामणि - विन्ध्येश्वरीप्रसाद द्विवेदी, पेज–363*

257. एकस्मिन् सौरवर्षे कति सङ्क्रान्तयो भवन्ति? UGC 73 J–2015

(A) 10 (B) 24

(C) 30 (D) 12

स्रोत–*ज्योतिषशास्त्र-प्रशिक्षक - गिरिजाशङ्कर शास्त्री, पेज–4-7*

258. एक वर्ष में कितने विषुव होते हैं? UGC 73 J–2015

(A) 2 (B) 4

(C) 1 (D) 12

स्रोत–*सूर्यसिद्धान्त - रामचन्द्र पाण्डेय, पेज–348*

259. ऋतुओं का निर्धारण किस गणना से होता है? UGC 73 J–2015

(A) निरयणगणनया (B) सायणगणनया

(C) सौरचान्द्रगणनया (D) चान्द्रगणनया

स्रोत–*सूर्यसिद्धान्त - रामचन्द्र पाण्डेय, पेज–349*

260. सावनदिनं किं भवति– UGC 73 J–2015

(A) सूर्यस्य एकांशे गते

(B) सूर्योदयाद् अग्रिमसूर्योदयपर्यन्तं कालमानम्।

(C) सूर्यचन्द्रमसोः परस्परं द्वादशांशान्तरिते।

(D) चन्द्रमसः एकनक्षत्रात् अपरनक्षत्रपर्यन्तं गतिः।

स्रोत–*संस्कृत-परम्परागतविषय - शत्रुघ्न त्रिपाठी, पेज–32*

261. जन्मकुण्डल्यां दशमभावात् किं विचार्यते– UGC 73 J–2015

(A) वृत्तिप्रश्नः (B) व्ययप्रश्नः

(C) लाभप्रश्नः (D) मृत्युप्रश्नः

स्रोत–*संस्कृत-परम्परागतविषय - शत्रुघ्न त्रिपाठी, पेज–02*

262. लग्न क्या होता है? UGC 73 J–2015

(A) जन्मकाले पूर्वाक्षितिजे लग्नः राशिभागः

(B) सूर्योदयकाले पूर्वाक्षितिजे लग्नः राशिभागः

(C) पश्चिमक्षितिजे लग्नः राशिभागः

(D) मध्याह्नकाले पूर्वाक्षितिजे लग्नः राशिभागः

263. अमावस्या कदा भवति? UGC 73 J–2015

(A) यदा सूर्यचन्द्रमसोः परस्परम् अन्तरम् 160°–180° मध्ये भवति

(B) यदा सूर्यचन्द्रमसोः परस्परम् अन्तरं 348°–360° मध्ये भवति

(C) यदा सूर्यचन्द्रमसोः परस्परम् अन्तरं 96° – 108° मध्ये भवति

(D) यदा सूर्यचन्द्रमसोः परस्परम् अन्तरं 60° – 72° मध्ये भवति

स्रोत–*गोलपरिभाषा - कमलाकान्त पाण्डेय, पेज–13*

264. मकरराशि का स्वामी कौन सा ग्रह है? UGC 73 J–2015

(A) सूर्यः (B) शनिः

(C) बृहस्पतिः (D) शुक्रः

स्रोत–*मुहूर्तचिन्तामणि - विन्ध्येश्वरी प्रसाद द्विवेदी, पेज–365*

265. निम्नलिखित में से कौन सा ग्रह दो राशियों का स्वामी नहीं होता है? UGC 73 J–2015

(A) सूर्यः (B) भौमः

(C) शुक्रः (D) बृहस्पतिः

स्रोत–*मुहूर्तचिन्तामणि - विन्ध्येश्वरी प्रसाद द्विवेदी, पेज–365*

266. किस स्थान की केन्द्रसंज्ञा नहीं होती है? UGC 73 J–2015

(A) द्वितीयस्य (B) चतुर्थस्य

(C) सप्तमस्य (D) दशमस्य

स्रोत–*संस्कृत-परम्परागतविषय - शत्रुघ्न त्रिपाठी, पेज–03*

267. जन्मकुण्डली में कौन सा स्थान मृत्युस्थान कहलाता है? UGC 73 J–2015

(A) नवमम् (B) एकादशम्

(C) अष्टमम् (D) द्वादशम्

स्रोत–*संस्कृत-परम्परागतविषय - शत्रुघ्न त्रिपाठी, पेज–02*

256. (C) 257. (D) 258. (A) 259. (C) 260. (B) 261. (A) 262. (A) 263. (B) 264. (B) 265. (A) 266. (A) 267. (C)

268. नक्षत्र के एक पाद का क्या मान है? UGC 73 J–2015

(A) $3^o - 20^o$ (B) $13^o - 20^o$

(C) $6^o - 40^o$ (D) $12^o - 40^o$

***स्रोत**–बृहद्पाराशरहोराशास्त्रम् - सुरेशचन्द्र मिश्र, पेज–25*

269. दिनमान क्या होता है? UGC 73 J–2015

(A) सूर्योदयात् मध्याह्नकालपर्यन्तं कालमानम्

(B) मध्याह्नकालात् सूर्यास्तपर्यन्तं कालमानम्

(C) सूर्योदयात् सूर्यास्तकालपर्यन्तं कालमानम्

(D) मध्याह्नात् अर्धरात्रिपर्यन्तं कालमानम्

***स्रोत**–ज्योतिषशास्त्र-प्रशिक्षक - गिरिजाशङ्कर शास्त्री, पेज–05*

270. भयात् क्या होता है? UGC 73 J–2015

(A) राशेः गतांशादयः (B) नक्षत्रस्य गतांशादयः

(C) नक्षत्रस्य शेषांशादयः (D) ग्रहस्य गतांशादयः

***स्रोत**–ज्योतिषशास्त्र-प्रशिक्षक - गिरिजाशङ्कर शास्त्री, पेज–21*

271. ज्योतिषमाधारीकृत्य वेदानां कालं चतुःसहस्र-विक्रमपूर्वं मन्यमानो विद्वानस्ति– G GIC–2015

(A) बालगङ्गाधरतिलकः (B) मैक्समूलरः

(C) वासुदेवशरण-अग्रवालः (D) विण्टरनित्जः

***स्रोत**–UGC उपकार संस्कृत गाइड - मिथिलेश पाण्डेय, पेज–42*

272. विक्रमसंवत्सर की गणना किस मान से होती है? UGC 73 D–2015

(A) चान्द्रमानेन (B) सौरमानेन

(C) बार्हस्पत्यमानेन (D) सौर-चान्द्रमानेन

273. 'भचक्रम्' किसे कहा जाता है? UGC 73 D–2015

(A) सूर्यादिग्रहाणां चक्रम् (B) कुचक्रम्

(C) आकाशमण्डलम् (D) नक्षत्राणांशचक्रम्

***स्रोत**–बृहद्पाराशरहोराशास्त्रम् - सुरेशचन्द्र मिश्र, पेज–25*

274. तिथिक्षयः कदा भवति– UGC 73 D–2015

(A) यदा चन्द्रमाः गत्याधिक्येन शीघ्रं परिभ्रमति

(B) यदा कस्याञ्चित् तिथौ सूर्योदयो न भवति

(C) यदा चन्द्रमसः गतिर्न्यूनतमा भवति

(D) यदा काचित् तिथिः सूर्यास्तसमयात् पूर्वमेव समाप्यते

***स्रोत**–ज्योतिषशास्त्र-प्रशिक्षक - गिरिजाशङ्कर शास्त्री, पेज–10*

275. आधुनिक नक्षत्र गणनाक्रम में अन्तिम नक्षत्र कौन-सा है? UGC 73 D–2015

(A) अश्विनी (B) उत्तराभाद्रपदम्

(C) कृत्तिका (D) रेवती

***स्रोत**–मुहूर्तचिन्तामणि - विन्ध्येश्वरी प्रसाद, पेज–77*

276. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सत्य नहीं है? UGC 73 D–2015

(A) राशिचक्रे मीनस्य द्वादशस्थानं विद्यते

(B) चान्द्रवर्षे दिनानां संख्या षष्ठयुत्तरत्रिशतम् विद्यते

(C) जन्मकुण्डल्यां चतुर्थस्थानस्य केन्द्रसंज्ञा भवति

(D) जन्मकुण्डल्यां लग्नस्य महत्त्वं सर्वाधिकमस्ति

***स्रोत**–संस्कृत-परम्परागतविषय - शत्रुघ्न त्रिपाठी, पेज–26*

277. चन्द्रग्रहण कब होता है? UGC 73 D–2015

(A) यदा चन्द्रमाः पृथिव्याः छायायाम् आगच्छति

(B) यदा चन्द्रमाः सूर्यस्य पृथ्व्याश्च मध्ये आगच्छति

(C) यदा सूर्यः पृथ्व्याश्च चन्द्रस्य च मध्ये आगच्छति

(D) यदा सूर्यबिम्बम् पृथ्व्या आच्छाद्यते

***स्रोत**–सूर्यसिद्धान्त - रामचन्द्र पाण्डेय, पेज–169*

278. सूर्यसिद्धान्त के अनुसार भूव्यास का परिमाण क्या है? UGC 73 D–2015

(A) 1200 योजनानि (B) 1500 योजनानि

(C) 1600 योजनानि (D) 1000 योजनानि

***स्रोत**–सूर्यसिद्धान्त - रामचन्द्र पाण्डेय, पेज–38*

279. जन्मकुण्डली में किस भाव से विवाह का विचार किया जाता है? UGC 73 D–2015

(A) पञ्चमात् (B) लग्नात्

(C) अष्टमात् (D) सप्तमात्

***स्रोत**–भारतीयज्योतिष - नेमिचन्द्रशास्त्री, पेज–316*

280. जब सभी ग्रह चरराशियों में आ जाते हैं तो कौन सा योग बनता है? UGC 73 D–2015

(A) मुशलः (B) रज्जुः

(C) नलः (D) मालाः

***स्रोत**–बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् - सुरेशचन्द्र मिश्र, पेज–252*

268. (A) 269. (C) 270. (B) 271. (A) 272. (D) 273. (D) 274. (B) 275. (D) 276. (B) 277. (A) 278. (C) 279. (D) 280. (B)

281. एक कल्प में कितने वर्ष होते हैं? UGC 73 D–2015

(A) 4,32,000 (B) 43,20,000
(C) 4,32,00,00,000 (D) 4,32,00,000

***स्रोत**–सूर्यसिद्धान्त - रामचन्द्र पाण्डेय, पेज–13*

282. त्रिज्या क्या होती है? UGC 73 D–2015

(A) व्यासः
(B) व्यासार्धः
(C) षष्ठ्यंशात्मककोणस्य ज्या
(D) पञ्चचत्वारिंशदंशात्मककोणस्य ज्या

***स्रोत**–सूर्यसिद्धान्त - रामचन्द्र पाण्डेय, पेज–38*

283. देशान्तरवृत्त क्या होता है? UGC 73 D–2015

(A) ध्रुवयोर्मध्यगतं भूवृत्तम्
(B) भूमध्यवृत्तम्
(C) सूर्यस्य देशेषु प्रत्यक्षभ्रमणवृत्तम्
(D) नक्षत्रचक्रस्य भ्रमणवृत्तम्

***स्रोत**–ज्योतिषशास्त्र-प्रशिक्षक - गिरिजाशङ्कर शास्त्री, पेज–18*

284. भूपरिधि किसे कहते है? UGC 73 D–2015

(A) क्षितिजवृत्तम्
(B) भूमध्यसामान्तरम् अक्षवृत्तम्
(C) ध्रुवप्रोतवृत्तम्
(D) खमण्डले यम्योत्तरवृत्तम्

285. शरत् सम्पात कब होता है? UGC 73 D–2015

(A) यदा सूर्यः सायणतुलाराशौ प्रविशति
(B) यदा सूर्यः सायणमेषराशौ प्रविशति
(C) यदा सूर्यः निरयणतुलाराशौ प्रविशति
(D) यदा सूर्यः सायणमिथुनराशौ प्रविशति

***स्रोत**–सूर्यसिद्धान्त - रामचन्द्र पाण्डेय, पेज–335*

286. निम्नलिखित में से कौन सा ग्रह नपुंसक कहलाता है? UGC 73 D–2015

(A) सूर्यः (B) भौमः
(C) गुरुः (D) शनिः

***स्रोत**–ज्योतिषशास्त्र-प्रशिक्षक - गिरिजाशङ्कर शास्त्री, पेज–95*

287. कालपुरुष के हृदय को कौन सी राशि द्योतित करती है? UGC 73 D–2015

(A) मेषः (B) वृषः
(C) कर्कटः (D) सिंहः

***स्रोत**–ज्योतिषशास्त्र-प्रशिक्षक - गिरिजाशङ्कर शास्त्री, पेज–90*

288. एक राशि में कितने नक्षत्रपाद होते हैं? UGC 73 D–2015

(A) 9 (B) 4
(C) 6 (D) 8

***स्रोत**–मुहूर्तचिन्तामणि - विन्ध्येश्वरीप्रसाद द्विवेदी, पेज–362*

289. सूर्यसिद्धान्त ग्रन्थ किस विषय का है? UGC 73 D–2015

(A) भौतिकविज्ञानस्य (B) ज्यौतिषस्य
(C) वेदान्तस्य (D) तन्त्रस्य

***स्रोत**–सूर्यसिद्धान्त - रामचन्द्र पाण्डेय, पेज–भू. 8*

290. लगधाचार्योऽस्ति– UGC 73 S–2013

(A) आर्षज्योतिषग्रन्थकारः
(B) फलितज्योतिषग्रन्थकारः
(C) गणितज्योतिषग्रन्थकारः
(D) वास्तुविद्याग्रन्थकारः

***स्रोत**–संस्कृतवाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-16) - श्रीनिवासरथ/ रामचन्द्र पाण्डेय, पेज–23*

।। नमः संस्कृताय ।।

281. (C) 282. (B) 283. (B) 284. (B) 285. (A) 286. (D) 287. (C) 288. (A) 289. (B) 290. (A)

11. वेदों का रचनाकाल

1. नित्याः खलु वेदा इति केषाम् अभिमतम्– UGC 25 J–2008

(A) मोक्षमूलरस्य
(B) जैकोबीमहोदयस्य
(C) वेबरस्य
(D) प्राचीनभारतीयपरम्परायाः

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–11-15*

2. वेदस्य अपौरुषेयत्वं कः स्वीकरोति–UGC 25 D–2009

(A) वेबरः (B) मैक्समूलरः
(C) विल्सनः (D) जैमिनिः

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–12*

3. वेदकालविषये भारतीयपरम्परागतविचारं कः परिपोषयति। UGC 25 J–2013

(A) मैक्समूलरः (B) वेबरः
(C) विन्टरनित्सः (D) सायणः

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–17*

4. (i) वेद का समय 6000 ई0 पू0 किनके मत में है–
(ii) किस विद्वान् के अनुसार ऋग्वेद का आरम्भकाल 6000 ई0 पू0 है– UGC 25 J–1995, 1999

(A) बालगङ्गाधरतिलक (B) वेबर
(C) मैक्समूलर (D) याकोबी

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–40*

5. 'उत्तर ध्रुव' को वेदों का रचना स्थान माना जाता है? UGC 25 J–1994

(A) बालगङ्गाधर तिलक (B) वेबर
(C) मैक्समूलर (D) मैक्डोनल

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–62*

6. (i) वेदकालस्य निर्धारणे भारतीयज्योतिषपरम्परा केन परिपालिता–
(ii) ज्योतिर्विज्ञानमाश्रित्य कः वेदानां कालनिर्धारणमकरोत्
(iii) वेदकालनिरूपणे कः ज्योतिषमवलम्बते– UGC 25 D–2005 J–2011, D–2011

(A) विन्टरनित्सः (B) मैक्समूलरः
(C) वेबरः (D) बालगङ्गाधरतिलकः

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–39*

7. (i) बालगङ्गाधर तिलक के अनुसार ऋग्वेद का समय है?
(ii) बालगङ्गाधरतिलकानुसारं ऋग्वेदस्य कालः ख्रीस्तपूर्वं वर्तते? UGC 25 J–2009, D–2004, J–2002

(A) 6000 ई0 पू0 (B) 8000 ई0 पू0
(C) 2500 ई0 पू0 (D) 3500 ई0 पू0

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–40*

8. बालगङ्गाधरतिलकम् अनुसृत्य वेदस्य रचनाकालम् अस्ति। UGC 25 D–2000

(A) 6000 ई0 पू0 तः 4000 ई0 पू0 पर्यन्तम्
(B) 5000 ई0 पू0 तः 3000 ई0 पू0 पर्यन्तम्
(C) 5000 ई0 पू0 तः 4000 ई0 पू0 पर्यन्तम्
(D) 6000 ई0 पू0 तः 5000 ई0 पू0 पर्यन्तम्

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–40*

9. (i) नक्षत्रसम्पातादिना वेदकालं कः प्रतिपादयति–
(ii) नक्षत्रसम्पातगणनया केन वेदकालो निर्धार्यते। UGC 25 D–2012, 2013, UK SLET–2012

(A) मैक्समूलरः (B) वेबरः
(C) बालगङ्गाधरतिलकः (D) जैकोबी

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–40*

1. (D) 2. (D) 3. (D) 4. (A) 5. (A) 6. (D) 7. (A) 8. (A) 9. (C)

10. लोकमान्यबालगङ्गाधरतिलकमते वैदिकरचनाकालः कः? BHU AET–2011

(A) 6000 – 4500 BC (B) 4500 – 1200 BC
(C) 4000 – 2500 BC (D) 2500 – 1200 BC

स्रोत**–*****वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–40***

11. (i) वैदिककाल निर्णये ज्योतिषस्य उपयोगः केन कृतः–
(ii) ज्योतिषशास्त्राधारेण वैदिकतिथिनिर्धारकः कोऽस्ति?
BHU AET–2011, UGC–25 D–2007 , 2014

(A) विन्टरनित्सः (B) लोकमान्यबालगङ्गाधरतिलकः
(C) मैक्समूलरः (D) मैक्डोनलः

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–39

12. लोकमान्यतिलकमतानुसारं वेदस्य रचना कदा अभवत्? BHU AET–2010

(A) 3 सहस्रवर्षपूर्वम् (B) 2500 वर्षपूर्वम्
(C) 6000 वर्ष ईसापूर्वम् (D) लक्षवर्षपूर्वम्

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–40

13. लोकमान्यतिलकमते वेदस्य कालः– UGC 25 J–2010

(A) त्रिसहस्रवर्षेभ्यः पूर्वम् (B) सार्धत्रिसहस्रवर्षेभ्यः पूर्वम्
(C) पञ्चसहस्रवर्षेभ्यः पूर्वम् (D) दशसहस्रवर्षेभ्यः पूर्वम्

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–40

14. ज्योतिषमाधारीकृत्य वेदानां कालं चतुःसहस्रविक्रमपूर्वं मन्यमानो विद्वानस्ति– GGIC – 2015

(A) बालगङ्गाधरतिलकः (B) वासुदेवशरणअग्रवालः
(C) मैक्समूलरः (D) विण्टरनित्सः

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–41

15. 'वेदा अपौरुषेयाः सन्ति'-इति मतम् अस्ति। UGC 25 J–2013

(A) मैक्समूलरस्य (B) दयानन्दस्य
(C) विन्टरनित्सस्य (D) सर्वेषामेव

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–18

16. छन्दः कालादिनामभिः वेदकालं प्रथमतः कः प्रतिपादयति– UGC 25 J–2012

(A) मैक्समूलरः (B) वेबरः
(C) बालगङ्गाधरतिलकः (D) विन्टरनित्सः

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–42

17. (i) मैक्समूलरमतानुसारम् ऋग्वेदस्य कालो वर्तते?
(ii) मैक्समूलर के अनुसार वेद का समय है।
(iii) मैक्समूलरानुसारं प्राचीनस्य ऋग्वेदस्य रचना कदा अभवत्? BHU AET–2010
UGC 25 D–1999, 2001, 2009, J–2000, 2001

(A) 300 वि0 पू0 (B) 500 वि0 पू0
(C) 100 वि0 पू0 (D) 1200 वि0 पू0

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–42

18. मैक्समूलरमतानुसारं वेदस्य मन्त्र रचना कदा अभवत्? BHU AET–2010

(A) 1000 ई0 पू0 (B) 2000 ई0 पू0
(C) 4000 ई0 पू0 (D) 5000 ई0 पू0

वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–42

19. मैक्समूलरमहोदयेन ऋग्वेदस्य कालः स्वीकृतः। UP GIC–2015

(A) 1200 ख्रिष्टाब्दपूर्वकम् (B) 5000 ख्रिष्टाब्दपूर्वकम्
(C) ख्रिष्टाब्दस्य प्रथमशताब्द्याम् (D) 1300 विक्रमसंवत्पूर्वम्।

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–39

20. मैक्समूलरमतानुसारं वेदानां रचनाकालः– CVVET–2015

(A) ई0पू0 षट्ससहस्रवर्षेभ्यः प्राक्
(B) ई0 पू0 द्वादशतवर्षेभ्यः प्राक्
(C) ई0 पू0 सप्तसहस्रवर्षेभ्यः प्राक्
(D) ई0 पू0 सार्धद्विसहस्रवर्षेभ्यः प्राक्

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–39

10. (A) 11. (B) 12. (C) 13. (C) 14. (A) 15. (B) 16. (A) 17. (D) 18. (A) 19. (A) 20. (B)

21. प्रथमः वेदकालनिर्णायकोऽस्ति— G GIC–2015

(A) राथः (B) मैक्समूलरः
(C) सायणः (D) मैक्डॉनलः

स्रोत–*वैदिक साहित्य और संस्कृति - बलदेव उपाध्याय, पेज–94*

22. सूत्रसाहित्यस्य रचनाकालः पी0 वी0 काणे-मतानुसारम्— CVVET–2015

(A) ई0 500तः 800 पर्यन्तम्
(B) ई0 पू0 500तः ई0 500 पर्यन्तम्
(C) ई0 800तः 1950 पर्यन्तम्
(D) ई0 पू0 500तः 300 पर्यन्तम्

23. विन्टरनित्स के अनुसार ऋग्वेद का समय है। UGC 25 D–1996

(A) 1500 BC (B) 2500 BC
(C) 3500 BC (D) 4500 BC

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–42*

24. वेदस्य अपौरुषेयत्वं कः न स्वीकरोति— UGC 25 J–2010

(A) विन्टरनित्सः (B) सायणः
(C) माधवः (D) दयानन्दः

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–17, 18, 23*

25. वेबरमहाभागः यजुर्वेदीयानां शतपथब्राह्मणग्रन्थानाम् आलोचनात्मकं संस्करणं कदा अप्रकाशयत्। UGC 25 D–2011

(A) 1855 ई0 (B) 1955 ई0
(C) 1850 ई0 (D) 1852 ई0

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–34*

26. दीनानाथ चुलेटमहोदयानुसारं वेदस्य रचना कदा अभवत्— BHU AET–2010

(A) 3 लक्षवर्षपूर्वम् (B) 4 लक्षवर्षपूर्वम्
(C) सहस्रवर्षपूर्वम् (D) शतवर्षपूर्वम्

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–39*

21. (B) 22. (B) 23. (B) 24. (A) 25. (A) 26. (A)

12. वैदिक-व्याकरण

1. वेदस्य मुख्याः स्वराः– BHU AET–2010

(A) 4 (B) 5
(C) 3 (D) 1

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–191*

2. संख्यया स्वराङ्कनं भवति– UGC 25 J–2009

(A) यजुर्वेदे (B) सामवेदे
(C) अथर्ववेदे (D) ऋग्वेदे

स्रोत–*वैदिकसूक्तसंग्रह (वैदिक व्या0-30) - विजयशङ्कर पाण्डेय*

3. माध्यन्दिनीय-संहितायामुदात्तस्वरस्य अङ्कनं भवति– UGC 25 J–2009

(A) अधः (B) उपरिष्टात्
(C) तिर्यक् (D) किमपि न

स्रोत–*संस्कृत-वाङ्मय का बृहत् इतिहास (प्रथम खण्ड)-बलदेव उपाध्याय/ओम प्रकाश, पेज–269*

4. मन्त्रेषु अनुदात्तस्वराङ्कनं क्रियते– UGC 25 J–2012

(A) मध्ये (B) उपरिष्टात्
(C) अधः (D) वामतः

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–326*

5. स्वरितात् परो अनुदात्तः किम् उच्यते? HE –2015

(A) उदात्तः (B) प्रचयः
(C) जात्यस्वरितः (D) अनुदात्ततरः

स्रोत–*ऋग्वेद-प्रातिशाख्यम् - वीरेन्द्रकुमार वर्मा, पेज–230*

6. उदात्तादिस्वराः कति भवन्ति? BHU – AET–2010

(A) विंशतिः (B) त्रयः
(C) दश (D) पञ्च

स्रोत–*ऋग्वेद-प्रातिशाख्यम् - वीरेन्द्रकुमार वर्मा, पेज–213*

7. स्वराः इत्यनेन के गृह्यन्ते? BHU AET–2010

(A) सवनानि (B) उदात्तादयः
(C) स्तवनानि (D) प्रयाजादयः

स्रोत–*ऋग्वेद-प्रातिशाख्यम् - वीरेन्द्रकुमार वर्मा, पेज–213*

8. वैदिकमन्त्रस्य उच्चारणे स्वराणां मुख्यभेदः– BHU AET–2011

(A) 2 (B) 5
(C) 3 (D) 6

स्रोत–*ऋग्वेद-प्रातिशाख्यम् - वीरेन्द्रकुमार वर्मा, पेज–213*

9. ऋक्प्रातिशाख्यानुसारेण स्वराणां .... सन्ति– UGC 25 D–2014

(A) त्रिविधभेदाः (B) चतुर्विधभेदाः
(C) पञ्चविधभेदाः (D) नवविधभेदाः

स्रोत–*ऋग्वेद-प्रातिशाख्यम् - वीरेन्द्र कुमार वर्मा, पेज–213*

10. स्वरित के कितने भेद होते हैं? UGC 73 J–2014

(A) त्रयः (B) पञ्च
(C) अष्टौ (D) सप्त

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास-गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज–391*

11. समाहारो भवति? BHU AET–2012

(A) उदात्तः (B) अनुदात्तः
(C) स्वरितः (D) प्रचयः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–15*

12. ऋग्वेदीय-प्रातिशाख्यानुसारेण रक्तसंज्ञः कः? UGC 25 D–2013

(A) स्पर्शः (B) अनुनासिकः
(C) संयोगः (D) विसर्गः

स्रोत–*ऋग्वेद-प्रातिशाख्यम् - वीरेन्द्रकुमार वर्मा, पेज–69*

13. ''यज्ञस्य देवम्'' इत्यत्र 'देवम्' पदस्य स्वरोऽस्ति– UGC 25 J–2013

(A) देव॑म् (B) देव॒म्
(C) दे॒व॒म् (D) दे॒वम्

वैदिकसूक्तसंग्रह (अग्निसूक्त ऋग्वेद 1.1.1)-विजयशङ्कर पाण्डेय, पेज–31

1. (C)	2. (B)	3. (D)	4. (C)	5. (B)	6. (B)	7. (B)	8. (C)	9. (A)	10. (C)
11. (C)	12. (B)	13. (D)							

14. 'इषे' पद में जो स्वर है, वह है– BHU MET–2014

(A) आद्युदात्त (B) मध्योदात्त

(C) सर्वोदात्त (D) अन्तोदात्त

15. ऋग्वेद में व्ळ् उपलब्ध होता है– UP GDC–2008

(A) स्वर-व्यञ्जन के मध्य में (B) दो स्वरों के मध्य में

(C) दो व्यञ्जनों के मध्य में (D) व्यञ्जन-स्वर के मध्य में

स्रोत–*वैदिकसूक्तसंग्रह (वैदिक व्या.)-विजयशङ्कर पाण्डेय, पेज–02*

16. ''तिस्रः प्लुत उच्यते स्वरः'' इति कथनं वर्त्तते? UP GDC–2012

(A) ऋक्प्रातिशाख्ये (B) अष्टाध्याय्याम्

(C) महाभाष्ये (D) निरुक्ते

स्रोत–*ऋग्वेद-प्रातिशाख्यम् - वीरेन्द्र कुमार वर्मा, पेज–66*

17. त्रयः स्वराः इत्यन्तर्गते न गण्यते– UGC 25 J–2015

(A) उदात्तः (B) आगमः

(C) अनुदात्तः (D) स्वरितः

स्रोत–*वेदचयनम् - विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी, परिशेष-35*

18. ऋग्वेदे प्रमुखप्रयुक्तस्वरसंख्याः कियत्यः– BHU AET–2011

(A) 4 (B) 3

(C) 5 (D) 6

स्रोत–*ऋग्वेद-प्रातिशाख्यम् - वीरेन्द्र कुमार वर्मा, पेज–213*

19. (i) वेदाध्ययने विकृतिपाठः कतिधा विद्यते?

(ii) वेदपाठस्य कति विकृतयः भवन्ति–

(iii) विकृतिपाठः कतिधा–BHU AET–2010, 2011 UGC 25 D–2004, J–2010

(A) 7 (B) 8

(C) 9 (D) 10

स्रोत–*वेदचयनम् - विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी, परिशेष-32*

20. निम्नलिखित में कौन सा लकार केवल वेदों में पाया जाता है? BHU MET–2009, 2013

(A) लट् (B) लेट्

(C) लोट् (D) लङ्

स्रोत–*वैदिकसूक्तसंग्रह (वैदिक व्या.)-विजयशङ्कर पाण्डेय, पेज–22*

21. पञ्चमो लकारः कुत्र प्राप्यते? BHU AET–2010

(A) न्याये (B) पुराणे

(C) वेदे (D) अर्थशास्त्रे

स्रोत–*वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (भाग-4)-गोविन्दाचार्य, पेज–06*

22. 'गमत्' किस लकार से सम्बद्ध है– BHU MET–2009, 2013

(A) लट् (B) लोट्

(C) लृट् (D) लेट्

स्रोत–*वेदचयनम् (ऋग्वेद 1.1.5)-विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी, पेज–17*

23. 'तारिषत्' पद किस लकार से सम्बद्ध है? BHU MET–2011

(A) लट् (B) विधिलिङ्

(C) लोट् (D) लेट्

स्रोत–*ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, भूमिका–32*

24. को लकारः छन्दसि प्रसिद्धः? BHU Sh.ET–2011

(A) लिट् (B) लोट्

(C) लेट् (D) लङ्

स्रोत–*वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (भाग-4)-गोविन्दाचार्य, पेज–01, 06*

25. लुङ्-लङ्-लिट्लकाराणां बह्वर्थकः प्रयोगो दृश्यते? UP GDC–2012

(A) पालिभाषायाम् (B) वैदिकसंस्कृते

(C) श्रेण्यसंस्कृते (D) गाथासंस्कृते

26. (i) लेट्लकारस्य प्रयोगेण युक्ता भाषास्ति

(ii) लेट्लकार प्रयुक्त हुआ है– UP GDC–2008, UP GIC–2009, 2015

(A) वैदिक संस्कृत में (B) लौकिक संस्कृत में

(C) पालि में (D) प्राकृत में

स्रोत–*(i) ऋक्सूक्तसंग्रह-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, भूमिका–32*

(ii) वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (भाग-4) - गोविन्दाचार्य, पेज–06

14. (C)	15. (B)	16. (A)	17. (B)	18. (B)	19. (B)	20. (B)	21. (C)	22. (D)	23. (D)
24. (C)	25. (B)	26. (A)							

27. प्रायः वेदेषु एव लभ्यते– **UGC 25 J–2015**

(A) लट्लकारः (B) लृट्लकारः

(C) लिट्लकारः (D) लेट्लकारः

स्रोत–*(i) वैदिकसूक्तसंग्रह-विजयशङ्कर पाण्डेय–वैदिक व्याकरण–22*

(ii) ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, भूमिका-32

28. 'पाहि' इति पदं कस्मिन् लकारे विद्यते? **BHU AET–2010**

(A) लोट्लकारे (B) लृट्लकारे

(C) लिट्लकारे (D) लङ्लकारे

ऋक्सूक्तसंग्रह ऋग्वेद (1.143.8)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–163

29. प्लुतसंज्ञा भवति– **BHU AET–2010**

(A) व्यञ्जनस्य (B) स्वरस्य

(C) पदस्य (D) शब्दस्य

स्रोत–*ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, भूमिका–30*

30. आमन्त्रितज ओकारो भवति– **UGC 25 J–2014**

(A) रक्तः (B) प्रगृह्यः

(C) रिफितः (D) यमः

स्रोत–*ऋग्वेद-प्रातिशाख्यम् - वीरेन्द्रकुमार वर्मा, पेज–96*

31. अस्ति बाह्यप्रयत्नः– **UGC–25 J–2015**

(A) नादः (B) ईषत्स्पृष्टम्

(C) स्पृष्टम् (D) विवृतम्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–17*

32. कौन सा प्रत्यय केवल वेदों में प्रयुक्त है? **BHU MET–2009, 2011**

(A) अध्यै (B) तुमुन्

(C) क्त्वा (D) क्त

स्रोत–*वैदिकसूक्तसंग्रह (वैदिक व्या.)-विजयशङ्कर पाण्डेय, पेज–14*

33. 'जीवसे' मे प्रत्यय है– **BHU MET–2014**

(A) असे (B) तवै

(C) तवे (D) मने

स्रोत–*वैदिकसूक्तसंग्रह (वैदिक व्या.)-विजयशङ्कर पाण्डेय, पेज–14*

34. तुमर्थक प्रत्ययों का प्रचुर प्रयोग हुआ है– **UP GDC–2008**

(A) उपनिषदों में (B) पुराणों में

(C) वेदों में (D) रामायण में

स्रोत–*वैदिकसूक्तसंग्रह - विजयशङ्कर पाण्डेय, पेज–14*

35. प्लुतमात्रोच्चारणकालः– **BHU AET–2010**

(A) 2 (B) 1

(C) 3 (D) 4

स्रोत–*ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–30*

36. व्यञ्जनोच्चारणकालः– **BHU AET–2010**

(A) 2 (B) 1

(C) 4 (D) $\frac{1}{2}$

स्रोत–*ऋग्वेद-प्रातिशाख्यम् - वीरेन्द्रकुमार वर्मा, पेज–69*

37. ह्रस्वोच्चारणकालः– **BHU AET–2010**

(A) 2 (B) 1

(C) 4 (D) 3

स्रोत–*ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–30*

38. दीर्घमात्रोच्चारणकालः– **BHU AET–2010**

(A) 2 (B) 3

(C) 4 (D) 1

स्रोत–*ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–30*

39. ऋग्वेद में 'देवासः' रूप किस विभक्ति का है? **UP GDC–2008**

(A) प्रथमा विभक्ति (B) द्वितीया विभक्ति

(C) तृतीया विभक्ति (D) सप्तमी विभक्ति

स्रोत–*ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–63*

40. 'दाशुषे' में विभक्ति है– **BHU MET–2015**

(A) चतुर्थी (B) पञ्चमी

(C) सप्तमी (D) प्रथमा

ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 1.1.6)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–58, 59

27. (D) 28. (A) 29. (B) 30. (B) 31. (A) 32. (A) 33. (A) 34. (C) 35. (C) 36. (D) 37. (B) 38. (A) 39. (A) 40. (A)

41. वैदिकव्याकरणे कियन्तः अध्यायाः सन्ति–
BHU AET–2011
(A) 4 (B) 8
(C) 12 (D) 13

42. (i) ऋग्वेदस्य शाकलसंहितायां कति सन्ध्यक्षराणि स्वीकृतानि UGC 25 J–2012
(ii) सन्ध्यक्षराणि कति– D–2015
(A) त्रीणि (B) चत्वारि
(C) अष्टौ (D) द्वादश

स्रोत–*(i) वेदचयनम् - विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी, परिशेष–35*
(ii) ऋग्वेद-प्रातिशाख्यम् - वीरेन्द्रकुमार वर्मा, पेज–43

43. समानाक्षराणि कियन्ति– UGC 25 D–2012, J–2013
(A) त्रीणि (B) चत्वारि
(C) षट् (D) अष्टौ

स्रोत–*ऋग्वेद-प्रातिशाख्यम् - वीरेन्द्रकुमार वर्मा, पेज–42*

44. प्रसिद्ध व्याकरण संख्या है– BHU AET–2010
(A) 9 (B) 4
(C) 6 (D) 3

संस्कृत व्याकरणशास्त्र का इतिहास-युधिष्ठिर मीमांसक/रामनाथत्रिपाठी, पेज–30

45. तैत्तिरीयप्रातिशाख्यानुसारं कति सन्धयो भवन्ति?
BHU AET–2012
(A) षट् (B) सप्त
(C) अष्ट (D) दश

46. तैत्तिरीयप्रातिशाख्यानुसारं कति स्वराः भवन्ति?
BHU AET–2012
(A) षोडश (B) चतुर्दश
(C) विंशतिः (D) त्रिंशत्

तैत्तिरीयप्रातिशाख्य-जमुना पाठक/सुशील कुमार पाठक, पेज–06

47. तैत्तिरीयप्रातिशाख्यानुसारं कति ऊष्माणो भवन्ति–
BHU AET–2012
(A) चत्वारः (B) षट्
(C) पञ्च (D) नव

स्रोत–*तैत्तिरीयप्रातिशाख्य-जमुना पाठक/सुशील कुमार पाठक, पेज–09*

48. ऋक्प्रातिशाख्यानुसारं सोष्मवर्णः कः–
UGC 25 S–2013
(A) च (B) छ
(C) ज (D) ट

स्रोत–*ऋग्वेद-प्रातिशाख्यम् - वीरेन्द्रकुमार वर्मा, पेज–55*

49. ऋक्प्रातिशाख्यानुसारम् अघोषवर्णः कः–
UGC 25 S–2013
(A) श (B) ष
(C) ड (D) ण

स्रोत–*ऋग्वेद-प्रातिशाख्यम् - वीरेन्द्रकुमार वर्मा, पेज–54*

50. सोष्मसञ्ज्ञो वर्णः कः– UGC 25 D–2012
(A) क (B) ख
(C) ग (D) ङ

स्रोत–*ऋग्वेद-प्रातिशाख्यम् - वीरेन्द्रकुमार वर्मा, पेज–55*

51. ऋक्प्रातिशाख्यानुसारं सोष्मवर्णः कः–
UGC 25 J–2014
(A) थ (B) द
(C) प (D) ख

स्रोत–*ऋग्वेद-प्रातिशाख्यम् - वीरेन्द्रकुमार वर्मा, पेज–55*

52. ऋक्प्रातिशाख्यानुसारम् अघोषवर्णः कः?
UGC 25 J–2014
(A) त (B) द
(C) ध (D) ब

स्रोत–*ऋग्वेद-प्रातिशाख्यम् - वीरेन्द्रकुमार वर्मा, पेज–54*

53. अष्टविकृतपाठेषु कः पाठः सर्वाधिककठिनः विलक्षणश्चास्ति? BHU AET–2010
(A) जटा (B) घनः
(C) रेखा (D) शिखा

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–08*

54. घनपाठे प्रथमपदस्य कतिवारमावृत्तिर्भवति?
BHU AET–2010
(A) द्विवारम् (B) पञ्चवारम्
(C) त्रिवारम् (D) सप्तवारम्

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–08*

41. (B)	**42. (B)**	**43. (D)**	**44. (A)**	**45. (A)**	**46. (A)**	**47. (B)**	**48. (B)**	**49. (A)**	**50. (B)**
51. (D)	**52. (A)**	**53. (B)**	**54. (B)**						

55. वैदिक-पदपाठस्य विकृतयः सन्ति– JNU MET–2014

(A) षट् (B) सप्त
(C) अष्ट (D) तिस्रः

वैदिक साहित्य का इतिहास-गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज–18

56. वेदानां रक्षार्थं कतिविकृतिपाठाः मन्यन्ते? BHU AET–2012

(A) पञ्च (B) षट्
(C) अष्ट (D) दश

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–08*

57. संहिताध्ययनानन्तरं कः पाठः विधीयते– UGC 25 D–2010

(A) क्रमपाठः (B) पदपाठः
(C) जटापाठः (D) घनपाठः

स्रोत–*ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज भू.–36*

58. 'निर्भुज संहितापाठ' है– BHU AET–2015

(A) आर्षपाठ (B) जटापाठ
(C) घनपाठ (D) विकृतिपाठ

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास-गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज–17*

59. पदपाठ इत्यस्य परमप्रयोजनम् अस्ति– UGC 25 J–2015

(A) पदनिर्माणम् (B) शब्दनिर्माणम्
(C) वेदपाठरक्षणम् (D) मन्त्रगानम्

स्रोत–*ऋक्सूक्तसंग्रह-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज-36 भू. 37*

60. अर्थ समझते हुये वैदिक मन्त्रों के सस्वर पाठ को कहा जाता है? UP TET–2016

(A) पारायण विधि (B) सूत्रविधि
(C) वाद-विवाद विधि (D) उपर्युक्त सभी

स्रोत–*संस्कृतशिक्षणविधि - विजयनारायण चौबे, पेज–85*

61. कः पाठः अष्टविधः– UGC 25 D–2014

(A) क्रमपाठः (B) पदपाठः
(C) विकृतिपाठः (D) संहितापाठः

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–8*

62. 'साम' इति शब्देन किं गृह्यते– BHU AET–2010

(A) सदनम् (B) सादनम्
(C) साम्यम् (D) सर्जनम्

वैदिक साहित्य का इतिहास-गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज–100

63. शुक्लयजुःप्रातिशाख्यस्य कस्मिन् अध्याये संज्ञापरिभाषयोः वर्णनम् अस्ति? BHU AET–2010

(A) प्रथमे (B) द्वितीये
(C) तृतीये (D) चतुर्थे

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–179*

64. ''शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम्'' इति कस्यां शिक्षायां विलसति? BHU AET–2010

(A) पाणिनीयशिक्षा
(B) माण्डूकीयशिक्षा
(C) नारदीयशिक्षा
(D) याज्ञवल्क्यशिक्षा

स्रोत–*पाणिनीयशिक्षा (श्लोक-42)-शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पेज–143*

65. ''स वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति यथेन्द्रशत्रुः स्वरतोऽपराधात्'' इत्यंशः कुत्रास्ति? BHU AET–2010

(A) पाणिनीयशिक्षा (B) नारदीयशिक्षा
(C) याज्ञवल्क्यशिक्षा (D) वाशिष्ठीशिक्षा

स्रोत–*पाणिनीयशिक्षा (श्लोक-52)-शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पेज–165*

66. 'पत्सुतः शी' पदस्य अभिप्रेतार्थः– CCSUM - Ph.D–2016

(A) यमः (B) इन्द्रः
(C) वृत्रः (D) दानुः

स्रोत–*वेदचयनम् (ऋग्वेद 1.32.8)- विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी, पेज–47-48*

67. 'तत्त्वा यामि' मन्त्रे 'यामि' पदस्य आशयः– CCSUM - Ph.D–2016

(A) गच्छामि (B) आगच्छामि
(C) याचे (D) स्तौमि

स्रोत–*निरुक्त - छज्जूराम शास्त्री, पेज–63-64*

55. (C)	56. (C)	57. (B)	58. (A)	59. (C)	60. (A)	61. (C)	62. (C)	63. (A)	64. (A)
65. (A)	66. (C)	67. (C)							

13. वैदिक-सूक्तियाँ

1. 'स्वाध्यायोऽध्येतव्यः' इति वचनं कस्य? BHU AET–2010

(A) तन्त्रस्य (B) श्रुतेः
(C) पुराणस्य (D) रामायणस्य

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–02*

2. (i) 'अग्निमीळे पुरोहितं ....' किस वेद का है?
(ii) 'अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्॥' इति मन्त्रः कस्य वेदस्य प्रथमो मन्त्रोऽस्ति। BHU RET–2008, UGC 25 D–2001

(A) ऋग्वेदस्य (B) यजुर्वेदस्य
(C) सामवेदस्य (D) अथर्ववेदस्य

ऋक्सूक्तसंग्रह (अग्निसूक्त 1.1.1)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–55

3. ''ओ३म् क्रतो स्मर'' इति प्राप्यते– JNU MET–2014

(A) ऋग्वेदे (B) यजुर्वेदे
(C) सामवेदे (D) अथर्ववेदे

स्रोत–*यजुर्वेद (40.15) - वेदान्ततीर्थ, पेज–488*

4. ''द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया'' प्राप्यते– JNU MET–2014

(A) ऋग्वेदे (B) कठोपनिषदि
(C) तैत्तिरीयोपनिषदि (D) महाभारते

वैदिक साहित्य का इतिहास (ऋग्वेद 10.164.20)-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–49

5. 'स नः पितेव सूनवे' किस सूक्त से सम्बद्ध है? UGC 73 J–2015

(A) रुद्रसूक्तेन (B) अग्निसूक्तेन
(C) इन्द्रसूक्तेन (D) सवितृसूक्तेन

ऋक्सूक्तसंग्रह (अग्निसूक्त 1.1.9)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–60

6. त्रिस्रोदेव्यः इति कस्यां संहितायां प्राप्यते? BHU AET–2010

(A) वाजसनेयिसंहितायाम् (B) गोपथसंहितायाम्
(C) कौथुमसंहितायाम् (D) माध्वसंहितायाम्

7. ''विद्ययामृतमश्नुते'' इति वाक्यांशः वाजसनेयि–संहितायाः कस्मिन्नध्याये अस्ति? BHU AET–2010

(A) द्वादशे (B) त्रयोदशे
(C) नवत्रिंशे (D) चत्वारिंशे

स्रोत–*ईशादि नौ उपनिषद् - गीताप्रेस, पेज–27, 36*

8. ''वसोः पवित्रमसि शतधारम्'' इति मन्त्रः शुक्ल–यजुर्वेदस्य कस्मिन्नध्याये प्राप्यते? BHU AET–2010

(A) प्रथमे (B) तृतीये
(C) सप्तमे (D) दशमे

स्रोत–*यजुर्वेद (प्रथमोऽध्याय) - वेदान्ततीर्थ, पेज–18*

9. ''अहं ब्रह्मास्मि'' कस्मिन् वेदान्तर्गतो भवति? BHU AET–2010

(A) ऋग्वेद (B) यजुर्वेद
(C) सामवेद (D) अथर्ववेद

स्रोत–*(i) बृहदारण्यकोपनिषद् (1.4.10)-शाङ्करभाष्य, गीताप्रेस, पेज–241*
(ii) वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–05, 122

10. ''असुर्या नाम ते लोकाः'' इत्युक्तिः कस्य वेदस्य? BHU AET–2010, 2011

(A) ऋग्वेदस्य (B) यजुर्वेदस्य
(C) सामवेदस्य (D) अथर्ववेदस्य

स्रोत–*यजुर्वेद (40.3) - वेदान्ततीर्थ, पेज–485*

11. ''कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः''-इति सूक्तिः केन वेदेन सम्बद्धा। UGC 25 D–2014

(A) ऋग्वेदेन (B) यजुर्वेदेन
(C) सामवेदेन (D) अथर्ववेदेन

स्रोत–*(i) धार्मिक सूक्तियाँ - प्रकाशचन्द्र गंगराडे, पेज–39*
(ii) यजुर्वेद (40.3) - वेदान्ततीर्थ, पेज–485

1. (B) 2. (A) 3. (B) 4. (A) 5. (B) 6. (A) 7. (D) 8. (A) 9. (B) 10. (B) 11. (B)

12. ''तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः'' कहाँ की पंक्ति है– UGC 73 D–1996, BHU MET–2011

(A) ऋग्वेद की (B) अथर्ववेद की
(C) सामवेद की (D) यजुर्वेद की

स्रोत–*यजुर्वेद (40.1) - वेदान्ततीर्थ, पेज–485*

13. ''आनन्दं ब्रह्मणो विद्वान् न बिभेति कुतश्चन'' वर्तते? UGC 25 J–2006

(A) बृहदारण्यके (B) तैत्तिरीये
(C) केनोपनिषदि (D) छान्दोग्ये

स्रोत–*ईशादि नौ उपनिषद् - गीताप्रेस, पेज–403*

14. 'विश्वं भवत्येकनीडम्' इति पद्यांशः कस्मिन् ग्रन्थे प्राप्यते? JNU MET–2015

(A) वेदे (B) महाभारते
(C) रामायणे (D) योगवाशिष्ठे

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–75*

15. (i) ''स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम्'' इति वचनं कस्यामुपनिषदि विराजते– UGC 25 J–2008,
(ii) 'स्वाध्यायान्मा प्रमदः' वर्तते? 2009

(A) केनोपनिषदि (B) कठोपनिषदि
(C) तैत्तिरीयोपनिषदि (D) मुण्डकोपनिषदि

स्रोत–*(i) ईशादि नौ उपनिषद् - गीताप्रेस, पेज–362*
(ii) तैत्तिरीयोपनिषद् (शीक्षावल्ली एकादश अनुवाक)

16. ''आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे'' इति मन्त्रः अस्ति– UGC 73 D–2010

(A) ऋग्वेदस्य (B) अथर्ववेदस्य
(C) वाजसनेयसंहितायाः (D) कठसंहितायाः

स्रोत–*(i) वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–76*
(ii) यजुर्वेद (22.22) - आचार्य वेदान्ततीर्थ, पेज–339

17. ''विद्ययाऽमृतमश्नुते'' यह सूक्ति प्राप्त होती है– UGC 73 D–2006

(A) अथर्ववेदे (B) शुक्लयजुर्वेदे
(C) सामवेदे (D) ऋग्वेदे

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–76*

18. ''मा गृधः कस्यस्विद्धनम्'' यह सूक्ति मिलती है– UGC 73 J–2011

(A) श्रीमद्भगवद्गीतायाम् (B) शुक्लयजुर्वेदे
(C) ऋग्वेदे (D) अथर्ववेदे

स्रोत–*(i) वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–76*
(ii) ईशावास्योपनिषद् (मन्त्र-1) - दीपक कुमार, पेज–18

19. 'योऽसावादित्ये पुरुषः सोऽसावहम्' – इति वाक्यं कुत्र वर्तते? UGC 25 D–2015

(A) ऋग्वेदे (B) सामवेदे
(C) यजुर्वेदे (D) अथर्ववेदे

स्रोत–*यजुर्वेद (40.17) - वेदान्ततीर्थ, पेज–488*

20. (i) 'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः' यह उक्ति कहाँ प्राप्त होती है–
(ii) 'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः' इति कस्य वचनम् अस्ति। UGC 25 J–2011, BHU MET–2013, 2014 UGC 73 J–2015, RPSC ग्रेड-II (TGT)–2010

(A) ऋग्वेदस्य (B) सामवेदस्य
(C) श्रीमद्भगवद्गीतायाः (D) अथर्ववेदस्य

वैदिकसूक्तसंग्रह पृथिवीसूक्त (12.1.10) -विजयशंकर पाण्डेय, पेज–142

21. ''ऋचः सामानि छन्दांसि पुराणं यजुषा सह'' इति कुतः उद्धृतः– UGC 25 D–2014

(A) ऋग्वेदात् (B) अथर्ववेदात्
(C) रामायणात् (D) महाभारतात्

स्रोत–*(i) संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकरशर्मा 'ऋषि', पेज–173*
(ii) अथर्ववेद (11.7.24), वेदान्ततीर्थ, पेज–72

22. ''सा नो भूमिर्विसृजतां माता पुत्राय मे पयः'' मन्त्रांशोऽयं कुत्रास्ति? UK SLET–2015

(A) ऋग्वेदे (B) कृष्णयजुर्वेदे
(C) अथर्ववेदे (D) सुश्रुतसंहितायाम्

स्रोत–*(i) वेदचयनम् - विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी, पेज–260*
(ii) वैदिकसूक्तसंग्रह (पृथ्वीसूक्त अथर्ववेद 12.10.8)-विजयशंकर पाण्डेय, पेज–140

12. (D)	13. (B)	14. (A)	15. (C)	16. (C)	17. (B)	18. (B)	19. (C)	20. (D)	21. (B)
22. (C)									

23. 'माताभूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः' से सम्बन्धित है–
BHU MET–2009, 2014

(A) पृथिवीसूक्त (B) रुद्रसूक्त
(C) हिरण्यगर्भसूक्त (D) वरुणसूक्त

वैदिकसूक्तसंग्रह अथर्ववेद (12.1.10)-विजयशंकर पाण्डेय, पेज–142

24. 'कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूः' कुत्र इयम् उक्तिः–
UGC 25 J–2012

(A) श्रीमद्भगवद्गीतायाम्
(B) कठोपनिषदि
(C) ईशावास्योपनिषदि
(D) श्रीमद्भागवते

***स्रोत**–ईशावास्योपनिषद् (मन्त्र-8) - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–56*

25. ''तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाह्यतः'' कुत्र इयम् उक्तिः–
UGC 25 D–2012, J–2013

(A) भगवद्गीतायाम् (B) श्रीमद्भागवते
(C) ईशावास्योपनिषदि (D) कठोपनिषदि

***स्रोत**–ईशावास्योपनिषद् (मन्त्र-5) - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–51*

26. (i) ''विद्ययाऽमृतमश्नुते'' वाक्य किससे सम्बद्ध है?
(ii) 'विद्ययाऽमृतमश्नुते' इति सूक्तिः लभ्यते?
(iii) 'विद्ययाऽमृतमश्नुते' किस उपनिषद् में है?
DSSSB PGT–2014, UP TET–2013
UGC 73 D–2008, BHU MET–2009, 2013

(A) कठोपनिषदि (B) शतपथब्राह्मणे
(C) ईशावास्योपनिषदि (D) तैत्तिरीयारण्यके

***स्रोत**–ईशावास्योपनिषद् (मन्त्र-11) - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–62*

27. 'खं ब्रह्म' एतद् वाक्यं कस्याम् उपनिषदि प्राप्यते?
BHU AET–2010

(A) केनोपनिषदि (B) कठोपनिषदि
(C) बृहदारण्यकोपनिषदि (D) प्रश्नोपनिषदि

***स्रोत**–बृहदारण्यकोपनिषद् शाङ्करभाष्य - गीताप्रेस, पेज–1173*

28. (i) ''तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः'' किसमें मिलता है?
(ii) ''तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः'' उक्ति है?
(iii) ''तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः'' यह पंक्ति किस उपनिषद् में मिलती है?
UGC 73 D–1992, 1994, BHU MET–2012
H-TET–2015, CCSUM-Ph. D–2016

(A) मुण्डकोपनिषद् में (B) ईशावास्योपनिषद् में
(C) नारायणोपनिषद् में (D) छान्दोग्योपनिषद् में

***स्रोत**–ईशावास्योपनिषद् (मन्त्र-1) - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–41*

29. ''मा गृधः कस्यस्विद्धनम्'' यह वाक्य है?
UGC 73 S–2013

(A) ईशावास्योपनिषद् (B) कठोपनिषद्
(C) तैत्तिरीयोपनिषद् (D) माण्डूक्योपनिषद्

***स्रोत**–ईशावास्योपनिषद् (मन्त्र-1) - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–41*

30. ''अन्धं तमः प्रविशन्ति'' इति वचनं कस्यामुपनिषदि वर्तते?
UGC 25 D–2008

(A) कठोपनिषदि (B) ईशोपनिषदि
(C) केनोपनिषदि (D) मुण्डकोपनिषदि

***स्रोत**–ईशावास्योपनिषद् (मन्त्र-9) - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–59*

31. 'योऽसावसौ पुरुषः सोऽहमस्मि' - इत्यस्य कुत्रोपदेशः?
UGC 25 D–2013

(A) ईशोपनिषदि (B) तैत्तिरीयोपनिषदि
(C) केनोपनिषदि (D) श्रीमद्भागवते

***स्रोत**–ईशावास्योपनिषद् (मन्त्र-16) - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–71*

32. ''कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः''–किस उपनिषद् से है– UGC 25 D–1996, BHU MET–2014

(A) कठोपनिषद् (B) ईशावास्योपनिषद्
(C) केनोपनिषद् (D) मुण्डकोपनिषद्

***स्रोत**–ईशावास्योपनिषद् (मन्त्र-02) - दीपककुमार, पेज–26*

33. 'न कर्म लिप्यते नरे' यह वेदवाक्य कहाँ उल्लिखित है?
UGC 73 D–2015

(A) मुण्डकोपनिषदि (B) श्वेताश्वतरोपनिषदि
(C) केनोपनिषदि (D) ईशावास्योपनिषदि

***स्रोत**–ईशावास्योपनिषद् (मन्त्र-02) - दीपककुमार, पेज–26*

23. (A) 24. (C) 25. (C) 26. (C) 27. (C) 28. (B) 29. (A) 30. (B) 31. (A) 32. (B) 33. (D)

34. ''तमसो मा ज्योतिर्गमय'' इति कुत्र विद्यते–
UGC 25 D–2012, 2014

(A) ऋग्वेदे (B) बृहदारण्यके
(C) अथर्ववेदे (D) सामविधाने

स्रोत–*बृहदारण्यकोपनिषद् (अध्याय-1/3/28)-गीताप्रेस, पेज–153*

35. ''उत्तब्धं वागेव गीथोच्च गीथा चेति सउद्गीथः'' कुत्रेयमुक्तिः? UGC 25 J–2014

(A) केनोपनिषदि (B) तैत्तिरीयोपनिषदि
(C) कठोपनिषदि (D) बृहदारण्यकोपनिषदि

स्रोत–*बृहदारण्यकोपनिषद् शाङ्करभाष्य - गीताप्रेस, पेज–145*

36. ''पूर्णमदः पूर्णमिदम्'' पाया जाता है– UGC 25 D–2003, BHU AET–2011, CCSUM-Ph. D–2016

(A) बृहदारण्यकोपनिषद् में
(B) छान्दोग्योपनिषद् में
(C) प्रश्नोपनिषद् में
(D) तैत्तिरीयोपनिषद् में

स्रोत–*बृहदारण्यकोपनिषद् (अध्याय 5/1/1)-गीताप्रेस, पेज–1161*

37. ''अहं ब्रह्मास्मि'' इति कुत्र उक्तम्? BHU AET–2012

(A) कठोपनिषदि (B) बृहदारण्यकोपनिषदि
(C) गीतायाम् (D) छान्दोग्योपनिषदि

स्रोत–*बृहदारण्यकोपनिषद् (शाङ्करभाष्य 1/4/10)-गीताप्रेस, पेज–241*

38. ''विज्ञानमानन्दं ब्रह्म'' इति वाक्यं वर्तते?
BHU AET–2012

(A) कठोपनिषदि (B) बृहदारण्यकोपनिषदि
(C) गीतायाम् (D) न्याये

स्रोत–*बृहदारण्यकोपनिषद् (शाङ्करभाष्य 3/9/28)-गीताप्रेस, पेज–827*

39. 'आत्मैवेदमग्र आसीत् पुरुषविधः'' इति कुत्रोक्तम्–
UGC 25 D–2013

(A) कठोपनिषदि (B) तैत्तिरीयोपनिषदि
(C) बृहदारण्यकोपनिषदि (D) केनोपनिषदि

स्रोत–*बृहदारण्यकोपनिषद् (शाङ्करभाष्य 1/4/1)-गीताप्रेस, पेज–162*

40. 'अमृतं च स्थितं च यच्च सच्च त्यच्च' कुत्र इयम् उक्तिः?
UGC 25 S–2013

(A) केनोपनिषदि (B) छान्दोग्योपनिषदि
(C) तैत्तिरीयोपनिषदि (D) बृहदारण्यकोपनिषदि

स्रोत–*बृहदारण्यकोपनिषद् (शाङ्करभाष्य 2/3/1)-गीताप्रेस, पेज–511*

41. ''आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः'' इति कस्य वचनम्?
BHU MET–2012

(A) बृहदारण्यकोपनिषदः (B)गीतायाः
(C) मुण्डकोपनिषदः (D) कठोपनिषदः

स्रोत–*बृहदारण्यकोपनिषद् (शाङ्करभाष्य 2/4/5)-गीताप्रेस, पेज–546*

42. 'आत्मनस्तु कामाय सर्वं प्रियं भवति' इति समुक्तम्–
UGC 25 D–2009

(A) कठोपनिषदि (B) मुण्डकोपनिषदि
(C) बृहदारण्यकोपनिषदि (D) छान्दोग्योपनिषदि

बृहदारण्यकोपनिषद् (शाङ्करभाष्य 2/4/5) - गीताप्रेस, पेज–546

43. 'वाचं धेनुमुपासीत' इति कुत्र उपदिश्यते–
UGC 25 J–2013

(A) श्रीमद्भागवते (B) बृहदारण्यकोपनिषदि
(C) तैत्तिरीयोपनिषदि (D) ईशोपनिषदि

स्रोत–*बृहदारण्यकोपनिषद् (शाङ्करभाष्य 5/8/1)-गीताप्रेस, पेज–1203*

44. (i) 'असतो मा सद्गमय' यह उक्ति किस उपनिषद् में है? BHU AET–2011

(ii) ''असतो मा सद्गमय'' कुत्रोपलब्धिर्भवति?
UGC 25 J–1995, D–2001, JNU MET–2015

(A) छान्दोग्योपनिषदि (B) मुण्डकोपनिषदि
(C) माण्डूक्योपनिषदि (D) बृहदारण्यकोपनिषदि

स्रोत–*बृहदारण्यकोपनिषद् (शाङ्करभाष्य 1/3/28)-गीताप्रेस, पेज–153*

45. ''असद् वा इदमग्र आसीत्'' अयं विचारः कुत्र निर्दिष्टः–
UGC 25 D–2012

(A) ईश (B) तैत्तिरीय
(C) केन (D) बृहदारण्यक

स्रोत–*(i) ईशादि नौ उपनिषद् - गीताप्रेस, पेज–390*
(ii) तैत्तिरीयोपनिषद् (वल्ली-2 अनुवाक 7)

34. (B)	35. (D)	36. (A)	37. (B)	38. (B)	39. (C)	40. (D)	41. (A)	42. (C)	43. (B)
44. (D)	45. (B)								

46. 'युवा स्यात् साधु युवा' इति कुत्र उपदिश्यते? UGC 25 J–2012

(A) तैत्तिरीयोपनिषदि (B) कठोपनिषदि
(C) बृहदारण्यकोपनिषदि (D) केनोपनिषदि

स्रोत–(i) ईशादि नौ उपनिषद् (शाङ्करभाष्य)-गीताप्रेस, पेज–1043
(ii) तैत्तिरीयोपनिषद् (वल्ली-2 अनुवाक 7)

47. (i) 'श्रुतं मे गोपाय' इति श्रुतिवाक्यं कुतः गृहीतम्?
(ii) ''श्रुतं मे गोपाय'' के उल्लेख वाला ग्रन्थ है– HE–2015, BHU MET–2015

(A) कठोपनिषद् (B) तैत्तिरीयोपनिषद्
(C) केनोपनिषद् (D) छान्दोग्योपनिषद्

स्रोत–(i) ईशादि नौ उपनिषद् - गीताप्रेस, पेज–341
(ii) तैत्तिरीयोपनिषद् (वल्ली 1 अनुवाक 04)

48. ''यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते'' इति कुत्र उक्तम्? BHU AET–2012

(A) कठोपनिषदि (B) तैत्तिरीयोपनिषदि
(C) ईशावास्योपनिषदि (D) मुण्डकोपनिषदि

स्रोत–(i) तैत्तिरीयोपनिषद् (वल्ली-3 अनुवाक प्रथम)
(ii) ईशादि नौ उपनिषद् - गीताप्रेस, पेज–405

49. (i) 'सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म' यह उद्धरण कहाँ पर है?
(ii) ''सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म'' इति उक्तम्– BHU AET–2012, UGC 73 D–2015

(A) महाभारते (B) तैत्तिरीयोपनिषदि
(C) सांख्यदर्शने (D) कठोपनिषदि

स्रोत–(i) ईशादि नौ उपनिषद् - गीताप्रेस, पेज–372
(ii) तैत्तिरीयोपनिषद् (वल्ली-2 अनुवाक 01)

50. (i) 'यतो वाचो निवर्तन्ते' इति कस्य वाक्यम्?
(ii) ''यतो वाचो निवर्तन्ते अप्राप्य मनसा सह'' कुत्र इयम् उक्तिः? UGC 25 D–2013, UK SLET–2012

(A) कठोपनिषद् (B) तैत्तिरीयोपनिषद्
(C) केनोपनिषद् (D) बृहदारण्यकोपनिषद्

स्रोत–(i) ईशादि नौ उपनिषद् - गीताप्रेस, पेज–381
(ii) तैत्तिरीयोपनिषद् (वल्ली-2, अनुवाक 04 एवं 09), पेज–381, 403

51. 'अन्नाद् भूतानि जायन्ते जातान्यन्नेन वर्धन्ते' इयमुक्तिः कुत्रास्ति? UGC 25 J–2013

(A) कठोपनिषद् (B) बृहदारण्यकोपनिषद्
(C) केनोपनिषद् (D) तैत्तिरीयोपनिषद्

स्रोत–(i) ईशादि नौ उपनिषद् - गीताप्रेस, पेज–374
(ii) तैत्तिरीयोपनिषद् (वल्ली-2 अनुवाक-02)-चुन्नीलाल शुक्ल, पेज–50

52. ''उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान् निबोधत'' इति कुत्र उपदिश्यते। UGC 25 J–2012, UP PGT (H)–2000 BHU AET–2011, CCSUM-Ph. D–2016

(A) भगवद्गीतायाम् (B) श्रीमद्भागवते
(C) कठोपनिषदि (D) बृहदारण्यकोपनिषदि

स्रोत–ईशादि नौ उपनिषद् (कठो. 1/3/14)-गीताप्रेस, पेज–132

53. 'मानी पुनः पुनर्वशमापद्यते मे' कुत्र इयम् उक्तिः? UGC 25 S–2013

(A) तैत्तिरीयोपनिषदि (B) बृहदारण्यके
(C) कठोपनिषदि (D) केनोपनिषदि

स्रोत–ईशादि नौ उपनिषद् (कठोपनिषद् 1/2/6) - गीताप्रेस, पेज–103

54. ''येयं प्रेते विचिकित्सा मनुष्येऽस्तीत्येके नायमस्तीति चैके'' यह किसका कथन है– BHU MET–2011, 2012

(A) वाजश्रवा का (B) नचिकेता का
(C) त्रिणाचिकेत का (D) यम का

स्रोत–ईशादि नौ उपनिषद् (कठोपनिषद् 1/1/20)-गीताप्रेस, पेज–89

55. ''श्रेयश्च प्रेयश्च मनुष्यमेतः'' यह उक्ति कहाँ प्राप्त होती है– BHU MET–2011, 2012

(A) कठोपनिषद् में (B) ईशोपनिषद् में
(C) छान्दोग्योपनिषद् में (D) बृहदारण्यकोपनिषद् में

स्रोत–ईशादि नौ उपनिषद् (कठोपनिषद् 1/2/2)-गीताप्रेस, पेज–99

56. 'योगो हि प्रभवाप्ययौ' कुत्र इयम् उक्तिः? UGC 25 J–2014

(A) बृहदारण्यके (B) केनोपनिषदि
(C) भगवद्गीतायाम् (D) कठोपनिषदि

स्रोत–ईशादि नौ उपनिषद् (कठोपनिषद् 2/3/11)-गीताप्रेस, पेज–165

46. (A) 47. (B) 48. (B) 49. (B) 50. (B) 51. (D) 52. (C) 53. (C) 54. (B) 55. (A) 56. (D)

57. ''सस्यमिव मर्त्यः पच्यते सस्यमिवाजायते पुनः'' इति केनोक्तम्?
UGC 25 J–2014, BHU MET–2009, 2013

(A) नचिकेतसा (B) वाजश्रवसा
(C) यमेन (D) अग्निना

स्रोत–*ईशादि नौ उपनिषद् (कठोपनिषद् 1/1/6)-गीताप्रेस, पेज–80*

58. ''इन्द्रियेभ्यः परा ह्यर्था अर्थेभ्यश्च परं मनः'' इति कुत्रत्या उक्तिरियम्? UGC 25 D–2012

(A) कठोपनिषद् (B) बृहदारण्यकोपनिषद्
(C) तैत्तिरीयोपनिषद् (D) केनोपनिषद्

स्रोत–*ईशादि नौ उपनिषद् (कठोपनिषद् 1/3/10)-गीताप्रेस, पेज–128*

59. ''आत्मानं रथिनं विद्धि'' उपलब्ध है?
UGC 73 J–1999

(A) कठोपनिषद् में (B) ईशावास्योपनिषद् में
(C) केनोपनिषद् में (D) मुण्डकोपनिषद् में

स्रोत–*ईशादि नौ उपनिषद् (कठोपनिषद् 1/3/3)-गीताप्रेस, पेज–123*

60. 'स्वर्गे लोके न भयं किञ्चिनास्ति, न तत्र त्वं न जरया बिभेति' किस उपनिषद् से सम्बद्ध है? BHU MET–2008

(A) केनोपनिषद् (B) मुण्डकोपनिषद्
(C) कठोपनिषद् (D) छान्दोग्योपनिषद्

स्रोत–*ईशादि नौ उपनिषद् (कठोपनिषद् 1/1/12)-गीताप्रेस, पेज–84*

61. ''मृत्यवे त्वा ददामीति'' किसने कहा?
BHU MET–2009, 2013, UGC 25 S–2013

(A) यम (B) उद्दालक
(C) नचिकेता (D) कुमार

स्रोत–*ईशादि नौ उपनिषद् (कठोपनिषद् 1/1/4) - गीताप्रेस, पेज–78*

62. ''ॐ सह नाववतु सह नौ भुनक्तु सह वीर्यं करवावहै तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।'' यह शान्तिपाठ किस उपनिषद् में प्राप्त होता है? BHU MET 2009, 2013

(A) कठ (B) केन
(C) प्रश्न (D) ईश

स्रोत–*ईशादि नौ उपनिषद् - गीताप्रेस, पेज–75*

63. 'अङ्गुष्ठमात्रः पुरुषोऽन्तरात्मा' इयमुक्तिः कुत्रास्ति?
UGC 25 J–2013

(A) ईशोपनिषदि (B) तैत्तिरीयोपनिषदि
(C) कठोपनिषदि (D) केनोपनिषदि

स्रोत–*ईशादि नौ उपनिषद् (कठोपनिषद् 2/3/17)-गीताप्रेस, पेज–168*

64. ''न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यः'' उद्धृतोऽस्ति?
UP GDC–2012

(A) ईशावास्योपनिषदि (B) प्रश्नोपनिषदि
(C) कठोपनिषदि (D) श्रीमद्भगवद्गीतायाम्

स्रोत–*ईशादि नौ उपनिषद् (कठोपनिषद् 1/1/27)-गीताप्रेस, पेज–96*

65. ''अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणः'' इयमुक्तिः कुत्रास्ति?
UGC 25 D–2013

(A) बृहदारण्यकोपनिषदि (B) ईशोपनिषदि
(C) तैत्तिरीयोपनिषदि (D) कठोपनिषदि

स्रोत–*ईशादि नौ उपनिषद् (कठोपनिषद् 1/2/18)-गीताप्रेस, पेज–113*

66. (i) ''सर्वं खल्विदं ब्रह्म'' कुत्रास्ति वाक्यमिदम्–
(ii) ''सर्वं खल्विदं ब्रह्म'' यह महावाक्य किस ग्रन्थ में है? BHU AET–2010, 2011, BHU MET–2014
(iii) 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म तज्जलानिति' को बताने वाला ग्रन्थ है–UGC 73 J–2015, CCSUM - Ph. D–2016

(A) छान्दोग्य (B) ऐतरेय
(C) मुण्डक (D) कठ

स्रोत–*छान्दोग्योपनिषद् शाङ्करभाष्य (3/14/1)-गीताप्रेस, पेज–280*

67. ''तरति शोकमात्मवित्'' इति उक्तम्– BHU AET–2012

(A) छान्दोग्योपनिषदि (B) कठोपनिषदि
(C) मुण्डकोपनिषदि (D) रामायणे

स्रोत–*छान्दोग्योपनिषद् शाङ्करभाष्य (7/1/3)-गीताप्रेस, पेज–673*

68. (i) 'तत्त्वमसि' इति महावाक्यं कस्यां उपनिषदि प्राप्यते?
UP GDC–2012, BHU AET–2011, 2012
(ii) 'तत्त्वमसि' इति महावाक्यम् उपदिष्टमस्ति–

(A) छान्दोग्योपनिषदि (B) मुण्डकोपनिषदि
(C) बृहदारण्यकोपनिषदि (D) ऐतरेयब्राह्मणे

स्रोत–*छान्दोग्योपनिषद् शाङ्करभाष्य (6/8/7)-गीताप्रेस, पेज–619*

57. (A) 58. (A) 59. (A) 60. (C) 61. (B) 62. (A) 63. (C) 64. (C) 65. (D) 66. (A) 67. (A) 68. (A)

69. ''प्रज्ञा प्रतिष्ठा प्रज्ञानं ब्रह्म'' वाला उपनिषद् है– BHU MET–2014

(A) बृहदारण्यकोपनिषद् (B) कठोपनिषद्
(C) ऐतरेयोपनिषद् (D) प्रश्नोपनिषद्

स्रोत–*ईशादि नौ उपनिषद् (ऐतरेयोपनिषद् 3/1/3) -गीताप्रेस, पेज–327*

70. ''ऋग्वेदं भगवोऽध्येमि'' इति वाक्यमस्ति? JNU M.Phil/Ph.D–2014

(A) ऐतरेयोपनिषदि (B) यजुर्वेदे
(C) छान्दोग्योपनिषदि (D) तैत्तिरीयोपनिषदि

स्रोत–*छान्दोग्योपनिषद् (शाङ्करभाष्य 7/1/2) -गीताप्रेस, पेज–672*

71. ''विद्यया विन्दतेऽमृतम्'' इति कुत्रोपदिष्टम्– UGC 25 J–2012

(A) ईशावास्योपनिषदि (B) केनोपनिषदि
(C) तैत्तिरीयोपनिषदि (D) कठोपनिषदि

स्रोत–*ईशादि नौ उपनिषद् (केनोपनिषद् 2/4) -गीताप्रेस, पेज–57*

72. 'अतिमुच्य धीराः प्रेत्यास्माल्लोकादमृता भवन्ति' कुत्र इयम् उक्तिः? UGC 25 D–2013

(A) ईशोपनिषदि (B) केनोपनिषदि
(C) भगवद्गीतायाम् (D) कठोपनिषदि

स्रोत–*ईशादि नौ उपनिषद् (केनोपनिषद् 01/2) -गीताप्रेस, पेज–49*

73. 'यन्मनसा न मनुते येनाहुर्मनो मतम्' कुत्र इयम् उक्तिः– UGC 25 J–2013

(A) ईशोपनिषदि (B) केनोपनिषदि
(C) कठोपनिषदि (D) भगवद्गीतायाम्

स्रोत–*ईशादि नौ उपनिषद् (केनोपनिषद् 1.5) -गीताप्रेस, पेज–51*

74. (i) 'आत्मना विन्दते वीर्यम्' अयं विचारः कुत्रोपदिश्यते?

(ii) ''आत्मना विन्दते वीर्यं विद्यया विन्दतेऽमृतम्'' इति उक्तिः अस्ति? UGC 25 S–2013, D–2014

(A) ईशावास्योपनिषदि (B) कठोपनिषदि
(C) केनोपनिषदि (D) बृहदारण्यकोपनिषदि

स्रोत–*ईशादि नौ उपनिषद् (केनोपनिषद् खण्ड 2/4) -गीताप्रेस, पेज–57*

75. 'आदित्यो ह वै प्राणोरयिरेव चन्द्रमाः' से सम्बन्धित ग्रन्थ है– BHU MET–2015

(A) ईशावास्योपनिषद् (B) कठोपनिषद्
(C) छान्दोग्योपनिषद् (D) प्रश्नोपनिषद्

स्रोत–*ईशादि नौ उपनिषद् (प्रश्नोपनिषद् 1/5) -गीताप्रेस, पेज–175*

76. (i) 'सत्यमेव जयते' कुत्र प्राप्यते?

(ii) ''सत्यमेव जयते नाऽनृतम्'' जिसमें पठित है, वह है–

(iii) 'सत्यमेव जयते' पंक्तेः सन्दर्भग्रन्थः–

(iv) 'सत्यमेव जयते' शब्द कहाँ से लिया गया है?

UP PCS 1991, 2004, UK PCS–2004
MP PCS – 1992, 1997, AWES TGT–2013
DSSSB TGT–2014, UGC 73 J–2015
BHU AET–2011, UGC 25 J–2005, BHU MET–2014

(A) रघुवंशम् (B) मुण्डकोपनिषद्
(C) ईशोपनिषद् (D) सामवेदः

ईशादि नौ उपनिषद् (मुण्डकोपनिषद् 3/1/6) -गीताप्रेस, पेज–269

77. ''भिद्यते हृदयग्रन्थिः'' कुत्रास्ति? BHU AET–2011

(A) मुण्डकोपनिषद् (B) माण्डूक्योपनिषद्
(C) केनोपनिषद् (D) प्रश्नोपनिषद्

ईशादि नौ उपनिषद् (मुण्डकोपनिषद् 2/2/8) -गीताप्रेस, पेज–262

78. ''द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया'' कस्याम् उपनिषदि प्राप्यते? BHU AET–2011

(A) माण्डूक्योपनिषदि (B) मुण्डकोपनिषदि
(C) केनोपनिषदि (D) तैत्तिरीयोपनिषदि

ईशादि नौ उपनिषद् (मुण्डकोपनिषद् 3/1/1) -गीताप्रेस, पेज–265

79. ''क्षीयन्ते चास्य कर्माणि'' इति कस्य वाक्यम्– BHU AET–2012

(A) मुण्डकोपनिषद् (B) केनोपनिषद्
(C) कठोपनिषद् (D) ईशावास्योपनिषद्

ईशादि नौ उपनिषद् (मुण्डकोपनिषद् 2/2/8) -गीताप्रेस, पेज–262

69. (C) 70. (C) 71. (B) 72. (B) 73. (B) 74. (C) 75. (D) 76. (B) 77. (A) 78. (B) 79. (A)

80. रिक्तस्थान की पूर्ति के लिए सबसे उपर्युक्त अंश कौन है– स्वस्ति नो............ **BHU MET–2009**
(A) पूषा विश्ववेदाः (B) इन्द्रो वृद्धश्रवाः
(C) ताक्ष्यो अरिष्टनेमिः (D) बृहस्पतिर्दधातु
स्रोत–ईशादि नौ उपनिषद् - गीताप्रेस, पेज–282

81. ''ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू'...... कृतः'' इत्यत्र वर्णव्यवस्थामधिकृत्य रिक्तस्थानं प्रपूरयत– **RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014**
(A) वैश्यः (B) शूद्रः
(C) ब्राह्मणः (D) राजन्यः
ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 10/90/12)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–401

82. ''तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्'' इति कस्य सूक्तस्य ऋचांशोऽस्ति? **RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014**
(A) पुरुषसूक्तस्य (B) इन्द्रसूक्तस्य
(C) अग्निसूक्तस्य (D) विष्णुसूक्तस्य
ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 10/90/16)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–404

83. पुरुषसूक्तेन सम्बद्धा उक्तिः अस्ति– **UGC 25 J–2015**
(A) राजन्तमध्वराणां गोपामृतस्य दीदिविम्
(B) यः पर्वतान् प्रकुपिताँ अरम्णात्
(C) स भूमिं विश्वतो वृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्
(D) न मृत्युरासीदमृतं न तर्हि
ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 10/90/1)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–392

84. 'कामस्तदग्रे' इति कस्य सूक्तस्य मन्त्रांशोऽस्ति? **UP GDC –2014**
(A) हिरण्यगर्भः (B) नासदीयः
(C) पुरुषः (D) वागम्भृणी
ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 10/129/04)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–434

85. 'य आत्मदा बलदा' ये सम्बन्धित सूक्त है– **BHU MET–2014**
(A) पृथिवीसूक्त (B) हिरण्यगर्भसूक्त
(C) अग्निसूक्त (D) वरुणसूक्त
ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 10/12/12)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–407

86. ''अहं राष्ट्री संगमनी वसूनाम्'' मन्त्रोऽयं कस्मिन्–सूक्ते वर्तते? **UK SLET–2015**
(A) अग्निसूक्ते (B) वरुणसूक्ते
(C) वाक्सूक्ते (D) पुरुषसूक्ते
(i) ऋक्सूक्तसंग्रह (वाक्सूक्त 10.125.3)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–418
(iii) वेदचयनम् - विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी, पेज–174

87. ''यत्र गावो भूरिशृङ्गा अयासः'' यह किस मन्त्र का है– **BHU MET–2012**
(A) अग्निसूक्त (B) विष्णुसूक्त
(C) इन्द्रसूक्त (D) वाक्सूक्त
(i) ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 1.54.06)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–170
(ii) वेदचयनम् - विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी, पेज–106

88. ''यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं'' इत्यनेन मन्त्रांशेन सम्बद्धं सूक्तम् अस्ति। **UP GDC–2008, UP GIC–2015**
(A) अग्निसूक्तम् (B) शिवसङ्कल्पसूक्तम्
(C) नासदीयसूक्तम् (D) इन्द्रसूक्तम्
वैदिकसूक्तसंग्रह (शिवसङ्कल्पसूक्त मन्त्र 01)-विजयशङ्कर पाण्डेय, पेज–51

89. ''हृतप्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठम्''इति श्लोकांशः सूचकः अस्ति? **UP GIC–2015**
(A) देवतायाः (B) ब्रह्मणः
(C) धनदस्य (D) मनसः
वैदिकसूक्तसंग्रह (शिवसङ्कल्पसूक्त मन्त्र-06)-विजयशङ्कर पाण्डेय, पेज–55

90. ''ब्रह्मा सर्वविद्यः सर्वं वेदितुमर्हति'' का जहाँ उल्लेख है, वह ग्रन्थ है– **BHU MET–2014**
(A) मनुस्मृति (B) शतपथब्राह्मण
(C) निरुक्त (D) ईशोपनिषद्
स्रोत–निरुक्त - छज्जूराम शास्त्री, पेज–25

91. 'अनर्थकाः हि मन्त्राः' इति कस्य वचनम्– **BHU AET–2011**
(A) चार्वाकस्य (B) बौद्धस्य
(C) कौत्सस्य (D) जैनस्य
स्रोत–(i) वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–14
(ii) हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज–126

80. (D) 81. (D) 82. (A) 83. (C) 84. (B) 85. (B) 86. (C) 87. (B) 88. (B) 89. (D) 90. (C) 91. (C)

92. ''अर्थावबोधे निरपेक्षतया पदजातं यत्र उक्तं तन्निरुक्तम्'' इति कस्य उक्तिः? BHU AET–2011

(A) यास्कस्य (B) दुर्गाचार्यस्य
(C) सायणाचार्यस्य (D) माधवाचार्यस्य

स्रोत–*हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज–भू.-11*

93. 'मुखं व्याकरणं स्मृतम्' इति कस्य वचनम्? BHU AET–2011

(A) पतञ्जलेः (B) पाणिनेः
(C) मनोः (D) याज्ञवल्क्यस्य

स्रोत–*(i) वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–190*
(ii) पाणिनीयशिक्षा (श्लोक-42)-शिवराज आचार्य कौण्डिन्यायन, पेज–143

94. ''अङ्गानि वेदाश्चत्वारो मीमांसा न्यायविस्तरः। पुराणधर्मशास्त्रञ्च विद्या ह्येताश्चतुर्दश'' इति कस्य वचनमस्ति? BHU AET–2011

(A) कात्यायनस्य (B) बृहस्पतेः
(C) मनोः (D) हारीतस्य

95. ''उपजीव्यस्य यजुर्वेदस्य प्रथमतो व्याख्यानं युक्तम्'' इति कः कथितवान्– BHU AET–2011

(A) उव्वटः (B) महीधरः
(C) सायणः (D) यास्कः

स्रोत–*ऋग्वेदभाष्यभूमिका-रामअवध पाण्डेय, पेज–07*

96. 'कपिष्ठलो' इति कुत्र प्राप्यते? BHU AET–2010, 2012

(A) महाभाष्ये (B) अष्टाध्याय्याम्
(C) गीतायाम् (D) रघुवंशे

स्रोत–*अष्टाध्यायी (8.3.91) - ईश्वरचन्द्र, पेज–1073*

97. ''साक्षात्कृतधर्माण ऋषयो बभूवुः'' इति केन उक्तमस्ति? BHU AET–2010, 2012

(A) पाणिनिना (B) यास्केन
(C) पतञ्जलिना (D) व्यासेन

स्रोत–*(i) वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–12*
(ii) निरुक्त (1.20) - उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज–33

98. ''रक्षोहागमलघ्वसन्देहाः प्रयोजनम्'' वचनमिदं कस्योक्तिः– BHU AET–2011

(A) पाणिनिः (B) कात्यायनः
(C) भर्तृहरिः (D) पतञ्जलिः

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–194*

99. 'शेषे ब्राह्मणशब्दः' कस्य वचनम्? BHU AET–2011

(A) जैमिनिः (B) उव्वटः
(C) गुणविष्णुः (D) व्यासः

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–112*

100. अधोङ्कितानां समीचीनम् उत्तरं चिनुत–UGC 25 J–2013

(अ) पुरुषविद्याऽनित्यत्वात् कर्मसम्पत्तिर्मन्त्रो वेदे — **1. ईशोपनिषद्**
(ब) ओ३म् क्रतो स्मर — **2. ऋग्वेदः**
(स) कौषीतकिब्राह्मणम् — **3. अथर्ववेदः**
(द) शौनकसंहिता — **4. निरुक्तम्**

	अ	ब	स	द
(A)	4	1	2	3
(B)	1	4	3	2
(C)	3	4	2	1
(D)	1	2	4	3

स्रोत–*(अ) हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज–22*
(ब) ईशावास्योपनिषद् (मन्त्र-17) - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–74
(स, द) वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–9, 10

101. 'सर्वः शेषो व्यञ्जनान्येव' इति कुतः उद्धृतम्? UP GDC–2014

(A) ऋक्प्रातिशाख्यतः (B) पाणिनीयशिक्षातः
(C) सिद्धान्तकौमुदीतः (D) निरुक्ततः

स्रोत–*ऋग्वेदप्रातिशाख्यम् - वीरेन्द्रकुमार वर्मा, पेज–50*

102. 'संविदाना दिवा कवे श्रियां मा धेहि भूत्याम्' मन्त्रांशोऽयं वर्तते– UGC 25 D–2013

(A) वाक्सूक्ते (B) हिरण्यगर्भसूक्ते
(C) पृथिवीसूक्ते (D) पुरुषसूक्ते

स्रोत–*वैदिकसूक्तसंग्रह - गीताप्रेस, पेज–143*
अथर्ववेद (पृथिवीसूक्त 12.1.63)

92. (C) 93. (B) 94. (D) 95. (C) 96. (B) 97. (B) 98. (D) 99. (A) 100. (A) 101. (A) 102. (C)

103. (i) 'सर्वज्ञानमयो हि सः' इति पदेन सम्बन्धितः ग्रन्थः–

(ii) ''सर्वज्ञानमयो हि सः'' यह उक्ति कहाँ प्राप्त होती है– BHU MET–2009, JNU MET–2014

(A) मनुस्मृति में (B) रामायण में

(C) महाभारत में (D) वेद में

स्रोत–*(i) मनुस्मृति (2.7) - गिरिधर गोपाल शर्मा, पेज–63*

(ii) वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–19

104. अधोलिखितानां युग्मानां तालिकां विचिनुत–

(क) मातृदेवो भव 1. बृहदारण्यकोपनिषद्

(ख) असतो मा सद्गमय 2. तैत्तिरीयोपनिषद्

(ग) द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया 3. छान्दोग्योपनिषद्

(घ) तत्त्वमसि 4. मुण्डकोपनिषद्

UGC 25 J–2011

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(A)	2	1	4	3
(B)	1	2	3	4
(C)	4	2	3	1
(D)	1	3	2	4

स्रोत–*(क) ईशादि नौ उपनिषद् - गीताप्रेस, पेज–364*

(ख) वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–185

(ग) ईशादि नौ उपनिषद् - गीताप्रेस, पेज–265

(घ) वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–181

105. ''येनाहं नामृता स्यां किमहं तेन कुर्याम्'' कया इदम् उच्यते? UGC 25 D–2013

(A) मैत्रेय्या (B) कात्यायन्या

(C) गायत्र्या (D) उमया

स्रोत–*बृहदारण्यकोपनिषद् (5.4) - गीताप्रेस, पेज–1128*

106. ''वृषायमाणोऽवृणीत सोमम्'' से सम्बन्धित सूक्त है– BHU MET–2014

(A) रुद्र (B) पर्जन्य

(C) अग्नि (D) इन्द्र

स्रोत–*ऋक्सूक्तसंग्रह (इन्द्रसूक्त 1.32.3) -हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–86*

107. ''न वा अरे जायायै कामाय जाया प्रिया भवति, आत्मनस्तु कामाय जाया प्रिया भवति'' कस्य इयम् उक्तिः– UGC 25 J–2013

(A) कात्यायनस्य (B) मैत्रेय्याः

(C) याज्ञवल्क्यस्य (D) गार्ग्यस्य

स्रोत–*बृहदारण्यकोपनिषद् (2.4) - गीताप्रेस, पेज–546*

108. ''केवलाघो भवति केवलादी'' से सम्बन्धित ग्रन्थ है– BHU MET–2015

(A) ऋग्वेद (B) विष्णुपुराण

(C) कात्यायनश्रौतसूत्र (D) कठोपनिषद्

स्रोत–*(i) ऋग्वेद (10.117.6)*

(ii) हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज–275

109. ''मन एव त्वच्छ्रेयो मनसो वै त्वं ....'' इति उक्तम्? UGC 25 J–2015

(A) मनसा (B) वाचा

(C) नचिकेतसा (D) प्रजापतिना

स्रोत– *शतपथ ब्राह्मण (1.4.5.11) - वाङ्मनस् आख्यान*

110. ''इतिहास पुराणं पञ्चमं वेदानां वेदम्'' एतया पंक्त्या सम्बद्धा उपनिषद्– AWES TGT–2011, 2012

(A) कठोपनिषद् (B) छान्दोग्योपनिषद्

(C) केनोपनिषद् (D) मुण्डकोपनिषद्

स्रोत–*संस्कृत साहित्य का इतिहास (छान्दोग्य 7.1.2) - उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज–173*

111. 'इन्द्रेषिते प्रसवं भिक्षमाणे अच्छा समुद्रं रथ्येव याथः'' से सम्बन्धित सूक्त है– BHU MET–2014

(A) विश्वामित्रनदीसंवाद (B) रुद्र

(C) वरुण (D) सविता

स्रोत–*ऋग्वेद (विश्वामित्र नदी संवादसूक्त, 3.33.2)*

103. (A) 104. (A) 105. (A) 106. (D) 107. (C) 108. (A) 109. (D) 110. (B) 111. (A)

112. अधोऽङ्कितानां समीचीनमुत्तरं चिनुत–

(क) पूर्णमदः पूर्णमिदम्	**1. निरुक्तम्**
(ख) मा गृधः कस्यस्विद्धनम्	**2. अथर्ववेदीया**
(ग) समाम्नायः समाम्नातः	**3. ईशावास्योपनिषद्**
(घ) पैप्पलादसंहिता	**4. बृहदारण्यकोपनिषद्**

UGC 25 J–2012

	क	ख	ग	घ
(A)	4	3	1	2
(B)	3	2	1	4
(C)	2	3	4	1
(D)	1	2	3	4

स्रोत–*(क) बृहदारण्यकोपनिषद् (5.1.1) शाङ्करभाष्य - गीताप्रेस, पेज–1161*
(ख) वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–174
(ग) हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज–1
(घ) वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–10

113. ''कस्य नूनं कतमस्यामृतानाम्'' जिस सूक्त में पठित है, वह है– BHU MET–2015

(A) इन्द्र (B) वरुण
(C) नासदीय (D) सूर्य

स्रोत–*ऋग्वेद (1.24.1) - वेदान्ततीर्थ, पेज–61*

114. किं सत्यमस्ति– UGC 25 J–2011

(A) महर्षिदयानन्दः - अथर्ववेदभाष्यकारः
(B) महर्षिरमणः - ताण्ड्यब्राह्मणभाष्यकारः
(C) यास्कः - प्रातिशाख्यकारः
(D) पिङ्गलः - छन्दशास्त्रकारः

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–199*

115. ''आत्रायं पुरुषः स्वयं ज्योतिरिति'' वाक्य है– UGC 73 S–2013

(A) कठोपनिषद् में (B) तैत्तिरीयोपनिषद् में
(C) माण्डूक्योपनिषद् में (D) बृहदारण्यकोपनिषद् में

स्रोत–*बृहदारण्यकोपनिषद् (4.3.2) - गीताप्रेस, पेज–869-877*

116. ''महान् प्रभुर्वै पुरुषः'' का जिसमें पाठ है, वह ग्रन्थ है– BHU MET–2015

(A) श्वेताश्वतरोपनिषद् (B) कठोपनिषद्
(C) छान्दोग्योपनिषद् (D) प्रश्नोपनिषद्

स्रोत–*ईशादि नौ उपनिषद् (श्वेताश्वतरोपनिषद् 3.12) -गीताप्रेस, पेज–467*

117. 'तमीश्वराणां परमं महेश्वरं तं देवातानां परमं च दैवतम्'' इत्यादि मन्त्र किस उपनिषद् से उद्धृत है– H-TET–2014

(A) श्वेताश्वतरोपनिषद् से
(B) केनोपनिषद् से
(C) ईशोपनिषद् से
(D) इनमें से कोई नहीं

ईशादि नौ उपनिषद् (श्वेताश्वतरोपनिषद् 6.7) -गीताप्रेस, पेज–508

118. 'भक्तिलक्ष्मीसमृद्धानां किमन्यदुपयाचितम्' यह उक्ति किसकी है? UGC 73 D–2015

(A) सोमानन्दस्य
(B) उदयाकरसूनोः
(C) क्षेमराजस्य
(D) उत्पलाचार्यस्य

ईशादि नौ उपनिषद् (मुण्डकोपनिषद् 1.1.3) -गीताप्रेस, पेज–231

119. 'कस्मिन्नु भगवो विज्ञाते सर्वमिदं विज्ञातं भवति' इति प्रश्नः केन पृष्टः? JNU M.Phil/Ph.D–2014

(A) यक्षेण (B) युधिष्ठिरेण
(C) शौनकेन (D) जनकेन

स्रोत–*ईशादि नौ उपनिषद् - गीताप्रेस, पेज–231*

120. ''भगवन् कुतो ह वा इमाः प्रजाः प्रजायन्त''–इत्यस्य प्रश्नस्य कर्ता कः? JNU-M. Phil/Ph.D–2014

(A) कबन्धी (B) नचिकेताः
(C) सत्यकामः (D) सुकेशाः

स्रोत–*ईशादि नौ उपनिषद् (प्रश्नोपनिषद् 1.3) -गीताप्रेस, पेज–174*

112. (A) 113. (D) 114. (D) 115. (D) 116. (A) 117. (A) 118. (D) 119. (C) 120. (A)

14. वैदिक-देवता

1. (i) निरुक्तानुसारं मुख्यतः कति देवताः–
(ii) नैरुक्तमते कति देवताः – UGC 25 D–2008, 2009
(A) तिस्रः (B) पञ्च
(C) चतस्रः (D) षट्

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–11

2. देवतानाम् आकारः कतिविधः – HE–2015
(A) त्रिविधः (B) चतुर्विधः
(C) दशविधः (D) द्वादशविधः

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–11

3. (i) यास्क ने देवताओं को कितने भागों में बाँटा है?
(ii) यास्कमते देवता कियती? BHU AET–2011
(A) 1 (B) 4
(C) 5 (D) 3

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–11

4. यास्कमतानुसारं प्रकारदृष्ट्या कति देवताः? BHU AET–2010
(A) त्रिस्रः (B) चतस्रः
(C) सप्तप्रकाराः (D) दशप्रकाराः

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - कर्णसिंह, पेज–49

5. निरुक्तमते देवतानां स्थानं न विद्यते– BHU AET–2011
(A) पृथिवी (B) स्वर्गः
(C) अन्तरिक्षः (D) द्युलोकः

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–11

6. (i) ऋग्वेद में देवताओं की संख्या है–
(ii) वैदिकदेवतायाः कियत्यः संख्याः सन्ति– BHU AET–2011, UGC 25 J–2001
(A) 33 (B) 35
(C) 39 (D) 45

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–11

7. ऋचाओं के द्वारा आह्वान किया जाता है– UGC 25 D–2003
(A) राक्षसों का (B) देवों का
(C) मनुष्यों का (D) जङ्गली जीवों का

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–44

8. (i) का अन्तरिक्षस्थानीया देवता– UGC 25 J–2002, 2003
(ii) अन्तरिक्षस्थानीय देवता है– 2010, 2014 D–2012 2013, BHU AET–2010
(A) सूर्यः (B) अग्निः
(C) समुद्रः (D) इन्द्रः

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–40

9. (i) वृत्र का नाश किस देवता ने किया?
(ii) वृत्रहन्ता कौन है? BHU AET–2010, UGC 25
(iii) को नाम देवः 'वृत्रहा' इत्युच्यते–J–1995, D–2005
(A) अग्नि (B) विष्णु
(C) वरुण (D) इन्द्र

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 1.32.5) -हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–90

10. इन्द्र का कार्य है– UGC 25 D–1996
(A) वर्षा (B) प्रकाश
(C) विद्या (D) धन

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–12

11. 'मरुत्वान्' यह विशेषण किसका है– UGC 25 D–1998
(A) अग्नि (B) विष्णु
(C) इन्द्र (D) वरुण

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–11

12. देवता इन्द्रोऽस्ति– UGC 25 J–2006, D–2008
(A) पृथिवीस्थानीया (B) अन्तरिक्षस्थानीया
(C) द्युस्थानीया (D) पातालस्थानीया

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–40

1. (A) 2. (A) 3. (D) 4. (A) 5. (B) 6. (A) 7. (B) 8. (D) 9. (D) 10. (A) 11. (C) 12. (B)

13. 'यो अश्मनोरन्तरग्निं जजान' अनेन मन्त्रभागेन कः परामृश्यते? UK SLET–2015, UGC 25 J–2007

(A) विष्णुः (B) सविता
(C) बृहस्पतिः (D) इन्द्रः

ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋ0 2.12.3) -हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–180

14. 'रसानुप्रदानः वृत्रवधः' इत्यस्ति– UGC 25 J–2009

(A) बृहस्पतिकर्म (B) रुद्रकर्म
(C) सवितृकर्म (D) इन्द्रकर्म

***स्रोत**–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–298*

15. 'दस्योर्हन्ता' को देवः? UGC 25 J–2013

(A) इन्द्रः (B) विष्णुः
(C) वरुणः (D) कोऽपि न

***स्रोत**–ऋक्सूक्तसंग्रह (2.12.10) -हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–186*

16. (i) ऋग्वेदे अधिकतमानां सूक्तानां देवता?
(ii) ऋग्वेद में किस देवता के अधिकतम सूक्त हैं–
(iii) ऋग्वेद में सर्वाधिक सूक्त किस देवता के हैं–
(iv) ऋग्वेदे प्रधानतया स्तुतो देव :–UP GDC–2008 BHU MET–2008, 2009, 2011, 2012, 2013, UGC 25 J–2006, UGC 73 J–2015, CCSUM-Ph. D–2016

(A) इन्द्र (B) अग्नि
(C) विष्णु (D) वरुण

***स्रोत**–(i) ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–11*
(ii) वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–40

17. ''यः सोमपा निचितो'' में 'यः' पद किसके लिए आया है? BHU MET–2009, 2013

(A) विष्णु (B) प्रजापति
(C) अग्नि (D) इन्द्र

***स्रोत**–वैदिकसूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 2.12.13) -विजयशङ्कर पाण्डेय, पेज–76*

18. (i) मघवा देवः कः? BHU MET–2008, 2009, 2013
(ii) 'मघवा' विशेषण किस देवता के लिए है? UGC 25 D–2015, UGC 73 D–2015

(A) अग्नि (B) इन्द्र
(C) सूर्य (D) वरुण

***स्रोत**–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्त शास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–12*

19. 'यस्मान्न ऋते विजयन्ते' में 'यस्मात्' का क्या अभिप्राय है– BHU MET–2009, 2013

(A) अग्नि (B) इन्द्र
(C) रुद्र (D) वरुण

***स्रोत**–वैदिकसूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 2.12.9) -विजयशङ्कर पाण्डेय, पेज–72*

20. 'यः सूर्यं य उषसं जजान' इसमें किस देव की स्तुति की गयी है? BHU MET–2011

(A) सूर्य (B) उषा
(C) इन्द्र (D) विष्णु

***स्रोत**–वैदिकसूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 2.12.7) -विजयशङ्कर पाण्डेय, पेज–70*

21. 'द्यावाचिदस्मै पृथिवी नमेते'–यहाँ 'अस्मै' पद किसको व्यक्त करता है? BHU MET–2011, 2012

(A) विष्णु (B) इन्द्र
(C) अग्नि (D) रुद्र

वैदिकसूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 2.12.13) -विजयशङ्कर पाण्डेय, पेज–76

22. इन्द्र को ऋग्वेद में किस नाम से पुकारा गया है? UP TGT (S.S.)–2009

(A) वीरेन्द्र (B) पुरन्दर
(C) पशुपति (D) मारुत

***स्रोत**–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–298*

23. (i) 'वज्रबाहु' जिसकी उपाधि है, वह है–
(ii) 'वज्रबाहु' के रूप में कौन देवता प्रसिद्ध है– BHU MET–2011, 2012, 2015

(A) सविता (B) विष्णु
(C) इन्द्र (D) रुद्र

वैदिकसूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 2.12.13) -विजयशङ्कर पाण्डेय, पेज–76

24. वृत्रासुर का वध करने वाले देवता थे– BHU MET–2010

(A) अग्नि (B) इन्द्र
(C) वरुण (D) सविता

ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 1.32.5) -हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–90

13. (D) 14. (D) 15. (A) 16. (A) 17. (D) 18. (B) 19. (B) 20. (C) 21. (B) 22. (B) 23. (C) 24. (B)

25. ऋग्वेद में कौन देवता चमत्कार युक्त कार्यों का सम्पादन करते हैं? UP GDC–2008

(A) अश्विना (B) मरुत्
(C) इन्द्र (D) उषा

ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 2.12.1)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–177-178

26. (i) सोमपा किस देवता की उपाधि है? BHU AET–2010
(ii) सोमपानामकः देवता– UGC 25 J–2003

(A) इन्द्रः (B) विष्णुः
(C) बृहस्पतिः (D) अग्निः

ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 2.12.13)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–190

27. अग्निहोत्रे अग्निना सह देवता का विद्यते? BHU AET–2010

(A) इन्द्रः (B) सोमः
(C) वरुणः (D) प्रजापतिः

संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (द्वितीय-खण्ड)-बलदेव उपाध्याय, पेज–113

28. 'शतक्रतुः' विशेषणोपेतः कः अस्ति? BHU AET–2011

(A) विष्णुः (B) अश्विनौ
(C) वायुः (D) इन्द्रः

स्रोत–*ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री, पेज–12*

29. वैदिकसंहितासु सर्वाधिकपराक्रमी देवः वर्णितः? RPSC ग्रेड II (TGT)–2010

(A) अग्निः (B) यमः
(C) विष्णुः (D) इन्द्रः

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–41*

30. पापाचारिणो दस्योर्नाशकः वैदिकः देवः – UGC 25 D–2014

(A) इन्द्रः (B) अग्निः
(C) पूषन् (D) वरुणः

स्रोत–*ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–186*

31. 'वज्रहस्तः' इति विशेषणं कस्य देवस्य? UGC 25 D–2013

(A) उषसः (B) विष्णोः
(C) अग्नेः (D) इन्द्रस्य

स्रोत–*ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद भाग 2.12.13) - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–190*

32. इन्द्र का प्रधान अस्त्र है– BHU AET–2011

(A) बाण (B) वज्र
(C) तलवार (D) गदा

स्रोत–*ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–11*

33. इन्द्र के साथ स्तुत्य देवता कौन हैं? BHU AET–2011

(A) सोम (B) पर्जन्य
(C) चन्द्रमा (D) तीनों

स्रोत–*वैदिकसूक्तसंग्रह - विजयशङ्कर पाण्डेय, पेज–25*

34. ऋग्वेद संहिता में मन्त्रों का एक चौथाई भाग किस देवता को समर्पित है? MPPSC–1999

(A) रुद्र (B) अग्नि
(C) इन्द्र (D) मरुत्

स्रोत–*वैदिकसूक्तसंग्रह - विजयशङ्कर पाण्डेय, पेज–24*

35. 'हिरण्यबाहुः' इसका क्या अर्थ है? UGC 73 J–2009

(A) इन्द्रः (B) शिवः
(C) यमः (D) दिक्पालः

36. 'शचीपति' किसका नाम है– BHU MET–2015

(A) इन्द्र (B) अग्नि
(C) वरुण (D) सोम

स्रोत–*ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–12*

37. (i) ऋग्वेदे 'पुरोहित' कस्य संज्ञा अस्ति?
(ii) ऋग्वेद के प्रथममण्डल के प्रथमसूक्त में 'पुरोहित' विशेषण किस देवता से सम्बद्ध है–
UGC 25 J–1995, 1998, RPSC ग्रेड I (PGT)–2014

(A) इन्द्र (B) सवितृ
(C) अग्नि (D) द्यावापृथिवी

स्रोत–*वैदिकसूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 1.1.1)-विजयशङ्कर पाण्डेय, पेज–31*

38. (i) ऋग्वेद के प्रथममण्डल के प्रथमसूक्त का देवता है–
(ii) ऋग्वेद के प्रथमसूक्त में कौन सा देवता वर्णित है–
(iii) ऋग्वेद के प्रथमसूक्त में किस देवता की स्तुति है–
BHU MET–2010, 2011, UGC 25 D–1996

(A) इन्द्र (B) वरुण
(C) अग्नि (D) बृहस्पति

वैदिकसूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 1.1.1) - विजयशङ्कर पाण्डेय, पेज–31

25. (C) 26. (A) 27. (D) 28. (D) 29. (D) 30. (A) 31. (D) 32. (B) 33. (A) 34. (C)
35. (A) 36. (A) 37. (C) 38. (C)

39. (i) 'कविक्रतुः' किसका विशेषण है–
(ii) 'कविक्रतुः' उपाधि किस देवता की है–
UGC 25 D–1999, 2002, J–2002
(A) अग्नि (B) विष्णु
(C) इन्द्र (D) वरुण
वैदिकसूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 1.1.5) - विजयशङ्कर पाण्डेय, पेज–34

40. (i) 'पुरोहित' है– BHU AET–2011, MET–2012
(ii) पुरोहितः कोऽस्ति UGC 25 J–2001, D–2002
(A) वरुण (B) इन्द्र
(C) सविता (D) अग्नि
वैदिकसूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 1.1.1) - विजयशङ्कर पाण्डेय, पेज–31

41. अग्नि का सम्बन्ध किस ऋतु से है? UGC 25 J–2004
(A) वसन्त से (B) हेमन्त से
(C) ग्रीष्म से (D) वर्षा से
स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–259*

42. यास्कमते अग्निर्भवति– UGC 25 D–2007
(A) अन्तरिक्षस्थानः (B) पृथिवीस्थानः
(C) द्युस्थानः (D) गृहस्थानः
स्रोत–*हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज–301*

43. 'गृहपतिः' इति विशेषणं कस्य देवस्य प्रसिद्धम्?
UGC 25 D–2008
(A) इन्द्रस्य (B) सवितुः
(C) अश्विनोः (D) अग्नेः
स्रोत–*ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–13*

44. ऋग्वेदस्य प्रथममण्डलस्य प्रथमसूक्ते कः स्तूयते–
UGC 25 J–2012, G GIC–2015
(A) अग्निः (B) यमः
(C) विष्णुः (D) वरुणः
ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 1.1.1)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–55

45. निम्नलिखित देवताओं में से किसे अक्सर अतिथि की उपाधि देकर सम्बोधित किया जाता है?
JPSC–2008
(A) इन्द्र (B) वरुण
(C) अग्नि (D) सोम
स्रोत–*ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–13*

46. 'स नः पितेव सूनवे' किस सूक्त से सम्बद्ध है?
BHU MET–2011, 2013
(A) रुद्र (B) इन्द्र
(C) अग्नि (D) सविता
ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 1.1.9)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–60

47. (i) पृथिवी के देवता कौन हैं–
(ii) पृथिवीलोक के प्रधान देवता कौन हैं–
BHU MET–2009, 2013, BHU AET–2011
(A) अग्नि (B) सूर्य
(C) वायु (D) इन्द्र
स्रोत–*वैदिक साहित्य और संस्कृति-बलदेव उपाध्याय, पेज–508*

48. 'होता' देव कौन हैं? BHU MET–2008, 2011
(A) इन्द्र (B) विष्णु
(C) पर्जन्य (D) अग्नि
ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 1.1.1)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–55

49. (i) 'स देवाँ एह वक्षति' इत्यत्र 'सः' इति पदेन को देवोऽभिप्रेतः?
(ii) 'स देवाँ एह वक्षति' में 'स' किसको बतलाता है?
BHU MET–2011, RPSC ग्रेड II (TGT)–2014
(A) वायु (B) आदित्य
(C) अग्नि (D) इन्द्र
ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 1.1.2)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–55

50. (i) अग्नि किस लोक के देवता हैं?
(ii) अग्निदेवता अस्ति– BHU MET–2010
CCSUM-Ph. D–2016
(A) पृथिवीलोक (B) अन्तरिक्षलोक
(C) द्युलोक (D) अन्तरिक्ष तथा द्युलोक
स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–297*

39. (A) 40. (D) 41. (A) 42. (B) 43. (D) 44. (A) 45. (C) 46. (C) 47. (A) 48. (D) 49. (C) 50. (A)

51. (i) ऋग्वेदानुसारेण 'होता' इति विशेषणम् अस्ति–
(ii) ऋग्वेदे (1.1.1) 'होतारम्' इति पदं कस्य देवस्य विशेषणं अस्ति? UP GDC–2012, UP GIC–2015

(A) रुद्रस्य (B) वरुणस्य
(C) इन्द्रस्य (D) अग्नेः

ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 1.1.1) -हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–55

52. 'घृतलोम' इति शब्दः कस्याः देवतायाः विशेषणम् अस्ति? BHU AET–2011

(A) अग्नेः (B) विष्णोः
(C) रुद्रस्य (D) मरुतः

***स्रोत**–वैदिकसूक्तसंग्रह - विजयशङ्कर पाण्डेय, पेज–23*

53. 'जातवेदाः' कः अस्ति? BHU AET–2011

(A) वरुणः (B) इन्द्रः
(C) अग्निः (D) वायुः

***स्रोत**–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–13*

54. 'दमूनाः' इति कस्य विशेषणम् अस्ति? BHU AET–2011

(A) पूषन् (B) सविता
(C) विष्णुः (D) अग्निः

***स्रोत**–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–14*

55. यास्कमते अग्नेः निर्वचनं किं न हि– BHU AET–2011

(A) अग्रे नयति (B) अङ्गं नयति सन्नममानः
(C) अग्रणीः भवति (D) अग्रं यज्ञेषु प्रणीयते

***स्रोत**–हिन्दी निरुक्त (7/4) - कपिलदेव शास्त्री, पेज–301*

56. पौनः पुन्येन संस्तुत देवता है– UGC 25 J–1999

(A) अग्नि (B) वरुण
(C) इन्द्र (D) विष्णु

***स्रोत**–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–60*

57. 'रत्नधातमम्' इति कस्य विशेषणम्–UGC 25 S–2013

(A) बृहस्पतेः (B) अग्नेः
(C) रुद्रस्य (D) वायोः

***स्रोत**–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–55*

58. अग्नि का प्रधान कर्म क्या है? BHU AET–2010

(A) हविष्य का वहन (B) शीतलता प्रदान करना
(C) सृष्टि (D) कोई नहीं

***स्रोत**–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–13, 14*

59. अग्नि के साथ स्तुत्य देवता है– BHU AET–2010

(A) विष्णु (B) शिव
(C) इन्द्र (D) उषा

***स्रोत**–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–13*

60. शाकपूणि के वैश्वानर किसे कहा गया है? BHU AET–2011

(A) इन्द्र (B) अग्नि
(C) यम (D) विष्णु

***स्रोत**–निरुक्त - छज्जूराम शास्त्री, पेज–366*

61. 'हव्यवाह' जिसका नाम है, वह है– BHU MET–2015

(A) सूर्य (B) अग्नि
(C) विद्युत् (D) रुद्र

***स्रोत**–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–14*

62. ऋग्वेद की प्रथम ऋचा किस देवता के प्रति है? MP PSC–2003

(A) इन्द्र (B) अग्नि
(C) वरुण (D) रुद्र

ऋक्सूक्तसंग्रह (अग्निसूक्त 1.1.1) -हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–55

63. द्युस्थान देवता हैं–UGC 73 J–2012, UGC 25 D–2003

(A) विष्णुः (B) पर्जन्यः
(C) रुद्रः (D) सोमः

***स्रोत**–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–38*

64. विष्णु का परमपद है– UGC 25 J–1994 D–2011

(A) द्युस्थान (आकाश) (B) हृदय
(C) अन्तरिक्ष (D) भूलोक

***स्रोत**–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–38*

65. 'यस्य त्री-पूर्णा मधुना पदानि' इसका सम्बन्ध है– UGC 25 J–1998

(A) वरुणसूक्त से (B) विष्णुसूक्त से
(C) इन्द्रसूक्त से (D) अश्विनसूक्त से

ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 1.154.4) -हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–168

51. (D)	52. (A)	53. (C)	54. (D)	55. (A)	56. (A)	57. (B)	58. (A)	59. (C)	60. (B)
61. (B)	62. (B)	63. (A)	64. (A)	65. (B)					

66. 'मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः' यह मन्त्रांश सम्बन्धित है– UGC 25 J–2000

(A) रुद्र (B) विष्णु
(C) बृहस्पति (D) सोम

ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 1.154.2)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–165

67. (i) 'उरुक्रम' विशेषण किस देवता का है?
(ii) 'उरुक्रमः' कस्य विशेषणं भवति–BHU AET–2011
(iii) 'उरुक्रमः' कथ्यते? UGC 25 D–2001, G GIC–2015

(A) इन्द्र (B) रुद्र
(C) विष्णु (D) अग्नि

***स्रोत**–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–299*

68. ''त्रीणि पदानि'' कस्य देवस्य प्रसिद्धानि? UGC 25 J–2005

(A) अग्नेः (B) इन्द्रस्य
(C) सवितुः (D) विष्णोः

ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 1.154.4)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–168

69. विष्णोः त्रीणि पदानि केन पूर्णानि भवन्ति? UGC 25 D–2007, G GIC–2015

(A) उदकेन (B) अमृतेन
(C) मधुना (D) घृतेन

ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 1.154.4)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–168

70. 'त्रेधा निदधे पदम्' इति केन सह सम्बध्यते? UGC 25 J–2011

(A) इन्द्रसूक्तेन (B) रुद्रसूक्तेन
(C) विष्णुसूक्तेन (D) उषस्सूक्तेन

***स्रोत**–शुक्लयजुर्वेद (5.15) - रामकृष्ण शास्त्री, पेज–95*

71. श्रुतौ यज्ञस्वरूपेण स्तूयते– UGC 25 D–2012

(A) गङ्गा (B) गोदावरी
(C) विष्णुः (D) वरुणः

***स्रोत**–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–310*

72. 'उरुगाय' का अर्थ है– BHU MET–2013

(A) बड़े जबड़ों वाला (B) लम्बी भुजाओं वाला
(C) बहुत लोगों द्वारा स्तुत्य (D) अनेक गायों वाला

ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 1.154.6)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–16, 165

73. तदस्य प्रियमभि पाथो अश्यां नरो अत्र देवयवो मदन्ति' इस मन्त्र में किस देवता की स्तुति की गयी है? BHU MET–2011

(A) विष्णु (B) अग्नि
(C) रुद्र (D) इन्द्र

ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 1.154.5)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–169

74. कौन सा देवता 'त्रिविक्रम' नाम से जाना जाता है? BHU MET–2010

(A) विष्णु (B) वरुण
(C) सूर्य (D) सविता

ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 1.154.2)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–15

75. (i) 'त्रेधा विचक्रमाणः उरुगायः' कः देवः अस्ति?
(ii) 'विचक्रमाणस्त्रेधोरुगायः' यह किस देवता को व्यक्त करता है– BHU MET–2012, UGC 73 D–2015
RPSC ग्रेड-I (PGT)–2014

(A) इन्द्र (B) विष्णु
(C) वरुण (D) अग्नि

ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 1.154.1)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–164

76. विष्णोः निवासस्थानं कुत्रास्ति? BHU AET–2011

(A) द्युलोकः (B) पृथिवीलोकः
(C) पाताललोकः (D) अन्तरिक्षलोकः

***स्रोत**–(i) वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–38*
(ii) संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (प्रथम खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/व्रजबिहारी चौबे, पेज–618

77. (i) 'उरुगाय' किसका विशेषण है–
(ii) 'उरुगाय' इति पदं ऋग्वेदे सूचयति– UP GIC–2015, UGC 25 J–1999

(A) इन्द्र (B) वरुण
(C) विष्णु (D) अग्नि

***स्रोत**–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–299*

78. स्वर्ग का देवता कौन है? BHU AET–2011

(A) अग्नि (B) इन्द्र
(C) वायु (D) विष्णु

***स्रोत**–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–38*

66. (B)	**67. (C)**	**68. (D)**	**69. (C)**	**70. (C)**	**71. (C)**	**72. (C)**	**73. (A)**	**74. (A)**	**75. (B)**
76. (A)	**77. (C)**	**78. (D)**							

79. द्युस्थानीय देवता हैं– UGC 73 J–2014, UGC 25 D–2005, 2009, 2015, BHU AET–2010

(A) इन्द्र (B) अग्नि
(C) सूर्य (D) विद्युत्

***स्रोत**–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–37*

80. प्रातः और सायं का देवता है– UGC 25 D–1999

(A) अग्नि (B) इन्द्र
(C) सविता (D) विष्णु

***स्रोत**–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–16*

81. 'ऋताधिपति' किसकी उपाधि है– UGC 25 D–2002

(A) अग्नि (B) अश्विनौ
(C) सविता (D) इन्द्र

82. का द्युस्थानदेवता– BHU AET–2012, UGC 25 D–2010

(A) सविता (B) चन्द्रमाः
(C) वायुः (D) बृहस्पतिः

वैदिक साहित्य का इतिहास-गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज–331

83. सवितृदेवस्य नामोल्लेखः प्रायः भूतः अस्ति– UGC 25 D–2000

(A) 200 बारम् (B) 170 बारम्
(C) 150 बारम् (D) 140 बारम्

***स्रोत**–वैदिक माइथोलाजी - रामकुमार राय, पेज–58*

84. गायत्री-मन्त्रस्य उपास्य देवता वर्तते– BHU AET–2010, 2011 AWES TGT–2008, 2010, 2012

(A) अग्निः (B) सविता
(C) रुद्रः (D) विष्णुः

***स्रोत**–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–37*

85. याज्ञवल्क्यः यजुषां प्राप्त्यर्थं कस्य देवस्य आराधनां कृतवान्– BHU AET–2010

(A) इन्द्रस्य (B) सूर्यस्य
(C) वरुणस्य (D) विष्णोः

***स्रोत**–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–65*

86. कः देवः वाजिरूपेण वाजसनेयिसंहितायाः उपदेशं कृतवान्– BHU AET–2010

(A) इन्द्रः (B) सूर्यः
(C) वरुणः (D) विष्णुः

***स्रोत**–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–64*

87. 'आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन् अमृतं मर्त्यं च' अनेन सम्बन्धः– BHU AET–2011

(A) विष्णुः (B) सविता
(C) अग्निः (D) वरुणः

ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 1.35.2) -हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–105

88. कस्य देवस्य अनुग्रहेण महामुनिः याज्ञवल्क्यः शुक्लयजुषः उपलब्धिं कृतवान्? BHU AET–2011

(A) वरुणस्य (B) भास्करस्य
(C) शिवस्य (D) इन्द्रस्य

***स्रोत**–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–65*

89. सूर्य किस लोक से सम्बद्ध हैं? BHU MET–2008

(A) अन्तरिक्षलोक से (B) द्युलोक से
(C) पृथिवीलोक से (D) पृथिवी एवं द्युलोक से

***स्रोत**–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–37*

90. ''कस्यनूनं कतमस्यामृतानां मनामहे चारुदेवस्य नाम'' यह मन्त्र ऋग्वेद के किस सूक्त से सम्बद्ध है? BHU MET–2014

(A) सूर्यः (B) उषा
(C) वरुणः (D) इन्द्रः

***स्रोत**–ऋग्वेद (1.24.1) - वेदान्ततीर्थ, पेज–61*

91. (i) ऋग्वेद के नवममण्डल से सम्बद्ध देवता हैं–
(ii) नवम मण्डल के देवता हैं–
(iii) ऋग्वेदस्य नवमे मण्डले को देवः स्तुतिं लभते– UGC 25 J–2001, 2002, 2005, BHU AET–2011

(A) विश्वामित्र (B) सोम
(C) वशिष्ठ (D) कण्व

ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 2.24.1)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–11

79. (C)	80. (C)	81. (C)	82. (A)	83. (B)	84. (B)	85. (B)	86. (B)	87. (B)	88. (B)
89. (B)	90. (A)	91. (B)							

92. सोम का निवासस्थान क्या है? UGC 25 J–2004

(A) द्युलोक में (B) पाताल में
(C) पृथिवीलोक में (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–*वैदिक साहित्य और संस्कृति-बलदेव उपाध्याय, पेज–511*

93. ऋग्वेदस्य नवममण्डलस्य देवतानाम् अस्ति– UGC 25 D–2006, J–2008

(A) अग्निः, शुचिः (B) अग्निः, पावकः
(C) अग्निसोमौ (D) पवमानसोमः

स्रोत–*वैदिक साहित्य और संस्कृति-बलदेव उपाध्याय, पेज–511*

94. ऋग्वेदस्य कस्मिन् मण्डले सोमस्य स्तुतिः दृक्पथमुपयाति– UGC 25 J–2008

(A) द्वितीयमण्डले (B) पञ्चममण्डले
(C) दशममण्डले (D) नवममण्डले

स्रोत–*ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री, पेज–11*

95. (i) पवमानः कः उच्यते?
(ii) पवमानः कस्याः देवतायाः नाम अस्ति? BHU AET–2010, UGC 25 J–2012

(A) इन्द्रः (B) बृहस्पतिः
(C) विष्णुः (D) सोमः

स्रोत–*वैदिक साहित्य और संस्कृति-बलदेव उपाध्याय, पेज–511*

96. 'हेति' = शस्त्र से किसका सम्बन्ध है? UGC 25 J–2001

(A) रुद्र (B) वरुण
(C) अग्नि (D) उषस्

ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 2.33.14)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–205

97. 'दस्रा' इति उपाधिमान् कः अस्ति– BHU AET–2011

(A) अश्विन् (B) विष्णुः
(C) रुद्रः (D) विवस्वान्

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–302*

98. 'सोमादपि मधूनि अधिकं रुचिं कः स्थापयति– BHU AET–2011

(A) वरुणः (B) रुद्रः
(C) विष्णुः (D) अश्विन्

स्रोत–*ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–22*

99. 'दिव्यभिषक्' इति उपाधिमान् कः अस्ति? BHU AET–2011

(A) रुद्रः (B) इन्द्रः
(C) अग्निः (D) अश्विन्

स्रोत–*ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–22*

100. ऋजास्वं प्रति नेत्रं कः प्रदत्तवान्? BHU AET–2011

(A) अश्विन् (B) मरुत्
(C) इन्द्रः (D) जातवेदाः

स्रोत–*ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री, पेज–22*

101. यास्कमते कस्याः देवतायाः कालः अर्धरात्रीतः सूर्योदयपर्यन्तम् BHU AET–2011

(A) अश्विन् (B) अग्निः
(C) इन्द्रः (D) रुद्रः

स्रोत–*ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–22*

102. (i) 'नासत्यौ' इति कस्य नाम अस्ति? UGC 25 J–2006
(ii) 'नासत्या' इति विशेषणम्– D–2012, 2014

(A) अग्नेः (B) अश्विनोः
(C) वरुणस्य (D) इन्द्रस्य

स्रोत–*ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–312*

103. (i) द्युस्थानीयदेवता अस्ति– UGC 25 D–1997, 2007
(ii) यह द्युलोक का देवता है– BHU AET–2010

(A) वरुण (B) सोम
(C) अश्विनौ (D) अग्नि

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–36*

104. वरुणदेवः– UGC 25 D–2006

(A) द्युस्थानः (B) पृथिवीस्थानः
(C) अन्तरिक्षस्थानः (D) पातालस्थानः

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–36*

105. (i) 'असुर' विशेषण किसका है?
(ii) 'असुर' शब्द किसका दूसरा अर्थ है? UGC 25 D–2001, BHU MET–2014

(A) अश्विनौ (B) वरुण
(C) विष्णु (D) अग्नि

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–36*

92. (C)	93. (D)	94. (D)	95. (D)	96. (A)	97. (A)	98. (D)	99. (D)	100. (A)	101. (A)
102. (B)	103. (A)	104. (A)	105. (B)						

106. 'जलोदर व्याधि' का कारण है– UGC 25 J–2003

(A) इन्द्र (B) वरुण
(C) सोम (D) वायु

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–125

107. ऋग्वेदे नैतिकाध्यक्षरूपेण को देवः श्रेष्ठो वर्तते? RPSC ग्रेड-I (PGT)–2014

(A) वरुणः (B) अग्निः
(C) विष्णुः (D) इन्द्रः

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–14

108. वरुण किस वर्ण का देवता है? UGC 25 J–2004

(A) ब्राह्मणवर्ण का (B) क्षत्रियवर्ण का
(C) वैश्यवर्ण का (D) शूद्रवर्ण का

स्रोत–वैदिक साहित्य और संस्कृति-बलदेव उपाध्याय, पेज–481

109. शुनःशेपाख्याने प्राधान्येन स्तुतः देवः कः? UGC 25 J–2012

(A) कुबेरः (B) इन्द्रः
(C) विष्णुः (D) वरुणः

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–125

110. जल का अधिष्ठातृ देव कौन है? BHU MET–2008, 2009, 2013

(A) वरुण (B) सूर्य
(C) इन्द्र (D) अश्विनौ

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–14

111. कस्य देवस्य चाराः प्रसिद्धाः – UGC 25 D–2005

(A) वरुणस्य (B) सोमस्य
(C) अग्नेः (D) इन्द्रस्य

स्रोत–वैदिक साहित्य और संस्कृति-बलदेव उपाध्याय, पेज–483

112. वेदोक्तऋतस्य का देवता? JNU MET–2015

(A) वरुणः (B) इन्द्रः
(C) अग्निः (D) रुद्रः

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–301

113. वरुणस्य विशेषणम् अस्ति– UGC 25 D–2014

(A) उरुचक्षाः (B) वज्रहस्तः
(C) गोपाः (D) बलदाः

ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 1.25.5)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–71

114. 'धृतव्रतः' कस्य विशेषणम् अस्ति– UK SLET–2012

(A) वरुणस्य (B) इन्द्रस्य
(C) अग्नेः (D) विष्णोः

ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 1.25.8)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–14

115. (i) अन्तरिक्षस्थानीय देवता कौन हैं?
(ii) का अन्तरिक्षस्थानीया देवता?
BHU AET–2011, 2012, UGC 25 J–2013

(A) सूर्यः (B) वायुः
(C) अग्निः (D) मेघः

स्रोत–संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास (प्रथम-खण्ड) - बलदेव उपाध्याय, पेज–625

116. 'भिषक्तं त्वा भिषणां शृणोमि' इसका किस देवता से सम्बन्ध है? UGC 25 D–1998

(A) वायु (B) विष्णु
(C) रुद्र (D) सोम

ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 2.33.4)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–196

117. 'जलाषः' इति कस्य विशेषणम्? UGC 25 D–2006

(A) वरुणस्य (B) अश्विनोः
(C) रुद्रस्य (D) सोमस्य

ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 2.33.7)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–199

118. कपर्दी कः देवः? UGC 25 D–2012

(A) अग्निः (B) वरुणः
(C) रुद्रः (D) बृहस्पतिः

स्रोत–वैदिकसूक्तसंग्रह - गीताप्रेस, पेज–20

119. 'विलोहितः' इति कस्याः देवतायाः विशेषणम् अस्ति? UGC 25 D–2015

(A) विष्णोः (B) रुद्रस्य
(C) वायोः (D) इन्द्रस्य

स्रोत–वैदिकसूक्तसंग्रह - गीताप्रेस, पेज–19

106. (B) 107. (A) 108. (B) 109. (D) 110. (A) 111. (A) 112. (A) 113. (A) 114. (A) 115. (B) 116. (C) 117. (C) 118. (C) 119. (B)

120. ''मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु'' इस मन्त्र के देवता हैं– UGC 73 S–2013

(A) विष्णुः (B) रुद्रः
(C) सूर्यः (D) दिक्पतिः

स्रोत–वैदिकसूक्तसंग्रह - गीताप्रेस, पेज–22

121. शुक्लयजुर्वेदे पिनाकः धनुषः सम्बद्धः कः अस्ति– BHU AET–2011

(A) रुद्रः (B) विष्णुः
(C) अग्निः (D) मरुत्

स्रोत–(i) वैदिकसूक्तसंग्रह - गीताप्रेस, पेज–37
(ii) वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–303

122. अन्तरिक्षस्थानीया देवता का? UGC 25 J–2015

(A) रुद्रः (B) सोमः
(C) अग्निः (D) बृहस्पतिः

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–40-42

123. ज्ञान के देवता हैं– UGC 25 J–2003

(A) बृहस्पति (B) इन्द्र
(C) वरुण (D) सूर्य

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–308

124. 'ब्रह्मणस्पतिः' इति विशेषणवान् कोऽस्ति? BHU AET–2011

(A) मरुत् (B) विष्णुः
(C) बृहस्पतिः (D) वरुणः

स्रोत–वैदिकसूक्तसंग्रह - गीताप्रेस, पेज–16

125. पुरुषसूक्तस्य देवता का? BHU AET–2011

(A) पुरुषः (B) अङ्गिरसः
(C) इन्द्रः (D) वनस्पतिः

ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 10/90)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–392

126. 'स जातो अत्यरिच्यत' में 'सः' पद का अर्थ है– BHU MET–2009, 2013

(A) पुरुष (B) प्रजापति
(C) अग्नि (D) विष्णु

ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 10.90.5)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–396

127. 'हिरण्यगर्भ' इति पदेन अभिधीयते– UGC 25 D–2012, UK SLET–2015

(A) इन्द्रः (B) रुद्रः
(D) वरुणः (D) प्रजापतिः

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–405

128. कस्याहुतिः मनसा दीयते? UGC 25 D–2012

(A) विष्णोः (B) इन्द्रस्य
(C) प्रजापतिः (D) रुद्रस्य

ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 10.121.6)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–411

129. (i) 'कस्मै देवाय हविषा विधेम' यह उक्ति किस देवता के लिए है? BHU MET–2009, 2013

(ii) 'कस्मै देवाय हविषा विधेम' अनेन मन्त्रभागेन परामृश्यते– UGC 73 J–2015, G GIC–2015

(A) प्रजापति (B) इन्द्र
(C) विष्णु (D) पुरुष

ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 10.121.6)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–411

130. 'भूतस्य जातः पतिः' इति कस्य देवस्य परिचयोऽस्ति? UP GDC–2014

(A) पुरुषस्य (B) इन्द्रस्य
(C) सूर्यस्य (D) हिरण्यगर्भस्य

ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 10.121.1)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–405

131. ऋग्वैदिकहिरण्यगर्भसूक्तस्य का देवता? UGC 25 D–2014

(A) अग्निः (B) इन्द्रः
(C) प्रजापतिः (D) वरुणः

ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 10/121)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–405

132. 'पुराणी देवी' किसका विशेषण है– UGC 25 D–1997

(A) सरस्वती का (B) उषस् का
(C) पृथिवी का (D) वाक् का

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–306

120. (B) 121. (A) 122. (A) 123. (A) 124. (C) 125. (A) 126. (A) 127. (D) 128. (C) 129. (A) 130. (D) 131. (C) 132. (B)

133. 'ऋतावरी' यह विशेषण किसका है– UGC 25 J–2000

(A) इन्द्र का (B) सवितृ का
(C) उषस् का (D) वरुण का

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–306

134. ऋग्वैदिक स्त्री देवता है– UGC 25 D–2002

(A) उषा (B) सविता
(C) अश्विनौ (D) अग्नि

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–306

135. चन्द्ररथा का वर्तते? UGC 25 D–2012

(A) नदी (B) उर्वशी
(C) उषा (D) यमी

स्रोत–ऋकसूक्तसंग्रह (3.61.2)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–235

136. (i) 'मघोनी' किसका सम्बोधन है?
(ii) 'मघोनी' कौन देवता है? BHU MET–2011, 2012

(A) पृथिवी (B) उषा
(C) पर्जन्य (D) रुद्र

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–306

137. यास्कमते 'उषा' शब्दस्य निर्वचनं किम्? BHU AET–2011

(A) उदेति (B) उदासते
(C) उदगच्छित् (D) उच्छति

स्रोत–हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज–239

138. 'अवस्यूमेव चिन्वती' का वर्णनीय विषय है– BHU MET–2014

(A) वरुण (B) उषा
(C) नदी (D) अग्नि

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–237

139. 'सुदृशीकसन्दृक्' विशेषण है– BHU MET–2009, 2013

(A) अग्नि का (B) इन्द्र का
(C) रात्रि का (D) उषा का

स्रोत–वैदिकसूक्तसंग्रह - विजयशङ्कर पाण्डेय, पेज–81

140. वाक्सूक्तस्य (ऋग्वेदे 10-125) का देवता? UGC 25 J–2013

(A) वाक् (B) आत्मा
(C) वेनो भार्गवः (D) वागाम्भृणी (परमात्मा)

ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 10/125)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–416

141. नासदीयसूक्त का देवता है– HE–2015

(A) सूर्यः (B) आपः
(C) परमात्मा (D) परमेष्ठी

ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 10/129)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–430

142. प्रथमवेदे 'असुर' शब्दः कस्मै प्रयुक्तः? BHU AET–2011

(A) देवता (B) ऋषिः
(C) याज्ञिकः (D) ईश्वरः

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–33

143. का देवता सूर्यस्य पत्नी माता च कथ्यते– BHU AET–2011

(A) अदितिः (B) उषा
(C) पृथिवी (D) दितिः

144. (i) एशिया माइनर के बोगजकोई अभिलेख में निम्नलिखित वैदिक देवताओं का उल्लेख है?
(ii) बोगजकोई अभिलेख में किन वैदिक देवताओं का उल्लेख मिलता है? MP PSC–2000, UGC 06 J–2012

(A) इन्द्र, अग्नि, रुद्र, सोम
(B) इन्द्र, नासत्या, मित्र, वरुण
(C) इन्द्र, वरुण, अग्नि, सोम
(D) इन्द्र, सूर्य, पूषा, नासत्या

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–40

145. वैदिककाल में निम्न में से किसकी उपासना नहीं की गयी है– MP PSC–2003

(A) वरुण (B) इन्द्र
(C) मरुत् (D) लक्ष्मी

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–34-47

133. (C) 134. (A) 135. (C) 136. (B) 137. (D) 138. (B) 139. (D) 140. (D) 141. (C) 142. (A) 143. (B) 144. (B) 145. (D)

146. निम्नलिखित में से वैदिक देवता नही है?

UP TGT (S.S.)–2001

(A) विष्णु (B) कृष्ण
(C) इन्द्र (D) वरुण

वैदिक साहित्य का इतिहास-गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज–330-331

147. रुद्रो देवता अस्ति– CCSUM-Ph. D–2016

(A) द्युस्थानीयः (B) अन्तरिक्षस्थानीयाः
(C) पृथिवीस्थानीयः (D) द्यावापृथिव्योः

***स्रोत**–वैदिकसूक्तसंग्रह - विजयशङ्कर पाण्डेय, पेज–13*

148. 'वहनं च हविषामावहनं च देवतानाम्' इदं कर्म–

CCSUM-Ph. D–2016

(A) अग्निः (B) इन्द्रः
(C) अश्विनौ (D) वरुणः

***स्रोत**–हिन्दी निरुक्त-कपिलदेव शास्त्री, पेज–286*

149. 'प्रातः सवनं वसन्तो गायत्री त्रिवृत्स्तोमो स्थन्तरं साम' एते सम्बद्धा : सन्ति देवेन सह–CCSUM-Ph. D–2016

(A) अग्निना (B) इन्द्रेण
(C) आदित्येन (D) विष्णुना

***स्रोत**–हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज–286*

146. (B) 147. (B) 148. (A) 149. (A)

15. वैदिक ऋषि और भाष्यकार

1. माध्यन्दिनसंहिता के भाष्यकर्त्ता कौन हैं– UGC 73 D–2007

(A) उव्वट (B) गौतम
(C) वशिष्ठ (D) भरत

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–16*

2. काण्वसंहिता के भाष्यकार कौन हैं– UGC 73 J–2009, D–2009

(A) भवस्वामी (B) भट्टभास्कर
(C) हलायुध (D) महीधर

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–15-16*

3. माध्यन्दिनसंहिता के भाष्यकार नहीं हैं– UGC 73 J–2013

(A) महर्षिदयानन्द (B) सायण
(C) उव्वट (D) महीधर

स्रोत–*(i) वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–13*
(ii) वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–24

4. काण्वसंहिता के भाष्यकार हैं– UGC 73 S–2013

(A) महर्षिदयानन्दः (B) उव्वटः
(C) महीधरः (D) सायणः

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–13*

5. महीधर किस वेद के भाष्यकार हैं– UGC 25 J–1998, BHU MET–2008

(A) अथर्ववेद (B) कृष्णयजुर्वेद
(C) शुक्लयजुर्वेद (D) सामवेद

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–16*

6. वेंकटमाधव किस वेद के भाष्यकार हैं– UGC 73 J–1991, UGC 25 D–1998, J–2004

(A) ऋग्वेद (B) कृष्णयजुर्वेद
(C) अथर्ववेद (D) सामवेद

स्रोत–*(i) वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–11*
(ii) संस्कृतवाङ्मय का बृहद् इतिहास (प्रथम-खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/व्रजबिहारी चौबे, पेज–636

7. चारों वेदों के भाष्यकार हैं– UGC 25 D–2002

(A) सायणाचार्य (B) भास्कराचार्य
(C) लगधाचार्य (D) पतञ्जलि

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–13-14*

8. शतपथब्राह्मणस्य भाष्यकारः कः– BHU AET–2011

(A) हरिस्वामी (B) करपात्रीस्वामी
(C) धूर्तस्वामी (D) दयानन्दस्वामी

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–10*

9. कात्यायनश्रौतसूत्र के भाष्यकार हैं– UGC 73 J–2013

(A) गोविन्दस्वामी (B) बौधायनः
(C) कर्काचार्यः (D) गर्ग्यनारायणस्वामी

स्रोत– *संस्कृतवाङ्मय का बृहद् इतिहास (द्वितीय-खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/ओमप्रकाश पाण्डेय, पेज–100*

10. आश्वलायनश्रौतसूत्रस्य भाष्यकारः कः– BHU AET–2011

(A) नारायणः (B) उद्गीथः
(C) माधवः (D) विद्याधरगौडः

स्रोत– *संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास (द्वितीय-खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/ओमप्रकाश पाण्डेय,, पेज–59*

11. ऋग्वेदस्य प्रसिद्धभाष्यकारः कोऽस्ति– BHU AET–2011

(A) उव्वटाचार्यः (B) महीधराचार्यः
(C) सायणाचार्यः (D) कर्काचार्यः

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–12-13*

12. ऋग्वेदस्य प्राचीनतमं भाष्यं कस्य– UGC 25 J–2007, BHU AET–2011

(A) दयानन्दस्य (B) अरविन्दस्य
(C) सायणस्य (D) करपात्रस्वामिनः

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–14*

1. (A) 2. (C) 3. (B) 4. (D) 5. (C) 6. (A) 7. (A) 8. (A) 9. (C) 10. (A) 11. (C) 12. (C)

13. पूर्वमीमांसादर्शनस्य भाष्यकारः कः–BHU AET–2011

(A) धूर्तस्वामी (B) शबरस्वामी
(C) देवस्वामी (D) हरिस्वामी

स्रोत–*अर्थसंग्रह - राजेश्वरशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज–17*

14. (i) ऋग्वेदस्य प्रथमं भाष्यं कस्य–

(ii) ऋक्संहितायाः समुपलब्धेषु भाष्येषु प्रथमो भाष्यकारः वर्तते? BHU AET–2011

(iii) ऋग्वेदस्य प्राचीनतमो भाष्यकारो अस्ति– UGC 25 J–2007, D–2015, UK SLET–2015

(A) सायणस्य (B) वेङ्कटमाधवस्य
(C) स्कन्दस्वामिनः (D) माधवस्य

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–10*

15. उव्वटोऽस्ति भाष्यकारः– UGC 25 D–2006

(A) ऋग्वेदस्य (B) शुक्लयजुर्वेदस्य
(C) सामवेदस्य (D) अथर्ववेदस्य

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–16*

16. महर्षिदयानन्दः कस्य भाष्यकारः अस्ति– UGC 25 J–2011

(A) अथर्ववेदस्य (B) सामवेदस्य
(C) यजुर्वेदस्य (D) शतपथब्राह्मणस्य

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–18*

17. यज्ञविधिमधिकृत्य मन्त्रव्याख्यानं क्रियते– UGC 25 J–2012

(A) अरविन्देन (B) विन्टरनित्सेन
(C) दयानन्देन (D) सायणेन

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–17*

18. एषु प्राचीनवेदभाष्यकारो न वर्तते–UGC 25 D–2012

(A) सायणः (B) स्कन्दस्वामी
(C) अरविन्दः (D) गुणविष्णुः

स्रोत–*(i) वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–22-25*
(ii) संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास (द्वितीय-खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/ओमप्रकाश पाण्डेय, पेज–551

19. वैदिकग्रन्थों के प्रसिद्ध भाष्यकार सायण निम्न में से किस काल में सक्रिय थे– UK PCS–2002

(A) चोलराज्यकाल (B) गुप्तराज्यकाल
(C) सातवाहनराज्यकाल (D) विजयनगरराज्यकाल

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–12*

20. उव्वट ने किस वेद पर भाष्य लिखा है? BHU MET–2010

(A) ऋग्वेद (B) यजुर्वेद
(C) सामवेद (D) अथर्ववेद

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–16*

21. कौन ऋग्वेद के भाष्यकार हैं– BHU MET–2012

(A) महीधर (B) स्कन्दस्वामी
(C) हलायुध (D) भट्टभास्कर

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–10*

22. सायण ने सर्वप्रथम किस वेद पर भाष्य लिखा? BHU MET–2009, 2013

(A) ऋग्वेद (B) सामवेद
(C) यजुर्वेद (D) अथर्ववेद

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–13*

23. गुणविष्णु ने जिस पर भाष्य लिखा है, वह ग्रन्थ है– BHU MET–2014

(A) ऐतरेयब्राह्मण (B) छान्दोग्यब्राह्मण
(C) शतपथब्राह्मण (D) गोपथब्राह्मण

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–15*

24. धूर्तस्वामी भाष्यकारः अस्ति– UGC 73 D–2013

(A) बौधायनश्रौतसूत्रस्य (B) भारद्वाजश्रौतसूत्रस्य
(C) आपस्तम्बश्रौतसूत्रस्य (D) सत्याषाढश्रौतसूत्रस्य

स्रोत–*संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास (द्वितीय-खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/ओमप्रकाश पाण्डेय, पेज–74*

25. स्कन्दस्वामिना भाष्यं प्रणीतम्– UGC 73 D–2013

(A) काण्वसंहितायाः (B) सामवेदस्य
(C) मैत्रायणीसंहितायाः (D) शाकलसंहितायाः

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–22*

13. (B) 14. (C) 15. (B) 16. (C) 17. (D) 18. (C) 19. (D) 20. (B) 21. (B) 22. (C) 23. (B) 24. (C) 25. (D)

26. 'ऋग्वेदभाष्य' के लेखक हैं– UGC 25 D–2002

(A) वेङ्कटमाधव (B) शङ्कराचार्य
(C) महीधर (D) भवस्वामी

स्रोत–*(i) वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–11*
(ii) संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास (प्रथम-खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/व्रजबिहारी चौबे, पेज–636

27. एषु प्राचीनव्याख्याकारो वर्तते– UGC 25 S–2013

(A) जैकोबी (B) मैक्समूलरः
(C) ए0 वेबर (D) सायणः

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–22-23*

28. सायण ने वेदों पर अपनी टीका किस भाषा में लिखी? UP TGT (S.S.)–2010

(A) तेलुगु (B) तमिल
(C) संस्कृत (D) पाली

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–27*

29. कः वेदानां भाष्यकारः न अस्ति– UGC 25 D–2014

(A) माधवाचार्यः (B) सायणाचार्यः
(C) मल्लिनाथः (D) यास्काचार्यः

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–12, 14*

30. सायणाचार्य अभवत्? RPSC ग्रेड-II (TGT)–2010

(A) गीताभाष्यकारः (B) महाभारतभाष्यकारः
(C) वेदभाष्यकारः (D) रामायणभाष्यकारः

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–12*

31. ऋग्वेदस्य आदिमं भाष्यं कस्य? BHU AET–2011

(A) सायणस्य (B) अरविन्दस्य
(C) दयानन्दस्य (D) करपात्रस्वामिनः

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–13*

32. वेदस्य आधुनिकव्याख्याता कः? BHU AET–2011

(A) वेङ्कटमाधवः (B) महीधरः
(C) सातवलेकरः (D) स्कन्दस्वामी

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–19*

33. (i) महीधरभाष्यस्य किन्नाम?
(ii) महीधरकृतभाष्यस्य अपरं नाम किम् अस्ति–
(iii) शुक्लयजुर्वेदोपरि महीधरभाष्यस्य किं नाम अस्ति?
BHU AET–2010, 2011, 2012 UGC 73 D–2009

(A) महीदीपः (B) स्वर्गद्दीपः
(C) वेदद्दीपः (D) मन्त्रप्रकाशः

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–16*

34. सायणाचार्यः सर्वप्रथमं कस्य वेदस्य व्याख्यानं कृतवान्? BHU AET–2010, UGC 25 D–2015

(A) ऋग्वेदस्य (B) यजुर्वेदस्य
(C) सामवेदस्य (D) अथर्ववेदस्य

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–13*

35. वेदव्याख्यातुः वेङ्कटमाधवस्य समयः? CVVET–2015

(A) ई-1300 तमवत्सरात् प्राक्
(B) ई-1100 तमवत्सरात् प्राक्
(C) ई-1400 तमवत्सरात् प्राक्
(D) ई-1200 तमवत्सरात् प्राक्

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–11*

36. माध्यन्दिनसंहितायां कस्य भाष्यं प्राप्यते? BHU AET–2010

(A) सायणस्य (B) उव्वटस्य
(C) पतञ्जलेः (D) मल्लिनाथस्य

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–16*

37. शुक्लयजुर्वेदभाष्यस्य मङ्गलाचरणे महीधरः कं स्मरति? BHU AET–2010

(A) सायणम् (B) कात्यायनम्
(C) पतञ्जलिम् (D) उव्वटम्

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–24*

38. यजुर्वेदस्य कस्यां संहितायां सायणाचार्यस्य भाष्यमस्ति? BHU AET–2012

(A) तैत्तिरीयसंहितायाम् (B) शाकलसंहितायाम्
(C) तापनीयसंहितायाम् (D) बुधेयसंहितायाम्

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–13*

26. (A) 27. (D) 28. (C) 29. (C) 30. (C) 31. (A) 32. (C) 33. (C) 34. (B) 35. (B) 36. (B) 37. (D) 38. (A)

39. ऋग्वेदसंहिताया आंग्लपद्यानुवादकः वैदेशिकः विद्वान् वर्तते– UGC 25 D–2015

(A) एच० विल्सनः
(B) ए० ए० मैक्डानलः
(C) आर० टी० एच० ग्रीफिथः
(D) विलियम-कैलेण्डः

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–20

40. सायणाचार्यः कस्यां संहितायां भाष्यं नैव रचितवान्? BHU AET–2012

(A) शाकलसंहितायाम् (B) बाष्कलसंहितायाम्
(C) कौथुमसंहितायाम् (D) शौनकसंहितायाम्

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–13

41. वाजसनेयिप्रातिशाख्ये उपलब्धस्य भाष्यस्य किं नाम अस्ति? BHU AET–2010

(A) पितृमोदः (B) भ्रातृमोदः
(C) मातृमोदः (D) बन्धुमोदः

स्रोत– संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास (द्वितीय-खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/ओमप्रकाश पाण्डेय, पेज–15

42. शुक्लयजुर्वेदस्य भाष्यकारो नास्ति? UGC 73 D–2012

(A) शौनकः (B) सायणः
(C) उव्वटः (D) महीधरः

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–24

43. शुक्लयजुर्वेद के भाष्यकार हैं? UGC 73 D–1999

(A) जैमिनि (B) सायण
(C) शाबर (D) उव्वट

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–16

44. वेद के व्याख्याकार के रूप में सर्वाधिक प्रख्यात भारतीय आचार्य हैं? UP GDC–2008

(A) अरविन्द (B) दयानन्द
(C) सायण (D) यास्क

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–13

45. ऋग्वेदव्याख्यानकारो भवति? UGC 73 D–2012

(A) वाचस्पतिमिश्रः (B) भट्टभास्करः
(C) मध्वाचार्यः (D) शङ्कराचार्यः

स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज–765-803

46. ऋग्वेदभाष्यकारो नास्ति? UGC 73 J–2012

(A) वेङ्कटमाधवः (B) सायणः
(C) आत्मानन्दः (D) उव्वटः

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–16

47. उव्वटमहीधरयोः भाष्यमस्ति? UGC 73 J–2012

(A) सामवेदस्य (B) ऋग्वेदस्य
(C) काण्ववेदस्य (D) शुक्लयजुर्वेदस्य

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–198

48. 'पदक्रमसदन'–नामकं भाष्यं कस्य प्रातिशाख्यस्य विद्यते– UGC 25 D–2015

(A) वाजसनेयप्रातिशाख्यस्य (B) ऋक्प्रातिशाख्यस्य
(C) अथर्वप्रातिशाख्यस्य (D) तैत्तिरीयप्रातिशाख्यस्य

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–198

49. शुक्लयजुर्वेदस्य काण्वशाखायाः भाष्यकारोऽस्ति? UGC 73 J–2012

(A) उव्वटः (B) सायणः
(C) महीधरः (D) शौनकः

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–13

50. शुक्लयजुर्वेदस्य माध्यन्दिनशाखायाः हिन्दीभाषया आदिभाष्यकारोऽस्ति– UGC 73 J–2012

(A) महर्षिमहेशयोगी (B) अरविन्दमहर्षिः
(C) दामोदरसातवलेकरः (D) महर्षिदयानन्दः

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–28

51. शुक्लयजुर्वेदस्य संस्कृत-हिन्दी–भाषायां कृतं भाष्यं प्राप्यते– UGC 73 D–2011

(A) आचार्यसायणस्य (B) आचार्यमहीधरस्य
(C) आचार्योव्वटस्य (D) महर्षिदयानन्दसरस्वतेः

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–18

39. (C)	40. (B)	41. (C)	42. (A)	43. (D)	44. (C)	45. (C)	46. (D)	47. (D)	48. (D)
49. (B)	50. (D)	51. (D)							

52. स्वामीकरपात्रीजी का भाष्य है– BHU MET–2014

(A) ऋग्वेद पर (B) सामवेद पर

(C) शुक्लयजुर्वेद पर (D) अथर्ववेद पर

स्रोत–*संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास (द्वितीय-खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/ओमप्रकाश पाण्डेय, पेज–558*

53. आत्मानन्द ने जिस पर भाष्य लिखा, वह है– BHU MET–2014

(A) शिवसङ्कल्पसूक्त (B) इन्द्रसूक्त

(C) अस्यवामीयसूक्त (D) वरुणसूक्त

स्रोत–*संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास (प्रथम-खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/व्रजबिहारी चौबे, पेज–638*

54. 'उव्वट' ने व्याख्या की है जिस वेद शाखा की, वह है– BHU MET–2014

(A) माध्यन्दिन (B) पैप्पलाद

(C) कपिष्ठल (D) शौनक

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–16*

55. (i) महीधर क्या हैं– UGC 73 J–2015

(ii) महीधर कौन हैं? BHU MET–2009, 2013

(A) सूत्रकार (B) भाष्यकार

(C) वार्तिककार (D) पदकार

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–16*

56. एषु अर्वाचीनो वेदभाष्यकारो न वर्तते– UGC 25 J–2012

(A) मैक्समूलरः (B) वेबरः

(C) अरविन्दः (D) सायणः

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–7*

57. 'ब्राह्मणसर्वस्व' नामकं वेदभाष्यं केन विरचितम्– UGC 25 D–2015, UGC 73 D–2015

(A) हरिस्वामिना (B) हलायुधेन

(C) गुणविष्णुना (D) उव्वटेन

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–15-16*

58. वैदिकस्वरप्रक्रियायाः वृत्तिकारः कः? UGC 25 D–2015

(A) भट्टोजिदीक्षितः (B) पाणिनिः

(C) पतञ्जलिः (D) कात्यायनः

स्रोत–*संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास (पञ्चदश-खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/गोपालदत्त पाण्डेय, पेज–221*

59. (i) कः अग्निसूक्तस्य ऋषिः? HE –2015

(ii) अग्निसूक्तस्य ऋषिः कः? UGC 25 J–2015

(A) हिरण्यस्तूपः (B) दीर्घतमाः

(C) मधुच्छन्दाः (D) विश्वामित्रः

स्रोत–*(i) अग्निसूक्त (ऋग्वेद 1.1.1)*

(ii) ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–55

60. ऋग्वेद के पदपाठकार हैं? UGC 25 J–1998

(A) शाकल्य (B) आत्रेय

(C) यास्क (D) कात्यायन

स्रोत–*वैदिक साहित्य और संस्कृति - बलदेव उपाध्याय, पेज–33*

61. हिरण्यगर्भसूक्तस्य ऋषिः कः? BHU AET–2011

(A) विश्वामित्रः (B) भरद्वाजः

(C) अत्रिः (D) हिरण्यगर्भः

स्रोत–*(i) हिरण्यगर्भसूक्त (ऋग्वेद 10.121)*

(ii) वैदिकसूक्तसंग्रह - विजयशङ्कर पाण्डेय, पेज–116

62. ऋषिः कः आसीत्? BHU AET–2011

(A) मन्त्रवाचकः (B) मन्त्रद्रष्टा

(C) मन्त्रकर्त्ता (D) मन्त्रलेखकः

स्रोत–*वैदिकसूक्तसंग्रह - विजयशङ्कर पाण्डेय, पेज–10*

63. (i) ऋग्वेदस्य प्रथममण्डलस्य ऋषिः अस्ति?

(ii) ऋग्वेद के प्रथमसूक्त के ऋषि कौन हैं?

UGC 25 D–2006, BHU MET– 2008, 2009, 2011 2013, UK SLET–2015

(A) वसिष्ठः (B) विश्वामित्रः

(C) मधुच्छन्दाः (D) अगस्त्यः

स्रोत–*वैदिकसूक्तसंग्रह - विजयशङ्कर पाण्डेय, पेज–31*

52. (C) 53. (C) 54. (A) 55. (B) 56. (D) 57. (B) 58. (A) 59. (C) 60. (A) 61. (D) 62. (B) 63. (C)

64. अक्षसूक्त के ऋषि कौन हैं? BHU MET–2009, 2013

(A) मधुच्छन्दा (B) दीर्घतमा
(C) कश्यप (D) कवषऐलूष

स्रोत–*ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–381*

65. वंशमण्डल का ऋषि कौन है? BHU MET–2011

(A) मधुच्छन्दा (B) पवमान
(C) वामदेव (D) दीर्घतमा

स्रोत–*(i) वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–31*
(ii) वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–47

66. (i) पुरुषसूक्तस्य (10.90) ऋषिः अस्ति?
(ii) पुरुषसूक्त का द्रष्टा कौन है? BHU MET–2011
RPSC ग्रेड-II TGT–2011, RPSC ग्रेड-I PGT–2014

(A) नारायण (B) उद्गीथ
(C) सायण (D) अत्रि

स्रोत– *(ii) ऋक्सूक्तसंग्रह (10.90)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–392*

67. ऋग्वेद का प्रथम अध्येता कौन है? BHU MET–2012

(A) पैल (B) वैशम्पायन
(C) जैमिनि (D) सुमन्तु

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–04*

68. (i) ऋग्वेदीय-द्वितीयमण्डलस्य ऋषिः वर्तते
(ii) ऋग्वेदसंहिता के द्वितीय मण्डल के ऋषि कौन हैं– BHU MET–2012, UGC 73 J–2015

(A) गृत्समद (B) विश्वामित्र
(C) वामदेव (D) वसिष्ठ

स्रोत–*ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–177*

69. ऋग्वेदस्य द्वितीयमण्डलान्तर्गतस्य इन्द्रसूक्तस्य ऋषिः कः? UGC 25 S–2013

(A) गृत्समदः (B) हिरण्यगर्भः
(C) विश्वामित्रः (D) अत्रिः

स्रोत–*ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–177*

70. ''स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव'' अस्य मन्त्रस्य ऋषिः वर्तते? UGC 25 D–2013

(A) वशिष्ठः (B) मधुच्छन्दाः
(C) कण्वः (D) अङ्गिराः

स्रोत–*वैदिकसूक्तसंग्रह (ऋ. 1.1.9)-विजयशङ्कर पाण्डेय, पेज–37*

71. ''सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः ....'' अस्य मन्त्रस्य ऋषिरस्ति? UGC 25 D–2013

(A) नारायणः (B) कण्वः
(C) मेधातिथिः (D) अङ्गिराः

स्रोत–*(i) पुरुष-सूक्त ऋग्वेद 10.90*
(ii) ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–403

72. 'दीर्घतमा' कस्य सूक्तस्य ऋषिः विद्यते? RPSC ग्रेड-II TGT–2014

(A) विष्णुसूक्तस्य (B) इन्द्रसूक्तस्य
(C) अग्निसूक्तस्य (D) पुरुषसूक्तस्य

स्रोत–*ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–164*

73. तैत्तिरीयसंहिता केन प्रवर्तिता? BHU AET–2010

(A) प्रवर्धनेन (B) तित्तिरिणा
(C) कण्वेन (D) मेधातिथिना

स्रोत–*संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (प्रथम-खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/व्रजबिहारी चौबे, पेज–228*

74. सोमयागे कति ऋत्विजो भवन्ति? BHU AET–2010

(A) षोडश (B) दश
(C) षट् (D) पञ्च

स्रोत–*श्रौतयज्ञ परिचय - वेणीरामशर्मा गौड, पेज–28*

75. (i) गायत्रीमन्त्र की रचना किसने की थी–
(ii) गायत्रीमन्त्रस्य द्रष्टा? BHU AET–2010
UK PCS–2006, UGC 06 J–2015

(A) वसिष्ठः (B) भरद्वाजः
(C) गृत्समदः (D) विश्वामित्रः

स्रोत–*ऋग्वेद (3.62.10) - वेदान्त तीर्थ, पेज–139*

64. (D) 65. (C) 66. (A) 67. (A) 68. (A) 69. (A) 70. (B) 71. (A) 72. (A) 73. (B) 74. (A) 75. (D)

76. सुदास के विरुद्ध ऋग्वेद में उल्लिखित दस राजाओं का युद्ध किसके नेतृत्व में लड़ा गया था?
UGC 06 J–2014

(A) वसिष्ठ (B) विश्वामित्र
(C) कुरु (D) पुरु

स्रोत–*वैदिक साहित्य और संस्कृति-बलदेव उपाध्याय, पेज–412*

77. सामवेदस्य प्रकाण्डविद्वान् कः आसीत्?
BHU AET–2011

(A) मैक्समूलरः (B) पीटर्सनः
(C) दयानन्दः (D) सायणः

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–13*

78. वेदव्यासमहामुनिः यजुर्वेदं कस्मै समर्पितवान्?
BHU AET–2011

(A) वैशम्पायनाय (B) सुमन्तवे
(C) जैमिनये (D) पैलाय

संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास (प्रथम-खण्ड)-बलदेव उपाध्याय, पेज–77

79. (i) निम्नलिखित पुरोहितों में से कौन यज्ञ के सम्पादन का निरीक्षण करता था?
(ii) यज्ञस्य निरीक्षणं कः ऋत्विक् करोति?
BHU AET–2010, UGC 06 J–2014

(A) होता (B) अध्वर्युः
(C) उद्‌गाता (D) ब्रह्मा

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–102*

80. ऋषयः मन्त्राणां के सन्ति? BHU AET–2012

(A) लेखकाः (B) द्रष्टारः
(C) पाठकाः (D) वक्तारः

स्रोत–*वैदिकसूक्तसंग्रह - विजयशङ्कर पाण्डेय, पेज–10*

81. याज्ञवल्क्यः कस्य सभायामासीत्? BHU AET–2012

(A) जनकस्य (B) युधिष्ठिरस्य
(C) दशरथस्य (D) प्रजापतेः

स्रोत–*याज्ञवल्क्यस्मृति - उमेशचन्द्र पाण्डेय, पेज–34*

82. (i) सर्वप्रथम वेदों का निर्वचन किया है?
(ii) वैदिकशब्दानां निर्वचनं कः कृतवान्?
UK SLET–2015, UGC 25 J–1994

(A) गौतमः (B) यास्कः
(C) पिङ्गलः (D) कपिलः

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–16*

83. वेदों के पुनरुत्थान का श्रेय किसे है? UP PCS–1995

(A) रामकृष्णपरमहंस (B) स्वामीदयानन्दसरस्वती
(C) रामानुज (D) स्वामीविवेकानन्द

संस्कृति साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–10

84. निम्नलिखित में से कौन सी वह ब्रह्मवादिनी थी, जिसने कुछ वेद मन्त्रों की रचना की थी? IAS–1995

(A) लोपामुद्रा (B) गार्गी
(C) लीलावती (D) सूर्या सावित्री

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–48*

85. उपनिषदों के समय में वह विदुषी महिला कौन थी जो दार्शनिकों की सभा में उच्च ज्ञान पर सम्भाषण कर सकती थी? UGC 06 J–2015

(A) अपाला (B) घोषा
(C) गार्गी (D) विश्ववारा

स्रोत–*बृहदारण्यकोपनिषद् (शाङ्करभाष्य 3.8)-गीताप्रेस, पेज–756*

86. मन्त्रदर्शनं के अकुर्वन्? RPSC ग्रेड-II, TGT–2010

(A) राक्षसाः (B) ऋक्षयः
(C) मर्कटाः (D) ऋषयः

स्रोत–*वैदिकसूक्तसंग्रह - विजयशङ्कर पाण्डेय, पेज–10*

87. निम्नलिखित में से कौन महिला विदुषी वैदिक मन्त्रों की रचयिता मानी जाती हैं? MP PSC–1997

(A) विश्ववारा (B) घोषा
(C) अपाला (D) ये सभी

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–70-71*

88. ऋग्वैदिकस्य वरुणसूक्तस्य ऋषिरस्ति? DL–2015

(A) कपिलः (B) कात्यायनः
(C) शुनःशेपः (D) शाकल्यः

स्रोत–*ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–68*

76. (B) 77. (D) 78. (A) 79. (D) 80. (B) 81. (A) 82. (B) 83. (B) 84. (D) 85. (C) 86. (D) 87. (D) 88. (C)

89. वरुणसूक्तस्य ऋषिरस्ति? JNU MET–2014

(A) वसिष्ठः (B) वरुणः
(C) विश्वामित्रः (D) आपः

स्रोत–*ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–325*

90. ऋग्वेदीय सप्तममण्डल के ऋषि हैं? UGC 73 D–2015

(A) वसिष्ठः (B) अत्रिः
(C) वामदेवः (D) मधुच्छन्दाः

वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–47

91. ''ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः''–अस्य मन्त्रस्य ऋषिरस्ति? UGC 25 J–2013

(A) मधुच्छन्दाः (B) अजीगर्तः
(C) कण्वः (D) नारायणः

ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋ. 10.90.16)-हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–404

92. वाजसनेय कौन हैं? UGC 73 J–2007, D–2010

(A) मनुः (B) याज्ञवल्क्यः
(C) गौतमः (D) वशिष्ठः

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–94*

93. विश्वामित्र जिस मण्डल के ऋषि हैं, वह है? BHU MET–2015

(A) तीसरा (B) चौथा
(C) पाँचवा (D) षष्ठ

स्रोत–*ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–207*

94. ''उप त्वाग्ने दिवे-दिवे दोषावस्तर्धिया वयम्'' अस्य मन्त्रस्य ऋषिः वर्तते? UGC 25 J–2013

(A) अग्निः (B) कण्वः
(C) दीर्घतमाः (D) मधुच्छन्दाः

वैदिकसूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 1.1.7)-विजयशङ्कर पाण्डेय, पेज–36

95. चतुर्थ मण्डल के ऋषि हैं? BHU MET–2014

(A) वामदेव (B) भरद्वाज
(C) गृत्समद (D) वशिष्ठ

स्रोत–*ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–242*

96. विष्णुसूक्तस्य ऋषिः अस्ति? UGC 25 J–2011

(A) दीर्घतमाः (B) हिरण्यस्तूपः
(C) गृत्समदः (D) हिरण्यगर्भः

स्रोत–*ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–164*

97. समुचितां तालिकां चिनुत– UGC 73 J–2015

(अ) ऋषयः **1. अर्थशास्त्रप्रवर्तकः**
(ब) मनुः **2. सौगतधर्मप्रवर्तकः**
(स) कौटिल्यः **3. मन्त्रद्रष्टारः**
(द) बुद्धः **4. धर्मशास्त्रप्रवर्तकः**

	अ	ब	स	द
(A)	4	1	3	2
(B)	3	2	4	1
(C)	3	4	1	2
(D)	1	4	3	2

स्रोत–*(अ) वैदिकसूक्तसंग्रह - विजयशंकर पाण्डेय, पेज–10*
(ब) मनुस्मृति-शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, भू. पेज–8
(स) कौटिलीय अर्थशास्त्रम् - वाचस्पति गैरोला, पेज–67
(द) वेदान्तसार - सन्तनारायण, भू. पेज-VIII

98. निरुक्तस्य व्याख्याकारः वर्तते? JNU M.Phil/Ph.D–2015

(A) यास्कः (B) कश्यपः
(C) दुर्गाचार्यः (D) व्याडिः

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–185*

99. सायणस्य व्याख्यापद्धतिरस्ति– UGC 25 S–2013

(A) वैज्ञानिकी (B) याज्ञिकी
(C) तान्त्रिकी (D) ऐतिहासिकी

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–17*

100. (i) अधस्तादृत्तेषु कः वंशमण्डलेन सम्बद्धः नास्ति?
(ii) निम्नलिखित में से कौन वंशमण्डल से सम्बद्ध नहीं है? UGC 73 J–2015
BHU MET–2009, 2013, UGC 25 D–2015

(A) गौतम (B) वामदेव
(C) अत्रि (D) विश्वामित्र

स्रोत–*(i) वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–31*
(ii) वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–47

89. (A) 90. (A) 91. (D) 92. (B) 93. (A) 94. (D) 95. (A) 96. (A) 97. (C) 98. (C) 99. (B) 100. (A)

101. ऋग्वेदीयषष्ठमण्डलस्य ऋषिः वर्तते– UGC 25 D–2015

(A) भरद्वाजः (B) वामदेवः
(C) वशिष्ठः (D) विश्वामित्रः

***स्रोत**–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–47*

102. सायणाचार्यस्य गुरुः कः आसीत्– BHU AET–2011

(A) भारतीकृष्णतीर्थः (B) विद्यातीर्थः
(C) विद्यारण्यस्वामी (D) ब्रह्मानन्दसरस्वती

***स्रोत**–संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास (प्रथम-खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/व्रजबिहारी चौबे, पेज–639*

103. (i) सायण का भ्राता किसे कहा गया है?
(ii) सायणस्य अनुजस्य नाम किम्–
BHU AET–2011, BHU MET–2009, 2013

(A) तारानाथः (B) दुर्गानाथः
(C) भोगनाथः (D) योगनाथः

***स्रोत**–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–12*

104. नचिकेतसः पितुर्नाम– UGC 25 D–2004

(A) वाजस्रवा (B) श्वेतकेतुः
(C) याज्ञवल्क्यः (D) जाबालिः

***स्रोत**–ईशादि नौ उपनिषद् - गीताप्रेस, पेज–77*

105. आपदेवस्य गुरुः कः? BHU AET–2011

(A) खण्डदेवः (B) वोपदेवः
(C) अनन्तः (D) जयन्तः

***स्रोत**–अर्थसंग्रह - राजेश्वरशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज–22*

106. उव्वटाचार्यस्य स्थानं कस्मिन् पुरे वर्तते?
BHU AET–2011

(A) पृथिवीपुरे (B) आनन्दपुरे
(C) अलकापुरे (D) गङ्गापुरे

***स्रोत**–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–16*

107. आचार्यसायणस्य मातुः नाम किम्? BHU AET–2011

(A) लक्ष्मीः (B) श्रीमती
(C) दुर्गावती (D) मधुमती

***स्रोत**–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–12*

108. (i) सायणस्य अग्रजस्य किं नाम आसीत्?
(ii) सायणस्य को भ्राता? BHU AET–2011, 2012

(A) हलायुधः (B) माधवः
(C) पिङ्गलः (D) मायणः

***स्रोत**–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–12*

109. योगिनः याज्ञवल्क्यस्य गुरुः कः आसीत्?
BHU AET–2011

(A) अत्रिः (B) अगस्त्यः
(C) विश्वामित्रः (D) वैशम्पायनः

***स्रोत**–याज्ञवल्क्यस्मृति - उमेशचन्द्र पाण्डेय, पेज–13*

110. याज्ञवल्क्यस्य पितुः वाजसनेः अपरं नाम किमस्ति?
BHU AET–2010

(A) वैशम्पायनः (B) सुमन्तुः
(C) देवरातः (D) कणादः

***स्रोत**–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–131*

111. उव्वटस्य पितुः नाम किमासीत्? BHU AET–2010

(A) कैयटः (B) मम्मटः
(C) जल्लटः (D) वज्रटः

***स्रोत**–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–24*

112. यजुषां वमनकर्ता याज्ञवल्क्यः कस्य शिष्यः आसीत्?
BHU AET–2012

(A) वैशम्पायनस्य (B) सुमन्तोः
(C) माधवस्य (D) विश्वामित्रस्य

***स्रोत**–याज्ञवल्क्यस्मृति - उमेशचन्द्र पाण्डेय, पेज–13*

113. 'शतपथानुसारं याज्ञवल्क्यस्य गुरोः नाम किमस्ति?
BHU AET–2012

(A) आरुणिः (B) उपमन्युः
(C) धौम्यः (D) सदानन्दः

***स्रोत**–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–131*

114. सायणः– BHU AET–2010

(A) वेदभाष्यकर्ता (B) वैयाकरणः
(C) मीमांसकः (D) कविः

***स्रोत**–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–12*

101. (A) 102. (B) 103. (C) 104. (A) 105. (C) 106. (B) 107. (B) 108. (B) 109. (D) 110. (C) 111. (D) 112. (A) 113. (A) 114. (A)

115. महर्षिः वेदव्यासः कम् ऋग्वेदं समर्पितवान्–
BHU AET–2011
(A) वैशम्पायनम् (B) जैमिनिम्
(C) पैलम् (D) सुमन्तुम्
स्रोत–*संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास (प्रथम-खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/व्रजबिहारी चौबे, पेज–73*

116. 'शेषे यजुः शब्दः' इति कस्य वचनमस्ति–
(ii) 'शेषे यजुः शब्दः' इति वचनं कः उक्तवानस्ति?
BHU AET–2010, 2012
(A) यास्कः (B) पतञ्जलिः
(C) जैमिनिः (D) सायणः
स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–63*

117. ''यजुर्यजतेः'' इति निर्वचनं कस्यास्ति?
BHU AET–2010
(A) सायणस्य (B) महीधरस्य
(C) पतञ्जलेः (D) यास्कस्य
स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–63*

118. ''एकशतमध्वर्युशाखा'' इति केन कथितमस्ति–
BHU AET–2010
(A) पतञ्जलिना (B) पाणिनिना
(C) वररुचिना (D) माधवेन
स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–93*

119. ''मन्त्रब्राह्मणयोर्वेदनामधेयम्'' इति कः उक्तवानस्ति?
BHU AET–2010, 2012
(A) आपस्तम्बः (B) पाणिनिः
(C) माधवः (D) महीधरः
स्रोत–*वैदिकसूक्तसंग्रह - विजयशङ्कर पाण्डेय, भूमिका-2*

120. ''अर्थावबोधे निरपेक्षतया पदजातं यत्रोक्तं तन्निरुक्तम्'' कस्य वचनमस्ति? BHU AET–2011, 2012
(A) यास्कस्य (B) सायणस्य
(C) दुर्गाचार्यस्य (D) पाणिनेः
स्रोत–*हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज–भूमिका-11*

121. ''रजः शब्दो लोकवाची'' इसके वक्ता हैं–
BHU MET–2015
(A) इजलिङ्ग (B) मैक्समूलर
(C) सायण (D) ग्रिफिथ
स्रोत–*ऋक्सूक्तसंग्रह (1.35.2) - हरिदत्त शास्त्री, पेज–105*

122. ''सम्पूर्णमृषिवाक्यन्तु सूक्तमित्यभिधीयते'' वाक्यमिदं कस्य– BHU AET–2011
(A) जैमिनेः (B) व्यासस्य
(C) शौनकस्य (D) याज्ञवल्क्यस्य
स्रोत–*बृहद्देवता - रामकुमार राय, पेज–05*

123. ''यः पृथिवीं व्यथमानामदृंहद्यः पर्वतान्प्रकुपिताँ अरम्णात्''-अस्य मन्त्रस्य द्रष्टा ऋषि कः?
UGC 25 D–2015
(A) विश्वामित्रः (B) गृत्समदः
(C) मधुच्छन्दाः (D) इन्द्रः
वैदिकसूक्तसंग्रह (इन्द्रसूक्त ऋग्वेद 2.12.2)-विजयशङ्कर पाण्डेय, पेज–66

124. इष्टप्राप्त्यनिष्टपरिहारयोरलौकिकमुपायं यो ग्रन्थो वेदयति स वेदः–इति लक्षणं कस्य? UGC 25 D–2015
(A) महीधरस्य (B) लौगाक्षिभास्करस्य
(C) सायणस्य (D) पारस्करस्य
स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–01*

125. 'शून्य' का आविष्कार किया था? IAS–1995
(A) आर्यभट्ट ने (B) भास्करप्रथम ने
(C) वराहमिहिर ने (D) किसी अज्ञातभारतीय ने
स्रोत–*भारतीय शास्त्र एवं शास्त्रकार-गिरिजाशङ्कर शास्त्री, पेज–153*

126. प्राचीन भारत का पहला प्रसिद्ध ज्योतिषशास्त्र का ज्ञाता कौन था? UP TGT (S.S.)–2009
(A) बाणभट्ट (B) आर्यभट्ट
(C) विशाखदत्त (D) कात्यायन
स्रोत–*भारतीय शास्त्र एवं शास्त्रकार-गिरिजाशङ्कर शास्त्री, पेज–151*

127. स्वामिदयानन्दसरस्वतीमहोदयस्य जन्म अस्मिन् वर्षे आसीत्– CVVET–2015
(A) ई0 1636 तमे वर्षे (B) ई0 1724 तमे वर्षे
(C) ई0 1824 तमे वर्षे (D) ई0 1875 तमे वर्षे
वैदिक साहित्य का इतिहास-गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज–383

115. (C) 116. (C) 117. (D) 118. (A) 119. (A) 120. (B) 121. (C) 122. (C) 123. (B) 124. (C) 125. (A) 126. (B) 127. (C)

128. निम्नलिखित में से किसका प्राचीन भारत के आयुर्वेद शास्त्र से सम्बन्ध नहीं है? IAS–1993

(A) धन्वन्तरि (B) भास्कराचार्य
(C) चरक (D) सुश्रुत

संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज–606

129. वास्तुशास्त्रस्य प्राचीनतमः आचार्यः अस्ति– UGC 73 D–2004

(A) कालिदासः (B) मयः
(C) वराहमिहिरः (D) पतञ्जलिः

संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज–605

130. मिथिला में गार्गी वाचक्नवी ने किस ऋषि से शास्त्रार्थ किया था– MP PSC–2003

(A) वशिष्ठ (B) विश्वामित्र
(C) भरद्वाज (D) याज्ञवल्क्य

वैदिक साहित्य और संस्कृति - बलदेव उपाध्याय, पेज–427

131. ''पुरुषार्थानां वेदयिता वेद उच्यते''। इस परिभाषा के कर्ता हैं– BHU MET–2015

(A) सायणः (B) महीधरः
(C) जैमिनिः (D) भट्टभास्करः

132. अशुद्ध विकल्प चुनिये– UGC 73 J–2015

(A) भारतीयसंस्कृतिः – वेदाश्रिता
(B) यजुर्वेदः – कल्पम्
(C) महर्षिवेदव्यासः – योगदर्शनम्
(D) महर्षिदयानन्दः – आर्यसमाजप्रवर्तकः

स्रोत–*भारतीयदर्शन - चटर्जी एवं दत्त, पेज–280*

133. कुल्लूकभट्टस्य समयः– CVVET–2015

(A) त्रयोदशशतकम् (B) एकादशशतकम्
(C) दशमशतकम् (D) चतुर्दशशतकम्

स्रोत–*मनुस्मृति - शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, भू. पेज-16*

134. 'लीलावती' इति गणितग्रन्थस्य कः रचयिता? JNU MET–2015

(A) आर्यभट्टः (B) भास्कराचार्यः
(C) कमलाकरभट्टः (D) ब्रह्मगुप्तः

स्रोत–*भारतीय शास्त्र एवं शास्त्रकार-गिरिजाशङ्करशास्त्री, पेज–180*

135. बृहत्संहिता की रचना किसने की थी? UP TGT S.S.–2003

(A) कालिदास (B) कल्हण
(C) आर्यभट्ट (D) वराहमिहिर

स्रोत–*संस्कृत शास्त्रों का इतिहास - बलदेव उपाध्याय, पेज–71*

128. (B) **129.** (C) **130.** (D) **131.** (D) **132.** (C) **133.** (A) **134.** (B) **135.** (D)

16. वैदिकग्रन्थ और ग्रन्थकार

1. 'वैदिक-देवशास्त्र' (Vedic Mythology) के लेखक हैं– UGC 25 J–1994

(A) मैक्समूलर (B) वेबर
(C) मैक्डॉनल (D) कीथ

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–37

2. 'वैदिकव्याकरण' के आधुनिक लेखक हैं– UGC 25 D–1997

(A) बॉप (B) मायरहोफर
(C) लुई रेनू (D) आर० एन० दण्डेकर

स्रोत–संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास (द्वितीय-खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/ओमप्रकाश पाण्डेय, पेज–331

3. (i) निरुक्तकार कौन हैं? UGC 25 D–1996, D–1999, (ii) निरुक्तस्य रचयिता अस्ति– J–2003, UGC 73 (iii) निरुक्त के लेखक हैं– D–1992 1994, DSSSB PGT–2014, BHU AET–2010, UPGIC–2015

(A) पाणिनि (B) कात्यायन
(C) पतञ्जलि (D) यास्क

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–5

4. (i) 'वेदाङ्गज्योतिष' के रचयिता हैं–
(ii) वेदाङ्गज्योतिषस्य प्रणेता कः?
(iii) वेदाङ्गज्योतिषस्य कर्तुः किं नाम अस्ति?
BHU AET–2010, J–2011, 2012 UGC 25 J–2001 BHU MET–2008, 2010, BHU Bed–2014

(A) लगध (B) पाणिनि
(C) पतञ्जलि (D) कालिदास

संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज–605

5. "Vedic Concordance" (वैदिक वाक्यकोश) के लेखक हैं– UGC 25 J–2003

(A) मैक्समूलर (B) डॉ० ब्लूमफील्ड
(C) वेबर (D) विण्टरनित्स

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–21

6. ''Orion'' (ऑरिआन) किसकी रचना है– UGC 25 D–2003

(A) याकोबी (B) बालगङ्गाधरतिलक
(C) वेबर (D) मैक्समूलर

स्रोत–(i) वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–30
(ii) संस्कृत शास्त्रों का इतिहास - बलदेव उपाध्याय, पेज–81

7. ऋग्वेदप्रातिशाख्यस्य प्रणेता कः– BHU AET–2011

(A) उव्वटः (B) महीधरः
(C) शौनकः (D) कात्यायनः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज–90

8. कस्य ग्रन्थस्य प्रणेताचार्यः सायणः– BHU AET–2011

(A) मीमांसापरिभाषा (B) न्यायप्रकाशः
(C) ऋग्वेदभाष्यभूमिका (D) श्लोकवार्तिकम्

स्रोत–ऋग्वेदभाष्यभूमिका - सायण/जगन्नाथ पाठक, भूमिका-3

9. यज्ञतत्त्वप्रकाशग्रन्थस्य कर्ता कः– BHU AET–2011

(A) भरतस्वामी (B) चिन्नस्वामी
(C) देवस्वामी (D) धूर्तस्वामी

स्रोत– संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (सप्तम खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/जगन्नाथ पाठक, पेज-550

10. 'वैदिकविज्ञान और भारतीय संस्कृति' इति ग्रन्थस्य कर्ता कः– BHU AET–2011

(A) गिरधरशर्माचतुर्वेदी (B) मधुसूदनओझा
(C) गोपीनाथकविराजः (D) गौरीनाथशास्त्री

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–19, 31

11. 'वाजसनेयि-प्रातिशाख्य' के रचयिता कौन हैं– BHU MET–2008

(A) शौनक (B) कात्यायन
(C) भरद्वाज (D) गौतम

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्करशर्मा 'ऋषि', पेज–90

1. (C) 2. (C) 3. (D) 4. (A) 5. (B) 6. (B) 7. (C) 8. (C) 9. (B) 10. (A) 11. (B)

12. (i) बृहद्देवतायाः रचयिता कोऽस्ति? BHU MET–2008
(ii) 'बृहद्देवता' किसकी रचना है– BHU AET–2012
UP GDC–2008, UP GIC–2015

(A) शौनक (B) कात्यायन
(C) पाणिनि (D) पतञ्जलि

स्रोत–*संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्करशर्मा 'ऋषि', पेज–95*

13. 'जैमिनीय-न्यायमाला' किसने लिखी है– BHU MET–2009

(A) गौतम (B) सायण
(C) माधव (D) भर्तृहरि

स्रोत–*अर्थसंग्रह - राजेश्वरशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज–21*

14. शतपथब्राह्मणस्य कर्ता अस्ति– UGC 73 J–2013

(A) महीधरः (B) शौनकः
(C) याज्ञवल्क्यः (D) सायणः

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–76

15. चरणव्यूहग्रन्थः केन रचितः– BHU AET–2011

(A) महीदासः (B) शौनकः
(C) कात्यायनः (D) आश्वलायनः

स्रोत–*संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्करशर्मा 'ऋषि', पेज–97*

16. (i) 'निघण्टु' के रचयिता हैं–
(ii) निघण्टुग्रन्थस्य रचयिता प्राचीनमतानुसारम्–
BHU AET–2010, BHU MET–2015

(A) अमरसिंहः (B) पाणिनिः
(C) यास्कः (D) अर्वाचीनः

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–89

17. ऋक्तन्त्रस्य रचयिता– BHU AET–2010

(A) शाकटायनः (B) आश्वलायनः
(C) जैमिनिः (D) व्यासः

स्रोत–*संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास (द्वितीय-खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/ओमप्रकाश पाण्डेय, पेज–24*

18. राणायनीयप्रातिशाख्यस्य रचयिता– BHU AET–2010

(A) गौतमः (B) सात्यमुग्रिः
(C) जैमिनिः (D) हरदत्तः

19. भट्टोजिदीक्षितमतानुसारम् ऋक्तन्त्रस्य प्रणेता कः– BHU AET–2010

(A) शाकटायनः (B) शाङ्खायनः
(C) औद्व्रजिः (D) जैमिनिः

स्रोत–*संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास (द्वितीय-खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/ओमप्रकाश पाण्डेय, पेज–24*

20. (i) 'धर्मसूत्र' के प्रवर्तक हैं– BHU AET–2010
(ii) यजुर्वेदस्य धर्मसूत्रस्य रचयिता कोऽस्ति–
(iii) प्राचीनतमं धर्मसूत्रम्– UGC 73 S–2013, J–2014

(A) गौतमः (B) कणादः
(C) पतञ्जलिः (D) कपिलः

स्रोत–*संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्करशर्मा 'ऋषि', पेज–91*

21. ऋक्प्रातिशाख्यस्य वर्ण्यविषयः कः– BHU AET–2011

(A) अग्निष्टोमः (B) चातुर्मास्यम्
(C) अग्न्याधानम् (D) वर्णस्वरादिविवेचनम्

स्रोत–*संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्करशर्मा 'ऋषि', पेज–90*

22. (i) सर्वानुक्रमणीकारः– BHU AET–2010
(ii) 'सर्वानुक्रमणी' इति ग्रन्थस्य रचयितुः नाम किमस्ति?

(A) महीधरः (B) वात्स्यायनः
(C) कात्यायनः (D) पाणिनिः

स्रोत–*संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशंकरशर्मा 'ऋषि', पेज–95*

23. चुलेटस्य ग्रन्थस्य किं नाम अस्ति? BHU AET–2010

(A) वेदसमयनिर्णयः (B) वेदयुगनिर्णयः
(C) वेदनिर्णयः (D) वेदकालनिर्णयः

वैदिक साहित्य का इतिहास-गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज–39

24. 'निरुक्तश्लोकवार्त्तिक' के कर्त्ता हैं? UGC 73 D–2013

(A) यास्कः (B) दुर्गाचार्यः
(C) नीलकण्ठः (D) स्कन्दस्वामी

स्रोत–*संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास (द्वितीय-खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/ओमप्रकाश पाण्डेय, पेज–357*

12. (A) 13. (C) 14. (C) 15. (B) 16. (C) 17. (A) 18. (*) 19. (C) 20. (A) 21. (D) 22. (C) 23. (D) 24. (B)

25. वैदिकव्याकरणस्य रचनां कः कृतवान्– BHU AET–2011

(A) हारवर्ड (B) मोक्षमूलर
(C) मैक्डॉनल (D) ग्रिफिथ

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–36

26. (i) 'ऋग्वेदभाष्यभूमिका' के रचयिता हैं–
(ii) ऋग्वेदभाष्यभूमिकायाः रचयिता कोऽस्ति–
UP GDC–2008, BHU RET–2008, BHU MET–2015

(A) महीधरः (B) गुरुदेवः
(C) सायणः (D) माधवः

स्रोत–सायणकृत ऋग्वेदभाष्यभूमिका - जगन्नाथ पाठक, पेज–3

27. गुप्तकाल का प्रसिद्ध खगोलशास्त्री कौन था? MP PSC–1992

(A) आर्यभट्ट (B) भास्कराचार्य
(C) वराहमिहिर (D) ब्रह्मगुप्त

स्रोत–संस्कृत शास्त्रों का इतिहास - बलदेव उपाध्याय, पेज–70

28. निम्नलिखित में से कौन विदुषी महिला वैदिकमन्त्रों की रचयिता नहीं थी– MP PSC–1999

(A) विश्ववारा (B) अपाला
(C) गार्गी (D) घोषा

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–48

29. निम्नलिखित में से कौन-सा वेद अंशतः गद्य में है– MP PSC–2009

(A) ऋग्वेद (B) सामवेद
(C) यजुर्वेद (D) अथर्ववेद

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–63

30. निम्नलिखित में से किस विदुषी ने वैदिक मन्त्रों की रचना की थी– MP PSC–2008

(A) गार्गी (B) विश्ववारा घोषा
(C) मैत्रेयी (D) जाबाली

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–48

31. ऋग्वेद में कौन से वैदिक देवता सहस्त्र स्तम्भों वाले भवन में निवास करते हुए वर्णित हैं? MP PSC–2008

(A) इन्द्र व अग्नि (B) यम व यमी
(C) मित्र व वरुण (D) ऊषा व सूर्य

32. वैदिक साहित्य में सभा और समिति को किस देवता की दो पुत्रियाँ कहा गया है– MP PSC–2008

(A) वरुण (B) अग्नि
(C) इन्द्र (D) प्रजापति

स्रोत–संस्कृत-वाङ्मय बृहद् इतिहास (प्रथम-खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/ब्रजबिहारी चौबे, पेज–549

33. तन्त्रयुक्तियों का विवरण है? UGC 73 J–1999

(A) अर्थशास्त्र (B) भृगुसंहिता
(C) मनुस्मृति (D) गौतमधर्मसूत्र

स्रोत–संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास (द्वितीय खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/ओमप्रकाश पाण्डेय, पेज-194

34. गोविन्दस्वामी के भाष्य वाला ग्रन्थ है– BHU MET–2015

(A) ऐतरेयब्राह्मण (B) कात्यायनश्रौतसूत्र
(C) कठोपनिषद् (D) ऋग्वेदीय-अग्निसूक्त

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–26

35. ''पीटर-पीटर्सन'' की रचना है– BHU MET–2015

(A) ऋग्वेद से स्तोत्र (Hymns from the Rgveda)
(B) वेद से चयनित
(C) नये वेद से चयनित
(D) वेद के अग्नि से निकली चिनगारी

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–17

36. 'On the Vedas' के रचनाकार हैं– BHU MET–2015

(A) योगिराज अरविन्द (B) ग्रिफिथ
(C) लक्ष्मणस्वरूप (D) मधुसूदन ओझा

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–19

37. 'ऐतरेय ब्राह्मण' के अंग्रेजी अनुवादक हैं– BHU MET–2015

(A) अरविन्द (B) किरीट जोशी
(C) चिन्नस्वामी (D) ए0 बी0 कीथ

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–125

25. (C) 26. (C) 27. (A) 28. (C) 29. (C) 30. (B) 31. (A) 32. (D) 33. (D) 34. (A) 35. (A) 36. (A) 37. (D)

38. ''गीतिषु सामाख्या'' इस सूत्र के रचनाकार हैं– BHU MET–2015

(A) कपिलः (B) कणादः
(C) जैमिनिः (D) पतञ्जलिः

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–77*

39. 'वेदभाष्यभूमिकासंग्रह'– के रचयिता हैं– BHU MET–2015

(A) आचार्य सायण (B) उव्वट
(C) महीधर (D) स्कन्दस्वामी

स्रोत–*वैदिक साहित्य और संस्कृति - बलदेव उपाध्याय, पेज–68*

40. 'श्रीसातवलेकर' द्वारा रचित वेदभाष्य का नाम है– BHU MET–2015

(A) सुबोधभाष्यम् (B) वेदप्रदीपः
(C) वेदार्थप्रकाशः (D) सुबोधिनी

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–19*

41. 'वेददीपभाष्य' के कर्ता हैं– UGC 73 J–2014

(A) सायणाचार्यः (B) हलायुधः
(C) कर्काचार्यः (D) महीधरः

स्रोत–*(i) वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–24*
(ii) संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज–112

42. 'तैत्तिरीयप्रातिशाख्य' सम्बद्ध है– BHU MET–2010

(A) ऋग्वेद (B) सामवेद
(C) शुक्लयजुर्वेद (D) कृष्णयजुर्वेद

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–198*

43. 'मशकश्रौतसूत्र' सम्बद्ध है? BHU MET–2010, BHU AET–2012

(A) ऋग्वेद (B) यजुर्वेद
(C) अथर्ववेद (D) सामवेद

स्रोत–*संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास (द्वितीय-खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/ओमप्रकाश पाण्डेय, भू.-40*

44. शुक्लयजुषः श्रौतसूत्रकर्ता– UGC 73 D–2014

(A) बौधायनः (B) कात्यायनः
(C) आश्वलायनः (D) आपस्तम्बः

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–216*

45. निघण्टुग्रन्थस्य संग्रहः कृतः केन? BHU AET–2011

(A) प्रजापतिकश्यपेन (B) मैक्डाँनलेन
(C) शौनकेन (D) सायणेन

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–183, 184*

46. आपदेवस्य कति ग्रन्थाः सन्ति? BHU AET–2011

(A) 1 (B) 2
(C) 3 (D) 4

स्रोत–*(i) अर्थसंग्रह - राजेश्वरशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज–22*
(ii) सर्वदर्शनसंग्रह-(माधवाचार्य) उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज–803

47. 'जैमिनीयन्यायमाला' ग्रन्थस्य व्याख्याग्रन्थः कः? BHU AET–2011

(A) विस्तरः (B) विण्टरः
(C) प्रस्तारः (D) स्वस्तयनः

स्रोत–*(i) अर्थसंग्रह - राजेश्वर शास्त्री मुसलगाँवकर, भूमिका-21*
(ii) सर्वदर्शनसंग्रह (माधवाचार्य) उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज–769

48. कातीयेष्टिदीपकस्य कर्ता कः? BHU AET–2011

(A) परमानन्दः (B) नित्यानन्दः
(C) ब्रह्मानन्दः (D) शङ्करानन्दः

स्रोत–*संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-15) - बलदेव उपाध्याय/गोपालदत्त पाण्डेय, पेज-192*

49. 'निरुक्तालोचनम्' इति ग्रन्थस्य कः लेखकः? BHU AET–2011

(A) करपात्रस्वामी (B) मधुसूदनस्वामी
(C) सत्यव्रतसामश्रमी (D) हलायुधः

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–30*

50. 'ऐतरेयालोचनम्' इति ग्रन्थस्य कः लेखकः? BHU AET–2011

(A) स्कन्दस्वामी (B) महीधरः
(C) प्रभुदत्तः (D) सत्यव्रतसामश्रमी

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–27*

38. (C) 39. (A) 40. (A) 41. (D) 42. (D) 43. (D) 44. (B) 45. (A) 46. (A) 47. (A) 48. (B) 49. (C) 50. (D)

51. शुक्लयजुः प्रातिशाख्यस्य टीकाकारः कोऽस्ति? BHU AET–2010

(A) सायणः (B) वेङ्कटनाथः
(C) उव्वटः (D) पतञ्जलिः

स्रोत–*(i) वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–24*
(ii) संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज–112

52. दुर्गाचार्यमतेन निघण्टुग्रन्थरचयिता– BHU AET–2010

(A) पाणिनिः (B) अर्वाचीनः
(C) वररुचिः (D) यास्कः

वैदिक साहित्य का इतिहास-गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज–300-201

53. ऋक्तन्त्रं नाम प्रातिशाख्यग्रन्थः– BHU AET–2010

(A) सामवेदस्य (B) ऋग्वेदस्य
(C) यजुर्वेदस्य (D) अथर्ववेदस्य

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–180*

54. शुक्लयजुर्वेदस्य प्रातिशाख्यं केन रचितमस्ति– BHU AET–2012

(A) कात्यायनेन (B) गौतमेन
(C) वामनेन (D) वैशम्पायनेन

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–178*

55. "The Orion" इति पुस्तकं केन रचितमस्ति? BHU AET–2012

(A) मैक्समूलरेण (B) मैक्डोनलेन
(C) तिलकेन (D) भण्डारकेण

स्रोत–*(i) वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–30*
(ii) संस्कृत शास्त्रों का इतिहास - बलदेव उपाध्याय, पेज–81

56. वैदिकव्याकरणस्य व्याख्याकारः कः– BHU AET–2011

(A) जयकृष्णः (B) हलायुधः
(C) वामनः (D) भारद्वाजः

स्रोत–*संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास (द्वितीय खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/ओमप्रकाश पाण्डेय, पेज-265*

57. ऋक्तन्त्रं नाम– BHU AET–2010

(A) प्रातिशाख्यम् (B) मन्त्रः
(C) व्याकरणम् (D) भाष्यम्

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–180*

58. सही योग कौन सा है? BHU MET–2010

(A) यास्क – निरुक्त (B) कालिदास – महाभारत
(C) वाल्मीकि – उत्तररामचरित (D) भास – रामायण

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–17*

59. सायणभाष्यसहितं ऋग्वेदं सर्वप्रथमं यः सम्पादयामास सोऽस्ति पाश्चात्त्यविद्वान्– UP GDC–2012

(A) ओल्डेनवर्गः (B) हिल्लेब्राण्टः
(C) मैक्समूलरः (D) मैक्डॉनलः

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–32*

60. ऋग्वेदभाष्यभूमिकायां पुराणस्य लक्षणानि कति प्रतिपादितानि– BHU AET–2011

(A) 3 (B) 5
(C) 8 (D) 9

स्रोत–*ऋग्वेदभाष्यभूमिका - रामअवध पाण्डेय, पेज-119*

61. वैदिकस्वरमीमांसायाः कर्ता कोऽस्ति– BHU AET–2011

(A) उव्वटः (B) युधिष्ठिरमीमांसकः
(C) आपदेवः (D) सत्यव्रतसामश्रमी

स्रोत–*संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (पञ्चदश-खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/गोपालदत्त पाण्डेय, पेज–162-163*

62. विदेघ माधव का अपने पुरोहित गोतम राहूगण के साथ पूर्व दिशा की ओर जाने का कथानक निम्नांकित में से किसमें उल्लिखित है? UGC 06 D–2012

(A) गोपथ ब्राह्मण (B) बृहदारण्यक उपनिषद्
(C) शतपथ ब्राह्मण (D) ऐतरेय ब्राह्मण

स्रोत–*वैदिक साहित्य और संस्कृति-बलदेव उपाध्याय, पेज–210*

51. (C)	52. (B)	53. (A)	54. (A)	55. (C)	56. (D)	57. (A)	58. (A)	59. (C)	60. (B)
61. (B)	62. (C)								

17. वेद के विविध प्रश्न

1. ''आवाहनं देवानां वहनञ्च हविषाम्'' इत्यस्ति– UGC 25 J–2009

(A) अग्निकर्म (B) विष्णुकर्म
(C) रुद्रकर्म (D) इन्द्रकर्म

स्रोत–*हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज–286*

2. अधोऽङ्कितानां समीचीनां तालिकां चिनुत–

(क) ब्रह्मचारिसूक्तम् 1. घ्राणम्
(ख) मैत्रायणी-आरण्यकम् 2. अथर्ववेदः
(ग) अथेदं भस्मान्तं शरीरम् 3. कृष्णयजुर्वेदः
(घ) शिक्षा 4. ईशावास्योपनिषद्

UGC 25 J–2011

	क	ख	ग	घ
(A)	2	4	1	3
(B)	3	2	1	4
(C)	3	2	4	1
(D)	2	3	4	1

स्रोत–*(क) वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–109*
(ख) वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–165
(ग) ईशादि नौ उपनिषद् - गीताप्रेस, पेज–43
(घ) पाणिनीयशिक्षा (श्लोक 41-42) - शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पेज–143

3. किं सत्यम् अस्ति। UGC 25 J–2011

(A) श्रीमद्भगवद्गीता अस्ति ऋग्वेदस्य आदिमसूक्तस्य व्याख्या
(B) प्रातिशाख्यस्य लेखकोऽस्ति पाणिनिः
(C) यजुर्वेदे सन्ति विंशतिः अध्यायाः
(D) वेदभाष्यकारोऽस्ति आचार्यः सायणः

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–23*

4. किं सत्यम् अस्ति UGC 25 J–2011

(A) शुनःशेपाख्यानमस्ति कौषीतकिब्राह्मणे
(B) नचिकेतसः कथा ऋग्वेदे अस्ति
(C) कर्मकाण्डं चर्चितम् आरण्यकेषु
(D) ऋग्वेदस्य प्रथमशब्दः अस्ति 'अग्निम्'

स्रोत–*ऋक्सूक्तसंग्रह (1.1.1) -हरिदत्तशास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–55*

5. अधोऽङ्कितानां समीचीनम् उत्तरं चिनुत–

(अ) पूर्णमदः पूर्णमिदम् 1. निरुक्तम्
(ब) मा गृधः कस्यस्विद्धनम् 2. अथर्ववेदीया
(स) समाम्नायः समाम्नातः 3. ईशावास्योपनिषद्
(द) पैप्पलादसंहिता 4. बृहदारण्यकोपनिषद्

UGC 25 J–2012

	अ	ब	स	द
(A)	4	3	1	2
(B)	3	2	1	4
(C)	2	3	4	1
(D)	1	2	3	4

स्रोत–*(अ) ईशादि नौ उपनिषद् - गीताप्रेस, पेज–27*
(ब) ईशादि नौ उपनिषद् - गीताप्रेस, पेज–28
(स) निरुक्तम् - उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज–14
(द) वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–99

6. अश्वस्य मेध्यस्य लोमानि कानि उच्यन्ते। UGC 25 J–2012

(A) ऋतवः
(B) दिशः
(C) नक्षत्राणि
(D) ओषधयश्च वनस्पतयश्च

स्रोत–*बृहदारण्यकोपनिषद् (शाङ्करभाष्यसहित)-गीताप्रेस, पेज–38*

7. माङ्गलिक आचार्यो महतो शास्त्रौघस्य मङ्गलार्थमादितः किं प्रयुक्ते? UGC 25 J–2012

(A) काव्यम् (B) नित्यशब्दम्
(C) अनित्यशब्दम् (D) सिद्धशब्दम्

स्रोत–*व्याकरणमहाभाष्यम् - जयशङ्करलाल त्रिपाठी, पेज–82*

1. (A) 2. (D) 3. (D) 4. (D) 5. (A) 6. (D) 7. (D)

8. अधोऽङ्कितानां समीचीनम् उत्तरं चिनुत–

(क) सरमा-पणिसंवादः — 1. बृहदारण्यकोपनिषद्
(ख) स्वाध्यायान्मा प्रमदः — 2. ऋग्वेदस्य दशममण्डले
(ग) कल्पः — 3. तैत्तिरीयोपनिषद्
(घ) आत्मनस्तु कामाय सर्वं प्रियं भवति — 4. हस्तः

UGC 25 D–2012

	क	ख	ग	घ
(A)	1	2	3	4
(B)	4	2	3	1
(C)	2	3	4	1
(D)	3	2	1	4

स्रोत–(क) वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–57
(ख) ईशादि नौ उपनिषद् - गीताप्रेस, पेज–362
(ग) पाणिनीयशिक्षा (श्लोक 41-42) - शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पेज–143
(घ) बृहदारण्यकोपनिषद् (शाङ्करभाष्यसहित 2/4) -गीताप्रेस, पेज–546

9. 'आर्य' शब्द इंगित करता है?

IAS–1999, UP PCS–2007

(A) नृजातिसमूह को (B) यायावरीजन को
(C) भाषासमूह को (D) श्रेष्ठवंश को

स्रोत–संस्कृत-हिन्दी कोष - वामनशिवराम आप्टे, पेज–159

10. वैदिककाल में किस जानवर को 'अघन्या' माना जाता है? UP PCS–2008

(A) बैल (B) भेड़
(C) गाय (D) हाथी

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–275

11. वैदिक दर्शन में विकास की अवधारणा क्या थी?

UGC 06 D–2006

(A) बहुदेववाद (B) अधिदेववाद
(C) एकेश्वरवाद तथा एकात्मवाद (D) उपर्युक्त सभी

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज–38

12. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए–

(क) ऋग्वेद — 1. संगीतमय स्तोत्र
(ख) यजुर्वेद — 2. स्तोत्र एवं कर्मकाण्ड
(ग) सामवेद — 3. तन्त्र मन्त्र एवं वशीकरण
(घ) अथर्ववेद — 4. स्तोत्र एवं प्रार्थनाएं

UP PCS–2001

	क	ख	ग	घ
(A)	4	2	1	3
(B)	4	1	2	3
(C)	3	2	4	1
(D)	2	3	1	4

स्रोत–(ख) वैदिक साहित्य का इतिहास-गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज–75
(ग) वैदिक साहित्य का इतिहास-गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज–100
(घ) वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–104

13. वैदिक अध्ययन के सन्दर्भ में 'सन्तान' का अर्थ है–

BHU MET–2014

(A) पद (B) अर्थ
(C) संहिता (D) व्याकरण

स्रोत–ईशादि नौ उपनिषद् - गीताप्रेस, पेज–334

14. 'महीत्वा' का अर्थ है– BHU MET–2014

(A) महिमा से (B) पृथ्वी से
(C) पूजा से (D) ज्ञान से

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह (10.121.4) - हरिदत्तशास्त्री, पेज-409

15. 'गव्यम्' का अर्थ है? BHU MET–2014

(A) भरतवंशीय (B) पवमान
(C) गो दुग्ध आदि (D) जाने वाला

स्रोत–संस्कृतहिन्दीकोश - वामनशिवराम आप्टे, पेज-340

16. प्राचीनकाले वेदाध्ययनं कुत्र भवति स्म?

BHU B.ed–2012

(A) मन्दिरेषु (B) गृहेषु
(C) गुरुकुलेषु (D) ग्रामेषु

स्रोत–भारतीय संस्कृति - दीपक कुमार, पेज–192

17. चरणव्यूहग्रन्थस्य विषयः कः– BHU AET–2011

(A) वेदशाखापर्यालोचनम् (B) ज्ञानकाण्डः
(C) उपासनाकाण्डः (D) कर्मकाण्डः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–34

8. (C) 9. (D) 10. (C) 11. (A) 12. (A) 13. (C) 14. (A) 15. (C) 16. (C) 17. (A)

18. ऋग्वेदभाष्यभूमिकायां विद्यास्थानानि कति प्रतिपादितानि– BHU AET–2011

(A) 14 (B) 18
(C) 10 (D) 60

स्रोत–*ऋग्वेदभाष्यभूमिका - राम अवध पाण्डेय, पेज–120*

19. सूर्यः पूर्वाह्णे कैरेति? BHU AET–2012

(A) ऋग्भिः (B) यजुर्भिः
(C) ब्रह्णैः (D) गोपैः

20. सूर्यास्तमये केन सह एति? BHU AET–2012

(A) गवा (B) अथर्ववेदेन
(C) सामवेदेन (D) ब्रह्मचारिभिः

21. चातुर्मास्यं कदा प्रभृति प्रारभ्यते– BHU AET–2012

(A) फाल्गुनपूर्णिमातः (B) वैशाखपूर्णिमातः
(C) आषाढपूर्णिमातः (D) भाद्रपदपूर्णिमातः

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–314*

22. अग्न्याधाने ब्राह्मणस्य कः कालः– BHU AET–2012

(A) वसन्तः (B) ग्रीष्मः
(C) शरदः (D) हेमन्तः

स्रोत–*वैदिकशब्दमीमांसा - गीताञ्जलि पाण्डेय, पेज–51*

23. ब्राह्मणस्य अग्न्याधाने किं नक्षत्रम्– BHU AET–2012

(A) कृत्तिका (B) स्वाती
(C) हस्तः (D) भरणी

स्रोत–*संस्कृतवाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-2) - बलदेव उपाध्याय/ओमप्रकाश पाण्डेय, पेज-435*

24. राज्ञः कः अग्न्याधानकालः – BHU AET–2012

(A) वर्षाः (B) हेमन्तः
(C) ग्रीष्मः (D) वसन्तः

स्रोत–*वैदिकशब्दमीमांसा - गीताञ्जलि पाण्डेय, पेज–51*

25. वैश्यस्य कः अग्न्याधानकालः – BHU AET–2012

(A) ग्रीष्मः (B) वसन्तः
(C) शरदः (D) हेमन्तः

स्रोत–*वैदिकशब्दमीमांसा - गीताञ्जलि पाण्डेय, पेज–51*

26. बहुदेववादिनः के आसन्– RPSC-ग्रेड-I PGT–2011

(A) वैदिकार्याः (B) बौद्धभिक्षुकाः
(C) राक्षसाः (D) शिवोपासकाः

स्रोत–*वैदिकदर्शन - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–132*

27. सही उत्तर चुनिये– UGC 73 D–2014

(A) लोमशशिक्षा–अथर्ववेदस्य
(B) शिवसङ्कल्पमन्त्राः–जैमिनीयसामवेदे
(C) शौनकशिक्षा–राणायनीयशाखायाः
(D) व्यासशिक्षा–कृष्णयजुषः

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–86

28. श्रीरुद्राध्याय है– UGC 73 D–2014

(A) संहितायाम् (B) ब्राह्मणे
(C) उपनिषदि (D) आरण्यके

स्रोत–*संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज–49*

29. कस्य किं मतम्– UGC 25 J–2013

(क) अनर्थकाः हि मन्त्राः — **1. नैरुक्तसमयः**
(ख) सर्वाणि नामानि आख्यातजानि — **2. वार्ष्यायणिः**
(ग) षड्भावविकाराः — **3. कौत्सः**
(घ) सर्वाणि नामानि आख्यातजानि न — **4. गार्ग्यः**

	क	ख	ग	घ
(A)	3	1	2	4
(B)	1	2	4	3
(C)	3	2	1	4
(D)	4	1	2	3

स्रोत–*निरुक्तम् - उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज–25, 19, 4, 19*

30. ''लोपागमवर्णविकारज्ञो हि सम्यग् वेदान्–परिपालयिष्यतीत्यत्र'' लोपागमस्य उदाहरणम् अस्ति– UGC 25 J–2013

(A) देवा अदुह् (B) उद्ग्राभम्
(C) देवा अदुहत (D) देवै दुह्यते

स्रोत–*व्याकरणमहाभाष्यम् - जयशङ्करलाल त्रिपाठी, पेज–22*

18. (A)	19. (A)	20. (C)	21. (A)	22. (A)	23. (A)	24. (C)	25. (C)	26. (A)	27. (D)
28. (A)	29. (A)	30. (A)							

31. अधोऽङ्कितानां समीचीनमुत्तरं चिनुत–

(क) कालगणनायोपयुज्यते 1. सामवेदीयम्
(ख) ईशावास्यमिदं सर्वम् 2. ऋग्वेदः
(ग) षड्विंशब्राह्मणम् 3. ज्योतिषम्
(घ) दशतयी 4. यत्किञ्च जगत्यां जगत्

UGC 25 S–2013

	क	ख	ग	घ
(A)	1	3	4	2
(B)	2	4	3	1
(C)	3	4	1	2
(D)	4	3	1	1

स्रोत*–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–208, 10, 174

32. आह्वनीयस्य स्वरूपम्– UGC 25 S–2013

(A) वृत्तम् (B) चतुरस्रम्
(C) वर्तुलम् (D) षट्कोणम्

स्रोत*–*वैदिकशब्दमीमांसा - गीताञ्जलि पाण्डेय, पेज–46

33. आनन्दमयस्य शिरः किमुच्यते– UGC 25 S–2013

(A) आनन्दः (B) मोदः
(C) प्रियम् (D) प्रमोदः

स्रोत*–*ईशादि नौ उपनिषद् - गीताप्रेस, पेज–384

34. ऋग्वैदिक आर्य किसकी पूजा किया करते थे– MP PSC–1999

(A) प्रकृति की उपासना (B) गाय की पूजा
(C) यक्षपूजा (D) वृक्षपूजा

स्रोत*–*वैदिक माइथोलॉजी - रामकुमार राय, पेज–02-03

35. अधोङ्कितानां समीचीनम् उत्तरं चिनुत–

(क) प्रश्नोपनिषद् 1. निरुक्तम्
(ख) पञ्चविंशब्राह्मणम् 2. अथर्ववेदः
(ग) अथेदं भस्मान्तं शरीरम् 3. सामवेदः
(घ) व्याप्तिमत्त्वात् शब्दस्य 4. ईशोपनिषद्

UGC 25 D–2013

	क	ख	ग	घ
(A)	4	1	2	3
(B)	1	3	4	2
(C)	2	3	4	1
(D)	3	4	1	2

स्रोत*–*(क) वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–10
(ग) ईशावास्योपनिषद् (मन्त्र-17) - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–74
(घ) निरुक्त - छज्जूराम शास्त्री, पेज–7

36. समुचितं सम्बन्धं प्रस्थापयत– UGC 25 D–2013

(क) सत्त्वप्रधानानि 1. निघण्टवः
(ख) निगमा इमे भवन्ति 2. तद्यथा-पाचकः पंक्तिः
(ग) संविज्ञातानि तानि 3. नामानि
(घ) तद्यत्र उभे 4. भावप्रधाने भवतः

	क	ख	ग	घ
(A)	1	2	4	3
(B)	2	1	3	4
(C)	3	1	2	4
(D)	4	3	2	1

37. उत्तरवैदिक काल में विभाजन का आधार क्या था– MP PSC–1992

(A) वर्णव्यवस्था (B) श्रमव्यवस्था
(C) आश्रमव्यवस्था (D) उक्त सभी

स्रोत*–*भारत की प्राचीन संस्कृतियाँ एवं सभ्यतायें, पेज–178

38. वैदिक युग में 'मान' का अर्थ है– MP PSC–1994

(A) धन (B) बुद्धि
(C) प्रतिष्ठा (D) वजन

स्रोत*–*वैदिक साहित्य और संस्कृति-बलदेव उपाध्याय, पेज–464

39. वैदिक समाज में किसका अस्तित्व था– MP PSC–1995

(A) पैतृक-परिवार (B) प्रकृति-पूजा
(C) वर्ण-प्रथा (D) ये सभी

स्रोत*–*वैदिक साहित्य और संस्कृति-बलदेव उपाध्याय, पेज–422

40. संस्कारों का वर्णन निम्नलिखित में से किस मूल-पाठ में है– MP PSC–1997

(A) श्रौतसूत्र (B) मनुस्मृति
(C) गृह्यसूत्र (D) धर्मसूत्र

वैदिक साहित्य का इतिहास-गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज–275

41. वैदिक काल की सबसे सामान्य शासनव्यवस्था क्या थी– MP PSC–1999

(A) गणतन्त्र (B) राजतन्त्र
(C) कुलीनतन्त्र (D) प्रजातन्त्र

31. (C) 32. (B) 33. (C) 34. (A) 35. (C) 36. (C) 37. (A) 38. (D) 39. (D) 40. (C) 41. (B)

42. 'इदमहमनृतात्सत्यमुपैमि' इस मन्त्र का विनियोग है–
UGC 73 D–2005

(A) शाखाहरणे (B) व्रतग्रहणे
(C) व्रतविसर्जने (D) समिष्टयजुर्होमे

स्रोत– *शुक्लयजुर्वेद (1.5) - रामकृष्ण शास्त्री, पेज–08*

43. सौत्रामणि स्तोत्र है– UGC 73 J–2010

(A) वाजसनेयसंहितायाम् (B) अथर्ववेदे
(C) कृष्णयजुर्वेदे (D) सामवेदे

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–67*

44. 'शुनःशेप-आख्याने' कस्य उल्लेखो नास्ति–
UGC 25 J–2013

(A) वरुणस्य (B) वसिष्ठस्य
(C) बादरायणस्य (D) अजीगर्तस्य

स्रोत–*संस्कृत गद्यालोक प्रकाश - करुणा अग्रवाल, पेज–39*

45. केन-रहितो मन्त्रः वाग्वज्रो भवति– BHU AET–2010

(A) स्वरेण (B) द्रव्येण
(C) पात्रेण (D) दर्भेण

पाणिनीयशिक्षा (श्लोक 52)-शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पेज–165

46. अश्वस्य मेध्यस्य पर्वाणि कानि उच्यन्ते–
UGC 25 D–2012

(A) ऋतवः
(B) अहोरात्राणि
(C) नक्षत्राणि
(D) मासाश्चार्धमासाश्च

स्रोत–*बृहदारण्यकोपनिषद् (शांकरभाष्य सहित)-गीताप्रेस, पेज–38*

47. वैदिकसाहित्यस्य एषु ग्रन्थेषु यज्ञवेदिविधानं वर्णितम्–
AWES TGT–2011

(A) स्मृतिग्रन्थेषु (B) दर्शनेषु
(C) शुल्बसूत्रेषु (D) निरुक्तेषु

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–239*

48. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत–

(क) शिवसङ्कल्पसूक्तं वर्तते 1. गोपथब्राह्मणम्
(ख) ऋग्वेदे उषस्सूक्तं वर्तते 2. अथर्ववेदे
(ग) कालसूक्तं उपलभ्यते 3. यजुर्वेदे
(घ) अथर्वेदीयम् 4. तृतीयमण्डले

UGC 25 S–2013

	क	ख	ग	घ
(A)	2	3	4	1
(B)	4	3	2	1
(C)	3	4	2	1
(D)	1	4	3	2

स्रोत–*(A) वैदिकसूक्तसंग्रह - विजयशंकर पाण्डेय, भू.–15*
(B) ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री, पेज–233
(D) वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–151

49. विधेयाः के– UGC 25 S–2013

(A) मन्त्राः (B) ब्राह्मणाः
(C) अर्थवादाः (D) प्रश्लिष्टाः

स्रोत–*अर्थसंग्रह - राजेश्वरशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज भू.–16*

50. आवसथ्य अग्नि का आधान किया जाता है–
UGC 73 D–2013

(A) अक्षरारम्भसमये (B) वधूप्रवेशसमये
(C) वाग्दानकाले (D) दायाद्यकाले

स्रोत–*श्रौतयज्ञ-परिचय - वेणीरामशर्मा गौड, पेज–02*

51. ''सुवर्णस्तेयकृद्विप्रः'' यहाँ 'विप्र' शब्द का अर्थ है–
UGC 73 S–2013

(A) ब्राह्मणः (B) क्षत्रियः
(C) नरः (D) वैश्यः

52. निम्नाङ्कित में समीचीन तालिका चुनिये–

(क) ईशावास्योपनिषद् 1. अथर्ववेद
(ख) शतपथब्राह्मण 2. ऋग्वेद
(ग) ऐतरेयब्राह्मणम् 3. माध्यन्दिनसंहिता
(घ) पैप्पलादसंहिता 4. काण्वसंहिता

UGC 73 S–2013

	क	ख	ग	घ
(A)	3	2	4	1
(B)	4	2	3	1
(C)	4	3	2	1
(D)	3	4	2	1

स्रोत–*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–65, 9, 10*

42. (B) 43. (A) 44. (C) 45. (A) 46. (D) 47. (C) 48. (C) 49. (C) 50. (D) 51. (*) 52. (C)

53. समीचीन तालिका चयन करें– UGC 73 S–2013

(क) गोपथब्राह्मणम् (I) शुक्लयजुर्वेद

(ख) पञ्चविंशब्राह्मणम् (II) अथर्ववेद

(ग) काण्वसंहिता (III) ऋग्वेद

(घ) ऐतरेयोपनिषद् (IV) सामवेद

	क	ख	ग	घ
(A)	II	III	I	IV
(B)	II	I	IV	III
(C)	II	IV	III	I
(D)	II	IV	I	III

वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–151, 140, 65, 168

54. माध्यन्दिनसंहिता के ग्यारहवें अध्याय में निरूपित है– UGC 73 J–2014

(A) सोमः (B) चातुर्मास्यानि

(C) हविर्यागाः (D) अग्निचयनम्

***स्रोत**–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–67*

55. अधोङ्कितानां समीचीनामुत्तरं चिनुत–

(क) नचिकेतोपाख्यानम् 1. पुत्रोऽहं पृथिव्याः

(ख) सत्यं वद धर्मं चर 2. कठोपनिषद्

(ग) माता भूमिः 3. तैत्तिरीयोपनिषद्

(घ) शुल्बसूत्रम् 4. कल्पान्तर्गतम्

UGC 25 J–2014

	क	ख	ग	घ
(A)	1	3	4	2
(B)	4	2	3	1
(C)	3	1	4	2
(D)	2	3	1	4

***स्रोत**–(अ) कठोपनिषद् (प्रथम अध्याय वल्ली-3 श्लोक-16)*

(ब) तैत्तिरीयोपनिषद् (प्रथमवल्ली, अनुवाक-11)

(स) अथर्ववेद (पृथिवीसूक्त 12.12)

(द) वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–214

56. विज्ञानमयस्य शिरः किमुच्यते– UGC 25 J–2014

(A) श्रद्धा (B) सत्यम्

(C) बृहतम् (D) महः

***स्रोत**–ईशादि नौ उपनिषद् - गीताप्रेस, पेज–381*

57. उपवेदाः सन्ति? UGC 73 D–2004, BHU AET–2010

(A) पञ्च (B) चत्वारः

(C) त्रयः (D) सप्त

***स्रोत**–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–10*

58. 'यास्केन' कतिविधः व्याख्याविधिः स्वीकृतः– UGC 25 D–2012

(A) त्रिविधः (B) पञ्चविधः

(C) चतुर्विधः (D) अष्टविधः

***स्रोत**–निरुक्त - उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज–02*

59. यज्ञदृष्ट्या कति ऋत्विजः भवन्ति? BHU AET–2010

(A) 01 (B) 02

(C) 04 (D) 06

***स्रोत**–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–45*

60. प्रश्नानां विभागस्य किं नाम अस्ति? BHU AET–2010

(A) संवाकः (B) अनुवाकः

(C) अभ्यावाकः (D) काठकः

***स्रोत**–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–45*

61. कात्यायनश्रौतसूत्रे कति अध्यायाः सन्ति? BHU AET–2010

(A) विंशतिः (B) एकविंशतिः

(C) षड्विंशतिः (D) त्रिंशत्

***स्रोत**–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–45*

62. कतिविधाः मन्त्राः– UK SLET–2012, BHU AET–2010

(A) त्रिधा (B) चतुर्धा

(C) पञ्चधा (D) द्विधा

***स्रोत**–निरुक्त - छज्जूराम शास्त्री, पेज–326*

53. (D) 54. (D) 55. (D) 56. (A) 57. (B) 58. (A) 59. (C) 60. (B) 61. (C) 62. (A)

63. बौधायनगृह्यसूत्रे तृतीयप्रश्ने कत्यध्यायाः सन्ति– **BHU AET–2012**

(A) अष्ट (B) पञ्च
(C) त्रयोदश (D) अष्टादश

64. बृहद्देवताग्रन्थे कति अध्यायाः सन्ति– **BHU AET–2011**

(A) 8 (B) 20
(C) 12 (D) 16

स्रोत–*बृहद्देवता - रामकुमार राय, भू. पेज–15*

65. आचार्यसायणस्य का शाखा आसीत्– **BHU AET–2011**

(A) मैत्रायणी (B) तैत्तिरीया
(C) काण्वी (D) काठकी

स्रोत–*संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास (प्रथम-खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/ब्रजबिहारी चौबे, पेज–640*

66. निम्नलिखित में से सही सुमेलित नही है? **UGC 06 J–2015**

(A) पञ्चसिद्धान्तिका – वराहमिहिर
(B) ब्रह्मसूत्र – आर्यभट्ट
(C) अष्टांगसंग्रह – वाग्भट्ट
(D) निघण्टु – धनवन्तरी

स्रोत–*(i) सर्वदर्शनसंग्रह (माधवाचार्य) उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज–812*
(ii) संस्कृत शास्त्रों का इतिहास-बलदेव उपाध्याय, पेज–70, 25, 52

67. सुमेलित कीजिये– **UGC 06 D–2012**

(क) ऋग्वेद **1. काण्व**
(ख) यजुर्वेद **2. राणायनीय**
(ग) सामवेद **3. पिप्पलाद**
(घ) अथर्ववेद **4. शाकल**

	क	ख	ग	घ
(A)	4	3	2	1
(B)	2	1	3	4
(C)	4	1	2	3
(D)	1	2	3	4

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास-गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज–56, 78, 103, 121*

68. सुमेलित कीजिये– **UGC 06 J–2012**

(क) ऋग्वेद **1. वाजसनेयी**
(ख) यजुर्वेद **2. शाकल**
(ग) सामवेद **3. शौनक**
(घ) अथर्ववेद **4. कौथुम**

	क	ख	ग	घ
(A)	1	4	3	2
(B)	2	1	4	3
(C)	1	3	2	4
(D)	3	4	1	2

स्रोत–*वैदिक साहित्य का इतिहास-गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज–56, 78, 103, 121*

69. राजा सुदास जिसके विषय में ऋग्वेद में वर्णन है कि उसने दस राजाओं को पराजित किया, किस जन से सम्बद्ध था? **UGC 06 J–2012**

(A) अनु (B) द्यु
(C) तृत्सु (D) यदु

स्रोत–*वैदिक साहित्य और संस्कृति-बलदेव उपाध्याय, पेज–412*

70. सुमेलित कीजिये– **UGC 06 J–2006**

सूची-I **सूची-II**
(क) गुणाढ्य **1. लीलावती**
(ख) वाग्भट **2. प्रबन्ध-चिन्तामणि**
(ग) भास्कराचार्य **3. बृहत्कथा**
(घ) मेरुतुंग **4. अष्टांगहृदय**

	क	ख	ग	घ
(A)	1	2	3	4
(B)	4	1	2	3
(C)	2	3	1	4
(D)	3	4	1	2

स्रोत–*(A) संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज–422*
(C) भारतीय शास्त्र एवं शास्त्रकार - गिरिजाशंकर शास्त्री, पेज–176
(D) संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज–411

63. (C) 64. (A) 65. (B) 66. (B) 67. (C) 68. (B) 69. (C) 70. (D)

शीघ्र प्रकाश्य

प्रतियोगितागङ्गा

(भाग-2)

भारतीयदर्शन

संस्कृतसाहित्य

भाग-2

संस्कृत-व्याकरण

भाषा

शीघ्र प्रकाश्य पुस्तकें

1.

असिस्टेण्ट प्रोफेसर परीक्षा

(संस्कृत) हलप्रश्नपत्रम्

2.

व्याख्यास्मि

(प्रवक्ता परीक्षा व्याख्यात्मक हल)

3.

प्राख्यातास्मि

(UGC-NET व्याख्यात्मक हल)

1. संज्ञा-प्रकरण

1. पाणिनि के अनुसार 'आ, ऐ, औ' की संज्ञा होती है– UGC 25 J–1994 D–1999

(A) गुण　(B) टि

(C) गति　(D) वृद्धि

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.1) - ईश्वरचन्द्र, पेज–06*

2. 'उपधा' का लक्षण पाणिनि के अनुसार है– UGC 25 J–1994

(A) क्तक्तवतू　(B) अलोऽन्त्यात्पूर्व

(C) यूस्त्र्याख्यौ　(D) सुप्तिङन्तम्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.64) - ईश्वरचन्द्र, पेज–48*

3. (i) पाणिनि के अनुसार 'निष्ठा' है– UGC 25 J–1995

(ii) निष्ठा संज्ञा विधायक सूत्र है– D–1999

(A) अचोऽन्त्यादि　(B) क्तक्तवतू

(C) ईदूदेद्द्विवचनम्　(D) न वेति

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.25) - ईश्वरचन्द्र, पेज–19*

4. पाणिनि के अनुसार 'प्रातिपदिक' का लक्षण है– UGC 25 J–1995

(A) आद्यन्तौ टकितौ　(B) तुल्यास्यप्रयत्नम्

(C) न वेति　(D) अर्थवदधातुरप्रत्ययः

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.2.45) - ईश्वरचन्द्र, पेज–69*

5. 'घि' संज्ञा किसकी होती है– UGC 25 D–1997

(A) पति　(B) सखि

(C) नरपति　(D) वधू

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.8) - ईश्वरचन्द्र, पेज–112*

6. इनमें 'प्रातिपदिक' है– UGC 25 D–1997

(A) गच्छति　(B) जस्

(C) वनम्　(D) अहन्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.2.45) - ईश्वरचन्द्र, पेज–69*

7. पाणिनि के अनुसार पद का लक्षण है– UGC 25 D–1996

(A) अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्

(B) वा पदान्तस्य

(C) पदान्ताद्वा

(D) सुप्तिङन्तं पदम्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.14) - ईश्वरचन्द्र, पेज–114*

8. (i) इनमें प्रगृह्य स्वर है– UGC 25 J–1998

(ii) प्रगृह्यं किम्? CVVET–2015

(A) पचेते　(B) सेवते

(C) विमतिः　(D) नदी

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.11) - ईश्वरचन्द्र, पेज–13-14*

9. (i) 'टि संज्ञा' का लक्षण है– UGC 25 J–1998

(ii) 'टि संज्ञा' किसकी होती है? 2000, D–1999

(iii) 'टि संज्ञा' विधायक सूत्र है।

(A) परः सन्निकर्षः　(B) एकाल्

(C) अचोऽन्त्यादि　(D) अदेङ्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.63) - ईश्वरचन्द्र, पेज–47*

10. 'संहिता' का लक्षण है– UGC 25 D–1998, 2002

(A) अदेङ्　(B) एकाल्

(C) हलोऽनन्तराः　(D) परः सन्निकर्षः

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.108) - ईश्वरचन्द्र, पेज–147*

11. 'सर्वनामस्थान' संज्ञा विधायक सूत्र है– UGC 25 D–1998

(A) सुप्तिङन्तम्　(B) न वेति

(C) शि सर्वनामस्थानम्　(D) तुल्यास्यप्रयत्नम्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.41) - ईश्वरचन्द्र, पेज–24*

1. (D)　2. (B)　3. (B)　4. (D)　5. (C)　6. (D)　7. (D)　8. (A)　9. (C)　10. (D)　11. (C)

12. 'नदी संज्ञा' किसकी होती है– UGC 25 J–1999

(A) सुधी (B) ग्रामणी
(C) वधू (D) मुनि

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.3) - ईश्वरचन्द्र, पेज–109*

13. विभाषा-संज्ञा का अर्थ है– UGC 25 J–1999

(A) निषेध (B) विकल्प
(C) निषेध-विकल्प (D) प्राप्ति

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.43) - ईश्वरचन्द्र, पेज–25*

14. 'अपादान' संज्ञा विधायक सूत्र है– UGC 25 D–1999

(A) स्वतन्त्रः (B) साधकतमम्
(C) ध्रुवमपाये (D) कर्मणा यमभिप्रैति

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.24) - ईश्वरचन्द्र, पेज–119*

15. 'अ, ए, ओ' की संज्ञा क्या है– UGC 25 J–2001

(A) वृद्धि (B) गुण
(C) संहिता (D) प्रातिपदिक

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.2) - ईश्वरचन्द्र, पेज–6*

16. निम्न में से 'हरी' शब्द है– UGC 25 J–2001

(A) प्रगृह्य (B) टि
(C) सवर्ण (D) पद

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.11) - ईश्वरचन्द्र, पेज–13-14*

17. (i) इदूदेद्द्विवचन है– G GIC–2015, UGC 25 D–2001
(ii) ईदूदेद्द्विवचनं भवति– 2006, 2008, 2009

(A) प्रगृह्य (B) एकाल्
(C) टि (D) नदी

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.11) - ईश्वरचन्द्र, पेज–13*

18. (i) कोऽपृक्तः – UGC 25 D–2001
(ii) अपृक्तसंज्ञा होती है–

(A) परः सन्निकर्षः (B) एकाल्
(C) अचोऽन्त्यादि (D) अदेङ्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.2.41) - ईश्वरचन्द्र, पेज–68*

19. (i) यू स्त्र्याख्यौ................. है– UGC 25 D–2001
(ii) 'यू स्त्र्याख्यौ' भवति J–2008, 2009

(A) एकाल् (B) टि
(C) प्रगृह्य (D) नदी

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.3) - ईश्वरचन्द्र, पेज–109*

20. (i) निषेधविकल्पयोः का संज्ञा– UGC 25 J–2002
(ii) न वेति.............। 2005, 2004, 2009
(iii) 'न' और 'वा' की संज्ञा होती है–

(A) निष्ठा (B) सर्वनाम
(C) निषेध (D) विभाषा

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.43) - ईश्वरचन्द्र, पेज–25*

21. ''निष्ठा'' विधायक सूत्र है– UGC 25 J–2002, 2003

(A) क्तक्तवतू निष्ठा (B) सुप्तिङन्तं पदम्
(C) अपृक्त एकाल्-प्रत्ययः (D) सुडनपुंसकस्य

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.25) - ईश्वरचन्द्र, पेज–19*

22. (i) क्तक्तवतू .... इति सूत्रेण का संज्ञा विधीयते–
(ii) क्तक्तवतू-प्रत्यययोः का संज्ञा अस्ति–
(iii) 'क्तक्तवतू' इत्यनयोः का संज्ञा भवति?
UGC-25 D–2005, 2009, J–2006, 2010, S–2013

(A) टि (B) घि
(C) नदी (D) निष्ठा

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.25) - ईश्वरचन्द्र, पेज–19*

23. (i) वृद्धिसंज्ञा केन सूत्रेण विधीयते–UGC 25 J–2002,
(ii) वृद्धिसंज्ञाविधायकं सूत्रम् 2005, 2012,
(iii) 'वृद्धिसंज्ञा' का सूत्र है– D–2003, 2010
UGC 73 J–2012, 2014, UK SLET–2015, S–2013
JNU MET–2014, CVVET–2015

(A) आद् गुणः (B) वृद्धिरेचि
(C) वृद्धिरादैच् (D) अचोऽन्त्यादि

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.1) - ईश्वरचन्द्र, पेज–5*

12. (C) 13. (C) 14. (C) 15. (B) 16. (A) 17. (A) 18. (B) 19. (D) 20. (D) 21. (A) 22. (D) 23. (C)

24. 'उपधासंज्ञा' होती है– UGC 25 J–2002

(A) अन्तिम अल् से पूर्व वर्ण की

(B) अन्तिम अल् की

(C) अच् से पूर्व की

(D) अन्तिम हल् वर्ण की

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.64) - ईश्वरचन्द्र, पेज–48*

25. (i) अन्त्यादलः पूर्वो वर्णः – UGC 25 D–2002,
(ii) 'अलोऽन्त्यात्पूर्वः' में संज्ञा है– 2010, J–2008

(A) उपधा (B) नदी

(C) प्रगृह्य (D) अपृक्त

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.64) - ईश्वरचन्द्र, पेज–48*

26. (i) परः सन्निकर्षः .... अस्ति–UGC 25 D–2004, 2009,
(ii) परः सन्निकर्षः कः अस्ति–J–2010, UP GIC–2015

(A) संहिता (B) वृद्धिः

(C) नदी (D) घि

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.108) - ईश्वरचन्द्र, पेज–147*

27. अदेङ्.........। UGC 25 D–2004

(A) गुणः (B) प्रातिपदिकम्

(C) अपृक्तः (D) पदम्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.2) - ईश्वरचन्द्र, पेज–6*

28. तुल्यास्यप्रयत्नं ....। UGC 25 D–2004, 2006, 2007

(A) घु (B) सवर्णम्

(C) निष्ठा (D) प्रगृह्यम्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.9) - ईश्वरचन्द्र, पेज–11*

29. एकाल्-प्रत्ययस्य का संज्ञा– UGC 25 J–2005,
2007, 2009 D–2006, 2009 S–2013

(A) नदी (B) समाहारः

(C) एकः वर्णः (D) अपृक्तम्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.2.41) - ईश्वरचन्द्र, पेज–68*

30. समीचीनां तालिकां चिनुत– UGC 25 J–2005

(अ) प्रगृह्यम् **(1) यू स्त्र्याख्यौ**
(ब) टि **(2) अदेङ्**
(स) गुणः **(3) ईदूदेद्द्विवचनम्**
(द) नदी **(4) अचोऽन्त्यादि**

	अ	ब	स	द
(A)	3	4	2	1
(B)	1	2	4	3
(C)	4	3	1	2
(D)	3	1	2	4

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.3, 1.1.63, 1.1.2, 1.1.11) - ईश्वरचन्द्र*

31. स्वादिपञ्चप्रत्ययानां का संज्ञा– UGC 25 D–2005

(A) प्रत्याहारः (B) अनुनासिकः

(C) सर्वनामस्थानम् (D) प्रातिपदिकम्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.42) - ईश्वरचन्द्र, पेज–25*

32. समीचीनां तालिकां चिनुत– UGC 25 D–2005

(अ) वृद्धिः **(i) न वेति**
(ब) उपधा **(ii) एकाल्-प्रत्ययः**
(स) अपृक्तम् **(iii) आदैच्**
(द) विभाषा **(iv) अलोऽन्त्यात्पूर्वः**

	अ	ब	स	द
(A)	(iii)	(iv)	(ii)	(i)
(B)	(i)	(ii)	(iv)	(iii)
(C)	(iii)	(i)	(iv)	(ii)
(D)	(ii)	(i)	(iii)	(iv)

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.43, 1.1.64 1.2.41, 1.1.1) - ईश्वरचन्द्र*

33. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत–

(अ) संहिता **(i) अचोऽन्त्यादि**
(ब) गुणः **(ii) अलोऽन्त्यात् पूर्व**
(स) उपधा **(iii) परः सन्निकर्षः**
(द) टि **(iv) अदेङ्**

UGC 25 J–2006

	अ	ब	स	द
(A)	(iii)	(iv)	(ii)	(i)
(B)	(i)	(ii)	(iv)	(iii)
(C)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(D)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.108, 1.1.63 1.1.2, 1.1.64) - ईश्वरचन्द्र*

24. (A) **25.** (A) **26.** (A) **27.** (A) **28.** (B) **29.** (D) **30.** (A) **31.** (C) **32.** (A) **33.** (A)

34. अर्थवदधातुरप्रत्ययः– UGC 25 J–2006, D–2007

(A) प्रगृह्यम् (B) सुप्

(C) तद्धितः (D) प्रातिपदिकम्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.2.45) - ईश्वरचन्द्र, पेज–69*

35. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत–

(अ) वृद्धिः (i) यू स्त्र्याख्यौ

(ब) नदी (ii) आदैच्

(स) टि (iii) अलोऽन्त्यात् पूर्व

(द) उपधा (iv) अचोऽन्त्यादि

UGC 25 D–2006

	अ	ब	स	द
(A)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(B)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)
(C)	(ii)	(i)	(iv)	(iii)
(D)	(ii)	(i)	(iii)	(iv)

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.1, 1.4.3, 1.1.63, 1.1.64) - ईश्वरचन्द्र*

36. 'नदीसंज्ञाविधायकं' सूत्रं किम्? UGC 25 J–2007

(A) यू स्त्र्याख्यौ (B) अलोऽन्त्यात्पूर्वः

(C) ईदूदेद्द्विवचनम् (D) अपृक्तः

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.3) - ईश्वरचन्द्र, पेज–109*

37. समीचीनां तालिकां चिनुत– UGC 25 J–2007

(अ) संहिता (i) अदेङ्

(ब) गुणः (ii) अचोऽन्त्यादि

(स) पदम् (iii) परः सन्निकर्षः

(द) टि (iv) सुप्तिङन्तम्

	अ	ब	स	द
(A)	(i)	(ii)	(iv)	(iii)
(B)	(iv)	(ii)	(iii)	(i)
(C)	(ii)	(iii)	(i)	(iv)
(D)	(iii)	(i)	(iv)	(ii)

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.14, 1.1.2, 1.4.108, 1.1.63)-ईश्वरचन्द्र*

38. 'अमी अश्वाः' इत्यत्र प्रगृह्यसंज्ञाविधायकं सूत्रम्– UGC 25 J–2007

(A) ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम्

(B) अदसो मात्

(C) निपात एकाजनाङ्

(D) प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.12) - ईश्वरचन्द्र, पेज–14*

39. (i) व्याकरणशास्त्रानुसारं 'पदसंज्ञकं' भवति–

(ii) 'पद' संज्ञा है– UGC 25 D–2007, 2009,

(iii) 'पदस्य' किं लक्षणम्– J–2014, G GIC–2015,

(iv) 'पदम्' अस्ति– BHU MET–2008

(A) सन्धियुक्तम् (B) योग्यताकांक्षासत्तियुक्तम्

(C) समासयुक्तम् (D) सुप्तिङन्तम्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.14) - ईश्वरचन्द्र, पेज–114*

40. (i) 'मुनि' शब्द की संज्ञा है– UGC 25 D–2007,

(ii) 'मुनि' इति पदस्य का संज्ञा– J–2004

(A) टि (B) घि

(C) गति (D) नदी

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.7) - ईश्वरचन्द्र, पेज–111*

41. समीचीनां तालिकां चिनुत– UGC 25 D–2007

(अ) नदी (i) गतिश्च

(ब) उपधा (ii) ईदूदेद्द्विवचनम्

(स) गतिः (iii) यू स्त्र्याख्यौ

(द) प्रगृह्यम् (iv) अलोऽन्त्यात्पूर्वः

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	(iii)	(ii)	(i)	(iv)
(B)	(iii)	(iv)	(i)	(ii)
(C)	(iv)	(ii)	(iii)	(i)
(D)	(i)	(iv)	(ii)	(iii)

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.3, 1.1.64, 1.4.59, 1.1.11) - ईश्वरचन्द्र*

34. (D) 35. (C) 36. (A) 37. (D) 38. (B) 39. (D) 40. (B) 41. (B)

42. सर्वनामस्थानसंज्ञाविधायकं सूत्रम्–

UGC 25 J–2008, 2015, JNU-MET–2015

JNU M-Phil/Ph.D–2015

(A) स्वादिष्वसर्वनामस्थाने (B) सुडनपुंसकस्य

(C) सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ (D) सर्वादीनि सर्वनामानि

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.42) - ईश्वरचन्द्र, पेज–25*

43. प्रत्याहार विधायक सूत्र है– H TET–2014, 2015

(A) आदिरन्त्येन सहेता (B) तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम्

(C) कादयो मावसानाः (D) हलोऽनन्तराः संयोगः

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.70) - ईश्वरचन्द्र, पेज–52*

44. किं सूत्रम् 'इत्' - संज्ञाविधायकं नास्ति?

JNU M.Phil/Ph.D–2015

(A) उपदेशेऽजनुनासिक इत् (B) आदिर्ञिटुडवः

(C) आदिरन्त्येन सहेता (D) षः प्रत्ययस्य

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.70) - ईश्वरचन्द्र, पेज–52*

45. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत –

UGC 25 J–2008

(अ) निष्ठा (i) अपृक्तम्

(ब) आत् ऐच् (ii) क्तक्तवतू

(स) ईकारान्तं द्विवचनम् (iii) वृद्धिः

(द) एकाल् प्रत्ययः (iv) प्रगृह्यम्

	अ	ब	स	द
(A)	(iv)	(iii)	(i)	(ii)
(B)	(i)	(iv)	(iii)	(ii)
(C)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)
(D)	(iv)	(i)	(ii)	(iii)

अष्टाध्यायी (1.1.25, 1.1.1, 1.1.11, 1.2.41)-ईश्वरचन्द्र, पेज–19, 5, 14, 68

46. वर्णानामतिशयितः सन्निधिः .... संज्ञः स्यात्–

JNU MET–2014

(A) प्रातिपदिकम् (B) नदी

(C) संहिता (D) उपसर्जनम्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.108) - ईश्वरचन्द्र, पेज–147*

47. सखिभिन्नस्य 'इ'-वर्णान्तस्य .... संज्ञा–

UGC 25 D–2008

(A) नदी (B) निष्ठा

(C) कृत् (D) घि

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.7) - ईश्वरचन्द्र, पेज–111*

48. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत–

(अ) क्तक्तवतू (i) सवर्णम्

(ब) तुल्यास्यप्रयत्नम् (ii) गुणः

(स) अत् एङ् (iii) टि

(द) अचोऽन्त्यादि (iv) निष्ठा UGC 25 D–2008

	अ	ब	स	द
(A)	iv	iii	i	ii
(B)	iv	i	ii	iii
(C)	i	iv	iii	ii
(D)	iii	ii	iv	i

अष्टाध्यायी (1.1.25, 1.1.2, 1.1.09, 1.1.63)-ईश्वरचन्द्र, पेज–19, 6, 11, 47

49. 'अदेङ्' इत्यस्य का संज्ञा– UGC 25 J–2009

(A) भ (B) टि

(C) गुणः (D) घु

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.2) - ईश्वरचन्द्र, पेज–6*

50. समीचीनां तालिकां चिनुत– UGC 25 J–2009

(अ) प्रातिपदिकम् (i) आदैच्

(ब) वृद्धिः (ii) सुप्तिङन्तम्

(स) पदम् (iii) अचोऽन्त्यादि

(द) टि (iv) अर्थवदधातुरप्रत्ययः

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	ii	iii	i	iv
(B)	iii	i	iv	ii
(C)	iv	i	ii	iii
(D)	i	iv	iii	ii

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.2.45, 1.1.1, 1.4.14, 1.1.63) - ईश्वरचन्द्र, पेज–69, 05, 114, 47*

42. (B) **43.** (A) **44.** (C) **45.** (C) **46.** (C) **47.** (D) **48.** (B) **49.** (C) **50.** (C)

51. उपयुक्तां तालिकां चिनुत– UGC 25 D–2009

(अ) अपृक्तम् **(i) अदेङ्**
(ब) वृद्धिः **(ii) इग्यणः**
(स) गुणः **(iii) एकाल् प्रत्ययः**
(द) सम्प्रसारणम् **(iv) आदैच्**

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	(iii)	(iv)	(i)	(ii)
(B)	(ii)	(i)	(iii)	(iv)
(C)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)
(D)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.2.41, 1.1.1, 1.1.2, 1.1.44) - ईश्वरचन्द्र, पेज–68, 5, 6, 26*

52. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत – UGC 25 J–2010

(अ) सवर्णम् **(i) सुप्तिङन्तम्**
(ब) उदात्तः **(ii) यू स्त्र्याख्यौ**
(स) पदम् **(iii) तुल्यास्यप्रयत्नम्**
(द) नदी **(iv) उच्चैः.........**

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	(ii)	(i)	(iv)	(iii)
(B)	(ii)	(iii)	(i)	(iv)
(C)	(iv)	(ii)	(iii)	(i)
(D)	(iii)	(iv)	(i)	(ii)

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.9, 1.2.29, 1.4.14, 1.4.3) - ईश्वरचन्द्र, पेज–11, 66, 114, 109*

53. 'संयोग' – संज्ञा सूत्रमस्ति– UGC 25 D–2010, UP GDC–2014

(A) अनचि च (B) संयोगे गुरुः
(C) हलोऽनन्तराः संयोगः (D) अचोऽन्त्यादि टि

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.7) - ईश्वरचन्द्र, पेज–10*

54. अस्य प्रातिपदिकसंज्ञाभवितुमर्हति – UGC 25 J–2011

(A) कृष्ण + अम् + श्रित + सु
(B) भू + अ + ति
(C) हरि + ङि
(D) यज्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.2.46) - ईश्वरचन्द्र, पेज–70*

55. उपसर्गसंज्ञा विधायक 'सूत्र' है? H-TET–2014

(A) अनूपसर्गस्य (B) प्रादयः
(C) उपसर्गाः क्रियायोगे (D) भूवादयो धातवः

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.58) - ईश्वरचन्द्र, पेज–132-133*

56. 'प्रादयः' इति सूत्रेण प्रादीनां गतिसंज्ञा कदा भवति? JNU M.Phil/Ph.D–2004

(A) सुबन्तानां योगे (B) तद्धितान्तानां योगे
(C) अव्ययानां योगे (D) क्रियायाः योगे

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.58) - ईश्वरचन्द्र, पेज–132*

57. 'अग्निचित्' इत्यत्र उपधासंज्ञा अस्ति– UGC 25 J–2011

(A) 'इत्'-समुदायस्य (B) 'चित्'-समुदायस्य
(C) 'त'-वर्णस्य (D) 'इ'-वर्णस्य

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.64) - ईश्वरचन्द्र, पेज–48*

58. (i) 'घि-संज्ञा' केन सूत्रेण भवति– UGC 25 J–2012,
(ii) 'घि-संज्ञा' विधायक सूत्र है– UGC 73 S–2013

(A) यू स्त्र्याख्यौ (B) अचोऽन्त्यादि
(C) परः सन्निकर्षः (D) शेषो घ्यसखि

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.7) - ईश्वरचन्द्र, पेज–111*

59. पाणिनिमते 'मुनि' शब्दस्य का संज्ञा भवति– UGC 25 D–2012

(A) नदी (B) घि
(C) टि (D) अपृक्त

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.7) - ईश्वरचन्द, पेज–111*

60. (i) गुण के स्वरूप का निरूपण कौन सूत्र करता है–
(ii) 'गुणसंज्ञा' विधायक सूत्र है–UGC 25 D–2005,
(iii) 'गुणसंज्ञा' विधायकसूत्रं किम्– 2012,
BHU MET–2012, UGC 73 D–1999

(A) वृद्धिरेचि (B) अकः सवर्णे दीर्घः
(C) आद् गुणः (D) अदेङ्गुणः

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.2) - ईश्वरचन्द्र, पेज–6*

51. (A) **52.** (D) **53.** (C) **54.** (A) **55.** (C) **56.** (D) **57.** (D) **58.** (D) **59.** (B) **60.** (D)

61. अस्य प्रातिपदिकसंज्ञा नास्ति– UGC 25 J–2013

(A) भवति (B) पठितुम्
(C) पाणिपादम् (D) दाशरथिः

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.14, 1.2.45-46)-ईश्वरचन्द्र, पेज–114, 69*

62. 'सर्वनामस्थानसंज्ञा' कस्य भवति– UGC 25 J–2013

(A) 'शी' प्रत्ययस्य (B) 'शि' प्रत्ययस्य
(C) सर्वनामशब्दस्य (D) सर्वशब्दस्य

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.41) - ईश्वरचन्द्र, पेज–24*

63. 'डुकृञ् करणे' धातौ अन्तिमस्य 'ञ्' वर्णस्य इत्संज्ञा केन सूत्रेण भवति? RPSC ग्रेड-I PGT–2014

(A) हलन्त्यम् (B) तस्य लोपः
(C) आदिर्ञिटुडवः (D) उपदेशेऽजनुनासिक इत्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.3.3) - ईश्वरचन्द्र, पेज–79*

64. 'ग्रामणी + सु + स्' इत्यत्र अपृक्तसंज्ञा कस्य भवति– UGC 25 D–2013

(A) 'सु' इत्यस्य (B) 'स्' इत्यस्य
(C) 'ग्रामणी' इत्यस्य (D) 'ग्रामणी + सु' इत्यस्य

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.2.41) - ईश्वरचन्द्र, पेज–68*

65. अस्य शब्दस्य नदीसंज्ञा नास्ति– UGC 25 D–2013

(A) नदी (B) साध्वी
(C) स्त्री (D) ग्रामणीः

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.3) - ईश्वरचन्द्र, पेज–109*

66. 'परिक्रयणे सम्प्रदानमन्यतरस्याम्' इति सूत्रेण अन्यतरस्यां का संज्ञा भवति– UGC 25 D–2013

(A) अपादानसंज्ञा (B) करणसंज्ञा
(C) कर्मसंज्ञा (D) अधिकरणसंज्ञा

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.44) - ईश्वरचन्द्र, पेज–126*

67. 'विष्णू इमौ' अत्र का संज्ञा प्रवर्तते– UGC 25 J–2014

(A) घि (B) संयोगः
(C) नदी (D) प्रगृह्यम्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.11) - ईश्वरचन्द्र, पेज–13*

68. (i) 'कृत्तद्धितसमासाश्च' सूत्रेण संज्ञा भवति–
(ii) 'कृत्तद्धितसमासाश्च' इत्यनेन का संज्ञा विधीयते– UGC 25 J–2014, CCSUM Ph. D–2016

(A) नदी-संज्ञा (B) प्रातिपदिक-संज्ञा
(C) गति-संज्ञा (D) सर्वनाम-संज्ञा

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.2.46) - ईश्वरचन्द्र, पेज–70*

69. 'ए' तथा 'ऐ' की सवर्णसंज्ञा पाणिनि को अभीष्ट है या नहीं– UP PGT–2010

(A) हाँ (B) नहीं
(C) दोनों में सवर्णसंज्ञा की परिभाषा ही नहीं लागू होती
(D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.9) - ईश्वरचन्द्र, पेज–11*

70. ''वर्णानामतिशयितः सन्निधिः'' क्या है– UP PGT–2009

(A) प्रातिपदिक (B) पद
(C) पररूप (D) संहिता

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.108) - ईश्वरचन्द्र, पेज–147*

71. (i) निम्नलिखित में से किसकी वृद्धिसंज्ञा नहीं होती है–
(ii) अधोलिखितेषु 'वृद्धिसंज्ञकः' नास्ति– UP GDC–2012, UP GIC–2009, UP TET –2013

(A) आ (B) ओ
(C) औ (D) ऐ

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.1) - ईश्वरचन्द्र, पेज–5*

72. (i) 'निष्ठा' पदेन उच्येते– UP GIC–2009, UGC-25
(ii) 'निष्ठा-संज्ञा' किन प्रत्ययों की होती है– D–2007

(A) तव्य-तव्यत् (B) शतृ-शानच्
(C) अनीय-अनीयर् (D) क्त-क्तवतू

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.25) - ईश्वरचन्द्र, पेज–19*

73. किसकी प्रगृह्यसंज्ञा नहीं होती है– UP GIC–2009

(A) ओकारान्त द्विवचन (B) ऊकारान्त द्विवचन
(C) ईकारान्त द्विवचन (D) एकारान्त द्विवचन

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.11) - ईश्वरचन्द्र, पेज–13*

61. (A) 62. (B) 63. (A) 64. (B) 65. (D) 66. (B) 67. (D) 68. (B) 69. (B) 70. (D) 71. (B) 72. (D) 73. (A)

74. (i) व्यञ्जनसन्निपातः इति कथ्यते

(ii) स्वरों के व्यवधान के बिना आये हुए व्यञ्जनों की क्या संज्ञा होती है–

UP TGT–1999, UGC 25 J–2015

(A) पदम्　　(B) निष्ठा

(C) संहिता　　(D) संयोग

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.17) - ईश्वरचन्द्र, पेज–10*

75. 'घि' व्याकरण का एक शब्द है–　UP TGT–2004

(A) आम शब्द　　(B) विधि शब्द

(C) पारिभाषिक शब्द　　(D) संज्ञा शब्द

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.7) - ईश्वरचन्द्र, पेज–111*

76. (i) 'सुप्तिङन्तं' भवति–

(ii) 'सुबन्त' और 'तिङन्त' क्या कहलाते हैं–

BHU MET–2010, RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014

(A) पद　　(B) अर्थ

(C) क्रिया　　(D) अव्यय

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.14) - ईश्वरचन्द्र, पेज–114*

77. (i) सवर्णसंज्ञा केन सूत्रेण भवति

(ii) सवर्ण संज्ञा का विधायक सूत्र क्या है–

(iii) सवर्ण संज्ञा है– BHU MET–2010, DL –2015

RPSC ग्रेड-I (PGT)–2013, RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014, CC SUM-Ph.D–2016

(A) झरो झरि सवर्णे　　(B) तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम्

(C) अकः सवर्णे दीर्घः　　(D) हलन्त्यम्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.9) - ईश्वरचन्द्र, पेज–11*

78. वर्गों के द्वितीय, चतुर्थ और शल् वर्णों की संज्ञा होती है?

H-TET–2015

(A) अल्पप्राण　　(B) महाप्राण

(C) घोष　　(D) अघोष

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–17*

79. पाणिनीय व्याकरण के अनुसार 'अ, ए, ओ' हैं–

DSSSB PGT–2014, BHU MET–2010

(A) वृद्धि　　(B) गुण

(C) प्रकृतिभाव　　(D) लोप

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.2) - ईश्वरचन्द्र, पेज–6*

80. व्याकरणे लोपस्य तात्पर्यम् अस्ति?

REET–2016

(A) विस्मरणं लोपः　　(B) अदृश्यं लोपः

(C) अश्रवणं लोपः　　(D) अदर्शनं लोपः

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.59) – ईश्वरचन्द्र पेज–45*

81. स्पर्शसंज्ञकाः वर्णाः के–　BHU Sh. ET–2011

(A) अचः　　(B) वर्गीयाः

(C) अवर्गीयाः　　(D) हलः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–40*

82. वृद्धिसंज्ञासूत्रं तपरः कः–　BHU Sh. ET–2011

(A) अकारः　　(B) आकारः

(C) इकारः　　(D) उकारः

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.1) - ईश्वरचन्द, पेज–5*

83. प्रदत्तेषु कुत्र प्रगृह्यसंज्ञायाः प्रयोजनम्–

BHU Sh. ET–2011

(A) अम्यश्वा　　(B) अश्वा अमी

(C) तेऽत्र　　(D) अमी ईशाः

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.12) - ईश्वरचन्द्र, पेज–14*

84. 'नदी'-संज्ञा कस्य–　BHU Sh. ET–2011

(A) भानु　　(B) मधु

(C) लता　　(D) गति

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.6) - ईश्वरचन्द्र, पेज–110, 111*

85. 'अभ्यस्त'-संज्ञाविधायकं सूत्रमस्ति– BHU AET–2011

(A) जक्षित्यादयः षट्　　(B) सर्वस्य द्वे

(C) नित्यवीप्सयोः　　(D) यथास्वे यथायथम्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (6.1.6) - ईश्वरचन्द्र, पेज–665*

74. (D)　75. (D)　76. (A)　77. (B)　78. (B)　79. (B)　80. (D)　81. (B)　82. (B)　83. (D)　84. (D)　85. (A)

86. 'घ'–संज्ञा भवति– BHU AET–2011

(A) 'दा-धा' इत्यनयोः (B) 'क्त-क्तवतू' इत्यनयोः
(C) 'तरप्-तमप्' इत्यनयोः (D) 'शतृ-शानच्' इत्यनयोः

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.21) - ईश्वरचन्द्र, पेज–18*

87. अ इ उ ऋ लृ – एषां स्वराणां पूर्वाचार्यैः विहिता सञ्ज्ञासीत्– BHU AET–2011

(A) ह्रस्वस्वर इति (B) दीर्घस्वर इति
(C) मिश्रस्वर इति (D) समानाक्षर इति

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.2.27) - ईश्वरचन्द्र, पेज–65*

88. दीक्षितमतेन 'वृद्धिरादैच्' इति सूत्रे कति पदानि सन्ति– BHU AET–2012

(A) द्वे (B) त्रीणि
(C) चत्वारि (D) पञ्च

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.1) - ईश्वरचन्द्र, पेज–5*

89. (i) केन सूत्रेण संहिता संज्ञा भवति–
(ii) संहितासंज्ञा विधायकं सूत्रं किम्–
BHU AET–2012, CCSUM Ph.D–2016

(A) संहितायाम् (B) परः सन्निकर्षः संहिता
(C) संज्ञायाम् (D) संहितशफलक्षणवामादेश्च

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.108) - ईश्वरचन्द्र, पेज–147*

90. 'आदिरन्त्येन सहेता' इति कीदृशं सूत्रम्–BHU AET–2012

(A) संज्ञा (B) परिभाषा
(C) विधि (D) अधिकार

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.70) - ईश्वरचन्द्र, पेज–52*

91. धातुसंज्ञा विधायकं सूत्रं किम्– BHU AET–2012

(A) धातोः (B) लिटि धातोरनभ्यासस्य
(C) धातोस्तन्निमित्तस्यैव (D) भूवादयो धातवः

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.3.1) - ईश्वरचन्द्र, पेज–79*

92. धातुसंज्ञा-विधायकं सूत्रम् अस्ति– JNU MET–2015

(A) भूवादयो धातवः (B) सनाद्यन्ताः धातवः
(C) A+B इत्युभयमपि (D) धातोः

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.3.1, 3.1.32) - ईश्वरचन्द्र, पेज–79, 264*

93. 'टि'–संज्ञा-विधायकं सूत्रं किम्– BHU AET–2012

(A) टेः (B) टाबृचि
(C) अचोऽन्त्यादि टि (D) आद्यन्तौ टकितौ

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.63) - ईश्वरचन्द्र, पेज–47*

94. 'मुखनासिकावचनः' इति कीदृशं सूत्रम्– BHU AET–2012

(A) संज्ञा (B) परिभाषा
(C) अधिकार (D) अतिदेश

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.8) - ईश्वरचन्द्र, पेज–10*

95. निम्नलिखित सूत्रों में परिभाषा सूत्र है– UGC 73 J–2009

(A) आद्यन्तौ टकितौ (B) अदेङ्गुणः
(C) इको यणचि (D) न वेति विभाषा

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड-1)-भीमसेन शास्त्री, पेज–127*

96. (i) प्रगृह्य संज्ञाविधायक सूत्र है? UGC 25 D–2002,
(ii) प्रगृह्यसंज्ञा का सूत्र है– UGC 73 D–2015

(A) सुडनपुंसकस्य (B) ईदूदेद्द्विवचनम् ......
(C) क्तक्तवतू ...... (D) अलोऽन्त्यात्पूर्वः ......

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.11) - ईश्वरचन्द्र, पेज–13*

97. 'सवर्ण' है– UGC 25 D–2002

(A) इ, श (B) अ, आ
(C) विसर्ग-हलन्त (D) अनुनासिक

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.9) - ईश्वरचन्द्र, पेज–11*

98. सुबन्त और तिङन्त की संज्ञा है– UGC 25 J–2003

(A) पद (B) निष्ठा
(C) नदी (D) सर्वनाम

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.14) - ईश्वरचन्द्र, पेज–114*

99. संयोगसंज्ञायाः उदाहरणमस्ति– RPSC ग्रेड-I (PGT), 2011

(A) आकाशः (B) इन्द्रः
(C) देवालयः (D) मालाः

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.7) - ईश्वरचन्द्र, पेज–10*

86. (C) 87. (A) 88. (A) 89. (B) 90. (A) 91. (D) 92. (C) 93. (C) 94. (A) 95. (A) 96. (B) 97. (B) 98. (A) 99. (B)

100. एतेषु सवर्ण-संज्ञकौ कौ वर्णौ– BHU Sh. ET–2013

(A) प् - न् (B) क् - घ्
(C) त् - भ् (D) च् - द्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.9) - ईश्वरचन्द्र, पेज–11*

101. पदसंज्ञा कस्य भवति– BHU Sh. ET–2013

(A) वर्णसमुदायस्य (B) सुबन्ततिङन्तयोः
(C) कृत्प्रत्ययस्य (D) तद्धितप्रत्ययस्य

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.14) - ईश्वरचन्द्र, पेज–114*

102. इत्संज्ञाविधायकं सूत्रम् अस्ति– RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014

(A) अदर्शनं लोपः (B) आदिरन्त्येन सहेता
(C) हलन्त्यम् (D) तस्य लोपः

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.3.3) - ईश्वरचन्द्र, पेज–79*

103. संयोगसंज्ञा भविष्यति– RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014

(A) द्वयोः स्वरयोः मध्ये (B) द्वयोः व्यञ्जनयोः मध्ये
(C) द्वयोः वाक्ययोः मध्ये (D) द्वयोः पदयोः मध्ये

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.7) - ईश्वरचन्द्र, पेज–10*

104. अधोलिखितानां कस्मिन् पदे संहितासंज्ञा प्रयुक्ता– RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014

(A) उपेन्द्रः (B) रामस्य
(C) कमलम् (D) अचलः

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.108) - ईश्वरचन्द्र, पेज–147*

105. अधोलिखित में परिभाषासूत्र है– UGC 73 D–2010

(A) हलन्त्यम् (B) वान्तो यि प्रत्यये
(C) उपसर्जनं पूर्वम् (D) स्थानेऽन्तरतमः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड-1)-भीमसेन शास्त्री, पेज–37*

106. 'नाऽज्झलौ' इति सूत्रेण निषिद्ध्यते–UGC 73 J–2012

(A) सावर्ण्यम् (B) आदेशः
(C) लोपः (D) समासः

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.10) - ईश्वरचन्द्र, पेज–13*

107. संज्ञा विधायक सूत्र है– UGC 73 J–2012

(A) झलां जश् झशि (B) इको गुणवृद्धी
(C) हशि च (D) वृद्धिरादैच्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.1) - ईश्वरचन्द्र, पेज–5*

108. व्याकरण में 'उपदेश' शब्द का अर्थ है– UGC 73 J–2013

(A) आदेशः (B) शब्दबोधः
(C) प्लुतसंज्ञा (D) उदात्तः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–14*

109. 'उपसर्जनसंज्ञा' विधायक सूत्र है– UGC 73 S–2013

(A) उपसर्जनं पूर्वम् (B) प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्
(C) उपसर्गाच्च (D) उपपदमतिङ्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.2.43) - ईश्वरचन्द्र, पेज–68*

110. प्रगृह्यसंज्ञा विधायक सूत्र नहीं है– UGC 73 J–2007

(A) अदसो मात् (B) प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम्
(C) निपात एकाजनाङ् (D) ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (6.1.121) - ईश्वरचन्द्र, पेज–697*

111. 'वृद्धिसंज्ञक-वर्ण' होते हैं– UGC 73 J–2007

(A) आ, ऐ, औ (B) अ, इ, उ
(C) अ, ए, ओ (D) इ, उ, ए

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.1) - ईश्वरचन्द्र, पेज–5*

112. 'विभाषा-संज्ञा' विधायकं सूत्रं किम्– UGC 25 D–2014

(A) विभाषा चेः (B) विभाषा ङिश्योः
(C) विभाषा दिक्समासे बहुव्रीहौ (D) न वेति विभाषा

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.43) - ईश्वरचन्द्र, पेज–25*

113. 'अपृक्त एकाल् प्रत्ययः' इति सूत्रे 'अल्' इत्यनेन किं गृह्यते– UGC 25 D–2014

(A) वर्णाः (B) धातवः
(C) स्वराः (D) प्रातिपदिकम्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.2.41) - ईश्वरचन्द्र, पेज–68*

100. (B) **101.** (B) **102.** (C) **103.** (B) **104.** (A) **105.** (D) **106.** (A) **107.** (D) **108.** (A) **109.** (B) **110.** (B) **111.** (A) **112.** (D) **113.** (A)

114. सामान्यतया 'घि' इति संज्ञा कस्य भवति– **UGC 25 D–2014**

(A) पुँल्लिङ्ग-शब्दस्य (B) स्त्रीलिङ्ग-शब्दस्य
(C) नपुंसकलिङ्ग-शब्दस्य (D) अलिङ्ग-शब्दस्य

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.7) - ईश्वरचन्द्र, पेज–111*

115. समीचीनम् उत्तरं चिनुत– **UGC 25 D–2014**

(अ) रक्तसंज्ञा **1. व्यञ्जन-सन्निपातः**
(ब) ईदूदेद्द्विवचनम् **2. समानाक्षराण्यादितः**
(स) संयोगस्तु **3. अनुनासिकः**
(द) अष्टौ **4. प्रगृह्यम्**

	अ	ब	स	द
(A)	4	2	3	1
(B)	3	4	1	2
(C)	1	2	3	4
(D)	3	2	4	1

स्रोत–*(i) अष्टाध्यायी (1.1.11, 1.1.7)-ईश्वरचन्द्र, पेज–10, 13*
(ii) ऋग्वेद प्रातिशाख्यम् - वीरेन्द्र कुमार वर्मा, पेज–42, 69

116. (i) 'तुल्यास्यप्रयत्नम्' इत्यादि सूत्रं किं परिभाषयति
(ii) तालु आदि स्थान और आभ्यन्तर प्रयत्न ये दोनों जिन वर्णों के समान हों, उनकी परस्पर होती है– UGC 73 D–2013, UP GDC–2014

(A) संहिता-संज्ञा (B) संयोग-संज्ञा
(C) अवसान-संज्ञा (D) सवर्ण-संज्ञा

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.9) - ईश्वरचन्द्र, पेज–11*

117. किन वर्णों की परस्पर सवर्ण संज्ञा कही गई है? **H-TET–2015**

(A) ऋ व अ की (B) ऋ और समस्त स्वरों की
(C) ऋ व ऌ की (D) स्वर एवं व्यञ्जनों की

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.9) - ईश्वरचन्द्र, पेज–11*

118. वर्णानामदर्शने का संज्ञा भवति? **RPSC ग्रेड-I (PGT)–2014**

(A) अभावः (B) संहिता
(C) लोपः (D) संयोगः

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.59) - ईश्वरचन्द्र, पेज–45*

119. लोपः भवति– **AWES TGT–2010, 2013**

(A) अदर्शनम् (B) अभावः
(C) निषेधः (D) अन्तर्हितम्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.159) - ईश्वरचन्द्र, पेज–45*

120. 'आदिरन्त्येन सहेता' इति सूत्रे कति पदानि– **JNU MET–2014**

(A) द्वे पदे (B) त्रीणि पदानि
(C) चत्वारि पदानि (D) पञ्च पदानि

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.70) - ईश्वरचन्द्र, पेज–52*

121. स्थानेऽन्तरतमः में 'अन्तरतमः' का अर्थ क्या है– **BHU MET–2012**

(A) अन्तःस्थः (B) भिन्नतमः
(C) सदृशतमः (D) पृथक्तमः

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.49) - ईश्वरचन्द्र, पेज–29*

122. 'तिङ्' प्रत्याहार में कितने प्रत्यय होते हैं– **UP TGT–2013**

(A) 18 (B) 19
(C) 20 (D) 21

स्रोत–*अष्टाध्यायी (3.4.78) - ईश्वरचन्द्र, पेज–409*

123. 'वर्गाणां प्रथम-तृतीय-पञ्चमाः यणश्चाल्पप्राणाः' इत्यत्र 'च'–कारः कस्य बोधकः – **BHU AET–2011**

(A) 'हश्'-प्रत्याहारस्य (B) 'शल्'-प्रत्याहारस्य
(C) 'खर्'-प्रत्याहारस्य (D) अचाम्

लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-1)-भीमसेनशास्त्री, पेज–25

124. 'दाधा घ्वदाप्' इत्यनेन घुसंज्ञकधातुर्नास्ति– **BHU AET–2011**

(A) दाण्दाने (B) डुदाञ्दाने
(C) दैप् शोधने (D) देङ्रक्षणे

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.19) - ईश्वरचन्द्र, पेज–16*

125. 'आदिरन्त्येन सहेता' इति सूत्रं संज्ञाविधायकमस्ति– **UP GIC–2015**

(A) प्रत्ययस्य (B) प्रत्याहारस्य
(C) अनुबन्धस्य (D) लोपस्य

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.70) - ईश्वरचन्द्र, पेज–52*

114. (A) 115. (B) 116. (D) 117. (C) 118. (C) 119. (A) 120. (C) 121. (C) 122. (A) 123. (D) 124. (C) 125. (B)

126. (i) सुबन्तानां तिङन्तानां च का संज्ञा? UP GIC–2015, (ii) सुबन्ततिङन्तौ कथ्येते– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2014

(A) धातुः (B) प्रातिपदिकः
(C) प्रत्ययः (D) पदम्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.14) - ईश्वरचन्द्र, पेज–114*

127. अधस्तनेषु निष्ठा-संज्ञा कस्य भवति– UGC 25 J–2015

(A) तव्यत्-इत्यस्य (B) तव्य-इत्यस्य
(C) क्तवतु-इत्यस्य (D) अनीयर्-इत्यस्य

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.25) - ईश्वरचन्द्र, पेज–19*

128. अव्ययीभावसंज्ञा केन सूत्रेण क्रियते? JNU-M. Phil/Ph.D–2015

(A) अव्ययीभावश्च 2.4.18 (B) अव्ययीभावाश्च 4.3.59
(C) अव्ययीभावः 2.1.5 (D) अव्ययीभावश्च 1.1.40

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.40) - ईश्वरचन्द्र, पेज–151*

129. उपपदसंज्ञा-विधायकं सूत्रं किम्– UGC 25 J–2015

(A) कर्मण्यण् (B) उपपदमतिङ्
(C) तत्रोपपदं सप्तमीस्थम् (D) कुगतिप्रादयः

स्रोत–*अष्टाध्यायी (3.1.92) - ईश्वरचन्द्र, पेज–289*

130. 'सुप्तिङन्तं पदम्' इति सूत्रम् अतिरिच्य पदसंज्ञाविधायकं सूत्रं किम्– UGC 25 J–2015

(A) पदस्य (B) पदात्
(C) पदान्तस्य (D) स्वादिष्वसर्वनामस्थाने

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.17) - ईश्वरचन्द्र, पेज–115*

131. संस्कृत का क्षेत्र किस सीमा तक विस्तृत था– UGC (H) J–2012

(A) प्रादेशिक (B) सार्वदेशिक
(C) मध्यदेशीय (D) क्षेत्रीय

132. तालु आदि स्थानो में जो अच् ऊपरी भाग में बोला जाये, उसकी संज्ञा है– H-TET–2014

(A) उदात्त (B) अनुदात्त
(C) स्वरित (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.2.29) - ईश्वरचन्द्र, पेज–66*

133. तुमुन् प्रत्ययान्त पद की अव्ययसंज्ञा करने वाला सूत्र है– H-TET–2014

(A) अव्ययीभावश्च (B) अव्ययादाप्सुपः
(C) क्त्वा-तोसुन्-कसुनः (D) कृन्मेजन्तः

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.38) - ईश्वरचन्द्र, पेज–24*

134. 'गुणसंज्ञा' करने वाला सूत्र है– H-TET–2014

(A) अचो ञ्णिति (B) वचिस्वपियजादीनां किति
(C) कृन्मेजन्तः (D) सार्वधातुकार्धधातुकयोः

स्रोत–*अष्टाध्यायी (7.3.84) - ईश्वरचन्द्र, पेज–949*

135. किं सूत्रम् 'इत्'–संज्ञा विधायकं नास्ति– JNU M.Phil/Ph.D–2015

(A) उपदेशेऽजनुनासिक इत्
(B) आदिर्ञिटुडवः
(C) वेः शब्दकर्मणः
(D) षः प्रत्ययस्य

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.3.2, 1.3.3, 1.3.5, 1.3.6)*

136. 'उच्चैः' की अव्ययसंज्ञा करने वाला सूत्र है? H-TET–2014

(A) स्वरादिनिपातमव्ययम् (B) अव्ययीभावः
(C) कृन्मेजन्तः (D) अव्ययादाप्सुपः

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.36) - ईश्वरचन्द्र, पेज–23*

137. हलोऽनन्तराः– AWES TGT–2009

(A) संयोगः (B) संहिता
(C) सन्धिः (D) समासः

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.7) - ईश्वरचन्द्र, पेज–10*

138. 'शक' इत्यत्र टिसंज्ञा कस्यांशस्य भवति? UGC 25 D–2015

(A) 'क' इत्यस्य
(B) 'श' इत्यस्य
(C) ककारोत्तरवर्तिनः अकारस्य
(D) शकारोत्तरवर्तिनः अकारस्य

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (1.1.64) - गीताप्रेस, पेज–22*

126. (D) **127.** (C) **128.** (C) **129.** (C) **130.** (D) **131.** (B) **132.** (A) **133.** (D) **134.** (D) **135.** (C) **136.** (A) **137.** (A) **138.** (C)

139. 'सखन्' इत्यत्र उपधासंज्ञा कस्य भवति? **UGC 25 D–2015**

(A) खकारोत्तरवर्तिनः 'अन्' इत्यय
(B) सकारस्य
(C) खकारोत्तरवर्तिनः अकारस्य
(D) सकारोत्तरवर्तिन अकारस्य

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.64) - ईश्वरचन्द्र, पेज–48*

140. 'व' का सम्प्रसारण है– **UGC 25 D–1996**

(A) इ (B) उ
(C) ऋ (D) लृ

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.44) - ईश्वरचन्द्र, पेज–26*

141. इनमें सवर्ण है– **UGC 25 D–1997**

(A) इ, श (B) आ, ह
(C) ऋ, लृ (D) अ, उ

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (1.1.9) - गीताप्रेस, पेज–16*

142. इनमें सवर्ण नहीं होते हैं– **UGC 25 J–1999**

(A) उ - ऊ (B) अ - आ
(C) ऋ - लृ (D) अ - इ

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.9) - ईश्वरचन्द्र, पेज–11*

143. वर्णसमाम्नाये कति सूत्राणि? **CVVET–2015**

(A) दश (B) द्वादश
(C) नव (D) चतुर्दश

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–3*

144. यह सवर्ण है– **UGC 25 J–2000**

(A) अ - इ (B) इ - ई
(C) इ - उ (D) ए - ओ

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.9) - ईश्वरचन्द्र, पेज–11*

145. 'ऐ' कैसा स्वर है– **UGC 25 J–2001**

(A) अर्धविवृत (B) विवृत
(C) स्पर्श (D) संवृत

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (1.1.9) - गीताप्रेस, पेज–17*

146. 'उ' का सम्प्रसारण है– **UGC 25 J–2001**

(A) प् (B) व्
(C) द् (D) य्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.44) - ईश्वरचन्द्र, पेज–26*

147. अनुनासिक वर्णों की संख्या है– **UGC 25 D–2001, UP TGT–2009**

(A) पाँच (B) आठ
(C) दस (D) बारह

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.8) - ईश्वरचन्द्र, पेज–10*

148. स्पर्शवर्णों का समूह है– **UGC 25 J–2002**

(A) क् च् ट् त् प् (B) व् प् ङ् श् म्
(C) श् ष् स् ह् (D) त् थ् द् ध् स्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–17*

149. 'च्' वर्णः कुत्र अन्तर्भवति– **UGC 25 D–2005**

(A) अनुनासिकः (B) स्पर्शः
(C) स्वरः (D) संघर्षः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–17*

150. मूर्धन्येषु अन्तर्भवति– **UGC 25 D–2005, 2009**

(A) ष् (B) य्
(C) व् (D) ल्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–16*

151. मूर्धन्यवर्णः अस्ति– **UGC 25 D–2009**

(A) प (B) ड
(C) ल (D) न

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–17*

152. अधोनिर्दिष्टेषु ऊष्मवर्णः– **UGC 25 J–2006**

(A) ह् (B) य्
(C) क् (D) अ

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–17*

153. अधोनिर्दिष्टेषु स्पर्शः– **UGC 25 D–2006**

(A) म् (B) य्
(C) इ (D) व्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–17*

139. (C)	140. (B)	141. (C)	142. (D)	143. (D)	144. (B)	145. (B)	146. (B)	147. (A)	148. (A)
149. (B)	150. (A)	151. (B)	152. (A)	153. (A)					

154. समीचीनां तालिकां चिनुत– UGC 25 D–2006

(अ) स्पर्शः	**1. शल्**
(ब) स्वरः	**2. कवर्णः**
(स) जिह्वामूलीयम्	**3. अच्**
(द) ऊष्मः	**4. जिह्वामूलम्**

	अ	ब	स	द
(A)	2	3	4	1
(B)	1	2	3	4
(C)	4	3	2	1
(D)	3	2	1	4

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–17*

155. यरलवाः वर्णाः– UP PCS–2013, UGC 25 J–2009

(A) स्पृष्टाः (B) अन्तःस्थाः
(C) ईषत्स्पृष्टाः (D) अनुनासिकाः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–17*

156. (i) उच्चारणे बाह्यप्रयत्नः कतिविधः –

(ii) पाणिनि के अनुसार बाह्यप्रयत्नों की संख्या कितनी है– UP PGT–2009, JNU MET–2014

(iii) बाह्यप्रयत्न हैं– DSSSB PGT–2014

(A) दो (B) पाँच
(C) ग्यारह (D) दस

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–17*

157. माहेश्वर सूत्रों में चौथा सूत्र है– UP TGT–1999

(A) ऐऔच् (B) हयवरट्
(C) खफछठथचटतव् (D) हल्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–13*

158. (i) कुल स्वर संख्या है– UP TET–2014

(ii) संस्कृत व्याकरण के अनुसार अचों (स्वरों) की संख्या है– UP TGT–2004

(A) नौ (B) छः
(C) सात (D) आठ

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–9*

159. पाणिनीयव्याकरणे स्वराः सन्ति– REET–2016

(A) दीर्घप्लुतौ (B) अनुनासिकाः
(C) उदात्तानुदात्तस्वरिताः (D) उदात्तानुदात्तौ

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - भैमी व्याख्या (भाग-1), पेज–14*

160. (i) व्याकरणे मूलस्वराः सन्ति

(ii) संस्कृत व्याकरण में मूल स्वरों की संख्या है– UP TGT–2003, UGC 73 D–2004, H-TET–2015

(A) पाँच (B) छः
(C) सात (D) आठ

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण एवं लेखन - रामगोपाल शर्मा, पेज–144*

161. वर्णमाला में वर्णों की संख्या है– UP TGT–2004

(A) ग्यारह (B) तेरह
(C) बयालिस (D) तैंतीस

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–13*

162. छोटी से छोटी व्यक्त खण्ड ध्वनि को कहते हैं– UP TGT–2004

(A) वर्ण (B) पद
(C) शब्द (D) वाक्य

स्रोत–*संस्कृतव्याकरण एवं लेखन - रामगोपाल शर्मा, पेज–144*

163. वर्णमाला में व्यञ्जनों की संख्या है– UP TGT–2009

(A) 31 (B) 41
(C) 33 (D) 39

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–13*

164. स्वराणाम् आभ्यन्तरप्रयत्नं किम्? RPSC ग्रेड-I (PGT)–2014

(A) स्पृष्टम् (B) ईषत्स्पृष्टम्
(C) विवृतम् (D) संवृतम्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–17*

165. सन्ध्यक्षर होते हैं– UP TGT–2004

(A) क, ख, ग, घ, ङ (B) य, र, ल, व
(C) श, ष, स, ह (D) ए, ऐ, ओ, औ

स्रोत–*ऋग्वेद प्रातिशाख्यम् - वीरेन्द्रकुमार वर्मा, पेज–43*

154. (A) **155.** (B) **156.** (C) **157.** (A) **158.** (A) **159.** (C) **160.** (A) **161.** (C) **162.** (A) **163.** (C) **164.** (C) **165.** (D)

166. (i) माहेश्वर सूत्रों में 'ह' व्यञ्जन कितनी बार प्रयुक्त हुआ है– UP TGT–2004, 2009
(ii) माहेश्वर सूत्र में 'ह' कितनी बार आया है–
(A) 15 (B) 2
(C) 14 (D) 8
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–13*

167. व्यञ्जन वर्ण की सही मात्रा है– UP TGT–2004
(A) एकमात्रा (B) द्विमात्रा
(C) त्रिमात्रा (D) अर्द्धमात्रा
स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूरामसक्सेना, पेज–40*

168. 'एओङ्' क्या है– BHU MET–2010
(A) प्रत्याहार (B) माहेश्वरसूत्र
(C) क्रियापद (D) तद्धित
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–13*

169. 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत् संज्ञा होती है– BHU MET–2010
(A) हल् की (B) अच् की
(C) लोप की (D) अव्यय की
स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.3.3) - ईश्वरचन्द्र, पेज–79*

170. प्रत्यय के आदि में स्थित चवर्ग और टवर्ग की इत्संज्ञा करने वाला सूत्र है? H-TET–2015
(A) लशक्वतद्धिते (B) हलन्त्यम्
(C) चुटू (D) षः प्रत्ययस्य
स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.3.7) - ईश्वरचन्द्र, पेज–81*

171. (i) वर्णमाला में ऊष्म व्यञ्जन कौन से हैं–
(ii) ऊष्मवर्ण कौन हैं – BHU MET–2008, 2010,
(iii) संस्कृत व्याकरण में ऊष्म वर्ण हैं– UP PCS–2012,
(iv) ऊष्मवर्णानां क्रमः कः? REET–2016
(A) य् व् र् ल् (B) श् ष् स् ह्
(C) अ इ उ ऋ (D) ए ऐ ओ औ
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–17*

172. 'कु' इति कथनेन के वर्णाः बुध्यन्ते– BHU Sh. ET–2011
(A) वर्गीयाः (B) अवर्गीयाः
(C) क-वर्गीयाः (D) उकार-भेदाः
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–16*

173. किम् आम्रेडितम्– BHU Sh. ET–2011
(A) द्विरुक्तम् (B) द्विरुक्तपरम्
(C) द्विरुक्तपूर्वम् (D) द्विरुक्तमध्यमम्
स्रोत–*अष्टाध्यायी (8.1.2) - ईश्वरचन्द्र, पेज–995*

174. सजातीयानामचां कतिविधो भेदो भवति– BHU AET–2011
(A) कालकृतः (B) स्थानभागकृतः
(C) नासिका-कृतः (D) उपर्युक्त-सर्वविधः
स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.9/1.2.27) - ईश्वरचन्द्र, पेज–11-65*

175. 'ऊकालोऽज्झ्रस्वदीर्घप्लुतः' इति सूत्रम् अचां कीदृशं भेदं प्रकटीकरोति– BHU AET–2011
(A) स्थानभागकृतम् (B) कालकृतम्
(C) नासिकाकृतम् (D) स्थानकृतम्
स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.2.27) - ईश्वरचन्द्र, पेज–65*

176. को मुखात् नोच्चार्यते– BHU AET–2012
(A) मकारः (B) ङकारः
(C) णकारः (D) अनुस्वारः
स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.8) - ईश्वरचन्द्र, पेज–10*

177. (i) कति माहेश्वराणि सूत्राणि BHU AET–2012,
(ii) माहेश्वर सूत्रों की संख्या है– UP TET–2013, DSSSB PGT–2014
(A) दश (B) चतुर्दश
(C) पञ्चदश (D) चत्वारि
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–13*

178. 'अच्' प्रत्याहारे कति वर्णाः सन्ति– BHU AET–2012, UP TGT–2013
(A) चत्वारः (B) त्रयोदश
(C) दश (D) नव
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–17*

166. (B) **167.** (D) **168.** (B) **169.** (A) **170.** (C) **171.** (B) **172.** (C) **173.** (B) **174.** (D) **175.** (B) **176.** (D) **177.** (B) **178.** (D)

179. 'अ इ उ ण्' इति कीदृशं सूत्रम्– BHU AET–2012

(A) परिभाषा (B) संज्ञा
(C) अधिकारः (D) नियमः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–13*

180. (i) एकारः कतिविधः– BHU AET–2012,
(ii) एकारस्य कियन्तो भेदाः– BHU Sh. ET–2013

(A) षड्विधः (B) द्वादशविधः
(C) अष्टादशविधः (D) एकादशविधः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–18*

181. (i) आभ्यन्तरप्रयत्नः कतिविधः–
(ii) आभ्यन्तरप्रयत्नाः कियन्तः–
BHU AET–2012, JNU MET–2014, REET–2016

(A) द्विविधः (B) त्रिविधः
(C) पञ्चविधः (D) एकादशविधः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–17*

182. दीक्षितमतेन उपदेशशब्दस्य कोऽर्थः– BHU AET–2012

(A) शास्त्रम् (B) गुणैः प्रापणम्
(C) आद्योच्चारणम् (D) कथनम्

स्रोत–*वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (भाग-एक)-गोपालदत्त पाण्डेय, पेज–14*

183. (i) कति स्पर्शवर्णाः – BHU AET–2012
(ii) स्पर्शवर्णों की संख्या कितनी है–

(A) पञ्च (B) त्रयोदश
(C) पञ्चविंशतिः (D) चत्वारः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–17*

184. 'स्पर्श' व्यञ्जनों के वर्ग हैं? UP TET–2016

(A) दो (B) पाँच
(C) चार (D) तीन

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–17*

185. एषु कः अयोगवाहः– BHU AET–2012

(A) सकारः (B) अकारः
(C) अनुस्वारः (D) हकारः

स्रोत–*पाणिनीयशिक्षा-शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायनः, पेज–106*

186. कः ध्वनिः कण्ठोष्ठम्? AWES TGT–2008

(A) आ (B) ए
(C) औ (D) ई

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–16*

187. (i) व्याकरण में उपदेश का क्या अर्थ होता है–
(ii) व्याकरण में उपदेश क्या है–
BHU MET–2008, BHU MET–2011

(A) लोप (B) आदर्श
(C) आद्योच्चारणम् (D) आगम

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–14*

188. 'शिवसूत्रजाल' किसको कहते हैं– BHU MET–2008

(A) माहेश्वरसूत्रों को (B) वार्तिकसूत्रों को
(C) अष्टाध्यायी के सूत्रों को (D) उणादिसूत्रों को

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–13*

189. अन्तःस्थ वर्ण कौन हैं–
BHU MET–2008, UP TET–2016

(A) य् व् र् ल् (B) श् ष् स् ह्
(C) अ इ उ ऋ लृ (D) ए ओ ऐ औ

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–17*

190. 'य्' का सम्प्रसारण है– UGC 25 J–2003

(A) व् (B) इ
(C) अय् (D) उ

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.44) - ईश्वरचन्द्र, पेज–26*

191. ए और ऐ का उच्चारणस्थान है? H-TET–2015

(A) कण्ठोष्ठ (B) कण्ठतालु
(C) दन्तोष्ठ (D) मूर्धा

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–16*

192. ऊष्म वर्ण नहीं है– UP TET–2014

(A) श् (B) य्
(C) स् (D) ह्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–17*

179. (B) **180.** (B) **181.** (C) **182.** (C) **183.** (C) **184.** (B) **185.** (C) **186.** (C) **187.** (C) **188.** (A)
189. (A) **190.** (B) **191.** (B) **192.** (B)

193. ऊष्म व्यञ्जन हैं– **UP TET–2016**
(A) य् व् र् ल् (B) च् छ् ज् झ् ञ्
(C) प् फ् ब् भ् (D) श् ष् स् ह्
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–17*

194. स्पर्शव्यञ्जन नहीं है– **UP TET–2014**
(A) क् (B) प्
(C) य् (D) ट्
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–17*

195. 'ग' व्यञ्जन है? **UP TET–2016**
(A) अन्तःस्थ व्यञ्जन (B) ऊष्म व्यञ्जन
(C) स्पर्श व्यञ्जन (D) संयुक्त व्यञ्जन
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–17*

196. 'क वर्ग' के वर्ण कहे जाते हैं– **UP TET–2014**
(A) ऊष्म व्यञ्जन (B) स्पर्श व्यञ्जन
(C) अन्तःस्थ व्यञ्जन (D) सरस व्यञ्जन
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–17*

197. 'अ' एवं 'आ' परस्पर हैं– RPSC ग्रेड-II (TGT)–2013
(A) सवर्ण (B) संयोग
(C) पद (D) संहिता
स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.9) - ईश्वरचन्द्र, पेज–11*

198. 'च' वर्ण है– **RPSC ग्रेड-I (PGT)–2013**
(A) ईषद्विवृत (B) स्पृष्ट
(C) ईषत्स्पृष्ट (D) विवृत
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–17*

199. त वर्ण है– **RPSC ग्रेड-I (PGT)–2013**
(A) संवार (B) नाद
(C) घोष (D) अल्पप्राण
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–17*

200. महर्षि पाणिनि ने संस्कृत की वर्णमाला को विभाजित किया है– **UP TET–2013, 2014**
(A) 12 खण्डों में (B) 14 खण्डों में
(C) 16 खण्डों में (D) 18 खण्डों में
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–13*

201. निम्नलिखितवर्गेषु ईषत्स्पृष्टाः वर्णाः चेतव्याः–
RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014
(A) क् ख् ग् घ् (B) य् व् र् ल्
(C) अ इ उ ऋ (D) श् ष् स् ह्
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–17*

202. ईषत्स्पृष्टः वर्णः कः– **BHU Sh. ET–2013**
(A) यकारः (B) जकारः
(C) नकारः (D) शकारः
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–17*

203. (i) कादयो मावसानाः वर्णाः भवन्ति–AWES TGT–2008,
(ii) कादयो मावसानाः सन्ति– **G GIC–2015**
(iii) कादयो मावसानाः ------ **UGC 25 D–2004, 2007, J–2010, 2011**
(A) ऊष्माः (B) सङ्केताः
(C) अन्तस्थाः (D) स्पर्शाः
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–17*

204. 'विद्या ददाति विनयम्' इत्यत्र कोऽनुनासिको वर्णः–
BHU Sh. ET–2013
(A) वकारः (B) नकारः
(C) दकारः (D) तकारः
स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.8)-ईश्वरचन्द्र, पेज–10 (हितोपदेश-6)*

205. नीचे लिखे वर्णों में तकार का सवर्ण कौन सा है–
UGC 73 J–2008
(A) ग् (B) च्
(C) ड् (D) ध्
स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.9) - ईश्वरचन्द्र, पेज–11*

206. शम्भु के मतानुसार संस्कृत वर्णों की संख्या है–
UGC 73 S–2013
(A) 48 (B) 42
(C) 64 (D) 47
स्रोत–*पाणिनीयशिक्षा (श्लोक-3) शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पेज–58*

193. (D)	194. (C)	195. (C)	196. (B)	197. (A)	198. (B)	199. (D)	200. (B)	201. (B)	202. (A)
203. (D)	204. (B)	205. (D)	206. (C)						

207. भट्टोजिदीक्षित के मत में आभ्यन्तर प्रयत्न हैं– UGC 73 J–2014

(A) द्विधा (B) त्रिधा
(C) चतुर्धा (D) पञ्चधा

स्रोत–*वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी - गोपालदत्त पाण्डेय, पेज–27*

208. स्वरों के उच्चारण में लगने वाले समय को कहते हैं– DL(H)–2015

(A) मात्रा (B) अनुस्वार
(C) ह्रस्व (D) प्लुत

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.2.27) - ईश्वरचन्द्र, पेज–65*

209. 'श्र' एक संयुक्त व्यञ्जन है। इसमें किन दो वर्णों को सम्मिलित किया गया है– DL(H)–2015

(A) स् और र् वर्णों को (B) ष् और र् वर्णों को
(C) श् और र् वर्णों को (D) श्र और अ वर्णों को

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.7) - ईश्वरचन्द्र, पेज–10*

210. सही विकल्प चुनिये– UGC 73 D–2014

(A) अ, इ, उ, ऋ एषां वर्णानाम्-अष्टादशभेदाः प्रत्येकम्।
(B) अन्यपदार्थप्रधानः-द्वन्द्वः
(C) कारकाणि सन्ति - सप्त
(D) विभक्तयः सन्ति - षट्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–16*

211. माहेश्वरसूत्राणां पारम्परिकं नामास्ति प्रशस्यतरम्– DL–2015

(A) वर्णभेदः (B) वर्णसंस्कारः
(C) वर्णतन्त्रम् (D) वर्णवेदः

स्रोत–*लघुशब्देन्दुशेखर - वैकुण्ठनाथशास्त्री, पेज–12*

212. कः वर्णः तालव्यो न– AWES TGT–2013

(A) य् (B) श्
(C) च् (D) थ्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–16*

213. कः स्वरः संवृतः– AWES TGT–2013

(A) ए (B) उ
(C) इ (D) अ

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–17*

214. किं वर्णम् ऊष्मं न– AWES TGT–2010, 2013

(A) श् (B) र्
(C) ष् (D) स्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–17*

215. ओ३म् ध्वनौ अत्र ३ वाचकः अस्ति– AWES TGT–2013

(A) दीर्घस्वरस्य (B) संख्यायाः
(C) प्लुतस्वरस्य (D) उच्चारणे स्वरस्य दीर्घतायाः

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.2.27) - ईश्वरचन्द्र, पेज–65*

216. (i) अकार के कितने भेद हैं?
(ii) अकारः कतिविधः– JNU MET–2014

(A) द्विविधः (B) दशविधः
(C) षोडशविधः (D) अष्टादशविधः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–16*

217. अक् प्रत्याहार के अन्तर्गत कौन-कौन से वर्ण आते हैं? UP TET–2016

(A) अ, इ, उ, ऋ, ऌ (B) अ, इ, उ
(C) ऋ, ऌ (D) सभी स्वर

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–15*

218. एतेषु मूर्धन्यः महाप्राणः वर्णः कः–JNU MET–2014

(A) त् (B) द्
(C) ठ् (D) ण्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–16*

219. यणः के– JNU MET–2014

(A) स्पर्शाः (B) ऊष्माणः
(C) अन्तःस्था (D) जिह्वामूलीयाः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–17*

220. एतेषु अघोषमहाप्राणः किम्– JNU MET–2014

(A) ल् (B) ख्
(C) य् (D) च्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–17*

207. (C) **208.** (A) **209.** (C) **210.** (A) **211.** (D) **212.** (D) **213.** (D) **214.** (B) **215.** (C) **216.** (D) **217.** (A) **218.** (C) **219.** (C) **220.** (B)

221. यणानां आभ्यन्तरप्रयत्नं किम्?

RPSC ग्रेड-I (PGT)–2015

(A) स्पृष्टम् (B) ईषत्स्पृष्टम्
(C) विवृतम् (D) संवृतम्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–17*

222. एतेषु घोषः अल्पप्राणः किम्– JNU MET–2014

(A) ब् (B) भ्
(C) छ् (D) ख्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–17*

223. एतेषु कण्ठ्यवर्णः कः – JNU MET–2014

(A) ट् (B) प्
(C) अ (D) च्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–17*

224. 'मुखनासिकावचनोऽनुनासिकः' इति सूत्रे कति पदानि–

JNU MET–2014

(A) एकं पदम् (B) त्रीणि पदानि
(C) द्वे पदे (D) चत्वारि पदानि

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.8) - ईश्वरचन्द्र, पेज–10*

225. 'क-वर्णस्य' प्रयत्नं किम्– BHU B.ed–2013

(A) विवृतम् (B) स्पृष्टम्
(C) संवृतम् (D) ईषत्स्पृष्टम्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–17*

226. कः वर्णः तालव्यः न– AWES TGT–2010

(A) श् (B) म्
(C) छ् (D) य्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–16*

227. ईषद्विवृतप्रयत्नाः वर्णाः सन्ति–

RPSC ग्रेड-I (PGT)–2014

(A) य, र, ल, व (B) ग, ज, ड, द, ब
(C) श, ष, स, ह (D) अ, इ, उ, ए

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–17*

228. '×प' तथा '×फ' को कहा जाता है– UP PGT–2013

(A) प् तथा फ् (B) जिह्वामूलीय
(C) उपध्मानीय (D) यम वर्ण

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–18*

229. महाप्राण ध्वनियाँ व्यञ्जन-वर्ग में किससे सम्बन्धित है–

UP TGT (H)–2013

(A) पहला-दूसरा (B) दूसरा-तीसरा
(C) दूसरा-चौथा (D) पहला-चौथा

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–17*

230. वर्णमाला किसे कहेंगे– UP TGT (H) 2009

(A) शब्द समूह को
(B) वर्णों के संकलन को
(C) शब्द गणना को
(D) वर्णों के व्यवस्थित समूह को

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–13*

231. पाणिनीय शिक्षा में ध्वनियों को वर्गीकृत करने के कौन-से पाँच आधार स्वीकार किये गए हैं–

UP PGT (H)–2000

(A) स्वर, काल, स्थान, संवाद, नाद
(B) स्वर, स्थान, काल, प्राण, सुर
(C) काल, प्रयत्न, स्थान, प्राण, अनुदात्त
(D) स्वर, काल, स्थान, प्रयत्न, अनुप्रदान

स्रोत–*पाणिनीयशिक्षा - दामोदर महतो, पेज–16*

232. 'स्वर' के प्रकार हैं– UP PGT (H) 2004

(A) ह्रस्व (B) दीर्घ
(C) प्लुत (D) उपर्युक्त तीनों

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.2.27) - ईश्वरचन्द्र, पेज–65*

233. (i) अयोगवाहः कथ्यते– UP PGT(H)–2005, UP TET–2016,
(ii) 'अयोगवाह' कहा जाता है– UP GDC–2012

(A) विसर्ग को (B) महाप्राण को
(C) संयुक्तव्यञ्जन को (D) अल्पप्राण को

स्रोत–*पाणिनीयशिक्षा-शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पेज–106*

221. (B) **222.** (A) **223.** (C) **224.** (C) **225.** (B) **226.** (B) **227.** (C) **228.** (C) **229.** (C) **230.** (D) **231.** (D) **232.** (D) **233.** (A)

234. निम्नलिखित में कण्ठ्य ध्वनियाँ कौन सी हैं– UP TGT(H)–2010

(A) क् , ख् (B) य् , र्
(C) च् , ज् (D) ट् , ण्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–16, 17*

235. हिन्दी वर्णमाला में 'अं' और 'अः' क्या हैं– UGC(H) J–2012

(A) स्वर (B) व्यञ्जन
(C) अयोगवाह (D) संयुक्ताक्षर

स्रोत–*पाणिनीय शिक्षा-शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पेज–106*

236. 'यद्यपि' इति पदे संयुक्ताक्षरः अस्ति– C-TET–2011

(A) य् प् (B) द् य्
(C) य् द् (D) द व्

स्रोत–*संस्कृतगङ्गा वस्तुनिष्ठ संस्कृत व्याकरणम्-सर्वज्ञभूषण, पेज–187*

237. इनमें से कौन-सा वर्ण स्पर्श व्यञ्जन नहीं है– UP PGT (H)–2013

(A) क (B) च
(C) ट (D) य

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–17*

238. इनमें से कौन सा व्यञ्जन अल्पप्राण है– UP PGT (H)–2013

(A) ख (B) थ
(C) च (D) फ

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–17*

239. 'ल' – वर्णः अस्ति– UGC 25 J–2015

(A) ओष्ठ्यः (B) ऊष्मः
(C) अन्तःस्थः (D) दन्त्यः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–17*

240. कः वर्णः कण्ठ्यः न – AWES TGT–2011

(A) अ (B) ह्
(C) घ् (D) त्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–16*

241. उच्चारणस्थान ओष्ठ्य अस्ति– AWES TGT–2011

(A) ख् (B) ण्
(C) उ (D) ए

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–16*

242. चतुर्दश माहेश्वरसूत्रों में किस-किस वर्ण की दो बार आवृत्ति हुई है? H-TET–2014

(A) लकार व हकार की (B) रकार व लकार की
(C) णकार व हकार की (D) ककार व हकार की

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–13*

243. कः वर्णः मूर्धन्यः न– AWES TGT–2010

(A) थ् (B) ठ्
(C) र् (D) ष्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–16*

244. ऊष्मवर्णः कः– AWES TGT–2010

(A) प् (B) य्
(C) ह् (D) फ्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–17*

245. ऊष्मवर्णाः सन्ति– G GIC–2015

(A) अकः (B) यणः
(C) झषः (D) शलः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–17*

246. पञ्च मूलस्वराः सन्ति– AWES TGT–2010

(A) अ, इ, उ, ऋ, लृ (B) अ, आ, इ, ई, उ
(C) अ, इ, उ, ए, ओ (D) आ, ई, ऊ, ऐ, औ

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण एवं लेखन-रामगोपाल शर्मा, पेज–144*

247. संस्कृतभाषायां स्वराः सन्ति– REET–2016

(A) य् व् र् ल् (B) श् ष् स् ह्
(C) अ इ उ ऋ (D) ञ् म् ङ् न्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–17*

234. (A) **235.** (C) **236.** (B) **237.** (D) **238.** (C) **239.** (C) **240.** (D) **241.** (C) **242.** (C) **243.** (A) **244.** (C) **245.** (D) **246.** (A) **247.** (C)

248. (i) अधोलिखितेषु अन्तःस्थवर्णोऽस्ति– AWES TGT–2009,
(ii) कः ध्वनिः अन्तस्थः – CCSUM Ph.D–2016

(A) ल् (B) लृ
(C) ऋ (D) ॠ

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–17*

249. कः ध्वनिः तालव्यो न – AWES TGT–2009, 2010

(A) छ (B) य
(C) फ (D) श

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–16*

250. कः वर्णः दन्त्यः न – AWES TGT–2008

(A) व् (B) स्
(C) ध् (D) लृ

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–16*

251. 'ङ' का उच्चारणस्थान है– UGC 25 D–1996

(A) कण्ठतालु (B) कण्ठोष्ठ
(C) दन्त्योष्ठ (D) कण्ठनासिका

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–16*

252. (i) इनमें से दन्त्य वर्ण हैं– UGC 25 D–1999,
(ii) एतेषु दन्त्यवर्णः कः– JNU MET–2016

(A) क् ख् (B) च् छ्
(C) ट् ठ् (D) त् थ्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–16*

253. ऋटुरषाणां किं स्थानम्– UGC 25 J–2006, D–2007

(A) तालु (B) दन्तः
(C) जिह्वा (D) मूर्धा

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–16*

254. इचुयशानां किं स्थानम्– UGC 25 D–2006, 2009

(A) दन्ताः (B) मूर्धा
(C) मुखम् (D) तालु

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–16*

255. अकुहविसर्जनीयानाम् उच्चारणस्थानं किम्–
UGC 25 J–2009, 2010

(A) मूर्धा (B) ओष्ठः
(C) कण्ठः (D) तालु

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–16*

256. मूर्धन्यो भवति– UGC 25 J–2009

(A) प् (B) ड्
(C) ल् (D) न्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–16*

257. एते वर्णाः तालुस्थानीयाः सन्ति– UGC 25 J–2011

(A) इ उ ऋ लृ (B) अ क् ह् विसर्ग
(C) इ च् य् श् (D) ऋ ट् र् ष्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–16*

258. 'य्' वर्ण का उच्चारणस्थान है– UP PGT–2003

(A) कण्ठ (B) तालु
(C) मूर्धा (D) दन्त

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–16*

259. 'ग्' वर्ण का उच्चारणस्थान है– UP PGT–2003

(A) ओष्ठ (B) दन्त
(C) कण्ठ (D) तालु

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–16*

260. माहेश्वरसूत्रेषु हकारादिषु अकारः किमर्थः–
BHU AET–2012

(A) इत्-संज्ञार्थः (B) उच्चारणार्थः
(C) व्यर्थः (D) हल्प्रत्याहारे ग्रहणार्थः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–14*

261. 'ख्' कौन-सी ध्वनि है– UP PGT–2005

(A) मूर्धन्य (B) तालव्य
(C) दन्त्य (D) कण्ठ्य

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–16*

248. (A) **249.** (C) **250.** (A) **251.** (D) **252.** (D) **253.** (D) **254.** (D) **255.** (C) **256.** (B) **257.** (C)
258. (B) **259.** (C) **260.** (B) **261.** (D)

262. (i) 'लृ' वर्णस्य उच्चारणस्थानं किं वर्तते–
(ii) 'लृ' का उच्चारणस्थान है– UP TGT–2009, BHU B.Ed.–2013
(A) कण्ठ (B) दन्त
(C) तालु (D) मूर्धा
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–16*

263. 'अ' वर्ण का उच्चारणस्थान क्या है– BHU MET–2010
(A) तालु (B) दन्त
(C) कण्ठ (D) मूर्धा
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–16*

264. यकार का उच्चारणस्थान है– BHU MET–2010
(A) तालु (B) दन्त्योष्ठ
(C) कण्ठ (D) कण्ठतालु
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–16*

265. कः वर्णः मूर्धातः उच्चार्यते– BHU AET–2012
(A) अकारः (B) उकारः
(C) शकारः (D) षकारः
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–16*

266. जकारस्य उच्चारणस्थानं किम्– BHU AET–2012
(A) कण्ठः (B) मूर्धा
(C) नासिका (D) तालु
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–16*

267. 'इ' का उच्चारणस्थान है– BHU MET–2008
(A) कण्ठ (B) तालु
(C) मूर्धा (D) नासिका
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–16*

268. 'ल्' का उच्चारणस्थान है– BHU MET–2008
(A) कण्ठ (B) तालु
(C) दन्त (D) ओष्ठ
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–16*

269. 'ऋ' का उच्चारणस्थान है– UP TET–2013, BHU MET– 2008, 2012, H-TET–2014
(A) कण्ठ (B) तालु
(C) दन्त (D) मूर्धा
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–16*

270. कः ध्वनिः महाप्राणो न – AWES TGT–2008
(A) त् (B) ष्
(C) थ् (D) फ्
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–17*

271. (i) अनुस्वारस्य उच्चारणस्थानं किम्
(ii) 'अनुस्वार' का उच्चारणस्थान है– BHU MET–2008, JNU MET–2014
(A) तालु (B) दन्त
(C) मूर्धा (D) नासिका
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–17*

272. (i) वकारस्य उच्चारणस्थानं वर्तते?
(ii) वकार का उच्चारणस्थान है– BHU MET–2008, RPSC ग्रेड-I (PGT)–2014, CCSUM Ph.D–2016
(A) कण्ठ (B) तालु
(C) मूर्धा (D) दन्तोष्ठ
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–17*

273. निम्नलिखित वर्णों में से किस वर्ण का उच्चारण स्थान दन्तोष्ठ है? UP TET–2016
(A) व् (B) म्
(C) प् (D) क्
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–17*

274. 'लृतुलसानां' सूत्र है– UGC 25 J–2003
(A) कण्ठ का (B) दन्त का
(C) तालु का (D) मूर्धा का
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–16*

262. (B) **263.** (C) **264.** (A) **265.** (D) **266.** (D) **267.** (B) **268.** (C) **269.** (D) **270.** (A) **271.** (D) **272.** (D) **273.** (A) **274.** (B)

275. (i) विसर्गस्योच्चारणस्थानम् अस्ति

(ii) पाणिनीयशिक्षायां विसर्गस्योच्चारणस्थानम् अस्ति–

RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011, RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014, UP GDC–2014

(A) तालु (B) कण्ठः

(C) कण्ठोष्ठम् (D) दन्ताः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–16*

276. 'ट्' वर्ण का उच्चारणस्थान है–

RPSC ग्रेड-III (TGT)–2013, H-TET–2015

(A) कण्ठ (B) मूर्धा

(C) ओष्ठ (D) दन्त

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–16*

277. 'क' वर्ण का उच्चारणस्थान है– UP TET–2014

(A) मूर्धा (B) तालु

(C) कण्ठ (D) ओष्ठ

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–16*

278. 'ह्' का उच्चारणस्थान क्या है– BHU MET–2011

(A) कण्ठ (B) ओष्ठ

(C) दन्तमूल (D) मूर्धा

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–16*

279. इनमें से दो कण्ठ्यवर्ण हैं– UGC 73 D–2007

(A) ग् घ् (B) ज् झ्

(C) ड् ढ् (D) द् ध्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–16*

280. संस्कृतवर्णमालायाः उच्चारणस्थानानि वर्तन्ते–

RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014

(A) नव (B) एकादश

(C) अष्ट (D) पञ्च

स्रोत–*पाणिनीय शिक्षा-शिवराज आचार्यः कौण्डिन्न्यायन, पेज–88*

281. 'त' वर्गस्य उच्चारणस्थानम् अस्ति–

RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014

(A) ओष्ठौ (B) तालु

(C) दन्ताः (D) कण्ठः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–16*

282. वर्णों का उत्पत्तिस्थान है– UGC 73 J–2013

(A) अष्टौ (B) पञ्च

(C) चत्वारि (D) षट्

पाणिनीय शिक्षा (श्लोक-13)-शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पेज–88

283. निम्नलिखित में से कण्ठ से उच्चरित होने वाली ध्वनि है–

UP GDC–2008

(A) म् (B) त्

(C) ल् (D) अ

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–16*

284. अनुनासिक वर्णों का उच्चारण होता है–

UP TET–2013

(A) कण्ठ से (B) तालु से

(C) मुखनासिका से (D) दन्त से

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.8) - ईश्वरचन्द्र, पेज–10*

285. उच्चारणस्थान की दृष्टि से 'य्' वर्ण है–

UP GDC (H)–2012

(A) दन्त्य (B) मूर्धन्य

(C) तालव्य (D) कण्ठ्य

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–16*

286. 'ष' इति वर्णस्य उच्चारणस्थानमस्ति– DL–2015

(A) तालु (B) नासिका

(C) दन्ताः (D) मूर्धा

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–16*

287. 'स्' इति वर्णस्योच्चारणे कः बाह्यप्रयत्नः– DL–2015

(A) घोषः (B) अघोषः

(C) अल्पप्राणः (D) उदात्तः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–17*

275. (B) **276.** (B) **277.** (C) **278.** (A) **279.** (A) **280.** (C) **281.** (C) **282.** (A) **283.** (D) **284.** (C) **285.** (C) **286.** (D) **287.** (B)

288. 'उ' वर्ण का उच्चारणस्थान क्या है– BHU MET–2012

(A) कण्ठ (B) दन्त
(C) ओष्ठ (D) मूर्धा

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–16*

289. '≍क' तथा '≍ख' का उच्चारणस्थान है– UP PGT–2013

(A) कण्ठ (B) तालु
(C) ओष्ठ (D) जिह्वामूलीय

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–17*

290. निम्नलिखित में से ओष्ठ ध्वनि नहीं है– DL(H)–2015

(A) च् में (B) प् में
(C) भ् में (D) म् में

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–16*

291. 'श्' ध्वनि का उच्चारणस्थान है– UGC (H) D–2013

(A) मूर्धन्य (B) तालव्य
(C) दन्त्य (D) ओष्ठ्य

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–16*

292. 'छ्' ध्वनि का उच्चारणस्थान है– UGC (H) J–2007

(A) दन्त्य (B) ओष्ठ्य
(C) तालव्य (D) कण्ठ्य

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–16*

293. 'प' का उच्चारणस्थान है– BHU MET–2015

(A) ओष्ठ (B) जिह्वा
(C) नासिका (D) मूर्धा

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–16*

294. दन्त्येषु अन्तर्भवति– UGC 25 D–2007

(A) क् (B) प्
(C) ल् (D) म्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–16*

295. उच्चारणस्थानं कण्ठः अस्ति– AWES TGT–2010

(A) झ् (B) क्
(C) ल् (D) ध्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–16*

296. ओकारस्य उच्चारणस्थानं भवति– AWES TGT–2009

(A) कण्ठः (B) कण्ठोष्ठम्
(C) कण्ठतालू (D) तालु

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–16*

297. 'यण्' प्रत्याहार में होगा– UP TGT–2004

(A) य्, क्, व्, ल् (B) ष्, अ, र्, ल्
(C) य्, व्, र्, ल् (D) य्, र्, ल्, ष्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–10*

298. 'चर्' प्रत्याहार में निम्नलिखित वर्ण आते हैं– UP TGT–2005

(A) च्, ट्, त्, क्, प्
(B) च्, ट्, त्, क्, प्, श्, ष्, स्
(C) श्, ष्, स्
(D) श्, ष्, स्, ह्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–10*

299. अधोलिखित में कौन वर्ण 'झष्' प्रत्याहार में आता है– UP TGT–2010

(A) ख् (B) ज्
(C) ठ् (D) ध्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–10*

300. 'अक्' क्या है– BHU MET–2010

(A) प्रत्याहार (B) उपसर्ग
(C) वार्तिक (D) प्रत्यय

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–10*

301. लकारस्य कस्मिन् प्रत्याहारे ग्रहणं सम्भवति– BHU Sh.ET–2011

(A) अण् (B) अच्
(C) झल् (D) शल्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–10*

288. (C) **289.** (D) **290.** (A) **291.** (B) **292.** (C) **293.** (A) **294.** (C) **295.** (B) **296.** (B) **297.** (C) **298.** (B) **299.** (D) **300.** (A) **301.** (A)

302. प्रत्याहारे केषां ग्रहणं नेष्यते– BHU Sh. ET–2011

(A) अचाम् (B) अलाम्

(C) इताम् (D) आदिवर्णानाम्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–10*

303. 'अट्' प्रत्याहारे हकारग्रहणस्य किं प्रयोजनम्– BHU AET–2012

(A) दवो हसतीत्यत्र उत्वम् (B) अर्हेण इत्यत्र णत्वम्

(C) अभवदित्यत्र अडागमः (D) उच्चारणार्थः

लघुसिद्धान्तकौदी (भैमीव्याख्या भाग–1)-भीमसेन शास्त्री, पेज–585

304. 'हल्' क्या है– BHU MET–2008

(A) प्रत्याहार (B) प्रत्यय

(C) उपसर्ग (D) वार्तिक

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–11*

305. निम्नलिखित में से कौन सा प्रत्याहार सर्वाधिक वर्णों को परिगणित करता है– UP TET–2014

(A) अच् (B) यर्

(C) अश् (D) जश्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–10*

306. वर्गों के तीसरे वर्ण किस प्रत्याहार में आते हैं– UP TET–2014

(A) हश् (B) जश्

(C) शल् (D) झष्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–10*

307. किस प्रत्याहार में सभी स्वर आते हैं– UP TET–2014

(A) अल् (B) अच्

(C) अट् (D) अम्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–9*

308. 'उक्' प्रत्याहारे कति वर्णाः सन्ति– BHU B.Ed–2013

(A) य् व् र् ल् (B) ए ओ ऐ औ

(C) श् ष् स् र् (D) उ ऋ लृ

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–9*

309. 'जश्' प्रत्याहारे कस्य ग्रहणं सम्भवति– BHU Sh. ET–2013

(A) यकारस्य (B) अकारस्य

(C) मकारस्य (D) गकारस्य

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–10*

310. 'र'–प्रत्याहारे कस्य वर्णस्य संग्रहः– BHU Sh. ET–2013

(A) हकारस्य (B) लकारस्य

(C) वकारस्य (D) यकारस्य

स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (खण्ड-एक)-गोपालदत्त पाण्डेय, पेज–11*

311. 'हल् प्रत्याहार' में कितने वर्ण होते हैं– UP TGT–2013

(A) 33 (B) 34

(C) 35 (D) 36

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–11*

312. 'र' – प्रत्याहारः केन स्वीकृतः– BHU AET–2012

(A) दीक्षितेन (B) नागेशेन

(C) कैय्यटेन (D) वरदराजेन

स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (खण्ड एक)-श्रीगोपालदत्त पाण्डेय, पेज–15*

313. प्रत्याहारसूत्रेषु नवमं सूत्रमस्ति– JNU MET–2015

(A) हयवरट् (B) कपय्

(C) झभञ् (D) घढधष्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–13*

314. माहेश्वरसूत्राणामुपयोगिता किमर्थम्? BHU Sh. ET–2013

(A) सन्धिज्ञानाय

(B) वर्णज्ञानाय

(C) प्रत्याहारसिद्ध्यै

(D) व्याकरणज्ञानाय

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–2*

302. (C) 303. (B) 304. (A) 305. (B) 306. (B) 307. (B) 308. (D) 309. (D) 310. (B) 311. (A) 312. (A) 313. (D) 314. (C)

315. अधोनिर्दिष्टानां समीचीनां तालिकां विचिनुत–

(अ) अभिनिविशश्च **1. तुल्यास्यप्रयत्नम्**
(ब) अपृक्त **2. बहुव्रीहिः**
(स) चित्रगुः **3. कर्मसंज्ञा**
(द) सवर्णम् **4. एकाल् प्रत्ययः**

UGC 25 J–2012

	अ	ब	स	द
(A)	2	1	3	4
(B)	1	2	4	3
(C)	3	4	2	1
(D)	4	3	1	2

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.9, 1.2.41, 1.4.1.47, 5.4.11) -ईश्वरचन्द्र*

316. यञ्-प्रत्याहारे कः नास्ति? **CVVET–2015**

(A) म (B) भ
(C) ढ (D) व

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–10*

317. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत–

(अ) सवर्णम् **1. उपसर्जनं पूर्वम्**
(ब) नदी **2. हेतौ**
(स) अधिहरि **3. तुल्यास्यप्रयत्नम्**
(द) दण्डेन घटः **4. यू स्त्र्याख्यौ**

UGC 25 S–2013

	अ	ब	स	द
(A)	1	2	3	4
(B)	2	3	4	1
(C)	3	4	1	2
(D)	4	1	3	2

स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.2.30, 2.3.23, 1.1.9, 1.4.3.) - ईश्वरचन्द्र, पेज–190, 11, 201, 109*

318. कौन सा कथन गलत है– **UK TET–2013**

(A) संस्कृत में वचनों की संख्या है–तीन
(B) संस्कृत में पुरुषों की संख्या है–तीन
(C) संस्कृत में लिङ्गों की संख्या है–तीन
(D) संस्कृत में कारकों की संख्या है–तीन

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (खण्ड–2) - गोविन्दाचार्य, पेज–172*

319. समीचीनम् उत्तरं चिनुत– **UGC 25 D–2014**

(अ) यणः **1. स्पर्शाः**
(ब) शलः **2. प्रातिपदिकम्**
(स) कादयो मावसानाः **3. अन्तःस्थाः**
(द) अर्थवदधातुरप्रत्ययः **4. ऊष्माणः**

	अ	ब	स	द
(A)	4	3	1	2
(B)	3	4	1	2
(C)	2	3	1	4
(D)	1	3	4	2

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–17*

320. 'संस्कृत' शब्दस्याऽशयोऽस्ति– **DL–2015**

(A) संस्कारसहितम् (B) सुभूषितम्
(C) सत्कृतम् (D) समाविष्टम्

स्रोत–*संस्कृत हिन्दी कोश - वामन-शिवराम आप्टे, पेज–1051*

321. संस्कृत के वे शब्द जो हिन्दी में ज्यों के त्यों प्रयुक्त होते हैं– **DL (H)–2015**

(A) तद्भव (B) तत्सम
(C) सङ्कर (D) देशज

स्रोत–*हिन्दी शब्द-अर्थ-प्रयोग - हरदेवबाहरी, पेज–96*

322. 'अनचि च' इति सूत्रे कीदृशः प्रतिषेधः– **BHU AET–2011**

(A) पर्युदासः (B) प्रसज्यः
(C) अल्पार्थकः (D) अप्राशस्त्यार्थकः

स्रोत–*अष्टाध्यायी 8.4.46 - ईश्वरचन्द्र, पेज–1095*

323. 'ङिच्च' इति सूत्रमस्ति– **BHU AET–2011**

(A) अधिकारसूत्रम् (B) विधिसूत्रम्
(C) परिभाषासूत्रम् (D) नियमसूत्रम्

स्रोत–*अष्टाध्यायी 1.1.52 - ईश्वरचन्द्र, पेज–31*

324. 'सार्वधातुकमपित्' इति सूत्रम् अस्ति– **BHU AET–2011**

(A) संज्ञासूत्रम् (B) विधिसूत्रम्
(C) अतिदेशसूत्रम् (D) परिभाषासूत्रम्

स्रोत–*अष्टाध्यायी 12.4 - ईश्वरचन्द्र, पेज–55*

315. (C) **316.** (C) **317.** (C) **318.** (D) **319.** (B) **320.** (A) **321.** (B) **322.** (B) **323.** (C) **324.** (C)

325. 'अनेकान्ता' इत्यस्य कोऽर्थः– BHU AET–2012

(A) उच्चारिताः (B) अवयवाः
(C) अनुच्चारिताः (D) अनवयवाः

स्रोत–*परिभाषेन्दुशेखरः - आचार्य विश्वनाथ मिश्र, पेज–20*

326. 'एकः पूर्वपरयोः' इति कीदृशं सूत्रम्– BHU AET–2012

(A) संज्ञा (B) परिभाषा
(C) विधिः (D) अधिकारः

स्रोत–*अष्टाध्यायी (6.1.81) - ईश्वरचन्द्र, पेज–686*

327. (i) यत्रानेकविधमान्तर्यं तत्र कीदृशमान्तर्यं बलीयः–
(ii) यत्रानेकविधमान्तर्यं तत्र कस्य ग्रहणम्– BHU AET–2011, 2012

(A) प्रमाणकृतस्य (B) गुणकृतस्य
(C) स्थानकृतस्य (D) अर्थकृतस्य

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–31*

328. 'लोटो लङ्वत्' इति सूत्रमस्ति? JNU M.Phil/Ph.D–2014

(A) अधिकारसूत्रम् (B) संज्ञासूत्रम्
(C) नियमसूत्रम् (D) अतिदेशसूत्रम्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–401*

329. उपधासंज्ञा केन सूत्रेण भवति? CCSUM Ph.D–2016

(A) अलोऽन्त्यात् पूर्व उपधा (B) अत उपधायाः
(C) उपधायाश्च (D) उपधायां च

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–175*

330. रेफः कस्मिन् वर्गे विद्यते– CCSUM Ph.D–2016

(A) स्पर्शः (B) अन्तस्थः
(C) ऊष्मः (D) अनुनासिकः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–17*

331. अधोलिखितेषु दन्त्यवर्णौ– CCSUM Ph.D–2016

(A) छ झ (B) द ध
(C) ब भ (D) ख ग

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–17*

325. (D) **326.** (D) **327.** (C) **328.** (D) **329.** (A) **330.** (B) **331.** (B)

2. सन्धि-प्रकरण

1. (i) सन्धि है– UP TGT–2003
(ii) सन्धि कहते हैं– UP TET–2013
(A) दो पदों का मेल (B) दो वर्णों का मेल
(C) दो दूरवर्ती पदों का मेल (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–44*

2. सन्धि कहाँ आवश्यक नहीं मानी जाती है– UP GIC–2009
(A) एकपद में (B) धातूपसर्ग में
(C) समास में (D) वाक्य में

स्रोत–*(i) संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–45*
(ii) लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड–1), पेज–35

3. व्याकरणे संहिता पदेन सूच्यते? RPSC ग्रेड-I (PGT)–2014
(A) सन्धिः (B) समासः
(C) लोपः (D) कारकः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–29*

4. सन्धि के कारण हो सकता है– UP TGT–2003
(A) लोप (B) कोई नया वर्ण
(C) दो में से एक का द्वित्व (D) उपर्युक्त तीनों परिवर्तन

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–45*

5. अच् सन्धि कहते हैं– UP TGT–2003
(A) व्यञ्जनसन्धि को (B) स्वरसन्धि को
(C) विसर्गसन्धि को (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड–1), पेज–34*

6. हल्सन्धि में विकार होता है– UP TGT–2004
(A) व्यञ्जन का (B) स्वर का
(C) विसर्ग का (D) उपर्युक्त तीनों का

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड–1), पेज–98*

7. वाक्य में सन्धि करना अथवा न करना है– UP TGT –2004
(A) ऐच्छिक (B) निषिद्ध
(C) उपर्युक्त दोनों (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–45*

8. धातु और उपसर्ग में सन्धि करना है– UP TGT –2004
(A) ऐच्छिक (B) अनिवार्य
(C) निषिद्ध (D) उपर्युक्त तीनों

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–45*

9. संहिता का तात्पर्य है– UP TGT –2004
(A) श्रेष्ठ पदीयता (B) पदार्थ-सम्बन्ध
(C) परः सन्निकर्षः (D) वाक्यार्थ-सम्बन्ध

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–44*

10. हल्-सन्धि कहते हैं– UP TGT –2005
(A) स्वरसन्धि को (B) व्यञ्जनसन्धि को
(C) विसर्गसन्धि को (D) मुखसन्धि को

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड–1), पेज–98*

11. सन्धि है– UP TGT –2010
(A) पदविधि (B) वर्णविधि
(C) इनमें से दोनों (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–44*

12. 'निमज्जतीन्दोर्किरणेष्विवाङ्कः' इत्यत्र कति सन्धिस्थलानि सन्ति? BHU Sh. ET–2011
(A) त्रीणि (B) द्वे
(C) पञ्च (D) चत्वारि

स्रोत–*(i) अष्टाध्यायी (6.1.97, 6.1.74) - ईश्वरचन्द्र*
(ii) कुमारसम्भवम् 1/3

1. (B) 2. (D) 3. (A) 4. (D) 5. (B) 6. (A) 7. (A) 8. (B) 9. (C) 10. (B) 11. (B) 12. (D)

13. संहिता कुत्र विवक्षाधीना भवति? BHU AET–2012

(A) समासे (B) वाक्ये

(C) एकपदे (D) धातूपसर्गयोः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–45*

14. व्याकरण से सम्बन्धित सन्धि नहीं है–

UP TET–2013, UGC 25 J–2004

(A) मुखसन्धि (B) स्वरसन्धि

(C) व्यञ्जनसन्धि (D) विसर्गसन्धि

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–46*

15. सन्धि निम्नलिखित में से किनमें अवश्य करनी चाहिए?

UP TGT–2013

(A) एकपद में (B) धातु तथा उपसर्ग के मध्य

(C) समास में (D) उपर्युक्त सभी में

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–45*

16. 'अवङ्'-आदेशः कस्य स्थाने भवति– HE–2015

(A) आद्यस्य (B) सर्वस्य

(C) अन्त्यस्य (D) मध्यस्य

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड–1), पेज–79*

17. 'दध्यत्र' शब्दस्य सन्धिविच्छेदः अस्ति–

MP वर्ग-2 (TGT)–2011, UK TET–2011

(A) द + ध्यत्र (B) दध् + यत्र

(C) दधि + अत्र (D) दध्य + त्र

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–50*

18. 'इत्यादयः' में सन्धि है–

MP वर्ग-2 (TGT)–2011, UK TET–2011

(A) यण् (B) दीर्घ

(C) गुण (D) वृद्धि

स्रोत–*संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–186*

19. 'इति + आदि' इत्यत्र सन्धिः वर्तते? REET–2016

(A) गुणसन्धि (B) वृद्धिसन्धिः

(C) उपपदसन्धिः (D) यण्सन्धिः

स्रोत–*संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–186*

20. 'लृ + आकृतिः' इत्यत्र सन्धिः स्यात्–

RPSC वर्ग-I (PGT)–2011

(A) गुणसन्धिः (B) दीर्घसन्धिः

(C) यण्सन्धिः (D) पररूपसन्धिः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–50*

21. 'धात्रंशः' अस्मिन् पदे सन्धिः अस्ति–

MP वर्ग-I (PGT)–2012

(A) गुणसन्धिः (B) वृद्धिसन्धिः

(C) यण्सन्धिः (D) दीर्घसन्धिः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–50*

22. अधोलिखितेषु यण्सन्धेः रूपं विद्यते–

RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014

(A) प्रत्युपकारः (B) गङ्गौघः

(C) मार्तण्डः (D) विद्यालयः

स्रोत–*संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–187*

23. यण्सन्धि होगी जब– UP TGT–2004

(A) आ + ई (B) इ + ई

(C) अ + ए (D) इ + अ

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–49*

24. 'पितृ + आकृतिः' का शुद्ध सन्धिरूप है–

UP TGT–2005

(A) पितृ आकृतिः (B) पतिकृतिः

(C) पित्राकृतिः (D) पितराकृतिः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–50*

25. 'मधु + अरिः' इत्यस्य सन्धिपदं निर्णेयम्–

RPSC ग्रेड-I (PGT)–2014

(A) मधूरिः (B) मधारिः

(C) मध्वारिः (D) मध्वरिः

लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड–1)-भीमसेन शास्त्री, पेज–44

13. (B)	**14. (A)**	**15. (D)**	**16. (C)**	**17. (C)**	**18. (A)**	**19. (D)**	**20. (C)**	**21. (C)**	**22. (A)**
23. (D)	**24. (C)**	**25. (D)**							

26. यणसन्धि का उदाहरण है– UP TGT–2010

(A) विद्या + आलयः = विद्यालयः
(B) गङ्गा + ओघः = गङ्गौघः
(C) गुरु + आदेशः = गुर्वादेशः
(D) महा + इन्द्रः = महेन्द्रः

स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–50

27. 'यद्यपि' पद में कौन-सी सन्धि है? UGC 73 D–2005

(A) यण्सन्धिः (B) दीर्घसन्धिः
(C) हल्सन्धिः (D) विसर्गसन्धिः

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड–1), पेज–45

28. 'लाकृतिः' इसमें सन्धिविधायक सूत्र है– UGC 73 J–2006

(A) वृद्धिरेचि (B) इको यणचि
(C) उरण् रपरः (D) आद् गुणः

स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–50

29. 'धातृ + अंशः' में सन्धि कीजिए– RPSC ग्रेड-III–2013

(A) धातरंशः (B) धातुरंशः
(C) धात्रंशः (D) धातोरंशः

स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–50

30. 'सुध्युपास्यः' में कौन-सी सन्धि है? BHU MET–2008

(A) हल्सन्धि (B) विसर्गसन्धि
(C) प्रकृतिभावसन्धि (D) अच्सन्धि

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड–1), पेज–44

31. यण्सन्धि कहाँ है? BHU MET–2008

(A) उपेन्द्रः (B) नायकः
(C) लाकृतिः (D) रामायणम्

स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–50

32. अधोलिखितेषु कः एकादेशः? BHU Sh. ET–2011

(A) यणः (B) पूर्वरूपम्
(C) विसर्गः (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड–1), पेज–34

33. 'आद्यन्तम्' पद का सन्धिविच्छेद है– RPSC ग्रेड-III–2013

(A) आद्य + अन्तम् (B) आदी + अन्तः
(C) आदि + अन्तम् (D) आद्या + अन्तम्

स्रोत–संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–186

34. 'दध्यत्र' में सन्धि है– UGC 73 D–1994

(A) यण् (B) गुण
(C) वृद्धि (D) पूर्वरूप

स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–50

35. 'पित्रर्थः' का सन्धि-विच्छेद है– UGC 73 D–1997

(A) पितृ + अर्थः (B) पिता + अर्थः
(C) पित्रा + अर्थः (D) पितॄ + अर्थः

स्रोत–संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषण, पेज–189

36. 'अत्यधिक' में सन्धि है– UP TET–2013

(A) गुणसन्धि (B) वृद्धिसन्धि
(C) यण्सन्धि (D) हल्सन्धि

स्रोत–संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–185

37. 'अन्वय' शब्द का सन्धि-विच्छेद है– UP PCS–2015

(A) अनु + अय (B) अनु + आय
(C) अनू + अय (D) अनू + आय

स्रोत–संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–188

38. 'पाठतोऽप्यनभ्यासः' = ? AWES TGT–2013

(A) पाठतः + अपि + अनभ्यासः
(B) पाठतो + ओपि + अनभ्यासः
(C) पाठतोपि + अभ्यासः
(D) पाठतोऽप्य + नभ्यासः

अष्टाध्यायी (6.1.109 और 6.1.74)-ईश्वरचन्द्र, पेज–684, 694

26. (C) **27.** (A) **28.** (B) **29.** (C) **30.** (D) **31.** (C) **32.** (A) **33.** (C) **34.** (A) **35.** (A)
36. (C) **37.** (A) **38.** (A)

39. 'पठत्वत्र' इत्यत्र सन्धिविच्छेदः निर्णेयः– **RPSC ग्रेड I (PGT)–2014**

(A) पठ + त्वत्र (B) पठतु + अत्र

(C) पठत्व + त्र (D) पठत् + वत्र

स्रोत–*अष्टाध्यायी (6.1.74) - ईश्वरचन्द्र, पेज–684*

40. 'इन्द्रियाण्यादौ = ? **AWES TGT–2013**

(A) इन्द्रियाण् + आदौ (B) इन्द्रियाणि + आदौ

(C) इन्द्रियाण्य + यादौ (D) इन्द्रिय + णियादौ

स्रोत–*अष्टाध्यायी (6.1.74) - ईश्वरचन्द्र, पेज–684*

41. 'इति + आदयः' = ? **AWES TGT–2013**

(A) इति आदयः (B) इतियादयः

(C) इत्यादयः (D) इत्आदयः

स्रोत–*संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–186*

42. 'गुरु + आदेशः' में सन्धि होने पर बनता है– **UP TGT –2013**

(A) गुरुदेशः (B) गुरादेशः

(C) गुर्वादेशः (D) गुरोदेशः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–50*

43. 'सुध्युपास्यः' में सन्धि है– **BHU MET–2012**

(A) हल्सन्धि (B) विसर्गसन्धि

(C) अच्सन्धि (D) प्रकृतिभावसन्धि

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी भैमी व्याख्या (खण्ड–1), पेज–44*

44. किस उदाहरण में यण्सन्धि है? **BHU MET–2009**

(A) उपेन्द्रः (B) नायकः

(C) विद्यालयः (D) धात्रंशः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–50*

45. 'साधु + इति' में सन्धि होने पर बनता है– **UP TGT –2013**

(A) साधोइति (B) साध्विति

(C) साधूति (D) साधुरिति

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–50*

46. 'प्रत्येक' का सन्धि-विच्छेद होगा– UP TGT (H)– 2013

(A) प्रत्य + एक (B) प्रति + एक

(C) प्रति + ऐक (D) प्रत्ये + एक

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड–1) पेज–46*

47. 'प्रत्यक्षम्' में सन्धि है– **UP TGT (H)–2002**

(A) गुणसन्धि (B) दीर्घसन्धि

(C) अयादिसन्धि (D) यण्सन्धि

स्रोत–*अष्टाध्यायी (6.1.74) - ईश्वरचन्द्र, पेज–684*

48. यदि इ, उ, और ऋ के बाद कोई भिन्न स्वर आने पर परिवर्तन क्रमशः य् व् र् में हो तो कौन-सी सन्धि होगी? **UP TGT (H)–2003**

(A) गुणस्वरसन्धि (B) यण्स्वरसन्धि

(C) वृद्धिस्वरसन्धि (D) अयादिस्वरसन्धि

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–49*

49. 'सु + आगतम्' में कौन-सी सन्धि है? **UP TGT (H)–2005, UP PGT (H)–2005**

(A) गुणसन्धि (B) अयादिसन्धि

(C) वृद्धिसन्धि (D) यण्सन्धि

स्रोत–*संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–189*

50. 'इत्यादि' शब्द का सही सन्धि-विच्छेद होगा– **UP TGT (H)–2005, 2009**

(A) इति + आदि (B) इत्य + आदि

(C) इति + यादि (D) इत + आदि

स्रोत–*संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–186*

51. 'स्वस्त्यस्तु' का सन्धि-विच्छेद होगा– **UP TGT (H)–2009**

(A) स्वस्ति + अस्तु (B) स्वः + अस्त्यस्तु

(C) स्वस्त्य + अस्तु (D) स्व + सत्यस्तु

स्रोत–*अष्टाध्यायी (6.1.74) - ईश्वरचन्द्र, पेज–684*

52. 'प्रति + आरोपण' = ? **UP TGT (H)–2010**

(A) प्रति आरोपण (B) प्रतिरोपण

(C) प्रत्यारोपण (D) प्रत्आरोपण

स्रोत–*अष्टाध्यायी (6.1.74) - ईश्वरचन्द्र, पेज–684*

39. (B) **40.** (B) **41.** (C) **42.** (C) **43.** (C) **44.** (D) **45.** (B) **46.** (B) **47.** (D) **48.** (B)
49. (D) **50.** (A) **51.** (A) **52.** (C)

53. 'अन्वेषण' का शुद्ध सन्धि-विच्छेद है– UP PGT (H)–2004

(A) अन्वेष + ण (B) अन्वे + षण

(C) अनु + वेषण (D) अनु + एषण

स्रोत–*संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–188*

54. 'यण् सन्धि' का सम्बन्ध किस सन्धि विशेष से है? UP PGT (H)–2004

(A) व्यञ्जनसन्धि से (B) विसर्गसन्धि से

(C) स्वरसन्धि से (D) दीर्घसन्धि से

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–49*

55. 'व्याप्तः' में सन्धि है– UP PGT (H)–2009

(A) गुणसन्धि (B) दीर्घसन्धि

(C) अयादिसन्धि (D) यण्सन्धि

स्रोत–*संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–187*

56. 'धात्रंशः' का अर्थ है– BHU MET–2015

(A) शक्ति का अंश (B) धातु का अंश

(C) आँवला का अंश (D) ब्रह्मा का अंश

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड-1), पेज–45*

57. 'शिश्वंग, स्मृत्यादेश' किस सूत्र के उदाहरण है? H-TET–2015

(A) वृद्धिरादैच् (B) अदेङ्गुणः

(C) झलां जश् झशि (D) इको यणचि

स्रोत–*संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–187*

58. 'किरणेष्विवाङ्कः'– AWES TGT–2012

(A) किरणो + इष्व + आङ्क (B) किरणः + इष्वेसु + वाङ्क

(C) किरणेषु + इव + अङ्कः (D) किरणे + ओष्व + अङ्कः

स्रोत–*अष्टाध्यायी (6.1.74. 6.1.97)-ईश्वरचन्द्र, पेज–684, 691*

59. 'इत्याख्यः'– AWES TGT–2012

(A) इत्या + आख्यः (B) इत्य + आख्यः

(C) इति + आख्यः (D) इति + याख्यः

स्रोत–*अष्टाध्यायी (6.1.74) - ईश्वरचन्द्र, पेज–684*

60. 'इति + अभिधानेन' = AWES TGT–2012

(A) इत्यभिधानेन (B) इत्याभिधानेन

(C) इतिभिधानेन (D) इतियाभिधानेन

स्रोत–*अष्टाध्यायी (6.1.74) - ईश्वरचन्द्र, पेज–684*

61. 'देव्युवाच' = ? AWES TGT–2010

(A) देव + उवाच (B) देवी + उवाच

(C) देव्य + उवाच (D) देव्यु + उवाच

स्रोत–*संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–186*

62. 'मात्रनुमतिः' = ? AWES TGT–2008

(A) मात्र + नुमतिः (B) मातृ + अनुमतिः

(C) मातर् + अनुमतिः (D) मात्रन् + उमतिः

स्रोत–*संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–189*

63. ''लाकृतिः'' इसका सन्धि विच्छेद है– UGC 73 J–1998

(A) लृ + आकृतिः (B) ला + आकृतिः

(C) लृ + कृतिः (D) ल + आकृतिः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–50*

64. ''पित्राकृतिः'' का शुद्ध सन्धि-विच्छेद है– UP PGT (H)–2009

(A) पितॄ + अकृतिः (B) पित्र + आकृतिः

(C) पित्रृ + आकृतिः (D) पितृ + आकृतिः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–50*

65. ''रीत्यनुसार'' शब्द का सन्धि-विच्छेद क्या होगा? RLP–2015

(A) रीत + अनुसार (B) रीति + अनुसार

(C) रीत्य + अनुसार (D) रीतु + अनुसार

स्रोत–*संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–187*

66. 'लोपः शाकल्यस्य' सूत्रेण प्रतिपादितं पदम् अस्ति– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011

(A) हर इह (B) हरे इह

(C) हरि इह (D) हरौ इह

लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड–1)-भीमसेन शास्त्री, पेज–56

53. (D)	**54. (C)**	**55. (D)**	**56. (D)**	**57. (D)**	**58. (C)**	**59. (C)**	**60. (A)**	**61. (B)**	**62. (B)**
63. (A)	**64. (D)**	**65. (B)**	**66. (A)**						

67. 'भावुकः' का सन्धि-विच्छेद है– UP TET–2014

(A) भौ + आवुकः (B) भो + वुकः
(C) भाव + उकः (D) भौ + उकः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड–1), पेज–49*

68. 'भावकः' पदस्य सन्धि-विच्छेद अस्ति– RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014

(A) भो + अकः (B) भौ + अकः
(C) भावि + अकः (D) भू + अकः

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–215*

69. 'नायकः' का सन्धि-विच्छेद है– UP TGT–2003, UP TET–2016

(A) ना + अकः (B) ने + अकः
(C) न + अकः (D) नै + अकः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–50*

70. 'स्वरसन्धि' में अय् होगा– UP TGT–2004

(A) ए + अ (B) ऐ + अ
(C) ओ + अ (D) औ + अ

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–50*

71. 'नयन' शब्द का सन्धिविच्छेद होगा– UP TGT–2004

(A) नौ + आय (B) नै + अन
(C) नो + अन (D) ने + अन

स्रोत–*संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–191*

72. 'पावकः' का सन्धि-विच्छेद है– UP TGT–2001, 2005, 2009, UP TET–2014

(A) पा + अकः (B) पो + अकः
(C) पै + अकः (D) पौ + अकः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–50*

73. 'ओ' के उपरान्त यदि कोई स्वर आवे तो उसके स्थान पर हो जाता है– UP TGT–2009

(A) अय् (B) अव्
(C) आय् (D) आव्

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–50*

74. 'वान्तो यि प्रत्यये' का उदाहरण है– UP GDC–2008, BHU MET–2015

(A) नायकः (B) नाव्यम्
(C) पावकः (D) विष्णवे

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–51*

75. 'गव्यम्, नाव्यम्' यह पद किस सूत्र से निष्पन्न होंगे? H-TET–2015

(A) अचो यत् (B) एचोऽयवायावः
(C) अध्वपरिमाणे च (D) वान्तो यि प्रत्यये

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–41*

76. निम्नलिखित में से अच् सन्धि का उदाहरण है– UP GDC–2008

(A) तट्टीका (B) शिवोऽर्च्यः
(C) पावकः (D) विश्नः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–50*

77. 'गवेन्द्रः' इत्यत्र कः मौलिकविच्छेदः? BHU Sh. ET–2011

(A) गवि + इन्द्रः (B) गो + इन्द्रः
(C) गव + इन्द्रः (D) गवे + इन्द्रः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–51*

78. 'गो + अग्रम्' इसका सन्धिरूप है– UGC 73 J–1998

(A) गवग्रम् (B) गावग्रम्
(C) गवाग्रम् (D) गोअग्रम्

स्रोत–*(i) संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–192*
(ii) संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–51

79. पो + इत्रः = ? AWES TGT–2010

(A) पवुत्रः (B) पवित्रः
(C) पोइत्रः (D) पवीत्रः

स्रोत–*संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–192*

80. 'पवित्रम्' में सन्धि-विच्छेद कीजिये? UP TET–2016

(A) पो + इत्रम् (B) पौ + इत्रम्
(C) पव + इत्रम् (D) पा + इत्रम्

स्रोत–*संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–192*

67. (D) **68.** (B) **69.** (D) **70.** (A) **71.** (D) **72.** (D) **73.** (B) **74.** (B) **75.** (D) **76.** (C) **77.** (B) **78.** (C) **79.** (B) **80.** (A)

81. 'हरे + ए' सन्धि होकर कौन-सा शुद्ध रूप बनेगा? **BHU RET–2012**

(A) हरौ (B) हरये
(C) हरए (D) हरयः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–50*

82. 'तौ + अवदताम्' = ? **AWES TGT–2013**

(A) तावvदताम् (B) तौववदताम्
(C) तावरवदताम् (D) तावौवदताम्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (6.1.75) - ईश्वरचन्द्र, पेज–684*

83. 'पावन' शब्द का सन्धि-विच्छेद होगा– **DL (H)–2015**

(A) पा + वन (B) पो + अन
(C) पौ + अन (D) प + वन

स्रोत–*संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–193*

84. 'पवन' शब्द में सन्धि है– **UP PGT (H)–2003**

(A) गुणसन्धि (B) यणसन्धि
(C) अयादिसन्धि (D) वृद्धिसन्धि

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड-1), पेज–49*

85. यदि ए, ओ, ऐ, औ के आगे कोई भी स्वर हो तो इसके स्थान में क्रमशः अय्, अव्, आय्, आव् हो जाता है तो यह कौन सी स्वरसन्धि कहलाती है? **UP PGT (H)–2004**

(A) वृद्धिस्वरसन्धि (B) अयादिस्वरसन्धि
(C) यण्स्वरसन्धि (D) दीर्घस्वरसन्धि

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–50*

86. 'विष्णवे' का सन्धि विच्छेद है– UP PGT (H)–2005

(A) विष्णु + ए (B) विष्णो + ए
(C) विष्णु + अए (D) विष्णु + अवे

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–50*

87. 'पवन' का शुद्ध सन्धि-विच्छेद है– **UP PGT (H)–2010**

(A) पो + अन (B) पव + अन्
(C) पः + अवन (D) पव + न्

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–50*

88. 'विष्ण इह' इत्यत्र केन सूत्रेण 'य्' लोपो भवति? **BHU AET–2012**

(A) लोपः शाकल्यस्य (B) रो रि
(C) हलि सर्वेषाम् (D) भो-भगो-अघो......

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–50*

89. उभावपि इत्यत्र पदच्छेदः– **CVVET–2015**

(A) उभा + वपि (B) उभौ + अपि
(C) उभा + अपि (D) उभाव + पि

स्रोत–*अष्टाध्यायी (6.1.75) - ईश्वरचन्द्र, पेज–684*

90. अयादिसन्धि विधायकं सूत्रं वर्तते– UP GIC–2015

(A) एचोऽयवायावः (B) इको यणचि
(C) अनचि च (D) लोपः शाकल्यस्य

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–50*

91. 'वटो + ऋक्षः' = ? **AWES TGT–2008**

(A) वटवृक्षः (B) वटोर्क्षः
(C) वट ऋक्षः (D) वटः वृक्षः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड-1), पेज–49*

92. स्वरसन्धि का परिणाम 'ओ' होगा– UP TGT–2003

(A) यदि 'अ' या 'आ' के बाद 'उ' या 'ऊ' हो
(B) यदि 'अ' या 'आ' के बाद 'इ' या 'ई' हो
(C) यदि 'अ' या 'आ' के बाद 'ऋ' या 'ॠ' हो
(D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–47*

93. यदि 'अ' या 'आ' के बाद 'इ' या 'ई' आए तो होगा– **UP TGT–2003**

(A) ए (B) ऐ
(C) ओ (D) औ

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–47*

94. ''प्रणम्योपविष्टः'' अत्र सन्धिरस्ति– **MP वर्ग-2 (TGT)–2011, UK TET–2011**

(A) यण्सन्धिः (B) गुणसन्धिः
(C) दीर्घसन्धिः (D) वृद्धिसन्धिः

स्रोत–*अष्टाध्यायी (6-1-84) - ईश्वरचन्द्र, पेज–686*

81. (B)	**82.** (A)	**83.** (C)	**84.** (C)	**85.** (B)	**86.** (B)	**87.** (A)	**88.** (A)	**89.** (B)	**90.** (A)
91. (A)	**92.** (A)	**93.** (A)	**94.** (B)						

95. ''ब्रह्मर्षिः'' शब्द में सन्धि है– UP TET–2014

(A) दीर्घसन्धि (B) अयादिसन्धि
(C) गुणसन्धि (D) हल्सन्धि

स्रोत–*संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–185*

96. 'तथेति' का सन्धि-विच्छेद होगा– UP TGT–2009

(A) तथ + इति (B) तथा + तेति
(C) तथा + इति (D) तथा + इत

स्रोत–*संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–182*

97. 'हितोपदेशः' में किससे सन्धि की गई है– UP TET–2013, 2014

(A) वृद्धिरेचि (B) झलां जश् झशि
(C) आद्गुणः (D) अकः सवर्णे दीर्घः

स्रोत–*(i) संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–185*
(ii) अष्टाध्यायी (6-1-84) - ईश्वरचन्द्र, पेज–686

98. स्वर सन्धि में 'अर्' होगा– UP TGT–2003

(A) यदि 'ऋ' के बाद 'अ' आये
(B) यदि 'अ' के बाद 'ऋ' आए
(C) यदि 'अ' के बाद 'उ' आए
(D) यदि 'अ' के बाद 'इ' आए

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–47*

99. 'गङ्गोदकम्' का सन्धि-विच्छेद है– UP TGT–2004, MP वर्ग-2 (TGT)–2011 UK TET–2011, UP TET–2016

(A) गङ्गा + उदकम् (B) गङ्गो + उदकम्
(C) गङ्ग + उदकम् (D) गङ्गा + ओदकम्

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–47*

100. यदि 'अ' या 'आ' के बाद 'उ' या 'ऊ' आये तो होगा– UP TGT–2005

(A) ए (B) ऐ
(C) ओ (D) औ

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–47*

101. 'तव + लृकार' इस सन्धि के रूप होते हैं– UGC 73 J–2009

(A) षट् (B) त्रीणि
(C) पञ्च (D) चत्वारि

स्रोत–*वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी - गोपालदत्त पाण्डेय, पेज–102*

102. निम्नलिखित में से किसमें 'आद्गुणः' सूत्र से सन्धि है? UP GDC–2008

(A) पावकः (B) सूर्योदयः
(C) विद्यालयः (D) इत्यादिः

स्रोत–*(i) लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड-1), पेज–54*
(ii) लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–45

103. 'गङ्गोदकम्' इत्यत्र कः सन्धिः UP GDC–2008

(A) दीर्घः (B) वृद्धिः
(C) गुणः (D) यण्

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–47*

104. 'नागेन्द्रः' में कौन-सी सन्धि है? BHU MET–2010

(A) वृद्धिसन्धि (B) गुणसन्धि
(C) यण्सन्धि (D) दीर्घसन्धि

स्रोत–*संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–182*

105. कृष्णर्द्धिः इत्यत्र? CVVET–2015

(A) गुणसन्धिः (B) वृद्धिसन्धिः
(C) यणादेशः (D) पररूपम्

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–47*

106. गुणसन्धि किस उदाहरण में है– BHU MET–2008

(A) हरेऽव (B) गङ्गोदकम्
(C) धावकः (D) सुध्युपास्यः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–47*

107. गुण सन्धि कहाँ है? BHU MET–2008

(A) हरेऽव (B) रमेशः
(C) नायकः (D) सुध्युपास्यः

स्रोत–*(i) संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–47*
(ii) अष्टाध्यायी (6.1.84) - ईश्वरचन्द्र, पेज–686

95. (C) **96.** (C) **97.** (C) **98.** (B) **99.** (A) **100.** (C) **101.** (D) **102.** (B) **103.** (C) **104.** (B) **105.** (A) **106.** (B) **107.** (B)

108. 'उपेन्द्रः' में कौन-सी सन्धि है? BHU MET–2008, 2015

(A) गुणसन्धि (B) हल्सन्धि
(C) विसर्गसन्धि (D) वृद्धिसन्धि

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–47*

109. गुणसन्धि विधायक सूत्र है– RPSC ग्रेड-III–2013

(A) आद्गुणः (B) अदेङ्गुणः
(C) एङि पररूपम् (D) अचोऽन्त्यादि टि

स्रोत–*अष्टाध्यायी (6.1.84) - ईश्वरचन्द्र, पेज–686*

110. 'रमेशः' में सन्धि है– UGC 73 J–1999

(A) वृद्धि (B) पूर्वरूप
(C) गुण (D) यण्

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–47*

111. 'गणेशः' इत्यत्र केन सूत्रेण गुणो भवति– BHU AET–2012

(A) अदेङ्गुणः (B) आद्गुणः
(C) अतोगुणे (D) मिदेर्गुणः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–47*

112. 'उपेन्द्रः' का सन्धि-विच्छेद है– UP TET–2013

(A) उप + इन्द्रः (B) उप + एन्द्रः
(C) उपा + इन्द्रः (D) उप + ऐन्द्रः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–47*

113. 'उमेशः' शब्द में किस सूत्र के अनुसार सन्धि की गयी है? UP TET–2013

(A) इको यणचि (B) आद् गुणः
(C) खरि च (D) तोर्लि

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-1) - पेज–54*

114. 'चन्द्रोज्ज्वलाः' इति पदस्य सन्धिविच्छेदः अस्ति– C-TET–2011

(A) चन्द्र + उत् + ज्ज्वलाः (B) चन्द्र + उज्ज्वलाः
(C) चन्द्रो + उज्ज्वलाः (D) चन्द्र + ओज्ज्वलाः

स्रोत–*अष्टाध्यायी (6.1.86) - ईश्वरचन्द्र, पेज–686*

115. 'ग्रीष्म + ऋतौ' = पद होगा– AWES TET–2011

(A) ग्रीष्मृतै (B) ग्रीष्मर्तौ
(C) ग्रीष्मरतौ (D) ग्रीष्मरुतौ

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–47*

116. 'वार्षिकोत्सवः' पद होगा– AWES TET–2011

(A) वार्षिक + ओत्सवः (B) वार्षिक + उत्सवः
(C) वार्षिक् + ओत्सवः (D) वार्षिक + ऊत्सवः

स्रोत–*संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–184*

117. 'गङ्गा + उदकम्'– AWES TGT–2010

(A) गङोदकम् (B) गङ्गौदकम्
(C) गङ्गोदकम् (D) गङ्गुदकम्

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–47*

118. निम्नलिखित में से किस शब्द में 'गुणसन्धि' है? UP PCS–2015

(A) हिमालयः (B) इत्यादिः
(C) तल्लीनः (D) देवेन्द्रः

स्रोत–*संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–182*

119. 'नरेशः' में कौन सन्धि है? BHU MET–2012

(A) गुण (B) वृद्धि
(C) दीर्घ (D) प्रकृतिभाव

स्रोत–*संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–182*

120. 'ग्रीष्म + ऋतुः' में सन्धि होने पर क्या शब्द बनता है? UP TGT–2013

(A) ग्रीष्मृतुः (B) ग्रीष्मरतुः
(C) ग्रीष्मर्तुः (D) उपर्युक्त में कोई नहीं

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–47*

121. व्यञ्जनसन्धि का उदाहरण नहीं है– UP TGT (H)–2009

(A) उत् + चारणम् = उच्चारणम्
(B) रामस् + टीकते = रामष्टीकते
(C) गङ्गा + उदकम् = गङ्गोदकम्
(D) सत् + चित् = सच्चित्

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–47*

108. (A) **109.** (A) **110.** (C) **111.** (B) **112.** (A) **113.** (B) **114.** (B) **115.** (B) **116.** (B) **117.** (C)
118. (D) **119.** (A) **120.** (C) **121.** (C)

122. यदि 'अ' या 'आ' के बाद 'इ' या 'ई' आए तो दोनों मिलकर 'ए' हो जाते हैं। यह स्वरसन्धि कहलाती है? UP PGT (H)–2002

(A) दीर्घस्वरसन्धि (B) वृद्धिस्वरसन्धि
(C) गुणस्वरसन्धि (D) अयादिस्वरसन्धि

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–47*

123. 'नवोढा' का सन्धिविच्छेद है– UP PGT (H)–2004

(A) नव + उढा (B) नवो + ढा
(C) नव + ऊढा (D) न + ओढा

स्रोत–*संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–183*

124. 'यथेप्सितम्' = ? AWES TGT–2010

(A) यथा + ईप्सितम् (B) यथा + एप्सितम्
(C) यथा + ऐप्तिसतम् (D) यथा + इप्सितम्

स्रोत–*संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–182*

125. 'यथेष्टम्' इत्यस्य सन्धिविच्छेदः करणीयः? REET–2016

(A) यथेष्ट + अम् (B) यथा + इष्टम्
(C) यथा + एष्टम् (D) यथेष् + टम्

स्रोत–*संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–182*

126. 'पश्य + उपरि' = ? AWES TGT–2009

(A) पश्युपरि (B) पश्योपरि
(C) पश्यउपरि (D) पश्यूपरि

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–47*

127. 'ब्रह्मर्षिः' = AWES TGT–2008

(A) ब्रह्म् + ऋषिः (B) ब्रह्म + ऋषिः
(C) ब्रह्मा + ऋृषिः (D) ब्रह्मः + ऋषिः

स्रोत–*संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–185*

128. 'वर्षा + ऋतुः' = ? AWES TGT–2010

(A) वर्षार्तुः (B) वर्षतुः
(C) वर्षर्तुः (D) वर्षातुः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–48*

129. 'देवेन्द्रः' इस पद में किस सूत्र से सन्धि हुई है? UGC 73 D–2015

(A) आद् गुणः (B) अदेङ्गुणः
(C) ह्रस्वस्य गुणः (D) सार्वधातुकार्धधातुकयोः

स्रोत–*अष्टाध्यायी (6.1.84) - ईश्वरचन्द्र, पेज–686*

130. 'अ' या 'आ' के बाद 'ए' या 'ऐ' आए तो दोनों के स्थान पर 'ऐ' होने की सन्धि है– UP PGT–2010

(A) गुण (B) वृद्धि
(C) दीर्घ (D) पररूप

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–48*

131. वृद्धिसन्धि विधायक सूत्र है– UP TGT–1999

(A) वृद्धिरेचि (B) वृद्धिरादैच्
(C) एङः पदान्तादति (D) एङि पररूपम्

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–48*

132. (i) 'प्राच्र्छति' अत्र सन्धिः अस्ति– MP वर्ग-I (PGT)–2012
(ii) 'प्राच्र्छति' इत्यत्र कः सन्धिः–RPSC ग्रेड-III–2013
(iii) 'प्राच्र्छति' में सन्धि है– BHU Sh. ET–2013

(A) वृद्धिसन्धिः (B) गुणसन्धिः
(C) दीर्घसन्धिः (D) पूर्वरूपसन्धिः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–48*

133. यदि 'अ' या 'आ' के बाद 'ए' या 'ऐ' आये तो होगा– UP TGT–2004

(A) ए (B) ऐ
(C) ओ (D) औ

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–48*

134. 'मतैक्यम्' में निम्न सूत्र से सन्धि कार्य होता है– UP TGT–2004

(A) अदेङ्गुणः (B) वृद्धिरादैच्
(C) वृद्धिरेचि (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–*संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–189*

122. (C) **123.** (C) **124.** (A) **125.** (B) **126.** (B) **127.** (B) **128.** (C) **129.** (A) **130.** (B) **131.** (A) **132.** (A) **133.** (B) **134.** (C)

135. 'प्रार्च्छति' का सन्धि-विच्छेद है– UP TGT–2005

(A) प्रा + ऋच्छति (B) प्रर + ऋच्छति

(C) प्र + ऋच्छति (D) प्रार्च्छ + ति

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–48*

136. 'महौषधिः' में सन्धि है– BHU MET–2010

(A) गुण (B) वृद्धि

(C) दीर्घ (D) विसर्ग

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–54*

137. 'अक्ष + ऊहिनी' सन्धि में इसका रूप होता है– UGC 25 J–1999, UGC 73 D–1999

(A) अक्षोहिनी (B) अक्षौहिनी

(C) अक्षैहिणी (D) अक्षौहिणी

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–47*

138. 'वृद्धिसन्धि' किस उदाहरण में है? BHU MET–2008, 2011

(A) रमेशः (B) पावकः

(C) उत्थानम् (D) देवैश्वर्यम्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–53*

139. वृद्धिसन्धि कहाँ है? BHU MET–2008

(A) रमेशः (B) पावकः

(C) उत्थानम् (D) गङ्गौघः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–49*

140. (i) 'प्र + ऋच्छति' इत्यत्र किं कार्यं भवति?

(ii) 'प्र + ऋच्छति' = प्रार्च्छति इत्यत्र कः सन्धिः? BHU AET–2012, JNU MET–2015

(A) गुणः (B) पररूपम्

(C) प्रकृतिभावः (D) वृद्धिः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–48*

141. 'महौषधिः'–सन्धिविच्छेद होगा–AWES TGT–2011

(A) मह + औषधिः (B) महो + औषधिः

(C) महा + ओषधिः (D) महो + ओषधिः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–54*

142. 'मम + ऐश्वर्यम्' AWES TGT–2010

(A) ममोश्वर्यम् (B) मम ऐश्वर्यम्

(C) ममैश्वर्यम् (D) ममौश्वर्यम्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (6.1.85) - ईश्वरचन्द्र, पेज–687*

143. 'सदैव' शब्द में कौन-सी सन्धि है? UP PCS–2012

(A) यण्सन्धि (B) व्यञ्जनसन्धि

(C) वृद्धिसन्धि (D) गुणसन्धि

स्रोत–*संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–190*

144. 'सुख + ऋतः' में सन्धि होने पर क्या शब्द बनता है? UP TGT–2013

(A) सुखार्तः (B) सुखर्तः

(C) सुखरतः (D) सुखारतः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–48*

145. 'कृष्णैकत्वम्' शब्द में सन्धि है– UP PGT (H)–2009

(A) गुणसन्धि (B) वृद्धिसन्धि

(C) अयादिसन्धि (D) दीर्घसन्धि

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–49*

146. उद्योगेनैव इत्यत्र कः सन्धिः अस्ति? REET–2016

(A) गुणसन्धिः (B) वृद्धिसन्धिः

(C) यण्सन्धिः (D) पररूपसन्धिः

स्रोत–*अष्टाध्यायी (6.1.85) - ईश्वरचन्द्र, पेज–687*

147. 'धर्म + औत्सुक्यम्' = ? AWES TGT–2010

(A) धर्मौत्सुक्यम् (B) धर्मोत्सुक्यम्

(C) धर्मोउत्सुक्यम् (D) धर्मातसुक्यम्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (6.1.85) - ईश्वरचन्द्र, पेज–687*

148. 'सैषा' = ? AWES TGT–2009

(A) सः + एषा (B) स + एषा

(C) सा + एषा (D) सो + एषा

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–216*

135. (C) **136.** (B) **137.** (D) **138.** (D) **139.** (D) **140.** (D) **141.** (C) **142.** (C) **143.** (C) **144.** (A)
145. (B) **146.** (B) **147.** (A) **148.** (C)

149. 'स्वैरिणी' = ? AWES TGT–2008

(A) स्वैर + इनि (B) स्व + एरिणी

(C) स्व + ईरिणी (D) स्व + ऐरिणी

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–47*

150. 'कृष्णैकत्वम्' शब्द किस सूत्र का उदाहरण है? H TET–2014

(A) वृद्धिरेचि (B) उरण्रपरः

(C) अदेङ्गुणः (D) एङि पररूपम्

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–49*

151. 'प्रौढः' पदे सन्धिविच्छेदः भवति? G GIC–2015, JNU M.Phil/Ph. D–2015

(A) प्र + ओढः (B) प्र + औढः

(C) प्र + ऊढः (D) प्रौ + ढः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–48*

152. 'तथा + एव = तथैव' इत्यत्र कः सन्धिः? BHU BEd–2015

(A) गुणः (B) वृद्धिः

(C) यण्ः (D) दीर्घः

स्रोत–*संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–190*

153. 'प्रष्ठौहः' पद किस सूत्र का उदाहरण है? H TET–2015

(A) प्रादूहोढोढ्येषैष्येषु (B) एत्येधत्यूठ्सु

(C) वृद्धिरेचि (D) वृद्धिरादैच्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड-1), पेज–59*

154. 'तथैव' शब्द का सन्धि-विच्छेद है– UP TET–2016

(A) तथ + एव (B) तथे + एव

(C) तथा + ऐव (D) तथा + एव

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड-1), पेज–59*

155. 'दैत्य + अरिः' में कौन-सी सन्धि है? UP PGT–2003

(A) गुणसन्धि (B) दीर्घसन्धि

(C) वृद्धिसन्धि (D) अयादिसन्धि

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–46*

156. 'सतीव' अत्र विच्छेदः भवति– MP वर्ग-2 (TGT)–2011, UK TET–2011

(A) सत् + इव (B) सती + इव

(C) सति + इव (D) सत + इव

स्रोत–*संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–180*

157. 'भानूदयः' में कौन-सी सन्धि है? MP वर्ग-2 (TGT)–2011, UK TET–2011

(A) गुण (B) यण्

(C) दीर्घ (D) वृद्धि

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–67*

158. 'उत्तर + अचलः' अत्र सन्धिः कार्यः – MP वर्ग-2 (TGT)–2011, UK TET–2011

(A) उत्तराचलः (B) उत्तरोचलः

(C) उत्तरेचलः (D) उत्तरचलः

स्रोत–*अष्टाध्यायी (6.1.97) - ईश्वरचन्द्र, पेज–691*

159. 'यच्छलेनाभ्युपेतम्' अस्य सन्धिविच्छेदः अस्ति– MP TET–2011

(A) यच्छले + नाभ्युपेतम् (B) यच्छलेना + भ्युपेतम्

(C) यच्छल + इनाभ्युपेतम् (D) यच्छलेन + अभ्युपेतम्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (6.1.97) - ईश्वरचन्द्र, पेज–691*

160. 'ग्रामस्यार्थे' इति पदे कः सन्धिः अस्ति– MP TET–2011

(A) दीर्घसन्धिः (B) गुणसन्धिः

(C) व्यञ्जनसन्धिः (D) विसर्गसन्धिः

स्रोत–*अष्टाध्यायी (6.1.97) - ईश्वरचन्द्र, पेज–691*

161. 'हरीशः' अत्र सन्धिः अस्ति– MP वर्ग-I (PGT)–2012

(A) गुणसन्धिः (B) यण्सन्धिः

(C) वृद्धिसन्धिः (D) दीर्घसन्धिः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–67*

149. (C) 150. (A) 151. (C) 152. (B) 153. (B) 154. (D) 155. (B) 156. (B) 157. (C) 158. (A) 159. (D) 160. (A) 161. (D)

162. कस्मिन् पदे दीर्घसन्धिः अस्ति–
RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014, C–TET–2013
(A) नास्ति (B) चैव
(C) पावकः (D) रमेशः
स्रोत–*अष्टाध्यायी (6.1.97) - ईश्वरचन्द्र, पेज–691*

163. 'अति + इव = अतीव' में सन्धि का नियम है–
UP TGT–2004
(A) इको यणचि (B) अकः सवर्णे दीर्घः
(C) वृद्धिरादैच् (D) सर्वत्र विभाषा गोः
स्रोत–*(i) संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–46*
(ii) संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–180

164. 'होतृ + ऋकारः' में कौन-सी सन्धि है? UP TGT–2010
(A) वृद्धि (B) गुण
(C) दीर्घ (D) यण्
स्रोत–*(i) अष्टाध्यायी (6.1.97) - ईश्वरचन्द्र, पेज–691*
(ii) संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–46

165. 'दीपावलिः' का सन्धि-विच्छेद होगा–
UP TGT–2010
(A) दीपा + वलिः (B) दीपा + अवलिः
(C) दीप + अवलिः (D) दीप + वलिः
स्रोत–*अष्टाध्यायी (6.1.97) - ईश्वरचन्द्र, पेज–691*

166. 'हिमालयः' में कौन-सी सन्धि है? BHU MET–2010
(A) गुणसन्धि (B) यण्सन्धि
(C) दीर्घसन्धि (D) वृद्धिसन्धि
स्रोत–*संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–180*

167. 'धीशः' पद में सन्धि है? UP TET–2016
(A) दीर्घसन्धि (B) गुणसन्धि
(C) वृद्धिसन्धि (D) अयादिसन्धि
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–66-67*

168. 'श्रीशः' इत्यत्र कः सन्धिः? BHU B.Ed–2011
(A) वृद्धिः (B) विसर्गः
(C) दीर्घः (D) गुणः
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–67*

169. 'रमा + आगच्छति' इत्यत्र कः सन्धिः भवति?
DSSSB PGT–2014
(A) सवर्णदीर्घः (B) पूर्वरूपम्
(C) पररूपम् (D) प्रतिमुखसन्धिः
स्रोत–*अष्टाध्यायी (6.1.97) - ईश्वरचन्द्र, पेज–691*

170. 'रक्षार्थम्' का सन्धिविच्छेद पद होगा–
AWES TGT–2011
(A) रक्ष् + अर्थम् (B) रक्ष + अर्थम्
(C) रक्षा + अर्थम् (D) रक्षा + आर्थम्
स्रोत–*संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–179*

171. 'लक्ष्मी + ईश्वरः' = ? AWES TGT–2010
(A) लक्ष्मिश्वरः (B) लक्ष्मीश्वरः
(C) लक्ष्मवेश्वरः (D) लक्ष्मेश्वरः
स्रोत–*संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–180*

172. 'परार्द्धसङ्ख्या' = ? AWES TGT–2010
(A) परः + आर्द्धसङ्ख्या (B) पर + अर्धसङ्ख्या
(C) परा + अर्द्धसङ्ख्या (D) परा + आर्द्धसङ्ख्या
स्रोत–*अष्टाध्यायी (6.1.97) - ईश्वरचन्द्र, पेज–691*

173. 'कल्पान्त' शब्द में कौन-सी सन्धि है? DL (H)–2015
(A) गुणसन्धि (B) यण्सन्धि
(C) दीर्घसन्धि (D) व्यञ्जनसन्धि
स्रोत–*संस्कृतङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–177*

174. 'अन्यान्य' शब्द का सन्धि–विच्छेद होगा–
UP TGT (H)–2005
(A) अ + न्यान्य (B) अन्य + अन्य
(C) अन् + यान्य (D) अन्या + आन्य
स्रोत–*अष्टाध्यायी (6.1.97) - ईश्वरचन्द्र, पेज–691*

175. 'दैत्य + अरिः = दैत्यारिः' एक उदाहरण है–
UP TGT (H)–2010
(A) व्यञ्जनसन्धि का (B) स्वरसन्धि का
(C) विसर्गसन्धि का (D) इनमें से कोई नहीं
स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–46*

162. (A) **163.** (B) **164.** (C) **165.** (C) **166.** (C) **167.** (A) **168.** (C) **169.** (A) **170.** (C) **171.** (B)
172. (C) **173.** (C) **174.** (B) **175.** (B)

176. 'दैत्यारि' में कौन सी सन्धि है? UP TET–2016

(A) स्वरसन्धि (B) व्यञ्जनसन्धि
(C) विसर्गसन्धि (D) पूर्वरूपसन्धि

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–46*

177. 'अकः सवर्णे दीर्घः' सूत्र है– UP TGT–2001

(A) स्वरसन्धि का (B) व्यञ्जनसन्धि का
(C) विसर्गसन्धि का (D) प्रकृतिभावसन्धि का

स्रोत–*अष्टाध्यायी (6.1.97) - ईश्वरचन्द्र, पेज–691*

178. 'अकः सवर्णे दीर्घः' सूत्र के उदाहरणों में लृवर्ण का उदाहरण नहीं है। इसका क्या कारण है? UP GDC–2008

(A) उदाहरण देने की आवश्यकता नहीं समझी गयी
(B) इस पर ध्यान ही नहीं गया
(C) यह उदाहरण देने वाले के अज्ञान का सूचक है
(D) लृकार का दीर्घ नहीं होता।

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–66*

179. 'प्रहरीव' अत्र सन्धिविच्छेदं कुरुत– REET–2016

(A) प्रहरी + इव (B) प्रहर + इव
(C) प्रह + रीव (D) प्र + हरीव

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड–1), पेज–73*

180. पर्वतारोहणम्– AWES TGT–2012

(A) पर्वत + आरोहणम् (B) पर्वत् + आरोहणम्
(C) पर्वता + आरोहणम् (D) पर्वता + अरोहणम्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (6.1.97) - ईश्वरचन्द्र, पेज–691*

181. उत्कीर्णा + आलेखाः = AWES TGT–2012

(A) उत्कीर्णालेखाः (B) उत्कीर्णश्चलेखाः
(C) उत्कीर्णोलेखाः (D) उत्कीर्णेलेखाः

स्रोत–*अष्टाध्यायी (6.1.97) - ईश्वरचन्द्र, पेज–691*

182. निमज्जति + इन्दोः = AWES TGT–2012

(A) निमज्जतिन्दोः (B) निमज्जतीन्दोः
(C) निमज्जतइन्दोः (D) निमज्जितीन्दोः

स्रोत–*अष्टाध्यायी (6.1.97) - ईश्वरचन्द्र, पेज–691*

183. 'लघूर्मि' में कौन सी सन्धि है– UP TET–2016

(A) अयादि स्वरसन्धि (B) दीर्घ स्वरसन्धि
(C) वृद्धि स्वरसन्धि (D) यण् स्वरसन्धि

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–216*

184. तस्य + आवासम् + एव = ? AWES TGT–2012

(A) तस्याआवासमेव (B) तस्यावासामेव
(C) तस्यावासमेव (D) तस्यावासमिव

स्रोत–*अष्टाध्यायी (6.1.97) - ईश्वरचन्द्र, पेज–691*

185. भूर्ध्वम् = ? AWES TGT–2010

(A) भू + उर्ध्वम् (B) भू + ऊर्ध्वम्
(C) भूध् + उर्ध्वम् (D) भु + उर्ध्वम्

स्रोत–*संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–181*

186. क्षितीशः ? AWES TGT–2010

(A) क्षिती + इशाः (B) क्षिति + ईशः
(C) क्षित + ईशः (D) क्षिति + इशः

स्रोत–*संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–180*

187. 'होतृकारः' इस शब्द की सिद्धि करने वाला सूत्र है– HR TET–2014

(A) अकः सवर्णे दीर्घः (B) अन्तादिवच्च
(C) ङिच्च (D) निपात एकाजनाङ्

स्रोत–*(i) संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–46*
(ii) रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–216

188. 'महतीयं' का पदच्छेद है? H-TET–2015

(A) महत् + ईयं (B) महति + ईयं
(C) महती + यं (D) महती + इयं

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड–1), पेज–74*

189. कौन सा दीर्घसन्धि का उदाहरण नहीं है? H-TET–2015

(A) साधूक्तम् (B) सत्यार्थः
(C) होतृकारः (D) पित्रादेशः

स्रोत–*अष्टाध्यायी (6.1.74) - ईश्वरचन्द्र, पेज–684*

176. (A)	**177.** (A)	**178.** (D)	**179.** (A)	**180.** (A)	**181.** (A)	**182.** (B)	**183.** (B)	**184.** (C)	**185.** (B)
186. (B)	**187.** (A)	**188.** (D)	**189.** (D)						

190. 'पररूप' विधायक सूत्र है– UGC 73 D–2012

(A) उपसर्जनं पूर्वम् (B) एङि पररूपम्
(C) अतोरोरप्लुतादप्लुते (D) ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–49*

191. पररूपसन्धेः उदाहरणमस्ति– UP GDC–2012, RPSC ग्रेड-II (TGT)–2010, G GIC–2015, UP GIC–2015

(A) प्रेजते (B) प्रार्च्छति
(C) उपैति (D) उपैधते

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–49*

192. 'प्रेजते' में सन्धि है– UGC 73 D–1992, 1996

(A) पररूपसन्धि (B) पूर्वरूपसन्धि
(C) यण्सन्धि (D) गुणसन्धि

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–49*

193. 'शिवेहि' में सन्धि-विच्छेद होगा– UP GIC–2009

(A) शिव + एहि (B) शिव + ऐहि
(C) शिवे + एहि (D) शिव + आ + इहि

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–65*

194. 'मनीषा' इत्यस्य सन्धिविच्छेदः अस्ति– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011, BHU Sh. ET–2008

(A) मन + ईषा (B) मनसः + ईषा
(C) मनस्य + ईषा (D) मनस् + ईषा

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–49*

195. 'मनीषा' मे सन्धि होगी– UP TGT–1999, UGC 73 J–1991

(A) पररूप (B) प्रकृतिभाव
(C) पूर्वरूप (D) दीर्घ

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–49*

196. अधोलिखितेषु पररूपसन्धेः रूपमस्ति– RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014

(A) एतावागतौ (B) नवोढा
(C) दध्यत्र (D) मनीषा

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–49*

197. 'हलीषा' इत्यत्र पररूपसन्धौ विच्छेदोऽस्ति– BHU AET–2011

(A) हलस् + ईषा (B) हल + ईषा
(C) हल् + ईष (D) हलि + ईषा

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-1), पेज–69*

198. पररूप एकादेश विधायक सूत्र है– UGC 73 D–2013

(A) एङ् ह्रस्वात्सम्बुद्धेः (B) एङः पदान्तादति
(C) एङि पररूपम् (D) अवङ् स्फोटायनस्य

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–49*

199. 'उप + ओषति' इत्यत्र सन्धिकृते कं कार्यं भवति? BHU AET–2012

(A) गुणः (B) पररूपम्
(C) वृद्धिः (D) पूर्वरूपम्

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–49*

200. 'शिवेहि' इत्यत्र पररूपमेकादेशः सूत्रेण भवति– UGC 73 D–2014

(A) एङि पररूपम् (B) एङः पदान्तादति
(C) ओमाङोश्च (D) अव्यक्तानुकरणस्यात इतौ

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-1), पेज–71*

201. 'उपोषति' पद में पररूप एकादेश किस सूत्र से होता है? UGC 73 J–2015

(A) ओमाङोश्च (B) एङः पदान्तादति
(C) अव्यक्तानुकरणस्य तु वा (D) एङि पररूपम्

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–49*

202. 'सकलोऽपि' इत्यस्य सन्धिविच्छेदः करणीयः– REET–2016

(A) सकलो + अपि (B) सकल + अपि
(C) सकलः + अपि (D) सकलो + पि

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-1), पेज–74-75*

203. 'एङः पदान्तादति' इति सूत्रेण कः सन्धिः विधीयते? JNU MET–2014

(A) अयादिः (B) पूर्वरूपम्
(C) पररूपम् (D) प्रकृतिभावः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–51*

190. (B) 191. (A) 192. (A) 193. (D) 194. (D) 195. (A) 196. (D) 197. (B) 198. (C) 199. (B) 200. (C) 201. (D) 202. (A) 203. (B)

204. 'एङः पदान्तादति' इस सूत्र का उदाहरण है–
UGC 73 S–2013, RPSC ग्रेड-I (PGT)–2014
(A) हरी एतौ (B) गवाग्रम्
(C) हरेऽव (D) ग्रोग्रम्
स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–51*

205. 'संसारेऽधुना' इत्यत्र सन्धिसूत्रम् अस्ति–
RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011
(A) एङि पररूपम् (B) एङः पदान्तादति
(C) शकन्ध्वादिषु पररूपं वाच्यम् (D) एत्येधत्यूठ्सु
स्रोत– *(i) संस्कृतगङ्गा व्याकरणम्-सर्वज्ञभूषणः, पेज–194*
(ii) लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-1), पेज–75

206. 'गो + अग्रम्' सन्धि करने पर कितने रूप होते हैं?
(i) गोअग्रम् (ii) गोऽग्रम् (iii) गवाग्रम्
UGC 73 J–2010
(A) त्रीणि (B) चत्वारि
(C) पञ्च (D) षट्
स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–51*

207. 'हरेऽव' इत्यत्र किं कार्यं भवति? BHU Sh. ET–2008
(A) पूर्वरूपम् (B) पररूपम्
(C) सवर्णदीर्घः (D) यण्
स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–51*

208. एतेषु पररूपस्य किमुदाहरणम्? BHU Sh.ET–2013
(A) दैत्यारिः (B) हरेऽव
(C) प्रार्च्छति (D) मार्तण्डः
स्रोत–*संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–193*

209. पूर्वरूपस्य उदाहरणमस्ति– UP GDC–2014
(A) गो अग्रम् (B) उपोषति
(C) रामोऽस्ति (D) गङ्गौघः
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमीव्याख्या खण्ड–1), पेज–75*

210. (i) 'हरेऽव' इत्यस्य सन्धिविधायकं सूत्रमस्ति–
(ii) 'हरेऽव' सन्धौ सूत्रं प्रयुक्तमस्ति–
DL–2015, UP GIC–2015
(A) एङः पदान्तादति (B) एङि पररूपम्
(C) एचोऽयवायावः (D) अवङ् स्फोटायनस्य
स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–51*

211. 'वृक्षेऽस्मिन्' पद में सन्धि है– H-TET–2015
(A) पररूप (B) पूर्वरूप
(C) प्रकृतिभाव (D) जश्त्व
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमीव्याख्या खण्ड–1), पेज–75*

212. चित्रेऽस्मिन् AWES TGT–2012
(A) चित्रे + अस्मिन् (B) चित्रो + स्मिन्
(C) चित्र + ओस्मिन् (D) चित्र् + अस्मिन
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमीव्याख्या खण्ड–1), पेज–75*

213. प्रकृतिभावशब्दस्य कोऽर्थः? BHU Sh.ET–2011
(A) सन्ध्यभावः (B) विसर्गाभावः
(C) हल्-अभावः (D) स्वरसन्धिभावः
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–73*

214. 'लते + एते' – यहाँ पर सन्धि करने पर रूप होता है–
UGC 73 J–2010
(A) लते एते (B) लतयैते
(C) लता एते (D) लतैते
स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.11) - ईश्वरचन्द्र, पेज–13-14*

215. 'इ + इन्द्रः' में सन्धि है– BHU MET–2014
(A) दीर्घ (B) प्रकृतिभाव
(C) विसर्गसन्धि (D) गुण
स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.12) - ईश्वरचन्द्र, पेज–14-15*

216. 'हरी एतौ' इत्यत्र कः सन्धिः? BHU Sh.ET–2008
(A) अच् (B) हल्
(C) विसर्गः (D)स्वादिः
स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–51*

204. (C) 205. (B) 206. (A) 207. (A) 208. (D) 209. (C) 210. (A) 211. (B) 212. (A) 213. (A) 214. (A) 215. (B) 216. (A)

217. हरी + इह अत्र सन्धौ कृते – CVVET–2015

(A) हरीह (B) हरियह

(C) हरी इह (D) हरयिह

स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–51

218. 'हरी + एतौ' इत्यत्र सन्धौ किं रूपम्? BHU Sh.ET–2013

(A) हर्येतौ (B) हरयेतौ

(C) हरी एतौ (D) हरेतौ

स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–51

219. 'हरी + एतौ' इत्यत्र कः सन्धिः? BHU AET–2012

(A) प्रकृतिभावः (B) अच्सन्धिः

(C) हल्सन्धिः (D) विसर्गसन्धिः

स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–51

220. प्रकृतिभाव का उदाहरण है– UGC–73 J–2005

(A) सुध्युपास्यः (B) प्राच्छंति

(C) हरेऽव (D) अमी ईशाः

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (1.1.12) - गोविन्दाचार्य, पेज–74

221. 'गङ्गे अमू, विष्णू इमौ' पदो की सिद्धि करने वाला सूत्र है? H-TET–2015

(A) निपात एकाजनाङ् (B) ओत्

(C) ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम् (D) प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम्

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (1.1.11) - गोविन्दाचार्य, पेज–73

222. जश्त्वसन्धेः सूत्रमस्ति– UGC 25 D–2000

(A) झलां जशोऽन्ते (B) खरि च

(C) शश्छोऽटि (D) तोर्लि

स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–54

223. 'समुद्धर्ता' का विग्रह है– UP PGT–2010

(A) समुद् + धर्ता (B) समुद् + हर्ता

(C) समुत् + धर्ता (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड-1), पेज–117

224. (i) 'समिदाधानम्' का विग्रह होगा

(ii) 'समिदाधानम्' पदस्य सन्धिविच्छेदः अस्ति–

RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011, UP PGT–2010

UK TET–2011

(A) समित् + आधानम् (B) समिद् + आधानम्

(C) समिथ् + आधानम् (D) समिध् + आधानम्

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड–1), पेज–106

225. 'कान + कान्' अत्र सन्धिः अस्ति–

MP वर्ग-I (PGT)–2012

(A) काँस्कान् (B) कान्कान्

(C) कास्कान् (D) काकान्

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड–1), पेज–139

226. (i) 'विद्वान् + लिखति' इत्यस्य सन्धौ भवति

(ii) विद्वान् + लिखति में सन्धि होगी–

UP GIC–2009, BHU AET–2011, DL–2015

(A) विद्वाल्लिखति (B) विद्वान्निखति

(C) विद्वाल्लिँखति (D) विद्वाल्ँलिखित

स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–54

227. 'यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा' सूत्र का उदाहरण है? H-TET–2015

(A) महाँल्लाभ (B) विद्वाँल्लिखति

(C) एतन्मुरारि (D) उल्लास

स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–54

228. 'हरिस् + शेते' में सन्धि होने पर कौन-सा रूप बनेगा– UP TGT–1999

(A) हरिशयते (B) हरिण्शेते

(C) हरिश्शेते (D) हरिशेते

स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–52

229. निम्नलिखित किस स्थिति में 'ष्टुना ष्टुः' सूत्र प्रयुक्त होगा? UP TGT–1999

(A) आ + उष्णम् (B) रामस् + चिनोति

(C) तत् + टीका (D) वाक् + हरिः

स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–53

217. (C) **218.** (C) **219.** (A) **220.** (D) **221.** (C) **222.** (A) **223.** (B) **224.** (D) **225.** (A) **226.** (C) **227.** (C) **228.** (C) **229.** (C)

230. ''सन् + षष्ठः = सन्षष्ठः'' इस उदाहरण में किस सूत्र का नियम प्रयुक्त होगा? UP TGT–1999

(A) शात् (B) शश्छोऽटि

(C) तोः षि (D) न पदान्ताट्टोरनाम्

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–53*

231. ''एतत् + मुरारिः = एतन्मुरारिः' सन्धि में किस सूत्र की प्रवृत्ति है? UP TGT–1999

(A) मोऽनुस्वारः (B) यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा

(C) न पदान्ताट्टोरनाम् (D) तोर्लि

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–54*

232. 'रामश्चलति' उदाहरण है– UP TGT–2001

(A) यण्सन्धि का (B) गुणसन्धि का

(C) हल्सन्धि का (D) दीर्घसन्धि का

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–52*

233. (i) 'तट्टीका' इस सूत्र का उदाहरण है–

(ii) 'तट्टीका' शब्द किस सूत्र से बना है?

UPTGT–2001, MP वर्ग-2 (TGT)–2011, H-TET–2014

(A) स्तोः श्चुना श्चुः (B) एङि पररूपम्

(C) ष्टुना ष्टुः (D) झलां जशोऽन्ते

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–53*

234. 'अजन्तः' का सन्धि-विच्छेद है– MP वर्ग-2 (TGT)–2011, UK TET–2011, AWES TGT–2009

(A) अज + अन्तः (B) अ + जन्तः

(C) अच् + अन्तः (D) अजा + अन्तः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड-1), पेज–106*

235. 'ग्रामाच्चलितः' पदस्य सन्धि-विच्छेदः भवेत्– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011

(A) ग्रामान् + चलितः (B) ग्रामाद् + चलितः

(C) ग्रामात् + चलितः (D) ग्रामाज + चलितः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड–1), पेज–100*

236. 'शिवच्छाया' पदस्य विच्छेदः भवेत्– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011

(A) शिवद् + छाया (B) शिव + छाया

(C) शिवत् + छाया (D) शिवज् + छाया

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–59*

237. 'शात्' सूत्रेण निष्पादितं पदम्– RPSC ग्रेड-II (TGT)–2010

(A) प्रश्नः (B) सन्षष्ठः

(C) वागीशः (D) निकृष्टः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–53*

238. 'कुण्ठितः' अस्मिन् पदे सन्धिः वर्तते– RPSC ग्रेड-II (TGT)–2010

(A) स्वरसन्धिः (B) विसर्गसन्धिः

(C) व्यञ्जनसन्धिः (D) दीर्घसन्धिः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड–1), पेज–121*

239. हल्सन्धेः उदाहरणमस्ति– RPSC ग्रेड-II (TGT)–2010

(A) दावाग्निः (B) चेद्वायौ

(C) ह्युत्तमानाम् (D) कल्पान्तेऽस्य

स्रोत–*अष्टाध्यायी (8/2/39)*

240. 'हरि + रम्यः' इत्यस्य सन्धिपदमस्ति? RPSC ग्रेड I (PGT)–2014

(A) हरि रम्यः (B) हरी रम्यः

(C) हरिररम्यः (D) हरिर्रम्यः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड–1), पेज–151*

241. 'जगदीशः' किस सूत्र से सन्धि हुई है– UP TET–2014

(A) तोर्लि (B) मोऽनुस्वारः

(C) खरि च (D) झलां जशोऽन्ते

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड–1), पेज–106*

230. (C) **231.** (B) **232.** (C) **233.** (C) **234.** (C) **235.** (C) **236.** (B) **237.** (A) **238.** (C) **239.** (B) **240.** (B) **241.** (D)

242. 'रामश्चिनोति' पद का सन्धिविच्छेद होता है–
UP TET–2014
(A) रामश्चिन + उति (B) राम + श्चिनोति
(C) रामश् + चिनोति (D) रामस् + चिनोति
स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–52*

243. 'सच्चरितम्' पद का सन्धिविच्छेद है–
UP TET–2014
(A) सच् + चरितम् (B) सत् + चरितम्
(C) सच्च + रितम् (D) सत + चरितम्
स्रोत–*संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–202*

244. 'कतिचिज्जनाः' पदस्य सन्धिविच्छेदः स्यात्–
RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014
(A) कतिचिद् + जनाः (B) कतिचिज + जनाः
(C) कतिचित् + जनाः (D) कतिचिच् + जनाः
स्रोत–*अष्टाध्यायी (8/4/39) - ईश्वरचन्द्र, पेज–1092*

245. 'अधिष्ठाता' पदस्य सन्धिविच्छेदः अस्ति–
RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014
(A) अधिः + ठाता (B) अधिष् + थाता
(C) अधिस् + ठाता (D) अधिः + थाता
स्रोत–*संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–196*

246. 'झलां जशोऽन्ते' सूत्रस्य उदाहरणमस्ति–
RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014
(A) तल्लयः (B) रामष्टीकते
(C) प्रश्नः (D) वागीशः
स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–54*

247. अधोलिखितेषु हल्सन्धेः शुद्धरूपं नास्ति–
RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014
(A) तल्लीनः (B) सुगण्णीशः
(C) वागीशः (D) प्रनश्यति
स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–54*

248. 'स्तोः श्चुना श्चुः' के अनुसार सन्धि रूप है–
UP TGT–2003
(A) प्रश्नः (B) शिवच्छाया
(C) हरिश्शेते (D) तट्टीका
स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–52*

249. हरिस् + शेते में सन्धि किस सूत्रानुसार होगी?
UP TET–2016
(A) स्तोः श्चुना श्चुः (B) ष्टुना ष्टुः
(C) झलां जश् झशि (D) झलां जशोऽन्ते
स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–52*

250. 'कस्मिंश्चित्' का सन्धि-विच्छेद है– UP TGT–2004
(A) कस्मिन् + चित (B) कस्मिन् + चित्
(C) कस्मि + चित् (D) कस्मिनः + श्चितन्
स्रोत–*संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–197*

251. 'झलां जश् झशि' के अनुसार सन्धि रूप है–
UP TGT–2004
(A) तट्टीका (B) षण्मुखः
(C) सच्चित् (D) युद्धम्
स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–217*

252. 'पुम् + कोकिलः' की सन्धि होगी–
UP TGT–2005, AWES TGT–2008
(A) पुस्कोकिलः (B) पुंस्कोकिलः
(C) पुङ्कोकिलः (D) पुंकोकिलः
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड-1), पेज–135*

253. 'रामश्चिनोति' में निम्नसूत्र से सन्धि कार्य होता है–
UP TGT–2005
(A) ष्टुना ष्टुः (B) स्तोः श्चुना श्चुः
(C) खरि च (D) झलां जशोऽन्ते
स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–52*

242. (D) 243. (B) 244. (C) 245. (B) 246. (D) 247. (D) 248. (C) 249. (A) 250. (B) 251. (D) 252. (B) 253. (B)

254. 'स्तोः श्चुना श्चुः' इति सूत्रस्योदाहरणं वर्तते– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2014

(A) वागीशः (B) एतन्मुरारिः

(C) रामश्चिनोति (D) तल्लयः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–52*

255. 'ष्टुना ष्टुः' के अनुसार सन्धि रूप है– UP TGT–2005

(A) तट्टीका (B) सच्चित्

(C) विश्नः (D) वृक्षाल्लगुडम्

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–53*

256. 'ष्टुना ष्टुः' इति सूत्रस्योदाहरणं भवति– G-GIC–2015

(A) अजन्तः (B) रामष्षष्ठः

(C) तच्च (D) लब्धः

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–217*

257. 'चक्रिण्ढौकसे' किस सूत्र का उदाहरण है? H-TET–2015

(A) स्तो श्चुना श्चुः (B) ष्टुना ष्टुः

(C) न पदान्ताट्टोरनाम् (D) तोः षि

स्रोत–*संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–198*

258. 'वाक् + ईशः = वागीशः' में सन्धि का सूत्र है– UP TGT–2009

(A) झलां जश् झशि (B) झलां जशोऽन्ते

(C) खरि च (D) झयो होऽन्यतरस्याम्

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–54*

259. 'चिन्मात्रम्' में तकार को नकार किस सूत्र से हुआ है? UGC 73 J–2008

(A) तोर्लि (B) अणोऽप्रगृह्यस्यानुनासिकः

(C) नश्चापदान्तस्य झलि (D) प्रत्यये भाषायां नित्यम्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–91*

260. ''झलां जश् झशि'' यह सूत्र किस प्रकरण में पठित है? UGC 73 J–2007

(A) समासप्रकरणे (B) तद्धितप्रकरणे

(C) सन्धिप्रकरणे (D) कृदन्तप्रकरणे

स्रोत–*अष्टाध्यायी (8.4.52) - ईश्वरचन्द्र, पेज–1097*

261. यहाँ सन्धि है– 'वाक् + हरिः' UGC 73 D–2009

(A) वाच्हरिः (B) वाक्हरिः

(C) वाग्घरिः (D) वाज्झरिः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–55*

262. 'मृच्छकटिकम्' शब्द का सन्धिविच्छेद होगा– UP GDC–2008

(A) मृद् + शकटिकम् (B) मृच् + छकटिकम्

(C) मृच्छ + कटिकम् (D) मृत्श + कटिकम्

स्रोत–*मृच्छकटिकम् - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज–6*

263. 'यशांसि' में सन्धि है– RPSC ग्रेड-III–2013

(A) अच् (B) हल्

(C) विसर्ग (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–*संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–200*

264. 'वाग् + हरिः' इत्यत्र हकारस्य पूर्वसवर्णे घकारः केन आन्तर्येण भवति? BHU AET–2011

(A) स्थानकृतेन (B) गुणकृतेन

(C) अर्थकृतेन (D) प्रमाणकृतेन

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड–1), पेज–117*

265. 'अहम् + लिखामि = अहलँ्लिखामि' इत्यत्र मस्यानुस्वारस्य परसवर्णे भवति केन सूत्रेण? BHU AET–2011

(A) वा पदान्तस्य (B) अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः

(C) तोर्लि (D) उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड–1), पेज–122*

254. (C) 255. (A) 256. (B) 257. (B) 258. (B) 259. (D) 260. (C) 261. (C) 262. (A) 263. (B) 264. (B) 265. (A)

266. 'जगदीशः' का सन्धिविच्छेद क्या होगा? **BHU MET–2008, UP TGT (H)–2001**

(A) जगत् + ईशः (B) जगते + ईशः
(C) जगति + ईशः (D) जगती + ईशः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड–1), पेज–106*

267. अनुनासिकसन्धेः किमुदाहरणम्? BHU Sh.ET–2008

(A) तडिल्लता (B) चिन्मयम्
(C) शिवं वन्दे (D) तच्छिवः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–54*

268. 'प्रत्यये भाषायां नित्यम्' अस्य वार्तिकस्य कुत्र सम्बन्धः? BHU Sh.ET–2008

(A) नद्यम्बु (B) हरेऽव
(C) चिन्मयम् (D) एतन्मुरारिः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–54*

269. 'धनुष्टङ्कारः' इत्यत्र कः सन्धिः? BHU Sh.ET–2011

(A) गुणसन्धिः (B) ष्टुत्वसन्धिः
(C) दीर्घसन्धिः (D) पररूपसन्धिः

स्रोत–*संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–199*

270. हल्सन्धेः किमुदाहरणम्? BHU Sh.ET–2013

(A) वागीशः (B) विद्यालयः
(C) अहर्गणः (D) उपेन्द्रः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड–1), पेज–106*

271. 'यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा' इत्यस्य सूत्रस्योदाहरणमस्ति? RPSC ग्रेड I (PGT)–2014

(A) वाङ्मयम् (B) उल्लेखः
(C) वागीशः (D) जगदीशः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड–1), पेज–109*

272. एतेषु परसवर्णस्य किम् उदाहरणम्? BHU Sh.ET–2013

(A) सम्राट् (B) सन् स
(C) शान्तः (D) सन्नच्युतः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड–1), पेज–121*

273. 'तल्लयः' का सन्धिविग्रह है– UP TET–2013

(A) तत् + लयः (B) तल् + लयः
(C) तः + लयः (D) तल्ल् + यः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड–1), पेज–110*

274. 'मृगाश्चरन्ति' इति पदस्य सन्धिविच्छेदः अस्ति– C-TET–2012

(A) मृगः + चरति (B) मृगाः + चरन्ति
(C) मृगाश् + चरन्ति (D) मृगा + चरन्ति

स्रोत–*नीतिशतकम् - बलवान सिंह यादव, पेज–17*

275. 'कस्मिंश्चिदरण्ये' पदस्य सन्धिविच्छेदः अस्ति– C-TET–2012

(A) कस्मिश्चित् + अरण्ये (B) कस्मिंश्चित् + रण्ये
(C) कस्मिन् + चित् + अरण्ये (D) कस्मिन् + अरण्ये

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड–1), पेज–107*

276. अत्र सन्धियुक्तं पदं किम्? C-TET–2012

(A) संस्कृतपाठ्यपुस्तकगतपाठान्
(B) अन्यभाषया
(C) पाठनविधौ
(D) संस्कृतच्छात्राः

स्रोत–*संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–202*

277. 'तट्टीका' में सन्धि है– UK-TET–2011

(A) स्वरसन्धि (B) विसर्गसन्धि
(C) व्यञ्जनसन्धि (D) स्वरविसर्गसन्धि

स्रोत–*संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–198*

278. तत् + टीका = ? AWES TGT–2008

(A) तत्टीका (B) तटीका
(C) तट्टीका (D) तच्टीका

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–53*

279. 'महच्चित्रम्' इत्यस्मिन् केन सूत्रेण सन्धिः भवति? UK TET–2011

(A) तोर्लि (B) स्तोः श्चुना श्चुः
(C) खरि च (D) झलां जशोऽन्ते

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–216*

266. (A)	**267.** (B)	**268.** (C)	**269.** (B)	**270.** (A)	**271.** (A)	**272.** (C)	**273.** (A)	**274.** (B)	**275.** (C)
276. (D)	**277.** (C)	**278.** (C)	**279.** (B)						

280. 'अलङ्करोति' इत्यस्य सन्धिविच्छेदः किं भवति? UK-TET–2011

(A) अलङ् + करोति (B) अलम् + करोति
(C) अलं + करोति (D) अलङ्क + रोति

स्रोत–*अष्टाध्यायी (8.4.58) - ईश्वरचन्द्र, पेज–1099*

281. 'सम् + चयात्' = पद होगा– AWES TGT–2011

(A) सञ्चयात् (B) सञ्चयात
(C) सङ्चयात् (D) सम्चयात्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (8.4.57) - ईश्वरचन्द्र, पेज–1099*

282. 'अलं + कुर्वन्ति' सन्धिपद होगा– AWES TGT–2011

(A) अलम् कुर्वन्ति (B) अलङ्कुर्वन्ति
(C) अलं कुर्वन्ति (D) अलञ्कुर्वन्ति

स्रोत–*अष्टाध्यायी (8.4.58) - ईश्वरचन्द्र, पेज–1099*

283. 'तृणञ्चरति'-सन्धिविच्छेद पद होगा– AWES TGT–2011

(A) तृणम् + चरति (B) तृणस् + चरति
(C) तृणा + चरति (D) तृणं + चरति

स्रोत–*अष्टाध्यायी (8.5.58) - ईश्वरचन्द्र, पेज–1090*

284. जगत् + याति = AWES TGT–2010

(A) जगतयाति (B) जगदाति
(C) जगताति (D) जगद्याति

स्रोत–*अष्टाध्यायी (8.2.39) - ईश्वरचन्द्र, पेज–1028*

285. निष्प्रत्यूहम् = AWES TGT–2010

(A) निष् + प्रत्युहम् (B) निः + प्रतिहम्
(C) निः + प्रत्यूहम् (D) निस् + प्रत्यूहम्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (8.3.41) - ईश्वरचन्द्र, पेज–1058*

286. प्रत्ययादेव = AWES TGT–2010

(A) प्रत्ययाद् + ऐव (B) प्रत्यया + अदेव
(C) प्रत्ययात् + एव (D) प्रत्यय + अदेव

स्रोत–*अष्टाध्यायी (8.2.39) - ईश्वरचन्द्र, पेज–1028-1029*

287. 'वाग्जाल' का सन्धिविच्छेद होगा– UP PCS–2013

(A) वाक् + जाल (B) वाक + जाल
(C) वाग् + जाल (D) वाग + जाल

स्रोत–*संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–201*

288. 'वाग्घरिः' पदस्य वैकल्पिकं सन्धिपदमस्ति– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2014

(A) वाज्धरिः (B) वाग्हरिः
(C) वाक्धरिः (D) वाध्धरिः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड-1) पेज–116*

289. 'तल्लीनः' शब्द का सन्धि-विच्छेद होगा– UP PCS–2012, UP PGT (H)–2004

(A) तव + लीनः (B) तल + लीनः
(C) ततः + लीनः (D) तत् + लीनः

स्रोत–*संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–198*

290. अजादिः = ? AWES TGT–2013

(A) अच + आदिः (B) अज् + आदिः
(C) अच् + आदिः (D) अज + आदिः

स्रोत–*अष्टाध्यायी (8.2.39) - ईश्वरचन्द्र, पेज–1028-1029*

291. यत् + अवसरे = ? AWES TGT–2013

(A) यत अवसरे (B) यत्वसरे
(C) यदवसरे (D) यतवसरे

स्रोत–*अष्टाध्यायी (8.2.39) - ईश्वरचन्द्र, पेज–1028-1029*

292. अम् + कितानाम् = ? AWES TGT–2013

(A) अम् कितानाम् (B) अङ्ककितानाम्
(C) अङ्कितानाम् (D) अङ्गमकितानम्

स्रोत–*संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–196*

293. 'ष्टुना ष्टुः' इति सूत्रे 'ष्टुना' अत्र का विभक्तिः? JNU MET–2014

(A) प्रथमा (B) तृतीया
(C) पञ्चमी (D) षष्ठी

स्रोत–*अष्टाध्यायी (8.4.40) - ईश्वरचन्द्र, पेज–1093*

294. 'जगन्नाथः' में कौन सन्धि है? UP TGT (H)–2013, UP PGT (H)–2004

(A) वृद्धिसन्धि (B) यण्सन्धि
(C) स्वरसन्धि (D) व्यञ्जनसन्धि

स्रोत–*संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–198*

280. (B) **281.** (A) **282.** (B) **283.** (A) **284.** (D) **285.** (D) **286.** (C) **287.** (A) **288.** (B) **289.** (D)
290. (C) **291.** (C) **292.** (C) **293.** (B) **294.** (D)

295. 'शश्छोऽटि' सूत्र का उदाहरण है– H-TET–2015

(A) तच्छिव (B) तद्वानि
(C) वाग्घरि (D) समुद्धर्ता

स्रोत–*संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–198*

296. 'उद्योग' का सन्धि होगा? UP TGT (H)–2013

(A) उत् + योग (B) उद + योग
(C) उध + योग (D) उत् + अयोग

स्रोत–*संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–196*

297. 'अनन्त' शब्द की सही सन्धि होगी– UP TGT (H)–2001, 2004, UP PGT (H)–2002

(A) अन + अन्त (B) अन् + अन्त
(C) अ + नन्त (D) अनन् + त

298. 'भगवद्गीता' का सन्धिविच्छेद है– UP TGT (H)–2003

(A) भगवद् + गीता (B) भग + वद् + गीता
(C) भगवत् + गीता (D) भग + वद्गीता

स्रोत–*अष्टाध्यायी (8.2.39) - ईश्वरचन्द्र, पेज–1028*

299. 'अभिन्न' शब्द का सन्धिविच्छेद होगा– UP TGT (H)–2004

(A) अभि + न्न (B) अ + भिन्न
(C) अभित् + न (D) अनि + न

स्रोत–*अष्टाध्यायी (8.4.44) - ईश्वरचन्द्र, पेज–1094*

300. 'उज्ज्वलः' शब्द का सही सन्धिविच्छेद चुनिए– UP TGT (H)–2005, UP PGT (H)–2013

(A) उज् + ज्वलः (B) उज्ज + वलः
(C) उत् + ज्वलः (D) उज + वलः

स्रोत–*संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–196*

301. 'उज्ज्वल' में प्रयुक्त सन्धि है– UP PGT (H)–2003

(A) गुणसन्धि (B) व्यञ्जनसन्धि
(C) विसर्गसन्धि (D) दीर्घसन्धि

स्रोत–*संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–196*

302. 'हरिश्चन्द्र' में प्रयुक्त किस सन्धि का नाम सही है? UP TGT (H)–2009

(A) स्वरसन्धि (B) व्यञ्जनसन्धि
(C) विसर्गसन्धि (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–*अष्टाध्यायी (8.4.39) - ईश्वरचन्द्र, पेज–1092*

303. 'उड्डयनम्' का सन्धिविच्छेद होगा– UP PGT (H)–2005

(A) उत् + डयनम् (B) उद् + डयनम्
(C) उड + अयनम् (D) उड् + डयनम्

स्रोत–*संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–196*

304. 'उत्थानम्' इति पदस्य सन्धि– G-GIC–2015

(A) उत् + थानम् (B) उद् + स्थानम्
(C) उद् + थानम् (D) उत् + स्थानम्

स्रोत–*संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–196*

305. 'स्तोः श्चुना श्चुः' सूत्र के अनुसार श्चुत्वसन्धि का निम्नलिखित में से कौन-सा उदाहरण सही है? UP PGT (H)–2005

(A) रामस् + चिनोति = रामश्चिनोति
(B) रामस् + टीकते = रामष्टीकते
(C) रामस् + षष्ठः = रामष्षष्ठः
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–52*

306. (i) 'सम् + स्कर्ता' इति स्थितौ किं रूपं न सिद्ध्यति
(ii) 'सम् + स्कर्ता' द्वारा कौन-सा सन्धिरूप नहीं बनेगा? UP GIC–2009, DL–2015

(A) सँस्स्कर्ता (B) संस्स्कर्ता
(C) संस्कर्ता (D) संर्स्कर्ता

स्रोत–*वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (भाग-1)-गोपालदत्त पाण्डेय, पेज–165*

307. 'हरिं वन्दे' पद में सन्धि होती है– UP TET–2014

(A) 'मोऽनुस्वारः' से (B) 'झलां जश् झशि' से
(C) 'एचोऽयवायावः' से (D) 'अतोरोरप्लुतादप्लुते' से

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–56*

295. (A) **296.** (A) **297.** (B) **298.** (C) **299.** (C) **300.** (C) **301.** (B) **302.** (B) **303.** (A) **304.** (B) **305.** (A) **306.** (D) **307.** (A)

308. उड्डीय? **AWES TGT–2012**

(A) उड् + डीय　(B) उत् + डीय
(C) उत् + डिय　(D) उत + डीय

स्रोत–*संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–196*

309. गेहात् + निः + क्रान्तस्य = **AWES TGT–2012**

(A) गेहानिष्क्रान्तस्य　(B) गेहाननिश्क्रान्तस्य
(C) गेहान्निष्क्रान्तस्य　(D) गेहातनिक्रान्तस्य

स्रोत–*अष्टाध्यायी (8.3.41, 8.4.44) - ईश्वरचन्द्र, पेज–1095*

310. रामः + शेते = **AWES TGT–2010**

(A) रामशोते　(B) रामच्छेते
(C) रामश्शेते　(D) सन्धिः न सम्भवः

स्रोत–*संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–200*

311. ''उत् + लङ्घनम्'' = ? **AWES TGT–2010**

(A) उत्लङ्घनम्　(B) उल्लङ्घनम्
(C) उतलङ्घनम्　(D) उल्ल्ङ्घनम्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (8.4.59) - ईश्वरचन्द्र, पेज–1100*

312. ''उपमानस् + टिट्टिभः'' = ? **AWES TGT–2010**

(A) उपमानष्टिट्टिभः　(B) उपमानश्टिट्टभः
(C) उपमानुटट्भिः　(D) उपमानेष्टट्टिभः

स्रोत–*अष्टाध्यायी (8.4.40) - ईश्वरचन्द्र, पेज–1093*

313. ''निरञ्जनम्'' = ? **AWES TGT–2010**

(A) निर + अंजनम्　(B) निः + अञ्जनम्
(C) निर् + अञजनम्　(D) निः + अंञजनम्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (8.2.66) - ईश्वरचन्द्र, पेज–1035-1036*

314. सत्यम् + वद = ? **AWES TGT–2009**

(A) सत्यं वद　(B) सत्यम्वद
(C) सत्यङ्गवद　(D) सन्धिर्न सम्भवा

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–217*

315. शं + का = ? **AWES TGT–2009**

(A) शङ्का　(B) शंका
(C) शँका　(D) सन्धिर्न सम्भवः

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–221*

316. याच् + ना = ? **AWES TGT–2009**

(A) याच्ना　(B) याच्ञा
(C) याञ्चा　(D) याँचा

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–216*

317. विपज्जालम् = ? **AWES TGT–2009**

(A) विपत् + जालम्　(B) विपच् + जालम्
(C) विपज् + जालम्　(D) विपद् + जालम्

स्रोत–*संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–201*

318. कण्ठः = ? **AWES TGT–2009**

(A) कं + ठः　(B) कम् + ठः
(C) कन् + ठः　(D) कण् + टः

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–221*

319. तस्मिंस्तरौ = ? **AWES TGT–2009**

(A) तस्मिन् + तरौ　(B) तस्मिः + तरौ
(C) तस्मिन् + स्तरौ　(D) तस्मिंस् + तरौ

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–221*

320. हरिम् + वन्दे = ? **AWES TGT–2008**

(A) हरिं वन्दे　(B) हरिम्वन्दे
(C) हरिन्वन्दे　(D) हरिङ्वन्दे

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–56*

321. बुद्धिः = ? **AWES TGT–2008**

(A) बुध् + धिः　(B) बुद् + दिः
(C) बुद् + द्धिः　(D) बुध + द्धिः

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–217*

322. शुध् + धिः = ? **AWES TGT–2009**

(A) शुध्धिः　(B) शुधृधिः
(C) शुधिः　(D) शुद्धिः

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–217*

323. 'अहरहः' का विग्रह है– UP PGT–2010, UK–2011

(A) अहर् + अहः　(B) अहर् +अहन्
(C) अहन् + अहः　(D) अहन् +अहन्

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–63*

308. (B) **309.** (C) **310.** (C) **311.** (B) **312.** (A) **313.** (B) **314.** (A) **315.** (A) **316.** (B) **317.** (A) **318.** (A) **319.** (A) **320.** (A) **321.** (A) **322.** (D) **323.** (C)

324. (i) 'मनोरथः' इत्यस्य सन्धिविच्छेद अस्ति
(ii) 'मनोरथः' का सन्धि-विच्छेद होगा–
UP TGT–2001, UP GIC–2009, 2015
BHU MET–2010, UP TET–2013, UP GDC–2014

(A) मनो + रथः (B) मनस् + रथः
(C) मनर् + रथः (D) मनु + रथः

स्रोत–*संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–205*

325. 'मनोरथः' में सन्धि है–
UGC 25 D–1996, BHU MET–2008

(A) गुणसन्धि (B) पूर्वरूपसन्धि
(C) प्रकृतिभाव सन्धि (D) विसर्गसन्धि

स्रोत–*संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–205*

326. 'पितुः + इच्छा' में सन्धि होने पर रूप बनेगा–
UP TGT–1999

(A) पितोच्छा (B) पितोछा
(C) पितुरिच्छा (D) पितुः इच्छा

स्रोत–*संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–205*

327. 'शिवोऽर्च्यः' का सन्धिविच्छेद होगा– UP TGT–2001

(A) शिवस् + अर्च्यः (B) शिवो + अर्च्य
(C) शिव + अर्च्य (D) शिवस् + र्च्य

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड-1), पेज–145*

328. 'कस्त्वम्' अत्र सन्धिरस्ति–
MP वर्ग-2 (TGT)–2011, UK TET–2011

(A) अच्सन्धिः (B) हल्सन्धिः
(C) विसर्गसन्धिः (D) स्वरसन्धिः

स्रोत–*संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–203*

329. 'विसर्जनीयस्य सः' कदा भवति–
RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011

(A) खरि परे (B) जशि परे
(C) झलि परे (D) हशि परे

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड-1), पेज–143*

330. 'ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः' सूत्रेण सिद्ध्यति–
RPSC वर्ग-II (TGT)–2010

(A) आदेशः (B) अन्ताराष्ट्रियः
(C) दीर्घतमः (D) अन्तर्राष्ट्रीयः

स्रोत–*संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–202*

331. 'शम्भुः + राजते' अत्र सन्धिपदम् अस्ति–
RPSC वर्ग-II (TGT)–2014

(A) शम्भुर राजते (B) शम्भुस् राजते
(C) शम्भो राजते (D) शम्भू राजते

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–63*

332. 'शम्भू राजते, हरी रम्य व पुना रमते' इन तीनों पदों की सिद्धि हम किस प्रकरण में करेगें? H-TET–2015

(A) विसर्गसन्धि में (B) व्यञ्जनसन्धि में
(C) अच्सन्धि में (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–*संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–205-206*

333. 'यशस्कम्' का सन्धिविच्छेद है– UP TGT–2004

(A) यश + कम् (B) यश + अस्कम्
(C) यशः + स्कम् (D) यशः + कम्

स्रोत–*संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–205*

334. 'पुनर् + रमते' का सन्धि रूप है? UP TGT–2004

(A) पुनरमते (B) पुनोरमते
(C) पुनःरमते (D) पुनारमते

स्रोत–*संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–205*

335. 'पुना रमते' इस शब्द की सिद्धि करने वाला सूत्र है–
H-TET–2014

(A) ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः (B) हलि सर्वेषाम्
(C) हशि च (D) वा शरि

स्रोत–*संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–205*

336. 'पुनारमते' का अर्थ है– BHU MET–2015

(A) पुनः खेलता है (B) पुरुष नहीं खेलता
(C) दूसरे विचार से (D) फिर से नहीं खेलता

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड-1), पेज–151*

324. (B) **325.** (D) **326.** (C) **327.** (A) **328.** (C) **329.** (A) **330.** (B) **331.** (D) **332.** (A) **333.** (D) **334.** (D) **335.** (A) **336.** (A)

337. सन्धि नियम की दृष्टि से कौन-सा रूप शुद्ध है? UP GIC–2009

(A) पुनारमते (B) पुनः रमते
(C) पुनर् रमते (D) पुनोरमते

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–97*

338. 'पुनारमते' इसका सन्धि-विच्छेद है– UGC 73 J–1999

(A) पुनःरमते (B) पुनर् + रमते
(C) पुनो + रमते (D) पुनस् + रमते

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - आद्या प्रसाद मिश्र, पेज–97*

339. 'स्वाराज्यम्' का सन्धि विच्छेद है– UP TGT–2004

(A) स + राज्यम् (B) स्वर् + राज्यम्
(C) सु + राज्यम् (D) सो + राज्यम्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (8.3.14, 6.3.110)-ईश्वरचन्द्र, पेज–1050, 773*

340. 'हरिर् + रम्यः' में किस वर्ण का लोप हुआ है? UP TGT–2009

(A) स् (B) र्
(C) विसर्ग (D) य्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड–1), पेज–151*

341. 'हरी रम्यः' इत्यस्मिन् वाक्ये 'हरी' इति पदमस्ति– UP GDC–2012

(A) प्रथमाद्विवचनान्तम् (B) द्वितीयाद्विवचनान्तम्
(C) प्रथमैकवचनान्तम् (D) सप्तम्येकवचनान्तम्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड–1), पेज–151*

342. 'अन्तर् + राष्ट्रियः' का सम्मिलित रूप होगा– UP TGT–2010

(A) अन्ताराष्ट्रियः (B) अन्तर्राष्ट्रियः
(C) अन्तर्राष्ट्रीयः (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–*संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–202*

343. 'अन्ताराष्ट्रियः = ? AWES TGT–2008

(A) अन्तः = राष्ट्रियः (B) अन्तर् + राष्ट्रियः
(C) अन्ता + राष्ट्रियः (D) सन्धिर्न सम्भवा

स्रोत–*संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–202*

344. निम्नलिखित शब्दों में सही क्या है? UP TGT–2013

(A) अन्तरराष्ट्रिय (B) अन्तराराष्ट्रिय
(C) अन्ताराष्ट्रिय (D) अन्तर्राष्ट्रीय

स्रोत–*संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–202*

345. निम्नलिखित में से कौन हल्सन्धि नहीं है? UP GDC–2008

(A) जगन्नाथः (B) शिवोवन्द्यः
(C) सच्चित् (D) चिन्मयः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड–1), पेज–146*

346. 'शिवोवन्द्यः' इत्यत्र सन्धिः अस्ति– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011, MP वर्ग-I (PGT)–2012

(A) पूर्वरूपसन्धिः (B) हल्सन्धिः
(C) अच्सन्धिः (D) विसर्गसन्धिः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या (खण्ड–1), पेज–146*

347. किमत्र विजातीयम्– BHU Sh.ET–2008

(A) अमी ईशाः (B) नायकः
(C) पुनारमते (D) नद्यम्बुः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड–1), पेज–184*

348. 'ससजुषो रुः' इत्यत्र किं विधीयते? BHU Sh.ET–2011

(A) षत्वम् (B) सत्वम्
(C) विसर्गः (D) रुः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड–1), पेज–145*

349. कुत्र 'रो रि' इति सूत्रं न प्रवर्तते? BHU Sh.ET–2011

(A) हरी राजते (B) शम्भू राजते
(C) मनोरथः (D) पुनारमते

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड–1), पेज–152*

350. 'रो रि'–इत्यस्य सूत्रस्य किमुदाहरणम्? BHU Sh.ET–2013

(A) अहरहः (B) हरी रम्यः
(C) स शम्भु (D) भो देवाः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड–1), पेज–151*

337. (A)	**338.** (B)	**339.** (B)	**340.** (B)	**341.** (C)	**342.** (A)	**343.** (B)	**344.** (C)	**345.** (B)	**346.** (D)
347. (A)	**348.** (D)	**349.** (C)	**350.** (B)						

351. 'प्रातः + रम्यम्' की सन्धि है– UGC 73 D–1997
(A) प्रातरम्यम् (B) प्रातःरम्यम्
(C) प्रातर्रम्यम् (D) प्रातारम्यम्
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड-1), पेज–151*

352. 'कोऽपि' इति पदे सन्धिः अस्ति– C-TET–2011
(A) व्यञ्जनसन्धिः (B) विसर्गसन्धिः
(C) यण्सन्धिः (D) श्चुत्वसन्धिः
स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–218*

353. 'कः + अपि' की सन्धि होगी– UP TGT (H)–2010
(A) कपि (B) कविः
(C) कर्पि (D) कोऽपि
स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–218*

354. 'कः + अत्र' का सन्धि रूप है– UP TGT–1999
(A) को अत्र (B) कोऽत्र
(C) कः अत्र (D) कोत्रत्रा
स्रोत–*संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–205*

355. 'पीडितोऽभवत्' पदस्य सन्धिविच्छेदः अस्ति– C-TET–2011
(A) पीड् + अभवत् (B) पीडितः + अभवत्
(C) पीडित + अभवत् (D) पीडा + अभवत्
स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–218*

356. विसर्गसन्धेः उदाहरणमस्ति– C-TET–2013
(A) दुष्करमेव (B) गोत्रेष्वपि
(C) आशान्वितः (D) चक्षुर्दानम्
स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–218*

357. भक्तैः + नम्यते = पद होगा– AWES TGT–2011
(A) भक्तैनम्यते (B) भक्तैर्नम्यते
(C) भक्तैस्नम्यते (D) भक्तनम्यते
स्रोत–*अष्टाध्यायी (8.2.66) - ईश्वरचन्द्र, पेज–1035*

358. वायोः + इव = पद होगा– AWES TGT–2011
(A) वायोइव (B) वायोरिव
(C) वायौव (D) वायोरव
स्रोत–*अष्टाध्यायी (8.2.66) - ईश्वरचन्द्र, पेज–1035*

359. 'सामवेदोऽस्मि' इति पदविच्छेदः अस्ति– AWES TGT–2011
(A) सामवेद + अस्मि (B) सामवेदः + अस्मि
(C) सामवेदी + अस्मि (D) सामवेदा + अस्मि
स्रोत–*अष्टाध्यायी (6.1.109) - ईश्वरचन्द्र, पेज–694*

360. 'वृक्षो वर्धते' सन्धिविच्छेद होगा– AWES TGT–2011
(A) वृक्ष + वर्धते (B) वृक्षः + वर्धते
(C) वृक्षो + वर्धते (D) वृक्षा + वर्धते
स्रोत–*अष्टाध्यायी (6.1.110) - ईश्वरचन्द्र, पेज–695*

361. नराष्षट् = ? AWES TGT–2010
(A) नराः + षट् (B) नरे + अष्षट्
(C) नरा + मन्यः (D) नरो + षट्
स्रोत–*अष्टाध्यायी (8.4.40) - ईश्वरचन्द्र, पेज–1093*

362. मुनिर्मान्यः– AWES TGT–2010
(A) मुनिः + मान्यः (B) मुनिर् + अमान्यः
(C) मुनिर् + षट् (D) मुनिः + अमान्यः
स्रोत–*अष्टाध्यायी (8.2.66) - ईश्वरचन्द्र, पेज–1035*

363. सर्वस्तरतु = AWES TGT–2013
(A) सर्वः + तरतु (B) सर्वस् + तरतु
(C) सर्वस्त + अस्तु (D) सर्व + स्तरतु
स्रोत–*अष्टाध्यायी (8.3.34) - ईश्वरचन्द्र, पेज–1056*

364. पर्जन्यस्तद् = ? AWES TGT–2013
(A) पर्जन्यः + स्तत् (B) पर्जन्यस्त + तत्
(C) पर्जन्यस् + तद् (D) पर्जन्यः + तद्
स्रोत–*अष्टाध्यायी (8.3.34) - ईश्वरचन्द्र, पेज–1056*

365. कार्यक्रमः + तु AWES TGT–2013
(A) कार्यक्रम अस्तु (B) कार्यक्रमस्तु
(C) कार्यक्रम्सतु (D) कार्यक्रमष्टु
स्रोत–*अष्टाध्यायी (8.3.34) - ईश्वरचन्द्र, पेज–1056*

351. (D)	**352. (B)**	**353. (D)**	**354. (B)**	**355. (B)**	**356. (D)**	**357. (B)**	**358. (B)**	**359. (B)**	**360. (B)**
361. (A)	**362. (A)**	**363. (A)**	**364. (D)**	**365. (B)**					

366. 'सः + असौ' का सन्धि रूप क्या है? **BHU MET–2012**

(A) सासौ (B) सोऽसौ

(C) स सौ (D) सरसौ

स्रोत–*अष्टाध्यायी (6.1.109) - ईश्वरचन्द्र, पेज–694*

367. 'मनोविज्ञान' में सन्धि है– **UP TGT (H)–2013**

(A) व्यञ्जनसन्धि (B) विसर्गसन्धि

(C) यण्सन्धि (D) दीर्घसन्धि

स्रोत–*अष्टाध्यायी (6.1.110) - ईश्वरचन्द्र, पेज–695*

368. 'मनोरम' का सन्धि-विच्छेद है– UP TGT (H)–2003

(A) मन + ओरम (B) मन + रम

(C) मनो + रम (D) मनः + रम

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (6.1.10) (भैमीव्याख्या खण्ड-1), पेज–152*

369. 'तेजोमयः का सही सन्धिविच्छेद है– **UP TGT (H)–2009**

(A) तेज + ओमय (B) तेजः + अमय

(C) तेजः + मयः (D) तेजो + मय

स्रोत–*अष्टाध्यायी (6.1.110) - ईश्वरचन्द्र, पेज–695*

370. 'दुष्प्रकृति' शब्द का सन्धिविच्छेद है– **UP TGT (H)–2010**

(A) दुस + प्रकृति (B) दुः + प्रकृति

(C) दुश्य् + प्रकृति (D) दुसप्र + कृति

स्रोत–*अष्टाध्यायी (8.3.41) - ईश्वरचन्द्र, पेज–1058*

371. 'शिवो वन्द्यः' इस वाक्य में किस सूत्र से सन्धि हुई है? **UGC 73 D–2015**

(A) अतो रोरप्लुतादप्लुते

(B) हशि च

(C) भो-भगो-अघो-अपूर्वस्ययोऽशि

(D) हलि सर्वेषाम्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (6.1.110) (भैमी व्याख्या खण्ड–1), पेज–146*

372. 'बृहस्पति' का सन्धि-विच्छेद है– UP PGT (H)–2009

(A) बृहस + पति (B) बृहस् + पति

(C) बृहः + पति (D) बृहश् + पति

स्रोत–*अष्टाध्यायी (8.3.34) - ईश्वरचन्द्र, पेज–1056*

373. 'दुर्जन' का सन्धिविच्छेद होगा– UP PGT (H)–2013

(A) दुर् + जन (B) दुः + जन

(C) दु + अरजन (D) दुं + जन

स्रोत–*अष्टाध्यायी (8.2.66) - ईश्वरचन्द्र, पेज–1035*

374. 'अहरहः' का अर्थ है– **BHU MET–2015**

(A) बड़ा आश्चर्य (B) चमत्कार

(C) प्रतिदिन (D) प्रतिवर्ष

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड–1) (8.2.69), पेज–149*

375. ''वा शरि'' का उदाहरण है– **BHU MET–2015**

(A) विष्णुस्त्राता (B) हरिःशेते

(C) अघो या हि (D) यशः कायः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड–1) (8.3.36), पेज–143*

376. मुनिभिरागतम् = **AWES TGT–2010**

(A) मुनिभिः + आगतम्

(B) मुनिभिर + आगतम्

(C) मुनिभिः + रागतम्

(D) सन्धिर्न सम्भवा

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड–1) (8.2.66), पेज–145*

377. शिष्यः + जयति = ? **AWES TGT–2009**

(A) शिष्यर्जयति (B) शिष्य जयति

(C) शिष्यो जयति (D) शिष्यरजयति

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–219*

378. गुरू रुष्टः– **AWES TGT–2009**

(A) गुरु + रुष्टः (B) गुरूः + रूष्टः

(C) गुरुर् + रुष्टः (D) सन्धिर्न सम्भवा

स्रोत–*संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–204*

366. (B) 367. (B) 368. (D) 369. (C) 370. (B) 371. (B) 372. (C) 373. (B) 374. (C) 375. (B)
376. (A) 377. (C) 378. (C)

379. देवः + अधुना = ? **AWES TGT–2008**

(A) देव + अधुना (B) देवऽधुना

(C) देवोधुना (D) देवोऽधुना

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–218*

380. एषः + च? **CVVET–2015**

(A) एष च (B) एषक्ष

(C) एषो च (D) एषा च

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड–1), पेज–155*

381. 'प्रथमो भागः' में प्रथम शब्द के र् (रुँ) को उ करने वाला सूत्र है– **H TET–2014**

(A) रो रि

(B) रोऽसुँपि

(C) हशि च

(D) अतो रोरप्लुतादप्लुते

स्रोत–*(i) अष्टाध्यायी (6.1.110) - ईश्वरचन्द्र, पेज–695*

(ii) लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड–1), पेज–146

382. 'निर्धन' में कौन-सी सन्धि है? **RLP–2015**

(A) अयादि सन्धि (B) यण् सन्धि

(C) व्यञ्जन सन्धि (D) विसर्ग सन्धि

स्रोत–*अष्टाध्यायी (8.2.66) - ईश्वरचन्द्र, पेज–1035*

383. 'सुगण्णीशः' इति पदे सन्धिविधायकं सूत्रमस्ति– **RPSC ग्रेड-I (PGT) 2011**

(A) अनुनासिकात् परोऽनुस्वारः

(B) यरोनुनासिकेऽनुनासिको वा

(C) अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः

(D) ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड–1), पेज–131*

384. 'सुगण् + ईशः' इत्यस्य सन्धिपदमस्ति– **RPSC ग्रेड I (PGT)–2014**

(A) सुगणीशः (B) सुगनीशः

(C) सुगन्नीशः (D) सुगण्णीशः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड–1), पेज–131*

385. 'हे प्रभो!' में 'प्रभु' शब्द में कौन-सी विधि है– **UP PGT (H)–2000**

(A) वृद्धि (B) दीर्घ

(C) गुण (D) सम्प्रसारण

स्रोत–*अष्टाध्यायी (7.3.108) - ईश्वरचन्द्र, पेज–958*

386. किस शब्द का सन्धि विच्छेद सही नहीं है? **H-TET–2014**

(A) प्र + उढः = प्रोढः (B) नी + ऊन = न्यून

(C) अम्बु + ऊर्मि = अम्बूर्मि (D) शची + इन्द्र = शचीन्द्र

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–48*

प्रियसंस्कृतमित्राणि!

आप तभी पढ़ें, जब मन प्रसन्न हो
दुःखी मन से की गयी पढ़ाई
एक प्रकार से चट्टान पर की
जाने वाली जुताई के समान लगभग व्यर्थ है।

–संस्कृतगङ्गा

379. (D) 380. (A) 381. (C) 382. (D) 383. (D) 384. (D) 385. (C) 386. (A)

3. समास-प्रकरण

1. समासः कः? BHU Sh.ET–2008

(A) पदार्थवाचकम् (B) अनेकपदीकरणम्
(C) एकपदीकरणम् (D) सर्ववाक्यम्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–02*

2. समासस्य प्रकाराः सन्ति? AWES TGT–2010

(A) त्रयः (B) षट्
(C) पञ्च (D) चत्वारः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–02*

3. समास की प्रक्रिया होती है? UP TGT–2005

(A) दो वर्णों के बीच (B) दो पदों के बीच
(C) दो वाक्यों के बीच (D) एक वर्ण और एक पद के बीच

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–02*

4. समासस्य व्याकरणसम्मता परिभाषा अस्ति– RPSC ग्रेड-I (TGT)–2014

(A) समसनं समासः (B) संक्षिप्तीकरणं समासः
(C) पदमेलनं समासः (D) पदविलोपनं समासः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–02*

5. लघुसिद्धान्तकौमुदीकारमते समासः कतिधा वर्तते? UGC 25 J–2013

(A) पञ्चधा (B) षोढा
(C) सप्तधा (D) चतुर्धा

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–02*

6. समासे प्रथमानिर्दिष्टम् उपसर्जनं कुत्र प्रयोक्तव्यम्? UGC 25 J–2006

(A) पूर्वम् (B) अन्ते
(C) मध्ये (D) यथेच्छम्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–20*

7. 'स्वं रूपं शब्दस्याशब्दसंज्ञा' इति सूत्रे 'शब्दसंज्ञा' इति पदे कः समासः? JNU MET–2015

(A) षष्ठीतत्पुरुषः (B) द्वितीयातत्पुरुषः
(C) सप्तमीतत्पुरुषः (D) बहुव्रीहिः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–94-97*

8. समासशास्त्रे उपसर्जनं नाम– UGC 25 D–2006

(A) द्वितीयानिर्दिष्टम् (B) प्रथमानिर्दिष्टम्
(C) सप्तमीनिर्दिष्टम् (D) तृतीयानिर्दिष्टम्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–20*

9. (i) समासशास्त्रे प्रथमानिर्दिष्टस्यसंज्ञा भवति–
(ii) समासशास्त्रे प्रथमानिर्दिष्टं किं भवति?
UGC 25 D–2012, CCSUM Ph.D–2016

(A) उपसर्गः (B) अव्ययम्
(C) उपसर्जनम् (D) प्रातिपदिकम्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–20*

10. उपसर्जनसञ्ज्ञाविधायकं सूत्रम् अस्ति? UK SLET–2015

(A) परवल्लिङ्गं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः
(B) गोस्त्रियोरुपसर्जनस्य
(C) अनुपसर्जनात्
(D) एकविभक्ति चाऽपूर्वनिपाते

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–136*

11. अविग्रह (जिसका विग्रह न हो) युक्त समास है? UGC 25 J–2002

(A) नित्य (B) तत्पुरुष
(C) बहुव्रीहि (D) द्वन्द्व

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–11*

1. (C) 2. (C) 3. (B) 4. (A) 5. (A) 6. (A) 7. (C) 8. (B) 9. (C) 10. (D) 11. (A)

12. परार्थाभिधानरूपा वृत्तिः कतिविधा? BHU AET–2011

(A) कृदन्तरूपैका
(B) कृत्तद्धितरूपा द्विविधा
(C) कृत्तद्धितसमासरूपा त्रिविधा
(D) कृत्तद्धितसमासैकशेषसनाद्यन्तधातुरूपाः पञ्चविधा

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–09*

13. 'विशेषसंज्ञाविनिर्मुक्तः' कः समास :–
UGC 25 D–2007, J–2011

(A) बहुव्रीहिः (B) द्विगुः
(C) केवलः (D) कर्मधारयः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–02*

14. सुबन्त पद के साथ सुबन्त पद के समास को कहते हैं? UP TGT–2004

(A) सुबसुबा (B) सुपुसुपा
(C) सुप्सुपा (D) सुसुपा

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–09*

15. नित्यसमासो नाम– UGC 25 J–2005

(A) अस्वपदविग्रहः (B) विकल्पो न भवति
(C) स्वपदविग्रहः (D) विग्रहवान्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–11*

16. 'वागर्थाविव' पदे समासः अस्ति–
RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011

(A) सुप्सुपा (B) तत्पुरुषः
(C) बहुव्रीहिः (D) द्वन्द्वः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–14*

17. 'नैकः' में कौन-सा समास है? UP TGT–2010

(A) नञ् तत्पुरुष (B) अव्ययीभाव
(C) एकशेषद्वन्द्व (D) सुप्सुपा

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–13*

18. 'भूतपूर्वः' यहाँ समास विधायक सूत्र है?
UP TGT–2001, UGC 25 J–1998

(A) प्राक्कडारात्समासः (B) कुगतिप्रादयः
(C) सह सुपा (D) उपसर्जनं पूर्वम्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–09*

19. 'भूतपूर्वः' अस्मिन् पदे समासो वर्तते?
AWES TGT–2010 H-TET–2015

(A) तत्पुरुषः (B) केवलसमासः
(C) बहुव्रीहिः (D) समासो न वर्तते

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–09*

20. (i) अव्ययीभाव समास होता है? UGC 73 J–2005
(ii) अव्ययीभाव-समासे भवति– D–2013

(A) न कोऽपि प्रधानं पदं भवति
(B) अन्यपदप्रधानं भवति
(C) पूर्वपदप्रधानं भवति
(D) उत्तरपदप्रधानं भवति

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–02*

21. (i) जिस समास में प्रथमपद प्रधान होता है, उसे कहते हैं?
(ii) प्रायेण पूर्वपदार्थप्रधानः कः समासः?
(iii) पूर्वपदप्रधान समास है?
(iv) प्रायः पूर्वपद की प्रधानता वाला समास है–
UGC 73 D–2014, UGC 25 D–2001, 2002, 2004
S–2013, UP PGT–2009, BHU Sh.ET–2013
UP TET–2016

(A) अव्ययीभाव (B) तत्पुरुष
(C) कर्मधारय (D) द्वन्द्व

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–02*

22. अव्ययीभावसंज्ञायाः फलं किम्? UGC 25 J–2011

(A) अव्ययसंज्ञा (B) प्रातिपदिकसंज्ञा
(C) सुप् लुक् (D) सुप्प्रत्ययानां प्राप्तिः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–02*

12. (D) 13. (C) 14. (C) 15. (A) 16. (A) 17. (D) 18. (C) 19. (B) 20. (C) 21. (A) 22. (A)

23. उपसर्जन का उपयोग इसमें विशेष रूप से होता है? UGC 73 D–2007

(A) तत्पुरुष (B) अव्ययीभाव
(C) बहुव्रीहि (D) द्वन्द्व

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–20*

24. (i) नित्यनपुंसकलिङ्गैकवचनान्तः समासो भवति?
(ii) कः समासः नित्यनपुंसकलिङ्गे एकवचने प्रयुक्तः भवति? G GIC–2015, UP GDC–2012, UP GIC–2009, 2015

(A) बहुव्रीहिः (B) द्विगुः
(C) द्वन्द्वः (D) अव्ययीभावः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–23*

25. अव्ययीभावसमासे सहस्य 'सः' इति आदेशः केन सूत्रेण विधीयते? UGC 25 J–2014

(A) अव्ययीभावश्च (B) अनश्च
(C) अव्ययीभावे चाकाले (D) नस्तद्धिते

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–36*

26. (i) अव्ययीभावसमास में पद के अन्त में लिङ्ग होता है?
(ii) अव्ययीभावसमास की सिद्धि होने पर सम्पूर्ण पद हो जाता है? UP TGT–2003, 2004

(A) पुंलिङ्ग (B) स्त्रीलिङ्ग
(C) नपुंसकलिङ्ग (D) उपर्युक्त तीनों

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–23*

27. पञ्चमीं विना सार्वविभक्तिकः 'अम्' भावः कस्मिन् समासे विधीयते? UGC 25 D–2014

(A) तत्पुरुषे (B) बहुव्रीहौ
(C) द्वन्द्वे (D) अव्ययीभावे

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–24*

28. को नाम समासः नित्यं क्लीबलिङ्गं धारयति? DL–2015

(A) द्वन्द्वः
(B) द्विगुः
(C) विशेष्य-विशेषण-सम्बन्धि-कर्मधारयः
(D) अव्ययीभावः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–23*

29. समासान्त-अव्ययीभावस्य उदाहरणं किम्– UK SLET–2012

(A) अध्यात्मम् (B) अधिगोपम्
(C) निर्मक्षिकम् (D) उपसमीपम्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–52*

30. 'अनुरूपम्' पद में समास का नाम है? UGC 25 J–1995, UP PGT (H)–2013

(A) अव्ययीभाव (B) तत्पुरुष
(C) द्विगु (D) द्वन्द्व

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–33*

31. 'रूपस्य योग्यम्' इससे बनता है? UGC 25 D–1997, J–2013

(A) यथारूपम् (B) प्रतिरूपम्
(C) अनुरूपम् (D) अतिरूपम्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–33*

32. 'अनुरूपम्' इत्यस्य पदस्य विग्रहः वर्तते? UGC 25 D–2007, RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014

(A) रूपस्य प्रति (B) रूपस्य योग्यम्
(C) रूपस्य सादृश्यम् (D) रूपस्य पश्चात्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–33*

33. 'यथारूपम्' पद में समास है? UGC 25 D–1999

(A) अव्ययीभाव (B) द्विगु
(C) द्वन्द्व (D) बहुव्रीहि

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–35*

34. एतेषु कोऽव्ययीभावसमासः? BHU Sh.ET–2013

(A) अनश्वः (B) नखभिन्नः
(C) यथाशक्ति (D) पञ्चगवम्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–35*

35. (i) 'यथाशक्ति' में समास है? UGC 25 J–2003
(ii) 'यथाशक्ति' इत्यत्र कः समासः– BHU Sh.ET–2008, RPSC ग्रेड-III–2013, UP TET–2016

(A) तत्पुरुषः (B) बहुव्रीहिः
(C) अव्ययीभावः (D) द्विगुः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–33*

23. (B) **24.** (D) **25.** (C) **26.** (C) **27.** (D) **28.** (D) **29.** (A) **30.** (A) **31.** (C) **32.** (B)
33. (A) **34.** (C) **35.** (C)

36. 'यथाशक्ति' इति समस्तपदस्य विग्रहः भवति– C-TET–2015

(A) शक्तिम् अनतिक्रम्य (B) शक्तिं प्रयुज्य
(C) शक्तिः यथा (D) शक्तेः महत्त्वम्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–33*

37. 'यथारुचि' में समास है? UP PCS–2013

(A) तत्पुरुष (B) बहुव्रीहि
(C) अव्ययीभाव (D) द्वन्द्व

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–35*

38. 'यथामति' शब्द में कौन समास है? UP TGT–2013

(A) अव्ययीभाव (B) बहुव्रीहि
(C) तत्पुरुष (D) द्वन्द्व

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–35*

39. निम्नलिखित में से 'यथाविधि' का सही समास कौन-सा है? UP PGT (H)–2010

(A) अव्ययीभाव (B) तत्पुरुष
(C) कर्मधारय (D) बहुव्रीहि

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–33*

40. 'अधिहरि' यह समास इस अर्थ में है? UGC 25 D–1998, J–2000

(A) समीप (B) समृद्धि
(C) व्यृद्धि (D) विभक्ति

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–19*

41. (i) 'अधिहरि' इत्यत्र कः समासः?
(ii) 'अधिहरि' अस्मिन् पदे कः समासः?
UP TGT–2001, UGC 25 J–2005, 2007, 2008

(A) केवलसमासः (B) उपपदसमासः
(C) तत्पुरुषः (D) अव्ययीभावः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–21*

42. 'हरि शब्दस्य प्रकाशः' का समस्त पद क्या होगा? H-TET–2015

(A) अधिहरि (B) इतिहरि
(C) हरिइति (D) अनुहरि

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–32*

43. 'अधिहरि' इत्यस्य अलौकिकविग्रहः भवति? UGC 25 J–2014

(A) अधि + हरि + सु (B) हरि + अधि + ङि
(C) हरि+ङि+अधि+सु (D) हरौ + इति + ङि

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–21*

44. (i) विभक्त्यर्थे अव्ययीभावस्य उदाहरणं भवति–
(ii) विभक्ति के अर्थ में अव्ययीभाव का उदाहरण है– UGC 73 J–2010

(A) उपकूलम् (B) सतृणम्
(C) दुर्भिक्षम् (D) अधिहरि

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–21*

45. 'अधिगोपम्' इत्यत्र कः समासः? UGC 25 J–2013

(A) उपपदतत्पुरुषः (B) कर्मधारयः
(C) तत्पुरुषः (D) अव्ययीभावः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–24*

46. (i) 'अधिगोपम्' इत्यत्र अधिपदांशः कस्मिन्नर्थेऽस्ति?
(ii) 'गोप इति = अधिगोपम्' इत्यत्र कस्मिन्नर्थे कः समासः– BHU AET–2011, HE–2015

(A) सप्तमीतत्पुरुषः (B) पश्चादर्थेऽव्ययीभावः
(C) विभक्त्यर्थेऽव्ययीभावः (D) सादृश्यार्थेऽव्ययीभावः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–24*

47. 'गोः समीपे' में अव्ययीभाव समास कीजिये? UP GDC–2008

(A) गोरूप (B) उपगौ
(C) उपगु (D) उपगोः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–237*

48. 'कुम्भस्य समीपं' इसका समस्तरूप है? UGC 73 J–1998

(A) उपरिकुम्भम् (B) अधिकुम्भम्
(C) परिकुम्भम् (D) उपकुम्भम्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–26*

36. (A)	37. (C)	38. (A)	39. (A)	40. (D)	41. (D)	42. (B)	43. (C)	44. (D)	45. (D)
46. (C)	47. (C)	48. (D)							

49. 'उपकृष्णम्' इत्यस्य पदस्य विग्रहः वर्तते? **UGC 25 J–2009**

(A) कृष्णस्य सादृश्यम् (B) कृष्णस्य पश्चात्

(C) कृष्णस्य समीपम् (D) कृष्णं प्रति

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–26*

50. 'उपकृष्णम्' इत्यत्र समासोऽस्ति? **RPSC ग्रेड-II TGT–2014**

(A) केवलसमासः (B) तत्पुरुषः

(C) अव्ययीभावः (B) बहुव्रीहिः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–26*

51. 'उपराजम्' अत्र समासान्तः कः? UGC 25 D–2005

(A) टच् (B) अच्

(C) अ (D) अम्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–52*

52. 'उपराजम्' में कौन-सा समास है? UP PGT–2003

(A) बहुव्रीहि (B) तत्पुरुष

(C) अव्ययीभाव (D) द्वन्द्व

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–52*

53. 'उपशरदम्' अत्र कः समासः? UGC 25 J–2006

(A) बहुव्रीहिः (B) द्विगुः

(C) अव्ययीभावः (D) द्वन्द्वः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–48*

54. 'उपशरदम्' इत्यस्य पदस्य समासविग्रहः अस्ति? **RPSC ग्रेड-I (PGT)–2014**

(A) शरदः समीपम् (B) शरदः उपरि

(C) शरदः अनुकूलम् (D) शरदः आधिक्यम्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–48*

55. 'राज्ञः समीपम्' का समस्तपद है? H TET–2014

(A) उपराजन् (B) राजसमीपम्

(C) उपराजम् (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–52*

56. (i) विष्णु के बाद का सम्पूर्ण पद है?
(ii) 'विष्णोः पश्चात्' का सम्पूर्ण पद है? **UP TGT–2003, 2004**

(A) उपविष्णुन् (B) अनुविष्णो

(C) अनुविष्णवे (D) अनुविष्णु

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–28*

57. 'अनुविष्णु'–समस्त पद का विग्रह होगा– **UP PGT–2013**

(A) अनुविष्णो (B) अनुकर्ता विष्णुम्

(C) विष्णोः पश्चात् (D) विष्णोरनुयायी

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–28*

58. 'रथस्य पश्चात्' इस विग्रहवाक्य का समास होगा? **UP TGT–2004**

(A) रथिपात् (B) पथपश्चात्

(C) अनुरथम् (D) पश्चात् रथेन

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–32*

59. 'अनुरथम्' इस अव्ययीभावसमास वाले पद का अस्वपद विग्रह है? RPSC ग्रेड-III–2013

(A) रथस्य अनु (B) अनोः रथः

(C) अनु चासौ रथम् (D) रथस्य पश्चात्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–32*

60. सुमद्रम्-अत्र 'सु' अव्ययः कस्मिन्नर्थे वर्तते? **UGC 25 J–2011, D–2013**

(A) 'सुन्दरम्' इत्यस्मिन् अर्थे (B) 'सुष्ठु' इत्यस्मिन् अर्थे

(C) 'समृद्धिः' इत्यस्मिन् अर्थे (D) 'समीपम्' इत्यस्मिन् अर्थे

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–28*

61. 'सुमद्रम्' में कौन-सा समास है? UP PGT–2000

(A) कर्मधारय (B) बहुव्रीहि

(C) अव्ययीभाव (D) षष्ठीतत्पुरुष

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–28*

49. (C)	**50.** (C)	**51.** (A)	**52.** (C)	**53.** (C)	**54.** (A)	**55.** (C)	**56.** (D)	**57.** (C)	**58.** (C)
59. (D)	**60.** (C)	**61.** (C)							

62. किस समस्तपद का विग्रह सही नहीं है?
H-TET–2015

(A) सुमद्रम् – मद्राणां समृद्धिः
(B) पञ्चगवधनः – पञ्च गौः धनं यस्य सः
(C) चित्रगुः – चित्रा गावो यस्य सः
(D) निर्घृणः – निर्गता घृणा यस्मात् सः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–106*

63. 'सुमद्रम्' इत्यस्य समासविग्रहः कः?
RPSC ग्रेड-I (PGT)–2014

(A) मद्राणां समृद्धिः (B) मद्राणां हितम्
(C) मद्रमनतिक्रम्य (D) मद्राणां समीपम्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–28*

64. कः शब्दः अव्ययीभावसमासस्य उदाहरणम् अस्ति?
UK TET–2011

(A) सुखार्थम् (B) युधिष्ठिरः
(C) पाणिपादम् (D) आसमुद्रम्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–45*

65. उपासनम् = ? AWES TGT–2010

(A) उपासना इति (B) आसनस्य समीपम्
(C) उपासन अभावः (D) उपासना समीपम्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–26*

66. 'निर्मक्षिकम्' में किस अर्थ में समास है?
BHU MET–2012

(A) अभाव (B) भाव
(C) समुच्चय (D) निर्गमन

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–28*

67. 'निर्मक्षिकम्' का समासविग्रह होगा– UP TET–2014

(A) निर्गता मक्षिका यस्मात् सः
(B) निर्गता मक्षिका यस्मिन् सः
(C) मक्षिकाणाम् अभावः
(D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–28*

68. 'निर्मक्षिकम्' में समास है– BHU MET–2010, UP PGT–2004, UP TET–2003, 2005

(A) तत्पुरुष (B) अव्ययीभाव
(C) द्वन्द्व (D) बहुव्रीहि

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–28*

69. 'निर्मक्षिकम्' अस्य पदस्य अलौकिकविग्रहः भवति?
UGC 25 D–2012

(A) निर्+मक्षिका + अम् (B) मक्षिका + टा + निर्
(C) मक्षिक + सुँ + निर् (D) मक्षिका + आम् + निर्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–30*

70. समाहारे समस्यमानम् अव्ययीभावरूपम्–
UK SLET–2015

(A) उपजरसम् (B) पञ्चगङ्गम्
(C) यथाशक्ति (D) अधिहरि

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–42*

71. 'पञ्चगङ्गम्' इत्यत्र समासविधायकं सूत्रं किम्?
RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011, UGC 25 S–2013

(A) संख्यापूर्वो द्विगुः (B) चार्थे द्वन्द्वः
(C) नदीभिश्च (D) अनेकमन्यपदार्थे

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–42*

72. 'पञ्चानां गङ्गानां समाहारः पञ्चगङ्गम्' इत्यत्र कः समासः?
UGC 25 D–2005, 2009

(A) तत्पुरुषः (B) द्विगुः
(C) कर्मधारयः (D) अव्ययीभावः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–42-43*

73. (i) 'पञ्चगङ्गम्'–यहाँ समास है–
(ii) 'पञ्चगङ्गम्' इत्यस्मिन् पदे समासोऽस्ति–
UP PGT 2002, 2005, UP GDC – 2014
REET–2016, UGC 25 D–1998, UP GIC–2015

(A) द्विगु (B) तत्पुरुष
(C) अव्ययीभाव (D) बहुव्रीहि

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–42*

62. (B)	63. (A)	64. (D)	65. (B)	66. (A)	67. (C)	68. (B)	69. (D)	70. (B)	71. (C)
72. (D)	73. (C)								

74. निम्नलिखित में से अव्ययीभाव समास है– UP TGT–2004

(A) पञ्चनरम् (B) पञ्चनदम्
(C) पञ्चाननम् (D) पञ्चगवम्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–44*

75. 'गङ्गायाः समीपम्' इस अस्वपद विग्रह में अव्ययीभाव समास होता है? RPSC ग्रेड-III–2013

(A) गङ्गासमीपम् (B) समीपगङ्गाम्
(C) उपगङ्गम् (D) सगङ्गम्

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–236*

76. (i) 'उपगङ्गम्' अस्मिन् पदे समासोऽस्ति–
(ii) 'उपगङ्गम्' में कौन सा समास है?
UP TGT–2009, BHU MET–2009
UP TET–2013, 2016, MP वर्ग-1 (PGT)–2012

(A) तत्पुरुष (B) द्वन्द्व
(C) अव्ययीभाव (D) बहुव्रीहि

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–236*

77. 'सप्तगङ्गम्' में समास है? UGC 73 D–1996

(A) तत्पुरुषः (B) द्विगुः
(C) अव्ययीभावः (D) द्वन्द्वः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–44*

78. 'द्वियमुनम्' किस सूत्र से बनता है? UGC 25 D–1997

(A) अव्ययीभावश्च (B) नदीभिश्च
(C) संख्यापूर्वो द्विगुः (D) अव्ययीभावे चाकाले

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–42*

79. (i) 'द्वियमुनम्' इत्यस्मिन् पदे समासः अस्ति?
(ii) 'द्वियमुनम्' इत्यत्र कः समासः?
UP PGT–2000, UGC 25 D–2012
JNU M.Phil/Ph. D–2015

(A) द्विगुः (B) द्वन्द्वः
(C) अव्ययीभावः (D) तत्पुरुषः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–42*

80. कः समासः युक्तः– UK SLET–2012

(A) द्वियमुनम् (B) द्वौयमुनम्
(C) द्वायमुनम् (D) द्वेयमुनम्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–42*

81. 'दुर्यवनम्' में समास है? UP PGT–2002

(A) तत्पुरुष (B) अव्ययीभाव
(C) बहुव्रीहि (D) द्वन्द्व

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–28*

82. 'सतृणम्' यहाँ समास इस अर्थ में है? UGC 25 J–1998

(A) समीप (B) साकल्य
(C) समृद्धि (D) विभक्ति

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–36*

83. अव्ययीभावसमासे 'साग्नि' इत्युदाहरणे अग्निरुच्यते? UGC 25 S–2012

(A) देवः (B) दाहकः
(C) पाचकः (D) ग्रन्थः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–36*

84. 'सहरि' में कौन-सा समास है?
UP PGT–2003, UP TGT–2004

(A) अव्ययीभाव (B) तत्पुरुष
(C) बहुव्रीहि (D) द्वन्द्व

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–36*

85. 'आमेखलम्' अस्मिन् पदे समासोऽस्ति? UP TET–2011

(A) अव्ययीभावः (B) बहुव्रीहिः
(C) तत्पुरुषः (D) द्वन्द्वः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–45*

86. 'परि अभूषयत् = पर्यभूषयत्' इस विग्रहवाक्य में कौन-सा समास है? UP TGT–2004

(A) द्विगुसमास (B) बहुव्रीहिसमास
(C) द्वन्द्वसमास (D) अव्ययीभावसमास

स्रोत–*वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (भाग-2)-गोविन्दाचार्य, पेज–373*

74. (B) **75.** (C) **76.** (C) **77.** (C) **78.** (B) **79.** (C) **80.** (A) **81.** (B) **82.** (B) **83.** (D)
84. (A) **85.** (A) **86.** (D)

87. 'हिमस्य अत्ययः' का सम्पूर्ण पद है? UP TGT–2005

(A) अनुहिमम् (B) अतिहिमम्
(C) उपहिमम् (D) उपहिमाय

स्रोत–*समासप्रकरण (आचार्यसेतु)-ललित कुमार त्रिपाठी, पेज–33*

88. अधोनिर्दिष्ट में से अव्ययीभाव का उदाहरण है? UGC 73 D–2008

(A) अर्धपिप्पली (B) शाकप्रति
(C) अतिमालः (D) प्राचार्यः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–45*

89. अतिनिद्रम्– AWES TGT–2009

(A) निद्रायाः अत्ययः (B) निद्रायाः आधिक्यम्
(C) निद्रायाः अति (D) निद्रा सम्प्रति न युज्यते

स्रोत–*समासप्रकरण (आचार्यसेतु)-ललित कुमार त्रिपाठी, पेज–33*

90. अव्ययीभावसमासस्योदाहरणमस्ति? RPSC ग्रेड-II (TGT)–2010

(A) घनश्यामः (B) प्रत्यर्थम्
(C) नीलोत्पलम् (D) हस्तलिखितम्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–33*

91. 'प्रतिदिनम्' में समास है? UP TET–2013, 2014

(A) अव्ययीभाव (B) तत्पुरुष
(C) कर्मधारय (D) बहुव्रीहि

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–34*

92. 'प्रत्यक्षम्' में समास है? UP TGT–2004, 2010

(A) नञ् तत्पुरुष (B) अव्ययीभाव
(C) द्वन्द्व (D) कर्मधारय

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–51*

93. प्रत्येकम् – AWES TGT–2010

(A) प्रति एकम् (B) एकम् प्रति एकम्
(C) एकम् एकम् प्रति (D) प्रति एक एकम्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–34*

94. 'प्रतिचक्रम्' में लौकिकविग्रह है? AWES TGT–2013

(A) प्रति प्रति चक्रम् (B) चक्रं चक्रं प्रति
(C) प्रत्यचक्रम् (D) चक्रं प्रति प्रति

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–34*

95. 'प्रतिपुष्पम्' समास है? UGC 73 J–1994

(A) द्वन्द्व (B) अव्ययीभाव
(C) तत्पुरुष (D) कर्मधारय

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–34*

96. 'अध्यात्मम्' में समास है? UP GDC–2008

(A) अव्ययीभाव (B) तत्पुरुष
(C) कर्मधारय (D) बहुव्रीहि

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–52*

97. 'आभचैद्यम्' पद में समास है? UP GDC–2008

(A) तत्पुरुष (B) कर्मधारय
(C) अव्ययीभाव (D) द्विगु

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग)*

98. 'तिष्ठन्ति गावो यस्मिन् काले स तिष्ठद्गु दोहनकाल' इत्यत्र समासोऽस्ति? BHU AET–2011

(A) अव्ययीभावः (B) बहुव्रीहिः
(C) कर्मधारयः (D) द्वन्द्वः

स्रोत–*वैयाकरणसिद्धान्त कौमुदी (भाग–2)-गोविन्दाचार्य, पेज–408*

99. अव्ययीभाव का उदाहरण है? UGC 73 D–2009

(A) राजपुरुषः (B) अहिनकुलम्
(C) त्रिमुनि (D) पञ्चवटी

स्रोत–*वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (भाग–2)-गोविन्दाचार्य, पेज–411*

100. 'त्रिमुनि' में समास है? UGC 73 D–1997

(A) तत्पुरुष (B) बहुव्रीहि
(C) कर्मधारय (D) अव्ययीभाव

स्रोत–*वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (भाग–2)-गोविन्दाचार्य, पेज–411*

87. (B) **88.** (B) **89.** (D) **90.** (B) **91.** (A) **92.** (B) **93.** (C) **94.** (B) **95.** (B) **96.** (A) **97.** (C) **98.** (A) **99.** (C) **100.** (D)

101. 'अव्ययं विभक्तिः...' इत्यादि सूत्रे यथार्थेषु किं नास्ति–
JNU M.Phil/Ph. D–2014
(A) योग्यता (B) वीप्सा
(C) आनुपूर्व्यम् (D) पदार्थानतिवृत्तिः
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–18*

तत्पुरुषसमासः

102. तत्पुरुषे समासे कस्य पदार्थस्य प्रधानता भवति?
MP वर्ग-1 (PGT)–2012, UGC 25 D–2013
(A) पूर्वपदार्थस्य (B) उत्तरपदार्थस्य
(C) अन्यपदार्थस्य (D) उभयपदार्थस्य
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–02*

103. (i) उत्तरपदार्थ प्रधान है? UP TGT–2004
(ii) समास, जिसमें प्रायः उत्तरपद के अर्थ की प्रधानता होती है?
(A) अव्ययीभाव (B) तत्पुरुष
(C) बहुव्रीहि (D) द्वन्द्व
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–02*

104. 'तत्पुरुषः' इति सूत्रमस्ति? UP GIC–2015
(A) विधि (B) परिभाषा
(C) नियम (D) अधिकार
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–59*

105. (i) कर्मधारय समास किसका भेद है?
(ii) कर्मधारय समास किस समास का एक भेद है?
UP TGT–1999, UP PGT–2010, UK TET–2011
(A) अव्ययीभाव (B) तत्पुरुष
(C) बहुव्रीहि (D) द्विगु
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–108*

106. 'व्यधिकरण तत्पुरुष' समास के कितने भेद हैं?
UP PGT–2010, UK TET–2011
(A) चार (B) पाँच
(C) छः (D) सात
स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका – बाबूराम सक्सेना, पेज–241*

107. 'परस्मैपद' में कौन-सा समास है?
UP PGT–2010, UK TET–2011
(A) अव्ययीभाव (B) कर्मधारय
(C) तत्पुरुष (D) केवलसमास
स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–255*

108. 'अलं कुमार्यै' इत्यस्य समस्तं रूपं किम्?
UGC 25 J–2014
(A) अलङ्कुमारी (B) कुमार्यै अलम्
(C) अलङ्कुमारिः (D) अलङ्कुमारिन्
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–174*

109. (i) 'सप्तर्षयः' पदे कः समासः?
(ii) 'सप्तर्षयः' में कौन-सा समास है?
UP PGT–2003, 2005, AWES TGT–2011
(A) अव्ययीभाव (B) तत्पुरुष
(C) द्वन्द्व (D) बहुव्रीहि
स्रोत–*समास प्रकरण (आचार्य सेतु)-ललित कुमार त्रिपाठी, पेज–77*

110. अर्धम् ऋचः– AWES TGT–2009
(A) अर्धर्ची (B) अर्धर्चम्
(C) अर्धऋचा (D) अर्धमृचा
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–176*

111. 'पञ्च गावो धनं यस्य' इत्यस्य समस्तपदमस्ति?
RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011
(A) पञ्चगवधनम् (B) पञ्चगुः
(C) पञ्चगवधनस्य (D) पञ्चगवधनः
स्रोत–*समास प्रकरण (आचार्य सेतु)-ललित कुमार त्रिपाठी, पेज–78*

112. 'शैलोन्नतः' उदाहरणमस्ति? RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014
(A) द्वन्द्वसमासस्य (B) कर्मधारयसमासस्य
(C) अव्ययीभावसमासस्य (D) बहुव्रीहिसमासस्य

113. 'गवाक्षः' पद में कौन-सा समास है? UP TGT–2010
(A) बहुव्रीहिसमास (B) तत्पुरुषसमास
(C) केवलसमास (D) द्वन्द्वसमास
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–249*

101. (C) 102. (B) 103. (B) 104. (D) 105. (B) 106. (C) 107. (C) 108. (C) 109. (B) 110. (B) 111. (D) 112. (B) 113. (B)

114. 'देशसञ्चारः' इति पदे कः समासः? C-TET–2012
(A) अव्ययीभावः (B) कर्मधारयः
(C) द्वन्द्वः (D) तत्पुरुषः

115. 'संस्कृतशिक्षणम्' इति पदे कः समास? C-TET–2013
(A) तत्पुरुषः (B) बहुव्रीहिः
(C) द्विगुः (D) अव्ययीभावः

116. 'पितृतुल्यः' शब्द में कौन समास है? UP TGT–2013
(A) अव्ययीभाव (B) तत्पुरुष
(C) बहुव्रीहि (D) द्वन्द्व
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–70*

117. 'जलमग्नः' शब्द में कौन समास है? UP TGT–2013
(A) अव्ययीभाव (B) तत्पुरुष
(C) द्वन्द्व (D) बहुव्रीहि
स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–14*

118. 'द्व्यङ्गुलम्' इत्यत्र को लौकिकविग्रहः? UGC 25 D–2014
(A) द्वयोः अङ्गुल्योः समाहारः (B) द्वे अङ्गुली प्रमाणस्य
(C) द्वे अङ्गुली यस्य (D) द्वि च अङ्गुलिश्च
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–154*

119. सर्वेषां महत्तरः– AWES TGT–2008
(A) सर्वमहत् (B) सर्वमहतः
(C) सर्वमहत्तरः (D) सर्वमहान्
स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–246*

120. 'कृष्णाश्रितः' में समास– UP PGT–2002
(A) अव्ययीभाव (B) तत्पुरुष
(C) द्वन्द्व (D) बहुव्रीहि
स्रोत–*समास प्रकरण (आचार्य सेतु)-ललित कुमार त्रिपाठी, पेज–55*

121. 'कष्टापन्नः' समास का विग्रह क्या है? UP TGT–2009
(A) कष्टम् आपन्नः (B) कष्टेन आपन्नः
(C) कष्टे आपन्नः (D) कष्टाय आपन्नः
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–63*

122. 'दुःखातीतः' पद में तत्पुरुष का विग्रह है? RPSC ग्रेड-III–2013
(A) दुःखेन अतीतः (B) दुःखाय अतीतः
(C) दुःखम् अतीतः (D) दुःखे अतीतः
स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–242*

123. शोकपतितः– AWES TGT–2009
(A) शोकं पतितः
(B) शोकात् पतितः
(C) शोकेन पतितः
(D) शोकरूपेण पतितः
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–63*

124. (i) 'हरित्रातः' का विग्रहवाक्य है?
(ii) 'हरित्रातः' पद का समास-विग्रह है?
BHU MET–2012, UGC 25 J–1994
RPSC ग्रेड-III–2013
(A) हरौ त्रातः (B) हरिम् त्रातः
(C) हरिणा त्रातः (D) हरेः त्रातः
स्रोत–*समास प्रकरण (आचार्य सेतु)-ललित कुमार त्रिपाठी, पेज–56*

125. 'हरित्रातः' में समास है? UP PGT–2002
(A) तत्पुरुष (B) बहुव्रीहि
(C) अव्ययीभाव (D) द्वन्द्व
स्रोत–*समास प्रकरण (आचार्य सेतु)-ललित कुमार त्रिपाठी, पेज–56*

126. 'हरित्रातः' में कौन-सा समास है? UP PGT–2003, UP TGT–2005
(A) द्वितीया तत्पुरुष (B) तृतीया तत्पुरुष
(C) चतुर्थी तत्पुरुष (D) षष्ठी तत्पुरुष
स्रोत–*समास प्रकरण (आचार्य सेतु)-ललित कुमार त्रिपाठी, पेज–56*

127. 'गुणधानाः' पद में समास होगा– H-TET–2015
(A) तृतीया तत्पुरुष (B) चतुर्थी तत्पुरुष
(C) सप्तमी तत्पुरुष (D) द्वितीया तत्पुरुष
स्रोत–*वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (भाग–2)-गोविन्दाचार्य, पेज–448*

114. (D) **115.** (A) **116.** (B) **117.** (B) **118.** (B) **119.** (D) **120.** (B) **121.** (A) **122.** (C) **123.** (A)
124. (C) **125.** (A) **126.** (B) **127.** (A)

128. 'नखभिन्नः' का लौकिकविग्रह है? UGC 25 J–2004

(A) नखात् भिन्ना (B) नखेभ्यः भिन्नः
(C) नखं भिन्नः (D) नखैः भिन्नः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–66*

129. 'नखभिन्नः' में समास है? UP TGT–2003

(A) तृतीयातत्पुरुष (B) कर्मधारय
(C) बहुव्रीहि (D) द्वन्द्वसमास

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–66*

130. 'आचारकुशलः' अत्र समासः अस्ति? MP वर्ग-1 (PGT)–2012

(A) पञ्चमी तत्पुरुष (B) षष्ठी तत्पुरुष
(C) द्वितीया तत्पुरुष (D) तृतीया तत्पुरुष

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–244*

131. 'राज्ञा पूजितः-राजपूजितः' में कौन-सा समास है? UP TGT–2004

(A) तत्पुरुष (B) अव्ययीभाव
(C) द्विगु (D) बहुव्रीहि

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग)-भीमसेन शास्त्री, पेज–82*

132. 'वाग्युद्धम्' समास का विग्रह है– UP TGT–2009

(A) वाचि युद्धम् (B) वाचे युद्धम्
(C) वाचा युद्धम् (D) वाचो युद्धम्

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–244*

133. 'शोकाकुल' में समास है? UP PGT (H)–2003

(A) तत्पुरुष (B) कर्मधारय
(C) बहुव्रीहि (D) अव्ययीभाव

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–244*

134. 'प्रकृतिविकृतिभाव एवेष्टः' इत्येषा पंक्तिः वर्णयति– UK SLET–2015

(A) 'तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन' इत्येतत् सूत्रम्
(B) 'द्वितीया श्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नैः' इत्येतत् सूत्रम्
(C) 'उपमितं व्याघ्रादिभिः सामान्याप्रयोगे' इत्येतत् सूत्रम्
(D) 'चतुर्थी तदर्थार्थ-बलि-हितसुखरक्षितैः' इत्येतत् सूत्रम्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–71*

135. 'भूतबलिः' इत्यत्र समासः केन सूत्रेण विधीयते? UGC 25 D–2012

(A) कर्तृकरणे कृता बहुलम्
(B) चतुर्थी तदर्थार्थ-बलि-हित-सुख-रक्षितैः
(C) पञ्चमी भयेन
(D) सप्तमी शौण्डैः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–73*

136. 'भूतबलिः' पद में कौन-सा समास है? UP-TET–2014

(A) अव्ययीभाव (B) तत्पुरुष
(C) बहुव्रीहि (D) द्वन्द्व

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–73*

137. 'द्विजार्था' इत्यस्य समासविग्रहः स्यात्? RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014

(A) द्विजार्थमिदम् (B) द्विजाय अयम्
(C) द्विजाय अर्थः (D) द्विजाय इयम्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–74*

138. चतुर्थी तत्पुरुषसमास है? UP TGT– 2004, 2005

(A) यूपदारु (B) द्विमूर्धः
(C) धवखदिरौ (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–71*

139. 'ज्ञानाय इदं ज्ञानार्थम्' में समास है? UP-TGT–2004

(A) द्वितीया तत्पुरुष (B) तृतीया तत्पुरुष
(C) चतुर्थी तत्पुरुष (D) पञ्चमी तत्पुरुष

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–74*

140. (i) 'अश्वघासः' यहाँ विग्रहवाक्य है?
(ii) अत्र विग्रह वाक्यं भवति– UGC 73 D–2009

(A) अश्वेन घासः (B) अश्वस्य घासः
(C) अश्वाय घासः (D) अश्वे घासः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–73*

128. (D) 129. (A) 130. (D) 131. (A) 132. (C) 133. (A) 134. (D) 135. (B) 136. (B) 137. (D) 138. (A) 139. (C) 140. (B)

141. 'चोरभयम्' पद में समास है? UP TGT–2009

UP PGT–2002, 2004, RPSC ग्रेड-III–2013

UGC 25 J–1994, UP- TET–2013

(A) तत्पुरुष (B) बहुव्रीहि

(C) कर्मधारय (D) द्वन्द्व

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–76*

142. (i) 'चोरभयम्' समासविग्रहः अस्ति?

(ii) 'चोराद्भयम्' इति समस्तपदस्य समासविग्रहः भवति–

RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011

RPSC ग्रेड-II (TGT)–2010, RPSC ग्रेड-III–2013

BHU MET–2009, 2012, G-GIC–2015

(A) चौरस्य भयम् (B) चौरेण भयम्

(C) चौरात् भयम् (D) चौराय भयम्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–76*

143. 'चोरात् भयम्' में समास है? RPSC ग्रेड-III–2013

(A) पञ्चमी तत्पुरुष (B) षष्ठी तत्पुरुष

(C) तृतीया तत्पुरुष (D) द्वितीया तत्पुरुष

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–76*

144. वृक्षपतितानि– AWES TGT–2010

(A) वृक्षस्य पतितानि (B) वृक्षात् पतितानि

(C) वृक्षेण पतितानि (D) वृक्षे पतितानि

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–81*

145. 'राजदन्ताः' अस्य लौकिकविग्रहवाक्यं भवति?

UGC 25 D–2013

(A) राज्ञां दन्ताः

(B) दन्तानां राजानः

(C) दन्तानां राजानम्

(D) दन्त + आम् + राजन् + जस्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–233*

146. राजपुरुषः इत्यत्र कः समासः? UK TET–2011

BHU B.Ed–2013, MP वर्ग-2 (TGT)–2011

BHU MET–2013, RPSC ग्रेड-III–2013

(A) द्वन्द्वः (B) अव्ययीभावः

(C) बहुव्रीहिः (D) तत्पुरुषः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–81*

147. 'नगाधिराजः' अस्मिन् पदे विग्रहः स्यात्?

MP वर्ग-2 (TGT)–2011

(A) नगश्च अधिराजश्च (B) नगः अधिराजो यस्य

(C) नागानाम् अधिराजः (D) नगानाम् अधिराजः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–82-83*

148. षष्ठी तत्पुरुष युक्त समास है? UP TGT–2003

(A) दूरादागतः (B) राजपुरुषः

(C) धान्यार्थः (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–81*

149. 'राजपुरुषः' समास का विग्रह है?

UGC 73 J–2015, BHU MET–2012

(A) राज्ञा पुरुषः (B) राज्ञः पुरुषः

(C) राजा पुरुषः (D) राजनि पुरुषः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–81*

150. 'राजहंस' इस पद का विग्रहवाक्य होगा?

UP TGT–2004

(A) राजा इव हंसः (B) हंसानां राजानाम्

(C) हंस एव राजा सः (D) हंसानां राजा

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–233*

151. 'कृष्णसखः' इत्यत्र समासः– UGC 73 J–2011

(A) अव्ययीभावः (B) तत्पुरुषः

(C) बहुव्रीहिः (D) द्विगुः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–165*

141. (A) **142.** (C) **143.** (A) **144.** (B) **145.** (B) **146.** (D) **147.** (D) **148.** (B) **149.** (B) **150.** (D) **151.** (B)

152. 'राजपुत्रः' में समास है? UP-TET–2013

(A) तत्पुरुष (B) कर्मधारय
(C) बहुव्रीहि (D) अव्ययीभाव

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–81*

153. 'सङ्गीतसाधनम्' पदे समासः अस्ति? C-TET–2011

(A) तत्पुरुषः (B) बहुव्रीहिः
(C) द्वन्द्वः (D) द्विगुः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–82-83*

154. 'तत्पुरुषः' में कौन समास है? H-TET–2014

(A) कर्मधारय (B) षष्ठीतत्पुरुष
(C) बहुव्रीहि (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–81*

155. 'कल्पतरुच्छायायाम्' का विग्रह है? BHU MET–2012

(A) कल्पतरुं छायायाम् (B) कल्पस्य तरोः छायायाम्
(C) कल्पतरूणां छायाम् (D) कल्पतरवे छायायाम्

स्रोत– *अष्टाध्यायी (2/2/8)-ईश्वरचन्द्र, पेज–179*

156. 'गोशाला' पद में समास है? UP-TGT (H)–2009

(A) तत्पुरुष (B) द्वन्द्व
(C) कर्मधारय (D) द्विगु

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–83*

157. 'सद्गतिः' शब्द में समास है? UP-PGT (H)–2002

(A) तत्पुरुष (B) अव्ययीभाव
(C) बहुव्रीहि (D) द्विगु

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–83*

158. राष्ट्रपतिः– AWES TGT–2010

(A) राष्ट्रं पतिः (B) राष्ट्राय पतिः
(C) राष्ट्रस्य पतिः (D) राष्ट्रायाः पतिः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–83*

159. गङ्गायाः पारम्– AWES TGT–2009

(A) गङ्गपारम् (B) गाङ्गपारम्
(C) गंगोपारम् (D) गङ्गापारम्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–45*

160. 'हेमघटः' शब्द में समास है? H-TET–2014

(A) तृतीयातत्पुरुषः (B) बहुव्रीहिः
(C) षष्ठीतत्पुरुषः (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–83*

161. 'अक्षशौण्डः'-अस्य अलौकिकविग्रहः भवति? UGC 25 J–2013

(A) अक्ष + सु शौण्ड + सु
(B) अक्ष + सुप् शौण्ड + सु
(C) अक्षेषु शौण्डः
(D) अक्ष + ङि शौण्ड + ङि

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग)-भीमसेन शास्त्री, पेज–91*

162. 'अक्षशौण्डः' इत्यस्य लौकिकविग्रहः अस्ति? RPSC ग्रेड-II TGT–2014

(A) अक्षाणां शौण्डः (B) अक्षेषु शौण्डः
(C) अक्षैः शौण्डः (D) अक्षेभ्यः शौण्डः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–91*

163. 'नगरस्थिता' इति पदे समासः अस्ति? C-TET–2011

(A) अव्ययीभावः (B) कर्मधारयः
(C) तत्पुरुषः (D) द्वन्द्वः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–91*

164. (i) 'ध्यानमग्नः' पदे समासः अस्ति?
(iii) 'ध्यानमग्नः' में कौन-सा समास है– C-TET–2011, UP PGT (H)–2013

(A) तत्पुरुषः (B) द्वन्द्वः
(C) अव्ययीभावः (D) कर्मधारयः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग)*

165. 'पौर्वशालः' का विग्रह है? UP PGT–2000, UP TGT–1999, AWES TGT–2011

(A) शालायाः पूर्वम् (B) पौर्व एव शालः
(C) पूर्वा शाला यस्य सः (D) पूर्वस्यां शालायां भवः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–102*

152. (A)	153. (A)	154. (B)	155. (B)	156. (A)	157. (A)	158. (C)	159. (D)	160. (C)	161. (B)
162. (B)	163. (C)	164. (A)	165. (D)						

166. 'मुनिश्रेष्ठः' पद में समास है? H-TET–2014

(A) द्वितीयातत्पुरुष (B) चतुर्थीतत्पुरुष
(C) सप्तमीतत्पुरुष (D) कर्मधारय

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–92*

167. अलुक्समासस्य किम् उदाहरणम्–BHU Sh. ET–2013

(A) वनेचरः (B) अधिहरि
(C) पीताम्बरः (D) अहोरात्रः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–255*

168. 'युधिष्ठिर' में कौन-सा समास है? UP PGT–2005

(A) तत्पुरुष (B) बहुव्रीहि
(C) अलुक् (D) कर्मधारय

स्रोत–*समासप्रकरण (आचार्यसेतु)-ललित कुमार त्रिपाठी, पेज–89*

169. 'कुपुरुषः' में समास है? UP PGT–2002, 2003

(A) अव्ययीभाव (B) द्वन्द्व
(C) गति तत्पुरुष (D) बहुव्रीहि

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–127*

170. (i) 'निष्कौशाम्बिः' में समास है? UP GIC–2009, 2015
(ii) 'निष्कौशाम्बिः' इत्यस्मिन् समासो अस्ति?

(A) गतितत्पुरुष (B) बहुव्रीहि
(C) अव्ययीभाव (D) केवलसमास

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–141*

171. 'निष्कौशाम्बिः' पदस्य समास-विग्रहः अस्ति?
RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011

(A) निर्गता कौशाम्बी (B) निष्क्रान्तः कौशाम्ब्याः
(C) अप्राप्ता कौशाम्बी (D) बहिः कौशाम्बि

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–141*

172. 'गवाम् अक्षि इव' इत्यत्र समस्तपदमस्ति–
UGC 25 D–2015

(A) गवाक्षी (B) गवाक्षा
(C) गवाक्षम् (D) गवाक्षः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–249*

173. नञ्-समासः कः– UK SLET–2012

(A) अनश्वः (B) कुपुरुषः
(C) कुपुत्रः (D) प्राचार्यः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–123*

174. 'अब्राह्मणः' में कौन-सा समास है? UP PGT–2003

(A) अव्ययीभाव (B) बहुव्रीहि
(C) द्वन्द्व (D) तत्पुरुष

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–122*

175. 'अब्राह्मण' में तत्पुरुषसमास है? UP PGT–2003

(A) तृतीयातत्पुरुष के कारण (B) द्वितीयातत्पुरुष के कारण
(C) नञ्तत्पुरुष के कारण (D) पञ्चमीतत्पुरुष के कारण

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–122*

176. नञ्तत्पुरुषसमासस्य उदाहरणं किम्? C-TET–2013

(A) शीतलसलिलम् (B) अनुद्वेगकरम्
(C) प्रियहितम् (D) रागसमम्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–123*

177. 'अनुद्योगः' इत्यत्र कः समासः? REET–2016

(A) बहुव्रीहिः (B) उपपदसमासः
(C) नञ्-तत्पुरुषः (D) कर्मधारयः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–124*

178. निम्नलिखित में से नञ्तत्पुरुष समास कौन सा है?
UP PGT (H)–2004

(A) रोगमुक्तः (B) राजपुरुषः
(C) अभावः (D) पुत्रहितम्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–127*

179. 'कुपुत्रः' में समास है? UP GIC–2009

(A) अव्ययीभाव (B) बहुव्रीहि
(C) कर्मधारय (D) प्रादितत्पुरुष

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–128*

166. (C) **167.** (A) **168.** (C) **169.** (C) **170.** (A) **171.** (B) **172.** (D) **173.** (A) **174.** (D) **175.** (C)
176. (B) **177.** (C) **178.** (C) **179.** (D)

180. 'शोभनो राजा' इत्यस्य समस्तं पदं किम्? **UGC 25 J–2015**

(A) सुराजः (B) सुराजा
(D) सुराजी (D) सुराज्ञी

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–133*

181. समानाधिकरण तत्पुरुषसमास का नाम क्या है? **UP GIC–2009**

(A) द्वितीयातत्पुरुष (B) प्रादितत्पुरुष
(C) कर्मधारय (D) द्विगु

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–108*

182. विशेष्य-विशेषणभावसमासस्य प्रसिद्धं नाम किम्? **RPSC ग्रेड I (PGT)–2014**

(A) द्विगुः (B) द्वन्द्वः
(C) कर्मधारयः (D) अव्ययीभावः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–112*

183. कर्मधारयसंज्ञा भवति– **UGC 25 D–2013**

(A) अव्ययीभावस्य
(B) समानाधिकरणस्य तत्पुरुषस्य
(C) असमानाधिकरणस्य तत्पुरुषस्य
(D) समानाधिकरणस्य बहुव्रीहेः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–108*

184. कर्मधारयसमास-विधायकं सूत्रं किम्? **UGC 25 D–2010**

(A) सह सुपा (B) विशेषणं विशेष्येण बहुलम्
(C) अनेकमन्यपदार्थे (D) अर्धं नपुंसकम्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–112*

185. 'पुरुषर्षभः' पद में समास का सही विकल्प छाँटिये? **H-TET–2015**

(A) उपमानोत्तरपद कर्मधारयसमास
(B) अवधारणापूर्वपद कर्मधारयसमास
(C) उपमानोपमेय कर्मधारयसमास
(D) विशेषण-विशेष्य कर्मधारयसमास

स्रोत–*समासप्रकरण (आचार्यसेतु)-ललित कुमार त्रिपाठी, पेज–69-70*

186. 'विशेषणं विशेष्येण बहुलम्' से कौन समास बनता है? **BHU MET–2009**

(A) अव्ययीभाव (B) बहुव्रीहि
(C) कर्मधारय (D) द्वन्द्व

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–112*

187. (i) 'नीलोत्पलम्' में समास है?
(ii) 'नीलोत्पलम्' अस्मिन् समासोऽस्ति
UP PGT–2013, RPSC ग्रेड-III–2013, G GIC–2015, UGC 25 J–1995, UP TGT (H)–2001, 2002

(A) अव्ययीभाव (B) द्विगु
(C) द्वन्द्व (D) कर्मधारय

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–112*

188. निम्नलिखित में से कर्मधारयसमास किसमें है? **UP TGT (H)–2009**

(A) चक्रपाणिः (B) चतुर्युगम्
(C) नीलोत्पलम् (D) माता-पितरौ

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–112*

189. तत्पुरुषसमासे 'देवब्राह्मण' इत्युदाहरणे ब्राह्मणो वर्ततेऽभिप्रेतः– **UGC 25 J–2014**

(A) देवरूपः (B) देवप्रियः
(C) देवपूजकः (D) देवाधीनः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–120*

190. 'देवब्राह्मण' इत्यत्र समासविग्रहः अस्ति– **RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011**

(A) देव एव ब्राह्मणः (B) देववत् ब्राह्मणः
(C) देवपूजको ब्राह्मणः (D) देवेषु ब्राह्मणः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–120*

191. 'पीताम्बरम्' शब्द में समास है? **UP TGT–2003**
UP PGT–2000, 2002, BHU MET–2012

(A) कर्मधारय (B) तत्पुरुष
(C) द्वन्द्व (D) बहुव्रीहि

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–262*

180. (B) **181.** (C) **182.** (C) **183.** (B) **184.** (B) **185.** (A) **186.** (C) **187.** (D) **188.** (C) **189.** (C) **190.** (C) **191.** (A)

192. 'पीतम् अम्बरम् इति पीताम्बरम्' में कौन-सा समास है? **UP TGT–1999**

(A) बहुव्रीहिसमास (B) केवलसमास
(C) कर्मधारयसमास (D) तत्पुरुषसमास

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–262*

193. 'पीताम्बरम्' का विग्रह है? **UP-TET–2013**

(A) पीतं च तत् अम्बरम्
(B) पीतम् अम्बरम् यस्य सः
(C) पीतम् अम्बरम् येन सः
(D) पीतम् अम्बरं यस्मिन्

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–262*

194. 'कृष्णचतुर्दशी' इत्यत्र समासः **RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011**

(A) कर्मधारयः (B) तत्पुरुषः
(C) बहुव्रीहिः (D) अव्ययीभावः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–114*

195. 'परमानन्द' शब्द में कौन-सा समास है? **UP TGT (H)–2013**

(A) तत्पुरुष (B) द्वन्द्व
(C) कर्मधारय (D) अव्ययीभाव

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–162*

196. इनमें से कौन सा शब्द कर्मधारय समास का उदाहरण है? **UP PGT (H)–2015**

(A) अन्धकूप (B) गृहप्रवेश
(C) तिरंगा (D) सुख-दुःख

197. (i) 'महान् च असौ राजा' इससे रूप बनता है?
(ii) 'महान् राजा' इत्यर्थे समस्तः शब्दः कः?
UGC 25 J–1999, D–2015 DSSSB PGT–2014 CVVET–2015

(A) महाराजः (B) महद्राजः
(C) महद्राजा (D) महराजा

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–163*

198. (i) महाराजः पदे समासः– **UP TGT–2009**
(ii) 'महाराजः' पद में समास है? **UGC 73 J–1991 CCSUM-Ph.D–2016**

(A) कर्मधारय (B) तत्पुरुष
(C) बहुव्रीहि (D) द्विगु

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–163*

199. 'महान्तः जनाः' पद होगा– **AWES TGT–2011**

(A) महाजनाः (B) महन्जनाः
(C) महान् जनाः (D) महोजनाः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज–163*

200. 'किंसखा' में कौन-सा समास है? **UP TGT–1999**

(A) द्वन्द्व (B) द्विगु
(C) अव्ययीभाव (D) कर्मधारय

स्रोत–*किरातार्जुनीयम् - रामसेवक दुबे, पेज–54*

201. 'किं राजा' इत्यस्य कः समासविग्रहः? **RPSC ग्रेड-I (PGT)–2014**

(A) कुत्सितः राजा (B) किम् राजा
(C) न राजा (D) कः राजा

स्रोत–*किरातार्जुनीयम् - रामसेवक दुबे, पेज–55*

202. 'नीलकमलम्' में कौन समास है? **BHU MET–2011**

(A) कर्मधारय (B) अव्ययीभाव
(C) बहुव्रीहि (D) द्वन्द्व

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–113*

203. उपमानपूर्वकपदकर्मधारयस्य उदाहरणं भवति– **UGC 73 J–2007**

(A) कृष्णसर्पः (B) घनश्यामः
(C) देवब्राह्मणः (D) नीलोत्पलम्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–117*

204. 'घनश्यामः' में कौन-सा समास है? **UP TET–2013**

(A) कर्मधारय (B) अव्ययीभाव
(C) द्विगु (D) द्वन्द्व

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–117*

192. (C) **193.** (A) **194.** (A) **195.** (C) **196.** (A) **197.** (A) **198.** (A) **199.** (A) **200.** (D) **201.** (A)
202. (A) **203.** (B) **204.** (A)

205. पूर्वपदप्रकृतिस्वरात् 'स्थूलपृषती' इत्यत्र कः समासः? BHU AET–2012

(A) षष्ठीतत्पुरुषः (B) कर्मधारयः
(C) पञ्चमीतत्पुरुषः (D) बहुव्रीहिः

स्रोत–*व्याकरण-महाभाष्यम् - जयशङ्कर त्रिपाठी, पेज–27*

206. नीलगगने– AWES TGT–2010

(A) नीलं च तत् गगनं तस्मिन् (B) नीले गगने इति
(C) नीलं च गगनं इति (D) नीलाय गगनाय च

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–113*

207. 'शुष्कपत्रम्' पद में समास है? H-TET–2015

(A) तत्पुरुष (B) द्वन्द्व
(C) कर्मधारय (D) बहुव्रीहि

स्रोत–*संस्कृतगङ्गा संस्कृत-साहित्यम् - सर्वज्ञभूषण, पेज–98*

208. (i) जिस समानाधिकरण तत्पुरुष में प्रथमपद संख्यावाची होता है? UGC 25 D–2003
(ii) समास में प्रथमशब्द संख्यावाचक हो तो वह समास होगा? UP PGT (H)–2015
UP TGT–2004, UP TET–2016

(A) तत्पुरुष (B) कर्मधारय
(C) द्विगु (D) अव्ययीभाव

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–109*

209. समास में प्रथमशब्द संख्यावाचक हो तो वह द्विगु समास होगा जब दूसरा शब्द– UP TGT–2003

(A) संज्ञा (B) अव्यय
(C) विशेषण (D) उपसर्ग

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–109-110*

210. 'अष्टानामध्यायानां समाहारः'–इत्यस्य समस्तपदमस्ति– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2014

(A) अष्टाध्यायम् (B) अष्टाध्यायः
(C) अष्टाध्यायी (D) अष्टाध्यायाः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण और रचना (लुसेन्ट)-अरविन्द कुमार, पेज–233*

211. द्विगुसमासः कः? BHU Sh.ET–2013

(A) अव्ययपूर्वः (B) संख्यापूर्वः
(C) निपातपूर्वः (D) क्रियापूर्वः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–109*

212. संख्यापूर्वः कः समासः? UGC 25 J–2009

(A) केवलः (B) तत्पुरुषः
(C) द्विगुः (D) बहुव्रीहिः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–109*

213. 'स नपुंसकम्' इत्यनेन सूत्रेण नपुंसकत्वं भवति? UGC 25 J–2011

(A) अव्ययीभावसमासे (B) बहुव्रीहिसमासे
(C) कर्मधारयसमासे (D) समाहारद्विगुसमासे

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–110*

214. द्विगुसमासः कस्य समासस्य भेदः? AWES TGT–2011, 2013

(A) कर्मधारयः (B) स्वतन्त्रः
(C) तत्पुरुषः (D) बहुव्रीहिः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–02*

215. 'त्रिलोकी' पद में समास का नाम है? UGC 25 J–1995

(A) द्विगु (B) द्वन्द्व
(C) अव्ययीभाव (D) बहुव्रीहि

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–111*

216. 'पञ्चगवम्' में समास है? UGC 25 D–2002

(A) कर्मधारय (B) अव्ययीभाव
(C) द्विगु (D) द्वन्द्व

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–111*

217. 'पञ्चगवम्' का विग्रहवाक्य होगा– UP TGT–2004

(A) पञ्चानां गोवां समाहारः (B) पञ्चानां गवां समाहारः
(C) पञ्चानां गवा समाहारः (D) पञ्चानां गवेतरा समाहारः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–110*

218. 'पञ्चगावो धनं यस्य' इत्यस्य समस्तपदमस्ति– RPSC ग्रेड-I PGT–2011

(A) पञ्चगवधनम् (B) पञ्चगुः
(C) पञ्चगोधनम् (D) पञ्चगवधनः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–106*

205. (D) **206.** (A) **207.** (C) **208.** (C) **209.** (A) **210.** (C) **211.** (B) **212.** (C) **213.** (D) **214.** (A)
215. (A) **216.** (C) **217.** (B) **218.** (D)

219. पञ्चानां मूलानां समाहारः– AWES TGT–2009

(A) पञ्चमूलम् (B) पञ्चमूल
(C) पञ्चमूला (D) पञ्चमूली

***स्रोत**–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–111*

220. (i) 'पञ्चवटी' में समास है?
(ii) 'पञ्चवटी' अस्मिन् पदे समासः अस्ति?
MP वर्ग-1 (PGT)–2012, UP TGT–1999
BHU MET–2012, UP TGT (H)–2005, 2013

(A) अव्ययीभावः (B) द्विगुः
(C) द्वन्द्वः (D) बहुव्रीहिः

***स्रोत**–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–251*

221. द्विगुसमास का उदाहरण है? UGC 73 D–2010

(A) द्वित्राः (B) उपकूलम्
(C) पाणिपादम् (D) पञ्चवटी

***स्रोत**–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–251*

222. 'त्रिभुवनम्' इत्यत्र कः समासः? BHU B.Ed–2012

(A) तत्पुरुष (B) द्विगु
(C) द्वन्द्व (D) बहुव्रीहि

***स्रोत**–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–111*

223. (i) द्विगुसमास युक्त शब्द है? UP TGT (H)–2010
(ii) द्विगुसमास का उदाहरण है? UP TGT–2005

(A) राजा-रानी (B) पीताम्बर
(C) त्रिभुवनम् (D) भूदेव

***स्रोत**–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–111*

224. 'नवानां रात्रीणां समाहारः' समस्तपदमस्ति?
RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011

(A) नवरात्रः (B) नवरात्रिः
(C) नवरात्रम् (D) नवरात्री

***स्रोत**–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–161*

225. 'पञ्चानां पात्राणां समाहारः' इत्यस्य समस्तपदमस्ति?
RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014

(A) पञ्चपात्रः (B) पञ्चपात्री
(C) पञ्चपात्राणि (D) पञ्चपात्रम्

***स्रोत**–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–111*

226. 'पञ्चपात्रम्' इत्यत्र कः समासः? BHU B.Ed–2015

(A) द्विगुः (B) द्वन्द्वः
(C) तत्पुरुषः (D) कर्मधारयः

***स्रोत**–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–111*

227. (i) 'सप्तर्षयः' इत्यत्र केन सूत्रेण समासः?
(ii) 'सप्तर्षयः' समासविधायकं सूत्रं किम्?
UGC 25 D–2006, BHU AET–2011

(A) विशेषणं विशेष्येण बहुलम्
(B) दिक्संख्ये संज्ञायाम्
(C) चार्थे द्वन्द्वः
(D) दिङ्नामान्यन्तराले

***स्रोत**–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–99*

228. 'त्रिवेणी' पद में कौनसा समास है?
UP TET–2013, RLP–2015

(A) द्वन्द्वसमास (B) अव्ययीभावसमास
(C) तत्पुरुषसमास (D) द्विगुसमास

***स्रोत**–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–111*

229. निम्नलिखित वर्गों में किस वर्ग में समास का उदाहरण अशुद्ध है? UP TGT–1999

(A) अव्ययीभाव 1. यथाक्रमम्, उपगङ्गम्
(B) द्विगु 2. पञ्चगङ्गम्, द्वियमुनम्
(C) तत्पुरुष 3. ग्रामगतः, सुखप्राप्तः
(D) द्वन्द्व 4. रामकृष्णौ, पितरौ

***स्रोत**–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–42*

219. (D) **220.** (B) **221.** (D) **222.** (B) **223.** (C) **224.** (C) **225.** (D) **226.** (A) **227.** (B) **228.** (D) **229.** (B)

बहुव्रीहिसमासः

230. (i) बहुव्रीहिसमासः अस्ति? AWES TGT–2010
(ii) बहुव्रीहि समास में कौन पद प्रधान होता है?
UP GIC–2009, RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011

(A) पूर्वपदप्रधानः (B) उत्तरपदप्रधानः
(C) उभयपदप्रधानः (D) अन्यपदप्रधानः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–02*

231. (i) अन्यपद की प्रधानता वाला समास होता है?
(ii) अन्यपदार्थप्रधानः कः समासः? BHU Sh.ET–2008
UGC 73 J–2013, UGC 25 D–2002

(A) द्विगुः (B) द्वन्द्वः
(C) अव्ययीभावः (D) बहुव्रीहिः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–02*

232. 'प्राप्तोदकः' में समास है? UP PGT–2002

(A) इतरेतरद्वन्द्वः (B) बहुव्रीहिः
(C) अव्ययीभावः (D) अलुक्तत्पुरुषः

स्रोत–*समासप्रकरण (आचार्यसेतु)-ललित कुमार त्रिपाठी, पेज–125*

233. 'सत्यनिष्ठ' शब्द में कौन समास है? UP TGT–2013

(A) अव्ययीभाव (B) तत्पुरुष
(C) बहुव्रीहि (D) द्वन्द्व

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–99*

234. शुभानना = ? AWES TGT–2010

(A) शुभम् आननं यस्याः सा
(B) शुभम् आननं यस्याः सः
(C) शुभम् आननं यस्मिन् तत्
(D) शुभम् आननम् इव

स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.2.24)-लघुसिद्धान्तकौमुदी-गोविन्दाचार्य, पेज–951*

235. 'द्विमूर्धः' पद में समास है? UGC 25 J–1994

(A) अव्ययीभाव (B) द्विगु
(C) तत्पुरुष (D) बहुव्रीहि

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–209*

236. 'पञ्चाननः' में समास है? UGC 25 D–1996

(A) तत्पुरुष (B) बहुव्रीहि
(C) द्विगु (D) कर्मधारय

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–98*

237. 'चित्रगुः' का विग्रहवाक्य है?
UP PGT–2009, UGC 25 D–1995

(A) चित्रा चासौ गोः (B) चित्रा गावो यस्य सः
(C) चित्राणां गवां समाहारः (D) चित्रायाः गौः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–198*

238. 'रूपवद्भार्यः' पद में समास है?
UP PGT–2002, 2004, UGC 25 D–1991
2002 J–2001, UGC 73 J–1991

(A) द्विगु (B) द्वन्द्व
(C) तत्पुरुष (D) बहुव्रीहि

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–199*

239. 'रूपवती भार्या यस्य' इत्यस्य समस्तपदं भवति–
UGC 25 D–2015

(A) रूपवतीभार्यः (B) रूपवतीभार्यम्
(C) रूपवद्भार्यः (D) रूपवद्भार्या

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–199*

240. (i) 'चक्रपाणिः' इत्यत्र समासः? UP PGT–2004
(ii) 'चक्रपाणिः' में कौन-सा समास है?
UGC 25 D–2011, UP TGT–2004, 2005

(A) द्वन्द्वः (B) द्विगुः
(C) तत्पुरुषः (D) बहुव्रीहिः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–263*

241. ''चक्रं पाणौ यस्य सः'' इत्यस्य समस्तपदं किम्
RPSC ग्रेड-I (PGT)–2014

(A) चक्रपाणिः (B) चक्रपाणी
(C) पाणिचक्रम् (D) पाणिचक्रिन्

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका -बाबूराम सक्सेना, पेज–263*

230. (D) 231. (D) 232. (B) 233. (C) 234. (A) 235. (D) 236. (B) 237. (B) 238. (D) 239. (C) 240. (D) 241. (A)

242. 'चन्द्रशेखरः' में कौन-सा समास है?
UP PGT–2003, 2009, UP TET–2013

(A) समानाधिकरण बहुव्रीहि (B) व्यधिकरण बहुव्रीहि
(C) तत्पुरुष (D) द्वन्द्व

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–263*

243. 'कम्बुकण्ठः' समस्तपद का सही विग्रह होगा?
UP PGT–2010, UK TET–2011

(A) कम्बु कण्ठः यस्य सः (B) कम्बोः कण्ठः
(C) कम्बुश्चासौ कण्ठश्च (D) कम्बुरिव कण्ठो यस्य सः

स्रोत–*समासप्रकरण (आचार्यसेतु)-ललित कुमार त्रिपाठी, पेज–125*

244. 'शशिशेखरः' में समास है? UP TGT–2004

(A) बहुव्रीहि (B) कर्मधारय
(C) द्वन्द्व (D) नञ् तत्पुरुष

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका -बाबूराम सक्सेना, पेज–263*

245. 'स्त्रीप्रमाणः' में समास है? UP PGT–2005

(A) अव्ययीभाव (B) द्वन्द्व
(C) द्विगु (D) बहुव्रीहि

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–202*

246. 'मृगनयना' में त्रिलुप्ता उपमा दिखलाने के लिए निम्नलिखित विग्रहों में से कौन उपयुक्त है?
UP PGT–2005

(A) मृगस्य नयना
(B) मृगीव नयना चञ्चला
(C) मृगस्य नयने इव चञ्चले नयने यस्याः सा
(D) मृगस्य नयने इव नयने यस्या सा

247. 'सीता जाया यस्य सः' एक शब्द में होगा–
UP TGT–2004

(A) सीताजाया (B) सीतापत्नी
(C) सीताजानिः (D) सीतापतिः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–199*

248. 'चन्द्रशेखरः' में बहुव्रीहि समास है, इसका विग्रह है?
UP TGT–2005

(A) चन्द्रः शेखरः यस्य (B) चन्द्रः शेखरे यस्य सः
(C) चन्द्र शिखर यस्य (D) चन्द्रः शिखरे यस्य

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–263*

249. 'कृताधिपत्याम्' में समास है?
UP PGT–2010, UK TET–2011

(A) तत्पुरुष
(B) समानाधिकरण तत्पुरुष
(C) बहुव्रीहि
(D) व्यधिकरण तत्पुरुष

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–225*

250. 'व्यूढोरस्कः' में समास है? UP TGT–2005

(A) अव्ययीभाव (B) कर्मधारय
(C) बहुव्रीहि (D) द्वन्द्व

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–218*

251. 'ऊढः रथः येन सः' इत्यस्य समस्तपदं किम्?
RPSC ग्रेड-I (PGT)–2014

(A) ऊढरथः (B) रथोढः
(C) रथेऊढः (D) रथरुढः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–190*

252. (i) 'द्वौ पादौ यस्य सः' इति कस्य विग्रहः?
(ii) 'द्वौ पादौ यस्य सः' किसका विग्रह है–
UP TGT–2009, AWES TGT–2012, 2013

(A) द्विपादः (B) द्विपात्
(C) द्विपद् (D) द्विपदी

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–213*

253. 'कृतप्रणामः' में कौन-सा समास है? UP TGT–2010

(A) तत्पुरुष (B) कर्मधारय
(C) द्वन्द्व (D) बहुव्रीहि

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–225*

242. (B) 243. (D) 244. (A) 245. (D) 246. (C) 247. (C) 248. (B) 249. (C) 250. (C) 251. (A) 252. (B) 253. (D)

254. 'सुपात्' इत्यत्र कः समासः? UGC 25 S–2013

(A) तत्पुरुषः (B) बहुव्रीहिः

(C) द्वन्द्वः (D) अव्ययीभावः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–213*

255. 'उपजातकोपः' अत्र समासोऽस्ति– MP वर्ग-2 (TGT)–2011, UK TET–2011

(A) द्वन्द्वः (B) बहुव्रीहिः

(C) तत्पुरुषः (D) अव्ययीभावः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–193*

256. 'अधीतविद्यः' में समास होगा– MP वर्ग-2 (TGT)–2011, UK TET–2011

(A) तत्पुरुष (B) कर्मधारय

(C) द्वन्द्व (D) बहुव्रीहि

स्रोत–*समासप्रकरण (आचार्यसेतु)-ललित कुमार त्रिपाठी, पेज–115*

257. 'जलजाक्षी'–समासविग्रहः अस्ति– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011

(A) जलजम् इव अक्षि यस्याः सा

(B) जलजे अक्षि यस्याः सा

(C) जलजम् अक्षि यस्याः सा

(D) जलजे इव अक्षिणी यस्याः सा

स्रोत–*समासप्रकरण (आचार्यसेतु)-ललित कुमार त्रिपाठी, पेज–129*

258. 'पाषाणहृदयः' पदस्य समासविग्रहः स्यात्? RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014

(A) पाषाण इव हृदयः

(B) पाषाणवत् हृदयं यस्य सः

(C) पाषाण एव हृदयं यस्य सः

(D) पाषाणवत् हृदयः

259. (i) 'पीताम्बरः' में है? MP वर्ग-2 (TGT)–2011

(ii) 'पीताम्बरः' का विग्रहवाक्य है? UGC 25 J–1995, BHU MET–2015

(A) पीतं च तत् अम्बरम् (B) पीतम् अम्बरं यस्य सः

(C) पीतम् अम्बरं येन सः (D) पीतम् अम्बरं यस्मिन्

स्रोत–*समासप्रकरण (आचार्यसेतु)-ललित कुमार त्रिपाठी, पेज–126*

260. (i) पीताम्बरः अत्र समासः? UP TGT–2009

(ii) 'पीताम्बरः' में कौन-सा समास है– BHU MET–2009, UK TET–2011, CCSUM-Ph.D–2016

(A) तत्पुरुष (B) बहुव्रीहि

(C) द्विगु (D) द्वन्द्व

स्रोत–*समासप्रकरण (आचार्यसेतु)-ललित कुमार त्रिपाठी, पेज–126*

261. अधोनिर्दिष्ट में बहुव्रीहिसमास का उदाहरण क्या है? UGC 73 D–2008

(A) नीलोत्पलम् (B) पञ्चगङ्गम्

(C) पीताम्बरः (D) पाणिपादम्

स्रोत–*समासप्रकरण (आचार्यसेतु)-ललित कुमार त्रिपाठी, पेज–126*

262. 'लम्बोदरः' उदाहरण है? UP TGT (H)–2009

(A) बहुव्रीहिसमास का (B) द्वन्द्वसमास का

(C) द्विगुसमास का (D) कर्मधारयसमास का

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण और रचना (लूसेन्ट)-अरविन्द कुमार, पेज–236*

263. 'धनञ्जयः' में समास है? UP TGT (H)–2002

(A) तत्पुरुष (B) कर्मधारय

(C) बहुव्रीहि (D) अव्ययीभाव

स्रोत–*किरातार्जुनीयम्-रामसेवक दुबे, पेज–125*

264. 'चक्रपाणिदर्शनार्थ' पद में मान्य समास है? UP PGT (H)–2009

(A) कर्मधारय (B) तत्पुरुष

(C) अव्ययीभाव (D) बहुव्रीहि

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–189*

265. 'विदित-वेदितव्यः' में कौन-सा समास है? UP TGT–2010

(A) अव्ययीभाव (B) द्विगु

(C) बहुव्रीहि (D) तत्पुरुष

स्रोत–*शुकनासोपदेश - तारिणीश झा, पेज–01*

266. 'द्वित्राः' किसका उदाहरण है? UGC 73 J–2006

(A) कर्मधारय का (B) बहुव्रीहि का

(C) द्वन्द्व का (D) अव्ययीभाव का

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–205*

254. (B)	255. (B)	256. (D)	257. (D)	258. (B)	259. (B)	260. (B)	261. (C)	262. (A)	263. (C)
264. (D)	265. (C)	266. (B)							

267. 'पञ्चषा' इत्यत्र कः समासः? BHU AET–2011

(A) द्वन्द्वसमासः (B) तत्पुरुषसमासः
(C) द्विगुसमासः (D) बहुव्रीहिसमासः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–205*

268. 'प्रशस्ता वाग् अस्ति अस्य' इति विग्रहे प्रयोगो भवति– BHU AET–2011

(A) वाग्मी (B) वाग्ग्मी
(C) वाचालः (D) वाचाटः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–1119*

269. 'जन्मादि'–कौन-सा समास है? UGC 73 J–2008

(A) तत्पुरुषः (B) बहुव्रीहिः
(C) कर्मधारयः (D) अव्ययीभावः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–189*

270. 'तुल्यास्यप्रयत्नम्' इत्यत्र कः समासः? BHU AET–2012

(A) तत्पुरुषः (B) कर्मधारयः
(C) बहुव्रीहिः (D) द्वन्द्वः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी-गोविन्दाचार्य, पेज–16*

271. 'कृतभूरिपरिश्रमः' इत्यत्र कः समासः– BHU AET–2012

(A) अव्ययीभावः (B) तत्पुरुषः
(C) द्वन्द्वः (D) बहुव्रीहिः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमीव्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–225*

272. 'वीरपुरुषको ग्रामः' इत्यत्र कः समासः? UGC 25 D–2010

(A) अव्ययीभावः (B) बहुव्रीहिः
(C) तत्पुरुषः (D) द्वन्द्वः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग)-भीमसेन शास्त्री, पेज–192*

273. 'अपुत्रः' में समास है? UGC 25 J–2004

(A) अव्ययीभाव (B) नञ्समास
(C) बहुव्रीहि (D) कर्मधारय

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग)-भीमसेन शास्त्री, पेज–196*

274. 'उद्धतस्वभावः' पदे समासः अस्ति? C-TET–2012

(A) तत्पुरुषः (B) बहुव्रीहिः
(C) द्वन्द्वः (D) अव्ययीभावः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमीव्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–191, 192*

275. पदानां विग्रहं चिनुत– AWES TGT–2013

'समुपजातविवेकः'

(A) समुपजातः विवेकः येन सः
(B) सम् उपजातविवेकः यस्य सः
(C) समुपजातं विवेक यस्य सः
(D) विवेकः उपजातः यस्य सः

276. 'सर्वधर्मविद्' AWES TGT–2013

(A) सर्व धर्म जानाति (B) सर्व धर्मान् जानाति
(C) सर्वं धर्म वेत्ति (D) सर्वान् धर्मान् वेत्ति यः सः

277. 'महात्मानः'– AWES TGT–2013

(A) महान् आत्मा येषां ते
(B) महा आत्मा यस्य सः
(C) महत् आत्मा येषां तानि
(D) महात्मा आनः कथ्यन्ते

स्रोत–*उत्तररामचरितम्-शिवबालक द्विवेदी, पेज–135*

278. 'नीलकण्ठः' में समास है? Chh. PSC–2012, BHU MET–2010

(A) द्विगु (B) कर्मधारय
(C) बहुव्रीहि (D) अव्ययीभाव

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–184*

279. 'अपुत्रः'– AWES TGT–2009

(A) न पुत्रः (B) पुत्रस्य अभावः
(C) अविद्यमानः पुत्रः यस्य सः (D) न पुत्रः यस्य सः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–196*

280. 'व्याघ्रस्य इव पादौ यस्य सः' भवति– AWES TGT–2008

(A) व्याघ्रपाद् (B) व्याघ्रपाद
(C) व्याघ्रपात् (D) व्याघ्रपात

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–212*

281. 'अजातशत्रु' में कौन-सा समास है? UP TET–2016

(A) तत्पुरुष (B) द्वन्द्व
(C) कर्मधारय (D) बहुव्रीहि

267. (D) 268. (B) 269. (B) 270. (C) 271. (D) 272. (B) 273. (C) 274. (B) 275. (D) 276. (D) 277. (A) 278. (C) 279. (C) 280. (C) 281. (D)

282. 'देशान्तर' में कौन-सा समास है? RLP–2015
(A) कर्मधारय (B) बहुव्रीहि
(C) द्विगु (D) द्वन्द्व

283. 'महत् यशः यस्य सः' भवति? AWES TGT–2008
(A) महायशः (B) महत्यशः
(C) महायशस्कः (D) महत्यशस्कः
स्रोत–*समासप्रकरण (आचार्यसेतु)-ललित कुमार त्रिपाठी, पेज–133*

284. किस समास में उभयपदप्रधान होते हैं? UP TET–2014
(A) कर्मधारय में (B) द्विगु में
(C) द्वन्द्व में (D) तत्पुरुष में
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–02*

285. उभयपदप्रधानो कः समासः? RPSC ग्रेड-I PGT–2014
(A) बहुव्रीहिः (B) अव्ययीभावः
(C) तत्पुरुषः (D) द्वन्द्वः
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–02*

286. पूर्व एवम् उत्तर दोनों पदों के अर्थ की प्रधानता..... समास में होती है? UGC 73 J–2014, UP PGT (H)–2002
(A) अव्ययीभाव (B) तत्पुरुष
(C) द्वन्द्व (D) बहुव्रीहि
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–02*

287. 'द्वन्द्वसमास' में कौन-सा पद प्रधान होता है? UP PGT (H)–2013
(A) उत्तर पद (B) प्रथम पद
(C) दोनों पद (D) इनमें से कोई नहीं
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–02*

288. द्वन्द्व समास के भेद हैं? UP TGT–2001
(A) दो भेद (B) तीन भेद
(C) पाँच भेद (D) एक भेद
स्रोत–*समासप्रकरण (आचार्यसेतु)-ललित कुमार त्रिपाठी, पेज–140*

289. 'समाहारः' कस्य समासस्य भेदः– BHU Sh.ET–2008
(A) तत्पुरुषस्य (B) द्वन्द्वस्य
(C) अव्ययीभावस्य (D) बहुव्रीहेः
स्रोत–*समासप्रकरण (आचार्यसेतु)-ललित कुमार त्रिपाठी, पेज–140*

290. 'समाहार' में कौन-सा समास होता है? BHU MET–2010
(A) द्वन्द्व (B) द्विगु
(C) कर्मधारय (D) अव्ययीभाव
स्रोत–*समासप्रकरण (आचार्यसेतु)-ललित कुमार त्रिपाठी, पेज–140*

291. 'समाहारद्वन्द्वः' सदैव प्रयुज्यते– UGC 25 J–2007
(A) पुँल्लिङ्गे (B) स्त्रीलिङ्गे
(C) नपुंसकलिङ्गे (D) उभयलिङ्गे
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–110*

292. एषु को द्वन्द्वसमासः योग्यः? BHU Sh.ET–2008
(A) कारकपूर्वः (B) इतरेतरार्थकः
(C) अव्ययपूर्वः (D) संख्यापूर्वः
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–231*

293. 'चार्थे द्वन्द्वः' इति अस्मिन् चकारस्य अर्थः भवति? RPSC ग्रेड-II TGT–2010
(A) त्रयः (B) दश
(C) अष्ट (D) चत्वारः
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–231*

294. समासान्तप्रत्ययविधायकं सूत्रं न अस्ति– UK SLET–2015
(A) ऋक्पूरब्धूः पथामानक्षे (B) द्वन्द्वाच्चुदषहान्तात् समाहारे
(C) अनश्च (D) द्वन्द्वश्च प्राणितूर्यसेनाङ्गानाम्
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–240*

295. 'समाहारद्वन्द्व' का उदाहरण है? UGC 73 J–2009
(A) द्वित्राः (B) राजपुरुषः
(C) हस्तपादम् (D) रामश्यामौ
स्रोत–*समासप्रकरण (आचार्यसेतु)-ललित कुमार त्रिपाठी, पेज–148*

296. 'स्तोः श्चुना श्चुः' इति सूत्रे 'स्तोः' इत्यत्र कः समासः? BHU AET–2012
(A) समाहारद्वन्द्वः (B) इतरेतरद्वन्द्वः
(C) तत्पुरुषः (D) बहुव्रीहिः
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी-गोविन्दाचार्य, पेज–84*

282. (B) 283. (C) 284. (C) 285. (D) 286. (C) 287. (C) 288. (A) 289. (B) 290. (A) 291. (C) 292. (B) 293. (D) 294. (D) 295. (C) 296. (A)

297. 'चटकौ' में कौन-सा समास है? UP TET–2013

(A) द्विगु　(B) द्वन्द्व
(C) कर्मधारय　(D) तत्पुरुष

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–260*

298. 'शीतोष्णम्' शब्द में क्या समास है? UP TGT–2013

(A) अव्ययीभाव　(B) द्वन्द्व
(C) बहुव्रीहि　(D) तत्पुरुष

स्रोत–*वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (भाग–2)-गोविन्दाचार्य, पेज–827*

299. 'पाणिपादम्' में समास है? UP PGT–2004, 2009

(A) इतरेतरद्वन्द्व　(B) समाहारद्वन्द्व
(C) एकशेषद्वन्द्व　(D) अलुक्तत्पुरुष

स्रोत–*समासप्रकरण (आचार्यसेतु)-ललित कुमार त्रिपाठी, पेज–148*

300. 'पाणिपादम्' अस्मिन् पदे समासविग्रहः भवति– UGC 25 J–2012

(A) पाणी च पादौ च　(B) पाणिः च पादम् च
(C) पाणिना च पादेन च　(D) पाणिं च पादौ च

स्रोत–*समासप्रकरण (आचार्यसेतु)-ललित कुमार त्रिपाठी, पेज–148*

301. (i) 'पाणी च पादौ च' का सामासिक पद होगा–
(ii) 'पाणिश्च पादश्च' इससे बनता है?
UP TGT–2004, UGC 25 J–2000

(A) पाणिपादौ　(B) पाणिपादाः
(C) पादपाणिः　(D) पाणिपादम्

स्रोत–*समासप्रकरण (आचार्यसेतु)-ललित कुमार त्रिपाठी, पेज–148*

302. 'मित्रावरुणौ' में समास है? UP PGT–2013

(A) 'इद्वृद्धौ' सूत्र से
(B) 'ईदग्नेः सोमवरुणयोः' सूत्र से
(C) 'अग्नेः स्तुत्स्तोमसोमाः' सूत्र से
(D) 'देवताद्वन्द्वे च' सूत्र से

स्रोत–*वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (भाग–2)-गोविन्दाचार्य, पेज–833*

303. द्वन्द्वसमासस्य उदाहरणम् अस्ति– UGC 73 D–2004

(A) घनश्यामः　(B) श्वेताम्बरः
(C) राजपुरुषः　(D) अहिनकुलम्

स्रोत–*वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (भाग–2)-गोविन्दाचार्य, पेज–818*

304. 'अहिनकुलम्' इसका समास विधायक सूत्र है? UGC 73 D–2006

(A) द्वन्द्वश्च प्राणितूर्यसेनाङ्गानाम्
(B) विप्रतिषिद्धं चानधिकरणवाचि
(C) राजदन्तादिषु परम्
(D) येषां च विरोधः शाश्वतिकः

स्रोत–*वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (भाग–2)-गोविन्दाचार्य, पेज–818*

305. 'अहिनकुलम्' का विग्रह है? UGC 73 J–1991

(A) अहिश्च नकुलश्च　(B) अहिन् नकुलम्
(C) अहिः नकुलम्　(D) अहिश्च नकुलौ च

स्रोत–*वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (भाग–2)-गोविन्दाचार्य, पेज–817*

306. (i) 'अहिनकुलम्' पद में समास है?
(ii) 'अहिनकुलम्' इति पदे समासोऽस्ति–
UP TET–2014, G-GIC–2015

(A) द्वन्द्व　(B) बहुव्रीहि
(C) कर्मधारय　(D) तत्पुरुष

स्रोत–*वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (भाग–2)-गोविन्दाचार्य, पेज–818*

307. 'नक्तन्दिवम्' में समास है?
UP PGT–2013, UP PGT (H)–2005

(A) कर्मधारय　(B) अव्ययीभाव
(C) द्वन्द्व　(D) तत्पुरुष

स्रोत–*किरातार्जुनीयम्-रामसेवक दुबे, पेज–66*

308. नक्तं च दिवं च– AWES TGT–2008

(A) नक्तदिवम्　(B) नक्तन्दिवम्
(C) नक्तन्दिवौ　(D) नक्तदिवे

स्रोत–*किरातार्जुनीयम्-रामसेवक दुबे, पेज–66*

309. 'चतुर्युगम्' भवति– AWES TGT–2008

(A) चत्वारः युगाः　(B) चत्वारि युगानि
(C) चर्तुषु युगेषु समाहारम्　(D) चतुर्णां युगानां समाहारः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–111*

297. (B)	298. (B)	299. (B)	300. (A)	301. (D)	302. (D)	303. (D)	304. (D)	305. (A)	306. (A)
307. (C)	308. (B)	309. (D)							

310. 'धवखदिरौ' यहाँ किस अर्थ में द्वन्द्वसमास समझें? **H TET–2014**

(A) अल्पाच्तरत्वात् (B) अजाद्यदन्तत्वात्

(C) ज्येष्ठानुपूर्व्वात् (D) अभ्यर्हितत्वात्

स्रोत–*समासप्रकरण (आचार्यसेतु)-ललित कुमार त्रिपाठी, पेज–143*

311. 'धवखदिरौ' में समास है? **UP TGT–2001**

(A) द्विगु (B) द्वन्द्व

(C) कर्मधारय (D) तत्पुरुष

स्रोत–*समासप्रकरण (आचार्यसेतु)-ललित कुमार त्रिपाठी, पेज–146*

312. 'इन्द्रश्च-अग्निश्च' का समस्तरूप होगा– **UP TGT–1999**

(A) इन्द्राग्निः (B) इन्द्राग्नयः

(C) अग्नीन्द्रः (D) इन्द्राग्नी

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–237*

313. 'कुक्कुटमयूर्यौ' इत्यस्य पदस्य लौकिकविग्रहः भवति– **UGC 25 J–2012**

(A) कुक्कुटश्च मयूरी च (B) कुक्कुटञ्च मयूरञ्च

(C) कुक्कुटस्य च मयूर्याश्च (D) कुक्कुटौ च मयूर्यौ च

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–169*

314. पिककाकयोः– **AWES TGT–2013**

(A) पिकः च काकः च तयोः

(B) पिकायो काकयोः च

(C) काकः च पिकयोः च

(D) पिक च ककयोः च

स्रोत–*वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (भाग–2)-गोविन्दाचार्य, पेज–821*

315. 'छत्रोपाहनम्' पदे समासः अस्ति– **RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014**

(A) बहुव्रीहिः (B) कर्मधारयः

(C) तत्पुरुषः (D) द्वन्द्वः

स्रोत–*वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (भाग–2)-गोविन्दाचार्य, पेज–844*

316. 'काशीप्रयागम्' अस्मिन् पदे समासः अस्ति? **MP वर्ग-1 (PGT)–2012**

(A) द्वन्द्वः (B) तत्पुरुषः

(C) अव्ययीभावः (D) कर्मधारयः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिखा - बाबूराम सक्सेना, पेज–256*

317. 'पितृशुश्रूषकः' का विग्रह होगा– **MP वर्ग-2 (TGT)–2011, UK TET–2011**

(A) पिता च सुश्रूषकश्च (B) पितुः शुश्रूषकः

(C) पिता चासौ शुश्रूषकः च (D) पिता शुश्रूषकः यस्य सः

318. 'गुरुवृद्धाचार्यान्' इति पदे कः समासः– **C-TET–2014**

(A) अव्ययीभावः (B) द्वन्द्वः

(C) तत्पुरुषः (D) बहुव्रीहिः

319. 'दम्पती' अस्मिन् पदे समास-विग्रहः भवति– **UGC 25 J–2010**

(A) पिता च भ्राता च (B) पिता च पतिश्च

(C) पिता च पुत्रश्च (D) जाया च पतिश्च

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–235*

320. 'सीतारामौ' में समास है? **MP वर्ग-2 (TGT)–2011**

(A) तत्पुरुष (B) द्वन्द्व

(C) कर्मधारय (D) अव्ययीभाव

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–236*

321. 'परवल्लिङ्गं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः' इत्यस्य उदाहरणं नास्ति– **UP GDC–2012**

(A) सीतारामौ (B) मयूरीकुक्कुटौ

(C) अर्धपिप्पली (D) कुक्कुटमयूरौ

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–169*

322. 'जगतः पितरौ वन्दे' इत्यत्र 'पितरौ' इत्यस्य कोऽर्थः– **BHU Sh.ET–2013**

(A) पितृद्वयम् (B) माता च पिता च

(C) मातृद्वयम् (D) पितृसमौ

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–239*

310. (A) **311.** (B) **312.** (D) **313.** (A) **314.** (A) **315.** (D) **316.** (A) **317.** (D) **318.** (B) **319.** (D) **320.** (B) **321.** (A) **322.** (B)

323. 'मातापितरौ' इत्यत्र कः समासः? BHU B.ed–2014

(A) कर्मधारयः (B) अव्ययीभावः

(C) तत्पुरुषः (D) द्वन्द्वः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–239*

324. निम्नलिखित में से द्वन्द्वसमास का उदाहरण है– UP GDC–2008

(A) राजपुरुषः (B) पीताम्बरः

(C) पितरौ (D) विश्नः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–239*

325. 'पितरौ' समस्तपद में कौन-सा समास होता है? UP PGT–2010, UP TET–2014

(A) इतरेतरद्वन्द्वसमास (B) समाहारद्वन्द्वसमास

(C) एकशेषद्वन्द्वसमास (D) केवलसमास

स्रोत–*समासप्रकरण (आचार्यसेतु)-ललित कुमार त्रिपाठी, पेज–142*

326. (i) 'पितरौ' में समास है? BHU MET–2012

(ii) पितरौ ..... समास का उदाहरण है– UP PGT–2000

(A) तत्पुरुष (B) बहुव्रीहि

(C) द्वन्द्व (D) अव्ययीभाव

स्रोत–*समासप्रकरण (आचार्यसेतु)-ललित कुमार त्रिपाठी, पेज–148*

327. (i) 'मातापितरौ' इत्यस्य समासविग्रह अस्ति?

(ii) 'पितरौ' समस्तपद का विग्रह–

(iii) 'पितरौ' इत्यस्य पदस्य विग्रहः? REET–2016, UP PGT–2003, 2013, UGC 25 J–2007

(A) पिता च कन्या च (B) माता च पिता च

(C) भ्राता च पिता च (D) स्वसा च पिता च

स्रोत–*समासप्रकरण (आचार्यसेतु)-ललित कुमार त्रिपाठी, पेज–142*

328. द्वन्द्वसमास का उदाहरण है– RPSC ग्रेड-III–2013

(A) मातापितरौ (B) सुपुत्रः

(C) वीरपुरुषः (D) सप्तर्षिः

स्रोत–*समासप्रकरण (आचार्यसेतु)-ललित कुमार त्रिपाठी, पेज–148*

329. 'मातापितरौ' इत्यत्र मातृ शब्दस्य पूर्वनिपाते को नियमः– BHU AET–2011

(A) लघ्वक्षरञ्च पूर्वम् (B) अल्पाच्तरम्

(C) अभ्यर्हितञ्च (D) धर्मादिष्वनियमः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–239*

330. 'हरिहरौ' में कौन-सा समास है? UP PGT–2005

(A) तत्पुरुष (B) बहुव्रीहि

(C) द्वन्द्व (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

स्रोत–*समासप्रकरण (आचार्यसेतु)-ललित कुमार त्रिपाठी, पेज–147*

331. 'हरिहरौ' शब्द का विग्रह होता है– UP PGT–2003

(A) हरि च हरौ च (B) हरिश्च हरश्च

(C) हरि च हरौ च (D) हरी च हरौ च

स्रोत–*समासप्रकरण (आचार्यसेतु)-ललित कुमार त्रिपाठी, पेज–147*

332. 'हरिहरौ' इत्यत्र समासविधायकं सूत्रं किम्? UGC 25 J–2014

(A) द्वन्द्वे घि (B) अजाद्यदन्तम्

(C) अल्पाच्तरम् (D) निष्ठा

स्रोत–*समास प्रकरण (आचार्य सेतु)-ललित कुमार त्रिपाठी, पेज–147*

333. (i) 'द्वादश' पदे कः समासः? UP TGT–2009

(ii) 'द्वादश' पद में समास है? UGC 25 J–1994, D–2001 AWES TGT–2012

(A) तत्पुरुष (B) कर्मधारय

(C) बहुव्रीहि (D) द्वन्द्व

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–165*

334. अल्पाच्तरम्-इत्यस्य सूत्रस्य उदाहरणम्– UGC 25 J–2013

(A) शिवकेशवौ (B) ईशकृष्णौ

(C) मातापितरौ (D) हरिहरौ

स्रोत–*समासप्रकरण (आचार्यसेतु)-ललित कुमार त्रिपाठी, पेज–143*

323. (D) **324.** (C) **325.** (C) **326.** (C) **327.** (B) **328.** (A) **329.** (C) **330.** (C) **331.** (B) **332.** (A) **333.** (D) **334.** (A)

335. किस समास में 'घि' संज्ञक का पूर्व में प्रयोग होता है? UGC 73 D–2015

(A) बहुव्रीहौ (B) तत्पुरुषे
(C) द्वन्द्वे (D) अव्ययीभावे

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–235*

336. इन युग्मों में से कौन-सा सही नहीं है? UP TGT (H)–2009

(A) नीलोत्पलम् कर्मधारयसमासः
(B) दशाननः बहुव्रीहिसमासः
(C) रामलक्ष्मणौ अव्ययीभावसमासः
(D) दिवारात्रिः द्वन्द्वसमासः

स्रोत–*समासप्रकरण (आचार्यसेतु)-ललित कुमार त्रिपाठी, पेज–147*

337. 'रामकृष्णौ' मे कौन-सा समास है? UP PGT–2003

(A) एकशेषद्वन्द्व (B) इतरेतरद्वन्द्व
(C) समाहारद्वन्द्व (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

स्रोत–*समासप्रकरण (आचार्यसेतु)-ललित कुमार त्रिपाठी, पेज–147*

338. द्वन्द्व में घिसंज्ञक प्रातिपदिक कहाँ होता है? UGC 73 J–2015

(A) परम् (B) मध्ये
(C) पूर्वम् (D) अन्त्ये

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–235*

339. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत– UGC 25 J–2008

(अ) कर्मधारयः (i) पीताम्बरः
(ब) अव्ययीभावः (ii) त्रिभुवनम्
(स) द्विगुः (iii) निर्मक्षिकम्
(द) बहुव्रीहिः (iv) कृष्णसर्पः

	अ	ब	स	द
(A)	i	iii	ii	`iv
(B)	iii	i	iv	ii
(C)	ii	iii	iv	i
(D)	iv	iii	ii	i

लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–30, 115, 111, 191

340. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत– UGC 25 D–2008

(अ) सहरि (i) नञ्-तत्पुरुषः
(ब) कण्ठेकालः (ii) द्वन्द्वः
(स) पाणिपादम् (iii) अव्ययीभावः
(द) अनश्वः (iv) बहुव्रीहिः

	अ	ब	स	द
(A)	i	ii	iv	iii
(B)	iii	ii	i	iv
(C)	ii	iv	iii	i
(D)	iii	iv	ii	i

लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–35, 188, 240, 123

341. पदानां विग्रहं लिखत– AWES TGT–2012
'नान्द्यन्ते'

(A) नन्द्यः अन्ते तस्मिन् (B) नान्द्याः अन्तः तस्मिन्
(C) नन्द्याः च तत् अन्ते (D) नन्द्यः च अन्ते तस्मिन्

स्रोत–*उत्तररामचरितम्-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–5*

342. त्वक्प्रत्यारोपकः – AWES TGT–2012

(A) त्वचः प्रत्यारोपकः (B) त्वकः प्रत्यारोपकः
(C) त्वक् प्रत्यारोपकः (D) त्वचम् प्रत्यारोपकम्

343. गौरवगाथां AWES TGT–2012

(A) गौरवं गाथां ताम् (B) गौरवस्य गाथा, ताम्
(C) गौरवं गाथा, ताम् (D) गौरवे गाथा तानि

344. वर्तमानकाले AWES TGT–2012

(A) वर्तमानः कालः तानि (B) वर्तमानं कालं ताम्
(C) वर्तमानः कालः तस्मिन् (D) वर्तमानं कालं इति

345. स्वाध्ययनस्य– AWES TGT–2012

(A) स्वं स्वस्य वा अध्ययनम्, तस्य
(B) स्वयं स्वस्य वा अध्ययनस्य तस्य
(C) स्वं स्वं वा अध्ययनं तेषां
(D) स्वस्य स्वं अध्ययनं तस्मिन्

335. (C) 336. (C) 337. (B) 338. (C) 339. (D) 340. (D) 341. (B) 342. (A) 343. (B) 344. (C) 345. (A)

346. समस्तपदं लिखत– **AWES TGT–2012**
पूर्वा दिक्, तस्याम्
(A) पूर्वादिशि (B) पूर्वदिशे
(C) पूर्वदिशायां (D) पूर्वादिशा

347. करतलयोः ध्वनिः, तेन **AWES TGT–2012**
(A) करतलध्वनिम् (B) करतलयोर्ध्वनिः
(C) करतलध्वनिना (D) करतलस्यध्वनिः

348. अष्टौ (अष्ट) विधाः यस्य तत्– AWES TGT–2012
(A) अष्टविधम् (B) अष्टौविधाः
(C) अष्टाविधम् (D) अष्टानां विधानां

349. सुबद्धानि मूलानि येषां ते– **AWES TGT–2012**
(A) सुबद्धमूलम् (B) सुबद्धमूलाः
(C) सुबद्धमूलानि (D) सुबद्धमूलः

350. धनस्य विनाशं गतं– **AWES TGT–2012**
(A) धनस्य विनाशेन गतम् (B) धनविनाशगतम्
(C) धनानविनाशगतम् (D) कोऽपि न अस्ति

351. 'सतां सन्निधानम्' का समस्तपद है? H-TET–2014
(A) सत्सन्निधानम् (B) सतासन्निधानम्
(C) सतसन्निधानम् (D) इनमें से कोई नहीं

352. परार्थाभिधानं भवति– **CCSUM-Ph.D –2016**
(A) कारकः (B) विग्रहः
(C) क्रिया (D) वृत्तिः

स्रोत*–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमीव्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–09

353. द्वन्द्वसमासे पूर्वं प्रयुज्यते– **CCSUM-Ph.D–2016**
(A) नदीसंज्ञकः (B) निष्ठासंज्ञक
(C) घिसंज्ञक (D) भसंज्ञक

स्रोत*–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमीव्याख्या चतुर्थ भाग।), पेज–235

346. (A) **347.** (C) **348.** (A) **349.** (B) **350.** (B) **351.** (A) **352.** (D) **353.** (C)

4. कारक-प्रकरण

1. **(i) क्रिया से सीधा सम्बन्ध रखने वाले को कहते हैं?**
(ii) यस्य क्रियया सह साक्षात् सम्बन्धो भवति तस्य नाम– UP TET–2013, RPSC ग्रेड-II (TGT)–2010
(A) सन्धिः (B) अव्ययम्
(C) कारकम् (D) प्रत्ययः
स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–09*

2. **क्रियायाः केन साक्षात्-सम्बन्धोऽस्ति? UP GIC–2015**
(A) पदेन (B) कारकेण
(C) विशेषणेन (D) निपातेन
स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–09*

3. **'कारक' पद में प्रत्यय है– RPSC ग्रेड-II (TGT)–2013**
(A) तुमुन् (B) तृच्
(C) ण्वुल् (D) इतच्
स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–09*

4. **कारक-विभक्तयः यत्र सहजमन्तर्भवन्ति तदुच्यते– DL–2015**
(A) डुकृञ् (B) डुदाञ्
(C) सुप् (D) तद्धिताः
स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–11*

5. **(i) कारक होते हैं–**
(ii) संस्कृत में कारकों की संख्या मानी जाती है–
(iii) व्याकरण में कारक हैं– UGC 25 J–2002
(iv) कति कारकाणि UGC 73 J–2005
UP PGT–2010, DSSSB PGT–2014
UP GIC–2009, MP वर्ग-I (PGT)–2012
(A) पञ्च (5) (B) षट् (6)
(C) सप्त (7) (D) अष्टौ (8)
स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–10*

6. **उपपदविभक्तेः .... बलीयसी– UGC 25 D–2004**
(A) अनुपपदविभक्तिः (B) कारकविभक्तिः
(C) प्रथमाविभक्तिः (D) न काऽपि विभक्तिः
स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–11*

7. **प्रथमाविभक्तिः कस्मिन् अर्थे भवति? REET–2016**
(A) उपमार्थे (B) कारणार्थे
(C) लिङ्गपरिमाणवचनमात्रे (D) परिभाषार्थे
स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–13*
(ii) अष्टाध्यायी (2.3.46) - ईश्वरचन्द्र, पेज–209

8. **उपपद विभक्ति से .... विभक्ति बलवती होती है– UGC 73 J–2014**
(A) कारक (B) पञ्चमी
(C) चतुर्थी (D) तृतीया
स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–11*

9. **... विभक्ति से कारक विभक्ति बलवती होती है– UGC 73 S–2013**
(A) सुबन्तपद (B) तिङन्तपद
(C) उपपद (D) उपसर्ग
स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–11*

10. **'उपपदविभक्तेः कारकविभक्तिः बलीयसी' इत्यस्य उदाहरणं भवति– UGC 25 D–2013**
(A) रामं नमामि (B) नमस्करोति देवान्
(C) गुरुणा सह शिष्यः गच्छति (D) यागाय याति
स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–55*

11. **स्वतन्त्रः UGC 25 J–2006, 2008**
(A) कर्ता (B) न भाव्यः
(C) कर्म (D) अधिकरणम्
स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–40*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.54) - ईश्वरचन्द्र, पेज–131

1. (C) 2. (B) 3. (C) 4. (C) 5. (B) 6. (B) 7. (C) 8. (A) 9. (C) 10. (B) 11. (A)

12. क्रियायां स्वातन्त्र्येण विवक्षितोऽर्थः कः स्यात्? UGC 25 D–2012

(A) कर्म (B) करणम्
(C) कर्ता (D) अधिकरणम्

स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–40*

13. प्रातिपदिकार्थे का विभक्तिः? UGC 25 J–2006

(A) सप्तमी (B) प्रथमा
(C) द्वितीया (D) तृतीया

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–13*
(ii) अष्टाध्यायी (2.3.46) - ईश्वरचन्द्र, पेज–209

14. 'श्रीः' इत्यत्र कस्मिन्नर्थे प्रथमा? UGC 25 D–2010

(A) प्रातिपदिकार्थमात्रे (B) परिमाणमात्रे
(C) लिङ्गमात्रे (D) वचनमात्रे

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–13*
(ii) अष्टाध्यायी (2.3.46) - ईश्वरचन्द्र, पेज–209

15. लिङ्गमात्राधिक्ये प्रथमा–इसका उदाहरण है– UGC 25 J–1998

(A) एकः, द्वौ, बहवः (B) द्रोणो व्रीहिः
(C) तटः, तटी, तटम् (D) श्रीः, कृष्णः, ज्ञानम्

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–13*
(ii) अष्टाध्यायी (2.3.46) - ईश्वरचन्द्र, पेज–209

16. 'परिमाणमात्रे प्रथमा' अस्योदाहरणमस्ति– UP GIC–2015

(A) चितो व्रीहिः (B) धृतो व्रीहिः
(C) बहु व्रीहिः (D) द्रोणो व्रीहिः

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–13*
(ii) अष्टाध्यायी (2.3.46) - ईश्वरचन्द्र, पेज–209

17. परिमाणमात्र में प्रथमा विभक्ति का उदाहरण है– UGC 73 D–2010

(A) नीचैः (B) प्रस्थो यवः
(C) एकः (D) वृक्षः

स्रोत–*(i) संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–177*
(ii) अष्टाध्यायी (2.3.46) - ईश्वरचन्द्र, पेज–209

18. 'द्रोणो व्रीहिः' वाक्य में 'व्रीहि' पद में कौन सी विभक्ति है? UP TGT–2010

(A) प्रातिपदिकार्थमात्र में प्रथमा
(B) परिमाणमात्र में प्रथमा
(C) परिमाण सामान्य को बताने में प्रथमा
(D) परिमाण विशेष को बताने में प्रथमा

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–15*
(ii) अष्टाध्यायी (2.3.46) - ईश्वरचन्द्र, पेज–209

19. 'द्रोणो व्रीहिः' वाक्ये प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाण-वचन-मध्यतः कतमोंशः प्रयोगहेतुः? DL–2015

(A) प्रथमः (B) द्वितीयः
(C) तृतीयः (D) चतुर्थः

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–15*
(ii) अष्टाध्यायी (2.3.46) - ईश्वरचन्द्र, पेज–209

20. 'द्रोणो व्रीहिः' इत्यत्र प्रत्ययार्थे परिमाणे प्रकृत्यर्थः केन संसर्गेण विशेषणम्? JNU M.Phil/Ph.D–2015

(A) अभेदेन (B) भेदाभेदेन
(C) स्वस्वामिभावेन (D) जन्यजनकभावेन

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–15*
(ii) अष्टाध्यायी (2.3.46) - ईश्वरचन्द्र, पेज–209

21. 'बहवः' इत्यत्र कस्मिन् अर्थे प्रथमा विभक्तिः अस्ति– JNU MET–2015

(A) प्रातिपदिकार्थमात्रे (B) लिङ्गमात्राधिक्ये
(C) परिमाणमात्रे (D) संख्यामात्रे

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–15*
(ii) अष्टाध्यायी (2.3.46) - ईश्वरचन्द्र, पेज–209

22. 'सम्बोधने च' सूत्र से विभक्ति होती है? UP TGT–2009

(A) सप्तमी (B) षष्ठी
(C) द्वितीया (D) प्रथमा

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–15*
(ii) अष्टाध्यायी (2.3.47) - ईश्वरचन्द्र, पेज–210

12. (C) **13.** (B) **14.** (A) **15.** (C) **16.** (D) **17.** (B) **18.** (A) **19.** (C) **20.** (A) **21.** (D) **22.** (D)

23. किस अर्थ में प्रथमा विभक्ति नहीं होती– UP GIC–2009

(A) प्रातिपदिकार्थ (B) लिङ्ग
(C) हेतु (D) परिमाण

स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–13*

24. 'स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङ्मयं तप उच्यते' में रेखाङ्कित पद में विभक्ति है– H TET–2014

(A) प्रथमा (B) द्वितीया
(C) चतुर्थी (D) तृतीया

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–13*
(ii) श्रीमद्भगवद्गीता (17.15) - गीताप्रेस

25. (i) कर्म का लक्षण है– UGC 25 J–1994, 1995
(ii) पाणिनि के अनुसार 'कर्म' है–2001, D–1996
(iii) पाणिनि के अनुसार 'कर्म' का लक्षण है–

(A) ध्रुवमपाये (B) कर्तुरीप्सिततमम्
(C) आधारः (D) स्वतन्त्रः

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–16*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.49) - ईश्वरचन्द्र, पेज–127

26. 'कर्मसंज्ञा' का सूत्र नहीं है– UGC 25 J–2002

(A) कर्तुरीप्सिततमम् (B) कर्मणि द्वितीया
(C) तथायुक्तं चानीप्सितम् (D) अकथितं च

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–17*
(ii) अष्टाध्यायी (2.3.2) - ईश्वरचन्द्र, पेज–194

27. कर्तुः क्रियया ईप्सिततमं कारकम्– UGC 25 J–2005

(A) कर्ता (B) करणम्
(C) कर्म (D) अधिकरणम्

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–16*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.49) - ईश्वरचन्द्र, पेज–127

28. (i) कर्तुरीप्सिततमं कारकं किमुच्यते UP PGT–2000
(ii) कर्ता का 'ईप्सिततम' कारक कहलाता है–

(A) कर्म (B) करण
(C) सम्प्रदान (D) अपादान

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–16*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.49) - ईश्वरचन्द्र, पेज–127

29. (i) 'अपादानादिविशेषों से अविवक्षित कारक में .... संज्ञा होगी।
(ii) अपादानादिविशेषैः अविवक्षितं कारकं.........
UGC 25 D–2008, S–2013, UGC 73 D–2014

(A) अपादानम् (B) कर्म
(C) करणम् (D) किमपि न

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–19*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.51) - ईश्वरचन्द्र, पेज–128

30. अनीप्सितस्य का संज्ञा? UGC 25 J–2013

(A) करणसंज्ञा (B) सम्प्रदानसंज्ञा
(C) कर्मसंज्ञा (D) अपादानसंज्ञा

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–19*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.50) - ईश्वरचन्द्र, पेज–128

31. कर्तुरीप्सिततमं कर्मेति सूत्रेण कर्मग्रहणस्य प्रयोजनमस्ति– JNU M.Phil/Ph. D–2015

(A) अनीप्सितनिवृत्तिः (B) इत्थम्भूताख्याननिवृत्तिः
(C) आधारनिवृत्तिः (D) आधारप्रवृतिः

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–16*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.49) - ईश्वरचन्द्र, पेज–127

32. कर्तुः क्रियया आप्तुमिष्टतमस्य कारकस्य का संज्ञा भवति? UGC 25 S–2013

(A) कर्त्ता (B) कर्म
(C) करणम् (D) अधिकरणम्

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–16*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.49) - ईश्वरचन्द्र, पेज–127

23. (C)	24. (A)	25. (B)	26. (B)	27. (C)	28. (A)	29. (B)	30. (C)	31. (C)	32. (B)

33. 'कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे' सूत्र है– UP PGT–2002, 2004

(A) कर्ताकारक का (B) कर्मकारक का
(C) करणकारक का (D) सम्प्रदानकारक का

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–38*
(ii) अष्टाध्यायी (2.3.5) - ईश्वरचन्द्र, पेज–195

34. 'सः दश वर्षाणि अध्ययनं करोति' वाक्य किस कारक सूत्र का उदाहरण बनेगा– H-TET–2015

(A) कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे (B) अपवर्गे तृतीया
(C) कर्तृकरणयोस्तृतीया (D) अधिशीङ्स्थाऽऽसां कर्म

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–38*
(ii) अष्टाध्यायी (2.3.5) - ईश्वरचन्द्र, पेज–195

35. 'अभिनिविशश्च' सूत्र है? UP TGT–2003, 2004

(A) करणकारक का (B) कर्मकारक का
(C) सम्प्रदानकारक का (D) अपादानकारक का

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–29*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.47) - ईश्वरचन्द्र, पेज–126

36. 'अन्तराऽन्तरेण युक्ते' सूत्र है? UP TGT–2004

(A) द्वितीया का (B) तृतीया का
(C) पञ्चमी का (D) सप्तमी का

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–31*
(ii) अष्टाध्यायी (2.3.4) - ईश्वरचन्द्र, पेज–195

37. 'दिवः कर्म च' यह सूत्र वैकल्पिक रूप से किस कारक से सम्बन्धित हो सकता है– UP TGT–2004

(A) कर्मकारक से (B) सम्प्रदानकारक से
(C) अधिकरणकारक से (D) अपादानकारक से

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–41*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.43) - ईश्वरचन्द्र, पेज–125

38. 'उपान्वध्याङ्वसः' सूत्र है– UP TGT–2005, DL–2015

(A) करणकारक का (B) कर्मकारक का
(C) अपादानकारक का (D) सम्प्रदानकारक का

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–30*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.48) - ईश्वरचन्द्र, पेज–127

39. 'क्रुधद्रुहोरुपसृष्टयोः' संज्ञा भवति– RPSC ग्रेड-II (TGT)–2010

(A) कर्मसंज्ञा (B) अधिकरणसंज्ञा
(C) करणसंज्ञा (D) सम्प्रदानसंज्ञा

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–50*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.38) - ईश्वरचन्द्र, पेज–124

40. 'अकथितं च' किस कारक का द्योतक है? BHU MET–2009, 2011, 2012

(A) करण (B) कर्म
(C) सम्प्रदान (D) सम्बन्ध

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–19*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.51) - ईश्वरचन्द्र, पेज–128

41. कर्मसंज्ञाविधायकं सूत्रं किम्? DSSSB PGT–2014

(A) कर्मणि द्वितीया
(B) कर्तरि कर्मव्यतिहारे
(C) कर्तुरीप्सिततमं कर्म
(D) कर्मप्रवचनीययुक्ते द्वितीया

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–16*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.49) - ईश्वरचन्द्र, पेज–127

42. 'कर्म' इत्यनुवृत्तौ पुनः कर्मग्रहणम् आधारनिवृत्यर्थम् अन्यथा 'गेहं प्रविशति' इत्यत्रैव स्यात् इतीयं पङ्क्तिः कतमत् सूत्रम् अधिकृत्य वर्तते? UK SLET–2015

(A) कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्
(B) दिवः कर्म च
(C) कर्तुरीप्सिततमं कर्म
(D) गत्यर्थकर्मणि द्वितीयाचतुर्थ्यौ चेष्टायामनध्वनि

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–16*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.49) - ईश्वरचन्द्र, पेज–127

33. (B)	34. (A)	35. (B)	36. (A)	37. (A)	38. (B)	39. (A)	40. (B)	41. (C)	42. (C)

43. कर्ता द्वारा अनीप्सितपदार्थ की क्या संज्ञा होती है? UP TGT–2013

(A) कर्ता (B) कर्म
(C) करण (D) सम्प्रदान

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–19*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.50) - ईश्वरचन्द्र, पेज–128

44. कर्ता का इष्टतम कारक है? UP TGT–2001

(A) कर्मकारक (B) करणकारक
(C) सम्प्रदानकारक (D) अपादानकारक

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–16*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.49) - ईश्वरचन्द्र, पेज–127

45. (i) 'अनुक्ते कर्मणि' का विभक्तिः भवति?
(ii) 'अनुक्त कर्म' में विभक्ति है–
UP TGT–2001, RPSC ग्रेड-III–2013
UGC 25 D–2001, 2010

(A) द्वितीया (B) तृतीया
(C) चतुर्थी (D) पञ्चमी

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–17*
(ii) अष्टाध्यायी (2.3.2) - ईश्वरचन्द्र, पेज–194

46. द्विकर्मकधातुओं में होती है– UGC 25 J–2002

(A) तृतीयाविभक्ति (B) द्वितीयाविभक्ति
(C) पञ्चमीविभक्ति (D) सप्तमीविभक्ति

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–19*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.51) - ईश्वरचन्द्र, पेज–128

47. कर्मणि किं भवति? RPSC ग्रेड-II (TGT)–2010

(A) सप्तमी (B) षष्ठी
(C) प्रथमा (D) द्वितीया

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–17*
(ii) अष्टाध्यायी (2.3.2) - ईश्वरचन्द्र, पेज–194

48. 'अकथितं च' सूत्र है– RPSC ग्रेड-III–2013

(A) प्रथमाविभक्ति का (B) द्वितीयाविभक्ति का
(C) तृतीयाविभक्ति का (D) पञ्चमीविभक्ति का

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–19*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.51) - ईश्वरचन्द्र, पेज–128

49. मासमास्ते रेखांकित पद में कौन सी विभक्ति है–
UP PGT–2002

(A) प्रथमा विभक्ति (B) द्वितीया विभक्ति
(C) तृतीया विभक्ति (D) चतुर्थी विभक्ति

स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–23*

50. द्विकर्मक दुह्, याच् आदि बारह धातुओं का कर्मवाच्य बनाने में उनका गौण कर्म किस विभक्ति में आता है–
UP GIC–2009

(A) प्रथमा (B) द्वितीया
(C) तृतीया (D) चतुर्थी

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–19*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.51) - ईश्वरचन्द्र, पेज–128

51. 'धिक्' के योग में कौन-सी विभक्ति होती है–
UP TGT–1999, RPSC ग्रेड-III–2013

(A) षष्ठी (B) पञ्चमी
(C) तृतीया (D) द्वितीया

स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–30*

52. (i) 'अभितः' के योग में विभक्ति होती है–
(ii) 'अभितः' इति शब्दस्य योगे का विभक्तिः?
UP TGT–2003, 2004, DSSSB PGT–2014
UP TET–2013, CCSUM Ph.D–2016

(A) द्वितीया (B) तृतीया
(C) चतुर्थी (D) पञ्चमी

स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–31*

43. (B)	44. (A)	45. (A)	46. (B)	47. (D)	48. (B)	49. (B)	50. (A)	51. (D)	52. (A)

53. 'परितः' के योग में विभक्ति होगी? UP TGT–2005

(A) द्वितीया (B) तृतीया
(C) चतुर्थी (D) पञ्चमी

स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–31*

54. 'समया' के योग में विभक्ति होती है– UGC 25 J–1994, 2001

(A) षष्ठी (B) पञ्चमी
(C) द्वितीया (D) चतुर्थी

स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–31*

55. 'अभि + क्रुध्' धातु के योग में विभक्ति आती है– UGC 25 D–1999

(A) द्वितीया (B) तृतीया
(C) चतुर्थी (D) पञ्चमी

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–50, 51*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.38) - ईश्वरचन्द्र, पेज–124

56. ''अभितः-परितः-समया-निकषा-हा-प्रतियोगेऽपि'' सूत्र किस विभक्ति का है? UGC 25 J–2004 RPSC ग्रेड-III–2013, UP GDC–2008

(A) प्रथमा (B) चतुर्थी
(C) षष्ठी (D) द्वितीया

स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–31*

57. 'अभितः' या 'सर्वतः' के योग में कौन सी विभक्ति होती है– UP PGT–2013, RPSC ग्रेड-III, UP TGT–2010

(A) षष्ठी (B) पञ्चमी
(C) तृतीया (D) द्वितीया

स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–31*

58. 'कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे' सूत्र द्वारा किस विभक्ति का निर्देश किया गया है– UP PGT–2010 BHU MET–2009, 2012

(A) द्वितीया (B) तृतीया
(C) चतुर्थी (D) पञ्चमी

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–38*
(ii) अष्टाध्यायी (2.3.5) - ईश्वरचन्द्र, पेज–195

59. (i) 'अन्तरा' योगे विभक्तिः भवति–
(ii) 'अन्तरा' के योग में विभक्ति है– RPSC ग्रेड-III 2013, AWES TGT–2011

(A) प्रथमा (B) द्वितीया
(C) तृतीया (D) चतुर्थी

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–31*
(ii) अष्टाध्यायी (2.3.4) - ईश्वरचन्द्र, पेज–195

60. 'मूर्खं धिक्' इत्यत्र का विभक्ति? BHU Sh.ET–2011

(A) प्रथमा (B) द्वितीया
(C) तृतीया (D) सम्बोधनम्

स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–30*

61. (i) कर्मप्रवचनीययुक्ते विभक्तिः भवति–
(ii) कर्मप्रवचनीय' के योग में .... विभक्ति होती है– UGC 73 S–2013, J–2015

(A) द्वितीया (B) तृतीया
(C) पञ्चमी (D) चतुर्थी

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–32*
(ii) अष्टाध्यायी (2.3.8) - ईश्वरचन्द्र, पेज–196

62. 'अभि' एवं 'नि' उपसर्गपूर्वक 'विश्' के योग में किस विभक्ति का प्रयोग होता है– UP GDC–2008

(A) सप्तमी (B) चतुर्थी
(C) पञ्चमी (D) द्वितीया

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–29*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.47) - ईश्वरचन्द्र, पेज–126

63. अभिपूर्वस्य 'क्रुध्' धातोः योगे विभक्तिः भवति? UK SLET–2015

(A) द्वितीया (B) तृतीया
(C) चतुर्थी (D) पञ्चमी

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–50*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.38) - ईश्वरचन्द्र, पेज–124

53. (A) 54. (C) 55. (A) 56. (D) 57. (D) 58. (A) 59. (B) 60. (B) 61. (A) 62. (D) 63. (A)

64. 'विना' के योग में विभक्ति होती है– **RPSC ग्रेड-III–2013**

(A) प्रथमा (B) द्वितीया
(C) चतुर्थी (D) षष्ठी

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–70*
(ii) अष्टाध्यायी (2.3.32) - ईश्वरचन्द्र, पेज–205

65. 'विद्यालयं निकषा नदी अस्ति' में कौन सी विभक्ति है? **UP PGT (H)–2010**

(A) द्वितीया (B) तृतीया
(C) चतुर्थी (D) पञ्चमी

स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–31*

66. राजा सेवक को कम्बल देता है, वाक्य मे रेखांकित पद में कौन-सा कारक है? **RLP–2015**

(A) सम्प्रदानकारक (B) कर्ताकारक
(C) कर्मकारक (D) सम्बन्धकारक

स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–46*

67. 'गत्यर्थक धातुओं' के योग में विभक्ति होती है? **UP TET–2013**

(A) तृतीया (B) पञ्चमी
(C) सप्तमी (D) द्वितीया

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–24*
(ii) अष्टाध्यायी 1.4.52 - ईश्वरचन्द्र, पेज–129

68. 'वीप्सार्थे द्योत्ये' का विभक्तिर्गम्यते? UGC 25 J–2015

(A) तृतीया (B) पञ्चमी
(C) द्वितीया (D) सप्तमी

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–34*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.89) - ईश्वरचन्द्र, पेज–141

69. ''अन्तरा त्वां मां हरिः'' किस सूत्र का उदाहरण है– **H TET–2014**

(A) अन्तराऽन्तरेणयुक्ते (B) कर्मप्रवचनीयाः
(C) अनुर्लक्षणे (D) कर्मप्रवचनीययुक्ते द्वितीया

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–31*
(ii) अष्टाध्यायी (2.3.4) - ईश्वरचन्द्र, पेज–195

70. 'पुष्पाणि स्पृहयति' इत्यत्र 'पुष्पाणि' इति पदम् अस्ति– **UGC 25 D–2013**

(A) ईप्सिततमम् (B) ईप्सितम्
(C) अनीप्सितम् (D) अनीप्सितम्

स्रोत– *(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–49*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.36) - ईश्वरचन्द्र, पेज–123

71. 'पुष्पाणि स्पृहयन्ति' इत्यत्र 'पुष्पाणि' इत्यस्य कर्मसंज्ञा भवति– **UGC 25 J–2011**

(A) अनीप्सित्वात् (B) ईप्सिततमत्त्वात्
(C) स्पृहधातोः प्रयोगात् (D) प्रकर्षाभावात्

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–49*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.49) - ईश्वरचन्द्र, पेज–127

72. 'ग्रामं गच्छति' इत्यत्र केन सूत्रेण द्वितीयाविभक्तिः अस्ति– **UGC 25 D–2011, H TET–2014**

(A) 'अकथितं च' सूत्रेण
(B) 'शब्दायतेर्न' सूत्रेण
(C) 'तथायुक्तं चानीप्सितम्' सूत्रेण
(D) 'कर्मणि द्वितीया' सूत्रेण

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–19*
(ii) अष्टाध्यायी (2.3.2) - ईश्वरचन्द्र, पेज–194

73. 'तथायुक्तं चानीप्सितम्' इति सूत्रस्योदाहरणम्? **UGC 25 D–2006**

(A) ओदनं पचति (B) गां पयः दोग्धि
(C) अग्नेः माणवकं वारयति (D) ग्रामं गच्छन् तृणं स्पृशति।

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–19*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.50) - ईश्वरचन्द्र, पेज–128

74. 'विषं भक्षयति'–यहाँ कर्मसंज्ञा विधायक सूत्र है– **UGC 25 J–1999**

(A) अकथितं च (B) तथायुक्तं चानीप्सितम्
(C) दिवः कर्म च (D) अभिनिविशश्च

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–19*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.50) - ईश्वरचन्द्र, पेज–128

64. (B) 65. (A) 66. (A) 67. (D) 68. (C) 69. (A) 70. (A) 71. (B) 72. (D) 73. (D) 74. (B)

75. 'ग्रामं गच्छन्तृणं स्पृशति' इत्यत्र द्वितीयाविधायकं सूत्रं किम्? **UGC 25 D–2012, UP PGT–2013**

(A) अकथितं च (B) स्पृहेरीप्सितः

(C) कर्तुरीप्सिततमं कर्म (D) तथायुक्तं चानीप्सितम्

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–19*

(ii) अष्टाध्यायी (1.4.50) - ईश्वरचन्द्र, पेज–128

76. 'विषं भुङ्क्ते' इसमें कर्मसंज्ञा होती है– **UGC 73 J–1999, D–2008**

(A) कर्तुरीप्सिततमम् (B) दिवः कर्म च

(C) तथायुक्तं चानीप्सितम् (D) भुजोऽनवने

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–19*

(ii) अष्टाध्यायी (1.4.50) - ईश्वरचन्द्र, पेज–128

77. 'ग्रामं गच्छन् तृणं स्पृशति' इसमें 'तृणम्' की कर्मसंज्ञा होती है– **UGC 73 D–2006**

(A) अकथितं च (B) कर्तुरीप्सिततमं कर्म

(C) तथायुक्तं चानीप्सितम् (D) दिवः कर्म च

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–19*

(ii) अष्टाध्यायी (1.4.50) - ईश्वरचन्द्र, पेज–128

78. 'ओदनं भुञ्जानो विषं भुङ्क्ते' उदाहरण है? **UP PGT–2000**

(A) अभुक्त्यर्थस्य न (B) अनुर्लक्षणे

(C) तथायुक्तं चानीप्सितम् (D) हेतौ

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–19*

(ii) अष्टाध्यायी (1.4.50) - ईश्वरचन्द्र, पेज–128

79. वाक्यं स्यात्– **UGC 73 D–2004**

(A) गौरश्वः पुरुषो हस्ती

(B) नभः कुसुममस्तीति

(C) अग्निना सिञ्चति

(D) देवदत्तः ग्रामं गच्छन् तृणं स्पृशति

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–19*

(ii) अष्टाध्यायी (1.4.50) - ईश्वरचन्द्र, पेज–128

80. ''ओदनं भुञ्जानो विषं भुङ्क्ते'' में 'ओदन' की कर्मसंज्ञा किस सूत्र से हुई है– **UP PGT–2004**

(A) कर्मणि द्वितीया (B) तथायुक्तं चानीप्सितम्

(C) अकथितं च (D) कर्तुरीप्सिततमं कर्म

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–19*

(ii) अष्टाध्यायी (1.4.49) - ईश्वरचन्द्र, पेज–127

81. ''सः तण्डुलेन ओदनं पचति'' वाक्यमिदं संशोधयत– **REET–2016**

(A) सः तण्डुलान् ओदनं पचति

(B) स तण्डुलाय ओदनं पचति

(C) स तण्डुलानं ओदनः पचति

(D) सः तण्डुलात् ओदनम् पचति

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–21*

(ii) अष्टाध्यायी (1.4.51) - ईश्वरचन्द्र, पेज–128

82. 'गां दोग्धि पयः' से सम्बन्धित सूत्र है– **UGC 25 D–2003**

(A) अकथितं च (B) कर्तुरीप्सिततमं कर्म

(C) अपादान (D) कर्मप्रवचनीयाः

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–20*

(ii) अष्टाध्यायी (1.4.51) - ईश्वरचन्द्र, पेज–128

83. 'सः मन्दिरम् आगत्य पुस्तकं पठित्वा तण्डुलान् ओदनं पचति।' इत्यत्र वाक्ये अकथितं कर्म अस्ति– **RPSC ग्रेड-I (PGT)–2014**

(A) मन्दिरम् (B) ओदनम्

(C) तण्डुलान् (D) पुस्तकम्

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–21*

(ii) अष्टाध्यायी (1.4.51) - ईश्वरचन्द्र, पेज–128

84. 'गां दोग्धि पयः' में 'गां' की संज्ञा होगी? **UP TGT–2010**

(A) कर्म (B) करण

(C) अधिकरण (D) अपादान

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–20*

(ii) अष्टाध्यायी (1.4.51) - ईश्वरचन्द्र, पेज–128

75. (D) 76. (C) 77. (C) 78. (C) 79. (D) 80. (D) 81. (A) 82. (A) 83. (C) 84. (A)

85. 'गां दोग्धि पयः' वाक्ये 'गां' प्रयोगाय निर्दिष्टं सूत्रमस्ति– DL–2015

(A) कर्मणि द्वितीया (B) कर्तुरीप्सिततमं कर्म
(C) तथायुक्तं चानीप्सितम् (D) अकथितं च

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–20*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.51) - ईश्वरचन्द्र, पेज–128

86. 'गां दोग्धि पयः' अत्र 'पयः' अस्ति– MP वर्ग-1 (PGT)–2012

(A) कर्त्ता (B) करणम्
(C) कर्म (D) अधिकरणम्

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–20*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.49) - ईश्वरचन्द्र, पेज–127

87. (i) 'गां दोग्धि पयः' अत्र 'गो' पदे द्वितीया भवति–
(ii) 'गां दोग्धि पयः' 'बलिं भिक्षते वसुधाम्'। उपर्युक्त वाक्यों में क्रमशः 'गाम्' और 'बलिं' में कर्मकारक द्वितीया विभक्ति का विधायक सूत्र कौन-सा है? UP TGT–1999, CCSUM-Ph.D–2016

(A) अधिशीङ्स्थासां कर्म (B) उपान्वध्याङ्वसः
(C) अकथितं च (दुह्याच्...) (D) अभिनिविशश्च

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–20/21*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.51) - ईश्वरचन्द्र, पेज–128

88. 'बलिं याचते वसुधाम्' यहाँ 'बलि' की कर्मसंज्ञा विधायक सूत्र है? UP TGT–2001, 2009 UP TET–2014, UGC 25 D–1997

(A) अकथितं च (B) अपवर्गे तृतीया
(C) तथायुक्तं चानीप्सितम् (D) अभिनिविशश्च

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–21*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.51) - ईश्वरचन्द्र, पेज–128

89. 'याच्' धातोः योगे किं कारकम् उक्तम् – DL–2015

(A) अपादानम् (B) अधिकरणम्
(C) कर्ता (D) कर्म

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–19*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.51) - ईश्वरचन्द्र, पेज–128

90. 'बलिं याचते वसुधाम्' इस वाक्य में 'बलि' में द्वितीया विभक्ति क्यों होती है? UP TGT–2013

(A) बलि गौण कर्म है।
(B) अपादान की विशेष विवक्षा नहीं, अपितु अविवक्षता है।
(C) 'अकथितं च' सूत्र से कर्मसंज्ञा होती है।
(D) उपर्युक्त सभी कारणों से

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–21*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.51) - ईश्वरचन्द्र, पेज–128

91. 'द्विकर्मकधातोः' उदाहरणमस्ति– RPSC ग्रेड-II TGT–2010

(A) अध्यापकः छात्रान् पाठयति
(B) अध्यापकः छात्रं पाठयति
(C) अध्यापकः छात्रान् पृच्छति
(D) अध्यापकः छात्रं प्रश्नं पृच्छति

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–19*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.51) - ईश्वरचन्द्र, पेज–128

92. 'वृक्षात् अवचिनोति फलानि'– अत्र अविवक्षितं कर्म भवेत्– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011

(A) वृक्षेण (B) वृक्षम्
(C) वृक्षे (D) वृक्षैः

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–21*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.51) - ईश्वरचन्द्र, पेज–128

93. 'अकथितं च' इस सूत्र का उदाहरण है– UGC 73 D–2009

(A) विषं भुङ्क्ते (B) हरिं भजति
(C) वृक्षं पुष्पमवचिनोति (D) गृहं गच्छति बालकः

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–21*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.51) - ईश्वरचन्द्र, पेज–128

94. 'अकथितं च' इत्यस्य सूत्रस्य उदाहरणम् अस्ति– UGC 25 J–2013

(A) माणवकं धर्मं ब्रूते। (B) धर्मं जानाति वेदेन।
(C) वनं गच्छति रथेन। (D) माणवकाय दीक्षां ददाति।

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–22*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.51) - ईश्वरचन्द्र, पेज–128

85. (D) 86. (C) 87. (C) 88. (A) 89. (D) 90. (D) 91. (D) 92. (B) 93. (C) 94. (A)

95. अकथितकर्म का उदाहरण है– **UGC 25 D–1998, J–2000**

(A) विषं भुङ्क्ते (B) ग्रामं गच्छति
(C) मासमास्ते (D) देवदत्तं शतं मुष्णाति

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–22*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.51) - ईश्वरचन्द्र, पेज–128

96. भिक्षुकः याचते– **UGC 73 D–2005**

(A) श्रेष्ठिनः (B) श्रेष्ठिने
(C) श्रेष्ठिनि (D) श्रेष्ठिनम्

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–21*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.51) - ईश्वरचन्द्र, पेज–128

97. निम्न में से द्विकर्मक धातु नहीं है? UP TET –2013

(A) कृष् (B) दण्ड्
(C) मन् (D) मथ्

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–19*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.51) - ईश्वरचन्द्र, पेज–128

98. 'शत्रवः स्वर्गम् अगच्छन्' वाक्य का णिजन्त रूप होगा– **UP PGT–2000**

(A) शत्रवः स्वर्गम् अगमयत् (B) शत्रून् स्वर्गम् अगमयत्
(C) शत्रून् स्वर्गम् अगच्छन् (D) शत्रवे स्वर्गम् अगमयत्

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–24*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.52) - ईश्वरचन्द्र, पेज–129

99. इनमें शुद्ध रूप है– **UGC 25 D–1999**

(A) ग्रामात् परितः (B) ग्रामस्य परितः
(C) ग्रामेण परितः (D) ग्रामं परितः

स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–31*

100. इस अर्थ में 'परि' कर्मप्रवचनीय होता है– **UGC 25 J–2000**

(A) पूजा (B) भाग
(C) अतिक्रमण (D) समुच्चय

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–34*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.89) - ईश्वरचन्द्र, पेज–141

101. 'अधिशीङ्स्थासां कर्म' का उदाहरण है– **UGC 25 J–2002, RPSC ग्रेड-III–2013**

(A) कटे आस्ते (B) वैकुण्ठम् अध्यास्ते
(C) जटाभिः तापसः (D) अधिवसति वैकुण्ठं हरिः

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–29*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.46) - ईश्वरचन्द्र, पेज–126

102. 'अधिशीङ्स्थासां कर्म' सूत्र सम्बन्धित है? **UP TET–2016**

(A) प्रथमा विभक्ति से (B) द्वितीया विभक्ति से
(C) तृतीया विभक्ति से (D) चतुर्थी विभक्ति से

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–29*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.46) - ईश्वरचन्द्र, पेज–126

103. 'अधिवसति वैकुण्ठं हरिः' किस सूत्र से सिद्ध होता है? **BHU MET–2012**

(A) अधिशीङ्स्थासां कर्म (B) अधीगर्थदयेशां कर्मणि
(C) अधिपरी अनर्थकौ (D) उपान्वध्याङ्वसः

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–30*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.48) - ईश्वरचन्द्र, पेज–127

104. 'अनु हरिं सुराः' किस सूत्र का उदाहरण है– **BHU MET–2012**

(A) हेतौ (B) हीने
(C) तृतीयार्थे (D) अनुर्लक्षणे

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–33*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.86) - ईश्वरचन्द्र, पेज–140

105. कारकप्रकरणे ण्यन्ताण्यन्तविचारः अधस्तनेषु कस्मिन् सूत्रे कृतः? **UGC 25 D–2014**

(A) गतिबुद्धिप्रत्यवसानार्थशब्दकर्माकर्मकाणामणि कर्ता स णौ
(B) अणुदित्सवर्णस्य चाप्रत्ययः
(C) णेरनिटि
(D) णो नः

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–24*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.52) - ईश्वरचन्द्र, पेज–129

95. (D) **96.** (D) **97.** (C) **98.** (B) **99.** (D) **100.** (B) **101.** (B) **102.** (B) **103.** (D) **104.** (B) **105.** (A)

106. 'कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे' इति सूत्रेण सिद्धम्– UP GDC–2014

(A) अक्ष्णा काणः (B) तिलात् तैलम्
(C) हिमवतो गङ्गा (D) क्रोशं कुटिला नदी

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–38*
(ii) अष्टाध्यायी (2.3.5) - ईश्वरचन्द्र, पेज–195

107. 'गङ्गां यमुनां च............ प्रयागराजः अस्ति' इति वाक्ये रिक्तस्थाने पदं योजनीयम् अस्ति? BHU RET–2012

(A) परितः (B) अभितः
(C) अन्तरा (D) पृथक्

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–31*
(ii) अष्टाध्यायी (2.3.4) - ईश्वरचन्द्र, पेज–195

108. .... समया नदी वहति। AWES TGT–2013

(A) नगरं (B) नगरस्य
(C) नगरात् (D) नगरेण

स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–31*

109. तस्मै..........विना कथं कथितम्। AWES TGT–2013

(A) प्रयोजनस्य (B) प्रयोजनम्
(C) प्रयोजने (D) प्रयोजनाय

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–70*
(ii) अष्टाध्यायी (2.3.32) - ईश्वरचन्द्र, पेज–205

110. 'अधिवसति वैकुण्ठं हरिः' में 'अधिवसति' रूप बनाने का सही सूत्र कौन है? BHU MET–2009

(A) अधिशीङ्स्थासां कर्म (B) अधिपरी अनर्थकौ
(C) उपान्वध्याङ्वसः (D) अधीगर्थदयेशां कर्मणि

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–30*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.48) - ईश्वरचन्द्र, पेज–127

111. 'अधि भुवि रामः' में कर्मप्रवचनीयसंज्ञा किस सूत्र से होती है? BHU MET–2009

(A) अधिरीश्वरे (B) कर्मप्रवचनीयाः
(C) अधीगर्थदयेशां कर्मणि (D) अधिपरी अनर्थकौ

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–102*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.96) - ईश्वरचन्द्र, पेज–143

112. 'अनुर्लक्षणे' सूत्र विधायक है? UP PGT–2013

(A) कर्मप्रवचनीयसंज्ञा का (B) उपसर्गसंज्ञा का
(C) गतिसंज्ञा का (D) निपातसंज्ञा का

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–32*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.83) - ईश्वरचन्द्र, पेज–139

113. जपमनु प्रावर्षत्..........अत्र द्वितीया केन सूत्रेण? UGC 25 J–2008, BHU MET–2014

(A) अनुर्लक्षणे (B) कर्मप्रवचनीययुक्ते द्वितीया
(C) कर्मणि द्वितीया (D) लक्षणेत्थम्भूताख्यान----

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–32*
(ii) अष्टाध्यायी (2.3.8) - ईश्वरचन्द्र, पेज–196

114. कारकप्रयोगदृष्ट्या वाक्यमिदं शुद्धं वर्तते– UGC 25 J–2013

(A) नृपे गां याचते (B) देवदत्ताय अभिक्रुध्यति
(C) देवदत्तम् अभिक्रुध्यति (D) पुष्पेण स्पृहयति

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–51*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.38) - ईश्वरचन्द्र, पेज–124

115. अयम् उपपदविभक्तेः प्रयोगः वर्तते– UGC 25 J–2013

(A) ग्रामाद् आयाति (B) हरिः सेव्यते
(C) लक्ष्म्या सहितः (D) रामात् पृथक्

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–69*
(ii) अष्टाध्यायी (2.3.32) - ईश्वरचन्द्र, पेज–205

116. हेत्वर्थक 'अनु' शब्द को कहते हैं? UP TGT–2004

(A) कर्मप्रवचनीय (B) व्यपेक्षा
(C) अतिदेश (D) विभाषा

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–32*
(ii) अष्टाध्यायी (2.3.8) - ईश्वरचन्द्र, पेज–196

117. कारकप्रयोगदृष्ट्या वाक्यमिदं शुद्धम् अस्ति– UGC 25 D–2013

(A) भक्तः रोचते भक्तिः (B) देवदत्तं श्लाघते
(C) वैकुण्ठम् अध्यास्ते हरिः (D) वैकुण्ठे अध्यास्ते हरिः

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–29*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.46) - ईश्वरचन्द्र, पेज–126

106. (D) **107.** (C) **108.** (A) **109.** (B) **110.** (C) **111.** (A) **112.** (A) **113.** (B) **114.** (C) **115.** (D)
116. (A) **117.** (C)

118. 'हरिमभिवर्तते' वाक्य में 'हरिम्' में द्वितीया विभक्ति का कारण है– UP PGT–2000

(A) कर्मत्व (B) अनभिहितत्व
(C) अभि का प्रयोग (D) ईप्सितत्त्व

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–35*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.90) - ईश्वरचन्द्र, पेज–141

119. 'रामः गृहम् अधितिष्ठति' में 'गृहम्' की कर्मसंज्ञा किस सूत्र से हुई है– UP PGT–2002

(A) कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे (B) अकथितं च
(C) अधिशीङ्स्थासां कर्म (D) कर्तुरीप्सिततमं कर्म

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–29*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.46) - ईश्वरचन्द्र, पेज–126

120. जब 'क्रुध्' तथा 'द्रुह्' धातु उपसर्ग सहित हों तो जिसके प्रति क्रोध या द्रोह किया जाता है, वह होता है? UP TGT–2003

(A) सम्प्रदानसंज्ञा में (B) करणसंज्ञा में
(C) कर्मसंज्ञा में (D) अपादानसंज्ञा में

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–50*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.38) - ईश्वरचन्द्र, पेज–124

121. 'वैकुण्ठम् अध्यास्ते हरिः' यहाँ किस अर्थ में कर्म संज्ञा होती है? UP TGT–2005

(A) अपादान अर्थ में (B) सम्प्रदान अर्थ में
(C) सम्बन्ध अर्थ में (D) आधार अर्थ में

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–29*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.46) - ईश्वरचन्द्र, पेज–126

122. 'दुष्टः सज्जनम् अभिद्रुह्यति' इत्यस्मिन् वाक्ये प्रवृत्तं सूत्रम् अस्ति– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011

(A) क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः
(B) स्पृहेरीप्सितः
(C) क्रुधद्रुहोरुपसृष्टयोः कर्म
(D) अभिनिविशश्च

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–50*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.38) - ईश्वरचन्द्र, पेज–124

123. 'पञ्चवर्षाणि अधीते' अस्मिन् वाक्ये द्वितीयाविभक्तेः कारकसूत्रमस्ति– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011

(A) अधिपरी अनर्थकौ
(B) कर्मप्रवचनीययुक्ते द्वितीया
(C) कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे
(D) अधिशीङ्स्थासां कर्म

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–38*
(ii) अष्टाध्यायी (2.3.5) - ईश्वरचन्द्र, पेज–195

124. 'अधिशीङ्स्थासां कर्म' सूत्रस्य उदाहरणम् अस्ति– RPSC ग्रेड-II (TGT)–2010

(A) वयं भारते वसामः (B) वयं भारतम् अधितिष्ठामः
(C) वयं भारताय यजामः (D) वयं भारतस्य नागरिकाः

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–29*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.46) - ईश्वरचन्द्र, पेज–126

125. .... न प्रतिभाति किञ्चित्– RPSC ग्रेड-III–2013

(A) बभुक्षितेन (B) बुभुक्षितम्
(C) बभुक्षिता (D) बुभुक्षितस्य

स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–31*

126. 'अक्षान् दीव्यति' में कर्मसंज्ञक सूत्र है– UGC 73 D–1997

(A) कर्मणि द्वितीया (B) दिवस्तदर्थस्य
(C) दिवः कर्म च (D) दिवः कर्मणि

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–41-42*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.43) - ईश्वरचन्द्र, पेज–125

127. 'मासं कल्याणी' यहाँ द्वितीया विधायक सूत्र है– UGC 73 J–2014

(A) कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे
(B) कर्मणि द्वितीया
(C) कर्मप्रवचनीययुक्ते द्वितीया
(D) अतो नुम्

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–38*
(ii) अष्टाध्यायी (2.3.5) - ईश्वरचन्द्र, पेज–195

118. (C) 119. (C) 120. (C) 121. (D) 122. (C) 123. (C) 124. (B) 125. (B) 126. (C) 127. (A)

128. 'अध्यास्ते वैकुण्ठं हरिः' इत्यत्र 'वैकुण्ठम्' इत्यस्य कर्मसंज्ञा केन सूत्रेण भवति– BHU RET–2008, UGC 73 D–2015

(A) कर्तुरीप्सिततमं कर्म (B) अकथितं च
(C) अधिशीङ्स्थासां कर्म (D) उपान्वध्याङ्वसः

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–29*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.46) - ईश्वरचन्द्र, पेज–126

129. हीने द्योत्ये का विभक्तिः – AWES TGT–2010

(A) पञ्चमी (B) तृतीया
(C) द्वितीया (D) चतुर्थी

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–33*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.85) - ईश्वरचन्द्र, पेज–140

130. 'कर्मकारक' विधायक सूत्र है– H TET–2014

(A) स्पृहेरीप्सितः (B) कर्तरि प्रथमा
(C) कर्मणि द्वितीया (D) उपान्वध्याङ्वसः

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–30*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.48) - ईश्वरचन्द्र, पेज–127

131. 'अधिशीङ्स्थासां' कर्म सूत्र से कर्मसञ्ज्ञा होती है– H TET–2014

(A) करण की (B) सम्प्रदान की
(C) अपादान की (D) आधार की

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–29*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.46) - ईश्वरचन्द्र, पेज–126

132. 'क्रोशं कुटिला नदी' इत्यस्मिन् द्वितीया भवति– G GIC–2015

(A) 'कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे' इति सूत्रेण
(B) 'साधकतमं करणम्' इति सूत्रेण
(C) 'कर्तृकरणयोस्तृतीया' इति सूत्रेण
(D) 'कर्तुरीप्सिततमं कर्म' इति सूत्रेण

स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–38*

तृतीया-विभक्ति

133. 'हेतौ' इस सूत्र का उदाहरण है– UGC 25 D–1997

(A) धूमात् वह्निमान् (B) अध्ययनेन वसति
(C) धनेन किम् (D) बाणेन हतः

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–44*
(ii) अष्टाध्यायी (2.3.23) - ईश्वरचन्द्र, पेज–201

134. 'इत्थम्भूतलक्षणे'–इस सूत्र का उदाहरण है– UGC 25 J–1998, BHU MET–2008

(A) मुखेन त्रिलोचनः (B) जटाभिः तापसः
(C) पादेन गच्छति (D) प्रकृत्या शोभनः

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–43*
(ii) अष्टाध्यायी (2.3.21) - ईश्वरचन्द्र, पेज–201

135. 'हेतु तृतीया' का उदाहरण है– UGC 25 D–1998

(A) प्रकृत्या चारु (B) अध्ययनेन वसति
(C) दुःखेन याति (D) मासेन व्याकरणम्

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–44*
(ii) अष्टाध्यायी (2.3.23) - ईश्वरचन्द्र, पेज–201

136. 'येनाङ्गविकारः' इस सूत्र का उदाहरण है– UGC 25 J–1999

(A) जटाभिस्तापसः (B) वपुषा चतुर्भुजः
(C) दण्डेन ताडितः (D) बाणेन हतः

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–43*
(ii) अष्टाध्यायी (2.3.20) - ईश्वरचन्द्र, पेज–201

137. 'येनाङ्गविकारः' सम्बन्धित है– UGC 25 J–2001, 2003, UP TET–2014

(A) तृतीया से (B) चतुर्थी से
(C) पञ्चमी से (D) षष्ठी से

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–43*
(ii) अष्टाध्यायी (2.3.20) - ईश्वरचन्द्र, पेज–201

138. 'नाना' के योग में विभक्ति है– UGC 25 D–2001

(A) प्रथमा (B) तृतीया
(C) षष्ठी (D) सप्तमी

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–69*
(ii) अष्टाध्यायी (2.3.32) - ईश्वरचन्द्र, पेज–205

128. (C) 129. (C) 130. (D) 131. (D) 132. (A) 133. (B) 134. (B) 135. (B) 136. (B) 137. (A) 138. (B)

139. 'साधकतमं करणम्' सूत्र किस विभक्ति का है– UGC 25 J–2003

(A) प्रथमा (B) तृतीया
(C) पञ्चमी (D) सप्तमी

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–40*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.42) - ईश्वरचन्द्र, पेज–125

140. 'हेत्वर्थे' का विभक्तिः? UGC 25 J–2012

(A) द्वितीया (B) तृतीया
(C) चतुर्थी (D) पञ्चमी

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–44*
(ii) अष्टाध्यायी (2.3.23) - ईश्वरचन्द्र, पेज–201

141. (i) 'जटाभिः तापसः'– अत्र तृतीया केन सूत्रेण?
(ii) 'जटाभिस्तापसः' में तृतीया विभक्ति का हेतु है– UP TGT–1999, UP PGT–2003, 2004
(iii) 'जटाभिः तापसः' में तृतीया विभक्ति विधायक सूत्र– UP GDC–2012, UGC 25 D–2003, 2008
(iv) 'जटाभिः तापसः' सम्बन्धित है– UP TET–2013

(A) अपवर्गे तृतीया (B) दिवः कर्म च
(C) हेतौ (D) इत्थम्भूतलक्षणे

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–43*
(ii) अष्टाध्यायी (2.3.21) - ईश्वरचन्द्र, पेज–201

142. (i) 'अक्ष्णा काणः' में तृतीया विभक्ति हुई है–
(ii) 'अक्ष्णा काणः' केन सूत्रेण तृतीया विभक्तिः? UGC 25 J–2005, 2007, BHU MET–2009 UP TGT–2005, CCSUM-Ph.D–2016

(A) कर्तृकरणयोः तृतीया (B) येनाङ्गविकारः
(C) दिवः कर्म च (D) जनिकर्तुः प्रकृतिः

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–43*
(ii) अष्टाध्यायी (2.3.20) - ईश्वरचन्द्र, पेज–201

143. साधकतमं– UGC 25 D–2006, J–2009

(A) कर्म (B) कर्ता
(C) अधिकरणम् (D) करणम्

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–40*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.42) - ईश्वरचन्द्र, पेज–125

144. क्रियासिद्धौ प्रकृष्टोपकारकं कारकं............... UGC 25 D–2008

(A) करणम् (B) अपादानम्
(C) तादर्थ्यम् (D) उपकारकम्

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–40*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.42) - ईश्वरचन्द्र, पेज–125

145. 'सह साकं सार्धम्' इति योगे किं कारकं भवति– UGC 25 D–2009

(A) कर्ता (B) कर्म
(C) करणम् (D) सम्प्रदानम्

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–42/43*
(ii) अष्टाध्यायी (2.3.19) - ईश्वरचन्द्र, पेज–200

146. (i) 'सहयुक्तेऽप्रधाने' इति सूत्रमस्ति–
(ii) 'सहयुक्तेऽप्रधाने' विभक्तिः भवति– UGC 25 D–2011, RPSC ग्रेड-II (TGT)–2010

(A) प्रथमाविभक्तेः (B) तृतीयाविभक्तेः
(C) पञ्चमीविभक्तेः (D) षष्ठीविभक्तेः

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–42*
(ii) अष्टाध्यायी (2.3.19) - ईश्वरचन्द्र, पेज–200

147. अपवर्गे करणयोस्तृतीया भवति? UGC 25 S–2013

(A) कर्तृकर्मणोः (B) हेतुकरणयोः
(C) कालाध्वनोः (D) संज्ञासर्वनाम्नोः

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–42*
(ii) अष्टाध्यायी (2.3.6) - ईश्वरचन्द्र, पेज–196

148. 'नदीमन्ववसिता सेना' इत्यत्र कस्मिन्नर्थे कर्मप्रवचनीयसंज्ञा भवति? UGC 25 J–2014

(A) प्रथमार्थे (B) पञ्चम्यर्थे
(C) तृतीयार्थे (D) सप्तम्यर्थे

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–33*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.84) - ईश्वरचन्द्र, पेज–139

139. (B) 140. (B) 141. (D) 142. (B) 143. (D) 144. (A) 145. (C) 146. (B) 147. (C) 148. (C)

149. 'चर्मणि द्वीपिनं हन्ति'.............अत्र चर्मशब्दे आदौ कतमा विभक्तिः प्राप्ता भवति? UGC 25 J–2014

(A) हेतौ तृतीया (B) अपादाने पञ्चमी
(C) कर्मणि द्वितीया (D) सम्प्रदाने चतुर्थी

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–94*
(ii) अष्टाध्यायी (2.3.23) - ईश्वरचन्द्र, पेज–201

150. 'सह' के योग में कौन-सी विभक्ति होती है? DL–2015, UP PGT–2000, BHU MET–2010

(A) द्वितीया (B) तृतीया
(C) चतुर्थी (D) षष्ठी

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–42*
(ii) अष्टाध्यायी (2.3.19) - ईश्वरचन्द्र, पेज–200

151. 'सह' इति योगेन कतमं वाक्यं समीचीनम्– C-TET–2015

(A) श्रीकण्ठः तस्मात् सह गृहम् अगच्छत्
(B) श्रीकण्ठः तस्मिन् सह गृहम् अगच्छत्
(C) श्रीकण्ठः तेन सह गृहम् अगच्छत्
(D) श्रीकण्ठः तस्मै सह गृहम् अच्छत्

स्रोत–*(i) वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (खण्ड–2) - गोविन्दाचार्य, पेज–246*
(ii) अष्टाध्यायी (2.3.19) - ईश्वरचन्द्र, पेज–200

152. (i) 'अक्ष्णा काणः' इसमें 'अक्ष्णा' शब्द के साथ तृतीया विभक्ति इस सूत्र से प्रयुक्त है?
(ii) 'अक्ष्णा काणः' बनाने वाला सूत्र क्या है– BHU MET–2011, 2012, UP TET–2016

(A) इत्थम्भूतलक्षणे (B) हेतौ
(C) येनाङ्गविकारः (D) साधकतमं करणम्

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–43*
(ii) अष्टाध्यायी (2.3.20) - ईश्वरचन्द्र, पेज–201

153. 'येनाङ्गविकारः' एवं 'इत्थम्भूतलक्षणे' सूत्रों से विभक्ति होती है– UP PGT–2005

(A) द्वितीया (B) द्वितीया एवं तृतीया
(C) तृतीया (D) तृतीया एवं पञ्चमी

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–43*
(ii) अष्टाध्यायी (2.3.20) - ईश्वरचन्द्र, पेज–201

154. 'नक्षत्रवाची' शब्द कालविशेष को प्रकट करता है, तो विभक्ति होती है– UP PGT–2005

(A) चतुर्थी-पञ्चमी (B) प्रथमा-द्वितीया
(C) द्वितीया-तृतीया (D) तृतीया-सप्तमी

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–100*
(ii) अष्टाध्यायी (2.3.45) - ईश्वरचन्द्र, पेज–209

155. शरीर के किसी अङ्ग के विकार में कौन-सी विभक्ति होती है? UP TGT–1999, RPSC ग्रेड-III–2013

(A) द्वितीया (B) चतुर्थी
(C) तृतीया (D) षष्ठी

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–43*
(ii) अष्टाध्यायी (2.3.20) - ईश्वरचन्द्र, पेज–201

156. 'येनाङ्गविकारः' सूत्र है– UP TGT–2003, 2004

(A) करणकारक का (B) कर्मकारक का
(C) सम्प्रदानकारक का (D) अपादानकारक का

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–43*
(ii) अष्टाध्यायी (2.3.20) - ईश्वरचन्द्र, पेज–201

157. (i) 'इत्थम्भूतलक्षणे' सूत्रेण भवति–
(ii) 'इत्थम्भूतलक्षणे' सूत्रप्रयोगे विभक्तिः
(iii) इत्थम्भूतलक्षणे' से सम्बन्धित विभक्ति है– UP TGT–2001, CCSUM-Ph.D–2016

(A) द्वितीया विभक्ति (B) तृतीया विभक्ति
(C) चतुर्थी विभक्ति (D) पञ्चमी विभक्ति

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–43*
(ii) अष्टाध्यायी (2.3.21) - ईश्वरचन्द्र, पेज–201

158. तृतीया विभक्ति तब होती है जब– UP TGT–2003

(A) काल अर्थ के साथ अपवर्ग द्योतित होने पर
(B) हीन अर्थ द्योतित होने पर
(C) अनादर अर्थ द्योतित होने पर
(D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–42*
(ii) अष्टाध्यायी (2.3.6) - ईश्वरचन्द्र, पेज–196

149. (A) **150.** (B) **151.** (C) **152.** (C) **153.** (C) **154.** (D) **155.** (C) **156.** (A) **157.** (B) **158.** (A)

159. 'पादेन खञ्जः' में तृतीया विभक्ति है?
UP TGT–2001, UP TET–2014

(A) येनाङ्गविकारः से (B) सहयुक्तेऽप्रधाने से
(C) साधकतमं करणम् से (D) कर्तृकरणयोस्तृतीया से

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–43*
(ii) अष्टाध्यायी (2.3.20) - ईश्वरचन्द्र, पेज–201

160. 'वपुषा चतुर्भुजः' वाक्य में 'वपुषा' में किस सूत्र पर आधारित तृतीया है? UP TGT–2004

(A) इत्थम्भूतलक्षणे (B) हेतौ
(C) येनाङ्गविकारः (D) अपवर्गे तृतीया

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–43*
(ii) अष्टाध्यायी (2.3.21) - ईश्वरचन्द्र, पेज–201

161. 'शिखया परिव्राजकः' यहाँ किस कारक में तृतीया विभक्ति है– UP TGT–2004

(A) कर्मणि (B) कर्तरि
(C) संज्ञायाम् (D) करणे

स्रोत–*वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (खण्ड-2)-गोविन्दाचार्य, पेज–249*

162. 'इत्थम्भूतलक्षणे' सूत्र है? UP TGT–2005

(A) करणकारक का (B) सम्प्रदानकारक का
(C) अपादानकारक का (D) अधिकरणकारक का

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–43*
(ii) अष्टाध्यायी (2.3.21) - ईश्वरचन्द्र, पेज–201

163. सः प्रकृत्या चारु अस्ति– वाक्य किस सूत्र का उदाहरण है? H-TET–2015

(A) प्रकृत्यादिभ्यः उपसंख्यानम् (B) अपवर्गे तृतीया
(C) इत्थम्भूतलक्षणे (D) साधकतमं करणम्

स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–41*

164. 'सहयुक्तेऽप्रधाने' सूत्र है? UP TGT–2009

(A) कर्मकारक का (B) करणकारक का
(C) सम्प्रदानकारक का (D) अपादानकारक का

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–42*
(ii) अष्टाध्यायी (2.3.19) - ईश्वरचन्द्र, पेज–200

165. 'रामेण बाणेन हतो बाली' इत्यत्र ''साधकतमं करणम्'' इति सूत्रस्य गतार्थता कस्मिन् पदे विद्यते?
RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014

(A) रामेण (B) बाणेन
(C) हतः (D) बाली

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–41*
(ii) अष्टाध्यायी (2.3.18) - ईश्वरचन्द्र, पेज–200

166. 'रामेण बाणेन हतः बाली' वाक्य में 'बाली' कौन कारक है– UP TGT–2010

(A) कर्ता (B) कर्म
(C) प्रातिपदिक (D) करण

स्रोत–*(i) वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (भाग-2)-गोविन्दाचार्य, पेज–242*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.49) - ईश्वरचन्द्र, पेज–127

167. 'रामः रावणं बाणेन हन्ति' में रेखाङ्कित अंश में विभक्ति है?
UK TET–2011

(A) द्वितीया (B) तृतीया
(C) चतुर्थी (D) पञ्चमी

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–41*
(ii) अष्टाध्यायी (2.3.18) - ईश्वरचन्द्र, पेज–200

168. 'रामेण बाणेन हतो बाली'– अत्र तृतीयाविधायकं सूत्रमस्ति– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011, UP TET–2013

(A) साधकतमं करणम् (B) दिवः कर्म च
(C) अपवर्गे तृतीया (D) हेतौ

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–40*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.42) - ईश्वरचन्द्र, पेज–125

169. 'गुरोः सह आगतः शिष्यः' अत्र रेखाङ्किते शुद्धप्रयोगः स्यात्– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011

(A) गुरुणा (B) गुरुम्
(C) गुरौ (D) गुरवे

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–42*
(ii) अष्टाध्यायी (2.3.19) - ईश्वरचन्द्र, पेज–200

159. (A) 160. (C) 161. (D) 162. (A) 163. (A) 164. (B) 165. (B) 166. (B) 167. (B) 168. (A) 169. (A)

170. 'सः.......... खञ्जः' रिक्तस्थान में होगा–

RPSC ग्रेड-III–2013

(A) पादेन (B) पादस्य

(C) पादात् (D) पादम्

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–43*

(ii) अष्टाध्यायी (2.3.20) - ईश्वरचन्द्र, पेज–201

171. रिक्तस्थान में उचित विभक्ति युक्त पद को संकेतित कीजिए–

.... सह गृहं गच्छति। RPSC ग्रेड-III–2013

(A) पितुः (B) पित्रा

(C) पित्रेण (D) पितरम्

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–42*

(ii) अष्टाध्यायी (2.3.19) - ईश्वरचन्द्र, पेज–200

172. 'नदीनदादिभिः' इत्यत्र का विभक्तिः? REET–2016

(A) चतुर्थी बहुवचनम् (B) तृतीया बहुवचनम्

(C) षष्ठी बहुवचनम् (D) पञ्चमी बहुवचनम्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मनन्द त्रिपाठी, पेज–26*

173. '........ विना नास्ति सुखानुभूतिः' रिक्तस्थान में होगा–

RPSC ग्रेड-III–2013

(A) दुःखेन (B) दुःखाय

(C) दुःखस्य (D) दुःखे

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–69*

(ii) अष्टाध्यायी (2.3.32) - ईश्वरचन्द्र, पेज–205

174. 'देवदत्तः................ खल्वाटः अस्ति' रिक्तस्थान की पूर्ति करें– RPSC ग्रेड-III–2013

(A) शिरसि (B) शिरसा

(C) शिरसे (D) शिरसः

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–43*

(ii) अष्टाध्यायी (2.3.20) - ईश्वरचन्द्र, पेज–201

175. 'साधकतमं करणम्' इत्यत्र 'तमप्' ग्रहणेन किं जायते?

BHU AET–2011

(A) कारकप्रकरणे 'साधकतममिति' सूत्रात् अन्यत्र गौणमुख्यन्याये न प्रवर्तते

(B) अर्थवद्ग्रहणे नानार्थकस्य ग्रहणम्

(C) निर्दिश्यमानस्य आदेशा भवन्ति

(D) क्वचिदेकदेशोऽपि प्रवर्तते

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–40*

(ii) अष्टाध्यायी (1.4.42) - ईश्वरचन्द्र, पेज–125

176. गुणवाचकास्त्रीलिङ्गे का विभक्तिः व्यवस्था?

UGC 25 J–2015

(A) तृतीया - पञ्चम्यौ (B) द्वितीया - तृतीया - पञ्चम्यः

(C) षष्ठी - सप्तम्यौ (D) द्वितीया - चतुर्थ्यौ

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–69*

(ii) अष्टाध्यायी (2.3.25) - ईश्वरचन्द्र, पेज–202

177. 'जटाभिः तापसः' में तृतीया का कारण क्या है–

BHU MET–2010

(A) अङ्गविकार (B) करण

(C) हेतु (D) उपलक्षण

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–43*

(ii) अष्टाध्यायी (2.3.21) - ईश्वरचन्द्र, पेज–201

178. 'अलं श्रमेण' इस वाक्य में कौन-सी विभक्ति किस कारक से है? UP TGT–2010

(A) श्रम हेतु है, इसलिये हेतौ से तृतीया है।

(B) श्रम कारण है, अतः ''कर्तृकरणयोस्तृतीया'' से तृतीया है।

(C) करण कारक है, अतः तृतीया है

(D) उक्त वाक्य अशुद्ध है।

स्रोत–*वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (खण्ड–2) - गोविन्दाचार्य, पेज–251*

170. (A) 171. (B) 172. (B) 173. (A) 174. (B) 175. (A) 176. (A) 177. (D) 178. (B)

179. 'येनाङ्गविकारः' सूत्रात् सिद्ध्यति– DL–2015

(A) अक्ष्णा काणः (B) अक्षिकाणम्

(C) काणस्याक्षिः (D) काणयाक्षिः

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–43*

(ii) अष्टाध्यायी (2.3.20) - ईश्वरचन्द्र, पेज–201

180. करणकारक का बोध कराने की विभक्ति है– BHU MET–2010

(A) पञ्चमी (B) तृतीया

(C) सप्तमी (D) चतुर्थी

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–41*

(ii) अष्टाध्यायी (2.3.18) - ईश्वरचन्द्र, पेज–200

181. निम्नलिखित में से किस सूत्र से तृतीया विभक्ति होती है? BHU MET–2010

(A) अभितः-परितः-समया-निकषा-हा-प्रतियोगेऽपि

(B) रुच्यर्थानां प्रीयमाणः

(C) जनिकर्तुः प्रकृतिः

(D) इत्थम्भूतलक्षणे

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–43*

(ii) अष्टाध्यायी (2.3.21) - ईश्वरचन्द्र, पेज–201

182. फलप्राप्तिबोधक काल और मार्ग का अत्यन्त संयोग होने पर विभक्ति होती है। UGC 73 J–2013

(A) द्वितीया (B) तृतीया

(C) चतुर्थी (D) पञ्चमी

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–42*

(ii) अष्टाध्यायी (2.3.6) - ईश्वरचन्द्र, पेज–196

183. 'अपवर्गे तृतीया' इत्यस्योदाहरणमस्ति– BHU AET–2011

(A) पुण्येन दृष्टो हरिः

(B) शशिना सह याति कौमुदी

(C) द्वादशभिर्वर्षैर्व्याकरणं श्रूयते

(D) धनेन कुलम्

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–42*

(ii) अष्टाध्यायी (2.3.6) - ईश्वरचन्द्र, पेज–196

184. 'मासेन भगवद्गीता अधीता।' अत्र रेखाङ्कित पदे तृतीया विभक्तेः कारकं सूत्रमस्ति– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2015

(A) अपवर्गे तृतीया (B) कर्तृकरणयोस्तृतीया

(C) इत्थम्भूतलक्षणे (D) आख्यातोपयोगे

स्रोत–*(i) वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (खण्ड-2)-गोविन्दाचार्य, पेज–245*

(ii) अष्टाध्यायी (2.3.6) - ईश्वरचन्द्र, पेज–196

185. 'अपवर्ग' इत्येतम् अर्थम् अभिव्यनक्ति– UK SLET–2015

(A) मासम् अधीते (B) मासेन अधीते

(C) मासाद् अधीते (D) मासे अधीते

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–42*

(ii) अष्टाध्यायी (2.3.6) - ईश्वरचन्द्र, पेज–196

186. 'क्रोशेन अनुवाकोऽधीतः' इत्यत्र तृतीयाविभक्तिः कं द्योतयति? HE–2015

(A) साफल्यम् (B) हेतुम्

(C) लक्षणम् (D) अत्यन्तसंयोगम्

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–42*

(ii) अष्टाध्यायी (2.3.6) - ईश्वरचन्द्र, पेज–196

187. पाणिनि के अनुसार करण क्या है? BHU MET–2012

(A) साधकतमम् (B) अधिकरणम्

(C) कर्तुरीप्सिततमम् (D) ध्रुवमपाये

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–40*

(ii) अष्टाध्यायी (1.4.42) - ईश्वरचन्द्र, पेज–125

188. उद्यानं .... शोभते AWES TGT–2013

(A) पुष्पया (B) पुष्पैः

(C) पुष्पाभिः (D) पुष्पात्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.3.18) - ईश्वरचन्द्र, पेज–200*

189. 'कृ + ण्वुल्' प्रत्यय के संयोग से शब्द बनता है? UP TGT–2013

(A) कारकः (B) कर्त्ता

(C) कृण्वुल् (D) कृतिः

स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–9*

179. (A) 180. (B) 181. (D) 182. (B) 183. (C) 184. (A) 185. (B) 186. (A) 187. (A) 188. (B) 189. (A)

190. जिस कारण या प्रयोजन से कोई कार्य किया जाता है, उसमें विभक्ति होती है? UP TGT–2013

(A) तृतीया　　(B) चतुर्थी
(C) पञ्चमी　　(D) षष्ठी

स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.3.23) - ईश्वरचन्द्र, पेज–201*

191. 'क्रोशेन अनुवाकोऽधीतः' में तृतीया विभक्ति का प्रयोग किया गया है। UP PGT–2013, H TET–2015

(A) 'सहयुक्तेऽप्रधाने' सूत्र से
(B) 'इत्थम्भूतलक्षणे' सूत्र से
(C) 'प्रकृत्यादिभ्य उपसंख्यानम्' सूत्र से
(D) 'अपवर्गे तृतीया' सूत्र से

स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.3.6) - ईश्वरचन्द्र, पेज–196*

192. 'अह्ना अनुवाकोऽधीतः'–इस वाक्य में 'अह्ना' पद में विभक्ति किस सूत्र से उपपन्न होती है? UGC 73 D–2015

(A) कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे (B) कर्तृकरणयोस्तृतीया
(C) अपवर्गे तृतीया　　(D) हेतौ

स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.3.6) - ईश्वरचन्द्र, पेज–196*

193. 'सः अक्ष्णा काणः प्रतीयते' अस्मिन् वाक्ये 'अक्ष्णा' पदे का विभक्तिः अस्ति? UK TET–2011

(A) तृतीया　　(B) चतुर्थी
(C) पञ्चमी　　(D) षष्ठी

स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.3.20) - ईश्वरचन्द्र, पेज–201*

194. निम्नाङ्कितेषु वाक्येषु 'सहयुक्तेऽप्रधाने' इति सूत्रस्य प्रयोगः कस्मिन् वाक्ये भवति? UK TET–2011

(A) पुत्रस्य सार्धम् आगतः पिता
(B) पुत्रे सार्धम् आगतः पिता
(C) पुत्रेण सार्धम् आगतः पिता
(D) पुत्रं सार्धम् आगतः पिता

स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.3.19) - ईश्वरचन्द्र, पेज–200*

195. 'सख्या सदृशः' इत्यत्र तृतीया केन सूत्रेण विधीयते– JNU M.Phil/Ph. D–2014

(A) अपवर्गे तृतीया
(B) कर्तृकरणयोस्तृतीया
(C) तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन
(D) तुल्यार्थैरतुलोपमाभ्यां तृतीयान्यतरस्याम्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.3.72) - ईश्वरचन्द्र, पेज–219*

चतुर्थी विभक्ति

196. 'नमः' के योग में प्रयुक्त विभक्ति है– UGC 25 J–1995, RPSC ग्रेड-III–2013

(A) तृतीया　　(B) पञ्चमी
(C) षष्ठी　　(D) चतुर्थी

स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.3.16) - ईश्वरचन्द्र, पेज–199*

197. 'गणेशाय नमः' में प्रयुक्त विभक्ति है– UP PGT (H)–2010

(A) प्रथमा　　(B) द्वितीया
(C) चतुर्थी　　(D) षष्ठी

स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.3.16) - ईश्वरचन्द्र, पेज–199*

198. 'अलम्' के योग में विभक्ति होती है– UGC 25 D–1996, J–1999

(A) पञ्चमी　　(B) चतुर्थी
(C) सप्तमी　　(D) द्वितीया

स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.3.16) - ईश्वरचन्द्र, पेज–199*

199. 'तस्मै कुप्यति' में चतुर्थी विभक्ति किस सूत्र से है– UGC 25 J–2000

(A) स्पृहेरीप्सितः
(B) क्रुध्-द्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः
(C) धारेरुत्तमर्णः
(D) येनाङ्गविकारः

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.37) - ईश्वरचन्द्र, पेज–124*

190. (A) **191.** (D) **192.** (C) **193.** (A) **194.** (C) **195.** (D) **196.** (D) **197.** (C) **198.** (B) **199.** (B)

200. (i) 'हनुमते नमः' में विभक्ति है–
(ii) 'हनुमते नमः' में 'हनुमते' में कौन-सी विभक्ति है–
UP TGT–2009, UGC 25 J–2003
(A) चतुर्थी (B) पञ्चमी
(C) षष्ठी (D) सप्तमी
स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.3.16) - ईश्वरचन्द्र, पेज–199*

201. 'सम्प्रदाने' का विभक्तिः?
UP PGT–2005, UP TET–2013
UGC 25 D–2005, 2006, BHU Sh.ET–2013
(A) चतुर्थी (B) द्वितीया
(C) षष्ठी (D) प्रथमा
स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.3.13) - ईश्वरचन्द्र, पेज–197*

202. 'पुष्पेभ्यः स्पृहयति' अत्र केन सूत्रेण विभक्तिः –
UGC 25 D–2005, 2009, J–2010
(A) अपादाने पञ्चमी (B) चतुर्थी सम्प्रदाने
(C) कर्तृकर्मणोः कृति (D) स्पृहेरीप्सितः
स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.36) - ईश्वरचन्द्र, पेज–123*

203. क्रियया यमभिप्रैति स......... UGC 25 D–2005
(A) कर्म (B) सम्प्रदानम्
(C) अपादानम् (D) अधिकरणम्
स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–47*

204. (i) 'कर्मणा यमभिप्रैति' वह–
(ii) कर्मणा यमभिप्रैति स....... इत्यत्र किं कारकम्?
UGC 73 D–2013, J–2012, DL–2015
UGC 25 J–2007, D–2012
(A) करणम् (B) कर्म
(C) सम्प्रदानम् (D) अपादानम्
स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.32) - ईश्वरचन्द्र, पेज–122*

205. 'हरये रोचते भक्तिः' अत्र सम्प्रदानसंज्ञा केन सूत्रेण?
UGC 25 J–2006
(A) स्पृहेरीप्सितः (B) चतुर्थी सम्प्रदाने
(C) कर्मणा यमभिप्रैति (D) रुच्यर्थानां प्रीयमाणः
स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.33) - ईश्वरचन्द्र, पेज–123*

206. 'क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः–तत्र का विभक्तिः?
UGC 25 D–2007
(A) चतुर्थी (B) तृतीया
(C) द्वितीया (D) पञ्चमी
स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.37) - ईश्वरचन्द्र, पेज–124*

207. 'क्रुध्' धातु के योग में जिस पर क्रोध किया जाय उसमें विभक्ति होती है–
UP TGT–2004, RPSC ग्रेड-III–2013
(A) चतुर्थी (B) द्वितीया
(C) तृतीया (D) पञ्चमी
स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.37) - ईश्वरचन्द्र, पेज–124*

208. 'तीर्थयात्रायै' इत्यस्य का विभक्तिः? REET–2016
(A) षष्ठी (B) पञ्चमी
(C) चतुर्थी (D) तृतीया
स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–22*

209. 'स्वाहा'-शब्दयोगे का विभक्तिः? UGC-25 D–2010
(A) पञ्चमी (B) चतुर्थी
(C) सप्तमी (D) तृतीया
स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.3.16) - ईश्वरचन्द्र, पेज–199*

210. 'पशुना रुद्रं यजते' इत्यत्र 'पशुना' पदे या तृतीया सा कस्मिन् कारकेऽस्ति– UGC 25 J–2011
(A) करणकारके (B) सम्प्रदानकारके
(C) कर्मकारके (D) कर्तृकारके
स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–47*

211. (i) 'वषट्' के योग में विभक्ति लगती है–
(ii) 'वषट्' योगे का विभक्तिर्भवति?
UGC 25 J–2014, BHU MET–2015
(A) द्वितीया (B) तृतीया
(C) चतुर्थी (D) पञ्चमी
स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.3.16) - ईश्वरचन्द्र, पेज–199*

200. (A) **201.** (A) **202.** (D) **203.** (B) **204.** (C) **205.** (D) **206.** (A) **207.** (A) **208.** (C) **209.** (B) **210.** (C) **211.** (C)

212. (i) 'बालकाय मोदकाः रोचन्ते' में रेखाङ्कित पद में कौन-सी विभक्ति है–

(ii) 'बालकाय मोदकं रोचते' वाक्य में 'बालकाय' है–
UP PGT–2002, UP TGT–2003

(A) द्वितीया विभक्ति (B) तृतीया विभक्ति
(C) चतुर्थी विभक्ति (D) पञ्चमी विभक्ति

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.33) - ईश्वरचन्द्र, पेज–123*

213. 'बालकाय मोदकाः रोचन्ते' में बालक की सम्प्रदान संज्ञा किस सूत्र से है– UP TGT–2010

(A) धारेरुत्तमर्णः (B) रुच्यर्थानां प्रीयमाणः
(C) तुमर्थाच्च भाववचनात् (D) स्पृहेरीप्सितः

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.33) - ईश्वरचन्द्र, पेज–123*

214. 'बालकेभ्यः मिष्ठान्नं रोचते'– रेखाङ्कित पद में कौन-सी विभक्ति है– UP PGT–2003, 2004

(A) पञ्चमी (B) चतुर्थी
(C) सप्तमी (D) तृतीया

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.36) - ईश्वरचन्द्र, पेज–123*

215. 'स्पृहेरीप्सितः' सूत्र है– UP TGT–2004, BHU MET–2012

(A) कर्मकारक का (B) करणकारक का
(C) अपादानकारक का (D) सम्प्रदानकारक का

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.36) - ईश्वरचन्द्र, पेज–123*

216. 'पुष्पेभ्यः स्पृहयति' में कौन-सा कारक है?
UP PGT–2002

(A) कर्मकारक (B) करणकारक
(C) सम्प्रदानकारक (D) अपादानकारक

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.36) - ईश्वरचन्द्र, पेज–123*

217. (i) 'स्पृह्'–धातुप्रयोगे यस्य 'स्पृहा' भवति तत्र विभक्तिर्भवति–

(ii) 'स्पृहा' के योग में विभक्ति होती है–
UP GDC–2012, UP TGT–2004, RPSC ग्रेड-III–2013

(A) चतुर्थी (B) तृतीया
(C) द्वितीया (D) सप्तमी

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.36) - ईश्वरचन्द्र, पेज–123*

218. 'परमात्मने नमः' यहाँ 'नमः' के योग में जो विभक्ति है–
UP PGT–2010, UK TET–2011

(A) कारक विभक्ति (B) उपपद विभक्ति
(C) (A) तथा (B) दोनों (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.3.16) - ईश्वरचन्द्र, पेज–199*

219. (i) नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलम् और वषट् शब्दों के योग में कौन-सी विभक्ति होती है–

(ii) 'नमः' के योग में विभक्ति होती है–

UP TGT–1999, UP PGT (H)–2009
BHU MET–2012, UP TET–2013
RPSC ग्रेड-(III)–2013

(A) द्वितीया विभक्ति (B) तृतीया विभक्ति
(C) चतुर्थी विभक्ति (D) पञ्चमी विभक्ति

स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.3.16) - ईश्वरचन्द्र, पेज–199*

220. (i) 'स्वस्ति' के योग में कौन-सी विभक्ति होती है–

(ii) 'स्वस्ति' योगे विभक्तिर्भवति– UP TGT–1999, UP GDC–2014, AWES TGT–2010

(A) चतुर्थी (B) पञ्चमी
(C) षष्ठी (D) सप्तमी

स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.3.16) - ईश्वरचन्द्र, पेज–199*

221. 'प्रजाभ्यः स्वस्ति' में चतुर्थी विभक्ति का सूत्र है–
UP TGT–2001

(A) हितयोगे च (B) रुच्यर्थानां प्रीयमाणः
(C) चतुर्थी सम्प्रदाने (D) नमः-स्वस्ति-स्वाहा----

स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.3.16) - ईश्वरचन्द्र, पेज–199*

222. 'स्वधा' के योग में किस विभक्ति का प्रयोग होता है–
UP TET–2014

(A) तृतीया (B) चतुर्थी
(C) पञ्चमी (D) षष्ठी

स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.3.16) - ईश्वरचन्द्र, पेज–199*

212. (C) 213. (B) 214. (B) 215. (D) 216. (C) 217. (A) 218. (B) 219. (C) 220. (A) 221. (D) 222. (B)

223. 'स्वाहा' – इत्यनेन कः शब्दः समीचीनः –

BHU Sh.ET–2013

(A) अग्नौ (B) अग्नाय

(C) अग्नेः (D) अग्नये

स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.3.16) - ईश्वरचन्द्र, पेज–199*

224. 'तस्मै श्रीगुरवे नमः' वाक्य में 'श्रीगुरवे' है–

UP TGT–2005

(A) द्वितीया विभक्ति में (B) पञ्चमी विभक्ति में

(C) षष्ठी विभक्ति में (D) चतुर्थी विभक्ति में

स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.3.16) - ईश्वरचन्द्र, पेज–199*

225. 'गुरवे नमः' वाक्ये चतुर्थी प्रयोगस्य सूत्रमस्ति–

DL–2015

(A) नमः-स्वस्तियोगेऽपि

(B) नमस्पुरसोर्गत्योः

(C) नमः-स्वस्ति-स्वाहा-स्वधाऽलंवषड्योगाच्च

(D) क्रियार्थोपपदस्य च कर्मणि स्थानिनः

स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.3.16) - ईश्वरचन्द्र, पेज–199*

226. नृपः .... अलम्। AWES TGT–2013

(A) नृपं (B) नृपेण

(C) नृपाय (D) नृपस्य

स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.3.16) - ईश्वरचन्द्र, पेज–199*

227. (i) 'रुच्यर्थानां प्रीयमाणः' यह सूत्र किस विभक्ति का विधायक है–

(ii) ''रुच्यर्थानां प्रीयमाणः'' इत्यादि सूत्रं कस्याः विभक्तेः विधायकम्?

UP GIC–2009, UP TET–2013, 2014

BHU MET–2014, G GIC–2015

(A) द्वितीया (B) तृतीया

(C) चतुर्थी (D) पञ्चमी

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.33) - ईश्वरचन्द्र, पेज–123*

228. 'रुच्' धातोर्योगे विभक्तिः भवति–

RPSC ग्रेड-II TGT–2014

(A) द्वितीया (B) तृतीया

(C) सप्तमी (D) चतुर्थी

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.33) - ईश्वरचन्द्र, पेज–123*

229. 'मह्यम् अपूपाः रोचन्ते' रेखाङ्कित पद में विभक्ति है–

RPSC ग्रेड-III–2013

(A) षष्ठी (B) तृतीया

(C) चतुर्थी (D) पञ्चमी

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.33) - ईश्वरचन्द्र, पेज–123*

230. ''........ रोचते भक्तिः'' रिक्तस्थान में होगा–

RPSC ग्रेड-III–2013

(A) हरये (B) हरिणा

(C) हरे (D) हरौ

स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–47*

231. चतुर्थी विभक्ति तब आती है, जब– UP TGT–2004

(A) अनादर अर्थ द्योतित हो

(B) अतसुच् प्रत्ययान्त शब्दों के योग में

(C) कर्म-प्रवचनीय में

(D) अपवर्ग द्योतित होने पर

स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.3.17) - ईश्वरचन्द्र, पेज–199*

232. 'धारेरुत्तमर्णः' सूत्र किस कारक के साथ सम्बन्धित है?

UP TGT–2004

(A) अपादानकारक से (B) अधिकरणकारक से

(C) सम्प्रदानकारक से (D) करणकारक से

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.35) - ईश्वरचन्द्र, पेज–123*

233. 'मुक्तये हरिं भजति' से 'मुक्तये' में चतुर्थी हुई–

UP TGT–2005

(A) 'चतुर्थी सम्प्रदाने' द्वारा

(B) 'स्पृहेरीप्सितः' सूत्र से

(C) 'क्लृपि सम्पद्यमाने च' (वा०) से

(D) 'तादर्थ्ये चतुर्थी वाच्या' (वा०) से

स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–52*

223. (D) 224. (D) 225. (C) 226. (C) 227. (C) 228. (D) 229. (C) 230. (A) 231. (A) 232. (C) 233. (D)

234. 'राजा ब्राह्मणाय गां ददाति' वाक्य में रेखाङ्कित शब्द की संज्ञा है? UP TGT–2010

(A) कर्म (B) करण
(C) अपादान (D) सम्प्रदान

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.32) - ईश्वरचन्द्र, पेज–122*

235. 'रामः देवदत्ताय शतं धारयति ग्रामे' अस्मिन् वाक्ये रेखाङ्कित पदे विभक्तिः भवेत्– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011

(A) पञ्चमी (B) षष्ठी
(C) तृतीया (D) चतुर्थी

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.35) - ईश्वरचन्द्र, पेज–123*

236. 'ग्रामे वृक्षस्य अधः स्थितः रामः देवदत्ताय शतं धारयति' उपर्युक्तवाक्ये उत्तमर्णः अस्ति– RPSC ग्रेड I (PGT)–2014

(A) रामः (B) वृक्षः
(C) ग्रामः (D) देवदत्तः

स्रोत–*(i) अष्टाध्यायी (1.4.35) - ईश्वरचन्द्र, पेज–123*
(ii) वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (खण्ड–2)-गोविन्दाचार्य, पेज–257

237. .... संयच्छते कामुकः– उचित पद का चयन करें– RPSC ग्रेड-III–2013

(A) दास्या (B) दास्यै
(C) दास्याः (D) दासीम्

स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–45*

238. रिक्तस्थान की पूर्ति करें– RPSC ग्रेड-III–2013
गुरुः .... क्रुध्यति–

(A) शिष्यम् (B) शिष्ये
(C) शिष्यः (D) शिष्याय

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.37) - ईश्वरचन्द्र, पेज–124*

239. रिक्तस्थान में उचित पद होगा– RPSC ग्रेड-III–2013
श्यामसुन्दरः .... ईर्ष्यति–

(A) मया (B) मम
(C) मह्यम् (D) मत्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.37) - ईश्वरचन्द्र, पेज–124*

240. ''दुष्टः............. द्रुह्यति'' इस वाक्य में उचित पद से रिक्तस्थान की पूर्ति करें– RPSC ग्रेड-III–2013

(A) सज्जने (B) सज्जनाय
(C) सज्जनात् (D) सज्जनेन

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.37) - ईश्वरचन्द्र, पेज–124*

241. 'क्रुध्, द्रुह्, ईर्ष्य' धातुओं तथा इनके समान अर्थ वाली धातुओं के योग में जिस पर क्रोध किया जाता है, उसकी क्या संज्ञा होती है? UP TGT–2013

(A) करण (B) सम्प्रदान
(C) अपादान (D) अधिकरण

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.37) - ईश्वरचन्द्र, पेज–124*

242. 'तादर्थ्ये चतुर्थी वाच्या' नियम का उदाहरण है– H TET–2014

(A) मुक्तये हरिं भजति (B) पत्ये शेते
(C) रजकाय वस्त्रं ददाति (D) रजकस्य वस्त्रं ददाति

स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–52*

243. 'नमस्कुर्मो नृसिंहाय' इत्यत्र चतुर्थी-विभक्तिः केन सूत्रेण विधीयते? JNU M.Phil/Ph. D–2014, 2015

(A) नमःस्वस्तिस्वाहास्वधाऽलंवषड्योगाच्च
(B) क्रियार्थोपपदस्य च कर्मणि स्थानिनः
(C) तुमर्थाच्च भाववचनात्
(D) मन्यकर्मण्यनादरे विभाषाप्राणिषु

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–54*
(ii) अष्टाध्यायी (2.3.14) - ईश्वरचन्द्र, पेज–198

244. तुमर्थाच्च भाववचनात्– इस सूत्र का उदाहरण है?

(A) यागाय याति (B) भक्तिः ज्ञानाय कल्पते
(C) फलेभ्यः स्पृहयति (D) विप्राय गां प्रतिशृणोति

स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.3.15) - ईश्वरचन्द्र, पेज–198*

234. (D) 235. (D) 236. (D) 237. (A) 238. (D) 239. (C) 240. (B) 241. (B) 242. (A) 243. (B) 244. (A)

पञ्चमी विभक्ति

245. (i) अपादाने का विभक्तिः?

(ii) अपादान कारक में विभक्ति होती है–

RPSC ग्रेड-III–2013, UP PGT–2013
UK TET–2011, UGC 25 J–2005

(A) प्रथमा (B) पञ्चमी
(C) सप्तमी (D) तृतीया

स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.3.28) - ईश्वरचन्द्र, पेज–203*

246. 'आरात्' योग में विभक्ति होती है– UGC 25 J–1998

(A) तृतीया (B) द्वितीया
(C) चतुर्थी (D) पञ्चमी

स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.3.29) - ईश्वरचन्द्र, पेज–203*

247. 'पञ्चमी विभक्ते' इस सूत्र का उदाहरण है–

UGC 25 J–2000

(A) शतात् बद्धः
(B) चोरात् रक्षति
(C) जाड्याद् बद्धः
(D) माथुराः पाटलिपुत्रकेभ्यः आढ्यतराः

स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.3.42) - ईश्वरचन्द्र, पेज–208*

248. 'अन्तर्धौ येनादर्शनमिच्छति' अत्र का विभक्तिः?

UGC 25 J–2009

(A) द्वितीया (B) पञ्चमी
(C) सप्तमी (D) तृतीया

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.28) - ईश्वरचन्द्र, पेज–120*

249. 'भी'-धातुप्रयोगे 'भयहेतौ' का विभक्तिः–

RPSC ग्रेड-III–2013, UGC 25 J–2010

(A) तृतीया (B) षष्ठी
(C) पञ्चमी (D) सप्तमी

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.25) - ईश्वरचन्द्र, पेज–120*

250. 'आख्यातोपयोगे' इत्यनेन किं विधीयते?

UGC 25 D–2010

(A) अपादानसंज्ञा (B) सम्प्रदानसंज्ञा
(C) अधिकरणसंज्ञा (D) कर्मसंज्ञा

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.29) - ईश्वरचन्द्र, पेज–121*

251. 'ध्रुवमपाये.............' इत्यत्र किं कारकम्?

UGC 25 J–2012

(A) करणम् (B) अपादानम्
(C) सम्प्रदानम् (D) कर्म

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.24) - ईश्वरचन्द्र, पेज–119*

252. 'चौराद् बिभेति' इत्यत्र अपादानं केन सूत्रेण विधीयते?

UGC 25 J–2012

(A) पराजेरसोढः (B) भीत्रार्थानां भयहेतुः
(C) वारणार्थानामीप्सितः (D) विभाषा गुणेऽस्त्रियाम्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.25) - ईश्वरचन्द्र, पेज–120*

253. ''आख्यातोपयोगे'' इति सूत्रस्योदाहरणं किम्?

UGC 25 J–2012

(A) मातुर्निलीयते कृष्णः (B) नटस्य गाथां श्रृणोति
(C) उपाध्यायादधीते (D) हिमवतो गङ्गा प्रभवति

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.29) - ईश्वरचन्द्र, पेज–121*

254. (i) 'हिमवतः गङ्गा प्रभवति' 'हिमवतः' इत्यत्र अपादानसंज्ञा केन क्रियते?

(ii) 'हिमवतो गङ्गा प्रभवति' इत्यत्र किं सूत्रं प्रवर्तते?

UGC 25 S–2013, JNU MET–2015

(A) पराजेरसोढः (B) धारेरुत्तमर्णः
(C) जनिकर्तुः प्रकृतिः (D) भुवः प्रभवः

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.31) - ईश्वरचन्द्र, पेज–121*

255. 'आसने उपविश्य प्रेक्षते' वाक्य का दूसरा वाक्य रूप है– UP PGT–2000

(A) आसनं उपविश्य प्रेक्षते (B) आसनं प्रेक्षते
(C) आसनात् प्रेक्षते (D) आसने प्रेक्षते

स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–63*

245. (B) **246.** (D) **247.** (D) **248.** (B) **249.** (C) **250.** (A) **251.** (B) **252.** (B) **253.** (C) **254.** (D)
255. (C)

256. (i) 'भीत्रार्थानां भयहेतुः' में कारक है–
(ii) 'भीत्रार्थानां भयहेतुः' सूत्र से सम्बद्ध है–
UP PGT–2000, BHU MET–2009, 2012
UP TET–2013, UP TGT–2005, 2009

(A) करणकारक (B) अपादानकारक
(C) सम्प्रदानकारक (D) कर्मकारक

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.25) - ईश्वरचन्द्र, पेज–120*

257. 'मातुर्निलीयते कृष्णः' रेखाङ्कित पद में कौन-सी विभक्ति है– UP PGT–2003

(A) तृतीया (B) चतुर्थी
(C) पञ्चमी (D) सप्तमी

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.28) - ईश्वरचन्द्र, पेज–120*

258. कर्मप्रवचनीय अप, आङ् के योग में कौन-सी विभक्ति होती है– UP PGT–2009

(A) तृतीया (B) चतुर्थी
(C) पञ्चमी (D) षष्ठी

स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.3.10) - ईश्वरचन्द्र, पेज–197*

259. 'चौरात् बिभेति' में पञ्चमी विभक्ति किस सूत्र से है?
UP TGT–2001, UP TET–2014

(A) अपादाने पञ्चमी (B) भीत्रार्थानां भयहेतुः
(C) आख्यातोपयोगे (D) जनिकर्तुः प्रकृतिः

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.25) - ईश्वरचन्द्र, पेज–120*

260. 'ऋते' के योग में विभक्ति होती है? UP TGT–2004

(A) द्वितीया (B) तृतीया
(C) चतुर्थी (D) पञ्चमी

स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.3.29) - ईश्वरचन्द्र, पेज–203*

261. 'आरात्, ऋते व पूर्व' शब्दों के योग में कौन-सी विभक्ति होगी? H TET–2015

(A) तृतीया (B) चतुर्थी
(C) पञ्चमी (D) सप्तमी

स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.3.29) - ईश्वरचन्द्र, पेज–203*

262. 'वृक्षात् पत्रं पतति' में रेखाङ्कित पद में कारक है–
U.K. TET–2011, UK TET–2011

(A) कर्मकारक (B) करणकारक
(C) सम्प्रदानकारक (D) अपादानकारक

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.24) - ईश्वरचन्द्र, पेज–119*

263. 'वारणार्थानामीप्सितः' सूत्रानुसारेण 'यवानां गां वारयति क्षेत्रे' इत्यत्र शुद्धप्रयोगः स्यात्–
RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011

(A) यवान् (B) यवैः
(C) यवेभ्यः (D) यवेषु

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.27) - ईश्वरचन्द्र, पेज–120*

264. 'यवेभ्यः गां वारयति'–वाक्य किस कारकसूत्र का उदाहरण है– H TET–2015

(A) अन्तर्धौ येनादर्शनमिच्छति
(B) भीत्रार्थानां भयहेतुः
(C) जुगुप्साविरामप्रमादार्थानामुपसंख्यानम्
(D) वारणार्थानामीप्सितः

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.27) - ईश्वरचन्द्र, पेज–120*

265. 'ध्रुवमपायेऽपादानम्' उपर्युक्तसूत्रे 'अपाये' पदस्य अर्थः अस्ति– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011

(A) हानिः (B) आपत्तिः
(C) आघातः (D) विश्लेषः

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.24) - ईश्वरचन्द्र, पेज–119*

266. 'ऋते............न मुक्तिः' रिक्तस्थान में उचित पद होगा–
RPSC ग्रेड-III–2013

(A) ज्ञानम् (B) ज्ञानस्य
(C) ज्ञानात् (D) ज्ञानाय

स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.3.29) - ईश्वरचन्द्र, पेज–203*

267. बालिका .... बिभेति। रिक्तस्थान की पूर्ति कीजिए–
UP TET–2014

(A) चौरेण (B) चौरम्
(C) चौरस्य (D) चौरात्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.25) - ईश्वरचन्द्र, पेज–120*

256. (B) **257.** (C) **258.** (C) **259.** (B) **260.** (D) **261.** (C) **262.** (D) **263.** (C) **264.** (D) **265.** (D) **266.** (C) **267.** (D)

268. 'बालकः........बिभेति' रिक्तस्थान में होगा–
RPSC ग्रेड-III–2013, UP TET–2014
(A) व्याघ्रात् (B) व्याघ्रम्
(C) व्याघ्रस्य (D) व्याघ्रे
स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.25) - ईश्वरचन्द्र, पेज–120*

269. 'जनिकर्तुः प्रकृतिः' सूत्र किस विभक्ति का है?
RPSC ग्रेड-III–2013
(A) चतुर्थी विभक्ति (B) प्रथमा विभक्ति
(C) पञ्चमी विभक्ति (D) तृतीया विभक्ति
स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.30) - ईश्वरचन्द्र, पेज–121*

270. '.......... को न बिभेति' – इस वाक्य में रिक्तस्थान की पूर्ति करें– RPSC ग्रेड-III–2013
(A) असज्जनात् (B) असज्जनस्य
(C) असज्जने (D) असज्जनाय
स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.25) - ईश्वरचन्द्र, पेज–120*

271. 'ब्राह्मणः प्रजाः प्रजायन्ते' इत्यत्र अपादानं कस्मिन् पदे वर्तते– RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014
(A) ब्रह्मणः (B) प्रजाः
(C) प्रजायन्ते (D) अजायन्त
स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–62*

272. 'राजपुरुषः राजमार्गे धावतः अश्वात् अपतत्'–अत्र धावतः विशेषणम् अस्ति– MP वर्ग-1 (PGT)–2012
(A) राजपुरुषस्य (B) अश्वात्
(C) पुरुषस्य (D) राजमार्गस्य
स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–59*

273. 'विना' इत्यनेन योगे विभक्तयः भवन्ति–
MP वर्ग-1 (PGT)–2012
(A) द्वितीया तृतीया चतुर्थी
(B) द्वितीया चतुर्थी पञ्चमी
(C) द्वितीया तृतीया पञ्चमी
(D) तृतीया चतुर्थी पञ्चमी
स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.3.32) - ईश्वरचन्द्र, पेज–205*

274. पाणिनि के अनुसार 'अपादान' का क्या लक्षण है?
BHU MET–2008
(A) साधकतमम् (B) कर्मणा यमभिप्रैति
(C) अधिकरणम् (D) ध्रुवमपाये
स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.24) - ईश्वरचन्द्र, पेज–119*

275. 'ग्रामात् बहिः' इत्यत्र पञ्चम्यां को हेतुः?
BHU AET–2011
(A) 'अप-परि-बहिरञ्चवः पञ्चम्या' इति समासविधानम्
(B) 'आङ्मर्यादावचने'
(C) 'विभाषा गुणेऽस्त्रियामिति' सूत्रे विभाषेति योगविभागः
(D) 'कार्त्तिक्याः प्रभृति' इति भाष्यप्रयोगः।
स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–65*

276. 'जनिकर्तुः प्रकृतिः' इत्यस्य उदाहरणम् अस्ति–
BHU AET–2011
(A) हिमवतो गङ्गा प्रभवति
(B) मातुर्निलीयते कृष्णः
(C) गोमयाद् वृश्चिको जायते
(D) अध्ययनात् पराजयते
स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.30) - ईश्वरचन्द्र, पेज–121*

277. 'अग्निमान् धूमात्' इसमें पञ्चमी विधायक सूत्र है–
UGC 73 J–2006, 2010
(A) विभाषा गुणेऽस्त्रियाम् (B) हेतौ
(C) ध्रुवमपायेऽपादानम् (D) पञ्चमी विभक्ते
स्रोत–*(i) अष्टाध्यायी (2.3.25) - ईश्वरचन्द्र, पेज–202*
(ii) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–69

278. 'भुवः प्रभवः' जिस विभक्ति का विधान करता है, वह है– BHU MET–2014
(A) तृतीया (B) पञ्चमी
(C) चतुर्थी (D) षष्ठी
स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.31) - ईश्वरचन्द्र, पेज–121*

268. (A) 269. (C) 270. (A) 271. (A) 272. (B) 273. (C) 274. (D) 275. (A) 276. (C) 277. (A) 278. (B)

279. (i) अपादान विधायक सूत्र है–

(iii) अपादानसंज्ञा विदधाति? UGC 73 D–2012

(A) अकथितं च (B) दिवस्तदर्थश्च

(C) रुच्यर्थानां प्रीयमाणः (D) आख्यातोपयोगे

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.29) - ईश्वरचन्द्र, पेज–121*

280. (i) 'जनिकर्तुः प्रकृतिः' सूत्रानुसारेण वाक्यरचना अस्ति–

(ii) ''जनिकर्तुः प्रकृतिः'' का प्रवृत्तिनिमित्तक उदाहरण है–

(iii) 'जनिकर्तुः प्रकृतिः' का उदाहरण है–

UGC 73 J–2013, D–2014, BHU MET–2015

RPSC ग्रेड-I (PGT)–2014

(A) हिमवतो प्रभवति (B) ब्रह्मणः प्रजाः प्रजायन्ते

(C) गवां गोषु वा प्रसूतः (D) राज्ञां मतः

स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–62*

281. 'ग्रामात् आगच्छति' इत्यत्र ग्राम' पदे किं कारकम्?

DSSSB PGT–2014

(A) सम्प्रदानम् (B) करणम्

(C) अपादानम् (D) अधिकरणम्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.24) - ईश्वरचन्द्र, पेज–119*

282. 'चोराद् भयम् = चोरभयम्' इत्यत्र पञ्चमीविभक्तिः केन सूत्रेण? UGC 25 D–2014

(A) पराजेरसोढः (B) भीत्रार्थानां भयहेतुः

(C) रुच्यर्थानां प्रीयमाणः (D) हेतौ

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.25) - ईश्वरचन्द्र, पेज–120*

283. 'आ जन्मनः आ मरणात्' इति वाक्यांशे 'जन्मनः' पदे विभक्तिरस्ति– UP GDC–2014

(A) तृतीया (B) पञ्चमी

(C) षष्ठी (D) चतुर्थी

स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.3.10) - ईश्वरचन्द्र, पेज–197*

284. .... गङ्गा प्रभवति। AWES TGT–2013

(A) हिमालयस्य (B) हिमालयः

(C) हिमालयम् (D) हिमालयात्

स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–63*

285. नियमपूर्वक विद्या स्वीकार करने पर वक्ता में किस विभक्ति का प्रयोग होता है?

UP TGT–2013, UGC 73 D–2015

(A) तृतीया (B) चतुर्थी

(C) पञ्चमी (D) षष्ठी

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.29) - ईश्वरचन्द्र, पेज–121*

286. निम्नलिखित वाक्यों में शुद्ध है? UP PGT (H)–2000

(A) मातरं निलीयते कृष्णः (B) मातरि निलीयते कृष्णः

(C) मातुर्निलीयते कृष्णः (D) मात्रा निलीयते कृष्णः

स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–61*

287. 'अश्वात् रामः अपतत्' इस वाक्य में आये 'अश्वात्' पद में कौन-सी विभक्ति है? UP TET–2013

(A) चतुर्थी (B) पञ्चमी

(C) तृतीया (D) षष्ठी

स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.3.28) - ईश्वरचन्द्र, पेज–203*

288. 'आकुमाराद् यशः पाणिनेः' इत्यत्र पञ्चमी-विधायकं सूत्रं (शास्त्रं) प्रवर्तते– BHU AET–2011

(A) पञ्चमी विभक्तेः (B) विभाषा गुणेऽस्त्रियाम्

(C) अकर्तृर्यृणे पञ्चमी (D) पञ्चम्यपाङ्परिभिः

स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.3.10) - ईश्वरचन्द्र, पेज–197*

289. 'बिभेति' इति पदेन कस्य सम्बन्धः?

BHU Sh.ET–2011

(A) रामाय (B) रामात्

(C) रामेण (D) रामेषु

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.25) - ईश्वरचन्द्र, पेज–120*

290. 'पराजेरसोढः' का उदाहरण होगा– BHU MET–2015

(A) हिमालयाद् गङ्गा प्रभवति

(B) सिंहाद् बिभेति

(C) अध्ययनात् पराजयते

(D) गुरोरधीते विद्याम्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.24) - ईश्वरचन्द्र, पेज–120*

279. (D) 280. (B) 281. (C) 282. (B) 283. (B) 284. (D) 285. (C) 286. (C) 287. (B) 288. (D) 289. (B) 290. (C)

291. अपादानकारक मूलतः प्रयुक्त होता है?

UP TGT–2003

(A) संयोग अर्थ में (B) वियोग अर्थ में

(C) पराजित करने के अर्थ में (D) दया करने के अर्थ में

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.24) - ईश्वरचन्द्र, पेज–119*

षष्ठी विभक्ति

292. षष्ठी सम्बन्धित कारक है– UGC 25 J–2002

(A) सम्बन्ध मात्र की विवक्षा (B) अपादान

(C) अधिकरण (D) करण

स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.3.50) - ईश्वरचन्द्र, पेज–210*

293. (i) कारक की श्रेणी में नहीं आता है–

(ii) कारकं नास्ति– UGC 25 D–2002, J–2004

RPSC ग्रेड-III–2013, MP वर्ग-1 (PGT)–2012

(A) कर्ता (B) करण

(C) सम्बन्ध (D) अधिकरण

स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–10*

294. 'कर्मादीनामपि सम्बन्धमात्रविवक्षायां का विभक्तिर्भवति?

UGC 25 D–2004, HE–2015

(A) प्रथमा (B) पञ्चमी

(C) चतुर्थी (D) षष्ठी

स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–72*

295. 'सर्पिषः ज्ञानम्' अत्र षष्ठी केन सूत्रेण?

UGC 25 D–2008

(A) ज्ञोऽविदर्थस्य करणे (B) षष्ठी शेषे

(C) अधीगर्थदयेशां कर्मणि (D) कर्तृकर्मणोः कृति

स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–76*

296. 'कर्तृकर्मणोः कृति' इति सूत्रेण किं विधीयते?

RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014, UGC 25 D–2010

UP GDC–2012

(A) चतुर्थी (B) पञ्चमी

(C) सप्तमी (D) षष्ठी

स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.3.65) - ईश्वरचन्द्र, पेज–215*

297. जब कोई क्रिया कृदन्त रूप से प्रकट की जाती है, तो उस क्रिया के कर्ता अथवा कर्म में कौन-सी विभक्ति का प्रयोग होता है? UP TGT–2013

(A) द्वितीया (B) तृतीया

(C) षष्ठी (D) सप्तमी

स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–82*

298. 'कर्तृकर्मणोः कृति' सूत्र है– UP PGT–2003

(A) सम्प्रदान का (B) करण का

(C) सम्बन्ध का (D) कर्म का

स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.3.65) - ईश्वरचन्द्र, पेज–215*

299. 'कृष्णास्य कृतिः' में 'कृष्ण' पद में षष्ठी विभक्ति किस सूत्र से हुई? UP PGT–2002

(A) षष्ठी शेषे (B) षष्ठी हेतुप्रयोगे

(C) कर्तृकर्मणोः कृति (D) उभयप्राप्तौ कर्मणि

स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–82*

300. 'मातुः स्मरति' रेखाङ्कित पद में कौन-सी विभक्ति है?

UP PGT–2002

(A) पञ्चमी विभक्ति (B) चतुर्थी विभक्ति

(C) तृतीया विभक्ति (D) षष्ठी विभक्ति

स्रोत–*(i) अष्टाध्यायी (2.3.50) - ईश्वरचन्द्र, पेज–210*

(ii) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–73

301. 'मातुः स्मरणम्' इत्यस्मिन् प्रयोगे षष्ठी-विभक्तेः कारक सूत्रमस्ति– UP GDC–2012

(A) षष्ठी हेतुप्रयोगे (B) षष्ठ्यतसर्थप्रत्ययेन

(C) अधीगर्थदयेशां कर्मणि (D) कर्तृकर्मणोः कृति

स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–76*

302. 'कृते' के साथ विभक्ति प्रयोग होती है–

UP TGT–1999

(A) तृतीया (B) चतुर्थी

(C) पञ्चमी (D) षष्ठी

स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–82*

291. (B) 292. (A) 293. (C) 294. (D) 295. (A) 296. (D) 297. (C) 298. (C) 299. (C) 300. (D) 301. (C) 302. (D)

303. 'कर्तृकर्मणोः कृति' सूत्रस्य उदाहरणम् अस्ति–
RPSC ग्रेड-II (TGT)–2010

(A) ग्रामं गतः (B) वृक्षात् पतितः
(C) विप्राय दानम् (D) कालस्य गतिः

स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.3.65) - ईश्वरचन्द्र, पेज–215*

304. 'रुदतः पितुः विदेशं गतः' अत्र प्रवृत्तं सूत्रमस्ति–
RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011

(A) यस्य च भावेन भावलक्षणम्
(B) षष्ठी चानादरे
(C) षष्ठी शेषे
(D) षष्ठ्यतसर्थप्रत्ययेन

स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–97*

305. 'ब्रह्मणः जिज्ञासा' इसमें 'ब्रह्मणः' में षष्ठी है–
UGC 73 J–2006

(A) कर्तरि षष्ठी (B) षष्ठी शेषे
(C) अनादरे षष्ठी (D) कर्मणि षष्ठी

स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–72*

306. निम्नलिखित में से किस उदाहरण में षष्ठी विभक्ति है?
UP GDC–2008

(A) अक्ष्णा काणः (B) विप्राय गां ददाति
(C) मातुः स्मरति (D) हरये रोचते भक्तिः

स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–73*

307. 'कर्तृकर्मणोः कृति' सूत्र का उदाहरण कौन है?
BHU MET–2011, 2012

(A) रामेण हतः (B) मया सेव्यो हरिः
(C) वृक्षस्य पत्राणि (D) घटस्य कर्ता

स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.3.65) - ईश्वरचन्द्र, पेज–215*

308. 'दुग्धस्य पानम्' में षष्ठी विभक्ति किस अर्थ में है–
UGC 73 D–1994

(A) कर्मणि (B) कर्त्तरि
(C) सम्बन्धे (D) पाने योगे

स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.3.65) - ईश्वरचन्द्र, पेज–215*

309. जो बात अन्य विभक्तियों से न कहने की इच्छा हो, उसमें किस विभक्ति का प्रयोग होता है?
UP TGT–2013

(A) द्वितीया (B) तृतीया
(C) पञ्चमी (D) षष्ठी

स्रोत–*(i) अष्टाध्यायी (2.3.50) - ईश्वरचन्द्र, पेज–210*
(ii) संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–221

310. 'अर्जुनस्य वचनं द्वयम्' वाक्य में 'अर्जुनस्य' में है?
UP PGT (H)–2002

(A) करण (B) सम्प्रदान
(C) सम्बन्ध (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.3.50) - ईश्वरचन्द्र, पेज–210*

311. 'अल्पस्य हेतोर्बहु हातुमिच्छन्' इत्यत्र षष्ठीविधायकं शास्त्रमस्ति– **BHU AET–2011**

(A) षष्ठ्यतसर्थप्रत्ययेन
(B) षष्ठी हेतुप्रयोगे
(C) निमित्तपर्यायप्रयोगे सर्वासां प्रायदर्शनम् (वा०)
(D) षष्ठी शेषे

स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.3.26) - ईश्वरचन्द्र, पेज–202*

312. शुद्धं वाक्यमस्ति– **UP GIC–2015**

(A) रजकाय वस्त्रं ददाति (B) रजकं वस्त्रं ददाति
(C) रजके वस्त्रं ददाति (D) रजकस्य वस्त्रं ददाति

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.32) - ईश्वरचन्द्र, पेज–122*

313. 'इदं मम शयितम्'–यहाँ षष्ठी विधायक सूत्र है–
UGC 25 D–1998

(A) क्तस्य च वर्तमाने (B) कृत्यानां कर्त्तरि वा
(C) अधिकरणवाचिनश्च (D) कर्तृकर्मणोः कृति

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–85*
(ii) अष्टाध्यायी (2.3.68) - ईश्वरचन्द्र, पेज–217

303. (D) 304. (B) 305. (A) 306. (C) 307. (D) 308. (A) 309. (D) 310. (C) 311. (B) 312. (D) 313. (C)

314. 'छात्राणां रामः श्रेष्ठः' इसका वैकल्पिक है– UGC 25 D–1998

(A) छात्रेभ्यः रामः श्रेष्ठः (B) छात्रेषु रामः श्रेष्ठः
(C) छात्रैः रामः श्रेष्ठः (D) छात्रान् रामः श्रेष्ठः

स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.3.41) - ईश्वरचन्द्र, पेज–208*

315. कारकप्रयोगदृष्ट्या कस्य वाक्यस्य साधुत्वम्– BHU Sh.ET–2013

(A) ऋते ज्ञानस्य न मुक्तिः (B) रामस्य सह श्यामो गतः
(C) मातुः स्मरति (D) अश्वेन पतति

स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–73*

सप्तमी विभक्ति

316. पाणिनि के अनुसार 'अधिकरण' का क्या लक्षण है– BHU MET–2010

(A) साधकतमम् (B) ध्रुवमपाये
(C) आधारः (D) कर्तुरीप्सिततमम्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.45) - ईश्वरचन्द्र, पेज–126*

317. 'अधिशीङ्स्थासां कर्म' सूत्र द्वारा कस्य 'कर्मसंज्ञा' भवति– RPSC ग्रेड-III (TGT)–2014

(A) धातोः (B) आधारस्य
(C) ईप्सिततमस्य (D) उपसर्गस्य

स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–29*

318. 'अभिव्यापक आधार'–इसका उदाहरण है– UGC 73 J–2011, UGC 25 J–1998, 1999

(A) कटे आस्ते (B) केशेषु गृहीतः
(C) तिलेषु तैलम् (D) गुरौ भक्तिः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–215*

319. 'तिलेषु तैलम्' में आधार है– RPSC ग्रेड-III–2013

(A) औपश्लेषिक (B) वैषयिक
(C) अभिव्यापक (D) कोई नहीं

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–215*

320. 'आधारः' कतिविधः? UGC 25 D–2010

(A) त्रिविधः (B) चतुर्विधः
(C) पञ्चविधः (D) षड्विधः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–215*

321. (i) 'वैषयिक आधार' का उदाहरण है–
(ii) वैषयिकाधिकरणस्य उदाहरणम्– UGC 25 J–2007 UGC 73 J–2009, UP GDC–2008

(A) तिलेषु तैलम् (B) मोक्षे इच्छास्ति
(C) गङ्गायां गावः (D) वने व्याघ्रः

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.45) - ईश्वरचन्द्र, पेज–126*

322. 'नृणां नृषु वा ब्राह्मणः श्रेष्ठः' में सूत्र प्रयुक्त हुआ है– UGC 25 J–2004

(A) यस्य च भावेन भावलक्षणम् (B) यतश्च निर्धारणम्
(C) सहयुक्तेऽप्रधाने (D) षष्ठी चानादरे

स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.3.41) - ईश्वरचन्द्र, पेज–208*

323. (i) 'यतश्च निर्धारणम्' अनेन सूत्रेण विधीयते–
(ii) 'यतश्च निर्धारणम्' किन विभक्तियों का विधायक है? UGC 25 J–2007, UP GIC–2009

(A) द्वितीया तृतीया का (B) तृतीया चतुर्थी का
(C) प्रथमा द्वितीया का (D) षष्ठी सप्तमी का

स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.3.41) - ईश्वरचन्द्र, पेज–208*

324. 'जीवेषु मानवाः श्रेष्ठाः' वाक्य में रेखाङ्कित पद में विभक्ति विधायक सूत्र है? UP TET–2016

(A) आधारोऽधिकरणम् (B) सप्तम्यधिकरणे च
(C) यतश्च निर्धारणम् (D) साध्वसाधुप्रयोगे च

स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.3.41) - ईश्वरचन्द्र, पेज–208*

325. 'चर्मणि द्वीपिनं हन्ति' इत्युदाहरणं कस्य भवति? UGC 25 J–2012

(A) निमित्तात् कर्मयोगे (वा०) (B) साध्वसाधुप्रयोगे च (वा०)
(C) षष्ठी चानादरे (D) यतश्च निर्धारणम्

स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–94*

314. (B) 315. (C) 316. (C) 317. (B) 318. (C) 319. (C) 320. (A) 321. (B) 322. (B) 323. (D) 324. (C) 325. (A)

326. 'सर्वस्मिन् शरीरे आत्मा अस्ति' इस वाक्य में 'अधिकरण' है– UP PGT–2004

(A) आत्मा (B) शरीर
(C) अस्ति (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–93*

327. 'चर्मणि द्वीपिनं हन्ति' यहां 'चर्मणि' में सप्तमी का प्रयोग हुआ है? UP TGT–2005

(A) सप्तम्यधिकरणे च' से (B) निमित्तात्कर्मयोगे से
(C) यस्य च भावेन भावलक्षणम् (D) यतश्च निर्धारणम् से

स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–94*

328. 'यस्य च भावेन भावलक्षणम्' सूत्र है– UP PGT–2003, UP TGT–2005

(A) कर्मकारक (B) करणकारक
(C) अपादानकारक (D) अधिकरणकारक

स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.3.37) - ईश्वरचन्द्र, पेज–206*

329. (i) 'कटे आस्ते' यह कैसा आधार है–
(ii) 'कटे आस्ते' इत्युदाहरणे 'कटे' इत्यत्र आधारः अस्ति– UP PGT–2005, UP GDC–2012

(A) वैषयिक (B) अभिव्यापक
(C) औपश्लेषिक (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–93*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.45) - ईश्वरचन्द्र, पेज–126

330. 'व्याघ्रः चर्मणि द्वीपिनं हन्ति' वाक्य में 'चर्मणि' है? UP TGT–2004

(A) तृतीया विभक्ति में (B) द्वितीया विभक्ति में
(C) सप्तमी विभक्ति में (D) पञ्चमी विभक्ति में

स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–94*

331. 'रुदति पुत्रे माता जगाम' के रेखाङ्कित शब्द में कौन-सी विभक्ति है– UP TGT–2004

(A) चतुर्थी (B) षष्ठी
(C) सप्तमी (D) पञ्चमी

स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.3.38) - ईश्वरचन्द्र, पेज–207*

332. 'सूर्ये अस्तं गते गोपाः गृहम् अगच्छन्' में विभक्ति है– UP TGT–2009

(A) चतुर्थी (B) पञ्चमी
(C) सप्तमी (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–220*

333. 'कवीनां कविषु वा कालिदासः श्रेष्ठः' में प्रयुक्त विभक्ति है? UP TGT–2009

(A) चतुर्थी (B) सप्तमी
(C) पञ्चमी (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–216*

334. '........ कालिदासः श्रेष्ठः।' रिक्तस्थान में होगा– RPSC ग्रेड-III–2013, AWES TGT–2010, 2013

(A) कविभ्यः (B) कविषु
(C) कवयः (D) कविभिः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–216*

335. भावलक्षणविषये का विभक्तिः? UGC 25 D–2014

(A) सप्तमी (B) षष्ठी
(C) पञ्चमी (D) चतुर्थी

स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–95*

336. 'साधुः कृष्णो मात्रे असाधुर्मातुलाय' रेखाङ्कितयोः उचितपदप्रयोगः स्यात्– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011

(A) मातरि, मातुले (B) मात्रा, मातुलेन
(C) मातुः, मातुलात् (D) मातरम्, मातुलम्

स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–94*

337. अधिकरण कारक में विभक्ति होती है– RPSC ग्रेड-III–2013

(A) सप्तमी (B) तृतीया
(C) षष्ठी (D) द्वितीया

स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.3.36) - ईश्वरचन्द्र, पेज–206*

338. ''यस्य च .... भावलक्षणम्''– इत्यत्र रिक्तस्थानं पूरयतु– RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014

(A) कर्मणा (B) करणेन
(C) भावेन (D) उपकरणेन

स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.3.37) - ईश्वरचन्द्र, पेज–206*

326. (B) **327.** (B) **328.** (D) **329.** (C) **330.** (C) **331.** (C) **332.** (C) **333.** (B) **334.** (B) **335.** (A)
336. (A) **337.** (A) **338.** (C)

339. 'सीता स्थाल्यां तण्डुलोदनं पचति' इत्यत्र केन सूत्रेण सिद्ध्यति? RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014

(A) सप्तम्यधिकरणे च (B) यतश्च निर्धारणम्
(C) भुवः प्रभवः (D) षष्ठी शेषे

स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–93*

340. 'स्थाल्यां पचति' अत्र स्थाली अस्ति– MP वर्ग-1 (PGT)–2012

(A) अपादानम् (B) कर्म
(C) करणम् (D) अधिकरणम्

स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–93*

341. कर्मद्वारा औपश्लेषिकाधारस्योदाहरणमस्ति– BHU AET–2011

(A) कटे आस्ते (B) तिलेषु तैलम्
(C) स्थाल्यां पचति (D) मोक्षे इच्छा अस्ति

स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–93*

342. 'दिशि' इत्यस्मिन् पदे का विभक्तिः? किम् वचनं च? REET–2016

(A) षष्ठी - एकवचनम् (B) द्वितीया - एकवचनम्
(C) सप्तमी - द्विवचनम् (D) सप्तमी - एकवचनम्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–84*

343. 'इको यणचि' सूत्रे 'अचि' इत्यत्र कीदृशे आधारे सप्तमी– BHU AET–2011

(A) वैषयिकाधारे (B) अभिव्यापकाधारे
(C) गौणाभिव्यापके (D) औपश्लेषिकाधारे

स्रोत–*वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (खण्ड–1) - गोपालदत्त पाण्डेय, पेज–75*

344. 'गवां गोषु वा कृष्णा बहुक्षीरा' इत्यत्र षष्ठी, सप्तमी विधायकं सूत्रमस्ति– BHU AET–2011

(A) षष्ठी चानादरे (B) दूरान्तिकार्थैः षष्ठ्यन्यतरस्याम्
(C) यतश्च निर्धारणम् (D) षष्ठ्यतसर्थप्रत्ययेन

स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–98*

345. 'व्रजम् अवरुणद्धि गाम्' इत्यत्र अकथितं कारकम्? UK SLET–2015

(A) करणकारकम् (B) अधिकरणकारकम्
(C) अपादानकारकम् (D) सम्प्रदानकारकम्

स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–21*

346. निर्धारणविषये कीदृशी विभक्तिव्यवस्था? UGC 25 D–2014

(A) तृतीया-पञ्चम्यौ (B) चतुर्थी-पञ्चम्यौ
(C) पञ्चमी-षष्ठ्यौ (D) षष्ठी-सप्तम्यौ

स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.3.41) - ईश्वरचन्द्र, पेज–208*

347. निम्नलिखित में शुद्ध शब्द क्या नहीं है? UP TGT–2013

(A) मञ्चे (B) अधिमञ्चम्
(C) मञ्चे अधि (D) मञ्चस्य उपरि

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.45, 1.4.46) - ईश्वरचन्द्र, पेज–126*

348. निमित्त शब्द का अर्थ रखने वाले शब्दों का प्रयोग होने पर सर्वनाम शब्द में किस विभक्ति का प्रयोग होता है? UP TGT–2013

(A) द्वितीया (B) तृतीया
(C) द्वितीया से सप्तमी तक सभी (D) चतुर्थी

स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–74*

349. आधार कितने प्रकार का होता है, जिसमें सप्तमी विभक्ति का प्रयोग होता है? UP TGT–2013

(A) 2 (B) 3
(C) 4 (D) 5

स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–93*

350. क्रिया का आधार सूचित करने वाला कारक है? DL (H)–2013

(A) अपादानकारक (B) सम्प्रदानकारक
(C) अधिकरणकारक (D) सम्बन्धकारक

स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–92*

339. (A) **340.** (D) **341.** (C) **342.** (D) **343.** (D) **344.** (C) **345.** (B) **346.** (D) **347.** (C) **348.** (C) **349.** (B) **350.** (C)

351. √विश्वस्-योगे **AWES TGT–2010**

(A) तृतीया (B) पञ्चमी
(C) षष्ठी (D) सप्तमी

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण एवं लेखन-रामगोपाल शर्मा, पेज–299*

352. 'सर्वस्मिन्नात्माऽस्ति' इस उदाहरण में कौन-सा आधार है– **H TET–2014**

(A) आधारोधारः (B) अभिव्यापकः
(C) वैषयिकः (D) औपश्लेषिकः

स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–93*

353. 'मोक्षे इच्छाऽस्ति' में मोक्ष की अधिकरणसंज्ञा करने वाला सूत्र है– **H TET–2014**

(A) आधारोऽधिकरणम् (B) सप्तम्यधिकरणे च
(C) यस्य च भावेन भावलक्षणम् (D) षष्ठी चानादरे

स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–93*

354. 'यस्य च भावेन भावलक्षणम्' इति सूत्रे सप्तमी कस्मात् सूत्रात् अनुवर्तते? **JNU M. Phil/Ph. D–2014**

(A) सप्तम्यधिकरणे च
(B) सप्तमी शौण्डैः
(C) सप्तमी पञ्चम्यौ कारकमध्ये
(D) यस्मादधिकं यस्य चेश्वरवचनं तत्र सप्तमी

स्रोत–*वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (खण्ड–2)-गोविन्दाचार्य, पेज–347*

355. उप कर्मप्रवचनीययोगे सप्तमी कस्मिन्नर्थेद्योत्येऽस्ति? **UGC 25 D–2015**

(A) हीने (B) अधिके
(C) वीप्सायाम् (D) स्वस्वामिभावे

स्रोत–*(i) वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (खण्ड–2)-गोविन्दाचार्य, पेज–361*
(ii) अष्टाध्यायी (2.3.9) - ईश्वरचन्द्र, पेज–196

356. अधिककर्मप्रवचनीययोगे सप्तमी कस्मिन् अर्थे द्योत्येऽस्ति? **UGC 25 D–2015**

(A) हीने (B) अधिके
(C) वीप्सायाम् (D) स्वस्वामिभावे

स्रोत–*वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (खण्ड–2)-गोविन्दाचार्य, पेज–360*

357. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत?

(अ) ग्रामादायाति **(i) आख्यातोपयोगे**
(ब) पुष्पेभ्यः स्पृहयति **(ii) ध्रुवमपायेऽपादानम्**
(स) पुत्रेण सहागतः **(iii) स्पृहेरीप्सितः**
(द) उपाध्यायादधीते **(iv) सहयुक्तेऽप्रधाने**

UGC 25 J–2008

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)
(B)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)
(C)	(ii)	(iii)	(i)	(iv)
(D)	(iii)	(iv)	(i)	(ii)

वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (खण्ड–2)-गोविन्दाचार्य, पेज–278, 258, 246, 285

358. अधोनिर्दिष्टानां समीचीनां तालिकां विचिनुत –

(अ) उपधा **(1) सम्प्रदानम्**
(ब) रुच्यर्थानां धातूनां प्रयोगे **(2) अलोऽन्त्यात्पूर्व**
(स) अक्ष्णा काणः **(3) कर्मकारकम्**
(द) अधिशीङ्योगे **(4) येनाङ्गविकारः**

UGC 25 J–2011

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	1	3	4	2
(B)	3	1	2	3
(C)	2	4	1	3
(D)	2	1	4	3

स्रोत–*वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (खण्ड–2)-गोविन्दाचार्य, पेज–255, 247, 214*

359. अभिहितः– **AWES TGT–2013**

(A) प्रताडितः (B) उक्तः
(C) दृष्टः (D) अधिक्षिप्तः

स्रोत–*भैमी व्याख्या (खण्ड–3) - भीमसेन शास्त्री, पेज–305*

360. अधोऽङ्कितानां युग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत–

(अ) दूरान्तिकार्थैः **(1) डारौरसः**
(ब) वयसि **(2) षष्ठ्यन्यतरस्याम्**
(स) लुटः प्रथमस्य **(3) लिटि**
(द) कुञ्चानुप्रयुज्यते **(4) प्रथमे** **UGC 25 D–2012**

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	3	4	1	2
(B)	2	4	1	3
(C)	2	3	4	1
(D)	4	3	2	1

स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.3.34, 4.1.20, 2.4.85, 3.1.40) - ईश्वरचन्द्र*

351. (D) 352. (B) 353. (A) 354. (A) 355. (B) 356. (D) 357. (B) 358. (D) 359. (B) 360. (B)

361. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिये गये कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये– UP PGT–2009

सूची-I	सूची-II
(अ) पादेन खञ्जः	(i) द्वितीया
(ब) गुरवे नमः	(ii) पञ्चमी
(स) चौरात् बिभेति	(iii) चतुर्थी
(द) बलिं याचते वसुधाम्	(iv) तृतीया

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	(i)	(ii)	(iv)	(iii)
(B)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)
(C)	(iii)	(iv)	(ii)	(i)
(D)	(ii)	(iv)	(iii)	(i)

स्रोत–अष्टाध्यायी (2.3.20, 2.3.16, 1.4.25, 1.4.51) - ईश्वरचन्द्र

362. उचितम् अर्थं चिनुत– AWES TGT–2013

अन्तिकम्–

(A) समीपम् (B) सत्काराय

(C) प्रसन्नं कर्तुम् (D) सेवायाम्

स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–224

363. अधस्तनयुग्मानां तालिकां चिनुत UGC 25 D–2014

(अ) रात्राह्नाहाः पुंसि	(1) उच्चैः, नीचैः, कृष्णः श्रीः, ज्ञानम्
(ब) अक्ष्णोर्दर्शनात्	(2) अह्ना क्रोशेन वा अनुवाकोऽधीतः
(स) नियतोपस्थितिकः प्रातिपदिकार्थः	(3) अहोरात्रः
(द) अपवर्गे तृतीया	(4) गवाक्षः

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	4	3	2	1
(B)	3	4	1	2
(C)	2	1	4	3
(D)	1	4	3	2

स्रोत–अष्टाध्यायी (2.4.29, 5.4.76, 2.3.46, 2.3.6) - ईश्वरचन्द्र

364. निम्नलिखित में कौन-सा वाक्य शुद्ध है– UP TGT–1999

(a) कविषु कालिदासः श्रेष्ठः (b) कवीनां कालिदासः श्रेष्ठः

(c) विकल्प A, B दोनों (d) कविभिः कालिदासः श्रेष्ठः

(A) केवल A (B) केवल B

(C) केवल D (D) केवल C

स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–216

365. 'अपूर्वः कोऽपि कोशोऽयं विद्यते तव भारति'– यहाँ पर 'भारति' पद है– H TET–2014

(A) सम्बोधनम् (B) अपादानम्

(C) अधिकरणम् (D) सम्प्रदानम्

स्रोत–अष्टाध्यायी (2.3.47) - ईश्वरचन्द्र, पेज–210

366. 'उपाध्यायादधीते' अत्र पञ्चमी विभक्तिः? CCSUM-Ph.D–2016

(A) जनिकर्तुः (B) आख्यातोपयोगे

(C) भुवः प्रभवः (D) पराजेरसोढः

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–62

367. 'केशेषु चमरीं हन्ति' अत्र सप्तमी भवति– CCSUM-Ph.D–2016

(A) सप्तम्यधिकरणे च (B) आधारोऽधिकरणम्

(C) निमित्तात्कर्मयोगे (D) षष्ठी चानादरे

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–94

361. (B) **362.** (A) **363.** (B) **364.** (D) **365.** (A) **366.** (B) **367.** (C)

5. प्रत्यय-प्रकरण

1. प्रत्यय का ज्ञान कराने के लिए सर्वप्रथम– UP TGT–1999

(A) प्रत्यय की परिभाषा बतायेंगे
(B) प्रत्यययुक्त शब्दों में से कुछ शब्द बतायेंगे
(C) कुछ प्रत्यययुक्त शब्दों के अर्थ को बतायेंगे
(D) प्रत्यययुक्त शब्दों के साथ कुछ वाक्यों को प्रस्तुत करेंगे

2. कृदन्त की संज्ञा होती है– UP TGT–2010

(A) प्रत्यय (B) धातु
(C) संयोग (D) प्रातिपदिक

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.2.46) - ईश्वरचन्द्र, पेज–70*

3. तृतीया विभक्ति के बहुवचन में प्रत्यय होता है– BHU MET–2010

(A) जस् (B) भिस्
(C) औ (D) शस्

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–67*

4. 'शुक्रियम्' में प्रयुक्त प्रत्यय है– BHU MET–2014

(A) खन् (B) घञ्
(C) घन् (D) इयङ्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (4.2.25) - ईश्वरचन्द्र, पेज–472*

5. कति सुबादिप्रत्ययाः सन्ति– BHU Sh. ET–2013

(A) पञ्चदश (15) (B) एकविंशतिः (21)
(C) चतुर्विंशतिः (24) (D) अष्टादश (18)

स्रोत–*(i) लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–1017*
(ii) अष्टाध्यायी (4.1.2) - ईश्वरचन्द्र, पेज–421

6. 'आनन्दमयः' इस पद में मयट् प्रत्यय है– UGC 73 J–2014

(A) विरूपार्थे (B) प्राचुर्यार्थे
(C) विशेषणार्थे (D) स्वार्थे

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-5)-भीमसेन शास्त्री, पेज–391*

7. असङ्गतं प्रकृति–प्रत्यययुग्मम् अस्ति– UK SLET–2015

(A) हृ + ण्यत् (B) वृञ् + ण्यत्
(C) लूञ् + ण्यत् (D) शास् + क्यप्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (3.1.109) - ईश्वरचन्द्र, पेज–294*

8. सर्वनामस्थानसंज्ञकाः प्रत्ययाः कति– HE–2015

(A) सप्त (B) चत्वारः
(C) नव (D) पञ्च

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.42) - ईश्वरचन्द्र, पेज–25*

9. तिङ्प्रत्ययाः कियन्तः– JNU MET–2014

(A) नव (9) (B) षोडश (16)
(C) अष्टादश (18) (D) विंशतिः (20)

स्रोत–*अष्टाध्यायी (3.4.78) - ईश्वरचन्द्र, पेज–409*

10. सर्वनामस्थानसंज्ञकः प्रत्ययः– UGC 25 J–2006

(A) अण् (B) जस्
(C) अच् (D) सुप्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.42) - ईश्वरचन्द्र, पेज–25*

11. 'सनाद्यन्ता धातवः' इत्यत्र सनादयः प्रत्ययाः कति– BHU AET–2011

(A) दश (B) द्वादश
(C) नव (D) अष्टौ

स्रोत–*अष्टाध्यायी (3.1.32) - ईश्वरचन्द्र, पेज–264*

12. 'पाकः' में प्रत्यय है– UGC 25 D–1996

(A) क (B) ण्वुल्
(C) क्त (D) घञ्

स्रोत–*(i) अष्टाध्यायी (3.3.18) - ईश्वरचन्द्र, पेज–357*
(ii) लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–840

1. (D) 2. (D) 3. (B) 4. (C) 5. (B) 6. (B) 7. (B) 8. (D) 9. (C) 10. (B) 11. (B) 12. (D)

13. कृ + क्तवतु = भवति **UGC 25 D–2011**

(A) कुर्वाणः (B) कर्तवान्

(C) कृतवान् (D) कृत्वा

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–807, 808*

14. धातोः विधीयमानः तव्यत्-प्रत्ययः कस्मिन् अर्थे भवति? **UGC 25 J–2013**

(A) कर्तरि (B) भावे

(C) भावे कर्मणि च (D) कर्मणि

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–774*

15. 'स्नात्यनेन स्नानीयं चूर्णम्।' इत्यत्र 'स्ना' धातोः विधीयमानः अनीयर्-प्रत्ययः कस्मिन् अर्थे वर्तते? **UGC-25 D–2013**

(A) कर्तरि (B) कर्मणि

(C) भावे (D) करणे

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-3)-भीमसेन शास्त्री, पेज–14*

16. 'पच्' धातु में क्त प्रत्यय लगाकर रूप बनेगा। **UP PGT–2000**

(A) पचितः (B) पक्तः

(C) पक्वः (D) पचतः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–812*

17. (i) 'कुम्भकारः' पदे कृत्प्रत्ययोऽस्ति? UP PGT–2002

(ii) 'कुम्भकारः' में प्रत्यय है– BHU MET–2014, DL–2015

(A) शतृ (B) शानच्

(C) अण् (D) घञ्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–788*

18. 'पठनीय' शब्द में कौन सा प्रत्यय है– UP PGT–2003

(A) तव्यत् (B) तव्य

(C) अनीयर् (D) यत्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–775*

19. 'देय' में कौन-सा प्रत्यय है– **UP PGT–2003**

(A) शतृ (B) शानच्

(C) तव्य (D) यत्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–777*

20. (i) 'अर्य' शब्द 'ऋ' में किस प्रत्यय के संयोग से बनता है–

(i) 'ऋ' में किस प्रत्यय के संयोग से 'अर्य' शब्द बनता है– **UP PGT–2004, 2010**

(A) शतृ (B) यत्

(C) अच् (D) क्त

स्रोत–*अष्टाध्यायी (3.1.103) - ईश्वरचन्द्र, पेज–293*

21. 'नन्दिग्रहिपचादिभ्यो ल्युणिन्यचः' सूत्र किन प्रत्ययों का विधान करता है– **UP PGT–2004**

(A) ल्यु (B) णिनि

(C) अच् (D) उपर्युक्त तीनों

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (3.1.134) - गोविन्दाचार्य, पेज–785*

22. 'कुर्वाणः' में प्रत्यय है– **UP PGT–2004**

(A) शतृ (B) शानच्

(C) आन् (D) अण्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-3)-भीमसेन शास्त्री, पेज–136*

23. 'एधनीयम्' में कौन-सा प्रत्यय है– **UP PGT–2005, 2013**

(A) तव्यत् (B) अनीयर्

(C) यत् (D) ण्यत्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (3.1.96) - गोविन्दाचार्य, पेज–774*

24. श्यन्, शः तथा श्नुः प्राप्त होते हैं, क्रमशः– **UP PGT–2005**

(A) दिवादि, तुदादि एवं स्वादि में

(B) तुदादि, जुहोत्यादि एवं दिवादि में

(C) अदादि, चुरादि एवं स्वादि में

(C) स्वादि, दिवादि एवं तुदादि में

स्रोत–*अष्टाध्यायी (3.1.69, 77, 73)-ईश्वरचन्द्र, पेज–282, 83, 84*

25. 'क्षिप्तः' में कौन-सा प्रत्यय है– **UP PGT–2009**

(A) क्तवतु (B) शतृ

(C) तुमुन् (D) क्त

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–814*

13. (C)	14. (C)	15. (D)	16. (C)	17. (C)	18. (C)	19. (D)	20. (B)	21. (D)	22. (B)
23. (B)	24. (A)	25. (D)							

26. 'दर्शनम्' में कौन सा प्रत्यय है– UP PGT–2009

(A) ल्युट् (B) अनीयर्
(C) घञ् (D) ण्वुल्

स्रोत–*(i) अष्टाध्यायी (3.3.115) - ईश्वरचन्द्र, पेज–378*
(ii) लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-3)-भीमसेन शास्त्री, पेज–238

27. 'पठितवत्' में प्रत्यय है– UP PGT–2000

(A) क्तवतु (B) वतुप्
(C) क्त (D) मतुप्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–808*

28. √दा + यत् का शुद्ध रूप होगा– UP PGT–2000, 2013

(A) दायः (B) दीयम
(C) देयम् (D) दायम्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–778*

29. 'जनमेजयः' इत्यत्र प्रत्ययो वर्तते– UP GDC–2012

(A) खश् (B) खच्
(C) क (D) ट

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–793*

30. 'कार्यम्' इति पदे प्रत्ययो वर्तते UP GDC–2012

(A) यत् (B) ण्यत्
(C) क्यप् (D) ल्यप्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–780*

31. 'धार्यम्' शब्द में प्रयुक्त प्रत्यय है? H-TET–2015

(A) ण्यत् (B) क्यप्
(C) यत् (D) ष्यञ्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–80*

32. कार्यम् में कौन-सा प्रत्यय नहीं हो सकता है? BHU MET–2012

(A) यत् (B) ण्यत्
(C) क्यप् (D) क्विप्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–780*

33. इनमें से कौन-सा 'कृत्य' प्रत्यय नहीं है– UP GIC–2009

(A) तव्य (B) तव्यत्
(C) क्यप् (D) क्यच्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (3.1.95) - गोविन्दाचार्य, पेज–773*

34. कौन-सा रूप 'शतृ' प्रत्यय की दृष्टि से अशुद्ध है– UP GIC–2009

(A) कुर्वन् (B) कुर्वती
(C) कुर्वन्ति (D) कुर्वत्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (3.2.124) - ईश्वरचन्द्र, पेज–336*

35. कौन-सा प्रत्यय कर्मवाच्य एवं भाववाच्य में नहीं लगता? UP GIC–2009

(A) खल् (B) कृत्य
(C) क्त (D) क्तवतु

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–807*

36. 'रागः' इत्यस्मिन् पदे प्रत्ययोऽस्ति– UP GIC–2009, 2015

(A) घञ् (B) क
(C) अच् (D) अप्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (6.4.27)-गोविन्दाचार्य, पेज–840-841*

37. 'यशस्करः' में प्रत्यय है– UP GIC–2009

(A) क (B) ट
(C) क्त (D) खश्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (3.2.20) - ईश्वरचन्द्र, पेज–310*

38. 'क्त और क्तवतु' किस नाम से प्रसिद्ध है? UP TGT–2004

(A) निष्ठा (B) सत्
(C) घ (D) पद

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (3.2.102) - गोविन्दाचार्य, पेज–807*

39. (i) 'विचिन्त्य' इत्यत्र धातोः कः प्रत्ययः?
(ii) 'विचिन्त्य' में कौन-सा प्रत्यय है–
UP TGT–2009, RPSC ग्रेड I (PGT)–2014

(A) ल्यप् (B) क्विप्
(C) कनिन् (D) यत्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.37) - ईश्वरचन्द्र, पेज–845*

26. (A)	27. (A)	28. (C)	29. (A)	30. (B)	31. (A)	32. (D)	33. (D)	34. (C)	35. (D)
36. (A)	37. (B)	38. (A)	39. (A)						

40. 'वनेचरः' में कौन-सा प्रत्यय लगा है– UP TGT–2010

(A) घञ् (B) ष्यञ्
(C) ट (D) मनिन्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (3.2.16) - गोविन्दाचार्य, पेज–790*

41. 'ट' प्रत्ययान्तः शब्दः वर्तते– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011

(A) वनेचरः (B) शिरोरुहः
(C) सरोरुहः (D) मूलविभुजः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (3.2.16) - गोविन्दाचार्य, पेज–790*

42. 'इच्छन्' में कौन-सा प्रत्यय है? UP TGT–2010

(A) खच् (B) तृच्
(C) यत् (D) शतृ

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-3)-भीमसेन शास्त्री, पेज–132*

43. 'गतिः' में कौन-सा प्रत्यय है? BHU MET–2010

(A) क्तिन् (B) णिनि
(C) तिप् (D) ङीप्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (3.3.94) - गोविन्दाचार्य, पेज–846*

44. 'पठनम्' में पठ् धातु से प्रत्यय है– BHU MET–2010

(A) इमनिच् (B) ल्यप्
(C) ल्युट् (D) वु

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (3.3.115) - गोविन्दाचार्य, पेज–853*

45. 'शानच्' प्रत्ययान्तः शब्दः कः? BHU Sh.ET–2011

(A) महिमानः (B) यवमानः
(C) वर्धमानः (D) प्रथिमानः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-3)-भीमसेन शास्त्री, पेज–138*

46. ताच्छील्ये णिनिप्रत्ययस्योदाहरणं नास्ति– BHU AET–2011

(A) उष्णभोजी (B) प्रियवादी
(C) उष्णभोज आतुरः (D) मितभाषी

स्रोत–*अष्टाध्यायी (3.2.78) - ईश्वरचन्द्र, पेज–324*

47. 'क्त' प्रत्ययान्तस्योदाहरणम् अस्ति– BHU AET–2011

(A) स्नातं मया (B) विश्वं कृतवान्
(C) फलं खादितवान् (D) ग्रामं गतवान्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (3.2.102) - गोविन्दाचार्य, पेज–807*

48. 'पत्' धातोः 'ष्ट्रन्' प्रत्यये रूपं जायते– BHU AET–2011

(A) पत्रम् (B) पात्रम्
(C) पत्त्रम् (D) पक्त्रम्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (7.2.9) - ईश्वरचन्द्र, पेज–869*

49. 'पच्' धातोः कर्मणि निष्ठातकारे रूपमस्ति– BHU AET–2011, CVVET–2015

(A) पक्ववान् (B) पक्तः
(C) पक्नः (D) पक्वः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-3)-भीमसेन शास्त्री, पेज–95*

50. 'तुल्यास्यप्रयत्नम्' इत्यत्र 'आस्य' पदे कः प्रत्ययः? BHU AET–2012

(A) यत् (B) अण्
(C) अत्र (D) ण्यत्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (3.1.124) - ईश्वरचन्द्र, पेज–298*

51. 'प्रत्याहार' इत्यत्र कः प्रत्ययः– BHU AET–2012

(A) अण् (B) घञ्
(C) घ (D) खल्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (3.3.18) - ईश्वरचन्द्र, पेज–357*

52. 'गत्वा' पद में प्रत्यय है– BHU MET–2008

(A) क्त्वा (B) ल्यप्
(C) तुमुन् (D) क्त

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–207*

53. 'स्तुत्यः' पद में कौन-सा प्रत्यय है? H-TET–2015

(A) ल्यप् (B) ण्यत्
(C) यत् (D) क्यप्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–779*

40. (C) **41.** (A) **42.** (D) **43.** (A) **44.** (C) **45.** (C) **46.** (C) **47.** (A) **48.** (C) **49.** (D) **50.** (D) **51.** (B) **52.** (A) **53.** (D)

54. 'यत्' प्रत्ययः भवति– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011
(A) अजन्ताद् धातोः
(B) पवर्गान्ताद् अदुपधात् धातोः
(C) आकारान्ताद् धातोः
(D) उपर्युक्त-सर्वप्रकारेभ्यः धातुभ्यः
स्रोत–*अष्टाध्यायी (3.1.97-98) - ईश्वरचन्द्र, पेज–291*

55. 'शिष्यः' इत्यस्मिन् पदे प्रत्यय अस्ति– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011
(A) यत् (B) ण्यत्
(C) क्यप् (D) अच्
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–779*

56. 'मार्ग्यः' इत्यस्मिन् प्रकृतिप्रत्ययौ स्तः– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011
(A) मार्ग + यत् (B) मृज् + ण्यत्
(C) मार्ग + क्यप् (D) मृज् + क्यप्
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–781*

57. 'पावकः' इत्यत्र प्रकृति-प्रत्ययौ विद्यते– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011
(A) पौ + अकः (B) पा + ठक्
(C) पुञ् + ण्वुल् (D) पौ + ढक्
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (3.1.133) - गोविन्दाचार्य, पेज–784*

58. 'प्रियंवदः' इत्यत्र प्रत्ययः अस्ति– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011, UGC 73-D–2014, H-TET–2015
(A) ड (B) ट
(C) खश् (D) खच्
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (3.2.38) - गोविन्दाचार्य, पेज–794*

59. 'आहारः' इत्यस्मिन् पदे प्रकृति-प्रत्ययौ स्तः– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011
(A) आ + हृ + अण् (B) आ + हृ + घञ्
(C) आ + हृ + ड (D) आ + हृ + ष्ट्रन्
स्रोत–*अष्टाध्यायी (3.3.18) - ईश्वरचन्द्र, पेज–357*

60. 'उत्कण्ठितः' पदे प्रत्ययः अस्ति– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011
(A) क्त (B) तल्
(C) त्व (D) इतच्
स्रोत–*अष्टाध्यायी (3.2.102) - ईश्वरचन्द्र, पेज–329*

61. 'शतृ' प्रत्ययान्तः रूपमस्ति– RPSC ग्रेड-I (TGT)–2010
(A) ताड्यमानः (B) ताडयति
(C) ताडयित्वा (D) ताडयत्
स्रोत–*अष्टाध्यायी (3.2.124) - ईश्वरचन्द्र, पेज–336*

62. 'नयनम्' रूप है– RPSC ग्रेड-III–2013
(A) नी + क्तिन् प्रत्यय का (B) नै + ल्युट् प्रत्यय का
(C) नी + ल्युट् प्रत्यय का (D) नी + ण्यत् प्रत्यय का
स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–210-211*

63. 'क्तिन्' प्रत्यय का उदाहरण है– RPSC ग्रेड-III–2013
(A) पानम् (B) स्थानीयम्
(C) भक्तिः (D) नेता
स्रोत–*अष्टाध्यायी (3.3.94) - ईश्वरचन्द्र, पेज–372*

64. 'एधितव्यम्' पद में प्रत्यय है– RPSC ग्रेड-III–2013
(A) ल्यप् (B) क्यप्
(C) क्तवतु (D) तव्यत्
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (3.1.96) - गोविन्दाचार्य, पेज–774*

65. 'इत्यः' पद में प्रत्यय है– RPSC ग्रेड-III–2013
(A) ल्यप् (B) क्यप्
(C) यत् (D) ण्यत्
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (3.1.109) - गोविन्दाचार्य, पेज–779*

66. 'क्तवतु' प्रत्ययान्त पद है– RPSC ग्रेड-III–2013
(A) कृतः (B) कृतवान्
(C) कृतिः (D) कार्यः
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (1.1.26) - गोविन्दाचार्य, पेज–808*

54. (D) 55. (C) 56. (B) 57. (C) 58. (D) 59. (B) 60. (A) 61. (D) 62. (C) 63. (C) 64. (D) 65. (B) 66. (B)

67. 'छिन्नः' पद में प्रत्यय है– RPSC ग्रेड-III–2013

(A) ण्यत् (B) तृच्
(C) खश् (D) क्त

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–808*

68. कृ + ण्वुल् = ... रिक्तस्थान में होगा।

RPSC ग्रेड-III–2013

(A) कर्ता (B) कारकः
(C) कृतिः (D) करणम्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (3.1.133) - गोविन्दाचार्य, पेज–783*

69. 'सेवमानम्' में कौन-सा प्रत्यय है?

RPSC ग्रेड-III–2013

(A) शतृ (B) शानच्
(C) मतुप् (D) तव्यत्

लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-3)-भीमसेन शास्त्री, पेज–136-138

70. (i) 'गच्छन्' पद में प्रत्यय है–

(ii) 'गच्छन्' इत्यत्र प्रत्ययं निर्दिशतु?

RPSC ग्रेड-III–2013, RPSC ग्रेड-I (PGT)–2014

(A) तृच् (B) शानच्
(C) शतृ (D) क्तवतु

(i) लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-3)-भीमसेन शास्त्री, पेज–133
(ii) अष्टाध्यायी (3.2.124) - ईश्वरचन्द्र, पेज–336

71. 'निर्मितवान्' इत्यत्र कः प्रत्ययः? REET–2016

(A) शतृ (B) शानच्
(C) क्तवतु (D) ण्वुल्

लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-3)-भीमसेन शास्त्री, पेज–106

72. 'चि' धातु से 'तव्यत्' प्रत्यय करने पर रूप बनेगा–

RPSC ग्रेड-III–2013

(A) चयनीयम् (B) चेतव्यः
(C) चेतनीयम् (D) चेत्यम्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (3.1.96) - गोविन्दाचार्य, पेज–775*

73. 'ण्यत्' प्रत्ययान्त शब्द है– RPSC ग्रेड-III–2013

(A) पेयः (B) कार्यः
(C) शप्यः (D) लभ्यः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (3.1.124) - गोविन्दाचार्य, पेज–780*

74. 'कृतिः' शब्देस्मिन् कः प्रत्यय–

UP PGT (H)–2010, RPSC ग्रेड-III–2013

(A) ल्युट् (B) कर्ता
(C) क्तिन् (D) तृच्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (3.2.94) - गोविन्दाचार्य, पेज–846*

75. 'क्षम् + क्तिन्' योगे शब्दः निर्मीयते–

RPSC ग्रेड I (PGT)–2014

(A) क्षन्तिः (B) शान्तिः
(C) क्षान्तिः (D) क्षाम्तिः

लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-3), पेज–215

76. 'ल्युट्' प्रत्यय का उदाहरण है– RPSC ग्रेड-III–2013

(A) पठनीयम् (B) कर्ता
(C) दानम् (D) गतिः

स्रोत–*(i) अष्टाध्यायी (3.3.115) - ईश्वरचन्द्र, पेज–378*
(ii) लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-3)-भीमसेन शास्त्री, पेज–238

77. 'तव्यत्तव्यानीयरः' सूत्र का सम्बन्ध है–

RPSC ग्रेड-III–2013

(A) यत् (B) क्यप्
(C) तव्यत् (D) क्तवतु

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (3.1.96) - गोविन्दाचार्य, पेज–774*

78. 'क्तवतु' प्रत्ययान्त शब्द है– RPSC ग्रेड-III–2013

(A) कान्तिमन्तः (B) पठितवन्तः
(C) बुद्धिमन्तः (D) श्रीमन्तः

स्रोत–*अष्टाध्यायी (3.2.102) - ईश्वरचन्द्र, पेज–329*

79. 'श्रुत्वा' पद में कौन-सा प्रत्यय है?

CTET–2012, RPSC ग्रेड-III–2013

(A) तुमुन् (B) क्त्वा
(C) ल्यप् (D) क्तिन्

लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-3)-भीमसेन शास्त्री, पेज–284

67. (D)	68. (B)	69. (B)	70. (C)	71. (C)	72. (B)	73. (B)	74. (C)	75. (C)	76. (C)
77. (C)	78. (B)	79. (B)							

80. 'क्त्वा' प्रत्ययान्तशब्दः कः? C-TET–2015

(A) चलामि (B) श्रुत्वा
(C) स्वयम् (D) कर्तुम्

लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-3) - भीमसेन शास्त्री, पेज–284

81. 'तोत्तुम्' में प्रत्यय है– RPSC ग्रेड-III–2013

(A) तुम् (B) तुमुन्
(C) तुमन् (D) क्तिन्

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–223*

82. 'दत्तवान्' में प्रत्यय है– RPSC ग्रेड-III–2013

(A) शानच् (B) कानच्
(C) क्तवतु (D) क्त

स्रोत–*अष्टाध्यायी (3.2.102) - ईश्वरचन्द्र, पेज–329*

83. 'गम् + तव्यत्' का कृदन्त प्रयोग है–

RPSC ग्रेड-III–2013

(A) गमितव्यम् (B) गन्तव्यम्
(C) गातव्यम् (D) गतव्यम्

स्रोत–*(i) अष्टाध्यायी (3.1.96) - ईश्वरचन्द्र, पेज–291*
(ii) लघुसिद्धान्तकौमुदी (3.1.96) - गोविन्दाचार्य, पेज–774

84. 'सृज् + अनीयर्' का कृदन्त प्रयोग होगा–

RPSC ग्रेड-III–2013

(A) सर्जनीयम् (B) सृजनीयम्
(C) सर्जणीयम् (D) सृजणीयम्

स्रोत–*(i) अष्टाध्यायी (3.1.96) - ईश्वरचन्द्र, पेज–291*
(ii) लघुसिद्धान्तकौमुदी (3.1.96) - गोविन्दाचार्य, पेज–774

85. 'प्रच्छ् + क्त्वा' इन प्रकृति प्रत्ययों से प्रयोग बनेगा–

RPSC ग्रेड-III–2013

(A) प्रच्छित्वा (B) प्रष्ट्वा
(C) पृष्ट्वा (D) पृच्छवा

स्रोत–*(i) रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–208*
(ii) लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-3)-भीमसेन शास्त्री, पेज–278

86. 'भुक्तवान्' पद में प्रत्यय है– RPSC ग्रेड-III–2013

(A) क्त (B) क्तवतु
(C) तमप् (D) तुमुन्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (3.2.102) - ईश्वरचन्द्र, पेज–329*

87. 'प्र' उपसर्गपूर्वकस्य 'हृ' धातोः घञ् प्रत्ययस्य योगे अर्थः अस्ति– RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014

(A) भोजनम् (B) भ्रमणम्
(C) नाशः (D) प्रहारः

स्रोत–*अष्टाध्यायी (3.3.18) - ईश्वरचन्द्र, पेज–357*

88. 'अनु' उपसर्गपूर्वकस्य 'कृ' धातोः निष्पन्नस्य 'अनुकरोति' शब्दस्य अर्थः अस्ति–

RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014

(A) पूर्वं करोति (B) न करोति
(C) अग्रे करोति (D) अनुवर्तनं करोति

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (1.3.79) - गोविन्दाचार्य, पेज–744*

89. 'सम्' उपसर्गपूर्वकस्य 'आप्' धातोः 'क्तिन्' प्रत्ययस्य योगे अर्थः– RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014

(A) सम्यक् अस्ति (B) समानाप्तिः
(C) समाप्तिः पूर्तिः वा (D) सम्प्राप्तिः

स्रोत–*अष्टाध्यायी (3.3.94) - ईश्वरचन्द्र, पेज–372*

90. (i) छिद् धातोः 'क्त' प्रत्ययान्तं रूपं किं भवति–
(ii) 'छिद् + क्त' प्रत्यये सति पदं स्यात्–
RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014, RPSC ग्रेड-I (PGT)–2014

(A) छिन्नः (B) छिद्नः
(C) छिद्क्तः (D) छित्तः

(i) लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-3)-भीमसेन शास्त्री, पेज–104
(ii) लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दचार्य, पेज–809

91. 'कृतवान्' इति पदे कृ धातोः प्रत्ययः स्यात्–

RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014

(A) वतुप् (B) क्तवतु
(C) क्त (D) शानच्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–808*

80. (B) 81. (B) 82. (C) 83. (B) 84. (A) 85. (C) 86. (B) 87. (D) 88. (D) 89. (D) 90. (A) 91. (B)

92. अधोलिखितेषु कस्मिन् पदे 'क्त' प्रत्ययस्य प्रयोगः न कृतः– RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014

(A) भुग्नः (B) शुष्कः

(C) पक्वः (D) अभूत्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (3.2.102) - ईश्वरचन्द्र, पेज–329*

93. 'लभ्यम्' इति पदे प्रकृति-प्रत्ययौ स्तः– RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014

(A) लभ् + यत् (B) लभ् + ण्यत्

(C) लभ् + क्यप् (D) लभ् + ल्यप्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (3.1.98) - गोविन्दाचार्य, पेज–778*

94. 'शतृ' प्रत्ययान्ते शब्दे प्रत्ययस्य अवशिष्यते– RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014

(A) अन् (B) अत्

(C) आन (D) मान

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–203*

95. 'दृश्' धातोः 'तुमुन्' प्रत्यययोगेन शब्दः निष्पद्यते– RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014

(A) दृष्टम् (B) दर्शयितुम्

(C) दशितुम् (D) द्रष्टुम्

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–223*

96. 'पा' धातु में तुमुन् प्रत्यय जोड़ने से क्या रूप बनेगा? H-TET–2015

(A) पिलितुम् (B) पित्वतुम्

(C) पातुम् (D) पायितुम्

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–223*

97. 'दा' धातु में 'क्त्वा' प्रत्यय का योग करने पर होता है– UP TET–2014

(A) दात्वा (B) दयित्वा

(C) दत्त्वा (D) दायित्वा

लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-3)-भीमसेन शास्त्री, पेज–276

98. 'शतृ' प्रत्यययुक्त पद है– UP TET–2014

(A) कथितः (B) कर्तुम्

(C) पठन् (D) पठित्वा

लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-3) - भीमसेन शास्त्री, पेज–134

99. 'आकर्णयन्' शब्द में कौन सा प्रत्यय प्रयुक्त है? UP TET–2016

(A) क्त (B) क्तवतु

(C) शतृ (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-3), पेज–132*

100. 'दृष्ट्वा' पदस्य प्रकृति–प्रत्ययौ स्तः– MP वर्ग-2 (TGT)–2011, UK TET–2011

(A) विश् + क्त्वा (B) दृश् + क्त्वा

(C) क्रीड् + तुमुन् (D) पठ् + ल्यप्

स्रोत–*(i) रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–208*

(ii) लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-3) पेज–276

101. 'गतवान्' पदे प्रत्ययः अस्ति– UK TET–2011

(A) क्त (B) क्तवतु

(C) शानच् (D) तव्यत्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-3), पेज–102*

102. 'अवगम्य' में प्रत्यय है– MP वर्ग-2 (TGT)–2014, UK TET–2011

(A) क्त (B) क्त्वा

(C) ल्यप् (D) तल्

स्रोत–*(i) लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-3), पेज–265*

(ii) अष्टाध्यायी (7.1.37) - ईश्वरचन्द्र, पेज–845

103. 'चरन्' अस्मिन् पदे प्रत्ययोऽस्ति– MP वर्ग-2 (TGT)–2011, UK TET–2011

(A) तुमुन् (B) तृच्

(C) शतृ (D) ण्मुल्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-3), पेज–133*

92. (D)	93. (A)	94. (B)	95. (D)	96. (C)	97. (C)	98. (C)	99. (C)	100. (B)	101. (B)
102. (C)	103. (C)								

104. 'आसीनः' अस्मिन् पदे प्रत्ययोऽस्ति–
MP वर्ग-2 (TGT)–2011, UK TET–2011
(A) नुम् (B) अण्
(C) क्त (D) शानच्
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-3), पेज–136*

105. 'दर्शनीयः' इति पदे प्रकृति-प्रत्ययौ स्तः–
MP TET–2011
(A) दर्श + अनीयर् (B) दृश् + अनीयर्
(C) दर्शन + ईय (D) दर्श + नीयर्
स्रोत–*(i) लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-3), पेज–9-10*
(ii) अष्टाध्यायी (3.1.96) - ईश्वरचन्द्र, पेज–291

106. 'अनीयर्' प्रत्ययोऽस्ति– MP वर्ग-1 (PGT)–2012
(A) कृत्प्रत्ययः (B) तद्धितप्रत्ययः
(C) स्त्रीप्रत्ययः (D) अप्रत्ययः
स्रोत–*(i) अष्टाध्यायी (3.1.96) - ईश्वरचन्द्र, पेज–291*
(ii) लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-3), पेज–07

107. 'सिक्तवान्' पदे प्रकृतिः प्रत्ययश्च स्तः–
MP वर्ग-1 (PGT)–2012
(A) सिच् + मतुप् (B) सिच् + वतुप्
(C) सिक् + तवतु (D) सिच् + क्तवतु
स्रोत–*(i) लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-3), पेज–113*
(ii) लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–815

108. 'चुर्' धातोः ''तुमुन्'' प्रत्यये सति रूपं भवति–
MP वर्ग-1 (PGT)–2012
(A) चुरयितुम् (B) चोरितुम्
(C) चुरितुम् (D) चोरयितुम्
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-3), पेज–187*

109. 'प्रणम्य' में प्रत्यय है– UP TET–2014
(A) त्यप् (B) ल्यप्
(C) यत् (D) क्त
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-3), पेज–277*

110. 'विहाय' पद में उपसर्ग प्रकृति एवं प्रत्यय है–
UP TET–2014
(A) वि + हृ + शतृ (B) वि + हा + ल्यप्
(C) वि + हा + क्तिन् (D) वि + हा + क्त्वा
स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–209*

111. 'जेतुं शक्यम्' इति विग्रहे रूपं भवति–
UGC 73 D–2006
(A) जेयम् (B) जय्यम्
(C) जयनीयम् (D) जेतव्यम्
स्रोत–*अष्टाध्यायी (6.1.78) - ईश्वरचन्द्र, पेज–685*

112. 'क्षेतुं शक्यं' यह अर्थ बोधक पद है–
UGC 73 D–2011
(A) क्षय्यम् (B) क्षीयम्
(C) क्षेयम् (D) क्षतम्
स्रोत–*अष्टाध्यायी (6.1.78) - ईश्वरचन्द्र, पेज–685*

113. 'इगुपधज्ञाप्रीकिरः कः' इस सूत्र का उदाहरण है–
UGC 73 J–2013
(A) कारकः (B) कृशः
(C) गृहम् (D) गायकः
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (3.1.135) - गोविन्दाचार्य, पेज–787*

114. निम्नलिखित शब्दों में कृदन्त है– UP GDC–2008
(A) कुम्भकारः (B) वैनतेयः
(C) पौरवः (D) वैदिकः
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (3.2.1) - गोविन्दाचार्य, पेज–788*

115. 'हसनम्' में किस प्रत्यय का योग है? UP GDC–2008
(A) शतृ (B) ल्युट्
(C) शानच् (D) ण्वुल्
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-3), पेज–15*

116. 'शयनम्' पदे प्रकृतिप्रत्ययौ स्तः–
RPSC ग्रेड I (PGT)–2014
(A) शै + अच् (B) शि + णिनि
(C) शी + इन् (D) शी + ल्युट्
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-3), पेज–240*

104. (D) 105. (B) 106. (A) 107. (D) 108. (D) 109. (B) 110. (B) 111. (B) 112. (A) 113. (B) 114. (A) 115. (B) 116. (D)

117. 'हितम्' में किस प्रत्यय का योग है– UP GDC–2008

(A) क्त (B) ण्वुल्
(C) ल्युट् (D) क

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–813*

118. 'नैषध्य' में प्रत्यय है– BHU MET–2014

(A) ल्यप् (B) ण्यत्
(C) ण्य (D) क्यप्

स्रोत–*(i) लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-5), पेज–53*
(ii) अष्टाध्यायी (4.1.170) - ईश्वरचन्द्र, पेज–466

119. 'ग्रामं गतः' में 'क्त' प्रत्यय किस अर्थ में है? UGC 73 D–1996

(A) सम्बन्ध अर्थ में (B) कर्म अर्थ में
(C) कर्त्ता अर्थ में (D) क्रिया अर्थ में

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–62*

120. किं रूपं तद्धितस्य नास्ति? BHU Sh.ET–2013

(A) मामकीनः (B) प्रियः
(C) मासिकम् (D) पारलौकिकम्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (3.1.135) - गोविन्दाचार्य, पेज–787*

121. एषु कः कृत्प्रत्ययान्तः शब्दः– BHU Sh.ET–2013

(A) वैनतेयः (B) दाशरथिः
(C) मदीयः (D) दुष्करः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (3.3.126) - गोविन्दाचार्य, पेज–856*

122. कारक में.................प्रत्यय है– UGC 73 J–2012

(A) कः (B) ण्वुल्
(C) अण् (D) वरम्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (3.1.133) - गोविन्दाचार्य, पेज–782*

123. 'दत्तः' में कौन-सा प्रत्यय है? UP TET–2013

(A) क्त (B) क्त्वा
(C) अनीयर् (D) यत्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (7.4.46) - गोविन्दाचार्य, पेज–814*

124. 'भोक्तुम्' में प्रयुक्त प्रकृति एवं प्रत्यय है– UP TET–2013

(A) भुज् + तुमुन् (B) भुक् + तुमुन्
(C) भोज् + तुमुन् (D) भुज् + क्त्वा

स्रोत–*(i) लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-3), पेज–189*
(ii) लघुसिद्धान्तकौमुदी (3.3.167) - गोविन्दाचार्य, पेज–838

125. 'पठितः' में धातु-प्रत्यय है– UP TET–2013

(A) पठ् + क्त्वा (B) पठ् + क्त
(C) पठ् + घञ् (D) पठ् + ल्युट्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–815*

126. 'भूतः' इति पदे प्रत्ययः अस्ति– C-TET–2012

(A) क्त (B) ल्यप्
(C) क्तवतु (D) क्त्वा

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–815*

127. 'निर्गत्य' इति पदे प्रत्ययः अस्ति– C-TET–2012

(A) ल्यप् (B) क्त
(C) तुमुन् (D) क्त्वा

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-3), पेज–266*

128. 'मन्यमानः' इति पदे प्रत्ययः अस्ति? C-TET–2012

(A) शतृ (B) अनीयर्
(C) शानच् (D) क्तवतु

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-3), पेज–137*

129. 'कर्तव्यम्' इति पदे कः प्रत्ययः? C-TET–2012

(A) तव्यत् (B) क्तवतु
(C) तव्य (D) अनीयर्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-3), पेज–4*

130. अत्र 'क्त' प्रत्ययः कस्मिन् पदे प्रयुक्तः? C-TET–2012

(A) स्वीकृतः (B) अधीत्य
(C) महत्त्वम् (D) पठनीयम्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–815*

117. (A) 118. (C) 119. (C) 120. (B) 121. (D) 122. (B) 123. (A) 124. (A) 125. (B) 126. (A) 127. (A) 128. (C) 129. (A) 130. (A)

131. 'उपविष्टः' इति– C-TET–2012

(A) कर्मणि कृदन्तः (B) कर्तरि कृदन्तः
(C) वर्तमान-कृदन्तः (D) विध्यर्थक-कृदन्तः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-3), पेज–111*

132. कस्मिन् पदे 'अनीयर्'-प्रत्ययः प्रयुक्तः? C-TET–2013

(A) इत्यादीनि (B) उल्लेखनीयानि
(C) अन्यानि (D) वैज्ञानिकी

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (3.1.96) - गोविन्दाचार्य, पेज–774*

133. 'ल्यप्' प्रत्ययः कस्मिन् पदे प्रयुक्तः? C-TET–2013

(A) बाल्यात् (B) विज्ञाय
(C) स्यात् (D) इयम्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (7.1.37) - ईश्वरचन्द्र, पेज–845*

134. 'विहस्य' इति पदे प्रत्ययः अस्ति– C-TET–2011

(A) ल्यप् (B) य
(C) क्त्वा (D) क्यप्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (7.1.37) - ईश्वरचन्द्र, पेज–845*

135. 'विस्मृत्य' पदे प्रत्ययः अस्ति? C-TET–2011

(A) तल् (B) क्यप्
(C) ल्यप् (D) क्त्वा

स्रोत–*अष्टाध्यायी (7.1.37) - ईश्वरचन्द्र, पेज–845*

136. 'क्तवतु' प्रत्ययः कस्मिन् पदे अस्ति? C-TET–2011

(A) अभवत् (B) अन्विष्टवान्
(C) गतः (D) श्रुतः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–815*

137. 'परिवृता' पदे प्रत्ययः अस्ति– C-TET–2011

(A) तल् (B) क्त्वा
(C) क्त (D) क्तवतु

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–815*

138. 'स्थितः' पदे कः प्रत्ययः? C-TET–2011

(A) तसिल् (B) यत्
(C) क्त (D) क्तवतु

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–815*

139. 'अभिषिक्तः' इति पदमस्ति? UK TET–2011

(A) तिङन्तपदम् (B) तद्धितपदम्
(C) कृदन्तपदम् (D) अव्ययपदम्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–815*

140. 'उषित्वा' इति रूपं कस्य धातोः कस्य प्रत्ययस्य च संयोगेन भवति? UK TET–2011

(A) वस् + क्त्वा (B) विश् + क्त्वा
(C) ऊर्ज + त्व (D) वप् + त्व

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-3), पेज–282*

141. 'धृत्वा' इत्यत्र कः प्रत्ययः प्रयुक्तः? REET–2016

(A) क्त (B) शानच्
(C) क्तवतु (D) क्त्वा

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-3), पेज–839*

142. 'जि' धातोः 'तुमुन्' प्रत्ययस्य संयोगेन किं रूपं भवति? UK TET–2011

(A) जयितुम् (B) जन्तुम्
(C) जीतुम् (D) जेतुम्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–839*

143. 'पातव्यम्'– AWES TGT–2011

(A) पा + तव्यत् (B) पा + अनीयर्
(C) पा + इन् (D) पिब् + तव्यत्

स्रोत–*(i) अष्टाध्यायी (3.1.96) - ईश्वरचन्द्र, पेज–291*
(ii) लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-3), पेज–29

144. त्यक्त्वा– AWES TGT–2011

(A) त्यक् + तव्यत् (B) त्यज् + अनीयर्
(C) त्यज् + क्त्वा (D) त्यज् + इन्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-3), पेज–275*

145. 'दृश् + अनीयर् AWES TGT–2011

(A) दृशनीयम् (B) दृष्टनीयम्
(C) दार्शनीयम् (D) दर्शनीयम्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (3.1.96) - ईश्वरचन्द्र, पेज–291*

131. (A) 132. (B) 133. (B) 134. (A) 135. (C) 136. (B) 137. (C) 138. (C) 139. (C) 140. (A)
141. (D) 142. (D) 143. (A) 144. (C) 145. (D)

146. कः तद्धितप्रत्ययः न– AWES TGT–2011
(A) मतुप् (B) तल्
(C) क्तिन् (D) त्व
स्रोत–*(i) अष्टाध्यायी (3.3.94) - ईश्वरचन्द्र, पेज–372*
(ii) लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–846

147. कृदन्त प्रत्यय किन शब्दों के साथ जुड़ते हैं– UP PCS–2012
(A) संज्ञा (B) धातु
(C) सर्वनाम (D) अव्यय
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–806*

148. 'क्तक्तवतू' इत्यत्र का विभक्तिः? HE–2015
(A) प्रथमैकवचनम् (B) प्रथमाद्विवचनम्
(C) द्वितीयाद्विवचनम् (D) षष्ठीद्विवचनम्
लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-3)-भीमसेन शास्त्री, पेज–84

149. निष्ठासंज्ञक प्रत्यय कौन से है? H-TET–2015
(A) शतृ-शानच् (B) क्त्वा-ल्यप्
(C) क्त-क्तवतु (D) तव्यत्-तव्य
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–807*

150. 'पाचकः' इति पदे धातु + प्रत्ययः योगोऽस्ति– DL–2015
(A) पच् + ण्वुल् (B) पच् + अण्
(C) पच् + वुञ् (D) पच् + अक्
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–840*

151. शुद्धं प्रकृति-प्रत्ययं चिनुत– AWES TGT–2013
'चलन्' =
(A) चल् + शानच् (B) चल् + शतृ
(C) चल् + क्त (D) चल् + क्तवतु
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-3), पेज–133*

152. 'पठितवान्' = AWES TGT–2013
(A) पठ् + शतृ (B) पठ् + क्त
(C) पठ् + शानच् (D) पठ् + क्तवतु
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-3), पेज–107*

153. 'नतवान्' = AWES TGT–2013
(A) नत् + वान् (B) नम् + क्तवतु
(C) नम् + वान् (D) नम् + क्तवन्
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–815*

154. 'कृतः' = AWES TGT–2013
(A) कृ + क्त (B) कृ + त
(C) कृ + तः (D) कृ + क्तः
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–814*

155. 'श्रुतम्' = AWES TGT–2013
(A) श्रु + क्तवतु (B) श्रु + शानच्
(C) श्रु + क्त (D) श्रु + शतृ
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–815*

156. 'धर्मः'...................। AWES TGT–2013
(A) आचरणीयानि (B) आचरणीया
(C) आचरणीयः (D) आचरन्
(i) लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-3)-भीमसेन शास्त्री, पेज–09
(ii) लघुसिद्धान्तकौमुदी (3.1.96) - गोविन्दाचार्य, पेज–774

157. 'धनदः' में कौन-सा प्रत्यय है– BHU MET–2012
(A) क (B) ट
(C) अक (D) अन
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (3.2.3) - गोविन्दाचार्य, पेज–789*

158. 'हसितम्' में कौन-सा प्रत्यय है? BHU MET–2012
(A) घञ् (B) अच्
(C) क्त (D) घ
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–808*

159. 'पुरा शक्रमुपस्थाय' में 'उपस्थाय' पद का क्या अर्थ है? BHU MET–2012
(A) पूजां कृत्वा (B) आगम्य
(C) उपविश्य (D) आज्ञापयत्
स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.3.25) - ईश्वरचन्द्र, पेज–88*

160. इष् + तुमुन् = ? AWES TGT–2010
(A) इष्टुम् (B) एष्टुम्
(C) अष्टिम् (D) अष्टुम्
लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-3), पेज–185

146. (C) **147.** (B) **148.** (B) **149.** (C) **150.** (A) **151.** (B) **152.** (D) **153.** (B) **154.** (A) **155.** (C)
156. (C) **157.** (A) **158.** (C) **159.** (A) **160.** (B)

161. सम् + अस् + ल्यप् = **AWES TGT–2010**

(A) समसल्यप् (B) समस्य

(C) समसय (D) सम्भूय

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-3), पेज–270*

162. अट् + तुमुन् = ? **G GIC–2015**

(A) अर्टितुम् (B) अट्तुम्

(C) अटितुम् (D) एट्तुम्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-3), पेज–185*

163. वृक्षे फलानि .... कपयः प्रसन्नाः भवन्ति। **AWES TGT–2010**

(A) खादितम् (B) खादन्तः

(C) खादितवान् (D) खादन्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-3), पेज–133*

164. प्रकृति-प्रत्यय-विभागं कुरुत – 'उपविष्टः' – **AWES TGT–2010**

(A) उप + विश् + क्त (B) उप + विष्ट + ल्यप्

(C) उप + विष्ट + क्त्वा (D) उप + विश् + क्तवतु

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–202*

165. आवां गुरोः पाठं ....। **AWES TGT–2010**

(A) पठिताम् (B) पठितम्

(C) पठितवन्तौ (D) पठितवान्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–808*

166. ते सर्वे मांसभक्षणम्.................। **AWES TGT–2013, 2010**

(A) परित्यक्तवान् (B) परित्यक्तवन्तः

(C) परित्यक्तम् (D) परित्यक्तः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–815*

167. 'पृष्टवान्' शब्द में प्रकृति तथा प्रत्यय है? **UP PGT–2013**

(A) प्रच्छ् + क्तवतु (B) पृष्ट् + वान्

(C) पृच्छ् + क्त (D) पृच्छ् + मतुप्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–815*

168. 'कृ' धातु से स्त्रीलिङ्ग में शतृ प्रत्यय लगाने पर रूप बनेगा? **UP PGT–2013**

(A) कुर्वनी (B) कुर्वन्ती

(C) कुर्वती (D) कुर्वन्ता

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-3), पेज–132*

169. 'कर्तृ' शब्द में कौन-सा प्रत्यय है? **UP TET–2016**

(A) तव्य (B) तृच्

(C) तव्यत् (D) अनीयर्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-3), पेज–36*

170. 'कर्ता' इत्यत्र प्रत्ययोऽस्ति – **G GIC–2013**

(A) कृ + तृच् (B) कृ + णिच्

(C) कृ + अण् (D) कृ + ण्वुल्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-3), पेज–37*

171. 'शुष् + क्त' प्रत्यय के योग से शब्द बनेगा? **UP PGT–2013**

(A) शुष्कः (B) शुष्यः

(C) शुष्तः (D) शुष्वः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-3), पेज–95*

172. √वह् धातु से 'तुमुन्' प्रत्यय लगने पर रूप होगा? **UP PGT–2013**

(A) वहितुम् (B) वहेतुम्

(C) वोढितुम् (D) वोढुम्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-3), पेज–191*

173. 'वीक्षमाणः' इत्यत्र कः प्रत्ययोऽस्ति? **C-TET–2014**

(A) शानच् (B) शतृ

(C) क्त (D) मतुप्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-3), पेज–136*

174. 'विहाय' इत्यत्र कः प्रत्ययः? **C-TET–2014**

(A) ण्यत् (B) क्यप्

(C) यत् (D) ल्यप्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-3), पेज–285*

161. (D) 162. (C) 163. (B) 164. (A) 165. (C) 166. (B) 167. (A) 168. (C) 169. (B) 170. (A) 171. (A) 172. (D) 173. (A) 174. (D)

175. 'तव्यत्' और 'अनीयर्' प्रत्यय का प्रयोग होता है– UP PGT (H)–2004

(A) करने के अर्थ में (B) चाहिए के अर्थ में
(C) चुका है के अर्थ में (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–474*

176. 'तुमुन्' प्रत्यय का प्रयोग निम्नलिखित में से किस अर्थ में होता है? UP PGT (H)–2005

(A) चाहिए (B) योग्य
(C) के लिए (D) करके

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–205*

177. 'जो पूजा के योग्य हो' उसे कहा जायेगा– UP PGT (H)–2005

(A) पूज्यनीय (B) पूज्य
(C) पुज्यनीय (D) पुजनीय

स्रोत–*तिङ्कृत्कोषः (द्वितीय-आर्धधातुकखण्ड) - पुष्पादीक्षित, पेज–126*

178. 'अधीत' शब्द की व्युत्पत्ति का ठीक विकल्प चुनिये– UP TGT–2010

(A) अधि + इट् + यत् (B) अधि + इट् + क्त
(C) अधि + इङ् + क्त (D) अधि + इङ् + क्तवतु

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-3), पेज–101*

179. 'जनार्दनः' इत्यस्मिन् प्रत्ययः अस्ति– UP GIC–2015

(A) ल्युट् (B) ल्यु
(C) ण्वुल् (D) अन

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (3.1.134) - गोविन्दाचार्य, पेज–786*

180. 'प्रेत्य'– AWES TGT–2012

(A) प्रे + क्त्वा + ल्यप् (B) प्र + इ + क्त्वा + ल्यप्
(C) प्रा + कल्वा + ईयस् (D) प्र + ए + ल्यप्

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–207*

181. तिष्ठत् AWES TGT–2012

(A) तिष्ठ + शतृ (B) स्था + शानच्
(C) स्था + शतृ (D) तिष्ठ + शानच्

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–203*

182. तीर्त्वा– AWES TGT–2012

(A) तॄ + क्त्वा (B) त + ई + क्त्वा
(C) तृ + ई + क्त्वा (D) त्वृ + क्त

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–208*

183. धावतः AWES TGT–2012

(A) धाव् + क्त (B) धाव् + क्त्वा
(C) धाव् + शतृ (D) धाव् + ईयस्

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–203*

184. जवीयः– AWES TGT–2012

(A) जव + तसिल् (B) जव + ईयस्
(C) जव + ल्यप् (D) जव + इन्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (5.3.57) - ईश्वरचन्द्र, पेज–616*

185. आत्मनेपदीयधातुभिः सह प्रत्ययः –AWES TGT–2010

(A) शतृ (B) शानच्
(C) ल्यप् (D) तिङ्

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–485*

186. कः प्रत्ययः कृत्प्रत्ययो न– AWES TGT–2010

(A) क्तवतु (B) शानच्
(C) शतृ (D) अण्

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–284*

187. शानच् प्रत्ययस्य प्रयोगः भवति– RPSC ग्रेड I (PGT)–2014

(A) वर्तमानकालार्थे (B) भूतकालार्थे
(C) भविष्यद्कालार्थे (D) अनद्यतनभूतकालार्थे

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–485*

188. योक्तुम् = AWES TGT–2010

(A) √यज् + त्यप् (B) √युज् + तुमुन्
(C) √यज् + क्यप् (D) √युज् + क्तिन्

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–206*

189. आ + √रुह् + ल्यप्– AWES TGT–2010

(A) आरूहः (B) आरुह्य
(C) आरूह्यः (D) आरूह्य

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-3), पेज–281*

175. (B)	176. (C)	177. (B)	178. (C)	179. (B)	180. (B)	181. (C)	182. (A)	183. (C)	184. (B)
185. (B)	186. (D)	187. (A)	188. (B)	189. (B)					

190. तद् + √दृश् + क्विन्– AWES TGT–2010

(A) तदृशः (B) तादृक्
(C) तादृक्षः (D) तादृशः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–141*

191. प्रनष्टवान्– AWES TGT–2010

(A) प्र + नष्ट + क्त्वा (B) प्र + नश् + ल्यप्
(C) प्र + नश् + क्तवतु (D) प्र + नष्ट + क्त

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-3), पेज–106*

192. सामर्थ्ये योगे .... प्रत्ययस्य प्रयोगः भवति– AWES TGT–2010

(A) अच् (B) तुमुन्
(C) ल्युट् (D) शतृ

193. आलभ्य– AWES TGT–2009

(A) आ + √लभ् + ण्यत् (B) आ + √लभ्+ क्यच्
(C) आ + √लभ् + यत् (D) आ + √ लभ्+ ल्यप्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-3), पेज–281*

194. पवमानः– AWES TGT–2009

(A) √पू + शानम् (B) √पू + कानच्
(C) √पू + मानच् (D) √पू + शानन्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (3.2.128) - ईश्वरचन्द्र, पेज–327*

195. पाकः– AWES TGT–2009

(A) √पच् + घञ् (B) √पच् + अञ्
(C) √पच् + कञ् (D) √पच् + इञ्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–840*

196. भिक्षाचरः– AWES TGT–2010

(A) भिक्षा+ √ चर् + क (B) भिक्षा + √चर् + अ
(C) भिक्षा + √चर् + अण् (D) भिक्षा + √चर् + ट

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (3.2.17) - गोविन्दाचार्य, पेज–791*

197. विद्वांसस्तु राजसिंहासनरहिताः सन्तोऽपि जनैः...... इत्यादि में रेखाङ्कित पद में कौन-सा प्रत्यय है? H TET–2014

(A) झि (B) झ
(C) शतृ (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–821*

198. 'शुद्धः' पद में कौन-सा प्रत्यय है? H TET–2014

(A) जस् (B) क
(C) क्त (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–815*

199. 'प्रतिकूलोपहितम्' में कौन-सा प्रत्यय है? H TET–2014

(A) क्तवतु (B) तमप्
(C) क्त (D) शतृ

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमीव्याख्या भाग-3), पेज–106*

200. 'शिष्यः' शब्द की उपयुक्त निष्पत्ति है– H TET–2014

(A) शास् + क्यप् (B) शास् + ण्यत्
(C) शिष् + यत् (D) शिष् + यक्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–779*

201. इण् (जाना) धातु से तव्यत् प्रत्यय करने पर रूप बनेगा– H TET–2014

(A) ऐतव्यः (B) एतव्यः
(C) एषितव्यः (D) इतव्यः

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–223*

202. भाववाच्य में धातु से कृत्यसञ्ज्ञक प्रत्यय करने पर धातु का रूप होगा– H TET–2014

(A) नपुंसकलिङ्ग बहुवचन में
(B) कर्ता के अनुसार लिङ्ग तथा वचन
(C) कर्म के अनुसार लिङ्ग तथा वचन
(D) नपुंसकलिङ्ग एकवचन में

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–774*

203. ''प्रभूतं धनम् अर्जितवान्'' वाक्य में रेखाङ्कित पद में प्रत्यय है– H TET–2014

(A) शानच् (B) मतुँप्
(C) क्तवतु (D) कानच्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-3), पेज–101*

190. (B) **191.** (C) **192.** (B) **193.** (D) **194.** (D) **195.** (A) **196.** (D) **197.** (C) **198.** (C) **199.** (C)
200. (A) **201.** (B) **202.** (D) **203.** (C)

204. 'अविवेकिता अपि अनर्थाय' में रेखाङ्कित पद में कौन-सा प्रत्यय है– H TET–2014

(A) यत् (B) क्यप्
(C) ल्यप् (D) ङे

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–67*

205. 'पक्वम्' इस कृदन्त पद में प्रत्यय है– H TET–2014

(A) क्वनिप् (B) अच्
(C) घ (D) क्त

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (8.2.52) - गोविन्दाचार्य, पेज–812*

206. सम्पत् पद में कौन-सा प्रत्यय है? H TET–2014

(A) शतृ (B) मतुँप्
(C) वतुँप् (D) क्विप्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–847*

207. 'वैयाकरणः' पद की निष्पत्ति बताइये– H TET–2014

(A) व्याकरण् + अच्
(B) व्याकरण + अण्
(C) व्याकरण + अञ्
(D) वि + आ + कृ + ल्युट्

लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-5), पेज–88

208. 'पचेलिमाः' शब्द निष्पन्न हुआ है? H TET–2014

(A) पच् + एलिम (B) पचेलिम + आ
(C) पच् + केलिमर् (D) पचे + लिमर्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–776*

209. चितिः = ? AWES TGT–2008

(A) √चि + क्तिन् (B) √चि + तिप्
(C) √चि + तिङ् (D) √ चि + त्यप्

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–214*

210. यजमानः = ? AWES TGT–2008

(A) √यज् + कानच् (B) √यज् + शानन्
(C) √यज् + शानच् (D) √यज् + सग्यमान्

स्रोत–*(i) रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–204*
(ii) अष्टाध्यायी (3.2.128) - ईश्वरचन्द्र, पेज–337

211. 'शप्' प्रत्यय किस अर्थ में विहित है– UGC 73 J–2015

(A) कर्मार्थे (B) कर्त्रर्थे
(C) हेत्वर्थे (D) भावार्थे

स्रोत–*अष्टाध्यायी (3.1.68) - ईश्वरचन्द्र, पेज–282*

212. 'प्रक्षालनम्' पद में प्रत्यय है? H-TET–2015

(A) ल्युट् (B) ल्यु
(C) अनम् (D) कोई नहीं

स्रोत–*अष्टाध्यायी (3.3.115) - ईश्वरचन्द्र, पेज–378*

213. 'लब्धः' पद में कौन-सा प्रत्यय है? H-TET–2015

(A) धः प्रत्यय (B) अच् प्रत्यय
(C) क्त प्रत्यय (D) शतृ प्रत्यय

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-3), पेज–110*

214. 'केशकः' इत्यत्र कन् प्रत्ययः केन सूत्रेण विधीयते? UGC 25 J–2012

(A) विमुक्तादिभ्योऽण् (B) स्वाङ्गेभ्यः प्रसिते
(C) कुल्माषादञ् (D) पूर्वादिनिः

स्रोत–*अष्टाध्यायी (5.2.66) - ईश्वरचन्द्र, पेज–592*

215. द्वेस्तीयः [पा0सू0 5.2.54] इत्येनन कः प्रत्ययः विधीयते कश्च तस्य अर्थः? UGC 25 J–2013

(A) तीय-प्रत्ययः पूरणे अर्थे।
(B) तीय-प्रत्ययः संख्यायाम् अर्थे।
(C) स्तीय-प्रत्ययः पूरणे अर्थे।
(D) द्वेस्तीय-प्रत्ययः मत्वर्थे।

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-5), पेज–283*

216. 'गणपति + अण्' का रूप होगा– UP PGT–2000

(A) गणपत्यण् (B) गणपतिम्
(C) गाणपत्यम् (D) गाणपतम्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-5), पेज–07*

204. (D) **205.** (D) **206.** (D) **207.** (B) **208.** (C) **209.** (A) **210.** (B) **211.** (B) **212.** (A) **213.** (C) **214.** (B) **215.** (A) **216.** (D)

217. (i) 'भागिनेयः' अस्मिन् पदे प्रत्ययोऽस्ति?
(ii) 'भगिनी' में किस प्रत्यय के योग से 'भागिनेयः' पद बनता है– UP PGT–2010, UK TET–2011 MP वर्ग-I (PGT)–2011

(A) अण् (B) यत्
(C) ढक् (D) क्त

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका – बाबूराम सक्सेना, पेज–274*

218. (i) 'गाङ्गः' में प्रत्यय है–
(ii) 'गाङ्गः' इति पदे प्रत्ययोऽस्ति UP GIC–2009, G GIC–2015

(A) अण् (B) अप्
(C) अच् (D) अञ्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-5), पेज–38*

219. 'मासिकम्' पदे प्रत्ययः अस्ति– UP GIC–2009, 2015

(A) ठक् (B) ठञ्
(C) ठप् (D) ट्यु

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-5), पेज–132*

220. 'तदीयः' में प्रत्यय है– UP GIC–2009

(A) छ (B) त्यप्
(C) ईय (D) क्यप्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-5), पेज–122*

221. 'शिक्षकः' में प्रत्यय है– UP GIC–2009

(A) ठक् (B) ण्वुल्
(C) अण् (D) वुन्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-5), पेज–90*

222. नाम के बाद जो प्रत्यय जुड़ते हैं, उन्हें क्या कहते हैं। UP TGT–2004

(A) तद्धित (B) तिङन्त
(C) कृदन्त (D) णिजन्त

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–271*

223. ''वैक्रमः'' में कौन-सा प्रत्यय है– UP TGT–2010

(A) अण् (B) यत्
(C) ईयसुन् (D) मतुप्

स्रोत–*शिवराजविजयम् - रमाशङ्कर मिश्र, पेज–46*

224. 'लघिमा' की व्युत्पत्ति हेतु ठीक विकल्प चुनिए– UP TGT–2010

(A) लघु + इमनिच् (B) लघु + मनिन्
(C) लघु + मतुप् (D) लघु + वतुप्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-5), पेज–251*

225. 'गर्ग का पुत्र' किमस्य एकपदे रूपम्? BHU Sh.ET–2011

(A) गर्गः (B) गर्गा
(C) गार्ग्यः (D) गर्गिः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-5), पेज–22*

226. 'व्यासस्यापत्यं' भवति? BHU AET–2011

(A) वैयासः (B) वैयासिः
(C) वैयासकिः (D) वैयासेयः

स्रोत–*अष्टाध्यायी (4.1.97) - ईश्वरचन्द्र, पेज–451*

227. 'वैनतेयः' इत्यस्मिन् पदे प्रत्ययः अस्ति? RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011 UK TET–2011, MP वर्ग-2 (TGT)–2011

(A) ठक् (B) ष्यञ्
(C) यञ् (D) ढक्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-5), पेज–43*

228. 'माधुर्यम्' पदस्य विग्रह अस्ति? RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011

(A) मधुर + ष्यञ् (B) मधुर + मयट्
(C) मधुर + यञ् (D) मधुर + यत्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-5), पेज–254*

217. (C) **218.** (A) **219.** (B) **220.** (A) **221.** (D) **222.** (A) **223.** (A) **224.** (A) **225.** (C) **226.** (C) **227.** (D) **228.** (A)

229. 'जनार्दनः' शब्द की उचित व्युत्पत्ति है?
H-TET–2015

(A) जन + अर्द् + णिच् + ल्यु
(B) जन + अर्द् + णिच् + ल्युट्
(C) जनु + अर्द् + ल्यु + अ
(D) जन + अर्द + ल्यु + णिच्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–786*

230. 'वायव्यम्' अस्मिन् पदे प्रत्ययोऽस्ति?
RPSC ग्रेड-I (PGT)–2010

(A) स्त्रीप्रत्ययः (B) पूर्व-कृदन्तप्रत्ययः
(C) तद्धितप्रत्ययः (D) उत्तरकृदन्तप्रत्ययः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-5), पेज–75*

231. कृत्य-प्रत्यय में सम्मिलित नहीं है–
RPSC ग्रेड-III–2013

(A) तव्यत् (B) यत्
(C) अनीयर् (D) मतुप्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-5), पेज–300*

232. 'मत्त्वा' शब्द में प्रकृति-प्रत्यय है–
RPSC ग्रेड-III–2013

(A) मत् + क्त्वा (B) मति + क्त्वा
(C) कत् + क्त्वा (D) मन् + क्त्वा

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-3), पेज–279*

233. 'बान्धवाः' पद में कौन सा प्रत्यय है–
RPSC ग्रेड-III–2013

(A) शतृ (B) शानच्
(C) अण् (D) तल्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-5), पेज–394*

234. निम्नाङ्कित में तद्धितप्रत्ययान्त अव्यय है–
RPSC ग्रेड-III–2013

(A) गन्तुम् (B) कृत्वा
(C) जीवसे (D) अधुना

स्रोत–*अष्टाध्यायी (5.3.17) - ईश्वरचन्द्र, पेज–609*

235. 'तल्' प्रत्ययान्तं पदमस्ति– RPSC ग्रेड-III–2014

(A) गन्ता (B) बन्धुता
(C) पठिता (D) हसिता

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–279*

236. 'श्रीमत्' शब्दे प्रकृतिप्रत्ययौ स्तः–
RPSC ग्रेड-I (PGT)–2014

(A) श्री + शतृ (B) श्री + मतुप्
(C) श्री + मयट् (D) श्री + शानच्

स्रोत– *रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–104*

237. 'सुरभीकरोति' अत्र प्रत्ययोऽस्ति–
MP वर्ग-2 (TGT)–2011

(A) णिच् (B) ङीप्
(C) च्वि (D) ङीष्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (5.4.50) - ईश्वरचन्द्र, पेज–637*

238. 'श्रीमान्' पदे कः प्रत्ययः अस्ति?
MP वर्ग-2 (TGT)–2011, UK TET–2011

(A) मतुप् (B) तल्
(C) ठक् (D) ढक्

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–104*

239. 'ममता' में प्रत्यय है–
MP वर्ग-2 (TGT)–2011, UK TET–2011

(A) अण् (B) ढक्
(C) तल् (D) मतुप्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (5.1.118) - ईश्वरचन्द्र, पेज–575*

240. 'गुरुता-महत्ता-लघुता' इत्यादि शब्द किस मूल प्रत्यय से निष्पन्न हैं? H-TET–2015

(A) ता (B) आ
(C) तल् (D) ठक्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (5.1.118) - ईश्वरचन्द्र, पेज–575*

229. (A) 230. (C) 231. (D) 232. (D) 233. (C) 234. (D) 235. (B) 236. (B) 237. (C) 238. (A) 239. (C) 240. (C)

241. 'लघुता' अस्मिन् पदे प्रत्ययोऽस्ति– MP वर्ग-1 (PGT)–2012

(A) तुट् (B) तिप्
(C) तल् (D) अण्

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–112*

242. 'औपगवः' यह.........प्रत्ययान्त है– UGC 73 D–2012

(A) तद्धित (B) कृत्
(C) सुप् (D) तिप्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-5), पेज–121*

243. 'भवदीयः' में प्रत्यय-निर्देश कीजिये– UP GDC–2008

(A) छ (B) च्वि
(C) अण् (D) ल्यप्

स्रोत–*(i) लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-5), पेज–123*
(ii) अष्टाध्यायी (4.2.113) - ईश्वरचन्द्र, पेज–492

244. 'ग्रामीणः' बनता है– BHU MET–2014

(A) ग्राम + खञ् (B) ग्राम + फ
(C) ग्राम + घञ् (D) ग्राम + ख

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-5), पेज–113*

245. 'तद्धित' इत्यत्र कः प्रत्ययः? BHU Sh. ET–2013

(A) ङीष् (B) ङीप्
(C) ई (D) इन्-प्रत्ययः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-5), पेज–313*

246. राष्ट्रियशब्दस्य अधोनिर्दिष्टेषु अर्थेषु को न भवति? DSSSB PGT–2014

(A) राष्ट्राय द्रुह्यति (B) राष्ट्रे भवः
(C) राष्ट्रादागतः (D) राष्ट्रस्यायम्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-5), पेज–111*

247. 'राष्ट्रीयः' इति पदे प्रत्ययोऽस्ति– G GIC–2015

(A) छ (B) इञ्
(C) इण् (D) घ

स्रोत–*अष्टाध्यायी (4.2.92) - ईश्वरचन्द्र, पेज–487*

248. 'पवित्रतमा' इत्यत्र कः प्रत्ययः? REET–2016

(A) तरप् (B) तसिल्
(C) तमप् (D) तव्यत्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (5.3.55) - ईश्वरचन्द्र, पेज–616*

249. गुणवन्तः– AWES TGT–2011

(A) गुण + तत् (B) गुण + मतुप्
(C) गुण + इन् (D) गुण + तन्तः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-5), पेज–303*

250. योगी– AWES TGT–2011

(A) योग + इन् (B) योग + ई
(C) योग + तल् (D) योग + इ

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–1117*

251. दिन + ठञ्– AWES TGT–2011

(A) दिनिक (B) दैनिकम्
(C) दैनिकः (D) दैनिकी

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-5), पेज–132*

252. विनतायाः पुत्रः– AWES TGT–2010

(A) विनतायाः (B) वैनतेयः
(C) विनतार्ये (D) वैनताय

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-5), पेज–43*

253. वृष्णे अपत्यं पुमान्– AWES TGT–2010

(A) वार्ष्णेणः (B) वृष्णमः
(C) वार्ष्णेयः (D) वृष्णेष्वः

स्रोत–*अष्टाध्यायी (4.1.114) - ईश्वरचन्द्र, पेज–455*

254. 'द्रोणस्य अपत्यं पुमान्' इत्यर्थे तद्धितान्तः शब्दः कः– DSSSB TGT–2014

(A) द्रोणिः (B) द्रोणः
(C) द्रौणिः (D) द्रोणायनः

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–108*

255. 'कुन्ती' शब्द से 'कौन्तेय' पद बनता है; अधोलिखित सूत्र से– UP PGT–2013

(A) 'तस्यापत्यम्' सूत्र से (B) 'स्त्रीभ्यो ढक्' सूत्र से
(C) 'अत् इञ्' सूत्र से (D) 'लुक् स्त्रियाम्' सूत्र से

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-5), पेज–43*

241. (C)	**242.** (A)	**243.** (A)	**244.** (A)	**245.** (D)	**246.** (A)	**247.** (D)	**248.** (C)	**249.** (B)	**250.** (A)
251. (C)	**252.** (B)	**253.** (C)	**254.** (C)	**255.** (B)					

256. 'कौन्तेय' पद में कौन-सा प्रत्यय विद्यमान है? UP TET–2016

(A) इञ् (B) अय्

(C) ढक् (D) ण्यत्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-5), पेज–43*

257. 'क्षमावान्' इत्यत्र कः प्रत्ययः? C-TET–2014

(A) तुमुन् (B) क्त

(C) मतुप् (D) क्तवतु

स्रोत–*अष्टाध्यायी (5.2.94) - ईश्वरचन्द्र, पेज–595*

258. कः तद्धितप्रत्ययः न– AWES TGT–2011

(A) मतुप् (B) क्तिन्

(C) तल् (D) त्व

स्रोत–*अष्टाध्यायी (3.3.94) - ईश्वरचन्द्र, पेज–372*

259. जमदग्नेः पुत्रम्– AWES TGT–2010

(A) जमदग्न्यम् (B) जामदग्न्यः

(C) जामदग्निः (D) जामदग्निम्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-5), पेज–23*

260. 'द्वितीयः' पद में कौन-सा तद्धित प्रत्यय है? H TET–2014

(A) ईयसुन् (B) छ

(C) क्यच् (D) तीय

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-5), पेज–283*

261. वैश्वामित्रः = ? AWES TGT–2009

(A) विश्वामित्र + इञ् (B) विश्वामित्र + अण्

(C) विश्वामित्र + अञ् (D) विश्वामित्र + एय्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-5), पेज–40*

262. कः प्रत्ययः कृत्प्रत्ययः न? AWES TGT–2008, 2010

(A) शतृ (B) क्तवतु

(C) शानच् (D) अण्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-5), पेज–37*

263. कः तद्धितप्रत्ययः? AWES TGT–2009

(A) क्यप् (B) ल्यप्

(C) ण्यत् (D) ष्यञ्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (5.1.113) - ईश्वरचन्द्र, पेज–576*

264. प्रास्थिकः = ? AWES TGT–2009

(A) प्रस्थ + घञ् (B) प्रस्थ + कञ्

(C) प्रस्थ + ठञ् (D) प्रस्थ + ष्यञ्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-5), पेज–225*

265. अधोलिखितेषु किं शुद्धं वर्तते? G GIC–2015

(A) आस्तिकः = अस्ति + ठक्

(B) आस्तिकः = असि + ठक्

(C) आस्तिकः = अस्ति + यत्

(D) आस्तिकः = असि + ठञ्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (4.4.60) - ईश्वरचन्द्र, पेज–541*

266. 'दन्तुरः' इत्यत्र कः प्रत्ययः? UGC 25 D–2015

(A) र (B) अच्

(C) इरच् (D) उरच्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-5), पेज–311*

267. ''प्राङ्मुखी'' इत्यत्र ङीप् केन सूत्रेण विधीयते? UGC 25 D–2012

(A) नखमुखात्संज्ञायाम् (B) जातेरस्त्रीविषयादयोपधात्

(C) क्रीतात्करणपूर्वात् (D) दिक्पूर्वपदान्ङीप्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (4.1.60) - ईश्वरचन्द्र, पेज–441*

268. 'गोपस्य स्त्री गोपी' इत्यत्र स्त्रियां केन सूत्रेण कः प्रत्ययो भवति? UGC 25 J–2013

(A) ऋन्नेभ्यो ङीप्। इति ङीप्

(B) पुंयोगादाख्यायाम्। इति ङीष्

(C) उगितश्च। इति ङीप्

(D) पत्युर्नो यज्ञसंयोगे। इति ङीप्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-6), पेज–42*

256. (C)	**257. (C)**	**258. (B)**	**259. (B)**	**260. (D)**	**261. (B)**	**262. (D)**	**263. (D)**	**264. (C)**	**265. (A)**
266. (D)	**267. (D)**	**268. (B)**							

269. ''सीमा'' इत्यत्र 'ङीप्' निषेधकसूत्रं किम्– UGC 25 S–2013

(A) मनः (B) अनो बहुव्रीहेः
(C) टाबृचि (D) न यासयोः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-6), पेज–90-91*

270. पच् + शप् + अ + शतृ > अत् = पचत्' इत्यत्र स्त्रियां केन सूत्रेण कः प्रत्ययः भवति? UGC 25 D–2013

(A) 'उगितश्च' इति ङीप्।
(B) 'वयसि प्रथमे' इति ङीप्
(C) 'अजाद्यतष्टाप्' इति टाप्।
(D) 'ऋन्नेभ्यो ङीप्' इति ङीप्।

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-6), पेज–08*

271. 'लावणिकः' का स्त्रीलिङ्ग क्या होगा– UP PGT–2000

(A) लावणिकी (B) लावणिका
(C) लावणिक् (D) लावणिजा

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-6), पेज–16*

272. 'टाप्' प्रत्यय होता है– UP TGT–2002, UP PGT–2004

(A) अकारान्त प्रातिपदिक से
(B) ईकारान्त प्रातिपदिक से
(C) उकारान्त प्रातिपदिक से
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-6), पेज–04*

273. ङीप् प्रत्यय होता है– UP PGT–2002

(A) अकारान्त प्रातिपदिक से
(B) ईकारान्त प्रातिपदिक से
(C) उकारान्त प्रातिपदिक से
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-6), पेज–08*

274. 'एडका' शब्द किस प्रत्यय के योग से बना है– UP PGT–2005

(A) टाप् (B) चाप्
(C) डाप् (D) आप्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-6), पेज–6*

275. 'टाप्' प्रत्यय के योग में कौन-सा लिङ्ग होता है– BHU MET–2010

(A) पुँल्लिङ्ग (B) स्त्रीलिङ्ग
(C) नपुंसकलिङ्ग (D) अनियतलिङ्ग

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-6), पेज–4*

276. 'अजा' में कौन-सा प्रत्यय है– BHU MET–2008, 2014

(A) टाप् (B) चाप्
(C) ङीप् (D) उपर्युक्त में कोई नहीं

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-6), पेज–4*

277. अज + टाप् ....। रिक्तस्थान में उचित शब्द होगा– RPSC ग्रेड-III–2013

(A) अज (B) अजी
(C) अजा (D) अजरा

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-6), पेज–5*

278. 'चटका' इस पद में कौन-सा प्रत्यय है– UGC 73 D–2005

(A) कन् (B) टाप्
(C) ता (D) ङीप्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-6), पेज–6*

279. 'चटका' इत्यत्र स्त्री प्रत्यय-विधायकं सूत्रमस्ति– G-GIC–2015

(A) यञश्च (B) स्त्रियाम्
(C) अजाद्यतष्टाप् (D) उगितश्च

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-6), पेज–6*

280. 'रमा' इति पदे कः प्रत्ययः? RPSC ग्रेड I (PGT)–2014

(A) टाप् (B) डाप्
(C) चाप् (D) आप्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-6), पेज–4*

281. अज + ... = अजा AWES TGT–2010

(A) इन् (B) टाप्
(C) ङीप् (D) मतुप्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-6), पेज–5*

269. (A) 270. (A) 271. (A) 272. (A) 273. (C) 274. (A) 275. (B) 276. (A) 277. (C) 278. (B) 279. (C) 280. (A) 281. (B)

282. 'चटक + टाप्' इत्यस्मिन् रूपं निर्मीयते– UP GIC–2015

(A) चटकी (B) चटका
(C) चट्टा (D) चटकाय

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-6), पेज–6*

283. संज्ञार्थप्रयुक्ते 'मामकी' इति पदे ''ङीप्'' इत्यस्य– UGC 25 J–2015

(A) नित्यविधिः (B) निषेधः
(C) वैकल्पिक-प्रवृत्तिः (D) अशुद्ध-प्रयोगः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-6), पेज–92*

नोट– इसका उत्तर 'C' भी माना जा सकता है किन्तु संज्ञा और छन्दस् के विषय में उत्तर 'A' होगा।

284. लावणिकी शब्द 'लावणिक' में किस प्रत्यय के संयोग से बनता है– UP PGT–2002

(A) टाप् (B) ङीप्
(C) ङीष् (D) ङीन्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-6), पेज–16*

285. 'कर्त्री' में कौन-सा प्रत्यय है– UP PGT–2003

(A) टाप् (B) ङीप्
(C) ङीष् (D) ङीन्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-6), पेज–7*

286. (i) 'नर्तक' में किस प्रत्यय के संयोग से 'नर्तकी' शब्द बनता है UP PGT–2002, 2004, 2009

(ii) नर्तकी में प्रयुक्त प्रत्यय है? BHU MET–2014

(A) टाप् (B) ङीप्
(C) ङीष् (D) ङीन्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-6), पेज–24*

287. 'गौरी' में कौन-सा प्रत्यय है– UP PGT–2005, BHU MET–2008, 2015, 2011

(A) ङीप् (B) ङीष्
(C) टाप् (D) ङीन्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-6)-भीमसेन शास्त्री, पेज–26*

288. 'गौरी, अतिकेशी, चन्द्रमुखी' इत्यादि पद किस प्रत्यय के उदाहरण है? H-TET–2015

(A) ङीष् (B) ङीप्
(C) ङीन् (D) ढक्

लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-6), पेज–26, 60, 61

289. 'सूर्या' में कौन-सा प्रत्यय है– UP PGT–2005

(A) टाप् (B) चाप्
(C) ङीप् (D) ण्यत्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-6), पेज–49*

290. 'वयसि प्रथमे' सूत्र से विहित प्रत्यय है– UP PGT–2005

(A) ङीष् (B) टाप्
(C) ङीप् (D) ङीन्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-6), पेज–28*

291. 'दाक्षी' में स्त्री-प्रत्यय है– UP PGT–2005

(A) ङीष् (B) ङीन्
(C) टाप् (D) ऊङ्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-6), पेज–76*

292. 'शर्वाणी' इति पदे प्रत्ययो वर्तते– G GIC–2015

(A) ङीप् (B) ङीष्
(C) ङीन् (D) णिनि

स्रोत–*(i) लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–1165*
(ii) अष्टाध्यायी (4.1.49) - ईश्वरचन्द्र, पेज–435

293. 'इन्द्राणी' इत्यत्र कः आगमः? G GIC–2015

(A) नुट् (B) नुक्
(C) नुम् (D) आनुक्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–1166*

294. ''गार्ग्यायणी'' इति पदे प्रत्ययो वर्तते– UP GDC–2012, UP GIC–2015

(A) ङीप् (B) ङीष्
(C) ङीन् (D) णिनि

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-6), पेज–24*

282. (B) 283. (A) 284. (B) 285. (B) 286. (C) 287. (B) 288. (A) 289. (B) 290. (C) 291. (A) 292. (B) 293. (D) 294. (B)

295. 'श्वशुर' शब्दस्य स्त्रीत्वविवक्षायां निष्पद्यते–

BHU AET–2011

(A) श्वशुरी (B) श्वशुर्या

(C) श्वशुराणी (D) श्वश्रूः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-6), पेज–80*

296. (i) 'नारी' इत्यस्मिन् पदे कः स्त्रीप्रत्ययः अस्ति–

(ii) 'नारी' पद में कौन-सा प्रत्यय है?

RPSC ग्रेड-III–2013, JNU M.Phil/Ph.D–2015

(A) ङीप् (B) ङीष्

(C) ङीन् (D) ऊङ्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-6), पेज–85-86*

297. 'पार्वती' पदे स्त्रीप्रत्ययः अस्ति–

MP वर्ग-2 (TGT)–2011, UK TET–2011

(A) टाप् (B) ङीप्

(C) ङीष् (D) अज्ञात

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-6), पेज–114*

298. (i) आचार्यस्य स्त्री– MP वर्ग-I (PGT)–2014

(ii) आचार्यस्य पत्नी AWES TGT–2010

(A) आचार्यानी (B) आचार्या

(C) आचार्याणी (D) आचार्यी

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-6), पेज–55*

299. ''मानुषी'' अत्र प्रकृतिः प्रत्ययश्च स्तः–

MP वर्ग-I (PGT)–2012

(A) मनुष्य + ङीष् (B) मनुष् + ङीष्

(C) मनुष + ङीप् (D) मनुष्य + ङीन्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-6), पेज–74*

300. 'पारदृश्वन्' इसका स्त्रीलिङ्ग में रूप होता है–

UGC 73–2006

(A) पारदृश्वनी (B) पारदृश्वरी

(C) पारद्रष्ट्री (D) पारदृश्वना

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-6), पेज–88*

301. 'नर्तकी' इस शब्द में स्त्रीप्रत्यय किस सूत्र से हुआ है–

UGC 73 D– 2008

(A) जातित्वात् (B) वयोवाचित्वात्

(C) षित्वात् (D) ङित्वात्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-6), पेज–24*

302. 'तटी' इस शब्द में ङीष् प्रत्यय किससे है–

UGC 73 D–2008

(A) जातिवाचकत्वात् (B) पुंयोगात्

(C) वर्णवाचित्वात् (D) अप्राणिवाचित्वात्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-6), पेज–70*

303. 'गोपस्य स्त्री गोपी' में ङीष् विधायक सूत्र है–

UGC 73 J–2011

(A) क्रीतात्करणपूर्वात् (B) पुंयोगादाख्यायाम्

(C) बहुव्रीहेश्चान्तोदात्तात् (D) बह्वादिभ्यश्च

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-6), पेज–42*

304. 'दामहायनान्ताच्च' इस सूत्र से होता है–

UGC 73 D–2011

(A) ङीप् प्रत्ययः (B) आनङ् आदेश

(C) ङीष् प्रत्ययः (D) लोपः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-6), पेज–91*

305. 'षिद्गौरादिभ्यश्च' इस सूत्र का उदाहरण है–

UGC 73 J–2014

(A) नर्तकी (B) कामुकी

(C) मुक्तकेशी (D) सुरापानी

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-6), पेज–24-25*

306. (i) 'त्रिलोकी' पद में कौन-सा प्रत्यय है–

(ii) 'त्रिलोकी' पदे स्त्रीप्रत्ययः अस्ति

RPSC ग्रेड-III–2013, G GIC–2015

(A) ङीन् (B) टाप्

(C) ङीष् (D) ङीप्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-6), पेज–30*

295. (D) 296. (C) 297. (B) 298. (A) 299. (A) 300. (B) 301. (C) 302. (A) 303. (B) 304. (A) 305. (A) 306. (D)

307. शिक्षक-शब्दः स्त्रीत्वे विवक्षिते 'शिक्षिका' भवति तर्हि नर्तकशब्दः कीदृशो भवति? DSSSB PGT–2014

(A) नर्तिका (B) नर्तनकारिणी
(C) नर्तकी (D) नर्तका

***स्रोत**–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-6), पेज–26*

308. मत्वर्थप्रत्ययः नास्ति– UK SLET–2015

(A) लच् (B) विनि
(C) ऊङ् (D) उरच्

***स्रोत**–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-6), पेज–77*

309. 'युवतिः' इत्यत्र युवन् शब्दात् .... प्रत्ययः भवति– UGC 73 D–2014

(A) तिप् (B) क्तिन्
(C) ति (D) ङीष्

***स्रोत**–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-6), पेज–86*

310. किं पदं ङीष् प्रत्ययान्तम्– HE –2015

(A) नदी (B) गार्गी
(C) नर्तकी (D) त्रिलोकी

***स्रोत**–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-6), पेज–25*

311. 'युवतिः' में प्रत्यय बताइए– BHU MET–2012

(A) ति (B) क्तिन्
(C) ङीप् (D) इनि

***स्रोत**–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-6), पेज–86*

312. 'श्वश्रूः' में हैं– BHU MET–2015

(A) ऊङ् प्रत्यय (B) 'ऊ' प्रत्यय
(C) उवङ् प्रत्यय (D) अव्यय शब्द है

***स्रोत**–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-6), पेज–80*

313. 'आचार्यानी' पदे प्रत्ययः अस्ति– UP GIC–2015

(A) ङीप् (B) ङीन्
(C) क्तिन् (D) ङीष्

***स्रोत**–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-6), पेज–55*

314. ''सपत्नी'' में प्रत्यय है– BHU MET–2015

(A) ङीप् (B) ङीष्
(C) ङीन् (D) कोई नहीं

***स्रोत**–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-6), पेज–95*

315. नर्तकी = ? AWES TGT–2009

(A) नर्तक + ङीप् (B) नर्तक + ङीष्
(C) नर्तक + ङीन् (D) नर्तक + णिनि

***स्रोत**–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-6), पेज–25*

316. 'कुमारी' पद में 'ङीप्' विधायक सूत्र है– UGC 73 J–2015

(A) द्विगोः (B) वयसि प्रथमे
(C) दामहायनान्ताच्च (D) काण्डान्तात् क्षेत्रे

***स्रोत**–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-6), पेज–28*

317. 'सुमुखा शाला' – इत्यत्र स्वाङ्गलक्षणङीष् कथं न– UGC 25 D–2015

(A) अप्राणिस्थत्वात् (B) अमूर्तत्वात्
(C) विकारजत्वात् (D) द्रवत्वात्

***स्रोत**–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-6), पेज–63*

318. 'कुमारी' शब्दे कः स्त्रीप्रत्ययः अस्ति? JNU MET–2015

(A) ङीप् (B) ङीष्
(C) ङीन् (D) ऊङ्

***स्रोत**–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-6), पेज–28*

319. 'शूर्पणखा' पदं केन सूत्रेण सिध्यति– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2010

(A) पूर्वपदात्संज्ञायामगः (B) वोतो गुणवचनात्
(C) वयसि प्रथमे (D) इतो मनुष्यजातेः

***स्रोत**–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-6), पेज–68*

320. 'इषुगमियमां छः' इति सूत्रेण भवति– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2010

(A) उत्वम् (B) छत्वादेशः
(C) एत्वम् (D) क्त्वाप्रत्ययः

***स्रोत**–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–476*

307. (C) **308.** (C) **309.** (C) **310.** (C) **311.** (A) **312.** (A) **313.** (D) **314.** (A) **315.** (B) **316.** (B) **317.** (A) **318.** (A) **319.** (A) **320.** (B)

321. (i) अधोनिर्दिष्टेषु कस्य अन्तिमवर्णः स्त्रीप्रत्ययः नास्ति– UGC 73 J–2008
(ii) नीचे दिये गये शब्दों में से किसमें स्त्रीप्रत्यय नहीं है–
(A) धनी (B) कुमारी
(C) नदी (D) नारी
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (5.2.115) - गोविन्दाचार्य, पेज–1116*

322. कौन-सा प्रत्यय केवल वेदों में प्रयुक्त है– BHU MET–2009
(A) अध्यै (B) तुमुन्
(C) क्त्वा (D) क्त
स्रोत–*वैदिकसूक्तसंग्रह - विजयशंकर पाण्डेय, पेज–परिशिष्ट-15*

323. अधोलिखित शब्दों तथा उनके प्रत्ययों के साथ सुमेलित कीजिए– UP PGT–2013
(अ) शिक्षकः 1. शानच्
(ब) अजा 2. वुन्
(स) बुद्धिमान् 3. टाप्
(द) याचमानः 4. मतुप्

	अ	ब	स	द
(A)	1	4	3	2
(B)	2	1	4	3
(C)	4	2	3	1
(D)	2	3	4	1

स्रोत–*(अ) (i) अष्टाध्यायी 4.2.60) - ईश्वरचन्द्र, पेज–481*
(ii) लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-5) - भीमसेन शास्त्री, पेज–90
(ब) अष्टाध्यायी (4.1.4) - ईश्वरचन्द्र, पेज–422
(स) (i) अष्टाध्यायी (5.2.94) - ईश्वरचन्द्र, पेज–595
(ii) रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–104
(द) रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–204

324. 'ज्ञायन्ते' पद में कौन-सा प्रत्यय है? H TET–2014
(A) झ (B) झि
(C) ते (D) इनमें से कोई नहीं
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (3.4.78) - गोविन्दाचार्य, पेज–380*

325. 'आरुरुक्षुः' पद में उ प्रत्यय का विधान करने वाला सूत्र है– H TET–2014
(A) उदितो वा (B) ण्वुल्तृचौ
(C) कुगतिप्रादयः (D) सनाशंसभिक्ष उः
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–824*

326. 'अश्नुते' पद में तिङ्प्रत्यय है– H TET–2014
(A) त (B) झ
(C) तिप् (D) झि
स्रोत–*बृहद्धातुकुसुमाकर - हरेकान्त मिश्र, पेज–497*

327. दिवादिगण की धातुओं से कौन-सा प्रत्यय किया जाता है– H TET–2014
(A) श्नु (B) श्यन्
(C) श्ना (D) श
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–586*

328. 'अब्राह्मी ब्राह्मी भवति इति ब्राह्मीकृत्य' किस प्रत्यय का उदाहरण है? H TET–2014
(A) अकँच् का (B) च्विँ का
(C) अण् का (D) ङीन् का
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–1148*

329. 'लभ्यन्ते' पद में धातु से विशेष प्रत्यय किया गया है? H TET–2014
(A) शप् (B) यक्
(C) श्यन् (D) क्यच्
स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–441*

330. 'दिक्पूर्वपदादसंज्ञायां ञः' इत्यनेन किं विधीयते? UGC 25 D–2015
(A) टच्-प्रत्ययः (B) ञ-प्रत्ययः
(C) पुंवद्भावः (D) एकवद्भावः
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य शर्मा, पेज–927*

331. अधोऽङ्कितयुग्मेभ्यः समीचीना तालिका चेतव्या– UGC 25 D–2015
(A) कृत्यानां कर्तरि वा (i) दण्डिकः
(B) उगितश्च (ii) मम मया वा सेव्यो हरिः
(C) ईच खनः (iii) भवती
(D) अत इनिठनौ (iv) खेयम्

	A	B	C	D
(A)	ii	iii	iv	i
(B)	ii	iv	iii	i
(C)	i	iii	iv	ii
(D)	ii	i	iii	iv

स्रोत–*(अ) (i) अष्टाध्यायी (2.3.71) - ईश्वरचन्द्र, पेज–219*
(ii) संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–229
(ब) लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, भाग-6), पेज–8-9
(द) लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–1116

321. (A) 322. (A) 323. (D) 324. (A) 325. (D) 326. (A) 327. (B) 328. (B) 329. (B) 330. (B) 331. (A)

6. वाच्य-प्रकरण

1. कर्मवाच्य और भाववाच्य में कर्ता में कौन-सी विभक्ति होती है– UP GIC–2009

(A) प्रथमा (B) द्वितीया

(C) तृतीया (D) चतुर्थी

***स्रोत**–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–52*

2. 'प्रधाने नी-हृ-कृष्वहाम्' इति नियमेन कर्मणि प्रयोगो भवति– BHU AET–2011

(A) ग्रामम् अजां वहति (B) ग्रामम् अजाम् उह्यते

(C) ग्रामम् अजा उह्यते (D) ग्रामः अजा उह्यते

***स्रोत**–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–188-189*

3. गौणे कर्मणि दुह्यादेरिति नियमेन शुद्धमस्ति– BHU AET–2011

(A) सुधा क्षीरनिधिं मथ्यते (B) सुधां क्षीरनिधिर्मथ्यते

(C) सुधां क्षीरनिधि मथ्यते (D) सुधायै क्षीरनिधिं मथ्यते

***स्रोत**–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–188-189*

4. कर्म के उक्त होने पर कर्ता में कौन विभक्ति होगी– UP TGT–2013

(A) प्रथमा (B) द्वितीया

(C) सम्बोधन (D) तृतीया

***स्रोत**–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–194*

5. 'शोभा वेदपाठं करोति' इत्यस्य वाच्यपरिवर्तनमेवं भवति– G GIC–2015

(A) शोभा वेदपाठं क्रियते

(B) शोभया वेदपाठः क्रियते

(C) शोभया वेदपाठं करोति

(D) शोभया वेदपाठ कृणुते

***स्रोत**–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–54-55*

6. 'अहं तव गृहं विचेष्यामि' का कर्मवाच्य में रूपान्तरण होगा– UP PGT–2004, 2010

(A) मया तव गृहं विचेष्ये (B) मया तव गृहं विचेतास्मि

(C) मया तव गृहं विचेताहे (D) मया तव गृहं विचेष्यते

***स्रोत**–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–52-53*

7. 'भवन्तः कुत्र भविष्यन्ति' का भाववाच्य में रूपान्तरण होगा– UP PGT–2004, 2010

(A) भवद्भिः कुत्र भवितारः (B) भवद्भिः कुत्र भविष्ये

(C) भवद्भिः कुत्र भविष्यते (D) भवता कुत्र भविता

***स्रोत**–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–53*

8. 'माता पुत्रं प्रीणाति' का कर्मवाच्य होगा– UP PGT–2010

(A) मात्रा पुत्रं प्रीव्यते (B) मात्रा पुत्रः प्रीयते

(C) मात्रा पुत्रः प्रीणायते (D) मात्रा पुत्रः प्रीणीयते

***स्रोत**–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–55*

9. 'छात्राः चतुरः श्लोकान् पठितवन्तः' इति वाक्यस्य कर्मवाच्ये प्रयोगः अस्ति– BHU RET–2012

(A) छात्रैः चतुरः श्लोकाः पठिताः

(B) छात्रैः चत्वारः श्लोकाः पठिताः

(C) छात्राः चत्वारः श्लोकाः पठिताः

(D) छात्रैः चत्वारः श्लोकान् पठिताः

***स्रोत**–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–62-63*

10. कर्तृवाच्य में कर्म कौन-सी विभक्ति में आता है– UP TGT–2004

(A) प्रथमा (B) द्वितीया

(C) तृतीया (D) चतुर्थी

***स्रोत**–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–52*

1. (C)	2. (C)	3. (A)	4. (D)	5. (B)	6. (D)	7. (C)	8. (B)	9. (B)	10. (B)

11. 'रामः पुस्तकानि पठति' में वाच्यपरिवर्तन करने पर वाक्य होगा– UP TGT–2004

(A) रामेण पुस्तकं पठ्यन्ते

(B) रामेण पुस्तकं पठ्यते

(C) रामेण पुस्तकानि पठ्यन्ते

(D) रामेण पुस्तकानि पठ्यते

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–53*

12. 'गुरुः छात्रेण सह विद्यालयं गच्छति' का कर्मवाच्य होगा– UP TGT–2005

(A) गुरुणा सह छात्र विद्यालयं गच्छति

(B) गुरु छात्रेण सह विद्यालयं गच्छति

(C) गुरुणा छात्रेण सह विद्यालयं गम्यते

(D) गुरुणा छात्रेण सह विद्यालयः गम्यते

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–53*

13. 'सः ग्रामे निवसति' में क्रियापद को लङ्लकार में परिवर्तित करने पर वाक्य बनेगा– UP TGT–2005

(A) सः ग्रामे अनिवसत् (B) सः ग्रामे अनिवसति

(C) सः ग्रामे न्यवसत् (D) सः ग्रामे न्यवसति

14. 'रामः अश्वं ग्रामं नयति' इसका कर्मवाच्य होगा– UP TGT–2005

(A) रामः अश्वं नीयते

(B) रामेण अश्वः ग्रामं नयते

(C) रामेण ग्रामः अश्वं नयते

(D) रामेण अश्वः ग्रामं नीयते

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–188-189*

15. 'भवान् वपति' का भाववाच्य होगा– UP TGT–2010

(A) त्वया वायते (B) त्वया वयते

(C) भवता वप्यते (D) भवता उप्यते

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–52-53*

16. कर्तृवाच्ये क्रिया भवति– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011

(A) कर्तानुसारिणी (B) कर्मानुसारिणी

(C) विशेषानुसारिणी (D) कारकानुसारिणी

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–52*

17. ''भवान् नित्यं वेदं पठेत्''– इत्यस्य कर्मवाच्यमस्ति– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011

(A) भवता नित्यं वेदं पठनीयम्

(B) भवता नित्यं वेदः पठनीयः

(C) भवता नित्यं वेदं पठनीयः

(D) भवता नित्यं वेदः पठनीयम्

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–78-79*

18. 'रामः पुस्तकं पठति' कर्मवाच्य क्या होगा? UP TGT–2009

(A) रामेण पुस्तकं पठेत् (B) रामेण पुस्तकं पठितानि

(C) रामेण पुस्तके पठ्यते (D) रामेण पुस्तकं पठ्यते

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–52-53*

19. 'त्वं चन्द्रं पश्य' इसका कर्मवाच्य में रूप होगा– UP TGT–2004

(A) तेन चन्द्रः दृष्टः (B) त्वयि चन्द्रं पश्यति

(C) त्वया चन्द्रः पश्यामि (D) त्वया चन्द्रः दृश्यताम्

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–54-55*

20. 'छात्रः उपविशति' है– UP TET–2013

(A) कर्तृवाच्य (B) कर्मवाच्य

(C) भाववाच्य (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–52*

21. 'वयं पाठयितुं विद्यालयं गच्छामः' इत्यस्य कर्मवाच्यं किम् अस्ति? UK TET–2011

(A) वयं पाठयितुं विद्यालयं गम्यते

(B) अस्माभिः पाठयितुं विद्यालयः गम्यते

(C) वयं पाठयितुं विद्यालयः गम्यते

(D) अस्माभिः पाठयितुं विद्यालयं गम्यते

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–52-53*

11. (C) **12.** (D) **13.** (C) **14.** (D) **15.** (D) **16.** (A) **17.** (B) **18.** (D) **19.** (D) **20.** (A) **21.** (B)

22. 'राधा पत्रं लेखिष्यति' इत्यस्य वाच्यपरिवर्तने लेख्यं भवति– DL–2015

(A) पत्रे राधा लिखिष्यति (B) राधया पत्रं लेखिष्यते

(C) पत्रेण राधया लिखिष्यते (D) राधायाः पत्रं लिखिष्यते

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–53*

23. वाच्य-परिवर्तनं कुरुत– 'मया पाठः पठ्यते' AWES TGT–2010

(A) मां पाठं पाठयामि (B) अहं पाठं पठामि

(C) मम पाठं पठामि (D) अहं पाठं पठिष्येमे

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–52-53*

24. 'पुष्पा स्वलेखन्या पत्रं लिखति' वाक्य का वाच्य परिवर्तन होगा– UP PGT–2013

(A) पुष्पा स्वलेखनीं पत्रं लिखति

(B) पुष्पया स्वलेखन्या पत्रं लिख्यते

(C) पुष्पया स्वलेखन्या पत्रेण लिख्यते

(D) पत्रेण पुष्पा स्वलेखन्या लिख्यते

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–53*

25. 'अहं त्वां पश्यामि' इति कर्मणिप्रयोगः स्यात्? BHU RET–2012

(A) अहं त्वं दृश्यसे (B) मया त्वं दृश्यसे

(C) अहं त्वां दृश्यसे (D) मया त्वं दृश्ये

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–52-53*

26. कर्मवाच्य सम्भव है– UP PGT–2005

(A) सकर्मक-अकर्मक में (B) केवल सकर्मक में

(C) केवल अकर्मक में (D) उपर्युक्त सभी में

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–52*

27. बालाभ्यां पाठः – CVVET–2015

(A) पठ्यते (B) पठ्येते

(C) पठतः (D) पठति

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–54-55*

28. कर्मवाच्य के कर्ता में कौन-सी विभक्ति होती है– UP PGT–2010

(A) प्रथमा (B) द्वितीया

(C) तृतीया (D) इनमें से सभी

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–52*

29. जिस क्रिया का वाच्य कर्म है, उसे कहते हैं– UP TGT–2004

(A) कर्तृवाच्य (B) कर्मवाच्य

(C) भाववाच्य (D) तीनों वाच्य

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–52*

30. कर्मवाच्ये कर्म भवति– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011, UP TGT–2013

(A) तृतीयाविभक्तौ (B) द्वितीयाविभक्तौ

(C) प्रथमाविभक्तौ (D) सप्तमीविभक्तौ

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–52*

31. किस वाच्य में क्रिया कर्म के अनुसार चलती है– UP TET–2013

(A) कर्तृवाच्य (B) भाववाच्य

(C) कर्मवाच्य (D) तीनों में

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–52*

32. 'रामेण बाणेन हतो बाली' इस वाक्य का कर्तृवाच्य रूप है– UP PGT–2000

(A) रामः बाणेन बालीं हतवान् (B) रामेण बाणेन बालीं हतः

(C) रामः बाणेन बाली हतवान् (D) रामेण बाणेन बालि हतवान्

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–195*

33. 'बालकेन ग्रन्थः दृश्यते' प्रयोग है– UP PGT–2002

(A) कर्तृवाच्य का

(B) कर्मवाच्य का

(C) भाववाच्य का

(D) उपर्युक्त में से किसी का भी नहीं

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–52*

22. (B) 23. (B) 24. (B) 25. (B) 26. (B) 27. (A) 28. (C) 29. (B) 30. (C) 31. (C) 32. (A) 33. (B)

34. 'तेन पाठः पठ्यते' प्रयोग है– UP PGT–2004

(A) कर्तृवाच्य का (B) कर्मवाच्य का

(C) भाववाच्य का (D) उपर्युक्त में से किसी का भी नहीं

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–53*

35. 'सः गच्छति' वाक्यस्यास्य वाच्यपरिवर्तनं कुरुत– REET–2016

(A) सः गम्यते (B) सा गच्छति

(C) तेन गम्यते (D) मया गम्यते

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–52*

36. निम्नलिखित में शुद्ध वाक्य है– UP PGT–2005

(A) मया चन्द्रः पश्यति (B) मया चन्द्रः पश्यते

(C) मया चन्द्रः दृश्यते (D) मया चन्द्रः पश्यामि

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–53*

37. ''नारीभिः आभूषणानि धार्यन्ते'' में वाच्यपरिवर्तन होगा– UP TGT–2004

(A) नारी भूषणानि धारयति

(B) नारी आभूषणानि धारयन्ति

(C) नार्याः आभूषणानि धारयन्ति

(D) नार्यः आभूषणानि धारयन्ति

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–52-53*

38. 'रामः गच्छति' का कर्मवाच्य होगा– UP TGT–2010

(A) रामः गम्यते (B) रामेण गच्छति

(C) रामेण गम्यते (D) रामः गमयति

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–54*

39. अधोलिखितवाक्यस्य वाच्यपरिवर्तनं कुरुत– 'अहं ग्रामं गच्छामि।' REET–2016

(A) मया ग्रामं गम्यते (B) मया ग्रामः गम्यते

(C) मया ग्रामे गम्यते (D) मया ग्रामं गच्छामि

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–52*

40. 'या आनन्दानुभूतिः विधीयते' इति वाक्ये किं वाच्यम्– C-TET–2011

(A) भाववाच्यम् (B) कर्तृवाच्यम्

(C) कर्मवाच्यम् (D) नैतेषु किमपि

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–54*

41. 'मयापि स्वविक्रमः दर्शितः'– अस्य वाक्यस्य कर्तृवाच्ये वाक्यं भविष्यति– UK TET–2011

(A) मयापि स्वविक्रमं ददर्श

(B) अहमपि स्वविक्रमम् अपश्यम्

(C) अहमपि स्वविक्रमम् अद्राक्षम्

(D) अहमपि स्वविक्रमम् अदर्शयम्

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–63*

42. 'ते देवान् यजन्ति' वाक्य का कर्मवाच्य में परिवर्तित रूप है? H-TET–2014

(A) तै देवान् यज्यते

(B) तैर्देवा इज्यन्ते

(C) तैः देवाः यज्यन्ते

(D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–54-55*

43. निम्नलिखित में कौन-सा कर्मवाच्य है– UP PGT (H)–2000

(A) सः गृहं गतवान् (B) तेन गृहं गतम्

(C) सः गृहः अगच्छत् (D) तेन गृहं गतानि

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–66*

44. भाववाच्य के लिये निम्नलिखित में क्या सही नहीं है– UP TGT–2015

(A) भाववाच्य तभी जब क्रिया अकर्मक हो

(B) कर्ता तृतीयान्त होता है

(C) क्रिया केवल प्रथमपुरुष एकवचन में प्रयुक्त होती है

(D) भाववाच्य में क्रिया कर्ता के वचन के अनुसार होती है।

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–52*

45. भाववाच्यात्मक-क्रियापदस्य उदाहरणमस्ति– C-TET–2011

(A) नृत्यं करोति (B) हस्यते

(C) भोजनं खादति (D) लेखं लिखति

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–52*

34. (B) 35. (C) 36. (C) 37. (D) 38. (C) 39. (B) 40. (C) 41. (D) 42. (B) 43. (B) 44. (D) 45. (B)

46. 'बालकैः हस्यते' वाक्य में वाच्यपरिवर्तन होगा–

UP TET–2016

(A) बालकाः हसन्ति (B) बालिका हसति

(C) बालकः हसति (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–52-53*

47. 'छात्रेण उपविश्यते' में प्रयोग है– UP PGT–2002

(A) कर्तृवाच्य (B) कर्मवाच्य

(C) भाववाच्य (D) उपर्युक्त में से किसी का भी नहीं

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–52-53*

48. 'तया भूयते' का कर्तृवाच्य प्रयोग है– UP PGT–2005

(A) सा भवति (B) सः भवति

(C) सः भविष्यति (D) तेन भविष्यति

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–52-53*

49. 'तेन सुप्यते' किस वाच्य का वाक्य है–

UP TGT–2010

(A) कर्तृवाच्य (B) कर्मवाच्य

(C) भाववाच्य (D) इनमें से तीनों

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–53*

50. 'रामः गच्छति' का भाववाच्य होगा–

UP TET–2013

(A) रामः गम्यते (B) रामेण गच्छति

(C) रामः गमयति (D) रामेण गम्यते

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–52-53*

51. अधोलिखितवाक्येषु भाववाच्यस्य वाक्यं किम् अस्ति–

UK TET–2011

(A) अध्यापकैः अध्यापनाय विद्यालयः गम्यते

(B) छात्रेण भ्रमणाय नवदिल्ली गम्यते

(C) सर्वैः ध्यातव्यम्

(D) बालकाः ध्यानं कुर्वन्ति

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–78-79*

52. ''दुग्धं प्रकृत्या मधुरम्'' इत्यस्य कः प्रकृतानुवादः–

BHU Sh.ET–2008

(A) दुग्ध अच्छा है। (B) दुग्ध स्वभाव से मधुर है।

(C) दुग्ध मधुर है। (D) दुग्ध मधुर होता है।

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–195*

46. (A) **47.** (C) **48.** (A) **49.** (C) **50.** (D) **51.** (C) **52.** (B)

7. शब्दरूप-प्रकरण

1. **'राम' शब्द का षष्ठी बहुवचन का रूप है? UP TGT–2004**
   (A) रामस्य (B) रामयोः
   (C) रामाणाम् (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–01*

2. **'राम'-शब्दस्य रूपेषु 'रामाभ्याम्' इति रूपस्य आवृत्तिः कति वारं भवति? MP वर्ग-I PGT–2012**
   (A) द्विवारम् (B) त्रिवारम्
   (C) चतुर्वारम् (D) पञ्चवारम्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–01*

3. **'राम' शब्द तृतीया द्विवचन का रूप है? UP TGT (H)–2005**
   (A) रामाभ्याम् (B) रामान्
   (C) रामैः (D) रामेभ्यः

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–01*

4. **'राम' शब्द षष्ठी एकवचन है? UP TGT (H)–2009**
   (A) रामौ (B) रामस्य
   (C) रामे (B) रामेषु

स्रोत–*(i) रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–01*
(ii) रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–123

5. **'बालक' शब्द का द्वितीया बहुवचन का रूप है? UP TGT–2003**
   (A) बालकम् (B) बालकाः
   (C) बालकौ (D) बालकान्

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–70*

6. **'बालक' शब्द का षष्ठी बहुवचन का रूप होगा? UP TGT–2005**
   (A) बालकान् (B) बालकानाम्
   (C) बालकेन (D) बालकेभ्यः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–70*

7. **'बालक' शब्द का चतुर्थी एकवचन का रूप है? UP TGT–2009**
   (A) बालकेभ्यः (B) बालकाय
   (C) बालकाभ्याम् (D) बालकात्

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–70*

8. **बालक-शब्दस्य षष्ठीविभक्तेः द्विवचनस्य रूपं लिखत– BHU BEd–2013**
   (A) बालकयोः (B) बालकाः
   (C) बालकस्य (D) बालकेन

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–70*

9. **'अस्मिन् उद्याने .... बालकाः क्रीडन्ति।' रिक्तस्थान में उचित शब्द होगा– RPSC ग्रेड-III–2013**
   (A) तिस्रः (B) त्रीणि
   (C) त्रयः (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–136*

10. **'कृष्ण' का षष्ठी द्विवचन में रूप बनेगा? C-TET–2011, UP PGT–2010**
    (A) कृष्णस्य (B) कृष्णौ
    (C) कृष्णानाम् (D) कृष्णयोः

स्रोत–*रूपचन्द्रिका (रामवत्) - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–01*

11. **'देव'–शब्दस्य चतुर्थीविभक्तेः एकवचनं लिखत– BHU BEd–2014**
    (A) देवम् (B) देवेन
    (C) देवाय (D) देवस्य

स्रोत–*रूपचन्द्रिका (रामवत्) - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–01*

12. **अकारान्त पुँल्लिङ्ग 'प्रथम' शब्द का तृतीयाविभक्ति बहुवचन में क्या रूप होता है? UP TGT–2013**
    (A) प्रथमे (B) प्रथमेन
    (C) प्रथमैः (D) प्रथमौ

स्रोत–*रूपचन्द्रिका (रामवत्) - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–05*

1. (C) **2.** (B) **3.** (A) **4.** (B) **5.** (D) **6.** (B) **7.** (B) **8.** (A) **9.** (C) **10.** (D) **11.** (C) **12.** (C)

13. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द सदा बहुवचन में प्रयोग होता है– UP PCS–2013

(A) शिशु (B) भक्ति

(C) पुस्तक (D) प्राण

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–40*

14. अधोलिखितेषु 'हरि'–शब्दस्य पञ्चमीविभक्तेः रूपं नास्ति– RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014

(A) हरेः (B) हरिभ्याम्

(C) हरिभ्यः (D) हरये

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–09*

15. 'हरि' शब्द तृतीया विभक्ति एकवचन में रूप होगा– RPSC ग्रेड-III–2013

(A) हरेण (B) हरिणा

(C) हरीणा (D) हारेण

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–09*

16. 'द्यो' शब्दस्य द्वितीयान्तम्– CVVET–2015

(A) द्यावम् (B) द्याम्

(C) दिवम् (D) द्योम्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–30*

17. 'मुनि' शब्द का षष्ठी विभक्ति एकवचन का रूप है– UP PGT(H)–2009

(A) मुनये (B) मुनेः

(C) मुनौ (D) मुन्यौः

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–09*

18. 'सखि' शब्द का द्वितीया एकवचन में रूप होगा– UP TGT–1999

(A) सखिम् (B) सखीन्

(C) सखी (D) सखायम्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–09*

19. 'सखि' शब्द का प्रथमा बहुवचन का रूप है– UP TGT–2001

(A) सखा (B) सखायौ

(C) सखायः (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–09*

20. 'सखि' शब्दस्य प्रथमा-विभक्तौ एकवचने रूपम् अस्ति– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011

(A) सखिः (B) सखी

(C) सखा (D) सखि

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–09*

21. 'मुनि' शब्द पुँल्लिङ्ग द्वितीया बहुवचन का रूप है– RPSC ग्रेड-III–2013

(A) मुनिम् (B) मुनयः

(C) मुनीन् (D) मुनेः

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–8-9*

22. 'कवि' शब्द का पञ्चमी एकवचन का रूप है– UP TGT–2003

(A) कवेः (B) कविभ्याम्

(C) कविभ्यः (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–73*

23. तृतीया विभक्ति में 'कवि' शब्द का सही रूप होगा– UP TGT–2004 निरस्त

(A) कविना (B) कवये

(C) कवयः (D) कवौ

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–73*

24. 'कवि' शब्द के चतुर्थी एकवचन में होता है? UP PGT–2010

(A) कवयः (B) कविना

(C) कवये (D) कवौ

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–73*

13. (D) 14. (D) 15. (B) 16. (B) 17. (B) 18. (D) 19. (C) 20. (C) 21. (C) 22. (A) 23. (A) 24. (C)

25. सखि-शब्दस्य तृतीयैकवचने रूपम्– CVVET–2015

(A) सख्या (B) सखिना
(C) सखेन (D) सखायेन

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–74*

26. कवि-शब्दस्य सप्तमी-एकवचने रूपं भवति– MP वर्ग-I (PGT)–2012

(A) कवे (B) कवये
(C) कव्याम् (D) कवौ

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–73*

27. 'पति' शब्द का चतुर्थी विभक्ति में रूप होगा? UP TGT–2004

(A) पत्या (B) पत्ये
(C) पत्युः (D) पत्योः

स्रोत–*(i) संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–73*
(ii) रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–10

28. 'पति' शब्द का सप्तमी एकवचन का रूप होगा? UP TGT–2005

(A) पतीन् (B) पत्ये
(C) पत्युः (D) पत्यौ

स्रोत–*(i) संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–74*
(ii) रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–10

29. (i) 'पत्यौ' पदमस्ति–
(ii) 'पत्यौ' में कौन-सी विभक्ति है?
UP TGT–2009, RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014

(A) प्रथमा विभक्ति (B) द्वितीया विभक्ति
(C) तृतीया विभक्ति (D) सप्तमी विभक्ति

स्रोत–*(i) संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–74-75*
(ii) रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–10

30. 'भूपति' शब्द का षष्ठी एकवचन का रूप है? UP TGT–2001

(A) भूपत्याः (B) भूपत्युः
(C) भूपतेः (D) भूपतयः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–74*

31. निम्नलिखित में कौन शब्द शुद्ध है? UP TGT–2013

(A) भुपत्युः (B) भूपतेः
(C) भूपत्यै (D) भूपत्या

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–74*

32. 'द्वि' शब्द के रूप किन वचनों में हो सकते हैं? UP TGT–2004

(A) द्विवचन में (B) एकवचन में
(C) बहुवचन में (D) उपर्युक्त तीनों वचनों में

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–162*

33. 'द्वि' शब्द के रूप किस लिङ्ग में होंगे? UP TGT–2004

(A) पुँल्लिङ्ग में (B) स्त्रीलिङ्ग में
(C) नपुंसकलिङ्ग में (D) उपर्युक्त तीनों लिङ्गों में

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–162*

34. श्रीपति-शब्दस्य षष्ठीविभक्तौ रूपम्– CVVET–2015

(A) श्रीपतेः (B) श्रीपत्युः
(C) श्रीपतयः (D) श्रीपत्याः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–74*

35. सप्तमी विभक्ति में 'गुरु' का सही रूप होगा? UP TGT–2005

(A) गुरवे (B) गुरौ
(C) गुरुणा (D) गुरोः

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–124*

36. 'गुरु' शब्दस्य चतुर्थी-विभक्तेः एकवचनस्य रूपं भवति– BHU B.Ed–2012

(A) गुरुणा (B) गुरुम्
(C) गुरोः (D) गुरवे

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–124*

37. 'गुरु' शब्दस्य द्वितीयाद्विवचने रूपं भवति– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2014

(A) गुरू (B) गुरुभ्याम्
(C) गुर्वोः (D) गुरुभ्यः

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–124*

25. (A) **26.** (D) **27.** (B) **28.** (D) **29.** (D) **30.** (C) **31.** (B) **32.** (A) **33.** (D) **34.** (A) **35.** (B) **36.** (D) **37.** (A)

38. 'साधु' शब्द का सप्तमी एकवचन का रूप है? UP TGT–2004

(A) साधौ (B) साधुषु
(C) साधुना (D) साधुभिः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–76*

39. पञ्चमी विभक्ति में 'भानु' का सही रूप होगा? UP TGT–2003

(A) भानवे (B) भानोभ्याम्
(C) भानुना (D) भानोः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–77*

40. 'भानुना' में विभक्ति है– UP TET–2013

(A) द्वितीया (B) तृतीया
(C) चतुर्थी (D) पञ्चमी

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–76*

41. 'शम्भु' शब्द का चतुर्थी विभक्ति एकवचन का क्या रूप होता है? UP TGT–2013

(A) शम्भवाय (B) शम्भवायै
(C) शम्भवे (D) शम्भव्या

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–15*

42. 'वायु' शब्दस्य चतुर्थी-एकवचने किं रूपम्? BHU Sh.ET–2013

(A) वायुने (B) वायवे
(C) वायवाय (D) वायोः

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–15*

43. 'रै' इस ऐकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्द का प्रथमा विभक्ति एकवचन का रूप है– H-TET–2014

(A) राः (B) रैः
(C) रायः (D) राया

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–21*

44. 'युवन्' शब्द का षष्ठी विभक्ति एकवचन का रूप है– UP TGT–2004

(A) यूनः (B) यूनि
(C) यूनोः (D) यूनाम्

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–103*

45. 'युवन्' शब्द का प्रथमा बहुवचन में क्या रूप होता है? UP TGT–2013

(A) युवानः (B) युवानम्
(C) युवा (D) यूनः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–103*

46. 'राजन्' शब्द का सप्तमी एकवचन का रूप होगा? UP TGT–2010

(A) राजि (B) राज्ञि
(C) राज्ञि एवं राजनि (D) राजनि

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–102*

47. (i) 'राजन्'-शब्दस्य तृतीयायाः एकवचने किं रूपं भवति?
(ii) 'राजन्' इत्यस्य तृतीयैकवचने रूपं भवति– UK TET–2011, DL–2015

(A) राजेन (B) राजः
(C) राज्ञे (D) राज्ञा

स्रोत–*(i) रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–47*
(ii) संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–102

48. 'राजन्' इत्येतत् शब्दरूपमधिकृत्य सत्यकथनं न अस्ति– UK SLET–2015

(A) अस्मिन् शब्दे 'ज्' इत्यस्यानन्तरं वर्तमानः 'अ' इत्ययं ध्वनिः उपधासञ्ज्ञः अस्ति।
(B) अस्मिन् शब्दे 'राज्' इत्यस्मादनन्तरं 'अन्' इत्ययमंशः 'टि' संज्ञकः अस्ति।
(C) 'राजन्' इत्येतच्छब्दरूपं प्रातिपदिकसञ्ज्ञम् अस्ति।
(D) 'राजन्' इत्येतच्छब्दरूपं पदसञ्ज्ञम् अस्ति।

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–102*

49. .... नामानि वदत। AWES TGT–2013

(A) राज्ञः (B) राज्ञौ
(C) राज्ञे (D) राजस्य

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–102*

38. (A) **39.** (D) **40.** (B) **41.** (C) **42.** (B) **43.** (A) **44.** (A) **45.** (A) **46.** (C) **47.** (D) **48.** (D) **49.** (A)

50. शब्दरूपेषु 'आत्मनः' पदमस्ति–

RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014

(A) प्रथमा-एकवचनस्य (B) पञ्चमी-एकवचनस्य

(C) प्रथमाबहुवचनस्य (D) षष्ठीद्विवचनस्य

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–49*

51. 'आत्मन्' शब्दस्य षष्ठी-विभक्तौ द्विवचने रूपम् अस्ति–

RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011

(A) आत्मनोः (B) आत्मस्योः

(C) आत्मयोः (D) आत्मायोः

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–49*

52. आत्मन्-शब्दस्य षष्ठी-बहुवचने रूपं भवति–

MP वर्ग-I (PGT)–2012

(A) आत्मानाम् (B) आत्मनाम्

(C) आत्माम् (D) आत्माणाम्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–49*

53. 'करिन्' प्रातिपदिकस्य सप्तम्येकवचनं रूपमस्ति–

UP GIC–2015

(A) करिणौ (B) करीणाम्

(C) करिणि (D) करिणोः

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–48*

54. 'गुणिने' किस विभक्ति का रूप है? UP TGT–2004

(A) तृतीया (B) द्वितीया

(C) पञ्चमी (D) चतुर्थी

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–106*

55. 'विद्वस्' शब्द का सप्तमी बहुवचन का रूप है?

UP TGT–2004

(A) विद्वत्सु (B) विदुषाम्

(C) विदुषोः (D) विदुषि

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–71*

56. 'विद्वस्' शब्द षष्ठी बहुवचन का रूप है–

RPSC ग्रेड-III–2013

(A) विदुसाम् (B) विद्वत्सु

(C) विदुषाम् (D) विदुषः

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–71*

57. 'विद्वस्' शब्द की तृतीया विभक्ति एकवचन का रूप है? H-TET–2014

(A) विदुषः (B) विद्वद्भिः

(C) विदुषे (D) विदुषा

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–115*

58. 'विद्वस्' शब्दस्य पुँल्लिङ्गे षष्ठी-विभक्तौ रूपाणि–

GGIC–2015

(A) विदुषस्य विदुषोः विदुषाम्

(B) विदुषः विदुषोः विदुषाम्

(C) विदुषः विदुषयोः विदुषाणाम्

(D) विदुषस्य विदुषयोः विदुषाणाम्

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–115*

59. मम गृहे..................आगच्छन्ति। AWES TGT–2013

(A) विद्वान् (B) विदुषः

(C) विद्वांसः (D) विद्वद्भिः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–115*

60. 'भूभृत्'-शब्दस्य द्वितीया-बहुवचनमस्ति–

RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014

(A) भूभृताः (B) भूभृतान्

(C) भूभृतः (D) भूभृते

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–96*

61. 'भूभृत्' शब्दस्य षष्ठीविभक्तिबहुवचनस्य रूपं किम्?

RPSC ग्रेड-I (PGT)–2014

(A) भूभृताम् (B) भूभृतानाम्

(C) भूभृणाम् (D) भूभृत्सु

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–96*

50. (B) **51.** (A) **52.** (B) **53.** (C) **54.** (D) **55.** (A) **56.** (C) **57.** (D) **58.** (B) **59.** (C) **60.** (C) **61.** (A)

62. 'भूभृत्'–शब्दस्य प्रथमा-विभक्तौ बहुवचने रूपं अस्ति– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011

(A) भूभृताः (B) भूभृदाः
(C) भूभृतः (D) भूभृद्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–96*

63. 'वणिज्'-शब्दस्य सप्तमीविभक्तौ-बहुवचने रूपम् अस्ति– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011

(A) वणिजसु (B) वणिक्षु
(C) वणिस्सु (D) वणिजषु

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–94*

64. 'सुधियम्' किस विभक्ति का रूप है? UP TGT–2003, 2004

(A) द्वितीया (B) चतुर्थी
(C) पञ्चमी (D) सप्तमी

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–75*

65. 'महीभुजे' में कौन-सी विभक्ति है? UP TGT–2009

(A) प्रथमा (B) चतुर्थी
(C) षष्ठी (D) सप्तमी

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–91*

66. 'जलमुच्' शब्द का प्रथमा विभक्ति एकवचन का रूप होगा? UP TGT–2004

(A) जलमुचि (B) जलमुक्/जलमुग्
(C) जलमुचौ (D) जलमुचः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–91*

67. 'विश्वपा' शब्द का सप्तमी एकवचन का रूप है– UP TGT–2001

(A) विश्वपायाम् (B) विश्वपि
(C) विश्वपोः (D) विश्वासु

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–8*

68. पुँल्लिङ्गे 'विश्वपा' शब्दस्य षष्ठीबहुवचने रूपं भवति– BHU AET–2011

(A) विश्वपाम् (B) विश्वपानाम्
(C) विश्वपेषाम् (D) विश्वपः

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–8*

69. 'विश्वपा'–शब्दस्य द्वितीयाबहुवचने रूपमस्ति– DL–2015

(A) विश्वपान् (B) विश्वपः
(C) विश्वपीन् (D) विश्वपाः

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–7*

70. 'अन्विष्यता' इति पदे विभक्तिः अस्ति? C-TET–2011

(A) चतुर्थी (B) तृतीया
(C) प्रथमा (D) द्वितीया

स्रोत–*अष्टाध्यायी (3.3.14) - ईश्वरचन्द्र, पेज–356*

71. निम्नलिखित वर्गों में केवल पुँल्लिङ्ग शब्द किस वर्ग में हैं? UP TGT–1999

(A) सखा, हरिः, दाराः
(B) महिमा, सविता, अञ्जलिः
(C) मधुरम्, फलम्, जलम्
(D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–8*

72. 'सुधी' शब्द के द्वितीया बहुवचन का रूप है– UP TET–2014

(A) सुधीनि (B) सुधीः
(C) सुधियः (D) सुधीनाम्

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–75*

73. 'सुखी' शब्द का तृतीया एकवचन में क्या रूप होता है? UP TGT–2013

(A) सुख्या (B) सुखिना
(C) सुख्यः (D) सुख्युः

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–14*

74. 'गो' शब्द का षष्ठी बहुवचन का रूप होगा? UP TGT–2001

(A) गोनाम् (B) गोवाम्
(C) गवाम् (D) गवानाम्

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–80*

62. (C) **63.** (B) **64.** (A) **65.** (B) **66.** (B) **67.** (B) **68.** (A) **69.** (B) **70.** (B) **71.** (A)
72. (C) **73.** (A) **74.** (C)

75. 'गावः' पदस्य वचनमस्ति– DL–2015

(A) एकवचनम् (B) द्विवचनम्
(C) बहुवचनम् (D) निर्वचनम्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–20*

76. 'स्वयम्भुवि' किस विभक्ति का रूप है? UP TGT–2003

(A) तृतीया (B) चतुर्थी
(C) षष्ठी (D) सप्तमी

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–77*

77. 'प्रध्यम्' किस विभक्ति का रूप है? UP TGT–2005

(A) द्वितीया (B) तृतीया
(C) पञ्चमी (D) सप्तमी

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–12*

78. (i) 'पितृ'–शब्दस्य सप्तमी-एकवचने रूपम् अस्ति
(ii) 'पितृ' शब्द का सप्तमी एकवचन में रूप क्या होगा?
UP TGT–2009, MP वर्ग-1 (PGT)–2012

(A) पितरि (B) पितुः
(C) पित्रे (D) पित्रा

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–78*

79. 'पितुः' पितृ शब्द का कौन-सा रूप है? UP TGT–2010

(A) षष्ठी एकवचन (B) द्वितीया बहुवचन
(C) प्रथमा बहुवचन (D) सप्तमी एकवचन

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–78*

80. 'पितृ'–शब्दस्य द्वितीया-बहुवचनं चिनुत–
RPSC ग्रेड-II (TGT)–2011, 2014

(A) पितरान् (B) पितरीन्
(C) पितृन् (D) पितराः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–77*

81. 'पितृन्' रूप है? UK TET–2011

(A) प्रथमा बहुवचन का (B) द्वितीया बहुवचन का
(C) तृतीया द्विवचन का (D) पञ्चमी बहुवचन का

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–77*

82. 'पितृ' शब्दस्य प्रथमा-विभक्तौ एकवचने रूपम् अस्ति–
RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011

(A) पिता (B) पितृन्
(C) पितरान् (D) पित्रा

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–77*

83. 'पितृ' शब्द के प्रथमा बहुवचन का रूप है? UP TGT (H)–2001

(A) पितृः (B) पितराः
(C) पितरः (D) पितारः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–77*

84. 'स्रष्टा' इत्यत्र कीदृशं पदम्? BHU Sh.ET–2013

(A) आकारान्त (B) उकारान्त
(C) ऋकारान्त (D) अकारान्त

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–52*

85. 'नृ' शब्द के प्रथमा विभक्ति एकवचन का रूप है?
UP PGT–2010, UK TET–2011

(A) नरः (B) ना
(C) नः (D) नृः

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–19*

86. 'पथिन्' शब्द का प्रथमाविभक्ति बहुवचन का रूप है– H-TET–2014

(A) पन्थाः (B) पन्थानम्
(C) पन्थानाः (D) पन्थानः

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–52*

87. 'महिमन्' इस शब्द का पुँल्लिङ्ग प्रथमा विभक्ति एकवचन का रूप है– H-TET–2014

(A) महिमा (B) महिम्नः
(C) महिमानः (D) महिम्ना

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–103*

88. 'महत्' शब्द के सम्बोधन में एकवचन का रूप है– H-TET–2014

(A) हे महान् (B) हे महन्
(C) हे महत् (D) हे महान्तः

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–63*

75. (C)	76. (D)	77. (A)	78. (A)	79. (A)	80. (C)	81. (B)	82. (A)	83. (C)	84. (C)
85. (B)	86. (D)	87. (A)	88. (B)						

89. (i) 'आत्मन्'-शब्दस्य द्वितीयाविभक्तेः बहुवचनस्य रूपं किम्?

(ii) आत्मन्-शब्दरूपस्य द्वितीया विभक्त्यन्तं पदं बहुवचने .... भवति–

AWES TGT–2010, RPSC ग्रेड I (PGT)–2014

(A) आत्मानः (B) आत्मनः

(C) आत्माः (D) आत्मनाः

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–49*

90. 'विद्वस्' शब्दस्य चतुर्थी-एकवचनस्य रूपं वर्तते–

BHU B.Ed–2015

(A) विदुषा (B) विदुषे

(C) विदुषः (D) विदुषि

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–71*

91. एषु मूलतो हलन्तः शब्दः कः? BHU Sh.ET–2013

(A) महिमा (B) सविता

(C) ज्ञानानि (D) वारिणी

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–103*

92. 'बालिका'-प्रातिपदिकस्य द्वितीयायाः द्विवचनरूपमस्ति–

DL–2015

(A) बालिकायाः (B) बालिकाः

(C) बालिके (D) बालिकौ

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–85*

93. 'गरीयस्' शब्दस्य षष्ठी-विभक्तौ-एकवचने रूपम् अस्ति–

RPSC ग्रेड-I (PGT)–2014

(A) गरीयसः (B) गरीयसे

(C) गरीयसा (D) गरियस्

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–116*

94. 'रमा' शब्दस्य सप्तमीविभक्तिबहुवचनस्य रूपम् अस्ति–

UP TGT (H)–2009, RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011

(A) रमासु (B) रमसु

(C) रमेषु (D) रमाषु

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–22*

95. 'रामः रावणं बाणेन हन्ति' में रेखांकित अंश में विभक्ति है– UK TET–2011

(A) द्वितीया (B) तृतीया

(C) चतुर्थी (D) पञ्चमी

स्रोत–*(i) वैयाकरण सिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–242*

(ii) संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका (2.3.18)-बाबूराम सक्सेना, पेज–194

96. 'रमायाः' में विभक्ति वचन है– UP TET–2016

(A) द्वितीया विभक्ति द्विवचन

(B) तृतीया विभक्ति एकवचन

(C) चतुर्थी विभक्ति एकवचन

(D) षष्ठी विभक्ति एकवचन

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–22*

97. 'रमा' शब्दस्य पञ्चमीविभक्तेरेकवचने रूपं भवति–

G-GIC–2015

(A) रमात् (B) रमायाम्

(C) रमयाः (D) रमायाः

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–22*

98. निम्नलिखित में से स्त्रीलिङ्ग तृतीया विभक्ति का रूप कौन-सा है? UP TGT–1999

(A) नद्यः (B) रमया

(C) धेनोः (D) स्त्रियै

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–22*

99. 'लता' शब्द स्त्रीलिङ्ग चतुर्थी एकवचन का रूप क्या है–

RPSC ग्रेड-III–2013

(A) लतया (B) लतायै

(C) लतायाः (D) लताया

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–85*

100. 'लता' शब्द का द्वितीया बहुवचन का रूप है–

RPSC ग्रेड-III–2013

(A) लताः (B) लताम्

(C) लतान् (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–*आधुनिक संस्कृत व्याकरण और रचना-श्यामनन्दन शास्त्री, पेज–43*

89. (B) 90. (B) 91. (A) 92. (C) 93. (A) 94. (A) 95. (B) 96. (D) 97. (D) 98. (B) 99. (B) 100. (A)

101. 'लता'-शब्दस्य रूपेषु 'लते' इति रूपस्य आवृत्तिः कति वारं भवति– MP वर्ग-1 (PGT)–2012

(A) त्रिवारम् (B) चतुर्वारम्

(C) पञ्चवारम् (D) षड्वारम्

स्रोत–*आधुनिक संस्कृत व्याकरण और रचना-श्यामनन्दन शास्त्री, पेज–43*

102. 'लता'-शब्दस्य सप्तमीबहुवचने रूपम् अस्ति? UK TET–2011

(A) लतायाः (B) लतयोः

(C) लतासु (D) लतायै

स्रोत–*आधुनिक संस्कृत व्याकरण और रचना-श्यामनन्दन शास्त्री, पेज–43*

103. पञ्चमी विभक्ति एकवचन में 'लता' शब्द का रूप है? UP TET–2013

(A) लताभिः (B) लतायाम्

(C) लतानाम् (D) लतायाः

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–22*

104. (i) 'मालायाम्' किस विभक्ति का रूप है?

(ii) 'मालायाम्' में विभक्ति है? UP TGT–2004, UP TET–2014

(A) द्वितीया (B) पञ्चमी

(C) सप्तमी (D) षष्ठी

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–22*

105. 'नदी' शब्द का द्वितीया बहुवचन का रूप है? UP TGT–2001, UP TET–2013

(A) नदीः (B) नद्यः

(C) नदीन् (D) नद्या

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–26*

106. (i) 'नदीः' किस विभक्ति का रूप है?

(ii) 'नदीः' इति रूपम् अस्ति? UP TET–2004, MP वर्ग-1 (PGT)–2012

(A) द्वितीया-बहुवचन (B) प्रथमा-एकवचन

(C) प्रथमा-बहुवचन (D) द्वितीया-एकवचन

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–26*

107. 'नद्यां जलम् अस्ति' में रेखाङ्कित अंश में विभक्ति है– MP वर्ग-2 (TGT)–2011, UK TET–2011

(A) चतुर्थी (B) पञ्चमी

(C) षष्ठी (D) सप्तमी

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–86*

108. 'नदी' इति शब्दस्य तृतीयाविभक्तौ एकवचनं किम्? DSSSB TGT–2014

(A) नद्यौ (B) नद्याः

(C) नद्या (D) नदीनाम्

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–86*

109. 'नदी' शब्द से सप्तमी विभक्ति एकवचन में रूप बनेगा– UP TET–2016

(A) नदीम् (B) नद्याः

(C) नद्याम् (D) नदीषु

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–86*

110. (i) मतिशब्दस्य चतुर्थी-विभक्तौ एकवचने रूपं भवति–

(ii) 'मति' शब्द का चतुर्थी एकवचन का रूप है? UP TGT–2010, UP GIC–2015

(A) मत्यै (B) मतये

(C) मत्यै, मतये (D) मत्यै, मतये दोनों नहीं

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–25*

111. 'मति' शब्द के षष्ठी एकवचन का रूप है? UP TGT (H)–2005

(A) मत्या (B) मत्याः

(C) मतयः (D) मतये

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–25*

112. 'मति' शब्दस्य तृतीया एकवचने रूपं भवति? G-GIC–2015

(A) मतिना (B) मत्या

(C) मतेन (D) मतिभिः

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–25*

101. (B) 102. (C) 103. (D) 104. (C) 105. (A) 106. (A) 107. (D) 108. (C) 109. (C) 110. (C) 111. (B) 112. (B)

113. 'मत्याम्' शब्द रूप है? UP PGT (H)–2005
(A) मति शब्द के द्वितीया एकवचन का
(B) मति शब्द के द्वितीया बहुवचन का
(C) मति शब्द के षष्ठी बहुवचन का
(D) मति शब्द के सप्तमी एकवचन का
स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–25*

114. ''शशिनः सह याति कौमुदी।''
अत्र रेखाङ्कितस्य शुद्धपदं भविष्यति– RPSC ग्रेड I (PGT)–2014
(A) शशिनौ (B) शशिने
(C) शशिना (D) शशिनम्
स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.3.19) - ईश्वरचन्द्र, पेज–200*

115. 'श्री' शब्द के द्वितीया बहुवचन का रूप होगा? UP TGT–2010
(A) श्रियः (B) श्रीन्
(C) श्रीः (D) श्रियम्
स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–87*

116. निम्न में कौन शब्द शुद्ध है? UP TGT–2013
(A) कुमार्यः (B) कुमार्या
(C) कुमार्योः (D) उपर्युक्त सभी
स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–27*

117. 'सुश्री' शब्द के पञ्चमी विभक्ति के एकवचन का क्या रूप होता है? UP TGT–2013
(A) सुश्रीः (B) सुश्रियः
(C) सुश्रिये (D) सुश्रियौ
स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–14*

118. 'स्त्री'-शब्दस्य चतुर्थी-विभक्तौ एकवचने रूपम् अस्ति– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011
(A) स्त्रियाय (B) स्त्रियै
(C) स्त्र्याय (D) स्त्रिये
स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–27*

119. 'द्वि' शब्द का स्त्रीलिङ्ग में द्वितीया विभक्ति का द्विवचन का रूप है– RPSC ग्रेड-III–2013
(A) द्वौ (B) द्वे
(C) द्वयी (D) इनमें से कोई नहीं
स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–11*

120. 'धेनवः' किस विभक्ति का रूप है? UP TGT–2004
(A) प्रथमा में (B) तृतीया में
(C) चतुर्थी में (D) षष्ठी में
स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–28*

121. 'धेनु'-शब्दस्य तृतीया-एकवचनमस्ति– RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014
(A) धेनुना (B) धेन्वा
(C) धेन्वै (D) धेनुभिः
स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–28*

122. 'माता' रूप का मूल प्रातिपदिक शब्द– UP TGT–1999
(A) आकारान्त (B) उकारान्त
(C) इकारान्त (D) ऋकारान्त
स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–89*

123. स्त्रीलिङ्ग 'मातृ' शब्द का द्वितीया विभक्ति बहुवचन का रूप है? UP TET–2013
(A) मातुः (B) मातृन्
(C) मातरः (D) मातृः
स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–89*

124. 'मातृ' शब्दस्य तृतीयाविभक्तौ एकवचने रूपं भवति– G-GIC–2015
(A) मातृणा (B) मात्रया
(C) मात्रा (D) मात्रेण
स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–89*

125. निम्नलिखित में से शुद्ध रूप है– RPSC ग्रेड-III–2013
(A) तिसृणा (B) तिसृभिः
(C) तिस्रणा (D) तिसृभ्याम्
स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–136*

113. (D) 114. (C) 115. (A) 116. (D) 117. (B) 118. (B) 119. (B) 120. (A) 121. (B) 122. (D) 123. (D) 124. (C) 125. (B)

126. 'स्वसृ' शब्द के चतुर्थी विभक्ति में दिये गये रूपों में गलत कौन सा है? UP PGT (H)–2013

(A) स्वस्रे (B) स्वसुः
(C) स्वसृभ्याम् (D) स्वसृभ्यः

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–30*

127. 'स्वसृ'–शब्दस्य पञ्चमीविभक्तौ बहुवचने रूपम् अस्ति– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011

(A) स्वसरिभ्यः (B) स्वसाभ्यः
(C) स्वसारभ्यः (D) स्वसृभ्यः

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–30*

128. 'स्वसृ' शब्द का सप्तमी एकवचन का रूप होगा– H-TET–2015

(A) स्वसरे (B) स्वसरि
(C) स्वसरेषु (D) स्वसरौ

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–30*

129. 'अप्' (जल) शब्द के रूप कितने वचनों में चलते हैं? UP TGT–1999

(A) केवल एकवचन (B) केवल द्विवचन
(C) केवल बहुवचन (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–80*

130. 'अप्'-प्रातिपदिकं पदरूपेण नित्यं प्रयुक्तं भवति– DL–2015

(A) द्विवचने (B) अव्ययत्वेन
(C) बहुवचने (D) एकवचने

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–80*

131. 'तत्' शब्द स्त्रीलिङ्ग प्रथमा बहुवचन का रूप है– RPSC ग्रेड-III–2013

(A) ते (B) ताः
(C) तानि (D) ताभिः

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–82*

132. 'दिक्षु' पदस्य मूलशब्दः अस्ति– UK TET–2011

(A) इक्षु (B) दिहक्षु
(C) दिश् (D) दिशा

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–83*

133. 'फलानाम्' किस विभक्ति का रूप है? UP TGT–2003

(A) द्वितीया (B) तृतीया
(C) पञ्चमी (D) षष्ठी

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–81*

134. द्वितीया-विभक्तिः कस्मिन् पदे अस्ति? RPSC ग्रेड-II (TGT)–2010

(A) प्रतिष्ठायाम् (B) प्रतिष्ठाभ्याम्
(C) प्रतिष्ठायाः (D) प्रतिष्ठाम्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–22*

135. 'जगति' शब्दरूपं स्यात्– RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014

(A) पञ्चमी-एकवचनस्य (B) सप्तमी-एकवचनस्य
(C) चतुर्थी-एकवचनस्य (D) षष्ठी-बहुवचनस्य

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–99*

136. जगत्-शब्दस्य द्वितीया बहुवचने रूपमस्ति? RPSC ग्रेड I (PGT)–2014, DSSSB TGT–2014

(A) जगतः (B) जगन्ति
(C) जगन्ती (D) जगतान्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–99*

137. 'जगत्' शब्द का प्रथमा बहुवचन में रूप है। RPSC ग्रेड-III–2013

(A) जगत् (B) जगती
(C) जगतः (D) जगन्ति

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–99*

138. कस्मिन् पदे सप्तमी-विभक्तिः अस्ति? C-TET–2013

(A) ते (B) जगति
(C) विद्यन्ते (D) अश्नुते

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–99*

126. (B)	127. (D)	128. (B)	129. (C)	130. (C)	131. (B)	132. (C)	133. (D)	134. (D)	135. (B)
136. (B)	137. (D)	138. (B)							

139. 'जगत्' शब्द के चतुर्थी एकवचन का रूप है?
UP TGT (H)–2005

(A) जगते (B) जगतः
(C) जगतोः (D) जगद्भ्यः

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–99*

140. एषु को मूलतः अजन्तशब्दः? BHU Sh.ET–2008

(A) मनस् (B) वचस्
(C) निर्जर (D) उच्चैस्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–06*

141. 'मनस्' शब्द का द्वितीया बहुवचन में रूप है–
RPSC ग्रेड-III–2013

(A) मनः (B) मनान्
(C) मनाः (D) मनांसि

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–132*

142. 'मनस्'-शब्दस्य पञ्चम्येकवचने रूपं भवति–
RPSC ग्रेड I (PGT)–2014

(A) मनसि (B) मनसा
(C) मनसः (D) मनः

बृहद् अनुवाद चन्द्रिका/चक्रधर नौटियाल-'हंस' शास्त्री, पेज–68

143. 'द्वारदेशम्' विभक्तिं लिखत– AWES TGT–2010

(A) चतुर्थी (B) सप्तमी
(C) तृतीया (D) द्वितीया

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–71*

144. 'दिवम्' शब्द किस विभक्ति का रूप है?
UP TGT–2004

(A) प्रथमा (B) द्वितीया
(C) तृतीया (D) चतुर्थी

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–78*

145. निम्नलिखित में चतुर्थी विभक्ति एकवचन का कौन-सा रूप है? UP TGT–1999

(A) भानौ (B) राज्ञः
(C) दध्ने (D) हरेः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–82*

146. षष्ठी-विभक्ति में 'दधि' का सही रूप होगा?
UP TGT–2003

(A) दध्नोः (B) दध्नाभ्याम्
(C) दधि (D) दधीनि

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–82*

147. द्वितीया-विभक्ति में 'दधि' का रूप होगा?
UP TGT–2004

(A) दध्नोः (B) दध्ना
(C) दध्नः (D) दधीनि

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–82*

148. वारि-शब्दस्य पञ्चमी-एकवचने रूपमस्ति–
RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014

(A) वारिणात् (B) वार्यात्
(C) वारिणः (D) वारिणोः

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–35*

149. वारि-शब्दस्य सप्तमी-एकवचने रूपं भवति–
MP वर्ग-1 (PGT)–2012, UP TET–2013

(A) वारिणी (B) वारीणि
(C) वारिणि (D) वारिणे

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–35*

150. 'अक्षिषु' किस विभक्ति का रूप है?
UP TGT–2005

(A) सप्तमी (B) द्वितीया
(C) तृतीया (D) चतुर्थी

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–82*

151. 'मधु'-शब्दस्य षष्ठी-विभक्तौ द्विवचने रूपम् अस्ति–
RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011

(A) मध्वोः (B) मधवोः
(C) मध्वौ (D) मधुनोः

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–36*

139. (A) 140. (C) 141. (D) 142. (C) 143. (D) 144. (B) 145. (C) 146. (A) 147. (D) 148. (C) 149. (C) 150. (A) 151. (D)

152. 'मधुनी' किस विभक्ति का रूप है? UP TGT–2004

(A) द्वितीया (B) चतुर्थी
(C) षष्ठी (D) सप्तमी

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–36*

153. उकारान्तप्रकृतिः कस्य? BHU Sh.ET–2013

(A) मधोः (B) प्रापुः
(C) धातुः (D) स्वसुः

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–36-37*

154. 'तत्' शब्द का स्त्रीलिङ्ग षष्ठीबहुवचन का रूप है? UP TGT–2001

(A) तेषाम् (B) तस्याम्
(C) तासाम् (D) ताषाम्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–82*

155. 'तद्' शब्द का पुँल्लिङ्ग द्वितीया बहुवचन का रूप बनता है? UP TGT–2001

(A) तौ (B) तम्
(C) तान् (D) तेषाम्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–58*

156. 'तत्' सर्वनाम शब्द का षष्ठी विभक्ति का रूप है? UP TGT–2004

(A) तेन (B) तस्य
(C) तस्मिन् (D) तस्मै

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–58*

157. 'तस्मै' में विभक्ति है– UP TET–2013

(A) प्रथमा (B) द्वितीया
(C) तृतीया (D) चतुर्थी

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–58*

158. अहं .... नद्यां स्नानं करोमि। AWES TGT–2010, 2013

(A) ताम् (B) तस्याम्
(C) तस्याः (D) ताभ्याम्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–82*

159. निम्नलिखित वर्गों में चतुर्थी विभक्ति के रूप किस वर्ग में है? UP TGT–1999

(A) कः, कौ (B) तम्, तौ
(C) तस्याः, ताभ्याम् (D) तस्यै, ताभ्यः

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–82*

160. सर्वनाम शब्द 'तद्' पुँल्लिङ्ग प्रथमा विभक्ति बहुवचन का रूप होगा– UP TGT–1999

(A) तानि (B) ताः
(C) ते (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–58*

161. तत् के चतुर्थी विभक्ति एकवचन स्त्रीलिङ्ग का रूप है– H-TET–2014

(A) ताभ्यः (B) तस्मै
(C) तस्यै (D) तस्याम्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–82*

162. 'एतद्' शब्द पुँल्लिङ्ग प्रथमा एकवचन का रूप है– RPSC ग्रेड-III–2013

(A) एतम् (B) एषः
(C) एषा (D) एते

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–58*

163. 'सर्व' शब्द का स्त्रीलिङ्ग सप्तमी एकवचन का रूप है? UP TGT–2001

(A) सर्वस्मिन् (B) सर्वस्याम्
(C) सर्वयोः (D) सर्वेषु

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–133*

164. 'सर्वाणां प्रियो हरिः।' रेखाङ्किते शुद्धपदमस्ति– RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014

(A) सर्वानाम् (B) सर्वेभ्यः
(C) सर्वस्मिन् (D) सर्वेषाम्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–02*

152. (A) **153.** (A) **154.** (C) **155.** (C) **156.** (B) **157.** (D) **158.** (B) **159.** (D) **160.** (C) **161.** (C) **162.** (B) **163.** (B) **164.** (D)

165. 'सर्व' के पञ्चमी एकवचन में रूप बनेगा? UP PGT–2010, UK TET–2011

(A) सर्वस्मात् (B) सर्वात्
(C) सर्वस्य (D) सर्वाः

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–02*

166. सर्वस्य रूप है? UP PGT (H)–2004

(A) चतुर्थी का (B) पञ्चमी का
(C) षष्ठी का (D) सप्तमी का

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–02*

167. 'सर्वस्मै' में विभक्ति है– BHU MET–2015

(A) तृतीया (B) चतुर्थी
(C) सप्तमी (D) अव्यय है

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–02*

168. 'सर्वस्यै' में लिङ्ग है– BHU MET–2015

(A) पुँल्लिङ्ग (B) स्त्रीलिङ्ग
(C) नपुंसकलिङ्ग (D) स्त्रीलिङ्ग एवं पुँल्लिङ्ग

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–145*

169. 'किम्' शब्द पुँल्लिङ्ग तृतीया विभक्ति बहुवचन में रूप होगा– RPSC ग्रेड-III–2013

(A) कैः (B) केनैः
(C) केभिः (D) केभ्यः

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–46*

170. पुँल्लिङ्ग 'सर्व' शब्द का प्रथमा विभक्ति बहुवचन में क्या रूप होता है? UP TGT–2013

(A) सर्वाः (B) सर्वे
(C) सर्वौ (D) सर्व

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–02*

171. पुँल्लिङ्ग 'सर्व' शब्दस्य तृतीया एकवचने रूपमस्ति– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2014

(A) सर्वैः (B) सर्वना
(C) सर्वेण (D) सर्वणा

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–02*

172. 'युष्मद्' सर्वनाम शब्द पञ्चमी विभक्ति बहुवचन का रूप होगा– UP TGT–1999

(A) युष्मत् (B) युष्मभ्यम्
(C) युष्माभिः (D) युष्मात्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–59*

173. 'युष्मद्' शब्द का षष्ठी एकवचन का रूप है? UP TGT–2001, RPSC ग्रेड-III–2013

(A) तव (B) त्वत्
(C) युष्मत् (D) युष्माकम्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–59*

174. (i) 'त्वत्' किस सर्वनाम का रूप है? UP TGT–2004
(ii) 'त्वत्' किस शब्द का रूप है? UP TET–2014

(A) तत् (B) इदम्
(C) अस्मद् (D) युष्मद्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–59*

175. 'युष्मद्' शब्द का सप्तमी बहुवचन का रूप होता है? UP TGT–2005

(A) त्वयि (B) युष्मासु
(C) युष्माकम् (D) त्वत्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–59*

176. 'युष्मद्' शब्दस्य षष्ठी-विभक्तौ बहुवचने रूपम् अस्ति– MP वर्ग-2 (TGT)–2011, UK TET–2011

(A) युवयोः (B) युष्माकम्
(C) युषाम् (D) यूवाम्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–59*

177. द्वितीयैकवचने 'युष्मद्'–शब्दस्यादेशो भवति– BHU AET–2011

(A) वाम् (B) नौ
(C) त्वाम् (D) नः

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–59*

165. (A) **166.** (C) **167.** (B) **168.** (B) **169.** (A) **170.** (B) **171.** (C) **172.** (A) **173.** (A) **174.** (D) **175.** (B) **176.** (B) **177.** (C)

178. 'युष्मद्' शब्द का सप्तमी एकवचन का रूप है– RPSC ग्रेड-III–2013

(A) तव (B) तस्याम्
(C) युष्मदि (D) त्वयि

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–59*

179. 'युष्मद्' शब्द के सप्तमी विभक्ति में दिये गये रूपों में गलत कौन-सा है? UP PGT (H)–2013

(A) तव (B) त्वयि
(C) युवयोः (D) युष्मासु

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–59*

180. 'युष्माकं गृहं कुत्र अस्ति' इस वाक्य में सर्वनाम है– UP TET–2013

(A) युष्माकम् (B) गृहम्
(C) कुत्र (D) अस्ति

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–59*

181. 'युष्मद्' शब्द का चतुर्थी बहुवचन रूप है? UP TGT–2010

(A) तुभ्यः (B) वः
(C) युष्मेभ्यः (D) युष्मेभ्यम्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–59*

182. 'अस्मद्' शब्द का चतुर्थी बहुवचन में रूप होगा? UP TGT–2001, 2004

(A) मह्यम् (B) आवाभ्याम्
(C) अस्मत् (D) अस्मभ्यम्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–59*

183. 'मह्यम्' किस सर्वनाम का रूप है? UP TGT–2004

(A) अस्मद् का (B) युष्मद् का
(C) एतद् का (D) अदस् का

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–59*

184. 'अस्मद्' शब्द का द्वितीया बहुवचन का विकल्प रूप होगा? UP TGT–2004

(A) मा (B) नौ
(C) नः (D) माम्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–59*

185. (i) 'अस्मद्' शब्दस्य सप्तम्येकवचने किं रूपं भवति?
(ii) 'अस्मद्' शब्द सप्तमी एकवचन का रूप है? UP TGT–2009, RPSC ग्रेड-I (PGT)–2015

(A) मया (B) मम
(C) मयि (D) माम्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–60*

186. 'अस्मद्' शब्द का स्त्रीलिङ्ग में क्या रूप होगा? UP TGT–2010

(A) अहम् (B) त्वम्
(C) मया (D) इनमें कोई लिङ्ग नहीं होता

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–59*

187. कौन-सा शब्द तीनों लिङ्गों में समान है? BHU Sh.ET–2008

(A) लता (B) विद्वस्
(C) अजा (D) अस्मद्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–59*

188. 'मया' इत्यस्य विभक्तिं वचनं च लिखत– BHU B.Ed–2014

(A) तृतीया-एकवचनम् (B) चतुर्थी-एकवचनम्
(C) द्वितीया-बहुवचनम् (D) षष्ठी-द्विवचनम्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–59*

189. 'अस्मद्'-शब्दस्य प्रथमाविभक्तौ द्विवचने रूपम् अस्ति– MP वर्ग-2 (TGT)–2011, UK TET–2011

(A) वयम् (B) आवाम्
(C) मया (D) अस्मभ्यम्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–59*

190. 'शसो नः' सूत्रेण जातः– RPSC ग्रेड-II (TGT)–2010

(A) अस्माकम् (B) एते
(C) अहम् (D) अस्मान्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (7/1/29) - ईश्वरचन्द्र, पेज–843*

178. (D) **179.** (A) **180.** (A) **181.** (B) **182.** (D) **183.** (A) **184.** (C) **185.** (C) **186.** (D) **187.** (D) **188.** (A) **189.** (B) **190.** (D)

191. 'अस्मद्'-शब्दस्य रूपम् अस्ति– **RPSC ग्रेड-II (TGT)–2010**

(A) मत् (B) आसन्दः
(C) आस्ताम् (D) अपि

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–59*

192. अस्मद्-शब्दस्य रूपेषु 'नः' इति रूपस्य आवृत्तिः कति वारं भवन्ति? **MP वर्ग-1 (PGT)–2012**

(A) द्विवारम् (B) चतुर्वारम्
(C) पञ्चवारम् (D) त्रिवारम्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–59*

193. 'मया' पद किस शब्द का तृतीया एकवचन का रूप है– **UP TET–2014**

(A) युष्मद् (B) अस्मद्
(C) इदम् (D) अदस्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–59*

194. अस्मद् सर्वनाम का षष्ठी-विभक्ति बहुवचन का रूप है? **UP TET–2013**

(A) मम (B) अस्मभ्यम्
(C) अस्माकम् (D) अस्मत्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–60*

195. 'मयि' इति पदे विभक्तिः अस्ति? **C-TET–2012**

(A) तृतीया (B) सप्तमी
(C) पञ्चमी (D) सम्बोधन

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–60*

196. 'नः' पदस्य प्रातिपदिकरूपमस्ति– **DL–2015**

(A) अस्मद् (B) अदस्
(C) तद् (D) युष्मद्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–59*

197. 'अस्मद्' शब्द का पञ्चमी एकवचन में क्या रूप होता है? **UP TGT–2013**

(A) माम् (B) मत्
(C) मम (D) अस्मत्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–60*

198. 'अस्मद्' शब्द के तृतीया विभक्ति के रूप हैं? **UP TGT (H)–2009**

(A) अहम्, आवाम्, वयम्
(B) मया, आवाभ्याम्, अस्माभिः
(C) मत्, आवाभ्याम्, अस्मत्
(D) मम, आवयोः, अस्माकम्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–59*

199. 'अस्मभ्यम्' शब्दरूप है? **UP PGT (H)–2005**

(A) अस्मद् शब्द के चतुर्थी बहुवचन का
(B) अस्मद् शब्द के तृतीया एकवचन का
(C) अस्मद् शब्द के षष्ठी एकवचन का
(D) अस्मद् शब्द के षष्ठी बहुवचन का

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–59*

200. 'अस्मद्' शब्द के पञ्चमी विभक्ति में दिये हुये रूपों में गलत कौन-सा है? **UP PGT (H)–2013**

(A) मत् (B) आवाभ्याम्
(C) अस्मत् (D) अस्मभ्यम्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–60*

201. 'रोचते मे एष मयूरः' में रेखाङ्कित पद की प्रकृति, विभक्ति तथा वचन बताइये– **H-TET–2014**

(A) युष्मद् + चतुर्थी + एकवचन
(B) अस्मद् + षष्ठी + द्विवचन
(C) अस्मद् + चतुर्थी + एकवचन
(D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–59*

202. अदस् (वह) शब्द के स्त्रीलिङ्ग पञ्चमी विभक्ति बहुवचन में रूप होगा? **UP PGT (H)–2005**

(A) अमूभ्यः (B) अमूष्याः
(C) अमूः (D) अमुया

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–87*

191. (A) **192.** (D) **193.** (B) **194.** (C) **195.** (B) **196.** (A) **197.** (B) **198.** (B) **199.** (A) **200.** (D) **201.** (C) **202.** (A)

203. 'अदस्' शब्द का स्त्रीलिङ्ग प्रथमा एकवचन का रूप है?
UP TGT–2009

(A) असौ (B) अदः
(C) अमू (D) अमूः

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–86*

204. 'अदस्' शब्द का नपुंसकलिङ्ग द्वितीया बहुवचन का रूप होगा? UP TGT–2004

(A) अमू (B) अमूनि
(C) अमून् (D) अमू

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–102*

205. ''असौ, अमू, अमी'' में किस प्रातिपदिक के रूप हैं?
UP TGT–1999

(A) इदम् शब्द पुँल्लिङ्ग के
(B) अदस् शब्द पुँल्लिङ्ग के
(C) इदम् शब्द स्त्रीलिङ्ग के
(D) इदम् शब्द नपुंसकलिङ्ग के

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–73*

206. (i) स्त्रीलिङ्गे 'इदम्' शब्दस्य षष्ठी-बहुवचनं किम्?
(ii) सर्वनाम शब्द 'इदम्' स्त्रीलिङ्ग षष्ठीविभक्ति बहुवचन का रूप होगा?
UP TGT–1999, RPSC ग्रेड I (PGT)–2014

(A) एषामो (B) एतेषाम्
(C) एतासाम् (D) आसाम्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–81*

207. 'स इमं स्त्रीमपश्यत्।' रेखाङ्किते शुद्धपदं भविष्यति–
RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014, C-TET–2012

(A) इमाम् (B) अमुम्
(C) एतम् (D) एताम्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–81*

208. पुँल्लिङ्गे 'इदम्'-शब्दस्य तृतीया-बहुवचनमस्ति–
RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014

(A) आभिः (B) एभिः
(C) अनयाभिः (D) अनेनाभिः

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–46*

209. 'इयम्' किस लिङ्ग का रूप है?
UP PGT–2010, UK TET–2011

(A) पुँल्लिङ्ग (B) स्त्रीलिङ्ग
(C) नपुंसकलिङ्ग (D) स्त्रीलिङ्ग व पुँल्लिङ्ग दोनों

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–81*

210. .... वस्त्राणि मलिनानि सन्ति।
AWES TGT–2013

(A) इमानि (B) इदम्
(C) इमे (D) इमौ

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–90*

211. 'अदस्' शब्दस्य षष्ठीबहुवचनरूपं पुंलिङ्गे –
CVVET–2015

(A) अदसाम् (B) अमूनाम्
(C) अमूषाम् (D) अमीषाम्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–73*

212. `.............................. बालकः रोदिति'
रिक्तस्थान में उचित शब्द है– RPSC ग्रेड-III–2013

(A) इयम् (B) इदम्
(C) अयम् (D) एतत्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–46*

213. 'एषाम्' इति पदस्य विभक्तिः अस्ति– C-TET–2012

(A) षष्ठी (B) तृतीया
(C) प्रथमा (D) सप्तमी

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–46*

203. (A) 204. (B) 205. (B) 206. (D) 207. (A) 208. (B) 209. (B) 210. (A) 211. (D) 212. (C) 213. (A)

214. 'भवत्या' इत्यस्य विभक्तिवचने लिखत– BHU B.Ed–2012

(A) चतुर्थी-बहुवचन (B) पञ्चमी-एकवचन
(C) तृतीया-एकवचन (D) सप्तमी-एकवचन

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–86*

215. 'भवती' शब्दस्य रूपम् अस्ति– RPSC ग्रेड-II (TGT)–2010

(A) भवानी (B) भवन्तः
(C) भवत्सु (D) भवती

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–86*

216. 'भवत्' शब्द पुँल्लिङ्ग सप्तमी एकवचन का रूप है– RPSC ग्रेड-III–2013

(A) भवत्सु (B) भवतौ
(C) भवति (D) भवताम्

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–97*

217. 'भवता' इति कस्याः विभक्तेः कस्य वचनस्य च रूपम् अस्ति? UK TET–2011

(A) तृतीया-एकवचनम् (B) द्वितीया-बहुवचनम्
(C) षष्ठी-एकवचनम् (D) सप्तमी-एकवचनम्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–63*

218. निम्नलिखित में से अशुद्ध शब्दरूप है– RPSC ग्रेड-III–2013

(A) पञ्चानाम् (B) पञ्चसु
(C) पञ्च (D) पञ्चाभ्याम्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–44-45*

219. 'चतुर्' शब्द का पुँल्लिङ्ग में द्वितीया के बहुवचन का रूप है– RPSC ग्रेड-III–2013

(A) चत्वारि (B) चतस्रः
(c) चत्वारः (D) चतुरः

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–45*

220. 'लृ'-शब्दस्य षष्ठ्येकवचने किं रूपम्? BHU AET–2011

(A) उर् (B) लुः
(C) लः (D) उल्

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–77*

221. 'ईश्वरः .... प्रभुरस्ति।' रिक्तस्थान में उचित शब्द होगा– RPSC ग्रेड-III–2013

(A) जगतः (B) जगते
(C) जगतम् (D) कोई नहीं

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–99*

222. 'सम्बोधन' में विभक्ति होती है– RPSC ग्रेड-III–2013

(A) द्वितीया (B) सप्तमी
(C) प्रथमा (D) तृतीया

स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.3.47) - ईश्वरचन्द्र, पेज–210*

223. निम्नलिखित में से 'युष्मद्' शब्द के लिये क्या सही कथन है? UP TGT–2013

(A) मध्यम पुरुषवाची है।
(B) सम्बोधन शब्द के ठीक बाद प्रयोग वर्जित है।
(C) तीनों लिङ्गों में एक समान रूप होते हैं।
(D) उपर्युक्त सभी सही है।

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–122-23*

224. सही जोड़ी कौन है? UP PGT (H)–2000

(A) रमायाम्-प्रथमा बहुवचन (B) गौर्याः-पञ्चमी एकवचन
(C) वारिणि-द्वितीया द्विवचन (D) गावः-षष्ठी एकवचन

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–26-27*

225. अत्र कस्मिन् पदे द्वितीया-विभक्तिः प्रयुक्ता? C-TET–2013

(A) परम् (B) नित्यम्
(C) कृतज्ञताम् (D) शाश्वतम्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–22*

214. (C) 215. (D) 216. (C) 217. (A) 218. (D) 219. (D) 220. (B) 221. (A) 222. (C) 223. (D) 224. (B) 225. (C)

226. 'स्थितायाम्' पदे विभक्तिः अस्ति– C-TET–2011

(A) चतुर्थी (B) द्वितीया
(C) षष्ठी (D) सप्तमी

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–22*

227. 'महिम्नः' इति कस्याः विभक्तेः रूपम्– BHU Sh.ET–2014

(A) प्रथमायाः (B) तृतीयायाः
(C) पञ्चम्याः (D) सप्तम्याः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–103*

228. 'चक्रिंस्त्रायस्व' इत्यस्मिन् वाक्ये प्रयुक्तं 'चक्रिन्' इति पदमस्ति– UP GDC–2012

(A) प्रातिपदिकम्
(B) प्रथमैकवचनान्तम्
(C) सम्बोधने प्रयुक्तप्रथमैकवचनान्तम्
(D) द्वितीयैकवचनान्तम्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–111*

226. (D) 227. (C) 228. (C)

8. धातुरूप-प्रकरण

1. 'भू' धातु लट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप होगा– UP TGT–2001

(A) भवामि (B) भवथ
(C) भवन्ति (D) भवति

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–103*

2. 'दुह्' धातु परस्मैपद लट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन में रूप होगा– UP TGT–1999

(A) दोग्धि (B) दोहति
(C) दुहति (D) दुहोति

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–263*

3. नीचे लिखे धातुरूपों में आत्मनेपद के रूप किस वर्ग में हैं? UP TGT–1999

(A) लभै, लभावहै, लभामहै
(B) पास्यामि, पास्यावः, पास्यामः
(C) ब्रूयात्, ब्रूयाताम्, ब्रूयुः
(D) गच्छेत्, गच्छेताम्, गच्छेयुः

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–204*

4. 'दा' धातु के मध्यमपुरुष के रूप किस वर्ग में हैं? UP TGT–1999

(A) ददाति, दत्तः, ददति
(B) ददासि, दत्थः, दत्थ
(C) ददामि, दद्वः, दद्मः
(D) दद्यात्, दद्याताम्, दद्युः

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–299*

5. 'लभ्' धातु लट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन में रूप होगा– UP TGT–1999

(A) लभते (B) लभेते
(C) लभेत (D) लभति

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–203*

6. 'भू' धातु लट्लकार उत्तमपुरुष एकवचन में रूप होगा– UP TGT–2004

(A) भवामि (B) भवावः
(C) भवामः (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–103*

7. 'अस्' धातु का लट्लकार उत्तमपुरुष बहुवचन में रूप होगा– UP TGT–2004

(A) अस्ति (B) स्तः
(C) सन्ति (D) स्मः

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–247*

8. 'हन्ति' रूप कहाँ बनता है? UP TGT–2005, 2009

(A) प्रथमपुरुष बहुवचन में (B) मध्यमपुरुष एकवचन में
(C) प्रथमपुरुष एकवचन में (D) उत्तमपुरुष एकवचन में

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–296*

9. 'ददति' रूप बनता है– UP TGT–2005

(A) प्रथमपुरुष एकवचन में (B) प्रथमपुरुष द्विवचन में
(C) प्रथमपुरुष बहुवचन में (D) उत्तमपुरुष बहुवचन में

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–299*

10. 'पा' धातु परस्मैपदी का लट्लकार प्रथमपुरुष द्विवचन का रूप है– UP TGT–2009

(A) पिबसि (B) पिबतः
(C) पिबति (D) पिबामि

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–174*

11. 'भी' धातु परस्मैपद लट्लकार मध्यमपुरुष एकवचन का रूप है– UP TGT–2009

(A) बिभेमि (B) बिभेषि
(C) बिभेतु (D) बिभीत

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–310*

1. (D) 2. (A) 3. (A) 4. (B) 5. (A) 6. (A) 7. (D) 8. (C) 9. (C) 10. (B) 11. (B)

12. 'दुधुक्षसि' में कौन-सी धातु है? UP TGT–2010
(A) दुधु (B) दुह्
(C) धुक्ष् (D) दुक्ष्

स्रोत–*बृहद्धातुकुसुमाकरः - हरेकान्त मिश्र, पेज–330*

13. 'हन्' धातोः लट्लकारे प्रथमपुरुषबहुवचनरूपमस्ति– RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014, DL–2015 RPSC ग्रेड I (PGT) 2014
(A) हनन्ति (B) हनन्ते
(C) घ्नन्ति (D) हन्ति

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–296*

14. 'मिल्' सङ्गमे धातु का लट्लकार अन्यपुरुष एकवचन का रूप है– UP PGT–2000
(A) मिलति (B) मिलते
(C) दोनों नहीं (D) दोनों ही

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–430*

15. 'रुधिर्' आवरणे का लट्लकार अन्यपुरुष एकवचन का रूप है– UP PGT–2000
(A) रुणद्धि (B) रुन्धे
(C) दोनों नहीं (D) दोनों ही

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–466, 467*

16. 'गम्' धातु लट्लकार मध्यमपुरुष द्विवचन में रूप होता है– UP PGT–2002
(A) गच्छतः (B) गच्छामि
(C) गच्छत (D) गच्छथः

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–131*

17. 'गच्छति' पद है– H-TET–2015
(A) गम् + लट् + प्रथम पुरुष एकवचन
(B) गम् + शतृ + सप्तमी एकवचन + पुँल्लिङ्ग
(C) गम् + शतृ + सप्तमी एकवचन + नपुंसकलिङ्ग
(D) उपर्युक्त सभी

स्रोत–*(i) रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–149*
(ii) संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–98

18. 'असि' में लकार है– UP PGT–2005
(A) लट् (B) लिट्
(C) लङ् (D) लुङ्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–247*

19. 'अस्' धातु का लृट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप है– UP PGT–2005
(A) भविष्यति (B) असि
(C) अस्मि (D) सन्ति

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–248*

20. 'दुह्' धातु के लट्लकार मध्यमपुरुष बहुवचन का रूप है– UP PGT–2010
(A) दुहध (B) दुहधः
(C) दोहध (D) दुग्ध

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–263*

21. 'पठामः' पठ् धातु का रूप है– UP TET–2014
(A) लट्लकार उत्तमपुरुष बहुवचन
(B) लोट्लकार उत्तमपुरुष बहुवचन
(C) लङ्लकार उत्तमपुरुष बहुवचन
(D) विधिलिङ्लकार उत्तमपुरुष बहुवचन।

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–172*

22. 'अस्ति' इति क्रियापदस्य लकार लिखत– BHU B.Ed–2013
(A) लोट् (B) लङ्
(C) लट् (D) लिङ्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–247*

23. 'अस्ति' इति पदं लङ्लकारे परिवर्तयत– REET–2016
(A) अत्ति (B) आसीत्
(C) स्तः (D) सन्ति

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–247-48*

12. (B) **13.** (C) **14.** (A) **15.** (D) **16.** (D) **17.** (D) **18.** (A) **19.** (A) **20.** (D) **21.** (A) **22.** (C) **23.** (B)

24. 'तिष्ठामि' इति क्रियापदस्य लकारं लिखत– BHU B.Ed–2011

(A) लट् (B) लृट्
(C) लङ् (D) लोट्

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–234

25. अधोलिखितेषु किं न अजन्तं रूपम्? BHU Sh.ET–2011

(A) मासः (B) त्रीणि
(C) पठतः (D) वारिणी

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–172

26. 'सन्ति' पदे धातुः अस्ति– MP वर्ग-2 (TGT)–2011, UK TET–2011

(A) भू (B) अस्
(C) जनि (D) जागृ

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–247

27. 'विद्' धातोः लट्लकारे प्रथमपुरुषस्य द्विवचनमस्ति– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011

(A) विदतः (B) वित्तः
(C) विद्याताम् (D) विद्धः

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–287

28. 'रुद्' धातु का लट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन में रूप है– RPSC ग्रेड-III–2013

(A) रुदति (B) रोदति
(C) रुदिति (D) रोदिति

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–279

29. 'वदतु' इति क्रियापदस्य लकारपुरुषवचनं लिखत– BHU B.Ed–2012

(A) लट्प्रथमपुरुषएकवचनम्
(B) लोट्प्रथमपुरुषएकवचनम्
(C) लृट्प्रथमपुरुषएकवचनम्
(D) लङ्उत्तमपुरुषएकवचनम्

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–205

30. 'हन्' धातोः लट्लकारे प्रथमपुरुषैकवचनस्य रूपं किम्? RPSC ग्रेड-II (TGT)–2013

(A) हनति (B) हन्ति
(C) घ्नन्ति (D) हति

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–296

31. 'भवन्ति' में कौन-सा लकार है? UP TET–2013

(A) लङ्लकार (B) लट्लकार
(C) लृट्लकार (D) लिङ्लकार

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–103

32. 'हसथ' इति रूपमस्ति– UP TET–2013

(A) लट्लकारस्य (B) विधिलिङ्लकारस्य
(C) लृट्लकारस्य (D) लोट्लकारस्य

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–242

33. (i) परस्मैपदी देने के अर्थ में 'दा' धातु से प्रथम पुरुष बहुवचन में रूप बनेगा?
(ii) 'दा' धातोः लट्लकारस्य प्रथमपुरुषबहुवचने रूपमस्ति– UP TET–2013, 2016

(A) ददाति (B) ददन्ति
(C) ददति (D) दन्ते

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–299

34. 'ब्रवीमि' इति– C-TET–2012

(A) मध्यमपुरुषबहुवचनम् (B) उत्तमपुरुषैकवचनम्
(C) प्रथमपुरुषैकवचनम् (D) उत्तमपुरुषबहुवचनम्

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–271

35. शिक्षणशब्दे मूलधातुः वर्तते– REET–2016

(A) शिक्ष् (B) शिस्
(C) शास् (D) शिक्षा

लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड–3), पेज–240

36. अधिपूर्वात् इङ् अध्ययने इति धातोः सनि किं रूपम्? DSSSB PGT–2014

(A) अधिजिगमिष्यति (B) अधिजिगांसते
(C) अधिजिगांसति (D) अधिजिगमिषः

स्रोत–बृहद्धातुकुसुमाकरः - हरेकान्त मिश्र, पेज–354

24. (A) **25.** (C) **26.** (B) **27.** (B) **28.** (D) **29.** (B) **30.** (B) **31.** (B) **32.** (A) **33.** (C) **34.** (B) **35.** (A) **36.** (B)

37. 'गृह्णामि' इति लौकिकसंस्कृतस्य वैदिक्यां भवितुमर्हति– UP GDC–2014

(A) गृहामि (B) गृभ्णामि

(C) गृहागामि (D) गृहीमि

स्रोत–*ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्त शास्त्री/कृष्णकुमार, भू. 43*

38. 'हन् हिंसागत्योः' इति धातोः लट्लकारे प्रथमपुरुषे एकवचने किं रूपम्? DSSSB TGT–2014

(A) घ्नन्ति (B) हन्ति

(C) हनति (D) हति

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–296*

39. 'ऊपर जाता है' के लिये संस्कृत में क्रिया प्रयुक्त होती है– UP TET–2014

(A) निर्गच्छति (B) प्रतिगच्छति

(C) उद्गच्छति (D) अवगच्छति

स्रोत–*सम्भाषण शब्दकोष - सर्वज्ञभूषण, पेज–90*

40. 'क्री' धातु से लट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन में रूप बनता है– UP PGT–2013

(A) क्रेष्यति (B) क्रीणाति

(C) क्रेषोष्ट (D) क्रीडति

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–531*

41. पठ् धातु के वर्तमानकाल में मध्यमपुरुष के एकवचन का रूप है– UP TGT (H)–2009

(A) पठति (B) पठसि

(C) पठन्ति (D) पठामि

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–172*

42. 'वेत्सि' आख्यात पद में कौन-सा लकार है? UP PGT (H)–2000

(A) लट् (B) लोट्

(C) लुट् (D) लङ्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–287*

43. 'दुह्' धातु के लट्लकार के मध्यमपुरुष एकवचन का रूप है? UP PGT (H)–2000

(A) धोक्षि (B) दोहि

(C) दुग्धसि (D) दुहसि

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–263*

44. 'बिभ्यति' में वचन है– BHU MET–2015

(A) एकवचन (B) द्विवचन

(C) बहुवचन (D) अव्यय

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–310*

45. निमीलयति– ASES TGT–2008

(A) अविकसितं करोति (B) उन्मीलनं न करोति

(C) अस्तं करोति (D) मलिनं करोति

स्रोत– *(i) बृहद्धातुकुसुमाकरः - हरेकान्त मिश्र, पेज–135*

(ii) शुकनासोपदेश - तारिणीश झा, पेज–16

46. 'आता है' के लिये संस्कृत क्रिया प्रयोग होगी– UP TET–2013

(A) प्रतिगच्छति (B) निर्गच्छति

(C) आगच्छति (D) अवगच्छति

स्रोत–*सम्भाषण शब्दकोषः - सर्वज्ञभूषण, पेज–88*

47. 'अस्' धातोः लट्लकारे उत्तमपुरुषस्य एकवचनस्य रूपं भवति– BHU B.Ed–2015

(A) अस्ति (B) सन्ति

(C) अस्मि (D) असि

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–247*

48. 'भू' धातु लिट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन में रूप बनता है– UP TGT–2003

(A) बभूव (B) बभूवतुः

(C) बभूवुः (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–103*

37. (B) 38. (B) 39. (C) 40. (B) 41. (B) 42. (A) 43. (A) 44. (C) 45. (B) 46. (C) 47. (C) 48. (A)

49. 'गम्' धातु लिट्लकार मध्यमपुरुष बहुवचन में रूप बनता है– UP TGT–2003

(A) जगाम (B) जग्मुः

(C) जग्म (D) जग्मतुः

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–131*

50. 'उवाच' किस लकार का रूप है? UP TGT–2009

(A) लट् (B) लिट्

(C) लङ् (D) लिङ्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–271*

51. 'आदिदेश' में पुरुष, वचन है– UP TGT–2010

(A) प्रथमपुरुष एकवचन

(B) मध्यमपुरुष बहुवचन

(C) उत्तमपुरुष द्विवचन

(D) मध्यमपुरुष एकवचन

स्रोत–*बृहद्धातुकुसुमाकर - हरेकान्त मिश्र, पेज–509*

52. 'गम् धातु' लिट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन में हो जाता है– UP PGT–2002, 2004

(A) अगच्छत् (B) जग्मुः

(C) जगाम (D) अगमत्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–131*

53. 'गम् धातु' लिट्लकार प्रथमपुरुष द्विवचन का रूप है– UP PGT–2003

(A) जगाम (B) जग्मतुः

(C) जग्मथुः (D) जग्म

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–131*

54. परोक्षार्थे को लकारः? BHU Sh. ET–2013

(A) लट् (B) लिट्

(C) लङ् (D) लिङ्

स्रोत– *(i) लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–391*

(ii) अष्टाध्यायी–3.2.115

55. 'बभूव' पद किस लकार में विद्यमान है? RPSC ग्रेड-III–2013

(A) लट्लकार (B) लोट्लकार

(C) लिट्लकार (D) लुङ्लकार

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–103*

56. भू धातोः लिट्लकारे प्रथमपुरुषबहुवचने रूपमस्ति– DL–2015

(A) अभूवन् (B) भविष्यति

(C) बभूवुः (D) भवितारः

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–103*

57. '√अद्' धातु से लिट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन में रूप बनता है– UP PGT–2013

(A) अत्त (B) आदत्

(C) जघास (D) अन्ता

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–246*

58. 'बभूव' रूप बनता है– UP PGT–2013

(A) 'भू' धातु लोट्लकार प्र0 पु0 एकवचन

(B) 'भू' धातु लिट्लकार प्र0 पु0 एकवचन

(C) 'भू' धातु लङ्लकार म0पु0 द्विवचन

(D) 'भू' धातु लुङ्लकार प्र0 पु0 एकवचन

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–103*

59. 'बभूव' रूप किस लकार का है? UP PGT (H)–2005

(A) लङ् (B) लुङ्

(C) लिट् (D) लिङ्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–103*

60. 'जघान' में लकार है– BHU MET–2015

(A) लट् (B) लिट्

(C) लङ् (D) लृट्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–296*

49. (C) **50.** (B) **51.** (A) **52.** (C) **53.** (B) **54.** (B) **55.** (C) **56.** (C) **57.** (C) **58.** (B) **59.** (C) **60.** (B)

61. 'कृ' धातु लुट्लकार प्रथम पुरुष बहुवचन का रूप है– H-TET–2015

(A) अकार्षुः (B) कर्तारः
(C) चक्रुः (D) कुर्युः

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–514*

62. कस्य लकारस्य प्रथमपुरुषे ''डा रौ रसः'' इति आदेशाः भवन्ति? BHU Sh.ET–2011

(A) लङ् (B) लिट्
(C) लृट् (D) लुट्

स्रोत– *लघुसिद्धान्तकौमुदी (2.4.85) - गोविन्दाचार्य, पेज–396*

63. संस्कृत में भविष्यकाल के लिये किस लकार का प्रयोग किया जाता है? UP TGT–1999

(A) लट्लकार (B) लोट्लकार
(C) लृट्लकार (D) लङ्लकार

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–296*

64. लृट्लकार किस काल का बोधक है? UP TGT–2001

(A) भूतकाल (B) आज्ञार्थक
(C) भविष्यकाल (D) वर्तमानकाल

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–296*

65. आसन्न भविष्य के लिये प्रयुक्त होता है– UP TGT–2003

(A) लिट्लकार (B) लुट्लकार
(C) लृट्लकार (D) लङ्लकार

स्रोत– *(i) लघुसिद्धान्तकौमुदी (3.3.13)-गोविन्दाचार्य, पेज–399*

66. 'दृश्' धातु का लृट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन में रूप होगा? UP TGT–2004, RPSC ग्रेड-III–2013

(A) अपश्यत् (B) द्रक्ष्यति
(C) द्रक्ष्यन्ति (D) पश्यतु

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–154*

67. 'द्रक्ष्यति' किस धातु का लृट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप है? UP TGT–2004

(A) द्रक्ष् (B) दृश्य
(C) दृश् (D) पश्य

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–154*

68. 'पा' धातु लृट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप होगा– UP TGT–2005

(A) पास्यसि (B) पिबस्यति
(C) पास्यति (D) पास्यामि

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–174*

69. 'गम्' धातु लृट्लकार उत्तमपुरुष में एकवचन का रूप है? UP TGT–2009

(A) गमिष्यामि (B) गच्छताम्
(C) अगच्छत् (D) अगच्छन्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–131*

70. 'त्यज्' धातोः लृट्लकारे मध्यमपुरुषस्य द्विवचनमस्ति– RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014

(A) त्यजिष्यथः (B) त्यक्ष्यथः
(C) त्यजिष्येथे (D) त्यक्ष्यथ

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–146*

71. 'नृत्' धातोः लृट्लकारे उत्तमपुरुषस्य एकवचनमस्ति– RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014

(A) नृत्स्यामि (B) नृत्स्ये
(C) नृत्स्यामिः (D) नर्तिष्यामि

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–342*

72. 'प्रच्छ्' धातोः लृट्लकारस्य उत्तमपुरुषे बहुवचनमस्ति– RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014

(A) प्रच्छिष्यामः (B) प्रच्छयिष्यामः
(C) प्रक्ष्यामः (D) प्रक्षिष्यामः

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–422*

61. (B)	**62.** (D)	**63.** (C)	**64.** (C)	**65.** (C)	**66.** (B)	**67.** (C)	**68.** (C)	**69.** (A)	**70.** (B)
71. (D)	**72.** (C)								

73. 'वृत्' धातोः लृट्लकारस्य उत्तमपुरुषस्य बहुवचने रूपं स्यात्– RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014

(A) वर्त्स्यत्ति (B) वर्तामहे
(C) वर्तावहे (D) वर्त्स्यामः

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–214*

74. 'द्रक्ष्यसि' क्रिया का लकार है– UP PGT–2003

(A) लुट् (B) लृट्
(C) लुङ् (D) लट्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–154*

75. 'कुप्' धातोः लृट्लकारे उत्तमपुरुषस्य बहुवचनमस्ति– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011

(A) कुप्स्यामः (B) कुप्स्याम
(C) कुप्स्यामहे (D) कोपिष्यामः

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–324*

76. 'चुर्' धातोः लृट्लकारे मध्यमपुरुषस्य बहुवचनमस्ति– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011

(A) चोरिष्यथ (B) चुरिष्यथ
(C) चौरिष्यथ (D) चोरयिष्यथ

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–584*

77. 'भुज्' धातोः लृट्लकारे प्रथमपुरुषैकवचनरूपमस्ति– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011

(A) भोजिष्यति (B) भुनक्ति
(C) भोक्ष्यते (D) भक्षिष्यति

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–497*

78. 'पा' धातु लृट्लकार उत्तमपुरुष द्विवचन में रूप होगा– RPSC ग्रेड-III–2013

(A) पास्याम (B) पास्यावः
(C) पिबिस्यावः (D) पिबस्यावः

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–174*

79. 'लिख्' धातोः लृट्लकारे प्रथमपुरुषस्य एकवचने रूपं भवति– MP वर्ग-1 (PGT)–2013

(A) लिखिष्यति (B) लेखिष्यति
(C) लिखिष्यत्ति (D) लिखिस्यति

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–442*

80. लिख् धातोः लृट्लकारस्य अन्यपुरुष-बहुवचने रूपमस्ति– RPSC ग्रेड I (PGT)–2014

(A) लिखिष्यन्ति (B) लिखिस्यन्ति
(C) लिखिश्यन्ति (D) लेखिष्यन्ति

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–442*

81. पच् धातोः लृट्लकारे मध्यमपुरुषस्य एकवचने रूपं भवति– MP वर्ग-1 (PGT)–2013

(A) पक्ष्यति (B) पचिस्यसि
(C) पक्ष्यसि (D) पचिष्यति

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–169*

82. 'करिष्यामि' इति पदे लकारः– C-TET–2012

(A) लट् (B) लिट्
(C) लृट् (D) लोट्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–514*

83. 'अनु' उपसर्गपूर्वकं 'गम् धातोः' लृट्लकारस्य प्रथमपुरुषस्य एकवचने किं रूपं भवति? UK TET–2011

(A) अन्वगच्छत् (B) अनुगमिष्यति
(C) अनुगमिष्यत्ति (D) अन्वगच्छन्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–131*

84. 'दास्यन्ति' इति कस्य लकारस्य कस्य पुरुषस्य कस्य वचनस्य च रूपम् अस्ति? UK TET–2011

(A) लट्लकारः मध्यमपुरुषः एकवचनम्
(B) लृट्लकारः प्रथमपुरुषः बहुवचनम्
(C) लोट्लकारः प्रथमपुरुषः एकवचनम्
(D) विधिलिङ्लकारः मध्यमपुरुषः द्विवचनम्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–300*

73. (D)	**74.** (B)	**75.** (D)	**76.** (D)	**77.** (C)	**78.** (B)	**79.** (B)	**80.** (D)	**81.** (C)	**82.** (C)
83. (B)	**84.** (B)								

85. 'भू' धातु का 'भवत' रूप– UP TGT–1999
(A) विधिलिङ्लकार म0पु0 बहुवचन का है।
(B) लोट्लकार म0पु0 बहुवचन का है।
(C) लङ्लकार म0पु0 बहुवचन का है।
(D) लोट्लकार प्र0पु0 एकवचन का है।
स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–103*

86. 'चुर्' धातु का 'चोरयतम्' रूप– UP TGT–1999
(A) लट्लकार म0पु0 द्विवचन का है।
(B) लोट्लकार म0पु0 द्विवचन का है।
(C) विधिलिङ्लकार म0पु0 द्विवचन का है।
(D) लङ्लकार म0पु0 द्विवचन का है।
स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–584*

87. 'भू' धातु का लोट्लकार मध्यमपुरुष एकवचन में रूप होगा– UP TGT–2003
(A) भव (B) भवतम्
(C) भवत (D) भवन्तु
स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–103*

88. 'अस्' धातु का लोट्लकार मध्यमपुरुष एकवचन में रूप होगा– UP TGT–2004, RPSC ग्रेड-III–2013
(A) अस्तु (B) स्ताम्
(C) सन्तु (D) एधि
स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–248*

89. 'भी' धातु लोट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप होगा– UP TGT–2010
(A) भयतु (B) विभीतु
(C) बभयतु (D) बिभेतु
स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–311*

90. 'ब्रू' धातु के लोट्लकार अन्यपुरुष एकवचन का रूप है– UP TGT–2010
(A) वदतु (B) ब्रवतु
(C) ब्रवीतु (D) ब्रूहि
स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–271*

91. 'निन्दन्तु' इत्यत्र कः लकारः? REET–2016
(A) लट्लकारः (B) लृट्लकारः
(C) लोट्लकारः (D) लङ्लकारः
स्रोत–*बृहद्अनुवादचन्द्रिका - चक्रधर नौटियाल, पेज–396*

92. 'इष्' धातोः लोट्लकारस्य अन्यपुरुषे एकवचनमस्ति– RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014
(A) इष्यन्तु (B) ऐष्यन्तु
(C) इच्छतु (D) ऐच्छन्तु
स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–389*

93. 'चुर्' धातोः लोट्लकारस्य उत्तमपुरुषबहुवचने रूपं स्यात्– RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014
(A) चोरयामः (B) चोरयिष्यामहे
(C) चोरयामहे (D) चोरयाम
स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–584*

94. 'भू' धातु लोट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन में हो जाता है– UP PGT–2002
(A) भविता (B) भवतु
(C) भवतः (D) भव
स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–103*

95. 'भू' धातु लोट्लकार उत्तमपुरुष एकवचन में हो जाता है– UP PGT–2004
(A) भवामि (B) भवानि
(C) भविष्यामि (D) भवन्तु
स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–103*

96. 'पठ्' धातु लोट्लकार प्रथमपुरुष द्विवचन का रूप है– UP PGT–2004
(A) पठ (B) पठामि
(C) पठताम् (D) पठतु
स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–172*

97. 'भवानि' में लकार है– UP PGT–2009
(A) लट् (B) लोट्
(C) लङ् (D) विधिलिङ्
स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–103*

85. (B) **86.** (B) **87.** (A) **88.** (D) **89.** (D) **90.** (C) **91.** (C) **92.** (C) **93.** (D) **94.** (B)
95. (B) **96.** (C) **97.** (B)

98. 'गम्' धातु का लोट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन में क्या रूप होता है? UP TET–2014

(A) गच्छतु (B) गच्छेत्
(C) गमिष्यति (D) अगच्छत्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–131*

99. 'दृश्' धातु लोट्लकार मध्यमपुरुष द्विवचन का रूप है– UP TET–2014

(A) पश्यतम् (B) पश्यताम्
(C) पश्याव (D) अपश्यन्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–154*

100. 'पा' धातु का लोट्लकार मध्यमपुरुष द्विवचन में रूप होता है– UP TET–2014

(A) पिबतु (B) पिबतम्
(C) पिबताम् (D) पिबत

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–174*

101. 'गच्छतु' इत्यत्र कः लकारः? BHU B.Ed–2014

(A) लोट् (B) लट्
(C) लङ् (D) लृट्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–131*

102. 'समाविशतु' पदस्य विच्छेदं कुरु– REET–2016

(A) सम् + आ + विश् + लोट्
(B) समा + विश् + लोट्
(C) समा + विशतु
(D) सम् + आ + विश + लट्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–451*

103. एतेषु क्रियावाचकं धातुरूपं किम्? BHU Sh.ET–2013

(A) गच्छन्ती (B) पाठकः
(C) भवानि (D) स्रष्टा

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–103*

104. आदेशार्थे को लकारः? BHU Sh.ET–2011

(A) लोट् (B) लिट्
(C) लङ् (D) लृङ्

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–01*

105. 'दा' धातोः लोट्लकारे मध्यमपुरुषस्य बहुवचनमस्ति– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011

(A) दत्त (B) दत्तः
(C) ददन्तु (D) ददतु

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–300*

106. 'हन्' धातु का रूप लोट्लकार मध्यमपुरुष एकवचन में होगा– UP TGT–2004, 2005

(A) हंसि (B) जहि
(C) हतः (D) हन्तु

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–297*

107. 'कृ' धातोः लोट्लकारे उत्तमपुरुषस्य एकवचनमस्ति– RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014

(A) करवाणि (B) कृवानि
(C) कृवाणि (D) करवानि

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–514*

108. 'एधन्ताम्' इत्यत्र कः लकारः? UK SLET–2012

(A) लट्लकारः (B) लोट्लकारः
(C) लङ्लकारः (D) लिङ्लकारः

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–109*

109. लोट्लकारस्य रूपमस्ति– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011

(A) जायेते (B) जनिष्यते
(C) जायेताम् (D) जाये

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–326*

110. 'क्रीडताम्' रूप का सम्बन्ध है– RPSC ग्रेड-III–2013

(A) लोट्लकार (B) लट्लकार
(C) लङ्लकार (D) लृट्लकार

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–121*

98. (A) **99.** (A) **100.** (B) **101.** (A) **102.** (A) **103.** (C) **104.** (A) **105.** (A) **106.** (B) **107.** (A) **108.** (B) **109.** (C) **110.** (A)

111. 'कृ' धातोः लोट्लकारस्य अन्यपुरुष-एकवचनरूपमस्ति विकल्परूपेण– RPSC ग्रेड I PGT–2014

(A) कुरुतात् (B) कुरु
(C) कुरुतम् (D) कुरुत

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–514*

112. 'भू' धातु लोट्लकार म०पु० बहुवचन में रूप होगा– RPSC ग्रेड-III–2013, UP TGT–2013

(A) भवतम् (B) भवत
(C) भवन्तु (D) भवेत

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–103*

113. 'अस्' धातु का लोट्लकार में शुद्ध रूप होगा– RPSC ग्रेड-III–2013

(A) असाम (B) आसामः
(C) आसावः (D) अस्मः

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–248*

114. 'कृ' धातु (आत्मनेपदी) लोट्लकार उत्तमपुरुष एकवचन का रूप है– RPSC ग्रेड-III– 2013

(A) करवै (B) कुर्वे
(C) कुर्वीय (D) करवाणि

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–516*

115. 'वदतु' इति क्रियापदस्य लकारपुरुषवचनं लिखत– BHU B.Ed–2012

(A) लट्-प्रथम-एकवचनम् (B) लोट्-प्रथम-एकवचनम्
(C) लृट्-प्रथम-एकवचनम् (D) लङ्-उत्तम-एकवचनम्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–205*

116. 'भवतात्' इति रूपमस्ति– MP वर्ग-1 (PGT)–2012

(A) लङ्लकारस्य (B) लुङ्लकारस्य
(C) लोट्लकारस्य (D) लुट्लकारस्य

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–103*

117. 'पठताम्' रूप किस लकार, पुरुष एवं वचन का है? UP TET–2013

(A) लोट्लकार, प्रथमपुरुष, द्विवचन
(B) लोट्लकार, मध्यमपुरुष, बहुवचन
(C) लोट्लकार, उत्तमपुरुष, द्विवचन
(D) लट्लकार, प्रथमपुरुष, द्विवचन

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–172*

118. 'गच्छ' इति क्रियापदे लकारः अस्ति– C-TET–2012

(A) लोट् (B) लृट्
(C) लट् (D) विधिलिङ्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–131*

119. 'शक्' धातोः लोट्लकारे मध्यमपुरुषैकवचनस्य रूपं किम्? RPSC ग्रेड I (PGT)–2014

(A) शक्नोतु (B) शक्नुत
(C) शक्नुहि (D) शक्नवानि

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–173*

120. 'जहि' इति क्रियापदस्य लकारः अस्ति–C-TET–2012

(A) लृट्लकारः (B) लङ्लकारः
(C) लिट्लकारः (D) लोट्लकारः

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–297*

121. 'श्रूयताम्' इति रूपम् अस्ति– UK TET–2011

(A) लोट्लकारस्य (B) लिङ्लकारस्य
(C) लट्लकारस्य (D) लुट्लकारस्य

स्रोत–*धातुरत्नाकर (पञ्चम भाग), पेज–315*

122. 'दिव्' धातु का लोट्लकार प्रथमपुरुष के द्विवचन में क्या रूप होता है? UP TGT–2013

(A) दीव्यतम् (B) दीव्यतात्
(C) दीव्यताम् (D) दीव्यत्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–322*

111. (A) **112.** (B) **113.** (A) **114.** (A) **115.** (B) **116.** (C) **117.** (A) **118.** (A) **119.** (C) **120.** (D) **121.** (A) **122.** (C)

123. '√हु' धातु से लोट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन में रूप बनता है– UP PGT–2013

(A) हेर्धि (B) जुहाव

(C) हूयात् (D) जुहोतु

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–298*

124. 'पा' धातु का लोट्लकार में प्रथमपुरुष बहुवचन का रूप होगा– UP PGT (H)–2003

(A) पिबत (B) पिबन्तु

(C) पिबन्ति (D) पिबेयुः

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–174*

125. उत्तमपुरुषस्य कः प्रयोगः? BHU Sh.ET–2013

(A) भवानि (B) भवतात्

(C) जहाति (D) एधाञ्चक्रे

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–103*

126. भवान् विद्यालयं– CVVET–2015

(A) गच्छ (B) गच्छतु

(C) गच्छन्तु (D) गच्छतः

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–131*

127. 'हन्' (मारना) धातु के लङ्लकार के प्रथमपुरुष एकवचन में क्या रूप होगा? UP TGT–1999

(A) अहन् (B) अहताम्

(C) अहनन् (D) अहः

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–297*

128. 'गम्' धातु का लङ्लकार उत्तमपुरुष बहुवचन में रूप बनता है– UP TGT–2004

(A) अगच्छम् (B) अगच्छाव

(C) अगच्छाम (D) अगच्छः

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–131*

129. 'हन्' धातु लङ्लकार उत्तमपुरुष बहुवचन में रूप होगा– UP TGT–2004

(A) अहनम् (B) अह्नन्

(C) अहन्म (D) जहि

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–297*

130. 'जन्' धातु लङ्लकार प्रथमपुरुष बहुवचन में होगा– UP TGT–2004

(A) अजागुरुः (B) अजायत

(C) अजायेताम् (D) अजायन्त

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–326*

131. 'आसीत्' क्रिया का लकार है– UP PGT–2002, 2004

(A) लुङ् (B) लङ्

(C) लिट् (D) लृङ्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–248*

132. 'भू' धातु परस्मैपद का लङ्लकार मध्यमपुरुष एकवचन का रूप है– UP TGT–2009

(A) अभवन् (B) भवतु

(C) अभवः (D) भवताम्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–104*

133. 'अभवत्' रूप है? UP PGT–2000

(A) लङ् प्र0 पु0 एकवचन (B) लङ् म0 पु0 बहुवचन

(C) लुङ् प्र0 पु0 एकवचन (D) लुङ् म0 पु0 बहुवचन

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–104*

134. (i) पठ् धातोः लङ्लकारे प्रथमपुरुषबहुवचनस्य रूपमिदं सिद्ध्यति

(ii) 'पठ्' धातु लङ्लकार प्रथमपुरुष बहुवचन का रूप है–UP PGT–2003, RPSC ग्रेड-I (PGT)–2014

(A) पठेयुः (B) पठन्ति

(C) अपठन् (D) अपठत्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–173*

135. 'लभ्' धातोः लङ्लकारस्य प्रथमपुरुषस्य एकवचने रूपं भवति– MP वर्ग-2 (TGT)–2011, UK TET–2011

(A)अलभताम् (B) अलभम्

(C) अलभत (D) अलभावहै

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–204*

123. (D)	124. (B)	125. (A)	126. (B)	127. (A)	128. (C)	129. (C)	130. (D)	131. (B)	132. (C)
133. (A)	134. (C)	135. (C)							

136. 'अलभत' में कौन सा लकार है?
MP वर्ग-2 (TGT)–2011, UK TET–2011
(A) लट् (B) लोट्
(C) लङ् (D) विधिलिङ्
स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–204*

137. 'इष्' धातोः लङ्लकारे मध्यमपुरुषस्य एकवचनमस्ति–
RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011
(A) अइच्छत् (B) अइषत्
(C) अइच्छ (D) ऐच्छः
स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–389*

138. 'तन्' धातोः लङ्लकारे उत्तमपुरुषस्य एकवचनमस्ति–
RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011
(A) अतनम् (B) अतनोमि
(C) अतनवम् (D) अतनोः
स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–511*

139. 'लिख्' धातु लङ्लकार मध्यमपुरुष एकवचन का रूप है– **RPSC ग्रेड-III–2013**
(A) अलिखत् (B) अलिखः
(C) अलिखतम् (D) अलिखन्
स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–176*

140. लङ्लकार में गम् धातु का शुद्ध रूप है–
RPSC ग्रेड-III–2013
(A) अगच्छः (B) अगच्छेत्
(C) अगमः (D) अगमिष्यः
स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–131*

141. 'हस्' धातोः लङ्लकारस्य उत्तमपुरुषबहुवचने रूपमस्ति–
RPSC ग्रेड I (PGT)–2014
(A) अहसम् (B) अहसाव
(C) अहसाम (D) अहसः
स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–243*

142. 'स्था' धातु लङ्लकार मध्यमपुरुष द्विवचन का रूप है– **RPSC ग्रेड-III–2013**
(A) अतिष्ठताम् (B) अतिष्ठः
(C) अतिष्ठतम् (D) अस्थातम्
स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–234*

143. 'अयजन्त' प्रयोग में धातु, लकार, पुरुष तथा वचन है–
RPSC ग्रेड-III–2013
(A) 'यज्' धातु, लृट्लकार, प्रथमपुरुष, बहुवचन
(B) 'यज्' धातु, लट्लकार, उत्तमपुरुष, बहुवचन
(C) 'यज्' धातु, लङ्लकार, प्रथमपुरुष, बहुवचन
(D) 'यज्' धातु, लोट्लकार, प्रथमपुरुष, बहुवचन
स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–194*

144. 'कृ' धातु (परस्मैपदी) लङ्लकार मध्यमपुरुष द्विवचन का रूप है– **RPSC ग्रेड-III–2013**
(A) अकुर्वाथाम् (B) अकरोः
(C) अकरोतम् (D) अकुरुतम्
स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–514*

145. 'पठ्' धातोः लङ्लकारे मध्यमपुरुषस्य एकवचने रूपं भवति– MP वर्ग-1 (PGT)–2013, UP TGT–2013
(A) अपठत् (B) अपठतम्
(C) अपठम् (D) अपठः
स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–173*

146. 'अस्' धातु लङ्लकार मध्यमपुरुष द्विवचन का रूप है– **UP TET–2013**
(A) आस्ताम् (B) स्याताम्
(C) आस्तम् (D) आस्व
स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–248*

147. 'अभवन्' में लकार है– **UP TET–2013**
(A) लट् (B) लोट्
(C) विधिलिङ् (D) लङ्
स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–104*

136. (C) **137.** (D) **138.** (C) **139.** (B) **140.** (A) **141.** (C) **142.** (C) **143.** (C) **144.** (D) **145.** (D) **146.** (C) **147.** (D)

148. 'भू' धातु लङ्लकार म0 पु0 बहुवचन का रूप है– UP TET–2013

(A) अभवत् (B) अभवत
(C) अभवः (D) अभवम्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–104*

149. 'अभवत्' पदे लकारोऽस्ति– UP GDC–2014

(A) विधिलिङ् (B) लुङ्
(C) लोट् (D) लङ्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–104*

150. 'अकरोः' रूप है– UP TGT H–2005

(A) 'कृ' धातु, लोट्लकार, प्र0 पु0, एकवचन
(B) 'कृ' धातु, लङ्लकार, म0 पु0, एकवचन
(C) 'कृ' धातु, लट्लकार, प्र0 पु0, बहुवचन
(D) 'कृ' धातु, लृट्लकार, उ0 पु0, द्विवचन

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–514*

151. 'नी', धातु के लङ्लकार मध्यमपुरुष एकवचन का रूप होगा– UP PGT (H)–2005

(A) अनयम् (B) अनयन्
(C) अनयत् (D) अनयः

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–167*

152. 'स्था' धातु का लङ्लकार मध्यमपुरुष बहुवचन का रूप होगा– UP PGT (H)–2009

(A) तिष्ठत् (B) अतिष्ठति
(C) अतिष्ठन् (D) अतिष्ठत

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–234*

153. 'स्पृश्' धातु के लङ्लकार के मध्यमपुरुष में दिये गये रूपों में गलत कौन है? UP PGT (H)–2013

(A) अस्पृशः (B) अस्पृशताम्
(C) अस्पृशतम् (D) अस्पृशत

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–464*

154. 'स्पृश्' धातु के लृट्लकार के मध्यमपुरुष के दिये गये रूपों में गलत कौन है? UP PGT (H)–2013

(A) स्पर्क्ष्यसि (B) स्पर्क्ष्याव
(C) स्पर्क्ष्यथः (D) स्पर्क्ष्यथ

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–464*

155. 'रुच्' धातोः लङ्लकारस्य मध्यमपुरुष-एकवचनरूपमस्ति– RPSC ग्रेड I (PGT)–2014

(A) अरोचथाः (B) अरुचः
(C) अरोचः (D) अरूचः

स्रोत– *(i) रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–202*
(ii) धातुरूपकौमुदी - राजेश्वरशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज–106

156. पठ् के लङ्लकार उत्तमपुरुष बहुवचन का रूप निम्नलिखित में से कौन-सा होगा? UP PGT (H)–2005

(A) अपठाम (B) अपठाव
(C) अपठम् (D) अपठन्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–173*

157. निम्नलिखित वर्गों में विधिलिङ्लकार के रूप किस वर्ग में है? UP TGT–1999

(A) भवतु, भवता (B) लभताम, सेवताम्
(C) रुन्धः, रुणद्धि (D) भवेत्, लभेय

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–104, 204*

158. 'गच्छेत' किस लकार का रूप है? UP TGT–2001

(A) लट्लकार का (B) लोट्लकार का
(C) लङ्लकार का (D) विधिलिङ्लकार का

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–132*

159. 'पठ्' धातु के विधिलिङ् में प्रथमपुरुष बहुवचन का रूप होता है– UP TGT–2009

(A) पठानि (B) पठेयुः
(C) अपठाव (D) पठन्ति

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–173*

148. (B) **149.** (D) **150.** (B) **151.** (D) **152.** (D) **153.** (B) **154.** (B) **155.** (A) **156.** (A) **157.** (D) **158.** (D) **159.** (B)

160. 'लभ्' धातु आत्मनेपद के विधिलिङ् मध्यमपुरुष बहुवचन का रूप है– UP TGT–2010

(A) लभेध्वम् (B) लभध्वम्

(C) लभेत (D) लभेः

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–204*

161. 'जन्' धातु आत्मनेपद के विधिलिङ्लकार उत्तमपुरुष एकवचन का रूप है? UP TGT–2010

(A) जायेयम् (B) जायेत

(C) जाये (D) जायेय

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–327*

162. 'दा'–धातोः विधिलिङ्लकारे मध्यमपुरुषस्य बहुवचनमस्ति– RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014

(A) दद्यात (B) ददेत्

(C) ददेध्वम् (D) दद्यात्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–300*

163. 'पठेत्' रूप है– UP PGT–2000

(A) लट् प्रथमपुरुष एकवचन

(B) लट् म0 पु0 बहुवचन

(C) विधिलिङ् प्र0 पु0 एकवचन

(D) विधिलिङ् म0 पु0 बहुवचन

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–173*

164. 'पठ्' धातु विधिलिङ् प्रथमपुरुष द्विवचन में हो जाता है– UP PGT–2002

(A) पठ (B) पठताम्

(C) पठेताम् (D) पठेत्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–173*

165. 'सेव्' धातोः विधिलिङ्लकारे मध्यमपुरुषस्य एकवचनमस्ति– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011

(A) सेवेथाः (B) सेवसे

(C) सेवेयाथाम् (D) सेवेताम्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–233*

166. 'शक्' धातोः विधिलिङ्लकारे प्रथमपुरुषस्य द्विवचनमस्ति– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011

(A) शक्नुतः (B) शक्येताम्

(C) शक्नुयाताम् (D) शक्नुताम्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–381*

167. 'भुज्' धातोः विधिलिङ्लकारे प्रथमपुरुषस्य बहुवचनमस्ति– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011

(A) भुजेयुः (B) भुञ्ज्युः

(C) भुक्ष्यः (D) भुज्यः

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–496*

168. 'ज्ञा' धातोः विधिलिङ्लकारे प्रथमपुरुषस्य द्विवचनमस्ति– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011

(A) जानीयाताम् (B) ज्ञायताम्

(C) जिज्ञायेताम् (D) ज्ञायाताम्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–545*

169. 'लिखेयुः' रूप है– RPSC ग्रेड-III–2013

(A) विधिलिङ्लकार का (B) लट्लकार का

(C) लोट्लकार का (D) लङ्लकार का

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–176*

170. 'दद्युः' निम्नलिखित में से रूप है– RPSC ग्रेड-III–2013

(A) लृट्लकार का (B) लङ्लकार का

(C) विधिलिङ्लकार का (D) लट्लकार का

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–300*

171. भूः धातोः विधिलिङ्लकारे मध्यमपुरुष-एकवचनस्य रूपं किम्? RPSC ग्रेड I (PGT)–2014

(A) भवेः (B) भव

(C) भूया (D) भवेयुः

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–104*

160. (A) 161. (D) 162. (A) 163. (C) 164. (C) 165. (A) 166. (C) 167. (B) 168. (A) 169. (A) 170. (C) 171. (A)

172. 'सहेध्वम्' रूप के धातु, लकार, पुरुष तथा वचन हैं– RPSC ग्रेड-III–2013

(A) 'सह' धातु, लट्लकार, मध्यमपुरुष, बहुवचन
(B) 'सह्' धातु, लङ्लकार, मध्यमपुरुष, बहुवचन
(C) 'सह्' धातु, लोट्लकार, मध्यमपुरुष, बहुवचन
(D) 'सह्' धातु, विधिलिङ्लकार, मध्यमपुरुष, बहुवचन

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–232*

173. 'जि' धातु विधिलिङ् प्रथमपुरुष एकवचन का प्रयोग है– RPSC ग्रेड-III–2013

(A) जीयात् (B) जीयेत्
(C) जायात् (D) जयेत्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–142*

174. 'सः अत्र तिष्ठेत्' रेखाङ्कित शब्द में मूलधातु तथा लकार है– UP TET–2013

(A) स्था, लङ्लकार (B) स्था, विधिलिङ्लकार
(C) तिष्ठ, लट्लकार (D) तिष्ठ, लोट्लकार

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–234*

175. अत्र विधिलिङ्लकारस्य उदाहरणमस्ति– C-TET–2013

(A) ज्ञापयति (B) वाञ्छति
(C) प्रकटयति (D) आचरेत्

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–192*

176. 'स्था' धातोः विधिलिङ्लकारस्य मध्यमपुरुषस्य एकवचने किं रूपं भवति? UK TET–2011

(A) तिष्ठतु (B) तिष्ठानि
(C) तिष्ठेः (D) तिष्ठेयम्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–234*

177. 'भवेयुः' क्रियापदे वर्तते– DL–2015

(A) लट्प्रथमपुरुषे एकवचनम्
(B) विधिलिङ्मध्यमपुरुषे द्विवचनम्
(C) विधिलिङ्प्रथमपुरुषे बहुवचनम्
(D) विधिलिङ्-उत्तमपुरुषे बहुवचनम्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–104*

178. आत्मानं सततं.................दारैरपि धनैरपि। AWES TGT–2010

(A) सेवेत् (B) रक्षेत्
(C) त्यजेत् (D) गच्छेत्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–200*

179. अलसः कर्त्तव्यम्................ AWES TGT–2010

(A) उपेक्षते (B) अपेक्षते
(C) प्रेक्षते (D) ईक्षते

स्रोत–*सम्भाषण-शब्दकोष - सर्वज्ञभूषण, पेज–90*

180. 'ब्रू' धातु का विधिलिङ् मध्यमपुरुष द्विवचन का क्या रूप होता है? UP TGT–2013

(A) ब्रूयात् (B) ब्रूयात
(C) ब्रूयाव (D) ब्रूयातम्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–272*

181. 'गम्' धातु का लुङ्लकार प्रथमपुरुष बहुवचन में रूप बनता है– UP TGT–2005

(A) जगाम (B) अगमन्
(C) गम्यात् (D) अगमाम

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–132*

182. 'भू' धातु का लुङ्लकार प्रथमपुरुष एकवचन में रूप होता है– UP TGT–2003, 2005

(A) अभूत् (B) अभूवन्
(C) अभूत (D) बभूव

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–104*

183. ''उदतूतुलत्'' में कौन-सा लकार है? UP TGT–2010

(A) लङ् (B) लिङ्
(C) लुङ् (D) लृङ्

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–438*

184. 'अदातम्' रूप है– UP PGT–2000

(A) लुङ् उ0 पु0 एकवचन (B) लुङ् म0 पु0 द्विवचन
(C) लङ् उ0 पु0 एकवचन (D) लङ् प्र0 पु0 बहुवचन

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–300*

172. (D) 173. (D) 174. (B) 175. (D) 176. (C) 177. (C) 178. (B) 179. (A) 180. (D) 181. (B) 182. (A) 183. (C) 184. (B)

185. 'अद्' धातु का लुङ्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप है– UP PGT–2005

(A) अघसः (B) अघसत्
(C) आदत् (D) अत्स्यति

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–247*

186. 'ऐधिषत' इतीदं तिङन्तपदम् अस्ति– UK SLET–2015

(A) विधिलिङ् - प्रथमपुरुष - एकवचनान्तम्
(B) लुङ् - प्रथमपुरुष - बहुवचनान्तम्
(C) लुङ् - प्रथमपुरुष - एकवचनान्तम्
(D) लङ् - प्रथमपुरुष - एकवचनान्तम्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–110*

187. संस्कृत में 'धातुरूप' कहते हैं– UP TGT–2001, UP TET–2013

(A) संज्ञापद को (B) कर्मपद को
(C) क्रियापद को (D) विशेषणपद को

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–301*

188. 'विघाताय' में कौन-सी धातु है? UP TGT–2009

(A) धा (B) तन्
(C) हन् (D) गम्

स्रोत–*किरातार्जुनीयम् - रामसेवक दूबे, पेज–49*

189. 'सन्तः' में कौन-सी धातु है? UP TGT–2010

(A) सद् (B) अस्
(C) सु (D) तन्

स्रोत– *(i) नीतिशतकम् - बलवान सिंह यादव, पेज–104*
(ii) रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–203

190. 'उह्यते' में कौन-सी धातु है? UP TGT–2009

(A) ऊह् (B) या
(C) वह् (D) हा

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–198*

191. 'चोरयति' में धातु है– UP PGT–2010

(A) चोर (B) चुर्
(C) चोरय् (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–584*

192. 'ददामि' किस धातु का रूप है? UP PGT–2010

(A) वद् (B) धा
(C) दा (D) दध

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–299*

193. एतेषु रुधादिगणीयः को धातुः? BHU Sh. ET–2013

(A) करोति (B) हिनस्ति
(C) बिभेति (D) गच्छति

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–509*

194. एतेषु किं धातुरूपं बहुवचनम्? BHU Sh. ET–2013

(A) अधीयते (B) अकामयत्
(C) जुहुधि (D) देयात्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–250*

195. किम् आत्मनेपदम्? BHU Sh.ET–2013

(A) तङानौ (B) स्वरितेत्
(C) सर्वम् (D) अदादि

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.100)*

196. यङ्लुङन्तस्य किम् उदाहरणम्? BHU Sh. ET–2013

(A) बुभूषति (B) बोभवीति
(C) पिपठिष्यति (D) जरीगृह्यते

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–611*

197. वधादेशः कुत्र? BHU Sh.ET–2011

(A) भू (B) खाद्
(C) पठ् (D) हन्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–529*

198. 'चिकीर्षुः' किस धातु से बना है? UP TGT–2009

(A) चि (B) कृष्
(C) सु (D) कृ

स्रोत–*संस्कृत व्याकरणप्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–461*

199. 'सेवामहे' में वचन है– MP वर्ग-2 (TGT)–2011, UK TET–2011

(A) एकवचन (B) द्विवचन
(C) बहुवचन (D) अवचन

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–232*

185. (B) 186. (B) 187. (C) 188. (C) 189. (B) 190. (C) 191. (B) 192. (C) 193. (B) 194. (A)
195. (A) 196. (D) 197. (D) 198. (D) 199. (C)

200. धातुरूपमस्ति– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011

(A) वद् (B) गम्
(C) कथय (D) पृच्छ्

***स्रोत**–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–587*

201. 'क्रीत्वा' अस्मिन् पदे धातुः वर्तते– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011

(A) कृ (B) क्रीड्
(C) क्री (D) कृत्

***स्रोत**–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–207*

202. 'अरोत्स्ये' धातुरूपं कस्मिन् गणे अस्ति? RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011

(A) भ्वादिगणे (B) रुधादिगणे
(C) तनादिगणे (D) जुहोत्यादिगणे

***स्रोत**–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–469*

203. 'एहि' यह रूप है– UGC 73 D–1994

(A) इण् धातु का (B) इक् धातु का
(C) एत धातु का (D) आ + इण् धातु का

***स्रोत**–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–252*

204. 'हन्ति' पद में वचन है– RPSC ग्रेड-III–2013

(A) एकवचन (B) द्विवचन
(C) बहुवचन (D) इनमें से कोई नहीं

***स्रोत**–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–296*

205. 'करिष्यामः' में धातु है– RPSC ग्रेड-III–2013

(A) क्रि (B) डुकृञ्
(C) क्रय् (D) क्री

***स्रोत**–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–514*

206. 'सेवते' में धातु है– RPSC ग्रेड-III–2013

(A) सेव् (B) सैव्
(C) सिव् (D) साव्

***स्रोत**–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–232*

207. 'बिभीयात्' रूप में धातु है– RPSC ग्रेड-III–2013

(A) भू (B) ब्रू
(C) भी (D) भय्

***स्रोत**–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–311*

208. 'जग्ध्वा' में धातु है– RPSC ग्रेड-III–2013

(A) गध् (B) अद्
(C) जग् (D) जग्द

***स्रोत**–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–207*

209. 'ज्ञात्वा' में कौन-सी धातु है? UP TET–2013

(A) ज्ञा (B) ज्ञात्
(C) ज्ञ (D) ज्ञान

***स्रोत**–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–208*

210. 'तिष्ठति' में धातु है– UP TET–2013

(A) गच्छ (B) स्था
(C) तिष्ठ् (D) तिष्ठति

***स्रोत**–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–234*

211. 'भवितुम्' में धातु है– UP TET–2013

(A) भवि (B) भवित्
(C) भू (D) भव्

***स्रोत**–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–206*

212. 'खादितः' में धातु है– UP TET–2013

(A) खाद् (B) खादि
(C) खा (D) खादित्

***स्रोत**–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–201*

213. 'त्यजन्ति' इति पदे धातुः अस्ति– C-TET–2011

(A) तर्ज् (B) त्यज
(C) त्यज् (D) त्यक्त

***स्रोत**–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–146*

214. 'ददामि' किस धातु का रूप है? UK TET–2011

(A) दद् (B) धा
(C) दा (D) दध

***स्रोत**–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–299*

**200. (C) 201. (C) 202. (B) 203. (D) 204. (A) 205. (B) 206. (A) 207. (C) 208. (B) 209. (A)
210. (B) 211. (C) 212. (A) 213. (C) 214. (C)**

215. 'नयेयुः' पदस्य मूलधातुः कः? AWES TGT–2013
(A) नम् (B) नञ्
(C) नय् (D) नी
स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–167*

216. 'हृ' धातोः रूपं न भवति– AWES TGT–2013
(A) हरामी (B) हरामि
(C) हराणि (D) अहरत्
स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–239*

217. 'रोचै' पदस्य बहुवचनं– AWES TGT–2013
(A) रोचावहै (B) रोचामहे
(C) रोचावहे (D) रोचामहै
स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–202*

218. 'चुर्' धातु के सम्बन्ध में क्या सही कथन है? UP TGT–2013
(A) 'चुर्' धातु में णिच् प्रत्यय नहीं लगता।
(B) 'चुर्' धातु से स्वार्थ में णिच् होता है।
(C) 'चुर्' धातु में णिच् प्रत्यय लगाना ऐच्छिक है।
(D) 'चुर्' धातु केवल आत्मनेपदी धातु है।
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–686*

219. 'प्रणश्यति' क्रियापदे कः धातुः? AWES TGT–2011
(A) प्रणश् (B) नश्
(C) नाशय (D) विनश्
स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–194*

220. इनमें से कौन-सी धातु सकर्मक नहीं है? UP TGT–2001
(A) पठ् (B) हन्
(C) लिख् (D) नृत्
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–378-379*

221. धातुएँ कितने प्रकार की होती हैं? UP TGT–2003
(A) दो प्रकार से (B) तीन प्रकार से
(C) चार प्रकार से (D) पाँच प्रकार से
स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–301*

222. पौनः पुन्येन स्मरणं करोति– AWES TGT–2009
(A) सास्मर्यते (B) संस्मर्यते
(C) सस्मर्यते (D) स्मारयति
स्रोत–*(i) बृहद्धातुकुसुमाकरः - हरेकान्त मिश्र, पेज–268*
(ii) अष्टाध्यायी - ईश्वरचन्द्र, पेज–969

223. अप्सरा इव आचरति– AWES TGT–2009
(A) अप्सरायति (B) अप्सरायते
(C) अप्सरति (D) अप्सरते
स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–466*

224. 'पाठयति' भवति– AWES TGT–2009
(A) इच्छार्थक क्रिया (B) पौनः पुन्यार्थक क्रिया
(C) अनुकरणात्मक क्रिया (D) प्रेरणार्थक क्रिया
स्रोत–*(i) संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–457*
(ii) बृहद्धातुकुसुमाकरः - हरेकान्त मिश्र, पेज–104

225. पौनः पुन्येन नर्तनं करोति– AWES TGT–2008
(A) नर्तयति (B) नृनर्तयति
(C) नरीनृत्यते (D) न कोऽपि शुद्धः
स्रोत–*(i) संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–462*
(ii) अष्टाध्यायी (3.1.22)

226. रोदितुम् इच्छति– AWES TGT–2008
(A) रूरुदिषति (B) रुरूदिषति
(C) रोरुदिषति (D) रोरूदिषते
स्रोत– *बृहद्धातुकुसुमाकरः - हरेकान्त मिश्र, पेज–370*

227. उभयपदी धातुः कः– CVVET–2015
(A) पठ् (B) पच्
(C) पत् (D) लभ्
स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–194*

228. भू धातुः– CVVET–2015
(A) अकर्मकः (B) सकर्मकः
(C) द्विकर्मकः (D) एककर्मकः
स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–311-312*

215. (D) 216. (A) 217. (D) 218. (B) 219. (B) 220. (D) 221. (B) 222. (A) 223. (B) 224. (D) 225. (C) 226. (C) 227. (B) 228. (A)

229. गच्छतीत्यस्य णिजन्तं किम्– CVVET–2015

(A) गच्छयति (B) गमयति

(C) गामयति (D) गमिष्यति

स्रोत–*(i) रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–223*

(ii) संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–458

230. जिगमिषति– AWES TGT–2008

(A) ज्ञातुमिच्छति (B) गन्तुमिच्छति

(C) जयमिच्छति (D) हन्तुमिच्छति

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–461*

231. शब्दं करोति– AWES TGT–2008

(A) शब्दस्यते (B) शब्दायते

(C) शब्दयति (D) शब्दायति

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–466*

232. गङ्गाम् आत्मनः इच्छति– AWES TGT–2008

(A) गङ्गीयति (B) गङ्गीयते

(C) गङ्गायते (D) गङ्गायति

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–464*

233. कविमात्मानमिच्छति– AWES TGT–2009

(A) कवियति (B) कवयति

(C) कवीयति (D) कवीयते

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–465*

234. ग्रहीतुमिच्छति– AWES TGT–2009

(A) जिग्रहति (B) जिगीषति

(C) जिगमिषति (D) जिघृक्षति

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–461*

235. अधोलिखितेषु शुद्धं युग्मं चिनुत–

MP वर्ग-1 (PGT)–2012

(A) गच्छेयम् - एकवचनम् (B) गच्छेम - एकवचनम्

(C) गच्छतात् - द्विवचनम् (D) अगच्छम् - बहुवचनम्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–132*

236. 'सम्बोधयति' पद का सम्बन्ध है? H-TET–2014

(A) यङन्त प्रक्रिया से (B) सन्नन्त प्रक्रिया से

(C) ण्यन्त प्रक्रिया से (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–457*

229. (B) **230.** (B) **231.** (B) **232.** (A) **233.** (C) **234.** (D) **235.** (A) **236.** (C)

9. अशुद्धि परिमार्जन एवं अनुवाद

1. निम्नलिखित में शुद्ध वाक्य कौन-सा है? **UP TGT–1999**

(A) ग्रामस्य बहिः विद्यालयोऽस्ति।
(B) ग्रामं बहिः विद्यालयोऽस्ति।
(C) ग्रामात् बहिः विद्यालयोऽस्ति।
(D) ग्रामं बहिः विद्यालयोऽस्ति।

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–213*

2. निम्नलिखित में शुद्धवाक्य के क्रमाङ्क का निर्देश कीजिए? **UP TGT–1999**

(A) कृष्णस्य उभयतः गोपालाः सन्ति
(B) कृष्णम् उभयतः गोपालाः सन्ति।
(C) कृष्णेन उभयतः गोपालाः सन्ति।
(D) कृष्णात् उभयतः गोपालाः सन्ति

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–185*

3. 'कृष्ण के दोनों ओर ग्वाले हैं' की संस्कृत है– **UP TET–2016**

(A) कृष्णस्य उभयतः गोपा सन्ति
(B) कृष्णम् उभयतः गोपाः सन्ति
(C) कृष्णाय उभयतः गोपा सन्ति
(D) कृष्णः उभयतः गोपाः सन्ति

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–185*

4. निम्नलिखित में शुद्ध विभक्ति का प्रयोग किस वाक्य में है? **UP TGT–1999**

(A) मयि मोदकं रोचते। (B) मां मोदकं रोचते।
(C) मया मोदकं रोचते। (D) मह्यं मोदकं रोचते।

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–201*

5. निम्नलिखित में शुद्ध है? **UP TGT–1999**

(A) मात्रे स्मरति। (B) मातरि स्मरति।
(C) मात्रा स्मरति। (D) मातुः स्मरति।

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–224*

6. संस्कृत व्याकरण की दृष्टि से शुद्ध रूप है? **UP TGT 1999, 2013, UGC 25 D–2011, UP PGT (H)–2002, UP TET–2013**

(A) उपरोक्त (B) उपरुक्त
(C) अपरोक्त (D) उपर्युक्त

स्रोत–*संस्कृतगङ्गा संस्कृतव्याकरणम् - सर्वज्ञभूषण, पेज–186*

7. निम्नलिखित में कौन-सा शुद्ध है? **UP TGT–1999**

(A) महानता (B) महान्ता
(C) महत्ता (D) महनता

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–113*

8. एक ही शब्द की वर्तनी चार तरह से लिखी गयी है, सही का चयन कीजिए? **UP PGT (H)–2013**

(A) उपर्लिखित (B) उपरिलिखित
(C) ऊपरलिखित (D) ऊपर्लिखित

9. निम्नलिखित में शुद्ध वाक्य कौन-सा है? **UP TGT–1999**

(A) गुरुः शिष्याय क्रुध्यति (B) गुरुः शिष्यं क्रुध्यति
(C) गुरुः शिष्ये क्रुध्यति (D) गुरुः शिष्यस्य क्रुध्यति।

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–201*

10. 'रमेश मेरा मित्र है'–इसका संस्कृत में शुद्ध अनुवाद कौन-सा है? **UP TGT–1999**

(A) रमेशः मम मित्रम् अस्ति
(B) रमेशः मया मित्रम् अस्ति
(C) रमेशः मम् मित्रम् अस्ति
(D) रमेशः मह्यं मित्रम् अस्ति

स्रोत–*(i) संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–122*
(ii) शुद्धिकौमुदी - जनार्दन हेगडे, पेज–17

1. (C)	2. (B)	3. (B)	4. (D)	5. (D)	6. (D)	7. (C)	8. (B)	9. (A)	10. (A)

11. अधोलिखित में कौन-सा वाक्य अशुद्ध है? UP TGT–1999

(A) अचिराय देवदत्तो गमिष्यति। (B) अचिरे देवदत्तो गमिष्यति।

(C) अचिरात् देवदत्तो गमिष्यति। (D) अचिरेण देवदत्तो गमिष्यति।

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–521*

12. 'गङ्गा हिमालय से निकलती है' का संस्कृत अनुवाद है– UP TGT–1999

(A) गङ्गा हिमालयेन निःसरति

(B) गङ्गा हिमालयात् निःसरति

(C) गङ्गा हिमालयस्य निःसरति

(D) गङ्गा हिमालयात् निसरत्

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–210*

13. अशुद्ध वाक्य का चयन कीजिए? UP TET–2016

(A) रामं विना जीवितुं नोत्सहे

(B) रामेण विना जीवितुं नोत्सहे

(C) रामात् विना जीवितुं नोत्सहे

(D) रामस्य विना जीवितुं नोत्सहे

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–197*

14. 'वाराणसी भारत का प्रमुख धार्मिक नगर है'–इसका अनुवाद है? UP TGT–1999

(A) वाराणसी भारतस्य प्रमुखं धार्मिकनगरम् अस्ति

(B) वाराणसी भारतस्य प्रमुखः धार्मिकनगरः अस्ति

(C) वाराणसी भारते प्रमुखनगरं सन्ति

(D) वाराणसी भारतस्य प्रमुखं धार्मिकनगरं सन्ति

15. 'यहाँ भगवान् विश्वनाथ का प्रसिद्ध मन्दिर है' का अनुवाद है– UP TGT–1999

(A) इदं भगवतो शंकरस्य प्रसिद्धमन्दिराणि अस्ति।

(B) तत्र भगवतः शंकरस्य प्रसिद्धः मन्दिरे अस्ति।

(C) तत्र भगवतः शिवस्य प्रसिद्धं देवालयं सन्ति।

(D) अत्र भगवतः विश्वनाथस्य प्रसिद्धमन्दिरम् अस्ति।

16. ''कवियों में कालिदास श्रेष्ठ है'' अस्य वाक्यस्य संस्कृते अनुवादं कुरुत– REET–2016

(A) कवेः कालिदासः श्रेष्ठः (B) कवि कालिदासः श्रेष्ठः

(C) कवये कालिदासः श्रेष्ठः (D) कविषु कालिदासः श्रेष्ठः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–*

17. 'काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना मदनमोहन मालवीय ने की थी'–का अनुवाद है? UP TGT–1999

(A) काशीहिन्दूविश्वविद्यालयानां स्थापना मदनमोहनमालवीयः करोति

(B) काशीहिन्दूविश्वविद्यालयस्य स्थापनां मदनमोहनमालवीयः अकरोत्।

(C) काशीहिन्दूविश्वविद्यालये स्थापनां मदनमोहनमालवीयः अकोरात्।

(D) काशीहिन्दूविश्वविद्यालयः स्थापना मदनमोहनमालवीयः अकरोत।

18. 'बौद्धों का तो यह अत्यन्त पवित्र तीर्थ है'–का संस्कृत में अनुवाद है– UP TGT–1999

(A) बौद्धस्य इदमत्यन्तं पवित्रं तीर्थम् अस्ति।

(B) बौद्धानाम् अयम् अत्यन्तं पवित्रतीर्थम् अस्ति

(C) बौद्धानां तु इदम् अत्यन्तं तीर्थं स्तः

(D) बौद्धानां तु इदम् अत्यन्तं पवित्रं तीर्थम् अस्ति

19. 'वह गाय से दूध दुहता है' का सही अनुवाद होगा? UP TGT–1999

(A) सः गवा पयः दोग्धि (B) सः गां पयः दुहति

(C) सः गोभिः पयः दोग्धि (D) सः गां पयः दोग्धि

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–181*

20. हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद बनाने के लिए पहले– UP TGT–1999

(A) धातु एवं शब्दरूपों का ज्ञान करायेंगे

(B) लकारों का ज्ञान करायेंगे

(C) लकारों से कुछ हिन्दी वाक्यों का संस्कृत अनुवाद पूछेंगे

(D) किसी एक लकार के एकपुरुष और एकवचन के वाक्य संस्कृत में श्यामपट्ट पर लिखेंगे।

11. (B)	12. (B)	13. (D)	14. (A)	15. (D)	16. (D)	17. (B)	18. (D)	19. (D)	20. (D)

21. 'माता च पिता च' के निम्नलिखित तीन रूपों में कौन-सा अशुद्ध है? UP TGT–1999

(1) पितरौ (2) मातृपितरौ (3) मातापितरौ

(A) पहला (B) दूसरा

(C) तीसरा (D) तीनों

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–973*

22. निम्नलिखित में से कौन-सा वाक्य शुद्ध है? UP TGT–1999

(A) एक विंशतयः छात्रा कक्षायाम्

(B) एकविंशतिः छात्राः कक्षायाम्

(C) एकविंशताः छात्राः कक्षायाम्

(D) एकविंशततमी छात्राः कक्षायाम्

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–46*

23. शुद्ध वाक्य का चयन कीजिए? UP TGT–1999

(A) त्रिः बालाः गच्छन्ति (B) त्रयः बालः गच्छन्ति

(C) त्रीणि बालाः गच्छन्ति (D) तिस्रः बालाः गच्छन्ति

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–41*

24. निम्न में से शुद्ध वाक्य चुनिए– UP TET–2016

(A) सः पुस्तकं पठसि (B) सा विद्यालयं गच्छतः

(C) तौ विद्यालयं गच्छतः (D) तं पुस्तकं पठथः

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–03*

25. शुद्ध वाक्य का चयन कीजिए– UP TGT–1999

(A) चतुरः विप्रान् आमन्त्र्य भोजय

(B) चत्वारि विप्रान् आमन्त्र्य भोजय

(C) चतस्रः विप्रान् आमन्त्र्य भोजय

(D) चतुराणि विप्रान् आमन्त्र्य भोजय

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–43*

26. निम्नलिखित में शुद्ध वाक्य है? UP TGT–1999

(A) तत्र पञ्च जनाः निवसन्ति

(B) तत्र पञ्चाः जनाः निवसन्ति

(C) तत्र पञ्चा जनैः निवसति

(D) तत्र पञ्चसु जनाः निवसति

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–45*

27. निम्नलिखित में कौन-सा वाक्य शुद्ध है? UP TGT–1999

(A) अष्टानि फलानि आनय

(B) अष्टौ फलानि आनय

(C) अष्टाः फलानि आनय

(D) अष्टे फलानि आनय

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–44, 136*

28. निम्नलिखित वाक्यों में शुद्ध वाक्य कौन-सा है? UP TGT–1999

(A) ये सुकृतिभिः असूयन्ति ते पापात्मनः।

(B) ये सुकृतिभ्यः असूयन्ति ते पापात्मानः।

(C) ये सुकृतिषु असूयन्ति ते पापात्मानः।

(D) ये सुकृतिनाम् असूयन्ति ते पापात्मनः।

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.37) - ईश्वरचन्द्र, पेज–124*

29. निम्नलिखित वाक्यों में शुद्ध वाक्य कौन-सा है? UP TGT–1999

(A) शिशुः क्रीडनकं रोचते।

(B) शिशुं क्रीडनकं रोचते।

(C) शिशवे क्रीडनकं रोचते।

(D) शिशोः क्रीडनकं रोचते।

स्रोत–*(i) संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–201*

(ii) अष्टाध्यायी (1.4.33) - ईश्वरचन्द्र, पेज–123

30. 'तुम कुसुमपुर जाओ' का संस्कृत अनुवाद है? UP TGT–2003

(A) त्वां कुसुमपुरं गच्छ (B) त्वं कुसुमपुरं गच्छ

(C) त्वं कुसुमपुरं गच्छेत् (D) त्वां गच्छेत् कुसुमपुरम्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.49) - ईश्वरचन्द्र, पेज–127*

31. 'किं करवाणि ते' का अर्थ है? UP TGT–2003

(A) मैं तुम्हारे लिए क्या कर सकता हूँ

(B) तुम मेरे लिए क्या कर सकते हो

(C) तुम्हें क्या करना है।

(D) मैं तुमसे क्या करवाता हूँ।

21. (B) 22. (B) 23. (D) 24. (C) 25. (A) 26. (A) 27. (B) 28. (B) 29. (C) 30. (B) 31. (A)

32. वाक्यमिदं संशोधयत– बालाः दुग्धं पिबामि। REET–2016

(A) बालाः दुग्धं पिबाति (B) बालः दुग्धानि पिबन्ति

(C) बालाः दुग्धं पिबन्ति (D) बालाः दुग्धाः पिबन्ति

33. 'एतदासनमास्यताम्' का अर्थ है? UP TGT–2003

(A) तुम आसन ग्रहण कर।

(B) यह आसन ग्रहण करें।

(C) इस आसन पर वह आ गया।

(D) इस आसन पर मैं आता हूँ।

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–52-53*

34. 'मातृ + औदार्यम्' का शुद्ध रूप है? UP TGT–2003

(A) मात्रोदार्यम् (B) मात्रौदार्यम्

(C) मातृदार्यम् (D) मातृऔदार्यम्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (6.1.85) - ईश्वरचन्द्र, पेज–687*

35. 'भद्रं भूयाद् भवतः' का अर्थ है– UP TGT–2004

(A) आपका भला हो। (B) हे मान्यवर! आप कैसे हैं।

(C) भद्र कैसे हैं? (D) आप भले तो हैं।

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–145*

36. 'एका क्रिया द्व्यर्थकरी प्रसिद्धा' का अर्थ है? UP TGT–2004

(A) एक बार काम करना काफी है।

(B) एक काम ही प्रसिद्ध है।

(C) दो प्रयोजन प्रसिद्ध हैं।

(D) एक पन्थ दो काज।

37. 'डण्डा सबको ठीक करता है' सही संस्कृत रूप है? UP TGT–2004

(A) दण्डः न शास्ति सर्वः प्रजाः

(B) दण्डः शास्ति सर्वाः प्रजाः

(C) दण्डः शास्ति सर्वः प्रजाः

(D) दण्डः शास्ति प्रजा सर्वा

स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.3.2) - ईश्वरचन्द्र, पेज–194*

38. निम्नलिखित में से शुद्ध वाक्य कौन-सा है? UP TGT–2004

(A) विपदि ददातु मे धनान् भवान्

(B) विपदि ददातु मम धनानि भवान्

(C) विपदि ददातु मे धनं भवान्

(D) ददतु धने विपदि

स्रोत–*अष्टाध्यायी (14.3.2) - ईश्वरचन्द्र, पेज–194*

39. 'मैं यश नहीं चाहता' इसका संस्कृत अनुवाद होगा? UP TGT–2004

(A) अहं यशं न इच्छति (B) अहं यशं न इच्छामि

(C) न अहं यशं लिप्सामि (D) अहं यशः न इच्छामि

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–07*

40. 'अत्रभवतां भवताम् आगमनेन धन्याः वयम्' इस वाक्य का हिन्दी अनुवाद होगा? UP TGT–2005

(A) यहाँ आपके आगमन से वे धन्य हुए।

(B) यहाँ आपके आगमन से मैं धन्य हुआ।

(C) यहाँ आप लोगों के आगमन से हम धनवान् हुए

(D) पूजनीय आप लोगों के आगमन से हम लोग धन्य हुए

41. 'तुम कानपुर जाओ' का सही संस्कृत अनुवाद है? UP TGT–2005

(A) गच्छ त्वं कर्णपुरम् (B) कर्णपुरं त्वं गच्छेत्

(C) कर्णपुरं त्वां गच्छ (D) त्वं कर्णपुरं गच्छेय

42. इनमें शुद्ध वाक्य है? UP TGT–2009

(A) युवां पुस्तकं पठथ (B) यूयं पुस्तकं पठथम्

(C) यूयं पुस्तकं पठथ (D) आवां पुस्तकं पठथ

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–05*

43. इनमें शुद्ध वाक्य है? UP TGT–2009

(A) बालिका जलात् मुखं प्रक्षालयति

(B) बालिका जले मुखं प्रक्षालयति

(C) बालिका जलेन मुखं प्रक्षालयति

(D) बालिका जलानि मुखं प्रक्षालयति

अष्टाध्यायी (सूत्र 1.4.49, 1.4.42)-ईश्वरचन्द्र, पेज–125, 127

32. (C)	**33.** (B)	**34.** (B)	**35.** (A)	**36.** (D)	**37.** (B)	**38.** (C)	**39.** (D)	**40.** (D)	**41.** (A)
42. (C)	**43.** (C)								

44. निम्नलिखित में शुद्ध वाक्य है? UP TGT–2010

(A) श्रान्ताः जनाः शीघ्रं शयन्ते

(B) श्रान्ताः जनाः शीघ्रं शेरते

(C) श्रान्ताः जनाः शीघ्रं शयन्ति

(D) श्रान्ताः जनाः शीघ्रं स्वपिति

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–165*

45. शुद्ध वाक्य छाँटिए– UP TGT–2010

(A) सः कौचित् साधूं पश्यति

(B) सः कञ्चित् साधुं पश्यति

(C) सः कञ्चित् साधून् पश्यति

(D) सः कश्चन साधू पश्यसि

46. कारकदृष्ट्या कौन-सा वाक्य शुद्ध है? UP TGT–2010

(A) बालकः अध्यापकेन पुस्तकं पठति

(B) बालकः अध्यापकात् पुस्तकं पठति

(C) बालकः अध्यापकात् पुस्तकानि पठन्ति।

(D) बालकः अध्यापकेन पुस्तकानि पठति।

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–209*

47. शुद्ध शब्द चुनिए– UP TGT–2010

(A) अम्बरीसः (B) अम्बरीशः

(C) अम्बरिशः (D) अम्बरीषः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–1183*

48. अशुद्ध वाक्य चुनिए– UP TGT–2010

(A) बालाः चित्रम् अवलोकते (B) चिन्तकः आलोचते

(C) तरुणः वस्त्रं धरति (D) सा स्वयं लेपयति

49. शुद्ध शब्द चुनिए– UP TGT–2010

(A) सहोदरा (B) सहोदरी

(C) दोनों शुद्ध हैं। (D) दोनों अशुद्ध हैं।

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग–6), पेज–111*

50. निम्नलिखित में से शुद्ध शब्द है?
UP PCS–2015, UP TGT (H)–2010

(A) कुमुदनी (B) कुमुदिनी

(C) कुमूदनी (D) कूमुदिनी

स्रोत–*संस्कृत-हिन्दी-कोश - वामनशिवराम आप्टे, पेज–285*

51. निम्नलिखित वाक्यों में शुद्ध है– UP PGT–2000

(A) त्वया सह अहं चित्रं द्रक्षिष्यामि

(B) तव सह अहं चित्रं द्रक्षष्यामि

(C) त्वया सह अहं चित्रं द्रक्ष्यामि

(D) त्वया सः अहं चित्रं द्रक्ष्यामि

स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.3.19) - ईश्वरचन्द्र, पेज–200*

52. शुद्ध वाक्य है– UP PGT–2000

(A) नमस्कृत्वा हरिं गच्छति (B) नमस्कृत्य हरये गच्छति

(C) नमस्कृत्य हरिं गच्छति (D) नमस्कृत्वा हरये गच्छति

स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (खण्ड–2) - गोविन्दाचार्य, पेज–271*

53. अधोलिखित वाक्यों में एक वाक्य शुद्ध है–
UP PGT–2000

(A) रामाः दीनाय धनं ददन्ति

(B) रामा दीनान् धनं ददन्ति

(C) रामाः दीनं धनं ददति

(D) रामाः दीनाय धनं ददति

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.32) - ईश्वरचन्द्र, पेज–122*

54. 'रामो गच्छति ग्रामम्' प्रयोग है– UP PGT–2004

(A) कर्तृवाच्य का (B) कर्मवाच्य का

(C) भाववाच्य का (D) उपर्युक्त में से किसी का भी नहीं

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–275*

55. निम्नलिखित में से कौन-सा वाक्य शुद्ध है–
UP PGT–2004, 2009

(A) अध्ययनात् पराजयते (B) अध्ययनं पराजयते

(C) अध्ययनः पराजयते (D) अध्ययनस्य पराजयते

स्रोत–*संस्कृत-व्याकरण-प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–208*

56. निम्नाङ्कित वाक्यों में कौन-सा वाक्य शुद्ध है–
UP PGT–2004, 2009

(A) अध्ययनं हेतु काश्यां तिष्ठति

(B) अध्ययनं हेतो काश्यां तिष्ठति

(C) अध्ययनस्य हेतोः काश्यां तिष्ठति

(D) अध्ययनस्य हेतु काश्यां तिष्ठति

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–222*

44. (B) 45. (B) 46. (B) 47. (D) 48. (A) 49. (A) 50. (B) 51. (C) 52. (C) 53. (D) 54. (A) 55. (A) 56. (C)

57. शुद्ध वाक्य है– UP PGT–2004

(A) आवां पठावः (B) अहं पठावः

(C) वयं पठावः (D) यूयं पठावः

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–07*

58. 'सीता..... गृहम् आगतवती'। इस वाक्य का पूरक पद होगा– UP PGT–2005

(A) रेलयानम् (B) बसयानेन

(C) शकटयानया (D) साइकिलयानम्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.42) - ईश्वरचन्द्र, पेज–125*

59. 'मैं जाना चाहता हूँ' का संस्कृत रूपान्तर है– UP PGT–2005

(A) अहं आजिगमिषामि (B) अहं जिगमिषामि

(C) अहम् गमिष्यामि (D) अहं गन्तुं नेच्छामि

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–708*

60. 'क्या जल्दी है? रेलगाड़ी के चलने में देर है। घबराइए नहीं।' इस वाक्य का सही संस्कृत रूपान्तर है– UP PGT–2005

(A) का त्वरा रेलयानं न चलति। व्याकुली मा भूः।

(B) का त्वरा? चिरेण प्रयास्यति रेलयानम्। मा स्म व्याकुली भूः

(C) का शीघ्रता। रेलयानम् अद्य न चलिष्यति। मा स्म व्याकुलताम्

(D) शीघ्रता का। अचिरं प्रयास्यति रेलयानम्। मा स्म व्याकुली

61. 'रसोइया चावलों से भात पकाता है'–का संस्कृत रूपान्तर है– UP PGT–2009

(A) पाचकः तण्डुलान् ओदनं पचति

(B) पाचकः तण्डुलेन ओदनं पचसि

(C) पाचकः तण्डुलात् ओदनानि पचति

(D) पाचकः तण्डुलेन ओदनं पचतः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–181*

62. 'सोलहवाँ बालक पढ़ता है'– का संस्कृत में अनुवाद होगा– UP PGT–2010

(A) षोडशतमः बालकः पठति (B) षोडशः बालकः पठति

(C) षड्दशतमः बालकः पठन्ति (D) षोडश बालकाः पठति

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–46, 47*

63. निम्नाङ्कित वाक्यों में शुद्ध वाक्य कौन-सा है– UP PGT–2010

(A) कृष्णा अश्वः धावति (B) कृष्णः अश्वं धावति

(C) कृष्णम् अश्वं धावति (D) कृष्णः अश्वः धावति

स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.3.46) - ईश्वरचन्द्र, पेज–209*

64. निम्नलिखित वाक्यों में कौन शुद्ध है– UP PGT–2010, UK TET–2011

(A) सूर्ये अस्ते गते गोपागृहम् अगच्छन्

(B) सूर्ये अस्तं गते गोपाः गृहम् अगच्छन्

(C) सूर्यस्य अस्ते गते गोपाः गृहम् अगच्छन्

(D) सूर्यस्य अस्तं गते गोपाः गृहम् अगच्छन्

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–220*

65. शुद्ध वाक्य चुनिए– UP PGT–2010, UK TET–2011

(A) शिष्याय व्याकरणं बोधयति

(B) शिष्याय वेदं पाठयति

(C) शिष्यं व्याकरणं बोधयति

(D) शिष्यं वेदाय पाठयति

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.52) - ईश्वरचन्द्र, पेज–129*

66. शुद्ध वाक्य चुनिए– UP PGT–2010, UK TET–2011

(A) श्यामा गीतं शृण्वती नृत्यति

(B) श्यामा गीतं श्रृण्वती नृत्यति

(C) श्यामा गीतं श्रृण्वन्ती नृत्यति

(D) श्यामा गीतं श्रुवन्ती नर्तते

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–85*

67. शुद्धं वाक्यं लिखत– BHU B.Ed–2011

(A) बालकं पुस्तकं रोचते।

(B) बालकाय पुस्तकं रोचते।

(C) बालकस्य पुस्तकं रोचते।

(D) बालकः पुस्तकं रोचते।

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.33) - ईश्वरचन्द्र, पेज–123*

57. (A) **58.** (B) **59.** (B) **60.** (B) **61.** (A) **62.** (B) **63.** (D) **64.** (B) **65.** (C) **66.** (A) **67.** (B)

68. ''बालक को लड्डू अच्छा लगता है।''
अस्य वाक्यस्य संस्कृतानुवाद अस्ति–
RPSC ग्रेड I (PGT)–2014

(A) बालकं मोदकं रोचते (B) बालकाय मोदकं रोचते
(C) बालकस्य मोदकं रोचते (D) बालकः मोदकं रुच्यते

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.33) - ईश्वरचन्द्र, पेज–123*

69. निम्नलिखित वाक्यों में शुद्ध वाक्य है–
UP TET–2014

(A) शिष्यः आसनम् अधितिष्ठति।
(B) शिष्यः आसने अधितिष्ठति।
(C) शिष्यः आसनेन अधितिष्ठति।
(D) शिष्यः आसनात् अधितिष्ठति।

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.46) - ईश्वरचन्द्र, पेज–126*

70. 'पुत्र के साथ पिता आया।' इति वाक्यस्य संस्कृतानुवादो वर्तते– RPSC ग्रेड I (PGT)–2014

(A) पुत्रात् सह पिता आगच्छत्
(B) पुत्रे सह पिता आगच्छत्
(C) पुत्रेण सह पिता आगच्छत्
(D) आगच्छत् पुत्राय सह पिता

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–196*

71. शुद्ध वाक्य का चयन कीजिए। UP TET–2014

(A) विप्रं गां ददाति (B) विप्रस्य गां ददाति
(C) विप्राय गां ददाति (D) विप्रे गां ददाति

स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–46*

72. 'अभिक्रुध्यति' इत्यत्र कस्य साधुत्वम्–
BHU Sh.ET–2011

(A) तम् (B) तयोः
(C) तेभ्यः (D) तेन

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–202*

73. शुद्ध वाक्य चुनिए। UP TET–2014

(A) सः किं पठतः (B) तौ किं कुर्वन्ति
(C) बालिका कुत्र गच्छसि (D) ताः विद्यालयं गच्छन्ति

74. सत्यकथनं वर्तते– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2010, 2011

(A) पाणिनेः ग्रन्थस्याभिधानं 'महाभाष्यम्'
(B) भवभूतिः अर्वाचीनकविः अस्ति
(C) कालिदासः आदिकविः मन्यते सर्वैः
(D) वेदाः ऋषिभिः रचिताः

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–62*

75. अशुद्धं वाक्यमस्ति RPSC ग्रेड-II –2010

(A) यथा बीजं तथा फलम् (B) अपूर्वोऽयमात्मविश्वासः
(C) ज्ञानं भारः क्रियां विना (D) आत्मानं न प्रशंसति महापुरुषाः

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–02*

76. 'वह पाप से घृणा करता है' का संस्कृत अनुवाद होगा–
RPSC ग्रेड-III –2013

(A) सः पापात् जुगुप्सते (B) सः पापेन जुगुप्सते
(C) सः पापस्य जुगुप्सते (D) सः पापैः जुगुप्सते

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–208*

77. अशुद्ध वाक्य है– RPSC ग्रेड-III –2013

(A) अत्र त्रयः जनाः नृत्यन्ति
(B) तत्र बालकाः कन्दुकेन क्रीडन्ति
(C) तत्र एते स्त्रियः हसन्ति
(D) वृक्षे चत्वारि फलानि सन्ति

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–133*

78. 'रामः ग्रामं गच्छति' वाक्य का बहुवचन में रूप होगा–
RPSC ग्रेड-II (TGT)–2013

(A) रामः ग्रामं गच्छन्ति (B) रामाः ग्रामं गच्छति
(C) रामाः ग्रामं गच्छन्ति (D) रामः ग्रामन् गच्छति

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–03*

79. अशुद्ध वाक्य है– RPSC ग्रेड-II (TGT)–2013

(A) रामेण बाणेन बाली हतः
(B) मोहनः कलमेन लिखति
(C) नदीं परितः वृक्षाः सन्ति
(D) सः ग्रामेण अजां नयति

स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–41*

68. (B) 69. (A) 70. (C) 71. (C) 72. (A) 73. (D) 74. (D) 75. (D) 76. (A) 77. (C) 78. (C) 79. (D)

80. ''रोती हुई बालिका माता का स्मरण करती है।'' इत्यस्य व्याकरणसम्मतः संस्कृतानुवादः अस्ति– RPSC ग्रेड I (PGT)–2014

(A) रुदन् बालिका मातरं स्मरणं करोति
(B) रुदती बालिका मात्रे स्मरति
(C) रुदन्ती बालिका मातरं स्मरति
(D) रुदती बालिका मातुः स्मरति

(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–73
(ii) रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–68

81. एतेषु विशेषणविशेष्यदृष्ट्या कस्य साधुत्वम्? BHU Sh.ET–2013

(A) अयम् अञ्जलिः (B) अयं मित्रम्
(C) मधुरः पयः (D) अधिको वयः

स्रोत–*संस्कृत-हिन्दी-कोशः - वामन शिवराम आप्टे, पेज–14*

82. किमशुद्धं वाक्यम्? BHU Sh.ET–2013

(A) विप्राय गां ददाति (B) मां रोचते फलम्
(C) मोक्षे इच्छास्ति (D) प्रजाभ्यः स्वस्ति

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.37) - ईश्वरचन्द्र, पेज–123*

83. 'विद्वानों को प्रणाम करता हूँ'– इत्यर्थे किं वाक्यं साधु– BHU Sh.ET–2013

(A) विद्वानान् नमामि (B) विदुषो नमामि
(C) विदुषान् नमामि (D) विद्वानेभ्यो नमामि

स्रोत–*(i) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–55*
(ii) संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–205

84. 'आपकी महिमा का वर्णन कर रहा हूँ'– इत्यस्य कः शुद्धोऽनुवादः? BHU Sh.ET–2013

(A) भवतां महिमायाः निरूपणं करोमि
(B) भवतां महिमां निरूपणं करोमि
(C) भवतां महिमस्य निरूपणं करोमि
(D) भवतां महिमानं निरूपयामि

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–103*

85. ''तेज तेज में शान्त होता है।'' – इत्यस्य शुद्धं संस्कृतानुवादं चिनुत– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2014

(A) तेजः तेजसि शाम्यति (B) तेजः तेजे शाम्यति
(C) तेजः तेजे शात्यति (D) तेजः तेजस्मिन् शान्त्यति

स्रोत–*उत्तररामचरितम् (5.7) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–348*

86. किं वाक्यं साधु? BHU Sh.ET–2013

(A) मया धनं दत्तवान् (B) अहं धनं दत्तम्
(C) अहं धनाय दत्तवान् (D) मया धनं दत्तम्

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–64, 65*

87. 'कहाँ से गिर रहा है'– इत्यस्मिन्नर्थे किं वाक्यं साधु– BHU Sh.ET–2013

(A) कश्चित् पतति (B) कदाचित् पतति
(C) कुतः पतति (D) क्वचित् पतति

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.24) - ईश्वरचन्द्र, पेज–119*

88. 'विश्वस्मिन् विश्वे' इत्यस्य कोऽर्थः? BHU Sh.ET–2013

(A) प्रत्येक विश्व में (B) समस्त विश्व में
(C) विश्व के विश्व में (D) विश्व के अन्तर्गत विश्व में।

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.45) - ईश्वरचन्द्र, पेज–126*

89. 'चत्वारः कन्याः चत्वारः फलानि खादन्ति' इत्यस्य शुद्धवाक्यं भविष्यति– RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014

(A) चतस्रः कन्याः चत्वारः फलानि खादन्ति
(B) चतस्रः कन्याः चत्वारि फलानि खादन्ति
(C) चत्वारि कन्याः चत्वारि फलानि खादन्ति
(D) चत्वारः कन्याः चतस्रः फलानि खादन्ति

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–43*

90. 'राम मोहन से भोजन पकवाता है?' इत्यस्य वाक्यस्य संस्कृतानुवादः विद्यते– RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014

(A) रामः मोहनः भोजनं पचति
(B) रामः मोहनं भोजनं पाचयति
(C) रामः मोहनेन भोजनं पाचयति
(D) रामः मोहनस्य भोजनं पक्ष्यति

स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–25*

80. (D) 81. (A) 82. (B) 83. (B) 84. (D) 85. (A) 86. (D) 87. (C) 88. (B) 89. (B) 90. (C)

91. 'मेरे घर के चारों ओर पर्वत हैं' इत्यस्य वाक्यस्य शुद्धानुवादः अस्ति– RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014

(A) मम गृहस्य परितः पर्वताः सन्ति
(B) मम गृहात् परितः पर्वताः सन्ति
(C) मम गृहे पर्वतानि सन्ति
(D) मम गृहं परितः पर्वताः सन्ति

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–186*

92. 'नमो भगवन्तं वासुदेवम्।' इत्यस्य वाक्यस्य शुद्धरूपम् अस्ति? RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014

(A) नमो भगवति वासुदेवे (B) नमो भगवतां वासुदेवानाम्
(C) नमो भगवतैः वासुदेवैः (D) नमो भगवते वासुदेवाय

स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.3.16) - ईश्वरचन्द्र, पेज–199*

93. 'अध्ययन से हार मान रहा है'' इति वाक्यस्य संस्कृतानुवादः वर्तते? RPSC ग्रेड I (PGT)–2014

(A) अध्ययनेन पराजयते (B) अध्ययनात् पराजयते
(C) अध्ययने पराजयते (D) पराजयते अध्ययनम्

स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–60*

94. ''परमात्मा की इस महिमा को देखो'' संस्कृतभाषायां वाक्यस्य शुद्धानुवादः भविष्यति– RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014

(A) परमात्मस्य इमां महिमां पश्य
(B) परमात्मायाः इमां महिम्नः पश्य
(C) परमात्मनः इमं महिमानं पश्य
(D) परमात्मस्य इमं महिमनं पश्य

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–103*

95. ''मानव पुण्य का फल चाहते हैं।'' अस्य वाक्यस्य संस्कृतानुवादः अस्ति– RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014

(A) मानवाः पुण्यं फलम् इच्छन्ति
(B) मानवाः पुण्यस्य फलम् इच्छन्ति
(C) मानवाः पुण्यफलम् ऐच्छन्ति
(D) मानवाः फलं पुण्यं इच्छन्ति

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–28, 29*

96. 'राम से धन स्वीकार करो' – इत्यस्य संस्कृतानुवादः अस्ति– RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014

(A) रामेण धनं स्वीकरोतु (B) रामेण धनः स्वीकरोतु
(C) रामं धनेन स्वीकरोतु (D) रामात् धनं स्वीकरोतु

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.24) - ईश्वरचन्द्र, पेज–119*

97. 'अहं विद्यालयं गच्छामि' इत्यस्य अनुवादं कुरुत– BHU B.Ed–2012

(A) वह विद्यालय जाता है। (B) वे विद्यालय जाते हैं।
(C) तुम विद्यालय जाते हो। (D) मैं विद्यालय जाता हूँ।

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–07*

98. ''नदी के दोनों ओर खेत हैं।'' इत्यस्य संस्कृतानुवादः अस्ति– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2014

(A) नद्याः द्विपर्यन्तं क्षेत्रमस्ति
(B) नदीम् अभितः क्षेत्राणि सन्ति
(C) नद्याः अभितः क्षेत्राणि सन्ति
(D) नद्याः अभितः क्षेत्रमस्ति

स्रोत–*(i) रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–10*
(ii) सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–31

99. शुद्धं वाक्यं चिनुत– BHU B.ed–2012

(A) त्वं पुस्तकं पठति (B) अहं पुस्तकं पठ्यते
(C) अहं पुस्तकं पठामि (D) वयं पुस्तकं पठसि

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–07*

100. इनमें से शुद्ध रूप है– UGC 25 D–1997

(A) व्याकरणाय अधीती (B) व्याकरणेन अधीती
(C) व्याकरणे अधीती (D) व्याकरणस्य अधीती

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–216*

101. शुद्धं वाक्यं लिखत– BHU B.Ed–2013

(A) रामः बालकेन सह आगच्छति
(B) रामः बालकं सह आगच्छति
(C) रामः बालकाय सह आगच्छति
(D) रामः बालकस्य सह आगच्छति

स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.3.19) - ईश्वरचन्द्र, पेज–200*

91. (D) 92. (D) 93. (B) 94. (C) 95. (B) 96. (D) 97. (D) 98. (B) 99. (C) 100. (C) 101. (A)

102. 'मह्यम् अध्ययनं रोचते' इति वाक्यस्य अनुवादं कुरुत– BHU B.Ed–2013

(A) मुझे अध्ययन अच्छा लगता है

(B) अध्ययन में मेरी कोई रुचि नहीं है

(C) अध्ययन व्यर्थ है।

(D) अध्ययन की मुझे कोई आवश्यकता नहीं है।

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.33) - ईश्वरचन्द्र, पेज–123*

103. 'सः कुत्र गमिष्यति? इत्यस्य अनुवादं कुरुत– BHU B.Ed–2014

(B) वह कहाँ जाता है? (B) वह कहाँ गया?

(C) वह कहाँ जाना चाहता है? (D) वह कहाँ जायेगा?

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–15*

104. 'पिता को नमस्कार' अस्य संस्कृतानुवादः भविष्यति– MP वर्ग-I (PGT)–2012

(A) पित्रे नमः (B) पितुः नमः

(C) पितरम् नमः (D) पितरि नमः

स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.3.16) - ईश्वरचन्द्र, पेज–199*

105. शुद्धं वाक्यं चिनुत– MP वर्ग-I (PGT)–2012

(A) भूपतिः सिंहासने अध्यास्ते

(B) भूपतिः सिंहासनस्याध्यास्ते

(C) भूपतिः सिंहासनमध्यास्ते

(D) भूपतिः सिंहासनायाध्यास्ते

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–183*

106. ''सबके सो जाने पर वह पढ़ता है''–अनुवादं करोतु– MP वर्ग-I PGT–2012

(A) सर्वस्य शयानेषु सः पठति

(B) सर्वेषां शयानेषु सः पठति

(C) सर्वैः शयानेषु सः पठति

(D) सर्वेषु शयानेषु सः पठति

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–220*

107. कौन-सा वाक्य शुद्ध है– UP GIC–2009, UP GDC–2012

(A) रजकाय वस्त्रं ददाति (B) रजकं वस्त्रं ददाति

(C) रजके वस्त्रं ददाति (D) रजकस्य वस्त्रं ददाति

स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–46*

108. 'पुत्र के साथ पिता आया' इति वाक्यस्य संस्कृतानुवादो वर्त्तते– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2014

(A) पुत्रात् सह पिता आगच्छत्

(B) पुत्रे सह पिता आगच्छत्

(C) पुत्रेण सह पिता आगच्छत्

(D) आगच्छत् पुत्राय सह पिता

स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.3.19) - ईश्वरचन्द्र, पेज–200*

109. निम्नलिखित में से शुद्ध वाक्य है– UP GDC–2008

(A) देवदत्तः पादस्य खञ्जः (B) देवदत्तः पादात् खञ्जः

(C) देवदत्तः पादेन खञ्जः (D) देवदत्त पादे खञ्जः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–197*

110. 'प्रियं वदति' इस अर्थ में शुद्ध प्रयोग है– UP GDC–2008

(A) प्रियंवदः (B) प्रियवाक्

(C) प्रियवद् (D) प्रियवचः

स्रोत–*अष्टाध्यायी (3.2.38) - ईश्वरचन्द्र, पेज–314*

111. 'रावणस्य दश आननानि आसन्' इत्यस्य वाक्यस्य एकवचने रूपमस्ति– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011

(A) रावणस्य दशाननं रूपमस्ति

(B) रावणस्य दशाननम् आसीत्

(C) रावणस्य आननदश आसीत्

(D) रावणस्य आननानां दशकम् आसीत्

112. 'इस बालिका को पढ़ना अच्छा लगता है'– अस्य वाक्यस्य संस्कृतानुवाद अस्ति– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011

(A) इमां बालिकां पठनं रोचते

(B) अस्याः बालिकायाः पठनं रोचते

(C) एतां बालिकां पठनं रोचते

(D) अस्यै बालिकायै पठनं रोचते

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.33) - ईश्वरचन्द्र, पेज–123*

102. (A) 103. (D) 104. (A) 105. (C) 106. (D) 107. (D) 108. (C) 109. (C) 110. (A) 111. (D) 112. (D)

113. 'उसने दस दिन में आरोग्य प्राप्त किया'–उपर्युक्त वाक्यस्य संस्कृतानुवाद अस्ति?

RPSC ग्रेड-I (PGT)–2014

(A) सः दशभिर्दिनैरारोग्यं लब्धवान्

(B) सः दशसु दिनेषु आरोग्यं प्राप्तवान्

(C) सः दशदिनात् आरोग्य प्राप्तवतः

(D) सः दशदिने आरोग्यं प्राप्नोति

स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.3.06) - ईश्वरचन्द्र, पेज–196*

114. ''लतायाः पूर्वलूनायाः प्रसूनस्यागमः कुतः'' रेखाङ्किते शुद्धरूपं भवेत्– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011

(A) लतां पूर्वलूनां (B) लतायै पूर्वलूनायै

(C) लताभ्यः पूर्वलूनाभ्यः (D) लतायाः पूर्वलूनायां

115. 'वृक्ष से पत्ते गिरते हैं' के लिए संस्कृत में चार वाक्य दिये गये हैं, सही वाक्य का चयन कीजिए–

UP PGT (H)–2013

(A) वृक्षस्य पत्राणि पतति (B) वृक्षेण पत्राणि पतति

(C) वृक्षात् पत्राणि पतन्ति (D) वृक्षे पत्राणि पतति

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–207*

116. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द अशुद्ध है?

UP TET–2013, UP TGT (H)–2004

(A) पूज्य (B) पूजनीय

(C) पूज्यनीय (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–*नालन्दा सामान्य हिन्दी - पृथ्वीनाथ पाण्डेय, पेज–413*

117. गलत वर्तनी वाला शब्द चुनिये? UP TET–2013

(A) पुंलिङ्गः (B) स्त्रीलिङ्गः

(C) नपुंसकलिङ्गः (D) उभयलिंगः

स्रोत–*शुद्धिकौमुदी - जनार्दन हेगडे, पेज–519*

118. कौन सा वाक्य शुद्ध है– UP TET –2013

(A) मम न रोचते मोदकम् (B) मां न रोचते मोदकम्

(C) मह्यं न रोचते मोदकम् (D) मत् न रोचते मोदकम्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1-4-33) - ईश्वरचन्द्र, पेज–123*

119. निम्नाङ्कितेषु वाक्येषु शुद्धरूपं किम् अस्ति?

UK TET–2011

(A) विद्यालयस्य परितः वृक्षाः सन्ति

(B) विद्यालयात् परितः वृक्षाः सन्ति

(C) विद्यालये परितः वृक्षाः सन्ति

(D) विद्यालयं परितः वृक्षाः सन्ति

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–186*

120. शुद्ध वर्तनी वाले शब्द का चयन कीजिये?

UP PCS–2013

(A) अन्त्याक्षरी (B) पूज्यनीय

(C) तदोपरान्त (D) कवियित्री

स्रोत–*नालन्दा सामान्य हिन्दी - पृथ्वीनाथ पाण्डेय, पेज–400*

121. एतेषु इदं शुद्धरूपं भवति? UGC 73 D–2014

(A) सीता रामस्य सह वनं गतवती

(B) सीता रामेण सह वनं गतवती

(C) सीता रामात् सह वनं गतवती

(D) सीता रामं सह वनं गतवती

स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.3.19) - ईश्वरचन्द्र, पेज–200*

122. शुद्धं वाक्यं लिखत? BHU B.Ed–2014

(A) सः गृहं गच्छामि (B) सः पुस्तकं पठति

(C) त्वं किं करोति (D) अहं विद्यालयं गच्छति

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–03*

123. 'वह दौड़ता तो है' संस्कृतेऽनूद्यताम् DL–2015

(A) सः धावन्नस्ति (B) सः धावकोऽस्ति

(C) धावता गच्छति सः (D) सः धावति तु

स्रोत–*सम्भाषण-शब्दकोष (संस्कृतगङ्गा) - सर्वज्ञभूषणः, पेज–82*

124. 'काला घोड़ा झटपट भागा' संस्कृते भवति–

DL–2015

(A) श्यामोऽश्वः शीघ्रत्वेनाऽधावत

(B) धावन्नस्ति श्यामोश्वः

(C) श्यामोऽश्वः झटित्यधावत्

(D) अधावदेवश्यामोऽश्वः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–522*

113. (A) 114. (D) 115. (C) 116. (C) 117. (D) 118. (C) 119. (D) 120. (A) 121. (B) 122. (B) 123. (D) 124. (C)

125. 'वागर्थाविव सम्पृक्तौ' हिन्द्यामनूद्यते– DL–2015

(A) वाणी और अर्थ साथ रहते हैं।

(B) वाणी-अर्थ एक साथ हैं।

(C) वाणी-अर्थ एक ही हैं।

(D) वाणी और अर्थ के समान जुड़े हुये हैं

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–891*

126. 'स जनास इन्द्रः' वाक्यस्य हिन्दी-भावान्तरणमस्ति– DL–2015

(A) वह जनवादी इन्द्र हैं। (B) जानते हो वह इन्द्र हैं?

(C) हे मानवों! वह इन्द्र हैं। (D) जन-जन में व्याप्त इन्द्र हैं।

स्रोत–*ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्त शास्त्री/कृष्णकुमार, पेज–177*

127. 'स आगत्य अहं गमिष्यामि।' उपर्युक्त वाक्यस्य शुद्धवाक्यं स्यात् RPSC ग्रेड I (PGT)–2014

(A) तस्य आगतस्य अहं गमिष्यामि

(B) तस्य आगते अहं गमिष्यामि

(C) तस्मिन्नागते अहं गमिष्यामि

(D) तेन आगते अहं गमिष्यामि

स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.3.37) - ईश्वरचन्द्र, पेज–206*

128. 'सुबह पाँच बजे सूर्य उदित हुआ' – इत्यस्य वाक्यस्य शुद्ध अनुवादः अस्ति? BHU RET–2012

(A) प्राते पञ्चवादने सविता उदितः

(B) प्रातः पञ्चवादने सविता उदिता

(C) प्रातः पञ्चवादने सविता उदितः

(D) प्रातर्पञ्चवादने सविता उदिता

स्रोत–*बृहद्अनुवादचन्द्रिका - चक्रधर नौटिहाल, पेज–37*

129. ''कृष्ण राम से अधिक चतुर है।'' अस्य वाक्यस्य उचितः संस्कृतानुवाद अस्ति– RPSC ग्रेड I (PGT)–2014

(A) कृष्णः रामेण अधिकः चतुरः अस्ति।

(B) कृष्णः रामात् पटुतरः अस्ति।

(C) कृष्णः रामेण पटुः अस्ति।

(D) कृष्ण रामेण पटुतरः अस्ति।

स्रोत–*(i) लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–1133*

(ii) अष्टाध्यायी (5-3-57) - ईश्वरचन्द्र, पेज–616-617

130. अधोलिखितेषु शुद्धं वाक्यमस्ति? BHU RET–2012

(A) प्रयागम् अभितः नद्यौ वहतः

(B) प्रयागस्य अभितः नद्यो वहतः

(C) प्रयागेण अभितः नद्यौ वहतः

(D) प्रयागात् अभितः नद्यौ वहतः

स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारक-प्रकरणम्)-राममुनि पाण्डेय, पेज–31*

131. अधोनिर्दिष्टेषु वाक्येषु शुद्धं वाक्यमस्ति? BHU RET–2012

(A) महामनामालवीयः विश्वविद्यालयस्य स्थापना कृता

(B) महामनामालवीयेन विश्वविद्यालयस्य स्थापना कृता।

(C) महामनसा मालवीयमहोदयेन विश्वविद्यालयस्य स्थापना कृताः।

(D) महामनसैः मालवीयैः विश्वविद्यालयस्य स्थापना कृतैः।

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–52*

132. ''ताः क्रीडन्ति'' का हिन्दी में क्या अर्थ है? BHU RET–2012

(A) वह खेलता है। (B) वे दोनों खेलते हैं।

(C) वह खेलती है। (D) वे सब खेलती हैं।

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–02*

133. निम्नोक्त-वाक्येषु शुद्धम् एकमस्ति– DL–2015

(A) शतरूप्यकाणि धारयामि

(B) शतं रूप्यकाणि धारयामि

(C) शतानि रूप्यकाणि धारयामि

(D) शतरूप्यकं धारयामि

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–48*

134. समुचितं क्रियापदं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत– आवां गुरोः पाठं................। AWES TGT–2013

(A) पठितम् (B) पठितवन्तौ

(C) पठितवान् (D) पठितम्

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–66*

135. अधोलिखितेषु किं वाक्यं शुद्धम्? JNU MET–2014

(A) सः प्रातः अजामः (B) पाण्डवाः राज्यं चकार

(C) गुरवः ज्ञानम् अददुः (D) त्वं तदा शेध्वे

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–300*

125. (D) **126.** (C) **127.** (C) **128.** (C) **129.** (B) **130.** (A) **131.** (B) **132.** (D) **133.** (B) **134.** (B) **135.** (C)

136. शुद्धं वाक्यं चिनुत **AWES TGT–2010**

(A) गोपालः जलेन मुखं प्रक्षालयति

(B) गोपालः जलमुखं प्रक्षालयति

(C) गोपालः जलतः मुखं प्रक्षालयति

(D) गोपालः जले मुखं प्रक्षालयति

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–195*

137. अधोलिखितेषु शुद्धं रूपं चिनुत– **RPSC ग्रेड I (PGT)–2014**

(A) इयं मम पाठ्यपुस्तकमस्ति

(B) इदं मम पाठ्यपुस्तकमस्ति

(C) अयं मम पाठ्यपुस्तकमस्ति

(D) इमं मम पाठ्यपुस्तकमस्ति

138. निम्नलिखित में कौन शब्द शुद्ध है? UP TGT–2013

(A) अक्षतः (B) दाराः

(C) लाजः (D) वर्षा

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–40*

139. निम्नलिखित में से कौन-सा वाक्य शुद्ध है? **UP TGT–2013**

(A) शतस्त्रिय पठन्ति (B) शताः स्त्रीणां कियन्मूल्यम्

(C) विंशतिः फलानि सन्ति (D) त्रिंशताः बालिका पठन्ति

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–46*

140. निम्न लौकिकप्रयोगों में कौन अशुद्ध है? **UP TGT–2013**

(A) सत्यमेव जयते (B) धर्मः जयति सदा

(C) न्यायो जयति सर्वत्र (D) सत्यं जयति सर्वत्र

स्रोत–*अष्टाध्यायी (3-1-19) - ईश्वरचन्द्र, पेज–86*

141. निम्नलिखित वाक्यों में शुद्ध क्या है? UP TGT–2013

(A) रामेण भार्या त्यज्यते (B) रामेण भार्यां त्यजति

(C) रामः भार्या त्यजति (D) रामेण भार्या त्याजायति

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–52*

142. निम्नलिखित वाक्यों में कौन-सा वाक्य शुद्ध है? **UP TGT–2013**

(A) रामः पठति (B) रामेण पठ्यते

(C) रामः पाठयति (D) सभी शुद्ध हैं

143. 'गच्छन्तं बालकं पश्य' इत्यस्य वाक्यस्य स्त्रीलिङ्गे शुद्धं रूपं किम्? **RPSC ग्रेड I (PGT)–2014**

(A) गच्छन्तीं बालिकां पश्य

(B) गच्छती बालिकां पश्य

(C) गच्छति बालिका पश्य

(D) गच्छतिं बालिकां पश्य

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–68*

144. अशुद्ध वाक्य बताइये? **UP TGT–2013**

(A) कति बालिकाः? (A) कति जनाः पठन्ति?

(C) कतयः मुनयः जपन्ति? (D) कति फलानि सन्ति?

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–40*

145. निम्नलिखित में शुद्ध वाक्य क्या है? UP TGT–2013

(A) हरिः वैकुण्ठम् उपवसति (B) हरिः वैकुण्ठम् अनुवसति

(C) हरिः वैकुण्ठे वसति (D) उपर्युक्त सभी शुद्ध हैं

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–184*

146. शुद्ध वाक्य बताइये? **UP TGT–2013**

(A) वर्षायां न गन्तव्यः (B) वर्षायां न गन्तव्यम्

(C) वर्षायां न गमनीयम् (D) वर्षासु न गन्तव्यम्

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–40*

147. अशुद्ध वाक्य बतलाइये? **UP PGT–2013**

(A) रमेशः पठितवान् (B) राधा अहं च पठावः

(C) रामश्च अहं च त्वं च पठसि (D) मीना नृत्यञ्चकार

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–102*

148. कौन-सा शब्द संस्कृत में अशुद्ध है? UP PGT–2013

(A) मयंकः (B) कलङ्कः

(C) भुजङ्गः (D) शशाङ्कः

स्रोत–*अष्टाध्यायी (8.4.58) - ईश्वरचन्द्र, पेज–1099*

136. (A) 137. (B) 138. (B) 139. (C) 140. (A) 141. (A) 142. (D) 143. (A) 144. (C) 145. (D) 146. (D) 147. (C) 148. (A)

149. कौन सा वाक्य अशुद्ध है? UP PGT–2013

(A) राधा कृष्णेन सह वनं जगाम।

(B) सुधा रामायणं पठितवती

(C) पिता पुत्रं प्रश्नं पृच्छति

(D) शोभा मोहनेन जलं याचयामास

150. 'आभा पुष्पं जिघ्रति' का हिन्दी अनुवाद होगा? UP PGT–2013

(A) आभा फूल खाती है।

(B) आभा फूल से नफरत करती है।

(C) आभा पुष्प पसन्द करती है।

(D) आभा फूल सूँघती है।

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–7*

151. इनमें से शुद्ध वर्तनी वाला शब्द कौन है? UP TGT (H)–2001, 2003

(A) आर्शीवाद (B) असीर्वाद

(C) आशीर्वाद (D) असीरवाद

स्रोत–*नालन्दा सामान्य हिन्दी - पृथ्वीनाथ पाण्डेय, पेज–409*

152. (i) किं रूपं शुद्धम्?

(ii) इनमें से वर्तनी की दृष्टि से शुद्ध शब्द है?

UP TGT (H)–2005, AWES TGT–2009, 2012

(A) उज्जवल (B) उज्ज्वल

(C) उज्वल (D) उजवल

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–216*

153. 'आलौकिक' का शुद्ध शब्द है? UP TGT (H)–2009

(A) अलौकक (B) अलोकिक

(C) अलौकिक (D) आलोकुक

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–890*

154. निम्नलिखित में शुद्ध वर्तनी का चयन कीजिये? UP TGT (H)–2009

(A) कवियित्री (B) कवित्री

(C) कवियत्री (D) कवयित्री

स्रोत–*नालन्दा सामान्य हिन्दी - पृथ्वीनाथ पाण्डेय, पेज–401*

155. 'मार्ग के दोनों तरफ वृक्ष हैं'–का अनुवाद संस्कृत में है? UP TGT (H)–2009

(A) मार्गम् उभयतः वृक्षाः सन्ति

(B) मार्गस्य उभयतः वृक्षाः सन्ति

(C) मार्गे उभयतः वृक्षाः सन्ति

(D) मार्गे वृक्षाः सन्ति

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–185*

156. 'राम दशरथ के पुत्र थे' का संस्कृत मूल है? UP TGT (H)–2010

(A) रामः दशरथस्य पुत्रः आसीत्।

(B) रामः दशरथस्य पुत्र अस्मि।

(C) दशरथः रामस्य जनकः आसीत्।

(D) रामस्य दशरथः जनक आसन्।

स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.3.50) ईश्वरचन्द्र, पेज–210*

157. 'ज्ञानिभिः सार्धं कदापि न द्रुह्यते'–का अनुवाद है? UP TGT (H)–2010

(A) ज्ञानी के साथ बैर अच्छा नहीं होता है।

(B) ज्ञानियों के साथ बैर नहीं करना चाहिए।

(C) ज्ञानी के साथ कभी भी बैर नहीं करना चाहिए।

(D) ज्ञानीजनों के साथ बैर अनुचित है।

स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.3.19) - ईश्वरचन्द्र, पेज–200*

158. शुद्धं वाक्यं वर्तते? RPSC ग्रेड I (PGT)–2014

(A) रामः दुष्टं क्रुध्यति (B) रामः दुष्टाय क्रुध्यति

(C) रामः दुष्टौ क्रुध्यति (D) रामः दुष्टात् क्रुध्यति

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.37) - ईश्वरचन्द्र, पेज–124*

159. निम्नलिखित शब्दों में से शुद्ध शब्द है? UP PGT (H)–2002

(A) जीजीविषा (B) जिजीविषा

(C) जीजिविषा (D) जिजिविषा

स्रोत–*सम्भाषण-शब्दकोष (संस्कृतगङ्गा) - सर्वज्ञभूषणः, पेज–170*

149. (D) 150. (D) 151. (C) 152. (B) 153. (C) 154. (D) 155. (A) 156. (A) 157. (C) 158. (B) 159. (B)

160. 'गाँव के चारों ओर जल है' कौन-सा संस्कृत अनुवाद सही है? UP PGT (H)–2005

(A) ग्रामं परितः जलम् अस्ति
(B) ग्रामस्य परितः जलम् अस्ति
(C) ग्रामस्य चहुँदिशासु जलम् अस्ति
(D) ग्रामस्य सर्वतः जलम् अस्ति

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–186*

161. 'अन्धौ मधुरं गायतः' अस्य आक्षरिकानुवादः– BHU Sh.ET–2008

(A) अन्धा सुमधुर गान करता है।
(B) दो अन्धे मधुरगान करते हैं।
(C) सब अन्धे गायक हैं।
(D) अन्धा गान करता था।

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–09*

162. 'पापात् जुगुप्सते' इत्यस्य कोऽनुवादः? BHU Sh.ET–2008

(A) पाप से डरता है। (B) पाप करने को चाहता है
(C) पाप से घृणा करता है (D) पाप से मुक्त है।

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–208*

163. 'धर्मनिरपेक्षता भारत का मन्त्र है'–इत्यस्य कोऽनुवादः– BHU Sh.ET–2011

(A) धर्मरक्षा भारतम्
(B) धर्मनिरपेक्षता भारतस्य मन्त्रः
(C) धर्मनिरपेक्षता निमित्तं भारतम्
(D) धर्मनिरपेक्षता भारतगौरवम्

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–29*

164. 'हिमालय से बहती हुई गङ्गा पवित्र है'–इत्यस्य कोऽनुवादः ग्राह्यः– BHU Sh.ET–2011

(A) हिमालयेभ्यः प्रवाहिता गङ्गा पवित्रा
(B) हिमालयस्य प्रवहन्तो गङ्गा पवित्रा
(C) हिमालयात् प्रवहन्ती गङ्गा पवित्रा
(D) हिमालयतः प्रवाहितः गङ्गा पवित्रा

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.31)- ईश्वरचन्द्र, पेज–121*

165. 'अहं पुस्तकं पठामि'–इत्यस्य अनुवादं कुरुत। BHU B.Ed–2015

(A) हम सब पुस्तक पढ़ते हैं। (B) मैं पुस्तक पढ़ता हूँ।
(C) हम दोनों पुस्तक पढ़ते हैं। (D) वह पुस्तक पढ़ता है।

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–7*

166. 'गुरु को नमस्कार है'– का संस्कृत अनुवाद है– RPSC ग्रेड-III–2013

(A) गुरवे नमः (B) गुरोः नमः
(C) गुरौ नमः (D) गुरुः नमः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–204*

167. वह अध्यापक से संस्कृत पढ़ता है? RPSC ग्रेड-III–2013

(A) सः अध्यापके संस्कृतं पठति
(B) सः अध्यापकात् संस्कृतं पठति
(C) सः अध्यापकस्य संस्कृतं पठति
(D) सः अध्यापकः संस्कृतं पठति

स्रोत–*(i) संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–209*
(ii) अष्टाध्यायी (1.1.29)- ईश्वरचन्द्र, पेज–121

168. शुद्ध-वाक्यम् अस्ति– RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014

(A) अहं प्रासादात् पतामि (B) अहं प्रासादस्य पतामि
(C) अहं प्रासादेन पतामि (D) अहं प्रासादाय पतामि

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–207*

169. शुद्धं वाक्यं लिखत– BHU B.Ed–2015

(A) सः गृहं गम्यते (B) त्वं पुस्तकं पठसि
(C) ते वनं गच्छति (D) अहं जलं पिबामः

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–05*

170. 'गङ्गा हिमालय से निकलती है' के लिए संस्कृत में चार वाक्य दिये गये है, सही वाक्य का चयन कीजिए– UP PGT (H)–2013

(A) गङ्गा हिमालयोः प्रभवति (B) गङ्गा हिमालयं प्रभवति
(C) गङ्गा हिमालयेण प्रभवति (D) गङ्गा हिमालयात् प्रभवति

स्रोत–*(i) संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–210*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.31) - ईश्वरचन्द्र, पेज–121

160. (A) 161. (B) 162. (C) 163. (B) 164. (C) 165. (B) 166. (A) 167. (B) 168. (A) 169. (B) 170. (D)

171. 'त्वया वचांसि श्रोतव्यम्।' रेखाङ्कित शुद्धपदं स्यात्– **RPSC ग्रेड I (PGT)–2014**

(A) श्रोतव्यानि (B) श्रोतव्यौ

(C) श्रोतव्ये (D) श्रोतव्यः

स्रोत–*(i) रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–78-225*

(ii) अष्टाध्यायी (3.4.70)- ईश्वरचन्द्र, पेज–407

172. किं रूपं शुद्धम्? **AWES TGT–2012**

(A) आछिनति (B) आचछिनत्ति

(C) अचछिञनति (D) आछिनत्ति

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–478*

173. किं रूपं शुद्धम्? **AWES TGT–2012**

(A) मणिराकाशः (B) मणिआकाशः

(C) मणयाकाशः (D) मण्याराकाशः

स्रोत–*शिवराजविजय - रमाशङ्कर मिश्र, पेज–03*

174. किं रूपं शुद्धम्? **AWES TGT–2012**

(A) सत्व्यावहरतव्यम् (B) सद्व्यहर्तव्यम्

(C) सदव्यावहारतव्यम् (D) सद्व्यवहर्तव्यम्

175. किं रूपं शुद्धम्? **AWES TGT–2008, 2012**

(A) परामर्शेन (B) परामर्शेण

(C) परामृर्शेन (D) परामर्शेण्

176. शुद्धं वाक्यं प्रदर्शय– **AWES TGT–2010**

(A) अहम् एकं कन्यां पश्यामि

(B) अहम् एकां कन्यां पश्यामि

(C) अहम् एका कन्यां पश्यामि

(D) अहम् एकः कन्यां पश्यामि

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–37*

177. शुद्धं वाक्यं प्रदर्शय– **AWES TGT–2010**

(A) उपमा कालिदासः भारविर्थगौरवम्

(B) उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्

(C) उपमा कालिदासेन भारवेर्थगौरवम्

(D) उपमा कालिदासाय भारवेर्थगौरवम्

स्रोत–*किरातार्जुनीयम् - रामसेवक दुबे, पेज–25*

178. शुद्धं वाक्यं प्रदर्शय– **AWES TGT–2010**

(A) दशरथस्य चत्वारि पुत्रः आसन्

(B) दशरथस्य चतस्रः पुत्राः आसन्।

(C) दशरथस्य चत्वारः पुत्राः आसन्

(D) दशरथस्य चत्वाराः पुत्राः आसन्।

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–43*

179. 'स्नानस्य पूर्वं न भुञ्जीत् न धावेत् भोजनस्य परम्' रेखाङ्कितयोः शुद्धपदे भविष्यतः– **RPSC ग्रेड I (PGT)–2014**

(A) स्नानेन, भोजनेन (B) स्नाने, भोजने

(C) स्नानात्, भोजनात् (D) स्नानाय, भोजनाय

स्रोत–*(i) अष्टाध्यायी (2.3.29) - ईश्वरचन्द्र, पेज–203*

(ii) रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–24

180. शुद्धं वाक्यं प्रदर्शय– **AWES TGT–2010**

(A) बलरामः परशुरामः रामचन्द्रः इति त्रयः रामाः

(B) बलरामः परशुरामः रामचन्द्रः इति तिक् रामाः।

(C) बलरामः परशुरामः रामचन्द्रः इति त्रीणि रामः।

(D) बलरामः परशुरामः रामचन्द्रः इति त्रिभिः रामाः।

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–41*

181. शुद्धं वाक्यं प्रदर्शय– **AWES TGT–2010**

(A) मम च रोचते ते वाक्यम्

(B) मया न रोचते ते वाक्यम्

(C) मां न रोचते ते वाक्यम्

(D) मह्यं न रोचते ते वाक्यम्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.33) - ईश्वरचन्द्र, पेज–123*

182. शुद्धं वाक्यं प्रदर्शय– **AWES TGT–2010**

(A) साधून् पश्यामि

(B) अहं साधूः पश्यामि

(C) अहं साधूनां पश्यामि

(D) अहं साधौ पश्यामि।

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–07*

171. (A) 172. (D) 173. (A) 174. (D) 175. (B) 176. (B) 177. (B) 178. (C) 179. (C) 180. (A) 181. (D) 182. (A)

183. 'महद्राजा अद्यैव गतः।' इत्यस्य शुद्धवाक्यं स्यात्– RPSC ग्रेड I (PGT)–2014

(A) महद्राजन् अद्यैव गतः (B) महाराजः अद्यैव गतः
(C) महाराजा अद्यैव गतः (D) महद्राज्ञा अद्यैव गताः

स्रोत–*(i) अष्टाध्यायी (6.3.45) - ईश्वरचन्द्र, पेज–760*
(ii) रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–62

184. शुद्धं वाक्यं प्रदर्शय– AWES TGT–2010

(A) वनस्य सर्वे पशवः अगच्छन्
(B) वनस्य सर्वाणि पशवाः अगच्छन्
(C) वनस्य सर्वाः पशवः अगच्छन्
(D) वनस्य सर्वपशवः अगच्छन्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.3.50) - ईश्वरचन्द्र, पेज–210*

185. शुद्धं वाक्यं प्रदर्शय– AWES TGT–2010

(A) दुग्धेन नवीनतम् उत्पद्यते (B) दुग्धस्य नवीनतम् उत्पद्यते
(C) दुग्धे नवनीतम् उत्पद्यते (D) दुग्धात् नवनीतम् उत्पद्यते

स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.3.28) - ईश्वरचन्द्र, पेज–203*

186. किं रूपं शुद्धम्? AWES TGT–2009

(A) पतन्जलिः (B) पतंजलिः
(C) पतञ्जली (D) पतञ्जलिः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग–1), पेज–73*

187. किं रूपं शुद्धम्? AWES TGT–2009

(A) क्रन्दिष्यति (B) क्रन्दिष्यते
(C) कृन्दिष्यति (D) कर्न्दिष्यति

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–191*

188. किं रूपं शुद्धम्– AWES TGT–2009

(A) कुमकुमम् (B) कुकमम्
(C) कुङ्कुमम् (D) कुम्कुमम्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (8.4.57) - ईश्वरचन्द्र, पेज–1099*

189. किं रूपं शुद्धम्– AWES TGT–2009

(A) पारलौकिकं सुखम् (B) परलौकिकं सुखम्
(C) प्रलौकिकं सुखम् (D) परालौकिकं सुखम्

190. किं रूपं शुद्धम्– AWES TGT–2009

(A) वल्मीकीयं रामायणम् (B) वाल्मीकियं रामायणम्
(C) वाल्मिकीयं रामायणम् (D) वाल्मीकीयं रामायणम्

191. शुद्धं वाक्यं प्रदर्शय– AWES TGT–2009

(A) अहं विद्यां पठितम् (B) मया विद्या पठिता
(C) मया विद्यां पठिता (D) अहं विद्या पठितम्

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–63*

192. शुद्धं वाक्यं प्रदर्शय– AWES TGT–2009

(A) साधवः दीनं प्रति दयां कुर्वन्ति
(B) साधवः दीनेभ्यः प्रति दयाकुर्वन्ति
(C) साधवः दीनं प्रति दयां कुर्वति
(D) साधवः दीनानां प्रति दया कुर्वन्ति।

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–186*

193. शुद्धं वाक्यं प्रदर्शय– AWES TGT–2009

(A) समुद्रात् सुधां मन्थति (B) सुधां समुद्रात् मथ्नाति
(C) समुद्रात् सुधां मथ्नाति (D) सुधां समुद्रं मथ्नाति

स्रोत–*(i) संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–182*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.51) - ईश्वरचन्द्र, पेज–128

194. शुद्धं वाक्यं प्रदर्शय– AWES TGT–2009

(A) द्वारपालः स्वनियोगे अधितिष्ठति
(B) द्वारपालः स्वनियोगमधितिष्ठति
(C) द्वारपालः स्वनियोगमधितिष्ठते
(D) द्वारपालः स्वनियोगः अधितिष्ठति।

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.46) - ईश्वरचन्द्र, पेज–126*

195. शुद्धं वाक्यं प्रदर्शय– AWES TGT–2009

(A) हंसः वियति उड्डीयते
(B) हंसः वियते उड्डीयते
(C) हंसः वियत उड्डीयते
(D) हंसः वियतम् उड्डीयते

183. (B) 184. (A) 185. (D) 186. (D) 187. (A) 188. (C) 189. (A) 190. (D) 191. (B) 192. (A) 193. (D) 194. (B) 195. (A)

196. शुद्धं वाक्यं प्रदर्शय– AWES TGT–2009

(A) उत्कोचं तं देहि तेन तव कार्यं सेत्स्यति
(B) उत्कोचः तस्मै तेहि तेन तव कार्यं सेत्स्यति।
(C) उत्कोच तस्मै देहि तेन तव कार्यं सेत्स्यति
(D) उत्कोचं तस्मै दास्यति तेन तव कार्यं सेत्स्यति।

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.32) - ईश्वरचन्द्र, पेज–122*

197. शुद्धं वाक्यं प्रदर्शय– AWES TGT–2009

(A) हस्तलिपिः स्पष्टा शुद्धा च कुरु
(B) हस्तलिपिं स्पष्टं शुद्धं च कुरु
(C) हस्तलिपिं स्पष्टां शुद्धां च कुरु
(D) हस्तलिपिः स्पष्टां शुद्धां च कुरु।

198. शुद्धं वाक्यं प्रदर्शय– AWES TGT–2009

(A) न हि सत्येन विरमत्ति बुधाः
(B) न हि सत्यात् विरमन्ति बुधाः
(C) न हि सत्यस्य विरमति बुधाः
(D) न हि सत्ये विरमति बुधाः।

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–207*

199. शुद्धं वाक्यं प्रदर्शय– AWES TGT–2009

(A) भगवन्! चन्द्रशेखर! मया पाहि
(B) भगवन्! चन्द्रशेखरः! मां पाहि
(C) भगवान्! चन्द्रशेखरः! मह्यं पाहि
(D) भगवन्! चन्द्रशेखर! मां पाहि।

स्रोत–*धातुरूपकौमुदी - राजेश्वर शास्त्री/मुसलगाँवकर, पेज–235*

200. शुद्धं वाक्यं प्रदर्शय– AWES TGT–2009

(A) अहं स्वाभ्युदयाय लक्ष्मीनारायणौ वन्दे
(B) अहं स्वाभ्युदयाय लक्ष्मीनारायणं वन्दे
(C) अहं स्वाभ्युदयाय लक्ष्मीनारायणेभ्यः वन्दे
(D) अहं स्वाभ्युदयाय लक्ष्मीनारायणोः वन्दे।

201. किं रूपं शुद्धम्? AWES TGT–2008

(A) किंकरः (B) किङ्करः
(C) किन्करः (D) किन्करः

स्रोत–*अष्टाध्यायी (8.4.58) - ईश्वरचन्द्र, पेज–1099*

202. किं रूपं शुद्धम्? AWES TGT–2008

(A) राज्ञां पूजितः (B) राजपूजितः
(C) राजपूजितम् (D) राजपूजिता

स्रोत–*(i) संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–228*
(ii) अष्टाध्यायी (2.3.67) - ईश्वरचन्द्र, पेज–216

203. किं रूपं शुद्धम्– AWES TGT–2008

(A) सोदरी (B) सहोदरी
(C) सहोदरि (D) सहोदरा

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग–6), पेज–111*

204. किं रूपं शुद्धम्– AWES TGT–2008

(A) आर्षिः भणितिः (B) आर्षा भणितिः
(C) आर्षी भणितिः (D) आर्षम्भणितिः

205. शुद्धं वाक्यं प्रदर्शय– AWES TGT–2008

(A) किमिति वृथा प्रकुप्यसि गुरौ
(B) किमिति वृथा प्रकुप्यसि गुरवे
(C) किमिति वृथा प्रकुप्यसि गुरुषु
(D) किमिति वृथा प्रकुप्यसि गुरूणाम्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.37) - ईश्वरचन्द्र, पेज–124*

206. शुद्धं वाक्यं प्रदर्शय– AWES TGT–2008

(A) नास्ति मे मरणस्य भयम् (B) नास्ति मे मरणस्य भयः
(C) मे मरणाद्भयः नास्ति (D) मरणाद्भयं मे नास्ति

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.25) - ईश्वरचन्द्र, पेज–120*

207. शुद्धं वाक्यं प्रदर्शय– AWES TGT–2008

(A) सूर्यस्य तेजेन भूमण्डलं तप्तम्
(B) सूर्यस्य तेजत्वेन भूमण्डलं तप्तम्
(C) सूर्यस्य तेजसा भूमण्डलं तप्तम्
(D) सूर्यस्य तेजेन भूमण्डलः तप्तः।

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–66*

208. शुद्धं वाक्यं प्रदर्शय– AWES TGT–2008

(A) कदापि मृषा मा वदेत् (B) कदापि मृषां मा वदेत्
(C) कदापि मृषाः मा वदेत् (D) कदापि मृषः मा वदेत्

196. (D) 197. (C) 198. (B) 199. (D) 200. (A) 201. (B) 202. (A) 203. (D) 204. (C) 205. (B) 206. (D) 207. (C) 208. (A)

209. शुद्धं वाक्यं प्रदर्शय– AWES TGT–2008

(A) मम न रोचते ते वाक्यम्
(B) मे न रोचते ते वाक्यम्
(C) माम् न रोचते ते वाक्यम्
(D) मया न रोचते ते वाक्यम्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.33) - ईश्वरचन्द्र, पेज–123*

210. शुद्धं वाक्यं प्रदर्शय– AWES TGT–2008

(A) कृष्णस्य सर्वतः गोपाः (B) कृष्णं सर्वतः गोपाः
(C) कृष्णस्य सर्वतः गोपान् (D) कृष्णं सर्वतः गोपान्

स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–30*

211. शुद्धं वाक्यं प्रदर्शय– AWES TGT–2008

(A) द्वादशसु दिनेषु नीरोगः जातः।
(B) द्वादशादिनेषु नीरोगः जातः।
(C) द्वादशभिः दिनैः नीरोगः जातः।
(D) द्वादशान् दिनान् नीरोगः जातः।

स्रोत–*(i) अष्टाध्यायी (2.3.6) - ईश्वरचन्द्र, पेज–196*
(ii) संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–196

212. शुद्धं वाक्यं प्रदर्शय– AWES TGT–2008

(A) आर्तत्राणं वः शस्त्रम्
(B) आर्तत्राणेन वः शस्त्रम्
(C) आर्तत्राणानां वः शस्त्रम्
(D) आर्तत्राणाय वः शस्त्रम्

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–203*

213. शुद्धं वाक्यं प्रदर्शय– AWES TGT–2008

(A) पुत्र लोकव्यवहारेषु अनभिज्ञोऽसि
(B) पुत्रः लोकव्यवहारम् अनभिज्ञोऽसि
(C) पुत्र लोकव्यवहारेऽनभिज्ञोऽसि
(D) पुत्र लोकव्यहाराणाम् अनभिज्ञोऽसि

स्रोत–*(i) संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–217*
(ii) रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–34

214. शुद्धं वाक्यं प्रदर्शय– AWES TGT–2008

(A) केन हेतुना अत्र वससि?
(B) कस्य हेतुना अत्र वससि?
(C) क हेतुना अत्र वससि?
(D) कस्य हेतुः अत्र वससि?

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–222*

215. शुद्धं रूपं प्रदर्शय– AWES TGT–2012

(A) हिमालयेन गङ्गा निगच्छति
(C) हिमालयः गङ्गया निर्गच्छति
(C) हिमालयात् गङ्गा निर्गच्छति
(D) हिमालये गङ्गा निर्गच्छति

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–210*

216. शुद्ध वर्तनी की दृष्टि से 'अनयोः आश्रितः' का सही विकल्प क्या है? BHU B.Ed–2015

(A) अनयोनाश्रितः
(B) अन्योआश्रितः
(C) अन्योन्याश्रितः
(D) अन्यनाश्रितः

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.31) - ईश्वरचन्द्र, पेज–121*

217. अहं त्वं च विद्यालयं– CVVET–2015

(A) गच्छामि (B) गच्छसि
(C) गच्छथः (D) गच्छावः

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–102*

218. रामः ग्रन्थौ– CVVET–2015

(A) पठति (B) पठतः
(C) पठ्यते (D) पठ्येते

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–02*

209. (B)	210. (B)	211. (C)	212. (D)	213. (A)	214. (A)	215. (C)	216. (C)	217. (D)	218. (A)

10. उपसर्ग और अव्यय

1. उपसर्ग क्या है? UP PGT–2004
(A) प्रत्यय (B) शब्द
(C) कृदन्त (D) अव्यय

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–518*

2. उपसर्ग धातु के साथ कहाँ आता है? UP TGT–2004, UP TET–2014
(A) पहले (B) पीछे
(C) आगे-पीछे (D) लग नहीं सकता

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–518*

3. आदि में जुड़ने वाले तथा अर्थपरिवर्तन करने वाले शब्दांश को कहते हैं? UP TET–2016
(A) परसर्ग (B) प्रत्यय
(C) विसर्ग (D) उपसर्ग

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–518*

4. यदि 'उपसर्ग' क्रिया से युक्त हो तो उसे कहेंगे? UP TGT–2004
(A) संज्ञा (B) परिभाषा
(C) गति (D) अधिकार

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–193*

5. उपसर्गप्रयोगेण धात्वर्थस्य भवति– RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014
(A) परिवर्तनम् (B) टिप्पणीकरणम्
(C) नाशः (D) अधःकरणम्

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–518*

6. उपसर्गयुक्तपदमस्ति– RPSC ग्रेड-II (TGT)–2010
(A) करोति (B) निरस्यति
(C) हसति (D) अस्ति

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–519-520*

7. उपसर्गरहितपदमस्ति– RPSC ग्रेड-II (TGT)–2010
(A) अन्वेषणात् (B) आलोचनम्
(C) निपातेन (D) पतितः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड–3)-भीमसेन शास्त्री, पेज–107*

8. 'आनयति' पद में उपसर्ग है? RPSC ग्रेड-III–2013
(A) आङ् (B) आन्
(C) आम् (D) अनु

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–519*

9. 'निर्मक्षिकम्' पद में उपसर्ग है? RPSC ग्रेड-III–2013
(A) निर्म (B) निर्
(C) निश् (D) निरम्

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–519*

10. 'अनुगृहीत' पद में उपसर्ग है? RPSC ग्रेड-III–2013
(A) अ (B) अनु
(C) आङ् (D) अन्

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–519*

11. 'अध्यास्ते' पद में उपसर्ग है? RPSC ग्रेड-III–2013
(A) अधि (B) अध्
(C) अध्य् (D) अध्याः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–519*

12. उपसर्ग में सम्मिलित नहीं है? RPSC ग्रेड-III (PGT)–2013
(A) अभि (B) भव
(C) परि (D) अनु

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–58*

13. 'स्वागतम्' शब्द में उपसर्ग है? RPSC ग्रेड-III (PGT)–2013
(A) स्व (B) अ
(C) सु (D) अप्

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–519*

1. (D)	2. (A)	3. (D)	4. (C)	5. (A)	6. (B)	7. (D)	8. (A)	9. (B)	10. (B)
11. (A)	12. (B)	13. (C)							

14. 'प्राचार्य' शब्द में 'प्र' उपसर्ग का अर्थ है– RPSC ग्रेड-III (PGT)–2013

(A) प्रगत (B) अपकर्ष
(C) प्रस्थित (D) पूर्व

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–252*

15. 'पर्याय' पद में उपसर्ग है? RPSC ग्रेड-I (PGT)–2013

(A) परि (B) परी
(C) परा (D) प्र

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–519*

16. 'संस्कारः' पद में उपसर्ग है? UP PGT (H)–2005, RPSC ग्रेड-III–2013

(A) सस् (B) संस्
(C) संश् (D) सम्

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–520*

17. 'संस्कृतम्' शब्द में निम्नाङ्कित में से कौन-सा उपसर्ग है? UP TET–2016

(A) समु (B) सम्
(C) स (D) सम

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–520*

18. प्रादि की उपसर्गसंज्ञा होती है? RPSC ग्रेड-III – 2013

(A) कारक का योग होने पर (B) क्रिया योग होने पर
(C) प्रातिपदिक होने पर (D) पद योग होने पर

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–58*

19. 'अन्वर्थक' शब्द में उपसर्ग है– RPSC ग्रेड-III –2013

(A) अन् (B) अनि
(C) अनु (D) अनू

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–519*

20. यह एक उपसर्ग है– BHU MET–2010

(A) रामः (B) गम्
(C) पठ् (D) निर्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–58*

21. 'अधीत्य' इति पदे कः उपसर्गः? C-TET–2012

(A) य (B) ई
(C) अधि (D) ल्यप्

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–207*

22. उपसर्गसंज्ञा किसकी होती है? BHU MET–2008

(A) प्रादि की (B) सुप् की
(C) तिङ् की (D) हल् की

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–58*

23. निम्नलिखित शब्दों में से कौन-सा शब्द उपसर्गयुक्त नहीं है– UP TET–2014

(A) विहार (B) विटप
(C) विदेश (D) वियोग

स्रोत–*संस्कृत हिन्दी कोश - वामन शिवराम आप्टे, पेज–932*

24. 'निर्गता' इत्यत्र कः उपसर्गः? REET–2016

(A) निः (B) निस्
(C) नि (D) निर्

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–520*

25. (i) कति उपसर्गाः सन्ति– BHU AET–2012
(ii) उपसर्गाः कियन्तः? JNU MET–2014
(iii) उपसर्गों की संख्या कितनी है? UGC 73 D–2014 BHU MET–2008, UP TET–2014, 2016

(A) विंशतिः (20) (B) द्वाविंशतिः (22)
(C) एकादश (21) (D) दश (10)

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–58*

26. उपमार्थकनिपातः कतिविधः? HE –2015

(A) द्वितीयः (B) त्रिविधः
(C) चतुर्विधः (D) पञ्चविधः

स्रोत–*हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज–34*

27. कस्य नैरुक्ताचार्यस्य मते उपसर्गाः वाचकः न, अपितु द्योतकाः भवन्ति? HE –2015

(A) शाकटायनस्य (B) औदुम्बरायणस्य
(C) शाकपूणेः (D) दुर्गाचार्यस्य

स्रोत–*निरुक्त (प्रथम अध्याय) - छज्जूराम शास्त्री, पेज–11*

14. (A)	**15.** (A)	**16.** (D)	**17.** (B)	**18.** (B)	**19.** (C)	**20.** (D)	**21.** (C)	**22.** (A)	**23.** (B)
24. (D)	**25.** (B)	**26.** (C)	**27.** (A)						

28. संस्कृते उपसर्गत्वेन न गण्यते– DL–2015

(A) परा (B) सम्

(C) निस् (D) यत्

***स्रोत**–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–519*

29. प्रपद्यते पदे 'प्र' इत्युपसर्गयोगाद्विशेषः ज्ञायते– DL–2015

(A) प्रकर्षः (B) प्रकाशः

(C) प्रमाणम् (D) प्रमेयम्

***स्रोत**–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–520*

30. किस शब्द में 'आ' उपसर्ग नही है? UP TGT (H)–2015

(A) आजन्म (B) आगमन

(C) आकर्षक (D) आदरणीया

31. 'उपसर्ग' से सम्बन्धित सूत्र है– UP PGT (H)–2005

(A) प्रादयः (B) परश्च

(C) गतिश्च (D) इनमें से कोई नहीं

***स्रोत**–अष्टाध्यायी (1.4.58) - ईश्वरचन्द्र, पेज–132*

32. 'सम्' उपसर्ग से निष्पन्न शब्द कौन-सा है? UP PGT (H)–2009

(A) संस्कार (B) सामना

(C) समझौता (D) स्वयं

***स्रोत**–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–520*

33. उच्चारण शब्द में उपसर्ग है– UP PGT (H)–2010

(A) उ (B) उच्

(C) उत् (D) उच्च

***स्रोत**–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–519*

34. स्वरादिनिपातम् किम्? RPSC ग्रेड-II (TGT)–2010

(A) सन्धिः (B) धातुः

(C) अव्ययम् (D) कारकम्

***स्रोत**–अष्टाध्यायी (1.1.36) - ईश्वरचन्द्र, पेज–23*

35. 'उच्चैः' का स्वरूप क्या है? UP TGT–2004

(A) अव्यय (B) प्रत्यय

(C) उपसर्ग (D) सर्वनाम

लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड–1)-भीमसेन शास्त्री, पेज–517

36. 'चिरम्' अव्ययस्य अर्थः अस्ति– RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014

(A) दीर्घकालम् (B) अल्पकालम्

(C) निश्चितकालपर्यन्तम् (D) शीघ्रम्

लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड–1) - भीमसेन शास्त्री, पेज–519

37. ननु एवं कथमुच्यते इत्यत्र 'ननु' अव्ययस्य अर्थः अस्ति– RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014

(A) अनुनयः (B) शङ्का

(C) वार्ता (D) नियमः

***स्रोत**–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड–1)-भीमसेन शास्त्री, पेज–556*

38. 'न खलु न खलु बाणः सन्निपात्योऽयमस्मिन्' अत्र 'खलु' अव्ययेन सूच्यते– RPSC ग्रेड I (PGT)–2014

(A) अनुनयः (B) जिज्ञासा

(C) निश्चयः (D) नियमः

***स्रोत**–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड–1)-भीमसेन शास्त्री, पेज–543*

39. 'इदानीं रमेशः प्रातः उच्चैः पठति' इत्यस्मिन् वाक्ये कति अव्ययानि सन्ति? RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014

(A) 5 (B) 4

(C) 2 (D) 3

लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्याखण्ड–1)-भीमसेन शास्त्री, पेज–517, 516, 569

40. ''सः शनैः चरति'' इत्यत्र अव्ययस्य अर्थः अस्ति– RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014

(A) मन्दगत्या (B) लघुगत्या

(C) दीर्घगत्या (D) तीव्रगत्या

***स्रोत**–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड–1)-भीमसेन शास्त्री, पेज–517*

41. 'सः शनैः शनैः चरति।' इत्यत्र 'शनैः' अव्ययस्य उचितमर्थं स्यात्? RPSC ग्रेड I (PGT)–2014

(A) मन्दगत्या (B) तीव्रगत्या

(C) मन्दस्वरेण (D) मन्दरीत्या

***स्रोत**–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड–1)-भीमसेन शास्त्री, पेज–517*

28. (D)	29. (A)	30. (D)	31. (A)	32. (A)	33. (C)	34. (C)	35. (A)	36. (A)	37. (B)
38. (A)	39. (D)	40. (A)	41. (A)						

42. ''विद्वांसं किल आश्रयेयुः'' इत्यत्र 'किल' अव्ययस्य अर्थः अस्ति– RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014
(A) विद्याप्रकर्षः (B) वार्ता
(C) अनुनयः (D) सामान्यरूपेण निश्चयार्थे
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड–1)-भीमसेन शास्त्री, पेज–544

43. 'धिक्' इति अव्ययस्य अर्थः अस्ति– RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014
(A) भर्त्सनम् (B) शङ्का
(C) निषेधः (D) अल्पम्
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड–1)-भीमसेन शास्त्री, पेज–530

44. 'नमः' इति अव्ययस्य योगे विभक्तिः प्रयुज्यते– RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014
(A) द्वितीया (B) चतुर्थी
(C) सप्तमी (D) प्रथमा
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड–1)-भीमसेन शास्त्री, पेज–529

45. भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः? अस्मिन् वाक्ये 'पुनः' अव्ययस्य अर्थः अस्ति– RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014
(A) निषेधः (B) जिज्ञासा
(C) वाक्यालङ्कारः (D) पुनरावृत्तिः
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड–1)-भीमसेन शास्त्री, पेज–516

46. 'अलं मल्लो मल्लाय' में अव्यय है– RPSC ग्रेड-III –2013
(A) मल्लाय (B) अलम्
(C) मल्लो (D) अलंमल्लो
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड–1)-भीमसेन शास्त्री, पेज–526

47. निम्नाङ्कित में 'अव्यय' है– RPSC ग्रेड-III –2013
(A) तरप् (B) तमप्
(C) अधुना (D) अनीयर्
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड–1)-भीमसेन शास्त्री, पेज–569

48. किञ्चात्र मध्यार्थकम् अव्ययपदम्? BHU Sh.ET–2008
(A) यथा (B) अन्तरा
(C) प्रति (D) विना
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड–1)-भीमसेन शास्त्री, पेज–523

49. 'क्षिप्रम्' क्या है– BHU MET–2010
(A) अव्यय (B) द्वितीयान्तपुँल्लिङ्ग शब्द
(C) द्वितीयान्तस्त्रीलिङ्ग (D) द्वितीयान्तनपुंसकलिङ्ग
स्रोत–संस्कृत-हिन्दी - वामनशिवराम आप्टे, पेज–318

50. 'न सा सभा यत्र न सन्ति वृद्धाः' में कितने अव्ययपद हैं– BHU MET–2010
(A) 3 (B) 4
(C) 1 (D) 2

51. 'अव्यय' शब्द है– UP TET–2013
(A) सर्वदा (B) नदी
(C) अहम् (D) सः
लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड–1)-भीमसेन शास्त्री, पेज–569

52. 'आरात्' इति एतत्– C-TET–2012
(A) नामपदम् (B) क्रियापदम्
(C) उपसर्गः (D) अव्ययम्
लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड–1)-भीमसेन शास्त्री, पेज–518

53. 'अत्र तत्र' इत्यर्थे किम् अव्ययपदं प्रयुक्तम् अस्ति– C-TET–2012
(A) इतस्ततः (B) किल
(C) मा (D) कदाचित्
स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–522

54. 'अधुना' इत्यर्थे अत्र किं पदं प्रयुक्तम्? C-TET–2012
(A) एव (B) यत्
(C) इति (D) सम्प्रति
स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–4

42. (D)	**43.** (A)	**44.** (B)	**45.** (D)	**46.** (B)	**47.** (C)	**48.** (B)	**49.** (A)	**50.** (A)	**51.** (A)
52. (D)	**53.** (A)	**54.** (D)							

55. 'धिक्' अव्ययस्य प्रयोगे विभक्तिः प्रयुज्यते–
RPSC ग्रेड I (PGT)–2014

(A) तृतीया (B) चतुर्थी
(C) द्वितीया (D) प्रथमा

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–12*

56. 'मशकः कर्णस्य पार्श्वे शब्दं करोति' वाक्य में अव्यय है– UP TET–2014

(A) शब्दम् (B) पार्श्वे
(C) कर्णस्य (D) मशकः

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–26*

57. 'अद्य अहं पाठं न पठिष्यामि' वाक्य में अव्ययपद है–
UP TET–2014

(A) अद्य (B) अहं
(C) पाठं (D) पठिष्यामि

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–522*

58. ''गच्छतु भवान् .... दर्शनाय।''
इत्यस्मिन् वाक्ये रिक्तस्थाने उचितमव्ययं भविष्यति–
RPSC ग्रेड-I (PGT)–2014

(A) किल (B) विना
(C) पुनर् (D) पुरा

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–62*

59. 'राष्ट्रपतिः .... अत्रागन्ता' वाक्य में रिक्तस्थान में प्रयुक्त होने वाला पद है– RPSC ग्रेड-III–2013

(A) श्वः (B) ह्यः
(C) विना (D) प्रति

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–60*

60. निम्नलिखित में से कौन सा पद 'अव्यय' है?
UP TET–2014

(A) अत्र (B) मया
(C) पाठं (D) पठामि

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–522*

61. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द अव्यय है?
UP TET–2013

(A) राम (B) लता
(C) यथा (D) गुरु

लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड–1)-भीमसेन शास्त्री, पेज–570

62. 'आशु' शब्द का अर्थ है– AWES TGT–2013

(A) तत्पश्चात् (B) ततः
(C) स्वयम् (D) शीघ्रम्

स्रोत–*संस्कृत हिन्दी-कोश - वामन शिवराम आप्टे, पेज–164*

63. 'आशु' इत्यस्य पर्यायवाची किम् अस्ति–
UK TET–2011

(A) सुलभः (B) त्वरितम्
(C) ध्रुवम् (D) नूनम्

स्रोत–*संस्कृत हिन्दी-कोश - वामन शिवराम आप्टे, पेज–164*

64. 'शशिना सह याति कौमुदी'-यहाँ अव्ययपद क्या है?
BHU MET–2012

(A) शशिना (B) सह
(C) याति (D) कौमुदी

लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड–1)-भीमसेन शास्त्री, पेज–552

65. 'स्वाहा' किस तरह का पद है– BHU MET–2012

(A) अव्यय (B) प्रथमा (स्त्रीलिङ्ग)
(C) तृतीया (पुँल्लिङ्ग) (D) सर्वनाम

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–20*

66. .... अपि महिलाः समादृताः आसन्–
AWES TGT–2010, 2011

(A) च (B) परम्
(C) अधुना (D) पुरा

लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड–1)-भीमसेन शास्त्री, पेज–528

67. .... धनस्य महती अवश्यकता अस्ति–
AWES TGT–2010, 2011

(A) उच्चैः (B) पुरा
(C) अधुना (D) इतः

लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड–1)-भीमसेन शास्त्री, पेज–569

55. (C) **56.** (B) **57.** (A) **58.** (C) **59.** (A) **60.** (A) **61.** (C) **62.** (D) **63.** (B) **64.** (B)
65. (A) **66.** (D) **67.** (C)

68. अव्यय शब्दों में किस विभक्ति के प्रत्ययों का लोप होता है? UP TGT–2013

(A) प्रथमा का (B) द्वितीया का

(C) तृतीया का (D) सभी का

स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.4.82) - ईश्वरचन्द्र, पेज–247*

69. 'अथ' इति अव्ययस्य अर्थः किम् अस्ति? UK TET–2011

(A) अनन्तरम् (B) मध्यमः

(C) अन्तिमः (D) अद्य

लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड–1)-भीमसेन शास्त्री, पेज–530

70. 'तरूणाम् .... बालाः क्रीडन्ति।' रिक्तस्थाने उचितमव्ययं चेतव्यम्। RPSC ग्रेड I PGT–2014

(A) अधः (B) विना

(C) श्वः (D) उच्चैः

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–12*

71. 'साम्प्रतम्' इति पदस्य पर्यायो भवति– C-TET–2015

(A) अधुना (B) तदा

(C) श्वः (D) अद्य

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूलाल सक्सेना, पेज–524*

72. ''लघ्वी .... वृद्धिमती च पश्चात्।'' – रिक्तस्थाने उचितमव्ययं चेतव्यम्? RPSC ग्रेड I (PGT)–2014

(A) पुरा (B) ह्यः

(C) मिथ्या (D) अधः

स्रोत–*नीतिशतकम् (श्लोक-49)-राजेश्वर प्रसाद मिश्र, पेज–104*

73. ''जलं .... जीवनं नास्ति'' उचितमव्ययं चित्वा रिक्तस्थानपूर्तिः कर्तव्या। RPSC ग्रेड I (PGT)–2014

(A) पुनः (B) विना

(C) सह (D) मिथः

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–12*

74. निम्न में कौन कथन सत्य नहीं है–UP TGT (H)–2015

(A) संस्कृत में तीन वचन होते हैं।

(B) हिन्दी में दो वचन होते हैं।

(C) हिन्दी में दो लिंग होते हैं।

(D) संस्कृत में हिन्दी की तरह दो लिंग होते हैं।

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–122*

75. प्रश्ननिर्माणं कुरुत– AWES TGT–2010

अश्वाः .... प्राणत्राणाय इतस्ततः अधावन्–

(A) किम् (B) किमर्थम्

(C) कान् (D) केन

76. ''न च प्रयोजनमन्तरा चाणक्यः स्वप्नेऽपि चेष्टते।'' उपर्युक्त वाक्ये 'अन्तरा' अव्ययस्य अर्थ अस्ति– RPSC ग्रेड I (PGT)–2014

(A) मध्ये (B) विना

(C) सह (D) मिथः

स्रोत–*(i) रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–12*

(ii) मुद्राराक्षस (अङ्क-3) - पुष्पा गुप्ता, पेज–162

नगरे नगरे ग्रामे ग्रामे विलसतु संस्कृतवाणी।
सदने सदने जनजनवदने जयतु चिरं कल्याणी।।

68. (D) 69. (A) 70. (A) 71. (A) 72. (A) 73. (B) 74. (D) 75. (B) 76. (B)

11. संस्कृत-संख्या

1. 'अष्टाविंशतिः' शब्द का क्या अर्थ है?
UP TGT–1999, UP TET–2014

(A) अठारह (18) (B) अड़तीस (38)
(C) अट्ठाईस (28) (D) अड़तालीस (48)

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–151*

2. `55' संख्या का वाचक संस्कृत शब्द कौन-सा है?
UP TGT–1999, UP TET–2014

(A) पञ्चपञ्चाशत् (B) पञ्चापञ्चशत
(C) पञ्चपञ्च (D) पञ्चशताम्

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–154*

3. संस्कृत शब्द 'चत्वारिंशत्' किस संख्या का वाचक है?
UP TGT–1999

(A) 400 (B) 104
(C) 40 (D) 44

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–152*

4. संख्यावाची शब्द 'षण्णवतिः' किस अंक का वाचक है? **UP TGT–1999**

(A) 69 (B) 96
(C) 79 (D) 66

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–158*

5. `49' का शब्दात्मक रूप होगा? UP TGT–2001

(A) नवचत्वारिंशत् (B) नवपञ्चाशत्
(C) एकोनचत्वारिंशत् (D) एकोनत्रिंशत्

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–153*

6. `99' का संस्कृत शब्द होगा?
UP TGT–2001, 2003, 2009

(A) नवतिः (B) नवनवतिः
(C) षण्णवतिः (D) एकोननवतिः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–158*

7. `33' को संस्कृत में कैसे लिखेंगे? UP TGT–2001

(A) त्रयोत्रिंशत् (B) त्रयशती
(C) त्रयस्त्रिंशत् (D) त्रयोस्त्रिशती

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–152*

8. 'द्वि' इस संख्यावाची शब्द का पुँल्लिङ्ग रूप होगा?
H-TET–2015

(A) द्वे (B) द्वौ
(C) द्वि (D) दो

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–135*

9. 'एकोनसप्ततिः' कौन-सी संख्या है?
UP TGT–2004, DL–2015

(A) 79 (B) 71
(C) 70 (D) 69

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–155*

10. `89' का संस्कृत रूप होगा? UP TGT–2004

(A) नवतिः (B) नवनवतिः
(C) एकोननवतिः (D) षडशीतिः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–157*

11. (i) 10,000 भवति – UP TGT–2004, 2009
(ii) संस्कृत में 'दशहजार' होगा? AWES TGT–2009

(A) अयुतम् (B) सहस्रम्
(C) लक्षम् (D) नियुतम्

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–159*

12. `32' का संस्कृत शब्दात्मक रूप होगा?
UP TGT–2004

(A) द्वात्रिंशत् (B) द्वाविंशतिः
(C) द्विचत्वारिंशत् (D) द्विपञ्चाशत्

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–151*

1. (C)	**2. (A)**	**3. (C)**	**4. (B)**	**5. (A)**	**6. (B)**	**7. (C)**	**8. (B)**	**9. (D)**	**10. (C)**
11. (A)	**12. (A)**								

13. `25' का संस्कृत शब्दात्मक रूप होगा? **UP TGT–2004**
(A) पञ्चविंशतिः (B) पञ्चपञ्चाशत्
(C) पञ्चदश (D) एकोनपञ्चाशत्
स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–151*

14. (i) `96' का संस्कृत रूप होगा? **UP TGT–2005**
(ii) द्वयङ्का 96 संख्या संस्कृते लिख्यते– **DL–2015**
(A) षट्सप्ततिः (B) षडशीतिः
(C) षण्णवतिः (D) षट्षष्टिः
स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–158*

15. `91' का संस्कृत शब्दात्मक रूप होगा? **UP TGT–2005**
(A) एकनवतिः (B) नवनवतिः
(C) एकोननवतिः (D) एकाशीतिः
स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–158*

16. 'तेरह' के लिए संस्कृत में शब्द है? **UP TGT–2009**
(A) त्रयदशम् (B) त्रिदश
(C) त्रयोदश (D) इनमें से कोई नहीं
स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–150*

17. 'चतुरशीतिः' किसे कहते हैं? **UP TGT–2010**
(A) 84 (B) 48
(C) 44 (D) 480
स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–157*

18. 'षट्सप्ततिः' का अर्थ है– **UP PGT–2010, UK TET–2011**
(A) 76 (B) 67
(C) 660 (D) 607
स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–156*

19. 'पचास' को संस्कृत में कहा जाता है? **UP PGT–2010**
(A) पञ्चदश (B) पञ्चाशत्
(C) पञ्चशतम् (D) इनमें से कोई नहीं
स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–153*

20. 'एकोनविंशतिः' शब्द का अर्थ है– **UP TET–2014**
(A) इक्कीस (21) (B) उन्नीस (19)
(C) इक्यावन (51) (D) इक्यानवे (91)
स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–150*

21. 'सप्तविंशतिः' शब्द का अर्थ है– **UP TET–2013**
(A) सत्रह (17) (B) सत्ताइस (27)
(C) सैंतीस (37) (D) सैंतालिस (47)
स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–151*

22. संस्कृतभाषायां '27' संख्या वर्तते। **AWES TGT–2012**
(A) सप्तविंशतिः (B) सप्तविंशः
(C) सप्तविंशतितमम् (D) सप्तविंशतितमी
स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–151*

23. 'पञ्चविंशतिः' शब्द का हिन्दी अर्थ होता है? **UP TET–2013**
(A) पन्द्रह (15) (B) पच्चीस (25)
(C) पैंतीस (35) (D) पचास (50)
स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–151*

24. संख्यावाचक '21' अङ्कस्य कृते पदं लिख्यते– **DL–2015**
(A) विंशोत्तरैकम् (B) विंश्याः उत्तरम्
(C) एकविंशतिः (D) उत्तरविंशतिः
स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–151*

25. उचितं संख्यापदं चित्वा वाक्यानि पूरयत–
.... बालिकयोः भ्रातरः कुत्र सन्ति? **AWES TGT–2013**
(A) द्वौ (B) द्वे
(C) द्वयोः (D) द्वाभ्याम्
स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–135*

13. (A)	14. (C)	15. (A)	16. (C)	17. (A)	18. (A)	19. (B)	20. (B)	21. (B)	22. (A)
23. (B)	24. (C)	25. (C)							

26. गुरुकुले छात्राः .... वेदान् पठन्ति। AWES TGT–2013

(A) चत्वारि (B) चत्वारः
(C) चतुरः (D) चतुरान्

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–136*

27. .... (500) छात्राः पठन्ति। AWES TGT–2013

(A) पञ्चाशत् (B) पञ्चशतम्
(C) पञ्चविंशतिः (D) पञ्चपञ्चाशत्

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–159*

28. वृक्षे (5) .... पक्षिणः कूजन्ति। AWES TGT–2013

(A) पञ्चभिः (B) पञ्चसु
(C) पञ्चभ्यः (D) पञ्च

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–136*

29. .... (94) पुस्तकानि सन्ति। AWES TGT–2010, 2013

(A) चतुर्णवतिः (B) चतुर्नवतिः
(C) चतुर्णवातिः (D) चतुरणवतिः

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–140*

30. वित्तस्य .... (3) गतयः भवन्ति। AWES TGT–2013

(A) त्रयः (B) त्रीणि
(C) तिस्रः (D) त्रयाणि

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–162*

31. कः शब्दः 29 इति संख्यायाः वाचकः न– AWES TGT–2010

(A) ऊनत्रिंशी (B) ऊनत्रिंशत्
(C) एकोनत्रिंशत् (D) नवविंशतिः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–151*

32. अयुतम् = AWES TGT–2010

(A) 10000 (B) 1000000
(C) 1000 (D) 100000

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–159*

33. 'अष्टन्' शब्द का प्रथमा विभक्ति का क्या रूप होता है? UP TGT–2013

(A) अष्टः (B) अष्टन्
(C) अष्टौ (D) अष्टाः

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–136*

34. 'आठ' को पुँल्लिङ्ग में क्या कहेंगे? UP TGT–2010

(A) अष्टम् (B) अष्टौ
(C) अष्टाः (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–136*

35. किम् 'चतुर्णवतिः' – AWES TGT–2010

(A) 49 (B) 84
(C) 48 (D) 94

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–140*

36. (i) 'नियुतम्' भवति AWES TGT–2008, 2010
(ii) किम् 'नियुतम्'

(A) 1,00,000 (B) 10,000
(C) 10,00,000 (D) 1,000

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–140*

37. 'त्रयस्त्रिंशत्' भवति– AWES TGT–2010

(A) 63 (B) 33
(C) 113 (D) 313

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–139*

38. संस्कृतभाषायां 88 संख्या वर्तते–AWES TGT–2010

(A) अशीतिः (B) अष्टाषष्टिः
(C) षट्षष्टिः (D) अष्टाशीतिः

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–140*

39. 'अष्टाशीतिः' पद का अर्थ .... संख्या है? UP TET–2016

(A) 78 (B) 88
(C) 87 (D) 18

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–157*

26. (C)	27. (B)	28. (D)	29. (B)	30. (C)	31. (A)	32. (A)	33. (C)	34. (B)	35. (D)
36. (C)	37. (B)	38. (D)	39. (B)						

40. सप्तत्रिंशदधिकषट्शताधिक-नवसहस्राधिकनवायुतं भवति– **AWES TGT–2010**

(A) 73,699 (B) 99,637
(C) 37, 969 (D) 96, 937

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–161*

41. 'नवतितमः भवति– **AWES TGT–2009**

(A) 900 (B) 9000
(C) 09 (D) 90

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–157*

42. 'द्व्यधिकपञ्चशतम्' किस संख्या का वाचक है? **UP TET–2016**

(A) 52 (B) 25
(C) 50 (D) 502

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–159*

43. 'सार्धशतचतुष्टयम्' भवति– **AWES TGT–2009**

(A) 54 (B) 450
(C) 540 (D) 4500

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी*

44. `66' भवति– **AWES TGT–2009**

(A) षट्षष्टिः (B) षष्टिषट्
(C) षषष्टिः (D) षड्षष्टिः

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–139*

45. पञ्चदशोनद्विसहस्रतमे– **AWES TGT–2008**

(A) 1,985 (B) 5891
(C) 1958 (D) 1589

46. `62' भवति– **AWES TGT–2008**

(A) षष्टिद्वौ (B) द्वाषष्टिः
(C) द्वाष्ट्यौ (D) षड्द्वौ

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–139*

47. प्रातः 5 : 30 – **AWES TGT – 2011**

(A) सपादपञ्चवादने (B) सार्धपञ्चवादने
(C) पादोनपञ्चवादने (C) सार्धषड्वादने

स्रोत–*वाक्यविस्तारः (प्रथमा दीक्षा)-वेम्पटि कुटुम्बशास्त्री, पेज–18-19*

48. रात्रौ 9 : 15 **AWES TGT–2010, 2011**

(A) सपादनववादने (B) पादोननववादने
(C) पादोनदशवादने (D) सार्धनववादने

स्रोत–*वाक्यविस्तारः (प्रथमा दीक्षा)-वेम्पटि कुटुम्बशास्त्री, पेज–18*

49. रात्रौ 7 : 45 – **AWES TGT – 2011**

(A) त्रिपाद-सप्तवादने (B) पादोन-अष्टवादने
(C) त्रयः पादा सप्त च वादने (D) सार्ध सप्त-वादने

स्रोत–*वाक्यविस्तारः (प्रथमा दीक्षा)-वेम्पटि कुटुम्बशास्त्री, पेज–18-19*

50. प्रातः 8 : 00– **AWES TGT – 2011**

(A) अष्टावादने (B) अष्टाः वादने
(C) अष्टवादने (D) अष्टिवादने

स्रोत–*वाक्यविस्तारः (प्रथमा दीक्षा)-वेम्पटि कुटुम्बशास्त्री, पेज–18-19*

नगरे नगरे ग्रामे ग्रामे विलसतु संस्कृतवाणी।
सदने सदने जनजनवदने जयतु चिरं कल्याणी।।

40. (B) 41. (D) 42. (D) 43. (B) 44. (A) 45. (A) 46. (B) 47. (B) 48. (A) 49. (B) 50. (C)

12. रिक्तस्थानपूर्तिः

1. अवकरम् .... मा क्षिपत। AWES TGT–2011

(A) उच्चैः (B) अपि

(C) इतस्ततः (D) च

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग–1), पेज–567*

2. .... अपि महिलाः समादृताः आसन्– AWES TGT–2011

(A) उच्चैः (B) च

(C) अधुना (D) पुरा

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग–1), पेज–528*

3. सहसा स शिशुः .... अक्रन्दत्। AWES TGT–2011

(A) परम् (B) च

(C) उच्चैः (D) पुरा

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग–1), पेज–517*

4. .... धनस्य महती आवश्यकता अस्ति– AWES TGT–2011

(A) ह्यः (B) पुरा

(C) उच्चैः (D) इदानीम्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग–1), पेज–569*

5. .... सः चित्रं रचयति– AWES TGT–2011

(A) पुरा (B) श्वः

(C) अधुना (D) च

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग–1), पेज–569*

6. किं तव माता विदेशं ....? AWES TGT–2011

(A) गम्यते (B) गच्छति

(C) गतः (D) आगच्छति

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–313*

7. अद्य मेधाविनः छात्राः गुरुणा ..... AWES TGT–2011

(A) सम्मानयन्ति (B) सम्मान्यन्ते

(C) सम्मानयते (D) सम्मानयति

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–321*

8. अवश्यमेव................ मया सह आगच्छ। AWES TGT–2011

(A) सः (B) त्वम्

(C) सा (D) ते

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–123*

9. अध्यापिकाः गीतं..........। AWES TGT–2011

(A) शृणोति (B) श्रूयते

(C) शृण्वन्ति (D) श्रूयन्ते

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–332*

10. परिश्रमेण एव जनाः सफलतां.............. AWES TGT–2011

(A) प्राप्नोत (B) प्राप्यते

(C) प्राप्नोति (D) प्राप्नुवन्ति

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–393*

11. मर्यादापुरुषोत्तमरामस्य जन्मोऽभूत्। तस्य .... कौशल्या आसीत्– AWES TGT–2008, 2010

(A) पालयित्री (B) पोषयित्री

(C) जननी (D) अम्बा

स्रोत–*संस्कृत-हिन्दी-कोष - वामन शिवराम आप्टे, पेज–395*

12. .... मित्रं त्यजेत्। AWES TGT–2009

(A) मायाविनम् (B) मायावी

(C) मायावि (D) मायावीः

स्रोत–*अष्टाध्यायी (2.3.2) - ईश्वरचन्द्र, पेज–194*

1. (C)	**2. (D)**	**3. (C)**	**4. (D)**	**5. (C)**	**6. (B)**	**7. (B)**	**8. (B)**	**9. (C)**	**10. (D)**
11. (C)	**12. (A)**								

13. .... यशो दुराचारस्य–　　AWES TGT–2009

(A) प्रश्नयति　　(B) प्रणश्यति
(C) प्रनश्यते　　(D) प्रणश्यते

14. .... ब्रह्मणे नमः–　　AWES TGT–2009

(A) वाङ्मनसातीताय　　(B) वाङ्मनोतीताय
(C) वाङ्मनोरतीताय　　(D) वाङ्मनसतीताय

स्रोत–*सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–55*

15. .... दुर्जनः विद्ययालङ्कृतोऽपि सन्–　　AWES TGT–2009

(A) विहर्तव्यो　　(B) अपहर्तव्यो
(C) परिहर्तव्यो　　(D) परहर्तव्यो

स्रोत–*नीतिशतकम् (दुर्जन-पद्धति) - तारिणीश झा, पेज–70*

16. मतिरेव बलाद्..............।　　AWES TGT–2009

(A) गरीयसी　　(B) गरीया
(C) गरीयसि　　(D) गरीयः

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–116*

17. जलबिन्दु..............क्रमशः पूर्यते घटः–　　AWES TGT–2009

(A) निपतितेन　　(B) निपातितेन
(C) निपतनेन　　(D) निपातेन

स्रोत–*हितोपदेश (सुहृद्भेद) - रामेश्वर भट्ट, पेज–87*

18. हनुमान् द्रोणपर्वतात् सञ्जीवनीम् ....　　AWES TGT–2009

(A) अहरत्　　(B) आहरत्
(C) अपहरत्　　(D) आहरेत्

स्रोत–*रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–240*

19. सङ्कटापन्नो विभीषणो............. अभवत्–　　AWES TGT–2009

(A) रामश्रितो　　(B) रामश्रितम्
(C) रामाश्रिता　　(D) रामाश्रिताः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–242*

20. एकदा एकः ग्रामीणः नगरे आगतः। अतिपिपासितो सन् सः जलस्य .... इतस्ततः अभ्रमत्।　　AWES TGT–2008

(A) सेवनार्थम्　　(B) ग्रहीतार्थम्
(C) पानीर्थम्　　(D) लाभार्थम्

21. मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्म लक्ष्मीं.............।　　AWES TGT–2008

(A) विभाति　　(B) तनोति
(C) आभाति　　(D) चिनोति

स्रोत–*अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/20) श्लोक-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–46*

22. इन्द्र अचिन्तयत् यत् दिलीपः शतं यज्ञान् विधाय पदवीं मे..........।　　AWES TGT–2008

(A) प्राप्स्यति　　(B) अवाप्स्यसि
(C) जनिष्यति　　(D) ग्रहीष्यति

स्रोत–*बृहद्धातुकुसुमाकर - हरेकान्त मिश्र, पेज–493*

23. शशिना सह याति कौमुदी सह मेघेन तडित्.............।　　AWES TGT–2008

(A) गच्छति　　(B) आयाति
(C) प्रलीयते　　(D) प्रयाति

स्रोत–*कुमारसम्भवम् (4/33) - वेम्पटि कुटुम्बशास्त्री, पेज–96*

24. सम्पत्तौ न हस्येत् विपत्तौ च न प्राज्ञः ....　　AWES TGT–2008

(A) चिन्तयेत्　　(B) विषीदेत्
(C) प्रलपेत्　　(D) क्रन्देत

25. 'भवान् घटान्..... भर दो' के लिए संस्कृत पद होगा?　　UP TGT–2004

(A) पूरयतु　　(B) पूरयन्तु
(C) पूरय　　(D) पूरयत

26. वयं प्रातः एव सर्वं कार्यं.........। AWES TGT–2013

(A) कृतम्　　(B) कृतवन्तः
(C) कृतवान्　　(D) कृताः

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–66*

13. (B)	14. (A)	15. (C)	16. (A)	17. (D)	18. (A)	19. (A)	20. (A)	21. (B)	22. (A)
23. (C)	24. (B)	25. (A)	26. (B)						

27. ते सर्वे मांसभक्षणं...........। AWES TGT–2010, 2013

(A) परित्यक्तम्　(B) परित्यक्तवान्

(C) परित्यक्तवन्तः　(D) परित्यक्तः

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–66*

28. उद्याने .... बालिकाः प्रसीदन्ति। AWES TGT–2010, 2013

(A) क्रीडन्ति　(B) क्रीडन

(C) क्रीडन्त्यः　(D) क्रीडत्यः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमीव्याख्या भाग-3), पेज–132*

29. वृक्षे फलानि .... कपयः प्रसन्नाः भवन्ति। AWES TGT–2013

(A) खादन्तः　(B) खादन्

(C) खादितम्　(D) खादितवान्

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–69*

30. अहं श्वः विद्यालयं............। AWES TGT–2013

(A) अगच्छन्　(B) अगच्छावः

(C) गच्छामि　(D) गमिष्यामि

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–60*

31. वयं ह्यः विज्ञानं..........। AWES TGT–2013

(A) अपठाम　(B) अपठाव

(C) अपठः　(D) पठिष्यामि

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–60*

32. यदि वृष्टिः........... तर्हि एव बीजानि वपतु AWES TGT–2013

(A) भवेत　(B) भवन्ति

(C) भवति　(D) भवेः

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–60*

33. रेखाङ्कितं पदम् अधिकृत्य प्रश्ननिर्माणं करणीयम् – जनाः लोभिनः वर्तन्ते– REET–2016

(A) के　(B) किम्

(C) कस्मिन्　(D) कः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–133*

34. आपः...........। AWES TGT–2010

(A) विशालः　(B) निर्मलाः

(C) नैकः　(D) चञ्चलम्

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–108*

35. पतञ्जलिः वाग्शुद्ध्यर्थं............. अरचयत्। UK TET–2011

(A) आयुर्वेदम्　(B) धनुर्वेदम्

(C) ऋग्वेदम्　(D) व्याकरणम्

स्रोत–*व्याकरणमहाभाष्यम् (पस्पशाह्निकं)-मधुसूदनमिश्र, पेज–14-15*

36. चलाचले च संसारे....... एको हि निश्चलः– AWES TGT–2013

(A) धनम्　(B) धर्मः

(C) विद्या　(D) कर्म

37. मूर्खाः............ विना शास्त्राणां भारं वहन्ति। AWES TGT–2010, 2013

(A) शब्दज्ञानम्　(B) मेधाम्

(C) अर्थज्ञानम्　(D) धनम्

38. गुरुः........... मार्जनं करोति। AWES TGT–2013

(A) शिष्यान्　(B) शिष्येभ्यः

(C) शिष्याणाम्　(D) शिष्येषु

39. पयः..........भवति। AWES TGT–2013

(A) मधुराः　(B) मधुरम्

(C) मधुरः　(D) मधुर

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–118*

40. रिक्तस्थानं पूरयित्वा सूक्तिं संयोजयत– संघे-शक्तिः कलौ............ REET–2016

(A) धर्मे　(B) कार्ये

(C) युगे　(D) वर्षे

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–239*

41. .... धावति। AWES TGT–2013

(A) चिताः　(B) चित्तम्

(C) चित्ता　(D) चित्तानि

27. (C)	28. (C)	29. (A)	30. (D)	31. (A)	32. (C)	33. (A)	34. (B)	35. (D)	36. (B)
37. (C)	38. (C)	39. (B)	40. (C)	41. (B)					

42. पितरौ पुत्रं...........। **AWES TGT–2013**

(A) पालयथ (B) पालयन्ति

(C) पालयतः (D) पालयति

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–38*

43. कति .... गच्छन्ति? **AWES TGT–2013**

(A) लोके (B) लोकम्

(C) लोकाः (D) लोकान्

44. .... आकाशे गर्जति। **AWES TGT–2013**

(A) मेघाः (B) मेघः

(C) मेघानि (D) मेघस्य

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–2*

45. असारोऽयं संसारः.........भज। **AWES TGT–2010**

(A) भगवते (B) भगवन्ते

(C) भगवानम् (D) भगवन्तम्

स्रोत–*कारकप्रकरण (2.3.2) - राममुनि पाण्डेय, पेज–17*

46. ते .... अहर्निशं धनं रक्षन्ति –

AWES TGT–2010

(A) वराकाः (B) वराकान्

(C) वराकैः (D) वराकाणि

47. दमयन्ती .... नलस्यन्दनं ददर्श।

AWES TGT–2010

(A) प्रसादेन (B) प्रसादस्य

(C) प्रासादात् (D) प्रसादम्

स्रोत–*कारकप्रकरण - राममुनि पाण्डेय, पेज–63*

48. काव्यशास्त्रविनोदेन कालो .... धीमताम्–

AWES TGT–2012

(A) अनुगच्छति

(B) अवगच्छति

(C) गच्छति

(D) प्रत्यागच्छति

42. (C) **43.** (C) **44.** (B) **45.** (D) **46.** (A) **47.** (C) **48.** (C)

13. संस्कृत-शब्दार्थः

स्ववर्गेषु भिन्नः शब्दः कः

1. (A) निशीथः (B) शर्वरी (C) विभावरी (D) पराह्नः

AWES TGT–2009

स्रोत–*अमरकोषः (1.4.4.) - हरगोविन्द शास्त्री, पेज–35*

2. (A) दन्ती (B) लोमशा (C) मार्जारी (D) महिषी

AWES TGT–2009

3. (A) पिटिका (B) विसूचिका (C) पाटच्चरः (D) पक्षाघातः

AWES TGT–2009

स्रोत–*अमरकोषः (2.10.25)-हरगोविन्द शास्त्री, पेज–358*

4. (A) कुसीदिकः (B) कूपकः (C) आपणिकः (D) अभिकर्ता

AWES TGT–2009

स्रोत–*(i) अमरकोषः (1.10.10) - हरगोविन्द शास्त्री, पेज–91*
(ii) संस्कृत-हिन्दी-कोष-वामनशिवराम आप्टे, पेज–290, 292, 141

5. (A) इन्द्रनीलः (B) मरकतम् (C) पारदः (D) मुरजः

AWES TGT–2009

स्रोत–*अमरकोषः (1.7.5) - हरगोविन्द शास्त्री, पेज–69*

6. (A) व्रीहिः (B) यवः (C) संयावः (D) चणकः

AWES TGT–2009

स्रोत–*अमरकोषः (2.9.18) - हरगोविन्द शास्त्री, पेज–312, 313*

7. (A) युतम् (B) अयुतम् (C) नियुतम् (D) प्रयुतम्

AWES TGT–2009

स्रोत– *रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–48*

8. (A) किसलयम् (B) अरण्यम् (C) मूलम् (D) वृन्तम्

AWES TGT–2009

स्रोत–*अमरकोषः (2.4.1) - हरगोविन्द शास्त्री, पेज–124*

9. (A) कह्लारः (B) क्षौरिकः (C) कारुकः (D) पादरञ्जकः

AWES TGT–2009

स्रोत–*संस्कृत-हिन्दी-कोष - वामनशिवराम आप्टे, पेज–261*

10. (A) कुमुद्वती (B) इन्दीवरम् (C) नीलोत्पलम् (D) उत्पलम्

AWES TGT–2008

स्रोत–*अमरकोषः (1.10.38) - हरगोविन्द शास्त्री, पेज–101*

11. (A) रोहितः (B) लोहितः (C) शोणः (D) रक्तः

AWES TGT–2008

स्रोत–*अमरकोषः (1.5.15) - हरगोविन्द शास्त्री, पेज–53*

12. (A) अर्कः (B) पिङ्गलः (C) मार्तण्डः (D) मिहिरः

AWES TGT–2008

स्रोत–*अमरकोषः (1.3.31) - हरगोविन्द शास्त्री, पेज–33*

13. (A) मानसम् (B) शेमुषी (C) धिषणा (D) प्रज्ञा

AWES TGT–2008

स्रोत–*अमरकोषः (1.5.2) - हरगोविन्द शास्त्री, पेज–48*

14. (A) अध्याहारः (B) तर्कः (C) ऊहः (D) विचिकित्सा

AWES TGT–2008

स्रोत–*अमरकोषः (1.5.3) - हरगोविन्द शास्त्री, पेज–49*

1. (D)	2. (A)	3. (C)	4. (B)	5. (D)	6. (C)	7. (A)	8. (B)	9. (A)	10. (A)
11. (C)	12. (B)	13. (A)	14. (D)						

15. (A) ग्राम्यम् (B) निष्ठुरम्
(C) परुषम् (D) कर्कशम्
AWES TGT–2008

स्रोत–*अमरकोषः (1.6.19) - हरगोविन्द शास्त्री, पेज–64*

16. (A) उटजः (B) नगरी
(C) पर्णशाला (D) कुटी
AWES TGT–2009

स्रोत–*अमरकोषः (2.2.6) - हरगोविन्द शास्त्री, पेज–114*

17. (A) पीडा (B) बाधा
(C) निर्ऋतिः (D) व्यथा
AWES TGT–2008

स्रोत–*अमरकोषः (1.9.2) - हरगोविन्द शास्त्री, पेज–87*

18. (A) त्रिपथगा (B) वापी
(C) जह्नुतनया (D) सुरनिम्नगा
AWES TGT–2008

स्रोत–*अमरकोषः (1.10.31) - हरगोविन्द शास्त्री, पेज–98*

19. (A) प्राह्णः (B) क्षपा
(C) त्रियामा (D) शर्वरी
AWES TGT–2008

स्रोत–*अमरकोषः (1.4.4) - हरगोविन्द शास्त्री, पेज–35*

20. (A) अपवर्गः (B) कैवल्यः
(C) निर्वाणः (D) अभ्युपगमः
AWES TGT–2008

स्रोत–*अमरकोषः (1.5.6) - हरगोविन्द शास्त्री, पेज–50*

21. कः शब्दः स्ववर्गे असम्बद्धः
(A) नलिनी (B) स्थलपद्मम्
(C) सैन्धवम् (D) गन्धपुष्पम्
AWES TGT–2010

स्रोत–*अमरकोषः (2.8.44) - हरगोविन्द शास्त्री, पेज–280*

22. (A) कुलपतिः (B) आचार्यः
(C) लिपिकः (D) मातुलः
AWES TGT–2010

स्रोत–*संस्कृत-हिन्दी-शब्दकोष - वामनशिवराम आप्टे, पेज–791*

23. कः शब्दः स्ववर्गे भिन्नः – AWES TGT–2013
(A) त्रुटिः (B) कालः
(C) कलनः (D) योजनम्

स्रोत–*संस्कृत-हिन्दी-शब्दकोष - वामन शिवराम आप्टे, पेज–442*

24. शुद्धम् अर्थं चिनुत
निग्रहम्– AWES TGT–2011
(A) ग्रहणम् (B) गृहात् निर्गमनम्
(C) वशीकरणम् (D) ग्रहेण रहितम्

स्रोत–*संस्कृत-हिन्दी-शब्दकोष - वामनशिवराम आप्टे, पेज–442*

25. वाङ्मय– AWES TGT–2011
(A) विशेष अङ्मयम् (B) अङ्गैः युक्तम्
(C) साहित्यम् (D) वाण्याः

स्रोत–*संस्कृत-हिन्दी-शब्दकोष - वामनशिवराम आप्टे, पेज–912*

26. पुंसः– AWES TGT–2011
(A) पौषस्य (B) नामविशेषम्
(C) पुरुषस्य (D) पवित्रस्य

स्रोत–*अमरकोषः (2.6.1) - हरगोविन्द शास्त्री, पेज–187*

27. वदनाम्बुजे– AWES TGT–2011
(A) वदति मुखे (B) वदन्
(C) मुखकमले (D) शरीरे

28. 'भक्तः शिवम् उपासते' अत्र 'उपासते' पदस्य अर्थः अस्ति– RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014
(A) दूरे तिष्ठति (B) पूजां करोति
(C) निकटं गच्छति (D) अनुगच्छति

स्रोत–*सम्भाषण-शब्दकोषः - सर्वज्ञभूषणः, पेज–90*

29. 'आ' उपसर्गपूर्वकस्य दिश् धातोः निष्पन्नस्य 'आदिशति' पदस्य अर्थः अस्ति– RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014
(A) उपदेशं ददाति (B) आज्ञां ददाति
(C) सन्देशं ददाति (D) अनुज्ञां ददाति

स्रोत–*सम्भाषण-शब्दकोषः - सर्वज्ञभूषणः, पेज–88*

15. (A)	16. (B)	17. (C)	18. (B)	19. (A)	20. (D)	21. (C)	22. (D)	23. (A)	24. (A)
25. (C)	26. (C)	27. (C)	28. (B)	29. (B)					

30. घञ् प्रत्ययान्तस्य 'रागः' शब्दस्य अर्थः अस्ति– RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014

(A) रञ्जनद्रव्यम् (B) रञ्जनीय वस्त्रम्
(C) रञ्जितम् (D) आसक्तिः

स्रोत–*संस्कृत-हिन्दी-शब्दकोष - वामनशिवराम आप्टे, पेज–851*

31. 'अति + चरति' इत्यस्य अर्थः अस्ति– RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014

(A) अत्यधिकं चरति (B) न चरति
(C) विरुद्धं चरति (D) सम्यक् चरति

32. 'सा मयि न प्रत्येति' अस्मिन् वाक्ये 'प्रत्येति' शब्दस्य अभिप्रायः अस्ति– RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014

(A) निकटागमनम् (B) दूरगमनम्
(C) विरुद्धगमनम् (D) विश्वासः

स्रोत–*सम्भाषण-शब्दकोषः - सर्वज्ञभूषणः, पेज–109*

33. ''सर्वथा निरक्षरः अस्ति सः'' अत्र निर् उपसर्गपूर्वकस्य 'निरक्षरः' पदस्य व्याकरणसम्मतः अर्थः अस्ति– RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014

(A) अज्ञः (B) मूर्खः
(C) अक्षरज्ञानरहितः (D) अशिक्षितः

34. 'रज्जुः' शब्द का हिन्दी में अर्थ है– UP TGT (H)–2009

(A) मछली (B) मेढ़क
(C) रस्सी (D) घोड़ा

स्रोत–*अमरकोषः (2.10.27) - हरगोविन्द शास्त्री, पेज–359*

35. 'गली' के लिए संस्कृत शब्द है– BHU MET–2015

(A) पट्टनम् (B) पूः
(C) रथ्या (D) वेशः

स्रोत–*अमरकोषः (2.2.3) - हरगोविन्द शास्त्री, पेज–113*

36. 'अक्षौहिणी' शब्दस्य कोऽर्थः? BHU AET–2012

(A) शकारः (B) सम्बन्धः
(B) देवनाक्षः (D) परिमाण विशेष विशिष्ट सेना

स्रोत–*(i) संस्कृत-हिन्दी-शब्दकोष-वामन शिवराम आप्टे, पेज–5*
(ii) अमरकोषः (2.8.81) - हरगोविन्द शास्त्री, पेज–292

37. 'गङ्गौघः' का अर्थ है– BHU MET–2015

(A) गङ्गा प्रवाह (B) जल प्रवाह
(C) धारा प्रवाह (D) गङ्गा जल

लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड-एक), पेज–58

38. परायणम्– AWES TGT–2013

(A) धर्मः (B) चरित्रम्
(C) शरणम् (D) कर्तव्यम्

स्रोत–*संस्कृत-हिन्दी-शब्दकोष - वामनशिवराम आप्टे, पेज–575*

39. परिचर्याम्– AWES TGT–2013

(A) सेवाम् (B) कार्यम्
(C) आज्ञापालनम् (D) प्रसन्नम्

स्रोत–*अमरकोषः (2.7.35) - हरगोविन्द शास्त्री, पेज–252*

40. निम्नलिखित शब्दों में कौन 'सरिता' का पर्याय नहीं है– UP PSC–2013

(A) तटिनी (B) त्रिपथगा
(C) निम्ना (D) तरङ्गिणी

स्रोत–*अमरकोषः (1.10.29) - हरगोविन्द शास्त्री, पेज–98*

41. 'सुभाषितम्' पद का अर्थ है? H-TET–2015

(A) मधुरवचन (B) कटुवचन
(C) दुर्वचन (D) निर्वचन

स्रोत–*संस्कृत-हिन्दी-शब्दकोष - वामनशिवराम आप्टे, पेज–1112*

42. श्रीर्भवति– AWES TGT–2012

(A) लक्ष्मी (B) दुर्गा
(C) ऐश्वर्या (D) शोभा

स्रोत–*अमरकोषः (1.1.27) - हरगोविन्द शास्त्री, पेज–12*

43. 'सततं' पदस्य पर्यायः अस्ति– C-TET–2015

(A) निरन्तरम् (B) श्वः
(C) प्रथमतया (D) अधुना

स्रोत–*संस्कृत-हिन्दी-शब्दकोष - वामनशिवराम आप्टे, पेज–1062*

44. 'सनातनः' भवति– AWES TGT–2012

(A) शाश्वतः (B) कालस्योपरि
(C) परम्परा (D) क्रमिकः

स्रोत–*अमरकोषः (3.1.72) - हरगोविन्द शास्त्री, पेज–391*

30. (D)	31. (A)	32. (D)	33. (C)	34. (C)	35. (C)	36. (D)	37. (A)	38. (C)	39. (A)
40. (B)	41. (A)	42. (A)	43. (A)	44. (A)					

45. विहारं करोति– AWES TGT–2012

(A) व्याहरति (B) विहरति

(C) व्यवहरति (D) व्यवहरते

46. पर्यायं लिखत 'कीर्तिः'– AWES TGT–2011

(A) महिमा (B) यशः

(C) अपकीर्तिः (D) श्रुतिः

स्रोत–*अमरकोषः (1.6.11) - हरगोविन्द शास्त्री, पेज–61*

47. 'मधुरता' पदस्य पर्यायः – AWES TGT–2011

(A) गेयता (B) लयबद्धता

(C) माधुर्यम् (D) लालित्यम्

स्रोत–*संस्कृत-हिन्दी-शब्दकोष - वामनशिवराम आप्टे, पेज–769*

48. निम्नाङ्कित में 'अरविन्दम्' शब्द का पर्याय है– UP TET–2016

(A) नीरम् (B) गगनम्

(C) वायुः (D) कमलम्

स्रोत–*अमरकोषः - हरगोविन्द शास्त्री, पेज–89*

49. 'समुद्र' शब्द का पर्यायवाची है– UP TET–2014

(A) निशिचरः (B) दिनकरः

(C) रत्नाकरः (D) सुधाकरः

स्रोत–*अमरकोषः (1.10.2) - हरगोविन्द शास्त्री, पेज–88*

50. 'जलनिधिः' पद का पर्याय शब्द है? UP TET–2016

(A) मेघः (B) चन्द्रः

(C) समुद्रः (D) मत्स्यः

स्रोत–*अमरकोषः (1.10.2) - हरगोविन्द शास्त्री, पेज–88*

51. 'शफरी' पद का पर्यायवाची है– UP TET–2014

(A) शत्रु (B) मीन

(C) समुद्र (D) शम्भु

स्रोत–*अमरकोषः (1.10.18) - हरगोविन्द शास्त्री, पेज–94*

52. 'चातक' शब्द का पर्यायवाची है– UP TET–2014

(A) सरः (B) सारङ्गः

(C) केतुः (D) पयः

स्रोत–*अमरकोषः (2.5.17) - हरगोविन्द शास्त्री, पेज–178*

53. 'पुत्री' का पर्यायवाची है– UP TET–2014

(A) तनयः (B) तनुजः

(C) तनया (D) सुतः

स्रोत–*अमरकोषः (2.6.27) - हरगोविन्द शास्त्री, पेज–195*

54. 'द्रुमम्' का पर्यायवाची शब्द है – AWES TGT–2010

(A) शाखाम् (B) अन्नम्

(C) वृक्षम् (D) तृणम्

स्रोत–*अमरकोषः (2.4.5) - हरगोविन्द शास्त्री, पेज–125*

55. अन्यस्वम् पर्यायवाची– AWES TGT–2010

(A) अन्यपुरुषम् (B) अन्यसुखम्

(C) अन्यस्य धनम् (D) अन्यस्य अन्नम्

56. सूक्तिः शब्दस्य पर्यायः– AWES TGT–2010

(A) सुभाषितः (B) सुवदनः

(C) सुबोधः (D) लोकोक्तिः

स्रोत–*संस्कृत हिन्दी शब्दकोश-वामनशिवराम आप्टे, पेज–1112*

57. इनमें से किस शब्द के पर्यायवाची गलत हैं– UP TGT (H)–2009

(A) **कमल** -जलज, पंकज, सरोज

(B) **पुष्प** - कुसुम, फूल, सुमन

(C) **सरस्वती** - गिरा, भारती, वाणी

(D) **सूर्य** - दिवस, याम, वासर

स्रोत–*अमरकोषः (1.4.2) - हरगोविन्द शास्त्री, पेज–35*

58. निम्नलिखित में से कौन-सा 'रात्रि' का पर्यायवाची नहीं है? UP PSC–2015

(A) रजनी (B) विभावरी

(C) समीर (D) निशि

स्रोत–*अमरकोषः (1.4.4) - हरगोविन्द शास्त्री, पेज–36*

45. (B) 46. (B) 47. (C) 48. (D) 49. (C) 50. (C) 51. (B) 52. (B) 53. (C) 54. (C) 55. (C) 56. (A) 57. (D) 58. (C)

59. 'मृषा' किस शब्द का पर्याय है– Chh. PSC–2012

(A) मिथ्या (B) मृत्यु
(C) मित्र (D) मुक्ति

स्रोत–*अमरकोषः (3.4.15) - हरगोविन्द शास्त्री, पेज–519*

60. 'समग्रम्' इति पदस्य पर्यायः अस्ति? C-TET–2015

(A) सम्पूर्णम् (B) अल्पम्
(C) अर्धम् (D) अर्धार्धम्

स्रोत–*अमरकोषः (3.1.65) - हरगोविन्द शास्त्री, पेज–389*

61. 'वृक्षः' इति पदस्य अर्थः भवति– C-TET–2015

(A) शाखा (B) पत्रम्
(C) नदी (D) तरुः

स्रोत–*अमरकोषः (2.4.5) - हरगोविन्द शास्त्री, पेज–125*

62. विलोमपदानि लिखत

तमसा– AWES TGT–2012

(A) प्रकाशेन (B) अतमसा
(C) अवलोकम् (D) कोऽपि न अस्ति

63. उभयम्– AWES TGT–2012

(A) एकम् (B) अनन्तम्
(C) अनेकम् (D) कोऽपि न अस्ति

64. निःशेषम्– AWES TGT–2012

(A) शेषम् (B) अवशेषम्
(C) अनुशेषम् (D) अशेषम्

65. उदाराम्– AWES TGT–2012

(A) अवदाराम् (B) अनुदाराम्
(C) अनदाराम् (D) कोऽपि न अस्ति

स्रोत–*सम्भाषण-शब्दकोषः - सर्वज्ञभूषणः, पेज–114*

66. समस्तम्– AWES TGT–2012

(A) अवशिष्टम् (B) असमस्तम्
(C) असमस्त् (D) अविशिष्टम्

67. 'अधीरता' पदस्य विलोमपदं किम्–
AWES TGT–2011

(A) धैर्यम् (B) शान्तिः
(C) सन्तोषः (D) अचञ्चलम्

68. विलोमपदं लिखत

शत्रुता– AWES TGT–2011

(A) अशत्रुता (B) सुहृद्
(C) सौहृदम् (D) मित्रता

स्रोत–*सम्भाषण-शब्दकोषः - सर्वज्ञभूषणः, पेज–121*

69. उद्यमेन– AWES TGT–2011

(A) सावधानेन (B) विवेकेन
(C) आलस्येन (D) प्रयत्नेन

70. हिंसा – AWES TGT–2011

(A) अनाचरम् (B) अत्याचाराः
(C) अहिंसाया (D) अहिंसा

स्रोत–*नालन्दा सामान्य हिन्दी - पृथ्वीनाथ पाण्डेय, पेज–132*

71. 'सुकरम्' शब्द का विपरीतार्थक शब्द है–
UP TET–2014

(A) निष्कर्ष (B) सुकर्म
(C) कुकर्म (D) दुष्करम्

72. 'रात्रि' शब्द का विपरीतार्थक शब्द है–
UP TET–2014

(A) निशा (B) रात
(C) अहन् (D) शर्वरी

73. 'तमः' का विलोम शब्द है– UP TET–2014

(A) अधर्मः (B) निषेधः
(C) प्रकाशः (D) सुलभः

74. 'अधीत्य' इत्यस्य विलोमम्– AWES TGT–2010

(A) अवधीत्य (B) अवाधीत्य
(C) अनाधीत्य (D) अनधीत्य

59. (A)	60. (A)	61. (D)	62. (A)	63. (A)	64. (A)	65. (B)	66. (B)	67. (A)	68. (D)
69. (C)	70. (D)	71. (D)	72. (C)	73. (C)	74. (D)				

75. 'विमूढधीः' विलोमशब्दम्– AWES TGT–2010, 2013
(A) मन्दधीः (B) निधिः
(C) सुधीः (D) उदधिः

76. कातरः– AWES TGT–2013
(A) अकरुणः (B) अधीरः
(C) अकारुणिकः (D) अकातरः

77. वाक्पटुः– AWES TGT–2013
(A) सुवक्ता (B) वाग्भीतः
(C) वाचालः (D) सुदाता

78. भद्राणि– AWES TGT–2013
(A) कल्याणानि (B) सुखानि
(C) दुःखानि (D) जीवनानि

79. 'एके' इत्यस्य विरोधिपदं भवति– DL–2015
(A) बहुधा (B) अनेके
(C) असंख्याः (D) बहुत्वम्

80. 'सम्मानः' इति पदस्य विपरीतार्थकः नास्ति? C-TET–2015
(A) अपमानः (B) तिरस्कारः
(C) आदरः (D) अनादरः

81. 'कीर्तिम्' इति पदस्य विपरीतार्थकः नास्ति? C-TET–2015
(A) अकीर्तिः (B) यशः
(C) अपकीर्तिः (D) लोकापवादः

स्रोत–*अमरकोषः (1.6.11) - हरगोविन्द शास्त्री, पेज–61*

82. 'बहुज्ञ' का विपरीतार्थक शब्द है? UP TET–2016
(A) अभिज्ञ (B) अल्पज्ञ
(C) सर्वज्ञ (D) ब्रह्मज्ञ

75. (C) 76. (D) 77. (B) 78. (C) 79. (B) 80. (C) 81. (B) 82. (B)

14. व्याकरण के विविध प्रश्न

1. संस्कृत में कितने वचन होते हैं? BHU RET– 2012
(A) तीन (B) सात
(C) पाँच (D) आठ
स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–01*

2. संस्कृत में लिङ्ग होते हैं– UGC 25 J– 2004
(A) 2 (B) 3
(C) 4 (D) 1
स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–02*

3. धातुओं की गण संख्या कितनी है–BHU MET– 2008
(A) दस (B) नव
(C) आठ (D) बारह
स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–01*

4. कौन सा कथन गलत है? UP PGT– 2010
(A) संस्कृत में वचनों की संख्या है– तीन
(B) संस्कृत में पुरुषों की संख्या है– तीन
(C) संस्कृत में लिङ्गों की संख्या है– तीन
(D) संस्कृत में कारकों की संख्या है– तीन
स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–01*

5. संस्कृत में प्रत्येक लकार में पुरुष होते हैं– UP TET– 2014, UP TGT 2004
(A) दो (B) तीन
(C) चार (D) पाँच
स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–01*

6. वक्ता जिन सर्वनामों का प्रयोग अपने लिए करता है, वे कहलाते हैं– UP TET– 2014
(A) प्रथमपुरुष (B) मध्यमपुरुष
(C) उत्तमपुरुष (D) इनमें से कोई नहीं
स्रोत–*(i) लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–386*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.106) - ईश्वरचन्द्र, पेज–147

7. कति विभक्तयः? BHU AET– 2012
(A) सप्त (B) अष्टौ
(C) चतस्रः (D) तिस्रः
स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–175*

8. संस्कृत व्याकरण में 'कति' शब्द किस वचन में प्रयोग किया जाता है? UP TET–2016
(A) एकवचन (B) द्विवचन
(C) बहुवचन (D) उपर्युक्त सभी में
स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–40*

9. (i) कति लकाराः सन्ति? BHU Sh.ET– 2011
(ii) संस्कृत में कितने लकार हैं? UP TGT–2004, 2010, BHU MET–2010
(A) अष्टादश (B) दश
(C) पञ्चदश (D) विंशतिः
स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–01*

10. अधोलिखितेषु प्रथमपुरुषप्रयोगः कुत्र भवेत्? BHU Sh.ET– 2011
(A) अहम् (B) त्वम्
(C) वृक्षः (D) वयम्
स्रोत–*(i) लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–387*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.107) - ईश्वरचन्द्र, पेज–147

11. अस्मदि उपपदे धातोः कः पुरुषः? BHU Sh.ET.– 2011
(A) प्रथमपुरुषः (B) उत्तमपुरुषः
(C) मध्यमपुरुषः (D) सर्वे
स्रोत–*(i) लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–386*
(ii) अष्टाध्यायी (1.4.106) - ईश्वरचन्द्र, पेज–147

12. ब्रह्मा व्याकरणशास्त्रं कस्मै प्रोवाच? BHU MET– 2012
(A) इन्द्राय (B) बृहस्पतये
(C) भारद्वाजाय (D) ब्राह्मणेभ्यः
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–भू. XIX*

1. (A)	2. (B)	3. (A)	4. (D)	5. (B)	6. (C)	7. (A)	8. (C)	9. (B)	10. (C)
11. (B)	12. (B)								

13. व्याकरणस्य पर्यायोऽस्ति– BHU MET–2012

(A) अर्थानुशासनम् (B) शब्दानुशासनम्
(C) वाक्यानुशासनम् (D) लिङ्गानुशासनम्

स्रोत–*व्याकरण-महाभाष्य (पश्पशाह्निक)-जयशङ्करलाल त्रिपाठी, पेज–05*

14. व्याकरणमित्यत्र कस्मिन्नऽर्थे ल्युट्प्रत्ययः? BHU AET–2012

(A) कर्त्तरि (B) भावे
(C) कर्मणि (D) करणे

व्याकरण-महाभाष्य (पश्पशाह्निक)-जयशङ्करलाल त्रिपाठी, पेज–122

15. 'महिमा' शब्द में लिङ्ग क्या है? BHU MET–2010

(A) पुँल्लिङ्ग (B) नपुंसकलिङ्ग
(C) स्त्रीलिङ्ग (D) अनियतलिङ्ग

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–103*

16. 'निधिः' शब्द किस लिङ्ग का है? UP TGT–2009

(A) पुँल्लिङ्ग (B) स्त्रीलिङ्ग
(C) नपुंसकलिङ्ग (D) उभयलिङ्ग

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–509*

17. 'दारा' शब्द किस लिङ्ग का है? UP TET–2014

(A) स्त्रीलिङ्ग (B) पुँल्लिङ्ग
(C) नपुंसकलिङ्ग (D) उपर्युक्त कोई नहीं

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–510*

18. निम्नलिखित में पुंलिङ्ग शब्द कौन-सा नहीं है– UP TGT–2010

(A) निधिः (B) विधिः
(C) प्रविधिः (D) सरणी

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–510*

19. पयः पदस्य लिङ्गमस्ति– DL–2015

(A) पुँल्लिङ्गम् (B) स्त्रीलिङ्गम्
(C) विविधलिङ्गम् (D) नपुंसकलिङ्गम्

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–118*

20. 'देवता' शब्दः कस्मिन् लिङ्गे अस्ति– DL–2015

(A) पुँल्लिङ्गे (B) स्त्रीलिङ्गे
(C) नपुंसकलिङ्गे (D) उभयलिङ्गे

स्रोत–*पाणिनीयलिङ्गानुशासनम् - ईश्वरचन्द्र, पेज–11*

21. 'विधिः' शब्द किस लिङ्ग में प्रयुक्त होता है? H-TET–2015

(A) पुँल्लिङ्ग में (B) स्त्रीलिङ्ग में
(C) नपुंसकलिङ्ग में (D) उक्त तीनों में

स्रोत–*पाणिनीय-लिङ्गानुशासनम् - ईश्वरचन्द्र, पेज–23*

22. 'धीराः' इति पदं कस्मिन् लिङ्गे प्रयुक्तमस्ति? REET–2016

(A) पुँल्लिङ्गे (B) स्त्रीलिङ्गे
(C) नपुंसकलिङ्गे (D) सर्वलिङ्गे

स्रोत–*नीतिशतकम् (श्लोक-71) - राजेश्वर मिश्र, पेज–137*

23. कवि का स्त्रीलिङ्ग होगा? UP PGT (H)–2002

(A) कवियत्री (B) कवियित्री
(C) कवयित्री (D) कवियित्रि

स्रोत–*राजपाल हिन्दी शब्दकोश - हरदेव बाहरी, पेज–154*

24. स्त्रीलिङ्गे कः शब्दः प्रयुज्येत – UP TGT (H)–2002

(A) महिमा (B) समाधिः
(C) विपत्तिः (D) अञ्जलिः

स्रोत–*अष्टाध्यायी (3.3.94) - ईश्वरचन्द्र, पेज–372*

25. निम्नलिखितेषु किं पदं नपुंसकलिङ्गे अस्ति? C-TET–2012

(A) गुणः (B) मृगः
(C) तपः (D) विद्या

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–118*

26. व्याकरणशास्त्रस्य प्रथमः प्रवक्ता कः? BHU AET–2012

(A) ब्रह्मा (B) इन्द्रः
(C) बृहस्पतिः (D) पाणिनिः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, भू. पेज–XIX*

13. (B) **14.** (D) **15.** (A) **16.** (A) **17.** (B) **18.** (D) **19.** (D) **20.** (B) **21.** (A) **22.** (A)
23. (C) **24.** (C) **25.** (C) **26.** (A)

27. कः पतञ्जलिः? BHU AET– 2012

(A) सूत्रकारः (B) वार्तिककारः

(C) भाष्यकारः (D) प्रक्रियाकारः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–03*

28. 'मुनित्रयम्' इति नाम्ना प्रसिद्धाः– RPSC ग्रेड-II (TGT)– 2010

(A) पाणिनिपतञ्जलियाज्ञवल्क्याः

(B) अत्रिपाणिनिनारदाः

(C) पतञ्जलिवररुचिकण्वाः

(D) पाणिनिपतञ्जलिवररुचयः

स्रोत–*वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी भाग-1-गोपालदत्त पाण्डेय, पेज–02*

29. पाणिने अर्वाचीनः आचार्यः कः– BHU AET– 2012

(A) स्फोटायनः (B) पतञ्जलिः

(C) शाकटायनः (D) सेनकः

संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास-युधिष्ठिर मीमांसक/रामनाथ त्रिपाठी, पेज–31

30. नागेशस्य पितुः नाम किम्? BHU MET– 2012

(A) कौण्डभट्टः (B) रङ्गोजिभट्टः

(C) कुमारिलभट्टः (D) शिवभट्टः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, भू–XXII*

31. लोपागमवर्णविकारज्ञः कः? BHU AET– 2012

(A) वैयाकरणः (B) नैयायिकः

(C) मीमांसकः (D) साहित्यिकः

स्रोत–*व्याकरण-महाभाष्यम् - जयशङ्करलाल त्रिपाठी, पेज–22*

32. कः पाणिनेः पूर्ववर्ती वैयाकरणः BHU AET– 2012

(A) आपिशलिः (B) वोपदेवः

(C) वासुदेवदीक्षितः (D) चन्द्रगोमी

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–प्राक्कथन*

33. पतञ्जलिना विद्याध्ययनाय कुत्र उषितम्– BHU AET– 2012

(A) मथुरायाम् (B) साकेते

(C) पाटलिपुत्रे (D) विदिशायाम्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज भू. XXI*

34. वार्तिककार के रूप में व्याकरण में किसे जाना जाता है? UP PGT (H)– 2004

(A) पतञ्जलि (B) भट्टोजिदीक्षित

(C) कात्यायन (D) जयादित्य

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज भू. XXI*

35. व्याकरण के मुनियों की संख्या है– UGC 73 J– 2005

(A) सप्त (B) पञ्च

(C) त्रयः (D) एका

स्रोत–*अष्टाध्यायी (सूत्रपाठ) - गोपालदत्त पाण्डेय, पेज–01*

36. वार्तिककार हैं– RPSC ग्रेड-I (PGT)– 2011, DSSSB PGT– 2014, UGC 73 S–2013

(A) पाणिनिः (B) कात्यायनः

(C) पतञ्जलिः (D) भर्तृहरिः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–भू. (XXI)*

37. कात्यायनस्य काः सन्ति? REET–2016

(A) सूत्राणि (B) वार्तिकानि

(C) मन्त्राणि (D) परिभाषासूत्राणि

संस्कृत व्याकरण का इतिहास-युधिष्ठिर मीमांसक - रामनाथ त्रिपाठी, पेज–116-117

38. पाणिनिः – BHU AET– 2010

(A) वैयाकरणः (B) दार्शनिकः

(C) कविः (D) तपस्वी

स्रोत–*व्याकरणमहाभाष्यम् - जयशङ्करलाल त्रिपाठी, पेज–02*

39. 'पाणिनि' कौन थे? MP PSC– 1993

(A) इतिहासकार (B) व्याकरणविद्वान्

(C) चिकित्सक (D) जैनविद्वान्

स्रोत–*व्याकरणमहाभाष्यम् - जयशङ्करलाल त्रिपाठी, पेज–02*

40. 'मुनित्रय' में जिनकी गणना नहीं होती वे हैं– BHU MET– 2015

(A) पाणिनि (B) कात्यायन

(C) पतञ्जलि (D) कैय्यट

स्रोत–*अष्टाध्यायी (सूत्रपाठ) - गोपालदत्त पाण्डेय, पेज–01*

27. (C) **28.** (D) **29.** (B) **30.** (D) **31.** (A) **32.** (A) **33.** (C) **34.** (C) **35.** (C) **36.** (B) **37.** (B) **38.** (A) **39.** (B) **40.** (D)

41. पतञ्जलेः अपरं नाम किम्– BHU AET–2012

(A) गोनर्दीयः (B) वररुचिः
(C) दाक्षिपुत्रः (D) शालातुरीयः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज भू.–(XXI)*

42. पतञ्जलिवाणीशुद्ध्यर्थम् अरचयत् UK TET–2011

(A) आयुर्वेदम् (B) धनुर्वेदम्
(C) ऋग्वेदम् (D) व्याकरणम्

स्रोत–*व्याकरणमहाभाष्यम् (पस्पशाह्निकं)-मधुसूदन मिश्र, पेज–14-15*

43. व्याकरण के त्रिमुनियों में कौन नहीं आता है? UP TET–2013

(A) शाकटायन (B) महर्षिपतञ्जलि
(C) पाणिनि (D) कात्यायन

स्रोत–*अष्टाध्यायी (सूत्रपाठ) - गोपालदत्त पाण्डेय, पेज–01*

44. व्याकरणशास्त्रे प्रथमं प्रकृतिप्रत्ययविभागरूपसंस्कारः केन कृतः? BHU AET–2012

(A) इन्द्रेण (B) बृहस्पतिना
(C) ब्रह्मणा (D) पाणिनिना

संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास-युधिष्ठिर मीमांसक/रामनाथ त्रिपाठी, पेज–27-28

45. त्रिमुनिव्याकरणे त्रयः मुनयः सन्ति? AWES TGT–2008

(A) पाणिनि, वररुचि, कात्यायन
(B) पाणिनि, कण्व, पतञ्जलि
(C) पाणिनि, शाकल्य, पतञ्जलि
(D) पाणिनि, कात्यायन, पतञ्जलि

स्रोत–*अष्टाध्यायी (सूत्रपाठ) - गोपालदत्त पाण्डेय, पेज–01*

46. ''सिंहो व्याकरणस्य कर्तुमहरत्प्राणान् प्रियान् पाणिनेः'' इत्यादि पद्यमिदं कुत्रास्ति? BHU AET–2011

(A) कथासरित्सागरे (B) श्लोकवार्तिके
(C) पाणिनीयशिक्षायाम् (D) तन्त्रवार्तिके

संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास-युधिष्ठिर मीमांसक/रामनाथ त्रिपाठी, पेज–77, 78

47. 'पतञ्जलेः' जन्मस्थानं कुत्र– BHU AET–2012

(A) उत्कले (B) पाटलिपुत्रे
(C) गोनर्दप्रदेशे (D) विदिशायाम्

स्रोत–*व्याकरणमहाभाष्यम् - जयशङ्करलाल त्रिपाठी, भू. पेज–5*

48. महाभाष्य के लेखक 'पतञ्जलि' समसामयिक थे? UP PCS–2011

(A) चन्द्रगुप्तमौर्य के (B) अशोक के
(C) पुष्यमित्रशुंग के (D) चन्द्रगुप्तप्रथम के

स्रोत–*व्याकरणमहाभाष्यम् - जयशङ्करलाल त्रिपाठी, भू. पेज–4*

49. पाणिनेः अपरं नाम किम्– BHU AET–2012

(A) दाक्षिपुत्रः (B) गोणिकापुत्रः
(C) गोनर्दीयः (D) वररुचिः

स्रोत–*व्याकरणमहाभाष्यम् - जयशङ्करलाल त्रिपाठी, पेज–2*

50. सतीदेवी कस्य माता– BHU AET–2014

(A) हरिदीक्षितस्य (B) भट्टोजिदीक्षितस्य
(C) कौण्डभट्टस्य (D) नागेशस्य

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज भू.–XXII*

51. कौण्डभट्टस्य पितुः नाम किम्– BHU AET–2012

(A) भर्तृहरिः (B) हरिदीक्षितः
(C) भट्टोजिदीक्षितः (D) रङ्गोजिभट्टः

स्रोत–*वैयाकरण-भूषणसार (खण्ड–1)-भीमसेन शास्त्री, पेज–13*

52. कति सार्वधातुकलकाराः सन्ति? BHU Sh.ET–2008

(A) चत्वारः (B) त्रयः
(C) सप्त (D) षट्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (3.1.67) - ईश्वरचन्द्र, पेज–280*

53. कति आर्धधातुकमूलकाः लकाराः? BHU Sh. ET–2008

(A) पञ्च (B) षट्
(C) सप्त (D) दश

स्रोत–*अष्टाध्यायी (3.1.67) - ईश्वरचन्द्र, पेज–280*

54. 'लट्लकार' किस काल का बोधक है– UP TGT–2009

(A) भविष्यकाल का (B) विधि, आज्ञा, आशीष अर्थ का
(C) भूतकाल का (D) वर्तमानकाल का

स्रोत–*अष्टाध्यायी (3.2.123) - ईश्वरचन्द्र, पेज–335*

41. (A)	42. (D)	43. (A)	44. (D)	45. (D)	46. (A)	47. (C)	48. (C)	49. (A)	50. (D)
51. (D)	52. (A)	53. (B)	54. (D)						

55. भूतार्थे 'स्म' इति प्रयुज्यते? UGC 73 J-2012

(A) लटि (B) लृटि
(C) लोटि (D) लङि

स्रोत–*अष्टाध्यायी (3.2.118) - ईश्वरचन्द्र, पेज–334*

56. वर्तमानकालः AWES TGT–2008

(A) प्रारब्धः कालः (B) कालः न समाप्तः
(C) प्रारब्धोऽपसमापृश्च (D) भूतभविष्यतोः प्रतिद्वन्द्वी

स्रोत–*वैयाकरण-सिद्धान्तकौमुदी (खण्ड–4)-गोविन्दाचार्य, पेज–9*

57. लट्लकारस्य प्रयोगः भवति– AWES TGT–2012

(A) वर्तमाने (B) प्रारब्धकाले
(C) अपरिसमाप्तकाले (D) प्रारब्धोपरिसमाप्तकाले

स्रोत–*अष्टाध्यायी (3.2.123) - ईश्वरचन्द्र, पेज–335*

58. परोक्ष के अर्थ में लकार है– UGC 73 J 2008

(A) लट् (B) लङ्
(C) लिट् (D) लिङ्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (3.2.115) - ईश्वरचन्द्र, पेज–333*

59. परोक्षभूते कस्य लकारस्य प्रयोगः क्रियते? AWES TGT–2009

(A) लिट् (B) लङ्
(C) लुट् (D) लेट्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (3.2.115) - ईश्वरचन्द्र, पेज–333*

60. परोक्षे विहितः लकारः– CVVET–2015

(A) लट् (B) लेट्
(C) लिट् (D) लुट्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (3.2.115) - ईश्वरचन्द्र, पेज–333*

61. (i) 'अनद्यतनभविष्यति' को लकारः
(ii) 'अनद्यतनभविष्यति' को लकारो विधीयते?
(iii) 'अनद्यतन भविष्य' के लिए प्रयुक्त होता है– UP TGT–2005, BHU Sh. ET–2008

(A) लट् (B) लिट्
(C) लुट् (D) लङ्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (3.3.15) - ईश्वरचन्द्र, पेज–356*

62. संस्कृत में भविष्यकाल के लिए प्रयोग किया जाता है– UP TET–2014

(A) लट्लकार (B) लोट्लकार
(C) लृट्लकार (D) लङ्लकार

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–296*

63. 'सामान्य भविष्य' के लिए प्रयुक्त होता है? UP TGT–2004

(A) लङ्लकार (B) लोट्लकार
(C) लृट्लकार (D) लट्लकार

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–296*

64. 'लृट्लकारः' कस्य कालस्य बोधकः अस्ति? UP PGT (H)–2004, UGC 25 D–2011

(A) वर्तमानकालस्य (B) भूतकालस्य
(C) भविष्यत्कालस्य (D) एतेषु न कोऽपि

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–296*

65. 'भविष्यत्' अर्थ में कौन लकार प्रयुक्त होता है? BHU MET–2012

(A) लट् (B) विधिलिङ्
(C) लोट् (D) लृट्

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–296*

66. लौकिक संस्कृत में प्रयुक्त नहीं होने वाला लकार कौन-सा है? BHU MET–2008

(A) लेट् (B) लट्
(C) लोट् (D) विधिलिङ्

स्रोत–*(i) संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–294*
(ii) लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–376-377

67. केवल वेद में प्रयुक्त होने वाला लकार कौन सा है? UP PGT–2004, 2005, BHU MET–2010

(A) लट् (B) लिट्
(C) लृट् (D) लेट्

स्रोत–*(i) संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–294*
(ii) बृहद् अनुवाद चन्द्रिका-चक्रधर नौटियाल 'हंस' शास्त्री, पेज–217

55. (A)	**56.** (D)	**57.** (A)	**58.** (C)	**59.** (A)	**60.** (C)	**61.** (C)	**62.** (C)	**63.** (C)	**64.** (C)
65. (D)	**66.** (A)	**67.** (D)							

68. 'भवतात्' इत्यत्र कस्मिन्नर्थे को लकारः? BHU Sh.ET–2008

(A) आशीर्वादे लिट् (B) आशीर्वादे लङ्
(C) आशीर्वादे लुङ् (D) आशीर्वादे लोट्

स्रोत–*धातुरूपकौमुदी - राजेश्वर शास्त्री मुसलगाँवकर, पेज–02*

69. लोट्लकार का प्रयोग किस अर्थ में होता है? UP PGT (H)–2005

(A) भूतकाल के लिए (B) वर्तमानकाल के लिए
(C) आज्ञा व आशीर्वाद के लिए (D) चाहिये के अर्थ में

स्रोत–*संस्कृत-व्याकरण-प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–312*

70. 'लोटो लङ्वत्' इति सूत्रेण अधोलिखितविकल्पमात्रेषु किमभिप्रेतम्? UGC 25 D–2015

(A) अडागमः (B) आडागमः
(C) ह्यादेशः (D) सलोपः

स्रोत–*(i) अष्टाध्यायी (3.4.85)-ईश्वरचन्द्र, पेज–412*
(ii) लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–401

71. 'आनय' पद में कौन-सा लकार है? H-TET–2015

(A) लोट्लकार (B) लङ्लकार
(C) विधिलिङ् (D) लृट्लकार

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–158*

72. सूची I का मिलान सूची II से कीजिए और दिये गये कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए : UP TGT (H)–2001

सूची I	**सूची II**
(अ) लट्लकार	(i) भविष्यत्काल
(ब) लोट्लकार	(ii) वर्तमानकाल
(स) लङ्लकार	(iii) आज्ञार्थक
(द) लृट्लकार	(iv) भूतकाल

	अ	ब	स	द
(A)	(iii)	(iv)	(i)	(ii)
(B)	(iii)	(i)	(ii)	(iv)
(C)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(D)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)

संस्कृतव्याकरणप्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–294, 296, 297, 305

73. 'अपालयत्' इत्यत्र लकारः अस्ति– REET–2016

(A) लोट्लकार (B) लट्लकार
(C) लुङ्लकार (D) लङ्लकार

स्रोत–*बृहद्धातुकुसुमाकरः - हरेकान्त मिश्र, पेज–626*

74. 'अनद्यतने विहितः लकारः? CVVET–2015

(A) लोट् (B) लृट्
(C) लुङ् (D) लङ्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (3.2.111) - ईश्वरचन्द्र, पेज–332*

75. 'विधिनिमन्त्रणाऽऽमन्त्रणाधीष्टसम्प्रश्नप्रार्थनेषु' इस सूत्र से कौन-सा लकार विहित है? BHU MET–2012

(A) लट् (B) लोट्
(C) लङ् (D) लिङ्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (3.3.161) - ईश्वरचन्द्र, पेज–388*

76. 'छात्राः पठेयुः' इत्यत्र क्रियायाः लकारः अस्ति– REET–2016

(A) लट्लकारः (B) लोट्लकारः
(C) विधिलिङ्लकारः (D) लृट्लकारः

स्रोत–*धातुरूपकौमुदी - राजेश्वर शास्त्री मुसलगाँवकर, पेज–111*

77. हेतुहेतुमद्भावे को लकारः? BHU Sh. ET–2008

(A) लृट् (B) लिङ्
(C) लोट् (D) लुङ्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (3.3.156) - ईश्वरचन्द्र, पेज–387*

78. विध्यादिषु अर्थेषु कस्य लकारस्य प्रयोगः क्रियते– AWES TGT–2009

(A) विधिलिङ् (B) आशीर्लिङ्
(C) लुट् (D) लुङ्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (3.3.161) - ईश्वरचन्द्र, पेज–388*

79. सम्भावना के लिए क्या लकार प्रयोग होता है? BHU MET–2010

(A) लङ् (B) लट्
(C) लिङ् (D) लोट्

स्रोत–*(i) संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–297*
(ii) बृहद् अनुवाद चन्द्रिका-चक्रधर नौटियाल 'हंस' शास्त्री, पेज–227

68. (D) 69. (C) 70. (D) 71. (A) 72. (D) 73. (D) 74. (D) 75. (D) 76. (C) 77. (B) 78. (A) 79. (C)

80. 'अश्रौषम्' में कौन सा लकार है? UP TGT– 2010

(A) लुङ्लकार (B) लोट्लकार

(C) लिट्लकार (D) लङ्लकार

स्रोत–*संस्कृतव्याकरणप्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–333*

81. 'सत्यमेव जयते' इस वाक्य में आत्मनेपद हुआ है? UGC 73 D– 2008

(A) 'विपराभ्यां जेः' इति सूत्रेण

(B) आर्षत्वात्

(C) जि धातोः उभयपदित्वात्

(D) जि धातोः आत्मनेपदित्वात्

स्रोत–*लूसेंट सामान्य ज्ञान, पेज–9*

82. 'धर्ममुच्चरते' इत्यत्र क्रियापदे आत्मनेपदविधायकं सूत्रं किम्? UGC 25 D 2014

(A) उदश्चरः सकर्मकात् (B) अकर्मकाच्च

(C) पूर्ववत्सनः (D) समस्तृतीयायुक्तात्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.3.53) - ईश्वरचन्द्र, पेज–95*

83. 'अनुकरोति' इत्यत्र परस्मैपदविधायकं सूत्रं किम्? UGC 25 D - 2014

(A) अभिप्रत्यतिभ्यः क्षिपः (B) अनुपराभ्यां कृञः

(C) परेर्मृषः (D) व्याङ्परिभ्यो रमः

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.3.79) - ईश्वरचन्द्र, पेज–103*

84. 'सर्पिषो जानीते' इत्यत्र क्रियापदे आत्मनेपदविधायकं सूत्रं किम्? UGC 25 J–2015

(A) तङानावात्मनेपदम् (B) कर्तरि कर्मव्यतिहारे

(C) अनुदात्तङित आत्मनेपदम् (D) अकर्मकाच्च

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.3.45) - ईश्वरचन्द्र, पेज–93*

85. 'उपरमति' इत्यत्र परस्मैपदविधायकं सूत्रं किम्? UGC 25 J–2015

(A) व्याङ्परिभ्यो रमः (B) अभिप्रत्यतिभ्यः क्षिपः

(C) अनुपराभ्यां कृञः (D) उपाच्च

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.3.84) - ईश्वरचन्द्र, पेज–103*

86. 'भोजनकाले उपतिष्ठते' इत्यत्रात्मनेपदविधायकसूत्रं किम्? UGC 25 S–2013

(A) अकर्मकाच्च (B) उपान्मन्त्रकरणे

(C) समवप्रविभ्यः स्थः (D) उदोऽनूर्ध्वकरणे

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.3.26) - ईश्वरचन्द्र, पेज–89*

87. आत्मनेपदस्य विधानं करोति– UK SLET– 2015

(A) आत्मनेपदेष्वनतः

(B) कास्प्रत्यायादाममन्त्रे लिटि

(C) आम्प्रत्ययवत्कृञोऽनुप्रयोगस्य

(D) कृञ्चानुप्रयुज्यते लिटि

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.3.63) - ईश्वरचन्द्र, पेज–98*

88. 'शत्रुमधिकुरुते' इत्यत्र क्रियापदे आत्मनेपदविधायकं सूत्रं किम्? UGC 25 D–2015

(A) वेः शब्दकर्मणः (B) अकर्मकाच्च

(C) अधेः प्रहसने (D) उपपराभ्याम्

स्रोत–*वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (खण्ड–5)-गोविन्दाचार्य, पेज–397*

89. 'अध्यापयति वेदम्' इत्यत्र क्रियापदे परस्मैपदविधायकं सूत्रं किम् UGC 25 D–2015

(A) विभाषाऽकर्मकात् (B) निगरणचलनार्थेभ्यश्च

(C) परेर्मृषः (D) बुधयुधनशजनेङ्प्रुद्रुस्रुभ्यो णेः

स्रोत–*वैयाकरण-सिद्धान्तकौमुदी (खण्ड–5)-गोविन्दाचार्य, पेज–445*

90. महाभाष्ये कति आह्निकानि सन्ति? BHU AET–2012

(A) 80 (B) 84

(C) 82 (D) 83

स्रोत–*व्याकरणमहाभाष्यम् - जयशङ्करलाल त्रिपाठी, पेज–1*

91. महाभाष्यस्य द्वितीयाह्निकस्य नाम किम्? BHU AET– 2012

(A) प्रत्याहाराह्निकम् (B) समर्थाह्निकम्

(C) पस्पशाह्निकम् (D) कारकाह्निकम्

संस्कृत वाड्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड–15)- बलदेव उपाध्याय, पेज–118

80. (A)	81. (B)	82. (A)	83. (B)	84. (D)	85. (D)	86. (A)	87. (C)	88. (C)	89. (D)
90. (B)	91. (A)								

92. पाणिनीयव्याकरणे केषां शब्दानामनुशासनं भवति? BHU AET–2012

(A) लौकिकानामेव (B) वैदिकानामेव
(C) उभयेषाम् (D) न केषाञ्चित्

स्रोत–*व्याकरणमहाभाष्यम् - जयशङ्करलाल त्रिपाठी, पेज–9*

93. किं तावत् व्याकरणम्? BHU AET–2012

(A) लक्ष्यमेव (B) लक्ष्यलक्षणे
(C) लक्षणमेव (D) अर्थः

स्रोत–*व्याकरणमहाभाष्यम् - जयशङ्करलाल त्रिपाठी, पेज–126*

94. 'पस्पशा' शब्द किससे सम्बद्ध है? BHU MET–2008

(A) शाङ्करभाष्य (B) पातञ्जलमहाभाष्य
(C) वाक्यपदीय (D) परिभाषेन्दुशेखर

स्रोत–*व्याकरणमहाभाष्यम् - जयशङ्करलाल त्रिपाठी, पेज–भू. 8*

95. महाभाष्यानुसारं सिद्धान्ततः व्याकरणशब्दस्य कोऽर्थः? UGC 25 J–2013

(A) सूत्रम् (B) लक्ष्यम्
(C) शब्दः (D) लक्ष्य-लक्षणे

स्रोत–*व्याकरणमहाभाष्यम् - जयशङ्करलाल त्रिपाठी, पेज–126*

96. 'स्थूला चासौ पृषती च स्थूलपृषती' – इति विग्रहे कीदृशी स्वरव्यवस्था प्रवर्तते? UGC 25 D–2013

(A) पूर्वपदप्रकृतिस्वरत्वम्
(B) उत्तरपदप्रकृतिस्वरत्वम्
(C) समासान्तानुदात्वम्
(D) समासान्तोदात्तत्वम्

स्रोत–*व्याकरणमहाभाष्यम्-जयशङ्करलाल त्रिपाठी, पेज–27-28*

97. 'अथ गौरित्यत्र' कः शब्दः? UGC 25 D 2013

(A) सास्ना-लाङ्गूल-ककुद-खुर-विषाण्यर्थरूपं स शब्दः।
(B) इङ्गितं चेष्टितं निमिषितं स शब्दः
(C) भिनेष्वभिन्नं छिन्नेष्वछिन्नं सामान्यभूतं स शब्दः
(D) येनोच्चारितेन सास्ना-लाङ्गूल-ककुद-खुर विषाणिनां सम्प्रत्ययो भवति सः शब्दः।

स्रोत–*व्याकरणमहाभाष्यम् - जयशङ्करलाल त्रिपाठी, पेज–17*

98. ''येनोच्चारितेन सास्नालाङ्गूलककुदखुरविषाणिनां सम्प्रत्ययो भवति स शब्दः'' इत्यत्र उच्चारितेन इत्यस्य कः अर्थः अस्ति? JNU M.Phil/Ph.D–2014

(A) श्रुतेन (B) लिखितेन
(C) उच्चारितप्रकाशितेन (D) निर्दिष्टेषु कश्चिदपि नास्ति

स्रोत–*व्याकरण-महाभाष्यम् - जयशङ्करलाल त्रिपाठी, पेज–17*

99. महाभाष्यरीत्या 'चत्वारि शृङ्गा' इत्यत्र किं चत्वारि पदेन गृह्यते? UGC 25 S–2013

(A) चत्वारो वेदाः (B) चत्वारः विद्याभ्यासकालाः
(C) चत्वारः ऋत्विजः (D) नामाख्यातोपसर्गनिपाताश्च

स्रोत–*व्याकरणमहाभाष्यम् - जयशङ्करलाल त्रिपाठी, पेज–46*

100. महाभाष्ये 'कूपखानकवत्' इत्युदाहरणं कस्मिन् प्रसङ्गे उक्तम्? UGC 25 J–2014

(A) शब्दस्य ज्ञाने धर्मः (B) गौरित्यत्र कः शब्दः
(C) किमर्थं वर्णानामुपदेशः (D) सिद्धे शब्दार्थसम्बन्धे

स्रोत–*व्याकरणमहाभाष्यम् - जयशङ्करलाल त्रिपाठी, पेज–117*

101. व्याकरण के अध्ययन का प्रयोजन है– UGC 73 J–2012, 2013

(A) यशः प्राप्ति (B) व्यवहारज्ञानम्
(C) अर्थप्राप्ति (D) वेदानां रक्षा

स्रोत–*व्याकरणमहाभाष्यम् - जयशङ्करलाल त्रिपाठी, पेज–22*

102. 'अथ शब्दानुशासनम्' यहाँ 'अथ' शब्द प्रयुक्त होता है– UGC 73 D–2012

(A) आरम्भार्थे (B) अधिकारार्थे
(C) मङ्गलार्थे (D) प्रश्नार्थे

स्रोत–*व्याकरणमहाभाष्यम् - जयशङ्करलाल त्रिपाठी, पेज–5*

103. शब्द अर्थ सम्बन्ध को नित्य मानते हैं– UGC 73 J–2013

(A) महाकवयः (B) वेदान्तिनः
(C) वैयाकरणाः (D) नैयायिकाः

स्रोत–*व्याकरणमहाभाष्यम् - जयशङ्करलाल त्रिपाठी, पेज–91*

92. (C) 93. (B) 94. (B) 95. (D) 96. (D) 97. (D) 98. (C) 99. (D) 100. (A) 101. (D) 102. (B) 103. (C)

104. 'रक्षोहागमलघ्वसन्देहाः प्रयोजनम्' – यहाँ 'ऊह' का अर्थ है– UGC 73 S–2013

(A) तर्कः (B) निश्चयः
(C) सन्देहः (D) वादः

स्रोत–*व्याकरणमहाभाष्यम् - जयशङ्करलाल त्रिपाठी, पेज–23*

105. न सर्वैर्लिङ्गैर्न च सर्वाभिर्विभक्तिभिर्वेदमन्त्रानिगदिताः। ते चावश्यं यज्ञगतेन पुरुषेण यथायथं विपरिणमयितव्याः इतीयं भाष्यपङ्क्तिः वर्णयति – UK SLET–2015

(A) रक्षानामकं व्याकरणप्रयोजनम्
(B) असन्देहनामकं व्याकरणप्रयोजनम्
(C) लघुनामकं व्याकरणप्रयोजनम्
(D) ऊहनामकं व्याकरणप्रयोजनम्

स्रोत–*व्याकरणमहाभाष्यम् - जयशङ्करलाल त्रिपाठी, पेज–23*

106. 'भद्रैषां लक्ष्मीर्निहिताधिवाचि' इति पंक्तिः कस्मिन् प्रसङ्गे महाभाष्ये उद्धृता? UGC 25 D–2015

(A) शब्दपरिभाषाप्रसङ्गे (B) व्याकरणाध्ययनप्रयोजनप्रसङ्गे
(C) शब्दार्थसम्बन्धप्रसङ्गे (D) व्याकरणलक्षणप्रसङ्गे

स्रोत–*व्याकरणमहाभाष्यम् - जयशङ्करलाल त्रिपाठी, पेज–56*

107. ''भवे च तद्धितः प्रोक्तादयश्च तद्धिताः'' इति वाक्यद्वयेन निराकर्तुम् इष्यते– UK SLET–2015

(A) सूत्राणां व्याकरणत्वम्
(B) शब्दानां व्याकरणत्वम्
(C) लक्ष्यलक्षणानां व्याकरणत्वम्
(D) व्याकरणस्य मोक्षसाधनत्वम्

स्रोत–*व्याकरणमहाभाष्यम् - जयशङ्करलाल त्रिपाठी, पेज–124*

108. ''अथ गौरित्यत्र'' कः शब्दः इत्यनेन किं प्रतिपाद्यते? UGC 25 D–2014

(A) ध्वनिः (B) स्फोटः
(C) मात्रा (D) स्वरः

स्रोत–*व्याकरण महाभाष्यम्-जयशङ्करलाल त्रिपाठी, पेज–17-18*

109. 'प्रतीतपदार्थको लोके ध्वनिरिति शब्दः' इति कथनं लभ्यते– UP GDC–2014

(A) महाभाष्ये (B) लघुसिद्धान्तकौमुद्याम्
(C) सिद्धान्तकौमुद्याम् (D) वाक्यपदीये

स्रोत–*व्याकरणमहाभाष्यम् - जयशङ्करलाल त्रिपाठी, पेज–19*

110. 'पश्पशा' इत्युच्यन्ते UP GDC–2014

(A) पाशाः (B) पशुः
(C) वर्णाः (D) भाषा

स्रोत–*व्याकरणमहाभाष्यम् - जयशङ्करलाल त्रिपाठी, पेज–35*

111. चत्वारि शृङ्गास्त्रयोऽस्य पादाः द्वे शीर्षे सप्तहस्तासोऽस्य' इत्युदाहरणे रेखाङ्कितांशस्य आशयोऽस्ति– UP GDC–2014

(A) सप्तविभक्तयः (B) सप्तलोकाः
(C) सप्तकराः (D) सप्तपादाः

स्रोत–*व्याकरणमहाभाष्यम् - जयशङ्करलाल त्रिपाठी, पेज–47*

112. 'चत्वारि शृङ्गाः त्रयोऽस्य पादा' इति मन्त्रे चत्वारिपदस्य निरुक्तसम्मतः अर्थोऽस्ति? JNU M.Phil/Ph. D–2014

(A) धर्मार्थकाममोक्षाः (B) नामाख्यातोपसर्गनिपाताः
(C) ऋग्यजुःसामाथर्ववेदाः (D) होतृउद्गात्रध्वर्युब्रह्माणः

स्रोत–*निरुक्तम् - छज्जूराम शास्त्री, पेज–587*

113. महाभाष्य का विषय क्या था? MP PSC–1994, 2003

(A) व्याकरण (B) ज्योतिष
(C) संगीत (D) बौद्धधर्म

स्रोत–*व्याकरणमहाभाष्यम् - जयशङ्करलाल त्रिपाठी, पेज–भू. 5*

114. व्याकरणस्य गौणप्रयोजनानि सन्ति– UK SLET–2012

(A) 12 (B) 14
(C) 13 (D) 10

स्रोत–*व्याकरणमहाभाष्यम् - जयशङ्करलाल त्रिपाठी, पेज–29*

115. व्याकरणस्य सर्वोत्तमपद्धतिः का– UK SLET–2012

(A) अर्थोपदेशः (B) वर्णोपदेशः
(C) शब्दोपदेशः (D) ध्वन्युपदेशः

स्रोत–*व्याकरणमहाभाष्यम्-जयशङ्करलाल त्रिपाठी, पेज–67, 68*

104. (B) 105. (D) 106. (B) 107. (B) 108. (A) 109. (A) 110. (C) 111. (A) 112. (C) 113. (A) 114. (C) 115. (C)

116. पतञ्जलिमतानुसारं वेदस्य षट्स्वङ्गेषु कस्य प्राधान्यम्
JNU MET–2015

(A) निरुक्तस्य (B) छन्दसः
(C) शिक्षायाः (D) व्याकरणस्य

***स्रोत**–व्याकरणमहाभाष्यम् - जयशङ्कर लाल त्रिपाठी, पेज–25*

117. (i) पतञ्जल्यनुसारं व्याकरणस्य मुख्यानि प्रयोजनानि कति सन्ति– UP GDC–2012, BHU AET–2010, 2012
(ii) व्याकरणाध्ययनस्य कति प्रमुखप्रयोजनानि?
(iii) पतञ्जलेरनुसारं व्याकरणाध्ययनस्य मुख्य-प्रयोजनानि सन्ति? HE–2015, JNU MET–2015
(iv) शब्दानुशासनस्य कति मुख्यानि प्रयोजनानि?

(A) चत्वारि (B) षड्
(C) पञ्च (D) सप्त

***स्रोत**–व्याकरणमहाभाष्यम् - जयशङ्कर लाल त्रिपाठी, पेज–21*

118. वैयाकरणैः शब्दार्थयोः सम्बन्धः स्वीकृतः–
UP GDC–2012

(A) संयोगसम्बन्धः (B) समवायसम्बन्धः
(C) नित्यसम्बन्धः (D) अनित्यसम्बन्धः

***स्रोत**–व्याकरणमहाभाष्यम् - जयशङ्करलाल त्रिपाठी, पेज–91*

119. 'स वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति' इत्यनेन महाभाष्ये किमभिप्रेतम्? UGC 25 J – 2015

(A) शब्दशुद्धिः (B) चित्तशुद्धिः
(C) कायशुद्धिः (D) व्यवहारशुद्धिः

***स्रोत**–व्याकरणमहाभाष्यम् - जयशङ्करलाल त्रिपाठी, पेज–32*

120. पाणिनीयशिक्षायां वर्णानां संख्या वर्तते? REET–2016

(A) 63 या 64 (B) 32 या 33
(C) 26 या 27 (D) 40 या 50

पाणिनीयशिक्षा (श्लोक-3)-शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पेज–70

121. एकः शब्दः सम्यग्ज्ञातः स्वर्गे लोके कः भवति–
UGC 73 J– 2015

(A) राजा (B) यशस्वी
(C) कामधुक् (D) पण्डितः

***स्रोत**–व्याकरणमहाभाष्यम् - जयशङ्करलाल त्रिपाठी, पेज–भू. 20*

122. ''ग्रामे-ग्रामे काठकं कालापकं च'' इति कुत्र प्राप्यते?
BHU AET–2010

(A) महाभाष्ये (B) वार्तिके
(C) गीतायाम् (D) मल्लिनाथभाष्ये

***स्रोत**–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - बलदेव उपाध्याय, पेज–134*

123. 'एको निमित्तं शब्दानामपरोऽर्थे प्रयुज्यते' इति पंक्तिः कुत्र उपलभ्यते? UGC 25 D–2015

(A) महाभाष्ये (B) वाक्यपदीये
(C) पाणिनीयशिक्षायाम् (D) अष्टाध्याय्याम्

***स्रोत**–वाक्यपदीयम् (का. 43) - शिवशंकर अवस्थी, पेज–208*

124. पाणिनिना अष्टाध्याय्यां वैयाकरणानामुल्लेखः कृतः– BHU AET–2011

(A) अष्टानाम् (B) सप्तानाम्
(C) दशानाम् (D) षण्णाम्

संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास-युधिष्ठिर मीमांसक/रामनाथ त्रिपाठी, पेज–55-71

125. अष्टाध्याय्याः प्रथमं सूत्रं किम्? BHU AET–2012

(A) वृद्धिरादैच् (B) अदेङ्गुणः
(C) आद् गुणः (D) इको गुणवृद्धी

***स्रोत**–अष्टाध्यायी (सूत्रपाठ) - गोपालदत्त पाण्डेय, पेज–02*

126. एषु को स्मर्यतेऽष्टाध्याय्याम्? BHU AET–2012

(A) पतञ्जलिः (B) चन्द्रगोमी
(C) गार्ग्यः (D) वोपदेवः

संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास-युधिष्ठिर मीमांसक/रामनाथ त्रिपाठी, पेज–59

127. पाणिनिना अष्टाध्याय्यां कति आचार्याः स्मृताः?
BHU AET–2012

(A) दश (B) चतुर्दश
(C) चत्वारः (D) पञ्चदश

संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास-युधिष्ठिर मीमांसक/रामनाथ त्रिपाठी, पेज–55-71

128. भट्टोजिमतेन अष्टाध्याय्यां कति सूत्राणि सन्ति?
DSSSB PGT–2014

(A) 3970 (B) 3980
(C) 3974 (D) 3984

***स्रोत**–वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी - गोपालदत्त पाण्डेय, पेज–भू. 9*

116. (D) 117. (C) 118. (C) 119. (A) 120. (A) 121. (C) 122. (A) 123. (B) 124. (C) 125. (A) 126. (C) 127. (A) 128. (C)

129. अष्टाध्याय्याम् अन्तिमं सूत्रं किम्? DSSSB PGT–2014

(A) अइउण् (B) पूर्वत्रासिद्धम्
(C) इति शब्दानुशासनम् (D) अ अ

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–भू. XX*

130. पाणिनि ने किस ग्रन्थ के द्वारा भाषा को एकरूपता देने का प्रयास किया? UGC (H) J–2008

(A) महाभाष्य (B) अष्टाध्यायी
(C) योगवाशिष्ठ (D) बृहस्पतिनीतिसार

स्रोत–*संस्कृत शास्त्रों का इतिहास-बलदेव उपाध्याय, पेज–434*

131. अष्टाध्याय्याः प्रत्येकम् अध्याये कति पादाः सन्ति– JNU MET–2015

(A) चत्वारः (B) पञ्च
(C) त्रयः (D) षट्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (भाग–1) - ईश्वरचन्द्र, पेज–भू. 7*

132. पाणिनीयशिक्षायां कति श्लोकाः सन्ति– UGC 25 D–2015

(A) चतुःषष्टिः (B) त्रिषष्टिः
(C) षष्टिः (D) सप्ततिः

स्रोत–*पाणिनीयशिक्षा-शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पेज–41*

133. 'शास्त्रानुपूर्वं तद्विद्यात् यथोक्तं लोकवेदयोः' इति पंक्तिः कुत्र उपलभ्यते? UGC 25 D–2015

(A) पाणिनिशिक्षायाम् (B) अष्टाध्याय्याम्
(C) वाक्यपदीये (D) महाभाष्ये

पाणिनीयशिक्षा (श्लोक–1)-शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पेज–02

134. अकर्मक तथा सकर्मक का सम्बन्ध है– UP TET–2013

(A) संज्ञा से (B) सर्वनाम से
(C) क्रिया से (D) विशेषण से

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–52-53*

135. सकर्मकत्वं किम्? BHU AET–2011

(A) फलाश्रयत्वम्
(B) फलव्यधिकरणव्यापारवाचकत्वम्
(C) व्यापाराश्रयत्वम्
(D) फलसमानाधिकरणव्यापारवाचकत्वम्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–378*

136. 'रामः खादति' वाक्येऽस्मिन् 'खादति' क्रियापदम् अस्ति? AWES TGT–2013

(A) सकर्मकः (B) द्विकर्मकः
(C) सकर्मकाकर्मकौ (D) अकर्मकः

स्रोत–*वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (भाग–4)-गोविन्दाचार्य, पेज–07*

137. 'बालिका पठति' वाक्येऽस्मिन् 'पठति' क्रिया कीदृशी– AWES TGT–2010

(A) सकर्मकाकर्मकौ (B) अकर्मकः
(C) द्विकर्मकः (D) सकर्मकः

स्रोत–*वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (भाग–4)-गोविन्दाचार्य, पेज–07*

138. क्रिया अकर्मक होती है जब– UP TGT–2013
(गलत विकल्प चुनिए)

(A) जब धातु का अर्थ बदल जाए
(B) जब धातु के अर्थ में कर्मसमाविष्ट हो
(C) जब धातु का कर्म अत्यन्त प्रसिद्ध हो
(D) जब कर्म शब्दों से लिखा न हो

स्रोत–*संस्कृत-व्याकरण-प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–184*

139. 'जुहोति' क्रियया सह किं पदं युक्तम्? BHU Sh.ET–2011

(A) वृक्षेण (B) अपवर्गेण
(C) हविषा (D) वायुना

स्रोत–*संस्कृत-व्याकरण-प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–118*

140. 'वारीणि' इत्यनेन सह का क्रिया योग्या? BHU Sh. ET–2011

(A) स्तः (B) अस्ति
(C) सन्ति (D) नास्ति

स्रोत–*संस्कृत-व्याकरण-प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–81*

141. 'प्रयाति' इति पदेन कस्य प्रयोगः? BHU Sh.ET–2011

(A) ग्रामम् (B) ग्रामेण
(C) हे ग्राम! (D) ग्रामाः

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.49) - ईश्वरचन्द्र, पेज–127*

129. (D) 130. (B) 131. (A) 132. (C) 133. (A) 134. (C) 135. (B) 136. (A) 137. (D) 138. (D) 139. (C) 140. (C) 141. (A)

142. 'दाराः' इति पदेन सह किं पदमुपयुक्तम्
BHU Sh.ET–2011

(A) गच्छति (B) धावति
(C) पठामि (D) तिष्ठन्ति

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–40*

143. उत्तपते, वितपते, इत्यनयोः क्रियापदयोः कोऽर्थः?
UGC 25 J 2013

(A) विलापयतीत्यर्थः (B) संतापयतीत्यर्थः
(C) दीप्यते-इत्यर्थः (D) उष्णं-करोतीत्यर्थः

स्रोत–*वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (खण्ड–5)-गोविन्दाचार्य, पेज–382*

144. प्रत्यय का अर्थ व्यापार अधिकरण फलवाचकत्व है–
UGC 73 J–2014

(A) सकर्मकत्वम् (B) अकर्मकत्वम्
(C) अव्ययत्वम् (D) व्यापारत्वम्

स्रोत–*वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (खण्ड–4)-गोविन्दाचार्य, पेज–08*

145. कर्म की दृष्टि से क्रिया के भेद हैं– UP PCS–2013

(A) तीन (B) दो
(C) चार (D) पाँच

स्रोत–*वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (खण्ड–5)-गोविन्दाचार्य, पेज–456*

146. 'क्रिया' से कौन उक्त होते हैं– UP TGT–2013

(A) कर्ता (B) कर्म
(C) भाव (D) उपर्युक्त सभी

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–52*

147. ''उरण् रपरः'' इति किम्? BHU Sh. ET–2008

(A) विधिसूत्रम् (B) अतिदेशसूत्रम्
(C) संज्ञासूत्रम् (D) अधिकारसूत्रम्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–47*

148. किमत्र परिभाषासूत्रम्? BHU Sh.ET–2008

(A) हलन्त्यम् (B) इको यणचि
(C) स्थानेऽन्तरतमः (D) मुखनासिकावचनोऽनुनासिकः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–30*

149. 'गुणः' आदेशं केन सूत्रेण भवति–
RPSC ग्रेड-II (TGT)–2010

(A) जुसि च (B) श्लौ
(C) अदभ्यस्तात् (D) वृत्तो वा

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–567*

150. 'काल्याः दासः इति कालिदासः' इस व्युत्पत्ति में कालिदास के नाम में 'काली' शब्द के अन्तिम दीर्घ ईकार को ह्रस्व इकार किस सूत्र से हुआ–
UP TET–2014

(A) ङिति ह्रस्वश्च (B) ई च गुणः
(C) ङ्यापोः संज्ञाछन्दसोर्बहुलम् (D) ङिच्च

स्रोत–*अष्टाध्यायी (6.3.62) - ईश्वरचन्द्र, पेज–763*

151. 'तस्मिन्निति निर्दिष्टे पूर्वस्य' सूत्रे कस्याः सप्तम्याः ग्रहणं भवति? BHU AET–2012

(A) वैषयिकसप्तम्याः (B) अभिव्यापकसप्तम्याः
(C) सतिसप्तम्याः (D) औपश्लेषिकसप्तम्याः

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.1.65) - ईश्वरचन्द्र, पेज–48*

152. अवङ्स्फोटायनस्येति सूत्रे स्फोटायनग्रहणं किमर्थम्?
BHU AET–2012

(A) पूजार्थम् (B) स्पष्टार्थम्
(C) लाघवार्थम् (D) उत्तरार्थम्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड–1), पेज–79*

153. समीचीनां तालिकां चिनुत– UGC 25 J–2012

(A) प्राचां ष्फ 1. क्रियातिपत्तौ
(B) लिङ्निमित्ते लृङ् 2. तृतीयान्यतरस्याम्
(C) प्रेष्यब्रुवोर्हविषो 3. तद्धितः
(D) तुल्यार्थैरतुलोपमाभ्याम् 4. देवतासम्प्रदाने

	A	B	C	D
(A)	2	3	1	4
(B)	3	2	4	1
(C)	3	1	4	2
(D)	4	2	3	1

स्रोत–*अष्टाध्यायी (क) 4.1.17 (ख) 3.3.139 (ग) 2.3.61 (घ) 2.3.72 पेज–426, 384, 214, 219*

142. (D) 143. (C) 144. (A) 145. (B) 146. (D) 147. (A) 148. (C) 149. (A) 150. (C) 151. (C) 152. (A) 153. (C)

154. 'इजादेश्च गुरुमतोऽनुच्छः' इति सूत्रेण किं विधीयते?
UGC 25 J– 2012, D–2015

(A) आम् (B) इट्
(C) वृद्धिः (D) गुणः

स्रोत–*अष्टाध्यायी भाग–1 (3.1.36) - ईश्वरचन्द्र, पेज–267*

155. अधस्तनयुग्मेभ्यः समीचीना तालिका चेतव्या–
UGC 25 J– 2015

(अ) कृञः प्रतियत्ने **(i) योजनं योजने वा**
(ब) अभाषितपुंतकाच्च **(ii) गङ्गका, गङ्गिका**
(स) कालात् सप्तमी च वक्तया **(iii) कुम्भकारः**
(द) तत्रोपपदं सप्तमीस्थम् **(iv) एधोदकस्योपस्करणम्**

	अ	ब	स	द
(A)	4	2	1	3
(B)	3	2	1	4
(C)	4	3	1	2
(D)	2	1	3	4

स्रोत–*अष्टाध्यायी - ईश्वरचन्द्र, पेज–211, 935, 122, 289*

156. अनुदात्तेत उपदेशे यो ङित् तदन्ताच्च धातोः लस्य स्थाने किं स्यात्– **UGC 25 D– 2012**

(A) परस्मैपदम् (B) आत्मनेपदम्
(C) प्रातिपदिकम् (D) आर्धधातुकम्

स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.3.12) (भाग–1) - ईश्वरचन्द्र, पेज–83*

157. समीचीनां तालिकां विचिनुत– UGC 25 J – 2012

(अ) हलोऽनन्तराः **(1) केवलसमासः**
(ब) विशेषसंज्ञाविनिर्मुक्तः **(2) संयोगः**
(स) प्रायेणान्यपदार्थप्रधानः **(3) इत्थम्भूतलक्षणे**
(द) जटाभिस्तापसः **(4) बहुव्रीहिः**

	अ	ब	स	द
(A)	3	4	2	1
(B)	1	2	3	4
(C)	2	1	4	3
(D)	4	3	1	2

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी-आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–145, 147, 27*

158. 'कृत्यल्युटो बहुलम्' इति सूत्रस्योदाहरणं किम्–
UGC 25 D– 2012

(A) प्रयाणीयम् (B) स्नानीयं चूर्णम्
(C) प्रभव्यम् (D) प्रयाभ्यम्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–777*

159. 'भू+शप्>अ+अन्ति' इति स्थिते द्वयोः अकारयोः केन सूत्रेण किं भवति– **UGC 25 J– 2013**

(A) अतो गुणे इत्यनेन पूर्वरूपत्वम्
(B) अतो गुणे इत्यनेन पररूपत्वम्
(C) अतो गुणे इत्यनेन गुणादेशत्वम्
(D) आद् गुणः इत्यनेन गुणादेशत्वम्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–389*

160. 'भू लिट्>ल्>तिप्>णल्> अ = भू + अ'– इति स्थिते किं कार्यं भवति– **UGC 25 D– 2013**

(A) इको यणचि - इति यणादेशः
(B) लिटि धातोरनभ्यासस्य - इति द्वित्वम्
(C) भुवो वुग्लुङ्लिटोः - इति वुगागमः
(D) सार्वधातुकार्धधातुकयोः - इति गुणः

स्रोत–*वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (भाग–4)-गोविन्दाचार्य, पेज–33*

161. समीचीनां तालिकां चिनुत– UGC 25 J– 2014

(अ) अलोऽन्त्यात्पूर्वः **(1) अध्ययनात् पराजयते**
(ब) माणवकं पन्थानं पृच्छति **(2) नीलोत्पलम्**
(स) पराजेरसोढः **(3) अकथितं च**
(द) विशेषणं विशेष्येण बहुलम् **(4) उपधा**

	अ	ब	स	द
(A)	3	2	4	1
(B)	2	1	3	4
(C)	4	3	1	2
(D)	1	4	2	3

(i) संस्कृत-व्याकरण-प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–182, 208, 248
(ii) अष्टाध्यायी (1.1.64) - ईश्वरचन्द्र, पेज–48

154. (A) 155. (A) 156. (B) 157. (C) 158. (B) 159. (B) 160. (C) 161. (C)

162. 'फले प्रधानं व्यापारस्तिङर्थस्तु विशेषणम्' – यह उक्ति कहाँ पर उद्धृत है? UGC 73 D–2015
(A) वैयाकरणमहाभाष्ये (B) शब्देन्दुशेखरे
(C) सिद्धान्तकौमुद्याम् (D) भूषणसारे
स्रोत–*वैयाकरणभूषणसार (श्लोक-2)-भीमसेन शास्त्री, पेज–14*

163. 'भवन्ति' में अन्तादेशविधिः किस सूत्र से होता है। UGC 73 J– 2015
(A) झोऽन्तः (B) लिट् च
(C) इतश्च (D) झेर्जुस्
स्रोत–*वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (भाग–4)-गोविन्दाचार्य, पेज–22*

164. 'न माङ् योगे' इति सूत्रस्य कः आशयः BHU Sh. ET– 2008
(A) लकाराभावः (B) अडागमनिषेधः
(C) धातुसंज्ञानिषेधः (D) अतीतार्थनिषेधः
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–416*

165. 'भिक्षुः प्रभुमुपतिष्ठते' इत्यत्रात्मनेपदविधायकं किम्– UGC 25 J– 2014
(A) अकर्मकाच्च (B) वा लिप्सायामिति वक्तव्यम्
(C) उपान्मन्त्रकरणे (D) समवप्रविभ्यः स्थः
स्रोत–*अष्टाध्यायी (भाग–1) - ईश्वरचन्द्र, पेज–88*

166. 'वीरपत्नी' इति कस्य सूत्रस्योदाहरणं वर्तते– UGC 25 J–2014
(A) पत्युर्नो यज्ञसंयोगे (B) नित्यं सपत्न्यादिषु
(C) अन्तर्वत्पति वतोर्नुक् (D) विभाषा सपूर्वस्य
स्रोत–*अष्टाध्यायी भाग–1 (4.1.35) - ईश्वरचन्द्र, पेज–431*

167. 'मो राजि समः क्वौ'– इस सूत्र का उदाहरण है– UGC 73 J– 2013
(A) यशांसि (B) सम्राट्
(C) हरिं वन्दे (D) संस्कर्ता
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–100*

168. ञिति णिति च तद्धिते परे आदिवृद्धिविधायकं सूत्रमस्ति– UGC 73 S– 2013
(A) वृद्धिरादैच् (B) वृद्धिरेचि
(C) किति च (D) तद्धितेष्वचामादेः
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–927*

169. 'आदेः परस्य' इस सूत्र का अपवादक होता है– UGC 73 D– 2013
(A) अलोऽन्त्यस्य (B) स्वरितेनाधिकारः
(C) अनेकाल्-शित्-सर्वस्य (D) ङिच्च
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–93*

170. 'अचोञ्णिति' सूत्र से वृद्धि होती है– UGC 73 D– 2013
(A) सखायौ (B) उपैति
(C) प्रौढः (D) रामौ
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–178*

171. 'हे बहुश्रेयसि' इसमें ह्रस्व होता है– UGC 73 D – 2013
(A) अम्बार्थनद्योर्ह्रस्वः (B) आण्नद्याः
(C) आटश्च (D) यू स्त्र्याख्यौ नदी
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–187*

172. 'क्रोष्टुः' इसमें उकार आदेश होता है– UGC 73 J– 2014
(A) ऋत उत् (B) विसर्जनीयस्य सः
(C) ससजुषो रुः (D) प्रादयः
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–200*

173. भसञ्ज्ञायाः विधानं करोति– UK SLET– 2015
(A) झयः (B) तसौ मत्वर्थे
(C) वयसि पूरणान् (D) वर्णाद् ब्रह्मचारिणि
स्रोत–*अष्टाध्यायी (1.4.19) - ईश्वरचन्द्र, पेज–117*

174. 'न क्रोडादिबह्वचः' इत्येतत् सूत्रं वर्तते– UK SLET– 2015
(A) 'पुंयोगादाख्यायाम्' इत्यस्यापवादः
(B) 'स्वाङ्गाच्चोपसर्जनादसंयोगोपधात्' इत्यस्यापवादः
(C) 'यञश्च' इत्यस्यापवादः
(D) 'अनो बहुव्रीहेः' इत्यस्यापवादः
स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–1170*

162. (D) 163. (A) 164. (B) 165. (B) 166. (B) 167. (B) 168. (D) 169. (A) 170. (A) 171. (A) 172. (A) 173. (B) 174. (B)

175. 'आनि लोट्' इत्यनेन किं विधीयते– UGC 25 D– 2014

(A) णत्वम् (B) षत्वम्
(C) कुत्वम् (D) मत्वम्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–404*

176. 'अनादिनिधनं ब्रह्म शब्दत्वं'– यह कथन किसका है? UGC 73 D–2015

(A) नागेश (B) भट्टोजिदीक्षित
(C) भर्तृहरि (D) नारायणभट्ट

स्रोत–*वाक्यपदीयम् (श्लोक–1) - शिवशङ्कर अवस्थी, पेज–01*

177. अधोङ्कितानां युग्मानां शुद्धां तालिकां चिनुत–

(अ) टिड्ढाणञ्द्वयसज्दघ्नञ्मात्रच्तयप्ठक्ठञ्कञ्क्वरपः (1) ईद्यति
(ब) लोमादिपामादि-पिच्छादिभ्यः शनेलचः (2) ऐधिषत UGC 25 D– 2014
(स) आत्मनेपदेष्वनतः (3) यादृशी
(द) ग्लेयम् (4) पिच्छलः

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	4	2	1	3
(B)	1	3	1	3
(C)	4	3	2	1
(D)	3	4	2	1

अष्टाध्यायी (अ) 4.1.15. (ब) 5.2.100 (स) 7.1.5. (द) 6.4.65

178. 'बहुलं छन्दसि' वेदस्य स्वच्छन्दताक्षेत्रं कथ्यते– DL– 2015

(A) उच्चारणविधिषु (B) शिक्षणविधिषु
(C) दीक्षातन्त्रे (D) व्याकरण-नियमक्षेत्रे

स्रोत–*अष्टाध्यायी भाग–1 (2.4.39) - ईश्वरचन्द्र, पेज–231*

179. 'सेर्ह्यपिच्च' सूत्र से किसका विधान किया गया है– BHU MET– 2012

(A) सि (B) हि
(C) पित् (D) च

स्रोत–*अष्टाध्यायी भाग–1 (3.4.87)-ईश्वरचन्द्र, पेज–412-413*

180. 'असिद्धं बहिरङ्गमन्तरङ्गे' इति किमस्ति? JNU MET–2015

(A) परिभाषा (B) सूत्रम्
(C) वार्त्तिकम् (D) भाष्यम्

स्रोत–*परिभाषेन्दुशेखर - विश्वनाथ मिश्र, पेज–180*

181. 'यङ्' प्रत्यय विधायक सूत्र है– BHU MET– 2012

(A) गुणो यङ्लुकोः
(B) यङोऽचि च
(C) दीर्घोऽकितः
(D) धातोरेकाचो हलादेः क्रियासमभिहारे यङ्

स्रोत–*अष्टाध्यायी भाग–1 (3.1.22) - ईश्वरचन्द्र, पेज–259*

182. व्याकरण क्यों पढ़े? UGC 73 D–2015

(A) वेदानां रक्षार्थम् (B) शास्त्राणां रक्षार्थम्
(C) मन्वन्तराणां रक्षार्थम् (D) देवानां रक्षार्थम्

स्रोत–*व्याकरणमहाभाष्यम् - जयङ्करलाल त्रिपाठी, पेज–22*

183. ''उच्चैरुदात्तः, नीचैरनुदात्तः, समाहारः स्वरितः'' सूत्राणां सूत्रकारः कः– UGC 25 D– 2014

(A) पतञ्जलिः (B) पाणिनिः
(C) सायणः (D) यास्कः

स्रोत–*अष्टाध्यायी भाग–1 (1.2.29, 1.2.30)-ईश्वरचन्द्र, पेज–66*

184. 'ग्लानः' इत्यत्र तकारस्य नकारविधायकं शास्त्रमस्ति– BHU AET–2011

(A) रदाभ्यां निष्ठातो नः पूर्वस्य च दः
(B) संयोगादेरातो धातोर्यण्वतः
(C) ओदितश्च
(D) ल्वादिभ्यः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–809*

185. 'पूर्वत्रासिद्धम्' इति कीदृशं सूत्रम् BHU AET 2011

(A) परिभाषासूत्रम् (B) अतिदेशसूत्रम्
(C) अधिकारसूत्रम् (D) संज्ञासूत्रम्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–49*

175. (A) 176. (C) 177. (D) 178. (D) 179. (B) 180. (A) 181. (D) 182. (A) 183. (B) 184. (B) 185. (C)

186. अधोङ्कितानां युग्मानां समीचीना तालिका चेतव्या– UGC 25 J 2015

(अ) झयः	**(1) भृत्यः**
(ब) मनोरौ वा	**(2) शताद् बद्धः**
(स) भृञोऽसंज्ञायाम्	**(3) विद्युत्वान्**
(द) अकर्तृर्यृणे पञ्चमी	**(4) मनु**

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	2	4	3	1
(B)	3	4	1	2
(C)	1	3	2	4
(D)	3	4	2	1

अष्टाध्यायी (अ) 8.2.10 (ब) 4.1.38 (स) 3.1.112 (द) 2.3.24

187. 'अन्तादिवच्च' सूत्र का उदाहरण है– H-TET- 2014

(A) शिवायोन्नमः (B) शिवेहि

(C) पतञ्जलिः (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–64*

188. 'जनान् वारयित्वा अपृच्छत' में रेखाङ्कित पद का विधान करने वाला सूत्र है– H-TET- 2014

(A) समानकर्तृकयोः पूर्वकाले

(B) क्त्वा-तोसुन्कसुनः

(C) अलं खल्वोः प्रतिषेधयोः प्राचां क्त्वा

(D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–*अष्टाध्यायी भाग–1 (3.4.21) - ईश्वरचन्द्र, पेज–397*

189. 'तन्मात्रम्' किस सूत्र का उदाहरण है– H-TET- 2014

(A) यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा (B) झलां जशोऽन्ते

(C) झरो झरि सवर्णे (D) मोऽनुस्वारः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–90-91*

190. 'तद्धितेष्वचामादेः' इति सूत्रेण किं विधीयते– UGC 73 J- 2015

(A) दीर्घः (B) गुणः

(C) ह्रस्वः (D) वृद्धिः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–927*

191. 'अनचि च' इति सूत्रे नञः अर्थः अस्ति– JNU M.Phil/Ph.D–2014

(A) पर्युदासः (B) प्रसज्यप्रतिषेधः

(C) अल्पत्वम् (D) अप्राशस्त्यम्

स्रोत–*अष्टाध्यायी भाग–1 (8.4.46) - ईश्वरचन्द्र, पेज–1095*

192. ''इदमाद्यं पदस्थानं सिद्धिसोपानपर्वणाम्'' इत्यत्र इदमिति पदस्यार्थो भवति– UGC 73 D- 2014

(A) साहित्यम् (B) व्याकरणम्

(C) दर्शनम् (D) निरुक्तम्

स्रोत–*वाक्यपदीयम् (श्लोक 16)-शिवशङ्कर अवस्थी, पेज–125*

193. 'वज्रं पतति मस्तके' इति पद्यांशः कुत्रोक्तः– UGC 25 J- 2015

(A) महाभाष्ये (B) अष्टाध्याय्याम्

(C) वाक्यपदीये (D) पाणिनीयशिक्षायाम्

पाणिनीयशिक्षा (श्लोक 53)-शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायनः, पेज–70

194. 'अर्थरूपं तथा शब्दे स्वरूपं च प्रकाशते' यह है– UGC 73 J – 2014

(A) वाक्यपदीये (B) लघुमञ्जूषायाम्

(C) काशिकायाम् (D) महाभाष्ये

स्रोत–*वाक्यपदीयम् (49) - शिवशङ्कर अवस्थी, पेज–223*

195. 'फलमात्र धात्वर्थ है, व्यापार प्रत्ययार्थ है' यह मत है– UGC 73 J- 2014

(A) नागेशभट्टस्य (B) मण्डनमिश्रस्य

(C) भट्टोजिदीक्षितस्य (D) बालभट्टस्य

स्रोत–*वैयाकरणभूषणसार - भीमसेन शास्त्री, पेज–36*

196. वैयाकरणमते धात्वर्थोऽस्ति– BHU MET- 2011

(A) फलम् (B) भावना

(C) कर्त्ता (D) फलव्यापारौ

स्रोत–*वैयाकरणभूषणसार (खण्ड–1) - भीमसेन शास्त्री, पेज–28*

197. नागेशमते 'अइउण्' इत्यत्र कथं न संहिताकार्यम्– BHU MET- 2012

(A) अविवक्षया (B) उपजीव्यविरोधात्

(C) सौत्रत्वात् (D) निपातनात्

स्रोत–*लघुशब्देन्दुशेखर - विश्वनाथ मिश्र, पेज–06*

186. (B) 187. (B) 188. (A) 189. (A) 190. (D) 191. (B) 192. (B) 193. (D) 194. (A) 195. (B) 196. (D) 197. (A)

198. नागेशमतेन उपदेशशब्दः कीदृशः– BHU MET– 2012

(A) भावघञन्तः (B) करणल्युडन्तः

(C) करणघञन्तः (D) कर्मघञन्तः

स्रोत–*लघुशब्देन्दुशेखर - विश्वनाथ मिश्र, पेज–56*

199. नृत्तावसाने शिवः कति वारं ढक्कां ननाद– BHU AET– 2012

(A) द्वादशवारम् (B) नववारम्

(C) दशवारम् (D) चतुर्दशवारम्

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–13*

200. सन्ध्यक्षराणि कानि– BHU AET– 2012

(A) ए ओ ऐ औ (B) अ इ उ

(C) ऋ लृ (D) य व र ल

स्रोत–*ऋग्वेद-प्रातिशाख्यम् – वीरेन्द्र कुमार वर्मा, पेज–43*

201. 'अनुविद्धमिव ज्ञानं सर्वं शब्देन भासते' जिसमें है, वह है– BHU– MET– 2014

(A) महाभाष्य (B) वाक्यपदीय

(C) काशिकावृत्ति (D) रूपचन्द्रिका

स्रोत–*वाक्यपदीयम् (ब्रह्मकाण्ड का. 114)-शिवङ्कर अवस्थी, पेज–368*

202. 'तुन्नवत्' इति किमुच्यते– UGC 25 J– 2014

(A) सक्तुः (B) परिपवनम्

(C) टङ्कारध्वनिः (D) तन्तुशाटिका

स्रोत–*व्याकरणमहाभाष्यम् - जयशङ्कर लाल त्रिपाठी, पेज–54*

203. विकल्प कहाँ स्वीकृत होता है– UGC 73 D– 2008

(A) अतुल्यबले (B) तुल्यबले

(C) अप्राप्ते (D) असंगते

स्रोत–*अष्टाध्यायी भाग–1 (1.4.2) - ईश्वरचन्द्र, पेज–108*

204. 'टित्' का आगम कहाँ होता है– UGC 73 D– 2011

(A) अन्त्यावयवः (B) आद्यवयवः

(C) अन्त्यादचः परम् (D) अन्त्यादचः पूर्वम्

स्रोत–*अष्टाध्यायी भाग–1 (1.1.45) - ईश्वरचन्द्र, पेज–27*

205. 'अनेकव्यक्तिभिः व्यङ्ग्यं स्फोटः' भवति– UGC 73 D– 2013

(A) वर्णः (B) जातिः

(C) पदम् (D) वाक्यम्

स्रोत–*वाक्यपदीयम् (का.-92)-शिवशङ्कर अवस्थी, पेज–309*

206. ''प्रणवस्य स्फोटत्वं स्फुटमेवोक्तम्''– यह उक्ति किस ग्रन्थ में उद्धृत है– UGC 73– D – 2013

(A) महाभाष्ये (B) सिद्धान्तकौमुद्याम्

(C) वाक्यपदीये (D) परमलघुमञ्जूषायाम्

स्रोत–*वाक्यपदीयम् (ब्रह्म काण्ड) का.–9*

207. पाणिनीयशिक्षा में ध्वनियाँ कितने सर्गों में विभक्त हैं– UP PGT– 2003

(A) चार (B) पाँच

(C) छः (D) सात

पाणिनीयशिक्षा (श्लोक-9-10)-शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पेज–79

208. 'पचति' इस आख्यात अर्थ के लिए कर्त्ता में अन्वय है– UGC 73 D– 2013

(A) समवायेन (B) आश्रयता-सम्बन्धेन

(C) विषयता-सम्बन्धेन (D) संयोगेन

स्रोत–*वैयाकरणभूषणसार - भीमसेन शास्त्री, पेज–21*

209. वाक्यपदीयकारेण स्फोटग्रहणाय कीदृशो ध्वनिर्निर्दिष्टः– UGC 25 D– 2014

(A) नित्यः (B) अनित्यः

(C) प्राकृतः (D) वैकृतः

स्रोत–*वाक्यपदीयम् - शिवशङ्कर अवस्थी, पेज–12, 145*

210. व्याकरणपाठसामग्र्यां न गण्यते– DL– 2015

(A) सन्धिः (B) समासः

(C) उपसर्गाः (D) रससिद्धिः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–45, 234, 518*

211. भाष्यविधेरपरं नाम भवति– DL– 2015

(A) व्यासविधिः (B) पाठ्यपुस्तकविधिः

(C) व्याख्याविधिः (D) पारम्परिकीविधिः

स्रोत–*व्याकरणमहाभाष्यम्-जयशङ्करलाल त्रिपाठी, पेज–भू. 4-6*

198. (C) 199. (D) 200. (A) 201. (B) 202. (B) 203. (B) 204. (B) 205. (B) 206. (C) 207. (B) 208. (A) 209. (A) 210. (D) 211. (C)

212. 'सर्वप्रातिपदिकेभ्यः क्विब्वा वक्तव्यः'– यह क्या है– BHU MET–2012

(A) सूत्र (B) वार्तिक
(C) वृत्ति (D) भाष्य

स्रोत–*अष्टाध्यायी (भाग–1) - ईश्वरचन्द्र, पेज–256*

213. हिन्दी का पाणिनि किसको कहा जाता है– UP PGT (H) – 2004

(A) कामताप्रसाद गुरू (B) रामचन्द्र वर्मा
(C) भोलानाथ तिवारी (D) किशोरीदास वाजपेयी

स्रोत–*हिन्दी भाषा एवं साहित्य का वस्तुनिष्ठ इतिहास-गोविन्द पाण्डेय, पेज–36*

214. अभिनवगुप्तः कस्य शिष्यः आसीत्–BHU AET– 2011

(A) पुण्यराजस्य (B) हेलाराजस्य
(C) चन्द्राचार्यस्य (D) हरिस्वामिनः

स्रोत–*संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास-बलदेव उपाध्याय, पेज–112*

215. वैयाकरणमते तिङर्थः– BHU AET– 2011

(A) कृतिः (B) कर्म
(C) भावना (D) कर्तृ-कर्म-संख्या-कालाः

स्रोत–*लघुसिद्धान्त कौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–377, 379*

216. 'चत्वारि शृङ्गाः' इति मन्त्रे व्याकरणशास्त्रीत्या सप्त के– BHU AET 2012

(A) लोकः (B) ऋषयः
(C) विभक्तयः (D) पदार्थाः

स्रोत–*व्याकरणमहाभाष्यम्-जयशङ्करलाल त्रिपाठी, पेज–45-46*

217. 'अल्पाक्षर' जिसका लक्षण है, वह है–BHU MET– 2015

(A) सूत्र (B) व्याख्या
(C) वृत्ति (D) फक्किका

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, – भू. XX*

218. ध्वनिस्फोटयोर्मध्ये कः सम्बन्धः– UGC 25 J– 2015

(A) कार्यकारणभावः (B) शक्तिशक्तिमद्भावः
(C) गुणगुणिभावः (D) क्रियाक्रियावद्भावः

स्रोत–*वाक्यपदीयम् – शिवशङ्कर अवस्थी–भू. 5, 142*

219. स्वीकृतं भर्तृहरिमते वाचः– UGC 25 J– 2015

(A) चातुर्विध्यम् (B) त्रैविध्यम्
(C) द्वैविध्यम् (D) ऐकविध्यम्

स्रोत–*वाक्यपदीयम् (श्लोक-133) - शिवशङ्कर अवस्थी, पेज–422*

220. तृतीये सवने कीदृशः स्वरः प्रयोज्यः –UGC 25 J– 2015

(A) गम्भीरः (B) मध्यमः
(C) तारः (D) कम्पः

पाणिनीयशिक्षा (श्लोक-8)- शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पेज–11

221. शब्दतत्त्वं केन रूपेण विवर्तते– UGC 73 J– 2015

(A) शब्दभावेन (B) अर्थभावेन
(C) ब्रह्मरूपेण (D) ध्वनिरूपेण

स्रोत–*वाक्यपदीयम् - शिवशङ्कर अवस्थी, पेज–29*

222. रङ्गवर्णे कति मात्राः निर्दिष्टाः– UGC 25 D – 2014

(A) एकमात्रा (B) द्वे मात्रे
(C) तिस्रो मात्राः (D) बह्व्यो मात्राः

पाणिनीयशिक्षा (श्लोक-28)-शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायनः, पेज–115

223. अतीतस्य कति भेदाः– BHU Sh.ET– 2008

(A) चत्वारः (B) द्वौ
(C) पञ्च (D) त्रयः

स्रोत–*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–01*

224. कति विध्यादयोऽर्थाः– BHU Sh. ET– 2011

(A) पञ्च (B) षट्
(C) चत्वारः (D) सप्त

स्रोत– *लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड–2), पेज–64, 65*

225. मध्यमपुरुषे को आदेशः– BHU Sh.ET– 2013

(A) वस् (B) थस्
(C) झि (D) तस्

स्रोत–*अष्टाध्यायी भाग–1 (3.4.78) - ईश्वरचन्द्र, पेज–409*

226. कश्चात्र विशेषसंज्ञायुक्तशब्दः– BHU Sh.ET– 2008

(A) बालकः (B) युष्मद्
(C) देवः (D) कविः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी (1.1.27) - गोविन्दाचार्य, पेज–152*

212. (B) **213.** (A) **214.** (B) **215.** (D) **216.** (C) **217.** (A) **218.** (A) **219.** (B) **220.** (C) **221.** (B)
222. (B) **223.** (D) **224.** (B) **225.** (B) **226.** (B)

227. एषु को व्याकरणस्य आशयः–

BHU Sh.ET–2008

(A) लक्ष्यम्

(B) लक्षणम्

(C) उभयम्

(D) नोभयम्

स्रोत–*व्याकरणमहाभाष्यम् - जयशङ्करलाल त्रिपाठी, पेज–126*

228. अधस्तनयुग्मेभ्यः समीचीना तालिका चेतव्या–

(अ) कर्तृकर्मणोः कृति	**(i) युक्तयोगः**
(ब) निष्ठा	**(ii) शतस्य शतं वा प्रतिदीव्यति**
(स) विभाषोपसर्गे	**(iii) वीरपुरुषको ग्रामः**
(द) अनेकमन्यपदार्थे	**(iv) जगतः कर्ता कृष्णः**

कूट : UGC 25 D–2015

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	(iv)	(i)	(ii)	(iii)
(B)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(C)	(ii)	(iv)	(iii)	(i)
(D)	(ii)	(i)	(iv)	(iii)

स्रोत–*अष्टाध्यायी (अ) 2.3.65 (ब) 1.1.25 (स) 2.3.59 (द) 2.2.24*

227. (C) **228.** (A)

15. व्याकरण के ग्रन्थ-ग्रन्थकार

1. (i) अष्टाध्यायी के रचनाकार हैं UP TGT 2004, 2010
(ii) अष्टाध्यायी किसकी कृति है– UP PCS 2006 MP PSC 1995, RPCS 2008 Jh PCS 2010, UGC 25 D 2013, BHU MET 2011, BHU AET 2011

(A) पाणिनि (B) पतञ्जलि
(C) वररुचि (D) माहेश्वर

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास - युधिष्ठिर मीमांसक/ रामनाथ त्रिपाठी, पेज–95*

2. पाणिनिना कः ग्रन्थः रचितः? DSSSB-TGT 2014, BHU B.Ed. 2014

(A) महाभाष्य (B) वाक्यपदीय
(C) प्रौढमनोरमा (D) अष्टाध्यायी

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास - युधिष्ठिर मीमांसक/ रामनाथ त्रिपाठी, पेज–95*

3. महान् व्याकरणाचार्य पाणिनि ने संस्कृत की वर्णमाला को बाँटा है– UP TET–2013

(A) 10 खण्डों में (B) 12 खण्डों में
(C) 14 खण्डों में (D) 16 खण्डों में

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–38*

4. पाणिनिना महेश्वरात् कति सूत्राणि अधिगतानि– JNU MET–2015

(A) पञ्चदश (B) चतुर्दश
(C) त्रयोदश (D) द्वादश

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–26*

5. 'अष्टाध्यायी' ग्रन्थ सम्बन्धित है? UP TET 2014, BHU AET 2010

(A) व्याकरण से (B) अलङ्कार से
(C) नाट्यशास्त्र से (D) काव्यशास्त्र से

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–26*

6. पाणिनेः व्याकरणस्य अभिधानम्– AWES TGT 2010, 2011

(A) अष्टाध्यायी (B) महाभाष्य
(C) सिद्धान्तकौमुदी (D) लघुसिद्धान्तकौमुदी

स्रोत–*(i) संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–25-26*
(ii) संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास - युधिष्ठिर मीमांसक/ रामनाथ त्रिपाठी, पेज–95

7. अष्टाध्यायी की रचना आठ अध्यायों में किसने की थी– MP PSC 2005

(A) पतञ्जलि (B) पाणिनि
(C) कौटिल्य (D) कालिदास

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–26*

8. महाभाष्यकारः कः अस्तिः REET–2016

(A) पाणिनिः (B) पतञ्जलिः
(C) कात्यायनः (D) भट्टोजिदीक्षितः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास - युधिष्ठिर मीमांसक/ रामनाथ त्रिपाठी, पेज–127*

9. (i) 'महाभाष्य' किसने लिखा– BHU AET 2010
(ii) महाभाष्य के रचयिता कौन हैं? BHU MET 2008, 2011, UGC 73 D 1992, 1996, MP PCS 1998

(A) पतञ्जलि (B) कात्यायन
(C) पाणिनि (D) वरदराज

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास - युधिष्ठिर मीमांसक/ रामनाथ त्रिपाठी, पेज–127*

10. महाभाष्य-उद्योतव्याख्यानस्य कर्ता कः? BHU AET 2012

(A) कैयटः (B) भर्तृहरिः
(C) नागेशः (D) चारुदेवशास्त्री

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास - युधिष्ठिर मीमांसक/ रामनाथ त्रिपाठी, पेज–160*

1. (A)	2. (D)	3. (C)	4. (B)	5. (A)	6. (A)	7. (B)	8. (B)	9. (A)	10. (C)

11. महाभाष्यस्य प्रथम-व्याख्याग्रन्थः कः? BHU AET 2012

(A) प्रदीपः (B) उद्योतः
(C) प्रदीपोद्योतः (D) महाभाष्यदीपिका

(i) व्याकरण महाभाष्यम् (पस्पशाह्निकम्)-जयशंकर लाल त्रिपाठी– भू. 06
(ii) संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास - युधिष्ठिर मीमांसक/ रामनाथ त्रिपाठी, पेज–139

12. महाभाष्यम्– BHU AET 2010

(A) व्याकरणम् (B) सांख्यम्
(C) योगः (D) वेदान्तः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास - युधिष्ठिर मीमांसक/ रामनाथ त्रिपाठी, पेज–136*

13. पतञ्जलि का सम्बन्ध किस रचना से है – MP PCS 1993

(A) चरकसंहिता (B) दिव्यावदान
(C) अष्टाध्यायी (D) महाभाष्य

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास - युधिष्ठिर मीमांसक/ रामनाथ त्रिपाठी, पेज–127*

14. 'काशिकावृत्ति' के रचयिता हैं? BHU MET 2014

(A) पाणिनि (B) वामनजयादित्य
(C) पतञ्जलि (D) माहेश्वर

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास - युधिष्ठिर मीमांसक/ रामनाथ त्रिपाठी, पेज–169*

15. काशिकावृत्तिः केन विरचिता? BHU AET 2012

(A) जयादित्यवामनाभ्याम् (B) भर्तृहरिणा
(C) कैयटेन (D) नारायणभट्टेन

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास - युधिष्ठिर मीमांसक/ रामनाथ त्रिपाठी, पेज–169*

16. 'पदमञ्जरी' कस्य ग्रन्थस्य टीका? BHU AET 2012

(A) काशिकावृत्तेः (B) महाभाष्यस्य
(C) भाषावृत्तेः (D) वाक्यपदीयस्य

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास - युधिष्ठिर मीमांसक/ रामनाथ त्रिपाठी, पेज–172*

17. काशिकोपरि पदमञ्जरीकार आसीत् BHU AET 2011

(A) हरदत्तमिश्रः (B) शिवभट्टः
(C) रङ्गनाथयज्वा (D) रामदेवमिश्रः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास - युधिष्ठिर मीमांसक/ रामनाथ त्रिपाठी, पेज–171*

18. 'काशिका टीका' किस ग्रन्थ पर प्राप्त होती है? BHU MET 2012

(A) वाक्यपदीय (B) अष्टाध्यायी
(C) महाभाष्य (D) सिद्धान्तकौमुदी

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास - युधिष्ठिर मीमांसक/ रामनाथ त्रिपाठी, पेज–171*

19. 'काशिका' है? UP PGT H 2000

(A) पाणिनि कृत 'अष्टाध्यायी' की टीका
(B) पतञ्जलि कृत 'महाभाष्य' की टीका
(C) पतञ्जलि कृत 'योगसूत्र' की टीका
(D) भर्तृहरि कृत 'वाक्यपदीय' की टीका

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास - युधिष्ठिर मीमांसक/ रामनाथ त्रिपाठी, पेज–171,172*

20. (i) 'सिद्धान्तकौमुदी' के प्रणेता UP TGT 1993
(ii) 'सिद्धान्तकौमुदी' के रचनाकार कौन हैं?
BHU AET–2010, 2012, 2013, H-TET 2014

(A) पाणिनि (B) पतञ्जलि
(C) भट्टोजिदीक्षित (D) वरदराज

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास - युधिष्ठिर मीमांसक/ रामनाथ त्रिपाठी, पेज–201*

21. भट्टोजिदीक्षितः कस्य ग्रन्थस्य रचयिता? BHU AET 2012

(A) काशिकावृत्तेः (B) महाभाष्यस्य
(C) भाषावृत्तेः (D) प्रौढमनोरमायाः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास - युधिष्ठिर मीमांसक/ रामनाथ त्रिपाठी, पेज–201*

11. (D) 12. (A) 13. (D) 14. (B) 15. (A) 16. (A) 17. (A) 18. (B) 19. (A) 20. (C) 21. (D)

22. एषु कः प्रक्रियाग्रन्थः? BHU AET 2012

(A) लघुमञ्जूषा (B) सिद्धान्तकौमुदी
(C) संग्रहः (D) प्रदीपः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास - युधिष्ठिर मीमांसक/ रामनाथ त्रिपाठी, पेज–201*

23. सिद्धान्तकौमुद्याः 'बालमनोरमा'–व्याख्यायाः प्रवक्ता कः? BHU AET 2012

(A) सायणाचार्यः (B) अनुभूतिस्वरूपाचार्यः
(C) शाकटायनः (D) वासुदेवदीक्षितः वाजपेयी

स्रोत–*वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (भाग-एक) गोपालदत्त पाण्डेय भू. पेज–16 संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास - युधिष्ठिर मीमांसक/ रामनाथ त्रिपाठी, पेज–203*

24. 'शब्दकौस्तुभस्य' रचयिता कः? BHU AET 2011, 2012

(A) नागेशभट्टः (B) हरिदीक्षितः
(C) भट्टोजिदीक्षितः (D) कौण्डभट्टः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास - युधिष्ठिर मीमांसक/ रामनाथ त्रिपाठी, पेज–201*

25. सिद्धान्तकौमुदीग्रन्थस्य प्रथमा टीका का? BHU AET 2012

(A) लघुशब्देन्दुशेखरः (B) बालमनोरमा
(C) प्रौढमनोरमा (D) लक्ष्मी

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास - युधिष्ठिर मीमांसक/ रामनाथ त्रिपाठी, पेज–201*

26. सिद्धान्तकौमुद्यास्तत्त्वबोधिनीटीकायाः प्रणेता आसीत्? BHU AET 2011

(A) ज्ञानेन्द्रसरस्वती (B) वासुदेवदीक्षितः
(C) शिवरामत्रिपाठी (D) नृसिंहः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास - युधिष्ठिर मीमांसक/ रामनाथ त्रिपाठी, पेज–201*

27. अष्टाध्याय्याः 'शब्दकौस्तुभ'–वृत्तेः प्रणेताऽस्ति? BHU AET 2011

(A) अप्पयदीक्षितः (B) विश्वेश्वरपाण्डेयः
(C) भट्टोजिदीक्षितः (D) कौण्डभट्टः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास - युधिष्ठिर मीमांसक/ रामनाथ त्रिपाठी, पेज–201*

28. भट्टोजिदीक्षितः– BHU AET 2010

(A) वेदभाष्यकर्ता (B) सिद्धान्तकौमुदीप्रणेता
(C) श्रौतसूत्रप्रणेता (D) गृह्यसूत्रप्रणेता

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास - युधिष्ठिर मीमांसक/ रामनाथ त्रिपाठी, पेज–201*

29. 'तत्त्वबोधिनी' किस ग्रन्थ पर टीका है? BHU MET 2008

(A) सिद्धान्तकौमुदी (B) काशिका
(C) अष्टाध्यायी (D) लघुसिद्धान्तकौमुदी

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास - युधिष्ठिर मीमांसक/ रामनाथ त्रिपाठी, पेज–201*

30. (i) 'लघुसिद्धान्तकौमुदी' केन कृता– BHU MET 2008
(ii) 'लघुसिद्धान्तकौमुदी' के रचयिता कौन हैं? 2009, 2011, BHU B.Ed 2011, BHU AET 2010, UP TET 2014, UP GIC 2015, H-TET–2015

(A) वरदराजाचार्य (B) नागेशभट्ट
(C) कौण्डभट्ट (D) भट्टोजिदीक्षित

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य – भू. 23*

31. लघुमञ्जूषाग्रन्थस्य रचयिता कः? BHU AET 2012

(A) नागेशः (B) विश्वनाथः
(C) रङ्गनाथः (D) वैद्यनाथः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास - युधिष्ठिर मीमांसक/ रामनाथ त्रिपाठी, पेज–160*

32. लघुशब्देन्दुशेखरकार आसीत्– BHU AET 2011

(A) हरिदीक्षितः (B) भट्टोजिदीक्षितः
(C) नागेशभट्टः (D) कौण्डभट्टः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास - युधिष्ठिर मीमांसक/ रामनाथ त्रिपाठी, पेज–160*

33. 'वैयाकरणसिद्धान्तमञ्जूषा' इति ग्रन्थस्य प्रणेता आसीत्– BHU AET 2011

(A) वैद्यनाथपायगुण्डे (B) नागेशभट्टः
(C) भट्टोजिदीक्षितः (D) बालभट्टः

स्रोत–*लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य – भू. 22*

22. (B)	**23.** (D)	**24.** (C)	**25.** (C)	**26.** (A)	**27.** (C)	**28.** (B)	**29.** (A)	**30.** (A)	**31.** (A)
32. (C)	**33.** (B)								

34. वाक्यपदीयग्रन्थस्य रचयिता/लेखकः कः? BHU AET 2012, UGC 73 D–2015

(A) भर्तृहरिः (B) हरिदीक्षितः
(C) भट्टोजिदीक्षितः (D) कौण्डभट्टः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास - युधिष्ठिर मीमांसक/ रामनाथ त्रिपाठी, पेज–139*

35. 'व्याकरणचन्द्रोदय' के रचयिता हैं– BHU MET 2014

(A) पट्टाभिरामशास्त्री (B) कमलनाथत्रिपाठी
(C) डॉ. सत्यव्रतशास्त्री (D) पं. चारुदत्तत्रिपाठी

36. 'मुग्धबोध' व्याकरण के रचयिता का नाम है– UGC 73J 2013

(A) हेमचन्द्रः (B) कात्यायनः
(C) वोपदेवः (D) भर्तृहरिः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास - युधिष्ठिर मीमांसक/ रामनाथ त्रिपाठी, पेज–240*

37. शब्दार्थसम्बन्धानां नित्यत्वं भर्तृहरिमते कुत्राम्नातम् अस्ति? JNU M.Phil/Ph. D–2014

(A) पाणिनिसूत्रेषु
(B) कात्यायनवार्तिकेषु
(C) संग्रहग्रन्थे महाभाष्ये च
(D) एतेषु (A), (B), (C) इत्यत्र निर्दिष्टेषु सर्वेष्वेव

स्रोत–*वाक्यपदीयम् (ब्रह्मकाण्ड का.-23)-शिवशङ्कर अवस्थी, पेज–132*

38. 'संग्रहग्रन्थः' केन विरचितः? BHU AET 2011, 2012

(A) पाणिनिना (B) पतञ्जलिना
(C) भर्तृहरिणा (D) व्याडिना

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास - युधिष्ठिर मीमांसक/ रामनाथ त्रिपाठी, पेज–353*

39. कः पाणिनेः पूर्ववर्ती वैयाकरणः? BHU AET 2012

(A) आपिशलिः (B) बोपदेवः
(C) वासुदेवदीक्षितः (D) चन्द्रगोमी

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास - युधिष्ठिर मीमांसक/ रामनाथ त्रिपाठी, पेज–53*

40. रूपावतारस्य रचयिता कः? BHU AET 2011-2012

(A) रामचन्द्राचार्यः (B) धर्मकीर्तिः
(C) विमलसरस्वती (D) नागेशः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास - युधिष्ठिर मीमांसक/ रामनाथ त्रिपाठी, पेज–196*

41. प्रथमप्रक्रियाकारः कः? BHU AET 2012

(A) रामचन्द्राचार्यः (B) धर्मकीर्तिः
(C) विमलसरस्वती (D) नागेशः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास - युधिष्ठिर मीमांसक/ रामनाथ त्रिपाठी, पेज–196*

42. चन्द्रगोमी कस्य व्याकरणस्य रचयिता? BHU AET 2012

(A) कातन्त्रस्य (B) कलापस्य
(C) चान्द्रस्य (D) सारस्वतस्य

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास - युधिष्ठिर मीमांसक/ रामनाथ त्रिपाठी, पेज–216*

43. हरिदीक्षितः कस्य ग्रन्थस्य कर्त्ता? BHU AET 2012

(A) प्रौढमनोरमायाः (B) शब्दरत्नस्य
(C) प्रदीपस्य (D) वाक्यपदीयस्य

स्रोत–*संस्कृतवाङ्मय का बृहद् इतिहास (पञ्चदश खण्ड) - बलदेव उपाध्याय, पेज भू.–13*

44. सरस्वतीकण्ठाभरणस्य प्रणेता कः? BHU AET 2012

(A) शिवस्वामी (B) चन्द्रगोमी
(C) बोपदेवः (D) भोजदेवः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास - युधिष्ठिर मीमांसक/ रामनाथ त्रिपाठी, पेज–330*

45. गणरत्नमहोदधेः कर्त्ताऽऽसीत्? BHU AET 2011

(A) कैयटः (B) भर्तृहरिः
(C) वर्धमानसूरिः (D) हेलाराजः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास - युधिष्ठिर मीमांसक/ रामनाथ त्रिपाठी, पेज–232*

34. (A) 35. (D) 36. (C) 37. (D) 38. (D) 39. (A) 40. (B) 41. (B) 42. (C) 43. (B) 44. (D) 45. (C)

46. सुमेलित कीजिए– UGC 25 J 2002

(अ) पाणिनि	1. महाभाष्य
(ब) पतञ्जलि	2. अष्टाध्यायी
(स) सायणाचार्य	3. न्यायकोश
(द) भीमाचार्य	4. ऋग्वेदभाष्य

	अ	ब	स	द
(A)	2	1	4	3
(B)	4	1	3	2
(C)	1	1	2	4
(D)	2	3	1	4

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास - युधिष्ठिर मीमांसक/ रामनाथ त्रिपाठी, पेज–95, 127*

47. प्रौढमनोरमायाः कुचमर्दनकार आसीत्–BHU AET 2011

(A) पण्डितराजजगन्नाथः (B) नारायणभट्टः
(C) चक्रपाणिदत्तः (D) कृष्णमिश्रः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास - युधिष्ठिर मीमांसक/ रामनाथ त्रिपाठी, पेज–178*

48. कातन्त्रपरिशिष्टकार आसीत्– BHU AET 2011

(A) शर्ववर्मा (B) विजयानन्दः
(C) श्रीपतिदत्तः (D) कात्यायनः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास - युधिष्ठिर मीमांसक/ रामनाथ त्रिपाठी, पेज–211*

49. हेमचन्द्रसूरिविरचितो व्याकरणग्रन्थो वर्तते– BHU AET - 2011

(A) संक्षिप्तसारः
(B) सिद्धहैमशब्दानुशासनम्
(C) मुग्धबोधव्याकरणम्
(D) सारस्वतव्याकरणम्

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास - युधिष्ठिर मीमांसक/ रामनाथ त्रिपाठी, पेज–232*

50. सुमेलित कीजिए BHU AET 2011

(A) पाणिनिः	1. कामसूत्र
(B) वात्स्यायनः	2. राजतरङ्गिणी
(C) चाणक्यः	3. अष्टाध्यायी
(D) कल्हणः	4. अर्थशास्त्र

(A)	A-3	B-1	C-4	D-2
(B)	A-4	B-1	C-2	D-3
(C)	A-2	B-3	C-1	D-4
(D)	A-1	B-2	C-3	D-4

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–04, 260

51. वैयाकरणग्रन्थसंग्रहस्य प्रणेता कः? BHU AET 2011

(A) यास्कः (B) व्याडिः
(C) शाकटायनः (D) गालवः

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास - युधिष्ठिर मीमांसक/ रामनाथ त्रिपाठी, पेज–106*

52. 'जेम्स आर वैलेन्टाईन' ने जिस ग्रन्थ का अंग्रेजी में अनुवाद किया है, वह है– BHU MET 2015

(A) लघुसिद्धान्तकौमुदी (B) पाणिनीयधातुवृत्ति
(C) धातुरूपनन्दिनी (D) ''सुधा'' टीका गूगल सर्च

53. निम्नलिखित में से कौनसा-युग्म संगत है– MP PSC 2009

(A) पुष्यमित्र शुंग – पतञ्जलि
(B) कनिष्क – थेरनागसेन
(C) मिनाण्डर – अश्वघोष
(D) चन्द्रगुप्त प्रथम – हरिषेण

स्रोत–*संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास - युधिष्ठिर मीमांसक/ रामनाथ त्रिपाठी, पेज–132–133*

54. 'वैयाकरणभूषणम्' कस्य रचना– BHU AET 2011

(A) भट्टोजिदीक्षितस्य (B) वनमालीमिश्रस्य
(C) कौण्डभट्टस्य (D) हरिदीक्षितस्य

स्रोत–*वैयाकरणभूषणसार - भीमसेनशास्त्री, पेज भू.–12*

46. (A) 47. (A) 48. (C) 49. (B) 50. (A) 51. (B) 52. (A) 53. (A) 54. (C)

55. कौण्डभट्टस्य पितुः नाम किम्– **BHU AET 2012**

(A) भर्तृहरिः (B) हरिदीक्षितः
(C) भट्टोजिदीक्षितः (D) रङ्गोजिभट्टः

स्रोत–वैयाकरणभूषणसार (खण्ड-1)-भीमसेन शास्त्री, पेज–13

56. परस्परं सम्यक् मेलनीयाः– **JNU MET–2015**

आचार्याः	ग्रन्थाः
(क) वामनजयादित्यः	a. व्याकरणमहाभाष्यम्
(ख) वरदराजाचार्यः	b. सिद्धान्तकौमुदी
(ग) पतञ्जलिः	c. मध्यसिद्धान्तकौमुदी
(घ) भट्टोजिदीक्षितः	d. काशिकावृत्तिः

	क	ख	ग	घ
(A)	d	c	a	b
(B)	a	c	b	d
(C)	b	a	c	d
(D)	a	b	c	d

संस्कृतगङ्गा वस्तुनिष्ठ-संस्कृतव्याकरणम्-सर्वज्ञभूषणः, पेज–176

57. सुमेलित कीजिये– **UGC 06 D–2011**

लेखक	ग्रन्थ
(क) कौटिल्य	1. स्मृति
(ख) भद्रबाहु	2. महाभाष्य
(ग) कात्यायन	3. कल्पसूत्र
(घ) पतञ्जलि	4. अर्थशास्त्र

	क	ख	ग	घ
(A)	4	3	1	2
(B)	3	2	1	4
(C)	1	2	3	4
(D)	4	2	1	3

58. सूची-I से सूची-II सुमेलित कीजिये–

(क) महाभाष्य	1. कालिदास
(ख) कुमारसम्भव	2. पाणिनि
(ग) अष्टाध्यायी	3. चाणक्य
(घ) अर्थशास्त्र	4. पतञ्जलि

UP TGT (S.S.)–2010

	क	ख	ग	घ
(A)	4	1	2	3
(B)	1	2	3	4
(C)	1	2	4	3
(D)	2	1	4	3

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृत-साहित्यम्-सर्वज्ञभूषणः, पेज–279-291

55. (D) 56. (A) 57. (A) 58. (A)

16. भाषाविज्ञान

1. 'वैदिकभाषा' किस भाषा के सबसे निकट है– UGC 25 J–1994, 2001, D– 2001

(A) हिटाइट (B) भारोपीय
(C) अवेस्ता (D) पर्सियन

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–416*

2. भाषा की परिभाषा में अन्तर्भूत नहीं है– UGC 25 D – 2003

(A) व्यक्त वाणी
(B) यादृच्छिक ध्वनि प्रतीकों की व्यवस्था
(C) विभाषा
(D) सांकेतिक

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–29-30*

3. भारतीय भाषाओं की जननी है– UP TET 2014

(A) हिन्दी (B) संस्कृत
(C) द्रविड (D) पंजाबी

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–415*

4. भाषायाः कौशलानि सन्ति– RPSC ग्रेड II (TGT) 2010

(A) त्रीणि (B) चत्वारि
(C) दश (D) चतुर्दश

स्रोत–*संस्कृतशिक्षणम् - उदयशंकर झा, पेज–30*

5. भाषा.......विनिमयस्य साधनम् – UGC 25 D– 2004

(A) विचारस्य (B) आचारस्य
(C) वित्तस्य (D) वस्तुनः

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–30*

6. बाह्यप्रयत्नस्तु– UGC 25 J– 2007

(A) पञ्चधा (B) दशधा
(C) एकादशधा (D) त्रयोदशधा

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–166*

7. ''विचार जब ध्वन्यात्मक होकर होठों पर प्रकट होती है, तो वह भाषा कहलाती है।'' यह किसका विचार है– UP PGT – 2009

(A) डॉ. मङ्गलदेवशास्त्री का (B) डॉ. भोलाशङ्करव्यास का
(C) पतञ्जलि का (D) प्लेटो का

स्रोत–*भाषाविज्ञान - भोलानाथ तिवारी, पेज–02*

8. भाषा के सम्बन्ध में असत्य कथन कौन सा है– UP TGT (H) 2010

(A) भाषा सामाजिक सम्पत्ति है।
(B) भाषा परिवर्तनशील है।
(C) भाषा अनुकरण सादृश्य है।
(D) भाषा पैतृक सम्पत्ति है।

स्रोत–*भाषाविज्ञान - भोलानाथ तिवारी, पेज–57*

9. भाषा का वैशिष्ट्य कौन नहीं है– BHU MET– 2012

(A) सम्प्रेषण का साधन (B) सर्वव्यापक होना
(C) अविच्छिन्न प्रवाह होना (D) परिवर्तनहीनता

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–54, 55, 58*

10. भाषा की कौन सी प्रकृति सत्य नहीं है– UP PGT– 2013

(A) भाषा प्रतीकों की एक व्यवस्था है।
(B) जिन प्रतीकों से भाषा का निर्माण होता है उन्हें वाक् प्रतीक कहते हैं।
(C) प्रत्येक समुदाय में भाषा एक होती है।
(D) भाषा सम्बन्धी प्रतीक यादृच्छिक होते हैं।

स्रोत–*भाषाविज्ञान - भोलानाथ तिवारी, पेज–05*

11. भाषाविज्ञान के अन्तर्गत अध्ययन का क्षेत्र नहीं है– UP PGT– 2013

(A) अर्थपरिवर्तन (B) ध्वनिपरिवर्तन
(C) काव्यध्वनिनिरूपण (D) पदविज्ञान

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–86*

1. (C) 2. (C) 3. (B) 4. (B) 5. (A) 6. (C) 7. (D) 8. (D) 9. (D) 10. (C) 11. (C)

12. तुलनात्मक-भाषाशास्त्रस्य अध्ययनस्य आरम्भकाले कयोः भाषयोः मध्ये ध्वनिसाम्यं प्रत्यक्षीकृतम्? **UGC 25 J– 2013**

(A) संस्कृत-हिन्दी-मध्ये (B) संस्कृत-लैटिन-मध्ये
(C) संस्कृत-फारसी-मध्ये (D) संस्कृत-फ्रांसीसी-मध्ये

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–04*

13. (i) भारोपीय भाषाओं के मुख्य विभाग हैं–
(ii) ध्वनि के आधार पर भारोपीय भाषा के मुख्य विभाग हैं– UGC 25 J–1994, 2001, D–2001
(iii) भारोपीय भाषा के प्रकार हैं–

(A) दो (B) तीन
(C) चार (D) पाँच

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–384*

14. भारोपीय भाषा में संस्कृत 'च वर्ग' की उत्पत्ति बताने वाला– **UGC 25 J– 1994**

(A) ग्रिम (GRIMM) (B) कालित्स (COLITZ)
(C) वर्नर (VERNER) (D) ग्रासमान (GRASSMAN)

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–248*

15. भारतीय आर्यभाषा की कितनी अवस्थाएँ हैं– **UGC 25 D– 2001, 2009**

(A) दो (B) तीन
(C) चार (D) पाँच

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–425*

16. 'संस्कृत' भाषा आती है – **UGC 25 J – 2002**

(A) द्रविड (B) यूरोपीय
(C) भारोपीय (D) अमेरिकी

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–384-385*

17. (i) कौन-सी भारोपीय परिवार की भाषा नही है?
(ii) भारोपीयपरिवारस्य भाषा नास्ति–
BHU MET– 2009, 2013, UGC 25 D 2004

(A) संस्कृतभाषा (B) आंग्लभाषा
(C) तमिलभाषा (D) प्राकृतभाषा

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–396*

18. आंग्लभाषा भारोपीयपरिवारस्य कया भाषया सम्बद्धा अस्ति– **UGC 25 D – 2011**

(A) इटालिकभाषया (B) केल्टिकभाषया
(C) ग्रीकभाषया (D) जर्मानिकभाषया

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–391-392*

19. भारोपीयभाषापरिवारे शतमवर्गस्य कति प्रमुखभेदाः? **UGC 25 J– 2012**

(A) चत्वारः (B) सप्त
(C) नव (D) एकादश

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–385*

20. भारोपीयभाषापरिवारे भारत-ईरानीवर्गः कस्मिन् वर्गे? **UGC 25 J – 2012**

(A) केन्टुमवर्गे (B) शतमवर्गे
(C) चीनीपरिवारे (D) आर्मीनीपरिवारे

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–385*

21. भारोपीय परिवार की भाषा नहीं है–UGC (H) J– 2014

(A) केल्टिक (B) इटालिक
(C) जर्मानिक (D) सियोयन

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–384*

22. का भारोपीया भाषा अस्ति– **UGC 25 D 2014**

(A) ग्रीक (B) कन्नड
(C) तेलगू (D) मलयालम

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–384, 390*

23. निम्नलिखित में से कौन भारोपीय परिवार की भाषा नहीं है– **UGC (H) J– 2011**

(A) मराठी (B) गुजराती
(C) मलयालम (D) हिन्दी

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–396*

24. कवर्गस्य त्रयः प्रकाराः आसन्– **UK SLET– 2015**

(A) प्राकृतस्य पैशाचीनामकप्रभेदे। (B) मूलभारोपीयध्वनिषु
(C) पहलवीयभाषायाम् (D) नैतेषु कुत्रापि।

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–381*

12. (B) **13.** (A) **14.** (B) **15.** (B) **16.** (C) **17.** (C) **18.** (D) **19.** (A) **20.** (B) **21.** (D)
22. (A) **23.** (C) **24.** (B)

25. संस्कृतस्य भाषा-परिवारः कथ्यते– UP GDC 2014

(A) भारतीयः (B) भारोपीयः
(C) आर्य-द्रविडः (D) आर्यवर्तीयः

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–371*

26. भारोपीयभाषा कस्मिन् भाषाखण्डे समाहिताः? HE – 2015

(A) अफ्रीकाखण्डे (B) यूरेशियाखण्डे
(C) प्रशान्तमहासागरीयखण्डे (D) अमेरिकाखण्डे

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–371*

27. 'भारोपीय' प्रथमं केन उक्तम् – JNU MET 2014

(A) थॉमस रॉबर्ट (B) थाँमस यंग
(C) विलियम जोन्स (D) मैक्समूलर

स्रोत–*विकीपीडिया - इण्टरनेट*

28. भाषा की उत्पत्ति का मूल कारण है? UGC 25 D– 2003

(A) अर्थ (B) शब्द
(C) पद (D) ध्वनि

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–65*

29. (i) भाषाविज्ञाने यो-हे-हो- सिद्धान्तः कस्मिन् प्रसङ्गे प्रवृत्तः? UP PGT– 2000, UP GDC–2014
(ii) 'यो-हे-हो सिद्धान्त' का सम्बन्ध है?

(A) भाषोत्पत्ति से (B) ध्वनिपरिवर्तन से
(C) भाषावर्गीकरण से (D) अर्थविस्तार से

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–72*

30. 'मे पोल-सिद्धान्त' में 'पोल' क्या है? UP PGT–2000

(A) एक खम्भा (B) एक गृह
(C) एक त्योहार (D) एक वृक्ष

संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज–459

31. 'यो-हे-हो वाद' किस प्रसङ्ग में आया है–UP GDC–2008

(A) ध्वनि-परिवर्तन के कारण (B) ध्वनि-परिवर्तन की दिशाएँ
(C) भाषा का उद्भव (D) अर्थ-परिवर्तन के कारण

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–72*

32. भाषा की 'दैवी उत्पत्ति' के सिद्धान्त का समर्थन किसने किया है? UP PGT 2004

(A) सुसमिल्श (B) रूसो
(C) अरस्तू (D) हेर्डर

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–67*

33. भाषा के 'धातु-सिद्धान्त' के प्रतिपादक हैं– UP PGT– 2005

(A) रूसो (B) मैक्समूलर
(C) हारडर (D) अरस्तू

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–68*

34. भाषा की उत्पत्ति विषयक 'समन्वय सिद्धान्त' के प्रवर्तक भाषाशास्त्री हैं– UP PGT– 2009

(A) प्लेटो (B) हेनरीस्वीट
(C) जी. रेवेज (D) न्वारे

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–74*

35. भाषा की उत्पत्ति विषयक 'रणन सिद्धान्त' के मूल प्रवर्तक स्वीकार किये जाते हैं। UP PGT 2010, UK TET– 2011

(A) रूसो (B) सुसमिल्श
(C) प्लेटो (D) न्वारे

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–68*

36. हिन्दी भाषा की उत्पत्ति हुयी है– UGC (H) J–2011

(A) वैदिक संस्कृत से (B) लौकिक संस्कृत से
(C) शौरसेनी अपभ्रंश से (D) प्राकृत से

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–436*

37. दिगम्बर जैन आगमों की मुख्य भाषा है– UGC 25 J– 1994

(A) शौरसेनी (B) महाराष्ट्री
(C) संस्कृत (D) वैदिकभाषा

स्रोत–*भाषाविज्ञान - कर्ण सिंह, पेज–118*

25. (B) **26.** (B) **27.** (B) **28.** (D) **29.** (A) **30.** (A) **31.** (C) **32.** (A) **33.** (B) **34.** (B)
35. (C) **36.** (C) **37.** (A)

38. 'मराठी' निम्नलिखित में से किस भाषापरिवार के अन्तर्गत है– UGC 25 J 1995

(A) पालि (B) चीनी
(C) जर्मन (D) आधुनिकभारतीयभाषा

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–443-444*

39. 'अवेस्ता' का भाषापरिवार है– UGC 25 D– 1996

(A) द्रविड (B) सामी
(C) भारतीय आर्यभाषा (D) जर्मन

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–415*

40. इनमें मध्य आर्य भारतीय भाषा है–UGC 25 D 1997

(A) VEDIC SANSKRIT (वैदिक संस्कृत)
(B) MARATHI (मराठी)
(C) MAGADHI (मागधी)
(D) ORIYA (उड़िया)

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–435*

41. 'शतम्' वर्ग की भाषा है– UGC 25 D– 1997

(A) तोखारी (B) आर्मीनी
(C) जर्मानिक (D) केल्टिक

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–385*

42. चीनी भाषा इस प्रकार में आती है– UGC 25 D– 1997

(A) ISOLATING अयोगात्मक
(B) INCORPORATING प्रश्लिष्ट योगात्मक
(C) AGGLUTINATIVE अश्लिष्ट अयोगात्मक
(D) INFLECTIONAL श्लिष्ट योगात्मक

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–357*

43. 'संस्कृतम्' किस परिवार की मुख्य भाषा है? H-TET–2015

(A) भारत यूरोपीय परिवार (B) काकेसी परिवार
(C) चीनी परिवार (D) द्राविड परिवार

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–384-385*

44. यह विभक्तिप्रधान भाषा है– UGC 25 J– 1998

(A) संस्कृत (B) तुर्की
(C) द्रविड (D) चीनी

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–363*

45. यह संश्लिष्ट भाषा है– UGC 25 D– 1998

(A) DRAVEDIAN (द्रविड)
(B) CHINESE (चीनी)
(C) GREENLANDISH (ग्रीन लैण्डिस)
(D) INDO-EUROPEAN (भारोपीय)

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–363*

46. 'पूर्वेभिः' इस पद का प्रयोग इसी भाषा में होता है– UGC 25 J 1999, 2000

(A) CLASSICAL SANSKRIT (शास्त्रीय संस्कृत)
(B) VEDIC SANSKRIT (वैदिक संस्कृत)
(C) PALI (पालि)
(D) PRAKRIT (प्राकृत)

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–427*

47. 'संस्कृतभाषा' अस्ति – UP GIC 2009, UP, GDC 2012 CCSUM-Ph.D–2016

(A) AGGLUTINATIVE (अश्लिष्ट अयोगात्मक)
(B) INFLECTIONAL (श्लिष्ट योगात्मक)
(C) ISOLATING (अयोगात्मक)
(D) INCORPORATING (प्रश्लिष्ट योगात्मक)

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–363*

48. संस्कृतभाषा है– UGC 25 D–1999

(A) प्रत्ययप्रधान (B) विभक्तिप्रधान
(C) अयोगात्मक (D) समासप्रधान

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–363*

49. एकाक्षरी भाषा है– UGC 25 D– 1999

(A) तुर्की (B) चीनी
(C) जर्मन (D) अवेस्ता

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–399*

38. (D) 39. (C) 40. (C) 41. (B) 42. (A) 43. (A) 44. (A) 45. (D) 46. (B) 47. (B) 48. (B) 49. (B)

50. द्रविड भाषा है– UGC 25 J– 2000

(A) AGGLUTINATIVE (अश्लिष्ट योगात्मक)

(B) INFLECTIONAL (श्लिष्ट योगात्मक)

(C) INCORPORATING (प्रश्लिष्ट योगात्मक)

(D) ISOLATING (अयोगात्मक)

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–360-362*

51. 'शतम्' परिवार की भाषा है– UGC 25 J– 2000

(A) केल्टिक (B) इटैलिक

(C) अवेस्ता (D) हिटाइट

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–384*

52. आकृतिमूलक वर्गीकरण को इस नाम से भी जाना जाता है– UGC 25 D– 2003

(A) ध्वनिवर्गीकरण (B) रूपात्मक

(C) अभिधार्थक (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–*भाषाविज्ञान - कर्ण सिंह, पेज–63*

53. 'बहड्डकहा' (बृहत्कथा) इति कथाग्रन्थस्य भाषा श्रूयते – UP GDC–2012

(A) अपभ्रंशः (B) शौरसेनी

(C) मागधी (D) पैशाची

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–438*

54. (i) अयोगात्मकभाषायाः उत्तमोदाहरणमस्ति–

(ii) अयोगात्मकवर्गस्य प्रतिनिधिभाषाऽस्ति–

UP GDC– 2012, RPSC ग्रेड I PGT–2014

(A) सूडानी (B) तोखारी

(C) चीनी (D) स्यामी

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–357*

55. (i) 'अपभ्रंश' अस्ति UP GIC– 2009, UP GDC– 2008

(ii) 'अपभ्रंश' है – JNU MET– 2014

(A) प्राचीन भारतीय आर्यभाषा (B) नवीन भारतीय आर्यभाषा

(C) द्रविड परिवार भाषा (D) मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–431*

56. भाषावर्गीकरणस्य आधारः स्वीकृतः–

UGC 25 D– 2004

(A) कालः (B) धर्मः

(C) प्रकृतिः (D) आकृतिः

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–356*

57. तुमर्थक प्रत्यय अधिक उपलब्ध होते हैं–

UP GIC– 2009

(A) पालि में (B) प्राकृत में

(C) वैदिकसंस्कृत में (D) लौकिकसंस्कृत में

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–427*

58. (i) भारतीयार्यभाषासु प्राचीनतमा भाषा का अस्ति–

(ii) प्राचीनतमा भारतीयार्यभाषाऽस्ति–

UGC 25 D– 2004, G GIC–2015

(A) पालिभाषा (B) प्राकृतभाषा

(C) वैदिकसंस्कृतभाषा (D) लौकिकसंस्कृतभाषा

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–425*

59. संयोगात्मक भाषा– UGC 25 J 2005, D– 2008

(A) आंग्लम् (B) संस्कृतम्

(C) चीनी (D) हिन्दी

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–365*

60. समीचीनां तालिकां चिनुत– UGC 25 J– 2006

(क) लोपः 1. ISO LATING (अयोगात्मक)

(ख) चीनी 2. संघर्षी

(ग) हकारः 3. GENEALOGICAL CLASSIFICATION

(घ) पारिवारिकवर्गीकरण् 4. ध्वनिपरिवर्तनहेतुः

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(A)	4	1	2	3
(B)	1	4	3	2
(C)	1	2	3	4
(D)	4	3	1	2

भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–235-357-148-371

50. (A) 51. (C) 52. (B) 53. (D) 54. (C) 55. (D) 56. (D) 57. (C) 58. (C) 59. (B) 60. (A)

61. अधोनिर्दिष्टेषु वियोगात्मकभाषा....। UGC 25 J– 2008

(A) संस्कृतम् (B) ग्रीक
(C) लैटिन (D) हिन्दी

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–365*

62. भारतीय-आर्यभाषायाः अवस्थाः सन्ति– UGC 25 D– 2009

(A) चतस्रः (B) पञ्च
(C) तिस्रः (D) षट्

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–425*

63. अयोगात्मकभाषासु न भवन्ति– UGC 25 J – 2011

(A) उपसर्गाः (B) क्रियाः
(C) कारकाणि (D) लिङ्गानि

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–359*

64. भाषापरिवर्तनस्य कति बाह्यकारणानि? UGC 25 J– 2012

(A) चत्वारि (B) षट्
(C) अष्टौ (D) दश

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–96-102*

65. (i) आर्यभाषापरिवारे गणिता भाषा नास्ति –
(ii) आर्यभाषापरिवारस्य भाषा न मन्यते –
UGC 25 D– 2013, UP GDC– 2014

(A) प्राकृतम् (B) पालि
(C) संस्कृतम् (D) तमिल

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–425-431*

66. (i) विश्वस्य भाषायाः कति परिवाराः सन्ति?
(ii) पारिवारिकवर्गीकरणस्य कति प्रमुखभेदाः –
UGC 25 J– 2012, UK SLET– 2012

(A) चतुर्दश (B) षोडश
(C) अष्टादश (D) विंशतिः

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–371*

67. 'शतम्' वर्गस्य कति शाखाः सन्ति? UGC 25 D– 2013

(A) तिस्रः (B) चतस्रः
(C) पञ्च (D) सप्त

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–385*

68. 'शौरसेनी' इसके अन्तर्गत है– UP GDC– 2008

(A) पालि (B) प्राकृत
(C) अपभ्रंश (D) पैशाची

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–435-436*

69. पालिभाषा प्राचीनकाले केन नाम्ना प्रसिद्धा आसीत्? JNU MET–2015

(A) शौरसेनी (B) अर्द्धमागधी
(C) मागधी (D) पैशाची

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–437*

70. भाषाओं का आकृतिमूलक वर्गीकरण विषयक कौन-सा विकल्प सही है? UP PGT– 2005

(A) योगात्मक, वियोगात्मक, संयोगात्मक, एकल
(B) अयोगात्मक, अश्लिष्ट, श्लिष्ट, प्रश्लिष्ट
(C) श्लिष्ट, अश्लिष्ट, प्रश्लिष्ट, विश्लिष्ट
(D) चीनी, भारोपीय, द्रविड, लैटिन

स्रोत–*(i) भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–357*
(ii) भाषाविज्ञान - भोलानाथ तिवारी, पेज–95

71. तुखारी (तोखारी) शाखा का पता कब लगा? UP PGT– 2005

(A) इक्कीसवीं शताब्दी में (B) बीसवीं शताब्दी में
(C) अठारहवीं शताब्दी में (D) उपर्युक्त में से किसी में भी नहीं।

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–395*

72. 'अवेस्ता' भाषा है? UP PGT– 2005

(A) ईरानी (B) भारतीय
(C) ग्रीक (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–416*

61. (D) 62. (C) 63. (A) 64. (C) 65. (D) 66. (C) 67. (B) 68. (B) 69. (C) 70. (B) 71. (B) 72. (A)

73. भाषाओं के पारिवारिक वर्गीकरण का आधार है– UGC (H) J–2012

(A) रूपरचना (B) ध्वनि
(C) इतिहास (D) अर्थ

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–356*

74. निम्नलिखित में से कौन द्रविड परिवार की भाषा है? UGC (H) J–2010

(A) उड़िया (B) बंगला
(C) असमिया (D) कन्नड़

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–396*

75. 'शतम्'-वर्गस्य भाषा नास्ति– UK SLET–2015

(A) संस्कृतभाषा (B) अवेस्ताभाषा
(C) हिन्दीभाषा (D) लैटिनभाषा

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–385*

76. 'अपभ्रंश' शब्द का प्रयोग मध्यकालीन संस्कृत ग्रन्थों में होता है– IAS–1996

(A) राजपूतों में से जातिच्युत लोगों को इंगित करने के लिये।
(B) वैदिक कर्मकाण्डों के त्याग को इंगित करने के लिये।
(C) कुछ आधुनिक भारतीय भाषाओं के आरम्भिक रूपों को इंगित करने के लिये।
(D) संस्कृतोत्तर छन्दों को इंगित करने के लिये।

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–440*

77. भाषाणां पारिवारिकं वर्गीकरणमेव मन्यते– UP GDC–2014

(A) सामाजिकं वर्गीकरणम् (B) ऐतिहासिकं वर्गीकरणम्
(C) भौगोलिकं वर्गीकरणम् (D) मानवीयं वर्गीकरणम्

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–356*

78. भाषायाः आकृतिमूलकं वर्गीकरणं न कथ्यते– G GIC–2015

(A) रूपात्मकम् (B) पदात्मकम्
(C) ध्वन्यात्मकम् (D) रचनात्मकम्

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–356*

79. युगाश्रित-निर्धारणे पालि-भाषाऽस्ति– UP GDC–2014

(A) प्राचीना (B) अर्वाचीना
(C) मध्ययुगीना (D) आधुनिकी

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–431*

80. सम्बन्धतत्त्वाश्रयं वर्गीकरणं किम्? HE – 2015

(A) आकृतिमूलकम् (B) परिवारमूलकम्
(C) देशमूलकम् (D) प्रभावमूलकम्

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–372*

81. संस्कृतस्य सहभाषे आस्ताम्– UP GDC–2014

(A) उर्दू-हरयाणव्यौ (B) सिन्धी-पब्तून्यौ
(C) पालि-प्राकृते (D) डोंगरी-पैशाच्यौ

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–431-432*

82. (i) अवेस्ता की सदृशतम क्या है?
(ii) 'अवेस्ता' की सदृशतम भाषा कौन है? BHU MET–2011, 2012

(A) वैदिकसंस्कृतम् (B) जर्मन भाषा
(C) अंग्रेजी भाषा (D) लौकिकसंस्कृतम्

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–416*

83. श्लिष्ट योगात्मकता किस भाषा का वैशिष्ट्य है? BHU MET–2012

(A) संस्कृत (B) चीनी
(C) फ्रेंच (D) अंग्रेजी

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–357*

84. अधोलिखितेषु भारतीयभाषापरिवारः किं नास्ति? JNU MET–2014

(A) आर्य (B) द्रविड
(C) ऑस्ट्रो-एशियाई (D) दक्षिण-एशियाई

स्रोत–*भाषविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–387, 396, 409*

85. सन्थाली.........अस्ति। JNU MET–2014

(A) आर्य-भाषा (B) द्रविड-भाषा
(C) ऑस्ट्रो-एशियाई (D) तिब्बती-बर्मी

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–409*

73. (C) 74. (D) 75. (D) 76. (C) 77. (B) 78. (C) 79. (C) 80. (B) 81. (C) 82. (A) 83. (A) 84. (D) 85. (C)

86. मणिपुरी.......भाषा अस्ति। JNU MET–2014

(A) आर्य (B) द्रविड
(C) ऑस्ट्रो-एशियाई (D) तिब्बती-बर्मी

स्रोत–*Wikipedia (विकीपीडिया) इण्टरनेट*

87. बोडो.........भाषा अस्ति। JNU MET–2014

(A) आर्य (B) द्रविड
(C) ऑस्ट्रो-एशियाई (D) तिब्बती-बर्मी

स्रोत–*Wikipedia (विकीपीडिया) इण्टरनेट*

88. 'संस्कृत' किस तरह की भाषा है? BHU MET–2011

(A) श्लिष्टयोगात्मक (B) प्रश्लिष्टयोगात्मक
(C) मध्ययोगात्मक (D) अयोगात्मक

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–363*

89. संसार में भाषायें प्रचलित हैं– UGC 25 J–2013

(A) लगभग 3,000 (B) लगभग 6,000
(C) लगभग 2,500 (D) लगभग 4,000

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–355*

90. संस्कृत से सीधा सम्बन्ध किस भाषा का है– UGC (H) J–2012

(A) प्राकृत (B) अपभ्रंश
(C) आधुनिक भारतीय भाषायें (D) हिन्दी

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–432*

91. अधोलिखितेषु का भाषा 'केन्टुम्'–वर्गे नहि आयाति? UP GIC–2015

(A) ग्रीक (B) फ्रेंच
(C) रूसी (D) लैटिन

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–385*

92. अवेस्ता भारोपीयपरिवारस्य कया शाखया सम्बद्धास्ति? UP GIC–2015

(A) भारत-ईरानीशाखया (B) ग्रीकशाखया
(C) हित्तीशाखया (D) तोखारीशाखया

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–415-416*

93. मध्यकालिकी आर्यभाषा नास्ति– UP GIC–2015

(A) अपभ्रंश (B) प्राकृतम्
(C) पालिः (D) बांग्ला

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–431*

94. लिखित-भाषास्वरूपेषु प्राचीनतममस्ति UP GIC–2015

(A) वैदिकसंस्कृतम् (B) पालिः
(C) अपभ्रंश (D) लौकिकसंस्कृतम्

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–416*

95. आकृतिमूलकवर्गीकरणेन असम्बद्धम् – UGC 25 J–2015

(A) प्रकृतिः (B) प्रत्ययः
(C) उपसर्गः (D) व्यापारः

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–358-359*

96. पारिवारिकवर्गीकरणेन असम्बद्धम् – UGC 25 J–2015

(A) फलसाम्यम् (B) ध्वनिसाम्यम्
(C) पदसाम्यम् (D) अर्थसाम्यम्

स्रोत–*(i) भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–373*
(ii) भाषाविज्ञान - कर्ण सिंह, पेज–65

97. किं तत्त्वं वियोगात्मक-भाषायाः प्रकृतिलक्षणम्? UGC 25 J–2015

(A) संख्या (B) अर्थः
(C) सन्धिः (D) प्रकृति-प्रत्यय-पार्थक्यम्

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–358*

98. का भाषा 'केन्टुम'–वर्गेण असम्बद्धम्– UGC 25 J–2015

(A) ग्रीक-भाषा (B) इताली
(C) लैटिन-भाषा (D) संस्कृत-भाषा

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–385*

86. (D) 87. (D) 88. (A) 89. (A) 90. (A) 91. (C) 92. (A) 93. (D) 94. (A) 95. (D) 96. (A) 97. (D) 98. (D)

99. को भाषापरिवारः बृहत्तमा– UK SLET– 2012

(A) भारोपीयभाषापरिवारः (B) सूडानीपरिवारः

(C) अमरीकीपरिवारः (D) चीनीपरिवारः

***स्रोत**–भाषाविज्ञान - कर्ण सिंह, पेज–74*

100. मराठीभाषायाः भाषापरिवारः कः– UK SLET– 2012

(A) भारोपीयः (B) काकेशी

(C) द्राविडः (D) बास्कः

(i) भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–396-397-401

(ii) भाषाविज्ञान - कर्णसिंह, पेज–69

101. अयोगात्मकभाषा का– UK SLET– 2012

(A) संस्कृत (B) तिब्बती

(C) हिन्दी (D) हिब्रू

***स्रोत**–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–357*

102. दो क्रमिक व्यञ्जन महाप्राण ध्वनियों में से एक के महाप्राणत्वह्रास का प्रस्ताव जिसने किया, वह है– UGC 25 J– 1995

(A) ग्रिम (B) वर्नर

(C) बूचट (D) ग्रासमान

भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–245, 246, 241

103. 'स्वराघात के कारण ध्वनि परिवर्तन होता है।' इस नियम के प्रवर्तक हैं – UGC 25 D– 1997, UP PGT– 2004

(A) VERNER (वर्नर)

(B) GRIMM (ग्रिम)

(C) GRASSMAN (ग्रासमान)

(D) FORTUNATON (फोर्तुनातोव)

***स्रोत**–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–241*

104. 'तालव्यीकरण' का नियम किसमें लागू होता है– UGC 25 J– 1998

(A) चकार में (B) बभूव में

(C) तस्थौ में (D) पपात में

***स्रोत**–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–248*

105. किसमें ग्रासमान का नियम लागू होता है– UGC 25 D– 1998

(A) बभूव में (B) चकार में

(C) जगाम में (D) तस्थौ में

***स्रोत**–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–246*

106. 'बभूव' इस पद में यह नियम लागू होता है– UGC 25 J– 1999

(A) ग्रासमान नियम (B) वर्नर नियम

(C) ग्रिम नियम (D) फोर्तुनातोव नियम

***स्रोत**–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–246*

107. 'वर्नर' नियम के अनुसार 'क' का परिवर्तित रूप है– UGC 25 D– 1999, 2002

(A) ख् (B) ग्

(C) घ् (D) ङ्

***स्रोत**–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–246*

108. ग्रिम नियम के अन्तर्गत 'भ' का परिवर्तित रूप है– UGC 25 D– 1999

(A) प् (B) फ्

(C) ब् (D) म्

***स्रोत**–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–242*

109. 'बभार' इस पद में यह नियम लागू होता है। UGC 25 J– 2000

(A) ग्रासमाननियम (B) वर्नरनियम

(C) ग्रिमनियम (D) कालित्सनियम

***स्रोत**–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–246*

110. कॉंलिजनियमस्य उपयोगो भवति अस्मिन्– UGC 25 J– 2007

(A) ददौ (B) दधौ

(C) चकार (D) करोति

***स्रोत**–(i) भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–247*

(ii) भाषाविज्ञान - कर्णसिंह, पेज–175

99. (A) 100. (A) 101. (B) 102. (D) 103. (A) 104. (A) 105. (A) 106. (A) 107. (B) 108. (C) 109. (A) 110. (C)

111. (i) कः नियमः ग्, द्, ब् इति व्यञ्जनानि क्रमानुसारेण क्, त्, प् इति व्यञ्जने परिवर्तते?
(ii) किस नियम से ग्, द्, ब् हो जाते हैं क्, त्, प्?
(iii) केन नियमेन ग् द् ब् वर्णाः क् त् प् वर्णरूपेण परिणमन्ति?
UP GIC– 2009, UP GIC– 2015, G GIC–2015

(A) वर्नरनियम (B) ग्रिमनियम
(C) ग्रासमाननियम (D) तालव्यनियम

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–242*

112. निम्नाङ्कितेषु ध्वनिनियमस्य प्रवर्तको न वर्तते– UGC 25 J– 2013

(A) ग्रिम (Grimm) (B) ग्रासमान (Grassman)
(C) वेबर (Weber) (D) वर्नर (Verner)

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–241*

113. 'वर्गस्य प्रथमवर्णस्य परिवर्तनं केवलम् असंयुक्तध्वनिषु एव भवति, न तु संयुक्तध्वनिषु।' इति अपवादनियमः केन प्रदत्तः? UGC 25 J– 2013

(A) ग्रिममहोदयेन (B) ग्रासमानमहोदयेन
(C) वर्नरमहोदयेन (D) आचार्येण भोलाशङ्करेण

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–245*

114. ध्वनिनियमेषु क्रमेण प्रथमः को गण्यते? UGC 25 S– 2013

(A) वर्नरनियमः (B) ग्रिमनियमः
(C) कालित्सनियमः (D) ग्रासमाननियमः

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–241*

115. ध्वनिनियमेषु द्वितीयः को गण्यते? UGC 25 J– 2014

(A) ग्रासमाननियमः (B) वर्नरनियमः
(C) ग्रिमनियमः (D) कालित्ज्नियमः

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–241*

116. क्या ध्वनि परिवर्तन के लिये वर्नर ने ग्रिम नियम में सुधार किया है? UP PGT– 2000

(A) हाँ (B) नहीं
(C) दोनों का कोई सम्बन्ध नहीं है (D) कुछ भी नहीं

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–246*

117. ग्रिम, ग्रासमैन एवं वर्नर सम्बन्धित हैं? UP PGT– 2005

(A) भौतिक नियमों से (B) जैविक नियमों से
(C) व्याकरण के नियमों से (D) ध्वनि नियमों से

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–241*

118. ग्रिमनियम के अनुसार निम्न जर्मन 'THREE' का उच्च जर्मन में परिवर्तित रूप है – UP PGT– 2010

(A) DREE (B) THREI
(C) THRI (D) DREI

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–245*

119. ध्वनिनियमस्य कर्ता अस्ति– UK SLET– 2015

(A) ग्रासमानः (B) वैङ्कटरमणः
(C) विन्टरनित्जः (D) कीथः

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–241*

120. 'ग्रासमान-नियमः' केन सम्बद्धः अस्ति? UGC 25 D– 2014

(A) अर्थतत्त्वेन (B) ध्वनितत्त्वेन
(C) वाक्यतत्त्वेन (D) साहित्येन

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–241*

121. प्रथमवर्णपरिवर्तनं कस्मिन् ध्वनिनियमे समाहितम्? HE – 2015

(A) ग्रिमनियमे (B) ग्रासमाननियमे
(C) वर्नरनियमे (D) तालव्यनियमे

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–241*

122. प्रसिद्धध्वनिनियमेषु अर्वाचीनतमः कः? UGC 25 J– 2015

(A) वर्नरनियमः (B) ग्रासमाननियमः
(C) ग्रिमनियमः (D) विण्टरनिट्जनियमः

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–246*

123. संस्कृतभाषायाः 'शतम्' इति पदं गाथिकभाषायां 'हुन्द' भवति, इति कस्य मतम्? UGC 25 J– 2015

(A) ग्रिममहोदयस्य (B) वर्नरमहोदयस्य
(C) ग्रासमानमहोदयस्य (D) थॉम्पसनमहोदयस्य

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–247*

111. (B) 112. (C) 113. (A) 114. (B) 115. (A) 116. (A) 117. (D) 118. (D) 119. (A) 120. (B)
121. (A) 122. (A) 123. (B)

124. ग्रिमनियमस्य सम्बन्धः कति स्पर्शध्वनिभिः अस्तिः – UGC 25 D– 2011

(A) 9 (B) 6

(C) 3 (D) 12

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–243-244*

125. क्या ग्रिम-नियम का त्रिभुज निम्नवत् है? UP PGT – 2000

क् ख् ग्

य् र् ल् प् फ् ब्
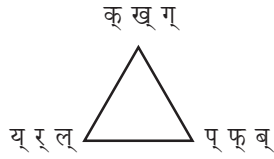
(A) बिल्कुल सही (B) बिल्कुल गलत

(C) कुछ हद तक सही है (D) कह नहीं सकते

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–242*

126. 'इ' ऐसा स्वर है, जो है– UCG 25 J– 1995 D– 2001

(A) केन्द्रीय (B) विवृत

(C) पश्च (D) अग्र

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–150*

127. `d' का अघोष रूप निम्नलिखित में से कौन-सा है– UGC 25 J– 1995

(A) ट् (B) ड्

(C) त् (D) थ्

स्रोत–*भाषाविज्ञान - कर्ण सिंह, पेज–158*

128. 'स' का घोष रूप है– UGC 25 D– 1996

(A) ज् (B) ब्

(C) द् (D) ग्

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–225*

129. यह सन्ध्यक्षर पालि भाषा में नहीं है– UGC 25 J– 1998

(A) ए (B) ओ

(C) ऐ (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–434*

130. यह पश्चस्वर है– UGC 25 J– 1998

(A) ए (B) इ

(C) आ (D) अ

(i) भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–150, 227

(ii) भाषाविज्ञान - कर्ण सिंह, पेज–155

131. संस्कृत का 'ऐ' पालि भाषा में हो जाता है– UGC 25 D– 1998

(A) अ (B) ए

(C) औ (D) उ

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–434*

132. यह अग्र स्वर है– UGC 25 D 1998

(A) उ (B) य

(C) इ (D) ओ

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–150, 227*

133. 'अ' किस प्रकार का स्वर है? H-TET–2015

(A) पश्च स्वर (B) अर्धविवृत स्वर

(C) केन्द्रीय स्वर (D) अनुनासिक स्वर

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–150, 159*

134. पालि में संस्कृत की यह ध्वनि नहीं मिलती– UP GIC– 2009

(A) आ (B) ए

(C) ऐ (D) ओ

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–434*

135. निर्दिष्टेषु स्पर्शः कः? UGC 25 J– 2005

(A) म् (B) ह्

(C) अ (D) ल्

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–148*

136. तालव्येषु अन्तर्भवति– UGC 25 J– 2005

(A) अ (B) क्

(C) ष् (D) श्

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–165*

124. (A) 125. (B) 126. (D) 127. (C) 128. (A) 129. (C) 130. (C) 131. (B) 132. (C) 133. (C) 134. (C) 135. (A) 136. (D)

137. अधोनिर्दिष्टेषु कण्ठ्यवर्णः– UGC 25 J– 2008

(A) ग् (B) ट्
(C) ज् (D) इ

भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–148, 164

138. एतेषु संवृतस्वरः कः? UGC 25 J– 2008

(A) ए (B) ऊ
(C) आ (D) न

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–152*

139. अधोनिर्दिष्टेषु तालव्यवर्णः– UGC 25 D– 2008

(A) ज (B) ख
(C) ड (D) म

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–165*

140. कः सन्ध्यक्षरः? UGC 25 J– 2010

(A) अ (B) औ
(C) लृ (D) ई

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–160*

141. (i) कः अर्धस्वर इति निर्दिश्यताम् –
(ii) भाषाविज्ञानदृष्ट्या अर्धस्वरः कः?
UGC 25 J– 2010, D–2015

(A) अ (B) ई
(C) ह् (D) य्

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–147*

142. ह्रस्वस्वरभक्तेः उच्चारणकालो भवति–
UGC 25 J– 2012

(A) त्रिमात्राकालः (B) द्विमात्राकालः
(C) अर्धोनमात्राकालः (D) अर्धमात्राकालः

स्रोत–*ऋग्वेदप्रातिशाख्यम् (1/35) - वीरेन्द्रकुमार वर्मा, पेज–69*

143. (i) भाषाविज्ञानदृशा अर्धस्वरो भवति–
(ii) संस्कृतभाषाध्वनिसन्दर्भेऽधोलिखितेषु 'अर्धस्वरः' कः? UGC 25 J– 2013, D–2015

(A) उ (B) अं
(C) व् (D) ए

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–147*

144. भाषाविज्ञानदृशा अर्धस्वरो भवति–UGC 25 D– 2013

(A) अ (B) य्
(C) इ (D) अः

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–147*

145. 'ई' से सङ्केतित स्वर है? UP PGT– 2009

(A) वर्तुल (B) केन्द्रीय
(C) पश्च (D) अग्र

भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–150, 152

146. निम्नलिखित में 'अघोष अल्पप्राण' ध्वनि कौन सी है?
UP TGT (H)– 2010

(A) झ (B) थ्
(C) ज (D) क, त

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–225*

147. 'अघोष-दन्त्य-संघर्षी' व्यञ्जनम् अस्ति –
AWES TGT– 2012

(A) ग् (B) स्
(C) न् (D) फ्

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–225*

148. इनमें से कौन-सा युग्म अघोष ध्वनि है?
UGC (H) D–2015

(A) ग, घ (B) थ्, द
(C) प, फ (D) द, ध

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–225*

149. अघोषध्वनिः अस्ति – UGC 25 D– 2014

(A) ज् (B) ध्
(C) त् (D) अ

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–225*

150. प्राकृते प्रायः वर्गाणां द्वितीय-चतुर्थवर्णानां तथा शल् वर्णानां स्थाने परिवर्तितो भवति– UP GDC– 2014

(A) विसर्जनीयः (B) उपध्मानीयः
(C) जिह्वामूलीयः (D) हकारः

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–436*

137. (A) 138. (B) 139. (A) 140. (B) 141. (D) 142. (C) 143. (C) 144. (B) 145. (D) 146. (D)
147. (B) 148. (C) 149. (C) 150. (D)

151. भाषाविज्ञान के अनुसार व्यञ्जनों के मूल चार प्रकारों में कौन सा प्रकार नहीं आता है– UP PGT– 2013

(A) स्पर्शी (B) संघर्षी

(C) निःश्वासी (D) कम्पनयुक्त

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–168, 169*

152. भाषाविज्ञान में अग्रस्वरों के उच्चारण में जिह्वा की चार कोटियों में कौन नहीं है– UP PGT– 2013

(A) उच्च (B) उच्चमध्य

(C) निम्नमध्य (D) निम्नोच्च

स्रोत–*भाषाविज्ञान - कर्ण सिंह, पेज–154*

153. भाषाविज्ञान के अनुसार स्वर के उच्चारण से सम्बद्ध चार प्रकारों में कौन सा प्रकार नहीं है– UP PGT– 2013

(A) पार्श्विक (B) नासिक्यरञ्जन

(C) प्रतिवेष्टन (D) तनन

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–168-169*

154. जिह्वाभाग-विशेषोच्चारणदृष्ट्या मध्यस्वरोऽस्ति– UGC 25 J– 2015

(A) अकारः (B) इकारः

(C) उकारः (D) एकारः

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–225*

155. (i) 'च' इति वर्णः कीदृशोऽस्ति?

(ii) 'च' वर्ण कैसा है? UGC 73 J – 2015

(A) घोष-अल्पप्राणः (B) घोष-महाप्राणः

(C) अघोष-अल्पप्राणः (D) अघोष-महाप्राणः

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–225*

156. 'अर्थसंकोच' का उदाहरण है– UGC 25 D– 2003

(A) कुशल (B) असुर

(C) वारिज (D) गवेषणा

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–338*

157. (i) अर्थपरिवर्तनस्य दिशः सन्ति– UGC 25 J– 2004

(ii) 'ब्रील महोदय' के अनुसार अर्थविकास की दिशाएँ होती हैं– D–2003, RPSC ग्रेड I (PGT)–2014

(A) 3 (B) 5

(C) 6 (D) 4

स्रोत–*भाषाविज्ञान - कर्ण सिंह, पेज–239*

158. (i) 'अर्थसंकोचस्य' उदाहरणमस्ति UP GIC– 2009, 2015

(ii) 'अर्थ-संकोच' का उदाहरण है– UP GDC– 2008

(A) प्रवीण (B) तैल

(C) असुर (D) सरसिज

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–338*

159. व्यंग्य-प्रयोग इनमें से किसका कारण है? UP GIC – 2009

(A) ध्वनि-नियम (B) ध्वनि-परिवर्तन

(C) अर्थ-परिवर्तन (D) शब्द-परिवर्तन

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–341*

160. क्या अर्थपरिवर्तन का कारण ध्वनि परिवर्तन है? UP PGT– 2000

(A) हाँ (B) नहीं

(C) कुछ-कुछ (D) दोनों के अधिष्ठान भिन्न हैं।

स्रोत–*भाषाविज्ञान - भोलानाथ तिवारी, पेज–268*

161. 'प्रवीण' उदाहरण है? UP PGT– 2004

(A) अर्थविस्तार का (B) अर्थसंकोच का

(C) अर्थादेश का (D) अर्थोत्कर्ष का

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–337*

162. किमेकम् अर्थविस्तारस्योदाहरणं नास्ति? HE – 2015

(A) गवेषणा (B) कुशलः

(C) परश्वः (D) महापात्रः

स्रोत–*भाषाविज्ञान - भोलानाथ तिवारी, पेज–264*

151. (C) 152. (D) 153. (A) 154. (A) 155. (C) 156. (C) 157. (A) 158. (D) 159. (C) 160. (C) 161. (A) 162. (D)

163. अर्थविस्तारस्योदाहरणं वर्तते – G GIC–2015

(A) भार्या (B) तैलम्
(C) मौनम् (D) श्राद्धम्

***स्रोत**–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–337*

164. 'देवानां प्रियः' अर्थपरिवर्तनं लभते– UP GIC – 2015

(A) 'धार्मिक' इत्यर्थे (B) धर्मगुरुरित्यर्थे
(C) 'मूर्ख' इत्यर्थे (D) सभ्यस्यार्थे

***स्रोत**–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–341*

165. 'कुशलः' इत्युदाहरणमस्ति – G GIC–2015

(A) अर्थसङ्कोचस्य (B) अर्थादेशस्य
(C) अर्थविस्तारस्य (D) अर्थोत्कर्षस्य

***स्रोत**–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–336*

166. अर्थपरिवर्तनकारणेष्वन्यतमम्– UGC 25 J– 2015

(A) सादृश्यम् (B) आगमः
(C) लोपः (D) स्वरभक्तिः

***स्रोत**–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–350*

167. 'देवानां प्रियः' इति वाक्यम् उदाहरणं भवति – G GIC–2015

(A) अर्थापत्तेः (B) अर्थविस्तारस्य
(C) अर्थापकर्षस्य (D) अर्थविपर्ययस्य

***स्रोत**–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–340-341*

168. अर्थविस्तारोदाहरणेष्वन्यतमो नास्ति– UGC 25 D–2015

(A) तैलम् (B) मुग्धः
(C) गौः (D) सभ्यः

***स्रोत**–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–337-340*

169. अर्थसङ्कोचोदाहरणेष्वन्यतमो नास्ति– UGC 25 D–2015

(A) जलदः (B) सभ्यः
(C) मनुष्यः (D) पङ्कजम्

***स्रोत**–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–340*

170. 'पण्डित जी > पण्डीजी' इसमें ध्वनिपरिवर्तन का कारण है– UGC 25 J– 2004

(A) प्रयत्नलाघव (B) बलाघात
(C) सन्धि (D) अनुनासिकता

***स्रोत**–भाषाविज्ञान - भोलानाथ तिवारी, पेज–346*

171. ध्वनिसिद्धान्तस्य मूलाधारः सिद्धान्तः वर्तते– UP GDC– 2012, G GIC–2015

(A) शब्दब्रह्मत्वम् (B) शब्दनित्यत्वम्
(C) स्फोटवादः (D) अभिधावृत्तिः

***स्रोत**–वाक्यपदीयम् - शिवशङ्कर अवस्थी/भूमिका, पेज–18*

172. धर्म का 'धम्म' होना किसका उदाहरण है– UP GIC– 2009, UP GDC– 2008

(A) तालव्य नियम (B) सादृश्य
(C) समीकरण (D) विषमीकरण

***स्रोत**–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–233*

173. धर्म शब्द का रूपान्तर 'धम्म' सम्बन्धित है? UP TGT (SS)–2005

(A) संस्कृतभाषा से (B) प्राकृतभाषा से
(C) पालिभाषा से (D) अपभ्रंशभाषा से

***स्रोत**–भाषाविज्ञान - कर्ण सिंह, पेज–114*

174. (i) प्रयत्नलाघव कारण है –
(ii) प्रयत्नलाघवः कारणमस्ति–
(iii) 'प्रयत्नलाघवम्' इति कस्याभ्यन्तरकारणमस्ति? UP GIC– 2009, G GIC–2015, UP GDC–2012

(A) ध्वनि-नियम (B) अर्थ-परिवर्तन
(C) भाषा का ह्रास (D) ध्वनि-परिवर्तन

***स्रोत**–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–227*

175. ध्वनयः समुपोहन्ते तैर्न भिद्यते। सही उत्तर है– UGC 73 J– 2012

(A) शब्दात्मा (B) अर्थात्मा
(C) स्फोटात्मा (D) काव्यात्मा

वाक्यपदीयम् (ब्रह्मकाण्ड श्लोक-76)-शिवशङ्कर अवस्थी, पेज–282

163. (B) 164. (C) 165. (C) 166. (A) 167. (C) 168. (C) 169. (B) 170. (A) 171. (C) 172. (C) 173. (C) 174. (D) 175. (C)

176. ध्वनिपरिवर्तनस्य अन्तःकारणम् नास्ति –
UGC 25 D–2000
(A) प्रयत्नलाघवम् (B) क्षिप्रभाषणम्
(C) ध्वनिनां परिवेशम् (D) बलाघातम्
स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–227-228*

177. छात्राणाम् उच्चारणदोषं दूरीकरणाय भाषाशिक्षकः भाषाविज्ञानस्य कस्मिन् विज्ञाने पारङ्गतः भूयात्–
UK TET– 2011
(A) रूपविज्ञाने (B) ध्वनिविज्ञाने
(C) वाक्यविज्ञाने (D) अर्थविज्ञाने
स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–107*

178. 'ध्वनि परिवर्तन तो जिह्वानर्तन है।' इसके बारे में आप क्या समझते हैं? UP PGT– 2000
(A) यह उक्ति सही है।
(B) यह उक्ति सही नहीं है।
(C) यह उक्ति सर्वथा असम्बद्ध उक्ति है।
(D) यह उक्ति एकाङ्गी है।

179. ध्वनिपरिवर्तन का आभ्यन्तर कारण है?
UP PGT– 2000
(A) अनुकरण की अपूर्णता (B) अन्य भाषाओं का प्रभाव
(C) सादृश्य (D) कालप्रभाव
स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–228*

180. ध्वनिपरिवर्तन का सबसे प्रमुख कारण है?
UP PGT– 2004, 2005
(A) बलाघात (B) अज्ञान
(C) प्रयत्न-लाघव (D) सादृश्य
स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–227*

181. 'ध्वनि-परिवर्तन' का आन्तरिक कारण है?
UP PGT– 2009
(A) प्रयत्नलाघव (B) बोलने की शीघ्रता
(C) ध्वनियों का प्रवेश (D) बलाघात
स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–229*

182. 'धर्म का धम्म' रूप में परिवर्तन उदाहरण है?
UP PGT– 2009
(A) पुरोगामी समीकरण का
(B) पश्चगामी समीकरण का
(C) पुरोगामी विषमीकरण का
(D) पश्चगामी विषमीकरण का
स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–233*

183. 'समाक्षर लोप' की अवधारणा प्रस्तुत की।
UP PGT– 2010, UK TET– 2011
(A) सर विलियमजोन्स ने (B) ब्लूमफील्ड ने
(C) मैक्समूलर ने (D) वर्नर ने
स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–235*

184. भाषाविज्ञान की दृष्टि में 'प्रयत्नलाघव' का अर्थ है?
DL (H)– 2015
(A) शीघ्र बोलना
(B) कम समय में अधिक बोलना
(C) बोलने की मितव्ययिता
(D) उच्चारण की सुविधा
स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–227*

185. 'वाराणसी' का 'बनारस' रूप में विकास उदाहरण है?
DL (H)– 2015
(A) वर्ण-विपर्यय का (B) व्यञ्जनागम का
(C) व्यञ्जन लोप का (D) स्वर-व्यञ्जनागम का
स्रोत–*भाषा विज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–236*

186. वर्णलोपस्य उदाहरणम् अस्ति– UGC 25 D– 2014
(A) आस्थत् (B) ज्योतिः
(C) गतम् (D) द्वारः
स्रोत–*निरुक्तम् -आचार्य विश्वेश्वर, पेज–135*

187. ध्वनिपरिवर्तनस्य कारणं नास्ति– UK SLET– 2015
(A) प्रयत्नलाघवं मुखसुखं वा (B) क्षिप्रभाषणम्
(C) भावातिरेकः (D) समीकरणं विषमीकरणं वा
स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–221-230*

176. (C) 177. (B) 178. (D) 179. (A) 180. (C) 181. (A) 182. (B) 183. (B) 184. (D) 185. (A) 186. (C) 187. (D)

188. ध्वनिपरिवर्तन का कारण कौन नहीं है? BHU MET–2011

(A) समीकरण (B) लोप
(C) आनुवांशिकता (D) आगम

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–228*

189. भाषायां ध्वनि-परिवर्तनस्य कारणं नास्ति– UP GDC–2014

(A) शुद्धोच्चारणम् (B) स्वराघातः
(C) वर्णविपर्ययः (D) प्रयत्नलाघवम्

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–227-235*

190. सूर्यः पदस्य 'सुज्जो' इति परिवर्तने कारणमस्ति– UP GDC–2014

(A) आगमः (B) लोपः
(C) स्थानपरिवर्तनम् (D) सरलीकरणम्

स्रोत–*प्राकृत दीपिका - सुदर्शन लाल जैन, पेज–19*

191. बलाघातेन 'त्रि' स्थाने भवति– DL–2015

(A) त्रिकः (B) त्रियतम्
(C) श्री (D) त्रिगुणम्

स्रोत–*भाषाविज्ञान - कर्ण सिंह, पेज–170*

192. ध्वनि-परिवर्तन के मुख्य कारण कितने हैं? BHU MET–2009

(A) 2 (B) 3
(C) 4 (D) 5

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–227*

193. आभ्यन्तर परिवर्तन के द्वारा एक दूसरे से सम्बद्ध ध्वनियों तथा रूपियों के मध्य के प्रत्यावर्तन के अध्ययन को कहते हैं – UP PGT–2013

(A) रूपध्वनिम-विज्ञान (B) ध्वनि-विज्ञान
(C) शब्दरूप ध्वनिम-विज्ञान (D) रूपप्रक्रियात्मक-ध्वनि-विज्ञान

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–286*

194. ध्वनिवैज्ञानिकैः कारणत्वेन किं स्वीक्रियते? UGC 25 D–2015

(A) मृदुतालु (B) वर्त्सः
(C) ऊर्ध्वैष्ठिः (D) नासिकाविवरः

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–136*

195. 'उष्ट्र' का 'ऊँट' ध्वनि परिवर्तन निम्नलिखित में से कौन-सा प्रकार है? UP PGT–2005

(A) विपर्यय (B) लोप
(C) अनुनासिकता (D) आगम

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–235*

196. कस्मात् कारणात् 'स्थल' इति शब्दस्य 'थल' इति उच्चारणं क्रियते ? G GIC–2015

(A) आगमस्य (B) स्वरभक्तेः
(C) आदिलोपस्य (D) भावातिरेकस्य

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–235*

197. 'पुढवी' इति प्राकृत-शब्दस्य संस्कृतमूलमस्ति– UP GDC–2014

(A) पार्थिवी (B) पृथ्वी
(C) प्रथवी (D) पृथिव्याम्

स्रोत–*प्राकृत दीपिका - सुदर्शन लाल जैन, पेज–5*

198. 'सम्मासम्बुद्धि' इति पालिप्रयोगस्य पूर्वरूपमस्ति– UP GDC–2014

(A) सम्यक् सम्बुद्धिः (B) सम्यक्तरा बुद्धिः
(C) सम्यक् सिद्धिः (D) सम्यक् सम्बोधनम्

स्रोत–*भारतीय दर्शन - सतीश चन्द्र चट्टोपाध्याय, पेज–147*

199. भारतीयार्यभाषायाः वर्गाणां प्रथमवर्णः पारसीकभाषायां तृतीयवर्णो भवति, कथम्? UP GDC–2014

(A) पितृ > पितर् (B) भ्रातृ > भ्रातर्
(C) मातृ > मातर् (D) मातृ > मादर

200. भाषा के परिवर्तन में आभ्यन्तर कारण कौन है? BHU MET–2012

(A) सांस्कृतिक प्रभाव (B) साहित्यिक प्रभाव
(C) प्रयत्नलाघव (D) वैज्ञानिक प्रभाव

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–91*

201. निम्नलिखित में से कौन सा उपकरण दृश्य-श्रव्य है? UP TET–2014

(A) टेलीविजन (B) फ्लैश कार्ड
(C) लिंग्वाफोन (D) चित्र

188. (C) 189. (A) 190. (C) 191. (C) 192. (A) 193. (A) 194. (A) 195. (B) 196. (C) 197. (B) 198. (A) 199. (D) 200. (C) 201. (A)

202. ऊष्मा भेदाः सन्ति– UGC 73 D– 2013

(A) दश (B) सप्त

(C) त्रयः (D) द्वौ

203. 'वृक्ष' किस प्रकार का शब्द है? UP PGT– 2004

(A) यौगिक (B) योगाभास

(C) योगरूढ़ (D) अव्यक्त योग

***स्रोत**–चन्द्रालोक 1/10 - सुबोधचन्द्र पन्त, पेज–7*

204. 'वे शब्द जिनके सार्थक खण्ड न हो सके' उन्हें कहते हैं– DL (H)– 2015

(A) रूढ़ (मूल) (B) योगरूढ़

(C) यौगिक (D) प्रयुक्त

***स्रोत**–चन्द्रालोक 1/10 - सुबोधचन्द्र पन्त, पेज–7-8*

205. वाक्य-विचार के अन्तर्गत क्या अध्ययन किया जाता है? UP PGT (H)– 2013

(A) शब्दकोश का (B) वर्णों का

(C) A और B दोनों का (D) वाक्यों का

***स्रोत**–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–295*

206. प्राचीन संस्कृत ग्रन्थों में प्राप्य 'यवनप्रिय' शब्द द्योतक है– IAS 1995

(A) एक प्रकार की उत्कृष्ट भारतीय मलमल का

(B) हाथी दाँत का

(C) नृत्य के लिये यवन राज्यसभा में भेजी जाने वाली नर्तकियों का

(D) कालीमिर्च का

207. अधोलिखितेषु संगणकीय-भाषाविज्ञानस्य उपविषयः किं नास्ति? JNU MET– 2014

(A) E-learning

(B) Natural Language Analysis

(C) Machine Translation

(D) Pos Tagging

208. रुद्रदाम्नः गिरनारशिलालेखे सुदर्शनतडागस्य कः पुनर्निर्माता– UGC 25 J– 2012

(A) पुष्पगुप्तः (B) तुषारस्फः

(C) चक्रपालितः (D) सुविशाषः

प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख-परमेश्वरी लाल गुप्त (भाग-1), पेज–203

209. पिउदस्सि 'राजा' इति उल्लेखो मिलति– UP GDC– 2014

(A) समुद्रगुप्तप्रशस्तिलेखे (B) रुद्रदाम्नः शिलालेखे

(C) स्कन्दगुप्तस्यलेखे (D) अशोकस्याभिलेखेषु

प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख-परमेश्वरी लाल गुप्त (भाग-1), पेज–9

210. कवि कालिदास के नाम का उल्लेख किसमें हुआ है? J PSC–2006

(A) इलाहाबाद स्तम्भलेख में

(B) एहोल के उत्कीर्णलेख में

(C) अलपादु दानलेख में

(D) हनुमकोंडा उत्कीर्णलेख में

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–183

211. एषु कस्य देशस्य नाम हरिषेणस्य एलाहाबादशिलालेखे नास्ति– UGC 25 J– 2015

(A) समतटः (B) डवाकः

(C) कामरूपः (D) चीनः

प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख-परमेश्वरी लाल गुप्त (भाग-2), पेज–11

212. हरिषेणविरचिते इलाहाबादशिलालेखे 'कविराज' इत्युपाधिः भवति– UGC 25 D–2015

(A) चन्द्रगुप्तस्य (B) अशोकस्य

(C) समुद्रगुप्तस्य (D) स्कन्दगुप्तस्य

प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख-परमेश्वरी लाल गुप्त (भाग-2), पेज–11

213. एहोल-शिलालेखः कस्य वर्तते– UGC 25 S– 2013

(A) द्वितीयचन्द्रगुप्तस्य (B) द्वितीयधरसेनस्य

(C) द्वितीयजीवितगुप्तस्य (D) द्वितीयपुलकेशिनः

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–182-183

202. (C) 203. (C) 204. (A) 205. (D) 206. (D) 207. (B) 208. (D) 209. (D) 210. (B) 211. (D) 212. (C) 213. (D)

214. (i) आधुनिक देवनागरी लिपि का प्राचीन रूप है–
(ii) देवनागरी लिपि की उत्पत्ति किससे हुई?
UGC (H) J – 2010, UP PCS – 1999

(A) खरोष्ठी (B) ब्राह्मी
(C) पैशाची (D) कैथी

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–494-95*

215. अशोकस्य अभिलेखस्य लिपिः अस्ति–
UK SLET– 2012

(A) शारदा (B) ब्राह्मी एवं खरोष्ठी
(C) देवनागरी (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–491*

216. ग्रन्थलिपि अस्मिन् प्रान्ते प्रचुरप्रचारं गता–
CVVET–2015

(A) मद्रासे (B) कर्णाटके
(C) महाराष्ट्रे (D) ओढ्रदेशे

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–495*

217. पाण्डुलिपेः नामान्तरम् – CVVET–2015

(A) मातृका (B) मूलप्रतिः
(C) शुद्धप्रतिः (D) तालपत्रम्

स्रोत–स्रोत–*haratdiscovery.org - इण्टरनेट*

218. लिप्यन्तरणज्ञानस्य मुख्यं प्रयोजनम्– CVVET–2015

(A) भाषाविकासः (B) पाठभेदज्ञानम्
(C) परिशोधनम् (D) ग्रन्थसम्पादनम्

219. ग्रन्थसम्पादने पाठभेदाः कुत्र दर्शनीयाः –
CVVET–2015

(A) प्रतिपृष्ठमधोभागे (B) ग्रन्थस्य भूमिकायाम्
(C) परिशिष्टे (D) विषयानुक्रमण्याः अनन्तरम्

220. भारोपीय भाषा का प्राचीनतम अभिलेखीय प्रमाण मिलता है– UGC 06 J–2015

(A) बैक्ट्रिया से (B) इराक से
(C) ईरान से (D) सीरिया से

स्रोत–*भाषाविज्ञान - भोलानाथ तिवारी, पेज–117*

221. किसने एक तरफ संस्कृत मुद्रा लेख के साथ चाँदी के सिक्के निर्गत किये– UP PCS– 2000

(A) मोहम्मद बिनकासिम (B) महमूदगजनी
(C) शेरशाह (D) अकबर

222. किस राजा ने सर्वप्रथम संस्कृत में एक विस्तृत अभिलेख जारी किया था? UGC 06 J–2011

(A) अशोक (B) रुद्रदामन
(C) खारवेल (D) गोंडोफर्निस

स्रोत–*पापुलर गाइड/U.G. NET (संस्कृत)-आर. गुप्ता/प्रीति सिंह, पेज–488*

223. आकृतिमूलक वर्गीकरणं भवति–CCSUM Ph.D–2016

(A) शब्दरूपस्य (B) अर्थस्य
(C) उभयोः (D) न कोऽपि

स्रोत–*भाषाविज्ञान - कर्ण सिंह, पेज–55*

224. भारोपीयपरिवारे नास्ति– CCSUM Ph.D–2016

(A) संस्कृतम् (B) स्पेनी
(C) अंग्रेजी (D) तेलगु

स्रोत–*भाषाविज्ञान - भोलानाथ तिवारी, पेज–117*

225. शाक-साग इति परिवर्तनस्य कारणम्–
CCSUM Ph.D–2016

(A) घोषीकरणम् (B) अघोषीकरणम्
(C) महाप्राणीकरणम् (D) अल्पप्राणीकरणम्

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–236*

226. ध्वनीनामुच्चारणे मुख्यतमम् उपकरणमस्ति–
CCSUM-Ph.D–2016

(A) दन्तः (B) जिह्वा
(C) ओष्ठः (D) नासिका

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–139*

227. वर्नरनियमस्य प्रतिष्ठाता कालवर्नर कस्य देशस्य निवासी– CCSUM-Ph.D–2016

(A) जर्मनी (B) फ्रांस
(C) ब्रिटेन (D) रूस

स्रोत–*भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–246*

214. (B) 215. (B) 216. (A) 217. (A) 218. (D) 219. (A) 220. (C) 221. (B) 222. (B) 223. (A) 224. (D) 225. (A) 226. (B) 227. (A)

प्रतियोगितागङ्गा स्त्रोतग्रन्थ–सूची

1. **अथर्ववेद** (भाग-1-2) - आचार्य वेदान्ततीर्थ - मनोज पब्लिकेशन्स, दिल्ली –2015
2. **अमरकोष** - (श्रीअमर सिंह) - हरगोविन्दशास्त्री - चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी – 2005
3. **अर्थसंग्रह** - (लौगाक्षिभास्कर) - दयाशंकरशास्त्री - चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी – 2008
4. **अर्थसंग्रह** - (लौगाक्षिभास्कर) - राजेश्वर शास्त्री मुसलगाँवकर- चौखम्भा संस्कृत संस्थान, वाराणसी – 2009
5. **अष्टाध्यायी** (भाग-1-2) - (महर्षि पाणिनि) - ईश्वरचन्द्र - चौखम्भा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली – 2015
6. **अष्टाध्यायी** (सूत्रपाठ) - (महर्षि पाणिनि) - गोपालदत्त पाण्डेय - चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी – 2013
7. **आधुनिक संस्कृत व्याकरण और रचना** - श्यामनन्दन शास्त्री - भारती भवन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स
8. **ईशादि नौ उपनिषद्** - हरिकृष्णदास गोयन्दका - गीताप्रेस, गोरखपुर – सं० 2071
9. **ईशावास्योपनिषद्** - आद्याप्रसाद मिश्र - अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद – 2014
10. **ईशावास्योपनिषद्** - दीपक कुमार - चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, – 2015
11. **उत्तररामचरितम्** - कपिलदेव द्विवेदी - रामनारायणलाल विजयकुमार, इलाहाबाद – 2011
12. **उत्तररामचरितम्** - शिवबालक द्विवेदी - हंसा प्रकाशन, जयपुर – 2011
13. **उपनिषद् अंक** - गीताप्रेस, गोरखपुर, तेरहवाँ संस्करण
14. **उपनिषद्** (108) (ब्रह्मविद्याखण्ड) - श्रीराम शर्मा आचार्य - संस्कृत संस्थान, बरेली – 2010
15. **उपकार संस्कृत गाइड** - मिथिलेश पाण्डेय
16. **ऋक्सूक्तसंग्रह** - डॉ० हरिदत्तशर्मा/डॉ० कृष्णकुमार - साहित्य भण्डार, मेरठ
17. **ऋग्वेद** (भाग-1 से 4) आचार्य वेदान्ततीर्थ - मनोज पब्लिकेशन्स, दिल्ली – 2015
18. **ऋग्वेद-प्रातिशाख्यम्** (महर्षिशौनक) - डॉ० वीरेन्द्र कुमार वर्मा - चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली – 2011
19. **ऋग्वेदभाष्यभूमिका** (आचार्य सायण) - डॉ० राम अवधपाण्डेय - मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली – 2014
20. **ऋग्वेदभाष्य-भूमिका** (आचार्य सायण) - रविन्द्रनाथ मिश्र, जगन्नाथ पाठक-चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी – 2013
21. **कठोपनिषद्** (ज्ञानखण्ड, 108 उपनिषद्) - श्रीराम शर्मा आचार्य - संस्कृति संस्थान, बरेली – 2010
22. **कठोपनिषद्** (शाङ्करभाष्य)-गीताप्रेस, गोरखपुर – सं० 2072
23. **किरातार्जुनीयम्** (भारवि) - रामसेवक दुबे - शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद – 2010 तृतीय संस्करण
24. **कुमारसम्भवम्** (कालिदास) - डॉ० राजू (राजेश्वर) शास्त्री मुसलगाँवकर-चौखम्बा संस्कृतभवन, वाराणसी–वि०सं० 2057
25. **कौटिलीय अर्थशास्त्रम्** (चाणक्य) - वाचस्पति गैरोला - चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी – 2013
26. **चन्द्रालोक** (जयदेव) - सुबोधचन्द्र पन्त - मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली – 2003
27. **छान्दोग्योपनिषद्** (शाङ्करभाष्य) - गीताप्रेस, गोरखपुर – सं० 2070
28. **जातक परिजात** - कपिलेश्वर शास्त्री
29. **ज्योतिषशास्त्र प्रशिक्षक** - डॉ० गिरिजाशङ्कर शास्त्री - उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ – 2004
30. **तिङ्कृत्कोषः** - पुष्पादीक्षित - संस्कृत भारती, नव देहली– 2011
31. **तैत्तिरीयोपनिषद्** - चुन्नीलाल शुक्ल - साहित्यभण्डार, मेरठ – 2012
32. **तैत्तिरीयप्रातिशाख्य** - जमुना पाठक, सुशील पाठक - चौखम्बा संस्कृत आफिस, वाराणसी – 2013
33. **धातुरूपकौमुदी** - राजेश्वरशास्त्री मुसलगाँवकर - चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी – 2009
34. **धार्मिक सूक्तियाँ** - प्रकाशचन्द्र गंगराडे - बी एण्ड एस- पब्लिशर्स, नई दिल्ली – 2006

35. **नीतिशतकम्** (भर्तृहरि) - बलवान सिंह यादव - चौखम्भा संस्कृत भवन, वाराणसी – सं० 2072
36. **निरुक्त** (यास्क) - छज्जूराम शास्त्री, देवशर्मा शास्त्री - मेहरचन्द लक्ष्मनदास पब्लिकेशन, नई दिल्ली – 2012
37. **निरुक्तम्** (यास्क) - उमाशङ्करशर्मा 'ऋषि' - चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी – 2014
38. **निर्णयसिन्धु** (कमलाकरभट्ट) - ब्रजरत्न भट्टाचार्य - चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी – 2014
39. **परिभाषेन्दुशेखरः** (श्रीनागेशभट्ट) - विश्वनाथ मिश्र - चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी
40. **पाणिनीयलिङ्गानुशासनम्** - ईश्वरचन्द्र - चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली – 2004
41. **पाणिनीय शिक्षा** (महर्षिपाणिनि) - डॉ० दामोदर महतो - मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली – 2014
42. **पाणिनीयशिक्षा** (महर्षिपाणिनि) - शिवराज आचार्य - कौण्डिन्न्यायन - चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी – 2012
43. **पापुलर मास्टर गाइड** - आर० गुप्ता, प्रीति सिंह
44. **बृहद् अनुवाद चन्द्रिका** - चक्रधर नौटियाल 'हंस' शास्त्री, सत्यानन्द वेद वागीश - मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली – 2013
45. **बृहद् अबकहडा चक्रम्** - एस० के० झा 'सुमन' - श्री ठाकुरप्रसाद पुस्तक भण्डार, वाराणसी – 2013
46. **बृहदबकहडाचक्रम्** - अवधबिहारी त्रिपाठी, कमलकान्त शुक्ल - चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी – 2015
47. **बृहदारण्यकोपनिषद्** - गीताप्रेस, गोरखपुर – सं० 2071
48. **बृहद्धातुकुसुमाकर** - हरेकान्तमिश्र - चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली – 2011
49. **बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्** - सुरेशचन्द्र मिश्र - रंजन पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली – 2008
50. **भारतीयदर्शन** - चटर्जी एवं दत्त - पुस्तकभण्डार पब्लिशिंग हाउस, पटना – 2012
51. **भारतीय ज्योतिष का इतिहास** - गोरखप्रसाद - उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ – 2010
52. **भारतीय ज्योतिष** - नेमिचन्द्र शास्त्री - भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली – 2010
53. **भारत की प्राचीन संस्कृतियाँ और सभ्यताएँ**
54. **भारतीय शास्त्र एवं शास्त्रकार** - डॉ० गिरिजाशंकर शास्त्री - चौखम्बा संस्कृत भवन वाराणसी – सं० 2072
55. **भारतीय संस्कृति** - दीपक कुमार - चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी – 2014
56. **भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र** - कपिलदेव द्विवेदी - विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी – 2012
57. **भाषाविज्ञान** - कर्ण सिंह - साहित्यभण्डार, मेरठ – 2006
58. **भाषाविज्ञान** - भोलानाथ तिवारी - किताब महल प्रकाशन, पेज – 2006
59. **मनुस्मृति** (महर्षिमनु) - शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन - चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी – 2014
60. **मानसागरी** - सीताराम झा, रूप नारायण झा - श्रीठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार, वाराणसी – 2002
61. **मुहूर्तचिन्तामणि** (श्रीरामदेवयज्ञ) - विन्ध्येश्वरी प्रसाद द्विवेदी, ब्रह्मानन्द त्रिपाठी - चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी – 2014
62. **मृच्छकटिकम्** (श्रीशूद्रक) - रमाशंकर त्रिपाठी - मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली – 2012
63. **यजुर्वेद** - वेदान्ततीर्थ - मनोज पब्लिकेशन्स दिल्ली – 2015
64. **यज्ञमीमांसा** - वेणीरामशर्मा गौड़ - चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी – 1999
65. **याज्ञवल्क्यशिक्षा** (महर्षियाज्ञवल्क्य) - नरेश झा - चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी – 2012
66. **याज्ञवल्क्यस्मृति** (महर्षियाज्ञवल्क्य) - उमेशचन्द्र पाण्डेय - चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी – सं० 2070
67. **रचनानुवादकौमुदी** - कपिलदेव द्विवेदी - विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी – 2011
68. **रूपचन्द्रिका** - डॉ० ब्रह्मानन्द त्रिपाठी - चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी – 2012
69. **लघुजातकम्** - कमलाकान्त पाण्डेय, डॉ० ब्रह्मानन्द त्रिपाठी - चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी – 2015
70. **लघुपाराशरी** (उडुदायप्रदीप) - सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव - ज्योतिषकर्मकाण्ड एवम् अध्यात्म शोध संस्थान – 2007
71. **लघुशब्देन्दुशेखर** (श्रीनागेशभट्ट) आचार्य विश्वनाथमिश्र - चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली – 2012

72. **लघुशब्देन्दुशेखर** (श्रीनागेशभट्ट) वैकुण्ठनाथ शास्त्री चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी – 2014
73. **लघुसिद्धान्तकौमुदी** (वरदराजाचार्य) - गीताप्रेस, गोरखपुर
74. **लघुसिद्धान्तकौमुदी** (वरदराजाचार्य) गोविन्दाचार्य, आचार्य रघुनाथ शास्त्री, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी – 2013
74. **लघुसिद्धान्तकौमुदी** (भैमी व्याख्या भाग-1-6) - भीमसेन शास्त्री - भैमी प्रकाशन दिल्ली – 2005
75. **वाक्यपदीयम् ब्रह्मकाण्डम्** (भर्तृहरि) - शिवशङ्कर अवस्थी- चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी – 2013
76. **विकीपीडिया** - इण्टरनेट - Google Search.
77. **व्याकरणमहाभाष्यम्** (महर्षि पतञ्जलि) - जयशङ्करलाल त्रिपाठी - चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी – 2013
78. **वेदान्तसार** (सदानन्द) - आद्याप्रसाद मिश्र - अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद – 2011
79. **वेदान्तसार** (सदानन्द) - सन्तनारायण श्रीवास्तव - सुदर्शन प्रकाशन, गाजियाबाद – 2005
80. **वेदचयनम्** - विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी - विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी – 2014
81. **वैदिक दर्शन** - कपिलदेव द्विवेदी - विश्वभारती अनुसन्धान परिषद् ज्ञानपुर (भदोही) – 2006
82. **वैदिक माइथोलाजी** (ए० ए० मैकडॉनल) - रामकुमार राय - चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी – 2015
83. **वैदिकशब्दमीमांसा** - गीताञ्जलि पाण्डेय - साहित्य संगम, इलाहाबाद – 2013
84. **वैदिक साहित्य एवं संस्कृति** - कपिलदेव द्विवेदी - विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी – 2015
85. **वैदिक साहित्य और संस्कृति** - आचार्य बलदेव उपाध्याय - शारदा संस्थान, वाराणसी
86. **वैदिक साहित्य का इतिहास** - कर्णसिंह - साहित्य भण्डार, मेरठ – 2010
87. **वैदिक साहित्य का इतिहास** - गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पं० राजेश्वर (राजू) शास्त्री मुसलगाँवकर - चौखम्भा संस्कृत संस्थान, वाराणसी – सं० 2072
88. **वैदिक साहित्य का इतिहास** - पारसनाथ द्विवेदी - चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी – 2014
89. **वैदिकसूक्तसंग्रह** - विजयशङ्कर पाण्डेय - अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद – 2014
90. **वैयाकरण भूषणसार** (खण्ड-1) (कौण्डभट्ट) - भीमसेन शास्त्री - भैमी प्रकाशन, दिल्ली – 2009
91. **वैयाकरण-सिद्धान्तकौमुदी** - गोपालदत्त पाण्डेय - चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी – 2013
92. **वैयाकरण-सिद्धान्तकौमुदी** (भाग 1-6) - गोविन्दाचार्य - चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी – 2013
93. **शब्दरूपकौमुदी** - राजेश्वर शास्त्री मुसलगाँवकर - चौखम्भा संस्कृत संस्थान, वाराणसी – 2014
94. **शिवराजविजयम्** (अम्बिकादत्तव्यास) - रमाशङ्कर मिश्र - चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी – 2014
95. **शुकनाशोपदेशः** (बाणभट्ट) - तारिणीश झा - रामनारायण लाल अरुण कुमार, इलाहाबाद – 2010
96. **श्रौतयज्ञ परिचय** - वेणीराम शर्मा गौड़ - चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी – 1999
97. **समासप्रकरण** (आचार्य सेतु) - ललितकुमार त्रिपाठी - राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, दिल्ली – 2012
98. **सम्भाषण-शब्दकोषः** - सर्वज्ञभूषण/सुधीर तिवारी - संस्कृतगङ्गा प्रकाशन, प्रयाग – 2014
99. **सिद्धान्त-कौमुदी** (कारक प्रकरण) - आनन्द कुमार श्रीवास्तव, राममुनि पाण्डेय - विभा प्रकाशन, – 2012
100. **सर्वदर्शनसंग्रह** (माधवाचार्य) - उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि' - चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी – 2012
101. **सूर्यसिद्धान्त** - रामचन्द्र पाण्डेय - चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी – 2014
102. **संस्कृतगङ्गा-संस्कृत व्याकरणम्** - सर्वज्ञभूषण - संस्कृतगङ्गा प्रकाशन, प्रयाग – 2016
103. **संस्कृत गद्यालोक प्रकाश** - करुणा अग्रवाल - विभा प्रकाशन, इलाहाबाद – 2006
104. **संस्कृत-परम्परागतविषय** - शत्रुघ्न त्रिपाठी - चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी – 2014
105. **संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास** (द्वितीय-खण्ड) - बलदेव उपाध्याय, ओमप्रकाश पाण्डेय - उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान लखनऊ – 2015

106. **संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास** (खण्ड-16) - बलदेव उपाध्याय/श्रीनिवासरथ/रामचन्द्र पाण्डेय - उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ – 2012
107. **संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास** (पञ्चदश खण्ड) - बलदेव उपाध्याय - गोपालदत्त पाण्डेय - उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ – 2001
108. **संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास** (प्रथम खण्ड) - बलदेव उपाध्याय/ब्रजबिहारी चौबे - उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ – 2012
109. **संस्कृत व्याकरण और लेखन** - डॉ0 रामगोपाल शर्मा, डॉ0 नारायण मुखर्जी - हितैषी पब्लिशर्स (प्रा0) लि0, नई दिल्ली
110. **संस्कृत व्याकरण और रचना** (लूसेन्ट) - अरविन्द कुमार - लूसेन्ट पब्लिकेशन्स, पटना– 2011
111. **संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका** - बाबूराम सक्सेना - रामनारायण लाल प्रहलाददास, इलाहाबाद – 2016
112. **संस्कृत व्याकरणशास्त्र का इतिहास** (युधिष्ठिर मीमांसक) रामनाथ त्रिपाठी - चौखम्भा पब्लिशर्स, वाराणसी – 2014
113. **संस्कृत-शिक्षणम्** - डॉ0 उदयशङ्कर झा - चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी – 2011
114. **संस्कृत शिक्षण विधि** - विजयनारायण चौबे
115. **संस्कृत शास्त्रों का इतिहास** - बलदेव उपाध्याय - चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी – 1994
116. **संस्कृत साहित्य का इतिहास** - उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि' - चौखम्बा भारती अकादमी, वाराणसी – 2014
117. **संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास** - कपिलदेव द्विवेदी - रामनारायणलाल विजयकुमार, इलाहाबाद – 2013
118. **संस्कृत हिन्दी शब्दकोश** - वामन शिवराम आप्टे - चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी – 2012
119. **हिन्दी-निरुक्त** - कपिलदेव शास्त्री, चुन्नीलाल शुक्ल, श्रीकान्त शुक्ल - साहित्य भण्डार, मेरठ – 2009
120. **हिन्दी शब्द-अर्थ-प्रयोग** - हरदेव बाहरी
121. **हिन्दू-संस्कार** - राजबली पाण्डेय - चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी – 2014

UGC-NET/JRF, TGT, PGT, DSSSB, RPSC, MA,
M.Phil/Ph.D Entrance आदि संस्कृत सम्बद्ध
सभी प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए

भाग- 2

संस्कृतसाहित्य
भारतीयदर्शन

विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में पूछे गये लगभग 7000 प्रश्नों का स्त्रोत सहित हल

सम्पादक
सर्वज्ञभूषण
सचिव
संस्कृतगङ्गा, प्रयाग

सह-सम्पादिका
सुमन सिंह
माता सेवक इण्टर कॉलेज
बैरी-बीसा, भदोही (उ.प्र.)

संशोधक
कविता सिंह
अमिता सिंह
नेगम देवी

* **प्रकाशनाधिकारिणी संस्था**

संस्कृतगङ्गा (पञ्जीकृत)
59, मोरी, दारागञ्ज, इलाहाबाद
(कोतवाली दारागञ्ज के आगे, गङ्गाकिनारे, संकटमोचन छोटे हनुमान् मन्दिर के पास)
कार्यालय - 7800138404, 9839852033
email-sanskritganga@gmail.com
वेबसाइट– www.sanskritganga.org
www.sanskritganga.in

* **प्रकाशक**

संस्कृतगंगा
59 मोरी, दारागंज, इलाहाबाद

* **वितरक**

राजू पुस्तक केन्द्र
अल्लापुर, इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश)
मो० 9453460552

* पुस्तकें डाक द्वारा भी आर्डर कर सकते हैं–**7800138404** **(गोपेश मिश्र)**

* प्रथमसंस्करण – सितम्बर - 2017

* **मूल्य – ` 425/-** (चार सौ पच्चीस रुपये मात्र)

* **विधिक चेतावनी–**
    - लेखक की लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक की कोई भी सामग्री किसी भी माध्यम से प्रकाशित या उपयोग करने की अनुमति नहीं होगी,
    - इस पुस्तक को प्रकाशित करने में प्रकाशक द्वारा पूर्ण सावधानी बरती गयी है, फिर भी किसी भी त्रुटि के लिए प्रकाशक व लेखक/सम्पादक जिम्मेवार नहीं होंगे।
    - किसी भी परिवाद के लिए न्यायिक क्षेत्र केवल इलाहाबाद ही होगा।

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

1. राजू पुस्तक भण्डार, अल्लापुर, इलाहाबाद
   सम्पर्क सूत्र : 0532-2503638, 9453460552
2. संस्कृतगङ्गा, दारागञ्ज, इलाहाबाद - 7800138404
3. गौरव बुक एजेन्सी, कैण्ट, वाराणसी
4. विजय मैग्जीन सेन्टर, बलरामपुर
5. जायसवाल बुक सेन्टर, हरदोई – 9415414569
6. शिवशंकर बुक स्टाल, जौनपुर
7. न्यू पूर्वांचल बुक स्टाल, जौनपुर – 9235743254
8. कृष्णा बुक डिपो बस्ती – 8182854095
9. मौर्या बुक डिपो, पाण्डेयपुर, वाराणसी– 9454735892
10. मनीष बुक स्टोर, गोरखपुर – 9415848788
11. द्विवेदी ब्रदर्स, गोरखपुर – 0551-344862
12. विद्यार्थी पुस्तक मन्दिर, गोरखपुर – 9838172713
13. रंजन मिश्रा, गोरखपुर (बस स्टैण्ड)
14. आशीर्वाद बुक डिपो, अमीनाबाद, लखनऊ
15. मालवीय पुस्तक केन्द्र, अमीनाबाद, लखनऊ – 9918681824
16. मॉडर्न मैग्जीन बुक शॉप, कपूरशाला, लखनऊ
17. साहू बुक स्टॉल, अलीगंज, लखनऊ – 9838640164
18. भूमि मार्केटिंग, लखनऊ – 9450520503
19. दुर्गा स्टोर, राजा की मण्डी, आगरा – 9927092063
20. महामाया पुस्तक केन्द्र, बिलासपुर – 09907418171
21. डायमण्ड बुक स्टाल, ज्वालापुर, हरिद्वार
22. कम्पटीशन बुक हाउस, सब्जी मण्डी रोड, बरेली – 9897529906
23. अजय गुप्ता बुक स्टोर, लखीमपुर – 809062054
24. शिवशंकर बुक स्टाल, रीवा – 9616355944
25. कृष्णा बुक एजेन्सी, वाराणसी – 9415820103
26. गर्ग बुक डिपो, जयपुर
27. अग्रवाल बुक सेन्टर, मुखर्जी नगर, नयी दिल्ली
28. चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी (सभी बुक स्टालों पर)
   मो. – 9839243286, 9415508311, 0532-2420414
29. विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक वाराणसी – 0542-2413741
30. मोतीलाल बनारसी दास, वाराणसी
31. केशवी बुक डिस्ट्रीब्यूटर्स, नयी दिल्ली – 93
32. महावीर बुक स्टाल, खजूरी बाजार, इन्दौर
33. हिन्दी बुक डिपो, मुरादाबाद – 94566888596
34. माँ बुक स्टेशनर्स, शहडोल छत्तीसगढ़ – 9406754644
35. परिमल पब्लिकेशन्स शक्तिनगर, दिल्ली – 011-23845456
36. शारदा पुस्तक भवन, युनिवर्सिटी रोड, कटरा, इलाहाबाद

संस्कृतगङ्गा उवाच

प्रिय संस्कृतमित्राणि! नमः संस्कृताय।

- संस्कृतगङ्गा दारागञ्ज प्रयाग द्वारा **''प्रतियोगितागङ्गा''** (भाग-2) आप सभी संस्कृतमित्रों की सेवा में समर्पित है, इस पुस्तक में संस्कृत-साहित्य, काव्यशास्त्र एवं भारतीय दर्शन से सम्बद्ध विगत सभी प्रतियोगी परीक्षाओं में पूछे गये बहुविकल्पीय प्रश्नों का सप्रमाण हल प्रस्तुत है।
- इसके पहले प्रतियोगितागङ्गा (भाग-1) वैदिक-साहित्य एवं संस्कृतव्याकरण से सम्बद्ध विगत सभी प्रतियोगी परीक्षाओं में पूछे गये लगभग 5000 बहुविकल्पीय प्रश्नों वाली पुस्तक आपकी सेवा में पहले ही समर्पित की जा चुकी है। एक वर्ष में ही 10,000 से अधिक प्रतियाँ बिकने के बाद इस पुस्तक की माँग लगातार बढ़ रही थी, जो आज पूरी हुई।
- मित्रों! इस पुस्तक का लेखनकार्य जुलाई 2014 से प्रारम्भ किया गया था, तब से लेकर आज सितम्बर 2017 तक लगभग तीन वर्ष से अधिक अनवरत परिश्रम के बाद पुस्तक का यह स्वरूप आपके सामने आ सका है, तो इसमें कोई सन्देह नहीं कि इस पुस्तक को तैयार करने में काफी समय लगा, परन्तु कोई भी जिज्ञासु प्रतियोगी छात्र इसे पढ़कर इसके श्रम का अनुभव कर सकता है– **''जानाति हि पुनः सम्यक् कविरेव कवेः श्रमम्''** (नलचम्पू 1/23) कहने को तो यह भी कहा जा सकता है कि इस पुस्तक में प्रश्नों का ही तो संग्रह है और क्या मौलिक सर्जना है, परन्तु मित्रों यह तो इसके स्वाध्याय से ही पता चलेगा कि इसमें लगातार 3 वर्षों तक लगभग 25 संस्कृतमित्रों के सहयोग से क्या विशेष कार्य किया गया है। इस कार्य को तो कोई जिज्ञासु, स्वाध्यायी तथा गुणी पाठक ही बता सकता है, कि पुस्तक का कार्य कितना गुरुतर, श्रमसाध्य एवं भगीरथप्रयास से ही सम्भव था, क्योंकि– **''जानन्ति हि गुणान् वक्तुं तद्विधा एव तादृशाम्''**
- प्रतियोगी परीक्षाओं के विषय में हम सभी लोगों की यह आम धारणा रही है कि TGT, PGT, UGC आदि किसी भी प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी करने के पूर्व प्रत्येक छात्र उस परीक्षा की मूल प्रकृति को जानने समझने के लिए उस परीक्षा के विगतवर्षों में पूछे गये प्रश्नों को देखना समझना चाहता है, ताकि उसी के अनुसार वह योजनाबद्ध तरीके से अपनी तैयारी कर सके। इस दृष्टि से यह पुस्तक संस्कृत प्रतियोगी परीक्षार्थियों के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगी, तथा संस्कृत से जुड़ी सभी प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए प्रथम एवं अनिवार्य पुस्तक होगी। क्योंकि इसमें **भारत में सम्पन्न संस्कृत-सम्बद्ध किसी भी परीक्षा का प्रश्न यथासम्भव सही सन्दर्भ, स्रोत एवं उत्तर के साथ संकलित है।** इस पुस्तक की यही विशिष्टता रही है कि इसमें केवल विगत परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्नों का ही संग्रह किया गया है न कि स्वनिर्मित प्रश्नों का। प्रश्नों की प्रकृति के साथ किसी भी तरह की छेड़छाड़ नहीं की गयी है, और **प्रत्येक प्रश्न के आगे उस परीक्षा का नाम और वर्ष भी अङ्कित** किया गया है।
- मित्रों! इस पुस्तक का यह स्वरूप बनाने में कुछ बड़ी चुनौतियाँ संस्कृतगङ्गा के सामने थीं, जैसे–

  (i) प्रश्नपत्रों की उपलब्धता

  (ii) प्रश्नों का सही उत्तर खोजना

  (iii) उत्तरों का प्रामाणिक ग्रन्थों से सही स्रोत लिखना

  (iv) प्रश्नों की पुनरावृत्ति रोकना

  (v) सभी प्रश्नों का सही सन्दर्भ लिखना

  (vi) किसी भी तरह के मुद्रणदोष से पुस्तक को बचाना

  (vii) प्रश्नों को सही क्रम में व्यवस्थित करते हुए उचित स्थान पर संकलित करना

  इन सभी चुनौतियों को संस्कृतगंगा की सम्पादक टीम ने अथक परिश्रम करके आसान बना दिया।

क्या है? इस पुस्तक में ....

1. विगत सभी प्रतियोगी परीक्षाओं के संस्कृतसम्बद्ध प्रश्नों का संग्रह–

- मित्रों! इस पुस्तक में भारतवर्ष में सम्पन्न किसी भी प्रतियोगी परीक्षा में यदि कोई भी संस्कृतवाङ्मय से सम्बद्ध बहुविकल्पीय प्रश्न पूछा गया है, तो उसका संकलन किया गया है; वह परीक्षा चाहे IAS, PCS, UGC NET/JRF, TGT, PGT या किसी विश्वविद्यालय BHU, JNU या DU आदि की प्रवेश परीक्षा से ही सम्बद्ध क्यों न हो। इस प्रकार **लगभग 450 से अधिक प्रश्नपत्रों से लगभग 12000 (बारह हजार) से अधिक प्रश्न** प्रतियोगितागङ्गा के दोनों भागों में संगृहीत किये गये हैं।
- इस पुस्तक में संस्कृतसाहित्य से **लगभग 4500 प्रश्न** तथा भारतीय दर्शन से **लगभग 2500** प्रश्नों का संग्रह है। इसप्रकार प्रतियोगितागङ्गा (भाग-2) में संस्कृतसाहित्य, काव्यशास्त्र एवं भारतीय दर्शन से सम्बद्ध लगभग **7000 बहुविकल्पीय** प्रश्नों का संग्रह है।
- विगत वर्षों में सन् 1990 से अब तक की किसी भी प्रतियोगी परीक्षा में यदि एक भी प्रश्न संस्कृतसम्बद्ध था तो उसका संकलन 'प्रतियोगितागङ्गा' में करने का पूरा प्रयास किया गया है; वह परीक्षा संस्कृतविषय से ही पूर्णतया सम्बद्ध हो, ऐसा नहीं है, बहुत सारे प्रश्न IAS, PCS, RPSC, MPPSC के प्रथम प्रश्नपत्र (सामान्यज्ञान) से भी संकलित हैं। विशेषकर वैदिकवाङ्मय में। जैसे– (i) **सबसे पुराना वेद कौन-सा है? (ii) ऋग्वेद की मूल लिपि थी, (iii) गायत्रीमन्त्र किस पुस्तक में मिलता है आदि।**
- इसीप्रकार प्राचीन इतिहास, सामाजिक विज्ञान और हिन्दी साहित्य की TGT, PGT, UGC आदि परीक्षाओं में संस्कृत से जुड़े बहुत प्रश्न पूछे जाते हैं, उन सभी प्रश्नों को यथासम्भव संकलित करने का पूरा प्रयास किया गया है। हाँ, जो प्रश्नपत्र उपलब्ध नहीं हो पाये थे उनके प्रश्न इस संस्करण में संकलित नहीं हैं। आगामी संस्करण में उनको भी संगृहीत करने का प्रयास होगा।

2. प्रश्नों का विषयवार विभाजन–

- इस पुस्तक में सर्वप्रथम सभी प्रश्नों को पाँच भागों में विभाजित किया गया है–
  1. वैदिकवाङ्मय, 2. संस्कृतव्याकरण, 3. भाषाविज्ञान, 4. भारतीयदर्शन, 5. संस्कृतसाहित्य
  अब यदि प्रश्न वेद से सम्बद्ध है तो उसे वैदिकवाङ्मय में और यदि व्याकरण, दर्शन, साहित्य और भाषाविज्ञान से हैं तो उन्हें उनके सही स्थान पर संकलित किया गया।
- पुनः संस्कृतसाहित्य को **रामायण, महाभारत, रघुवंश, किरातार्जुनीयम्, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, काव्यप्रकाश, दशरूपक** आदि **37 अध्यायों** में विभाजित किया गया। अब जो प्रश्न जिस अध्याय से सम्बद्ध था उस प्रश्न को उसी अध्याय में संकलित किया गया, अर्थात् रामायण से सम्बद्ध सभी प्रश्न रामायण में, महाभारत से सम्बद्ध प्रश्न महाभारत नामक अध्याय में संकलित किये गये। इसप्रकार संस्कृतसाहित्य से सम्बद्ध सभी प्रश्न तत्तत् अध्यायों में विभाजित करने से एक विषय के प्रश्न एक ही स्थान पर एकत्रित हो गये। साथ ही इसका भी ध्यान रखा गया है कि कौन-सा प्रश्न पहले होगा, कौन बाद में।
- इसीप्रकार भारतीयदर्शन सम्बद्ध प्रश्नों को **सांख्यकारिका, योगसूत्र, वेदान्तसार, अर्थसंग्रह, तर्कभाषा, तर्कसंग्रह** आदि **14 अध्यायों** में विभाजित करके संकलित किया गया। अतः इस पुस्तक में सभी प्रतियोगी परीक्षाओं के संस्कृतसाहित्य एवं भारतीय दर्शन आदि से सम्बद्ध प्रश्न एकस्थान पर आपको एक साथ मिलेंगे।

3. प्रश्नों का सही सन्दर्भ–

- इस पुस्तक में प्रत्येक प्रश्न के आगे परीक्षा का नाम और परीक्षा वर्ष का सन्दर्भ मोटे-मोटे (Bold) अक्षरों में लिखा गया है; जैसे– **TGT–2010, PGT–2011, UGC J–2000** आदि। इससे पाठकों को यह पता चलेगा कि यह प्रश्न किस परीक्षा में किस वर्ष और कहाँ पूछा गया था।

4. प्रश्नों की पुनरावृत्ति का अभाव–

- विभिन्न प्रश्नपत्रों से प्रश्नों को संकलित करते समय देखा गया कि एक ही प्रश्न कई परीक्षाओं में बार-बार पूछा जा रहा है, तो उसे एक ही बार लिखकर उसका सन्दर्भ उस प्रश्न के आगे लिख दिया गया। कई बार ऐसा भी देखा गया कि वही प्रश्न किसी दूसरी शैली से पूछा गया है, भाव साम्य है, और उत्तर भी समान है तो ऐसे भी प्रश्नों को एक ही जगह संकलित किया गया है। जैसे– किरातार्जुनीय नामक अध्याय के प्रश्न क्र-71 को देखें–

(i) 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः' यह कथन किससे सम्बन्धित है? **UP PGT–2002, UGC 25 J–1998, 1999**
(ii) 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः' यह सूक्ति किस ग्रन्थ की है? **D–1996, 2004, 2013, UP TGT–1999, 2001, 2010**
(iii) 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः' यह सूक्ति किस काव्य की है? **RPSC SET-2010, UP GIC-2009, BHU B.Ed-2013,**
(iv) 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः' इति श्लोकांशः कुत्र प्राप्यते? **BHU MET-2009, 2013, UP TET-2013, K SET-2014, UGC 73 D–2008**

(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (B) किरातार्जुनीयम् (C) नैषधीयचरितम् (D) मेघदूतम्

इन प्रश्नों के सन्दर्भ से स्पष्ट है कि यह प्रश्न 17 अगल-अलग परीक्षाओं में पूछा गया है, यहाँ प्रश्न की प्रकृति समान थी, उत्तर भी समान था, अतः इसे 17 बार न लिखकर एक ही स्थान पर संकलित किया गया। इससे एक ही प्रश्न की पुनरावृत्ति नहीं हुई।

5. स्रोत सहित प्रामाणिक उत्तर–

इस पुस्तक में संकलित प्रत्येक प्रश्न का उत्तर स्रोत के साथ दिया गया है; उत्तरों की प्रामाणिकता के लिए विद्वान् लेखकों की पुस्तकों, इण्टरनेट या आप्तपुरुष गुरुजनों की सलाह को वरीयता दी गयी है। पुस्तकों का चयन करते समय यह ध्यान रखा गया है कि जिन पुस्तकों से उत्तरों की जाँच पड़ताल की जा रही है, वे प्रामाणिक हों। साथ ही जिन प्रश्नों के नीचे स्रोत के रूप में किसी पुस्तक या लेखक का नाम नहीं है उसे विद्वज्जनों की सलाह के आधार पर सही उत्तर माना गया है; जैसे व्याकरण के उत्तरों की शुचिता के लिए **प्रो0 ललितकुमार त्रिपाठी** गुरूजी का सतत मार्गदर्शन मिलता रहा है। साथ ही बहुत सारे प्रश्नों का उत्तर ठीक वैसे ही नहीं मिल पा रहा था, जैसा प्रश्न में पूछा है, पर उसी नियम या सूत्र से वह उत्तर सही माना गया है।

6. मुद्रणदोष और गलत उत्तरों की सम्भावना नगण्य–

मित्रों! इस पुस्तक को पाँच बार प्रूफ किया गया है, सामान्यतया किसी भी पुस्तक की तीन बार प्रूफ रीडिंग की जाती है, किन्तु इस पुस्तक को अलग-अलग व्युत्पन्न प्रतियोगी छात्रों एवं योग्य शिक्षकों द्वारा पाँच बार प्रूफ किया गया है; अतः इस पुस्तक में मुद्रणगत दोष या उत्तरों के गलत होने की सम्भावना न के बराबर है, फिर भी **''पुस्तक 100% शुद्ध, सत्य एवं सरल है''** ऐसा प्रथमसंस्करण में ही कहना वाचालता होगी।

7. स्रोत ग्रन्थसूची–

इस पुस्तक के अन्त में उन सभी प्रामाणिक पुस्तकों की सूची (लेखक, प्रकाशक एवं प्रकाशनवर्ष के साथ) दी जा रही है, जिनका उपयोग उत्तरों का सही स्रोत खोजने में किया गया है।

कृतज्ञता-ज्ञापनम्

अन्त में उन सभी संस्कृतगंगा के भगीरथों को नमन, जिन्होंने प्रतियोगिता रूपी गङ्गा को इस पृथ्वी पर लाने में 2 वर्षों की अखण्ड साधना की। विशेषकर जिन्हें यह जिम्मेदारी सौंपी गयी थी; अपनी सम्पादकीय टीम से जुड़ी **अनीतावर्मा, सुमनसिंह, अमितासिंह** एवं **नेगमदेवी** को। इनके साथ जो छाया की तरह इनका साथ देती रहीं उनमें **कविता सिंह, प्रियंका उमराव, रचनासिंह, शफीनाबेगम, नीलमगुप्ता, पूजागुप्ता, रागिनी शुक्ला, गायत्री पाण्डेय, गायत्री तिवारी, साधना तिवारी, शीला यादव,** को हार्दिक धन्यवाद।

जिन्होंने तीर्थराज प्रयाग के गङ्गातट पर स्थित संस्कृतगङ्गा से प्रादुर्भूत इस प्रतियोगिता रूपी गङ्गा को निर्मल बनाने में अपना सर्वस्व समर्पण कर दिया, जिनमें से सभी को नाम्ना स्मरण करने में तो शायद कागज कम पड़ जाय किन्तु कुछ मित्रों को नाम से स्मरण करना मेरा परम कर्त्तव्य हैं जिनमें **सत्यप्रकाश साहू, अम्बिकेशप्रताप सिंह, नीतीश उपाध्याय, राघवकुमार झा, सुशीलसिंह (चञ्चल), रमाकान्तमौर्य, मनीषशर्मा, रामबिहारी दुबे, अमितसिंह 'कोरॉव', ज्ञानसिंह, राजीवशुक्ल, अरुणपाण्डेय 'बजरंगी', अरुणपाण्डेय 'निर्मोही', श्रीकान्त, दिनेश दुबे, सुभाषचन्द्र पाल, दीपचन्द्रयादव, सुनीलचौरसिया, दीपचन्द्र चौरसिया, महेन्द्र मिश्र, वीरेन्द्र यादव, श्रीकृष्णशुक्ल, विकाससिंह, अमित सिंह (बाराबंकी), मनमोहन मिश्र, उपमन्यु मिश्र, विमलेश कुमार, रंजीत कुमार, करुणाशंकर भार्गव, उमापति वर्मा, केदारनाथ तिवारी, डॉ0 सुनीलसिंह, राजीवसिंह, रवीन्द्रमिश्र, सच्चिदानन्द शुक्ल, दीपकशास्त्री, नितिन शुक्ला, अमितमिश्र, बाबुलराव, दशरथ यादव, पवनकुमार सिंह, योगेश कुमार मिश्र 'राधे-राधे', योगेश मिश्र, 'मुनि जी', राजीव चतुर्वेदी, अजय पाण्डेय, विमलकुमार सिंह, अम्बर केशरवानी, गोपेश मिश्र, राकेश जी** को हार्दिक धन्यवाद।

प्रतियोगितागङ्गा में संकलित प्रश्नपत्रों की सूची

परीक्षा	वर्ष	प्रश्नपत्रों की संख्या
AWES TGT	2008–2013	06
BHU AET	2010–2013	34
BHU B.Ed	2011–2015	05
BHU MET	2008–2016	09
BHU RET	2008–2012	02
BHU Sh.ET	2008–2013	03
CCSUM (H) Ph.D	2016	01
CCSUM Ph.D	2016	01
BPSC	1992–2011	12
Chh. PSC	2003–2012	06
CLP (चकबन्दी लेखपाल परीक्षा)	2015	01
C-TET	2012–15	11
CVVET	2015–2017	02
DL (डायट प्रवक्ता संस्कृत)	2015	01
DL (H) (डायट प्रवक्ता हिन्दी)	2015	01
DSSSB PGT	2014	01
DSSSB TGT	2014	01
DU Ph.D	2016	01
DU M.Phil	2016–17	01
G-GIC	2015	01
GJ SET	2003–2016	10
HE (हायर एजुकेशन)	2015	01
H-TET	2013–2015	04
IAS	1994–2013	24
Jh. PSC	2003–2013	06
JNU MET (M.A. प्रवेश परीक्षा)	2014–2015	02
JNU M.Phil/Ph.D	2014–015	02
K-SET	2013–15	06
KL SET	2014–16	03
KT SET	2013–14	04
MGKV Ph.D	2016	01
MH SET	2011-2016	08
MP वर्ग-I PGT	2012	01
MP-PSC	1990-2012	19
MP-TET	2011	01
REET (राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा)	2016	01
RLP (राजस्व लेखपाल परीक्षा)	2015	01
RPSC	1992–2013	13
RPSC SET	2010–2014	04
RPSC ग्रेड-I PGT	2015	01
RPSC ग्रेड-I, II, III	2010-2014	04
SU Ph.D	2015	01
UGC कोड-25 (संस्कृत)	1994–2017	56
UGC कोड-73 (संस्कृत परम्परागत विषय)	1991-2017	46
UGC कोड-20 (हिन्दी)	2007-2015	26
UGC कोड-06 (इतिहास)	2012-2015	20

परीक्षा	वर्ष	प्रश्नपत्रों की संख्या
UGC कोड-09 (शिक्षाशास्त्र)	2005-2013	09
UK-TET	2011	03
UK SLET	2012–2015	04
UK PCS	2002–2011	05
UP GDC	2008–2014	03
UP GDC (हिन्दी)	2012	01
UP GIC	2009–2015	02
UP PGT (संस्कृत)	2000–2013	09
UP PGT (समाजशास्त्र)	2010–2013	02
UP PGT (हिन्दी)	2000-2013	08
UP PCS	1999–2013	20
UP TET	2013–2016	07
UP TGT (संस्कृत)	1999–2013	10
UP TGT (हिन्दी)	2001-2013	09
UP TGT (सामाजिक विज्ञान)	2001–2013	07
WB SET	2010	01
		कुल योग = 463

सङ्केताक्षर सूची

AWES TGT– Army Welfare Educational Society (आर्मी स्कूल संस्कृत शिक्षक परीक्षा)
BHU AET– Banaras Hindu University Aachary Entrance Test (काशी हिन्दू विश्वविद्यालय आचार्य प्रवेश परीक्षा)
BHU B.Ed – Banaras Hindu University Bachelor of Education (काशी हिन्दू विश्वविद्यालय शिक्षाशास्त्री प्रवेश परीक्षा)
BHU MET– Banaras Hindu University Master of Art Entrance Test (काशी हिन्दू विश्वविद्यालय स्नातकोत्तर प्रवेश परीक्षा)
BHU RET– Banaras Hindu University Research Entrance Test (काशी हिन्दू विश्वविद्यालय अनुसन्धान प्रवेश परीक्षा)
BHU Sh.ET– Banaras Hindu University Shastri Entrance Test (काशी हिन्दू विश्वविद्यालय शास्त्री प्रवेश परीक्षा)
BPSC– Bihar Public Sarvice Commisson (बिहार लोक सेवा आयोग)
CCSUM Ph.D– Chaudhari Charan Singh University Merath Doctor of Philosophy (चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ शोध प्रवेश परीक्षा)
CCSUM (H) Ph.D– Chaudhari Charan Singh University Merath Hindi Doctor of Philosophy (चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ हिन्दी शोध प्रवेश परीक्षा)
Chh. PSC– Chhattisgarh Public Sarvice Commission (छत्तीसगढ़ लोक सेवा आयोग)
C-TET– Central Teacher Eligibility Test (केन्द्रीय शिक्षक पात्रता परीक्षा)
CVVET – Combind Vidya Varidhi Entrance Test (संयुक्त विद्या वारिधि प्रवेश परीक्षा)
DU Ph. D – Delhi University Doctor of Philosophy (दिल्ली विश्वविद्यालय शोध प्रवेश परीक्षा)
DU M. Phil – Delhi Master of Philosophy (दिल्ली विश्वविद्यालय शोध प्रवेश परीक्षा)
DL– Diet Lecturer डायट प्रवक्ता (संस्कृत)
DL (H)– Diet Lecturer (Hindi) डायट प्रवक्ता (हिन्दी)
DSSSB PGT– Delhi Subordinate Services Selection Board Post Graduate Teacher (दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड प्रवक्ता परीक्षा)
DSSSB TGT– Delhi Subordinate Services Selection Board Trained Graduate Teacher (दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड प्रशिक्षित स्नातक परीक्षा)
G-GIC– Goverment Girls Inter College (राजकीय बालिका इण्टर कालेज)
GJ SET – Gujrat State Eligibility Test (गुजरात राज्य पात्रता परीक्षा)
HE – Higher Education (असिस्टेन्ट प्रोफेसर परीक्षा, उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग)
H-TET– Hariyana Teacher Eligibility Test (हरियाणा शिक्षक पात्रता परीक्षा)
IAS– Indian Administrative Service (भारतीय प्रशासनिक सेवा)
Jh.-PSC – Jharakhand Public Service Commission (झारखण्ड लोक सेवा आयोग)
JNU MET– Jawahar Lal Nehru University Master of Art Entrance Test. (जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय स्नातकोत्तर प्रवेश परीक्षा)

JNU M.Phil-Ph.D– Jawaher Lal Nehru University Master of Philosophy. Doctor of philosophy
K SET – Karnatak State Eligibility Test (कर्नाटक राज्य पात्रता परीक्षा)
KL SET – Keral State Eligibility Test (केरल राज्य पात्रता परीक्षा)
MGKV Ph.D – Mahatma Gandhi Kashi Vidya Peeth Doctor of Philosophy (महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ शोध प्रवेश परीक्षा)
MH SET – Maharastra State Eligibility Test (महाराष्ट्र राज्य पात्रता परीक्षा)
MP वर्ग-I PGT– Madhya Pradesh Prawakta Pareeksha (मध्य प्रदेश प्रवक्ता परीक्षा)
MP PSC– Madhya Pradesh Public Service Commission (मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग)
MP TET– Madhya Pradesh Teacher Eligibility Test (मध्य प्रदेश शिक्षक पात्रता परीक्षा)
REET– Rajsthan Eligibility Examination for Teacher (राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा)
RLP – Rajasva Lekhapal Pareeksha (राजस्व लेखपाल परीक्षा)
RPSC– Rajasthan Public service Commission (राजस्थान लोक सेवा आयोग)
RPSC ग्रेड-I PGT– Rajasthan Public service Commission Post Graduate Teacher
(राजस्थान लोक सेवा आयोग वरिष्ठ अध्यापक परीक्षा)
RPSC ग्रेड-II TGT– Rajasthan Public Service Commission Trained Graduate Teacher
(राजस्थान लोक सेवा आयोग वरिष्ठ अध्यापक परीक्षा)
RPSC ग्रेड-III– Rajasthan Public Service Commision (राजस्थान लोक सेवा आयोग कनिष्ठ अध्यापक परीक्षा)
RPSC SET – Rajsthan Public Service Commission State Eligibility Test (राजस्थान लोक सेवा आयोग राज्य पात्रता परीक्षा)
SU Ph.D – Sagar University Doctor of Philosophy (सागर विश्वविद्यालय शोध प्रवेश परीक्षा)
T SET – Tamilnadu State Eligibility Test (तमिलनाडु राज्य पात्रता परीक्षा)
UGC 25 J– University Grant Commission Code-25 Sanskrit June
(विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा आयोजित कोड-25 संस्कृत जून)
UGC 25 D– University Grant Commission Code-25 Sanskrit December
(विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा आयोजित कोड-25 संस्कृत दिसम्बर)
UGC 25 S– University Grant Commission Code-25 Sanskrit September
(विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा आयोजित कोड-25 संस्कृत सितम्बर)
UGC 73 J– University Grant Commission Code-73 Sanskrit June
(विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा आयोजित कोड-73 संस्कृत परम्परागत विषय जून)
UGC 73 D– University Grant Commission Code-73 Sanskrit December
(विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा आयोजित कोड-73 संस्कृत परम्परागत विषय दिसम्बर)
UGC 73-S– University grant Commission Code-73 Sanskrit September
(विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा आयोजित कोड-73 संस्कृत सितम्बर)
UGC (H) J– University Grant Commission (Hindi) June (विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा आयोजित कोड 20 हिन्दी जून)
UGC (H) D– University Grant Commission (Hindi) December (विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा आयोजित कोड 20 हिन्दी दिसम्बर)
UGC 06 J– University Grant Commission Code-06 June (विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा आयोजित कोड 06 (इतिहास) जून)
UGC 06 D– University Grant Commission Code-06 December. (विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा आयोजित कोड 06 (इतिहास) दिसम्बर)
UGC 09 J– University Grant Commission code - 09 June (विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा आयोजित कोड 09 (शिक्षाशास्त्र) जून)
UGC 09 D– University Grant Commission Code - 09 December
(विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा आयोजित कोड-09 (शिक्षाशास्त्र) दिसम्बर)
UK TET– Uttarakhand Teacher Eligibility Test (उत्तराखण्ड शिक्षक पात्रता परीक्षा)
UK SLET– Uttarakhand State Lecturer Eligibility Test (उत्तराखण्ड राज्यस्तरीय प्रवक्ता अर्हता परीक्षा)
UK PCS– Uttarakhand Provincial Civil Service-es. (उत्तराखण्ड प्रान्तीय लोक सेवा)
UP GDC– Uttar Pradesh Government Degree College (उत्तर प्रदेश राजकीय महा-विद्यालय (स्क्रीनिंग परीक्षा)
UP GDC (H)– Uttar Pradesh Government Degree College (उत्तर प्रदेश राजकीय महाविद्यालय स्क्रीनिंग परीक्षा (हिन्दी)
UP GIC– Uttar Pradesh Government Inter College (उत्तर प्रदेश राजकीय इण्टर कालेज प्रवक्ता)
UP PGT– Uttar Pradesh Post Graduate Teacher (उत्तर प्रदेश प्रवक्ता परीक्षा संस्कृत)
UP PGT (S.S.)– Uttar Pradesh Post Graduate Teacher (Sociology) (समाजशास्त्र (उत्तर प्रदेश प्रवक्ता परीक्षा)
UP PGT (H)– Uttar Pradesh Post Graduate Teacher (Hindi) (उत्तर प्रदेश प्रवक्ता परीक्षा, (हिन्दी)
UP PCS– Uttar Pradesh Provincial Civil Service-es (उत्तर प्रदेश प्रान्तीय लोक सेवा)
UP TET– Uttar Pradesh Teacher Eligibility Test (उत्तर प्रदेश शिक्षक पात्रता परीक्षा)
UP TGT– Uttar Pradesh Trained Graduate Teacher (Sanskrit) (उत्तर प्रदेश प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक चयन परीक्षा (संस्कृत)
UP TGT (H)– Uttar Pradesh Trained Graduate Teacher (Hindi) (उत्तर प्रदेश प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक चयन परीक्षा (हिन्दी)
UP TGT (S.S.)– Uttar Pradesh Trained Graduate Teacher Social Science
(उत्तर प्रदेश प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक चयन परीक्षा (सामाजिक विज्ञान)

अनुक्रमणिका

भाग-1

संस्कृत-साहित्य

01 रामायण

1. (i) रामायणं केन रचितम्? UGC-73 D–1992
   (ii) रामायण के रचयिता हैं? BHU MET–2012
   (iii) रामायणस्य रचयिता कः – BHU B.Ed–2012
   (A) व्यासः (B) वाल्मीकिः
   (C) मनुः (D) तुलसीदासः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-103

2. (i) वाल्मीकि ने किस ग्रन्थ की रचना की? UGC-73
   (ii) वाल्मीकि की रचना है? D–1992, BHU AET–2011
   (A) महाभारत (B) गीता
   (C) रामायण (D) उत्तररामचरित

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-103

3. (i) रामायण में श्लोक संख्या है– UGC-73 J–2010
   (ii) रामायणे कति श्लोकाः – T SET–2013
   (A) लक्षश्लोकाः (B) चतुर्विंशतिसहस्रश्लोकाः
   (C) षड्विंशतिसहस्रश्लोकाः (D) चत्वारिंशत्सहस्रश्लोकाः

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-103

4. (i) संस्कृतसाहित्ये किं काव्यम् आदिकाव्यं कथ्यते–
   (ii) आदिकाव्य है– JNU MET–2015
   BHU RET–2012, UGC-73 D–2010
   (A) श्रीमद्भागवतम् (B) श्रीमद्रामायणम्
   (C) श्रीमद्भगवद्गीता (D) श्रीमन्महाभारतम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-112

5. (i) 'चतुर्विंशतिसाहस्रीसंहिता' इति कस्य ग्रन्थस्य अपरं नाम विद्यते? HAP– 2016, KL-SET–2015
   (ii) आर्षकाव्येषु चतुर्विंशतिसाहस्री अस्ति–
   (iii) 'चतुर्विंशतिसाहस्री-संहिता' कहते हैं–
   (iv) चतुर्विंशतिसाहस्री संहिता नाम्ना प्रसिद्धमस्ति?
   BHU MET–2008, UGC-73 J–2012
   S–2013, UGC-25 J–2014, MGKV Ph. D–2016
   (A) जयः (B) रामायणम्
   (C) महाभारतम् (D) अग्निपुराणम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-103

6. 'वाल्मीकि-रामायणं' कीदृशं ग्रन्थमस्ति?
   RPSC ग्रेड-II (TGT)–2010
   (A) चम्पूकाव्यम् (B) महाकाव्यम्
   (C) खण्डकाव्यम् (D) गीतिकाव्यम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-112

7. 'रामचरितमानस' में कितने काण्ड हैं?
   UGC 73 D–1997, J–2015
   (A) सात (B) बारह
   (C) आठ (D) पन्द्रह

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-103

8. (i) 'वाल्मीकि-रामायण' में कितने काण्ड हैं?
   (ii) रामायण की कथा कितने काण्डों में विभक्त है?
   (iii) वाल्मीकिरामायणे कति काण्डाः सन्ति–
   MH SET–2016, K SET–2014
   UGC-73 D–1996, J–1999, BHU MET–2008
   BHU AET–2010, MP वर्ग-I (PGT)–2012
   UK SLET–2012, DSSSB PGT–2014
   (A) पञ्च (B) सप्त
   (C) नव (D) दश

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी , पेज-103

9. आर्षकाव्य है– BHU AET–2009, BHU MET–2013
   (A) भागवतपुराण (B) रामायण
   (C) रघुवंश (D) उत्तररामचरित

संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (तृतीय खण्ड)-बलदेव उपाध्याय, पेज-02

10. 'रामायण' को कहते हैं– UGC-73 J–1998
    (A) खण्डकाव्य (B) चम्पूकाव्य
    (C) महानाटक (D) आदिकाव्य

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास -कपिलदेव द्विवेदी, पेज-112

1. (B)	2. (C)	3. (B)	4. (B)	5. (B)	6. (B)	7. (A)	8. (B)	9. (B)	10. (D)

11. (i) रामायणे प्रधानरसः कः –MH-SET–2013, 2016
(ii) रामायणे प्रमुखरसः कः –K-SET–2015, H TET–2015
(iii) वाल्मीकिरामायण में किस रस की प्रधानता है?
(iv) रामायणे अङ्गीरसः कः? HE–2015
(v) उपलब्धेसु सर्वेषु रसेषु रामायणस्य अङ्गीरसरूपेण राराजते– AWES TGT–2009, 2010, UK SLET–2015

(A) वीरः (B) रौद्रः
(C) शान्तः (D) करुणः

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-140

12. 'शोकः श्लोकत्वमागतः' किसके लिए कहा गया है– BHU MET–2011

(A) सीता (B) भवभूति
(C) वाल्मीकि (D) व्यास

संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-3)-बलदेव उपाध्याय, पेज-14

13. अधस्तनेषु सत्यासत्यपर्यायेषु समीचीनं विचिनुत– MH SET–2016

(a) भवभूतिना महाभारतं लिखितम्
(b) रामायणे रामस्य कथा वर्तते
(c) दशरथः अजस्य पुत्र आसीत्
(d) दशरथस्य माता अरुन्धती आसीत्

(A) असत्यम्, सत्यम्, सत्यम्, असत्यम्
(B) सत्यम्, सत्यम्, असत्यम्, असत्यम्
(C) असत्यम्, सत्यम्, असत्यम्, सत्यम्
(D) असत्यम्, असत्यम्, सत्यम्, सत्यम्

संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-216

14. रामचरितज्ञानार्थं वाल्मीकये को वरमदात्– HE–2015

(A) नारदः (B) गौतमः
(C) ब्रह्मा (D) गालवः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-124

15. रामायणं......काण्डात्मकं स्मृतम्– BHU AET–2010, AWES TGT–2013

(A) षट् (B) पञ्च
(C) सप्त (D) अष्ट

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास -कपिलदेव द्विवेदी, पेज-103

16. किसका शोक श्लोक में परिणत हो गया– BHU MET–2012

(A) कालिदास का (B) शकुन्तला का
(C) सीता का (D) वाल्मीकि का

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास -उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-124

17. रामायणकाव्यस्य रचनाकालः अस्ति– AWES TGT–2010, 2011

(A) त्रेतायुगम् (B) द्वापरयुगम्
(C) सतयुगम् (D) कलियुगम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-130

18. वाल्मीकिकृत 'रामायण' किसकी कथा पर आधारित है– BHU AET–2011

(A) कृष्णकथा (B) बलरामकथा
(C) रामकथा (D) शिवकथा

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-103

19. महर्षिवाल्मीकिना रामायणं वर्णितम्– AWES TGT–2010, 2011

(A) किष्किन्धाकाण्डं यावत् (B) सुन्दरकाण्डं यावत्
(C) युद्धकाण्डं यावत् (D) उत्तरकाण्डं यावत्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास -उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-128

20. रामायणकथां वाल्मीकये कः उपदिदेश? CVVET–2015

(A) भरद्वाजः (B) नारदः
(C) वसिष्ठः (D) विश्वामित्रः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि',पेज-124

21. रामायणं .... भाषायां लिखितम्– AWES TGT–2010

(A) वैदिक (B) प्राकृत
(C) संस्कृत (D) अपभ्रंश

स्रोत– संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि',पेज-122

22. कस्य कृते आदिकाव्यस्य संज्ञा प्रयुज्यते– AWES TGT–2009

(A) महाभारतम् (B) श्रीमद्भागवतम्
(C) रामचरितमानसम् (D) रामायणम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-112

11. (D) 12. (C) 13. (A) 14. (C) 15. (C) 16. (D) 17. (A) 18. (C) 19. (C) 20. (B) 21. (C) 22. (D)

23. सुन्दरकाण्डे सर्गाणां संख्या– CVVET–2015
(A) 68 (B) 80
(C) 71 (D) 65
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-126

24. आदिकाव्ये सर्ग-संख्याऽस्ति– GGIC–2015
(A) पञ्चशतम् (B) चतुःशतम्
(C) षट्शतम् (D) त्रिशतम्
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-124

25. 'वाल्मीकि रामायण' में कितने सर्ग हैं? UGC-73 J–2015
(A) 325 (B) 500
(C) 250 (D) 255
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-124

26. (i) रामायणे कस्मिन् काण्डे 'अहल्याशाप विमोचन'–वृत्तान्तोऽस्ति– UGC-25 D–2012, 2014
(ii) 'अहल्याशाप विमोचनम्' कस्मिन् काण्डे वर्णितम्–
(A) अयोध्याकाण्डे (B) अरण्यकाण्डे
(C) बालकाण्डे (D) सुन्दरकाण्डे
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास -उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-125

27. रामायणे श्रीरामस्य ऋष्यमूकपर्वतनिवासो वर्णितः– UP-GDC–2012
(A) किष्किन्धाकाण्डे (B) बालकाण्डे
(C) सुन्दरकाण्डे (D) युद्धकाण्डे
वाल्मीकीय रामायण (किष्किन्धाकाण्डम्-प्रथमसर्ग)-गीताप्रेस, (कोड-75) पेज-639

28. जटायुरावणयुद्धं रामायणस्य कस्मिन् काण्डे– UGC-25 J–2013
(A) अरण्यकाण्डे (B) सुन्दरकाण्डे
(C) किष्किन्धाकाण्डे (D) बालकाण्डे
संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-3)-बलदेव उपाध्याय, पेज-22

29. रामायणे हनुमतः अङ्गुलीयकप्रदानवृत्तान्तः कस्मिन् काण्डे वर्तते– UGC-25 J–2013
(A) सुन्दरकाण्डे (B) युद्धकाण्डे
(C) किष्किन्धाकाण्डे (D) उत्तरकाण्डे
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-126

30. रामायणे हनूमतः समुद्रतरणं कस्मिन् काण्डे वर्णितम्? K SET–2014
(A) किष्किन्धाकाण्डे (B) युद्धकाण्डे
(C) सुन्दरकाण्डे (D) उत्तरकाण्डे
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-126

31. (i) वालिवधरामायणे कस्मिन् काण्डे?
(ii) वालिवधस्य वर्णनमस्ति रामायणस्य– UGC-25 J–2013, RPSC SET–2013-14
(A) सुन्दरकाण्डे (B) किष्किन्धाकाण्डे
(C) अरण्यकाण्डे (D) बालकाण्डे
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-126

32. 'रामायणे' शबरीवृत्तान्तः कस्मिन् काण्डे अस्ति– UGC-25 D–2013, CVVET–2015
(A) अयोध्याकाण्डे (B) अरण्यकाण्डे
(C) किष्किन्धाकाण्डे (D) सुन्दरकाण्डे
स्रोत–वाल्मीकिरामायण (अरण्यकाण्ड, सर्ग-74)-गीताप्रेस, पेज-633

33. (i) गङ्गावतरणोपाख्यानं रामायणे कस्मिन् काण्डे स्थितम्–
(ii) रामायणे गङ्गावतरणकथा कुत्र वर्णिता? HE–2015, K-SET–2013
(A) अयोध्याकाण्डे (B) सुन्दरकाण्डे
(C) अरण्यकाण्डे (D) बालकाण्डे
स्रोत– संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-125

34. ऋष्यशृङ्गमुनेः चरितं रामायणस्य कस्मिन् काण्डे वर्णितम्– UGC-25 J–2012
(A) अयोध्याकाण्डे (B) अरण्यकाण्डे
(C) सुन्दरकाण्डे (D) बालकाण्डे
स्रोत–वाल्मीकिरामायण (बालकाण्ड सर्ग-15) -गीताप्रेस, पेज-62

35. 'सुन्दरकाण्डम्' कुत्र निबद्धम्– BHU AET–2012
(A) महाभारते (B) भागवते
(C) पद्मपुराणे (D) वाल्मीकिरामायणे
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-122

36. सुन्दरकाण्डे चन्द्रोदयस्य वर्णनमस्ति–BHU AET–2012
(A) शोभनम् (B) अशोभनम्
(C) रुक्षम् (D) अतिकठिनम्
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-139

23. (A) 24. (A) 25. (B) 26. (C) 27. (A) 28. (A) 29. (A) 30. (C) 31. (B) 32. (B) 33. (D) 34. (D) 35. (D) 36. (A)

37. वाल्मीकिरामायणानुसारं दशरथस्य पुत्रेष्टियज्ञे पुरोहितः आसीत्? UGC 25 J–2016

(A) वसिष्ठः (B) ऋष्यशृङ्गः
(C) भरद्वाजः (D) विश्वामित्रः

स्रोत–वाल्मीकिरामायण (बालकाण्ड सर्ग-15)-गीताप्रेस, पेज-62

38. वाल्मीकिरामायणानुसारं शम्बूकः केन हतः? UGC 25 J–2016

(A) दशरथेन (B) रामेण
(C) परशुरामेण (D) भरतेन

स्रोत–वाल्मीकीय रामायण (उत्तरकाण्ड सर्ग-76) गीताप्रेस, पेज-775

39. का सीतायै दिव्यवस्त्रभूषणानि प्रददाति–K SET–2013

(A) सुमित्रा (B) अनसूया
(C) कौसल्या (D) अरुन्धती

वाल्मीकिरामायण (अयोध्याकाण्ड सर्ग-119) गीताप्रेस, पेज-471-472

40. इन्द्रजित् केन हतः? K SET–2013

(A) लक्ष्मणेन (B) रामेण
(C) सुग्रीवेण (D) हनुमता

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-127

41. रामः ताडकावधं कस्य आज्ञया चकार– RPSC SET–2010

(A) याज्ञवल्क्यस्य (B) जनकस्य
(C) दशरथस्य (D) विश्वामित्रस्य

स्रोत–वाल्मीकिरामायण (बालकाण्ड-सर्ग-26)-गीताप्रेस, पेज-84-86

42. केन ऋषिणा रामलक्ष्मणौ यज्ञरक्षार्थं याचितौ? RPSC SET–2010

(A) शृङ्गेण (B) विश्वामित्रेण
(C) अत्रिणा (D) पुलस्त्येन

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-124

43. अशुद्धं युग्मं चिनुत– MP-वर्ग-I (PGT)–2012

(A) रामायणम्–प्रतिमानाटकम्
(B) रामायणम्–अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(C) रामायणम्–उत्तररामचरितम्
(D) रामायणम्–अनर्घराघवम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-116

44. निम्नलिखित में से कौन काव्य रामायण का उपजीवी नहीं है– UP-GDC–2008

(A) उत्तररामचरितम् (B) किरातार्जुनीयम्
(C) रघुवंशम् (D) महावीरचरितम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-116

45. रामायणमाश्रित्य यस्य कथास्ति– UGC-25 J–2013

(A) कुन्दमाला (B) रत्नावली
(C) मालविकाग्निमित्रम् (D) पञ्चरात्रम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-116

46. यस्य कथा रामायणाश्रिता नास्ति– UGC-25 D–2013

(A) महावीरचरितम् (B) अभिषेकनाटकम्
(C) मृच्छकटिकम् (D) उत्तररामचरितम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास -कपिलदेव द्विवेदी, पेज-116

47. वाली कहाँ का राजा था– BHU MET–2011

(A) लङ्का का (B) अयोध्या का
(C) कैकय का (D) किष्किन्धा का

स्रोत–वाल्मीकिरामायण (किष्किन्धाकाण्ड 9/1,2)-गीताप्रेस, पेज-663

48. सुग्रीवनामकं पात्रं कस्मिन् ग्रन्थे विद्यते–K SET–2014

(A) महाभारते (B) वाल्मीकिरामायणे
(C) शिवपुराणे (D) देवीभागवतपुराणे

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-126

49. श्रीरामचन्द्रः एनं व्याकरणशास्त्रज्ञ इति प्रशंसति– UGC-25 D–2012

(A) सुग्रीवम् (B) भरतम्
(C) लक्ष्मणम् (D) हनूमन्तम्

स्रोत–वाल्मीकिरामायण (किष्किन्धाकाण्ड-सर्ग-3), श्लोक-25-36

50. स्वर्णमृगरूपेण 'पञ्चवट्याम्' उपस्थितस्य राक्षसस्य नाम– UK SLET–2015

(A) खरः (B) कबन्धः
(C) दूषणः (D) मारीचः

स्रोत–वाल्मीकिरामायण (युद्धकाण्ड 126/22)-गीताप्रेस, पेज-582

51. 'रुमा' इति कस्याः नाम – BHU AET–2011

(A) सुग्रीवपत्न्याः (B) विभीषणपत्न्याः
(C) अङ्गदमातुः (D) नलनीलयोः मातुः

स्रोत–वाल्मीकिरामायण (किष्किन्धाकाण्ड 26/42)-गीताप्रेस, पेज-711

37. (B) 38. (B) 39. (B) 40. (A) 41. (D) 42. (B) 43. (B) 44. (B) 45. (A) 46. (C) 47. (D) 48. (B) 49. (D) 50. (D) 51. (A)

52. वाल्मीकिरामायणानुसारं सुग्रीवस्य पत्न्याः नाम आसीत्? UGC 25 J–2016

(A) तारा (B) अहल्या
(C) रुमा (D) सुलोचना

स्रोत–वाल्मीकिरामायण (किष्किन्धाकाण्ड 26/42)-गीताप्रेस,पेज-711

53. सागरलङ्घने के त्रयो जनाः समर्थाः– BHU AET–2011

(A) नीलो नलो द्विविदश्च (B) हनुमान् गरुडो वायुश्च
(C) मैनाकः प्रवर्षणः कैलासश्च (D) प्रवेको विवेको अरुणश्च

स्रोत–वाल्मीकिरामायण (सुन्दरकाण्ड 39/26)-गीताप्रेस, पेज-123

54. अजस्य पितुः नाम किम्– BHU AET–2012

(A) दिलीपः (B) रघुः
(C) दीर्घबाहुः (D) इक्ष्वाकुः

स्रोत–रघुवंशम् (5/36)-हरगोविन्द मिश्र, पेज-121

55. अश्वमेधयज्ञवर्णनं रामायणस्य कस्मिन् काण्डे? RPSC SET–2013-14

(A) बालकाण्डे (B) उत्तरकाण्डे
(C) सुन्दरकाण्डे (D) अयोध्याकाण्डे

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-105

56. मन्दोदर्याः पतिः कः? RPSC SET–2010

(A) रावणः (B) कुम्भकर्णः
(C) विभीषणः (D) पुलस्त्यः

स्रोत–वाल्मीकिरामायण (युद्धकाण्ड 111/1,2)-गीताप्रेस, पेज-541

57. अधस्तनवाक्यानां सत्यासत्यपर्यायेषु समीचीनं विचिनुत– MH SET–2013

(a) रामायणीया कथा महाभारते न प्राप्यते
(b) रामायणीया कथा महाभारते प्राप्यते
(c) महाभारतकथा रामायणे न प्राप्यते
(d) महाभारतकथा रामायणे प्राप्यते

(A) सत्यम्, असत्यम्, असत्यम्, सत्यम्
(B) सत्यम्, असत्यम्, सत्यम्, असत्यम्
(C) असत्यम्, सत्यम्, असत्यम्, सत्यम्
(D) असत्यम्, सत्यम्, सत्यम्, असत्यम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-131

58. रामलक्ष्मणयोः अध्ययनं कुत्र जातम्? MH SET–2016

(A) पितुः गृहे (B) तक्षशिलाविश्वविद्यालये
(C) दण्डकारण्ये (D) वशिष्ठस्य आश्रमे

स्रोत–

59. ''यावत्स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महीतले'' इत्येतत् वाक्यं कमनुसरति? MH SET–2016

(A) रामायणम् (B) भगवद्गीता
(C) महाभारतम् (D) ईशावास्योपनिषद्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-103

60. दशरथस्य कति पुत्रा आसन्– BHU AET–2012

(A) एकः (B) द्वौ
(C) त्रयः (D) चत्वारः

वाल्मीकिरामायण (बालकाण्ड 18/21-22) गीताप्रेस, पेज-69-70

61. सीतास्वयंवरे ऐशं धनुः केन भग्नम्– BHU AET–2012

(A) रावणेन (B) बाणेन
(C) रामेण (D) लक्ष्मणेन

वाल्मीकीयरामायण (बालकाण्ड सर्ग-67) गीताप्रेस, पेज-156-157

62. सीता केन हृता– BHU AET–2012

(A) रावणेन (B) खरेण
(C) कुम्भकर्णेन (D) दूषणेन

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-125

63. वाली केन हतः– BHU AET–2012

(A) सुग्रीवेण (B) हनुमता
(C) रामेण (D) रावणेन

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-126

64. रावणस्य भार्या का– BHU AET–2012

(A) सीता (B) सुलोचना
(C) त्रिजटा (D) मन्दोदरी

स्रोत–वाल्मीकिरामायण (युद्धकाण्ड 111/1,2)-गीताप्रेस, पेज-541

65. रामेण को लङ्काधिपतिः कृतः– BHU AET–2012

(A) सुग्रीवः (B) विभीषणः
(C) खरः (D) दूषणः

वाल्मीकीयरामायण (युद्धकाण्ड सर्ग-112)-गीताप्रेस, पेज-549-550

52. (C) 53. (B) 54. (B) 55. (B) 56. (A) 57. (D) 58. (D) 59. (A) 60. (D) 61. (C) 62. (A) 63. (C) 64. (D) 65. (B)

66. एकपत्नीव्रतधरः कः– BHU AET–2012
(A) दशरथः (B) रामः
(C) रघुः (D) दिलीपः
स्रोत– रघुवंशम् (14/86) - हरगोविन्द मिश्र, पेज–368

67. मधुरां नाम पुरीं कश्चक्रे– BHU AET–2012
(A) रामः (B) भरतः
(C) लक्ष्मणः (D) शत्रुघ्नः
स्रोत–वाल्मीकिरामायण (उत्तरकाण्ड सर्ग 70)-गीताप्रेस, पेज-766

68. कुशः कस्य सुतः– BHU AET–2012
(A) रामस्य (B) भरतस्य
(C) लक्ष्मणस्य (D) शत्रुघ्नस्य
स्रोत–वाल्मीकिरामायण (उत्तरकाण्ड सर्ग 66) -गीताप्रेस, पेज-759

69. सागरलङ्घनसमये हनूमतो बलपरीक्षा कया कृता– BHU AET–2012
(A) सुरसया (B) सीतया
(C) राजलक्ष्म्या (D) आदित्येन
स्रोत–वाल्मीकिरामायण (सुन्दरकाण्ड सर्ग 58)-गीताप्रेस, पेज-172,173

70. सूक्ष्मरूपं धृत्वा लङ्काप्रवेशकाले हनुमान् कया अवरुद्धः– BHU AET–2012
(A) सुरसया (B) सिंहिकया
(C) लङ्किन्या (D) त्रिजटया
स्रोत–वाल्मीकिरामायण (सुन्दरकाण्ड 3/30)-गीताप्रेस, पेज-20, 21

71. 'रामकथा' में जटायु आख्यान कौन-सी अर्थप्रकृति है– UP GIC–2009
(A) बीज अर्थप्रकृति (B) पताका अर्थप्रकृति
(C) प्रकरी अर्थप्रकृति (D) कार्य अर्थप्रकृति
स्रोत–दशरूपक-बैजनाथ पाण्डेय, पेज-22

72. रामायणे 'सुग्रीवादिवृत्तम्' अस्ति– UP GDC–2014
(A) पताका (B) प्रकरी
(C) पताकास्थानकम् (D) आधिकारिकम्
स्रोत–दशरूपक -केशवराव मुसलगाँवकर, भू0पेज-46

**73. ''देशे देशे कलत्राणि देशे देशे च बान्धवाः
तं तु देशं न पश्यामि यत्र भ्राता सहोदरः''
उपर्युक्त श्लोक में महत्त्व प्रतिपादित है–UP PGT–2004**
(A) कलत्र का (B) बन्धु का
(C) देश का (D) सहोदरभ्राता का
स्रोत–वाल्मीकिरामायण (युद्धकाण्ड 101/15)-गीताप्रेस, पेज-514

74. वशिष्ठ गुफा कहाँ स्थित है– UK LWR–2011
(A) चमोली (B) उत्तरकाशी
(C) टिहरी (D) पिथौरागढ़
स्रोत–

75. क्रौञ्चद्वन्द्ववियोगोत्थः............. श्लोकत्वमागतः– BHU AET–2010
(A) दुःखम् (B) शोकः
(C) रोषः (D) क्रोधः
स्रोत–ध्वन्यालोक (1/5) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–29

76. कस्य पक्षिणः वधात् शोकः श्लोकत्वम् अजायत? HAP–2016
(A) गृध्रस्य (B) क्रौञ्चस्य
(A) शुकस्य (D) कोकिलस्य
स्रोत–वाल्मीकिरामायण (बालकाण्ड 2/15,16), पेज-33

77. रावणासुरात् सीतायाः विमुक्तिः अनया स्वप्नेन दृष्टा– UGC-25 J–2012
(A) मन्दोदर्या (B) तारया
(C) त्रिजटया (D) कैकेय्या
स्रोत–वाल्मीकिरामायण (सुन्दरकाण्ड सर्ग- 27), पेज-86

78. 'रावणं मन्यमाना मां सीता भीता भविष्यति' कदा– BHU-AET–2011
(A) द्विजातिरिव संस्कृतभाषणे
(B) गन्धर्वजातिरिव प्राकृतभाषणे
(C) रक्षोजातिरिव पैशाचीभाषणे
(D) मनुष्यजातिरिव लोकभाषाभाषणे
स्रोत–वाल्मीकिरामायण (सुन्दरकाण्ड 30/18)-गीताप्रेस, पेज-94

66. (B)	67. (D)	68. (A)	69. (A)	70. (C)	71. (C)	72. (A)	73. (D)	74. (B)	75. (B)
76. (B)	77. (C)	78. (A)							

79. कस्मिन् युगे रामो राज्यं चकार– BHU AET–2012
(A) सत्ययुगे (B) त्रेतायुगे
(C) द्वापरे (D) कलियुगे
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-130

80. रावणेन सीता कुत्र स्थापिता आसीत्–BHU AET–2012
(A) गृहवाटिकायाम् (B) अशोकवाटिकायाम्
(C) अन्तःपुरवाटिकायाम् (D) रावणान्तःपुरे
स्रोत–वाल्मीकिरामायण (सुन्दरकाण्ड 58/56)-गीताप्रेस, पेज-175

81. (i) क्रौञ्चवधं विलोक्य 'मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः' इति श्लोकं कः उच्चारितवान्
(ii) 'मा निषाद प्रतिष्ठाम्' उक्ति किससे सम्बद्ध है– BHU MET–2010, RPSC SET–2010
(A) व्यास से (B) कालिदास से
(C) भास से (D) वाल्मीकि से
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास -उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-124

82. रामायणे श्लोकसंख्या भवति– UGC 25 D–2015
(A) 31000-40,000 (B) 22000-25000
(C) 11000-15000 (D) 5000-10,000
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास -कपिलदेव द्विवेदी, पेज-103

83. (i) रामायणाश्रितं काव्यमेतत् भवति– K-SET–2015
(ii) एषु किं रामायणाश्रितं भवति– UGC 25 Jn.–2017
(A) नैषधीयचरितम् (B) किरातार्जुनीयम्
(C) शिशुपालवधम् (D) रघुवंशम्
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-116

84. ''अनार्यजुष्टमस्वर्ग्यं कुर्यां पापमहं यदि।
इक्ष्वाकूणामहं लोके भवेयं कुलपांसनः॥'' केन इदम् उच्यते? K-SET–2014
(A) रामेण (B) लक्ष्मणेन
(C) भरतेन (D) दशरथेन
स्रोत–वाल्मीकिरामायण (अयोध्याकाण्ड 82/14, 17)-गीताप्रेस, पेज-391

85. 'शोकः श्लोकत्वमागतः' इति कस्मिन्काण्डे वर्णितम्? GJ-SET–2013
(A) युद्धकाण्डे (B) बालकाण्डे
(C) अरण्यकाण्डे (D) सुन्दरकाण्डे
स्रोत–वाल्मीकिरामायण (बालकाण्ड 2/40)-गीताप्रेस, पेज-35

86. रामायणस्य समीक्षितावृत्तिः कया संस्थया प्रकाशिता– GJ-SET–2013
(A) प्राच्यविद्यामन्दिरं, वडोदरा
(B) भाण्डारकर-संशोधन-संस्था, पुणे
(C) निर्णयसागरसंस्था, मुम्बई
(D) गीताप्रेस, गोरखपुर संस्था
संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-3)-बलदेव उपाध्याय, पेज-31

87. सुलभाः पुरुषा राजन् सततं प्रियवादिनः।
अप्रियस्य तु पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः॥
श्लोकममुं रावणासुरम्प्रति कः उक्तवान्– UGC-25 J–2012
(A) कुम्भकर्णः (B) सुग्रीवः
(C) वाली (D) मारीचः
स्रोत–वाल्मीकिरामायण (अरण्यकाण्ड 37/2)-गीताप्रेस, पेज-550

88. 'प्रतिपत्पाठशीलस्य विद्येव तनुतां गता' इयमुक्तिः कुत्रोपलभ्यते– UGC-25 S–2013
(A) श्रीमद्भागवते (B) विष्णुपुराणे
(C) रामायणे (D) भगवद्गीतायाम्
स्रोत–वाल्मीकिरामायण (सुन्दरकाण्ड 59/31)-गीताप्रेस, पेज-183

89. ''सुलभाः पुरुषा राजन् सततं प्रियवादिनः।
अप्रियस्य तु पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः॥''
श्लोकममुं रावणासुरम्प्रति कः उक्तवान्– UGC-25 D–2014
(A) कुम्भकर्णः (B) सुग्रीवः
(C) विभीषणः (D) वाली
स्रोत–वाल्मीकिरामायण (युद्धकाण्ड 16/21) - गीताप्रेस, पेज-238

90. ''तथा मे माधवी देवी विवरं दातुमर्हति'' उत्तरे वाल्मीकि रामायणकाण्डे केनोक्तम्– DL–2015
(A) सीतया (B) कैकेय्या
(C) कौशल्यया (D) पृथिव्या
स्रोत–वाल्मीकिरामायण (उत्तरकाण्ड 97/14)-गीताप्रेस, पेज-810

79. (B) 80. (B) 81. (D) 82. (B) 83. (D) 84. (C) 85. (B) 86. (A) 87. (D) 88. (C) 89. (C) 90. (A)

91. नाहं जानामि केयूरे नाहं जानामि कुण्डले।
नूपुरे त्वभिजानामि नित्यं पादाभिवन्दनात्॥
अयं श्लोकः CVVET–2015

(A) रघुवंशस्य (B) महाभारतस्य
(C) रामायणस्य (D) उत्तररामचरितस्य

स्रोत–वाल्मीकिरामायण (किष्किन्धाकाण्ड 6/22)-गीताप्रेस, पेज-658

92. ''धर्मसारमिदं जगत्'' इस वाक्य वाला ग्रन्थ है– BHU MET–2015

(A) गीता (B) वाल्मीकीयरामायणम्
(C) नीतिशतकम् (D) उत्तररामचरितम्

स्रोत–वाल्मीकिरामायण (अरण्यकाण्ड 9/30)-गीताप्रेस, पेज-490

93. सुन्दरकाण्डस्य क्रमसंख्या का वर्तते? GJ SET–2013

(A) द्वितीया (B) तृतीया
(C) चतुर्थी (D) पञ्चमी

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-122

94. वाल्मीकिरामायणे पञ्चमं काण्डमस्ति? CVVET–2017

(A) अरण्यकाण्डम् (B) सुन्दरकाण्डम्
(C) किष्किन्धाकाण्डम् (D) युद्धकाण्डम्

स्रोत– संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज–122

95. हनुमतो लङ्कायात्रा कस्मिन् काण्डे वर्णिता–CVVET–2017

(A) अरण्यकाण्डे (B) लङ्काकाण्डे
(C) युद्धकाण्डे (D) सुन्दरकाण्डे

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज–126

91. (C) 92. (B) 93. (D) 94. (B) 95. (D)

02 महाभारत

1. **महाभारत के लेखक कौन हैं? BHU-AET–2011**
   (A) मनु (B) कौत्स
   (C) नारद (D) व्यास

संस्कृत साहित्य का इतिहास – उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 145

2. **(i) 'महाभारत' है– UGC-73 J–1991, D–1992**
   (ii) 'महाभारत' क्या है–
   (A) पुराण (B) इतिहास
   (C) आख्यान (D) काव्य

संस्कृत साहित्य का इतिहास – उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 147

3. **महाभारत कैसा ग्रन्थ है? H-TET–2015**
   (A) ऐतिहासिक (B) सामाजिक
   (C) धार्मिक (D) नैतिक

संस्कृत साहित्य का इतिहास – उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 145

4. **(i) 'इतिहासपुराणाभ्यां वेदं समुपबृंहयेत्' एतया उक्त्या सम्बद्धः ग्रन्थः– AWES TGT–2011**
   (ii) 'इतिहासपुराणाभ्यां वेदं समुपबृंहयेत्' इत्युक्तिः कस्य वर्तते? RPSC SET–2010
   (A) विष्णुपुराणस्य (B) महाभारतस्य
   (C) रामायणस्य (D) ऋग्वेदस्य

संस्कृत साहित्य का इतिहास – उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 173

5. **इनमें प्राचीनतम कौन है? BHU MET–2010**
   (A) रामाभिषेकम् (B) महाभारतम्
   (C) उत्तररामचरितम् (D) रघुवंशम्

संस्कृत साहित्य का इतिहास – उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 156

6. **इतिहासग्रन्थ है– UGC-73 D–2009**
   (A) रामायणम् (B) महाभारतम्
   (C) श्रीमद्भागवतम् (D) देवीभागवतम्

संस्कृत साहित्य का इतिहास – उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 147

7. **(i) 'पञ्चमवेद' कौन-सा ग्रन्थ है– BHU MET–2008,**
   (ii) पञ्चमो वेदः कः? AWES TGT–2008
   (A) आयुर्वेद (B) धनुर्वेद
   (C) महाभारत (D) सर्पवेद

संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-3) – बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ- 529

8. **(i) 'महाभारत' को जाना जाता है– UP TGT–2009, 2010**
   (ii) महाभारत को कहा जाता है?
   (A) जयसंहिता (B) आदिकाव्य
   (C) सौप्तिकसंहिता (D) अरण्यसंहिता

संस्कृत साहित्य का इतिहास – उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 147

9. **(i) 'जय' इति कस्य महाकाव्यस्य नामान्तरम् –**
   (ii) 'जय' इति कस्य नामान्तरम्–
   (iii) 'जयकाव्यम्' इति नाम्ना किं ज्ञायते?
   UGC-25 D–2014, J–2015, HAP–2016
   (A) रामायणस्य (B) महाभारतस्य
   (C) रघुवंशस्य (D) किरातार्जुनीयस्य

संस्कृत साहित्य का इतिहास – उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ-147-148

10. **'महाभारतस्य' कः क्रमः– HE–2015**
   (A) जयः, भारतम्, महाभारतम्
   (B) भारतम्, जयः, महाभारतम्
   (C) महाभारतम्, जयः, भारतम्
   (D) जयः, विजयः, महाभारतम्

संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 147-148

11. **(i) महाभारतस्य प्रथमं नाम आसीत्– RPSC SET–2010**
   (ii) महाभारतस्य अपरं नाम किम्?
   MP वर्ग-1 (PGT)–2012, DSSSB TGT–2014, GJ SET–2013
   (A) जयः (B) विजयः
   (C) लघुभारतम् (D) बालभारतम्

संस्कृत साहित्य का इतिहास – उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 147

1. (D) 2. (B) 3. (A) 4. (B) 5. (B) 6. (B) 7. (C) 8. (A) 9. (B) 10. (A) 11. (A)

12. महाभारतस्य आलोचनात्मकसंस्करणं कुतः प्रकाशितम्– DU Ph.D–2016

(A) पूनातः (B) बडौदातः

(C) मुम्बईतः (D) मद्रासतः

संस्कृत साहित्य का इतिहास – उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 146

13. महाभारतस्य आलोचनात्मकसंस्करणस्य सम्पादकः अस्ति– DU Ph. D–2016

(A) एस0 आर0 भट्टः (B) जी0 एच0 भट्टः

(C) एस0 के0 सुकथंकरः (D) वी0 एस0 सुक्थणकरः

संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-3)–बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ- 440

14. 'चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः' इत्युक्तम्? DU Ph. D–2016

(A) अर्थशास्त्रे (B) रामायणे

(C) याज्ञवल्क्यस्मृतौ (D) महाभारते

महाभारत (खण्ड-3) भीष्मपर्व (28/13)–गीताप्रेस, पृष्ठ- 672

15. उचित सम्बद्ध विकल्प चुनिये– UGC 73 J–2016

(A) वाल्मीकिः - पञ्चरात्रम् (B) विदुरनीतिः - महाभारतम्

(C) प्रतिसर्गः - कालिदासः (D) मन्वन्तराणि - भारवि

स्रोत–विदुरनीति – जगदीश्वरानन्द सरस्वती, भू. पृष्ठ- 05

16. द्यूतक्रीडावर्णनं कस्मिन् पर्वणि विद्यते–GJ SET–2013

(A) सभापर्वणि (B) कर्णपर्वणि

(C) आदिपर्वणि (D) स्त्रीपर्वणि

संस्कृत साहित्य का इतिहास – उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ-149

17. (i) विश्वसाहित्य के इतिहास में सबसे बड़ा महाकाव्य है– K SET–2014, UP PGT–2009

(ii) विश्वसाहित्येतिहासे बृहत्तमम् इतिहासकाव्यमस्ति–

(A) रामायणम् (B) महाभारतम्

(C) शिशुपालवधम् (D) श्रीमद्भगवद्गीता

संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 145

18. (i) 'महाभारत' में कितने श्लोक हैं- BHU AET–2011

(ii) महाभारते कति श्लोकाः सन्ति? BHU MET–2009,

(iii) व्यासविरचित 'महाभारत' के श्लोकों की संख्या क्या है? 2013, UGC 73 D–2005, 2007, 2008

(A) अयुतश्लोकाः (B) पञ्चविंशतिसहस्रश्लोकाः

(C) लक्षश्लोकाः (D) द्विलक्षश्लोकाः

संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 145

19. (i) 'शतसाहस्रीसंहिता' नाम किस ग्रन्थ का है?

(ii) एनं 'शतसाहस्रीसंहिता' इति ब्रुवन्ति विपश्चितः–

(iii) 'शतसाहस्री' इति कस्याभिधानमस्ति–

(iv) 'शतसाहस्री' कस्य ग्रन्थस्य संज्ञा–AWES TGT–2010,

(v) 'शतसाहस्रीसंहिता' इति कस्य अपरं नाम?

UGC 25 D–2012, 2014, 2015, J–2016, UGC 73 D–2015,

(A) श्रीमद्रामायणम् (B) महाभारतम्

(C) विष्णुपुराणम् (D) श्रीमद्भागवतम्

संस्कृत साहित्य का इतिहास – उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 145

20. महाभारतस्य श्लोकानां संख्या आसीत्–AWES TGT–2010

(A) पञ्चदशसहस्रम् (B) विंशतिसहस्रम्

(C) चतुर्विंशतिसहस्रम् (D) शतसहस्रम्

संस्कृत साहित्य का इतिहास – उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 145

21. (i) ''यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत्क्वचित्'' इति कथनेन कस्य परिचयः भवति–UP GIC–2015,

(ii) ''धर्मे चार्थे च कामे च मोक्षे च भरतर्षभ।
यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत्क्वचित्॥''
कस्य परिचयः उक्तः? UP GDC–2014, G GIC–2015, UGC 25 J–2016, RPSC SET–2010

(A) रामायणस्य (B) महाभारतस्य

(C) मनुस्मृतेः (D) सर्वदर्शनसंग्रहस्य

संस्कृत साहित्य का इतिहास – उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 145

22. महाभारत का युद्ध कितने दिनों तक चला–UPTET–2013

(A) अठारह दिन (18) (B) आठ दिन (8)

(C) बारह दिन(12) (D) सोलह दिन (16)

संस्कृत साहित्य का इतिहास – उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 151

23. (i) व्यास प्रणीत महाभारत में कितने पर्व हैं?

(ii) महाभारते पर्वाणि कति– BHU RET–2008,

(iii) महाभारतस्य विभाजने पर्वणां संख्या अस्ति–

(iv) महाभारतस्य कथा कति पर्वसु विभक्ता अस्ति–

(v) महाभारते कति पर्वाणि सन्ति–BHU Sh.ET–2013 BHU B.Ed–2011, 2012, UGC-73 D–2012, BHU MET–2008, UPGIC–2015, MGKV Ph.D–2016

(A) अष्टादश (B) त्रयोदश

(C) द्वादश (D) चतुर्दश

संस्कृत साहित्य का इतिहास – उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 145

12. (A) 13. (D) 14. (D) 15. (B) 16. (A) 17. (B) 18. (C) 19. (B) 20. (D) 21. (B) 22. (A) 23. (A)

24. (i) महाभारतस्य विषयवस्तु विभाजनं वर्तते–
(ii) महाभारतं विभक्तम् अस्ति? UP GDC–2012, T SET–2013
(A) काण्डेषु (B) अध्यायेषु
(C) सर्गेषु (D) पर्वसु
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 145

25. महाभारतस्य द्वितीयं पर्व किम्– UGC-25 J–2014
(A) वनपर्व (B) सभापर्व
(C) भीष्मपर्व (D) विराटपर्व
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 149

26. महाभारतस्याष्टादशसु पर्वसु इदं द्वादशतमं भवति– UGC-25 D–2012
(A) अनुशासनपर्व (B) सौप्तिकपर्व
(C) शान्तिपर्व (D) स्त्रीपर्व
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 151

27. महाभारतस्य तृतीयं पर्व किमुच्यते– UGC-25 S–2013
(A) उद्योगपर्व (B) भीष्मपर्व
(C) द्रोणपर्व (D) वनपर्व
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 149

28. महाभारत में 'पर्व' है– UGC 73 J–2016
(A) आरण्यकपर्व (B) आश्रमवासिकपर्व
(C) साकमेधिकपर्व (D) वनवासिकपर्व
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 152

29. 'महाभारत' का दूसरा नाम है– UGC 73 J–2016
(A) शतसाहस्री (B) दशसाहस्री
(C) साहस्री (D) द्विशतसाहस्री
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 145

30. एषु किं पर्व महाभारते नास्ति– UGC 25 Jn.–2017
(A) द्रोणपर्व (B) भीष्मपर्व
(C) युधिष्ठिरपर्व (D) शल्यपर्व
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 145-146

31. महाभारताश्रितं न भवति– UGC 25 Jn. 2017
(A) वेणीसंहारम् (B) दूतवाक्यम्
(C) मध्यमव्यायोगः (D) अभिषेकनाटकम्
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास–कपिलदेव द्विवेदी, पृष्ठ- 129

32. अष्टसहस्रश्लोकात्मकस्य भारतस्य नाम किम्? K-SET–2015
(A) भारतम् (B) महाभारतम्
(C) जयः (D) पञ्चमवेदः
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 147

33. महाभारतस्य बृहत्तमं पर्व ...... अस्ति? GJ SET–2016
(A) शान्तिपर्व (B) द्रोणपर्ण
(C) शल्यपर्व (D) कर्णपर्व
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 151

34. महाभारते राधिकापुत्रः कः कथ्यते? K/T SET–2014
(A) शल्यः (B) दुश्शासनः
(C) कर्णः (D) नकुलः
संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (भाग-3)–बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ- 546

35. महाभारतस्य मौलिकरूपम् आसीत्– K/T SET–2013
(A) जयनाम्ना (B) विजयनाम्ना
(C) भारतनाम्ना (D) आर्षकाव्यनाम्ना
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 147

36. महाभारते उद्योगपर्व CVVET–2015
(A) तृतीयम् (B) पञ्चमम्
(C) चतुर्थम् (D) षष्ठम्
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 145

37. महाभारते अन्तिमं पर्व किम् – UK SLET–2012
(A) विराटपर्व (B) स्वर्गारोहणपर्व
(C) उद्योगपर्व (D) शल्यपर्व
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 146

38. 'भगवद्गीता' किस ग्रन्थ का भाग है– UGC-73 J–2010
(A) महाभारतस्य (B) भागवतस्य
(C) रामायणस्य (D) स्कन्दपुराणस्य
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 158

39. 'शान्तिपर्व' है– UGC-73 D–2006
(A) रामायणे (B) महाभारते
(C) भागवते (D) मार्कण्डेयपुराणे
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 146

24. (D) 25. (B) 26. (C) 27. (D) 28. (B) 29. (A) 30. (C) 31. (D) 32. (C) 33. (A)
34. (C) 35. (A) 36. (B) 37. (B) 38. (A) 39. (B)

40. (i) शान्तिपर्व में बल के अङ्ग हैं–
(ii) शान्तिपर्वणि बलस्य अङ्गानि सन्ति?
UGC-73 J–2012, D–2014

(A) षट् (B) सप्त
(C) पञ्च (D) नव

स्रोत–

41. महाभारतस्य भीष्मपर्वणि वर्तते–
UGC-73 J–2005, D–2007, 2012

(A) दुर्गासप्तशती (B) श्रीमद्भागवतम्
(C) देवीभागवते (D) श्रीमद्भगवद्गीता

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 158

42. 'शाकुन्तलोपाख्यान' इसमें मिलता है– UGC-73 J–2006

(A) श्रीमद्रामायणे (B) महाभारते
(C) देवीभागवते (D) अग्निपुराणे

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 149

43. (i) भगवद्गीतायाः उपदेशः महाभारतस्य कस्मिन् पर्वणि उपलभ्यते– MP-वर्ग-1 (PGT)–2012
(ii) महाभारतस्य कस्मिन् पर्वणि गीताया उपदेशः?
BHU AET–2010

(A) उद्योगपर्वणि (B) वनपर्वणि
(C) भीष्मपर्वणि (D) शान्तिपर्वणि

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 158

44. 'मौसलपर्वणः' उल्लेखोऽस्ति– UGC-25 D–2011

(A) रामायणे (B) महाभारते
(C) भगवद्गीतायाम् (D) रघुवंशे

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 146

45. मौसलपर्व– CVVET–2015

(A) अष्टादशम् (B) षोडशम्
(C) सप्तदशम् (D) पञ्चदशम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 146

46. (i) महाभारत के किस पर्व में 'नलोपाख्यान' वर्णित है?
(ii) 'महाभारते' नलोपाख्यानं कस्मिन् पर्वणि–
UGC-25 D–2013, UGC 73 D–2015

(A) आदिपर्वणि (B) वनपर्वणि
(C) कर्णपर्वणि (D) अनुशासनपर्वणि

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 149

47. 'विष्णुसहस्रनामस्तोत्रं' कुत्र वर्तते– UGC-25 J–2014

(A) श्रीमद्भागवते (B) रामायणे
(C) ब्रह्माण्डपुराणे (D) महाभारते

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 152

48. नलोपाख्यान है– UGC-73 J–1998

(A) रामायणे (B) कथासरित्सागरे
(C) विष्णुपुराणे (D) महाभारते

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 149

49. 'आश्रमवासी' इति भागः वर्तते– UK SLET–2015

(A) रामायणे (B) महाभारते
(C) सामवेदे (D) दशकुमारचरिते

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 146

50. महाभारतस्य उपाख्यानम् अस्ति– UK SLET–2015

(A) वृषभोपाख्यानम् (B) नलोपाख्यानम्
(C) खलोपाख्यानम् (D) हलोपाख्यानम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 149

51. (i) महाभारत के किस पर्व में 'शकुन्तलोपाख्यान' वर्णित है? HE–2015, UGC 73 D–2015
(ii) 'शकुन्तलोपाख्यानं' कस्मिन् पर्वण्युपलभ्यते–

(A) आदिपर्वणि (B) वनपर्वणि
(C) विराटपर्वणि (D) कर्णपर्वणि

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 149

52. (i) श्रीमद्भगवद्गीता महाभारतस्य कस्मिन् पर्वणि उल्लिखिता– BHU AET–2010, GJ SET–2013
(ii) श्रीमद्भगवद्गीता महाभारतस्य कस्य पर्वभागो विद्यते?
(iii) श्रीमद्भगवद्गीता महाभारतस्य कस्मिन् पर्वणि कृतपदा?
RPSC SET–2013-14,

(A) उद्योगपर्वणि (B) द्रोणपर्वणि
(C) भीष्मपर्वणि (D) कर्णपर्वणि

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 158

40. (A) 41. (D) 42. (B) 43. (C) 44. (B) 45. (B) 46. (B) 47. (D) 48. (D) 49. (B) 50. (B) 51. (A) 52. (C)

53. ''प्रज्ञा प्रतिष्ठा भूतानां प्रज्ञा लाभः परो मतः।
प्रज्ञा निःश्रेयसी लोके प्रज्ञा स्वर्गो मतः सताम्।।''
इति .... वर्तते – GJ SET–2016

(A) रामायणे (B) महाभारते
(C) विष्णुपुराणे (D) हरिवंशे

स्रोत–महाभारत (खण्ड-5) शान्तिपर्व (180/2)–गीताप्रेस, पृष्ठ- 551

54. 'उर्ध्वबाहुः विरौम्येष' इति वाक्यं .... कथयति– GJ SET–2016

(A) व्यासः (B) सञ्जयः
(C) विदुरः (D) अश्वत्थामा

महाभारत (खण्ड-6) स्वर्गारोहणपर्व (5/57,58,62)–गीताप्रेस, पृष्ठ- 1217

55. महाभारते समीक्षितावृत्तिः .... संस्थया प्रकाशिता– GJ SET–2016

(A) प्राच्यविद्यामन्दिरम्, बडोदरा
(B) विश्वेश्वरानन्दशोधसंस्थानम्, होशियारपुरम्
(C) गीताप्रेस, गोरखपुर
(D) भण्डारकर-प्राच्यविद्याशोधसंस्थानम्, पूना

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास–कपिलदेव द्विवेदी, पृष्ठ- 119

56. महाभारतस्य चतुर्थपर्वणः नाम किम्? RPSC ग्रेड-I PGT–2014

(A) सभापर्व (B) भीष्मपर्व
(C) विराटपर्व (D) उद्योगपर्व

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास–कपिलदेव द्विवेदी, पृष्ठ- 118

57. विदुरनीति है– UGC-73 D–2012

(A) रामायणे (B) हरिवंशपुराणे
(C) महाभारते (D) पद्मपुराणे

स्रोत–विदुरनीति–गुञ्जेश्वर चौधरी, पृष्ठ- 01

58. श्रीकृष्णः कस्मिन् पर्वणि दूतस्य कार्यम् अकरोत्– AWES TGT–2010

(A) सभापर्वणि (B) भीष्मपर्वणि
(C) उद्योगपर्वणि (D) वनपर्वणि

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ–149,150

59. गान्धारी किसकी माँ है– MP वर्ग-2 (TGT)–2011, UK-TET–2011

(A) धृतराष्ट्र की (B) विदुर की
(C) दुर्योधन की (D) कर्ण की

महाभारत (खण्ड-1) आदिपर्व (114/25)–गीताप्रेस, पृष्ठ-400, 401

60. सुभद्रा किसकी बहन थी– MP-वर्ग-2 (TGT)–2011 UK-TET–2011, UGC-73 D–1994

(A) अर्जुन की (B) कृष्ण की
(C) अश्वत्थामा की (D) नकुल की

महाभारत (खण्ड-1) आदिपर्व (218/14, 17)–गीताप्रेस, पृष्ठ- 716

61. माद्री माता थी– MP-वर्ग-2 (TGT)–2011 UK-TET–2011

(A) युधिष्ठिर की (B) नकुल की
(C) भीम की (D) द्रोण की

स्रोत–महाभारत (खण्ड-1) आदिपर्व (123/21)–गीताप्रेस, पृष्ठ- 429

62. भीष्मस्य पितृकृतं नाम किम्– AWES TGT–2014

(A) देवव्रतः (B) भद्ररथः
(C) देवदत्तः (D) वज्रदत्तः

स्रोत–महाभारत (खण्ड-1) आदिपर्व (100/21)–गीताप्रेस, पृष्ठ-358

63. कृष्ण की जन्मदात्री माता थी– UGC-73 D–1992

(A) देवकी (B) यशोधरा
(C) कौशल्या (D) यशोदा

स्रोत–महाभारत (खण्ड-1) सभापर्व (2/30)–गीताप्रेस, पृष्ठ- 767

64. सैवलोऽस्ति– UGC-73 J–2013

(A) विदुरः (B) कर्णः
(C) दुःशासनः (D) शकुनिः

स्रोत–महाभारत (खण्ड-1) सभापर्व (59/3)–गीताप्रेस, पृष्ठ-1000

65. महाभारतयुद्धे पाण्डवानां सैन्यप्रमाणं किम्? HAP–2016

(A) एकादश-अक्षौहिणी (B) दश-अक्षौहिणी
(C) सप्त-अक्षौहिणी (D) पञ्च-अक्षौहिणी

स्रोत–महाभारत (खण्ड-3) उद्योगपर्व (55/27)– गीताप्रेस, पृष्ठ- 466

53. (B)	54. (A)	55. (D)	56. (C)	57. (C)	58. (C)	59. (C)	60. (B)	61. (B)	62. (A)
63. (A)	64. (D)	65. (C)							

66. भीष्मस्य पिता– CVVET–2015
(A) व्यासः (B) बाह्लिकः
(C) शान्तनुः (D) विचित्रवीर्यः
स्रोत–महाभारत (खण्ड-1) आदिपर्व–गीताप्रेस, पृष्ठ- 363

67. को द्रौणिः– BHU AET–2012
(A) अर्जुनः (B) दुर्योधनः
(C) युधिष्ठिरः (D) अश्वत्थामा
स्रोत–महाभारत (खण्ड-1) आदिपर्व (129/47)–गीताप्रेस, पृष्ठ-454

68. दासीपुत्रः कः– BHU AET–2012
(A) विदुरः (B) मैत्रेयः
(C) धृतराष्ट्रः (D) पाण्डुः
महाभारत (खण्ड-1) आदिपर्व (105/28, 30)–गीताप्रेस, पृष्ठ-382

69. वैरोचनिः कः? BHU AET–2012
(A) इन्द्रः (B) वरुणः
(C) बलिः (D) प्रह्लादः
स्रोत–श्रीमद्भागवत (खण्ड-1, 8.19.14) - गीताप्रेस, पेज–994

70. द्रोणाचार्यस्य वधं केन अकरोत्–AWES TGT–2011
(A) अर्जुनेन (B) धृष्टद्युम्नेन
(C) भीमेन (D) घटोत्कचेन
स्रोत–महाभारत (खण्ड-4) द्रोणपर्व (192/67)–गीताप्रेस, पृष्ठ- 682

71. बृहन्नला .... आसीत्। AWES TGT–2010
(A) भीमः (B) अर्जुनः
(C) युधिष्ठिरः (D) नकुलः
स्रोत–महाभारत (खण्ड-2) विराटपर्व (11/8, 9)–गीताप्रेस, पृष्ठ- 1033

72. कर्णः कवचकुण्डलौ कस्मै प्रदत्तवान्– RPSC-ग्रेड-II (TGT)–2010
(A) अर्जुनाय (B) युधिष्ठिराय
(C) इन्द्राय (D) कृष्णाय
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 466

73. जयद्रथ किसके हाथों मारा गया– MP वर्ग-2 (TGT)–2011, UK-TET–2011
(A) कृष्ण (B) बलराम
(C) अर्जुन (D) भीम
स्रोत–महाभारत (खण्ड-4) द्रोणपर्व (146/132)–गीताप्रेस, पृष्ठ-496

74. भीष्मस्य निर्वाणं कस्मिन्पर्वणि विद्यते? K-SET–2015
(A) अनुशासनपर्वणि (B) उद्योगपर्वणि
(C) भीष्मपर्वणि (D) शान्तिपर्वणि
स्रोत–महाभारत (खण्ड-6) अनुशासनपर्व– गीताप्रेस, पृष्ठ- 761

75. सावित्रीकथा कुत्र वर्णिता– K-SET–2014
(A) वनपर्वणि (B) आदिपर्वणि
(C) उद्योगपर्वणि (D) भीष्मपर्वणि
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 149

76. शान्तनोः पुत्रस्य नाम किम्? RPSC SET–2010
(A) भीष्मः (B) अर्जुनः
(C) जनमेजयः (D) आरुणिः
स्रोत–महाभारत (खण्ड-1) आदिपर्व –गीताप्रेस, पृष्ठ- 363-365

77. महाभारतस्य खिलपर्व किं विद्यते? GJ SET–2013
(A) विष्णुपुराणम् (B) नारदपुराणम्
(C) भागवतपुराणम् (D) हरिवंशपुराणम्
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 159

78. महाभारतस्य सौप्तिकपर्वणः प्रमुखा घटनास्ति– RPSC SET–2013-14
(A) शल्यस्य सेनापतित्वम् (B) द्रोणवधः
(C) अश्वत्थामा द्रौपदीपुत्राणांवधः (D) जयद्रथवधः
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास–कपिलदेव द्विवेदी, पृष्ठ- 118

79. महाभारतकथा केन कथिता– MH SET–2013
(A) वाल्मीकिना (B) शुकेन
(C) सौतिना (D) शौनकेन
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 148

80. ''शान्तिपर्व' में दुर्गसंख्या है– UGC-73 D–2013
(A) पञ्च (B) नव
(C) षट् (D) दश
स्रोत–महाभारत (खण्ड-5) शान्तिपर्व (86/5)–गीताप्रेस, पृष्ठ-275

66. (C)	67. (D)	68. (A)	69. (C)	70. (B)	71. (B)	72. (C)	73. (C)	74. (A)	75. (A)
76. (A)	77. (D)	78. (C)	79. (C)	80. (C)					

81. महाभारते यक्षप्रश्नानाम् उपयुक्तानि उत्तराणि कः दत्तवान्– RPSC-ग्रेड-II (TGT)–2010

(A) कृष्णः (B) विदुरः
(C) कुबेरः (D) युधिष्ठिरः

स्रोत–महाभारत (खण्ड-2) वनपर्व (313/44) पृष्ठ–986

82. हस्तिनापुर राजधानी थी– MP-वर्ग-2 (TGT) 2011, UK TET–2011

(A) कौरवों की (B) पाण्डवों की
(C) सहस्रार्जुन की (D) प्रद्युम्न की

महाभारत (खण्ड-6) आश्रमवासिकपर्व–गीताप्रेस, पृष्ठ-1154, 1158

83. परीक्षितस्य पितामहः क आसीत्? RPSC SET–2010

(A) भीमः (B) शान्तनुः
(C) अर्जुनः (D) भरतः

स्रोत–श्रीमद्भागवत महापुराण (1.12.2.10)–गीताप्रेस, पृष्ठ-136, 137

84. महाभारत युद्ध के समय दिव्य दृष्टि किसको प्राप्त थी– BHU MET–2008, AWES TGT–2008

(A) संजय को (B) धृतराष्ट्र को
(C) युधिष्ठिर को (D) भीम को

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 150

85. महाभारत के सन्दर्भ में कौन-सा कथन सत्य है– UP PGT–2010, UK TET–2011

(A) इसमें तीन लाख श्लोक हैं।
(B) इसकी कथावस्तु अठारह पर्वों में विभक्त है।
(C) यह पौराणिक उपन्यास है।
(D) यह विश्व का सबसे बड़ा खण्डकाव्य है।

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 145

86. निम्नलिखित में से कौन काव्य महाभारत का उपजीवी नहीं है– UP GDC–2008

(A) दशकुमारचरितम् (B) ऊरुभङ्गम्
(C) नलचम्पूः (D) शिशुपालवधम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास–कपिलदेव द्विवेदी, पृष्ठ-129

87. आख्यानोपाख्यानैः उपबृंहितं काव्यम् अस्ति– UP GDC–2012

(A) रामायणम् (B) नैषधीयचरितम्
(C) महाभारतम् (D) श्रीमद्भागवतम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि' पेज-157

88. निम्नलिखित में से यह आख्यान महाभारत में है– UGC 73 J–2016

(A) ऋष्यशृङ्गाख्यानम् (B) शुनःशेपाख्यानम्
(C) रामोपाख्यानम् (D) गङ्गावतरणम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 158

89. ''यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत्क्वचित्'' इयमुद्घोषणा स्वरचनाविषये केन कृता– UP GDC–2012

(A) वाल्मीकिना (B) श्रीमद्भागवतकृता व्यासेन
(C) महाभारतकृता व्यासेन (D) श्रीहर्षेण

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 145

90. युद्ध में पाण्डवों की सहायता किसने की– UP TET–2013

(A) भीष्म ने (B) द्रोणाचार्य ने
(C) धृतराष्ट्र ने (D) कृष्ण ने

स्रोत–महाभारत (खण्ड-3) उद्योगपर्व-गीताप्रेस पेज–29-31

91. कालान्तर में द्रौपदी सहित पाण्डव कहाँ गये– UP TET–2013

(A) वन में (B) राजभवन में
(C) हिमालय में (D) प्रयाग में

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ-152

92. पाण्डवों तथा कौरवों के मध्य युद्ध हुआ– UP TET–2013

(A) मालवा में (B) विन्ध्यक्षेत्र में
(C) कुरुक्षेत्र में (D) मथुरा में

महाभारत (खण्ड-3), उद्योगपर्व (159/1) गीताप्रेस, पेज–476

93. युद्ध में कौन पराजित हुआ– UP TET–2013

(A) दुर्योधन (B) अर्जुन
(C) कृष्ण (D) युधिष्ठिर

स्रोत–महाभारत (खण्ड-4), शल्यपर्व, गीताप्रेस, पेज–1243

94. अज्ञातवासे अर्जुनस्य नाम आसीत्– UK SLET–2015

(A) कङ्कः (B) धनञ्जयः
(C) विजयः (D) बृहन्नला

स्रोत–महाभारत (खण्ड-2) – गीताप्रेस, पृष्ठ- 1033

95. महाभारतयुद्धे सर्वाधिकदिवसपर्यन्तं कौरवसेनापतिः कः आसीत्– HE–2015

(A) द्रोणः (B) कर्णः
(C) शल्यः (D) भीष्मः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 150

81. (D)	82. (B)	83. (C)	84. (A)	85. (B)	86. (A)	87. (C)	88. (C)	89. (C)	90. (D)
91. (C)	92. (C)	93. (A)	94. (D)	95. (D)					

96. महाभारतस्य समीक्षात्मकसंस्करणम् (Chitical Edition) अनया संस्थया प्रकाशितम्–JNU M.Phil/Ph.D–2015
(A) निर्णयसागरमुद्रणालयः
(B) भाण्डारकर ओरियन्टलरिसर्च इन्स्टिट्यूट, पुणे
(C) ओरियन्टल इन्स्टिट्यूट, बडौदा
(D) कुप्पुस्वामिशास्त्री रिसर्च इन्स्टिट्यूट, चेन्नई

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 146

97. नैमिषारण्ये महाभारतीयां कथां क उक्तवान्–HE–2015
(A) वैशम्पायनः (B) उग्रश्रवाः
(C) शौनकः (D) व्यासः

संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-3)–बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ- 434

98. देवीं......नत्वा ततो जयमुदीरयेत् – BHU-AET–2010
(A) सरस्वतीम् (B) भगवतीम्
(C) हैमवतीम् (D) प्रभावतीम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 147

99. अकबर के दरबार में संस्कृत रचना जिसका फारसी में 'रज्मनामा' के नाम से अनुवाद हुआ था–UGC 06 D–2004
(A) रामायण (B) महाभारत
(C) वेद (D) गीता

स्रोत– Lucent's सामान्य ज्ञान, पेज–55

100. कीचकस्य वधं महाभारतस्य कस्मिन् पर्वण्युपवर्णितम्– UGC-25 J–2012
(A) उद्योगपर्वणि (B) विराटपर्वणि
(C) शल्यपर्वणि (D) द्रोणपर्वणि

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 149

101. 'यक्ष संवाद' कहाँ से लिया गया है–UGC-73 D–1999
(A) पिता से (B) महाभारत से
(C) रामायण से (D) भागवत से

स्रोत–महाभारत (खण्ड-2) वनपर्व – गीताप्रेस, पृष्ठ- 983

102. अर्जुनेन सह युद्धं कर्तुम् अश्वत्थामा कस्य अस्त्रस्य प्रयोगम् अकरोत्– AWES TGT–2010
(A) ब्रह्मास्त्रस्य (B) पाशुपतास्त्रस्य
(C) विषास्त्रस्य (D) सहस्रास्त्रस्य

स्रोत–भागवत प्रथमखण्ड-(1/7/19, 20), पेज–109

103. 'दमयन्तीकथा' महाभारते कस्मिन् पर्वणि वर्तते– K-SET–2013
(A) सभापर्वणि (B) वनपर्वणि
(C) कर्णपर्वणि (D) स्त्रीपर्वणि

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 157

104. पाण्डवाः वनवासाय किं वनं प्रविविशुः? K-SET–2013
(A) दण्डकारण्यम् (B) काम्यकवनम्
(C) नागवनम् (D) नैमिषारण्यम्

स्रोत–महाभारत (खण्ड-2) अरण्यपर्व– गीताप्रेस, पृष्ठ- 37

105. धर्मे चार्थे च कामे च मोक्षे च भरतर्षभ।
यदिहास्ति तदन्यत्र, यन्नेहास्ति न तत् क्वचित्।।
.... वर्तते? GJ SET–2016
(A) द्रोणपर्वणि (B) विराटपर्वणि
(C) आदिपर्वणि (D) सभापर्वणि

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास–कपिलदेव द्विवेदी, पृष्ठ- 117

106. महाभारते भीष्मस्य प्राणत्यागः कुत्र वर्णितः – UGC 73 Jn–2017
(A) भीष्मपर्वणि (B) शान्तिपर्वणि
(C) अनुशासनपर्वणि (D) स्वर्गारोहणपर्वणि

महाभारत (खण्ड-6) अनुशासनपर्व (168/6)–गीताप्रेस, पृष्ठ-761

107. (i) ''अहिंसा परमो धर्मः'' यह उक्ति है–
(ii) ''अहिंसा परमो धर्मः'' यह वाक्य है–
UGC-73 J–2011, UP TET–2013
(A) उपनिषदि (B) कालिकापुराणे
(C) महाभारतस्य शान्तिपर्वणि (D) अनुशासनपर्वणि

स्रोत–संस्कृत परम्परागत विषय – शत्रुघ्न त्रिपाठी, पृष्ठ- 123

108. अक्षुद्रान् दानशीलांश्च सत्यशीलाननास्तिकान्।
कार्ष्णं वेदमिमं विद्वान् श्रावयित्वार्थमश्नुते
इत्यस्मिन् श्लोके प्रस्तुतीकृतः 'कार्ष्णः वेदः' कः– UGC-25 D–2012
(A) भगवद्गीता (B) श्रीमद्रामायणम्
(C) जानकीहरणम् (D) महाभारतम्

स्रोत–महाभारत (खण्ड-1) आदिपर्व (62/18) गीताप्रेस, पेज–207

109. महर्षिः वेदव्यासः कतिभिः वर्षैः महाभारतं कृतवान्– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2015
(A) चतुर्भिः (B) पञ्चभिः
(C) त्रिभिः (D) षड्भिः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा, 'ऋषि', पेज–145

96. (B) 97. (B) 98. (A) 99. (B) 100. (B) 101. (B) 102. (A) 103. (B) 104. (B) 105. (C) 106. (C) 107. (C) 108. (D) 109. (C)

03 रघुवंशम्

1. **'रघुवंश'-महाकाव्यस्य रचनां कः अकरोत्?** **BHU B. Ed–2012, UP TGT (H)–2009**
   (a) भारविः (b) व्यासः
   (c) कालिदासः (d) माघः

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-138

2. **(i) 'रघुवंशम्' है?** **UP TGT–2009**
   (ii) रघुवंशस्य किं काव्यस्वरूपम्? GJ SET–2007
   (iii) रघुवंशम् किं विधं काव्यमस्ति? RPSC SET–2013-14
   (a) महाकाव्यम् (b) गीतिकाव्यम्
   (c) नाटकम् (d) व्याकरणग्रन्थः

स्रोत–रघुवंश -हरगोविन्दमिश्र, भू. पेज-12

3. **'रघुवंशमहाकाव्य' के मङ्गलाचरण में कालिदास ने किसकी वन्दना की?** **UP TET–2014**
   (a) सरस्वती की (b) गणेश-पार्वती की
   (c) कार्तिकेय की (d) शिव-पार्वती की

स्रोत–रघुवंश (1/1) - कृष्णमणि त्रिपाठी, पेज-2, 3

4. **रघुवंशे 'जगतः पितरौ' इति कौ वर्णितौ? UK SLET–2015**
   (a) राधाकृष्णौ (b) सीतारामौ
   (c) पार्वतीपरमेश्वरौ (d) देवकीवसुदेवौ

स्रोत–रघुवंश (1/1) - हरगोविन्द मिश्र , पेज-2

5. **(i) रघुवंशमहाकाव्ये सर्गाः सन्ति– CCSUM Ph. D–2016,**
   (ii) रघुवंश महाकाव्य में सर्ग हैं? MP वर्ग-I PGT–2012,
   (iii) रघुवंशे सर्गाणां संख्या वर्तते–BHU MET–2011,
   (iv) रघुवंश में कुल कितने सर्ग हैं? 2012, 2014
   (v) रघुवंशे कति सर्गाः सन्ति? T-SET–2013,
   (vi) रघुवंशे महाकाव्ये सर्गसंख्याऽभिधीयताम्?
   BHU AET–2012, WB SET–2010, MH-SET–2014, 2013, KL-SET–2016, UP PGT (H)–2013, UP TGT–2010, UGC-25 J–2007, BHU B.Ed–2011, CVVET–2015
   (a) 18 (b) 19
   (c) 20 (d) 21

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-151-152

6. **(i) रघुवंशमहाकाव्ये कति राजानो वर्णिताः सन्ति?**
   (ii) रघुवंशमहाकाव्ये कियद् सूर्यवंशीयानां राज्ञां वर्णनमस्ति– DSSSB TGT–2014, MGKV Ph. D–2016
   (a) 20 (b) 19
   (c) 31 (d) 39

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-151

7. **रघु के वंश का किसमें वर्णन है? BHU MET–2008**
   (a) मेघदूत में (b) रघुवंश में
   (c) कुमारसम्भव में (d) नैषधीयचरित में

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-151

8. **रघुवंश में किस वंश के राजाओं का वर्णन है?** **BHU MET–2010**
   (a) सोमवंश के (b) सूर्यवंश के
   (c) गन्धर्ववंश के (d) किन्नरवंश के

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-151

9. **रघुवंशमहाकाव्ये सर्वप्रथमं कस्य राज्ञः वर्णनम् अस्ति–** **UGC 25 S–2013**
   (a) रामस्य (b) रघोः
   (c) अजस्य (d) दिलीपस्य

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-151

10. **इक्ष्वाकुवंशे जातः– RPSC ग्रेड-II (TGT)–2010**
    (a) कृष्णः (b) बाणभट्टः
    (c) रामः (d) जयदेवः

स्रोत–रघुवंश (3/1) - हरगोविन्द मिश्र, पेज-58

11. **'अथ प्रजानामधिपः प्रभाते' इत्यत्र राजार्थकः शब्दः कः–** **BHU Sh.ET–2011**
    (a) प्रजा (b) प्रभातः
    (c) अधिपः (d) अथ

स्रोत–रघुवंश (2/1) - हरगोविन्द मिश्र, पेज-33

1. (C)	2. (A)	3. (D)	4. (C)	5. (B)	6. (C)	7. (B)	8. (B)	9. (D)	10. (C)
11. (C)									

12. 'रघुवंशे' कस्य वर्णनं नास्ति– BHU Sh.ET–2011

(a) पार्वत्याः (b) दिलीपस्य

(c) रामस्य (d) अजस्य

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-151

13. 'रघुवंश' में किसकी गो-सेवा वर्णित है– BHU MET–2008, UP TET–2014

(a) दिलीप की (b) रघु की

(c) दशरथ की (d) अज की

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-151

14. (i) 'रघुवंश' में दशरथ के पिता कौन हैं–

(ii) रघुवंश में दशरथ के पिता का क्या नाम है? BHU MET–2008, 2009, 2013

(a) दिलीप (b) अज

(c) रघु (d) मनु

स्रोत– रघुवंशम् (8/28, 29) – हरगोविन्द मिश्र, पेज-195-196

15. 'नन्दिनी धेनु' का वर्णन किसमें है–BHU MET–2010

(a) कुमारसम्भवम् में (b) रघुवंशम् में

(c) किरातार्जुनीयम् में (d) शिशुपालवधम् में

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-151

16. 'रघुवंश' में इन्दुमती किसकी रानी हैं– BHU MET–2010

(a) रघु की (b) अज की

(c) इक्ष्वाकु की (d) दिलीप की

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-151

17. राजा दशरथ का सम्बन्ध किस वंश से था– BHU MET–2009, 2013

(a) सूर्यवंश से (b) चन्द्रवंश से

(c) इन्द्रवंश से (d) मनुवंश से

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-151

18. रघुवंशियों का कौन-सा कालक्रमानुसार युग्म सही है– UP TGT–2010

(a) रघु, अज, दशरथ, राम (b) दिलीप, अज, दशरथ, राम

(c) अज, दिलीप, रघु, राम (d) राम, दशरथ, रघु, अज

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी पेज-152

19. 'रघुवंश-महाकाव्य' किसकी स्तुति से प्रारम्भ होता है– UP GIC–2009

(a) गणेश-लक्ष्मी की (b) शिव-पार्वती की

(c) विष्णु-लक्ष्मी की (d) सरस्वती की

स्रोत– रघुवंशम् (1.1) – हरगोविन्द मिश्र, पेज-02

20. रघुवंशी राजाओं में सर्वप्रथम नाम आता है– UGC 25 J–2004

(a) रघु (b) अज

(c) अग्निवर्ण (d) वैवस्वत

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-152

21. (i) रघुवंशस्य व्याख्यानं केन विरचितम्?

(ii) रघुवंशस्य प्रथमव्याख्यानं केन विरचितम्? KL-SET–2014, 2015

(a) मल्लिनाथेन (b) वल्लभदेवेन

(c) नारायणपण्डितेन (d) अरुणगिरिनाथेन

किरातार्जुनीयम्- अभिराजराजेन्द्र मिश्र, पेज-28

22. अजविलाप किसमें है– UGC 25 J–1994

(a) स्वप्नवासवदत्तम् में (b) नैषधीयचरितम् में

(c) रघुवंशम् में (d) कुमारसम्भवम् में

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी,पेज-151

23. कालिदासविरचित मालविकाग्निमित्रम् नाटक में अग्निमित्र की द्वितीय पत्नी है– UGC 25 J–2001

(a) मदनिका (b) मालविका

(c) धारिणी (d) इरावती

स्रोत–कालिदास-ग्रन्थावली -ब्रह्मानन्द शास्त्री, पेज-568

24. 'इन्दुमती' किस महाकाव्य की पात्र है–UGC 25 D–2001

(a) शिशुपालवधम् की (b) रघुवंशम् की

(c) नैषधीयचरितम् की (d) किरातार्जुनीयम् की

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-151

25. 'रघुवंशमहाकाव्य' का पात्र नहीं है– UGC 25 J–2002

(a) राम (b) दिलीप

(c) भीम (d) लक्ष्मण

स्रोत– रघुवंशम् (10/81) – हरगोविन्द मिश्र, पेज-266

12. (A) 13. (A) 14. (B) 15. (B) 16. (B) 17. (A) 18. (A) 19. (B) 20. (D) 21. (A)
22. (C) 23. (D) 24. (B) 25. (C)

26. 'अग्निवर्ण' पात्र है– UGC 25 J–2003

(a) मेघदूत का (b) रघुवंश का
(c) वेणीसंहार का (d) मुद्राराक्षस का

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी,पेज-152

27. वरतन्तुशिष्यस्य कौत्सस्य वृत्तान्तमस्मिन् काव्ये निबद्धं वर्तते– UGC 25 D–2008

(a) कुमारसम्भवे (b) रघुवंशे
(c) माघे (d) किरातार्जुनीये

स्रोत–रघुवंश (5/1) - हरगोविन्द मिश्र, पेज-108

28. 'इक्ष्वाकूणां दुरापेऽर्थे त्वदधीना हि सिद्धयः' इति कः कं प्रति आह– UGC 25 D–2013

(a) वसिष्ठः दिलीपं प्रति (b) दिलीपः वशिष्ठं प्रति
(c) वसिष्ठः सुदक्षिणां प्रति (d) सुदक्षिणा दिलीपं प्रति

स्रोत–रघुवंश (1/72) - हरगोविन्द मिश्र, पेज-25

29. 'सन्ध्या' से किसकी तुलना की गयी है–UP TET–2013

(a) राजा की (b) राजा की पत्नी की
(c) मार्ग की (d) धेनु की

स्रोत–रघुवंश (2/20) - हरगोविन्द मिश्र, पेज-39

30. इक्ष्वाकुवंशी राजाओं का निरूपण प्राप्त होता है– UP TET–2014

(a) दशकुमारचरितम् में (b) रघुवंशम् में
(c) मेघदूतम् में (d) कादम्बरी में

स्रोत–रघुवंश (3/1) - हरगोविन्द मिश्र, पेज-58

31. किसका परिश्रम व्यर्थ है– UP TET–2014

(a) सिंह का (b) गाय का
(c) राजा दिलीप का (d) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–रघुवंश (2/34) - हरगोविन्द मिश्र, पेज-43

32. किसके ऊपर चलाया गया अस्त्र व्यर्थ होगा– UP TET–2014

(a) सिंह पर (b) नन्दिनी पर
(c) राजा दिलीप पर (d) वृक्ष पर

स्रोत–रघुवंश (2/34) - हरगोविन्द मिश्र, पेज-43, 44

33. रघुवंशमहाकाव्ये कस्य वंशस्य राज्ञां वर्णनं विद्यते– HAP – 2016

(a) इक्ष्वाकुवंशस्य (b) पुरुवंशस्य
(c) यदुवंशस्य (d) कुरुवंशस्य

स्रोत–रघुवंश (3/1) - हरगोविन्द मिश्र, पेज-58

34. 'योगेनान्ते तनुत्यजाम्' इतीयं पंक्तिः केन आश्रमेण सम्बद्धा– DU M.Phil–2016

(a) ब्रह्मचर्याश्रमेण (b) गृहस्थाश्रमेण
(c) वानप्रस्थाश्रमेण (d) संन्यासाश्रमेण

स्रोत–रघुवंश (1/8) - हरगोविन्द मिश्र, पेज-04-05

35. कौन लज्जा त्यागकर लौट जाय– UP TET–2014

(a) राजा दिलीप (b) सिंह
(c) गुरु (d) शिष्य

स्रोत–रघुवंश (2/33, 40) - हरगोविन्द मिश्र, पेज-43, 45

36. किसके प्रति शिष्य भक्ति प्रदर्शित करें– UP TET–2014

(a) लज्जा के प्रति (b) शस्त्र के प्रति
(c) यश के प्रति (d) गुरु के प्रति

स्रोत–रघुवंश (2/40) - हरगोविन्द मिश्र, पेज-45

37. नन्दिनी गाय ने प्रसन्न होकर वरदान दिया था– UP TET–2014

(a) धनप्राप्ति का (b) राज्यप्राप्ति का
(c) राज्य एवं धनप्राप्ति का (d) पुत्र-प्राप्ति का

स्रोत–रघुवंश (2/64) - हरगोविन्द मिश्र, पेज-53

38. रघुवंशे रघोः पिता कः? UK SLET–2015

(a) अजः (b) दिलीपः
(c) रामः (d) दशरथः

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-152

39. रघुवंश के किस सर्ग में सीतापरित्याग का वृत्तान्त है? UGC 73 J–2013

(a) पञ्चमे (b) अष्टमे
(c) चतुर्दशे (d) दशमे

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-151

26. (B)	**27. (B)**	**28. (B)**	**29. (D)**	**30. (B)**	**31. (C)**	**32. (A)**	**33. (A)**	**34. (D)**	**35. (A)**
36. (D)	**37. (D)**	**38. (B)**	**39. (C)**						

40. रघुवंशस्य चतुर्दशसर्गस्य नाम किम्? UGC 25 J–2016

(a) सीतापवादः (b) सीतापरित्यागः

(c) श्रीराममनसस्तापः (d) सीतावनवासः

स्रोत–रघुवंश - हरगोविन्द मिश्र, पेज-369

41. रघुवंशस्य कस्मिन् सर्गे दिलीपस्य गोसेवा वर्णिता? UGC 25 J–2011

(a) प्रथमे (b) द्वितीये

(c) तृतीये (d) चतुर्थे

स्रोत–रघुवंश (2/4) - हरगोविन्द मिश्र, पेज-34

42. रघुः किन्नामकं यज्ञं चकार? UGC 25 J–2011

(a) राजसूयम् (b) विश्वजित्

(c) अश्वमेधः (d) पुत्रेष्टिः

स्रोत–रघुवंश-कृष्णमणि त्रिपाठी, भू. पेज-13

43. ''श्रुतेरिवार्थं स्मृतिरन्वगच्छत्''–इत्यत्र कोऽलङ्कारः? RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014

(a) उत्प्रेक्षा (b) उपमा

(c) दृष्टान्तः (d) तुल्ययोगिता

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–160

44. (i) दिलीपस्य भार्यायाः नाम किम्? UP TET 2016, MH-SET–2016

(ii) राजा दिलीप की पत्नी का नाम है?

(a) इन्दुमती (b) सुदक्षिणा

(c) लक्ष्मी (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

स्रोत–रघुवंश (2/2) - हरगोविन्द मिश्र, पेज-33

45. दिलीपस्य गोसेवा कस्मिन् महाकाव्ये वर्णिताऽस्ति? BHU AET–2010, BHU Sh.ET–2013

(a) रघुवंशे (b) कुमारसम्भवे

(c) जानकीहरणे (d) सीताचरिते

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-151

46. 'वागर्थाविव सम्पृक्तौ'–इति कस्य ग्रन्थस्य प्रथमं पद्यम्? BHU Sh.ET–2013

(a) उत्तररामचरितस्य (b) रघुवंशस्य

(c) किरातार्जुनीयस्य (d) कुमारसम्भवस्य

स्रोत–रघुवंश (1/1) - हरगोविन्द मिश्र,पेज-02

47. 'अदूरवर्तिनीं सिद्धिं राजन्विगणयात्मनः' इस पंक्ति को कौन कहता है? BHU MET–2011, 2012

(a) वशिष्ठ (b) दिलीप

(c) कामधेनु (d) नन्दिनी

स्रोत–रघुवंश (1/86) - हरगोविन्द मिश्र, पेज-29

48. रघुवंशमहाकाव्ये अजः कस्य पुत्रः? DSSSB TGT–2014

(a) रघोः (b) पुण्डरीकस्य

(c) दिलीपस्य (d) अग्निवर्णस्य

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी,पेज-152

49. गङ्गा-यमुना के सङ्गम का वर्णन प्राप्त होता है– UP GIC–2009

(a) माघकृत शिशुपालवध में

(b) कालिदास कृत रघुवंश में

(c) भासकृत प्रतिमानाटक में

(d) भवभूतिकृत उत्तररामचरितम् में

स्रोत–रघुवंश (13/58) -हरगोविन्द मिश्र, पेज-338

50. दिलीपस्य वृत्तं कस्मिन् काव्ये अस्ति? T-SET–2014

(A) रघुवंशे (B) बुद्धचरिते

(C) किरातार्जुनीये (D) मेघदूते

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी,पेज-151

51. किस काव्य का महाभारत ग्रन्थ उपजीव्य नहीं है– UGC 73 J–2015

(a) शिशुपालवधम् (b) रघुवंशम्

(c) नैषधीयचरितम् (d) किरातार्जुनीयम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-116

52. (i) 'श्रुतेरिवार्थं स्मृतिरन्वगच्छत्'' इत्यस्ति?

(ii) 'श्रुतेरिवार्थं स्मृतिरन्वगच्छत्' प्रस्तुत श्लोकांश उद्धृत है– UGC 25 D–2009, UP TET–2013

(a) रामायणे (b) महाभारते

(c) रघुवंशे (d) वेणीसंहारे

स्रोत–रघुवंश (2/2) - हरगोविन्द मिश्र, पेज-33

40. (B) 41. (B) 42. (B) 43. (B) 44. (B) 45. (A) 46. (B) 47. (A) 48. (A) 49. (B) 50. (A) 51. (B) 52. (C)

53. ''प्रजानामेव भूत्यर्थं स ताभ्यो बलिमग्रहीत्। सहस्त्रगुणमुत्स्त्रष्टुमादत्ते हि रसं रविः॥'' यह किस ग्रन्थ में मिलता है– BHU MET–2011, 2012

(a) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (b) मेघदूतम्
(c) रघुवंशम् (d) कुमारसम्भवम्

स्रोत–रघुवंश (1/18) - हरगोविन्द मिश्र, पेज-8

54. ''श्रुतेरिवार्थं स्मृतिरन्वगच्छत्'' इस उक्ति के रचयिता कौन हैं– BHU MET–2009, 2013

(a) भारवि (b) भास
(c) भट्टनारायण (d) कालिदास

स्रोत–रघुवंश (2/2) - हरगोविन्द मिश्र, पेज-33

55. ''सञ्चारिणी दीपशिखेव' यह उपमा कालिदास के किस काव्य में है– UP TET–2014

(a) रघुवंशम् में (b) कुमारसम्भवम् में
(c) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में (d) मेघदूतम् में

स्रोत– रघुवंश (6/67) - हरगोविन्द मिश्र, पेज-158

56. (i) 'क्व सूर्यप्रभवो वंशः क्व चाल्पविषया मतिः' – पंक्ति किस ग्रन्थ से उद्धृत है?
(ii) ''क्व सूर्यप्रभवो वंशः'' कालिदास की उक्ति किस ग्रन्थ में है– UP TET–2014, 2016

(a) रघुवंश में (b) मेघदूत में
(c) कुमारसम्भव में (d) अभिज्ञानशाकुन्तल में

स्रोत–रघुवंश (1/2) - हरगोविन्द मिश्र, पेज-2

57. 'न पादपोन्मूलनशक्तिरंहः शिलोच्चये मूर्च्छति मारुतस्य॥' श्लोकांश उद्धृत है– UP TET–2014

(a) किरातार्जुनीयम् से (b) रघुवंशम् से
(c) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से (d) उत्तररामचरितम् से

स्रोत–रघुवंश (2/34) - हरगोविन्द मिश्र, पेज-43

58. ''प्रांशुलभ्ये फले लोभादुद्बाहुरिव वामनः'' यह सूक्ति किस काव्य से है– UGC 25 J–1999

(a) किरातार्जुनीयम् से (b) रघुवंशम् से
(c) शिशुपालवधम् से (d) बुद्धचरितम् से

स्रोत–रघुवंश (1/3) - हरगोविन्द मिश्र, पेज-3

59. (i) ''हेम्नः संलक्ष्यते ह्यग्नौ विशुद्धिः श्यामिकाऽपि वा '' श्लोकार्धः ...... अस्ति? UGC 25 D–1999
(ii) ''हेम्नः संलक्ष्यते ह्यग्नौ विशुद्धिः श्यामिकाऽपि वा'' यह सूक्ति किस काव्य से है– GJ SET–2016

(a) रघुवंशम् से (b) रामायणचम्पू से
(c) किरातार्जुनीयम् से (d) पञ्चतन्त्र से

स्रोत–रघुवंश (1/10) - हरगोविन्द मिश्र, पेज-5

60. ''अलं महीपाल! तव श्रमेण'' यह कथन किसने किसके लिए कहा– UGC 25 J–2004

(a) सिंह ने दिलीप से (b) दिलीप ने मन्त्री से
(c) दिलीप ने सिंह से (d) दिलीप ने गुरु से

स्रोत–रघुवंश (2/33, 34) - हरगोविन्द मिश्र, पेज-43

61. (i) ''वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये'' इत्युक्तिः–
(ii) 'वागर्थाविव सम्पृक्तौ'.....इति श्लोकेन किं महाकाव्यं आरभ्यते– UGC 25 D–2004, UGC 73 J–2016
(ii) 'वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये' श्लोकांश किस काव्य में है? T-SET–2013, MH SET–2014, K-SET–2015

(a) बुद्धचरिते (b) रघुवंशे
(c) नैषधीयचरिते (d) शिशुपालवधे

स्रोत–रघुवंश (1/1) - हरगोविन्द मिश्र, पेज-2

62. ''शैशवेऽभ्यस्तविद्यानाम्'' इत्यस्ति–UGC 25 D–2005

(a) किरातार्जुनीये (b) बुद्धचरिते
(c) मेघदूते (d) रघुवंशमहाकाव्ये

स्रोत–रघुवंश (1/8) - हरगोविन्द मिश्र, पेज-4

63. ''सञ्चारिणी दीपशिखेव रात्रौ'' इति रघुवंशमहाकाव्ये कस्मिन्सन्दर्भे वर्णितं भवति– UGC 25 D–2007

(a) दिलीपस्य गोसेवा (b) रामवनगमनम्
(c) सीताविसर्जनम् (d) इन्दुमती-स्वयंवरः

स्रोत–रघुवंश (6/67) - हरगोविन्द मिश्र, पेज-158

64. ''सन्ततिः शुद्धवंश्या हि परत्रेह च शर्मणे'' सूक्ति ग्रहण की गई है– UP PGT–2013

(a) शिशुपालवधम् से (b) रघुवंशम् से
(c) किरातार्जुनीयम् से (d) मालविकाग्निमित्रम् से

स्रोत–रघुवंश (1/69) - हरगोविन्द मिश्र, पेज-24

65. ''शस्त्रेण रक्ष्यं यदशक्यरक्ष्यं न तद्यशः शस्त्रभृतां क्षिणोति'' इयमुक्तिः कालिदासस्य कस्मिन् ग्रन्थे अस्ति– GGIC – 2015

(a) मेघदूते (b) अभिज्ञानशाकुन्तले
(c) रघुवंशे (d) कुमारसम्भवे

स्रोत–रघुवंश (2/40) - हरगोविन्द मिश्र, पेज-45

53. (C) 54. (D) 55. (A) 56. (A) 57. (B) 58. (B) 59. (A) 60. (A) 61. (B) 62. (D) 63. (D) 64. (B) 65. (C)

**66. ''ज्ञाने मौनं क्षमा शक्तौ त्यागे श्लाघाविपर्ययः।
गुणा गुणानुबन्धित्वात् तस्य सप्रसवा इव॥''
कस्य गुणाः श्लोकेऽस्मिन् उल्लिखिताः?** **UGC 25-D–2015**

(a) रघोः (b) रामस्य
(c) अजस्य (d) दिलीपस्य

स्रोत–रघुवंश (1/22) - हरगोविन्द मिश्र, पेज-9

67. पौरेषु सोऽहं बहुलीभवन्तमपां तरङ्गेष्विव तैलबिन्दुम्। सोढुं न तत्पूर्वमवर्णमीशे आलानिकं स्थाणुमिव द्विपेन्द्रः॥ रघुवंशे कस्येयमुक्तिः? **UGC 25 Jn–2017**

(a) लक्ष्मणस्य (b) रामस्य
(c) भरतस्य (d) शत्रुघ्नस्य

स्रोत–रघुवंश (14/38) - हरगोविन्द मिश्र, पेज-355

68. रघोः वंशस्य आदिमः मनुः कः? **K-SET–2015**

(a) सावर्णिमनुः (b) वैवस्वतमनुः
(c) स्वायम्भुवः (d) स्वारोचिषः

स्रोत–रघुवंश (1/11) - हरगोविन्द मिश्र, पेज-5,6

69. कस्य शापः दिलीपस्य सन्ततिप्रतिबन्धकः आसीत्? **K-SET–2015**

(a) दुर्वाससः शापः (b) विश्वामित्रस्य शापः
(c) नन्दिन्याः शापः (d) कामधेनोः शापः

स्रोत–रघुवंश (1/75-79) - हरगोविन्द मिश्र, पेज-26,27

70. अधोऽङ्कितानां युग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत– **K-SET–2015**

(क) दिलीपः 1. इन्दुमती
(ख) कुशः 2. कौसल्या
(ग) अजः 3. सुदक्षिणा
(घ) दशरथः 4. कुमुद्वती

	क	ख	ग	घ
(a)	1	2	3	4
(b)	2	1	4	3
(c)	3	4	1	2
(d)	4	3	2	1

स्रोत–रघुवंश - कृष्णमणि त्रिपाठी, भू. पेज-02,40,19,24,25

71. रघुवंशमहाकाव्यस्य उपजीव्यम् अस्ति– **T-SET–2013**

(a) महाभारतम् (b) पद्मपुराणम्
(c) रामायणम् (d) मनुस्मृतिः

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-116

72. दिलीपः किमर्थं बलिमग्रहीत्? **K-SET–2013**

(a) आत्मक्षेमाय (b) कोशरक्षणाय
(c) प्रतापवृद्धये (d) प्रजाक्षेमाय

स्रोत–रघुवंश- (1/18) - कृष्णमणि त्रिपाठी, पेज-10

73. 'उद्बाहुरिव वामनः' इत्युपमा कस्मिन्महाकाव्ये वर्तते– **GJ-SET–2013**

(a) नैषधीयचरिते (b) किरातार्जुनीये
(c) रघुवंशे (d) कुमारसम्भवे

स्रोत–रघुवंश (1/3)- हरगोविन्द मिश्र, पेज-03

74. 'मणौ वज्रसमुत्कीर्णे सूत्रस्येवास्ति मे गतिः' – इत्युक्तिः? **GJ SET–2011**

(a) दण्डिनः (b) भवभूतेः
(c) माघस्य (d) कालिदासस्य

स्रोत–रघुवंश (1/4) - हरगोविन्द मिश्र, पेज-03

75. राज्ञः दिलीपस्य पत्नी सुदक्षिणा .... राजकन्या आसीत्? **GJ SET–2016**

(a) उत्कलस्य (b) मगधस्य
(c) पाञ्चालस्य (d) विदर्भस्य

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि',पेज-213

76. 'इन्दुमती-स्वयंवर-वर्णनम्' रघुवंशस्य कस्मिन् सर्गे विद्यते? **RPSC SET–2010**

(a) प्रथमे (b) चतुर्थे
(c) अष्टमे (d) षष्ठे

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-215

77. 'क्लेशावहा भर्तुरलक्षणाहम्' इत्थं का वदति– **K SET–2014**

(a) सीता (b) कैकेयी
(c) कौसल्या (d) सुदक्षिणा

स्रोत–रघुवंश (14/05) - हरगोविन्द मिश्र, पेज-347

66. (D) 67. (B) 68. (B) 69. (D) 70. (C) 71. (C) 72. (D) 73. (C) 74. (D) 75. (B) 76. (D) 77. (A)

78. 'तितीर्षुर्दुस्तरं मोहादुडुपेनास्मि सागरम्' इति कालिदासोक्तिः रघुवंशे कुत्रास्ति? RPSC SET–2013-14

(a) चतुर्दशसर्गे (b) पञ्चमसर्गे
(c) प्रथमसर्गे (d) त्रयोदशसर्गे

स्रोत–रघुवंश (1/2) - हरगोविन्द मिश्र,पेज-02

79. आराधय सपत्नीकः प्रीता कामदुधा हि सा का– KL-SET–2016

(a) कामधेनुः (b) सुदक्षिणा
(c) मेना (d) नन्दिनी

स्रोत–रघुवंश (1/81) - हरगोविन्द मिश्र, पेज-27

80. 'प्रसादचिह्नानि पुरः फलानि।' इतीयं पंक्तिः कस्मिन् काव्ये वर्तते? MH SET–2011

(a) कुमारसम्भवे (b) रघुवंशे
(c) किरातार्जुनीये (d) शिशुपालवधे

स्रोत–रघुवंश (2/22) - हरगोविन्द मिश्र, पेज-40

81. 'यशोधनानां हि यशो गरीयः' इति पंक्तिः कस्मिन् काव्ये वर्तते– MH SET–2013

(a) रघुवंशे (b) शिशुपालवधे
(c) बुद्धचरिते (d) कुमारसम्भवे

स्रोत– रघुवंश (14/35) - हरगोविन्द मिश्र, पेज- 354

82. स्ववीर्यगुप्ता हि मनोः प्रसूतिः – इति पंक्तिः कस्मिन् काव्ये वर्तते– MH SET–2013

(a) दशकुमारचरिते (b) रघुवंशे
(c) शिशुपालवधे (d) मनुस्मृत्याम्

स्रोत–रघुवंश (2/4) - हरगोविन्द मिश्र, पेज-34

83. वागर्थाविव सम्पृक्तौ कौ? MH SET–2016

(a) रामकृष्णौ (b) पार्वति-परमेश्वरौ
(c) रामलक्ष्मणौ (d) कृष्णार्जुनौ

स्रोत–रघुवंश (1/1) - हरगोविन्द मिश्र, पेज-02

84. 'प्रजानामेव भूत्यर्थं स ताभ्यो बलिमग्रहीत्।' कः? KL SET–2014

(a) रघुः (b) दिलीपः
(c) दशरथः (d) रामः

स्रोत–रघुवंश (1/18) - हरगोविन्द मिश्र, पेज-08

85. 'शस्त्रेण रक्ष्यं यदशक्यरक्ष्यं न तद्यशः शस्त्रभृतां क्षिणोति' – कस्य वचनमिदम्? KL - SET–2014

(a) वशिष्ठस्य (b) दिलीपस्य
(c) सिंहस्य (d) रघोः

स्रोत–रघुवंश (2/33, 40) - हरगोविन्द मिश्र, पेज-43, 45

86. रघुवंशस्य त्रयोदशसर्गे का कथा वर्णिता अस्ति– KL SET–2015

(a) रावणवध (b) रामस्य अयोध्याप्रत्यागमनम्
(c) रामस्य राज्याभिषेकः (d) सीतापरित्यागः

स्रोत–रघुवंश - कृष्णमणि त्रिपाठी, भू. पेज-31

87. 'तितीर्षुर्दुस्तरं मोहादुडुपेनास्मि सागरम्' पङ्क्तौ अस्याम् 'तितीर्षुः' शब्दस्य कोऽर्थः? T-SET–2014

(a) तरितुम् इच्छुकः (b) तारयितुम् इच्छुकः
(c) तारितुम् इच्छा (d) तारयितुम् इच्छा

स्रोत–रघुवंश (1/2) - हरगोविन्द मिश्र, पेज-2,3

88. 'योगेनान्ते तनुत्यजाम्' कथनम् इदं केषां सन्दर्भे प्रयुक्तम्? T-SET–2014

(a) रघूणाम् (b) इक्ष्वाकूनाम्
(c) गान्धर्वाणाम् (d) पाण्डवानाम्

स्रोत–रघुवंश (1/5, 8) - हरगोविन्द मिश्र, पेज-05

89. राजा दिलीपः किमर्थं राज्यभारं सचिवेषु निचिक्षिवे– T-SET–2013

(a) तीर्थयात्रागमनाय (b) भोगविलासाय
(c) संतानार्थाय विधये (d) युद्धार्थं गमनाय

स्रोत–रघुवंश - कृष्णमणि त्रिपाठी, भू. पेज-1,2

90. रघुवंशस्य .... सर्गे राज्ञः दिलीपस्य गोसेवाचरणव्रतं वर्णितमस्ति– GJ SET–2003

(A) प्रथमे (B) द्वितीये
(C) चतुर्दशे (D) षोडशे

स्रोत–रघुवंश - कृष्णमणि त्रिपाठी, भू. पेज–4, 5

91. ''वैदेहिबन्धोर्हृदयं विदद्रे'' – इत्यत्र कस्तावत् वैदेहिबन्धुः– UGC 25 J–2015

(A) रामः (B) लक्ष्मणः
(C) रावणः (D) भरतः

स्रोत– रघुवंशम् (14/33) - हरगोविन्द मिश्र, पेज–354

78. (C)	79. (D)	80. (B)	81. (A)	82. (B)	83. (B)	84. (B)	85. (C)	86. (B)	87. (A)
88. (A)	89. (C)	90. (B)	91. (A)						

04 कुमारसम्भवम्

1. (i) 'कुमारसम्भव' महाकाव्य किस कवि ने लिखा है?
   (ii) 'कुमारसम्भवमहाकाव्य' के रचयिता कौन हैं?
   BPSC–2002, BHU MET–2010
   (A) बाणभट्ट (B) चन्दवरदाई
   (C) हरिषेण (D) कालिदास

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-209

2. कुमारसम्भवमहाकाव्ये कति सर्गाः सन्ति?
   BHU B.Ed–2012, DSSSB–TGT–2014
   (A) पञ्चदश (B) अष्टादश
   (C) सप्तदश (D) द्वादश

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-209

3. कुमारसम्भवमहाकाव्यस्य कस्मिन् सर्गे हिमालयवर्णनमस्ति?
   BHU AET–2010
   (A) तृतीये (B) प्रथमे
   (C) चतुर्थे (D) द्वितीये

स्रोत–कुमारसम्भव (प्रथमसर्ग)- राजेश्वरशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज-1

4. (i) कस्मिन् काव्ये हिमालयवर्णनं प्रथमतः?
   (ii) कस्मिन् काव्ये आदौ हिमालयस्य वर्णनं भवति?
   UGC 73 J–2008, BHU Sh.ET–2011, DSSSB PGT–2014
   (A) रघुवंशे (B) मालविकाग्निमित्रे
   (C) कुमारसम्भवे (D) मेघदूते

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि',पेज-211

5. 'शिव-पार्वत्योः' चर्चा कस्मिन् ग्रन्थे दृश्यते?
   BHU B.Ed–2015
   (A) रघुवंशे (B) मेघदूते
   (C) ऋतुसंहारे (D) कुमारसम्भवे

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-209

6. (i) कुमारसम्भवमहाकाव्ये कुमारः वर्तते–
   (ii) कुमारसम्भवमहाकाव्ये कुमारस्य प्रयोगः कस्य कृते अस्ति?
   RPSC ग्रेड-II (TGT)–2010, AWES TGT–2009
   (A) कार्तिकेयस्य (B) गणेशस्य
   (C) भरतस्य (D) इन्द्रपुत्रस्य

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास -उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-209

7. 'कुमारसम्भव' में किस राक्षस का वध वर्णित है?
   BHU MET–2010
   (A) नरकासुर (B) त्रिपुरासुर
   (C) बकासुर (D) तारकासुर

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास -उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-209

8. कुमारसम्भवे उमातपोवर्णनं कस्मिन् सर्गे कृतम्?
   JNU MET–2014
   (A) प्रथमे (B) षष्ठे
   (C) सप्तमे (D) पञ्चमे

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि',पेज-211

9. ''स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः'' अत्र अलङ्कारोऽस्ति?
   MP वर्ग-2 (TGT)–2011
   (A) उत्प्रेक्षा (B) उपमा
   (C) रूपकम् (D) अतिशयोक्ति

स्रोत–कुमारसम्भव (1/1) - राजेश्वरशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज-1-4

10. (i) ''एको हि दोषो गुणसन्निपाते निमज्जतीन्दोः किरणेष्विवाङ्कः'' उपर्युक्त सूक्ति कहाँ मिलती है?
    (ii) 'एको हि दोषो गुणसन्निपाते निमज्जतीन्दोः किरणेष्विवाङ्कः' इति सूक्तिः अस्मिन् काव्ये उपलभ्यते–
    BHU MET–2009, 2013, GGIC–2015
    (A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (B) किरातार्जुनीयम्
    (C) रघुवंशम् (D) कुमारसम्भवम्

स्रोत–कुमारसम्भव (1/3) - राजेश्वरशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज-7

11. (i) ''शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्'' कस्मिन् काव्ये प्रोक्तम् ?
    (ii) ''शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्'' सूक्ति है–
    (iii) 'शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्' कस्मिन् काव्ये सूचितम्?
    (iv) 'शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्' इति कुत्र वर्तते?
    UP PGT–2004, UGC 25 D–2010
    BHU B.Ed–2014, 2015
    (A) रघुवंशे (B) कुमारसम्भवे
    (C) अभिज्ञानशाकुन्तले (D) विक्रमोर्वशीये

स्रोत–कुमारसम्भव (5/33) - वेम्पटि कुटुम्ब शास्त्री, पेज-114

1. (D) 2. (C) 3. (B) 4. (C) 5. (D) 6. (A) 7. (D) 8. (D) 9. (A) 10. (D) 11. (B)

12. ''अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयो नाम नगाधिराजः'' यह पंक्ति कहाँ प्राप्त होती है?
BHU MET–2011, UGC 73 Jn–2017

(A) मेघदूतम् (B) रघुवंशम्
(C) कुमारसम्भवम् (D) ऋतुसंहारम्

स्रोत–कुमारसम्भव (1/1) - राजेश्वरशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज-1

13. क्षुद्रेऽपि नूनं शरणं प्रपन्ने ममत्वमुच्चैः शिरसां सतीव – यह पंक्ति कहाँ प्राप्त होती है? BHU MET–2016

(A) मेघदूत (B) रघुवंश
(C) कुमारसम्भव (D) ऋतुसंहार

स्रोत–कुमारसम्भव (1/12) - राजेश्वरशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज-25

14. 'क्लेशः फलेन हि पुनर्नवतां विधत्ते' इयं पंक्ति अस्ति–
RPSC ग्रेड -II (TGT)–2010

(A) कादम्बर्याः (B) कुमारसम्भवस्य
(C) नीतिशतकस्य (D) हितोपदेशस्य

स्रोत–कुमारसम्भव (5/86) - वेम्पटि कुटुम्ब शास्त्री, पेज-137

15. ''स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः'' उक्ति है–
UGC 73 J–1999

(A) रघुवंशम् की (B) शिशुपालवधम् की
(C) कुमारसम्भवम् की (D) किरातार्जुनीयम् की

स्रोत–कुमारसम्भव (1/1) - राजेश्वरशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज-1

16. 'शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्' एषा उक्तिः कस्य काव्यस्य? AWES TGT–2012

(A) कुमारसम्भवम्/ब्रह्मचारी (B) नैषध/नल
(C) नैषध/दमयन्ती (D) नैषध/हंस

स्रोत–कुमारसम्भव (5/33) - सुधाकर मालवीय, पेज-132

17. (i) 'न धर्मवृद्धेषु वयः समीक्ष्यते' – इस उक्ति के रचयिता कौन हैं? H TET–2015
(ii) 'न धर्मवृद्धेषु वयः समीक्ष्यते' – यह वचन किस कवि के हैं? BHU MET–2016

(A) भास (B) व्यास
(C) कालिदास (D) भवभूति

स्रोत–कुमारसम्भव (5/16) - वेम्पटि कुटुम्ब शास्त्री, पेज-107

18. शिव पार्वती विवाह, कार्तिकेय जन्म व कार्तिकेय द्वारा तारकासुर वध – ये समस्त घटनायें किस महाकाव्य की ओर सङ्केत कर रही हैं? H TET–2015

(A) किरातार्जुनीयम् (B) रघुवंशम्
(C) कुमारसम्भवम् (D) नैषधीयचरितम्

संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-209

19. 'प्रियेषु सौभाग्यफला हि चारुता' – इस उक्ति के रचयिता कौन हैं? BHU MET–2016

(A) भारवि (B) भट्टनारायण
(C) भास (D) कालिदास

स्रोत–कुमारसम्भव (5/1) - वेम्पटि कुटुम्ब शास्त्री,पेज-101

20. 'मनोरथानामगतिर्न विद्यते' - कस्येदं वाक्यम्?
KL SET–2016

(A) मेनायाः (B) पार्वत्याः
(C) ब्रह्मचारिणः (D) सख्याः

स्रोत–कुमारसम्भव (5/64) -सुधाकर मालवीय, पेज-147

21. कुमारसम्भवम् महाकाव्यस्य प्रारम्भः कीदृग्विधेन मङ्गलाचरणेन अस्ति? MGKV Ph. D–2016

(A) नमस्कारात्मकेन (B) आशीर्वादात्मकेन
(C) वस्तुनिर्देशात्मकेन (D) न केनापि

स्रोत– कुमारसम्भव - राजेश्वरशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज-01

12. (C) 13. (C) 14. (B) 15. (C) 16. (A) 17. (C) 18. (C) 19. (D) 20. (B) 21. (C)

05 किरातार्जुनीयम्

1. (i) किरातार्जुनीयम् के रचनाकार हैं– UGC 73 J–2009
(ii) 'किरातार्जुनीयम्' के कर्ता हैं– UP TGT–2011 BHU MET–2008

(A) माघ (B) भामह
(C) श्रीहर्ष (D) भारवि

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-243

2. (i) 'किरातार्जुनीयम्' महाभारत के किस पर्व से लिया गया है? UP TGT–2001, 2003, 2013,
(ii) किरातार्जुनीयमहाकाव्यस्य कथावस्तु कुतः गृहीतम्? UGC 25 J–2016

(A) आदिपर्व से (B) वनपर्व से
(C) विराटपर्व से (D) शान्तिपर्व से

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-243

3. महाभारत पर आधारित ग्रन्थ है– UGC 25 D–2002

(A) रघुवंशम् (B) दशकुमारचरितम्
(C) किरातार्जुनीयम् (D) बुद्धचरितम्

संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-243

4. (i) किरातार्जुनीयमहाकाव्ये कति सर्गाः सन्ति?
(ii) 'किरातार्जुनीयम्' ग्रन्थ में कुल कितने सर्ग हैं?
(iii) भारविकाव्ये सर्गाणां संख्या वर्तते?
(iv) किरातार्जुनीयम् में समस्त सर्गों की संख्या है–
(v) किरातार्जुनीयस्य काव्यस्य सर्गाः–
UP TGT–2001, 2005, 2009, 2010, 2013, BHU MET–2008, 2009, 2013, UP TET–2013, 2014, AWES TGT–2010, 2011, GJ SET–2007 RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014

(A) 15 (B) 20
(C) 18 (D) 22

संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-243

5. 'किरातार्जुनीयम्' का प्रथम पद्य किस छन्द में है? UP TGT–2009, UP PGT (H)–2000

(A) वंशस्थ (B) उपजाति
(C) आर्या (D) मालिनी

स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/1)-रामसेवक दुबे, पेज-45

6. (i) 'किरातार्जुनीयम्' महाकाव्य के प्रथम सर्ग में प्रमुखता से प्रयुक्त छन्द कौन-सा है? UP TGT–2009
(ii) 'किरातार्जुनीयम्' के प्रथम सर्ग में छन्द है– BHU MET–2011, 2012, 2016 UP TET–2016, UP GIC–2009

(A) वसन्ततिलका (B) उपेन्द्रवज्रा
(C) वंशस्थ (D) उपजाति

स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/1)-रामसेवक दुबे, पेज-45

7. (i) 'किरातार्जुनीयम्' में किरात है–
(ii) किरातार्जुनीयम् में 'किरात' शब्द किसका बोधक है?
(iii) किरातार्जुनीये किरातः कः? UP TGT–2004, 2005, 2009 UGC 25 J–2007, 2014

(A) गणेशः (B) शिवः
(C) राहुः (D) युधिष्ठिरः

संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-243

8. (i) वनेचर किस वन में युधिष्ठिर के पास आया?
(ii) वनेचरः युधिष्ठिरं कस्मिन् स्थाने समाययौ? UP TGT–2009, T SET–2013

(A) विन्ध्याटवी में (B) द्वैतवन में
(C) दण्डकारण्य में (D) पञ्चवटी में

स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/1)–रामसेवक दुबे, पेज-39

9. (i) 'कुरूणामधिपः' का तात्पर्य है–UP TGT–2009,
(ii) किरातार्जुनीयम् में 'कुरूणामधिपस्य' शब्द प्रयुक्त किया गया है– UP PGT–2010, UK TET–2011

(A) अर्जुन (B) भीम
(C) दुर्योधन (D) दुःशासन

स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/1)–रामसेवक दुबे, पेज-39

1. (D)	2. (B)	3. (C)	4. (C)	5. (A)	6. (C)	7. (B)	8. (B)	9. (C)

10. (i) किरातार्जुनीये प्रतिसर्गस्यान्तिमं पदमस्ति–
(ii) 'किरातार्जुनीयम्' के प्रत्येक सर्ग का अन्तिम पद है–
UGC 25 D–2001, J – 2011, 2014, UP TGT–2009
(A) लक्ष्मी (B) विभु
(C) शिव (D) श्री
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि' , पेज-244

11. वीररस प्रधान काव्य है– UP TGT–2010
(A) उत्तररामचरितम् (B) नैषधीयचरितम्
(C) कुमारसम्भवम् (D) किरातार्जुनीयम्
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-244

12. (i) 'किरातार्जुनीयम्' शब्द निष्पन्न होता है– HE–2015
(ii) 'किरातार्जुनीयम्' शब्दे कः प्रत्यय?
UP TGT–2013, UP GIC–2009
(A) छ प्रत्यय (B) ङीप् प्रत्यय
(C) ल्युट् प्रत्यय (D) युच् प्रत्यय
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि' , पेज-243

13. 'किरातार्जुनीयम्' के प्रथम सर्ग में वनेचर वार्तालाप कर रहा है– UP TET–2014
(A) दुर्योधन से (B) युधिष्ठिर से
(C) अर्जुन से (D) नकुल से
स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/1)–रामसेवक दुबे ,पेज-39

14. किरातः कस्य महाकाव्यस्य पात्रम् अस्ति?
RPSC SET–2010
(A) रघुवंशस्य (B) किरातार्जुनीयस्य
(C) नैषधस्य (D) बुद्धचरितस्य
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-243

15. 'किरातार्जुनीयम्' महाकाव्य किस पर आधारित है?
BHU MET–2009, 2013
(A) श्रीमद्भागवत (B) विष्णुपुराण
(C) महाभारत (D) रामायण
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास -उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-243

16. 'किरातार्जुनीयम्' का नायक कौन है? UP TGT–2013
(A) युधिष्ठिर (B) अर्जुन
(C) शिव (किरातवेशधारी) (D) भीम
स्रोत–किरातार्जुनीयम् - रामसेवक दुबे, पेज-24

17. (i) किरातार्जुनीये अङ्गीरसः? UP TGT–2013
(ii) 'किरातार्जुनीयम्' का प्रधान रस क्या है?
UP TGT (H)–2005, GJ SET–2003
(A) शृङ्गाररस (B) करुणरस
(C) वीररस (D) शान्तरस
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशङ्कर शर्मा ' ऋषि', पेज-244

18. द्वैतवन में गुप्तचर किसके पास लौटा? UP TGT–2004
(A) दुर्योधन (B) युधिष्ठिर
(C) गुप्तचर (D) द्रौपदी
स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/1) - रामसेवक दुबे,पेज-39

19. 'श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीम्' किस प्रकार का मङ्गलाचरण है? UP TGT–2011
(A) आशीर्वादात्मक (B) नमस्कारात्मक
(C) वस्तुनिर्देशात्मक (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं
स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/1) - रामसेवक दुबे,पेज- 44

20. 'अदेवमातृकाः' का प्रयोग किस ग्रन्थ में है?
UP TGT–1999
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् चतुर्थ अङ्क में
(B) किरातार्जुनीयम् प्रथमसर्ग में
(C) उत्तररामचरितम् तृतीय अङ्क में
(D) कादम्बरी शुकनासोपदेश में
स्रोत– किरातार्जुनीयम् (1/17) - रामसेवक दुबे,पेज-84

21. ''स वर्णिलिङ्गी विदितः समाययौ। युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचरः'' इस श्लोक में 'वर्णिलिङ्गी' शब्द का अर्थ है– UP TGT–2003
(A) ब्रह्मचारी (B) किरात
(C) देवयोनि विशेष (D) विपरीतलिङ्ग वाला
स्रोत– किरातार्जुनीयम् (1/1) - रामसेवक दुबे,पेज-43

22. 'किरातार्जुनीयम्' काव्य में दुर्योधन अपनी श्रेष्ठता प्रदर्शित करने के लिए जो आचरण करता है, वह आचरण/नीति निर्धारित है– UP TGT–2003
(A) बृहस्पति के द्वारा (B) नारद के द्वारा
(C) मनु के द्वारा (D) कामन्दक के द्वारा
स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/9) - रामसेवक दुबे,पेज-64

10. (A) 11. (D) 12. (A) 13. (B) 14. (B) 15. (C) 16. (B) 17. (C) 18. (B) 19. (C) 20. (B) 21. (A) 22. (C)

23. (i) दुर्योधनस्य शासनव्यवस्थां ज्ञातुं युधिष्ठिरेण कः प्रेषितः? HAP –2016, UP TGT–2004
(ii) 'किरातार्जुनीयम्' में दुर्योधन की शासन व्यवस्था जानने के लिये किसे भेजा गया था?
(A) सहदेवः (B) वनेचरः
(C) नकुलः (D) धृष्टद्युम्नः
स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/1) - रामसेवक दुबे,पेज-39

24. दुर्योधन कुरु की प्रजा को प्रसन्न करने के लिए जो विशेष व्यवस्था करता है, वह सम्बन्धित है– UP TGT–2003
(A) करों को उदार बनाने में
(B) उपहार बाँटने में
(C) कृष्ण के साथ सम्बन्धों को सुधारने में
(D) सिंचाई व्यवस्था को उन्नत करने में
स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/17) - रामसेवक दुबे,पेज-84

25. 'मखेष्वखिन्नोऽनुमतः पुरोधसा, धिनोति हव्येन हिरण्यरेतसम्'–प्रस्तुत श्लोक में 'हिरण्यरेतसम्' का अर्थ है? UP TGT–2003
(A) अग्नि (B) इन्द्र
(C) कुबेर (D) ब्रह्मा
स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/22) - रामसेवक दुबे,पेज-96-98

26. 'किरातार्जुनीयम्' में दुर्योधन की तुलना की गई है– UP TGT–2004
(A) उरग से (B) शुक से
(C) द्विप से (D) सिंह से
स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/24) - रामसेवक दुबे,पेज-100

27. (i) 'किरातार्जुनीयम्' में गुप्तचर किस वेष में जाता है?
(ii) किरातार्जुनीयम् का गुप्तचर किस वेष में हस्तिनापुर जाता है? UP TGT–2004, 2010
(A) सैनिक (B) संन्यासी
(C) ब्रह्मचारी (D) मन्त्री
स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/1) - रामसेवक दुबे,पेज-39

28. 'प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः'–यहाँ 'मादृशां' से तात्पर्य है? UP TGT–2004
(A) भीम (B) युधिष्ठिर
(C) गुप्तचर (D) द्रौपदी
स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/25)-रामसेवक दुबे,पेज-103, 105

29. किरातार्जुनीयस्य कः पाकः प्रथितः? K-SET–2015
(A) द्राक्षापाकः (B) कदलीपाकः
(C) आमलकीपाकः (D) नारिकेलपाकः
स्रोत–किरातार्जुनीयम् - रामसेवक दुबे,भू0 पेज-21

30. ब्रह्मचारी विप्र का वेषधारण करने वाला गुप्तचर था– UP TGT–2011
(A) यक्ष (B) वनेचर
(C) ब्राह्मण (D) वैश्य
स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/1) - रामसेवक दुबे,पेज-39

31. धन जीतकर युधिष्ठिर को कौन देता था? UP TGT–2004
(A) भीम (B) नकुल
(C) सहदेव (D) अर्जुन
स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/35)-रामसेवक दुबे,पेज-124-125

32. 'किरातार्जुनीयम्' में किस विषय का चमत्कारित्व है? UP TGT–2004
(A) रचनाशैली (B) अर्थगौरव
(C) उपमा (D) श्लेष
स्रोत–किरातार्जुनीयम् - रामसेवक दुबे,भू. पेज-31

33. 'वनेचर' शब्द का संस्कृत प्रतिशब्द होगा–UP TGT–2004
(A) ब्रह्मचारी (B) गुप्तचर
(C) वर्णिलिङ्गी (D) दूत
स्रोत–किरातार्जुनीयम् -रामसेवक दुबे, पेज-43

34. (i) किरातार्जुनीयम् में अर्जुन भगवान् शङ्कर से किस अस्त्र की प्राप्ति करते हैं?
(ii) 'किरातार्जुनीयम्' में अर्जुन को कौन-सा प्रसिद्ध अस्त्र प्राप्त हुआ है– UP TGT–2004, UP TET–2016
(A) गाण्डीव (B) पाशुपतास्त्र
(C) अग्निबाण (D) जृम्भकास्त्र
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-243

35. ''सहसा विदधीत न क्रियाम्'' इस वाक्य का हिन्दी में अनुवाद होगा– UP TGT–2004
(A) हठपूर्वक कार्य मत करो (B) हठपूर्वक कार्य करें
(C) सहसा कार्य करें (D) सहसा कार्य न करें
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-250

23. (B)	24. (D)	25. (A)	26. (A)	27. (C)	28. (C)	29. (D)	30. (B)	31. (D)	32. (B)
33. (B)	34. (B)	35. (D)							

36. 'किरातार्जुनीयम्' में 'अदेवमातृकाः' कौन हैं? UP TGT–2005

(A) नदी जलाशय एवं नहरों से सिंचाई करने वाले
(B) बादलों की वर्षा पर निर्भर रहने वाले
(C) देवताओं की कृपा प्राप्ति के लिए यज्ञानुष्ठान करने वाले
(D) राक्षसी शक्तियों के भरोसे कार्य सिद्ध करने वाले

स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/17) - रामसेवक दुबे, पेज-84, 85

37. वनेचर की बात सुनने के बाद युधिष्ठिर कहाँ पहुँचे? UP TGT–2005

(A) अपने विश्रामगृह में (B) द्रौपदी के समीप
(C) व्यास के समीप (D) पर्वत पर

स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/26) - रामसेवक दुबे, पेज-106

38. किस प्रकार के वचन दुर्लभ होते हैं? UP TGT–2005

(A) प्रिय किन्तु असत्य (B) हितकारी और मनोहर
(C) हानिकारक और कठोर (D) सत्य और प्रिय

स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/4) - रामसेवक दुबे, पेज-50

39. 'कथं त्वमेतौ धृतिसंयमौ यमौ विलोकयन्नुत्सहसे न बाधितुम्' इस श्लोक में 'यमौ' किस युग्म के लिए प्रयुक्त है? UP TGT–2005

(A) राम-लक्ष्मण (B) नकुल-सहदेव
(C) भीम-अर्जुन (D) बलराम-कृष्ण

स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/36) - रामसेवक दुबे, पेज-127

40. महापुरुषों के साथ कैसा विरोध भी अच्छा होता है– UP TGT–2005

(A) महापुरुषों को पराजित करने वाला
(B) धन सम्पत्ति दिलाने वाला
(C) उन्नति कराने वाला
(D) मित्रता बढ़ाने वाला

स्रोत– किरातार्जुनीयम् (1/8) - रामसेवक दुबे, पेज-61

41. दुर्योधन यज्ञ कार्य में कैसे लगा रहता है? UP TGT–2005

(A) चारों ओर सैनिक नियुक्त करके
(B) शत्रुओं को कैद करके
(C) मित्रों को उपकृत करके
(D) दुःशासन को युवराज पद पर बैठा करके

स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/22) - रामसेवक दुबे, पेज-96

42. दुर्योधन कब भयभीत हो जाता है? UP TGT–2005

(A) श्रीकृष्ण की माया शक्ति सोचकर
(B) युधिष्ठिर का नाम सुनकर
(C) पाण्डवों की दैवीय शक्ति से
(D) विदुर के उपदेश सुनकर

स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/23) - रामसेवक दुबे, पेज-98

43. ''महीभुजे'' में कौन-सी विभक्ति है– UP TGT–2009

(A) प्रथमा (B) चतुर्थी
(C) षष्ठी (D) सप्तमी

स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/2) - रामसेवक दुबे, पेज-46

44. 'विघाताय' में कौन-सी धातु है– UP TGT–2009

(A) धा (B) तन्
(C) हन् (D) गम्

स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/3) - रामसेवक दुबे, पेज-49

45. 'कृतप्रणामः' में कौन-सा समास है– UP TGT–2010

(A) तत्पुरुष (B) कर्मधारय
(C) द्वन्द्व (D) बहुव्रीहि

स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/2) - रामसेवक दुबे, पेज-45,46

46. 'वनेचरः' में कौन-सा प्रत्यय है? UP TGT–2010

(A) घञ् (B) ष्यञ्
(C) ट (D) मनिन्

स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/1) - रामसेवक दुबे, पेज-43

47. किस महाकाव्य के प्रत्येक सर्ग के अन्त में 'लक्ष्मी' शब्द का प्रयोग किया गया है? UP TGT–2010

(A) रघुवंशम् (B) शिशुपालवधम्
(C) किरातार्जुनीयम् (D) नैषधीयचरितम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-244

48. (i) 'किरातार्जुनीयम्' प्रथम सर्ग के अन्त्य श्लोक में कौन-सा छन्द है? UP PGT–2010,
(ii) 'विधिसमयनियोगाद्दीप्तिसंहारजिह्मम्' में छन्द है– UK TET–2011

(A) उपजाति (B) वंशस्थ
(C) वसन्ततिलका (D) मालिनी

स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/46) - रामसेवक दुबे, पेज-148,153

36. (A)	37. (B)	38. (B)	39. (B)	40. (C)	41. (D)	42. (B)	43. (B)	44. (A)	45. (D)
46. (C)	47. (C)	48. (D)							

49. 'कृषीवल' से तात्पर्य है– UP PGT–2010

(A) कृषि से (B) किसान से

(C) सिंचाई के साधन से (D) वृष्टि से

स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/17) - रामसेवक दुबे, पेज-84, 86

50. 'नारीसमया' में 'समया' से तात्पर्य है– UP PGT–2010

(A) समान (B) माया वाली

(C) समय (D) मर्यादा

स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/28)-रामसेवक दुबे, पेज-110-111

51. 'यमौ' कौन हैं? UP TET–2013

(A) युधिष्ठिर (B) भीम

(C) अश्विनी पुत्र (नकुल एवं सहदेव) (D) अर्जुन

स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/36)-रामसेवक दुबे, पेज-127-128

52. भीम किसके पुत्र हैं? UP TET–2013

(A) धर्मराज के (B) वायु के

(C) अग्नि के (D) इन्द्र के

स्रोत–महाभारत आदिपर्व (121 /14)-गीताप्रेस, पेज-422

53 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः'–यह किस ग्रन्थ की उक्ति है? UP TGT–2010

(A) शिशुपालवधम् (श्रीकृष्ण) (B) हर्षचरितम् (राज्यश्री)

(C) किरातार्जुनीयम् (वनेचर) (D) किरातार्जुनीयम् (युधिष्ठिर)

स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/4)- रामसेवक दुबे, पेज-50

54. तवाभिधानाद् व्यथते नताननः, स दुःसहान्मन्त्रपदादिवोरगः' – इत्यत्र 'नताननः' कः? UGC 25 J–2013

(A) सुयोधनः (B) धर्मराजः

(C) वनेचरः (D) भीमसेनः

स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/24) - रामसेवक दुबे, पेज-100

55. 'कथं न मन्युर्ज्वलयत्युदीरितः, शमीतरुं शुष्कमिवाग्निरुच्छिखः।' इत्युक्त्या कः प्रेरितः? UGC 25 J–2014

(A) अर्जुनः (B) युधिष्ठिरः

(C) वनेचरः (D) सुयोधनः

स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/32) - रामसेवक दुबे, पेज-118

56. अर्जुन किसमें नायक के रूप में वर्णित हैं? BHU MET–2010

(A) किरातार्जुनीयम् (B) शिशुपालवधम्

(C) कुमारसम्भवम् (D) नैषधीयचरितम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-244

57. (i) किरातार्जुनीयम् शीर्षक में प्रयुक्त 'किरात' शब्द किसके लिये प्रयुक्त हुआ है? UP GDC–2008

(ii) भारविरचित 'किरातार्जुनीयम्' में 'किरात' से क्या अभिप्राय है? UP TGT–2011

(A) प्रथमसर्ग का वनेचर जो ब्रह्मचारी के वेश में गुप्तचर है।

(B) महाकाव्य के अगले सर्गों में जिन किरात-किरातिनियों का वर्णन किया गया है।

(C) किरातवेशधारी शिव।

(D) पाण्डुपुत्र जो गुप्तवेश में दर-दर भटकते हैं।

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-243

58. 'कीदृशं वचः दुर्लभं भवति।' उचित शब्द का चयन कर पंक्ति पूर्ण करें– UP TET–2014

(A) सत्यम् (B) प्रियम्

(C) हितं मनोहारि च (D) मनोहारि

स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/4) - रामसेवक दुबे, पेज-50

59. (i) किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग के आधार पर पाण्डव कहाँ निवास कर रहे थे?

(ii) महाकवि भारवि के महाकाव्य में पाण्डवों ने अपना निवासस्थान बनाया– UP TET–2014, UP TGT–2011

(A) शान्तिवन में (B) द्वैतवन में

(C) तुलसीवन में (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत– किरातार्जुनीयम् (1/1) - रामसेवक दुबे, पेज-39

60. अर्थगौरवसम्पन्नं काव्यं किं नाम भारवेः? BHU AET–2012

(A) जानकीहरणम् (B) किरातार्जुनीयम्

(C) सौन्दरनन्दम् (D) रामचरितम्

स्रोत– किरातार्जुनीयम् - रामसेवक दुबे, भू.पेज-31

49. (B) 50. (D) 51. (C) 52. (B) 53. (C) 54. (A) 55. (B) 56. (A) 57. (C) 58. (C) 59. (B) 60. (B)

61. ''प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः'' इत्यत्र 'खलु' अव्ययस्य अर्थ अस्ति? RPSC ग्रेड-II TGT–2014
(A) अनुनयः (B) जिज्ञासा
(C) विनिग्रहः (D) निश्चयः
स्रोत– किरातार्जुनीयम् (1/25) - राजेन्द्र मिश्र, पेज-90

62. ''भवादृशेषु प्रमदाजनोदितं भवत्यधिक्षेप इवानुशासनम्। तथापि वक्तुं व्यवसाययन्ति मां निरस्तनारीसमया दुराधयः॥'' इस पद्य में 'मां' पद से किसको कहा गया है? BHU MET–2012
(A) द्रौपदी (B) शकुन्तला
(C) सीता (D) लक्ष्मी
स्रोत– किरातार्जुनीयम् (1/28)-रामसेवक दुबे, पेज-110-111

63. 'अबन्ध्यकोपस्य विहन्तुरापदां, भवन्ति वश्याः स्वयमेव देहिनः' इस पंक्ति में 'अबन्ध्यकोपस्य' का क्या अर्थ है? BHU MET–2012
(A) सफल क्रोध वाले (B) मृषा क्रोध वाले
(C) मुक्त कोप वाले (D) व्यर्थ क्रोध वाले
स्रोत– किरातार्जुनीयम् (1/33)-रामसेवक दुबे, पेज-120-121

64. 'किरातार्जुनीयम्' के प्रथमसर्ग में प्रयुक्त छन्द में प्रयुक्त गण हैं? UP TGT–2013
(A) जगण तगण जगण रगण
(B) जगण तगण जगण दो गुरुवर्ण
(C) तगण तगण जगण गुरु गुरु
(D) तगण भगण जगण जगण गुरु गुरु
स्रोत– किरातार्जुनीयम् - रामसेवक दुबे, पेज-45

65. 'स वल्कवासांसि तवाधुना हरन्' – कः? K-SET–2013
(A) अर्जुनः (B) भीमः
(C) नकुलः (D) सहदेवः
स्रोत– किरातार्जुनीयम् (1/35) - रामसेवक दुबे, पेज-124-125

66. 'किरातार्जुनीयम्' प्रथमसर्ग के कथानक में निम्नलिखित में से क्या नहीं है? UP TGT–2013
(A) द्वैतवन में निवास
(B) गुप्तचर द्वारा दुर्योधन का वृत्तान्त
(C) द्रौपदी का क्रोध
(D) द्रौपदी के क्रोध का युधिष्ठिर द्वारा समर्थन
स्रोत– संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-243

67. 'न्यायधारा हि साधवः' का अर्थ है– UP PGT–2010, UK TET–2011
(A) न्याय की धारा अच्छी होती है।
(B) न्याय की धारा साधुओं की धारा है।
(C) सज्जन न्यायमार्ग का ही आश्रय लेते हैं।
(D) सज्जन न्यायमार्ग का परित्याग करते हैं।
स्रोत– किरातार्जुनीयम् (11/30)- सुधाकर मालवीय, पेज-313

68. किरातार्जुनीयम् का कथानक लिया गया है– UP TET–2014
(A) रामायण से (B) महाभारत से
(C) पुराणों से (D) गीता से
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-243

69. यस्य कथा रामायणाश्रिता नास्ति– UGC 25 J–2015
(A) रघुवंशस्य (B) भट्टिकाव्यस्य
(C) जानकीहरणस्य (D) किरातार्जुनीयस्य
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-243

70. ''पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम्''– इस सूक्ति के रचयिता हैं– UP PGT–2000, UP TGT–2009
(A) कालिदास (B) माघ
(C) भारवि (D) भर्तृहरि
स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/41) - रामसेवक दुबे, पेज-138

71. (i) ''हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः'' यह कथन किससे सम्बन्धित है? UPPGT-2002,2013, UGC 25 J-1999,
(ii) हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः' यह सूक्ति किस ग्रन्थ की है? 1998, D–1996, 2013, 2004,
(iii) 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः' यह सूक्ति किस काव्य की है? UP TGT–1999, 2001, 2010,
(iv) 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः' इति श्लोकांशः कुत्र प्राप्यते? RPSC SET–2010, UP GIC–2009, BHU B. Ed–2013 BHU MET–2009, 2013, UP TET–2013, K-SET–2014, UGC 73 D–2008
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (B) किरातार्जुनीयम्
(C) नैषधीयचरितम् (D) मेघदूतम्
स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/4) - रामसेवक दुबे, पेज-50

61. (D) 62. (A) 63. (A) 64. (A) 65. (A) 66. (D) 67. (C) 68. (B) 69. (D) 70. (C) 71. (B)

72. ''अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता'' यह उक्ति किसने कही है? UP PGT–2002

(A) भीम (B) द्रौपदी

(C) दुर्योधन (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/23) - रामसेवक दुबे, पेज-98

73. 'हितं मनोहारि च दुर्लभम्' का अर्थ है–UP TGT–2011

(A) हितकारी वचन दुर्लभ होता है।

(B) मनोहारि वचन दुर्लभ होता है।

(C) हितकारी और प्रियवचन दुर्लभ होता है।

(D) दुर्लभ वचन ही हितकारी होता है।

स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/4) - रामसेवक दुबे, पेज-50-51

74. 'वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः' के अनुसार खलजनों के सम्पर्क की अपेक्षा श्रेष्ठ होता है– UP TGT–2011

(A) साधुजनों का साथ (B) साधुजनों का विरोध

(C) दुष्टजनों का साथ (D) मूर्ख लोगों का विरोध

स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/8) - रामसेवक दुबे, पेज-61

75. ''अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता'' यह उक्ति कहाँ प्राप्त होती है? BHU MET–2009, 2013

(A) नीतिशतकम् (B) किरातार्जुनीयम्

(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (D) मेघदूतम्

स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/23) - रामसेवक दुबे, पेज-98

76. (i) 'वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः' इति सूक्तिः कस्मात् उद्धृता? UP PGT–2002, UGC 25 J–2009,

(ii) ''वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः'' किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है? UP GIC–2012,

(iii) 'समुन्नयन् भूतिमनार्यसंगमाद्वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः' इत्युक्तिः कुत्र प्राप्यते?

RPSC SET–2013-2014, JNU MET–2015

MGKV Ph. D–2016

(A) उत्तररामचरितम् (B) मेघदूतम्

(C) किरातार्जुनीयम् (D) कादम्बरी

स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/8) - रामसेवक दुबे, पेज-61

77. 'अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता' कः एवं वदति–K-SET–2014

(A) वनेचरः (B) कैकेयी

(C) भीमः (D) सुदक्षिणा

स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/23) - रामसेवक दुबे, पेज-98

78. ''स्फुटता न पदैरपाकृता, न च न स्वीकृतमर्थगौरवम्'' किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है?

AWES TGT–2011, UP PGT–2002, 2010

UGC 25 D–1999, UK TET–2011

(A) शिशुपालवधम् से (B) किरातार्जुनीयम् से

(C) जानकीहरणम् से (D) रघुवंशम् से

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-245

79. ''न बाधतेऽस्य त्रिगणः परस्परम्'' सूक्ति उद्धृत है– UP PGT–2010, UK TET–2011

(A) मृच्छकटिकम् (B) किरातार्जुनीयम्

(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (D) नीतिशतकम्

स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/11) - रामसेवक दुबे, पेज-69

80. 'न तितिक्षासममस्ति साधनम्'' इदं वाक्यमस्ति? UGC 25 D–2006

(A) शिशुपालवधे (B) किरातार्जुनीये

(C) बुद्धचरिते (D) मेघदूते

स्रोत–किरातार्जुनीयम् (2/43) - सुधाकर मालवीय, पेज-63

81. ''प्रवृत्तिसारा खलु मादृशां गिरः'' इति वचनं वर्तते? UGC 25 J–2008

(A) वनेचरस्य (B) नारदस्य

(C) युधिष्ठिरस्य (D) द्रौपद्याः

स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/25) - रामसेवक दुबे, पेज-103

82. ''व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवम्'' इति कस्मिन् काव्ये उक्तम्? UGC 25 J–2012, BHU MET–2011

(A) शिशुपालवधे (B) भट्टिकाव्ये

(C) किरातार्जुनीये (D) कुमारसम्भवे

स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/30) - रामसेवक दुबे, पेज-114

72. (D) 73. (C) 74. (B) 75. (B) 76. (C) 77. (A) 78. (B) 79. (B) 80. (B) 81. (A) 82. (C)

83. (i) ''हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः'' कस्येयमुक्तिः?
(ii) 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः' उक्ति है–
UGC 25 J–2013, UP TGT–2009, 2004, MH SET–2011

(A) युधिष्ठिरस्य (B) वनेचरस्य
(C) द्रौपद्याः (D) अर्जुनस्य

स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/4) - रामसेवक दुबे, पेज-50

84. हितं मनोहारि च दुर्लभं............ BHU B. Ed–2014

(A) धनम् (B) पुस्तकम्
(C) वचः (D) गृहम्

स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/4) - रामसेवक दुबे, पेज-50

85. (i) 'सहसा विदधीत न क्रियाम्' यह सूक्ति किस महाकाव्य से उद्धृत है? UGC 73 D–1997
(ii) ''सहसा विदधीत न क्रियाम्'' सूक्ति है–
(iii) ''सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः परमापदां'' इस सूक्ति से युक्तकाव्य है– UGC 25 J–1994, UP TET–2014, H TET–2014, UP PGT (H)–2010

(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (B) गीता
(C) किरातार्जुनीयम् (D) शिशुपालवधम्

स्रोत–किरातार्जुनीयम् (2/30) - सुधाकर मालवीय, पेज-55

86. (i) ''सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः परमापदां पदम्'' इति वचनं कस्य महाकवेरस्ति? MP वर्ग-1 (PGT)–2012,
(ii) 'सहसा विदधीत न क्रियाम्' इति कस्य कवेः विवेककौशलं प्रथयति? K-SET–2015
(iii) 'सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः' – किस कवि का प्रिय श्लोक है? UP TGT–2009, UGC 25 D–2007, MGKV Ph. D–2016

(A) कालिदासस्य (B) माघस्य
(C) भवभूतेः (D) भारवेः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि',पेज-250

87. राजाओं का स्वभाव होता है– UP TGT–2011

(A) दुर्विज्ञेय (B) विज्ञेय
(C) अप्रत्यक्ष (D) प्रत्यक्ष

स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/6) - रामसेवक दुबे, पेज-56

88. 'प्रविश्य कृष्णासदनं महीभुजा' में कृष्णा का तात्पर्य है– UP TGT – 2011

(A) कृष्ण से (B) द्रौपदी से
(C) कुन्ती से (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/26) - रामसेवक दुबे, पेज-106, 107

89. 'भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः' पंक्ति का भावसाम्य निम्नलिखित में से किसके साथ सही बैठता है? UP TGT–2011

(A) जैसी करनी, वैसी भरनी
(B) जैसे के संग तैसा
(C) जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरत देखी तिन तैसी
(D) इनमें से किसी के साथ नहीं

स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/30) - रामसेवक दुबे, पेज-114

90. ''अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता'' – कस्य वचनमिदम्? MH SET–2016

(A) माघस्य (B) भारवेः
(C) श्रीहर्षस्य (D) भवभूतेः

स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/23) - रामसेवक दुबे, पेज-98

91. ''सहसा विदधीत न क्रियाम्'' – इत्ययमुपदेशः केन प्रदत्तः? MH SET–2016

(A) भीमेन (B) द्रौपद्या
(C) युधिष्ठिरेण (D) वनेचरेण

स्रोत–किरातार्जुनीयम् (2/30) - सुधाकर मालवीय, पेज-55

92. ''निराश्रया हन्त! हता मनस्विता'' यह किसकी उक्ति है? UP TGT–1999

(A) काश्यप की (B) भर्तृहरि की
(C) द्रौपदी की (D) युधिष्ठिर की

स्रोत– किरातार्जुनीयम् (1/43) - रामसेवक दुबे, पेज-142

93. ''सदानुकूलेषु हि कुर्वते रतिं, नृपेष्वमात्येषु च सर्वसम्पदः'' यह किसके द्वारा कहा गया है? UP TGT–1999

(A) द्रौपदी द्वारा (B) वनेचर द्वारा
(C) दुर्योधन द्वारा (D) युधिष्ठिर द्वारा

स्रोत– किरातार्जुनीयम् (1/5) - रामसेवक दुबे, पेज-53

83. (B) 84. (C) 85. (C) 86. (D) 87. (A) 88. (B) 89. (B) 90. (B) 91. (C) 92. (C) 93. (B)

94. ''स चिन्तयत्येव भियस्त्वदेष्यतीः, अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता'' यह किसके विषय में कहा गया है? UP TGT–1999

(A) युधिष्ठिर के (B) वनेचर के
(C) दुर्योधन के (D) दुःशासन के

स्रोत– किरातार्जुनीयम् (1/23) - रामसेवक दुबे, पेज-98

95. ''निगूढतत्त्वं नयवर्त्म विद्विषाम्'' यह उक्ति किसकी है? UP TGT–2001

(A) वनेचर (B) दुर्योधन
(C) द्रौपदी (D) युधिष्ठिर

स्रोत– किरातार्जुनीयम् (1/6) - रामसेवक दुबे, पेज-56

96. ''विचित्ररूपाः खलु चित्तवृत्तयः'' यह सुभाषित किस ग्रन्थ से है? UP TGT–2004

(A) मेघदूत से (B) किरातार्जुनीयम् से
(C) उत्तररामचरितम् से (D) शिवराजविजयम् से

स्रोत– किरातार्जुनीयम् (1/37) - रामसेवक दुबे, पेज-129

97. ''तथापि वक्तुं व्यवसाययन्ति मां निरस्तनारीसमया दुराधयः'' यह श्लोकांश किस ग्रन्थ से लिया गया है? UP TGT–2001

(A) मेघदूतम् (B) शिवराजविजयम्
(C) नीतिशतकम् (D) किरातार्जुनीयम्

स्रोत– किरातार्जुनीयम् (1/28) - रामसेवक दुबे, पेज-110

98. ''प्रजासु वृत्तिं यमयुङ्क्त वेदितुम्'' यह श्लोकांश कहाँ से उद्धृत है? UP TGT–2004

(A) किरातार्जुनीयम् से (B) प्रतिमानाटकम् से
(C) मालविकाग्निमित्रम् से (D) शिशुपालवधम् से

स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/1) - रामसेवक दुबे, पेज-39

99. (i)''हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः'' यह उक्ति किसकी है?
(ii) ''हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः'' इति केन उक्तम्?
RPSC ग्रेड-I (PGT)–2015, BHU MET–2008

(A) भारवि की (B) कालिदास की
(C) व्यास की (D) वाल्मीकि की

स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/4) - रामसेवक दुबे, पेज-50

100. ''अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता'' यह सूक्ति किसके लिए कथित है? UP TGT–2009

(A) दुर्योधन के विषय में (B) युधिष्ठिर के विषय में
(C) भीम के विषय में (D) द्रौपदी के विषय में

स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/23) - रामसेवक दुबे, पेज-98

101. ''पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम्'' यह उक्ति किस ग्रन्थ में है? UP TGT–2009, 2013

(A) नीतिशतकम् में (B) किरातार्जुनीयम् में
(C) मुद्राराक्षसम् में (D) शिशुपालवधम् में

स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/41) - रामसेवक दुबे, पेज-138

102. ''शमेन सिद्धिं मुनयो न भूभृतः'' यह कथन किसका है? UP TGT–2009

(A) द्रौपदी का (B) वनेचर का
(C) दुर्योधन का (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/42) - रामसेवक दुबे, पेज-140

103. ''व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवं'' सूक्ति किरातार्जुनीयम् के किस सर्ग से उद्धृत है? UP TGT–2010

(A) प्रथम सर्ग (B) द्वितीय सर्ग
(C) तृतीय सर्ग (D) चतुर्थ सर्ग

स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/30) - रामसेवक दुबे, पेज-114

104. ''जटाधरः सञ्जुहुधीह पावकम्'' यह कथन किसको कहा गया है? UP PGT–2010, UK TET–2011

(A) युधिष्ठिर को (B) अर्जुन को
(C) भीम को (D) दुर्योधन को

स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/44) - रामसेवक दुबे, पेज-144

105. ''क्रियासु युक्तैर्नृपचारचक्षुषो, न वञ्चनीयाः प्रभवोऽनुजीविभिः'' इस उक्ति वाला ग्रन्थ है– BHU MET–2014

(A) किरातार्जुनीयम् (B) शिशुपालवधम्
(C) विक्रमाङ्कदेवचरितम् (D) रघुवंशम्

स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/4) - रामसेवक दुबे, पेज-50

94. (C) 95. (A) 96. (B) 97. (D) 98. (A) 99. (A) 100. (A) 101. (B) 102. (A) 103. (A) 104. (A) 105. (A)

106. ''वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः'' यह उक्ति किस ग्रन्थ में किसने कही है? UP TGT–2013
(A) शिवराजविजयम् में, सेनापति ने
(B) किरातार्जुनीयम् में, वनेचर ने
(C) किरातार्जुनीयम् में, युधिष्ठिर ने
(D) शिवराजविजयम् में, शिवाजी ने
स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/8) - रामसेवक दुबे, पेज-61

107. ''हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः'' इति केन कथितम्? UP GIC–2015, T-SET–2013
(A) कालिदासेन (B) अश्वघोषेण
(C) माघेन (D) भारविणा
स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/4) - रामसेवक दुबे, पेज-50

108. 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः' एषा उक्तिः कस्य काव्यस्य? AWES TGT–2012
(A) शिशुपालवधम्/श्रीकृष्ण (B) हर्षचरितम्/राज्यश्री
(C) किरातार्जुनीयम्/युधिष्ठिर (D) किरातार्जुनीयम्/वनेचर
स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/4) - रामसेवक दुबे, पेज-50

109. ''व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवं भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः'' – इत्याद्युक्तिः किरातार्जुनीये भवति– UGC 25 D–2015
(A) अर्जुनस्य (B) द्रौपद्याः
(C) युधिष्ठिरस्य (D) वनेचरस्य
स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/30) - रामसेवक दुबे, पेज-114

110. ''वसन्ति हि प्रेम्णि गुणा न वस्तुनि'' इति कस्योक्तिः? JNU M.Phil/Ph.D–2015
(A) कालिदासस्य (B) भवभूतेः
(C) भारवेः (D) श्रीहर्षस्य
स्रोत–किरातार्जुनीयम् (8/37) - सुधाकर मालवीय, पेज-216

111. 'अबन्ध्यकोपस्य विहन्तुरापदां भवन्ति वश्याः स्वयमेव देहिनः' इति वाक्यं कस्मिन् महाकाव्येऽस्ति? GJ SET–2013
(A) रघुवंशे (B) शिशुपालवधे
(C) किरातार्जुनीये (D) नैषधीयचरिते
स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/33) - रामसेवक दुबे, पेज-120

112. द्वैतवने युधिष्ठिरं समाययौ– GJ-SET–2014
(A) नभश्चरः (B) स्थलचरः
(C) वनेचरः (D) शनैश्चरः
स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/1) - रामसेवक दुबे, पेज-39

113. 'प्रवक्तुमिच्छन्ति मृषा हितैषिणः' – अलङ्कारः कः? KL SET–2015
(A) उपमालङ्कारः (B) उत्प्रेक्षालङ्कारः
(C) काव्यलिङ्गालङ्कारः (D) अर्थान्तरन्यासालङ्कारः
स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/2)–रामसेवक दुबे, पेज-45, 47

114. 'वृणुते हि विमृश्यकारिणं गुणलुब्धाः स्वयमेव सम्पदः'– यह उक्ति कहाँ प्राप्त होती है? BHU MET–2016
(A) नीतिशतक (B) शिशुपालवध
(C) किरातार्जुनीय (D) कुमारसम्भव
स्रोत–किरातार्जुनीयम् (2/30)–सुधाकर मालवीय , पेज-55

115. (i) किरातार्जुनीयस्य मल्लिनाथसूरिकृतटीकायाः नाम किम्? KL SET–2016
(ii) मल्लिनाथविरचितं किरातार्जुनीयव्याख्यानं किम्? RPSC ग्रेड-I PGT–2014
(A) सञ्जीवनी (B) घण्टापथः
(C) छाया (D) चन्द्रालोकः
स्रोत–किरातार्जुनीयम्–रामसेवक दुबे, पेज-40

106. (B) 107. (D) 108. (D) 109. (B) 110. (C) 111. (C) 112. (C) 113. (D) 114. (C) 115. (B)

06 शिशुपालवधम्

1. (i) शिशुपालवधस्य रचयिता महाकविः–
(ii) 'शिशुपालवधम्' के रचयिता कौन हैं?
(iii) शिशुपालवधस्य रचयिता कः अस्ति?
UP TGT (H)–2009, UP PGT–2000
UGC 73D–2008, 2009, GJ SET–2008

(A) सुबन्धुः (B) भारविः
(C) भट्टिः (D) माघः

संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 259

2. (i) शिशुपालवधमहाकाव्ये कति सर्गाः सन्ति?
(ii) 'शिशुपालवध' महाकाव्य में कितने सर्ग हैं?
(iii) शिशुपालवध में सर्ग संख्या है?
(iv) शिशुपालवधे सर्गाणां संख्या अस्ति?
(v) शिशुपालवधे काव्ये सर्गसंख्याऽभिधीयताम्–
BHU MET–2009, 2013, 2014,
RPSC SET–2010, UP PGT–2003, 2004,
BHU AET–2011, UP GDC–2014,
UGC 25 D–2002, UK TET–2011

(A) 17 (B) 18
(C) 20 (D) 22

संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 262

3. किस महाकाव्य का प्रारम्भ और समाप्ति 'श्री' शब्द से होता है? H-TET–2014

(A) किरातार्जुनीयम् (B) शिशुपालवधम्
(C) रघुवंशम् (D) कुमारसम्भवम्

स्रोत–शिशुपालवध – जनार्दन गङ्गाधर रटाटे , भू. पृष्ठ- 27

4. शिशुपालवधमहाकाव्यस्य प्रथमसर्गस्य नाम किम्?
UGC 25 J–2015, Jn–2017

(A) कृष्णनारदसम्भाषणम् (B) नारदावतरणम्
(C) नारदगुणकीर्तनम् (D) कृष्णगुणकीर्तनम्

स्रोत–शिशुपालवध – जनार्दन गङ्गाधर रटाटे, पृष्ठ- 164

5. 'शिशुपालवधम्' के प्रथमसर्ग में कुल कितने श्लोक हैं?
UP PGT–2010, BHU MET–2011, UK TET–2011

(A) सत्तर (70) (B) साठ (60)
(C) पचहत्तर (75) (D) पचास (50)

स्रोत–शिशुपालवध (1.75)–जनार्दन गङ्गाधर रटाटे, पृष्ठ-161

6. शिशुपालवध महाकाव्य के किस सर्ग में नारद और श्रीकृष्ण का वर्णन प्राप्त होता है? BHU MET–2012

(A) प्रथम (B) द्वितीय
(C) तृतीय (D) पञ्चम

संस्कृत साहित्य का इतिहास – उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 262

7. (i) शिशुपालवधस्य प्रथमसर्गे प्रयुक्तं छन्दः अस्ति–
(ii) 'शिशुपालवधम्' के प्रथम सर्ग का प्रधान छन्द है? UP PGT–2005, 2011 UP GDC–2012

(A) वसन्ततिलका (B) इन्द्रवज्रा
(C) उपजाति (D) वंशस्थ

स्रोत–शिशुपालवध – देवनारायण मिश्र, भू. पृष्ठ- 20

8. (i) शिशुपालवधस्य प्रधानरसः कः?
(ii) 'शिशुपालवधम्' महाकाव्य का अङ्गीरस है?
(iii) 'शिशुपालवधम्' महाकाव्य में प्रमुख रस है?
MH SET–2016, UP PGT–2004, UGC 25 J–2002

(A) शृङ्गार (B) वीर
(C) अद्‌भुत (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–शिशुपालवध – जनार्दन गङ्गाधर रटाटे, भू. पृष्ठ- 22

9. शिशुपालवधस्य .... सर्गे श्रीकृष्णनारदसम्भाषणमस्ति?
GJ SET–2003

(A) प्रथमे (B) द्वितीये
(C) तृतीये (D) चतुर्थे

स्रोत–शिशुपालवध – तारिणीश झा, पृष्ठ-158

1. (D) 2. (C) 3. (B) 4. (A) 5. (C) 6. (A) 7. (D) 8. (B) 9. (A)

10. (i) 'शिशुपालवधम्' का मूलस्रोत है–UK TET–2011
(ii) 'शिशुपालवधम्' की कथावस्तु महाभारत के किस पर्व से उद्धृत है? UP PGT–2005, 2010
(A) आदिपर्व (B) शान्तिपर्व
(C) सभापर्व (D) इनमें से कोई नहीं
संस्कृत साहित्य का इतिहास – उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 263

11. 'श्री' इति शब्देन कस्य काव्यस्य मङ्गलाचरणं प्रारभ्यते– RPSC SET–2010
(A) शिशुपालवधस्य (B) मेघदूतस्य
(C) कुमारसम्भवस्य (D) ऋतुसंहारस्य
स्रोत–शिशुपालवध – जनार्दन गङ्गाधर रटाटे, भू. पृष्ठ- 27

12. (i) अधस्तनेषु महाभारताश्रितम् अस्ति–
(ii) महाभारत पर आधारित महाकाव्य है–
UP PGT–2009, UGC 25 J–1998, UP GDC–2012
(A) कुमारसम्भव (B) रघुवंश
(C) रावणवध (D) शिशुपालवध
संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 263

13. शिशुपालवधस्योपजीव्यमस्ति– UP GDC–2014
(A) रामायणम् (B) महाभारतम्
(C) पुराणम् (D) गीता
संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 263

14. 'शिशुपालवधम्' की कथावस्तु विभाजित है– UP TGT–2010
(A) अंकों में (B) सर्गों में
(C) अध्यायों में (D) पर्वों में
स्रोत–शिशुपालवध – जनार्दन गङ्गाधर रटाटे, भू. पृष्ठ- 20

15. शिशुपालवधस्य किं वैशिष्ट्यम्– BHU Sh.ET–2011
(A) उपमा (B) त्रयो गुणाः
(C) अर्थगौरवम् (D) पदलालित्यम्
स्रोत–शिशुपालवध – जनार्दन गङ्गाधर रटाटे, भू. पृष्ठ- 28

16. (i) रैवतक पर्वत का वर्णन कहाँ है?
(ii) रैवतकपर्वतस्य वर्णनं कस्मिन् काव्ये वर्तते?
(iii) रैवतक पर्वत का वर्णन किस काव्य में है?
(iv) रैवतक पर्वत का वर्णन कहाँ प्राप्त होता है?
BHU MET–2008, 2009, 2013, UP PGT–2004, 2009, UGC 25 J–1998, GJ SET–2014, MH SET–2016
(A) कुमारसम्भवम् (B) कादम्बरी
(C) शिशुपालवधम् (D) मेघदूतम्
संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 262-263

17. शिशुपाल का वध किसने किया? BHU MET–2009, 2013
(A) कृष्ण ने (B) अर्जुन ने
(C) विष्णु ने (D) भीम ने
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 262

18. शिशुपाल के किस सर्ग में यमुना नदी का वर्णन है– UP PGT–2003
(A) प्रथम सर्ग (B) चतुर्थ सर्ग
(C) द्वादश सर्ग (D) त्रयोदश सर्ग
संस्कृत साहित्य का इतिहास – उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 263

19. शिशुपालवधस्य प्रथमसर्गे द्वारिकायां कस्यागमनं दृश्यते? G-GIC–2015
(A) शिशुपालस्य (B) नारदस्य
(C) युधिष्ठिरस्य (D) इन्द्रस्य
स्रोत–शिशुपालवध (1/1) – जनार्दन गङ्गाधर रटाटे, पृष्ठ-2-3

20. 'श्रियः पतिः श्रीमति शासितुं जगत्' में 'श्रीमति' शब्द निम्नांकित में से किसका विशेषण है– UP PGT–2005
(A) लक्ष्मी (B) नारद
(C) वसुदेव का घर (D) क्षीर सागर
स्रोत–(i) शिशुपालवध (1/1)–जनार्दन गङ्गाधर रटाटे, पृष्ठ- 4
(ii) शिशुपालवध (1/1)-तारिणीश झा, पेज-04

21. 'कुथेन नागेन्द्रमिवेन्द्रवाहनम्' इति उपमासूचकवाक्येन शिशुपालवधे लक्षितः–UP GDC–2012, UP PGT–2011
(A) नारदः (B) श्रीकृष्णः
(C) शिशुपालः (D) हिरण्यकशिपुः
स्रोत–शिशुपालवध (1/8)–जनार्दन गङ्गाधर रटाटे, पृष्ठ- 20-21

10. (C) 11. (A) 12. (D) 13. (B) 14. (B) 15. (B) 16. (C) 17. (A) 18. (C) 19. (B) 20. (C) 21. (A)

22. (i) 'पिशङ्गमौञ्जीयुजमर्जुनच्छविम्' इति विशेषणेन माघकाव्ये सूच्यते– UP GDC–2012

(ii) 'पिशङ्गमौञ्जीयुजमर्जुनच्छविम्' – किसे समझ लिया गया? UP PGT–2011

(A) श्रीकृष्णः (B) बलरामः

(C) अर्जुनः (D) नारदः

स्रोत–शिशुपालवध (1/6) – जनार्दन गङ्गाधर रटाटे, पृष्ठ- 16

23. उपमा अर्थगौरव और पदलालित्य ये तीन गुण इस काव्य में है– UGC 25 D–1997

(A) बुद्धचरितम् (B) किरातार्जुनीयम्

(C) रघुवंशम् (D) शिशुपालवधम्

स्रोत–शिशुपालवध – जनार्दन गङ्गाधर रटाटे, भू. पृष्ठ- 28

24. किसमें नारद का वर्णन है? UGC 25 D–1998

(A) रघुवंशम् (B) बुद्धचरितम्

(C) शिशुपालवधम् (D) हर्षचरितम्

संस्कृत साहित्य का इतिहास – उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 262

25. (i) कस्मिन् सन्ति त्रयो गुणाः? UGC 25 J–2010

(ii) काव्ये कस्मिन् समाख्याताः काव्यविद्भिस्त्रयो गुणाः? BHU AET–2012

(A) मेघे (B) रघुवंशे

(C) नैषधीये (D) शिशुपालवधे

स्रोत–शिशुपालवध – जनार्दन गङ्गाधर रटाटे, भू. पृष्ठ- 28

26. नारदमुनेः स्वागतार्थं को जवेन पीठादुदतिष्ठत्? UGC 25 D–2012

(A) बलदेवः (B) शिशुपालः

(C) हिरण्यकशिपुः (D) अच्युतः (कृष्णः)

स्रोत–शिशुपालवध (1/12)–जनार्दन गङ्गाधर रटाटे, पृष्ठ- 29

27. 'सतीव योषित्प्रकृतिः सुनिश्चला पुमांसमभ्येति भवान्तरेष्वपि।।' .... इति पद्यांशानुसारं भवान्तरेषु पुमांसं किम् अभ्येति? UGC 25 D–2013

(A) जातिः (B) सती

(C) योषित् (D) स्वभावः

स्रोत–शिशुपालवध (1/72)–जनार्दन गङ्गाधर रटाटे, पृष्ठ- 157

28. 'रथाङ्गपाणेः पटलेन रोचिषामृषित्विषः संवलिता विरेजिरे'–'इत्यत्र रथाङ्गपाणिः' कः– UGC 25 J–2014

(A) नारदः (B) रावणः

(C) कृष्णः (D) शिशुपालः

स्रोत–शिशुपालवध (1/21)–जनार्दन गङ्गाधर रटाटे, पृष्ठ-49-50

29. रावणभयात् हेमाद्रिगुहागृहान्तरं कः दिवसानि निनाय– UGC 25 J–2014

(A) कृष्णः (B) कौशिकः

(C) नारदः (D) वसुदेवः

स्रोत–शिशुपालवध (1/53)–जनार्दन गङ्गाधर रटाटे, पृष्ठ- 121-122

30. शिशुपालवधानुसारेण कः हिरण्यगर्भाङ्गभूः मुनिः? UK SLET–2015

(A) नारदः (B) कृष्णः

(C) बलरामः (D) गर्गः

स्रोत–शिशुपालवध (1/1) – जनार्दन गङ्गाधर रटाटे, पृष्ठ- 5

31. किं नाम महाकाव्यं 'श्रियः पतिः' इति उल्लेखेन प्रारभ्यते? UP GDC–2014

(A) कुमारसम्भवम् (B) शिशुपालवधम्

(C) किरातार्जुनीयम् (D) जानकीहरणम्

स्रोत–शिशुपालवध (1/1) – जनार्दन गङ्गाधर रटाटे, पृष्ठ- 2

32. श्रीकृष्णस्य सम्मुखं गौरवर्णः नारदः कस्याभिरामताम् अचोरयत्? UGC 25 J–2012

(A) सूर्यस्य (B) कृष्णस्य

(C) चन्द्रमसः (D) बलदेवस्य

स्रोत–शिशुपालवध (1/16)–जनार्दन गङ्गाधर रटाटे, पृष्ठ- 37

33. माघकाव्ये श्रीकृष्णः अम्बरादवतरन्तं कं ऋषिं ददर्श? K-SET–2015

(A) भृगुम् (B) वशिष्ठम्

(C) नारदम् (D) वामदेवम्

स्रोत–शिशुपालवध (1/1)–जनार्दन गङ्गाधर रटाटे, पृष्ठ- 2-3

34. शिशुपालवध के अनुसार शिशुपाल है– UP PGT–2013

(A) हिरण्यकशिपु का जन्मान्तर (B) कंस का जन्मान्तर

(C) रावण का जन्मान्तर (D) जलन्धर का जन्मान्तर

स्रोत–शिशुपालवध (1/69)–जनार्दन गङ्गाधर रटाटे, पृष्ठ- 151

22. (D) 23. (D) 24. (C) 25. (D) 26. (D) 27. (D) 28. (C) 29. (B) 30. (A) 31. (B) 32. (C) 33. (C) 34. (C)

35. ''हृतेऽपि भारे महतस्त्रपाभरादुवाह दुःखेन भृशानतं शिरः'' कस्य वर्णना इयम्? UGC 25 J–2015

(A) कुबेरस्य (B) यमवाहनमहिषस्य
(C) इन्द्रस्य (D) वरुणस्य

शिशुपालवध (1/57)–जनार्दन गङ्गाधर रटाटे, पृष्ठ- 128-129

36. ''स तप्तकार्तस्वरभास्वराम्बरः ....'' इति, शिशुपालवधस्य श्लोकांशे 'कार्तस्वर' पदस्य कोऽर्थः? UGC 25 J–2015

(A) रजतम् (B) ताम्रम्
(C) सुवर्णम् (D) स्फटिकम्

स्रोत–शिशुपालवध (1/20)–जनार्दन गङ्गाधर रटाटे, पृष्ठ- 47

37. (i) ''सदाभिमानैकधना हि मानिनः'' यह सूक्ति है–
(ii) 'सदाभिमानैकधना हि मानिनः।' अयं श्लोकार्धः कस्मिन् काव्ये वर्तते?
UP PGT–2000, BHU MET – 2015, MH SET–2013

(A) रामायण में (B) शिशुपालवध में
(C) नलचम्पू में (D) कुमारसम्भव में

स्रोत–शिशुपालवध (1/67)–जनार्दन गङ्गाधर रटाटे, पृष्ठ- 147

38. (i) ''सतीव योषित्प्रकृतिः सुनिश्चला पुमांसमभ्येति भवान्तरेष्वपि'' पंक्ति किस ग्रन्थ से उद्धृत है?
(ii) ''सतीव योषित्प्रकृतिः सुनिश्चला पुमांसमभ्येति भवान्तरेष्वपि।।'' कुत्र अस्ति अयं पद्यांशः?
UGC 25 D–2014, UP PGT–2005

(A) शिशुपालवधम् (B) शिवराजविजयम्
(C) मनुस्मृति (D) कुमारसम्भवम्

स्रोत–शिशुपालवध (1/72)–जनार्दन गङ्गाधर रटाटे, पृष्ठ- 156

39. (i) ''नवसर्गगते माघे नव शब्दो न विद्यते'' यह सूक्ति किस ग्रन्थ के लिए प्रचलित है? UP PGT–2004,
(ii) 'नवसर्गगते माघे नवशब्दो न विद्यते' – उक्ति किस ग्रन्थ के लिये उद्धृत है? 2009, 2010, UK TET–2011

(A) मेघदूतम् (B) शिशुपालवधम्
(C) कुमारसम्भवम् (D) जानकीहरणम्

स्रोत–शिशुपालवध – जनार्दन गङ्गाधर रटाटे, भू. पृष्ठ- 16

40. 'गतं तिरश्चीनमनूरुसारथेः प्रसिद्धमूर्ध्वज्वलनं हविर्भुजः।' शिशुपालवधे अस्मिन् पद्यांशे 'अनूरुसारथिः' भवति? UGC 25 Jn–2017

(A) अग्निः (B) सूर्यः
(C) चन्द्रः (D) विद्युत्

स्रोत–शिशुपालवध (1/2) – जनार्दन गङ्गाधर रटाटे, पृष्ठ- 6

41. ''महीयांसः प्रकृत्या मितभाषिणः'' इदं वाक्यमस्ति– UGC 25 J–2006

(A) रघुवंशे (B) नैषधीयचरिते
(C) शिशुपालवधे (D) रामायणे

स्रोत–(i) संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 271
(ii) शिशुपालवधम् (2/13)-शिवदत्त अधीच, पेज-33

42. (i) 'श्रेयसि केन तृप्यते' सूक्तं गृहीतमस्ति –
(ii) 'श्रेयसि केन तृप्यते' इति समुक्तिः उद्धृतास्ति–
(iii) 'श्रेयसि केन तृप्यते'' इत्यस्ति– UP GIC–2015,
(iv) 'श्रेयसि केन तृप्यते' सूक्ति ग्रहण की गई है–
UP PGT–2013, UGC 25 J–2007, UP GDC–2014, BHU MET–2016

(A) बुद्धचरिते (B) शिशुपालवधे
(C) किरातार्जुनीये (D) नैषधमहाकाव्ये

स्रोत–शिशुपालवध (1/29)–जनार्दन गङ्गाधर रटाटे, पृष्ठ- 68

43. ''शरीरभाजां भवदीयदर्शनं व्यनक्ति कालत्रितयेऽपि योग्यताम्'' इदं वाक्यमस्ति– UGC 25 J–2008

(A) माघकाव्ये (B) नैषधे
(C) किरातार्जुनीये (D) कुमारसम्भवे

स्रोत–शिशुपालवध (1/26)–जनार्दन गङ्गाधर रटाटे, पृष्ठ- 61

44. ''शरीरभाजां भवदीयदर्शनं व्यनक्ति कालत्रितयेऽपि योग्यताम्'' यह सूक्ति किस ग्रन्थ में है? BHU MET–2014, UP PGT–2005

(A) किरातार्जुनीयम् (B) मेघदूतम्
(C) शिशुपालवधम् (D) रघुवंशम्

स्रोत–शिशुपालवध (1/26)–जनार्दन गङ्गाधर रटाटे, पृष्ठ- 61

35. (B) 36. (C) 37. (B) 38. (A) 39. (B) 40. (B) 41. (C) 42. (B) 43. (A) 44. (C)

45. (i) ''क्षणे क्षणे यन्नवतामुपैति तदेव रूपं रमणीयतायाः'' इयमुक्तिः वर्तते? UGC 25 J–2011,
(ii) क्षणे क्षणे यन्नवतामुपैति तदेव रूपं रमणीयतायाः इयम् उक्तिः अस्ति– BHU MET–2016

(A) किरातार्जुनीये (B) शिशुपालवधे
(C) नैषधीयचरिते (D) कुमारसम्भवे

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 271

46. ''हरत्यघं सम्प्रति हेतुरेष्यतः शुभस्य पूर्वाचरितैः कृतं शुभैः। शरीरभाजां भवदीयदर्शनं व्यनक्ति कालत्रितयेऽपि योग्यताम्॥'' इस पद्य का कथन किया है– UP PGT–2013

(A) शिशुपालवध में नारद ने (B) नलचम्पू में नल ने
(C) शिशुपालवध में श्रीकृष्ण ने (D) कादम्बरी में बाणभट्ट ने

स्रोत–शिशुपालवध (1/26)–जनार्दन गङ्गाधर रटाटे, पृष्ठ- 61

47. ''क्षणे क्षणे यन्नवतामुपैति, तदेव रूपं रमणीयतायाः'' किसने प्रतिपादित किया? H-TET–2015

(A) माघ ने (B) भारवि ने
(C) कालिदास ने (D) श्रीहर्ष ने

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 271

48. ''तथापि शुश्रूषुरहं गरीयसीर्गिरोऽथवा श्रेयसि केन तृप्यते'' – शिशुपालवधकाव्ये इतीदं कस्य वचनम्? K-SET–2015

(A) श्रीकृष्णस्य वचनम् (B) नारदवचनम्
(C) बलरामवचनम् (D) सात्यकिवचनम्

स्रोत–शिशुपालवध (1/29) – जनार्दन गङ्गाधर रटाटे, पृष्ठ- 68

49. ''न चक्रमस्याक्रमताधिकन्धरम्'' कस्य? K-SET–2014

(A) रावणस्य (B) शिशुपालस्य
(C) हिरण्यकशिपोः (D) भस्मासुरस्य

स्रोत–शिशुपालवध (1/54) – जनार्दन गङ्गाधर रटाटे, पृष्ठ- 123

50. स बाल आसीद्वपुषा चतुर्भुजो कः? – K-SET–2013

(A) रावणः (B) श्रीरामः
(C) विष्णुः (D) शिशुपालः

स्रोत–शिशुपालवध (1/70) – जनार्दन गङ्गाधर रटाटे, पृष्ठ- 152

51. शिशुपालवधे शिशुपालः कीदृशं पात्रम्? GJ SET–2013

(A) नायकः (B) प्रतिनायकः
(C) न कोऽपि (D) सहनायकः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास – राकेश कुमार जैन, पृष्ठ- 111

52. शिशुपालवधे राजसूययज्ञः केनायोजितः? RPSC SET–2013-14

(A) शिशुपालेन (B) दुर्योधनेन
(C) युधिष्ठिरेण (D) कृष्णेन

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 262

53. शिशुपालवधमहाकाव्यानुसारम् इन्द्रस्य सन्देशमादाय कृष्णसभायां क आगतः? RPSC SET–2013-14

(A) जरासन्धः (B) दुर्योधनः
(C) नारदर्षिः (D) युधिष्ठिरः

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास–कपिलदेव द्विवेदी, पृष्ठ- 201

54. 'निधिः श्रुतीनां धनसम्पदामिव।' कस्येदं वर्णनम्? MH SET–2013

(A) नारदमुनेः (B) श्रीहरेः
(C) युधिष्ठिरस्य (D) अर्जुनस्य

स्रोत–शिशुपालवध (1/28)–जनार्दन गङ्गाधर रटाटे, पृष्ठ- 66

55. श्रीकृष्णस्य पार्श्वे आकाशमार्गेण कः समागतः? T-SET–2013

(A) नारदः (B) इन्द्रः
(C) वनेचरः (D) यक्षः

स्रोत–शिशुपालवध – तारिणीश झा, भू. पृष्ठ- 22

56. ''शरीरभाजां भवदीयदर्शनं व्यनक्ति कालत्रितयेऽपि योग्यताम्'' शिशुपालवधे कस्य प्रशंसेयम्? UGC 25 D–2015

(A) नारदस्य (B) श्रीकृष्णस्य
(C) वासुदेवस्य (D) बलरामस्य

स्रोत–शिशुपालवध (1/26)–जनार्दन गङ्गाधर रटाटे, पृष्ठ- 61-62

57. 'नमुचिद्विषा' इत्यस्य पदस्य कोऽर्थः– UGC 25 S–2013

(A) नारदेन (B) इन्द्रेण
(C) रावणेन (D) माघेन

स्रोत–शिशुपालवध (1/51)–जनार्दन गङ्गाधर रटाटे, पृष्ठ- 117

45. (B) 46. (C) 47. (A) 48. (A) 49. (A) 50. (D) 51. (B) 52. (C) 53. (C) 54. (A) 55. (A) 56. (A) 57. (B)

58. 'जगत्प्रभोरप्रसहिष्णु वैष्णवं न चक्रमस्याक्रमताधि कन्धरम्' श्लोकांश मे 'वैष्णवं' पद प्रयुक्त हुआ है–
UPPGT–2011

(A) भगवान कृष्ण (B) विष्णु-उपासक
(C) जगत्पालक विष्णु (D) भस्मी विशेष

स्रोत–शिशुपालवध (1/54)–जनार्दन गङ्गाधर रटाटे, पेज-123, 124

59. शिशुपालवधे– ''विभिन्नशङ्खः कलुषीभवन्मुहुर्मदेन दन्तीव मनुष्यधर्मणः'' कस्य वर्णना इयम्? – UGC 25 J–2016

(A) इन्द्रस्य (B) कुबेरस्य
(C) वरुणस्य (D) गणेशस्य

स्रोत–शिशुपालवध (1/55)–जनार्दन गङ्गाधर रटाटे, पृष्ठ- 125

60. कस्य गृहे वसता श्रीकृष्णेन नारदः दृष्टः?
MH SET–2016

(A) युधिष्ठिरस्य (B) वसुदेवस्य
(C) शिशुपालस्य (D) बलरामस्य

स्रोत–शिशुपालवध (1/1) – जनार्दन गङ्गाधर रटाटे, पृष्ठ- 3

61. नारद-वीणायाः नाम किम्? MH SET–2016

(A) बृहती
(B) महती
(C) कच्छपी
(D) रुद्रवीणा

स्रोत–शिशुपालवध (1/10)–जनार्दन गङ्गाधर रटाटे, पृष्ठ-23-24

58. (B) 59. (B) 60. (B) 61. (B)

07 नैषधीयचरितम्

1. 'नैषधीयचरितम्' किस श्रेणी की रचना है? **UP TGT–2004**

(A) महाकाव्य (B) खण्डकाव्य
(C) गद्यकाव्य (D) नाटक

संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-285

2. 'नैषधीयचरितम्' कथा का आधार है– **UGC 25 J–1999**

(A) महाभारत (B) ऋग्वेद
(C) बृहत्कथा (D) रामायण

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-287

3. (i) 'नैषधीयचरितम्' में नायक कौन है?
(ii) नैषधीयचरितस्य नायकः –
BHU MET–2010, GJ SET–2007

(A) दुष्यन्तः (B) नलः
(C) शिवः (D) अर्जुनः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-287

4. (i) नैषधीयचरिते महाकाव्ये .... सर्गाः सन्ति–
(ii) 'नैषधीयचरितम्' में कितने सर्ग स्वीकृत किये गये हैं? **UGC 25 J–2013, S–2013,**
(iii) नैषधीयचरिते कति सर्गाः? **UP PGT–2003,**
(iv) श्रीहर्ष द्वारा रचित महाकाव्य 'नैषधचरित' में कितने सर्ग हैं? **H-TET–2015,**
MH-SET–2011, GJ SET–2016

(A) 18 (B) 20
(C) 22 (D) 27

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-287

5. (i) 'नैषधीयचरितम्' में मुख्य रस कौन-सा है?
(ii) नैषधीयचरिते प्रयुक्तोऽङ्गीरसः अस्ति–
UP GDC–2012, UP TGT–2004, KL SET–2015

(A) वीररसः (B) शृङ्गाररसः
(C) करुणरसः (D) शान्तरसः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-290

6. (i) किस महाकाव्य को विद्वानों के लिए 'औषधि' कहा जाता है? **UP PGT–2004, 2009**
(ii) विद्वानों के लिए औषधि है–

(A) शिशुपालवधम् (B) नैषधीयचरितम्
(C) किरातार्जुनीयम् (D) रघुवंशम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-294,295

7. 'निषध' - देशेन सम्बन्धितस्य पात्रस्य नामास्ति– **UP GDC–2012**

(A) दमयन्ती (B) नलः
(C) पथिकः (D) हंसः

स्रोत–नैषधीयचरितम्-देवर्षि सनाढ्य शास्त्री, भू. पेज-68

8. (i) 'विद्वदौषधम्' किं काव्यं निगदितम्?
(ii) विद्वद्भ्य औषधिरूपं महाकाव्यमस्ति?
RPSC SET–2010, MGKV Ph. D–2016

(A) रघुवंशम् (B) नैषधीयचरितम्
(C) किरातार्जुनीयम् (D) बुद्धचरितम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-294

9. (i) 'मदेकपुत्रा जननी जरातुरा' इति कथनमस्ति–
(ii) मदेकपुत्रा जननी जरातुरा ...... कस्य इयमुक्तिः?
UP GDC–2012, UGC 25 J–2015

(A) हंसस्य (B) नलस्य
(C) पथिकस्य (D) भीमस्य

स्रोत–नैषधीयचरितम् (1/135) -देवर्षि सनाढ्य शास्त्री, पेज-114

10. किस काव्य में एक पात्र के पाँच रूप हैं? **UGC 25 D–1997**

(A) बुद्धचरितम् में (B) नैषधीयचरितम् में
(C) मुद्राराक्षसम् में (D) वेणीसंहारम् में

स्रोत–नैषधीयचरितम् (सर्ग-13)-देवर्षि सनाढ्य शास्त्री, पेज-127

11. (i) हंस का विलाप वर्णन है–
(ii) हंसविलापः कस्मिन् महाकाव्ये विद्यते?
UK SLET–2015, UGC 25 D–2003

(A) रघुवंशम् (B) बुद्धचरितम्
(C) नैषधीयचरितम् (D) हरविजयम्

स्रोत–नैषधीयचरितम् (1/135)-देवर्षि सनाढ्य शास्त्री, पेज-114

1. (A) 2. (A) 3. (B) 4. (C) 5. (B) 6. (B) 7. (B) 8. (B) 9. (A) 10. (B) 11. (C)

12. ''चतुर्दशत्वं कृतवान् कुतस्स्वयं, न वेद्मि विद्यासु चतुर्दशस्स्वयम्'' कः सः? UGC 25 D–2012
(A) दुष्यन्तः (B) अर्जुनः
(C) नलः (D) कृष्णः
स्रोत–नैषधीयचरितम् (1/4)-देवर्षि सनाढ्य शास्त्री, पेज- 06

13. ''अधारि पद्मेषु तदङ्घ्रिणा क्व तच्छय-च्छायलवोऽपि पल्लवे।'' अस्मिन् पद्यांशे कस्य सौन्दर्यं वर्णितम्? UGC 25 D–2013
(A) दमयन्त्याः (B) नलस्य
(C) रामस्य (D) सीतायाः
स्रोत–नैषधीयचरितम् (1/20)-देवर्षि सनाढ्य शास्त्री, पेज-24

14. 'कथाप्रसङ्गेषु मिथः सखीमुखात्तृणेऽपि तन्व्या नलनामनि श्रुते।' अत्र 'नल' इत्यस्य पदस्य कोऽर्थः – UGC 25 D–2013
(A) नलः (B) कामः
(C) तृणम् (D) स्तुतिपाठकः
स्रोत–नैषधीयचरितम् (1/35)-देवर्षि सनाढ्य शास्त्री, पेज-36

15. नैषधीयचरिते काः नलस्य दन्तैः उपमिताः? UK SLET–2015
(A) क्रियाः (B) विद्याः
(C) बुद्धयः (D) कीर्तयः
स्रोत–नैषधीयचरितम् (1/5)-देवर्षि सनाढ्य शास्त्री, पेज-07

16. (i) ''निपीय यस्य क्षितिरक्षिणः कथां तथाद्रियन्ते न बुधाः सुधामपि।'' इति कस्य कथा अत्र उल्लिखिता?
(ii) नैषधे 'निपीय यस्य क्षितिरक्षिणः कथाम्' इति उल्लेखेन वर्णितोऽस्ति– UGC 25 D–2014, UP GDC–2014
(A) दुष्यन्तस्य (B) नलस्य
(C) रघोः (D) रामचन्द्रस्य
स्रोत–नैषधीयचरितम् (1/1)-देवर्षि सनाढ्य शास्त्री, पेज-01

17. (i) नलदमयन्त्योः कथा कस्मिन् महाकाव्ये निबद्धा?
(ii) नल और दमयन्ती की कथा कहाँ चित्रित है? BHU MET–2011, K SET–2015
(A) नैषधीयचरितम् (B) भामिनीविलास
(C) रत्नावली (D) जानकीहरण
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज- 224

18. 'श्रीहर्ष' द्वारा रचित 'नैषधीयचरित' में किस रीति की प्रधानता है? UP TGT (H)–2005
(A) पाञ्चाली रीति (B) वैदर्भी रीति
(C) गौडी रीति (D) प्रसाद रीति
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-226

19. 'शृङ्गारामृतशीतगुः' विशेषण किस काव्य के लिए प्रसिद्ध है? UP GIC–2009
(A) शृङ्गारशतकम् (B) अमरुशतकम्
(C) मेघदूतम् (D) नैषधीयचरितम्
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-291

20. मल्लिनाथेन कस्य ग्रन्थस्य टीका कृता? AWES TGT–2008
(A) ऋग्वेदस्य (B) बुद्धचरितस्य
(C) नैषधीयचरितस्य (D) मन्दारचरितस्य
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-288

21. नैषधीयचरिते कस्यालङ्कारस्य वैशिष्ट्यम्? BHU AET–2010
(A) यमकस्य (B) श्लेषस्य
(C) उपमायाः (D) अनुप्रासस्य
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-289

22. ''त्यजन्त्यसूञ्शर्म च मानिनो वरं त्यजन्ति न त्वेकमयाचितव्रतम्'' इयमुक्तिः– UGC 25 D–2012 MH SET–2013
(A) शिशुपालवधात् (B) नैषधीयचरितात्
(C) किरातार्जुनीयात् (D) रघुवंशात्
स्रोत–नैषधीयचरितम् (1/50)-देवर्षि सनाढ्य शास्त्री, पेज-48

23. 'फलेन मूलेन च वारिभूरुहां, मुनेरिवेत्थं मम यस्य वृत्तयः।'
कं प्रति कस्येयमुक्तिः? UGC 25 J–2014
(A) हंसं प्रति नलस्य (B) नलं प्रति हंसस्य
(C) दमयन्तीं प्रति नलस्य (D) नलं प्रति दमयन्त्याः
स्रोत–नैषधीयचरितम् (1/133)-देवर्षि सनाढ्य शास्त्री, पेज-113

12. (C) 13. (B) 14. (C) 15. (B) 16. (B) 17. (A) 18. (B) 19. (D) 20. (C) 21. (B) 22. (B) 23. (B)

24. नलस्य स्मितेन कस्य श्रियः जिताः? K-SET–2013

(A) सरोरुहस्य (B) विधोः

(C) कामदेवस्य (D) सूर्यस्य

स्रोत–नैषधीयचरितम् (1/24)-देवर्षि सनाढ्य शास्त्री, पेज-27

25. 'क्वचिद् बुधैरप्यपथेन गम्यते' सूक्ति का स्रोत है? UP PGT–2013

(A) कुमारसम्भवम् (B) मृच्छकटिकम्

(C) नैषधीयचरितम् (D) महावीरचरितम्

स्रोत– नैषधीयचरितम् (9/36)-देवर्षि सनाढ्य शास्त्री, पेज-226

26. 'फलेन मूलेन च वारिभूरुहां मुनेरिवेत्थं मम यस्य वृत्तयः' नैषधीयचरिते इयमुक्तिर्भवति– UGC 25 Jn–2017

(A) नलस्य (B) दमयन्त्याः

(C) हंसपत्न्याः (D) हंसस्य

स्रोत– नैषधीयचरितम् (1/133)-देवर्षि सनाढ्य शास्त्री, पेज-113

27. नैषधीयचरितस्य नायिका का? RPSC ग्रेड-1 (PGT)–2014, GJ SET–2003

(A) पद्मावती (B) मदनिका

(C) दमयन्ती (D) तारावती

स्रोत– नैषधीयचरितम् -देवर्षि सनाढ्य शास्त्री, भू. पेज-44

28. हंसः कस्य दूतः? MH-SET–2016

(A) रामस्य (B) नलस्य

(C) लक्ष्मणस्य (D) कालिदासस्य

स्रोत–नैषधीयचरितम् -देवर्षि सनाढ्य शास्त्री, भू. पेज-28

29. नलदमयन्ती कथाचित्रणं कस्मिन् महाकाव्ये प्राप्यते? UGC 73 Jn–2017

(A) नैषधीयचरिते (B) किरातार्जुनीये

(C) भामिनीविलासे (D) रघुवंशे

स्रोत– नैषधीयचरितम्-देवर्षि सनाढ्य शास्त्री, भू. पेज-43

30. 'निपीय यस्य क्षितिरक्षिणः कथास्तथाद्रियन्ते न बुधाः सुधामपि' इत्यत्र अर्थालङ्कार अस्ति– DU M. Phil–2016

(A) अर्थश्लेषः (B) व्यतिरेकः

(C) उत्प्रेक्षा (D) अप्रस्तुतप्रशंसा

स्रोत– नैषधीयचरितम् (1/1)-देवर्षि सनाढ्य शास्त्री, पेज-02

31. 'स पुनरन्य एव देवो न्यक्कृतसर्वोर्वीपतिचरितः' – इतीदं वाक्यं सम्बद्धम्– DU M. Phil–2016

(A) चिन्तामणिना (B) कन्दर्पकेतुना

(C) वसुदेवेन (D) विष्णुना

स्रोत–

32. 'अधीतिबोधाचरणप्रचारणैः' इति वाक्यं कस्मिन्महाकाव्ये वर्तते? GJ SET–2013

(A) सौन्दरानन्दे (B) बुद्धचरिते

(C) नैषधीयचरिते (D) शिशुपालवधे

स्रोत– नैषधीयचरितम् (1/4)-देवर्षि सनाढ्य शास्त्री, पेज-06

33. नैषधीयचरितमहाकाव्यस्य नायिका .... अस्ति? GJ SET–2016

(A) मुग्धा (B) परकीया

(C) प्रोषितभर्तृका (D) स्वकीया

स्रोत– नैषधीयचरितम् -देवर्षि सनाढ्य शास्त्री, भू. पेज-44

34. 'धिगस्तु तृष्णातरलं भवन्मनः समीक्ष्य पक्षान् मम हेमजन्मनः' इति वाक्यं कः कं वदति? GJ SET–2016

(A) स्वर्णमृगो रामं वदति (B) हंसो नलं वदति

(C) नकुलो युधिष्ठिरं वदति (D) द्रौपदी युधिष्ठिरं वदति

स्रोत–नैषधीयचरितम् (1/130)-देवर्षि सनाढ्य शास्त्री, पेज-111

35. 'नृपः पतङ्गं समधत्त पाणिना' – पंक्तिरियं कस्मात् काव्यात् उद्धृताऽस्ति? K SET–2014

(A) रघुवंशात् (B) नैषधमहाकाव्यात्

(C) शिशुपालवधात् (D) किरातार्जुनीयात्

स्रोत–नैषधीयचरितम् (1/124)-देवर्षि सनाढ्य शास्त्री, पेज-107

24. (B) 25. (C) 26. (D) 27. (C) 28. (B) 29. (A) 30. (B) 31. (A) 32. (C) 33. (D) 34. (B) 35. (B)

36. 'भवेदमीभिः कमलोदयः कियान्' इत्यत्र 'अमीभिः' इत्यनेन सर्वनाम्ना परामृश्यन्ते– D.U M. Phil–2016

(A) जलकणाः

(B) हंसपक्षाः

(C) तुषारशीकराः

(D) उक्तेषु न केऽपि

स्रोत– नैषधीयचरितम् (1/130)-देवर्षि सनाढ्य शास्त्री, पेज-111

37. 'गतिस्तयोरेष जनः' इत्यत्र हंसः कयोः गतिः? DU M.Phil–2016

(A) नलदमयन्त्योः (B) मातृवरटयोः

(C) नलदमयन्तीराख्ययोः (D) स्वर्भूलोकयोः

स्रोत–नैषधीयचरितम् (1/135)-देवर्षि सनाढ्य शास्त्री, पेज-114

38. 'मितं च सारं च वचो हि वाग्मिता' – कस्य कवेः काव्यमिदम्? K SET–2014

(A) कालिदासस्य (B) भारवेः

(C) श्रीहर्षस्य (D) माघस्य

स्रोत– नैषधीयचरितम् (9/8)-देवर्षि सनाढ्य शास्त्री, पेज-203

39. 'अमुष्य विद्या रसनाग्रनर्तकी।' इति कस्य वर्णनम्? MH SET–2013

(A) नारदमुनेः (B) नलस्य

(C) भीमस्य (D) शिशुपालस्य

स्रोत– नैषधीयचरितम् (1/5)-देवर्षि सनाढ्य शास्त्री, पेज-07

40. 'नलोपाख्यानाधारितं काव्यं किम्? MH SET–2016

(A) रघुवंशम् (B) नैषधीयचरितम्

(C) शिशुपालवधम् (D) किरातार्जुनीयम्

स्रोत– नैषधीयचरितम्-देवर्षि सनाढ्य शास्त्री, भू. पेज-28

36. (B) 37. (B) 38. (C) 39. (B) 40. (B)

08 महाकाव्य के विविध प्रश्न

1. (i) महाकाव्यं कीदृशम्? DSSSB TGT–2014
(ii) महाकाव्यस्य लक्षणम्? UGC 73 J–2010,
(iii) महाकाव्य विभक्त होता है? UGC 25 J–2004,
(ii) महाकाव्य होता है? RPSC ग्रेड-II (TGT)–2010
(A) सर्गबन्धम् (B) वृत्तबन्धम्
(C) पद्यबन्धम् (D) रीतिबन्धम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-132

2. महाकाव्य की कथावस्तु होती है– UP PGT–2009
(A) कविकल्पित (B) मिश्रित
(C) इतिहास प्रसिद्ध (D) इनमें से कोई नहीं

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-132

3. अगले सर्ग की कथावस्तु कहाँ सूचित की जाती है– UP PGT–2009
(A) सर्गारम्भ में (B) सर्ग के मध्य में
(C) सर्गान्त में (D) कहीं भी

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-133

4. (i) अयं रसः महाकाव्यस्य अङ्गिरसत्वेन न अभिमतः?
(ii) महाकाव्य में अङ्गीरस नहीं होता है?
UP PGT–2003, UK SLET–2015
(A) शृङ्गारः (B) वीरः
(C) शान्तः (D) रौद्रः

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-132

5. किरातार्जुनीयम् रचना साहित्य की किस विधा के अन्तर्गत आती है? UP TGT–2011
(A) गीतिकाव्य (B) खण्डकाव्य
(C) महाकाव्य (D) स्तोत्रकाव्य

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-243

6. (i) महाकाव्ये कति सर्गाणि भवितव्यानि?
(ii) महाकाव्य में कम से कम कितने सर्ग होने चाहिए?
(iii) महाकाव्य में सर्गों की न्यूनतम संख्या है?
UP PGT–2003, 2009, UP GDC–2008,
AWES TGT–2010, 2012, UGC 25 D–2005
(A) 28 (B) 35
(C) 8 (D) 12

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-196

7. 'बृहत्त्रयी' का एक ग्रन्थ 'किरातार्जुनीयम्' शेष दो ग्रन्थों के नाम हैं– UP TGT–2005
(A) शिशुपालवधम्, कादम्बरी
(B) शिशुपालवधम्, नैषधीयचरितम्
(C) नैषधीयचरितम्, वेमभूपालचरितम्
(D) नैषधीयचरितम्, तिलकमञ्जरी

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-182

8. महाकाव्ये नायकः कीदृशः स्यात्– HAP–2016
(A) धीरोदात्तः (B) धीरललितः
(C) धीरोद्धतः (D) धीरशान्तः

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-132

9. (i) बृहत्त्रयी में नहीं गिना जाता– UP PGT–2009, 2010
(ii) 'बृहत्त्रयी' के अन्तर्गत कौन-सा महाकाव्य नहीं है?
(iii) बृहत्त्रय्यां न गण्यते– UGC 25 J–2002, 2016,
(iv) बृहत्त्रय्याम् अस्य ग्रन्थस्य गणना न भवति–
(v) बृहत्त्रयी के अन्तर्गत नही है– D–2013,
(vi) 'बृहत्त्रयी' में कौन-सा महाकाव्य नहीं आता है?
UP PGT (H)–2004, UP TGT (H)–2005, UP TET–2016
(A) किरातार्जुनीयम् (B) शिशुपालवधम्
(C) रघुवंशम् (D) नैषधीयचरितम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-208

1. (A) 2. (C) 3. (C) 4. (D) 5. (C) 6. (C) 7. (B) 8. (A) 9. (C)

10. बृहत्त्रयीमध्ये महाकाव्यानां कालाश्रितः क्रमोऽस्ति? UP GIC–2015

(A) शिशुपालवधम्, किरातार्जुनीयम्, नैषधीयचरितम्

(B) नैषधीयचरितम्, शिशुपालवधम्, किरातार्जुनीयम्

(C) किरातार्जुनीयम्, नैषधीयचरितम्, शिशुपालवधम्

(D) किरातार्जुनीयम्, शिशुपालवधम्, नैषधीयचरितम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-208

11. संस्कृतसाहित्ये बृहत्तमं महाकाव्यमस्ति– G-GIC–2015

(A) शिशुपालवधम् (B) नैषधीयचरितम्

(C) हरविजयम् (D) जानकीहरणम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-248

12. अधोलिखितेषु बृहत्त्रय्यां परिगण्यते– G-GIC–2015

(A) रामायणम् (B) रघुवंशम्

(C) शिशुपालवधम् (D) महाभारतम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-202

13. कर्णः कस्मै कवचकुण्डलानि यच्छति–MH-SET–2013

(A) ब्रह्मणे (B) सूर्याय

(C) चन्द्राय (D) इन्द्राय

स्रोत–(i) कर्णभारम् - रामजी मिश्र, भू0पेज-25

(ii) संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-466

14. अधस्तनेषु विरूपं विचिनुत– MH SET–2013

(A) रघुवंशम् (B) जानकीहरणम्

(C) प्रतिमानाटकम् (D) सेतुबन्ध

संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-466-467

15. अधस्तनेषु विरूपं विचिनुत– MH SET–2013

(A) कर्णः (B) माढव्यः

(C) रामः (D) चाणक्यः

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0पेज-99

16. अधस्तनवाक्यानां सत्यासत्यत्वपर्यायेषु समीचीनं विचिनुत– MH SET–2013

(a) रघुवंशस्योपरि सञ्जीवनी टीका वर्तते।

(b) किरातार्जुनीयस्योपरि घण्टापथटीका वर्तते।

(c) शिशुपालवधमहाकाव्ये 'विंशतिः सर्गाः' सन्ति।

(d) स्वप्नवासवदत्ते विद्यमानस्य विदूषकस्य नाम 'वसन्तकः' इति।

(A) सत्यम्, सत्यम्, सत्यम्, सत्यम्

(B) सत्यम्, सत्यम्, असत्यम्, सत्यम्

(C) असत्यम्, सत्यम्, सत्यम्, सत्यम्

(D) सत्यम्, असत्यम्, असत्यम्, सत्यम्

स्रोत–(i) संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-202

(ii) किरातार्जुनीयम्- राजेन्द्र मिश्र, भू0 पेज–28

(iii) स्वप्नवासवदत्तम् -जयपाल विद्यालङ्कार, भू0 पेज-xxiii

17. अधोनिर्दिष्टेषु युग्मपर्यायेषु समीचीनं विचिनुत– MH SET–2013

(क) मारविजयः 1. नैषधीयचरितम्

(ख) दमयन्ती 2. रघुवंशम्

(ग) अलकानगरी 3. मेघदूतम्

(घ) दिलीपसिंहसंवादः 4. बुद्धचरितम्

	क	ख	ग	घ
(A)	4	1	3	2
(B)	1	2	3	4
(C)	2	1	4	3
(D)	3	4	1	2

संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-230,287,332,213

18. निम्नलिखित में से कौन 'लघुत्रयी' में सम्मिलित नहीं है? UP GDC–2008

(A) गीतगोविन्द (B) मेघदूत

(C) कुमारसम्भव (D) रघुवंश

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-208

19. निम्नलिखित में से कौन-सी रचना लघुत्रयी में नहीं आती है? UP PGT (H)–2005

(A) रघुवंश (B) कुमारसम्भव

(C) मेघदूत (D) ऋतुसंहार

संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-208

10. (D) 11. (C) 12. (C) 13. (D) 14. (C) 15. (B) 16. (A) 17. (A) 18. (A) 19. (D)

20. लघुत्रयी के अन्तर्गत कौन-कौन से ग्रन्थ आते हैं? UP PGT–2009, UP TGT–2010

(A) किरातार्जुनीयम्, शिशुपालवधम्, नैषधीयचरितम्
(B) मृच्छकटिकम्, मेघदूतम्, शिशुपालवधम्
(C) रघुवंशम्, कुमारसम्भवम्, किरातार्जुनीयम्
(D) रघुवंशम्, मेघदूतम्, कुमारसम्भवम्

संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-208

21. ''चतुर्विंशतिसाहस्रीं चक्रे..........'' इसकी पूर्ति इससे होती है– UGC 73 J–2005

(A) सुश्रुतसंहिताम् (B) रावणसंहिताम्
(C) भारतसंहिताम् (D) नारदसंहिताम्

संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-147

22. अधोलिखितेषु लघुत्रय्यां नास्ति– G-GIC–2015

(A) रघुवंशम् (B) किरातार्जुनीयम्
(C) कुमारसम्भवम् (D) मेघदूतम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास -कपिलदेव द्विवेदी, पेज-182

23. संस्कृत साहित्य में सुप्रसिद्ध महाकाव्य हैं– UGC 73 D–2010

(A) षट् (B) पञ्च
(C) दश (D) एकादश

स्रोत–वस्तुनिष्ठ-संस्कृतसाहित्यम् -सर्वज्ञभूषण, पेज-307

24. भट्टिकाव्ये वर्णिता कथा अस्ति– MP वर्ग-1 (PGT)–2012

(A) कंसवधकथा (B) रामकथा
(C) कृष्णकथा (D) दमयन्तीकथा

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-252

25. शुद्धं वर्गं चिनुत– MP वर्ग-1 (PGT)–2012

(A) रघुवंशम् - मेघदूतम् - शिशुपालवधम्
(B) किरातार्जुनीयम् - नैषधम् - रघुवंशम्
(C) शिशुपालवधम् - मेघदूतम् - नैषधम्
(D) किरातार्जुनीयम् - शिशुपालवधम् - नैषधम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-208

26. अधोनिर्दिष्टेषु किं व्याकरणप्रधानकाव्यम्– BHU Sh.ET–2011

(A) मेघदूतम् (B) चारुदत्तम्
(C) वेणीसंहारम् (D) भट्टिकाव्यम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-238

27. कौन-सा युग्म सही नहीं है– BHU MET–2010

(A) कालिदास-रघुवंशम् (B) भारवि-किरातार्जुनीयम्
(C) श्रीहर्ष-जानकीहरणम् (D) भवभूति-उत्तररामचरितम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-225

28. मूलतः ''बुद्धचरितम्'' की सर्ग संख्या का उल्लेख मिलता है– UP PGT–2003

(A) 28 (B) 32
(C) 35 (D) 37

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-229

29. 'बुद्धचरित' महाकाव्य में महात्माबुद्ध को बुद्धत्व की प्राप्ति का वर्णन किस सर्ग में हुआ है? UP PGT–2003

(A) 9वें सर्ग में (B) 12वें सर्ग में
(C) 14वें सर्ग में (D) 16वें सर्ग में

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-169

30. एतेषु महाकाव्यं किम्? GJ SET–2013

(A) नैषधीयचरितम् (B) दशकुमारचरितम्
(C) हर्षचरितम् (D) उत्तररामचरितम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-225

31. (i) बुद्धचरितमहाकाव्ये प्रमुखो रसः कः? HAP–2016
(ii) बुद्धचरितस्य अङ्गीरसः कः? RPSC SET–2010

(A) शृङ्गारः (B) करुणः
(C) शान्तः (D) रौद्रः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-235

32. (i) निम्नलिखित में से कौन महाकाव्य नहीं है?
(ii) महाकाव्य नहीं है– UP PGT–2004, UGC 25 D–2001

(A) किरातार्जुनीयम् (B) मेघदूतम्
(C) नैषधीयचरितम् (D) रघुवंशम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-526

20. (D) 21. (C) 22. (B) 23. (B) 24. (B) 25. (D) 26. (D) 27. (C) 28. (A) 29. (C) 30. (A) 31. (C) 32. (B)

33. निम्नलिखित तालिका-1 में पात्रों के प्रकार दिए गये हैं और तालिका-2 में इनके प्रसिद्ध उदाहरण दिये गये हैं। इनके आधार पर दिए गये विकल्पों में से सही सुमेलित को चुनें– UP PGT–2005

तालिका-1	तालिका-2
(क) विदूषक	(i) शिशुपाल
(ख) नगररक्षक	(ii) मैत्रेय, माधव्य
(ग) पूर्व जन्म में रावण	(iii) सोमरात
(घ) पुरोहित	(iv) चन्दनक

	क	ख	ग	घ
(A)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)
(B)	(iii)	(ii)	(i)	(iv)
(C)	(ii)	(iv)	(i)	(iii)
(D)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)

स्रोत–(i) अभिज्ञानशाकुन्तलम्-कपिलदेव द्विवेदी - भू0 पेज-99
(ii) मृच्छकटिकम् - जगदीशचन्द्र मिश्र - भू0 पेज-47
(iii) शिशुपालवधम् - तारिणीश झा -भू0 पेज-22,23

34. लघुत्रय्यां कस्य काव्यस्य गणना भवति? RPSC SET–2010

(A) किरातार्जुनीयस्य (B) मेघदूतस्य
(C) नैषधस्य (D) शिशुपालवधस्य

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-208

35. युग्मपर्यायेषु समीचीनं विचिनुत– MH SET–2013

(क) किरातार्जुनीयम्	1. राजवाहनः
(ख) नैषधीयचरितम्	2. खण्डकाव्यम्
(ग) मेघदूतम्	3. दमयन्ती
(घ) दशकुमारचरितम्	4. द्रौपदी

	क	ख	ग	घ
(A)	4	2	1	3
(B)	4	3	2	1
(C)	1	2	3	4
(D)	3	4	1	2

संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-243,287,332,383

36. ग्रन्थान् कालानुक्रमेण लिखत– MH SET–2013

(क) किरातार्जुनीयम् (ख) नैषधीयचरितम्
(ग) शिशुपालवधम् (घ) रघुवंशम्

(A)	क	ग	ख	घ
(B)	ग	ख	क	घ
(C)	ख	ग	घ	क
(D)	घ	क	ग	ख

संस्कृत साहित्य का समी. इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-151,180,199,224

37. प्राचीनतम महाकाव्य कौन-सा है? UP PGT–2011

(A) कुमारसम्भवम् (B) किरातार्जुनीयम्
(C) बुद्धचरितम् (D) जानकीहरणम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-231

38. बुद्धचरितम् एकं .... अस्ति– GJ SET–2008, 2011

(A) रूपकम् (B) खण्डकाव्यम्
(C) महाकाव्यम् (D) चम्पूकाव्यम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-229

39. बुद्धचरितस्य प्रथमसर्गस्य नाम ...... इति।

(A) अभिनिष्क्रमणम् (B) संवेगोत्पत्तिः
(C) अन्तःपुरविहारः (D) भगवत्प्रसूतिः

स्रोत–बुद्धचरितम् - रामचन्द्रदास शास्त्री, पेज-01

40. अधस्तनवर्गयोः युग्मपर्यायेषु समीचीनं विचिनुत– MH SET–2014

(क) दिलीपः	1. रघुवंशम्
(ख) यक्षः	2. किरातार्जुनीयम्
(ग) द्रौपदी	3. मेघदूतम्
(घ) उपहारवर्मा	4. दशकुमारचरितम्

	क	ख	ग	घ
(A)	1	2	3	4
(B)	2	4	1	3
(C)	4	2	1	3
(D)	1	3	2	4

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-151,528,184,475

33. (C) 34. (B) 35. (B) 36. (D) 37. (C) 38. (C) 39. (D) 40. (D)

41. अधस्तनयुग्मानां सत्यासत्यत्वपर्यायेषु समीचीनं विचिनुत– MH SET–2011

(क) 'महीयांसः प्रकृत्या मितभाषिणः' इति भारविणा उक्तम्।
(ख) अग्निवर्णस्य वर्णनं मालविकाग्निमित्रे विद्यते।
(ग) रतिविलापः कुमारसम्भवे विद्यते।
(घ) हर्षचरितम् इत्येतत् काव्यं श्रीहर्षेण रचितम्

(A) सत्यम्, असत्यम्, सत्यम्, सत्यम्
(B) असत्यम्, सत्यम्, असत्यम्, सत्यम्
(C) सत्यम्, असत्यम्, असत्यम्, सत्यम्
(D) असत्यम्, असत्यम्, सत्यम्, असत्यम्

संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-271,478,211,395

42. सूची-I एवं सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए– UP PGT–2009

सूची-I	सूची-II
(क) किरातार्जुनीयम्	(i) श्रीकृष्ण
(ख) शिशुपालवधम्	(ii) अर्जुन
(ग) वेणीसंहारम्	(iii) दुष्यन्त
(घ) अभिज्ञानशाकुन्तलम्	(iv) भीम

	क	ख	ग	घ
(A)	(iii)	(ii)	(iv)	(i)
(B)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(C)	(ii)	(i)	(iv)	(iii)
(D)	(iii)	(ii)	(i)	(iv)

संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-243,262,518,483

43. अधोलिखित में से कौन-सा काव्य अर्वाचीन है? UP GIC–2009

(A) हर्षचरितम् (B) महावीरचरितम्
(C) सीताचरितम् (D) विक्रमाङ्कदेवचरितम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-260

44. (i) अधोलिखित में से कौन-सा ऐतिहासिक महाकाव्य है?
(ii) अधोलिखितेषु ऐतिहासिकमहाकाव्यमस्ति– UP GIC–2009, 2015

(A) नैषधीयचरितम् (B) जानकीहरणम्
(C) विक्रमाङ्कदेवचरितम् (D) बुद्धचरितम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-595

45. अधोलिखित में से कौन-सा महाकाव्य पचास सर्गों में निबद्ध है– UP GIC–2009

(A) जानकीहरण (B) भट्टिकाव्य
(C) सौन्दरनन्द (D) हरविजय

संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-278

46. रामायण के उपजीवी काव्यों में कौन सा नहीं है? UGC 73 J–2016

(A) भट्टिकाव्यम् (B) नैषधीयचरितम्
(C) सेतुबन्धः (D) जानकीहरणम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-287

47. शुद्धोधन किस ग्रन्थ का पात्र है? UGC 25 D–2002

(A) दशकुमारचरितम् (B) बुद्धचरितम्
(C) हर्षचरितम् (D) उत्तररामचरितम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-229

48. 'जानकीहरणम्' इति महाकाव्ये कति सर्गाः सन्ति– UGC 25 D–2011

(A) 18 (B) 20
(C) 22 (D) 21

संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-257

49. कस्य काव्यस्य अष्टमसर्गपर्यन्तम् एव मल्लिनाथेन व्याख्यानं रचितम्– UGC 25 D–2012

(A) रघुवंशस्य (B) किरातार्जुनीयस्य
(C) कुमारसम्भवस्य (D) नैषधस्य

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-150

50. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां विचिनुत– UGC 25 D–2012

(क) द्वाविंशति-सर्गात्मकम्	**(1) शिशुपालवधम्**
(ख) विंशतिसर्गात्मकम्	**(2) रघुवंशमहाकाव्यम्**
(ग) एकोनविंशति-सर्गात्मकम्	**(3) किरातार्जुनीयम्**
(घ) अष्टादश-सर्गात्मकम्	**(4) नैषधमहाकाव्यम्**

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(A)	3	1	4	2
(B)	2	3	1	4
(C)	1	4	3	2
(D)	4	1	2	3

संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-262,212,243,287

41. (D) 42. (C) 43. (C) 44. (C) 45. (D) 46. (B) 47. (B) 48. (B) 49. (C) 50. (D)

51. 'हैयङ्गवीनम्' इति शब्दस्य अर्थः– UGC 25 S–2013

(A) क्षीरम् (B) घृतम्
(C) जलम् (D) अग्निः

स्रोत–रघुवंशम् (1/45) - कृष्णमणि त्रिपाठी, पेज-21

52. गौतमबुद्धस्य चिकित्सकः क आसीत्? HE–2015

(A) जीवकः (B) मणिभद्रकः
(C) नागसेनः (D) संघभद्रः

स्रोत–प्राचीन भारत - सौरभ चौबे, पेज-138

53. काव्यस्य कति भेदाः ? BHU Sh.ET–2008

(A) द्वौ (B) पञ्च
(C) अष्टौ (D) नव

स्रोत–शिशुपालवध - तारिणीश झा, भू0 पेज-8

54. सातवाहनप्रणीता 'गाथासप्तशती' कस्यां भाषायामस्ति? DSSSB PGT–2014

(A) संस्कृते (B) प्राकृते
(C) अपभ्रंशे (D) भूतभाषायाम्

संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-343

55. पञ्चोपास्य देवताओं में कौन-कौन से देवता शामिल हैं? UP TGT–2004

(A) शिव, गणेश, सूर्य, विष्णु, दुर्गा
(B) अरविन्दम्, अशोक, चूतम्, नवमल्लिका, नीलोत्पल।
(C) अहिल्या, द्रौपदी, सीता, तारा, मन्दोदरी।
(D) दुग्धम्, दधि, घृतम्, मूत्रम्, गोमयम्।

स्रोत–नित्यकर्म-पूजाप्रकाश (गीताप्रेस)-लालबिहारी मिश्र, पेज-140

56. बुद्धचरित का वर्ण्यविषय है– BHU AET–2011

(A) बुद्ध का जीवनचरित
(B) बुद्ध का निर्वाण
(C) बुद्ध का दर्शन
(D) बौद्ध निकायों का सैद्धान्तिक विभेद

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-169

57. श्रव्यकाव्य में गणना जिसकी होती है, वह है– BHU MET–2015

(A) पद्यकाव्य (B) दर्शन
(C) नाटक (D) धर्मशास्त्र

स्रोत–मेघदूत -आर0 बी0 शास्त्री, भू. पेज-3

58. आख्यायिकायाः कथावस्तु अस्ति–AWES TGT–2012

(A) ऐतिहासिक (B) कविकल्पित
(C) मिश्रित (D) चमत्कारपूर्ण

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-390

59. शिवलीलार्णवकाव्ये सर्गाः– CVVET–2015

(A) 20 (B) 22
(C) 21 (D) 23

संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास-राधावल्लभ त्रिपाठी, पेज-506

60. वाल्मीकिरामायणमाश्रित्य कथा नास्ति यत्र– UGC 25 J–2016

(A) रघुवंशम् (B) कुन्दमाला
(C) मालतीमाधवम् (D) जानकीहरणम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-116

61. लघुत्रय्यां परिगण्यते– KL SET–2015

(A) रघुवंशम् (B) शिशुपालवधम्
(C) किरातार्जुनीयम् (D) नैषधीयचरितम्

संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-208

62. समुचितं सम्बद्धं विकल्पं चिनुत– UGC 73 J–2016

(A) गौडीयसंस्करणम् – रामायणम्
(B) पश्चिमोत्तरीयसंस्करणम् – महाभारतम्
(C) अनर्घराघवम् – गरुडपुराणम्
(D) इतिहासपुराणाभ्यां ..... समुपबृंहेत्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-103

63. उचित सम्बद्ध विकल्प चुनिये– UGC 73 J–2016

(A) आर्षकाव्यम् – रामायणम्
(B) विराटपर्व – महाभारतस्य दशमपर्व
(C) सुन्दरकाण्डम् – रामायणस्य द्वितीयं काण्डम्
(D) उत्तररामचरितचम्पूः – भोजराजः

संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-3)-बलदेव उपाध्याय, पेज-46

51. (B) 52. (A) 53. (A) 54. (B) 55. (A) 56. (A) 57. (A) 58. (A) 59. (B) 60. (C) 61. (A) 62. (A) 63. (A)

64. समुचित तालिका का चयन कीजिये– **UGC 73 J–2016**

(क) श्रीमद्भगवद्गीता (1) रामायणम्
(ख) गौडीयसंस्करणम् (2) विष्णु
(ग) पञ्चलक्षणम् (3) पुराणम्
(घ) महापुराणम् (4) महाभारतम्

	क	ख	ग	घ
(A)	3	1	2	4
(B)	4	1	3	2
(C)	4	2	1	3
(D)	2	4	1	3

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-94,96,103, 118

65. बृहत्त्रयी के अन्तर्गत नहीं है– **UK TET–2011**

(A) किरातार्जुनीयम् (B) शिशुपालवधम्
(C) कुमारसम्भवम् (D) नैषधीयचरितम्

संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-208

66. इनमें से कौन-सा महाकाव्य नहीं है– UGC 25 J–1994

(A) रघुवंशम् (B) शिशुपालवधम्
(C) हर्षचरितम् (D) नैषधीयचरितम्

संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-395

67. अधोलिखितेषु रामायणाश्रितं काव्यं नास्ति? **CVVET–2016**

(A) रघुवंशम् (B) भट्टिकाव्यम्
(C) सेतुबन्धम् (D) बुद्धचरितम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–116

64. (B) 65. (C) 66. (C) 67. (D)

09 अभिज्ञानशाकुन्तलम्

1. (i) 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के रचयिता हैं–
(ii) 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' किसने लिखा–
MP PSC–2000, BHU B.Ed–2011, UP TGT–2011

(A) बाणभट्ट (B) वेदव्यास
(C) कालिदास (D) भवभूति

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0 पेज-11,12

2. (i) अभिज्ञानशाकुन्तलम् साहित्य की किस विधा के अन्तर्गत है?
(ii) 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' है– UP TGT–2004, 2011

(A) महाकाव्य (B) व्याकरणग्रन्थ
(C) नाटक (D) गद्यकाव्य

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0 पेज-49

3. (i) 'अभिज्ञानशाकुन्तले' कति अङ्काः सन्ति?
(ii) अभिज्ञानशाकुन्तल में कितने अङ्क हैं?
BHU MET–2008, 2012, 2013, BHU Sh.ET–2009, 2012, UP TGT–2011, BHU AET–2012, JNU MET–2015

(A) 8 (B) 6
(C) 5 (D) 7

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-334, संस्कृत साहित्य का इतिहास -उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-483

4. 'शाकुन्तलकथायाः' वास्तव्यमुपजीव्यमस्ति–
UP GDC–2013

(A) ऋग्वेदः (B) धर्मशास्त्रम्
(C) सामवेदः (D) महाभारतम्

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0 पेज-6

5. (i) 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' का अङ्गी रस है–
(ii) अभिज्ञानशाकुन्तलस्य अङ्गीरसः अस्ति–
UP PGT–2011, UGC 25 J–2007, MGKV Ph.D–2016

(A) वीर (B) श्रृङ्गार
(C) करुण (D) शान्त

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0 पेज-60

6. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में किस रीति का प्रयोग है?
UP TGT–2009

(A) वैदर्भीरीति (B) गौडीरीति
(C) पाञ्चालीरीति (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0 पेज-76

7. (i) 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' का दुष्यन्त नायक है?
(ii) अभिज्ञानशाकुन्तलम् का नायक दुष्यन्त है?
UP PGT–2000, UP TGT–2010

(A) धीरप्रशान्त (B) धीरोद्धत्त
(C) धीरललित (D) धीरोदात्त

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् -कपिलदेव द्विवेदी, भू0 पेज-86

8. (i) महाभारतस्य कस्मात् पर्वणः कथां स्वीकृत्य कालिदासेन 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' विरचितम्–
(ii) 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' की कथा महाभारत के किस पर्व में प्राप्त होती है? UP PGT–2003,
(iii) अभिज्ञानशाकुन्तलस्य कथायाः मूलस्रोतः महाभारते कुत्रास्ति? UP TGT–2010
RPSC SET–2013-14, JNU MET–2015

(A) वनपर्व (B) सभापर्व
(C) आदिपर्व (D) शान्तिपर्व

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0 पेज-41

9. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' का सर्वप्रथम अंग्रेजी अनुवाद किसने किया? UP PGT–2005

(A) शेक्सपीयर (B) गेटे
(C) विलियमजोन्स (D) मैक्समूलर

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–17

10. 'शाकुन्तलम्' की कथा और कहाँ प्राप्त है?
UP PGT–2010

(A) महाभारत में (B) पद्मपुराण में
(C) वायुपुराण में (D) महाभारत/पद्मपुराण दोनों में

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0 पेज-06

1. (C)	2. (C)	3. (D)	4. (D)	5. (B)	6. (A)	7. (D)	8. (C)	9. (C)	10. (D)

11. महाभारत पर आश्रित नाटक है– UGC 25 D–1998, UP TGT–2004

(A) रत्नावली (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(C) स्वप्नवासवदत्तम् (D) मालतीमाधवम्

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0 पेज-06

12. एक आभरण खो जाने से किस कथा में स्थिति बदल गई है– UGC 25 J–1999

(A) रत्नावली (B) स्वप्नवासवदत्तम्
(C) बुद्धचरितम् (D) अभिज्ञानशाकुन्तलम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-334

13. (i) 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में 'अभिज्ञान' शब्द से किसका बोध होता है– UP TGT–2001, 2004

(ii) 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में अभिज्ञान का सम्बन्ध किस वस्तु से है?

(A) नथुनी (B) पायल
(C) अँगूठी (D) लॉकेट

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-3

14. 'अभिज्ञान' शब्द का अर्थ है– UP TGT–2011

(A) ज्ञान होना (B) स्मरण होना
(C) पहचान (D) अभियान होना

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-3

15. (i) अभिज्ञानशाकुन्तलस्य मूलस्रोतः–

(ii) अभिज्ञानशाकुन्तलस्य मूलकथायाः स्रोतोऽस्ति?

(iii) अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक का उत्स (मूल) है?

UP TGT–2004, BHU AET–2010, AWES TGT 2009

(A) ऋग्वेदः (B) छान्दोग्योपनिषद्
(C) ब्रह्मपुराणम् (D) महाभारतम्

(i) संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-335
(ii) अभिज्ञानशाकुन्तलम्- कपिलदेव द्विवेदी, भू0 पेज-41

16. शाकुन्तलमङ्गलाचरणे कीदृशः शिवः वर्णितः? HAP–2016

(A) दशमूर्तिः (B) नवमूर्तिः
(C) अष्टमूर्तिः (D) पञ्चमूर्तिः

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/1)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-01

17. अभिज्ञानशाकुन्तलम् का कथानक– UP TGT–2011

(A) ऐतिहासिक है
(B) उत्पाद्य है
(C) ऐतिहासिक होने पर भी कुछ परिवर्तित है
(D) इनमें से कुछ भी नहीं है

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0 पेज-41

18. अभिज्ञानशाकुन्तलस्य जर्मनभाषायां प्रथमः अनुवादकः आसीत्? DU Ph. D–2016

(A) गेटे (B) विलियमजोन्सः
(C) मैक्समूलरः (D) जॉर्जफोस्टरः

स्रोत–मेघदूतम् - विजेन्द्र कुमार शर्मा, भू0 पेज-15

19. (i) अभिज्ञानशाकुन्तलस्य नान्दीपाठे वर्णिताऽऽद्या सृष्टिरस्ति– UP GDC–2014

(ii) अभिज्ञानशाकुन्तलस्य प्रारम्भे नान्दीपद्ये स्त्रष्टुः आद्या सृष्टिः का? G GIC–2015

(A) पृथ्वी (B) जलम्
(C) अग्निः (D) वायुः

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/1) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-1

20. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में शकुन्तला को शाप किसने दिया? UP PGT–2000, 2013

(A) वशिष्ठ (B) नारद
(C) दुर्वासा (D) विश्वामित्र

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0 पेज-39

21. (i) अभिज्ञानशाकुन्तले विदूषकस्य नाम किम्?

(ii) शकुन्तलानाटके विदूषकस्य नाम–

(iii) 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' नाटक का विदूषक है–

(iv) अभिज्ञानशाकुन्तले विदूषकस्य नाम स्मरत साम्प्रतम्?

UP PGT–2002, 2010, UP TGT–2001, 2004, UK TET–2011, BHU AET–2010, 2012, UGC 25 D–1998, 2007, UGC 25 J–2011, 2016 HE –2015, K SET–2014, JNU MET–2015, GJ SET–2016

(A) मैत्रेय (B) माढव्य
(C) माणवक (D) गौतम

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0 पेज-99

11. (B) 12. (D) 13. (C) 14. (C) 15. (D) 16. (C) 17. (C) 18. (D) 19. (B) 20. (C) 21. (B)

22. दुष्यन्त की मनः स्थिति जानने के लिए मेनका ने अपनी किस सखी को भेजा था– UP PGT–2003, UP TGT–2004

(A) सानुमती (B) उर्वशी
(C) रम्भा (D) तिलोत्तमा

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0 पेज-40

23. (i) अभिज्ञानशाकुन्तले मातलिः कः आसीत्?
(ii) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में मातलि कौन है? UP PGT–2003, 2011 BHU MET–2012

(A) दुष्यन्त का पुरोहित (B) दुष्यन्त का सेनापति
(C) इन्द्र का सारथि (D) कण्व का शिष्य

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0 पेज-99

24. एक प्रसिद्ध नाटक में मधुकरिका कौन है– UP PGT–2005

(A) मेनका की सखी
(B) दुष्यन्त की परिचारिका
(C) मारीच के आश्रम की तपस्विनी
(D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0 पेज-100

25. (i) दुर्वासा ऋषि के क्रोधित हो जाने पर किसने उन्हें प्रसन्न किया? UP PGT–2010, UP TGT–2010,
(ii) किसने शकुन्तला को शाप के प्रभाव से मुक्त करने के लिये दुर्वासा से प्रार्थना की– UK TET–2011

(A) शकुन्तला (B) अनसूया
(C) प्रियंवदा (D) अनसूया/प्रियंवदा दोनों

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-187

26. अभिज्ञानशाकुन्तल में वेत्रवती है– UP PGT–2010, UK TET–2011

(A) नदी (B) उद्यानपालिका
(C) प्रतीहारी (D) अप्सरा

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0 पेज-100

27. शर्मिष्ठा के पिता थे– UP PGT–2010

(A) ययाति (B) शुक्राचार्य
(C) दानवराजवृषपर्वा (D) पुरु

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-211

28. सानुमती पात्र किस काव्य में है– UGC 25 J–1995

(A) किरातार्जुनीयम् (B) उत्तररामचरितम्
(C) शिशुपालवधम् (D) अभिज्ञानशाकुन्तलम्

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0 पेज-100

29. (i) शारद्वतपात्रस्य वर्णनं कस्मिन् नाटके अस्ति?
(ii) शारद्वत पात्र का वर्णन किस नाटक में है? BHU MET–2008, 2009, 2013

(A) उत्तररामचरिते (B) अभिज्ञानशाकुन्तले
(C) मृच्छकटिके (D) मुद्राराक्षसे

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् -कपिलदेव द्विवेदी, भू0 पेज-99

30. (i) 'अभिज्ञानशाकुन्तलस्य नायकः कः –
(ii) अभिज्ञानशाकुन्तलनाटके नायकः कः वर्तते– BHU MET–2008, BHU B.Ed–2015

(A) यौगन्धरायणः (B) दुष्यन्तः
(C) वसन्तकः (D) उदयनः

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् -कपिलदेव द्विवेदी, भू0 पेज-99

31. अनसूया किस नाटक में एक पात्र है–BHU MET–2010

(A) मालविकाग्निमित्रम् (B) विक्रमोर्वशीयम्
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (D) उत्तररामचरितम्

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0 पेज-100

32. (i) सर्वदमनः कस्य नाटकस्य पात्रमस्ति–
(ii) सर्वदमन किस नाटक का पात्र है? BHU MET–2011, 2012

(A) अभिज्ञानशाकुन्तलस्य (B) उत्तररामचरितस्य
(C) प्रतिमानाटकस्य (D) अभिषेकनाटकस्य

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0 पेज-99

33. राजा दुष्यन्तः कुत्र प्रसिद्धः– BHU Sh.ET–2011

(A) शिशुपालवधे (B) मेघदूते
(C) कुमारसम्भवे (D) अभिज्ञानशाकुन्तले

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0 पेज-86

34. दुष्यन्तः कस्य ग्रन्थस्य नायकः– BHU Sh.ET–2013

(A) कादम्बर्याः (B) अभिज्ञानशाकुन्तलस्य
(C) कुमारसम्भवस्य (D) महाकाव्यस्य

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0 पेज-86

22. (A) 23. (C) 24. (B) 25. (C) 26. (C) 27. (C) 28. (D) 29. (B) 30. (B) 31. (C) 32. (A) 33. (D) 34. (B)

35. अभिज्ञानशाकुन्तल में ययाति के किस पुत्र का नाम उल्लिखित है? UP TGT–1999

(A) यदु (B) तुर्वशु
(C) पुरु (D) द्रुध्यु

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-210-211

36. शकुन्तला की सखी कौन है– UP TGT–2001

(A) गौतमी (B) मालविका
(C) उर्वशी (D) अनसूया/प्रियंवदा

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0 पेज-100

37. (i) शकुन्तला के साथ राजदरबार तक कौन गयी थी?
(ii) इयं शकुन्तलया सह दुष्यन्तगृहं गच्छति–
(iii) शकुन्तला के साथ दुष्यन्त के राजदरबार तक कौन गई थी? UP TGT–2001, 2004, 2009,
(iv) अभिज्ञानशाकुन्तलम् के अनुसार शकुन्तला के साथ पतिगृह हस्तिनापुर गई थी– UP TET–2014, UK SLET–2015

(A) गौतमी (B) मेनका
(C) अनसूया (D) प्रियंवदा

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी,पेज-260

38. किसके आग्रह पर शकुन्तला के प्रति दुर्वासा के शाप में लघुता आयी? UP TGT–2001

(A) अनसूया (B) प्रियंवदा
(C) कण्व (D) गौतमी

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-187

39. दुर्वासा ऋषि के आश्रम में पदार्पण के समय शकुन्तला किसके ध्यान में मग्न थी? UPTGT–2011

(A) कण्व ऋषि के (B) दुष्यन्त के
(C) सद्यः प्रसूता हरिणी के (D) नवपल्लवयुक्त लता के

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-184

40. अनसूया और प्रियंवदा हैं– UP TGT–2003

(A) शकुन्तला की सखियाँ (B) दुष्यन्त की रानियाँ
(C) कण्व आश्रम की अध्यक्षा (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0 पेज-100

41. दुर्वासा ऋषि ने शकुन्तला को क्या शाप दिया? UP TGT–2011

(A) कि तू याद करी विद्या भूल जायेगी
(B) कि तू अस्वस्थ हो जायेगी
(C) कि तेरा पुत्र तुझे भूल जाएगा
(D) कि तू जिसके ध्यान में बैठी है वो तुझे भूल जाएगा

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/1) -कपिलदेव द्विवेदी, पेज-184

42. दुर्वासा ऋषि ने शापमोचन किस तरह बताया– UP TGT–2011

(A) छः महीने बाद दुष्यन्त को स्वतः शकुन्तला का स्मरण हो जाएगा
(B) वसन्त ऋतु में आम्रमंजरी देखकर दुष्यन्त को शकुन्तला की याद आ जाएगी
(C) किसी अभिज्ञान (पहचान) देखने से दुष्यन्त को शकुन्तला का स्मरण हो जाएगा
(D) पुनर्जन्म में दुष्यन्त को शकुन्तला का स्मरण हो जाएगा।

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् -कपिलदेव द्विवेदी,पेज-188

43. अभिज्ञानशाकुन्तले दुर्वाससः शापः कस्य उदाहरणं भवति– UGC 25 J–2016

(A) प्रवेशकस्य (B) चूलिकायाः
(C) विष्कम्भकस्य (D) अङ्कावतारस्य

अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/1)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-184,190

44. चतुर्थ अङ्क की विषयवस्तु मानवीय जीवन की किस घटना पर आधारित है? UPTGT–2011

(A) बच्चे के जन्म के अवसर की
(B) बच्चे के गुरुकुल जाने के अवसर की
(C) बेटी की शादी होने पर विदाई के अवसर की
(D) मृत्यूपरान्त श्मशान जाने के अवसर की

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-487

35. (C) 36. (D) 37. (A) 38. (B) 39. (B) 40. (A) 41. (D) 42. (C) 43. (C) 44. (C)

45. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' नाटक में वर्णित गौतमी है? UP TGT–2003

(A) दुष्यन्त की परिचारिका
(B) कण्व आश्रम की अध्यक्षा
(C) मारीच आश्रम की तपस्विनी
(D) एक अप्सरा

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0 पेज-100

46. गौतमी कौन थी? UP TGT–2009

(A) शकुन्तला की सखी (B) वृद्धा तापसी
(C) आश्रम की परिचारिका (D) कण्व की पत्नी

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0 पेज-100

47. अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक में गौतमी है– UP TGT–2004

(A) शकुन्तला की सखी (B) अप्सरा
(C) तपोवन की अध्यक्षा (D) दुष्यन्त की प्रतीहारी

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0 पेज-100

48. शार्ङ्गरव पात्र का वर्णन किस नाटक में है? BHU MET–2016

(A) उत्तररामचरित (B) मृच्छकटिक
(C) अभिज्ञानशाकुन्तल (D) मुद्राराक्षस

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0 पेज-99

49. (i)'तपोधनं वेत्सि न मामुपस्थितम्' यहाँ तपोधन शब्द प्रयुक्त हुआ है– UP TGT–2003, DL–2015
(ii) 'तपोधनं वेत्सि न माम् उपस्थितम्' इति कस्य परिचयोऽस्ति?

(A) कण्व के लिए (B) दुष्यन्त के लिए
(C) दुर्वासा के लिए (D) जंगल के लिए

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/1)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-184

50. 'अस्यामहं त्वयि च सम्प्रति वीतचिन्तः' कः? KL SET–2016

(A) दुष्यन्तः (B) शार्ङ्गरवः
(C) कण्वः (D) मारीचः

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/13)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-245

51. शकुन्तला को विदाई का सन्देश दिया–UP TGT–2004

(A) कण्व ने (B) दुर्वासा ने
(C) तपोवन के वृक्षों ने (D) मृगों ने

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/18)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–229

52. ''मम विरहजां न त्वं वत्से! शुचं गणयिष्यसि'' यहाँ 'मम' से तात्पर्य है? UP TGT–2004

(A) कण्व (B) शकुन्तला
(C) सर्वदमन (भरत) (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/19)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-233

53. (i) शकुन्तला की माता कौन थी? UP TGT–2004
(ii) अभिज्ञानशाकुन्तले शकुन्तलायाः मातुः नाम किम्?
(iii) शकुन्तलायाः जन्मदात्री माता–
RPSC ग्रेड-I (PGT)–2014, CCSUM Ph.D–2016

(A) मेनका (B) शर्मिष्ठा
(C) मदिरा (D) मैना

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0 पेज-100

54. (i) शकुन्तला-दुष्यन्त के पुत्र का नाम है?
(ii) दुष्यन्तस्य पुत्रः कः? UP TGT–2004, RPSC SET–2010
(iii) अभिज्ञानशाकुन्तलनाटके दुष्यन्तशकुन्तलयोः पुत्रस्य नाम किं वर्तते? RPSC ग्रेड-I (PGT)–2015

(A) सर्वदमन (भरत) (B) चन्द्रापीड
(C) वैशम्पायन (D) पुरु

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0 पेज-99

55. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में सखियों ने शापवृत्तान्त सर्वप्रथम किसे सुनाया? UP TGT–2004

(A) कण्व को (B) मेनका को
(C) शकुन्तला को (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-189

56. दुष्यन्त के साथ शकुन्तला के विवाह की सूचना महर्षि कण्व को किसने दी? UP TGT–2005

(A) गौतमी ने
(B) अनसूया और प्रियंवदा ने
(C) अशरीरिणी छन्दोमयी वाणी ने
(D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-198

45. (B) 46. (B) 47. (C) 48. (C) 49. (C) 50. (C) 51. (A) 52. (A) 53. (A) 54. (A) 55. (D) 56. (C)

57. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' नाटक में वर्णित शार्ङ्गरव है– UP TGT–2005
(A) कण्व का शिष्य (B) मारीच का शिष्य
(C) दुष्यन्त का पुरोहित (D) राजा ययाति का पुत्र
स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू० पेज-93-94

58. अभिज्ञानशाकुन्तलनाटके मारीचस्य शिष्यः कः अस्ति– JNU MET–2015
(A) गालवः (B) शार्ङ्गरवः
(C) मालवः (D) शारद्वतः
स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू० पेज-99

59. (i) कण्व ऋषि को इस नाम से भी पुकारते थे?
(ii) 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में कण्व ऋषि को किस अन्य नाम से वर्णित किया गया है? UP TGT–2009, 2011
(A) दुर्वासा (B) वशिष्ठ
(C) गौतमी (D) काश्यप
स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू० पेज-89

60. राजा दुष्यन्त की प्रथम पटरानी थी– UP TGT–2010
(A) सानुमती (B) वसुमती
(C) शकुन्तला (D) मेनका
स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-368

61. 'प्रियंवदा' किस नाटक में है– UGC 73 D–1996
(A) रामदूत (B) अभिषेक
(C) मृच्छकटिक (D) शाकुन्तलम्
स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू० पेज-100

62. पुरु किसका पुत्र था? UP GDC–2008
(A) देवयानी (B) मेनका
(C) शकुन्तला (D) शर्मिष्ठा
स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-211

63. मघवतः सकाशात् केन सह मनुष्यलोकमवतरति दुष्यन्तः? BHU AET–2012
(A) जानुकेन (B) माधव्येन
(C) गौतमेन (D) मातलिना
स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-388

64. अभिज्ञानशाकुन्तले ऋषि-पात्राणां संख्या वर्तते– BHU AET–2010
(A) 02 (B) 04
(C) 06 (D) 03
स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू० पेज-53

65. मातलि किस नाटक का पात्र है? BHU MET–2016
(A) प्रतिमानाटक (B) मृच्छकटिक
(C) अभिज्ञानशाकुन्तल (D) मध्यमव्यायोग
स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू० पेज-99

66. महर्षि कण्व किनके साथ शकुन्तला को पतिगृह भेजते हैं? UP TGT–2013
(A) शार्ङ्गरव (B) शारद्वत
(C) गौतमी (D) उपर्युक्त सभी
स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू० पेज-39

67. (i) कालिदास ने 'सुलभकोपो महर्षिः' किसे कहा है?
(ii) सुलभकोपो महर्षिः अस्ति– UP TGT–2004, UP PGT (H)–2010
(A) दुर्वासा को (B) विश्वामित्र को
(C) परशुराम को (D) वशिष्ठ को
स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-185

68. (i) शाकुन्तले दुष्यन्तपुत्रस्य प्रथमं नाम किम् आसीत्–
(ii) दुष्यन्तपुत्रस्य प्रथमं नाम किम् आसीत्? UGC 25 J–2015, Jn–2017
(A) भरतः (B) दौष्यन्तिः
(C) सर्वदमनः (D) गौतमः
स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-448

69. 'गण्डकस्योपरि पिण्डकः संवृत्तः' है– UP PGT–2003, 2004
(A) सूक्ति (B) काव्यलक्षण
(C) मुहावरा (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं
स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-91,93

70. 'सर्वथा चक्रवर्तिनं पुत्रमाप्नुहि' से क्या निर्दिष्ट है? UP PGT–2005
(A) अभिज्ञानशाकुन्तल के कथानक का प्रयोजन
(B) कालिदास को पुत्रप्राप्ति
(C) कुमारकार्तिकेय का जन्म
(D) इनमें से कोई नहीं
स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-28

57. (A) 58. (A) 59. (D) 60. (B) 61. (D) 62. (D) 63. (D) 64. (D) 65. (C) 66. (D) 67. (A) 68. (C) 69. (C) 70. (A)

71. सत्य कथन का चयन करें– UP PGT–2009, UP TGT–2009

(A) दुष्यन्त-शकुन्तला का विवाह 'गान्धर्व' था।
(B) दुष्यन्त-शकुन्तला का विवाह 'दैव' था।
(C) दुष्यन्त-शकुन्तला का विवाह 'प्रजापत्य' था।
(D) दुष्यन्त-शकुन्तला का विवाह 'पैशाची' था।

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0 पेज-39

72. ``......... षड्भागमक्षय्यं ददत्यारण्यका हि नः।'' उपर्युक्त रिक्तस्थान की पूर्ति के लिए कौन-सा विकल्प उपयुक्त है? UP PGT–2005

(A) यशः (B) तपः
(C) मनः (D) धनम्

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (2/13)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-120

73. शकुन्तला से 'भर्तुर्बहुमता भव' यह वाक्य किसने कहा है? UP TGT–1999

(A) काश्यप ने (B) एक तापसी ने
(C) गौतमी ने (D) प्रियंवदा ने

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-202

74. 'वामाः कुलस्याधयः' में 'वामा' का अभिप्राय है– UP TGT–2005, 2009, UP PGT (H)–2009

(A) सुन्दर युवतियाँ
(B) अच्छे स्वभाव वाली स्त्रियाँ
(C) मनोनुकूल व्यवहार करने वाली स्त्रियाँ
(D) कहे गये ढंग के विपरीत या प्रतिकूल आचरण करने वाली स्त्रियाँ

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/18)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-229

75. 'वामाः कुलस्याधयः' मे 'वामा' का क्या अर्थ है? BHU MET–2016

(A) कटाक्ष (B) सुन्दरी
(C) वामभाग में स्थिता (D) विपरीता

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/18)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-229

76. 'दिष्ट्या धूमाकुलितदृष्टेरपि यजमानस्य पावक एवाहुतिः पतिता'– इस दृष्टान्त द्वारा किसने अपनी कृतार्थता स्वीकार की है? UP PGT–2011

(A) कण्व (B) गौतमी
(C) मातलि (D) शकुन्तला

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-197

77. ''दिष्ट्या धूमाकुलितदृष्टेरपि यजमानस्य पावक एवाहुतिः पतिता।'' इस वाक्य में 'पावक' शब्द से किसको सङ्केतित किया गया है? UP TGT–2005

(A) शकुन्तला को (B) दुष्यन्त को
(C) कण्व को (D) यज्ञशाला को

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-197

78. 'आमन्त्रयस्व सहचरम्' का अभिप्राय है– UP TGT–2005

(A) सहचर से मिल लो (B) सहचर से बात कर लो
(C) सहचर को छोड़ दो (D) सहचर से विदा ले लो

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-173

79. विदाई के साथ कण्व ने किस श्लोक से शकुन्तला को उपदेश दिया? UP TGT–2005

(A) शुश्रूषस्व गुरून् ....
(B) अस्मान् साधु विचिन्त्य ....
(C) पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलम् ....
(D) एषापि प्रियेण विना गमयति ....

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/18)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-229

80. 'यात्येकतोऽस्तशिखरं पतिरोषधीनाम्' यहाँ 'पतिरोषधीनाम्' शब्द प्रयुक्त हुआ है? UP TGT–2005

(A) चन्द्रमा के लिए (B) सूर्य के लिए
(C) कण्व के लिए (D) विश्वामित्र के लिए

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/2)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-190

81. ''भूयिष्ठं भव दक्षिणा परिजने'' में 'परिजन' का अर्थ है? UP TGT–2009

(A) सौत (B) अत्यधिक
(C) उदार (D) सेवकजन

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/18)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-229

71. (A) 72. (B) 73. (B) 74. (D) 75. (D) 76. (A) 77. (B) 78. (D) 79. (A) 80. (A) 81. (D)

82. ''आ परितोषाद् विदुषां न साधु मन्ये .... विज्ञानम्।'' **BHU AET–2012**

(A) प्रबन्ध (B) प्रमाण
(C) प्रयोग (D) प्रसाद

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/2) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-8

83. अथवा भवितव्यानां .... भवन्ति सर्वत्र। **BHU AET–2012**

(A) पात्राणि (B) सूत्राणि
(C) द्वाराणि (D) तन्त्राणि

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/16)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-38

84. गच्छति पुरः शरीरं धावति पश्चादसंस्तुतं चेतः। चीनांशुकमिव केतोः ..... नीयमानस्य– **BHU AET–2012**

(A) प्रतिकूलं (B) प्रतिभवनं
(C) सुरनगरीं (D) प्रतिवातं

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/34)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-89

85. ''सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु .... मन्तःकरण-प्रवृत्तयः।'' **BHU AET–2012**

(A) प्रधान (B) प्रमाण
(C) सन्धान (D) सिद्धान्त

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/22)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-54

86. ''अतः परीक्ष्य कर्तव्यं विशेषात् सङ्गतं रहः। .... हृदयेष्वेवं वैरीभवति सौहृदम्॥'' **BHU AET–2012**

(A) अदृष्ट (B) अनिष्ट
(C) अमित्र (D) अज्ञात

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (5/24)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-291

87. येन येन वियुज्यन्ते प्रजाः स्निग्धेन बन्धुना। स स ...... तासां दुष्यन्त इति घुष्यताम्॥ **BHU AET–2012**

(A) शापदृते (B) कोपादृते
(C) पापादृते (D) दोषादृते

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (6/23)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-370

88. ''तेजोद्वयस्य युगपद् व्यसनोदयाभ्यां लोको .... इवात्मदशान्तरेषु।'' **BHU AET–2011**

(A) नियुज्यत (B) नियम्यत
(C) विभज्यत (D) विबोध्यत

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/2)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-190

89. ''तत्र श्लोकचतुष्टयम्'' इत्युक्तौ 'तत्र' इति पदेन आशयोऽस्ति। **UP GIC–2015**

(A) उत्तररामचरितस्य तृतीयोऽङ्कः
(B) अभिज्ञानशाकुन्तलस्य चतुर्थोऽङ्कः
(C) मृच्छकटिकस्य प्रथमोऽङ्कः
(D) उक्तेषु किमपि न

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-341

90. (i) धीवरेण शकुन्तलाया अंगुलीयकप्राप्तिः कस्मिन्नङ्के वर्णिता– **UP PGT–2000**

(ii) 'धीवर प्रसङ्ग' अभिज्ञानशाकुन्तलम् के किस अङ्क में है? **RPSC SET–2013-14**

(A) तृतीय (B) पञ्चम
(C) षष्ठ (D) सप्तम

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0 पेज-40

91. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में विदूषक का चित्रण हुआ है? **UP PGT–2002**

(A) प्रथम अङ्क में (B) द्वितीय अङ्क में
(C) तृतीय अङ्क में (D) पञ्चम अङ्क में

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0 पेज-38

92. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के किस अङ्क के प्रारम्भ में सर्वप्रथम शुद्ध विष्कम्भक का प्रयोग किया गया है? **UP PGT–2002**

(A) प्रथम अङ्क (B) द्वितीय अङ्क
(C) तृतीय अङ्क (D) चतुर्थ अङ्क

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-134

93. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' नाटक में प्रवेशक का प्रयोग हुआ है– **UP PGT–2002**

(A) तृतीय अङ्क में (B) द्वितीय अङ्क में
(C) पञ्चम अङ्क में (D) षष्ठ अङ्क में

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-317

94. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के किस अङ्क में 'विष्कम्भक' समाप्त होता है? **UP PGT–2004, 2009, 2010, UK TET–2011**

(A) द्वितीय (B) तृतीय
(C) चतुर्थ (D) पञ्चम

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-190

82. (C) 83. (C) 84. (D) 85. (B) 86. (D) 87. (C) 88. (B) 89. (B) 90. (C) 91. (B) 92. (C) 93. (D) 94. (C)

95. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम् में शापवृत्तान्त किस अङ्क में है? UP TGT–2004

(A) प्रथम (B) तृतीय
(C) चतुर्थ (D) षष्ठ

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/1)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-184

96. अभिज्ञानशाकुन्तलम् की रचना करते समय कवि कालिदास की किस मौलिकता के कारण दुष्यन्त का चरित्र उदात्त बन पाया– UP TGT–2011

(A) शकुन्तला जैसी प्रकृति-पुत्री को प्रेम करने के कारण
(B) भारतवर्ष के वीर सम्राट् की छवि प्रस्तुत करने के कारण
(C) दुर्वासा ऋषि के शाप की कल्पना के कारण
(D) पहचान के रूप में अंगूठी देने के कारण

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-336

97. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अङ्क में विष्कम्भक है? UP TGT–2009

(A) अङ्क के अन्त में (B) अङ्क के प्रारम्भ में
(C) अङ्क के मध्य में (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-190

98. कालिदास कृत 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' नाटक के किस अङ्क को सर्वाधिक महत्त्व दिया जाता है? UP TET–2014

(A) द्वितीय (B) चतुर्थ
(C) पञ्चम (D) सप्तम

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-341

99. कस्मिन् अङ्के शकुन्तला मनोगतं गीतवस्तु नलिनीपत्रे नखैर्निक्षिप्तवर्णं करोति? BHU AET–2012

(A) प्रथमे (B) तृतीये
(C) द्वितीये (D) पञ्चमे

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-158

100. (i) आकाशयानेन सानुमती नामाप्सराः कस्मिन् अङ्के प्रविशति? UGC 25 Jn–2017

(ii) सानुमत्याः उपाख्यानम् अभिज्ञानशाकुन्तले कस्मिन् अङ्के अस्ति? BHU AET–2012

(iii) शाकुन्तले सानुमतीप्रवेशः कस्मिन्नङ्के वर्तते? KL SET–2014

(A) चतुर्थे (B) षष्ठे
(C) पञ्चमे (D) सप्तमे

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–318

101. शकुन्तलायाः हस्तात् परिभ्रष्टम् अङ्गुलीयकं पुनः कस्मिन्नङ्के राज्ञा आसादितम्? BHU AET–2012

(A) चतुर्थे (B) षष्ठे
(C) पञ्चमे (D) सप्तमे

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0 पेज-40

102. अभिज्ञानशाकुन्तलस्य कस्मिन्नङ्के कण्वः शकुन्तलामुपदिशति? BHU AET–2010

(A) द्वितीये (B) तृतीये
(C) चतुर्थे (D) पञ्चमे

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/18)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–229

103. अभिज्ञानशाकुन्तले वायोः विभिन्नस्तरेषु परिभ्रमणं कस्मिन्नङ्के वर्तते– UGC 25 J–2016

(A) चतुर्थे (B) पञ्चमे
(C) षष्ठे (D) सप्तमे

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (7/6)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-395

104. अभिज्ञानशाकुन्तले षष्ठाङ्कगतः धीवरवृत्तान्तः कस्य उदाहरणं भवति? UGC 25 D–2015

(A) प्रवेशकस्य (B) विष्कम्भकस्य
(C) अङ्कावतारस्य (D) प्रस्तावनायाः

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-317

105. (i) किस स्थान पर शकुन्तला की अँगूठी गिरी?

(ii) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में 'अभिज्ञान' कहाँ पर गिरा था? UK SLET–2015, UGC 25 J–2013

(iii) शकुन्तलायाः अङ्गुलीयकं कुत्र प्रभ्रष्टम्– UP PGT–2003, UP TGT–2004, UP TET–2014

(A) मार्ग में (B) शचीतीर्थ में
(C) प्रभासतीर्थ में (D) कण्वाश्रम में

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-283,284

106. 'मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति'-अत्र काव्यादर्शकाराभिप्रेतः गुणः कः? KL SET–2016

(A) सौकुमार्यम् (B) श्लेषः
(C) माधुर्यम् (D) प्रसादः

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/20)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-47

95. (C) 96. (C) 97. (B) 98. (B) 99. (B) 100. (B) 101. (B) 102. (C) 103. (D) 104. (A) 105. (B) 106. (C)

107. शकुन्तला की शापमुक्ति का कारण है? UP TGT–2003

(A) मोतियों की माला (B) कङ्गन
(C) बाजूबन्द (D) अँगूठी

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू. पेज-40

108. राजा दुष्यन्त शकुन्तला को पहचान सकते हैं जब वे देखेंगे– UP TGT–2004

(A) कुण्डल (B) हार
(C) अँगूठी (D) केयूर

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू. पेज-39

109. अनसूया एवं प्रियंवदा ने अपने किस ज्ञान के आधार पर शकुन्तला को आभूषण पहनाया? UP TGT–2005

(A) उन्होंने आभूषण पहनाने का प्रशिक्षण लिया था।
(B) गौतमी ने उन्हें आभूषण पहनाना बताया था।
(C) शकुन्तला ने स्वतः अपने ज्ञान से आभूषण पहना।
(D) चित्रकारी में आभूषण प्रयोग से प्राप्त ज्ञान के आधार पर पहनाया।

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-207-208

110. 'शकुन्तला के गर्भ में दुष्यन्त का तेज (वीर्य) पल रहा है'– यह बात कण्व को किसने बताई? UP TGT–2005

(A) अनसूया एवं प्रियंवदा ने (B) गौतमी ने
(C) छन्दोमयी वाणी ने (D) कण्व के शिष्यों ने

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-198

111. शकुन्तला ने विदाई के समय जिस लता का आलिङ्गन किया था उसका क्या नाम था? UP TGT–2005

(A) वनज्योत्स्ना (B) नवमालिका (चमेली)
(C) लताभगिनी (D) केसरलता

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-219

112. दुष्यन्त के वंश का नाम था– UP TGT–2009

(A) रघुवंश (B) पुरु
(C) काश्यप (D) कुशिक

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0 पेज-86

113. शकुन्तला के अनिष्ट निवारण के लिए महर्षि कण्व कहाँ गये थे? UP TGT–2012

(A) हिमालय (B) सोमतीर्थ
(C) कुरुक्षेत्र (D) प्रयाग

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-31

114. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अङ्क में कुल कितने श्लोक हैं? UP TGT–2010, 2013

(A) 48 (B) 42
(C) 46 (D) 22

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-240

115. अभिज्ञानशाकुन्तलस्य चतुर्थाङ्कस्य कति श्लोकाः प्रसिद्धाः? RPSC ग्रेड-II (TGT)–2010

(A) पञ्च (B) त्रयः
(C) सप्त (D) चत्वारः

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-341

116. अधोऽङ्कितेषु पद्येषु शाकुन्तलस्य प्रसिद्धश्लोकश्चतुष्ट्यां न गण्यते– UP GDC–2012

(A) पातुं न प्रथमं व्यवस्यति........
(B) शुश्रूषस्व गुरून् कुरु............
(C) यास्यत्यद्य शकुन्तलेति.........
(D) अनाघ्रातं पुष्पं..............

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू. पेज-68

117. ग्रीवाभङ्गाभिरामं मुहुरनुपतति स्यन्दने दत्तदृष्टिः, पश्चार्द्धेन प्रविष्टः शरपतनभयाद् भूयसा पूर्वकायम्। दर्भैरर्धावलीढैः श्रमविवृतमुखभ्रंशिभिः कीर्णवर्त्मा, पश्योदग्रप्लुतत्त्वाद् वियति बहुतरं स्तोकमुर्व्यां प्रयाति।।'' इत्यस्मिन् श्लोके कोऽलङ्कारः? RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014

(A) निदर्शना (B) स्वभावोक्तिः
(C) व्यतिरेकः (D) दीपकम्

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/7)- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-19

118. 'अभिज्ञानशाकुन्तल' के चतुर्थ अङ्क में ''लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु'' पद्यांश में अलङ्कार है– UP GIC–2009

(A) उत्प्रेक्षा (B) अतिशयोक्ति
(C) उपमा (D) अर्थान्तरन्यास

अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/2)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-190-192

107. (D) 108. (C) 109. (D) 110. (C) 111. (A) 112. (B) 113. (B) 114. (D) 115. (D) 116. (D) 117. (B) 118. (A)

119. अधोलिखित पद्यों में 'शाकुन्तल' के प्रसिद्ध चार पद्यों की गणना नहीं की जाती– UP PGT–2011

(A) पातुं न प्रथमं व्यवस्यति ....

(B) यास्यत्यद्य शकुन्तलेति ...

(C) शुश्रूषस्व गुरून् कुरु .....

(D) उद्गलितदर्भकवला मृग्यः ....

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0 पेज-68

120. शाकुन्तलश्लोकचतुष्टये एष श्लोकः न परिगण्यते? K SET–2015

(A) यास्यत्यद्य शकुन्तलेति .....

(B) शुश्रूषस्व गुरून् ......

(C) अस्मान् साधु विचिन्त्य ....

(D) अस्यास्सर्गविधौ प्रजापतिरभूत्..........

स्रोत–विक्रमोर्वशीयम् (1/10) - परमेश्वरदीन पाण्डेय, पेज-20

121. पक्षिभिः पालिता नायिका का? GJ SET–2013

(A) शकुन्तला (B) उर्वशी

(C) मालविका (D) रत्नावली

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0 पेज-88

122. शकुन्तलायाः पालकपिता– GJ SET–2007

(A) भारद्वाजः (B) जमदग्निः

(C) कण्वः (D) अग्निः

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0 पेज-99

123. शक्रावतारतीर्थस्य निवासी कः? MH SET–2016

(A) धीवरः (B) माधव्यः

(C) शार्ङ्गरवः (D) उदयनः

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-306,307

124. 'बलवदपि शिक्षितानामात्मन्यप्रत्ययं चेतः' में अलङ्कार है– BHU MET–2016

(A) उपमा (B) अर्थान्तरन्यास

(C) उत्प्रेक्षा (D) रूपक

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/2) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-9

125. अभिज्ञानशाकुन्तलस्य चतुर्थाङ्के वर्णितम्? RPSC ग्रेड-II (TGT) 2010

(A) गौतम्याः जीवनम्

(B) दुष्यन्तस्य पराक्रमम्

(C) शकुन्तलायाः भरतेन सह संवादः

(D) शकुन्तलायाः विदावेलायां पितुः सन्देशम्

स्रोत–(i) संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-341

(ii) अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-229

126. दुष्यन्तगतां रतिं प्रति शकुन्तला केन शब्देन प्रतिपाद्यते? DSSSB TGT–2014

(A) उद्दीपनविभावः (B) समभावः

(C) आलम्बनविभावः (D) भार्याभावः

स्रोत–साहित्यदर्पण - अभिराजराजेन्द्र मिश्र, पेज-215

127. 'परभृत' किस पक्षी को कहते हैं? UP TGT–2010

(A) कौआ (B) कोयल

(C) कबूतर (D) मयूर

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/10)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-215

128. 'शकुन्तला' नाटक का खड़ी बोली गद्य में अनुवाद किया– UP TGT (H)–2013

(A) राजाशिवप्रसाद सितारे हिन्द ने

(B) राजालक्ष्मण सिंह ने

(C) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने

(D) गिरिधरदास ने

स्रोत–हिन्दी साहित्य का इतिहास - रामचन्द्र शुक्ल, पेज-298

129. राजा लक्ष्मण सिंह ने 'अभिज्ञानशाकुन्तल' का अनुवाद कब किया? UGC (H) J–2012

(A) 1863 ई0 (B) 1880 ई0

(C) 1876 ई0 (D) 1881 ई0

स्रोत–

130. हंसपदिका का गीत है– UGC 73 D–1997

(A) मृच्छकटिकम् में (B) अभिषेकम् में

(C) शाकुन्तलम् में (D) मुद्राराक्षसम् में

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-241

119. (D) 120. (D) 121. (A) 122. (C) 123. (A) 124. (B) 125. (D) 126. (C) 127. (B) 128. (B) 129. (A) 130. (C)

131. गृहिणी किम् उच्यते? RPSC ग्रेड-II (TGT)–2010
(A) वनम् (B) गृहम्
(C) धनम् (D) उद्यानम्
स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (2/18)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-231

132. निम्न में से कौन-सा कथन असत्य है–UP TGT–2009
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक में सात अङ्क हैं।
(B) शाकुन्तलम् की कथा महाभारत के आदिपर्व में वर्णित है।
(C) कालिदास वैदर्भी रीति के कवि हैं।
(D) मालविकाग्निमित्रम् नाटक में सात अङ्क हैं।
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-326

133. दुष्यन्त के साथ शकुन्तला का विवाह सम्पन्न होने पर उसकी सखियाँ हो जाती हैं– UP TGT–2003
(A) प्रसन्न (B) चिन्तित
(C) क्रोधित (D) ईर्ष्याग्रस्त
स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-180

134. (i) ''अविश्रमोऽयं लोकतन्त्राधिकारः'' इस उक्ति से युक्त नाटक है। UP PGT–2000, BHU MET–2016
(ii) 'अविश्रमोऽयं लोकतन्त्राधिकारः' यह उक्ति कहाँ है?
(A) मुद्राराक्षसम् में (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में
(C) मृच्छकटिकम् में (D) इनमें से किसी में नहीं
स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-249

135. ''अहो रागपरिवाहिणी गीतिः'' राजा दुष्यन्त का यह कथन किसकी प्रशंसा में है– UP PGT–2005
(A) शकुन्तला के गाने पर (B) प्रियंवदा के गाने पर
(C) हंसपदिका के गाने पर (D) गौतमी के गाने पर
स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-243

136. (i) 'स्त्रीणामशिक्षितपटुत्वममानुषीषु'– इस उक्ति से युक्त नाटक है– UP PGT–2004, 2009,
(ii) ''स्त्रीणामशिक्षितपटुत्वममानुषीषु'' यह सूक्ति किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है? H-TET–2015
(iii) 'स्त्रीणामशिक्षितपटुत्वममानुषीषु सन्दृश्यते' इति उक्तिः कुत्र– UGC 25 D–2014
(A) उरुभङ्गम् (B) मालविकाग्निमित्रम्
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (D) विक्रमाङ्कचरितम्
स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (5/22)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-287

137. ''श्रद्धा वित्तं विधिश्चेति त्रितयं तत्समागतम्'' किस नाटक का श्लोक है? UP PGT–2009
(A) मुद्राराक्षसम् (B) उत्तररामचरितम्
(C) विक्रमोर्वशीयम् (D) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (7/29)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–441

138. ''श्रिया दुरापः कथमीप्सितो भवेत्'' इदं वाक्यमस्ति? UGC 25 D–2006
(A) स्वप्नवासवदत्ते (B) मुद्राराक्षसे
(C) अभिज्ञानशाकुन्तले (D) मृच्छकटिके
स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (3/11)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-155

139. ''यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया''– कस्य वचनमिदम्? BHU AET–2012, UGC 25 J–2012
(A) दुष्यन्तस्य (B) कण्वस्य
(C) शारद्वतस्य (D) गौतम्याः
स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/6)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-208

140. ''भवितव्यानां द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र'' किस ग्रन्थ की उक्ति है? BHU MET–2008
(A) महाभारतम् (B) किरातार्जुनीयम्
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (D) हितोपदेश
स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/16)-कपिलदेव द्विवेदी,पेज-38

141. ''राजरक्षितव्यानि तपोवनानि नाम'' यह वाक्य किस नाटक में है? BHU MET–2008
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (B) रत्नावली
(C) वेणीसंहारम् (D) प्रतिमानाटकम्
स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-61

142. ''पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलम्'' किस काव्य की उक्ति है? BHU MET–2010
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (B) शिशुपालवधम्
(C) किरातार्जुनीयम् (D) उत्तररामचरितम्
स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/9)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–213

143. अभिज्ञानशाकुन्तलस्य नान्दीपाठः कस्मिन् छन्दसि भवति– MGKV Ph. D–2016
(A) शिखरिणी (B) स्रग्धरा
(C) मन्दाक्रान्ता (D) शार्दूलविक्रीडित
स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-05

131. (B) 132. (D) 133. (A) 134. (B) 135. (C) 136. (C) 137. (D) 138. (C) 139. (B) 140. (C) 141. (A) 142. (A) 143. (B)

144. 'अर्थो हि कन्या परकीय एव' में कन्या की उपमा किस उपमान के साथ दी गयी है? UP TGT–2011

(A) कमलिनी के साथ (B) चाँदनी के साथ
(C) धरोहर के साथ (D) ब्याज के साथ

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/22)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-240

145. ''अनिर्वर्णनीयं परकलत्रम्'' यह उक्ति कहाँ की है? BHU AET–2009, BHU MET–2013

(A) प्रतिमानाटकम् (B) रघुवंशम्
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (D) वेणीसंहारम्

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-267

146. (i) ''अतिस्नेहः पापशङ्की'' इति सूक्तिः कस्मिन् नाटके विद्यते–
(ii) ''अतिस्नेहः पापशङ्की'' यह सूक्ति किस ग्रन्थ की है– UP TGT–2009, RPSC SET–2010

(A) नीतिशतकम् (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(C) उत्तररामचरितम् (D) शिवराजविजयम्

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-235

147. ''न खलु धीमतां कश्चिदविषयो नाम'' सूक्ति है– UP TGT–2010

(A) किरातार्जुनीयम् की (B) शिवराजविजयम् की
(C) शुकनासोपदेश की (D) अभिज्ञानशाकुन्तलम् की

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-229

148. ''किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्'' इति कस्य पंक्तिः? RPSC ग्रेड-I (TGT)–2010, BHU AET–2010

(A) विक्रमोर्वशीयस्य (B) नैषधीयचरितस्य
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलस्य (D) महाभारतस्य

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/20)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-46

149. (i) ''न प्रभातरलं ज्योतिरुदेति वसुधातलात्'' इत्युक्तिः वर्तते– UP GDC–2012
(ii) 'न प्रभातरलं ज्योतिरुदेति वसुधातलात्' उक्ति है– G GIC–2013, UP PGT–2011

(A) उत्तररामचरिते (B) मृच्छकटिके
(C) अभिज्ञानशाकुन्तले (D) नैषधीयचरिते

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/26)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-73

150. ''लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु'' श्लोकांशोऽयं तिष्ठति– UP GDC–2012

(A) मृच्छकटिके (B) मेघदूते
(C) रघुवंशे (D) अभिज्ञानशाकुन्तले

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/2)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-190

151. ''भावस्थिराणि जननान्तसौहृदानि'' यह उक्ति है– UGC 73 J–1998

(A) मालविकाग्निमित्रे (B)मेघदूते
(C) अभिज्ञानशाकुन्तले (D) विक्रमोर्वशीये

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (5/2)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–245

152. ''तेजोद्वयस्य युगपद्व्यसनोदयाभ्यां लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु'' यह श्लोकांश 'शाकुन्तलम्' के किस अङ्क से है? UP TET–2014

(A) प्रथम अङ्क (B) द्वितीय अङ्क
(C) तृतीय अङ्क (D) चतुर्थ अङ्क

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/2)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-190

153. (i) ''को नामोष्णोदकेन नवमालिकां सिञ्चति'' यह कथन किसका है? UP TGT–1999, UP PGT–2009,
(ii) 'को नामोष्णोदकेन नवमालिकां सिञ्चति' कथन है– 2011, UP TET–2014, BHU MET–2011

(A) शकुन्तला (B) प्रियंवदा
(C) अनसूया (D) गौतमी

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-190

154. ''कुसुममिव.........यौवनमङ्गेषु सन्नद्धम्''– BHU AET–2011

(A) लोभनीयं (B) दर्शनीयं
(C) वर्णनीयं (D) रूपरम्यं

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/21)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-50

155. अथवा .... द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र। BHU AET–2011

(A) देवदत्तानां (B) भवितव्यानां
(C) प्रार्थितव्यानां (D) धर्मकृत्यानां

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/16)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-38

144. (C) 145. (C) 146. (B) 147. (D) 148. (C) 149. (C) 150. (D) 151. (C) 152. (D) 153. (B) 154. (A) 155. (B)

156. ''अये, लब्धं नेत्रनिर्वाणम्'' इति कः कथयति अभिज्ञानशाकुन्तले? BHU AET–2010

(A) दुष्यन्तः (B) शकुन्तला
(C) मातलिः (D) विदूषकः

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-140

157. ''सरस्वती श्रुतमहतां महीयताम्'' इति कस्य नाटकस्य भरतवाक्येऽस्ति? BHU AET–2010

(A) उत्तररामचरितम् (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(C) विक्रमोर्वशीयम् (D) मालविकाग्निमित्रम्

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (7/35)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-453

158. ''इष्टप्रवासजनितान्यबलाजनस्य दुःखानि नूनमतिमात्रसुदुःसहानि'' इति सूक्तिः अस्ति– UP GDC–2013

(A) कालिदासस्य (B) भवभूतेः
(C) बाणभट्टस्य (D) श्रीहर्षस्य

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/3)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-192

159. ''गुर्वपि विरहदुःखमाशाबन्धः साहयति'' इति श्लोकः लभ्यते– UP GDC–2013

(A) मालविकाग्निमित्रे (B) उत्तररामचरिते
(C) अभिज्ञानशाकुन्तले (D) मेघदूते

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/16)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-225

160. (i) ''आ परितोषाद् विदुषां न साधु मन्ये प्रयोगविज्ञानम् बलवदपि शिक्षितानामात्मन्यप्रत्ययं चेतः॥'' यह श्लोक किस काव्य का है? UP PGT–2000, 2003

(ii) 'आ परितोषाद् विदुषां न साधु मन्ये प्रयोगविज्ञानम्' किस ग्रन्थ में यह उक्ति है? BHU MET–2010

(A) उत्तररामचरितम् (B) किरातार्जुनीयम्
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (D) शिशुपालवधम्

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/2)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-8

161. ''वामाः कुलस्याधयः'' यह उक्ति किस ग्रन्थ में वर्णित है? UP TGT–2013

(A) उत्तररामचरितम् (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(C) नीतिशतकम् (D) किरातार्जुनीयम्

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/18)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-229

162. ''कामी स्वतां पश्यति'' यह सूक्ति है– UP PGT–2000

(A) दुष्यन्त की (B) कण्व की
(C) शकुन्तला की (D) दुर्वासा की

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (2/2)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-95

163. शकुन्तलायाः एकस्याः सख्याः नाम आसीत्– K/T SET–2013

(A) प्रियवंदा (B) उर्वशी
(C) महाश्वेता (D) उर्मिला

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू. पेज-100

164. अभिज्ञानशाकुन्तले कयोः रसयोरपूर्वसम्मेलन विद्यते? KL SET–2015

(A) शृङ्गार-वीरयोः (B) शृङ्गार-हास्ययोः
(C) शृङ्गार-करुणयोः (D) शृङ्गार-शान्तयोः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-487

165. ''ज्वलति चलितेन्धनोऽग्निर्विप्रकृतः पन्नगः फणां कुरुते। प्रायः स्वं महिमानं क्षोभात् प्रतिपद्यते हि जनः॥'' यह श्लोक निम्नलिखित में से किससे सम्बन्धित है– UP PGT–2000

(A) मृच्छकटिकम्/शूद्रक (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम्/मातलि
(C) उत्तररामचरितम्/लव (D) किरातार्जुनीयम्/द्रौपदी

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (6/31)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-385

166. ''अचेतनं नाम गुणं न लक्षयेत्'' यह पंक्ति किसने किससे कही? UP PGT–2005

(A) दुष्यन्त ने धीवर से (B) विदूषक ने दुष्यन्त से
(C) धीवर ने मन में (D) दुष्यन्त ने अँगूठी से

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (6/13)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-350

167. ''अतः परीक्ष्य कर्तव्यं विशेषात् संगतं रहः'' अभिज्ञानशाकुन्तलम् में यह उक्ति किसकी है? UP PGT–2009, AWES TGT–2012

(A) कण्व की (B) मारीच की
(C) दुष्यन्त की (D) शार्ङ्गरव की

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (5/24)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-291

156. (A) 157. (B) 158. (A) 159. (C) 160. (C) 161. (B) 162. (A) 163. (A) 164. (C) 165. (B) 166. (D) 167. (D)

168. 'सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यं'' किस नाटक से उद्धृत है? UP PGT–2009, UGC 73 J–2008

(A) उत्तररामचरितम् (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(C) मालविकाग्निमित्रम् (D) विक्रमोर्वशीयम्

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/20)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-46

169. ''अनाघ्रातं पुष्पं किसलयमलूनं'' वचन किसके सम्बन्ध में है? UP PGT–2009

(A) प्रियंवदा के (B) शकुन्तला के
(C) गौतमी के (D) अनसूया के

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (2/10)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-115

170. ''प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः........ पुनर्भवं परिगत शक्तिरात्मभूः'' यह भरतवाक्य किस ग्रन्थ का है? UP PGT–2010, UK TET–2011

(A) मृच्छकटिकम् (B) मालविकाग्निमित्रम्
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (D) उत्तररामचरितम्

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (7/35)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-453

171. ''न तादृशा आकृतिविशेषा गुणविरोधिनो भवन्ति'' प्रियंवदा द्वारा उक्त वाक्य किसके लिए है? UP PGT–2010, UK TET–2011

(A) दुष्यन्त (B) शकुन्तला
(C) महर्षि कण्व (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-180

172. ''दुष्यन्तेनाहितं तेजो दधानां भूतये भुवः।
अवेहि तनयां ब्रह्मन्नग्निगर्भां शमीमिव॥''
यह सूचना कण्व को किससे प्राप्त हुई? UP PGT–2010, UK TET–2011

(A) गौतमी (B) अनसूया
(C) प्रियंवदा (D) छन्दोमयी वाणी

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/4)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-198

173. 'शकुन्तला के गर्भ में दुष्यन्त का तेज पल रहा है'–यह कण्व को किसके द्वारा पता चला? UP PGT–2011

(A) गौतमी द्वारा
(B) अनसूया एवं प्रियंवदा द्वारा
(C) कण्व के तपोवन वृक्षों द्वारा
(D) अशरीरिणी छन्दोमयी वाणी द्वारा

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-198

174. ''सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम्'' यह किससे कहा गया? UP PGT–2010, UK TET–2011

(A) वनदेवियों से (B) लता-पादपों से
(C) सखियों से (D) पशु-पक्षियों से

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/9)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-213

175. (i) ''किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्'' यह इसमें है– UGC 25 J–1998, 2000, D–2003
(ii) 'किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्' यह सूक्ति मिलती है?

(A) उत्तररामचरितम् (B) मालतीमाधवम्
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (D) विक्रमोर्वशीयम्

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/20)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-46

176. ''यान्त्येवं गृहिणीपदं युवतयो वामाः कुलस्याधयः'' यह सूक्ति किस नाटक से है? UGC 25 J–1999, 2009

(A) उत्तररामचरितम् (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(C) मुद्राराक्षसम् (D) वेणीसंहारम्

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/18)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-229

177. ''शुश्रूषस्व गुरून्'' श्लोक है– UGC 25 J–2003

(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में (B) रघुवंशम् में
(C) उत्तररामचरितम् में (D) मुद्राराक्षसम् में

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/18)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-229

178. (i) ''अर्थो हि कन्या परकीय एव'' सूक्ति सम्बद्ध है–
(ii) अर्थो हि कन्या परकीय एव पंक्तिरियं कस्मिन् काव्ये वर्तते? UGC 25 J–2004, UP TET–2014,
(iii) 'अर्थो हि कन्या परकीय एव' यह उक्ति कहाँ की है?
(iv) 'अर्थो हि कन्या परकीय एव' अयं श्लोकांशः कस्य नाटकस्य? CCSUM Ph. D–2016, BHU MET–2011, 2012, 2016, MH SET–2013

(A) वेणीसंहारम् (B) मृच्छकटिकम्
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (D) रत्नावली

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/22)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-240

179. ''तत्राऽपि च चतुर्थोऽङ्कस्तत्र श्लोकचतुष्टयम्'' इत्युक्तिः सङ्गच्छते– UGC 25 D–2004, BHU B.Ed–2012

(A) मृच्छकटिके (B) वेणीसंहारे
(C) अभिज्ञानशाकुन्तले (D) उत्तररामचरिते

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-341

168. (B) 169. (B) 170. (C) 171. (A) 172. (D) 173. (D) 174. (B) 175. (C) 176. (B) 177. (A) 178. (C) 179. (C)

180. 'पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं.........' इत्यस्ति– UGC 25 D–2005, D–2011

(A) स्वप्नवासवदत्तायाम् (B) उत्तररामचरिते
(C) अभिज्ञानशाकुन्तले (D) मृच्छकटिके

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/9)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-213

181. ''आ परितोषाद्विदुषां न साधु मन्ये प्रयोगविज्ञानम्'' इति वाक्यं वर्तते– UGC 25 J–2008

(A) भासस्य (B) भारवेः
(C) भवभूतेः (D) कालिदासस्य

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/2) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-8

182. (i) ''अनिर्वर्णनीयं परकलत्रम्'' इति वाक्यं अस्ति–
(ii) 'अनिर्वर्णनीयं परकलत्रम्' इति कस्य कथनमस्ति– UGC 25 D–2008, MGKV Ph. D–2016

(A) भरतस्य (B) दुष्यन्तस्य
(C) युधिष्ठिरस्य (D) रघोः

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-267

183. 'वत्से! सुशिष्यपरिदत्ता विद्येवाशोचनीयासि संवृत्ता'' कस्येयमुक्तिः– UGC 25 J–2013

(A) दुष्यन्तस्य (B) कण्वस्य
(C) गौतम्याः (D) शकुन्तलायाः

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-197

184. 'आर्तत्राणाय वः शस्त्रं न प्रहर्तुमनागसि'–अभिज्ञानशाकुन्तले कस्य वचनमिदम्? UGC 25 D–2013, UP GDC–2012, UP PGT–2011

(A) वैखानसस्य (B) दुष्यन्तस्य
(C) कण्वस्य (D) अनसूयायाः

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/11)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-26

185. 'गच्छति पुरः शरीरं धावति पश्चादसंस्तुतं चेतः'' कस्य उक्तिरियम्– UGC 25 J–2014

(A) कण्वस्य (B) दुष्यन्तस्य
(C) गौतम्याः (D) शार्ङ्गरवस्य

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/34)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-89

186. अभिज्ञानशाकुन्तल में ''मृगानुसारिणं साक्षात्पश्यामीव पिनाकिनम्'' किसने कहा है? BHU MET–2011, 2012

(A) विदूषक (B) कण्व
(C) सूत (D) तापस

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/6)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-15

187. किसने कहा है ''अस्ति कालनेमिप्रसूतिर्दुर्जयो नाम दानवगणः''– BHU MET–2011

(A) दुष्यन्त (B) विदूषक
(C) शार्ङ्गरव (D) मातलि

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-384

188. ''तेजोद्वयस्य युगपद्व्यसनोदयाभ्यां लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु'' यह किस पात्र का कथन है– UP TGT–1999

(A) काश्यप (B) कण्वशिष्य
(C) अनसूया (D) प्रियंवदा

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/2)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-190

189. 'उद्गलितदर्भकवला मृग्यः परित्यक्तनर्तना मयूराः अपसृतपाण्डुपत्रा मुञ्चन्त्यश्रूणीव लताः॥' उपर्युक्त पद्य किस पात्र द्वारा कहा गया है? UP TGT–1999

(A) काश्यप द्वारा (B) अनसूया द्वारा
(C) प्रियंवदा द्वारा (D) गौतमी द्वारा

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/12)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-217

190. ''कथां प्रमत्तः प्रथमं कृतामिव'' यह श्लोकांश है– UP TGT–2001

(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में (B) शुकनासोपदेश में
(C) शिवराजविजयम् में (D) मेघदूतम् में

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/1)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-184

191. ''पीड्यन्ते गृहिणः कथं नु तनयाविश्लेषदुःखैर्नवैः'' यह उक्ति किसकी है? UP TGT–2001

(A) प्रियंवदा की (B) अनसूया की
(C) गौतमी की (D) कण्व की

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/6)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-208

180. (C) 181. (D) 182. (B) 183. (B) 184. (A) 185. (B) 186. (C) 187. (D) 188. (B) 189. (C) 190. (A) 191. (D)

192. सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं.......... रिक्तस्थान की पूर्ति करें– UP TGT–2001

(A) सर्वैरनुज्ञायताम् (B) नादत्ते
(C) अनुमतगमना (D) स्नेहेन

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/9)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-213

193. ''अर्थो हि कन्या परकीय एव'' किसके लिए कहा गया है– UP TGT–2001

(A) शकुन्तला के लिए (B) प्रियंवदा के लिए
(C) अनसूया के लिए (D) गौतमी के लिए

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/22)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-240

194. ''तन्माऽतिमात्रं मम कृत उत्कण्ठस्व'' यह कथन किसका है– UP TGT–2001

(A) काश्यप का (B) शकुन्तला का
(C) प्रियंवदा का (D) अनसूया का

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-238

195. ''गच्छ पादयोः प्रणम्य निवर्तयैनम्'' यह कथन है– UP TGT–2003

(A) अनसूया का प्रियंवदा के प्रति
(B) प्रियंवदा का अनसूया के प्रति
(C) शकुन्तला का अनसूया के प्रति
(D) अनसूया का शकुन्तला के प्रति

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-185

196. ''अभिज्ञानाभरणदर्शनेन शापो निवर्तिष्यत'' इति यह उक्ति है– UP TGT–2004

(A) कण्व की (B) अनसूया की
(C) दुर्वासा की (D) गौतमी की

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-188

197. ''सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम्'' उक्ति है– UP TGT–2004

(A) कण्व की (B) शकुन्तला की
(C) अनसूया की (D) प्रियंवदा की

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/9)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-213

198. ''पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलम्'' यह उक्ति है– UP TGT–2004

(A) कण्व की (B) अनसूया की
(C) प्रियंवदा की (D) शकुन्तला की

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/9)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-213

199. ''किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्''– वाक्य किसके बारे में कहा गया है– UP TGT–2004

(A) दुर्वासा (B) शकुन्तला
(C) कण्व (D) मेनका

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/20)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-46

200. 'मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति' इत्यत्र 'लक्ष्म' शब्दस्य कोऽर्थः? UGC 73 J–2016

(A) चिह्नम् (B) पुष्पम्
(C) लयः (D) शोभा

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/20)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-47

201. 'अथवाऽनार्यः परदारव्यवहारः' यह कथन है– UP PGT–2011

(A) तापसी (B) गौतमी
(C) मातलि (D) दुष्यन्त

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-421

202. ''शान्तानुकूलपवनश्च शिवश्च पन्थाः'' यह उक्ति किसकी है? UP TGT–2005, UP PGT–2011

(A) कण्व की (B) प्रियंवदा की
(C) आकाशभाषित की (D) कण्वशिष्य की

अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/11)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-215,216

203. 'अयं जनः कस्य हस्ते समर्पितः' यह कथन है? UP TGT–2005, UP PGT–2011

(A) शकुन्तला का (B) अनसूया और प्रियंवदा का
(C) कण्व का (D) कण्व शिष्य का

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-221

204. ''रक्षितव्या खलु प्रकृतिपेलवा प्रियसखी''–यह कथन है– UP TGT–2005

(A) अनसूया का शकुन्तला के प्रति
(B) प्रियंवदा का शकुन्तला के प्रति
(C) अनसूया का प्रियंवदा के प्रति
(D) कण्व का शकुन्तला के प्रति

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-189

192. (A) 193. (A) 194. (B) 195. (A) 196. (C) 197. (A) 198. (A) 199. (B) 200. (A) 201. (D) 202. (C) 203. (B) 204. (A)

205. (i) ''अर्थो हि कन्या परकीय एव तामद्य सम्प्रेष्य परिग्रहीतुः'' यह वक्तव्य किसका है?

(ii) 'अर्थो हि कन्या परकीय एव' शाकुन्तले कस्येयम् उक्तिः? UP TGT–2009, 2010, G GIC–2015

(A) गौतमी का (B) दुष्यन्त का

(C) काश्यप का (D) मेनका का

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/22)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-240

206. ''कोऽन्यो हुतवहाद् दग्धुं प्रभवति'' यह कथन है– UP TGT–2009

(A) प्रियंवदा का (B) अनसूया का

(C) कण्व का (D) गौतमी का

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-185

207. ''ओदकान्तं स्निग्धोजनोऽनुगन्तव्य इति श्रूयते'' यह कथन किसका है? UP TGT–2010, UP PGT–2011

(A) कण्व का (B) अनसूया का

(C) प्रियंवदा का (D) कण्व शिष्य शार्ङ्गरव का

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-225

208. अभिज्ञानशाकुन्तले परित्यागानन्तरं शकुन्तला कुत्र न्यवसत्? RPSC ग्रेड-I PGT–2015

(A) कण्वाश्रमे (B) अत्र्याश्रमे

(C) वसिष्ठाश्रमे (D) मारीचाश्रमे

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम्-कपिलदेव द्विवेदी, भू. पेज-40-41

209. ''श्रद्धा वित्तं विधिश्चेति त्रितयं तत्समागतम्'' इति को निरूपयति– BHU AET–2012

(A) अदितिः (B) मातलिः

(C) मारीचः (D) कण्वः

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (7/29)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-441

210. ''मनोरथा नाम तटप्रपाताः'' इयम् उक्तिः उपलभ्यते– UGC 25 D–2014

(A) रत्नावल्याम् (B) वेणीसंहारे

(C) अभिज्ञानशाकुन्तले (D) मृच्छकटिके

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (6/10)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-344

211. निम्नलिखित पंक्तौ छन्दसः नाम निर्दिशतु
''असंशयं क्षत्र परिग्रहक्षमा,
यदार्यमस्यामभिलाषि मे मनः॥'' UGC 25 D–2014

(A) वंशस्थम् (B) द्रुतविलम्बितम्

(C) शालिनी (D) वसन्ततिलका

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/22)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-54-55

212. 'प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः'' इति भरतवाक्यांशः कस्यास्ति– UP GDC–2013

(A) भवभूतेः (B) कविकर्णपूरस्य

(C) महिमभट्टस्य (D) कालिदासस्य

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (7/35)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-453

213. ''अस्ति कालनेमिप्रसूतिर्दुर्जयो नाम दानवगणः'' इस पंक्ति को कौन कहता है? BHU MET–2012, 2016

(A) दुष्यन्त (B) मातलि

(C) विदूषक (D) कण्व

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-384

214. सागरमुज्झित्वा कुत्र वा महानद्यवतरति– UP PGT–2011

(A) रामायणम् (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम्

(C) रघुवंशम् (D) मृच्छकटिकम्

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-151

215. 'रम्याणि वीक्ष्य मधुरांश्च निशम्य शब्दान्' सूक्ति है– WB SET–2010

(A) मेघदूत (B) कादम्बरी

(C) रत्नावली (D) अभिज्ञानशाकुन्तल

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (5/2)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-245

216. ''स्वप्नो नु माया नु मतिभ्रमो नु''– निम्नाङ्कितेषु कतस्मिन् समुपलभ्यते– WB SET–2010

(A) स्वप्नवासवदत्ते (B) हर्षचरिते

(C) अभिज्ञानशाकुन्तले (D) मेघदूते

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (6/10)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-344

217. 'परमार्थेन न गृह्यतां वचः'-कं प्रत्युक्तिरियम्– KL SET–2016

(A) राजानम् (B) सेनापतिम्

(C) जयन्तम् (D) विदूषकम्

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/18)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-132

205. (C) 206. (B) 207. (D) 208. (D) 209. (C) 210. (C) 211. (A) 212. (D) 213. (B) 214. (B) 215. (D) 216. (C) 217. (A)

218. अरण्ये मया रुदितमासीत् - शाकुन्तले कस्य वचनमिदम्? KL SET–2014
(A) राज्ञः (B) विदूषकस्य
(C) कण्वस्य (D) शारद्वतस्य
स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-100

219. 'पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं युष्मास्वपीतेषु या'– उक्तिरियं कस्य पात्रस्य अस्ति– T-SET–2014
(A) काश्यपस्य (B) शार्ङ्गरवस्य
(C) प्रियंवदायाः (D) दुष्यन्तस्य
स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/9)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-213

220. 'स्त्रीणामशिक्षितपटुत्वममानुषीषु सन्दृश्यते किमुत याः प्रतिबोधवत्यः' अभिज्ञानशाकुन्तले इयमुक्तिः कस्य? UGC 25 Jn–2017
(A) शार्ङ्गरवस्य (B) शारद्वतस्य
(C) दुष्यन्तस्य (D) सोमरातस्य
स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (5/22)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-287

221. ''अहिणवमहुलोलुवो तुमं तह परिचुम्बि अ''– इत्यादिसङ्गीतं भवति– UGC 25 D–2015
(A) हंसपदिकायाः (B) अनसूयायाः
(C) शकुन्तलायाः (D) प्रियंवदायाः
स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (5/1)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-242

222. ''सतीमपि ज्ञातिकुलैकसंश्रयां जनोऽन्यथा भर्तृमतीं विशङ्कते''– कस्येयमुक्तिः? UGC 25 D–2015
(A) दुष्यन्तस्य (B) शारद्वतस्य
(C) शार्ङ्गरवस्य (D) कण्वस्य
स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (5/17)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-273

223. देवयानी .... पत्नी आसीत्? GJ SET–2016
(A) शुक्राचार्यस्य
(B) विचित्रवीर्यस्य
(C) धृष्टद्युम्नस्य
(D) ययातेः
स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-211

224. 'शुश्रूषस्व गुरून् कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीजने' – पंक्ति में निहित छन्द का नाम है– H TET–2015
(A) स्रग्धरा
(B) शार्दूलविक्रीडितम्
(C) पुष्पिताग्रा
(D) वियोगिनी
स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/18)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-229

225. ''तीव्राघातप्रतिहततरुः स्कन्धलग्नैकदन्तः'' केन छन्दसा विनिर्मितोऽयं श्लोकपादः? UGC 25 D–2015
(A) हरिणी
(B) शिखरिणी
(C) मन्दाक्रान्ता
(D) मालिनी
स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/33)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-85,86

226. ''भावस्थिराणि जननान्तरसौहृदानि'' इति केनोक्तम्? K SET–2014
(A) कण्वेन (B) दुष्यन्तेन
(C) शारद्वतेन (D) कञ्चुकिना
स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (5/2)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-245

218. (B) 219. (A) 220. (C) 221. (A) 222. (C) 223. (D) 224. (B) 225. (C) 226. (B)

10 उत्तररामचरितम्

1. (i) 'उत्तररामचरितम्' के रचयिता हैं?
(ii) 'उत्तररामचरितम्' किसकी रचना है?
UP TGT–2004, 2011, UP PGT (H)–2002, BHU MET–2008, BHU B. Ed–2012, UP TET–2016

(A) भारवि (B) भवभूति
(C) भर्तृहरि (D) भरतमुनि

स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0 पेज-36

2. (i) उत्तररामचरितम् में अङ्क की गिनती है–
(ii) 'उत्तररामचरितम्' में कुल कितने अङ्क हैं?
(iii) उत्तररामचरितम् में अङ्कों की संख्या है–
(iv) उत्तररामचरिते कति अङ्काः सन्ति?
UP TGT–2001, 2011, 2013, MH SET–2013, BHU B.Ed–2014, DL–2014

(A) 5 (B) 6
(C) 7 (D) 10

स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0 पेज-51

3. (i) करुणरसप्रधानं किं नाटकं प्रसिद्धम्?
(ii) 'करुणरस' प्रधान नाटक है–
(iii) किस नाटक का अङ्गीरस करुण रस है?
UP TGT–2001, UP PGT–2010, UGC 25 D–2004, J–2001, UGC 73 S–2013, UP GDC–2013, RPSC SET–2010, UK TET–2011

(A) मुद्राराक्षसम् (B) उत्तररामचरितम्
(C) मालतीमाधवम् (D) अभिज्ञानशाकुन्तलम्

स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0 पेज-86

4. 'उत्तररामचरितम्' में पात्रों की संख्या है–
UP TGT–2003

(A) 8 (आठ) (B) 30 (तीस)
(C) 5 (पाँच) (D) 12 (बारह)

स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0 पेज-140

5. (i) गर्भाङ्क इस नाटक में है– UP TGT–2009,
(ii) किस नाट्यकृति में गर्भाङ्क मिलता है?
UGC 25 J–1998

(A) मालतीमाधवम् (B) महावीरचरितम्
(C) उत्तररामचरितम् (D) स्वप्नवासवदत्तम्

स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0 पेज-59

6. 'उत्तररामचरितम्' के तृतीय अङ्क में कुल कितने श्लोक हैं? UP TGT–2009

(A) 46 (B) 42
(C) 48 (D) 38

स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-261

7. विदूषक रहित रचना है? UP TGT–2009

(A) उत्तररामचरितम् (B) मृच्छकटिकम्
(C) शिशुपालवधम् (D) नैषधीयचरितम्

स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0 पेज-62

8. भवभूति का सम्बन्ध किस कृति से नहीं है?
UP TGT–2010

(A) उत्तररामचरितम् (B) महावीरचरितम्
(C) बुद्धचरितम् (D) मालतीमाधवम्

स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0 पेज-36

9. भवभूति का सम्बन्ध है? UP TET–2013

(A) मालविकाग्निमित्रम् से (B) रघुवंशम् से
(C) अष्टाध्यायी से (D) उत्तररामचरितम् से

स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0 पेज-36

10. भवभूति का उत्कर्ष किस नाटक में है?
UGC 73 D–2010

(A) उत्तररामचरितम् में (B) महावीरचरितम् में
(C) मालतीमाधवम् में (D) नागानन्द में

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-403

1. (B)	2. (C)	3. (B)	4. (B)	5. (C)	6. (C)	7. (A)	8. (C)	9. (D)	10. (A)

11. (i) छायाङ्क अस्मिन् नाटके निबद्धमस्ति–
(ii) छाया अङ्क का सम्बन्ध किस नाटक से है–
(iii) छायाऽङ्कस्य योजना वर्तते? UP GDC–2012, UGC 25 J–2008, UP TGT–2010, 2013

(A) अभिज्ञानशाकुन्तले (B) उत्तररामचरिते
(C) मुद्राराक्षसे (D) प्रतिमानाटके

स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू० पेज-58

12. उत्तररामचरितम् नाटक रामायण के– UP TGT–2011

(A) पूर्वार्द्ध पर आधारित है।
(B) उत्तरार्द्ध पर आधारित है।
(C) सम्पूर्ण रामायण पर आधारित है।
(D) रामायण के एक अंश पर आधारित है।

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास–कपिलदेव द्विवेदी, पेज-402,403

13. (i) उत्तररामचरिते अङ्गीरसः कः?
(ii) उत्तररामचरितस्य प्रधानो रसः–
(iii) उत्तररामचरितम् नाटक का मुख्य रस है– UGC 25 D--1998, 2005, 2010, UPTGT (H)–2003, AWES TGT–2008, UP TGT–2003, 2004, 2005, 2011, UP PGT–2009

(A) वीरः (B) शृङ्गारः
(C) करुणः (D) हास्यः

स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू० पेज-90

14. (i) 'भवभूति' का सर्वश्रेष्ठ नाटक है–
(ii) भवभूति की मुख्यनाट्यकृति है– UPTET–2014, AWES TGT–2010

(A) उत्तररामचरितम् (B) वेणीसंहारम्
(C) मुद्राराक्षसम् (D) विक्रमोर्वशीयम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-403

15. महाकवि भवभूति किस रस के प्रयोग में सिद्धहस्त हैं? UP TET–2014

(A) श्रृंगार रस (B) वीर रस
(C) करुण रस (D) शान्त रस

स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू० पेज-82

16. (i) 'उत्तररामचरितम्' में किस पात्र की भूमिका नगण्य है? UP TGT–2013,
(ii) उत्तररामचरितम् में निम्नलिखित में से कौन-सा पात्र नही है? UK TET–2011, UP PGT–2010

(A) सूत्रधार की (B) नायक की
(C) नायिका की (D) विदूषक की

स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू० पेज-126

17. उत्तररामचरिते 'पदवाक्यप्रमाणज्ञो भवभूतिर्नाम जतुकर्णीपुत्रः' इति केनोक्तम्? DU Ph.D–2016

(A) रामभद्रेण (B) सूत्रधारेण
(C) वाल्मीकिना (D) अष्टावक्रेण

स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-03

18. उत्तररामचरितम् के तृतीय अङ्क में कवि की मौलिक कल्पना है? UP TGT–2011

(A) छाया-सीता व राम का दण्डकारण्य में पुनरागमन
(B) लक्ष्मण व सीता का मिलन
(C) वाल्मीकि आश्रम को छोड़कर सीता का दण्डकारण्य में प्रवेश
(D) इनमें से कोई नहीं

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-404

19. छाया-सीता के साथ दण्डकारण्य में आए राम का दर्शन करने वाला दूसरा पात्र है– UP TGT–2011

(A) भागीरथी (B) तमसा
(C) मुरला (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू० पेज-58

20. अस्मिन्नाटके अन्तर्नाटकं विद्यते? K SET–2014

(A) मुद्राराक्षसे (B) प्रसन्नराघवे
(C) महावीरचरिते (D) उत्तररामचरिते

स्रोत–उत्तररामचरितम् – रामअवध पाण्डेय, भू. पेज-23

21. गर्भाङ्कस्य योजना केन नाटककारेण कृता? GJ SET–2013

(A) भासेन (B) कालिदासेन
(C) भवभूतिना (D) विशाखदत्तेन

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-403

11. (B) 12. (B) 13. (C) 14. (A) 15. (C) 16. (D) 17. (B) 18. (A) 19. (B) 20. (D) 21. (C)

22. उत्तररामचरितं .... प्रयुक्तं भवतीति सूत्रधारो विज्ञापयति– GJ SET–2016

(A) महाकालमन्दिरचत्वरे (B) कालप्रियानाथस्य यात्रायाम्

(C) नीलकण्ठोत्सवे (D) विश्वनाथमन्दिराभोगे

स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-03

23. (i) उत्तररामचरितस्य प्रथमाङ्कः उच्यते?

(ii) भवभूतेः उत्तररामचरिते किं नाम प्रथमोऽङ्कः? UGC 25 S–2013

(A) कुमारप्रत्यभिज्ञानम् (B) पञ्चवटीप्रवेशः

(C) चित्रदर्शनम् (D) छाया

स्रोत–उत्तररामचरितम् (अंक-1) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-96

24. 'चित्रदर्शनम्' इत्याख्यः अङ्कः कस्मिन् नाटके वर्तते? UP GDC–2014, WB SET–2010

(A) मृच्छकटिके (B) अभिज्ञानशाकुन्तले

(C) मालविकाग्निमित्रे (D) उत्तररामचरिते

स्रोत–उत्तररामचरितम् (अंक-1) - कपिलदेव द्विवेदी पेज-96

25. 'उत्तररामचरितम्' में लवकुश के जन्म की किस वर्षगाँठ का वर्णन है? UP TGT–2013

(A) आठवीं (B) दसवीं

(C) बारहवीं (D) चौदहवीं

स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-162

26. 'उत्तररामचरितम्' के तृतीय अङ्क का प्रारम्भ किससे होता है? UP TGT–2013

(A) नान्दी (B) आकाशभाषित

(C) सूत्रधार (D) विष्कम्भक

स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-165

27. 'उत्तररामचरितम्' नाटक का मङ्गलाचरण किस छन्द में है? UP TGT–2013

(A) गायत्री (B) अनुष्टुप्

(C) उपजाति (D) वंशस्थ

स्रोत–उत्तररामचरितम् (1/1) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-01

28. 'उत्तररामचरितम्' के मङ्गलाचरण में किसकी वन्दना की गयी है? UP TGT–2013

(A) शिव (B) विष्णु

(C) शक्ति (D) कवि तथा वाणी

स्रोत–उत्तररामचरितम् (1/1) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-01

29. 'उत्तररामचरितम्' के तृतीय अङ्क में राम किससे अपनी व्यथा का वर्णन करते हैं? UP TGT–2001

(A) वासन्ती से (B) तमसा से

(C) मुरला से (D) सीता से

स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0पेज-49

30. दुबारा दण्डकारण्य मे आये हुये राम के साथ किस पात्र को भवभूति ने तृतीय अङ्क में वर्णित किया है? UP TGT–2011

(A) तमसा को (B) वासन्ती को

(C) मुरला को (D) भागीरथी को

स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0 पेज-48-49

31. 'उत्तररामचरितम्' में वर्णित तमसा और मुरला हैं? UP TET–2011, UP TGT–2001, 2003, 2009

(A) दो नदियाँ (B) वनदेवियाँ

(C) सीता की परिचारिका (D) लवकुश की परिचारिका

स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-155

32. उत्तररामचरितम् की कथावस्तु प्रारम्भ होती है? UP TGT–2003

(A) शम्बूक वध के लिए राम के दण्डकारण्य जाने से

(B) राम द्वारा सीता के निर्वासन से

(C) राम-सीता के पुनर्मिलन से

(D) लव-कुश का चन्द्रकेतु युद्ध से

स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0 पेज-47

33. (i) भवभूतिना उत्तररामचरितस्य कस्मिन्नङ्के छायादृश्यं प्रदर्शितम्?

(ii) 'छायाङ्क' उत्तररामचरितम् का कौन-सा अङ्क है?

(iii) उत्तररामचरितस्य छायाङ्कः कथ्यते–

(iv) उत्तररामचरितस्य कः अङ्कः छाया इति अभिधीयते? UP TGT–2003, 2001, 2009, 2010, 2013, RPSC SET–2013-14, UGC 25 D–2012, MGKV Ph.D–2016

(A) चतुर्थः (B) द्वितीयः

(C) पञ्चमः (D) तृतीयः

स्रोत–उत्तररामचरितम् (अंक-3) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-262

22. (B) 23. (C) 24. (D) 25. (C) 26. (D) 27. (B) 28. (D) 29. (A) 30. (B) 31. (A) 32. (B) 33. (D)

34. 'उत्तररामचरितम्' के तृतीय अङ्क में दो पात्रों के परस्पर संवाद में नाटकीय तत्त्वों का परिचय मिलता है–ये दो पात्र हैं– UP TGT–2003
(A) राम और वासन्ती (B) राम और मुरला
(C) तमसा और मुरला (D) सीता और तमसा
स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0 पेज-48

35. कालप्रियानाथस्य यात्रायामभिनीतम्– GJ SET–2003
(A) स्वप्नवासवदत्तम् (B) उत्तररामचरितम्
(C) मृच्छकटिकम् (D) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-3

36. उत्तररामचरिते कः रसः– MH SET–2011
(A) करुणविप्रलम्भशृङ्गारः (B) हास्यः
(C) वीरः (D) शान्तः
स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0 पेज-86

37. सीता राम को कितने वर्षों के अन्तराल पर देखती हैं? UP TGT–2004
(A) 12 वर्ष (B) 20 वर्ष
(C) 14 वर्ष (D) 10 वर्ष
स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0 पेज-58

38. 'उत्तररामचरित' के तृतीय अङ्क में घटनास्थल है? UP TGT–2004, 2013
(A) वाल्मीकि का आश्रम (B) अयोध्या
(C) सरयू नदी का तट (D) पञ्चवटी
स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0 पेज-48

39. 'उत्तररामचरितम्' में सीता की सखी है? UP TGT–2004, UP GDC–2008
(A) लोपामुद्रा (B) वासन्ती
(C) मुरला (D) तमसा
स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0 पेज-132

40. ऋषि अगस्त्य की पत्नी है? UP TGT–2004, 2009
(A) वासन्ती (B) लोपामुद्रा
(C) गोदावरी (D) तमसा
स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-155

41. रामचन्द्र 'छायासीता' को क्यों नहीं देख पाते? UP TGT–2004
(A) ऋषि के अभिशाप की वजह से।
(B) कण्व के आशीर्वाद की वजह से।
(C) सीता को दिये गये भागीरथी के आशीर्वाद की वजह से।
(D) सीता के स्वयं अदृश्या होने की वजह से।
स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-181

42. 'छायाङ्क' का मुख्य कथानक है– UP TGT–2004
(A) राम-सीता मिलन (B) राम-सीता पुनर्मिलन
(C) विरहवेदना की अनुभूति (D) पतिभक्ति
स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0 पेज-78

43. दण्डकारण्य मे राम कितने वर्ष बाद दुबारा आए थे? UP TGT–2011
(A) आठ वर्ष बाद (B) दस वर्ष बाद
(C) बारह वर्ष बाद (D) चौदह वर्ष बाद
स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0 पेज-58

44. 'उत्तररामचरितम्' के तृतीयाङ्क में किस नदी का उल्लेख है? UP TGT–2004
(A) कावेरी (B) कृष्णा
(C) गोदावरी (D) यमुना
स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0 पेज-48

45. रामचन्द्र जी दुबारा दण्डकारण्य किसलिए गये थे? UP TGT–2005
(A) राक्षसों के वध के लिए
(B) ऋषियों के दर्शन के लिए
(C) दण्डकारण्य देखने के लिए
(D) तपस्या करते हुए शम्बूक को दण्ड देने के लिए
स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-128

46. (i) तृतीय अङ्क मे सीतावियोग जन्य शोक के कारण मूर्च्छित राम को पुनः चेतना कैसे प्राप्त होती है?
(ii) मूर्च्छित राम को चेतना कैसे मिली? UP TGT–2005, 2011
(A) शीतल वायु के स्पर्श से (B) शीतल जल के स्पर्श से
(C) सीता के कर स्पर्श से (D) वाल्मीकि के आशीर्वाद से
स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0 पेज-48, 177

34. (C) 35. (B) 36. (A) 37. (A) 38. (D) 39. (B) 40. (B) 41. (C) 42. (B) 43. (C) 44. (C) 45. (D) 46. (C)

47. कौन-सा रस विवर्त प्राप्त कर लेता है? UP TGT–2005

(A) शृङ्गार (B) शान्त

(C) करुण (D) हास्य

स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-260

48. 'उत्तररामचरितम्' नाटक में वर्णित वासन्ती है? UP TGT–2005

(A) राक्षसी (B) नदी

(C) लव-कुश की परिचारिका (D) सीता की सखी

स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू० पेज-132

49. 'उत्तररामचरितम्' के तृतीय अङ्क को छायाङ्क कहते हैं? क्योंकि– UP TGT–2005

(A) इसमें राम को सीता का चित्र दिखाया जाता है।

(B) इस अङ्क में सीता की छाया सभी दर्शकों एवं पात्रों को दिखाई पड़ती है।

(C) इस अङ्क में राम को सीता की छाया दिखाई देती है।

(D) मञ्च पर उपस्थित सीता राम को नहीं दिखाई देती।

स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू० पेज-78

50. 'उत्तररामचरितम्' में किससे कुश एवं लव के जन्म का रहस्योद्घाटन होता है? UP TGT–2009

(A) विष्कम्भक द्वारा (B) प्रवेशक द्वारा

(C) चूलिका द्वारा (D) आकाशभाषित द्वारा

स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू० पेज-48

51. निम्नलिखित में से किसका सम्बन्ध 'उत्तररामचरितम्' से नहीं है? UP TGT–2010

(A) विदूषक का अभाव (B) करुणरस की प्रधानता

(C) गर्भाङ्क की योजना (D) अष्टपदा नान्दी

स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-05

52. 'प्रत्युप्तस्येव दयिते तृष्णादीर्घस्य चक्षुषः। मर्मच्छेदोपमैर्यत्नैः सन्निकर्षो निरुध्यते॥' इस श्लोक के 'प्रत्युप्तस्येव' इस पद में अलङ्कार है? UP TGT–2010

(A) उपमा (B) उत्प्रेक्षा

(C) रूपक (D) दृष्टान्त

स्रोत–उत्तररामचरितम् (3/46)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-258,259

53. ''आश्च्योतनं नु हरिचन्दनपल्लवानाम्'' में 'नु' किस अलङ्कार का वाचक है? UP TGT–2010

(A) उत्प्रेक्षा (B) भ्रान्तिमान्

(C) अतिशयोक्ति (D) सन्देह

स्रोत–उत्तररामचरितम् (3/11)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-178,179

54. अगस्त्याश्रम में राम के रहने के लिए पर्णकुटी का निर्माण किसने किया था? UP PGT–2000

(A) अगस्त्य (B) शिव

(C) राम (D) लक्ष्मण

स्रोत–कादम्बरी कथामुखम् -तारिणीश झा, पेज-170

55. (i) 'उत्तररामचरितम्' में राम किस कोटि के नायक हैं?

(ii) महाकवि भवभूति के राम किस प्रकृति के नायक हैं? UP PGT–2009, UP TGT–2013

(A) धीरललित (B) धीरोदात्त

(C) धीरप्रशान्त (D) धीरोद्धत

स्रोत–साहित्यदर्पण (3/32) - शालिग्राम शास्त्री, पेज-65

56. सीता परित्याग के बाद पुनः राम और सीता का मिलन वर्णित है– UP TET–2014

(A) प्रतिमानाटकम् में (B) उत्तररामचरितम् में

(C) महावीरचरितम् में (D) रघुवंशम् में

स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू० पेज-59, 60

57. 'उत्तररामचरितम्' में किस काल के समाज एवं संस्कृति का वर्णन है? UP TET–2014

(A) महाभारतकालीन (B) रामायणकालीन

(C) पुराणकालीन (D) इनमें से किसी का नहीं

स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू० पेज-62

58. 'आराधनाय लोकस्य मुञ्चतो नास्ति मे व्यथा' इत्यस्ति? UGC–25 J–2007

(A) अभिज्ञानशाकुन्तले (B) उत्तररामचरिते

(C) मृच्छकटिके (D) महावीरचरिते

स्रोत–उत्तररामचरितम् (1/12) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-25

47. (C) 48. (D) 49. (D) 50. (A) 51. (D) 52. (B) 53. (D) 54. (D) 55. (B) 56. (B) 57. (B) 58. (B)

59. ''भवभूतिमहाकवेरिमां निरर्गलतरङ्गिणी'' इति वदन्ति– UGC 25 D–2012

(A) स्रग्धरा (B) मन्दाक्रान्ता
(C) शिखरिणी (D) वसन्ततिलका

स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-530

60. ''वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि'' इत्यत्र किं छन्दः? UGC 25 D–2013

(A) अनुष्टुप् (B) शिखरिणी
(C) वसन्ततिलका (D) पुष्पिताग्रा

स्रोत–उत्तररामचरितम् (2/7) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-117

61. 'वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि' इति केनोक्तम्? K SET–2013

(A) वाल्मीकिना (B) भवभूतिना
(C) भासेन (D) कालिदासेन

स्रोत–उत्तररामचरितम् (2/7) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-117

62. छाया-सीता इसमें आती है? UGC 25 D–1998

(A) मृच्छकटिकम् (B) मुद्राराक्षसम्
(C) उत्तररामचरितम् (D) रत्नावली

स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू० पेज-58

63. 'उत्तररामचरित' नाटक की विशेषता है? UGC 25 D–2001

(A) गर्भाङ्क की योजना (B) छाया सीता का प्रयोग
(C) विदूषक रहित रचना (D) सभी

स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू० पेज-58,59,62

64. छायाङ्क .... में है? UGC 25 D–2002

(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (B) उत्तररामचरितम्
(C) मुद्राराक्षसम् (D) वेणीसंहारम्

स्रोत–उत्तररामचरितम् (अंक-3) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-262

65. अन्तःकरणतत्त्वस्य दम्पत्योः स्नेहसंश्रयात्। आनन्दग्रन्थिरेकोऽयमपत्यमिति पठ्यते॥ इस श्लोक में किसका महत्त्व प्रतिपादित है? UK TET–2011, UP PGT–2010

(A) प्रेम का महत्त्व (B) पति का महत्त्व
(C) पत्नी का महत्त्व (D) पुत्र का महत्त्व

स्रोत–उत्तररामचरितम् (3/17) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-196

66. तमसा और मुरला दोनों नदियाँ किस काव्य की पात्र हैं? BHU MET–2010

(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (B) महावीरचरितम्
(C) उत्तररामचरितम् (D) वेणीसंहारम्

स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू० पेज-140

67. उत्तररामचरिते भवभूतिना कस्मिन् अङ्के भरतस्य उल्लेखः कृतः? DU M.Phil–2016

(A) प्रथमे (B) द्वितीये
(C) तृतीये (D) चतुर्थे

स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-320

68. उत्तररामचरिते कस्य पात्रस्य नाट्यमञ्चे दर्शनं न भवति? DU M.Phil–2016

(A) वसिष्ठस्य (B) शत्रुघ्नस्य
(C) लवणस्य (D) उक्तानां त्रयाणामपि

स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू० पेज-140

69. उत्तररामचरिते शम्बूकमुनिः कतमं लोकं प्राप्नोति– DU M.Phil–2016

(A) यमलोकम् (B) वैराजम्
(C) मर्त्यलोकम् (D) उक्तेषु कमपि न

स्रोत–उत्तररामचरितम् (2/12) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-127

70. उत्तररामचरितस्य उपजीव्यो ग्रन्थः कः अस्ति? K SET–2014

(A) वाल्मीकिरामायणम् (B) अध्यात्मरामायणम्
(C) रामचरितमानसम् (D) भुशुण्डिरामायणम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-402,403

71. उत्तररामचरिते कतमः अङ्कः 'गर्भाङ्कः' इति नाम्ना प्रसिद्धः– UK SET–2015

(A) प्रथमोऽङ्कः (B) तृतीयोऽङ्कः
(C) सप्तमोऽङ्कः (D) पञ्चमोऽङ्कः

स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू० पेज-59

72. 'दिष्ट्याऽपरिहीनधर्मः खलु स राजा' संवादेन भवभूतिः परिचाययति– UP GDC–2013

(A) जननायकम् (B) कुलगुरुम्
(C) श्रीरामम् (D) कलियुगम्

स्रोत–उत्तररामचरितम् (अंक-3) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-172

59. (C) 60. (A) 61. (B) 62. (C) 63. (D) 64. (B) 65. (D) 66. (C) 67. (D) 68. (D) 69. (B) 70. (A) 71. (C) 72. (C)

73. भागीरथी 'उत्तररामचरितम्' में किसकी पूजा करने के बहाने सीता को लाती है? UP TGT–2013

(A) शिव (B) विष्णु
(C) ब्रह्मा (D) सूर्य

स्रोत–उत्तररामचरितम् (अंक-3) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-162

74. 'उत्तररामचरितम्' में अदृश्यरूप में सीता किसके साथ पञ्चवटी में आती हैं? UP TGT–2013

(A) गोदावरी (B) गंगा
(C) तमसा (D) वासन्ती

स्रोत–उत्तररामचरितम् (अंक-3)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-161-162

75. करुण के रस-राजत्व की प्रतिष्ठापना किस ग्रन्थ द्वारा की गई? UP TGT (H)–2004, 2005

(A) रघुवंशम् (B) उत्तररामचरितम्
(C) प्रतिमानाटकम् (D) किरातार्जुनीयम्

स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0 पेज-86

76. 'उत्तररामचरितम्' के तृतीय अङ्क का सम्बन्ध किससे है? UP PGT (H)–2009

(A) वाल्मीकि के आश्रम से (B) अयोध्या से
(C) सरयू के तट से (D) पञ्चवटी से

स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0 पेज-48

77. शान्ता थी– UGC 73 J–1991

(A) दशरथ की पुत्री (B) राम की पुत्री
(C) ऋषिकन्या (D) विदुषी

स्रोत–उत्तररामचरितम् (1/4) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-10

78. 'सतां सद्भिः सङ्गः कथमपि हि पुण्येन भवति' का अर्थ है– UP PGT–2010

(A) सज्जनों का सत्य के साथ मिलन बड़े पुण्य से होता है।
(B) सज्जनों का सज्जनों के साथ मिलन बड़े पुण्य से होता है।
(C) सत्य का सज्जनों से मिलना पुण्यकारी है।
(D)सज्जनों का दुर्जनों से मिलन पुण्यकारी नहीं है।

स्रोत–उत्तररामचरितम् (2/1) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-97, 98

79. ''प्रियाशोको जीवं कुसुममिव घर्मो ग्लपयति'' यह उक्ति किससे सम्बन्धित है? UP PGT–2002

(A) मृच्छकटिकम् (B) मुद्राराक्षसम्
(C) उत्तररामचरितम् (D) मालविकाग्निमित्रम्

स्रोत–उत्तररामचरितम् (3/30) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-220

80. ''गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः'' सूक्ति किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है?

UP PGT–2002, 2005, 2013, CCSUM Ph.D–2016

(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (B) दशकुमारचरितम्
(C) किरातार्जुनीयम् (D) उत्तररामचरितम्

स्रोत–उत्तररामचरितम् (4/11) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-291

81. (i)''वितरति गुरुः प्राज्ञे विद्यां यथैव तथा जडे'' इत्युक्तिः कस्मिन् नाटके आयाति? MGKV-Ph. D–2016

(ii) 'वितरति गुरुः प्राज्ञे विद्यां यथैव तथा जडे' उक्तिः केन ग्रन्थेन सम्बद्धा अस्ति? UGC 25 J–2012, D–2012

(A) महावीरचरिते (B) मालतीमाधवे
(C) मालविकाग्निमित्रे (D) उत्तररामचरिते

स्रोत–उत्तररामचरितम् (2/4) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-105

82. (i)''एको रसः करुण एव निमित्तभेदाद्'' इयमुक्तिः कुत्रोपलभ्यते– UGC 25 J–2014, 1995,

(ii) 'एको रसः करुण एव' कुत्र वर्तते इदं वाक्यम्?

(iii) 'एको रसः करुण एव निमित्तभेदात्' से सम्बद्ध रचना है? UP TGT–2009, GJ SET–2007, G GIC–2015, K SET–2014, AWES TGT–2012

(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (B) मुद्राराक्षसम्
(C) वेणीसंहारम् (D) उत्तररामचरितम्

स्रोत–उत्तररामचरितम् (3/47) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-260

83. ''तीर्थोदकं च वह्निश्च नान्यतः शुद्धिमर्हतः'' यह उक्ति किसे लक्ष्य करके कही गयी है– BHU MET–2014

(A) सीता (B) द्रौपदी
(C) राम (D) दमयन्ती

स्रोत–उत्तररामचरितम् (1/13) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज- 27

84. ''दिष्ट्या अपरिहीनधर्मः खलु स राजा'' उक्तिरियम् उत्तररामचरिते वर्तते– UP GDC–2012

(A) आत्रेय्याः (B) तमसायाः
(C) वासन्त्याः (D) सीतायाः

स्रोत–उत्तररामचरितम् (अंक-3) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-172

73. (D) 74. (B) 75. (B) 76. (D) 77. (A) 78. (B) 79. (C) 80. (D) 81. (D) 82. (D) 83. (A) 84. (D)

85. 'एको रसः करुण एव निमित्तभेदात्' उक्तिरियम् उत्तररामचरितेऽस्ति? UP GDC–2012, UGC 25 J–2016

(A) मुरलायाः (B) सीतायाः
(C) तमसायाः (D) वासन्त्याः

स्रोत–उत्तररामचरितम् (3/47) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-260

86. (i) उत्तररामचरितम् में निम्नलिखित उक्ति किसकी है– ''त्वं जीवितं त्वमसि मे हृदयं द्वितीयं, त्वं कौमुदी नयनयोरमृतं त्वमङ्गे। इत्यादिभिः प्रियशतैरनुरुध्य मुग्धां तामेव शान्तमथवा किमतः परेण।।'' UP GDC–2008

(ii) ''त्वं जीवितं त्वमसि मे हृदयं द्वितीयम्'' उत्तररामचरित में यह किसकी उक्ति है? UP TGT–2001, 2005

(A) राम की (B) भरत की
(C) कौशल्या की (D) वासन्ती की

स्रोत–उत्तररामचरितम् (3/26) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-212

87. (i) ''ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति'' मतं कस्य अस्ति? UP GDC–2013

(ii) 'ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति''– यह सूक्ति किस कवि की है? UGC 25 J–1999

(A) श्रीहर्षस्य (B) भवभूतेः
(C) विशाखदत्तस्य (D) चाणक्यस्य

स्रोत–उत्तररामचरितम् (1/10) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-22

88. ''अनिर्भिन्नो गभीरत्वादन्तर्गूढघनव्यथः'', यह किस कवि ने और किस सन्दर्भ में कहा है? UP TGT–1999

(A) कालिदास ने मेघ के वर्णन में।
(B) भारवि ने द्रौपदी के व्यथा वर्णन में।
(C) भवभूति ने राम के करुण रस वर्णन में
(D) भर्तृहरि ने मूर्ख (जड़) के वर्णन में।

स्रोत–उत्तररामचरितम् (3/1) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-156

89. ''स्नपयति हृदयेशं स्नेहनिष्यन्दिनी ते, धवलमधुरमुग्धा दुग्धकुल्येव दृष्टिः'' उपर्युक्त पद्यांश किस ग्रन्थ से उद्धृत है? UP TGT–1999

(A) उत्तररामचरितम् से (B) मेघदूतम् से
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से (D) नीतिशतकम् से

स्रोत–उत्तररामचरितम् (3/23) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-206

90. 'तोयस्येवाप्रतिहतरयः सैकतं सेतुमोघः'' श्लोकांश है? UP TGT–2001

(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से (B) नीतिशतकम् से
(C) मेघदूतम् से (D) उत्तररामचरितम् से

स्रोत–उत्तररामचरितम् (3/36) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज- 228

91. ''करुणस्य मूर्तिरथवा शरीरिणी विरहव्यथेव वनमेति जानकी'' यह कथन किसका है? UP TGT–2001

(A) मुरला का (B) सीता का
(C) राम का (D) तमसा का

स्रोत–उत्तररामचरितम् (3/4) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-164

92. 'ईदृशानां विपाकोऽपि जायते परमाद्भुतः'' यह कथन है– UP TGT–2003

(A) मुरला का (B) तमसा का
(C) गोदावरी का (D) लोपामुद्रा का

स्रोत–उत्तररामचरितम् (3/3) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-160

93. ''अविदितगतयामा रात्रिरेव व्यरंसीत्'' उत्तररामचरित में यह किसकी उक्ति है? UP TGT–2004

(A) तमसा की (B) सीता की
(C) राम की (D) लव की

स्रोत–उत्तररामचरितम् (1/27) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-51

94. (i) लौकिकानां हि साधुनामर्थं वागनुवर्तते .... ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति– इस सूक्ति से युक्त रचना है? UP PGT–2000,

(ii) ''ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति'' यह वाक्यांश कहाँ से उद्धृत है? UP TGT–2004, UGC 25 J–1994, 2005

(A) रघुवंश से (B) तिलोत्तमा से
(C) उत्तररामचरित से (D) रामायण से

स्रोत–उत्तररामचरितम् (1/10) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-22

95. 'शुचिः बिम्बग्राहे मणिः न मृदादयः' उत्तररामचरितस्य वाक्यमिदं किं सूचयति? MH SET–2016

(A) रामलक्ष्मणयोः वैमत्यम् (B) आत्रेयीवासन्तीकथोपकथनम्
(C) रामसीताविलापम् (D) प्राज्ञजडक्षत्रप्रभेदम्

स्रोत–उत्तररामचरितम् (2/4) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-105

85. (C) 86. (D) 87. (B) 88. (C) 89. (A) 90. (D) 91. (D) 92. (A) 93. (C) 94. (C) 95. (D)

96. 'भवभूतिर्विशिष्यते'' यह उक्ति किस नाटक के बारे में है? UP TGT–2004

(A) उत्तररामचरितम् (B) महावीरचरितम्
(C) मालतीमाधवम् (D) मालविकाग्निमित्रम्

स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-529

97. 'करुणस्य मूर्तिरथवा' यह उक्ति किसके बारे में है? UP TGT–2004

(A) शम्बूक (B) तमसा
(C) सीता (D) भागीरथी

स्रोत–उत्तररामचरितम् (3/4) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-164

98. ''किसलयमिव मुग्धं बन्धनाद् विप्रलूनं हृदयकमलशोषी दारुणो दीर्घशोकः'' प्रस्तुत श्लोक किससे उद्धृत है– UP TGT–2009

(A) मेघदूतम् (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(C) रघुवंशम् (D) उत्तररामचरितम्

स्रोत–उत्तररामचरितम् (3/5) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-165

99. ''शोकक्षोभे च हृदयं प्रलापैरेव धार्यते'' उक्ति है– UP TGT–2009

(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (B) स्वप्नवासवदत्तम्
(C) उत्तररामचरितम् (D) मृच्छकटिकम्

स्रोत–उत्तररामचरितम् (3/29) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-218

100. ''अयि कठोर! यशः किल ते प्रियम्'' कथन किसका है– UP TGT–2010

(A) सीता का (B) वासन्ती का
(C) तमसा का (D) मुरला का

स्रोत–उत्तररामचरितम् (3/27) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-214

101. ''सतां सद्भिः सङ्गः कथमपि हि पुण्येन भवति'' यह किस नाट्यग्रन्थ से सम्बद्ध है– UP PGT–2004

(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (B) उत्तररामचरितम्
(C) मृच्छकटिकम् (D) विक्रमोर्वशीयम्

स्रोत–उत्तररामचरितम् (2/1) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-97

102. (i)''अपि ग्रावा रोदित्यपि दलति वज्रस्य हृदयम्'' इसका सम्बन्ध है– UP PGT–2010, UGC 25 J–2000

(ii) ''अपि ग्रावा रोदित्यपि दलति वज्रस्य हृदयम्'' यह सूक्ति मिलती है?

(A) रत्नावली से (B) स्वप्नवासवदत्ता से
(C) मृच्छकटिकम् से (D) उत्तररामचरितम् से

स्रोत–उत्तररामचरितम् (1/28) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-52

103. ''करुणस्य मूर्तिरथवा शरीरिणी'' इदं वर्णनं कस्मिन् काव्येऽस्ति? UGC 25 J–2013

(A) उत्तररामचरितम् (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(C) मुद्राराक्षसम् (D) रत्नावली

स्रोत– उत्तररामचरितम् (3/4) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-164

104. ''रहस्यं साधूनामनुपधि विशुद्धं विजयते'' जिस कवि की उक्ति है, वह हैं– UGC 25 D–1996

(A) कालिदास (B) अश्वघोष
(C) भवभूति (D) दिङ्नाग

स्रोत–उत्तररामचरितम् (2/2) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-99

105. (i)''एको रसः करुण एव'' यह कथन है–

(ii)''एको रसः करुण एव निमित्तभेदात्'' इति केनोक्तम्–

(iii) ''एको रसः करुण एव'' इति केनोक्तम्?

(iv) ''एको रसः करुण एव निमित्तभेदात् भिन्नः पृथक् पृथगिव श्रयते विवर्तान्'' इसके वक्ता ग्रन्थकार हैं– BHU AET–2010, UGC 25 J–2000, D–2007

(A) कालिदास (B) माघ
(C) भवभूति (D) श्रीहर्ष

स्रोत–उत्तररामचरितम् (3/47) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-260

106. ''वितरति गुरुः प्राज्ञे विद्यां यथैव तथा जडे'' उत्तररामचरिते कस्य संवादोऽस्ति? UP GDC–2013

(A) रामस्य (B) अष्टावक्रस्य
(C) आत्रेय्याः (D) वनदेवतायाः

स्रोत–उत्तररामचरितम् (2/4) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-105

96. (A) 97. (C) 98. (D) 99. (C) 100. (B) 101. (B) 102. (D) 103. (A) 104. (C) 105. (C) 106. (C)

107. ''वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि'' पद्यांशोऽयं कस्मिन् नाटके आयाति? UGC 25 D–2013

(A) मालतीमाधवे (B) महावीरचरिते
(C) उत्तररामचरिते (D) अभिज्ञानशाकुन्तले

स्रोत–उत्तररामचरितम् (2/7) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज- 117

108. (i) 'पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः' उत्तररामचरिते उक्तिरियं भवति?

(ii) ''पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः'' इति वाक्यम् उत्तररामचरितस्य केन पात्रेण प्रयुक्तम्? DL–2014, UGC 25 D–2015, J–2016

(A) सीतायाः (B) मुरलायाः
(C) तमसायाः (D) वासन्त्याः

स्रोत–उत्तररामचरितम् (3/1) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-156

109. ''एको रसः करुण एव'' यह उक्ति उत्तररामचरितम् के किस अङ्क से सम्बन्धित है– UP TGT–2013

(A) 1 (B) 2
(C) 3 (D) 4

स्रोत–उत्तररामचरितम् (3/47) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-260

110. (i) ''पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः'' इति केनोक्तम्? JNU MET–2015

(ii) 'पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः'' किस कवि से सम्बद्ध है? UP TET–2016

(A) कालिदास (B) भास
(C) भवभूति (D) अश्वघोष

स्रोत–उत्तररामचरितम् (3/1) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-156

111. (i) लौकिकानां हि साधूनामर्थं वागनुवर्तते–

(ii) ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति'' के वक्ता हैं– BHU MET–2014, UGC 25 D–2015

(A) श्रीलक्ष्मण (B) सीता
(C) राम (D) अष्टावक्र

स्रोत–उत्तररामचरितम् (1/10) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-22

112. 'पूरोत्पीडे तटाकस्य परीवाहः प्रतिक्रिया' में 'पूरोत्पीडे' शब्द का अर्थ है– UP TGT–2001, 2005

(A) वाणी (B) सरोवर
(C) जलवृद्धि (D) बादल

स्रोत–उत्तररामचरितम् (3/29) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-219

113. ''अन्तःकरणतत्त्वस्य दम्पत्योः स्नेहसंश्रयात् आनन्दग्रन्थिरेकोऽयमपत्यमिति पठ्यते''–यहाँ 'अपत्यम्' शब्द का अर्थ है? UP TGT–2003

(A) विश्वास (B) सन्तान
(C) सीधा (D) गर्भिणी

स्रोत–उत्तररामचरितम् (3/17) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-196

114. 'पूरोत्पीडे तटाकस्य परीवाहः प्रतिक्रिया' से क्या तात्पर्य है– UP TGT–2011

(A) तालाब के अधिक भर जाने पर जल को बाहर बहाना ही एकमात्र संरक्षण उपाय होता है।
(B) तालाब को भरने के लिये जल को बाहर से डालना ही उपाय होता है।
(C) तालाब के अधिक भर जाने पर बाहर का पानी रोक देना ही उपाय होता है।
(D) तीनों ही अर्थ सही नहीं है।

स्रोत–उत्तररामचरितम् (3/29) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-219

115. 'लोकोत्तराणां चेतांसि को हि विज्ञातुमर्हति'–इति कस्मिन्नाटके वर्ण्यते– GJ SET–2013

(A) अभिज्ञानशाकुन्तले (B) उत्तररामचरिते
(C) कर्णभारे (D) मुद्राराक्षसे

स्रोत–उत्तररामचरितम् (2/7) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-117

116. प्रियप्रायावृत्तिर्विनयमधुरो वाचि नियमः ...... उक्तिः? GJ SET–2016

(A) तापस्याः (B) वनदेवतायाः
(C) सीतायाः (D) रामस्य

स्रोत–उत्तररामचरितम् (2/2) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-99

117. 'विपाक' शब्द का अर्थ है? UP TGT–2003

(A) कृत्रिम नदी (B) दुरवस्था
(C) स्वभाव (D) घास

स्रोत–उत्तररामचरितम् (3/3) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-161

107. (C) 108. (B) 109. (C) 110. (C) 111. (C) 112. (C) 113. (B) 114. (A) 115. (B) 116. (A) 117. (B)

118. 'अमरसिन्धु' है? UP TGT–2004

(A) सरस्वती (B) समुद्र
(C) गङ्गा (D) यमुना

स्रोत–उत्तररामचरितम् (3/48) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-262

119. 'पौलस्त्यस्य जटायुषा विघटितः' श्लोक में 'पौलस्त्यस्य' से तात्पर्य है? UP TGT–2003

(A) सुग्रीव से (B) रावण से
(C) लक्ष्मण से (D) हनुमान् से

स्रोत–उत्तररामचरितम् (3/43) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-248

120. 'पुटपाक' का अभिप्राय है? UP TGT–2005

(A) एक प्रकार का व्यञ्जन
(B) एक प्रकार का आभूषण
(C) एक प्रकार की औषधि
(D) औषधि पकाने का एक विशिष्ट ढंग

स्रोत–उत्तररामचरितम् (3/1)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-156,157

121. 'प्रसवः खलु प्रकर्षपर्यन्तः स्नेहस्य' यहाँ 'प्रसवः' शब्द का अर्थ है? UP TGT–2005

(A) सन्तान (B) गर्भावस्था
(C) प्रसव-वेदना (D) सन्तानोत्पत्ति

स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-196

122. 'त्वं जीवितम्' का अर्थ है? UP TGT–2009

(A) तुम जीवित हो (B) तुम जीवन हो
(C) तुम जियो (D) तुम्हारे जीते जी

स्रोत–उत्तररामचरितम् (3/26) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-212

123. 'नीरन्ध्रबालकदली' में 'नीरन्ध्र' पद का अर्थ है– UP TGT–2010

(A) नीर धारण करने वाला (B) नीरस
(C) सघन (D) निःशब्द

स्रोत–उत्तररामचरितम् (3/21) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-202

124. 'वधूद्वितीय' का अर्थ है– UP TGT–2010

(A) दो स्त्रियाँ (B) दूसरे की स्त्री
(C) दूसरी स्त्री (D) प्रिया के साथ

स्रोत–उत्तररामचरितम् (अंक-3)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-187-188

125. 'कल्याणि! सञ्जीवय जगत्पतिम्' इस पद्यांश में 'जगत्पतिम्' की व्यञ्जना है? UP PGT–2010, UK TET–2011

(A) राम के लिए (B) शिव के लिए
(C) राजा के लिए (D) सीता के लिए

स्रोत–उत्तररामचरितम् (3/10) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-177

126. 'रात्रिरेव व्यरंसीत्'। कस्मिन् नाटके इदं दृश्यते– KL SET–2014

(A) अनर्घराघवे (b) वेणीसंहारे
(C) उत्तररामचरिते (D) मुद्राराक्षसे

स्रोत–उत्तररामचरितम् (1/27) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-51

127. 'सतां सद्भिः सङ्गः कथमपि हि पुण्येन भवति' – इदं कथनम् उत्तररामचरिते नाटकेऽस्ति– T SET–2013

(A) लक्ष्मणस्य (B) रामस्य
(C) सीतायाः (D) वनदेवतायाः

स्रोत–उत्तररामचरितम् (2/1) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-97

128. उत्तररामचरितम् में तमसा और मुरला हैं– UP PGT–2010

(A) वनदेवता
(B) सीता की सखियाँ
(C) नदी विशेषाधिष्ठात्री देवियाँ
(D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-155

118. (C) 119. (B) 120. (D) 121. (A) 122. (B) 123. (C) 124. (D) 125. (A) 126. (C) 127. (D) 128. (C)

11 स्वप्नवासवदत्तम्

1. (i) 'स्वप्नवासवदत्तम्' के लेखक हैं–
(ii) स्वप्नवासवदत्तस्य रचयिता कः अस्ति?
BPSC–1999, UGC 25 J–2007, BHU Sh.ET–2013
(A) कालिदासः (B) भासः
(C) भवभूतिः (D) राजशेखरः
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास -कपिलदेव द्विवेदी, पेज-275

2. (i) स्वप्नवासवदत्ते कति अङ्काः सन्ति?
(ii) 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक में कुल कितने अङ्क हैं?
UP PGT–2003, DSSSB PGT–2014, UGC 25 J–2010, DSSSB TGT–2014
(A) पाँच (B) छः
(C) सात (D) आठ
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-275

3. स्वप्नवासवदत्ता नाटक का नायक उदयन किस कोटि का है– UGC 25 J–1999
(A) धीरोदात्त (B) धीरोद्धत
(C) धीरललित (D) धीरप्रशान्त
स्रोत–स्वप्नवासवदत्तम् - तारिणीश झा, भू0पेज-32

4. उदयनः कस्य नाटकस्य नायकः? AWES TGT–2008
(A) विक्रमोर्वशीयम् (B) स्वप्नवासवदत्तम्
(C) मृच्छकटिकम् (D) कुन्दमाला
स्रोत–स्वप्नवासवदत्तम् -तारिणीश झा, भू0 पेज-32

5. संस्कृते अतिप्राचीनरूपकस्य नाम किम्?
DSSSB TGT–2014
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (B) शारिपुत्रप्रकरणम्
(C) स्वप्नवासवदत्तम् (D) उत्तररामचरितम्
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–285

6. 'स्वप्नवासवदत्तम्' इति नाटकस्य आकरग्रन्थः–
DSSSB TGT–2014
(A) महाभारतम् (B) रामायणम्
(C) बृहत्कथा (D) बालचरितम्
स्रोत–स्वप्नवासवदत्तम् - सुधाकर मालवीय, भू. पेज-17

7. (i) लावाणकदाहकथा कस्मिन् रूपके घटिता आसीत्?
(ii) लावाणकग्राम की घटना कहाँ वर्णित है?
H-TET–2015, RPSC SET–2010
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में (B) मालविकाग्निमित्रम् में
(C) मृच्छकटिकम् में (D) स्वप्नवासवदत्तम् में
स्रोत–स्वप्नवासवदत्तम् - जयपाल विद्यालंकार, पेज-192

8. (i) यौगन्धरायणः अत्र कथापात्रत्वेन आविष्कृतः–
(ii) यौगन्धरायण किसका प्रमुख पात्र है?
UGC 25 D–1996, K-SET–2014
(A) उत्तररामचरितम् (B) रत्नावली
(C) स्वप्नवासवदत्तम् (D) कादम्बरी
स्रोत–स्वप्नवासवदत्तम् - शेषराज शर्मा 'रेग्मी', भू. पेज-16

9. (i) रुमण्वान् पात्र का वर्णन है– UGC 25 J–2002
(ii) 'रुमण्वान्' कस्मिन् नाटके पात्रविशेषः?
UK SLET–2015
(A) स्वप्नवासवदत्तम् में (B) मृच्छकटिकम् में
(C) वेणीसंहारम् में (D) उत्तररामचरितम् में
स्रोत–स्वप्नवासवदत्तम् -शेषराज शर्मा 'रेग्मी', भू. पेज-16

10. स्वप्नवासवदत्ते वर्णितपात्रेषु उदयनस्य सेनापतिः कः आसीत्? UGC 25 J–2016
(A) आरुणिः (B) रुमण्वान्
(C) यौगन्धरायणः (D) प्रद्योतः
स्रोत–स्वप्नवासवदत्तम् -तारिणीश झा, भू0 पेज-72

11. उदयनस्य चरितं कस्मिन् ग्रन्थे अस्ति– T-SET–2014
(A) शिशुपालवधे (B) मुद्राराक्षसे
(C) स्वप्नवासवदत्ते (D) वेणीसंहारे
स्रोत–स्वप्नवासवदत्तम् -तारिणीश झा, भू0पेज-32

1. (B) 2. (B) 3. (C) 4. (B) 5. (C) 6. (C) 7. (D) 8. (C) 9. (A) 10. (B) 11. (C)

12. वसन्तक (विदूषक)–युक्तरचना अस्ति–
AWES TGT–2011
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (B) मालतीमाधवम्
(C) विक्रमोर्वशीयम् (D) स्वप्नवासवदत्तम्
स्रोत–स्वप्नवासवदत्तम् - शेषराज शर्मा 'रेग्मी', भू0पेज-16

13. स्वप्नवासवदत्त-नाटके विदूषकस्य नाम किम्?
RPSC ग्रेड-I (PGT)–2014
(A) वसन्तकः (B) कामन्दकः
(C) मकरन्दः (D) माधव्यः
स्रोत–स्वप्नवासवदत्तम् -शेषराज शर्मा 'रेग्मी', भू0पेज-16

14. 'घोषवती वीणा' का सम्बन्ध किस नाटक से है?
UP PGT–2003
(A) चारुदत्तम् (B) मृच्छकटिकम्
(C) महावीरचरितम् (D) स्वप्नवासवदत्तम्
स्रोत–स्वप्नवासवदत्तम् - रूपनारायण त्रिपाठी, भू0पेज-13

15. (i) उदयनस्य वीणायाः नाम किम्?
(ii) स्वप्नवासवदत्त-नाटके उदयनस्य वीणायाः नाम किमासीत्? RPSC ग्रेड-I (PGT)–2014, 2015
(A) प्रेमवती (B) रागवती
(C) घोषवती (D) आलापवती
स्रोत–स्वप्नवासवदत्तम् - रूपनारायण त्रिपाठी, भू0 पेज-13

16. (i) स्वप्नवासवदत्तस्य स्वप्नवृत्तान्तो वर्तते–
(ii) स्वप्नवासवदत्तम् का 'स्वप्न अङ्क' कौन-सा है?
(iii) स्वप्नवासवदत्त-नाटकस्य स्वप्नः अङ्कः कः?
MGKV Ph. D–2016, UP TGT–2004, WB SET–2010
(A) द्वितीयः (B) तृतीयः
(C) चतुर्थः (D) पञ्चमः
स्रोत–स्वप्नवासवदत्तम् - सुधाकर मालवीय, भू0पेज-20

17. वासवदत्ता कस्य राज्यस्य राजकन्या आसीत्?
HAP–2016
(A) अवन्तिकायाः (B) मगधस्य
(C) कौशाम्ब्याः (D) गान्धारदेशस्य
स्रोत–स्वप्नवासवदत्तम् - सुधाकर मालवीय, भू0पेज-21

18. (i) 'चक्रारपंक्तिरिव गच्छति भाग्यपंक्तिः' यह सूक्ति है–
(ii) 'चक्रारपंक्तिरिव गच्छति भाग्यपंक्तिः' किसमें पाया जाता है?
(iii) ''चक्रारपंक्तिरिव गच्छति भाग्यपंक्तिः'' – सूक्तिरियं कस्मिन् काव्ये वर्तते–
UGC 25 D–1999, UGC 73 D–1999, CVVET–2017
(A) मेघदूतम् (B) मृच्छकटिकम्
(C) हितोपदेशम् (D) स्वप्नवासवदत्तम्
स्रोत–स्वप्नवासवदत्तम् (1/4) - शेषराज शर्मा 'रेग्मी', पेज-11

19. ''स्वप्ने नाटके भर्तृस्नेहात् सा हि दग्धाऽप्यदग्धा'' कस्य वचनमिदम्? UGC 25 J–2011
(A) ब्रह्मचारिणः (B) यौगन्धरायणस्य
(C) विदूषकस्य (D) उदयनस्य
स्रोत–स्वप्नवासवदत्तम् (1/13)-शेषराज शर्मा 'रेग्मी', पेज-41

20. 'दुःखं न्यासस्य रक्षणम्' एषा उक्तिः कस्य नाटकस्य?
AWES TGT–2011, K SET–2013
(A) चारुदत्तस्य (B) स्वप्नवासवदत्तस्य
(C) मृच्छकटिकस्य (D) विक्रमोर्वशीयस्य
स्रोत–स्वप्नवासवदत्तम् (1/10)-रूपनारायण त्रिपाठी, पेज-37

12. (D) 13. (A) 14. (D) 15. (C) 16. (D) 17. (A) 18. (D) 19. (A) 20. (B)

12 मृच्छकटिकम्

1. (i) मृच्छकटिकस्य रचयितुर्नाम–BHU Sh.ET–2013,
(ii) मृच्छकटिकस्य को रचयिता? DSSSB PGT–2014,
(iii) मृच्छकटिकं केन विरचितम्–UGC 25 J–2005, GJ SET–2011

(A) शूद्रकः (B) भवभूतिः
(C) जयदेवः (D) सुबन्धुः

स्रोत–मृच्छकटिकम् - रमाशङ्कर त्रिपाठी, भू0 पेज-vii

2. शूद्रकस्य का रचना अस्ति– T-SET–2014

(A) उत्तररामचरितम् (B) मेघदूतम्
(C) मृच्छकटिकम् (D) वेणीसंहारम्

स्रोत–मृच्छकटिकम् - रमाशङ्कर त्रिपाठी, भू0 पेज-vii

3. शूद्रकेन मानभूतं प्रकरणनाट्यं निर्मितमासीत्– DL–2015

(A) वेणीसंहारम् (B) विद्धशालभञ्जिका
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (D) मृच्छकटिकम्

स्रोत–मृच्छकटिकम् - जगदीशचन्द्र मिश्र, भू0पेज-7

4. (i) मृच्छकटिकम् इत्यस्य पदस्य हिन्दीभाषायाम् अर्थोऽस्ति–
(ii) 'मृच्छकटिकम्' का शाब्दिक अर्थ है– UP PGT–2013, T SET–2013

(A) मिट्टी की गाड़ी (B) मिट्टी का घोड़ा
(C) मृत मन्त्री (D) कठिन प्रयास

स्रोत–मृच्छकटिकम् - रमाशङ्कर त्रिपाठी, पेज-6

5. (i) मृच्छकटिकं कस्य रूपकस्य उदाहरणं भवति?
(ii) 'मृच्छकटिकम्' कीदृशं रूपकं मन्यते?
(iii) 'मृच्छकटिकम्' किस प्रकार का रूपक ग्रन्थ है?
(iv) मृच्छकटिकम् अस्ति– UP PGT–2004, 2005,
(v) मृच्छकटिकस्य रूपकविधा अस्ति–
(vi) मृच्छकटिकम् .... वर्तते–
(vii) 'मृच्छकटिकम्' भवति– UGC 25 J–2006
(viii) मृच्छकटिकम् किंविधं रूपकम्?
(ix) रूपक-भेद की दृष्टि से 'मृच्छकटिकम्' क्या है?
RPSC SET–2013-14, JNU MET–2015, BHU MET–2011, UP GDC–2008, UGC 25 J–1998, D–2012, J–2015, 2016, Jn–2017 BHU AET–2010, K SET–2013, 2015, CCSUM Ph.D–2016, GGIC–2015

(A) नाटक (B) भाण
(C) व्यायोग (D) प्रकरण

स्रोत–मृच्छकटिकम् - रमाशङ्कर त्रिपाठी, भू0पेज-xxvii

6. (i) प्रकरणस्य उदाहरणं भवति– UP GIC–2010,
(ii) प्रकरणमस्ति........... UGC 25 J–2005, 2013, UGC 25 D–2009

(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (B) मृच्छकटिकम्
(C) रत्नावली (D) वेणीसंहारम्

स्रोत–मृच्छकटिकम् - रमाशङ्कर त्रिपाठी, भू0पेज-xxvii

7. अधोलिखितेषु प्रकरणनाटकं रूपकोऽस्ति– UP GIC–2015

(A) मृच्छकटिकम् (B) स्वप्नवासवदत्तम्
(C) मुद्राराक्षसम् (D) उत्तररामचरितम्

स्रोत–मृच्छकटिकम् - रमाशङ्कर त्रिपाठी, भू0पेज-xxx

8. मृच्छकटिकस्य नान्दीपाठे कस्याः देवतायाः समाधेः माध्यमेन रक्षाकामना कृताऽस्ति? GGIC–2015

(A) ब्रह्मणः (B) विष्णोः
(C) सरस्वत्याः (D) शङ्करस्य

स्रोत–मृच्छकटिकम् (1/1) - रमाशङ्कर त्रिपाठी, पेज-1

9. 'मृच्छकटिकम्' की कथा किसमें समायोजित है? UP PGT–2000

(A) उद्योत (B) सर्ग
(C) अङ्क (D) उच्छ्वास

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-310

10. (i) 'मृच्छकटिके' कति अङ्काः सन्ति?
(ii) का मृच्छकटिके अङ्कानां संख्यागणय साम्प्रतम्?
(iii) अङ्कैः प्रकरणं मृच्छकटिकं कतिभिः कृतम्?
BHU AET–2011, 2012, UGC 25 D–2007

(A) पञ्चदश (B) सप्त
(C) दश (D) पञ्च

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-307

11. 'मृच्छकटिकम्' का नायक कौन है? UP PGT–2000

(A) शकार (B) दुर्योधन
(C) संवाहक (D) चारुदत्त

स्रोत–मृच्छकटिकम्- जगदीशचन्द्र मिश्र, भू. पेज-47

1. (A) 2. (C) 3. (D) 4. (A) 5. (D) 6. (B) 7. (A) 8. (D) 9. (C) 10. (C) 11. (D)

12. 'मृच्छकटिकम्' की नायिका है– UP PGT–2005

(A) कुलजा (B) वेश्या

(C) तापसी (D) कुलजा/वेश्या दोनों

स्रोत–मृच्छकटिकम् - रमाशङ्कर त्रिपाठी, भू0 पेज-xxxvi

13. (i) चारुदत्तः अस्मिन् रूपके नायकः–UP PGT–2013,

(ii) 'चारुदत्त' नायक है– K SET–2014

(A) शिशुपालवधम् में (B) रघुवंशम् में

(C) मृच्छकटिकम् में (D) कादम्बरी में

स्रोत–मृच्छकटिकम् - जगदीशचन्द्र मिश्र, भू0पेज-47

14. 'चारुदत्त' किस श्रेणी का नायक है?

UP PGT–2005, UP GDC–2008

(A) धीरोदात्त (B) धीरोद्धत

(C) धीरप्रशान्त (D) धीरललित

स्रोत–मृच्छकटिकम् - रमाशङ्कर त्रिपाठी, भू0पेज-xxxi

15. प्रकरण का नायक होता है– UGC 25 D–1996

(A) धीरोदात्त (B) धीरललित

(C) धीरोद्धत (D) धीरप्रशान्त

स्रोत–मृच्छकटिकम् - रमाशङ्कर त्रिपाठी, भू0पेज-xxxi

16. शकारी प्राकृत का प्रयोग किस नाटक में है–

UGC 25 D–1997

(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (B) स्वप्नवासवदत्तम्

(C) मृच्छकटिकम् (D) वेणीसंहारम्

स्रोत–मृच्छकटिकम् - जगदीशचन्द्र मिश्र, भू0 पेज-13

17. चारुदत्तस्य परिचारिका का? KL SET–2015

(A) सुदक्षिणा (B) रदनिका

(C) अरुन्धती (D) वसन्तसेना

स्रोत–मृच्छकटिकम् - जगदीशचन्द्र मिश्र, भू0 पेज-48

18. चारुदत्तस्य सेवकस्य नाम– DU M.phil–2016

(A) मैत्रेयः (B) संवाहकः

(C) आर्यकः (D) जूर्णवृद्धः

स्रोत–मृच्छकटिकम् - जगदीशचन्द्र मिश्र, भू0 पेज-47

19. शर्विलकस्य प्रेमिकायाः नाम– DU M.Phil–2016

(A) रदनिका (B) वसन्तसेना

(C) मदनिका (D) धूता

स्रोत–मृच्छकटिकम् - जगदीशचन्द्र मिश्र, भू0 पेज-48

20. मृच्छकटिकप्रकरणस्य षष्ठाङ्कस्य नाम– GJ SET–2016

(A) आर्यकापहरणम् (B) प्रवहणविपर्ययः

(C) सन्धिच्छेदः (D) अलङ्कारन्यासः

स्रोत–मृच्छकटिकम् - रमाशङ्कर त्रिपाठी, पेज-438

21. (i) 'मृच्छकटिके' प्रथमोऽङ्कः नामतो ज्ञायते–

(ii) 'मृच्छकटिक' प्रकरण के प्रथम अङ्क का नाम है?

(iii) मृच्छकटिके प्रथमाङ्कस्य नाम–

UP GIC–2009, UP GDC–2012, 2013,

KL SET–2014, UP PGT–2011

(A) द्यूतकरसंवाहकः (B) अलङ्कारन्यासः

(C) मदनिकाशर्विलकः (D) व्यवहारः

स्रोत–मृच्छकटिकम् - रमाशङ्कर त्रिपाठी, पेज-117

22. 'मृच्छकटिके' कियन्तः प्राकृतभेदाः प्रयुक्ताः?

BHU AET–2010

(A) 4 (B) 7

(C) 6 (D) 5

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-323

23. मृच्छकटिके .... नाम 'मदनिका-शर्विलकः' अस्ति?

GJ SET–2016

(A) चतुर्थाङ्कस्य (B) तृतीयाङ्कस्य

(C) द्वितीयाङ्कस्य (D) नवमाङ्कस्य

स्रोत–मृच्छकटिकम् - रमाशङ्कर त्रिपाठी, पेज-313

24. मृच्छकटिकस्य संस्थानकः? GJ SET–2003

(A) स्थावरकः (B) विटः

(C) चेटः (D) शकारः

स्रोत–मृच्छकटिकम् - रमाशङ्कर त्रिपाठी, भू0पेज-xl

25. धीरप्रशान्तः नायकः कस्य रूपकस्य वर्तते?

RPSC SET–2010

(A) मालविकाग्निमित्रस्य (B) रत्नावल्याः

(C) मध्यमव्यायोगस्य (D) मृच्छकटिकस्य

स्रोत–मृच्छकटिकम् - रमाशङ्कर त्रिपाठी, भू0पेज-xxxi

12. (D) 13. (C) 14. (C) 15. (D) 16. (C) 17. (B) 18. (B) 19. (C) 20. (B) 21. (B) 22. (B) 23. (A) 24. (D) 25. (D)

26. रोहसेनः इति पात्रं कस्मिन् नाटके वर्तते? MH SET–2011
(A) मृच्छकटिके (B) स्वप्नवासवदत्ते
(C) शाकुन्तले (D) रत्नावल्याम्
स्रोत–मृच्छकटिकम् - जगदीशचन्द्र मिश्र, भू0पेज-47

27. (i) मृच्छकटिकप्रकरणस्य नायिका–
(ii) 'मृच्छकटिकम्' की नायिका कौन है?
(iii) मृच्छकटिकस्य नायिका .... अस्ति?
MP वर्ग-1 (PGT)–2012, BHU MET–2009, 2013
RPSC SET–2010, GJ SET–2007, 2008
(A) वासवदत्ता (B) वसन्तसेना
(C) मदनिका (D) धूता
स्रोत–मृच्छकटिकम् - जगदीशचन्द्र मिश्र, भू0पेज-48

28. मृच्छकटिकस्य तृतीयाङ्कस्य नाम किम्? UGC 25 J–2016
(A) अलङ्कारन्यासः (B) सन्धिच्छेदः
(C) प्रवहण-विपर्ययः (D) व्यवहारः
स्रोत–मृच्छकटिकम् - रमाशङ्कर त्रिपाठी, पेज-235

29. वसन्तसेनाचारुदत्तयोः चित्रणं कस्मिन् नाटके स्तः?
BHU B.Ed–2014
(A) विक्रमोर्वशीयम् (B) रत्नावली
(C) मृच्छकटिकम् (D) मालविकाग्निमित्रम्
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-307

30. मैत्रेय विदूषक किस नाटक से सम्बद्ध है?
UP PGT–2003
(A) मृच्छकटिकम् (B) मालविकाग्निमित्रम्
(C) चारुदत्तम् (D) स्वप्नवासवदत्तम्
स्रोत–मृच्छकटिकम् - जगदीशचन्द्र मिश्र, भू0 पेज-47

31. (i) 'मृच्छकटिकम्' का विदूषक है–
(ii) मृच्छकटिकम् मे विदूषक का नाम क्या है?
(iii) मृच्छकटिकनाटके विदूषकस्य नाम किं वर्तते?
UP PGT–2002, 2009, 2010, 2011 UGC 25 J–1998, 2002, UK TET–2011, KL SET–2014
RPSC ग्रेड-I (PGT)–2015
(A) माधव्य (B) मैत्रेय
(C) माणवक (D) गौतम
स्रोत–मृच्छकटिकम् - जगदीशचन्द्र मिश्र, भू0पेज-47

32. मृच्छकटिके नायकस्य भार्यास्ति– BHU AET–2010
(A) वसन्तसेना (B) मदनिका
(C) धूता (D) रदनिका
स्रोत–मृच्छकटिकम् - जगदीशचन्द्र मिश्र, भू0पेज-48

33. 'धूता' किस कृति से सम्बन्धित है– UP PGT–2005
(A) किरातार्जुनीयम् (B) वेणीसंहारम्
(C) मृच्छकटिकम् (D) नागानन्दम्
स्रोत–मृच्छकटिकम् - जगदीशचन्द्र मिश्र, भू0पेज-34

34. कौन-सी नारी पात्र मृच्छकटिकम् में नहीं है?
UP PGT–2005
(A) वसन्तसेना की सखी
(B) वसन्तसेना की माता
(C) वसन्तसेना की परिचारिका
(D) वसन्तसेना की सपत्नी
स्रोत–मृच्छकटिकम् - श्रीनिवास शास्त्री, पेज-1

35. (i) शकार पात्र का वर्णन किस नाटक में है?
(ii) शकार का विवेचन किस कृति में है?
(iii) शकार किस रचना में है? BHU MET– 2016
UP PGT–2004, UGC 25 J–1994, 2003
(A) किरातार्जुनीयम् (B) मृच्छकटिकम्
(C) वेणीसंहारम् (D) नागानन्दम्
स्रोत–मृच्छकटिकम् - श्रीनिवास शास्त्री, भू0पेज-36

36. मृच्छकटिके अधोलिखितेषु पात्रेषु कः नाट्यमञ्चे न दृश्यते– DU Ph. D–2016
(A) विटः (B) जूर्णवृद्धः
(C) आर्यकः (D) दर्दुरकः
स्रोत–मृच्छकटिकम् - श्रीनिवास शास्त्री, पेज-1

37. 'मृच्छकटिके' शर्विलकोऽस्ति– UP GDC–2013
(A) नायकः (B) पताकानायकः
(C) खलनायकः (D) लोकनायकः
स्रोत–मृच्छकटिकम् - जयशङ्करलाल त्रिपाठी, भू. पेज-61

26. (A) 27. (B) 28. (B) 29. (C) 30. (A) 31. (B) 32. (C) 33. (C) 34. (A) 35. (B)
36. (B) 37. (B)

38. शर्विलक पात्र विशेष है– UGC 73 J–1998

(A) शाकुन्तले (B) मृच्छकटिके

(C) प्रतिमानाटके (D) मुद्राराक्षसे

स्रोत–मृच्छकटिकम् - जगदीशचन्द्र मिश्र, भू. पेज-47

39. कौन चारुदत्त के घर में सेंध लगाकर वसन्तसेना के गहने चुरा लेता है? UP PGT–2009

(A) शर्विलक (B) संवाहक

(C) दर्दुरक (D) मदनिका

स्रोत–मृच्छकटिकम् - जगदीशचन्द्र मिश्र, भू. पेज-30

40. मृच्छकटिके चौरकर्मनिपुणः शर्विलकोऽस्ति? BHU AET–2010

(A) ब्राह्मणः (B) क्षत्रियः

(C) वैश्यः (D) शूद्रः

स्रोत–मृच्छकटिकम् - जगदीशचन्द्र मिश्र, भू. पेज-29-30

41. (i) चारुदत्त के पुत्र का क्या नाम है? UP PGT–2005

(ii) मृच्छकटिक में चारुदत्त के पुत्र का नाम है?

(iii) आर्यचारुदत्तस्य पुत्रस्य नाम अस्ति?

RPSC ग्रेड-I (PGT)–2010, UP GDC–2008

(A) शूरसेन (B) आर्यक

(C) रोहसेन (D) रेभिल

स्रोत–मृच्छकटिकम् - श्रीनिवास शास्त्री, पेज-1

42. 'रदनिका' इति स्त्रीपात्रं तिष्ठति? UP GDC–2012

(A) उत्तररामचरिते (B) मृच्छकटिके

(C) रत्नावल्याम् (D) कादम्बर्याम्

स्रोत–मृच्छकटिकम् - श्रीनिवास शास्त्री, पेज-1

43. 'मृच्छकटिकम्' के निम्नाङ्कित पात्रों में कौन संस्कृत नहीं बोलता है? UP PGT–2004, 2010, UK TET–2011

(A) चारुदत्त (B) वसन्तसेना

(C) आर्यक (D) शर्विलक

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–324

44. 'मृच्छकटिके' वसन्तसेनां मृत्युमुखात् कः रक्षति? UP GIC–2015

(A) चन्दनकः (B) कुम्भीलकः

(C) शर्विलकः (D) संवाहकः

स्रोत–मृच्छकटिकम् - जगदीशचन्द्र मिश्र, भू0पेज-41

45. 'सन्धिच्छेदकर्मणः' वर्णनं प्राप्यते– UP GDC–2012

(A) अभिज्ञानशाकुन्तले (B) उत्तररामचरिते

(C) शिशुपालवधे (D) मृच्छकटिके

स्रोत–(i) मृच्छकटिकम् (3/23) -रमाशङ्कर त्रिपाठी, पेज-219

(ii) मृच्छकटिकम् - जगदीशचन्द्र मिश्र, पेज-179

46. 'मृच्छकटिकम्' के सम्बन्ध में अधोलिखित कथन सत्य है– UP PGT–2013

(A) 'मृच्छकटिकम्' केवल प्राकृतभाषा में लिखा गया है।

(B) 'मृच्छकटिकम्' एक नाटक है।

(C) 'मृच्छकटिकम्' में केवल पद्यों का प्रयोग है।

(D) 'मृच्छकटिकम्' एक प्रकरण है।

स्रोत–मृच्छकटिकम् - जगदीशचन्द्र मिश्र, भू0पेज-14

47. अधस्तनेषु उपजीव्यमहाकाव्याश्रितं नास्ति– UP GDC–2012

(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (B) मृच्छकटिकम्

(C) उत्तररामचरितम् (D) नैषधीयचरितम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–310

48. निम्नलिखित किस नाटक में सर्वाधिक शोषित, दलित एवं उपेक्षित वर्ग का सहानुभूतिपूर्ण चित्रण हुआ है? UP PGT–2009

(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (B) उत्तररामचरितम्

(C) मृच्छकटिकम् (D) मालविकाग्निमित्रम्

स्रोत–मृच्छकटिकम् - जगदीशचन्द्र मिश्र, भू0पेज-18

49. शूद्रक द्वारा लिखी हुई प्राचीन भारतीय पुस्तक मृच्छकटिकम् का विषय था– IAS–2003

(A) एक धनी व्यापारी और एक गणिका की पुत्री की प्रेम-गाथा।

(B) चन्द्रगुप्त द्वितीय की पश्चिमी भारत के शक क्षत्रपों पर विजय

(C) समुद्रगुप्त के सैन्य अभियान तथा शौर्यपूर्ण कार्य।

(D) गुप्त राजवंश के एक राजा तथा कामरूप की राजकुमारी की प्रेमगाथा।

स्रोत–मृच्छकटिकम् - श्रीनिवास शास्त्री, भू. पेज-33, 34

38. (B) 39. (A) 40. (A) 41. (C) 42. (B) 43. (B) 44. (D) 45. (D) 46. (D) 47. (B) 48. (C) 49. (A)

50. शकटविपर्यास किसमें होता है? UGC 25 J–1999
(A) वेणीसंहारम् (B) मुद्राराक्षसम्
(C) मृच्छकटिकम् (D) स्वप्नवासवदत्तम्
स्रोत–मृच्छकटिकम् - जगदीशचन्द्र मिश्र, भू0पेज-39,40

51. 'मृच्छकटिके' राजश्यालकस्य भाषा अस्ति– UP GDC–2012
(A) मागधी (B) शौरसेनी
(C) शकारी (D) महाराष्ट्री
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–324

52. किस नाटक मे रथ परिवर्तन से कथानक आगे चलता है– UGC 25 D–1997
(A) मुद्राराक्षसम् (B) मृच्छकटिकम्
(C) वेणीसंहारम् (D) उत्तररामचरितम्
स्रोत–मृच्छकटिकम् - जगदीशचन्द्र मिश्र, भू0 पेज-39,40

53. अभिसारिकाओं (वेश्याओं) का बाहुल्य से वर्णन है? UGC 25 D–1997
(A) कादम्बरी (B) मृच्छकटिकम्
(C) दशकुमारचरितम् (D) रत्नावली
संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-493

54. ''मृच्छकटिकं शूद्रकस्य रचना नास्ति'' इति मन्यते? DU Ph. D–2016
(A) पिशेलमहोदयेन (B) सिल्वाँलेवीमहोदयेन
(C) कीथमहोदयेन (D) उक्तैः सर्वैरेव
स्रोत–मृच्छकटिकम् -रमाशंकर त्रिपाठी, भू0पेज-ix-xi

55. 'अल्पक्लेशं मरणं दारिद्र्यमनन्तकं दुःखम्' इति वाक्यं कः कं प्रति कथयति– DU Ph. D–2016
(A) विदूषकः चारुदत्तं प्रति (B) विटः विदूषकं प्रति
(C) चारुदत्तः विदूषकं प्रति (D) शकारः विटं प्रति
स्रोत–मृच्छकटिकम् (1/11) - श्रीनिवास शास्त्री, पेज-14

56. 'समरव्यसनी प्रमादशून्यः' इति एतद्वर्णनं कस्य कवेः? MH SET–2013
(A) भवभूतेः (B) भट्टनारायणस्य
(C) शूद्रकस्य (D) श्रीहर्षस्य
स्रोत–मृच्छकटिकम् (1/5) - श्रीनिवास शास्त्री, पेज-4

57. 'हृदये गृह्यते नारी' सूक्ति किस ग्रन्थ से उद्धृत है– UP PGT–2005
(A) मृच्छकटिकम् (B) रत्नावली
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (D) हर्षचरितम्
स्रोत–मृच्छकटिकम् (1/50) - श्रीनिवास शास्त्री, पेज-42

58. ''लिम्पतीव तमोङ्गानि वर्षतीवाञ्जनं नभः असत्पुरुषसेवेव दृष्टिर्विफलतां गता'' यह पंक्ति जिस ग्रन्थ से है वह है– UGC 25 J–1995
(A) वेणीसंहारम् (B) मेघदूतम्
(C) मृच्छकटिकम् (D) रत्नावली
स्रोत–मृच्छकटिकम् (1/34) - श्रीनिवास शास्त्री, पेज-30

59. (i) ''वेश्याः श्मशानसुमना इव वर्जनीयाः'' इदं वाक्यमस्ति? UGC 25 J–2006
(ii) ''वेश्याः श्मशानसुमना इव वर्जनीयाः'' पंक्ति ग्रहण की गई है– UP PGT–2013
(A) उत्तररामचरिते (B) मुद्राराक्षसे
(C) स्वप्नवासवदत्ते (D) मृच्छकटिके
स्रोत–मृच्छकटिकम् (4/14) - श्रीनिवास शास्त्री, पेज-122

60. ''स्त्रियो हि नाम खल्वेता निसर्गादेव पण्डिताः। पुरुषाणान्तु पाण्डित्यं शास्त्रैरेवोपदिश्यते॥'' प्रस्तुत श्लोक किस पुस्तक से उद्धृत है? UP PGT–2009
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (B) मृच्छकटिकम्
(C) वेणीसंहारम् (D) शिशुपालवधम्
स्रोत–मृच्छकटिकम् (4/19) - श्रीनिवास शास्त्री, पेज-124

61. 'मृच्छकटिकम्' में है– UP PGT–2004
(A) अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता
(B) अहो अविश्वसनीयाः पुरुषाः
(C) अहो दुरासदो राजमहिमा
(D) अहो निर्धनता सर्वापदामास्पदम्
स्रोत–मृच्छकटिकम् (1/14) - श्रीनिवास शास्त्री, पेज-16

50. (C) 51. (C) 52. (B) 53. (B) 54. (D) 55. (C) 56. (C) 57. (A) 58. (C) 59. (D) 60. (B) 61. (D)

62. 'छिद्रेष्वनर्था बहुलीभवन्ति' यह सूक्ति कहाँ लिखित है– **H TET–2014**
(A) रत्नावली में (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में
(C) मृच्छकटिक में (D) कर्पूरमञ्जरी में

स्रोत–मृच्छकटिकम् (9/26) - श्रीनिवास शास्त्री, पेज-286

63. 'द्वयमिदमतीव लोके प्रियं नराणां सुहृच्च वनिता च' यह श्लोकांश किस ग्रन्थ का है– **UP PGT–2011**
(A) मेघदूतम् (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(C) मृच्छकटिकम् (D) रघुवंशम्

स्रोत–मृच्छकटिकम् (4/25) - श्रीनिवास शास्त्री, पेज-130

64. ''एष क्रीडति कूपयन्त्रघटिकान्यायप्रसक्तो विधिः'' यह सूक्ति किस रचना से है– **UP PGT–2011**
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (B) स्वप्नवासवदत्तम्
(C) मृच्छकटिकम् (D) रत्नावली

स्रोत–मृच्छकटिकम् (10/60) - श्रीनिवास शास्त्री, पेज-346

65. 'अयं हि पातकी विप्रो न वध्यो मनुरब्रवीत्'–यह कथन किसका है– **UP PGT–2011**
(A) वृद्धा (B) शकार
(C) अधिकरणिक (D) श्रेष्ठी कायस्थ

स्रोत–मृच्छकटिकम् (9/39) - रमाशङ्कर त्रिपाठी, पेज-633

66. 'केनोडुपेन परलोकनदीं तरिष्ये' यह कथन किसका है? **UP PGT–2011**
(A) चारुदत्त (B) शकार
(C) चेट (D) विट

स्रोत–मृच्छकटिकम् (8/23) - रमाशङ्कर त्रिपाठी, पेज-505

67. ''सुजनः खलु भृत्यानुकम्पकः स्वामी निर्धनकोऽपि शोभते। पिशुनः पुनर्द्रव्यगर्वितो दुष्करः खलु परिणामदारुणः''। कुत्र वर्तते– **UP PGT–2000**
(A) मृच्छकटिकम्/शूद्रक (B) किरातार्जुनीयम्/भारवि
(C) नीतिशतकम्/भर्तृहरि (D) मेघदूतम्/कालिदास

स्रोत–मृच्छकटिकम् (3/1) - श्रीनिवास शास्त्री, पेज-86

68. 'अपेयेषु तडागेषु बहुतरमुदकं भवति'–वचनमिदं कस्मिन्नाटके दृश्यते? **GJ SET–2013**
(A) मुद्राराक्षसे (B) मृच्छकटिके
(C) वेणीसंहारे (D) उत्तररामचरिते

स्रोत–मृच्छकटिकम् - रमाशङ्कर त्रिपाठी, पेज-159

69. 'समन्तत उपस्थित एष राष्ट्रियबन्धः'–'राष्ट्रियबन्धः' का अभिप्राय है– **UP PGT–2011**
(A) राष्ट्र का बन्धन (B) राजा का बन्धन
(C) चारुदत्त का बन्धन (D) रोहसेन का बन्धन

स्रोत–मृच्छकटिकम् - रमाशङ्कर त्रिपाठी, पेज-725

70. 'मतिस्तु गौः पङ्कगतेव सीदति' – कथन किसका है? **UP PGT–2011**
(A) विदूषक (B) चारुदत्त
(C) शकार (D) अधिकरणिक

स्रोत–मृच्छकटिकम् (9/25) - रमाशङ्कर त्रिपाठी, पेज-609

71. ''उपासिके! त्वं किल चारुदत्तेन मारितासीति'' – उपासिका का सम्बन्ध है– **UP PGT–2011**
(A) कौलधर्म से (B) बौद्धधर्म से
(C) वैष्णवधर्म से (D) कापालिक मत से

स्रोत–मृच्छकटिकम् - रमाशङ्कर त्रिपाठी, पेज-698-700

72. संसार में दरिद्र के समान नहीं है– **UP PGT–2011**
(A) म्यान विहीन तलवार (B) शुष्क वृक्ष
(C) दन्तहीन सर्प (D) पंखविहीन पक्षी

स्रोत–मृच्छकटिकम् (5.41)- रमाशङ्कर त्रिपाठी, पेज-374

73. 'मांसवृक्षैरियं मूर्खैर्भाराक्रान्ता वसुन्धरा' – किसका कथन है– **UP PGT–2011**
(A) चेट (B) शकार
(C) विट (D) विदूषक

स्रोत–मृच्छकटिकम् (8/6) - रमाशङ्कर त्रिपाठी, पेज-470

74. अदृश्यरूपा चपला जरेव या मनुष्यसत्वं परिभूय वर्धते का? **KL SET–2016**
(A) वसन्तसेना (B) लक्ष्मीः
(C) निद्रा (D) धृतिः

स्रोत–मृच्छकटिकम् (3/8) - श्रीनिवास शास्त्री, पेज-92

62. (C) 63. (C) 64. (C) 65. (C) 66. (D) 67. (A) 68. (B) 69. (B) 70. (D) 71. (B) 72. (A) 73. (C) 74. (C)

75. 'न भीतो मरणादस्मि' कस्येदं वचनम्? MH SET–2011

(A) श्रीरामस्य (B) अमात्यराक्षसस्य
(C) दुष्यन्तस्य (D) चारुदत्तस्य

स्रोत–मृच्छकटिकम् (10/27) - रमाशङ्कर त्रिपाठी, पेज-675

76. मृच्छकटिके कस्य नामपरिवर्तनं जातम्? MH SET–2016

(A) मैत्रेयस्य (B) आर्यकस्य
(C) चारुदत्तस्य (D) संवाहकस्य

स्रोत–मृच्छकटिकम् - रमाशङ्कर त्रिपाठी, भू0पेज- xlvi

77. 'लिम्पतीव तमोऽङ्गानि वर्षतीवाञ्जनं नभः'-कस्य वचनमिदम्– KL SET–2014, 2015

(A) विदूषकस्य (B) राज्ञः
(C) शकारस्य (D) विटस्य

स्रोत–मृच्छकटिकम् (1/34) - रमाशङ्कर त्रिपाठी, पेज-68

78. 'रमणाभिमुखाः स्त्रियः' किं न गणयन्ति– KL SET–2016

(A) शीतोष्णम् (B) दुःखम्
(C) सुखम् (D) दारिद्र्यम्

स्रोत–मृच्छकटिकम् (5/16) - रमाशङ्कर त्रिपाठी, पेज-342

75. (D) 76. (D) 77. (D) 78. (A)

13 मुद्राराक्षस

1. मुद्राराक्षस का लेखक निम्न में कौन है– UP PCS–1992, BPSC–2004
(A) अश्वघोष (B) विशाखदत्त
(C) कुमारदास (D) भास
स्रोत–मुद्राराक्षस - पुष्पा गुप्ता, भू0पेज- (xii)

2. मुद्राराक्षस नाटक का नायक कौन है? UP PGT(H)–2013
(A) सिद्धार्थक (B) समीद्धार्थक
(C) चाणक्य (D) चन्द्रगुप्त
स्रोत–मुद्राराक्षस -पुष्पा गुप्ता, भू0पेज-(xxxi)

3. (i) मुद्राराक्षस में अङ्कों की संख्या है? BHU MET–2015
(ii) मुद्राराक्षसनाटके कति अङ्काः सन्ति? T-SET–2013
(A) 7 (B) 10
(C) 6 (D) 5
संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-504

4. (i) कस्मिन् रूपके नायिका नास्ति– DL–2015
(ii) नायिकाविहीनं नाटकं वर्तते– RPSC SET–2013-14
(A) कुन्दमाला (B) नागानन्दम्
(C) प्रसन्नराघवम् (D) मुद्राराक्षसम्
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-360

5. मुद्राराक्षस का प्रधान रस है? UGC 25 J–1998
(A) शृङ्गार (B) करुण
(C) शान्त (D) वीर
स्रोत–मुद्राराक्षस - पुष्पा गुप्ता, भू0पेज- (xxiv)

6. (i) राक्षस पात्र जिस रूपक में है, वह है–
(ii) राक्षसपात्रम् उपलभ्यते?
UGC 25 J–1995, 2003, GJ SET–2007
(A) प्रतिज्ञायौगन्धरायणम् (B) रत्नावली
(C) स्वप्नवासवदत्तम् (D) मुद्राराक्षसम्
स्रोत–मुद्राराक्षस - पुष्पा गुप्ता, भू0पेज- (xxxii)

7. मुद्राराक्षस है– UGC 25 D–2001
(A) प्रकरण (B) व्यायोग
(C) भाण (D) नाटक
स्रोत–मुद्राराक्षस -पुष्पा गुप्ता, भू0पेज- (xii)

8. मुद्राराक्षसनाटके नन्दस्य मन्त्री–AWES TGT–2012
(A) राक्षसः (B) चाणक्यः
(C) मलयकेतुः (D) चन्द्रगुप्तः
स्रोत–मुद्राराक्षस - पुष्पा गुप्ता, भू0पेज- xlv

9. मुद्राराक्षसस्य प्रथमाङ्कस्य का संज्ञा– MH SET–2013
(A) राक्षसविचारः (B) कृतककलहः
(C) मुद्रालाभः (D) राक्षसनिर्वेदः
स्रोत–मुद्राराक्षस - पुष्पा गुप्ता, पेज-68

10. किस नाटक में स्त्रियों का प्रयोग नहीं है– UGC 25 D–1999, J–2012
(A) वेणीसंहार (B) मुद्राराक्षस
(C) कादम्बरी (D) शिशुपालवध
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-360

11. मुद्राराक्षसनाटके मुद्रा केन सम्बद्धा भवति? UGC 25 J–2012
(A) मलयकेतुना (B) चन्द्रगुप्तेन
(C) चाणक्येन (D) राक्षसेन
स्रोत–मुद्राराक्षस - पुष्पा गुप्ता, भू0पेज- (xix)

12. नन्दवंश पर आधारित नाटक कौन-सा है? BHU MET–2008, 2009, 2013
(A) मुद्राराक्षसम् (B) प्रतिज्ञायौगन्धरायणम्
(C) वेणीसंहारम् (D) दूतघटोत्कचम्
स्रोत–मुद्राराक्षस - परमेश्वरदीन पाण्डेय, भू. पेज-9

13. सर्वार्थसिद्धिः केन वंशेन सम्बद्धः? MH SET–2013
(A) सूर्यवंशेन (B) चन्द्रवंशेन
(C) गुप्तवंशेन (D) नन्दवंशेन
स्रोत–मुद्राराक्षस - पुष्पा गुप्ता, पेज- (xivii)

1. (B) 2. (C) 3. (A) 4. (D) 5. (D) 6. (D) 7. (D) 8. (A) 9. (C) 10. (B) 11. (D) 12. (A) 13. (D)

14. राजनीति और कूटनीतिक विषयों पर आधारित संस्कृत नाटक कौन है? BHU MET–2013

(A) मुद्राराक्षसम् (B) नागानन्द
(C) प्रियदर्शिका (D) महावीरचरितम्

स्रोत–मुद्राराक्षस - परमेश्वरदीन पाण्डेय, भू0पेज-9

15. चन्दनदास सेठ जिस नाटक में आता है, वह नाटक है– BHU MET–2014

(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (B) कर्णभारम्
(C) वेणीसंहारम् (D) मुद्राराक्षसम्

स्रोत–मुद्राराक्षस - परमेश्वरदीन पाण्डेय, भू0पेज-8

16. (i) अस्मिन्नाटके विदूषकः नास्ति–
(ii) संस्कृतसाहित्ये विदूषकरहितनाटकं वर्तते – RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014, K SET–2014

(A) मालतीमाधवम् (B) मालविकाग्निमित्रम्
(C) मुद्राराक्षसम् (D) अभिज्ञानशाकुन्तलम्

स्रोत–मुद्राराक्षस - पुष्पा गुप्ता, भू0पेज-xx

17. विशाखदत्त के प्राचीन भारतीय नाटक मुद्राराक्षस की विषयवस्तु है– IAS–2002

(A) प्राचीन हिन्दू अनुश्रुति के देवताओं और राक्षसों के बीच संघर्ष के बारे में
(B) एक आर्य राजकुमार और एक कबीले की महिला की प्रेम कथा के बारे में
(C) दो आर्य कबीलों के बीच सत्ता के संघर्ष की कथा के बारे में।
(D) चन्द्रगुप्त मौर्य के समय में राजदरबार की दुरभिसन्धियों के बारे में

स्रोत–मुद्राराक्षस -परमेश्वरदीन पाण्डेय, भू0 पेज-9-11

18. मुद्राराक्षसे कौमुदीमहोत्सवः केन निषिद्धः? UGC 25 Jn–2016 K SET–2014

(A) राक्षसेन (B) चन्द्रगुप्तेन
(C) चाणक्येन (D) मलयकेतुना

स्रोत–मुद्राराक्षस -परमेश्वरदीन पाण्डेय, भू0 पेज-10

19. कस्य गृहे स्वकुटुम्बं संन्यस्य राक्षसः नगराद् बहिः जगाम? UK SLET–2015

(A) जीवसिद्धेः (B) चन्दनदासस्य
(C) शकटदासस्य (D) नन्दस्य

स्रोत–मुद्राराक्षस - परमेश्वरदीन पाण्डेय, भू0पेज-08

20. 'सः दोषः सचिवस्यैव यदसत् कुरुते नृपः'–इससे सम्बन्धित ग्रन्थ है– BHU MET–2015

(A) मुद्राराक्षसम् (B) वेणीसंहारम्
(C) स्वप्नवासवदत्तम् (D) उत्तररामचरितम्

स्रोत–मुद्राराक्षस (3/32) - परमेश्वरदीन पाण्डेय , पेज-198

21. कृतककोपवृत्तान्तः कस्मिन् दृश्यकाव्ये वर्त्तते? UGC 25 J–2015

(A) मुद्राराक्षसे (B) मृच्छकटिके
(C) उत्तररामचरिते (D) वेणीसंहारे

स्रोत–मुद्राराक्षस - पुष्पा गुप्ता, पेज-192

22. कृतककोपवृत्तान्तः मुद्राराक्षसे कस्मिन्नङ्केऽस्ति? UGC 25 Jn–2017

(A) प्रथमे (B) द्वितीये
(C) तृतीये (D) चतुर्थे

स्रोत–मुद्राराक्षस - पुष्पा गुप्ता, पेज-192

23. मुद्राराक्षसनाटके चाणक्यः कं श्रेष्ठिनं निगृहीतुम् इच्छति– UK SLET–2012

(A) कृष्णदासम् (B) रामदासम्
(C) चन्दनदासम् (D) कुमारदासम्

स्रोत–मुद्राराक्षस - पुष्पा गुप्ता, भू. पेज-xLiii

24. अधोलिखितेषु नाटकेषु कस्मिन्नाटके स्त्रीपात्रो न? AWES–2009

(A) मुद्राराक्षसम् (B) स्वप्नवासवदत्तम्
(C) कुन्दमाला (D) अनर्घराघवम्

स्रोत–मुद्राराक्षस - पुष्पा गुप्ता, भू0पेज- xx

25. ''न हि खलु सर्वः सर्वं जानाति'' इति कुत्र वर्तते– UGC 25 J–2013, BHU B. Ed–2012

(A) वेणीसंहारे (B) मध्यमव्यायोगे
(C) रत्नावल्याम् (D) मुद्राराक्षसे

स्रोत–मुद्राराक्षस - परमेश्वरदीन पाण्डेय, पेज-29

26. ''नन्दोन्मूलनदृष्टवीर्यमहिमा बुद्धिस्तु मा गान्मम'' – मुद्राराक्षसे कस्येयमुक्तिः? UGC 25 D–2012

(A) चन्द्रगुप्तस्य (B) चाणक्यस्य
(C) राक्षसस्य (D) चन्दनदासस्य

स्रोत–मुद्राराक्षस (1/26) - पुष्पा गुप्ता, पेज-65

14. (A) 15. (D) 16. (C) 17. (D) 18. (C) 19. (B) 20. (A) 21. (A) 22. (C) 23. (C) 24. (A) 25. (D) 26. (B)

27. **कः नन्दसाम्राज्यस्य महामात्यः, यः अन्ते चन्द्रगुप्तस्य महामात्यपदं स्वीकरोति– CCSUM Ph. D–2016**
(A) वररुचिः (B) चाणक्यः
(C) राक्षसः (D) सिद्धार्थकः
स्रोत–मुद्राराक्षस - पुष्पा गुप्ता, भू0पेज- xx

28. **'प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः प्रारभ्य विघ्नविहिता विरमन्ति मध्याः।' मुद्राराक्षसे कस्येयमुक्तिः– UGC 25 J–2016**
(A) विराधगुप्तस्य (B) चाणक्यस्य
(C) राक्षसस्य (D) चन्द्रगुप्तस्य
स्रोत–मुद्राराक्षस (2/17) - पुष्पा गुप्ता, पेज-110

29. **''सुलभेष्वर्थलाभेषु परसंवेदने जनः।**
क इदं दुष्करं कुर्यादिदानीं शिविना विना॥''
मुद्राराक्षसे इयमुक्तिर्भवति– UGC 25 J–2016
(A) राक्षसस्य (B) चन्दनदासस्य
(C) चाणक्यस्य (D) भागुरायणस्य
स्रोत–मुद्राराक्षस (1/24) - परमेश्वरदीन पाण्डेय, पेज-68

30. **कः चाणक्यस्य शिष्यः आसीत्? MH SET–2016**
(A) राक्षसः (B) पर्वतकः
(C) चन्द्रगुप्तः (D) चन्दनदासः
स्रोत–मुद्राराक्षस -परमेश्वरदीन पाण्डेय, भू0पेज-12

31. **मुद्राराक्षसे नान्दीश्लोके कस्य स्तुतिः विद्यते– MH SET–2013**
(A) विष्णोः (B) शिवस्य
(C) ब्रह्मदेवस्य (D) लक्ष्म्याः
स्रोत–मुद्राराक्षस - परमेश्वरदीन पाण्डेय, पेज-1,2

32. **मुद्राराक्षसे नाटके किं पात्रं सर्वप्रधानमस्ति–T-SET–2014**
(A) चाणक्यः (B) चन्द्रगुप्तः
(C) राक्षसः (D) मलयकेतुः
स्रोत–मुद्राराक्षस - परमेश्वरदीन पाण्डेय, भू0पेज-06

33. **''अत्यादरो शङ्कनीयः'' – इदं कथनं मुद्राराक्षसनाटकेऽस्ति– T-SET–2013**
(A) तृतीयेऽङ्के (B) प्रथमेऽङ्के
(C) षष्ठेऽङ्के (D) द्वितीयेऽङ्के
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-365

34. **'न विदूषको नापि नायिका' कस्मिन् रूपके– BHU AET–2010**
(A) वेणीसंहारे (B) बालभारते
(C) मालतीमाधवे (D) मुद्राराक्षसे
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-360

27. (C) 28. (A) 29. (C) 30. (C) 31. (B) 32. (A) 33. (B) 34. (D)

14 वेणीसंहार और रत्नावली

1. (i) वेणीसंहारस्य रचयिता कः? UGC 25 D–2005, 2011
(ii) वेणीसंहारनाटकस्य रचयिता कः?
(iii) वेणीसंहारस्य कर्ता– GJ SET–2007, HAP–2016
(A) भासः (B) कालिदासः
(C) शूद्रकः (D) भट्टनारायणः
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-381

2. वेणीसंहारे द्रौपद्याः वेणीबन्धनं केन कृतम्? RPSC SET–2010
(A) भीमेन (B) युधिष्ठिरेण
(C) दुर्योधनेन (D) दुःशासनेन
संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-518-519

3. 'उत्तंसयिष्यति कचांस्तव देवि भीमः' इति वाक्यं कस्मिन् ग्रन्थे वर्तते– MH SET–2013
(A) मुद्राराक्षसे (B) किरातार्जुनीये
(C) वेणीसंहारे (D) स्वप्नवासवदत्ते
स्रोत–वेणीसंहारम् (1/21) - गंगासागर राय, पेज-41

4. वेणीसंहारस्य नाट्यविषयः सम्बद्धः –BHU B. Ed–2014
(A) रामायणेन (B) महाभारतेन
(C) पुराणेन (D) उत्तररामचरितेन
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-129

5. वेणीसंहार में कितने अङ्क हैं? BHU MET–2009, 2013
(A) 3 (B) 6
(C) 7 (D) 8
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-382

6. नाटकस्य उदाहरणं भवति– UGC 25 J–2009
(A) मृच्छकटिकम् (B) मालतीमाधवम्
(C) वेणीसंहारम् (D) त्रिपुरविजयः
स्रोत–वेणीसंहारम् - गंगासागर राय, भू0पेज-12,13

7. द्रौपदी कस्मिन्नाटके नायिका– BHU B. Ed–2012, BHU AET–2010
(A) उत्तररामचरितम् (B) मुद्राराक्षसम्
(C) वेणीसंहारम् (D) स्वप्नवासवदत्तम्
स्रोत–वेणीसंहारम् - गंगासागर राय, भू0पेज-12

8. द्रौपदीभीमयोः वर्णनं कस्मिन् नाटके वर्णितम्? BHU AET–2010
(A) उत्तररामचरितम् (B) मुद्राराक्षसम्
(C) वेणीसंहारम् (D) स्वप्नवासवदत्तम्
स्रोत–वेणीसंहारम् - गंगासागर राय, भू0पेज-3

9. छह अङ्कों वाले नाटक का नाम है– BHU MET–2014
(A) उत्तररामचरितम् (B) वेणीसंहारम्
(C) मृच्छकटिकम् (D) मुद्राराक्षसम्
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-382

10. भीमः प्रतिज्ञातवान्– UGC 25 D–2011
(A) दुर्योधनेन वैरत्वम्।
(B) दुर्योधनेन कृतं द्रौपद्यां प्रति तिरस्कारम् अपकर्तुम्।
(C) दुःशासनेन कृतं तिरस्कारं प्रतिकर्तुम्।
(D) भानुमत्या द्रौपद्याः तिरस्कारः।
स्रोत–वेणीसंहार - गंगासागर राय, भू0पेज-3

11. वेणीसंहारे दुर्योधनस्य कञ्चुकी कः? UGC 25 D–2014
(A) विनयन्धरः (B) जयन्धरः
(C) रुधिरप्रियः (D) सुन्दरकः
स्रोत–वेणीसंहारम् - परमेश्वरदीन पाण्डेय, भू0पेज-15

12. (i) वीररसप्रधानं नाटकं किम्? UGC 25 J–2001
(ii) वीररस प्रधान है? K SET–2013
(A) वेणीसंहारम् (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(C) स्वप्नवासवदत्तम् (D) उत्तररामचरितम्
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-388

1. (D) 2. (A) 3. (C) 4. (B) 5. (B) 6. (C) 7. (C) 8. (C) 9. (B) 10. (B) 11. (A) 12. (A)

13. वेणीसंहारे संहारपदस्य आशयः–CCSUM Ph. D–2016
(A) विनाशः (B) त्यागः
(C) परिष्कारः (D) हननम्
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि',पेज-519

14. वेणीसंहारेऽङ्गीरसः? GJ SET–2004
(A) करुणः (B) शृङ्गारः
(C) वीरः (D) अद्भुतः
स्रोत–वेणीसंहारम् - गंगासागर राय, भू0पेज-13

15. वेणीसंहारस्य वेणी कया सम्बद्धा– CCSUM Ph. D–2016
(A) सुभद्रा (B) गान्धारी
(C) उत्तरा (D) द्रौपदी
स्रोत–वेणीसंहारम् - गंगासागर राय, भू0पेज-12

16. (i) रत्नावलीनाटकस्य कर्ता कः?
(ii) रत्नावल्याः रचयिता कः?
(iii) रत्नावलीति कस्येयं विश्रुता नाटिका कवेः?
UGC 25 D–2007, BHU AET–2012, RO–2015
(A) हर्षवर्धनः (B) श्रीहर्षः
(C) भासः (D) बाणः
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-366

17. (i) रत्नावली क्या है– BHU MET–2008, 2009, 2013
(ii) रत्नावली कीदृशं दृश्यकाव्यं भवति? K-SET–2014
(iii) रत्नावल्याः रूपकप्रकारः UGC 25 D–2006,
(iv) रत्नावली भवति– J 2010, WB SET–2010
(v) रत्नावली किम् अस्ति– GJ SET–2007, 2009
(A) नाटक है (B) महाकाव्य है
(C) नाटिका है (D) खण्डकाव्य है
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-373

18. (i) रत्नावलीनाटिकायाः नायको वर्तते–
(ii) रत्नावल्यां वत्सराजः कीदृशो नायकः?
UP GDC–2012, DSSSB PGT–2014
(A) धीरप्रशान्तः (B) धीरोद्धतः
(C) धीरललितः (D) धीरोदात्तः
स्रोत–रत्नावली - श्रीकृष्ण त्रिपाठी, भू0पेज-14

19. नाटिकाऽस्ति– UGC 25 D–2005
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (B) मृच्छकटिकम्
(C) रत्नावली (D) वेणीसंहारम्
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-373

20. (i) सागरिका किसमें नायिका है? UP GDC –2013
(ii) 'सागरिका' नायिका अस्ति– BHU MET–2016
(A) मृच्छकटिके (B) कादम्बर्याम्
(C) रत्नावल्याम् (D) शिवराजविजये
स्रोत–रत्नावली - श्रीकृष्ण त्रिपाठी, भू0पेज-17

21. रत्नावली कस्य देशस्य राजकन्या वर्तते–
CCSUM Ph. D–2016
(A) मगधः (B) अवन्ती
(C) विदर्भः (D) सिंहलः
स्रोत–रत्नावली - श्रीकृष्ण त्रिपाठी, भू0पेज-17

22. रत्नावल्यां प्रधानरसः कः? UGC 25 D–2014
(A) वीररसः (B) रौद्ररसः
(C) शान्तरसः (D) शृङ्गाररसः
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-375

23. रत्नावली कस्य उपरूपकप्रभेदस्य उदाहरणं भवति–
UGC 25 D–2012
(A) त्रोटकस्य (B) नाटिकायाः
(C) भाणिकायाः (D) सट्टकस्य
स्रोत–रत्नावली - तारिणीश झा, भू0पेज-17

24. रत्नावलीति नाटिकायाः स्वरूपं वर्तते–UP GDC–2012
(A) नाटकप्रकरणयोः मिश्रितं स्वरूपम्
(B) भाणडिमयोः मिश्रितं स्वरूपम्
(C) प्रकरणसमवकारयोः मिश्रितं स्वरूपम्
(D) सट्टकहल्लीसकयोः मिश्रितं स्वरूपम्
स्रोत–दशरूपक - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-228-229

25. सागरिका किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है–
BHU MET–2008
(A) प्रतिज्ञायौगन्धरायण (B) मृच्छकटिकम्
(C) रत्नावली (D) मुद्राराक्षस
स्रोत–रत्नावली - श्रीकृष्ण त्रिपाठी, भू0पेज-17

13. (C) 14. (C) 15. (D) 16. (A) 17. (C) 18. (C) 19. (C) 20. (C) 21. (D) 22. (D) 23. (B) 24. (A) 25. (C)

26. (i) वसन्तक किसमें है? UP TGT–2004, UGC 25 J–1994
(ii) वसन्तक किस नाटक से सम्बन्धित है?
(A) रत्नावली (B) मृच्छकटिकम्
(C) उत्तररामचरितम् (D) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
स्रोत–रत्नावली - श्रीकृष्ण त्रिपाठी, भू0पेज-25

27. रत्नावल्यां उदयनस्य कञ्चुकी कः? UGC 25 J–2015
(A) बाभ्रव्यः (B) यौगन्धरायणः
(C) वसन्तकः (D) विक्रमबाहुः
स्रोत–रत्नावली - श्रीकृष्ण त्रिपाठी, भू0पेज-25

28. रत्नावलीनाटिकायाः प्रथमाङ्कस्य नाम किम्? UGC 25 J–2013
(A) संकेतः (B) कदलीगृहः
(C) मदनमहोत्सवः (D) ऐन्द्रजालिकः
स्रोत–रत्नावली - श्रीकृष्ण त्रिपाठी, पेज-45

29. रत्नावल्यां द्वितीयाङ्कस्य नाम– UGC 25 D–2014
(A) मदनमहोत्सवः (B) कदलीगृहम्
(C) सङ्केतः (D) इन्द्रजालिकम्
स्रोत–रत्नावली - श्रीकृष्ण त्रिपाठी, पेज-99

30. मदनमहोत्सवस्य वर्णनं कस्मिन् ग्रन्थे प्रथमाङ्के उपलभ्यते? UGC 25 S–2013
(A) उत्तररामचरिते (B) अभिज्ञानशाकुन्तले
(C) रत्नावल्याम् (D) मृच्छकटिके
स्रोत–रत्नावली - श्रीकृष्ण त्रिपाठी, पेज-45

31. 'यातोऽस्मि पद्मनयने समयो ममैषः' रत्नावल्याः संवाद–श्लोकेन कः सम्बोध्यते? UP GDC–2013
(A) महाराज्ञी (B) विदूषकः
(C) उदयनः (D) सागरिका
स्रोत–रत्नावली (3/6) - श्रीकृष्ण त्रिपाठी, पेज-112

32. ''आनीय झटिति घटयति विधिरभिमतमभिमुखीभूतः'' उक्तिरियं रत्नावल्यां वर्तते– UP GDC–2012
(A) यौगन्धरायणस्य (B) उदयनस्य
(C) सूत्रधारस्य (D) रत्नावल्याः
स्रोत–रत्नावली (1/6) - श्रीकृष्ण त्रिपाठी, पेज-10

33. लीलावधूतपद्मा कथयन्ती पक्षपातमधिकं नः।
मानसमुपैति केयं चित्रगता राजहंसीव॥
इयमुक्तिः कामुद्दिश्य कथिता– UGC 25 J–2014
(A) शकुन्तलाम् (B) महाश्वेताम्
(C) द्रौपदीम् (D) सागरिकाम्
स्रोत–रत्नावली (2/9) - श्रीकृष्ण त्रिपाठी, पेज-74

34. रत्नावल्यां कस्याः नगर्याः दृश्यं वर्तते? GJ SET–2013
(A) कौशाम्ब्याः (B) उज्जयिन्याः
(C) श्रीलङ्कायाः (D) श्रावस्त्याः
स्रोत–रत्नावली (1/10) - श्रीकृष्ण त्रिपाठी, पेज-18

35. रत्नावल्याः मङ्गलाचरणस्य प्रथमे श्लोके कस्य स्तुतिः प्राप्यते? UGC 25 D–2015
(A) विष्णोः (B) ब्रह्मणः
(C) शिवस्य (D) गणेशस्य
स्रोत–रत्नावली (1/1) - तारिणीश झा, पेज-02

36. 'सिद्धेर्भ्रान्तिर्नास्ति सत्यं तथापि स्वेच्छाचारी भीत एवास्मि भर्तुः।' इत्युक्तिः रत्नावल्यां केन सम्बद्धा? UGC 25 J–2016
(A) उदयनेन (B) वसन्तकेन
(C) बाभ्रव्येण (D) यौगन्धरायणेन
स्रोत– रत्नावली (1/7) - श्रीकृष्ण त्रिपाठी, पेज-12

37. रत्नावल्या अपरं नाम– GJ SET–2004
(A) वासवदत्ता (B) सागरिका
(C) कर्पूरमञ्जरी (D) शकुन्तला
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-373

38. रत्नावली कस्य राज्ञो दुहिताऽऽसीत्– RPSC SET–2013-14
(A) दृढवर्मणः (B) कलिङ्गराजस्य
(C) सिंहलेश्वरस्य (D) मत्स्यराजस्य
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-374

39. रत्नावल्याः नायकः कः– MH SET–2016
(A) चारुदत्तः (B) दुष्यन्तः
(C) दुर्योधनः (D) उदयनः
स्रोत–रत्नावली - तारिणीश झा, भू0पेज-43

40. वासवदत्तया कुसुमायुधस्य पूजा कुत्र सम्पादिता– UGC 25 J–2013
(A) बकुलपादपतले (B) रक्ताशोकपादपतले
(C) सहकारवृक्षतले (D) दाडिमवृक्षतले
स्रोत–रत्नावली (प्रथम अङ्क) - तारिणीश झा, पेज-52

26. (A) 27. (A) 28. (C) 29. (B) 30. (C) 31. (D) 32. (C) 33. (D) 34. (A) 35. (C)
36. (D) 37. (B) 38. (C) 39. (D) 40. (B)

15 नाटक के विविध प्रश्न

1. ''तवास्मि गीतरागेण हारिणा प्रसभं हृतः।
एष राजेव दुष्यन्तः सारङ्गेणातिरंहसा॥''
उपर्युक्त श्लोक किसका उदाहरण है? UP PGT–2000
(A) नान्दी (B) पताकास्थानक
(C) बिन्दु (D) प्रस्तावना

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/5)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-13

2. ''शिरसि धृतसुरापगे स्मरारावरुणमुखेन्दुरुचिर्गिरीन्द्रपुत्री।
अथ चरणयुगानते स्वकान्ते स्मितसरसा भवतोस्तु भूतिहेतुः॥''
– उपर्युक्त श्लोक है? UP PGT–2000
(A) ईश-स्तुति (B) मङ्गलाचरण
(C) पूर्वरङ्ग (D) द्वादशपदानान्दी

स्रोत–साहित्यदर्पण (6/25) शालिग्राम शास्त्री, पेज-173

3. (i) 'विक्रमोर्वशीयम्' नाम रूपकमस्ति? UP PGT–2000,
(ii) 'विक्रमोर्वशीय' है? BHU AET–2010
(A) चम्पूकाव्य (B) खण्डकाव्य
(C) नाटक (D) त्रोटक

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-329

4. (i) 'प्रियदर्शिकायाः' नायकः कः–
(ii) प्रियदर्शिका नाटिका के नायक हैं?
UP PGT–2002, AWES TGT–2012
(A) वस्तुमित्र (B) उदयन
(C) मित्रावस्तु (D) दृढवर्मा

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-369

5. नागानन्द के नायक का क्या नाम है? UP PGT–2002
(A) जीमूतवाहन (B) दुष्यन्त
(C) उदयन (D) शंखचूड

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-371

6. नागानन्द नाटक की नायिका का क्या नाम है?
UP PGT–2002
(A) इरावती (B) मलयवती
(C) लक्ष्मी (D) मदनिका

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-371

7. (i) 'विक्रमोर्वशीयम्' नायकः – UP PGT–2003,
(ii) 'विक्रमोर्वशीयम्' का नायक है? AWES TGT–2012
(A) विक्रमादित्य (B) अग्निमित्र
(C) माधव (D) पुरुरवा (विक्रम)

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-329

8. साहित्य की सभी विधाओं में से सर्वाधिक रम्यतापूर्ण विधा है– UP TGT–2011
(A) महाकाव्य (B) गीतिकाव्य
(C) कथा (D) नाटक

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-341

9. इनमें से कौन रूपक नहीं है? UP PGT–2005
(A) मृच्छकटिकम् (B) विक्रमोर्वशीयम्
(C) महावीरचरितम् (D) दशकुमारचरितम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-381

10. शकारी, अवन्तिजा, चाण्डाली एवं ढक्की ये प्रकार हैं– UP PGT–2005
(A) वेश्याओं के (B) विशिष्ट नायिकाओं के
(C) प्राकृत के (D) काव्य की रीतियों के

स्रोत–मृच्छकटिकम्-जगदीशचन्द्र मिश्र, भू0 पेज-12

11. निम्नलिखित में से कौन 'कञ्चुकी' की विशेषता नहीं है? UP PGT–2005
(A) अन्तःपुर में जाने वाला वृद्ध
(B) गुणवान् ब्राह्मण
(C) सब कार्यों को करने में कुशल
(D) राजा का विश्वस्त मित्र

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम्-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-461

12. 'यवनिका' शब्द का अर्थ है? UP PGT–2005
(A) यवन देश की कन्या (B) यवन सैनिक
(C) पर्दे के पीछे (D) पर्दा

स्रोत–दशरूपक- रमाशङ्कर त्रिपाठी, पेज-101

1. (D) 2. (B) 3. (D) 4. (B) 5. (A) 6. (B) 7. (D) 8. (D) 9. (D) 10. (C)
11. (D) 12. (D)

13. (i) पुत्तलिका-नृत्य से संस्कृत नाटक की उत्पत्ति मानने वाला विद्वान् है? UP PGT–2000, 2003
(ii) किसने यह विचार, व्यक्त किया है कि 'पुत्तलिका नृत्य' से नाटकों की उत्पत्ति हुई है?
(A) डॉ० कीथ (B) डॉ० कोनो
(C) डॉ० पिशेल (D) डॉ० हर्टल
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-266

14. मालतीमाधव किस रूपक के प्रकार का भाग है? UGC 25 J–1995
(A) प्रकरण (B) नाटक
(C) ईहामृग (D) प्रहसन
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-397

15. दस अङ्कों का रूपक है– UGC 25 D–2001
(C) मुद्राराक्षस (B) मृच्छकटिकम्
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (D) उत्तररामचरितम्
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-307

16. सुमेलित कीजिए– UGC 25 J–2003
(अ) रत्नावली 1. 10 अङ्क
(ब) वेणीसंहारम् 2. 4 अङ्क
(स) अभिज्ञानशाकुन्तलम् 3. 6 अङ्क
(द) मृच्छकटिकम् 4. 7 अङ्क

	अ	ब	स	द
(A)	2	3	4	1
(B)	3	4	2	1
(C)	1	2	3	4
(D)	4	3	1	2

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-अ 515, ब-518, स-483, द-493

17. (i) प्रहसनस्य उदाहरणम्? UGC 25 J–1994,
(ii) यह प्रहसन है– D–2007
(A) प्रियदर्शिका (B) प्रतिज्ञायौगन्धरायणम्
(C) मत्तविलासः (D) मृच्छकटिकम्
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-548

18. 'प्रबोधचन्द्रोदयः'– UGC 25 J–2008
(A) चम्पूकाव्यम् (B) पद्यकाव्यम्
(C) गद्यकाव्यम् (D) रूपकम्
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-543

19. मालतीमाधवनाटकस्य इतिवृत्तं वर्तते? UGC 25 J–2008
(A) प्रसिद्धम् (B) कविकल्पितम्
(C) उत्पाद्यम् (D) चारित्रकम्
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-बलदेव उपाध्याय, पेज-543

20. मुद्राराक्षसनाटकस्य कथावस्तु भवति–UGC 25 D–2008
(A) प्रसिद्धम् (B) चारित्रकम्
(C) उत्पाद्यम् (D) कविकल्पितम्
स्रोत–मुद्राराक्षसम्- परमेश्वरदीन पाण्डेय, भू० पेज-6

21. 'डिम' इति रूपके अङ्काः भवन्ति? UGC 25 D–2009
(A) 5 (B) 6
(C) 10 (D) 4
स्रोत–साहित्यदर्पण (6/242) -शालिग्रामशास्त्री, पेज-216

22. ऊरुभङ्गे नायकः कः? UGC 25 D–2010
(A) दुर्योधनः (B) भीमः
(C) धृतराष्ट्रः (D) श्रीकृष्णः
स्रोत–संस्कृतकवि-दर्शन- भोला शंकर व्यास, पेज--193

23. उन्मत्तराघवं कस्य रूपकस्य उदाहरणं भवति? UGC 25 D–2012
(A) अङ्कस्य (B) डिमस्य
(C) वीथ्याः (वीथेः) (D) समवकारस्य
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-445

24. सोपहासनिगूढार्था-नालिकैव– UGC 25 S–2013
(A) नाटिका (B) प्रकरणिका
(C) प्रहेलिका (D) भाणिका
स्रोत–साहित्यदर्पण (6/261)- शालिग्राम शास्त्री, पेज-219

25. अधस्तनेषु एकाङ्किरूपकमस्ति? UGC 25 D–2013
(A) प्रतिज्ञायौगन्धरायणम् (B) चारुदत्तम्
(C) कर्णभारम् (D) अविमारकम्
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-276

13. (C) 14. (A) 15. (B) 16. (A) 17. (C) 18. (D) 19. (B) 20. (A) 21. (D) 22. (B) 23. (A) 24. (C) 25. (C)

26. 'प्रतिमानाटकम्' में कितने अङ्क हैं?
BHU MET–2011, BHU B. Ed–2011, UPTGT–2004

(A) 4 (B) 7
(C) 5 (D) 9

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-276

27. नाटके आमुखः कस्य भेदः? BHU B. Ed–2013

(A) भारतीवृत्तेः (B) अर्थोपक्षेपकस्य
(C) सन्धेः (D) पताकास्थानकस्य

स्रोत–दशरूपक (3/5)-रमाशङ्कर त्रिपाठी, पेज-204

28. 'कर्पूरमञ्जरी' किस भाषा में लिखित है?
BHU MET–2013

(A) संस्कृत (B) पालि
(C) प्राकृत (D) ईरानी

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज--539

29. बालरामायण में कितने अङ्क हैं? BHU MET–2009, 2013

(A) 7 (B) 8
(C) 9 (D) 10

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-539

30. नाटक नहीं है? UGC 73 J–2013

(A) स्वप्नवासवदत्तम् (B) वासवदत्तम्
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (D) उत्तररामचरितम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-391

31. संस्कृतसाहित्ये प्रतीकात्मकस्य नाटकस्य नाम अस्ति?
RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011

(A) विद्धशालभञ्जिका (B) प्रबोधचन्द्रोदय
(C) प्रसन्नराघवम् (D) आश्चर्यचूडामणि

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-543

32. महाभारतकथामाश्रित्य भासेन किं नाटकं लिखितम्?
K SET–2014

(A) प्रतिज्ञायौगन्धरायणम् (B) स्वप्नवासवदत्तम्
(C) प्रतिमानाटकम् (D) कर्णभारम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-466

33. अधस्तनवर्गयोः युग्मपर्यायेषु समीचीनं विचिनुत–
MH SET–2011

(क) मृच्छकटिकम् 1. नाटकम्
(ख) दशकुमारचरितम् 2. प्रकरणम्
(ग) उत्तररामचरितम् 3. नाटिका
(घ) रत्नावली 4. गद्यकाव्यम्

	क	ख	ग	घ
(A)	1	4	2	3
(B)	2	1	4	3
(C)	3	4	2	1
(D)	2	4	1	3

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-क. 495, ख. 381, ग. 528, घ. 515

34. अधोनिर्दिष्टानां ग्रन्थानां कालानुक्रमेण समीचीनं पर्यायं विचिनुत– MH SET–2011

1. स्वप्नवासवदत्तम् 2. मुद्राराक्षसम्
3. अभिज्ञानशाकुन्तलम् 4. उत्तररामचरितम्

(A)	2	1	4	3
(B)	1	2	3	4
(C)	1	3	4	2
(D)	3	1	2	4

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-275, 326, 355, 395

35. अधोनिर्दिष्टेषु युग्मपर्यायेषु समीचीनं विचिनुत–
MH SET–2013

(क) राजवाहनः 1. कादम्बरी
(ख) महाश्वेता 2. मृच्छकटिकम्
(ग) यौगन्धरायणः 3. दशकुमारचरितम्
(घ) शकारः 4. स्वप्नवासवदत्तम्

	क	ख	ग	घ
(A)	3	4	1	2
(B)	3	1	4	2
(C)	4	3	1	2
(D)	2	1	3	4

स्रोत– संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज– क-475, ख-494, ग-275, घ-309

26. (B) 27. (A) 28. (C) 29. (D) 30. (B) 31. (B) 32. (D) 33. (D) 34. (C) 35. (B)

36. भासकृत अधोलिखित नाटकों में से कौन-सा रामायणमूलक है? UP GIC–2009
(A) अभिषेकनाटकम् (B) ऊरुभङ्गम्
(C) बालचरितम् (D) पञ्चरात्रम्
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-466

37. यत्र उत्पाद्यं लोकसंश्रयञ्च वृत्तं भवति तदस्ति रूपकम्? UP GDC–2012
(A) नाटकम् (B) प्रकरणम्
(C) डिमः (D) व्यायोगः
स्रोत–दशरूपक- (3/39)- रमाशङ्कर त्रिपाठी, पेज-226

38. महावीरचरित का मूल है– UGC 73 D–1997
(A) रामायणम् (B) शाकुन्तलम्
(C) महाभारतम् (D) गीता
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-526

39. अभिषेकनाटक' के कथावस्तु का मूल है? UGC 73 J–1999
(A) भागवतम् (B) महाभारतम्
(C) रामायणम् (D) पद्मपुराणम्
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-466

40. अद्यत्वे संस्कृतभाषा कस्य कृते समुपयुक्ता भाषा मन्यते? UP C-TET–2013
(A) गणितस्य (B) खगोलविज्ञानस्य
(C) विमानशास्त्रस्य (D) सङ्गणकस्य
स्रोत–

41. निम्नलिखित में से त्रोटक है? UP GDC–2008
(A) मालतीमाधवम् (B) कर्पूरमञ्जरी
(C) विक्रमोर्वशीयम् (D) रत्नावली
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-329

42. निम्नलिखितेषु कतमो ग्रन्थो नाटकग्रन्थो नास्ति– T SET–2014
(A) हर्षचरितम् (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(C) मुद्राराक्षसम् (D) वेणीसंहारम्
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-491

43. निम्नलिखित में से किस रचना के अन्त में कवि ने भगवान् शिव से मुक्ति की प्रार्थना की है? UP GDC–2008
(A) उत्तररामचरितम् (B) मेघदूतम्
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (D) प्रतिमानाटकम्
स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम्-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–453

44. 'महानाटकम्' इति कथ्यते? BHU AET–2010
(A) हनुमन्नाटकम् (B) मृच्छकटिकम्
(C) उत्तररामचरितम् (D) मुद्राराक्षसम्
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-540

45. कीदृशो नायकः जीमूतवाहनः? BHU AET–2010
(A) धीरोदात्तः (B) धीरप्रशान्तः
(C) धीरोद्धतः (D) धीरललितः
स्रोत–दशरूपक-रमाशङ्कर त्रिपाठी, पेज-116

46. द्वे नायिके कस्मिन् रूपके भवतः? BHU AET–2010
(A) त्रोटके (B) नाटिकायाम्
(C) ईहामृगे (D) वीथ्याम्
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज–515

47. केन महाकविना स्वरूपकेषु प्रायेणोक्तम् 'निर्दोषदर्शना हि कन्यकाः'? BHU AET–2010
(A) भासेन (B) हर्षेण
(C) भवभूतिना (D) कालिदासेन
स्रोत–उत्तररामचरितम् (1/5)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–12,13

48. महाकविभासकृते कस्मिन्नाटके भरतवाक्यं नोपलभ्यते? BHU AET–2010
(A) स्वप्नवासवदत्ते (B) चारुदत्ते
(C) दूतवाक्ये (D) अविमारके
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–276

49. भासकृतानि महाभारताश्रितानि नाटकानि सन्ति? BHU AET–2010
(A) 3 (B) 5
(C) 7 (D) 9
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-466

36. (A) 37. (B) 38. (A) 39. (C) 40. (D) 41. (C) 42. (A) 43. (C) 44. (A) 45. (A)
46. (B) 47. (C) 48. (B) 49. (C)

50. केनाचार्येण प्रोक्तं 'सर्वशुक्ला सरस्वती' – BHU AET–2010

(A) भामहेन (B) विश्वनाथेन

(C) दण्डिना (D) भोजराजेन

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-472

51. गुप्तकाल में लिखित संस्कृतनाटकों में स्त्री और शूद्र बोलते हैं? IAS–1995

(A) संस्कृत (B) प्राकृत

(C) पालि (D) शौरसेनी

स्रोत–

52. अधोऽङ्कितानां समीचीनमुत्तरं चिनुत– K SET–2014

(क) कादम्बरी 1. प्रकरणम्

(ख) हर्षचरितम् 2. कथा

(ग) मृच्छकटिकम् 3. नाटिका

(घ) रत्नावली 4. आख्यायिका

	क	ख	ग	घ
(A)	2	3	1	4
(B)	2	4	1	3
(C)	1	4	2	3
(D)	3	2	4	1

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-307,373,491,493

53. अधोऽङ्कितानां युग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत– K SET–2015

(क) मुद्राराक्षसम् 1. नाटिका

(ख) अभिज्ञानशाकुन्तलम् 2. चारित्रिकरूपकम्

(ग) उत्तररामचरितम् 3. महाभारताधारितं रूपकम्

(घ) रत्नावली 4. करुणरसरूपकम्

	क	ख	ग	घ
(A)	1	2	3	4
(B)	3	4	2	1
(C)	2	3	4	1
(D)	4	3	1	2

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-358, ख-335, ग-403, घ-373

54. कर्णभाररूपकं कत्यङ्कात्मकम्? RPSC SET–2013-14

(A) एकाङ्कात्मकम् (B) चतुरङ्कात्मकम्

(C) दशाङ्कात्मकम् (D) पञ्चाङ्कात्मकम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-276

55. कालिदास द्वारा रचित 'मालविकाग्निमित्रम्' नाटक का नायक था? UP PCS–1998

(A) पुष्यमित्र शुंग (B) गौतमीपुत्र शातकर्णि

(C) अग्निमित्र (D) चन्द्रगुप्त द्वितीय

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-326

56. कर्पूरमञ्जरी इति कृतिः कस्य उपरूपकप्रभेदस्य उदाहरणम्? DSSSB PGT–2014

(A) नाटिका (B) त्रोटकम्

(C) सट्टकम् (D) नाट्यरासकम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-539

57. प्रस्तावनायाः नामान्तरं किम्? DSSSB PGT–2014

(A) सुमुखम् (B) प्रमुखम्

(C) आमुखम् (D) दुर्मुखम्

स्रोत–दशरूपक- रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-206

58. सट्टक है– UP PGT (H)–2005

(A) एक प्रकार का छन्द (B) एक प्रकार का नाटक

(C) एक प्रकार की युद्ध शैली (D) एक प्रकार का गीत

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-441

59. उत्तमाधमशिक्षकयोः लक्षणं कस्मिन् काव्ये उक्तम्? DSSSB TGT–2014

(A) अभिज्ञानशाकुन्तले (B) मालविकाग्निमित्रे

(C) मुद्राराक्षसे (D) प्रतिज्ञायौगन्धरायणे

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-328

60. भगवान् राम के जीवन से सम्बन्धित नाटक है? UP PGT (H)–2013

(A) मालतीमाधव (B) महावीरचरित

(C) स्वप्नवासवदत्ता (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-401

50. (C) 51. (B) 52. (B) 53. (C) 54. (A) 55. (C) 56. (C) 57. (C) 58. (B) 59. (B) 60. (B)

61. नाटके विदूषकः – AWES TGT–2012

(A) सूत्रधारस्य कर्म करोति (B) मञ्चसज्जां करोति
(C) सञ्चालनकर्म करोति (D) हास्यविनोदं करोति

स्रोत–साहित्यदर्पण (3/42)-शालिग्राम शास्त्री, पेज–68

62. मालविकाग्निमित्रस्य विदूषकः– AWES TGT–2012

(A) गौतमः (B) मैत्रेयः
(C) वसन्तकः (D) माढव्यः

स्रोत–संस्कृतगङ्गा-साहित्यम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-304

63. कर्णभारनाटकस्य नायकः अस्ति–UK SLET–2012

(A) कर्णः (B) दुष्यन्तः
(C) चारुदत्तः (D) रामः

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-276

64. ''विक्रमोर्वशीयम्' का विदूषक है– UP PGT–2002

(A) माणवक (B) मैत्रेय
(C) वसन्तक (D) माधव्य

स्रोत–संस्कृतगङ्गा-साहित्यम् -सर्वज्ञभूषण, पेज -304

65. निम्नलिखित में से किसका मत है कि संस्कृत नाटकों की उत्पत्ति 'स्वांगवाद' से हुई है? UP PGT–2003

(A) प्रो0 हिलब्रान्ड (B) स्टेन कोनो
(C) उपर्युक्त दोनों (D) डॉ0 पिशेल

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव, द्विवेदी, पेज-266

66. प्राचीन भारत की निम्नलिखित पुस्तकों में से किस एक में शुंग राजवंश के संस्थापक के पुत्र की प्रेम कहानी है– IAS–2016

(A) स्वप्नवासवदत्ता (B) मालविकाग्निमित्रम्
(C) मेघदूतम् (D) रत्नावली

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-328

67. अधोलिखित रूपकों में कौन-सा रूपक प्राचीनतम है– UP PGT–2011

(A) मृच्छकटिकम् (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(C) मुद्राराक्षसम् (D) शारिपुत्रप्रकरणम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-303, 305
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा ऋषि, पेज–491

68. नाटके अङ्कानाम् अधिकतमा संख्या का? HAP–2016

(A) अष्टौ (B) पञ्च
(C) दश (D) षट्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-437

69. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत– GJ SET–2008

(क) स्वप्नवासवदत्ते 1. धीवरवृत्तान्तः
(ख) अभिज्ञानशाकुन्तले 2. लवकुशवृत्तान्तः
(ग) मृच्छकटिके 3. लावाणकग्रामप्रसङ्गः
(घ) उत्तररामचरिते 4. शर्विलकप्रसङ्गः

	क	ख	ग	घ
(A)	1	2	4	3
(B)	3	1	4	2
(C)	3	4	1	2
(D)	4	2	1	3

(i) संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-530, 474, 494
(ii) अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू. पेज–46

70. अधस्तनवाक्यानां सत्यासत्यत्वपर्यायेषु समीचीनं विचिनुत– MH SET–2011

(क) रघुवंशमिति नाटकं वर्तते।
(ख) चारुदत्तः स्वप्नवासवदत्तस्य नायकः
(ग) चन्द्रापीडः कादम्बर्याः नायकः
(घ) सर्वदमनः शकुन्तलायाः पुत्रः

(A) असत्यम्, असत्यम्, सत्यम्, सत्यम्
(B) सत्यम्, सत्यम्, असत्यम्, असत्यम्
(C) सत्यम्, असत्यम्, असत्यम्, सत्यम्
(D) असत्यम्, सत्यम्, सत्यम्, असत्यम्

(i) संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज–क-208, ग-398
(ii) स्वप्नवासवदत्तम्-तारिणीश झा, भू. पेज–32
(iii) अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–448

71. अधस्तनवाक्यानां सत्यासत्यत्वपर्यायेषु समीचीनं विचिनुत– MH SET–2011

(क) उत्तरे रामचरिते भवभूतिर्विशिष्यते
(ख) वेणीसंहारस्य कविः विशाखदत्तः वर्तते
(ग) पदलालित्यमित्येतद् वैशिष्ट्यं भारवेरस्ति
(घ) कालिदासेन द्वे महाकाव्ये विरचिते

(A) सत्यम्, असत्यम्, सत्यम्, असत्यम्
(B) असत्यम्, सत्यम्, सत्यम्, असत्यम्
(C) सत्यम्, असत्यम्, असत्यम्, असत्यम्
(D) सत्यम्, असत्यम्, असत्यम्, सत्यम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज (क) 425, (ख) 381, (ग) 193, (घ) 149, 151

61. (D) 62. (A) 63. (A) 64. (A) 65. (C) 66. (B) 67. (A) 68. (C) 69. (B) 70. (A) 71. (D)

72. अधस्तनेषु युग्मपर्यायेषु समीचीनं विचिनुत– MH SET–2016

(क) शार्ङ्गरवः 1. उत्तररामचरितम्
(ख) शकारः 2. अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(ग) दुर्मुखः 3. वेणीसंहारम्
(घ) भीमः 4. मृच्छकटिकम्

	क	ख	ग	घ
(A)	1	4	3	2
(B)	2	1	4	3
(C)	2	1	3	4
(D)	2	4	1	3

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-338,309,404,388

73. अधस्तनेषु युग्मपर्यायेषु समीचीनं विचिनुत– MH SET–2016

(क) कादम्बरी 1. नाटकम्
(ख) रघुवंशम् 2. गद्यकाव्यम्
(ग) मुद्राराक्षसम् 3. गीतिकाव्यम्
(घ) मेघदूतम् 4. महाकाव्यम्

	क	ख	ग	घ
(A)	2	4	1	3
(B)	2	3	4	1
(C)	2	3	1	4
(D)	2	4	3	1

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा, 'ऋषि', पेज–398, 208, 504, 332

74. मध्यमव्यायोगे 'मध्यम' पदेन कस्य सङ्केतः अस्ति– MGKV Ph. D–2016

(A) अर्जुनस्य (B) नकुलस्य
(C) भीमस्य (D) भीष्मस्य

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा, 'ऋषि', पेज–466

72. (D) 73. (A) 74. (C)

16 कादम्बरी

1. (i) 'कादम्बरी' के लेखक कौन हैं?
(ii) शुकनासोपदेश 'कादम्बरी' का अंश है। उसके रचयिता– UP TGT–2004, 2011
(A) बाणभट्ट (B) गुणाढ्य
(C) सुबन्धु (D) क्षेमेन्द्र
स्रोत–(i) कादम्बरी-समीर शर्मा, भू0पेज-7
(ii) शुकनासोपदेश-राजेश्वर प्रसाद मिश्र, पेज–37

2. (i) कादम्बरी साहित्य की किस विधा के अन्तर्गत आती है? UP TGT–1999, 2004, 2005, 2011 2013,
(ii) 'कादम्बरी' किस विधा की रचना है। UP TET–2014,
(iii) कादम्बरी एकं ...... काव्यमस्ति? UP PGT–2000,
(iv) कादम्बरी कीदृशः साहित्यप्रकारो वर्तते– 2009,
(v) कादम्बरी किस प्रकार का ग्रन्थ है?
(vi) कादम्बरी है– UGC 25 D–2009, GJ SET–2008, 2011, 2013
(A) आख्यायिका (B) इतिहास
(C) कथा (D) चम्पू
स्रोत–कादम्बरी-समीर शर्मा, भू0 पेज-07

3. (i) शुकनास ने किसे उपदेश दिया–UP TGT–1999, 2004
(ii) कादम्बरी में मन्त्री शुकनास ने किसे उपदेश दिया?
(A) तारापीड को (B) वैशम्पायन को
(C) चन्द्रापीड को (D) पुण्डरीक को
स्रोत–शुकनासोपदेश- राजेश्वर प्रसाद मिश्र, पेज-42

4. कादम्बरी की कथा है– UP TGT–2001
(A) कल्पनाप्रसूत (B) रामायण पर आधारित
(C) महाभारत पर आधारित (D) पूर्णतः काल्पनिक
स्रोत–कादम्बरीकथामुखम्- राजेन्द्र मिश्र, भू0पेज-28

5. कादम्बरी में कितने जन्मों की कथा है? UP TGT–2001, 2010
(A) दो (B) तीन
(C) चार (D) पाँच
स्रोत–शुकनासोपदेश- राजेश्वर प्रसाद मिश्र, पेज-29

6. 'चन्द्रापीड' किस ग्रन्थ का नायक है? UP TGT–2003
(A) शिवराजविजयम् (B) कादम्बरी
(C) मेघदूतम् (D) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
स्रोत–कादम्बरी- समीर शर्मा, भू0 पेज-8

7. 'कादम्बरी' में किसके तीन जन्मों का वर्णन है? UP TGT–2003, 2009
(A) चन्द्रापीड (B) कपिञ्जल
(C) पुण्डरीक (D) लक्ष्मी
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-398

8. (i) बाणभट्ट ने किस रीति में अपने काव्य की रचना की? UP TGT–2004, UP PGT–2004,
(ii) बाण ने कादम्बरी में किस रीति का प्रयोग किया?
(iii) बाणभट्टस्य गद्ये रीतिरस्ति। 2009, 2013
(iv) मुख्यतः कादम्बरी की शैली है–
(A) वैदर्भी (B) गौडी
(C) पाञ्चाली (D) इनमें से कोई नहीं
स्रोत–कादम्बरी-समीर शर्मा, भू0 पेज-8

9. (i) शुकनासोपदेश किस ग्रन्थ का अंश है?
(ii) शुकनासोपदेशः कस्मिन् ग्रन्थे निबद्धः अस्ति? UP TGT–2004, 2010, UGC 25 D–1996, MGKV Ph. D–2016, BHU MET–2008, 2011
(A) रघुवंशम् (B) कादम्बरी
(C) महाभारतम् (D) रामायणम्
स्रोत–शुकनासोपदेश-राजेश्वर प्रसाद मिश्र, पेज-37

10. कादम्बरी में पार्श्व नायिका कौन है? UP TGT–2004
(A) पत्रलेखा (B) विलासवती
(C) महाश्वेता (D) कादम्बरी
स्रोत–कादम्बरी- तारिणीश झा, भू. पेज-57

1. (A)	2. (C)	3. (C)	4. (A)	5. (B)	6. (B)	7. (A)	8. (C)	9. (B)	10. (C)

11. कादम्बरी और हर्षचरितम् में बाण ने किस देवता की स्तुति की है? UP TGT–2010

(A) शिव (B) विष्णु
(C) इनमें से दोनों (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–(i) कादम्बरी-तारिणीश झा, पेज-3,4,5
(ii) हर्षचरितम् - मोहनदेव पन्त, पेज-1

12. (i) कादम्बरीकथायां नायकस्य नाम किम्?
(ii) कादम्बरी का प्रमुख नायक है– UP PGT–2010,
(iii) कादम्बरीगद्यकाव्यस्य नायकोऽस्ति– UP GIC–2012
UP GDC–2012, UP TET–2014, UK TET–2011
K SET–2013

(A) शूद्रक (B) तारापीड
(C) चन्द्रापीड (D) वैशम्पायन

स्रोत–कादम्बरी- समीर शर्मा, भू0 पेज-8

13. कादम्बरी एक सुन्दर उदाहरण है? UP TGT–2011

(A) गद्यकाव्य का (B) पद्यकाव्य का
(C) मिश्रितकाव्य का (D) उपर्युक्त में से किसी का नहीं

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-493

14. बाणभट्ट की शैली की प्रमुख विशेषता है– UP TGT–2011

(A) कान्तासम्मित उपदेश की सरसशैली
(B) अलङ्कार प्रधान शैली
(C) दोनों का सम्मिश्रण
(D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–शुकनासोपदेश- राजेश्वर प्रसाद मिश्र, भू0 पेज, 14

15. तारापीडस्य मन्त्री कः? K SET–2015

(A) चन्द्रापीडः (B) शुकनासः
(C) पुण्डरीकः (D) शूद्रकः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-399

16. चन्द्रापीडः .... अवतारः। GJ SET–2016

(A) पुण्डरीकस्य (B) ब्रह्मणः
(C) शिवस्य (D) चन्द्रमसः

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-493

17. कादम्बर्यां शुकनासस्य पुत्रः कः – RPSC SET–2013-14

(A) चन्द्रापीडः (B) वैशम्पायनः
(C) पुण्डरीकः (D) हारीतः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-399

18. कादम्बरी में नायिका कौन है? BHU MET–2010

(A) महाश्वेता (B) कादम्बरी
(C) शबरकन्या (D) ताम्बूलकरङ्कवाहिनी

स्रोत–कादम्बरी- समीर शर्मा, भू0 पेज-8

19. (i) कादम्बर्याः मूलं स्रोतं किम्? BHU AET–2010
(ii) कादम्बरी के कथानक का मूलस्रोत है–
(iii) कादम्बरी कथानक का आधार है–
UP TGT–2010, 2011, 2013

(A) गुणाढ्य की बृहत्कथा (B) अमरकथा
(C) अवन्तिसुन्दरीकथा (D) शूद्रककथा

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-495

20. कादम्बर्याः उत्तरार्धं कः विरचितवान्? DSSSB TGT–2014

(A) राघवभट्टः (B) भूषणभट्टः
(C) मल्लिनाथः (D) शङ्करभट्टः

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-495

21. कादम्बरी के प्रारम्भ में बाणभट्ट ने कितने श्लोकों की रचना की है? UP TGT–2013

(A) 10 (B) 15
(C) 20 (D) 25

स्रोत–कादम्बरीकथामुखम् - तारिणीश झा, भू0 पेज-51

22. कादम्बरी के प्रथम मङ्गलाचरण में किसकी वन्दना की गई है? UP TGT–2013

(A) ब्रह्मा (B) विष्णु
(C) महेश (D) त्रिगुणमयपरब्रह्म

स्रोत–कादम्बरीकथामुखम् (श्लोक-1) - समीर शर्मा, पेज-1

23. कादम्बरी का प्रधानरस है– UP TGT–2013

(A) वीर (B) करुण
(C) शृङ्गार (D) शान्त

स्रोत–कादम्बरी -समीर शर्मा, भू0 पेज-12

11. (C)	**12. (C)**	**13. (A)**	**14. (C)**	**15. (B)**	**16. (D)**	**17. (B)**	**18. (B)**	**19. (A)**	**20. (B)**
21. (C)	**22. (D)**	**23. (C)**							

24. 'खल्वनर्थपरम्परा' में 'खलु' शब्द से क्या आशय है? H TET–2015

(A) थोड़ा ही (B) निश्चित ही
(C) अचानक ही (D) अनर्थ ही

स्रोत–शुकनासोपदेश-राजेश्वर प्रसाद मिश्र, पेज-45

25. वैशम्पायन की प्रेमिका थी– UP TGT–2003

(A) कादम्बरी (B) महाश्वेता
(C) चाण्डालकन्या (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–शुकनासोपदेश-राजेश्वर प्रसाद मिश्र, पेज-30

26. चन्द्रापीड की प्रेमिका थी– UP TGT–2005

(A) महाश्वेता (B) कादम्बरी
(C) शकुन्तला (D) चाण्डालकन्या

स्रोत–शुकनासोपदेश- राजेश्वर प्रसाद मिश्र, पेज-29,30

27. (i) शुकनास किस राजा का प्रधान अमात्य था?
(ii) कादम्बर्यां शुकनासः कस्य राज्ञः मन्त्री आसीत्? UK SLET–2015,UP TGT–2005

(A) राम का (B) दुष्यन्त का
(C) दशरथ का (D) तारापीड का

स्रोत–शुकनासोपदेश- राजेश्वर प्रसाद मिश्र, पेज-37

28. शुकनासोपदेश में शुकनास, कादम्बरी कथा में कौन है? UP TGT–2011

(A) राजा (B) मन्त्री
(C) युवराज (D) चाण्डाल

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-399

29. (i) चन्द्रापीड के पिता का नाम था– UP TGT–2009
(ii) चन्द्रापीडः कस्य पुत्रः आसीत्? RPSC SET–2010

(A) श्वेतकेतोः (B) तारापीडस्य
(C) शुकनासस्य (D) हंसस्य

स्रोत–शुकनासोपदेश- राजेश्वर प्रसाद मिश्र, पेज-37

30. विलासवती किसकी पत्नी थी? UP TGT–2009

(A) शुकनास की (B) तारापीड की
(C) चन्द्रापीड की (D) पुण्डरीक की

स्रोत–शुकनासोपदेश- तारिणीश झा, भू० पेज-13

31. चन्द्रापीड का विवाह किससे होता है? UP TGT–2009

(A) महाश्वेता (B) मनोरमा
(C) कादम्बरी (D) लक्ष्मी

स्रोत–शुकनासोपदेश- तारिणीश झा, भू० पेज-1

32. पत्रलेखा किसकी पुत्री थी? UP TGT–2010

(A) गन्धर्वराज की (B) शुकनास की
(C) तारापीड की (D) कुलूतेश्वर की

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-494

33. शूद्रक अवतार था– UP PGT–2002

(A) पुण्डरीक (B) पृथु
(C) वैशम्पायन (D) चन्द्रापीड

स्रोत–शुकनासोपदेश- राजेश्वर प्रसाद मिश्र, पेज-30

34. (i) हारीत पुत्र था–
(ii) हारीत किसका पुत्र था? UP PGT–2004, 2010, UK TET–2011

(A) महर्षि अगस्त्य का (B) महर्षि जाबालि का
(C) महर्षि श्वेतकेतु का (D) महर्षि विश्वामित्र का

स्रोत–शुकनासोपदेश- राजेश्वर प्रसाद मिश्र, पेज-41

35. शुकनासोपदेश में शुकनास के अतिरिक्त दूसरा पात्र है– UP TGT–2011

(A) वैशम्पायन (B) चन्द्रापीड
(C) तारापीड (D) शूद्रक

स्रोत–शुकनासोपदेश- राजेश्वर प्रसाद मिश्र, पेज-42

36. किसके गुण दोषों का वर्णन शुकनास ने किया है? UP TGT–2011

(A) राजा के (B) युवराज के
(C) लक्ष्मी के (D) प्रजा के

स्रोत–शुकनासोपदेश- राजेश्वर प्रसाद मिश्र, पेज-37-38

37. राजतन्त्र शासन परम्परा में उपदेश दिये जाते हैं– UP TGT–2011

(A) विवाह-संस्कार के अवसर पर
(B) राज्याभिषेक के अवसर पर
(C) विद्योपार्जन के अवसर पर
(D) वानप्रस्थ के अवसर पर

स्रोत–शुकनासोपदेश- तारिणीश झा, भू० पेज-13

24. (B) 25. (B) 26. (B) 27. (D) 28. (B) 29. (B) 30. (B) 31. (C) 32. (D) 33. (D)
34. (B) 35. (B) 36. (C) 37. (B)

38. लक्ष्मी ने निष्ठुरता का गुण किससे प्राप्त किया? UP TGT–2004

(A) कौस्तुभमणि से (B) उच्चैःश्रवा से
(C) कालकूट से (D) मदिरा से

स्रोत–शुकनासोपदेश- राजेश्वर प्रसाद मिश्र, पेज-59

39. लक्ष्मी 'पातालगुहेव...........' है– UP TGT–2004

(A) विटपकानध्यारोहति (B) तमोबहुला
(C) चिरद्युतिकारिणी (D) प्रकटितविविधसंक्रान्तिः

स्रोत–शुकनासोपदेश- राजेश्वर प्रसाद मिश्र, पेज-68

40. लक्ष्मी से कुप्रभावित राजा 'दर्शनप्रदानमपि.............. गणयन्ति– UP TGT–2004

(A) अनुग्रहं (B) वरप्रदानं
(C) पावनं (D) उपकारं

स्रोत–शुकनासोपदेश- राजेश्वर प्रसाद मिश्र, पेज-104

41. 'निर्मलापि कालुष्यमुपयाति' में किसकी ओर संकेत है? H TET–2015

(A) बुद्धि (B) मन
(C) आत्मा (D) शरीर

स्रोत–शुकनासोपदेश- राजेश्वर प्रसाद मिश्र, पेज-47

42. कौन-सा राजा सिद्धादेश होता है? UP TGT–2004

(A) भीरुप्रकृतिः (B) उन्मत्तः
(C) आरुढप्रतापः (D) तरलहृदयः

स्रोत–शुकनासोपदेश- राजेश्वर प्रसाद मिश्र, पेज-118

43. 'लक्ष्मी 'साधुभाव' की क्या है? UP TGT–2004

(A) प्रस्तावना (B) कदलिका
(C) राहुजिह्वा (D) वध्यशाला

स्रोत–शुकनासोपदेश- राजेश्वर प्रसाद मिश्र, पेज-76

44. दोषों की शृंखला में कौन सम्मिलित नहीं है? H TET–2015

(A) गर्भ से ही धनशाली होना (B) नवीन युवावस्था होना
(C) अत्यधिक शिक्षित होना (D) अतुलनीय सुन्दर होना

स्रोत–शुकनासोपदेश- राजेश्वर प्रसाद मिश्र, पेज-45

45. 'राज्यविषविकारतन्द्राप्रदा' है– UP TGT–2004

(A) राजलक्ष्मी (B) सरस्वती
(C) युवावस्था (D) सुन्दरता

स्रोत–शुकनासोपदेश- राजेश्वर प्रसाद मिश्र, पेज-56

46. ''उत्कुपितलोचना इव तेजस्विनो नेक्षन्ते'' ऐसा आचरण करते हैं– UP TGT–2004

(A) सज्जन (B) युवकजन
(C) मूर्खजन (D) लक्ष्मी से प्रभावित राजा

स्रोत–शुकनासोपदेश- राजेश्वर प्रसाद मिश्र, पेज-91

47. (i) चन्द्रापीड को राज्याभिषेक पर उपदेश देता है–
(ii) यौवराज्यात्पूर्वं चन्द्रापीडं क उपदिशति–
UP TGT–2004, BHU AET–2010

(A) तारापीडः (B) शुकनासः
(C) वैशम्पायनः (D) पत्रलेखा

स्रोत– शुकनासोपदेश- तारिणीश झा, भू० पेज-13

48. 'कादम्बरी' शब्द का अर्थ है–
UP TGT–2004, UGC 25 D–2014

(A) सुरा (B) विष
(C) अमृत (D) जल

स्रोत–शुकनासोपदेश- तारिणीश झा , भू० पेज-12

49. 'कादम्बरी' में चन्द्रापीड किस राज्य का युवराज है? UP TGT–2004

(A) कौशाम्बी (B) धारानगरी
(C) सतारा (D) उज्जयिनी

स्रोत–शुकनासोपदेश- राजेश्वर प्रसाद मिश्र, पेज-37

50. (i) कादम्बरी का शुक पक्षी पूर्व जन्म में कौन था?
(ii) शुक के पूर्व जन्म का नाम था–
UP TGT–2004, 2009, 2010

(A) शूद्रक (B) वैशम्पायन
(C) पत्रलेखा (D) कपिञ्जल

स्रोत–शुकनासोपदेश- राजेश्वर प्रसाद मिश्र, पेज-30

51. शूद्रक की राजसभा में शुकपक्षी को कौन लाया था? UP TGT–2004

(A) प्रतीहारी (B) पत्रलेखा
(C) पुण्डरीक (D) मातङ्गिनी (चाण्डालकन्या)

स्रोत–कादम्बरी- समीर शर्मा, पेज-42

38. (A)	39. (B)	40. (A)	41. (A)	42. (C)	43. (D)	44. (C)	45. (A)	46. (D)	47. (B)
48. (A)	49. (D)	50. (B)	51. (D)						

52. शुकनासोपदेश की विषयवस्तु में निम्न में से कौन सम्मिलित नहीं है? UP TGT–2005

(A) युवावस्थाजन्य विकार

(B) लक्ष्मीमद

(C) उत्तराधिकार के प्रति लापरवाही

(D) ऐश्वर्य सम्बन्धी दोष

स्रोत–शुकनासोपदेश- तारिणीश झा, पेज-1

53. कादम्बरी कथा के विषय में निम्न में से कौन-सी बात गलत है– UP TGT–2005

(A) शुक ने शूद्रक को सुनाया

(B) जाबालि ने शुक को सुनाया

(C) महाश्वेता ने चन्द्रापीड को सुनाया

(D) शुकनास ने चन्द्रापीड को सुनाया

स्रोत–कादम्बरी- तारिणीश झा, भू0 पेज-32-35

54. 'शुकनासोपदेश' में किसे अविनयों (दुराचारों) का घर नहीं कहा गया है? UP TGT–2005

(A) गर्भेश्वरत्वम् (B) अभिनवयौवनत्वम्

(C) अप्रतिमरूपत्वम् (D) ऐश्वर्यतिमिरान्धत्वम्

स्रोत–शुकनासोपदेश-राजेश्वर प्रसाद मिश्र, पेज-45

55. शुकनासोपदेशानुसारेण अहङ्कारस्य एकं प्रबलं कारणं वर्तते– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2014

(A) बुद्धिमत्ता (B) ज्ञानराहित्यम्

(C) गर्भेश्वरत्वम् (D) सौजन्यम्

स्रोत–शुकनासोपदेश-राजेश्वर प्रसाद मिश्र, पेज-45

56. लक्ष्मीमद कैसा होता है? UP TGT–2005

(A) मदिरापान के समान

(B) विषपान के समान

(C) शीघ्रविनाशी

(D) अन्तिम अवस्था में भी नष्ट न होने वाला

स्रोत–शुकनासोपदेश- राजेश्वर प्रसाद मिश्र, पेज-42,43

57. किस प्रकार के राजा का आदेश सिद्ध योगी के समान सफल होता है? UP TGT–2005

(A) प्रचुर धन वाले का (B) अतिशय बलवान् का

(C) आरूढ प्रताप वाले का (D) सरल व्यवहार वाले का

स्रोत–शुकनासोपदेश- राजेश्वर प्रसाद मिश्र, पेज-118

58. बिना जल वाला स्नान कौन-सा है? UP TGT–2005

(A) धूपस्नान (B) मन्त्रस्नान

(C) मानसिक स्नान (D) गुरूपदेशरूपीस्नान

स्रोत–शुकनासोपदेश- तारिणीश झा, पेज-13

59. गुरूपदेशस्य महत्त्वमस्मिन्नुपवर्णितं विस्तरेण– UGC 25 S–2013

(A) हर्षचरिते (B) दशकुमारचरिते

(C) नैषधीयचरिते (D) कादम्बर्याम्

स्रोत–शुकनासोपदेश- तारिणीश झा, पेज-13

60. राजप्रकृति कैसी होती है? UP TGT–2009

(A) विह्वला (B) उज्ज्वला

(C) निर्मला (D) सुलभा

स्रोत–शुकनासोपदेश- राजेश्वर प्रसाद मिश्र, पेज-56

61. 'चिकीर्षुः' किस धातु से बना है? UP TGT–2009

(A) चि (B) कृष्

(C) सु (D) कृ

स्रोत–शुकनासोपदेश- राजेश्वर प्रसाद मिश्र, पेज-43

62. (i) राजा शूद्रक की राजधानी– UP TGT–2010, 2013

(ii) राजा शूद्रक की राजधानी थी–

(A) विदिशा (B) उज्जयिनी

(C) अवन्तिका (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–कादम्बरी- समीर शर्मा, पेज-31

63. निम्नलिखित अवतरण में किसके विशेषण हैं? 'अतिशुद्ध-स्वभावमपि कृष्णचरितम् अकरमपि हस्तस्थित-सकल-भुवनतलं राजानम् अद्राक्षीत्। UP PGT–2000

(A) शूद्रक (B) वैशम्पायन

(C) पुण्डरीक (D) चन्द्रापीड

स्रोत–कादम्बरी- समीर शर्मा, पेज-54

52. (C) 53. (D) 54. (D) 55. (C) 56. (D) 57. (C) 58. (D) 59. (D) 60. (A) 61. (D) 62. (A) 63. (A)

64. (i) शाल्मली वृक्ष का वर्णन किस ग्रन्थ में है?
(ii) शाल्मलीवृक्ष का वर्णन किसमें है?
(iii) शाल्मलीवृक्ष का वर्णन इसमें पाया जाता है?
(iv) 'शाल्मलीवृक्षवर्णनं' कस्मिन् काव्ये दृश्यते?
UP PGT–2004, UGC 25 J–1994, 1998, 2001, D–2013

(A) रघुवंशम् (B) किरातार्जुनीयम्
(C) कादम्बरी (D) शिवराजविजयम्

स्रोत–कादम्बरी- तारिणीश झा, भू0 पेज-32

65. (i) 'त्रिभुवनप्रसवभूमिरिव विस्तीर्णा' विशेषता किसके लिए प्रयुक्त है? UP PGT–2004, 2009, 2010
(ii) 'त्रिभुवनप्रसवभूमिरिव विस्तीर्णा' विशेषण किसके लिये प्रयुक्त है?

(A) विदिशा (B) उज्जयिनी
(C) विन्ध्याटवी (D) हेमकूट

स्रोत–कादम्बरी- तारिणीश झा, पेज-44

66. 'विन्ध्यवनभूमिरिव वेत्रलतावती' निम्नाङ्कित में से किसका विशेषण है? UP PGT–2005

(A) प्रतिहारी (B) चाण्डालकन्या
(C) महाश्वेता (D) कुलदेवी

स्रोत–कादम्बरी-समीर शर्मा, पेज-41

67. कादम्बरी में वर्णित इन्द्रायुध था? UP PGT–2005

(A) मन्त्री (B) राजा
(C) घोड़ा (D) वज्र

स्रोत–शुकनासोपदेश-तारिणीश झा, भू0 पेज-13

68. इन्द्रायुध किसका अवतार था? UP PGT–2009

(A) चन्द्रमा का (B) कपिञ्जल का
(C) पुण्डरीक का (D) वैशम्पायन का

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-493

69. लक्ष्मी की उत्पत्ति हुई है– UP TET–2013

(A) गङ्गानदी से (B) धन सम्पत्ति से
(C) शिव से (D) जलधि (समुद्र) से

स्रोत–शुकनासोपदेश-राजेश्वर प्रसाद मिश्र, पेज-60

70. पुण्डरीकः कस्मात् कारणात् मृतः – K-SET–2013

(A) विरहतापेन (B) रोगेन
(C) आत्महत्यया (D) तृष्णया

स्रोत–कादम्बरी (महाश्वेतावृत्तान्त) - राजदेव मिश्र, भू. पेज-27

71. पत्रलेखा इसकी पात्र है– UGC 25 D–1997

(A) मृच्छकटिक की (B) रत्नावली की
(C) हर्षचरित की (D) कादम्बरी की

स्रोत–शुकनासोपदेश- तारिणीश झा, भू0 पेज-15

72. अधूरी कादम्बरी का पूरण इनसे हुआ– UGC 25 J–1999

(A) दण्डी (B) सुबन्धु
(C) हर्षवर्धन (D) पुलिन्दभट्ट

स्रोत–कादम्बरी- समीर शर्मा, भू0पेज-9

73. कादम्बरीकथायां पुण्डरीकस्य सखा कः? K SET–2014

(A) वैशम्पायनः (B) चन्द्रापीडः
(C) कपिञ्जलः (D) शुकनासः

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-494

74. इस कथा का आधार पुनर्जन्म सिद्धान्त पर विश्वास है– UGC 25 D–1999

(A) दशकुमारचरितम् (B) शुकसप्तति
(C) कादम्बरी (D) शिशुपालवधम्

स्रोत–कादम्बरी- तारिणीश झा, भू0पेज-67

75. शूद्रक का वर्णन है– UGC 25 D–2003

(A) कादम्बरी (B) हर्षचरितम्
(C) नैषधीयचरितम् (D) दशकुमारचरितम्

स्रोत–कादम्बरी- (कथामुखम्)- तारिणीश झा, पेज-32

76. लक्ष्मी चाञ्चल्यमस्मिन्नुपवर्णितमस्ति– UGC 25 D–2012, 2014

(A) शाकुन्तले (B) कादम्बर्याम्
(C) हर्षचरिते (D) रघुवंशे

स्रोत–शुकनासोपदेश- तारिणीश झा, पेज-30

64. (C) 65. (A) 66. (A) 67. (C) 68. (B) 69. (D) 70. (A) 71. (D) 72. (D) 73. (C) 74. (C) 75. (A) 76. (B)

77. वैशम्पायनवृत्तान्तः कुत्रोपवर्णितः– UGC 25 J–2014
(A) दशकुमारचरिते (B) मृच्छकटिके
(C) कादम्बर्याम् (D) हर्षचरिते

स्रोत–कादम्बरी- समीर शर्मा, पेज-70

78. ''न वैदग्ध्यं गणयति'' इत्यस्मिन् वाक्ये वैदग्ध्यशब्दस्य कोऽर्थः– BHU B.Ed–2013
(A) निपुणता (B) पाण्डित्य
(C) चतुराई (D) मूर्खता

स्रोत–शुकनासोपदेश- राजेश्वर प्रसाद मिश्र, पेज-64

79. चन्द्रापीडस्य सेविका अस्ति– DU M Phil–2016
(A) मदनलेखा (B) चन्द्रलेखा
(C) पत्रलेखा (D) चित्रलेखा

स्रोत–कादम्बरीकथामुखम् - तारिणीश झा, भू० पेज-33

80. (i) 'चन्द्रापीड' पात्र कहाँ वर्णित है?
(ii) 'चन्द्रापीड' पात्र कहाँ उपलब्ध है?
BHU MET–2009, 2013
(A) बुद्धचरित में (B) हर्षचरित में
(C) दशकुमारचरित में (D) कादम्बरी में

स्रोत–शुकनासोपदेश-तारिणीश झा, भू० पेज-01

81. (i) 'कादम्बरी' शब्द प्रसिद्ध है– UP GDC–2012
(ii) 'कादम्बरी' इति शब्दस्य प्रसिद्धोऽर्थोऽस्ति–
(iii) 'कादम्बरी' शब्द का अर्थ है– UP PGT–2011
UP TGT–2011
(A) अप्सरा (B) मदिरा
(C) भीरुस्त्री (D) कदम्बधारिणी

स्रोत–शुकनासोपदेश- तारिणीश झा, भू० पेज-12

82. वेत्रवती नदी किस नगरी में स्थित है? UP GIC–2009
(A) अलका में (B) विदिशा में
(C) उज्जयिनी में (D) अवन्ती में

स्रोत–कादम्बरीकथामुखम्- तारिणीश झा, पेज-45

83. (i) 'अच्छोदसरोवर' का वर्णन कहाँ प्राप्त होता है?
(ii) 'अच्छोदसरोवर' का वर्णन है–UGC 73 J–1999
BHU MET–2016
(A) मृच्छकटिकम् (B) स्वप्नवासवदत्तम्
(C) हर्षचरितम् (D) कादम्बरी

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-494

84. राजा शूद्रक की तुलना किससे नहीं की गई है? UP TET–2013
(A) चक्रधर से (B) वरुण से
(C) हर (शिव) से (D) कमलयोनि (ब्रह्मा) से

स्रोत–कादम्बरीकथामुखम्-तारिणीश झा, पेज-26,27

85. 'मन्मथः' पद का अर्थ है– UP TET–2013
(A) मन (B) कामदेव
(C) शिव (D) विष्णु

स्रोत–कादम्बरीकथामुखम्-समीर शर्मा, पेज-17

86. अप्रतिहतशक्ति से युक्त है– UP TET–2013
(A) मन्मथ (B) हर (शिव)
(C) गुह (कार्तिकेय) (D) कमलयोनि

स्रोत–कादम्बरीकथामुखम्- समीर शर्मा, पेज-16-17

87. 'गुह इवाप्रतिहतशक्तिः'–यहाँ 'गुह' का अभिप्राय है– UP PGT–2011
(A) गुहावासी (B) कामदेव
(C) कार्तिकेय (D) गूद

स्रोत–कादम्बरीकथामुखम्- समीर शर्मा, पेज-17

88. राजहंस को किसने विमान बनाया? UP TET–2013
(A) कमलयोनि (ब्रह्मा) ने (B) लक्ष्मी ने
(C) समुद्र ने (D) विष्णु ने

स्रोत–कादम्बरीकथामुखम् - समीर शर्मा, पेज-16-17

89. किसने राजा की ओर मुख करके आर्या छन्द को पढ़ा? UP TET–2014
(A) विहङ्गराज ने (B) प्रतीहारी ने
(C) चाण्डालकन्या ने (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–कादम्बरीकथामुखम्- समीर शर्मा, पेज-71

77. (C) 78. (B) 79. (C) 80. (D) 81. (B) 82. (B) 83. (D) 84. (B) 85. (B) 86. (C) 87. (C) 88. (A) 89. (A)

90. कौन उस आर्या छन्द को सुनकर आश्चर्यचकित हो गया? UP TET–2014
(A) राजा (B) शुक
(C) देवता (D) राक्षस
स्रोत–कादम्बरीकथामुखम् - समीर शर्मा, पेज-71

91. समस्त मन्त्रिमण्डल में प्रधानमन्त्री है– UP TET–2014
(A) कुमारपालित (B) कुमार
(C) शुक (D) इनमें से कोई नहीं
स्रोत–कादम्बरीकथामुखम् - समीर शर्मा, पेज-72

92. किसके वर्णों के उच्चारण में स्पष्टता थी? UP TET–2014
(A) शुक के (B) राजा के
(C) प्रजा के (D) मन्त्री के
स्रोत–कादम्बरीकथामुखम् - तारिणीश झा, पेज-101

93. चन्द्रापीड का राज्याभिषेक करने की इच्छा किसे हुई? UP TET–2014
(A) शुकनास को (B) तारापीड को
(C) कादम्बरी को (D) वैशम्पायन को
स्रोत–शुकनासोपदेश-राजेश्वर प्रसाद मिश्र, पेज-37

94. ''आसीदशेषनरपति शिरः''–यह कथन किसके लिए कहा गया है? UP TET–2014
(A) वैशम्पायन (B) शूद्रक
(C) चन्द्रापीड (D) शुकनास
स्रोत–कादम्बरीकथामुखम्- समीर शर्मा, पेज-15

95. (i) कादम्बरी कथा के अनुसार विदिशा जिस राजा की राजधानी थी, उसका नाम है– UP TET–2014
(ii) कादम्बर्यानुसारं विदिशा कस्य राजधानी आसीत्? T SET–2014
(A) तारापीड (B) चन्द्रापीड
(C) शुकनास (D) शूद्रक
स्रोत–कादम्बरीकथामुखम् - समीर शर्मा, पेज-31, 20

96. 'त्रयीमयाय त्रिगुणात्मने नमः' इस वाक्य में परमात्मा की कितनी अवस्थाओं का वर्णन किया गया है? UP TET–2014, T SET–2013
(A) दो (B) तीन
(C) चार (D) पाँच
स्रोत–कादम्बरीकथामुखम् (श्लोक-1)-समीर शर्मा, पेज-01

97. 'हर इव जितमन्मथः' अंश के आधार पर जितेन्द्रिय राजा शूद्रक है– UP TET–2014
(A) शिव के समान (B) इन्द्र के समान
(C) ब्रह्मा के समान (D) विष्णु के समान
स्रोत–कादम्बरीकथामुखम् - समीर शर्मा, पेज-16

98. कादम्बरी में वर्णित विदिशा नगरी किस नदी के किनारे स्थित है? UP TET–2014
(A) सरयू (B) वेत्रवती
(C) गङ्गा (D) महानदी
स्रोत–कादम्बरीकथामुखम् - समीर शर्मा, पेज-31

99. कादम्बर्याः तिर्यक्पात्रं वैशम्पायनः कस्मिन्नाश्रमे लब्धवानाश्रयम्? UP GDC–2014
(A) रामगिर्याश्रमे (B) जाबाल्याश्रमे
(C) अगस्त्याश्रमे (D) चित्रकूटाश्रमे
स्रोत–कादम्बरीकथामुखम् - तारिणीश झा, पेज-315, भू.-33

100. कादम्बर्याः 'शूद्रक' ऐतिहासिकः पात्रमस्ति न वा? निश्चीयताम्– UP GDC – 2014
(A) ऐतिहासिकः (B) कल्पितः
(C) उक्तमुभयमपि न (D) अनिर्णयः
स्रोत–कादम्बरीकथामुखम्-'अभिराज' राजेन्द्र मिश्र, भू. पेज-28

101. कादम्बर्याः वास्तविकी कथा केनोक्ताऽऽसीत्? UP GDC – 2014
(A) वैशम्पायनेन (B) हारीतेन
(C) जाबालिना (D) तारापीडेन
स्रोत–कादम्बरी- रमाशंकर त्रिपाठी, भू0 पेज-10

102. कादम्बर्यां महाश्वेता कं देवमुपवीणयति स्म? BHU AET–2010
(A) गणेशम् (B) शिवम्
(C) विष्णुम् (D) इन्द्रम्
स्रोत–कादम्बरी (महाश्वेतावृत्तान्त)-राजदेव मिश्र, पेज-01

103. चाण्डालकन्या प्रथमे जन्मनि का आसीत्? BHU AET–2010
(A) लक्ष्मी (B) दुर्गा
(C) पार्वती (D) सरस्वती
स्रोत–(i) शुकनासोपदेश-तारिणीश झा, भू0 पेज-18
(ii) संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–493

90. (A) 91. (A) 92. (A) 93. (B) 94. (B) 95. (D) 96. (B) 97. (A) 98. (B) 99. (B) 100. (B) 101. (C) 102. (B) 103. (A)

104. चाण्डालकन्ययाऽऽनीतः शुकः क आसीत्? **BHU AET–2010**

(A) कपिञ्जलः (B) इन्द्रायुधः
(C) पुण्डरीकः (D) चन्द्रमाः

स्रोत–शुकनासोपदेश-तारिणीश झा, भू० पेज-18

105. महाश्वेतावृत्तान्ते किं नाम सरो वर्णितम्? **BHU AET–2010**

(A) पम्पासरः (B) अच्छोदसरः
(C) मानसरः (D) ब्रह्मसरः

स्रोत–शुकनासोपदेश- राजेश्वर प्रसाद मिश्र, पेज-29

106. कादम्बरीकथायां पुण्डरीकस्यानुरागः कं प्रति आसीत्? **RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011**

(A) कादम्बरीम् (B) महाश्वेताम्
(C) शकुन्तलाम् (D) तापसीम्

स्रोत–शुकनासोपदेश- तारिणीश झा, भू० पेज-01

107. (i) महाश्वेताचरितम् अवतारितम्–
(ii) 'महाश्वेता' का वर्णन कहाँ प्राप्त होता है? **BHU MET–2012, WB SET–2010**

(A) कादम्बरी (B) रामायण
(C) महाभारत (D) दशकुमारचरित

स्रोत–शुकनासोपदेश- राजेश्वर प्रसाद मिश्र, पेज-29

108. शुकनास के उपदेश के पश्चात् प्रसन्न हृदय वाला राजा कहाँ गया? **UP TGT–2013**

(A) राजदरबार में (B) उद्यान में
(C) अपने भवन में (D) वन में

स्रोत–शुकनासोपदेश- राजेश्वर प्रसाद मिश्र, पेज-119

109. 'धिया निबद्धेयमतिद्वयी कथा' के अन्तर्गत 'अतिद्वयी' कथा से दो किन कथाओं का उल्लेख है? **UP PGT–2013**

(A) कादम्बरी तथा हर्षचरितम्
(B) बृहत्कथा तथा वासवदत्ता
(C) पद्मिनी तथा रयीशः
(D) तिलकमञ्जरी तथा अवन्तिसुन्दरी

स्रोत–कादम्बरीकथामुखम् (श्लोक 20)-समीर शर्मा, पेज-14,15

110. (i) 'विन्ध्याटवी वर्णन' किस ग्रन्थ का अंश है?
(ii) 'विन्ध्याटवी' का वर्णन प्राप्त होता है? **UP PGT–2013, BHU MET–2016**

(A) नलचम्पू में (B) कादम्बरीकथामुखम् में
(C) मृच्छकटिकम् में (D) हर्षचरितम् में

स्रोत–कादम्बरीकथामुखम् - समीर शर्मा, भू० पेज-12

111. कौस्तुभमणि को कौन धारण करता है? UP TGT–2013

(A) ब्रह्मा (B) विष्णु
(C) शिव (D) इन्द्र

स्रोत–कादम्बरी-कथामुखम् (श्लोक -7)-समीर शर्मा, पेज-06

112. महाश्वेता किसका पर्यायवाची है? UP TGT (H)–2003

(A) लक्ष्मी (B) सरस्वती
(C) पार्वती (D) सीता

स्रोत–संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेजी शब्दकोश-उमाप्रसाद पाण्डेय, पेज-705

113. ''स्तनयुगमश्रुस्नातम्'' .... इत्यादि कादम्बरीकथा-मुखश्लोकस्य वक्ताऽस्ति– **UP GIC–2015**

(A) जाबालिः (B) शूद्रकः
(C) शुकनासः (D) वैशम्पायनशुकः

स्रोत–कादम्बरीकथामुखम् - समीर शर्मा, पेज-71

114. 'कादम्बरीरसज्ञानामाहारोऽपि न रोचते' इत्यत्र 'कादम्बरी' पदे कोऽलङ्कारः? **BHU AET–2010**

(A) अनुप्रासः (B) यमकम्
(C) श्लेषः (D) रसवत्

स्रोत–कादम्बरीकथामुखम् - समीर शर्मा, भू० पेज-13

115. कादम्बर्यां विन्ध्याटवीवर्णने अचेतनपदार्थानां चेतनदेवताभिः उपमाकरणस्य मूले चमत्कारोऽस्ति? **UP GDC–2012**

(A) वक्रोक्तेः (B) यमकस्य
(C) श्लेषस्य (D) अनुप्रासस्य

स्रोत–कादम्बरीकथामुखम् - तारिणीश झा, पेज-150,151

104. (C) 105. (B) 106. (B) 107. (A) 108. (C) 109. (B) 110. (B) 111. (B) 112. (B) 113. (D) 114. (C) 115. (C)

116. ''अनुज्झितधवलतापि सरागैव भवति यूनां दृष्टिः''– यह सूक्ति किस ग्रन्थ से सम्बन्ध रखती है? UP PGT (H)–2000

(A) नीतिशतकम् (B) कादम्बरी शुकनासोपदेश
(C) उत्तररामचरितम् (D) स्वप्नवासवदत्तम्

स्रोत–शुकनासोपदेश - राजेश्वर प्रसाद मिश्र, पेज-47

117. ''अतिगहनं तमो यौवनप्रभवम्'' सूक्ति किस ग्रन्थ की है? UP PGT–2009

(A) कादम्बरी (शुकनासोपदेश) (B) नलचम्पू
(C) मृच्छकटिकम् (D) अभिज्ञानशाकुन्तलम्

स्रोत–शुकनासोपदेश - राजेश्वर प्रसाद मिश्र, पेज-42

118. ''गन्धर्वनगरलेखेव पश्यत एव नश्यति'' इदं वाक्यमस्ति– UGC 25 D–2006

(A) दशकुमारचरिते (B) हर्षचरिते
(C) मुद्राराक्षसे (D) कादम्बर्याम्

स्रोत–शुकनासोपदेश - राजेश्वर प्रसाद मिश्र, पेज-62

119. ''सुभाषितं हारि विशत्यधो-गलान्न दुर्जनस्या-र्करिपोरिवामृतम्'' इति केन कविनोक्तम्? UGC 25 J–2012

(A) वेदव्यासेन (B) बाणमहाकविना
(C) कालिदासेन (D) भासेन

स्रोत–कादम्बरीकथामुखम् (श्लोक-7) - समीर शर्मा, पेज-05

120. ''रजोजुषे जन्मनि सत्त्ववृत्तये'' श्लोक जिसमें उपलब्ध है, वह ग्रन्थ है– BHU MET–2014

(A) कादम्बरी (B) हर्षचरितम्
(C) मालविकाग्निमित्रम् (D) वासवदत्ता

स्रोत–कादम्बरीकथामुखम् (श्लोक-1) -समीर शर्मा, पेज-01

121. (i) ''अकारणाविष्कृतवैरदारुणादसज्जनात् कस्य भयं न जायते'' पद्यस्यास्य प्रणेता कविरस्ति–

(ii) ''अकारणाविष्कृतवैरदारुणादसज्जनात् कस्य भयं न जायते'' – श्लोकांश के रचयिता हैं? UP GDC–2012, UP PGT–2011

(A) भवभूतिः (B) श्रीहर्षः
(C) कालिदासः (D) बाणभट्टः

स्रोत–कादम्बरीकथामुखम् (श्लोक-5)-समीर शर्मा, पेज-04

122. (i) ''स्फुरत्कलालाप-विलास-कोमला'' वाक्यांशोऽयं वैशिष्ट्यं प्रकटयति– UP GDC–2012

(ii) 'स्फुरत्कलालापविलासकोमला'–यह वाक्यांश किसके वैशिष्ट्य को प्रकट करता है– UP PGT–2011

(A) कादम्बर्याः (B) वासवदत्तायाः
(C) रत्नावल्याः (D) कथाकाव्यस्य

स्रोत–कादम्बरी-कथामुखम् (श्लोक-8)-जयशङ्कर लाल त्रिपाठी, पेज-09

123. 'सर्वथा निष्फला प्रज्ञा' इति वाक्यं .... विद्यते– GJ SET–2016

(A) मुद्राराक्षसे (B) हर्षचरिते
(C) अभिज्ञानशाकुन्तले (D) कादम्बर्याम्

स्रोत–कादम्बरी (महाश्वेतावृत्तान्त)-राजदेव मिश्र, पेज–72

124. 'कालो हि गुणाश्च दुर्निवारतामारोपयन्ति मदनस्य सर्वदा'– वाक्यमेतद् .... वदति? GJ SET–2016

(A) विलासवती (B) महाश्वेता
(C) कपिञ्जल (D) तरलिका

स्रोत–कादम्बरी (महाश्वेतावृत्तान्त)-प्रद्युम्न पाण्डेय, पेज-44

125. महाश्वेतायाः प्रेम्णि कः स्वप्राणान् त्यक्तवान्? RPSC SET–2013-14

(A) चन्द्रापीडः (B) हारीतः
(C) इन्द्रायुधः (D) पुण्डरीकः

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-494

126. 'अंशुमयीमिव तनुच्छायानुलिप्तभूतलाम्।' – इयं पंक्तिः कां वर्णयति– MH SET–2013

(A) शकुन्तलाम् (B) महाश्वेताम्
(C) कादम्बरीम् (D) सीताम्

स्रोत–कादम्बरी (महाश्वेतावृत्तान्त)-राजदेव मिश्र, पेज-15,16

127. महाश्वेतायाः प्रियकरः कः– MH SET–2013

(A) चन्द्रापीडः (B) तारापीडः
(C) चन्द्रकेतुः (D) पुण्डरीकः

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-494

116. (B) 117. (A) 118. (D) 119. (B) 120. (A) 121. (D) 122. (D) 123. (D) 124. (B) 125. (D) 126. (B) 127. (D)

128. (i) ''असज्जनात् कस्य भयं न जायते'' यह वचन किस ग्रन्थ का है– UGC 25 J–2015

(ii) ''असज्जनात्कस्य भयं न जायते'' इति सूक्तेराकरोऽस्ति–UP TGT–2013, UP GDC–2014

(iii) ''अकारणाविष्कृतवैरदारुणादसज्जनात् कस्य भयं न जायते'' इत्यादि श्लोकः कस्मिन् ग्रन्थेऽस्ति?

(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (B) उत्तररामचरितम्
(C) कादम्बरी (D) नीतिशतकम्

स्रोत–कादम्बरीकथामुखम् (श्लोक-5)-समीर शर्मा, पेज-4

129. 'अकालकुसुमप्रसवा इव मनोहराकृतयोऽपि लोकविनाश हेतवः, श्मशानाग्नय इवातिरौद्रभूतयः, तैमिरिका इवादूरदर्शिनः, उपसृष्टा इव क्षुद्राधिष्ठितभवनाः, श्रूयमाणा अपि प्रेतपटहा इवोद्वेजयन्ति।' प्रस्तुत गद्यांश किस ग्रन्थ से उद्धृत है? UP TGT–1999

(A) शिवराजविजयम् (B) उत्तररामचरितम्
(C) कादम्बरी (शुकनासोपदेश) (D) अभिज्ञानशाकुन्तलम्

स्रोत–शुकनासोपदेश-राजेश्वर प्रसाद मिश्र, पेज-94

130. 'ऐश्वर्यतिमिरान्धत्वम्' यह कथन किस ग्रन्थ का है? UP TGT–2001

(A) शुकनासोपदेश का (B) मेघदूतम् का
(C) नीतिशतकम् का (D) किरातार्जुनीयम् का

स्रोत–शुकनासोपदेश-राजेश्वर प्रसाद मिश्र, पेज-44

131. ''पुरुषोत्तमरताऽपि खलजनप्रिया'' यह उक्ति किसके लिए है? UP TGT–2005

(A) चाण्डालकन्या के लिए (B) कादम्बरी के लिए
(C) महाश्वेता के लिए (D) लक्ष्मी के लिए

स्रोत–शुकनासोपदेश-राजेश्वर प्रसाद मिश्र, पेज-72

132. ''रुचिरस्वरवर्णप्रदा रसभाववती जगन्मनो हरति'' किस कवि की रचना के लिए कहा गया है? UP TGT–2009

(A) कालिदास (B) भवभूति
(C) बाणभट्ट (D) भारवि

स्रोत–कादम्बरीकथामुखम्-समीर शर्मा, भू0पेज-16

133. ''लब्धापि दुःखेन परिपाल्यते'' किसका कथन है? UP PGT–2005

(A) शुकनास का (B) चन्द्रापीड का
(C) तारापीड का (D) विलासवती का

स्रोत–शुकनासोपदेश-तारिणीश झा, पेज-19

134. ''मनस्तु साधुध्वनिभिः पदे पदे हरन्ति सन्तो मणिनूपुरा इव'' पंक्तियाँ किस ग्रन्थ से उद्धृत हैं? UP PGT–2005

(A) नीतिशतक (B) मेघदूत
(C) कादम्बरी (D) शिशुपालवध

स्रोत–कादम्बरीकथामुखम् (श्लोक-6)-समीर शर्मा, पेज-05

135. 'स्तनयुगमश्रुस्नातं समीपतरवर्ति हृदयशोकाग्नेः। चरति विमुक्ताहारं व्रतमिव भवतो रिपुस्त्रीणाम्॥' इति श्लोकः निबद्धः वर्तते– UGC 25 J–2008

(A) रघुवंशे (B) हर्षचरिते
(C) दशकुमारचरिते (D) कादम्बर्याम्

स्रोत–कादम्बरीकथामुखम्-समीर शर्मा, पेज-71

136. ''सर्वथा न कञ्चन स्पृशन्ति शरीरधर्माणमुपतापाः'' कस्माद् ग्रन्थादेतत् वाक्यमुद्धृतम्? UGC 25 J–2012

(A) दशकुमारचरितम् (B) हर्षचरितम्
(C) नैषधीयचरितम् (D) कादम्बरी

स्रोत–कादम्बरी (महाश्वेतावृत्तान्त)-राजदेव मिश्र, पेज-31

137. ''अचिरेण च तस्याः स्वयं पतितैः फलैरपूर्य्यत भिक्षाभाजनम्'' कस्य सम्बन्धे उक्तिः? UGC 25 J–2011

(A) कादम्बर्याः सम्बन्धे (B) महाश्वेतायाः सम्बन्धे
(C) पत्रलेखायाः सम्बन्धे (D) मदलेखायाः सम्बन्धे

स्रोत–कादम्बरी (महाश्वेतावृत्तान्त)-प्रद्युम्न पाण्डेय, पेज-26,33

138. ''किमिव हि दुष्करमकरुणानाम्'' सूक्ति ग्रहण की गई है– UP PGT–2013

(A) नलचम्पू से (B) शिशुपालवध से
(C) अभिज्ञानशाकुन्तल से (D) कादम्बरी से

स्रोत–कादम्बरीकथामुखम्-तारिणीश झा, पेज-271

128. (C) 129. (C) 130. (A) 131. (D) 132. (C) 133. (A) 134. (C) 135. (D) 136. (D) 137. (B) 138. (D)

139. 'नास्ति जीवितादन्यदभिमततरमिह जगति सर्वजन्तूनाम्' सूक्ति किस ग्रन्थ की है? UPPGT–2011

(A) मृच्छकटिकम् (B) नलचम्पूः
(C) कादम्बरी (D) अभिज्ञानशाकुन्तलम्

स्रोत–कादम्बरीकथामुखम् - समीर शर्मा, पेज-138

140. ''अन्तरिते च तस्मिन् शबरसेनापतौ .... पिबन्निवास्माकमायूंषि।'' इत्यत्र रिक्तस्थानम् अधोलिखितेन उपयुक्तेन विकल्पेन पूरयत– DU Ph. D–2016

(A) जीर्णशबरः (B) शापः
(C) सिंहः (D) श्येनः

स्रोत–कादम्बरीकथामुखम्-तारिणीश झा, पेज-270

141. 'स्वस्यैवाविनयस्य फलमनेनानुभूयते' इतीदं कस्य वचनम्? DU M.Phil–2016

(A) गर्गमुनेः (B) हारितमुनेः
(C) जाबालिमुनेः (D) अगस्त्यमुनेः

स्रोत–कादम्बरीकथामुखम्-तारिणीश झा, पेज-385, भू. 54

142. पुण्डरीकः महाश्वेतावियोगेन तप्तः शरीरं त्यक्त्वा अपरस्मिन् जन्मनि कः बभूव? K SET–2015

(A) व्यासः (B) वैशम्पायनः
(C) शुकः (D) जाबालिः

स्रोत–कादम्बरीकथामुखम्-तारिणीश झा, भू0पेज-54

143. शुकनासोपदेशानुसारेण लक्ष्मीः सरस्वतीपरिगृहीतं जनं कस्मात् नालिङ्गति– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2015

(A) ईर्ष्याकारणात् (B) अपवित्रमिव मन्यमाना
(C) अनिमित्तमिव मन्यमाना (D) पातकिनमिव मन्यमाना

स्रोत–शुकनासोपदेश-तारिणीश झा, पेज-25,26

139. (C) 140. (A) 141. (C) 142. (B) 143. (A)

17 हर्षचरितम्

1. (i) 'हर्षचरितम्' ग्रन्थस्य रचनाकारः अस्ति–
(ii) हर्षचरित का रचयिता कौन हैं?
(iii) हर्षचरित किसकी रचना है?
(iv) हर्षचरितस्य रचयिता अस्ति– MGKV Ph. D–2016 BHU MET–2008, 2009, 2010, 2013
(A) कालिदासः (B) बाणभट्टः
(C) विष्णुगुप्तः (D) परिमलगुप्तः
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-395

2. (i) बाणभट्टस्य कृतं हर्षचरितम्– UGC 73 J–2010,
(ii) बाणभट्ट कृत हर्षचरित है– UGC 25 D–1996, J–2007,
(iii) हर्षचरित है– AWES TGT–2009,
(iv) हर्षचरितम् किसका उदाहरण है– UP GIC–2009,
(v) हर्षचरितम् एका अस्ति–GJ SET–2004, 2014, 2016,
(vi) हर्षचरितम् .... काव्यमस्ति? HAP–2016
(A) कथा (B) चम्पूकाव्य
(C) आख्यायिका (D) चारित्रिककाव्य
स्रोत–हर्षचरितम् - जगन्नाथ पाठक, भू0पेज-14

3. आख्यायिका है– UGC 25 J–2002, RPSC ग्रेड-II TGT–2010
(A) हर्षचरितम् (B) दशकुमारचरितम्
(C) कादम्बरी (D) मृच्छकटिकम्
स्रोत–हर्षचरितम् - जगन्नाथ पाठक, भू0पेज-14

4. सत्यं किमस्ति– UGC 25 J–2011
(A) हर्षचरितं कथा वर्तते
(B) हर्षचरितम् आख्यायिका वर्तते
(C) हर्षचरितं चम्पूः वर्तते
(D) हर्षचरितं महाकाव्यं वर्तते
स्रोत–हर्षचरितम् - जगन्नाथ पाठक, भू0पेज-14

5. 'हर्षचरितं' कीदृशं काव्यम्? BHU Sh.ET–2011
(A) पद्यम् (B) चम्पूः
(C) गद्यम् (D) नाटकम्
स्रोत–हर्षचरितम् - जगन्नाथ पाठक, भू0पेज-05

6. सम्राट्हर्षवर्धनस्य पितुः नाम किम्–UGC 25 S–2013
(A) प्रभाकरवर्धनः (B) राज्यवर्धनः
(C) अवन्तिवर्मा (D) ग्रहवर्मा
स्रोत–हर्षचरितम् - जगन्नाथ पाठक, भू0पेज-15

7. (i) बाणभट्ट की आत्मकथा जिस रचना में है, वह है–
(ii) बाणभट्टस्य जीवनवृत्तान्तः ग्रन्थे प्राप्यते– UGC 25 J–1995, D–2003, GJ SET–2007
(A) दशकुमारचरितम् (B) हर्षचरितम्
(C) बुद्धचरितम् (D) शिशुपालवधम्
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-396

8. (i) 'हर्षचरितम्' में उच्छ्वास हैं– BHU AET–2010,
(ii) हर्षचरिते उच्छ्वासानां संख्या कियती? UP PGT–2000
(A) 5 (B) 7
(C) 8 (D) 6
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-396

9. राज्यश्रीः पात्र .... है? UGC 25 D–2002
(A) हर्षचरितम् (B) दशकुमारचरितम्
(C) कादम्बरी (D) शिशुपालवधम्
स्रोत–हर्षचरितम् - जगन्नाथ पाठक, भू0पेज-16

10. महासत्त्वता हि प्रथममवलम्बनं लोकस्य इति........ अकथयत्? GJ SET–2016
(A) राजहंसः राजवाहनम् (B) प्रभाकरवर्धनः हर्षवर्धनम्
(C) यशोमती हर्षवर्धनम् (D) मातङ्गः राजवाहनम्
स्रोत–हर्षचरितम् (पञ्चमोच्छ्वास) - जगन्नाथ पाठक, पेज-293

11. हर्षचरिते रसायनः कः ? UGC 25 J–2014
(A) व्याधिः (B) औषधिः
(C) वैद्यकुमारकः (D) राजसूनुः
स्रोत–हर्षचरितम् (पञ्चमोच्छ्वास) - शिवनाथ पाण्डेय, पेज-67

12. कुरङ्गकेन हर्षचरिते किं कर्म कृतम्? UGC 25 J–2015
(A) चिकित्साकर्म (B) पूजाकर्म
(C) वार्ताप्रदानम् (D) भाग्यगणनम्
स्रोत–हर्षचरितम् (पञ्चमोच्छ्वास)-शिवनाथ पाण्डेय, भू0पेज-30

1. (B) 2. (C) 3. (A) 4. (B) 5. (C) 6. (A) 7. (B) 8. (C) 9. (A) 10. (B) 11. (C) 12. (C)

13. रुग्णः प्रभाकरवर्धनः उपचारहेतोः कुत्र गतः – UGC 25 J–2013

(A) उद्याने (B) वने
(C) धवलगृहे (D) स्नानगृहे

स्रोत–हर्षचरितम् (पञ्चमोच्छ्वास) - शिवनाथ पाण्डेय, पेज-44

14. एकदा प्रत्युषसि हर्षः स्वप्ने अग्निना दह्यमानं कमपश्यत्– UGC 25 D–2013

(A) गजम् (B) अश्वम्
(C) केसरिणम् (D) सर्पम्

स्रोत–हर्षचरितम् (पञ्चमोच्छ्वास) - शिवनाथ पाण्डेय, पेज-06

15. ''निर्गतासु न वा कस्य कालिदासस्य सूक्तिषु। प्रीतिर्मधुरसान्द्रासु मञ्जरीष्विव जायते॥'' कस्मिन् ग्रन्थे उपलभ्यतेऽयं श्लोकः? UGC 25 J–2015

(A) हर्षचरिते (B) अभिज्ञानशाकुन्तले
(C) रघुवंशे (D) कादम्बर्याम्

स्रोत–हर्षचरितम् (1/16) - जगन्नाथ पाठक, पेज-08

16. 'अतिदुर्धरो बान्धवस्नेहः सर्वप्रमाथी' – हर्षचरिते इयमुक्तिर्भवति– UGC 25 J–2016

(A) प्रभाकरवर्धनस्य (B) हर्षवर्धनस्य
(C) भण्डिनः (D) यशोमत्याः

स्रोत–हर्षचरितम् (पञ्चमोच्छ्वास) - शिवनाथ पाण्डेय,पेज-60

17. हर्षचरिते पञ्चमे उच्छ्वासे 'विश्वस्तानां यशसा स्थातुमिच्छामि लोके न वपुषा' – इत्युक्तिर्भवति– UGC 25 Jn.–2017

(A) हर्षवर्धनस्य (B) प्रभाकरवर्धनस्य
(C) यशोमत्याः (D) कुरङ्गकस्य

स्रोत–हर्षचरितम् - शिवनाथ पाण्डेय,पेज-108

18. हर्षचरितस्य तृतीये उच्छ्वासे उल्लिखितः आचार्यः अस्ति– GJ SET–2016

(A) नागार्जुनः (B) रामानुजः
(C) भैरवाचार्यः (D) शौनकाचार्यः

स्रोत–हर्षचरितम् - जगन्नाथ पाठक, पेज भू. 37, 175

19. वज्रायुधस्य वर्णनमस्ति– UGC 25 J–2006

(A) कादम्बर्याम् (B) वासवदत्तायाम्
(C) हर्षचरिते (D) दशकुमारचरिते

स्रोत–

20. श्रीहर्षस्य सहोदरी राजश्रीः कं अपरिणयत्– K-SET–2015

(A) इन्द्रवर्मा (B) ग्रहवर्मा
(C) यशोवर्मा (D) हर्षवर्मा

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–492

13. (C) 14. (C) 15. (A) 16. (B) 17. (C) 18. (C) 19. (C) 20. (B)

18 दशकुमारचरितम्

1. दण्डिना रचितं गद्यकाव्यं किम्? K SET–2013
(A) वासवदत्ता (B) दशकुमारचरितम्
(C) हर्षचरितम् (D) कादम्बरी
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-381

2. 'बृहत्कथा' आधारित ग्रन्थ है– UGC 25 D–2001
(A) नैषधीयचरितम् (B) रघुवंशम्
(C) वेणीसंहारम् (D) दशकुमारचरितम्
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-बलदेव उपाध्याय, पेज-435

3. (i) दशकुमारचरितं प्रणीतम्– GJ SET–2003,
(ii) दशकुमारचरितं कस्य कवेः रचना अस्ति? T SET–2014
(A) बाणभट्टेन (B) सुबन्धुना
(C) धनपालेन (D) दण्डिना
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी पेज-466

4. दशकुमारचरिते अयं प्रतिनायकः भवति– UGC 25 J–2012, D–2014
(A) राजहंसः (B) मानसारः
(C) राजवाहनः (D) पुष्पोद्भवः
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-473

5. (i) दशकुमारचरिते कति उच्छ्वासाः सन्ति?
(ii) 'दशकुमारचरितम्' में उच्छ्वासों की संख्या है– BHU AET–2010, UP TET–2014, K SET–2014
(A) आठ (B) पाँच
(C) सात (D) दश
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-475

6. दशकुमारचरिते कियती संख्याऽस्ति राजकुमाराणाम्– BHU AET–2010
(A) 07 (B) 08
(C) 09 (D) 10
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-474-475

7. कुत्र पदलालित्यं प्रसिद्धम्? BHU Sh.ET–2008
(A) काव्ये (B) दशकुमारचरिते
(C) भासनाटकचक्रे (D) पुराणे
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–477

8. किस प्राचीन गद्यकाव्य में लोक जीवन का सर्वाधिक चित्रण है? UP GIC–2009
(A) दशकुमारचरितम् (B) वासवदत्ता
(C) कादम्बरी (D) हर्षचरितम्
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-481

9. दशकुमारचरितस्य नायकः कः? UGC 25 J–2016
(A) राजहंसः (B) उपहारवर्मा
(C) राजवाहनः (D) अपहारवर्मा
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-383

10. दशकुमारचरितम् में उल्लिखित किसी एक कुमार का नाम– UGC 25 J–2001
(A) राजवाहन (B) हंस
(C) नल (D) बुद्ध
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-383

11. विश्रुतस्य वृत्तान्तं कुत्रवर्णितम् – UGC 25 J–2012
(A) कादम्बरी (B) दशकुमारचरितम्
(C) हर्षचरितम् (D) चम्पूरामायणम्
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-475

12. (i) पुण्यवर्मा कस्य देशस्य नृप आसीत् दशकुमारचरिते–
(ii) पुण्यवर्मा कस्य देशस्य नृप आसीत्? UGC 25 J–2013, D–2015
(A) वत्सदेशस्य (B) उज्जयिन्याः
(C) वाराणस्याः (D) विदर्भदेशस्य
स्रोत–दशकुमारचरितम् - विश्वनाथ झा, पेज-238, 239

1. (B)	2. (D)	3. (D)	4. (B)	5. (A)	6. (D)	7. (B)	8. (A)	9. (C)	10. (A)
11. (B)	12. (D)								

13. (i) दशकुमारचरितानुसारं राजभूपस्य राजधानी आसीत्?
(ii) 'राजहंसभूपः' कस्यां नगर्यां बभूव?
T-SET–2013, MH SET–2013
(A) कुसुमपुरनगर्याम् (B) उज्जयिनीनगर्याम्
(C) पुष्पपुरीनगर्याम् (D) विदिशानगर्याम्
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी,पेज-473

14. 'राजवाहन' नामक राजकुमार का वर्णन है–UP TET–2014
(A) दशकुमारचरितम् में (B) मृच्छकटिकम् में
(C) रत्नावली में (D) वेणीसंहारम् में
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी,पेज-475

15. दशकुमारचरिते पूर्वपीठिकायां निबद्धानामुच्छ्वासानां संख्या वर्तते– BHU AET–2010
(A) 06 (B) 08
(C) 05 (D) 07
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा, 'ऋषि' पेज-384

16. दशकुमारचरितस्य कस्मिन् चरिते सुरतमञ्जर्याः उपाख्यानमस्ति? UGC 25 J–2015
(A) अपहारवर्मचरिते (B) उपहारवर्मचरिते
(C) राजवाहनचरिते (D) पुष्पोद्भवचरिते
स्रोत–दशकुमारचरितम् (प्रथमोच्छ्वास)-विश्वनाथ झा, पेज-10

17. (i) दशकुमारचरिते मगधनरेशस्य पुत्रः कः?
(ii) मगधनरेशराजहंसस्य पुत्रः – AWES TGT–2012, GJ SET–2013
(A) मित्रगुप्तः (B) राजवाहनः
(C) कामपालः (D) सत्यवर्मा
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि',पेज-383

18. 'दशकुमारचरितम्' की कथावस्तु का विचार कहाँ से लिया गया है– UP PGT–2000
(A) ऋग्वेद (B) छान्दोग्योपनिषद्
(C) बृहत्कथा (D) महाभारत
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-बलदेव उपाध्याय, पेज–435

19. दशकुमारचरिते अथ सोऽप्याचचक्षे – ''देव, मयापि परिभ्रमता कोऽपि कुमारः .... दृष्टः'' – इत्यादिषु कस्य परिभ्रमणमुल्लिखितम्? UGC 25 J–2016
(A) राजवाहनस्य (B) विश्रुतस्य
(C) अपहारवर्मणः (D) उपहारवर्मणः
स्रोत– दशकुमारचरितम्-विश्वनाथ झा, पेज–237

20. ओष्ठ्यवर्णानामभावोऽस्ति दशकुमारचरितस्य उच्छ्वासे– GJ SET–2004
(A) सप्तमे (B) अष्टमे
(C) षष्ठे (D) चतुर्थे
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी ,पेज-478

21. दशकुमारचरितम् में दण्डी ने कौन-सी रीति का प्रयोग किया है? WB SET–2010
(A) गौडी रीति (B) वैदर्भी रीति
(C) पाञ्चाली रीति (D) अवन्ती रीति
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–475

22. विश्रुतः कया सह विवाहमकरोत्– MH SET–2013
(A) कन्दुकवत्या (B) मणिकर्णिकया
(C) सौदामिन्या (D) मञ्जुवादिन्या
स्रोत–दशकुमारचरितम्- विश्वनाथ झा, पेज-280

23. प्रचण्डवर्माणं कः हतवान्– MH SET–2013
(A) सुश्रुतः (B) विश्रुतः
(C) अपहारवर्मा (D) उपहारवर्मा
स्रोत–दशकुमारचरितम्- विश्वनाथ झा, पेज-276

24. दशकुमारचरितम् इति कः वाङ्मयप्रकारः? MH SET–2014
(A) नाटकम् (B) प्रकरणम्
(C) कादम्बरी (D) आख्यायिका
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि',पेज-381

25. किस रचना में कुट्टनियों का वर्णन किया गया है? UP PGT (H)–2003
(A) कादम्बरी (B) मृच्छकटिकम्
(C) दशकुमारचरितम् (D) रत्नावली
संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि',पेज-385-388

26. दुर्भिक्ष का वर्णन किस काव्य में है? UGC 25 D–1998
(A) हर्षचरितम् (B) दशकुमारचरितम्
(C) कादम्बरी (D) वासवदत्ता
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि',पेज-384

13. (C) 14. (A) 15. (C) 16. (C) 17. (B) 18. (C) 19. (B) 20. (A) 21. (B) 22. (D) 23. (B) 24. (D) 25. (C) 26. (B)

19 शिवराजविजयम्

1. (i) 'शिवराजविजयम्' के रचनाकार हैं–
(ii) 'शिवराजविजयम्' के लेखक हैं–
(iii) शिवराजविजयम् के रचयिता हैं? UP TGT–2001, 2005, 2011

(A) अम्बिकादत्तव्यास (B) दण्डी
(C) कालिदास (D) सुबन्धु

स्रोत–शिवराजविजयम् - देवनारायण मिश्र, भू० पेज-13

2. 'शिवराजविजयः' इति उपन्यासात्मकं गद्यकाव्यं विरचितम्– RPSC ग्रेड-II (TGT)–2010

(A) बाणभट्टेन (B) अम्बिकादत्तेन
(C) दण्डिना (D) विष्णुदत्तेन

स्रोत–शिवराजविजयम् - देवनारायण मिश्र, भू० पेज-13

3. संस्कृत साहित्य में प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास का सौभाग्य किसे प्राप्त हुआ? UP TGT–2001

(A) कादम्बरी (B) शिवराजविजयम्
(C) हर्षचरितम् (D) वासवदत्ता

स्रोत–शिवराजविजयम् - देवनारायण मिश्र, भू० पेज-13

4. 'शिवराजविजयः' ग्रन्थः एकः– AWES TGT–2013

(A) महाकाव्यः (B) यात्रावृत्तान्तः
(C) उपन्यासः (D) आख्यायिका

स्रोत–शिवराजविजयम् - देवनारायण मिश्र, भू० पेज-13

5. 'शिवराजविजयम्' का मङ्गलाचरण है– UP TGT–2005

(A) अम्बिकादत्तव्यास द्वारा लिखा गया है।
(B) महाभारत से उद्धृत किया गया है।
(C) श्रीमद्भगवद्गीता से उद्धृत किया गया है।
(D) श्रीमद्भागवतपुराण से उद्धृत किया गया है।

स्रोत–शिवराजविजयम् - देवनारायण मिश्र, पेज-01

6. (i) शिवराजविजय विभक्त है– UP TGT–2003, 2004,
(ii) शिवराजविजयम् का विभाजन हुआ है?
(iii) शिवराजविजयस्य वस्तुविभाजनं वर्तते? UP GDC–2012

(A) सर्गों में (B) खण्डों में
(C) उन्मेषों में (D) निःश्वास/विरामों में

स्रोत–शिवराजविजयम् - रमाशङ्कर मिश्र, भू. पेज-16

7. (i) 'शिवराजविजय' की सम्पूर्ण कथा कितने निःश्वासों में समाहित है? UP TGT–2001, 2004, 2005, 2010
(ii) शिवराजविजय में कितने निःश्वास हैं?
(iii) शिवराजविजय में निःश्वास संख्या कितनी है?

(A) पाँच (B) आठ
(C) दस (D) बारह

स्रोत–शिवराजविजयम् - देवनारायण मिश्र, भू. पेज-36

8. 'शिवराजविजय' के प्रत्येक विराम में कितने निःश्वास हैं– BHU MET–2011, 2012, UP TGT–2013

(A) त्रयः (3) (B) पञ्च (5)
(C) चत्वारः (4) (D) षट् (6)

स्रोत–शिवराजविजयम् - देवनारायण मिश्र, भू० पेज-36

9. 'शिवराजविजयम्' रचना के नायक हैं? UP TGT–2011

(A) महाराष्ट्रकेसरी शिवाजी (B) शिवजी
(C) अवरङ्गजीव (औरंगजेब) (D) अफजलखान

स्रोत–शिवराजविजयम् (प्रथमविराम)-देवनारायण मिश्र, भू. पेज-42

10. (i) 'शिवराजविजय' काव्य का प्रारम्भ होता है–
(ii) 'शिवराजविजय' काव्यस्य समारम्भो भवति–
(iii) 'शिवराजविजयम्' के कथानक के प्रारम्भ का काल है? UP TGT–2003, 2004, 2009,
(iv) 'शिवराजविजय', गद्यकाव्य का आरम्भ होता है? UP GIC–2009, UP GDC–2012 G GIC–2015

(A) सूर्योदय वर्णन से
(B) कोंकण यात्रा से
(C) रघुवीरसिंह की तोरणयात्रा से
(D) हनुमान मंदिर के वर्णन से

स्रोत–शिवराजविजयम् - रमाशङ्कर मिश्र, पेज-03

1. (A)	2. (B)	3. (B)	4. (C)	5. (D)	6. (D)	7. (D)	8. (C)	9. (A)	10. (A)

11. 'शिवराजविजयम्' का प्रधानरस कौन है? UP TGT–2001

(A) करुणरस (B) वीररस

(C) हास्यरस (D) शृङ्गाररस

स्रोत–शिवराजविजयम् - देवनारायण मिश्र, भू० पेज-22

12. शिवराजविजय में किस रीति का आश्रय लिया गया है? UP TGT–2001, 2003

(A) गौडी (B) वैदर्भी

(C) लाटी (D) पाञ्चाली

स्रोत–शिवराजविजयम् - देवनारायण मिश्र, भू० पेज-18

13. गोपीनाथ है? UP TGT–2003

(A) शिवाजी का मित्र (B) अफजल खाँ का दूत

(C) हनुमान्मन्दिर का पुजारी (D) रघुवीर सिंह का गुरु

स्रोत–शिवराजविजयम् - रमाशङ्कर मिश्र, पेज-209

14. (i) शिवराजविजयम् किस विधा (श्रेणी) में लिखा गया ग्रन्थ है? UP TGT–2003, 2004, 2005, 2011,

(ii) शिवराजविजस्य काव्यविधाऽस्ति–

(iii) शिवराजविजय साहित्य के किस विधा के अन्तर्गत आता है? UP PGT–2010, UP GDC–2014

(iv) शिवराजविजय क्या है?

(A) नाटक (B) ऐतिहासिक उपन्यास

(C) महाकाव्य (D) कथा

स्रोत–शिवराजविजयम् - देवनारायण मिश्र, भू० पेज-16

15. पं० अम्बिकादत्त व्यास की अन्य संस्कृत रचनाओं में शामिल है– UP TGT–2011

(A) बिहारी-बिहार (B) सामवत (नाटक)

(C) शिव-विवाह (D) भारत-भारती

स्रोत–शिवराजविजयम् - देवनारायण मिश्र, भू० पेज-15

16. सोमनाथतीर्थ को धूलि में किसने मिला दिया? UP TGT–2004

(A) शहाबुद्दीन (B) कुतुबुद्दीन

(C) अकबर (D) महमूद गजनवी

स्रोत–शिवराजविजयम् - देवनारायण मिश्र, पेज-47-48

17. सोमनाथ तीर्थ के देवता हैं? UP TGT–2004

(A) ब्रह्मा (B) विष्णु

(C) राम (D) महादेव

स्रोत–शिवराजविजयम् - देवनारायण मिश्र, पेज-51

18. महमूदगजनवी ने सिन्धु नदी पार करके किसे अपनी राजधानी बनाया? UP TGT–2004

(A) गजिनी को (B) तक्षशिला को

(C) काबुल को (D) तेहरान को

स्रोत–शिवराजविजयम् - देवनारायण मिश्र, पेज-53

19. शिवराजविजय में कान्यकुब्ज के राजा थे? UP TGT–2004

(A) शहाबुद्दीन (B) पृथ्वीराज

(C) कुतुबुद्दीन (D) जयचन्द्र

स्रोत–शिवराजविजयम् - देवनारायण मिश्र, पेज-57

20. 'शिवराजविजयम्' में शिवाजी के अतिरिक्त और किसका चरित्र-चित्रण है? UP TGT–2004

(A) भैरो सिंह (B) गौर सिंह

(C) गुजराल सिंह (D) मोहन सिंह

स्रोत–शिवराजविजयम् - देवनारायण मिश्र, भू० पेज-42

21. 'शिवराजविजय' में कहाँ की घटना का वर्णन है? UP TGT–2004

(A) महाराष्ट्र (B) राजस्थान

(C) दिल्ली (D) बिहार

स्रोत–शिवराजविजयम् - देवनारायण मिश्र, भू० पेज-44

22. 'शिवराजविजय' में किस तरह की चेतना का प्रकाश है? UP TGT–2004

(A) राष्ट्रीय (B) प्रादेशिक

(C) दैशिक (D) कालिक

स्रोत–शिवराजविजयम् - रमाशङ्कर मिश्र, भू० पेज-13

23. 'शिवराजविजयम्' प्रथमनिःश्वास में पहले ही पुष्पचयन करने वाला कौन है? UP TGT–2005

(A) श्यामवटु (B) गौरवटु

(C) गुरु जी (D) बालिका

स्रोत–शिवराजविजयम् - देवनारायण मिश्र, पेज-12-13

11. (B)	**12. (D)**	**13. (B)**	**14. (B)**	**15. (B)**	**16. (D)**	**17. (D)**	**18. (A)**	**19. (D)**	**20. (B)**
21. (A)	**22. (A)**	**23. (A)**							

24. योगिराज ने पहली बार कब समाधि लगायी थी? UP TGT–2005, 2009

(A) युधिष्ठिर के समय
(B) विक्रमादित्य के समय
(C) दुराचारपूर्ण (यवनकाल) समय में
(D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–शिवराजविजयम् - देवनारायण मिश्र, पेज-37

25. शिवराजविजय में एक विप्रकन्या का अपहरण किया था– UPTGT–2011

(A) द्रविणों ने (B) एक यवन बालक ने
(C) जंगली जाति के लोगों ने (D) आर्यों ने

स्रोत–शिवराजविजयम् - रमाशङ्कर मिश्र, पेज-34

26. विप्र-बालिका के अपहर्ता यवन युवक का वध किसने किया? UP TGT–2005

(A) श्यामसिंह ने (B) गौरसिंह ने
(C) ब्रह्मचारी गुरु ने (D) शिवाजी ने

स्रोत–शिवराजविजयम् - देवनारायण मिश्र, पेज-83

27. विप्र कन्या की उपमा दी गई है? UP TGT–2011

(A) लक्ष्मी देवी से (B) पार्वती देवी से
(C) सरस्वती देवी से (D) दुर्गा देवी से

स्रोत–शिवराजविजयम् - रमाशङ्कर मिश्र, पेज-14

28. (i) सोमनाथ मन्दिर पर किसने आक्रमण किया?
(ii) भारत के 'सोमनाथ मन्दिर पर आक्रमण करने वाला शासक था? UP TGT–2005, 2010

(A) बाबर ने (B) औरङ्गजेब ने
(C) महमूद गजनवी ने (D) मुहम्मदगोरी ने

स्रोत–शिवराजविजयम् - देवनारायण मिश्र, पेज-47, 48

29. रोती हुई बालिका को शान्त करने के लिए किसको आदेश दिया गया था? UP TGT–2005

(A) गौरवटु को (B) श्यामवटु को
(C) सेवक को (D) किसी को भी नहीं

स्रोत–शिवराजविजयम् - देवनारायण मिश्र, पेज-20

30. गौरवटु का परिचय है – UP TGT–2005

(A) वह शिवाजी का सेनानी है।
(B) वह आश्रम में निवास करने वाला विद्यार्थी है।
(C) वह श्यामवटु का बड़ा भाई है।
(D) वह संन्यस्त ब्रह्मचारी है।

स्रोत–शिवराजविजयम् - रमाशङ्कर मिश्र, पेज-93

31. 'अपजिहीर्षुः' में कौन-सी धातु है? UP TGT–2009

(A) आप् (B) जि
(C) हृ (D) हष्

स्रोत–शिवराजविजयम् - देवनारायण मिश्र, पेज-82

32. महमूद गजनवी था– UPTGT–2011

(A) बुखारा का (B) पेरुशलम का
(C) ताशकन्द का (D) गजिनी का

स्रोत–शिवराजविजयम् - रमाशङ्कर मिश्र, पेज-56

33. महमूद ने भारत पर आक्रमण किया– UP TGT–2011

(A) भारत की धन-सम्पत्ति लूटने के लिये
(B) इस्लाम के प्रचार के लिए
(C) अपने साम्राज्य के विस्तार के लिये
(D) उपर्युक्त तीनों के लिये

स्रोत–शिवराजविजयम् - रमाशङ्कर मिश्र, पेज-56-59

34. पवित्र भारत के पराधीन होने का कारण था– UPTGT–2011

(A) पृथ्वीराज चौहान और जयचन्द की आपसी फूट
(B) पृथ्वीराज चौहान का कमजोर होना
(C) जयचन्द द्वारा पृथ्वीराज चौहान को नीचा दिखाने की भावना
(D) यवनों का आक्रामक रुख अपना लेना

स्रोत–(i) शिवराजविजयम् - देवनारायणमिश्र, पेज–58
(ii) शिवराजविजयम् - रमाशङ्कर मिश्र, पेज–68, 69, 70, 71

35. 'चन्द्रहास' का अर्थ है? UP TGT–2009

(A) उदीयमान चन्द्र (B) तलवार
(C) चन्द्र का उपहास (D) चाँदनी के समान ह्रास वाला

स्रोत–शिवराजविजयम् - देवनारायण मिश्र, पेज-83

36. योगिराज पुनः कब समाधिस्थ हुए? UP TGT–2009

(A) युधिष्ठिर के समय (B) विक्रमादित्य के समय
(C) भोजराज के समय (D) पृथ्वीराज के समय

स्रोत–शिवराजविजयम् - देवनारायण मिश्र, पेज-37

24. (A) 25. (B) 26. (B) 27. (C) 28. (C) 29. (B) 30. (B) 31. (C) 32. (D) 33. (A) 34. (A) 35. (B) 36. (B)

37. 'सतीर्थ्यः' का अर्थ है? UP TGT–2009

(A) सहपाठी (B) सूर्य
(C) थाल्हा (D) दोना

स्रोत–शिवराजविजयम् - देवनारायण मिश्र, पेज-11

38. 'वैक्रमः' में कौन-सा प्रत्यय है? UP TGT–2010

(A) अण् (B) यत्
(C) ईयसुन् (D) मतुप्

स्रोत–शिवराजविजयम् - रमाशङ्कर मिश्र, पेज-46

39. 'उदतूतुलत्' में कौन-सा लकार है? UP TGT–2010

(A) लङ् (B) लिङ्
(C) लुङ् (D) लृङ्

स्रोत–(i) शिवराजविजयम् - रूपनारायण त्रिपाठी, पेज-52
(ii) बृहद्धातुकुसुमाकर-हरेकान्त मिश्र, पेज–623

40. भारतवर्ष में सर्वप्रथम यवन शासन का बीजारोपण किसने किया? UP TGT–2010, 2013

(A) महमूद गजनवी ने (B) शहाबुद्दीन ने (मो0 गोरी)
(C) कुतुबुद्दीन ने (D) अलाउद्दीन ने

स्रोत–शिवराजविजयम् - देवनारायण मिश्र, पेज-56-59

41. ब्रह्मचारी बालकों ने पहाड़ से उतरकर आने वाले योगी से प्रार्थना की– UP TGT–2011

(A) विद्याध्ययन कराने की (B) अपने आश्रम में आने की
(C) उपदेश देने की (D) राजनीति सिखाने की

स्रोत–शिवराजविजयम् - रमाशङ्कर मिश्र, पेज-20

42. 'शिवराजविजयम्' के सम्बन्ध में क्या सही नहीं है? UP TGT–2010

(A) इसके लेखक अम्बिकादत्तव्यास हैं।
(B) इसके नायक शिवाजी हैं।
(C) शिवराजविजयम् में 13 निःश्वास हैं।
(D) शिवराजविजयम् प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास है।

स्रोत–शिवराजविजयम् - रमाशङ्कर मिश्र, भू0 पेज-16

43. वयसा षोडशवर्षदेशीयः कम्बुकण्ठः आयतललाटः सुबाहुर्विशाललोचनः, ये विशेषण किसके लिये प्रयुक्त हुये हैं? UP PGT–2010, UK TET–2011

(A) रघुवीर सिंह (B) शिवाजी
(C) गौर सिंह (D) श्याम सिंह

स्रोत–शिवराजविजयम् - देवनारायण मिश्र, पेज-07

44. 'नेदीयसि' का अर्थ है? UP PGT–2010, UK TET–2011

(A) अत्यन्त समीप में (B) न देने के अर्थ में
(C) नदी के तल में (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–शिवराजविजयम् - देवनारायण मिश्र, पेज-65

45. 'यायजूकः' शब्द का अर्थ है? UP PGT–2010, UK TET–2011

(A) यात्राशील (B) भ्रमणशील
(C) दुराचारी (D) यज्ञशील

स्रोत–शिवराजविजयम् - रमाशङ्कर मिश्र, पेज-52

46. शिवराजविजये युगव्यापिनिद्रातः जागर्ति– UP GDC–2012

(A) महाराजः (B) महागुरुः
(C) महामात्यः (D) योगिराजः

स्रोत–शिवराजविजयम् - रमाशङ्कर मिश्र, पेज-20, 45, 46

47. ''रात्रिर्गमिष्यति भविष्यति सुप्रभातं भास्वानुदेष्यति हसिष्यति पंकजश्रीः। इत्थं विचिन्तयति कोशगते द्विरेफे हा हन्त, हन्त!! नलिनीं गज उज्जहार॥'' श्लोकेऽस्मिन् 'कोशगतद्विरेफ' पदेन कवेः अभिप्रायोऽस्ति– UP GDC–2012

(A) भ्रमरः (B) अफजलखानः
(C) औरंगजेबः (D) गौरसिंहः

स्रोत–शिवराजविजयम् - रमाशङ्कर मिश्र, पेज-104-105

48. शहाबुद्दीन नामक यवन ने निम्नलिखित में क्या नहीं किया? UP TGT–2013

(A) गजनीदेश पर आक्रमण
(B) महमूद के वंशजों की हत्या
(C) दिल्लीश्वर पृथ्वीराज की हत्या (महमूद गजनवी की हत्या)
(D) दिल्ली पर आक्रमण

स्रोत–शिवराजविजयम् - रमाशंकर मिश्र, पेज-66, 68, 71

नोट– आयोग का यह प्रश्न विवादित है।

49. 'ध्यानावस्थितैर्भवादृशैर्न ज्ञायते कालवेगः' यह उक्ति किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है? UP TGT–2013

(A)उत्तररामचरितम् (B) कादम्बरी
(C) शिवराजविजयम् (D) किरातार्जुनीयम्

स्रोत–शिवराजविजयम् - देवनारायण मिश्र, पेज-35

37. (A) 38. (A) 39. (C) 40. (B) 41. (B) 42. (C) 43. (C) 44. (A) 45. (D) 46. (D) 47. (B) 48. (C) 49. (C)

50. अफजल खाँ को मारने के पश्चात् वीर शिवाजी ने रणभूमि की सफाई का कार्य निम्नलिखित में से किसे सौंपा? UP TGT–2013

(A) गौरसिंह (B) सेनापति
(C) माल्यश्रीक (D) सचिव

स्रोत–शिवराजविजयम् (द्वितीय निःश्वास)-रमाशङ्कर मिश्र, पेज-242

51. ''सत्यं न लक्षितो मया समयवेगः'' कथन है– UP PGT–2010

(A) ब्रह्मचारीगुरु का (B) योगिराज का
(C) गौरसिंह का (D) श्यामसिंह का

स्रोत–शिवराजविजयम् - देवनारायण मिश्र, पेज-37

52. कदलीदलकुञ्जायितस्य एतत्कुटीरस्य समन्तात् पुष्पवाटिका, पूर्वतः परम-पवित्र-पानीयं परस्सहस्त्र पुण्डरीक-पटल-परिलसितं पतत्रि-कुल-कूजितं पूजित पयः पूरितं सर आसीत्'' उपर्युक्त गद्यांश किस रचना से उद्धृत है? UP TGT–1999

(A) कादम्बरी से (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से
(C) शिवराजविजयम् से (D) उत्तररामचरितम् से

स्रोत–शिवराजविजयम् - देवनारायण मिश्र, पेज-08

53. 'कार्यं वा साधयेयं देहं वा पातयेयम्' उक्ति है– UP TGT–2013

(A) पृथ्वीराज की (B) युधिष्ठिर की
(C) शिवाजी की (D) विक्रमादित्य की

स्रोत–शिवराजविजयम् - देवनारायण मिश्र, पेज-62

54. ''रात्रिर्गमिष्यति भविष्यति सुप्रभातम्'' पद्यांश का सम्बन्ध किस रचनाकार से है? UP PGT–2010, UK TET–2011

(A) भर्तृहरि (B) अम्बिकादत्तव्यास
(C) भवभूति (D) भारवि

स्रोत–शिवराजविजयम् - देवनारायण मिश्र, पेज-88

55. 'क्वचिन्मन्दिराणि भिद्यन्ते, क्वचित्तुलसीवनानि छिद्यन्ते' क्वचिद्दारा अपह्रियन्ते, क्वचिद्धनानि लुण्ठ्यन्ते'' गद्यांश कुतो गृहीतः – UP GDC–2014

(A) कादम्बरीतः (B) हर्षचरितात्
(C) शिवराजविजयात् (D) वासवदत्तायाः

स्रोत–शिवराजविजयम् - देवनारायण मिश्र, पेज-30-31

56. 'शिवराजविजयम्' में प्रयुक्त 'ताम्रचूडभक्षणपातकेन' का अर्थ है– UP TGT–2011

(A) तॉम्बे का चूड़ा चबाना रूपी पाप से
(B) मुर्गा खाने के पाप से
(C) लाल चूड़ी तोड़ना रूपी पाप से
(D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–शिवराजविजयम् - देवनारायण मिश्र, पेज-87

50. (C) 51. (B) 52. (C) 53. (C) 54. (B) 55. (C) 56. (B)

20 गद्यकाव्य के विविध प्रश्न

1. 'अपरीक्षितकारकम्' कस्य पुस्तकस्य भागः–
RPSC ग्रेड-II (TGT)–2010
(A) मृच्छकटिकस्य (B) गीतगोविन्दस्य
(C) पञ्चतन्त्रस्य (D) विक्रमोर्वशीयस्य
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-578

2. सर्वप्रथम 'पञ्चतन्त्र' का सम्पादन किस विदेशी विद्वान् ने किया? UP GIC–2009
(A) नार्मन ब्राउन (B) हर्टेल
(C) मैक्डॉनल (D) मैक्समूलर
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-576

3. पञ्चतन्त्रस्य रचनायाः उद्देश्यम् आसीत्–
AWES TGT–2010
(A) सामान्यजनान् नीतिज्ञान् कर्तुम्
(B) बालकान् नीतिज्ञं कर्तुम्
(C) राज्ञः अमरकीर्तेः पुत्रान् शिक्षितुम्
(D) विष्णुशर्मणः स्वविद्वतां निवेदितुम्
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-578

4. पञ्चतन्त्र का 'पञ्चमतन्त्र' कौन-सा है?
H TET–2014
(A) अपरीक्षितकारक (B) मित्रसम्प्राप्ति
(C) काकोलूकीय (D) इनमें से कोई नहीं
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-578

5. 'हितोपदेशः' कति भागेषु विभक्तः–
MP वर्ग-2 (TGT)–2011, UK TET–2011
(A) चत्वारः (B) पञ्च
(C) षट् (D) नव
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-582

6. हितोपदेशे कति कथाः सन्ति–
MP वर्ग-2 (TGT)–2011, UK TET–2011
(A) 43 (B) 25
(C) 30 (D) 10
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-582

7. 'हितोपदेशे' पञ्चतन्त्रात् कति कथाः समुद्धृताः–
MP वर्ग-2 (TGT)–2011, UK TET–2011
(A) 43 (B) 20
(C) 25 (D) 28
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-433

8. हितोपदेश का सम्बन्ध किस विधि से है?
UP TET–2016
(A) सूत्रविधि (B) कहानी कथन विधि
(C) भाषण विधि (D) उपर्युक्त सभी
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-433

9. पशुपक्षिविषयकाः कथाः यस्मिन् सन्ति सः वर्तते–
MP वर्ग-2 (TGT)–2011, UK TET–2011
(A) हितोपदेशः (B) गीता
(C) बालरामायणम् (D) चित्रमीमांसा
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-582

10. पशुपक्षिविषयकाभिः कथाभिः के मुदिताः भवन्ति–
MP वर्ग-2 (TGT)–2011, UK TET–2011
(A) गर्दभाः (B) वानराः
(C) बालाः (D) मत्स्याः
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–578-579

11. बृहत्कथा की भाषा है– UGC 25 J–2001
(A) संस्कृत (B) प्राकृत
(C) राक्षसी (D) पैशाची
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-584

1. (C) 2. (B) 3. (C) 4. (A) 5. (A) 6. (A) 7. (C) 8. (B) 9. (A) 10. (C) 11. (D)

12. 'समासबहुलता' विशेषता कस्याः विधायाः–
RPSC ग्रेड-II (TGT)–2010

(A) संस्कृतगद्यस्य (B) संस्कृतनाटकस्य
(C) संस्कृतव्याकरणस्य (D) संस्कृतपद्यस्य

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-बलदेव उपाध्याय, पेज-378

13. जातककथाः मूलतः विरचिताः–
RPSC ग्रेड-II (TGT)–2010

(A) संस्कृतभाषायाम् (B) प्राकृतभाषायाम्
(C) हिन्दीभाषायाम् (D) पालिभाषायाम्

स्रोत–जातकमाला-जगदीशचन्द्र मिश्र, भू. पेज–02

14. संस्कृतसाहित्यमस्ति– RPSC ग्रेड-II (TGT)–2010

(A) पञ्चविधम् (B) त्रिविधम्
(C) द्विविधम् (D) सप्तविधम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-453

15. (i) वासवदत्ताकथायाः नायकोऽस्ति–
(ii) निम्नलिखित में से 'वासवदत्ता' (गद्यकाव्य) का नायक है–
MP वर्ग-1 (PGT)–2012, UP GDC–2008

(A) कन्दर्पकेतुः (B) मकरन्दः
(C) विद्याधरः (D) किरातः

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-485

16. ''प्रत्यक्षरश्लेषमयप्रबन्धविन्यासवैदग्ध्यनिधिर्निबन्धम्'' इति कथनमस्ति– MP वर्ग-I (PGT)–2012

(A) बाणभट्टस्य (B) सुबन्धोः
(C) दण्डिनः (D) वादीभसिंहस्य

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-392

17. निम्नलिखित में से किसके मतानुसार संस्कृत गद्यकाव्य के अन्तर्गत 'प्रबन्धकल्पनाकथा' और 'आख्यायिकोपलब्धार्था' का विभाजन हुआ है– UP PGT–2000

(A) पतञ्जलि (B) भर्तृहरि
(C) दण्डी (D) वामन

संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-375, 376

18. निम्नलिखित में से कौन गद्यकारों का समूह है?
UP GDC–2008

(A) कालिदास - भवभूति - भास
(B) सुबन्धु - दण्डी - भास
(C) कुमारदास - कालिदास - जयदेव
(D) सुबन्धु - दण्डी - बाण

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-483

19. शास्त्रीयं गद्यं प्राप्यते– BHU AET–2010

(A) पञ्चतन्त्रे (B) हितोपदेशे
(C) रूपकेषु (D) महाभाष्ये

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-374

20. कवीनां निकषं भवति– BHU AET–2010

(A) गद्यम् (B) श्यामलादण्डकम्
(C) शास्त्रम् (D) छन्दोयोजनम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-372

21. आख्यायिकायाः कथावस्तु अस्ति– AWES TGT–2010

(A) चमत्कारपूर्णः (B) कविकल्पितः
(C) मिश्रितः (D) ऐतिहासिकः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-491

22. संस्कृतवाङ्मय में सर्वप्रथम गद्य का प्रयोग किस ग्रन्थ में हुआ है? UP TGT–2013

(A) ऋग्वेद (B) यजुर्वेद
(C) कादम्बरी (D) हर्षचरितम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-372

23. गद्यकाव्य के कितने भेद होते हैं? UP TGT–2013

(A) 2 (B) 6
(C) 4 (D) 5

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-461

24. 'प्रत्यक्षरश्लेषघना' कथा कही जाती है–
UP PGT–2013

(A) अवन्तिसुन्दरी कथा (B) कादम्बरी कथा
(C) वासवदत्ता कथा (D) शिवराजविजयम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-392

12. (A) 13. (D) 14. (C) 15. (A) 16. (B) 17. (C) 18. (D) 19. (D) 20. (A) 21. (D) 22. (B) 23. (A) 24. (C)

25. हर्षवर्धन और समुद्रगुप्त दोनों ने– MP PSC–1994

(A) अश्वमेध यज्ञ किया
(B) विदेशी राजाओं के दूतों का स्वागत किया
(C) दक्षिण को जीता
(D) संस्कृत साहित्य में योगदान किया।

स्रोत–यूनिक-2015, पेज–57,71

26. गद्यकाव्यत्रय्याम् आयान्ति – UP GIC–2015

(A) दशकुमारचरितम्, वासवदत्ता, कादम्बरी
(B) कादम्बरी, शूद्रककथा, हर्षचरितम्
(C) हर्षचरितम्, दशकुमारचरितम्, शूद्रककथा
(D) शिवराजविजयम्, कादम्बरी, हर्षचरितम्

स्रोत–कादम्बरीकथामुखम् - तारिणीश झा, भू0पेज-11

27. गद्यकाव्यं नास्ति– UGC 25 J–2016

(A) कादम्बरी (B) दशकुमारचरितम्
(C) बुद्धचरितम् (D) हर्षचरितम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-229

28. वासवदत्ता कस्य राज्यस्य राजकन्या आसीत्? HAP–2016

(A) अवन्तिकायाः (B) मगधस्य
(C) कौशाम्ब्याः (D) गान्धारदेशस्य

स्रोत–स्वप्नवासवदत्तम्-सुधाकर मालवीय, भू0 पेज- 21

25. (D) 26. (A) 27. (C) 28. (A)

21 नलचम्पूः

1. (i) नलचम्पू के रचयिता हैं–BHU MET–2013, 2015
(ii) नलचम्पू के कर्ता कौन हैं?
(iii) नलचम्पूकारः कोऽस्ति? UP GIC–2015
(A) हर्षः (B) दण्डी
(C) त्रिविक्रमभट्टः (D) बाणभट्टः
स्रोत–नलचम्पू- धुरन्धर पाण्डेय, भू० पेज -07

2. (i) गद्य और पद्य से युक्त काव्य को कहते हैं–
(ii) गद्य-पद्य मिश्रित काव्य को कहते हैं–UP TGT–2005
UGC 73 J–2013, UGC 25 D–2006, BHU MET–2010
(A) दण्डकम् (B) नाटकम्
(C) चम्पूः (D) आख्यायिका
स्रोत–नलचम्पू- धुरन्धर पाण्डेय, भू० पेज -05

3. गद्यपद्यमयं काव्यम्– DSSSB TGT–2014
(A) चम्पूरित्यभिधीयते (B) मिश्रमित्यभिधीयते
(C) चित्रमित्यभिधीयते (D) युग्ममित्यभिधीयते
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-601

4. संस्कृतस्य प्रथमः चम्पूग्रन्थः कः? DSSSB TGT–2014
(A) विश्वगुणादर्शचम्पूः (B) नलचम्पूः
(C) चम्पूरामायणम् (D) चम्पूभारतम्
स्रोत–नलचम्पू- धुरन्धर पाण्डेय, भू० पेज-07

5. ''नलचम्पू'' विभक्त किया गया है– UP PGT–2013
(A) अध्यायों में (B) अंकों में
(C) उच्छ्वासों में (D) सर्गों में
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज–604

6. 'नलचम्पू' कथा की नायिका है– UP PGT–2004, 2010
(A) प्रियङ्गुमञ्जरी (B) रूपवती
(C) किन्नरी (D) दमयन्ती
स्रोत–नलचम्पू- धुरन्धर पाण्डेय, भू० पेज-48

7. सभङ्गश्लेष का सर्वाधिक प्रयोग किस ग्रन्थ में हुआ है? UP PGT–2004
(A) कादम्बरी (B) वासवदत्ता
(C) नलचम्पू (D) दशकुमारचरितम्
स्रोत–नलचम्पू- धुरन्धर पाण्डेय, पेज-16

8. नलचम्पू के मङ्गलाचरण में किस देवता की स्तुति है? UP PGT–2005
(A) शिव-पार्वती की (B) गणेश की
(C) सरस्वती की (D) उपर्युक्त में से कोई भी नहीं
स्रोत–नलचम्पू (1/1)- धुरन्धर पाण्डेय, पेज-01

9. नलचम्पू कितने उच्छ्वासों में वर्णित है– UP PGT–2009, 2011
(A) सात (B) आठ
(C) पाँच (D) छः
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-604

10. नलचम्पू की कथावस्तु का आधार है– UP PGT–2004, 2010, UK TET–2011
(A) शान्तिपर्व (B) भीष्मपर्व
(C) वनपर्व (D) सभापर्व
स्रोत–नलचम्पू- तारिणीश झा, भू०पेज-21

11. त्रिविक्रमभट्ट की रचना है– UP PGT–2011
(A) रामायणचम्पू (B) मदालसाचम्पू
(C) यशस्तिलकचम्पू (D) इनमें से कोई नहीं
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–603

12. राजा नल के महामन्त्री का नाम– UP PGT–2010, UK TET–2011
(A) सालङ्कायन (B) श्रुतिशील
(C) वीरसेन (D) बाहुक
स्रोत–नलचम्पू- धुरन्धर पाण्डेय, भू०पेज -14

1. (C) 2. (C) 3. (A) 4. (B) 5. (C) 6. (D) 7. (C) 8. (A) 9. (A) 10. (C) 11. (B) 12. (B)

13. 'करोति कस्य नाह्लादं कथा कान्तेव भारती' सूक्ति किस ग्रन्थ से उद्धृत है? UP PGT–2005

(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (B) नलचम्पू
(C) कादम्बरी (D) हर्षचरितम्

स्रोत–नलचम्पू (1/13)- धुरन्धर पाण्डेय, पेज-13

14. (i) ''किं कवेस्तेन काव्येन किं काण्डेन धनुष्मतः परस्य हृदये लग्नं न घूर्णयति यच्छिरः'' यह पद्य वाक्य उद्धृत है। UP PGT–2005, 2011

(ii) 'परस्य हृदये लग्नं न घूर्णयति यच्छिरः' पंक्ति ग्रहण की गयी है? UP PGT–2013

(A) उत्तररामचरितम् से (B) नलचम्पू से
(C) नीतिशतकम् से (D) वेणीसंहारम् से

स्रोत–नलचम्पू (1/5)- धुरन्धर पाण्डेय, पेज-05

15. 'सर्वं सहाः सूरयः' कस्मात् ग्रन्थात् उक्तम्– UK SLET–2012

(A) नलचम्पूः (B) मृच्छकटिकम्
(C) रामायणम् (D) मुद्राराक्षसम्

स्रोत–नलचम्पू (1/15)- धुरन्धर पाण्डेय, पेज-15

16. 'दृश्यते न च यत्र स्त्री नवापीनपयोधरा' – श्लोकांश किस ग्रन्थ से है? UP PGT–2011

(A) मृच्छकटिकम् (B) नलचम्पूः
(C) शिशुपालवधम् (D) शृङ्गारशतकम्

स्रोत–नलचम्पू (1/26)- धुरन्धर पाण्डेय, पेज-34

17. नलचम्पू के 'आर्यावर्तवर्णनम्' में मुख्य रूप से किन अलङ्कारों का प्रयोग हुआ है– UP GDC–2008

(A) श्लेष - उपमा - परिसंख्या
(B) अपह्नुति - श्लेष - विभावना
(C) श्लेष - रूपक - व्यतिरेक
(D) श्लेष - काव्यलिङ्ग - दीपक

स्रोत–नलचम्पू - तारिणीश झा, पेज-36, 38, 45

18. 'अनूचानः' कः? HE–2015

(A) वैयाकरणः (B) दैवज्ञः
(C) साङ्गवेदाध्येता (D) होता

स्रोत–नलचम्पू - तारिणीश झा, पेज-22

13. (B) 14. (B) 15. (A) 16. (B) 17. (A) 18. (C)

22 ऋतुसंहारम् / मेघदूतम्

1. ऋतुओं का वर्णन किसमें पाया जाता है? BHU MET–2010

(A) मेघदूत में (B) ऋतुसंहार में
(C) रघुवंश में (D) मुद्राराक्षस में

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-330

2. ऋतुसंहार है– UP PGT–2003

(A) महाकाव्य (B) गद्यकाव्य
(C) गीतिकाव्य (D) नाटक

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-330

3. (i) ऋतुसंहारे कियद् ऋतूनां वर्णनमस्ति–
(ii) ऋतूनां वद का संख्या ऋतुसंहारवर्णने– UGC 25 D–2011, BHU AET–2011

(A) 5 (पञ्च) (B) 6 (षट्)
(C) 3 (तिस्रः) (D) 4 (चतस्रः)

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-330

4. महाकवि कालिदास द्वारा रचित 'ऋतुसंहार' कहलाता है– UP TET–2014

(A) महाकाव्य (B) खण्डकाव्य
(C) गीतिकाव्य (D) नाटक

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-330

5. राजन्ते ऋतुसंहारे सर्गाः कति वदाधुना– BHU AET–2012

(A) पञ्च (B) षट्
(C) सप्त (D) अष्टौ

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-330

6. अध उक्तेष्वेको लघुत्रय्यां नास्ति– DL–2015

(A) ऋतुसंहारम् (B) कुमारसम्भवम्
(C) रघुवंशम् (D) मेघदूतम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-208

7. मेघदूतम् के रचयिता हैं– UPTGT–2011

(A) भारवि (B) कालिदास
(C) भवभूति (D) श्रीहर्ष

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-332

8. (i) कालिदास द्वारा विरचित खण्डकाव्य है–
(ii) कालिदासेन गीतिमयं खण्डकाव्यं विरचितम् – DL–2015, UGC 73 D–2012

(A) हनुमद्दूतम् (B) पवनदूतम्
(C) मेघदूतम् (D) हंसदूतम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-332

9. मेघदूतम् के कथानक का मूलस्रोत है– UPTGT–2011

(A) ऐतिहासिक (B) कविकल्पित
(C) जनश्रुति पर आधारित (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-332

10. 'कालिदासस्य गीतिकाव्ये विरहव्यथा' वर्णिता– RPSC ग्रेड-II (TGT)–2010

(A) दक्षस्य (B) यक्षस्य
(C) कुबेरस्य (D) कालिदासस्य

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-332

11. (i) महाकवि कालिदास की अनुपम कृति 'मेघदूतम्' है–
(ii) मेघदूत किस विधा की रचना है?
(iii) मेघदूतम् रचना साहित्य की किस विधा के अन्तर्गत है? UPTGT–2005, 2011 UPTET–2014

(A) गद्यकाव्य (B) महाकाव्य
(C) गीतिकाव्य (D) सट्टक

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-332

12. मेघदूतम् किस श्रेणी का काव्य है? UP TGT–2004

(A) चम्पूकाव्य (B) स्मार्तकाव्य
(C) गद्यकाव्य (D) दूतकाव्य

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-540

1. (B) 2. (C) 3. (B) 4. (C) 5. (B) 6. (A) 7. (B) 8. (C) 9. (B) 10. (B) 11. (C) 12. (D)

13. (i) मेघदूत है– UP TGT–2000, 2001, 2010,
(ii) मेघदूत किस विधा का ग्रन्थ है–UGC 73 D–1992,
(iii) मेघदूतम् वर्तते एकम्– BHU MET–2010
(iv) कालिदासप्रणीतं मेघदूतम् एकं ...... अस्ति?
(v) मेघदूत का काव्य प्रकार है–
JNU MET–2014, GJ SET–2003

(A) महाकाव्य (B) खण्डकाव्य
(C) नाटक (D) चम्पू

स्रोत–मेघदूतम्- राजेश्वर प्रसाद मिश्र, पेज-19

14. खण्डकाव्य है– UP PGT–2009, UGC 25 D–1998, 1997, J–1995, 2003, 2011

(A) दशकुमारचरितम् (B) नलचम्पूः
(C) मेघदूतम् (D) किरातार्जुनीयम्

स्रोत–मेघदूतम्- विजेन्द्र कुमार शर्मा, भू0 पेज-32

15. (i) मेघदूतकाव्ये प्रयुक्तस्य छन्दसः नाम वर्तते?
(ii) मेघदूतखण्डकाव्ये प्रयुक्तं छन्दः –
(iii) मेघदूते प्रयुक्तं छन्दः अस्ति?
(iv) मेघदूत में किस छन्द का प्रयोग है?
(v) मेघदूतकाव्यं कस्मिन् छन्दसि उपनिबद्धम्–
UP TGT–1999, 2009, 2013, UP GDC–2012, K SET–2014, 2015 , UP PGT–2009, UGC 25 J–2003, UP GIC–2015, AWES TGT–2010, GJ SET–2008, 2004, 2007 RPSC ग्रेड-I (PGT)–2014, 2015, MGKV Ph. D–2016

(A) स्रग्धरा (B) मन्दाक्रान्ता
(C) हरिणी (D) शिखरिणी

स्रोत–मेघदूतम्- विजेन्द्र कुमार शर्मा, भू0 पेज-20

16. मेघदूतम् में किसको संस्कृत साहित्य में एक नवीन काव्यप्रकार की उद्भावना का श्रेय प्राप्त है जो इस नाम से विख्यात है– UP TGT–2011

(A) सन्देशकाव्य (B) खण्डकाव्य
(C) गीतिकाव्य (D) स्रोतकाव्य

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-340

17. (i) मेघदूतोपरि मल्लिनाथेन विरचिता टीका ..... अस्ति?
(ii) ऋषिपुत्रपरमेश्वरकृतस्य मेघदूतव्याख्यानस्य नामधेयं किम्? GJ SET–2016, KL SET–2016

(A) सञ्जीवनी (B) नारायणी
(C) भामती (D) दीपशिखा

स्रोत–मेघदूतम्- शेषराज शर्मा 'रेग्मी', भू0 पेज-23

18. मेघदूते कुबेरेण निर्वासितो यक्षः कुत्र वसतिं चक्रे? RPSC SET–2013-14

(A) रामगिर्याश्रमेषु (B) अलकापुर्याम्
(C) उज्जयिन्याम् (D) विशालायाम्

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ श्लोक-1) -दयाशंकर शास्त्री, पेज- 45

19. अधस्तनवाक्यानां सत्यासत्यत्वपर्यायेषु समीचीनं विचिनुत– MH SET–2011

(क) मेघदूतम् इति एतत् खण्डकाव्यं विद्यते।
(ख) मृच्छकटिकम् इत्येतद् नाटकं वर्तते।
(ग) 'मुद्राराक्षसम्' नाम प्रकरणम्।
(घ) 'मालतीमाधवम्' भवभूतिकवेः प्रकरणम्।

	क	ख	ग	घ
(A)	सत्यम्	सत्यम्	असत्यम्	असत्यम्
(B)	असत्यम्	सत्यम्	असत्यम्	सत्यम्
(C)	सत्यम्	सत्यम्	सत्यम्	असत्यम्
(D)	सत्यम्	असत्यम्	असत्यम्	सत्यम्

संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-332, 495, 501, 525

20. मेघदूतम् का प्रधान रस है? UP TGT–2011

(A) शृङ्गाररस (B) करुणरस
(C) शान्तरस (D) वीररस

स्रोत–मेघदूतम् - विजेन्द्र कुमार शर्मा, भू0 पेज-43

21. केवलं मन्दाक्रान्ताच्छन्दसि निबद्धम्–UGC 25 D–2004

(A) किरातार्जुनीयम् (B) मेघदूतम्
(C) बुद्धचरितम् (D) नैषधीयचरितम्

स्रोत–मेघदूतम् - विजेन्द्र कुमार शर्मा, भू0 पेज-20

22. मेघदूतम् में प्रयुक्त छन्द के प्रत्येक चरण में कितने अक्षर होते हैं– UP TGT–2013

(A) 14 (D) 15
(C) 16 (D) 17

स्रोत–मेघदूतम्- विजेन्द्र कुमार शर्मा, पेज-4

13. (B) 14. (C) 15. (B) 16. (A) 17. (A) 18. (A) 19. (D) 20. (A) 21. (B) 22. (D)

23. मेघदूतम् का अङ्गीरस है– UGC 25 J–2000

(A) करुण (B) करुण विप्रलम्भ
(C) सम्भोग शृङ्गार (D) वियोग शृङ्गार

स्रोत–मेघदूतम् - दयाशङ्कर शास्त्री, पेज–38

24. मेघदूतम् की कथावस्तु विभक्त है– UP TGT–2009

(A) खण्डों में (B) निःश्वासों में
(C) अध्यायों में (D) सर्गों में

स्रोत–मेघदूतम्- विजेन्द्र कुमार शर्मा, भू0 पेज-13

25. मेघदूतम् कितने भागों में विभक्त है– UGC 25 J–2004, BHU MET–2010

(A) चार (B) तीन
(C) दो (D) पाँच

स्रोत–मेघदूतम्- विजेन्द्र कुमार शर्मा, भू0 पेज-13

26. मेघदूतम् का प्रमुख पात्र है– UP TET–2014

(A) यक्ष (B) कुबेर
(C) मेघ (D) यक्षिणी

स्रोत–मेघदूतम् - आर0बी0शास्त्री, भू0 पेज-26

27. यक्ष का स्वामी कौन था? UP TGT–2009

(A) कुबेर (B) यम
(C) इन्द्र (D) वरुण

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ)-दयाशंकर शास्त्री, पेज-45

28. (i) यक्ष को कितनी अवधि के लिये अपनी पत्नी से दूर रहना था? UP TGT–2004, 2011
(ii) मेघदूत में शाप कितने वर्ष का था–

(A) एक वर्ष (B) दो वर्ष
(C) चार मास (D) आठ मास

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ)-दयाशंकर शास्त्री, पेज-45

29. मेघदूतम् का नायक है? UP TGT–2011

(A) देवता (B) मनुष्य
(C) यक्ष (D) किन्नर

स्रोत–मेघदूतम् -आर.बी. शास्त्री, भू. पेज-26

30. मेघदूतम् में यक्ष शापित है– UP TGT–2003, 2004

(A) शिव के द्वारा (B) कुबेर के द्वारा
(C) हिमालय के द्वारा (D) मेघ के द्वारा

स्रोत–मेघदूतम् - दयाशंकर शास्त्री, पेज-45

31. (i) विरही यक्ष कहाँ निवास कर रहा था?
(ii) मेघदूतस्य अभिशप्तः यक्षः कुत्र निवसति?
(iii) मेघदूतम् में अभिशप्त यक्ष कहाँ रहता है?
(iv) मेघदूतम् में अभिशप्त यक्ष कहाँ निवास कर रहा था?
(v) मेघदूते यक्षः कुत्र वसतिं चक्रे?
UP TGT–2001, 2004, 2009, 2011
UGC 25 J–2014, G GIC–2015

(A) नर्मदा के तट पर (B) अलकापुरी में
(C) आम्रकूट पर्वत पर (D) रामगिरि पर्वत में

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-01)- दयाशंकर शास्त्री, पेज-45

32. यक्ष की विरहकथा किस ग्रन्थ में वर्णित है? BHU MET–2008

(A) रघुवंश में (B) कुमारसम्भव में
(C) शिशुपालवध में (D) मेघदूत में

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-01)- दयाशंकर शास्त्री, पेज-45

33. यक्ष ने मेघ को किस मास के प्रथम दिन को देखा था– UP TGT–2009

(A) चैत्र (B) श्रावण
(C) माघ (D) आषाढ

स्रोत–मेघदूतम् (श्लोक -2)-विजेन्द्र कुमार शर्मा, पेज-4

34. पुराणों में 'मेघदूतम्' के विरही यक्ष का नाम मिलता है– UP TGT–2010

(A) राजवाहन (B) बुद्ध
(C) हेममाली (D) कुबेर

स्रोत–मेघदूतम् - विजेन्द्र कुमार शर्मा, भू0 पेज-42

35. (i) विरहिणी यक्षिणी कहाँ निवास कर रही थी?
(ii) यक्ष की पत्नी कहाँ रहती थी–
(iii) मेघदूतकाव्यानुसारं यक्षस्य पत्नी कुत्र वसति स्म?
UGC 25 S–2013, UP TGT–2009, 2011

(A) अमरावती (B) विदिशा
(C) उज्जयिनी (D) अलकापुरी

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-7)-दयाशंकर शास्त्री,पेज-63

23. (D) 24. (A) 25. (C) 26. (A) 27. (A) 28. (A) 29. (C) 30. (B) 31. (D) 32. (D) 33. (D) 34. (C) 35. (D)

36. मेघदूते कस्याः नगर्याः वर्णनमस्ति–
RPSC ग्रेड-II (TGT)–2010

(A) द्वारिकायाः (B) पुष्पपुर्याः
(C) काश्याः (D) उज्जयिन्याः

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-28)–विजेन्द्र कुमार शर्मा, पेज-46

37. कस्य काव्ये मेघः दूतभावेन कल्पितः–
BHU Sh. ET–2011

(A) माघस्य (B) भारवेः
(C) कालिदासस्य (D) श्रीहर्षस्य

स्रोत–मेघदूतम् - थानेशचन्द्र उप्रेती, भू. पेज–39

38. कस्य काव्यस्यारम्भः 'कश्चित्' पदेन भवति?
BHU Sh.ET–2011

(A) शिशुपालवधस्य (B) मेघदूतस्य
(C) लघुकाव्यस्य (D) दृश्यकाव्यस्य

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-01) -दयाशंकर शास्त्री, पेज-45

39. 'तस्मिन्नद्रौ कतिचिदबलाविप्रयुक्तःस कामी' मेघदूत की इस पंक्ति के आगे की पंक्ति कौन-सी है?
UP TGT–1999

(A) वप्रक्रीडापरिणतगजप्रेक्षणीयं ददर्श
(B) जीमूतेन स्वकुशलमयीं हारयिष्यन् प्रवृत्तिम्
(C) नीत्वा मासान्कनकवलयभ्रंशरिक्तप्रकोष्ठः
(D) अन्तर्वाष्पश्चिरमनुचरो राजराजस्य दध्यौ

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-2) -दयाशंकर शास्त्री, पेज-51

40. मेघदूतम् के अनुसार कैलाशपर्वत तक मेघ के सहयात्री कौन होंगे?
UP TGT–2001

(A) राजहंस (B) बलाका
(C) चातक (D) नलगिरि

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-11)-दयाशंकर शास्त्री, पेज-71

41. 'कण्ठाश्लेषप्रणयिनि जने किं पुनर्दूरसंस्थे' इसमें 'जन' शब्द किसका बोधक है– UP TGT–2001, 2004, 2010

(A) मेघ का (B) यक्षिणी का
(C) राजहंस का (D) चातक का

स्रोत–मेघदूतम् (श्लोक-3)- विजेन्द्र कुमार शर्मा, पेज–6, 7

42. (i) मेघदूत में मेघ को कितने पदार्थों का सम्मिश्रण कहा गया है?
UP TGT–2001,
(ii) कालिदास के अनुसार कितने तत्त्वों की समष्टि से मेघ बनता है?
UP TGT–2013

(A) पाँच (B) चार
(C) तीन (D) दो

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-5)- दयाशंकर शास्त्री, पेज-58

43. कालिदास के अनुसार चेतन और अचेतन में कृपण कौन ह?
UP TGT–2001

(A) कामार्त (B) शोकार्त
(C) क्षुधार्त (D) रोगार्त

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-5)- दयाशंकर शास्त्री, पेज-58

44. (i) 'याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा' इसमें 'अधिगुण' शब्द से किसका बोध होता है–
(ii) 'याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा' इत्यत्र 'अधिगुणे' इति पदेन बोध्य अस्ति?
UP TGT–2001, 2005, UP GDC–2012

(A) यक्ष का (B) मेघ का
(C) गङ्गा का (D) कुबेर का

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-6) -दयाशंकर शास्त्री, पेज-60

45. मेघ की यात्रा के समय वामपार्श्व में किसकी ध्वनि होती है?
UP TGT–2001

(A) राजहंस की (B) बलाका की
(C) चातक की (D) सारिका की

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-10)- दयाशंकर शास्त्री, पेज-70

46. मेघदूतम् में किस राजा का उल्लेख मिलता है–
UP TGT–2003

(A) उदयन का (B) शूद्रक का
(C) दुष्यन्त का (D) राम का

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-31)- दयाशंकर शास्त्री, पेज-111

47. ''तस्मिन्नद्रौ कतिचिदबलाविप्रयुक्तः स कामी''– यहाँ 'अद्रौ' का तात्पर्य है–
UP TGT–2003

(A) पर्वत से (B) घर से
(C) सूक्ष्म वस्त्र से (D) मार्ग से

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-02)- दयाशंकर शास्त्री, पेज-51-52

36. (D) 37. (C) 38. (B) 39. (C) 40. (A) 41. (B) 42. (B) 43. (A) 44. (B) 45. (C) 46. (A) 47. (A)

48. 'धूमज्योतिः सलिलमरुतां सन्निपातः क्व मेघः' प्रस्तुत श्लोकांश में 'सन्निपात' का अर्थ है– UP TGT–2003

(A) जूही की कली से (B) गर्जन से
(C) चमेली से (D) मेघ समूह से

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-05) -दयाशंकर शास्त्री, पेज-58

49. मेघदूत में वर्णित 'पुष्करावर्तक' है– UP TGT–2003

(A) यज्ञ का दूत (B) मेघों का निवास स्थान
(C) मेघों का कुल (D) अलकापुरी का मेघ

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-06)- दयाशंकर शास्त्री ,पेज-60-61

50. 'सम्पत्स्यन्ते कतिपयदिनस्थायिहंसाः दशार्णाः', यहाँ 'दशार्णाः' है एक– UP TGT–2003

(A) पर्वत (B) देश
(C) नदी (D) राजा

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-24)- दयाशंकर शास्त्री, पेज-97-98

51. मेघदूतम् में 'धूमज्योतिः सलिलमरुतां सन्निपातः' है– UP TGT–2004, UP PGT–2010

(A) यक्ष (B) मेघ
(C) कुबेर (D) इन्द्र

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-05) -दयाशंकर शास्त्री, पेज-58

52. (i) 'प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु' एतादृशः कस्य स्वभावः–
(ii) 'प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु' होते हैं–
UP TGT–2004, CCSUM Ph. D–2016

(A) मूढजनाः (B) विद्वज्जनाः
(C) राजानः (D) कामार्ताः

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-05)- दयाशंकर शास्त्री ,पेज-58

53. राजहंस कहाँ जाने को उत्सुक हैं– UP TGT–2004

(A) कैलासपर्वत (B) वैकुण्ठ
(C) मानसरोवर (D) स्वर्गलोक

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-11) -दयाशंकर शास्त्री, पेज-71-72

54. यक्ष के विरह का कितना समय बीत चुका है? UP TGT–2004

(A) एक वर्ष (B) आठ माह
(C) चार मास (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-2)- दयाशंकर शास्त्री ,पेज-51

55. ''इत्याख्याते पवनतनयं मैथिलीवोन्मुखी सा'' यहाँ 'सा' से तात्पर्य है– UP TGT–2004

(A) सीता (B) विद्युत्
(C) यक्षिणी (D) हनुमान्

स्रोत–मेघदूतम् (उत्तरमेघ-40) -दयाशंकर शास्त्री, पेज-137

56. यक्ष को शाप दिया था– UP TGT–2004

(A) इन्द्र (B) नारद
(C) कुबेर (D) दुर्वासा

स्रोत–मेघदूतम् - दयाशंकर शास्त्री, भू.पेज-32

57. 'मेघदूतम्' में चेतन और अचेतन में कौन भेद नहीं कर पाते हैं? UP TGT–2004

(A) विलासी (B) भोगी
(C) कामार्त (D) संन्यासी

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-5)- दयाशंकर शास्त्री, पेज-58

58. ''यक्षश्चक्रे जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु'' इस श्लोकांश में 'जनकतनया' कौन है– UP TGT–2004

(A) यक्षिणी (B) सीता
(C) गङ्गा (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-01)- दयाशंकर शास्त्री, पेज-45

59. कालिदास के अनुसार निम्नलिखित में से किससे मेघ का सम्पर्क नहीं है– UP TGT–2004

(A) धुएँ से (B) ज्योति से
(C) सलिल से (D) वृक्ष से

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-05) -दयाशंकर शास्त्री, पेज-58

60. स्त्रियों का पहला प्रणयवचन क्या होता है– UP TGT–2005

(A) प्रेम की बातें करना
(B) नैन से नैन मिलाना
(C) स्त्रियों का हाव-भाव या विभ्रमप्रदर्शन करना
(D) सामने आ-आ कर हट जाना

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-29) -दयाशंकर शास्त्री, पेज-107

61. 'शापान्तो मे भुजगशयनादुत्थिते शार्ङ्गपाणौ'– यहाँ 'शार्ङ्गपाणौ' का अर्थ है– UP TGT–2005

(A) भगवान् सूर्य (B) भगवान् शङ्कर
(C) भगवान् विष्णु (D) भगवान् राम

स्रोत–मेघदूतम् (उत्तरमेघ-50) -दयाशंकर शास्त्री, पेज-170-171

48. (D) 49. (C) 50. (B) 51. (B) 52. (D) 53. (C) 54. (B) 55. (C) 56. (C) 57. (C) 58. (B) 59. (D) 60. (C) 61. (C)

62. 'जीमूतेन स्वकुशलमयीं हारयिष्यन् प्रवृत्तिम्' प्रस्तुत पंक्ति में 'जीमूतेन' का अभिप्राय है– UP TGT–2005

(A) पवन से (B) बादल से
(C) शकुन्तला से (D) यशोमति से

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-04) -दयाशंकर शास्त्री, पेज-56

63. मेघदूत के प्रथम श्लोक में 'वर्षभोग्येण' शब्द आया है। यहाँ पर 'न' को 'ण' किस सूत्र से हुआ है? UP TGT–2005

(A) रषाभ्यां नो णः समानपदे (B) पूर्वपदात्संज्ञायामगः
(C) अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि (D) कुमति च

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-1)- विजेन्द्र कुमार शर्मा, पेज-04

64. स्त्रियों का आशाबन्ध कैसा होता है? UP TGT–2005

(A) नवनीतसदृश (B) पाषाणसदृश
(C) कुसुमसदृश (D) वज्रसदृश

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-09)- दयाशंकर शास्त्री, पेज-68

65. सबसे अधिक लघु (हल्का) कौन होता है? UP TGT–2005

(A) तूल (B) मन
(C) रिक्त (D) तिनका

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-20)- दयाशंकर शास्त्री, पेज-89

66. विदिशा नगरी में कौन-सी नदी थी? UP TGT–2009

(A) चर्मण्वती (B) गम्भीरा
(C) वेत्रवती (D) शिप्रा

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-25)- दयाशंकर शास्त्री, पेज-100

67. 'कृतान्तः' का अर्थ है–UP TGT–2009, UP GDC–2012

(A) मित्र के द्वारा लाया गया (B) प्रियतम का समाचार
(C) दैव (भाग्य) (D) कम बोलने वाली

स्रोत–मेघदूतम् (उत्तरमेघ-45)- दयाशंकर शास्त्री, पेज-156

68. मेघदूतम् में मेघ को किस नदी से जल ग्रहण करने की सलाह दी गयी है? UP TGT–2009

(A) यमुना (B) गोदावरी
(C) कावेरी (D) नर्मदा (रेवा)

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-20)- दयाशंकर शास्त्री, पेज-89

69. 'मेघदूतम्' में यक्ष के शापान्त की अवधि मानी गयी है– UP TGT–2009

(A) तीन माह (B) चार माह
(C) दो माह (D) एक सप्ताह

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-02)- विजेन्द्र कुमार शर्मा, पेज-4-5

70. 'मेघदूतम्' काव्य में नायक विरही यक्ष को किस कारण से अपनी नायिका से दूर जाना पड़ा? UP TGT–2011

(A) पत्नी अपने पिता के घर चली गयी थी
(B) पति-पत्नी में कुछ वैमनस्य हो गया था
(C) अपने कर्त्तव्य पालन में भूल करने के कारण शापवश
(D) अपने कर्तव्य पालन में परदेश जाने के कारण

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-1)- दयाशंकर शास्त्री, पेज-45

71. (i) विन्ध्याचल की तलहटी में बहने वाली नदी है–
(ii) पूर्वमेघ में विन्ध्याचल की तलहटी में बिखरी हुई किस नदी का वर्णन है? UP TGT–2010, UP GIC–2009

(A) गङ्गा (B) नर्मदा (रेवा)
(C) कावेरी (D) व्यास

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-19)- विजेन्द्र कुमार शर्मा, पेज-33

72. (i) यक्ष के प्रवास की अवधि क्या थी?
(ii) यक्ष का प्रवास कितने दिनों का था? UP TGT–2010, UP TGT–2013

(A) पाँच वर्ष (B) तीन वर्ष
(C) एक वर्ष (D) तीन मास

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-1)- विजेन्द्र कुमार शर्मा, पेज-1

73. (i) मेघदूतानुसारं यक्षस्य शापान्तकालोऽस्ति?
(ii) मेघदूतम् में यक्ष के शाप के अवसान का दिन था–
(iii) मेघदूते यक्षस्य शापान्तः कदा भवति–
UP TGT–2010, UP PGT–2010, DU Ph. D–2016 MGKV Ph. D–2016

(A) वैशाख पूर्णिमा (B) भाद्रपदकृष्ण अष्टमी
(C) भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी (D) देवप्रबोधिनी एकादशी

स्रोत–मेघदूतम् (उत्तरमेघ-50)- दयाशंकर शास्त्री, पेज-171

62. (B) 63. (D) 64. (C) 65. (C) 66. (C) 67. (C) 68. (D) 69. (B) 70. (C) 71. (B) 72. (C) 73. (D)

74. 'कुन्द' का पुष्प होता है– UP TGT–2010

(A) लाल (B) सफेद

(C) पीला (D) बहुरङ्गी

स्रोत–मेघदूतम् (उत्तरमेघ-02)- विजेन्द्र कुमार शर्मा, पेज-02

75. 'शूली' का अर्थ है– UP TGT–2010

(A) भाले वाला (B) शिव

(C) काँटेदार (D) कष्टप्रद

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-37)- विजेन्द्र कुमार शर्मा, पेज-61

76. 'कान्तोदन्त' का अर्थ है– UP TGT–2010

(A) चमकते दाँत (B) प्रियतम का वृत्तान्त

(C) प्रिया के दाँत (D) प्रिय का अन्त

स्रोत–मेघदूतम् (उत्तरमेघ-40)- विजेन्द्र कुमार शर्मा, पेज-63

77. उज्जयिनी में स्थित शिवलिङ्ग का क्या नाम है? UP TGT–2010

(A) वैद्यनाथ (B) महाकाल

(C) मार्कण्डेय (D) विश्वनाथ

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-37)- विजेन्द्र कुमार शर्मा, पेज-61

78. किस काव्य में अलकापुरी का वर्णन प्राप्त होता है– UP TGT–2010

(A) पवनदूत (B) मेघदूतम्

(C) रघुवंशम् (D) किरातार्जुनीयम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-528

79. मेघदूतम् की यक्षिणी शापदिवसों की गणना किससे करती है? UP TGT–2010

(A) पुष्पों से (B) लेखनी से

(C) मणियों से (D) अन्नकणों से

स्रोत–मेघदूतम् (उत्तरमेघ-27)–विजेन्द्र कुमार शर्मा, पेज-42

80. 'शफर' से अभिप्राय है– UP PGT–2010

(A) बादल

(B) विशाल नदी

(C) जल में चमकने वाली एक छोटी मछली

(D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-43)- विजेन्द्र कुमार शर्मा, पेज-70

81. (i) मेघदूतम् में यक्ष 'वक्रः पन्था यदपि भवतः' कहकर मेघ से किस नगरी में जाने का अनुरोध करता है? UP GDC–2012

(ii) मेघदूते 'वक्रः पन्था यदपि भवतः' इत्यादिभिर्वचोभिः मेघं प्रार्थयति यक्षः गन्तुम्– UP GIC–2009

(A) अलका (B) उज्जयिनी

(C) विदिशा (D) दशार्ण

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-28)- विजेन्द्र कुमार शर्मा, पेज-46

82. आसु कस्याः नद्या उल्लेखो मेघदूते नास्ति? UGC 25 Jn–2017

(A) रेवायाः (B) शिप्रायाः

(C) तुङ्गभद्रायाः (D) गन्धवत्याः

स्रोत–मेघदूतम् - शेषराजशर्मा रेग्मी, भू0 पेज-35

83. 'मेघ' एक अचेतन, ज्ञान शून्य, धुआँ-प्रकाश और वायु का सम्मिश्रण है। सन्देश तो किसी चेतन प्राणी के द्वारा ही भेजा जा सकता है जिसकी इन्द्रियाँ कुशल हो। यक्ष यह सब समझता हुआ भी मेघ से निवेदन करता है। निम्नलिखित सूक्तियों में से किस सूक्ति में इसका कारण बताया गया है– UP GDC–2008

(A) प्रीतः प्रीतिप्रमुखवचनं स्वागतं व्याजहार

(B) कामार्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु

(C) याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा।

(D) सन्देशं मे हर धनपतिक्रोधविश्लेषितस्य

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-5)- विजेन्द्र कुमार शर्मा, पेज-9

84. कालिदास का जन्मस्थान अधिकांश विद्वान् उनके ग्रन्थों में वर्णित सामग्री के आधार पर उज्जयिनी मानते हैं। पूर्वमेघ में भी कुछ श्लोकों से इसी अभिप्राय की ओर संकेत मिलता है। निम्नलिखित में से किस श्लोक को उनमें प्रमुख रूप से सम्मिलित किया जाता है– UP GDC–2008

(A) रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय।

(B) तेषां दिक्षु प्रथितविदिशालक्षणां राजधानीम्

(C) वक्रः पन्था यदपि भवतः प्रस्थितस्योत्तराशाम्

(D) राशीभूतः प्रतिदिनमिव त्र्यम्बकस्याट्टहासः

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-28)- विजेन्द्र कुमार शर्मा, पेज-46

74. (B) 75. (B) 76. (B) 77. (B) 78. (B) 79. (A) 80. (C) 81. (B) 82. (C) 83. (B) 84. (C)

85. मेघदूत मे किस नगरी का उल्लेख मिलता है?– UP TGT–2005

(A) अयोध्या (B) अलका
(C) काञ्ची (D) मथुरा

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–528

86. 'हरशिरश्चन्द्रिकाधौतहर्म्या' रूपेण वर्णिता नगरी अस्ति– UP GDC–2012

(A) विदिशा (B) उज्जयिनी
(C) अलका (D) दशपुरम्

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-07)- विजेन्द्र कुमार शर्मा, पेज-13

87. मेघदूते 'राजराजस्य दध्यौ' इतिपद्ये 'राजराजस्य' इति पदेनाभिहितोऽस्ति– UP GDC–2012

(A) यक्षः (B) कुबेरः
(C) महाकालः (D) इन्द्रः

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-3)- विजेन्द्र कुमार शर्मा, पेज-6

88. अलकापुर्याः वर्णनं कुत्र प्राप्यते– UGC 25 J–2005

(A) कादम्बर्याम् (B) रघुवंशे
(C) मेघदूते (D) अभिज्ञानशाकुन्तले

स्रोत–मेघदूतम् (उत्तरमेघ-1)- विजेन्द्र कुमार शर्मा, पेज-1

89. कालिदास ने किस ग्रन्थ में अमरकण्टक के सौन्दर्य का चित्रण किया है? MP PSC–2010

(A) कुमारसम्भवम् (B) शाकुन्तलम्
(C) मेघदूतम् (D) ऋतुसंहारम्

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-17)- विजेन्द्र कुमार शर्मा, पेज-31

90. विदिशा .... नदी के तट पर स्थित है– MP PSC–2010

(A) बेतवा (B) शिप्रा
(C) नर्मदा (D) चम्बल

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-25)- विजेन्द्र कुमार शर्मा, पेज-43

91. मेघदूते 'यक्षेश्वराणां वसतिः' का वर्णिता? UK SLET–2015

(A) अलका (B) उज्जयिनी
(C) विदिशा (D) काशी

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-7)- विजेन्द्र कुमार शर्मा, पेज-13

92. अलकापुरी केषां वसतिः? HAP–2016

(A) नराणाम् (B) राक्षसानाम्
(C) नागानाम् (D) यक्षेश्वराणाम्

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-7)- विजेन्द्र कुमार शर्मा, पेज-13

93. मेघदूते 'जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु' इत्युल्लेखतः परिचितो भवति– UP GDC–2014

(A) विन्ध्याचलः (B) श्रीशैलः
(C) चित्रकूटम् (D) रामगिर्याश्रमः

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-1)- विजेन्द्र कुमार शर्मा, पेज-1

94. 'वक्रः पन्था यदपि' इति सङ्केतेन का नगरी ज्ञाता भवति? UP GDC–2014

(A) अलकापुरी (B) उज्जयिनी
(C) विदिशा (D) अयोध्या

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-28)- विजेन्द्र कुमार शर्मा, पेज-46

95. मेघदूते इयं नगरी नास्ति वर्णिता– BHU AET–2010

(A) उज्जयिनी (B) वाराणसी
(C) विदिशा (D) अलका

मेघदूतम् (पूर्वमेघ-28,26,7)-विजेन्द्र कुमार शर्मा, पेज-46,42,13

96. कविसमयानुसारेण वर्षाकाले के मानसं यान्ति? DSSSB PGT–2014

(A) काकाः (B) हंसाः
(C) मयूराः (D) चकोराः

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-11)- विजेन्द्र कुमार शर्मा, पेज-20

97. (i) 'याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा'। किसने यह लिखा है? BHU MET–2009, 2013

(ii) ''याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा''– उक्ति है?

(A) कालिदास (B) माघ
(C) भारवि (D) भवभूति

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-6)- विजेन्द्र कुमार शर्मा, पेज-11

98. मेघदूतम् में 'दिङ्नाग' कौन हैं? UP TGT–2004

(A) मीमांसक (B) नैयायिक
(C) बौद्ध (D) वेदान्ती

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-14)- विजेन्द्र कुमार शर्मा, पेज-26

85. (B) 86. (C) 87. (B) 88. (C) 89. (C) 90. (A) 91. (A) 92. (D) 93. (D) 94. (B) 95. (B) 96. (B) 97. (A) 98. (C)

99. प्रसिद्ध टीकाकार, मल्लिनाथ के अनुसार मेघदूतम् में कितने पद्य हैं? UP TGT–2013

(A) 115 (B) 120
(C) 121 (D) 125

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवदी,पेज-527

100. मेघदूतम् के प्रारम्भ में निम्न में से किस प्रकार का मङ्गलाचरण किया गया है? UP TGT–2013

(A) आशीर्वादात्मक (B) नमस्कारात्मक
(C) वस्तुनिर्देशात्मक (D) उपर्युक्त सभी

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-1)- विजेन्द्र कुमार शर्मा, पेज-4

101. अलकापुरी में यक्ष का घर कुबेर के महल से किस दिशा में मेघदूतम् में बताया गया है? UP TGT–2013

(A) पूर्व (B) उत्तर
(C) पश्चिम (D) दक्षिण

स्रोत–मेघदूतम् (उत्तरमेघ-15)- दयाशंकर शास्त्री, पेज-39

102. 'मेघदूतम्' में मेघ के मार्ग में निम्नलिखित में से क्या नहीं है? UP TGT–2013

(A) नर्मदा नदी (B) विदिशा
(C) उज्जयिनी (D) अयोध्या

मेघदूतम् (पूर्वमेघ-19,25,28)-दयाशंकर शास्त्री, पेज-87,100,105

103. मेघदूतम् अस्मिन् गीतिकाव्ये का जह्नुकन्या? AWES TGT–2011

(A) नर्मदा (B) निर्विन्ध्या
(C) रेवा (D) गङ्गा

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-54)- दयाशंकर शास्त्री, पेज-159

104. ''न क्षुद्रोऽपि प्रथमसुकृतापेक्षया संश्रयाय, प्राप्ते मित्रे भवति विमुखः किं पुनर्यस्तथोच्चैः।'' उपर्युक्त में कौन सा छन्द है? H TET–2014

(A) शिखरिणी (B) स्रग्धरा
(C) मालिनी (D) मन्दाक्रान्ता

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-17)- दयाशंकर शास्त्री, पेज-83

105. 'कान्ताविरहगुरुणा' इत्यत्र कति पदानि सन्ति? BHU Sh.ET–2011

(A) त्रीणि (B) द्वे
(C) एकम् (D) चत्वारि

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-01)-दयाशंकर शास्त्री, पेज-45

106. ''कामार्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु''–यह पंक्ति किस ग्रन्थ से है? UP PGT (H)–2000

(A) नीतिशतकम् (B) शृङ्गारशतकम्
(C) मेघदूतम् (D) रघुवंशम्

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-05)-दयाशंकर शास्त्री, पेज-58

107. ''रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय'' का सम्बन्ध किस ग्रन्थ से है? UP PGT–2010, UP TGT–2005, 2009

(A) किरातार्जुनीयम् (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(C) मेघदूतम् (D) रघुवंशम्

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-20)-दयाशंकर शास्त्री, पेज-89

108. निम्नांकित में कौन-सी सूक्ति मेघदूतम् से सम्बद्ध नहीं है– UP PGT–2010, UK TET–2011

(A) कामार्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु।
(B) अकृतार्थेऽपि मनसिजे रतिमुभयप्रार्थना कुरुते।
(C) याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाऽधमे लब्धकामा।
(D) स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु

स्रोत–मेघदूतम् -दयाशंकर शास्त्री, भू0 पेज-42,43

109. (i) 'याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा' यह पंक्ति कहाँ से उद्धृत है। JNU MET–2015

(ii) ''याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा'' यह सूक्ति जिस रचना में है वह है– UP TGT–2004 UGC 25 J–1995, 2005, D–1999, BHU MET–2014, UP GDC–2014, DU Ph. D–2016

(A) वेणीसंहारम् (B) नैषधीयचरितम्
(C) किरातार्जुनीयम् (D) मेघदूतम्

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-06)-दयाशंकर शास्त्री, पेज-60

110. ''प्रीतः प्रीतिप्रमुखवचनं स्वागतं व्याजहार'' कुत्रेयमुक्तिः। UGC 25 D–2013

(A) मेघदूते (B) कुमारसम्भवे
(C) ऋतुसंहारे (D) रघुवंशे

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-04)-दयाशंकर शास्त्री, पेज-56

99. (C) 100. (C) 101. (B) 102. (D) 103. (D) 104. (D) 105. (C) 106. (C) 107. (C) 108. (B) 109. (D) 110. (A)

111. मेघदूतम् काव्य का खड़ी बोली मे अनुवाद किया है? UP PGT–2004
(A) सदल मिश्र ने (B) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने
(C) लल्लू यादव ने (D) राजा लक्ष्मण सिंह ने
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास–कपिलदेव द्विवेदी, पेज–540
नोट–मेघदूतम् काव्य का खड़ी बोली में अनुवाद लक्ष्मीधर बाजपेयी ने किया था। राजा लक्ष्मण सिंह ने ब्रजभाषा में अनुवाद किया था। लक्ष्मीधर विकल्प में न होने के कारण राजा लक्ष्मण सिंह को ही माना जा सकता है।

112. ''स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु'' सूक्ति किस ग्रन्थ में है? UP TGT–1999
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में (B) नीतिशतकम् में
(C) किरातार्जुनीयम् में (D) मेघदूतम् में
स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-29)-दयाशंकर शास्त्री, पेज-107

113. ''न क्षुद्रोऽपि प्रथमसुकृतापेक्षया संश्रयाय, प्राप्ते मित्रे भवति विमुखः किं पुनर्यस्तथोच्चैः'' उपर्युक्त सूक्ति किस ग्रन्थ से उद्धृत है? UP TGT–1999
(A) मेघदूतम् से (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से
(C) उत्तररामचरितम् से (D) नीतिशतकम् से
स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-17)-दयाशंकर शास्त्री, पेज-83

114. ''के वा न स्युः परिभवपदं निष्फलारम्भयत्नाः'' यह सूक्ति इस रचना से उद्धृत है– UP GDC–2008
(A) किरातार्जुनीयम् (B) नीतिशतकम्
(C) मेघदूतम् (D) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-58)-दयाशंकर शास्त्री, पेज-166

115. ''जातं वंशे भुवनविदिते पुष्करावर्तकानाम्' यह उक्ति है– UGC 73 D–2009
(A) नैषधे (B) रघुवंशे
(C) मेघदूते (D) कुमारसम्भवे
स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-06)-दयाशंकर शास्त्री, पेज-60

116. ''वेणीभूतप्रतनुसलिलातामतीतस्य सिन्धुः'' इयं पंक्तिः अस्ति– RPSC ग्रेड (TGT)–2010
(A) कादम्बर्याः (B) अभिज्ञानशाकुन्तलस्य
(C) मेघदूतस्य (D) वेणीसंहारस्य
स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-30)-दयाशंकर शास्त्री, पेज-110

117. ''प्राप्ते मित्रे भवति विमुखः किं पुनर्यस्तथोच्चैः'' यह श्लोकांश उद्धृत है– UP TGT–2003
(A) मेघदूतम् से (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से
(C) किरातार्जुनीयम् से (D) शिवराजविजयम् से
स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-17)-दयाशंकर शास्त्री, पेज-83

118. ''कस्यात्यन्तं सुखमुपनतं दुःखमेकान्ततो वा नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण'' इस श्लोक का सन्देश है– UP PGT–2000
(A) संसार परिवर्तनशील है।
(B) दुःख में स्थिर रहना चाहिए।
(C) सुख-दुःख परिवर्तनशील है।
(D) नीच का साथ नहीं करना चाहिए।
स्रोत–मेघदूतम् (उत्तरमेघ-49)-दयाशंकर शास्त्री, पेज-168

119. (i) कस्यात्यन्तं सुखमुपनतं दुःखमेकान्ततो वा, नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण॥ उपर्युक्त श्लोकांश किस ग्रन्थ में मिलता है?
(ii) ''नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण'' यह वचन किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है? UP TGT–2013
MH SET–2013, BHU MET–2016
(A) उत्तररामचरितम् (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(C) किरातार्जुनीयम् (D) मेघदूतम्
स्रोत–मेघदूतम् (उत्तरमेघ-49)-दयाशंकर शास्त्री, पेज-168

120. ''सद्यः पाति प्रणयिहृदयं विप्रयोगे रुणद्धि''– इस सूक्ति वाला ग्रन्थ है– BHU MET–2015
(A) रघुवंशम् (B) किरातार्जुनीयम्
(C) मेघदूतम् (D) ऋतुसंहारम्
स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-09)-दयाशंकर शास्त्री, पेज-68

121. ''श्यामास्वङ्गं चकितहरिणी प्रेक्षणे दृष्टिपातं...........'' इति पद्यांशः कस्मिन् ग्रन्थे उपलभ्यते? UGC 25 J–2015
(A) रघुवंशे (B) नैषधीयचरिते
(C) मेघदूते (D) बुद्धचरिते
स्रोत–मेघदूतम् (उत्तरमेघ-44)-दयाशंकर शास्त्री, पेज-152

122. 'ज्ञातास्वादो विवृतजघनां को विहातुं समर्थः' कुतः उद्धृतम्– UK SLET–2012
(A) मेघदूतम् (B) कादम्बरी
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (D) किरातार्जुनीयम्
स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-45)-दयाशंकर शास्त्री, पेज-139

111. (D) 112. (D) 113. (A) 114. (C) 115. (C) 116. (C) 117. (A) 118. (C) 119. (D) 120. (C) 121. (C) 122. (A)

123. 'मेघे माघे गतं वयः' कस्येयमुक्तिः? G GIC–2015

(A) मल्लिनाथस्य (B) राजशेखरस्य
(C) हेमचन्द्रस्य (D) गोवर्धनाचार्यस्य

स्रोत–मेघदूतम् -शेषराजशर्मा रेग्मी, भू0 पेज-33

124. विप्रलम्भशृङ्गारः अङ्गीरसः भवति अस्मिन् काव्ये– UGC 25 D–2015

(A) रघुवंशे (B) मेघदूते
(C) शिशुपालवधे (D) नैषधीयचरिते

स्रोत–मेघदूतम् -दयाशङ्कर शास्त्री, भू0पेज-38

125. 'तन्वी श्यामा शिखरिदशना पक्वबिम्बाधरोष्ठी' पंक्ति का सम्बन्ध किस काव्य से है? H TET–2015

(A) ऋतुसंहारम् (B) स्वप्नवासवदत्तम्
(C) रघुवंशम् (D) मेघदूतम्

स्रोत–मेघदूतम् (उत्तरमेघ-22)-दयाशंकर शास्त्री, पेज-62

126. 'कामार्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाऽचेतनेषु' इति उक्तिः विद्यते? K SET–2013

(A) मेघसन्देशे (B) ऋतुसंहारे
(C) रघुवंशे (D) पवनसन्देशे

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-05)-दयाशंकर शास्त्री, पेज-58

127. ''कश्चित्कान्ताविरहगुरुणा'' – इत्यंशः कस्य ग्रन्थस्य प्रथमे श्लोके विद्यते? RPSC SET–2010

(A) मेघदूतस्य (B) रघुवंशस्य
(C) शिशुपालवधस्य (D) नैषधीयचरितस्य

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-01)-दयाशंकर शास्त्री, पेज-45

128. 'त्वत्सम्पर्कात् पुलकितमिव प्रौढपुष्पैः कदम्बैः।' इत्यस्मिन् पद्यांशे कः अर्थालङ्कारः अस्ति? DU M. Phil–2016

(A) उत्प्रेक्षा (B) उपमा
(C) उपमा उत्प्रेक्षा च (D) उपमेयोपमा

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-26)-दयाशंकर शास्त्री, पेज-101

129. 'या वः काले वहति सलिलोद्गारमुच्चैर्विमाना मुक्ताजालग्रथितमलकं कामिनीवाभ्रवृन्दम्।' इत्यस्य कः शब्दः श्लेषयुक्तः अस्ति? DU M. Phil–2016

(A) उच्चैर्विमाना (B) मुक्ताजालग्रथितम्
(C) अलकम् (D) अभ्रवृन्दम्

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-67)-दयाशंकर शास्त्री, पेज-186

123. (A) 124. (B) 125. (D) 126. (A) 127. (A) 128. (A) 129. (A)

23 नीतिशतकम्

1. (i) 'नीतिशतकम्' कस्य कृतिः? BHU MET–2008,
(ii) नीतिशतकम् के कर्ता कौन हैं? BHU B.Ed–2013
(iii) 'नीतिशतकम्' के रचयिता हैं? UP TGT–2011

(A) जयदेव (B) अमरुक
(C) क्षेमेन्द्र (D) भर्तृहरि

(i) संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी,पेज-541
(ii) नीतिशतकम् -तारिणीश झा, भू0 पेज-08

2. भर्तृहरि ने नीतिशतक लिखा है– UP TGT–2011

(A) गद्य में (B) गद्य पद्य दोनों में
(C) छन्दों में (D) श्लोक में

स्रोत–नीतिशतकम्- तारिणीश झा, भू0 पेज-08

3. शतकत्रय के रचयिता हैं? UP TGT–2004

(A) भर्तृहरि (B) भट्टि
(C) मयूरभट्ट (D) भोज

(i) संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-541
(ii) नीतिशतकम् - तारिणीश झा , भू0 पेज-08

4. भारतीय जनश्रुति महाराज भर्तृहरि को– UP TGT–2011

(A) विक्रमसंवत् के संस्थापक महाराज विक्रमादित्य का बड़ा भाई मानती है।
(B) कालिदास के समकक्ष मानती है।
(C) गुजरात और महाराष्ट्र के समीप स्थित राज्य का राजा मानती है।
(D) विदिशा के राजा का कनिष्ठ पुत्र मानती है।

स्रोत–नीतिशतकम् - राजेश्वर प्रसाद मिश्र, भू0 पेज-09

5. शतकत्रय ग्रन्थ के रचनाकार ने और किस प्रसिद्ध ग्रन्थ की रचना की है? UP TGT–2004

(A) अष्टाध्यायी (B) महाभाष्यम्
(C) वाक्यपदीयम् (D) सिद्धान्तकौमुदी

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-541

6. नीतिशतक में कितने पद्य हैं। BHU MET– 2012

(A) एक सौ (100) (B) एक सौ एक (101
(C) एक सौ तेरह (113) (D) एक सौ ग्यारह (111)

स्रोत–नीतिशतकम् - तारिणीश झा,भू0 पेज-8

7. 'नीतिशतकम्' में कितने श्लोक हैं? UP TGT–2011

(A) पचास (B) पच्चीस
(C) सौ (D) दो सौ

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा, 'ऋषि', पेज–344

8. (i) नीतिशतकम् साहित्य की किस विधा के अन्तर्गत है–
(ii) नीतिशतकम् किस प्रकार के काव्य के अन्तर्गत आता है– UK TET–2011, UP TGT–2011

(A) गद्यकाव्य (B) प्रबन्धकाव्य
(C) मुक्तककाव्य (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–नीतिशतकम् - राजेश्वर प्रसाद मिश्र, भू0 पेज-09

9. नीतिशतक में कितने प्रकार के प्राणी बताये गये हैं– UP TGT–2001

(A) तीन (B) चार
(C) छः (D) आठ

स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-65)- तारिणीश झा, पेज-105

10. नीतिशतककार के अनुसार सभा में किस उपाय के द्वारा मूर्ख अपनी मूर्खता को छिपा सकता है? UP TGT–2003

(A) कम बोलकर (B) मौन रहकर
(C) विचारपूर्वक बोलकर (D) हँसकर

स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-07)- तारिणीश झा, पेज-11

11. नीतिशतककार के मतानुसार क्रोधी राजा के प्रिय होते हैं– UP TGT–2003

(A) उसके अपने परिजन (B) उसके घनिष्ठ मित्र
(C) उसके निजी सेवक (D) कोई व्यक्ति भी नहीं।

स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-47)- तारिणीश झा, पेज-77

1. (D) 2. (C) 3. (A) 4. (A) 5. (C) 6. (D) 7. (C) 8. (C) 9. (B) 10. (B) 11. (D)

12. दुष्टों की मित्रता की तुलना की गयी है? UP TGT–2003

(A) छाया से (B) कोयल से
(C) सर्प से (D) विष से

स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-50)- तारिणीश झा, पेज-82

13. सभी प्रकार की विपत्तियों से रक्षा होती है– UP TGT–2003

(A) पूर्वकृत पुण्यों के कारण (B) वीरता के कारण
(C) देवताओं की सहायता से (D) प्रत्युत्पन्नमति से

स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-101)- तारिणीश झा, पेज-162

14. मैनाक किसका पुत्र है? UP TGT–2004

(A) इन्द्र का (B) हिमालय का
(C) समुद्र का (D) दैत्य का

स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-29)- तारिणीश झा, पेज-49

15. प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन .... कैः? UP TGT–2004

(A) जनैः (B) बालैः
(C) नीचैः (D) पुरुषैः

स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-73)- तारिणीश झा, पेज-119

16. विभाति कायः करुणाकुलानां .... रिक्तस्थान की पूर्ति करें? UP TGT–2004

(A) कुण्डलेन (B)कङ्कणेन
(C) परोपकारेण न चन्दनेन (D) परोपकारिणाम्

स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-63)- तारिणीश झा, पेज-102

17. 'ये परहितं स्वार्थाय निघ्नन्ति' नीतिशतकम् के अनुसार वे लोग हैं? UP TGT–2004

(A) सत्पुरुषाः (B) सामान्याः
(C) मानुषराक्षसाः (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-65)- तारिणीश झा, पेज-105

18. नीतिशतकम् का विषय– UPTGT–2011

(A) किसी एक सम्प्रदाय से सम्बन्धित है
(B) विज्ञान पर आधारित है
(C) आध्यात्मिक संचेतना पर आधारित है।
(D) मनुष्य मात्र की नीति कुशलता का उपदेश देने वाला है

स्रोत–नीतिशतकम् - राजेश्वर प्रसाद मिश्र, पेज-16-17

19. नीतिशतकम् की भाषा– UPTGT–2011

(A) क्लिष्ट है (B) अलङ्कारप्रधान है
(C) अति सरल, सुबोध है (D) अति गम्भीर है

स्रोत–नीतिशतकम् - राजेश्वर प्रसाद मिश्र, पेज-23

20. थोड़े से ज्ञान से स्वयं को ज्ञानी मानने वाले मनुष्य को कौन नही समझा सकते हैं? UP TGT–2011

(A) ब्रह्मा (B) विष्णु
(C) महेश (D) गणेश

स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-03)- तारिणीश झा, पेज-04

21. अपनी अज्ञता छिपाने के लिये मूढ़ जनों का एकमात्र उपाय है? UPTGT–2011

(A) मौनावलम्बन (B) प्रगल्भालम्बन
(C) हारालम्बन (D) क्रोधालम्बन

स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-07)- तारिणीश झा, पेज-11

22. स्वाभिमान और सम्मान के पात्र होते हैं– UPTGT–2011

(A) राजा (B) धनवान्
(C) विद्वज्जन (D) राज्याधिकारी

नीतिशतकम् (श्लोक-12, 13, 14)- तारिणीश झा, पेज-20, 22, 24

23. सत्संगति के प्रभाव से– UPTGT–2011

(A) मनुष्य की बुद्धि तीव्र होती है
(B) सत्य और सदाचरण में उसकी प्रवृत्ति होती है
(C) मान मर्यादा और प्रतिष्ठा प्राप्त करता है
(D) पाप आदि से मुक्त होकर उपर्युक्त सभी सद्गुण विकसित होते हैं?

स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-19)- राजेश्वर प्रसाद मिश्र, पेज-58

24. 'नास्त्युद्यमसमो ....' रिक्तस्थान की पूर्ति करें? UP TGT–2004

(A) लज्जा (B) भूषणम्
(C) रिपुः (D) बन्धुः

स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-02)- राजेश्वर प्रसाद मिश्र, पेज-182

25. पर्वत के पंख काटे थे? UP TGT–2004

(A) इन्द्र (B) विष्णु
(C) शिव (D) ब्रह्मा

स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-29)- तारिणीश झा, पेज-49

12. (A) 13. (A) 14. (B) 15. (C) 16. (C) 17. (C) 18. (D) 19. (C) 20. (A) 21. (A) 22. (C) 23. (D) 24. (D) 25. (A)

26. सुप्रसिद्ध कविजन निर्धन होकर रहते हैं, तो इसमें दोषी है? UP TGT–2004

(A) प्रजा (B) राजा
(C) मन्त्री (D) सेनापति

स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-12)- तारिणीश झा, पेज-20

27. शूरवीर महीतल पर अपना प्रभाव प्रकट कर सकता है? UP TGT–2004

(A) धन से (B) ज्ञान से
(C) पराक्रम से (D) अहंकार से

स्रोत–नीतिशतकम् - राजेश्वर प्रसाद मिश्र, पेज-184

28. नीतिशतकम् में 'पूर्वतपसा खलु सञ्चितानि' हैं? UP TGT–2004

(A) कर्माणि (B) भाग्यानि
(C) फलानि (D) गुणानि

स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-98)- तारिणीश झा, पेज-158

29. (i) विद्याविहीन हैं? UP TGT–2004, BHU B.Ed–2011
(ii) भर्तृहरि ने विद्याविहीन मानव को क्या कहा?

(A) भूभारभूता (B) पशु
(C) दुर्जन (D) हृदयहीन

स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-17) - तारिणीश झा, पेज-29

30. राजनीति की तुलना की गयी है– UP TGT–2005

(A) नारी से (B) वेश्या से
(C) छाया से (D) रानी से

स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-39)- तारिणीश झा, पेज-64

31. महाराज भर्तृहरि की प्रमुख रचनाएँ हैं– UP TGT–2011

(A) नीतिशतकम् (B) श्रृङ्गारशतकम्
(C) वैराग्यशतकम् (D) उपर्युक्त तीनों ही

स्रोत–नीतिशतकम् - तारिणीश झा, भू0 पेज-08

32. धन की कौन सी गति नहीं होती है– UP TGT–2011

(A) दान (B) भोग
(C) नाश (D) सन्तोष प्राप्ति

स्रोत–नीतिशतकम् - (श्लोक -35) तारिणीश झा, पेज-58

33. नीतिशतकम् अपनी गेयता के कारण–UP TGT–2011

(A) गीतिकाव्य है (B) रीतिकाव्य है
(C) वक्रोक्तियुक्त काव्य है (D) इनमें से कोई नहीं।

स्रोत–नीतिशतकम्–राजेश्वर प्रसाद मिश्र, भू0 पेज-8, 9

34. नीतिशतककार के मतानुसार सम्पत्ति काल में महापुरुषों की मनोवृत्ति होती है? UP TGT–2005

(A) विशाल पर्वत के शिलाओं की समूह की भाँति कठोर
(B) कमल के समान कोमल
(C) पीपल पात की तरह चञ्चल
(D) पवन के समान गतिशील

स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-55)- राजेश्वर प्रसाद मिश्र, पेज-111

35. सबका आभूषण क्या है? UP TGT–2005

(A) स्वर्ण (B) धन
(C) शील (D) सत्य

स्रोत–नीतिशतकम् - राजेश्वर प्रसाद मिश्र, पेज-186

36. सबसे बड़ा साधन है? UP TGT–2005

(A) दान (B) पूजन
(C) तीर्थयात्रा (D) परहितसाधन

स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक 64) - तारिणीश झा, पेज-104

37. संसार में सबसे अधिक मनोहर तथा कष्टकारक कौन होता है? UP TGT–2005

(A) धन (B) ज्ञान
(C) रमणी (D) यश

स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक 8) परिशिष्ट-तारिणीश झा, पेज-170

38. निम्न विकल्पों में से किसे भर्तृहरि ने मूर्ख एवं दुराग्रही व्यक्ति को प्रसन्न करने की अपेक्षा अधिक सरल नहीं कहा है? UP TGT–2005

(A) मगर की दाढ़ से बलात् मणि निकाल लेना
(B) क्रुद्ध सर्प को फूल की तरह सिर पर धारण करना
(C) कभी मृगतृष्णा से जल प्राप्त करना
(D) नाव से नदी पार करना

स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-04)- तारिणीश झा, पेज-06

26. (B) 27. (C) 28. (B) 29. (B) 30. (B) 31. (D) 32. (D) 33. (A) 34. (B) 35. (C) 36. (D) 37. (C) 38. (D)

39. 'यं यं पश्यसि तस्य तस्य पुरतो मा ब्रूहि दीनं वचः''। इस सूक्ति के माध्यम से किसे शिक्षा दी जा रही है?
UP TGT–2005
(A) राजा को (B) बादल को
(C) चातक को (D) याचक को
स्रोत–नीतिशतकम् परिशिष्ट श्लोक-16-तारिणीश झा, पेज-180

40. ''आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महारिपुः। नास्त्युद्यमसमो बन्धुः कृत्वा यं नावसीदति॥'' इस श्लोक में किसका महत्त्व प्रतिपादित है?
UP TGT–2009
(A) ज्ञान का (B) धर्म का
(C) कर्म का (D) मित्र का
स्रोत–नीतिशतकम् परिशिष्ट, श्लोक-1-तारिणीश झा, पेज-163

41. साहित्य, संगीत एवं कला से अपरिचित व्यक्ति होता है? **UP TGT–2009**
(A) परममूर्ख (B) परमबुद्धिमान्
(C) परमपशु (D) परमदुष्ट
स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-3) - राजेश्वर प्रसाद मिश्र, पेज-44

42. (i) भर्तृहरि के अनुसार सर्वोत्कृष्ट आभूषण है?
(ii) भर्तृहरिमते मनुष्यस्य परं भूषणं किम्–
RPSC ग्रेड-I (PGT)–2015, UP TGT–2010
(A) विनय (B) क्षमा
(C) शील (D) वाक्संयम
स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-3)-राजेश्वर प्रसाद मिश्र, पेज-186

43. आरम्भगुर्वी क्षयिणी क्रमेण लघ्वी पुरा वृद्धिमती च पश्चात्। दिनस्य पूर्वार्द्धपरार्द्धभिन्ना छायेव मैत्री खलसज्जनानाम्। इस श्लोक में छन्द है? UP TGT–2010
(A) इन्द्रवज्रा (B) उपेन्द्रवज्रा
(C) उपजाति (D) वसन्ततिलका
स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-49)-राजेश्वर प्रसाद मिश्र, पेज-104

44. निम्न में कौन-सी कृति भर्तृहरि की नहीं है?
UK TET–2011
(A) वैराग्यशतकम् (B) नीतिशतकम्
(C) पञ्चतन्त्रम् (D) वाक्यपदीयम्
स्रोत–नीतिशतकम् -राजेश्वर प्रसाद मिश्र, पेज-09,10

45. मित्राणि तथा रिपवः जायन्ते–
RPSC ग्रेड-II (TGT)–2010, MP TET–2011
(A) कुलेन (B) ज्ञानेन
(C) जन्मना (D) व्यवहारेण
स्रोत–

46. भर्तृहरेः गुहा अस्ति। RPSC ग्रेड-II (TGT)–2010
(A) प्रयागसमीपे (B) पुष्करसमीपे
(C) कश्मीरसमीपे (D) द्वारिकासमीपे
स्रोत–

47. मनुष्य का कौन सा भूषण स्थायी है?
UP PGT–2010, UK (TET)–2011
(A) स्नान (B) उज्ज्वलहार
(C) परिष्कृत वाणी (D) इनमें से कोई नहीं
स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-16)- तारिणीश झा, पेज-27

48. कवि ने वृक्ष, मेघ तथा सत्पुरुष को कहा है?
UP (TET)–2013
(A) परोपकारी (B) अहंकारी
(C) कृष्ण (D) अतिथि
स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-62)- तारिणीश झा, पेज-101

49. वृक्ष कब झुक जाते हैं? UP TET–2013
(A) पत्तों से युक्त होने पर (B) फल आने पर
(C) फूल आने पर (D) सूख जाने पर
स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-62)- तारिणीश झा, पेज-101

50. नये जल से युक्त होने पर कौन अधिक लटक जाता है? UP TET–2013
(A) पर्वत (B) नदी
(C) समुद्र (D) मेघ (घन)
स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-62)- तारिणीश झा, पेज-101

51. समृद्धि के समय कौन अभिमान रहित होता है?
UP TET–2013
(A) राजा (B) सत्पुरुष
(C) व्यापारी (D) कृपण
स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-62) तारिणीश झा पेज-101

39. (C) 40. (C) 41. (C) 42. (C) 43. (C) 44. (C) 45. (D) 46. (B) 47. (C) 48. (A) 49. (B) 50. (D) 51. (B)

52. विद्या किं ददाति?
MP वर्ग-2 (TGT)–2011, UK TET–2011
(A) पात्रताम् (B) विनयम्
(C) धनम् (D) धर्मम्
स्रोत–हितोपदेश (श्लोक-6)- नारायण राम आचार्य, पेज-2

53. पात्रत्वाद् किं आप्नोति?
MP वर्ग-2 (TGT)–2011, UK TET–2011
(A) धनम् (B) विनयम्
(C) धर्मम् (D) पात्रताम्
स्रोत–हितोपदेश (श्लोक-6)- नारायण राम आचार्य, पेज-02

54. येन बालः न पाठितः सः पिता कीदृशः?
UK TET–2011
(A) शत्रुवत् (B) वैरीवत्
(C) हंसवत् (D) बकवत्
स्रोत–हितोपदेश (श्लोक-38)- नारायण राम आचार्य, पेज-08

55. अपठितः बालः सभामध्ये कथमिव शोभते?
UK TET–2011
(A) शत्रुवत् (B) वैरीवत्
(C) हंसवत् (D) हंसमध्ये बकवत्
स्रोत–हितोपदेश (श्लोक-38)- नारायण राम आचार्य, पेज-08

56. यः नित्यं नीतिशास्त्रं शृणोति अधीते सः कस्माद् पराभवं न आप्नोति? MP वर्ग-2 (TGT)–2011, UK TET–2011
(A) शुकात् (B) शक्रात्
(C) शावकात् (D) व्याघ्रात्
स्रोत–

57. के न भुक्ताः वयमेव भुक्ताः?
MP वर्ग-2 (TGT)–2011, UK TET–2011
(A) वयमेव (B) त्वमेव
(C) जना एव (D) भोगाः
स्रोत–भर्तृहरिशतकम् -स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती, पेज-133

58. किं न तप्तम्, वयमेव तप्ताः –
MP वर्ग-2 (TGT)–2011, UK TET–2011
(A) भोगाः (B) तपः
(C) तृष्णा (D) ते
स्रोत–भर्तृहरिशतकम् -स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती, पेज-133

59. का न जीर्णा, वयमेव जीर्णाः–
MP वर्ग-2 (TGT)–2011, UK TET–2011
(A) पक्षिणाः (B) भोगाः
(C) तृष्णा (D) ते
स्रोत–भर्तृहरिशतकम् -स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती, पेज-133

60. कः न यातः? वयमेव याताः–
MP वर्ग-2 (TGT)–2011, UK TET–2011
(A) तृष्णा (B) कालः
(C) भोगः (D) तपः
स्रोत–भर्तृहरिशतकम् -स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती, पेज-133

61. धनात् किं प्राप्यते? MP वर्ग-2 (TGT)–2011
UK TET–2011
(A) विद्या (B) विनयः
(C) धनम् (D) धर्मः
स्रोत–हितोपदेश (श्लोक-06)- नारायण राम आचार्य, पेज-02

62. या बालं न पाठयति सा माता कीदृशी?
MP वर्ग-2 (TGT)–2011, UK TET–2011
(A) शत्रु (B) वैरिणी
(C) कालिनी (D) यामिनी
स्रोत–(i) हितोपदेश (श्लोक-38)-नारायण राम आचार्य, पेज-8
(ii) चाणक्यनीति (2.11)

63. कः सुखम् आराध्यः?
MP वर्ग-2 (TGT)–2011, UK TET–2011
(A) अज्ञः (B) विशेषज्ञः
(C) मूर्खः (D) महामूर्खः
स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-03)- तारिणीश झा, पेज-04

64. सुखतरं कः आराध्यते?
MP वर्ग-2 (TGT)–2011, UK TET–2011
(A) विशेषज्ञः (B) अज्ञः
(C) मोहनः (D) सः
स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-03)- तारिणीश झा, पेज-04

52. (B)	53. (A)	54. (B)	55. (D)	56. (B)	57. (D)	58. (B)	59. (C)	60. (B)	61. (D)
62. (A)	63. (A)	64. (A)							

65. ज्ञानलवदुर्विदग्धं जनं कः न रञ्जयति? MPवर्ग-2 (TGT)–2011, UK TET–2011
(A) मूर्खः अपि (B) अज्ञः अपि
(C) विशेषज्ञः अपि (D) ब्रह्मा अपि
स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-03)- तारिणीश झा, पेज-04

66. क्षीणेषु वित्तेषु कां जानीयात्? MPTET–2011
(A) मित्रम् (B) भार्याम्
(C) शुचिम् (D) बान्धवान्
स्रोत–चाणक्यनीति (1.11)-प्रणव शुक्ल, पेज–14

67. ये धर्मं न वदन्ति, ते भवन्ति– MPTET–2011
(A) सभाः न (B) धर्माः न
(C) वृद्धाः न (D) शूराः न
स्रोत–

68. चन्दनात् अपि अधिकः शीतलः कः वर्तते? MPTET–2011
(A) चन्द्रः (B) सूर्यः
(C) तारकः (D) साधकः
स्रोत–

69. कः नरः कुलीनः, पण्डितः, श्रुतवान्, गुणज्ञः च भवति? MPTET–2011
(A) यस्य विद्या अस्ति (B) यस्य वक्तृत्वम् अस्ति
(C) यस्य वित्तम् अस्ति (D) यस्य दर्शनीयत्वम् अस्ति
स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-33)- तारिणीश झा, पेज-54

70. धीमतां कालः येन गच्छति? MPTET–2011
(A) व्यसनेन (B) काव्यशास्त्रविनोदेन
(C) निद्रया (D) कलहेन
हितोपदेश (मित्रलाभ, श्लोक-1)-नारायण राम आचार्य, पेज-12

71. मूर्खाणां समयः कथं गच्छति? MPTET–2011
(A) निद्रया (B) कलहेन
(C) निद्रया कलहेन च (D) काव्यशास्त्रविनोदेन
स्रोत–हितापदेश (मित्रलाभ, श्लोक-1)-नारायण राम आचार्य, पेज-12

72. लोभात् किं न भवति? MPTET–2011
(A) क्रोधः (B) कामः
(C) मोहः (D) पुण्यम्
हितोपदेश मित्रलाभ (श्लोक-27)-नारायण राम आचार्य, पेज-21

73. के सत्पुरुषाः भवन्ति? C-TET–2012
(A) ये पुत्रान् पालयन्ति
(B) ये स्वार्थं विहाय परोपकारं कुर्वन्ति
(C) ये स्वार्थं साधयन्ति
(D) येषां धनं नास्ति
स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-65)-तारिणीश झा, पेज-105

74. मानुषराक्षसाः किं कुर्वन्ति? C-TET–2012
(A) मांसं भक्षयन्ति (B) स्वार्थाय परहितं नाशयन्ति
(C) विद्याभ्यासं न वाञ्छन्ति (D) बन्धुहत्यां कुर्वन्ति
स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-65)- तारिणीश झा, पेज-105

75. स्वार्थाविरोधेन परहितं कुर्वाणाः के? C-TET–2012
(A) सामान्याः (B) सत्पुरुषाः
(C) देशाभिमानिनः (D) राक्षसाः
स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-65)- तारिणीश झा, पेज-105

76. ये निघ्नन्ति निरर्थकं परहितं ते के न जानीमहे– C-TET–2012
(A) अनुष्टुप्च्छन्दसि (B) मात्राच्छन्दसि
(C) शार्दूलविक्रीडितच्छन्दसि (D) वंशस्थच्छन्दसि
स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-65)-तारिणीश झा, पेज-105-107

77. कः पुत्रः? C-TET–2012
(A) यः धनं आनयेत्
(B) यः सुचरितैः पितरं प्रीणयेत्
(C) यः सदा क्रीडति
(D) यः अरण्येषु अटति
स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-60)- तारिणीश झा, पेज-98

78. सा पत्नी या– C-TET–2012
(A) भर्तुः धनमिच्छति (B) सुतं प्रसूते
(C) भर्तुः हितमिच्छति (D) प्रियं वदति
स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-60)- तारिणीश झा, पेज-98

65. (D)	66. (B)	67. (C)	68. (A)	69. (C)	70. (B)	71. (C)	72. (D)	73. (B)	74. (B)
75. (A)	76. (C)	77. (B)	78. (C)						

79. किं नाम मित्रम्? C-TET–2012
(A) यत् एकस्मात् गुरोः विद्याम् अधीते
(B) यः समीपगृहे वसति
(C) यत् सहाय्यं करोति
(D) सुखदुःखयोः समक्रियम्
स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-60)- तारिणीश झा, पेज-98

80. 'एतत्त्रयं जगति पुण्यकृतो लभन्ते' इदं पद्यं कस्मिन् वृत्ते निबद्धम्? C-TET–2012
(A) आर्या (B) अनुष्टुप्
(C) वसन्ततिलका (D) इन्द्रवज्रा
स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-60)- तारिणीश झा, पेज-98

81. ते मनुष्याः भूमौ भारः एव सन्ति।– C-TET–2012
(A) ये विद्याहीनाः (B) ये ज्ञानिनः
(C) ये परिश्रमशीलाः (D) ये दानशीलाः
स्रोत–नीतिशतकम् (परिशिष्ट श्लोक-11)-तारिणीश झा, पेज-174

82. भर्तृहरिरचित-वाक्यपदीयम् सम्बद्धम् अस्ति– C-TET–2012
(A) अष्टाध्यायी-सूत्रव्याख्यया (B) महाभाष्यस्य व्याख्यया
(C) व्याकरणदर्शनेन (D) काव्यशास्त्रसिद्धान्तेन
स्रोत–नीतिशतकम् - राजेश्वर प्रसाद मिश्र, पेज-11

83. फलोद्गमैः के नम्राः भवन्ति? C-TET–2011
(A) तरवः (B) गुरवः
(C) कुरवः (D) शत्रवः
स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-62)- तारिणीश झा, पेज-101

84. नवाम्बुभिः के दूरविलम्बिनः सन्ति? C-TET–2011
(A) फलोद्गमाः (B) सत्पुरुषाः
(C) मेघाः (D) परोपकारिणः
स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-62)- तारिणीश झा, पेज-101

85. समृद्धिभिः के उद्धताः न भवन्ति? C-TET–2011
(A) घनाः (B) शत्रवः
(C) सत्पुरुषाः (D) तरवः
स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-62)- तारिणीश झा, पेज-101

86. स्वभाव एवैष परोपकारिणाम्– इदं पद्यं कस्मिन् वृत्ते निबद्धम्? C-TET–2012
(A) वंशस्थवृत्ते (B) शार्दूलविक्रीडिते
(C) मात्रावृत्ते (D) इन्द्रवज्रावृत्ते
स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-62)- तारिणीश झा, पेज-101-102

87. पुरुषस्य भूषणं किम्? C-TET–2011
(A) अलङ्करणम् (B) विलेपनम्
(C) कर्णाभूषणम् (D) वाक्
स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-16)- तारिणीश झा, पेज-27

88. मनुष्यं किं सज्जीकरोति? C-TET–2011
(A) वाणी (B) स्नानम्
(C) विलेपनम् (D) अलङ्कृताः मूर्धजाः
स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-16)- तारिणीश झा, पेज-27

89. विद्या से हीन मनुष्य के जीवन से क्या लाभ? RPSC ग्रेड-(PGT)–2011
(A) विद्याहीनस्य नरस्य किं लाभं जीवितस्य
(B) विद्याहीनस्य नरस्य कः लाभः जीवितेन
(C) विद्याहीनस्य नरस्य जीविष्यै किं लाभम्
(D) विद्याहीनस्य नरस्य जीवितात् किं लाभम्
स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-17)- तारिणीश झा, पेज-29

90. भर्तृहरि के नीतिशतकम् में 'तदा मूर्खोऽस्मीति ज्वर इव मदो मे व्यपगतः' का तात्पर्य है– UP GDC–2008
(A) मूर्खता ज्वर है।
(B) मदमस्त हाथी मूर्ख होता है।
(C) मूर्खता मद है।
(D) बुद्धिमानों के सम्पर्क में आने पर ज्ञानी होने का नशा उतर जाता है।
स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-08)- तारिणीश झा, पेज-13

91. निम्न में से कौन सी कृति भर्तृहरि की नहीं है? UK TET–2011
(A) वैराग्यशतकम् (B) भट्टिकाव्यम्
(C) नीतिशतकम् (D) वाक्यपदीयम्
स्रोत–नीतिशतकम् - राजेश्वर प्रसाद मिश्र, भू. पेज–9, 10

79. (D)	80. (C)	81. (A)	82. (C)	83. (A)	84. (C)	85. (C)	86. (A)	87. (D)	88. (A)
89. (B)	90. (D)	91. (B)							

92. यत्र पादत्रये कथां प्रति पद्यस्य अन्तिमपादे नीतिः उच्यते तादृशं काव्यं किम्? DSSSB TGT–2014

(A) चण्डीशतकम् (B) मयूरशतकम्

(C) उपदेशशतकम् (D) नीतिशतकम्

स्रोत–

93. 'अनुत्तम' का क्या अर्थ है? BHU MET–2009

(A) जो अच्छा न हो

(B) जिससे उत्कृष्ट कोई और न हो

(C) उत्तमता का अभाव

(D) व्यर्थ

स्रोत–संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेजी शब्दकोश-उमाप्रसाद पाण्डेय, पेज–45

94. नीतिशतकम् में राजनीति को कितने स्वरूपों को धारण करने वाली कहा गया है? UP TGT–2013

(A) 8 (B) 9

(C) 10 (D) 11

स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-39)-तारिणीश झा, पेज–64

95. नीतिशतकम् के अनुसार धन की कितने दशायें होती हैं? UP TGT–2013

(A) 2 (B) 4

(C) 3 (D) 5

स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-35)- तारिणीश झा, पेज-58

96. ''सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः'' श्लोकांश में 'परमगहनो' का क्या अर्थ है? UP TGT–2001

(A) अत्यन्त कठिन (B) असंगत बोलने वाले

(C) धोखा न देने वाले (D) लज्जावाली

स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-48)- तारिणीश झा, पेज-79

97. ''ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रह्मापि नरं न रञ्जयति''-श्लोकांश में 'रञ्जयति' का तात्पर्य है। UP TGT–2003

(A) मूर्ख (B) ज्ञाता

(C) बलपूर्वक (D) प्रसन्नकरना

स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-03)- तारिणीश झा, पेज-04

98. ''मूर्ध्नि वा सर्वलोकस्य शीर्यते वन एव वा'' श्लोकांश में 'मूर्ध्नि' शब्द का अर्थ है? UP TGT–2003

(A) आगे (B) पीछे

(C) ऊपर (D) नीचे

स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-26)- तारिणीश झा, पेज-44

99. 'कन्था' शब्द का अर्थ है– UP TGT–2003

(A) जीर्णवस्त्र (B) सरलता

(C) तुच्छता (D) समुद्र

स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-74)- तारिणीश झा, पेज-121

100. ''न हि गणयति क्षुद्रो जन्तुः परिग्रहफल्गुताम्'' इस वाक्य में 'गणयति' का तात्पर्य है। UP TGT–2005

(A) गणना करने से (B) संख्या गिनने से

(C) विचारने से (D) शत्रुता करने से

स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-9)- तारिणीश झा, पेज-14

101. ''शूरे निर्घृणता मुनौ विमतिता दैन्यं प्रियालापिनि''- इस श्लोकांश में 'निर्घृणता' का क्या अर्थ है। UP TGT–2005

(A) घृणा (B) निर्दयता

(C) सज्जनता (D) दुर्जनता

स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-44)-तारिणीश झा, पेज-71

102. 'नागेन्द्र' का अर्थ है– UP TGT–2009

(A) नागों का राजा (B) श्रेष्ठ हाथी

(C) नागलोक का स्वामी (D) पर्वतराज

स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-11)-तारिणीश झा, पेज-19-20

103. 'शूली' का अर्थ है– UP TGT–2010

(A) भालेवाला (B) शिव

(C) काँटेदार (D) कष्टप्रद

स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-52)-तारिणीश झा, पेज-84-85

104. 'लुब्धक' का अर्थ है– UP TGT–2010

(A) लोभी (B) लुभावना

(C) उपलब्ध (D) बहेलिया

स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-51)-तारिणीश झा, पेज-83

92. (D) 93. (B) 94. (C) 95. (C) 96. (A) 97. (D) 98. (C) 99. (A) 100. (C) 101. (B) 102. (B) 103. (B) 104. (D)

105. (i) ''सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ते'' यह उक्ति कहाँ प्राप्त होती है– UP TGT–2010,
(ii) ''सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ति'' सूक्ति किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है? BHU MET–2009, 2011, 2012, 2013

(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (B) अमरुकशतकम्
(C) नीतिशतकम् (D) चौरपञ्चाशिका

स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-33)-तारिणीश झा, पेज-55

106. ''सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ति'' किसकी उक्ति है– UP GIC–2009

(A) कालिदास (B) भर्तृहरि
(C) वाल्मीकि (D) माघ

स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-33)-तारिणीश झा, पेज-55

107. ''यां चिन्तयामि सततं मयि सा विरक्ता'' पंक्ति किस पुस्तक से उद्धृत है– UP PGT–2010, UK TET–2011

(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (B) मेघदूतम्
(C) उत्तररामचरितम् (D) नीतिशतकम्

स्रोत–नीतिशतकम् (परिशिष्ट, श्लोक-21)-तारिणीश झा, पेज-185

108. ''दुर्जनः परिहर्तव्यो विद्ययालङ्कृतोऽपि सन्'' यह वचन किसने कहा है? UP TGT–1999

(A) भवभूति ने (B) कालिदास ने
(C) भर्तृहरि ने (D) भारवि ने

स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-43)-तारिणीश झा, पेज-70

109. 'न मूर्खजनसम्पर्कः सुरेन्द्रभवनेष्वपि' यह सूक्ति कहाँ प्राप्त होती है? BHU MET–2016

(A) हितोपदेश (B) पञ्चतन्त्र
(C) शुकनासोपदेश (D) नीतिशतक

स्रोत–नीतिशतकम् (परिशिष्ट श्लोक-12)-तारिणीश झा, पेज-175

110. ''विधिरहो बलवानिति मे मतिः'' यह सुभाषित किस ग्रन्थ में है– UP TGT–1999, 2009

(A) नीतिशतकम् में
(B) उत्तररामचरितम् में
(C) कादम्बरी (शुकनासोपदेश) में
(D) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में

स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-86)-तारिणीश झा, पेज-138

111. ''मन्यामहे मलयमेव यदाश्रयेण कङ्कोलनिम्बकुटजा अपि चन्दनाः स्युः'' यह श्लोकांश किस ग्रन्थ से उद्धृत है? UP TGT–1999

(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से (B) नीतिशतकम् से
(C) उत्तररामचरितम् से (D) शुकनासोपदेश से

स्रोत–नीतिशतकम् (परिशिष्ट, श्लोक-17)-तारिणीश झा, पेज-181

112. ''विद्याविहीनः पशुः'' यह उक्ति किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है– UP TGT–2001

(A) नीतिशतकम् से (B) मेघदूतम् से
(C) उत्तररामचरितम् से (D) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से

स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-17)-तारिणीश झा, पेज-29

113. ''प्रारब्धमुत्तमजना न परित्यजन्ति'' श्लोकांश उद्धृत है– UP TGT–2001

(A) मेघदूतम् से (B) कादम्बरी से
(C) नीतिशतकम् से (D) किरातार्जुनीयम् से

स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-73)-तारिणीश झा, पेज-119

114. ''भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्ताः'' यह श्लोकांश किस ग्रन्थ से उद्धृत है? UP TGT–2004

(A) अमरुशतक से (B) नीतिशतक से
(C) मुद्राराक्षस से (D) वैराग्यशतक से

स्रोत–वैराग्यशतकम् – स्वामी विदेहात्मानन्द, पेज–5

115. ''सेवाधर्मो परमगहनो योगिनामप्यगम्यः'' कथन है– UP TGT–2009

(A) भवभूति का (B) भर्तृहरि का
(C) कालिदास का (D) भारवि का

स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-48)- तारिणीश झा, पेज-78

116. नीतिशतकम् मे कितनी पद्धतियाँ हैं? BHU MET–2011

(A) 09 (B) 10
(C) 18 (D) 12

स्रोत–नीतिशतकम् - तारिणीश झा, भू. पेज–09

105. (C) 106. (B) 107. (D) 108. (C) 109. (D) 110. (A) 111. (B) 112. (A) 113. (C) 114. (D) 115. (B) 116. (B)

117. ''अज्ञः सुखमाराध्यः सुखतरमाराध्यते विशेषज्ञः'' कस्य ग्रन्थस्य वर्तते– MP वर्ग-2 (TGT)–2011, UK TET–2011

(A) नीतिशतकस्य (B) पञ्चतन्त्रस्य
(C) हितोपदेशस्य (D) कथासरित्सागरस्य

स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-03)- तारिणीश झा, पेज-04

118. ''विपदि धैर्यमथाभ्युदये क्षमा'' यह पंक्ति किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है– UP TGT–2013

(A) उत्तररामचरितम् (B) किरातार्जुनीयम्
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (D) नीतिशतकम्

स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-53)- तारिणीश झा, पेज-86

119. ''मा ब्रूहि दीनं वचः'' यह उक्ति किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है– UP TGT–2013

(A) उत्तररामचरितम् (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(C) किरातार्जुनीयम् (D) नीतिशतकम्

स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-3)- राजेश्वर प्रसाद मिश्र, पेज-92

120. ''प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः'' के कर्ता कौन हैं– UP PGT (H)–2013

(A) भास (B) भर्तृहरि
(C) भवभूति (D) भारवि

स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-72)-राजेश्वर प्रसाद मिश्र, पेज-138

121. 'न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः' – यह उक्ति कहाँ प्राप्त होती है? BHU MET–2016

(A) अभिज्ञानशाकुन्तल (B) किरातार्जुनीय
(C) नीतिशतक (D) चौरपञ्चाशिका

स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-75)-तारिणीश झा, पेज-122

122. 'साहित्यसंगीतकलाविहीनः साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः।' उक्ति कहाँ से उद्धृत है? H-TET–2015

(A) विदुरनीति से (B) वैराग्यशतक से
(C) नीतिशतक से (D) महाभारत से

स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-3)-राजेश्वर प्रसाद मिश्र, पेज-44

123. ''सर्वे गुणाः .... आश्रयन्ति।'' रिक्तस्थानं पूरयित्वा सूक्तिं निर्मापयत– REET–2016

(A) निधानम् (B) काञ्चनम्
(C) सौन्दर्यम् (D) ज्ञानम्

स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-33)- तारिणीश झा, पेज-55

124. 'न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति' वाक्यमिदं लोट्लकारे परिवर्तयत– REET–2016

(A) न्याय्यात् पथः प्रविचलिष्यति
(B) न्याय्यात् पथः प्रविचलेत्
(C) न्याय्यात् पथः प्रविचलन्तु
(D) न्याय्यात् पथः अविचलत्

स्रोत–रूपचन्द्रिका- ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज-139

125. नीतिशतके भर्तृहरेः भार्यायाः नाम किम्? RPSC ग्रेड-I (PGT)–2014

(A) मनोवती (B) रागिनी
(C) अवन्तिका (D) पिङ्गला

स्रोत–नीतिशतकम्- राजेश्वर प्रसाद मिश्र, भू0 पेज-09

117. (A) 118. (D) 119. (D) 120. (B) 121. (C) 122. (C) 123. (B) 124. (C) 125. (D)

24 मुक्तककाव्य/गीतिकाव्य/खण्डकाव्य के विविध प्रश्न

1. किस प्रकार के काव्य को 'एकदेशानुकारि' कहा गया है? UP GIC–2009

(A) खण्डकाव्य (B) महाकाव्य
(C) गद्यकाव्य (D) चम्पूकाव्य

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-521

2. 'खण्डकाव्य' कहा जाता है जो– UP PGT–2013

(A) काव्य के एक देश का अनुसरण करता है।
(B) खण्डों में विभक्त होता है।
(C) खण्डिता नायिका के चरित पर आधारित हो।
(D) महाकाव्य के कुछ सर्गों का निबद्धीकरण हो।

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-521

3. निम्नलिखित में से कौन गीतिकाव्य का ग्रन्थ नहीं है? UP TGT–2010

(A) कुमारसम्भवम् (B) ऋतुसंहारम्
(C) मेघदूतम् (D) B और C दोनों

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-138

4. अधोलिखित में से कौन-सा काव्य गीतिकाव्य नहीं है? UP GIC–2008

(A) अमरुकशतक (B) गीतगोविन्दम्
(C) मत्तविलासः (D) भामिनीविलासः

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-443

5. शतकत्रय में सम्मिलित नहीं है– UGC 25 J–2004

(A) नीतिशतक (B) अमरुकशतक
(C) वैराग्यशतक (D) शृङ्गारशतक

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-541

6. विदुर किसको नीति का बोध कराते हैं? UGC 73 J–2012

(A) श्रीकृष्णम् (B) धृतराष्ट्रम्
(C) दुर्योधनम् (D) युधिष्ठिरम्

स्रोत–विदुरनीति- गुञ्जेश्वर चौधरी, भू0 पेज-3

7. गीतगोविन्दकाव्यस्य कः विषयः? BHU Sh.ET–2008

(A) नीतिः (B) भक्तिः
(C) अर्थनीतिः (D) समाजनीतिः

स्रोत–गीतगोविन्द- रामचन्द्र वर्मा शास्त्री, भू0 पेज-11

8. पञ्चतन्त्रे कस्य राज्ञो मूर्खपुत्रान् विष्णुशर्मा प्राज्ञान् करोति? DSSSB PGT–2014, DSSSB TGT–2014

(A) पाषाणबुद्धेः (B) जडबुद्धेः
(C) अमरशक्तेः (D) दुर्बलशक्तेः

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-578

9. अमरुकशतकं वर्तते– AWES TGT–2008

(A) महाकाव्य (B) मुक्तककाव्य
(C) आख्यायिका (D) लोककथा

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-348

10. विक्रमोर्वशीयम् है? BHU MET–2016

(A) त्रोटक (B) नाटिका
(C) प्रकरण (D) भाण

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-329

11. गद्यपद्यात्मक-श्रव्यकाव्यस्य नाम– K SET–2013

(A) नाटकम् (B) लघुकाव्यम्
(C) चित्रकाव्यम् (D) चम्पूकाव्यम्

स्रोत–साहित्यदर्पण- शालिग्राम शास्त्री, पेज-227

12. वैराग्यशतक किस प्रकार की रचना है? UP TGT – 2004

(A) ऐतिहासिक (B) महाकाव्य
(C) खण्डकाव्य (D) व्याकरणग्रन्थ

स्रोत–नीतिशतकम् - राकेश शास्त्री, भू. पेज–11, 16

1. (A) 2. (A) 3. (A) 4. (C) 5. (B) 6. (B) 7. (B) 8. (C) 9. (B) 10. (A) 11. (D) 12. (C)

25 कवि परिचय

1. (i) आदिकवि के नाम से किसको जाना जाता है?
(ii) आदिकवि के रूप में किसको जाना जाता है?
(iii) संस्कृतसाहित्ये आदिकविरूपेण कः प्रसिद्धः?
(iv) आदिकविः वर्तते– BHU MET– 2011,
(v) संस्कृतभाषा में 'आदिकवि' की उपाधि से विभूषित कवि हैं– BHU AET– 2011, H TET–2015 BHU B.Ed– 2011, UP TET– 2014, UGC 73 D– 2004, J–2016, RPSC SET–2010

(A) व्यास (B) तुलसीदास
(C) वाल्मीकि (D) कालिदास

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-122

2. वाल्मीके अपरमभिधानमस्ति– AWES TGT– 2012

(A) कविकुलगुरुः (B) पदवाक्यप्रमाणज्ञः
(C) सुरगुरुः (D) आदिकविः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-134

3. वाल्मीकि किस वंश के माने गये हैं? BHU AET–2011

(A) कुरुवंश (B) यदुवंश
(C) रघुवंश (D) भृगुवंश

स्रोत–कविर्जयति वाल्मीकिः - आनन्द कुमार श्रीवास्तव, पेज-114

4. महर्षि वाल्मीकि आश्रम स्थापित है– UP PCS– 2007

(A) श्रावस्ती में (B) बिठूर में
(C) काल्पी में (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–कविर्जयति वाल्मीकिः - आनन्द कुमार श्रीवास्तव, पेज-119

5. संस्कृते आर्षकविरूपेण प्रतिष्ठितः अस्ति– DL– 2014

(A) सुबन्धुः (B) भासः
(C) कालिदासः (D) वाल्मीकिः

संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-134

6. तमसा नदी के तट पर किसका आश्रम था? BHU MET– 2008, 2009, 2013

(A) वाल्मीकि का (B) दुर्वासा का
(C) कण्व का (D) विश्वामित्र का

संस्कृत साहित्य का इतिहास- राकेश कुमार जैन/मनमोहन शर्मा, पेज-61

7. (i) 'शोकः श्लोकत्वमागतः' उक्ति किससे सम्बद्ध है–
(ii) को नामासौ कविर्यस्य शोकः श्लोकत्वमागतः? BHU AET– 2011

(A) वाल्मीकिः (B) व्यासः
(C) भासः (D) कालिदासः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-140

8. (i) किंवदन्ती के अनुसार वाल्मीकि कवि बनने के पूर्व क्या थे?
(ii) किंवदन्ती के अनुसार प्रारम्भिक जीवन में वाल्मीकि क्या थे? BHU AET– 2010, 2011

(A) डकैत (B) संन्यासी
(C) ब्रह्मचारी (D) कोई नहीं

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास- राकेश कुमार जैन/मनमोहन शर्मा, पेज-61

9. महर्षि व्यास का दूसरा नाम क्या था? BHU AET– 2011

(A) कात्यायन (B)कृष्णद्वैपायन
(C) पराशर (D) भृगु

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-145

10. व्यासस्य पितामहः क आसीत्? UGC 25 S– 2013

(A) शक्तिः (B) पराशरः
(C) द्वैपायनः (D) विश्वामित्रः

स्रोत– पुराण विमर्श - बलदेव उपाध्याय, पेज-63

11. (i) महाभारतानुसारं वेदव्यासस्य मातुः नाम आसीत्?
(ii) महर्षि व्यास की माता का क्या नाम था– BHU AET– 2010, 2011, UGC 25 J–2016

(A) सत्यवती (B) कुन्ती
(C) शकुन्तला (D) गान्धारी

संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-145

1. (C) 2. (D) 3. (D) 4. (B) 5. (D) 6. (A) 7. (A) 8. (A) 9. (B) 10. (A) 11. (A)

12. महर्षिवेदव्यासस्य पुत्रस्य नाम आसीत्– **AWES TGT–2010**

(A) रामदेवः (B) नामदेवः
(C) शुकदेवः (D) सोमदेवः

संस्कृत साहित्य का इतिहास-राकेश कुमार जैन/मनमोहन शर्मा, पेज-71

13. कृष्णद्वैपायन के शिष्यों में कौन नहीं हैं? **BHU AET–2010**

(A) पैल (B) वैशम्पायन
(C) आरुणि (D) जैमिनि

संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड–3)-बलदेव पेज-437

14. बादरायणः कः? **BHU AET–2012**

(A) शुकः (B) नारदः
(C) सूतः (D) व्यासः

संस्कृत साहित्य का इतिहास-राकेश कुमार जैन/मनमोहन शर्मा , पेज-72

15. कः सत्यवतीसुतः? **BHU AET–2012**

(A) पराशरः (B) शुकः
(C) व्यासः (D) शान्तनुः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-145

16. निम्नलिखित में कौन कालक्रम में प्रथम हैं? **UP GDC–2008**

(A) भास (B) भवभूति
(C) कालिदास (D) शूद्रक

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-465

17. निम्नलिखित में से कौन कवि कालिदास से पूर्ववर्ती हैं– **UP PGT (H)–2005**

(A) भारवि (B) भास
(C) दण्डी (D) भवभूति

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-465

18. (i) महाकविभासप्रणीतानि .... रूपकाणि सन्ति?
(ii) भासस्य नाटकानां संख्या मन्यते–
(iii) भास द्वारा लिखित उपलब्ध नाटकों की संख्या है–
RPSC ग्रेड-II (TGT)–2010, GJ SET–2014
MP वर्ग-1 (PGT)–2012, UP GIC–2009

(A) त्रीणि (3) (B) त्रयोदश (13)
(C) त्रिंशत् (30) (D) दश (10)

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-465

19. का रचना भासस्य नास्ति– **JNU MET–2015**

(A) स्वप्नवासवदत्तम् (B) चारुदत्तम्
(C) ऊरुभङ्गम् (D) मृच्छकटिकम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-466

20. भासस्य महाभारताधारित-नाटकानां संख्या वर्तते– **RPSC ग्रेड-II TGT–2014**

(A) सप्त (7) (B) नव (9)
(C) अष्ट (8) (D) त्रयोदश (13)

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-466

21. कस्य रूपकेषु प्रस्तावना स्थापना इत्युच्यते– **UGC 25 J–2010, 2012**

(A) शूद्रकस्य (B) श्रीहर्षस्य
(C) भासस्य (D) भट्टनारायणस्य

संस्कृत साहित्य का इतिहास-राकेश कुमार जैन/मनमोहन शर्मा, पेज-229

22. नाटकचक्रं कस्य प्रसिद्धम्? **BHU Sh. ET–2011**

(A) कालिदासस्य (B) माघस्य
(C) भवभूतेः (D) भासस्य

संस्कृत साहित्य का इतिहास-राकेश कुमार जैन/मनमोहन शर्मा, पेज-224

23. भासस्य रामायणाधृतं नाटकमस्ति– **RPSC SET–2013-14**

(A) प्रतिमानाटकम् (B) स्वप्नवासवदत्तम्
(C) प्रतिज्ञायौगन्धरायणम् (D) कर्णभारः

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-276

24. 'सर्वशोभनीयं सुरूपं नाम' इस उक्ति के रचयिता कौन हैं? **BHU MET–2016**

(A) कालिदास (B) भास
(C) भवभूति (D) शूद्रक

भासनाटकचक्रम् (भाग-2, प्रतिमानाटकम्) रामचन्द्र मिश्र , पेज-20

25. संस्कृतसाहित्ये कविताकामिन्याः हासः कः कथ्यते– **RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011**

(A) भासः (B) कालिदासः
(C) वत्सराजः (D) जगन्नाथः

संस्कृत साहित्य का इतिहास-राकेश कुमार जैन/मनमोहन शर्मा, पेज-225

12. (C) 13. (C) 14. (D) 15. (C) 16. (A) 17. (B) 18. (B) 19. (D) 20. (A) 21. (C) 22. (D) 23. (A) 24. (B) 25. (A)

26. कविकुलगुरुः कः? UGC 25 D– 2010

(A) माघः (B) कालिदासः
(C) अश्वघोषः (D) भारविः

स्रोत– संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-218

27. (i) कालिदास किस राजा के आश्रित कवि थे?
(ii) कालिदास किसके शासनकाल में थे?
UP TGT– 2009, MP PSC– 1990

(A) चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य II (B) धवलचन्द्र
(C) अवन्तिवर्मा (D) यशोवर्मा

स्रोत– मेघदूतम् - दयाशंकर शास्त्री, भू० पेज-9

28. (i) कालिदासः केनोपाधिना विभूषितः –
(ii) महाकवेः कालिदासस्योपाधिरस्ति–
BHU AET– 2010, JNU MET– 2014

(A) स्वर्णशिखा (B) अग्निशिखा
(C) दीपशिखा (D) रत्नशिखा

स्रोत– संस्कृत सुकवि समीक्षा - बलदेव उपाध्याय, पेज-78

29. (i) 'दीपशिखा' बिरुदाङ्कितः कविः –
(ii) 'दीपशिखा' शब्द किससे सम्बद्ध है?
(iii) दीपशिखा नाम्ना प्रसिद्धकविरस्ति–
BHU MET–2016, K SET–2013, MGKV Ph. D–2016

(A) श्रीहर्ष (B) भारवि
(C) बाणभट्ट (D) कालिदास

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-159

30. (i) कः कवि स्वोपमायाः कृते प्रसिद्धः –
(ii) उपमालङ्कारे कः कविः प्रसिद्धः –
AWES TGT– 2008, 2012, K SET–2015

(A) कालिदासः (B) श्रीहर्षः
(C) माघः (D) बाणभट्टः

स्रोत– मेघदूतम् - दयाशंकर शास्त्री, भू० पेज-24

31. (i) महाकवि कालिदास किस अलङ्कार के लिए प्रसिद्ध हैं?
(ii) कालिदासः कस्यालङ्कारप्रयोगे सर्वश्रेष्ठ आसीत्?
(iii) कालिदास किसी एक विशिष्ट अलङ्कार के प्रयोग में अतुलनीय हैं, वह अलङ्कार है?
UP TGT (H) 2005, 2009, MP (वर्ग- 2) TGT– 2011, UK TET– 2011, UP TGT–2011

(A) उपमा (B) श्लेष
(C) उत्प्रेक्षा (D) यमक

संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-223

32. वैदर्भीरीतिसन्दर्भे.....विशिष्यते– BHU AET– 2010

(A) भवभूतिः (B) बाणभट्टः
(C) कालिदासः (D) अभिनन्दः

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-346

33. कालिदास के संस्कृत नाटकों में स्त्री एवं शूद्र चरित्र किस भाषा में बोलते हैं? NVS TGT–2016

(A) संस्कृत (B) पाली
(C) प्राकृत (D) ब्राह्मी

स्रोत– महाकवि कालिदास - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज–157

34. 'दीपशिखा' इति उपाधिः कस्मै कवये प्रदत्तः?
RPSC SET–2010

(A) भारवये (B) कालिदासाय
(C) माघाय (D) अश्वघोषाय

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-159

35. 'क इह .... न रमते'– BHU AET– 2010

(A) रघुकारे (B) कालिदासे
(C) मेघदूते (D) शाकुन्तले

संस्कृत साहित्य का इतिहास-राकेश कुमार जैन/मनमोहन शर्मा, पेज-98

36. 'अमृतेनेव संसिक्ताः चन्दनेनैव चर्चिताः' – इत्युक्तिः कं लक्षयति– UGC 25 D–2015

(A) भासम् (B) बाणभट्टम्
(C) शूद्रकम् (D) कालिदासम्

स्रोत– मेघदूतम् - दयाशंकर शास्त्री, भू. पेज–43

37. (i) महाकविकालिदासस्य कति नाटकानि सन्ति–
(ii) वर्तमान में कालिदास के कितने नाटक उपलब्ध हैं–
(iii) अभिज्ञानशाकुन्तलम् सहित कालिदास ने कितने नाटक लिखे हैं? BHU MET– 2013,
(iv) कालिदासकृतनाटकानि सन्ति? BHU B.Ed– 2013, MP वर्ग-1 (PGT)– 2012, UP PGT–2011

(A) चत्वारि (4) (B) पञ्च (5)
(C) षट् (6) (D) त्रीणि (3)

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-478

38. कथा साहित्यकार नहीं हैं? UGC 25 D– 2003

(A) विष्णुशर्मा (B) नारायणपण्डित
(C) सोमदेव (D) कालिदास

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी , भू. पेज-49

26. (B)	**27. (A)**	**28. (C)**	**29. (D)**	**30. (A)**	**31. (A)**	**32. (C)**	**33. (C)**	**34. (B)**	**35. (A)**
36. (D)	**37. (D)**	**38. (D)**							

39. कालिदास किस रीति के कवि हैं? UP PGT–2011
(A) वैदर्भी (B) गौडी
(C) पाञ्चाली (D) लाटी

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-220

40. कवि कालिदास के सम्बन्ध में कौन-सा कथन असत्य है– UP PGT– 2010
(A) कालिदास ने अपने किसी भी ग्रन्थ में अपने जीवन से सम्बद्ध किसी भी बात का उल्लेख नहीं किया है।
(B) वे कश्मीर के निवासी थे।
(C) कालिदास का उज्जयिनी के प्रति विशेष आग्रह था।
(D) वे शिव की उपासना करते थे।

संस्कृत साहित्य का इतिहास-राकेश कुमार जैन/मनमोहन शर्मा, पेज-93-94

41. सन्देशकाव्यप्रस्थानं केन समारब्धम्–UGC 25 J– 2010
(A) अश्वघोषेण (B) कालिदासेन
(C) कुन्तकेन (D) वामनेन

संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-340

42. लघुत्रयीति संज्ञया प्रथितस्य काव्यत्रयस्य प्रणेता कविः वर्तते– UP GDC– 2012
(A) क्षेमेन्द्रः (B) जयदेवः
(C) बिल्हणः (D) कालिदासः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-208

43. (i) 'सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तःकरणप्रवृत्तयः' इति कस्य उक्तिः? UGC 25 D– 2008,
(ii) 'सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तः करणप्रवृत्तयः' इति वाक्यं वर्तते– UP GIC– 2015
(A) भर्तृहरेः (B) कालिदासस्य
(C) भासस्य (D) भवभूतेः

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/22) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-54

44. 'सरस्वती श्रुतमहतां महीयताम्' इति केनोक्तम्? UGC 25 D– 2012
(A) वाल्मीकिना (B) कालिदासेन
(C) भवभूतिना (D) श्रीहर्षेण

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (7/35)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-453

45. (i) ''आ परितोषाद्विदुषां न साधु मन्ये प्रयोगविज्ञानम्''– इति वाक्यं वर्तते– UGC 25 J– 2008,
(ii) 'आ परितोषाद्विदुषां न साधु मन्ये प्रयोगविज्ञानम्' इतीयं कस्योक्तिः? BHU AET– 2010
(A) भासस्य (B) भारवेः
(C) कालिदासस्य (D) भवभूतेः

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/02) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-8

46. ''अज्ञातहृदयेष्वेवं वैरीभवति सौहृदम्''– इति वाक्यस्य कर्ता वर्तते– UGC 25 J– 2009
(A) भारविः (B) कालिदासः
(C) माघः (D) श्रीहर्षः

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (5/24)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-291

47. 'न प्रभातरलं ज्योतिरुदेति वसुधातलात्'– यह सूक्ति जिसकी है, वह है– BHU MET– 2015
(A) कालिदास (B) वाल्मीकि
(C) दण्डी (D) माघ

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/26) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-73

48. ''अर्थो हि कन्या परकीय एव'' इति वाक्यस्य कर्ता वर्तते– UGC 25 D– 2009
(A) कालिदासः (B) माघः
(C) श्रीहर्षः (D) भारविः

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/22) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-240

49. केनोक्तम्– 'न धर्मवृद्धेषु वयः समीक्ष्यते?' AWES TGT– 2009
(A) शूद्रकेण (B) भवभूतिना
(C) अश्वघोषेन (D) कालिदासेन

संस्कृत साहित्य का इतिहास - राकेश कुमार जैन, पेज-99

50. 'नाद्यन्ते ततः प्रविशति सूत्रधारः' इति कस्य कवेः नाटकानां प्रारम्भे विद्यते– BHU AET– 2010 K SET–2014
(A) कालिदासस्य (B) हर्षस्य
(C) भासस्य (D) भवभूतेः

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-05, 15

39. (A)	40. (B)	41. (B)	42. (D)	43. (B)	44. (B)	45. (C)	46. (B)	47. (A)	48. (A)
49. (D)	50. (A)								

51. 'पुराणमित्येव न साधु सर्वम्' – इस उक्ति का रचयिता कौन है? BHU MET–2016

(A) व्यास (B) वाल्मीकि
(C) भास (D) कालिदास

स्रोत– मालविकाग्निमित्रम् (1/2) - रमाशंकर पाण्डेय, पेज–04

52. कालिदास की रचना 'रघुवंशम्' है– UP TGT (H)–2001

(A) एक खण्डकाव्य (B) एक गीतिकाव्य
(C) एक मुक्तककाव्य (D) एक महाकाव्य

स्रोत– संस्कृत साहित्य का इतिहास-राकेश कुमार जैन ,पेज-95

53. कालिदासकृत-काव्यानां सञ्जीवनी-टीकाकृतास्ति– BHU AET–2010

(A) मल्लिनाथः (B) दक्षिणावर्तनाथः
(C) अरुणगिरिनाथः (D) प्रमथनाथः

स्रोत– मेघदूतम् -शेषराज शर्मा 'रेग्मी',भू0 पेज-23

54. निम्न अभिलेखों में से किसमें कालिदास का नाम मिलता है? MP PSC– 2005

(A) मथुरा स्तम्भलेख गुप्तसंवत् 61 (B) उदयगिरि गुहालेख
(C) साँची का लेख (D) ऐहोल का लेख

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0 पेज-13

55. (i) कालिदासः कस्यालङ्कारस्य प्रयोगे निपुणः?
(ii) कालिदासः कस्यालङ्कारप्रयोगे सर्वश्रेष्ठ आसीत्? CVVET–2015, MP वर्ग-1 (TGT)–2011

(A) अर्थान्तरन्यासस्य (B) निदर्शनालङ्कारस्य
(C) उपमालङ्कारस्य (D) रूपकालङ्कारस्य

संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-223

56. कवेः अश्वघोषस्य मातुः नाम आसीत्? RPSC ग्रेड-II (TGT)– 2014

(A) कनकाक्षी (B) मीनाक्षी
(C) हरिणाक्षी (D) सुवर्णाक्षी

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-226

57. 'सौन्दरनन्द' किसकी रचना है? MP PCS– 1991

(A) अश्वघोष (B) बाणभट्ट
(C) भवभूति (D) भास

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-227

58. अश्वघोषः कस्य धर्मस्य प्रचारार्थं काव्यानि अलिखत्– UGC 25 J– 2013

(A) जैनधर्मस्य (B) बौद्धधर्मस्य
(C) सिखधर्मस्य (D) ख्रिष्टधर्मस्य

स्रोत–संस्कृत सुकवि समीक्षा- बलदेव उपाध्याय, पेज-121

59. अश्वघोष के ग्रन्थ किस भाषा में लिखे गये हैं? Chh. PSC– 2005

(A) पालि (B) प्राकृत
(C) संस्कृत (D) हिन्दी

संस्कृत साहित्य का इतिहास-बलदेव उपाध्याय, पेज-170-171

60. (i) अश्वघोष किसका समकालीन था?
(ii) प्रसिद्ध बौद्ध विद्वान् अश्वघोष किसके समकालीन थे? UK PCS– 2009, MPPSC– 1995

(A) अशोक (B) कनिष्क
(C) नागार्जुन (D) हर्ष

स्रोत–संस्कृत सुकवि समीक्षा- बलदेव उपाध्याय, पेज-123

61. भारवि थे– UP TGT– 2010

(A) दाक्षिणात्य (B) औदीच्य
(C) पश्चिमीभारत के (D) पूर्वीभारत के

स्रोत–किरातार्जुनीयम्- रामसेवक दुबे, भू0 पेज -13

62. भारवि के आश्रयदाता थे– UP TGT– 2010

(A) पुलकेशिन का भाई (B) हर्ष
(C) यशोवर्मा (D) पुलकेशिन

स्रोत–किरातार्जुनीयम्- रामसेवक दुबे, भू0 पेज -14

63. भारविः कस्योपासकः आसीत्? UGC 25 D– 2000

(A) ब्रह्मणः (B) विष्णोः
(C) शिवस्य (D) पार्वत्याः

स्रोत–किरातार्जुनीयम्- रामसेवक दुबे, भू0 पेज -13

64. वश्यभट्टेन तुलना केन– UK SLET– 2012

(A) कालिदासेन (B) माघेन
(C) बाणभट्टेन (D) भारविना

स्रोत–

51. (D) 52. (D) 53. (A) 54. (D) 55. (C) 56. (D) 57. (A) 58. (B) 59. (C) 60. (B)
61. (A) 62. (A) 63. (C) 64. (D)

65. (i) महाकविः भारविः प्रसिद्धः? UGC 25 D– 2011,
(ii) भारविः केन कारणेन प्रसिद्धः? DSSSB PGT– 2014,
(iii) भारवि क्यों प्रसिद्ध हैं? UGC 73 J– 2008,
(iv) भारवेः काव्यस्य किं वैशिष्ट्यं प्रसिद्धम्?
(v) भारविः कथं प्रसिद्धः? DSSSB TGT– 2014, GJ SET–2011, RPSC SET–2013-14

(A) अर्थगौरवात् (B) शब्दप्रयोगात्
(C) उपमाप्रयोगात् (D) शब्दालङ्कारप्रयोगात्

स्रोत–किरातार्जुनीयम्- रामसेवक दुबे, भू० पेज -25

66. अर्थगौरव के लिए कौन कवि प्रसिद्ध हैं?
(ii) कस्य कवेरर्थगौरवं स्तुतम्? UP TGT– 2009,
(iii) अर्थगौरवे कस्य कवेः श्रेष्ठता –
(iv) संस्कृतसाहित्य में अर्थगौरव के लिये प्रसिद्ध हैं? UP PGT– 2002, 2009, UP PGT (H)– 2005, UP TET– 2013, BHU MET– 2008, BHU AET– 2010, BHU Sh.ET– 2013

(A) माघ (B) दण्डी
(C) भारवि (D) कालिदास

स्रोत–किरातार्जुनीयम्- रामसेवक दुबे, भू० पेज -25

67. महाकवि भारवि किस शैली के प्रवर्तक माने जाते हैं? UP TGT– 2005

(A) सरल (B) कठोर
(C) अर्थगौरव (D) इनमें से नहीं

स्रोत–किरातार्जुनीयम्- रामसेवक दुबे, भू० पेज -25

68. (i) ''नारिकेलफलसम्मितं वचः'' किस कवि के बारे में कहा गया है? UP TGT– 2004, 2009, 2010,
(ii) किस कवि की वाणी 'नारिकेल फल' के समान है?
(iii) कस्य काव्यं 'नारिकेलफलसम्मितम्' –
(iv) कस्य वचनं 'नारिकेलफल-सम्मितं' कल्पितम्? UP PGT (H)– 2013, UGC 25 D– 2014, G GIC–2015

(A) भारवेः (B) कालिदासस्य
(C) माघस्य (D) बाणस्य

स्रोत–किरातार्जुनीयम्- रामसेवक दुबे, भू० पेज -21

69. भारवि की शैली मे कौन-सा तत्त्व प्रधान है– UP TGT–2011

(A) ओजप्राधान्यता (B) वैदर्भीरीति की प्रधानता
(C) गौडीरीति की प्रधानता (D) अर्थगौरवता

स्रोत–किरातार्जुनीयम्- रामसेवक दुबे, भू० पेज -25

70. भारवि शब्द का अर्थ है– UP TGT–2011

(A) जिसको रवि अर्थात् सूर्य की चमक आये
(B) भार को ढोने वाला
(C) सूर्य की कान्ति
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास - बलदेव उपाध्याय, पेज-139

71. भारविः कस्य सभापण्डित आसीत्? KL SET–2015

(A) चालुक्यवंशी-विष्णुवर्धनमहोदयस्य
(B) विक्रमादित्यस्य
(C) जयचन्द्रस्य
(D) हर्षदेवस्य

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-180

72. अर्थगौरव का अर्थ है– UP TGT–2011

(A) गौरव गरिमा से युक्त बातें कहना
(B) शब्द से ज्यादा अर्थ पर जोर देना
(C) थोड़े से शब्दों में ज्यादा अर्थ कह देना
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

स्रोत–किरातार्जुनीयम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज -24

73. भारवि कवि के वचन को कहा गया है– UP GIC– 2009

(A) पुटपाक के समान (B) द्राक्षापाक के समान
(C) नारिकेलपाक के समान (D) रसालपाक के समान

स्रोत–किरातार्जुनीयम् - रामसेवक दूबे, भू० पेज -21

74. भारवि के काव्यमार्ग को कहा जाता है– UPGDC– 2008

(A) विचित्रमार्ग (B) सुकुमारमार्ग
(C) प्राचीनमार्ग (D) अन्योक्तिमार्ग

स्रोत–संस्कृत सुकवि समीक्षा - बलदेव उपाध्याय, पेज-173

65. (A)	66. (C)	67. (C)	68. (A)	69. (D)	70. (C)	71. (A)	72. (C)	73. (C)	74. (A)

75. महाकाव्य लेखन की अलङ्कार बहुल पद्धति 'विचित्रमार्ग' के प्रवर्तक हैं– UP PGT– 2000

(A) माघ (B) कालिदास

(C) भारवि (D) श्रीहर्ष

स्रोत–संस्कृत सुकवि समीक्षा - बलदेव उपाध्याय,पेज-173

76. संस्कृतमहाकाव्यकारेषु 'आतपत्र'-बिरुदेन कः भूषितः? RPSC ग्रेड-I (PGT)– 2011

(A) कालिदासः (B) भारविः

(C) अश्वघोषः (D) भर्तृमेण्ठः

स्रोत–किरातार्जुनीयम् - रामसेवक दुबे, भू0 पेज -13

77. (i) पदलालित्ये विख्यातः कः? UP TGT (H)– 2009,
(ii) पदलालित्ये प्रथितः कविः कः? UP PGT– 2009,
(iii) कस्य कवेः वैशिष्ट्यं पदलालित्यम् –
(iv) पदलालित्य के लिए प्रसिद्ध हैं– UP TET– 2014,
(v) पदलालित्यविषये प्रसिद्धः कविरस्ति?
(vi) पदलालित्ये प्रसिद्धस्य गद्यकारस्य नामास्ति–
RPSC ग्रेड- II (TGT)– 2014, MGKV Ph. D–2016 AWES TGT– 2009, UGC 25 J 2002, D– 2009 K SET–2015

(A) कालिदास (B) दण्डी

(C) भारवि (D) माघ

स्रोत–संस्कृत सुकवि समीक्षा - बलदेव उपाध्याय, पेज-295

78. ''संस्कृतं नाम दैवीवाक्''– इस सूक्ति के लेखक हैं– BHU MET– 2014

(A) कालिदास (B) दण्डी

(C) वाल्मीकि (D) माघ

स्रोत– काव्यादर्श (1/33) - श्रीरामचन्द्र मिश्र, पेज–31

79. दण्डिनो मतेन सरस्वती कीदृशी? DSSSB TGT– 2014

(A) सर्वश्यामा (B) सर्वरक्ता

(C) सर्वधूमा (D) सर्वशुक्ला

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-472

80. भर्तृहरिरचितं वाक्यपदीयं सम्बद्धमस्ति– C TET– 2012

(A) अष्टाध्यायी-सूत्रव्याख्यया (B) महाभाष्यस्य व्याख्यया

(C) व्याकरणदर्शनेन (D) काव्यशास्त्रसिद्धान्तेन

स्रोत– नीतिशतकम् - राजेश्वर प्रसाद मिश्र, भू0पेज-11

81. 'मूर्खस्य नास्त्यौषधम्' इति नीतेः कविरस्ति– UP GIC– 2015

(A) बिल्हणः (B) राजशेखरः

(C) भर्तृहरिः (D) भल्लटः

स्रोत–नीतिशतकम् - राजेश्वर प्रसाद मिश्र, पेज-43

82. भर्तृहरेः गुहा अस्ति– RPSC ग्रेड-II (TGT)– 2010

(A) प्रयागसमीपे (B) पुष्करसमीपे

(C) कश्मीरसमीपे (D) द्वारिकासमीपे

स्रोत–

83. भर्तृहरिणा एतेषु किं न रचितम्? JNU MET–2015

(A) नीतिशतकम् (B) वाक्यपदीयम्

(C) शिवशतकम् (D) शृङ्गारशतकम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-541

84. संस्कृत के किस कवि के लिए 'घण्टा' विशेषण प्रयुक्त हुआ है– UP PGT (H)– 2009

(A) बाणभट्ट (B) माघ

(C) भारवि (D) श्रीहर्ष

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-269

85. 'नवसर्गगते....नवशब्दो न विद्यते' उक्ति है– UP PGT– 2005, 2009

(A) कालिदास के विषय में (B) श्रीहर्ष के विषय में

(C) माघ के विषय में (D) भारवि के विषय में

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-268

86. तावद् भा भारवेर्भाति यावन्....... नोदयः– BHU AET– 2010

(A) मेघस्य (B) माघस्य

(C) चन्द्रस्य (D) हर्षस्य

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-221

75. (C) 76. (B) 77. (B) 78. (B) 79. (D) 80. (C) 81. (C) 82. (B) 83. (C) 84. (B) 85. (C) 86. (B)

87. (i) काव्यरचना की दृष्टि से महाकवि माघ किन तीन गुणों से विभूषित किये जाते हैं?
(ii) माघ के गुण हैं? UGC 25 D–2002, UP PGT (H)–2004
(A) पदलालित्य, ओज, माधुर्य
(B) ओज, माधुर्य, उपमा
(C) उपमा, अर्थगौरव, पदलालित्य
(D) अर्थगौरव, उपमा, प्रसाद
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-269

88. उपमा, पदलालित्य और अर्थगौरव की दृष्टि से एक साथ तीनों से युक्त कौन-सा संस्कृत कवि प्रसिद्ध है? UP PGT (H)–2010
(A) कालिदास (B) भारवि
(C) दण्डी (D) माघ
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-269

89. (i) काव्येषु माघः इत्युक्त्या किं काव्यं प्रसिद्धम्?
(ii) माघकाव्यं किम्? BHU B.Ed–2015
(A) कुमारसम्भवम् (B) शिशुपालवधम्
(C) किरातार्जुनीयम् (D) नैषधीयचरितम्
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-262

90. ''कुमुदवनमपश्रि श्रीमदम्भोजखण्डम्''– इत्यादि पद्यं केन सम्बद्धम्? UGC 25 D–2015
(A) माघेन (B) कालिदासेन
(C) श्रीहर्षेण (D) भासेन
स्रोत–शिशुपालवधम् - जनार्दन गंगाधर रटाटे, पेज-3

91. (i) गद्यकार बाणभट्ट का स्थितिकाल क्या है?
(ii) बाणभट्ट का समय स्वीकार किया जाता है–
(iii) बाणभट्ट का काल माना जाता है–
UP PGT 2000, UP TGT–1999, 2010
(A) षष्ठ शताब्दी ई. (B) सप्तम शताब्दी ई.
(C) अष्टम शताब्दी ई. (D) नवम शताब्दी ई.
स्रोत–कादम्बरी - रमाशंकर त्रिपाठी, भू0पेज-9

92. बाणभट्टस्य पूर्वजः आसीत्– BHU AET–2010
(A) गौतमः (B) पराशरः
(C) उपमन्युः (D) वत्सः
स्रोत–कादम्बरी (श्लोक -10) - तारिणीश झा, पेज-12

93. महाकवि बाणभट्ट के गुरु का नाम था– UP PGT–2013
(A) भत्सु (भर्वु) (B) मौखरि
(C) सदानन्द (D) वात्स्यायन
स्रोत–कादम्बरी (श्लोक -4) - तारिणीश झा, पेज-06

94. बाण के पितामह हैं– UGC 25 J–2004
(A) पाशुपत (B) श्रीधर
(C) अर्थपति (D) विश्वेश्वर
स्रोत–कादम्बरी (श्लोक-13) - तारिणीश झा, पेज-16

95. बाणभट्टस्य जन्मग्रामः कस्य नदस्योत्तरे तीरेऽवस्थितः– BHU AET–2010
(A) शोणनदस्य (B) गण्डकीनदस्य
(C) ब्रह्मपुत्रनदस्य (D) गङ्गायाः
स्रोत–शुकनासोपदेश - तारिणीश झा, भू0पेज-02

96. कवि 'बाण' निवासी थे– BPSC–1996
(A) पाटलिपुत्र के (B) थानेश्वर के
(C) भोजपुर के (D) उपरोक्त में से कोई नहीं
स्रोत–शुकनासोपदेश - तारिणीश झा, भू0पेज-02

97. (i) बाणभट्टस्य आश्रयदाता कः आसीत्–
(ii) बाणभट्ट किस सम्राट् के सभापण्डित थे?
UP TGT–2013, BHU AET–2010
(A) चन्द्रगुप्त (B) समुद्रगुप्त
(C) हर्षवर्धन (D) शाहजहाँ
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-396

98. (i) साहित्यजगत् का किसको 'उच्छिष्ट' कहा जाता है?
(ii) सर्वं जगत् कस्य कवेः उच्छिष्टं निगदितम्?
UP PGT–2009, RPSC SET–2010
(A) बाणभट्ट (B) श्रीहर्ष
(C) दण्डी (D) सुबन्धु
स्रोत–(i) संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-404
(ii) कादम्बरी - रमाशंकर त्रिपाठी, भू0पेज-7

87. (C) 88. (D) 89. (B) 90. (A) 91. (B) 92. (D) 93. (A) 94. (C) 95. (A) 96. (A) 97. (C) 98. (A)

99. (i) गद्यकाव्य की बाणभट्ट की कृतियों की संख्या?
(ii) बाणभट्ट की गद्य कृतियाँ कितनी है?
UP TGT– 2013

(A) 1 (B) 2
(C) 3 (D) 4

स्रोत–कादम्बरी - रमाशंकर त्रिपाठी, भू0पेज-15

100. (i) बाणभट्ट ने किस रीति में अपने काव्य की रचना की?
(ii) बाण के कादम्बरी में किस रीति का प्रयोग किया है
(iii) कविबाणभट्टस्य शैली कथ्यते– UP TGT 2004,
(iv) बाण ने कादम्बरी में किस रीति का प्रयोग किया है?
(v) बाणभट्ट के गद्य की रीति क्या है? 2009, 2013,
(vi) बाणभट्टस्य गद्ये रीतिरस्ति– AWES TGT– 2013,
G GIC–2015

(A) वैदर्भी (B) गौडी
(C) पाञ्चाली (D) उपर्युक्त में से नहीं

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-496

101. हर्षचरितानुसारं बाणभट्टस्य गोत्रं किम्? GJ SET–2013

(A) वात्स्यायनम् (B) गार्ग्यम्
(C) पाराशरम् (D) काश्यपम्

(i) संस्कत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-489
(ii) कादम्बरीकथामुखम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-10

102. बाणस्तु..... BHU AET– 2010

(A) चतुराननः (B) तर्काननः
(C) पञ्चाननः (D) षडाननः

स्रोत–कादम्बरी - रमाशंकर त्रिपाठी, भू0पेज-16

103. 'बाणस्तु पञ्चाननः' सूक्ति किसने कही?
UP TGT– 2010, 2013

(A) चन्द्रदेव ने (B) मल्लिनाथ ने
(C) जयदेव ने (D) कृष्णकवि ने

स्रोत–कादम्बरी - रमाशंकर त्रिपाठी, भू0पेज-16

104. 'पञ्चबाणस्तु बाणः' यह कथन किसका है?
UP TGT– 2010

(A) जयदेव का (B) चन्द्रदेव का
(C) गङ्गादेवी का (D) त्रिविक्रमभट्ट का

स्रोत–संस्कृतगङ्गा वस्तुनिष्ठ संस्कृत-साहित्यम् - सर्वज्ञभूषण,पेज-12

105. ''बाणः कवीनामिह चक्रवर्ती'' इत्युक्तम्–
UGC 25 J– 2014

(A) कालिदासेन (B) सोड्ढलेन
(C) माघेन (D) श्रीहर्षेण

स्रोत–संस्कृतगङ्गा वस्तुनिष्ठ संस्कृतसाहित्यम् - सर्वज्ञभूषण,पेज-12

106. ''एनं कवीनामिह चक्रवर्ती''– इति वदन्ति विपश्चितः–
UGC 25 D– 2012

(A) कालिदासः (B) वाल्मीकिः
(C) श्रीहर्षः (D) बाणः

स्रोत–संस्कृतगङ्गा वस्तुनिष्ठ संस्कृत-साहित्यम्-सर्वज्ञभूषण, पेज–12

107. 'कवीनामगलद्दर्पः नूनं वासवदत्तया' इतीयं कस्योक्तिः?
DU Ph.D–2016

(A) गोवर्धनाचार्यस्य (B) सुबन्धोः
(C) बाणभट्टस्य (D) जल्हणस्य

स्रोत–हर्षचरितम् - मोहनदेव पन्त, पेज-6

108. 'रुचिरस्वरवर्णप्रदा रसभाववती जगन्मनो हरति'– किस कवि की रचना के लिए कहा गया है? UP TGT– 2009

(A) कालिदास (B) भवभूति
(C) बाणभट्ट (D) भारवि

स्रोत– संस्कृत साहित्य का इतिहास-राकेश कुमार जैन, पेज-207

109. कालिदासस्योपमेव बाणभट्टस्य कोऽलङ्कारो विशिष्येतु?
BHU AET– 2010

(A) उत्प्रेक्षा (B) रूपकम्
(C) अर्थान्तरन्यासः (D) सन्देहः

स्रोत–कादम्बरी - रमाशंकर त्रिपाठी, भू0पेज-02

110. हर्ष के विषय में उल्लेख किससे प्राप्त होता है–
MP PSC– 1990

(A) कल्हण से (B) बाण से
(C) कालिदास से (D) भास से

स्रोत–कादम्बरी - रमाशंकर त्रिपाठी, भू0पेज-16

111. बाणभट्टस्य विषये 'वाणी बाणो बभूवेति' कथनस्य लेखकः आसीत्? G GIC–2015

(A) चन्द्रदेवः (B) बिल्हणः
(C) गोवर्धनाचार्यः (D) धर्मदासः

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-498

99. (B) 100. (C) 101. (A) 102. (C) 103. (A) 104. (A) 105. (B) 106. (D) 107. (C) 108. (C) 109. (A) 110. (B) 111. (C)

112. हर्ष के साम्राज्य की राजधानी थी– UP PCS– 1993

(A) कन्नौज (B) पाटलिपुत्र
(C) प्रयाग (D) थानेश्वर

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-396

113. सम्राट् हर्ष ने अपनी राजधानी थानेश्वर से कहाँ स्थानान्तरित की थी? UP PCS– 1992

(A) प्रयाग (B) दिल्ली
(C) कन्नौज (D) राजगृह

स्रोत–लूसेंट सामान्यज्ञान - सुनील कुमार सिंह, पेज–25

114. सम्राट् हर्षवर्धन ने दो महान् धार्मिक सम्मेलन का आयोजन किया था? UP PCS– 2003

(A) कन्नौज तथा प्रयाग में (B) प्रयाग तथा थानेश्वर में
(C) थानेश्वर तथा वल्लभी में (D) वल्लभी तथा प्रयाग में

स्रोत– गूगल सर्च

115. हर्ष किस वंश के थे? MP PSC– 2003

(A) पुष्यभूति राजवंश (B) पाल राजवंश
(C) प्रतिहार राजवंश (D) चन्देल राजवंश

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-396

116. श्रीहर्षस्य भ्राता कः? MH SET–2013

(A) राज्यवर्धनः (B) आनन्दवर्धनः
(C) कीर्तिवर्धनः (D) गुणवर्धनः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि',पेज-513

117. भवभूति का मूल नाम था–
UP TGT– 2005, UP TGT (H)– 2010

(A) श्रीपति (B) उम्बेक
(C) श्रीकण्ठ (D) नीलकण्ठ

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-राकेश कुमार जैन, पेज–248

118. भवभूति का स्थितिकाल क्या है? UP TGT– 1999

(A) पञ्चम शताब्दी (B) षष्ठ शताब्दी
(C) सप्तम शताब्दी (D) अष्टम शताब्दी

स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0पेज-45

119. संस्कृतसाहित्ये 'श्रीकण्ठः' इत्युपाधिना विभूषितोऽयं कविः – JNU MET–2015

(A) कालिदासः (B) क्षेमेन्द्रः
(C) भवभूतिः (D) विशाखदत्तः

स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0पेज-13

120. (i) भवभूति किसके आश्रित कवि थे?
(ii) भवभूति के आश्रयदाता नरेश का नाम था?
UP TGT– 2001, 2005

(A) यशोवर्मा (B) हर्षवर्धन
(C) चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य (D) विष्णुवर्धन

स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0पेज-43,44

121. महाकवि भवभूति की कितनी रचनायें हैं?
UP TGT– 2013

(A) 3 (B) 4
(C) 5 (D) 6

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-395

122. निम्नलिखित में से कौन-सी रचना भवभूति की नहीं है– UP TGT–2011

(A) प्रतिमानाटकम् (B) उत्तररामचरितम्
(C) मालतीमाधवम् (D) महावीरचरितम्

स्रोत–संस्कृत सुकवि समीक्षा - बलदेव उपाध्याय, पेज-318

123. भवभूति का उत्कर्ष किस नाटक में है?
UGC 73 D– 2010

(A) उत्तररामचरिते (B) महावीरचरिते
(C) मालतीमाधवे (D) नागानन्दे

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-403

124. जतुकर्णीपुत्रः भवति– UGC 25 Jn–2017

(A) भवभूतिः (B) कालिदासः
(C) माघः (D) श्रीहर्षः

स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0पेज-12

125. भवभूति ने प्रकृति वर्णन में आश्रय लिया है–
UP TET– 2014

(A) गौडी रीति का (B) वैदर्भी रीति का
(C) पाञ्चाली रीति का (D) गौडी/वैदर्भी दोनों का

स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0पेज-111, 112

112. (D) 113. (C) 114. (A) 115. (A) 116. (A) 117. (C) 118. (C) 119. (C) 120. (A) 121. (A) 122. (A) 123. (A) 124. (A) 125. (D)

126. (i) ''एको रसः करुण एव'' इति कस्य मतम्?
(ii) संस्कृत के किस कवि ने 'एको रसः करुण एव' कहकर करुण रस को 'रसराज' घोषित किया?
(iii) संस्कृतवाङ्मये 'करुणरसस्य' वर्णने कः विशिष्यते?
UP TGT (H)– 2001, UGC 25 D– 2013, BHU Sh.ET– 2008, UP PGT (H)– 2005, UGC 73 Jn–2017

(A) कालिदासः (B) अश्वघोषः
(C) बाणभट्टः (D) भवभूतिः

स्रोत–उत्तररामचरितम् (3/47) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-260

127. (i) .... भवभूतिर्विशिष्यते–
(ii) 'भवभूतिर्विशिष्यते' यह उक्ति किस नाटक के बारे में है? UP TGT– 2004, GJ SET–2004

(A) महावीरचरितम् (B) उत्तररामचरितम्
(C) मालतीमाधवम् (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-राकेश कुमार जैन, पेज-253

128. भवभूतिमहाकवेरिमां ''निरर्गलतरङ्गिणी' इति वदन्ति? UGC 25 D–2012

(A) स्रग्धरा (B) शिखरिणी
(C) मन्दाक्रान्ता (D) वसन्ततिलका

स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0 पेज-124

129. उत्तररामचरिते कविः कोऽयं विशिष्यते– BHU AET– 2012

(A) अश्वघोषः (B) जयदेवः
(C) कालिदासः (D) भवभूतिः

स्रोत–संस्कृत सुकवि समीक्षा - बलदेव उपाध्याय, पेज-333

130. ......भवभूतिरेव तनुते– BHU AET– 2010

(A) तारुण्यम् (B) दारुण्यम्
(C) आरुण्यम् (D) कारुण्यम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-राकेश कुमार जैन, पेज-253

131. उत्तररामचरितस्य रचनाकारः कः? BHU B.Ed– 2015

(A) कालिदासः (B) शूद्रकः
(C) भवभूतिः (D) भासः

स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0पेज-36

132. श्रीकण्ठपदलाञ्छनः पदवाक्यप्रमाणतत्त्वज्ञः– UGC 25 D–2015

(A) भासेन (B) भवभूतिना
(C) श्रीहर्षेण (D) अश्वघोषेण

स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0पेज-13

133. इनके पिता का नाम 'नीलकण्ठ' माता 'जतुकर्णी' व गुरु 'ज्ञाननिधि' – हम किस कवि की बात कर रहे– H TET–2015

(A) विशाखदत्त (B) भर्तृहरि
(C) राजशेखर (D) भवभूति

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-राकेश कुमार जैन, पेज-248

134. उदयपुरस्य राजाजगतसिंहवर्णनं जगन्नाथः कस्मिन् ग्रन्थे अकरोत्? UGC 25 D– 2011

(A) प्राणाभरणे (B) जगदाभरणे
(C) यमुनावर्णने (D) गङ्गालहर्याम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–555

135. (i) कस्य काव्यं 'विद्वदौषधम्' कथ्यते?
(ii) ''नैषधं विद्वदौषधम्' प्रसिद्धमस्ति –
(iii) विद्वानों के लिए 'औषधि' माना गया है?
(iv) 'उदिते नैषधे काव्ये क्व माघः क्व च भारविः' यहाँ 'नैषधे' पद किस महाकवि की ओर सङ्केत करता है? UP PGT– 2009, UP PGT (H)– 2003, AWES TGT– 2010, 2012, UGC 25 J– 2015

(A) भारवि (B) माघ
(C) श्रीहर्ष (D) कालिदास

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-294

136. (i) ''ताम्बूलद्वयमासनं च लभते यः कान्यकुब्जेश्वरात्'' अस्मिन् कथने 'यः' इति पदेन कस्य महाकवेः निर्देशः? MP वर्ग 1 (PGT)– 2012,
(ii) कः कविः स्वाश्रयदातुः राज्ञः ताम्बूलद्वयं लभते स्म? DU Ph.D–2016

(A) माघस्य (B) श्रीहर्षस्य
(C) दण्डिनः (D) भारवेः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि',पेज-284

126. (D) 127. (B) 128. (B) 129. (D) 130. (D) 131. (C) 132. (B) 133. (D) 134. (B) 135. (C) 136. (B)

137. उत्प्रेक्षालङ्कार में समर्थ कवि हैं? UGC 25 D–2001

(A) कालिदास (B) माघ
(C) श्रीहर्ष (D) भारवि

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-230

138. (i) नैषधीयचरितप्रणेतुः पिता कः?
(ii) नैषधकारस्य पितुर्नाम–
DU Ph.D–2016, K SET–2015

(A) श्रीनिवासः (B) श्रीधरः
(C) श्रीहीरः (D) मम्मटः

स्रोत–नैषधीयचरितम् (1/145) - सुरेन्द्रदेव शास्त्री, पेज-287

139. ''श्रीहीरः सुषुवे जितेन्द्रियचयं मामल्लदेवी च यम्''– इति वार्ता केन सम्बद्धा– UGC 25 D–2015

(A) माघेन (B) भारविणा
(C) श्रीहर्षेण (D) भासेन

स्रोत–नैषधीयचरितम् (1.145)-देवर्षि सनाढ्य शास्त्री, पेज–122

140. अम्बिकादत्तव्यास की जन्मभूमि है–UP PGT–2005

(A) जयपुर (B) प्रयाग
(C) पटना (D) काशी

स्रोत–शिवराजविजय - रमाशङ्कर मिश्र, भू0पेज-10

141. 'शिवराजविजयम्' के रचयिता कहाँ के प्राध्यापक थे? UP TGT–2004

(A) कानपुर (B) पटना
(C) जयपुर (D) दिल्ली

स्रोत–शिवराजविजय - रमाशङ्कर मिश्र, भू0पेज-11

142. 'संस्कृत सञ्जीवनी समाज' की स्थापना किसने की? UP TGT–2001

(A) गोविन्ददास ने (B) कुसुमदेव ने
(C) माधवभट्ट ने (D) अम्बिकादत्तव्यास ने

स्रोत–शिवराजविजय - देवनारायण मिश्र, भू0पेज-13

143. शिवराजविजयम् के रचयिता को किस सम्मान से विभूषित किया गया था? UP TGT–2004

(A) घटिकाशतक (B) दीपशिखा
(C) वाग्देवतावतार (D) श्रीकण्ठपदलाञ्छन

स्रोत–शिवराजविजय - रमाशङ्कर मिश्र, भू0पेज-11

144. 'घटिकाशतक' की उपाधि से विभूषित किये गये हैं– UP TGT–2010

(A) बाणभट्ट (B) भर्तृहरि
(C) अम्बिकादत्तव्यास (D) कालिदास

स्रोत–शिवराजविजय - रमाशङ्कर मिश्र, भू0 पेज-11

145. अम्बिकादत्तव्यास को निम्नलिखित में से किस उपाधि से विभूषित नहीं किया गया है? UP PGT–2013

(A) घटिकाशतक (B) शतावधान
(C) साहित्याचार्य (D) मीमांसक

स्रोत–शिवराजविजय - रमाशङ्कर मिश्र, भू0 पेज-11

146. 'रात्रिर्गमिष्यति भविष्यति सुप्रभातम्' पद्यांश का सम्बन्ध किस रचनाकार से है? UK TET–2011

(A) भर्तृहरि (B) अम्बिकादत्तव्यास
(C) भवभूति (D) भारवि

स्रोत–शिवराजविजय - देवनारायण मिश्र, पेज-88

147. (i) चाणक्य का अन्य नाम था–
(ii) चाणक्य बचपन में किस नाम से जाने जाते थे?
UP PCS–2006, IAS–1993

(A) अजय (B) चाणक्य
(C) विष्णुगुप्त (D) देवगुप्त

स्रोत–कौटिलीय-अर्थशास्त्रम्-वाचस्पति गैरोला, भू0 पेज–67

148. कालानुसारी क्रमः– UGC 25 D–J 2004, J–2011

(A) कालिदासः, भासः, बाणभट्टः, भवभूतिः
(B) भासः, कालिदासः, बाणभट्टः, भवभूतिः
(C) भवभूतिः, कालिदासः, भासः, बाणभट्टः
(D) बाणभट्टः, कालिदासः, भवभूतिः, भासः

संस्कृतगङ्गा वस्तुनिष्ठ संस्कृत-साहित्यम्-सर्वज्ञभूषण, पेज-291,292

149. निम्न में पूर्व से पर की ओर सही कालक्रम है? UP TGT–2010

(A) माघ, भारवि, कालिदास (B) माघ, कालिदास, भारवि
(C) कालिदास, भारवि, माघ (D) कालिदास, माघ, भारवि

संस्कृतगङ्गा वस्तुनिष्ठ संस्कृत-साहित्यम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-291

137. (C) 138. (C) 139. (C) 140. (A) 141. (B) 142. (D) 143. (A) 144. (C) 145. (D) 146. (B) 147. (C) 148. (B) 149. (C)

150. निम्न को कालक्रमानुसार बताइए? UGC 25 J– 2001

(A) कालिदास, माघ, भारवि, वाल्मीकि
(B) वाल्मीकि, कालिदास, भारवि, माघ
(C) माघ, भारवि, कालिदास, वाल्मीकि
(D) भारवि, कालिदास, माघ, वाल्मीकि

संस्कृतगङ्गा वस्तुनिष्ठ संस्कृत-साहित्यम्-सर्वज्ञभूषण, पेज-291-292

151. निम्नलिखित जोड़ों में से कौन-सा जोड़ा सुमेलित नहीं है? UP PCS– 1997

(A) रविकीर्ति — पुलकेशिन द्वितीय
(B) भवभूति — कन्नौज के यशोवर्मन्
(C) हरिषेण — हर्ष
(D) दण्डी — नरसिंह वर्मन्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-159,234

152. अधोनिर्दिष्टेषु युग्मपर्यायेषु समीचीनं विचिनुत– MH SET–2013

(क) घण्टा — **1. नैषधम्**
(ख) दीपशिखा — **2. कालिदासः**
(ग) विद्वदौषधम् — **3. भासः**
(घ) हासः — **4. माघः**

	क	ख	ग	घ
(A)	4	2	1	3
(B)	1	2	3	4
(C)	3	4	1	2
(D)	2	1	4	3

संस्कृत साहित्य का इतिहास-राकेश कुमार जैन, पेज–96, 111, 118, 225

153. गौतमबुद्धस्य मातुः नाम किम्? MH SET–2016

(A) महामाया (B) आम्रपाली
(C) यशोधरा (D) पिङ्गला

स्रोत– भारतीय दर्शन - श्रीकान्त पाण्डेय, पेज–113

154. कनिष्क के समकालीन निम्नलिखित नामों का अध्ययन करें और निम्नाङ्कित उत्तर कोड के अनुसार अपना उत्तर इंगित करें– UP PCS– 1994

I. अश्वघोष **II. वसुमित्र**
III. कालिदास **IV. कम्बन्**

(A) I और IV (B) II और III
(C) I और II (D) वे सभी

स्रोत– लूसेंट सामान्य ज्ञान - सुनील कुमार सिंह, पेज–23

155. निम्न में से कौन-सा संस्कृत कवि मध्यप्रदेश का नहीं है? MP PSC– 2010

(A) कल्हण (B) भवभूति
(C) मण्डन मिश्र (D) कालिदास

स्रोत– संस्कृत साहित्य का इतिहास-बलदेव उपाध्याय, पेज–265

156. भक्तिकाल के किस कवि ने संस्कृत को छोड़कर भी संस्कृत की शास्त्रीय परम्परा का निर्वहण किया? UP TGT (H)– 2004

(A) जायसी (B) सूरदास
(C) तुलसीदास (D) कालिदास

स्रोत– गूगल सर्च - विकिपीडिया

157. काल के अनुसार निम्नलिखित आचार्यों का सही अनुक्रम क्या है? UGC (H) J– 2013

(A) भामह, दण्डी, आनन्दवर्धन, अभिनवगुप्त
(B) दण्डी, आनन्दवर्धन, अभिनवगुप्त, भामह
(C) आनन्दवर्धन, दण्डी, भामह, अभिनवगुप्त
(D) अभिनवगुप्त, भामह, दण्डी, आनन्दवर्धन

संस्कृतगङ्गा वस्तुनिष्ठ संस्कृत-साहित्यम्-सर्वज्ञभूषण, पेज-292, 278

158. निम्नलिखित में से विजयनगर के किस शासक ने तेलुगू और संस्कृत साहित्य को समृद्ध किया था? MP PSC– 2008

(A) देवराय प्रथम (B) देवराय द्वितीय
(C) कृष्ण देवराय (D) रामराय

स्रोत– गूगल सर्च - भारतकोश

159. निम्नलिखित में अवरोहक्रम से समुचित कालक्रम को चुनिये– UGC 73 D–2015

(A) विशाखदत्तः, जयदेवः, मुरारिः, माघः
(B) विशाखदत्तः, माघः, मुरारिः, जयदेवः
(C) माघः, जयदेवः, विशाखदत्तः, मुरारिः
(D) विशाखदत्तः, मुरारिः, माघः, जयदेवः

संस्कृतगङ्गा वस्तुनिष्ठ संस्कृतसाहित्यम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-291-293

150. (B) 151. (C) 152. (A) 153. (A) 154. (C) 155. (A) 156. (C) 157. (C) 158. (C) 159. (B)

160. निम्नलिखित को कालानुक्रम में व्यवस्थित कीजिये तथा नीचे दिये गये कूटों से सही उत्तर चुनिये–

UGC 06 J–2011

1. श्रीहर्ष **2. माघ**

3. भारवि **4. भट्टि**

(A)	1	2	3	4
(B)	2	3	1	4
(C)	3	4	2	1
(D)	4	2	1	3

संस्कृतगङ्गा वस्तुनिष्ठ संस्कृत-साहित्यम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-292

161. भासस्य रामकथाश्रितानां नाटकानां संख्या अस्ति–

MGKV Ph. D–2016

(A) त्रीणि (B) द्वे

(C) पञ्च (D) चत्वारि

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–275

162. 'माघे मेघे गतं वयः' कस्मिन् कवेः उक्तिरस्ति–

MGKV Ph. D–2016

(A) वल्लभदेवस्य (B) भास्कराचार्यस्य

(C) मल्लिनाथसूरिणः (D) राजशेखरस्य

स्रोत–संस्कृतगङ्गा वस्तुनिष्ठ संस्कृतसाहित्यम्-सर्वज्ञभूषण, पेज-10

163. सुबन्धुः अग्रणी कविरस्ति–

RPSC ग्रेड-I (PGT)–2015

(A) श्लेषरचनायाम्

(B) अनुप्रासरचनायाम्

(C) विरोधाभासरचनायाम्

(D) उत्प्रेक्षारचनायाम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज–392

160. (C) 161. (B) 162. (C) 163. (A)

26 सुभाषित/सूक्तियाँ

1. (i) 'मेघे माघे गतं वयः' यह सूक्ति किस विद्वान् के द्वारा कही गयी है? UP PGT– 2003, 2004,
(ii) ''मेघे माघे गतं वयः'' यह सूक्ति किस विद्वान् की है? UGC 25 D– 1999

(A) मल्लिनाथ सूरि (B) राजशेखर
(C) वल्लभदेव (D) माघ

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्व) -दयाशङ्कर शास्त्री, पेज-44

2. 'सर्वः कान्तमात्मीयं पश्यति' यह सूक्ति वाक्य किसके द्वारा कथित है? UP PGT– 2004

(A) चारुदत्त (B) चाणक्य
(C) दुष्यन्त (D) उदयन

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (अङ्क-2)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-111

3. ''सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तःकरणप्रवृत्तयः'' यह कथन किसका है? UP PGT– 2004, UGC 25 D– 2008

(A) माघ (B) श्रीहर्ष
(C) भारवि (D) कालिदास

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/22)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-54

4. निम्नांकित सूक्तियों को उनके रचनाकारों के साथ सुमेलित कीजिए? UP PGT– 2010, UK TET– 2011

(क) वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः (1) कालिदास
(ख) दिष्ट्या वर्धसे (2) भर्तृहरि
(ग) कोऽन्यो हुतवहाद् दग्धुं प्रभवति (3) भवभूति
(घ) न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः (4) भारवि

	क	ख	ग	घ
(A)	4	1	2	3
(B)	1	3	2	4
(C)	4	3	1	2
(D)	3	2	4	1

स्रोत–क. किरातार्जुनीयम् (1/8) रामसेवक दुबे, पेज-61
ख. उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-190
ग. अभिज्ञानशाकुन्तलम् , कपिलदेव द्विवेदी, पेज-185
घ. नीतिशतकम् - तारिणीश झा, पेज-122

5. ''रहस्यं साधूनामनुपधि विशुद्धं विजयते'' जिस कवि की उक्ति है वह है– UGC 25 D– 1996

(A) कालिदास (B) अश्वघोष
(C) भवभूति (D) दिङ्नाग

स्रोत–उत्तररामचरितम् (2/2) -कपिलदेव द्विवेदी, पेज-99

6. .... दाहकोऽभून्न पावकः? GJ SET–2008

(A) प्रतिमानाम-नाट्यस्य (B) कर्णभारस्य नाट्यस्य
(C) स्वप्नवासवदत्तस्य (D) पञ्चतन्त्रस्य

स्रोत–स्वप्नवासवदत्तम् - जयपाल विद्यालंकार, भू० पेज- (XIII)

7. ''धन्यो माघकविर्वयं तु कृतिनः तत्सूक्तिसंसेवनात्'' इस बात को कहने वाले थे– UGC 25 J–1999

(A) माघकवि (B) वल्लभदेव
(C) मल्लिनाथसूरि (D) दक्षिणावर्तनाथ

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-265

8. ''ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति'' यह सूक्ति किस कवि की है– UGC 25 J– 1999

(A) कालिदास (B) भवभूति
(C) भारवि (D) भास

स्रोत–उत्तररामचरितम् (1/10)- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-22

9. ''प्रतिबध्नाति हि श्रेयः पूज्यपूजाव्यतिक्रमः'' इदं वाक्यमस्ति– UGC 25 J– 2006

(A) रघुवंशे (B) महाभारते
(C) शिशुपालवधे (D) किरातार्जुनीये

स्रोत–रघुवंशम् (1/79) - कृष्णमणि त्रिपाठी, पेज-35

10. ''सतां हि प्रियंवदता कुलविद्या'' इदं वाक्यमस्ति– UGC 25 J– 2006

(A) हर्षचरिते (B) कादम्बर्याम्
(C) दशकुमारचरिते (D) बुद्धचरिते

स्रोत–हर्षचरितम्-मोहनदेव पन्त, पेज-45

1. (A) 2. (C) 3. (D) 4. (C) 5. (C) 6. (C) 7. (C) 8. (B) 9. (A) 10. (A)

11. ''मृगयाऽघाय न भूभृतां घ्नताम्'' इदं वाक्यमस्ति– UGC 25 D–2006
(A) नैषधीयचरिते (B) बुद्धचरिते
(C) किरातार्जुनीये (D) रघुवंशे
स्रोत–नैषधीयचरितम् (2/10) - देवर्षि सनाढ्य शास्त्री, पेज-8

12. ''प्रतिबध्नाति हि श्रेयः पूज्यपूजाव्यतिक्रमः'' कस्येयमुक्तिः? UGC 25 J–2012
(A) कामधेनोः (B) नन्दिन्याः
(C) दिलीपस्य (D) वसिष्ठस्य
स्रोत–रघुवंशम् (1/79) -कृष्णमणि त्रिपाठी, पेज-35

13. (i) ''हतोऽपि लभते स्वर्गं जित्वा तु लभते यशः'' इति कुत्र वर्तते? UGC 25 J–1999, 2012
(ii) ''हतोऽपि लभते स्वर्गं जित्वा तु लभते यशः। उभे बहुमते लोके नास्ति निष्फलता रणे॥'' इति केन कस्मिन् नाटके उक्तम्? MH SET–2016
(A) ऊरुभङ्गे दुर्योधनेन (B) दूतकाव्ये कृष्णेन
(C) कर्णभारे कर्णेन (D) मध्यमव्यायोगे भीमेन
स्रोत– कर्णभारम् - रामजी मिश्र (1/12), पेज-13

14. 'इयं सा जातिस्त्यक्ता' – कस्येदं वचनम्– MH SET–2013
(A) अश्वत्थाम्नः (B) श्रीरामस्य
(C) चारुदत्तस्य (D) कर्णस्य
स्रोत– वेणीसंहार - गंगासागर राय, पेज–159

15. 'सहर्षचरिताशश्वद् धृतकादम्बरी कथा। MH SET–2016 बाणस्य वाण्यनार्येव स्वच्छन्दा चरति क्षितौ॥' इति केनोक्तम्?
(A) राजशेखरेण (B) बाणेन
(C) त्रिलोचनेन (D) श्रीकण्ठेन
स्रोत–संस्कृत सुकवि समीक्षा- बलदेव उपाध्याय,पेज-534

16. जीवन्तु ते कुरुकुलस्य निवापमेघा वैरं च विग्रहकथाश्च वयं च नष्टाः। ऊरुभङ्गे कस्य वचनमिदम्? KL SET–2014
(A) भीमस्य (B) बलदेवस्य
(C) कृष्णस्य (D) दुर्योधनस्य
भासनाटकचक्रम् (भाग-2 ऊरुभङ्गम् 1/31)-बलदेव उपाध्याय, पेज–29

17. 'बौद्धबुद्धिमिव निरालम्बनां वैदेहीमिव प्राप्तज्योतिः।' कस्याः इदं वर्णनम्? MH SET–2013
(A) कादम्बर्याः (B) महाश्वेतायाः
(C) शकुन्तलायाः (D) सीतायाः
स्रोत–कादम्बरी (महाश्वेतावृत्तान्त)-राजदेव मिश्र, पेज-14

18. (i) 'कालविफलान्यस्त्राणि ते सन्तु' – कस्यायं शापः?
(ii) ''मां च शशाप कालविफलान्यस्त्राणि ते सन्त्विति' अत्र कः शशाप? UGC 25 D–2012, K SET–2013
(A) कर्णः (B) शल्यः
(C) जमदग्निः (D) शक्रः
स्रोत–कर्णभारम् (1/10) - रामजी मिश्र, पेज-11

19. अधोनिर्दिष्टानां समीचीनां तालिकां विचिनुत– UGC 25 D–2012
A. पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम् 1. रघुवंशः
B. श्रेयसि केन तृप्यते 2. कादम्बरी
C. सहस्रगुणमुत्स्रष्टुमादत्ते हि रसं रविः 3. शिशुपालवधम्
D. न हि क्षुद्रनिघति पातामिहता चलति वसुधा 4. किरातार्जुनीयम्

	A	B	C	D
(A)	3	1	2	4
(B)	4	3	1	2
(C)	2	4	3	1
(D)	1	2	4	3

स्रोत–क- किरातार्जुनीयम् (1/41) - रामसेवक दुबे, पेज-138
ख- शिशुपालवधम् (1/29) - तारिणीश झा, पेज-63
ग- रघुवंशम् (1/18) - कृष्णमणि त्रिपाठी, पेज-10
घ- कादम्बरी (महाश्वेतावृत्तान्त)-राजदेव मिश्र, पेज-31

20. अधोङ्कितानां युग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत– UGC 25 J–2013
(अ) प्रसिद्धमूर्ध्वज्वलनं हविर्भुजः 1. किरातार्जुनीयम्
(ब) अनङ्गोऽयमनङ्गत्वम द्यनिन्दिष्यति ध्रुवम् 2. अभिज्ञान शाकुन्तलम्
(स) अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता 3. शिशुपालवधम्
(द) किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम् 4. रत्नावली

	अ	ब	स	द
(A)	2	3	4	1
(B)	4	2	1	3
(C)	3	4	1	2
(D)	1	3	2	4

स्रोत–अ. शिशुपालवधम् (1/2) - तारिणीश झा, पेज-6
स. किरातार्जुनीयम् (1/23)- रामसेवक दुबे, पेज-98
द. अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/20) - कपिलदेव द्विवेद, पेज-46

11. (A) 12. (D) 13. (C) 14. (A) 15. (A) 16. (D) 17. (B) 18. (C) 19. (B) 20. (C)

21. अधोनिर्दिष्टानां समीचीनां तालिकां चिनुत?

UGC 25 S– 2013

(अ) प्रावृषेण्यं पयोवाहं विद्युदैरावताविव।	1. दशकुमारचरितम्
(ब) वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः	2. उत्तररामचरितम्
(स) तस्य वसुमती नामसुमती लीलावती कुलशेखर रमणी-रमणी बभूव।	3. रघुवंशम्
(द) जनकानां रघूणां च सम्बन्धः कस्य न प्रियः।	4. किरातार्जुनीयम्

	अ	ब	स	द
(A)	3	4	1	2
(B)	1	2	3	4
(C)	2	1	4	3
(D)	2	3	1	4

स्रोत–अ- रघुवंशम् (1/36) - कृष्णमणि त्रिपाठी, पेज-17
ब- किरातार्जुनीयम् (1/8) - रामसेवक दुबे, पेज-61
द- उत्तररामचरितम् (1/51) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-93

22. 'हुतं च दत्तं च तथैव तिष्ठति' – इति वचनं कस्मिन्नाटके वर्तते? GJ SET–2013

(A) कर्णभारे (B) ऊरुभङ्गे
(C) दूतवाक्ये (D) मध्यमव्यायोगे

स्रोत–कर्णभारम् (1/22) - रामजी मिश्र,पेज-23

23. 'ज्ञातासारोऽपि खल्वेकः सन्दिग्धे कार्यवस्तूनि'' इत्युक्तिः कुत्रास्ति? UGC 25 J– 2014

(A) नैषधीयचरिते (B) माघकाव्ये
(C) रघुवंशे (D) भट्टिकाव्ये

स्रोत–शिशुपालवधम् (2/12) - हरगोविन्द शास्त्री, पेज-63

24. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत–

UGC 25 J– 2014

(अ) विचित्ररूपाः खलु चित्तवृत्तयः	1. उत्तररामचरितम्
(ब) पतत्यधो धामविसारि सर्वतः।	2. हर्षचरितम्
(स) तीर्थोदकं च वह्निश्च नान्यतः शुद्धिमर्हतः।	3. किरातार्जुनीयम्
(द) लोके हि लोहेभ्यः कठिनतरा खलु स्नेहमया बन्धनपाशाः	4. शिशुपालवधम्

	अ	ब	स	द
(A)	4	2	3	1
(B)	1	3	4	2
(C)	2	1	3	4
(D)	3	4	1	2

स्रोत–अ- किरातार्जुनीयम् (1/37) - रामसेवक दुबे,पेज-129
ब- शिशुपालवधम् (1/2) - तारिणीश झा, पेज-6
स- उत्तररामचरितम् (1/13) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-27

25. 'यदेक एव प्रतिगृह्य सेवते' एकः कः? KL SET–2016

(A) मोक्षः (B) त्यागः
(C) अर्थः (D) धर्मः

स्रोत–

26. ....चरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्?

BHU B.Ed– 2012, 2015

(A) उत्तम (B) उदार
(C) हठ (D) गर्व

स्रोत–हितोपदेश (श्लोक -70) – रामेश्वर भट्ट, पेज-36

27. ''पातयति महापुरुषान् सममेव बहूननादरेणैव।'' एषा पंक्तिः कस्मिन् काव्ये वर्तते? MH SET–2013

(A) दशकुमारचरिते (B) हर्षचरिते
(C) रघुवंशे (D) शिशुपालवधे

स्रोत–हर्षचरितम् (5/2)-शिवनाथ पाण्डेय, पेज-02

21. (A) 22. (A) 23. (B) 24. (D) 25. (B) 26. (B) 27. (B)

28. अधस्तनवर्गयोः युग्मपर्यायेषु समीचीनं विचिनुत– MH SET–2011

(क) दैवायत्तं कुले जन्म 1. कुमारसम्भवम्
(ख) अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा 2. वेणीसंहारम्
(ग) सहसा विदधीत न क्रियाम् 3. मेघदूतम्
(घ) कामार्ता हि प्रकृतिकृपणाः 4. किरातार्जुनीयम्

	क	ख	ग	घ
(A)	1	3	2	4
(B)	2	1	4	3
(C)	3	1	4	2
(D)	2	4	3	1

स्रोत–क-वेणीसंहारम् (3/37) ख-कुमारसम्भवम् (1/1) ग-किरातार्जुनीयम् (2/30) घ-मेघदूतम् (पूर्वमेघ-5)

29. 'ईप्सितं तदवज्ञानाद् विद्धि सार्गलमात्मनः' – अत्र अलङ्कारः कः? KL SET–2015
(A) उत्प्रेक्षा (B) मालोपमा
(C) अर्थान्तरन्यासः (D) दीपकम्

स्रोत–रघुवंशमहाकाव्य (1/79)-बलवान सिंह यादव, पेज–94-95

30. ग्रीवाभङ्गाभिरामं मुहुरनुपतति स्यन्दने दत्तदृष्टिः' – अत्र अलङ्कार– KL SET–2015
(A) व्याजस्तुतिः (B) पर्यायोक्तिः
(C) काव्यलिङ्गम् (D) स्वाभावोक्तिः

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/7)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-18,19

31. स्वदेशे पूज्यते राजा..... सर्वत्र पूज्यते। BHU B.Ed–2015
(A) मूर्खः (B) विद्वान्
(C) मित्रम् (D) वृद्धः

स्रोत–पञ्चतन्त्रम् (मित्र सम्प्रति श्लोक-59)-गुरू प्रसाद शास्त्री, पेज–444

32. ''अयं निजः परो वेति गणना लघु चेतसाम्'' इति कस्मिन् ग्रन्थे वर्णितम्? BHU B.Ed–2011
(A) हितोपदेशे (B) रघुवंशे
(C) मेघदूते (D) शिशुपालवधे

स्रोत–हितोपदेश (श्लोक-70) - विश्वनाथ शर्मणा, पेज-74

33. ''यस्मादन्तः स्थितः सर्वः स्वयमर्थोऽवभासते। सलिलस्येव सूक्तस्य स प्रसाद इति स्मृतः'' उपर्युक्त श्लोक किस ग्रन्थ का है? BHU MET–2011
(A) साहित्यदर्पण (B) नाट्यशास्त्र
(C) चन्द्रालोक (D) दशरूपक

स्रोत–चन्द्रालोक-कृष्णमणि त्रिपाठी, पेज-65

34. ''सर्वज्ञानमयो हि सः'' यह उक्ति कहाँ से प्राप्त है? BHU MET–2013
(A) मनुस्मृति (B) रामायण
(C) महाभारत (D) वेद

स्रोत–मनुस्मृति (2/7) -गिरिधर गोपाल शर्मा, पेज-63

35. ''परोपदेशे पाण्डित्यं सर्वेषां सुकरं नृणाम्'' इत्ययं श्लोकांशः......ग्रन्थे वर्तते? BHU B.Ed–2014
(A) वैराग्यशतके (B) चाणक्यसूत्रे
(C) हितोपदेशे (D) नीतिशतके

स्रोत–हितोपदेश (श्लोक-102)-विश्वनाथ शर्मणा, पेज-95

36. जननी जन्मभूमिश्च............अपि गरीयसी। BHU B.Ed–2014
(A) गृहात् (B) स्वर्गात्
(C) लोकात् (D) देशात्

स्रोत–

37. ''संग्रामाध्वरदीक्षितो नरपतिः'' यह वाक्य जिसमें है वह ग्रन्थ है– BHU MET–2014
(A) उत्तररामचरितम् (B) स्वप्नवासवदत्तम्
(C) प्रतिमानाटकम् (D) वेणीसंहारम्

स्रोत– वेणीसंहार (1/25) -गंगासागर राय, पेज-47

38. ''सत्यादप्यनृतं श्रेयो धिक् स्वर्गं नरकोऽस्तु मे'' के वक्ता हैं– BHU MET–2014
(A) कर्ण (B) दुर्योधन
(C) भीम (D) अश्वत्थामा

स्रोत–वेणीसंहार (3/48) - गंगासागर राय, पेज-169

39. ईदृग्विनोदः कुतः – कः अत्र परामृष्टः विनोदः? KL SET–2013
(A) द्यूतम् (B) मृगया
(C) चित्रलेखनम् (D) व्यायामः

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (2/5)- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-104

28. (B) 29. (C) 30. (D) 31. (B) 32. (A) 33. (C) 34. (A) 35. (C) 36. (B) 37. (D) 38. (D) 39. (B)

40. ''छलबहुलमरीणां संगरम्'' इस उक्ति वाला ग्रन्थ है– BHU MET–2014

(A) वासवदत्तम् (B) वेणीसंहारम्
(C) उत्तररामचरितम् (D) रत्नावली

स्रोत–वेणीसंहार (5/21) -गंगासागर राय, पेज-245

41. ''वेद एवं द्विजातीनां निःश्रेयस्करः परः'' किस ग्रन्थ में है? BHU MET–2014

(A) पराशरस्मृतिः (B) याज्ञवल्क्यस्मृतिः
(C) मनुस्मृतिः (D) विदुरनीतिः

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति (1/40)-उमेशचन्द्र पाण्डेय, पेज-16

42. प्रवृत्तं च निवृत्तश्च द्विविधं कर्मवैदिकम्'' किसकी उक्ति है? BHU MET–2014

(A) मनु (B) याज्ञवल्क्य
(C) गौतम (D) पराशर

स्रोत–मनुस्मृति (12/88) -शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन,पेज-877

43. बहुगुणरमणीयो कामिनीचित्तहारी'' जिसमें पाया जाता है, वह ग्रन्थ है– BHU MET–2014

(A) हितोपदेशम् (B) ऋतुसंहारम्
(C) नीतिशतकम् (D) अभिज्ञानशाकुन्तलम्

स्रोत–ऋतुसंहार (2/29) - सीताराम चतुर्वेदी, पेज-354

44. ''तपसा मनसा वाग्भिः पूजिता बलिकर्मभिः। तुष्यन्ति शमिनां नित्यं देवताः किं विचारितैः॥'' वाला ग्रन्थ है– BHU MET–2014

(A) वेणीसंहारम् (B) मृच्छकटिकम्
(C) मुद्राराक्षसम् (D) प्रतिमानाटकम्

स्रोत– मृच्छकटिकम् (1/16) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-40

45. सर्वे केन तुष्यन्ति? RPSC ग्रेड-II (TGT)–2010

(A) सत्येन (B) असत्येन
(C) प्रियवाक्यप्रदानेन (D) सन्तोषेण

स्रोत–

46. ''धर्मो रक्षति रक्षितः'' इयं पक्तिः अस्ति– RPSC ग्रेड-II TGT–2010

(A) मनुस्मृतेः (B) महाभारतस्य
(C) नीतिशतकस्य (D) हितोपदेशस्य

स्रोत–मनुस्मृति (8/15)-शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन , पेज-517

47. कर्णभारे कर्णस्य प्रणामं श्रुत्वा... आशीर्वचनमुच्चारितम्? GJ SET–2016

(A) दीर्घायुर्भव (B) विजयी भव
(C) तिष्ठतु ते यशः (D) ससागरां धरित्रीं लभस्व

स्रोत–कर्णभारम् - रामजी मिश्र, पेज-18

48. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत– K SET–2013

(क) सतां सद्भिः सङ्गः कथमपि हि पुण्येन भवति — 1. माघः
(ख) किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम् — 2. भारविः
(ग) स किं सखा साधु न शास्ति योऽधिपम् — 3. कालिदासः
(घ) अनीत्वा पङ्क्तां धूलिं उदकं नावतिष्ठते — 4. भवभूतिः

	क	ख	ग	घ
(A)	2	3	1	4
(B)	3	2	4	1
(C)	4	3	2	1
(D)	2	4	1	3

स्रोत–क. उत्तररामचरितम् (2/1) ख. अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/20) ग. किरातार्जुनीयम् (1/5)

49. अधस्तनानि वाक्यानि कविभिः यथोचितं योजयत– K SET–2014

(क) हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः — 1. भवभूतिः
(ख) शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम् — 2. माघः
(ग) सर्वः स्वार्थं समीहते — 3. भारविः
(घ) लोकोत्तराणां चेतांसि को हि विज्ञातुमर्हति — 4. कालिदासः

	क	ख	ग	घ
(A)	1	4	2	3
(B)	3	4	2	1
(C)	4	1	2	3
(D)	3	4	1	2

स्रोत–क- किरातार्जुनीयम् (1/4) ख- कुमारसम्भवम् (5/33) घ- उत्तररामचरितम् (2/7)

40. (B)	41. (B)	42. (A)	43. (B)	44. (B)	45. (C)	46. (A)	47. (C)	48. (C)	49. (B)

50. 'दिष्ट्या मित्रकार्येण मे विनाशो जनितः न पुनः पुरुषदोषेण' इत्येतद्वाक्यं कस्मिन् नाटके वर्तते? MH SET–2013

(A) मुद्राराक्षसे (B) अभिज्ञानशाकुन्तले
(C) स्वप्नवासवदत्ते (D) उत्तररामचरिते

स्रोत–मुद्राराक्षस - परमेश्वरदीन पाण्डेय, पेज-70

51. ''न जायते म्रियते वा कदाचित्'' इति कस्य कृते? RPSC ग्रेड-II (TGT)–2010

(A) आदित्यस्य (B) आत्मनः
(C) अर्जुनस्य (D) अम्बरस्य

स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (2/20)-गीताप्रेस, पेज-31

52. ''शरीरेऽरिः प्रहरति, हृदये स्वजनस्तथा'' सूक्ति का स्रोत है– UP GIC – 2009

(A) प्रतिमानाटकम् (B) उत्तररामचरितम्
(C) नीतिशतकम् (D) नलचम्पू

स्रोत–प्रतिमानाटक (1/2) - धरानन्द शास्त्री, पेज-33

53. (i) ''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः'' उक्ति है–
(ii) यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः इत्युक्तिः कस्मिन् ग्रन्थे प्राप्यते?
UGC 73 J– 1999, RPSC SET–2010

(A) मनुस्मृति (B) रामायण
(C) महाभारत (D) गीता

स्रोत–मनुस्मृति (3/56)- शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पेज-215

54. ''नाट्याख्यं पञ्चमं वेदम्'' यह कथन है– UP TET– 2013

(A) भरतमुनि का (B) अश्वघोष का
(C) श्रीहर्ष का (D) शूद्रक का

स्रोत–नाट्यशास्त्र(1.15)-बाबूलाल शुक्ल शास्त्री, पेज-05

55. 'सतां सद्भिः सङ्गः कथमपि हि पुण्येन भवति' का अर्थ है। UK TET– 2011

(A) सज्जनों का सत्य के साथ मिलन बड़े पुण्य से होता है।
(B) सज्जनों का सज्जनों से मिलन बड़े पुण्य से होता है।
(C) सत्य का सज्जनों से मिलना पुण्यकारी है।
(D) सज्जनों का दुर्जनों से मिलना पुण्यकारी नहीं है।

स्रोत–उत्तररामचरितम् (2/1)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-97, 98

56. रम्याणि वीक्ष्य मधुरांश्च निशम्य शब्दान् पर्युत्सुको भवति यत्.......... जन्तुः। BHU AET– 2011

(A) कुशलोऽपि (B) सफलोऽपि
(C) सुखितोऽपि (D) कुपितोऽपि

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (5/2)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-245

57. ''पुराणमित्येव न साधु सर्वम्'' इति कालिदासोक्तिः कुत्र प्राप्यते? BHU AET– 2010

(A) विक्रमोर्वशीये (B) मालविकाग्निमित्रे
(C) रघुवंशे (D) कुमारसम्भवे

स्रोत–मालविकाग्निमित्रम् (1/2)-रमाशंकर पाण्डेय, पेज-4

58. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत– UGC 25 D– 2014

(अ) चलापाङ्गां दृष्टिं स्पृशसि बहुशो वेपथुमतीम्। **1. किरातार्जुनीयम्**
(ब) गुणानुरोधेन विना न सत्क्रिया। **2. अभिज्ञानशाकुन्तलम्**
(स) क्षणमिह मम कण्ठे बाहुपाशं विधेहि। **3. शिशुपालवधम्**
(द) पुरातनं त्वां पुरुषं पुराविदः। **4. रत्नावली**

	अ	ब	स	द
(A)	1	2	3	4
(B)	2	1	4	3
(C)	3	2	1	4
(D)	4	3	2	1

स्रोत–अ- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/24)
ब- किरातार्जुनीयम् (1/12) द- शिशुपालवधम् (1/33)

59. ''क्लेशः फलेन हि पुनर्नवतां विधत्ते'' इयम् उक्तिः कुत्र वर्तते– RPSC ग्रेड-II (TGT)– 2010

(A) रघुवंशे (B) किरातार्जुनीये
(C) कुमारसम्भवे (D) नैषधीयचरिते

स्रोत–कुमारसम्भवम् (5/86)-सुधाकर मालवीय, पेज–159

50. (A) 51. (B) 52. (A) 53. (A) 54. (A) 55. (B) 56. (C) 57. (B) 58. (B) 59. (C)

60. 'अहो उदाररमणीया पृथिवी' यह वाक्य इस नाटक का है– UGC 25 J– 1994

(A) मुद्राराक्षस (B) अभिज्ञानशाकुन्तल

(C) वेणीसंहार (D) मालविकाग्निमित्र

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (अङ्क-7)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-400

61. निम्नलिखित सूक्तियों को उनके रचनाकारों के साथ सुमेलित कीजिए– UP PGT– 2013

(अ) सतीव योषित्प्रकृतिः सुनिश्चला पुमांसमभ्येति भवान्तरेष्वपि। (i) कालिदास

(ब) हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः। (ii) माघ

(स) अतिकृपणाः खल्वमी प्राणाः। (iii) भारवि

(द) स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु। (iv) बाणभट्ट

	अ	ब	स	द
(A)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(B)	(iii)	(iv)	(ii)	(i)
(C)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)
(D)	(iv)	(ii)	(iii)	(i)

स्रोत–अ- शिशुपालवधम् (1/72) ब- किरातार्जुनीयम् (1/4)
स- कादम्बरीकथामुखम् - तारिणीश झा, पेज-291
द- मेघदूतम् (पूर्व-29)

62. 'विनैव युद्धादार्येण जितं दुर्जयं रिपुकुलमिति' – वचनं....... GJ SET–2016

(A) चन्द्रगुप्तस्य (B) चाणक्यस्य

(C) ब्रह्मराक्षसस्य (D) विक्रमादित्यस्य

स्रोत–मुद्राराक्षस - परमेश्वरदीन पाण्डेय, पेज-377

63. ''हुतं च दत्तं च तथैव तिष्ठति'' – इति कथनं कर्णभारम् इति 'नाटकेऽस्ति'? T SET–2013

(A) कर्णस्य (B) शक्रस्य

(C) शल्यस्य (D) देवदूतस्य

स्रोत–कर्णभारम् (1/22) - रामजी मिश्र, पेज-23

64. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां मेलनतालिकां चिनुत– UGC 25 J–2016

(क) सतां सद्भिः सङ्गः कथमपि हि पुण्येन भवति (i) शिशुपालवधम्

(ख) अदृष्टमप्यर्थमदृष्टवैभवात् करोति सुप्तिर्जन दर्शनातिथिम् (ii) अभिज्ञानशाकुन्तलम्

(ग) हंसो हि क्षीरमादत्ते तन्मिश्रा वर्जयत्यपः (iii) उत्तररामचरितम्

(घ) तपने वर्षाः शरदा हिमागमो वसन्तलक्ष्म्या शिशिरः समेत्य च (iv) नैषधीयचरितम्

	क	ख	ग	घ
(A)	4	1	2	3
(B)	2	3	4	1
(C)	1	2	3	4
(D)	3	4	2	1

स्रोत–क- उत्तररामचरितम् (2/1) ख- नैषधीयचरितम् (1/39)
ग- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (6/28) घ- शिशुपालवधम् (1/66)

65. 'उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः' यह उक्ति कहाँ प्राप्त होती है? BHU MET–2016

(A) पञ्चतन्त्र (B) नीतिशतक

(C) रघुवंश (D) गीता

पञ्चतन्त्रम् (मित्रसम्प्रति) श्लोक (138)-गुरू प्रसाद शास्त्री, पेज-512

66. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत– UGC 25 Jn–2017

(क) लोके हि लोहेभ्यः कठिनतराः खलु स्नेहमयाः बन्धनपाशाः (i) रत्नावली

(ख) वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः (ii) हर्षचरितम्

(ग) श्रीहर्षो निपुणः कविः परिषदप्येषा गुणग्राहिणी (iii) मुद्राराक्षसम्

(घ) गजेन्द्राश्च नरेन्द्राश्च प्रायः सीदन्ति दुःखिताः (iv) किरातार्जुनीयम्

	क	ख	ग	घ
(A)	iii	ii	i	iv
(B)	ii	iv	i	iii
(C)	ii	iii	iv	i
(D)	iv	i	iii	ii

स्रोत–क- हर्षचरितम्-शिवनाथ पाण्डेय, पेज-6
ख- किरातार्जुनीयम् (1/8)-रामसेवक दुबे, पेज-61
ग- रत्नावली (1/5)-श्रीकृष्ण त्रिपाठी, पेज-7
घ- मुद्राराक्षसम् (1/16)-परमेश्वरदीन पाण्डेय, पेज-26

60. (B) 61. (C) 62. (A) 63. (A) 64. (D) 65. (A) 66. (B)

67. 'न स्त्री स्वातन्त्र्यमर्हति' मिलता है–UGC 73 D–1997

(A) रामायणम् (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(C) महाभारतम् (D) मनुस्मृति

स्रोत–मनुस्मृति (9/3)-शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन,पेज-635

68. (i) ''दैवायत्तं कुले जन्म मदायत्तं तु पौरुषम्''? इस सूक्ति वाला ग्रन्थ है– BHU MET–2015

(ii) 'दैवायत्तं कुले जन्म मदायत्तं तु पौरुषम्' इति उक्तिः कस्मिन् नाटके वर्तते? K SET–2015

(A) मेघदूतम् (B) रघुवंशम्
(C) वेणीसंहारम् (D) कुमारसम्भवम्

स्रोत–वेणीसंहार (3/37) - गंगासागर राय, पेज-155

69. ''धर्मसारमिदं जगत्'' इस वाक्य वाला ग्रन्थ है– BHU MET–2015

(A) गीता (B) वाल्मीकिरामायण
(C) नीतिशतकम् (D) उत्तररामचरितम्

स्रोत–वाल्मीकि रामायण (अरण्यकाण्ड 9/30)-गीताप्रेस, पेज–490

70. ''सर्वं परित्यज्य विद्वान् धर्मं समाचरेत्'' से सम्बन्धित ग्रन्थ है– BHU MET–2015

(A) गीता (B) महाभारत
(C) स्कन्दपुराण (D) कल्किपुराण

स्रोत–

71. ''विप्रे शस्त्रग्रहणगुरुणा साहसिक्याद् बिभेमि'' इससे सम्बन्धित ग्रन्थ है– BHU MET–2015

(A) उत्तररामचरितम् (B) प्रतिमानाटकम्
(C) हनुमन्नाटकम् (D) वेणीसंहारम्

स्रोत– हनुमन्नाटकम् (1/42)-मन्नालाल 'अभिमन्यु', पेज–17

72. 'व्यवहारेण मित्राणि जायन्ते रिपवस्तथा' यह सूक्ति पठित है– BHU MET–2015

(A) हितोपदेशः (B) नीतिशतकम्
(C) विदुरनीतिः (D) नीतिमञ्जरी

स्रोत–हितोपदेश मित्रलाभ (श्लोक 71)-रामेश्वर भट्ट, पेज-37

73. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत– UGC 25 J–2015

(अ) चीयते बालिशस्यापि सत्क्षेत्रपतिता कृषिः। (i) मृच्छकटिकम्
(ब) आसीत् स दोलाचल चित्रवृत्तिः (ii) कर्णभारम्
(स) हृदये गृह्यते नारी यदीदं नास्ति गम्यताम्। (iii) रघुवंशम्
(द) हुतं च दत्तं च तथैव तिष्ठति (iv) मुद्राराक्षसम्

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	(iv)	(i)	(ii)	(iii)
(B)	(iii)	(ii)	(i)	(iv)
(C)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)
(D)	(iv)	(iii)	(i)	(ii)

स्रोत–अ- मुद्राराक्षस (1/3) परमेश्वरदीन पाण्डेय, पेज-4
स- मृच्छकटिकम् (1/50) रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-95
द- कर्णभारम् (1/22) रामजी मिश्र,पेज-23

74. केनोक्तम् 'क्लेशः फलेन हि पुनर्नवतां विधत्ते'– AWES TGT–2008

(A) भवभूतिना (B) भासेन
(C) कालिदासेन (D) सुबन्धुना

स्रोत–कुमारसम्भवम् (5/86) सुधाकर मालवीय, पेज-159

75. ''स्वस्था भवन्तु कुरुराजसुताः सभृत्याः'' इति पद्यभागः कस्मिन् नाटके अस्ति? UK SLET–2015

(A) मुद्राराक्षसे (B) मृच्छकटिके
(C) वेणीसंहारे (D) उत्तररामचरिते

स्रोत–वेणीसंहार (1/7) - गंगासागर राय,पेज-16

76. ''स्नेहक्षयात् केवलमेति शान्तिम्'' – यह सूक्ति इस काव्य से है? UGC 25 D–1997

(A) मेघदूतम् से (B) बुद्धचरितम्
(C) शिशुपालवधम् से (D) किरातार्जुनीयम् से

स्रोत–

77. 'यथा स्त्रीणां तथा वाचां साधुत्वे दुर्जनो जनः' इति कस्योक्तिः? K SET–2015

(A) भासस्य (B) कालिदासस्य
(C) भवभूतेः (D) श्रीहर्षस्य

स्रोत–उत्तररामचरितम् (1/5) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-12

67. (D) 68. (C) 69. (B) 70. (C) 71. (C) 72. (A) 73. (D) 74. (C) 75. (C) 76. (B) 77. (C)

78. **''मनसि वचसि काये पुण्यपीयूषपूर्णाः'' – पंक्ति किस छन्द की ओर इंगित कर रही है? H TET–2015**

(A) उपजाति (B) शिखरिणी
(C) मालिनी (D) आर्या

स्रोत–नीतिशतकम् - गोपाल शर्मा, पेज-127

79. **''सर्वे भवन्तु सुखिनः'' किस प्रकार का वाक्य है? UP TET–2016**

(A) संकेतवाचक (B) विस्मयबोधक
(C) प्रश्नवाचक (D) इच्छावाचक

स्रोत–

80. **अधस्तनयुग्मानां समीचीनतालिकां चिनुत– UGC 25 J–2016**

(क) अनङ्गोऽयमनङ्गत्वमद्य निन्दिष्यति ध्रुवम् **(i) उत्तररामचरितम्**
(ख) उदेति पूर्वं कुसुमं ततः फलम् **(ii) कादम्बरी**
(ग) प्रभवति शुचिर्बिम्बग्राहे मणिर्न मृदादयः **(iii) रत्नावली**
(घ) न हि क्षुद्रनिर्घातपाताभिहता चलति वसुधा **(iv) अभिज्ञानशाकुन्तलम्**

	क	ख	ग	घ
(A)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(B)	(iii)	(iv)	(i)	(ii)
(C)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)
(D)	(iv)	(i)	(ii)	(iii)

स्रोत–क - रत्नावली (1/22) - श्रीकृष्ण त्रिपाठी, पेज-38
ख- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (7/30)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-442
ग-उत्तररामचरितम् (2.4)
घ-कादम्बरी (महाश्वेतावृत्तान्त)-प्रद्युम्न पाण्डेय, पेज–29

81. **अधस्तनयुग्मानां समीचीनां मेलनतालिकां चिनुत– UGC 25 J–2016**

(A) गतं तिरश्चीनमनूरुसारथेः **(i) उत्तररामचरितम्**
(B) न हि प्रियं प्रवक्तुमिच्छन्ति मृषा हितैषिणः **(ii) नैषधीयचरितम्**
(C) निपीय यस्य क्षितिरक्षिणः कथाम् **(iii) शिशुपालवधम्**
(D) अद्वैतं सुखदुःखयोरनुगतम् **(iv) किरातार्जुनीयम्**

	क	ख	ग	घ
(A)	3	4	1	2
(B)	2	3	4	1
(C)	3	4	2	1
(D)	1	2	3	4

स्रोत– A- शिशुपालवधम् (1/2) - तारिणीश झा,पेज-6
B- किरातार्जुनीयम् (1/2) - रामसेवक दुबे, पेज-45
C- नैषधीयचरितम् (1/1) - देवर्षि सनाढ्य शास्त्री,पेज-1
D- उत्तररामचरितम् (1/39)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-75

82. **'मग्नस्य दुःखे जगतो हिताय' इति कस्य वर्णनम् – UGC 25 J–2014**

(A) पाटलिपुत्रस्य (B) शुद्धोदनपुत्रस्य
(C) उद्यानस्य (D) देवदत्तस्य

स्रोत– बुद्धचरितम् (1/20)-रामचन्द्रदास शास्त्री, पेज–04

83. **''नाट्यं भिन्नरुचेर्जनस्य बहुधाप्येकं समाराधनम्'' वाक्यमिदं कुत्रास्ति? DSSSB PGT–2014**

(A) अभिज्ञानशाकुन्तले (B) मालविकाग्निमित्रे
(C) विक्रमोर्वशीये (D) मुद्राराक्षसे

स्रोत– मालविकाग्निमित्रम् (1/4)-रमाशंकर पाण्डेय, पेज-12

78. (C) 79. (D) 80. (B) 81. (C) 82. (B) 83. (B)

27 साहित्यिक ग्रन्थ-ग्रन्थकार

1. (i) 'स्वप्नवासवदत्तम्' के लेखक हैं?
(ii) स्वप्नवासवदत्तस्य को रचयिता?
(iii) स्वप्नवासवत्तायाः लेखकः कः अस्ति?
BPSC–1999, UGC 25 J–2007, BHU Sh.ET–2013, UGC 73 D–2007
(A) कालिदास (B) भास
(C) भवभूति (D) राजशेखर
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-275

2. यह भास की रचना नहीं है– UP PGT–2000
(A) प्रतिज्ञायौगन्धरायणम् (B) स्वप्नवासवदत्तम्
(C) रत्नावली (D) दरिद्रचारुदत्तम्
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-275, 365

3. का कृतिः भासविरचिता नास्ति– UGC 25 J–2010
(A) प्रतिमानाटकम् (B) ऊरुभङ्गम्
(C) स्वप्नवासवदत्तम् (D) वासवदत्ता
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-275, 482

4. भास की रचना है– UGC 25 D–2002
(A) विक्रमोर्वशीयम् (B) वेणीसंहारम्
(C) मृच्छकटिकम् (D) स्वप्नवासवदत्तम्
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-275

5. महाकवि भास का नाटक नहीं है?
UP TET–2014, UP PGT (H)–2009
(A) दूतवाक्यम् (B) स्वप्नवासवदत्तम्
(C) प्रतिमानाटकम् (D) मृच्छकटिकम्
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-275, 300

6. (i) कस्य रचना 'दूतवाक्यम्' वर्तते– UP TET–2013,
(ii) 'दूतवाक्यम्' कृति है– BHU MET–2010,
(iii) 'दूतवाक्यम्' के रचयिता कौन हैं?
MP-वर्ग-1 (PGT)–2012, AWES TGT–2008
(A) भास (B) भवभूति
(C) भारवि (D) कालिदास
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-275

7. 'प्रतिज्ञायौगन्धरायण' किसकी रचना है? UK TET–2011
(A) कालिदास (B) भास
(C) भारवि (D) भवभूति
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-275

8. भास रचित 'प्रतिमा' काव्य की कौन-सी विधा है?
UK TET–2011
(A) महाकाव्य (B) खण्डकाव्य
(C) चम्पूकाव्य (D) नाटक
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-276

9. 'प्रतिमानाटकम्' के रचयिता कौन हैं?
BHU MET–2008
(A) भास (B) भट्टनारायण
(C) कालिदास (D) विशाखदत्त
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-275

10. 'बालचरितम्' के लेखक कौन हैं? BHU MET–2016
(A) भास (B) बिल्हण
(C) अश्वघोष (D) भवभूति
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-275

11. भास द्वारा रचित नहीं है? BHU MET–2016
(A) अविमारकम् (B) उत्तररामचरितम्
(C) मध्यमव्यायोगः (D) कर्णभारम्
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-275/395

12. मध्यमव्यायोगः किसकी रचना है?BHU MET–2010
(A) भास (B) व्यास
(C) कालिदास (D) शूद्रक
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-275

13. (i) अभिषेकनाटक किसकी कृति है?
(ii) 'अभिषेकनाटकं' कस्य कृतिः? BHU B.Ed–2013,
(iii) अभिषेकनाटकं केन रचितम्? JNU MET–2014, BHU MET–2016
(A) भासस्य (B) विशाखदत्तस्य
(C) भट्टनारायणस्य (D) भवभूतेः
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-275

1. (B) 2. (C) 3. (D) 4. (D) 5. (D) 6. (A) 7. (B) 8. (D) 9. (A) 10. (A) 11. (B) 12. (A) 13. (A)

14. 'अविमारकम्' केन रचितम्– JNU MET–2014

(A) मुरारिणा (B) राजशेखरेण

(C) भासेन (D) भवभूतिना

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-275

15. (i) महाभारतमाश्रित्य विरचितं रूपकम्

(ii) भासस्य नाटकेषु किं नाटकं महाभारतस्य कथाश्रितम्– AWES TGT–2011, K SET–2014

(A) मध्यमव्यायोगः (B) अभिषेकः

(C) प्रतिज्ञायौगन्धरायणः (D) दरिद्रचारुदत्तः

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-129, 275

16. (i) भासनाटकचक्रस्य पाण्डुलिपीनां सम्पादनम् अनेन इदम्प्रथमतया कृतम्– JNU M Phil/Ph. D–2015,

(ii) भासनाटकानामनुसंधानकर्ता .... उच्यते? GJ SET–2016

(A) वी० राघवन् (B) पी० वी० काणे

(C) टी० गणपतिशास्त्री (D) एम० आर० काले

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-275

17. दरिद्रचारुदत्त, बालचरित, दूतघटोत्कच – ये सभी रूपक इनके द्वारा लिखित हैं? H TET–2015

(A) भास (B) भवभूति

(C) शूद्रक (D) भट्टनारायण

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-275

18. अधोलिखितेषु किं भासस्य रूपकम्– K SET–2014

(A) मुद्राराक्षसम् (B) अभिषेकनाटकम्

(C) मत्तविलासप्रहसनम् (D) रत्नावली

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-276

19. (i) अभिज्ञानशाकुन्तलम् के लेखक कौन हैं?

(ii) 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' किसने लिखा?

(iii) अभिज्ञानशाकुन्तलस्य रचयिता कः? MP PSC–2000, BHU B.Ed–2011, UP TGT (S.S.) 2010

(A) बाणभट्ट (B) वेदव्यास

(C) कालिदास (D) भवभूति

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-326

20. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत– WB SET–2010

(क) भवभूति (i) कुमारसम्भवम्

(ख) भट्टनारायण (ii) स्वप्नवासवदत्तम्

(ग) भास (iii) उत्तररामचरितम्

(घ) कालिदास (iv) वेणीसंहारम्

	क	ख	ग	घ
(A)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)
(B)	(ii)	(i)	(iv)	(iii)
(C)	(iii)	(iv)	(ii)	(i)
(D)	(i)	(iii)	(ii)	(iv)

संस्कृत साहित्य का समी. इति.-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-395, 381, 275, 138

21. निम्नलिखित में से कौन-सा ग्रन्थ कालिदास ने नहीं लिखा– MP PSC–2003

(A) मालविकाग्निमित्रम् (B) कुमारसम्भवम्

(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (D) जानकीहरणम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-208

22. लघुत्रय्याः कर्ता कः– BHU AET–2010

(A) कुमारदासः (B) दुर्गादासः

(C) कालिदासः (D) श्रीधरदासः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-208

23. कालिदास विरचित नाटक नहीं है? UP TET–2014

(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (B) मालविकाग्निमित्रम्

(C) स्वप्नवासवदत्तम् (D) विक्रमोर्वशीयम्

संस्कृत साहित्य का समी. इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-138, 275

24. निम्नलिखित में से कौन-सी कृति कालिदास की नहीं है– UP TET–2014

(A) रघुवंशम् (B) मेघदूतम्

(C) ऋतुसंहारम् (D) वेणीसंहारम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-138, 518

25. निम्न में से कौन-सी रचना कालिदास की नहीं है? BHU MET–2014

(A) मेघदूतम् (B) रघुवंशम्

(C) प्रतिमानाटकम् (D) कुमारसम्भवम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-138, 275

14. (C) 15. (A) 16. (C) 17. (A) 18. (B) 19. (C) 20. (C) 21. (D) 22. (C) 23. (C) 24. (D) 25. (C)

26. सही विकल्प चुनिये– UGC 73 D–2014

(A) रामायणम्– वेदव्यासः (B) महाभारतम्–वाल्मीकिः

(C) मेघदूतम्–कालिदासः (D) कादम्बरी–दण्डी

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-138

27. निम्नलिखित में से कौन-सा ग्रन्थ कालिदास प्रणीत है? UP PGT (H)–2009

(A) उत्तररामचरितम् (B) मालविकाग्निमित्रम्

(C) मृच्छकटिकम् (D) मुद्राराक्षसम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-138

28. कालिदास की साहित्यिक कृति कौन-सी नहीं है? Chh. PSC–2004, MP PSC–1991, 1996

(A) मृच्छकटिकम् (B) मेघदूतम्

(C) ऋतुसंहारम् (D) विक्रमोर्वशीयम्

संस्कृत साहित्य का समी० इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-300,138

29. (i) मृच्छकटिकस्य लेखकः कः मन्यते?

(ii) मृच्छकटिकस्य को रचयिता?

(iii) मृच्छकटिकम् केन विरचितम्?

BHU Sh.ET–2013, DSSSB PGT–2014, UGC 25 J–2005, RPSC SET–2010

(A) शूद्रकः (B) भवभूतिः

(C) जयदेवः (D) सुबन्धुः

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-300

30. (i) 'मुद्राराक्षसम्' रूपक के ग्रन्थकर्ता हैं'

(ii) मुद्राराक्षसस्य रचयिता कः? BHU AET–2011,

(iii) को मुद्राराक्षसं नाम नाटकं कृतवान् कविः?

(iv) 'मुद्राराक्षस' – किसकी रचना है?

(v) 'मुद्राराक्षस' के रचनाकार हैं? UP PGT (H)–2005, BHU MET–2010, 2015, BHU Sh.ET–2011, UGC 25 J–2007

(A) भासः (B) विशाखदत्तः

(C) हर्षः (D) भवभूतिः

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-354

31. (i) संस्कृत के सुप्रसिद्ध नाटककार विशाखदत्त की प्रसिद्ध कृति का नाम है– UGC 25 D–1996

(ii) विशाखदत्त की रचना है? UP TET–2016

(A) मृच्छकटिकम् (B) वेणीसंहारम्

(C) नागानन्दम् (D) मुद्राराक्षसम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-354

32. राजनीति और कूटनीति विषयों पर आधारित संस्कृत नाटक कौन है? BHU MET–2009

(A) मुद्राराक्षस (B) प्रियदर्शिका

(C) नागानन्द (D) महावीरचरित

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-361

33. पञ्चाङ्कं नाटकं 'नागानन्द' कस्य कवेः कृतिः? BHU AET–2011

(A) भासस्य (B) मयूरस्य

(C) हर्षवर्धनस्य (D) कृष्णामिश्रस्य

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-365

34. 'नागानन्द' 'रत्नावली' एवं 'प्रियदर्शिका' के लेखक हैं– RPSC ग्रेड-I–1999

(A) बाणभट्ट (B) विशाखदत्त

(C) वात्स्यायन (D) हर्षवर्धन

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-366

35. 'हर्षवर्धनस्य' रचना नास्ति– DL–2015

(A) प्रियदर्शिका (B) रत्नावली

(C) नागानन्दम् (D) नैषधीयचरितम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-366

36. निम्न में से कौन-सी रचना हर्ष द्वारा रचित नहीं है? MP PSC–2009

(A) रत्नावली (B) नागानन्द

(C) हर्षचरित (D) प्रियदर्शिका

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-366

37. 'प्रियदर्शिका' के कर्ता कौन हैं? BHU MET–2009, 2013

(A) हर्ष (B) कालिदास

(C) भवभूति (D) विशाखदत्त

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-366

26. (C) 27. (B) 28. (A) 29. (A) 30. (B) 31. (D) 32. (A) 33. (C) 34. (D) 35. (D) 36. (C) 37. (A)

38. 'प्रियदर्शिका' व 'रत्नावली' के रचनाकार कौन हैं? H TET–2015

(A) विशाखदत्त (B) मुरारि
(C) हर्षवर्धन (D) हेमचन्द्र

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-366

39. (i) रत्नावली कस्य रचना अस्ति–UGC 25 D–2007,
(ii) रत्नावल्याः रचयिता कः? BHU AET–2012, RO–2015, G GIC–2015

(A) श्रीहर्षः (B) हर्षदेवः
(C) भासः (D) बाणः

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-366

40. हर्ष के सम्बन्ध में निम्न कथन किसका है ''वह कभी थकता नही था। सारा दिन काम करता था, दिन उनके लिए छोटा पड़ता था।'' MP PSC–1992

(A) ह्वेनसांग (B) बाणभट्ट
(C) कल्हण (D) अश्वघोष

स्रोत–

41. (i) भट्टनारायणः कस्य कर्ता? JNU MET–2014
(ii) भट्टनारायणस्य रचना अस्ति
(iii) भट्टनारायण किस रूपक के रचयिता हैं– UGC 25 J–1995, UP GIC–2015

(A) वेणीसंहारस्य (B) नैषधचरितस्य
(C) अनर्घराघवस्य (D) मुद्राराक्षसस्य

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-381

42. वेणीसंहारस्य रचयिता कः? UGC 25 D–2005, 2011 WB SET–2010

(A) भासः (B) कालिदासः
(C) शूद्रकः (D) भट्टनारायणः

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-381

43. काव्यादर्शः कस्य कृतिः अस्ति – MGKV Ph. D–2017

(A) दण्डिनः (B) भामहस्य
(C) वामनस्य (D) विश्वनाथस्य

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-578

44. (i) 'उत्तररामचरितम्' के लेखक हैं–
(ii) उत्तररामचरितस्य रचयिता कः?
(iii) उत्तररामचरितम् किसकी रचना है? UP TGT–2004, BHU MET–2008, BHU B.Ed–2012, UP PGT (H)–2002

(A) भारवि (B) भवभूति
(C) भर्तृहरि (D) भरतमुनि

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-395

45. भवभूतिरचितस्य प्रकरणनाट्यस्य नाम किम्? RPSC ग्रेड-I (PGT)–2014

(A) दरिद्रचारुदत्तम् (B) मालतीमाधवम्
(C) मधुमालतीयम् (D) नागानन्दम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-397

46. 'मालतीमाधव' के लेखक हैं– RPSC–1999, BHU MET–2010, UP PGT (H)–2009

(A) भास (B) भवभूति
(C) शूद्रक (D) हर्ष

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-395

47. 'महावीरचरित' किसकी रचना है? UP PGT–2002

(A) कालिदास (B) शूद्रक
(C) भवभूति (D) अश्वघोष

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-395

48. भवभूति का सम्बन्ध है? UP TET–2013

(A) मालविकाग्निमित्रम् से (B) रघुवंशम् से
(C) अष्टाध्यायी से (D) उत्तररामचरितम् से

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-395

49. यह नाटक भवभूति की रचना नहीं है? BHU MET–2010

(A) वेणीसंहारम् (B) उत्तररामचरितम्
(C) महावीरचरितम् (D) मालतीमाधवम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-381

38. (C) 39. (B) 40. (A) 41. (A) 42. (D) 43. (A) 44. (B) 45. (B) 46. (B) 47. (C) 48. (D) 49. (A)

50. (i) भवभूतेः कवेः सर्वश्रेष्ठं नाटकम्?
(ii) भवभूति द्वारा लिखित रचना कौन है?
BHU MET–2009, 2013, UP TGT (H)–2010, AWES TGT–2011

(A) प्रतिमानाटक (B) उत्तररामचरित
(C) मुद्राराक्षस (D) मृच्छकटिक

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-403

51. भवभूति का सम्बन्ध किस कृति से नहीं है? UP TGT–2010

(A) उत्तररामचरितम् (B) महावीरचरितम्
(C) बुद्धचरितम् (D) मालतीमाधवम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-168, 395

52. अधोलिखितासु कृतिषु अश्वघोषस्य कृतिरस्ति– RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014

(A) गीतगोविन्दम् (B) शारिपुत्रप्रकरणम्
(C) रघुवंशम् (D) कुमारसम्भवम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-168

53. 'शारिपुत्रप्रकरण' के रचयिता हैं– BHU AET–2011

(A) बुद्धघोष (B) अश्वघोष
(C) मञ्जुघोष (D) धर्मत्रात

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-168

54. (i) बुद्धचरित के लेखक कौन हैं?
(ii) बुद्धचरितस्य लेखकस्य नाम–
(iii) बुद्धचरितस्य कर्ता? UP TGT (S. S.)–2010,
(iv) बुद्धचरित महाकाव्य के रचयिता हैं?
UGC 25 J–1998, 1999, 2003

(A) हरिषेण (B) अश्वघोष
(C) वसुमित्र (D) कालिदास

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-168

55. केन कविना बौद्धधर्मस्य प्रचारार्थं काव्यानि लिखितानि– UGC 25 J–2016

(A) कालिदासेन (B) माघेन
(C) अश्वघोषेण (D) भवभूतिना

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-168

56. (i) अनर्घराघव किसकी कृति है– BHU AET–2011,
(ii) 'अनर्घराघव' इस ग्रन्थ के रचयिता हैं–
(iii) 'अनर्घराघवं' कोऽसौ रचयामास नाटकम्?
H TET–2014, BHU MET–2009, 2013

(A) मुरारिः (B) शूद्रकः
(C) राजशेखरः (D) जयदेवः

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-430

57. राजशेखर की निम्नलिखित रचनाओं में से कौन रचना अधूरी है– UP PGT (H)–2005

(A) बालभारत (B) काव्यमीमांसा
(C) कर्पूरमञ्जरी (D) विद्धशालभञ्जिका

स्रोत–हिन्दी काव्यमीमांसा-गंगासागर राय, भू0 पेज - 41, 42

58. कविदिङ्नागेन लिखितम्– AWES TGT–2008

(A) सीतारामचरितम् (B) रावणचरितम्
(C) कुन्दमाला (D) कंसवधम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-436

59. 'प्रबोधचन्द्रोदय' किसका नाटक है? UP PGT–2002

(A) राजशेखर (B) कृष्णमिश्र
(C) दिङ्नाग (D) मुरारि

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-438

60. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत – UGC 25 D–2004

(अ) वेणीसंहारम् (i) भवभूतिः
(ब) स्वप्नवासवदत्तम् (ii) कालिदासः
(स) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (iii) भट्टनारायणः
(द) उत्तररामचरितम् (iv) भासः

	अ	ब	स	द
(A)	(ii)	(i)	(iii)	(iv)
(B)	(i)	(iii)	(iv)	(ii)
(C)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)
(D)	(iii)	(iv)	(ii)	(i)

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज- अ-381, ब-275, स-326, द-395

50. (B) 51. (C) 52. (B) 53. (B) 54. (B) 55. (C) 56. (A) 57. (A) 58. (C) 59. (B) 60. (D)

61. समीचीनां तालिकां चिनुत – UGC 25 D–2008

(अ) मुरारिः (i) मुद्राराक्षसम्
(ब) शूद्रकः (ii) प्रतिमानाटकम्
(स) भासः (iii) मृच्छकटिकम्
(द) विशाखदत्तः (iv) अनर्घराघवम्

	अ	ब	स	द
(A)	(iii)	(iv)	(i)	(ii)
(B)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)
(C)	(ii)	(i)	(iv)	(iii)
(D)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज- अ-430, ब-300, स-275, द-354

62. कालिदासेन रचिता कृतिः न वर्तते–UGC 25 D–2003

(A) स्वप्नवासवदत्तम् (B) मेघदूतम्
(C) रघुवंशम् (D) अभिज्ञानशाकुन्तलम्

संस्कृत साहित्य का समी. इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-275, 138

63. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत– UGC 25 S–2013

(अ) श्रीहर्षः 1. उत्तररामचरितम्
(ब) बाणभट्टः 2. बुद्धचरितम्
(स) भवभूतिः 3. नैषधीयचरितम्
(द) अश्वघोषः 4. हर्षचरितम्

	अ	ब	स	द
(A)	2	3	4	1
(B)	3	4	1	2
(C)	1	2	3	4
(D)	4	1	2	3

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज- अ-223, ब-490, स-395, द-168

64. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत– UGC 25 D–2013

(अ) हर्षः (1) मुद्राराक्षसम्
(ब) भवभूतिः (2) स्वप्नवासवदत्तम्
(स) विशाखदत्तः (3) उत्तररामचरितम्
(द) भासः (4) रत्नावली

	अ	ब	स	द
(A)	3	2	4	1
(B)	4	3	1	2
(C)	2	1	3	4
(D)	1	4	2	3

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज- अ-365, ब-395, स-354, द-275

65. अधस्तनयुग्मानां समीचीनतालिकां चिनुत– UGC 25 J–2016

(क) श्रीहर्षः (i) हर्षचरितम्
(ख) दण्डी (ii) मुद्राराक्षसम्
(ग) बाणभट्टः (iii) नैषधीयचरितम्
(घ) विशाखदत्तः (iv) दशकुमारचरितम्

	क	ख	ग	घ
(A)	(i)	(iii)	(iv)	(ii)
(B)	(iii)	(iv)	(i)	(ii)
(C)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)
(D)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज- क-223, ख-466, ग-490, घ-354

66. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत– UGC 25 J–2014

(अ) मुद्राराक्षसम् (i) भासः
(ब) वेणीसंहारम् (ii) विशाखदत्तः
(स) रत्नावली (iii) हर्षः
(द) स्वप्नवासवदत्तम् (iv) भट्टनारायणः

	अ	ब	स	द
(A)	(iv)	(ii)	(i)	(iii)
(B)	(ii)	(iv)	(iii)	(i)
(C)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(D)	(iii)	(i)	(ii)	(iv)

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज- अ-354, ब-381, स-365, द-275

67. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत– UGC 25 D–2014

(अ) रत्नावली 1. अश्वघोषः
(ब) वेणीसंहारम् 2. हर्षः
(स) बालचरितम् 3. भट्टनारायणः
(द) बुद्धचरितम् 4. भासः

	अ	ब	स	द
(A)	4	3	2	1
(B)	3	2	4	1
(C)	2	3	4	1
(D)	2	4	1	3

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज- अ-365, ब-381, स-275, द-168

61. (B) 62. (A) 63. (B) 64. (B) 65. (B) 66. (B) 67. (C)

68. कालिदासः – **WB SET–2010**

(A) रघुवंशम्, मेघदूतम्, शिशुपालवधम्
(B) बुद्धचरितम्, दशकुमारचरितम्, रत्नावली
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम्, वेणीसंहारम्, कादम्बरी
(D) अभिज्ञानशाकुन्तलम्, रघुवंशम्, मेघदूतम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-138

69. सुमेलित कीजिए– **UGC 25 J–2002**

(अ) मृच्छकटिकम् **1. भवभूति**
(ब) उत्तररामचरितम् **2.भट्टनारायण**
(स) वेणीसंहारम् **3. कालिदास**
(द) अभिज्ञानशाकुन्तलम् **4. शूद्रक**

	अ	ब	स	द
(A)	4	1	2	3
(B)	3	2	1	4
(C)	1	2	3	4
(D)	3	1	4	2

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज- अ-300, ब-395, स-381, द-326

70. अशुद्धं युग्मं चिनुत– **MP वर्ग-I (PGT)–2012**

(A) मालविकाग्निमित्रम् – कालिदासः
(B) उत्तररामचरितम् – भवभूतिः
(C) चारुदत्तम् – शूद्रकः
(D) स्वप्नवासवदत्तम् – भासः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज- (A)-138, (B)-395, (C)-275, (D)-275

71. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत– **UGC 25 D–2015**

(क) हर्षः **(i) मुद्राराक्षसम्**
(ख) भवभूतिः **(ii) कर्णभारम्**
(ग) विशाखदत्तः **(iii) उत्तररामचरितम्**
(घ) भासः **(iv) रत्नावली**

	क	ख	ग	घ
(A)	(iii)	(ii)	(iv)	(i)
(B)	(iv)	(iii)	(i)	(ii)
(C)	(ii)	(i)	(iii)	(iv)
(D)	(i)	(iv)	(ii)	(iii)

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज- अ-365, ब-395, स-354, द-275

72. आचार्यविश्वनाथकृता नाटिकाऽस्ति– **BHU AET–2010**

(A) शशिकला (B) चन्द्रकला
(C) रत्नावली (D) प्रियदर्शिका

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-587

73. (i) 'रामायणम्' केन रचितम्? **UGC 73 D–1992,**
(ii) 'रामायण' के रचयिता हैं? **BHU MET–2012,**
(iii) रामायण लिखी? **BHU B.Ed–2012, 2015**
(iv) रामायणस्य रचयिता कः **UP TGT (S.S.) 2005, 2009, 2010**

(A) व्यासः (B) वाल्मीकिः
(C) मनुः (D) तुलसीदासः

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-103

74. (i) वाल्मीकि ने किस ग्रन्थ की रचना की? **UGC 73**
(ii) वाल्मीकि की रचना है? **D–1992, BHU AET–2011**

(A) महाभारत (B) गीता
(C) रामायण (D) उत्तररामचरित

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-103

75. महाभारत के लेखक कौन हैं? **BHU AET–2011**

(A) मनु (B) कौत्स
(C) नारद (D) व्यास

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-117

76. कविपद्मगुप्तपरिमलरचितं महाकाव्यमस्ति– **RPSC ग्रेड-II (TGT)–2011**

(A) विक्रमाङ्कदेवचरितम् (B) सुप्रभदेवचरितम्
(C) नवसाहसाङ्कचरितम् (D) चालुक्यवंशमहाकाव्यम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-255

77. मानववंशमहाकाव्यस्य कविः– **RPSC ग्रेड-II (TGT)–2010**

(A) पं0 सूर्यनारायणशास्त्री (B) डॉ0 प्रभाकरशास्त्री
(C) पण्डितराजजगन्नाथः (D) मण्डनमिश्रः

संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास-राधावल्लभ त्रिपाठी, पेज–437

68. (D)	69. (A)	70. (C)	71. (B)	72. (B)	73. (B)	74. (C)	75. (D)	76. (C)	77. (A)

78. कालानुसारेण तालिकां चिनुत– UGC 25 Jn–2017

(1) भारविः (2) भासः

(3) कालिदासः (4) साहित्यदर्पणकारः विश्वनाथः

(A)	1	2	3	4
(B)	2	1	3	4
(C)	3	1	2	4
(D)	2	3	1	4

संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज–465, 202, 242, 587

79. 'सेतुबन्धम्' इति प्राकृतकाव्यं केन कृतम्– DSSSB PGT–2014

(A) विजयसेनेन (B) प्रवरसेनेन
(C) महासेनेन (D) विष्णुसेनेन

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-254

80. अधस्तनवर्गयोः युग्मपर्यायेषु समीचीनं विचिनुत– MH SET–2013

(क) कर्णभारम् 1. कालिदासः
(ख) मृच्छकटिकम् 2. भवभूतिः
(ग) मालतीमाधवम् 3. शूद्रकः
(घ) शाकुन्तलम् 4. भासः

	क	ख	ग	घ
(A)	4	3	2	1
(B)	1	2	3	4
(C)	2	3	4	1
(D)	3	4	1	2

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज- क-275, ख-300, ग-395, घ-138

81. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत– UGC 25 Jn–2017

(क) भासः (1) मालतीमाधवम्
(ख) कालिदासः (2) मृच्छकटिकम्
(ग) भवभूतिः (3) मालविकाग्निमित्रम्
(घ) शूद्रकः (4) पञ्चरात्रम्

	क	ख	ग	घ
(A)	4	3	1	2
(B)	2	3	4	1
(C)	3	4	2	1
(D)	1	2	3	4

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज- क-275, ख-138, ग-395, घ-301

82. निर्दिष्टेषु शुद्धं युग्मं चिनुत– MP वर्ग-1 (PGT)–2012

(A) कुमारसम्भवम् – रघुवंशम्
(B) रघुवंशम् – अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(C) कुमारसम्भवम् – मेघदूतम्
(D) मेघदूतम् – विक्रमोर्वशीयम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-138

83. (i) 'कुमारसम्भव' महाकाव्य किस कवि ने लिखा है–
(ii) 'कुमारसम्भव' महाकाव्य के रचयिता कौन हैं? BPSC–2002, BHU MET–2010

(A) बाणभट्ट (B) चन्दवरदाई
(C) हरिषेण (D) कालिदास

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-138

84. 'रघुवंशम्' महाकाव्यस्य रचनां कः अकरोत्? BHU B.Ed–2012, UP TGT (H)–2009

(A) भारविः (B) व्यासः
(C) कालिदासः (D) माघः

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-138

85. निम्नलिखित में से कौन-सा महाकाव्य कालिदास का है– BHU MET–2008

(A) बुद्धचरितम् (B) शिशुपालवधम्
(C) किरातार्जुनीयम् (D) कुमारसम्भवम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-138

86. (i) अश्वघोषेण विरचितमस्ति– BHU AET–2010,
(ii) अश्वघोषकृतं काव्यमस्ति–UGC 25 D–2005, 2008,
(iii) एतेषु अश्वघोषः कस्य काव्यस्य कर्ता?
(iv) अश्वघोष ने क्या लिखा– MP PSC–1998, GJ SET–2013

(A) हर्षचरितम् (B) बुद्धचरितम्
(C) विक्रमाङ्कदेवचरितम् (D) कुमारपालचरितम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-168

78. (D) 79. (B) 80. (A) 81. (A) 82. (A) 83. (D) 84. (C) 85. (D) 86. (B)

87. (i) सौन्दरनन्दमहाकाव्यस्य कर्त्ता कविरस्ति –
(ii) सौन्दरनन्द महाकाव्य इनकी रचना या कृति है?
(iii) सौन्दरनन्दस्य प्रणेता? UGC 73 D–1999, 2016
(iv) सौन्दरनन्दमहाकाव्यस्य रचयिता वर्तते–
(v) सौन्दरनन्द किसकी कृति है? UGC 25 D–2009, BHU AET–2011, BHU Sh.ET–2013, MP वर्ग-1 (PGT)–2012, CVVET–2015

(A) शङ्कराचार्यः (B) कालिदासः
(C) अश्वघोषः (D) हर्षदेवः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-168

88. अश्वघोषरचितं सौन्दरनन्दं महाकाव्यं कतिषु सर्गेषु निबद्धः? RPSC ग्रेड-I (PGT)–2015

(A) पञ्चदशसु (B) अष्टादशसु
(C) द्वादशसु (D) एकोनविंशतिषु

संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा, 'ऋषि', पेज–232, 233

89. (i) 'किरातार्जुनीयम्' के कर्त्ता हैं– UGC 73 J–2009,
(ii) किरातार्जुनीयस्य कर्ता कः अस्ति?
(iii) किरातार्जुनीयस्य महाकाव्यस्य रचयिताऽस्ति– BHU MET–2008, RPSC ग्रेड-II (TGT)–2010

(A) माघः (B) भामहः
(C) श्रीहर्षः (D) भारविः

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-182

90. निम्नलिखित कृतियों में से कौन-सी भारवि द्वारा रचित है? UP PGT (H)–2005

(A) शिशुपालवधम् (B) कुमारसम्भवम्
(C) किरातार्जुनीयम् (D) नैषधीयचरितम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-182

91. कः ग्रन्थः भारवेः कर्षते– AWES TGT–2010

(A) नलदमयन्तीचरितम् (B) किरातार्जुनीयम्
(C) मेघदूतम् (D) वासन्तिकस्वप्नः

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-182

92. (i) 'रावणवधकाव्यम्' के रचयिता हैं–
(ii) रावणवध नामक महाकाव्य की रचना किसने की है? BHU MET–2010, H TET–2015

(A) वाल्मीकि (B) भट्टि
(C) व्यास (D) दण्डी

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-238

93. 'जानकीहरणं' नाम महाकाव्यं रचितम्? UGC 73 J–2012

(A) कालिदासेन (B) भासेन
(C) कुमारदासेन (D) चण्डीदासेन

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-244

94. (i) 'शिशुपालवधम्' के रचयिता कौन हैं?
(ii) शिशुपालवधस्य रचयिता कोऽस्ति?
(iii) शिशुपालवधस्य रचयिता कः अस्ति? UP TGT (H)–2009, UP PGT–2000, UGC 73 D–2008, 2009, T SET–2014

(A) सुबन्धुः (B) भारविः
(C) भट्टिः (D) माघः

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-198, 199

95. महाकविना माघेन रचना कृता– GJ SET–2007

(A) किरातार्जुनीयम् (B) नैषधीयचरितम्
(C) शिशुपालवधम् (D) बुद्धचरितम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-199

96. माघकविः माघः कस्य पुत्रः आसीत्? KL SET–2016

(A) श्रीवर्मलातस्य (B) दत्तकस्य
(C) अभिनन्दस्य (D) भूमभट्टस्य

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-198,199

97. 'हरविजय' महाकाव्य के प्रणेता कौन हैं? BHU MET–2012

(A) श्रीहर्ष (B) हरिश्चन्द्र
(C) रत्नाकर (D) कविराज

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-248

87. (C) 88. (B) 89. (D) 90. (C) 91. (B) 92. (B) 93. (C) 94. (D) 95. (C) 96. (B) 97. (C)

98. श्रीहर्ष का ग्रन्थ है? UP TGT (H)–2009

(A) हितहरिवंश (B) नैषधकाव्य
(C) राजतरङ्गिणी (D) मेघदूत

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-223

99. (i) नैषधीयचरित के रचयिता कौन हैं?
(ii) नैषधं कस्य काव्यम्? BHU Sh.ET–2011, BHU MET–2009, 2013

(A) बाणस्य (B) कालिदासस्य
(C) भासस्य (D) श्रीहर्षस्य

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-223

100. 'खण्डनखण्डखाद्य' ग्रन्थ के रचयिता कौन हैं? H TET–2015

(A) सर्वज्ञात्ममुनि (B) निम्बार्काचार्य
(C) वाचस्पति मिश्र (D) श्रीहर्ष

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-223

101. कल्हण की 'राजतरङ्गिणी' को किसने आगे बढ़ाया? UP PCS–2000

(A) बिल्हण एवं मेरुतुंग (B) बिल्हण एवं मम्मट
(C) जोनराज एवं मेरुतुंग (D) जोनराज एवं श्रीवर

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-599

102. (i) कवि कल्हणस्य रचना – BPSC–2011,
(ii) कल्हण की रचना है? UGC 25 J–2004,
(iii) कल्हण की पुस्तक का क्या नाम है? MP PSC–2003, AWES TGT–2008

(A) अर्थशास्त्र (B) इण्डिका
(C) पुराण (D) राजतरङ्गिणी

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-599

103. कल्हण द्वारा रचित 'राजतरङ्गिणी' निम्नलिखित में से किससे सम्बन्धित है– MP PSC–2012

(A) चन्द्रगुप्त के शासन से (B) गीतों के संकलन से
(C) कश्मीर के इतिहास से (D) कृष्णदेव राय के शासन से

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-597, 598

104. (i) राजतरङ्गिण्याः कर्त्ता कः? DSSSB PGT–2014,
(ii) 'राजतरङ्गिणी' किस कवि की रचना है?
(iii) राजतरङ्गिण्याः रचयिता कः–UP PGT (H)–2004

(A) बिल्हणः (B) मायणः
(C) कल्हणः (D) उल्वणः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-597

105. 'कल्हण' की 'राजतरङ्गिणी' की रचना किस शताब्दी में हुई थी? MP PSC–2005

(A) 10वीं शताब्दी ई० (B) 11वीं शताब्दी ई०
(C) 12वीं शताब्दी ई० (D) 13वीं शताब्दी ई०

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-597

106. निम्नलिखित में कौन-सा ग्रन्थ बृहत्त्रयी में शामिल नहीं है? UP TET–2014

(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (B) किरातार्जुनीयम्
(C) शिशुपालवधम् (D) नैषधीयचरितम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-182

107. त्रयमेतत् बृहत्त्रय्यां गण्यते– UGC 25 J–2014

(A) किरातार्जुनीयम्, नैषधीयचरितम्, शिशुपालवधम्
(B) किरातार्जुनीयम्, रघुवंशम्, नैषधीयचरितम्
(C) नैषधीयचरितम्, कुमारसम्भवम्, किरातार्जुनीयम्
(D) शिशुपालवधम्, नैषधीयचरितम्, रघुवंशम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-182

108. बृहत्त्रयी का एक ग्रन्थ 'किरातार्जुनीयम्' है शेष दो ग्रन्थों के नाम हैं– UP TGT–2005

(A) शिशुपालवधम्, कादम्बरी
(B) शिशुपालवधम्, नैषधीयचरितम्
(C) नैषधीयचरितम्, वेमभूपालचरितम्
(D) नैषधीयचरितम्, तिलकमञ्जरी

संस्कृत साहित्य का समी. इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-182

109. महाकाव्यों की बृहत्त्रयी में कौन सम्मिलित नहीं है? H TET–2015

(A) शिशुपालवधम् (B) किरातार्जुनीयम्
(C) नैषधीयचरितम् (D) मेघदूतम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-182

98. (B) 99. (D) 100. (D) 101. (D) 102. (D) 103. (C) 104. (C) 105. (C) 106. (A) 107. (A) 108. (B) 109. (D)

110. बृहत्त्रय्यां ये ग्रन्थास्तेषु ग्रन्थेषु एकोऽस्ति– BHU AET–2010

(A) हरविजयम् (B) कंसवधम्
(C) गौडवधम् (D) शिशुपालवधम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-182

111. ''उषाहरणम्'' महाकाव्य के रचयिता हैं। UGC 73 S–2013

(A) कुमारदासः (B) त्रिविक्रमपण्डितः
(C) जगन्नाथः (D) नीलकण्ठदीक्षितः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-255

112. (i) दण्डिना रचितं काव्यमस्ति –
(ii) आचार्यदण्डिना कृतं गद्यकाव्यं किन्नाम? BHU AET–2010, UGC 25 D–2013

(A) हर्षचरितम् (B) दशकुमारचरितम्
(C) उत्तररामचरितम् (D) वेमभूपालचरितम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-466

113. (i) 'अवन्तिसुन्दरीकथा' किसकी रचना है?
(ii) 'अवन्तिसुन्दरी' के लेखक हैं? UP PGT–2005, UP TET–2014

(A) दण्डी (B) बाणभट्ट
(C) भट्टनारायण (D) अम्बिकादत्तव्यास

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-466

114. आचार्य दण्डी की कृति है– UP PGT–2009

(A) काव्यादर्श (B) दशकुमारचरितम्
(C) अवन्तिसुन्दरी (D) इनमें से सभी

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-466

115. (i) 'दशकुमारचरितम्' केन प्रणीतम्? UGC 25 D–2003,
(ii) 'दशकुमारचरितम्' के लेखक हैं? MP PGT–2012 , RPSC SET–2010

(A) भवभूति (B) कालिदास
(C) दण्डी (D) माघ

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-466

116. अयमस्ति दण्डीविरचितः कथाग्रन्थः– UK SLET–2015

(A) हर्षचरितम् (B) दशकुमारचरितम्
(C) कादम्बरी (D) शिवराजविजयम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-466

117. 'कलापरिच्छेद' के लेखक कौन हैं? UP TGT (H)–2003

(A) कालिदास (B) भवभूति
(C) दण्डी (D) भारवि

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-467

118. (i) 'वासवदत्ता' के रचयिता हैं? UP PGT–2013,
(ii) 'वासवदत्तायाः' रचनाकारोऽस्ति? BHU AET–2010,
(iii) वासवदत्ता के लेखक कौन हैं? BHU MET–
(iv) वासवदत्तायाः रचयिता वर्तते– 2009, 2012, 2013,
(v) संस्कृतसाहित्ये वासवदत्ताकथा केन रचिता?
RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011, AWES TGT–2010

(A) पतञ्जलिः (B) भासः
(C) हर्षः (D) सुबन्धुः

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-482

119. (i) 'सुबन्धु' प्रणेता हैं–
(ii) कवेः सुबन्धोः रचना वर्तते?
BHU MET–2010, RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014

(A) कादम्बरी (B) पञ्चतन्त्र
(C) वासवदत्ता (D) हितोपदेश

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-482

120. सुबन्धोः 'वासवदत्तायाः' नायकः कः? RPSC ग्रेड-I PGT–2014

(A) मित्रगुप्तः (B) कन्दर्पकेतुः
(C) अष्टावक्रः (D) उदयनः

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-485

121. (i) 'हर्षचरित' किसकी रचना है? BPSC–2004,
(ii) 'हर्षचरितस्य' रचयिता अस्ति? UGC 25 D–2009,
(iii) 'हर्षचरित' नामक पुस्तक किसने लिखी?
(iv) हर्षचरित के रचयिता कौन हैं? BHU MET–2008, 2009, 2010, 2013, MP PSC–2003

(A) कालिदास (B) बाणभट्ट
(C) विष्णुगुप्त (D) परिमलगुप्त

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-490

110. (D) 111. (B) 112. (B) 113. (A) 114. (D) 115. (C) 116. (B) 117. (C) 118. (D) 119. (C) 120. (B) 121. (B)

122. निबद्धा बाणभट्टेन का नामातिद्वयी कथा– BHU AET–2012

(A) बृहत्कथा (B) कादम्बरी
(C) वासवदत्ता (D) अवन्तिसुन्दरीकथा

स्रोत–कादम्बरीकथामुखम् (श्लोक-20),- तारिणीश झा, पेज-23

123. शुकनासोपदेश कादम्बरी का अंश है, उसके रचयिता हैं– UP TGT–2004

(A) बाणभट्ट (B) गुणाढ्य
(C) सुबन्धु (D) क्षेमेन्द्र

संस्कृत साहित्य का समी. इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-490-496

124. बाणभट्टविरचितमस्ति– UGC 25 J–2005

(A) बुद्धचरितम् (B) हर्षचरितम्
(C) नैषधीयचरितम् (D) दशकुमारचरितम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-490

125. (i) 'कादम्बरी' के लेखक कौन हैं? BHU MET–2008,
(ii) 'कादम्बरी' किसकी रचना/कृति है– 2009, 2013,
(iii) कादम्बर्याः प्रणेता कः? RPSC SET–2010,
(iv) कादम्बरी के रचयिता हैं? UP PGT (H)–2005, UP TGT–2004, BHU B.Ed–2011

(A) श्रीहर्ष (B) बाण
(C) भास (D) भवभूति

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-490

126. महाकवि बाणभट्ट की रचना नहीं है? UP TET–2014, 2016

(A) हर्षचरितम् (B) दशकुमारचरितम्
(C) चण्डीशतकम् (D) कादम्बरीकथा

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-490

127. बाणभट्टस्य ऐतिहासिककाव्यं किम् अस्ति? K SET–2014, 2016

(A) हर्षचरितम् (B) शिशुपालवधम्
(C) दशकुमारचरितम् (D) कादम्बरी

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-491

128. बाणभट्टस्य कृतिः हर्षचरितमस्ति– UP GIC–2015

(A) कथा (B) आख्यायिका
(C) उपन्यास (D) चम्पू

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-491

129. 'पार्वतीपरिणय' किसकी रचना है? UP TGT–2001

(A) कालिदास (B) बाणभट्ट
(C) माघ (D) कुमारदास

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-491

130. कौन-सी रचना बाणभट्ट की नहीं है– UP TGT–2010

(A) हर्षचरितम् (B) कादम्बरी
(C) तिलकमञ्जरी (D) मुकुटताडितम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-490-91

131. 'चण्डीशतक' किसकी रचना है? UP PGT–2011

(A) त्रिविक्रमभट्ट (B) बाणभट्ट
(C) नारायणभट्ट (D) दण्डी

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-490

132. (i) केन लिखितं शिवराजविजयः–AWES TGT–2008,
(ii) शिवराजविजयम् के लेखक कौन हैं?
(iii) शिवराजविजयम् के रचयिता हैं?
(iv) शिवराजविजय नामक पुस्तक के लेखक हैं?
BHU MET–2009, 2013, MP वर्ग-1 (PGT)–2012, UP TGT–2001, 2005, UP TET–2016

(A) अम्बिकादत्तव्यासः (B) सुबन्धुः
(C) कैयटः (D) नागेशभट्टः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-508,509

133. (i) 'तिलकमञ्जरी' के लेखक हैं–
(ii) तिलकमञ्जरी किसकी रचना है?
UP TGT–2003, 2009, UP PGT–2003

(A) हर्ष (B) रत्नाकर
(C) धनपाल (D) दण्डी

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-517

122. (B) 123. (A) 124. (B) 125. (B) 126. (B) 127. (A) 128. (B) 129. (B) 130. (C) 131. (B) 132. (A) 133. (C)

134. धनपालकृतं गद्यकाव्यं किम्? KL SET–2016

(A) जयन्तिका (B) गद्यचिन्तामणि
(C) तिलकमञ्जरी (D) ऋषभपञ्चाशिका

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-517

135. सुमेलित कीजिए– UK TET–2011

(अ) सुबन्धु 1. वासवदत्ता
(ब) बाण 2. शिवराजविजय
(स) दण्डी 3. हर्षचरित
(द) अम्बिकादत्त 4. काव्यादर्श

	अ	ब	स	द
(A)	1	3	4	2
(B)	3	4	2	1
(C)	1	4	2	3
(D)	4	3	1	2

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज- अ-482, ब-491, स-466, द-509

136. (i) मेघदूतस्य रचयिता कः? BHU B.Ed–2013, 2014
(ii) मेघदूतम् इति कस्य कृतिः?

(A) भारविः (B) कालिदासः
(C) भासः (D) जयदेवः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-138

137. निम्न में से कौन-सी कृति भर्तृहरि की नही है? UP PGT–2010

(A) वैराग्यशतकम् (B) भट्टिकाव्यम्
(C) नीतिशतकम् (D) वाक्यपदीयम्

संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-344, 355

138. (i) 'शृङ्गारशतकस्य' को रचयिता
(ii) 'शृङ्गारशतक' किसकी कृति है?
(iii) शृङ्गारनीतिवैराग्यशतकानि चकार कः?
BHU AET–2010, 2011, BHU Sh.ET–2013

(A) भरतः (B) जगद्धरः
(C) रविकीर्तिः (D) भर्तृहरिः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-541

139. (i) 'शतकत्रय' के रचयिता हैं–
(ii) 'शतकत्रय' के प्रणेता कौन हैं?
(iii) 'शतकत्रय' के लेखक कौन हैं?
UP TGT–2004, BHU MET–2011, 2012

(A) भर्तृहरि (B) भट्टि
(C) मयूरभट्ट (D) भोज

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-541

140. निम्न में से कौन-सी कृति भर्तृहरि की नहीं है? UK TET–2011

(A) वैराग्यशतकम् (B) पञ्चतन्त्रम्
(C) नीतिशतकम् (D) वाक्यपदीयम्

संस्कृत साहित्य का समी. इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-575,541

141. (i) 'नीतिशतकम्' कस्य कृतिः? BHU MET–2008,
(ii) 'नीतिशतकम्' के कर्ता कौन हैं? BHU B.Ed–2013

(A) जयदेव (B) अमरुक
(C) क्षेमेन्द्र (D) भर्तृहरि

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-541

142. 'वैराग्यशतकस्य' रचयितास्ति–
RPSC ग्रेड-I (PGT)–2010

(A) वररुचिः (B) वेदव्यासः
(C) भर्तृहरिः (D) विशाखदत्तः

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-541

143. 'अमरुकशतकम्' रचयिता– AWES TGT–2012

(A) भर्तृहरि (B) अमरुक कवि
(C) दामोदरगुप्ता (D) क्षेमेन्द्र

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-545

144. (i) 'गीतगोविन्द' के रचयिता हैं?
(ii) 'गीतगोविन्दम्' इति काव्यस्य कर्ता कः?
(iii) कोऽसौ यो 'गीतगोविन्दं' रचयामास सत्कविः –
(iv) 'गीतगोविन्द' के लेखक हैं?
CVVET–2017, UP PCS–2010, MP PCS–1997, AWES TGT–2013, BHU AET–2012

(A) धोयी (B) गोवर्द्धनाचार्य
(C) जयदेव (D) लक्ष्मणसेन

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-440

134. (C) 135. (A) 136. (B) 137. (B) 138. (D) 139. (A) 140. (B) 141. (D) 142. (C) 143. (B) 144. (C)

145. (i) 'जयदेवस्य' प्रसिद्धा रचना अस्ति–MP वर्ग-1 PGT–2012,
(ii) 'जयदेव; का प्रसिद्ध ग्रन्थ कौन है? G GIC–2015,
(iii) 'कविवरजयदेव' रचितं सरसं संस्कृत-काव्यमस्ति BHU MET–2009, 2013

(A) गीतराघव (B) अभिनवगीतगोविन्द
(C) गीतगोविन्द (D) संगीतलहरी

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-440

146. जयदेव थे– BHU MET–2010

(A) शृङ्गारशतककर्ता (B) गीतमञ्जरीकर्ता
(C) गीतगोविन्दकर्ता (D) गीतविनोदकर्ता

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-440

147. 'चौरपञ्चाशिका' इति–गीतिकाव्यस्य कर्ता कविरस्ति? MP वर्ग-1 (PGT)–2012

(A) बिल्हणः (B) कल्हणः
(C) जयदेवः (D) घटकर्परः

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-559

148. कौन-सा युग्म उपयुक्त नहीं है? BHU MET–2016

(A) मम्मट - काव्यप्रकाश (B) विश्वनाथ - साहित्यदर्पण
(C) मयूर - चौरपञ्चाशिका (D) जयदेव - चन्द्रालोक

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-559

149. सूर्यशतकस्य लेखकः– AWES TGT–2010, 2011

(A) बाणभट्टः (B) कुलशेखरः
(C) रामानुजाचार्यः (D) मयूरभट्टः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-561

150. काव्यस्य रचनेन कस्य कवेः कुष्ठरोगस्य निवृत्तिः सम्पन्ना? DSSSB TGT–2014

(A) धावकस्य (B) मयूरस्य
(C) श्रीहर्षस्य (D) माघस्य

स्रोत–कादम्बरीकथामुखम्-तारिणीश झा, भू0 पेज-23

151. 'चण्डीशतकस्य' लेखकः– AWES TGT–2010

(A) मयूरभट्टः (B) बाणभट्टः
(C) देवभट्टः (D) शीलभट्टः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-490

152. बाणभट्टरचितं हर्षचरितमस्ति– G GIC–2015

(A) आख्यायिका (B) कथा
(C) उपन्यासिका (D) चम्पूः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-491

153. 'अध्यर्धशतक' के रचयिता हैं? BHU AET–2011

(A) आर्यशूर (B) मातृचेट
(C) नागार्जुन (D) कालिदास

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-260

154. 'भज गोविन्दम्' गीतस्य रचयिता? BHU AET–2011 AWES TGT–2010

(A) आचार्यशङ्करः (B) लक्ष्मीदत्तः
(C) दिवाकरः (D) रामभद्रदीक्षितः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-365

155. शङ्कराचार्यरचिता का नाम लहरी स्मृता– BHU AET–2011

(A) गङ्गालहरी (B) सौन्दर्यलहरी
(C) सुधालहरी (D) करुणालहरी

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-561

156. (i) भामिनीविलासकाव्यस्य कर्ता अस्ति?
(ii) 'भामिनीविलास' गीतिकाव्यस्य रचयिता अस्ति?
(iii) 'भामिनीविलासः' इति मुक्तककाव्यस्य रचयिता–वर्तते– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011, MP वर्ग-1 (PGT)–2012, UP GIC–2015, G GIC–2015

(A) जयदेवः (B) पण्डितराजजगन्नाथः
(C) गोवर्धनाचार्यः (D) अमरुकः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-555

157. (i) 'नलचम्पू' के रचयिता हैं– CVVET–2017
(ii) नलचम्पूकाव्यस्य रचयिता– UP PGT–2004, 2009, 2010, 2013, BHU MET–2009, MP वर्ग-1 (PGT)–2012

(A) बाणभट्ट (B) विश्वेश्वरपाण्डेय
(C) आचार्यमेधाव्रत (D) त्रिविक्रमभट्ट

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-602

145. (C) 146. (C) 147. (A) 148. (C) 149. (D) 150. (B) 151. (B) 152. (A) 153. (B) 154. (A) 155. (B) 156. (B) 157. (D)

158. त्रिविक्रमभट्टविरचितं काव्यं किम्? KL SET–2016

(A) नलचम्पूः (B) कीरदूतम्
(C) पारिजातहरणम् (D) कुवलयमाला

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-602

159. 'विश्वगुणादर्शचम्पूः' इति काव्यं केन विरचितम्? DSSSB TGT–2014

(A) वेङ्कटाध्वरिणा (B) भोजराजेन
(C) सोमदेवेन (D) त्रिविक्रमेण

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-615

160. 'यशस्तिलक चम्पू' रचना किसकी है? UGC 73 J–2016

(A) हरिचन्द्रस्य (B) त्रिविक्रमभट्टस्य
(C) सोमदेवसूरेः (D) अनन्तभट्टस्य

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-610

161. शुद्धं युग्मं चिनुत– MP-वर्ग-1 (PGT)–2012

(A) जीवन्धरचम्पूः – हरिश्चन्द्रः
(B) रामायणचम्पूः – सोड्ढलः
(C) यशस्तिलकचम्पूः – भोजराजः
(D) भारतचम्पूः – सोमदेवसूरिः

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-610

162. कथा साहित्य है– BHU MET–2011

(A) पञ्चतन्त्र (B) मेघदूत
(C) रघुवंश (D) कुमारसम्भव

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-575

163. (i) 'पञ्चतन्त्र' किसने लिखा था? RPSC ग्रेड-I (TGT)–2010,
(ii) 'पञ्चतन्त्र'-लेखकः कः MP वर्ग-1 (PGT)– 2012,
(iii) 'पञ्चतन्त्रस्य' रचनाकारोऽस्ति UP GIC–2015,
(iv) 'पञ्चतन्त्रस्य' रचयिता कः? AWES TGT–2012
UP TGT (S.S.)–2009, H TET–2015,
MGKV Ph. D–2016

(A) नारायणपण्डितः (B) विष्णुशर्मा
(C) भर्तृहरिः (D) चाणक्यः

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-575

164. (i) 'कथासरित्सागर'-रचनाकारः अस्ति–
(ii) कथासरित्सागरस्य लेखकोऽस्ति–RPSC ग्रेड-I (PGT)–
2011, MP वर्ग-I (PGT)–2012, BHU MET–2016

(A) सोमदेवः (B) क्षेमेन्द्रः
(C) शिवदासः (D) जम्भलदत्तः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-586

165. (i) 'हितोपदेशस्य' लेखकः वर्तते– KL SET–2014
(ii) हितोपदेशस्य रचनाकारोऽस्ति– G GIC–2013
(iii) हितोपदेशस्य कर्त्ता भवति– UK TET–2011,
MP वर्ग-2 (TGT)–2011,

(A) विष्णुशर्मा (B) नारायणपण्डितः
(C) बाणभट्टः (D) सुबन्धुः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-582

166. (i) 'बृहत्कथामञ्जरी' के लेखक कौन हैं?
(ii) 'बृहत्कथामञ्जरी' ग्रन्थ किसने लिखी है?
BHU MET–2011, 2012

(A) गुणाढ्य (B) क्षेमेन्द्र
(C) नारायणपण्डित (D) दण्डी

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-585

167. शुद्धं युग्मं चिनुत– MP वर्ग-1 (PGT)–2012

(A) हितोपदेशः – विष्णुशर्मा (B) पञ्चतन्त्रम् – नारायणपण्डित
(C) बृहत्कथामञ्जरी–सोमदेव (D) बृहत्कथा – गुणाढ्य

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-583

168. 'बृहत्कथा' के लेखक हैं? UP TGT–2009

(A) नारायणपण्डित (B) विष्णुशर्मा
(C) गुणाढ्य (D) क्षेमेन्द्र

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-583

169. (i) 'पुराणानां' लेखकः....... अस्ति–UGC 73 J– 1991,
(ii) अष्टादशपुराणानां कर्ता कः? D–1992, 1994,
(iii) पुराणों के लेखक कौन माने जाते हैं?
(iv) भागवतपुराण के कर्ता हैं? BHU AET–2010,
(v) भागवत के रचयिता हैं? BHU B.Ed–2013,
AWES TGT–2010

(A) व्यास (B) अत्रि
(C) पराशर (D) नारद

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-173

158. (A) 159. (A) 160. (C) 161. (A) 162. (A) 163. (B) 164. (A) 165. (B) 166. (B) 167. (D) 168. (C) 169. (A)

170. अग्निपुराण किसकी रचना है? UGC 73 D–1992

(A) व्यास की (B) अग्निदेव की
(C) अत्रि की (D) मनु की

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-वाचस्पति गैरोला, पेज–250,263

171. श्रीमद्भागवत पुराण के प्रवक्ता कौन थे? H TET–2014

(A) शुकदेव (B) परीक्षित
(C) वैशम्पायन (D) जनमेजय

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-182,183

172. अधोलिखितः कः ग्रन्थः नीतिग्रन्थः न– AWES TGT–2010

(A) हितोपदेशः (B) पञ्चतन्त्रः
(C) चाणक्यनीतिः (D) श्रीमद्भागवतम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-182

173. भगवता व्यासेन– AWES TGT–2013

(A) वेदाः लिखिताः (B) महाभारतं वर्गीकृतमुक्ता च
(C) महाभारतं लिपिवदकृतम् (D) पुराणानि लिखितानि

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-वाचस्पति गैरोला, पेज–250

174. गोवर्धनाचार्येणाऽधस्तनेषु को ग्रन्थो विरचितः– BHU AET–2010

(A) दुर्गासप्तशती (B) गाथासप्तशती
(C) आर्यासप्तशती (D) नर्मसप्तशती

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-559

175. निम्न में से कौन-सा युग्म सही नहीं है– UP TGT–2009

(A) मृच्छकटिक – शूद्रक (B) वेणीसंहार – भट्टनारायण
(C) मुद्राराक्षस – विशाखदत्त (D) राजतरङ्गिणी – क्षेमेन्द्र

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-597

176. 'पृथ्वीराजविजय' किसकी रचना है? UP PGT–2002

(A) वस्तुपाल (B) चण्डकवि
(C) माधवाचार्य (D) सोमनाथ

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-255

177. (i) 'गाथासप्तशती' किसकी रचना है? UP PGT–2003

(ii) गाथासप्तशती रचना का कर्ता कौन है? UGC 73 J–2016

(A) घटकर्पर (B) अश्वघोष
(C) हाल (D) सिद्धसेनदिवाकर

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-561

178. 'शिवशतक' के लेखक हैं– UP PGT–2003

(A) सोमेश्वर (B) आनन्दवर्धन
(C) गोकुलनाथ (D) वल्लल

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-566

179. 'राघवविलास' किसकी रचना है? UP PGT–2003, 2004

(A) राजशेखर (B) कुन्तक
(C) भरत (D) विश्वनाथ

स्रोत–काव्यप्रकाश - पारसनाथ द्विवेदी, भू. पेज – 19

180. 'विषमबाणलीला' किसकी रचना है? UP PGT–2005

(A) दण्डी (B) भामह
(C) आनन्दवर्धन (D) रुद्रट

स्रोत–काव्यप्रकाश - पारसनाथ द्विवेदी, भू. पेज – 19

181. अधोलिखित में से समुचित मेल चुनिये– UGC 73 D–2015

(क) शूद्रकः **(i) बुद्धचरितम्**
(ख) दण्डी **(ii) मृच्छकटिकम्**
(ग) अश्वघोषः **(iii) अनर्घराघवम्**
(घ) मुरारिः **(iv) दशकुमारचरितम्**

	क	ख	ग	घ
(A)	(i)	(iv)	(ii)	(iii)
(B)	(iii)	(ii)	(iv)	(i)
(C)	(ii)	(iv)	(i)	(iii)
(D)	(iv)	(ii)	(i)	(iii)

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज- अ-300, ब-466, स-167, द-429

170. (A) 171. (A) 172. (D) 173. (D) 174. (C) 175. (D) 176. (B) 177. (C) 178. (C) 179. (D) 180. (C) 181. (C)

182. सुमेलित कीजिये– **UP PGT–2010**

(अ) सुबन्धुः 1. वासवदत्ता
(ब) बाणः 2. शिवराजविजयः
(स) दण्डी 3. हर्षचरितम्
(द) अम्बिकादत्तः 4. काव्यादर्शः

	अ	ब	स	द
(A)	1	3	4	2
(B)	3	4	2	1
(C)	1	4	2	3
(D)	2	3	1	4

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज- अ-482,ब-490, स-466,द-509

183. समीचीनां तालिकां चिनुत– **UGC 25 J–2008**

(अ) ऋतुसंहारम् 1. चारित्रिककाव्यम्
(ब) भजगोविन्दम् 2. महाकाव्यम्
(स) राजतरङ्गिणी 3. खण्डकाव्यम्
(द) नैषधीयचरितम् 4. स्तोत्रकाव्यम्

	अ	ब	स	द
(A)	4	1	3	2
(B)	1	3	2	4
(C)	3	4	1	2
(D)	1	2	4	3

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज- अ-330, ब-365, स-315, द-285

184. 'मधुराविजय' नाम काव्यान्तर्भवति– **UGC 25 D–2008**

(A) लघुकाव्येषु (B) गद्यकाव्येषु
(C) चारित्रिककाव्येषु (D) स्तोत्रकाव्येषु

स्रोत–संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास - राधावल्लभ त्रिपाठी, पेज-433

185. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुतः– **UGC 25 J–2010**

(अ) नागानन्दम् 1. विष्णुशर्मा
(ब) गीतगोविन्दम् 2. बाणभट्टः
(स) पञ्चतन्त्रम् 3. जयदेवः
(द) हर्षचरितम् 4. हर्षः

	अ	ब	स	द
(A)	3	2	4	1
(B)	4	3	1	2
(C)	1	2	3	4
(D)	1	3	2	4

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज- अ-365, ब-548, स-575, द-490

186. अधस्तनयुग्मस्य समीचीनां तालिकां चिनुत– **GJ SET–2011**

(क) वाल्मीकिः 1. बुद्धचरितम्
(ख) कालिदासः 2. रामायणम्
(ग) अश्वघोषः 3. रघुवंशम्
(घ) श्रीहर्षः 4. नैषधीयचरितम्

	क	ख	ग	घ
(A)	2	3	1	4
(B)	1	2	3	4
(C)	3	2	1	4
(D)	4	2	1	3

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज- क-103, ख-138, ग-168, घ-223

187. श्रीकृष्णविजयमहाकाव्यस्य कर्ता कः? KL SET–2001

(A) सुकुमारकविः (B) शङ्करकविः
(C) लीलाशुकः (D) नारायणभट्टः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-256

188. अधोनिर्दिष्टेषु युग्मपर्यायेषु समीचीनं विचिनुत– **MH SET–2013**

(क) हर्षः 1. महावीरचरितम्
(ख) अश्वघोषः 2. वेणीसंहारम्
(ग) भवभूतिः 3. रत्नावली
(घ) भट्टनारायणः 4. बुद्धचरितम्

	क	ख	ग	घ
(A)	4	2	1	3
(B)	3	4	2	1
(C)	2	3	1	4
(D)	3	4	1	2

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज- क-365, ख-168, ग-395, घ-381

182. (A) 183. (C) 184. (C) 185. (B) 186. (A) 187. (B) 188. (D)

189. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत– UGC 25 D–2012

(अ) मृच्छकटिकम् 1. अश्वघोषः
(ब) वेणीसंहारम् 2. शूद्रकः
(स) बालचरितम् 3. भट्टनारायणः
(द) बुद्धचरितम् 4. भासः

	अ	ब	स	द
(A)	4	3	2	1
(B)	3	2	4	1
(C)	2	3	4	1
(D)	2	4	1	3

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज- अ-300, ब-381, स-275, द-167

190. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत– UGC 25 J–2013

(अ) किरातार्जुनीयम् 1. भासः
(ब) दशकुमारचरितम् 2. दण्डी
(स) स्वप्नवासवदत्तम् 3. भारविः
(द) बुद्धचरितम् 4. अश्वघोषः

	अ	ब	स	द
(A)	4	3	2	1
(B)	2	1	3	4
(C)	3	2	1	4
(D)	1	4	3	2

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज- अ-182, ब-466, स-275, द-167

191. सुमेलित कीजिये– UGC 25 D–2002

(अ) अश्वघोष 1. रत्नावली
(ब) विशाखदत्त 2. सौन्दरनन्द
(स) हर्ष 3. मुद्राराक्षस
(द) कुमारदास 4. जानकीहरण

	अ	ब	स	द
(A)	1	2	3	4
(B)	2	3	1	4
(C)	2	3	4	1
(D)	4	2	3	1

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज- अ-168, ब-354, स-365, द-244

192. सुमेलित कीजिये– UGC 25 D–2001

(अ) वाक्यपदीयम् 1. हर्षः
(ब) मुद्राराक्षसम् 2. भर्तृहरिः
(स) अभिज्ञानशाकुन्तलम् 3. विशाखदत्तः
(द) रत्नावली 4. कालिदासः

	अ	ब	स	द
(A)	2	3	4	1
(B)	3	1	4	2
(C)	1	2	3	4
(D)	2	1	3	4

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज- अ-564, ब-501, स-485 द-514

193. द्वितीय राजतरङ्गिण्याः रचयिता– CVVET–2017

(A) श्रीवरः (B) जोनराजः
(C) कल्हणः (D) मम्मटः

सस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास-राधावल्लभ त्रिपाठी, पेज-138

194. निम्नलिखित में से कौन-सी कृति कालिदास कृत नहीं है– UP PGT (H)–2005

(A) कुमारसम्भव (B) अभिज्ञानशाकुन्तल
(C) उत्तररामचरित (D) रघुवंश

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-395

195. जीमूतवाहन की रचना है? UGC 73 D–1997

(A) आयभाग (B) कर्मभाग
(C) दायभाग (D) सृष्टिभाग

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-608

196. 'सत्तर्कदीपावलि' नामक ग्रन्थ का रचयिता है? UGC 73 J–2007

(A) व्यासतीर्थः (B) राघवेन्द्रतीर्थः
(C) पद्मनाभतीर्थः (D) जयतीर्थः

संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (दशम खण्ड)-बलदेव उपाध्याय, पेज–379

197. (i) कर्पूरमञ्जरी किस भाषा में लिखा ग्रन्थ है?
(ii) कर्पूरमञ्जरी की भाषा है– BHU MET–2009

(A) संस्कृत (B) प्राकृत
(C) पालि (D) अपभ्रंश

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-433

189. (C) 190. (C) 191. (B) 192. (A) 193. (B) 194. (C) 195. (C) 196. (C) 197. (B)

198. (i) किसे पण्डितराजजगन्नाथ ने नहीं लिखा है–
(ii) पण्डितराजजगन्नाथ विरचित कौन नहीं है?
(iii) पण्डितराज जगन्नाथ किसके लेखक नहीं हैं?
BHU MET–2009, 2011, 2013

(A) आसफविलास (B) रसगङ्गाधर
(C) गङ्गालहरी (D) चित्रमीमांसा

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-555

199. 'सरस्वतीकण्ठाभरणम्' के रचयिता हैं? H TET–2015

(A) भोजराज (B) अभिनवगुप्त
(C) महिमभट्ट (D) रुय्यक

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि',पेज-582

200. (i) बिल्हण किसके प्रणेता हैं?
(ii) कविः बिल्हणः किं रचितवान्?
(iii) बिल्हण की कृति कौन-सी है?
BHU MET–2011, 2012, 2013

(A) जानकीहरण (B) विक्रमांकदेवचरित
(C) खण्डनखण्डखाद्य (D) शृङ्गारतिलक

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-595

201. (i) 'जाम्बवती विजय' के रचयिता कौन हैं?
(ii) 'जाम्बवती विजय' - काव्यकर्ता कः?
BHU MET–2011, 2012, JNU MET–2014

(A) दण्डी (B) श्रीहर्ष
(C) अश्वघोष (D) पाणिनि

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-254

202. 'रसप्रदीप' के लेखक हैं? BHU MET–2014

(A) दण्डी (B) प्रभाकर
(C) कृष्णशर्मा (D) पाणिनि

संस्कृत काव्यशास्त्र का आलोचनात्मक इतिहास-अमरनाथ पाण्डेय, पेज–264

203. 'आम्रपाली' की लेखिका हैं? BHU MET–2014

(A) डॉ0 सुषमा कुलश्रेष्ठ (B) डॉ0 पुष्पा दीक्षित
(C) डॉ0 दीप्ति त्रिपाठी (D) डॉ0 मिथिलेशकुमारी मिश्रा

संस्कृत का अर्वाचीन समीक्षात्मक काव्यशास्त्र-अभिराज राजेन्द्र मिश्र, पेज–387

204. 'नारायणीयम्' के रचनाकार हैं? BHU MET–2014

(A) कणाद (B) नारद
(C) नारायण भट्टतिरि (D) माधव

स्रोत– संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-565

205. भावनापुरुषोत्तम के रचयिता हैं? BHU MET–2014

(A) रूपगोस्वामी (B) भवस्वामी
(C) श्रीनिवासदीक्षित (D) श्रीकृष्णारर्थ

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-446

206. भट्टमथुरानाथशास्त्रिणा रचितस्य भक्तिकाव्यस्य नाम अस्ति– RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014

(A) गीतगोविन्दम् (B) गङ्गावतरणम्
(C) गोविन्दवैभवम् (D) वेणुशतकम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-259

207. 'जयपुरवैभवम्' काव्यं केन विरचितम्?
RPSC ग्रेड-I (PGT)–2014

(A) भट्टमथुरानाथशास्त्रिणा (B) आचार्यशिवसागरत्रिपाठिना
(C) पण्डितपद्मशास्त्रिणा (D) देवर्षिकलानाथशास्त्रिणा

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-259

208. निम्नलिखित में से किस ग्रन्थ में कापालिकों, पाशुपतों और बौद्धों के भ्रष्ट आचरण का वर्णन है?
UGC 06 J–2014

(A) महावीरचरित (B) मत्तविलास
(C) मृच्छकटिक (D) उत्तररामचरित

संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास-राधावल्लभ त्रिपाठी, पेज-318

209. पद्मशास्त्रीविरचिता रचना अस्ति–
RPSC ग्रेड-II (TGT)–2010

(A) वेणुवादकः (B) राजपुत्रः
(C) राजतरङ्गिणी (D) वेणुधारकः राजतन्त्रः

स्रोत–

210. श्रीपद्मशास्त्रिणः रचनास्ति– RPSC ग्रेड-II (TGT)–2010

(A) कल्पतरुः (B) स्वर्णकाकः
(C) लौहतुला (D) प्रत्यभिज्ञानम्

स्रोत–

198. (D) 199. (A) 200. (B) 201. (D) 202. (B) 203. (D) 204. (C) 205. (C) 206. (C) 207. (A) 208. (B) 209. (D) 210. (B)

211. अर्वाचीनकविः अस्ति– RPSC ग्रेड-II (TGT)–2010, RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011

(A) श्रीहर्षः (B) देवर्षिनारदः
(C) देवर्षिकलानाथशास्त्री (D) जयदेवः

स्रोत–संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-7), पेज–466

212. वीरभूमिकाव्यस्य रचयितास्ति– RPSC ग्रेड-II (TGT)–2010, RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011

(A) भट्टनायकः (B) पं० शोभालालशास्त्री
(C) पं० पद्मशास्त्री (D) भारविः

स्रोत–

213. 'उपदेशशतकम्' कः विरचितवान्– DSSSB PGT–2014

(A) कालिदासः (B) गुमानिकविः
(C) बाणः (D) मयूरः

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-566

214. 'उज्ज्वलनीलमणि' किस आचार्य की रचना है? UGC (H) D–2008

(A) मधुसूदनसरस्वती (B) रूपगोस्वामी
(C) रामानन्द (D) रामानुजाचार्य

संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-588,589

215. रूपगोस्वामी की रचना है? UGC 73 J–2016

(A) नाट्यदर्पणः (B) शृङ्गारप्रकाशः
(C) रसार्णवसुधाकरः (D) उज्ज्वलनीलमणिः

संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-588,589

216. निम्नलिखित में से कौन-सी एक रचना कालिदास की नहीं है? UP PGT (H)–2004

(A) मेघदूतम् (B) दशकुमारचरितम्
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (D) रघुवंशम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-138

217. मिलान कीजिये– UP TGT (H)–2004

कृति	लेखक
(क) दशकुमारचरितम्	1. श्रीहर्ष
(ख) नैषधीयचरितम्	2. भवभूति
(ग) उत्तररामचरितम्	3. दण्डी

	क	ख	ग
(A)	1	2	3
(B)	3	2	1
(C)	3	1	2
(D)	2	1	3

संस्कृत साहित्य का समी. इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-466, 221, 395

218. मिलान कीजिये– UP TGT (H)–2005

(अ) कालिदास	1. दशकुमारचरितम्
(ब) माघ	2. अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(स) भवभूति	3. शिशुपालवधम्
(द) दण्डी	4. उत्तररामचरितम्

	अ	ब	स	द
(A)	1	2	3	4
(B)	2	3	4	1
(C)	3	1	2	4
(D)	4	2	3	1

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज- अ-138, ब-199, स-395, द-466

219. सूची I से सूची II से मिलान कीजिये– UP TGT (H)–2010, UP PGT (H)–2009

(अ) कालिदास	1. ऋतुसंहारम्
(ब) भवभूति	2. दशकुमारचरितम्
(स) दण्डी	3. नैषधीयचरितम्
(द) बाणभट्ट	4. उत्तररामचरितम्
(य) श्रीहर्ष	5. कादम्बरी

	अ	ब	स	द	य
(A)	1	4	2	5	3
(B)	2	3	4	5	1
(C)	3	4	3	2	5
(D)	4	1	5	3	2

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज- अ-138, ब-395, स-466, द-490, य-223

220. 'जातकमाला' किसकी रचना है? BHU AET–2011

(A) अश्वघोष (B) कुमारलात
(C) आर्यशूर (D) जिनभद्र

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-260

221. जातिप्रथा की तीव्र आलोचना करने वाला ग्रन्थ 'वज्रसूची' के रचयिता हैं– MP PSC–1997

(A) याज्ञवल्क्य (B) अश्वघोष
(C) गार्गी (D) नागार्जुन

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-229

211. (C) 212. (B) 213. (B) 214. (B) 215. (D) 216. (B) 217. (C) 218. (B) 219. (A) 220. (C) 221. (B)

222. समुद्रगुप्त के 'प्रयागस्तम्भ अभिलेख' का रचयिता कौन है? MP PSC–1997, MP PSC–1999, 2005

(A) हरिषेण (B) रविकीर्ति
(C) कालिदास (D) वात्स्यायन

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-254

223. कौटिल्य लेखक हैं? MP PSC – 2003

(A) राजतरंगिणी के (B) अर्थशास्त्र के
(C) कादम्बरी के (D) अष्टाध्यायी के

स्रोत–संस्कत साहित्य का इतिहास - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-611

224. निम्नलिखित में से कौन-सी रचना कालिदास की नहीं है? MP PSC–1999

(A) ऋतुसंहारम् (B) रघुवंशम्
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (D) कादम्बरी

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-138

225. 'योगवाशिष्ठ' का फारसी अनुवाद किसने किया था? MP PSC–2008

(A) अलबरूनी (B) फैजी
(C) नामदेव (D) दाराशिकोह

स्रोत–गूगल सर्च

226. 'पत्रदूतम्' के रचयिता हैं? BHU MET–2015

(A) रुद्रदेव त्रिपाठी (B) पट्टाभिराम शास्त्री
(C) गौरीनाथ शास्त्री (D) बटुकनाथ शास्त्री

स्रोत–संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-7), पेज–194,360

227. निम्नलिखित में से युग्म सुमेलित नहीं है– MP PSC–2008

(A) बुद्धचरित – अश्वघोष
(B) बृहत्संहिता – आर्यभट्ट
(C) मृच्छकटिक – शूद्रक
(D) शिलाप्पादिकारम् – इलांगो अडिगल

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि',पेज-605

228. विश्वेश्वर पण्डित की रचना है– BHU MET–2015

(A) रसतरङ्गिणी (B) चित्रमीमांसा
(C) काव्यरत्नम् (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

संस्कृत काव्यशास्त्र का आलोचनात्मक इतिहास-अमरनाथपाण्डेय, पेज–180

229. 'सत्याग्रहगीता' कस्य कृतिः– AWES TGT–2009

(A) महात्मागाँधी (B) मथुराप्रसाददीक्षितः
(C) लोकमान्यतिलकः (D) पण्डिताक्षमारावः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा, 'ऋषि', पेज–414

230. केन लिखितम् 'कुम्भशतकम्'? AWES TGT–2009

(A) रामजी उपाध्याय (B) बलदेव उपाध्याय
(C) शिवजी उपाध्याय (D) रमाकान्त उपाध्याय

स्रोत–

231. निम्नलिखित युग्मों में कौन एक सुमेलित नहीं है– UP PCS–2012

(A) कर्पूरमञ्जरी–हर्ष (B) मालविकाग्निमित्र–कालिदास
(C) मुद्राराक्षस–विशाखदत्त (D) सौन्दरनन्द–अश्वघोष

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-433

232. निम्नलिखित में से सही सुमेलित कीजिये–IAS–1998

1. मृच्छकटिकम् – शूद्रक
2. बुद्धचरितम् – वसुबन्धु
3. मुद्राराक्षसम् – विशाखदत्त
4. हर्षचरितम् – बाणभट्ट

(A) 1, 2 और 4 (B) 1, 3 और 4
(C) 1 और 4 (D) 2 और 3

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-300, 167, 354, 490

233. निम्नलिखित को सुमेलित कीजिये– IAS–1997

(अ) वराहमिहिर — **1. प्रबन्धचिन्तामणि**
(ब) विशाखदत्त — **2. मृच्छकटिकम्**
(स) शूद्रक — **3. बृहत्संहिता**
(द) बिल्हण — **4. देवीचन्द्रगुप्तम्**
5. विक्रमाङ्कदेवचरितम्

	अ	ब	स	द
(A)	3	4	5	2
(B)	3	4	2	5
(C)	5	3	4	1
(D)	1	3	5	2

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि',पेज- अ-605, ब-502 स-490, द-310

222. (A) 223. (B) 224. (D) 225. (D) 226. (A) 227. (B) 228. (C) 229. (D) 230. (*) 231. (A) 232. (B) 233. (B)

234. अधस्तनयुग्मानां समीचीनतालिकां चिनुत– UGC 25 J–2015

(अ) उत्तररामचरितम् 1. भासः
(ब) बुद्धचरितम् 2. भवभूतिः
(स) वेणीसंहारम् 3. भट्टनायकः
(द) स्वप्नवासवदत्तम् 4. अश्वघोषः

	अ	ब	स	द
(A)	2	4	3	1
(B)	1	2	3	4
(C)	4	3	2	1
(D)	2	3	4	1

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज- अ-395, ब-168, स-381, द-275

235. मिलान कीजिये– UP PGT (H)–2004

(अ) कालिदास 1. मालतीमाधवम्
(ब) भवभूति 2. दशकुमारचरितम्
(स) दण्डी 3. नैषधीयचरितम्
(द) श्रीहर्ष 4. मालविकाग्निमित्रम्

	अ	ब	स	द
(A)	2	1	4	3
(B)	3	2	4	1
(C)	4	1	2	3
(D)	1	3	2	4

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज- अ-138, ब-395, स-466, द-223

236. सुमेलित कीजिये– UP PGT (H)–2005

(अ) कालिदास 1. स्वप्नवासवदत्ता
(ब) भास 2. मेघदूत
(स) मम्मट 3. साहित्यदर्पण
(द) विश्वनाथ 4. काव्यप्रकाश

	अ	ब	स	द
(A)	2	1	4	3
(B)	1	2	3	4
(C)	3	4	1	2
(D)	4	3	2	1

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज- अ-138, ब-275

237. 'स्वर्गारोहण' किसकी रचना है? UP PGT–2002, 2004

(A) पतञ्जलि (B) वररुचि
(C) पाणिनि (D) बाणभट्ट

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-254

238. अनार्कली इति नाटकं रचितवान् – CVVET–2017

(A) कालूरिहनुमन्तरावः (B) वेंकटराघवः
(C) श्रीभाष्यं विजयसारथिः (D) नीलकण्ठदीक्षितः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-555

239. सूची-I सूची-II सुमेलित कीजिए– BPSC–1995

(A) नागानन्द 1. बाणभट्ट
(B) हर्षचरित 2. हर्षवर्धन
(C) तुगलकनामा 3. अमीरखुसरो
(D) ता-उल-मो 4. राजाराममोहनराय
5. अब्देमलिक इसासी
6. दीनबन्धु मिश्र

	A	B	C	D	E
(A)	1	2	3	4	6
(B)	1	5	3	4	6
(C)	2	1	3	5	6
(D)	2	1	3	4	6

संस्कृत साहित्य का समी. इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज- 365, 490

240. अधस्तनवाक्यानां सत्यासत्यत्वपर्यायेषु समीचीनं विचिनुत– MH SET–2013

(क) कविताकामिन्याः भासो हासो वर्तते।
(ख) चारुदत्तम् इत्यस्य काव्यस्य कर्ता शूद्रकोऽस्ति।
(ग) 'न हि शक्या हि स्त्रियो रोद्धुं प्रस्थिता दयितं प्रति' इत्येतद्वाक्यं शकुन्तलायाः वर्तते।
(घ) 'बुद्धचरितम्' इति काव्यम् अश्वघोषेण विरचितम्।

(A) असत्यम्, सत्यम्, सत्यम्, सत्यम्
(B) सत्यम्, असत्यम्, सत्यम्, असत्यम्
(C) सत्यम्, असत्यम्, असत्यम्, सत्यम्
(D) असत्यम्, सत्यम्, असत्यम्, असत्यम्

संस्कृत साहित्य का समी. इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-276, 167

234. (A) 235. (C) 236. (A) 237. (B) 238. (B) 239. (D) 240. (C)

241. कल्पतरुपरिमलस्य प्रणेता कः? KL SET–2016

(A) अमलानन्दः (B) अप्पय्यदीक्षितः
(C) प्रकाशात्मयतिः (D) वाचस्पतिमिश्रः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा, 'ऋषि', पेज–589

242. कुलशेखरस्य काव्यं किम्– KL-SET–2015

(A) रुद्राक्षमाला (B) मुकुन्दमाला
(C) द्राक्षामाला (D) मुक्तकमाला

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-562

243. पाञ्चाली-स्वयंवरचम्पूकाव्यस्य कर्ता कः? KL-SET–2015

(A) नारायणभट्टः (B) रामचन्द्रः
(C) भोजः (D) चक्रकविः

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-420

244. केरलाभरणाचम्पूः कस्य रचना? KL-SET–2015

(A) राघवाचार्यस्य (B) वेंकटाचार्यस्य
(C) रामचन्द्रदीक्षितस्य (D) श्रीकृष्णस्य

स्रोत–संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-5), पेज-141

245. वासुदेवस्य काव्यं भवति– KL-SET–2015

(A) युधिष्ठिरविजयम् (B) हरविजयम्
(C) चन्द्रविजयम् (D) रघुविजयम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–255

246. 'वाल्मीकिहृदयम्' टीका के रचयिता कौन हैं? UGC 73 D–2015

(A) अहोबल-आत्रेयः (B) माधवयोगी
(C) वैद्यनाथदीक्षितः (D) लोकनाथः चक्रवर्ती

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमांशकर शर्मा 'ऋषि', पेज-143

247. 'लक्षाभरण' नामक टीका के रचयिता कौन हैं? UGC 73 D–2015

(A) नारायणः, वादिराजः (B) नीलकण्ठः
(C) अर्जुनमिश्रः (D) विमलबोधः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि' पेज-157

248. पद्मगुप्तपरिमलस्य कृतिः– CVVET–2015

(A) गउडवहो (B) विक्रमाङ्कदेवचरितम्
(C) नवसाहसाङ्कचरितम् (D) पातालविजयम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-बलदेव उपाध्याय, पेज-258

249. भागवतसाररूपस्य नारायणीयस्य प्रणेता– CVVET–2015

(A) सोमेश्वरः (B) भट्टनारायणः
(C) हेमचन्द्रः (D) नारायणभट्टः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-565

250. रामायणमञ्जर्याः रचयिता– CVVET–2015

(A) क्षेमेन्द्रः (B) परीक्षितशर्मा
(C) अभिराजराजेन्द्रमिश्रः (D) कल्हणः

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-260

251. नलाभ्युदयकाव्यस्य कर्ता– CVVET–2015

(A) राजचूडामणिदीक्षितः (B) अमरचन्द्रसूरिः
(C) कृष्णदासकविराजः (D) वामनभट्टबाणः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज- 255

252. कण्ठाभरणकाव्य-कर्ता– CVVET–2015

(A) पाणिनिः (B) वररुचिः
(C) पतञ्जलिः (D) भवभूतिः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज–195

253. कप्पणाभ्युदयकाव्य-प्रणेता– CVVET–2015

(A) रत्नाकरः (B) गुणाढ्यः
(C) शिवस्वामी (D) क्षेमेन्द्रः

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-260

254. समीचीनां तालिकां चिनुत– UGC 25 D–2015

(क) अभिज्ञानशाकुन्तलम् **(i) उत्तररामचरितम्**
(ख) तीर्थोदकञ्च वह्निश्च नान्यतः शुद्धिमर्हतः **(ii) श्रीहर्षो निपुणः कविः**
(ग) रत्नावली **(iii) हर्षचरितम्**
(घ) परिवर्तमानः एकः कालः शैलनिवानन्तः **(iv) श्रद्धावित्तं विधिश्चेति त्रितयं तत् समागतम्**

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(A)	(iv)	(i)	(ii)	(iii)
(B)	(iii)	(i)	(ii)	(iv)
(C)	(iv)	(ii)	(i)	(iii)
(D)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)

स्रोत–(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम्- कपिलदेव द्विवेदी (7/29), पेज-441 (B) उत्तररामचरितम्- कपिलदेव द्विवेदी (1/13), पेज-27 (C) रत्नावली, श्रीकृष्ण त्रिपाठी, पेज-7, (D) हर्षचरितम् (5/2)

241. (B) 242. (B) 243. (A) 244. (C) 245. (A) 246. (A) 247. (A) 248. (C) 249. (D) 250. (A) 251. (D) 252. (B) 253. (C) 254. (A)

255. निम्नलिखित को क्रमानुसार लिखिए और निम्न कूट में से सही उत्तर चुनिये– UGC 06 J–2010

(1) मालविकाग्निमित्रम् (2) हर्षचरितम्
(3) अष्टाध्यायी (4) राजतरंगिणी

(A)	2	3	4	1
(B)	3	2	1	4
(C)	4	2	1	3
(D)	3	1	2	4

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-A-201, B-394, C-558, D-320

256. सुमेलित कीजिये– UGC 06 D–2009

(क) त्रिरत्न (1) बौद्ध धर्म
(ख) जातक (2) जैन धर्म
(ग) मुद्राराक्षस (3) सोमदेव
(घ) कथासरित्सागर (4) विशाखदत्त

	क	ख	ग	घ
(A)	2	3	4	1
(B)	2	1	3	4
(C)	4	2	1	3
(D)	2	1	4	3

स्रोत–क- भारतीय दर्शन-हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-159, ग- संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास, कपिलदेव द्विवेदी, पेज-354, घ-586, ख-590

257. सुमेलित कीजिये– UGC 06 J–2009

(क) इण्डिका (1) बाणभट्ट
(ख) हर्षचरित (2) चन्दरबरदाई
(ग) पृथ्वीराजरासो (3) मेगस्थनीज
(घ) राजतरंगिणी (4) कल्हण

	क	ख	ग	घ
(A)	4	3	1	2
(B)	3	1	2	4
(C)	2	4	3	1
(D)	1	2	4	3

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, ख-491 घ- संस्कृत साहित्य का इतिहास, उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-313

258. निम्नलिखित को अनुवर्ती क्रम में रखें और दिये गये कूट संकेतों में से सही उत्तर का चयन करें– UGC 06 J–2008

(1) रामायण (2) सामवेद
(3) अष्टाध्यायी (4) महाभारत

(A)	1	4	3	2
(B)	2	3	1	4
(C)	3	1	2	4
(D)	4	2	1	3

संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज–52, 93, 122, 148

259. सुमेलित कीजिये– UGC 06 D–2007

लेखक ग्रन्थ
(क) भारवि (1) बुद्धचरितम्
(ख) अश्वघोष (2) किरातार्जुनीयम्
(ग) वराहमिहिर (3) राजतरंगिणी
(घ) कल्हण (4) बृहत्संहिता

	क	ख	ग	घ
(A)	1	2	4	3
(B)	2	1	4	3
(C)	3	4	2	1
(D)	4	3	1	2

संस्कृत साहित्य का समी. इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-क-180, ख-167 ग- संस्कृत साहित्य का इतिहास, उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-605 घ-313

260. सुमेलित कीजिये– UGC 06 J–2005

(क) हर्ष 1. हर्षचरित
(ख) विज्ञानेश्वर 2. समरांगण सूत्रधार
(ग) भोज 3. प्रियदर्शिका
(घ) बाण 4. मिताक्षरा

	क	ख	ग	घ
(A)	1	2	4	3
(B)	3	2	4	1
(C)	3	4	2	1
(D)	1	2	3	4

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समी. इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज- क-365, घ-489, ख- संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-608

255. (D) 256. (D) 257. (B) 258. (B) 259. (B) 260. (C)

261. सुमेलित कीजिये– **UGC 06 D–2004**

(क) दण्डी	1. गउडवहो
(ख) वाक्पति	2. बुद्धचरित
(ग) अश्वघोष	3. कर्पूरमञ्जरी
(घ) राजशेखर	4. दशकुमारचरित

	क	ख	ग	घ
(A)	4	1	2	3
(B)	2	3	4	1
(C)	1	3	4	2
(D)	3	2	4	1

स्रोत– संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास कपिलदेव द्विवेदी, पेज- क-466, ख-254, ग-167, घ-433

262. सुमेलित कीजिये– **UGC 06 D–2011**

(क) गीतगोविन्द	1. बिल्हण
(ख) परिशिष्टपर्वम्	2. सोमदेव
(ग) कथासरित्सागर	3. हेमचन्द्र
(घ) विक्रमांकदेवचरित	4. जयदेव

	क	ख	ग	घ
(A)	1	2	3	4
(B)	4	3	2	1
(C)	3	4	2	1
(D)	2	3	4	1

संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-क-548, ग-संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-586, घ-310

263. 'मत्तविलासः' कृति किस श्रेणी में आती है? **UGC 73 J–2016**

(A) गीतिकाव्ये (B) शोककाव्ये
(C) शृङ्गारकाव्ये (D) प्रहसने

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-548

264. 'कृष्णाविलासकाव्यस्य' कर्ता कः? KL SET–2015

(A) सुकुमारकविः (B) नारायणकविः
(C) वासुदेवककविः (D) श्रीकृष्णकविः

संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (भाग-4)-बलदेव उपाध्याय, पेज-559

261. (A) 262. (B) 263. (D) 264. (A)

28 काव्यशास्त्रीय/विविध ग्रन्थ

1. आचार्य भरतकृतो ग्रन्थोऽस्ति BHU AET–2010

(A) काव्यशास्त्रम् (B) नाट्यशास्त्रम्
(C) अर्थशास्त्रम् (D) राजशास्त्रम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-577

2. (i) रससम्प्रदायस्य प्रवर्तकः कः –
(ii) रस सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य हैं–
BHU AET–2010, UP PGT–2004

(A) भामहः (B) क्षेमेन्द्रः
(C) विश्वनाथः (D) भरतः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-591

3. आचार्य जयदेवकृतो ग्रन्थोऽस्ति BHU AET–2010

(A) ध्वन्यालोकः (B) चन्द्रालोकः
(C) काव्यालोकः (D) सहृदयालोकः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-586

4. (i) 'वक्रोक्तिजीवितम्' इति ग्रन्थः केन लिखितः?
(ii) वक्रोक्तिजीवितस्य कर्ता कः?
BHU AET–2010, UGC 73D–1994

(A) कुन्तकेन (B) रुद्रटेन
(C) महिमभट्टेन (D) वामनेन

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-595

5. ध्वन्यालोकाभिधानं कः ससर्ज ग्रन्थमुत्तमम्?
BHU AET–2012

(A) भामहः (B) वामनः
(C) दण्डी (D) आनन्दवर्धनः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-580

6. काव्यलक्षणमुद्दिश्य विश्वनाथेन धीमता
को नाम रचितो ग्रन्थः समुदाहर साम्प्रतम्॥
BHU AET–2012

(A) दशरूपकम् (B) साहित्यदर्पणः
(C) काव्यप्रकाशः (D) काव्यमीमांसा

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-587

7. (i) 'रसगङ्गाधर' के रचयिता कौन हैं?
(ii) रसगङ्गाधरग्रन्थकर्तुर्नामाभिधीयताम् –
(iii) रसगङ्गाधर किसका ग्रन्थ है?
BHU AET–2012, UGC (H) D–2011, J-2012

(A) आनन्दवर्धनः (B) पण्डितराजजगन्नाथः
(C) कविराजविश्वनाथः (D) राजानकरुय्यकः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-589, 590

8. (i) 'ध्वन्यालोक' किसकी कृति है?
(ii) 'ध्वन्यालोक' किसकी रचना है?
UP PGT–2002, BHU MET–2009, 2013

(A) रुद्रट (B) राजशेखर
(C) अभिनवगुप्त (D) आनन्दवर्धन

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-580

9. (i) साहित्यदर्पण के रचयिता कौन हैं? UP PGT–2003,
(ii) साहित्यदर्पण किसकी रचना है– 2013,
(iii) साहित्यदर्पण के प्रणेता हैं– UGC 25 D–2004,
UGC 25 D–2003, BHU B.Ed–2013

(A) पं. जगन्नाथ (B) राजशेखर
(C) मम्मट (D) आचार्य विश्वनाथ

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-587

10. (i) नाट्यशास्त्र किसकी रचना है? BHU MET–2012,
(ii) नाट्यशास्त्रस्य रचयिता कोऽस्ति? UP PGT–2003,
(iii) नाट्यशास्त्र के रचयिता हैं? BHU AET–2012,
(iv) नाट्यशास्त्र के लेखक हैं– T SET–2014
(v) मुनिः किमभिधानोऽसौ नाट्यशास्त्रं चकार यः–
(vi) नाट्यशास्त्र के प्रणेता कौन हैं?
(vii) नाट्यशास्त्र की रचना किसने की?

(A) मम्मट (B) माधवाचार्य
(C) भरत (D) रुय्यक

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-577

1. (B) 2. (D) 3. (B) 4. (A) 5. (D) 6. (B) 7. (B) 8. (D) 9. (D) 10. (C)

11. (i) नाट्यशास्त्र के प्रवर्तक हैं– UP PGT– 2004,
(ii) नाट्यशास्त्र के प्रणेता हैं? UP TGT– 2005, BHU MET– 2008, 2009, 2011, 2013, UGC 25 J–2004, UGC 73 J - 1992, UPTET– 2014, UP PGT (H) 2009
(A) धनञ्जय (B) रामचन्द्र गुणचन्द्र
(C) भरतमुनि (D) विश्वनाथ
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-577

12. 'काव्यालङ्कारसारसंग्रहस्य:' कर्ता कः? JNU MET–2015
(A) भामहः (B) रुद्रटः
(C) उद्भटः (D) मुकुलभट्टः
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विशेश्वर, भू0 पेज-43

13. (i) 'व्यक्तिविवेक' के रचनाकार हैं– UP PGT– 2005,
(ii) 'व्यक्तिविवेको' विरचितः – UGC - 73 J–2014
(A) भोजराज (B) धनञ्जय
(C) क्षेमेन्द्र (D) महिमभट्ट
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि' पेज-582

14. (i) काव्यादर्श के रचयिता हैं– UGC - 25 J- 2005
(ii) काव्यादर्शकारः कः? UGC - 73 J - 2015,
(iii) काव्यादर्श के रचनाकार हैं? UPTET– 2014
(iv) काव्यादर्श के रचनाकार निम्नलिखित में से कौन हैं? UP PGT (H)– 2005, BHU MET - 2010, RPSC ग्रेड-I (TGT)– 2010
(A) रुद्रटः (B) वामनः
(C) दण्डी (D) राजशेखरः
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-578

15. काव्यालङ्कारसूत्रवृत्तिकारः कः? UGC - 25 D – 2005
(A) भामहः (B) वामनः
(C) दण्डी (D) रुद्रटः
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-579

16. नाट्यशास्त्रस्य ''अभिनवभारती'' इति व्याख्यायाः कर्ता कः? UGC 25 J– 2012
(A) आनन्दवर्धनः (B) भरतः
(C) अभिनवगुप्तः (D) धनञ्जयः
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-582

17. जगन्नाथ की कृति है? UGC– 73 D– 1992
(A) काव्यादर्श (B) रसगङ्गाधर
(C) छन्दशास्त्र (D) साहित्यदर्पण
संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-589, 590

18. पण्डितराज जगन्नाथ किसके लेखक नहीं हैं? BHU MET–2016
(A) आसफविलास (B) गङ्गालहरी
(C) रसगङ्गाधर (D) सौन्दर्यलहरी
संस्कृत काव्यशास्त्र का इतिहास-राजवंश सहाय 'हीरा', पेज-229, 230

19. सरस्वतीकण्ठाभरणस्य कर्ता अस्ति– KL SET–2014
(A) कालिदासः (B) भासः
(C) भोजः (D) सुबन्धुः
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-582

20. (i) विश्वनाथ की कृति है–
(ii) विश्वनाथ लेखक हैं- UGC - 73 D– 1994, 1996
(A) काव्यादर्श (B) साहित्यदर्पण
(C) काव्यप्रकाश (D) चन्द्रालोक
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-587

21. भामह की रचना है– UGC 73 D– 1997
(A) काव्यप्रकाशः (B) ध्वन्यालोकः
(C) काव्यालङ्कारः (D) काव्यालङ्कारकारिका
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-578

22. (i) दण्डी-रचित ग्रन्थ है–
(ii) दण्डी द्वारा लिखित ग्रन्थ कौन है?
(iii) महाकवि दण्डी ने किस ग्रन्थ को लिखा है? UGC 73 J– 1999, BHU MET– 2011, 2012
(A) काव्यप्रकाश (B) काव्यालङ्कार
(C) काव्यादर्श (D) काव्यकौमुदी
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-578

23. महिमभट्ट रचित ग्रन्थ है– UGC 73 J– 1998
(A) काव्यालङ्कारः (B) काव्यप्रकाशः
(C) व्यक्तिविवेकः (D) साहित्यदर्पणः
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-582

11. (C) 12. (C) 13. (D) 14. (C) 15. (B) 16. (C) 17. (B) 18. (D) 19. (C) 20. (B) 21. (C) 22. (C) 23. (C)

24. (i) रससूत्र के प्रतिपादक हैं– UGC 73 D–2006,
(ii) रससूत्रस्य कर्ता – 2011

(A) अभिनवगुप्तः (B) भट्टनायकः
(C) लोल्लटः (D) भरतमुनिः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-591

25. साहित्यदर्पण किस प्रकार की रचना है? BHU MET–2009

(A) धर्मग्रन्थ (B) लक्षणग्रन्थ
(C) नाटकग्रन्थ (D) आख्यायिका

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-587

26. कौन सा योग सही नहीं है– BHU MET–2009

(A) मम्मट – काव्यप्रकाश (B) विश्वनाथ – साहित्यदर्पण
(C) भरतमुनि – रसगङ्गाधर (D) जयदेव – चन्द्रालोक

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-590

27. रसगङ्गाधर किस प्रकार का ग्रन्थ है? BHU MET–2011

(A) महाकाव्य (B) लक्षणग्रन्थ
(C) नाटक (D) गीतिकाव्य

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-590

28. कुवलयानन्द के रचयिता हैं– BHU MET–2014

(A) अप्पयदीक्षित (B) वाचस्पतिमिश्र
(C) कृष्णसुधी (D) विष्णुशर्मा

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-589

29. 'चित्रमीमांसा' कस्य शास्त्रसम्बद्धः ग्रन्थः? JNU MET–2015

(A) धर्मशास्त्रम् (B) मीमांसाशास्त्रम्
(C) अलङ्कारशास्त्रम् (D) चित्रलेखशास्त्रम्

स्रोत– संस्कृत शास्त्रों का इतिहास, बलदेव उपाध्याय, पेज-269

30. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत–GJ SET–2008

(क) भरतस्य **1. औचित्यसम्प्रदायः**
(ख) वामनस्य **2. ध्वनिसम्प्रदायः**
(ग) आनन्दवर्धनस्य **3. रीतिसम्प्रदायः**
(घ) क्षेमेन्द्रस्य **4. रससम्प्रदायः**

	क	ख	ग	घ
(A)	4	1	2	3
(B)	4	1	2	3
(C)	4	3	2	1
(D)	1	3	4	2

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा, 'ऋषि', पेज- क-591, ख-592, ग-594, घ-596

31. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत– WB SET–2010

(क) शब्दशक्तिः **1. उत्साहः**
(ख) तर्कभाषा **2. अभिधा**
(ग) वीरः **3. प्रकरणम्**
(घ) रूपकम् **4. केशवमिश्रः**

	क	ख	ग	घ
(A)	1	2	3	4
(B)	2	3	4	1
(C)	2	4	1	3
(D)	3	2	4	1

स्रोत–साहित्यदर्पण- शालिग्रामशास्त्री, पेज क-26 घ-170
ख- तर्कभाषा- गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज-2
ग- काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-97

32. 'प्रतापरुद्रयशोभूषण' के रचनाकार हैं– BHU MET–2014

(A) गुणाढ्य (B) क्षेमेन्द्र
(C) विद्यानाथ (D) विद्याधर

संस्कृत काव्यशास्त्र का आलोचनात्मक इतिहास-अमरनाथ पाण्डेय, पेज-154

33. 'औचित्यविचारचर्चा'' के रचयिता हैं– BHU - MET–2014

(A) मम्मट (B) जगन्नाथ
(C) दण्डी (D) क्षेमेन्द्र

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-596

34. (i) काव्यालङ्कारस्य लेखकः – MPPSC – 2003
(ii) काव्यालङ्कार किसकी रचना है?
(iii) काव्यालङ्कार के रचयिता–
AWES - TGT–2010, JNU - MET–2014, UP PGT–2004, UGC (H) J–2011

(A) महिमभट्ट (B) उद्भटः
(C) जैयटः (D) भामहः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-578

35. राजशेखरस्य कृतिः का? DSSSB - TGT, DSSSB PGT–2014

(A) सौन्दर्यमीमांसा (B) काव्यमीमांसा
(C) चित्रमीमांसा (D) साहित्यमीमांसा

संस्कृत काव्यशास्त्र का आलोचनात्मक इतिहास-अमरनाथ पाण्डेय, पेज-81

24. (D) 25. (B) 26. (C) 27. (B) 28. (A) 29. (C) 30. (C) 31. (C) 32. (C) 33. (D) 34. (D) 35. (B)

36. निम्नलिखित में से हेमचन्द्र की रचना कौन सी है? UGC 73 J–2016

(A) काव्यमीमांसा (B) काव्यानुशासनम्

(C) कविकण्ठाभरणम् (D) काव्यनिर्णयः

संस्कृत काव्यशास्त्र का आलोचनात्मक इतिहास-अमरनाथ पाण्डेय, पेज-144

37. अलङ्कारशेखरः केन कृतः– JNU - MET– 2014

(A) रुय्यकेन (B) विद्यानाथेन

(C) विद्याधरेण (D) केशवमिश्रेण

संस्कृत काव्यशास्त्र का आलोचनात्मक इतिहास-अमरनाथ पाण्डेय, पेज-167

38. सुमेलयतु– JNU MET– 2014

ग्रन्थः	रचनाकारः
1. अभिनवभारती	(क) भरतमुनिः
2. काव्यप्रकाशः	(ख) रुय्यकः
3. नाट्यशास्त्रम्	(ग) अभिनवगुप्तपादाचार्यः
4. अलङ्कारसर्वस्वम्	(घ) मम्मटाचार्यः

(A)	1. ग	2. घ	3. ख	4. क
(B)	1. क	2. ख	3. ग	4. घ
(C)	1. घ	2. ग	3. ख	4. क
(D)	1. ग	2. घ	3. क	4. ख

स्रोत–संस्कृत काव्यशास्त्र का आलोचनात्मक इतिहास- अमरनाथ पाण्डेय, पेज- (1)-98 (2)-120 (3)-2 (4)-136

39. 'काव्यमीमांसा' के लेखक हैं– DL (H)– 2015, UP PGT (H) – 2004

(A) रुद्रट (B) भामह

(C) राजशेखर (D) दण्डी

संस्कृत काव्यशास्त्र का आलोचनात्मक इतिहास-अमरनाथ पाण्डेय, पेज-81

40. दण्डी के काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ का नाम है? UP TGT (H)– 2010

(A) प्रतिदर्श (B) काव्यशास्त्र

(C) काव्यादर्श (D) भाषादर्श

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-578

41. 'रसमञ्जरी' केन विरचिताऽस्ति? BHU AET– 2010

(A) शिङ्गभूपालेन (B) भानुदत्तेन

(C) कर्णपूरेण (D) विश्वेश्वरपण्डितेन

संस्कृत काव्यशास्त्र का आलोचनात्मक इतिहास-अमरनाथ पाण्डेय, पेज-159

42. "अलंकारसुधानिधिकर्ता" अस्ति? UGC 73 (D)– 2014

(A) भट्टभास्करः (B) जगन्नाथः

(C) मम्मटः (D) सायणः

स्रोत–

43. निम्नलिखित आलोचना ग्रन्थों को उनके लेखकों के साथ सुमेलित कीजिए– UGC (H) J–2013

(क) शृङ्गारप्रकाश	(i) महिमभट्ट
(ख) व्यक्तिविवेक	(ii) अप्पयदीक्षित
(ग) चित्रमीमांसा	(iii) भोज
(घ) रसमञ्जरी	(iv) रुद्रभट्ट
	(v) भानुदत्त

कूट :	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(A)	(iii)	(i)	(ii)	(v)
(B)	(iv)	(iii)	(i)	(ii)
(C)	(ii)	(i)	(iii)	(iv)
(D)	(v)	(ii)	(iv)	(iii)

स्रोत–संस्कृत काव्यशास्त्र का आलोचनात्मक इतिहास- अमरनाथ पाण्डेय, पेज- (A)-106, (B)-103, (C)-169, (D)-159

44. कालक्रमानुसार ग्रन्थों का सही अनुक्रम है– UGC (H) J– 2011

(A) काव्यशास्त्र, दशरूपक, काव्यालङ्कारसूत्रवृत्ति, नाट्यशास्त्र

(B) नाट्यशास्त्र, काव्यालङ्कारसूत्रवृत्ति, दशरूपक, काव्यप्रकाश

(C) काव्यालङ्कारसूत्रवृत्ति, नाट्यशास्त्र, काव्यप्रकाश, दशरूपक

(D) दशरूपक, काव्यप्रकाश, काव्यालङ्कारसूत्रवृत्ति, नाट्यशास्त्र

स्रोत–संस्कृत काव्यशास्त्र का आलोचनात्मक इतिहासस - अमरनाथ पाण्डेय,पेज- 2, 26, 99, 120

45. निम्नलिखित ग्रन्थों को उनके आचार्यों के साथ सुमेलित कीजिए– UGC (H) D– 2010

(अ) ध्वन्यालोक	(i) मम्मट
(ब) काव्यालङ्कार	(ii) आनन्दवर्धन
(स) काव्यप्रकाश	(iii) भामह
(द) काव्यानुशासन	(iv) हेमचन्द्र

	अ	ब	स	द
(A)	(ii)	(iii)	(i)	(iv)
(B)	(iv)	(iii)	(i)	(ii)
(C)	(iii)	(iv)	(i)	(ii)
(D)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)

स्रोत–संस्कृत काव्यशास्त्र का आलोचनात्मक इतिहास- अमरनाथ पाण्डेय, पेज- अ-41, ब-8 स-120 द-144

36. (B) 37. (D) 38. (D) 39. (C) 40. (C) 41. (B) 42. (A) 43. (A) 44. (B) 45. (A)

46. निम्नलिखित ग्रन्थ और ग्रन्थकारों को सुमेलित कीजिए– UGC (H) J– 2009

(अ) रसगङ्गाधर	(i) मम्मट
(ब) साहित्यदर्पण	(ii) आनन्दवर्धन
(स) काव्यप्रकाश	(iii) विश्वनाथ
(द) वक्रोक्तिजीवितम्	(iv) कुन्तक
	(v) पण्डितराज जगन्नाथ

	अ	ब	स	द
(A)	v	iii	i	iv
(B)	iii	ii	iv	i
(C)	v	i	ii	iii
(D)	iii	ii	i	v

स्रोत–संस्कृत काव्यशास्त्र का आलोचनात्मक इतिहास- अमरनाथ पाण्डेय, पेज-अ-174, ब-157,स-120, द-88

47. भामहः कस्य सम्प्रदायस्य आचार्यः? JNU MET–2015

(A) औचित्यसम्प्रदायस्य (B) रससम्प्रदायस्य
(C) अलङ्कारसम्प्रदायस्य (D) ध्वनिसम्प्रदायस्य

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-592

48. रीति सम्प्रदाय से सम्बन्धित काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ है– UP PGT (H)– 2005

(A) काव्यालङ्कारसूत्र (B) काव्यालङ्कार
(C) काव्यालङ्कारसूत्रवृत्ति (D) काव्यादर्श

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-592

49. (i) अलङ्कारसम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य कौन हैं?
(ii) अलंकारसम्प्रदायस्य प्रवर्तकः –AWES TGT–2011
(iii) अलङ्कारसम्प्रदाय के संस्थापक आचार्य हैं? UGC (H) J–2013, UP PGT–2002, 2003 UP TGT–2002, H TET–2015

(A) आचार्यभामहः (B) आचार्यदण्डी
(C) आचार्यवामनः (D) आचार्यः आनन्दवर्धनः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-592

50. जयदेवः कस्य ग्रन्थस्य प्रणेता? BHU Sh.ET–2013

(A) दशरूपकम् (B) चन्द्रालोकः
(C) काव्यानुशासनम् (D) औचित्यविचारचर्चा

संस्कृत काव्यशास्त्र का आलोचनात्मक इतिहास-अमरनाथ पाण्डेय, पेज-148

51. काव्यालङ्कारे श्लोकसंख्या अस्ति– BHU Sh.ET– 2003

(A) 500 (B) 400
(C) 425 (D) 300

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-578

52. इन ग्रन्थों का काल के आधार पर सही अनुक्रम कौन सा है– UGC (H) D - 2013

(A) काव्यादर्श, ध्वन्यालोक, काव्यप्रकाश, साहित्यदर्पण
(B) ध्वन्यालोक, काव्यप्रकाश, साहित्यदर्पण, काव्यादर्श
(C) काव्यप्रकाश, साहित्यदर्पण, काव्यादर्श, ध्वन्यालोक
(D) साहित्यदर्पण, काव्यादर्श, ध्वन्यालोक, काव्यप्रकाश

संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-578, 580,584, 587

53. रुद्रट द्वारा लिखित अलङ्कार ग्रन्थ का नाम है– UGC 73 J-2015

(A) काव्यालङ्कार (B) अलङ्कारसूत्रम्
(C) अलङ्कारसर्वस्वम् (D) रसालङ्कारः

संस्कृत काव्यशास्त्र का आलोचनात्मक इतिहास-अमरनाथ पाण्डेय, पेज-36

54. (i) गणित की पुस्तक ''लीलावती'' के लेखक हैं–
(ii) लीलावती के रचनाकार कौन हैं?
(iii) 'लीलावती' ग्रन्थस्य कर्ता कः अस्ति–
(iv) 'लीलावती' की रचना किसने की?
(v) 'लीलावती'-कारः अस्ति– UK PCS– 2009,
(vi) लीलावती केन रचिता? UGC 73D– 1994, 1996, 2004, 2009, J–1999, 2008, 2013

(A) रामानुज (B) कौटिल्य
(C) अमर्त्यसेन (D) भास्कराचार्य

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-606

55. 'ये रसस्याङ्गिनो धर्माः शौर्यादय इवात्मनः।' इतीमाम् उक्तिम् आलक्ष्य प्रस्तुतेषु अधोलिखितेषु वाक्येषु एकम् असमीचीनमस्ति? DU M. Phil–2016

(A) इयं विश्वनाथेन प्रतिपादिता
(B) इयं विश्वनाथेन उद्धृता
(C) इयं गुणविषये कस्यचिदाचार्यस्य मतं प्रतिपादयति
(D) इयं साहित्यदर्पणे कस्यचिद् अन्यस्य आचार्यस्य काव्यस्वरूपं निरसितुं प्रयुक्ता

स्रोत–(i) काव्यप्रकाश (8/86) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-380
(ii) साहित्यदर्पण - शालिग्राम शास्त्री, पेज-15

46. (A) 47. (C) 48. (A) 49. (A) 50. (B) 51. (B) 52. (A) 53. (A) 54. (D) 55. (A)

56. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत– K SET–2015

(क) वक्रोक्तिः काव्यजीवितम्		1. भोजराजः	
(ख) वाक्यं रसात्मकं काव्यम्		2. मम्मटः	
(ग) तददोषौ शब्दार्थौ सगुणौ		3. विश्वनाथः	
(घ) निर्दोषं गुणवत्काव्यम्		4. कुन्तकः	

	क	ख	ग	घ
(A)	4	3	2	1
(B)	3	2	1	4
(C)	1	3	2	4
(D)	1	2	3	4

स्रोत– काव्यप्रकाश - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–18-25

57. (i) अलङ्कारसर्वस्वकारः– KL SET–2015
(ii) अलङ्कारसर्वस्वम् कस्य कृतिरस्ति– CVVET–2015

(A) भामहः (B) रुय्यकः
(C) रुद्रटः (D) प्रतीहारेन्दुराजः

संस्कृत काव्यशास्त्र का आलोचनात्मक इतिहास-अमरनाथ पाण्डेय, पेज-136

58. (i) 'बृहत्संहिता' के रचनाकार हैं? BHU MET–2010,
(ii) बृहत्संहिता के रचयिता कौन हैं? UGC 73D,
(iii) बृहत्संहितायाः कर्ता कः अस्ति? 1996, 1999,
(iv) बृहत्संहितायाः लेखकोऽस्ति। J-2009, D-2012
J-1991, D-1992, BHU AET–2011

(A) आर्यभट्ट (B) वराहमिहिर
(C) भरद्वाज (D) भास्कराचार्य

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-605

59. (i) ग्रहलाघव के रचयिता हैं–UGC 73 D–1997, 1992
(ii) ग्रहलाघव कृतिरस्ति– BHU AET–2011, 2012
(iii) ग्रहलाघवो लेखकोरस्ति–

(A) गणेशदैवज्ञ (B) रामदैवज्ञ
(C) गणेशकवि (D) पृथुयश

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-606

60. (i) 'मिताक्षरा टीका' है–
(ii) मिताक्षरा नाम की टीका कहाँ मिलती है?
(iii) मिताक्षरा टीका किस स्मृति की है?
UGC 73 D– 1996, J–1998, 1999

(A) गौतमस्मृति की (B) हारीतस्मृति की
(C) याज्ञवल्क्यस्मृति की (D) मनुस्मृति की

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-608

61. वाचस्पत्यम् नामकस्य शब्दकोषस्य प्रणेताऽस्ति– DU M. Phil–2016

(A) वाचस्पतिमिश्रः (B) तारानाथतर्कवाचस्पतिः
(C) रामनाथतर्कवाचस्पतिः (D) राधाकान्तदेवबहादुरः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-603

62.

रचना	रचनाकार
(क) चित्रकाव्यकौतुकम्	(i) रामकरण शर्मा
(ख) सन्ध्या	(ii) श्रीरामचद्रुडुः
(ग) श्रीमत्प्रतापराणायनम्	(iii) रामरूपपाठकः
(घ) को वै रसः	(iv) आँगेटिपरीक्षितशर्मा

उपर्युक्तानां साहित्याकादमीपुरस्कृतानां रचनानां तद्रचनाकाराणां च समुचितानि युग्मानि कस्मिन् विकल्पे सन्ति– DU M. phil–2016

	क	ख	ग	घ
(A)	3	4	1	2
(B)	3	1	4	2
(C)	4	2	3	1
(D)	1	3	2	4

स्रोत–(i) संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-7), पेज–115-127
(ii) संस्कृत का अर्वाचीन समीक्षात्मक काव्यशास्त्र-अभिराजेन्द्र मिश्र, पेज–359

63. ध्वनिसम्प्रदायस्य प्रवर्तकः – KL SET–2015

(A) राजशेखरः (B) आनन्दवर्धनः
(C) वामनः (D) कुन्तकः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-580

64. 'जातकालङ्कार' के रचयिता हैं– UGC 73 D– 1994

(A) रामदैवज्ञ (B) गणेशकवि
(C) वराहमिहिर (D) गणेशदैवज्ञ

स्रोत–संस्कृत परम्परागत विषय - शत्रुघ्न त्रिपाठी- पेज-2

56. (A) 57. (B) 58. (B) 59. (A) 60. (C) 61. (B) 62. (B) 63. (B) 64. (B)

65. (i) 'निर्णयसिन्धु' के कर्ता हैं– UGC 73 D 1996,
(ii) 'निर्णयसिन्धु' के रचयिता हैं– J-1998

(A) कमलाकर (B) कुमारिल
(C) प्रभाकर (D) शङ्कर

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-609

66. मनुस्मृति के टीकाकार हैं– UGC 73 D– 1996

(A) उव्वट (B) कैयट
(C) महिमभट्ट (D) कुल्लूकभट्ट

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-607

67. (i) सारावलीकारः विद्यते– UGC 73 J– 1998,
(ii) सारावली की रचना इन्होंने की–BHU-AET– 2011

(A) वराहमिहिरः (B) भट्टोत्पलः
(C) कल्याणवर्मा (D) ढुण्ढिराजः

स्रोत–संस्कृत परम्परागत विषय - शत्रुघ्न त्रिपाठी, पेज-1

68. 'सिद्धान्तशिरोमणिकार' हैं– UGC 73 D– 1999

(A) गणेश (B) कमलाकर
(C) भास्कर (D) रामदैवज्ञ

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-606

69. मन्दारमञ्जरी' ग्रन्थ के रचयिता हैं–UGC 73 D– 2007

(A) सायणाचार्यः (B) वेदान्तदेशिकः
(C) राघवेन्द्रतीर्थः (D) व्यासतीर्थः

स्रोत–संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-10), पेज–391

70. 'बृहती' इत्याख्य ग्रन्थस्य कर्ता– UGC 73 D– 2011

(A) प्रभाकरः (B) कुमारिलः
(C) मण्डनमिश्रः (D) शालिकनाथः

स्रोत–अर्थसंग्रह - सत्यप्रकाश शर्मा, भू0 पेज-9

71. (i) वेदाङ्गज्योतिषग्रन्थस्य रचनां कः कृतवान्?
(ii) वेदाङ्गज्योतिषस्य प्रणेता वर्तते?
(iii) 'वेदाङ्गज्योतिषम्' लिखितम्?
BHU AET– 2010, 2012, 2011

(A) पाणिनिः (B) भास्कराचार्यः
(C) सीताराम झा (D) लगधः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-95

72. 'पञ्चसिद्धान्तिका' ग्रन्थ के प्रणेता हैं–
BHU MET– 2012

(A) वराहमिहिर (B) वाचस्पतिमिश्र
(C) कालिदास (D) श्रीहर्ष

स्रोत–संस्कृत परम्परागत विषय - शत्रुघ्न त्रिपाठी- पेज-1

73. (i) 'मिताक्षरा' के लेखक हैं– BHU MET– 2013, 2014,
(i) मिताक्षरायाः कर्ता कः? UGC– 73, J– 2006,
MP PSC– 2000

(A) भवभूति (B) भरत
(C) विज्ञानेश्वर (D) मम्मट

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-608

74. 'चतुर्वर्गचिन्तामणि' के लेखक का नाम है?
BHU MET– 2014

(A) धर्मेश्वर (B) रघुनाथभट्ट
(C) हेमाद्रि (D) शूलपाणि

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-609

75. 'धर्मकोश' के लेखक हैं– BHU MET– 2014

(A) त्रिलोचन मिश्र (B) अनन्तदेव
(C) श्रीदत्त (D) रघुनन्दन

स्रोत–

76. ''भारतीय भाषाचिन्तन'' के रचयिता हैं–
BHU MET– 2014

(A) डॉ. भोलानाथ तिवारी (B) विद्यानिवास मिश्र
(C) पं. रामप्रसाद त्रिपाठी (D) रामविलास शर्मा

स्रोत–

77. `An Introduction to Comparative Philasophy' के लेखक है? BHU MET– 2014

(A) पी.डी. गुणे (B) जेम्पर्सन
(C) ब्लूमफील्ड (D) भोलानाथ तिवारी

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–500

78. मीमांसासूत्रकारोऽस्ति– UGC 73 J–2005

(A) व्यासः (B) गौतमः
(C) जैमिनिः (D) कपिलः

स्रोत–अर्थसंग्रह - सत्यप्रकाश शर्मा, भू0 पेज–5

65. (A)	66. (D)	67. (C)	68. (C)	69. (B)	70. (A)	71. (D)	72. (A)	73. (C)	74. (C)
75. (A)	76. (B)	77. (A)	78. (C)						

79. समीचीनां तालिकां चिनुत– WB SET–2010

काव्यलक्षणम्	काव्यलक्षणकर्ता
(क) वाक्यं रसात्मकं काव्यम्	1. वामनः
(ख) रीतिरात्मा काव्यस्य	2. विश्वनाथः
(ग) काव्यस्यात्मा ध्वनिः	3. कुन्तकः
(घ) वक्रोक्तिः काव्यजीवितम्	4. आनन्दवर्धनः

	क	ख	ग	घ
(A)	2	1	4	3
(B)	1	2	3	4
(C)	2	3	4	1
(D)	3	4	2	1

स्रोत–काव्यप्रकाश-आचार्य विश्वेश्वर, पेज–क-27 ख-25 ग-26

80. 'दत्तकमीमांसा' के प्रणेता हैं–
UGC 73 J-2005, D– 2012

(A) कुबेरः (B) नन्दपण्डितः
(C) शूलपाणिः (D) प्रतापरुद्रदेवः

स्रोत–

81. (i) 'मन्वर्थमुक्तावली' के रचयिता हैं–
(ii) मन्वर्थमुक्तावल्याः प्रणेताऽस्ति–
UGC 73 J– 1998, 2008

(A) मेधातिथिः (B) कुल्लूकः
(C) विज्ञानेश्वरः (D) मनुः

स्रोत–मनुस्मृति-गिरिधर गोपाल शर्मा, पेज-1

82. (i) ''सिद्धान्तशिरोमणि'' के रचयिता हैं–
(ii) सिद्धान्तशिरोमणेः कर्तास्ति– UGC– 73 J–2013

(A) आर्यभट्टः (B) भास्कराचार्यः
(C) वराहमिहिरः (D) सामन्तचन्द्रशेखरः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-606

83. 'सूर्यसिद्धान्त' के प्रवर्तक हैं– UGC 73 D– 2012

(A) भास्कराचार्यः (B) वराहमिहिराचार्यः
(C) लगधाचार्यः (D) आर्यभट्टः

स्रोत–सूर्यसिद्धान्त (1.9) - रामचन्द्र पाण्डेय, भू0 पेज–09

84. विष्णु का सदागमैक विज्ञेयत्व प्रतिपादक ग्रन्थ है–
UGC– 73 J– 2012

(A) प्रमाणलक्षणम् (B) उपाधिखण्डनम्
(C) कथालक्षणम् (D) विष्णुतत्त्वनिर्णयः

संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास- (खण्ड-10), पेज-362

85. ''पञ्चसिद्धान्तिका'' किसने लिखी है–
BHU MET– 2011

(A) वराहमिहिर (B) कालिदास
(C) वाचस्पति मिश्र (D) विष्णुशर्मा

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-605

86. (i) दायभागग्रन्थः केन लिखितः? UGC– 73, J– 2005,
(ii) दायभाग ग्रन्थ का लेखक कौन है– 2007, 2014
(iii) दायभागस्य प्रणेता–

(A) विज्ञानेश्वर (B) रघुनन्दन
(C) जीमूतवाहन (D) नीलकण्ठ

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-608

87. भास्कराचार्यस्य कृतिरस्ति– BHU AET– 2010

(A) ग्रहलाघवम् (B) तत्त्वविवेकः
(C) बृहत्संहिता (D) सिद्धान्तशिरोमणिः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-606

88. काव्यदर्पणः इति ग्रन्थस्य कर्ता कः? KL SET–2016

(A) विश्वेश्वरपण्डितः (B) राजचूडामणिदीक्षितः
(C) गोविन्दठक्कुरः (D) केशवमिश्रः

संस्कृत काव्यशास्त्र का आलोचनात्मक इतिहास-अमरनाथ पाण्डेय, पेज–265

89. (i) वराहमिहिरेण लिखिता– BHU AET– 2011, 2012
(ii) वराहमिहिरविरचिता कृतिः का? CVVET–2017

(A) सारावली (B) गोलमीमांसा
(C) बृहत्संहिता (D) बृहदास्तुमाला

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि' पेज-605

90. चन्द्रालोक किस प्रकार की रचना है?
BHU MET–2016

(A) लक्षणग्रन्थ (B) नाटकग्रन्थ
(C) आख्यायिका (D) धर्मग्रन्थ

संस्कृत काव्यशास्त्र का आलोचनात्मक इतिहास-अमरनाथ पाण्डेय, पेज-149

79. (A) 80. (B) 81. (B) 82. (B) 83. (A) 84. (D) 85. (A) 86. (C) 87. (D) 88. (B) 89. (C) 90. (A)

91. मुहूर्त्तचिन्तामणिकारो विद्यते– BHU AET– 2011

(A) श्रीधराचार्यः (B) अनन्तदैवज्ञः
(C) रामदैवज्ञः (D) रामाचार्यः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-606

92. गणेशदैवज्ञस्य कृतिर्विद्यते– BHU AET– 2011

(A) ग्रहचिन्तामणिः (B) ग्रहलाघवम्
(C) गोलचिन्तामणिः (D) ग्रहणलाघवम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-606

93. बृहज्जातकस्य प्रसिद्धः टीकाकारो विद्यते– BHU AET– 2011

(A) लल्लः (B) भट्टलोल्लट
(C) कमलाकरः (D) भट्टोत्पलः

स्रोत–बृहज्जातकम् - पं० केदारदत्त जोशी, भू० पेज–(xxxviii)

94. मनुस्मृति की टीका मन्वर्थमुक्तावली के टीकाकार कौन हैं? BHU AET– 2011

(A) असहाय (B) कुल्लूकभट्ट
(C) गोविन्दराज (D) रामचन्द्र

स्रोत–मनुस्मृति - गिरिधर गोपाल शर्मा, पेज-1

95. आगमशास्त्र का ग्रन्थ कौन सा है?BHU AET– 2011

(A) सांख्यकारिका (B) सुवर्णसप्तति
(C) ताम्रसप्तति (D) परात्रिंशिका

स्रोत–संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-11), पेज-619

96. (i) 'तन्त्रालोकसार' के रचयिता हैं? UGC 73 D– 1992,
(ii) तन्त्रालोकसार के कर्ता हैं? 1994, J– 2006,
(iii) तन्त्रालोकसारस्य कर्ता कः? 2007, 2009

(A) अभिनवगुप्त (B) भोजराज
(C) माधव (D) क्षेमेन्द्र

संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि' पेज-581, 582

97. 'लीलावती' किस विषय से सम्बन्धित ग्रन्थ है– MP PCS– 1990

(A) गणित (B) विमानशास्त्र
(C) भूगर्भशास्त्र (D) खगोलशास्त्र

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-606

98. 'कुल्लूकभट्ट' कृत मनुस्मृति टीका का नाम है? UGC 73 J– 1999

(A) मन्वर्थकल्पलता (B) मन्वर्थप्रकाश
(C) तत्त्ववैशारदी (D) मन्वर्थमुक्तावली

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-1

99. 'यज्ञतत्त्वप्रकाश' के रचयिता हैं? BHU MET– 2015

(A) पट्टाभिरामशास्त्री (B) चिन्नस्वामी
(C) मण्डनमिश्र (D) बलदेव उपाध्याय

स्रोत–

100. The 'फिलॉसफी ऑफ वर्ड एण्ड मीनिंग'' के रचयिता हैं– BHU MET– 2015

(A) प्रो. गौरीनाथ शास्त्री (B) प्रो. अशोक शास्त्री
(C) प्रो. पट्टाभिराम शास्त्री (D) प्रो. कैलाशपति शास्त्री

स्रोत– गूगल सर्च

101. श्रीविद्या वाले ग्रन्थों में जिसकी गणना होती है, वह है– BHU MET– 2015

(A) कर्मकाण्डप्रदीप (B) ग्रहशान्ति प्रयोग
(C) मन्त्रमहोदधि (D) श्यामासपर्यापद्धति

स्रोत–

102. विश्वकर्मप्रकाश से सम्बन्धित शास्त्र है– BHU MET– 2015

(A) वास्तुशास्त्र (B) दर्शन
(C) स्मृति (D) काव्य

स्रोत–

103. (i) 'भज गोविन्दस्य' गीतस्य रचयिता–
(ii) 'भज गोविन्दम्' रचयिता कः? AWES TGT– 2010, 2011

(A) दिवाकरः (B) रामानन्दः
(C) आचार्यशङ्करः (D) रामानुजः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-365

104. 'अमरकोशस्य' लेखकः अस्ति– AWES TGT– 2012

(A) अमरदेवः (B) अमरसिंहः
(C) अमरनाथः (D) अमरस्वामी

स्रोत–अमरकोश- श्रीमन्नालाल 'अभिमन्यु', भू० पेज-2

91. (C) 92. (B) 93. (D) 94. (B) 95. (D) 96. (A) 97. (A) 98. (D) 99. (A) 100. (A) 101. (D) 102. (A) 103. (C) 104. (B)

105. वराहमिहिरस्य ज्योतिषग्रन्थस्य नाम– AWES TGT– 2011
(A) सारावली (B) बृहज्जातकः
(C) खण्डनखण्डखाद्यः (D) लघुमानसः
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-605

106. अस्मिन् ग्रन्थे स्वस्थवृत्तं वर्णितम्–AWES TGT– 2010
(A) सुश्रुतकाव्ये (B) अष्टांगहृदयकाव्ये
(C) चरकसंहितायाम् (D) चिकित्सासारसंग्रहे
भारतीय शास्त्र और शास्त्रकार-गिरिजाशंकर शास्त्री, पेज-110-111

107. आर्यभट्ट ने 23 वर्ष की अवस्था में किस ग्रन्थ की रचना की? H TET– 2014
(A) लीलावती (B) आरभटीय
(C) वेधशाला (D) इनमें से कोई नहीं
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-605

108. कुल्लूकभट्टेन कस्य ग्रन्थस्य टीका लिखिता? AWES TGT– 2009
(A) मुण्डकोपनिषद् (B) यजुर्वेदः
(C) मनुस्मृतिः (D) कातन्त्रव्याकरण्
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-607

109. 'वृत्तबोधकम्' शास्त्रं कथ्यते– AWES TGT– 2009
(A) अलङ्कारशास्त्रम् (B) छन्दशास्त्रम्
(C) प्रकीर्णकम् (D) खण्डकाव्यम्
स्रोत–वृत्तरत्नाकर-पवनकुमार पाण्डेय, भू0 पेज–03

110. 'आचारनिर्णय' के निर्माता हैं? BHU MET– 2014
(A) नागेशभट्ट (B) वेंकटेश
(C) वीरराघव (D) गोपाल
स्रोत–

111. शिवसूत्र ग्रन्थ में है? UGC 73 J–2016
(A) दिक्संख्ये संज्ञायाम् (B) शक्तिचक्रसंधाने विश्वसंहारः
(C) तन्तुसमन्वयात् (D) तत्प्रतिषेधार्थमेकतत्त्वाभ्यासः
स्रोत–

112. 'सिद्धान्तलेशसंग्रह' के रचयिता हैं? UGC 73 D– 2008
(A) मधुसूदन सरस्वती (B) प्रकाशात्मयतिः
(C) अप्पयदीक्षितः (D) श्रीहर्षः
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-589

113. 'चरकसंहिता' क्या है? MP PSC– 1993
(A) इतिहासग्रन्थ (B) चिकित्साग्रन्थ
(C) धार्मिकग्रन्थ (D) कथासंग्रह
स्रोत–भारतीय शास्त्र और शास्त्रकार-गिरिजाशंकर शास्त्री, पेज-109

114. प्रश्नानां सम्यक् मेलनं कर्त्तव्यम्– JNU MET–2015

सिद्धान्ताः	आचार्याः
(क) उत्पत्तिवादः	(i) अभिनवगुप्तः
(ख) अनुमितिवादः	(ii) भट्टलोल्लटः
(ग) अभिव्यक्तिवादः	(iii) श्रीशंकुकः
(घ) भुक्तिवादः	(iv) भट्टनायकः

	क	ख	ग	घ
(A)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(B)	(ii)	(iii)	(i)	(iv)
(C)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)
(D)	(iii)	(iv)	(i)	(ii)

स्रोत–काव्यप्रकाश-आचार्य विश्वेश्वर, पेज-101, 102, 107, 105

115. शौद्धोदनिनामकस्य आचार्यस्य सूत्राणां व्याख्यारूपः अलङ्कारग्रन्थः कः? KL SET–2016
(A) बौद्धालङ्कारः (B) अलङ्कारशेखरः
(C) सुबोधालङ्कारः (D) अलङ्कारसर्वस्वम्
स्रोत–

116. 'वक्रोक्तिः काव्यजीवितम्' इत्येतल्लक्षणं कस्मात् परास्तम्? MGKV Ph. D–2016
(A) वक्रोक्तेः दोषरूपत्वात्
(B) वक्रोक्तेः काव्यगुणरूपत्वात्
(C) वक्रोक्तेः अलङ्काररूपत्वात्
(D) वक्रोक्तेः काव्यात्मरूपत्वात्
स्रोत–साहित्यदर्पण (1.2) - शालिग्रामशास्त्री, पेज–16

117. 'बृहज्जातक' के रचयिता हैं? UGC 73 D–1992
(A) वराहमिहिर (B) गणेश
(C) रामदैवज्ञ (D) मुनीश्वर
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज–605

105. (B) 106. (C) 107. (B) 108. (C) 109. (B) 110. (D) 111. (B) 112. (C) 113. (B) 114. (B) 115. (*) 116. (C) 117. (A)

29 नाट्यशास्त्र

1. 'षट्त्रिंशदध्यायी षट्साहस्त्रीसंहिता' कहा जाता है? **UGC 73 J–2013**

(A) रामायणम् (B) नाट्यशास्त्रम्
(C) महाभारतम् (D) अर्थशास्त्रम्

स्रोत–नाट्यशास्त्रम्- ब्रजमोहन चतुर्वेदी, भू० पेज-13

2. 'नाट्यशास्त्र' को कहा जाता है– UP PGT–2009

(A) चतुर्थ वेद (B) पञ्चम वेद
(C) वेदत्रयी (D) सप्तम वेद

स्रोत–नाट्यशास्त्रम्- ब्रजमोहन चतुर्वेदी, भू० पेज-13

3. भरतस्य नाट्यशास्त्रं परिचाययति– UP GDC–2014

(A) नाट्यम् (B) नटस्य जीवनचरितम्
(C) नटेश्वरम् (D) कविशिक्षाम्

स्रोत–नाट्यशास्त्रम्- ब्रजमोहन चतुर्वेदी, भू० पेज-11

4. नाट्यवेदः केन निर्मितः? UK SLET–2015

(A) इन्द्रेण (B) ब्रह्मणा
(C) विष्णुना (D) शिवेन

स्रोत–नाट्यशास्त्रम्- ब्रजमोहन चतुर्वेदी, भू० पेज-45

5. नाट्यशास्त्र में 'नान्दी' से अभिप्रेत है? **UP PGT–2004, 2010**

(A) नान्दी देवता (B) बैल
(C) मङ्गलाचरण (D) पात्र

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम्- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-5

6. (i) जग्राह पाठ्यमृग्वेदात् सामभ्यो गीतमेव च। यजुर्वेदादभिनयान् रसानाथर्वणादपि॥ यह उक्ति है?
(ii) 'जग्राह पाठ्यमृग्वेदात्' यह कथन है?
UP PGT–2004, UGC 73 D–2014

(A) भरतमुनि का (B) धनञ्जय का
(C) मम्मट का (D) किसी का नहीं

स्रोत–नाट्यशास्त्रम् (1/17) - ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज-92

7. नाट्यवेदोत्पत्तये पाठ्यं कुतो जग्राह– **RPSC SET–2013-14**

(A) ऋग्वेदात् (B) सामवेदात्
(C) अथर्ववेदात् (D) यजुर्वेदात्

स्रोत–नाट्यशास्त्रम् (1/17) - ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज-92

8. कः प्रेक्षागृहाणां प्रमाणं लक्षणञ्च निर्दिशति? **UGC 25 D–2012**

(A) आदित्यः (B) विश्वकर्मा
(C) रुद्रः (D) यमः

स्रोत–नाट्यशास्त्रम् (2/7) - ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज-126

9. नाट्ये सौन्दर्यवैशिष्ट्यागवाहिका वृत्तिः का? **MH SET–2013**

(A) भारती (B) सात्त्वती
(C) आरभटी (D) कैशिकी

स्रोत–नाट्यशास्त्रम्- ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज-97-98

10. प्रथमनाट्यप्रयोगः कदा जातः– MH SET–2016

(A) इन्द्रध्वज-उत्सवप्रसङ्गे (B) विवाहप्रसङ्गे
(C) ब्रह्मोत्सवप्रसङ्गे (D) दीपोत्सवप्रसङ्गे

स्रोत–नाट्यशास्त्रम्- ब्रजमोहन चतुर्वेदी, भू० पेज-56

11. कैशिकीवृत्तिः केन निर्मिता– MH SET–2016

(A) चन्द्रेण (B) ब्रह्मणा
(C) परशुरामेण (D) इन्द्रेण

स्रोत–नाट्यशास्त्रम् (1/42)-ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज-96-97

12. कस्याः वृत्त्याः व्यापारार्थम् अप्सरसां सृष्टिः अभवत्? **MH SET–2013**

(A) भारतीवृत्त्याः (B) सात्त्वतीवृत्त्याः
(C) आरभटीवृत्त्याः (D) कैशिकीवृत्त्याः

स्रोत–नाट्यशास्त्रम् (1/46) - ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज-99

1. (B) 2. (B) 3. (A) 4. (B) 5. (C) 6. (A) 7. (A) 8. (B) 9. (D) 10. (A) 11. (B) 12. (D)

13. रससूत्रे अनिर्दिष्टं प्रधानं पदं किम्? KL SET–2014

(A) उत्पत्तिः इति पदम् (B) स्थायिनः इति पदम्
(C) व्यक्तिः इति पदम् (D) भुक्तिः इति पदम्

स्रोत–नाट्यशास्त्रम् भाग-(1)-बाबूलाल शुक्ल, पेज-229

14. नाट्यशास्त्रानुसारं कति नाट्यवृत्तयः– T SET–2013

(A) 4 (B) 5
(C) 6 (D) 2

स्रोत–नाट्यशास्त्रम् (6/24)-ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज-176-177

15. 'लोकवृत्तानुकरणं नाट्यमेतन्मया कृतम्' श्लोकपादोऽयं कस्मिन्? UGC 25 J–2013

(A) धर्मशास्त्रे (B) नाट्यशास्त्रे
(C) अर्थशास्त्रे (D) शिल्पशास्त्रे

स्रोत–नाट्यशास्त्रम् (1/112)- ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज-112

16. नाट्यशास्त्रानुसारं नाट्यमण्डपस्य रक्षणे कः नियुक्तः? UGC 25 S–2013

(A) चन्द्रः (B) अग्निः
(C) सूर्यः (D) वरुणः

स्रोत–नाट्यशास्त्रम् (1/84) - ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज-107

17. नाट्यशास्त्रे प्रेक्षागृहस्य वर्णनं कस्मिन् अध्यायेऽस्ति? UGC 25 S–2013

(A) तृतीयेऽध्याये (B) द्वितीयेऽध्याये
(C) पञ्चमेऽध्याये (D) चतुर्थेऽध्याये

स्रोत–नाट्यशास्त्रम्- ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज-126

18. संग्रहकारिका निरुक्तानां वर्णनं नाट्यशास्त्रस्य कस्मिन्नध्याये वर्तते? UGC 25 D–2013

(A) द्वितीये (B) चतुर्थे
(C) तृतीये (D) षष्ठे

स्रोत–नाट्यशास्त्रम् (6/3)- ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज-149

19. मण्डपसन्निवेशेषु नाट्यशास्त्रे न गण्यते? UGC 25 J–2014

(A) चतुरस्रः (B) वर्तुलः
(C) त्र्यस्रः (D) विकृष्टः

स्रोत–नाट्यशास्त्रम्- ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज-127

20. यत्किञ्चिल्लोके शुचि मेध्यमुज्ज्वलं दर्शनीयं नाट्यशास्त्रे तत् केनोपमीयते? UGC 25 J–2014

(A) हास्येन (B) शान्तेन
(C) शृङ्गारेण (D) वीरेण

स्रोत–नाट्यशास्त्रम् भाग-(i)-बाबूलाल शुक्ल शास्त्री , पेज-298

21. 'जग्राह पाठ्यमृग्वेदात्' वाला ग्रन्थ है? BHU MET–2014

(A) साहित्यदर्पण (B) नाट्यशास्त्र
(C) नाट्यदर्पण (D) दशरूपक

स्रोत–नाट्यशास्त्रम् (1/17)- ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज-92

22. (i) भरत ने नाट्य में...रस माने हैं– UGC 73 J–2012,
(ii) नाट्य में रस होते हैं? D–2013, Jn–2017
(iii) नाट्यशास्त्रे कियतां रसानां वर्णनं प्राप्यते? UP TGT–2013

(A) षट् (B) अष्टौ
(C) नव (D) दश

स्रोत–नाट्यशास्त्रम् (6/15)- ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज-157

23. नाट्यशास्त्र का षष्ठ अध्याय है? UGC 73 D–2013

(A) नाट्योत्पत्तिरध्यायः (B) प्रेक्षागृहोऽध्यायः
(C) रसाध्यायः (D) अभिनयाध्यायः

स्रोत–नाट्यशास्त्रम् (6/83) - ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज-221

24. संस्कृतनाटकानां प्रारम्भिकरूपं दृश्यते– RPSC ग्रेड-II (TGT)–2010

(A) कादम्बर्याम् (B) ऋग्वेदे
(C) पञ्चतन्त्रे (D) हितोपदेशे

स्रोत–नाट्यशास्त्रम्- ब्रजमोहन चतुर्वेदी, भू0 पेज-44

25. (i) 'रससूत्रम्' प्राप्यते? UGC 73 D–1997,
(ii) रससूत्र का मूल है? JNU MET–2014

(A) काव्यशास्त्र (B) काव्यप्रकाश
(C) रसगङ्गाधर (D) नाट्यशास्त्र

स्रोत–नाट्यशास्त्रम् (1/15) - ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज-159

26. रससूत्र के एक व्याख्याता हैं? UGC 73 J–1999

(A) रुद्रट (B) भट्टनायक
(C) भरत (D) शङ्कर

स्रोत–नाट्यशास्त्रम् (भाग-1)-बाबूलाल शुक्ल शास्त्री, भू0 पेज-30

13. (A) 14. (A) 15. (B) 16. (A) 17. (B) 18. (D) 19. (B) 20. (C) 21. (B) 22. (B)
23. (C) 24. (B) 25. (D) 26. (B)

27. शृङ्गारहास्यकरुणरौद्रवीरभयानकाः बीभत्साद्भुतसंज्ञौ चेत्यष्टौ......... रसाः स्मृताः। BHU AET–2012
(A) नाट्ये (B) काव्ये
(C) लोके (D) सूत्रे
स्रोत–नाट्यशास्त्रम् (6/16)-बाबूलाल शुक्ल शास्त्री, पेज-218

28. नाटके अयं मुख्यो रसः स्यात्– UK SLET–2015
(A) रौद्रः (B) शान्तः
(C) हास्यः (D) वीरः
स्रोत–दशरूपकम् (3.33) -रमाशङ्कर त्रिपाठी, पेज-224

29. (i) भरतः नाट्यशास्त्रस्य निर्माणे रसं कस्माद् जग्राह?
(ii) नाट्ये रसाः कस्माद् वेदात् गृहीताः? UK SLET–2015, K SET–2015
(A) ऋग्वेदात् (B) यजुर्वेदात्
(C) सामवेदात् (D) अथर्ववेदात्
स्रोत–नाट्यशास्त्रम् (1/17)- ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज-92

30. नाट्यवस्तु कतिविधम्? UK SLET–2015
(A) द्विविधम् (B) त्रिविधम्
(C) चतुर्विधम् (D) पञ्चविधम्
स्रोत–दशरूपकम्-रमाशङ्कर त्रिपाठी, पेज-13

31. नाट्यशास्त्रस्य 'अभिनवभारती' व्याख्यायाः कर्ता कः? UGC 25 D–2014
(A) आनन्दवर्धनः (B) अभिनवगुप्तः
(C) धनञ्जयः (D) भरतः
स्रोत–नाट्यशास्त्रम् भाग-1-बाबूलाल शुक्ल शास्त्री, भू0पेज-32, 33

32. ब्रह्मणा परिकल्पते नाट्ये निम्नाङ्कितेषु किं नास्ति? UP GDC–2014
(A) सर्वेषां हितोपदेशजननम्। (B) त्रैलोक्यस्य भावानुकीर्तनम्।
(C) काले विश्रान्तिजननम्। (D) जनानां संत्रासकारकम्।
स्रोत–नाट्यशास्त्रम् (1/107-114)-ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज-110-113

33. (i) नाट्यवेदनिर्माणे भरतेन अभिनयो गृहीतः?
(ii) ब्रह्मा कस्मात् वेदात् अभिनयं स्वीकृतवान्?
(iii) नाट्ये अभिनयाः कस्मात् वेदात् गृहीताः?
(iv) नाट्यवेदान्तर्भूतमभिनयतत्त्वं कुतो गृहीतम्? UP GDC–2012, 2013, UK SLET–2015, UGC 25 D–2012
(A) अथर्ववेदात् (B) यजुर्वेदात्
(C) सामवेदात् (D) ऋग्वेदात्
स्रोत–नाट्यशास्त्रम् (1/17)- ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज-92

34. भरतनाट्यशास्त्रे किं नाट्योद्देश्यं नास्ति? DL–2015
(A) हितोपदेशजननम् (B) विनोदजननम्
(C) सेवा-समायोजनम् (D) विश्रान्तिप्रदानम्
स्रोत–नाट्यशास्त्रम् (1/113-114)-ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज-112-115

35. नाट्यशिक्षणे मानकप्रदर्शनाय वाचिकाभिनयेन कः शिक्षयति? DL–2015
(A) छात्रः (B) छात्रा
(C) वेतनभोगी नाट्यकर्मी (D) नाट्यशिक्षकः
स्रोत–

36. नाट्यशास्त्रे प्रतिपादितानाम् अलङ्काराणां संख्या कति? JNU MET–2015
(A) 5 (B) 4
(C) 6 (D) 3
स्रोत–नाट्यशास्त्रम् (17/43) भाग-2-बाबूलाल शुक्ल,पेज-286

37. ''अन्तःपुरचरो वृद्धो विप्रो गुणगणान्वितः। सर्वकार्यार्थकुशलः कञ्चुकीत्यभिधीयते॥'' यह श्लोक कहाँ लिखा है? BHU MET–2012
(A) दशरूपक में (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में
(C) नाट्यशास्त्र में (D) साहित्यदर्पण में
स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम्- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-461

38. आचार्य भरतमुनि के अनुसार नाटक में गीत का उद्भव हुआ है? UP PGT–2013
(A) ऋग्वेद से (B) संगीत से
(C) गान्धर्ववेद से (D) सामवेद से
स्रोत–नाट्यशास्त्रम् (1/17) ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज-92

39. नाटक को 'पञ्चमवेद' की मान्यता प्रदान की? UP PGT (H)–2004
(A) भरतमुनि ने (B) विश्वनाथ ने
(C) दशरथ ओझा ने (D) पाणिनि ने
स्रोत–नाट्यशास्त्रम् (1/12)- ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज-89

40. आचार्य भरत ने किस रस को नाट्य प्रयोग में स्वीकार नहीं किया है? UP PGT (H)–2009
(A) शान्त (B) करुण
(C) भयानक (D) अद्भुत
स्रोत–नाट्यशास्त्रम् (6/15)- ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज-157

27. (A) 28. (D) 29. (D) 30. (A) 31. (B) 32. (D) 33. (B) 34. (C) 35. (D) 36. (B) 37. (C) 38. (D) 39. (A) 40. (A)

41. आशीर्वचनसंयुक्ता देवादीनां स्तुतिः का इत्युच्यते? DSSSB TGT–2014

(A) प्रस्तावना (B) भरतवाक्यम्
(C) पूर्वरङ्गः (D) नान्दी

स्रोत–नाट्यशास्त्रम् भाग-1 (5/24)-बाबूलाल शुक्ल शास्त्री, पेज-159

42. अधोलिखितेषु अभिनयप्रकारः कोऽस्ति? BHU AET–2010

(A) आचार्यः (B) व्यवहार्यः
(C) आहार्यः (D) प्रसार्यः

स्रोत–नाट्यशास्त्रम् भाग-2 (8/9)-बाबूलाल शुक्ल शास्त्री, पेज-5

43. रङ्गमञ्चस्य देवपूजनं केन तुल्यं भवति? UGC 25 D–2013

(A) यज्ञेन तुल्यम् (B) तपसा तुल्यम्
(C) दानेन तुल्यम् (D) धर्मेण तुल्यम्

स्रोत–नाट्यशास्त्रम् (1/124)- ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज-116

44. भरतमुनि ने गुणों की संख्या बतायी है? UP PGT (H)–2013

(A) 10 (B) 8
(C) 9 (D) 7

स्रोत–नाट्यशास्त्रम् (17/95)-बाबूलाल शुक्ल शास्त्री, पेज-300

45. वाणी और अङ्गों के अभिनय द्वारा जिनसे प्रकट हो, वे है– UP PGT (H)–2013

(A) संचारीभाव (B) विभाव
(C) अनुभाव (D) भाव

स्रोत–नाट्यशास्त्रम् (7/5)-बाबूलाल शुक्ल शास्त्री, पेज–375

46. ''विभाव, अनुभाव और व्यभिचारी भावों के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है'' यह किसका कथन है? UP PGT (H)–2013

(A) भामह (B) भरत
(C) मम्मट (D) जगन्नाथ

स्रोत–नाट्यशास्त्रम् - ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज-182

47. 'आरभटीवृत्तिः' कस्मिन् रसे भवति? UP GIC–2015

(A) वीरे (B) शृङ्गारे
(C) रौद्रे बीभत्से च (D) अद्भुते

स्रोत–नाट्यशास्त्रम् - ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज–229

48. रिक्तस्थानं पूरयत– ''नाट्याख्यं .... वेदं सेतिहासं करोम्यहम्।'' UGC 25 J–2015

(A) उत्तमम् (B) अपूर्वम्
(C) द्वितीयम् (D) पञ्चमम्

स्रोत–नाट्यशास्त्रम् (1/15)- बाबूलाल शुक्ल शास्त्री, पेज-05

49. लोके यानि कारणानि तानि काव्ये नाटके च केन नाम्ना व्यपदिश्यन्ते? UGC 25 D–2010

(A) भावाः (B) अनुभावाः
(C) सञ्चारिणः (D) विभावाः

स्रोत–साहित्यदर्पण - शालिग्राम शास्त्री,पेज-64

50. तथा नराणां नृपतिः शिष्याणां च यथा गुरुः। एवं हि सर्वभावानां ....। पूरयत। UGC 25 S–2013

(A) विभावः (B) सञ्चारीभावः
(C) अनुभावः (D) स्थायिभावः

स्रोत–नाट्यशास्त्रम् (भाग-1) (7/8)-बाबूलाल शुक्ल, पेज-379

51. भरत द्वारा स्थापित स्थायीभावों की संख्या है– UGC 73 J–2015

(A) दश (B) अष्टौ
(C) द्वादश (D) एकादश

स्रोत–नाट्यशास्त्रम् (6/18) बाबूलाल शुक्ल, पेज-221

52. रस का सर्वप्रथम शास्त्रीय विवेचन किसने किया? BHU B.Ed–2015

(A) भट्टलोल्लट (B) भरतमुनि
(C) राजशेखर (D) शङ्कुक

स्रोत–नाट्यशास्त्रम् - बाबूलाल शुक्ल शास्त्री, भू0 पेज-66

53. 'न तज्ज्ञानं न तच्छिल्पं न सा विद्या न सा कला' इति कस्मात् ग्रन्थात् उद्धृतोऽस्ति? GGIC–2015

(A) साहित्यदर्पणात् (B) काव्यप्रकाशात्
(C) नाट्यशास्त्रात् (D) दशरूपकात्

स्रोत–नाट्यशास्त्रम् (1/116)- ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज-113

54. ''न तज्ज्ञानं न तच्छिल्पं न सा विद्या न सा कला''– इत्यादि श्लोकः भवति– UGC 25 D–2015

(A) काव्यप्रशंसा (B) गुणप्रशंसा
(C) नाट्यप्रशंसा (D) अलङ्कारप्रशंसा

स्रोत–नाट्यशास्त्रम् (1/116)- ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज-113

41. (D)	42. (C)	43. (A)	44. (A)	45. (C)	46. (B)	47. (C)	48. (D)	49. (D)	50. (D)
51. (B)	52. (B)	53. (C)	54. (C)						

55. ''दुःखार्तानां श्रमार्तानां शोकार्तानां तपस्विनाम्।
...... लोके नाट्यमेतद् भविष्यति॥''
नाट्यशास्त्रतः रिक्तस्थानं पूरयत– UGC 25 Jn–2017
(A) मोक्षप्रदायकम् (B) ज्ञानप्रदायकम्
(C) आह्लादजननम् (D) विश्रामजननम्

स्रोत–नाट्यशास्त्रम् (1/114)- ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज-113

56. ब्रह्मा नाट्यवेदाय यजुर्वेदात् किं उपात्तवान्? K SET–2014
(A) पाठ्यम् (B) गीतम्
(C) अभिनयान् (D) रसान्

स्रोत–नाट्यशास्त्रम् (1/17)- ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज-92

57. हास्यरसस्य कति भेदाः भरतेन उक्ताः? K SET–2013
(A) सप्त (B) षट्
(C) दश (D) अष्ट

स्रोत–नाट्यशास्त्रम् (6/51)- ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज-204

58. नाट्यशास्त्रकारस्य मते गानं कतिविधम्– KL SET–2016
(A) सप्तविधम् (B) त्रिविधम्
(C) द्विविधम् (D) पञ्चविधम्

स्रोत–नाट्यशास्त्रम् (6/30)- ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज-181

59. अलक्षितद्विजं धीरमुत्तमानां स्मितं भवेत्– UGC 25 J–2016
(A) हसितम् (B) उपहसितम्
(C) विहसितम् (D) स्मितम्

स्रोत– नाट्यशास्त्र (6/55) - ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज–205

60. नान्दी प्रयुक्त होता है– UP PGT–2009
(A) काव्य में (B) चम्पूकाव्य में
(C) गद्यकाव्य में (D) नाटक में

स्रोत– नाट्यशास्त्र - ब्रजमोहन चतुर्वेदी, भू. पेज–14

61. 'भरतनाट्यशास्त्रम्' कतिषु अध्यायेषु विभक्तमस्ति– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2015
(A) अष्टात्रिंशत् (B) नवत्रिंशत्
(C) चत्वारिंशत् (D) षड्त्रिंशत्

स्रोत– नाट्यशास्त्र - ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज–13

62. नाट्यशास्त्रस्य टीकाकारः अस्ति? T SET–2014
(A) आनन्दवर्धनः (B) अभिनवगुप्तः
(C) विश्वनाथः (D) दण्डी

स्रोत– नाट्यशास्त्र - ब्रजमोहन चतुर्वेदी, भू. पेज–25

55. (D) 56. (C) 57. (B) 58. (D) 59. (D) 60. (D) 61. (D) 62. (B)

30 दशरूपक

1. **दशरूपकस्य रचयिता कोऽस्ति? T-SET–2014**
(A) धनञ्जयः (B) आनन्दवर्धनः
(C) मम्मटः (D) भोजः
स्रोत–दशरूपक - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-1

2. **रूपकों के भेदक तत्त्व हैं– UP PGT–2000**
(A) अङ्क, संवाद, रस (B) रस, नेता, वस्तु
(C) वस्तु, नेता, रङ्गमञ्च (D) रस, कथोपकथन, अङ्क
स्रोत–दशरूपक - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-12

3. **(i) दशरूपक में प्रकाश हैं–**
(ii) दशरूपके कति प्रकाशाः सन्ति?
UGC 73J–2016, MGKV Ph D–2016
(A) चत्वारः (B) अष्टौ
(C) पञ्च (D) त्रयः
स्रोत–दशरूपक - रमाशंकर त्रिपाठी, भू0 पेज-21

4. **आरम्भ, यत्न, प्राप्त्याशा, नियताप्ति और फलागम ...... है– UP PGT–2000**
(A) अर्थोपक्षेपक हैं (B) अर्थप्रकृतियाँ हैं
(C) सन्धियाँ हैं (D) कार्यावस्थाएँ हैं
स्रोत–दशरूपक (1/19) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-23

5. **किस रस में 'आरभटीवृत्ति' होती है? UP PGT–2000**
(A) रौद्र (B) शृङ्गार
(C) वीर (D) अद्भुत
स्रोत–दशरूपक (2/62) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-195

6. **'उन्माद' है– UGC 25 D–2002**
(A) विभाव (B) अनुभाव
(C) संचारीभाव (D) व्यभिचारीभाव
स्रोत–दशरूपक (4/8) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-253

7. **'वस्तु च द्विधा' इति केन ग्रन्थेन सम्बद्धोऽस्ति– UGC 25 D–2011**
(A) काव्यप्रकाशेन (B) दशरूपकेन
(C) साहित्यदर्पणेन (D) रसगङ्गाधरेण
स्रोत–दशरूपक - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-13

8. **''फलार्थिभिः प्रारब्धस्य कार्यावस्थाः'' कति सन्ति– UGC 25 J–2013**
(A) षट् (B) सप्त
(C) पञ्च (D) दश
स्रोत–दशरूपक (1/19) -रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-23

9. **'स्वीया'- नायिकायाः कति भेदाः? UGC 25 J–2014**
(A) एकादश (B) त्रयोदश
(C) चतुर्दश (D) अष्टादश
स्रोत–दशरूपक - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-149

10. **नाट्य में जहाँ प्रस्तुत भावी कथावस्तु की अन्योक्तिमय सूचना दी जाती है, वह होता है– UP GIC–2009**
(A) पताकास्थानक (B) पताका
(C) आधिकारिक (D) प्रकरण
स्रोत–दशरूपक (1/14) -रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-15

11. **(i) भूत एवं भावी घटनाओं की सूचना देने वाले नाट्यप्रयोग हैं– UP GIC–2009**
(ii) रूपक में भूत अथवा भावी घटनाओं की सूचना जहाँ मध्यम पात्रों द्वारा दी जाती है, वह होता है–
(A) आकाशभाषित (B) विष्कम्भक
(C) प्रवेशक (D) अङ्कास्य
स्रोत–दशरूपक (1/59) -रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-99

12. **'फलागम' की परिगणना होती है– UP GIC–2009, UP GDC–2012**
(A) अर्थप्रकृतियों में (B) कार्यावस्थाओं में
(C) नाट्यसन्धियों में (D)अर्थोपक्षेपकों में
स्रोत–दशरूपक (1/19) -रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-23

13. **रूपकभेदों में एकल अभिनय किसमें होता है? UP GIC–2009**
(A) प्रकरण में (B) डिम में
(C) भाण में (D) व्यायोग में
स्रोत–दशरूपक - केशवराम मुसलगाँवकर, पेज-293

1. (A) 2. (B) 3. (A) 4. (D) 5. (A) 6. (D) 7. (B) 8. (C) 9. (B) 10. (A) 11. (B) 12. (B) 13. (C)

14. (i) आचार्य धनञ्जय ने दशरूपक में 'नागानन्द' के नायक जीमूतवाहन को माना है?
(ii) दशरूपकानुसारेण नागानन्दस्य नायकः जीमूतवाहनः अस्ति– UP GIC–2009, 2015

(A) धीरप्रशान्तः (B) धीरोदात्तः
(C) धीरललितः (D) धीरोद्धतः

स्रोत–दशरूपक (2/4) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-116

15. (i) शृङ्गाररस में कौन-सी वृत्ति का प्रयोग होता है?
(ii) शृङ्गाररसाश्रया वृत्तिरस्ति– UP GIC–2009, UP GDC–2014

(A) कैशिकी (B) सात्वती
(C) आरभटी (D) भारती

स्रोत–दशरूपक (2/62) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-195

16. रूपकम् .... उच्यते? GJ- SET-2016

(A) अभिनयात् (B) रूपारोपात्
(C) वचनात् (D) संल्लापकात्

स्रोत–दशरूपक - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-7

17. अद्भुतघटनायाः समावेशो वर्तते यस्मिन् तत् कथ्यते– UP GDC–2012

(A) विलोभनम् (B) परिभावः
(C) उद्भेदः (D) विधानम्

स्रोत–दशरूपक - लोकमणि दाहाल, पेज-63

18. कैशिकीवृत्तिः मुख्यरूपेण प्रयुज्यते–UP GDC–2012

(A) शृङ्गारे हास्ये च (B) बीभत्से भयानके च
(C) रौद्रे अद्भुते च (D) वीरे अद्भुते च

स्रोत–दशरूपक (2/62) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-195

19. (i) संस्कृत नाट्यशास्त्र में उपरूपकों के कितने भेद हैं?
(ii) उपरूपकों की संख्या होती है–
(iii) उपरूपकाणि सन्ति? UGC 73 J–2007, UP PGT–2003, UGC 25 J–2004

(A) दश (10) (B) पञ्चदश (15)
(C) षोडश (16) (D) अष्टादश (18)

स्रोत–साहित्यदर्पण - शालिग्राम शास्त्री, पेज-170

20. 'सट्टकम्, त्रोटकम्, व गोष्ठी' किसके भेद हैं? H-TET-2015

(A) रूपक के (B) उपरूपक के
(C) महाकाव्य के (D) महाभारत के पात्रों के

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-441

21. (i) कितने स्थायीभाव हैं– UGC 73 D–2008
(ii) स्थायीभावाः कति सन्ति– JNU MET–2014

(A) अष्टौ (B) नव
(C) पञ्च (D) चत्वारः

स्रोत–दशरूपक (4/35) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-293

22. (i) व्यभिचारीभाव कितने हैं–
(ii) आचार्यों ने व्यभिचारीभावों की संख्या स्वीकृत की है– DSSSB TGT–2014, BHU AET–2010
(iii) व्यभिचारिभावाः भवन्ति– UGC 73 D–2009, UP PGT–2013

(A) पञ्चाशत् (B) त्रयस्त्रिंशत्
(C) नव (D) अष्टाविंशतिः

स्रोत–दशरूपक - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-252,253

23. रौद्ररस का स्थायीभाव है– UGC 73 D–2011

(A) जुगुप्सा (B) शोकः
(C) क्रोधः (D) शमः

स्रोत–दशरूपक (4/74) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-360

24. देवादिविषया रतिः का? BHU AET–2010

(A) भावः (B) रसः
(C) गुणः (D) अलङ्कारः

स्रोत–साहित्यदर्पण (3/260) - शालिग्राम शास्त्री, पेज-124

25. (i) मुखसन्धेः बीजारम्भसमन्वयात् कति अङ्गानि भवन्ति– BHU AET–2012, MH-SET-2013
(ii) दशरूपकवचनानुसारं मुखसन्धेः कति अङ्गानि? UGC 25 J–2002, 2012

(A) दश (B) एकादश
(C) द्वादश (D) त्रयोदश

स्रोत–दशरूपक (1/25) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-27

14. (B) 15. (A) 16. (B) 17. (B) 18. (A) 19. (D) 20. (B) 21. (A) 22. (B) 23. (C) 24. (A) 25. (C)

26. मुखसन्धौ अर्थप्रकृतिर्भवति– G-GIC-2015
(A) बिन्दुः (B) पताका
(C) प्रकरी (D) बीजम्
स्रोत–दशरूपक (1/24) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-27

27. वृत्तवर्तिष्यमाणकथांशानां अङ्कद्वयस्यान्तर्निविष्टः नीचपात्रप्रयोजितः अर्थोपक्षेपकः किमभिधानः प्रकीर्तितः– BHU AET–2012
(A) प्रवेशकः (B) विष्कम्भकः
(C) चूलिका (D) अङ्कावतारः
स्रोत–दशरूपक (1/60) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-100

28. नाट्यधर्मापेक्षया नियतश्राव्यं कतिधा भवति? BHU AET–2012
(A) द्विधा (B) त्रिधा
(C) चतुर्धा (D) पञ्चधा
स्रोत–दशरूपक (1/65) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-105

29. वीररसे का वृत्तिरालम्ब्यते– DU. Ph.D-2016
(A) कैशिकी (B) सात्वती
(C) आरभटी (D) भारती
स्रोत–दशरूपक (2/62) - श्रीनिवास शास्त्री, पेज-198

30. 'कैशिकीवृत्तिः' कुत्र अनुकूला? BHU Sh.ET–2013
(A) शृङ्गारे (B) रौद्रे
(C) शान्तरसे (D) हास्ये
स्रोत–दशरूपक (2/62) - श्रीनिवास शास्त्री, पेज-198

31. दशरूपकानुसारम् अवस्था नास्ति– T SET-2013
(A) नियताप्तिः (B) प्राप्त्याशा
(C) यत्नः (D) पताका
स्रोत–दशरूपक (1/19) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-23

32. 'वैदर्भी' इति का अस्ति? RPSC ग्रेड-II (TGT)–2010
(A) भाषा-शैली (B) महाकाव्य
(C) नाटकम् (D) अलङ्कार
स्रोत–काव्यमीमांसा - गंगासागर राय, पेज-21

33. किमस्तिताललयाश्रम्? UK SLET–2015
(A) नृत्तम् (B) नृत्यम्
(C) रूपकम् (D) रूपम्
स्रोत–दशरूपक - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-11

34. अयं नास्ति सञ्चारीभावः– UK SLET–2015
(A) व्रीडा (B) विषादः
(C) जडता (D) भयम्
स्रोत–दशरूपक - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-253

35. (i) रूपकेषु प्रयुज्यन्ते 'अर्थप्रकृतयः' कति?
(ii) रूपकेषु समाख्याता अर्थप्रकृतयः कति?
(iii) नाटक में अर्थप्रकृतियाँ कितनी होती हैं?
(iv) कति अर्थप्रकृतयः? UGC 25 D–1998,
(v) नाटक में अर्थप्रकृति हैं? J–2010, 2014,
(vi) अर्थप्रकृतयः कति प्रोक्ताः? BHU AET–2009, 2011, 2012, DL (H)–2015, RPSC SET-2013-14 BHU MET–2013
(A) षट् (B) पञ्च
(C) सप्त (D) दश
स्रोत–दशरूपक (1/18) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-22

36. (i) दशरूपकमतानुसारं ''दृष्टनष्टस्य बीजस्य अन्वेषणं भवति''– UGC 25 D–2014, Jn -2017
(ii) दृष्टनष्टस्य बीजस्य अन्वेषणं भवति–
(A) प्रतिमुखसन्धिः (B) मुखसन्धिः
(C) निर्वहणसन्धिः (D) गर्भसन्धिः
स्रोत–दशरूपक (1/36) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-55

37. दशरूपककारस्य रससिद्धान्तोऽस्ति– UP GDC–2013
(A) अभिनवगुप्तसम्मतः (B) आनन्दवर्धनानुगतः
(C) रुद्रटानुगतः (D) भट्टनायकानुमतः
स्रोत–दशरूपक - रमाशंकर त्रिपाठी, भू0 पेज-15

38. व्यञ्जनावृत्ति का विरोधी आचार्य है? UGC 73J -2016
(A) धनञ्जयः (B) विश्वनाथः
(C) जगन्नाथः (D) भानुदत्तः
स्रोत–दशरूपक - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-298

39. 'अवस्थाऽनुकृतिः' इत्यनेन बोधितं भवति– UP GDC–2013
(A) शास्त्रम् (B) काव्यम्
(C) नाट्यम् (D) साहित्यम्
स्रोत–दशरूपक - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-6

26. (D) 27. (A) 28. (A) 29. (B) 30. (A) 31. (D) 32. (A) 33. (A) 34. (D) 35. (B) 36. (D) 37. (D) 38. (A) 39. (C)

40. नाट्ये 'उपसंहृतिः' किं भवति– UP GDC–2013

(A) कार्यावस्था (B) अर्थोपक्षेपकः
(C) अर्थप्रकृतिः (D) सन्धिः

स्रोत–दशरूपक - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-27

41. एकमेव पात्रं सर्वं नाट्यवस्तु प्रस्तौति–UP GDC–2013

(A) डिमे (B) प्रकरणे
(C) व्यायोगे (D) भाणे

स्रोत–दशरूपक (3/49) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-231-232

42. (i) दशरूपके गणितानि सन्ध्यङ्गानि सन्ति–
(ii) सन्ध्यङ्गानां संख्या अस्ति – UP GDC–2013,
(iii) सन्ध्यङ्गानि कति– G-GIC-2015,
DSSSB PGT–2014

(A) षष्टिः (B) चतुष्षष्टिः
(C) अष्टषष्टिः (D) चतुःपञ्चाशत्

स्रोत–दशरूपक (1/54) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-97

43. 'रूपकं तत्समारोपात्' इति कस्य कृते उक्तम्–
UP GDC–2014

(A) अलङ्कारः (B) नाट्यस्याऽपरं नामकरणम्
(C) काव्यम् (D) काव्याभिनयः

स्रोत–दशरूपक - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-7

44. (i) 'अवस्थानुकृतिर्नाट्यम्' इति नाटकलक्षणं कृतम्–
(ii) 'अवस्थानुकृतिः नाट्यम्' कस्य चिन्तनमस्ति?
MGKV Ph. D–2016, UP GDC–2012

(A) धनञ्जयेन (B) धनिकेन
(C) भरतेन (D) विश्वनाथेन

स्रोत–दशरूपक - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-6

45. (i) दशरूपके नाट्यलक्षणं किम्?
(ii) नाट्यलक्षणे धनञ्जय उक्तवान्–
RPSC SET-2013-14, G-GIC-2015

(A) नाट्यं भिन्नरुचेः .... एकं समाराधनम्
(B) नटस्य कर्म नाटकम्
(C) अनुकरणं नाट्यम्
(D) अवस्थानुकृतिर्नाट्यम्

स्रोत–दशरूपक - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-6

46. नाट्ये यत्र प्रस्तुतस्य भाविनः कथावस्तुनः अन्योक्तिमयी सूचना दीयते तद् भवति– UP GDC–2012

(A) पताकास्थानकम् (B) पताका
(C) आधिकारिकम् (D) प्रासङ्गिकम्

स्रोत–दशरूपक (1/14) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-15

47. नृत्तनृत्ययोः स्वरूपं भवति– UP GDC–2012

(A) नृत्तं भावाश्रयं, नृत्यं ताललयाश्रयम्
(B) नृत्तं ताललयाश्रयं, नृत्यं भावाश्रयम्
(C) नृत्तं भावाश्रयं, नृत्यं रसाश्रयम्
(D) नृत्तं रसाश्रयं, नृत्यं ताललयाश्रयम्

स्रोत–दशरूपक - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-9-11

48. रामः कीदृशो नायकः? DSSSB PGT–2014

(A) धीरोदात्तः (B) योग्यः
(C) धीरोद्धतः (D) धीरललितः

स्रोत–दशरूपक -रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-117

49. ''महासत्त्वोऽतिगम्भीरः क्षमावानविकत्थनः।
स्थिरो निगूढाहङ्कारो धीरोदात्तो दृढव्रतः॥ यह श्लोक....... किस ग्रन्थ का है– BHU MET–2012

(A) चन्द्रालोक (B) दशरूपक
(C) साहित्यदर्पण (D) अभिज्ञानशाकुन्तलम्

स्रोत–दशरूपक (2/4) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-116

50. (i) नाटक में सन्धियों की संख्या होती है–
(ii) नाटके कति सन्धयः भवन्ति?
UP PGT–2013, BHU Sh.ET–2008,
GJ SET-2014, K-SET-2013, 2015,
UP GDC–2008, UGC 25 J–1995, 2006, D–2010

(A) दो (B) चार
(C) दश (D) पाँच

स्रोत–दशरूपक (1/22) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-26

51. अवान्तर प्रयोजन की समाप्ति से कथावस्तु के मुख्य प्रयोजन में विच्छेद प्राप्त हो जाने पर जो उसके अविच्छेद का कारण है, उसे कहते हैं– UP PGT–2013

(A) बिन्दु (B) बीज
(C) आरम्भ (D) फलागम

स्रोत–दशरूपक (1/17) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-21

40. (D) 41. (D) 42. (B) 43. (B) 44. (A) 45. (D) 46. (A) 47. (B) 48. (A) 49. (B)
50. (D) 51. (A)

52. नायक कितने प्रकार के होते हैं– UP TGT–2013

(A) 3 (B) 4
(C) 5 (D) 6

स्रोत–दशरूपक (2/3) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-113

53. श्रव्यकाव्य के कितने भेद हैं? UP TGT–2013

(A) 1 (B) 3
(C) 5 (D) 6

स्रोत–शिशुपालवध - तारिणीश झा, भू. पेज-9

54. (i) संस्कृत नाट्यशास्त्र में रूपक के कितने भेद हैं?
(ii) रूपक के कितने भेद होते हैं– UP TGT–2013,
(iii) रूपकभेदाः भवन्ति? UP PGT–2003
(iv) रूपकाणि कति? UGC 25 J–1994,
(v) रूपक कितने प्रकार के होते हैं? 1995, 2000, 2001
(vi) रूपकाणां भेदाः? GJ SET-2003, D–2004, 2007
DSSSB TGT–2014, DSSSB PGT–2014

(A) 6 (B) 10
(C) 8 (D) 12

स्रोत–दशरूपक - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-8

55. रामायण कथानक के प्रसंग में सुग्रीवादि का वृत्तान्त कहा जाता है– UP PGT–2013

(A) प्रकरी (B) उपचारवृत्तान्त
(C) पताका (D) सन्धि

स्रोत–दशरूपक (1/13) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-14-15

56. जिस नायिका का नायक दूर देश में किसी प्रयोजन से रहता हो, तो उस नायिका को कहते हैं– UP PGT–2013

(A) स्वाधीनपतिका (B) अभिसारिका
(C) कलहान्तरिता (D) प्रोषितप्रिया

स्रोत–दशरूपक - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-159

57. जो प्रासङ्गिक कथा दूर तक चलती है, कहा जाता है– UP PGT–2011

(A) प्रकरी (B) पताका
(C) प्रस्तावना (D) जनान्तिकम्

स्रोत–दशरूपक (1/13) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-14-15

58. नाटक में किसी पात्र के द्वारा मुँह फेरकर दूसरे व्यक्ति से रहस्यात्मक बात कही जाती है, उसे कहते हैं– UP PGT–2013

(A) जनान्तिक (B) आकाशभाषित
(C) अपवारित (D) अंकास्य

स्रोत–दशरूपक (1/66) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-106

59. नाटक में 'स्वगतम्' का अर्थ है– UP PGT–2013

(A) अश्राव्य (B) सर्वश्राव्य
(C) स्वागतयोग्य (D) स्वयं गया हुआ

स्रोत–दशरूपक (1/64) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-105

60. 'जनान्तिक' में एक मुद्रा का प्रकाशन होता है, उसे कहते हैं– UP PGT–2013

(A) चिन्मुद्रा (B) अंगुष्ठानामिके
(C) मत्तवारणी (D) त्रिपताकाकर

स्रोत–दशरूपक (1/65) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-106

61. 'त्रिपताकाकरेण' समाचर्यते मञ्चोपरि– G-GIC–2015

(A) अपवारितम् (B) आकाशभाषितम्
(C) जनान्तिकम् (D) स्वगतम्

स्रोत–दशरूपक (1.65) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-106

62. नाटक के मङ्गलाचरण को कहा जाता है– UP PGT–2013

(A) मंगलाशासन (B) नन्दिताकरण
(C) नान्दी (D) वेदस्तवन

स्रोत–साहित्यदर्पण (6/23-25)-शालिग्राम शास्त्री, पेज-172-173

63. दृश्यकाव्य की विधा है– UP TGT–2010

(A) नाटक (B) निबन्ध
(C) उपन्यास (D) गीतिकाव्य

स्रोत–साहित्यदर्पण- शालिग्राम शास्त्री, पेज-170

64. हास्य प्रधानरस इतिवृत्त वाला है? UGC 25 D–2002

(A) प्रकरण (B) अङ्क
(C) प्रहसन (D) भाण

स्रोत–दशरूपक (3/54) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-234

52. (B)	53. (B)	54. (B)	55. (C)	56. (D)	57. (B)	58. (C)	59. (A)	60. (D)	61. (C)
62. (C)	63. (A)	64. (C)							

65. यह उपरूपक का एक भेद है– UGC 25 D–1996

(A) नाटिका (B) प्रहसन
(C) भाण (D) डिम

स्रोत–साहित्यदर्पण (6/4) - शालिग्राम शास्त्री, पेज-170

66. (i) प्रकरण का नायक होता है?
(ii) प्रकरण का नायक होना चाहिये–
(iii) प्रकरणे कीदृशः नायकः भवति–
UGC 25 D–1996, J–2004, MGKV Ph. D–2016

(A) धीरोदात्तः (B) धीरललितः
(C) धीरोद्धतः (D) धीरप्रशान्तः

स्रोत–साहित्यदर्पण (6/224-225)-शालिग्राम शास्त्री, पेज-214

67. 'व्यापि प्रासङ्गिकवृत्त' कहलाता है–UGC 25 D–1997

(A) प्रकरी (B) बिन्दु
(C) पताका (D) सन्धि

स्रोत–साहित्यदर्पण - शालिग्राम शास्त्री, पेज-182

68. रसभावनैरन्तर्य इसमें होता है? UGC 25 D–1997

(A) रूपक (B) खण्डकाव्य
(C) महाकाव्य (D) चम्पू

स्रोत–साहित्यदर्पण (6/8) - शालिग्राम शास्त्री, पेज-171

69. यह सामान्य गुणों से युक्त नायक है–
UGC 25 D–1997

(A) धीरोदात्त (B) धीरप्रशान्त
(C) धीरललित (D) दक्षिण

स्रोत–दशरूपक (2/4) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-115

70. भाण है? UGC 25 D–1997, J–2004

(A) रत्नावली (B) मुद्राराक्षस
(C) धूर्तसमागम (D) चन्द्रकला

स्रोत–दशरूपक (3/49) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-231

71. यह धीरललित नायक है– UGC 25 J–1998, 2002

(A) उदयन (B) दुष्यन्त
(C) भीम (D) राम

स्रोत–दशरूपक (2/3) - श्रीनिवास शास्त्री, पेज-114

72. (i) भाणे नायकः कः? BHU AET–2010,
(ii) भाण का एकमात्र पात्र होता है?
UGC 25 J–1999, 2010,

(A) विट (B) चेट
(C) नायक (D) विदूषक

स्रोत–दशरूपक (3/49) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-231

73. यह धीरोदात्त नायक है? UGC 25 D–1998

(A) उदयन (B) भीम
(C) दुष्यन्त (D) चारुदत्त

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0 पेज-86

74. इसमें प्राकृत का प्रयोग होता है? UGC 25 D–1999

(A) शुद्ध विष्कम्भक (B) पताकास्थानक
(C) प्रस्तावना (D) प्रवेशक

स्रोत–दशरूपक (1.60) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-100-101

75. (i) इस नाटक को सट्टक के नाम से जाना जाता है?
(ii) अधोलिखितेषु कोऽस्ति 'सट्टकः'?
UGC 25 D–1999, BHU AET–2010

(A) रत्नावली (B) मालविकाग्निमित्र
(C) कर्पूरमञ्जरी (D) विक्रमोर्वशीय

स्रोत–साहित्यदर्पण (6/276) - शालिग्राम शास्त्री, पेज-221

76. (i) प्रकरण में अङ्कों की संख्या होगी–
(ii) प्रकरणे कति अङ्काः भवन्ति–
UGC 25 D–1999, 2005, J–2007

(A) 7 (B) 5
(C) 10 (D) 4

स्रोत–मृच्छकटिकम् -जगदीशचन्द्र मिश्र, भू0पेज-15

77. नाटक का नायक होता है—
UGC 25 J–2000, D–2006

(A) धीरप्रशान्त (B) धीरललित
(C) धीरोदात्त (D) धीरोद्धत

स्रोत–साहित्यदर्पण (6/9) - शालिग्राम शास्त्री, पेज-171

78. एक अङ्क का रूपक है– UGC 25 J–2000

(A) नाटक (B) भाण
(C) प्रकरण (D) नाटिका

स्रोत–दशरूपक - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-232

65. (A) 66. (D) 67. (C) 68. (A) 69. (B) 70. (C) 71. (A) 72. (A) 73. (C) 74. (D) 75. (C) 76. (C) 77. (C) 78. (B)

79. (i) वीथी क्या है? UGC 25 D–2001,UP PGT
(ii) 'वीथी'– (H)–2000, AWES TGT–2012
(A) वृत्ति (B) अभिनय
(C) सन्धि (D) रूपक
स्रोत–दशरूपक (1/8) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-8

80. वीथ्यामङ्कसंख्या स्यात्– D.U. Ph. D-2016
(A) 1 (B) 5
(C) 3 (D) 6
स्रोत–दशरूपक - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-239

81. (i) रूपक नहीं है? UGC 25 J–2002,
(ii) दशरूपकेषु नास्ति– UP GIC–2015
(A) भाण (B) अङ्क
(C) डिम (D) सट्टक
स्रोत–दशरूपक (1/8) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-8

82. दशरूपकेषु नास्ति– JNU MET-2015
(A) प्रकरणम् (B) प्रहसनम्
(C) अङ्कः (D) नाटिका
स्रोत–दशरूपक -रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-8

83. (i) चूलिका है– UGC 25 D–2002, J–2008
(ii) 'चूलिका' तावत्–
(A) सन्धिभेद (B) अर्थोपक्षेपक
(C) कथावस्तु भेद (D) रूपक भेद
स्रोत–दशरूपक (1/58) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-99

84. नाट्यसन्धियों के अङ्ग हैं– UGC 25 J–2004
(A) 15 (B) 12
(C) 13 (D) 64
स्रोत–दशरूपक (1/54) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-97

85. अधोलिखितेषु किं रूपकं नास्ति? UGC 25 J–2005
(A) भाणः (B) आख्यायिका
(C) नाटक (D) वीथी
स्रोत–दशरूपक (1/8) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-8

86. 'उपसंहृति' नाम– UGC 25 J–2008
(A) अवस्थाविशेषः (B) रूपकविशेषः
(C) अर्थोपक्षेपकविशेषः (D) सन्धिविशेषः
स्रोत–दशरूपक (1/24) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-27

87. प्राप्त्याशा नाम– UGC 25 D–2008
(A) सन्धिविशेष (B) अवस्थाविशेष
(C) रूपकविशेष (D) अनुभावविशेष
स्रोत–दशरूपक (1/19) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-23

88. पताका प्रकरी भेदात् द्विधा भवति– UGC 25 D–2008
(A) प्राकरणिकम् (B) प्रधानम्
(C) प्रासङ्गिकम् (D) चारित्रकम्
स्रोत–दशरूपक (1/13) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-14

89. अर्थोपक्षेपकाः उपयुज्यन्ते– UGC 25 D–2008
(A) रूपकेषु (B) प्रकरणग्रन्थेषु
(C) काव्येषु (D) धर्मशास्त्रेषु
स्रोत–दशरूपक (1/58) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-99

90. सात्त्विकभावानां संख्या भवति– UGC 25 J–2012
(A) त्रयस्त्रिंशत् (B) नव
(C) अष्टौ (D) अष्टादश
स्रोत–दशरूपक (4/5-6) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-251

91. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत– UGC 25 J–2011
(अ) नाटकम् **1. निन्दनीयपुरुषः**
(ब) प्रकरणम् **2. विटः**
(स) भाणः **3. धीरप्रशान्तः**
(द) प्रहसनम् **4. धीरोदात्तः**

	अ	ब	स	द
(A)	4	3	2	1
(B)	1	2	4	3
(C)	3	4	2	1
(D)	1	2	3	4

स्रोत–दशरूपक-रमाशंकर त्रिपाठी, अ-(3/23) पेज-220 ब- (3/40) पेज-226 स-(3/49) पेज-231 द-(3/54) पेज-234

92. आसु का नाट्यवृत्तिर्न भवति– UGC 25 J–2016
(A) कैशिकी (B) आरभटी
(C) अभिधा (D) भारती
स्रोत–दशरूपक (2/47) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-182

79. (D) 80. (A) 81. (D) 82. (D) 83. (B) 84. (D) 85. (B) 86. (D) 87. (B) 88. (C) 89. (A) 90. (C) 91. (A) 92. (C)

93. संस्कृतनाटकेषु विदूषकस्य को वर्गः?
IAS–1994, UGC 25 J–2013
(A) ब्राह्मणवर्गः (B) क्षत्रियवर्गः
(C) वैश्यवर्गः (D) शूद्रवर्गः

स्रोत–मृच्छकटिकम्-रमाशंकर त्रिपाठी, भू0 पेज- xlii (42)

94. 'अल्पमात्रं समुद्दिष्टं बहुधा यद्विसर्पति'–इति कस्य लक्षणम्? UGC 25 J–2013
(A) मुखस्य (B) बीजस्य
(C) निर्वहणस्य (D) पताकायाः

स्रोत–साहित्यदर्पण (6/65)-शालिग्राम शास्त्री, पेज-182

95. समवकारे पात्राणि के भवन्ति– UGC 25 D–2013
(A) मानवाः (B) दैत्याः
(C) देवाः दानवाः च (D) अप्सरसः

स्रोत–दशरूपक (3/63) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-237

96. (i) वृत्तवर्तिष्यमाणानां कथांशानां निदर्शकः। संक्षिप्तार्थस्तु... आदावङ्कस्य दर्शितः॥
(ii) वृत्तवर्तिष्यमाणानां कथांशानां निदर्शकः' इति नाटके कथ्यते– UGC 25 D–2013, J–2014, UP GIC–2015
(A) प्रवेशकः (B) विष्कम्भकः
(C) सूत्रधारः (D) अङ्कावतारः

स्रोत–दशरूपक (1/59) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-99

97. 'वृत्तवर्तिष्यमाणानां कथांशानां .... संक्षेपार्थस्तु विष्कम्भो मध्यपात्रप्रयोजितः॥' – रिक्तस्थानं पूरयतु?
BHU AET–2011
(A) प्रयोजकः (B) निदर्शकः
(C) नियामकः (D) प्रदर्शकः

स्रोत–दशरूपक (1/59) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-99

98. 'वृत्तवर्तिष्यमाणानां कथांशानां निदर्शकः संक्षेपार्थस्तु विष्कम्भः .... पात्रप्रयोजितः॥ BHU AET–2012
(A) मुख्य (B) नीच
(C) मध्य (D) दिव्य

स्रोत–दशरूपक (1/59) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-99

99. अवान्तरार्थविच्छेदे .... किमच्छेदकारणम्
UGC 25 J–2014
(A) बीजम् (B) बिन्दुः
(C) पताका (D) प्रकरी

स्रोत–दशरूपक (1/17) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-21

100. दशरूपकानुसारं प्रहसनं भवति? UGC 25 J–2016
(A) द्विविधम् (B) चतुर्विधम्
(C) त्रिविधम् (D)पञ्चविधम्

स्रोत–दशरूपक (3/54) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज–234

101. नाटक सन्धियों में प्रथम है? UGC 25 J–1994
(A) निर्वहण (B) गर्भ
(C) प्रतिमुख (D) मुख

स्रोत–दशरूपक (1/24) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-27

102. नाटिका को कहा गया है? UGC 25 J–2003
(A) रूपक (B) उपरूपक
(C) काव्य (D) चम्पू

स्रोत–साहित्यदर्पण (6/4) - शालिग्राम शास्त्री, पेज-170

103. नाटकं नाम किम्– MH SET–2013
(A) पञ्चसन्धिचतुर्वृत्तिचतुःषष्ट्यङ्गसंयुतम्
(B) कितवद्यूतकारादिविटचेटकसंकुलम्
(C)कैशिकीवृत्तिरहितम्
(D) अङ्गीरौद्ररसस्तस्य सर्वेऽङ्गानि रसाः पुनः

साहित्यदर्पण (6, 7, 115, 122)-शालिग्राम शास्त्री, पेज-170-198-199

104. डोम्बी श्रीगदितं च .... विभागे अन्तर्भवति
KL SET–2014
(A) भाणमिति (B) प्रहसनमिति
(C) उपरूपकमिति (D) व्यायोगमिति

स्रोत–दशरूपक - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-9

105. डिमः कत्यङ्कात्मको भवति– RPSC SET–2013-14
(A) पञ्चाङ्कात्मकः (B) सप्ताङ्कात्मकः
(C) चतुरङ्कात्मकः (D) अष्टाङ्कात्मकः

स्रोत–दशरूपक (3/59) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-235

93. (A) 94. (B) 95. (C) 96. (B) 97. (B) 98. (C) 99. (B) 100. (C) 101. (D) 102. (B) 103. (A) 104. (A) 105. (C)

106. (i) पञ्चसन्धिसमन्वितं रूपकं किम्?
(ii) पाँच सन्धियाँ किसमें होती हैं? BHU MET–2010
RPSC SET–2013-14

(A) नाटिका (B) खण्डकाव्य
(C) नाटक (D) आख्यायिका

स्रोत–साहित्यदर्पण (6/7) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–170

107. पञ्चसन्धयः कुत्र प्रसिद्धाः? BHU Sh.ET–2011

(A) काव्ये (B) महाकाव्ये
(C) गीतिकाव्ये (D) दृश्यकाव्ये

स्रोत–साहित्यदर्पण (6/7) शालिग्राम शास्त्री, पेज-170

108. नाट्यं किम्? BHU Sh.ET–2013

(A) रसोत्पादकम् (B) श्रवणीयम्
(C) दृश्यम् (D) अवस्थानुकृतिः

स्रोत–दशरूपक - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-6

109. अधोलिखितेषु कश्चिदेकोऽर्थोपक्षेपको नास्ति?
BHU AET–2010

(A) प्रवेशकः (B) नान्दी
(C) विष्कम्भकः (D) चूलिका

स्रोत–दशरूपक (1/58) -रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-99

110. अधोलिखितेषु कोऽस्ति नाट्यसन्धिः BHU AET–2010

(A) विमर्शः (B) पताका
(C) प्राप्त्याशा (D) बिन्दुः

स्रोत–दशरूपक (1/23) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-27

111. नाटके निर्वहणसन्धौ को रसः कार्यः? UK SLET–2015

(A) भयानकः (B) अद्भुतः
(C) शृङ्गारः (D) शान्तः

स्रोत–दशरूपक (3/33-34) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-224

112. दशरूपकानुसारं– UGC 25 J–2016
'बीजवन्तो मुखाद्यर्था विप्रकीर्णा यथायथम्।
ऐकार्थ्यमुपनीयन्ते' – इत्यादिलक्षणं भवति–

(A) मुखसन्धेः (B) गर्भसन्धेः
(C) निर्वहणसन्धेः (D) प्रतिमुखसन्धेः

स्रोत–दशरूपक (1/48) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-85

113. प्रहसने प्रधानरसः कः? K SET–2014

(A) शृङ्गारः (B) अद्भुतः
(C) हास्यः (D) वीरः

स्रोत–दशरूपक - श्रीनिवास शास्त्री, पेज-246

114. नाटकस्य कथावस्तु कीदृशं भवति– K SET–2014

(A) प्रख्यातम् (B) मिश्रम्
(C) उत्पाद्यम् (D) लोकायत्तम्

स्रोत–साहित्यदर्पण - शालिग्राम शास्त्री, पेज-170

115. प्रकरणे वृत्तं .... भवति– K SET–2013

(A) प्रख्यातम् (B) मिश्रम्
(C) उत्पाद्यम् (D) प्रासङ्गिकम्

स्रोत–दशरूपक (3/39) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-226

116. रूपकं ..... काव्यं भवति– GJ SET–2004

(A) श्रव्य (B) दृश्य
(C) चम्पू (D) महाकाव्य

स्रोत–दशरूपक - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-7

117. दशरूपकेषु .... न गण्यते– GJ SET–2016

(A) नाटकम् (B) प्रकरणम्
(C) भाणिका (D) डिमः

स्रोत–दशरूपक -रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-8

118. सौगन्धिकाहरणम्' कस्य रूपकस्योदाहरणम्?
GJ SET–2013

(A) नाटकस्य (B) ईहामृगस्य
(C) समवकारस्य (D) व्यायोगस्य

स्रोत–साहित्यदर्पण -शालिग्राम शास्त्री, पेज-215

119. 'डिम' नाम्नि रूपके अङ्गीरसः कः? GJ SET–2013

(A) वीरः (B) हास्यः
(C) रौद्रः (D) शान्तः

स्रोत–दशरूपक - श्रीनिवास शास्त्री, पेज-248

120. एतेषु .... सात्त्विकभावो न भवति– GJ SET–2016

(A) स्तम्भः (B) प्रलयः
(C) वैवर्ण्यम् (D) औत्सुक्यम्

स्रोत–दशरूपक - श्रीनिवास शास्त्री, पेज-266

106. (C) 107. (D) 108. (D) 109. (B) 110. (A) 111. (B) 112. (C) 113. (C) 114. (A) 115. (C) 116. (B) 117. (C) 118. (D) 119. (C) 120. (D)

121. कार्यावस्थाः कति? UK SLET–2015
(A) अष्टौ (B) सप्त
(C) षट् (D) पञ्च
स्रोत–दशरूपक (1/19) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-23

122. 'वीथी' इति कस्य प्रभेदः? UK SLET–2015
(A) महाकाव्यस्य (B) गद्यकाव्यस्य
(C) रूपकस्य (D) उपरूपकस्य
स्रोत–दशरूपक (1/8) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-8

123. भाणः कस्य महाविषयस्य भागः DL–2015
(A) महाकाव्यस्य (B) ऐतिह्यस्य
(C) नाट्यस्य (D) मुक्तकवाङ्मयस्य
स्रोत–दशरूपक (1/8) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-8

124. अर्थोपक्षेपकाः कति? DSSSB TGT–2014
K SET–2014
(A) चत्वारः (B) पञ्च
(C) षट् (D) सप्त
स्रोत–दशरूपक (1/58) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-99

125. रूपक के भेदक तत्त्व जिनके आधार पर उनमें अन्तर किया जाता है, वे कितने हैं? UP TGT–2013
(A) 3 (B) 4
(C) 5 (D) 6
स्रोत–दशरूपक-रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-12

126. शृङ्गार रस की दृष्टि से कृष्ण किस प्रकार के नायक हैं? UP PGT (H)–2013
(A) अनुकूल (B) दक्षिण
(C) शठ (D) धृष्ट
स्रोत–

127. निम्नलिखित में कौन सा अर्थोपक्षेपक नहीं है? UP PGT (H)–2013
(A) प्रवेशक (B) चूलिका
(C) नियताप्ति (D) विष्कम्भक
स्रोत–दशरूपक (1/58) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-99

128. इनमें से कौन नाट्य-वृत्तियों के अन्तर्गत नहीं है? UP PGT (H)–2013
(A) पाञ्चाली (B) कैशिकी
(C) आरभटी (D) भारती
स्रोत–दशरूपक (2/61) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-195

129. निम्नलिखित में धीरोद्धत नायक कौन है? UP PGT (H)–2013
(A) युधिष्ठिर (B) दुष्यन्त
(C) माधव (D) भीमसेन
स्रोत–साहित्यदर्पण (3/33) - शालिग्राम शास्त्री, पेज-65

130. अस्मिन् कः पञ्चसन्धिभेदः नास्ति? UP GIC–2015
(A) मुखः (B) सम्मुखः
(C) प्रतिमुखः (D) गर्भः
स्रोत–दशरूपक (1/23) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-26

131. नृत्तं ....।। शून्यं स्थानं पूरयत। UGC 25 J–2015
(A) भावाश्रयम् (B) केवलं लयाश्रयम्
(C) केवलं तालाश्रयम् (D)ताललयाश्रयम्
स्रोत–दशरूपक - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-11

132. प्राप्त्याशा भवति– UGC 25 J–2015
(A) फललाभाय औत्सुक्यमात्रम्
(B) उपायापायशङ्काभ्यां प्राप्तिसम्भवः
(C) अप्राप्तौ अतित्वरान्वितः व्यापारः
(D) अपायाभावतः प्राप्तिः
स्रोत–दशरूपक - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-24

133. दशरूपकमते नाटकस्य अङ्कसंख्या भवति– UGC 25 J–2015
(A) 5-7 (B) 5-8
(C) 5-10 (D) 7-10
स्रोत–दशरूपक (3/38) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-226

134. दशरूपके वस्तुकर्म कतिविधम्– UK SLET–2012
(A) द्विविधम् (B) चतुर्विधम्
(C) त्रिविधम् (D) सप्तविधम्
स्रोत–दशरूपक - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-13

135. गणिका नायिका भवति– UGC 25 D–2006
(A) नाटके (B) प्रकरणे
(C) भाणे (D) समवकारे
स्रोत–दशरूपक (3/41) -रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-227

136. 'नान्दी' प्रयुक्तो भवति– UP GIC–2015
(A) महाकाव्ये (B) खण्डकाव्ये
(C) गद्यकाव्ये (D) रूपके
स्रोत–साहित्यदर्पण (6/23-24) - शालिग्राम शास्त्री, पेज-172

121. (D) 122. (C) 123. (C) 124. (B) 125. (A) 126. (B) 127. (C) 128. (A) 129. (D) 130. (B)
131. (D) 132. (B) 133. (C) 134. (A) 135. (B) 136. (D)

137. निम्नाङ्कितेषु उचितः क्रमः कः? G GIC–2015
(A) बीजं, बिन्दुः, कार्यं, पताका, प्रकरी
(B) प्रकरी, पताका, कार्यं, बीजं, बिन्दुः
(C) बीजं, बिन्दुः, पताका, प्रकरी, कार्यम्
(D) कार्यं, बीजं, प्रकरी, पताका, बिन्दुः
स्रोत–दशरूपक (1/18) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-22

138. आकाशभाषिते पात्रसंख्या भवति? G GIC–2015
(A) एकम् (B) द्वे
(C) त्रीणि (D) चत्वारि
स्रोत–दशरूपक (1/67) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-107

139. दशरूपकानुसारं फलस्याप्राप्तावुपाययोजनादि-रूपचेष्टाविशेषः भवति? UGC 25 D–2015
(A) आरम्भः (B) प्रयत्नः
(C) प्राप्त्याशा (D) नियताप्तिः
स्रोत–दशरूपक (1/20) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-23

140. ''दोषा गुणा गुणा दोषा यत्र स्युर्मृदवं हि तत्''– दशरूपके कस्मिन् प्रसङ्गे इयमुक्तिः? UGC 25 D–2015
(A) वीथ्यङ्गप्रसङ्गे (B) नृत्यलक्षणप्रसङ्गे
(C) सन्धिभेदप्रसङ्गे (D) प्रहसनलक्षणप्रसङ्गे
स्रोत–दशरूपक (3/21) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-218

141. अवमर्शसन्धिषु न परिगण्यते? GJ SET–2016
(A) अपवादः (B) विद्रवः
(C) व्यवसायः (D) अनुव्यवसायः
स्रोत–दशरूपक (1/44) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-70

142. प्रस्तुतसम्बन्धि भिन्नार्थं सहसोदितम् .... GJ SET–2016
(A) छलनम् (B) वाक्केलिः
(C) गण्डः (D) नालिका
स्रोत–दशरूपक (3/18) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-214

143. समवकारे कत्यङ्काः भवन्ति? RPSC SET–2013-14
(A) एकः (B) दश
(C) चत्वारः (D) त्रयः
दशरूपक (3/65) - श्रीनिवास शास्त्री, पेज-250-251

144. महाकाव्ये नायकः किं विधो भवति? RPSC SET–2013-14
(A) धीरप्रशान्तः (B) धीरोदात्तः
(C) धीरोद्धतः (D) धीरललितः
स्रोत–साहित्यदर्पण (6/316) - शालिग्राम शास्त्री, पेज-225

145. अधोनिर्दिष्टेषु युग्मपर्यायेषु समीचीनं विचिनुत– MH SET–2013
(क) प्रकरणम् **1. सौगन्धिकाहरणम्**
(ख) व्यायोगः **2. त्रिपुरदाहः**
(ग) डिमः **3. कुसुमशेखरविजयः**
(घ) ईहामृगः **4. मालतीमाधवम्**

	क	ख	ग	घ
(A)	1	2	3	4
(B)	4	1	2	3
(C)	4	3	1	2
(D)	2	4	3	1

स्रोत–संस्कृतगंगासाहित्यम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-304

146. व्यायोगे किं विद्यते– MH SET–2013
(A) धूर्तचरितम् (B) नायिका कुलजा क्वापि
(C) नेतारः प्राकृतानराः (D) स्वल्पस्त्रीजनसंयुतत्वम्
स्रोत–साहित्यदर्पण (6/231) - शालिग्राम शास्त्री, पेज-215

147. अधस्तनेषु धीरललितः नायकः कः? MH SET–2016
(A) उदयनः (B) चारुदत्तः
(C) दुष्यन्तः (D) अग्निमित्रः
स्रोत–दशरूपक (2.3) - श्रीनिवास शास्त्री, पेज-114

148. डिमस्तु भवति– MGKV Ph. D–2016
(A) गर्भसन्धिरहितः (B) विमर्शसन्धिरहितः
(C) मुखसन्धिरहितः (D) प्रतिमुखसन्धिरहितः
स्रोत–दशरूपक - रमाशङ्कर त्रिपाठी, पेज–236

149. प्रहसनं ....। GJ SET–2016
(A) द्विविधिम् (B) त्रिविधम्
(C) चतुर्विधम् (D) पञ्चविधम्
स्रोत–दशरूपक - श्रीनिवास शास्त्री, पेज–246

150. (i) एक पात्र प्रयोजित रचना है? UGC 25 J–2001, (ii) एक पात्र प्रयोजित रूपक है? 2002
(A) अङ्क (B) ईहामृग
(C) भाण (D) डिम
स्रोत–साहित्यदर्पण (6/228) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–215

151. 'प्रशंसात उन्मुखीकरणं दशरूपके' कस्य लक्षणं भवति– UGC 25 J–2016
(A) भारत्याः (B) वीथ्याः
(C) प्ररोचनायाः (D) प्रहसनस्य
स्रोत–दशरूपक (3/6) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज–205

137. (C) 138. (A) 139. (B) 140. (A) 141. (D) 142. (C) 143. (D) 144. (B) 145. (B) 146. (D) 147. (A) 148. (B) 149. (B) 150. (C) 151. (C)

31 साहित्यदर्पण

1. (i) साहित्यदर्पणस्य प्रणेता-
(ii) साहित्यदर्पणग्रन्थकर्तुः नामाभिधीयताम्–
BHU Sh.ET–2011, GJ-SET-2011
(A) विश्वनाथः (B) जगन्नाथः
(B) धनपालः (D) धनञ्जयः
स्रोत- साहित्यदर्पण - भवानी शंकर शर्मा, भू० पेज-19

2. साहित्यदर्पणस्य आरम्भे विश्वनाथः कां देवतां नमस्करोति? BHU AET–2010
(A) गणेशम् (B) महेशम्
(C) सुरेशम् (D) वाग्देवताम्
स्रोत- साहित्यदर्पण (1/1)- भवानी शंकर शर्मा, पेज-97

3. 'परिच्छेद' विभाजन किस ग्रन्थ से सम्बद्ध है? BHU MET–2016
(A) साहित्यदर्पण (B) भावप्रकाशन
(C) काव्यप्रकाश (D) चन्द्रालोक
स्रोत- साहित्यदर्पण - भवानी शंकर शर्मा, भू० पेज-22

4. (i) साहित्यदर्पण में परिच्छेदों की संख्या है–
(ii) साहित्यदर्पणे कियन्तः परिच्छेदाः सन्ति?
UP PGT–2000, 2010, BHU AET–2010 UK TET–2011
(A) दस (B) आठ
(C) सात (D) नौ
स्रोत- साहित्यदर्पण - भवानी शंकर शर्मा, भू० पेज-22

5. (i) साहित्यदर्पणे .... सन्ति? UGC 25 J–2001,
(ii) साहित्यदर्पण में है–UP PGT-2011, GJ-SET-2011
(ii) साहित्यदर्पण विभक्त है?
(A) परिच्छेद (B) उच्छ्वास
(C) सर्ग (D) अङ्क
स्रोत- साहित्यदर्पण - भवानी शंकर शर्मा, भू० पेज-22

6. साहित्यदर्पण के प्रथम परिच्छेद का नाम है– UP PGT–2002, 2004
(A) काव्य-दोष-निरूपण (B) काव्य-स्वरूप-निरूपण
(C) काव्य-प्रयोजन-निरूपण (D) काव्य-लक्षण-निरूपण
स्रोत- साहित्यदर्पण - भवानी शंकर शर्मा, पेज-170

7. अधोलिखितेषु कतमत् विशेषणं विश्वनाथकृते न प्रयुज्यते– D. U.- Ph.D-2016
(A) साहित्यार्णवकर्णधारः (B) ध्वनिप्रस्थापनपरमाचार्यः
(C) सान्धिविग्रहिकः (D) चतुर्दशभाषावारविलासिनीभुजङ्गः
संस्कृत काव्यशास्त्र का आलोचनात्मक इतिहास-अमरनाथ पाण्डेय, पेज–157

8. आचार्य विश्वनाथानुसार काव्य का प्रयोजन है– UP PGT–2003
(A) पुरुषार्थ-चतुष्टय (B) मोक्ष
(C) अर्थ (D) इनमें से कोई नहीं
स्रोत- साहित्यदर्पण - भवानी शंकर शर्मा, भू० पेज-45,46

9. 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' इत्यत्र रसमध्ये ग्रहणं कृतम्– UGC 25 D–2015
(A) केवलं रसस्य (B) केवलं भावस्य
(C) केवलं रसाभासस्य (D) रस-भाव-तदाभासादीनाम्
स्रोत- साहित्यदर्पण - भवानी शंकर शर्मा, भू० पेज-43

10. (i) विश्वनाथमते काव्यशरीरे रसस्य का स्थितिर्वर्तते–
(ii) साहित्यदर्पण में 'काव्य में रस की स्थिति' को कहा गया है? UGC 25 D–2014, UK TET–2011
(A) अलङ्कारवत् (B) आत्मवत्
(C) गुणवत् (D) रीतिवत्
स्रोत- साहित्यदर्पण - भवानी शंकर शर्मा, पेज-134

11. (i) विश्वनाथ का काव्यलक्षण है– UGC 25 J–1994, 2001,
(ii) विश्वनाथेन कृतं काव्यलक्षणं किम्?
(iii) विश्वनाथ के अनुसार काव्यलक्षण है–
(iv) विश्वनाथोक्तं काव्यलक्षणम् .....। RPSC-SET-2010, GJ-SET-2013, 2008, MH-SET-2013
(A) शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्
(B) रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्
(C) वाक्यं रसात्मकं काव्यम्
(D) शरीरं तावदिष्टार्थव्यवच्छिन्नापदावली
स्रोत- साहित्यदर्पण - भवानी शंकर शर्मा, पेज-157

1. (A) 2. (D) 3. (A) 4. (A) 5. (A) 6. (B) 7. (D) 8. (A) 9. (D) 10. (B) 11. (C)

12. कीदृशं वाक्यं काव्यम्? HAP-2016
(A) रीत्यात्मकम् (B) दोषात्मकम्
(C) रसात्मकम् (D) गुणात्मकम्
स्रोत- साहित्यदर्पण - भवानी शंकर शर्मा, पेज-157

13. (i) विश्वनाथ ने किसके काव्यलक्षण का खण्डन किया–
(ii) विश्वनाथः कस्य काव्यलक्षणस्य खण्डनं कृतवान्?
(iii) विश्वनाथेन कस्य काव्यलक्षणस्य खण्डनं प्रधानत्वेन कृतम्? UGC 25 J–1998, 2000 2011, S-2013, K-SET–2013
(A) भामह (B) मम्मट
(C) दण्डी (D) जगन्नाथ
स्रोत- साहित्यदर्पण - भवानी शंकर शर्मा, पेज-37

14. (i) 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' इति काव्यलक्षणं कस्मिन् साहित्यशास्त्रे प्राप्यते? JNU MET-2015, CCSUM-
(ii) 'वाक्यं रसात्मकं काव्यं' वर्णित है– Ph.D-2016
(iii) 'वाक्यं रसात्मकं काव्यं'' इत्युक्तिः कुत्रोपलभ्यते– UGC 25 D–2003, BHU Sh.ET–2008
(A) काव्यप्रकाशे (B) साहित्यदर्पणे
(C) ध्वन्यालोके (D) काव्यालङ्कारे
स्रोत- साहित्यदर्पण - भवानी शंकर शर्मा, पेज-157

15. विश्वनाथमते काव्यत्वसिद्धिर्भवति– UGC 25 J–2006
(A) शब्दार्थाभ्याम् (B) गुणालङ्काराभ्याम्
(C) रीतिवृत्तिभ्याम् (D) रसात्
स्रोत-साहित्यदर्पण - भवानी शंकर शर्मा, पेज-19

16. विश्वनाथस्य मते काव्यम्– UGC 25 D–2006
(A) शब्दः (B) शब्दार्थौ
(C) वाक्यं (D) पदावलिः
स्रोत- साहित्यदर्पण - भवानी शंकर शर्मा, पेज-43

17. (i) 'वाक्यं रसात्मकं काव्यं' इत्युक्तम्–
(ii) 'वाक्यं रसात्मकं काव्यं' इति काव्यलक्षणमुक्तम्–
(iii) 'वाक्यं रसात्मकं काव्यं' के प्रतिपादक आचार्य हैं–
(iv) 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' कस्येदं काव्यलक्षणम्?
(v) वाक्यं रसात्मकं कथन है– BHU Sh.ET–2011,
(vi) 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' इति काव्यलक्षणेन सम्बद्धः आचार्यः अस्ति? G-GIC-2015
UGC 25 D–2007, BHU B.Ed–2014, T-SET-2013, 14 K-SET-2014, UP TET–2013, UP PGT–2000, UP GIC–2012, MH-SET-2013
(A) कुन्तकः (B) विश्वनाथः
(C) दण्डी (D) भरतः
स्रोत- साहित्यदर्पण - भवानी शंकर शर्मा, पेज-157

18. 'श्वेतो धावति' कस्य उदाहरणमस्ति? MGKV Ph. D–2016
(A) प्रयोजने उपादानलक्षणायाः
(B) रुढावुपादानलक्षणायाः
(C) प्रयोजने लक्षणलक्षणायाः
(D) रूढौ लक्षणलक्षणायाः
स्रोत- साहित्यदर्पण - अभिराजराजेन्द्र मिश्र, पेज-164

19. 'दोषास्तस्यापकर्षकाः' इत्यत्र 'तस्य' इत्यनेन सह साहित्यदर्पणमते कस्य बोधः? UGC 25 J–2016
(A) रसस्य (B) अलङ्कारस्य
(C) गुणस्य (D) सङ्केतस्य
स्रोत- साहित्यदर्पण - भवानी शंकर शर्मा, पेज-165,166

20. आचार्य विश्वनाथ की काव्यपारिभाषिक शब्दावली है– UP PGT–2002, JNU MET–2014
(A) रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्
(B) वाक्यं रसात्मकं काव्यम्
(C) वक्रोक्तिः काव्यजीवितम्
(D) तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि
स्रोत- साहित्यदर्पण - भवानी शंकर शर्मा, पेज-157

21. योग्यताकांक्षासत्तियुक्तः पदोच्चयः भवति— UGC–25 J 2016
(A) अभिधा (B) लक्षणा
(C) वाक्यम् (D) महावाक्यम्
स्रोत- साहित्यदर्पण (2/1) - भवानी शंकर शर्मा, पेज-171

22. आचार्य विश्वनाथ ने काव्य का लक्षण साहित्यदर्पण के किस परिच्छेद में दिया है– UP PGT–2003
(A) प्रथम (B) द्वितीय
(C) तृतीय (D) चतुर्थ
स्रोत- साहित्यदर्पण - भवानी शंकर शर्मा, पेज-157

23. अनेकार्थस्य शब्दस्य सन्निधाने एव व्यञ्जना सम्भवति– D.U.-M.Phil-2016
(A) आर्थी (B) अभिधाश्रया शाब्दी
(C) लक्षणाश्रया शाब्दी (D) उक्ताः सर्वविधा एव
स्रोत- साहित्यदर्पण (2/14) - भवानी शंकर शर्मा, पेज-266

12. (C) 13. (B) 14. (B) 15. (D) 16. (C) 17. (B) 18. (B) 19. (A) 20. (B) 21. (C)
22. (A) 23. (B)

24. एषु विश्वनाथस्य किं मतम्– BHU Sh.ET–2013
(A) रसो वै सः (B) वाक्यं रसात्मकं काव्यम्
(C) ध्वनिरात्मा काव्यस्य (D) शब्दार्थौ काव्यम्
स्रोत- साहित्यदर्पण - भवानी शंकर शर्मा, पेज-157

25. अद्भुतरसस्य स्थायिभावः – K-SET-2013
(A) भयम् (B) विस्मयः
(C) जुगुप्सा (D) क्रोधः
स्रोत- साहित्यदर्पण (3/242) - शालिग्राम शास्त्री, पेज-120

26. आचार्यविश्वनाथः कतीनाम् आचार्याणां काव्यलक्षणं खण्डितवान्– HE–2015
(A) त्रयाणाम् (B) चतुर्णाम्
(C) पञ्चानाम् (D) षण्णाम्
स्रोत- साहित्यदर्पण - भवानी शंकर शर्मा, पेज-43

27. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां विचिनुत– K-SET-2013
(क) विभावः 1. आस्वादवेद्यः
(ख) अनुभावः 2. सहकारी
(ग) व्यभिचारिभावः 3. कार्यम्
(घ) रसः 4. कारणम्

	क	ख	ग	घ
(A)	2	3	1	4
(B)	1	2	4	3
(C)	4	3	2	1
(D)	4	2	1	3

स्रोत- काव्यप्रकाश (सूत्र-43)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज–95

28. 'वाक्यं रसात्मकं ......।' इत्यस्मिन् रिक्तस्थाने योज्यम्– UP GIC–2012
(A) काव्यम् (B) तत्त्वम्
(C) सत्यम् (D) दिव्यम्
स्रोत- साहित्यदर्पण - भवानी शंकर शर्मा, पेज-157

29. काव्यलक्षणखण्डनविचारे कस्य मतं 'स्ववचनविरोधाद् अपास्तम्' इति विश्वनाथेन कथितम्? UGC 25 J–2015, Jn-2017
(A) आनन्दवर्धनस्य (B) वामनस्य
(C) मम्मटस्य (D) व्यक्तिविवेककारस्य
स्रोत- साहित्यदर्पण - शालिग्राम शास्त्री, पेज-18

30. साहित्यदर्पण के अनुसार 'कर्मणि कुशलः' उदाहरण है– UGC 25 D–2003
(A) अभिधा का (B) लक्षणा का
(C) व्यञ्जना का (D) तात्पर्या का
स्रोत- साहित्यदर्पण - भवानी शंकर शर्मा, पेज-213

31. (i) अग्रिमा शब्दशक्तिः – UGC 25 D–2004
(ii) अग्रिमा शब्दशक्तिः का अस्ति–
(A) तात्पर्या (B) व्यञ्जना
(C) लक्षणा (D) अभिधा
स्रोत- साहित्यदर्पण - भवानी शंकर शर्मा, पेज-56

32. (i) साक्षात्संकेतितार्थस्य बोधिका का?
(ii) सङ्केतितमर्थं बोधयन्ती शक्तिः–
UGC 25 D–2007, K-SET-2014
(A) अभिधा (B) लक्षणा
(C) व्यञ्जना (D) तात्पर्या
स्रोत- (i) साहित्यदर्पण - भवानी शंकर शर्मा, पेज-56
(ii) काव्यप्रकाश (सूत्र-9)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज–42

33. (i) साहित्यदर्पणे लक्षणायाः कति भेदाः प्रदर्शिताः –
(ii) साहित्यदर्पणे साकल्येन लक्षणायाः कति भेदाः?
(iii) साहित्यदर्पणे लक्षणायाः .... भेदाः सन्ति–
(iv) साहित्यदर्पणानुसारं लक्षणायाः प्रभेदाः–
(v) विश्वनाथेन 'लक्षणायाः' कति भेदाः प्रदर्शिताः–
UGC 25 J–2006, BHU AET–2010, JNU MET–2014, 2015, UGC 25 D–2013, 2014, 2015, GJ SET-2008, RPSC SET-2010
(A) षोडश (16) (B) चतुर्विंशतिः (24)
(C) अशीतिः (80) (D) द्वादश (12)
स्रोत- साहित्यदर्पण - भवानी शंकर शर्मा, पेज-59

34. 'लक्षणा' स्वीकृति का आधार है–UGC 25 J–1998
(A) योग्यता (B) आसक्तिः
(C) सङ्केतः (D) मुख्यार्थबाधः
स्रोत- साहित्यदर्पण - भवानी शंकर शर्मा, पेज-57

35. जिस लक्षणा में मुख्यार्थ का भी ग्रहण होता है, वह कौन सी लक्षणा कहलाती है– UP PGT–2011
(A) प्रयोजनमूला (B) रूढिमूला
(C) उपादानलक्षणा (D) लक्षण-लक्षणा
स्रोत–साहित्यदर्पण (2/6) - भवानी शंकर शर्मा, पेज-216

24. (B) 25. (B) 26. (C) 27. (C) 28. (A) 29. (A) 30. (B) 31. (D) 32. (A) 33. (C) 34. (D) 35. (C)

36. लक्षणा के 80 भेद किसने किये हैं–UP PGT–2000
(A) वामन (B) विश्वनाथ
(C) जगन्नाथ (D) आनन्दवर्धन
स्रोत–साहित्यदर्पण - भवानी शंकर शर्मा, पेज-59

37. 'गङ्गायां घोषः' किस लक्षणा भेद का उदाहरण है– UP PGT–2003
(A) रुढ़ि लक्षणलक्षणा (B) रूढ़ि उपादानलक्षणा
(C) प्रयोजन लक्षणलक्षणा (D) प्रयोजन उपादानलक्षणा
स्रोत–साहित्यदर्पण - भवानी शंकर शर्मा, पेज-58

38. 'कलिङ्गः साहसिकः' किस लक्षणा भेद का उदाहरण है? UP PGT–2003
(A) रुढ़िवती सारोपा लक्षणलक्षणा
(B) रुढ़िवती साध्यवसाना लक्षणलक्षणा
(C) रुढ़िवती साध्यवसाना सोपादानलक्षणा
(D) इनमें से कोई नहीं
स्रोत–साहित्यदर्पण - भवानी शंकर शर्मा, पेज-234

39. 'रुढेः प्रयोजनाद्वाऽसौ लक्षणा शक्तिरर्पिता' यह लक्षण है– UP PGT–2009
(A) विश्वनाथ का (B) आनन्दवर्धन का
(C) मम्मट का (D) पण्डितराजजगन्नाथ का
स्रोत–साहित्यदर्पण (2.5) - भवानी शंकर शर्मा, पेज-202

40. अधोलिखितासु शब्दशक्तिरूपेण का न परिगण्यते? MGKV Ph. D–2016
(A) ध्वनिः (B) लक्षणा
(C) अभिधा (D) व्यञ्जना
स्रोत– साहित्यदर्पण (2/3) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–26

41. (i) ''मुख्यार्थबाधे तद्युक्तो ययाऽन्योऽर्थः प्रतीयते ....।'' सा शक्तिः का? UGC 25 J–2013, K- SET-2014
(ii) ''मुख्यार्थबाधे तद्योगे कः व्यापारः भवति–
(A) अभिधा (B) लक्षणा
(C) व्यञ्जना (D) तात्पर्या
स्रोत–साहित्यदर्पण (2.5) - भवानी शंकर शर्मा, पेज-202

42. 'उपकृतं बहु तत्र किमुच्यते' उदाहरणमस्ति– UP GIC–2015
(A) लक्षणलक्षणायाः (B) उपादानलक्षणायाः
(C) सारोपालक्षणायाः (D) साध्यवसानालक्षणायाः
स्रोत–साहित्यदर्पण - भवानी शंकर शर्मा, पेज-222

43. विश्वनाथानुसारं शाब्दीव्यञ्जना कतिधा– UGC 25 J–2013
(A) चतुर्धा (B) द्विधा
(C) त्रिधा (D) पञ्चधा
स्रोत–साहित्यदर्पण (2.12) - भवानी शंकर शर्मा, पेज-63

44. साहित्यदर्पणस्य कस्मिन्परिच्छेदे व्यञ्जनायाः स्थापना कृता? JNU MET–2014
(A) द्वितीये (B) पञ्चमे
(C) चतुर्थे (D) तृतीये
स्रोत–साहित्यदर्पण - भवानी शंकर शर्मा, पेज-23

45. शब्दस्यार्थादिकस्य वृत्तिः का अस्ति? UGC 25 D–2004
(A) अभिधा (B) व्यञ्जना
(C) लक्षणा (D) तात्पर्या
स्रोत– साहित्यदर्पण (2.12) - भवानी शंकर शर्मा, पेज-261

46. शब्दार्थयोः शक्तिः का HAP–2016
(A) लक्षणा (B) व्यञ्जना
(C) अभिधा (D) तात्पर्याख्या
स्रोत– साहित्यदर्पण (2.12)-भवानी शंकर शर्मा, पेज-261,262

47. 'आयुर्घृतम्' इति उदाहरणमस्ति? JNU MET–2015
(A) रूढौ उपादानलक्षणायाः सारोपायाः
(B) प्रयोजने उपादानलक्षणायाः सारोपायाः
(C) प्रयोजने लक्षणलक्षणायाः सारोपायाः
(D) रूढौ लक्षणलक्षणायाः सारोपायाः
स्रोत– साहित्यदर्पण - भवानी शंकर शर्मा, पेज-231

48. (i) 'विरतास्वभिधाद्यासु ययाऽर्थो बोध्यते परः' यह किस वृत्ति का लक्षण है– UGC 73 D–2014,
(ii) विरतास्वभिधाद्यासु ययाऽर्थो बोध्यते परः। सा वृत्तिः ..... कथ्यते। UGC 25 J–2001,
(iii) विरतास्वभिधाद्यासु ययाऽर्थो बोध्यते परः, सा...। GJ- SET-2003, 2004, UK TET–2011, UP PGT–2009, 2010
(A) तात्पर्या (B) अभिधा
(C) लक्षणा (D) व्यञ्जना
स्रोत– साहित्यदर्पण (2.12) - भवानी शंकर शर्मा, पेज-261

36. (B) 37. (C) 38. (B) 39. (A) 40. (A) 41. (B) 42. (A) 43. (B) 44. (B) 45. (B)
46. (B) 47. (C) 48. (D)

49. रूढौ साध्यवसानायाः उपादानलक्षणायाः उदाहरणमस्ति– JNU MET -2015

(A) श्वेतो धावति (B) कलिङ्गः साहसिकः
(C) कुन्ताः प्रविशन्ति (D) गङ्गायां घोषः

स्रोत– साहित्यदर्पण - भवानी शंकर शर्मा, पेज-234

50. अधोलिखितेषु विश्वनाथानुसारं कतमद् रूढिमूलगौण-साध्यवसानायाः लक्षणाया उदाहरणं स्यात्? D.U. Ph.D-2016

(A) अश्वः श्वेतो धावति (B) राजा कण्टकं शोधयति
(C) एते कुन्ताः प्रविशन्ति (D) एतानि तैलानि हेमन्ते सुखानि

स्रोत– साहित्यदर्पण - भवानी शंकर शर्मा, पेज-237

51. (i) रसभेदाः सन्ति–UGC 25 J–2001, GJ-SET-2004
(ii) साहित्यदर्पण के अनुसार रस कितने हैं–

(A) 2 (B) 5
(C) 7 (D) 9

स्रोत– साहित्यदर्पण - भवानी शंकर शर्मा, पेज-16

52. साहित्यदर्पणानुसारं शान्तरसस्य स्थायीभावोऽस्ति– UGC 25 D–2006

(A) शमः (B) निर्वेदः
(C) विवेकः (D) माया

स्रोत– साहित्यदर्पण (3/245)-शालिग्राम शास्त्री, पेज–121

53. (i) विश्वनाथमतानुसारं काव्ये रसस्य स्थानं किम्?
(ii) विश्वनाथमतानुसारेण काव्ये रसो भवति–
(iii) साहित्यदर्पण में काव्य में रस की स्थिति को कहा गया है–UGC 25 D–2007, K-SET- 2013
(iv) साहित्यदर्पण के अनुसार काव्य में रस की स्थिति है? UP PGT–2004, 2010

(A) आत्मा (B) अवयवसंस्थानम्
(C) आभूषणम् (D) शरीरम्

स्रोत– साहित्यदर्पण - भवानी शंकर शर्मा, पेज-70.

54. काव्ये रीतेः किं स्वरूपम्? MGKV Ph. D–2016

(A) अलङ्कारस्वरूपम् (B) गुणस्वरूपम्
(C) सङ्घटनास्वरूपम् (D) आत्मस्वरूपम्

स्रोत– साहित्यदर्पण - शालिग्राम शास्त्री, पेज-270

55. रसनावृत्ति का उल्लेख किया है– UP PGT–2013

(A) आचार्य विश्वनाथ ने (B) आचार्य मम्मट ने
(C) आचार्य आनन्दवर्धन ने (D) आचार्य भामह ने

स्रोत– साहित्यदर्पण - भवानी शंकर शर्मा, पेज-51

56. विश्वनाथमतानुसारं वीररसः कतिविधः– UGC 25 J-2016

(A) द्विविधः (B) त्रिविधः
(C) पञ्चविधः (D) चतुर्विधः

स्रोत– साहित्यदर्पण - शालिग्राम शास्त्री, पेज-118

57. (i) विश्वनाथमते हास्यं कतिविधं भवति?
(ii) हास्यरसः कतिविधः भवति–
MGKV Ph. D–2016, UGC 25 J–2015, Jn–2017

(A) चतुर्विधम् (B) त्रिविधम्
(C) द्विविधम् (D) षड्विधम्

स्रोत– साहित्यदर्पण (3/217) - शालिग्राम शास्त्री, पेज-115

58. 'यत्र तु रतिः प्रकृष्टा नाभीष्टमुपैति...... ' इति कः? UGC-25J -2016

(A) विप्रलम्भः (B) संभोगः
(C) करुणः (D) वीरः

स्रोत– साहित्यदर्पण (3/186) - शालिग्राम शास्त्री, पेज-106

59. शान्तरसस्य वर्णः कः? UGC 25 J-2016

(A) नीलवर्णः (B) पीतवर्णः
(C) कुन्देन्दुसुन्दरच्छायः (D) रक्तवर्णः

स्रोत– साहित्यदर्पण (3/245) - शालिग्राम शास्त्री, पेज-121

60. 'श्लिष्टैः पदैरनेकार्थाभिधाने श्लेष इष्यते।' श्लेष के इस लक्षण के प्रतिपादक हैं– UP PGT–2000

(A) विश्वनाथ (B) मम्मट
(C) रुद्रट (D) भामह

स्रोत–साहित्यदर्पण (10.11)- शालिग्राम शास्त्री, पेज-282

61. 'शृङ्गारवीरशान्तानामेकोऽङ्गी रस इष्यते'-कस्य लक्षणमिदम्? K-SET-2013

(A) दृश्यकाव्यस्य (B) चम्पूकाव्यस्य
(C) महाकाव्यस्य (D) गद्यकाव्यस्य

स्रोत–साहित्यदर्पण (6.317) - शालिग्राम शास्त्री, पेज-225

49. (A) 50. (B) 51. (D) 52. (A) 53. (A) 54. (C) 55. (A) 56. (D) 57. (D) 58. (A) 59. (C) 60. (A) 61. (C)

62. (i) विश्वनाथानुसारं शब्दस्य कति शक्तयः?
(ii) विश्वनाथमते शब्दशक्तयः?
K-SET-2013, T-SET-2013

(A) द्वे (B) चतस्रः
(C) तिस्रः (D) पञ्च

स्रोत–साहित्यदर्पण - भवानी शंकर शर्मा, पेज-55

63. उच्चार्यत्वाद्यदेकत्र स्थाने तालुरदादिके।
सादृश्यं व्यञ्जनस्यैव .... उच्यते॥
रिक्तस्थान की पूर्ति कीजिये– UP PGT-2011

(A) छेकानुप्रासः (B) वृत्यानुप्रासः
(C) श्रुत्यानुप्रासः (D) अन्त्यानुप्रासः

स्रोत–साहित्यदर्पण (10.5) - शालिग्राम शास्त्री, पेज-276

64. विश्वनाथ ने काव्य में 'वक्रोक्ति' को किस रूप में माना है– UP PGT–2010

(A) रीति (B) गुण
(C) अलङ्कार (D) आत्मा

स्रोत– साहित्यदर्पण - भवानी शंकर शर्मा, पेज-137

65. साहित्यदर्पणे श्लेषः कतिविधः निरूपितः– BHU AET–2010

(A) अष्टविधः (B) सप्तविधः
(C) षड्विधः (D) चतुर्विधः

स्रोत– साहित्यदर्पण (10/11) - शालिग्राम शास्त्री, पेज-282

66. सत्यर्थे पृथगर्थायाः .... विनिगद्यते? UP PGT-2011

(A) अनुप्रासः (B) यमकम्
(C) उपमा (D) व्यतिरेकः

स्रोत– साहित्यदर्पण (10/08)- शालिग्राम शास्त्री, पेज-280

67. वक्रोक्तिः कतिविधा? HAP - 2016

(A) द्विविधा (B) त्रिविधा
(C) चतुर्विधा (D) पञ्चविधा

स्रोत– काव्यप्रकाश (सू0-102) आचार्य विश्वेश्वर, पेज-401

68. साहित्यदर्पणस्य कस्मिन् परिच्छेदे नाट्यतत्त्वानि वर्णितानि– BHU B.Ed–2011, BHU AET–2010

(A) प्रथमे (B) तृतीये
(C) चतुर्थे (D) षष्ठे

स्रोत– साहित्यदर्पण - भवानी शंकर शर्मा, पेज-23

69. उपमा-अलङ्कारे भवति – RPSC ग्रेड I PGT - 2014

(A) उपमानोपमेययोः स्पष्टं सुन्दरं साम्यम्
(B) गूढं वैकृतिकं साम्यम्
(C) किञ्चित् विचित्रं स्यात् साम्यम्
(D) अस्पष्टं प्राकृतिकं साम्यम्

स्रोत– साहित्यदर्पण (10/15)- शालिग्राम शास्त्री, पेज-292

70. साहित्यदर्पणे उपरूपकाणां कति भेदाः आख्याताः– BHU AET–2010

(A) 10 (B) 18
(C) 12 (D) 15

स्रोत– साहित्यदर्पण (6.6) - शालिग्राम शास्त्री, पेज-170

71. 'त्रिवर्गं साध्यम्'..........
उचित विधा द्वारा रिक्तस्थान की पूर्ति कीजिए। UP PGT-2011

(A) महाकाव्यम् (B) खण्डकाव्यम्
(C) नाट्यम् (D) चम्पूकाव्यम्

स्रोत– साहित्यदर्पण - शालिग्राम शास्त्री, पेज-11

72. 'अश्राव्यं खलु यद्वस्तु तदिह स्वगतं मतम्' यह पंक्ति कहाँ प्राप्त होती है– BHU MET–2012

(A) दशरूपक में (B) नाट्यशास्त्र में
(C) चन्द्रालोक में (D) साहित्यदर्पण में

स्रोत– साहित्यदर्पण (6/137) - शालिग्राम शास्त्री, पेज-201

73. संस्कृत नाटक में 'नान्दी' का उद्देश्य है– UP PGT–2000

(A) अर्थप्राप्ति (B) यशप्राप्ति
(C) आनन्दप्राप्ति (D) विघ्नोपशान्ति

स्रोत– साहित्यदर्पण (6/23)- शालिग्राम शास्त्री, पेज-172

74. रूपकों में स्त्रियों की भाषा होती है– UP PGT–2000

(A) संस्कृत (B) संस्कृत और प्राकृत
(C) प्राकृत (D) शौरसेनी

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-272

75. नाटकों में 'विष्कम्भक' का प्रयोग होता है– UP PGT–2002

(A) प्रारम्भ में (B) अन्त में
(C) मध्य में (D) कहीं पर भी

स्रोत–(i) दशरूपक - बैजनाथ पाण्डेय, पेज-119
(ii) साहित्यदर्पण-शालिग्राम शास्त्री, पेज-180

62. (C) 63. (C) 64. (C) 65. (A) 66. (B) 67. (A) 68. (D) 69. (A) 70. (B) 71. (C)
72. (D) 73. (D) 74. (C) 75. (A)

76. नाटकों में 'प्रवेशक' की भाषा होती है– UP PGT–2002

(A) संस्कृत (B) संस्कृत/प्राकृत
(C) प्राकृत (D) कोई नहीं

स्रोत–दशरूपक-बैजनाथ पाण्डेय, पेज-119

77. सभी रूपकों का सामान्य लक्षण किस रूपक के समान है? UP PGT–2003

(A) भाण (B) प्रहसन
(C) प्रकरण (D) नाटक

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास, उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-437

78. नाटक में विदूषक होता है– UP PGT–20004

(A) नाटक का नायक (B) नाटक का प्रतिनायक
(C) हास्यरस का पात्र (D) करुणरस का पात्र

स्रोत– साहित्यदर्पण (3/42) - शालिग्राम शास्त्री, पेज-68

79. नाटक में जो बात सुनने योग्य नहीं होती, उसे कहते हैं– UP PGT–2004, 2010

(A) प्रकाश (B) आत्मगत/स्वगत
(C) अपवारित (D) जनान्तिक

स्रोत– साहित्यदर्पण (6/137)-शालिग्राम शास्त्री, पेज-201

80. नाटकों में भरतवाक्य का प्रयोग होता है– UP PGT–2004, H TET-2015

(A) प्रारम्भ में (B) अन्त में
(C) मध्य में (D) कहीं भी

स्रोत– अभिज्ञानशाकुन्तलम्-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-453,454

81. 'कैशिकीवृत्ति' किस रस में होती है– UP PGT–2005

(A) शृङ्गाररस में (B) वीररस में
(C) रौद्ररस में (D) अद्भुतरस में

स्रोत– दशरूपक (2/62)-रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-195

82. नाटक में प्रवेशक का प्रयोग होता है– UP PGT–2005

(A) प्रारम्भ में (B) अन्त में
(C) दो अङ्कों के मध्य में (D) चार अङ्कों के मध्य में

स्रोत–(i) अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-463
(ii) साहित्यदर्पण (6.57) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–180

83. (i) 'नान्दी' प्रयुक्त होता है–
(ii) नान्दी इत्यस्य व्यवहारः कस्मिन् ग्रन्थे भवति– MGKV Ph. D–2016, UP PGT–2009

(A) काव्य में (B) चम्पूकाव्य में
(C) गद्यकाव्य में (D) नाटक में

स्रोत– साहित्यदर्पण (6/22.23)- शालिग्राम शास्त्री, पेज-172

84. (i) नाटके न्यूनतः कति अङ्काः भवन्ति–
(ii) नाटक में कम से कम व अधिक से अधिक कितने अङ्क होने चाहिए? UP PGT–2009, UGC 25 J–2005, D–2010

(A) 5–10 (B) 5–7
(C) 5–7 (D) 7–10

स्रोत– साहित्यदर्पण (6/8)- शालिग्राम शास्त्री, पेज-171

85. दस अङ्कों की रचना है– UGC 25 D–2003

(A) भाण (B) प्रकरण
(C) डिम (D) व्यायोग

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-307

86. प्रहसन की कथावस्तु होती है– UGC 25 J–2004

(A) इतिहास प्रसिद्ध (B) कविकल्पित
(C) मिश्रित (D) लौकिक

स्रोत– साहित्यदर्पण (6.264) - शालिग्राम शास्त्री, पेज-220

87. चत्वारः सन्धयो भवन्ति– UGC 25 D–2005

(A) नाटके (B) नाटिकायाम्
(C) प्रकरणे (D) भाणे

स्रोत– साहित्यदर्पण (6/272)- शालिग्राम शास्त्री, पेज-221

88. वीथ्यां प्रयुक्ता वृत्तिः– UGC 25 J–2007 D–2012

(A) भारती (B) सात्वती
(C) कैशिकी (D) आरभटी

स्रोत– साहित्यदर्पण (6/254)- शालिग्राम शास्त्री, पेज-217

89. (i) व्यायोगे नायकः– UGC 25 J–2007, D–2012
(ii) व्यायोगे नायकः कीदृशः?

(A) धीरोदात्तः (B) धीरशान्तः
(C) धीरललितः (D) धीरोद्धतः

स्रोत– साहित्यदर्पण (6/233)- शालिग्राम शास्त्री, पेज-215

76. (C)	**77. (D)**	**78. (C)**	**79. (B)**	**80. (B)**	**81. (A)**	**82. (C)**	**83. (D)**	**84. (A)**	**85. (B)**
86. (B)	**87. (B)**	**88. (C)**	**89. (D)**						

90. (i) नाटके इतिवृत्तं किम्? UGC 25 J–2010, 2012,
(ii) नाटके इतिवृत्तं किं भवति? GJ SET -2014
(A) कल्पितम् (B) प्रसिद्धम्
(C) अप्रसिद्धम् (D) मिश्रम्
स्रोत– साहित्यदर्पण (6/7) - शालिग्राम शास्त्री, पेज-170

91. सूत्रधार होता है? UP PGT–2004, 2005
(A) नायक के रूप में अभिनय करने के लिए
(B) नाटक आरम्भ करने के लिए
(C) अभिनय का निर्देशन एवं नियन्त्रण करने के लिए
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं
स्रोत– छन्दोऽलंकारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-48

92. विभावेनानुभावेन व्यक्तः सञ्चारिणा तथा रसतामेति रत्यादिः स्थायिभावः सचेतसाम् अत्र 'व्यक्तः' इत्यस्य पदस्य कोऽर्थः? MGKV Ph. D–2016
(A) दध्यादिन्यायेन परिणतः (B) दीपेन घट इव प्रतीतः
(C) स्थायी (D) लक्षितः
स्रोत–साहित्यदर्पण (3.1) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–47

93. अभिनेतागण जहाँ पर नाटक के उपयुक्त वेशभूषा धारण करते हैं, उसे कहते हैं–UP PGT–2004, 2010
(A) पूर्वरङ्ग (B) नेपथ्य
(C) जनान्तिक (D) स्वगत
स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-460

94. रामकथायां जटायु–आख्यानम् अर्थप्रकृतिः अस्ति– UP PGT–2000
(A) बीज-अर्थप्रकृतिः (B) पताका-अर्थप्रकृतिः
(C) प्रकरी-अर्थप्रकृतिः (D) कार्य-अर्थप्रकृतिः
स्रोत– दशरूपक- रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-14

95. ''यन्नाट्यवस्तुनः पूर्वं रङ्गविघ्नोपशान्तये।
कुशीलवाः प्रकुर्वन्ति .... स उच्यते॥''
उपर्युक्त लक्षण में रिक्तस्थान का पूरक शब्द है– UP PGT–2000
(A) सूत्रधारः (B) पूर्वरङ्गः
(C) संस्थापकः (D) रङ्गमञ्चः
स्रोत– साहित्यदर्पण (6/22)- शालिग्राम शास्त्री, पेज-172

96. 'तथा रामायणादीनां भविता दुःखहेतुता' पंक्ति ग्रहण की गयी है– UP PGT–2013
(A) काव्यप्रकाश से (B) साहित्यदर्पण से
(C) नाट्यशास्त्र से (D) वेदान्तसार से
स्रोत– साहित्यदर्पण (3.6) - शालिग्राम शास्त्री, पेज-52

97. ''श्रवणाद्दर्शनाद्वापि मिथः संरूढरागयोः।
दशाविशेषो योऽप्राप्तौ...... स उच्यते॥''
रिक्तस्थानं साहित्यदर्पणतः पूरयत UGC 25 D–2013
(A) पूर्वरागः (B) मानः
(C) प्रवासः (D) करुण-विप्रलम्भः
स्रोत– साहित्यदर्पण (3/188)- शालिग्राम शास्त्री, पेज-106

98. स्थायीभावोऽस्ति– CCSUM - Ph.D.-2016
(A) तिरोधातुं क्षमाः (B) तिरोधातुमक्षमाः
(C) अनित्यः (D) न कोऽपि
स्रोत– नाट्यशास्त्र - ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज-160

99. आचार्यविश्वनाथेन वाक्यनिष्पत्तौ कति तत्त्वानि निर्दिष्टानि? HE–2015
(A) त्रीणि (B) चत्वारि
(C) द्वे (D) पञ्च
स्रोत– साहित्यदर्पण (2/1) - भवानी शंकर शर्मा, पेज-171

100. साहित्यदर्पणानुसारं फलावाप्तौ अतित्वरान्वितः व्यापारः भवति? UGC 25 D–2015
(A) आरम्भः (B) नियताप्तिः
(C) प्राप्त्याशा (D) प्रयत्नः
स्रोत– साहित्यदर्पण - शालिग्राम शास्त्री, पेज-183

101. विश्वनाथमते सङ्केतः गृह्यते.......... UGC 25 J–2015
(A) जातौ, गुणे, द्रव्ये, क्रियायाञ्च (B) केवलं जातिगुणयोः
(C) केवलं द्रव्ये (D) केवलं क्रियायाम्
स्रोत– साहित्यदर्पण (2/4)- भवानी शंकर शर्मा, पेज-194

102. विश्वनाथेन गोबलीवर्दन्यायेन कयोः भेदः स्वीकृतः? D.U.- Ph.D-2016
(A) अनुभावसात्त्विकभावयोः (B) रसभावयोः
(C) स्थायिव्यभिचारिभावयोः (D) आलम्बनोद्दीपनविभावयोः
स्रोत–साहित्यदर्पण (3/134) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–94

90. (B) 91. (C) 92. (A) 93. (B) 94. (C) 95. (B) 96. (B) 97. (A) 98. (B) 99. (A) 100. (D) 101. (A) 102. (A)

103. दृश्यकाव्यं रूपकमिति कथ्यते यतोहि तत्र – D.U. M. Phil -2016
(A) रामादिस्वरूपस्य आरोपः भवति
(B) अवस्थानुकृतिर्भवति
(C) रूपकालङ्कारस्य प्रचुरः प्रयोगः भवति
(D) उक्तं सर्वमेव भवति
स्रोत– साहित्यदर्पण - शालिग्राम शास्त्री, पेज-170

104. 'श्वेतो धावति' इत्यत्र तदा एव लक्षणा स्यात् यदा– D.U. M. Phil -2016
(A) गुणे अभिधा स्वीक्रियते
(B) गुणिनि अभिधा स्वीक्रियेत
(C) गुणे गुणिनि च अभिधा स्वीक्रियेत
(D) जातौ अभिधा स्वीक्रियेत
स्रोत–साहित्यदर्पण (2/6) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–31

105. साहित्यदर्पणमते नीलवर्णः महाकालदैवतः रसः कः भवति– UGC 25 Jn–2017
(A) रौद्रः (B) वीरः
(C) भयानकः (D) वीभत्सः
स्रोत– साहित्यदर्पण - शालिग्राम शास्त्री, पेज-120

106. (i) वीररसस्य स्थायीभावः कः?
(ii) वीररसस्य स्थायीभावोऽस्ति? K-SET-2014, 2015, T-SET-2013
(A) हासः (B) शोकः
(C) क्रोधः (D) उत्साहः
स्रोत– काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-97

107. 'नायिका कुलजा क्वापि वेश्या क्वापि द्वयं क्वचित्' इति कस्य रूपकस्य नायिकालक्षणम् – CCSUM - Ph.D. - 2016
(A) नाटकम् (B) व्यायोगः
(C) ईहामृगः (D) प्रकरणम्
स्रोत–साहित्यदर्पण (6/226)-शालिग्राम शास्त्री, पेज-214-215

108. भाणे भवन्ति अङ्काः – CCSUM- Ph.D-2016
(A) एकः (B) त्रयः
(C) द्वौ (D) चत्वारः
स्रोत– साहित्यदर्पण (6/228)- शालिग्राम शास्त्री, पेज-215

109. व्यायोगो भवति– CCSUM- Ph.D-2016
(A) ख्यातेतिवृत्त्यात्मकः (B) कल्पितेतिवृत्त्यात्मकः
(C) उभयथा (D) न कोऽपि
स्रोत– साहित्यदर्पण (6/231) - शालिग्राम शास्त्री, पेज-215

110. अल्पमात्रं समुद्दिष्टं बहुधा यद्विसर्पति। फलावसानं यच्चैव .... तत् किम् अभिधीयते? UGC 25 Jn–2017
(A) बीजम् (B) बिन्दुः
(C) पताका (D) प्रकरी
स्रोत– साहित्यदर्पण (6/65) - शालिग्राम शास्त्री, पेज-182

111. वाक्यं .... काव्यम्? GJ - SET-2014
(A) भावात्मकं (B) रसात्मकं
(C) क्रियात्मकं (D) शब्दात्मकम्
स्रोत– साहित्यदर्पण - भवानी शंकर शर्मा, पेज-157

112. विश्वनाथोक्तदिशा अशीतिभेदाः भवन्ति– GJ- SET-2004
(A) अभिधायाः (B) लक्षणायाः
(C) व्यञ्जनायाः (D) तात्पर्यायाः
स्रोत– साहित्यदर्पण - भवानी शंकर शर्मा, पेज-59

113. (i) सर्गबन्धो.................. GJ SET-2004, 2008
(ii) सर्गबन्धो उच्यते–
(A) दृश्यकाव्यम् (B) गद्यकाव्यम्
(C) महाकाव्यम् (D) गीतिकाव्यम्
स्रोत– साहित्यदर्पण (6/315) - शालिग्राम शास्त्री, पेज-225

114. (i) साहित्यदर्पणकारेण प्रयुक्तस्य रसात्मकमिति पदस्य विग्रहः ....भवति? GJ- SET-2016
(ii) साहित्यदर्पणे रसात्मकम् इति पदस्य विग्रहः – KL- SET-2015
(A) रसे आत्मा यस्य (B) रसः आत्मा यस्य
(C) रस एव आत्मा यस्य (D) रसः आत्मनि यस्य
स्रोत– साहित्यदर्पण - शालिग्राम शास्त्री, पेज-19

103. (A) 104. (A) 105. (D) 106. (D) 107. (D) 108. (A) 109. (A) 110. (A) 111. (B) 112. (B) 113. (C) 114. (C)

115. नाटके अङ्गीरसः कः? GJ- SET-2013

(A) शृङ्गार एव (B) वीरः एव

(C) शृङ्गारो वीर एव वा (D) हास्यः एव

स्रोत– साहित्यदर्पण (6/10) - शालिग्राम शास्त्री, पेज-171

116. महाकाव्ये न्यूनातिन्यूनाः कति सर्गाः? GJ- SET-2013

(A) 28 (B) 35

(C) 12 (D) 8

स्रोत– साहित्यदर्पण (6.320)-शालिग्राम शास्त्री, पेज-225

117. (i) महाकाव्यस्य लक्षणम् – GJ- SET-2003,
(ii) महाकाव्यस्य लक्षणं किम्? MH SET-2013

(A) धर्मबद्धता (B) कर्मबद्धता

(C) स्वर्गबद्धता (D) सर्गबद्धता

स्रोत– साहित्यदर्पण (6.315) - शालिग्राम शास्त्री, पेज-225

118. (i) .... ख्यातवृत्तं स्यात्– रिक्ते पदं योजितं स्यात् –
(ii) नाटकं ख्यातवृत्तं स्यात् पञ्चसन्धिसमन्वितं किम्?
MGKV Ph. D–2016, UPGDC-2014, GJ SET-2008

(A) नाटकम् (B) त्रोटकम्

(C) प्रकरणम् (D) नाट्यम्

स्रोत– साहित्यदर्पण (6.7) - शालिग्राम शास्त्री, पेज-170

119. साहित्यदर्पणे कस्याचार्यस्य काव्यलक्षणं प्रत्याख्यातम्
RPSC SET-2013, 14

(A) पण्डितराजजगन्नाथस्य (B) दण्डिनः

(C) भामहस्य (D) मम्मटस्य

स्रोत– काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-18

120. शून्यं स्थानं यथोचितेन पदेन पूर्यताम्–
कीटानुविद्धरत्नादिसाधारण्येन...... WB. SET-2010

(A) काव्यता (B) शून्यता

(C) रम्यता (D) न्यूनता

स्रोत– साहित्यदर्पण - भवानी शंकर शर्मा, पेज-126

121. कस्य रूपकस्य नायिका द्विधा कुलस्त्री गणिका च?
MH- SET-2013

(A) नाटकस्य (B) प्रहसनस्य

(C) प्रकरणस्य (D) भाणस्य

स्रोत– साहित्यदर्पण (6/226) - शालिग्राम शास्त्री, पेज-215

122. विश्वनाथेन कः रसः इति प्रोक्तः – MH-SET-2013

(A) आस्वद्यते इति (B) चर्व्यते इति

(C) अभिव्यज्यते इति (D) रस्यते इति

स्रोत– साहित्यदर्पण - भवानी शंकर शर्मा, पेज–157

123. निःशेषच्युतचन्दनम् .... इति विश्वनाथानुसारं कस्या वृत्तेः उदाहरणम् MH-SET-2013

(A) अभिधायाः (B) व्यञ्जनायाः

(C) विपरीतलक्षणायाः (D) भारत्याः

स्रोत– साहित्यदर्पण - अभिराजराजेन्द्र मिश्र, पेज–195

124. विश्वनाथानुसारं काव्यशरीरे काव्यगुणाः .... वर्तन्ते?
GJ SET–2016

(A) कटककुण्डलादिवत् (B) आत्मवत्

(C) अवयवसंस्थानवत् (D) शौर्यादिवत्

स्रोत–साहित्यदर्पण - शालिग्राम शास्त्री, पेज–16

125. ''प्रतिकूलतामुपगते हि विधौ विफलत्वमेति बहुसाधनता'' अस्यां पंक्तौ कस्मिन् पदे श्लेषालङ्कारः अस्ति – RPSC ग्रेड-I PGT–2015

(A) प्रतिकूलता (B) विफलत्वम्

(C) बहुसाधनता (D) विधौ

स्रोत–साहित्यदर्पण (10/11) - शालिग्राम शास्त्री, पेज-282

126. विश्वनाथानुसारं रूपकं कतिविधम्– T-SET-2013

(A) दशविधम् (B) अष्टविधम्

(C) षड्विधम् (D) एकादशविधम्

स्रोत–साहित्यदर्पण (6.3) - शालिग्राम शास्त्री, पेज-170

127. विश्वनाथानुसारं महाकाव्ये सर्गाः स्युः T-SET-2013

(A) दशाधिकाः (B) नवाधिकाः

(C) एकादशाधिकाः (D) अष्टाधिकाः

स्रोत– साहित्यदर्पण (6.320) - शालिग्राम शास्त्री, पेज-225

128. वाक्यं स्याद् योग्यता .... आसक्तियुक्तः पदोच्चयः।
T-SET-2014

(A) सन्निधिः (B) सार्थकता

(C) गुणवत्ता (D) आकांक्षा

स्रोत– साहित्यदर्पण - शालिग्राम शास्त्री, पेज-24

129. 'अर्पणं स्वस्य वाक्यार्थे परस्यान्वयसिद्धये' परिभाषेयं कस्याः लक्षणायाः सन्दर्भे समीचीना अस्ति–T-SET-2014

(A) उपादानलक्षणा (B) लक्षणलक्षणा

(C) सारोपालक्षणा (D) सादृश्यालक्षणा

स्रोत– साहित्यदर्पण (2.7) - शालिग्राम शास्त्री, पेज-32

115. (C) 116. (D) 117. (D) 118. (A) 119. (D) 120. (A) 121. (C) 122. (D) 123. (B) 124. (D)
125. (D) 126. (A) 127. (D) 128. (D) 129. (B)

130. 'अग्निना सिञ्चति' इति वाक्यं प्रमाणं न कस्मात्? MH-SET-2013

(A) अनुभवविरोधात् (B) योग्यताविरहात्
(C) आकांक्षाविरहात् (D) सान्निध्यभावात्

स्रोत– साहित्यदर्पण (2.7) - शालिग्राम शास्त्री, पेज-24

131. विश्वनाथस्य इमाम् उक्तिम् उचितशब्देन पूरयत .... महावाक्यम्– T-SET-2014

(A) दीर्घवाक्यम् (B) वाक्यानां समूहः
(C) वाक्योच्चयः (D) प्रकरणम्

स्रोत– साहित्यदर्पण - शालिग्राम शास्त्री, पेज-25

132. साहित्यदर्पणानुसारेण एषु कस्य रूपकमध्ये गणनं न भवति– UGC 25 Jn- 2017

(A) समवकारस्य (B) नाटिकायाः
(C) प्रकरणस्य (D) प्रहसनस्य

स्रोत– साहित्यदर्पण (6.3) - शालिग्राम शास्त्री, पेज-170

133. (i) विश्वनाथमतमनुसृत्य जातिगुणद्रव्यक्रियासु कः? (ii) जातिगुणद्रव्यक्रियासु कः गृह्यते? K-SET-2015, MH-SET-2011

(A) लक्ष्यार्थः (B) व्यङ्ग्यार्थः
(C) सङ्केतः (D) तात्पर्यार्थः

स्रोत– साहित्यदर्पण (2.4) - शालिग्राम शास्त्री, पेज-27

134. हास्यरसप्रधानं रूपकं किम्? K- SET-2015

(A) प्रहसनम् (B) डिमः
(C) प्रकरणम् (D) वीथी

स्रोत– साहित्यदर्पण (6.265) - शालिग्राम शास्त्री, पेज-220

135. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत– K- SET-2015

(A) शृङ्गारः 1. निर्वेदः
(B) करुणः 2. विस्मयः
(C) अद्भुतः 3. शोकः
(D) शान्तः 4. रतिः

	क	ख	ग	घ
(A)	4	3	2	1
(B)	2	4	1	3
(C)	1	4	3	2
(D)	1	2	3	4

स्रोत– साहित्यदर्पण (3/175) - शालिग्राम शास्त्री, पेज-104-105

136. अधोलिखितेषु किम् अभिनये नान्तर्भवति–K-SET-2013

(A) आङ्गिकम् (B) निर्वेदः
(C) वाचिकम् (D) आहार्यम्

स्रोत– साहित्यदर्पण (6/2) - शालिग्राम शास्त्री, पेज-170

137. अध्यवसानस्वरूपम्– K-SET-2013

(A) केवलम् आरोपः (B) सादृश्यात्मकम्
(C) निगरणाध्यवसानम् (D) अपह्नवात्मकम्

स्रोत– साहित्यदर्पण (2/8) - शालिग्राम शास्त्री, पेज-33

138. रिक्तस्थानं पूरयत– ''अविरुद्धा विरुद्धा वा यं तिरोधातुमक्षमाः। आस्वादाङ्कुरकन्दोऽसौ भावः .... इति सम्मतः॥'' UGC 25 J–2014

(A) सात्त्विकः (B) सञ्चारी
(C) स्थायी (D) अनुभावः

स्रोत–साहित्यदर्पण (3/174)-शालिग्राम शास्त्री, पेज-104-105

139. स्वरस्य वैषम्येऽपि यत् शब्दसाम्यं तत्? BHU AET–2010, MP वर्ग-1 (PGT)–2012

(A) यमकम् (B) श्लेषः
(C) अनुप्रासः (D) भाषासमः

स्रोत– साहित्यदर्पण (10/3)- शालिग्राम शास्त्री, पेज-275

140. ''अनुप्रासः शब्दसाम्यं वैषम्येऽपि स्वरस्य यत्''– इत्यत्र शब्दसाम्यपदस्य तात्पर्यमस्ति– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011

(A) पदसाम्यम् (B) वर्णसाम्यम्
(C) स्वरसाम्यम् (D) व्यञ्जनसाम्यम्

स्रोत– साहित्यदर्पण (10/3)- शालिग्राम शास्त्री, पेज-275

141. साहित्यदर्पणे काव्यप्रयोजनं मतम्? MGKV Ph. D–2016

(A) यशः (B) त्रिवर्गः
(C) चतुर्वर्गः (D) सद्यः परनिर्वृत्तिः

स्रोत– साहित्यदर्पण (1.2) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–7-8

130. (B) 131. (C) 132. (B) 133. (C) 134. (A) 135. (A) 136. (B) 137. (C) 138. (C) 139. (C) 140. (B) 141. (C)

32 ध्वन्यालोक

1. (i) ध्वनिसिद्धान्त के प्रतिष्ठापक आचार्य हैं–
(ii) ध्वनिसिद्धान्तस्य प्रवर्तकः कः?
(iii) ध्वनिसम्प्रदाय के प्रवर्तक हैं? UGC 73 D–1996
RPSC SET- 2010, BHU MET-2016
(A) विश्वनाथ (B) दण्डी
(C) वामन (D) आनन्दवर्धन

संस्कृत का अर्वाचीन समीक्षात्मक काव्यशास्त्र-राजेन्द्र मिश्र, पेज-94

2. (i) ''काव्यस्यात्मा ध्वनिः'' यह कथन है–
(ii) 'काव्यस्यात्मा ध्वनिः' ब्रूते—
(iii) 'काव्यस्यात्मा ध्वनिः' इति कस्य मतमस्ति?
(iv) 'ध्वनिरात्मा काव्यस्य' इस परिभाषा से सम्बद्ध आचार्य हैं– UP PGT–2003, 2004,
CCSUM Ph.D-2016, UGC 25 J–2000, UGC 73 J–2006, BHU Sh.ET–2011, DSSSB TGT–2014
(A) अभिनवगुप्त (B) आनन्दवर्धन
(C) मम्मट (D) जगन्नाथ

स्रोत–ध्वन्यालोक (1/1) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-2

3. ध्वन्यालोकः विभक्तः अस्ति–MGKV Ph. D–2016
(A) उल्लासेषु (B) परिच्छेदेषु
(C) उद्योतेषु (D) अध्यायेषु

स्रोत– संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज–580

4. (i) आनन्दवर्धनाचार्यमतानुसारं काव्यस्यात्मा भवति–
(ii) काव्यस्यात्मा कः – UGC 25 J–2000, 2009
(iii) आनन्दवर्धन के अनुसार काव्य की आत्मा है–
(iii) आनन्दवर्धनमते काव्यस्यात्मा भवति–
BHU MET–2010, MH SET–2013,
UGC 73 J–1991, 2008, 2010
(A) ध्वनिः (B) रसः
(C) रीतिः (D) अलङ्कारः

स्रोत–ध्वन्यालोक (1/1) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-2

5. 'लोचनं' कस्य ग्रन्थस्य आख्यानम् अस्ति?
DSSSB PGT–2014, UGC 25 D–2010, MH- SET-2013
(A) नाट्यशास्त्रस्य (B) काव्यादर्शस्य
(C) ध्वन्यालोकस्य (D) काव्यालङ्कारस्य

स्रोत–ध्वन्यालोक - चण्डिका प्रसाद शुक्ल, भू0 पेज-14

6. आनन्दवर्धन किस सम्प्रदाय के आद्यप्रवर्तक हैं?
BHU MET–2008
(A) अलङ्कार (B) रस
(C) औचित्य (D) ध्वनि

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, भू0 पेज-48

7. आनन्दवर्धन के द्वारा रचित ग्रन्थ क्या है?
BHU MET–2010
(A) ध्वन्यालोक (B) अग्निपुराण
(C) विष्णुपुराण (D) नाट्यशास्त्र

स्रोत–ध्वन्यालोक - चण्डिका प्रसाद शुक्ल, भू0पेज-13

8. ''प्रतीयमानं पुनरन्यदेव वस्त्वस्ति वाणीषु महाकवीनाम्'' सिद्धान्तस्यास्य प्रतिष्ठापकः आचार्यः अस्ति–
UP GDC–2012
(A) मम्मटाचार्यः (B) क्षेमेन्द्रः
(C) अभिनवगुप्तः (D) आनन्दवर्धनः

स्रोत–ध्वन्यालोक (1/4) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-13

9. ध्वनिप्रस्थापनपरमाचार्य हैं– UGC 73 S–2013
(A) आनन्दवर्धनः (B) मम्मटः
(C) पण्डितराजजगन्नाथः (D) कविराजविश्वनाथः

(i) संस्कृत काव्यशास्त्र का आलोचनात्मक इतिहास-अमरनाथ पाण्डेय, पेज–121
(ii) काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, भू0 पेज–18

10. ''ध्वनिसम्प्रदायस्य' कः समर्थकः?
BHU Sh. ET–2013, MGKV Ph.D–2016
(A) आनन्दवर्धनः (B) विश्वनाथः
(C) जयदेवः (D) वामनः

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, भू0पेज-18

1. (D)	2. (B)	3. (C)	4. (A)	5. (C)	6. (D)	7. (A)	8. (D)	9. (B)	10. (A)

11. 'ध्वन्यालोकः' इत्यस्मिन् ग्रन्थे कति उद्योताः सन्ति– UGC 25 D–2014

(A) चत्वारः (B) पञ्च
(C) षट् (D) सप्त

स्रोत–ध्वन्यालोक - चण्डिका प्रसाद शुक्ल, भू0पेज-13

12. काव्यस्यात्मा स एवार्थः .... इत्यादिकारिकायाः रचयिताऽस्ति– UP GDC–2014

(A) मम्मटः (B) कैय्यटः
(C) भरतमुनिः (D) आनन्दवर्धनः

स्रोत–ध्वन्यालोक (1/5) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-29

13. ध्वन्यालोके ध्वनिविरोधिनां कति पक्षाः भवन्ति? UP GDC–2014

(A) पञ्च (B) चत्वारः
(C) अनेके (D) त्रयः

स्रोत–ध्वन्यालोक - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-2,3

14. ध्वनि को काव्य की आत्मा मानने वाले आचार्य हैं– UP PGT–2013

(A) आनन्दवर्धन (B) क्षेमेन्द्र
(C) भामह (D) वामन

स्रोत–ध्वन्यालोक (1/1) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-2

15. 'ध्वन्यालोक' किस शताब्दी का ग्रन्थ है? UGC -(H) D –2015

(A) सातवीं शताब्दी (B) आठवीं शताब्दी
(C) नौवीं शताब्दी (D) ग्यारहवीं शताब्दी

संस्कृत का अर्वाचीन समीक्षात्मक काव्यशास्त्र-राजेन्द्र मिश्र, पेज-94

16. काव्यास्यात्मा स एवार्थः .... इति कारिकया ध्वनेः .... स्थाप्यते।। KL-SET-2014

(A) सद्भावम् (B) साधुभावम्
(C) लक्षणम् (D) उदाहरणम्

स्रोत–ध्वन्यालोक (1/5) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-31

17. आनन्दवर्धन का सम्बन्ध इनमें से किससे है? BHU MET–2015

(A) अलङ्कार सम्प्रदाय (B) रीति सम्प्रदाय
(C) वक्रोक्ति सम्प्रदाय (D) ध्वनि सम्प्रदाय

स्रोत–काव्यप्रकाश-आचार्य विश्वेश्वर, भू0पेज-18

18. ध्वनिप्रभेदेषु उत्कृष्टः कः? UGC 25 J–2012

(A) अलङ्कारध्वनिः (B) भावध्वनिः
(C) रसध्वनिः (D) वस्तुध्वनिः

स्रोत–ध्वन्यालोक - आचार्य विश्वेश्वर, भू0पेज-15

19. ध्वन्यालोके प्रतीयमानस्य तृतीयः प्रभेदः कः उक्तः? UGC 25 S–2013

(A) अलङ्कारादिः (B) गुणादिः
(C) रसादिः (D) इत्यादिः

स्रोत–ध्वन्यालोक - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-18

20. अधोलिखित में कौन-सा सिद्धान्त ध्वनिसिद्धान्त का मूल आधार है? UP GIC–2009

(A) शब्दब्रह्मत्व (B) शब्दनित्यत्व
(C) स्फोटवाद (D) अभिधावृत्ति

स्रोत–काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-28-29

21. ध्वन्यालोक में 'काव्यस्यात्मा एवार्थः' से अभिप्राय है– UP GIC–2009

(A) करुण रस (B) प्रतीयमान अर्थ
(C) वाच्यार्थ (D) लक्ष्यार्थ

स्रोत–ध्वन्यालोक - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-29

22. ध्वनिकाव्यं भवति– UP GDC–2012

(A) यत्र वाच्येन तिरस्कृतं व्यङ्ग्यप्रधानम्
(B) यत्र वाच्यातिशयि व्यङ्ग्यं प्रधानम्
(C) यत्र वाच्यव्यङ्ग्ययोः समं प्राधान्यम्
(D) यत्र व्यङ्ग्योपस्कृतं वाच्यम्

स्रोत–काव्यप्रकाश (1/4) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-28

23. 'भ्रम धार्मिक विस्रब्धः' इति पद्ये व्यङ्ग्यमस्ति– UP GDC–2012

(A) वाच्ये प्रतिषेधरूपे व्यङ्ग्यं विधिरूपम्
(B) वाच्ये विधिरूपे व्यङ्ग्यं प्रतिषेधरूपम्
(C) वाच्ये प्रतिषेधरूपे अनुभयरूपम्
(D) वाच्यात् विभिन्नविषयत्वेन व्यवस्थापितम्

स्रोत–ध्वन्यालोक (1/4) आचार्य विश्वेश्वर, पेज-13

11. (A) 12. (D) 13. (D) 14. (A) 15. (C) 16. (A) 17. (D) 18. (C) 19. (C) 20. (C) 21. (B) 22. (B) 23. (B)

24. ध्वन्यालोकमते ध्वनेः निराकरणं कृतम्?

RPSC ग्रेड I PGT -2014

(A) अभाववादिभिः (B) अनिर्वचनीयतावादिभिः

(C) भाक्तवादिभिः (D) उपर्युक्तैः सर्वैः

स्रोत–ध्वन्यालोक (1/1) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–2-3

25. ''भाक्तमाहुस्तमन्ये'' इति कथनमस्ति–

UGC 73 D–2004

(A) ध्वनिवादिनाम् (B) स्फोटवादिनाम्

(C) अलङ्कारवादिनाम् (D) रीतिवादिनाम्

स्रोत–ध्वन्यालोक (1/1) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-2

26. ध्वन्यभाववादिनां विकल्पाः सन्ति–UGC 73 J–2012

(A) चत्वारः (B) पञ्च

(C) षट् (D) त्रयः

स्रोत–ध्वन्यालोक (1/1) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-5,6

27. (i) जिस काव्य में प्रतीयमान अर्थ की प्रधानता होती है, वह होता है? UGC 73 D–2012, J–2013

(ii) प्रतीयमानस्य प्राधान्यं भवति तत्काव्यम्–

(A) मध्यमम् (B) अधमम्

(C) अव्यङ्ग्यम् (D) ध्वनिकाव्यम्

स्रोत–ध्वन्यालोक (1/4) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-13

28. व्यङ्ग्यार्थ का 'नामान्तर' है– UGC 73 J–2011

(A) वाच्यार्थः (B) तात्पर्यार्थः

(C) प्रतीयमानार्थः (D) लक्ष्यार्थः

स्रोत–ध्वन्यालोक - चण्डिकाप्रसाद शुक्ल, भू0 पेज–28

29. यत्रार्थः शब्दो वा तमर्थमुपसर्जनीकृतस्वार्थौ। व्यङ्क्तः काव्यविशेषः स......... सूरिभिः कथितः–

UGC 73 D–2013

(A) ध्वनिरिति (B) भक्तिरिति

(C) व्यक्तिरिति (D) शक्तिरिति

स्रोत–ध्वन्यालोक (1/13) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-37

30. आनन्दवर्धन ने ध्वन्यालोक में एक विशिष्ट अर्थ की प्रशंसा की है। वह महाकवियों की वाणियों में सुशोभित होता है। जैसे अङ्गनाओं में लावण्य। वह अर्थ ही काव्य की आत्मा है, उसे कहते हैं–

UP GDC–2008

(A) वक्रोक्ति (B) अलङ्कार

(C) प्रतीयमान (D) वाच्यार्थ

स्रोत–ध्वन्यालोक (1/4) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-13

31. 'केचित् पुनर्लक्षणकरणशालीनबुद्धयो ध्वनेस्तत्त्वं गिरामगोचरं सहृदयसम्बन्धमेव समाख्यातवन्तः' आनन्दवर्धन का 'केचित्' शब्द से संकेत किसके प्रति है? UP GDC–2008

(A) विपर्ययवादी (B) अशक्यवक्तव्यवादी

(C) सन्देहवादी (D) ध्वनिवादी

स्रोत–ध्वन्यालोक - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-9

32. 'यत्रार्थः शब्दो वा तमर्थमुपसर्जनीकृतस्वार्थौ व्यङ्क्तः काव्यविशेषो' भवति– UGC 25 D–2014

(A)गुणीभूतव्यङ्ग्यम् (B) ध्वनिः

(C) अलङ्कारध्वनिः (D) चित्रकाव्यम्

स्रोत–ध्वन्यालोक (1/13) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-37

33. ''यत्रार्थः शब्दो वा तमर्थमुपसर्जनीकृतस्वार्थौ'' कारिकेयं केनाचार्येण लिखिता? G-GIC-2015

(A) मम्मटेन (B) आचार्यविश्वनाथेन

(C) आचार्यवामनेन (D) आनन्दवर्धनाचार्येण

स्रोत–ध्वन्यालोक (1/13) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-37

34. ''व्यङ्क्तः काव्यविशेषः सः ध्वनिः'' अस्मिन् वाक्ये 'व्यङ्क्तः' इत्यत्र का विभक्तिः? HE–2015

(A) प्रथमैकवचनम् (B) द्वितीयैकवचनम्

(C) प्रथमपुरुषद्विवचनम् (D) प्रथमपुरुषैकवचनम्।

स्रोत–ध्वन्यालोक - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-37

35. अविवक्षितवाच्य तथा विवक्षितान्यपरवाच्य भेद है–

UP PGT–2013

(A) अभिधा के (B) लक्षणा के

(C) ध्वनि के (D) तात्पर्या के

स्रोत–ध्वन्यालोक (1/13) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-55

24. (D) 25. (A) 26. (D) 27. (D) 28. (C) 29. (A) 30. (C) 31. (B) 32. (B) 33. (D) 34. (B) 35. (C)

36. 'शिखरिणि क्व नु नाम कियच्चिरं, किमभिधानमसावकरोत्तपः।' इत्यादि-श्लोकः ध्वन्यालोके उदाहरणरूपेण उल्लिखितः– UGC -25 J-2016

(A) अविवक्षितवाच्यप्रसङ्गे (B) अप्रस्तुतप्रशंसालङ्कारप्रसङ्गे
(C) विवक्षितान्यपरवाच्य-प्रसङ्गे (D) दीपकालङ्कार-प्रसङ्गे

स्रोत–ध्वन्यालोक - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-56

37. ध्वन्यालोके ध्वनिस्वरूपं निरूपितम्– UP GIC–2015

(A) प्रथमोद्योते द्वितीयकारिकायाम्
(B) प्रथमोद्योते चतुर्दशकारिकायाम्
(C) प्रथमोद्योते पञ्चमकारिकायाम्
(D) प्रथमोद्योते त्रयोदशकारिकायाम्

स्रोत–ध्वन्यालोक (1/13) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-37

38. यत्रार्थः शब्दो वा तमर्थमुपसर्जनीकृतस्वार्थौ। व्यङ्क्तः काव्यविशेषः स ध्वनिरिति ....। कारिकायाः रिक्तांशे योज्यमस्ति – UP GIC–2015

(A) शास्त्रज्ञैः कथितम् (B) ध्वनौ संसूचितम्
(C) आचार्येणोक्तम् (D) सूरिभिः कथितः

स्रोत–ध्वन्यालोक (1/13) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-37

39. (i) ''सुवर्णपुष्पां पृथिवीं चिन्वन्ति पुरुषास्त्रयः'' इत्यादि श्लोकः कस्य उदाहरणरूपेण ध्वन्यालोके उल्लिखितः–
(ii) ''सुवर्णपुष्पां पृथिवीं चिन्वन्ति पुरुषास्त्रयः शूरश्च कृतविद्यश्च यश्च जानाति सेवितुम्'' इत्यत्र कः ध्वनिः? UGC 25 J–2015, K-SET-2015

(A) अपेक्षालङ्कारस्य (B) विशेषोक्त्यलङ्कारस्य
(C) अविवक्षितवाच्यस्य (D) विवक्षितान्यपरवाच्यस्य

स्रोत–ध्वन्यालोक - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-56

40. 'ध्वन्यालोक' किस तत्त्व से सम्बन्धित है? UP TGT (H)–2004

(A) अलंकार (B) रस
(C) नाट्य (D) ध्वनि

स्रोत–ध्वन्यालोक (1/1) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-2

41. सन्ति सिद्धरसप्रख्याः ये च– UGC 73 J–2013

(A) रामायणादयः (B) रघुवंशादयः
(C) प्रकरणादयः (D) प्रहसनादयः

स्रोत–ध्वन्यालोक - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-194

42. आनन्दवर्धनमते मधुरतमः रसः कः? UGC 25 J–2012

(A) करुणरसः (B) विप्रलम्भशृङ्गारः
(C) सम्भोगशृङ्गारः (D) हास्यः

स्रोत–ध्वन्यालोक (1/5) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-29

43. ''अन्यदेवसहृदयलोचनामृतं तत्त्वान्तरं तद्वदेव सोऽर्थः– ध्वन्यालोककारमते ''सोऽर्थः'' इत्यस्य कः आशयः? UGC 25 J–2014

(A) अभिधेयार्थः (B) प्रतीयमानार्थः
(C) लक्ष्यार्थः (D) सेवार्थः

स्रोत–ध्वन्यालोक (1/4) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-13

44. ध्वन्यालोकतः रिक्तस्थानं पूरयत–UGC 25 D–2015
''यत्नतः .... तौ शब्दार्थौ महाकवेः।

(A) अवगन्तव्यौ (B) प्रत्यभिज्ञेयौ
(C) परिहर्त्तव्यौ (D) संस्मरणीयौ

स्रोत–ध्वन्यालोक (1/8) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-33

45. आनन्दवर्धन ने वाच्य नामक काव्यार्थ का विस्तृत वर्णन न देने का कारण क्या बताया? UP GDC–2008

(A) पर्याप्त सामग्री का अभाव
(B) विषय की दुरुहता
(C) पूर्व आचार्यों द्वारा पर्याप्त विवेचित होना।
(D) शब्दातीत होना

स्रोत–ध्वन्यालोक (1/3) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-12

46. 'योऽर्थः सहृदयश्लाघ्यः काव्यस्यात्मेति व्यवस्थितः' किसे कहा गया है? BHU MET–2014

(A) मम्मट ने (B) आनन्दवर्धन ने
(C) आचार्य विश्वनाथ ने (D) पण्डितराजजगन्नाथ ने

स्रोत–ध्वन्यालोक (1/2) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-11

47. (i) 'सूरिभिः कथितः इति विद्वदुपज्ञेयमुक्तिः' अत्र विषये के तावत् आनन्दवर्धनमते प्रथमे विद्वांसः?
(ii) 'सूरिभिः कथितः' इति प्रयोगेण ध्वनिवादिनः केषामुल्लेखं कृतवन्तः UP GDC–2014, K-SET-2015,
(iii) 'सूरिभिः कथितः' इत्यत्र सूरयः के? UGC 25 Jn- 2017

(A) काव्यशास्त्रिणः (B) वैयाकरणाः
(C) वेदान्तिनः (D) नैयायिकाः

स्रोत–ध्वन्यालोक (1/13) -आचार्य विश्वेश्वर, पेज-53

36. (C) 37. (D) 38. (D) 39. (C) 40. (D) 41. (A) 42. (A) 43. (B) 44. (B) 45. (C) 46. (B) 47. (B)

48. ''तस्याभावं जगदुरपरे भाक्तमाहुस्तमन्ये''–इत्युक्तिः कुत्र उपलभ्यते? UGC 25J -2016

(A) काव्यप्रकाशे (B) ध्वन्यालोके
(C) रसगङ्गाधरे (D) काव्यादर्शे

स्रोत–ध्वन्यालोक (1/1) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-2

49. 'स हि कदाचिद् वाच्ये विधिरूपे प्रतिषेधरूपः' अत्र स इत्यनेन कोऽभिप्रेतः? UGC 73Jn - 2017

(A) वाच्यार्थः (B) लक्ष्यार्थः
(C) व्यङ्ग्यार्थः (D) तात्पर्यार्थः

स्रोत–ध्वन्यालोक (1/4) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-13

50. आनन्दवर्धनः ध्वनिस्वरूपं केषां प्रीतये न्यरूपयत्? K-SET-2015

(A) पण्डितानां प्रीतये (B) वैदिकानां प्रीतये
(C) शिष्यानां प्रीतये (D) सहृदयानां प्रीतये

स्रोत–ध्वन्यालोक (1/1) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-2

51. अङ्गनासु लावण्यमिव महाकवीनां वाणीषु किमस्ति– K-SET-2015

(A) प्रतीयमानार्थः (B) वाच्यार्थः
(C) लक्ष्यार्थः (D) तात्पर्यार्थः

स्रोत–ध्वन्यालोक (1/4) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-13

52. ''श्वश्रूरत्र शेते'' इत्यत्र ध्वनिः कः? K-SET-2015

(A) वाच्ये विधिरूपे ध्वनिः प्रतिषेधरूपः
(B) वाच्ये निषेधरूपे ध्वनिः विधिरूपः
(C) वाच्ये विधिरूपे अनुभयरूपः ध्वनिः
(D) वाच्ये निषेधरूपे अनुभयरूपः ध्वनिः

स्रोत–ध्वन्यालोक - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-15

53. ''यत्नतः प्रत्यभिज्ञेयौ तौ शब्दार्थौ महाकवेः'' कस्येयमुक्तिः? K-SET-2014

(A) वाल्मीकेः (B) भामहस्य
(C) जगन्नाथस्य (D) आनन्दवर्धनस्य

स्रोत–ध्वन्यालोक (1/8) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-33

54. 'तस्याभावं जगदुरपरे' कस्य? K-SET-2014

(A) अलङ्कारस्य (B) गुणस्य
(C) रसस्य (D) ध्वनेः

स्रोत–ध्वन्यालोक (1/1) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-2

55. अविवक्षितवाच्यध्वनिः कतिविधः? RPSC-SET-2010

(A) चतुर्विधः (B) त्रिविधः
(C) पञ्चविधः (D) द्विविधः

स्रोत–ध्वन्यालोक (2/1) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-69

56. 'निश्वासान्ध इवादर्शः चन्द्रमा न प्रकाशते' अत्र ध्वनिविशेषः कः ? K-SET-2013

(A) अविवक्षितवाच्यः (B) विवक्षितान्यपरवाच्यः
(C) रसध्वनिः (D) अलङ्कारध्वनिः

स्रोत–ध्वन्यालोक - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-69-73

57. 'विभाति लावण्यमिवाङ्गनासु' इति कस्योक्तिर्वर्तते– GJ- SET-2013

(A) विश्वनाथस्य (B) भरतस्य
(C) मम्मटस्य (D) आनन्दवर्धनस्य

स्रोत–ध्वन्यालोक (1/4) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-13

58. प्रतीयमानार्थः कीदृशो निगदितः? RPSC SET-2013- 2014

(A) अङ्गनासु लावण्यमिव (B) तमसि ज्योतिरिव
(C) प्रभाते सूर्य इव (D) राकायां चन्द्र इव

स्रोत–ध्वन्यालोक (1/4) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-13

59. प्रतीयमानवस्तु कथम् इव विभाति– MH- SET–2013

(A) लावण्यम् (B) सौन्दर्यम्
(C) सादृश्यम् (D) सामीप्यम्

स्रोत–ध्वन्यालोक (1/4) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-13

60. व्यङ्ग्यार्थ इत्यर्थे ध्वनिशब्दस्य विग्रहः एव भवति– KL-SET-2014

(A) ध्वननं ध्वनिः (B) ध्वनतीति ध्वनिः
(C) ध्वन्यते अनेनेति ध्वनिः (D) ध्वन्यते अस्मादिति ध्वनिः

स्रोत–ध्वन्यालोक - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-53

61. निम्नलिखितो में से ध्वनिवादी आचार्य कौन हैं? MGKV Ph. D–2016

(A) आनन्दवर्धनः (B) रुद्रटः
(C) धनञ्जयः (D) महिमभट्टः

स्रोत–ध्वन्यालोक (1/14)-चण्डिकाप्रसाद शुक्ल, भू0 पेज–13

48. (B) 49. (C) 50. (D) 51. (A) 52. (B) 53. (D) 54. (D) 55. (D) 56. (A) 57. (D) 58. (A) 59. (A) 60. (C) 61. (A)

33 काव्यप्रकाश

1. **'काव्यप्रकाश' के रचयिता हैं—** **UP TET–2013, UP PGT (H)–2002**
(A) आचार्यकुन्तक (B) आनन्दवर्धनाचार्य
(C) आचार्यमम्मट (D) श्रीहर्ष
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-1

2. **मम्मटस्य ग्रन्थः अस्ति—** **AWES TGT–2010, UP PGT (H)–2003**
(A) काव्यधारा (B) काव्यप्रकाशः
(C) साहित्यप्रकाशः (D) काव्यरसः
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-1

3. **काव्यप्रकाशे काव्यस्य प्रयोजन-कारण-स्वरूपविशेष निर्णयो नाम कतम उल्लासः?** **BHU AET–2012**
(A) प्रथमः (B) द्वितीयः
(C) चतुर्थः (D) सप्तमः
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-33

4. **काव्यप्रकाशे शब्दार्थचित्रनिरूपणं नाम कतम उल्लासः?** **BHU AET–2011**
(A) द्वितीयः (B) तृतीयः
(C) चतुर्थः (D) षष्ठः
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-265

5. **काव्यप्रकाशे दोषदर्शनो नाम कतम उल्लासः?** **BHU AET–2012**
(A) षष्ठः (B) सप्तमः
(C) चतुर्थः (D) नवमः
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-377

6. **काव्यप्रकाशे गुणालङ्कारभेदनिर्णयो नाम कतम उल्लासः?** **BHU AET–2012**
(A) दशमः (B) नवमः
(C) सप्तमः (D) अष्टमः
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-398

7. **काव्यप्रकाश के प्रथम उल्लास का नाम है–** **UP PGT–2005**
(A) ध्वनिस्वरूप निरूपण (B) अर्थव्यञ्जकता निरूपण
(C) काव्यस्वरूप निरूपण (D) शब्दार्थस्वरूप निरूपण
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-33

8. **काव्यप्रकाश के नवम उल्लास का नाम है-** **UP PGT–2005**
(A) शब्दालङ्कारनिर्णयात्मकः
(B) काव्यस्य प्रयोजनकारणस्वरूपनिर्णयात्मकः
(C) शब्दार्थस्वरूपनिर्णयात्मकः
(D) गुणीभूतव्यङ्ग्यनिरूपणात्मकः
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-439

9. **(i) काव्यप्रकाशे .... उल्लासाः सन्ति-**
(ii) काव्यप्रकाश में कितने उल्लास हैं?
(iii) काव्यप्रकाशे कति उल्लासाः सन्ति?
BHU AET–2011, UGC 25 D–2010
BHU MET–2014, UGC 73 J–2016
(A) सप्त (B) दश
(C) एकादश (D) पञ्च
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-584

10. **मम्मट की रचना किस प्रकार की है?** **BHU MET-2008**
(A) लक्षणग्रन्थ (B) धर्मग्रन्थ
(C) नाटकग्रन्थ (D) इनमें से कोई नहीं
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-18-19

11. **कस्य ग्रन्थस्य टीकाः गृहे गृहे विद्यन्ते तथाप्येष तथैव दुर्गमः?** **BHU AET–2010**
(A) काव्यालङ्कारसूत्रस्य (B) काव्यप्रकाशस्य
(C) काव्यादर्शस्य (D) काव्यमीमांसायाः
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, भू0पेज-71-72

1. (C) 2. (B) 3. (A) 4. (D) 5. (B) 6. (D) 7. (C) 8. (A) 9. (B) 10. (A) 11. (B)

12. काव्यप्रकाशे शब्दालङ्कारनिर्णयो नाम कतम उल्लासः? BHU AET–2012

(A) नवमः (B) अष्टमः
(C) सप्तमः (D) दशमः

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-439

13. काव्यप्रकाशस्य चतुर्थे उल्लासे मुख्यरूपेण वर्णनमस्ति? RPSC ग्रेड I (PGT)-2014

(A) शब्दार्थस्वरूपस्य (B) ध्वनितत्त्वस्य
(C) गुणालङ्कारयोः (D) काव्यदोषाणाम्

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-195

14. उपलब्धासु काव्यप्रकाशस्य प्राचीनतमा टीका मन्यते– UP GDC–2014

(A) प्रतीपच्छाया (B) सङ्केतटीका
(C) बालचित्तानुरञ्जनी (D) दर्पणटीका

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, भू0पेज-72

15. गोविन्द ठक्कुर हैं– UP PGT–2013

(A) एकावली के रचनाकार (B) महाकवि
(C) काव्यप्रकाश के टीकाकार (D) श्रीकण्ठविजय के रचयिता

स्रोत–काव्यप्रकाश - पारसनाथ द्विवेदी, भू0पेज-52

16. काव्यप्रकाशस्य मङ्गलश्लोके कस्याः प्रशंसा कृता? UGC 25 D–2014

(A) सरस्वत्याः (B) पार्वत्याः
(C) कविभारत्याः (D) दुर्गायाः

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-05

17. (i) 'ग्रन्थारम्भे भारती कवेर्जयति' इति समुचितेष्टदेवतां कः परामृशति? BHU AET–2012
(ii) 'भारती कवेर्जयति' कस्यायमुद्घोषः? K SET–2014

(A) भामहः (B) वाग्भटः
(C) मम्मटः (D) रुय्यकः

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-05

18. 'नियतिकृतनियमरहितां नवरसरुचिरं' किमस्ति? BHU Sh.ET–2008

(A) नाटकम् (B) प्रहसनम्
(C) भाणः (D) काव्यम्

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-05

19. नवरसरुचिरां........... मादधती भारतीकवेर्जयति– BHU AET–2011

(A) प्रस्तुति (B) सत्कृति
(C) निर्मिति (D) स्वीकृति

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-05

20. शक्तिर्निपुणता लोकशास्त्रकाव्याद्यवेक्षणात्।
.......................................इति हेतुस्तदुद्भवे।।
काव्यप्रकाशतः रिक्तस्थानं पूरयत। UGC 25 D–2015

(A) काव्यज्ञशिक्षयाभ्यास (B) लोकतत्त्वानुशीलनम्
(C) रसभावयोश्चिन्तनम् (D) भावाभासस्य चिन्तनम्

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-16

21. 'नियतिकृतनियमरहितां'– UP PGT–2011

(A) कविभारती (B) कविप्रतिभा
(C) कविदृष्टिः (D) कविप्रसिद्धिः

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-05

22. (i) काव्यप्रकाशे काव्यप्रयोजनानि सन्ति-
(ii) मम्मट के अनुसार काव्य प्रयोजनों की संख्या है-
(iii) मम्मटोक्तानि काव्यप्रयोजनानि सन्ति?
(iv) मम्मटस्य मते काव्यप्रयोजनानि सन्ति–
(v) मम्मटेन कति काव्यप्रयोजनानि प्रतिपादितानि?
(vi) मम्मटाचार्येण कति काव्यप्रयोजनानि प्रतिपादितानि– UP PGT–2000, 2002, 2009, 2012, UGC 73 D–2004, 2012, 2013, 2014 J–2007, UP GDC–2013, DL–2015 G-GIC-2015

(A) 6 (B) 5
(C) 4 (D) 7

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-10

23. 'संकेतित अर्थ' कितने प्रकार का होता है? UP PGT–2005

(A) 6 प्रकार (B) 7 प्रकार
(C) 3 प्रकार (D) 4 प्रकार

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.10)- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-43

12. (A) 13. (B) 14. (B) 15. (C) 16. (C) 17. (C) 18. (D) 19. (C) 20. (A) 21. (A) 22. (A) 23. (D)

24. (i) मम्मटाचार्येण काव्यभेदाः निरूपिताः –
(ii) मम्मट के अनुसार काव्य के प्रमुख भेद होते हैं–
(iii) काव्य के प्रमुख भेद हैं- UGC- 25 J–2002
(iv) मम्मट के अनुसार काव्य कितने प्रकार का होता है?
UGC 73 D–2013, UP GIC–2009

(A) 3 (B) 2
(C) 4 (D) 5

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-28

25. (i) गुणीभूतव्यङ्ग्यस्य मध्यमकाव्यस्य कति भेदाः स्मृताः?
(ii) गुणीभूतव्यङ्ग्यस्य प्रभेदाः कति?
UGC 25 D–2006, BHU AET–2012

(A) 8 (B) 15
(C) 24 (D) 36

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.66) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-196

26. लक्षणायाः हेतवः सन्ति? UGC 25 D–2011

(A) 3 (B) 4
(C) 5 (D) 9

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.12) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-51

27. अर्थबोधस्य कति प्रमुखसाधनानि? UGC 25 D–2012

(A) सप्त (B) एकादश
(C) अष्ट (D) त्रयोदश

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–326

28. (i) मम्मट के अनुसार लक्षणा है? UP GDC–2008,
(ii) मम्मट के अनुसार लक्षणा की संख्या कितनी है?
(iii) मम्मटानुसारं लक्षणायाः भेदाः कति?
BHU MET–2010, JNU MET–2015

(A) 6 (B) 4
(C) 2 (D) 5

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.17) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-66

29. (i) मम्मट के अनुसार रस कितने प्रकार का होता है?
(ii) मम्मटमते रसाः कति UGC 73 D–2005, J–2008

(A) 5 (B) 6
(C) 8 (D) 9

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज - 96, 138

30. शब्दशक्त्युद्भवो भावो ध्वनिः कतिधा निरूपितः काव्यप्रकाशे? BHU AET–2012

(A) त्रिधा (B) चतुर्धा
(C) नवधा (D) द्विधा

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-93

31. अविवक्षितवाच्यो ध्वनिः कतिधा उदाहृतः?
BHU AET–2012

(A) त्रिधा (B) द्विधा
(C) अष्टधा (D) चतुर्धा

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.39) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-91

32. काव्यप्रकाशे शब्दः कतिधा निरूपितः –
BHU Sh.ET–2013

(A) द्वौ (B) पञ्च
(C) संख्यातीता (D) त्रयः

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-34

33. पदगतदोषाः कति? JNU MET–2014

(A) दश (B) पञ्च
(C) पञ्चदश (D) षोडश

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.72) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-266

34. मम्मटस्य मतेन काव्ये कति गुणाः–
DSSSB PGT–2014

(A) त्रयः (B) चत्वारः
(C) पञ्च (D) षट्

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.-88) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-388

35. काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये।
सद्यः परनिर्वृतये कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे।।
–यह उक्ति है– UGC 73 J–2015

(A) भामह की (B) मम्मट की
(C) कुन्तक की (D) लोल्लट की

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-10

36. मम्मट के अनुसार प्रमुख काव्यप्रयोजन क्या है?
BHU MET–2010

(A) यशः प्राप्ति (B) धनागम
(C) आनन्दप्राप्ति (D) मङ्गल

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-10

24. (A) 25. (A) 26. (A) 27. (C) 28. (A) 29. (D) 30. (D) 31. (B) 32. (D) 33. (D)
34. (A) 35. (B) 36. (C)

37. मम्मट के अनुसार काव्य प्रयोजन नहीं है-UP PGT–2000

(A) प्रतिभा (B) यश
(C) अर्थप्राप्ति (D) अनिष्टनिवारण

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-10

38. 'शिवेतरक्षतये' इत्यत्र शिवेतरपदे कस्य ग्रहणम्? HAP-2016

(A) शिवायाः (B) गणेशस्य
(C) मङ्गलस्य (D) अमङ्गलस्य

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-10

39. इनमें से कौन काव्य प्रयोजन नहीं है- UP PGT–2005

(A) शक्ति (B) निपुणता
(C) अभ्यास (D) उपर्युक्त सभी

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-10

40. काव्यप्रयोजनेषु मम्मटेन अधोलिखितेषु किं पदं न गृहीतम्- UGC 73 Jn–2017

(A) मुक्तये (B) यशसे
(C) अर्थकृते (D) शिवेतरक्षतये

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-10

41. (i) मम्मट के अनुसार काव्य का प्रधान प्रयोजन है?
(ii) प्रयोजनबहुत्वेऽपि किं नाम काव्यस्य सकल प्रयोजनमौलिभूतं प्रयोजनम्? UP PGT–2005,
(iii) मम्मटस्य शास्त्रे सकलप्रयोजनमौलिभूतं काव्यप्रयोजनम् उक्तम्– UP GIC–2009, 2012
(iv) 'सकलप्रयोजनमौलिभूतम्' किसे कहा गया है?
(v) काव्यप्रकाशे स्वीकृतेषु षट्प्रयोजनेषु मौलिभूतं प्रयोजनं किम्? RPSC-SET-2010, BHU AET–2012

(A) यश को (B) धनोपार्जन को
(C) व्यवहारज्ञान को (D) सद्यःपरनिर्वृति को

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-10

42. 'कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे' यह उक्ति है- UGC 73 D–2006

(A) शङ्कुकस्य (B) अभिनवगुप्तस्य
(C) मम्मटस्य (D) वामनस्य

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-10

43. श्रीहर्षादे..............दीनामिव धनम्। BHU AET–2011

(A) र्याचका (B) र्वारणा
(C) र्गायका (D) र्धावका

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-10

44. काव्यस्य किं न प्रयोजनम्? BHU Sh.ET–2011

(A) धनम् (B) यश
(C) व्यवहार (D) अशिवम्

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-10

45. ''काव्यं यशसे'' अत्र 'यशसे' पदे विभक्तिरस्ति– MP वर्ग-I (PGT)–2012

(A) सप्तमी (B) द्वितीया
(C) चतुर्थी (D) पञ्चमी

स्रोत–काव्यप्रकाश - श्रीनिवास शास्त्री, पेज-06

46. इतिहास का स्वरूप है? UGC 73 D–2014

(A) उपदेशप्रधानम् (B) वृत्तप्रधानम्
(C) निमित्तप्रधानम् (D) मिथ्याप्रणोदितम्

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-10-11

47. 'काव्यं यशसे' इति मम्मटोक्तस्योदाहरणं विद्यते– DL–2015

(A) धावकादीनामिव (B) मयूरभट्टादीनामिव
(C) बाणभट्टादीनामिव (D) कालिदासादीनामिव

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-10

48. (i) काव्यात् कीदृशः उपदेशो भविष्यति?
(ii) आचार्य मम्मटानुसारेण काव्यस्योपदेशो भवति? G-GIC–2015, DSSSB PGT–2014

(A) प्रभुसम्मितः (B) सुहृत्सम्मितः
(C) कान्तासम्मितः (D) गुरुसम्मितः

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-10

49. पुराणं कीदृशम्? DSSSB TGT–2014

(A) प्रभुसम्मितम् (B) कान्तासम्मितम्
(C) सुहृत्सम्मितम् (D) बन्धुसम्मितम्

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-10,11,12

37. (A) 38. (D) 39. (D) 40. (A) 41. (D) 42. (C) 43. (D) 44. (D) 45. (C) 46. (A) 47. (D) 48. (C) 49. (C)

50. 'काव्यं यशसे' के उल्लेख वाला ग्रन्थ है? **BHU MET–2015**
(A) साहित्यदर्पण (B) काव्यप्रकाश
(C) काव्यादर्श (D) ध्वन्यालोक
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-10

51. निम्नांकित काव्यप्रयोजनों में कौन आचार्य मम्मट द्वारा मान्य नहीं है? **UP PGT–2004, 2010**
(A) यश (B) धनार्जन
(C) प्रीति (D) व्यवहारज्ञान
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-10

52. (i) 'काव्यज्ञशिक्षयाभ्यास इति हेतुस्तदुद्भवे' इयमुक्तिः कस्माद् ग्रन्थादुद्धृता?
(ii) 'इति हेतुस्तदुद्भवे' इस कथन का सम्बन्ध निम्नलिखित में से किस ग्रन्थ से है?
UP PGT–2004, UGC 25 S–2013
(A) साहित्यदर्पण (B) दशरूपक
(C) काव्यप्रकाश (D) औचित्यविचारचर्चा
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-16

53. (i) 'इति हेतुस्तदुद्भवे' इति कस्य मतम्?
(ii) 'शक्तिर्निपुणता लोकशास्त्रकाव्याद्यवेक्षणात् काव्यज्ञशिक्षयाभ्यास इति हेतुः' कस्य मतम्?
G-GIC–2015, K SET–2015
(A) जगन्नाथस्य (B) हेमचन्द्रस्य
(C) वाग्भटस्य (D) मम्मटस्य
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-16

54. मम्मटानुसारं काव्यहेतुर्नास्ति- **T- SET–2013**
(A) शक्तिः (B) निपुणता
(C) भक्तिः (D) काव्यज्ञशिक्षयाभ्यासः
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-16

55. का कवित्वबीजरूपः संस्कारविशेषः **HAP–2016**
(A) शक्तिः (B) निपुणता
(C) बुद्धिः (D) अभ्यासः
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-16

56. 'इति हेतुस्तदुद्भवे' में तत् पद का अर्थ है? **BHU MET–2014**
(A) लक्षणग्रन्थ (B) अलंकार
(C) काव्य (D) रस
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-16, 17

57. शक्तिः .... लोकशास्त्रकाव्याद्यवेक्षणात्– **BHU AET–2011**
(A) निर्भीकता (B) निष्क्रियता
(C) निपुणता (D) निरीहता
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-16

58. (i) शक्तिर्निपुणतेत्यादिना काव्यहेतुत्वेन कति परिगणिताः काव्यप्रकाशे? **BHU AET–2012,**
(ii) कति काव्यहेतवः? **MH–SET–2013**
(A) एकः (B) द्वौ
(C) त्रयः (D) चत्वारः
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-16

59. 'त्रयः समुदिता हेतुः' कौन मानता है? **UGC 73 J–1991**
(A) जगन्नाथ (B) कुन्तक
(C) मम्मट (D) आनन्दवर्धन
स्रोत–काव्यप्रकाश (का0-3) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-17

60. (i) काव्यप्रकाशकारोक्ता 'शक्तिः' कमाशयं प्रकटयति? **DL–2015, UK SLET–2015**
(ii) काव्यप्रकाशस्य काव्यहेतुकारिकायां प्रयुक्तस्य 'शक्तिः' पदस्य कः आशयः?
(A) कविबुद्धिम् (B) कविधारणाम्
(C) कविभारतीम् (D) कविप्रतिभाम्
स्रोत–काव्यप्रकाश (का0-3) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-17

61. काव्यहेतुविषये मम्मटरीत्या किं साधु वर्तते? **DL–2015**
(A) इति हेतुः (B) त्रयो हेतवः
(C) काव्यहेतवः (D) मम्मटोक्तकाव्यहेतुः
स्रोत–काव्यप्रकाश (का03) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-17

50. (B) 51. (C) 52. (C) 53. (D) 54. (C) 55. (A) 56. (C) 57. (C) 58. (C) 59. (C) 60. (D) 61. (A)

62. आचार्य मम्मट के अनुसार काव्य का लक्षण है-
UP PGT–2004, 2009, 2013

(A) वाक्यं रसात्मकं काव्यम्
(B) वक्रोक्तिः काव्यजीवितम्
(C) तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि
(D) रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.-1) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-19

63. ''तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि''– यह लक्षण है- **UP PGT–2000**

(A) अलङ्कार का (B) गुण का
(C) काव्य का (D) दोष का

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-19

64. (i) 'तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि' से सम्बन्धित आचार्य हैं– UP PGT–2002,
(ii) 'अनलङ्कृती पुनःक्वापि' काव्यलक्षणं कस्यास्ति?
(iii) 'अनलङ्कृती पुनः क्वापि' इति केनोक्तम्?
UGC 73 J–2012, CCSUM-Ph.D–2016

(A) विश्वनाथ (B) मम्मट
(C) भामह (D) रुय्यक

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.1) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-19

65. ''स्वभावोक्तिरसौ चारु यथावद् वस्तुवर्णनम्।'' स्वभावोक्ति अलङ्कारस्य अस्मिन् लक्षणे 'चारु' शब्दस्य तात्पर्यमस्ति– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2015

(A) गुणदोषानुरूपं यथावद् वर्णनम्
(B) चमत्कारशून्यं वर्णनम्
(C) सहृदयहृदयावर्जकं वर्णनम्
(D) ग्राम्यं छन्दोबन्धरहितं वर्णनम्

स्रोत–अलङ्कारभूषण - कुन्दनकुमार, पेज–66

66. मम्मटकृतकाव्यलक्षणे 'अनलङ्कृती' इति पदं कस्मिन् वचने प्रयुक्तम्? HAP–2016

(A) एकवचने (B) द्विवचने
(C) बहुवचने (D) किमपि वचनं नास्ति

स्रोत–काव्यप्रकाश - सीताराम दोतोलिया, पेज-47

67. 'शब्दार्थ काव्य है' यह उक्ति किससे सम्बद्ध है?
BHU MET–2010

(A) मम्मट (B) जगन्नाथ
(C) जयदेव (D) विश्वनाथ

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.1) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-19

68. काव्यप्रकाश में उल्लिखित 'अनलङ्कृती' किसका विशेषण है? UP GIC–2009

(A) शब्द का (B) अर्थ का
(C) शब्दार्थ का (D) पद्य का

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-18

69. 'सगुणावनलङ्कृती' का अभिप्राय है–UGC 73 J–2013

(A) 'सर्वत्र सालङ्कारौ' क्वचित्तु स्फुटालङ्कारविरहेऽपि न काव्यत्वहानिः।
(B) 'सर्वत्र सालङ्कारौ' क्वचित्तु अस्फुटालङ्कारविरहेऽपि न काव्यत्वहानिः।
(C) 'सर्वत्र सालङ्कारौ' क्वचित्तु स्फुटालङ्कारविरहेऽपि काव्यत्वहानिः।
(D) सर्वत्रालङ्काररहितौ शब्दार्थौ काव्यम्।

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.1) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-19

70. (i) मम्मटकृत काव्यलक्षण में 'तद्' शब्द का आशय है–
(ii) 'तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि' अत्र 'तद्' पदस्य किं तात्पर्यम्?
UP GDC–2008, G-GIC–2015

(A) प्रयोजनम् (B) हेतुः
(C) अर्थः (D) काव्यम्

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-18

71. ..... शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि?
BHU AET–2011

(A) यददोषौ (B) पददोषौ
(C) तददोषौ (D) गतदोषौ

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.1) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-19

72. कस्य काव्यलक्षणं खण्डितं विश्वनाथेन?
UGC 25 J–2008

(A) मम्मटस्य (B) राजशेखरस्य
(C) भामहस्य (D) दण्डिनः

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.1) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-19-20

62. (C) 63. (C) 64. (B) 65. (C) 66. (B) 67. (A) 68. (C) 69. (A) 70. (D) 71. (C) 72. (A)

73. 'अनलङ्कृती पुनः क्वापि' से मम्मट का क्या अभिप्राय है? UP GDC–2008

(A) काव्य अलङ्कारविहीन होता है।

(B) काव्य में कहीं अलङ्कार मिल सकता है।

(C) काव्य प्रायः सालंकार होता है, परन्तु कहीं अलङ्कार विहीन होने पर भी उसका काव्यत्व अक्षुण्ण रहता है।

(D) काव्य अलङ्कार विहीन हो ही नहीं सकता।

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-19

74. काव्यस्वरूपमिदम्? UGC 25 S–2013

(A) तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनःक्वापि।

(A) इदमुत्तममतिशयिनि व्यङ्ग्ये वाच्याद्ध्वनिर्बुधैः कथितः।

(C) अतादृशि गुणीभूतव्यङ्ग्यं व्यङ्ग्ये तु मध्यमम्।

(D) तात्पर्यार्थोऽपि केषुचित्।

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-19

75. काव्यस्य शरीरं किम्? DSSSB PGT–2014, MH SET–2011

(A) शब्दार्थौ (B) रसः

(C) कथावस्तु (D) व्यङ्ग्यार्थः

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-19-25

76. काव्यं नाम किम्? DSSSB TGT–2014

(A) कवेः कौशलम् (B) कविनावान्तम्

(C) कविनानुभूतम् (D) कवेः कर्म

स्रोत–रसगङ्गाधर - मदनमोहन झा, भू.पेज-13

77. निम्नलिखित में सही है- UGC 73 J–2011

(A) वार्तालापः काव्यम् (B) कवेः कर्म काव्यम्

(C) शब्दरूपं काव्यम् (D) ध्वनिरूपं काव्यम्

स्रोत– रसगङ्गाधर - मदनमोहन झा, भू.पेज-13

78. अत्र स्फुटो न कश्चिदलङ्कारः। .... च प्राधान्यान्नालङ्कारता– BHU AET–2011

(A) शब्दस्य (B) अर्थस्य

(C) रसस्य (D) भावस्य

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-19

79. 'यः कौमारहरः स एव हि वरः' इत्यादौ रसस्य प्राधान्यात् स्फुटः कः अलङ्कारः परिलक्षितः? BHU AET–2012

(A) स्वभावोक्तिः (B) न कश्चित्

(C) विशेषोक्तिः (D) असङ्गतिः

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-19

80. 'तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि' इत्यत्र किं नाम विशेष्यपदम्? BHU AET–2012, RPSC-SET-2016

(A) अदोषौ (B) शब्दार्थौ

(C) सगुणौ (D) अनलङ्कृती

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–18-19

81. 'तददोषौ शब्दार्थौ' में विशेष्य पद क्या है? UP PGT–2005

(A) तद् (B) अदोषौ

(C) शब्दार्थौ (D) उपर्युक्त सभी

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-18-19

82. 'शब्दपरिवृत्ति असहिष्णुत्व' प्राप्त होता है– UP PGT–2005

(A) अर्थालङ्कार में (B) शाब्दीव्यञ्जना में

(C) शब्दालङ्कार में (D) उपर्युक्त B एवं C दोनों में

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-400

83. यः कौमारहरः स एव हि.......... BHU AET–2010

(A) नरः (B) चरः

(C) वरः (D) शरः

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-19

84. 'उपकृतं बहु तत्र किमुच्यते' इत्यादौ पद्ये मम्मटेन को ध्वनिभेदः स्वीकृतः? UP GDC–2014

(A) विवक्षितान्यपरवाच्यध्वनिभेदः।

(B) अलक्ष्यक्रमव्यङ्ग्यध्वनिः।

(C) लक्ष्यक्रमव्यङ्ग्यध्वनिः।

(D) अत्यन्ततिरस्कृतवाच्यध्वनिः।

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-92

73. (C) 74. (A) 75. (A) 76. (D) 77. (B) 78. (C) 79. (B) 80. (B) 81. (C) 82. (C) 83. (C) 84. (D)

85. 'स्फोटाश्रित'–काव्यसिद्धान्तोऽस्ति– UP GDC–2014

(A) रीतिः (B) रसः
(C) अलङ्कारः (D) ध्वनिः

स्रोत–ध्वन्यालोक - आचार्य विश्वेश्वर, भू0पेज-03

86. अर्थान्तरसङ्क्रमितवाच्यध्वनिः कस्य ध्वनेः प्रभेदः? DSSSB PGT–2014

(A) लक्षणामूलध्वनेः (B) अभिधामूलस्य
(C) शब्दशक्त्युद्भवस्य (D) अर्थशक्त्युद्भवस्य

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-91

87. सशङ्खचक्रो हरिः इत्यस्मिन् उदाहरणे 'हरिशब्दस्य' वाच्यार्थः अस्ति – MGKV Ph. D–2016

(A) इन्द्रः (B) विष्णुः
(C) वानरः (D) सिंहः

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-78

88. (i) मम्मटानुसारेण उत्तमकाव्यमस्ति-
(ii) मम्मट के अनुसार उत्तमकाव्य होता है?
(iii) आचार्य मम्मट ने उत्तमकाव्य माना है?
UP GDC–2008, 2013, UP PGT–2004, BHU MET–2008, 2009, 2013, UP GIC–2009, 2012

(A) गुणीभूतव्यङ्ग्य को (B) शब्दचित्र को
(C) अर्थचित्र को (D) ध्वनि को

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.2) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-28

89. मम्मट के मत में ध्वनिकाव्य है– UGC 73 J–2011

(A) मध्यमम् (B) अधमम्
(C) उत्तमम् (D) उत्तमोत्तमम्

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.2) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-28

90. 'वाच्यादतिशयिनि व्यङ्ग्ये' काव्य होता है? UGC 73 J–2013

(A) उत्तमोत्तमम् (B) मध्यमम्
(C) उत्तमम् (D) अधमम्

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.2)- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-28

91. सारोपालक्षणा कस्यालङ्कारस्य बीजम् अस्ति– JNU MET–2015

(A) रूपकस्य (B) अतिशयोक्तेः
(C) उत्प्रेक्षायाः (D) विभावनायाः

स्रोत–साहित्यदर्पण-शालिग्रामशास्त्री, पेज-33

92. (i) 'ध्वनिर्बुधैः कथितः' इस काव्यप्रकाश की पंक्ति में 'बुधैः' का अर्थ है? BHU AET–2012,
(ii) इदमुत्तममतिशयिनि व्यङ्ग्ये वाच्याद् ध्वनिर्बुधैः कथितः। अत्र 'बुधैः' पदेन कः संकेतितः? UGC 73 S–2013, UP PGT–2013

(A) मीमांसकैः (B) नैयायिकैः
(C) वैयाकरणैः (D) छान्दसैः

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-28

93. ''वापीं स्नातुमितो गतासि न पुनस्तस्याधमस्यान्तिकम्'' इत्यत्र कः काव्यभेदः? DL–2015

(A) गुणीभूतव्यङ्ग्यम् (B) व्यङ्ग्यप्राधान्ययुक्तम्
(C) लाक्षणिकम् (D) चित्रात्मकं चित्रं वा

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-30

94. ''निःशेषच्युतचन्दनं ....'' इत्यादि श्लोके 'अत्र तदन्तिकमेव स्नातुं गतासि' इति व्यङ्ग्यं मम्मटेन कथं निर्धारितम्? UGC 25 J–2015

(A) प्राधान्येन 'अधम'-पदेन (B) प्राधान्येन 'मिथ्यावादिनि'-पदेन
(C) 'निःशेष'-शब्देन (D) 'निर्मृष्टरागोऽधरः' इति पदेन

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-30

95. 'वापीं स्नातुमितो गतासि...........' इति पद्यं कीदृशस्य काव्यस्योदाहरणम्? GJ- SET–2013

(A) उत्तमस्य (B) अधमस्य
(C) मध्यमस्य (D) न कस्यापि

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-30

96. 'अतिशयिनि व्यङ्ग्ये' परिभाषया परिचयः भवति– UP GDC –2014

(A) रीतिकवितायाः (B) ध्वनिकाव्यस्य
(C) गुणीभूतव्यङ्ग्यस्य (D) अलङ्कृतकाव्यस्य

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.2)- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-28

97. अतादृशि गुणीभूतव्यङ्ग्ये किं काव्यम्? UGC 25 D–2012

(A) उत्तमोत्तमम् (B) मध्यमम्
(C) उत्तमम् (D) अधमम्

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.-03) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-31

85. (D) 86. (A) 87. (B) 88. (D) 89. (C) 90. (C) 91. (A) 92. (C) 93. (B) 94. (A) 95. (A) 96. (B) 97. (B)

98. (i) मम्मटमते मध्यमकाव्यं भवति?
(ii) मम्मट के मत में 'मध्यमकाव्य' है—
UP GIC–2013, UP PGT-2011
(A) शब्दचित्रम् (B) गुणीभूतव्यङ्ग्यम्
(C) ध्वनिः (D) वाच्यचित्रम्
स्रोत—काव्यप्रकाश (सू.3) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-31

99. ग्रामतरुणं तरुण्या नववञ्जुलमञ्जरीसनाथकरम्। पश्यन्त्या भवति मुहुर्नितरां......... मुखच्छाया॥
BHU AET–2011
(A) मन्थरा (B) मलिना
(C) मथुरा (D) नर्मदा
स्रोत—काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-31

100. ''ग्रामतरुणं तरुण्या नववञ्जुलमञ्जरीसनाथकरम्। पश्यन्त्या भवति मुहुर्नितरां मलिना मुखच्छाया॥'' काव्यप्रकाशे प्रथमोल्लासे श्लोकोऽयं कस्य काव्यभेदस्य उदाहरणरूपेण उल्लिखितः? UGC 25 Jn-2017
(A) ध्वनिकाव्यस्य (B) गुणीभूतव्यङ्ग्यकाव्यस्य
(C) शब्दचित्रकाव्यस्य (D) वाच्यचित्रकाव्यस्य
स्रोत—काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-31

101. मम्मटोक्तरीत्या एतत् काव्यभेदं न भवति—
K- SET -2015
(A) उत्तमम् (B) मध्यमम्
(C) अधमम् (D) उत्तमोत्तमम्
स्रोत—काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-33

102. मम्मटमतेन काव्यभेदः कतिविधः– MH-SET-2013
(A) एकविधः (B) द्विविधः
(C) चतुर्विधः (D) त्रिविधः
स्रोत—काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-33

103. काव्यभेदेषु गुणीभूतव्यङ्ग्यनाम्ना कः भेदः निगदितः?
RPSC SET -2010
(A) अधमकाव्यभेदः (B) उत्तमोत्तमकाव्यभेदः
(C) मध्यमकाव्यभेदः (D) उत्तमकाव्यभेदः
स्रोत—काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-31

104. वाच्यादनतिशयिनि व्यङ्ग्ये गुणीभूतव्यङ्ग्यं नाम काव्यं किं रूपं भवति? BHU AET–2012
(A) उत्तमम् (B) मध्यमम्
(C) अधमम् (D) साधारणम्
स्रोत—काव्यप्रकाश (सू.3) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-31

105. ग्रामतरुणं तरुण्या .... उदाहरण है? UP GIC–2009
(A) अवरकाव्य का (B) मध्यम काव्य का
(C) उत्तमकाव्य का (D) लक्षणा का
स्रोत—काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-31

106. मम्मट के अनुसार कौन मध्यमकाव्य है?
UP GDC–2008
(A) जिसमें व्यङ्ग्यार्थ की प्रधानता होती है।
(B) जिसमें वाच्यार्थ की प्रधानता होती है।
(C) चित्रकाव्य
(D) जिसमें व्यङ्ग्यार्थ गुणीभूत होता है।
स्रोत—काव्यप्रकाश (सू.3) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-31

107. 'अतादृशि...........व्यङ्ग्ये तु मध्यमम्' यह होता है?
UGC 73 D–2012
(A) द्विगुणितव्यङ्ग्यम् (B) गुणीभूतव्यङ्ग्यम्
(C) अगुणीभूतव्यङ्ग्यम् (D) न गुणीभूतव्यङ्ग्यम्
स्रोत—काव्यप्रकाश (सू.3) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-31

108. अदृष्टे दर्शनोत्कण्ठा दृष्टे विच्छेदभीरुता नादृष्टेन न दृष्टेन भवता लभ्यते सुखम्॥ इत्यत्र किं नाम गुणीभूतव्यङ्ग्यम्?
BHU AET–2012
(A) अगूढम् (B) अस्फुटम्
(C) सन्दिग्धम् (D) असुन्दरम्
स्रोत—काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-209

109. मम्मट के अनुसार अधमकाव्य है— BHU MET–2010
(A) ध्वनिकाव्य (B) गुणीभूतव्यङ्ग्य
(C) चित्रकाव्य (D) भावध्वनि
स्रोत—काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-31

98. (B) 99. (B) 100. (B) 101. (D) 102. (D) 103. (C) 104. (B) 105. (B) 106. (D) 107. (B) 108. (B) 109. (C)

110. (i) निम्नाङ्कित उदाहरण किसका है? 'स्वच्छन्दोच्छल-दच्छकच्छकुहर'– BHU MET–2009, 2013
(ii) काव्यप्रकाश में उद्धृत 'स्वच्छन्दोच्छलदच्छ-कच्छकुहरच्छाते-तराम्बुच्छटा', श्लोक किस काव्य भेद का उदाहरण है? UP GDC–2008

(A) अवरकाव्य (B) उत्तमकाव्य
(C) लक्षणा (D) श्लेष

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-32

111. (i) 'विनिर्गतं मानदमात्ममन्दिरात्' उदाहरणमस्ति–
(ii) 'विनिर्गतं मानदमात्ममन्दिरात्' आदि उदाहरण है?
(iii) 'विनिर्गतं मानमात्ममन्दिरात् इत्यादि पद्यम्' उदाहरणमस्ति GGIC–2015
UP GIC–2009, 2015, UP GDC–2014

(A) व्यङ्ग्यकाव्य का (B) शब्दचित्र का
(C) अर्थचित्र का (D) गुणीभूतव्यङ्ग्य का

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-32

112. 'शब्दचित्रं वाच्यचित्रमव्यङ्ग्यं तु' कहा गया है? UGC 73 J–2013

(A) उत्तमोत्तमम् (B) उत्तमम्
(C) मध्यमम् (D) अवरम्

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.4) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-31

113. स्फुटप्रतीयमानार्थरहितं काव्यं किम्? HAP-2016

(A) ध्वनिः (B) गुणीभूतव्यङ्ग्यम्
(C) चित्रम् (D) अभिधामूलध्वनिः

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-32

114. (i) अव्यङ्ग्यं .... स्मृतम्। BHU AET–2011, 2012
(ii) शब्दचित्रं वाच्यचित्रमव्यङ्ग्यं .... स्मृतम्।

(A) त्वक्षरं (B) त्वपरं
(C) त्वधरं (D) त्ववरं

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.4) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-31-32

115. तात्पर्यशक्तिः .... प्रसङ्गे स्वीकृता। GJ SET–2016

(A) अभिहितान्वयवादे (B) अन्विताभिधानवादे
(C) अर्थापत्तौ (D) व्यञ्जकता - विनिर्देश्य

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-35

116. उपमा अलङ्कारे कीदृशं साम्यम् उपस्थाप्यते– RPSC ग्रेड-I PGT–2015

(A) अस्पष्टम् (B) स्पष्टम्
(C) वैचित्र्यजनकम् (D) प्रस्फुटं सुन्दरं च

स्रोत–काव्यप्रकाश - सीताराम दोतोलिया, पेज–438

117. स्याद्वाचको लाक्षणिकः शब्दोऽत्र व्यञ्जकस्त्रिधा अस्मिन् कारिकांशे 'त्रिधा' शब्देन कस्य त्रित्वं प्रतिपादितम् अस्ति? HE–2015

(A) उपाधीनाम् (B) उपाधेयानाम्
(C) काव्यानाम् (D) अर्थानाम्

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-34

118. कस्य नियामकत्वे 'स्थाणुं भज भवच्छिदे' इति वाक्यं उदाहृतम्– HE –2015

(A) प्रकरणस्य (B) अर्थस्य
(C) देशस्य (D) कालस्य

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-78

119. (i) शब्दशक्तिः कतिविधा भवति–
(ii) शब्दशक्तयः कति–
(iii) शब्दों की शक्तियों की संख्या है?
(iv) शब्दस्य कति शक्तयः सन्ति?
UGC 25 J–2000, UGC 73 D–2005, BHU AET–2012, MH SET-2014, GJ SET-2014

(A) 1 (B) 3
(C) 2 (D) 4

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-34

120. वाक्य के लिए आवश्यक है- UGC 25 D–2001

(A) आकांक्षा (B) योग्यता
(C) सन्निधि (D) तीनों

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-36

121. 'अग्निना सिञ्चति' इत्यत्र कस्या अभावे इदं वाक्यं न भवति? BHU AET–2010

(A) अर्थस्य (B) आसक्तेः
(C) योग्यतायाः (D) आकांक्षायाः

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-36

122. स्याद्वाचको लाक्षणिकः......... व्यञ्जकस्त्रिधा। BHU AET–2011

(A) पदोऽत्र (B) शब्दोऽत्र
(C) पाकोऽत्र (D) स्वार्थोऽत्र

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-34

110. (A) 111. (C) 112. (D) 113. (C) 114. (D) 115. (A) 116. (C) 117. (A) 118. (B) 119. (B) 120. (D) 121. (C) 122. (B)

123. सर्वेषां प्रायशोऽर्थानां............. मपीष्यते।
BHU AET–2011
(A) पाचकत्व (B) लक्ष्यकत्व
(C) बोधकत्व (D) व्यञ्जकत्व
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-40

124. संकेतितश्चतुर्भेदो .... र्जातिरेव वा–
BHU AET–2011
(A) जात्यादि (B) व्यक्त्यादि
(C) गत्यादि (D) वृत्यादि
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-43

125. सङ्केतितः चतुर्भेदः केषां मतम्? K- SET-2014
(A) बौद्धानाम् (B) चार्वाकाणाम्
(C) मीमांसकानाम् (D) वैय्याकरणानाम्
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-43-50

126. ....विषयो ह्यन्यः फलमन्यदुदाहृतम्। BHU AET–2011
(A) ध्यानस्य (B) भानस्य
(C) वेद्यस्य (D) ज्ञानस्य
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-76

127. (i) संकेतित अर्थ को देने वाला शब्द कहलाता है?
(ii) साक्षात्संकेतितं योऽर्थमभिधत्ते स..........
UP PGT–2013, BHU AET–2012, GJ SET-2003, 2016
(A) साधकः (B) बोधकः
(C) वाचकः (D) सार्थकः
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-42

128. अभिधेयाविनाभूत ...... र्लक्षणोच्यते लक्षमाणगुणैर्योगाद् वृत्तेरिष्टा तु गौणता। BHU AET–2012
(A) प्रवृत्तिः (B) प्रतीतिः
(C) प्रस्तुतिः (D) विश्रान्तिः
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-65

129. व्यङ्ग्यार्थम् इच्छन् जनः तदुपायतया कस्मिन् अर्थे आदरवान् भवेत्? UK SLET–2015
(A) लक्ष्यार्थे (B) वाच्यार्थे
(C) व्यङ्ग्यार्थे (D) तात्पर्यार्थे
स्रोत–ध्वन्यालोक (1.9) – आचार्य विश्वेश्वर, पेज–34, 35

130. (i) संकेतित अर्थ को बताने वाली बोधक शक्ति है?
(ii) साक्षात्संकेतितार्थबोधिका शब्दशक्तिः का?
(iii) साक्षात्सङ्केतितमर्थं बोधयति–
(iv) संकेतितार्थस्य बोधिका शक्तिः?
UP PGT–2000, 2002, 2009, UGC 25 J–1994, G-GIC-2015, HAP-2016, CCSUM -Ph.D-2016
(A) अभिधा (B) लक्षणा
(C) व्यञ्जना (D) तात्पर्या
स्रोत–(i) काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-50
(ii) साहित्यदर्पण (2.4) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–26
(iii) काव्यप्रकाश (सूत्र-9)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज–42

131. 'स मुख्योऽर्थस्तत्र मुख्यो व्यापारोऽस्याभिधोच्यते' यह वचन है? UP PGT–2000
(A) काव्यप्रकाश (B) साहित्यदर्पण
(C) ध्वन्यालोक (D) नाट्यशास्त्र
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-50

132. अभिधा द्वारा जिस अर्थ का बोध होता है, वह है?
UGC 25 J–1995
(A) लक्ष्यार्थ (B) व्यंग्यार्थ
(C) तात्पर्यार्थ (D) अभिधेयार्थ
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-50

133. संकेतग्रह का सम्बन्ध है— UGC 25 D–1996
(A) अभिधा से (B) लक्षणा से
(C) व्यञ्जना से (D) तात्पर्या से
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-42

134. शक्तिग्रहं कस्मान्न भवति? JNU. M. Phil/Ph.D-2015
(A) व्याकरणात् (B) उपमानात्
(C) व्यवहारतः (D) अनुमानात्
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-42

135. (i) मुख्यार्थ की वृत्ति है–
(ii) मुख्यार्थ का बोध कराने वाली वृत्ति है?
UGC 25 D–2001, UGC 73 J–2015
(A) अभिधा (B) लक्षणा
(C) व्यञ्जना (D) शाब्दीव्यञ्जना
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-50

123. (D) 124. (A) 125. (D) 126. (D) 127. (C) 128. (B) 129. (B) 130. (A) 131. (A) 132. (D) 133. (A) 134. (D) 135. (A)

136. (i) पद का मुख्य अर्थ होता है?
(ii) कस्तावत् पदस्य मुख्यार्थः?
UGC 25 J–2010, UGC 73 D-2015
(A) लक्ष्यार्थः (B) व्यङ्ग्यार्थः
(C) वाच्यार्थः (D) तात्पर्यार्थः
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-50

137. सङ्केतितार्थस्य बोधनादग्रिमा .... कही जाती है— UGC 73 J–2013
(A) लक्षणा (B) अभिधा
(C) व्यञ्जना (D) तात्पर्या
स्रोत–साहित्यदर्पण-शालिग्राम शास्त्री, पेज-26

138. स मुख्योऽर्थस्तत्र .... व्यापारोऽस्याभिधोच्यते। BHU AET–2011
(A) लक्ष्यो (B) मुख्यो
(C) वाच्यो (D) भाष्यो
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-50

139. स मुख्योऽर्थस्तत्र मुख्यो.........ऽस्याभिधोच्यते। BHU AET–2012
(A) व्यापारो (B) व्याहारो
(C) व्याघातो (D) व्याख्यार्थो
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-50

140. नाभिधा .... भावात् हेत्वभावान्न लक्षणा। BHU AET–2012
(A) समया (B) नियमा
(C) सुविधा (D) व्यञ्जना
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-70-71

141. संकेतग्रहस्य साधनं न वर्तते— CCSUM Ph.D-2016
(A) व्याकरणम् (B) उपमानम्
(C) आप्तवाक्यम् (D) मुख्यार्थबाधः
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-42

142. (i) वाच्यार्थप्रतिपादिका शक्तिर्भवति–
(ii) शब्द की वह शक्ति जिससे वाच्यार्थ प्रकट होता है, वह कहलाती है?
UP TGT (H)–2009, UGC 25 D–2005
(A) लक्षणा (B) व्यञ्जना
(C) शब्दशक्ति (D) अभिधा
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-50

143. 'सङ्केतितश्चतुर्भेदो जात्यादिर्जातिरेव वा'– यह वाक्य किस ग्रन्थ में हैं– UGC 25 J–2015
(A) काव्यप्रकाश में (B) नाट्यशास्त्र में
(C) काव्यालङ्कार में (D) काव्यमीमांसा में
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-43

144. 'सङ्केतितश्चतुर्भेदः' इति केषां मतम्?
JNU. M.Phil/Ph.D-2014
(A) मीमांसकानाम् (B) नैयायिकानाम्
(C) काव्यशास्त्रिणाम् (D) बौद्धानाम्
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-43

145. जहाँ कोई शब्द अन्य अर्थ के लिए अपने अर्थ का त्याग कर देता है, वहाँ लक्षणा होती है-
UP PGT–2004, 2010, UK TET–2011
(A) उपादान (B) लक्षणलक्षणा
(C) शुद्धा (D) गौणी
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-53

146. (i) लक्षणाशक्तेः किम् आवश्यकं तत्त्वम्?
(ii) लक्षणा स्वीकृति का आधार है? T SET–2014,
(iii) लक्षणावृत्तेः आधारः अस्ति? MG KV Ph.D–2016, UP PGT–2004, UGC 25 J–1999
(A) योग्यता (B) संकेतग्रह
(C) आसक्ति (D) मुख्यार्थबाध
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-51

147. 'गङ्गायां घोषः' में कौन लक्षणा है? UP PGT–2004
(A) प्रयोजनमूला (B) रूढि-लक्षणलक्षणा
(C) प्रयोजनमूला-लक्षण-लक्षणा (D) रूढिमूला
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-53

148. (i) काव्यप्रकाशानुसारं वाचकः कः? T– SET–2014
(ii) वाचकः कीदृशमर्थम् अभिधत्ते?
RPSC–SET–2010
(A) साक्षात्सङ्केतितम् अर्थम् (B) लक्ष्यार्थम्
(C) व्यङ्ग्यार्थम् (D) तात्पर्यार्थम्
स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.-9) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-42

136. (C) 137. (B) 138. (B) 139. (A) 140. (A) 141. (D) 142. (D) 143. (A) 144. (C) 145. (B) 146. (D) 147. (C) 148. (A)

149. (i) का आरोपिता शब्दशक्तिः? UP PGT–2005,
(ii) 'आरोपित क्रिया' या आरोपित शब्दव्यापार है?
(iii) का अर्पिता शक्तिः– UGC 73 S–2013, J–2014, UK SLET–2012, 2015

(A) व्यञ्जना (B) अभिधा
(C) लक्षणा (D) लक्षणा एवं व्यञ्जना

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-51

150. 'गौरयम्' उदाहरण है? UP PGT–2005

(A) शुद्धालक्षणा का (B) सारोपा लक्षणा का
(C) शाब्दी व्यञ्जना का (D) साध्यवसाना गौणी लक्षणा का

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.12) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-62

151. 'गङ्गायां घोषः'–इसमें व्यङ्ग्यार्थ है-UGC 25 D–1998

(A) गंगाप्रवाह (B) गङ्गातट
(C) मीन (D) शैत्यपावनत्वादि

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-70-72

152. 'ईश्वरानुद्भाविता' का किससे सम्बन्ध है? UGC 25 D–1997

(A) अभिधा से (B) ध्वनि से
(C) तात्पर्या से (D) लक्षणा से

स्रोत–साहित्यदर्पण (2/5)-शालिग्राम शास्त्री, पेज-29

153. सान्तरार्थनिष्ठो व्यापारो भवति– UGC 25 J–2005

(A) व्यञ्जनाव्यापारः (B) लक्षणाव्यापारः
(C) अभिधाव्यापारः (D) तात्पर्याभिधो व्यापारः

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-52

154. 'गङ्गायां घोषः' इत्यत्रास्ति– BHU AET–2010

(A) लक्षण-लक्षणा (B) रूढिलक्षणा
(C) विपरीतलक्षणा (D) सारोपालक्षणा

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-57

155. मुख्यार्थबाधे सति भवति? UGC 25 J–2007

(A) अभिधाव्यापारः (B) लक्षणाव्यापारः
(C) व्यञ्जनाव्यापारः (D) तात्पर्यम्

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-51

156. 'गङ्गायां घोषः' इत्यत्र वर्तते? UGC 25 D–2009

(A) उपादानलक्षणा (B) प्रयोजनवती लक्षणा
(C) गौणीलक्षणा (D) सारोपालक्षणा

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-53

157. इयमेव रूपकालङ्कारस्य बीजम्- K-SET–2014

(A) सारोपा (B) साध्यवसानिका
(C) निरूढा (D) प्रयोजनवती

स्रोत–साहित्यदर्पण-शालिग्राम शास्त्री, पेज-33

158. 'गौर्वाहीकः' इत्युदाहरणम्– UGC 25 D–2008

(A) जहल्लक्षणायाः (B) अजहल्लक्षणायाः
(C) सारोपालक्षणायाः (D) साध्यवसानालक्षणायाः

स्रोत–काव्यप्रकाश - पारसनाथ द्विवेदी, पेज-62

159. (i) किं नाम अभिधापुच्छभूता भवति?
(ii) अभिधापुच्छभूता का? UGC 25 D–2006,
(iii) अभिधापुच्छमिति व्यवह्रियते– 2011, J-2015

(A) स्थापना (B) लक्षणा
(C) तात्पर्या (D) भावना

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-251

160. शब्दशक्तिः का? BHU Sh.ET–2013

(A) लक्षणा (B) उत्प्रेक्षा
(C) सम्भावना (D) विभक्तिः

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-34

161. काव्यप्रकाशकारेण काव्यहेतवः निर्दिष्टाः? RPSC ग्रेड-I PGT–2015

(A) शक्तिः (B) निपुणता
(C) अभ्यासः (D) एते समुदिताः हेतवः न तु व्यस्ताः

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-17

162. मम्मट द्वारा उपादान लक्षणा के उदाहरण 'गौरनुबन्ध्यः' में किस आचार्य के मत का खण्डन किया गया है? UP GIC–2009

(A) कुमारिलभट्ट (B) मुकुलभट्ट
(C) प्रभाकर (D) भट्टलोल्लट

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-54-55

149. (C) 150. (D) 151. (D) 152. (D) 153. (B) 154. (A) 155. (B) 156. (B) 157. (A) 158. (C) 159. (B) 160. (A) 161. (D) 162. (B)

163. 'उपकृतं बहु तत्र किमुच्यते' आदि उदाहरण है?
UP GIC–2009
(A) लक्षणलक्षणा का (B) उपादान लक्षणा का
(C) सारोपालक्षणा का (D) साध्यवसाना लक्षणा का
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-59

164. आयुरेवेदं (घृतम्) इत्यत्र लक्षणा अस्ति?
UP GDC–2012
(A) शुद्धा सारोपा (B) गौणी सारोपा
(C) शुद्धा साध्यवसाना (D) गौणी साध्यवसाना
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-65

165. (i) मुख्यार्थबाधे का वृत्तिः–
(ii) मुख्यार्थबाधे तद्योगे शक्तिर्भवति?
(iii) मुख्यार्थबाधे तद्योगे रूढितोऽथ प्रयोजनात्।
अन्योऽर्थो लक्ष्यते यत्सा .... रोपिता क्रिया।
BHU AET–2012, UGC 73 D–2004, BHU Sh. ET–2008
(A) व्यञ्जना (B) अभिधा
(C) लक्षणा (D) तात्पर्या
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-51

166. अधोनिर्दिष्टेषु युग्मपर्यायं समीचीनं विचिनुत–
MH-SET–2013
(क) उपादानलक्षणा 1. कुन्ताः प्रविशन्ति
(ख) लक्षणलक्षणा 2. आयुर्घृतम्
(ग) सारोपालक्षणा 3. श्वेतो धावति
(घ) प्रयोजनवती लक्षणा 4. कलिङ्गः साहसिकः

	क	ख	ग	घ
(A)	3	4	2	1
(B)	4	3	1	2
(C)	1	2	3	4
(D)	2	1	4	3

स्रोत–साहित्यदर्पण-भवानीशंकर शर्मा, पेज-217, 220, 231, 227

167. काव्यप्रकाशानुसारं लक्षणायाः भेदो नास्ति—
T-SET–2013
(A) साध्यवसाना लक्षणा (B) सारोपा लक्षणा
(C) सोपादाना लक्षणा (D) उपादान लक्षणा
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-61

168. उपादानलक्षणा का उदाहरण है? UGC 73 J–2009
(A) गामानय (B) कुन्ताः प्रविशन्ति
(C) गौर्वाहीकः (D) गङ्गायां घोषः
स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.13) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-53

169. 'काकेभ्यो दधि रक्ष्यताम्' इत्यत्र को विशेषः?
BHU AET–2010
(A) तात्पर्यानुपपत्तिः (B) अन्वयानुपपत्तिः
(C) सङ्केतग्रहाभावः (D) वाक्यार्थाऽवबोधः
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-52

170. मुख्यार्थबाधे .... रूढितोऽथ प्रयोजनात्।
अन्योऽर्थो लक्ष्यते यत्सा लक्षणारोपिता क्रिया।।
BHU AET–2011
(A) यद्योगे (B) व्यायोगे
(C) तद्योगे (D) संयोगे
स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.-12) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-51

171. उपादानं .... चेत्युक्ता शुद्धैव सा द्विधा।
BHU AET–2011
(A) लक्षणं (B) तत्क्षणं
(C) रक्षणं (D) शिक्षणं
स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.-13) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-53

172. 'देवदत्तो दिवा न भुङ्क्ते' इत्यत्र रात्रिभोजनं न लक्ष्यते।
BHU AET–2011
(A) दीनो (B) हीनो
(C) खिन्नो (D) पीनो
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-57

173. (i) लक्षणा कतिधा-BHU AET–2012, MH SET-2011,
(ii) प्रोक्ता कतिविधा काव्यप्रकाशे लक्षणा वद।
(iii) मम्मटानुसारं लक्षणायाः भेदाः कति? JNU. MET-2015
(A) द्विविधा (B) त्रिविधा
(C) चतुर्विधा (D) षड्विधा
स्रोत–काव्यप्रकाश (सूत्र-17) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-66

174. 'गौर्वाहीकः' इत्यत्र 'गौरयम्' इत्यत्र च साधारणगुणाश्रयत्वेन .... एव लक्ष्यते इत्यपरे-
BHU AET–2012
(A) पदार्थ (B) पद्यार्थ
(C) परार्थ (D) वाच्यार्थ
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-62, 63

163. (A) 164. (C) 165. (C) 166. (A) 167. (C) 168. (B) 169. (A) 170. (C) 171. (A) 172. (D) 173. (D) 174. (C)

175. मुख्यार्थबाधे तद्युक्ते कोऽर्थः प्रतीयते?
BHU Sh. ET–2011
(A) व्यङ्ग्यार्थः (B) लक्ष्यार्थः
(C) शक्यार्थः (D) तात्पर्यार्थः
स्रोत–साहित्यदर्पण (2.5) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–28

176. यस्यां लक्षणायां मुख्यार्थस्यापि ग्रहणं भवति सा लक्षणा भवति– **UGC 25 D–2013**
(A) उपादानलक्षणा (B) लक्षण-लक्षणा
(C) जहत्स्वार्था (D) रूढिमूलालक्षणलक्षणा
स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.-13) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-53

177. 'गङ्गायां घोषः' इत्यत्र लक्षणायाः प्रयोजनं किम्?
JNU MET–2014
(A) घोषे वासादेः प्रत्ययः
(B) गङ्गातीरे शीतत्वपावनत्वादेः प्रत्ययः
(C) गङ्गायां स्नानादिकस्य प्रत्ययः
(D) धीवराणां मत्स्यादिप्राप्तेः प्रत्ययः
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-70-71

178. 'गङ्गायां घोषः' इत्यस्मिन् शैत्यपावनत्वयोः प्रतीतौ शब्दशक्तिर्वर्तते– **G.GIC–2015**
(A) अभिधा (B) लक्षणा
(C) व्यञ्जना (D) तात्पर्या
स्रोत–काव्यप्रकाश (सू0-23) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-70

179. अधोलिखित में से लक्षणा के लिये कौन-सा हेतु अपेक्षित नहीं है? **UP PGT–2013**
(A) मुख्यार्थबाध (B) समवाय सम्बन्ध
(C) रूढि (D) प्रयोजन
स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.-12)- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-51

180. गौणी लक्षणा का ज्ञान होता है- **UP PGT–2013**
(A) समवाय से (B) सादृश्य से
(C) संयोग से (D) अर्थापत्ति से
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-59

181. 'कुन्ताः प्रविशन्ति'–यह जिसका उदाहरण है, वह है?
BHU MET–2015
(A) अभिधा (B) लक्षणा
(C) व्यञ्जना (D) वक्रोक्ति
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-53

182. (i) 'गङ्गायां घोषः' इत्यस्य लक्ष्यार्थोऽस्ति-
(ii) 'गङ्गायां घोषः' का लक्ष्यार्थ है-
(iii) 'गङ्गायां घोषः' अस्य लक्ष्यार्थः–
UP PGT–2002, UP GIC–2015, CCSUM -Ph.D-2016
(A) गङ्गातटे घोषः (B) घोषः प्रान्तवाहिन्यां गङ्गायाम्
(C) घोषे शीतत्वं-पाषाणत्वम् (D) गङ्गाजलप्रवाहे घोषः
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-61

183. (i) किसने कहा 'लक्षणा तेन षड्विधा'?
(ii) ''लक्षणा तेन षड्विधा'' कस्येयमुक्तिः?
(iii) 'लक्षणा तेन षड्विधा' इति केन आचार्येण उक्तम्?
UGC 73 J–2015, K- SET–2014, RPSC SET–2010
(A) कुन्तकेन (B) मम्मटेन
(C) भरतेन (D) रुद्रटेन
स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.-17) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-66

184. मम्मटमते लक्षणा साक्षात्सम्बधेन किं निष्ठा भवति?
JNU. M. Phil/Ph.D-2014
(A) शब्दनिष्ठा (B) मुख्यार्थनिष्ठा
(C) लक्ष्यार्थनिष्ठा (D) व्यङ्ग्यार्थनिष्ठा
स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.12) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-51

185. 'प्रयोजनेन सहितं लक्षणीयं न युज्यते'– इत्युक्तिः केन सम्बद्धा? **UGC 25 J–2016**
(A) व्यञ्जनायाः पृथग्वृत्तित्वस्वीकारेण
(B) अभिधायाः प्राथम्येन
(C) लक्षणायाः गौणत्वस्वीकारेण
(D) तात्पर्यार्थस्वीकारेण
स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.28) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-75

175. (B) 176. (A) 177. (B) 178. (C) 179. (B) 180. (B) 181. (B) 182. (A) 183. (B) 184. (B) 185. (A)

186. अधस्तनयुग्मानां तालिकां विचिनुत– K-SET-2015

(क) संयोगः 1. कर्णार्जुनौ
(ख) विप्रयोगः 2. सशंखचक्रो हरिः
(ग) साहचर्यम् 3. भीमार्जुनौ
(घ) विरोधिता 4. अशंखचक्रो हरिः

	क	ख	ग	घ
(A)	2	4	1	3
(B)	3	1	2	4
(C)	4	3	2	1
(D)	1	2	3	4

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.32) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-78

187. 'राम-लक्ष्मणौ' व्यञ्जना है- UP PGT–2002

(A) संयोग (B) विरोधिता
(C) साहचर्य (D) अर्थ

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.32) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-78

188. 'सशङ्खचक्रो हरिः' में व्यञ्जना है- UP PGT–2002

(A) संयोग (B) विप्रयोग
(C) विरोधिता (D) साहचर्य

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-82

189. व्यञ्जना कतिधा— MH-SET–2011

(A) द्विधा (B) त्रिधा
(C) चतुर्धा (D) पञ्चधा

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-82

190. प्रयोजन सदैव गम्य है– UP PGT–2005

(A) इंगित से (B) व्यञ्जना से
(C) व्याजोक्ति से (D) उपर्युक्त सभी से

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.-18) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-67

191. लक्षणा में प्रयोजन की प्रतीति कराने वाली वृत्ति है– UGC 25 D–2001

(A) अभिधा (B) लक्षणा
(C) व्यञ्जना (D) तात्पर्या

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.-23) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-70

192. प्रतीयमानार्थस्य प्रतिपादिका शक्तिर्भवति– UGC 25 D–2009

(A) व्यञ्जना (B) लक्षणा
(C) अभिधा (D) तात्पर्या

स्रोत–ध्वन्यालोक (1/4)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज–13

193. मम्मटमते व्यङ्ग्यमूलाव्यञ्जनायाः उदाहरणं वर्तते? UGC 25 D–2013

(A) निःशेषच्युतचन्दनम् (B) पश्य निश्चलनिष्पन्दा
(C) ग्रामतरुणं तरुण्या (D) मातर्गृहोपकरणं नास्ति

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-41

194. मम्मट के अनुसार व्यङ्ग्य रूप प्रयोजन में अपरिहार्य है- UP GIC–2009

(A) व्यञ्जना (B) अभिधा
(C) तात्पर्या (D) रूढि

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-69

195. ''अर्थस्य व्यञ्जकत्वे तच्छब्दस्य सहकारिता''–होती है- UGC 73 D–2012

(A) शाब्दीव्यञ्जनायाम् (B) आर्थीव्यञ्जनायाम्
(C) गूढव्यञ्जनायाम् (D) अगूढव्यञ्जनायाम्

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.-38) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-89

196. आर्थीव्यञ्जना में अर्थ की व्यञ्जकता और सहकारिता है– UGC 73 D–2013

(A) वर्णस्य (B) उपसर्गस्य
(C) प्रत्ययस्य (D) शब्दस्य

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.38) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-89

197. यस्य प्रतीतिमाधातुं लक्षणा समुपास्यते।
फले.......... गम्येऽत्र व्यञ्जनान्नापरा क्रिया॥ BHU AET–2011

(A) शब्दैक (B) मुख्यार्थ
(C) संकेत (D) सन्दर्भ

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.23) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-70

198. (i) 'गङ्गायां घोषः' इत्यत्र शैत्यपावनत्वादिर्बोधो जायते-
(ii) 'गङ्गायां घोषः' में शैत्य तथा पावनत्व की प्रतीति होती है- UP PGT–2013, WB SET-2010

(A) अभिधा वृत्ति से (B) लक्षणा वृत्ति से
(C) आधारत्व की विवक्षा से (D) व्यञ्जना से

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-70

186. (A) 187. (C) 188. (A) 189. (A) 190. (B) 191. (C) 192. (A) 193. (B) 194. (A) 195. (B) 196. (D) 197. (A) 198. (D)

199. संयोगादि के द्वारा अनेकार्थक शब्दों के वाचकत्व के नियन्त्रित होने पर वाच्यार्थ से भिन्न अर्थ की प्रतीति कराने वाले व्यापार को कहा जाता है– UP PGT–2013

(A) तात्पर्या (B) अभिधा
(C) व्यञ्जना (D) लक्षणा

स्रोत–काव्यप्रकाश (सूत्र-32) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-77

200. 'ज्ञानस्य विषयो ह्यन्यः' इत्यत्र अन्यशब्दस्य कः अर्थः- JNU. M. Phil/Ph.D-2014

(A) विषयादन्यः (B) फलादन्यः
(C) शब्दादन्यः (D) ज्ञानादन्यः

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.29) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-76

201. (i) अधस्तनपक्षेषु कतमस्मिन् आलङ्कारिकमतानुसारतः शब्दसङ्केतो गृह्यते। UGC 25 J–2008,
(ii) संकेतः कुत्र गृह्यते? WB SET-2010

(A) जातौ (B) जातिविशिष्टव्यक्तौ
(C) व्यक्तौ (D) जातिव्यक्त्याकृतिषु

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.-10)- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-43

202. (i) संकेतग्रह में शब्द का अर्थ 'अपोह' मान्य है–
(ii) 'अपोह' को शब्दार्थ मानने वाले मतवादी हैं– UP-GIC–2009, UP PGT–2011

(A) नैयायिकों के द्वारा (B) वेदान्तियों द्वारा
(C) बौद्धों द्वारा (D) मीमांसकों द्वारा

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-49

203. (i) केवल जाति में शब्द का संकेतग्रह मानने वाले मतवादी हैं? UP GIC–2009, UP GDC–2014
(ii) 'जातिरेव' सङ्केतग्रहस्याऽऽधार इति मन्यन्ते?

(A) वैयाकरण (B) मीमांसक
(C) वेदान्ती (D) बौद्ध

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-49

204. 'अन्विताभिधानवाद' मत है? UP PGT–2005

(A) आनन्दवर्धन का (B) कुमारिलभट्ट का
(C) प्रभाकरगुरु का (D) मम्मट का

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-37

205. संकेतग्रहस्य प्रधानं साधनम्........। GT SET–2016

(A) लोकव्यवहारः (B) आप्तवाक्यम्
(C) उपमानम् (D) कोशः

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-42

206. मीमांसकानां मते शब्दानां शक्तिः WB SET-2010

(A) जातौ (B) व्यक्तौ
(C) जातिविशिष्टव्यक्तौ (D) उपाधौ

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-47

207. तद्गतं च .... काव्यकारणतावच्छेकतया सिद्धो जातिविशेषः उपाधिरूपं वा खण्डम्। पूरयत। KL SET–2014

(A) काव्यत्वम् (B) शब्दत्वम्
(C) कारणत्वम् (D) प्रतिभात्वम्

स्रोत–रसगङ्गाधर - मदनमोहन झा, पेज–27

208. काव्यप्रकाशानुसारं गुणीभूतव्यङ्ग्यं नास्ति–T SET–2013

(A) अगूढः (B) अस्फुटः
(C) अपरस्याङ्गः (D) सुन्दरः

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.-66) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-196

209. अभिहितान्वयवाद का इससे सम्बन्ध है- UGC 25 D–1999

(A) तात्पर्यार्थ (B) व्यङ्ग्यार्थ
(C) प्रभाकरमत (D) संकेतितार्थ

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-35-36

210. (i) तात्पर्यावृत्तिः स्वीक्रियते– UGC 25 D–2008,
(ii) तात्पर्यार्थमङ्गीकुर्वन्ति– UP PGT–2011
(iii) तात्पर्यावृत्ति स्वीकृत की गयी है– UP GDC–2012, UGC 73 J–2016

(A) अन्विताभिधानवादिनः (B) अभिहितान्वयवादिनः
(C) नैरुक्तकाः (B) शब्दब्रह्मवादिनः

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-35-36

199. (C) 200. (B) 201. (B) 202. (C) 203. (B) 204. (C) 205. (A) 206. (A) 207. (D) 208. (D) 209. (A) 210. (B)

211. (i) ''तात्पर्यार्थोऽपि केषुचित्' कथनं सम्बद्ध्यते –
(ii) काव्यप्रकाश में 'तात्पर्यार्थोऽपि केषुचित्' में इनके मत का सङ्केत है-
(iii) 'तात्पर्यार्थोऽपि केषुचित्' इत्यंशे 'केषुचित्' पदेन मम्मटः केषां मतं प्रदर्शयति–
UP GDC–2013, UP GIC–2009, 2012

(A) नैयायिक (B) वैयाकरण
(C) मीमांसक (D) वैष्णव

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.-7)- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-35-36

212. (i) 'वाच्य एव वाक्यार्थ' इति ये वदन्ति ते–
(ii) 'वाच्य ही वाक्यार्थ है' यह मानने वाले हैं?
(iii) 'वाच्य एव वाक्यार्थः' इति केषां मतमस्ति?
(iv) 'वाच्य एव वाक्यार्थः' इति के वदन्ति–
UGC 73 J–2012, RPSC-SET-2010, K-SET–2013, MH SET-2013

(A) अभिहितान्वयवादिनः (B) अन्विताभिधानवादिनः
(C) भक्तिवादिनः (D) व्यक्तिवादिनः

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-37

213. .... र्थोऽपि केषुचित्। BHU AET–2011

(A) तात्पर्या (B) संक्षेपा
(C) विक्षेपा (D) सन्देशा

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.-7) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-35

214. विशिष्टा एव पदार्थाः वाक्यार्थः। न तु पदार्थानां........ BHU AET–2011

(A) वैशिष्ट्यम् (B) वैजात्यम्
(C) वैधर्म्यम् (D) संयोजनम्

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-37

215. वाच्य एव........... इत्यन्विताभिधानवादिनः। BHU AET–2012

(A) तात्पर्यार्थ (B) वाक्यार्थ
(C) तत्त्वार्थ (D) गूढार्थ

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-37

216. अभिहितान्वयवादिनां मतेन अपदार्थोऽपि वाक्यार्थः किम् उच्यते? BHU AET–2012

(A) तात्पर्यार्थः (B) वाक्यार्थः
(C) तत्त्वार्थः (D) गूढार्थः

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-36

217. शाब्दबोधे अन्विताभिधानवादः कैरङ्गीक्रियते? K -SET–2015

(A) वैय्याकरणैः (B) प्राभाकरैः
(C) भाट्टैः (D) नैय्यायिकैः

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-37

218. मम्मट ने 'आकांक्षायोग्यता-सन्निधिवशाद् वक्ष्यमाणस्वरूपाणां पदार्थानां समन्वये तात्पर्यार्थो विशेषवपुरपदार्थोऽपि वाक्यार्थः' कहकर किस वाद का संकेत किया है? UP GDC–2008

(A) तद्वानवाद (B) अपोहवाद
(C) अभिहितान्वयवाद (B) अन्विताभिधानवाद

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-36

219. अभिहितान्वयवाद मत है– UP PGT–2004, 2009

(A) प्रभाकर गुरु का (B) आनन्दवर्धन का
(C) मम्मट का (D) मीमांसक (कुमारिलभट्ट) का

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-35

220. मम्मट के अनुसार रसदोष है- UGC 73 D–2013

(A) एकादश (B) द्वादश
(C) त्रयोदश (D) चतुर्दश

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.-81)- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-357

221. दोषाः कतिधा मताः? BHU AET–2010

(A) द्विधा (B) त्रिधा
(C) चतुर्धा (D) पञ्चधा

स्रोत–साहित्यदर्पण (7.1) - शालिग्रामशास्त्री, पेज-228

222. न .... स्वपदेनोक्तावपि सञ्चारिणः क्वचित्। BHU AET–2011

(A) गुणः (B) दोषः
(C) बोधः (D) लाभः

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.82)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज-365

211. (C) 212. (B) 213. (A) 214. (A) 215. (B) 216. (A) 217. (B) 218. (C) 219. (D) 220. (C) 221. (D) 222. (B)

223. .... हतिर्दोषो रसश्च मुख्यः तदाश्रयाद्वाच्यः– BHU AET–2012

(A) लक्ष्यार्थ (B) वाच्यार्थ

(C) वाक्यार्थ (D) मुख्यार्थ

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.71) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-266

224. एषु कोऽर्थदोषः? BHU Sh.ET–2013

(A) अधिकाक्षरता (B) ग्राम्यत्वम्

(C) श्रुतिकटुता (D) समासबहुलता

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-330

225. 'रसापकर्षका दोषाः' उक्ति किस आचार्य की है? UP PGT (H)–2005

(A) वामन (B) विश्वनाथ

(C) मम्मट (D) भरत

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.-71) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-266

226. (i) रसापकर्षकः कः– UGC 73 D–2014,
(ii) रसापकर्षकाः भवन्ति– BHU Sh. ET–2011,
(iii) काव्यस्य अपकर्षकाः केः? K -SET–2015

(A) गुणाः (B) दोषाः

(C) अलङ्काराः (D) भावाः

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.-71) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-266

227. साक्षात्सम्बन्धेन दोषस्य कुत्र स्थितिः? HE–2015

(A) रसे (B) शब्दे

(C) अर्थे (D) वाक्ये

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.71) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-266

228. मम्मटस्य मतेन दोषाणां लक्षणं किम्? DSSSB PGT–2014, DSSSB TGT–2014

(A) वाक्यापकर्षको धर्मः (B) शब्दापकर्षको धर्मः

(C) रसापकर्षको धर्मः (D) अर्थापकर्षको धर्मः

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.71) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-266

229. दोषाः कस्यापकर्षकाः भवन्ति– BHU AET–2010

(A) अर्थस्य (B) गुणस्य

(C) रीतेः (D) रसस्य

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.71) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-266

230. ''ये रसस्याङ्गिनो धर्माः शौर्यादय इवात्मनः। उत्कर्षहेतवस्ते स्युरचलस्थितयो........।।'' उचित शब्द से वाक्यपूर्ति करें। UGC 73 J–2015

(A) अलङ्काराः (B) गुणाः

(C) दोषाः (D) वृत्तिः

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.86) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-380

231. काव्यस्य उत्कर्षहेतवः के? K -SET–2015

(A) दोषाः (B) वृत्तयः

(C) गुणाः (D) पाकाः

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.86) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-380

232. रसस्याङ्गिनो धर्माः के? JNU MET–2015

(A) अलङ्काराः B) गुणाः

(C) शब्दाः (D) अर्थाः

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.86) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-380

233. मम्मटमते कति पदगताः दोषाः भवन्ति? JNU. M. Phil/Ph.D-2014, JNU. MET-2015

(A) दश (B) द्वादश

(C) षोडश (D) पञ्चदश

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.72) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-266

234. मम्मटमते गुणाः सन्ति– UP GIC–2015

(A) मुख्यधर्माः (B) रसस्याङ्गिनो धर्माः

(C) सञ्चारिणो धर्माः (D) अस्थिराः धर्माः

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.86) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-380

235. ''ये रसस्याङ्गिनो धर्माः शौर्यादय इवात्मनः। उत्कर्षहेतवस्ते स्युरचलस्थितयो गुणाः।।'' इति कस्योक्तिः? UP GIC–2015

(A) आनन्दवर्धनस्य (B) वामनस्य

(C) मम्मटस्य (D) कुन्तकस्य

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.86) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-380

236. (i) मम्मट की सम्मति में गुण है?
(ii) मम्मटस्य मतेन काव्यगुणाः सन्ति– UP GDC–2013, UP GIC–2009

(A) रसस्य गौणीभूताः धर्माः

(B) काव्यस्य जीवनाधायकतत्त्वानि

(C) रसस्य उत्कर्षाधायकतत्त्वानि

(D) दोषरहितकाव्यरूपात्मकाः

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.86) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-380

223. (D) 224. (B) 225. (C) 226. (B) 227. (A) 228. (C) 229. (D) 230. (B) 231. (C) 232. (B) 233. (C) 234. (B) 235. (C) 236. (C)

237. (i) 'त्रयस्ते न पुनर्दश' इत्यादि काव्यगुणनिर्धारणं कृतवान्- UP GDC–2014, BHU AET–2010
(ii) 'त्रयस्ते न पुनर्दश इति' केन उक्तम्?
(A) दण्डी (B) वामनः
(C) विश्वनाथः (D) मम्मटः
स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.88) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-388

238. समासभूयस्त्वं कस्मिन् गुणे अभिमतम्? UK SLET–2015
(A) माधुर्ये (B) प्रसादे
(C) ओजसि (D) श्लेषे
स्रोत–काव्यादर्श (1/80)-श्रीरामचन्द्र मिश्र, पेज-61

239. माधुर्य गुण किस रस का धर्म है? UP GDC–2008
(A) शृङ्गार (B) वीर
(C) अद्भुत (D) रौद्र
स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.89) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-388

240. जो काव्यात्मा रस के धर्म हैं, वे कहलाते हैं– BHU AET–2012
(A) शब्दाः (B) गुणाः
(C) अलङ्काराः (D) अर्थाः
स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.86) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-380

241. आह्लादकत्वं ..... शृङ्गारे द्रुतिकारणम्– BHU AET–2012
(A) सौन्दर्यं (B) माधुर्यं
(C) विज्ञानं (D) शब्दानां
स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.89) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-388

242. को नामासौ गुणः प्रोक्तः सर्वत्र विहितस्थितिः? BHU AET–2012
(A) श्लेषः (B) प्रसादः
(C) समाधिः (D) समता
स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.93) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-390

243. यत्र श्रुतिमात्रेण शब्दाः अर्थबोधकाः भवन्ति तत्र मम्मटेन को नाम गुणः स्वीकृतः? BHU AET–2012
(A) अर्थव्यक्तिः (B) कान्तिः
(C) प्रसादः (D) उदारत्वम्
स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.100) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-394

244. ये रसस्याङ्गिनो धर्माः शौर्यादय इवात्मनः .... हेतवः ते स्युः। BHU AET–2012
(A) उद्धार (B) उत्साह
(C) उत्थान (D) उत्कर्ष
स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.86) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-380

245. अङ्गद्वारेण रसबोधकोऽयम्– JNU M. Phil/Ph.D-2015
(A) व्यभिचारिभावः (B) गुणः
(C) अलङ्कारः (D) व्यञ्जना
स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.87) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-381

246. अङ्गीकृताः कति गुणाः मम्मटेन यथायथम्– BHU AET–2012
(A) षड्गुणाः (B) दशगुणाः
(C) त्रयोगुणाः (D) पञ्चगुणाः
स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.88) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-388

247. माधुर्यौजः .... ख्यास्त्रयस्ते न पुनर्दश– BHU AET–2011
(A) प्रसादा (B) प्रमादा
(C) प्रकर्षा (D) प्रसन्ना
स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.88) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-388

248. अङ्गीरस के धर्म और उसके उत्कर्षाधायक तत्त्व हैं– UGC 73 J–2012
(A) अलङ्काराः (B) गुणाः
(C) वर्णाः (D) दोषाः
स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.86) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-380

249. (i) 'माधुर्यौजः प्रसादाख्याः त्रयस्ते न पुनर्दश' यह मत है-
(ii) ''माधुर्यौजः प्रसादाख्याः त्रयस्ते न पुनर्दश'' – इति कस्य मतमस्ति– UGC 73 J–2012, D–2014
(A) मम्मटस्य (B) भरतस्य
(C) भामहस्य (D) भोजराजस्य
स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.88) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-388

250. काव्यप्रकाशानुसारं शृङ्गारे द्रुतिकारणम् आह्लादकत्वं कस्य? UGC 25J -2016
(A) माधुर्यस्य (B) ओजसः
(C) प्रसादस्य (D) समतायाः
स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.88) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-388

237. (D) 238. (C) 239. (A) 240. (B) 241. (B) 242. (B) 243. (C) 244. (D) 245. (C) 246. (C) 247. (A) 248. (B) 249. (A) 250. (A)

251. विशेषाधानहेतुः सिद्धो वस्तुधर्मः कः? MH-SET-2011
(A) रसः (B) गुणः
(C) वर्णः (D) व्यक्तिः
स्रोत–(i) काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-44
(ii) साहित्यदर्पण - शालिग्राम शास्त्री, पेज-27

252. शब्दगत एवं अर्थगत बीस गुणों के प्रतिपादक आचार्य हैं- UP GIC–2009
(A) भामह (B) रुय्यक
(C) रुद्रट (D) वामन
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-388

253. माधुर्यौजः प्रसादाख्यास्त्रयस्ते न पुनर्दश के ते? UGC 25 D–2013
(A) काव्यदोषाः (B) काव्यगुणाः
(C) काव्यभेदाः (D) काव्यलक्षणम्
स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.88) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-388

254. अङ्गिनो रसस्य अचलस्थितयो धर्माः के? UGC 25 J–2014
(A) गुणाः (B) अलङ्काराः
(C) रीतयः (D) रसाः
स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.86) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-380

255. 'गुणवृत्त्या पुनस्तेषां वृत्तिः शब्दार्थयोर्मता' किसका कथन है? UP PGT–2004
(A) विश्वनाथ का (B) जगन्नाथ का
(C) मम्मट का (D) वामन का
स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.94) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-390

256. (i) मम्मट के मत में गुणों की संख्या है?
(ii) आचार्य मम्मट ने काव्यगुण माने हैं-
(iii) मम्मटमते कति काव्यगुणाः- UP TGT (H)–2005, UGC 73 J–2015, D-2015, K- SET-2013
(A) 10 (B) 3
(C) 15 (D) 8
स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.88) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-388

257. 'गौ शुक्लश्चलोडित्थः' किसका विचार है? UP PGT–2005
(A) मम्मट का (B) महाभाष्यकार का
(C) आनन्दवर्धन का (D) किसी का नहीं
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-45

258. तात्पर्यस्य अर्थो भवति– BHU AET–2012
(A) प्रतीतिजननयोग्यत्वम् (B) लक्ष्यार्थः
(C) मुख्योऽर्थः (D) व्यङ्ग्यार्थः
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-35

259. अर्थक्रियाकारितया प्रवृत्तिनिवृत्तियोग्या .... भवति– BHU AET–2012
(A) व्यक्तिरेव (B) भक्तिरेव
(C) शक्तिरेव (D) युक्तिरेव
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-44

260. ज्ञानस्य .... ह्यन्यः फलमन्यदुदाहृतम्? BHU AET–2012
(A) साधको (B) बोधको
(C) विषयो (D) कारक
स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.29) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-76

261. गुणानां काव्यस्वरूपविषये का भूमिका अस्ति— T-SET-2014
(A) गुणाः काव्यस्य आवश्यकानि तत्त्वानि सन्ति
(B) गुणाः काव्यस्य स्वरूपनिर्धारकाः सन्ति
(C) गुणाः काव्यस्य उत्कर्षहेतवः सन्ति
(D) गुणाः काव्यम् अलङ्कुर्वन्ति
स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.86) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-380

262. के अलङ्काराः? BHU Sh.ET–2011
(A) रसशोभाकराः (B) शब्दार्थशोभाकराः
(C) शब्दशोभाकराः (D) अर्थशोभाकराः
स्रोत–काव्यप्रकाश (सूत्र.87) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-381

263. अलङ्कारशब्दस्य व्युत्पत्तिमूलके वास्तविकोऽर्थो भवति– DL–2015
(A) उपमादयो भेदाः (B) भामहशास्त्रम्
(C) रसापकर्षकं तत्त्वम् (D) अलङ्करोतीति
स्रोत–काव्यप्रकाश - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–470

251. (B) 252. (D) 253. (B) 254. (A) 255. (C) 256. (B) 257. (B) 258. (B) 259. (A) 260. (C) 261. (C) 262. (B) 263. (D)

264. अलङ्कारशास्त्रसम्बन्धीविषयः कस्मिन् पुराणे प्रतिपादितो वर्तते? DSSSB TGT–2014

(A) महापुराणे (B) विष्णुपुराणे
(C) वायुपुराणे (D) अग्निपुराणे

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-578

265. अलङ्कारों को काव्य की शोभाकारक धर्म किसने माना? UGC (H) J–2007

(A) भामह (B) दण्डी
(C) मम्मट (D) क्षेमेन्द्र

स्रोत–(i) काव्यादर्श (2.1) - श्रीरामचन्द्र मिश्र, पेज–74
(ii) काव्यप्रकाश - पारसनाथ द्विवेदी, पेज471

266. भरतेनोक्ताः अलङ्काराः सन्ति – UGC 25 J–2009

(A) चत्वारः (B) विंशतिः
(C) पञ्च (D) सप्त

स्रोत– नाट्यशास्त्र (6/40)-बाबूलाल शुक्ल, पेज-293-294

267. अलङ्कारशास्त्रे कति प्रस्थानानि सन्ति– DSSSB PGT–2014, DSSSB TGT–2014

(A) त्रीणि (B) चत्वारि
(C) पञ्च (D) षट्

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, भू0 पेज–16-18

268. शब्दार्थ के शोभातिशायी धर्म अलङ्कार के समर्थक आचार्य हैं? UP PCS–2013

(A) विश्वनाथ (B) भामह
(C) दण्डी (D) बाणभट्ट

स्रोत– काव्यादर्श (2/1) - श्रीरामचन्द्र मिश्र, पेज–74

269. 'काव्यशोभाकरान्धर्मानलङ्कारान् प्रचक्षते' किसकी उक्ति है? UGC (H) D–2010, UP PGT (H)–2010, 2013

(A) दण्डी की (B) भामह की
(C) रुद्रट की (D) भरतमुनि की

स्रोत– काव्यादर्श (2/1) - श्रीरामचन्द्र मिश्र, पेज–74

270. उपकुर्वन्ति तं सन्तं ये .... जातुचित्। हारादिवदलङ्कारास्तेऽनुप्रासोपमादयः॥ रिक्तस्थानं पूरयतु। BHU AET–2012

(A) ङ्गहारेण (B) ऽङ्गद्वारेण
(C) ङ्गदानेन (D) ङ्गाङ्गित्वेन

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.87) – आचार्य विश्वेश्वर, पेज–381

271. भासते प्रतिभासार! रसाभाताहताविभा। भावितात्मा शुभा वादे देवाभा बत ते सभा॥ नामक पद्य में चित्रबन्ध है– UP PGT–2013

(A) खड्गबन्ध (B) सर्वतोभद्रा
(C) मुरजबन्ध (D) पद्मबन्ध

स्रोत–काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-436

272. शब्द की द्वयर्थी योजना से कौन-सा अलङ्कार होता है? UGC (H) J-2010

(A) अनुप्रास (B) वक्रोक्ति
(C) श्लेष (D) उत्प्रेक्षा

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.102) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-401

273. ''गुरुजनपरतन्त्रतया दूरतरं देशमुद्यतो गन्तुम् अलिकुलकोकिलललिते नैष्यति सखि! सुरभिसमयेऽसौ॥'' ....अत्र को नामालङ्कारः? UGC 25 D–2013

(A) उपमा (B) रूपकः
(C) श्लेषवक्रोक्तिः (D) काकुवक्रोक्तिः

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-403

274. ''यदुक्तमन्यथावाक्यमन्यथाऽन्येन योज्यते श्लेषेण काक्वा वा ज्ञेया सा .... स्तथा द्विधा॥'' BHU AET–2012

(A) श्लेषोक्ति (B) विज्ञप्ति
(C) वक्रोक्ति (D) द्विरुक्ति

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.102) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-401

275. वक्रोक्तिऽलङ्कारः कतिविधः? UK SLET–2012

(A) पञ्चविधः (B) चतुर्विधः
(C) द्विविधः (D) त्रिविधः

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.102) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-401

276. मम्मट के मत में निम्नलिखितों में से कौन सा शब्दालङ्कार है? UGC 73 J -2016

(A) वक्रोक्ति (B) उपमा
(C) रूपकम् (D) उत्प्रेक्षा

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-401

264. (D) 265. (B) 266. (A) 267. (C) 268. (C) 269. (A) 270. (B) 271. (D) 272. (B) 273. (D) 274. (C) 275. (C) 276. (A)

277. वक्रोक्ति है– BHU MET–2009, 2013
(A) गुण (B) रीति
(C) दोष (D) अलङ्कार
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-401

278. 'भङ्गीभणिति' कहलाती है– UGC 73 J–2014
(A) स्वभावोक्तिः (B) समासोक्तिः
(C) वक्रोक्तिः (D) सहोक्तिः
स्रोत–वक्रोक्तिजीवितम् (1.10)-परमेश्वरदीन पाण्डेय, पेज-51

279. 'सर्वदो माधवः पायात् स यो गङ्गामदीधरत्' अत्र कः अलङ्कार– CVVET–2017
(A) वक्रोक्तिः (B) श्लेषः
(C) अनुप्रासः (D) यमकम्
स्रोत–छन्दोऽलंकारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-62

280 . अनुप्रासालङ्कारोऽस्ति- UGC 73 D–2005
(A) शब्दालङ्कारः (B) अर्थालङ्कारः
(C) उभयालङ्कारः (D) वाक्यालङ्कारः
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–404

281. काव्यप्रकाशे कतिधा लाटानुप्रास इष्यते? BHU AET–2011, 2012
(A) द्विधा (B) त्रिधा
(C) चतुर्धा (D) पञ्चधा
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–407-409

282. स्वर की विषमता होने पर भी जो शब्द साम्य होता है, वह अलङ्कार है– UP PGT–2009, UP TET–2014
(A) अनुप्रास (B) यमक
(C) रूपक (D) उत्प्रेक्षा
स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.103) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-404

283. स्वरवैसादृश्येऽपि .... सदृशत्वं वर्णसाम्यम्। रसाद्यनुगताः प्रकृष्टो न्यासोऽनुप्रासः॥ BHU AET–2012
(A) व्यञ्जन (B) लक्षण
(C) वर्णन (D) वक्रोक्ति
स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.103) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-404

284. रसाद्यनुगतः .... न्यासोऽनुप्रासः– BHU AET–2011
(A) प्रकृष्टो (B) समन्वितो
(C) प्रथितो (D) प्रसिद्धो
स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.103) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-404

285. असकृद्व्यञ्जनावृत्तौ कोऽलङ्कारः? BHU Sh. ET–2013
(A) सहोक्तिः (B) श्लेषः
(C) अनुप्रासः (D) रूपकम्
स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.103) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-404

286. निम्न में से कौन सा अनुप्रास का भेद नहीं है? UP GIC–2009
(A) वृत्त्यानुप्रास (B) छेकानुप्रास
(C) मध्यानुप्रास (D) अन्त्यानुप्रास
स्रोत–(i) छन्दोऽलंकारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-59
(ii) साहित्यदर्पण - शालिग्राम शास्त्री, पेज–280

287. छेकानुप्रासः इत्यत्र 'छेकपदस्य' अर्थः कः? DSSSB PGT–2014
(A) पण्डितः (विदग्धः) (B) मधुरः
(C) कठोरः (D) भेकस्यानुजः
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-404

288. स्वरव्यञ्जन समूह की पुनरावृत्ति से कौन-सा शब्दालङ्कार होता है? BHU MET–2010
(A) श्लेष (B) अनुप्रास
(C) यमक (D) वक्रोक्ति
स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.103) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-404

289. 'लताकुञ्जं गुञ्जन् मदवदलिपुञ्जं चपलयन्' में अलङ्कार है– UP PGT–2004, UP TET-2016
(A) यमक (B) श्लेष
(C) अनुप्रास (D) इनमें से कोई नहीं
स्रोत–छन्दोऽलंकारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-59

290. 'यस्य न सविधे दयिता दवदहनस्तुहिनदीधितिस्तस्य।' 'यस्य च सविधे दयिता दवदहनस्तुहिनदीधितिस्तस्य॥' इस पद्य में अलङ्कार है–UP PGT–2013, MH SET-2013
(A) यमक (B) श्लेष
(C) वक्रोक्ति (D) लाटानुप्रास (शब्दानुप्रासः)
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-407

277. (D) 278. (C) 279. (B) 280. (A) 281. (D) 282. (A) 283. (A) 284. (A) 285. (C) 286. (C) 287. (A) 288. (B) 289. (C) 290. (D)

291. अनुप्रासालङ्कारलक्षणे कस्य वैषम्यम् अपि सम्भवति?
RPSC ग्रेड II TGT–2014

(A) वर्णस्य (B) शब्दस्य
(C) वाक्यस्य (D) स्वरस्य

स्रोत–साहित्यदर्पण (10.3) - शालिग्राम शास्त्री, पेज-275

292. (i) ''अर्थे सत्यर्थभिन्नानां वर्णानां सा पुनः श्रुतिः'' किस अलङ्कार से सम्बन्धित है? UP PGT–2000,
(ii) 'अर्थे सत्यर्थभिन्नानां वर्णानां तेनैव क्रमेण पुनः श्रुतिः' को नामालङ्कारः? BHU MET–2011,
(iii) 'अर्थे सत्यर्थभिन्नानां वर्णानां सा पुनः श्रुतिः'...?
(iv) 'अर्थे सत्यर्थभिन्नानां वर्णानां सा पुनः श्रुतिः' यह किस अलङ्कार का लक्षण है? BHU AET–2012, RPSC SET-2013-14, UGC 73 Jn -2017

(A) यमक (B) अनुप्रास
(C) रूपक (D) उपमा

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.-116) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-409

293. 'नगज नगजा दयिता दयिता विगतं विगतं ललितं' इत्यत्रः कः अलङ्कारः? RPSC ग्रेड -I (PGT)–2011

(A) यमकम् (B) अनुप्रासः
(C) रूपकम् (D) उपमा

स्रोत–

294. (i) 'नवपलाशपलाशवनं पुरः' अत्र अलङ्कारोऽस्ति–
(ii) 'नवपलाशपलाशवनं पुरः स्फुटपरागपरागतपङ्कजम्' अलङ्कार है–UP PGT–2002, RPSC ग्रेड -I PGT-2014 MP वर्ग - I PGT–2012

(A) यमकम् (B) श्लेषः
(C) वक्रोक्तिः (D) अन्योक्तिः

स्रोत–साहित्यदर्पण - शालिग्राम शास्त्री, पेज-280

295. 'सुरभिं-सुरभिं सुमनोभरैः' में कौन-सा अलङ्कार है?
UP PGT–2005

(A) श्लेष (B) यमक
(C) उपमा (D) भ्रान्तिमान्

स्रोत–साहित्यदर्पण - शालिग्राम शास्त्री,पेज-280

296. ''सत्यर्थे पृथगर्थायाः स्वरव्यञ्जनसंहतेः क्रमेण तेनैवावृत्तिर्यमकं विनिगद्यते।'' कथन है–
UP PGT (H)–2005

(A) मम्मट (B) विश्वनाथ
(C) राजशेखर (D) कोई नहीं

स्रोत–साहित्यदर्पण (10-8) - शालिग्राम शास्त्री,पेज-280

297. यमकम् इत्यलङ्कारः कदा भवति? DSSSB TGT–2014

(A) वर्णसमूहस्य आवृत्तौ
(B) व्यञ्जनसमूहस्य आवृत्तौ
(C) स्वरव्यञ्जनसमूहस्यावृत्तौ
(D) आभरणस्य स्त्रीपुरुषयोः सम्बन्धित्वे सति

स्रोत–साहित्यदर्पण - शालिग्राम शास्त्री,पेज-280

298. 'शारदा शारदाम्भोजवदना' इत्यत्र कोऽलङ्कारः?
DSSSB TGT–2014

(A) अनुप्रासः (B) यमकम्
(C) श्लेषः (D) वक्रोक्तिः

स्रोत–

299. वाग्भूषणं भूषणम्। AWES TGT–2012

(A) यमकम् (B) अनुप्रासः
(C) उत्प्रेक्षा (D) उपमा

स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-16)-तारिणीश झा, पेज-27

300. (i) यत्र एकस्मिन् वाक्ये अनेकार्थता भवेत् तत्र .... अलङ्कारो भवति। BHU AET–2012, UGC 73 D–2013,
(ii) 'एकार्थप्रतिपादकानामेव शब्दानां यत्रानेकार्थः' सोऽयं को नामालङ्कारः? K- SET-2015

(A) दृष्टान्तः (B) समुच्चयः
(C) परिकरः (D) श्लेषः

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू. 146) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–473

301. निम्नलिखित अलङ्कारों में कौन उभयालङ्कार है?
UP GDC–2008

(A) अनुप्रास (B) यमक
(C) श्लेष (D) रूपक

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-440

291. (D) 292. (A) 293. (A) 294. (A) 295. (B) 296. (B) 297. (C) 298. (B) 299. (A) 300. (D) 301. (C)

302. ''सर्वस्वं हर सर्वस्य'' अत्र अलङ्कारोऽस्ति– **MP वर्ग -I PGT–2012**

(A) यमकम् (B) श्लेषः
(C) अतिशयोक्तिः (D) लाटानुप्रासः

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-420

303. ''प्रतिकूलतानुपगते हि विधौ विफलत्वमेति बहुसाधनता'' ये अलङ्कार हैं– **UP PGT–2005**

(A) श्लेष (B) अनुप्रास
(C) उपमा (D) उत्प्रेक्षा

स्रोत–साहित्यदर्पण (10/11) - शालिग्राम शास्त्री, पेज-282

304. 'योऽसकृत्परगोत्राणां पक्षच्छेदक्षणक्षमः। शतकोटिदतां बिभ्रद् विबुधेन्द्रः स राजते' में अलङ्कार है– **UP PGT–2002**

(A) उपमा (B) यमक
(C) श्लेष (D) रूपक

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-421

305. (i) ''पृथुकार्त्तस्वरपात्रं भूषितनिःशेषपरिजनं देव! विलसत्करेणुगहनं सम्प्रति सममावयोः सदनम्''– यह किस अलङ्कार का उदाहरण है–
(ii) पृथुकार्त्तस्वरपात्रं भूषितनिःशेषपरिजनं देव। विलसत्करेणुगहनं सम्प्रति सममावयोः सदनम्।। इत्ययं श्लोकः कस्य अलङ्कारस्य अस्ति– **UP GIC–2012, UP PGT–2009**

(A) अनुप्रास (B) यमक
(C) श्लेष (D) उत्प्रेक्षा

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-417

306. श्लेष अलङ्कार होता है- **UP PGT (H)–2002**

(A) उभयालङ्कार (B) अर्थालङ्कार
(C) शब्दालङ्कार (D) सबसे अलग

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-440

307. सभङ्गश्लेष अलङ्कार के भेद बतलाये गये हैं? **UP PGT–2013**

(A) 4 (B) 7
(C) 8 (D) 10

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-415

308. (i) मम्मटमते श्लेषः कतिविधः? **K-SET-2013,**
(ii) श्लेषः कतिविधः? **KL- SET-2015**

(A) द्वादशविधः (B) त्रिविधः
(C) अष्टविधः (D) पञ्चविधः

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-415

309. अभङ्गश्लेष को अर्थालङ्कारों में परिगणित करने वाले आचार्य हैं– **UP GIC–2009**

(A) रुद्रट (B) रुय्यक
(C) शङ्कुक (D) कुन्तक

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-422

310. 'मम्मटानुसारेण अबिन्दुसुन्दरी नित्यं गलल्लावण्यबिन्दुका' इत्यत्र कोऽलङ्कारः? **UP GDC–2012**

(A) श्लेषः
(B) विरोधप्रतिभोत्पत्तिहेतुः श्लेषः
(C) श्लेषप्रतिभोत्पत्तिहेतुर्विरोधः
(D) विरोधः

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-429

311. 'भुजङ्गकुण्डली .... शिवः' इत्यत्र कोऽलङ्कारः? **DSSSB PGT–2014**

(A) पुनरुक्तवदाभासः (B) सर्पालङ्कारः
(C) श्लेषः (D) कुण्डलालङ्कारः

स्रोत–साहित्यदर्पण (10.2) - शालिग्राम शास्त्री, पेज-274

312. पूर्णोपमायां कति तत्त्वानि आवश्यकानि? **G-GIC–2015**

(A) चत्वारि (B) त्रीणि
(C) पञ्च (D) षट्

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-443

313. उपमानन्वययोरलङ्कारयोः व्यवच्छेदकं तत्त्वं किम्? **JNU-M.Phil/Ph.D-2014**

(A) उपमावाचकोपमानयोर्भेदः
(B) साधारणधर्मोपमेययोर्भेदः
(C) इवादिशब्दोपमेययोर्भेदः
(D) उपमानोपमेययोर्भेदः

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-443

302. (B) 303. (A) 304. (C) 305. (C) 306. (A) 307. (C) 308. (C) 309. (B) 310. (C) 311. (A) 312. (A) 313. (D)

314. किस सम्बन्ध से उपमा अलङ्कार होता है?
UGC 73 J-2016

(A) कार्यकारणसम्बन्धेन (B) तादात्म्यसम्बन्धेन
(C) आधाराधेयभावसम्बन्धेन (D) साधर्म्यसम्बन्धेन

स्रोत–काव्यप्रकाश (सूत्र-124) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-443

315. 'भेदे सति साधर्म्यम्' होता है, इसमें–UP GIC–2009

(A) रूपक (B) उपमा
(C) उत्प्रेक्षा (D) दीपक

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-443

316. (i) 'साधर्म्यमुपमा भेदे' उपमा अलङ्कार का यह लक्षण किसने दिया? BHU MET–2008,
(ii) 'साधर्म्यमुपमा भेदे' यह किसकी उक्ति है?
UP PGT–2013, UGC 73 J–2015

(A) जगन्नाथ (B) विश्वनाथ
(C) भामह (D) मम्मट

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.124) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-443

317. (i) ''दिवाकराद्रक्षति यो गुहासु लीनं दिवाभीतमिवान्धकारम्'' – अत्र अलङ्कारोऽस्ति– UK TET–2011
(ii) ''दिवाकराद्रक्षति यो गुहासु लीनं दिवाभीतमिवान्धकारम्। क्षुद्रेऽपि नूनं शरणं प्रपन्ने ममत्वमुच्चैः शिरसा सतीव॥'' इस पद्य में अलङ्कार है? H TET–2014

(A) निदर्शना (B) उत्प्रेक्षा
(C) अर्थान्तरन्यास (D) विभावना

स्रोत–कुमारसम्भवम् (1.12)-सुधाकर मालवीय, पेज-9

318. उपमालङ्कार का प्रयोग कहाँ है? UGC 73 D–2008

(A) इन्दुरिन्दुरिव (B) मुखं चन्द्र इव
(C) धनं धर्मस्य कारणम् (D) एतेषु न कुत्रापि

स्रोत–छन्दोऽलंकारसौरभम् - राजेन्द्रमिश्र, पेज–64

319. 'कमलमिव मनोज्ञं मुखम्' में कौन-सा अलङ्कार है–
UP PGT–2002

(A) उपमा (B) यमक
(C) रूपक (D) उत्प्रेक्षा

स्रोत–छन्दोऽलंकारसौरभम् - राजेन्द्रमिश्र, पेज–66

320. क्यच्-क्यङ् प्रत्यययोगे कोऽलङ्कारो भवति–
BHU AET–2010

(A) दीपकालङ्कारः (B) रूपकालङ्कारः
(C) उत्प्रेक्षालङ्कारः (D) उपमालङ्कारः

स्रोत–काव्यप्रकाश (सूत्र-129) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-452

321. उपमानोपमेययोरेव न तु कार्यकारणादिकयोः साधर्म्यं भवतीति तयोरेव समानेन धर्मेण सम्बन्धः कोऽलङ्कारः?
BHU AET–2012

(A) उपमेयोपमा (B) रूपकम्
(C) उपमा (D) उत्प्रेक्षा

स्रोत–काव्यप्रकाश (सूत्र-124) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-443

322. 'क्षणः कल्पति सीतायाः पद्माक्ष विरहे तव' अत्र कीदृशी लुप्तोपमा? KL- SET-2016

(A) धर्मवाचकलुप्ता (B) धर्मोपमानलुप्ता
(C) धर्मोपमानवाचकलुप्ता (D) वाचकलुप्ता

स्रोत–

323. 'प्रियाऽनुरागस्य मनः समुन्नते न भुजार्चितानां' - कः अलङ्कारः — KL- SET-2015

(A) मालोपमालङ्कारः (B) लुप्तोपमालङ्कारः
(C) उत्प्रेक्षालङ्कारः (D) काव्यलिङ्गालङ्कारः

स्रोत–रघुवंशम् (3.10)-कृष्णमणि त्रिपाठी, पेज–79

324. 'विपर्यास उपमेयोपमा तयोः' इत्यत्र तयोरितिपदेन कयोर्निर्देशः? BHU AET–2012

(A) गुणगुणिनोः (B) कार्यकरणयोः
(C) उपमानोपमेययोः (D) आधाराधेययोः

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू-124)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज-443

325. उपमान-उपमेययोः सादृश्यलक्ष्मीः कुत्र उल्लसति?
BHU Sh.ET–2013

(A) उत्प्रेक्षायाम् (B) तुल्ययोगितायाम्
(C) उपमायाम् (D) रूपके

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू-135)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज-460

326. काव्यप्रकाशे उपमानोपमेययोः विपर्यासे कोऽलङ्कारः?
UGC 25 D-2015

(A) अनन्वयः (B) विभावना
(C) विशेषोक्तिः (D) उपमेयोपमा

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.135) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-460

314. (D) 315. (B) 316. (D) 317. (C) 318. (B) 319. (A) 320. (D) 321. (C) 322. (*) 323. (A) 324. (C) 325. (C) 326. (D)

327. 'अखण्डं पुण्यानां फलमिव च तद्रूपमनघम्' अस्यां पंक्त्याम् अलङ्कारोऽस्ति– RPSC ग्रेड-II (TGT)–2010

(A) स्वभावोक्तिः (B) उपमा
(C) यमकः (D) उत्प्रेक्षा

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (2/10)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-115

328. 'मणौ वज्रसमुत्कीर्णे सूत्रस्येवास्ति मे गतिः'–इत्यत्र कः अलङ्कारः? UGC 25 D–2012

(A) निदर्शना (B) उपमा
(C) उत्प्रेक्षा (D) दृष्टान्त

स्रोत– रघुवंशम् (1/4) - श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी, पेज–4

329. अधोलिखित में अलङ्कार का नाम बतायें?
अधरः किसलयरागः कोमलविटपानुकारिणौ बाहू। कुसुममिव लोभनीयं यौवनमङ्गेषु सन्नद्धम्॥
BHU MET–2011, 2012

(A) उपमा (B) रूपक
(C) अतिशयोक्ति (D) सन्देह

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/21)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-50

330. ''यथा नदीनां बहवोऽम्बुवेगाः'' इत्यत्र कोऽलङ्कारः? BHU Sh.ET–2011

(A) उत्प्रेक्षा (B) यमकः
(C) उपमा (D) श्लेषः

स्रोत–

331. 'स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः' इत्यत्र कोऽलङ्कारः? BHU Sh.ET–2011, UK TET–2011

(A) यमकम् (B) उत्प्रेक्षा
(C) रूपकम् (D) व्याजस्तुति

स्रोत–कुमारसम्भवम् (1.1) - सुधाकर मालवीय, पेज-01

332. 'गाम्भीर्यगरिमा तस्य सत्यं गङ्गाभुजङ्गवत्' इत्यत्र कोऽलङ्कारः? HE–2015

(A) लुप्तोपमा (B) तद्धितगा आर्थी पूर्णोपमा
(C) तद्धितगा श्रौती पूर्णोपमा (D) उपमेयोपमा

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-447

333. मम्मटमते त्रिलुप्तोपमा कतिविधा? JNU M. Phil/Ph.D-2015

(A) त्रिविधा (B) द्विविधा
(C) षड्विधा (D) एकविधा

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-456

334. प्रभामहत्या शिखयेव दीपः त्रिमार्गयेव त्रिदिवस्य मार्गः। संस्कारवत्येव गिरा मनीषी तया स पूतश्च विभूषितश्च॥ H TET–2014

(A) मालोपमा (B) उपमा
(C) रूपक (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–कुमारसम्भवम् (1/28) - सुधाकर मालवीय, पेज-17

335. तुल्यादिशब्दैः कीदृशी उपमा अभिधीयते- KL-SET-2016

(A) शाब्दी (B) पूर्णा
(C) आर्थी (D) लुप्ता

स्रोत– काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–445

336. 'तवाभिधानाद् व्यथते नताननः स दुःसहान्मन्त्र पदादिवोरगः' इत्यत्र कः अलङ्कारः? UGC 25 S–2013

(A) श्लेषानुप्राणित उपमा (B) दृष्टान्तः
(C) रूपकः (D) श्लेषः

स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/24) - रामसेवक दुबे, पेज-103

337. (i)'रामरावणयोर्युद्धं रामरावणयोरिव' में अलङ्कार है–
(ii) 'रामरावणयोर्युद्धं रामरावणयोरिव' अत्र अलङ्कारः भवति– BHU MET–2009
(iii) 'गगनं गगनाकारं सागरः सागरोपमः। रामरावणयोर्युद्धं रामरावणयोरिव॥'
उपर्युक्त में अलङ्कार का नाम बताइये?
UP GDC–2008, BHU MET–2013, G - GIC-2015

(A) अनन्वयः (B) उपमेयोपमा
(C) उपमा (D) उत्प्रेक्षा

स्रोत– चन्द्रालोक (5.12) - कृष्णमणि त्रिपाठी, पेज–82

327. (B) 328. (B) 329. (A) 330. (C) 331. (B) 332. (C) 333. (D) 334. (A) 335. (C) 336. (A) 337. (A)

338. उपमेयोपमेयत्वे एकस्यैवैकवाक्यगे। विभावयत को नामालङ्कार परिकीर्तितः– BHU AET–2012

(A) उपमा (B) उपमेयोपमा

(C) सहोक्तिः (D) अनन्वयः

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.134) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-460

339. उपमेयस्य समेन सम्भावनम् उत्कटकोटिकसंशयः वा कस्मिन् अलङ्कारे भवति– RPSC ग्रेड-I PGT–2015

(A) विशेषोक्तौ (B) विभावनायाम्

(C) निदर्शनायाम् (D) उत्प्रेक्षायाम्

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.136) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-460

340. तत्सदृश अन्य वस्तु का निषेध निम्न अलङ्कार करता है- UP PGT–2000

(A) उत्प्रेक्षा (B) सन्देह

(C) विरोधाभास (D) परिसंख्या

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.184) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-526

341. (i) 'लिम्पतीव तमोऽङ्गानि वर्षतीवाञ्जनं नभः' को नाम मम्मटेनास्मिन् अलङ्कार उदाहृतः?

(ii) 'लिम्पतीव तमोऽङ्गानि वर्षतीवाञ्जनं नभः' में अलङ्कार है– DL–2015, CVVET–2017,

(iii) 'लिम्पतीव तमोऽङ्गानि वर्षतीवाञ्जनं नभः' अत्रायम् अलङ्कारः? RPSC ग्रेड-II TGT–2014,

(iv) 'लिम्पतीव तमोऽङ्गानि वर्षतीवाञ्जनं नभः'' – इत्यत्र कोऽलङ्कारः दृश्यते? MH-SET-2013,

(v) ''लिम्पतीव तमोऽङ्गानि वर्षतीवाञ्जनं नभः। असत्पुरुषसेवेव दृष्टिर्विफलतां गता॥'' अस्मिन् श्लोके कः अलङ्कारः? UP PGT–2004, 2005, 2010, BHU AET-2010, 2011, 2012, G-GIC-2015

(A) उत्प्रेक्षा (B) सन्देह

(C) रूपक (D) अपह्नुति

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.136) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-461

342. जहाँ उपमेय में उपमान की सम्भावना होती है, अलङ्कार है– UP PGT–2009, 2010

(A) उपमा (B) रूपक

(C) उत्प्रेक्षा (D) निदर्शना

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.136) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-460

343. एषु अर्थालङ्कारः कः? BHU Sh.ET–2013

(A) वृत्त्यानुप्रासः (B) यमकम्

(C) छेकानुप्रासः (D) उत्प्रेक्षा

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-441

344. 'सकलकलं पुरमेतज्जातं सम्प्रति सुधांशुबिम्बमिव' में मम्मट के अनुसार प्रधान अलङ्कार है–UP GIC–2009

(A) उपमा (B) श्लेष

(C) अनुप्रास (D) उत्प्रेक्षा

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-427

345. उत्कृष्ट कवि कल्पना की स्थिति में अलङ्कार होता है– UP GIC–2009

(A) उपमा (B) रूपक

(C) उत्प्रेक्षा (D) श्लेष

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर,पेज-460

346. (i) प्रकृतस्याप्रकृतेन सम्भावने- K-SET-2014

(ii) प्रकृतस्य समेन यत्सम्भावनं क्रियते तत्र अलङ्कारो भवति– UGC 73 J–2003

(A) रूपकम् (B) उत्प्रेक्षा

(C) उपमा (D) ससन्देहः

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-460

347. (i) मन्ये शङ्के ध्रुवमित्यादीनां प्रयोगः कस्मिन् अलङ्कारे भवति– KL SET–2016

(ii) मन्ये शङ्के ध्रुवं प्राय इत्यादिशब्दैः कः अलङ्कारः व्यज्जते? RPSC ग्रेड-I PGT -2014

(iii) कस्मिन्नलङ्कारे प्रायः 'मन्ये शङ्के ध्रुवं' इत्यादयः शब्दाः प्रयुज्यन्ते?

(A) उत्प्रेक्षालङ्कारे (B) अर्थान्तरन्यासालङ्कारे

(C) दृष्टान्तालङ्कारे (D) विभावनालङ्कारे

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-461

348. किसी प्रकृत अर्थात् प्रस्तुत वस्तु की अप्रस्तुत वस्तु रूप में सम्भावना प्रकट करने पर अलङ्कार होता है– UP PGT–2002

(A) अनुप्रास (B) श्लेष

(C) उत्प्रेक्षा (D) यमक

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.136) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-460

338. (D) 339. (D) 340. (D) 341. (A) 342. (C) 343. (D) 344. (A) 345. (C) 346. (B) 347. (A) 348. (C)

349. 'सैषा स्थली यत्र विचिन्वता त्वां भ्रष्टं मया नूपुर मेकमूर्व्याम्' में अलङ्कार है– UP PGT–2002

(A) उपमा (B) रूपक
(C) उत्प्रेक्षा (D) श्लेष

स्रोत–छन्दोऽलंकारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-70

350. 'वियति विसारिणीशष्पपंक्तिमिव आरचयन्तः' इत्यत्र कः अलङ्कारः– UGC 25 D–2014

(A) उपमा (B) अर्थान्तरन्यासः
(C) उत्प्रेक्षा (D) विरोधाभासः

स्रोत–कदाम्बरी-कथामुखम् - तारिणीश झा, पेज-200

351. वासवदत्तारीत्या 'निस्सरन्तीव प्राणाः' इत्यत्र कोऽलङ्कारः DU- Ph.D-2016

(A) रूपकम् (B) उत्प्रेक्षा
(C) उपमा (D) दीपकम्

स्रोत–वासवदत्ता - जमुना पाठक, पेज–79

352. कालिदासकृतप्रभातवर्णनश्लोकांश 'लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु' इत्यादौ प्रयुक्तोऽलङ्कारोऽस्ति– UP GDC–2014

(A) उपमा (B) अतिशयोक्ति
(C) उत्प्रेक्षा (D) अप्रस्तुतप्रशंसा

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4.2)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-190

353. 'अयमागृहीतकमनीयकङ्कणस्तव मूर्तिमानिव महोत्सवः करः।' इत्यत्र अर्थालङ्कारोऽस्ति- DU- Ph.D–2016

(A) उत्प्रेक्षा (B) उपमा
(C) ससन्देहः (D) भ्रान्तिमान्

स्रोत– उत्तररामचरितम् (1/18) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–36

354. उत्प्रेक्षालङ्कार इत्यत्र 'उत्प्रेक्षाशब्दस्य' कोऽर्थः? DSSSB TGT–2014

(A) ऊर्ध्वं प्रेक्षणम्
(B) इदं किं वा तदिति संशयः
(C) सम्भावना
(D) साधारणधर्मः कः इति ऊहनम्

स्रोत– (i) अलङ्कारभूषण - कुन्दन कुमार, पेज–93
(ii) काव्यप्रकाश (सू0-136) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–460

355. यदि उपमेय की उपमान के साथ सम्भावना व्यक्त की जाय तो अलङ्कार होता है- UP PGT–2013, UP PGT (H)–2002, UK TET–2011

(A) उत्प्रेक्षा (B) रूपक
(C) उपमेयोपमा (D) सन्देह

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.136) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-460

356. रूपकालङ्कारस्य प्रमुखा विशेषता का? RPSC ग्रेड-I PGT–2015

(A) प्रकृताप्रकृतयोः भेदः (B) प्रस्तुताप्रस्तुतयोः वैधर्म्यम्
(C) प्रस्तुताप्रस्तुतयोरभेदः (D) उपमानोपमेययोः निगरणम्

स्रोत– काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–463

357. 'प्रतीपभूपालमृगीदृशां दृशः' इत्यत्र अधोरेखितेंऽशे अलङ्कारोऽस्ति? D.U.- Ph.D-2016

(A) रूपकम् (B) उत्प्रेक्षा
(C) उपमा (D) अतिशयोक्तिः

स्रोत–नैषधीयचरितम् (1/11) - बद्रीनाथ मालवीय, पेज-33

358. (i) ''अयं मार्तण्डः किं? स खलु तुरगैः सप्तभिरितः कृशानुः किं? सर्वाः प्रसरति दिशो नैष नियतम्'' में अलङ्कार है–
(ii) अयं मार्तण्डः किं स खलु तुरगैः सप्तभिरितः कः अलङ्कारः? UP PGT–2004, KL- SET-2015

(A) उत्प्रेक्षा (B) सन्देह
(C) उपमा (D) रूपक

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.137) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-462

359. ''किं तारुण्यतरोरियं रसभरोदभिन्ना नवा वल्लरी''– उपर्युक्त में कौन अलङ्कार है? BHU MET–2013

(A) भ्रान्तिमान् (B) दीपक
(C) सन्देह (D) विभावना

स्रोत–साहित्यदर्पण - शालिग्राम शास्त्री, पेज-310

360. ''पङ्कजं वा सुधांशुर्वेत्यस्माकं न निर्णयः'' उपर्युक्त में कौन अलङ्कार है? BHU MET–2009

(A) भ्रान्तिमान् (B) सन्देह
(C) दीपक (D) विभावना

स्रोत–छन्दोऽलंकारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज–72

349. (C) 350. (C) 351. (B) 352. (C) 353. (A) 354. (C) 355. (A) 356. (C) 357. (B) 358. (B) 359. (C) 360. (B)

361. ''अयं प्रमत्तमधुपस्त्वन्मुखं वेत्ति पङ्कजम्'' इत्यत्र अलङ्कार अस्ति- RPSC ग्रेड -I (PGT)–2011
(A) भ्रान्तिमान् (B) अपह्नुतिः
(C) सन्देहः (D) समासोक्तिः
स्रोत–

362. कस्यालङ्कारस्य लक्षणे प्रामुख्येन ''स्थाणुर्वा पुरुषो वा'' इति भावो विद्यते– RPSC ग्रेड -II TGT–2014
(A) भ्रान्तिमान् (B) अपह्नुतिः
(C) श्लेषः (D) सन्देहः
स्रोत– साहित्यदर्पण - शालिग्राम शास्त्री, पेज–310

363. ....अभेदो य उपमानोपमेययोः। BHU AET–2011
(A) तदूपिकम् (B) तत्सामान्यम्
(C) तत्सन्धानम् (D) तद्रूपकम्
स्रोत– काव्यप्रकाश (सू0-138) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–463

364. तद्रूपकम् .... य उपमानोपमेययोः। BHU AET–2012
(A) अनिन्द्यो (B) अभेदो
(C) अलभ्यो (D) अनुक्तो
स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.138) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-463

365. 'तद्रूपकमभेदो य उपमानोपमेययोः' परिभाषा किस अलङ्कार की है? UP TET–2014
(A) रूपक अलङ्कार (B) यमक अलङ्कार
(C) अनुप्रास अलङ्कार (D) उत्प्रेक्षा अलङ्कार
स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.138) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-463

366. (i) जहाँ उपमेय एवं उपमान में अभेद प्रदर्शित किया जाता है। वहाँ होता है–
(ii) उपमानोपमेययोरभेदो यत्र भवति तत्र कोऽलङ्कारः- UP TET–2013, 2014, JNU M.Phil/Ph.D- 2014
(A) उपमा अलंकार (B) अनुप्रास अलंकार
(C) रूपक अलंकार (D) यमक अलंकार
स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.138) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-463

367. रूपकालङ्कारे प्रमुखता अस्ति–RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011
(A) उपमानोपमेययोः सुन्दरसाम्यस्य
(B) उपमानोपमेययोः प्रस्फुटसाम्यस्य
(C) उपमानोपमेययोः अभेदस्य
(D) उपमानोपमेययोः गम्यसाम्यस्य
स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.138) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-463

368. उपमेये उपमानस्यारोपो भवति– RPSC ग्रेड-II TGT–2010
(A) उपमायाम् (B) उत्प्रेक्षायाम्
(C) दृष्टान्ते (D) रूपके
स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.138)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज-463-464

369. ''राजते मृगलोचना'' अत्र अलङ्कारोऽस्ति– MP वर्ग -I PGT–2012
(A) रूपकम् (B) उत्प्रेक्षा
(C) विभावना (D) उपमा
स्रोत– साहित्यदर्पण - शालिग्राम शास्त्री, पेज–300

370. यत्र निरपह्नवे विषये विषयी आरोप्यते तत्र अलंकारो भवति– MP वर्ग -I PGT–2012
(A) उत्प्रेक्षा (B) अतिशयोक्ति
(C) विभावना (D) रूपकम्
स्रोत– साहित्यदर्पण (10.28) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–303

371. 'मुखं चन्द्रः' इत्यत्र कोऽलङ्कारः? DSSSB TGT–2014
(A) रूपकम् (B) उपमा
(C) अतिशयोक्तिः (D) परिणामः
स्रोत– अलङ्कारभूषण - कुन्दन कुमार, पेज–39

372. ''ज्योत्स्नाभस्मच्छुरणधवला'' इत्यत्र कः अलङ्कारः भवति– K SET–2015
(A) रूपकालङ्कारः (B) उपमालङ्कारः
(C) अर्थान्तरन्यासालङ्कारः (D) अपह्नुत्यलङ्कारः
स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.139) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-464

373. उपमेय का उपमान पर आरोप होने से कौन सा अलङ्कार होता है– BHU MET–2010
(A) यमक (B) रूपक
(C) उपमा (D) श्लेष
स्रोत–छन्दोऽलंकारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-67

374. समस्तवस्तुविषयक तथा एकदेशविवर्ति ये भेद हैं– UP PGT–2013
(A) उपमालङ्कार के (B) उत्प्रेक्षालङ्कार के
(C) सांगरूपक के (D) निरङ्गरूपक के
स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.141) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-466

361. (C) 362. (D) 363. (D) 364. (B) 365. (A) 366. (C) 367. (C) 368. (D) 369. (D) 370. (D) 371. (B) 372. (A) 373. (B) 374. (C)

375. काल्पनिक अभेदारोप होने पर अलङ्कार होता है– UP PGT–2004

(A) अनुप्रास (B) उत्प्रेक्षा
(C) रूपक (D) उपमा

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.138) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-463

376. न छिपाये गये उपमेय पर उपमान का अभेदारोप होने पर अलङ्कार होता है– UP PGT–2009

(A) उत्प्रेक्षा (B) परिसंख्या
(C) रूपक (D) उपमा

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.138)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज-463

377. निम्नलिखित में से कौन अर्थालङ्कार है? UP TGT (H)–2013

(A) श्लेष (B) यमक
(C) वक्रोक्ति (D) रूपक

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-441

378. 'तडिद्गौरी' इत्यत्रालङ्कारः – CVVET–2015

(A) उपमा (B) रूपकम्
(C) अनन्वयः (D) लुप्तोपमा

स्रोत–कुवलयानन्द (श्लोक-8)-भोलाशङ्कर व्यास, पेज–5

379. 'त्वं जीवितं त्वमसि मे हृदयम्'-इत्यस्मिन् कः अलङ्कारः? RPSC ग्रेड-I PGT -2014

(A) अनुप्रासः (B) उपमा
(C) विभावना (D) रूपकम्

स्रोत–उत्तररामचरितम् (3/26)-शिवबालक द्विवेदी, पेज-339

380. (i) प्रकृतं यन्निषिध्यान्यत् साध्यते सा............।
(ii) 'प्रकृतं प्रतिषिध्यान्यत्स्थापनं' चेत् तदा कोऽलङ्कारः?
(iii) प्रकृतं प्रतिषिध्य तदुपरि अप्रकृतस्य आरोपेण कः अलङ्कारः ग्राह्यः? UGC 25 - J-2013, BHU AET–2012, CVVET–2017

(A) असङ्गतिः (B) अपह्नुतिः
(C) विभावना (D) निदर्शना

स्रोत– काव्यप्रकाश (सू0-145)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज–470

381. (i) उपमेयम् असत्यं कृत्वा उपमानस्य सत्यरूपेण स्थापनेऽलङ्कारः भवति–
(ii) उपमेय को असत्य सिद्ध कर उपमान को सत्यरूप से स्थापित करने में अलङ्कार होता है– UP GIC–2009, 2012, UP GDC–2012

(A) रूपक (B) व्यतिरेक
(C) निदर्शना (D) अपह्नुति

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.145) -आचार्य विश्वेश्वर, पेज-470

382. अपह्नुतौ प्रतिषेधः भवति– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011

(A) अप्रकृतस्य (B) अप्रस्तुतस्य
(C) प्रकृतस्य (D) उपमानस्य

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.145) -आचार्य विश्वेश्वर, पेज-470

383. प्रस्तुत में अप्रस्तुत का परिस्फुरण होने से अलङ्कार होता है– UP GIC–2009

(A) समासोक्ति (B) अतिशयोक्ति
(C) विशेषोक्ति (D) विनोक्ति

स्रोत–साहित्यदर्पण - शालिग्राम शास्त्री, पेज-336

384. (i) 'काव्यप्रकाशे परोक्तिर्भेदकैः श्लिष्टैः' इति कस्यालङ्कारस्य लक्षणम्–
(ii) ''परोक्तिर्भेदकैः श्लिष्टैः'' इति लक्षणमस्ति– UP GDC–2012, G-GIC-2015, UGC 25 J–2016

(A) निदर्शनायाः (B) समासोक्तेः
(C) दीपकस्य (D) दृष्टान्तस्य

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.147) -आचार्य विश्वेश्वर, पेज-474

385. (i) अभवन्वस्तुसम्बन्ध उपमापरिकल्पकः
(ii) ''अभवन्वस्तुसम्बन्ध उपमापरिकल्पकः'' इति कस्य अलङ्कारस्य लक्षणमस्ति? UGC 25 J–2014,
(iii) उपमापरिकल्पकः अभवन् वस्तुसम्बन्धः कस्मिन् अलङ्कारे भवति? RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014,
(iv) 'अभवन्वस्तुसम्बन्ध उपमापरिकल्पकः' कस्यालङ्कारस्य लक्षणमिदम्– HAP-2016, BHU AET–2011, CVVET –2017, RPSC ग्रेड-I (PGT)–2015

(A) निदर्शना (B) समाधि
(C) विरोध (D) आक्षेप

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.148)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज-474

375. (C) 376. (C) 377. (D) 378. (D) 379. (D) 380. (B) 381. (D) 382. (C) 383. (A) 384. (B) 385. (A)

386. (i) 'क्व सूर्यप्रभवो वंशः क्व चाल्पविषया मतिः। तितीर्षुर्दुस्तरं मोहादुडुपेनास्मि सागरम्॥' मम्मटेनात्र वदत कोऽलङ्कार उदाहृतः?

(ii) 'क्व सूर्यप्रभवो वंशः क्व चाल्पविषया मतिः। तितीर्षुर्दुस्तरं मोहादुडुपेनास्मि सागरम्॥' श्लोकेऽस्मिन् ....अलङ्कारः।

(iii) 'तितीर्षुर्दुस्तरं मोहदुडुपेनास्मि सागरम्' इत्यत्र-अलङ्कारः- BHU AET–2012, GJ- SET-2016 KL SET–2015, RPSC ग्रेड-I PGT–2014

(A) निदर्शना (B) असङ्गति
(C) दीपक (D) परिवृत्तिः

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.148)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज-475

387. निदर्शना अलङ्कारः अस्ति यदि–RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011

(A) द्वयोः समानवस्तुनोः साम्यं परिकल्प्यते।
(B) द्वयोः वाक्यार्थयोः साम्यं परिकल्प्यते
(C) द्वयोः भिन्नवस्तुनोः साम्यं निर्धार्यते।
(D) अभवन् वस्तुसम्बन्धे उपमानोपमेयभावस्य कल्पना क्रियते।

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.148) -आचार्य विश्वेश्वर, पेज-474

388. कामं नृपाः सन्ति सहस्रशोऽन्ये राजन्वतीमाहुरनेन भूमिं नक्षत्र ताराग्रहसङ्कुलापि ज्योतिष्मती चन्द्रमसैव रात्रिः॥ उपर्युक्त पदे अलङ्कारः अस्ति–RPSC ग्रेड-I-I PGT–2011

(A) प्रतिवस्तूपमा (B) अर्थान्तरन्यासः
(C) दृष्टान्तः (D) निदर्शना

स्रोत–कुवलयानन्द - भोलाशङ्कर व्यास, पेज–68

389. देवीभावं गमिता परिवारपदं कथं भजत्वेषा। न खलु परिभोगयोग्यं दैवतरूपाङ्कितं रत्नम्॥ अत्र श्लोकेऽलङ्कृतिरस्ति– UP GDC–2014

(A) दृष्टान्त (B) प्रतिवस्तूपमा
(C) निदर्शना (D) दीपकम्

स्रोत–काव्यप्रकाश -आचार्य विश्वेश्वर, पेज-485

390. 'निदर्शना अभवन् वस्तुसम्बन्धः उपमापरिकल्पकः।' यह किसकी उक्ति है? UGC 73 J–2015

(A) रुय्यक (B) मम्मट
(C) राजशेखर (D) रुद्रट

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.148) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-474

391. चातकस्त्रिचतुरान् पयः कणान्, याचते जलधरं पिपासयः। सोऽपि पूरयति भूयसाऽम्भसा, चित्रमत्र महतामुदारता॥ उपर्युक्त पद में अलङ्कार है–RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011

(A) प्रहर्षणः (B) समासोक्तिः
(C) अर्थान्तरन्यासः (D) दृष्टान्तः

स्रोत–रसगङ्गाधर (द्वितीय आनन)-मदनमोहन झा, पेज–714

392. (i) मम्मटानुसारम् अप्रस्तुतप्रशंसालङ्कारः कतिविधः–

(ii) अप्रस्तुतप्रशंसालङ्कारः कतिविधः – UGC 25 D–2012, KL- SET-2015, JNU. M. Phil/Ph.D-2015

(A) द्विविधः (B) पञ्चविधः
(C) चतुर्विधः (D) दशविधः

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.151) -आचार्य विश्वेश्वर, पेज-476

393. अतिशयोक्ति-नामके अलङ्कारे भवति–UP GIC–2015

(A) उपमानेन उपमेयस्य निगरणम्
(B) उपमानोपमेययोः साधर्म्यम्
(C) उपमेयतः उपमानस्य श्रेष्ठत्वम्
(D) उपमानस्य सम्भावनमुपमेये

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.152) -आचार्य विश्वेश्वर, पेज-483

394. असम्बन्धे सम्बन्धस्य कल्पने कोऽलङ्कारः? DSSSB PGT–2014

(A) सम्बन्धातिशयोक्तिः (B) असम्बन्धातिशयोक्तिः
(C) असम्भवातिशयोक्तिः (D) सम्भवातिशयोक्तिः

स्रोत–चन्द्रालोक (5.44) - कृष्णमणि त्रिपाठी, पेज–110-111

395. (i) अध्यवसाये सिद्धेऽलङ्कारो भवति–

(ii) अध्यवसाय के निश्चित रूप से प्रतीत होने पर कौन सा अलङ्कार होता है?

(iii) अध्वसाय की सिद्धि होने पर अलङ्कार होता है? DL–2015, UP PGT–2002, 2004, 2009 UP GIC–2009, H TET–2014

(A) स्वभावोक्ति (B) रूपक
(C) अतिशयोक्ति (D) उत्प्रेक्षा

स्रोत–साहित्यदर्पण (10.46) -शालिग्राम शास्त्री, पेज–323

386. (A) 387. (D) 388. (C) 389. (B) 390. (B) 391. (A) 392. (B) 393. (A) 394. (B) 395. (C)

396. किस अलङ्कार में उपमान पक्ष उपमेय पक्ष का निगरण कर लेता है– UP GIC–2009

(A) उपमा (B) रूपक
(C) समासोक्ति (D) अतिशयोक्ति

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.152) -आचार्य विश्वेश्वर, पेज-483

397. सिद्धत्वेऽध्यवसायस्य .... निगद्यते। समुचित पद से रिक्तस्थान की पूर्ति करें। UGC 73 J–2015

(A) अतिशयोक्तिः (B) उत्प्रेक्षा
(C) अपह्नुतिः (D) अप्रस्तुतप्रशंसा

स्रोत–साहित्यदर्पण (10.46) -शालिग्राम शास्त्री, पेज–323

398. (i) सामान्यस्य द्विरेकस्य यत्र वाक्यद्वये स्थितिः। कोऽसौ भवत्यलङ्कारः? BHU AET–2012
(ii) ''सामान्यस्य द्विरेकस्य यत्र वाक्यद्वये स्थितिः।'' काव्यप्रकाशकारमते कोऽयम् अलङ्कारः? UGC 25 J–2015

(A) विशेषोक्तिः (B) संसृष्टिः
(C) प्रतिवस्तूपमा (D) विशेषः

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.153) -आचार्य विश्वेश्वर, पेज-484

399. (i) उपमानोपमेययोः बिम्बप्रतिबिम्बत्वं चेत् कस्तत्रालङ्कारः?
(ii) उपमेयोपमानयोः बिम्बप्रतिबिम्बभावः कस्मिन् अलङ्कारे प्रस्तूयते– UGC 25 J–2012
RPSC ग्रेड-I PGT–2015

(A) निदर्शनालङ्कारः (B) दीपकालङ्कारः
(C) व्यतिरेकालङ्कारः (D) दृष्टान्तालङ्कारः

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.154) -आचार्य विश्वेश्वर, पेज-486

400. ..... पुनरेतेषां सर्वेषां प्रतिबिम्बनम्– BHU AET–2012

(A) पर्यायः (B) दृष्टान्तः
(C) विरोधः (D) आक्षेपः

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.154) -आचार्य विश्वेश्वर, पेज-486

401. ''त्वयि दृष्ट एव तस्या निर्वाति मनो मनोभवज्वलितम्। आलोके हि हिमांशोर्विकसति कुसुमं कुमुद्वत्याः॥'' में अलङ्कार है? H-TET–2015

(A) अर्थान्तरन्यास (B) निदर्शना
(C) दृष्टान्त (D) उपमा

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–486

402. ''संसार-विषवृक्षस्य द्वे एव रसवत्फले। काव्यामृत-रसास्वादः सङ्गमः सज्जनैः सह॥'' में अलङ्कार है? H-TET–2015

(A) दृष्टान्त (B) उपमा
(C) यमक (D) रूपक

स्रोत–(i) हंसा परीक्षा गाइड - संजय कुमार जैन, पेज– 157
(ii) हितोपदेश (मित्र लाभ) श्लोक-135-विश्वनाथ शर्मणा, पेज–115

403. सकृद्वृत्तिस्तु धर्मस्य प्रकृताप्रकृतात्मनाम्। सैव क्रियासु बह्वीषु कारकस्येति दीपकम्॥'' को उद्भावित करने वाला ग्रन्थ है? BHU MET–2014

(A) रसगङ्गाधर (B) साहित्यदर्पण
(C) काव्यादर्श (D) काव्यप्रकाश

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.155) -आचार्य विश्वेश्वर, पेज-487

404. अप्रस्तुतप्रस्तुतयोरेक धर्माभिसम्बन्धः इति कस्मिन् अलङ्कारे भवति? RPSC ग्रेड-II PGT–2014

(A) अर्थान्तरन्यासः (B) रूपकम्
(C) दीपकम् (D) यमकम्

स्रोत–साहित्यदर्पण (10/49) शालिग्राम शास्त्री, पेज-328

405. ''सकृद्वृत्तिस्तु धर्मस्य प्रकृताप्रकृतात्मनाम्''–यह लक्षण है– UGC 73 J–2012

(A) दीपकालङ्कारस्य (B) रूपकालङ्कारस्य
(C) काव्यलिङ्गालङ्कारस्य (D) सङ्करालङ्कारस्य

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.155) -आचार्य विश्वेश्वर, पेज-487

406. व्यतिरेकालङ्कारस्य लक्षणम् अस्ति– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2011

(A) प्रस्तुतोऽप्रस्तुतयोः साम्यम्
(B) उपमानाद् उपमेयस्य व्यतिरेकः
(C) उपमानस्य उपमेयाद् व्यतिरेकः
(D) प्रस्तुताप्रस्तुतयोः वैषम्यम्

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.158) -आचार्य विश्वेश्वर, पेज-491

407. उपमान की अपेक्षा उपमेय की अधिकता या न्यूनता का वर्णन होने पर अलङ्कार होता है-UP PGT–2002

(A) भ्रान्तिमान् (B) दृष्टान्त
(C) व्यतिरेक (D) अपह्नुति

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.158)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज-491

396. (D) 397. (A) 398. (C) 399. (D) 400. (B) 401. (C) 402. (D) 403. (D) 404. (C) 405. (A) 406. (B) 407. (C)

408. उपमानादुपमेयस्य वर्णनं यत्राधिकं भवति तत्र कोऽलङ्कारो विधीयते? RPSC ग्रेड-II TGT–2014

(A) दीपकम् (B) दृष्टान्तः
(C) अर्थान्तरन्यासः (D) व्यतिरेकः

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.158) आचार्य विश्वेश्वर, पेज-491

409. ''दिशि मन्दायते तेजो दक्षिणस्यां रवेरपि। तस्यामेव रघोः पाड्याः प्रतापं न विषेहिरे।।'' इत्यत्र अलङ्कार अस्ति– RPSC ग्रेड-I PGT–2014

(A) रूपकम् (B) समासोक्तिः
(C) व्यतिरेकः (D) अतिशयोक्तिः

स्रोत–साहित्यदर्पण- सत्यव्रत सिंह, पेज-292

410. उपमानोपेक्षयोपमेय-प्रकर्षे सत्यलङ्कारो भवति– DL–2015

(A) अपह्नुतिः (B) व्यतिरेकः
(C) दृष्टान्तः (D) समासोक्तिः

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.158) -आचार्य विश्वेश्वर, पेज-491

411. (i) क्रियायाः प्रतिषेधेऽपि फलव्यक्तिः ....?
(ii) क्रियायाः प्रतिषेधेऽपि फलव्यक्ति अलङ्कारो भवति? UGC 25 D–2014, Jn.-2017, BHU AET–2012, UGC 73 D–2014

(A) विपर्ययः (B) विशेषता
(C) विरूपता (D) विभावना

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.161) -आचार्य विश्वेश्वर, पेज-498

412. यत्र हेतुर्विना कार्योत्पत्तिरुच्यते सञ्जायते तत्र अलङ्कारो भवति– MP वर्ग -I PGT–2012, G-GIC-2015

(A) विशेषोक्तिः (B) निदर्शना
(C) विभावना (D) समासोक्तिः

स्रोत–साहित्यदर्पण (10/66) - शालिग्राम शास्त्री- पेज-350

413. 'कारण के बिना कार्य के होने का वर्णन' होने पर कौन-सा अलङ्कार होता है? DL (H)–2015, UP TGT (H)–2010

(A) असङ्गत (B) विभावना
(C) विशेषोक्ति (D) व्यतिरेक

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.161) -आचार्य विश्वेश्वर, पेज-498

414. को नाम अलङ्कारो गम्यौपम्यमूलको नास्ति– UP GDC–2014

(A) निदर्शना (B) प्रतिवस्तूपमा
(C) तुल्ययोगिता (D) विभावना

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-441, 442

415. विभावनाऽलङ्कारः भवति, यत्र– UP GDC–2014

(A) कारणं बिना कार्यसद्भावः (B) सत्यपि कारणे कार्यासद्भावः
(C) विषयापह्नवे विषयिबोधः (D) विषयेऽपगते विषयिबोधः

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.161) -आचार्य विश्वेश्वर, पेज-498

416. (i) अधोलिखितेषु युग्मेषु परस्परं विरुद्धम् अलङ्कारयुगलमस्ति– UP GDC–2008, 2012,
(ii) निम्नलिखित में से किस अलङ्कार युग्म के अलङ्कार सर्वथा विपरीत लक्षण वाले हैं–UP GIC–2009
(iii) अधोलिखित युग्मों में से कौन सा युग्म है, जो विरोधी होकर भी एक दूसरे का अनुपूरक है?

(A) उपमा - उत्प्रेक्षा (B) रूपकम् - दीपकम्
(C) काव्यलिङ्गम् - परिसंख्या (D) विभावना - विशेषोक्ति

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.161-162)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज-499

417. विभावनाविशेषोक्तिरलङ्कारयोः आधारः कः? RPSC ग्रेड-I PGT–2014

(A) सादृश्यभावः (B) असादृश्यभावः
(C) उपमानोपमेयभावः (D) कार्यकारणभावः

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.161-162)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज-498,499

418. 'अखण्डेषु कारणेषु फलावचः' कस्य अलङ्कारस्य लक्षणम्? UGC 25-J–2016

(A) विशेषोक्तेः (B) विभावनायाः
(C) समासोक्तेः (D) वक्रोक्तेः

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.162) -आचार्य विश्वेश्वर, पेज-498

419. (i) किस अलङ्कार में कारण होने पर भी कार्य नहीं होता, इसमें– UP GIC–2009
(ii) कारण के होने पर कार्य न होने के वर्णन में कौन अलङ्कार होता है? UP GDC–2008

(A) विशेषोक्ति (B) समासोक्ति
(C) विभावना (D) व्यतिरेक

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.162) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-498

408. (D) 409. (C) 410. (B) 411. (D) 412. (C) 413. (B) 414. (D) 415. (A) 416. (D) 417. (D) 418. (A) 419. (A)

420. 'धनिनोऽपि निरुन्मादा युवानोऽपि न चञ्चलाः' अत्र कोऽलङ्कारा:? G-GIC-2015

(A) विभावना (B) उपमा
(C) विशेषोक्ति (D) रूपकम्

स्रोत–साहित्यदर्पण- शालिग्राम शास्त्री, पेज-351

421. कारणे उक्ते सति कार्याभावः कस्मिन् अलङ्कारे भवति– HAP-2016

(A) विभावनायाम् (B) विशेषोक्तौ
(C) दृष्टान्ते (D) समासोक्तौ

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.162) -आचार्य विश्वेश्वर, पेज-498

422. यत्र हेतौ सति अपि फलस्य अभावो कथ्यते तत्र अलङ्कारः भवति– G-GIC-2015

(A) समासोक्तिः (B) अतिशयोक्तिः
(C) विभावना (D) विशेषोक्तिः

स्रोत–साहित्यदर्पण (10.67) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–351

423. (i) अर्थान्तरन्यासस्य कति भेदाः?
(ii) अर्थान्तरन्यासालङ्कारः कतिविधः?
RPSC ग्रेड-I PGT–2011, KL SET–2016

(A) द्वौ (B) चत्वारः
(C) अष्ट (D) सप्त

स्रोत–काव्यप्रकाश -आचार्य विश्वेश्वर, पेज-500

424. समर्थनीयस्य अर्थस्य समर्थने कोऽलङ्कारः? DSSSB PGT–2014

(A) परिकरः (B) अनुमानम्
(C) काव्यलिङ्गम् (D) अर्थान्तरन्यासः

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.164) -आचार्य विश्वेश्वर, पेज-500

425. 'आशाबन्धः कुसुमसदृशं प्रायशो ह्यङ्गनानां। सद्यः पाति प्रणयि हृदयं विप्रयोगे रुणद्धि' कोऽत्रालङ्कारः– UGC 25 J–2013

(A) उपमा (B) दृष्टान्तः
(C) निदर्शना (D) अर्थान्तरन्यासः

स्रोत–मेघदूतम् (1/10) - तारिणीश झा, पेज-19

426. ''सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तःकरणप्रवृत्तयः।'' इत्यत्र कोऽलङ्कारः? UGC 25 J–2014

(A) उपमा (B) उत्प्रेक्षा
(C) सन्देहः (D) अर्थान्तरन्यासः

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/22) -कपिलदेव द्विवेदी, पेज-54-57

427. ''बृहत्सहायः कार्यान्तं क्षोदीयानपि गच्छति। सम्भूयाम्भोधिमभ्येति महानद्या नगापगा'' इत्यत्र अलङ्कारो वर्तते- RPSC ग्रेड-II PGT–2014

(A) अर्थान्तरन्यासः (B) रूपकम्
(C) श्लेषः (D) व्यतिरेकः

स्रोत–छन्दोऽलंकारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज–81

428. ''शान्तमिदमाश्रमपदं स्फुरति च बाहुः कुतः फलमिहास्य। भवितव्यानां द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र॥'' अत्र कोऽलङ्कारः? UGC 25 D–2014

(A) उपमा (B) अर्थान्तरन्यास
(C) रूपकम् (D) विभावना

अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/16)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-38-39

429. ''किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्''– में अलङ्कार बतलाइये– BHU MET–2009, 2013

(A) उपमा (B) अर्थान्तरन्यास
(C) उत्प्रेक्षा (D) अनुप्रास

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/20)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-46-47

430. बालक आदि की अपनी स्वाभाविक क्रिया या रूप का वर्णन कहा जाता है– UP PGT–2013

(A) अतिशयोक्ति (B) परिसंख्या
(C) स्वभावोक्ति (D) समासोक्ति

स्रोत– काव्यप्रकाश (सू.167) -आचार्य विश्वेश्वर, पेज-505

431. डिम्भादेः स्वक्रियारूपवर्णनम्– UP PGT–2011

(A) स्वभावोक्तिः (B) अन्योक्तिः
(C) अतिशयोक्तिः (D) मालोपमा

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.167) -आचार्य विश्वेश्वर, पेज-505

420. (C) 421. (B) 422. (D) 423. (B) 424. (D) 425. (D) 426. (D) 427. (A) 428. (B) 429. (B) 430. (C) 431. (A)

432. ''यत्र च गुरुव्यतिक्रमं नक्षत्रराशयः, मात्राकलहं लेखशालिकाः, मित्रोदय-द्वेषमुलूकाः अपत्यत्यागं कोकिलाः, बन्धुजीवविघातं ग्रीष्मदिवसाः कुर्वन्ति, न जनाः।'' इन पंक्तियों में प्रसिद्ध अलङ्कार– UP PGT–2013

(A) उपमा (B) परिसंख्या
(C) यमक (D) वक्रोक्ति

स्रोत– नलचम्पू - तारिणीश झा, पेज– 44

433. 'भक्तिर्भवे न विभवे व्यसनं शास्त्रे न युवतिकामास्त्रे। चिन्ता यशसि न वपुषि प्रायः परिदृश्यते महताम्॥' प्रस्तुत पद्य में अलङ्कार है– UP PGT–2013

(A) विरोधाभास (B) परिसंख्या
(C) कारणमाला (D) भ्रान्तिमान्

स्रोत–काव्यप्रकाश -आचार्य विश्वेश्वर, पेज-528

434. ''शशिकृपाणकवचेषु कलङ्काः, रतिकलहेषु दूतसम्प्रेषणानि, सार्य्यक्षेषु शून्यगृहाः न प्रजानामासन्'' इत्यत्र अर्थालङ्कारोऽस्ति- DU-Ph.D-2016

(A) परिसंख्या (B) कारणमाला
(C) एकावली (D) सारः

स्रोत–कादम्बरीकथामुखम् - तारिणीश झा, पेज-41

435. किञ्चित् पृष्टमपृष्टं वा कथितं यत् प्रकल्प्यते। तादृगन्यव्यपोहाय .... तु सा स्मृता।'' रिक्तस्थानं पूरयत। UGC 25 J–2015

(A) उपमा (B) व्याजस्तुतिः
(C) अपह्नुतिः (D) परिसंख्या

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.184) -आचार्य विश्वेश्वर, पेज-526

436. 'कार्यकारणयोर्भिन्नदेशतायाम्' अलङ्कार होता है– UGC 73 D–2012

(A) कारणमाला (B) विभावना
(C) विशेषोक्ति (D) असङ्गति

स्रोत–साहित्यदर्पण (10/69) - शालिग्राम शास्त्री, पेज-353

437. भ्रान्तिमान् अलङ्कार में प्राणतत्त्व है? UP PGT–2004, 2010

(A) सन्देह (B) भ्रान्ति का अनिश्चय
(C) भ्रान्ति का निश्चय (D) संशय

स्रोत–साहित्यदर्पण (10.36) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–311

438. अङ्गाङ्गिसम्बन्धेऽलङ्कृत्योः भवति अलङ्कारः– UP GDC–2014

(A) संसृष्टिः (B) काव्यसृष्टिः
(C) सङ्करः (D) सालङ्कारता

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.207) -आचार्य विश्वेश्वर, पेज-554

439. अलङ्काराणाम् एकाश्रयानुप्रवेशे कोऽलङ्कारः भवति? UK SLET–2015

(A) सङ्करः (B) संसृष्टिः
(C) श्लेषः (D) निदर्शना

स्रोत–काव्यप्रकाश -आचार्य विश्वेश्वर, पेज-554

440. अविश्रान्तिजुषामात्मन्यङ्गाङ्गित्वं तु कः अलङ्कारः भवति- K-SET-2015

(A) सन्देहालङ्कारः (B) सङ्करालङ्कारः
(C) श्लेषालङ्कारः (D) अतिशयोक्तिरलङ्कारः

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू.207) -आचार्य विश्वेश्वर, पेज-554

441. अन्योन्यालङ्कारस्य लक्षणं किम्- KL-SET–2015

(A) यथोत्तरं चेत्पूर्वस्य (B) क्रियया तु परस्परम्
(C) भिन्नदेशतया अत्यन्तं (D) समं योग्यतया

स्रोत–काव्यप्रकाश (10.120) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-429

442. संकरः कतिविधिः- HAP-2016

(A) षड्विधः (B) पञ्चविधः
(C) चतुर्विधः (D) त्रिविधः

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-554

443. 'सौन्दर्यमलङ्कारः' इति वाक्यं कुत्र विद्यते? DSSSB PGT–2014, DSSSB TGT–2014

(A) काव्यालङ्कारसूत्रे (B) व्यक्तिविवेके
(C) अलङ्कारसर्वस्ये (D) प्रतापरुद्रीये

स्रोत–छन्दोऽलंकारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-54

444. रसस्य च प्राधान्यान्नालङ्कारता में किस अलङ्कार का निषेध किया गया है? UP PGT–2005

(A) रसवद् का (B) शब्दालङ्कार का
(C) शृङ्गार का (D) उपर्युक्त सभी

स्रोत–

432. (B) 433. (B) 434. (A) 435. (D) 436. (D) 437. (C) 438. (C) 439. (A) 440. (B) 441. (B) 442. (D) 443. (A) 444. (A)

445. 'सौन्दर्यमलङ्कारः' इति प्रतिपादितम्–UGC 25 J–2009

(A) रुय्यकेन (B) रुद्रटेन
(C) भामहेन (D) वामनेन

स्रोत–काव्यालङ्कारसूत्र (1.1.2) - हरगोविन्द मिश्र, पेज–6

446. नवीनार्थसमर्थनं कस्मिन् अलङ्कारे भवति? BHU Sh.ET–2013

(A) उत्प्रेक्षायाम् (B) काव्यलिङ्गे
(C) रूपके (D) उपमायाम्

स्रोत– चन्द्रालोक (5/38) - कृष्णमणि त्रिपाठी, पेज–105

447. उपमानाद्यदन्यस्य .... स एव सः॥ BHU AET–2012

(A) समाख्यानं (B) दोषारोपः
(C) व्यतिरेकः (D) परामर्शः

स्रोत– काव्यप्रकाश (सू0-158)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज–491

448. अधोलिखितेषु कोऽलङ्कार उभयालङ्कारः इति कथितः– BHU AET–2010

(A) पर्यायालङ्कारः (B) पुनरुक्तवदाभासः
(C) परिकरालङ्कारः (D) परिसंख्यालङ्कारः

स्रोत–काव्यप्रकाश -आचार्य विश्वेश्वर, पेज-438-440

449. रसस्य गुणीभूतव्यङ्ग्यत्वे सति कोऽलङ्कारो जायते– BHU AET–2010

(A) प्रेयः (B) उर्जस्विन्
(C) रसवत् (D) समाहितः

स्रोत–काव्यप्रकाश -आचार्य विश्वेश्वर, पेज-204

450. 'हनुमानब्धिमतरत् दुष्करं किं महात्मनाम्'–इति वाक्यं कस्यालङ्कारस्य उदाहरणम्– UGC 25 D–2009

(A) उपमालङ्कारस्य (B) दृष्टान्तालङ्कारस्य
(C) दीपकालङ्कारस्य (D) अर्थान्तरन्यासालङ्कारस्य

स्रोत–चन्द्रालोक (5/68) - कृष्णमणि त्रिपाठी, पेज–133

451. 'यशः पयोराशिरभूत करकल्पतरोस्तव' इत्यत्र अलङ्कारः- CVVET–2015

(A) विभावना (B) मीलितम्
(C) विशेषोक्तिः (D) निदर्शना

स्रोत– कुवलयानन्द (श्लोक-82)-भोलाशङ्कर व्यास, पेज–147

452. 'हिमाद्रिं त्वद्यशोमग्नं सुरारशीतेन जानते' इत्यत्र अलङ्कारः– CVVET–2015

(A) उपमालङ्कारः (B) दृष्टान्तालङ्कारः
(C) उन्मीलित अलङ्कार (D) अर्थान्तरन्यासालङ्कारः

स्रोत– कुवलयानन्द (श्लोक-148)-भोलाशङ्कर व्यास, पेज–243

453. ''महावराहो गोत्रोद्धरणप्रवृत्तोऽपि गोत्रोद्दलनमकरोत्'' इत्यत्र कोऽलङ्कारः? DU- Ph.D-2016

(A) विषमः (B) अतिशयोक्तिः
(C) विरोधः (D) प्रतीपम्

स्रोत–वासवदत्ता - जमुना पाठक, पेज–21

**454. ''द्रवः संघातकठिनः स्थूलः सूक्ष्मो लघुर्गुरुः।
व्यक्तो व्यक्तेतरश्चासि प्राकाम्यं ते विभूतिषु॥''
अत्र अलङ्कारः कः? KL- SET-2016**

(A) विरोधः (B) स्वभावः
(C) अतिशयः (D) रसवान्

स्रोत– कुमारसम्भव (2/11) - वेम्पटि कुटुम्बशास्त्री, पेज–35

455. शेषोऽयं न भुजो वीरधत्ते यद्धरणीमिमाम्। अत्र अलङ्कारः कः? KL- SET-2016

(A) अतिशयोक्तिः (B) तुल्ययोगिता
(C) उत्प्रेक्षा (D) अपह्नुतिः

स्रोत–

456. परिकरालङ्कारस्य लक्षणम्? KL- SET-2016

(A) तुल्यबलविरोधः (B) विशेषणसाभिप्रायत्वम्
(C) परस्परं क्रियाजननम् (D) हेतोर्वाक्यपदार्थता

स्रोत–साहित्यदर्पण (10/57) - शालिग्राम शास्त्री, पेज-342

457. महीतलस्पर्शनिमात्रभिन्नमृद्धं हि राज्यं पदमैन्द्रमाहुः कोऽलङ्कारः? KL- SET-2016

(A) अतिशयोक्तिः (B) अपह्नुतिः
(C) रूपकम् (D) अर्थान्तरन्यासः

स्रोत– रघुवंश (2/50) - राधावल्लभ त्रिपाठी, पेज– 54-55

**458. चकोर्य एव चतुराश्चन्द्रिकाचामकर्मणि।
विनावन्तीर्न निपुणाः सुदृशो रतनर्मणि॥
अत्र अलङ्कार कः? KL SET–2016**

(A) व्यतिरेकः (B) निदर्शना
(C) प्रतिवस्तूपमा (D) दृष्टान्तः

स्रोत– साहित्यदर्पण - शालिग्राम शास्त्री, पेज–329

445. (D) 446. (B) 447. (C) 448. (B) 449. (C) 450. (D) 451. (A) 452. (C) 453. (C) 454. (A) 455. (A) 456. (B) 457. (D) 458. (C)

459. विशेषणानां साभिप्रायत्वे कः अलङ्कारः– CVVET–2017

(A) मीलितम् (B) उन्मीलितम्
(C) परिकराङ्करः (D) परिकरः

स्रोत–साहित्यदर्पण (10.57) - शालिग्राम शास्त्री, पेज-342

460. 'प्रस्तुतानामप्रस्तुतानां वा पदार्थानाम् एकधर्माभिसम्बन्धः' कस्मिन् अलङ्कारे भवति– RPSC ग्रेड-I PGT–2015

(A) तुल्ययोगितायाम् (B) प्रतिवस्तूपमायाम्
(C) निदर्शनायाम् (D) अर्थान्तरन्यासे

स्रोत– रसगंगाधर - मदनमोहन झा, पेज– 80-83

461. ''स वाक्य एकस्मिन् यत्रानेकार्थता भवेत्'' इत्यत्र 'स' इत्यस्य कोऽर्थः – UGC 25 D–2010

(A) निदर्शना
(B) समासोक्तिः
(C) श्लेषः
(D) रूपकम्
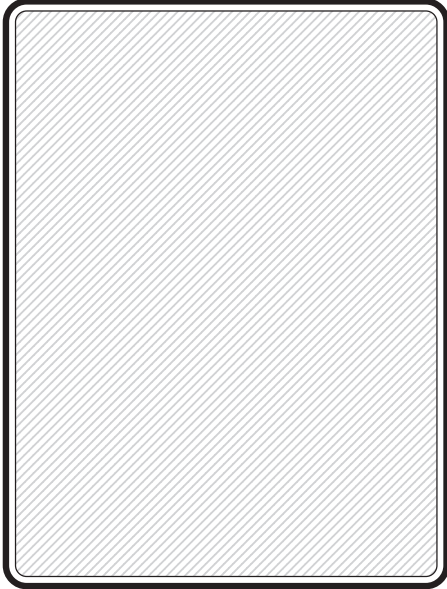
स्रोत– काव्यप्रकाश (सूत्र-146)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज–473

459. (D) 460. (B) 461. (C)

34 रसप्रश्न

1. रसः कुतो गृहीतः– BHU AET–2010
(A) ऋग्वेदतः (B) यजुर्वेदतः
(C) सामवेदतः (D) अथर्ववेदतः
स्रोत–नाट्यशास्त्रम् - ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज-84

2. शृङ्गारहास्यकरुणरौद्रवीरभयानकाः बीभत्साद्भुतसंज्ञौ चेत्यष्टौ .... रसाः स्मृताः॥ BHU AET–2011
(A) वेदे (B) लोके
(C) काव्ये (D) नाट्ये
स्रोत–नाट्यशास्त्रम् (6/15)-ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज-157

3. रसप्रस्थानस्य प्रवर्तकः कः? UGC 25 J–2010
(A) भामहः (B) भरतः
(C) विश्वनाथः (D) वामनः
स्रोत–काव्यप्रकाश-आचार्य विश्वेश्वर, भू0 पेज-16

4. व्यभिचार्यञ्जितः को भवति? UGC 25 J–2011
(A) भावध्वनिः (B) रसः
(C) अलङ्कारः (D) रसाभासः
स्रोत–काव्यप्रकाश-आचार्य विश्वेश्वर, पेज-110

5. ''वेद्यान्तरसंस्पर्शशून्यः'' इदं विशेषणमस्ति MP वर्ग (PGT)–2012
(A) गुणस्य (B) रसस्य
(C) अलङ्कारस्य (D) शब्दस्य
स्रोत–काव्यप्रकाश-आचार्य विश्वेश्वर, पेज-111

6. रस सर्वदा होता है– UGC 73 J–2007, D–2011
(A) शब्दरूपः (B) वाच्यरूपः
(C) अर्थरूपः (D) व्यङ्ग्यरूपः
स्रोत–काव्यप्रकाश-आचार्य विश्वेश्वर, पेज-217

7. विभावानुभावव्यभिचारि........... रसनिष्पत्तिः? BHU AET–2011
(A) सहयोगात् (B) संयोगात्
(C) सम्बन्धात् (D) सन्धानात्
स्रोत–(i) काव्यप्रकाश-आचार्य विश्वेश्वर, पेज-100
(ii) नाट्यशास्त्र - ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज–182

8. 'कारणान्यथ कार्याणि सहकारीणि यानि च' कस्य विषये आयाति? UGC 25 J–2013
(A) रसस्वरूपविषये (B) वस्तुस्वरूपविषये
(C) ध्वनिविषये (D) अलङ्कारविषये
स्रोत–काव्यप्रकाश (4.27)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज-95

9. रसः इति कः पदार्थः? UGC 25 D–2013
(A) आस्वाद्यमानः (B) श्रवणपेयः
(C) भोज्यमानः (D) दृश्यमानः
स्रोत–नाट्यशास्त्रम्-ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज-189

10. भरतमुनि के रससूत्र में निम्नलिखित में से किसका उल्लेख नहीं है? UGC (H) J–2010
(A) स्थायीभाव (B) विभाव
(C) अनुभाव (D) व्यभिचारीभाव
स्रोत–नाट्यशास्त्रम्-ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज-182

11. (i) 'विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगात् रसनिष्पत्तिः' इति केन उक्तम्? UP PGT (H)–2004,
(ii) ''विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः'' इति सूत्रस्य रचयितुर्नाम– UGC 73 J–2014,
(iii) 'विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः' सूत्र किस आचार्य का है? DSSSB TGT–2014,
(iv) 'विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः' किससे सम्बन्धित है? DL–2015, UP PGT–2003
(A) भरतेन (B) वामनेन
(C) भामहेन (D) जगन्नाथेन
स्रोत–(i) नाट्यशास्त्रम्-ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज-182
(ii) काव्यप्रकाश-आचार्य विश्वेश्वर, पेज-100

12. विशेष रूप से जो भावों को प्रकट करते हैं, उन्हें कहते हैं? UP PGT (H)–2013
(A) अनुभाव (B) संचारीभाव
(C) विभाव (D) स्थायीभाव
स्रोत–नाट्यशास्त्र (6.21)-ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज-164

1. (D) 2. (D) 3. (B) 4. (B) 5. (B) 6. (D) 7. (B) 8. (A) 9. (A) 10. (A) 11. (A) 12. (B)

13. रसस्य सन्दर्भे निम्नलिखितेषु कः शब्दः समीचीनः? T SET–2014

(A) ज्ञाप्यः (B) नित्यः
(C) कार्यः (D) आनन्दमयः

स्रोत– नाट्यशास्त्र (भाग-1)-बाबूलाल शुक्ल शास्त्री, पेज–365

14. (i) कतमो भावः रसतां प्राप्नोति– T SET–2014
(ii) कः भावः रसतामेति– RPSC SET–2010

(A) व्यभिचारिभावः (B) स्थायिभावः
(C) मनोभावः (D) अनुभावः

स्रोत– साहित्यदर्पण (3.1) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–46

15. रति स्थायीभाव वाला रस है? UGC 25 J–1994

(A) करुण (B) शृङ्गार
(C) अद्भुत (D) वीर

स्रोत–नाट्यशास्त्रम्-ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज-198

16. अष्टविधा नायिकाओं का सम्बन्ध किस 'रस' से होता है? UGC 25 D–1999

(A) वीररस (B) अद्भुतरस
(C) हास्यरस (D) शृङ्गाररस

स्रोत– दशरूपक - श्रीनिवास शास्त्री, पेज– 157

17. (i) शृङ्गाररसस्य स्थायीभावः कः भवति?
(ii) शृङ्गार रस का स्थायीभाव है? UGC 25 J–2004, UP PGT–2009, 2010, UP TGT (H)–2004, UK TET–2011

(A) शोक (B) हास
(C) रति (D) उत्साह

स्रोत–नाट्यशास्त्रम् - ब्रजमोहन चतुर्वेदी,पेज-161

18. (i) विप्रलम्भशृङ्गार में वियोग की कितनी दशायें मानी गयी हैं? BHU AET–2010, UP TGT (H)–2002
(ii) विप्रलम्भशृङ्गारे कामदशाः भवन्ति?

(A) 08 (B) 09
(C) 10 (D) 11

स्रोत–साहित्यदर्पण- शालिग्राम शास्त्री, पेज-107

19. (i) शृङ्गारे विप्रलम्भाख्यो भेदः कतिविधः स्मृतः?
(ii) मम्मट ने विप्रलम्भशृङ्गार के भेद स्वीकार किये हैं? UP PGT–2013, BHU AET–2011

(A) द्विविधः (B) त्रिविधः
(C) पञ्चविधः (D) षड्विधः

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-123

20. शृङ्गाररसः कतिविधः? UGC 25 J–2005

(A) द्विविधः (B) चतुर्विधः
(C) त्रिविधः (D) पञ्चविधः

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-121

21. माधुर्यगुणस्य कस्मिन् रसे प्रकर्षः वर्तते? UGC 25 D–2010

(A) शृङ्गारे (B) करुणे
(C) हास्ये (D) वीरे

स्रोत–काव्यप्रकाश (8/89) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-388

22. भ्रूविक्षेपकटाक्षादयः कस्य रसस्य अनुभावाः? MP वर्ग-1 (PGT)–2012

(A) करुणस्य (B) शान्तस्य
(C) शृङ्गारस्य (D) बीभत्सस्य

स्रोत–नाट्यशास्त्र- ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज-200

23. सहृदयस्य उत्साहादिसमुद्बोधः जायते? MGKV Ph. D–2016

(A) स्वारूप्याभिमानतः (B) पररूपत्वाभिमानतः
(C) स्वपरोभयरूपत्वाभिमानतः (D) साधारण्याभिमानतः

स्रोत– नाट्यशास्त्र - ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज–160

24. शृङ्गाररसो भवति? UGC 25J–2015

(A) प्रमथदैवतः (B) विष्णुदैवतः
(C) गन्धर्वदैवतः (D) नारायणदैवतः

स्रोत–नाट्यशास्त्र- ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज-197

25. कति भावाः समाख्याताः नामतो व्यभिचारिणः? BHU AET–2011

(A) एकत्रिंशत् (B) त्रयस्त्रिंशत्
(C) चतुस्त्रिंशत् (D) पञ्चत्रिंशत्

स्रोत–नाट्यशास्त्र (6/21) - ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज-164

13. (D) 14. (B) 15. (B) 16. (D) 17. (C) 18. (C) 19. (C) 20. (A) 21. (A) 22. (C) 23. (B) 24. (B) 25. (B)

26. स्थायीभावाः कति सन्ति– UGC 25 J–2010

(A) अष्ट (B) पञ्च
(C) दश (D) सप्त

स्रोत–नाट्यशास्त्र (6/7)- ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज-160

27. कति काव्यरसाः ज्ञेयाः– BHU Sh. ET–2011

(A) अष्टौ (B) नव
(C) दश (D) पञ्च

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–5

28. (i) संचारीभावों की संख्या मानी गयी है–
(ii) रसो के संचारीभावों की संख्या मानी जाती है–
UP PGT (H)–2010, UP TGT (H)–2001

(A) 32 (B) 30
(C) 34 (D) 33

स्रोत–नाट्यशास्त्र (6/21)- ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज-164

29. रसादिध्वनि के अन्तर्गत आते हैं– UP PGT–2005

(A) रस (B) भाव
(C) रसाभासभावाभासादि (D) उपर्युक्त सभी

स्रोत–काव्यप्रकाश-आचार्य विश्वेश्वर, पेज-94

30. (i) वीररसस्य स्थायीभावः– UP TGT (H)–2013,
(ii) वीररस का स्थायीभाव है? DSSSB (PGT)–2014,
(iii) वीररसस्य स्थायीभावः कः अस्ति– UGC 25
(iv) वीररसस्य स्थायीभावोऽस्ति– J–1998, 1999, D–2002, 2004, 2005,
MP वर्ग-1 (PGT)–2012, UP PGT (H)–2002

(A) उत्साहः (B) जुगुप्सा
(C) शोकः (D) भयम्

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-97

31. वीररसः कतिविधो भवति? BHU AET–2010

(A) द्विविधः (B) त्रिविधः
(C) चतुर्विधः (D) पञ्चविधः

स्रोत–नाट्यशास्त्र (6/79) - ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज-214

32. वीररसस्य को गुणः? MP वर्ग-1 (PGT)–2012

(A) माधुर्यम् (B) प्रसादः
(A) वीरत्वम् (D) ओजः

स्रोत–काव्यप्रकाश - पारसनाथ द्विवेदी, पेज-460

33. उत्साहः कस्य रसस्य स्थायिभावः? UGC 25 D–2014

(A) रौद्रस्य (B) करुणस्य
(C) वीरस्य (D) बीभत्सस्य

स्रोत–काव्यप्रकाश-आचार्य विश्वेश्वर, पेज-97

34. महावीरचरित में अङ्गी रस है? BHU MET–2010

(A) करुण (B) शृङ्गार
(C) वीर (D) शान्त

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-401

35. (i) बीभत्सरसस्य स्थायीभावः – UGC 25 J–2000,
(ii) बीभत्स रस का स्थायीभाव है? D–1996, 1998,
(iii) बीभत्सरसस्य स्थायीभावोऽस्ति– 2001, 2007, 2010,
UP PGT–2009, 2010, UP PGT (H)–2004,
UP TGT (H)–2013, AWES TGT–2010, 2013, GJ SET–2016, CCSUM Ph.D–2016

(A) रति (B) हास
(C) शोक (D) जुगुप्सा

स्रोत–काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-97

36. (i) जुगुप्सा स्थायीभाव होता है? DL (H)–2015
(ii) किस रस का स्थायीभाव 'जुगुप्सा' है?
UP TGT (H)–2001

(A) वीररस का (B) रौद्ररस का
(C) अद्भुतरस का (D) बीभत्सरस का

स्रोत–काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-97

37. (i) रौद्ररसस्य स्थायीभावः कः? UP GDC–2008,
(ii) रौद्ररस का स्थायीभाव है? UGC 25 D–2012,
(iii) रौद्ररसे स्थायीभावः कः? BHU Sh.ET–2013

(A) उत्साहः (B) भयम्
(C) जुगुप्सा (D) क्रोधः

स्रोत–काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-97

38. अधोलिखित में क्या सत्य है? UGC 73 D–2015

(A) रौद्ररसस्य स्थायिभावः - क्रोधः
(B) 'गङ्गायां घोषः' इत्युदाहरणमस्ति - रूढिमतीलक्षणायाः
(C) 'वीथी' इति रूपकस्य रसोऽस्ति - हास्यरसः
(D) दशरूपकमित्यस्य कर्ता - दण्डी

स्रोत–काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-97

26. (A)	27. (B)	28. (D)	29. (D)	30. (A)	31. (C)	32. (D)	33. (C)	34. (C)	35. (D)
36. (D)	37. (D)	38. (A)							

39. 'स्मितम्' UGC 25 J–2008

(A) शृङ्गाररसभेदः (B) हास्यरसभेदः
(C) वीररसभेदः (D) शान्तरसभेदः

स्रोत–नाट्यशास्त्रम्-ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज-204

40. हास्यरसप्रभेदाः सन्ति? UGC 25 D–2008

(A) त्रयः (B) चत्वारः
(C) पञ्च (D) षट्

स्रोत–नाट्यशास्त्रम्-ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज-204

41. आत्मस्थः परस्थश्चेति द्विविधो रसः– UGC 25 D–2006

(A) हास्यः (B) बीभत्सः
(C) अद्भुतः (D) भयानकः

स्रोत–नाट्यशास्त्रम्- ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज-203

42. (i) अद्भुतरस का स्थायीभाव क्या है?
(ii) अद्भुतरस का स्थायीभाव है? UGC 25 J–2002,
(iii) अद्भुतरसस्य स्थायिभावोऽस्ति 2005, 2008,
S–2013, UP PGT (H)–2010, 2013,

(A) विस्मयः (B) शोकः
(C) शमः (D) उत्साहः

स्रोत–काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-97

43. अद्भुतरसस्य को देवः? HE–2015

(A) यमः (B) ब्रह्मा
(C) विष्णुः (D) रुद्रः

स्रोत–नाट्यशास्त्रम् - ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज-197

44. 'अद्भुत एव रसः' इति कः आह? MH SET–2011

(A) जगन्नाथपण्डितः (B) नारायणः
(C) अभिनवगुप्तः (D) रूपगोस्वामी

स्रोत–संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-8), पेज-593

45. भयानकरसस्य वर्णः कः? BHU AET–2010

(A) बभ्रुः (B) पिङ्गलः
(C) रक्तः (D) कृष्णः

स्रोत–नाट्यशास्त्रम्- ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज-197

46. (i) करुणरस का स्थायीभाव है?
(ii) करुणरसस्य स्थायीभावोऽस्ति?
(iii) करुणरसस्य स्थायीभावः .... स्मृतः।
UGC 25 J–1995, 2001, 2007,
2009, D–2008, 2010, BHU AET–2010

(A) शोकः (B) रतिः
(C) हासः (D) उत्साहः

स्रोत–काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-97

47. अधोलिखितानि योजयत– K SET–2014

(क) शृङ्गारः 1. क्रोधः
(ख) करुणः 2. जुगुप्सा
(ग) रौद्रः 3. रतिः
(घ) बीभत्सः 4. शोकः

	क	ख	ग	घ
(A)	2	3	4	1
(B)	4	1	2	3
(C)	3	1	4	2
(D)	3	4	1	2

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-97

48. अधोलिखितानि योजयत– K SET–2013

(क) शृङ्गारः 1. यमः
(ख) हास्यम् 2. विष्णुः
(ग) करुणः 3. रुद्रः
(घ) रौद्रः 4. प्रमथदेवः

	क	ख	ग	घ
(A)	1	3	4	2
(B)	2	4	1	3
(C)	4	2	3	1
(D)	2	1	3	4

स्रोत–नाट्यशास्त्रम् (6.44) - ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज-197

49. (i) करुणरसस्य वर्णः कः ? UGC 25 D–2007,
(ii) करुणरसस्य वर्णः अस्ति– J–2012

(A) श्वेतः (B) श्यामः
(C) नीलः (D) कपोतः

स्रोत–नाट्यशास्त्रम्- ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज-197

50. शोको हि .... रसस्थायिभावः। UGC 25 J–2011

(A) शृङ्गारः (B) वीरः
(C) करुणः (D) भयानकः

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-97

51. करुणरसस्य वैशिष्ट्यं कुत्र उपलभ्यते?
MP वर्ग-1 (PGT)–2012

(A) वेणीसंहारे (B) उत्तररामचरिते
(C) मुद्राराक्षसे (D) रत्नावल्याम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-410

39. (B) 40. (D) 41. (A) 42. (A) 43. (B) 44. (A) 45. (D) 46. (A) 47. (D) 48. (B) 49. (D) 50. (C) 51. (B)

52. कुत्र करुणरसः मुख्यः? BHU Sh.ET–2011
(A) भवभूतिकृतौ (B) कालिदासकृतौ
(C) बाणकृतौ (D) शूद्रककृतौ
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-410

53. (i) शान्तरसस्य स्थायीभावः वर्तते?
(ii) शान्तरस का स्थायीभाव है– UP PGT (H)–2010,
(iii) 'शान्तरसस्य' स्थायीभावः कः अस्ति–
UGC 25D–2003, 2009, 2012, J–2010
(A) शोकः (B) शमः (निर्वेदः)
(C) उत्साहः (D) भयम्
स्रोत–नाट्यशास्त्रम्- ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज-160

54. निर्वेद स्थायीभाव है? UP TGT (H)–2005
(A) रौद्ररस का (B) शान्तरस का
(C) करुणरस का (D) भयानकरस का
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-97

55. निर्वेदः स्थायिभावः कस्य मते नाट्ये नास्ति?
UP GDC–2014
(A) आनन्दवर्धनस्य (B) मम्मटस्य
(C) अभिनवगुप्तस्य (D) धनञ्जयस्य
स्रोत– दशरूपक -श्रीनिवास शास्त्री, पेज-13

56. नाटक में कौन-सा रस सर्वमान्य नहीं है?
UP PGT–2004
(A) शान्त (B) शृङ्गार
(C) वीर (D) हास्य
स्रोत–नाट्यशास्त्रम्- ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज-157

57. नवमो रसः को मतः? BHU AET–2010
(A) भक्तिः (B) शान्तः
(C) वात्सल्यम् (D) अद्भुतः
स्रोत–काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-138

58. (i) शान्तरस के संस्थापक आचार्य हैं?
(ii) काव्ये शान्तरसस्य संस्थापकोऽस्ति–
UGC 73 J–2013, S–2013, D–2014
(A) भरतः (B) भामहः
(C) आनन्दवर्धनः (D) मम्मटः
स्रोत–काव्यप्रकाश-(सू0–47) आचार्य विश्वेश्वर, पेज-138

59. .... स्थायीभावोऽस्ति शान्तोऽपि नवमो रसः।
BHU AET–2011
(A) निर्व्याज (B) निर्दीप्ति
(C) निर्भीति (D) निर्वेद
स्रोत–काव्यप्रकाश (सू0-47)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज-138

60. मम्मटेन समाख्यातः को नाम नवमो रसः?
BHU AET–2012
(A) शान्तः (B) प्रदीप्तः
(C) मधुरः (D) वात्सल्यः
स्रोत–काव्यप्रकाश (सू0-47) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-138

61. ''निर्वेदः स्थायिभावोऽस्ति शान्तोऽपि नवमो रसः'' इति उक्तिर्वर्तते? UGC 25 J–2014
(A) भरतस्य (B) भामहस्य
(C) आनन्दवर्धनस्य (D) मम्मटस्य
स्रोत–काव्यप्रकाश (सू0-47) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-138

62. आचार्य मम्मट ने शान्तरस का स्थायीभाव स्वीकार किया है? UP PGT–2013
(A) शम को (B) निर्वेद को
(C) शान्त को (D) दैन्य को
स्रोत–काव्यप्रकाश (सू0-47) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-138

63. अभिनवगुप्त के अनुसार 'रसप्रतीति' है? UP GIC–2009
(A) निर्विकल्पक रूप (B) सविकल्पक रूप
(C) उभयाभावस्वरूप (D) ज्ञाप्य
स्रोत–काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-112

64. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत–
WB SET–2010
(क) शृङ्गार 1. विस्मय
(ख) बीभत्स 2. हास
(ग) अद्भुत 3. जुगुप्सा
(घ) हास्य 4. रति

	क	ख	ग	घ
(A)	4	3	1	2
(B)	1	2	3	4
(C)	4	2	1	3
(D)	2	4	3	1

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-97

52. (A) 53. (B) 54. (B) 55. (D) 56. (A) 57. (B) 58. (D) 59. (D) 60. (A) 61. (D)
62. (B) 63. (C) 64. (A)

65. अधस्तनवर्गयोः युग्मपर्यायेषु समीचीनं विचिनुत– MH SET–2011

(क) शृङ्गारः		1. रतिः		
(ख) वीरः		2. शोकः		
(ग) रौद्रः		3. क्रोधः		
(घ) करुणः		4. उत्साहः		
	क	ख	ग	घ
(A)	3	4	2	1
(B)	1	4	3	2
(C)	4	1	2	3
(D)	4	3	1	2

स्रोत–काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-97

66. रसनिष्पत्ति के प्रसङ्ग में भुक्तिवादी आचार्य हैं? UP GIC–2009

(A) भट्टनायक (B) भट्टलोल्लट
(C) श्रीशङ्कुक (D) अभिनवगुप्त

स्रोत–नाट्यशास्त्र-ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज-187

67. विश्वनाथः अस्ति? UGC 25 J–2009

(A) रसवादी (B) अलङ्कारवादी
(C) ध्वनिवादी (D) वक्रोक्तिवादी

स्रोत–साहित्यदर्पण-शालिग्राम शास्त्री, पेज-19

68. आनन्दवर्धनमते मधुरतमरसः कः? UGC 25 J–2012

(A) करुणरसः (B) हास्यरसः
(C) विप्रलम्भशृङ्गारः (D) सम्भोगशृङ्गारः

स्रोत–ध्वन्यालोक (1/5) -आचार्य विश्वेश्वर, पेज-29

69. भट्टनायकस्य भुक्तिवादः कस्य मतस्यानुकूलम्? UGC 25 D–2012

(A) मीमांसामतस्य (B) सांख्यमतस्य
(C) न्यायमतस्य (D) वेदान्तमतस्य

स्रोत–काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-107

70. (i) अनुमितिवाद के समर्थक हैं? UGC (H) D–2013
(ii) अनुमितिवाद की अवधारणा किसकी है?
(iii) अनुमिति के प्रतिष्ठाता कौन हैं? UP PGT–2003
(iv) रसनिष्पत्तिविषये अनुमितिवादं कः प्रस्तौति? UGC (H) J–2011, UGC (H) J–2007

(A) भट्टलोल्लटः (B) अभिनवगुप्तः
(C) भट्टनायकः (D) श्रीशङ्कुकः

स्रोत–काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-102

71. 'रसो मुख्यतया अनुकार्ये रामादावेव भवति' इति कस्य मतम्? UGC 25 J–2013

(A) भट्टलोल्लटस्य (B) शङ्कुकस्य
(C) भट्टनायकस्य (D) अभिनवगुप्तस्य

स्रोत–काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-101

72. भरत के रससूत्र के व्याख्याकारों में 'भुक्तिवादी' आचार्य हैं? UP GDC–2008

(A) भट्टलोल्लट (B) शङ्कुक
(C) अभिनवगुप्त (D) भट्टनायक

स्रोत–काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-105

73. रस का सर्वप्रथम शास्त्रीय विवेचन किसने किया? BHU B.Ed–2012

(A) भट्टलोल्लट (B) मम्मट
(C) राजशेखर (D) भरतमुनि

स्रोत–काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-100

74. रूपकों में किस आचार्य ने आठ ही रस को स्वीकार किया है? UP PGT–2000

(A) भरतमुनि (B) धनञ्जय
(C) मम्मट (D) पण्डितराजजगन्नाथ

स्रोत–नाट्यशास्त्रम् (6/15) -ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज-157

75. (i) अभिव्यक्तिवाद के समर्थक हैं?
(ii) रसानुभाव के विषय में अभिव्यक्तिवाद के प्रवर्तक हैं? UP PGT–2003, 2009

(A) आनन्दवर्धन (B) अभिनवगुप्त
(C) मम्मट (D) विश्वनाथ

स्रोत–काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-107

65. (B) 66. (A) 67. (A) 68. (A) 69. (B) 70. (D) 71. (A) 72. (D) 73. (D) 74. (A) 75. (B)

76. निम्नलिखित आचार्यों को उनके सिद्धान्तों के साथ सुमेलित कीजिए? UGC (H) J–2012

(क) भट्टलोल्लट	(i) अनुमितिवाद
(ख) शङ्कुक	(ii) अभिव्यक्तिवाद
(ग) भट्टनायक	(iii) भुक्तिवाद
(घ) अभिनवगुप्त	(iv) अभिव्यञ्जनावाद
	(v) उत्पत्तिवाद

	क	ख	ग	घ
(A)	(i)	(v)	(iii)	(ii)
(B)	(v)	(i)	(iii)	(ii)
(C)	(iii)	(ii)	(v)	(i)
(D)	(ii)	(iii)	(i)	(v)

काव्यप्रकाश-आचार्य विश्वेश्वर, पेज-A-101, B-102, C-105, D-107

77. (i) रसनिष्पत्तिविषये साधारणीकरणं प्रथमतया केन प्रतिपादितम् UGC (H) J–2010, UGC 73 J–2014,
(ii) भारतीय रससिद्धान्त में 'साधरणीकरण' का प्रयोग सर्वप्रथम किसने किया?
(iii) साधारणीकरण सिद्धान्त के प्रवर्तक आचार्य हैं?
(iv) 'साधारणीकरण' सङ्कल्पना के उद्गाता कौन हैं? DL (H)–2015, UP GIC–2015
(v) रसनिष्पत्तिसन्दर्भे 'साधारणीकरण' शब्दं सर्वप्रथमं प्रयुक्तवान् – UP-G GIC–2015

(A) कुन्तक (B) वामन
(C) भट्टनायक (D) अभिनवगुप्त

स्रोत– नाट्यशास्त्र - ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज–187

78. भुक्तिवाद की अवधारणा किसकी है? UGC (H) D–2008

(A) मम्मट (B) भट्टनायक
(C) भट्टलोल्लट (D) आनन्दवर्धन

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-105

79. भक्तिरस को रस के रूप में प्रतिष्ठित करने वाले आचार्य हैं? UGC (H) J–2007

(A) रामानुज (B) जीवगोस्वामी
(C) वल्लभाचार्य (D) रूपगोस्वामी

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, भू0 पेज-90

80. रस के सम्बन्ध में 'भुक्तिवाद' के प्रतिपादक आचार्य हैं? UP PGT (H)–2009

(A) भट्टलोल्लट (B) श्रीशङ्कुक
(C) भट्टनायक (D) अभिनवगुप्त

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-105

81. रसनिष्पत्तिसूत्रस्य व्याख्यातृषु भट्टनायकमतं किम्? RPSC SET–2013-14

(A) अभिव्यक्तिवादः (B) अनुमितिवादः
(C) भुक्तिवादः (D) उत्पत्तिवादः

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-105

82. (i) आचार्य शङ्कुक द्वारा रसनिष्पत्ति की व्याख्या का स्वरूप है? UP PGT (H)–2002, 2009
(ii) भरत के रससूत्र के व्याख्याता आचार्य शङ्कुक का सिद्धान्त कहलाता है–

(A) अभिव्यक्तिवाद (B) अनुमितिवाद
(C) उत्पत्तिवाद (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-102

83. 'भट्टलोल्लट' द्वारा प्रतिपादित मत कौन-सा है? UP PGT (H)–2010

(A) उत्पत्तिवाद (B) अभिव्यक्तिवाद
(C) भोगवाद (D) अनुमितिवाद

स्रोत–काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-101

84. रस निरूपण के प्रथम वक्ता थे? UP PGT (H)–2010

(A) भरतमुनि (B) दण्डी
(C) भामह (D) भट्टलोल्लट

स्रोत–काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-100

85. 'रससूत्र' के व्याख्याता कौन हैं? UGC (H) D–2012

(A) भरतमुनि, महिमभट्ट, मम्मट, विश्वनाथ
(B) लोल्लट, शङ्कुक, भट्टनायक, अभिनवगुप्त
(C) विश्वनाथ, पं0 जगन्नाथ, महिमभट्ट, अप्पयदीक्षित
(D) केशवमिश्र, विद्यासागर, राजशेखर, जयदेव

स्रोत–काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, भू0 पेज-16, 100

76. (B)	77. (C)	78. (B)	79. (D)	80. (C)	81. (C)	82. (B)	83. (A)	84. (A)	85. (B)

86. अभिनवगुप्त का रसवाद कहलाता है–UGC 73 J–2006

(A) उत्पत्तिवादः (B) अनुमितिवादः

(C) अभिव्यक्तिवादः (D) भुक्तिवादः

स्रोत–काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-107

87. कस्य मते रसः भुज्यते? UP GDC–2014

(A) अभिनवगुप्तमतेन (B) मम्मटमतेन

(C) नैय्यायिकमतेन (D) भट्टनायकमतेन

स्रोत–काव्यप्रकाश-पारसनाथ द्विवेदी, पेज-137

88. भट्टलोल्लटः साक्षात्सम्बन्धेन रसस्य स्थितिः कस्मिन् मनुते? HE–2015

(A) काव्ये (B) नटे

(C) अनुकार्ये (D) सामाजिके

स्रोत–काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-101

89. रसः लोल्लटमतेन कुत्र वर्तते? DSSSB PGT–2014

(A) सहृदये (B) अनुकर्तरि

(C) अनुकार्ये (D) काव्ये

स्रोत–काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-101

90. अभिनवगुप्तेन रसविषये को वादः अङ्गीकृतः? DSSSB TGT–2014

(A) भुक्तिवादः (B) अनुमितिवादः

(C) व्यक्तिवादः (D) उत्पत्तिवादः

स्रोत–काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-107

91. (i) चित्रतुरगन्यायं कः उपन्यस्यति?

(ii) रससिद्धान्त के प्रसङ्ग में चित्रतुरगादिन्याय का समुल्लेख किया है? UP PGT–2013 K-SET–2013

(A) शङ्कुक ने (B) भट्टनायक ने

(C) भट्टलोल्लट ने (D) नान्यदेव ने

स्रोत–काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-102

92. अधस्तनवाक्यानां सत्यासत्यत्वपर्यायं विचिनुत– MH SET–2013

(क) शोक इति करुणस्य स्थायिभावः

(ख) जुगुप्सा इति वीररसस्य व्यभिचारिभावः

(ग) क्रोधो भिन्नरुचेर्जनस्य बहुधाप्येकं समाराधनम्।

(घ) साधुकाव्यनिवेषणं न करोति कीर्तिम्।

(A) असत्यम्, सत्यम्, असत्यम् सत्यम्

(B) सत्यम्, असत्यम्, असत्यम्, असत्यम्

(C) असत्यम्, सत्यम्, सत्यम्, असत्यम्

(D) सत्यम्, असत्यम्, सत्यम्, असत्यम्

स्रोत–साहित्यदर्पण मालवि. (1.4)-शालिग्राम शास्त्री, पेज– 10, 116

93. अधस्तनवाक्यानां सत्यासत्यत्वपर्यायं विचिनुत– MH SET–2013

(क) रसविच्छेदहेतुत्वात् शृङ्गारो नैव वर्ण्यते

(ख) तत्र सङ्केतितार्थस्य बोधनाद् अग्रिमा अभिधा

(ग) सैषा न क्वापि वक्रोक्तिः

(घ) काव्यस्यानुपादेयत्वं महाभारते वर्णितम्

(A) सत्यम्, असत्यम्, सत्यम्, असत्यम्,

(B) असत्यम्, सत्यम्, असत्यम्, असत्यम्

(C) सत्यम्, सत्यम्, असत्यम्, असत्यम्

(D) असत्यम्, असत्यम्, सत्यम्, सत्यम्

स्रोत–साहित्यदर्पण (2/4), (3/193)-शालिग्राम शास्त्री, पेज–26,108

94. संस्कृतकाव्यशास्त्र में कितने रस स्वीकार किये गये हैं? UGC 73 D–2013

(A) 6 (B) 10

(C) 9 (D) 7

स्रोत–काव्यप्रकाश (सू0-47) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-138

95. रस को 'पानकरसन्याय' से चर्व्यमाण स्वीकृत किया है? UP PGT–2013

(A) भट्टलोल्लट ने (B) भट्टनायक ने

(C) आचार्य शङ्कुक ने (D) श्रीमदभिनवगुप्तपाद ने

स्रोत–काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-108

86. (C)	87. (D)	88. (C)	89. (C)	90. (C)	91. (A)	92. (B)	93. (B)	94. (C)	95. (D)

96. आचार्य भरतमुनि के बाद 'रसनिष्पत्ति' को लेकर मुख्य रूप से जिन विद्वानों ने रस के विषय में अपने विचार दिये हैं उनके नामों का कौन-सा क्रम सही है? UP PGT (H)–2005

(A) भट्टलोल्लट, भट्टशङ्कुक, भट्टनायक, अभिनवगुप्त
(B) अभिनवगुप्त, भट्टनायक, भट्टशङ्कुक, भट्टलोल्लट
(C) भट्टनायक, भट्टशङ्कुक, भट्टलोल्लट, अभिनवगुप्त
(D) भट्टशङ्कुक, भट्टलोल्लट, भट्टनायक, अभिनवगुप्त

स्रोत–काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-100

97. रस को नाट्य तक सीमित रखने का विरोध सर्वप्रथम किसने किया? UP PGT (H)–2000

(A) भामह (B) रुद्रट
(C) आनन्दवर्धन (D) अभिनवगुप्त

स्रोत–

98. 'सुखदुःखात्मको रसः' कहने वाले आचार्य हैं? UP PGT (H)–2004

(A) भरतमुनि (B) रामचन्द्र गुणचन्द्र
(C) आचार्य विश्वनाथ (D) आनन्दवर्धन

स्रोत–नाट्यदर्पण (3/7) - थानेशचन्द्र उप्रेती, पेज–106

99. (i) उत्पत्तिवाद के प्रतिपादक हैं –
(ii) उत्पत्तिवाद किससे सम्बन्धित है? UP PGT–2000, 2003

(A) भट्टलोल्लट (B) भट्टशङ्कुक
(C) भट्टनायक (D) अभिनवगुप्त

स्रोत–काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-101

100. रसविचारे भट्टनायकस्य विशिष्टं योगदानमस्ति? UP GIC–2015

(A) अभिधाविचारः (B) सात्त्विकविचारः
(C) ध्वनिविरोधविचारः (D) साधारणीकरणविचारः

स्रोत–(i) काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-107
(ii) नाट्यशास्त्र - ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज–187

101. भावकत्वव्यापारेण भाव्यमानः स्थायी सत्वोद्रेक प्रकाशानन्दमयसंविद्विश्रान्तिसतत्वेन भोगेन भुज्यते इति............। BHU AET–2012

(A) भरतः (B) भट्टलोल्लटः
(C) भट्टनायकः (D) श्रीशङ्कुकः

स्रोत–काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-107

102. रसोऽनुमेयः इति केन कथितम्? RPSC SET–2010

(A) भट्टनायकेन (B) अभिनवगुप्तेन
(C) शङ्कुकेन (D) भट्टनारायणेन

स्रोत–काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-102

103. कालिदासकृतानां सर्वेषां रूपकाणाम् अङ्गीरसोऽस्ति? BHU AET–2010

(A) करुणः (B) वीरः
(C) शृङ्गारः (D) अद्भुतः

संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-486

104. (i) वीररसप्रधानं नाटकमस्ति? BHU AET–2010
(ii) वीररसप्रधानं नाटकमिदम्? UGC 25 D–2012

(A) नागानन्दः (B) वेणीसंहारः
(C) प्रबोधचन्द्रोदयः (D) कुन्दमाला

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-388

105. महाभारतस्याङ्गीरसोऽस्ति? BHU AET–2010

(A) वीरः (B) अद्भुतः
(C) करुणः (D) शान्तः

स्रोत–ध्वन्यालोक- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-346

106. नैषधीयचरिते प्रयुक्तोङ्गीरसः अस्ति? UP GDC–2012

(A) अद्भुतः (B) करुणः
(C) शृङ्गारः (D) वीरः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-228

107 . 'उत्तररामचरितम्' का प्रमुखरस है? UP TET–2014

(A) शृङ्गार (B) करुण
(C) वीर (D) विप्रलम्भ

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-410

96. (A) 97. (D) 98. (B) 99. (A) 100. (D) 101. (C) 102. (C) 103. (C) 104. (B) 105. (D) 106. (C) 107. (B)

108. नाटके अङ्गीरसो भवति? UGC 25 J–2006

(A) शान्तः (B) करुणः
(C) हास्यः (D) वीरः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-437

109. (i) वाल्मीकिरामायणे प्रधानरसः अस्ति?
(ii) रामायणे को रसः प्रधानः?
UGC 25 D–2009, DSSSB PGT–2014

(A) शान्तः (B) वीरः
(C) करुणः (D) रौद्रः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-112

110. सुमेलयतु – UGC 25 D–2011

(क) किरातार्जुनीयम् **1. शृङ्गाररसः**
(ख) नैषधीयचरितम् **2. वीररसः**
(ग) उत्तररामचरितम् **3. वियोगशृङ्गारः**
(घ) मेघदूतम् **4. करुणरसः**

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(A)	2	1	4	3
(B)	3	4	1	2
(C)	1	2	3	4
(D)	4	3	2	1

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज- A-188, B-228, C-403, D-532

111. शब्दसम्भवात् रसः – MGKV Ph. D–2016

(A) न परोक्षः (B) न अपरोक्षः
(C) नानुमेयः (D) न संवेद्यः

स्रोत–साहित्यदर्पण (3/25)-शालिग्राम शास्त्री, पेज-60

112. अस्मिन् काव्ये वीररसः अङ्गीरसः भवति?
UGC 25 J–2013

(A) नैषधीयचरिते (B) शिशुपालवधे
(C) मेघदूते (D) रघुवंशे

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-205

113. शृङ्गाररसप्रधाननाटकम् इदम्? UGC 25 S–2013

(A) उत्तररामचरितम् (B) वेणीसंहारः
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (D) प्रतिमानाटकम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-339

114. महाकाव्य में अङ्गीरस होता है? UP GDC–2008

(A) शृङ्गार (B) हास्य
(C) बीभत्स (D) भयानक

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-132

115. मुद्राराक्षसेऽङ्गीरसः UGC 25 J–2005

(A) शृङ्गाररसः (B) करुणरसः
(C) हास्यरसः (D) वीररसः

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-360

116. साहित्यदर्पण के अनुसार काव्य में रस की स्थिति है?
UP PGT–2009

(A) शरीर जैसी (B) आत्मा जैसी
(C) अवयव संस्थान जैसी (D) अलङ्करण जैसी

स्रोत–साहित्यदर्पण- शालिग्राम शास्त्री, पेज-16

117. नलचम्पू में किस रस की प्रधानता है?
UP PGT–2009

(A) शृङ्गार (B) वीर
(C) रौद्र (D) शान्त

स्रोत–नलचम्पू-तारिणीश झा, पेज भू0-26

118. वेणीसंहार नाटक का अङ्गीरस है? UP PGT (H)–2000

(A) वीररस (B) शृङ्गार
(C) रौद्र (D) शान्त

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-388

119. महाभारते को रसः प्रधानः? DSSSB TGT–2014

(A) हास्यः (B) शान्तः
(C) वीरः (D) अद्भुतः

संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-160

120. किस नाटक का अङ्गीरस करुण रस है? UK TET–2011

(A) महावीरचरितम् (B) उत्तररामचरितम्
(C) वेणीसंहारम् (D) इनमें से कोई नहीं

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-403

121. अशुद्धं युग्मं चिनुत – MP वर्ग-1 (PGT)–2012

(A) बीभत्सः – जुगुप्सा (B) शृङ्गारः – रतिः
(C) अद्भुतः – विस्मयः (D) करुणः – भयम्

स्रोत–काव्यप्रकाश-आचार्य विश्वेश्वर, पेज-97

108. (D) 109. (C) 110. (A) 111. (B) 112. (B) 113. (C) 114. (A) 115. (D) 116. (B) 117. (A) 118. (A) 119. (B) 120. (B) 121. (D)

122. 'काव्य रस कार्य नहीं है' इसको प्रमाणित करने हेतु कौन-सा कथन सत्य है– UP PGT–2013

(A) रस विभावानुभावव्यभिचारी भावों से निष्पन्न होता है।
(B) लौकिक कारणों के समान ही रस के कारण कहे गये हैं।
(C) विभावादि के नाश होने पर रस की स्थिति नहीं रहती।
(D) सहृदय के हृदय में रस पहले से ही विद्यमान है।

स्रोत–काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-110

123. 'काव्ये रसयिता सर्वो' इति कस्य परिचायकः? UP GDC–2014

(A) ग्रन्थकर्तुः (B) काव्यानुकर्तुः
(C) काव्यशास्त्रज्ञस्य (D) सहृदयस्य

स्रोत–

124. नाट्यशास्त्रानुसारं कति स्थायिभावाः? UGC 25 D–2013

(A) नव (B) अष्टौ
(C) दश (D) सप्त

स्रोत–नाट्यशास्त्रम् (6/7)- ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज-160

125. रस की अवस्था को प्राप्त भाव अर्थात् स्थायीभाव कितने हैं? UP PGT–2009

(A) सात (7) (B) आठ (8)
(C) नौ (9) (D) दस (10)

स्रोत–नाट्यशास्त्रम् (6/7)- ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज-160

126. व्यक्तः स तैर्विभावाद्यैः स्थायी .... रसः स्मृतः। BHU AET–2011

(A) योगो (B) भूतो
(C) भाव्यो (D) भावो

स्रोत–काव्यप्रकाश- पारसनाथ द्विवेदी, पेज-128

127. अङ्गीरसो न भवति महाकाव्ये– CCSUM Ph. D–2016

(A) शृङ्गारः (B) वीरः
(C) शान्तः (D) करुणः

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-132

128. क्रोधः स्थायीभावो वर्तते– CCSUM Ph. D–2016

(A) वीरस्य (B) भयानकस्य
(C) रौद्रस्य (D) करुणस्य

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-97

129. भावेषु प्रधानभावः .... GJ SET–2016

(A) व्यभिचारिभावः (B) अनुभावः
(C) स्थायिभावः (D) विभावः

स्रोत–काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-97

130. श्रीशङ्कुकमते कीदृशः स्थायी रसो भवति – GJ SET–2014

(A) भावितः (B) अनुमितः
(C) उपचितः (D) अभिव्यक्तः

स्रोत–काव्यप्रकाश - सीताराम दोतोलिया, पेज–126

122. (C) **123.** (D) **124.** (B) **125.** (B) **126.** (D) **127.** (D) **128.** (C) **129.** (C) **130.** (B)

35 छन्दशास्त्र

1. (i) 'छन्दोनुशासन' के प्रणेता हैं–UGC 25 J– 2002,
(ii) 'छन्दशास्त्र' (छन्दसूत्र) के रचयिता हैं– D–2003,
(iii) छन्दसूत्र के रचनाकार हैं– 2014, BHU MET– 2010
(iv) छन्दः इति वेदाङ्गस्य प्रतिनिधिग्रन्थः 'छन्दःसूत्रम्' केन रचितः? BHU AET– 2010, 2012

(A) पिङ्गलः (B) यास्कः
(C) पाणिनिः (D) लगधः

स्रोत–संस्कृत शास्त्रों का इतिहास- बलदेव उपाध्याय,पेज-296

2. 'पिङ्गलछन्दसूत्र' केन रचितमस्ति? BHU AET– 2011

(A) गङ्गादासेन (B) कालिदासेन
(C) पिङ्गलेन (D) षड्गुरुशिष्येण

स्रोत–संस्कृत शास्त्रों का इतिहास - बलदेव उपाध्याय,पेज-296

3. 'पिङ्गल' प्रणीत ग्रन्थ का नाम है–BHU MET– 2008

(A) छन्दसूत्र (B) कल्पसूत्र
(C) निरुक्त (D) अष्टाध्यायी

स्रोत–संस्कृत शास्त्रों का इतिहास - बलदेव उपाध्याय,पेज-296

4. वृत्तरत्नाकरस्य कर्ता कः? DSSSB TGT– 2014, DSSSB PGT– 2014

(A) भूदारभट्टः (B) मन्दारभट्टः
(C) उदारभट्टः (D) केदारभट्टः

स्रोत–संस्कृत शास्त्रों का इतिहास - बलदेव उपाध्याय,पेज-307

5. छन्दः पादौ तु– RPSC ग्रेड II (TGT)– 2010

(A) इतिहासस्य (B) वेदस्य
(C) शास्त्रस्य (D) पुराणस्य

स्रोत–छन्दोऽलंकारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-5

6. लौकिकछन्दः भवति– RPSC ग्रेड-II (TGT)– 2010

(A) त्रिविधम् (B) चतुर्विधम्
(C) द्विविधम् (D) पञ्चविधम्

स्रोत–संस्कृत शास्त्रों का इतिहास-बलदेव उपाध्याय, पेज–296

7. छन्दोमयी रचना को कहते हैं– UGC 25 J– 2004

(A) पद्य (B) गद्य
(C) चम्पू (D) नाटक

स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज– 6, 7

8. छन्दसि पादस्य अन्तिमो वर्णः कीदृशः स्वीक्रियते? BHU Sh.ET– 2013

(A) प्लुत एव (B) लघुरेव
(C) लघुर्वा दीर्घो वा (D) दीर्घ एव

स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-11

9. मात्रागणे कति कलाः सन्ति? DSSSB PGT– 2014

(A) तिस्रः (B) चतस्रः
(C) पञ्च (D) षट्

स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-8

10. वर्णिकछन्देषु गणना भवति– AWES TGT– 2010, 2012

(A) मात्राणाम् (B) ध्वनीनाम्
(C) वर्णानाम् (D) स्वराणाम्

स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-11,12

11. कस्मिन् गणे मध्यो गुरुर्भवति? BHU Sh.ET– 2013

(A) जगणः (B) भगणः
(C) सगणः (D) मगणः

स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-10

12. भगणः कः? BHU Sh.ET– 2013

(A) अन्त्यगुरुः (B) आदिगुरुः
(C) मध्यगुरुः (D) आदिलघुः

स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-10

13. छन्दोविचारे कति गणाः सन्ति? BHU Sh. ET– 2011

(A) पञ्च (B) षट्
(C) चत्वारः (D) अष्टौ

स्रोत–संस्कृत व्याकरण-प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–528

1. (A) 2. (C) 3. (A) 4. (D) 5. (B) 6. (C) 7. (A) 8. (C) 9. (A) 10. (C) 11. (A) 12. (B) 13. (D)

14. अवसाने कस्य गुरुः? BHU– Sh.ET– 2011

(A) तगणः (B) मगणः

(C) सगणः (D) नगणः

स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-10

15. अधोलिखितेषु नगणः कः? BHU– Sh.ET– 2011

(A) ।।। (B) ऽऽऽ

(C) ।।ऽ (D) ऽ।।

स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-11

16. 'अश्नाति' इति शब्दः को गणो भवति? DSSSB PGT– 2014

(A) यगणः (B) तगणः

(C) जगणः (D) मात्रागणः

स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-11

17. 'चामुण्डी' इति शब्दः को गणो भवति? DSSSB TGT– 2014

(A) भूतगणः (B) मगणः

(C) नगणः (D) स्त्रीगणः

स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-11

18. (i) 'सर्वलघु' इति को गणः? UGC 25 J– 2015

(ii) कस्मिन् गणे सर्वे वर्णाः लाघवः? AWES TGT– 2010

(A) जगणः (B) भगणः

(C) नगणः (D) सगणः

स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-11

19. 'सम्बन्धः' इति शब्दे कः गणः? AWES TGT– 2010

(A) सगणः (B) भगणः

(C) यगणः (D) मगणः

स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-11

20. आर्याछन्दसि द्वितीयचरणे मात्राः भवन्ति– RPSC ग्रेड I (PGT) 2010, 2011

(A) द्वादश (B) त्रयोदश

(C) पञ्चदश (D) अष्टादश

स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-16,17

21. आर्या कस्मिन् छन्दसि अन्तर्भवति– KL SET–2015

(A) अर्धसमवृत्ते (B) मात्रा

(C) समवृत्ते (D) अत्यष्टिः

स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-16

22. आर्याप्रथमदलोक्तं लक्षणमुभयोर्दलयोर्भवति चेत् सा– CVVET–2015

(A) गीतिः (B) उद्गीतिः

(C) उपगीतिः (D) चपला

स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-18

23. अनुष्टुप्–छन्दसि सर्वत्र लघुः कतमो वर्णः भवति– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2014

(A) षष्ठः (B) सप्तमः

(C) पञ्चमः (D) अष्टमः

स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-19

24. ''शरदिन्दुसुन्दररुचिश्चेतसि सा मे गिरां देवी।
अपहृत्य तमःसन्ततमर्थानखिलान् प्रकाशयतु।।''
उपर्युक्त पद्य के छन्द का नाम लिखिए– RPSC ग्रेड-I (PGT) 2010, 2011

(A) आर्या (B) मालिनी

(C) उपेन्द्रवज्रा (D) वंशस्थ

स्रोत–साहित्यदर्पण - भवानी शंकर शर्मा,पेज-100

25. अनुष्टुप्-छन्दसि पञ्चमाक्षरः भवति– RPSC ग्रेड I (PGT) – 2010

(A) गुरुः (B) लघुः

(C) सानुस्वारः (D) प्लुतः

स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-19

26. 'जगतः पितरौ वन्दे' इत्यत्र किं छन्दः? BHU Sh. ET– 2013

(A) उपेन्द्रवज्रा (B) मन्दाक्रान्ता

(C) अनुष्टुप् (D) आर्या

स्रोत–रघुवंशम् (1/1) - बलवान सिंह यादव, पेज-4

14. (C) 15. (A) 16. (B) 17. (B) 18. (C) 19. (D) 20. (D) 21. (B) 22. (A) 23. (C) 24. (A) 25. (B) 26. (C)

27. 'वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि' इत्यत्र किं छन्दः? UGC 25 D– 2012

(A) अनुष्टुप् (B) वसन्ततिलका
(C) शिखरिणी (D) पुष्पिताग्रा

स्रोत–उत्तररामचरितम् (2/7)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-117

28. 'सर्वत्र लघु पञ्चमम्' इति लक्षणांशः कस्य छन्दसः वर्तते?– RPSC ग्रेड-II (TGT)– 2014

(A) शार्दूलविक्रीडितम् (B) अनुष्टुप्
(C) इन्द्रवज्रा (D) आर्या

स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-19

29. अनुष्टुप्–छन्दसि एकस्मिन् पादे अक्षराणि भवन्ति– MP वर्ग– 1 (PGT)– 2012

(A) दश (B) अष्टौ
(C) नव (D) द्वादश

स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-19

30. अनुष्टुप् है– UP PGT (H)– 2009

(A) एक छन्द (B) एक अलङ्कार
(C) एक रस (D) एक गुण

स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-19

31. यस्य छन्दसः चतुर्षु अष्टवर्णाः भवन्ति तद् अस्ति– RPSC ग्रेड-I (PGT)– 2011

(A) मालिनी (B) इन्द्रवज्रा
(C) अनुष्टुप् (D) आर्या

स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-19

32. (i) अनुष्टुप् छन्द में कितने अक्षर होते हैं?
(ii) अनुष्टुप् छन्द में कितने वर्ण होते हैं?
BHU MET– 2013, UP TGT – 2013

(A) 24 (B) 32
(C) 28 (D) 36

स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-19

33. 'पञ्चमं लघु सर्वत्र सप्तमं द्विचतुर्थयोः।
गुरुं षष्ठं च जानीयात् शेषेष्वनियमो मतः॥''
उपर्युक्त श्लोक लक्षण है– BHU MET 2009, 2013

(A) अनुष्टुप् का (B) इन्द्रवज्रा का
(C) त्रिष्टुप् का (D) स्रग्धरा का

स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-19

34. ''भानुः सकृद्युक्ततुरङ्ग एव'' अस्मिन् चरणे छन्दः विद्यते– RPSC ग्रेड-I (PGT) 2010, 2011

(A) उपेन्द्रवज्रा (B) शालिनी
(C) इन्द्रवज्रा (D) रथोद्धता

स्रोत–(i) छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-19
(ii) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (5/4)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–249

35. 'तौ जगौ गः'' लक्षणमस्ति– MP वर्ग-1 (PGT) 2012

(A) शार्दूलविक्रीडितछन्दसः (B) वंशस्थछन्दसः
(C) इन्द्रवज्राछन्दसः (D) मालिनीछन्दसः

स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-19

36. ''यत्रैव गङ्गायमुनात्रिवेणीगोदावरीसिन्धुसरस्वती च। सर्वाणि तीर्थानि वसन्ति तत्र यत्राच्युतोदारकथा प्रसङ्गः॥'' उपर्युक्त श्लोक के छन्द का नाम लिखिए– BHU MET– 2009

(A) इन्द्रवज्रा (B) उपेन्द्रवज्रा
(C) मालिनी (D) वंशस्थ

स्रोत– छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज–19

37. इन्द्रवज्रा छन्द में वर्णों की संख्या होती है – BHU MET– 2015

(A) 32 (B) 40
(C) 44 (D) 48

स्रोत–अलंकार एवं छन्द - समीर आचार्य, पेज-48

38. इन्द्रवज्रा–छन्दसः लक्षणे अन्ते गुरुः प्रयुज्यते–
इन्द्रवज्रां छन्दसि अन्ते कति गुरुवर्णाः भवन्ति?
RPSC ग्रेड-I (PGT)–2014,2015

(A) द्विवारम् (B) त्रिवारम्
(C) एकवारम् (D) चतुर्वारम्

स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-19

39. ''अर्थो हि कन्या परकीय एव तामद्य सम्प्रेष्य परिग्रहीतुः जातो ममायं विशदः प्रकामं, प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा॥''
इस श्लोक में छन्द है– UP PGT–2011

(A) उपजाति (B) शिखरिणी
(C) इन्द्रवज्रा (D) उपेन्द्रवज्रा

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/22)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-240

27. (A) 28. (B) 29. (B) 30. (A) 31. (C) 32. (B) 33. (A) 34. (C) 35. (C) 36. (A) 37. (C) 38. (A) 39. (C)

40. (i) ''त्वमेव माता च पिता त्वमेव'' उपर्युक्त पंक्ति का छन्द क्या है? BHU MET–2009, 2011, 2013

(ii) ''त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव, त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव॥''

उपर्युक्त श्लोक में कौन छन्द है?

(A) इन्द्रवज्रा (B) उपेन्द्रवज्रा
(C) आर्या (D) वंशस्थ

स्रोत–छन्दः प्रवेशिका - ज्ञानेन्द्रसापकोटा, पेज-34

41. (i) मिश्रितं छन्दो भवति– RPSC ग्रेड II (TGT)– 2014

(ii) इन्द्रवज्रा– उपेन्द्रवज्रयोः मेलनेन किं छन्दः भवति– MGKV Ph. D–2016

(A) उपजाति (B) आर्या
(C) इन्द्रवज्रा (D) उपेन्द्रवज्रा

स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-20

42. नजजलगैर्गदिता– CVVET–2015

(A) स्वागता (B) सुमुखी
(C) श्रीः (D) शालिनी

स्रोत–वृत्तरत्नाकर - धरानन्दशास्त्री, पेज–106

43. ''जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ।'' यह लक्षण है– UGC 25 J– 2004

(A) इन्द्रवज्रा का (B) उपेन्द्रवज्रा का
(C) वंशस्थ का (D) मालिनी का

स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-22

44. ''उदेति पूर्वं कुसुमं ततः फलम्'' उपर्युक्तचरणे छन्दसः नाम अस्ति– RPSC ग्रेड-I (PGT)– 2011

(A) रथोद्धता (B) वंशस्थम्
(C) उपेन्द्रवज्रा (D) द्रुतविलम्बितम्

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (7/30)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–442

45. ।ऽ।, ऽऽ।, ।ऽ।, ऽ।ऽ

निर्दिष्टानि लक्षणचिह्नानि वीक्ष्य छन्दसः नाम चिनुत– MP वर्ग-I (PGT) 2012

(A) मालिनी (B) शिखरिणी
(C) मन्दाक्रान्ता (D) वंशस्थ

स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-22

46. सगणचतुष्टयकपादवत् वृत्तम्– CVVET–2015

(A) द्रुतविलम्बितम् (B) दोधकम्
(C) तोटकम् (D) स्वागतम्

स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-23

47. ''विनयवारितवृत्तिरतस्तया न विवृतो मदनो न च संवृतः। उपर्युक्तोदाहरणे छन्दसः नामास्ति– RPSC ग्रेड-I (PGT) 2010, 2011

(A) वसन्ततिलका (B) द्रुतविलम्बितम्
(C) वंशस्थम् (D) रथोद्धता

स्रोत–(i) छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-22-23
(i) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (2/11) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–117

48. ''प्रकृतिसिद्धमिदं हि महात्मनाम्'' इत्यस्मिन् श्लोकांशे किं छन्दः? RPSC ग्रेड II (TGT)– 2014

(A) उपजाति (B) भुजङ्गप्रयातम्
(C) द्रुतविलम्बितम् (D) मन्दाक्रान्ता

स्रोत–नीतिशतकम् - तारिणीश झा, पेज-86-87

49. अरसिकेषु कवित्वनिवेदनं, शिरसि मा लिख मा लिख मा लिख'' अत्र किं छन्दः? MP वर्ग-1 (PGT) – 2012

(A) द्रुतविलम्बितम् (B) शार्दूलविक्रीडितम्
(C) उपजाति (D) वंशस्थ

स्रोत–वृत्तरत्नाकर - धरानन्दशास्त्री, पेज–117

50. 'उपकृतं बहु तत्र किमुच्यते' इति उदाहरणे छन्दः वर्तते? RPSC ग्रेड-I (PGT)–2014

(A) शालिनी (B) स्रग्धरा
(C) रथोद्धता (D) द्रुतविलम्बितम्

स्रोत–(i) छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-22
(ii) काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-92

51. द्रुतविलम्बितस्य लक्षणं– KL SET–2015

(A) नभौ भरौ (B) तौ जरौ
(C) शात्परैर्न लगै (D) तभजा जगौ

स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-22

52. भुजङ्गप्रयातछन्दसि चतुर्वारं कतयोः गणः भवति प्रत्येकस्मिन् चरणे– RPSC ग्रेड-I (PGT)– 2010, 2011

(A) सगणः (B) रगणः
(C) भगणः (D) यगणः

स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-23

40. (B) 41. (A) 42. (B) 43. (C) 44. (B) 45. (D) 46. (C) 47. (B) 48. (C) 49. (A) 50. (D) 51. (A) 52. (D)

53. ''चतुर्भिर्यकारैः'' इत्यनेन किं छन्दो वर्तते? RPSC ग्रेड II (TGT) 2014
(A) मालिनी (B) स्रग्धरा
(C) शिखरिणी (D) भुजङ्गप्रयातम्
स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-23

54. प्रहर्षिणी छन्द के प्रत्येक पाद में वर्णों की संख्या होती है? BHU MET–2015
(A) 9 (B) 10
(C) 12 (D) 13
स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-24

55. छन्दस्सु चतुर्दशवर्णात्मकं छन्दः अस्ति– RPSC ग्रेड I (PGT) 2010, 2011
(A) वसन्ततिलका (B) मालिनी
(C) शिखरिणी (D) रथोद्धता
स्रोत–अलंकार एवं छन्द - समीर आचार्य, पेज-54

56. 'वसन्ततिलकं' इत्यस्य छन्दसः एकस्मिन् पादे अक्षर संख्या रिक्तस्थानं प्रपूरयत– RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014
(A) 14 (B) 12
(C) 15 (D) 20
स्रोत–अलंकार एवं छन्द - समीर आचार्य, पेज-54

57. वसन्ततिलकायाः लक्षणं किम्? DSSSB TGT–2014
(A) रसभा नयौगः (B) भभजां रगौ गः
(C) मयरास्ततगौ गः (D) तभजा जगौ गः
स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-24,25

58. कस्मिन् छन्दसि प्रथमे षड्वर्णाः ह्रस्वाः भवन्ति BHU Sh.ET–2013
(A) स्रग्धरा (B) वसन्ततिलका
(C) उपेन्द्रवज्रा (D) मालिनी
स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-25

59. ''नयमययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः'' इदं लक्षणमस्ति– UGC 25 D–2011
(A) मालिनीछन्दसः (B) शालिनीछन्दसः
(C) वंशस्थछन्दसः (D) वसन्ततिलकाछन्दसः
स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-25

60. 'किरातार्जुनीयम्' प्रथमसर्ग के अन्त्य अधोलिखित श्लोक में कौन छन्द है? ''विधिसमयनियोगाद्दीप्ति संहारजिह्मम्।'' UP PGT–2010
(A) उपजाति (B) वंशस्थ
(C) वसन्ततिलका (D) मालिनी
स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/46) रामसेवक दुबे, पेज-148,153

61. मालिनी-वृत्तस्य लक्षणं किम्? DSSSB PGT–2014
(A) ररजनमयुतेयं मालिनी षड्कुकाब्भिः।
(B) ययरनमयुतेयं मालिनी सिन्धुरुद्रैः।
(C) ननभततयुतेयं मालिनी लोकसर्पैः।
(D) ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः।
स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-25

62. यमनसभलागः इति– CVVET–2015
(A) मालिन्याम् (B) भुजङ्गप्रयाते
(C) शिखरिण्याम् (D) प्रहर्षिण्याम्
स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-26

63. ''भवभूति महाकवेरिमां निरर्गलतरङ्गिणी'' इति वदन्ति– UGC 25 D–2012
(A) स्रग्धरा (B) मन्दाक्रान्ता
(C) शिखरिणी (D) वसन्ततिलका
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-523

64. ''रसैः रुद्रैश्छिन्ना यमनसभलागः शिखरिणी'' इत्यत्र रुद्रैः इति पदेन कस्याः संख्यायाः संकेतं भवति? RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014, RPSC ग्रेड-I (PGT)–2014
(A) 12 (द्वादश) (B) 11 (एकादश)
(B) 16 (षोडश) (D) 13 (त्रयोदश)
स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-26

65. ''न जाने भोक्तारं कमिह समुपस्थास्यति विधिः।'' UGC–25 J–2015
(A) मन्दाक्रान्ता (B) हरिणी
(C) शिखरिणी (D) स्रग्धरा
स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (2/10)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-115

53. (D) 54. (D) 55. (A) 56. (A) 57. (D) 58. (D) 59. (A) 60. (D) 61. (D) 62. (C) 63. (C) 64. (B) 65. (C)

66. शिखरिणी वृत्ते कति अक्षराणि भवन्ति– KL SET–2015

(A) द्वादश (B) सप्तदश
(C) ऊनविंशतिः (D) विंशतिः

स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-26

67. 'कलाभ्यां चूडालङ्कृतशशिकलाभ्यां निजतपः' अयं पादः – CVVET–2015

(A) प्रहर्षिण्याः (B) पञ्चचामरस्य
(C) स्रग्धरायाः (D) शिखरिण्याः

स्रोत–वृत्तरत्नाकर - धरानन्दशास्त्री, पेज–141

68. वियोगिनी .... भवति– KL SET–2014

(A) समवृत्तम् (B) अर्धसमवृत्तम्
(C) गाथा (D) मात्रावृत्तम्

स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-30,32

69. .... रगणं भवति– KL SET–2014

(A) आदिलघुः (B) अन्त्यलघुः
(C) मध्यलघुः (D) सर्वलघुः

स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-10

70. अतिजगतिच्छन्दसि चतुर्षु पादेषु आहत्य .... वर्णाः भवन्ति– KL SET–2014

(A) 48 (B) 52
(C) 56 (D) 60

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-49

71. ''नसमरसलागः षड्वेदैर्हयैर्हरिणीमता'' अस्मिन् लक्षणे 'हयैः' पदस्य तात्पर्यमस्ति– RPSC ग्रेड-I (PGT) , 2011

(A) अश्वैः (B) गजैः
(C) चतुर्भिः (D) सप्तभिः

स्रोत–वृत्तरत्नाकर - धरानन्दशास्त्री, पेज–143

72. मन्दाक्रान्ता–छन्दसि प्रत्येकस्मिन् चरणे कति वर्णाः निर्दिष्टाः? RPSC ग्रेड– I (PGT) 2010-2011

(A) पञ्चदश (B) त्रयोदश
(C) सप्तदश (D) अष्टादश

स्रोत–(i) छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-28
(ii) अलंकार एवं छन्द - समीर आचार्य, पेज-57

73. एषु सप्तदशवर्णात्मकं किं छन्दः? BHU Sh.ET– 2013

(A) इन्द्रवज्रा (B) मन्दाक्रान्ता
(C) शालिनी (D) वंशस्थ

स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-28

74. ''अव्यापन्नः कुशलमबले पृच्छति त्वां वियुक्ताम्'' अत्र छन्दः किम्? UGC 25 D– 2010

(A) विद्युन्माला (B) मन्दाक्रान्ता
(C) अनुष्टुप् (D) शिखरिणी

स्रोत–मेघदूतम् (उत्तरमेघ-41)-दयाशंकर शास्त्री, पेज–140

75. 'कश्चित्कान्ता विरहगुरुणा स्वाधिकारात् प्रमत्तः' अत्र कः छन्दः अस्ति? UGC 25 D– 2011

(A) मन्दाक्रान्ता (B) शिखरिणी
(C) स्रग्धरा (D) उपजातिः

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ 1) - रमाशङ्कर त्रिपाठी, पेज-3

76. 'धूमज्योतिः सलिलमरुतां सन्निपातः क्व मेघः' इत्यादिपद्यस्य वृत्तं किमस्ति? BHU Sh.ET– 2011

(A) मन्दाक्रान्ता (B) द्रुतविलम्बितम्
(C) उपजातिः (D) वसन्ततिलका

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-5) - रमाशङ्कर त्रिपाठी, पेज-11

77. मेघदूते किं छन्दः प्रयुक्तम्? BHU AET– 2010

(A) मालिनी (B) मन्दाक्रान्ता
(C) मेघविस्फूर्जिता (D) मध्यक्षामा

स्रोत–मेघदूतम् - रमाशङ्कर त्रिपाठी, भू0पेज-41

78. 'शिरः शार्वं स्वर्गात्पशुपतिशिरस्तः क्षितिधरम्' उक्त पङ्क्ति में छन्द है– HTET– 2014

(A) शार्दूलविक्रीडितम् (B) मन्दाक्रान्ता
(C) शिखरिणी (D) वंशस्थ

स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-10) - तारिणीश झा, पेज–18

79. द्वादशे सप्तमे च स्थाने कस्मिन् छन्दसि यतिः जायते? नाम निर्देशं कुरुत– RPSC ग्रेड-I (PGT), 2011

(A) शार्दूलविक्रीडितम् (B) शिखरिणी
(C) मन्दाक्रान्ता (D) शालिनी

स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-29

66. (B) 67. (D) 68. (B) 69. (C) 70. (B) 71. (D) 72. (C) 73. (B) 74. (B) 75. (A)
76. (A) 77. (B) 78. (C) 79. (A)

80. 'विद्यानां नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तं धनम्' इति पद्यांशे किन्नाम छन्दः? RPSC ग्रेड-II (TGT) 2014

(A) वसन्ततिलका (B) शिखरिणी
(C) शार्दूलविक्रीडितम् (D) मन्दाक्रान्ता

स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-17) - तारिणीश झा, पेज-29,31

81. शार्दूलविक्रीडितस्य लक्षणं किम्? DSSSB TGT–2014

(A) अर्थकैस्तनयास्तभाः सगुरवः शार्दूलविक्रीडितम्।
(B) सूर्याश्वैर्मसजस्तताः सगुरवः शार्दूलविक्रीडितम्।
(C) लोकाकैः स्यमजस्यताः सगुरवः शार्दूलविक्रीडितम्।
(D) वस्मरौर्भयस्तस्तभाः सगुरवः शार्दूलविक्रीडितम्।

स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-29

82. 'यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं सम्पृष्टमुत्कण्ठया' में छन्द है– H TET–2014

(A) शिखरिणी (B) स्रग्धरा
(C) शार्दूलविक्रीडितम् (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–(i) छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-29
(ii) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/6) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-208

83. (i) प्रतिपादं एकविंशतिः वर्णात्मकं किं छन्दः?
(ii) छन्दसि एकविंशति अक्षराणि भवन्ति–
RPSC ग्रेड-II (TGT)– 2014, KL SET-2015

(A) उपजाति (B) वंशस्थ
(C) मालिनी (D) स्रग्धरा

स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-29

84. प्रकृति (स्रग्धरा) छन्द के अक्षरों की संख्या होती है– UP PGT– 2002

(A) 36 (B) 44
(C) 72 (D) 84

स्रोत–वृत्तरत्नाकर (3/103) - धरानन्द शास्त्री, पेज-149

85. चरण में वर्णों की संख्या (कम से अधिक) के आधार पर इन वर्णिक छन्दों का सही अनुक्रम कौन-सा है? UGC (H) J– 2013

(A) वसन्ततिलका-मन्दाक्रान्ता-शार्दूलविक्रीडित-इन्द्रवजा
(B) मन्दाक्रान्ता-शार्दूलविक्रीडित-इन्द्रवज्रा-वसन्ततिलका
(C) शार्दूलविक्रीडित - इन्द्रवज्रा-वसन्ततिलका-मन्दाक्रान्ता
(D) इन्द्रवज्रा - वसन्ततिलका - मन्दाक्रान्ता - शार्दूलविक्रीडित

स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-19,24,28,29

86. स्रग्धरा प्रतिपादं कति वर्णयुता भवति– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2014

(A) एकविंशतिवर्णयुता (B) एकोनविंशतिवर्णयुता
(C) षोडशवर्णयुता (D) पञ्चदशवर्णयुता

स्रोत– (i) छन्दोऽलङ्कारमञ्जूषा - लक्ष्मीकान्त दीक्षित, पेज-15
(ii) छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-29

87. अधोलिखितेषु अर्धसमवृत्तं किम्? RPSC ग्रेड-I (PGT)–2014

(A) शिखरिणी (B) मन्दाक्रान्ता
(C) शालिनी (D) वियोगिनी

स्रोत–छन्दोऽलङ्कारमञ्जूषा - लक्ष्मीकान्त दीक्षित, पेज-16

88. रथोद्धता छन्दसः चतुर्षु चरणेषु कति वर्णाः भवन्ति? RPSC ग्रेड-I (PGT)–2014

(A) 68 (B) 48
(C) 44 (D) 60

स्रोत– वृत्तरत्नाकर - धरानन्दशास्त्री, पेज-110

89. तोटकवृत्तस्य लक्षणं किम्– KL SET–2016

(A) भ भ भ गुरूद्वयम् (B) स स स स
(C) र र र र (D) त त त त

स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-23

90. शालिनी नाम वृत्तं कस्मिन् छन्दसि अन्तर्भवति– KL SET–2016

(A) जगती (B) पंक्तिः
(C) गायत्री (D) त्रिष्टुप्

स्रोत–वृत्तरत्नाकर - धरानन्दशास्त्री, पेज-107

91. 'एकदा दधिविमाथकारिणीं मातरं समुपसेदिवान् भवान्'–वृत्तं किम्– KL SET–2016

(A) वंशस्थम् (B) तोटकम्
(C) रथोद्धता (D) बोधकम्

स्रोत– छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज–21

92. चतुर्थात् ततः सप्तमाच्च वर्णात् यतिः कुत्र। KL SET–2016

(A) मालिन्याम् (B) शालिन्याम्
(C) पृथ्व्याम् (D) वसन्ततिलके

स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज–21

80. (C) 81. (B) 82. (C) 83. (D) 84. (D) 85. (D) 86. (A) 87. (D) 88. (C) 89. (B) 90. (D) 91. (C) 92. (B)

93. हरिणीवृत्ते कति वर्णाः सन्ति? KL SET–2016

(A) अष्टादश (B) सप्तदश
(C) षोडश (D) चतुर्दश

स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-27

94. जसौ जसलया वसुग्रहयतिश्च... गुरुः–KL SET–2015

(A) शिखरिणी (B) पृथ्वी
(C) हरिणी (D) स्रग्धरा

स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-27

95. छन्दःशास्त्रे जगणस्य कतमो वर्णः गुरुः CVVET–2017

(A) प्रथमः (B) मध्यमः
(C) अन्तिमः (D) न कोऽपि

स्रोत- छन्दोऽलङ्कारसौरभम् – राजेन्द्र मिश्र, पेज–10

96. 'नेदं नभोमण्डलमम्बुराशिः'– इत्यादिपद्ये किं वृत्तम्– CVVET–2017

(A) इन्द्रवंशा (B) इन्द्रवज्रा
(C) उपेन्द्रवज्रा (D) वंशस्थम्

स्रोत- छन्दोऽलङ्कारसौरभम् – राजेन्द्र मिश्र पेज–19

97. शिखरिणीछन्दसि प्रतिपादं कतिषु वर्णेषु यतिः भवति– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2015

(A) 12, 5 (B) 6, 11
(C) 10, 7 (D) 11, 6

स्रोत- छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज–26

98. प्रतिचरणं त-भ-ज-ज-गणैः गुरुद्वयेन च युतं वृत्तम्? CVVET–2017

(A) शार्दूलविक्रीडितम् (B)वसन्ततिलका
(C) द्रुतविलम्बित (D) वंशस्थम्

स्रोत- छन्दोऽलङ्कारसौरभम् – राजेन्द्र मिश्र, पेज–24

99. द्वितीयपादमात्रे यस्मिन् अष्टादशमात्राः भवन्ति तस्य छन्दसः नाम वर्तते ? RPSC ग्रेड-I (PGT)–2015

(A) मन्दाक्रान्ता (B) शार्दूलविक्रीडितम्
(C) आर्या (D) शिखरिणी

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–466

100. ''ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः'' उपर्युक्त लक्षणे 'भोगि'' शब्देन का संख्या सूच्यते? RPSC ग्रेड-I (PGT)–2014

(A) सप्त (B) षड्
(C) अष्ट (D) पञ्च

स्रोत- वृत्तरत्नाकर - धरानन्द शास्त्री, पेज-137

101. मन्दाक्रान्ता छन्दसि यतयः भवन्ति– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2015

(A) 4, 6, 7 वर्णोपरि (B) 6, 11 वर्णोपरि
(C) 8, 4, 5 वर्णोपरि (D) 1, 2, 7 वर्णोपरि

स्रोत- वृत्तरत्नाकर - धरानन्द शास्त्री, पेज-144

102. स्रग्धरा छन्दसि एकस्मिन् पादे कति वर्णाः भवन्ति– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2015

(A) 19 (B) 21
(C) 17 (D) 15

स्रोत- वृत्तरत्नाकर - धरानन्द शास्त्री पेज-149,150

103. निर्धारितेषु छन्दस्सु अर्धसमवृत्तस्य उदाहरणमस्ति– RPSC ग्रेड-I (PGT)–2015

(A) रथोद्धता (B) शालिनी
(C) मालिनी (D) वियोगिनी

स्रोत–छन्दोऽलङ्कार मञ्जूषा - लक्ष्मीकान्त दीक्षित, पेज–16

104. एकोनविंशतिः वर्णाः कस्मिन् छन्दसि भवति? RPSC ग्रेड-I (PGT)–2014

(A) शिखरिणी (B) वसन्ततिलका
(C) उपजातिः (D) शार्दूलविक्रीडितम्

स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज-29

93. (B) 94. (B) 95. (B) 96. (B) 97. (B) 98. (B) 99. (C) 100. (C) 101. (A) 102. (B) 103. (D) 104. (D)

36 काव्यशास्त्र के विविध प्रश्न

1. किं काव्यम् (काव्य क्या है) UGC 73 J–2008
(A) शब्दप्रयोगः (B) कवेः कर्म
(C) वार्तालापः (D) अर्थबोधः
स्रोत–वक्रोक्तिजीवितम् (1/2)-परमेश्वरदीन पाण्डेय, पेज-5

2. 'शब्दार्थयोः सहभावः' .... कहलाता है–UGC 73 S–2013
(A) व्याकरणम् (B) साहित्यम्
(C) दर्शनम् (D) ज्योतिषम्
स्रोत–वक्रोक्तिजीवितम् (1/17) राधेश्याम मिश्र-पेज-57

3. रससम्प्रदायस्य प्रवर्तकः कः? BHU AET–2010
(A) भामहः (B) क्षेमेन्द्रः
(C) विश्वनाथः (D) भरतः
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-591

4. (i) औचित्यसम्प्रदायस्य प्रवर्तकाचार्योऽस्ति–
(ii) औचित्यसम्प्रदायस्य संस्थापकः कः अस्ति–
(iii) साहित्य में औचित्य सम्प्रदाय के प्रवर्तक कौन हैं? UGC 73 J–2005, D–2006, 2007
BHU MET–2016, KL SET–2015, MGKV Ph. D–2016
(A) अभिनवगुप्तः (B) आनन्दवर्धनः
(C) क्षेमेन्द्रः (D) विश्वनाथः
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-596

5. वक्रोक्ति सम्प्रदाय के प्रवर्तक हैं? UGC 73 J–1991
(A) वामन (B) कुन्तक
(C) बाणभट्ट (D) क्षेमेन्द्र
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-595

6. (i) रीति सम्प्रदाय के प्रवर्तक हैं –
(ii) रीति सम्प्रदाय के संस्थापक आचार्य हैं?
(iii) रीतिसम्प्रदाय के प्रमुख आचार्य कौन हैं?
UP PGT (H)–2010, BHU MET–2009, 2010, 2013
CCSUM (H) Ph. D–2016
(A) वामन (B) रुद्रट
(C) कुन्तक (D) दण्डी
संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-592-593

7. वक्रोक्ति सम्प्रदाय के विरोधी आचार्य हैं–
UGC (H) J–2013
(A) भामह (B) आचार्य विश्वनाथ
(C) रुद्रट (D) मम्मट
स्रोत– साहित्यदर्पण-भवानी शंकर शर्मा, पेज-138

8. काव्य सम्प्रदायों का सही विकास क्रम क्या होगा।
UP PGT (H)–2000
(A) रस - ध्वनि - अलंकार - रीति - वक्रोक्ति - औचित्य
(B) रस - अलंकार - रीति - वक्रोक्ति - ध्वनि - औचित्य
(C) अलंकार - रस - रीति - वक्रोक्ति - ध्वनि - औचित्य।
(D) रस - रीति - ध्वनि - अलंकार - वक्रोक्ति - औचित्य।
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, भू0 पेज-16-18

9. आचार्य कुन्तक काव्यशास्त्र में किस सम्प्रदाय के प्रवर्तक माने जाते हैं– UGC (H) J–2014
(A) औचित्य (B) वक्रोक्ति
(C) ध्वनि (D) रीति
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-595

10. साहित्यशास्त्र में कितने सम्प्रदाय हैं– BHU MET–2010
(A) 3 (B) 2
(C) 5 (D) 9
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर-भू0 पेज-16

11. 'रीतिरात्मा काव्यस्य' प्राप्यते? JNU MET–2015
(A) नाट्यशास्त्रे (B) काव्यालङ्कारसूत्रे
(C) साहित्यदर्पणे (D) काव्यमीमांसायाम्
स्रोत–काव्यप्रकाश- श्रीनिवास शास्त्री, भू0पेज-15

12. (i) ''रीतिरात्मा तु काव्यस्य'' इति वचनं कस्य?
(ii) 'रीतिरात्मा काव्यस्य' इति वचनम् अस्ति–
(iii) 'रीतिरात्मा काव्यस्य' यह मत प्रतिपादित है–
(iv) ''रीतिरात्मा काव्यस्य'' इति मतमस्ति?
CVVET–2015 DSSB PGT–2014,
BHU MET–2008, UGC 25 J–2010,
UGC 73 D–2010, J–1991, 1996, 2015, 2013
(A) वामनस्य (B) विश्वनाथस्य
(C) मम्मटस्य (D) दण्डिनः
स्रोत– काव्यालङ्कारसूत्र (1.2.6)-हरगोविन्द मिश्र, पेज–14

1. (B) 2. (B) 3. (D) 4. (C) 5. (B) 6. (A) 7. (B) 8. (B) 9. (B) 10. (C) 11. (B) 12. (A)

13. अलंकारस्य लक्षणं श्लोकस्य पूर्वार्धे तस्य उदाहरणम् उत्तरार्धे कस्मिन् ग्रन्थे प्रदत्ते – BHU AET–2010

(A) अलंकारसर्वस्वे (B) अलंकारकौस्तुभे
(C) चन्द्रालोके (D) कुवलयानन्दे

स्रोत–चन्द्रालोक (5/1)- कृष्णमणि त्रिपाठी, पेज-73

14. (i) ''वक्रोक्तिः काव्यजीवितम्'' इति केन उक्तम् –
(ii) 'वक्रोक्तिः काव्यजीवितम्' इयं परिभाषा वर्तते?
(iii) 'वक्रोक्तिः काव्यजीवितम्' इति कस्य मतम् अस्ति?
UGC 73 D–2004, 2012, CCSUM Ph. D–2016

(A) कुन्तकेन (B) मम्मटेन
(C) भामहेन (D) दण्डिना

स्रोत–काव्यप्रकाश - श्रीनिवास शास्त्री, भू० पेज-19

15. ''चतुर्वर्गफलप्राप्तिः सुखादल्पधियामपि'' कस्येयमुक्तिः? UGC 25 J–2013

(A) मम्मटस्य (B) विश्वनाथस्य
(C) वामनस्य (D) दण्डिनः

स्रोत–साहित्यदर्पण (1.2) - भवानीशंकर शर्मा, पेज-103

16. ''वाग्वैदग्ध्यप्रधानेऽपि रस एवात्र जीवितम्' इत्युक्तिः दर्पणकारेण कुतः उद्धृता? UGC 25 S–2013

(A) काव्यप्रकाशात् (B) रामायणात्
(C) अग्निपुराणात् (D) नाट्यशास्त्रात्

स्रोत–साहित्यदर्पण- शालिग्राम शास्त्री, पेज-18

17. 'मुखं विकसितस्मितं वशितवक्रिमप्रेक्षितं' कस्य उदाहरणम् इदम्? UGC 25 S–2013

(A) अगूढव्यङ्ग्यस्य (B) गूढव्यङ्ग्यस्य
(C) व्यञ्जनायाः (D) अभिधायाः

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-68

18. 'अपारे काव्यसंसारे कविरेकः प्रजापतिः' इति उद्धृतम्? UGC 25 S–2013

(A) ध्वन्यालोके (B) काव्यप्रकाशे
(C) नाट्यशास्त्रे (D) दशकुमारचरिते

स्रोत–ध्वन्यालोक - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-312

19. ''वैदग्ध्यभङ्गीभणितिः'' किसका सूत्र है– UGC (H) D–2013

(A) कुन्तक (B) भोज
(C) राजशेखर (D) पण्डितराजजगन्नाथ

स्रोत–वक्रोक्तिजीवितम् (1/10)-राधेश्याम मिश्र, पेज-47

20. इन उक्तियों को उनके आचार्यों के साथ सुमेलित कीजिए। UGC (H) D–2013

(अ) शब्दार्थशरीरं तावत्काव्यम् (i) भामह
(ब) काव्यं ग्राह्यम् अलङ्कारात् (ii) मम्मट
(स) मुख्यार्थहतिर्दोषः (iii) विश्वनाथ
(द) करोति कीर्तिं प्रीतिं च साधु काव्यनिबन्धनम् (iv) वामन
(v) दण्डी

कूट :

	अ	ब	स	द
(A)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(B)	(v)	(iv)	(ii)	(i)
(C)	(ii)	(iii)	(iv)	(v)
(D)	(v)	(iv)	(iii)	(ii)

स्रोत–काव्यप्रकाश, आचार्य विश्वेश्वर, पेज- अ-25, ब-25, स-(7/71), द-14 पेज-266

21. निम्नलिखित उक्तियों को उनके ग्रन्थकारों के साथ सुमेलित कीजिए– UGC (H) D–2010

(अ) सौन्दर्यमलंकारः (1) विश्वनाथः
(ब) वाक्यं रसात्मकं काव्यम् (2) वामनः
(स) वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये (3) पण्डितराजजगन्नाथः
(द) रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम् (4) कालिदासः

	अ	ब	स	द
(A)	4	3	2	1
(B)	1	2	3	4
(C)	2	1	4	3
(D)	2	4	3	1

स्रोत–अ- काव्यालंकारसूत्र (1.1.2)
ब- साहित्यदर्पण (1.3)
स- रघुवंशम् (1/1) कृष्णमणि त्रिपाठी, पेज-2
द- रसगंगाधर (1/1) मदन मोहन झा, पेज-10

13. (C) 14. (A) 15. (B) 16. (C) 17. (B) 18. (A) 19. (A) 20. (B) 21. (C)

22. (i) ''न कान्तमपि निर्भूषं विभाति वनितामुखम्'' इस उक्ति के लेखक हैं– UP PGT (H)–2010

(ii) ''न कान्तमपि निर्भूषं विभाति वनितामुखम्'' यह अभिमत है– UP TGT (H)–2005

(A) भामह (B) दण्डी
(C) उद्भट (D) रुद्रट

स्रोत–काव्यालङ्कार (1/13) - देवेन्द्रनाथ शर्मा, पेज–7

23. ''प्रज्ञा नवनवोन्मेषशालिनी प्रतिभा मता'' इति केनोक्तम्? UGC 25 D–2010

(A) भट्टतौतेन (B) अभिनवगुप्तेन
(C) भट्टनायकेन (D) महिमभट्टेन

संस्कृत काव्यशास्त्र का आलोचनात्मक इतिहास-अमरनाथ पाण्डेय, पेज–88

24. ''विना रुचिं प्रतनुते नालऽङ्कृतिर्नो गुणाः''– यहाँ समुचित विकल्प से रिक्तस्थान की पूर्ति करें। UGC 73 D–2014

(A) संयोगेन (B) औचित्येन
(C) सौभाग्येन (D) शृङ्गारेण

स्रोत–औचित्यविचारचर्चा -व्रजमोहन झा, पेज-6

25. मम्मटेनोक्तं नाऽस्ति DL–2015

(A) भारती कवेर्जयति (B) लक्ष्यं न मुख्यम्
(C) स्थायीभावो रसः स्मृतः (D) वाक्यं रसात्मकं काव्यम्

स्रोत– साहित्यदर्पण- शालिग्राम शास्त्री, पेज-19

26. ''यदि यथा वदति क्षितिपस्तथात्वं पतिकुले तव दास्यमपि क्षमम्'' इति कस्य काव्यांशः? DL–2015

(A) राजानक–रुय्यकस्य (B) पण्डितराज – जगन्नाथस्य
(C) महाकवेः कालिदासस्य (D) उत्तररामचरितकारस्य

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (5/27)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–296

27. (i) औचित्य को काव्य की आत्मा किसने माना है

(ii) ''औचित्यं काव्यजीवितम्'' इति कः आह? DSSSB PGT–2014

(A) रुय्यकः (B) अप्पयदीक्षितः
(C) क्षेमेन्द्रः (D) मनुष्यः

स्रोत–औचित्यविचारचर्चा- व्रजमोहन झा, पेज-4

28. ''यस्मादन्तः स्थितः सर्व स्वयमर्थोऽवभासते सलिलस्येव सूक्तस्य स प्रसाद इति स्मृतः''। यह श्लोक .... ग्रन्थ का है। BHU MET–2012

(A) चन्द्रालोक (B) साहित्यदर्पण
(C) नाट्यशास्त्र (D) ध्वन्यालोक

स्रोत–चन्द्रालोक (4/3)-कृष्णमणि त्रिपाठी, पेज-65

29. 'प्रतिषेधः प्रसिद्धानां कारणानामनादरः' – यह सूक्ति है– BHU MET–2015

(A) दशरूपक (B) अर्थसंग्रह
(C) मेघदूत (D) चन्द्रालोक

स्रोत–चन्द्रालोक (3/5)-कृष्णमणि त्रिपाठी, पेज-57

30. निम्नलिखित सिद्धान्तों को उनके विचारकों के साथ सुमेलित कीजिए– UGC (H) J–2014

(अ) मनोविश्लेषणवाद (i) अभिनवगुप्त
(ब) अस्तित्ववाद (ii) महिमभट्ट
(स) उत्पत्तिवाद (iii) ज्यापालसात्री
(द) अभिव्यक्तिवाद (iv) युग
(v) भट्टलोल्लट

कूट :	अ	ब	स	द
(A)	(v)	(i)	(ii)	(iii)
(B)	(iii)	(ii)	(iv)	(v)
(C)	(iv)	(iii)	(v)	(i)
(D)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)

स्रोत–काव्यप्रकाश-आचार्य विश्वेश्वर, स-101, द-107

31. निम्नलिखित आचार्यों को उनके सिद्धान्तों के साथ सुमेलित कीजिए– UGC (H) D–2012

(अ) भट्टलोल्लट (i) स्फोटवाद
(ब) शंकुक (ii) अभिव्यक्तिवाद
(स) अभिनवगुप्त (iii) अनुमितिवाद
(द) भट्टनायक (iv) उत्पत्तिवाद
(v) भुक्तिवाद

कूट :	अ	ब	स	द
(A)	(iv)	(iii)	(ii)	(v)
(B)	(i)	(ii)	(v)	(iv)
(C)	(iv)	(iii)	(i)	(ii)
(D)	(ii)	(i)	(iii)	(v)

काव्यप्रकाश-आचार्य विश्वेश्वर, अ-101,ब-102,105

22. (A)	23. (A)	24. (B)	25. (D)	26. (C)	27. (C)	28. (A)	29. (D)	30. (C)	31. (A)

32. महिमभट्ट द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त है– UP PGT (H)–2000

(A) अनुमानवाद (B) तात्पर्यवाद
(C) लक्षणवाद (D) अभिव्यञ्जनावाद

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि' पेज-582

33. निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सही नहीं है। UP PGT (H)–2005

(A) भट्टलोल्लट – उत्पत्तिवाद (B) शंकुक – अनुमितिवाद
(C) आचार्य मम्मट–भुक्तिवाद (D) अभिनवगुप्त–अभिव्यक्तिवाद

काव्यप्रकाश-आचार्य विश्वेश्वर, पेज- अ-101, ब-102, स-105,द-107

34. (i) भुक्तिवाद के संस्थापक कौन हैं। UP PGT–2011, (ii) काव्यशास्त्र में 'भुक्तिवाद' किसका सिद्धान्त है? UGC 73 J–2016

(A) अभिनवगुप्त (B) भट्टलोल्लट
(C) शंकुक (D) भट्टनायक

स्रोत–काव्यप्रकाश-आचार्य विश्वेश्वर, पेज-105

35. कालानुक्रमेण ग्रन्थकारान् नियोजयत– MH SET–2014

1. मम्मटः 2. पण्डितराजः जगन्नाथः
3. भामहः 4. विश्वनाथः

(A)	1	3	2	4
(B)	2	1	4	3
(C)	3	1	4	2
(D)	1	2	3	4

काव्यप्रकाश-श्रीनिवास शास्त्री, पेज भू0 अ-11, ब-24, स-31, द-32

36. निम्नलिखित तथ्यों का सही सुमेलन कीजिए– UP PGT–2013

(अ) अनुमितिवाद (i) विश्वनाथ
(ब) व्यक्तिविवेक (ii) शंकुक
(स) वात्सल्य रस (iii) महिमभट्ट
(द) कवि सृष्टि की श्रेष्ठता (iv) मम्मट

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(B)	(iv)	(iii)	(i)	(ii)
(C)	(ii)	(iv)	(iii)	(i)
(D)	(ii)	(iii)	(i)	(iv)

स्रोत–अ-काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज अ-102, ब- भू0-60, द- पेज-5, स-साहित्यदर्पण-शालिग्राम शास्त्री, पेज-123

37. काव्यशास्त्रीय सिद्धान्तों में गणना होती है, जिसकी वह है– BHU MET–2015

(A) उपमा (B) वंशस्थ
(C) निदर्शना (D) अलंकारसिद्धान्त

स्रोत–संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-8), पेज–375, 390

38. 'इष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली' यह काव्यलक्षण कहाँ है? UGC 73 D–2008

(A) काव्यादर्शे (B) काव्यप्रकाशे
(C) ध्वन्यालोके (D) साहित्यदर्पणे

स्रोत–काव्यादर्श (1/10)-रामचन्द्र मिश्र, पेज–9

39. (i) ''इष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली काव्यम्'' – यह काव्यलक्षण है?
(ii) ''शरीरं तावदिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली'' – परिभाषा है? UGC 73 D–2012, UGC 25 D–2005 UP PGT–2009, 2010, UK TET–2011

(A) भामहस्य (B) दण्डिनः
(C) मम्मटस्य (D) विश्वनाथस्य

स्रोत–काव्यादर्श (1/10)-रामचन्द्र मिश्र, पेज–09

40. ''शब्दार्थौ सहितौ वक्रकविव्यापारशालिनि।
बन्धे व्यवस्थितौ काव्यं तद्विदाह्लादकारिणि।''
यह काव्य लक्षण है– UGC 73 J–2014

(A) आनन्दवर्धनस्य (B) भामहस्य
(C) मम्मटस्य (D) कुन्तकस्य

स्रोत–वक्रोक्तिजीवितम् (1/7) – राधेश्याम मिश्र, पेज-17

41. कुन्तक के मतानुसार काव्य की आत्मा है– UGC 73 J–1998, 1999

(A) अलंकार (B) वक्रोक्ति
(C) औचित्य (D) रसः

स्रोत–काव्यप्रकाश-पारसनाथ द्विवेदी, भू0 पेज-82

42. कुन्तकमते शब्दस्य लक्षणं किम्? K SET–2014

(A) विवक्षितार्थैकवाचकोऽन्येषु सत्स्वपि
(B) सहृदयाह्लादसुन्दरः
(C) अनुप्रासादयः
(D) पदसमुदायः

स्रोत–वक्रोक्तिजीवितम् (1/9) - राधेश्याम मिश्र, पेज-34

32. (A) 33. (C) 34. (D) 35. (C) 36. (D) 37. (D) 38. (A) 39. (B) 40. (D) 41. (B) 42. (A)

43. (i) आचार्य वामन की काव्य परिभाषा है।
(ii) आचार्यवामनस्य काव्यपरिभाषा वर्तते–
UP PGT–2004, CCSUM Ph. D–2016

(A) काव्यस्यात्मा ध्वनिः (B) शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्
(C) रीतिरात्मा काव्यस्य (D) रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्

स्रोत–काव्यालङ्कारसूत्र (1.2.6)-हरगोविन्दमिश्र, पेज–14

44. काव्यलक्षण और उनके प्रतिष्ठापकों का सुमेलन कीजिए। UGC (H) J–2011

(अ) शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्	**(i) पण्डितराजजगन्नाथ**
(ब) शरीरं तावदिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली	**(ii) विश्वनाथ**
(स) रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्	**(iii) कुन्तक**
(द) वाक्यं रसात्मकं काव्यम्	**(iv) दण्डी**
	(v) भामह

	अ	ब	स	द
(A)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(B)	(iv)	(v)	(iii)	(i)
(C)	(v)	(iv)	(i)	(ii)
(D)	(iii)	(iv)	(ii)	(i)

स्रोत–अ- काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-24 ब-25, द-27
स- रसगंगाधर (1/1) - मदनमोहन झा, पेज-10

45. निम्नलिखित काव्यलक्षणों को उनके प्रतिस्थापकों के साथ सुमेलित कीजिए– UGC (H) D–2008

(अ) शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्	**(i) रुद्रट**
(ब) ननु शब्दार्थौ काव्यम्	**(ii) कुन्तक**
(स) शब्दार्थौ सहितौ वक्र-कविव्यापारशालिनि	**(iii) भामह**
(द) वाक्यं रसात्मकं काव्यम्	**(iv) भरतमुनि**
	(v) विश्वनाथ

कूट :

	अ	ब	स	द
(A)	(ii)	(iv)	(iii)	(i)
(B)	(iv)	(v)	(ii)	(iii)
(C)	(i)	(iv)	(iii)	(v)
(D)	(iii)	(i)	(ii)	(v)

स्रोत–काव्यप्रकाश-आचार्य विश्वेश्वर, पेज- 24–27

46. एषु क्रिया वैचित्र्यवक्रत्वप्रकारस्य उदाहरणं किम्? K-SET–2013

(A) सोऽयं दम्भधृतव्रतः प्रियतमे कर्तुं किमप्युद्यतः
(B) श्वासोत्कम्पतरङ्गिणि स्तनतटे इति
(C) स दहतु दुरितं शाम्भवो वः शराग्निः
(D) पाण्डिग्नि मग्नं वपुः

स्रोत–वक्रोक्तिजीवितम् - राधेश्याम मिश्र, पेज-78

47. कुन्तकमते काव्यमार्गाः कतिविधाः? K SET–2013

(A) त्रयः (B) द्वे
(C) चत्वारि (D) पञ्च

स्रोत–वक्रोक्तिजीवितम् (1/24) -राधेश्याम मिश्र, पेज-96

48. 'साहित्यमनयोः शोभाशालितां प्रति काप्यसौ' – एतद् विद्यते? K SET–2013

(A) ध्वन्यालोके (B) वक्रोक्तिजीविते
(C) काव्यादर्शे (D) काव्यालङ्कारे

स्रोत–वक्रोक्तिजीवितम् (1/17)- राधेश्याम मिश्र, पेज-57

49. 'काव्यस्यायमलङ्कारः कोऽप्यपूर्वो विधीयते' इति कस्योक्तिरस्ति? GJ SET–2013

(A) मम्मटस्य (B) जगन्नाथस्य
(C) कुन्तकस्य (D) राजशेखरस्य

स्रोत–वक्रोक्तिजीवितम् (1/2)- राधेश्याम मिश्र, पेज-7

50. 'धर्मादिसाधनोपायः सुकुमारक्रमोदितः' इति वाक्यम् .... उक्तम्? GJ SET–2016

(A) भरतेन (B) विश्वनाथेन
(C) जगन्नाथेन (D) कुन्तकेन

स्रोत–वक्रोक्तिजीवितम् (1/3)- राधेश्याम मिश्र,पेज-10

51. वक्रोक्तिजीविते वर्णितः प्रथमः गुणः कः? MH SET–2013

(A) माधुर्यम् (B) ओजः
(C) प्रसादः (D) समाधिः

स्रोत–वक्रोक्तिजीवितम् (1/30)- राधेश्याम मिश्र, पेज-113

43. (C) 44. (C) 45. (D) 46. (C) 47. (A) 48. (B) 49. (C) 50. (D) 51. (A)

52. निम्नलिखित काव्यलक्षणों को उनके आचार्यों के सही नामों के साथ सुमेलित कीजिए। UGC (H) J–2008

(अ) शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्	(i) विश्वनाथ
(ब) तददोषौ शब्दार्थौ सगुणा वनलङ्कृती पुनः क्वापि	(ii) मम्मट
(स) वाक्यं रसात्मकं काव्यं	(iii) जगन्नाथ
(द) रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्	(iv) भामह
	(v) आनन्दवर्धन

कूट :	अ	ब	स	द
(A)	(iii)	(ii)	(iv)	(i)
(B)	(iv)	(ii)	(i)	(iii)
(C)	(i)	(iii)	(ii)	(iv)
(D)	(ii)	(i)	(iv)	(iii)

स्रोत–अ- काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज- अ-24
ब-19, स-27 द- रसगंगाधर- मदन मोहन झा, पेज-10

53. ''वक्रोक्तिः काव्यजीवितम्'' कहकर वक्रोक्ति को ही काव्य की आत्मा स्वीकार करने वाले आचार्य हैं। UP PGT (H)–2003

(A) विश्वनाथ (B) मम्मट
(C) कुन्तक (D) दण्डी

संस्कृत काव्यशास्त्र का आलोचनात्मक इतिहास-अमरनाथ पाण्डेय, पेज-91

54. (i) 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' काव्य परिभाषा के प्रस्तोता हैं– UP PGT (H)–2005, UP PGT (H)–2009
(ii) 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' किसका कथन है–

(A) विश्वनाथ (B) राजशेखर
(C) श्रीहर्ष (D) भास

स्रोत– साहित्यदर्पण-राजेन्द्र मिश्र, पेज-133

55. काव्यं शरीरं किम् – DSSSB TGT–2014

(A) शब्दार्थौ (B) रसः
(C) कथावस्तु (D) व्यङ्ग्यार्थः

स्रोत–काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर,पेज-25

56. (i) ''शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्' यह काव्यलक्षण है–
(ii) ''शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्'' किसका मन्त्र है–
(iii) ''शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्'' परिभाषा किसके द्वारा दी गई है– UGC 73 D–1999, 2009,
(iv) ''शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्'' किसने कहा है– UP TGT (H)–2010, UP PGT (H)–2013

(A) रुद्रट का (B) भामह का
(C) विश्वनाथ का (D) आनन्दवर्धन का

स्रोत–काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-24

57. रसगङ्गाधरस्य कर्ता कः? UGC 73 Jn–2016

(A) कल्हणः (B) विश्वनाथः
(C) आनन्दवर्धनः (D) पण्डितराजजगन्नाथः

संस्कृत काव्यशास्त्र का आलोचनात्मक इतिहास-अमरनाथ पाण्डेय, पेज-174

58. (i) 'रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्' परिभाषा किसने दी है– UP PGT (H)– 2013
(ii) 'रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यं' कस्य काव्य लक्षणम्? BHU Sh.ET–2008, 2013
(iii) 'रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्'–इति केन अभिधीयते? DSSSB TGT–2014,
(iv) 'रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्' के प्रवर्तक हैं– UGC (H) J–2009, UGC 25 J–2009, UGC 73 D–2005, J–2005, DSSSB PGT–2014, UP PGT (H)–2013, K SET–2014

(A) दण्डी (B) पण्डितराजजगन्नाथ
(C) मम्मट (D) विश्वनाथ

स्रोत–रसगंगाधर (1/1) - मदनमोहन झा, पेज-10

59. 'रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्' काव्य का यह लक्षण किस ग्रन्थ में दिया गया है? UGC 73 J–2015

(A) काव्यालङ्कारे (B) रसगङ्गाधरे
(C) नाट्यशास्त्रे (D) सरस्वतीकण्ठाभरणे

स्रोत–रसगंगाधर (1/1) - मदनमोहन झा, पेज–10

60. पण्डितराजजगन्नाथमतानुसारं रमणीयार्थप्रतिपादकस्य कस्य काव्यत्वं भवति? UGC 25 J–2016

(A) रसस्य (B) अर्थस्य
(C) अलङ्कारस्य (D) शब्दस्य

स्रोत–रसगंगाधर (1/1) - मदनमोहन झा, पेज-10

52. (B) 53. (C) 54. (A) 55. (A) 56. (B) 57. (D) 58. (B) 59. (B) 60. (D)

61. 'औचित्यं रससिद्धस्य स्थिरं काव्यस्य जीवितम्'-यह काव्यलक्षण है– UGC 73 J–2015

(A) भोजराज (B) क्षेमेन्द्र
(C) हेमचन्द्र (D) कुन्तक

स्रोत–औचित्यविचारचर्चा (1/5)- व्रजमोहन झा, पेज-4

62. अधोलिखित में क्या सत्य है? UGC 73 D–2015

(A) करोति कीर्तिं प्रीतिं च साधुकाव्यनिबन्धम् – भामहः
(B) काव्यं सद् दृष्टादृष्टार्थं प्रीतिकीर्तिहेतुत्वात् – मम्मटः
(C) निर्दोषं गुणवत्काव्यमलंकारैरलंकृतम् – विश्वनाथः
(D) काव्यं यशसेऽर्थकृते .... – कुन्तकः

स्रोत–काव्यप्रकाश-आचार्य विश्वेश्वर, पेज-14

63. 'कविकण्ठाभरणम्' इत्यस्य ग्रन्थस्य रचयिता कः? JNU M. Phil/Ph.D–2015

(A) कल्हणः (B) बिल्हणः
(C) क्षेमेन्द्रः (D) भोजः

संस्कृत काव्यशास्त्र का आलोचनात्मक इतिहास - अमरनाथ पाण्डेय,पेज-115

64. कुन्तक के मार्ग निरूपण का आधार है। UGC 73 D–2013

(A) देशविशेषः (B) कविस्वभावः
(C) वर्ण्यविषयः (D) शब्दचमत्कारः

स्रोत–वक्रोक्तिजीवितम् - राधेश्याम मिश्र, पेज-99

65. निम्नलिखित आचार्यों को उनके कालखण्ड के साथ सुमेलित कीजिए– UGC (H) D–2012

(अ) भामह **(i) दसवीं सदी**
(ब) क्षेमेन्द्र **(ii) सत्रहवीं सदी**
(स) विश्वनाथ **(iii) ग्यारहवीं सदी**
(द) पण्डितराजजगन्नाथ **(iv) चौदहवीं सदी**
(v) छठी सदी

	अ	ब	स	द
(A)	(i)	(ii)	(v)	(iv)
(B)	(v)	(iii)	(iv)	(ii)
(C)	(iii)	(ii)	(i)	(v)
(D)	(iv)	(i)	(iii)	(ii)

स्रोत–संस्कृत काव्यशास्त्र का आलोचनात्मक इतिहास-अमरनाथ पाण्डेय, पेज– अ-8, ब-115, स-157, द-174

66. ''धर्मादिसाधनोपायः सुकुमारक्रमोदितः काव्यबन्धोऽभिजातानां हृदयाह्लादकारकः॥'' काव्यफलविषये श्लोकोऽयमस्ति– UGC 25 J–2016

(A) रसगङ्गाधरे (B) काव्यप्रकाशे
(C) वक्रोक्तिजीविते (D) काव्यादर्शे

स्रोत–वक्रोक्तिजीवितम् (1/3) - राधेश्याम मिश्र, पेज-10

67. आसु कस्याः वक्रतामध्ये गणनं नास्ति– UGC 25 Jn–2017

(A) वर्णविन्यासवक्रतायाः (B) समासवक्रतायाः
(C) पदपूर्वार्द्धवक्रतायाः (D) प्रकरणवक्रतायाः

स्रोत–वक्रोक्तिजीवितम् -राधेश्याम मिश्र ,भू0 पेज-24

68. एषु उपचारवक्रतायाः उदाहरणं किम्? K SET–2014

(A) सोऽयं दम्भधृतव्रतः प्रियतमे कर्तुं किमप्युद्यतः
(B) मध्येऽङ्कुरं पल्लवाः
(C) मैथिली तस्य दाराः
(D) हस्तापचेयं यशः

स्रोत–वक्रोक्तिजीवितम् - राधेश्याम मिश्र , पेज-68

69. ''रामोऽस्मि सर्वं सहे'' इत्यत्र कः वक्रताप्रकारः? K SET–2014

(A) पदपूर्वार्ध (B) प्रत्यय
(C) वर्णविन्यास (D) वाक्य

स्रोत–वक्रोक्तिजीवितम् -राधेश्याम मिश्र , पेज-64

70. भारतीय काव्य-शास्त्र के प्रमुख काव्यशास्त्रियों का सही क्रम क्या है? UGC (H) J–2012

(A) आनन्दवर्धन - भरतमुनि - जगन्नाथ - विश्वनाथ
(B) भरतमुनि - आनन्दवर्धन - विश्वनाथ - जगन्नाथ
(C) जगन्नाथ - विश्वनाथ - आनन्दवर्धन - भरतमुनि
(D) विश्वनाथ - आनन्दवर्धन - भरतमुनि - जगन्नाथ

स्रोत–संस्कृत काव्यशास्त्र का आलोचनात्मक इतिहास-अमरनाथ पाण्डेय, पेज- अ-3, ब-42, स-157, द-174

71. 'रसगंगाधर' में पंडितराजजगन्नाथ ने किस बादशाह की प्रशंसा की है? UGC (H) J–2014

(A) शाहजहाँ (B) औरंगजेब
(C) अकबर (D) बाबर

संस्कृत काव्यशास्त्र का आलोचनात्मक इतिहास-अमरनाथ पाण्डेय, पेज-174

61. (B) 62. (A) 63. (C) 64. (B) 65. (B) 66. (C) 67. (B) 68. (D) 69. (A) 70. (B) 71. (A)

72. निम्नलिखित आचार्यों का सही अनुक्रम क्या है? UGC (H) J–2012

(A) भरतमुनि - भामह - विश्वनाथ - अभिनवगुप्त
(B) भरतमुनि - विश्वनाथ - भामह - अभिनवगुप्त
(C) भरतमुनि - भामह - अभिनवगुप्त - विश्वनाथ
(D) भरतमुनि - अभिनवगुप्त - विश्वनाथ - भामह

स्रोत–संस्कृत काव्यशास्त्र का आलोचनात्मक इतिहास-अमरनाथ पाण्डेय, पेज- अ-03, ब-8, स-96, द-157

73. निम्नलिखित आचार्यों का कालानुसार सही अनुक्रम लिखिये– UGC (H) D–2010

(A) पंडितराज जगन्नाथ - कुन्तक - भामह - रूपगोस्वामी
(B) भामह - कुन्तक - रूपगोस्वामी - पंडितराज जगन्नाथ
(C) कुन्तक - भामह - पंडितराजजगन्नाथ - रूपगोस्वामी
(D) रूपगोस्वामी - कुन्तक - भामह - पंडितराज जगन्नाथ

स्रोत–संस्कृत काव्यशास्त्र का आलोचनात्मक इतिहास-अमरनाथ पाण्डेय, पेज- 8, 88, 161, 174

74. विश्वनाथ के अतिरिक्त किस आचार्य ने साहित्य शब्दों को अपने ग्रन्थ नाम में प्रयुक्त किया है। UP PGT (H)–2000

(A) भामह (B) राजशेखर
(C) रुय्यक (D) आनन्दवर्धन

स्रोत–काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, भू0 पेज-5

75. कालक्रमानुसारं तालिकां चिनुत– UGC 25 J–2016

(i) अप्पयदीक्षितः (ii) भरतः
(iii) विश्वनाथकविराजः (iv) वामनः

(A)	(ii)	(iv)	(iii)	(i)
(B)	(ii)	(iv)	(i)	(iii)
(C)	(ii)	(i)	(iii)	(iv)
(D)	(i)	(ii)	(iv)	(iii)

स्रोत–संस्कृत काव्यशास्त्र का आलोचनात्मक इतिहास-अमरनाथ पाण्डेय, पेज- अ-3 ब-26 स-157, द-169

76. निम्नलिखित वर्गों में कालक्रमानुसार आचार्यों का कौन सा क्रम सही है– UGC (H) D–2008

(A) मम्मट, दण्डी, भामह, आनन्दवर्धन
(B) दण्डी - आनन्दवर्धन - मम्मट - भामह
(C) भामह - दण्डी - आनन्दवर्धन - मम्मट
(D) आनन्दवर्धन - भामह - मम्मट - दण्डी

संस्कृत काव्यशास्त्र का आलो0 इति0-अमरनाथ पाण्डेय, पेज-8,19,42,120

77. कालक्रमानुसारेण तालिकां चिनुत– UGC 25 D–2015

(A) अप्पयदीक्षितः (B) भरतः
(C) आनन्दवर्धनः (D) दण्डी

(A) a - b - c - d (B) b - c - a - d
(A) c - a - b - d (D) b - d - c - a

संस्कृत काव्यशास्त्र का आलो0 इति0-अमरनाथ पाण्डेय, पेज-3,19,42,169

78. काव्य के अर्थवैज्ञानिक विवेचन का शुभारम्भ किसने किया– UP PGT (H)–2000

(A) वामन (B) महिमभट्ट
(C) मम्मट (D) आनन्दवर्धन

स्रोत–काव्यालङ्कार सूत्र (3.2.2)-हरगोविन्द शास्त्री, पेज–108

79. निम्न में से कौन किसके लिए प्रसिद्ध नहीं है? UP PGT (H)–2013

(A) उपमा के लिए कालिदास (B) करुण के लिए भवभूति
(C) अलङ्कार के लिए भामह (D) वक्रोक्ति के लिए क्षेमेन्द्र

संस्कृत काव्यशास्त्र का आलोचनात्मक इतिहास- अमरनाथ पाण्डेय, पेज-88

80. निम्न अलङ्कारशास्त्रियों में से कौन कश्मीर निवासी नहीं थे? BHU AET–2010

(A) विश्वनाथ (B) अभिनवगुप्त
(C) मम्मट (D) आनन्दवर्धन

संस्कृत काव्यशास्त्र का आलोचनात्मक इतिहास-अमरनाथ पाण्डेय, पेज-157

81. कुन्तकस्य मतेन त्रयो मार्गाः के? DSSSB PGT–2014

(A) निम्न, उन्नतः समश्च (B) मधुरो, विचित्रः प्रसादश्च
(C) मधुरः अभिजातः प्रसन्नश्च (D) सुकुमारो विचित्रः मध्यमश्च

स्रोत–वक्रोक्तिजीवितम् (1/24) - राधेश्याम मिश्र, पेज-96

82. सम्यक् मेलनं करोतु– JUN MET–2014

सिद्धान्तः	**आचार्यः**
(क) रसः	**(1) वामनः**
(ख) वक्रोक्तिः	**(2) आनन्दवर्धनः**
(ग) ध्वनिः	**(3) कुन्तकः**
(घ) रीतिः	**(4) भरतमुनिः**

	क	ख	ग	घ
(A)	1	2	3	4
(B)	2	1	4	3
(C)	4	3	2	1
(D)	3	1	4	2

संस्कृत काव्यशास्त्र का आलो0 इति0-अमरनाथ पाण्डेय, पेज-2,88,41,26

72. (C) 73. (B) 74. (B) 75. (A) 76. (C) 77. (D) 78. (A) 79. (D) 80. (A) 81. (D) 82. (C)

83. रचनाकाल के आधार पर निम्नलिखित ग्रन्थों का सही अनुक्रम है– UGC 25 D–2015

(A) ध्वन्यालोक, काव्यमीमांसा, काव्यादर्श, साहित्यदर्पण
(B) काव्यादर्श, ध्वन्यालोक, काव्यमीमांसा, साहित्यदर्पण
(C) काव्यादर्श, काव्यमीमांसा, ध्वन्यालोक, साहित्यदर्पण
(D) ध्वन्यालोक, काव्यादर्श, साहित्यदर्पण, काव्यमीमांसा

स्रोत–संस्कृत काव्यशास्त्र का आलोचनात्मक इतिहास- अमरनाथ, पाण्डेय, पेज- 19, 41, 81, 157

84. (i) वक्रोक्तिजीवितानुसारं कविव्यापारवक्रत्वप्रकाराः कति सम्भवन्ति? UGC 25 D–2012, J–2016
(ii) वक्रोक्तिजीविते कतिविधा वक्रोक्तिः स्वीकृता?
(iii) कुन्तकानुसारं कविव्यापारवक्रत्वप्रकाराः कति? RPSC SET–2013-2014

(A) अष्टौ (B) षट्
(C) सप्त (D) पञ्च

स्रोत–वक्रोक्तिजीवितम् (1/18)- राधेश्याम मिश्र, पेज-62

85. आनन्दवर्धनः कस्य सभापण्डित आसीत् UGC 25 D–2010

(A) अशोकस्य (B) शाहजहानस्य
(C) अवन्तिवर्मणः (D) औसफअलेः

संस्कृत काव्यशास्त्र का आलोचनात्मक इतिहास- अमरनाथ पाण्डेय, पेज-42

86. पण्डितराजः कः? BHU Sh.ET–2011

(A) जयदेवः (B) विश्वनाथः
(C) जगन्नाथः (D) कालिदासः

संस्कृत काव्यशास्त्र का आलोचनात्मक इतिहास- अमरनाथ पाण्डेय, पेज-173

87. काव्यशास्त्रियों में आचार्य मम्मट हैं? UP GIC–2009

(A) ध्वनिवादी (B) रीतिवादी
(C) अलङ्कारवादी (D) समन्वयवादी

भारतीयकाव्यशास्त्र (संस्कृत) का इतिहास-राजवंश सहाय 'हीरा', पेज–166

88. आचार्यविश्वनाथस्य पितुर्नामास्ति? BHU AET–2010

(A) चन्द्रशेखरः (B) शशिशेखरः
(C) विधुशेखरः (D) इन्दुशेखरः

संस्कृत काव्यशास्त्र का आलोचनात्मक इतिहास-अमरनाथ पाण्डेय, पेज-157

89. कः आचार्यो 'वाग्वेदतावतार' इति ख्यातः? BHU AET–2010

(A) आनन्दवर्धनः (B) अभिनवगुप्तः
(C) भरतमुनिः (D) मम्मटः

स्रोत–काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, भू0 पेज-73

90. शब्दरीतिनिर्णयविषये कस्य ग्रन्थकारस्य नाम राजशेखरेण काव्यमीमांसायां प्रथमेऽध्याये उल्लिखितम्– UGC 25 J–2016

(A) प्रचेतसः (B) चित्राङ्गस्य
(C) पराशरस्य (D) सुवर्णनाभस्य

काव्यमीमांसा (प्रथम अध्याय)-कृष्णमणि त्रिपाठी, पेज-3

91. राजशेखरेण काव्यमीमांसायां दोषाधिकरणविषये कस्य ग्रन्थकारस्य नाम उल्लिखितम्– UGC 25 Jn–2017

(A) सुवर्णनाभस्य (B) शेषस्य
(C) धिषणस्य (D) भरतस्य

काव्यमीमांसा (प्रथम अध्याय)-कृष्णमणि त्रिपाठी, पेज-4

92. 'उपकारकत्वादलङ्कारः सप्तममङ्गम् इति यायावरीयः।' उक्तिरियं कुत्रास्ति– UGC 25 J–2016

(A) नाट्यशास्त्रे (B) काव्यप्रकाशे
(C) काव्यमीमांसायाम् (D) वक्रोक्तिजीविते

स्रोत–हिन्दी काव्यमीमांसा-गंगासागर राय, पेज-4

93. शब्दार्थयोर्यथावत्सहभावेन विद्या भवति– K SET–2014

(A) शब्दविद्या (B) अर्थविद्या
(C) साहित्यविद्या (D) अविद्या

स्रोत–हिन्दी काव्यमीमांसा- गंगासागर राय, पेज-11

94. राजशेखरमते उपकारकत्वादलङ्कारः– K SET–2014

(A) पञ्चममङ्गम् (B) अष्टममङ्गम्
(C) नवममङ्गम् (D) सप्तममङ्गम्

स्रोत–हिन्दी काव्यमीमांसा- गंगासागर राय, पेज-4

83. (B) 84. (B) 85. (C) 86. (C) 87. (D) 88. (A) 89. (D) 90. (D) 91. (C) 92. (C) 93. (C) 94. (D)

95. राजशेखरमतानुसारम् अधोलिखितानि योजयत– K SET–2014

(क) अर्थश्लेषः	1. कामदेवः
(ख) आनुप्रासिकं	2. उतथ्यः
(ग) वैनोदिकं	3. सुवर्णनाभः
(घ) रीतिनिर्णयं	4. प्रचेतायनः

	क	ख	ग	घ
(A)	1	3	4	2
(B)	3	1	2	4
(C)	2	3	4	1
(D)	2	4	1	3

संस्कृत काव्यशास्त्र का आलोचनात्मक इतिहास- अमरनाथ पाण्डेय, पेज-81

96. आनन्दवर्धनाचार्यस्य स्थितिकालोऽस्ति? BHU AET–2010

(A) नवमशताब्दी (B) अष्टमशताब्दी
(C) दशमशताब्दी (D) सप्तमशताब्दी

संस्कृत काव्यशास्त्र का आलोचनात्मक इतिहास-अमरनाथ पाण्डेय, पेज-42

97. संस्कृतसाहित्यशास्त्रे 'यायावरीयः' कः कथ्यते? BHU AET–2010

(A) क्षेमेन्द्रः (B) राजशेखरः
(C) पण्डितराजजगन्नाथः (D) अभिनवगुप्तः

संस्कृत काव्यशास्त्र का आलोचनात्मक इतिहास-अमरनाथ पाण्डेय, पेज-80

98. कालानुसारेण कस्तावत् अर्वाचीनः? UGC 25 D–2014

(A) भरतः (B) जगन्नाथः
(C) विश्वनाथः (D) भामहः

संस्कृत काव्यशास्त्र का आलोचनात्मक इतिहास-अमरनाथ पाण्डेय, पेज-174

99. काव्यगुणों के प्रतिष्ठापक आचार्य हैं? UGC (H) D–2013

(A) रुद्रट (B) दण्डी
(C) वामन (D) अप्पयदीक्षित

स्रोत–काव्यप्रकाश-आचार्य विश्वेश्वर, भू0 पेज-45

100. समास की अधिकता ओज कहलाती है (ओजस्समास-भूयस्त्वम्) – यह किसका कथन है? UP PGT (H)–2000

(A) भरत (B) वामन
(C) रुय्यक (D) दण्डी

स्रोत–काव्यादर्श (1/80)-रामचन्द्र मिश्र, पेज–61

101. 'काव्यशोभायाः कर्त्तारो धर्माः गुणाः' काव्य गुण का यह सूत्र लिखा है? UP PGT (H)–2004

(A) आचार्य भरत ने (B) आचार्य दण्डी ने
(C) आचार्य वामन ने (D) आचार्य मम्मट ने

संस्कृत काव्यशास्त्र का आलोचनात्मक इतिहास-अमरनाथ,पाण्डेय, पेज-31

102. (i) भरतमुनि के अनुसार काव्य में कुल कितने गुण होते हैं? UP PGT (H)–2004, 2005

(ii) आचार्य भरतमुनि ने काव्यगुणों की संख्या बतायी है? UGC (H) J–2012

(A) 3 (B) 5
(C) 10 (D) 8

संस्कृत का अर्वाचीन समीक्षात्मक काव्यशास्त्र-राजेन्द्र मिश्र, पेज-59

103. 'भावप्रकाशन' ग्रन्थ के रचयिता हैं? UGC 73 J–2016

(A) शिङ्गभूपालः (B) शारदातनयः
(C) रामचन्द्रः (D) गुणचन्द्रः

संस्कृत काव्यशास्त्र का आलोचनात्मक इतिहास-अमरनाथ पाण्डेय, पेज-152

104. राजशेखरमते काव्यकविः कतिविधः? K SET–2013

(A) सप्त (B) द्वादश
(C) दश (D) अष्ट

स्रोत–हिन्दी काव्यमीमांसा-गंगासागर राय, पेज-37

105. 'कवयः द्विधा अरोचकिनः सतृणाभ्यवहारिणश्च' इति कस्य मतम्? K SET–2013

(A) कुन्तकस्य (B) यायावरीयस्य
(C) दण्डिनः (D) मङ्गलस्य

स्रोत–हिन्दी काव्यमीमांसा-गंगासागर राय, पेज-30

106. राजशेखरमते द्वित्रैः गुणैः कनीयान्, पञ्चमैः मध्यमः सर्वगुणयोगी कविः कः? K SET–2013

(A) अधमकविः (B) महाकविः
(C) कुकविः (D) शास्त्रकविः

स्रोत–हिन्दी काव्यमीमांसा-गंगासागर राय, पेज-42

107. काव्यमीमांसायाः रचयिता कोऽस्ति– T SET–2014

(A) भरतमुनिः (B) भोजः
(C) मम्मटः (D) राजशेखरः

स्रोत–हिन्दी काव्यमीमांसा-गंगासागर राय, भू0 पेज-1

95. (D) 96. (A) 97. (B) 98. (B) 99. (C) 100. (D) 101. (C) 102. (C) 103. (B) 104. (D) 105. (B) 106. (B) 107. (D)

108. काव्यमीमांसायां काव्यपुरुषस्य वर्णनं कस्मिन्नध्याये वर्तते? T SET–2013

(A) तृतीये (B) द्वितीये

(C) चतुर्थे (D) प्रथमे

स्रोत–हिन्दी काव्यमीमांसा-गंगासागर राय, पेज-12

109. काव्यमीमांसानुसारेण काव्यपाको नास्ति–T SET–2013

(A) नारिकेलपाकः (B) घृतपाकः

(C) क्रमुकपाकः (D) बदरपाकः

स्रोत–हिन्दी काव्यमीमांसा-गंगासागर राय, पेज-45

110. 'श्रव्यत्वं पुनः ओजः प्रसादयोरपि' अनेन कस्य मतं खण्डितम्? HE – 2015

(A) भामहस्य (B) दण्डिनः

(C) रुद्रटस्य (D) वामनस्य

स्रोत–काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-389

111. काव्यगुणानां लक्षणत्रयम् अस्ति UP GDC–2012

(A) शब्दसौष्ठवम् - अर्थसौन्दर्यम्, व्यङ्ग्यचमत्कारश्च

(B) शब्दधर्मत्वं - वाच्यधर्मत्वं - व्यवहारित्यञ्च

(C) काव्यधर्मत्वम् - अर्थधर्मत्वं - शब्दधर्मत्वञ्च

(D) रसधर्मत्वं - रसोत्कत्वम् - चलस्थितित्वञ्च

स्रोत–काव्यप्रकाश (8/66)- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-380

112. सही युग्म चिह्नित कीजिए? UP TGT (H)–2009

(A) वैदर्भी – माधुर्य (B) गौडी – माधुर्य

(C) पाञ्चाली – ओज (D) गौडी – प्रसाद

स्रोत–काव्यालङ्कारसूत्र (1.2.11-13)-हरगोविन्द शास्त्री, पेज–17-21

113. काव्ये येऽङ्गिनमर्थमवलम्बन्ते ते के? UGC 25 D–2010

(A) संघटनाः (B) गुणाः

(C) अलङ्काराः (D) भावाः

स्रोत–काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-380

114. 'सा च काव्यघटनानुकूलशब्दार्थोपस्थितिः' इत्यत्र 'सा' का? UGC 25 D–2010

(A) निपुणता (B) अभ्यास

(C) भावना (D) प्रतिभा

स्रोत–रसगंगाधर - मदनमोहन झा, पेज-27

115. आचार्य वामन ने 'काव्यहेतु' के स्थान पर किस शब्द का व्यवहार किया है– DL (H)–2015

(A) तात्पर्य (B) लक्षणा

(C) अभिधा (D) काव्यांग

स्रोत–काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-17

116. प्रतिभा, व्युत्पत्ति और अभ्यास में सर्वमान्य हेतु है– UP PGT–2005

(A) प्रतिभा (B) अभ्यास

(C) व्युत्पत्ति (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

स्रोत–(i) काव्यप्रकाश (1/3)- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-16

(ii) काव्यमीमांसा - गंगासागर राय, पेज–34

117. काव्यहेतवः सन्ति JNU MET–2014

(A) प्रतिभा - व्युत्पत्ति - मोक्षः

(B) धर्म - मोक्षः - कामः

(C) धर्म - अर्थ - काम - व्युत्पत्तिः

(D) प्रतिभा - व्युत्पत्ति - अभ्यास

स्रोत–(i) काव्यप्रकाश (1/3) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-16

(ii) काव्यमीमांसा - गंगासागर राय, पेज–25

118. काव्यबन्धोऽभिजातानां हृदयाह्लादकारकः' यह काव्यप्रयोजन है– UGC 73 D–2012 J–2014

(A) भामहस्य (B) मम्मटस्य

(C) कुन्तकस्य (D) वामनस्य

स्रोत–वक्रोक्तिजीवितम् (1/3)- राधेश्याम मिश्र, पेज-10

119. (i) पण्डितराजजगन्नाथेन मते काव्यस्य कति भेदाः स्वीकृताः– UGC 73 J–2014

(ii) पण्डितराजजगन्नाथ के अनुसार काव्य के भेद होते हैं? UGC 25 J–2016

(A) त्रयः (B) चत्वारः

(C) पञ्च (D) सप्त

स्रोत–रसगंगाधर - मदनमोहन झा, पेज-37

120. पण्डितराजजगन्नाथानुसारं सामान्यवस्तुध्वनिः गुणीभूतव्यंग्यप्रकाराश्च कस्मिन् काव्यप्रभेदेऽन्तर्भवन्ति? UGC 25 J–2012

(A) उत्तमोत्तमकाव्ये (B) उत्तमकाव्ये

(C) मध्यमकाव्ये (D) अधमकाव्ये

स्रोत–रसगंगाधर - मदनमोहन झा, पेज-66

108. (A) 109. (B) 110. (A) 111. (D) 112. (A) 113. (B) 114. (D) 115. (D) 116. (A) 117. (D) 118. (C) 119. (B) 120. (B)

121. 'उत्तमोत्तमोत्तममध्यमाधमभेदेन चत्वारः' भेदाः प्रकीर्तिताः– UGC 73 D–2014

(A) भामहेन (B) कविराजविश्वनाथेन
(C) मम्मटेन (D) पण्डितराजजगन्नाथेन

स्रोत–रसगंगाधर - मदनमोहन झा, पेज-37

122. 'शयिता सविधेऽप्यनीश्वरा सफलीकर्त्तुमहो मनोरथान्।' पण्डितराजजगन्नाथेन कस्य काव्यस्य उदाहरणरूपेण उद्धृतोऽयं श्लोकः? UGC 25 J–2016, K SET–2013

(A) अधमस्य (B) उत्तमोत्तमस्य
(C) उत्तमस्य (D) मध्यमस्य

स्रोत–रसगंगाधर - मदनमोहन झा, पेज-38

123. (i) पण्डितराजजगन्नाथमते यत्र व्यङ्ग्यमप्रधानमेव सचमत्कारकारणं भवति तत्काव्यमस्ति?
(ii) 'यत्र व्यङ्ग्यमप्रधानमेव सच्चमत्कारणं' जगन्नाथमते तत् भवति–
JNU M. Phil / Ph.D – 2014, UGC 25 Jn.–2017

(A) उत्तमोत्तमम् (B) मध्यमम्
(C) अधमम् (D) उत्तमम्

स्रोत–रसगंगाधर - मदनमोहन झा, पेज-66

124. चार काव्यभेदों का निरूपण किया है? UGC 73 D–2014

(A) भामहेन (B) मम्मटेन
(C) जगन्नाथेन (D) विश्वनाथेन

स्रोत–रसगंगाधर - मदनमोहन झा, पेज-37

125. (i) क्षेमेन्द्र ने औचित्यविचारचर्चा में औचित्य के भेदों का निरूपण किया है– UGC 73 D–2012,
(ii) क्षेमेन्द्र औचित्य के भेद मानते हैं? J–2013, 2014
(iii) क्षेमेन्द्रेण औचित्यस्य .... भेदाः प्रकीर्तिताः–

(A) सप्तविंशतिः (B) चतुर्विंशतिः
(C) त्रयोविंशतिः (D) त्रयोदश

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-596

126. रससिद्धान्तस्य ''स्थिरं काव्यस्य जीवितम्'' अस्ति– BHU AET–2012

(A) वैचित्यम् (B) औचित्यम्
(C) सौभाग्यम् (D) लावण्यम्

स्रोत–औचित्यविचारचर्चा (1/5) - व्रजमोहन झा, पेज-4

127. ''मित्रात्रिपुत्रनेत्राय, त्रयीशात्रवशत्रवे। UGC 25 Jn–2017
गोत्रारिगोत्रजत्राय, गोत्रात्रे ते नमो नमः॥''
रसगङ्गाधरे प्रथमे आनने श्लोकोऽयम् उदाहरणं भवति–

(A) उत्तमकाव्यस्य (B) अधमकाव्यस्य
(C) उत्तमोत्तमकाव्यस्य (D) मध्यमकाव्यस्य

स्रोत–रसगंगाधर - मदनमोहन झा, पेज-79

128. 'काव्यं मयाऽत्र निहितं न परस्य किञ्चित्' इति केनोक्तम्? K SET–2014

(A) राजशेखरेण (B) वामनेन
(C) जगन्नाथेन (D) आनन्दवर्धनेन

स्रोत–रसगंगाधर - मदनमोहन झा, पेज-7

129. 'शब्दः काव्यम्' – इत्यत्र अयं लौकिकं व्यवहारः प्रमाणम्? K SET–2013

(A) काव्यं लिखितम् (B) काव्यं न दृष्टम्
(C) काव्यं विस्मृतम् (D) काव्यं उच्चैः पठ्यते

स्रोत–रसगंगाधर - मदनमोहन झा, पेज-15

130. 'विमतवाक्यं त्वश्रद्धेयमेव' इति एतद् वाक्यं रसगङ्गाधरे कस्मिन् प्रकरणे वर्तते? MH SET–2013

(A) काव्यकारणप्रकरणे (B) काव्यलक्षणप्रकरणे
(C) काव्यभेदनिरूपणप्रकरणे (D) रसनिरूपणप्रकरणे

स्रोत– रसगंगाधर - मदनमोहन झा, पेज–16

131. अनौचित्येन आच्छादिता का न भवति? HE–2015

(A) एकाश्रया रतिः (B) अनेकाश्रया रतिः
(C) शोकावस्थायां रतिः (D) स्वकान्तविषया रतिः

स्रोत–

132. अर्थबोध कराने के सन्दर्भ में निम्नलिखित में कौन सा कथन सत्य है? UP PGT H–2005

(A) अभिधा शब्द-शक्ति लक्षणा पर आश्रित होती है।
(B) लक्षणाशब्द-शक्ति व्यञ्जना पर आधारित होती है।
(C) अभिधा शब्द-शक्ति लक्षणा व व्यञ्जना दोनों पर आश्रित होती है।
(D) लक्षणा एवं व्यञ्जना दोनों शब्दशक्तियाँ अभिधा पर आश्रित होती है।

स्रोत–साहित्यदर्पण (2/12,13)–शालिग्राम शास्त्री, पेज-39

121. (D) 122. (B) 123. (D) 124. (C) 125. (A) 126. (B) 127. (B) 128. (C) 129. (D) 130. (B) 131. (D) 132. (D)

133. रसदीनां बोधे का वृत्तिः अङ्गीकार्या? UK SLET–2015

(A) अभिधा (B) लक्षणा

(C) व्यञ्जना (D) तात्पर्याख्या

स्रोत–साहित्यदर्पण – शालिग्राम शास्त्री, पेज-161

134. वक्रोक्तिकारस्य मते किं तत्वं काव्ये वैचित्र्यं आनयति– T-SET–2014

(A) ध्वनिः (B) अलङ्कारः

(C) रीतिः (D) गुणाः

स्रोत– वक्रोक्तिजीवितम् (1/6) - राधेश्याम मिश्र, पेज–16

135. व्यङ्ग्यत्वविशिष्टार्थ बोध का जनक .... होता है। UGC 73 D–2012

(A) स्फोटः (B) पश्यन्ती

(C) सम्बन्धः (D) पदम्

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–28

136. स्फोट को व्यक्त करती है? UGC 73 J–2013

(A) वस्तुध्वनिः (B) अलङ्कारध्वनिः

(C) प्राकृतध्वनिः (D) वैकृतध्वनिः

स्रोत–ध्वन्यालोक - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–149

137. कस्य काव्यशोभा कर्तृत्वम्? BHU Sh.ET–2013

(A) प्रतिभा (B) व्यवहारज्ञानम्

(C) गुणाः (D) व्याकरणशुद्धः

संस्कृत काव्यशास्त्र का आलोचनात्मक इतिहास- अमरनाथ पाण्डेय, पेज-31

138. 'रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्' इत्यत्र रमणीयेषु कटाक्षनिक्षेपादिषु काव्यलक्षणस्य अतिव्याप्तिवारणाय ....पदम्? KL SET–2014

(A) अर्थ इति (B) शब्द इति

(C) प्रतिपादक इति (D) काव्यमिति

स्रोत–रसगंगाधर (1/1) - मदनमोहन झा, पेज-10

139. पण्डितराजजगन्नाथमते गुणीभूतव्यङ्ग्यकाव्यं .... विभागे अन्तर्भवति KL SET–2014

(A) उत्तमविभागे (B) मध्यमविभागे

(C) उत्तमोत्तमविभागे (D) अधमविभागे

स्रोत–रसगंगाधर - मदनमोहन झा, पेज-66

140. .... वाक्यं भवति? UGC 25 D–2012

(A) ध्वनिसमूहः (B) साकांक्षपदसमूहः

(C) शब्दसमूहः (D) वर्णसमूहः

स्रोत–तर्कभाषा- श्रीनिवास शास्त्री पेज-122

141. शब्दस्याभिव्यक्तेः ऊर्ध्वं वृत्तिभेदे तु वैकृताः ध्वनयः समुपोहन्ते, तैः कः न भिद्यते? UGC 25 D–2012

(A) जीवात्मा (B) स्फोटात्मा

(C) परमात्मा (D) काव्यात्मा

वाक्यपदीयम् -(ब्रह्मकाण्ड, का-77)-सूर्यनारायण शुक्ल, पेज-87

142. वाच्यवाचकचारुत्वहेतूनां विविधात्मनां रसादिपरता यत्र सः विषयः कस्य? UGC 25 D–2012

(A) रीतेः (B) रसवदलङ्कारस्य

(C) गुणीभूतव्यंग्यस्य (D) ध्वनेः

स्रोत–ध्वन्यालोक-आचार्य विश्वेश्वर (1/13) पेज-37

143. वामनमतानुसारेण काव्यास्यात्मा अस्ति? GGIC–2015

(A) वृत्तिः (B) अलङ्कारः

(C) रसः (D) गुणाः

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, भू0 पेज–44

144. ''शरीरं जीवितेनेव स्फुरितेनेव जीवितम् विना निर्जीवितां येन वाक्यं याति विपश्चिताम्॥'' UGC 73 Jn–2017 अत्र काव्यस्य जीवितत्वेन कस्य प्रतिपादनं कृतम् –

(A) ध्वनेः (B) रसस्य

(C) रीतेः (D) वक्रोक्तेः

स्रोत–वक्रोक्तिजीवितम् (1/39)-राधेश्याम मिश्र, पेज–61

133. (C) 134. (B) 135. (A) 136. (B) 137. (C) 138. (B) 139. (A) 140. (B) 141. (B) 142. (D) 143. (A) 144. (D)

145. वह्निना सिञ्चतीति न वाक्यम् **BHU AET–2012**
(A) आकांक्षारहितत्वात् (B) योग्यताविरहात्
(C) तात्पर्याभावात् (D) आसक्तिरहितत्वात्
स्रोत–साहित्यदर्पण-शालिग्राम शास्त्री,पेज-24

146. निम्नलिखित में से कौन संस्कृत समीक्षा पद्धति से सम्बन्धित नहीं है? **UP PGT (H)–2004**
(A) रस (B) अलङ्कार
(C) ध्वनि (D) शैली विज्ञान
स्रोत–

147. गतोऽस्तमर्कः भातीन्दुः, वासाय यान्ति पक्षिणः इत्यादिकं किम्? **DSSSB PGT–2014**
(A) अकाव्यम् (B) काव्यम्
(C) चित्रकाव्यम् (D) नव्यकाव्यम्
स्रोत–रसगंगाधर - मदन मोहन झा, पेज–22

148. 'गद्यं पद्यं च मिश्रं च तत् त्रिधैव व्यवस्थितम्'– यह कथन है– **UGC 73 J–2015**
(A) दण्डी का (B) वामन का
(C) रुद्रट का (D) भरत का
स्रोत–काव्यादर्श (1/11) - श्रीरामचन्द्र मिश्र, पेज-14

149. काकुदमित्यत्र काकुशब्देनाभिप्रेतं किम्? **UGC 25 S–2013**
(A) लक्ष्यार्थः (B) व्यङ्ग्यम्
(C) जिह्वा (D) ध्वनिः
स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-135

150. 'एको न द्वावितिव्यवहारस्येव श्लोकवाक्यं न काव्यम्। इति व्यवहारस्यापत्तेः' – कस्य मतस्य खण्डनावसरे वाक्यमिदं रसगङ्गाधरे वर्तते? **MH SET–2013**
(A) विश्वनाथस्य (B) मम्मटस्य
(C) अप्पयदीक्षितस्य (D) आनन्दवर्धनस्य
स्रोत–रसगङ्गाधर - मदनमोहन झा, पेज–19

151. निःशेषच्युतचन्दनं .... इति श्लोकव्याख्याने कस्य मतस्य खण्डनं पण्डितराजेन क्रियते? KL SET–2014
(A) मम्मटस्य (B) विश्वनाथस्य
(C) महिमभट्टस्य (D) अप्पयदीक्षितस्य
स्रोत–रसगङ्गाधर - मदनमोहन झा, पेज–51

152. रसगङ्गाधरे काव्यलक्षणमस्ति– **T SET–2013**
(A) तददोषौ शब्दार्थौ काव्यम्
(B) वाक्यं रसात्मकं काव्यम्
(C) गुणालङ्काररसान्वितः काव्यम्
(D) रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्
स्रोत–रसगंगाधर (1/1) - मदनमोहन झा, पेज-10

153. पण्डितराजस्य मते अधमकाव्ये कस्य प्राधान्यम्– **KL SET–2016**
(A) अर्थचमत्कृतेः (B) शब्दचमत्कृतेः
(C) चित्रचमत्कृतेः (D) शब्दार्थचमत्कृतेः
स्रोत–रसगंगाधर- मदनमोहन झा, पेज-78

154. 'विभावादयस्त्रयः समुदिता रसाः' इति रसगङ्गाधरे कतमं मतम्– **KL SET–2016**
(A) नवमम् (B) सप्तमम्
(C) अष्टमम् (D) दशमम्
स्रोत–रसगङ्गाधर - मदनमोहन झा, पेज–126

155. रसविषये चिरन्तनानां पक्षः कस्य– **KL SET–2016**
(A) अभिनवगुप्तस्य (B) भट्टनायकस्य
(C) शङ्कुकस्य (D) लोल्लटस्य
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–100

156. दण्डिना कतिगुणाः स्वीकृताः? **JNU M Phil/Ph. D–2014**
(A) एकादश (B) त्रयोदश
(C) दश (D) चतुर्दश
स्रोत–काव्यादर्श (1/42) -श्रीरामचन्द्र मिश्र,पेज-37

157. विश्वनाथ कविराज किसके लेखक नहीं हैं? **BHU MET–2016**
(A) साहित्यदर्पण (B) काव्यप्रकाशदर्पण
(C) चन्द्रकला (D) चन्द्रालोक
स्रोत– साहित्यदर्पण - भवानी शंकर, भू0 पेज-III

158. संस्कृतसाहित्य के अनुसार निम्नलिखित में से क्या सत्य कथन है? **UGC 73 D–2015**
(A) शृङ्गारः-रसः (B) करुणः-दुःखम्
(C) वीरः-सैनिकः (D) हास्यः-स्वभावः
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-97

159. सम्यक् मेलनं कर्तव्यम्– **JNU MET–2015**

ग्रन्थकाराः	ग्रन्थाः
(क) कुमारिलभट्टः	A. तन्त्रालोकः
(ख) अभिनवगुप्तः	B. तर्कसंग्रहः
(ग) अन्नम्भट्टः	C. माध्यमिककारिका
(घ) नागार्जुनः	D. श्लोकवार्त्तिकम्

	क	ख	ग	घ
(A)	D	A	B	C
(B)	A	B	C	D
(C)	B	A	C	D
(D)	A	C	B	D

स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-805, 803, 802, 809

145. (B) 146. (D) 147. (C) 148. (A) 149. (C) 150. (B) 151. (A) 152. (D) 153. (B) 154. (B) 155. (D) 156. (C) 157. (D) 158. (A) 159. (A)

37 संस्कृत वाङ्मय के विविध प्रश्न

1. आरम्भिक वैदिक साहित्य में सर्वाधिक वर्णित नदी है? UP PCS– 1999

(A) सिन्धु (B) सरस्वती
(C) शुतुद्रि (D) गङ्गा

स्रोत–संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (प्रथम खण्ड), पेज-519

2. निम्नलिखित में से कौन सबसे प्राचीन वाद्ययन्त्र है? UP PCS– 1999

(A) सितार (B) तबला
(C) सरोद (D) वीणा

स्रोत–भारतीय संगीत का इतिहास - शरच्चन्द्र श्रीधर परांजपे, पेज-379

3. उपनिषद्काल के राजा अश्वपति शासक थे– UP PCS– 1999

(A) काशी के (B) कैकेय के
(C) पाञ्चाल के (D) विदेह के

स्रोत–

4. शून्यता के सिद्धान्त का सर्वप्रथम प्रतिपादन करने वाले बौद्ध दार्शनिक का नाम है– UP PCS– 1998

(A) नागार्जुन (B) नागसेन
(C) आनन्द (D) अश्वघोष

स्रोत–भारतीय दर्शन की रूपरेखा-हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज–126

5. 'उपनिषद्' का फारसी में अनुवाद किस मुगल सम्राट् के शासनकाल में हुआ? UP PCS– 1992

(A) शाहजहाँ (B) अकबर
(C) जहाँगीर (D) औरङ्गजेब

स्रोत–लूसेंट सामान्य ज्ञान - सुनील कुमार सिंह, पेज-57

6. उत्तराखण्ड में द्वितीय राज्यभाषा का दर्जा किस भाषा को प्राप्त है? UK LWR– 2011

(A) उर्दू (B) संस्कृत
(C) अंग्रेजी (D) पंजाबी

स्रोत–

7. प्राचीन भारत का वह ग्रन्थ जिसका 15 भारतीय एवं चालीस विदेशी भाषाओं में अनुवाद हुआ–RPCS– 1992

(A) हितोपदेश (B) पञ्चतन्त्रम्
(C) कथासरित्सागर (D) शाकुन्तलम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-580

8. भागवत धर्म के प्रवर्तक थे– RPCS– 1993

(A) जनक (B) कृष्ण
(C) याज्ञवल्क्य (D) सूरदास

स्रोत–श्रीमद्भागवद् महापुराण (खण्ड-2) (11.29.8), पेज-892

9. एकलव्य किस गुरु का स्वघोषित शिष्य था? MP PSC– 1996

(A) भीष्म (B) परशुराम
(C) बलराम (D) द्रोणाचार्य

स्रोत–महाभारत आदिपर्व (131/45), पेज-465

10. भागीरथी नदी निकलती है? Chh. PSC– 2010

(A) गंगोत्री से (B) गोमुख से
(C) मानसरोवर से (D) तपोवन से

स्रोत–लूसेंट सामान्य ज्ञान - सुनील कुमार सिंह, पेज-177

11. निम्नलिखित को सुमेलित कीजिए? Chh. PSC– 2012

(क) नन्दी — 1. दिव्य सफेद हाथी
(ख) कल्पवृक्ष — 2. पवित्र गाय
(ग) ऐरावत — 3. शिव का साँड़
(घ) कामधेनु — 4. स्वर्ग का वृक्ष

	क	ख	ग	घ
(A)	3	4	1	2
(B)	1	2	4	3
(C)	4	3	2	1
(D)	3	1	4	2

स्रोत–

1. (A) 2. (D) 3. (B) 4. (A) 5. (A) 6. (B) 7. (B) 8. (B) 9. (D) 10. (B) 11. (A)

12. 'वन्दे मातरम्' गीत के रचनाकार थे? BPSC– 1992
(A) बंकिमचन्द्र चटर्जी (B) सरोजनी नायडू
(C) रवीन्द्रनाथ टैगोर (D) जयशंकर प्रसाद
स्रोत–लूसेंट सामान्यज्ञान - सुनील कुमार सिंह, पेज–296

13. 'सिर्र-ए-अकबर' इति रचना कस्य अस्ति? BHU AET– 2010
(A) अकबरस्य (B) दाराशिकोहस्य
(C) मुरादस्य (D) औरंगजेबस्य
स्रोत–वैदिक साहित्य और संस्कृति-बलदेव उपाध्याय, पेज-246

14. स्वतन्त्रे भारते प्रथमा राष्ट्रिया शिक्षानीतिः कदा प्रभाविनी जाता? DL– 2015
(A) 1966 वर्षे (B) 1968 वर्षे
(C) 1979 वर्षे (D) 1955 वर्षे
स्रोत– गूगल सर्च

15. निम्नोल्लिखितेषु किं प्रक्षेपणयन्त्रं नास्ति? DL– 2015
(A) ग्रामोफोन (B) फिल्म-स्ट्रिप-प्रोजेक्टर
(C) स्टीरियोस्कोप (D) ओवरहेडप्रोजेक्टर
स्रोत–संस्कृत-शिक्षणम् - उमाशंकर झा, पेज-132

16. संस्कृत में पुष्पपुरी का अर्थ है– BHU MET– 2014
(A) पावापुरी (B) पाटलिपुत्र
(C) प्रयाग (D) नैमिषारण्य
स्रोत–(i) संस्कृत-हिन्दी-कोश-वामन शिवराम आप्टे, पेज–601
(ii) संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज–411

17. कौन आधुनिक युग के कवि नहीं है? BHU MET– 2010
(A) रेवाप्रसाद द्विवेदी (B) राधावल्लभ त्रिपाठी
(C) भट्टनारायण (D) राजेन्द्र मिश्र
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-382

18. आधुनिक युग के कवि कौन हैं? BHU MET– 2008
(A) शूद्रक (B) माघ
(C) भास (D) रामावतार शर्मा
संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास-राधाबल्लभ त्रिपाठी, पेज–440

19. महिषासुरमर्दिनी कथ्यते। AWES TGT– 2010, 2013
(A) चण्डिका (B) दुर्गा
(C) कराली (D) लक्ष्मी
स्रोत–दुर्गासप्तशती (तृतीयोऽध्यायः)-गीताप्रेस, पेज–88

20. भारतीय संविधानस्य अष्टम्याम् अंकिताः कति भाषाः सन्ति? JNU MET– 2014
(A) 21 (B) 22
(C) 14 (D) 23
स्रोत–लूसेंट सामान्यज्ञान-सुनील कुमार सिंह, पेज–252

21. संस्कृत-हिन्दी-मशीनानुवादे कस्य कोशस्य आवश्यकता भविष्यति? JNU-MET– 2014
(A) संस्कृत-हिन्दी (B) हिन्दी-संस्कृत
(C) संस्कृत-संस्कृत (D) न कोऽपि
स्रोत–

22. प्राचीनभारतीयशास्त्रेषु क्रियाकल्पनाम्ना प्रथितं शास्त्रम्? JNU MET– 2014
(A) ज्योतिषशास्त्रम् (B) कर्मकाण्डम्
(C) काव्यशास्त्रम् (D) गणितशास्त्रम्
स्रोत–संस्कृत-हिन्दी-कोश-वामन शिवराम आप्टे, पेज–143

23. 'आततायिनः' इत्यस्य कोऽर्थः DSSSB PGT– 2014
(A) बान्धवाः (B) प्रियाः
(C) हन्तुमुद्यता (D) आयुधहस्ताः
स्रोत–

24. अमरकोशस्य नामान्तरं किम्? DSSSB PGT– 2014
(A) नामार्थानुशासनम् (B) अर्थलिङ्गानुशासनम्
(C) नामलिङ्गानुशासनम् (D) शब्दलिङ्गानुशासनम्
स्रोत–अमरकोश - मन्नालाल अभिमन्यु ,भू0 पेज-5

25. एषा ललितकला न अस्ति– AWES TGT– 2010, 2011
(A) काष्ठकला (B) साहित्यम्
(C) चित्रम् (D) संगीतम्
स्रोत–

26. सम्यग्ज्ञानवान् शरीरं.........इव धारयति? UGC 25 J– 2008
(A) मूढवत् (B) चक्रभ्रमिवत्
(C) जडवत् (D) पिशाचवत्
स्रोत–सांख्यकारिका (का.67)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-334

12. (A) 13. (B) 14. (B) 15. (A) 16. (B) 17. (C) 18. (D) 19. (B) 20. (B) 21. (*) 22. (*) 23. (C) 24. (C) 25. (A) 26. (B)

27. ''अलवर्ट वेबर'' वैदिक (विद्वान्) था– BHU MET–2015

(A) अमेरिका का (B) जर्मनी का
(C) फ्रांस का (D) भारत का

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज–400

28. कालः कस्य आयुः प्रमाणं गणयति? C–TET – 2014

(A) पूर्णिमायाः (B) विकासस्य
(C) जगतः (D) उत्पत्तेः

स्रोत–

29. सूर्यस्य गतिः कतिविधा? C–TET – 2014

(A) चतुर्धा (B) बहुधा
(C) त्रिधा (D) द्विधा

स्रोत–

30. प्रत्येकम् अयनस्य अवधिः कियान्? C–TET – 2014

(A) चतुर्मासाः (B) षण्मासाः
(C) पञ्चमासाः (D) सप्तमासाः

स्रोत–भारतीयशास्त्र और शास्त्रकार - मृदुला त्रिपाठी, पेज–131

31. भारतीयमासां नामानि कैः सम्बद्धानि? C–TET – 2014

(A) नक्षत्रनामाभिः (B) देवैः
(C) ब्रह्मणा (D) देशैः

स्रोत–भारतीयशास्त्र और शास्त्रकार - मृदुला त्रिपाठी, पेज–132

32. 'पुष्पधन्वा' किसे कहा जाता है? UP TGT–2013

(A) विष्णु (B) ब्रह्मा
(C) इन्द्र (D) कामदेव

स्रोत–संस्कृत हिन्दी शब्दकोश-वामन शिवराम आप्टे, पेज-627

33. गङ्गा का एक नाम है? UP TGT H–2010

(A) हंससुता (B) सुरसर
(C) विष्णुपदी (D) धेनुमती

स्रोत–

34. ह्वेनसाङ्गः कुत्र अधीतवान्? HE–2015

(A) वलभीविश्वविद्यालये (B) तक्षशिलाविश्वविद्यालये
(C) विक्रमशिलाविद्यालये (D) नालन्दाविश्वद्यालये

स्रोत–लूसेन्ट सामान्यज्ञान - सुनील कुमार सिंह, पेज-3

35. चरकसुश्रुतयोः योगदानं कस्मिन् शास्त्रे अस्ति? C-TET–2013

(A) चिकित्साशास्त्रे (B) सङ्गीतशास्त्रे
(C) काव्यशास्त्रे (D) विमानशास्त्रे

स्रोत–भारतीय शास्त्र एवं शास्त्रकार-गिरिजाशंकर शास्त्री, पेज-103-114

36. आर्यभट्टस्य योगदानं कस्मिन् शास्त्रे अस्ति– C–TET–2013

(A) समाजशास्त्रे (B) वास्तुशास्त्रे
(C) गणितशास्त्रे (D) चिकित्साशास्त्रे

स्रोत–भारतीय शास्त्र और शास्त्रकार-गिरिजा शंकर शास्त्री,पेज-151

37. अद्यत्वे संस्कृतभाषा कस्य कृते समुपयुक्ता भाषा मन्यते? C TET–2013

(A) गणितस्य (B) खगोलविज्ञानस्य
(C) विमानशास्त्रस्य (D) सङ्गणकस्य

स्रोत–

38. किसके ग्रन्थ में 'चन्द्रगुप्त मौर्य' का विशिष्ट रूप से वर्णन हुआ है? BPSC–2003

(A) भास (B) शूद्रक
(C) विशाखदत्त (D) अश्वघोष

स्रोत–मुद्राराक्षसम् - परमेश्वरदीन पाण्डेय, भू0 पेज-10

39. रसायनः कः आसीत्? HE–2015

(A) वटुः (B) हर्षस्य सुहृद्
(C) वैद्यकुमारकः (D) कञ्चुकी

स्रोत–हर्षचरितम् - शिवनाथ पाण्डेय, पेज-67

40. निम्नाङ्कित में से किसकी तुलना मैकियावेली के 'प्रिंस' से की जा सकती है? UP PCS–1994

(A) कालिदास का 'मालविकाग्निमित्रम्'
(B) कौटिल्य का 'अर्थशास्त्र'
(C) वात्स्यायन का 'कामसूत्र'
(D) तिरुवल्लुवर का 'तिरुक्कुरल'

स्रोत–

41. कस्मिन् मासे अक्षयतृतीया? BHU AET–2010

(A) माघे (B) चैत्रे
(C) फाल्गुने (D) वैशाखे

स्रोत–धर्मसिन्धु - रविदत्त शास्त्री, पेज–67-68

27. (B)	28. (*)	29. (D)	30. (B)	31. (A)	32. (D)	33. (C)	34. (D)	35. (A)	36. (C)
37. (D)	38. (C)	39. (C)	40. (B)	41. (D)					

42. नागपञ्चमी कस्मिन् मासे भवति? BHU AET–2010
(A) आषाढे (B) श्रावणे
(C) भाद्रपदे (D) माघे
स्रोत–धर्मसिन्धु - रविदत्त शास्त्री, पेज–86

43. वृद्धिश्राद्धं कीदृशं भवति– UGC 73 Jn–2017
(A) नित्यम् (B) पार्वणम्
(C) नैमित्तिकम् (D) साम्वत्सरिकम्
स्रोत–निर्णयसिन्धु-व्रजरत्न भट्टाचार्य, पेज-825

44. अवकीर्णी – इत्यस्य कोऽर्थः? UGC 73 Jn–2017
(A) ब्रह्मचारी (B) नैष्ठिकब्रह्मचारी
(C) व्रतभ्रष्टब्रह्मचारी (D) उपकुर्वाणब्रह्मचारी
स्रोत–संस्कृत हिन्दीकोश- वामन शिवराम आप्टे - पेज-105

45. रामनवमी कस्मिन् मासे भवति? BHU AET–2010
(A) चैत्रमासे (B) वैशाखमासे
(C) कार्त्तिकमासे (D) फाल्गुनमासे

46. परशुरामजयन्ती कदा पाल्यते? BHU AET–2010
(A) चैत्रशुक्लनवम्याम् (B) वैशाखशुक्लतृतीयायाम्
(C) भाद्रशुक्लचतुर्दश्याम् (D) कार्त्तिकपूर्णिमायाम्
स्रोत–धर्मसिन्धु - रविदत्त शास्त्री, पेज–67-69

47. माघशुक्लपञ्चम्यां का पूज्यते? BHU AET–2010
(A) लक्ष्मीः (B) सरस्वती
(C) दुर्गा (D) महाकाली
स्रोत–वाल्मीकिरामायण-गीताप्रेस (खण्ड-1) कोड-75, पेज-69

48. वासुदेवः कस्य पुत्रः? BHU AET–2012
(A) व्यासस्य (B) शूरस्य
(C) देवकस्य (D) वसुदेवस्य
स्रोत–श्रीमद्भागवद्महापुराण (खण्ड-2) (10/8/14) पेज-169

49. देवर्षिः कः? BHU AET–2012
(A) व्यासः (B) नारदः
(C) शुकः (D) सूतः
स्रोत–श्रीमद्भागवद् महापुराण (खण्ड-1) (1.3.8) पेज-89

50. नारदाय वीणा केन दत्ता?
(A) देवेन श्रीकृष्णेन (B) भगवता शिवेन
(C) देव्या सरस्वत्या (D) भगवत्या गायत्र्या
स्रोत–श्रीमद्भागवद् महापुराण (खण्ड-1) (1.6.33) पेज-106

51. वामनः कं भूमिम् अयाचत? BHU AET–2012
(A) इन्द्रम् (B) बलिम्
(C) कुबेरम् (D) रघुम्
स्रोत–श्रीमद्भागवद्महापुराण (खण्ड-1) (8.19.16) पेज-994

52. वामनः कति पदानि भूमिम् अयाचत्? BHU AET–2012
(A) त्रीणि पदानि (B) पञ्च पदानि
(C) षट् पदानि (D) अष्टौ पदानि
स्रोत–श्रीमद्भागवद्महापुराण (खण्ड-1) (8.19.16) पेज-994

53. कौमोदिकी कस्य गदा? BHU AET–2012
(A) भीमस्य (B) बलदेवस्य
(C) विष्णोः (D) दुर्योधनस्य
स्रोत–अमरकोश - श्रीमन्नालाल 'अभिमन्यु', पेज–5

54. होलिका कदा पाल्यते? BHU AET–2011
(A) मार्गशीर्षपूर्णिमायाम् (B) माघपूर्णिमायाम्
(C) फाल्गुनपूर्णिमायाम् (D) चैत्रपूर्णिमायाम्
स्रोत–धर्मसिन्धु - रविदत्त शास्त्री, पेज–195

55. नवरात्रारम्भः कदा भवति? BHU AET–2011
(A) आषाढशुक्लप्रतिपदि (B) भाद्रशुक्लप्रतिपदि
(C) आश्विनशुक्लप्रतिपदि (D) कार्त्तिकशुक्लप्रतिपदि
स्रोत–धर्मसिन्धु - रविदत्त शास्त्री, पेज–129

56. प्राचीन काल में कौन-सा नगर शिक्षा केन्द्र के रूप में विख्यात था? BHU AET–2012
(A) नागपुर (B) इलाहाबाद
(C) तक्षशिला (D) इन्द्रप्रस्थ
स्रोत–

42. (B)	43. (A)	44. (C)	45. (A)	46. (B)	47. (B)	48. (D)	49. (B)	50. (A)	51. (B)
52. (A)	53. (C)	54. (C)	55. (C)	56. (C)					

57. सुमेलित कीजिये? UP PCS– 2003

(अ) चन्द्रगुप्त		1. प्रियदर्शी
(ब) बिन्दुसार		2. सेन्ड्रोकोट्टस
(स) अशोक		3. अमित्रघाट
(द) चाणक्य		4. विष्णुगुप्त

	अ	ब	स	द
(A)	2	3	4	1
(B)	1	3	2	4
(C)	2	3	1	4
(D)	3	4	2	1

स्रोत–(i) लूसेंट सामान्यज्ञान-सुनीलकुमार सिंह, पेज–17, 18
(ii) प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख-परमेश्वरीलाल गुप्त, पेज–9

58. सूची I तथा सूची II को सुमेलित कीजिए– UP PCS– 2000

(अ) प्रद्योत		1. मगध
(ब) उदयन		2. वत्स
(स) प्रसेनजित		3. अवन्ति
(द) अजातशत्रु		4. कोसल

	अ	ब	स	द
(A)	1	2	3	4
(B)	4	3	2	1
(C)	3	2	4	1
(D)	4	1	3	2

स्रोत– (i) मेघदूतम् - दयाशंकर शास्त्री, पेज, अ,ब-112,113
(i) लूसेंट सामान्यज्ञान - सुनील कुमार सिंह, पेज– द-16, स-16

59. 'पौगण्डः' इत्यस्य कोऽर्थः? UGC 73 Jn–2017

(A) धनस्वामी (B) षोडशवर्षीयः
(C) न्यूनषोडशवर्षीयः (D) अष्टादशवर्षीयः

स्रोत–

60. चतुर्विंशतिहोरात्मकं संस्कृतरेडियोप्रसारणं करोति– DU M.Phil–2016

(A) केरलस्था चिन्मयमिशनफाउण्डेशनसंस्था
(B) हरिद्वारस्थं पतञ्जलियोगपीठम्
(C) पुड्डुचेरीस्था अरविन्दाश्रमसंस्था
(D) दिल्लीस्थं राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्

स्रोत–संस्कृत हिन्दी शब्दकोश- उमाप्रसाद पाण्डेय, पेज-579

61. षोडशं विश्वसंस्कृतसम्मेलनं समायोजितम्– DU M.Phil–2016

(A) दिल्लीनगरे (B) बैंकाकनगरे
(C) पेरिसनगरे (D) कोहिमानगरे

स्रोत– गूगल सर्च

62. 'मल्लनागघटितकान्तारसामोद इव विन्यासः' इत्यस्मिन् वाक्यांशे संकेतोऽस्ति– DU M.Phil–2016

(A) कामसूत्रस्य (B) रससूत्रस्य
(C) रसायनसूत्रस्य (D) ब्रह्मसूत्रस्य

स्रोत–

63. 2015 वर्षे 'पद्मविभूषणम्' इति पुरस्कारेण कः संस्कृतकविः सम्मानितः? JNU M. Phil/Ph. D–2015

(A) रमाकान्तशुक्लः (B) रामकरणशर्मा
(C) रामभद्राचार्यः (D) सत्यव्रतशास्त्री

स्रोत–

64. विश्वकर्मा माने जाते हैं– BHU MET– 2015

(A) कथाकार (B) गद्यकार
(C) पद्यकाव्यकार (D) शिल्पशास्त्र के उपदेशक

स्रोत–नाट्यशास्त्र (द्वितीयोऽध्याय)-ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज–126-138

65. महान् गीता का प्रथम उपदेश जिस भगवान् ने दिया था, वह थे– BHU MET– 2015

(A) याज्ञवल्क्य (B) मनु
(C) विवस्वान् (D) नारद

स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (4/1)-कृष्णकृपा श्रीमूर्ति, पेज–144

66. 'मत्स्यावतारस्य' उत्पत्ति अभवत्– AWES TGT– 2011, 2010

(A) वराहावतारस्य पश्चात् (B) जलप्रलयस्य पश्चात्
(C) रामावतारस्य पश्चात् (D) बुद्धावतारस्य पश्चात्

स्रोत–पुराण विमर्श - बलदेव उपाध्याय, पेज–173

67. इन्द्रस्य पत्नी का– AWES TGT– 2012

(A) इन्द्रा (B) इन्दिरा
(C) इन्द्राणी (D) इन्द्रयली

स्रोत–ऋक्-सूक्त-संग्रह - हरिदत्त शास्त्री, भू0पेज–11

57. (C) 58. (C) 59. (C) 60. (C) 61. (B) 62. (A) 63. (C) 64. (D) 65. (C) 66. (A) 67. (C)

68. भारते लेखनकलायाः आरम्भः– UK SLET– 2012
(A) 400 ईसा पूर्वम् (B) 200 ईसा पूर्वम्
(C) 500 ईसा पूर्वम् (D) 600 ईसा पूर्वम्
स्रोत–

69. लिच्छवि कुलदौहित्रत्वेन वर्णितः– UK SLET– 2012
(A) समुद्रगुप्तः (B) चाणक्यः
(C) स्कन्दगुप्तः (D) चन्द्रगुप्तः
स्रोत–प्राचीन भारत का इतिहास-सौरभ चौबे, पेज–265

70. अमरकोशे कति काण्डाः सन्ति? JNU M.Phil/Ph. D–2015
(A) 7 (B) 2
(C) 3 (D) 4
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज–601

71. अस्माकं राष्ट्रस्य ध्येयवाक्यम्.....अस्ति– AWES TGT– 2010
(A) वन्दे मातरम् (B) सत्यमेव जयते
(C) सर्वे भवन्तु सुखिनः (D) अद्य धर्मम् अस्तु
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-601

72. भिन्नं पदं चिनुत– AWES TGT– 2010
(A) ज्ञातवान् (B) चिन्तितवान्
(C) धनवान् (D) कारितवान्
स्रोत–

73. (A) संस्कृतम् (B) देवनागरी
(C) हिन्दी (D) मराठा
AWES TGT– 2010
स्रोत–

74. (A) केशवः (B) माधवः
(C) मधुकरः (D) गार्गी
AWES TGT– 2010
स्रोत–

75. रङ्गनाथः कस्य देवस्य वाचकः– AWES TGT– 2010
(A) ब्रह्मणः (B) गणेशस्य
(C) विष्णोः (D) शिवस्य
स्रोत–नित्यकर्म पूजा प्रकाश-लालबिहारी मिश्र, पेज–20

76. धर्मादि पुरुषार्थ से क्या तात्पर्य है? H–TET– 2014
(A) धर्म, अधर्म, ज्ञान, मोक्ष (B) धृति, क्षमा, दम, अस्तेय
(C) धर्म, अहिंसा, सत्य, मोक्ष (D) धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-वाचस्पति गैरोला, पेज–337

77. भारतीय महीनों के नाम किनसे सम्बद्ध है? H–TET– 2014
(A) राशियों से (B) नक्षत्रों से
(C) तिथियों से (D) इनमें से कोई नहीं
स्रोत–प्राचीन भारतीय संस्कृति-वीरेन्द्र कुमार सिंह, पेज-53

78. ग्रन्थादौ कृतस्य मङ्गलस्य फलं किम्– BHU AET– 2011
(A) दुःखनिवृत्तिः (B) ग्रन्थसमाप्तिः
(C) पुण्योत्पत्तिः (D) अपूर्वोत्पत्तिः
स्रोत–नैषधमहाकाव्यम् - देवनारायण मिश्र, पेज–32

79. निम्नलिखित में से कौन गुप्तकाल में अपना आयुर्विज्ञान विषयक रचना के लिए जाना जाता है– IAS– 1996
(A) सौमिल्ल (B) शूद्रक
(C) शौनक (D) सुश्रुत
स्रोत–प्राचीन भारत का इतिहास-सौरभ चौबे, पेज–295

80. प्राचीनकाले वेदाध्ययनं.......भवति स्म? BHU B.Ed– 2015
(A) गृहेषु (B) मन्दिरेषु
(C) गुरुकुलेषु (D) ग्रामेषु
स्रोत–

81. मिलान कीजिये– I.A.S.– 1996
(क) विशाखदत्त 1. चिकित्सा
(ख) वराहमिहिर 2. नाटक
(ग) चरक 3. खगोलविज्ञान
(घ) ब्रह्मगुप्त 4. गणित

	क	ख	ग	घ
(A)	1	3	4	2
(B)	2	1	3	4
(C)	2	3	1	4
(D)	3	4	1	2

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज– A-501, B-605, C-598, D-606

82. दस अवतारों में गणना नहीं होती है? UGC– 73 J– 2015
(A) कच्छप (B) गणेश
(C) राम (D) मत्स्य
स्रोत–पुराण विमर्श-बलदेव उपाध्याय, पेज–173

68. (A) 69. (C) 70. (C) 71. (B) 72. (C) 73. (B) 74. (D) 75. (C) 76. (D) 77. (A) 78. (B) 79. (D) 80. (C) 81. (C) 82. (B)

83. ख्रीष्टधर्मग्रन्थस्य 'न्यूटेस्टामेण्ट' (बाइबल) इत्यस्य संस्कृतभाषायां 'यीशुचरितम्' इति नाम्नाऽनुवादोऽकारि– DU M.Phil–2016

(A) वनेश्वरपाठकेन (B) परमानन्दपण्डितेन
(C) बसन्तगाडगिलेन (D) श्रीधरभास्करवर्णेकरेण

स्रोत–संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-7), पेज-13

84. 'साहित्य-अकादम्या 2014 तमस्य ख्रीष्टाब्दस्य कृते पुरस्कृतायाः कनकलोचनम्' इति रचनायाः प्रणेताऽस्ति– DU M.Phil–2016

(A) प्रभुनाथ द्विवेदी (B) हर्षदेवमाधवः
(C) हरिरामाचार्यः (D) एस0 सुब्बारावः

स्रोत– गूगल सर्च

85. 'वन्दे मातरम्' इति राष्ट्रगीतम् उद्धृतमस्ति? DU M.Phil–2016

(A) अथर्ववेदात् (B) विष्णुपुराणात्
(C) गीताञ्जलेः (D) आनन्दमठात्

संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-7), भू0 पेज-14,34

86. 2016 तमे ख्रीष्टाब्दे पद्मभूषणसम्मानेन सम्मानितः संस्कृत विद्वान् अस्ति– DU M.Phil–2016

(A) श्रीकृष्णस्वामी (B) रामानुजताताचार्यः
(C) शिवकुमारचट्टोपाध्यायः (D) वसन्तशास्त्री

स्रोत–गूगल सर्च

87. दूरदर्शनवार्त्ताप्रभागतः प्रसारितस्य 'वार्तावली' इत्यस्य संस्कृतकार्यक्रमस्य शुभारम्भोऽभूत– DU M.Phil–2016

(A) पञ्चदशाधिकद्विसहस्रतमे वर्षे जूनमासतः
(B) पञ्चदशाधिकद्विसहस्रतमे वर्षे जुलाईमासतः
(C) पञ्चदशाधिकद्विसहस्रतमे वर्षे जूनमासतः
(D) पञ्चदशाधिकद्विसहस्रतमे वर्षे दिसम्बरमासतः

स्रोत–गूगल सर्च

88. संस्कृतपाण्डुलिपीनां संग्रहार्थं शोधार्थं च प्रसिद्धं श्रीरणवीरशोधसंस्थानं स्थितमस्ति? DU M.Phil–2016

(A) पुणेनगरे (B) जम्मूनगरे
(C) बडौदानगरे (D) मुम्बईनगरे

स्रोत–संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (भाग-3) भू0 पेज–25

89. गोदावरी कस्मात् प्रदेशात् निर्गता? CVVET–2015

(A) कालिन्दगिरेः (B) नीलगिरेः
(C) नासिकात्र्यम्बकात् (D) हेमकूटात्

लूसेन्ट सामान्यज्ञान-सुनील कुमार सिंह, पेज–176

90. 'नैमिषारण्यं' कस्मिन् राज्ये वर्तते? CVVET–2015

(A) उत्तराखण्डे (B) हरियाणाराज्ये
(C) महाराष्ट्रे (D) उत्तरप्रदेशे

संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज–148

91. भारतसर्वकारस्य दैनन्दिनीम् अनुसरति– CVVET–2015

(A) आङ्ग्लकालगणनाम् (B) विक्रमकालगणनाम्
(C) दिल्लीकालगणनाम् (D) शककालगणनाम्

स्रोत–लूसेन्ट सामान्यज्ञान - सुनील कुमार सिंह, पेज–257

92. शिवोपदिष्ट सूत्रों का अपर नाम है? UGC 73 D–2015

(A) शिवोपनिषत्संग्रहः (B) शिवव्याप्तिः
(C) साम्भवसमावेशः (D) शिवपुराणम्

स्रोत–संस्कृतवाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-13), पेज–110-114

93. शिवदृष्टि नामक ग्रन्थ में श्लोको की संख्या है? UGC 73 D–2015

(A) 650 (B) 700
(C) 500 (D) 450

स्रोत–शिवदृष्टि - राधेश्याम चतुर्वेदी, पेज–1-298

94. इनमें से किस आयुर्वेदाचार्य ने तक्षशिला विश्वविद्यालय में शिक्षा प्राप्त की थी? UP PCS–2015

(A) धन्वन्तरि (B) वाग्भट
(C) चरक (D) जीवक

स्रोत–भारतीयशास्त्र और शास्त्रकार - मृदुला त्रिपाठी, पेज–95

95. पुलकेशिन के ऐहोल अभिलेख के लेखक रविकीर्ति ने स्वयं को निम्नांकित लेखकों के बराबर माना जाता है? UGC 06 D–2014

(1) बाणभट्ट (2) कालिदास
(3) भास (4) भारवि
(A) 1 और 3 (B) 2 और 4
(C) 2 और 3 (D) केवल 4

स्रोत–प्राचीन भारत का इतिहास - सौरभ चौबे, पेज–30

83. (A) 84. (A) 85. (D) 86. (B) 87. (A) 88. (B) 89. (C) 90. (D) 91. (D) 92. (D) 93. (B) 94. (C) 95. (B)

96. संस्कृत पत्रकारिता हेतु 'नारदपुरस्कार' कौन प्रदान करता है? BHU MET–2016

(A) दिल्ली संस्कृत अकादमी (B) उत्तरप्रदेश संस्कृत संस्थान
(C) राजस्थान संस्कृत अकादमी (D) कालिदास अकादमी

स्रोत–गूगल सर्च

97. संस्कृत हेतु 'खानखाना' पुरस्कार कौन प्रदान करता है? BHU MET–2016

(A) कालिदास अकादमी (B) उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान
(C) दिल्ली संस्कृत अकादमी (D) जम्मू कश्मीर संस्कृत संस्थान

स्रोत–गूगल सर्च

98. 'स्वरमङ्गला' संस्कृत पत्रिका है? BHU MET–2016

(A) राजस्थान संस्कृत अकादमी की
(B) दिल्ली संस्कृत अकादमी की
(C) उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान की
(D) हरियाणा संस्कृत अकादमी की

स्रोत–संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-7), भू0 पेज-20

96. (B) 97. (C) 98. (A)

भाग-2

भारतीयदर्शन

01 सांख्यकारिका

1. (i) सांख्यदर्शन के प्रणेता मुनि हैं– UP PGT–2005
(ii) सांख्यदर्शन के प्रवर्तक हैं– BHU-B.Ed–2014
(iii) सांख्यदर्शन के जनक? BHU MET–2008, 2010, 2013,
(iv) 'सांख्यशास्त्रस्य' प्रवर्तकः कः अस्ति–DSSSB PGT–2014
(v) सांख्यदर्शनस्य आद्यप्रवर्तक कः? BHU AET–2011, UP PGT–2005, UGC–73 J–2015, K-SET–2014, UGC 06 D–2006, UGC D–2007, J–2009, RPSC SET–2010, GJ-SET–2003
(A) भारद्वाजमुनिः (B) कपिलमुनिः
(C) बादरायणमुनिः (D) भौमिकमुनिः
स्रोत–सांख्यकारिका – राकेश शास्त्री, भू. पृष्ठ- 24

2. (i) सांख्यकारिकायाः कर्तुः नाम अस्ति–
(ii) 'सांख्यकारिका' के लेखक/रचयिता/कारिकाकार/रचनाकार कौन हैं– GJ SET–2007, 2004
(iii) सांख्यसार ग्रन्थ के कर्ता हैं– UP PGT-2000, 2009
(iv) सांख्यकारिकायाः कर्ता विद्यते? BHU MET-2010, UGC 73 J–2016, BHU AET–2010, 2011, G GIC–2015
(A) कपिल (B) वाचस्पतिमिश्र
(C) गौडपाद (D) ईश्वरकृष्ण
स्रोत–सांख्यकारिका – राकेश शास्त्री, भू. पृष्ठ- 31

3. सांख्यदर्शन, योगदर्शन से किस विषय में भिन्न होता है– UGC-73 J–2010
(A) तत्त्वविषय में (B) प्रमाणविषय में
(C) पुरुषविषय में (D) ईश्वरविषय में
स्रोत–सांख्यकारिका – राकेश शास्त्री, भू. पृष्ठ- 14

4. गौडपादभाष्य जिस पर है, वह ग्रन्थ है– BHU MET–2010, 2014
(A) तर्कसंग्रह (B) वेदान्तदर्शन
(C) सांख्यकारिका (D) मीमांसादर्शन
स्रोत–सांख्यकारिका – राकेश शास्त्री, भू. पृष्ठ- 33

5. सांख्यकारिकासु छन्दः– BHU AET–2011
(A) अनुष्टुप् (B) आर्या
(C) उपजातिः (D) वसन्ततिलका
स्रोत–सांख्यकारिका – राकेश शास्त्री, भू. पृष्ठ- 32

6. (i) 'सांख्य' के प्रथम आचार्य कौन हैं–
(ii) सांख्यशास्त्रस्य प्रथमः प्रवक्ता कः अस्ति– BHU AET–2010, 2011
(A) कपिलः (B) व्यासः
(C) आसुरिः (D) पञ्चशिखः
स्रोत–सांख्यकारिका – राकेश शास्त्री, भू. पृष्ठ- 25

7. (i) 'षष्टितन्त्रं' किम्– UGC-25 J–2013, BHU MET–2016
(ii) 'षष्टितन्त्र' शब्द किससे सम्बद्ध है?
(A) न्यायम् (B) वैशेषिकम्
(C) सांख्यम् (D) वेदान्तम्
स्रोत–सांख्यकारिका – राकेश शास्त्री, भू. पृष्ठ- 25

8. (i) 'सांख्य-प्रवचनभाष्य' के कर्ता/प्रणेता कौन हैं–
(ii) सांख्यप्रवचनभाष्य के रचयिता हैं– UGC-73 D–1994, 1998, 1999, BHU MET–2015
(A) विज्ञानभिक्षु (B) शङ्कराचार्य
(C) पञ्चशिख (D) उत्पलाचार्य
स्रोत–सांख्यकारिका – राकेश शास्त्री, भू. पृष्ठ- 28

9. महर्षिकपिलः कस्य दर्शनस्य प्रतिपादकः अस्ति– AWES TGT–2010
(A) न्यायस्य (B) सांख्यस्य
(C) योगस्य (D) वेदान्तस्य
स्रोत–सांख्यकारिका – राकेश शास्त्री, भू. पृष्ठ- 19

10. सांख्यसूत्राणां रचयिता कः? BHU- Sh.ET.–2011
(A) कपिलः (B) पञ्चशिखः
(C) आसुरिः (D) पतञ्जलिः
स्रोत–सांख्यकारिका – राकेश शास्त्री, भू. पृष्ठ- 25

1. (B)	2. (D)	3. (D)	4. (C)	5. (B)	6. (A)	7. (C)	8. (A)	9. (B)	10. (A)

11. सांख्यदर्शन कहा जाता है– UP PGT–2013

(A) अद्वैतवादी (B) त्रैतवादी
(C) द्वैताद्वैतवादी (D) द्वैतवादी

स्रोत–भारतीय दर्शन – चन्द्रधर शर्मा, पृष्ठ- 139/140

12. निम्नलिखित में से कौन भारतीय दर्शन की आरम्भिक विचारधारा है– UP PCS–1994, 1991

(A) सांख्य (B) वैशेषिक
(C) कर्ममीमांसा (D) योग

स्रोत–सांख्यकारिका – राकेश शास्त्री, भू० पृष्ठ- 16

13. सांख्यकारिका की रचना का उद्देश्य है– BHU AET–2010

(A) दुःख-प्राप्ति के उपाय का वर्णन
(B) दुःखनिवृत्ति के उपाय का वर्णन
(C) इहलौकिक सुख के उपाय का वर्णन
(D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-1) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 01

14. निम्नलिखित में से कौन सांख्य का आचार्य नहीं है– BHU AET–2010

(A) कपिल (B) आसुरि
(C) ईश्वरकृष्ण (D) व्यास

स्रोत–सांख्यकारिका – राकेश शास्त्री, भू. पृष्ठ- 30

15. (i) ईश्वरकृष्ण किस दर्शन से सम्बन्धित हैं
(ii) ईश्वरकृष्ण का सम्बन्ध किस दर्शन से है– BHU AET–2010, 2011

(A) न्याय (B) सांख्य
(C) वैशेषिक (D) योग

स्रोत–सांख्यकारिका – राकेश शास्त्री, भू. पृष्ठ- 29

16. ईश्वरकृष्ण का समय क्या माना गया है– BHU AET–2010

(A) 300 ई० (B) 500 ई०
(C) 600 ई० (D) 400 ई०

स्रोत–भारतीय दर्शन – चन्द्रधर शर्मा, पृष्ठ- 140

नोट– ईश्वरकृष्ण के समय के विषय में विद्वानों में मतभेद है।

17. (i) 'सांख्यकारिका' के चीनी अनुवाद का क्या नाम है–
(ii) सांख्यकारिकायाः अपरं नाम अस्ति– BHU AET–2010, GJ SET–2013

(A) सुवर्णसप्ततिः (B) रजतसप्ततिः
(C) ताम्रसप्ततिः (D) लौहसप्ततिः

स्रोत–(I) सांख्यकारिका–राकेश शास्त्री, भू. पृष्ठ- 32
(II) सांख्यकारिका–सन्तनारायण श्रीवास्तव, भू. पृष्ठ- xviii

18. (i) ईश्वरकृष्ण किस ग्रन्थ के लेखक हैं?
(ii) ईश्वरकृष्ण ने किस ग्रन्थ की रचना की है?
(iii) ईश्वरकृष्ण की रचना कौन-सी है–
(iv) ईश्वरकृष्णप्रणीतो ग्रन्थः .... वर्तते–
(v) ईश्वरकृष्णस्य का कृतिः वर्तते? BHU AET–2011, BHU MET–2008, UGC 73 J–2008, GJ SET–2011

(A) सांख्यतत्त्वकौमुदी (B) सांख्यकारिका
(C) न्यायमञ्जरी (D) सर्वदर्शनसंग्रह

स्रोत–सांख्यकारिका – राकेश शास्त्री, भू. पृष्ठ- 31

19. सांख्य का आचार्य कौन नहीं हैं– BHU AET–2011

(A) कपिल (B) आसुरि
(C) पञ्चशिख (D) शङ्कर

स्रोत–सांख्यकारिका – राकेश शास्त्री, भू. पृष्ठ- 30

20. प्रकृति-पुरुष की व्याख्या वाला दर्शन है– BHU MET–2015

(A) वेदान्त (B) सांख्य
(C) न्याय (D) मीमांसा

स्रोत–सांख्यकारिका – राकेश शास्त्री, भू. पृष्ठ- 15

21. प्राचीन सांख्यदर्शन में किसका महत्त्वपूर्ण योगदान है– MP-PCS–1997

(A) कपिल का (B) गौतम का
(C) नागार्जुन का (D) चार्वाक का

स्रोत–सांख्यकारिका – राकेश शास्त्री, भू. पृष्ठ- 30

22. निम्नाङ्कित में से कौन सांख्यकारिका से सम्बद्ध नहीं है? BHU MET–2016

(A) गौडपादभाष्य (B) सांख्यतत्त्वकौमुदी
(C) विषमस्थलटिप्पणी (D) भामती टीका

स्रोत–सांख्यकारिका–सन्तनारायण श्रीवास्तव, भू. पृष्ठ-xviii/xix

11. (D) 12. (A) 13. (B) 14. (D) 15. (B) 16. (D) 17. (A) 18. (B) 19. (D) 20. (B) 21. (A) 22. (D)

23. (i) 'सांख्यतत्त्वकौमुदी' के प्रणेता कौन हैं–
(ii) 'सांख्यतत्त्वकौमुदी' के लेखक/रचयिता हैं?
(iii) 'सांख्यतत्त्वकौमुदी' केन विरचिता? BHU MET–2011, 2012, BHU AET–2010, UGC 73 D–1996, 1997

(A) वाचस्पतिमिश्र (B) केशवमिश्र
(C) आद्याप्रसादमिश्र (D) कपिलमुनि

स्रोत–सांख्यकारिका – सन्तनारायण श्रीवास्तव, भू. पृष्ठ- xviii

24. 'सांख्यप्रवचनभाष्य' है– UGC-73 D–1996

(A) ईश्वरकृष्ण का (B) उत्पलदेव का
(C) वाचस्पतिमिश्र का (D) विज्ञानभिक्षु का

स्रोत–सांख्यकारिका – राकेश शास्त्री, भू. पृष्ठ- 28

25. कपिलमुनि द्वारा प्रतिपादित दार्शनिक प्रणाली है– UP PCS–1998

(A) पूर्वमीमांसा (B) सांख्यदर्शन
(C) न्यायदर्शन (D) उत्तरमीमांसा

स्रोत–सांख्यकारिका – राकेश शास्त्री, भू. पृष्ठ- 19

26. सांख्यसूत्रों के रचयिता कौन हैं– BHU MET–2009

(A) बादरायण (B) कपिल
(C) गौतम (D) कणाद

स्रोत–सांख्यकारिका – राकेश शास्त्री, भू. पृष्ठ- 25

27. सांख्यकारिका के टीकाकार हैं– BHU AET–2010

(A) वाचस्पतिमिश्र (B) कपिल
(C) पाणिनि (D) मेधातिथि

स्रोत–सांख्यकारिका – राकेश शास्त्री, भू. पृष्ठ- 35

28. वाचस्पतिमिश्र किस ग्रन्थ के टीकाकार हैं– BHU AET–2011

(A) सांख्यकारिका (B) मीमांसान्यायप्रकाश
(C) याज्ञवल्क्यस्मृति (D) मनुस्मृति

स्रोत–सांख्यकारिका – राकेश शास्त्री, भू. पृष्ठ- 35

29. सांख्यकारिका ग्रन्थ का नामान्तर है–UGC–73 J–2015

(A) सांख्यसूत्रम् (B) सांख्यदर्शनम्
(C) सांख्यसप्ततिः (D) प्रकृतिपुरुषसूत्रम्

स्रोत–सांख्यकारिका – राकेश शास्त्री, भू. पृष्ठ- 32

30. सांख्यकारिका में कितनी कारिकायें हैं? UGC-73 J–2015

(A) 76 (B) 78
(C) 70 (D) 75

स्रोत–सांख्यकारिका – सन्तनारायण श्रीवास्तव, भू. पृष्ठ- xvii

31. (i) सांख्याभिमत में कितने तत्त्व 'प्रकृति और विकृति' हैं–
(ii) सांख्यमते प्रकृतिविकृतयः कति भवन्ति–
(iii) सांख्यदर्शन में प्रकृतिविकृति तत्त्व कितने हैं।
(iv) प्रकृतिविकृतयो भवन्ति– UP PGT–2000,
(v) प्रकृतिविकृत्यात्मकतत्त्वानि कति – BHU MET–2011, 2012 UGC-73 D–2005, UGC-25 D–2004, BHU AET–2011, K SET–2014

(A) तीन (3) (B) पाँच (5)
(C) सात (7) (D) ग्यारह (11)

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-3) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 8

32. (i) 'सांख्यकारिका' में कुल कितने तत्त्वों का विवेचन हुआ है– UP PGT–2002, UGC-25 D–2014,
(ii) सांख्यदर्शने कति तत्त्वानि सन्ति–
(iii) सांख्यकारिकायां कति तत्त्वानि निरूपितानि–
(iv) सांख्य के अनुसार तत्त्वों की संख्या कितनी है–
(v) सांख्यैः स्वीकृतानि तत्त्वानि कति सन्ति– J–2000, 2004, 2012, 2014, UGC-73 D–2006, 2013 CVVET–2017, RPSC ग्रेड -I PGT–2014, BHU MET–2008, 2014, JNU MET–2015, K SET–2013, G GIC–2015

(A) पाँच (5) (B) दश (10)
(C) बीस (20) (D) पच्चीस (25)

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-3) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 8

33. सांख्यदर्शने सूक्ष्मशरीरमस्ति– JNU-M Phil/Ph. D–2014

(A) षोडशतत्त्वानां समुदायः
(B) सप्तदशतत्त्वानां समुदायः
(C) अष्टादशतत्त्वानां समुदायः
(D) एकोनविंशतितत्त्वानां समुदायः

स्रोत–सांख्यकारिका (का0-40)–राकेश शास्त्री, पृष्ठ-116, 117

23. (A) 24. (D) 25. (B) 26. (B) 27. (A) 28. (A) 29. (C) 30. (C) 31. (C) 32. (D) 33. (C)

34. (i) सांख्यदर्शन के मत से सूक्ष्मशरीर का निर्माण हुआ है–
(ii) सांख्यदर्शन के अनुसार सूक्ष्मशरीर में कितने अवयव हैं?
(iii) सूक्ष्मशरीर में कितने तत्त्वों का समुदाय है?
(iv) सांख्यदर्शने सूक्ष्मशरीरं कति तत्त्वात्मकम्?
(v) सांख्य मे सूक्ष्मशरीर की रचना में कितने अवयव हैं?
UP PGT–2004, 2011, UGC-25 J–2012, UGC 73 D–2015

(A) 17 तत्त्वों से (B) 20 तत्त्वों से
(C) 18 तत्त्वों से (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–सांख्यकारिका (का-40)–राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 116

35. भावैरधिवासितं लिङ्गम् अस्यां कारिकायां प्रतिपादितम्– CCSUM-Ph.D–2016

(A) स्थूलशरीरस्य (B) सूक्ष्मशरीरस्य
(C) भावशरीरस्य (D) अण्डजशरीरस्य

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-40)– राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 116

36. सांख्यदर्शन में मोक्ष कितने प्रकार का होता है– UGC 73 D–2005

(A) द्विविधः (B) त्रिविधः
(C) चतुर्विधः (D) पञ्चविधः

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-68)– राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 173

37. सांख्यमत में मानुषक सर्ग हैं– UGC 73 J–2009

(A) नानाविधः (B) त्रिविधः
(C) चतुर्विधः (D) एकविधः

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-53)– राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 152

38. (i) करण कितने प्रकार के होते हैं UGC-73 J–2013,
(ii) सांख्यानुसार करण हैं– BHU AET–2010
(iii) सांख्यकारिकानुसारं करणं कतिविधम्? UGC 25 Jn–2017

(A) 13 (B) 14
(C) 16 (D) 20

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-32)– राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 98

39. (i) सांख्यदर्शने सिद्धिः कतिधा प्रदर्शिता–
(ii) सिद्धियों के कितने भेद हैं–
BHU AET–2010, 2011, UGC-73 J–1991

(A) अष्टधा (B) नवधा
(C) दशधा (D) एकादशधा

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-47)– राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 134

40. अविद्यायाः कति भेदाः प्रदर्शिताः–
BHU AET–2010, UGC-25 D–2001

(A) अष्ट (B) नव
(C) दश (D) एकादश

स्रोत–सांख्यकारिका – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 136

41. तमसः कति भेदाः प्रतिपादिताः– BHU AET–2010, 2011

(A) अष्ट (B) नव
(C) दश (D) एकादश

स्रोत–सांख्यकारिका – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 136

42. (i) तुष्टयः कतिविधाः– BHU AET–2010, 2011,
(ii) तुष्टिभेदाः सन्ति– UGC 25 D–2002,
(iii) तुष्टि के प्रकार हैं– J–2006

(A) नवविधाः (B) द्विविधाः
(C) त्रिविधाः (D) चतुर्विधाः

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-47) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 134

43. (i) सांख्यकारिका मे तामिस्र के कितने भेद हैं?
(ii) तामिस्रः कतिधा– BHU AET–2010, 2011,
(iii) तामिस्रभेदाः सन्ति– BHU MET–2016

(A) सप्तदशधा (B) अष्टादशधा
(C) एकोनविंशतिधा (D) विंशतिधा

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-48) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 135

44. (i) इन्द्रियों की संख्या कितनी है–
(ii) इन्द्रियवधाः कति– BHU AET–2010, 2011

(A) दश (B) एकादश
(C) द्वादश (D) त्रयोदश

स्रोत–सांख्यकारिका – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 78

45. आध्यात्मिक्यः तुष्टयः कति– BHU AET–2010

(A) तिस्रः (B) चतस्रः
(C) पञ्च (D) षट्

स्रोत–सांख्यकारिका (का0-50) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 143

46. बाह्याः तुष्टयः कति– BHU AET–2010

(A) द्वौ (B) त्रयः
(C) चत्वारः (D) पञ्च

स्रोत–सांख्यकारिका (का0-50) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 143/144

34. (C) 35. (B) 36. (A) 37. (D) 38. (A) 39. (A) 40. (A) 41. (A) 42. (A) 43. (B) 44. (B) 45. (B) 46. (D)

47. पञ्चविंशति तत्त्वों की संख्या किस दर्शन में है– BHU MET–2010

(A) न्यायदर्शन (B) वेदान्तदर्शन
(C) सांख्यदर्शन (D) चार्वाकदर्शन

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-03) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 08

48. 'एवं तत्त्वाभ्यासान्नास्मि न मे नाहमित्यपरिशेषम्'– इत्यस्मिन् वाक्ये तत्त्वेति शब्दस्य अभिप्रायः– D.U-M. Phil–2016

(A) वेदार्थः (B) प्रधानम्
(C) पञ्चविंशतितत्त्वानि (D) मनस्तत्त्वम्

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-64) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 167

49. निम्नांकित तालिका-1 में सांख्यकारिका के अनुसार कुछ सम्प्रत्यय एवं तालिका-2 में उनके भेद अंकित हैं। उनकी सहायता से सही सुमेलित विकल्प चुनें– UP PGT–2005

तालिका-1	तालिका-2
(क) प्रकृतिः	(i) अनेकः
(ख) प्रकृति-विकृतिः	(ii) षोडश
(ग) विकृतिः	(iii) एकः
(घ) न प्रकृतिः न विकृतिः	(iv) सप्त

	क	ख	ग	घ
(A)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(B)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)
(C)	(iii)	(iv)	(ii)	(i)
(D)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-3) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 8

50. (i) सांख्यकारिका के अनुसार दुःख कितने हैं –
(ii) सांख्यमते दुःखम्– BHU AET–2011

(A) त्रिविधम् (B) द्विविधम्
(C) पञ्चविधम् (D) षड्विधम्

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-1) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 1

51. 'व्यक्त'–शब्देन कियन्ति तत्त्वानि सांख्येऽभिप्रेतानि– BHU AET–2011

(A) एकविंशतिः (B) द्वाविंशतिः
(C) त्रयोविंशतिः (D) चतुर्विंशतिः

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-11) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 38

52. अव्यक्तशब्देन कतिविधं तत्त्वं सांख्येऽभिप्रेतम्– BHU AET–2011

(A) एकविधा (B) द्विविधा
(C) त्रिविधा (D) चतुर्विधा

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-3) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 8

53. (i) केवलं विकारात्मकानि तत्त्वानि– BHU MET–2016
(ii) सांख्यदर्शन के अनुसार विकृति तत्त्व कितने हैं?
(iii) सांख्यमते विकृतयः कति सन्ति– BHU AET–2011, UGC-25 D–2004

(A) षोडश (B) सप्तदश
(C) अष्टादश (D) एकोनविंशतिः

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-3) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 8

54. प्रकृतिविकृत्यनात्मकं तत्त्वम्– BHU AET–2011

(A) एकविधम् (B) द्विविधम्
(C) त्रिविधम् (D) चतुर्विधम्

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-3) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 8

55. बुद्धेः सात्त्विकं रूपं कतिविधम्– BHU AET–2011

(A) द्विविधम् (B) त्रिविधम्
(C) चतुर्विधम् (D) पञ्चविधम्

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-23) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 73

56. ऐश्वर्यं कतिविधम्– BHU AET–2011

(A) सप्तविधम् (B) अष्टविधम्
(C) नवविधम् (D) दशविधम्

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-23) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 76

57. बुद्धेः तामसं रूपं कतिविधम्– BHU AET–2011

(A) चतुर्विधम् (B) पञ्चविधम्
(C) षड्विधम् (D) सप्तविधम्

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-23) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 73

47. (C) 48. (C) 49. (C) 50. (A) 51. (C) 52. (A) 53. (A) 54. (A) 55. (C) 56. (B) 57. (A)

58. बुद्धीन्द्रियाणि– BHU AET–2011

(A) त्रीणि (03) (B) षट् (06)
(C) पञ्च (05) (D) अष्टौ (08)

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-26) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 82

59. कर्मेन्द्रियाणि– BHU AET–2011

(A) पञ्च (05) (B) षट् (06)
(C) सप्त (07) (D) अष्टौ (08)

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-26) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 82

60. विपर्ययभेदाः– BHU AET–2011

(A) पञ्च (05) (B) षट् (06)
(C) सप्त (07) (D) अष्टौ (08)

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-47) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 134

61. अशक्तिभेदाः– BHU AET–2011

(A) पञ्चविंशतिः (25) (B) षड्विंशतिः (26)
(C) सप्तविंशतिः (27) (D) अष्टाविंशतिः (28)

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-47) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 135

62. मोहभेदाः– BHU AET–2011

(A) पञ्च (05) (B) षट् (06)
(C) सप्त (07) (D) अष्टौ (08)

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-48) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 136

63. (i) महामोह कितने प्रकार के हैं–
(ii) महामोहभेदाः– BHU AET–2010, 2011

(A) दश (10) (B) एकादश (11)
(C) द्वादश (12) (D) त्रयोदश (13)

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-48) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 137

64. (i) सांख्यकारिका के अनुसार बाह्यकरण कितने हैं?
(ii) सांख्यकारिकानुसारं बाह्यकरणानि कियन्ति?
BHU MET–2016, UGC 73 Jn–2017

(A) 3 (B) 6
(C) 11 (D) 10

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-33) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 101

65. (i) अन्धतामिस्रभेदाः–BHU AET–2011, MH SET–2011
(ii) सांख्यदर्शनरीत्या अन्धतामिस्त्रः कतिविधः?

(A) अष्टादश (18) (B) ऊनविंशतिः (19)
(C) विंशतिः (20) (D) एकविंशतिः (21)

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-48) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 135

66. (i) सांख्यमत में 'अन्तःकरण' हैं– UP GDC–2008
(ii) 'अन्तःकरणं' कतिविधं भवति–UGC 25 D–2004,
(iii) सांख्यदर्शने अन्तःकरणं कतिविधम्– J–2013
BHU MET–2012, 2011 BHU AET–2012, GJ SET–2014

(A) एकविधम् (B) द्विविधम्
(C) त्रिविधम् (D) त्रयोदशविधम्

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-33) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 101

67. (i) सांख्यशास्त्र में तन्मात्रायें हैं– UGC-73 D–1991
(ii) तन्मात्राएँ कितनी हैं– BHU MET–2012

(A) पाँच (B) सात
(C) दश (D) चार

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-24)–राकेश शास्त्री, पृष्ठ-77-78

68. सांख्यदर्शनानुसारं प्रकृतिविकृतिस्वरूपाणि सप्त कानि सन्ति? UGC 73 Jn–2017

(A) प्रकृतिपुरुषपञ्चभूतानि (B) महत्पुरुषपञ्चतन्मात्राणि
(C) महदहङ्कारपञ्चभूतानि (D) महदहङ्कारपञ्चतन्मात्राणि

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-3) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 8

69. विशुद्धं केवलं ज्ञानं कस्माद् उत्पद्यते? K-SET–2014

(A) दृष्टात् (B) व्यक्तात्
(C) अनुमानात् (D) तत्त्वाभ्यासात्

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-64) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 167

70. सांख्यकारिका के अनुसार वायु के कितने भेद हैं?
BHU MET–2016

(A) 2 (B) 3
(C) 4 (D) 5

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-29) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 89

58. (C) 59. (A) 60. (A) 61. (D) 62. (D) 63. (A) 64. (D) 65. (A) 66. (C) 67. (A)
68. (D) 69. (D) 70. (D)

71. निम्नांकित में से नौ भेद किसके हैं–BHU AET–2010

(A) अविद्या (B) तुष्टि
(C) सिद्धि (D) अशक्ति

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-47) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 134

72. (i) 'बुद्धिसर्गः' कतिविधो भवति – BHU AET–2011, (ii) 'प्रत्ययसर्गः' कतिविधः–UGC-25 J–2007, 2012, (iii) प्रत्ययसर्गो अस्ति– D–2014, CCSUM Ph. D–2016 (iv) प्रत्ययसर्गस्य भेदाः भवन्ति? HAP–2016

(A) त्रिविधः (B) चतुर्विधः
(C) पञ्चविधः (D) षड्विधः

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-46) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 132

73. समष्टिरूपेण 'प्रत्ययसर्गः' कतिविधः – UGC-25 D–2013

(A) पञ्चाशद्विधः (B) नवविधः
(C) शतविधः (D) सप्तविधः

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-46) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 131

74. सांख्यानुसारं नर्तकी वर्तते? UGC 25 J–2013

(A) प्रकृतिः (B) माया
(C) सर्गः (D) मनः

स्रोत–सांख्यकारिका –(का.-59)-राकेश शास्त्री, पृष्ठ-160

75. भौतिकः सर्गः कतिविधो भवति–UGC-25 D–2013

(A) चतुर्दशविधः (B) पञ्चविधः
(C) अष्टविधः (D) एकविधः

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-53) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 153

76. 'कैवल्यं' सांख्यमते कतिविधम्– UGC-25 D–2010, HAP–2016

(A) द्विविधम् (B) त्रिविधम्
(C) एकविधम् (D) बहुविधम्

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-68) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 173

77. सर्वसम्भवाभावात् कस्य सिद्धेः हेतुः अस्ति– UGC 73 Jn–2017

(A) प्रकृतेः (B) सत्कार्यवादस्य
(C) गुणानाम् (D) पुरुषस्य

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-9) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 29

78. दुःखत्रय किस दर्शन से सम्बन्धित है–

(A) जैनदर्शन से (B) बौद्धदर्शन से
(C) सांख्यदर्शन से (D) वैशेषिकदर्शन से

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-1) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 1

79. आध्यात्मिकं दुःखम्– BHU AET–2011

(A) एकविधम् (B) द्विविधम्
(C) त्रिविधम् (D) चतुर्विधम्

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-1) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 1

80. आधिभौतिकं दुःखं सांख्यमतेन उदाहियते– UGC-25 D–2013

(A) ज्वरातिसारादुत्पन्नं दुःखम्
(B) स्वजनवियोगाप्रियजनसंयोगजन्यं दुःखम्
(C) सर्पादिसमुद्भवं दुःखम्
(D) भूतप्रेतादिवशाज्जायमानं दुःखम्

स्रोत–सांख्यकारिका – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 02

81. शारीरिक दुःख होता है– UGC-25 J–2003

(A) आध्यात्मिक (B) आधिभौतिक
(C) आधिदैविक (D) आत्मिक

स्रोत–सांख्यकारिका – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 01

82. 'सांख्यशास्त्रे भूकम्पझञ्झावातादेश्च यद्दुःखं जायते' तत् किमित्युच्यते– DSSSB-PGT–2014

(A) आध्यात्मिकम् (B) आधिभौतिकम्
(C) आधिदैविकम् (D) आकस्मिकम्

स्रोत–सांख्यकारिका – राकेश शास्त्री, भू० पृष्ठ- 38, 02

83. दुःखत्रयाभिघाते सांख्यसिद्धान्तः कस्मात् श्रेयान् हेतुः– UGC 25 J–2016

(A) आर्षसिद्धान्तात्
(B) नित्यत्वात्
(C) व्यक्ताव्यक्तज्ञविज्ञानात्
(D) ब्रह्मज्ञानपरकात्

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-02)–राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 05, 06

71. (B)	72. (B)	73. (A)	74. (A)	75. (A)	76. (A)	77. (B)	78. (C)	79. (B)	80. (C)
81. (A)	82. (C)	83. (C)							

84. **(i) सांख्यकारिकामतेन प्रमाणानां संख्या अस्ति**
(ii) सांख्य के अनुसार कितने प्रमाण मान्य हैं?
(iii) सांख्यमत में प्रमाणों की संख्या कितनी है?
(iv) सांख्यस्वीकृतानि प्रमाणानि–
(v) सांख्य के अनुसार प्रमाणों की संख्या है–
(vi) सांख्यकारिका के अनुसार प्रमाण हैं?
(vii) सांख्यदर्शनानुसारं प्रमाणानां संख्या अस्ति–
(viii) सांख्यदर्शने प्रमाणानि सन्ति?
(ix) सांख्यमते प्रमाणमिष्टम्–
MH SET–2016, UP PGT–2002, 2004, DSSSB PGT–2014, BHU MET–2009, 2013, 2014, BHU AET-2010, 2011, UGC-73 D–1992, J-1999, 2010, 2013, D–1999, 2009, UP-GIC-2015, UGC-25 D–1999, 2001, 2015, J–1994, 1995, 2001, J–2008 2002, 2012, 2014, GJ SET–2004, 2007

(A) 4 (B) 5
(C) 3 (D) 2

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-04) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 12

85. **(i) सांख्य के अनुसार प्रमाण हैं– UP PGT–2010,**
(ii) सांख्यदर्शने कानि प्रमाणानि स्वीकृतानि?
(iii) सांख्याभिमतं प्रमाणत्रयं वर्तते– UK TET–2011, UGC 25 J–2013, UGC 73 Jn–2017

(A) प्रत्यक्ष, अनुमान, अर्थापत्ति
(B) प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान
(C) प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द
(D) प्रत्यक्ष, उपमान, शब्द

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-04) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ-12

86. **''त्रिविधमनुमानमिष्टम्'–यह किसका मत है– UGC-73, J–2008**

(A) मीमांसकानाम् (B) सांख्यानाम्
(C) नैयायिकानाम् (D) भाट्टानाम्

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-05) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 16

87. **(i) 'त्रिविधं प्रमाणमिष्टम्' - कथन प्राप्त होता है–**
(ii) 'त्रिविधं प्रमाणमिष्टं' इति कथनं प्राप्यते– UP PGT–2011, UP GDC–2012

(A) अर्थसंग्रहे (B) प्रमाणवार्तिके
(C) सांख्यकारिकायाम् (D) तर्कभाषायाम्

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-04) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 12

88. **(i) सांख्य के अनुसार अनुमान कितने माने गये हैं–**
(ii) सांख्यों का अनुमान है– UGC-25 S–2013,
(iii) सांख्यमते अनुमानस्य विभागाः सन्ति– UGC-73 J–2011, BHU AET–2010, BHU MET–2011, 2012, MGKV Ph. D–2016

(A) चतुर्विधम् (B) त्रिविधम्
(C) पञ्चविधम् (D) षड्विधम्

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-05) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 16

89. **सांख्यमत में प्रमाण हैं– दृष्ट, अनुमान और...... UGC-73 D–2011**

(A) उपमान (B) आप्तवचन
(C) अर्थापत्ति (D) अनुपलब्धि

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-04) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 12

90. **(i) त्रिविध प्रमाण किसे अभीष्ट है– UGC-25 J–2009,**
(ii) त्रिविधं प्रमाणं विद्यते– UGC-73 D–2012,
(iii) त्रिविधं प्रमाणम् इष्टम्– J–2013

(A) न्याय को (B) मीमांसा को
(C) सांख्य को (D) बौद्ध को

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-04) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 12

91. **'दृष्टवदानुश्रविकः' किससे सम्बद्ध है– BHU MET–2008, 2013**

(A) न्याय से (B) वेदान्त से
(C) सांख्य से (D) योग से

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-02) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 05

92. **''प्रमेयसिद्धिः प्रमाणाद्धि'' को बताने वाला ग्रन्थ है– BHU MET–2014**

(A) तर्कसंग्रह (B) वेदान्तसार
(C) सांख्यकारिका (D) अर्थसंग्रह

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-04) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 12

84. (C) 85. (C) 86. (B) 87. (C) 88. (B) 89. (B) 90. (C) 91. (C) 92. (C)

93. प्रमाणात् कस्य सिद्धिः भवति– BHU AET–2010

(A) प्रमाणस्य (B) प्रमेयस्य
(C) उभयोः (D) नोभयोः

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-04) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 12

94. (i) 'तल्लिङ्गलिङ्गिपूर्वकं' किम् अभिप्रेतम्–
(i) 'तल्लिङ्गलिङ्गिपूर्वकम्' लक्षणमिदं कस्य विद्यते? BHU AET–2010, 2011, UGC 25 Jn–2017

(A) प्रत्यक्षम् (B) अनुमानम्
(C) उपमानम् (D) शब्दः

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-05) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 16

95. कस्मात् प्रमेयसिद्धिः भवति– BHU AET–2011

(A) दृष्टात् (B) अनुमानात्
(C) आप्तवचनात् (D) प्रमाणात्

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-04) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 12

96. (i) सांख्यदर्शन में 'प्रतिविषयाध्यवसायः' किसका लक्षण है? BHU AET–2011, UGC 73 D–2015
(ii) प्रतिविषयाध्यवसायः– RPSC SET–2013-14
(ii) प्रतिविषयाध्यवसायो दृष्टम् इत्यत्र 'दृष्टं' पदेन किमुक्तम्?

(A) प्रत्यक्षम् (B) अनुमानम्
(C) आगमः (D) ऐहित्यम्

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-05) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 16

97. त्रिविधमाख्यातम्– BHU AET–2011

(A) प्रत्यक्षम् (B) अनुमानम्
(C) शब्दः (D) अर्थापत्तिः

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-05) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 16

98. ''प्रधानं परार्थं संहत्यकारित्वात् गृहादिवत्'' इत्यनेन सिद्धिर्भवति? DU Ph.D–2016

(A) सामान्यतोदृष्टानुमानेन पुरुषतत्त्वस्य
(B) सामान्यतोदृष्टानुमानेन प्रकृतितत्त्वस्य
(C) सामान्यतोदृष्टानुमानेन महत्तत्त्वस्य
(D) शेषवदनुमानेन व्यक्ततत्त्वानाम्

स्रोत–सांख्यकारिका – राकेशशास्त्री, पृष्ठ- 27,28

99. 'आप्तश्रुतिः' है– BHU AET–2011

(A) प्रत्यक्षम् (B) अनुमानम्
(C) शब्दः (D) अर्थापत्तिः

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-05) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 16

100. अप्रत्यक्ष विषयों की प्रतीति किस अनुमान से होती है– BHU AET–2010

(A) सामान्यतोदृष्ट से (B) पूर्ववत् से
(C) शेषवत् से (D) किसी से भी नहीं

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-05)–सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-70

101. ईश्वरकृष्णमते आप्तागमात् किं सिद्धं भवति– MH SET–2011

(A) अतीन्द्रियाणां प्रतीतिः (B) असिद्धम्
(C) परोक्षम् (D) परोक्षमसिद्धं च

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-06) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 21

102. 'प्रतिविषयाध्यवसायः' इत्यस्य सम्बन्धः केन– UGC-25 J–2015

(A) अनुमानेन (B) आप्तवचनेन
(C) प्रत्यक्षेण (D) उपमानेन

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-05) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 16

103. ''प्रतिविषयाध्यवसायो दृष्टम्'' इत्यँस्मिल्लक्षणे 'प्रतिविषयः' इत्यस्यार्थः अस्ति– DU Ph.D–2016

(A) मनः
(B) बुद्धिः
(C) विषयसन्निकृष्टातीन्द्रियाणि
(D) बुद्ध्युपरक्तः पुरुषः

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-05) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 16

104. प्रमाणं त्रिविधमिति– BHU AET–2012

(A) सांख्याः (B) मीमांसकाः
(C) चार्वाकाः (D) वेदान्तिनः

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-04) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 12

93. (B) 94. (B) 95. (D) 96. (A) 97. (B) 98. (B) 99. (C) 100. (A) 101. (C) 102. (C) 103. (C) 104. (A)

105. (i) सांख्यदर्शन का प्रमुख सिद्धान्त है–
(ii) सांख्यदर्शनस्य सिद्धान्तः अस्ति– UP PGT–2002,
(iii) सांख्यदर्शने अभ्युपगतः सिद्धान्तः कः?
(iv) सांख्यदर्शने कार्यकारणसिद्धान्तः कः?
(v) सांख्यस्य मतमिदम्? UGC-73 J–2013,
(vi) सांख्यशास्त्र का सिद्धान्त है– UGC-25 D–1996, J–2005 UP GIC–2015

(A) आरम्भवाद (B) संघातवाद
(C) सत्कार्यवाद (D) विवर्तवाद

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-09) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 29

106. (i) 'सत्कार्यवाद' के सिद्धान्त वाला दर्शन है–
(ii) 'सत्कार्यवाद' का प्रतिपादन करता है–
(iii) सत्कार्यवादस्य प्रवर्तकं दर्शनं किम्?
(iv) सत्कार्यवादः पुरस्कृतः– GJ SET–2008 RPSC SET–2013-14 BHU MET–2008, 2010, 2011, 2015, UGC–73 D–2010, J–2012

(A) वैशेषिक (B) मीमांसक
(C) सांख्य (D) अद्वैत

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-09) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 29

107. (i) सांख्यानां उत्पत्तिविषययुक्तः वादः कः?
(ii) 'सांख्यदर्शन' का प्रमुखवाद है–
BHU Sh.ET–2013, K SET–2015

(A) कारणकार्यवादः (B) सत्कार्यवादः
(C) सृष्टिवादः (D) मायावादः

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-09) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 29

108. 'सांख्य' स्वीकार करता है– UP PGT–2004, 2009

(A) असतः सत् जायते
(B) सतः सत् जायते
(C) सतः असत् जायते
(D) एकस्य सतो विवर्तः कार्यजातं न वस्तु सत्

स्रोत–सांख्यकारिका – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 32

109. (i) सतः सज्जायते इति के वदन्ति– HAP–2016
(ii) 'सतः सत् जायते' इति कस्य मतम्–
UGC-25 J–2007, 2012

(A) नैयायिकाः (B) वैशेषिकाः
(C) सांख्याः (D) जैनाः

स्रोत–सांख्यकारिका – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 32

110. असदकरणात् कारिकायाः व्याख्यानं कृतम्–
CCSUM Ph. D–2016

(A) सत्कार्यवादस्य (B) पुरुषस्य
(C) अव्यक्तस्य (D) व्यक्तस्य

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-09) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 29

111. ''नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः'' गीता का यह सिद्धान्त किस दर्शन से सम्बद्ध रखता है–
UP PGT–2005

(A) बौद्धदर्शन से (B) जैनदर्शन से
(C) सांख्यदर्शन से (D) वेदान्तदर्शन से

स्रोत–सांख्यकारिका – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 32

112. (i) कस्मात् कारणात् सत्कार्यं भवति– UGC-25 J–
(ii) 'सत्कार्यवाद' का एक कारण है– 1998, 2001,
(iii) सत्कार्यवादसाधको हेतुर्भवति– MH SET–2011

(A) प्रकृतिस्वरूपज्ञान (B) सामीप्य
(C) समानाभिहार (D) सर्वसम्भवाभाव

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-09) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 29

113. सत्कार्यवादस्य कारणं नास्ति– CCSUM Ph.D–2016

(A) असदकरणात् (B) शक्तस्य शक्यकरणात्
(C) कारणभावाच्च (D) हेतुमत्

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-09) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 29

114. (i) 'सत्कार्यवाद' की सिद्धि का हेतु है–
(ii) सत्कार्यवादसाधको हेतुर्भवति–
UGC 25 D–1997, UGC 73 J–2007

(A) संघातपरार्थत्वात् (B) कारणभावात्
(C) अयुगपत्प्रवृत्तेः (D) भोक्तृभावात्

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-09) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 29

105. (C) 106. (C) 107. (B) 108. (B) 109. (C) 110. (A) 111. (C) 112. (D) 113. (D) 114. (B)

115. सांख्य की प्रकृति है? UP PGT–2004
(A) व्यक्त (B) त्रिगुणात्मिका
(C) चेतन (D) अप्रधान
स्रोत–सांख्यकारिका (का.-11) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 38

116. (i) कारणात्मना कार्यमस्तीति स्वीकुर्वन्ति
(ii) ''कारणात्मा से कार्य है''-यह स्वीकार करते हैं–
(iii) 'कारण में कार्य विद्यमान ही है' – यह किसका मत है–UGC 73 J–2014, D–2014, UGC-25 J–1995
(A) जैनाः (B) बौद्धाः
(C) सांख्याः (D) नैयायिकाः
स्रोत–सांख्यकारिका (का.-09) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 31

117. (i) सत्कार्यवादसाधकाः कति हेतवः–BHU AET–2011,
(ii) ईश्वरकृष्णेन सत्कार्यवादस्य सिद्धये कति हेतवः प्रतिपादिताः? MH SET–2016, GJ SET–2014
(iii) सत्कार्यवादसिद्ध्यर्थं कति हेतवः उक्ताः–
(iv) सत्कार्यवाद के हेतु हैं–UGC-25 J–2002, 2010
(v) सत्कार्यवादसमर्थने उल्लिखितानि कारणानि सन्ति? MGKV Ph. D–2016
(A) त्रयः (B) चत्वारः
(C) पञ्च (D) षड्
स्रोत–सांख्यकारिका (का.-09) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ-29,30

118. सत्कार्यवाद के साधक हेतुओं में एक है– UP GDC–2008, UGC-25 D–1998, 1999, J–2000
(A) उपलब्धि (B) त्रैगुण्यविपर्यय
(C) उपादानग्रहण (D) अनुमान
स्रोत–सांख्यकारिका (का.-09) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 29

119. सांख्यदर्शन का मूल सिद्धान्त UP GIC – 2009
(A) प्रकृतिपुरुषैक्य (B) प्रकृतिबहुत्व
(C) प्रकृतिपुरुषविवेक (D) पुरुषैकत्व
स्रोत–सांख्यकारिका (का.-02) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 05

120. 'कारणभावाच्च' इत्यनेन पुष्यते– UGC-25 D–2005
(A) पुरुषबहुत्वम् (B) प्रकृतिसिद्धिः
(C) सृष्टिप्रक्रिया (D) सत्कार्यवादः
स्रोत–सांख्यकारिका (का.-09) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 29

121. (i) सांख्यदर्शनस्य सिद्धान्तः अस्ति?
(ii) सांख्यदर्शने कार्यकारणसिद्धान्तः कः? GGIC–2015
(iii) सांख्यानां कार्यकारणवादः कीदृशः? GJ SET–2013
(A) आरम्भवादः (B) सत्कार्यवादः
(C) संघातवादः (D) विवर्तवादः
स्रोत–सांख्यकारिका (का.-09) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 31

122. सत्कार्यवादे उत्पत्तेः पूर्वं कार्यं कीदृशम्– UGC-25 J–2006, 2009
(A) व्यक्तरूपेण सत् (B) अव्यक्तरूपेण सत्
(C) उभयरूपेण असत् (D) सदसद्
स्रोत–सांख्यकारिका (का.-09) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 30

123. उपादानग्रहणात् इत्येतेन कः पुष्यते–UGC-25 D–2009
(A) सत्कार्यवादः (B) पुरुषसिद्धिः
(C) प्रकृतिसिद्धिः (D) सृष्टिप्रक्रिया
स्रोत–सांख्यकारिका (का.-09) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 29

124. सांख्ये सत्कार्यवादस्वरूपमेवम् अस्ति– UGC-25 J–2013
(A) सतो विज्ञानादसज्जायते इति।
(B) सतो विवर्तभूतं कार्यजातं मिथ्यात्मकं जायते इति।
(C) पूर्वमसत् कार्यं सदेव कारणात् सदात्मकं जायते इति।
(D) पूर्वं सदेव कार्यं कारणात्मना पश्चाज्जायते इति।
स्रोत–भारतीय दर्शन – बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ- 257

125. (i) 'उत्पत्तेः प्राक् कार्यमुपादानकारणे वर्तते' इति सिद्धान्तः कस्मिन् दर्शने स्वीक्रियते–
(ii) 'कार्यं सत्' इति सिद्धान्तः कस्मिन् दर्शने स्वीकृतः–
(iii) 'उत्पत्तेः प्राक् कार्यं सत्'–इस मत का समर्थक है– UGC-25 J–1999, RPSC SET–2010, WB SET–2010
(A) मीमांसा (B) न्याय
(C) वैशेषिक (D) सांख्य
स्रोत–सांख्यकारिका (का.-09) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 29,30

126. सत्कार्यवादं स्वीकरोति– UK SLET–2015
(A) कपिलः (B) कणादः
(C) गौतमः (D) मध्वः
स्रोत–सांख्यकारिका – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 29,30

115. (B) 116. (C) 117. (C) 118. (C) 119. (C) 120. (D) 121. (B) 122. (B) 123. (A) 124. (D) 125. (D) 126. (A)

127. 'सत्कार्यवाद' .... दर्शन का सिद्धान्त है– **BHU MET–2012**

(A) सांख्य (B) न्याय
(C) वैशेषिक (D) वेदान्त

स्रोत–सांख्यकारिका – राकेश शास्त्री, भू. पृष्ठ- 58

128. सत्कार्यवादस्य सिद्धिः कस्मात् हेतोः न भवति? **UGC 25 JL–2016**

(A) असदकरणात् (B) सर्वस्मात् सर्वसम्भवात्
(C) शक्तस्य शक्यकरणात् (D) कारणभावात्

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-09) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 29

129. ईश्वरकृष्ण ने किस वाद की स्थापना की– **BHU AET–2010**

(A) सत्कार्यवाद की (B) प्रकृतिवाद की
(C) छायावाद की (D) असत्कार्यवाद की

स्रोत–सांख्यकारिका – राकेश शास्त्री, भू. पृष्ठ- 58

130. (i) 'सर्वसम्भवाभावात्' से सिद्ध होता है?
(ii) 'सर्वसम्भवाभावात्' किसकी सिद्धि का हेतु है– **UGC 73 J–2016, BHU MET–2016**

(A) असत्कार्यम् (B) सत्कार्यम्
(C) शून्यम् (D) सदसत्कार्यम्

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-09) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 29

131. (i) परिणामवादः सिद्धान्तः वर्तते **UGC-73**
(ii) परिणामवाद किसका सिद्धान्त है– D–2012, J–2007

(A) नैयायिकानाम् (B) वेदान्तिनाम्
(C) सांख्यानाम् (D) मीमांसकानाम्

स्रोत–भारतीय दर्शन – बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ- 258

132. सांख्यमते कार्यकारणसिद्धान्तः कः– UGC 25 D–2010

(A) आरम्भवादः (B) परिणामवादः
(C) संघातवादः (D) विवर्तवादः

स्रोत–भारतीय दर्शन – बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ- 258

133. सांख्यमते सत्कार्यवादस्य सिद्धिः न भवति– **DU M. Phil–2016**

(A) सद्करणात् (B) उपादानग्रहणात्
(C) सर्वसम्भवाभावात् (D) कारणभावात्

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-09) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 29

134. अधस्तनवाक्यानां सत्यासत्यत्वपर्यायेषु समीचीनं विचिनुत– **MH SET –2013**

A. संघातपरार्थत्वात् प्रकृतिः सिध्यति
B. प्रतिप्रतिगुणाश्रयविशेषात् कैवल्यं सिध्यति
C. कारणगुणात्मकत्वात् बुद्धिः प्रभवति
D. जन्ममरणकरणानां प्रतिनियतत्वात् पुरुषबहुत्वं सिध्यति

(A) सत्यम्, असत्यम्, असत्यम्, सत्यम्
(B) असत्यम्, सत्यम्, सत्यम्, असत्यम्
(C) सत्यम्, सत्यम्, सत्यम्, असत्यम्
(D) असत्यम्, असत्यम्, असत्यम्, सत्यम्

सांख्यकारिका (का.-17,16,14,18) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 56,51,48,59

135. सांख्यैः अङ्गीक्रियते एषः वादः– K-SET–2014

(A) विवर्तवादः (B) परिणामवादः
(C) आरम्भवादः (D) असत्कारणवादः

स्रोत–भारतीयदर्शन – बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ- 258

136. ईश्वरकृष्ण किस वाद को मानते हैं– **BHU AET–2011**

(A) परिणामवाद (B) ईश्वरवाद
(C) स्फोटवाद (D) तीनों में से कोई नहीं

स्रोत–भारतीय दर्शन – बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ- 258

137. (i) सांख्यदर्शन में 'अव्यक्त' क्या है? UP PGT–2000,
(ii) सांख्यमतानुसार 'अव्यक्त' है– UGC-73 J–2015

(A) पुरुष (B) ईश्वर
(C) प्रकृति (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–सांख्यकारिका – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 08

138. सांख्य की 'प्रकृति' नहीं है– **UP PGT–2009, BHU AET–2011**

(A) अव्यक्त (B) त्रिगुणात्मिका
(C) प्रधान (D) अप्रधान

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-11) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 41

139. सांख्यदर्शन में जगत्कारण होता है– UGC-73 J–2006

(A) ब्रह्म (B) माया
(C) प्रधानम् (D) ईश्वरः

स्रोत–सांख्यकारिका (का-11) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 38

127. (A) 128. (B) 129. (A) 130. (B) 131. (C) 132. (B) 133. (A) 134. (D) 135. (B) 136. (A) 137. (C) 138. (D) 139. (C)

140. (i) सांख्यमत में 'मूल प्रकृति' है– GJ SET–2013
(ii) मूलप्रकृतिः कीदृशी वर्तते? U GC-73 J–2009,
(iii) सांख्यमते मूलप्रकृतिः वर्तते? UGC-25 J–2014, CVVET–2017, BHU AET–2010, CCSUM Ph. D–2016

(A) विकृतिः (B) अविकृतिः
(C) प्रकृतिविकृतिः (D) न प्रकृतिः न विकृतिः

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-03) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 8

141. सांख्यमत में प्रधान कारण है– UGC-73, D–2010

(A) विवर्त (B) परिणाम
(C) साक्षित्वात् (D) स्रष्टत्वात्

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-16) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 51

142. सांख्यमत में प्रधान है– UGC-73 D–2011

(A) सचेतनम् (B) निरूपम्
(C) अचेतनम् (D) विकृतिः

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-11) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 40

143. मूलप्रकृति जगत् की होती है– UGC-73 S–2013

(A) कारण (B) कर्त्री
(C) अकर्त्री (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–सांख्यकारिका (का0-11) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 38

144. सांख्यकारिकानुसारेण 'अव्यक्तं' भवति– UP GDC–2012, UP PGT–2011

(A) असामान्यम् (B) अनाश्रितम्
(C) अप्रसवधर्मी (D) अविषयम्

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-10)–राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 32, 37

145. अव्यक्तं कस्मात् हेतोः कारणं भवति? UGC 25 J–2016

(A) नित्यत्त्वात् (B) परिमाणवत्त्वात्
(C) चैतन्यात् (D) निष्क्रियत्त्वात्

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-15) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 51

146. (i) सांख्यकारिका में जडतत्त्व कौन है–
(ii) कः जडपदार्थः BHU MET–2014, BHU Sh. ET–2011

(A) पुरुष (B) प्रकृति
(C) दोनों (D) कोई नहीं

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-11) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 40

147. (i) क्षीरप्रवृत्तिवत् प्रवृत्तिः कस्य भवति–
(ii) क्षीरस्य प्रवृत्तिर्यथा तथा प्रवर्तते– UGC 73 J–2012, BHU–AET–2010

(A) पुरुषस्य (B) मनसः
(C) प्रधानस्य (D) अहङ्कारस्य

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-57) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 158

148. प्रकृतिः स्वात्मानं कस्य प्रकाशयति– BHU AET–2010

(A) प्रधानस्य (B) पुरुषस्य
(C) उभयोः (D) नोभयोरपि

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-59) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 160

149. प्रकृतिः पुरुषार्थं प्रति केन हेतुना आत्मानं विमोचयति– BHU AET–2010

(A) बन्धेन (B) महता
(C) ज्ञानेन (D) अज्ञानेन

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-63) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 166

150. त्रिगुणात्मिका प्रकृतिः UGC-73, D–2013

(A) हेतुमती (B) अहेतुमती
(C) निर्लिप्ता (D) विकृतिः

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-10) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 33

151. केवलं प्रकृतिः– BHU AET–2011

(A) एकविधा (B) द्विविधा
(C) त्रिविधा (D) चतुर्विधा

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-10) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 35

152. त्रैगुण्यात् अविवेक्यादेः सिद्धिः– BHU AET–2011

(A) पुरुषस्य (B) प्रकृतेः
(C) धर्माणाम् (D) अधर्माणाम्

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-14) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 48

140. (B) 141. (B) 142. (C) 143. (A) 144. (B) 145. (B) 146. (B) 147. (C) 148. (B) 149. (C) 150. (B) 151. (A) 152. (B)

153. अविभागाद्वैश्वरूपस्य कारणत्वं साध्यते– BHU AET–2011

(A) अव्यक्तस्य (B) अहङ्कारस्य
(C) पुरुषस्य (D) महादादेः

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-15) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 51

154. सांख्यदर्शन में प्रधान की अनुपलब्धि का कारण है– UP GDC–2008

(A) अभाव (B) सूक्ष्मता
(C) अत्यधिक सामीप्य (D) अज्ञान

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-08) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 27

155. सांख्यमत में प्रकृति है– UP GDC–2008

(A) व्यक्त (B) अव्यक्त
(C) अव्यापी (D) अनेक

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-10)– राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 32

156. प्रकृतिर्वस्तुतो बध्नाति– UGC-25 D–2005

(A) स्वात्मानम् (B) पुरुषम्
(C) अहङ्कारम् (D) आनन्दम्

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-63) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 166

157. 'समन्वयात्' किं सिद्ध्यति– UGC-25 D–2007

(A) प्रकृतिः (B) पुरुषः
(C) गुणाः (D) कैवल्यम्

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-15) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 51

158. सांख्यानुसारं प्रकृतिः .... इव। UGC 25 D–2008

(A) माता (B) गृहिणी
(C) सुता (D) नर्तकी

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-59) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 160

159. (i) गुणानां साम्यावस्था नाम –
(ii) सांख्यमते सत्त्व-रजस्-तमसां साम्यावस्था किं कथ्यते–UGC 25 J–2010, D–2015, MH SET–2013

(A) मूलप्रकृतिः (B) बुद्धिः
(C) अहङ्कारः (D) कैवल्यम्

स्रोत–सांख्यकारिका – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 9

160. बुद्धेः प्रकृतिः– UGC-25 J–2012

(A) अहङ्कारः (B) पुरुषः
(C) मूलप्रकृतिः (D) तन्मात्राणि

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-22)– राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 71

161. सांख्यदर्शने प्रकृतेः स्वरूपमस्ति? JNU M. Phil/Ph. D–2014

(A) सक्रियत्वम् (B) अविवेकित्वम्
(C) चैतन्यत्वम् (D) परतन्त्रत्वम्

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-11) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 39

162. अव्यक्तं कीदृशं तत्त्वं निरूपितम्– UGC 25 D–2013

(A) चेतनम् (B) उदासीनम्
(C) जडम् (D) अभावरूपम्

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-11) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 40

163. (i) प्रकृति का अस्तित्व जानने का प्रमाण है–
(ii) प्रकृति का अस्तित्वबोधक प्रमाण है– UGC 25 J–1994, 2001

(A) प्रत्यक्ष (B) अनुमान
(C) उपमान (D) अर्थापत्ति

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-08)– राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 28

164. (i) 'प्रधान' का एक लक्षण है– UGC-25 J–1999
(ii) सांख्यमत में अव्यक्त का एक धर्म होता है–
(iii) प्रधानोऽस्ति– UGC 73 D–2014, K-SET–2013

(A) प्रसवधर्मित्व (B) चैतन्यत्व
(C) उदासीनत्व (D) अपरिणामित्व

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-11) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 38

165. (i) प्रकृतिः किमर्थं नोपलभ्यते? K-SET–2014, 2015
(ii) प्रधानस्य प्रत्यक्षं न भवति?

(A) अतिदूरात् (B) सौक्ष्म्यात्
(C) अतिसामीप्यात् (D) व्यवधानात्

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-08) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 27

166. प्रधान है– UGC 25 J–2001

(A) प्रकृति (B) महत्
(C) पञ्चतन्मात्रा (D) मन

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-11) - राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 38

153. (A) 154. (B) 155. (B) 156. (A) 157. (A) 158. (D) 159. (A) 160. (C) 161. (B) 162. (C) 163. (B) 164. (A) 165. (B) 166. (A)

167. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन असत्य है– UP PGT–2013

(A) प्रकृति बद्ध और मुक्त होती है।
(B) प्रकृति से सुकुमार और कोई वस्तु नहीं है।
(C) प्रकृति ईश्वर है तथा पुरुष जीव है
(D) ज्ञान से अपवर्ग की प्राप्ति होती है।

सांख्यकारिका (का.-44,61,63)–राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 127,163,127

168. का प्रकृतिः UK-SLET–2015

(A) गुणानाम् असमवायः (B) गुणानां भेदाः
(C) गुणानां समवायः (D) अकथनीयम्

स्रोत–सांख्यकारिका – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 11

169. व्यक्तं कीदृशं न भवति–UGC 25 JL–2016, Jn–2017

(A) परतन्त्रम् (B) अनाश्रितम्
(C) सावयवम् (D) सक्रियम्

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-10) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 35

170. प्रकृतिः कतिभिः रूपैरात्मानं बध्नाति– UGC-25 D–2014

(A) सप्तभिः (B) अष्टभिः
(C) पञ्चभिः (D) चतुर्भिः

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-63) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 166

171. प्रकृतित्वमात्रम् अस्ति– UGC 73 D–2014

(A) पुरुषे (B) महत्त्वे
(C) तन्मात्रेषु (D) अव्यक्ते

स्रोत–सांख्यकारिका – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 10

172. सत्त्वादि तीन गुणों की साम्यावस्था क्या है– BHU AET–2011

(A) प्रकृति (B) विकृति
(C) अज्ञान (D) भ्रान्ति

स्रोत–सांख्यकारिका – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 11

173. (i) नित्यमनुमानगम्यं त्रिगुणात्मकं च–
(ii) त्रिगुणात्मकमचेतनं .... भवति– UGC-73 J–2012 D–2012

(A) ईश्वरः (B) मनः
(C) प्रधानम् (D) ज्ञानम्

स्रोत–सांख्यकारिका (का0-11) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ-38,34

174. संसरण, बन्धन और मोक्ष होता है–UGC-73 J–2014

(A) बुद्धिः (B) प्रकृतिः
(C) पुरुषः (D) धर्मः

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-62) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 165

175. सांख्यकारिका में प्रकृति के कितने रूप कहे गये हैं– BHU MET–2016

(A) 3 (B) 4
(C) 7 (D) 9

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-63) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 166

176. (i) सांख्यकारिका में चेतन तत्त्व माना गया है–
(ii) सांख्य के निम्नलिखित तत्त्वों में से चेतनतत्त्व कौन-सा है– UP PGT–2000, BHU MET–2015

(A) बुद्धि (B) अहङ्कार
(C) मन (D) पुरुष

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-11) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 40

177. (i) ''कैवल्यार्थं प्रवृत्तेश्च'' किसके लिए प्रयुक्त है–
(ii) कैवल्य को प्राप्त करने वाला/वाली है?
(iii) कैवल्यं दृष्टत्वमकर्तृभावश्च कः– BHU AET–2011, UP PGT–2002, 2004, 2010

(A) पुरुष (B) प्रकृति
(C) ईश्वर (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-17) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 56

178. पुरुषस्य लक्षणं नास्ति– CCSUM Ph. D–2016

(A) अत्रिगुणम् (B) विवेकी
(C) चेतनम् (D) सामान्यम्

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-11) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 38

179. 'पुरुष' का लक्षण है– UP PGT–2009

(A) अचेतन (B) विवेकी
(C) प्रसवधर्मी (D) विकारी

स्रोत–सांख्यकारिका (का0-19)–सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ-187

167. (C) 168. (C) 169. (B) 170. (A) 171. (D) 172. (A) 173. (C) 174. (B) 175. (C) 176. (D) 177. (A) 178. (D) 179. (B)

180. (i) ''न प्रकृतिः न विकृतिः'' यह कारिकांश किसके लिए प्रयुक्त है– UP PGT–2009, GJ SET–2008
(ii) न प्रकृतिर्न विकृतिः ....MGKV Ph. D–2016
(iii) न प्रकृतिः न विकृतिः इत्यनेन कः अभिप्रेतः अस्ति?
(iv) सांख्यदर्शने न प्रकृतिः न विकृतिः इत्यनेन कस्य परिचयः भवति? UP GDC–2014

(A) अहङ्कार (B) ज्ञानेन्द्रियाँ
(C) कर्मेन्द्रियाँ (D) पुरुष

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-03) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 8

181. 'तथा च पुमान्' इस कारिकांश से ईश्वरकृष्ण को क्या अभिप्रेत है? UGC 73 D–2015

(A) तथा व्यक्ताद् विसदृशम् अव्यक्तं तथैव प्रधानसधर्मा पुरुषः
(B) यथा व्यक्तात् सदृशम् अव्यक्तं तथैव प्रधानसधर्मा पुरुषः
(C) यथा व्यक्तात् सदृशम् अव्यक्तं तथापि व्यक्तसमानधर्मा पुरुषः
(D) व्यक्ताऽव्यक्तविपरीतस्तथा व्यक्ताव्यक्तसधर्माऽपि पुरुषः

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-11) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 38

182. कस्माद् हेतोः पुरुषस्य सिद्धिर्भवति–UGC 25 JL–2016

(A) सक्रियत्वात् (B) गुणत्वात्
(C) भोक्तृभावात् (D) प्रवृत्तिभावात्

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-17) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 56

183. (i) भोक्तृभाव किसकी सिद्धि का हेतु है?
(ii) 'भोक्तृभाव' किसकी सत्ता का परिचायक है–
(iii) भोक्तृभावात्कैवल्यार्थं प्रवृत्तेश्चास्ति–
(iv) भोक्तृभावात् अस्ति–
UP PGT–2009, UGC-73 D–2013, BHU AET–2011, BHU MET–2016

(A) प्रकृति (B) पुरुष
(C) अविवेकी (D) प्रधान

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-17) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 56

184. सांख्यमते पुरुषस्य .... अस्ति? K-SET–2015

(A) कर्तृत्वम् (B) भोक्तृत्वम्
(C) अचेतनत्वम् (D) परिणामित्वम्

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-17) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 56

185. (i) सांख्यमत में 'पुरुष' है– UP GDC–2008,
(ii) सांख्यमते पुरुषोऽस्ति– UGC-73 D–2006, J–2012

(A) अचेतन (B) कर्त्ता
(C) उदासीन (D) भोक्ता

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-17)–राकेश शास्त्री, पृष्ठ-56-58

186. (i) सांख्यमत में 'पुरुष' है– UP PGT–2011
(ii) सांख्यमतरीत्या पुरुषः कीदृशः? MH-SET–2013
(iii) सांख्यनये 'पुरुषः' भवति– UP GDC–2012,
(iv) सांख्यमतेन पुरुषो अस्ति– BHU AET–2010,
(v) सांख्य के अनुसार पुरुष का स्वरूप है– K-SET–2015, UGC-25 D–2002, UGC-73 J–1991, D–2009 GJ SET–2014

(A) अविकृति (B) विकृति
(C) न प्रकृति न विकृति (D) प्रकृति विकृति

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-03) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 8

187. 'न प्रकृतिः न विकृतिः पुरुषः' इति कस्य दर्शनस्य विषयः – CVVET–2017

(A) योगदर्शनस्य (B) मीमांसादर्शनस्य
(C) न्यायदर्शनस्य (D) सांख्यदर्शनस्य

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-03) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 8

188. (i) सांख्यमत में 'पुरुष' है– BHU AET–2010,
(ii) सांख्यमते पुरुषः किम् अस्ति–UGC-73 J–2010,
(iii) सांख्यमते पुरुषो वर्तते–UGC-25 J–1999, S–2013
(iv) सांख्यकारिकासु पुरुषस्य स्वरूपं किम् उक्तम्–

(A) अचेतन (B) चेतन
(C) प्रकृति (D) विकृति

स्रोत–सांख्यकारिका (का0-11)–राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 38

189. (i) जरामरण दुःख को प्राप्त करता है– UGC–73 J–2013
(ii) जरामरणकृतं दुःखं प्राप्नोति– BHU AET–2011

(A) पुरुष (B) बुद्धि
(C) ईश्वर (D) मन

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-18) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 59

180. (D) 181. (D) 182. (C) 183. (B) 184. (B) 185. (D) 186. (C) 187. (D) 188. (B) 189. (A)

190. (i) 'संघातपरार्थत्वात्' इति हेतुना कस्य सिद्धिः–
(ii) संघातपरार्थत्वादित्यनेन कस्य सिद्धिर्भवति–
BHU AET–2014, HAP–2016
(A) प्रकृतेः (B) पुरुषस्य
(C) महतः (D) अहङ्कारस्य
स्रोत–सांख्यकारिका (का.-17) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 56

191. सांख्यदर्शने पुरुषः अस्ति GGIC–2014
(A) प्रकृतिः अविकृतिश्च (B) अप्रकृतिः विकृतिश्च
(C) प्रकृतिः विकृतिश्च (D) न प्रकृतिः न विकृतिः
स्रोत–सांख्यकारिका (का.-03) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 8

192. तद्विपरीतस्तथा च कः– BHU AET–2010
(A) व्यक्तः (B) अव्यक्तः
(C) प्रकृतिः (D) पुमान्
स्रोत–सांख्यकारिका (का.-11) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 38

193. सांख्यदर्शनानुसारं पुरुषस्वरूपेण सम्बद्धाः उक्तिः अस्ति? UGC 25 D–2015
(A) रूपैः सप्तभिरेव तु बध्नात्यात्मानमात्मना।
(B) पुरुषस्य दर्शनार्थं, कैवल्यार्थं तथा प्रधानस्य।
(C) तद्विपरीतस्तथा च पुमान्
(D) संसरति बद्ध्यते मुच्यते च।
स्रोत–सांख्यकारिका (का.-11) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 38

194. 'अधिष्ठानात्' किसकी सिद्धि का हेतु है–
BHU AET–2011, 2012
(A) पुरुषबहुत्व (B) प्रकृति
(C) पुरुष (D) सत्कार्यवाद
स्रोत–सांख्यकारिका (का.-17) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 56

195. (i) 'ज्ञ'-शब्देन सांख्ये कः परामृश्यते–
(ii) 'व्यक्ताव्यक्तज्ञविज्ञानात्' इत्यत्र ज्ञ शब्देन कः बोधव्यः?
BHU AET–2014, UGC-25 D–2012
(A) प्रकृतिः (B) पुरुषः
(C) ईश्वरः (D) देहः
स्रोत–सांख्यकारिका (का.02) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 06

196. पुरुषास्तित्त्वसाधकाः कति हेतवः–
BHU AET–2011, UGC-25 J–2010
(A) त्रयः (B) चत्वारः
(C) पञ्च (D) षट्
स्रोत–सांख्यकारिका (का.-17)–राकेश शास्त्री, पृष्ठ-56,57,58

197. पुरुषः– BHU AET–2011
(A) ईश्वरः (B) परमात्मा
(C) ब्रह्म (D) जीवः
स्रोत–भारतीय दर्शन – उमेश मिश्र, पृष्ठ- 305

198. त्रिगुणातीतोऽयम्– UGC-25 J–2005
(A) महान् (B) अहङ्कारः
(C) पुरुषः (D) विकारः
स्रोत–सांख्यकारिका (का.-17-18) - राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 56,59

199. (i) अकर्तृत्वमस्य धर्मः– UGC-25 D–2005, S–2013
(ii) अकर्तृत्वं कस्य धर्मोऽस्ति– GJ SET–2014
(iii) सांख्यमते अकर्तृत्वस्य कस्य स्वरूपमस्ति–
(A) प्रधानस्य (B) अहङ्कारस्य
(C) पुरुषस्य (D) ज्ञानेन्द्रियाणि
स्रोत–सांख्यकारिका (का.-19) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 63

200. 'पुरुषस्य' स्वरूपं किम्– UGC-25 J–1998, D–2006
(A) अपरिणामि (B) परिणामि
(C) त्रिगुणात्मकम् (D) सक्रियम्
स्रोत–भारतीय दर्शन – चन्द्रधर शर्मा, पृष्ठ- 146

201. (i) कर्तृत्वं कुत्र विद्यते– UGC-25 J–2007, D–2009
(ii) कर्त्तृत्वं कस्य धर्मः अस्ति–
(A) पुरुषे (B) मनसि
(C) प्रकृतौ (D) अहङ्कारे
स्रोत–भारतीय दर्शन – चन्द्रधर शर्मा, पृष्ठ- 146

202. चैतन्यम् अस्ति– UGC-25 D–2009
(A) प्रकृतेः (B) पुरुषस्य
(C) गुणत्रयस्य (D) महाभूतानाम्
स्रोत–भारतीयदर्शन - चन्द्रधर शर्मा,, पृष्ठ- 146

190. (B) 191. (D) 192. (D) 193. (C) 194. (C) 195. (B) 196. (C) 197. (D) 198. (C) 199. (C)
200. (A) 201. (C) 202. (B)

203. सांख्यमतानुसार यथार्थ स्वभाव में पुरुष है– UGC-25 J–1994, 2001

(A) सदैव सक्रियः (B) सृष्टिकाले सक्रियः

(C) सदैव निष्क्रियः (D) प्रलये एव निष्क्रियः

स्रोत–भारतीय दर्शन - चन्द्रधर शर्मा,, पृष्ठ- 146

204. सांख्यमतानुसार पुरुष और प्रकृति का सम्बन्ध है– UGC-25 J–1995

(A) नित्यः (B) असत्यः

(C) सत्यासत्यः (D) ज्ञानजन्यः

स्रोत–सांख्यकारिका - राकेश शास्त्री, भू. पृष्ठ- 40

205. प्रधानपुरुषयोः को धर्मः समानः? UGC 25 JL–2016

(A) त्रिगुणत्वम् (B) अहेतुत्वम्

(C) सामान्यत्वम् (D) अचेतनम्

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-10-11)–राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 37-38

206. पुरुष विपरीत है– UGC-25 D–2001

(A) अहङ्कार से (B) पञ्चमहाभूत से

(C) प्रकृति से (D) पञ्चतन्मात्रा से

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-11) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 38

207. सांख्यमत में 'पुरुष' होता है– UGC-73 D–2014

(A) सक्रियः (B) सङ्घातरूपः

(C) निष्क्रियः (D) अचेतनः

स्रोत–भारतीय दर्शन- चन्द्रधर शर्मा, पेज-146

208. (i) 'त्रिगुणादिविपर्ययात्' 'कैवल्यार्थं प्रवृत्तेश्च' इत्येतद् युक्तिद्वयं प्रमाणयति– UK-SLET–2015

(ii) त्रिगुणादिविपर्ययात् सिद्ध्यति–BHU AET–2010

(A) पुरुषबहुत्वम् (B) पुरुषस्य सत्ताम्

(C) प्रकृतेः सत्ताम् (D) परार्थानुमितिम्

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-17) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 56

209. सांख्ये माध्यस्थ्यं कस्य स्वरूपम्– UGC-25 D–2010

(A) पुरुषस्य (B) प्रधानस्य

(C) बुद्धेः (D) अहङ्कारस्य

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-19) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 62,63

210. (i) सांख्यमते पङ्गुवद् वर्तते–UGC-25 J–2013, 2015

(ii) सांख्यमते पङ्वन्धन्याये पङ्गुवद् वर्तते–

(A) प्रधानम् (B) पुरुषः

(C) गुणत्रयम् (D) अन्तःकरणम्

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-21) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 68

211. सांख्यमत में पुरुषबहुत्व सिद्धि करने का हेतु होता है– UGC-73 D–2007

(A) संघातपरार्थत्वम् (B) उपादानग्रहणम्

(C) परिणामः (D) अयुगपत्प्रवृत्तिः

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-18) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 59

212. सांख्यकारिका में 'अयुगपत्प्रवृत्तेः' से क्या बताया गया है? BHU MET–2016

(A) कैवल्य (B) पुरुषबहुत्व

(C) त्रैगुण्य (D) प्रकृति

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-18) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 59

213. ठीक उत्तर दीजिए– UGC-73 J–2007

R-सांख्ये पुरुषबहुत्वं प्रतिपादितम्

S-सांख्यदर्शने प्रधानस्य बहुत्वं मतम्

(A) R अशुद्धः S शुद्धः (B) R शुद्धः S अशुद्धः

(C) उभावशुद्धौ (D) उभौ शुद्धौ

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-18) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 59

214. ''त्रैगुण्यविपर्ययाच्च'' कस्य बहुत्वं सिद्धम्– K-SET–2013

(A) इन्द्रियस्य (B) मनसः

(C) प्रकृतेः (D) पुरुषस्य

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-18) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 59

215. सांख्यकारिका में 'त्रैगुण्यविपर्ययात्' से क्या बताया गया है– BHU MET–2011, 2012

(A) कैवल्य (B) पुरुषबहुत्व

(C) त्रैगुण्य (D) प्रकृति

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-18) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 59

203. (C) 204. (A) 205. (B) 206. (C) 207. (C) 208. (B) 209. (A) 210. (B) 211. (D) 212. (B) 213. (B) 214. (D) 215. (B)

216. पुरुषबहुत्वसाधकाः हेतवः– BHU AET–2011

(A) त्रयः (B) षट्
(C) नव (D) द्वादश

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-18) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 59

217. सांख्यानुसारं पुरुषबहुत्वप्रस्थापने कारणं भवति– UGC-25 J–2013

(A) शरीराकारभेदात्
(B) प्रतिपुरुषज्ञानभेदात्
(C) इन्द्रियसंख्याभेदात्
(D) जननमरणकरणानां प्रतिनियमात्

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-18) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 59

218. सांख्य के अनुसार पुरुष है– UGC-25 J–2000

(A) एकः (B) पञ्च
(C) द्वौ (D) बहवः

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-18) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 59

219. अधस्तनेषु सत्यासत्यत्वपर्यायेषु समीचीनं विचिनुत पुरुषोऽस्ति– MH-SET–2016

a. सर्वसम्भवाभावात् b. त्रैगुण्यविपर्ययात्
c. भोक्तृभावात् d. शक्तस्य शक्यकरणात्

(A) असत्यम्, असत्यम्, असत्यम्, सत्यम्
(B) असत्यम्, असत्यम्, सत्यम्, असत्यम्
(C) असत्यम्, सत्यम्, असत्यम्, असत्यम्
(D) सत्यम्, असत्यम्, असत्यम्, असत्यम्

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-17) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 56

220. सांख्यनये पुरुषस्य एकत्वं विद्यते– UK SLET–2015

(A) असत्यम् (B) किञ्चित्सत्यम्
(C) सत्यम् (D) अकथनीयम्

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-18)–राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 59, 60

221. पुरुषों के अनेकत्व या बहुत्व में क्या कारण नहीं है– BHU AET–2010

(A) इन्द्रियों का (B) तीनों गुण
(C) प्रयत्न (D) वायु का

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-18) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 59

222. त्रैगुण्यविपर्ययात् किं सिद्धम्– UGC-25 J–2015

(A) प्रधानम् (B) पुरुषैकत्वम्
(C) पुरुषबहुत्वम् (D) अज्ञानम्

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-18) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 59

223. (i) पुरुषबहुत्व-व्याख्यायै दर्शनमस्ति– UP GIC–2015
(ii) पुरुषबहुत्वस्य सिद्धिः ..... कृता–GJ SET–2008

(A) पुरुषार्थदर्शनम् (B) धर्मदर्शनम्
(C) सांख्यदर्शनम् (D) सर्वदार्शनिकम्

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-18) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 59

224. सांख्यदर्शन के अनुसार सृष्टि का अनुक्रम निम्नानुसार है? UGC 09 D–2012

(A) पुरुष, प्रकृति, अहंकार, महत्
(B) पुरुष, प्रकृति, महत्, अहंकार
(C) प्रकृति, पुरुष, महत्, अहंकार
(D) प्रकृति, पुरुष, अहंकार, महत्

स्रोत–सांख्यकारिका (का0-22) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ-70,72

225. पुरुषानुमाने हेतुर्भवति– UGC-73 D–2012

(A) अचेतनत्वम् (B) सङ्घातपरार्थत्वम्
(C) कारणभावः (D) त्रिगुणत्वम्

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-17) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 56

226. सांख्यदर्शने पृथिव्याः प्रादुर्भावः अस्ति– UGC-25 J–2009

(A) रसतन्मात्रात् (B) गन्धतन्मात्रात्
(C) शब्दतन्मात्रात् (D) स्पर्शतन्मात्रात्

स्रोत–सांख्यकारिका – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 73

227. सांख्यमतानुसारेण पृथिवी कस्याः विकृतिः भवति– K-SET–2013

(A) रूपस्य (B) रसस्य
(C) गन्धस्य (D) स्पर्शस्य

स्रोत–सांख्यकारिका – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 73

228. तमोगुणांशाद्यहङ्कारात् उत्पद्यते– UGC-25 J–2005

(A) ज्ञानेन्द्रियपञ्चकम् (B) कर्मेन्द्रियपञ्चकम्
(C) तन्मात्रापञ्चकम् (D) मनः

स्रोत–सांख्यकारिका (का. 25) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 81

216. (A) 217. (D) 218. (D) 219. (B) 220. (A) 221. (D) 222. (C) 223. (C) 224. (B) 225. (B) 226. (B) 227. (C) 228. (C)

229. (i) प्रकृतेः साक्षाज्जायते UP PGT–2000
(ii) प्रकृति से साक्षात् उत्पन्न है– UGC-25 D–1999
(iii) मूलप्रकृतेः कस्योत्पत्तिर्भवति– BHU AET–2011
HAP–2016

(A) अहङ्कार (B) पञ्चतन्मात्रा
(C) पञ्चमहाभूत (D) महत्

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-22) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 70

230. सांख्यदर्शन के अनुसार सृष्टि का निर्माण कितने तत्त्वों से हुआ है– UP PGT–2005

(A) 25 तत्त्वों से (B) 23 तत्त्वों से
(C) 24 तत्त्वों से (D) 5 तत्त्वों से

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-22) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ-71,72

231. (i) 'तन्मात्रा' उत्पन्न हुए हैं–UGC-25 J–2008, 2016
(ii) 'तन्मात्रा' प्रादुर्भूत हुए हैं– UGC 73 D–2008
(iii) सांख्यकारिकानुसारं तन्मात्राः कस्मात् उत्पद्यन्ते?
(iv) पञ्चतन्मात्राः कस्मात् समुत्पन्नाः?
(v) 'पञ्चतन्मात्राणि' कुतः प्रादुर्भवन्ति–
UGC-25 D–1997, 2006, MH SET–2016

(A) महत्तत्त्वात् (B) अहङ्कारात्
(C) बुद्धितः (D) महाभूतात्

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-22) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 70

232. सांख्यमत में 'महत्' उत्पन्न होता है– UGC-73 D–2009

(A) पुरुष से (B) प्रकृति से
(C) अहङ्कार से (D) तन्मात्रा से

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-22) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 70

233. तन्मात्राएँ विकार होती हैं– UGC-73 J–2012
UP GDC–2008

(A) पुरुष की (B) अव्यक्त की
(C) महाभूतों की (D) अहङ्कार की

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-22) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ-70,71

234. महत्तत्त्वतः जायमानः पदार्थः कथ्यते –
MGKV Ph. D–2016

(A) आकाशः (B) प्रकृतिः
(C) अहङ्कारः (D) पञ्चज्ञानेन्द्रियाणि

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-22)– राकेश शास्त्री, पृष्ठ-70,71

235. महत्तत्त्व होता है– UGC-73 J–2013

(A) अव्यक्तपरिणाम (B) मनःपरिणाम
(C) आकाशतत्त्वपरिणाम (D) रूपतत्त्वपरिणाम

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-03) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ-8,9

236. पञ्चतन्मात्रा परिणाम हैं–

(A) मूलप्रकृति (B) अहङ्कार
(C) पुरुष (D) इन्द्रिय

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-22)–राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 70-71

237. सांख्य के अनुसार इन्द्रियों की उत्पत्ति होती है–
UP-GIC–2009

(A) भौतिकतत्त्वों से (B) बुद्धितत्त्व से
(C) अहङ्कार से (D) पुरुषैकत्व से

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-22)– राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 70,71

238. सांख्यदर्शन के अनुसार द्विविध सृष्टि किससे उत्पन्न होती है? UGC 73 D–2015

(A) अहंकार (B) महत्
(C) प्रकृति (D) पञ्चतन्मात्रा

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-24) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ-77,78

239. अधस्तनेषु तत्त्वेषु प्रकृतिविकृतिस्वरूपात्मकं वर्तते–
UP GDC–2012

(A) अव्यक्तम् (B) अहङ्कारः
(C) पुरुषः (D) मनः

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-03) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 08

240. अहङ्कारात् कति उत्पद्यन्ते–
BHU AET–2010, UGC-25 J–2003

(A) पञ्चदश (B) षोडश
(C) एकोनविंशतिः (D) विंशतिः

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-24) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ-77,78

229. (D) 230. (A) 231. (B) 232. (B) 233. (D) 234. (C) 235. (A) 236. (B) 237. (C) 238. (A) 239. (B) 240. (B)

241. (i) षोडशको गणः प्रवर्तते? BHU AET–2011,
(ii) षोडशको गणः कस्माज्जायते– UGC-25 J–2002 K SET–2013
(A) पुरुषात् (B) प्रकृतेः
(C) महतः (D) अहङ्कारात्
स्रोत–सांख्यकारिका (का.-22) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 70

242. अहङ्कारात् कतिविधः सर्गः प्रवर्तते– K-SET–2014
(A) द्विविधः (B) त्रिविधः
(C) चतुर्विधः (D) दशविधः
स्रोत–सांख्यकारिका (का.-24) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 77

243. सांख्यमते पञ्चतन्मात्राणि कानि? K-SET–2015
(A) पृथिव्यादयः पञ्च (B) रूपादयः पञ्च
(C) चक्षुरादयः पञ्च (D) वागादयः पञ्च
स्रोत–सांख्यकारिका – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 72

244. सांख्यदर्शनरीत्या ऊर्ध्वगमनं केन भवति– MH SET–2013
(A) ज्ञानेन (B) धर्मेण
(C) वैराग्येण (D) कर्मोपासनया
स्रोत–सांख्यकारिका (का.-44) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 127

245. (i) 'पङ्ग्वन्धवत्' सम्बद्धौ कौ?
(ii) कयोः संयोगः 'पङ्ग्वन्धवत्' सांख्यनये वर्णितः
(iii) सांख्ये 'पङ्ग्वन्धवत्संयोगः' कयोर्मध्ये उक्तः– UP GDC–2014, BHU AET–2010, K-SET–2014
(A) प्रकृति-पुरुषयोः (B) प्रकृति-मनसोः
(C) बुद्धिप्रकृत्योः (D) प्रकृत्यहङ्कारयोः
स्रोत–सांख्यकारिका (का.-21) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 68

246. (i) 'पञ्चमहाभूत' किससे सम्बद्ध है–
(ii) 'पञ्चभूतानि' कस्मात् जायन्ते– BHU AET–2010
(A) प्रकृतेः (B) पुरुषात्
(C) पञ्चतन्मात्रेभ्यः (D) बुद्धेः
स्रोत–सांख्यकारिका (का.-22)– राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 70

247. (i) महत्तत्त्वेन कस्य उत्पत्तिः? BHU AET–2014
(ii) महतः किमुत्पद्यते– K-SET–2013, MH-SET–2011
(iii) महतः विकारः कः? RPSC SET–2010
(A) प्रकृतिः (B) पुरुषः
(C) अहङ्कारः (D) त्रयमपि
स्रोत–सांख्यकारिका (का.-22)–राकेश शास्त्री, पृष्ठ-70,71

248. पञ्चभूतानि साक्षात्कुतः जायन्ते– BHU AET–2011
(A) प्रकृतिः (B) महत्तत्त्वात्
(C) अहङ्कारात् (D) पञ्चतन्मात्रेभ्यः
स्रोत–सांख्यकारिका (का.-22)– राकेश शास्त्री, पृष्ठ-70,71

249. सांख्यमते एकादशेन्द्रियाणि जायन्ते– UGC-25 D–2004, 2012
(A) अहङ्कारात् (B) महतः
(C) प्रकृतेः (D) पञ्चतन्मात्रेभ्यः
स्रोत–सांख्यकारिका (का.-22)– राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 70,71

250. (i) प्रकृतिपुरुषयोः सम्बन्धः कीदृशो भवति–
(ii) पुरुष-प्रकृत्योः संसर्गः........... वर्णितः–
(iii) सांख्यमतानुसारं प्रकृतिपुरुषयोः सम्बन्धः कीदृशः– UGC-25 J–2008, 2014, K-SET–2015
(A) जडाजडवत् (B) मूक-बधिर-वत्
(C) अन्धमालावत् (D) पङ्ग्वन्धवत्
स्रोत–सांख्यकारिका (का.-21) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 68,69

251. सृष्टिक्रमे सांख्यैः कः न्यायः स्वीक्रियते GJ SET–2013
(A) स्थूणानिखनन्यायः (B) अन्धपङ्गुन्यायः
(C) अन्धगोलाङ्गुलन्यायः (D) कन्दबगोलकन्यायः
स्रोत–सांख्यकारिका (का.-21) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 68,69

252. (i) सांख्य के अनुसार आकाश का कारण है।
(ii) सांख्यमतानुसार आकाश किससे उत्पन्न होता है– UGC-25 J–1998, D–1999
(A) ईश्वरात् (B) अव्यक्तात्
(C) अहङ्कारात् (D) शब्दतन्मात्रात्
स्रोत–सांख्यकारिका (का.-22)– राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 73

241. (D) 242. (A) 243. (B) 244. (B) 245. (A) 246. (C) 247. (C) 248. (D) 249. (A) 250. (D) 251. (B) 252. (D)

253. एतेषु इदं न महाभूतम्– K-SET–2014

(A) आकाशम् (B) पृथिवी
(C) जलम् (D) स्पर्शः

स्रोत–सांख्यकारिका – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 73

254. (i) सांख्यमतानुसार प्रकृति का द्वितीय विकार है?
(ii) प्रकृति का द्वितीय परिणाम है– UGC-25 J–1999, UGC-73 J–1999

(A) पुरुष (B) तन्मात्र
(C) महत् (D) अहङ्कार

स्रोत–सांख्यकारिका (का0-22)–राकेश शास्त्री, पृष्ठ-70-71

255. सांख्यानुसार कर्मेन्द्रिय का मूल है– UGC-25 D–2001

(A) पुरुष (B) महत्
(C) अहङ्कार (D) पञ्चभूत

स्रोत–सांख्यकारिका (का0-24)–राकेश शास्त्री, पृष्ठ-77-78

256. महत् तत्त्व का उत्पत्तिस्थान है– UGC-25 D–2003

(A) अहङ्कार (B) प्रधान
(C) इन्द्रियाँ (D) तन्मात्रा

स्रोत–सांख्यकारिका (का0-22)–राकेश शास्त्री, पृष्ठ-70-71

257. 'स्पर्श-तन्मात्र' का कार्य है– UGC-73 J–1991

(A) आकाश (B) वायु
(C) रूप (D) पृथ्वी

स्रोत–सांख्यकारिका – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 72

258. सांख्यमतानुसार इन्द्रियाँ उत्पन्न होती हैं– UGC 73 J–1998

(A)अहङ्कारात् (B) पुरुषात्
(C) भूतेभ्यः (D) प्रधानात्

स्रोत–सांख्यकारिका (का0-24)–राकेश शास्त्री, पृष्ठ-77-78

259. (i) प्रकृतेः प्रथमं किम् उत्पन्नं भवति? UGC-73 D–1997
(ii) सांख्यमतानुसार प्रकृति का प्रथम विकार है– K SET–2013

(A) अहङ्कार (B) अणु
(C) पञ्चतन्मात्र (D) महत्

स्रोत–सांख्यकारिका – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 8,9

260. (i) सांख्यदर्शन में महदादि प्रकृति के विकार कहे गये हैं– UP-PGT–2013, GJ SET–2013
(ii) सांख्यनये विकाराणां संख्या–

(A) द्वादश (B) पञ्चविंशतिः
(C) षोडश (D) एकविंशतिः

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-03) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 08

261. प्रकृतिरपि विकृतिरपि अस्ति– UK-SLET–2015

(A) मूलप्रकृतिः (B) चक्षुरिन्द्रियम्
(C) अहङ्कारः (D) कैवल्यम्

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-03) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 08

262. सावयवं परतन्त्रं हेतुमत् अस्ति– UK SLET–2015

(A) पुरुषः
(B) प्रधानम्
(C) महदादि-पृथिव्यन्तं त्रयोविंशतितत्त्वम्
(D) एषु न किमपि

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-10)–राकेश शास्त्री, पृष्ठ-32, 33

263. सांख्यानुसारं सृष्टिकारणं किम्– UGC-25 D–2014

(A) पुरुषः (B) प्रकृतिः
(C) ब्रह्मा (D) प्रकृति-पुरुषसंयोगः

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-21) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 68

264. प्रकृति का विकार क्या है– BHU MET–2012

(A) महत् (B) अव्यक्त
(C) पुरुष (D) प्रधान

स्रोत–सांख्यकारिका (का0-22)–राकेश शास्त्री, पृष्ठ-70,71

265. प्रकृति एवं पुरुष के संयोग से क्या होता है– BHU AET–2010

(A) प्रलय (B) मोह
(C) ज्ञान (D) सृष्टि

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-21) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 68

266. महदादितत्त्व क्या हैं– BHU AET–2011

(A) प्रकृति (B) विकृति
(C) दोनों (D) दोनों में से कोई नहीं

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-03) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 08,09

253. (D) 254. (D) 255. (C) 256. (B) 257. (B) 258. (A) 259. (D) 260. (C) 261. (C) 262. (C) 263. (D) 264. (A) 265. (D) 266. (C)

267. सांख्यमतानुसारं 'महत्' अस्ति? DU Ph. D–2016 UGC 25 Jn–2017

(A) प्रकृतिः (B) विकृतिः
(C) प्रकृतिविकृतिः (D) न प्रकृतिः न विकृतिः

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-03) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 08

268. सृष्टि के सञ्चालन में कौन सक्षम है– BHU AET–2011

(A) प्रधान (B) पुरुष
(C) दोनों (D) दोनों में कोई नहीं

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-21) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 68

269. शब्दतन्मात्र से किसकी उत्पत्ति होती है– BHU AET–2011

(A) आकाश की (B) वायु की
(C) अग्नि की (D) जल की

स्रोत–सांख्यकारिका – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 72

270. ईश्वरकृष्ण के अनुसार संसार का मूल कारण क्या है– BHU AET–2011

(A) विकृति (B) प्रकृति
(C) पुरुष (D) ईश्वर

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-03) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 08

271. सांख्यकारिकायां सर्गस्य कारणम्– UGC-25 J–2015

(A) पुरुषः (B) ईश्वरः
(C) प्रधानम् (D) पुरुष-प्रकृति-संयोगः

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-21) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 68

272. 'ततोऽहङ्कारः' इति अहङ्कारस्य उत्पत्तिः कुतः भवति– UGC-25 J–2015, D–2015

(A) प्रकृतेः (B) महतः
(C) षोडशगणात् (D) पञ्चभूतेभ्यः

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-22) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 70

273. सांख्यमते वायोः प्रादुर्भावः कस्मात्– UGC-25 J–2006

(A) शब्दतन्मात्रात् (B) स्पर्शतन्मात्रात्
(C) गन्धतन्मात्रात् (D) रसतन्मात्रात्

स्रोत–सांख्यकारिका – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 72

274. (i) मन किस प्रकार की इन्द्रिय है– UP PGT–2009, 2010
(ii) सांख्यमते मनः कीदृशं इन्द्रियं भवति– UGC-25 J–2004, BHU AET–2011, UK-TET–2011, K-SET–2014

(A) कर्मेन्द्रिय
(B) ज्ञानेन्द्रिय
(C) उभयात्मक
(D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-27) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 84

275. सांख्यकारिकायां मनसः साधारणवृत्तिः अस्ति? JNU M. Phil/Ph. D–2015

(A) संकल्पः (B) प्राणः
(C) अभिमानः (D) अध्यवसायः

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-27) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 84

276. 'वाक्' कीदृशी भवति BHU AET–2010

(A) कर्मेन्द्रिय (B) ज्ञानेन्द्रिय
(C) उभयम् (D) नोभयम्

स्रोत–सांख्यकारिका (का0-26) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 81

277. ज्ञानेन्द्रियेषु अन्तर्गतं किम् BHU AET–2010

(A) वाक् (B) पाणिः
(C) पादः (D) चक्षुः

स्रोत–सांख्यकारिका (का0-26) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 81

278. उभयात्मकम् अत्र किम्– BHU AET–2010

(A) तमः (B) रजः
(C) मनः (D) गुणः

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-27) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 84

279. सांख्य के अनुसार श्रोत्र किस इन्द्रिय के अन्तर्गत आता है– BHU AET–2010

(A) ज्ञानेन्द्रिय (B) कर्मेन्द्रिय
(C) दोनों (D) दोनों से अलग

स्रोत–सांख्यकारिका (का0-26) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 81

267. (C) 268. (C) 269. (A) 270. (B) 271. (D) 272. (B) 273. (B) 274. (C) 275. (A) 276. (A) 277. (D) 278. (C) 279. (A)

280. (i) ईश्वरकृष्णेन बुद्धेः किं लक्षणं दत्तम्–
(ii) सांख्यकारिकामते बुद्धेः स्वरूपं किम्?
(iii) सांख्यमते बुद्धिः कीदृशी– BHU AET–2010
(iv) सांख्यमतानुसारेण बुद्धेः लक्षणमस्ति– RPSC ग्रेड-I PGT–2015, RPSC SET–2010, 2013- 2014

(A) सङ्कल्पात्मिका (B) अभावात्मिका
(C) अभिमानात्मिका (D) अध्यवसायात्मिका

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-23) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 73

281. बुद्धेः सात्त्विकगुणः भवति– DU M. Phil–2016

(A) अधर्मः (B) अज्ञानम्
(C) वैराग्यम् (D) अनैश्वर्यम्

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-23) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 73

282. अध्यवसायशब्देन किमुच्यते– BHU AET–2011

(A) बुद्धिः (B) धर्मः
(C) ज्ञानम् (D) ऐश्वर्यम्

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-23) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 73

283. महतः वृत्तिः– UGC-25 J–2006

(A) अभिमानः (B) सङ्कल्पः
(C) अध्यवसायः (D) आलोचनम्

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-23) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 73,74

284. अध्यवसायो लक्षणमस्ति– CCSUM Ph. D–2016

(A) मनसः (B) महतः
(C) अहङ्कारस्य (D) इन्द्रियाणाम्

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-23) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 73

285. ज्ञानं कस्य धर्मः– UGC-25 D–2007, 2012

(A) पुरुषस्य (B) प्रकृतेः
(C) अहङ्कारस्य (D) बुद्धेः

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-23) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 73

286. बुद्धि के सात्त्विक रूपों में से एक है–BHU AET–2010

(A) अधर्म (B) अज्ञान
(C) अवैराग्य (D) ज्ञान

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-23) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 73

287. सांख्यदर्शनानुसारम् अध्यवसायात्मकं तत्त्वं किम्– UGC-25 J–2015

(A) बुद्धिः (B) चक्षुः
(C) त्वक् (D) कर्णः

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-23) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 73

288. (i) ''अभिमानोऽहङ्कारः'' जिसका लक्षण है, वह है–
(ii) अभिमान का गुण है– BHU MET–2014, UGC-25 J–2003

(A) बुद्धि (B) प्रकृति
(C) अहङ्कार (D) मन

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-24)–राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 77, 78

289. (i) प्रकाशात्मक कौन है–
(ii) सांख्यदर्शनानुसार प्रकाश से सम्बद्ध है– UGC-73 J–2011, BHU MET–2011, 2012

(A) रजोगुण (B) प्रधान
(C) सत्त्वगुण (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-13) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 45

290. रिक्तस्थानों की पूर्ति के लिए निम्नाङ्कित चार विकल्पों में से कौन-सा विकल्प उपयुक्त है– UP PGT–2005

(क) .... लघु प्रकाशकम्
(ख) गुरु वरणकम् ....
(ग) .... अर्थतो वृत्तिः
(घ) उपष्टम्भकं चलञ्च ....

(A) प्रदीपवत्, सत्त्वम्, तमः, रजः
(B) सत्त्वम्, तमः, प्रदीपवत्, रजः
(C) तमः, रजः, सत्त्वम्, प्रदीपवत्
(D) रजः, तमः, सत्वम्, प्रदीपवत्

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-13)–राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 45

291. (i) गुणों की संख्या कितनी है UGC-73 J–2006,
(ii) सांख्यमत के अनुसार गुण होते हैं– D–1994,

(A) त्रयः (B) चत्वारः
(C) पञ्च (D) दश

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-12) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 43

280. (D) 281. (C) 282. (A) 283. (C) 284. (B) 285. (D) 286. (D) 287. (A) 288. (C) 289. (C) 290. (B) 291. (A)

292. (i) सांख्यकारिका के अनुसार रजोगुण होता है–
(ii) रजोगुण है–UGC-73 D–2012, UP PGT–2011
(iii) ईश्वरकृष्णमतेन रजः कीदृशं भवति–
MH SET–2011

(A) प्रकाशकः (B) वरणकः
(C) लघुः (D) उपष्टम्भकः

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-13) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 45

293. तमोगुणस्य प्रयोजनम् अस्ति– UP GDC–2012

(A) प्रवृत्तिः (B) प्रकाशः
(C) नियमनम् (D) विषादः

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-12) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 44

294. सांख्यकारिका में नियमात्मक कौन है?
BHU MET–2016

(A) आकाश (B) सत्त्वगुण
(C) रजोगुण (D) तमोगुण

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-12) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ-44

295. महतः प्रकृतेश्च समानधर्मः कः– BHU AET–2010

(A) त्रिगुणत्वम् (B) त्रिगुणराहित्यम्
(C) नित्यत्वम् (D) चैतन्यम्

स्रोत–सांख्यकारिका – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 41

296. (i) सत्त्वगुणो भवति– BHU AET–2010
(ii) सत्त्वगुणस्य लक्षणं किम्– UP PGT–2005
K-SET–2013, UGC-73 D–1992, 1996

(A) चलम् (B) आवरणकम्
(C) उपष्टम्भकम् (D) लघुप्रकाशकम्

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-13) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 45

297. ऐश्वर्यम् कस्य लक्षणं भवति? UGC 25 J–2016

(A) रजोगुणस्य (B) सत्त्वगुणस्य
(C) तमोगुणस्य (D) पुरुषस्य

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-23) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 73,76

298. रजोगुणस्य लक्षणं किम्– BHU AET–2010

(A) प्रकाशकम् (B) चलम्
(C) लघु (D) आवरणकम्

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-13) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 45

299. गुरु वरणकं किम्– BHU AET–2010, 2011

(A) तमः (B) रजः
(C) सत्त्वम् (D) न किमपि

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-13) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 45

300. तमो गुणो भवति– BHU AET–2012

(A) प्रकाशात्मकः (B) मोहात्मकः
(C) प्रवर्त्तकः (D) चञ्चलः

स्रोत–सांख्यकारिका (का0-12)–राकेश शास्त्री, पृष्ठ-43-44

301. प्रीत्यप्रीतिविषादात्मकाः– BHU AET–2011

(A) गुणाः (B) दोषाः
(C) पुरुषाः (D) देहाः

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-12) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 42

302. (i) लघु प्रकाशकञ्च– BHU AET–2011
(ii) सांख्यमतेन 'लघुप्रकाशकमिष्टं' किम्?
(iii) लघुप्रकाशकञ्चेति द्वे वैशिष्ट्ये स्तः–
UGC-25 S–2013, MH-SET–2013, G GIC–2015

(A) सत्त्वम् (B) रजः
(C) तमः (D) मनः

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-13) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 45

303. उपष्टम्भकं चलञ्च– BHU AET–2011, UGC-25 D–2002

(A) सत्त्वम् (B) रजः
(C) तमः (D) मनः

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-13) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 45

304. प्रदीपवच्चार्थतो वृत्तिः– BHU AET–2011

(A) गुणानाम् (B) भूतानाम्
(C) तन्मात्राणाम् (D) पुरुषाणाम्

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-13) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 45

305. सांख्यैः गुणाः .... इति वर्णिताः–UGC-25 J–2008

(A) सुख-दुःख-मोहात्मकाः (B) इष्टानिष्टोभयात्मकाः
(C) प्रीत्यप्रीतिविषादात्मकाः (D) सुख-दुःख-रागात्मकाः

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-12) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 42

292. (D) 293. (C) 294. (D) 295. (A) 296. (D) 297. (B) 298. (B) 299. (A) 300. (B) 301. (A) 302. (A) 303. (B) 304. (A) 305. (C)

306. 'सत्त्वगुण' देता है– UGC-25 D–2011
(A) दुःखम् (B) प्रीतिः
(C) विषादम् (D) मोहम्
स्रोत–सांख्यकारिका (का.-12) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 43

307. सांख्यमते गुरुवरणकञ्च उच्यते– UGC-25 S–2013
(A) सत्त्वम् (B) तमः
(C) रजः (D) रूपम्
स्रोत–सांख्यकारिका (का.-13) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 45

308. (i) सांख्यदर्शन में 'रजोगुण' होता है–
(ii) रजोगुणः किं प्रकारकः भवति– UP PGT–2013 RPSC SET–2013-2014
(A) स्थिर
(B) उपष्टम्भक तथा चञ्चल
(C) अनुपष्टम्भक तथा अचल
(D) लघु तथा प्रकाश
स्रोत–सांख्यकारिका (का.-13) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ-45,46

309. ''तमः प्रदीपवच्चार्थतो वृत्तिः'' कथनं कस्य विषये– JNU MET–2014, UGC-25 J–2015
(A) प्रकृतेः (B) पुरुषस्य
(C) गुणत्रयस्य (D) नैकस्यापि
स्रोत–सांख्यकारिका (का.-13) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 45

310. 'रजोगुण' का प्रयोजन है– BHU AET–2010
(A) प्रकाशन (B) प्रवर्तन
(C) नियन्त्रण (D) तीनों में से कोई नहीं
स्रोत–सांख्यकारिका (का0-12)–राकेश शास्त्री, पृष्ठ-44, 46

311. क्रियाशील गुण कौन-सा है– BHU AET–2010
(A) तमोगुण (B) सत्त्वगुण
(C) रजोगुण (D) ये सभी
स्रोत–सांख्यकारिका (का0-13)– राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 46

312. तमोगुण का स्वभाव क्या है– BHU AET–2011
(A) अप्रीत्यात्मक (B) प्रीत्यात्मक
(C) विषादात्मक (D) तीनों
स्रोत–सांख्यकारिका (का.-12)–राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 42, 43

313. अधस्तनवर्गयोः समीचीनं युग्मपर्यायं विचिनुत– MH SET–2013

(क) सत्त्वम् 1. सङ्कल्पविकल्पात्मकम्
(ख) रजः 2. अज्ञानम्
(ग) तमः 3. प्रकाशकम्
(घ) मनः 4 उपष्टम्भकम्

कूट :	क	ख	ग	घ
(A)	1	2	3	4
(B)	2	1	4	3
(C)	4	3	1	2
(D)	3	4	2	1

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-13,27)–राकेश शास्त्री, पृष्ठ-45,84

314. पञ्चविपर्ययभेदाः भवन्ति। कस्मात्? MH SET–2011
(A) करणवैकल्यात् (B) बुद्धेर्विपर्ययात्
(C) भेदानां परिमाणात् (D) कारणकार्यविभागात्
स्रोत–सांख्यकारिका (का.-46,47)–राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 131-135

315. ईश्वरकृष्ण के अनुसार तमोगुण का क्या स्वरूप है– BHU AET–2011
(A) अवरोधक (B) प्रकाशक
(C) गतिशील (D) कोई नहीं
स्रोत–सांख्यकारिका (का.-13) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 46

316. सांख्यदर्शन का प्रीत्यात्मक गुण है– BHU MET–2015
(A) रजः (B) तमः
(C) सत्त्वम् (D) रसः
स्रोत–सांख्यकारिका (का.-12)–राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 42, 43

317. तमोगुणः भवति– UP GIC–2015
(A) भारयुक्तः (B) प्रेरकः
(C) प्रकाशकः (D) क्रियाशीलः
स्रोत–सांख्यकारिका (का.-13) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 46

318. सांख्यदर्शन में 'अप्रीत्यात्मक' गुण कौन सा है? UGC 73 D–2015
(A) रजोगुणः (B) सत्त्वगुणः
(C) रजोमिश्रतमोगुणः (D) तमोगुणः
स्रोत–सांख्यकारिका (का.-12) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 43

306. (B) 307. (B) 308. (B) 309. (C) 310. (B) 311. (C) 312. (C) 313. (D) 314. (B) 315. (A) 316. (C) 317. (A) 318. (A)

319. (i) सांख्यमते सत्त्वगुणस्य स्वभावो विद्यते
(ii) सत्त्वगुण का स्वभाव क्या है–
(iii) सांख्यमतानुसारं सत्त्वगुणः– UGC-25 J–2013 –2015, BHU AET–2010

(A) सुखात्मकः (B) दुःखात्मकः
(C) अभावात्मकः (D) मोहात्मकः

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-12) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 43

320. 'सत्त्वगुणस्य' लक्षणं किम् – BHU AET–2010

(A) लघुप्रकाशकम् (B) आवरणकम्
(C) चलम् (D) उपष्टम्भकम्

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-13) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 45

321. विषादोऽस्य स्वरूपम्– UGC-25 J–2005

(A) सत्त्वगुणस्य (B) तमोगुणस्य
(C) रजोगुणस्य (D) पुरुषस्य

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-12) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 44

322. रजोगुणः भवति– BHU AET–2012

(A) प्रवृत्तिजनकः (B) मोहात्मकः
(C) ज्ञानात्मकः (D) सुखात्मकः

स्रोत–सांख्यकारिका (का0-13) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 46

323. (i) भिन्नधर्माणां गुणानां वृत्तिः कीदृशी भवति–
(ii) सांख्यमते गुणानां प्रवृत्तिः कीदृशी– UGC 25 J–2016, RPSC SET–2010

(A) जलवत् (B) वायुवत्
(C) अग्निवत् (D) प्रदीपवत्

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-13) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 45

324. सांख्य के अनुसार 'बुद्धि' के प्रमुख परिणाम हैं– UP PGT–2004, 2009

(A) विपर्यय, अशक्ति, सिद्धि और तमस्
(B) विपर्यय, अशक्ति, तुष्टि और सिद्धि
(C) विपर्यय, अशक्ति, मोह और सिद्धि
(D) विपर्यय, अशक्ति, मोह और तमस्

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-46) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 131

325. सांख्य के अनुसार पुरुषार्थ हैं– UK TET–2011

(A) धर्म और काम (B) भोग और अपवर्ग
(C) धर्म और मोक्ष (D) अर्थ और मोक्ष

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-42) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 122

326. सांख्यकारिका के अनुसार 'कैवल्य' प्राप्ति किससे होती है– BHU MET–2014

(A) ब्रह्मज्ञान से (B) ईश्वरज्ञान से
(C) प्रकृति-पुरुष-विवेक से (D) प्रकृति-ज्ञान से

स्रोत–सांख्यतत्त्वकौमुदी-प्रभा (का.-44)–आद्याप्रसाद मिश्र, पृष्ठ-267

327. सांख्यमतानुसार मोक्ष का साधन है– UGC-25 J–1994

(A) ब्रह्मज्ञान (B) प्रकृति-पुरुष-विवेक
(C) अष्टाङ्गयोग (D) ईश्वर-ज्ञान

स्रोत–सांख्यतत्त्वकौमुदी-प्रभा (का.-44)–आद्याप्रसाद मिश्र, पृष्ठ-267

328. वस्तुतः मोक्षः कस्य भवति– BHU AET–2010

(A) प्रकृतेः (B) पुरुषस्य
(C) मनसः (D) बुद्धेः

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-62)– राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 165

329. सांख्यकारिका के अनुसार कैवल्य का उपाय है– UP GDC–2008, UGC-25 D–2006

(A) भक्ति (B) कर्म
(C) विवेकख्याति (D) उपासना

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-44)–सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ-263

330. (i) सांख्यमतानुसार कैवल्य का स्वरूप है–
(ii) कैवल्यं किमस्ति– UGC-25 J–2007
(iii) सांख्यमतेन कैवल्यं कीदृशं भवति– D–2012, 2013, MH SET–2013

(A) नित्यसुखाभिव्यक्तिः
(B) आत्यन्तिकदुःखनिवृत्तिः
(C) ऐकान्तिकदुःखनिवृत्तिः
(D) ऐकान्तिकात्यन्तिकदुःखनिवृत्तिः

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-68) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 173

319. (A) 320. (A) 321. (B) 322. (A) 323. (D) 324. (B) 325. (B) 326. (C) 327. (B) 328. (A) 329. (C) 330. (D)

331. ऐकान्तिकम् आत्यन्तिकं कैवल्यम् आप्नोति– K-SET–2013

(A) महान् (B) प्रधानम्

(C) पुरुषः (D) अहङ्कारः

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-68) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 173

332. सांख्यमतानुसार अपवर्ग होता है– UGC-25 J–1995

(A) ज्ञानजन्यः (B) वैराग्यजन्यः

(C) अभ्यासजन्यः (D) विवेकजन्यः

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-44)–सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ-263

333. 'प्रत्ययसर्ग' में यह अन्तर्भूत है– UGC-25 J–1998

(A) तन्मात्र (B) पुरुष

(C) अहंकार (D) विपर्यय

स्रोत–सांख्यकारिका – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 148

334. 'प्रत्ययसर्ग' में यह अन्तर्भूत है– UGC-25 D–1998

(A) तन्मात्र (B) अशक्ति

(C) पुरुष (D) अहङ्कार

स्रोत–सांख्यकारिका – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 148

335. पुरुषस्य मोक्षार्थं प्रवर्तते– DU M. Phil–2016

(A) व्यक्तम् (B) अव्यक्तम्

(C) महान् (D) मनः

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-21) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 68

336. (i) सांख्य में अपवर्ग की प्राप्ति होती है–

(ii) ईश्वरकृष्णानुसारम् अपवर्गो भवति–

UGC-25 J–2003, BHU MET–2015, GJ SET–2003

(A) कर्म से (B) ज्ञान से

(C) मोक्ष से (D) गुण से

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-44) - राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 127

337. 'ज्ञान' से होता है– UGC-73 D–1992

(A) दुःख (B) अपवर्ग

(C) बुद्धि (D) धन

स्रोत–सांख्यकारिका (का0-44) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 127

338. सांख्यदर्शने निःश्रेयसः साधनं किम्– HE–2015

(A) ब्रह्मज्ञानम् (B) भक्तिः

(C) तत्त्वज्ञानम् (D) चित्तशुद्धिः

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-64) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 167,168

339. सांख्यस्य मूलसिद्धान्तोऽस्ति– UP GIC–2015

(A) प्रकृतिपुरुषैक्यम् (B) प्रकृतिपुरुषविवेकः

(C) प्रकृतिबहुलम् (D) पुरुषैकत्वम्

स्रोत–सांख्यकारिका – राकेश शास्त्री, भू. पृष्ठ- 49

340. ''ज्ञानेनापवर्गः'' किस मत में है– UGC-73 J–2010

(A) सांख्यमते (B) न्यायमते

(C) जैमिनिमते (D) चार्वाकमते

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-44) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 127

341. आत्यन्तिकदुःखनिवृत्तिर्भवति– UGC-73 J–2012

(A) धर्मात् (B) तत्त्वज्ञानात्

(C) गुरुवन्दनात् (D) औषधपानात्

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-68)–सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ-337

342. 'त्रिकालमाभ्यन्तरं करणम्– UGC-25 J–2009

(A) सदानन्दमते (B) केशवमिश्रमते

(C) ईश्वरकृष्णमते (D) जैमिनिमते

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-33) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 101

343. 'पुरुषबहुत्वं' को कौन-सा दर्शन स्वीकार करता है– BHU MET–2014

(A) सांख्य (B) न्याय

(C) मीमांसा (D) वैशेषिक

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-18) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 59

344. सांख्यकारिका में 'आनुश्रविकः' का क्या अर्थ है– BHU MET–2014

(A) पुराण (B) गुणत्रय

(C) स्मृति (D) वेद

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-2) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 5

331. (C) 332. (D) 333. (D) 334. (B) 335. (B) 336. (B) 337. (B) 338. (C) 339. (B) 340. (A) 341. (B) 342. (C) 343. (A) 344. (D)

345. किस दर्शन में यह प्रतिपादित किया गया है कि आत्माएँ अनेक हैं– UP PGT–2002

(A) न्यायदर्शन में (B) मीमांसादर्शन में
(C) सांख्यदर्शन में (D) वेदान्तदर्शन में

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-18) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 59

346. ईश्वरसिद्धिः निरूपिता नास्ति– UGC 73 D–2013

(A) सांख्ये (B) वेदान्ते
(C) न्याये (D) मीमांसायाम्

स्रोत–सांख्यकारिका – राकेश शास्त्री, भू. पृष्ठ- 32

347. 'प्रकृतिसरूप' और 'विरूप' क्या है– BHU MET–2011

(A) महत् (B) प्रकृति
(C) पुरुष (D) प्रधान

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-8) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 27

348. कौन ईश्वर को स्वीकार नहीं करता है– BHU MET–2011

(A) न्याय (B) वैशेषिक
(C) वेदान्त (D) सांख्य

स्रोत–सांख्यकारिका – राकेश शास्त्री,भू. पृष्ठ- 32

349. कार्यं भवति– UGC-25 D–2005

(A) केवलं प्रकृतिसरूपम्
(B) केवलं प्रकृतिविरूपम्
(C) प्रकृतिसरूपमपि प्रकृतिविरूपमपि
(D) न प्रकृतिसरूपं न प्रकृतिविरूपम्

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-8) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 27

350. सांख्यकारिका के अनुसार सुहृत्प्राप्ति है? BHU MET–2016

(A) सिद्धि (B) गुण
(C) तुष्टि (D) शक्ति

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-51)–राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 145, 146

351. पञ्चमहाभूतानि विशेषः कथ्यन्ते– DU M. Phil–2016

(A) शान्तत्वात् (B) घोरत्वात्
(C) मूढत्वात् (D) उक्त सर्वेगुणोपेतत्वात्

स्रोत–सांख्यकारिका (का0-38)–राकेशशास्त्री, पृष्ठ- 111

352. सांख्याभिमतख्यातिः का– UGC-25 J–2013

(A) अनिर्वचनीयख्यातिः (B) अन्यथाख्यातिः
(C) विवेकख्यातिः (D) असत्ख्यातिः

स्रोत–सांख्यकारिका (का-44)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–263

353. कारणगुणात्मकत्वात् कस्य अव्यक्तमपि सिध्यति– MH SET–2016

(A) कारणस्य (B) कार्यस्य
(C) पुरुषस्य (D) प्रधानस्य

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-14) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 48

354. सांख्यकारिकायां स्वीक्रियते– UK SLET–2015

(A) सेश्वरवादः (B) निरीश्वरवादः
(C) उभयविधः (D) अनुभयविधः

स्रोत–सांख्यकारिका – राकेश शास्त्री, भू. पृष्ठ- 32

355. अधस्तनेषु युग्मपर्यायेषु योग्यं विचिनुत– MH SET–2016

(क) प्रत्ययसर्गः 1. अष्टादश
(ख) तामिस्रः 2. दशविधः
(ग) विपर्ययः 3. चतुर्विधः
(घ) महामोहः 4. पञ्चविधः

	क	ख	ग	घ
(A)	3	1	4	2
(B)	1	2	3	4
(C)	2	4	3	1
(D)	4	3	1	2

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-46,47,48)–राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 138

356. 'आनुश्रविक' शब्द का अर्थ है– BHU AET–2010

(A) श्रुतिप्रतिपादित
(B) स्मृतिप्रतिपादित
(C) पुराणोक्त
(D) तीनों में से कोई नहीं

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-2) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 05

345. (C) 346. (A) 347. (A) 348. (D) 349. (C) 350. (A) 351. (D) 352. (C) 353. (B) 354. (B) 355. (A) 356. (A)

357. अधस्तनवाक्यानां सत्यासत्यत्वपर्यायेषु समीचीनं विचिनुत– **MH SET–2011**

A. सिकताभ्यः तैलोत्पत्तिः भवति
B. प्रधानव्यतिरेकी पुरुषः अस्ति
C. यदा सत्त्वमुत्कटं भवति तदा गुरूण्यङ्गानि भवन्ति
D. पुरुषस्य साक्षित्वं नास्ति

(A) सत्यम्, असत्यम्, सत्यम्, सत्यम्
(B) असत्यम्, सत्यम्, सत्यम्, सत्यम्
(C) असत्यम्, सत्यम्, असत्यम्, असत्यम्
(D) सत्यम्, असत्यम्, असत्यम्, असत्यम्

सांख्यकारिका (का.-9,11,13,19)–राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 31,38,46,62

358. सांख्यदर्शन के प्रसङ्ग में 'महत्' का अर्थ है– **BHU MET–2015**

(A) प्रकृति (B) पुरुष
(C) गुणत्रय (D) बुद्धि

स्रोत–सांख्यकारिका – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 09

359. 'दृष्टवदानुश्रविकः' किस दर्शन से सम्बन्धित है– **BHU MET–2008, 2012**

(A) सांख्यदर्शन से (B) न्यायदर्शन से
(C) वेदान्तदर्शन से (D) योगदर्शन से

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-2) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 05

360. संख्याजन्य परिमाण होता है– **UGC 73 J–2005**

(A) घटपरिमाणम् (B) त्रसरेणुपरिमाणम्
(C) तूलकपरिमाणम् (D) पटपरिमाणम्

न्यायसिद्धान्तमुक्तावली-गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज–206-209

361. 'परिणामवाद' किसका सिद्धान्त है– **UGC-73 J–2005, 2011, D–2012**

(A) वेदान्त (B) सांख्य
(C) नैयायिक (D) मीमांसक

स्रोत–भारतीय दर्शन – चन्द्रधर शर्मा, पृष्ठ- 141

362. पादविभागो नास्ति– **UGC-73 D–2013**

(A) ब्रह्मसूत्रग्रन्थे (B) सांख्यकारिकायाम्
(C) न्यायसूत्रग्रन्थे (D) मीमांसासूत्रग्रन्थे

स्रोत–सांख्यकारिका - राकेशशास्त्री, भू0 पृष्ठ- 19,29

363. जगत् के कर्त्ता ईश्वर नहीं है– यह मानते हैं– **UGC-73 S–2013**

(A) नैयायिकाः (B) सांख्याः
(C) अद्वैतवेदान्तिनः (D) योगिनः

स्रोत–सांख्यकारिका – राकेश शास्त्री, भू. पृष्ठ- 32

364. 'आनुश्रविक' कहते हैं– **UP PGT–2005**

(A) लौकिक उपाय से (B) वैदिक उपाय से
(C) भौतिक उपाय से (D) नैतिक उपाय से

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-2) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 05

365. सांख्यदर्शन के अनुसार उचित मेल कीजिये? **UGC 73 D–2015**

(क) बुद्धिरहंकारो मनः (i) दशविधः
(ख) बुद्धीन्द्रियाणि (ii) रजः
(ग) महामोहः (iii) अन्तःकरणम्
(घ) उपष्टम्भकं चलम् (iv) ज्ञानेन्द्रियाणि

	क	ख	ग	घ
(A)	(iv)	(iii)	(i)	(ii)
(B)	(i)	(ii)	(iv)	(iii)
(C)	(iii)	(iv)	(i)	(ii)
(D)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)

सांख्यकारिका (का.-33,34,48,13)–राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 101,103,135,45

366. अधोऽङ्कितानां युग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत– **K-SET–2015**

(क) धर्मः 1. बन्धः
(ख) अधर्मः 2. अपवर्गः
(ग) ज्ञानम् 3. अधोगमनम्
(घ) विपर्ययः 4. ऊर्ध्वगमनम्

	क	ख	ग	घ
(A)	3	4	2	1
(B)	2	3	4	1
(C)	4	3	2	1
(D)	1	2	3	4

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-44) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 127,129

357. (C) 358. (D) 359. (A) 360. (B) 361. (B) 362. (B) 363. (B) 364. (B) 365. (C) 366. (C)

367. अधस्तनेषु सत्यासत्यपर्यायेषु समीचीनं विचिनुत– MH SET–2013

(क) प्रमाणत्रयं साख्यैः स्वीकृतम्

(ख) प्रमाणचतुष्टयं सांख्यसम्मतम्

(ग) कार्यं सत्

(घ) बुद्धीन्द्रियाणि षट्

(A) सत्यम्, असत्यम्, सत्यम्, असत्यम्

(B) असत्यम्, सत्यम्, असत्यम्, सत्यम्

(C) सत्यम्, असत्यम्, असत्यम्, सत्यम्

(D) सत्यम्, सत्यम्, सत्यम्, सत्यम्

सांख्यकारिका (का.-4,9,34) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 12,29,103

368. अधस्तनेषु युग्मपर्यायेषु समीचीनं विचिनुत– MH-SET–2013

(क) उभयात्मकम् (1) अव्यक्तम्

(ख) प्रकृतिः (2) मनः

(ग) तुष्टयः (3) नानाश्रया

(घ) पुरुषस्य मोक्षार्थं प्रवर्तते (4) नव

	क	ख	ग	घ
(A)	2	3	4	1
(B)	1	2	3	4
(C)	4	1	2	3
(D)	3	4	1	2

सांख्यकारिका (का.-27,62,47)–राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 84,165,139,159

369. सांख्यमते सिद्धिर्नास्ति– CCSUM Ph. D–2016

(A) ऊहः (B) दुःखविघाता

(C) दानम् (D) अणिमा

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-51) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 146

370. सांख्यमते एकादशकः गणः तन्मात्रपञ्चकश्च इति द्विविधः सर्गः कस्मात् प्रवर्तते– RPSC SET–2013-14

(A) अहङ्कारात् (B) प्रकृतेः

(C) महतः (D) भूतेभ्यः

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-24) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 77

371. सांख्यकारिकानुसारं क एष विपर्ययाशक्ति तुष्टिसिद्धयाख्यः सर्गः? RPSC SET–2013-14

(A) पुरुषसर्गः (B) प्रकृतिसर्गः

(C) प्रत्ययसर्गः (D) कैवल्यसर्गः

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-46) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 131

372. प्रकृतेरनुपलब्धिः .... भवति GJ SET–2016

(A) सौक्ष्म्यात् (B) अतिसामीप्यात्

(C) अतिदूरात् (D) अभावात्

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-8) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 27

373. सांख्यदर्शने कैवल्यं भवति– GJ SET–2003

(A) प्रकृतेः (B) पुरुषस्य

(C) मनसः (D) गुणस्य

स्रोत–सांख्यतत्त्वकौमुदी-प्रभा (का0-68)-आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–305

374. प्रत्ययसर्गस्य निरूपणं वर्तते– GJ SET–2008

(A) सांख्यकारिकायाम् (B) वेदान्तसारे

(C) तर्कभाषायाम् (D) तर्कसंग्रहे

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-46) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 131

375. .... अष्टसिद्धिषु न परिगण्यते– GJ SET–2016

(A) अणिमा (B) ईशित्वम्

(C) तनिमा (D) लघिमा

स्रोत–सांख्यकारिका – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 76

376. संकल्प is the characteristic of– WB SET–2010

(A) बुद्धिः (B) अहङ्कारः

(C) मनः (D) पञ्चतन्मात्रम्

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-27) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 84

377. Arrange in Correct order– WB SET–2010

(क) गुरुवरणकम् 1. सत्त्वम्

(ख) उपष्टम्भकं चलञ्च 2. रजः

(ग) लघुप्रकाशकम् 3. तमः

	क	ख	ग
(A)	1	2	3
(B)	3	2	1
(C)	2	3	1
(D)	1	3	2

स्रोत–सांख्यकारिका (का.-13) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 45,46

367. (A) 368. (A) 369. (D) 370. (A) 371. (C) 372. (A) 373. (B) 374. (A) 375. (C) 376. (C) 377. (B)

378. सांख्यकारिकानुसारं किं तत्त्वं प्रधानपुरुषयोः अन्तरं विशिनष्टि? UGC 25 Jn–2017
(A) मनः (B) बुद्धिः
(C) अहङ्कारः (D) ज्ञः
स्रोत–सांख्यकारिका (का.-37)–राकेश शास्त्री, पृष्ठ-109,110

379. (i) ''जननमरणकरणानां ....'' इत्यनेन सिद्धम्–
(ii) 'जननमरणकरणानां प्रतिनियमात्' इति हेतोः किं सिध्यति? RPSC SET–2013, UGC 25 D–2009
(A) पुरुषबहुत्वम् (B) गुणबहुत्वम्
(C) इन्द्रियबहुत्वम् (D) कारणबहुत्वम्
स्रोत–सांख्यकारिका (का.-18) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 59

380. कपिलमुनेः शिष्यः आसीत्– KL SET–2015
(A) विज्ञानभिक्षुः (B) आसुरिः
(C) ईश्वरकृष्णः (D) पञ्चशिखः
स्रोत–सांख्यकारिका (का.-70) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 175

381. आत्मानं प्रकाश्य नर्तकी इव का निवर्तते? KL SET–2015
(A) बुद्धिः (B) प्रकृतिः
(C) तन्मात्राणि (D) इन्द्रियाणि
स्रोत–सांख्यकारिका (का.-59) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 160

382. आलोचनमात्रं वृत्तिरस्ति– KL SET–2015
(A) कर्मेन्द्रियाणाम् (B) महाभूतानाम्
(C) ज्ञानेन्द्रियाणाम् (D) पुरुषाणाम्
स्रोत–सांख्यकारिका (का.-28) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 87

383. बुद्धेः कति भेदाः सन्ति– KL SET–2015
(A) 05 (B) 07
(C) 08 (D) 12
स्रोत–सांख्यकारिका (का.-23) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 74

384. सांख्यनये .... प्रमाणमिष्टम्– GJ SET–2011
(A) एकविधम् (B) द्विविधम्
(C) चतुर्विधम् (D) त्रिविधम्
स्रोत–सांख्यकारिका (का.-04) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 12

385. पुरुषस्य दर्शनार्थं ..... तथा प्रधानस्य? GJ SET–2011
(A) मोक्षार्थम् (B) अपवर्गार्थम्
(C) कैवल्यार्थम् (D) मुक्त्यर्थम्
स्रोत–सांख्यकारिका (का.-21) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 68

386. 'पुरुषबहुत्वं सिद्धम्' इति कस्य मतम्? GJ SET–2013
(A) सदानन्दस्य (B) नृसिंहसरस्वतेः
(C) ईश्वरकृष्णस्य (D) केशवमिश्रस्य
स्रोत–सांख्यकारिका (का.-18) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 59

387. अधोलिखितेषु अव्यक्तस्य कारणत्वे को हेतुः नास्ति? UGC 73 Jn–2017
(A) भेदानां परिमाणम् (B) समन्वयः
(C) शक्तितः प्रवृत्तिः (D) त्रैगुण्यम्
स्रोत–सांख्यकारिका (का.-15) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 51

388. अविनाभावनियमोऽदर्शनात्– MH SET–2016
(क) कार्यकारणभावात् (ख) असदकरणात्
(ग) उपादानग्रहणात् (घ) सर्वसम्भवाभावात्
(A) सत्यम्, असत्यम्, सत्यम्, असत्यम्
(B) असत्यम्, सत्यम्, असत्यम्, सत्यम्
(C) सत्यम्, असत्यम्, असत्यम्, असत्यम्
(D) असत्यम्, सत्यम्, सत्यम्, सत्यम्
स्रोत–सांख्यकारिका (का0-9)

389. सांख्यकारिकानुसारेण किं कारणं प्रकृतेः अनुपलब्ध्या सम्बन्धं नास्ति– RPSC SET–2010
(A) सौक्ष्यम् (B) अतिसामीप्यम्
(C) अतिदूरम् (D) अधिष्ठानम्
स्रोत–सांख्यकारिका (का.17) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 56

390. भूतादिशब्देन किमुच्यते– HE–2015
(A) तमः प्रधानोऽहङ्कारः (B) शुद्धोऽहङ्कारः
(C) सत्वप्रधानोऽहङ्कारः (D) रजः प्रधानोऽहङ्कारः
स्रोत–सांख्यकारिका (का.25) – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 78

378. (B) 379. (A) 380. (B) 381. (B) 382. (C) 383. (C) 384. (D) 385. (C) 386. (C) 387. (D) 388. (D) 389. (D) 390. (A)

02 योगसूत्र

1. (i) योगदर्शनस्य प्रवर्तकोऽस्ति–BHU MET–2012
(ii) योगदर्शन के प्रवर्तक कौन हैं? UGC 73 J–2006 D–2006
(A) पाणिनि (B) पतञ्जलि
(C) कपिल (D) कणाद
स्रोत–भारतीयदर्शन की रूपरेखा-हरेन्द्रप्रसाद सिन्हा, पृष्ठ-270

2. पतञ्जलि का नाम किससे सम्बद्ध है? BHU MET–2010
(A) वार्तिक (B) अष्टाध्यायी
(C) योगदर्शन (D) निरुक्त
स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् – सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, भू. पृष्ठ- 21

3. (i) योगसूत्रकार हैं - UGC 73 D–2004, J–2005,
(ii) योगसूत्रस्य कर्त्ता अस्ति– BHU MET–2011
(A) कपिल (B) गौतम
(C) पतञ्जलि (D) जैमिनि
स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् – सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, भू. पृष्ठ-3

4. 'व्यासभाष्य' किस दर्शन में पाया जाता है ? BHU MET–2010
(A) न्याय (B) सांख्य
(C) जैन (D) योग
स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् – सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, भू. पृष्ठ- 21

5. योगभाष्यटीकाकारेषु प्राचीनतमोऽस्ति–MH-SET–2013
(A) शङ्करः (B) विज्ञानभिक्षुः
(C) वाचस्पतिः (D) हरिहरानन्दारण्यः
स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् – सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, भू. पृष्ठ- 03

6. 'योगसूत्र' पर भाष्य लिखा है - UP PGT–2005
(A) वाल्मीकि ने (B) पाणिनि ने
(C) शङ्कराचार्य ने (D) व्यास ने
स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् – सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, भू. पृष्ठ- 21

7. योगदर्शन के भाष्यकार हैं? UGC 73 JL–2016
(A) शङ्कर (B) वेदव्यास
(C) रामानुज (D) पतञ्जलि
स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् – सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, भू. पृष्ठ- 21

8. व्यास किसके भाष्यकार हैं - UGC 25 D–1996
(A) सांख्यसूत्र (B) ब्रह्मसूत्र
(C) न्यायसूत्र (D) योगसूत्र
स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् – सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, भू. पृष्ठ- 21

9. समाधिपाद अस्ति - UGC 73 J–2013
(A) योगसूत्रग्रन्थे (B) न्यायसूत्रग्रन्थे
(C) भक्तिसूत्रग्रन्थे (D) ब्रह्मसूत्रग्रन्थे
स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् – सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 01

10. पातञ्जलयोगसूत्रे आद्यं सूत्रं किम्? DSSSB PGT–2014
(A) अथ योगशासनम् (B) योगानुशासनम्
(C) अथ योगानुशासनम् (D) अथ योगः
स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (1.1)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ-01

11. अथ योगानुशासनमित्यत्र 'अथ' शब्दस्य कति अर्थाः भवन्ति? HAP–2016
(A) पञ्च (B) षट्
(C) चत्वारः (D) त्रयः
स्रोत–ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्य – सत्यानन्द सरस्वती, पृष्ठ- 21

12. योगसूत्रव्याख्याभाष्यं वर्तते - UP GDC–2013
(A) व्यासभाष्यम् (B) महाभाष्यम्
(C) शाङ्करभाष्यम् (D) नारदसंहिता
स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् – सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, भू. पेज- 21

13. सेश्वरं दर्शनमस्ति - UGC 73 D–2013, J–2014
(A) योगः (B) सांख्यः
(C) चार्वाकः (D) बौद्धः
स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् – सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, भू. पृष्ठ- 39

1. (B)	2. (C)	3. (C)	4. (D)	5. (C)	6. (D)	7. (B)	8. (D)	9. (A)	10. (C)
11. (A)	12. (A)	13. (A)							

14. 'सेश्वरसांख्य' कौन हैं ? UGC 73 D–2008
(A) मीमांसकाः (B) नैयायिकाः
(C) पातञ्जलिमतानुयायिनः (D) कापिलेयमतानुयायिनः
स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् – सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, भू. पृष्ठ- 39

15. दो दर्शनों में ईश्वर के अतिरिक्त सर्वसमान है - UGC 73 J–2012
(A) जैनबौद्धयोः (B) सांख्ययोगयोः
(C) न्यायवैशेषिकयोः (D) सांख्यचार्वाकयोः
स्रोत–भारतीय दर्शन – चन्द्रधर शर्मा, पृष्ठ- 162

16. (i) पतञ्जलि के मत में योग का लक्षण है-
(ii) योगसूत्र में योग का लक्षण है–UGC 73 J–1998,
(iii) योगमतानुसारं योगस्य लक्षणम् अस्ति– 1999,
(iv) योगस्य लक्षणं किम्? 2007, BHU AET–2010
(A) कर्मसु कौशलम् (B) युतसिद्धयोः सम्बन्धः
(C) चित्तवृत्तिनिरोधः (D) सन्निकर्षविशेषः
स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (1.2)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव पृष्ठ- 09

17. योगशब्द का अर्थ है - UGC 73 D–2009
(A) अभ्यासः (B) विनयानुशीलम्
(C) आनन्दानुगमः (D) चित्तवृत्तिनिरोधः
स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (1.2)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 09

18. पातञ्जलयोगसूत्रे 'चित्तवृत्तिनिरोधः' इत्यनेन कस्य परिचयः उक्तः ? UP GDC–2013
(A) धर्मस्य (B) योगस्य
(C) मोक्षस्य (D) कर्मणः
स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (1.2)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 09

19. द्रष्टुः स्वरूपेऽवस्थानं कदा भवति? BHU AET–2010
(A) विकल्पविरोधे (B) चित्तवृत्तिनिरोधे
(C) चित्तवृत्तिविरोधे (D) विकल्पसत्त्वे
स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (1.3)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 18

20. 'अथ योगानुशासनम्' अत्राथशब्देन किमुच्यते ? BHU AET–2011
(A) मङ्गलम् (B) आनन्तर्यम्
(C) अधिकारः (D) प्रश्नः
स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (1.1)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 01

21. (i) योगदर्शन में कितनी वृत्तियाँ हैं? DSSSB PGT–2014,
(ii) योगशास्त्रे कति वृत्तयः अङ्गीकृताः सन्ति?
(iii) चित्तवृत्तयः कति विद्यन्ते? BHU MET–2009
(iv) योगदर्शने चित्तवृत्तीनां संख्या निर्दिष्टा -
(v) चित्तवृत्तयः कति प्रतिपादिताः– GJ SET–2013,
(vi) योगसूत्रानुसारेण कति वृत्तयो भवन्ति–
BHU MET–2009, 2011, 2013, BHU AET–2010, 2011, UP GDC–2012, MH SET–2016
(A) दश (B) षट्
(C) पञ्च (D) अनन्ताः
स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (1.5)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 24

22. व्यासभाष्ये स्मृतिः कतिविधा प्रोक्ता? BHU AET–2010
(A) एकविधा (B) द्विविधा
(C) त्रिविधा (D) चतुर्विधा
स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (1.11)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 45,46

23. योगसूत्रे चित्तविक्षेपाः कति प्रतिपादिताः? BHU AET–2010, 2011
(A) अष्ट (B) नव
(C) दश (D) एकादश
स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (1.30)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ-99,100

24. (i) योगसूत्रे क्लेशाः कति प्रतिपादिताः? HAP-2016,
(ii) क्लेशाः कति भवन्ति? BHU AET–2010, 2011,
(iii) क्लेशाः सन्ति– UGC 73 J–2010
(iv) योगमते क्लेशः कतिविधः भवति–
(A) चत्वारः (B) पञ्च
(C) द्वौ (D) त्रयः
स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (2.3)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 161

25. (i) योगसूत्रे क्रियायोग इत्यनेन कति प्रतिपादितानि?
(ii) क्रियायोगाः कति? BHU AET–2010, 2011
(A) त्रयः (B) चत्वारः
(C) पञ्च (D) षट्
स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (2.1)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 156

14. (C) 15. (B) 16. (C) 17. (D) 18. (B) 19. (B) 20. (C) 21. (C) 22. (B) 23. (B) 24. (B) 25. (A)

26. योगदर्शन में प्रतिपादित सिद्धियाँ हैं-UGC 73 J–2008

(A) त्रयः (B) चत्वारि
(C) पञ्च (D) षट्

स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (4.6)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 503

27. विपर्यय के प्रकार हैं - UGC 25 D–2002

(A) 5 (B) 20
(C) 15 (D) 8

स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (1.8)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 36,37

28. योगमतानुसार तत्त्व होते हैं - UGC 73 J–1998

(A) षड्विंशतिः (26) (B) पञ्चदश (15)
(C) पञ्चविंशतिः (25) (D) अष्टाविंशतिः (28)

स्रोत–(i) पातञ्जलयोगदर्शनम् – सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, भू0 पृष्ठ- 40
(ii) भारतीयदर्शन - चन्द्रधर शर्मा, पेज–162

29. व्यासभाष्यानुसारं चित्तभूमयः कति सन्ति? UGC 25 J–2016

(A) पञ्च (B) चतस्रः
(C) षट् (D) सप्त

स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (1.1)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ-1,06

30. अणिमादीनि ऐश्वर्याणि कति? DSSSB PGT–2014

(A) अष्टौ (B) नव
(C) दश (D) एकादश

स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् - सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ-293

31. योगदर्शने कति पादाः सन्ति ? BHU AET–2010

(A) एकः (B) द्वौ
(C) त्रयः (D) चत्वारः

स्रोत– भारतीय दर्शन – चन्द्रधर शर्मा, पृष्ठ- 158

32. समाधिपादे कति सूत्राणि सन्ति ? BHU AET–2010

(A) 51 (B) 52
(C) 53 (D) 54

स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (1.51)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 153

33. साधनपादे कति सूत्राणि सन्ति ? BHU AET–2010

(A) 52 (B) 53
(C) 54 (D) 55

स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (2.55)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 316

34. (i) योगदर्शने प्रमाणानि कति प्रतिपादितानि?
(ii) योगदर्शने कति प्रमाणानि सन्ति–
(iii) योगसम्मत प्रमाणों की संख्या कितनी है?
BHU AET–2010, 2011, CVVET–2017
UGC 73 D–1994, 1997 J–2012

(A) एकम् (B) द्वे
(C) त्रीणि (D) चत्वारि

स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (1.7)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 28

35. ऐश्वर्य यौगिक-अयौगिक इन तीन प्रकारों का क्या होता है? UGC 73 J–2016

(A) प्रत्यक्षम् (B) आगमः
(C) द्रव्यम् (D) उपमानम्

स्रोत–

36. (i) समाधि के भेद हैं -
(ii) योगमते समाधिः कतिविधः भवति–
(iii) योगसूत्रानुसारेण समाधिः?
(iv) योगमते समाधिः भवति– CVVET–2017
UGC 73 D–2004, 2011, 2012, J–2010

(A) एक (B) दो
(C) तीन (D) चार

स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् – सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, भू. पृष्ठ- 32

37. सम्प्रज्ञात समाधि होती है - UGC 73 J–2005

(A) सात (B) पाँच
(C) तीन (D) चार

स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् – सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, भू. पृष्ठ- 32

38. पातञ्जलयोगसूत्राभिमते कः न सम्प्रज्ञातसमाधिः? JNU M. Phil/Ph. D–2015

(A) सवितर्कः (B) सानन्दः
(C) भवप्रत्ययः (D) सविचारः

पातञ्जलयोगदर्शनम् (1.17)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 62

26. (C) 27. (A) 28. (A) 29. (A) 30. (A) 31. (D) 32. (A) 33. (D) 34. (C) 35. (B) 36. (B) 37. (D) 38. (C)

39. (i) यम हैं - UGC 73 D–2004, 2011,
(ii) यमाः कति सन्ति– BHU AET–2011
(iii) योगदर्शनानुसारेण कति यमाः?
(A) चार (B) पाँच
(C) छः (D) सात

स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (2.30)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 266

40. (i) योगदर्शन में नियम हैं - UGC 73 D–2004,
(ii) योगाङ्गेषु कति नियमाः कथिताः? J–2011,
(iii) योगदर्शनानुसारेण नियमाः सन्ति– BHU AET–2011, MH-SET–2016
(A) पाँच (B) छः
(C) सात (D) आठ

स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (2.32)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 273

41. (i) योग के अङ्ग हैं- UGC 73 D–2009, 2010,
(ii) योगाङ्गानि भवन्ति– S–2013,
(iii) योगस्य अङ्गानि कति सन्ति–BHU AET–2011
(iv) योगाङ्गेषु कति नियमाः कथिताः?
(A) दश (B) नव
(C) अष्टौ (D) सप्त

स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (2.29)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 265

42. योगदर्शने 'विकल्पवृत्तिः' अस्ति- UP GDC–2012
(A) प्रत्यक्षानुमानप्रमाणता
(B) स्मृतिः
(C) शब्दज्ञानानुपातिवस्तुशून्यता
(D) वैराग्यभावात्मिका

स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (1.9)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 38

43. (i) 'पञ्चतय्यः क्लिष्टाक्लिष्टाः' इति सूत्रे काः प्रतिपादिताः? BHU AET–2010, UGC 73
(ii) 'क्लिष्टाक्लिष्ट पञ्चतय्य' होती हैं- J–2014
(A) स्मृतयः (B) प्रकृतयः
(C) वृत्तयः (D) विकृतयः

स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (1.5)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 24

44. शब्दज्ञानानुपाती वस्तुशून्यः कः भवति ? BHU AET–2010
(A) विकल्पः (B) प्रमाणम्
(C) निद्रा (D) विपर्ययः

स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (1.9)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 38

45. योगानुसारं मिथ्याज्ञानम् अतद्रूपप्रतिष्ठम्– K SET–2013
(A) विकल्पः (B) स्मृतिः
(C) निद्रा (D) विपर्ययः

स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (1.8)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 36

46. निम्नलिखित में से कौन 'योग' के अङ्ग नहीं हैं ? UP PGT–2005
(A) यम-नियम (B) चित्त-परिकर्म
(C) आसन-प्राणायाम (D) प्रत्याहार-धारणा

स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (2.29)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 265

47. योगानुसारं कः पूर्वेषामपि गुरुः? K-SET–2013
(A) पतञ्जलिः (B) भाष्यकारो व्यासः
(C) ईश्वरः (D) मनुः

स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (1.26)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 92

48. योगसूत्रव्यासभाष्ये विधारणम् इत्यनेन किमुक्तम् - BHU AET–2010
(A) प्राणायामः (B) प्राणत्यागः
(C) देहत्यागः (D) बुद्धित्यागः

स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (1.34)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 112

49. योगसूत्र के अनुसार ब्रह्मचर्य प्रतिष्ठा में होता है ? UGC 73 J–2011
(A) वीर्यनाशः (B) वीर्यलाभः
(C) निद्राजयः (D) वैराग्यलाभः

स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (2.38)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 286

50. यमादि .... अङ्गानि भवन्ति - UGC 73 D–2012
(A) अपवर्गस्य (B) तत्त्वज्ञानस्य
(C) चित्तवृत्तिनिरोधस्य (D) ध्यानस्य

स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (2.29)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ-265,9

39. (B) 40. (A) 41. (C) 42. (C) 43. (C) 44. (A) 45. (D) 46. (B) 47. (C) 48. (A)
49. (B) 50. (C)

51. 'देशबन्धश्चित्तस्य धारणा' यह सूत्र है-UGC 73 D–2013
(A) चतुर्थपादे (B) प्रथमपादे
(C) तृतीयपादे (D) द्वितीयपादे

स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (3.1)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 320

52. अहिंसाप्रतिष्ठायां तत्सन्निधौ - BHU AET–2011
(A) लोभत्यागः (B) कामत्यागः
(C) क्रोधत्यागः (D) वैरत्यागः

स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (2.35)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 284

53. सत्यप्रतिष्ठायां सिद्धिः - BHU AET–2011
(A) आसनस्य (B) वाचः
(C) प्राणायामस्य (D) कल्पनायाः

स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (2.36)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 285

54. अस्तेयप्रतिष्ठायाम् उपस्थानम् - BHU AET–2011
(A) सर्वरत्नानाम् (B) सर्वसिद्धीनाम्
(C) सर्वबुद्धीनाम् (D) सर्वसुखानाम्

स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (2.37)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 286

55. कस्य प्रतिष्ठायां वीर्यलाभः - BHU AET–2011
(A) सत्यस्य (B) अस्तेयस्य
(C) ब्रह्मचर्यस्य (D) अपरिग्रहस्य

स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (2.38)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 286

56. अनुत्तमसुखलाभः - BHU AET–2011
(A) ब्रह्मचर्यात् (B) सन्तोषात्
(C) शौचात् (D) तपसः

स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (2.42)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 291

57. ततः क्षीयते प्रकाशावरणम् - BHU AET–2011
(A) अनन्तसमापत्तेः (B) प्राणायामात्
(C) देवतासम्प्रयोगात् (D) प्रत्याहारात्

स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (2.52)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 312

58. व्यासभाष्यकारः कति आसनानां वर्णनं कृतवान्– HAP–2016
(A) त्रयोदशानाम् (B) एकादशानाम्
(C) पञ्चदशानाम् (D) चतुर्दशानाम्

स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (2.46)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 297

59. चित्तस्य देशबन्धः - BHU AET–2011
(A) धारणा (B) समाधिः
(C) ध्यानम् (D) प्रत्याहारः

स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (3.1)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 320

60. योगमत में आसन का लक्षण है - UGC 73 D–1997
(A) स्थितप्रज्ञम् (B) मनः शान्तिः
(C) स्थितकरणम् (D) स्थिरसुखम्

स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (2.46)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 296

61. प्राणायामः कीदृशो भवति - DSSSB PGT–2014
(A) पद्मासनस्थितस्य ओङ्कारध्यानम्
(B) अत्यन्तं प्राणत्यागः
(C) श्वासप्रश्वासयोः विधानम्
(D) श्वासप्रश्वासयोः गतिविच्छेदः

स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (2.49)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 301

62. अष्टाङ्गयोग के अनुसार नियमों में गणना नहीं है। UGC 73 J–2015
(A) शौचम् (B) सत्यम्
(C) स्वाध्यायः (D) सन्तोषः

स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (2.32)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 273

63. योगदर्शन के अनुसार अन्तरङ्गयोगाङ्ग है– UGC 73 J–2015
(A) धारणा (B) प्राणायामः
(C) प्रत्याहारः (D) यमाः

स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (3.7)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 328,329

64. (i) योगदर्शन में ईश्वर है - UGC 73 J–2006,
(ii) योगसूत्रे ईश्वरः कथं वर्णितः? BHU AET–2010
(A) जगत्कर्ता (B) पुरुषविशेष
(C) प्रकृतिपरिणाम (D) ब्रह्मस्वरूप

स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (1.24)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 80

65. तस्य वाचकः कः ? BHU AET–2010
(A) प्रणवः (B) समाधिः
(C) सम्प्रज्ञातः (D) असम्प्रज्ञातः

स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (1.27)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 93

51. (C) 52. (D) 53. (B) 54. (A) 55. (C) 56. (B) 57. (B) 58. (B) 59. (A) 60. (D)
61. (D) 62. (B) 63. (A) 64. (B) 65. (A)

66. (i) प्रणववाचक है - UGC 73 J–2009, 2013
(ii) योगमत में प्रणव है - D–1994
(iii) प्रणव किसका वाचक है–
(A) योगस्य वाचकः (B) ईश्वरस्य वाचकः
(C) जपवाचकः (D) वैराग्यस्य वाचकः
स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (1.27)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 93

67. ईश्वर कौन मानता है ? UGC 73 D–1999
(A) सांख्य (B) बौद्ध
(C) योग (D) चार्वाक
भारतीय दर्शन – हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पृष्ठ- 276

68. योगदर्शन में यह छब्बीसवाँ तत्त्व कौन-सा है ? H TET–2014
(A) आत्मा (B) ईश्वर
(C) योग (D) अहङ्कार
स्रोत–(I) पातञ्जलयोगदर्शनम् (1.24)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ-80
(II) भारतीयदर्शन- चन्द्रधर शर्मा, पेज-158

69. योगदर्शनानुसारं कः योगाङ्गैः सह सम्बद्धः न अस्ति– UGC 25 D–2015
(A) विकल्पः (B) प्रत्याहारः
(C) नियमः (D) प्राणायामः
स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (2.29)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 265

70. (i) योगमत में प्रमाण हैं - UGC 73 J–2009 D–2010
(ii) योगमते कति प्रमाणानि–
(A) प्रत्यक्षागमोपमानानि (B) प्रत्यक्षोपमानार्थापत्तयः
(C) प्रत्यक्षानुमानागमाः (D) प्रत्यक्षानुमानानुपलब्धयः
स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (1.7)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 28

71. योगमत में प्रमाण हैं - UGC 73 D–2014
(A) अर्थापत्तिः (B) अनुपलब्धिः
(C) सम्भवः (D) आगमः
स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (1.7)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 28

72. समाधिसिद्धिः - BHU AET–2011
(A) स्वाध्यायात् (B) ईश्वरप्रणिधानात्
(C) आसनात् (D) तपसः
स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (2.45)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 294

73. योगमत में कैवल्य का एक उपाय है-UGC 73 J–1999
(A) ध्यानमुद्रा (B) प्रकृतिसंयोग
(C) अविद्या (D) ईश्वरप्रणिधान
स्रोत–(i) पातञ्जलयोगदर्शनम् (1.23)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ-78,79
(ii) भारतीयदर्शन - चन्द्रधर शर्मा, पेज–163

74. पुरुषस्य स्वस्वरुपेऽवस्थानं कदा भवति– HAP–2016
(A) एकाग्रावस्थायाम् (B) मूढावस्थायाम्
(C) क्षिप्तावस्थायाम् (D) कैवल्ये
स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (1.3)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 18

75. योगमत में 'अभिनिवेश' का अर्थ होता है - UGC 73 D–2007
(A) समाधिः (B) मरणभयम्
(C) आग्रहः (D) वैराग्यम्
स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (2.9)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 177-178

76. दृग्दर्शनशक्त्योरेकात्मतेव - BHU AET–2011
(A) अविद्या (B) अस्मिता
(C) रागः (D) द्वेषः
स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् 2.6)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 174

77. सुखानुशयी - BHU AET–2011
(A) अभिनिवेशः (B) द्वेषः
(C) रागः (D) अस्मिता
स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (2.7)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 176

78. दुःखानुशयी - BHU AET–2011
(A) रागः (B) द्वेषः
(C) अस्मिता (D) अभिनिवेशः
स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (2.8)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 177

79. इसमें चित्तभूमियों की आलोचना है- UGC 73 J–2007
(A) न्यायदर्शन (B) वैशेषिकदर्शन
(C) मीमांसादर्शन (D) योगदर्शन
स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (2.27)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 256

66. (B) 67. (C) 68. (B) 69. (A) 70. (C) 71. (D) 72. (B) 73. (D) 74. (D) 75. (B)
76. (B) 77. (C) 78. (B) 79. (D)

80. व्यासभाष्ये वितर्क इत्यनेन कः अर्थः प्रतिपादितः? BHU AET–2010

(A) सूक्ष्मविचारः
(B) एकात्मिका संवित्
(C) चित्तस्यालम्बने स्थूलआभोगः
(D) ह्लादः

स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् –सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 63

81. अन्तरायाः के ? BHU AET–2010

(A) चित्तविक्षेपाः (B) शरीरविक्षेपाः
(C) उभयम् (D) नोभयम्

स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (1.30)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 99

82. व्यासभाष्ये 'स्वाध्याय' इत्यनेन कोऽर्थः प्रतिपादितः? BHU AET–2010

(A) गुरुमुखतोऽध्ययनम् (B) निरन्तराध्ययनम्
(C) सर्वशास्त्राध्ययनम् (D) मोक्षशास्त्राध्ययनम्

स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (2.32)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 274

83. हेयं दुःखं कीदृशम् ? BHU AET–2010

(A) आगतम् (B) वर्तमानम्
(C) अनागतम् (D) पुनः पुनः प्राप्तम्

स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (2.16)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 211

84. तदा .... स्वरूपेऽवस्थानं कस्य ? BHU AET–2010

(A) प्रकृतेः (B) द्रष्टुः
(C) दृश्यस्य (D) दृशः

स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (1.3)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 18

85. तदा द्रष्टुः कुत्रावस्थानम् ? BHU AET–2010

(A) स्वरूपे (B) अहङ्कारे
(C) बुद्धौ (D) प्रकृतौ

स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (1.3)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 18

86. अभ्यासवैराग्याभ्यां सूत्रकारेण किमुक्तम् ? BHU AET–2010

(A) तन्निरोधः (B) तद्विरोधः
(C) तदुत्पत्तिः (D) तद्स्थितिः

स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (1.12)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 50

87. स्थितप्रज्ञ किसे कहते हैं ? UP PGT–2005

(A) जो सभी मनोकामनाओं को छोड़ देता है।
(B) जो अपने आप में सन्तुष्ट रहता है।
(C) जो दुःखों से घबराता नहीं है।
(D) उपर्युक्त सभी गुण हों।

स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (2/55-56)–गीताप्रेस

88. अस्मिता है - UGC 73 J–2009

(A) दर्शनस्यैकात्मता (B) दृच्छक्तेरेकात्मता
(C) दृष्टिदोषः (D) दृग्दर्शनशक्त्योरेकात्मता

स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (2.6)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 174

89. योगमत में अभ्यास है - UGC 73 D–2009

(A) कायिकाभ्यासः (B) वाचिकाभ्यासः
(C) स्थितौ यत्नः (D) अनुभूतिविशेषः

स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (1.13)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 53

90. योगदर्शने पुरुषस्य चैतन्यं कस्य उदाहरणमस्ति? JNU M. Phil/Ph. D–2014

(A) विकल्पवृत्तेः (B) विपर्ययवृत्तेः
(C) प्रमाणवृत्तेः (D) स्मृतिवृत्तेः

स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (1.9)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 38

91. संयमसिद्ध प्रतिपादित करता है- UGC 73 J–2014

(A) परिणामत्रयसंयमात् अतीतानागतज्ञानम्
(B) प्रत्ययस्य परचित्तज्ञानम्
(C) त्रयमेकत्र संयमः
(D) त्रयमन्तरङ्गपूर्वेभ्यः

स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (3.16)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 370

92. अविद्यायाः नाशो भवति - UGC 73 J–2013

(A) इन्द्रियसाक्षात्कारात् (B) ब्रह्मसाक्षात्कारात्
(C) चित्तवृत्तिनिरोधात् (D) प्राणवियोगात्

स्रोत–भारतीय दर्शन – जगदीशचन्द्र मिश्र, पृष्ठ- 579

93. अभ्यास वैराग्यों से होता है - UGC 73 S–2013

(A) प्राणनिरोध (B) वृत्तिनिरोध
(C) इन्द्रियनिरोध (D) अज्ञाननिरोध

स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (1.12)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 50,51

80. (C) 81. (A) 82. (D) 83. (C) 84. (B) 85. (A) 86. (A) 87. (D) 88. (D) 89. (C)
90. (A) 91. (A) 92. (B) 93. (B)

94. तदेवार्थमात्रनिर्भासं स्वरूपशून्यमिव-BHU AET–2011

(A) समाधिः (B) संयमः
(C) ध्यानम् (D) प्रत्याहारः

स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (3.3)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 323

95. धारणा-ध्यान-समाधयः एकत्र - BHU AET–2011

(A) संयमः (B) प्रज्ञालोकः
(C) विनियोगः (D) निरोधपरिणामः

स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (3.4)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 325

96. कस्मिन् चित्ते असम्प्रज्ञातो योगः सम्भवति ? DSSSB PGT–2014

(A) मूढे (B) विक्षिप्ते
(C) निरुद्धे (D) एकाग्रे

स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (1.2)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 9

97. सम्प्रज्ञातसमाधेः किं लक्षणमस्ति– MH SET–2013

(A) चित्तस्यावृत्तिकस्य प्रशान्तवाहिता स्थितिः
(B) वितर्कविचारानन्दास्मितारूपानुगमात्
(C) कौष्ठ्यस्य वायोर्नासिकपुराभ्यां प्रयत्नविशेषाद्वमनम्
(D) सर्ववृत्तिप्रत्ययस्तमये संस्कारशेषो निरोधो चित्तस्य

स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (1.17)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 62

98. (i) योगदर्शन के अनुसार निर्बीज समाधि का दूसरा नाम क्या है? UGC 73 D–2015

(ii) योगसूत्रभाष्ये निर्बीजः समाधिः क उक्तः? UGC 25 Jn–2017

(A) सम्प्रज्ञातसमाधिः (B) असम्प्रज्ञातसमाधिः
(C) विदेहसमाधिः (D) भावसमाधिः

स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् –सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 66

99. सम्प्रज्ञातसमाधिः अस्ति– JNU M. Phil/Ph. D–2014

(A) निरुद्धचित्तावस्था (B) एकाग्रचित्तावस्था
(C) विक्षिप्तचित्तावस्था (D) क्षिप्तचित्तावस्था

स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् –सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 62

100. निम्नलिखित में उचित मेल कीजिये– UGC 73 D–2015

(क) अस्तेयम् (i) नियम
(ख) शौचम् (ii) संयम
(ग) धारणा, ध्यान, समाधि (iii) प्रमाणम्
(घ) आगम (iv) यम

	क	ख	ग	घ
(A)	(i)	(iv)	(iii)	(ii)
(B)	(iv)	(i)	(ii)	(iii)
(C)	(ii)	(i)	(iv)	(iii)
(D)	(iii)	(i)	(ii)	(iv)

पातञ्जलयोगदर्शनम् –सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ-28, 266, 273, 325

101. निम्नलिखित में योगदर्शन के अनुसार किसकी महाव्रत संज्ञा नहीं है? UGC 73 D–2015

(A) अहिंसा (B) स्वाध्याय
(C) ब्रह्मचर्य (D) अपरिग्रह

स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (2.30-31)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ-266,271

102. योगदर्शन के अनुसार 'दृग्दर्शनशक्त्योरेकात्मता' इस सूत्र के द्वारा क्या कहा गया है? UGC 73 D–2015

(A) अविद्या (B) अभिनिवेश
(C) अस्मिता (D) द्वेष

स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (2.6)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 174

103. व्यासभाष्यानुसारेण का उक्तिः सत्या? UGC 25 J–2016

(A) चित्तं हि प्रख्याप्रवृत्तिस्थितिशीलत्वात् त्रिगुणम्
(B) चित्तवृत्तीनां निरोधः असाध्यः
(C) सर्ववृत्तिनिरोधे सम्प्रज्ञातः समाधिः
(D) चित्तवृत्तिबोधे पुरुषस्य अनादिः सम्बन्धः न हेतुः

स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (1.2)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 09

104. सूर्यसंयमात् किं भवति– HAP–2016

(A) भुवनज्ञानम् (B) नक्षत्रज्ञानम्
(C) विप्रकृष्टज्ञानम् (D) परशरीरावेशः

स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (3.26)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 404

94. (A) 95. (A) 96. (C) 97. (B) 98. (B) 99. (A) 100. (B) 101. (B) 102. (C) 103. (A) 104. (A)

105. अधस्तनेषु युग्मपर्यायेषु समीचीनं विचिनुत– MH SET–2013

(क) चित्तभूमयः (1) पञ्च
(ख) योगाङ्गानि (2) नव
(ग) योगमताभिमतप्रमाणानि (3) अष्ट
(घ) योगान्तरायाः (4) त्रीणि

	क	ख	ग	घ
(A)	1	2	3	4
(B)	1	3	4	2
(C)	4	1	2	3
(D)	3	4	1	2

पातञ्जलयोगदर्शनम् –सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ-06, 265, 28, 98, 100

106. योगसूत्रे निरूपिताः पञ्चतय्यवृत्तयः काः सन्ति– RPSC SET–2013-14

(A) रूप-विज्ञान-वेदना-संज्ञा-संस्काराः
(B) प्रमाण-विपर्यय-विकल्प-निद्रा-स्मृतयः
(C) प्रत्यक्षानुमानोपमानशब्दार्थापत्तयः
(D) श्रद्धा-वीर्य-स्मृति-समाधि-प्रज्ञाः

स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (1.6) – सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव पृष्ठ- 28

107. क्लेशकर्मविपाकाशयैरपरामृष्टः पुरुषविशेषः कः? GJ SET–2013

(A) देवः (B) ईश्वरः
(C) कालः (D) इन्द्रः

स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (1.24)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 80

108. अभिनिवेशः .... अस्ति? GJ SET–2016

(A) वृत्तिः (B) चित्तभूमिः
(C) सिद्धिः (D) क्लेशः

स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (2.3)-सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पेज-161

109. क्रियायोगस्य .... अङ्गानि सन्ति? GJ SET–2016

(A) त्रीणि (B) पञ्च
(C) षट् (D) अष्ट

स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (2.1)-सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पेज-156

110. 'तस्मिन् परमगुरौ सर्वकर्मार्पणम्' इति व्यासभाष्येण किं लक्षितम्? UGC 25 Jn–2017

(A) सन्तोषः (B) तपः
(C) स्वाध्यायः (D) ईश्वरप्रणिधानम्

स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (2.32)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 273

111. योगस्य नवान्तरायेषु किं न गण्यते? UGC 73 Jn–2017

(A) व्याधिः (B) संशयः
(C) अदर्शनम् (D) प्रमादः

स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (1.30)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 99

112. पातञ्जलदर्शने क्रियायोगे किं नान्तर्भवति? UGC 73 Jn–2017

(A) तपः (B) स्वाध्यायः
(C) ईश्वरप्रणिधानम् (D) कर्म

स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (2.1)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 156

113. अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहाः सन्ति– K SET–2014

(A) यमाः (B) नियमाः
(C) प्राणायामः (D) धारणा

स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् –सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 266

114. योगदर्शने 'तत्त्ववैशारदी' टीकाग्रन्थस्य रचयिता कः? UGC 73 Jn–2017

(A) पतञ्जलिः (B) व्यासः
(C) भोजदेवः (D) वाचस्पतिमिश्रः

स्रोत– भारतीयदर्शन की रूपरेखा-हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पृष्ठ-270

115. सर्वभावाधिष्ठातृत्वं कस्यां सिद्धौ भवति– UGC 73 Jn–2017

(A) मधुमतीसिद्धौ (B) विशोकासिद्धौ
(C) मधुप्रतीकासिद्धौ (D) संस्कारशेषासिद्धौ

स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (3.49)–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ- 467

116. समापत्ति होती है– UGC 73 D–2006

(A) छः (B) चार
(C) तीन (D) पाँच

स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् (1.46)-सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पेज-143

105. (B) 106. (B) 107. (B) 108. (D) 109. (A) 110. (D) 111. (C) 112. (D) 113. (A) 114. (D) 115. (B) 116. (B)

03 तर्कसंग्रह

1. (i) वैशेषिकदर्शनस्य प्रवर्त्तकः कः? BHU AET–2010,
(ii) वैशेषिकसूत्राणां कर्ता कः? UP GIC–2015
(iii) वैशेषिकदर्शनस्य प्रवर्तक आचार्यः अस्ति - KL SET–2016

(A) कपिलः (B) कणादः
(C) गौतमः (D) जैमिनिः

स्रोत–तर्कसंग्रह – अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 04

2. कणाद-ऋषिणा किं दर्शनं प्रणीतम् - BHU Sh. ET–2013

(A) न्याय-दर्शनम् (B) वैशेषिकदर्शनम्
(C) सांख्य-दर्शनम् (D) मीमांसा-दर्शनम्

स्रोत–तर्कसंग्रह – गोविन्दाचार्य, भू. पृष्ठ- (ii)

3. वैशेषिकदर्शने कति अध्यायाः सन्ति? BHU AET–2011

(A) चत्वारः (B) पञ्च
(C) अष्ट (D) दश

स्रोत–तर्कसंग्रह – आद्याप्रसाद मिश्र, भू. पृष्ठ- 12

4. 'तर्कसंग्रहः एकः...................... GJ-SET-2016

(A) विवरणग्रन्थः (B) मिश्रप्रकरणग्रन्थः
(C) वादग्रन्थः (D) क्रोडपत्रम्

स्रोत–तर्कसंग्रह – गोविन्दाचार्य, भू. पृष्ठ- (iii)

5. (i) तर्कसंग्रह के रचनाकार हैं - RPSC SET–2010,
(ii) तर्कसंग्रहस्य लेखकोऽस्ति? 2013-14,
(iii) तकसंग्रहस्य कर्त्ता– BHU AET–2011,
(iv) तर्कसंग्रहस्य प्रणेता कः? BHU MET–2008, 2009 2011, 2013, MP वर्ग -I PGT–2012, G-GIC–2015 UGC 25 D–2003, S–2013, UGC 73 J–2009

(A) केशवमिश्र (B) अन्नम्भट्ट
(C) ईश्वरकृष्ण (D) पतञ्जलि

स्रोत–तर्कसंग्रह – आद्याप्रसाद मिश्र, भू. पृष्ठ- 16

6. (i) तर्कसंग्रह के दीपिकाकार हैं ?
(ii) तर्कसंग्रहस्य दीपिकाटीकायाः प्रणेता कः अस्ति?
(iii) तर्कसंग्रहस्य 'दीपिकाव्याख्या' केन विरचिता? BHU AET–2011, UGC 73 D–2014, KL SET–2015, MH-SET–2013

(A) गौतमः (B) विश्वनाथपञ्चाननः
(C) अन्नम्भट्टः (D) कणादः

स्रोत–तर्कसंग्रह – गोविन्दाचार्य, भू. पृष्ठ- (v)

7. (i) वैशेषिक दर्शन में पदार्थों की संख्या कितनी है?
(ii) पदार्थानां का संख्या?
(iii) वैशेषिकदर्शने कति पदार्थाः स्वीकृताः?
(iv) न्यायवैशेषिकमतानुसारं पदार्थाः -
(v) तर्कसंग्रहानुसारं पदार्थाः कति – BHU MET–2010
(vi) तर्कसंग्रहानुसारं पदार्थाः कतिविधाः? BHU AET–2010, BHU Sh.ET–2011, 2013, GJ-SET–2004, K-SET–2013 UGC 25 J–2014, 2015, 2016

(A) पञ्च (B) षट्
(C) सप्त (D) अष्टौ

स्रोत–तर्कसंग्रह – गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 20

8. (i) तर्कसंग्रह के अनुसार द्रव्य हैं-DSSSB TGT–2014,
(ii) वैशेषिकमतेन द्रव्याणि कति? UGC 25 J–2012,
(iii) तर्कसंग्रहानुसारं द्रव्याणि - S–2013, D–2014, MH SET–2013, GJ SET–2004

(A) षट् (B) चत्वारि
(C) सप्त (D) नव

स्रोत–तर्कसंग्रह – गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 23

9. द्रव्यगुणकर्मसामान्यविशेषसमवायाभावाः.....पदार्थाः- GJ- SET- 2011

(A) नव (B) दश
(C) सप्त (D) पञ्च

स्रोत–तर्कसंग्रह – गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 20

1. (B) 2. (B) 3. (D) 4. (B) 5. (B) 6. (C) 7. (C) 8. (D) 9. (C)

10. अतीतादिव्यवहारहेतुः................ GJ- SET- 2011

(A) कालः (B) आत्मा

(C) बुद्धिः (D) जीवः

स्रोत–तर्कसंग्रह – अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 45

11. अन्नम्भट्टमतेन आप्तस्य लक्षणं किम्? MH-SET-2011

(A) यथार्थद्रष्टा (B) यथार्थवक्ता

(C) अयथार्थनिन्दकः (D) अथार्थज्ञानी

स्रोत–तर्कसंग्रह - केदारनाथ त्रिपाठी, पृष्ठ- 62

12. नित्यत्वे सति अनेकसमवेतं–पूरयत। KL SET–2015, 2014

(A) द्रव्यम् (B) कर्म

(C) सामान्यम् (D) कारणम्

स्रोत–तर्कसंग्रह – गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 28

13. त्वचो योगो–ज्ञानकारणम्। KL SET-2014

(A) आत्मना (B) बुद्ध्या

(C) मनसा (D) स्मृत्या

न्यायसिद्धान्तमुक्तावली (प्रत्यक्षखण्ड)-गजाननशास्त्री मुसलगांवकर, पेज–299

14. (i) तर्कसंग्रहानुसार गुण कितने हैं?
(ii) न्याय-वैशेषिकों के द्वारा स्वीकार किये गये गुण हैं-
(iii) गुणाः कति? UPPGT–2003, BHU AET–2011,
(iv) तर्कसंग्रहे गुणाः सन्ति– UGC 25 J–2005, 2012,
(v) न्यायवैशेषिकैः अङ्गीकृताः कति गुणाः
2014, D–2008, UGC 73 D–2008, J–2015
K-SET–2014

(A) त्रयोदश (B) दश

(C) विंशतिः (D) चतुर्विंशतिः

स्रोत–तर्कसंग्रह – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 82

15. तर्कसंग्रह के अनुसार कर्म-पदार्थ कितने प्रकार का होता है? BHU MET–2008, 2011, 2012, BHU Sh. ET–2011, BHU AET–2010

(A) 4 (B) 5

(C) 3 (D) 2

स्रोत–तर्कसंग्रह – गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 26

16. 'सामान्य' के प्रकार हैं? BHU MET–2011, 2012

(A) दो (B) तीन

(C) चार (D) पाँच

स्रोत–तर्कसंग्रह – गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 28

17. नित्यद्रव्यवृत्तिः विशेषास्तु .... एव। UGC 25 D–2014

(A) अनन्ताः (B) पञ्च

(C) षट् (D) चत्वारः

स्रोत–तर्कसंग्रह – गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 30

18. तर्कसंग्रह में कौन गुण नहीं है? BHU MET- 2016

(A) सामान्य (B) संयोग

(C) संस्कार (D) रस

स्रोत–तर्कसंग्रह - केदारनाथ त्रिपाठी, पृष्ठ- 03

19. सप्तसु वैशेषिकपदार्थेषु कः एक एव? BHU AET–2012

(A) द्रव्यम् (B) समवायः

(C) गुणः (D) कर्म

स्रोत–तर्कसंग्रह – गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 32

20. (i) अन्नम्भट्टमतानुसारेण अभावः?
(ii) तर्कसंग्रहानुसारम् अभावः कतिविधः? HE–2015,
(iii) अभावपदार्थः कतिविधः BHU AET–2011, 2012,
BHU Sh. ET–2008, 2011, GJ SET–2003,
UGC 25 J–2012, S–2013, UGC 73 J–2014

(A) एकविधः (B) द्विविधः

(C) त्रिविधः (D) चतुर्विधः

स्रोत–तर्कसंग्रह – अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 34

21. भूतद्रव्याणि कति? BHU AET–2011

(A) त्रीणि (B) चत्वारि

(C) पञ्च (D) षट्

स्रोत–तर्कसंग्रह – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 81

22. 'विभु'-द्रव्याणि कति? BHU AET–2011

(A) त्रीणि (B) चत्वारि

(C) पञ्च (D) षट्

स्रोत–तर्कसंग्रह – गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 02

10. (A) 11. (B) 12. (C) 13. (C) 14. (D) 15. (B) 16. (A) 17. (A) 18. (A) 19. (B) 20. (D) 21. (C) 22. (B)

23. (i) आत्मा न्यायदर्शनानुसारं..........भवति?
(ii) आत्मा भवति- GJ-SET- 2004, 2016
(A) द्रव्यम् (B) गुणः
(C) विशेषः (D) सामान्यम्

स्रोत–तर्कसंग्रह – गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 23

24. 'मनः' कतिविधम्? BHU AET–2011
(A) एकविधम् (B) द्विविधम्
(C) त्रिविधम् (D) अनन्तम्

स्रोत–तर्कसंग्रह – अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 49

25. (i) तर्कसंग्रह में तेजोविषय के कितने भेद हैं?
(ii) तर्कसंग्रहानुसारं तैजसविषयः कतिविधः?
UGC 25 J–2014, BHU MET–2016
(A) त्रिविधः (B) द्विविधः
(C) चतुर्विधः (D) पञ्चविधः

स्रोत–तर्कसंग्रह – अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 40

26. 'विशेष'-पदार्थस्य कति भेदाः? AWES TGT–2012
(A) सप्त (B) नव
(C) अनन्ताः (D) कोऽपि न

स्रोत–तर्कसंग्रह – अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 32

27. (i) तर्कसंग्रहानुसारं रूपं कतिविधम्
(ii) रूपं कतिविधम्? BHU AET–2011, 2012
UGC 25 Jn–2017
(A) चतुर्विधम् (B) पञ्चविधम्
(C) षड्विधम् (D) सप्तविधम्

स्रोत–तर्कसंग्रह – अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 07

28. (i) रसगुणः कतिविधः -
(ii) कतिविधः रसः तर्कसंग्रहानुसारम्?
BHU ShET–2013, UGC 25 J–2012
(A) चत्वारः (B) नव
(C) पञ्च (D) षट्

स्रोत–तर्कसंग्रह – अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 07

29. गन्धः कतिविधः ?
BHU AET–2010, UGC 25 S–2013
(A) द्विविधः (B) त्रिविधः
(C) चतुर्विधः (D) पञ्चविधः

स्रोत–तर्कसंग्रह – अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 07

30. स्पर्शः कतिविधः? BHU AET–2012
(A) चतुर्विधः (B) त्रिविधः
(C) पञ्चविधः (D) षड्विधः

स्रोत–तर्कसंग्रह – अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 07

31. परिमाणः कतिविधः?
BHU AET–2012, UGC 25 J–2013
(A) द्विविधः (B) त्रिविधः
(C) चतुर्विधः (D) पञ्चविधः

स्रोत–तर्कसंग्रह – अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 07

32. शब्दः कतिविधः? BHU AET–2011
(A) एकविधः (B) द्विविधः
(C) त्रिविधः (D) चतुर्विधः

स्रोत–तर्कसंग्रह – अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 07

33. (i) तर्कसंग्रहानुसारं पृथिव्यां रूपम् - UGC 25
(ii) पृथिव्यां कतिविधं रूपमस्ति? D–2014, J-2015
(A) द्विविधम् (B) सप्तविधम्
(C) षड्विधम् (D) पञ्चविधम्

स्रोत–तर्कसंग्रह – अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 49

34. पृथिव्यां सन्ति गुणाः - UGC 73 J–2013
(A) सप्त (B) अष्टौ
(C) चतुर्दश (D) पञ्चदश

स्रोत–तर्कसंग्रह – अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 49

35. (i) 'तर्कसंग्रह' स्वीकार करता है?
(ii) तर्कसंग्रहानुसारं प्रमाणानि सन्ति -
UGC 25 D–1996, 2014, BHU MET–2014
(A) तीन प्रमाण (B) चार प्रमाण
(C) पाँच प्रमाण (D) छः प्रमाण

स्रोत–तर्कसंग्रह – दयानन्द भार्गव, पृष्ठ- 85

23. (A) 24. (D) 25. (C) 26. (C) 27. (D) 28. (D) 29. (A) 30. (B) 31. (C) 32. (B) 33. (B) 34. (A) 35. (B)

36. तर्कसंग्रह में अनुमान के प्रकार हैं–BHU MET–2014

(A) 3 (B) 4

(C) 2 (D) 5

स्रोत–तर्कसंग्रह – अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 86

37. तर्कसंग्रह के अनुसार वाक्य कितने प्रकार का है? BHU MET–2011, 2012, 2016

(A) एकविध (B) द्विविध

(C) त्रिविध (D) चतुर्विध

स्रोत–तर्कसंग्रह – अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 110

38. तर्कसंग्रह के अनुसार 'कारण' कितने प्रकार का होता है? UP PGT–2003, BHU MET–2008, 2011, 2012

(A) दो (B) तीन

(C) चार (D) छः

स्रोत–तर्कसंग्रह – आद्याप्रसाद मिश्र, पृष्ठ- 43

39. 'लिङ्गं' कतिविधम्? KL SET–2015, BHU AET–2011, UGC 25 S–2013

(A) एकविधम् (B) द्विविधम्

(C) त्रिविधम् (D) चतुर्विधम्

स्रोत–तर्कसंग्रह – अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 91

40. हेत्वाभासों में साध्याभाव में 'व्याप्त हेतु' कहलाता है? UGC 73, D-2015

(A) सव्यभिचार (B) विरुद्ध

(C) सत्प्रतिपक्ष (D) बाधित

स्रोत–तर्कसंग्रह – गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 216

41. 'हेत्वाभास' कितने हैं ? BHU MET–2012

(A) पञ्च (B) षट्

(C) सप्त (D) अष्ट

स्रोत–तर्कसंग्रह – अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 95

42. 'साध्याभावसाधकं हेत्वन्तरं यस्य विद्यते सः' हेत्वाभासोऽन्नम्भट्टेन केन नाम्ना प्रोक्तः? UGC 25 J-2016

(A) 'सत्प्रतिपक्ष' नाम्ना (B) 'असिद्ध' नाम्ना

(C) 'सव्यभिचार' नाम्ना (D) 'विरुद्ध' नाम्ना

स्रोत–तर्कसंग्रह – गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 218

43. तर्कसंग्रहानुसारं 'संस्कारमात्रजनकं ज्ञानम्' अस्ति? UGC 25 D-2015

(A) अनुभवः (B) यथार्थः

(C) स्मृतिः (D) प्रमाणम्

स्रोत–तर्कसंग्रह – गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 122

44. न्यायवैशेषिकदर्शनानुसारं सप्त.........भवन्ति GJ-SET-2008

(A) कर्माणि (B) गुणाः

(C) द्रव्याणि (D) पदार्थाः

स्रोत–तर्कसंग्रह – गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 20

45. पक्षत्वं नाम किम्? MH-SET-2013

(A) सिषाधयिषाविशिष्टसिद्ध्यभावः

(B) सिषाधयिषासहितसिद्ध्यभावः

(C) सिषाधयिषाविरहविशिष्टसिद्ध्यभावः

(D) सिषाधयिषाभावः

स्रोत–न्यायसिद्धान्तमुक्तावली – महानन्द झा, पृष्ठ- 65

46. अधस्तनेषु वाक्येषु असमीचीनं विचिनुत– MH-SET-2013

(A) आप्तस्तु यथाभूतस्यार्थस्योपदेष्टा

(B) विपक्षस्तु सन्दिग्धसाध्यधर्मः

(C) साध्यविपर्ययव्याप्तेस्तु विरुद्धः

(D) यत्समवेतं कार्यमुत्पद्यते तत्समवायिकारणम्

स्रोत–(i) तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 108, 115

(ii) तर्कसंग्रह-अनितासेन गुप्ता, पेज–71, 107

47. तर्कसंग्रहानुसारेण अयथार्थानुभवः कतिविधः? JNU MET-2015, KL SET–2016

(A) द्विविधः (B) त्रिविधः

(C) षड्विधः (D) द्वादशविधः

स्रोत–तर्कसंग्रह – आद्याप्रसाद मिश्र, पृष्ठ- 62

48. (i) 'यथार्थानुभव' कितने प्रकार का है?

(ii) तर्कसंग्रहमतानुसारं यथार्थानुभवः कतिविधः? UGC 73 J–2015, JNU MET–2015

(A) चतुर्विधः (B) पञ्चविधः

(C) सप्तविधः (D) नवधा

स्रोत–तर्कसंग्रह – आद्याप्रसाद मिश्र,-40

36. (C) 37. (B) 38. (B) 39. (C) 40. (B) 41. (A) 42. (A) 43. (C) 44. (D) 45. (C) 46. (B) 47. (B) 48. (A)

49. गुणाश्रयः कः - BHU AET–2011, 2012

(A) गुणः (B) गुणत्वम्
(C) द्रव्यम् (D) द्रव्यत्वम्

स्रोत–तर्कसंग्रह – गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 24,84

50. तर्कसंग्रहानुसारं प्रागप्रध्वंस अत्योन्येति चतुर्विधः? RPSC SET–2013, 2014

(A) अभावः (B) प्रभावः
(C) विभावः (D) स्वभावः

स्रोत–तर्कसंग्रह - गोविन्दाचार्य, पेज–288

51. नैमित्तिकद्रव्यत्वं कुत्र? BHU Sh. ET–2013

(A) आकाशे (B) मनसि
(C) पृथिव्याम् (D) वायौ

स्रोत–तर्कसंग्रह – आद्याप्रसाद मिश्र, पृष्ठ- 36

52. न्यायवैशेषिक के अनुसार द्रव्य नहीं है? UGC 25 D–1999

(A) तेजः (B) जलम्
(C) तमः (D) मनः

स्रोत–तर्कसंग्रह – अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 06

53. पृथिव्यां वर्तमानः स्पर्शः कः? BHU AET–2011

(A) उष्णम् (B) शीतलम्
(C) उभयमपि (D) अनुष्णाशीतलम्

स्रोत–तर्कसंग्रह – कांशीराम संन्ध्या राठौर, पृष्ठ-74

54. समवाय क्या है? UP PGT–2009

(A) वाक्यार्थ (B) पद
(C) वाक्य (D) पदार्थ

स्रोत–तर्कसंग्रह – अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 27

55. द्रव्यगुणकर्मसामान्यविशेषसमवायाभावाः इति - UGC 25 D–2014

(A) गुणाः (B) अपवादाः
(C) पदार्थाः (D) स्पर्शाः

स्रोत–तर्कसंग्रह – अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 27

56. (i) तर्कसंग्रह के अनुसार 'गन्धवती' लक्षण वाला है-
(ii) गन्धवत्त्वं कुत्र वर्तते? BHU MET–2015
(iii) गन्धोगुणः वर्तते? UGC 25 J–2013, 2014,
(iv) गन्धवत्वं कस्य लक्षणम्? 2016,
BHU AET–2011, 2012

(A) पृथिव्याम् (B) जले
(C) तेजसि (D) वायौ

स्रोत–तर्कसंग्रह – अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 35

57. तर्कसंग्रह में 'पृथिवी' कैसी है? BHU MET–2011, 2012

(A) मृद्वती (B) गन्धवती
(C) क्षमावती (D) स्पर्शवती

स्रोत–तर्कसंग्रह – अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 35

58. गन्धः कुत्र महाभूतां विद्यते? BHU Sh.ET–2008

(A) जले (B) वायौ
(C) क्षितौ (D) व्योम्नि

स्रोत–तर्कसंग्रह – गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 38

59. आत्मगुण कितने हैं? UGC 73 D–2010

(A) अष्टौ (B) पञ्च
(C) दश (D) एकादश

स्रोत–तर्कसंग्रह – अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 116

60. तर्कसंग्रह के अनुसार 'पर्वतो धूमवान् वह्नित्वात्' किसका उदाहरण है? BHU MET-2016

(A) आश्रयासिद्ध (B) व्याप्यत्वासिद्ध
(C) स्वरूपासिद्ध (D) अन्यथासिद्ध

स्रोत–तर्कसंग्रह - केदारनाथ त्रिपाठी, पृष्ठ- 59

61. पृथिवी में कितने प्रकार के रस हैं? BHU MET-2016

(A) 9 (B) 8
(C) 6 (D) 3

स्रोत–तर्कसंग्रह – अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 50

62. अनुष्णाशीत स्पर्श कहाँ है? BHU MET-2016

(A) आकाश (B) वायु
(C) जल (D) तेज

स्रोत–तर्कसंग्रह – अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 52

49. (C) 50. (A) 51. (C) 52. (C) 53. (D) 54. (D) 55. (C) 56. (A) 57. (B) 58. (C) 59. (A) 60. (B) 61. (C) 62. (B)

63. आकरजं सुवर्णादि तर्कसंग्रहे कस्मिन् परिगणितम्– UGC 25 J-2016

(A) पृथिव्याम् (B) तेजसि
(C) गुणेषु (D) व्योम्नि

स्रोत–तर्कसंग्रह – आद्याप्रसाद मिश्र, पृष्ठ- 24

64. अधोनिर्दिष्टेषु विषयक्रमः कुत्र पालिताः? K-SET-2013

(A) रूपम् - गन्धः - संख्या - गुरुत्वम्
(B) गन्धः - स्पर्शः - संख्या - परिमाणः
(C) सुखम् - दुःखम् - द्वेषः - इच्छा
(D) गुणः - कर्म - विशेषः - सामान्यम्

स्रोत–तर्कसंग्रह – आद्याप्रसाद मिश्र, पृष्ठ- 19

65. कः रसवान् पदार्थः? BHU Sh. ET–2008

(A) आपः (B) मरुत्
(C) तेजः (D) आकाशम्

स्रोत–तर्कसंग्रह – अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 37

66. (i) तर्कसंग्रहानुसारं शीतस्पर्शवत्त्वं कस्य लक्षणम्?
(ii) शीतस्पर्शवत्त्वं कस्य लक्षणम्? UGC 25 J–2014

(A) पृथिव्याः (B) जलस्य
(C) वायोः (D) परदुःखस्य

स्रोत–तर्कसंग्रह – अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 37

67. अभास्वरशुक्लं कुत्र वर्तते? BHU AET–2011

(A) पृथिव्याम् (B) जले
(C) तेजसि (D) वायौ

स्रोत–तर्कसंग्रह – अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 38

68. ..... स्यात् योग्यताकांक्षासक्तियुक्तः पदोच्चयः – GJ SET–2011

(A) काव्यम् (B) वाक्यम्
(C) नाट्यम् (D) पद्यम्

स्रोत–तर्कसंग्रह – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 247

69. भास्वरशुक्लं कुत्र वर्तते? BHU AET–2011

(A) पृथिव्याम् (B) जले
(C) तेजसि (D) वायौ

स्रोत–तर्कसंग्रह – अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 49

70. उष्णस्पर्शवत्त्वं लक्षणम् - UGC 25 S–2013

(A) पृथिव्याः (B) अपाम्
(C) तेजसः (D) आत्मनः

स्रोत–तर्कसंग्रह – अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 38

71. न्यायदर्शन के अनुसार जल में 'रूप' माना जाता है? UGC 73 D-2015

(A) शुक्ल (B) अभास्वरशुक्ल
(C) नील (D) कपिश

स्रोत–तर्कसंग्रह – गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 80

72. अधस्तनेषु युग्मपर्यायेषु समीचीनं विचिनुत– MH SET-2016

(क) द्रव्याणि 1. षड्विधः
(ख) अभावः 2. पञ्च
(ग) सन्निकर्षः 3. चतुर्विधः
(घ) कर्माणि 4. नव

	क	ख	ग	घ
(A)	4	3	1	2
(B)	1	2	4	3
(C)	2	1	3	4
(D)	3	4	2	1

स्रोत–तर्कसंग्रह – आद्याप्रसाद मिश्र, पृष्ठ- 18,19,23,46

73. अधस्तनवर्गयोः युग्मपर्यायेषु समीचीनं विचिनुत– MH SET-2011

(क) आप्तवाक्यम् 1. पदम्
(ख) शक्तम् 2. शक्तिः
(ग) ईश्वरेच्छा 3. उपमानम्
(घ) उपमितिकरणम् 4. शब्दः

	क	ख	ग	घ
(A)	1	3	4	2
(B)	4	2	3	1
(C)	4	1	2	3
(D)	3	1	2	4

स्रोत–तर्कसंग्रह – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 241,244

63. (B) 64. (B) 65. (A) 66. (B) 67. (B) 68. (B) 69. (C) 70. (C) 71. (B) 72. (A) 73. (C)

74. न्यायवैशेषिक मतानुसार सुवर्ण है- UGC 25 D–1997

(A) रूप (B) द्रव्यत्व

(C) तेजस् (D) रूपाभाव

स्रोत–तर्कसंग्रह – अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 40

75. (i) रूपरहितं स्पर्शवत् द्रव्यं किमस्ति? KL-SET–2014

(ii) रूपरहितं स्पर्शः किमस्ति? UGC 25 D–2011, RPSC SET–2013-14

(A) तेजस् (B) वायुः

(C) पृथ्वी (D) आकाशः

स्रोत–तर्कसंग्रह – अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 41

76. तन्मात्रेषु किं व्योमसम्बन्धीयम्– BHU Sh-ET–2008

(A) रूपम् (B) रसः

(C) गुणः (D) शब्दः

स्रोत–तर्कसंग्रह – गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 65

77. आकाश है - UGC 25 D–1998

(A) गुण (B) द्रव्य

(C) सामान्य (D) विशेष

स्रोत–तर्कसंग्रह – गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 23

78. विशेषगुणः कुत्र द्रव्ये नास्ति? UGC 25 D–2007

(A) आकाशे (B) वायौ

(C) मनसि (D) आत्मनि

स्रोत–न्यायसिद्धान्तमुक्तावली-गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज- 108

79. काल-द्रव्ये कति गुणाः? BHU AET–2010

(A) चत्वारः (B) पञ्च

(C) षट् (D) सप्त

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 194,215

80. तर्कसंग्रहानुसारम् आत्मा - UGC 25 S–2013

(A) अणुः (B) विभुः

(C) दीर्घः (D) मध्यमपरिमाणः

स्रोत–तर्कसंग्रह – अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 47

81. (i) तर्कसंग्रह के अनुसार ज्ञान का अधिकरण है?

(ii) ज्ञानाधिकरणम् इति कस्य लक्षणमस्ति?

MP वर्ग-I PGT–2012, MGKV Ph. D–2016

(A) आत्मा (B) प्रकृति

(C) बुद्धि (D) मन

स्रोत–तर्कसंग्रह – अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 47

82. तर्कसंग्रह के अनुसार आत्ममात्र का विशेष गुण है? UGC 73 D-2015

(A) शब्द (B) विभाग

(C) संयोग (D) बुद्धि

स्रोत–तर्कसंग्रह – अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 63

83. मनः कुत्रान्तर्भवति? BHU AET–2011

(A) द्रव्यम् (B) गुणः

(C) क्रिया (D) जातिः

स्रोत–तर्कसंग्रह – अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 06

84. मनः किं स्वरूपम्?

BHU AET–2011, UGC 25 S–2013

(A) सुखम् (B) दुःखम्

(C) आत्मा (D) परमाणुः

स्रोत–तर्कसंग्रह – अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 49

85. मनः कीदृशं द्रव्यम्? BHU AET–2011

(A) विभु (B) भूतम्

(C) परमाणुरूपम् (D) न किमपि

स्रोत–तर्कसंग्रह – अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 49

86. न्यायसिद्धान्तदृशा व्याप्तिः का? UGC 25 Jn–2017

(A) साध्यवदन्यास्मिन्नसम्बन्धः

(B) सिषाधयिषाविरहसहकृतसिद्ध्यभावः

(C) व्याप्स्य पक्षवृत्तित्वधीः

(D) साध्यक्तवेन पक्षस्य वचनम्

स्रोत–न्यायसिद्धान्तमुक्तावली-महानन्द झा, पेज–19

87. मनस् है - UGC 25 J–1998

(A) सामान्य (B) गुण

(C) द्रव्य (D) विशेष

स्रोत–तर्कसंग्रह – अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 06

74. (C) 75. (B) 76. (D) 77. (B) 78. (C) 79. (B) 80. (B) 81. (A) 82. (D) 83. (A) 84. (D) 85. (C) 86. (A) 87. (C)

88. न्याय-वैशषिक के अनुसार मनस् का परिमाण है - UGC 25 J–2000

(A) विभु (B) अणु
(C) महत् (D) दीर्घ

न्यायसिद्धान्तमुक्तावली (का0-85)-गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पृष्ठ-151

89. सुख की उपलब्धि होती है- UGC 73 S–2013

(A) चक्षुषा (B) मनसा
(C) घ्राणेन (D) प्राणेन

स्रोत–तर्कसंग्रह – अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 49

90. तर्कसंग्रहानुसारं किमस्ति नवमं द्रव्यम् - UGC 25 D–2012

(A) जीवः (B) जगत्
(C) दिक् (D) मनः

स्रोत–तर्कसंग्रह – अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 06

91. आत्मनिष्ठ गुण होता है- UGC 73 J–2005

(A) रूप (B) संख्या
(C) धर्म (D) शब्द

स्रोत–तर्कसंग्रह – गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 266

92. एषु विशेषगुणः कः? BHU AET–2012

(A) संख्या (B) परिमाणम्
(C) विभागः (D) रसः

स्रोत– तर्कभाषा-गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज–381

93. सप्तविधं रूपं कुत्र विद्यते? BHU AET–2010

(A) जले (B) तेजसि
(C) पृथिव्याम् (D) अन्यत्र

स्रोत–तर्कसंग्रह – अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 49

94. (i) स्पर्शस्य ज्ञानं भवति
(ii) स्पर्शज्ञानजनकं किम्?
BHU Sh. ET–2008, BHU AET–2012

(A) सर्वे गुणाः (B) त्वक्
(C) जातिः (D) व्यक्तिः

स्रोत–तर्कसंग्रह – अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 52

95. द्वीन्द्रियग्राह्यो अस्ति - UGC 73 D–2014

(A) संख्या (B) रूपम्
(C) संस्कारः (D) रसः

न्यायसिद्धान्तमुक्तावली (गुणनिरुपण का.-93)-गजाननशास्त्री मुसलगांवकर, पेज–164

96. रसना -ग्राह्यगुण है - BHU MET–2015

(A) रस (B) रूप
(C) गन्ध (D) स्पर्श

स्रोत–तर्कसंग्रह – अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 50

97. तर्कसंग्रह के अनुसार स्नेह की वृत्ति जिसमें है, वह है- BHU AET–2011, BHU MET–2014

(A) जल (B) तेज
(C) वायु (D) पृथिवी

स्रोत–तर्कसंग्रह – अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 07

98. स्नेहः कस्य विशेषगुणः? BHU AET–2012

(A) पृथिव्याः (B) जलस्य
(C) तेजसः (D) वायोः

स्रोत–तर्कसंग्रह – अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 07

99. पारिमाण्डल्यं नाम भवति– KL SET–2014

(A) आकाशमण्डलम् (B) अणुपरिमाणम्
(C) सूर्यामण्डलम् (D) कर्ममण्डलम्

न्यायसिद्धान्तमुक्तावली (प्रत्यक्ष खण्ड)-गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज-66

100. तर्कसंग्रहकारमते आत्मा कुत्रान्तर्भवति– KL SET-2014

(A) पदार्थेषु (B) गुणेषु
(C) द्रव्येषु (D) सामान्ये

स्रोत–तर्कसंग्रह – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 80

101. घ्राणजादिप्रभेदेन षड्विधं भवति– KL SET-2014

(A) व्याप्तिः (B) हेतुः
(C) प्रत्यक्षम् (D) पक्षधर्मः

न्यायसिद्धान्तमुक्तावली (प्रत्यक्षखण्ड)–गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज- 290

102. द्व्यणुकस्य परिमाणं किं भवति ? JNU MET–2014

(A) अणु (B) महत्
(C) ह्रस्वम् (D) दीर्घम्

न्यायसिद्धान्तमुक्तावली (प्रत्यक्षखण्ड)-गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज-206

88. (B)	89. (B)	90. (D)	91. (C)	92. (D)	93. (C)	94. (B)	95. (A)	96. (A)	97. (A)
98. (B)	99. (B)	100. (C)	101. (C)	102. (C)					

103. (i) आकाशे वर्तमानः गुणः कः? BHU AET–2010,
(ii) आकाशस्य विशेषगुणः कः? 2012
(A) शब्दः (B) रूपम्
(C) स्पर्शः (D) गन्धः
स्रोत–तर्कसंग्रह – अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 43

104. जलमात्रसमवेतो गुणः कः? BHU AET–2010
(A) गुरुत्वम् (B) स्नेहः
(C) परिमाणम् (D) संयोगः
स्रोत–तर्कसंग्रह – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 171

105. 'सर्वव्यवहारहेतुर्बुद्धिः ज्ञानम्' को उल्लिखित करने वाला ग्रन्थ है - BHU MET–2014
(A) सांख्यकारिका (B) वेदान्तसार
(C) तर्कसंग्रह (D) जैनदर्शनसार
स्रोत–तर्कसंग्रह – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 175

106. 'सर्वव्यवहारहेतुर्गुणः' यह किसका लक्षण है? UGC 73 D-2015
(A) संख्यायाः (B) संयोगस्य
(C) गुरुत्वस्य (D) बुद्धेः
स्रोत–तर्कसंग्रह – अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 63

107. विशेषगुण होने के कारण 'दिक् काल और मन' का गुण नहीं है - UGC 73 S–2013
(A) संयोगः (B) संख्या
(C) बुद्धिः (D) विभागः
न्यायसिद्धान्तमुक्तावली (प्रत्यक्षखण्ड)-गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पृष्ठ-108

108. संस्कारः कस्मिन् पदार्थे अन्तर्भवति? UGC 25 J–2010
(A) द्रव्ये (B) गुणे
(C) कर्मणि (D) अभावे
स्रोत–तर्कसंग्रह – अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 29

109. तर्कसंग्रहानुसारेण गुणो नास्ति– UP GDC–2012
(A) स्नेहः (B) दिक्
(C) द्वेषः (D) बुद्धिः
स्रोत–तर्कसंग्रह – अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 6,7

110. (i) तर्कसंग्रह में कौन गुण नहीं है?
(ii) तर्कसंग्रह में इनमें से कौन गुण के अन्तर्गत नहीं आता है?
(A) संयोगः (B) संस्कारः
(C) सम्बन्धः (D) रसः
स्रोत–तर्कसंग्रह – अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 6,7,8

111. तर्कसंग्रहे तर्कलक्षणं किमुक्तम्? UGC 25 J-2016
(A) मिथ्याज्ञानम्
(B) व्याप्यारोपेण व्यापकारोपः
(C) सन्निकृष्टसंयोगहेतुः
(D) एकस्मिन् धर्मिणि विरुद्ध-नानाधर्मवैशिष्ट्यावगाहि-ज्ञानम्
स्रोत–तर्कसंग्रह – अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 113

112. सिषाधयिषया शून्या सिद्धिर्यत्र न तिष्ठति, स किमुच्यते? UGC 25 J-2016
(A) व्याप्तिः (B) पक्षः
(C) परामर्शः (D) सपक्षः
स्रोत–न्यायसिद्धान्तमुक्तावली-महानन्द झा, पेज-65

113. तर्कसंग्रहानुसारम् आत्ममात्रविशेष-गुणेषु कस्य परिगणनं नास्ति? UGC 25 J-2016
(A) बुद्धेः (B) इच्छायाः
(C) स्थिति-स्थापकसंस्कारस्य (D) धर्मस्य
स्रोत–तर्कसंग्रह – गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 267,303

114. न्यायवैशेषिक मतानुसार 'तमः' है- UGC 25 J–1999
(A) अभाव (B) द्रव्य
(C) गुण (D) सामान्य
स्रोत–तर्कसंग्रह – केदारनाथ त्रिपाठी, पृष्ठ- 04

115. (i) तर्कसंग्रह के अनुसार कर्म का लक्षण है–
(ii) 'कर्म' का लक्षण है – UGC 25 J–2002, 2003
(A) वेदोऽखिलो धर्म (B) चलनात्मकं कर्म
(C) कर्तुरीप्सिततमं कर्म (D) अकथितं कर्म
स्रोत–तर्कसंग्रह – अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 118

103. (A) 104. (B) 105. (C) 106. (D) 107. (C) 108. (B) 109. (B) 110. (C) 111. (B) 112. (B) 113. (C) 114. (A) 115. (B)

116. अप्रमाणं वाक्यं किम्? MH SET- 2011
(A) दोषदुष्टम् (B) योग्यतारहितम्
(C) आकांक्षादिरहितम् (D) सन्निधिरहितम्
स्रोत–तर्कसंग्रह – गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 249

117. अधस्तनवाक्यानां सत्यासत्यत्वपर्यायेषु समीचीनं विचिनुत– MH SET- 2011
(क) पर्वतो वह्निमान् इति हेतुः
(ख) ज्ञानं सविकल्पकमेव वर्तते
(ग) अनुमानं द्विविधम्
(घ) अयथार्थानुभवस्त्रिविधः
(A) असत्यम्, असत्यम्, सत्यम्, सत्यम्
(B) असत्यम्, सत्यम्, असत्यम्, सत्यम्
(C) सत्यम्, सत्यम्, असत्यम्, असत्यम्
(D) सत्यम्, असत्यम्, सत्यम्, असत्यम्
स्रोत–तर्कसंग्रह – गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 188,157,182,255

118. रसत्वेऽतिव्याप्तिवारणाय किं पदं प्रयुक्तम्– MH SET- 2013
(A) कर्म इति (B) द्रव्यम् इति
(C) समवाय इति (D) गुण इति
स्रोत–तर्कभाषा – गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज- 381

119. कर्मपदार्थेन कः बुध्यते? BHU ShET–2011
(A) अभावः (B) द्रव्यम्
(C) क्रिया (D) गुणः
स्रोत–तर्कसंग्रह – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 264

120. (i) उत्क्षेपणापक्षेपणादिः कस्य भेदः गण्यते
(ii) उत्क्षेपणं कस्य प्रकारः? UP GDC–2014,
(iii) उत्क्षेपणं किम्? GJ-SET–2013
BHU AET–2012, UGC 25 J–2014,
(A) गुणः (B) कर्म
(C) सामान्यम् (D) द्रव्यम्
स्रोत–तर्कसंग्रह – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 86

121. 'प्रसारणं' किं रूपम्? BHU AET–2011
(A) द्रव्यम् (B) गुणः
(C) कर्म (D) सामान्यम्
स्रोत–तर्कसंग्रह – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 86

122. 'कर्म' का भेद है - UGC 25 D–2003
(A) पर (B) पृथ्वी
(C) शब्द (D) प्रसारण
स्रोत–तर्कसंग्रह – अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 118

123. (i) 'परापरभेदौ' कस्य? BHU AET–2010, 2012
(ii) परम्-अपरम् इति कस्य भेदः – GJ-SET–2007
(iii) पराऽपरभेदौ कस्य पदार्थस्य?
(A) द्रव्यस्य (B) गुणस्य
(C) कर्मणः (D) सामान्यस्य
स्रोत–तर्कसंग्रह – अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 30

124. तर्कसंग्रह में पाँच प्रकार का होता है? UGC 73 J-2016
(A) कर्म (B) सामान्यम्
(C) अभाव (D) द्रव्यम्
स्रोत–तर्कसंग्रह – गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 26

125. 'कार्यनियतपूर्ववृत्तित्वम्' इति लक्षणं भवति– GJ SET-2004
(A) कार्यस्य (B) कारणस्य
(C) करणस्य (D) समवायस्य
स्रोत–तर्कसंग्रह – अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 69

126. सविकल्पकप्रत्यक्षं कीदृशं भवति– MH SET- 2013
(A) विकल्पसहितम् (B)सप्रकारकम्
(C)निष्प्रकारकम् (D)विशेषणविहीनम्
स्रोत–तर्कसंग्रह – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 194

127. मिथ्याज्ञानस्य उदाहरणं किम् ? MH SET- 2011
(A) स्थाणुर्वा पुरुषो वा
(B) शुक्ताविदं रजतम्
(C) यदि वह्निर्नास्ति तर्हि धूमोऽपि न स्यात्
(D)वह्निः अनुष्णः
स्रोत–तर्कसंग्रह – केदारनाथ त्रिपाठी, पृष्ठ- 67

116. (C) 117. (A) 118. (D) 119. (C) 120. (B) 121. (C) 122. (D) 123. (D) 124. (A) 125. (B) 126. (B) 127. (B)

128. सामान्य रहता है- UGC 73 D–2010

(A) सामान्यसमवायाभावेषु (B) द्रव्यगुणकर्मसु
(C) द्रव्यगुणसमवायेषु (D) गुणकर्मविशेषेषु

स्रोत–तर्कसंग्रह – अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 30

129. तर्कसंग्रहानुसारं 'न्यूनदेशवृत्ति' इति लक्षणम् - UGC 25 J–2015

(A) अभावस्य (B) परसामान्यस्य
(C) अपरसामान्यस्य (D) विशेषस्य

स्रोत–तर्कसंग्रह – आद्याप्रसाद मिश्र, पृष्ठ- 72

130. (i) विशेष पदार्थ होता है-UGC 25 D–1998, 1999
(ii) तर्कसंग्रहानुसारं विशेषाः - J–2000, 2014,
(iii) विशेष पदार्थ इसमें ही रहता है– UGC 73 J–2007, BHU AET–2012, UP PGT–2009

(A) नित्यद्रव्यवृत्तयः (B) अनित्यद्रव्यवृत्तयः
(C) द्रव्यवृत्तयः (D) गुणवृत्तयः

स्रोत–तर्कसंग्रह – अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 120

131. (i) विशेषः .... द्रव्यवृत्तिः UGC 25 J–2012

(A) अनित्यः (B) नित्यः
(C) कारणात्मकः (D) स्मृतिरूपः

स्रोत–तर्कसंग्रह – अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 120

132. सत्ता सामान्य रहते हैं - UGC 73 D–2007

(A) विशेष (B) समवाय
(C) द्रव्यगुणकर्म (D) अभाव

स्रोत–तर्कसंग्रह – गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 29

133. अभावः केषु परिगणितः? BHU ShET–2013

(A) पदार्थेषु (B) कर्मसु
(C) गुणेषु (D) द्रव्येषु

स्रोत–तर्कसंग्रह – अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 27

134. वैशेषिकमते सप्तमः पदार्थः कः? BHU AET–2012

(A) गुणः (B) कर्म
(C) अभावः (D) विशेषः

स्रोत–तर्कसंग्रह – अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 27

135. अभावः कस्मिन् दर्शने 'पदार्थ' इत्युक्तः? UP GDC–2014

(A) सांख्ये (B) योगे
(C) वेदान्ते (D) वैशेषिके

स्रोत–तर्कसंग्रह – अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 27

136. (i) 'अनादिः सान्तः' कौन है? RPSC SET–2013-14
(ii) अनादिः सान्तश्च अभावः कः? BHU MET–2016 BHU AET–2008, 2010, UGC 25 D–2008

(A) अन्योन्याभावः (B) अत्यन्ताभावः
(C) प्रध्वंसाभावः (D) प्रागभावः

स्रोत–तर्कसंग्रह – कांशीराम, संन्ध्या राठौर, पृष्ठ- 232

137. (i) सादिरनन्तः कः? WB SET–2010
(ii) 'सादिरनन्तः' कौन है ? BHU AET–2011, BHU MET–2011, 2012

(A) प्रागभावः (B) अत्यन्ताभावः
(C) अन्योन्याभावः (D) प्रध्वंसाभावः

स्रोत–तर्कसंग्रह – कांशीराम, संन्ध्या राठौर, पृष्ठ- 232

138. (i) प्रागभावस्य लक्षणं भवति - UGC 25 D–2013
(ii) प्रागभावस्य अर्थो भवति–GJ-SET–2004, 2007

(A) अनादिः सान्तः
(B) सादिरनन्तः
(C) त्रैकालिकसंसर्गाभावः
(D) तादात्म्यसम्बन्धावच्छिन्नप्रतियोगिताभावः

स्रोत–तर्कसंग्रह – कांशीराम, संन्ध्या राठौर, पृष्ठ- 232

139. 'इह घटो भविष्यति' इति व्यवहारहेतुः– K SET-2013

(A) प्रागभावः (B) अत्यन्ताभावः
(C) प्रध्वंसाभावः (D) अन्योन्याभावः

स्रोत–तर्कसंग्रह – गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 289

128. (B) 129. (C) 130. (A) 131. (B) 132. (C) 133. (A) 134. (C) 135. (D) 136. (D) 137. (D) 138. (A) 139. (A)

140. समीचीनां तालिकां चिनुत - UGC 25 J–2015

(क) घटः पटः न (i) प्रागभावः
(ख) इह घटो भविष्यति (ii) अन्योन्याभावः
(ग) भूतले घटः न (iii) प्रध्वंसः
(घ) घटो ध्वस्तः (iv) अत्यन्ताभावः

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(A)	(i)	(iii)	(ii)	(iv)
(B)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)
(C)	(iii)	(ii)	(i)	(iv)
(D)	(ii)	(i)	(iv)	(iii)

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 251,252,253

141. ईश्वरसाधकं प्रमाणं किम्? BHU AET–2011

(A) प्रत्यक्षम् (B) अनुमानम्
(C) उभयम् (D) नोभयम्

स्रोत–न्यायदर्शनम् -(वात्स्यायनभाष्य) ढुण्ढिराज शास्त्री पेज-478

142. (i) तर्कसंग्रहानुसारम् अनुमानं नाम– UGC 25 J–2015,
(ii) अनुमानं नाम– MH SET–2016

(A) लिङ्गज्ञानम् (B) व्याप्तिः
(C) उदाहरणम् (D) लिङ्गपरामर्शः

स्रोत–तर्कसंग्रह-आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–53

143. आप्तोच्चारितं किं प्रमाणम्? BHU Sh.ET–2008

(A) तात्पर्यम् (B) शब्दः
(C) अनुमानम् (D) उपमानम्

स्रोत–तर्कसंग्रह – कांशीराम संन्ध्या राठौर, पृष्ठ- 163

144. 'आप्तवाक्यं शब्दः' इति लक्षणम्– UGC 25 J–2015

(A) पदस्य (B) वाक्यस्य
(C) शब्दप्रमाणस्य (D) महावाक्यस्य

स्रोत–तर्कसंग्रह – कांशीराम संन्ध्या राठौर, पृष्ठ-163

145. शाब्दज्ञानं नाम - UGC 25 D–2014

(A) अक्षरज्ञानम् (B) शब्दज्ञानम्
(C) शक्तिज्ञानम् (D) वाक्यार्थज्ञानम्

स्रोत–तर्कसंग्रह – अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 111

146. वैशेषिकमते किं प्रमाणं न? BHU AET–2010

(A) प्रत्यक्षम् (B)अनुमानम्
(C) उपमानम् (D) न कोऽपि

स्रोत–तर्कसंग्रह – गोविन्दाचार्य, भू. पृष्ठ- (ii)

147. शब्दप्रमाणस्य फलं किम्भवति– UGC 25 J-2016

(A) पदज्ञानम् (B) वाक्यार्थज्ञानम्
(C) शक्तिज्ञानम् (D) पदजन्यपदार्थस्मरणम्

स्रोत–तर्कसंग्रह – अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 111

148. तर्कसंग्रहानुसारम् अनुभवः K-SET–2014

(A) द्विविधः (B) त्रिविधः
(C) एकविधः (D) चतुर्विधः

स्रोत–तर्कसंग्रह – गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 124

149. 'व्याप्यस्य पक्षधर्मत्वधीः' इति किम्?
UGC 25 D-2015, J-2016

(A) परामर्शः (B) अनुमितिः
(C) पक्षता (D) प्रतिज्ञा

न्यायसिद्धान्तमुक्तावली (अनुमानोपमानखण्ड)–महानन्द झा, पृष्ठ-10

150. 'अन्नम्भट्टमतेन यत्समवेतं-कार्यमुत्पद्यते' तत् किम्?
MH SET–2013

(A) असमवायिकारणम् (B) समवायिकारणम्
(C) निमित्तकारणम् (D) असाधारणकारणम्

स्रोत–तर्कसंग्रह – गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 141

151. ''व्याप्तिविशिष्टपक्षधर्मताज्ञानमिति'' किसका लक्षण है? BHU AET–2008

(A) परामर्श का (B) पक्ष का
(C) सपक्ष का (D) विपक्ष का

स्रोत–तर्कसंग्रह- गोविन्दाचार्य, पेज-175

152. वैशेषिकमते समवाये किं प्रमाणम्? BHU AET–2010

(A) प्रत्यक्षम् (B) अनुमानम्
(C) उपमानम् (D) शब्दः

स्रोत– भारतीय दर्शन – हरेन्द्रप्रसाद सिन्हा, पृष्ठ- 218

140. (D) 141. (B) 142. (D) 143. (B) 144. (C) 145. (D) 146. (C) 147. (B) 148. (A) 149. (A) 150. (B) 151. (A) 152. (B)

153. तर्कसंग्रह यथार्थानुभव को क्या कहते हैं? BHU MET–2014

(A) अप्रमा (B) प्रमा
(C) उपमिति (D) संशय

स्रोत– तर्कसंग्रह – गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 124

154. प्रमाणं द्विविधमिति कस्य मतम्? UGC 25 D–2007

(A) वैशेषिकस्य (B) नैयायिकस्य
(C) मीमांसकस्य (D) सांख्यस्य

स्रोत– तर्कसंग्रह – गोविन्दाचार्य, भू. पृष्ठ- (ii)

155. रिक्तस्थानों की पूर्ति के लिए निम्नलिखित चार विकल्पों में से कौन-सा विकल्प उपयुक्त है ?
लिङ्गपरामर्शः ....। UP PGT–2005
व्याप्तिबलेनार्थगमकम् ....।
स्वभाविकः सम्बन्धः ....।
साध्यव्यापकत्वे सति साधनाव्यापकत्वम् ....।

(A) अनुमानम्, व्याप्तिः, लिङ्गम्, उपाधिः।
(B) अनुमानम्, उपमानम्, प्रतिज्ञा, व्याप्तिः।
(C) अनुमानम्, लिङ्गम्, व्याप्तिः, उपाधिः।
(D) व्याप्तिः, प्रमाणम्, उपाधिः, अनुमानम् ।

स्रोत– तर्कभाषा – बद्रीनाथ शुक्ल, पृष्ठ- 97,99

156. 'गौरश्वः पुरुषो हस्तीति' कस्माद् हेतोर्न प्रमाणम्? UGC 25 J–2013

(A) पदत्वात् (B)सन्निधेरभावात्
(C) दृष्टान्तरहितत्वात् (D) परस्पराकांक्षाविरहात्

स्रोत– तर्कसंग्रह – गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 245

157. अधोनिर्दिष्टानां समीचीनां तालिकां विचिनुत -

(अ) आप्तवाक्यम् **1. आप्तः**
(ब) अर्थाबाधः **2. सन्निधिः**
(स) पदानामविलम्बेनोच्चारणम् **3. शब्दः**
(द) यथार्थवक्ता **4. योग्यता**

UGC 25 D–2013

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	4	3	2	1
(B)	3	4	1	2
(C)	3	4	2	1
(D)	1	2	3	4

स्रोत– तर्कसंग्रह – गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 07

158. 'आप्तवाक्यम्' अस्ति - AWES TGT–2012

(A) शब्दः (B) रूपम्
(C) अनुमितिः (D) उपमितिः

स्रोत– तर्कसंग्रह – गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 07

159. शब्दोऽस्ति– CCSUM Ph.D-2016

(A) पदानां समूहः (B) वर्णानां समूहः
(C) साकांक्षपदानां समूहः (D) आप्तवाक्यम्

स्रोत– तर्कसंग्रह – गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 07

160. प्रागभावस्य प्रतियोगि किम्? BHU AET–2011, UGC 25 D–2008, GJ-SET–2003

(A) प्रागभावः (B) प्रध्वंसः
(C) कार्यम् (D) कारणम्

स्रोत– तर्कसंग्रह – गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 03

161. जिसका 'अभाव' हो उसे कहते हैं–UGC 73 J–1991

(A) प्रतियोगि (B) अनुयोगि
(C) अनुपलब्धि (D) उभयात्मक

स्रोत– तर्कसंग्रह – गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 288

162. तर्कसंग्रह के अनुसार 'कारण' का क्या लक्षण है? BHU MET–2010, UGC 25 S–2013, GJ-SET–2007

(A) कार्यनियतोत्तरवृत्ति (B) कार्यनियतमध्यवृत्ति
(C) कार्यान्तरवृत्ति (D) कार्यनियतपूर्ववृत्ति

स्रोत– तर्कसंग्रह – गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 03

163. तन्तवः पटस्य - MP वर्ग-I PGT–2012, UGC 25 D–2008, K-SET–2013

(A) निमित्तकारणम् (B) असमवायिकारणम्
(C) समवायिकारणम् (D) सहकारिकारणम्

स्रोत– तर्कसंग्रह – गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 141

164. घटं प्रति समवायिकारणं किम्? BHU AET–2011

(A) कुलालः (B) दण्डः
(C) दण्डसंयोगः (D) कपालम्

स्रोत– तर्कसंग्रह – गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 143

153. (B) 154. (A) 155. (C) 156. (D) 157. (C) 158. (A) 159. (D) 160. (C) 161. (A) 162. (D) 163. (C) 164. (D)

165. पटस्य किम् असमवायिकारणम्? BHU Sh.ET–2013

(A) वस्त्रनिर्माणयन्त्रम् (B) तन्तवः
(C) तुरीवेमादिकम् (D) तन्तुसंयोगः

स्रोत– तर्कसंग्रह – गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 145

166. पट का निमित्तकारण होता है– UP PGT-2011

(A) तन्तु (B) तुरी
(C) तन्तुसंयोग (D) तन्तुरूप

स्रोत– तर्कसंग्रह – गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 149

167. (i) न्यायमतानुसार समवायिकारण होता है?
(ii) समवायिकारणत्वं .... एवेति विज्ञेयम्।
KL SET–2014, UGC 25 D–1997

(A) द्रव्य (B) सामान्य
(C) विशेष (D) प्रागभाव

स्रोत– तर्कसंग्रह – गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 142

168. (i) तन्तुसंयोग पट का कारण है? UGC 73 D-2015
(ii) तन्तुसंयोगः पटस्य कीदृशं कारणम्?
UGC 25 Jn–2017

(A) समवायिकारण (B) असमवायिकारण
(C) निमित्तकारण (D) समवाय्यसमवायिकारण

स्रोत– तर्कसंग्रह – गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 145

169. असाधारणं कारणं कस्य लक्षणम्?
BHU Sh.ET–2013, K-SET–2014

(A) करणम् (B) कारणसमुदायः
(C) उपादानम् (D) निमित्तकारणम्

स्रोत– तर्कसंग्रह – गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 133

170. (i) न्यायवैशेषिकमतानुसार करण का लक्षण है –
(ii) वैशेषिकमतानुसार करण का लक्षण है –
UGC 25 J–1995

(A) फलोत्पादकम् (B) फलसाधनम्
(C) साधकतमम् (D) व्यापारवदसाधारणं कारणम्

स्रोत– तर्कसंग्रह – गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 135

171. तैजसमिन्द्रियं किम् ? BHU AET–2011

(A) घ्राणम् (B) चक्षुः
(C) श्रोत्रम् (D) रसनम्

स्रोत– तर्कसंग्रह - अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 38

172. जीवात्मसुखयोः कः सम्बन्धः? BHU AET–2010

(A) संयोगः (B) समवायः
(C) संयुक्तसमवायः (D) तादात्म्यम्

स्रोत– तर्कभाषा - गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पृष्ठ- 78

173. युग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत -

(अ) संयुक्तसमवायः **1. रूपत्वग्राहकः**
(ब) समवायः **2. रूपग्राहकः**
(स) समवेतसमवायः **3. शब्दग्राहकः**
(द) संयुक्तसमवेतसमवायः **4. शब्दत्वग्राहकः**

कूटः **UGC 25 S–2013**

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	3	4	1	2
(B)	2	3	4	1
(C)	4	3	2	1
(D)	3	2	1	4

स्रोत– तर्कसंग्रह – गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 162–165

174. रूपत्वस्य प्रत्यक्षं प्रति सन्निकर्षः भवति –
UGC 73 D–2014

(A) संयोगः (B) संयुक्तसमवेतसमवायः
(C) समवेतसमवायः (D) समवायः

स्रोत– तर्कसंग्रह - अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 79

175. (i) अभावः केन सन्निकर्षेण ज्ञायते? KL SET–2015
(ii) अभावस्य प्रत्यक्षं भवति-UGC 25 J–2015, 2016
(iii) अभावप्रत्यक्षेऽन्नम्भट्टानुसारं कः सन्निकर्षोऽङ्गीकृतः?
RPSC SET–2010, K-SET–2015

(A) संयोगसम्बन्धेन
(B) समवायसम्बन्धेन
(C) संयुक्त -समवाय-सन्निकर्षेण
(D) विशेषण-विशेष्यभावसन्निकर्षेण

स्रोत– तर्कसंग्रह - अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 80

165. (D) 166. (B) 167. (A) 168. (B) 169. (A) 170. (D) 171. (B) 172. (C) 173. (B) 174. (B) 175. (D)

176. संयोगसम्बन्धः अस्ति– JNU MET -2015

(A) द्रव्यम् (B) गुणः
(C) नित्यसम्बन्धः (D) कर्म

स्रोत– तर्कसंग्रह – गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 104

177. 'जीवात्मा प्रतिशरीरं भिन्नोविभुर्नित्यश्च' यह वाक्य है? UGC 73 J-2016

(A) विवेकचूडामणौ (B) तर्कसंग्रहदीपिकायाम्
(C) तर्कसंग्रहे (D) अर्थसंग्रहे

स्रोत– तर्कसंग्रह- अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 47

178. निम्नांकित तालिका -1 में सन्निकर्ष एवं तालिका-2 में उदाहरण दिये गये विकल्पों में से सही सुमेलित विकल्प चुनें – UP PGT–2005

तालिका -1	तालिका -2
(क) संयुक्तसमवायः	(i) चक्षुषा संयुक्ते भूतले घटाभावः
(ख) संयुक्तसमवेत-समवायः	(ii) चक्षुषा घटरूपसमवेतं रूपत्वादिकम्
(ग) समवेतसमवायः	(iii) श्रोत्रेन्द्रियेण शब्दसमवेतं शब्दत्वादिकम्
(घ) विशेषणविशेष्यभावः	(iv) चक्षुरादिना घटगत-रूपादिकम्

	क	ख	ग	घ
(A)	(iv)	(ii)	(iii)	(i)
(B)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)
(C)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(D)	(i)	(iv)	(iii)	(ii)

स्रोत– तर्कसंग्रह – गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 162-165

179. वैशेषिकमते पाकः कुत्र? BHU AET–2012

(A) परमाणौ (B) द्व्यणुके
(C) त्र्यणुके (D) चतुरणुके

स्रोत– तर्कसंग्रह – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 150

180. कार्यत्वलक्षणं किमात्मकमस्ति– UGC 25 J-2016

(A) अनन्यथासिद्धनियतपश्चाद्भावित्वम्
(B) समवायिकारणम्
(C) अन्यथासिद्धपूर्वभावित्वम्
(D) अन्यथासिद्धपश्चाद्भावित्वम्

स्रोत– तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 20

181. (i) पीलुपाकवादिनः के सन्ति? BHU AET–2012
(ii) पाकप्रक्रिया विशेषतः कुत्र वर्णिता? GJ SET–2014

(A) न्यायदर्शने (B) वैशेषिकदर्शने
(C) योगदर्शने (D) वेदान्तदर्शने

स्रोत– तर्कसंग्रह – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 152

182. वेगः भावनास्थितिस्थापकश्चेति कः गुणः भवति? K-SET- 2015

(A) गन्धः (B) संस्कारः
(C) परिमाणः (D) बुद्धिः

स्रोत– तर्कसंग्रह – गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 267

183. तर्कसंग्रहादीपिकानुसारम् 'परमाणुष्वेव-पाको, न द्व्यणुकादावपी' केषाम्मते? UGC 25 J-2016

(A) नैयायिकानाम् (B)वैशेषिकानाम्
(C) सांख्यानाम् (D)वेदान्तिनाम्

स्रोत– तर्कसंग्रह – गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 92

184. वैशेषिकपदार्थानां न्यायमते कुत्रान्तर्भावः? BHU AET–2012

(A) प्रमाणे (B) प्रयोजने
(C) सिद्धान्ते (D) अर्थे

स्रोत– तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 192,193

185. तर्कसंग्रहे संस्कारः कतिविधः प्रोक्तः– UGC 25 J-2016, BHU MET-2016

(A) द्विविधः (B) चतुर्विधः
(C) षड्विधः (D) त्रिविधः

स्रोत– तर्कसंग्रह – गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 267

176. (A) 177. (C) 178. (A) 179. (A) 180. (A) 181. (B) 182. (B) 183. (B) 184. (D) 185. (D)

186. पञ्चावयव में क्या सम्मिलित नहीं है? BHU MET-2016

(A) उपनय (B) उपमान

(C) उदाहरण (D) निगमन

स्रोत– तर्कसंग्रह – केदारनाथ त्रिपाठी, पृष्ठ- 46

187. न्यायवैशेषिक स्वीकार करता है- UPPGT–2010, UK TET–2011

(A) स्वतः प्रामाण्य, परतः अप्रामाण्य

(B) परतः प्रामाण्य, स्वतः अप्रामाण्य

(C) स्वतः प्रामाण्य, स्वतः अप्रामाण्य

(D) परतः प्रामाण्य, परतः अप्रामाण्य

स्रोत– तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 156

188. विशेष और नित्यद्रव्य में सम्बन्ध होता है- UGC 73 D–2010

(A) स्वरूप (B) तादात्म्यम्

(C) विशेषणता (D) समवाय

स्रोत–न्यायसिद्धान्तमुक्तावली–गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पृष्ठ- 45

189. तर्कसंग्रहे साहचर्यनियमशब्देन किमुच्यते? UGC 25 D–2012

(A) उपाधिः (B) सन्निकर्षः

(C) अपवर्गः (D) व्याप्तिः

स्रोत– तर्कसंग्रह- अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 85

190. 'शुक्ताविदं रजतमिति ज्ञानम्' अस्ति - UGC 25 J–2014

(A) प्रमा (B) उपमितिः

(C) यथार्थानुभवः (D) अप्रमा

स्रोत– तर्कसंग्रह- अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 65

191. न्यायवैशेषिक मतानुसार 'अप्रमा' का लक्षण है - UGC 25 J–1995

(A) प्रत्यक्षभिन्नं ज्ञानम्

(B) प्रत्यक्षानुमानभिन्नं ज्ञानम्

(C) तदभाववति तत्प्रकारकं ज्ञानम्

(D) असाक्षिज्ञानम्

स्रोत– तर्कसंग्रह- अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 65

192. 'शुक्तौ इदं रजतम्' इत्यनुभवः– K SET- 2014

(A) संशयः (B) प्रमा

(C) तर्कः (D) विपर्ययः

स्रोत– तर्कसंग्रह – आद्याप्रसाद मिश्र, पृष्ठ- 63

193. कार्यरूपा पृथिवी.............अस्ति– GJ SET-2016

(A) अनित्या (B) नित्या

(C) अतिनित्या (D) परिनित्या

स्रोत– तर्कसंग्रह – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 102

194. अधस्तनेषु युग्मपर्यायेषु समीचीनं विचिनुत–

(क) उष्णस्पर्शवत् 1. वायुः

(ख) गुणाः 2. आपः

(ग) शीतस्पर्शवत्यः 3. चतुर्विंशतिः

(घ) रूपरहितस्पर्शवान् 4. तेजः

	क	ख	ग	घ
(A)	4	3	2	1
(B)	1	2	3	4
(C)	3	4	1	2
(D)	2	1	4	3

स्रोत– तर्कसंग्रह – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 115,83,112,119

195. न्याय-वैशेषिक मतानुसार 'पद' का लक्षण है- UGC 25 J–1995

(A) शक्तम् (B) सुबन्तम्

(C) तिङन्तम् (D) सुप्तिङन्तम्

स्रोत– तर्कसंग्रह – आद्याप्रसाद मिश्र, पृष्ठ- 60

196. 'अत्यन्ताभावाप्रतियोगित्वं' अस्ति- UGC 73 D–2014

(A) केवलान्वयित्वम् (B) व्यतिरेकत्वम्

(C) वाच्यत्वम् (D) व्याप्तिः

स्रोत– तर्कसंग्रह – गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 195

197. 'अव्याप्यवृत्तित्वम्' नहीं है- UGC 73 D–2014

(A) शब्दे (B) ज्ञाने

(C) द्रव्यत्वे (D) संयोगे

न्यायसिद्धान्तमुक्तावली (प्रत्यक्षखण्ड)-गजानन शास्त्री मुसलगाँवकर, पेज–95,98

186. (B) 187. (D) 188. (D) 189. (D) 190. (D) 191. (C) 192. (D) 193. (A) 194. (A) 195. (A) 196. (A) 197. (C)

198. अस्मात् पदादयमर्थो बोद्धव्यः इतीश्वरेच्छा -

GJ-SET–2011, UK SLET–2015

(A) व्यञ्जना (B) शक्तिः

(C) लक्षणा (D) प्रतिभासः

स्रोत– तर्कसंग्रह – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 244

199. 'सुखाद्युपलब्धिसाधनमिन्द्रियं' किम्?

UGC 25 D-2015

(A) रसना (B) घ्राणम्

(C) मनः (D) चक्षुः

स्रोत– तर्कसंग्रह- अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 49

200. तर्कसंग्रहानुसारं शब्दसाक्षात्कारे कः सन्निकर्षः?

UGC 25 D–2015

(A) समवायः (B) संयोगः

(C) समवेतसमवायः (D) विशेषण-विशेष्य-भावः

स्रोत– तर्कसंग्रह- अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 79

201. तर्कसंग्रहदीपिकादिशा एषु गोर्लक्षणेषु कस्मिन् अतिव्याप्तिदोषः संघटते? UGC 25 Jn–2017

(A) शृङ्गित्वम् (B) एकशफत्वम्

(C) कपिलत्वम् (D) सास्नादिमत्त्वम्

स्रोत– तर्कसंग्रह – गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 12

202. अधोलिखितयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत–

UGC 25 J–2014

(अ) अर्थाबाधो — 1. अप्रमाणम्

(ब) गौरश्वः पुरुष इति — 2. योग्यता

(स) प्रहरे-प्रहरे उच्चरितपदानि — 3. योग्यताभाववत्

(द) अग्निना सिञ्चति — 4. सन्निधि अभाववन्ति

	अ	ब	स	द
(A)	2	1	4	3
(B)	3	2	4	1
(C)	1	3	2	4
(D)	2	3	4	1

स्रोत– तर्कसंग्रह – अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 108

198. (B) 199. (C) 200. (A) 201. (A) 202. (A)

04 तर्कभाषा

1. न्यायसूत्राणां प्रणेतुः गौतमस्य अपरं नाम किम् - DSSSB TGT–2014

(A) कणादः (B) वररुचिः

(C) अक्षपादः (D) गदाधरः

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, भू. पृष्ठ- 18

2. (i) तर्कभाषायाः रचयिता अस्ति–GJ-SET–2003-2011

(ii) तर्कभाषा के लेखक कौन हैं? K-SET–2013

(iii) 'तर्कभाषा' के ग्रन्थकार का नाम है -

(iv) तर्कभाषायाः रचयितुर्नाम ..... वर्तते?

(v) तर्कभाषायाः प्रणेता विद्यते? UP PGT–2009, 2010, 2013, UP GGIC–2015, BHU MET–2015, UGC 25 D–1996, BHU AET–2011

(A) अक्षपादगौतम (B) वात्स्यायन

(C) वाचस्पति (D) केशव मिश्र

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, भू. पृष्ठ- 28

3. लक्षितस्य लक्षणमुपपद्यते न वेति विचारः उच्यते- UGC 25 D–2013

(A) परीक्षा (B) लक्षणम्

(C) उद्देश्यः (D) विमर्शः

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 07

4. कस्य कृते तर्कभाषा विरचिता– MH SET-2016

(A) पण्डितस्य (B) विपश्चितः

(C) मेधाविनः (D) बालस्य

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 1

5. (i) न्यायदर्शनस्य कर्ता कः? UP PGT–2002

(ii) 'न्यायदर्शन' के प्रणेता हैं - KL SET–2015

(A) कपिल (B) गौतम

(C) शङ्कर (D) पतञ्जलि

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, भू. पृष्ठ- 18

6. 'षोडशपदार्थी' किसको कहा जाता है? BHU MET- 2016

(A) न्याय को (B) वैशेषिक को

(C) मीमांसा को (D) सांख्य को

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 04

7. 'संस्कारमात्रजन्यं ज्ञानं स्मृतिः' किस दर्शन से सम्बन्धित है- UP PGT–2013

(A) न्यायदर्शन (B) सांख्यदर्शन

(C) मीमांसादर्शन (D) जैनदर्शन

स्रोत–तर्कसंग्रह - राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 175

8. संस्कारमात्रजन्यं ज्ञानं किमुच्यते - BHU AET–2010

(A) प्रत्यक्षम् (B) स्मृतिः

(C) उपमितिः (D) अनुमितिः

स्रोत–तर्कसंग्रहः - राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 175

9. ज्ञातविषयं ज्ञानं................ GJ SET-2016

(A) प्रत्यक्षम् (B) स्मृतिः

(C) अनुवृत्तिः (D) विधिः

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 13

10. कस्मिन् ग्रन्थे प्राधान्येन षोडशपदार्थाः प्रतिपाद्यन्ते? WB SET-2010

(A) सांख्यकारिकायाम् (B) तर्कभाषायाम्

(C) वेदान्तसारे (D) तर्कसंग्रहे

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 04

11. स्मृतिव्यतिरिक्तं ज्ञानं किम् - BHU AET–2011

(A) स्मृतिः (B) अनुभवः

(C) ज्ञानम् (D) अज्ञानम्

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 13

12. नव्यन्यायप्रवर्तकः कः - BHU AET–2011

(A) गङ्गेशः (B) रघुनाथः

(C) गदाधरः (D) जगदीशः

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, भू. पृष्ठ- 24

1. (C) 2. (D) 3. (A) 4. (D) 5. (B) 6. (A) 7. (A) 8. (B) 9. (B) 10. (B) 11. (B) 12. (A)

13. वात्स्यायन ने जिस पर भाष्य लिखा, वह ग्रन्थ है- BHU MET–2014

(A) न्यायसूत्र (B) ब्रह्मसूत्र
(C) धर्मसूत्र (D) गृह्यसूत्र

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, भू. पृष्ठ- 20

14. प्रमाणैरर्थपरीक्षणं भवति - AWES TGT–2009

(A) मीमांसा (B) न्यायः
(C) वृत्तिः (D) कारिका

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 02

15. तर्कभाषा कस्य शास्त्रस्य प्रकरणग्रन्थः - BHU AET–2010

(A) वैशेषिकस्य (B) सांख्यस्य
(C) न्यायस्य (D) अन्यस्य

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 03

16. (i) न्यायदर्शने पदार्थसंख्या कियती प्रोक्ता –
(ii) न्यायशास्त्र में पदार्थ माने गये हैं–
(ii) न्यायदर्शने पदार्थाः सन्ति– UP GDC–2014, MH SET–2013, GJ-SET–2007, 2014, HAP–2016 UGC 25 J–2003, D–2003, J–2008

(A) षोडश (B) सप्तदश
(C) विंशतिः (D) एकविंशतिः

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 04

17. विपर्ययस्य अर्थो भवति? BHU AET–2012

(A) यथार्थज्ञानम् (B) मिथ्याज्ञानम्
(C) विपरीतज्ञानम् (D) तत्वज्ञानम्

स्रोत–तर्कसंग्रह - अनितासेन गुप्ता, पेज–112

18. (i) न्यायदर्शनानुसारं प्रमाणानि - UGC 25 D–2004,
(ii) नव्यन्याये कति प्रमाणानि स्वीक्रियन्ते– 2009
(iii) न्यायदर्शनानुसारं प्रमाणानि कति भवन्ति?
(iv) न्यायशास्त्रे उक्तानां प्रमाणानां संख्या कियती? J–2006, 2009, 2010, UGC 73 J–2006, 2012, D–2011, 2012, BHU AET–2010, 2011, MH SET–2016, GJ-SET–2008

(A) त्रीणि (B) चत्वारि
(C) पञ्च (D) षट्

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 50

19. (i) तर्कभाषानुसारं प्रमाणानि कतिविधानि?
(ii) तर्कभाषायां कति प्रमाणानि? GGIC–2015, K SET–2014, UGC 25 D–2012

(A) त्रिविधानि (B) चतुर्विधानि
(C) द्विविधानि (D) पञ्चविधानि

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 50

20. (i) परार्थानुमाने कति अवयवाः सन्ति?
(ii) अनुमाने अवयवानां कति संख्या भवति–
(ii) परार्थानुमाने अवयवाः - UGC 25 D–2004, J–2013, BHU AET–2011, UGC 73, J–2010, CVVET–2017, K-SET–2013, MH SET–2016

(A) त्रयः (B) पञ्च
(C) सप्त (D) नव

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 92

21. (i) असिद्धो हेत्वाभासः कतिविधः -UGC 25 J–2006
(ii) असिद्धः कतिविधः? BHU AET–2011

(A) द्विविधः (B) त्रिविधः
(C) चतुर्विधः (D) पञ्चविधः

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 111

13. (A) 14. (B) 15. (C) 16. (A) 17. (B) 18. (B) 19. (B) 20. (B) 21. (B)

22. (i) कारणं कतिविधम् – UGC 25 D–2001, 2006
(ii) कति कारणानि–BHU AET–2011, MH SET–2011
(A) एकविधम् (B) द्विविधम्
(C) त्रिविधम् (D) चतुर्विधम्
स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 24

23. (i) न्यायानुसारं प्रमेयाः सन्ति - UGC 25 J–2009,
(ii) तर्कभाषा में प्रमेयों की संख्या है– UP GIC–2009, UP GDC–2012, BHU AET–2012, UP PGT–2011
(A) दश (B) एकादश
(C) द्वादश (D) त्रयोदश
स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 175

24. (i) हेत्वाभासाः भवन्ति? UGC 25 D–2009, J–2012,
(ii) हेत्वाभासः कतिविधः- UP PGT–2002,
(iii) गौतमेन प्रवञ्चिताः हेत्वाभासाः कति विद्यन्ते?
(iv) कति सन्ति हेत्वाभासाः –
(v) हेत्वाभासानां संख्या भवति –
UGC 73 D–2010, J–2012, BHU AET–2011, BHU MET–2011, MH-SET–2016
(A) चतुर्विधः (B) पञ्चविधः
(C) द्विविधः (D) त्रिविधः
स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 109

25. यथार्थानुभवः कतिविधः - UGC 25 D–2012
(A) चतुर्विधः (B) पञ्चविधः
(C) सप्तविधः (D) नवविधः
स्रोत–तर्कसंग्रह – गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 130

26. (i) अनुमापकस्य हेतवः कति सन्ति -
(ii) 'अनुमापक' के हेतु न्यायदर्शनानुसार कितने हैं? UGC 25 D–2012, J–2015
(A) त्रयः (B) पञ्च
(C) अष्ट (D) एकादश
स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 93

27. (i) न्यायमतानुसार पदार्थ हैं - UGC 25 D–2003,
(ii) तर्कभाषानुसार पदार्थों की संख्या–
(iii) न्यायदर्शने गौतमेन कति पदार्थाः निरूपिताः?
(iv) न्यायनये कति पदार्थाः भवन्ति-BHU AET–2011 HAP–2016, UGC 73 J–2006, UP PGT–2000, 2003
(A) 25 (B) 16
(C) 9 (D) 7
स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 04

28. (i) न्यायशास्त्रेऽनुमानं .... वर्तते - UGC 25 J–2002,
(ii) अनुमान होता है- D–2001, BHU AET–2010,
(ii) तर्कभाषानुसार 'अनुमान' होता है– 2011, GJ-SET–2011
(A) दो प्रकार का (B) चार प्रकार का
(C) तीन प्रकार का (D) पाँच प्रकार का
स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 91

29. नव्यन्यायमतानुसार 'समवाय' है - UGC 73 D–1994
(A) तीन (B) एक
(C) दो (D) चार
स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 27

30. (i) गुणाः कति – UGC 73 J–2006, 2011
(ii) न्यायदर्शने गुणाः सन्ति-D–2009, K-SET–2014
(iii) नव्यन्यायमते गुणाः सन्ति–
(A) त्रयः (B) अष्टौ
(C) षोडश (D) चतुर्विंशतिः
स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 219

31. तर्कभाषा के अनुसार गुण नहीं है– UP PGT-2011
(A) स्नेह (B) दिक्
(C) द्वेष (D) बुद्धि
स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 219

22. (C) 23. (C) 24. (B) 25. (A) 26. (A) 27. (B) 28. (A) 29. (B) 30. (D) 31. (B)

32. (i) न्यायदर्शने द्रव्याणि सन्ति -
(ii) नव्यन्यायमतानुसारं कति द्रव्याणि सन्ति–
UGC 73 D–2006, 2012 J–2009

(A) पञ्च (B) सप्त
(C) नव (D) एकादश

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 194

33. (i) गौतमेन प्रतिपादिताः पदार्थाः - UGC 73 J–2008,

(A) नव (B) द्वादश
(C) षोडश (D) चतुर्विंशतिः

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 04

34. तर्कभाषा के अनुसार कारण के प्रकार होते हैं -
UP GDC–2008, UP PGT–2000, RPSC SET–2013-14

(A) दो (B) तीन
(C) चार (D) पाँच

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 24

35. असाधारणधर्मः कस्य लक्षणम्? UGC 25 Jn–2017

(A) लक्षणस्य (B) उद्देशस्य
(C) परीक्षायाः (D) आत्मनः

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 07

36. तर्कभाषा के अनुसार कर्मों की संख्या है -
UP PGT–2003

(A) तीन (B) चार
(C) पाँच (D) छः

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 243, 244

37. तर्कभाषा के अनुसार प्रमा के कितने भेद हैं -
UP PGT–2004

(A) एक (B) दो
(C) चार (D) पाँच

स्रोत–(i) तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 50
(ii) तर्कसंग्रह - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज– 40

38. रसः कतिविधः - BHU AET–2010

(A) पञ्चविधः (B) षड्विधः
(C) चतुर्विधः (D) सप्तविधः

स्रोत–तर्कसंग्रह-अनितासेन गुप्ता, पेज–50

39. द्रवत्वम् कतिविधम् - BHU AET–2011

(A) एकविधम् (B) द्विविधम्
(C) त्रिविधम् (D) चतुर्विधम्

स्रोत–तर्कसंग्रह – आद्याप्रसाद मिश्र, पृष्ठ- 36

40. निम्नाङ्कित तालिका-1 में तर्कभाषा के अनुसार कुछ सम्प्रत्यय तथा तालिका -2 में उनके भेद अङ्कित हैं। उनकी सहायता से सही सुमेलित विकल्प चुनें -

तालिका -1	तालिका -2
(क) प्रमेय	(i) 3
(ख) अवयव	(ii) 16
(ग) पदार्थ	(iii) 5
(घ) कारण	(iv) 12

UP PGT–2005

	क	ख	ग	घ
(A)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)
(B)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(C)	(iii)	(iv)	(ii)	(i)
(D)	(iv)	(iii)	(i)	(ii)

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 175,92,04,24

41. (i) अलौकिकसन्निकर्षः कतिविधः -
(ii) न्यायदृष्ट्याऽलौकिकप्रत्यक्षे कतिविधः सन्निकर्षः स्वीक्रियते? UGC 73 Jn–2017, BHU AET–2011, 2012

(A) एकविधः (B) द्विविधः
(C) त्रिविधः (D) चतुर्विधः

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 61

42. अधस्तनवर्गयोः समीचीनं युग्मपर्यायं विचिनुत–
MH SET-2013

(क) द्रव्याणि	1. चतुर्विंशतिः
(ख) गुणाः	2. नव
(ग) कर्माणि	3. त्रीणि
(घ) कारणानि	4. पञ्च

	क	ख	ग	घ
(A)	1	2	3	4
(B)	4	3	1	2
(C)	2	1	4	3
(D)	4	3	2	1

स्रोत–तर्कसंग्रह – आद्याप्रसाद मिश्र, पृष्ठ- 18,19,43

32. (C) 33. (C) 34. (B) 35. (A) 36. (C) 37. (C) 38. (B) 39. (B) 40. (A) 41. (C) 42. (C)

43. ज्ञानलक्षणः सामान्यलक्षणः योगजश्चेति कस्य भेदाः? JNU M Phil/Ph.D- 2014

(A) अलौकिकसन्निकर्षस्य (B) अनुमितेः
(C) उपमितेः (D) अर्थापत्तेः

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 61

44. सव्यभिचारः कतिविधः - BHU AET–2011

(A) एकविधः (B) द्विविधः
(C) त्रिविधः (D) चतुर्विधः

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 115

45. तर्कभाषा ग्रन्थः केन दर्शनेन सम्बन्ध अस्ति - MGKV Ph. D–2016

(A) सांख्यदर्शनम् (B) न्यायदर्शनम्
(C) योगदर्शनम् (D) वेदान्तदर्शनम्

स्रोत– तर्कभाषा - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–07

46. (i) अयथार्थानुभव होता है? BHU AET–2011, UGC 73
(ii) अयथार्थानुभवः कतिविधः - D–2015, J–2016

(A) त्रिविधः (B) चतुर्विधः
(C) पञ्चविधः (D) षड्विधः

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 14

47. अन्यथासिद्धस्य कति भेदाः - BHU AET–2012

(A) चत्वारः (B) पञ्च
(C) षट् (D) सप्त

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 21

48. कतिविधा व्याप्तिः - BHU AET–2012

(A) एकविधा (B) द्विविधा
(C) त्रिविधा (D) चतुर्विधा

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ-93

49. कतिविधं शब्दप्रमाणम् - BHU AET–2012

(A) द्विविधम् (B) त्रिविधम्
(C) एकविधम् (D) अनेकविधम्

स्रोत–भारतीय दर्शन – चन्द्रधर शर्मा, पृष्ठ- 186

50. न्यायशास्त्रे कतिविधं दुःखम् - BHU AET–2012

(A) एकोनविंशतिविधम् (B) विंशतिविधम्
(C) एकविंशतिविधम् (D) दशविधम्

स्रोत–तर्कभाषा – गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पृष्ठ- 563

51. (i) साक्षात्कारिप्रमाहेतुः सन्निकर्षः? BHU MET–2014,
(ii) सन्निकर्ष कितने हैं - CCSUM Ph.D–2016
(iii) इन्द्रियार्थसन्निकर्षः कतिविधः -BHU AET–2012
(iv) सन्निकर्षः कतिविधः - T-SET–2014, GJ SET-
(v) न्यायमते सन्निकर्षजं ज्ञानं कतिविधम्? 2013, UGC 25 D–2006, 2012, 2013, J–2002, JNU MET–2015

(A) पाँच (B) छः
(C) सात (D) सोलह

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 61

52. 'अयुतसिद्ध'-युग्मानि कति - JNU MET–2014

(A) चत्वारि (B) षट्
(C) पञ्च (D) सप्त

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 29

53. (i) लौकिकसन्निकर्षः कतिविधः - BHU AET–2010,
(ii) नैयायिकानां मते लौकिकसन्निकर्षः? 2011, 2012, UGC 25 D–2007, HAP–2016

(A) पञ्चविधः (B) एकविधः
(C) त्रिविधः (D) चतुर्विधः

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 61

54. न्यायमतानुसार अभाव कितने प्रकार का है? UGC 73 J–2015

(A) एक एव (B) द्विविधः
(C) त्रिविधः (D) चतुर्विधः

स्रोत–तर्कसंग्रह – गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 288

55. न्याय के अनुसार समवाय है - UGC 25 D–2002

(A) पदार्थ (B) द्रव्य
(C) गुण (D) कर्म

स्रोत–तर्कसंग्रह - गोविन्दाचार्य, पृष्ठ-01

56. गौतमसूत्रोक्तषोडशपदार्थेषु कस्य पदार्थस्य ग्रहणं नास्ति– UGC 25 J-2016

(A) 'संशय'-पदार्थस्य (B) 'विशेष'-पदार्थस्य
(C) 'अवयव'-पदार्थस्य (D) 'निर्णय'-पदार्थस्य

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 03,04

43. (A)	44. (B)	45. (B)	46. (A)	47. (B)	48. (B)	49. (A)	50. (C)	51. (B)	52. (C)
53. (C)	54. (D)	55. (A)	56. (B)						

57. न्यायसूत्रोक्तषोडशपदार्थेषु द्वितीयः पदार्थः कः - BHU AET–2010

(A) प्रमाणम् (B) प्रमेयम्
(C) प्रयोजनम् (D) सिद्धान्तः

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 03

58. तर्कभाषानुसारं प्रमायाः करणं किम्भवति– UGC 25 J-2016

(A) प्रमाता (B) प्रमेयम्
(C) तर्कः (D) इन्द्रियसंयोगादिः

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 51

59. न्यायमत मे किस पदार्थ की कारणता साधर्म्य के रूप में नहीं कही गई है? UGC 73 D-2015

(A) सामान्य (B) समवाय
(C) परिमाण्डल्य (D) विशेष

स्रोत–तर्कसंग्रह – गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 307

60. न्यायमत में 'परसत्ता' कहाँ मानी जाती है? UGC 73 D-2015

(A) विशेषवृत्ति (B) समवायवृत्ति
(C) द्रव्य-गुण-कर्मवृत्ति (D) सामान्यवृत्ति

स्रोत–तर्कभाषा – गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पृष्ठ- 494

61. साध्याभाववदवृत्तित्वमिति कस्य लक्षणमस्ति– HAP-2016

(A) परामर्शस्य (B) व्याप्तेः
(C) पक्षतायाः (D) अनुमानस्य

स्रोत–तर्कसंग्रह – गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 178

62. साध्याभावव्याप्यवान् कः? MH SET- 2013

(A) सत्प्रतिपक्षः (B) विरोधः
(C) असाधारणः (D) आश्रयासिद्धः

स्रोत–तर्कसंग्रह – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 231

63. (i) प्रमाकरणं - UGC 25 D–2014,
(ii) प्रमायाः करणं किम् - BHU AET–2010, 2011
KL SET–2015

(A) प्रमाता (B) प्रमेयः
(C) प्रमाणम् (D) इन्द्रियार्थसन्निकर्षः

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 12

64. 'प्रमाकरणं प्रमाणम्' इति कस्य लक्षणम् - UGC 25 J–2013

(A) प्रमायाः (B) प्रत्यक्षस्य
(C) प्रमाणस्य (D) लक्षणस्य

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 11-12

65. 'प्रत्यक्षानुमानोपमानशब्दाः' प्रमाणानीति मन्यन्ते - UGC 73 D–2013

(A) वैशेषिकाः (B) नैयायिकाः
(C) लौकिकाः (D) सांख्याः

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 50

66. तर्कभाषा के अनुसार निम्न में से कौन प्रमा नहीं है - UP GDC–2008

(A) उपमिति (B) स्मृति
(C) अनुमिति (D) शाब्दबोध

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 13

67. (i) न्यायदर्शनानुसारं किं प्रमाणरूपेण न स्वीक्रियते?
(ii) न्यायदर्शन के अनुसार प्रमाण नहीं है -
(iii) न्यायदर्शनं किं प्रमाणं नहि स्वीकरोति?
UP GIC–2015, UP GDC–2008, UGC 25 D–2015

(A) उपमान (B) अर्थापत्ति
(C) प्रत्यक्ष (D) शब्द

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 50

68. न्यायदर्शन में निम्नलिखित में से कौन से प्रमाण स्वीकृत हैं? UP PGT–2000

(A) प्रत्यक्ष, अनुमान
(B) प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द
(C) प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द
(D) प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, अर्थापत्ति

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 50

57. (B) 58. (D) 59. (C) 60. (C) 61. (B) 62. (B) 63. (C) 64. (C) 65. (B) 66. (B) 67. (B) 68. (C)

69. अधस्तनवाक्यानां सत्यासत्यत्वपर्यायेषु समीचीनं विचिनुत– MH SET- 2013

(क) प्रमाकरणं प्रमाणम् (ख) उपमितिकरणम्

(ग) त्रिवृत्करणम् उपमानम् (घ) अनुमितिकरणम् अनुमानम्

(A) सत्यम्, असत्यम्, असत्यम्, सत्यम्

(B) असत्यम्, सत्यम्, सत्यम्, असत्यम्

(C) सत्यम्, असत्यम्, सत्यम्, असत्यम्

(D) असत्यम्, सत्यम्, असत्यम्, सत्यम्

स्रोत–तर्कसंग्रह– राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 181,206

70. तर्कभाषानुसारेण करणं किम्? RPSC SET- 2013, 14

(A) साध्यतमम् (B) साधकतमम्

(C) अन्यथासिद्धम् (D) अयुतसिद्धम्

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 17

71. प्रमाणस्य लक्षणं वर्तते - BHU AET–2012

(A) यथार्थज्ञानम् (B) प्रमाकरणम्

(C) उपमितिकरणम् (D) परामर्शज्ञानम्

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 11-12

72. न्यायदर्शने प्रथमनिर्दिष्टः पदार्थः कः? BHU AET–2012

(A) प्रमेयम् (B) प्रयोजनम्

(C) संशयः (D) प्रमाणम्

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 03

73. तदभाववति तत्प्रकारकं ज्ञानं कीदृशम्? UGC 25 J–2012

(A) प्रमा (B) अप्रमा

(C) स्मृतिः (D) विपर्ययः

स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ-15

74. अधोलिखितेषु कः यथार्थानुभवः नास्ति? JNU MET–2014

(A) प्रत्यक्षज्ञानम् (B) अनुमितिः

(C) उपमानम् (D) शाब्दज्ञानम्

स्रोत–तर्कसंग्रह– केदारनाथ त्रिपाठी, पृष्ठ- 24

75. सन्निधे लक्षणं किम्? MH SET–2016

(A) पदानां विलम्बेन उच्चारणम्

(B) पदानाम् अविलम्बेन उच्चारणम्

(C) पदानाम् अनुच्चारणम्

(D) पदानां वारं वारम् उच्चारणम्

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ-126

76. प्रमाकरणं प्रमाणमिति? BHU AET–2012

(A) तार्किकाः (B) वेदान्तिनः

(C) सांख्याः (D) बौद्धाः

स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज-11,12

77. 'प्रमाकरणं प्रमाणम्' इति वाक्यमस्ति–UGC 25 D–2013

(A) वेदान्तसारस्य (B) सांख्यकारिकायाः

(C) तर्कभाषायाः (D) बुद्धस्य

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 11-12

78. तन्तूनां पटं प्रति किं कारणं भवति–UGC 25 D–2013

(A) समवायिकारणम् (B) निमित्तकारणम्

(C) असमवायिकारणम् (D) मिथ्याकारणम्

स्रोत– तर्कसंग्रह - गोविन्दाचार्य, पेज–141

79. अविज्ञाततत्वेऽर्थे कारणोपपत्तितस्तत्वज्ञानार्थम् ऊहः अस्ति– JNU M-Phil/Ph.D-2015

(A) तर्कः (B) निर्णयः

(C) वादः (D) जल्पः

स्रोत–तर्कभाषा – गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पृष्ठ- 585

80. ''एकस्मिन् धर्मिणि नानाधर्मावगाहि ज्ञानम्'' इति लक्षणं भवति - UGC 25 J–2015

(A) अज्ञानस्य (B) समूहालम्बनज्ञानस्य

(C) संशयस्य (D) शाब्दज्ञानस्य

स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ-14, 263

81. प्रामाण्य होता है- UGC 73 S–2013

(A) तद्वतितत्प्रकारकत्वे सति ज्ञानत्वम्

(B) तद्भाववति तत्प्रकारकत्वे सति ज्ञानम्

(C) अनुभवत्वम्

(D) शाब्दबोधत्वम्

स्रोत–तर्कभाषा – गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पृष्ठ- 232, 233

69. (A) 70. (B) 71. (B) 72. (D) 73. (B) 74. (C) 75. (B) 76. (A) 77. (C) 78. (A) 79. (A) 80. (C) 81. (C)

82. रजते 'इदं रजतम्' इति ज्ञानं वर्तते - UGC 25 D–2013

(A) तर्कः (B) भ्रमः
(C) सन्देहः (D) प्रमा

स्रोत–तर्कसंग्रह– राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 178

83. तद्वतितत्प्रकारकत्व-विशिष्ट-ज्ञानत्व होता है- UGC 73 D–2013

(A) प्रमाणत्वम् (B) प्रमेयत्वम्
(C) प्रामाण्यम् (D) प्रमातृत्वम्

स्रोत–तर्कभाषा – गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पृष्ठ-

84. प्रमाणैः कीदृशं ज्ञानं जायते - BHU Sh.ET–2008

(A) ज्ञानसामान्यम् (B) प्रमा
(C) अप्रमा (D) भ्रमः

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 13

85. अनुमिति है - BHU Sh.ET–2011

(A) प्रत्यक्ष (B) अदृश्य
(C) अनुमान (D) उपमान

स्रोत–तर्कसंग्रह– राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 207

86. यथार्थ अनुभव को न्याय की शब्दावली में कहा गया है - UP PGT–2013

(A) प्रमाण (B) आदर्श
(C) प्रमा (D) करण

स्रोत–तर्कसंग्रह - राकेश शास्त्री, पेज-178

87. (i) प्रत्यक्ष का लक्षण है- UP PGT–2013,
(ii) केशवमिश्रमते प्रत्यक्षं किम्? RPSC SET–2013-14

(A) असाक्षात्कारिप्रमाकरणं प्रत्यक्षम्
(B) साक्षात्कारिप्रमाकरणं प्रत्यक्षम्।
(C) इन्द्रियजं प्रत्यक्षम्।
(D) यद् दृश्यते तत् प्रत्यक्षम्।

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 51

88. प्रत्यक्षज्ञानकरणम्– KL SET- 2015

(A) शब्दः (B) प्रत्यक्षम्
(C)अनुमानम् (D) उपमानम्

स्रोत–तर्कसंग्रह– अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 67

89. 'यथार्थानुभवः प्रमा' इत्यत्र 'अनुभव' पद-ग्रहणेन कस्य निरासः– UGC 73 Jn–2017, UGC 25 J-2016

(A) स्मृतेः (B) प्रत्यक्षस्य
(C) अनुमानस्य (D) शब्दप्रमाणस्य

स्रोत–तर्कभाषा – बदरीनाथ शुक्ल, पृष्ठ- 16

90. तर्कभाषानुसारम् आत्मनो भोगायतनम्– K SET- 2014

(A) शरीरम् (B) मनः
(C) इन्द्रियम् (D) दुःखम्

स्रोत–तर्कभाषा – गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पृष्ठ- 283

91. अयं घट इति कीदृग् ज्ञानमस्ति? UP GDC–2013

(A) निर्विकल्पकम् (B) सविकल्पकम्
(C) संशयितम् (D) सतर्कम्

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 56

92. संसर्गानवगाहि ज्ञान होता है? UGC 73 J-2016

(A) संशयः (B) भ्रमः
(C) निर्विकल्पकम् (D) सविकल्पकम्

स्रोत–तर्कभाषा – गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पृष्ठ- 67

93. न्यायनये ज्ञानस्य स्वरूपम्– GJ SET- 2007

(A) द्रव्यम् (B) गुणः
(C) कर्म (D) सामान्यम्

स्रोत–भारतीय दर्शन – हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पृष्ठ- 168

94. (i) तर्कभाषागता 'प्रमा' किं स्वरूपाऽस्ति
(ii) तर्कभाषायां प्रमा प्रोक्ता – UP GDC–2013, 2012

(A) स्मृतिः (B) संशयः
(C) विपर्ययः (D) यथार्थानुभवः

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 13

95. उद्भूतरूप कारण होता है- UGC 73 D–2014

(A) त्वाचप्रत्यक्षस्य (B) चाक्षुषप्रत्यक्षस्य
(C) उपमितेः (D) रासनप्रत्यक्षस्य

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 200

82. (D) 83. (B) 84. (B) 85. (C) 86. (C) 87. (B) 88. (B) 89. (A) 90. (A) 91. (B) 92. (C) 93. (B) 94. (D) 95. (B)

96. (i) उपमितिकरणम्.................. GJ SET-2008
(ii) उपमितेः करणम्– K SET-2014
(A) परार्थानुमानम् (B) स्वार्थानुमानम्
(C) शब्दप्रमाणम् (D) उपमानम्
स्रोत–तर्कसंग्रह - राकेश शास्त्री, पेज-241

97. प्रमा इत्युच्यमाने अधोलिखितेषु कस्य निरसनं भवति? UGC 25 D–2014
(A) प्रमितिः (B) अनुमितिः
(C) स्मृतिः (D) उपमितिः
स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 13

98. (i) तद्वति तत्प्रकारकोऽनुभवः - UGC 25 J–2008
(ii) तद्वति तत्प्रकारकं ज्ञानं भवति - GJ-SET–2016
(A) अयथार्थः (B) यथार्थः
(C) स्मृतिः (D) विपर्ययः
स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 15

99. निष्प्रकारकं ज्ञानं किम्? UGC 25 J–2008, K-SET–2016
(A) स्मृतिः (B) यथार्थः
(C) निर्विकल्पकम् (D) विपर्ययः
स्रोत–(i) तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज-56
(ii) तर्कसंग्रह - अनितासेन गुप्ता, पेज–75

100. विशेषणविशेष्यभाव .... का प्रकार है - UGC 25 D–2002
(A) प्रत्यक्ष (B) उपमान
(C) अर्थापत्ति (D) शब्द
स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 56

101. नव्यन्यायमतानुसार निर्विकल्पकज्ञान का विषय है - UGC 73 D–1994
(A) एक (B) दो
(C) तीन (D) चार
स्रोत–न्यायसिद्धान्तमुक्तावली–गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पृष्ठ- 307

102. (i) षड्विधः सन्निकर्षः कस्मिन् प्रमाणे प्रयुज्यते?
(ii) सन्निकर्षषट्कं प्रस्तावितम् - UGC 73 D–2008, RPSC-SET–2010
(A) प्रत्यक्षप्रमाणप्रसङ्गे (B) अनुमानप्रमाणप्रसङ्गे
(C) अनुपलब्धिप्रमाणप्रसङ्गे (D) आगमप्रमाणप्रसङ्गे
स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 61

103. तर्कभाषा के अनुसार निम्नलिखित में से कौन अलौकिकप्रत्यक्ष का भेद नहीं है - UP PGT–2002
(A) सामान्यलक्षण (B) प्रत्यभिज्ञा
(C) ज्ञानलक्षण (D) योगज
स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 61

104. निर्विकल्पके किं प्रमाणम् ? BHU AET–2010
(A) प्रत्यक्षम् (B) अनुमानम्
(C) उपमानम् (D) अन्यत् किञ्चित्
स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 51,54

105. प्रत्यक्षं द्विविधं भवति - BHU AET–2012
(A) सगुणं निर्गुणम् (B) सविकल्पकम् निर्विकल्पकम्
(C) स्वार्थं परार्थम् (D) धर्माधर्मौ
स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 51

106. ज्ञानमिदं द्विविधं निर्विकल्पकं सविकल्पकञ्च– K SET- 2013
(A) प्रत्यक्षज्ञानम् (B) अनुमितिज्ञानम्
(C) उपमितिज्ञानम् (D) शाब्दज्ञानम्
स्रोत–तर्कभाषा – गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पृष्ठ- 60

107. अनुमानप्रमाणविमर्शसन्दर्भे 'लिङ्गपरामर्शः' भवति– SU PH.D-2015
(A) प्रथमं ज्ञानम् (B) तृतीयं ज्ञानम्
(C) द्वितीयं ज्ञानम् (D) चतुर्थज्ञानम्
स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 86

108. इन्द्रियसन्निकर्षजन्यं परार्थज्ञानं कीदृशम् ? BHU Sh.ET–2011
(A) परोक्षम् (B) न ज्ञानयोग्यम्
(C) प्रत्यक्षम् (D) अदृश्यम्
स्रोत–तर्कभाषा – गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पृष्ठ- 60

96. (D) 97. (C) 98. (B) 99. (C) 100. (A) 101. (A) 102. (A) 103. (B) 104. (A) 105. (B) 106. (A) 107. (B) 108. (C)

109. निर्विकल्पकं प्रत्यक्षमस्ति - UGC 73 J–2012
(A) प्रमा (B) अप्रमा
(C) संशय (D) न प्रमा नापि अप्रमा
स्रोत–तर्कभाषा – गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पृष्ठ- 67

110. कौन प्रत्यक्ष कहलाता है - BHU MET–2010
(A) आत्मसन्निकर्षजन्यम् (B) शरीरार्थसन्निकर्षजन्यम्
(C) इन्द्रियार्थसन्निकर्षजन्यम् (D) परोक्षार्थसन्निकर्षजन्यम्
स्रोत–(i) तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज-52
(ii) तर्कसंग्रह - अनितासेन गुप्ता, पेज–74

111. इन्द्रियार्थसन्निकर्षजन्यं ज्ञानं किं भवति? AWES TGT–2011, K-SET–2015, GJ-SET–2007, 2013
(A) अनुमान (B) प्रत्यक्ष
(C) उपमान (D) समवेत
स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 52

112. प्रत्यक्षप्रमाणस्य कति भेदाः? AWES TGT–2011, 2012
(A) नव (B) पञ्च
(C) द्वौ (D) षट्
स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 51

113. न्यायदर्शन के अनुसार लिङ्गत्व का लक्षण है- UP PGT–2013
(A) उपाधित्वं लिङ्गत्वम्
(B) अव्याप्तिबलेनार्थगमकं लिङ्गम्
(C) व्याप्तिबलेनार्थगमकत्वं लिङ्गत्वम्
(D) धूमाग्नोः स्वाभाविकं सम्बन्धं लिङ्गम्
स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 79

114. अनुमान प्रमाण के भेद हैं- UP PGT–2013
(A) उपमान तथा प्रत्यक्ष (B) अर्थापत्ति तथा अभाव
(C) स्वार्थ तथा परार्थ (D) षोढासन्निकर्ष तथा व्याप्ति
स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 91

115. ''साध्यव्याप्यहेतुमान् पक्षः'' यह ज्ञान है - UGC 73 D–2014
(A) सादृश्यज्ञानम् (B) परामर्शः
(C) शाब्दबोधः (D) चाक्षुषम्
न्यायसिद्धान्तमुक्तावली (अनुमानोपमानखण्ड)-महानन्द झा, पृष्ठ- 10

116. 'यत्र धूमस्तत्राग्निः' इति साहचर्यनियमः - UGC 25 D–2005, BHU AET–2012
(A) परामर्शः (B) पक्षधर्मता
(C) द्वितीयधूमज्ञानम् (D) व्याप्तिः
स्रोत– तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज-79

117. न्यायशास्त्रे साहचर्यनियमशब्देन नियुज्यते - UGC 25 D–2006
(A) व्याप्तिः (B) उपाधिः
(C) सन्निकर्षः (D) अपवर्गः
स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 79

118. व्याप्तिबलेनार्थगमकं किमुच्यते– UGC 25 J-2016
(A) परामर्शः (B) पक्षः
(C) लिङ्गम् (D) साध्यम्
स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 79

119. अनुमितिः कस्माद् अनन्तरं जायते? UGC 25 D–2006, GJ-SET–2014
(A) परामृशति (B) व्याप्तिज्ञानात्
(C) पदज्ञानात् (D) सादृश्यज्ञानात्
स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 78

120. अनुमानं नाम - UGC 25 D–2013
(A) व्याप्तिः (B) पक्षः
(C) हेतुः (D) लिङ्गपरामर्शः
स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 78

121. तर्कभाषायां लिङ्गपरामर्शः अस्ति– GGIC-2015
(A) प्रत्यक्षम् (B)अनुमानम्
(C) उपमानम् (D) शब्दः
स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 78

122. (i) पञ्चावयववाक्य का प्रयोग होता है -
(ii) पञ्चावयवाः प्रयोग एव - UGC 25 J–2014, UP PGT–2005
(A) स्वार्थानुमानम् (B) निगमनम्
(C) उदाहरणम् (D) परार्थानुमानम्
स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 92

109. (A) 110. (C) 111. (B) 112. (C) 113. (C) 114. (C) 115. (B) 116. (D) 117. (A) 118. (C) 119. (A) 120. (D) 121. (B) 122. (D)

123. न्याय-वैशेषिक मत मे व्याप्ति विशिष्ट पक्षताज्ञान है- UGC 25 J–2001

(A) व्यक्ति (B) साध्य
(C) परामर्श (D) अनुमान

स्रोत–तर्कसंग्रह– राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 206

124. प्रतिज्ञाहेतूदाहरणोपनयनिगमनानि केन पदेन व्यवह्रियन्ते– K SET-2015

(A) हेत्वाभासाः (B) अवयवाः
(C) कर्माणि (D) पदार्थाः

स्रोत–तर्कसंग्रह– गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 188

125. 'तस्मात्तथा' इति वाक्यम्– K SET-2013

(A) उपनयवाक्यम् (B) प्रतिज्ञावाक्यम्
(C) निगमनवाक्यम् (D) उदाहरणवाक्यम्

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 92

126. अतिदेशवाक्यार्थः कतिविधः? MH SET-2016

(A) त्रिविधः (B) द्विविधः
(C) चतुर्विधः (D) पञ्चविधः

स्रोत–तर्कसंग्रह– गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 234

127. साध्यधर्मविशिष्टधर्मप्रतिपादकवचनं किमस्ति? MH SET-2016

(A) निगमनम् (B) लिङ्गम्
(C) प्रतिज्ञा (D) उदाहरणम्

स्रोत–तर्कसंग्रह– गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 189

128. (i) अनुमिति का करण - UGC 73 D–2006,
(ii) अनुमितेः करणं भवति– J–2011

(A) हेतुज्ञान (B) पक्षधर्मताज्ञान
(C) सपक्षधर्मताज्ञान (D) व्याप्तिज्ञान

स्रोत–तर्कसंग्रह- केदारनाथ त्रिपाठी, पृष्ठ- 39,40

129. परामर्श-नामको ज्ञानविशेषः प्रस्तावितः? UGC 73 J–2008

(A) प्रत्यक्षप्रमाणप्रसङ्गे (B) अनुमानप्रमाणप्रसङ्गे
(C) उपमानप्रमाणप्रसङ्गे (D) शब्दप्रमाणप्रसङ्गे

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 78

130. अनुमितौ व्यापारो भवति - UGC 73 J–2010, UK SLET–2015

(A) व्याप्तिज्ञानम् (B)पक्षता
(C) परामर्शः (D) व्याप्तिः

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 78

131. (i) अनुमानवाक्यस्य अवयवाः सन्ति?
(ii) तर्कभाषा के अनुसार अनुमान के कितने अवयव हैं? UP PGT–2002, K-SET–2014

(A) तीन (B) चार
(C) पाँच (D) दो

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 92

132. परार्थानुमान में प्रतिज्ञावाक्य है - UP PGT–2009

(A) पर्वतो वह्निमान् (B) यो यो धूमवान् स स वह्निमान्
(C) तस्मात्तथा (D) धूमवत्त्वात्

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 92

133. तर्कभाषानुसारेण परार्थानुमाने हेतुः कति रूपोपपन्नः भवति– RPSC ग्रेड I PGT–2014

(A) चतुःरूपोपपन्नः (B) पञ्चरूपोपपन्नः
(C) त्रिरूपोपपन्नः (D) द्विरूपोपपन्नः

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 92

134. तर्कभाषाकृन्मते किम् अनुमानं प्रमाणम् ? BHU AET–2010

(A) व्याप्तिज्ञानम् (B) परामर्शः
(C) पक्षधर्मताज्ञानम् (D) पक्षता

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 78

135. (i) 'पर्वतो वह्निमान्' इति कस्यावयवस्य उदाहरणम्?
(ii) पर्वतो वह्निमान् इति ज्ञानं किम् ? BHU AET–2010, MH-SET–2013

(A) हेतुः (B) प्रतिज्ञा
(C) उदाहरणम् (D) उपनयः

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 92

123. (C) 124. (B) 125. (C) 126. (A) 127. (C) 128. (D) 129. (B) 130. (C) 131. (C) 132. (A)
133. (B) 134. (B) 135. (B)

136. अधोलिखितेषु परार्थानुमानस्य पञ्चावयवेषु कस्य परिगणनं नास्ति– UGC 25 J-2016

(A) प्रतिज्ञायाः (B) हेतोः
(C) संशयस्य (D) निगमनस्य

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ-92

137. पञ्चावयवेषु अन्त्यावयवस्य किं नाम? BHU AET–2010

(A) प्रतिज्ञा (B) हेतुः
(C) उपनयः (D) निगमनम्

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 92

138. स्वानुमितौ किम् अनुमानं प्रमाणम् BHU AET–2011

(A) स्वार्थानुमानम् (B) परार्थानुमानम्
(C) उभयम् (D) नोभयम्

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 91

139. 'पर्वतो वह्निमान्' धूमादित्यत्र साध्यं किम्? BHU AET–2011

(A) वह्निमान् (B) वह्निमयत्वं
(C) वह्नित्वं (D) पर्वतः

न्यायसिद्धान्तमुक्तावली (अनुमानखण्ड)-गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज-10,43

140. पर्वतो वह्निमान् धूमादित्यत्र सपक्षः कः? BHU AET–2011

(A) पर्वतः (B) महानसः
(C) ह्रदः (D) पर्वतत्वम्

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 108-268

141. 'पर्वतो वह्निमान्' इत्यत्र पक्षतावच्छेदकं किम् ? BHU AET–2011

(A) पर्वतः (B) पर्वतत्वं
(C) वह्निः (D) वह्नित्वं

न्यायसिद्धान्तमुक्तावली (अनुमान खण्ड)-गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज–42-43

142. विपक्षो नाम कः ? BHU AET–2011

(A) सन्दिग्धसाध्यवान् (B) निश्चितसाध्याभाववान्
(C) निश्चितसाध्यवान् (D) सन्दिग्धसाध्याभाववान्

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 108

143. निश्चितसाध्याभाववान् मन्यते– T SET-2013

(A) पक्षः (B) सपक्षः
(C) विपक्षः (D) प्रमितिः

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 108

144. प्रमाणेन विषयस्य ज्ञानं प्राप्नोति सः– T SET-2013

(A) प्रमाता (B) प्रमेयः
(C) प्रमितिः (D) प्रमाफलम्

स्रोत–

145. प्रमाता यं विषयं प्रमिणोति सः कथ्यते– T SET-2013

(A) प्रमाणम् (B) प्रमेयम्
(C) हेतुः (D) हेत्वाभासः

स्रोत–

146. तथाचायमिति कः अवयवः? BHU AET–2011, 2012

(A) प्रतिज्ञा (B) हेतुः
(C) उदाहरणम् (D) उपनयः

स्रोत–तर्कसंग्रह– गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 188

147. अनुमानस्य लक्षणं वर्तते - BHU AET–2012

(A) इन्द्रियजन्यम् (B) अनुमितिकरणज्ञानम्
(C) सादृश्यज्ञानम् (D) शाब्दज्ञानम्

स्रोत–तर्कसंग्रह– गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 173

148. अनुमानप्रमाणं किम्? BHU AET–2012

(A) पक्षधर्मताज्ञानम् (B) व्याप्तिज्ञानम्
(C) हेतुमात्रज्ञानम् (D) अन्यत् किमपि

स्रोत–तर्कसंग्रह– गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 173

149. (i) तर्कभाषायामर्थापत्तिः कुत्रान्तर्भाविता?
(ii) अर्थापत्तेः कस्मिन् प्रमाणेऽन्तर्भावः भवितुमर्हति? UGC 25 J-2016, J–2012

(A) प्रत्यक्षप्रमाणे (B) अनुमानप्रमाणे
(C) उपमानप्रमाणे (D) शब्दप्रमाणे

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 140,141

136. (C) 137. (D) 138. (A) 139. (C) 140. (B) 141. (B) 142. (B) 143. (C) 144. (A) 145. (B) 146. (D) 147. (B) 148. (B) 149. (B)

150. (i) स्वार्थं परार्थं चेति भेदौ भवतः - BHU Sh.ET–2011
(ii) स्वार्थपरार्थौ इति भेदद्वयं कस्य - GJ-SET–2003

(A) आप्तवाक्यस्य (B) प्रत्यक्षस्य
(C) आगमस्य (D) अनुमानस्य

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 91

151. ''पर्वतो वह्निमान् धूमात्'' इत्यत्र कः साध्यः ? BHU Sh.ET–2011

(A) धूमः (B) वह्निः
(C) पर्वतः (D) हेतुः

न्यायसिद्धान्तमुक्तावली (अनुमानखण्ड)-गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पृष्ठ-10

152. निश्चितसाध्यधर्मः धर्मी - UK SLET–2015

(A) पक्षः (B) विपक्षः
(C) सपक्षः (D) हेतुः

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 108

153. सन्दिग्धसाध्यवान्– K SET-2014, GJ SET-2016

(A) सपक्षः (B) पक्षः
(C) विपक्षः (D) सत्प्रतिपक्षः

स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ-108

154. 'धूमवत्वात्'-इति................ GJ SET-2016

(A) निगमनवाक्यम् (B) प्रतिज्ञावाक्यम्
(C) हेतुवाक्यम् (D) उदाहरणवाक्यम्

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 92,93

155. पञ्चावयवेषु चतुर्थोऽवयवः कः ? BHU AET–2010

(A) हेतुः (B) उदाहरणम्
(C) उपनयः (D) निगमनम्

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 92

156. साध्याभाववत्पक्ष यह बाधज्ञान प्रतिबन्धक होता है- UGC 73 J–2014

(A) परामर्शस्य (B) व्याप्तिज्ञानस्य
(C) अनुमितेः (D) आहार्यस्य

स्रोत–न्यायसिद्धान्तमुक्तावली (अनुमानखण्ड)–महानन्द झा, पृष्ठ- 101

157. परामर्शजन्यं ज्ञानं किम् - BHU AET–2012, GJ-SET–2011, K-SET–2014, CCSUM-Ph.D–2016

(A) प्रत्यक्षम् (B) अनुमितिः
(C) उपमितिः (D) शाब्दम्

स्रोत–तर्कसंग्रह– गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 174

158. सपक्षस्योदाहरणं विद्यते - UGC 25 D–2013

(A) महाह्रदः (B) पर्वतः
(C) महानसः (D) आकाशः

स्रोत–तर्कसंग्रह– गोविन्दाचार्य, पेज-202

159. 'यथा गौस्तथा गवयः' उदाहरण है - UP PGT–2013

(A) उपमानप्रमाण का (B) अनुमानप्रमाण का
(C) प्रत्यक्ष का (D) अर्थापत्ति का

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 119

160. उपमितिः नाम - UGC 25 D–2014, UGC 73 D–1994

(A) संज्ञा-संज्ञि-सम्बन्धज्ञानम्
(B) संज्ञा-ज्ञानम्
(C) संज्ञिज्ञानम्
(D) सादृश्यज्ञानम्

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 120

161. सादृश्यज्ञानं करणम् - UGC 25 D–2005, 2006

(A) अनुमितेः (B) उपमितेः
(C) शाब्दबोधस्य (D) चाक्षुषप्रत्यक्षस्य

स्रोत–तर्कसंग्रह– गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 233

162. गोसादृश्यविशिष्टपिण्डज्ञानम्–CCSUM-Ph.D-2016

(A) अनुमानम् (B) प्रत्यक्षम्
(C) उपमानम् (D) शब्दः

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 119

163. संज्ञासंज्ञिसम्बन्धज्ञानस्य कारणम् - UGC 25 D–2005

(A) प्रत्यक्षप्रमाणम् (B) शब्दप्रमाणम्
(C) अनुमानप्रमाणम् (D) उपमानप्रमाणम्

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 120

150. (D) 151. (B) 152. (C) 153. (B) 154. (C) 155. (C) 156. (C) 157. (B) 158. (C) 159. (A)
160. (A) 161. (B) 162. (C) 163. (D)

164. अतिदेशवाक्यार्थस्मरणं कुत्र व्यापारः - UGC 25 J–2006

(A) प्रत्यक्षे (B) अनुमितौ
(C) उपमितौ (D) शाब्दबोधे

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 119

165. उपमानं प्रमाणं किम् - UGC 25 D–2010, AET–2010

(A) इन्द्रियम् (B) व्याप्तिज्ञानम्
(C) सादृश्यज्ञानम् (D) शक्तिज्ञानम्

स्रोत–तर्कसंग्रह– गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 237

166. (i) उपमितिज्ञानं कथं जायते - UGC 25 D–2012,
(ii) उपमितिकरणं किम्– J–2014

(A) व्याप्तिज्ञानात् (B) इन्द्रियसन्निकर्षात्
(C) सादृश्यात् (D) पदज्ञानात्

स्रोत–तर्कसंग्रह– गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 233,237

167. (i) उपमान प्रमाण का फल है - UGC 25 D–1997
(ii) न्यायमते उपमानप्रमाणस्य किं फलम् - BHU AET–2010

(A) निर्विकल्पकज्ञान (B) शाब्दबोध
(C) शब्दप्रत्यक्ष (D) संज्ञासंज्ञिसम्बन्धज्ञान

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 120

168. 'उपमान' प्रमाण को मानते हैं - UGC 73 J–1999

(A) वैशेषिक (B) न्याय
(C) योग (D) बौद्ध

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 50,136

169. उपमितेः करणं भवति - UGC 73 D–2012

(A) परामर्शः (B) सन्निकर्षः
(C) पदज्ञानम् (D) सादृश्यधीः

स्रोत–तर्कसंग्रह– गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 233

170. गौरश्वः पुरुषो हस्तीत्यादिपदसमुदायः प्रमाणं कथं न भवति– UGC 25 Jn–2017

(A) सान्निध्याभावात् (B) योग्यताविरहात्
(C) आकांक्षाविरहात् (D) पदसमूहाभावात्

स्रोत– तर्कसंग्रह - गोविन्दाचार्य, पेज–245

171. उपमितौ कारणं किम् - BHU MET–2011, 2012

(A) पदज्ञानम् (B) पदार्थज्ञानम्
(C) सादृश्यज्ञानम् (D) व्याप्तिज्ञानम्

स्रोत–तर्कसंग्रह– गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 233

172. उपमानं भवति - BHU AET–2012

(A) साक्षात्ज्ञानम् (B) लिङ्गपरामर्शजन्यम्
(C) उपमितिकरणम् (D) आप्तवाक्यम्

स्रोत–तर्कसंग्रह– गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 233

173. उपमानप्रमाणस्य किं फलम् - BHU AET–2012

(A) सादृश्यज्ञानम् (B) पदनिष्ठशक्तिज्ञानम्
(C) पदार्थज्ञानम् (D) अन्यत् किमपि

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 119-120

174. सादृश्यज्ञानकारकं ज्ञानं किमस्ति - UGC 25 J–2012

(A) प्रत्यक्षम् (B) अनुमितिः
(C) शाब्दबोधः (D) उपमितिः

स्रोत–तर्कसंग्रह– गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 233

175. (i) सादृश्यात् .... जायते - BHU AET–2012,
(ii) सादृश्यज्ञानजन्यम् - GJ-SET–2016

(A) प्रत्यक्षम् (B) अर्थापत्तिः
(C) अनुमानम् (D) उपमानम्

स्रोत–तर्कसंग्रह– गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 233

176. (i) सञ्ज्ञासंज्ञिसम्बन्धप्रतीतिः किमुच्यते?
(ii) संज्ञा-सञ्ज्ञिसम्बन्धज्ञानं न्यायदर्शने किमङ्गीक्रियते?
(iii) संज्ञासंज्ञिसम्बन्धिज्ञानमस्ति?
UGC 73 Jn–2017, MGKV–Ph.D–2016, UGC 25 J-2016

(A) अनुमितिः (B) प्रत्यक्षम्
(C) उपमितिः (D) शब्दः

स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ-120

177. किं सादृश्यज्ञानाधीनम् - BHU Sh.ET–2011

(A) तात्पर्यम् (B) अनुमितिकरणम्
(C) शब्दप्रमाणम् (D) उपमितिकरणम्

स्रोत–तर्कसंग्रह– गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 233

164. (C) 165. (C) 166. (C) 167. (D) 168. (B) 169. (D) 170. (C) 171. (C) 172. (C) 173. (A) 174. (D) 175. (D) 176. (C) 177. (D)

178. तर्कभाषा में शब्दप्रमाण का लक्षण है- UP PGT–2013

(A) आप्तवाक्यं शब्दः (B) वेदोक्तवाक्यं शब्दः
(C) शास्त्रोक्तं शब्दः (D) लोकवाक्यं शब्दः

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 122

179. वाक्यार्थज्ञाने हेतुः अस्ति - UGC 25 D–2014

(A) निगमनम् (B) प्रतिज्ञा
(C) हेतुः (D) सन्निधिः

स्रोत–तर्कसंग्रह– गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 245-46

180. न्यायनये वाक्यम् - UGC 25 D–2004

(A) पदवर्णशब्दाः
(B) अभिधालक्षणाव्यञ्जनाः
(C) आकाङ्क्षायोग्यतासन्निधिमतां पदानां समूहः
(D) पदपदार्थयोजना

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 122

181. (i) नव्यन्याय में पद का लक्षण है-UGC 73 J–1998
(ii) न्यायदर्शने पदलक्षणं भवति - GJ-SET–2007

(A) सुप्तिङन्तम् (B) शक्तम्
(C) अर्थवत् (D) अर्थः

स्रोत–तर्कसंग्रह– गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 239

182. 'आप्तवाक्यं शब्दः' किस दर्शन से सम्बन्धित है - UP PGT–2004

(A) जैन (B) बौद्ध
(C) मीमांसा (D) न्याय

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 122

183. (i) 'आप्तवाक्य' है- UP PGT–2009, GJ-SET–2014
(ii) आप्तवाक्यम्' इति लक्षणम्? KL SET–2015

(A) रूप (B) शब्द
(C) अनुमिति (D) उपमिति

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 122

184. पदसमूहो नाम - BHU AET–2011

(A) पदम् (B) पदार्थः
(C) वाक्यम् (D) वाक्यार्थः

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 122-123

185. कीदृशं वाक्यं शब्दप्रमाणम् - BHU AET–2012

(A) आप्तवाक्यम् (B) अनाप्तवाक्यम्
(C) उभयवाक्यम् (D) स्मृतिवाक्यम्

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 122

186. शाब्दबोधे किं करणम् - BHU AET–2012

(A) पदज्ञानम् (B) पदार्थज्ञानम्
(C) पदनिष्ठा-शक्तिज्ञानम् (D) आप्तज्ञानम्

स्रोत–तर्कसंग्रह– गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 320

187. न्यायदर्शन के अनुसार कारण का लक्षण है - UP PGT–2013

(A) अन्यथासिद्ध-नियतपूर्वभावित्व
(B) अनन्यथासिद्ध-नियतपूर्वभावित्व
(C) अन्यथासिद्ध-नियतपश्चाद्भावित्व
(D) अनन्यथासिद्धनियतपश्चाद्भावित्व

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 20

188. कारणं तदुच्यते यत् कार्यात् - UGC 25 D–2005

(A) पूर्ववर्ति (B) परवर्ति
(C) नियतपूर्ववर्ति (D) समकालवर्ति

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 20

189. कार्यनियतपूर्ववृत्तित्वम् - UGC 25 J–2008, 2012 BHU AET–2014, UP PGT–2009

(A) कारणत्वम् (B) कार्यत्वम्
(C) करणत्वम् (D) अकारणत्वम्

स्रोत–तर्कसंग्रह– अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 69

190. वेमादिकं पटस्य अस्ति - UGC 25 J–2009

(A) समवायिकारणम् (B) असमवायिकारणम्
(C) निमित्तकारणम् (D) किमपि न

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 42-43

191. असमवायिकारणनाशात् कस्य नाशो भवति - UGC 25 J–2011

(A) द्रव्यस्य (B) गुणस्य
(C) कर्मणः (D) न कस्यापि

स्रोत–तर्कभाषा – गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पृष्ठ- 36

178. (A) 179. (D) 180. (C) 181. (B) 182. (D) 183. (B) 184. (C) 185. (A) 186. (A) 187. (B) 188. (C) 189. (A) 190. (C) 191. (A)

192. तर्कभाषानुसारं कारणं त्रिविधम् - UGC 25 D–2012

(A) समवायि-असमवायि-निमित्तभेदात्

(B) समवायि-संयुक्तसमवायि-निमित्तभेदात्

(C) संयोग-संयुक्ततादात्म्य-निमित्तभेदात्

(D) सहकारि-तादात्म्य-समवायिभेदात्।

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 24

193. पट का समवायिकारण है -UGC 25 J–1998, 2002, UP PGT–2009

(A) तन्तु (B) तन्तुसंयोग

(C) पटसंयोग (D) तन्तुपटसंयोग

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 24

194. 'मृत्पिण्डः' घटस्य कीदृशं कारणमुच्यते? UGC 25 J-2016

(A) निमित्तकारणम् (B) समवायिकारणम्

(C) असमवायिकारणम् (D) समवाय्यसमवायिकारणम्

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 33

195. नित्यः सम्बन्धः कः? MH SET-2011

(A) समवायः (B) समवेत-समवायः

(C) संयुक्तसमवेतसमवायः (D) असमवायः

स्रोत–तर्कसंग्रह – आद्याप्रसाद मिश्र, पृष्ठ- 75

196. तन्तुरूपं कारणमस्ति– CCSUM Ph.D-2016

(A) पटस्य (B) पटरूपस्य

(C) तन्तुसंयोगस्य (D) तन्तुरूपपटस्य

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 41

197. तर्कभाषानुसारं शब्दोपलब्धिसाधनमिन्द्रियं किम्? RPSC SET–2013-14

(A) त्वक् (B) रसनम्

(C) श्रोत्रम् (D) चक्षुः

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 190

198. (i) घटरूप का असमवायिकारण है -

(ii) घटरूपस्य असमवायिकारणं किं भवति?

UGC 25 J–2000, BHU AET–2010, HAP–2016

(A) दण्डरूप (B) कपालत्व

(C) कुम्भकार (D) कपालरूप

स्रोत–तर्कसंग्रह - गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 147

199. न्यायमतानुसार असमवायिकारण होता है- UGC 25 D–1999

(A) द्रव्य (B) सामान्य

(C) अभाव (D) गुण

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 44

200. अनुमिति की उत्पत्ति में कारण है- UGC 25 J–1999

(A) परामर्श (B) सन्निकर्ष

(C) सादृश्यज्ञान (D) निगमन

स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज-78

201. ज्ञान का समवायिकारण है - UGC 25 D–1998

(A) शरीर (B) इन्द्रिय

(C) आत्मा (D) मनस्

स्रोत–तर्कसंग्रह– अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 47

202. कार्य का अन्तिम कारण है - UGC 25 J–1994

(A) अवान्तरव्यापार (B) करण

(C) कर्ता (D) साधारणकारण

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 58

203. घटं प्रति कस्य अन्यथासिद्धत्वम्- UGC 73 J–2011

(A) दण्डस्य (B) कुलालस्य

(C) चक्रस्य (D) मृत्तिकायाः

स्रोत–तर्कभाषा – गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पृष्ठ- 27

204. घटं प्रति अन्यथासिद्धं भवति - UGC 73 J–2012

(A) दण्डत्वम् (B) दण्डः

(C) कुम्भकारः (D) कपालिका

स्रोत–तर्कभाषा – गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पृष्ठ- 26

205. (i) समवायिकारणं भवति -

(ii) तर्कभाषानुसारं समवायिकारणं किम्भवति–

UGC 25 Jn–2017, UGC 73 J–2013, BHU AET–2010

(A) गुणः (B) द्रव्यम्

(C) कर्म (D) अभावः

स्रोत–तर्कभाषा – गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पृष्ठ- 44

192. (A) 193. (A) 194. (B) 195. (A) 196. (B) 197. (C) 198. (D) 199. (D) 200. (A) 201. (C) 202. (A) 203. (B) 204. (A) 205. (B)

206. (i) निम्नलिखितेषु पटस्य असमवायिकारणं किम्?

(ii) न्यायदर्शन के अनुसार पट का असमवायिकारण है-

(iii) तर्कभाषानुसारेण असमवायिकारणस्य उदाहरणमस्ति–

UP GDC–2008, BHU AET–2010, 2011, 2012

RPSC ग्रेड-I PGT–2015, K-SET–2014

(A) पटरूप (B) तन्तु

(C) तन्तुसंयोग (D) तुरी

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 39

207. पटस्य निमित्तकारणं भवति -

UP GDC–2012, UP GIC–2015

(A) तन्तवः (B) तुरी

(C) तन्तुसंयोगः (D) तन्तुरूपम्

स्रोत–तर्कसंग्रह – गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 149

208. घटनिर्माणे कुम्भकारोऽस्ति– CCSUM Ph.D-2016

(A) समवायिकारणम् (B)असमवायिकारणम्

(C)उपादानकारणम् (D)निमित्तकारणम्

स्रोत–भारतीय दर्शन – चन्द्रधर शर्मा, पृष्ठ- 188

209. अधस्तनयुग्मपर्यायेषु समीचीनं विचिनुत–

MH SET-2014

(क) अनैकान्तिकः 1. यथार्थानुभव

(ख) अनुमानम् 2. कारणम्

(ग) चतुर्विधः 3. त्रिविधः

(घ) त्रिविधम् 4. द्विविधम्

	क	ख	ग	घ
(A)	3	4	1	2
(B)	2	4	1	3
(C)	4	2	1	3
(D)	1	2	3	4

तर्कसंग्रह–रामभजन शर्मा 'वात्स्यायन', पृष्ठ-A=71, B=38, C=59, D=43

210. अधस्तनयुग्मानां वाक्यानां सत्यासत्यपर्यायेषु समीचीनं-विचिनुत– MH SET-2013

(i) साहचर्यनियमः परामर्शः

(ii) आत्मत्वसामान्यवानात्मा

(iii) एकत्वादिव्यवहारहेतुः परिमाणम्

(iv) रसनेन्द्रियग्राह्यो विशेषगुणो वायुः

(A) सत्यम्, असत्यम्, सत्यम्,असत्यम्

(B) असत्यम्, असत्यम्, सत्यम्, सत्यम्

(C)असत्यम्, सत्यम्, असत्यम्, असत्यम्

(D) सत्यम्, असत्यम्, असत्यम्, सत्यम्

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 79,175,224,202

211. अधस्तनयुग्मानां सत्यासत्यपर्यायेषु समीचीनं विचिनुत–

MH SET–2013

(क) 'भूतले घटाभाव' इति अत्यन्ताभावः

(ख) 'घटः पटः न' इति अन्योन्याभावः

(ग) 'उत्पत्तेः प्राग् घटः अस्ति' इति प्रध्वंसाभावः

(घ) 'उत्पत्यनन्तरं घटः भिन्नः इति प्रागभावः

(A) असत्यम्,सत्यम्, सत्यम्, असत्यम्

(B) सत्यम्, सत्यम्, असत्यम्, असत्यम्

(C)सत्यम्, असत्यम्, असत्यम्, सत्यम्

(D) असत्यम्, असत्यम्, सत्यम्, सत्यम्

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 252,253,251

212. अधस्तनेषु युग्मपर्यायेषु समीचीनं विचिनुत–

MH SET-2013

(क) भोगायतनम् 1. आकाशम्

(ख) शब्दगुणम् 2. निगमनम्

(ग) शब्दो उतअनित्यः 3. संशयः

(घ) पक्षे साध्योपसंहारः 4. शरीरम्

	क	ख	ग	घ
(A)	2	1	3	4
(B)	1	2	3	4
(C)	4	1	3	2
(D)	3	4	2	1

स्रोत– तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 183,212,264,268

206. (C) 207. (B) 208. (D) 209. (A) 210. (C) 211. (B) 212. (C)

213. घटस्य समवायिकारणं किम् - BHU AET–2010, 2012
(A) पृथिवी (B) कपालम्
(C) कपालिका (D) चक्रम्
स्रोत–तर्कसंग्रह - आद्याप्रसाद मिश्र, पृष्ठ- 44

214. हेतुः कतिविधः - BHU AET–2010, 2012
(A) त्रिविधः (B) चतुर्विधः
(C) द्विविधः (D) पञ्चविधः
स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 93

215. समवाय्यसमवायिकारणाभ्यां भिन्नं कारणं किम् - BHU AET–2010
(A) कार्यम् (B) कारणम्
(C) निमित्तकारणम् (D) अन्यद्वा किञ्चित्
स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 42

216. कार्यमात्रं प्रति ईश्वरः किं कारणम् - BHU AET–2010
(A) समवायिकारणम् (B) असमवायिकारणम्
(C) निमित्तकारणम् (D) उपादानकारणम्
स्रोत–भारतीय दर्शन – हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पृष्ठ- 194

217. व्याप्यः कः उच्यते - BHU AET–2010
(A) साध्यम् (B) हेतुः
(C) सपक्षः (D) विपक्षः
स्रोत–न्यायसिद्धान्तमुक्तावली (अनुमानखण्ड)–महानन्द झा, पृष्ठ- 27

218. पञ्चसु अन्यथासिद्धेषु आवश्यकः कः - BHU AET–2010
(A) द्वितीयः (B) तृतीयः
(C) चतुर्थः (D) पञ्चमः
स्रोत–न्यायसिद्धान्तमुक्तावली-गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पृष्ठ- 85

219. यत्समवेतं कार्यमुत्पद्यते तत् किम् - BHU AET–2011, K-SET–2013
(A) समवायिकारणम् (B) असमवायिकारणम्
(C) निमित्तकारणम् (D) न किमपि
स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 33

220. शब्दस्य समवायिकारणं किम् - BHU AET–2011
(A) शब्दः (B) मृदङ्गः
(C) श्रोत्रम् (D) भेरीदण्डसंयोगः
स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 71

221. गन्धग्राहकम् इन्द्रियं किम् - BHU AET–2012
(A) श्रोत्रम् (B) चक्षुः
(C) रसनम् (D) घ्राणम्
स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 187

222. (i) तन्तुसंयोगः पटस्य किं कारणम्?
(ii) तन्तुसंयोग पट के प्रति कौन सा कारण है -
(iii) पटनिर्माणे तन्तुसंयोगः किंविधं कारणम्?
BHU MET–2009, 2011, 2013, MH-SET–2016, GJ SET–2013
(A) समवायिकारण (B) असमवायिकारण
(C) निमित्तकारण (D) उपादानकारण
स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री पृष्ठ - 39

223. कार्येण कारणेन वा सह एकस्मिन्नर्थे समवेतं सत् कारणम्- UK SLET–2015, K-SET–2014
(A) समवायिकारणम् (B) असमवायिकारणम्
(C) निमित्तकारणम् (D) त्रिविधमपि कारणम्
स्रोत– तर्कसंग्रह– राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 189

224. पटस्य असमवायिकारणम् अस्ति - UK SLET–2015
(A) तन्तुसंयोगः (B) दण्डः
(C) तन्तवः (D) कुलालसंयोगः
स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 39

225. तन्तुरूपं 'पटरूपस्य' कीदृक् कारणम् - JNU MET–2014, RPSC SET–2010
(A) समवायि (B) असमवायि
(C) निमित्तम् (D) उपादानम्
स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 41

213. (B) 214. (A) 215. (C) 216. (C) 217. (A) 218. (D) 219. (A) 220. (C) 221. (D) 222. (B) 223. (B) 224. (A) 225. (B)

226. घटः स्वगतरूपादेः **UGC 25 J–2005**

(A) असमवायिकारणम् (B) समवायिकारणम्

(C) निमित्तकारणम् (D) न कारणम्

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 33

227. गन्धं प्रति पृथिवी भवति - **UGC 25 D–2013**

(A) समवायिकारणम् (B) असमवायिकारणम्

(C) निमित्तकारणम् (D) उपादानकारणम्

स्रोत–तर्कसंग्रह – अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 35

228. (i) पटं प्रति तुरीवेमादिकं कीदृशं कारणं भवति -

(ii) तुरी पटस्य कीदृशं कारणमस्ति–

MGKV Ph.D–2016, UGC 25 J–2013

(A) समवायिकारणम् (B) असमवायिकारणम्

(C) स्वरूपकारणम् (D) निमित्तकारणम्

स्रोत–तर्कसंग्रह– गोविन्दाचार्य, पृष्ठ- 149

229. (i) श्रोत्रेण शब्दसाक्षात्कारे सन्निकर्षः -

(ii) श्रोत्रेन्द्रियेण गृहीते शब्दे शब्दश्रोत्रयोः यः सन्निकर्षः भवति स उच्यते? UGC 25 J–2005, CVVET–2017

(iii) शब्दग्रहणे सन्निकर्षः कः **UGC 25 D–2008,**

(iv) शब्दसाक्षात्कारे....सन्निकर्षः - **K-SET–2014,**

(v) शब्द के प्रत्यक्ष में सन्निकर्ष होता है- UGC 25 J–1999

(vi) श्रोत्रेन्द्रियेण शब्दस्य ग्रहणे सन्निकर्षः कः?

(vii) यदा श्रोत्रेण शब्दो गृह्यते तदा अयं सन्निकर्षः?

BHU AET–2010, 2011, 2012, SU Ph. D–2015

(A) संयोगः (B) विशेषणविशेष्यभावः

(C) समवायः (D) संयुक्तसमवायः

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 67

230. समवेतसमवायसन्निकर्षेण कस्य प्रत्यक्षं भवति-

UGC 25 J–2006

(A) गन्धस्य (B) शब्दस्य

(C) स्पर्शस्य (D) शब्दत्वस्य

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 67

231. (i) द्रव्य के प्रत्यक्ष में सन्निकर्ष होता है-

(ii) द्रव्यप्रत्यक्षे सर्वदा सन्निकर्षः - UGC 73 J–2015, UGC 25 J–2008, D–2012

(A) समवायः (B) तादात्म्यम्

(C) संयोगः (D) संयुक्त-समवायः

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 63

232. समीचीनां तालिकां चिनुत - **UGC 25 J–2008**

(क) संयुक्तसमवेतसमवायः **1. मनस्**

(ख) विशेषणता **2. गुणः**

(ग) समवायः **3. तमस्**

(घ) संयोगः **4. घटरूपत्वम्**

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(A)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)
(B)	(iv)	(iii)	(i)	(ii)
(C)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(D)	(iii)	(ii)	(i)	(iv)

तर्कभाषा–श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- क=66, ख=68, ग=67, घ=63

233. केन सन्निकर्षेण शब्दत्वं गृह्यते? BHU AET–2011

(A) संयोगः (B) समवायः

(C) विशेषणता (D) समवेतसमवायः

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 67

234. प्रत्यक्षं ज्ञानमस्ति - **UGC 25 D–2009**

(A) योगार्थसन्निकर्षजम् (B) इन्द्रियार्थसन्निकर्षजम्

(C) तत्त्वार्थसन्निकर्षजम् (D) पदार्थसन्निकर्षजम्

स्रोत–तर्कसंग्रह– अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 74

235. 'नीलो घटः' इत्यस्मिन् सम्बन्धः भवति–

UP GDC–2012

(A) संयोगसम्बन्धः (B) असमवायसम्बन्धः

(C) संयुक्तसमवायसम्बन्धः (D) समवेतसमवायसम्बन्धः

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 64

226. (B) 227. (A) 228. (D) 229. (C) 230. (D) 231. (C) 232. (A) 233. (D) 234. (B) 235. (C)

236. (i) रूपत्वस्य प्रत्यक्षे सन्निकर्षो भवति -
(ii) घटरूपत्व प्रत्यक्षे कः सन्निकर्षः
UGC 73 J–2010, JNU MET–2014

(A) संयुक्तसमवेतसमवायः (B) समवायः
(C) समवेतसमवायः (D) संयोगः

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 66

237. नव्यन्यायमते प्रत्यक्षानुकूलसन्निकर्षः -
UGC 73 D–2011, UP GDC–2008

(A) त्रयः (B) षट्
(C) सप्त (D) नव

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 61

238. तर्कभाषानुसारेण चक्षुषा घटगतश्यामरूपस्य प्रत्यक्षे सन्निकर्षो भवति - UP GDC–2012

(A) संयोगः (B) समवायः
(C) संयुक्तसमवायः (D) समवेतसमवायः

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 64

239. (i) न्यायदर्शनानुसार चक्षुरिन्द्रिय के द्वारा घटरूप का प्रत्यक्ष किस लौकिक सन्निकर्ष के द्वारा होता है?
(ii) यदा चक्षुरादिना घटगतरूपादिकं गृह्यते तदाऽनयोरिन्द्रियार्थसन्निकर्षः कः ?
(iii) घटरूपप्रत्यक्षे कः सन्निकर्षः - BHU AET–2010
BHU MET–2016, UGC 73 D–2015

(A) संयोगः (B) संयुक्तसमवायः
(C) समवायः (D) समवेतसमवायः

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 64

240. विशेषणविशेष्यभावसन्निकर्षस्य कुत्रोपयोगः -
BHU AET–2010

(A) द्रव्यप्रत्यक्षे (B) गुणप्रत्यक्षे
(C) कर्मप्रत्यक्षे (D) अभावप्रत्यक्षे

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 68

241. षट्सु सन्निकर्षेषु साक्षात्सम्बन्धः कतिविधः -
BHU AET–2010

(A) द्विविधः (B) त्रिविधः
(C) एकविधः (D) चतुर्विधः

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 61

242. संयुक्तसमवायः सन्निकर्षः कस्य प्रत्यक्षे -
BHU AET–2012

(A) घटस्य (B) घटरूपस्य
(C) रूपनिष्ठरूपत्वस्य (D) घटाभावस्य

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 64

243. संयोगः सन्निकर्षः कस्य प्रत्यक्षे - BHU AET–2012

(A) द्रव्यस्य (B) गुणस्य
(C) कर्मणः (D) सामान्यस्य

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 63

244. समवेतसमवायः कस्य प्रत्यक्षे उपयुज्यते -
BHU AET–2012

(A) द्रव्यस्य (B) गुणस्य
(C) कर्मणः (D) शब्दत्वस्य

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 67

245. षड्विधसन्निकर्ष का सिद्धान्त किससे सम्बद्ध है -
BHU MET–2009, 2011, 2013

(A) वेदान्त से (B) न्यायवैशेषिक से
(C) योगदर्शन से (D) बौद्धदर्शन से

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 61

246. विशेषणविशेष्यभावसन्निकर्षः कारणं भवति -
UK SLET–2015

(A) श्रोत्रेण शब्दस्य साक्षात्कारे
(B) चक्षुषा रूपत्वसामान्यस्य प्रत्यक्षे
(C) अभावपदार्थस्य प्रत्यक्षे
(D) योग्यतानामकशाब्दबोधकारणस्य ग्रहणे

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 68

236. (A) 237. (B) 238. (C) 239. (B) 240. (D) 241. (A) 242. (B) 243. (A) 244. (D) 245. (B) 246. (C)

247. (i) यदा शब्दसमवेतं शब्दत्वं श्रोत्रेन्द्रियेण गृह्यते तदा कः सन्निकर्षः भवति – BHU AET–2012
(ii) केन सन्निकर्षेण शब्दत्वं गृह्यते–RPSC SET–2013-14
(iii) शब्दत्व के प्रत्यक्ष में सन्निकर्ष होता है? UGC 25 D–1997, J–1998

(A) संयुक्तसमवायेन (B) समवेतसमवायेन
(C) समवायेन (D) संयोगेन

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 67

248. ''गन्धवती पृथ्वी शब्दत्वात्'' यहाँ हेतु में दोष है - UGC 73 S–2013

(A) बाधः (B) व्यभिचारः
(C) सत्प्रतिपक्षः (D) असिद्धः

स्रोत–

249. (i) 'गगनारविन्दं सुरभिः' अत्र कः हेत्वाभासः -
(ii) 'गगनारविन्दं सुरभि अरविन्दत्वात्' इत्यत्र को हेत्वाभासः? BHU RET–2008, DU Ph. D–2016
(iii) 'गगनारविन्दं सुरभिः' हेत्वाभासोऽस्ति।
(iv) 'गगनारविन्दं सुरभिः अरविन्दत्वात् सरोजारविन्दवत्' इति कस्य हेत्वाभासस्योदाहरणम् -
(v) न्यायदर्शन के अनुसार 'गगनारविन्दं सुरभि' किसका उदाहरण है - UGC 25 J–2009, BHU AET–2011, CCSUM Ph.D–2016 BHU MET–2008, 2009, 2011, 2013

(A) आश्रयासिद्धः (B) स्वरूपासिद्धः
(C) व्याप्यत्वासिद्धः (D) विरुद्धः

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 111

250. 'कालात्ययापदिष्ट हेत्वाभास' का दूसरा नाम क्या है? UGC 73 D–2015

(A) असिद्ध (B) सत्प्रतिपक्ष
(C) विरुद्ध (D) बाधित

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ -118

251. 'वह्निरनुष्णः' इति स्थले हेत्वाभासो वर्तते - UGC 25 J–2013

(A) सव्यभिचारः (B) सोपाधिकः
(C) बाधितः (D) आश्रयासिद्धः

न्यायसिद्धान्तमुक्तावली (अनुमानोपमानखण्ड)-महानन्द झा, पेज-127

252. इनमें से कौन-सा हेत्वाभास नहीं है- UP PGT–2005

(A) आश्रयासिद्ध (B) बाधित
(C) अनैकान्तिक (D) विपक्ष

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 109,118

253. (i) 'शब्दो नित्यः कृतकत्वात्' में कौन-सा हेत्वाभास है-
(ii) ''शब्दो नित्यः कृतकत्वात्'' उदाहरणमिदं कस्य हेत्वाभासस्य? MH-SET–2016, KL SET–2015, 2016

(A) असिद्ध (B) विरुद्ध
(C) अनैकान्तिक (D) प्रकरणसम

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 115

254. 'अनुमितिप्रतिबन्धकपथार्थज्ञानविषयत्वम्' इति कस्य लक्षणम् – UGC 25 J-2016

(A) पक्षस्य (B) विपक्षस्य
(C) हेत्वाभासस्य (D) केवलं व्यतिरेकलिङ्गस्य

न्यायसिद्धान्तमुक्तावली (अनुमानोपमानखण्ड)-महानन्द झा, पेज-88

255. आश्रयासिद्धेः किम् असिद्धम् - BHU AET–2010

(A) पक्षः (B) साध्यम्
(C) हेतुः (D) उदाहरणम्

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 111

256. अनैकान्तिक इत्यनेन कोऽभिधीयते - BHU AET–2011

(A) सव्यभिचारः (B) बाधितः
(C) सत्प्रतिपक्षः (D) असिद्धः

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 115

257. 'घटोऽनित्यः कार्यत्वात् पटवत्' इत्यनुमाने कः हेत्वाभासः? DU M. Phil -2016

(A) अनैकान्तिकः (B) विरुद्धः
(C) प्रकरणसमः (D) आश्रयासिद्धः

स्रोत–तर्कभाषा – गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पृष्ठ- 592

258. साध्यविपर्ययव्याप्तः हेतुः कः? MH SET-2016

(A) सव्यभिचारः (B) सत्प्रतिपक्षः
(C) विरुद्धः (D) निषिद्धः

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 115

247. (B) 248. (B) 249. (A) 250. (D) 251. (C) 252. (D) 253. (B) 254. (C) 255. (A) 256. (A) 257. (D) 258. (C)

259. आश्रयासिद्धस्य उदाहरणं किम्– MH SET–2013
(A) शब्दो नित्यः कृतकत्वात्
(B) गगनारविन्दं सुरभि अरविन्दत्वात्
(C) शब्दो गुणः चाक्षुषत्वात्
(D) वह्निरनुष्णः द्रव्यत्वात्
स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 111

260. नैयायिकानां मते शक्तिः कस्मिन् पदार्थे अन्तर्भवति– KL SET–2016
(A) द्रव्ये (B) गुणे
(C) सामान्ये (D) अभावे
न्यायसिद्धान्तमुक्तावली (प्रत्यक्षखण्ड)-गजाननशास्त्री मुसलगांवकर, पेज-21-22

261. तर्कभाषानुसारेण 'लिङ्गपरामर्शोऽनुमानम्' इत्यस्यां परिभाषायां किं लिङ्गम्? RPSC SET-2013-14
(A) स्वाभाविकः सम्बन्धः (B) तृतीयं ज्ञानम्
(C)व्याप्तिबलेनार्थगमकम् (D) पञ्चावयववाक्यम्
स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ-80

262. 'शब्दो नित्यः शब्दत्वात्' इत्यत्र हेत्वाभासः – BHU AET–2012
(A) साधारणः (B) असाधारणः
(C) विरुद्धः (D) बाधितः
स्रोत–तर्कसंग्रह– शिवशङ्कर गुप्त, पृष्ठ- 54

263. स्वरूपासिद्धे किम् असिद्धम् - BHU AET–2010
(A) पक्षः (B) साध्यम्
(C) हेतुः (D) सपक्षः
स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 274

264. 'अनैकान्तिकः' इति कस्य हेत्वाभासस्य नाम - BHU AET–2012
(A) असिद्धस्य (B) विरुद्धस्य
(C) सव्यभिचारस्य (D) सत्प्रतिपक्षस्य
स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 115

265. अनैकान्तो नाम भवति– KL SET-2014
(A) कारणभेदः (B) हेतुः
(C) हेत्वाभासः (D) पक्षधर्मः
स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 115

266. अनुमिति का कारण है? UGC 25 J–1994
(A) हेतुज्ञान (B) पक्षधर्मताज्ञान
(C) सपक्षधर्मताज्ञान (D) व्याप्तिज्ञान
स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 105,106

267. तर्कभाषायां प्रकरणसम-हेत्वाभासस्य अपर संज्ञा? UGC 25 Jn–2017
(A) बाधितविषयः (B) सत्प्रतिपक्षः
(C) सव्यभिचारः (D) अनुपसंहारी
स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 117

268. पक्षे प्रमाणान्तरावधृतसाध्याभावो हेतुः - UK SLET–2015
(A) कालात्ययापदिष्टः (B) प्रकरणसमः
(C) विरुद्धः (D) स्वप्रतिपत्तिः
स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 118

269. ''शब्दः अनित्यः चाक्षुषत्वात्'' अत्र कः हेत्वाभासः - JNU MET–2014
(A) विरुद्धः (B) बाधितः
(C) स्वरूपासिद्धः (D) सव्यभिचारः
स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 111

270. न्यायसिद्धान्तमुक्तावल्यां साध्यशून्यो यत्र पक्षस्त्वसौ क उदाहृतः? UGC 25 J-2016
(A) विरुद्धः (B) बाधः
(C) अनैकान्तिकः (D) सत्प्रतिपक्षः
स्रोत–न्यायसिद्धान्तमुक्तावली – महानन्द झा, पृष्ठ- 127

271. (i) न्यायदर्शने हेत्वाभासानां संख्या अस्ति?
(ii) न्यायमते हेत्वाभासाः - BHU MET–2011,
(iii) तर्कभाषानुसारं हेत्वाभासाः कतिविधाः?
(iv) हेत्वाभास कितने हैं? BHU AET–2012, GJ-SET–2014, SU Ph. D–2015 MH SET–2016
(A) द्वौ (B) चत्वारः
(C) पञ्च (D) षट्
स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 109

259. (B) 260. (D) 261. (B) 262. (B) 263. (C) 264. (C) 265. (C) 266. (B) 267. (B) 268. (A) 269. (C) 270. (B) 271. (C)

272. तन्तुपटयोः अस्ति सम्बन्धः – UGC 25 D–2009, 2013

(A) समवायिसम्बन्धः (B) असमवायिसम्बन्धः
(C) निमित्तसम्बन्धः (D) न कोऽपि सम्बन्धः

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 24

273. जाति और व्यक्ति का सम्बन्ध है - UGC 25 J–2000

(A) संयोग (B) समवाय
(C) तादात्म्य (D) स्वरूप

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 29

274. इन दोनों में समवाय सम्बन्ध होता है- UGC 25 D–1999

(A) घट-भूतल (B) जाति-व्यक्ति
(C) घटाभाव-भूतल (D) ज्ञान-विषय

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 29

275. समवाय इनके बीच होता है- UGC 25 J–1998

(A) गुण-कर्म (B) अवयव-अवयवी
(C) सामान्य विशेष (D) घटाभाव-भूतल

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 29

276. घटाभाव और भूतल का सम्बन्ध है? UGC 25 J–1994

(A) संयोग (B) समवाय
(C) स्वरूप (D) विशेषण-विशेष्य

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 68

277. 'पर्वतो वह्निमान्' में साध्यतावच्छेदक सम्बन्ध है - UGC 73 D–1997, BHU AET–2010

(A) असमवायि (B) सम्बन्ध
(C) समवाय (D) संयोग

न्यायसिद्धान्तमुक्तावली (अनुमानखण्ड)–गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पृष्ठ-18,22

278. अवयवावयविनोः सम्बन्धो भवति - UGC 73 D–2007, BHU AET–2012

(A) संयोगः (B) समवायः
(C) तादात्म्यम् (D) विशेषणता

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 29

279. नव्यन्यायमते समवायः - UGC 73 D–2011

(A) द्विप्रकारः (B) नित्यसम्बन्धः
(C) अनित्यसम्बन्धः (D) स्वरूपसम्बन्धः

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 27

280. 'नीलोघटः' में गुण-गुणी का कौन-सा सम्बन्ध है - UP GIC–2009

(A) समवायसम्बन्धः (B) संयोगसम्बन्धः
(C) असमवायसम्बन्धः (D) समवेतसमवायसम्बन्धः

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 34

281. तौ अयुतसिद्धौ विज्ञातव्यौ, ययोर्मध्ये– DU Ph.D-2016

(A) उभे पराश्रिते एव अवतिष्ठेते
(B) एकं सदैव अपराश्रितम् एव अवतिष्ठते
(C) अविनश्यद् एकम् अपराश्रितम् एव अवतिष्ठते
(D) विनश्यद् एकम् अपराश्रितम् एव अवतिष्ठते

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 27

282. (i) न्यायदर्शनानुसार 'ईश्वर' जगत् का कौन-सा कारण माना जाता है? UGC 73 D-2015, Jn–2017
(ii) नैयायिकसिद्धान्ते ईश्वरः जगतः कीदृशं कारणं स्वीक्रियते? KL SET-2016

(A) निमित्तकारणम् (B) समवायिकारणम्
(C) असमवायिकारणम् (D) समवाय्यसमवायिकारणम्

स्रोत–न्यायदर्शनम् (वात्स्यायनभाष्य)–आचार्य ढुण्ढिराजशास्त्री, पृष्ठ- 479

283. अयुतसिद्धयोः सम्बन्धः कः - BHU AET–2011 RPSC SET–2010

(A) संयोगः (B) समवायः
(C) संयुक्तसमवायः (D) समवेतसमवायः

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ-27

284. न्यायदर्शने जगत्कर्ता भवति - UGC 73 D–2006

(A) ईश्वरः (B) प्रकृतिः
(C) अदृष्टम् (D) माया

स्रोत–भारतीय दर्शन – हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पृष्ठ- 194

272. (A) 273. (B) 274. (B) 275. (B) 276. (D) 277. (C) 278. (B) 279. (B) 280. (A) 281. (C) 282. (A) 283. (B) 284. (A)

285. (i) न्यायवैशेषिकदृशा आत्मा कतिविधः?
(ii) आत्मा कतिविधः - BHU AET–2011
UGC 73 Jn–2017

(A) चतुर्विधः (B) त्रिविधः
(C) द्विविधः (D) एकविधः

स्रोत–तर्कसंग्रह– अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 47

286. न्यायमते सुवर्णस्य तैजसत्वं किम्प्रकारकम्?
DU Ph.D-2016

(A) उद्भूतरूपस्पर्शम्
(B) अनुद्भूतरूपमुद्भूतस्पर्शम्
(C) उद्भूतरूपमनुद्भूतस्पर्शम्
(D) उद्भूताभिभूतरूपस्पर्शम्

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 200

287. साक्षात्कारिप्रमायाः कारणमस्ति– DU Ph.D-2016

(A) प्रमाता (B) प्रमेयम्
(C) इन्द्रियसंयोगादिः (D) उक्तं सर्वमेव

स्रोत–तर्कभाषा – गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पृष्ठ- 60

288. 'साध्यव्यापकत्वे सति साधनाव्यापकः' इति कस्य लक्षणम्? UGC 25 J-2016, K SET-2015

(A) कारणभेदः (B) हेतुः
(C) हेत्वाभासः (D) उपाधिः

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ-82

289. 'नित्यम् एकम् अनेकानुगतम्' इति लक्षणं भवति–
GJ SET–2004

(A) सामान्यस्य (B) समवायस्य
(C) गुणस्य (D) विशेषस्य

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ-244

290. न्यायदर्शन के अनुसार 'आत्मा' का लक्षण है?
UGC 73 D-2015

(A) इन्द्रियाण्येवात्मा (B) धर्माधर्माश्रयोऽध्यक्ष आत्मा
(C) शरीरमेवात्मा (D) मन एवात्मा

स्रोत–भारतीय दर्शन - हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज–198

291. न्यायमत में मन का परिमाण है-
UGC 73 D–1999, 2009

(A) अणु (B) अपरिमित
(C) विभु (D) अन्य

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 217

292. न्यायमते इदं द्रव्यं न भवति - UGC 73 D–2007

(A) मरुत् (B) मनः
(C) तमः (D) कालः

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 194-195

293. संयोगसमवायिकारणतावच्छेदकता अस्ति -
UGC 73 D–2014

(A) सत्तायाम् (B) द्रव्यत्वे
(C) गुणवत्त्वे (D) पृथिवीत्वे

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 64

294. 'गगनकुसुमम्' इत्युदाहरणं तावत् - UGC 73 D–2008

(A) प्रागभावस्य (B) प्रध्वंसाभावस्य
(C) अत्यन्ताभावस्य (D) अन्योन्याभावस्य

स्रोत–भारतीय दर्शन – चन्द्रधर शर्मा, पृष्ठ- 168

295. नव्यन्यायमते तमः भवति - UGC 73 J–2010

(A) द्रव्यम् (B) अभावः
(C) गुणः (D) विशेषः

स्रोत–तर्कभाषा - गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज-310

296. भूतले घटाभावः नव्यन्यायमते कः -BHU AET–2012

(A) प्रागभावः (B) प्रध्वंसाभावः
(C) अत्यन्ताभावः (D) अन्योन्याभावः

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 252

297. कोऽभावः सादिरनन्तश्च - BHU AET–2012

(A) प्रध्वंसाभावः (B) प्रागभावः
(C) अन्योन्याऽभावः (D) अत्यन्ताभावः

स्रोत–(i) तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 252
(ii) तर्कसंग्रह - रामभजन शर्मा, पेज–106

285. (C) 286. (D) 287. (C) 288. (D) 289. (A) 290. (B) 291. (A) 292. (C) 293. (B) 294. (C) 295. (B) 296. (C) 297. (A)

298. द्रव्ये गुणकर्मणोः कः सम्बन्धः - BHU AET–2010

(A) संयोगः (B) तादात्म्यम्

(C) संयुक्तसमवायः (D) समवेतसमवायः

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 64

299. (i) घटः पटो न इतिहास उदाहरणम् 'घटो न पट' इति प्रतीतिसिद्धिः - UGC 73 D–2012, K-SET–2014

(ii) घटो न पट इति प्रतीतिसिद्धः –

(A) प्रागभावः (B) अन्योन्याभावः

(C) प्रध्वंसाभावः (D) संसर्गाभावः

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 253

300. 'तादात्म्य' सम्बन्ध से विशिष्ट प्रतियोगिता वाला अभाव कौन सा है?

UGC 73 D-2015, UGC 25 J-2016

(A) अन्योन्याभाव (B) प्रध्वंसाभाव

(C) प्रागभाव (D) अत्यन्ताभाव

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 253

301. न्यायनये ज्ञानस्य स्वरूपम् अस्ति– GJ SET-2007

(A) गुणः (B) कर्म

(C) द्रव्यम् (D)सामान्यम्

स्रोत–तर्कभाषा – गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पृष्ठ-303

302. (i) तर्कभाषानुसारम् 'अग्निना सिञ्चेत्' इति न वाक्यम्?

(ii) अग्निना सिञ्चेदिति न प्रमाणं किमर्थम्?

K SET–2014, MH SET–2013

(A) आकांक्षाविरहात् (B) योग्यताविरहात्

(C) सान्निध्याभावात् (D) प्रामाण्याभावात्

स्रोत–तर्कभाषा – आचार्य विश्वेश्वर, पृष्ठ- 108

303. गौरितिविशिष्टज्ञानं विशेषणज्ञानजन्यं विशिष्टज्ञानत्वात् इत्यनुमानं कस्य साधकम्– KL SET-2016

(A) सविकल्पकप्रत्यक्षस्य (B) योगिप्रत्यक्षस्य

(C) सामान्यलक्षणाप्रत्यासत्तेः (D) निर्विकल्पकप्रत्यक्षस्य

स्रोत–

304. गवादिशब्दानां न्यायनये कुत्र शक्तिः–KL SET-2016

(A) जातौ (B) व्यक्तौ

(C) जातिविशिष्टव्यक्तौ (D) जातिगुणद्रव्यक्रियासु

न्यायसिद्धान्तमुक्तावली (शब्दखण्ड)–गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पृष्ठ- 100

305. अधोलिखितेषु कः अयथार्थानुभवः नास्ति - JNU MET–2014

(A) संशयः (B) विपर्ययः

(C) तर्कः (D) अभावः

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 14

306. केवल नेत्र से ग्रहण करने वाला गुण -UP PGT–2004

(A) रूप (B) स्पर्श

(C) गन्ध (D) रस

स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ-220

307. नैयायिक-वैशेषिकयोः को वादः - BHU AET–2010

(A) असत्कार्यवादः (B) सत्कार्यवादः

(C) विवर्तवादः (D) संघातवादः

स्रोत–भारतीय दर्शन – हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पृष्ठ- 230

308. नैयायिक-वैशेषिकयोः को वादोऽभिमतः - BHU AET–2012

(A) आरम्भवादः (B) संघातवादः

(C) परिणामवादः (D) विवर्तवादः

स्रोत–भारतीय दर्शन – हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पृष्ठ- 191

309. असत्कार्यवादः कस्मिन् शास्त्रे स्वीकृतः - BHU AET–2012

(A) सांख्यशास्त्रे (B) योगशास्त्रे

(C) न्यायशास्त्रे (D) शास्त्रान्तरे

स्रोत–भारतीय दर्शन – हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पृष्ठ- 230

310. (i) 'पीठरपाक' किसका सिद्धान्त माना जाता है -

(ii) पीठरपाकवादिनः के -

UGC 73 D–2015, BHU AET–2011

(A) नैयायिकाः (B) वेदान्तिनः

(C) मीमांसकाः (D) बौद्धाः

स्रोत–तर्कसंग्रह - राकेश शास्त्री, पेज-152

298. (C) 299. (B) 300. (A) 301. (D) 302. (B) 303. (D) 304. (C) 305. (D) 306. (A) 307. (A) 308. (A) 309. (C) 310. (A)

311. कीदृशः तर्कभाषासम्मतः अपवर्गः UGC 25 D–2012

(A) दुःखस्यात्यान्तिकी निवृत्तिः

(B) दुःखस्यैकान्तिकी निवृत्तिः

(C) ब्रह्मसायुज्यम्

(D) स्वर्गात्मकः

स्रोत–तर्कभाषा – गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज-562

312. न्यायदर्शन के अनुसार जीवन का लक्ष्य है - UGC 25 D–1996

(A) कैवल्य (B) निःश्रेयस

(C) मोक्ष (D) निर्वाण

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 04

313. न्यायमते अपवर्गस्य किं स्वरूपम् - BHU AET–2012

(A) नित्यसुवाप्तिः (B) दुःखात्यन्तविमोक्षः

(C) अविद्यानिवृत्तिः (D) अन्यत् किमपि

स्रोत–तर्कभाषा – गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पृष्ठ-562

314. न्यायमतानुसार मोक्ष का स्वरूप क्या है? UGC 73 D-2015

(A) पुरुषार्थशून्यानां गुणानां प्रतिप्रसवः

(B) दुःखात्यन्तोच्छेदः

(C) प्रकृति-पुरुषविवेकः

(D) अज्ञाननिवृत्तिः

स्रोत–तर्कभाषा – गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पृष्ठ-562-564

315. 'कार्यानुकृतान्वयव्यतिरेकि कारणम्' इत्यस्मिन् कारणलक्षणे नैयायिकैः प्रदर्शितो दोषो अस्ति– DU M.Phil-2016

(A) अतिव्याप्तिः (B) अव्याप्तिः

(C) अनवस्था (D) असम्भवः

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 24

316. ज्ञानगुणस्य अनुव्यवसायात्मकं मानसप्रत्यक्षं भवति– DU M.Phil–2016

(A) संयोगसन्निकर्ष द्वारा

(B) विशेषणविशेष्यभावसन्निकर्ष द्वारा

(C) संयुक्तसमवायसन्निकर्ष द्वारा

(D) संयुक्तसमवेतसमवायसन्निकर्ष द्वारा

न्यायसिद्धान्तमुक्तावली (प्रत्यक्षखण्ड)-गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज–325

317. समीचीनं विकल्पं चिनोतु– DU M.Phil–2016

(A) मनः अणु आत्मसंयोगि, रूपाधिलब्धिकरणं नित्यञ्च।

(B) मनः आत्मसंयोगि, अन्तरिन्द्रियं, अनुमानगम्यं, विभु नित्यञ्च।

(C) मनः आत्मसंयोगि, सुखाद्युपलब्धिकारणं संख्याद्यष्टगुणवत्

(D) मनः अन्तरिन्द्रियं अणु संख्याद्याष्टादशगुणवत्, आत्मवियोगि नित्यञ्च।

स्रोत–तर्कभाषा – आचार्य विश्वेश्वर, पृष्ठ- 190

318. निर्विकल्पकज्ञानमस्ति– DU M Phil–2016

(A) केवलविशेषणतासहितज्ञानम्

(B) संसर्गताशून्यं ज्ञानम्

(C) केवलविशेष्यतासहितज्ञानम्

(D) विशेषणविशेष्यतासहितज्ञानम्

स्रोत–तर्कभाषा – गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पृष्ठ- 67

319. अव्यक्तविषयिणी समापत्तिर्भवति - UP GDC–2012

(A) निर्विचारा (B) निर्वितर्का

(C) सवितर्का (D) उपर्युक्तासु न

स्रोत–

320. मूर्त गुण होता है- UGC 73 J–2005

(A) ज्ञान (B) शब्द

(C) कृति (D) रूप

स्रोत–तर्कभाषा – गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पृष्ठ-485

321. मनसा ज्ञानं भवति - BHU AET–2012

(A) रूपस्य (B) रसस्य

(C) सुखदुःखयोः (D) शब्दस्य

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 191

322. न्यायवैशेषिकदर्शनानुसारं त्र्यणुके कियत् परिमाणं स्वीक्रियते - UGC 73 Jn–2017

(A) अणुपरिमाणम् (B) परमाणुपरिमाणम्

(C) महत्परिमाणम् (D) दीर्घपरिमाणम्

स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ-226

311. (A) 312. (B) 313. (B) 314. (B) 315. (B) 316. (C) 317. (C) 318. (B) 319. (B) 320. (D) 321. (C) 322. (C)

323. शब्दोऽभिधेयः प्रमेयत्वात् .... हेतुरस्ति? GJ SET–2016

(A) केवलान्वयी (B) केवलव्यतिरेकी
(C) अन्वयव्यतिरेकी (D) व्यतिरेकी

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 101

324. ज्ञाननिवर्त्य होता है- UGC 73 J–2012

(A) दुःखम् (B) धर्मः
(C) जगत् (D) जीवः

संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-10)–बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ-73-77

325. ''सुखसमवायिकारणम्'' है - UGC 73 D–2013

(A) ईश्वरः (B) पृथिवी
(C) मनः (D) आत्मा

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 217

326. अनुपपद्यमानार्थदर्शनात् तदुपपादकीभूतार्थान्तर-कल्पनम्' यह लक्षण है- UP PGT–2013

(A) अभाव का (B) अर्थापत्ति का
(C) शरीर का (D) असमवायिकारण का

स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ-138

327. शब्दशक्तिः कुत्र न्यायमते - UGC 25 D–2010

(A) जातौ (B) व्यक्तौ
(C) आकृतौ (D) जात्याकृतिविशिष्टव्यक्तौ

स्रोत–काव्यप्रकाश – आचार्य विश्वेश्वर, पृष्ठ- 49

328. गुणगुणिनोः कः सम्बन्धः - UGC 25 D–2013

(A) समवायः (B) आधाराधेयः
(C) व्याप्यत्वसम्बन्धः (D) स्वस्वामिसम्बन्धः

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 29

329. गुणगुणिनोः कः सम्बन्धः? MH SET-2013

(A) संयोगः (B) आश्रयासिद्धः
(C) अयुतसिद्धः (D) युतसिद्धः

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 29

330. पदार्थे तत्र तद्वत्ते-त्यनेन कारिकावल्यां विश्वनाथेन किमुक्तम्? UGC 73 Jn–2017

(A) आसत्तिः (B) आकांक्षा
(C) योग्यता (D) तात्पर्यज्ञानम्

स्रोत–कारिकावली - लोकमणि दाहाल, पेज–78

331. न्यायमतानुसार जीवात्मा का परिमाण - UGC 25 J–1994

(A) देहपरिमाण (B) विभुपरिमाण
(C) अणुपरिमाण (D) मध्यमपरिमाण

स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज-175

332. 'पदजन्यपदार्थोपस्थितिः' है? UGC 73 J–2012

(A) शक्तिज्ञानम् (B) शाब्दबोधः
(C) व्यापारः (D) करणम्

न्यायसिद्धान्तमुक्तावली (शब्दखण्ड)-गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पृष्ठ- 77-79

333. घटाभाव का प्रतियोगितावच्छेदक होता है- UGC 73 J–1998

(A) घटत्वम् (B) द्रव्यत्वम्
(C) पृथिवीत्वम् (D) पदार्थत्वम्

स्रोत–तर्कसंग्रह–अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 124

334. न्यायमत में एक जाति बाधक होता है- UGC 73 J–1999

(A) परत्वम् (B) रूपहानिः
(C) सादृश्यम् (D) अनुवृत्तिप्रत्ययः

न्यायसिद्धान्त मुक्तावली (प्रत्यक्षखण्ड)-गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज-38,39

335. न्यायदर्शनस्य सिद्धान्तोऽस्ति - UGC 73 J–2006

(A) प्रधानकारणवादः (B) सत्कार्यवादः
(C) परमाणुकारणवादः (D) ब्रह्मकारणवादः

स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ-197,198

336. सप्तानां साधर्म्यं भवति - UGC 73 J–2013

(A) प्रमेयत्वम् (B) द्रव्यत्वम्
(C) असमवेतत्वम् (D) निमित्तकारणत्वम्

स्रोत–तर्कसंग्रह - गोविन्दाचार्य, पेज-297

323. (A) 324. (C) 325. (D) 326. (B) 327. (D) 328. (A) 329. (C) 330. (C) 331. (B) 332. (C) 333. (A) 334. (B) 335. (C) 336. (A)

337. सामान्य रहता है- UP PGT–2004, 2009

(A) द्रव्य, गुण और विशेष में

(B) द्रव्य, गुण और कर्म में

(C) द्रव्य, कर्म और विशेष में

(D) द्रव्य, गुण और समवाय में

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 244

338. सुमेलित कीजिए - UP PGT–2005

(क) असाधारणधर्मवचनम् **(i) करणम्**

(ख) साधकतमम् **(ii) समवायिकारणम्**

(ग) अनन्यथासिद्धपश्चाद्भावित्वम् **(iii) कार्यत्वम्**

(घ) यत्समवेतं कार्यमुत्पद्यते **(iv) लक्षणम्**

	क	ख	ग	घ
(A)	i	ii	iii	iv
(B)	iv	i	iii	ii
(C)	iv	iii	ii	i
(D)	i	iii	iv	ii

स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 07,17,20,33

339. 'वह्निव्याप्यधूमवान् पर्वतः' इति ज्ञानं किम् - BHU AET–2010

(A) परामर्शः (B) व्याप्तिज्ञानम्

(C) अनुमितिः (D) स्मरणम्

स्रोत– (i) तर्कभाषा - श्रानिवास शास्त्री, पेज-85

(ii) तर्कसंग्रह - राकेश शास्त्री, पेज–206

340. नैयायिकमते पदस्य कुत्र शक्तिः - BHU AET–2010

(A) जातौ (B) व्यक्तौ

(C) जातिविशिष्टव्यक्तौ (D) जात्याकृतिविशिष्टव्यक्तौ

स्रोत–(i) न्यायसिद्धमुक्तावली (शब्द खण्ड)-गजाननशास्त्री, पृष्ठ- 100

(ii) न्यायदर्शनम् (2.2.68)-आचार्य ढुण्ढिराजशास्त्री, पृष्ठ- 291-292

341. घटाभावस्य प्रतियोगि कः - BHU AET–2011

(A) अभावः (B) घटाभावः

(C) घटः (D) कपालम्

स्रोत–तर्कभाषा – सुरेन्द्रदेव शास्त्री, पृष्ठ- 417

342. पक्षता नाम का - BHU AET–2011

(A) साध्यसंशयः (B) साध्यनिश्चयः

(C) साध्यसिद्धिः (D) साध्यव्याप्तिः

स्रोत–तर्कसंग्रह – अनितासेन गुप्ता, पेज-86

343. इन्द्रियाश्रयः कः मन्यते - BHU AET–2012

(A) आत्मा (B) मनः

(C) शरीरम् (D) हृदयम्

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 185

344. पदार्थों का उपदेशक ग्रन्थ है - BHU MET–2015

(A) तर्कसंग्रह (B) तर्कभाषा

(C) सांख्यकारिका (D) अर्थसंग्रह

स्रोत–तर्कभाषा – गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पृष्ठ- 3

345. एकस्मिन् एव घटे 'घटोऽयं' इति धारावाहिकज्ञानानां गृहीतग्राहिणाम् अप्रामाण्यप्रसङ्गात् - UK SLET–2015

(A) 'प्रमाकरणं प्रमाणम्' इति प्रमाणलक्षणं न सङ्गच्छते

(B) तुरीवेमयोः समवायत्वं न सङ्गच्छते

(C) 'अनधिगतार्थगन्तृ प्रमाणम्' इति प्रमाणलक्षणं न सङ्गच्छते

(D) फलायोगव्यवच्छिन्नं कारणं करणम्' इति करणलक्षणं न सङ्गच्छते

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 161

346. सुमेलित कीजिए - UGC 25 D–2002

(अ) आकाश **(1) कर्म**

(ब) गमन **(2) गुण**

(स) अयुतसिद्ध **(3) द्रव्य**

(द) पृथकत्व **(4) समवाय**

	अ	ब	स	द
(A)	3	1	4	2
(B)	2	4	1	3
(C)	1	2	3	4
(D)	4	3	1	2

स्रोत–तर्कसंग्रह – अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 28,9,120,29

347. सर्वमनित्यं प्रमेयत्वादिति ...... हेत्वाभासस्योदाहरणम्? GJ SET–2016

(A) साधारणस्य (B) असाधारणस्य

(C) अनुपसंहारेः (D) स्वरूपासिद्धेः

स्रोत–तर्कसंग्रह – अनितासेन गुप्ता, पृष्ठ- 97

337. (B) 338. (B) 339. (A) 340. (D) 341. (C) 342. (A) 343. (C) 344. (B) 345. (C) 346. (A) 347. (C)

348. प्रमाणतो अभ्यूपगम्यमानः सामान्यविशेषवानर्थः अस्ति– JNU M Phil/Ph.D-2014

(A) संशयः (B) दृष्टान्तः

(C) सिद्धान्तः (D) निर्णयः

स्रोत–तर्कभाषा – बद्रीनाथ शुक्ल, पृष्ठ- 339

349. धूमवत्वं हेतु अस्ति– CCSUM Ph.D-2016

(A) केवलव्यतिरेकी

(B) केवलान्वयी

(C) अन्वयव्यतिरेकी

(D) कोऽपि नास्ति

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 93

350. 'जीवच्छरीरं सात्मकं प्राणादिमत्त्वात्' इत्यत्र 'प्रणादिमत्त्वं कीदृशो हेतुः? UGC 25 J-2016

(A) केवलान्वयी

(B) केवलव्यतिरेकी

(C) अन्वय-व्यतिरेकी

(D) असद्धेतुः

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 97

351. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां विचिनुत– K SET-2015

(क) उत्क्षेपणम् 1. द्रव्यम्

(ख) आत्मा 2. कर्म

(ग) परिमाणः 3. सामान्यम्

(घ) परम् 4. गुणः

	क	ख	ग	घ
(A)	2	1	4	3
(B)	3	4	1	2
(C)	1	2	3	4
(D)	4	3	2	1

स्रोत–तर्कसंग्रह– अनितासेन गुप्ता-क-29,ख-28,ग-29,घ-30

352. प्रहरे प्रहरेऽसहोच्चारितानि 'गाम् आनय' इत्यादि पदानि न प्रमाणम् /वाक्यम्– K SET-2013

(A) सन्निधेः अभावात् (B) योग्यताया अभावात्

(C) आकांक्षाया अभावात् (D) समवायसम्बन्धस्य अभावात्

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 123

353. नैयायिकमते ज्ञानं..................अस्ति– GJ SET-2016

(A) निराकारम् (B)साकारम्

(C) उभयम् (D)अनुभयम्

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 258

348. (C) 349. (C) 350. (B) 351. (A) 352. (A) 353. (A)

05 वेदान्तसार

1. **वेदान्तदर्शनस्य प्रवर्तकः कः - DSSSB TGT–2014**
(A) बादरायणः (B) शङ्कराचार्यः
(C) कपिलः (D) पतञ्जलिः
स्रोत–वेदान्तसार – राकेश शास्त्री, भू. पृष्ठ- 11

2. **(i) 'वेदान्तसार'-ग्रन्थस्य कर्ता भवति–UP GDC–2014**
(ii) वेदान्तसारस्य ग्रन्थकृद् अस्ति–UGC 73 J–2015,
(iii) वेदान्तसारस्य कर्ता कः? Jn–2017, MH-SET–2016
(iv) वेदान्तसार के रचनाकार हैं ? UP PGT–2004,
(v) वेदान्तसारस्य प्रणेता कः? BHU MET–2008, 2013
(vi) वेदान्तसार के लेखक कौन हैं?
(A) कणादः (B) सदानन्दः
(C) सनातनः (D) सत्यानन्दः
स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, भू. पृष्ठ- xvi

3. **शाङ्करवेदान्तस्य प्रमुखं मतम् अस्ति– UP GDC–2014**
(A) अद्वैतम् (B) शुद्धाद्वैतम्
(C) द्वैताद्वैतम् (D) विशिष्टाद्वैतम्
स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, भू. पृष्ठ- viii

4. **(i) वेदान्तसार में वेदान्त के किस मत का निरूपण है–**
(ii) वेदान्तसारग्रन्थे कस्य मतस्य निरूपणं विद्यते–
BHU AET–2011, UP PGT–2000
(A) शुद्धाद्वैतवादस्य (B) अद्वैतवादस्य
(C) विशिष्टाद्वैतवादस्य (D) द्वैताद्वैतवादस्य
स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, भू. पृष्ठ- viii

5. **अद्वैतमित्यस्यार्थः कः - DSSSB PGT–2014**
(A) भेदः (B) अभेदः
(C) निश्चयः (D) पूर्णत्वम्
स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 30

6. **शङ्कराचार्य का सम्बन्ध किस दर्शन से है -**
BHU AET–2011
(A) औलूक्यदर्शन से (B) वेदान्तदर्शन से
(C) सांख्यदर्शन से (D) बौद्धदर्शन से
स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, भू. पृष्ठ- x

7. **वेदान्तदर्शनस्य अपरं नामास्ति - UP GIC–2015**
(A) पूर्वमीमांसा (B) उलूकदर्शनम्
(C) उत्तरमीमांसा (D) तत्त्वचिन्तनम्
स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, भू. पृष्ठ- viii

8. **'पञ्चदशी' से सम्बन्धित दर्शन है– BHU MET–2015**
(A) मीमांसादर्शन (B) वेदान्तदर्शन
(C) बौद्धदर्शन (D) सांख्यदर्शन
स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 79

9. **अद्वैततत्त्वप्रतिपादक उपनिषद्भाष्य है–**
UGC 73 S–2013
(A) वल्लभाचार्य (B) निम्बार्काचार्य
(C) शङ्कराचार्य (D) श्रीकण्ठाचार्य
स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, भू. पृष्ठ- ix, x

10. **रामानुजाचार्य का ग्रन्थ है - UGC 73 D–2012**
(A) आपदेवी (B) मीमांसाकुतूहल
(C) रहस्यत्रय (D) अध्वरमीमांसाकुतूहलवृत्तिः
स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह – उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 790

11. **वेदान्तियों का दर्शन है- UGC 73 D–2011**
(A) नास्तिक (B) शून्यवाद
(C) आस्तिक (D) परिणामवाद
स्रोत–वेदान्तसार – राकेश शास्त्री, भू. पृष्ठ- 02

12. **(i) अद्वैतवेदान्त के संस्थापक कौन हैं–**
(ii) अद्वैतवेदान्तस्य स्थापकः कः–UGC 25 D–1995,
(iii) अद्वैतवेदान्तदर्शनस्य प्रवर्तकः–AWES TGT–2013
UGC 73 D–2010, BHU AET–2012
(A) बादरायणः (B) शङ्कराचार्यः
(C) गौडपादः (D) मधुसूदनसरस्वती
स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, भू. पृष्ठ- viii

1. (A)	**2. (B)**	**3. (A)**	**4. (B)**	**5. (B)**	**6. (B)**	**7. (C)**	**8. (B)**	**9. (C)**	**10. (C)**
11. (C)	**12. (B)**								

13. 'वेदान्तपरिभाषा' के रचयिता कौन हैं– **UGC 73 D–2008**

(A) धर्मराजाध्वरीन्द्रः (B) सदानन्दः
(C) अप्पयदीक्षित (D) सुरेश्वरः

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, भू. पृष्ठ xviii

14. अद्वैतवेदान्त के अनुसार वार्तिककार हैं ? **UGC 73 J–2006, 2008, 2012**

(A) सुरेश्वराचार्यः (B) पद्मपादाचार्यः
(C) प्रकाशात्मयतिः (D) मधुसूदनसरस्वती

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, भू. पृष्ठ- xiii

15. शाङ्करभाष्य किस दर्शन से सम्बद्ध है ? **BHU MET–2010, 2011**

(A) न्यायदर्शन (B) सांख्यदर्शन
(C) वेदान्तदर्शन (D) जैनदर्शन

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, भू. पृष्ठ- xii

16. (i) शङ्कराचार्य किस वेदान्त से सम्बन्धित हैं ?
(ii) शङ्कराचार्य किस दर्शन के प्रणेता हैं ? **BHU MET–2010, BHU AET–2010**

(A) सांख्यदर्शन (B) न्यायदर्शन
(C) वैशेषिकदर्शन (D) अद्वैत वेदान्तदर्शन

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, भू. पृष्ठ- x

17. शारीरकमीमांसा कस्य शास्त्रस्य नाम वर्तते ? **BHU AET–2012**

(A) न्यायशास्त्रस्य (B) व्याकरणशास्त्रस्य
(C) वेदान्तशास्त्रस्य (D) योगदर्शनस्य

स्रोत–ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यम् - सत्यानन्द सरस्वती, पेज–18

18. वेदान्तसूत्रकारः आसीत् - **BHU AET–2012**

(A) कपिलः (B) बादरायणः
(C) पतञ्जलिः (D) जैमिनिः

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 8

19. वेदान्तसारः किं प्रकारकः ग्रन्थः? MH - SET–2016

(A) प्रकरणग्रन्थः (B) वादग्रन्थः
(C) साधनग्रन्थः (D) आकरग्रन्थः

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, भू. पृष्ठ -xix

20. उत्तरमीमांसाशास्त्रं वर्तते - **BHU AET–2012**

(A) योगः (B) न्यायः
(C) वेदान्तः (D) पूर्वमीमांसा

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, भू. पृष्ठ- viii

21. शङ्करात्पूर्वम् आचार्यः आसीत् ? BHU AET–2012

(A) वाचस्पतिः (B) गौडपादः
(C) हर्षः (D) मधुसूदनः

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, भू. पृष्ठ- x

22. 'अथातो ब्रह्मजिज्ञासा' इति सूत्रम् अस्ति– **SU Ph. D–2015**

(A) सांख्यदर्शने (B) न्यायदर्शने
(C) वेदान्तदर्शने (D) योगदर्शने

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 8

23. शारीरकसूत्रग्रन्थस्य प्रथमं सूत्रं वर्तते - **BHU AET–2012**

(A) अथातो धर्मजिज्ञासा (B) अथातो ब्रह्मजिज्ञासा
(C) अथ योगानुशासनम् (D)ॐ ब्रह्मणे नमः

स्रोत–ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यम् (1/1)-सत्यानन्द सरस्वती, पेज–19

24. 'जन्माद्यस्य यतः' इति ब्रह्मसूत्रग्रन्थस्य सूत्रं वर्तते - **BHU AET–2012**

(A) प्रथमम् (B) द्वितीयम्
(C) चतुर्थम् (D) दशमम्

ब्रह्मसूत्र शाङ्करभाष्यम् (1.1.2)–स्वामी सत्यानन्द सरस्वती, पृष्ठ-34

25. ब्रह्मसूत्रस्य आरम्भे उक्तम् ? **BHU AET–2012**

(A) ओम् (B) अथ
(C) इति (D) श्री

स्रोत–ब्रह्मसूत्र शाङ्करभाष्यम्–स्वामी सत्यानन्द सरस्वती, पृष्ठ- 19

26. वेदान्त का आधार है - **UP GDC–2008, UGC 25 D–2014, J–2012**

(A) गीता (B) महाभारत
(C) उपनिषद् (D) ऋग्वेद

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, भू. पृष्ठ- viii,7

13. (A) 14. (A) 15. (C) 16. (D) 17. (C) 18. (B) 19. (A) 20. (C) 21. (B) 22. (C) 23. (B) 24. (B) 25. (B) 26. (C)

27. वेदान्त का मूल आधार है- UP GDC–2008

(A) श्रुति (B) स्मृति
(C) तर्क (D) पुराण

स्रोत–भारतीय दर्शन – चन्द्रधर शर्मा, पृष्ठ- 237

28. वेदान्तो नाम किम्? UGC 73 Jn–2017

(A) रामायणम् (B) उपनिषत्प्रमाणम्
(C) शारीरकसूत्रम् (D) नीतिमञ्जरी

स्रोत–वेदान्तसार – राकेश शास्त्री, पृष्ठ-116

29. (i) अनिर्वचनीयख्यातिवादी हैं - UGC 25 D–2013, (ii) अनिर्वचनीयवादिनः के ? BHU AET–2012, UGC 73 J–2013

(A) वैशेषिकाः (B) मीमांसकाः
(C) बौद्धाः (D) अद्वैतवेदान्तिनः

स्रोत–भारतीय दर्शन – चन्द्रधर शर्मा, पृष्ठ- 207

30. अद्वैतवादियों की ख्याति है ? UGC 73 D–2012, BHU AET–2012

(A) अनिर्वचनीयख्यातिः (B) अख्यातिः
(C) सत्ख्यातिः (D) अन्यथाख्यातिः

स्रोत–भारतीय दर्शन – चन्द्रधर शर्मा, पृष्ठ- 207

31. वेदान्तदर्शनस्य द्वितीयम् अभिधानम् - AWES -TGT–2011

(A) अध्यात्मदर्शनम् (B) ब्रह्मसूत्रम्
(C) आध्यात्मिकदर्शनम् (D) ब्रह्मवाददर्शनम्

स्रोत–भारतीय दर्शन – शिवशंकर गुप्त, पृष्ठ- 7

32. जीव और ब्रह्म का सम्बन्ध है– UGC 73 J–2006, 2011

(A) शरीरशरीरिभावः
(B) बिम्बप्रतिबिम्बभावः
(C) अवच्छेद्यावच्छेदकसम्बन्धः
(D) जन्यजनकभावः

स्रोत–भारतीय दर्शन – हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पृष्ठ- 312

33. विद्वन्मनोरञ्जनी टीका जिस पर है, वह ग्रन्थ है ? BHU MET–2014

(A) अर्थसङ्ग्रह (B) तर्कभाषा
(C) तर्कसङ्ग्रह (D) वेदान्तसार

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, भू. पृष्ठ- xix

34. तदैक्यप्रमेयस्य तत्प्रतिपादकोपनिषत्प्रमाणस्य च बोध्य-बोधकभावः? वेदान्तसारानुसारं लक्षणमिदं कस्यास्ति? UGC 25 Jn. –2017

(A) अधिकारिणः (B) विषयस्य
(C) सम्बन्धस्य (D) प्रयोजनस्य

स्रोत–वेदान्तसार – आद्याप्रसाद मिश्र, पृष्ठ- 36

35. वेदान्तसारे प्रथमे श्लोके प्रथमः शब्दः कः? MH SET–2011

(A) सच्चिदानन्दम् (B) अवाङ्मनसगोचरम्
(C) अवयवरहितम् (D) अखण्डम्

स्रोत–वेदान्तसार – आद्याप्रसाद मिश्र, पृष्ठ- 21

36. वेदान्ते 'अथ' शब्दस्य अर्थो भवति– UGC 25 D–2008

(A) मङ्गलः (B) आनन्तर्यः
(C) निरर्थकः (D) अमङ्गलः

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 143

37. सदानन्दः वेदान्तसारे कम् आराधयति–MH SET–2011

(A) ईश्वरम् (B) गुरुम्
(C) आत्मानम् (D) परमात्मानम्

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 6

38. 'वेदान्तसार' के अनुसार निर्विकल्पक समाधि के अङ्ग गिनाए गए हैं - UP GIC–2009

(A) आठ (8) (B) सात (7)
(C) पाँच (5) (D) दश (10)

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 165

39. माया में कितने गुण कल्पित हैं ? BHU MET–2014

(A) 3 (B) 4
(C) 8 (D) 24

स्रोत–भारतीय दर्शन – हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पृष्ठ- 301

27. (A) 28. (B) 29. (D) 30. (A) 31. (A) 32. (B) 33. (D) 34. (C) 35. (D) 36. (B) 37. (B) 38. (A) 39. (A)

40. मानवानां कति पुरुषार्थाः भवन्ति – BHU AET–2012

(A) त्रयः (B) पञ्च
(C) चत्वारः (D) षट्

स्रोत–प्राचीन भारतीय संस्कृति – वीरेन्द्र कुमार सिंह, पृष्ठ- 53

41. 'चैतन्यं' कतिविधं भवति - BHU AET–2012

(A) द्विविधम् (B) त्रिविधम्
(C) चतुर्विधम् (D) पञ्चविधम्

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 74

42. 'ज्ञानेन्द्रियाणि' कति भवन्ति ? BHU AET–2012

(A) त्रिविधानि (B) पञ्चविधानि
(C) षड्विधानि (D) सप्तविधानि

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 65,66

43. 'ऊर्ध्वलोकाः' कति भवन्ति ? BHU AET–2012

(A) पञ्च (5) (B) षट् (6)
(C) सप्त (7) (D) नव (9)

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 82

44. (i) 'वायवः' कति भवन्ति ?
(ii) वायुः कतिविधः ? BHU AET–2012, 2014

(A) एकः (B) द्वौ
(C) त्रयः (D) पञ्च

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 69

45. वेदान्तसारे अधिकारी गुरुः कीदृशः– MH SET–2011

(A) परमकारुणिकः (B) दयालुः
(C) दयार्द्रः (D) आनन्दी

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 34

46. वेदान्तसारस्य प्रथमश्लोके सदानन्दः कमाश्रयते– MH SET–2013

(A) ब्रह्म (B) ईश्वरम्
(C) विष्णुम् (D) आत्मानम्

स्रोत–वेदान्तसार – बदरीनाथ शुक्ल, पृष्ठ- 1

47. सदानन्दस्य गुरोर्नामधेयं किम्– MH SET–2013

(A) वरुणः (B) रामानुजः
(C) अद्वैतानन्दः (D) अद्वयानन्दः

स्रोत–वेदान्तसार – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 113

48. वेदान्तसारे आदौ कस्य लक्षणं वर्णितम्– MH SET–2013

(A) कर्मणः (B) शास्तुः
(C) अधिकारिणः (D) ईश्वरस्य

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 10

49. .... नामोपनिषत्प्रमाणम्– GJ SET–2008

(A) वेदो (B) वेदान्तो
(C) वेदाङ्गम् (D) वेदार्थी

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 7

50. अधोलोकाः कति भवन्ति ? BHU AET–2012

(A) चत्वारः (B) पञ्च
(C) सप्त (D) नव

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 82

51. (i) अनुबन्ध कितने हैं - BHU MET–2011, 2012
(ii) अनुबन्ध हैं–UGC 25 D–2004, J-2009, D–2009
(iii) अनुबन्धः कतिविधः भवति– J-2014, 2000,
(iv) अनुबन्धाः कति सन्ति–
(v) वेदान्तसार में अनुबन्धों की संख्या–GJ SET–2013

(A) दश (10) (B) नव (9)
(C) चार (4) (D) पाँच (5)

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 9

52. वेदान्तानुसारं कतिविधः समाधिः ? UGC 25 J–2012

(A) द्विविधः (B) त्रिविधः
(C) चतुर्विधः (D) पञ्चविधः

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 157

53. (i) निर्विकल्पकसमाधौ कति विघ्नाः सम्भवन्ति ?
(ii) वेदान्तमते निर्विकल्पकविषये कति विघ्नाः सम्भवन्ति– UGC 25 J–2013, Jn–2017, DSSSB TGT–2014

(A) त्रयः (B) चत्वारः
(C) द्वौ (D) पञ्च

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 179

40. (C)	41. (B)	42. (B)	43. (C)	44. (D)	45. (A)	46. (D)	47. (D)	48. (C)	49. (B)
50. (C)	51. (C)	52. (A)	53. (B)						

54. कति कर्मेन्द्रियाणि भवन्ति ? BHU AET–2012
(A) त्रीणि (B) चत्वारि
(C) पञ्च (D) षट्

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 69

55. वेदान्त के अनुसार पदार्थ हैं – UGC 25 D–2003
(A) 4 (B) 6
(C) 2 (D) 5

स्रोत– भारतीयदर्शन - बलदेव उपाध्याय, पेज–363

56. महावाक्यानि.........सन्ति । AWES TGT–2013
(A) चत्वारः (B) पञ्च
(C) त्रीणि (D) नव

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 122

57. पञ्चज्ञानेन्द्रियबहिर्भूतः अस्ति–MGKV Ph. D–2016
(A) चक्षुः (B) घ्राणः
(C) रसना (D) उपस्थः

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 65,69

58. अनुबन्ध-चतुष्टयस्य निरूपणमस्ति– G-GIC–2015
(A) तर्कभाषायाम् (B) तर्कसंग्रहे
(C) वेदान्तसारे (D) सांख्यकारिकायाम्

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 9

59. अधोलिखितानाम् अनुबन्धचतुष्टयानां समीचीनं क्रमं चिनुत– G-GIC–2015
(A) अधिकारी, सम्बन्धः, विषयः, प्रयोजनम्
(B) अधिकारी, विषयः, सम्बन्धः, प्रयोजनम्
(C) अधिकारी, प्रयोजनम्, सम्बन्धः, विषयः
(D) अधिकारी, विषयः, प्रयोजनम्, सम्बन्धः

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 9

60. वेदान्त का एक अनुबन्ध है - UGC 25 D–1997
(A) उपनिषद् (B) सम्बन्ध
(C) अज्ञान (D) आत्मन्

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 9

61. वेदान्त का एक अनुबन्ध है - UP PGT–2009, UGC 25 J–1998, 1999
(A) अधिकारी (B) अद्वैत
(C) ब्रह्म (D) ज्ञान

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 9

62. (i) ''अधिकारिविषयसम्बन्धप्रयोजनानि'' किससे सम्बद्ध है? UP PGT–2009
(ii) 'अधिकारिविषयसम्बन्धप्रयोजनानि' पदेन व्यवक्ष्यन्ते? UGC 25 D–2003, K-SET–2015
(iii) अधिकारी है–
(A) विवर्त (B) बन्ध
(C) अनुबन्ध (D) प्रबन्ध

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 09

63. ''शमदमादिसाधनसम्पत्'' कस्य कृते आवश्यकम् ? BHU AET–2012
(A) अधिकारिणः (B) छात्रस्य
(C) जीवस्य (D) शरीरस्य

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 20

64. वेदान्त का प्रयोजन है - UP GDC–2008
(A) वेदार्थावबोध (B) प्रकृतिपुरुषविवेक
(C) स्वस्वरूपानन्दप्राप्ति (D) निर्वाण

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 30

65. अनुबन्धोऽयम् - UGC 25 J–2004
(A) पञ्चीकरणम् (B) अज्ञानम्
(C) विषयः (D) लक्षणम्

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 9

66. (i) वेदान्तसारस्य प्रतिपाद्यविषयः कः– UGC 25 J–2006
(ii) अद्वैतवेदान्तस्य विषयः कः ? WB-SET–2010
(iii) What is the विषय of वेदान्त? MH-SET–2013
(A) जीवब्रह्मैक्यम् (B) ईश्वरः
(C) अज्ञानम् (D) शुद्धं चैतन्यम्

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 30

54. (C)	55. (C)	56. (A)	57. (D)	58. (C)	59. (B)	60. (B)	61. (A)	62. (C)	63. (A)
64. (C)	65. (C)	66. (A)							

67. वेदान्तसारे प्रयोजनं निरूपितम् - UGC 25 D–2013

(A) दुःखनिवृत्तिः
(B) अभ्युदयलाभः
(C) पाण्डित्यसम्पादनम्
(D) अज्ञाननिवृत्तिः स्वस्वरूपानन्दावाप्तिश्च

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 30

68. साधनचतुष्टय के अन्तर्गत है? UGC 25 D–1998

(A) ईश्वर (B) नित्यानित्यवस्तुविवेक
(C) ब्रह्मज्ञान (D) उपनिषद्

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 20

69. साधनचतुष्टय में कौन नहीं है ? UP PGT–2003

(A) नित्यानित्यवस्तुविवेक (B) शमदमादिसाधनसम्पत्
(C) आत्मसंयम (D) मुमुक्षुत्व

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 20

70. (i) 'साधनचतुष्टयसम्पन्नः' किसके लिए है ?
(ii) साधनचतुष्टयसम्पन्नः कः? UP PGT–2000,
(iii) साधनचतुष्टयसम्पन्नेन प्रतिपाद्यते?
BHU AET–2012, UGC 25 J–2001, GJ-SET–2013, CCSUM-Ph.D–2016

(A) सम्बन्ध (B) विषय
(C) अधिकारी (D) प्रयोजन

स्रोत–वेदान्तसार – आद्याप्रसाद मिश्र, पृष्ठ- 27,28

71. (i) वेदान्त पढ़ने का अधिकारी है ?
(ii) को वेदान्तस्य अधिकारी UP PGT–2004, 2009,
(iii) वेदान्तानुसारम् अधिकारी भवति?
(iv) वेदान्ताधिकारी? UGC 73 J–2011, BHU AET–2012, RPSC-SET–2013-14, UGC 25 D–2014

(A) साधनचतुष्टयसम्पन्नप्रमाता
(B) काम्यनिषिद्ध कर्मों को ही मात्र न करने वाला
(C) वेद-वेदाङ्गों का ही मात्र अध्ययन करने वाला
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 11

72. (i) वेदान्तदर्शनस्य प्रतिपाद्यम् अस्ति- UP GDC–2012
(ii) वेदान्तसारनाम्नः प्रकरणग्रन्थस्य विषयोऽस्ति–
(iii) वेदान्तानां कुत्र तात्पर्यम्? K-SET–2014
DU-M.Phil–2016

(A) प्रकृतिपुरुषयोः ऐक्यसाधनम्
(B) जीवब्रह्मैक्यप्रतिपादनम्
(C) धर्मप्रतिपादनम्
(D) पदार्थनिरूपणम्

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 30

73. जीवब्रह्मैक्यं शुद्धचैतन्यं प्रमेयं वेदान्तस्य किं भवति?
K-SET–2015

(A) अधिकारी (B) विषयः
(C) सम्बन्धः (D) प्रयोजनम्

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 30

74. वेदान्तसारे महाभूतानां किं वर्णितम्– MH-SET–2016

(A) त्रिवृत्करणम् (B) नवमीकरणम्
(C) पञ्चीकरणम् (D) सप्तमीकरणम्

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 78

75. अनुबन्धचतुष्टयस्य अवयवः कः नास्ति? HAP–2016

(A) विषयः (B) सम्बन्धः
(C) प्रयोजनम् (D) नित्यानित्यवस्तुविवेकः

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 9

76. अनुबन्ध किसे कहते हैं - UP PGT–2005

(A) नित्यानित्यवस्तुविवेक को
(B) अधिकारिविषयसम्बन्धप्रयोजनानि को
(C) इहामुत्रार्थफलभोगविराग को
(D) उपर्युक्त में से किसी को भी नहीं

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 9

77. अधिकारी का एक साधन है- UGC 25 J–1999

(A) अद्वैतबुद्धि (B) ईश्वर
(C) उपनिषद् (D) नित्यानित्यवस्तुविवेक

स्रोत–वेदान्तसार – आद्याप्रसाद मिश्र, पृष्ठ- 33

67. (D) 68. (B) 69. (C) 70. (C) 71. (A) 72. (B) 73. (B) 74. (C) 75. (D) 76. (B) 77. (D)

78. अनुबन्धचतुष्टय में क्या नहीं आता ? UP PGT–2013

(A) विषय (B) सम्बन्ध
(C) प्रयोजन (D) पूर्वपक्ष

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 9

79. वेदान्ते अनुबन्धसंज्ञया किं नाभिहितम्? UGC 73 Jn–2017

(A) अधिकारी (B) प्रयोजनम्
(C) सम्बन्धः (D) विज्ञानम्

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 9

80. (i) 'अधिकारी विषयः सम्बन्धः प्रयोजनम्' इति चतुर्णां पारिभाषिकं नामास्ति -
(ii) तत्र .... नामाधिकारिविषयसम्बन्धप्रयोजनानि– UP GDC–2014, GJ-SET–2011, 2014

(A) अर्थचतुष्टयम् (B) अनुबन्धचतुष्टयम्
(C) निबन्धचतुष्टयम् (D) वर्णचतुष्टयम्

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 9

81. अनुबन्धचतुष्टये न गण्यते– UGC 25 D–2015

(A) सम्बन्धः (B) विषयः
(C) चैतन्यम् (D) प्रयोजनम्

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 9

82. अधोलिखितेषु कः वेदान्तसारानुसारेण अनुबन्धचतुष्टयान्तर्गतं नास्ति - UP GIC–2015

(A) अधिकारी (B) साधनम्
(C) सम्बन्धः (D) प्रयोजनम्

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 9

83. तितिक्षा कहते हैं - UP PGT–2003

(A) सर्वदा वासनाओं का परित्याग
(B) निषिद्ध विषयों से बाह्य इन्द्रियों का निवर्तन
(C) सभी मौसमों को सहन करने का अभ्यास
(D) मन का संयम

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 20,21

84. वेदान्तसारानुसारं तितिक्षायाः किं लक्षणम् अस्ति? UGC 25 J–2016

(A) विहितानां कर्मणां विधिना परित्यागः
(B) मोक्षेच्छा
(C) शीतोष्णादि-द्वन्द्व-सहिष्णुता
(D) जन्ममरणबन्धनात् मुक्तिः

स्रोत–वेदान्तसार – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 136

85. वेदान्तसारानुसारं तितिक्षायाः अर्थः– GJ-SET-2003, 2016

(A) सहिष्णुता (B) मोक्षेच्छा
(C) क्रियाशक्तिः (D) उपासना

स्रोत–वेदान्तसार – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 136

86. शमादिषट्कसम्पत्तौ नास्ति– DU-M.Phil–2016

(A) उपरतिः (B) श्रद्धा
(C) समाधानम् (D) वैराग्यम्

स्रोत–वेदान्तसार – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 136

87. षट्कसम्पत्तिमध्ये कस्य गणना न भवति– GJ SET–2013

(A) शमस्य (B) दमस्य
(C) उपरतेः (D) मुमुक्षुत्वस्य

स्रोत–वेदान्तसार – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 136

88. उपासनाकर्मणः अवान्तरफलमस्ति– DU-M.Phil–2016

(A) पितृलोकप्राप्तिः (B) सत्यलोकप्राप्तिः
(C) देवलोकप्राप्तिः (D) ब्रह्मलोकमुक्तिः

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 18

89. अज्ञानस्य समष्टिगतोपाधिः भवति– DU-M. Phil–2016

(A) विशुद्धसत्त्वप्रधानः (B) मलिनसत्त्वप्रधानः
(C) रजः प्रधानः (D) तमः प्रधानः

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 42

90. शमो नाम– K-SET–2014, BHU AET–2012

(A) अन्तरिन्द्रियनिग्रहः (B) बहिरिन्द्रियनिग्रहः
(C) द्वन्द्वसहिष्णुता (D) मोक्षेच्छा

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 20

78. (D) 79. (D) 80. (B) 81. (C) 82. (B) 83. (C) 84. (C) 85. (A) 86. (D) 87. (D) 88. (B) 89. (A) 90. (A)

91. (i) उपासनानां प्रयोजनम्–
(ii) वेदान्तसार के अनुसार उपासना का परम प्रयोजन है?
UPPGT–2010, UK TET–2011
SU Ph.D–2015, KL SET–2015
(A) बुद्धिशुद्धिः (B) चित्तैकाग्र्यम्
(C) पापक्षयः (D) मोक्षः

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 17,18

92. ''मोक्षेच्छा'' किसे कहते हैं ?
UPPGT–2005, BHU AET–2012
(A) मुमुक्षुत्वम्
(B) गुरूपदिष्टवेदान्तवाक्येषु विश्वासः
(C) शीतोष्णादिद्विन्द्वसहिष्णुता
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 20

93. त्रिवृत्करणं केषां भूतानां प्रतिपादितम्-UGC 25 J–2011
(A) पृथ्वीजलतेजषाम् (B) आकाशवायुतेजसाम्
(C) जलतेजवायूनाम् (D) पृथ्वीजलवायूनाम्

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 80

94. (i) 'दमो' भवति - BHU AET–2012,
(ii) दमः उच्यते– UGC 25 J–2013
(A) चित्तैकाग्र्यम् (B) अन्तरिन्द्रियनिग्रहः
(C) बहिरिन्द्रियनिग्रहः (D) विक्षेपाभावः

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 20

95. विहितकर्मणां विधिना परित्यागः - UGC 25 D–2005
(A) तितिक्षा (B) उपरतिः
(C) दमः (D) श्रद्धा

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 20

96. 'श्रवणादिव्यतिरिक्तविषयेभ्यो मनसो निग्रहं भवति?
UGC 73 D–2015
(A) तितिक्षा (B) उपरतिः
(C) दमः (D) शमः

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 20

97. 'उपरतिः' इत्यस्य कोऽर्थः ? UGC 25 J–2011
(A) इन्द्रियाणां निग्रहः
(B) मनसो निग्रहः
(C) निगृहीतस्य मनसः श्रवणादौ स्थिरता
(D) निगृहीतानाम् इन्द्रियाणां विषयाकर्षणाभावः

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 20

98. 'गुरूपदिष्टवेदान्तवाक्येषु विश्वासः' किं कथ्यते?
UGC 25 D–2015
(A) मुमुक्षुत्व (B) उपरतिः
(C) श्रद्धा (D) शमः

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 20

99. साधनचतुष्टय हैं - UGC 25 J–2002
(A) 2 (B) 4
(C) 3 (D) 5

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 20

100. (i) ...... शीतोष्णादिद्विन्द्वसहिष्णुता– UGC 25 J–2004
(ii) 'सर्दी - गर्मी को सहन करना' कहा जाता है-
GJ-SET–2011
(A) तितिक्षा (B) समाधि
(C) उपासना (D) श्रद्धा

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 20

101. निगृहीतस्य मनसः श्रवणादौ तदनुगुणविषये च समाधिः-
UK SLET–2015
(A) समाधानम् (B) तितिक्षा
(C) श्रद्धा (D) शमः

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 20

102. अधस्तनेषु साधनचतुष्टये अन्तर्भवति -
UGC 25 J–2015
(A) शमदमादिषट्कसम्पत्तिः (B) चन्दनम्
(C) उपक्रमः (D) उपसंहारः

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ - 20

91. (B) 92. (A) 93. (A) 94. (C) 95. (B) 96. (D) 97. (D) 98. (C) 99. (B) 100. (A) 101. (A) 102. (A)

103. 'सन्ध्यावन्दन' इत्यादि कैसा कर्म है ? **UP PGT–2009, BHU AET–2012**

(A) नित्यकर्म (B) नैमित्तिककर्म
(C) उपासनाकर्म (D) प्रायश्चित्तकर्म

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 14

104. अधोऽङ्कितानां युग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत– **K-SET–2015**

(क) शमः 1. लौकिकविषयेभ्यः इन्द्रियाणां निवर्तनम्
(ख) दमः 2. शीतोष्णादिद्वन्द्वसहिष्णुता
(ग) उपरतिः 3. अन्तरिन्द्रियनिग्रहः
(घ) तितिक्षा 4. ब्राह्येन्द्रियनिग्रहः

	क	ख	ग	घ
(A)	3	4	1	2
(B)	2	1	4	3
(C)	1	2	3	4
(D)	4	3	2	1

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 20

105. साधनचतुष्टये न गण्यते– **UGC 73 Jn–2017**

(A) इहामुत्रार्थफलभोगविरागः (B) शमादिषट्कसम्पत्तिः
(C) ब्रह्मजिज्ञासा (D) मुमुक्षुत्व

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 20

106. ज्योतिष्टोमादि कौन-सा कर्म है ? **UP PGT–2009**

(A) प्रायश्चित्त (B) काम्य
(C) निषिद्ध (D) नित्य

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 14

107. (i) काम्यानि कर्माणि कानि? **DU-Ph.D–2016**
(ii) काम्यकर्माणि सन्ति? **K-SET–2014**

(A) सन्ध्यावन्दनादीनि (B) जातेष्ट्यादीनि
(C) ज्योतिष्टोमादीनि (D) शाण्डिल्यविद्यादीनि

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 14

108. वेदान्तसारानुसारेण नित्यादिकर्मणां परमं प्रयोजनम् अस्ति– **SU. Ph.D–2015**

(A) नित्यानित्यवस्तुविवेकः (B) बुद्धिशुद्धिः
(C) पितृलोकप्राप्तिः (D) फलभोगविरक्तिः

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 17

109. नैमित्तिकं कर्मेदम् - **UGC 25 J–2004**

(A) ज्योतिष्टोमयज्ञम् (B) ब्रह्महत्या
(C) जातेष्टिः (D) सन्ध्यावन्दनम्

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 14

110. 'पापक्षयसाधनानि चान्द्रायणादीनि' कर्म अस्ति - **UGC 25 J–2011**

(A) नित्यकर्म (B) नैमित्तिककर्म
(C) उपासनाकर्म (D) प्रायश्चित्तकर्म

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 14

111. काम्यकर्माणि कीदृशानि - **UGC 25 D–2013**

(A) अकरणे पापसाधनानि (B) पापविनाशसाधनानि
(C) निमित्तवशात्कृतानि (D) फलोद्देश्येन विधीयमानानि

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 14,15

112. अनिष्ट साधना कर्म है- **UGC 25 J–2002**

(A) नित्य (B) नैमित्तिक
(C) उपासना (D) निषिद्ध

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 14

113. 'शाण्डिल्यविद्यादीनि' कर्म है - **UGC 25 J–2003**

(A) प्रायश्चित्त (B) उपासना
(C) नित्य (D) निषिद्ध

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 14-15

114. वेदान्तसारानुसारं कर्माणि - **UGC 25 D–2014**

(A) त्रिविधानि (B) पञ्चविधानि
(C) षड्विधानि (D) चतुर्विधानि

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 14

115. प्रायश्चित्तकर्माणि भवन्ति - **UGC 25 J–2015**

(A) हननादीनि (B) सन्ध्यावन्दनादीनि
(C) ज्योतिष्टोमादीनि (D) चान्द्रायणादीनि

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 14

103. (A) 104. (A) 105. (C) 106. (B) 107. (C) 108. (B) 109. (C) 110. (D) 111. (D) 112. (D) 113. (B) 114. (C) 115. (D)

116. अधोऽङ्कितानां युग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत– K-SET–2013

(क) काम्यानि		1. ब्राह्मणहननादीनि
(ख) निषिद्धानि		2. सन्ध्यावन्दनादीनि
(ग) नित्यानि		3. जातेष्ट्यादीनि
(घ) नैमित्तिकानि		4. ज्योतिष्टोमादीनि

	क	ख	ग	घ
(A)	4	1	2	3
(B)	1	2	3	4
(C)	2	1	4	3
(D)	4	2	3	1

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 14

117. अधोलिखितेषु नित्यकर्म भवति - UGC 25 J–2015

(A) ज्योतिष्टोमादि (B) सन्ध्यावन्दनादि
(C) चान्द्रायणादि (D) जातेष्ट्यादि

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 14

118. अद्वैतमतानुसार अविद्या है ? UGC 73 D–2011

(A) अनादिः सान्ता च (B) सादिः अनन्ता च
(C) अनादिः अनन्ता च (D) सादिः सान्ता च

स्रोत–भारतीय दर्शन – चन्द्रधर शर्मा, पृष्ठ- 239

119. अधोऽङ्कितानां समीचीनमुत्तरं चिनुत– K-SET–2014

(क) निषिद्धानि	1. अकरणे प्रत्यवायसाधनानि
(ख) नित्यानि	2. नरकाद्यनिष्टसाधनानि
(ग) नैमित्तिकानि	3. पापक्षयसाधनानि
(घ) प्रायश्चित्तानि	4. पुत्रजन्माद्यनुबन्धीनि

	क	ख	ग	घ
(A)	3	2	1	4
(B)	2	1	4	3
(C)	2	1	3	4
(D)	4	2	1	3

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 14

120. अकरणे प्रत्यवायसाधनानि कर्माणि– K-SET–2013

(A) काम्यानि (B) निषिद्धानि
(C) नित्यानि (D) नैमित्तिकानि

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 14

121. वेदान्तानुसारम् अज्ञानमस्ति– K-SET–2013

(A) सत् (B) असत्
(C) सदसत् (D) सदसद्भ्याम् अनिर्वचनीयम्

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 37

122. अद्वैतवेदान्त मत में माया है ? UGC 73 D–2009

(A) सद्रूपा (B) असद्रूपा
(C) उभयात्मिका (D) अनिर्वचनीया

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 37

123. (i) अज्ञान की शक्ति होती है? UP PGT–2004
(ii) वेदान्त के अनुसार अज्ञान की शक्ति है?
(iii) अज्ञान की दो शक्तियाँ वेदान्त में कही गयी हैं?
(iv) अज्ञानस्य शक्तिरस्ति– DU-M.Phil–2016
UP PGT–2013, UGC 25 J–1998, 1999, 2012, D–2007, UP GDC–2014, UGC 73 J–2016

(A) आवरण (B) विक्षेप
(C) आवरण-विक्षेप दोनों (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–वेदान्तसार – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 173

124. 'अथातो ब्रह्मजिज्ञासा' इत्यत्र 'अथ' शब्दः कस्मिन् अर्थे अस्ति– UGC 25 D–2015

(A) हेत्वर्थे (B) अधिकारार्थे
(C) अन्वयार्थे (D) आनन्तर्यार्थे

स्रोत–ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यम् - सत्यानन्द सरस्वती, पेज–21

125. (i) आवरण और विक्षेप किसकी शक्तियाँ हैं ?
(ii) आवरणं कस्य शक्तिरस्ति? GJ-SET–2004
(iii) विक्षेपः कस्य शक्तिरस्ति? UP PGT–2005,
(iv) विक्षेपशक्तिः ..... विद्यते UGC 25 D–1998,
(v) 'आवरणविक्षेपौ' कस्य शक्ती मन्येते? J–1998, J–2016, UGC 73 Jn–2017, UK SLET–2015

(A) ब्रह्म (B) ज्ञान
(C) अज्ञान (D) जीव

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 56

126. वेदान्त के अनुसार माया का क्या अर्थ है ? BHU MET–2010, BHU AET–2012

(A) अज्ञान (B) चैतन्य
(C) ईश्वर (D) जीव

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 37,38

116. (A) 117. (B) 118. (A) 119. (B) 120. (C) 121. (D) 122. (D) 123. (C) 124. (D) 125. (C) 126. (A)

127. अज्ञाने किं प्रमाणम् ? BHU AET–2012

(A) अहं मनुष्यम् इति प्रत्यक्षम्
(B) अहं विद्वान् इति प्रत्यक्षम्
(C) अहमज्ञः इति प्रत्यक्षम्
(D) अहं ब्राह्मण इति प्रत्यक्षम्

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 37,38

128. (i) 'समष्टिव्यष्टि-अभिप्रायेण एकमनेकमिति व्यवहारः' इदं लक्षणं कस्य घटते– UGC 25 J–2016, Jn–2017
(ii) 'समष्टिव्यष्ट्यभिप्रायेणैकमनेकमिति' उक्तिरियं वेदान्तसारे कस्य सन्दर्भेऽस्ति?

(A) भ्रमस्य (B) अध्यासस्य
(C) तत्त्वज्ञानस्य (D) अज्ञानस्य

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 42

129. माया कया शक्त्या ब्रह्माण्डं सृजति ? BHU AET–2012

(A) आवरणशक्त्या (B) विक्षेपशक्त्या
(C) ज्ञानशक्त्या (D) अर्थशक्त्या

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 56

130. अज्ञानस्य अपरं नाम अस्ति - UGC 73 J–2012

(A) प्रधानम् (B) अविद्या
(C) प्रकृतिः (D) अव्यक्तम्

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 37,38

131. 'जिससे सारा जगत् उत्पन्न होता है' वह परा शक्ति होती है - UGC 73 J–2014

(A) शक्तिः (B) चितिः
(C) माया (D) अव्यक्त

स्रोत–(i) वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 56
(ii) वेदान्तसार - राकेशशास्त्री, पेज–175

132. (i) वेदान्तानुसारम् अज्ञानस्य स्वरूपं भवति–
(ii) वेदान्त के अनुसार अज्ञान है- UP GDC–2008
(iii) सदसद्भ्यामनिर्वचनीयं त्रिगुणात्मकं ..... अस्ति– GJ-SET–2007, SU Ph.D–2015

(A) ज्ञान का अभाव (B) ज्ञानविरोधी
(C) सत् (D) असत्

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 37

133. सदसद्भ्यामनिर्वचनीयं किम् ? UGC 25 D–2006, J–2009

(A) ब्रह्म (B) जीवः
(C) ईश्वरः (D) अज्ञानम्

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 37

134. अज्ञाने कति गुणाः? UGC 25 D–2006, J–2007

(A) द्वौ (B) त्रयः
(C) चत्वारः (D) पञ्च

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 37

135. अध्यासं पण्डिताः.......इति मन्यते। UGC 25 D–2008

(A) माया (B) प्रकृतिः
(C) अविद्या (D) ज्ञानम्

स्रोत–भारतीयदर्शन - चन्द्रधर शर्मा, पेज–239

136. (i) अज्ञानं तु– UGC 25 D–2002, 2010, 2013
(ii) अज्ञानं किं रूपम् - K-SET–2013

(A) भावरूपम् (B) अभावरूपम्
(C) भावाऽभावरूपम् (D) अनुभवरूपम्

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 37

137. (i) अज्ञानादिसकलजडसमुच्चयः अस्ति -
(ii) अज्ञानादिसकलजडसमूहः अस्ति– UGC 25 D–2011, 2015, MGKV Ph. D–2016

(A) वस्तु (B) अवस्तु
(C) विवर्तः (D) अध्यारोपः

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 37

138. निम्नांकित में वेदान्तसार के अनुसार 'अवस्तु' क्या है? UGC 73 D–2015

(A) सत् (B) चित्
(C) आनन्दः (D) आकाशम्

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 37

139. (i) वेदान्तसारे अज्ञानस्य कतिविधा शक्तिः ?
(ii) अज्ञानं कतिविधं भवति– UGC 25 D–2012,
(iii) वेदान्तसारे अज्ञानस्य शक्तिः? J–2015, HAP–2016, MH SET–2013

(A) द्विविधा (B) त्रिविधा
(C) चतुर्धा (D) पञ्चधा

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 56

127. (C) 128. (D) 129. (B) 130. (B) 131. (C) 132. (B) 133. (D) 134. (B) 135. (A) 136. (A) 137. (B) 138. (D) 139. (A)

140. वेदान्तसारोक्ते अज्ञानलक्षणे 'ज्ञानविरोधि' इति पदस्य अर्थः अस्ति? JNU-M. Phil Ph.D–2014

(A) ज्ञानं विरोधि यस्य तत् (B) ज्ञानस्य विरोधि
(C) ज्ञानस्य अभावः (D) ज्ञाने विरोधि

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 37-39

141. (i) अद्वैतवेदान्तमतानुसार अज्ञान का स्वरूप -
(ii) अज्ञान का लक्षण है– UGC 25 J–1994, 2001

(A) सत् (B) असत्
(C) सदसत् (D) सदसद्विलक्षण

स्रोत–वेदान्तसार – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 149-152

142. अद्वैतमतानुसार संसारबन्ध का कारण है ? UGC 25 J–1995

(A) अज्ञान (B) विशेषज्ञानाभाव
(C) ममत्वज्ञान (D) जीवज्ञान

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 56

143. जीव को बन्धन में डालने वाली शक्ति को कहते हैं- UGC 25 D–1997

(A) आवरण (B) विक्षेप
(C) परिणाम (D) विवर्त

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 56

144. अज्ञान का स्वरूप है - UGC 25 D–1999, 2003

(A) अनिर्वचनीय (B) वस्तु
(C) अभाव (D) सत्

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 37

145. अज्ञान के अस्तित्त्व में प्रमाण है - UGC 25 J–2000

(A) उपमानम् (B) अपरोक्षानुभवः
(C) अनुपलब्धिः (D) अर्थापत्तिः

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 42

146. अज्ञान है - UGC 25 J–2002

(A) नित्य तथा अनित्य (B) व्यष्टि तथा समष्टि
(C) परा और अपरा (D) वस्तु और अवस्तु

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 42

147. निम्नलिखित में से शब्द की शक्ति नहीं है - UP TET–2014

(A) आवरण (B) अभिधा
(C) लक्षणा (D) व्यञ्जना

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 57

148. वेदान्ते 'शारीरकः' इत्यस्य कोऽर्थः - UGC 73 Jn–2017

(A) माया (B) जीवः
(C) प्रकृतिः (D) महत्

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 8

149. अधोलिखितेषु अनिर्वचनीयं भवति– UGC 25 J–2015

(A) जीवस्वरूपम् (B) अज्ञानम्
(C) जगत्स्वरूपम् (D) ईश्वरस्वरूपम्

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 37

150. अनादिभावरूप है और ज्ञान से निवृत्त होता है ? UGC 73 S–2013

(A) मनः (B) जगत्
(C) अज्ञानम् (D) मिथ्यात्वम्

संस्कृतवाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-10)-बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ-62

151. (i) अज्ञानोपहित चैतन्य जगत् का कारण है-
(ii) अज्ञानोपहितं चैतन्यं कीदृशं कारणं भवति? UP PGT–2009, BHU RET–2008, UGC 25 D–1999, Jn–2017

(A) निमित्त (B) उपादान
(C) निमित्त एवं उपादान (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 59

152. कीदृशाद् अज्ञानोपहितचैतन्याद् आकाशः उत्पद्यते? DU-Ph.D–2016

(A) तमः प्रधानविक्षेपशक्तिमतः
(B) सत्त्वप्रधानविक्षेपशक्तिमतः
(C) तमः-प्रधानावरणशक्तिमतः
(D) रजः-प्रधानविक्षेपशक्तिमतः

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 62

140. (B) 141. (D) 142. (A) 143. (A) 144. (A) 145. (D) 146. (B) 147. (A) 148. (B) 149. (B) 150. (C) 151. (C) 152. (A)

153. (i) कत्यवयवात्मकं सूक्ष्मशरीरं वेदान्तसारे उल्लिखितम्
(ii) वेदान्तदर्शन के मत से सूक्ष्मशरीर का निर्माण कितने तत्त्वों से हुआ है- MGKV Ph. D–2016,
(iii) सूक्ष्मशरीर के अवयव हैं - UP GIC–2009,
(iv) लिङ्गशरीरस्य कति अवयवाः सन्ति?
(v) वेदान्तसारे लिङ्गशरीराणि वर्णितानि -
(vi) वेदान्तानुसारं लिङ्गशरीरस्य घटकानि कति?
(vii) वेदान्तानुसारं लिङ्गशरीरस्य अवयवाः सन्ति?
(viii) वेदान्तसारानुसार सूक्ष्मशरीर के अवयवों की संख्या हैं? UGC 25 D–1998, 2005, 2006, 2007, 2012, J–2004, 2010, 2013, S–2013, 2015, Jn–2017 BHU MET–2015, RPSC SET–2010, G J-SET–2014, HAP–2016, JNU MET–2015, CCSUM-Ph.D–2016, K-SET–2015, MGKV Ph. D–2016, SU-Ph.D–2016, MH-SET–2011

(A) षोडशावयवानि (B) सप्तदशावयवानि
(C) एकादशावयवानि (D) द्वादशावयवानि

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 65

154. (i) मनुष्य किस कोटि में आता है– BHU AET–2012,
(ii) मनुष्य माना जाता है - 2014, BHU MET–2014

(A) स्वेदज (B) अण्डज
(C) जरायुज (D) उद्भिज

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 82-83

155. 'अण्डजाः' भवन्ति - BHU AET–2012

(A) मशकाः (B) पक्षिणः
(C) मनुष्याः (D) वृक्षाः

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 82-83

156. 'वृक्षाः' भवन्ति - BHU AET–2012

(A) उद्भिज्जाः (B) स्वेदजाः
(C) जरायुजाः (D) अण्डजाः

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 82-83

157. (i) वेदान्तमते कतिविधं शरीरम् - UGC 25 D–2010,
(ii) वेदान्तसारानुसारं शरीराणि- 2014, 2012

(A) चतुर्विधानि (B) पञ्चविधानि
(C) त्रिविधानि (D) षड्विधानि

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 46

158. स्थूलशरीराणि कतिविधानि वेदान्तमते– UGC-25 D–2012

(A) चतुर्विधानि (B) पञ्चविधानि
(C) त्रिविधानि (D) षड्विधानि

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 82

159. वेदान्तसारे कयोः कर्मणोः वर्जनं कथितम्? MH-SET–2011

(A) नित्यनैमित्तिकयोः (B) प्रायश्चित्तनित्ययोः
(C) काम्यनिषिद्धयोः (D) प्रायश्चित्तनिषिद्धयोः

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 11-12

160. अधस्तनवाक्यानां सत्यासत्यपर्यायेषु समीचीनं विचिनुत– MH-SET–2013

(क) आवरणशक्तिर्नाम इच्छाशक्तिः
(ख) ज्ञानशक्तिर्नाम क्रियाशक्तिः
(ग) आच्छादकशक्तिर्नाम आवरणशक्तिः
(घ) विक्षेपशक्तिर्नाम आवरणशक्तिः

(A) सत्यम्, असत्यम्, सत्यम्, असत्यम्
(B) असत्यम्, सत्यम्, असत्यम्, सत्यम्
(C) असत्यम्, असत्यम्, सत्यम्, असत्यम्
(D) सत्यम्, सत्यम्, असत्यम्, असत्यम्

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 56,73

161. आवरणशक्तिर्नाम का? MH-SET–2016

(A) विक्षेपशक्तिः (B) ज्ञानशक्तिः
(C) आच्छादकशक्तिः (D) क्रियाशक्तिः

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 56-57

162. अवस्तु नाम किम्? MH-SET–2016

(A) सर्वं वस्तुनाम अवस्तु
(B) ब्रह्म नाम अवस्तु
(C) जलं नाम अवस्तु
(D) अतोऽन्यदखिलम् (ब्रह्मणः व्यतिरिक्तमखिलम्) अवस्तु

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 37

163. अस्याज्ञानस्यावरणविक्षेपनामकमस्ति... GJ-SET–2011

(A) भक्तिद्वयम् (B) प्रकारद्वयम्
(C) शक्तिद्वयम् (D) कार्यद्वयम्

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 56

153. (B) 154. (C) 155. (B) 156. (A) 157. (C) 158. (A) 159. (C) 160. (C) 161. (C) 162. (D) 163. (C)

164. जरायुजानि– K-SET–2014

(A) मनुष्यपश्वादीनि (B) पक्षिपन्नगादीनि
(C) कक्षवृक्षादीनि (D) यूकमशकादीनि

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 82-83

165. द्विधा विधाय चैकैकं .... इत्युच्यते– GJ-SET–2008

(A) पञ्चीकरणम् (B) पञ्जीकरणम्
(C) साधारणीकरणम् (D) त्रिवृत्करणम्

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 78

166. पञ्चीकरणात् अप्सु कति तन्मात्राणामुपलब्धिः? GJ-SET–2013

(A) तन्मात्रद्वयस्य (B) एकस्य, रसस्यैव
(C) चतुर्णाम् (D) त्रयाणाम्

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 80

167. ''रज्वां सर्पत्वसम्भावना'' भवति– GJ-SET–2003

(A) श्रवणशक्त्या (B) विक्षेपशक्त्या
(C) अविद्यया (D) आवरणशक्त्या

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 56

168. कोशत्रयं मिलितमुच्यते– GJ-SET–2003

(A) स्थूलशरीरम् (B) सूक्ष्मशरीरम्
(C) कारणशरीरम् (D) आत्मस्वरूपम्

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 73

169. पञ्चीकृताद् भूतात् कस्य उत्पत्तिः जायते– GJ-SET–2007

(A) ईश्वरस्य (B) प्राज्ञस्य
(C) भ्वादिलोकस्य (D) ब्रह्मणः

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 82-83

170. रज्ज्वां सर्पस्याभासं का शक्तिः सम्पादयति– GJ-SET–2014

(A) विक्षेपशक्तिः (B) व्यञ्जनाशक्तिः
(C) लक्षणाशक्तिः (D) आवरणशक्तिः

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 56

171. (i) वेदान्तसारनिर्दिष्टेषु 'सूक्ष्मशरीरावयवेषु' कस्यैकस्य गणना नास्ति - HE–2015, UGC 25 J–2016

(ii) वेदान्तसारानुसारं लिङ्गशरीरे कस्य गणना न भवति–

(A) आकाशस्य (B) बुद्धेः
(C) मनसः (D) वायुपञ्चकस्य

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 65

172. कौन 'जरायुज' नहीं है - BHU AET–2010

(A) पशु (B) राक्षस
(C) पिशाच (D) सर्प

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 83

173. 'स्वेदज' कौन है- BHU AET–2010

(A) पक्षी (B) मनुष्य
(C) खटमल (D) मत्स्य

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 83

174. निम्नांकित में से 'अण्डज' कौन है-BHU AET–2011

(A) मनुष्य (B) सर्प
(C) पिशाच (D) पशु

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 83

175. निम्नांकित में से 'स्वेदज' कौन है–BHU AET–2011

(A) सर्प (B) पक्षी
(C) मच्छर (D) लताएँ

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 83

176. 'पञ्चीकरण' प्रक्रिया से सम्बद्ध प्रकरण है - UGC 73 D–2007

(A) जगत्सृष्टिः (B) ब्रह्मसत्यत्वम्
(C) ज्ञानसाधनानि (D) मोक्षप्रकरणम्

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 78-79

177. वेदान्तसार के अनुसार सृष्टिक्रम में पञ्चभूतों की उत्पत्ति का क्रम क्या है - UP PGT–2000

(A) पृथ्वी - जल - वायु - तेजस् - आकाश
(B) आकाश - तेजस् - वायु - जल - पृथ्वी
(C) आकाश - वायु - तेजस् - जल - पृथ्वी
(D) आकाश - जल - वायु - तेजस् - पृथ्वी

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 78-79

164. (A) 165. (A) 166. (C) 167. (D) 168. (B) 169. (C) 170. (A) 171. (A) 172. (D) 173. (C) 174. (B) 175. (C) 176. (A) 177. (C)

178. पञ्चीकरणेनोत्पद्यते– CCSUM Ph.D–2016

(A) लोकाः (B) ईश्वरः
(C) ब्रह्म (D) प्राज्ञः

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 82

179. (i) 'पञ्चीकरण' का निरूपण करता है -
(ii) 'पञ्चीकरण' प्रक्रिया का उल्लेख किस ग्रन्थ में है-
(iii) पञ्चीकरण प्रक्रिया कुत्र वर्तते– UP PGT–2000,
(iv) पञ्चीकरणप्रक्रियायाः सम्बद्धं प्रकरणम्– 2004
(v) 'पञ्चीकरण' प्रक्रिया प्रदर्शिता वर्तते -
(vi) The Concept of is पञ्चीकरण is propounded in
UGC 25 D–1996, J–1998, 2003, UGC 73 J–2005, D–2007, GJ-SET– 2004, WB-SET–2010, UK SLET–2015, H-TET–2004

(A) सांख्यदर्शने (B) न्यायदर्शने
(C) वेदान्तदर्शने (D) बौद्धदर्शने

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 79

180. निम्नलिखित में से एक कर्मेन्द्रिय है -
UP PGT–2004, UP GDC–2008, UGC 25 D–1999 J–2000

(A) वाक् (B) श्रोत्र
(C) घ्राण (D) चक्षुः

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 69

181. 'संकल्पविकल्पात्मिकान्तः करणवृत्तिः' किससे सम्बन्धित है - UP PGT–2005, UGC 73 D–2016

(A) मन (B) शरीर
(C) बुद्धि (D) प्रकृति

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 66

182. (i) वेदान्तानुसार मन का स्वरूप है-
(ii) मन का लक्षण है?
UP PGT–2009, UGC 25 D–1996, 1997

(A) अभिज्ञान (B) संकल्प-विकल्प
(C) अनुसन्धान (D) निश्चय

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 66

183. किस पञ्चीकृत पदार्थ में शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध, ये पाँचों, गुण पाये जाते हैं - UP PGT–2009

(A) तेज (B) वायु
(C) जल (D) पृथिवी

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 80

184. यह कर्मेन्द्रिय है - UGC 25 D–2016

(A) श्रोत्र (B) पाणि
(C) घ्राण (D) चक्षु

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 69

185. (i) पञ्चीकृतपृथिव्याम्–
(ii) वेदान्तसारानुसारं पृथिव्यां कस्य अभिव्यक्तिः भवति– UGC 25 J–2016, K-SET–2013

(A) केवलं गन्धस्य
(B) रसस्य च गन्धस्य च
(C) रूपस्य च गन्धस्य च
(D) शब्दस्पर्शरूपरसगन्धानाम्

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 80

186. विवेकः .... जायते– GJ-SET–2016

(A) विज्ञानमयकोशात् (B) प्राणमयकोशात्
(C) मनोमयकोशात् (D) अन्नमयकोशात्

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 73

187. (i) बुद्धि ज्ञानेन्द्रियों के साथ मिलकर निर्माण करती है-
(ii) पञ्चज्ञानेन्द्रियाँ एवं बुद्धि के द्वारा निर्मित होती हैं-
(iii) इयं बुद्धिज्ञानेन्द्रियैः सहिता भवति–
(iv) ज्ञानेन्द्रियैः सहिता बुद्धिः कथ्यते?
UP PGT– 2004, 2009, K-SET–2014, SU Ph.D–2015

(A) प्राणमयकोश (B) मनोमयकोश
(C) विज्ञानमयकोश (D) आनन्दमयकोश

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 68

188. अद्वैतवेदान्ते कर्त्तृत्वाद्यभिमानि उच्यते–UP GDC–2012

(A) मनोमयकोशः (B) आनन्दमयकोशः
(C) प्राणमयकोशः (D) विज्ञानमयकोशः

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 68

178. (A) 179. (C) 180. (A) 181. (A) 182. (B) 183. (D) 184. (B) 185. (D) 186. (A) 187. (C) 188. (D)

189. चक्षुरिन्द्रियेण कस्य ज्ञानं भवति - BHU AET–2012

(A) रूपस्य (B) रसस्य
(C) गन्धस्य (D) शब्दस्य

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 87

190. पञ्चीकरणे केषां संयोजनं भवति- BHU AET–2012

(A) पञ्चवायूनाम् (B) पञ्चकर्मेन्द्रियाणाम्
(C) पञ्चमहाभूतानाम् (D) पञ्चज्ञानेन्द्रियाणाम्

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 78

191. (i) अखिलशरीरवर्ती विष्वग्गतिमान् वायुः भवति -
(ii) अखिलशरीरवर्ती वायुः वर्तते -
UGC 25 D–2005, BHU AET–2012

(A) प्राणः (B) अपानः
(C) व्यानः (D) समानः

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 69

192. मन किस प्रकार की इन्द्रिय है - UP PGT–2009

(A) कर्मेन्द्रिय (B) ज्ञानेन्द्रिय
(C) उभयात्मक (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–(i) वेदान्तसार–सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 66
(ii) सांख्यकारिका (का0-27)–राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 84

193. विज्ञानमयकोशोऽयम् - UGC 25 J–2005, 2008

(A) पञ्चज्ञानेन्द्रियाणि + बुद्धिः
(B) पञ्चज्ञानेन्द्रियाणि + मनः
(C) पञ्चज्ञानेन्द्रियाणि + प्राणादिपञ्चकम्
(D) पञ्चकर्मेन्द्रियाणि + बुद्धिः

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 68

194. शब्दस्पर्शौ अभिव्यज्येते - UGC 25 D–2005

(A) पञ्चीकृताकाशे (B) पञ्चीकृतवायौ
(C) पञ्चीकृततेजसि (D) पञ्चीकृतपृथिव्याम्

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 80

195. पञ्चीकृते वायौ जलस्य कियान् भागः -
UGC 25 J–2006

(A) 5% (B) 25%
(C) 3% (D) $12\frac{1}{2}\%$

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ - 79

196. व्यानः वायुर्वर्तते - UGC 25 D–2009

(A) हृदि (B) नाभिमण्डले
(C) कण्ठदेशे (D) सर्वशरीरे

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 69

197. कः कोशः कारणशरीरम् - UGC 25 J–2010

(A) मनोमयकोशः (B) आनन्दमयकोशः
(C) विज्ञानमयकोशः (D) प्राणमयकोशः

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 47

198. विज्ञानमयकोशो भवति - UGC 25 J–2012

(A) ज्ञानशक्तिमान् - कर्तृरूपः
(B) इच्छाशक्तिमान् - कर्तृरूपः
(C) क्रियाशक्तिमान् - कार्यरूपः
(D) क्रियात्मकत्वेन - कार्यरूपः

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 73

199. पञ्चकोश है - UGC 25 J–2002

(A) पञ्चमहाभूत
(B) पञ्चकर्मेन्द्रियाँ
(C) विज्ञानमयकोश, मनोमयकोश, प्राणमयकोश, अन्नमयकोश, आनन्दमयकोश
(D) पञ्चज्ञानेन्द्रियाँ

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 46

200. पञ्चमहाभूतों में क्या सम्मिलित नहीं है–
BHU AET–2011

(A) नासिका (B) आकाश
(C) वायु (D) तेज

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 79

201. वायु का गुण क्या है - BHU AET–2010

(A) तेज (B) शब्द
(C) स्पर्श (D) रस

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 80

202. स्पर्श गुण से युक्त कौन है - BHU AET–2011

(A) आकाश (B) वायु
(C) पृथ्वी (D) अग्नि

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 80

189. (A) 190. (C) 191. (C) 192. (C) 193. (A) 194. (B) 195. (D) 196. (D) 197. (B) 198. (A) 199. (C) 200. (A) 201. (C) 202. (B)

203. प्रलये सर्वप्रथमं लयो भवति - BHU AET–2012

(A) जलस्य (B) पृथिव्याः
(C) वायोः (D) अग्नेः

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 119

204. जलस्य लयो भवति - BHU AET–2012

(A) वायौ (B) तेजसि
(C) आकाशे (D) पृथिव्याम्

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 119

205. (i) वेदान्तसारानुसारम् अग्नेः किम् उत्पद्यते?
(ii) अग्नेः विकृतिः किम्? UGC 25 D–2015, KL-SET–2015

(A) आपः (B) वायुः
(C) पृथिवी (D) आकाशः

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 62

206. आकाशात् कस्य महाभूतस्य उत्पत्तिः भवति - BHU AET–2012

(A) जलस्य (B) वायोः
(C) पृथिव्याः (D) अग्नेः

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 62

207. (i) आकाश का गुण क्या है-
(ii) आकाशस्य गुणः वर्तते– BHU AET–2011, 2012

(A) रसः (B) शब्दः
(C) स्पर्शः (D) गन्धः

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 80

208. भूतानां केभ्यः अंशेभ्यः कर्मेन्द्रियाणि उत्पद्यन्ते - UGC 25 J–2006

(A) सात्त्विकेभ्यः (B) राजसेभ्यः
(C) तामसेभ्यः (D) सर्वेभ्यः

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 69

209. भूतानां केभ्यः अंशेभ्यः ज्ञानेन्द्रियाणि उत्पद्यन्ते - UGC 25 D–2006, J–2010

(A) राजसेभ्यः (B) तामसेभ्यः
(C) सात्त्विकेभ्यः (D) सर्वेभ्यः

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 66

210. अद्वैतवेदान्तमते वायोः उपादानकारणमस्ति– JNU M.Phil/Ph.D–2014

(A) आकाशः (B) अज्ञानोपहितचैतन्यम्
(C) शुद्धचैतन्यम् (D) अग्निः

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ - 62

211. 'अध्यास' का अर्थ है- UP PGT–2003, UGC 25 S–2013

(A) स्मृति (B) संशय
(C) भ्रान्ति (D) साक्षात्कार

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 36

212. (i) 'वस्तुन्यवस्त्वारोपः' से परिभाषित है -
(ii) वस्तुनि अवस्त्वारोपः कः UP PGT–2009, UGC 25 D–2012, K-SET–2013, HAP–2016 WB SET–2010, GJ SET–2013

(A) अपवाद (B) पञ्चीकरण
(C) अध्यारोप (D) जीवन्मुक्ति

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 37

213. सन्ध्यावन्दनादीनां प्रयोजनं किम्? KL-SET–2016

(A) प्रत्यवायपरिहारः (B) पापक्षयः
(C)स्वर्गादीष्टप्राप्तिः (D) चित्तैकाग्र्यम्

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-14-15

214. ''परत्रपूर्वदृष्टावभासः'' इसका तात्पर्य एक ही शब्द से विदित होता है- UGC 73 J–2007

(A) अज्ञान (B) मिथ्याज्ञान
(C) अध्यास (D) अभेद

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 36

215. को नाम अध्यासः - BHU AET–2012

(A) अतस्मिन् तद्बुद्धिः (B) यथार्थज्ञानम्
(C) तर्कज्ञानम् (D) अनुमानम्

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 36

216. 'अध्यास' का निरूपण किस ग्रन्थ में है - UGC 73 D–2007, 2011

(A) ब्रह्मसूत्रभाष्ये (B) नैष्कर्म्यसिद्धौ
(C) गीताभाष्ये (D) केनोपनिषद्भाष्ये

स्रोत–ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्य- सत्यानन्द सरस्वती, पेज-17

203. (B) 204. (B) 205. (A) 206. (B) 207. (B) 208. (B) 209. (C) 210. (A) 211. (C) 212. (C) 213. (A) 214. (C) 215. (A) 216. (A)

217. अध्यास है- UGC 73 J–2011

(A) स्मृतिरूपः परत्रपूर्वदृष्टावभासः
(B) जगति ब्रह्मणः आरोपः
(C) रजते शुक्त्यारोपः
(D) गगने कुसुमाश्रयारोपः

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 36

218. ''अध्यासो नाम अतस्मिंस्तद्बुद्धिरित्यवोचाम'' इति वचनम् - UGC 73 D–2013

(A) भामतीकारस्य (B) पद्मपादाचार्यस्य
(C) प्रकाशानन्दयतेः (D) शङ्कराचार्यस्य

स्रोत–ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्य- सत्यानन्द सरस्वती, पेज- 17,36

219. निरुपाधिक-सोपाधिक-भेदात् द्विविधः - UGC 73 D–2013

(A) विधिः (B) ज्ञानम्
(C) जीवः (D) अध्यासः

स्रोत–भारतीय दर्शन – जगदीशचन्द्र मिश्र, पृष्ठ- 564

220. (i) अध्यारोपः किं भवति– UGC 25 D–2004,
(ii) अध्यारोपस्य लक्षणम् - J–2009, 2016, D–2012
(iii) अध्यारोपो नाम– RPSC SET–2013-14
(iv) कोऽध्यारोपः – MH-SET–2011, 2016, GJ-SET–2016

(A) वस्तुनि अवस्त्वारोपः (B) अवस्तुनि वस्त्वारोपः
(C) जीवे ब्रह्मण आरोपः (D) न किमपि

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 37

221. अध्यासः - UGC 25 J–2008

(A) कार्यरूपः (B) स्मृतिरूपः
(C) कारणरूपः (D) नित्यरूपः

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 36

222. (i) वेदान्तदर्शन में असर्पभूत रज्जु में सर्प के आरोप को कहा जाता है- UP PGT–2013
(ii) रज्जुसर्पारोपः किमुच्यते? GJ-SET–2007

(A) भ्रम (B) अध्यारोप
(C) मायाजन्य (D) आभास

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 37

223. रज्जोः विवर्त्तरूपं किम्? CCSUM Ph.D–2016

(A) रज्जुरूपसर्पः (B) रज्जुमात्रः
(C) रज्जुभिन्नः (D) वस्तुसर्पः

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 115,116

224. अवस्तुनि वस्त्वारोपः– GJ-SET–2008

(A) अपवादः (B) अर्थवादः
(C) अध्यारोपः (D) अपवर्गः

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 116

225. अध्यारोपः किम् - UK SLET–2012

(A) असत्यज्ञानम् (B) सत्यज्ञानम्
(C) मायाज्ञानम् (D) सदसत्ज्ञानम्

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 36,37

226. लय-विक्षेप-कषाय-रसास्वाद-लक्षणाश्चत्वारो विघ्नाः सम्भवन्ति - UK SLET–2015

(A) अपवादस्य (B) प्राणायामस्य
(C) यमनियमयोः (D) निर्विकल्पकसमाधेः

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 179

227. (i) 'सुषुप्तवज्जाग्रति यो न पश्यति' इति कस्य स्वभावोऽस्ति- UP PGT–2005
(ii) 'सुषुप्तवज्जाग्रति यो न पश्यति' स्वभाव वाला कौन होता है- UP GIC–2015

(A) ईश्वर (B) जीवन्मुक्त
(C) मुमुक्षु (D) प्राज्ञ

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 192

228. वेदान्त का परम लक्ष्य क्या है- BHU MET–2010

(A) दुःखज्ञान (B) भौतिकसुख
(C) संसारत्याग (D) मोक्ष

स्रोत–वेदान्तसार – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 143-144

229. वेदान्तशास्त्रानुसारं मोक्षो भवति- BHU AET–2012

(A) प्रमाणज्ञानात् (B) ब्रह्मज्ञानात्
(C) धर्मज्ञानात् (D) दानात्

स्रोत–भारतीय दर्शन – चन्द्रधर शर्मा, पृष्ठ-257

217. (A) 218. (D) 219. (D) 220. (A) 221. (B) 222. (B) 223. (B) 224. (A) 225. (A) 226. (D) 227. (B) 228. (D) 229. (B)

230. अद्वैत वेदान्त मत में मोक्ष है - UGC 73 J–2009

(A) असिद्धः (B) अनवाप्यः
(C) सिद्धः (D) उत्पाद्यः

स्रोत–भारतीय दर्शन – चन्द्रधर शर्मा, पृष्ठ- 259

231. 'जीवन्मुक्त' इत्यस्य अर्थो विद्यते - UGC 25 J–2005

(A) जीवनात् मुक्तः (B) जीवितः सन्मुक्तः
(C) प्रारब्धकर्मभ्यो मुक्तः (D) शुभवासनानुवृत्तेर्मुक्तः

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 205

232. जीवन्मुक्तौ सत्यां कस्य कर्मणः फलम् उपभोक्तव्यमेव- UGC 25 J–2006

(A) सञ्चितस्य (B) क्रियमाणस्य
(C) प्रारब्धस्य (D) सर्वेषाम्

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 187

233. अद्वैतवेदान्तमते मुक्तिः - UGC 25 D–2007

(A) ब्रह्मज्ञानप्राप्तिः (B) ब्रह्मसादृश्यप्राप्तिः
(C) ब्रह्मसायुज्यम् (D) ब्रह्मनिष्ठः

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 185,186

234. (i) जीवन्मुक्तस्य वर्णनं कुत्र अस्ति– UGC 25 D–2009,
(ii) जीवन्मुक्तिः अस्ति- J–2014, RPSC SET–2010
(iii) जीवन्मुक्तिः कस्मिन् दर्शने अस्ति–

(A) जैनदर्शने (B) बौद्धदर्शने
(C) चार्वाकदर्शने (D) वेदान्तदर्शने

स्रोत–वेदान्तसार – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 278

235. अद्वैतमतानुसार जीव कहलाता है- UGC 25 J–1995

(A) सर्वज्ञ (B) किञ्चिदज्ञ
(C) आत्मज्ञ (D) त्रिकालज्ञ

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 31

236. (i) जीवन्मुक्तः कः? HE–2015, RPSC
(ii) क एको जीवन्मुक्तस्य पर्यायः - SET–2013-14

(A) तितिक्षुः (B) युञ्जानः
(C) अखिलबन्धरहितो ब्रह्मनिष्ठः (D) साधकः

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 185

237. तत्त्वसाक्षात्कारोपायेष्वन्यतमः - UGC 25 D–2014

(A) उपक्रमः (B) उपसंहारः
(C) अभ्यासः (D) निदिध्यासनम्

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 152

238. वेदान्तशास्त्रे प्रमेयं किं भवति - UGC 25 D–2014

(A) ईश्वरः (B) जीवः
(C) विराट् (D) तुरीयचैतन्यम्

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 53

239. अद्वैतवेदान्त मत में जगत् कैसा है- UGC 73 J–2010, UGC 25 J–2014

(A) सत्य (B) मिथ्या
(C) नित्य (D) शुद्ध

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, भू. पृष्ठ-ix

240. जगत् की उत्पत्ति का कारण है - UP PGT–2003

(A) अज्ञान (B) ईश्वर
(C) ब्रह्म (D) आत्मा

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 56-57

241. 'अज्ञानकल्पितं द्वैतजगत्' वर्तते– BHU AET–2012

(A) ब्रह्म (B) छलम्
(C) प्रपञ्चः (D) माया

स्रोत–वेदान्तसार – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 176

242. प्रपञ्चस्य कीदृशी सत्ता- BHU AET–2012

(A) पारमार्थिकी (B) व्यावहारिकी
(C) प्रातिभासिकी (D) चतुर्थी काचित्

स्रोत–भारतीय दर्शन-हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज–297

243. अद्वैतवेदान्ते प्रपञ्चस्य किं साधितम् - BHU AET–2012

(A) नित्यत्वम् (B) मिथ्यात्वम्
(C) सर्वज्ञत्वम् (D) स्वप्नज्ञानत्वम्

स्रोत–वेदान्तसार – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 176,177

244. प्रधानं जगत् कारणं भवतीति नाङ्गीकुर्वन्ति - UGC 73 J–2013

(A) अद्वैतवेदान्तिनः (B) सांख्याः
(C) योगिनः (D) ईश्वरकृष्णादयः

स्रोत–भारतीय दर्शन – जगदीशचन्द्र मिश्र, पृष्ठ- 549

230. (C) 231. (B) 232. (A) 233. (D) 234. (D) 235. (B) 236. (C) 237. (D) 238. (D) 239. (B)
240. (A) 241. (C) 242. (B) 243. (B) 244. (A)

245. ''दृश्यत्वहेतुना मिथ्यात्वम्'' की सिद्धि होती है- UGC 73 J–2013
(A) मनसि (B) जगति
(C) ब्रह्मणि (D) मायायाम्
स्रोत–भारतीय दर्शन – जगदीशचन्द्र मिश्र, पृष्ठ- 555

246. जगत् को मिथ्या मानते हैं - UGC 73 D–1997
(A) नैयायिक (B) माध्व
(C) शङ्कर (D) रामानुज
स्रोत–भारतीय दर्शन – शोभा निगम, पृष्ठ- 231

247. सदसद्विलक्षण होता है- UGC 73 D–2014
(A) साक्षी (B) अविद्या
(C) आत्मा (D) जगत्
स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 37,38

248. जगत् का निमित्तोपादान है - UGC 73 S–2013
(A) प्राणाः (B) माया
(C) जीवः (D) ब्रह्म
स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 59

249. अद्वैतमत में ब्रह्म है - UGC 73 D–2011
(A) सत्यम् (B)सादि
(C) मिथ्या (D) सान्तम्
स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, भू. पृष्ठ- ix

250. अद्वैतवेदान्त मत में सत्य है- UGC 73 J–2009, D–2010
(A) जीव एव (B) जगदेव
(C) ब्रह्मैव (D) स्वर्ग एव
स्रोत–भारतीय दर्शन – हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पृष्ठ- 303

251. ब्रह्मसूत्र के अनुसार शास्त्र की योनि क्या है - UGC 73 D–2010
(A) जगत् (B) ब्रह्म
(C) जीव (D) शून्य
स्रोत–ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्य (1.1.3)–सत्यानन्द सरस्वती, पृष्ठ- 43

252. 'तस्मिन् दृष्टे परावरे' कस्मिन्– K-SET–2013
(A) ब्रह्मणि (B) ज्ञाने
(C) कर्मणि (D) विद्यायाम्
स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ-185,186

253. अवच्छेदवाद में जगत् का उपादान कारण है- UGC 73 D–2008
(A) ईश्वरः (B) अविद्या
(C) जीवः (D) ब्रह्म
संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-10)-बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ-97

254. (i) अद्वैतवेदान्त मत में ब्रह्म का होता है -
(ii) अद्वैतमते 'ब्रह्मणो' वर्तते?
UGC 73 D–2009, UGC 25 S–2013
(A) व्यावहारिकत्वम् (B) प्रातिभासिकत्वम्
(C) पारमार्थिकत्वम् (D) मिथ्यात्वम्
स्रोत–भारतीय दर्शन – हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पृष्ठ- 303

255. अद्वैतवेदान्तिनामीश्वरो वर्तते– DU-Ph.D–2016
(A) पारमार्थिकसत्ता
(B) व्यावहारिकसत्ता
(C) प्रातिभासिकसत्ता
(D) उक्तेषु न कोऽपि विकल्पः साधु
स्रोत–वेदान्तसार – कृष्णकान्त त्रिपाठी, भू. पृष्ठ- 25

256. अद्वैतवेदान्त में जगत् का -
UGC 25 J–1994, UGC 73 D–2009
(A) सत्यत्वम् (B) मिथ्यात्वम्
(C) पारमार्थिकत्वम् (D) ब्रह्मपरिणामात्मकत्वम्
स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, भू. पृष्ठ- ix

257. अद्वैतमत के अनुसार ब्रह्म जगत् का कौन-सा कारण है - UGC 73 J–2008
(A) उपादानकारण (B) निमित्तकारण
(C) समवायिकारण (D) उपादान और निमित्तकारण
स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 59

258. ब्रह्म को कहा गया है -
UPPGT–2004, BHU AET–2012
(A) सत् (B) चित्
(C) आनन्द (D) सच्चिदानन्द
स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 37

245. (B) 246. (C) 247. (B) 248. (D) 249. (A) 250. (C) 251. (B) 252. (A) 253. (D) 254. (C) 255. (A) 256. (B) 257. (D) 258. (D)

259. वस्तु है- UP PGT–2009, CCSUM - Ph.D–2016

(A) अज्ञानादिजडसमूह (B) ब्रह्म
(C) त्रिगुणात्मक (D) अनिर्वचनीय

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 37

260. अद्वैतवेदान्त में ब्रह्म स्वीकृत किया जाता है- UGC 73 D–2015

(A) व्यापकम् (B) अव्यापकम्
(C) बहुविधम् (D) त्रिविधम्

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 30

261. इस मत में ब्रह्म केवल निमित्त कारण है- UGC 73 J–2006

(A) अद्वैतवेदान्त (B) माध्ववेदान्त
(C) विशिष्टाद्वैतवेदान्त (D) शक्तिविशिष्टाद्वैतवेदान्त

स्रोत–भारतीय दर्शन – जगदीशचन्द्र मिश्र, पृष्ठ- 635

262. सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्मेति लक्षणं कीदृशम् - BHU AET–2012

(A) तटस्थलक्षणम् (B) स्वरूपलक्षणम्
(C) सामान्यलक्षणम् (D) विशेषलक्षणम्

स्रोत–भारतीय दर्शन – चन्द्रधर शर्मा, पृष्ठ- 251

263. ब्रह्म कीदृशं कारणम् - BHU AET–2012

(A) अभिन्ननिमित्तोपादानम् (B) केवलं निमित्तम्
(C) निमित्तोपादानातिरिक्तम् (D) केवलमुपादानम्

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 59

264. ब्रह्म जगत् उपादानकारणं निमित्तकारणं वर्तते इति कस्मिन् सूत्रे उक्तम् - BHU AET–2012

(A) तन्तुसमन्वयात् (B) जन्माद्यस्य
(C) अथातो ब्रह्मजिज्ञासा (D) शास्त्रयोनित्वात्

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 5

265. पारमार्थिकतत्त्वम् भवति - BHU AET–2012

(A) अतीतकालाबाध्यत्वम् (B) त्रिकालाबाध्यत्वम्
(C) भविष्यत्कालमात्राबाध्यत्वम् (D) वर्तमानकालमात्राबाध्यत्वम्

स्रोत–भारतीय दर्शन – चन्द्रधर शर्मा, पृष्ठ- 245

266. (i) अद्वैतवेदान्त मत में जीव और ब्रह्म का है-
(ii) अद्वैतवेदान्ते जीवब्रह्मणोः स्वरूपम् – UGC 25 D–2004, UGC 73 J–2009

(A) अभेदः (B) भेदः
(C) असत्त्वम् (D) अभावः

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 30

267. वेदान्त में अद्वैत शब्द इन दोनों का अभेद अभीष्ट है- UGC 25 J–2009, UGC 73 J–2005

(A) जीव एवं ब्रह्म (B) जीव एवं ईश्वर
(C) जीव एवं अज्ञान (D) जीव एवं पुरुष

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 30

268. (i) जीवस्य कतिविधाः अवस्थाः भवन्ति -
(ii) वेदान्तसारे जीवेश्वरयोः कति अवस्थाः कथिताः? UGC 25 J–2007, MH SET–2016

(A) त्रिविधा (B) चतुर्विधा
(C) पञ्चविधा (D) षड्विधा

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 46

269. सदानन्दमतेन ब्रह्म इति - UGC 25 D–2008

(A) ज्ञानम् (B) विज्ञानम्
(C) अवस्तु (D) वस्तु

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 37

270. वेदान्तसारे अनिर्वचनीयं किम् - UGC 25 D–2012

(A) ईश्वरः (B) जीवः
(C) जगत् (D) ब्रह्म

स्रोत–भारतीय दर्शन – चन्द्रधर शर्मा, पृष्ठ- 250

271. वेदान्तवाक्यानामद्वितीये ब्रह्मणि तात्पर्यस्यावधारणं केन भवति - DSSSB TGT–2014

(A) श्रवणेन (B) मननेन
(C) निदिध्यासनेन (D) स्मरणेन

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 151

259. (B) 260. (A) 261. (B) 262. (B) 263. (A) 264. (B) 265. (B) 266. (A) 267. (A) 268. (A) 269. (D) 270. (D) 271. (A)

272. जन्माद्यस्य यतः 'अस्य जगतो जन्मादियस्माद्भवति तद् ब्रह्म' इत्येतत् ब्रह्मणः कीदृशः लक्षणम् - DSSSB TGT–2014

(A) स्वरूपलक्षणम् (B) तटस्थलक्षणम्
(C) लक्षणं न भवति (D) विशिष्टलक्षणम्

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 5

273. ब्रह्मलक्षणसूत्र है- UGC 73 D–2014

(A) अथातो धर्मजिज्ञासा (B) शास्त्रयोनित्वात्
(C) जन्माद्यस्य यतः (D) प्रत्यक्षानुमानोपमानशब्दाः

स्रोत–(i) वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 5
(ii) ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्य - सत्यानन्द सरस्वती, पेज- 34

274. वेदान्तदर्शने नित्यं वस्तु -

(A) जगद् (B) आत्मा
(C) ब्रह्म (D) जीवः

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 37

275. अद्वैतानुभवपरक श्रुतिवाक्य है - UGC 73 J–2013

(A) तत्त्वमसि (B) सर्वं खल्विदं ब्रह्म
(C) अहं ब्रह्मास्मि (D) अयमात्मा ब्रह्म

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 141

276. अद्वैतवेदान्त मत में महावाक्य का अर्थ है- UGC 73 D–2009

(A) जीवब्रह्मभेदपरः (B) जीवमात्रपरः
(C) जीवब्रह्मैक्यपरः (D) जगत्सत्यत्वपरः

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ-122

277. (i) 'तत्त्वमसि' है – UP PGT–2000
(ii) 'तत्त्वमसि' माना जाता है - BHU AET–2011, 2010
(iii) तत्त्वमसि इति किमस्ति?

(A) ब्रह्मवाक्य (B) महावाक्य
(C) आचार्यवाक्य (D) अनुभववाक्य

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 121

278. अधस्तनवाक्यानां सत्यासत्यपर्यायेषु समीचीनं विचिनुत– MH-SET–2013

(अ) वेदान्तसारे 'अहं ब्रह्मास्मि' इति अनुभववाक्यार्थो वर्तते।
(ब) वेदान्तसारे 'तत्त्वमसि' इत्यखण्डार्थबोधकं वाक्यं विद्यते।
(स) वेदान्तसारे त्रिवृत्करणं विद्यते
(द) वेदान्तसारे ईश्वरवर्णनम् अस्ति

(A) सत्यम्, सत्यम्, असत्यम्, असत्यम्
(B) सत्यम्, असत्यम्, सत्यम्, असत्यम्
(C) असत्यम्, सत्यम्, असत्यम्, सत्यम्
(D) असत्यम्, असत्यम्, सत्यम्, सत्यम्

स्रोत–वेदान्तसार – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 249,232,71

279. 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म' यह महावाक्य किस उपनिषद् से सम्बद्ध है - UP PGT–2002

(A) बृहदारण्यकोपनिषद् (B) छान्दोग्योपनिषद्
(C) श्वेताश्वतरोपनिषद् (D) माण्डूक्योपनिषद्

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 91

280. शब्दः कस्य गुणः? MH-SET–2016

(A) वायोः (B) पृथिव्याः
(C) अपाम् (D) आकाशस्य

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 80

281. उपनिषद्-महावाक्येषु किं नास्ति– JNU MET–2015, JNU M.Phil/Ph.D–2015

(A) अहं ब्रह्मास्मि (B) तत् त्वम् असि
(C) प्रज्ञानं ब्रह्म (D) सर्वं खल्विदं ब्रह्म

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 122

282. (i) 'तत्त्वमसि' महावाक्य किससे सम्बन्धित है -
(ii) 'तत्त्वमसीति' महावाक्यं कुत्रास्ति - JNU MET–2014, UP PGT–2002

(A) छान्दोग्योपनिषद् (B) बृहदारण्यकोपनिषद्
(C) माण्डूक्योपनिषद् (D) कठोपनिषद्

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 122

272. (B) 273. (C) 274. (C) 275. (C) 276. (C) 277. (B) 278. (A) 279. (B) 280. (D) 281. (D) 282. (A)

283. महावाक्यचतुष्टयं कस्मिन् दर्शने सूचितम् -BHU B.Ed–2014
(A) सांख्य (B) अद्वैत
(C) न्याय (D) मीमांसा

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 122

284. 'अहं ब्रह्मास्मि' का सम्पादन कौन-सा दर्शन करता है- BHU MET–2008, 2011, 2012
(A) योगदर्शन (B) सांख्यदर्शन
(C) वेदान्तदर्शन (D) बौद्धदर्शन

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 141

285. 'अहं ब्रह्मास्मि' को क्या कहा जाता है-BHU MET–2014
(A) अर्थवादवाक्य (B) महावाक्य
(C) निषेधवाक्य (D) विधिवाक्य

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 122

286. (i) 'तत्त्वमसि' इति महावाक्यं कुत्र व्याख्यातम्–
(ii) 'तत्त्वमसि' का प्रतिपादन कौन-सा दर्शन करता है- RPSC SET–2010, BHU MET–2010, BHU AET–2012, WB SET–2010
(A) जैनदर्शन (B) बौद्धदर्शन
(C) न्यायदर्शन (D) अद्वैतवेदान्त

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 121,122

287. 'अहं ब्रह्मास्मि' यह वाक्य है - UGC 73 D–2005
(A) व्यवहृतिवाक्य (B) नीतिवाक्य
(C) अनुभूतिवाक्य (D) उपसंहृतिवाक्य

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 141

288. (i) 'तत्त्वमसि' इति वाक्ये अद्वैतिभिः कीदृशी लक्षणा आश्रियते? UGC 25 J–2013
(ii) 'तत्त्वमसि' इति वाक्यसमन्वये वेदान्ताभिमत लक्षणा वर्तते - RPSC-SET–2013-14
(iii) वेदान्तसारानुसारं 'तत्त्वमसि' इत्यस्मिन् वाक्ये कीदृशी लक्षणा– WB SET–2010,
(iv) 'तत्त्वमसि' इति महावाक्यार्थबोधे प्रवर्तमानाशक्तिः अस्ति? UP GDC–2008, SU Ph. D–2015
(v) वेदान्तसार के अनुसार तत्त्वमसि महावाक्य से अखण्डार्थ का बोध कराती है?
(A) जहल्लक्षणा (B) जहदजहल्लक्षणा
(C) अजहल्लक्षणा (D) उपादानलक्षणा

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 127

289. इनमें से कौन सा सम्बन्धत्रय में नहीं आता - UP PGT–2013
(A) समानाधिकरणम् (B)लक्ष्यलक्षणभावः
(C) विशेष्य-विशेषणभावः (D) प्रत्यक्षप्रत्ययभावः

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ-122

290. जहदजहल्लक्षणा कहाँ वर्णित है? BHU MET–2016
(A) सांख्यकारिका (B) वेदान्तसार
(C) काव्यप्रकाश (D) ध्वन्यालोक

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 127

291. तत्त्वमसीतिमहावाक्ये चिन्मात्रस्याथवा शुद्धब्रह्मणः अनुभूत्यर्थं कीदृशी लक्षणा स्वीक्रियते? UGC 73 Jn–2017
(A) जहल्लक्षणा (B) भागत्यागलक्षणा
(C) अजहल्लक्षणा (D) असिद्धलक्षणा

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 128

292. ऋग्वेदात् उद्धृतं महावाक्यं किम् - DSSSB TGT–2014
(A) प्रज्ञानं ब्रह्म (B) अहं ब्रह्मास्मि
(C) तत्त्वमसि (D) अयमात्मा ब्रह्म

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 122

293. 'अहं ब्रह्मास्मि' यहाँ अहम् पद में वृत्ति है - UGC 25 J–1995
(A) अभिधा (B) लक्षणा
(C) व्यञ्जना (D) जहदजहल्लक्षणा

स्रोत–

294. 'तत्त्वमसि' इस वाक्य में तत् पद का अर्थ है- UGC 73 D–2005
(A) ईश्वर (B) ब्रह्म
(C) जीव (D) माया

स्रोत–वेदान्तसार – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 103

295. अद्वैतवेदान्तिभिः 'तत्त्वमसि' इति महावाक्यादखण्डार्थ-बोधप्रक्रियायां स्वीक्रियते? DU-Ph.D–2016
(A) अभिहितान्वयवादः (B) अन्विताभिधानवादः
(C) तात्पर्यवादः (D) अखण्डार्थवादः

स्रोत–वेदान्तसार – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 232

283. (B) 284. (C) 285. (B) 286. (D) 287. (C) 288. (B) 289. (D) 290. (B) 291. (B) 292. (A) 293. (B) 294. (B) 295. (A)

296. 'तत्त्वमसि' वाक्य के अर्थ बोध हेतु स्वीकार की जाती है - UP PGT–2013

(A) जहल्लक्षणा (B) अजहल्लक्षणा
(C) भागलक्षणा (D) व्यञ्जना

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ-127

297. 'तत्त्वमसि' इत्यनेन किं वर्ण्यते? MH-SET–2016

(A) अनुभववाक्यार्थः (B) अनुवादवाक्यार्थः
(C) उपदेशवाक्यार्थः (D) विधिवाक्यार्थः

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 122

298. (i) अद्वैतवेदान्त में स्वीकृत प्रमाणों की संख्या है-
(ii) अद्वैत वेदान्त में ज्ञान (प्रमाणों) के स्रोत हैं?
(iii) अद्वैतवादियों के अनुसार प्रमाण हैं?
(iv) अद्वैतवेदान्ते कति प्रमाणानि?
UGC 73 D–2007, 2010, UGC 25 J–2002, DSSSB TGT–2014, UGC 09 D–2013

(A) त्रीणि (B) पञ्च
(C) षट् (D) चत्वारि

स्रोत–वेदान्तसार – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 73

299. अधस्तनेषु वाक्येषु किं महावाक्यं न भवति? K-SET–2014

(A) तत्त्वमसि (B) अहं ब्रह्मास्मि
(C) ईशावास्यमिदं सर्वम् (D) प्रज्ञानं ब्रह्म

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 122

300. अद्वैतवादियों के अनुमान के कितने अवयव हैं - UGC 73 J–2010, BHU AET–2012

(A) त्रयः (B) चत्वारः
(C) पञ्च (D) षट्

स्रोत–वेदान्तसार – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 75

301. वेदान्त में किसका प्रमाण स्वीकार्य है - BHU MET–2010

(A) रामायण का (B) महाभारत का
(C) भागवत का (D) वेद का

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 7

302. अद्वैतवेदान्ते षष्ठं प्रमाणं किम् - BHU AET–2012

(A) प्रत्यक्षम् (B) अनुमानम्
(C) अनुपलब्धिः (D) उपादानम्

स्रोत–वेदान्तसार – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 78

303. अर्थापत्तिनिरूपणे उत्तम् - BHU AET–2012

(A) तत्त्वमसि
(B) सर्वं खल्विदं ब्रह्म
(C) पीनो देवदत्तः दिवा न भुङ्क्ते
(D) यत्र यत्र धूमस्तत्र तत्र वह्निः

स्रोत–वेदान्तसार – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 77

304. परिणामवाद सिद्धान्त है- UGC 73 D–2012

(A) नैयायिकों का (B) वेदान्तियों का
(C) मीमांसकों का (D) सांख्यों का

स्रोत–वेदान्तसार – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 81

305. विवर्तवाद के समर्थक नहीं हैं - UGC 73 D–2012

(A) सायणाचार्यः (B) विद्यारण्यः
(C) वाचस्पतिः (D) अप्पयदीक्षितः

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 117

306. जगन्मिथ्या सिद्धान्त है - BHU AET–2012, UGC 73 J–2013

(A) द्वैतवेदान्त का (B) न्यायसिद्धान्त का
(C) सांख्यशास्त्र का (D) अद्वैतवेदान्त का

स्रोत–वेदान्तसार – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 49

307. जीवब्रह्मैक्य सिद्धान्त है - UGC 73 S–2013

(A) विशिष्टाद्वैतवेदान्त (B) अद्वैतवेदान्त
(C) माध्ववेदान्त (D) योगशास्त्र

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 30

308. (i) जगत् ब्रह्म का होता है - UP PGT–2003,
(ii) संसार है ब्रह्म का? UGC 73 S–2013,
(iii) जगत् ब्रह्मणो भवति? UGC 25 J–1998

(A) परिणाम (B) विवर्त
(C) कार्य (D) किमपि न

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 116

296. (C) 297. (C) 298. (C) 299. (C) 300. (A) 301. (D) 302. (C) 303. (C) 304. (D) 305. (A) 306. (D) 307. (B) 308. (B)

309. परिणामवाद और विवर्तवाद में समानतत्त्व है - UGC 73 D–2012

(A) जगत्सत्यत्वम् (B) आत्मसत्यत्वम्
(C) देहात्मैक्यम् (D) व्यक्तिस्वातन्त्र्यम्

स्रोत–भारतीय दर्शन –जगदीशचन्द्र मिश्र, पृष्ठ- 568

310. 'जगन्मिथ्यात्वं' सिद्धान्तित किया है-UGC 73 D–2012

(A) विजयीन्द्रतीर्थेन (B) वाचस्पतिमिश्रेण
(C) वल्लभाचार्येण (D) मध्वाचार्येण

स्रोत–वेदान्तसार – कृष्णकान्त त्रिपाठी, पृष्ठ- 10-11

311. (i) विवर्तवादमङ्गीकुर्वन्ति?
(ii) विवर्तवादस्य प्रवर्तकाः के सन्ति?
(iii) विवर्तवादः कस्य सिद्धान्तः?
(iv) विवर्तवाद स्वीकार करते हैं - UGC 25 S–2013
(v) विवर्तवादं के दार्शनिकाः स्वीकुर्वन्ति?
(vi) विवर्तवादः दर्शने पुरस्कृतः–
(vii) विवर्तवाद का सिद्धान्त किस दर्शन का है - UGC 73 D–2005, 2006, 2011, 2009, J–2007, GJ-SET–2004, HAP–2014

(A) सांख्याः (B) योगिनः
(C) अद्वैतवेदान्तिनः (D) बौद्धाः

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 115

312. (i) विवर्त का उदाहरण है -
(ii) विवर्तस्य उदाहरणम् अस्ति UGC 73 D–2011, UGC 25 J–2014

(A) गगनकुसुमम् (B) बन्ध्यासुतः
(C) शुक्तिकारजतम् (D) स्वपुष्पम्

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ-115

313. 'मिथ्यारूप से अन्य वस्तु के रूप में भासित होना' कहलाता है - UP PGT–2004, 2009

(A) परिणामवाद (B) आरम्भवाद
(C) असत्कार्यवाद (D) विवर्तवाद

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 116

314. विवर्त का आशय है- UP PGT–2004

(A) यथार्थ परिवर्तन (B) अयथार्थ परिवर्तन
(C) दोनों प्रकार के परिवर्तन(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 116,117

315. अद्वैत आचार्यों में प्रतिपादित किया हुआ 'ख्यातिवाद' है - UGC 73 J–2007

(A) अनिर्वचनीयख्याति (B) अख्याति
(C) सत्ख्याति (D) अन्यथाख्याति

स्रोत–भारतीयदर्शन – चन्द्रधर शर्मा, पृष्ठ- 207

316. परिणामः कः - BHU AET–2012

(A) उपादानविषयकसत्ताककार्यापत्तिः
(B) उपादानसमसत्ताककार्यापत्तिः
(C) उपादानाधिकसत्ताककार्यापत्तिः
(D) उपादानन्यूनसत्ताककार्यापत्तिः

स्रोत–भारतीयदर्शन - जगदीशचन्द्र मिश्र, पेज-568

317. (i) वेदान्तशास्त्रस्य वादो भवति - BHU AET–2012
(ii) अद्वैतवेदान्तस्य वादोऽस्ति? UGC 73 J–2012

(A) आरम्भवादः (B) विवर्तवादः
(C) सङ्घातवादः (D) ईश्वरवादः

स्रोत–(i) वेदान्तसार–सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 115-116
(ii) भारतीय दर्शन - हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पृष्ठ- 317

318. विवर्तो नाम .....? BHU AET–2012

(A) अतात्विकपरिवर्तनम् (B) माया
(C) तात्विकपरिवर्तनम् (D) स्वप्नः

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 115-116

319. 'विवर्त' का विचार है- UGC 73 J–2014

(A) प्रशस्तपादभाष्ये (B) तत्त्वकौमुद्याम्
(C) शाङ्करभाष्ये (D) अर्थसंग्रहे

स्रोत–भारतीय दर्शन – हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पृष्ठ- 316-317

320. (i) विवर्तो नाम किं विद्यते– UGC 25 J–2007

(A) कारणस्य समसत्ताकपरिणामः
(B) कारणस्य कार्यावस्था
(C) कारणात् विषमसत्ताकोत्पत्तिः
(D) कारणगुणादिमका कार्योत्पत्तिः

स्रोत–भारतीय दर्शन - जगदीशचन्द्र मिश्र, पृष्ठ- 568

309. (B) 310. (B) 311. (C) 312. (C) 313. (D) 314. (B) 315. (A) 316. (B) 317. (B) 318. (A) 319. (C) 320. (C)

321. (i) रज्जु में सर्प भ्रान्ति इसका उदाहरण है–
(ii) रज्जु में सर्प का ज्ञान कहलाता है-
(iii) रज्जु में सर्प का ज्ञान उदाहरण है– UGC 25 D–1997, 1998, J–2000

(A) परिणाम (B) अपवाद
(C) विक्षेप (D) विवर्त

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 116

322. (i) 'सतत्त्वतोऽन्यथा प्रथा' है– UGC 73 D–1996
(ii) सतत्त्वतोऽन्यथाप्रथा.....इत्युदीरितः–GJ-SET–2008

(A) विकार (B) विवर्त
(C) संवर्त्त (D) परिणाम

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 115

323. विवर्तवाद के प्रवर्त्तक हैं – UGC 73 D–1997

(A) रामानुज (B) शङ्कर
(C) माध्व (D) वल्लभ

स्रोत–भारतीय दर्शन – हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पृष्ठ- 317

324. (i) 'अतत्त्वतोऽन्यथा प्रथा' इत्यस्ति? GJ-SET–2013,
(ii) 'अतत्त्वतोऽन्यथा' अनेन कारिकया प्रतिपादितम्?
(iii) 'अतत्त्वतोऽन्यथाप्रथा' नाम भवति- UGC 73 J–2015, CCSUM Ph.D–2016, MGKV Ph. D–2016

(A) विवर्तः (B) विकारः
(C) परिणामः (D) विशेषः

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 115

325. (i) 'ब्रह्मसत्यं जगन्मिथ्या' यह सिद्धान्त है -
(ii) 'ब्रह्मसत्यं जगन्मिथ्या' इति कस्य दर्शनस्य मतम्– UGC 73 D–2007, J–2005, BHU AET–2012

(A) पूर्वमीमांसायाम् (B) सांख्यदर्शने
(C) वैशेषिकदर्शने (D) अद्वैतवेदान्ते

स्रोत–वेदान्तसार – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 49

326. वेदान्तदर्शने मनसः उत्पत्तिः कथं भवति – UGC 73 Jn–2017

(A) जीवब्रह्मयोगेन (B) जगत्ज्ञानयोगेन
(C) जगदज्ञानयोगेन (D) पञ्चतन्मात्राणां सत्वांशयोगेन

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 66

327. पञ्चप्राणादिवायूनां कुतः उत्पत्तिः वेदान्तमते- UGC 25 D–2010

(A) तामसाद् भूतांशात् (B) व्यस्ताद् राजसादंशात्
(C) सात्विकादंशात् (D) समस्ताद् राजसादंशात्

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 72

328. सुषुप्तिकाले कथ्यते - UGC 25 D–2011

(A) ब्रह्मा (B) विराट्
(C) प्राज्ञः (D) विश्वः

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 46

329. समष्टिव्यष्टिभिप्रायेण एकमनेकमिति व्यवह्रियते इति वाक्यं विद्यते– CCSUM Ph.D–2016

(A) मोक्षविषये (B) ईश्वरविषये
(C) अध्यारोपविषये (D) अज्ञानविषये

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 42

330. स्थूलप्रपञ्चोत्पत्तिः केभ्यः सम्भवति- UGC 25 D–2013

(A) ईश्वरादिभ्यः (B) मानवशरीरेभ्यः
(C) पञ्चीकृतपञ्चभूतेभ्यः (D) अपञ्चीकृतपञ्चभूतेभ्यः

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 78

331. विवर्तो .... विद्यते – UGC 25 J–2012

(A) कारणस्य कार्यावस्था
(B) कारणस्य समसत्ताकपरिणामः
(C) कारणगुणात्मकता कार्योत्पत्तिः
(D) अतत्वतोऽन्यथा प्रथा

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ-115

332. अज्ञानसमष्ट्युपहितस्य चैतन्यस्य एका का सञ्ज्ञा नास्ति? HE–2015

(A) सर्वेश्वरः (B) प्राज्ञः
(C) अव्यक्तः (D) अन्तर्यामी

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 43

333. व्यष्ट्युपहितचैतन्यमस्ति– CCSUM Ph.D–2016

(A) सर्वज्ञः (B) प्राज्ञः
(C) ब्रह्म (D) ईश्वरः

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 47

321. (D) 322. (A) 323. (B) 324. (A) 325. (D) 326. (D) 327. (D) 328. (C) 329. (D) 330. (C) 331. (D) 332. (B) 333. (B)

334. अज्ञान की विशुद्धसत्त्वप्रधानसमष्टि से उपहित चैतन्य कहलाता है? UGC 73 D–2015

(A) प्राज्ञः (B) विश्वः
(C) ईश्वरः (D) वैश्वानरः

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 42

335. वेदान्तसारग्रन्थे 'सूत्रात्मा' इत्यस्य अर्थः अस्ति? JNU M.Phil/Ph.D–2014

(A) हिरण्यगर्भः (B) तैजसः
(C) ईश्वरः (D) वैश्वानरः

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 74

336. वेदान्तानुसार बुद्धि का स्वरूप है- UGC 25 J–1999

(A) निश्चय (B) अनुसन्धान
(C) अभिमान (D) सङ्कल्प-विकल्प

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 66

337. वेदान्तानुसारम् अज्ञानोपहितं चैतन्यं स्वप्रधानतया जगतः– K-SET–2013

(A) उपादानकारणम् (B) असमवायिकारणम्
(C) निमित्तकारणम् (D) कारणमेव च

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 59

338. व्यष्ट्युपहितं चैतन्यं किमुच्यते? MH-SET–2011

(A) विश्वम् (B) विराट्
(C) वैश्वानरः (D) धनञ्जयः

स्रोत–वेदान्तसार – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 206

339. वेदान्तानुसारेण निश्चयात्मिका अन्तःकरणवृत्तिः का? K-SET–2015

(A) बुद्धिः (B) मनः
(C) चित्तम् (D) अहङ्कारः

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 65, 66

340. वेदान्तानुसारेण बुद्धिः .... भवति– K-SET–2013

(A) निश्चयात्मिकान्तः करणवृत्तिः
(B) सङ्कल्पविकल्पात्मिकान्तः करणवृत्तिः
(C) अनुसन्धानात्मिकान्तः करणवृत्तिः
(D) अभिमानात्मिकान्तः करणवृत्तिः

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 66

341. अद्वैतवेदान्तियों का व्यवहार में किनका नय है ? UGC 73 J–2010

(A) द्वैतिनाम् (B) भाट्टानाम्
(C) प्राभाकराणाम् (D) विशिष्टाद्वैतिनाम्

स्रोत–भारतीय दर्शन – चन्द्रधर शर्मा, पृष्ठ- 191

342. वेदान्त में सत्तात्रैविध्य स्वीकृत किया है- UGC 73 J–2007, D–2012,

(A) अद्वैत (B) माध्व
(C) वल्लभ (D) विशिष्टाद्वैत

स्रोत–भारतीय दर्शन – हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पृष्ठ- 296

343. कुछ बहुजीवाज्ञानवादी हैं - UGC 73 S–2013

(A) अद्वैतवेदान्त (B) द्वैतवेदान्त
(C) शुद्धाद्वैतवेदान्त (D) द्वैताद्वैतवेदान्त

स्रोत–भारतीय दर्शन – जगदीशचन्द्र मिश्र, पृष्ठ- 550

344. कौन यह मानते हैं कि वेदान्त वाक्य निरर्थक हैं? क्योंकि वे कोई क्रिया नहीं करते– UGC 73 J–2008

(A) सुरेश्वरः (B) श्रीहर्षः
(C) जैमिनिः (D) कणादः

स्रोत–

345. 'अज्ञानोपहितं चैतन्यमात्मा' यह किसका मत है ? BHU RET–2008

(A) वेदान्त का (B) बौद्ध का
(C) भाट्टमीमांसक का (D) चार्वाक का

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 53-54

346. मोक्ष का अधिकार है - UGC 73 D–2004

(A) सभी के लिए (B) ब्राह्मणों के लिए
(C) स्त्रियों के लिए (D) शूद्रों के लिए

स्रोत– वेदान्तसार - राकेशशास्त्री, पेज–28

347. 'ब्रह्मसत्यं जगन्मिथ्या' उक्ति है- UGC 73 D–2004

(A) शङ्कराचार्य की (B) रामानुजाचार्य की
(C) वल्लभाचार्य की (D) व्यास की

स्रोत–वेदान्तसार – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 28

334. (C) 335. (A) 336. (A) 337. (C) 338. (A) 339. (A) 340. (A) 341. (B) 342. (A) 343. (A) 344. (D) 345. (A) 346. (A) 347. (A)

348. अद्वैतवेदान्ते कयोः अद्वैतत्वं मतम्–CVVET–2017
(A) प्रकृतिपुरुषयोः (B) जगज्जीवयोः
(C) जीवब्रह्मणोः (D) भगवद्भक्तयोः
स्रोत– वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–30,31

349. ब्रह्म मायया आवृतं सत् अभिधीयते–CVVET–2017
(A) जगद् इति (B) ईश्वर इति
(C) परब्रह्म इति (D) सत् इति
स्रोत– भारतीय दर्शन - चन्द्रधर शर्मा, पेज–252

350. वेदान्तपरिभाषायाः मङ्गलश्लोको वर्तते - BHU AET–2012
(A) मङ्गलं भगवान् विष्णुः (B) अथातो ब्रह्मजिज्ञासा
(C) नत्वा सरस्वतीम् (D) यदविद्याविलासेन
स्रोत–वेदान्तपरिभाषा (1/1)–गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पृष्ठ- 01

351. ब्रह्मविद् किं भवति ? BHU AET–2012
(A) धर्मात्मा भवति (B) ब्रह्मैव भवति
(C) सुखी भवति (D) अज्ञानी भवति
स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 31

352. स्वप्नस्य सत्ता कीदृशी ? BHU AET–2012
(A) व्यावहारिकी (B) प्रातिभासिकी
(C) पारमार्थिकी (D) अलीकात्मिकी
स्रोत–वेदान्तसार-कृष्णकान्त त्रिपाठी,भू0 पेज-25

353. 'चित्' शब्दस्य कोऽर्थः ? BHU AET–2012
(A) अन्धकारः (B) प्रकाशः
(C) भ्रमः (D) आनन्दः
स्रोत–(i) वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 03
(ii) वेदान्तसार - राकेश शास्त्री, पेज–112

354. निर्वातदीपदचलं भवित - UGC 25 D–2013
(A) सविकल्पकसमाधिः (B) सगुणब्रह्मस्वरूपम्
(C) समष्टिजीवस्वरूपम् (D) निर्विकल्पकसमाधिः
स्रोत–वेदान्तसार-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–179

355. अद्वैतवेदान्तमते निरस्यते- UGC 73 J–2009
(A) जगन्मिथ्यात्ववादः (B) प्रस्थानत्रयम्
(C) प्रधानकारणवादः (D) प्रमाणषट्कवादः
स्रोत– वेदान्तसार-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–59

356. प्रमातृत्वादीनामविधिकत्वं सिद्धम् - UGC 73 D–2013
(A) बौद्धदर्शने (B) वैशेषिकदर्शने
(C) अद्वैतवेदान्ते (D) द्वैतवेदान्ते
स्रोत–

357. 'प्रपञ्चो ब्रह्मविवर्त' इति यह अस्वीकार करते हैं - UGC 73 D–2013
(A) वादीन्द्रतीर्थः (B) प्रकाशानन्दयतिः
(C) मधुसूदनसरस्वती (D) सदानन्दयतिः
स्रोत–

358. ''सुषुप्तवज्जाग्रति यो न पश्यति, द्वयं च पश्यन्नपि चाद्वयत्वतः तथा च कुर्वन्नपि निष्क्रियश्च यः, स आत्मविन्नान्य इतीह निश्चयः॥'' – इति पद्यं कस्मिन् ग्रन्थे अस्ति? JNU M.Phil/Ph.D –2015
(A) उपदेशसाहस्री (B) विवेकचूडामणिः
(C) अपरोक्षानुभूतिः (D) सौन्दर्यलहरी
स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 192

359. सुषुप्ति- उत्क्रान्ति अधिकरण है - UGC 73 J–2014
(A) जैमिनिसूत्रग्रन्थे (B) ब्रह्मसूत्रग्रन्थे
(C) भक्तिसूत्रग्रन्थे (D) धर्मसूत्रग्रन्थे
स्रोत–ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्य - सत्यानन्द सरस्वती, भू. पृष्ठ - 01

360. भागलक्षणा कहाँ वर्णित है- BHU MET–2011, 2012
(A) सांख्यकारिका में (B) वेदान्तसार में
(C) काव्यप्रकाश में (D) ध्वन्यालोक में
स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 126

361. सुषुप्त्यां चैतन्यप्रदीप्ताभिरतिसूक्ष्माभिः अज्ञानवृत्तिभिः आनन्दम् अनुभवतः– DU-Ph.D–2016
(A) सूत्रात्महिरण्यगर्भौ (B) विश्ववैश्वानरौ
(C) ईश्वरप्राज्ञौ (D) प्रकृतिपुरुषौ
स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 51

362. मनसः अधिष्ठातृदेवता वर्तते– BHU AET–2012
(A) चन्द्रः (B) वायुः
(C) सूर्यः (D) कालः
स्रोत–वेदान्तसार - राकेश शास्त्री, पेज– 212

348. (C) 349. (B) 350. (D) 351. (B) 352. (B) 353. (B) 354. (D) 355. (C) 356. (C) 357. (A) 358. (A) 359. (B) 360. (B) 361. (C) 362. (A)

363. अखिलबन्धरहितः ब्रह्मनिष्ठः कः? GJ-SET–2013
(A) अधिकारी (B) जीवन्मुक्तिः
(C) प्राज्ञः (D) ईश्वरः
स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 185-186

364. समीचीनम् उत्तरं चिनुत– WB-SET–2010

(क) ज्योतिष्टोमादीनि		**1. नैमित्तिकानि**	
(ख) सन्ध्यावन्दनादीनि		**2. प्रायश्चित्तानि**	
(ग) जात्येष्टादीनि		**3. नित्यानि**	
(घ) चान्द्रायणादीनि		**4. काम्यानि**	

	क	ख	ग	घ
(A)	1	2	3	4
(B)	4	3	1	2
(C)	3	4	2	1
(D)	2	1	4	3

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 14

365. अद्वैते सुषुप्ते देवता - UGC 25 D–2004
(A) वैश्वानरः (B) ईश्वरः
(C) हिरण्यगर्भः (D) अग्निः
स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 46

366. अनिर्वचनीयशब्दार्थः कः - UGC 25 J–2010
(A) सद्भिन्नत्वम् (B) असद्भिन्नत्वम्
(C) सदसद्भिन्नत्वम् (D) अन्यद् यत् किञ्चित्
स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 38

367. 'शोणो धावति' इत्यत्र का लक्षणा? UGC 25 J–2012
(A) भागलक्षणा (B) जहल्लक्षणा
(C) अजहल्लक्षणा (D) जहदजहल्लक्षणा
स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 127

368. षड्विधलिङ्गैः समुपेतं किम् ? UGC 25 J–2013
(A) श्रवणम् (B) मननम्
(C) निदिध्यासनम् (D) अध्यासः
स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 151

369. वेदान्तदर्शने कति अध्यायाः विद्यन्ते– KL-SET–2015
(A) अष्ट (B) चत्वारः
(C) सप्त (D) पञ्च
स्रोत–वेदान्तसार – राकेश शास्त्री, भू. पृष्ठ- 29

370. वेदान्तसारग्रन्थे श्रवणान्तर्गतषड्विधलिङ्गेषु कस्य गणना नास्ति? JNU M.Phil/Ph.D–2015
(A) अपूर्वता (B) अपूर्वः
(C) अभ्यासः (D) फलम्
स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 152

371. जहदजहल्लक्षणा स्वीकार करता है- UGC 73 J–1999
(A) अद्वैतवेदान्त (B) वैशेषिक
(C) सांख्य (D) बौद्ध
स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 127

372. भजगोविन्दम् सम्प्राप्ते सन्निहिते काले को धातुः न रक्षति ? DSSSB TGT–2014
(A) 'भू' सत्तायाम् (B) 'दृशिर्' प्रेक्षणे
(C) 'डुकृञ्' करणे (D) 'रक्ष' रक्षणे
स्रोत–

373. 'स्थूलोऽहं' यह अनुभव प्रमाणित करता है- UGC 73 D–2014
(A) अद्वैतवादम् (B) स्याद्वादम्
(C) क्षणभङ्गवादम् (D) देहात्मवादम्
स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 96

374. 'द्वैत' मत में प्रपञ्च है- UGC 73 D–2014
(A) असत्य (B) विवर्त
(C) नित्य (D) विष्णुस्वरूप
स्रोत–भारतीय दर्शन – जगदीशचन्द्र मिश्र, पृष्ठ- 638

375. विपरीतलक्षणा का दूसरा नाम है? UP PGT–2009
(A) अजहल्लक्षणा (B) जहदजल्लक्षणा
(C) जहल्लक्षणा (D) गौणीलक्षणा
स्रोत– काव्यप्रकाश - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–123, 124

376. वेदान्तसारस्य वर्णनानुसारं सम्बन्धत्रये न परिगण्यते- UK SLET–2015
(A) पदयोः समानाधिकरण्यम्
(B) पदार्थयोर्विशेषविशेष्यभावः
(C) प्रत्यगात्मलक्षणयोर्लक्ष्यलक्षणभावः
(D) अन्योऽन्यमिथुनवृत्तिता
स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 122

363. (B) 364. (B) 365. (B) 366. (C) 367. (C) 368. (A) 369. (B) 370. (B) 371. (A) 372. (C) 373. (D) 374. (C) 375. (B) 376. (D)

377. रामानुजाचार्य ने किस आचार्य की अपूर्ण इच्छा को पूर्ण किया - BHU AET–2011
(A) यादवप्रकाश (B) सुदर्शनसूरि
(C) यामुनाचार्य (D) वल्लभाचार्य
स्रोत–भारतीय दर्शन – जगदीशचन्द्र मिश्र, पृष्ठ- 600

378. मायाकृत-लोकसत्ताभासः वर्णितोऽस्ति - UP GIC–2015
(A) तर्कसंग्रहे (B) वेदान्तसारे
(C) त्रिपिटके (D) त्रिषु कुत्रापि न
स्रोत–वेदान्तसार - कृष्णकान्त त्रिपाठी, भू. पृष्ठ- 25

379. अजहल्लक्षणाया उदाहरणं भवति - UGC 25 J–2015
(A) शोणो धावति (B) तत्त्वमसि
(C) गङ्गायां घोषः (D) सोऽयं देवदत्तः
स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 127

380. अधोलिखितेषु साक्षात्कारोपयोगि भवति - UGC 25 J–2015
(A) उपक्रमः (B) अपूर्वता
(C) निदिध्यासनम् (D) फलम्
स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 152

381. 'जीवब्रह्मैक्यं शुद्धचैतन्यं प्रमेयं तत्र।' यह पंक्ति किस ग्रन्थ से उद्धृत है– UP PGT–2005
(A) तर्कभाषा (B) सांख्यकारिका
(C) वेदान्तसार (D) प्रशस्तपादभाष्य
स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 30

382. अद्वैतमत के अनुसार देह में अहं प्रत्यय है - UGC 73 D–2008
(A) मुख्यः (B) गौणः
(C) मिथ्या (D) अमुख्यः
स्रोत–

383. माध्ववेदान्त में मोक्ष का लक्षण - UGC 73 J–2012
(A) आत्मानुसन्धानः (B) नैजसुखानुभूतिः
(C) स्वस्वरूपानुभूतिः (D) ब्रह्मानुभूतिः
स्रोत–भारतीय दर्शन – जगदीशचन्द्र मिश्र, पृष्ठ- 638

384. प्रातिभासिकसत्ता वर्तते - UGC 73 D–2013
(A) शुक्तिरजते (B) ब्रह्मणि
(C) मायायाम् (D) व्यवहारे
स्रोत–वेदान्तसार – कृष्णकान्त त्रिपाठी, भू0 पृष्ठ- 25

385. मायाविच्छिन्नं चैतन्यं भवति - BHU AET–2012
(A) जीवः (B) परमेश्वरः
(C) माया (D) शरीरम्
स्रोत– भारतीयदर्शन-चन्द्रधर शर्मा, पेज–253

386. बाह्येन्द्रियाणां तद्व्यतिरिक्तविषयेभ्यो निवर्तनं किम्– KL SET–2014, 2016
(A) दमः (B) शमः
(C) तितिक्षा (D) समाधिः
स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 20

387. अद्वैतवेदान्तशास्त्रे का शब्दवृत्तिः न स्वीक्रियते? JNU M.Phil/Ph.D–2015
(A) अभिधा (B) व्यञ्जना
(C) गौणी (D) लक्षणा
स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 55-56

388. अनुबन्धो नास्ति– CCSUM Ph.D–2016
(A) अधिकारी (B) विषयः
(C) प्रयोजनम् (D) अज्ञानम्
स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 09

389. 'विवर्तस्तु प्रपञ्चोऽयं ब्रह्मणोऽपरिणामिनः'–यह वचन है? UGC 73 J–2016
(A) सुरेश्वरस्य (B) वाचस्पतिमिश्रस्य
(C) जगदीशस्य (D) विश्वनाथस्य
स्रोत–भारतीय दर्शन – जगदीशचन्द्र मिश्र, पृष्ठ- 548-549

390. विज्ञानमय-मनोमय-प्राणमयेति कोशत्रयं मिलितं सत् किमुच्यते? RPSC-SET–2013-14
(A) सूक्ष्मशरीरम् (B) स्थूलशरीरम्
(C) कारणशरीरम् (D) अज्ञानशरीरम्
स्रोत–वेदान्तसार – आद्याप्रसाद मिश्र, पृष्ठ- 66

377. (C) 378. (B) 379. (A) 380. (C) 381. (C) 382. (C) 383. (C) 384. (A) 385. (B) 386. (A) 387. (B) 388. (D) 389. (B) 390. (A)

391. वेदान्तसारस्य प्रज्ञा नाम्नी टीकायाः प्रणेता कः?

KL SET–2010

(A) डॉ० मिथिलेशपाण्डेयः
(B) डॉ० श्यामानन्दमिश्रः
(C) डॉ० विजयकर्णः
(D) डॉ० हरीश्वरदीक्षितः

स्रोत–

392. वेदान्तसारस्य सुबोधिनी इति प्रसिद्धायाः व्याख्यायाः प्रणेता कः? **KL SET–2016**

(A) रामतीर्थयतिः (B) नृसिंहसरस्वती
(C) आपदेवः (D) मिथिलेशपाण्डेयः

स्रोत–वेदान्तसार – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 39

393. देवदत्तः कः अस्ति– **MH-SET–2011**

(A) उद्गिरणकरः (B) उन्मीलनकरः
(C) पोषणकरः (D) जृम्भणकरः

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 71

394. वेदान्तस्य मुख्योग्रन्थोऽस्ति? **RPSC SET–2010**

(A) शाङ्करभाष्यम् (B) ब्रह्मसूत्रम्
(C) वेदान्तसारः (D) तर्कभाषा

स्रोत–वेदान्तसार - राकेशशास्त्री, भू. पृष्ठ- 12

395. 'अहं ब्रह्मास्मि' इति वाक्यं कीदृशम्?

RPSC-SET–2010, 2013, 2014

(A) उपदेशवाक्यम् (B) अनुभववाक्यम्
(C) आप्तवाक्यम् (D) पुराणवाक्यम्

स्रोत–वेदान्तसार – राकेश शास्त्री, पृष्ठ- 249

396. 'सत्-चिद्-आनन्द' इति विशेषणं वर्तते?

RPSC-SET–2010

(A) इन्द्रस्य (B) वरुणस्य
(C) यमस्य (D) ब्रह्मणः

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 3

397. अध्यारोपः कस्मिन् दर्शनग्रन्थे वर्तते?

RPSC-SET–2010

(A) वेदान्तसारे (B) तर्कसंग्रहे
(C) तर्कभाषायाम् (D) सांख्यकारिकायाम्

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 36,37

398. स्वरूपानुपमर्देन रूपान्तराभासो भवति –

UGC 73 J–2012

(A) परिणामवादः (B) विवर्तवादः
(C) संघातवादः (D) विषयतावादः

स्रोत– भारतीयदर्शन - हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज–316

391. (*) 392. (B) 393. (D) 394. (B) 395. (B) 396. (D) 397. (A) 398. (B)

06 अर्थसंग्रह

1. **(i) अर्थसंग्रहस्य प्रणेता कः?**
(ii) अर्थसंग्रहस्य कर्ता कः अस्ति –
UGC 73 J–2008, UGC 25 J–2012
(A) लौगाक्षिभास्करः (B) कुमारिलभट्टः
(C) शम्भुभट्टः (D) आपदेवः
स्रोत–अर्थसंग्रह – राजेश्वरशास्त्री मुसलगाँवकर, भू. पृष्ठ- 23

2. **''अथातो धर्मजिज्ञासा'' किसका सूत्र है-**
UGC 73 J–2015, BHU MET–2009, 2014
(A) न्यायदर्शन (B) मीमांसादर्शन
(C) वैशेषिकदर्शन (D) सांख्यदर्शन
स्रोत–अर्थसंग्रह – राजेश्वरशास्त्री मुसलगाँवकर, पृष्ठ- 06

3. **'अथातो धर्मजिज्ञासा' किस दर्शन का उद्घोष है?**
H-TET– 2015
(A) पूर्वमीमांसा (B) उत्तरमीमांसा
(C) सांख्य (D) न्याय
स्रोत–अर्थसंग्रह - राजेश्वरशास्त्री मुसलगाँवकर, पृष्ठ-06

4. **मीमांसादर्शनानुसारं वेदः कीदृशः भवति -**
BHU AET–2010
(A) पौरुषेयः (B) अपौरुषेयः
(C) कविनिर्मितः (D) अर्थहीनः
स्रोत–अर्थसंग्रह - राजेश्वरशास्त्री मुसलगाँवकर, पृष्ठ-58

5. **वेदस्य अपौरुषेयतायाः परिपोषकः कः?**
BHU AET–2011
(A) न्यायः (B) वैशेषिकः
(C) सांख्यः (D) मीमांसा
स्रोत–अर्थसंग्रह - राजेश्वरशास्त्री मुसलगाँवकर, पृष्ठ-58

6. **मीमांसादर्शनस्य सूत्रकारः कः? BHU AET–2012**
(A) स्कन्दस्वामी (B) शङ्कराचार्यः
(C) लौगाक्षिभास्करः (D) जैमिनिः
स्रोत–अर्थसंग्रह - राजेश्वरशास्त्री मुसलगाँवकर, भू0 पृष्ठ-10

7. **'गुरुमतम्' से मीमांसा दर्शन में जिसके मत का उल्लेख होता है वह है - BHU MET–2015**
(A) प्रभाकरमिश्र (B) लौगाक्षिभास्कर
(C) कुमारिलभट्ट (D) शालिकनाथ
स्रोत–अर्थसंग्रह - राजेश्वरशास्त्री मुसलगाँवकर, भू0पृष्ठ-17

8. **विधि-निषेध सिद्धान्त का प्रतिपादक दर्शन है -**
BHU MET–2014
(A) मीमांसा (B) पुराण
(C) न्यायशास्त्र (D) सांख्यदर्शन
स्रोत–अर्थसंग्रह - सत्यप्रकाश शर्मा, भू0 पृष्ठ-12-16

9. **(i) पूर्वमीमांसा दर्शन के प्रवर्तक हैं? BHU MET–2012**
(ii) मीमांसासूत्रस्य प्रवर्तकः कः? UGC 73 D–2008, 2010
(A) स्कन्दस्वामी (B) शङ्कराचार्य
(C) लौगाक्षिभास्कर (D) जैमिनि
स्रोत–

10. **पूर्वमीमांसादर्शने कति अध्यायाः सन्ति -**
BHU AET–2011
(A) 5 (B) 12
(C) 20 (D) 16
स्रोत–अर्थसंग्रह – राजेश्वरशास्त्री मुसलगाँवकर, भू. पृष्ठ- 12

11. **'अथातो धर्मजिज्ञासा' इति जैमिनीयसूत्रे वेदाध्ययनस्य दृष्टार्थत्वं को ब्रूते? UGC 25 JL– 2016**
(A) 'अथ' शब्दः (B) 'अतः' शब्दः
(C) 'धर्म' शब्दः (D) 'जिज्ञासा' शब्दः
स्रोत–अर्थसंग्रह – राजेश्वरशास्त्री मुसलगाँवकर, पृष्ठ- 06

12. **(i) वेदः अस्ति? UGC 25 D–2012, GJ SET–2016**
(ii) अर्थसंग्रहमते वेदभागः कतिविधः –
(iii) मीमांसकमते वेदः कतिधा भवति – BHU AET–2011
(A) द्विविधः (B) त्रिविधः
(C) चतुर्विधः (D) पञ्चविधः
स्रोत–अर्थसंग्रह – राजेश्वरशास्त्री मुसलगाँवकर, पृष्ठ- 20

1. (A) 2. (B) 3. (A) 4. (B) 5. (D) 6. (D) 7. (A) 8. (A) 9. (D) 10. (B) 11. (B) 12. (D)

13. दर्शपूर्णमास में अङ्गयाग होते हैं- UGC 73 D–2014

(A) पञ्च (B) षट्
(C) नव (D) चत्वारः

स्रोत–श्रौतयज्ञपरिचय – वेणीराम शर्मा गौड, पृष्ठ- 09

14. अमावस्या में प्रधानयाग होते हैं- UGC 73 D–2014

(A) चत्वारः (B) त्रयः
(C) षट् (D) पञ्च

स्रोत–श्रौतयज्ञपरिचय – वेणीराम शर्मा गौड, पृष्ठ- 09

15. (i) विधेः सहकारिप्रमाणानि –
(ii) प्रयोगविधेः सहकारिकारणानि भवन्ति -
UGC 25 D–2014, J–2015, BHU AET–2012

(A) पञ्च (B) षट्
(C) सप्त (D) नव

स्रोत–अर्थसंग्रह – राजेश्वरशास्त्री मुसलगाँवकर, पृष्ठ- 202

16. (i) विनियोगविधौ कति प्रमाणानि गणितानि -
(ii) विनियोगविधि के सहकारिभूत प्रमाण हैं?
(iii) विनियोगविधेः सहकारिप्रमाणानि कति भवन्ति?
BHU AET–2010, UGC 73 J–2012, D–2015, HAP–2016,

(A) षट् (B) नव
(C) पञ्च (D) दश

स्रोत–अर्थसंग्रह – राजेश्वरशास्त्री मुसलगाँवकर, पृष्ठ- 90

17. (i) मीमांसा के अनुसार भावना के प्रकार हैं
(ii) अर्थसंग्रहानुसारं भावना कतिधा -
(iii) मीमांसा दर्शन के अनुसार भावना के प्रकार हैं?
(iv) अर्थसंग्रहे कतिविधा भावना स्वीकृता?
UGC 25 S–2013, BHU MET–2014, BHU AET–2011, 2012, RPSC-SET–2010, CVVET–2017

(A) द्विविधा (B) त्रिविधा
(C) चतुर्विधा (D) पञ्चविधा

स्रोत–अर्थसंग्रह – राजेश्वरशास्त्री मुसलगाँवकर, पृष्ठ- 23

18. विनियोक्त्री श्रुति के कितने प्रकार हैं -
BHU MET–2014

(A) तीन (B) चार
(C) पाँच (D) छः

स्रोत–अर्थसंग्रह – राजेश्वरशास्त्री मुसलगाँवकर, पृष्ठ- 95

19. (i) अज्ञातार्थज्ञापको वेदभागः कोऽस्ति?
(ii) अर्थसंग्रहे अज्ञातार्थज्ञापको वेदभागः इत्यनेन कस्य निरूपणं कृतम्? HAP– 2016
UGC 73 J–2015, RPSC SET–2013-14

(A) विधिः (B) संहिता
(C) अर्थवादः (D) उपनिषद्

स्रोत–अर्थसंग्रह – राजेश्वरशास्त्री मुसलगाँवकर, पृष्ठ- 60

20. (i) अर्थसंग्रहानुसारं विधिः कतिविधः?
(ii) मीमांसायां विधयः कतिविधो भवन्ति –
(iii) कतिविधः विधिः –
BHU AET–2010, 2012, T-SET–2013, HAP–2016

(A) दशविधः (B) द्वादशविधः
(C) सप्तविधः (D) चतुर्विधः

स्रोत–अर्थसंग्रह – राजेश्वरशास्त्री मुसलगाँवकर, पृष्ठ- 75

21. मीमांसानुसारेण कर्माणि कानि - BHU AET–2011

(A) 2 (B) 3
(C) 5 (D) 9

स्रोत– भारतीय दर्शन-हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-290

22. प्रयोजनवदर्थविधान से अर्थवान् होता है?
UGC-73 J– 2016

(A) अर्थवादः (B) निन्दा
(C) निषेधः (D) विधिः

स्रोत–अर्थसंग्रह – सत्यप्रकाश शर्मा, पृष्ठ- 40

23. अर्थसंग्रह के अनुसार 'अर्थवाद' के कितने भेद हैं?
UGC-73 D– 2016

(A) पञ्च (B) त्रयः
(C) चत्वारः (D) षट्

स्रोत–अर्थसंग्रह – राजेश्वरशास्त्री मुसलगाँवकर, पृष्ठ- 357

13. (B) 14. (B) 15. (B) 16. (A) 17. (A) 18. (A) 19. (A) 20. (D) 21. (C) 22. (D) 23. (B)

24. अर्थवादस्य स्वरूपम् - GJ-SET-2003
(A) प्रशंसनम् (B) अवधारणम्
(C) मननम् (D) अनुचिन्तनम्
स्रोत–अर्थसंग्रह – सत्यप्रकाश शर्मा, पृष्ठ- 194

25. अर्थसंग्रहानुसारं शाब्दीभावना अपेक्षते? K-SET-2014
(A) अंशत्रयम् (B) अंशद्वयम्
(C) अंशचतुष्टयम् (D) अंशपञ्चकम्
स्रोत–अर्थसंग्रह – सत्यप्रकाश शर्मा, पृष्ठ- 25

26. अर्थसंग्रहानुसारं वैदिकवाक्ये व्यापारविशेषः किंनिष्ठः? RPSC SET-2013-14
(A) पुरुषनिष्ठः (B) स्मृतिनिष्ठः
(C) लिङ्गादिशब्दनिष्ठः (D) आख्यातनिष्ठः
स्रोत– अर्थसंग्रह-सत्यप्रकाश शर्मा, पेज-21

27. अर्थसंग्रहे 'वेदप्रतिपाद्यः प्रयोजनवदर्थो धर्मः' इति धर्मलक्षणे अथ पदोपार्थनं किमर्थम्? UGC-25-J-2016
(A) प्रयोजनेऽतिव्याप्तिवारणार्थम्
(B) भोजनादावतिव्याप्तिवारणार्थम्
(C) अनर्थफलकत्वात् श्येनादावतिव्याप्तिवारणार्थम्
(D) अनृतव्यावृत्यर्थम्
स्रोत–अर्थसंग्रह – सत्यप्रकाश शर्मा, पृष्ठ- 10

28. 'चित्रया यजेत पशुकाम' इत्यत्र चित्रत्वं कुत्र गृह्यते - UGC 73 Jn–2017
(A) काले (B) अग्नौ
(C) द्रव्ये (D) ब्राह्मणम्
स्रोत–अर्थसंग्रह – कामेश्वरनाथ मिश्र, पृष्ठ- 159

29. मीमांसानुसारं किं नाम स्थानम्? UGC 73 Jn–2017
(A) क्षेत्रम् (B) उपस्थितिः
(C) अनुपस्थितिः (D) प्राङ्गणम्
स्रोत–अर्थसंग्रह – कामेश्वरनाथ मिश्र, पृष्ठ- 127

30. समाख्या -
(A) एकविधा (B) द्विविधा
(C) त्रिविधा (D) चतुर्विधा
स्रोत–अर्थसंग्रह – राजेश्वरशास्त्री मुसलगाँवकर, पृष्ठ- 178

31. प्रधानरूप से स्वर्गादि उत्पत्ति में अवान्तर व्यापार होता है- UGC 73 J–2014
(A) यागध्वंस (B) याज्ञयानम्
(C) अपूर्वम् (D) पुरोडाश
स्रोत–(i) अर्थसंग्रह - सत्यप्रकाश शर्मा, पृष्ठ - 15
(ii) भारतीय दर्शन - हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज - 291

32. ''वेदप्रतिपाद्यः प्रयोजनवदर्थो धर्मः'' यह धर्मलक्षण है - UGC 73 D–2014, J–2015, Jn–2017
(A) कृष्णयज्वनः (B) आपदेवस्य
(C) शबरस्य (D) लौगाक्षिभास्करस्य
स्रोत–अर्थसंग्रह – राजेश्वरशास्त्री मुसलगाँवकर, पृष्ठ- 13-14

33. मीमांसादृष्ट्या व्याप्तेर्विशिष्टाः हेतवः कति? UGC 73 Jn–2017
(A) त्रयः (B) चत्वारः
(C) पञ्च (D) षट्
स्रोत–

34. ''पुरुषप्रवृत्त्यनुकूलभावकव्यापारविशेषरूपा'' है - UGC 73 D–2014
(A) आर्थीभावना (B) लिङ्गान्तरभावना
(C) शाब्दीभावना (D) विभावना
स्रोत–अर्थसंग्रह – राजेश्वरशास्त्री मुसलगाँवकर, पृष्ठ- 30

35. (i) अर्थसंग्रहे प्रोक्तं धर्मलक्षणमस्ति -
(ii) मीमांसादर्शन के अनुसार धर्म का लक्षण है- UGC 25 D–1996, UP GDC–2014
(A) चोदनालक्षणोऽर्थो धर्मः
(B) यतोऽभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः स धर्मः
(C) धारणाद्धर्मः इत्याहुः
(D) वेदोऽखिलो धर्ममूलम्
स्रोत–अर्थसंग्रह – राजेश्वरशास्त्री मुसलगाँवकर, पृष्ठ- 18

36. 'चोदनालक्षणोऽर्थः'' कस्य लक्षणम् ? K-SET–2015
(A) ब्रह्मणः (B) जगतः
(C) चैतन्यस्य (D) धर्मस्य
स्रोत–अर्थसंग्रह – राजेश्वरशास्त्री मुसलगाँवकर, पृष्ठ- 18

24. (A)	25. (A)	26. (C)	27. (C)	28. (C)	29. (B)	30. (B)	31. (C)	32. (D)	33. (A)
34. (C)	35. (A)	36. (D)							

37. पूर्वमीमांसामते धर्मः कः? UGC 25 D–2012

(A) सदाचारः (B) यागादिः

(C) अपवर्गः (D) अभ्युदयप्राप्तिः

स्रोत–अर्थसंग्रह – राजेश्वरशास्त्री मुसलगाँवकर, पृष्ठ- 13

38. कीदृशो भवति प्रयोगविधिः? UGC 25 D–2012

(A) अङ्गप्रधाननिबन्धबोधकः

(B) कर्मस्वरूपमात्रबोधकः

(C) प्रयोगप्राशुभावबोधकः

(D) कर्मजन्यफलस्वाम्यबोधकः

स्रोत–अर्थसंग्रह – राजेश्वरशास्त्री मुसलगाँवकर, पृष्ठ- 194

39. (i) ''प्रयोगप्राशुभावबोधको विधिः'' - जिसका लक्षण है, वह है - UGC 25 S–2013, BHU MET–2015

(ii) प्रयोगप्राशुभावबोधको भवति- BHU AET–2012

(A) उत्पत्तिविधिः (B) विशिष्टविधिः

(C) गुणविधिः (D) प्रयोगविधिः

स्रोत–अर्थसंग्रह – राजेश्वरशास्त्री मुसलगाँवकर, पृष्ठ- 194

40. अङ्गानां क्रमबोधको विधिः वर्तते- UGC 25 J–2013

(A) विनियोगविधिः (B) नियमविधिः

(C) परिसंख्याविधिः (D) प्रयोगविधिः

स्रोत–अर्थसंग्रह – राजेश्वरशास्त्री मुसलगाँवकर, पृष्ठ- 194

41. अर्थसंग्रहमनुसृत्य यागो नाम - UGC 25 S–2013

(A) देवतोद्देशेन द्रव्यत्यागः

(B) देवतोद्देशेन द्रव्यस्य प्रक्षेपः

(C) स्वस्वत्वनिवृत्तिपूर्वकं परस्वत्वापादनम्

(D) मन्त्रपठनम्

स्रोत–अर्थसंग्रह – सत्यप्रकाश शर्मा, पृष्ठ- 53

42. ''यागादिरेव धर्मः'' जिस ग्रन्थ में उल्लिखित है, वह है – BHU MET–2014

(A) मनुस्मृति (B) अर्थसंग्रह

(C) गौतमधर्मसूत्र (D) पराशरस्मृति

स्रोत–अर्थसंग्रह – सत्यप्रकाश शर्मा, पृष्ठ- 10

43. (i) अर्थसंग्रहानुसारं कर्मस्वरूपमात्रावबोधको विधिः?

(ii) कर्मस्वरूपमात्रबोधक कौन है? BHU MET–2009,

(iii) कर्मस्वरूपमात्रबोधको विधिः कः? 2011,

(iv) कस्तावत् कर्मस्वरूपमात्रावबोधकः –

T-SET–2014, HAP–2016, BHU AET–2012

(A) उत्पत्तिविधिः (B) विनियोगविधिः

(C) प्रयोगविधिः (D) अधिकारविधिः

स्रोत–अर्थसंग्रह – राजेश्वरशास्त्री मुसलगाँवकर, पृष्ठ- 76

44. शेषशेषिभावबोधक कौन है- BHU MET–2013

(A) उत्पत्तिविधि (B) विनियोगविधि

(C) प्रयोगविधि (D) अधिकारविधि

स्रोत–अर्थसंग्रह – राजेश्वरशास्त्री मुसलगाँवकर, पृष्ठ- 82

45. अङ्गस्य प्रधानस्य च सम्बन्धज्ञापको विधिः कथ्यते- UP GDC–2012

(A) विनियोगविधिः (B) अधिकारविधिः

(C) उत्पत्तिविधिः (D) प्रयोगविधिः

स्रोत–अर्थसंग्रह – राजेश्वरशास्त्री मुसलगाँवकर, पृष्ठ- 82

46. धर्मस्यादुष्टलक्षणम् - BHU AET–2012

(A) वेदप्रतिपाद्यः धर्मः

(B) अर्थवद्धर्मः

(C) वेदप्रतिपाद्यत्वे सति प्रयोजनत्वे

(D) सति अर्थवद्धर्मः

स्रोत–अर्थसंग्रह – दयाशङ्कर शास्त्री, पृष्ठ- 06

47. उत्पत्तिविधिः क उच्यते? UGC 25 J– 2016

(A) अङ्गप्रधानसम्बन्धबोधको विधिः

(B) प्रयोगप्राशुभावबोधको विधिः

(C) कर्मजन्यफलस्वाम्यबोधको विधिः

(D) कर्मस्वरूपमात्रबोधको विधिः

स्रोत–अर्थसंग्रह – राजेश्वरशास्त्री मुसलगाँवकर, पृष्ठ- 76

48. प्रयोजनवशेन क्रमनिर्णयः को भवति – UGC 73 Jn–2017

(A) पाठक्रमः (B) अर्थक्रमः

(C) नियमक्रमः (D) विधिनिर्णयः

स्रोत–अर्थसंग्रह – कामेश्वरनाथ मिश्र, पृष्ठ- 123

37. (B) 38. (C) 39. (D) 40. (D) 41. (A) 42. (B) 43. (A) 44. (B) 45. (A) 46. (C) 47. (D) 48. (B)

49. अधस्तनेषु युग्मपर्यायेषु योग्यं विचिनुत– MH SET–2016

(क) व्रीहीनवहन्ति 1. परिसंख्याविधिः
(ख) पञ्चपञ्चनखा भक्ष्याः 2. नियमविधिः
(ग) अग्निर्हिमस्य भेषजम् 3.विशिष्टविधिः
(घ) सोमेन यजेत 4. अनुवादः

	क	ख	ग	घ
(A)	4	3	1	2
(B)	2	1	4	3
(C)	3	4	2	1
(D)	1	2	3	4

स्रोत–अर्थसंग्रह – सत्यप्रकाश शर्मा, भू. पृष्ठ- 14-15-17

50. अधस्तनेषु सत्यासत्यपर्यायेषु समीचीनं विचिनुत– कर्मजन्यफलस्वाम्यं नाम– MH SET–2016

(i) कर्माजन्यफलभोक्तृत्वम् (ii) कर्मजन्याफलभोक्तृत्वम्
(iii) कर्मजन्यफलभोक्तृत्वम् (iv) कर्मजन्यफलाभोक्तृत्वम्
(A) असत्यम्, असत्यम्, असत्यम्, सत्यम्
(B) सत्यम्, असत्यम्, असत्यम्, असत्यम्
(C)असत्यम्, असत्यम्, सत्यम्, असत्यम्
(D) सत्यम्, सत्यम्, असत्यम्, असत्यम्

स्रोत–अर्थसंग्रह – सत्यप्रकाश शर्मा, पृष्ठ- 135

51. (i) कस्तावद्विधिः फलसाम्यबोधकः -
(ii) कर्मजन्यफलस्वाम्यबोधकः विधिः कः?
(iii) कर्मजन्यफलस्वाम्यं बोधयति –
BHU AET–2012, HAP–2016, UGC 73 Jn–2017

(A) अधिकारविधिः (B) प्रयोगविधिः
(C) नियमविधिः (D) विनियोगविधिः

स्रोत–अर्थसंग्रह – सत्यप्रकाश शर्मा, पृष्ठ- 135

52. श्रुति का लक्षण है- BHU AET–2015

(A) निरपेक्षो रवः (B) विधात्री
(C) विनियोक्त्री (D) विभक्तिरूपा

स्रोत–अर्थसंग्रह – सत्यप्रकाश शर्मा, पृष्ठ- 60

53. ''तत्र चान्यत्र च प्राप्तौ'' इति कस्य लक्षणं भवति - UGC 25 J–2015

(A) अपूर्वविधेः (B) नियमविधेः
(C) अधिकारविधेः (D) परिसंख्याविधेः

स्रोत–अर्थसंग्रह – सत्यप्रकाश शर्मा, पृष्ठ- 148

54. ''विरोधे गुणवादः स्यात्'' इति लक्षणम् - UGC 25 J–2015

(A) नामधेयस्य (B) गुणविधेः
(C) अर्थवादस्य (D) मन्त्रस्य

स्रोत–अर्थसंग्रह – सत्यप्रकाश शर्मा, पृष्ठ- 198

55. 'आदित्यो यूपः' इत्यत्र किंविधोऽर्थवादः? UGC 25 J– 2016

(A) भूतार्थवादः (B) अनुवादः
(C) निषेधशेषः (D) गुणवादः

स्रोत–अर्थसंग्रह – सत्यप्रकाश शर्मा, पृष्ठ- 198

56. 'अग्निर्हिमस्य भेषजम्' इत्यत्र को अर्थवादः– DU-M.Phil–2016

(A) गुणवादः (B) भूतार्थवादः
(C) विधिशेषार्थवादः (D) अनुवादः

स्रोत–अर्थसंग्रह – सत्यप्रकाश शर्मा, पृष्ठ- 198

57. भावनायाः अंशत्रये साधनस्य स्वरूपं किम्? K-SET– 2015

(A) किं भावयेत् (B) केन भावयेत्
(C) कथं भावयेत् (D) किमर्थं भावयेत्

स्रोत–अर्थसंग्रह – सत्यप्रकाश शर्मा, पृष्ठ- 32

58. अधस्तनेषु युग्मपर्यायेषु समीचीनं विचिनुत– MH-SET– 2013

(क) प्रधानविधिः 1. दध्ना जुहोति
(ख) विशिष्टविधिः 2. यजेत स्वर्गकामः
(ग) गुणविधिः 3. अग्निहोत्रं जुहुयात्
(घ) अधिकारविधिः 4. सोमेन यजेत

	क	ख	ग	घ
(A)	3	1	4	2
(B)	3	4	1	2
(C)	1	2	3	4
(D)	4	3	1	2

स्रोत–अर्थसंग्रह – सत्यप्रकाश शर्मा, भू. पृष्ठ- 14-15

49. (B) 50. (C) 51. (A) 52. (A) 53. (D) 54. (C) 55. (D) 56. (D) 57. (B) 58. (B)

59. अर्थसंग्रहे प्रदत्तेषु प्रमाणेषु...................... न परिगणितः? GJ-SET–2016

(A) अर्थः (B) ध्यानम्
(C) स्थानम् (D) पाठः

स्रोत–अर्थसंग्रह - सत्यप्रकाश शर्मा, पेज-112

60. अर्थवादस्य त्रिषु भेदेषु कः न गण्यते – UGC 73 Jn–2017

(A) गुणवादः (B) अनुवादः
(C) भूतार्थवादः (D) अपवादः

स्रोत–अर्थसंग्रह – कामेश्वरनाथ मिश्र, पृष्ठ- 194

61. ''पुरुषस्य निवर्तकं वाक्यम्'' को पूर्ण करने वाला शब्द है- UGC 25 J–2012, BHU MET–2015

(A) विधिः (B) मन्त्रः
(C) निषेधः (D) अर्थवादः

स्रोत–अर्थसंग्रह – सत्यप्रकाश शर्मा, पृष्ठ- 169

62. पुराकल्पार्थवाद का उदाहरण है - UGC 73 D–2014

(A) अग्निर्वा अकामयत
(B) शोभतेऽस्य मुखं च एवं वेद
(C) तमशपदधिया धियात्वा वध्यासुः
(D) असत्रं वा एतद् यदच्छन्दोमम्

स्रोत– अर्थसंग्रह - राजेश्वरशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज–354

63. गुणविधेः उदाहरणमस्ति? UGC 25 D–2014, S–2013

(A) सोमेन यजेत (B) राजा राजसूयेन
(C) दध्ना जुहोति (D) दर्शपूर्णमासाभ्यां स्वर्गकामो यजेत

स्रोत–अर्थसंग्रह – सत्यप्रकाश शर्मा, पृष्ठ- 42

64. परिसंख्या विधेरुदाहरणं किम् ? UGC 25 D–2012

(A) यजेत स्वर्गकामः (B) व्रीहीन् आवहन्ति
(C) दध्ना जुहोति (D) पञ्च पञ्चनखा भक्ष्याः

स्रोत–अर्थसंग्रह – सत्यप्रकाश शर्मा, भू. पृष्ठ- 15

65. (i) अर्थसंग्रहे विशिष्टविधेः उदाहरणमस्ति -
(ii) विशिष्टविधेरुदाहरणं किं विद्यते? UGC 25 J–2014, BHU AET–2010

(A) दध्ना जुहोति
(B) अग्निहोत्रं जुहुयात्स्वर्गकामः
(C) सोमेन यजेत
(D) राजा राजसूयेन स्वराज्यकामो यजेत

स्रोत–अर्थसंग्रह – सत्यप्रकाश शर्मा, पृष्ठ- 42

66. 'दध्ना जुहोति' एक विधि है, जिसे कहते हैं – BHU MET–2014

(A) उत्पत्तिविधि (B) प्रयोगविधि
(C) गुणविधि (D) विशिष्टविधि

स्रोत–अर्थसंग्रह – सत्यप्रकाश शर्मा, पृष्ठ- 42

67. ''न कलञ्जं भक्षयेत'' - BHU MET–2014

(A) विधिवाक्य है। (B) निवर्तक वाक्य है।
(C) अर्थवाद वाक्य है। (D) सामान्य वाक्य है।

स्रोत–अर्थसंग्रह – सत्यप्रकाश शर्मा, पृष्ठ- 169

68. ''विरोधे गुणवादः स्यादनुवादोऽवधारिते।
भूतार्थवादस्तद्धानादर्थवादस्त्रिधा मतः॥''
पद्यमिदं कुत्र सोदाहरणं व्याख्यातम् ? BHU AET–2011

(A) मीमांसापरिभाषायाम् (B) न्यायप्रकाशे
(C) अर्थसंग्रहे (D) ऋग्वेदभाष्यभूमिकायाम्

स्रोत–अर्थसंग्रह – सत्यप्रकाश शर्मा, पृष्ठ- 198

69. अपूर्वविधेरुदाहरणं किं विद्यते ? BHU AET–2010

(A) पयसा जुहोति (B) अग्निहोत्रं जुहोति
(C) अग्निज्योतिः (D) यदग्नये च

स्रोत–अर्थसंग्रह – दयाशङ्कर शास्त्री, भू. पृष्ठ- 25

70. 'अग्निहोत्रं जुहोति' किस विधि का उदाहरण है? UGC 73 D–2015

(A) अपूर्वविधि (B) गुणविधि
(C) नियमविधि (D) परिसंख्याविधि

स्रोत–अर्थसंग्रह – दयाशङ्कर शास्त्री, भू0पृष्ठ-25

71. शाब्दीभावनायाः साध्यं किम्भवति–UGC 25 Jn–2017

(A) लिङ्गादिज्ञानम् (B) अर्थवादज्ञाप्यप्राशस्त्यम्
(C) स्वर्गादिफलम् (D)आर्थीभावना

स्रोत–अर्थसंग्रह – सत्यप्रकाश शर्मा, पृष्ठ- 28

72. 'व्रीहीन् प्रोक्षति' यहाँ पर प्रोक्षण व्रीहि का अङ्ग होता है? UGC 73-J– 2016

(A) तृतीयाश्रुत्या (B) द्वितीयाश्रुत्या
(C) आख्यातश्रुत्या (D) धातुपदश्रवणेन

स्रोत–अर्थसंग्रह – सत्यप्रकाश शर्मा, पेज-64

59. (B) 60. (D) 61. (C) 62. (A) 63. (C) 64. (D) 65. (C) 66. (C) 67. (B) 68. (C) 69. (B) 70. (A) 71. (D) 72. (B)

73. 'व्रीहीन् अवहन्ति' यहाँ पर विधि होती है? UGC 73-J- 2016

(A) नियमविधि (B) अपूर्वविधि
(C) परिसंख्याविधि (D) गुणविधि

स्रोत–अर्थसंग्रह – सत्यप्रकाश शर्मा, पृष्ठ- 144

74. समानाभिद्यानश्रुतौ 'संख्यायाः' कथं भावनाङ्गत्वम्? DU-M. phil- 2016

(A) कर्मपरिच्छेदद्वारा
(B) अभिधानश्रुतिद्वारा
(C) कर्तृपरिच्छेदद्वारा
(D) संख्या भावनायाः अङ्गं न भवति

स्रोत–अर्थसंग्रह – सत्यप्रकाश शर्मा, पृष्ठ- 67

75. 'यस्य पर्णमयी जुहूर्भवति' इति विधिवाक्ये पर्णतायाः विकृतियागेऽन्वय कृते को दोषः? DU-M phil- 2016

(A) वाक्यभेददोषः (B) अर्थभङ्गदोषः
(C) कल्पनागौरवदोषः (D) पुनरुक्तिदोषः

स्रोत–अर्थसंग्रह – सत्यप्रकाश शर्मा, पृष्ठ- 80

76. 'सोमेन यजेत' इत्यस्य वाक्यस्य कः अर्थः? JNU-M.Phil Ph-D- 2014

(A) सोमवान् यागं कुर्यात्
(B) सोमवान् यागेन इष्टं भावयेत्
(C) सोमवता यागेनेष्टं भावयेत्
(D) यागेन सोमं भावयेत्

स्रोत–अर्थसंग्रह – सत्यप्रकाश शर्मा, पृष्ठ- 42

77. 'सोमेन यजेत' इत्यत्र - BHU AET–2012

(A) अधिकारविधिः (B) विनियोगविधिः
(C) गुणविशिष्टविधिः (D) उत्पत्तिविधिः

स्रोत–अर्थसंग्रह – सत्यप्रकाश शर्मा, पृष्ठ- 42

78. 'व्रीहीनवहन्ति' उदाहरण है - BHU AET–2012

(A) परिसंख्याविधेः (B) प्रयोगविधेः
(C) नियमविधेः (D) विनियोगविधेः

स्रोत–अर्थसंग्रह – सत्यप्रकाश शर्मा, भू० पृष्ठ- 15

79. ''अग्निष्टोमेन स्वर्गकामो यजेत'' अस्ति- BHU MET–2015

(A) विधिवाक्य (B) मन्त्रवाक्य
(C) प्रेरणावाक्य (D) श्रौतयागवचन

स्रोत–अर्थसंग्रह – दयाशङ्कर शास्त्री, पृष्ठ- 25

80. 'यागात् स्वर्गो भवति' इत्यत्र 'भू' धातोः कः अर्थः? UGC 25 J–2015

(A) सत्ता (B) यागः
(C) स्वर्गः (D) उत्पत्तिः

स्रोत–

81. (i) शाब्दीभावनायाः साध्यांशेकिमन्वेति?
(ii) ''शाब्दीभावना'' निरूपिता भवति - UGC 25 D–2013, MH SET–2016

(A) आख्यातत्वांशेन (B) लिङ्गत्वांशेन
(C) ज्ञापकांशेन (D) सामान्यांशेन

स्रोत–अर्थसंग्रह – सत्यप्रकाश शर्मा, पृष्ठ- 21

82. अर्थसंग्रहानुसारम् आख्यातेन किमुच्यते ? UGC 25 J–2014

(A) कर्ता (B) भावना
(C) कर्म (D) करण

स्रोत–अर्थसंग्रह – सत्यप्रकाश शर्मा, पृष्ठ- 29,69

83. न्यायप्रकाशमते भावनालक्षणं किम् ? BHU AET–2011

(A) इष्टप्राप्तिः
(B) जात्यादिविशेषणविशिष्टः
(C) भवितुर्भवनानुकूलो भावकव्यापारविशेषः
(D) तद्धर्मावच्छिन्नव्यावृत्तत्वम्

स्रोत–अर्थसंग्रह-सत्यप्रकाश शर्मा, पेज-19

84. भावना इत्यस्य पारिभाषिकोऽर्थः कः ? BHU AET–2010

(A) प्रवर्तना (B) वर्जना
(C) गर्जना (D) नन्दना

स्रोत–अर्थसंग्रह – सत्यप्रकाश शर्मा, पृष्ठ- 19

73. (A) 74. (B) 75. (D) 76. (C) 77. (C) 78. (C) 79. (A) 80. (D) 81. (B) 82. (B) 83. (C) 84. (A)

85. (i) भावना तावत् - BHU AET–2010, 2012
(ii) भावनायाः कति आकांक्षाः भवन्ति ?
(A) पञ्च (B) सप्त
(C) नव (D) तिस्रः
स्रोत–अर्थसंग्रह – सत्यप्रकाश शर्मा, पृष्ठ- 25

86. भावना केन लकारेण जायते ? BHU AET–2010
(A) लिट्लकारेण (B) लट्लकारेण
(C) लिङ्लकारेण (D) लङ्लकारेण
स्रोत–अर्थसंग्रह – सत्यप्रकाश शर्मा, पृष्ठ- 16-18

87. शाब्दीभावनायां कति अंशानामपेक्षा भवति ? BHU AET–2012
(A) 3 (B) 4
(C) 8 (D) 10
स्रोत–अर्थसंग्रह – सत्यप्रकाश शर्मा, पृष्ठ- 25

88. लक्षणावृत्तेः प्रयोगः न भवति - UK SLET–2015
(A) अथातो धर्मजिज्ञासा इत्यत्र 'जिज्ञासा' पदस्य विचारे
(B) 'सोमेन यजेत' इत्यत्र सोमपदस्य व्याख्याप्रसङ्गे
(C) अर्थवादवाक्येषु प्राशस्त्यनिन्दितत्वरूपयोः अर्थयोः प्रतिपादने
(D) आर्थीभावनायाः अंशत्रयापेक्षायाम्
स्रोत–अर्थसंग्रह – सत्यप्रकाश शर्मा, पृष्ठ- 8,42,194,29

89. भावना - BHU AET–2012
(A) चतुर्विधा (B) त्रिविधा
(C) द्विविधा (D) एकविधा
स्रोत–अर्थसंग्रह – सत्यप्रकाश शर्मा, पृष्ठ- 19

90. आर्थीभावनायाः साधनाकांक्षायां कारणत्वेन किं अन्वेति– JNU-M.phil/Ph. D– 2014
(A) स्वर्गः (B) यागादिः
(C) प्रयाजादिः (D) लिङ्गादिः
स्रोत–अर्थसंग्रह – कामेश्वरनाथ मिश्र, पृष्ठ- 38

91. शाब्दीभावना तावत् - BHU AET–2012
(A) अर्थनिष्ठा (B) शब्दनिष्ठा
(C) साध्यनिष्ठा (D) साधननिष्ठा
स्रोत–अर्थसंग्रह – सत्यप्रकाश शर्मा, पृष्ठ-21

92. शाब्दीभावना को स्वीकारते हैं - UGC 73 J–1998
(A) सांख्य (B) न्याय
(C) मीमांसा (D) चार्वाक
स्रोत–अर्थसंग्रह – कामेश्वरनाथ मिश्र, पृष्ठ-25

93. शाब्दीभावना भवति– DU-Ph.D– 2016, DU M. Phil–2016
(A) पुरुषप्रवृत्यवच्छिन्नप्रत्ययवाच्या
(B) आख्यातत्वावच्छिन्नप्रत्ययवाच्या
(C) लिङ्त्वावच्छिन्नप्रत्ययवाच्या
(D) धात्वर्थच्छिन्नप्रत्ययवाच्या
स्रोत–अर्थसंग्रह – कामेश्वरनाथ मिश्र, पृष्ठ- 27

94. 'रामः पठति' इत्यस्मिन् वाक्ये भावना अस्ति– JNU M.Phil/Ph.D–2015
(A) राम (B) सु
(C) पठ् (D) ति
स्रोत–अर्थसंग्रह - कामेश्वरनाथ मिश्र, पृष्ठ -46

95. 'भवितुर्भवनानुकूलोभावयितुर्व्यापारविशेषः' किं भवति - UGC 73 J–2015
(A) विनियोगः (B) भावना
(C) प्रयोगः (D) विधिः
स्रोत–अर्थसंग्रह - कामेश्वरनाथ मिश्र, पृष्ठ -25

96. अर्थसंग्रहानुसारं 'शाब्दीभावना' इत्यनेन कः अभिप्रायः? UGC-25 D– 2015
(A) अपौरुषेयवाक्यम्
(B) समभिव्यवहारः
(C) पुरुषप्रवृत्यनुकूलोभावयितुर्व्यापारविशेषः
(D) प्रयोजनेच्छाजनितक्रियाविषयव्यापारः
स्रोत–अर्थसंग्रह - कामेश्वरनाथ मिश्र, पृष्ठ -27

97. अर्थवादस्य लक्षणं किम् ? UGC 25 J–2014
(A) स्तुतिनिन्दान्यतरपरं वाक्यम् ।
(B) समभिव्यवहारो वाक्यम्
(C) अपौरुषेयं वाक्यम्
(D) अङ्गप्रधानसम्बन्धबोधकं वाक्यम् ।
स्रोत–अर्थसंग्रह - कामेश्वरनाथ मिश्र, पृष्ठ -190

85. (D) 86. (C) 87. (A) 88. (D) 89. (C) 90. (B) 91. (B) 92. (C) 93. (C) 94. (D) 95. (B) 96. (C) 97. (A)

98. अर्थवाद का साक्षात् सम्बन्ध किससे है ? **BHU MET–2009, 2013**

(A) मन्त्र (B) विधि
(C) भाष्य (D) भाषाविज्ञान

स्रोत–अर्थसंग्रह - कामेश्वरनाथ मिश्र, पृष्ठ -192

99. अर्थवादस्य विधिना सह वर्तते - BHU AET–2012

(A) पार्थक्यम् (B) विधेयता
(C) एकवाक्यता (D) बहुवाक्यता

स्रोत–अर्थसंग्रह - कामेश्वरनाथ मिश्र, पृष्ठ 193

100. अर्थवादो विधिम् - **BHU AET–2012**

(A) निन्दति (B) स्तौति
(C) विश्लेषयति (D) A+B दोनों

स्रोत–अर्थसंग्रह - कामेश्वरनाथ मिश्र, पृष्ठ 192

101. परिसंख्याविधेः दोषाः के ? **UGC 25 D–2013**

(A) श्रुतहानिः, अश्रुतप्रकल्पनम्, प्राप्तबाधः।
(B) श्रुतहानिः, प्राप्तबाधः, वाक्यभेदः
(C) अप्रामाण्यस्वीकारः, प्रामाण्यपरित्यागः
(D) वचनबलाद् विकल्पः, एकार्थत्वाद् विकल्पः।

स्रोत–अर्थसंग्रह - कामेश्वरनाथ मिश्र, पृष्ठ -149

102. (i) परिसंख्यायाः कुत्र तात्पर्यम् ?
(ii) परिसंख्याविधि का क्या प्रयोजन है ?
BHU MET–2009, 2011, 2013, BHU AET–2012

(A) निषेध (B) निन्दा
(C) प्रशंसा (D) संशय

स्रोत–अर्थसंग्रह - सत्यप्रकाश शर्मा, पृष्ठ-148

103. परिसंख्याविधिः कियद्दोषदुष्टः ? BHU AET–2011

(A) 3 (B) 5
(C) 8 (D) 11

स्रोत–अर्थसंग्रह - सत्यप्रकाश शर्मा, पृष्ठ -151

104. विनियोगविधेः किं प्रयोजनम् ? BHU AET–2010

(A) योगासनम् (B) विमानम्
(C) नामकरणम् (D) अङ्गप्रधानसम्बन्धविधानम्

स्रोत– अर्थसंग्रह - कामेश्वरनाथ मिश्र, पृष्ठ -61

105. विनियोगविधेरन्तिमं प्रमाणं किम्? BHU AET–2010

(A) लिङ्गम् (B) समाख्या
(C) वाक्यम् (D) श्रुतिः

स्रोत–अर्थसंग्रह - कामेश्वरनाथ मिश्र, पृष्ठ-64

106. विनियोगविधिः भवति - **UGC 73 J–2015**

(A) अङ्गप्रधानसम्बन्धबोधको विधिः
(B) प्रयोगप्राशुभावबोधको विधिः
(C) कर्मस्वरूपमात्रबोधको विधिः
(D) कर्मजन्यफलस्वाम्यबोधको विधिः

स्रोत– अर्थसंग्रह - कामेश्वरनाथ मिश्र, पृष्ठ-61

107. 'सविकल्पकं प्रत्यक्षं न भवति' यहाँ सौगतमीमांसकों में भेद है - **UGC 73 D–2014**

(A) नास्ति (B) अस्ति
(C) प्रमाणसत्त्वात् (D) प्रमाणाभावात्

स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज–84

108. मीमांसकों के अनुसार किससे प्रामाण्य ग्रहण होता है? **UGC 25 D–1996**

(A) अनुव्यवसाय से (B) विषयता से
(C) संवित्ति से (D) ज्ञातता से

स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री,पृष्ठ-160

109. तत्प्रख्यन्यायः कुत्र उपयुज्यते - UGC 25 S–2013

(A) निषेधनिर्णये (B) नियमविधिनिर्णये
(C) नामधेयनिर्णये (D) अर्थवादनिर्णये

स्रोत–अर्थसंग्रह - कामेश्वरनाथ मिश्र, पृष्ठ -157

110. हविर्यागेषु प्रकृतियागः - **BHU AET–2012**

(A) सौर्यः (B) चयनः
(C) श्येनयागः (D) पौर्णमासः

स्रोत–श्रौतयज्ञ परिचय - वेणीराम शर्मा गौड, पृष्ठ-10

111. मीमांसानुसारं कः विधिः न भवति ? **BHU AET–2012**

(A) उत्पत्तिविधिः (B) समग्रविधिः
(C) विनियोगविधिः (D) प्रयोगविधिः

स्रोत–अर्थसंग्रह - कामेश्वरनाथ मिश्र, पृष्ठ - 56

98. (B) 99. (C) 100. (D) 101. (A) 102. (A) 103. (A) 104. (D) 105. (B) 106. (A) 107. (D) 108. (D) 109. (C) 110. (D) 111. (B)

112. 'तस्य व्रतम् इत्युपक्रमो विकल्पप्रशक्तिश्च' इत्येतद् वाक्यं प्रस्तौति - UK SLET–2015

(A) वाक्यभेदस्य दोषद्वयम्

(B) अर्थवादवाक्यानां भेदद्वयम्

(C) नञर्थेन प्रत्ययार्थान्वये बाधकद्वयम्

(D) मुख्यक्रमस्य अंशद्वयम्

स्रोत–अर्थसंग्रह - कामेश्वरनाथ मिश्र, पृष्ठ -174

113. केन युक्तेन इन्द्रियाणि अर्थसंग्रहसमर्थानि भवन्ति? C-TET–2014

(A) शरीरेण (B) वाचा

(C) कर्मणा (D) मनसा

स्रोत–

114. वेदस्तावत् - BHU AET–2012

(A) पौरुषेयः (B) अपौरुषेयः

(C) सर्वज्ञकृतः (D) ईश्वरकृतः

स्रोत–अर्थसंग्रह - कामेश्वरनाथ मिश्र, पृष्ठ -47

115. इष्टप्राप्ति तथा अनिष्ट परिहार का साधन वेद है- H-TET–2014

(A) अलौकिक उपाय (B) लौकिक उपाय

(C) पूर्वोक्त दोनों सही (D) पूर्वोक्त दोनों गलत

स्रोत–अर्थसंग्रह - वाचस्पति उपाध्याय, भू0पृष्ठ-14

116. इष्टप्राप्त्यनिष्टपरिहारयोः यः ग्रन्थः वेदयति सः - AWES TGT–2009

(A) वेदः (B) भृगुसंहिता

(C) मनुस्मृतिः (D) वेदाङ्गज्योतिषम्

स्रोत–अर्थसंग्रह - वाचस्पति उपाध्याय, भू0पृष्ठ-14

117. निम्नलिखित में से मीमांसको ने विधि स्वीकार नहीं की है- UGC 73 J–2015

(A) उत्पत्तिविधि (B) विनियोगविधि

(C) प्रयोगविधि (D) उपयोगविधि

स्रोत–अर्थसंग्रह - वाचस्पति उपाध्याय, पृष्ठ-48

118. उचितमुत्तरं चिनुत - UGC 73 J–2015

स्थापना (क) अपौरुषेयं वाक्यं वेदः

तर्क (ख) स च पञ्चविधः

(A) (क) - इति सत्यं कथनमस्ति।
(ख) इति असत्यं कथनमस्ति।

(B) (क) इति असत्यं कथनमस्ति।
(ख) इति सत्यं कथनमस्ति।

(C) क, ख - इति उभे सत्ये स्तः।

(D) क, ख - इति उभे असत्ये स्तः।

स्रोत–अर्थसंग्रह - दयाशङ्कर शास्त्री, पृष्ठ-23

119. अर्थसंग्रहानुसारं विधिश्चतुर्विधः–
उत्पत्तिविधिः, विनियोगविधिः, अधिकारविधिः ...च। UGC 25-D– 2015

(A) नियमविधिः (B) प्रयोगविधिः

(C) यज्ञविधिः (D) परिसंख्याविधिः

स्रोत–अर्थसंग्रह - सत्यप्रकाश शर्मा, पृष्ठ-49

120. 'वैश्वदेवेन यजेत' इत्यत्र अग्निहोत्रशब्दस्य नामधेयत्वापादको हेतुरस्ति– DU-Ph. D– 2016

(A) मत्वर्थलक्षणाभयम् (B) वाक्यभेदभयम्

(C) तद्-व्यपदेशः (D) तत्प्रख्यशास्त्रम्

स्रोत–अर्थसंग्रह - सत्यप्रकाश शर्मा, पृष्ठ -166

121. ''सा च त्रिविधा–विधात्री अभिधात्री विनियोक्त्री च'' इत्यत्र 'सा' का? UGC 25-D– 2015

(A) वैदिकी समाख्या (B) श्रुतिः

(C) लौकिकी समाख्या (D) शब्दशक्तिः

स्रोत–अर्थसंग्रह - सत्यप्रकाश शर्मा, पृष्ठ-60

122. 'अग्निहोत्रं जुहोति' अत्र 'अग्निहोत्र' शब्दस्य कर्मनामधेयत्वं कस्मान्निमित्तात् UGC 25-J– 2016

(A) तत्प्रख्यशास्त्रात् (B) मत्वर्थलक्षणाभयात्

(C) वाक्यभेदात् (D) तद्व्यपदेशात्

स्रोत–अर्थसंग्रह - सत्यप्रकाश शर्मा, पृष्ठ-159

112. (C) 113. (D) 114. (B) 115. (A) 116. (A) 117. (D) 118. (C) 119. (B) 120. (D) 121. (B) 122. (A)

123. क्रिया का विनियोजक होता है? UGC 73-J– 2016

(A) मन्त्रः (B) प्रमाणम्

(C) प्रकरणम् (D) वाक्यम्

स्रोत–अर्थसंग्रह - सत्यप्रकाश शर्मा, पृष्ठ-92

124. अङ्गाङ्गिभावबोधक कौन है? BHU MET– 2016

(A) उत्पत्तिविधि

(B) विनियोगविधि

(C) अधिकारविधि

(D) प्रयोगविधि

स्रोत–अर्थसंग्रह - सत्यप्रकाश शर्मा, पृष्ठ-54

125. नित्यसन्ध्योपासनादौ पुरुषविशेषणत्वेन श्रूयते– DU M-Phil– 2016

(A) शुचिविहितकालजीवित्वम् (B) फलकामना

(C) निमित्तानिश्चयः (D) कोऽपि न

स्रोत–

126. 'अर्थसंग्रहे वेदप्रतिपाद्यः प्रयोजनवदर्थो धर्मः' इति धर्मलक्षणे 'वेदप्रतिपाद्यः' इति पदं किमर्थं गृहीतम्? UGC 25 Jn–2017

(A) द्यूतक्रीडादावतिव्याप्तिवारणाय

(B) स्वर्गादिप्रयोजनेऽतिव्याप्तिवारणाय

(C) श्येनयागादावतिव्याप्तिवारणाय

(D) भोजनादावतिव्याप्तिवारणाय

स्रोत–अर्थसंग्रह - सत्यप्रकाश शर्मा, पृष्ठ-10

123. (C) 124. (B) 125. (A) 126. (D)

07 चार्वाक/बौद्ध/जैन एवं अन्य दर्शन

1. (i) आस्तिकदर्शनानां संख्या - BHU B.Ed–2012, 2014, 2015,
(ii) आस्तिक दर्शन कितने हैं ?
(iii) अस्तिकदर्शनानि........ सन्ति। DSSSB TGT–2014,
(iv) आस्तिकदर्शनानि कति? UK SLET–2015
(v) आस्तिकदर्शनानां संख्या वर्तते –

(A) षट् (B) पञ्च
(C) सप्त (D) चत्वारि

स्रोत–भारतीय दर्शन-हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-06

2. आस्तिक भारतीय दर्शन का लक्ष्य है-UGC 73 D–2005

(A) भुक्ति (B) मुक्ति
(C) व्यवहृति (D) संसृति

स्रोत–भारतीय दर्शन-हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-03

3. आस्तिक दर्शन है- UGC 73 D–2007, 2012

(A) चार्वाक दर्शन (B) जैन दर्शन
(C) बौद्ध दर्शन (D) वेदान्त दर्शन

स्रोत–भारतीय दर्शन-हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-06

4. वैदिक दर्शन है- UGC 73 J–2014

(A) न्याय (B) जैन
(C) चार्वाक (D) बौद्ध

स्रोत–भारतीय दर्शन-हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-06

5. कौन-सा दर्शन वैदिक दर्शन नहीं है - BHU AET–2011

(A) बौद्ध दर्शन (B) मीमांसा दर्शन
(C) वैशेषिक दर्शन (D) वेदान्त दर्शन

स्रोत–भारतीय दर्शन-हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-06

6. कौन-सा दर्शन वैदिक है- BHU AET–2011

(A) चार्वाक दर्शन (B) जैन दर्शन
(C) बौद्ध दर्शन (D) मीमांसा दर्शन

स्रोत–भारतीय दर्शन-हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-06

7. भारतीय आस्तिक दर्शन है- UGC 73 S–2013

(A) त्रयोदश (B) चतुर्दश
(C) द्वादश (D) षट्

स्रोत–भारतीय दर्शन-हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-06

8. बृहस्पति किस दर्शन के आचार्य हैं - BHU MET–2008

(A) वैदिक दर्शन के (B) लोकायत के
(C) वेदान्त के (D) सांख्य के

स्रोत–भारतीय दर्शन-हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-80

9. चार्वाक दर्शन का आचार्य कौन है? BHU MET–2016

(A) चारुदत्त (B) बृहस्पति
(C) कुमारिल (D) चान्द्रायण

स्रोत–भारतीय दर्शन-हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-80

10. लोकायत किसको कहा गया है? BHU MET–2016

(A) मीमांसा (B) चार्वाक
(C) बौद्ध (D) जैन

स्रोत–भारतीय दर्शन-हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-80

11. कौन-सा दर्शन वेद को प्रमाण नहीं मानता - BHU MET–2010

(A) चार्वाकदर्शन (B) सांख्यदर्शन
(C) वेदान्तदर्शन (D) न्यायदर्शन

स्रोत–भारतीय दर्शन-हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-80

12. (i) 'ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत्' यह उक्ति किससे सम्बन्धित है -
(ii) 'ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत्' इति कस्य सिद्धान्तोऽस्ति–
BHU MET–2010, UGC 73 S–2013

(A) जैन (B) बौद्ध
(C) वेदान्त (D) चार्वाक

स्रोत–भारतीय दर्शन-हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-95

1. (A) 2. (B) 3. (D) 4. (A) 5. (A) 6. (D) 7. (D) 8. (B) 9. (B) 10. (B) 11. (A) 12. (D)

13. 'यावज्जीवेत् सुखं जीवेदृणं कृत्वा घृतं पिबेत्' किस दर्शन का मूलाधार है? H TET-2015

(A) जैन (B) बौद्ध
(C) चार्वाक (D) मीमांसा

स्रोत–भारतीय दर्शन-हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-94,95

14. चार्वाक मत में यह एक प्रमाण है - UGC 73 J–2006 D–2013

(A) अनुमान (B) प्रत्यक्ष
(C) उपमान (D) अर्थापत्ति

स्रोत–भारतीय दर्शन-हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-81

15. एकमेव प्रमाणं स्वीकरोति ? BHU AET–2012

(A) न्यायः (B) योगः
(C) वेदान्तः (D) चार्वाकः

स्रोत–भारतीय दर्शन-हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-81

16. ईश्वरः नाङ्गीकृतः कुत्र ? BHU AET–2012, UGC 73 J–2012

(A) न्याये (B) वेदान्ते
(C) चार्वाकदर्शने (D) योगे

स्रोत–भारतीय दर्शन-हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-90

17. अनुभूति ही प्रमाण है - किसका मत है? UGC 73 J–2008

(A) चार्वाकमतम् (B) बौद्धमतम्
(C) अद्वैतमतम् (D) द्वैतमतम्

स्रोत–भारतीय दर्शन-हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-81

18. (i) प्रत्यक्षमात्रप्रमाणवादिनः के –
(ii) केवल प्रत्यक्ष को प्रमाण मानने वाले कौन हैं? UGC 73 D–2008, 2013, BHU Sh. ET–2013
(iii) प्रत्यक्षमेवैकं प्रमाणम्-
(iv) प्रत्यक्षप्रमाणम् एव एकशरणाः के -

(A) सांख्याः (B) चार्वाकाः (लोकायतिकाः)
(C) बौद्धाः (D) जैनाः

स्रोत–भारतीय दर्शन-हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-81

19. भूतचैतन्यवाद के पुरस्कर्ता हैं- UGC 73 J–2009 D–2013

(A) मीमांसकाः (B) जैनाः
(C) नैयायिकाः (D) चार्वाकाः

स्रोत–भारतीय दर्शन-हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-85,86

20. पृथिवी, आपः, तेजः वायुश्चेतीमानि चत्वारि एव तत्त्वानि स्वीकरोति– DU-Mphil–2016

(A) लोकायतमतम् (B)आर्हतमतम्
(C) वैभाषिकबौद्धमतम् (D) काणादमतम्

स्रोत–भारतीय दर्शन-हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-86

21. 'त्रयो वेदस्य कर्त्तारो भाण्डधूर्तनिशाचराः' इयमुक्तिर्भवति- UGC 73 D–2009

(A) नैयायिकानाम् (B) मीमांसकानाम्
(C) चार्वाकाणाम् (D) वैशेषिकाणाम्

स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज–21

22. न्यायदर्शनस्य मूलम् – CVVET–2017

(A)गौतमप्रणीतं न्यायसूत्रम् (B) न्यायकुसुमाञ्जलिः
(C) न्यायलीलावती (D) न्यायभाष्यम्

स्रोत- तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज भू018

23. वैशेषिकदर्शनस्य नामान्तरं किम्? CVVET–2017

(A) श्रमणदर्शनम् (B) शाङ्करदर्शनम्
(C) सौन्दर्यदर्शनम् (D) औलूक्यदर्शनम्

स्रोत- तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज भू017

24. चार्वाकों का दर्शन है- UGC 73 J–2011

(A) आस्तिकम् (B) नास्तिकम्
(C) आत्मवादी (D) शून्यवादी

स्रोत–भारतीय दर्शन-हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-06

25. निम्नलिखित में नास्तिक है - UGC 73 D–2012, BHU AET–2011

(A) न्यायदर्शनम् (B) सांख्यदर्शनम्
(C) मीमांसादर्शनम् (D) लोकायतदर्शनम्

स्रोत–भारतीय दर्शन-हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-80

13. (C) 14. (B) 15. (D) 16. (C) 17. (A) 18. (B) 19. (D) 20. (A) 21. (C) 22. (A) 23. (D) 24. (B) 25. (D)

26. देहात्मवाद कौन मानता है- UGC 73 D–1998

(A) बौद्ध (B) जैन

(C) चार्वाक (D) नैयायिक

स्रोत–भारतीय दर्शन-हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-88

27. (i) अनुमान को प्रमाण नहीं मानता है -

(ii) अनुमानप्रमाणं नास्तीतिवादिनः सन्ति?

UGC 73 D–1999, J–2014

(A) बौद्ध (B) चार्वाक

(C) जैन (D) शङ्कर

स्रोत–भारतीय दर्शन-हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-82

28. नास्तिकशिरोमणिः कः- BHU AET–2011, 2012

(A) बौद्धः (B) जैनः

(C) चार्वाकः (D)गाणपत्यः

स्रोत–भारतीय दर्शन-हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-07

29. 'राजा भवतीश्वरः' यह मत है - UGC 73 D–2014

(A) चार्वाकस्य (B) पुराणस्य

(C) जैनस्य (D) अर्थशास्त्रस्य

स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह - उमाशंकर शर्मा, 'ऋषि', पेज–08

30. ''भूतेभ्यः चैतन्यमुपजायते'' ऐसा कहते हैं-

UGC 73 D–2014

(A) जैनाः (B) बौद्धाः

(C) चार्वाकाः (D) सांख्याः

स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-09

31. चार्वाकमते प्रमाणम् - BHU AET–2012

(A) त्रिविधम् (B) द्विविधम्

(C) चतुर्विधम् (D) एकविधम्

स्रोत–(i) भारतीय दर्शन-उमेश मिश्र, पेज-87

(ii) भारतीय दर्शन-हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-81

32. 'मरणमेव मोक्षः' इति वदन्ति - UGC 73 J–2013

(A) बौद्धाः (B) चार्वाकाः

(C) जैनाः (D) वैयाकरणाः

स्रोत–भारतीय दर्शन-उमेश मिश्र, पेज-86

33. पृथिव्यादि चार को ही भूत मानते हैं -

UGC 73 S–2013

(A) चार्वाकाः (B) वैशेषिकाः

(C) बौद्धाः (D) पौराणिकाः

स्रोत–भारतीय दर्शन-हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-86

34. स्वर्ग एवं ईश्वरादि को नहीं मानते हैं -

UGC 73 S–2013

(A) पौराणिकाः (B) वैशेषिकाः

(C) चार्वाकाः (D) मीमांसकाः

स्रोत–भारतीय दर्शन-हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-85

35. चार्वाक-संशयवादों में साम्य है- UGC 73 J–2014

(A) अतीतविषयनिषेधे (B) अनागतविषयनिषेधे

(C) अतीतानागतविषयनिषेधे (D) अनुमानप्रामाण्ये

स्रोत–चार्वाक दर्शन - आनन्द झा, पेज–70

36. (i) अपोह रूपमीति स्वीकुर्वन्ति?

(ii) 'अपोह' को शब्दार्थ मानने वाले मतवादी हैं -

(iii) अपोहसिद्धिवादिनः सन्ति?

(iv) 'संकेतग्रहे अपोहः शब्दार्थ' इति मतमस्ति?

UP GIC–2009, UP GDC–2012

UGC 73 J –2013, 2014

(A) मीमांसक (B) बौद्ध

(C) नैयायिक (D) वेदान्ती

स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-51,52

37. बौद्धमते चित्तचैत्तात्मकः स्कन्धः कतिविधः?

K SET– 2013

(A) त्रिविधः (B) चतुर्विधः

(C) पञ्चविधः (D) द्विविधः

स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह -उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-75

38. बौद्धदर्शनस्य मान्यसिद्धान्तोऽस्ति - UP GDC–2012

(A) स्याद्वादः (B) प्रतीत्यसमुत्पादवादः

(C) मायावादः (D) आत्मवादः

स्रोत–भारतीय दर्शन-हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-110

26. (C) 27. (B) 28. (C) 29. (A) 30. (C) 31. (D) 32. (B) 33. (A) 34. (C) 35. (C) 36. (B) 37. (C) 38. (B)

39. किस दर्शन के सिद्धान्त चार आर्य सत्य पर आधारित हैं? UGC-09-D-2010

(A) सांख्य (B) वेदान्त
(C) बौद्धमत (D) जैनमत

स्रोत–भारतीय दर्शन-हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-107

40. 'हीनयान' किससे सम्बद्ध है - BHU MET–2008, 2009, 2011, 2012, 2013

(A) बौद्धदर्शन (B) वेदान्त
(C) न्याय (D) चार्वाक

स्रोत–भारतीय दर्शन-हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-136

41. दिङ्नाग किस दर्शन के प्रतिष्ठापक हैं - BHU MET–2010

(A) वैशेषिक (B) बौद्धन्याय
(C) अद्वैत (D) सांख्य

स्रोत–भारतीय दर्शन-हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-129

42. 'त्रिपिटक' किससे सम्बद्ध है - BHU MET–2010

(A) जैनदर्शन (B) बौद्धदर्शन
(C) चार्वाकदर्शन (D) योगदर्शन

स्रोत–भारतीय दर्शन-हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-105

43. (i) योगाचार किस दर्शन का भेद है?
(ii) योगाचारः सिद्धान्तोऽयं वर्तते?
BHU MET–2010, UGC 73 Jn-2017

(A) जैन (B) चार्वाक
(C) बौद्ध (D) न्याय

स्रोत–भारतीय दर्शन-हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-129

44. (i) शून्यवाद किस दर्शन से सम्बद्ध है?
(ii) शून्यवादी कौन हैं -
(iii) शून्यवादक्षणभङ्गवादौ...........दर्शने भवतः?
(iv) शून्यवादसिद्धान्तः कुत्र वर्तते?
(v) शून्यवादमङ्गीकुर्वन्ति- UGC 73 J–2005, 2012 D–2007, 2011, S–2013, BHU Sh.ET–2013, BHU MET–2016

(A) सांख्य (B) बौद्ध
(C) जैन (D) नैयायिक

स्रोत–भारतीय दर्शन-हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-126

45. 'सर्वं शून्यम्' इति केन बौद्धसम्प्रदायेन स्वीकृतम्? UGC-25-D-2015

(A) माध्यमिकेन (B) सौत्रान्तिकेन
(C) योगाचारेण (D) वैभाषिकेन

स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह-उमाशंकर 'ऋषि', पेज-54

46. क्षणभङ्गवाद का सिद्धान्त है - UGC 73 J–2005, 2006, 2012

(A) जैनदर्शन (B) बौद्धदर्शन
(C) न्यायदर्शन (D) वैशेषिकदर्शन

स्रोत–भारतीय दर्शन-हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-121

47. बुद्धितत्त्व का विमर्श है - UGC 73 D–2005

(A) जैन दर्शन (B) बौद्ध दर्शन
(C) चार्वाक दर्शन (D) आगम

स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह- उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज- 61

48. (i) नागार्जुन प्रवर्तक हैं - UGC 73 J–2007, 2012
(ii) नागार्जुनः कस्य प्रवर्तकोऽस्ति –

(A) शून्यवाद (B) स्याद्वाद
(C) अद्वैतवाद (D) द्वैतवाद

स्रोत–भारतीय दर्शन-हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-126,127

49. अधोलिखितेषु बौद्धदर्शनाभिमतमार्यसत्यं नास्ति- UGC 73 Jn–2017

(A) दुःखम् (B) स्वीकरणम्
(C) समुदयः (D) मार्गः

स्रोत–भारतीय दर्शन-हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-108,110,117

50. 'आत्मदीपो भव' का दर्शन किसने दिया– H-TET-2015

(A) बुद्ध ने (B) कपिल ने
(C) विवेकानन्द ने (D) इन सभी ने

स्रोत–भारतीय दर्शन -हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-125

51. अवैदिक दर्शनों में से एक है- UGC 73 D–2008

(A) क्षणिकवादः (B) विवर्तवादः
(C) परिणामवादः (D) सत्कार्यवादः

स्रोत–भारतीय दर्शन-हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-121

39. (C) 40. (A) 41. (B) 42. (B) 43. (C) 44. (B) 45. (A) 46. (B) 47. (B) 48. (A) 49. (B) 50. (A) 51. (A)

52. बौद्धमत के अनुसार प्रत्यक्ष का विषय है- UGC 73 J–2009

(A) सामान्यलक्षणम् (B) स्वलक्षणम्
(C) नाम (D) जातिः

स्रोत–भारतीय दर्शन-चन्द्रधर शर्मा, पेज-91

53. 'विज्ञान सन्तान आत्मा' यह मत है- UGC 73 D–2009

(A) मीमांसकानाम् (B) अद्वैतवेदान्तिनाम्
(C) नैयायिकानाम् (D) बौद्धानाम्

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-103

54. ''द्वादशायतनानि'' का किसने निरूपण किया है- UGC 73 D–2010

(A) सांख्यैः (B) जैमिनीयैः
(C) पाशुपतैः (D) बौद्धैः

स्रोत–भारतीय दर्शन - हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-112-113

55. बौद्धदर्शन में सम्प्रदाय हैं - UGC 73 J–2013

(A) षट् (B) त्रयः
(C) चत्वारः (D) पञ्च

स्रोत–भारतीय दर्शन-हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-125

56. घटादिकं सर्वं विज्ञानरूपमिति स्वीकुर्वन्ति - UGC 73 J–2013

(A) जैनाः (B) वैशेषिकाः
(C) वेदान्तिनाः (D) बौद्धाः

स्रोत–वेदान्तसार -सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-134

57. सर्वास्तिवादी वर्तते– DU-M.phil–2016

(A) शून्यवादी (B) विज्ञानवादी
(C) वैभाषिक (D) सौत्रान्तिक

स्रोत– (i) भारतीय दर्शन - हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-134
(ii) भारतीय दर्शन - श्रीकान्त पाण्डेय, पेज–137

58. पुञ्ज से पुञ्ज की उत्पत्ति मानते हैं-UGC 73 J–2013

(A) चार्वाकाः (B) बौद्धाः
(C) जैनाः (D) वैशेषिकाः

स्रोत–भारतीय दर्शन-हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-134

59. अधोलिखितेषु केन सह कस्य सम्बन्धः उचितां तालिकां चिनुत - UGC 73 Jn–2017

क- सर्वं शून्यम् 1. योगाचारबौद्धाः
ख- बाह्यार्थशून्यत्वम् 2. वैभाषिकबौद्धाः
ग- बाह्यार्थानुमेयत्वम् 3. माध्यमिकबौद्धाः
घ- बाह्यार्थप्रत्यक्षम् 4. सौत्रान्तिकबौद्धाः

	क	ख	ग	घ
(A)	3	1	4	2
(B)	2	1	3	4
(C)	1	3	4	2
(D)	4	1	2	3

स्रोत–भारतीय दर्शन-हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-125-126

60. वैभाषिक कहलाते हैं - UGC 73 D–2013

(A) बौद्धाः (B) सांख्याः
(C) मीमांसकाः (D) जैनाः

स्रोत–भारतीय दर्शन - हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा , पेज-126,134

61. शून्यवादिनः इन्द्रियप्रत्यक्षं जगत् मन्यन्ते - UGC 73 D–2013

(A) सत्यमिति (B) नसत्यमिति
(C) सत्यासत्योभयमिति (D) अनिर्वचनीयमिति

स्रोत–भारतीय दर्शन-हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-127

62. 'यत्र यदध्यासस्तस्यैव विपरीतधर्मत्वकल्पनामाचक्षते:' इति मतम् – UGC 73 D–2013

(A) अख्यातिवादिनाम् (B) शून्यवादिनाम्
(C) आत्मख्यातिवादिनाम् (D) अन्यथाख्यातिवादिनाम्

स्रोत– ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यम्-स्वामी सत्यानन्द सरस्वती, पेज–7,9

63. दो प्रमाण स्वीकार करते हैं - UGC 73 S–2013

(A) पूर्वमीमांसकाः (B) बौद्धाः
(C) योगिनः (D) जैनाः

स्रोत–भारतीय दर्शन - श्रीकान्त पाण्डेय, पेज– 157

64. 'आलय विज्ञान' को स्वीकार करते हैं - UGC 73 S–2013

(A) वेदान्तिनः (B) बौद्धाः
(C) लौकिकाः (D) पाश्चात्यविज्ञानिनः

स्रोत–भारतीय दर्शन - हरेन्द्र प्रसाद, सिन्हा पेज-130

52. (B) 53. (D) 54. (D) 55. (C) 56. (D) 57. (C) 58. (B) 59. (A) 60. (A) 61. (D) 62. (B) 63. (B) 64. (B)

65. हीनयान- महायान में वैषम्य है - UGC 73 J–2014
(A) भगवद्विषये (B) जीवस्वरूपविषये
(C) जगद्विषये (D) मोक्षविषये

स्रोत–भारतीय दर्शन-हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-141

66. प्रमाणप्रमेयादिव्यवहारस्यापारमार्थिक स्वीकार करते हैं- UGC 73 J–2014
(A) शून्यवादिनः (B) अद्वैतिनः
(C) क्षणभङ्गवादिनः (D) विज्ञानवादिनः

स्रोत–

67. बौद्धदर्शन में आयतन हैं - UGC 73 J–2014, BHU AET–2011
(A) 12 (B) 13
(C) 15 (D) 18

स्रोत–भारतीय दर्शन-हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-112-113

68. बौद्धदर्शनप्रमाणमीमांसायाः प्रत्यक्षभेदाः सन्ति– JNU MET–2015
(A) निर्विकल्पकः सविकल्पकश्च
(B) प्रत्यक्षं परोक्षं च
(C) इन्द्रियमानसस्वसंवेदनयोगिप्रत्यक्षाणि
(D) प्रत्यक्षं परोक्षमपरोक्षं च

स्रोत–भारतीय दर्शन- उमेश मिश्र, पेज-156-157

69. नागार्जुनः कस्य दर्शनस्य आचार्यः? BHU Sh.ET–2013
(A) जैनदर्शनस्य (B) बौद्धदर्शनस्य
(C) वैष्णवदर्शनस्य (D) वेदान्तदर्शनस्य

स्रोत–भारतीय दर्शन-हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-126

70. एषु किं दर्शनं प्राकृतभाषायां लिखितम् - BHU Sh.ET–2008
(A) बौद्धम् (B) चार्वाक
(C) जैनम् (D) शैवम्

स्रोत–भारतीयदर्शन - हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज– 144

71. अधस्तनेषु पर्यायेषु समीचीनं विचिनुत–बाह्यायार्थशून्यत्वं के प्रतिपादयन्ति? MH- SET–2013
(A) योगाचाराः (B) माध्यमिकाः
(C) सौत्रान्तिकाः (D) वैभाषिकाः

स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-32

72. अधस्तनेषु विरूपं विचिनुत– MH-SET–2013
(A) रत्नत्रयम् (B) स्याद्वादः
(C) चेतनालक्षणो जीवः (D) भावनाचतुष्टयम्

स्रोत–भारतीय दर्शन-चन्द्रधर प्रसाद सिन्हा, पेज-148,154,159

73. 'नैरात्मवाद' मानते हैं - UGC 73 D–1997
(A) बौद्ध (B) जैन
(C) नैयायिक (D) मीमांसक

स्रोत–भारतीयदर्शन – चन्द्रधर शर्मा, पेज-55

74. विज्ञानवाद को मानते हैं-UGC 73 J–1998 D–1999
(A) वेदान्तिनः (B) मीमांसकाः
(C) योगाचाराः (D) बौद्धाः

स्रोत–भारतीय दर्शन-चन्द्रधर शर्मा, पेज-90, 91

75. जगत् को सत्य मानता है- UGC 73 J–1999
(A) शून्यवाद (B) अद्वैतवाद
(C) विज्ञानवाद (D) विशिष्टाद्वैतवाद

स्रोत–भारतीय दर्शन - हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज– 322, 323

76. बौद्धदर्शने कारणकार्यसिद्धान्तस्य का संज्ञाऽस्ति- UP GDC–2014
(A) सत्कार्यवादः (B) असत्कार्यवादः
(C) प्रतीत्यसमुत्पादवादः (D) विवर्तवादः

स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह-उमाशंकर शर्मा ऋषि, पेज-79

77. महासांघिकादि बौद्धपरिषद् की शाखायें हैं - UGC 73 D–2013
(A) नव (B) द्वादश
(C) तिस्रः (D) चत्वारि

स्रोत–भारतीय दर्शन - उमेश मिश्र, पेज–145

78. शब्दप्रमाण को स्वीकार नहीं करते हैं - UGC 73 D–2014
(A) बौद्धाः (B) गौतमीयाः
(C) सांख्याः (D) पौराणिकाः

स्रोत–सर्वदर्शन संग्रह- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-88

79. बौद्धदर्शन के अन्तर्गत माध्यमिक दर्शन के प्रतिपादक थे? UPTGT- S.S–2001
(A) नागार्जुन (B) अश्वघोष
(C) उपगुप्त (D) धर्मकीर्ति

स्रोत–भारतीय दर्शन-चन्द्रधर शर्मा, पेज-70

65. (D) 66. (A) 67. (A) 68. (C) 69. (B) 70. (C) 71. (A) 72. (D) 73. (A) 74. (C) 75. (D) 76. (C) 77. (A) 78. (A) 79. (A)

80. कस्य मतेन निर्विकल्पकमेव प्रत्यक्षं भवति ?
JNU MET–2014
(A) जैनदर्शनम् (B) न्यायः
(C) सांख्यः (D) बौद्धमतम्
स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि',पेज-84,85

81. बौद्धदर्शनस्य प्रसिद्धः सिद्धान्तः अस्ति -
JNU MET–2014
(A) प्रतीत्यसमुत्पादः (B) विवर्तवादः
(C) बिम्बप्रतिबिम्बवादः (D) आभासवादः
स्रोत–बौद्धदर्शन-मीमांसा - बलदेव उपाध्याय, पेज- 60

82. बुद्ध के उपदेशों की भाषा थी - BHU AET–2011
(A) मागधी या पाली (B) संस्कृत
(C) बौद्ध संस्कृत (D) अर्धमागधी प्राकृत
स्रोत–भारतीय दर्शन-हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-105

83. बौद्धों के मुख्य दार्शनिक प्रस्थानों की संख्या है-
BHU AET–2011
(A) चार (B) पाँच
(C) तीन (D) दो
स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज- 32

84. (i) शून्यतासिद्धान्त के मुख्य प्रतिष्ठापक आचार्य हैं-
(ii) शून्यवादस्य प्रवर्तकः - BHU AET–2011,
(iii) शून्यवादस्य प्रवर्तकः कः अस्ति?
(iv) शून्यवादस्य प्रवक्ता कः अस्ति?
CVVET-2015, UGC 73 D–2004, 2009
(A) नागार्जुनः (B) वसुबन्धुः
(C) असङ्गः (D) नागसेनः
स्रोत–भारतीय दर्शन- हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-126

85. नागार्जुन जगत् को मानते हैं - BHU AET–2011
(A) निःस्वभाववाद और शून्य
(B) शाश्वत और सस्वभाव
(C) उच्छेद और असत्स्वभाव
(D) नित्य और अनुत्पन्न
स्रोत–भारतीय दर्शन - हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-126, 127

86. बौद्धमत के प्रमाण का मान्य लक्षण है-
BHU AET–2011
(A) प्रमाकरणं प्रमाणम् (B) अविसंवादिज्ञानं प्रमाणम्
(C) अनुमितिकरणं प्रमाणम् (D) अज्ञातार्थज्ञापकं प्रमाणम्
स्रोत–भारतीय दर्शन- चन्द्रधर शर्मा, पेज-120

87. कार्यकारणसिद्धान्तः बौद्धदर्शने कथ्यते?
DU M.phil– 2016
(A) प्रतीत्यसमुत्पादः (B) द्वादशनिदानम्
(C) मध्यमप्रतिपदा (D) उक्ताः सर्वे विकल्पाः समीचीनाः
स्रोत–भारतीय दर्शन - चन्द्रधर शर्मा, पेज– 49-50

88. (i) बौद्धदर्शनेन कति प्रमाणानि स्वीकृतानि?
(ii) बौद्ध आचार्य प्रमाणों की संख्या मानते हैं -
BHU AET–2011, JNU MET–2015
(A) छः (B) पाँच
(C) चार (D) दो
स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-88

89. वसुबन्धु की कृति है - BHU AET–2011
(A) विंशतिका (B) महायान
(C) मध्यान्तविभंग (D) पञ्चभूमि
स्रोत–भारतीय दर्शन-उमेश मिश्र, पेज-164

90. बौद्धदर्शने भावनाचतुष्टये किं नोपदिष्टम्?
UGC-25-JL– 2016
(A) सर्वं क्षणिकं क्षणिकम् (B) स्वलक्षणं स्वलक्षणम्
(C) सामान्यं सामान्यम् (D) शून्यं शून्यम्
स्रोत–सर्वदर्शन संग्रह - उमाशङ्कर शर्मा ऋषि, पेज-31

91. बौद्ध निकायों की संख्या है - BHU AET–2011
(A) 28 (B) 18
(C) 05 (D) 14
स्रोत–भारतीय दर्शन-उमेश मिश्र, पेज-143

92. स्कन्धों की संख्या है - BHU AET–2011
(A) तीन (B) चार
(C) छः (D) पाँच
स्रोत–भारतीय दर्शन - उमेश मिश्र, पेज-152

80. (D) 81. (A) 82. (A) 83. (A) 84. (A) 85. (A) 86. (B) 87. (D) 88. (D) 89. (A) 90. (C) 91. (C) 92. (D)

93. बुद्ध के अनुसार दुःखों का मुख्य कारण है- BHU AET–2011

(A) भव (B) जाति
(C) तृष्णा (D) अविद्या

स्रोत–(i) भारतीय दर्शन - चन्द्रधर शर्मा, पेज-53, 54
(ii) भारतीय दर्शन - शोभा निगम, पेज–107

94. निर्विकल्पकं ज्ञानमिति - BHU AET–2012

(A) बौद्धाः (B) तार्किकाः
(C) सांख्याः (D) शाब्दिकाः

स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-85

95. क्षणिकविज्ञानवादी तावत् - BHU AET–2012

(A) वैभाषिकः (B) माध्यमिकः
(C) योगाचारः (D) सौत्रान्तिकः

स्रोत–भारतीय दर्शन-हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-121,130-131

96. भगवान् बुद्ध किस धर्म के संस्थापक हैं - BHU AET–2010, 2011

(A) जैनधर्म (B) बौद्धधर्म
(C) यहूदीधर्म (D) साँईधर्म

स्रोत–भारतीय दर्शन-हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-104-105

97. 'बुद्धिरात्मा' से सम्बन्धित है ? BHU MET–2015

(A) चार्वाक (B) बौद्ध
(C) वेदान्त (D) मीमांसा

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–103

98. बौद्धदर्शनस्य कियन्तो भेदाः सन्ति? GJ SET–2013

(A) त्रयः (B) पञ्च
(C) चत्वारः (D) सप्त

स्रोत–भारतीय दर्शन - हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-125

99. सौत्रान्तिकसम्प्रदायः सम्बद्ध अस्ति - UP GIC–2015

(A) बौद्धदर्शनेन (B) जैनदर्शनेन
(C) चार्वाकदर्शनेन (D) योगदर्शनेन

स्रोत–भारतीय दर्शन - उमेश मिश्र, पेज-149

100. एषा बौद्धस्य शाखा नास्ति - AWES TGT–2010

(A) धर्मयान (B) हीनयान
(C) महायान (D) कोऽपि युक्तो न वर्तते

स्रोत–भारतीय दर्शन-हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-138

101. क्षणिकविज्ञानवादिनः के - BHU AET–2011

(A) बौद्धाः (B) जैनाः
(C) नैयायिकाः (D) मीमांसकाः

स्रोत–भारतीय दर्शन-हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-121

102. जैनदर्शन के अनुसार आत्मा का परिमाण होता है- UP GDC–2012

(A) अणु (B) परममहत्
(C) मध्यमम् (D) ह्रस्व

स्रोत–भारतीय दर्शन - उमेश मिश्र, पेज– 97

103. (i) सप्तभङ्गीनय किसमें है-BHU MET–2010, 2016
(ii) सप्तभङ्गीनय किससे सम्बद्ध है?
(iii) सप्तभङ्गीनय को कौन मानते हैं?
(iv) सप्तभङ्गीन्यायः कैः अङ्गीकृतः?
UGC 73 J–1999, K-SET–2013, CVVET–2015

(A) बौद्धदर्शन (B) जैनदर्शन
(C) सांख्यदर्शन (D) न्यायदर्शन

स्रोत–भारतीय दर्शन-हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-149

104. नास्तिकदर्शन है-BHU MET–2010, UGC 73 D–2005

(A) जैनदर्शन (B) योगदर्शन
(C) न्यायदर्शन (D) वेदान्तदर्शन

स्रोत–भारतीय दर्शन-हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-143

105. (i) जैनदर्शनस्य मूलप्रवर्तकः - BHU MET–2010
(ii) जैनदर्शन के प्रणेता हैं- AWES-TGT–2010, 2011

(A) ऋषभदेव (महावीर स्वामी)
(B) पतञ्जलि
(C) जैमिनि
(D) बुद्ध

स्रोत–भारतीय दर्शन-हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-143

106. 'नवतत्त्वानि तन्मते' किसका मत है ? UGC 73 J–2010

(A) बौद्धमते (B) जैनमते
(C) सांख्यमते (D) जैमिनिमते

स्रोत–भारतीय दर्शन-हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-162

93. (D) 94. (A) 95. (C) 96. (B) 97. (B) 98. (C) 99. (A) 100. (A) 101. (A) 102. (C) 103. (B) 104. (A) 105. (A) 106. (B)

107. 'तीन रत्न' द्वारा मुक्ति होती है, किस धर्म के अनुसार– UGC 09-J– 2009

(A) बौद्धधर्म (B) जैनधर्म
(C) न्याय (D) सांख्य

स्रोत–भारतीय दर्शन-हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-159

108. अधस्तनेषु पर्यायेषु समीचीनं विचिनुत– जैनमतेन आर्हत्स्वरूपं किम्? MH SET– 2013

(A) सर्वज्ञो जितरागादिदोषः त्रैलोक्यपूजितः
(B) भुवनानामुपादानं कर्ता जीवनियामकः
(C) स्वतन्त्रो भवान् निर्दोषोऽशेषसद्गुणः
(D) सर्वज्ञः सर्वकर्तृत्वात् साधनाङ्गफलैः सह यो यज्जानाति कुरुते सः

स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि',पेज-103

109. अधस्तनवर्गयोः युग्मपर्यायेषु समीचीनं विचिनुत– MH SET– 2013

(क) स वा एष पुरुषोऽन्नरसमयः 1. अपरचार्वाकः
(ख) आत्मा वै जायते पुत्रः 2. अतिप्राकृतः
(ग) अन्योऽन्तर आत्ममनोमयः 3.चार्वाकः
(घ) ब्रूयुः ते ह प्राणः प्रजापतिं पितरमेत्यब्रूयुः 4. अन्यचार्वाकः

	क	ख	ग	घ
(A)	1	3	2	4
(B)	1	4	3	2
(C)	3	2	4	1
(D)	4	1	2	3

स्रोत–वेदान्तसार - राकेश शास्त्री, पेज–216

110. (i) 'स्याद्वादः' कस्य दर्शनस्य सिद्धान्तोऽस्ति ?
(ii) स्याद्वादस्य प्रतिपादनं कृतम् - BHU MET–2011,
(iii) 'स्याद्वाद' सिद्धान्त है - 2012,
(iv) स्याद्वाद .... का अभिमत है?
(v) स्याद्वादम् अङ्गीकुर्वन्ति?
UGC 73 J–1991, 2005, 2011, 2012 D–1999, 2006, UP GIC–2012, UP GDC–2014

(A) बौद्धदर्शन (B) चार्वाकदर्शन
(C) जैनदर्शन (D) माध्वदर्शन

स्रोत–जैनदर्शनसार – नरेन्द्र कुमार शर्मा, पेज-(xvii)

111. जैन और बौद्धों में समानतत्त्व होता है- UGC 73 D–2012

(A) जगन्मिथ्यात्वम् (B) ईश्वरास्तित्वाभावः
(C) प्रत्यक्षप्रामाण्यम् (D) सत्तात्रैविध्यम्

स्रोत–भारतीय दर्शन-हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-143

112. अनेकान्तवाद दर्शन का सिद्धान्त है - UGC 73 J–1998, 2014

(A) जैन (B) बौद्ध
(C) चार्वाक (D) सांख्य

स्रोत–भारतीय दर्शन-हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-146

113. जैन में अस्तिकाय की संख्या है - UGC 73 D–1994

(A) चार (B) पाँच
(C) तीन (D) दो

स्रोत–भारतीय दर्शन - चन्द्रधर शर्मा, पेज-39

114. जैनदर्शनं कं सिद्धान्तं न मन्यते– UGC-25-J– 2016

(A) कर्मवासनासिद्धान्तम्
(B) कर्मफलस्य क्रमजन्यतासिद्धान्तम्
(C) कर्मफलनाशसिद्धान्तम्
(D) आत्मनो नित्यतासिद्धान्तम्

स्रोत–भारतीय दर्शन- हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-152

115. (i) 'प्रतीत्यसमुत्पाद' के समर्थक हैं -
(ii) प्रतीत्यसमुत्पादवादः अनेन दर्शनशास्त्रेण सम्बद्धः– UGC 73 D–1994, CVVET–2015

(A) जैन (B) बौद्ध
(C) चार्वाक (D) मीमांसक

स्रोत–भारतीय दर्शन - शोभा निगम, पेज-111

116. सप्तभङ्गीनय में 'स्यात्' शब्द द्योतक होता है- UGC 73 D–2014

(A) सादृश्यस्य (B) विरोधस्य
(C) भेदस्य (D) अनेकान्तस्य

स्रोत–जैनदर्शनसार - नरेन्द्र कुमार शर्मा, पेज–265

117. जैनों का रामायण कहलाता है - BHU AET–2011

(A) पद्मपुराण (B) आदिपुराण
(C) उत्तरपुराण (D) हरिवंशपुराण

स्रोत–संस्कृतवाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-12), पेज–235

107. (B) 108. (A) 109. (C) 110. (C) 111. (B) 112. (A) 113. (B) 114. (C) 115. (B) 116. (D) 117. (A)

118. जैनदर्शन का दूसरा नाम है- BHU AET–2011

(A) श्रमणदर्शन (B) सुगतदर्शन
(C) सांख्यदर्शन (D) औलूक्यदर्शन

स्रोत– भारतीय दर्शन - शोभा निगम, पेज–13

119. जैनों का एक सम्प्रदाय है - BHU AET–2011

(A) पीताम्बर (B) दिगम्बर
(C) राधास्वामी (D) माध्यमिक

स्रोत– भारतीय दर्शन - उमेश मिश्र, पेज – 99

120. जैनदर्शनानुसारं द्रव्येषु क्रियाशीलतां सञ्चारयति– DU-M.phil–2016

(A) स्कन्धः (B) कालः
(C) धर्मः (D) अधर्मः

स्रोत– (i) जैनदर्शनसार - नरेन्द्र कुमार शर्मा, पेज–xiv
(ii) संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-12), पेज–70

121. जैनों का एक ग्रन्थ है - BHU AET–2011

(A) षट्खण्डागम (B) बाइबिल
(C) कुरान (D) श्रीमद्भागवत

स्रोत– भारतीय दर्शन - नन्दकिशोर देवराज, पेज– 107

122. दिगम्बर आगमग्रन्थों की मुख्य भाषा है - BHU AET–2011

(A) मागधी (B) अर्धमागधी
(C) शौरसेनी (D) महाराष्ट्री

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र–कपिलदेव द्विवेदी, पेज-438

123. णमोकार मन्त्र में किसको नमस्कार किया गया है - BHU AET–2011

(A) गणेशजी (B) शिव जी
(C) पञ्चपरमेष्ठी (D) भरतचक्रवर्ती

स्रोत– गूगल सर्च

124. महावीर भगवान् का प्रथम उपदेश हुआ - BHU AET–2011

(A) कैलाशपर्वत पर (B) राजगृह में
(C) वाराणसी में (D) सम्भेदशिखर

स्रोत– गूगल सर्च

125. कौन-सा द्रव्य अस्तिकाय नहीं है- BHU AET–2011

(A) कालद्रव्य (B) जीवद्रव्य
(C) आकाशद्रव्य (D) धर्मद्रव्य

स्रोत–भारतीय दर्शन-हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-154

126. जैनदर्शनानुसारं 'सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चरित्राणि................'। UGC 25 D–2015

(A) जीवः (B) मोक्षमार्गः
(C) मनः पर्यायः (D) मोक्षः

स्रोत–भारतीय दर्शन-जगदीशचन्द्र मिश्र, पेज-233

127. भगवान् महावीर की माता का नाम है- BHU AET–2011

(A) मरुदेवी (B) त्रिशलादेवी
(C) वामादेवी (D) इन्द्राणी

स्रोत–भारतीय दर्शन-शोभा निगम, पेज-77

128. 'दृष्टवदानुश्रविकः' इत्यत्र आनुश्रविकपदस्यार्थः..... GJ-SET–2016

(A) पौराणिकः (B) नास्तिकः
(C) वैदिकः (D) बौद्धः

स्रोत–सांख्यकारिका- राकेश शास्त्री, पेज-5

129. भगवान् महावीर की निर्वाण भूमि है- BHU AET–2011

(A) पावापुरी (B) सम्मेदशिखर
(C) कैलाश पर्वत (D) गिरनार

स्रोत–भारतीय दर्शन-शोभा निगम, पेज-79

130. जैन आगमों की मूलभाषा है - BHU AET–2011

(A) पालि (B) प्राकृत
(C) संस्कृत (D) अपभ्रंश

स्रोत–भारतीय दर्शन-हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-144

131. (i) जैनदर्शन में कितने तीर्थंकर हुये–
(ii) वर्धमानमहावीरः जैनतीर्थङ्करेषु कतमः– CVVET-2015 UGC 09 J–2008

(A) अष्टादशः (B) त्रयोदशः
(C) षोडशः (D) चतुर्विंशः

स्रोत–भारतीय दर्शन-हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-143

118. (A) 119. (B) 120. (C) 121. (A) 122. (B) 123. (B) 124. (B) 125. (A) 126. (B) 127. (B) 128. (C) 129. (A) 130. (B) 131. (D)

132. पाँच व्रतों में नाम नहीं आता - BHU AET–2011

(A) अहिंसा (B) अपरिग्रह

(C) ब्रह्मचर्य (D) क्षमा

स्रोत–भारतीय दर्शन- उमेश मिश्र, पेज-99

133. भङ्गीन्यायो जैनमतेन कतिविधम्? GJ-SET–2013

(A) पञ्चविधः (B) सप्तविधः

(C) अष्टविधः (D) नवविधः

स्रोत–भारतीय दर्शन-चन्द्रधर शर्मा, पेज-34

134. जैनदर्शन के अनुसार जीव है - BHU AET–2011

(A) आकाश प्रमाण (B) अणु प्रमाण

(C) लोक प्रमाण (D) देह प्रमाण

स्रोत–भारतीय दर्शन - उमेश मिश्र, पेज-97

135. जैनदर्शने द्रव्यस्य भेदानां संख्या अस्ति- UP GIC–2015

(A) 9 (B) 5

(C) 7 (D) 3

स्रोत–संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-12), पेज–67-69

136. 'अर्हत्' इत्यस्य प्रतिपादकं दर्शनमस्ति - UP GIC–2012

(A) चार्वाकदर्शनम् (B) बौद्धदर्शनम्

(C) जैनदर्शनम् (D) वेदान्तदर्शनम्

स्रोत–भारतीय दर्शन-चन्द्रधर शर्मा, पेज-29

137. 'अनुत्तम' का क्या अर्थ है ? BHU MET–2013

(A) जो अच्छा नहीं है

(B) उत्तमता का अभाव

(C) जिससे उत्कृष्ट कोई और न हो

(D) व्यर्थ

स्रोत– शिशुपालवध (1/27)-तारिणीश झा, पेज– 60

138. कालानवच्छिन्न प्रणववाच्य होता है - UGC 73 D–2014

(A) धर्मः (B) वेदः

(C) ईश्वरः (D) प्रकृतिः

पातञ्जलयोगदर्शनम् (1.26,27)-सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पेज-92,93

139. विपर्यय है - UGC 73 J–2008

(A) पदार्थविशेषः (B) रसविशेषः

(C) अभावविशेषः (D) अयथार्थविशेषः

स्रोत–तर्कभाषा- श्रीनिवास शास्त्री, पेज-14

140. ''औलूक्यदर्शनम्' इति संज्ञया प्रसिद्धं दर्शनमस्ति - UP GDC–2012

(A) सांख्यदर्शनम् (B) योगदर्शनम्

(C) वैशेषिकदर्शनम् (D) मीमांसादर्शनम्

स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह–उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-336

141. (i) वैशेषिक सूत्रों के रचयिता कौन हैं -
(ii) वैशेषिक दर्शन के प्रवर्तक कौन हैं? BHU MET–2008, 2016

(A) गौतम (B) कणाद

(C) पतञ्जलि (D) बादरायण

स्रोत–भारतीय दर्शन-हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-203

142. (i) अधस्तनेषु पर्यायेषु समीचीनं विचिनुत –
(ii) चतुर्णां बौद्धानामेषामुक्तिः प्रकीर्तिता। MH SET–2013

(A) दुःखोच्छेदसम्भवा

(B) रागादिज्ञानसन्तानवासनोच्छेदसम्भवा

(C) कर्मबन्धनसरूपा

(D) अज्ञानोच्छेदसम्भवा

स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज– 89

143. परमाणुसिद्धान्तः कस्मिन् दर्शने प्रतिपाद्यते– KL SET–2014

(A) मीमांसायाम् (B) न्याये

(C) वैशेषिके (D) द्वैते

स्रोत– भारतीय दर्शन - शोभा निगम, पेज– 197

144. नैयायिकमते मोक्षः नाम कः? KL SET–2015

(A) आत्यन्तिकदुःखध्वंसः

(B) स्वकर्तव्यत्वप्रकारकबोधानुकूलो व्यापारः

(C) शब्दप्रकृतिरपभ्रंशः

(D) ज्ञानविषयताऽवच्छेदकत्वमेवेष्टसाधनत्वम्

स्रोत–(i) भारतीय दर्शन - उमेश मिश्र, पेज– 187

(ii) तर्कभाषा - गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज– 532

132. (D) 133. (B) 134. (D) 135. (C) 136. (C) 137. (C) 138. (C) 139. (D) 140. (C) 141. (B) 142. (B) 143. (C) 144. (A)

145. नैयायिकमतानुसारेण 'चैत्रः पचति' इति वाक्यस्य कीदृशः शाब्दबोधः? RPSC SET-2015
(A) विक्लित्यप्रतिकूलव्यापारानुकूल
(B) विक्लित्यनुकूलव्यापारानुकूल
(C) क्रियान्तराऽऽकाङ्क्षोत्यपकताऽवच्छेक
(D) प्रत्ययार्थसमानाधिकरण
स्रोत–कारिकावली - लोकमणि दाहाल, पेज–81-83

146. स्पर्शी पदार्थ है- BHU Sh.ET-2011
(A) जल (B) अग्नि
(C) आकाश (D) वायु
स्रोत–भारतीय दर्शन -उमेश मिश्र, पेज-230

147. पीलुपाकवादिनः के ? BHU AET-2011, UGC 25 D-2007
(A) नैयायिकाः (B) वैशेषिकाः
(C) वेदान्तिनः (D) मीमांसकाः
स्रोत–भारतीय दर्शन- उमेश मिश्र, पेज-238

148. कौन यह मानते हैं कि वेदान्त वाक्य निरर्थक हैं ? क्योंकि वे कोई क्रिया नहीं करते -UGC 73 J-2008
(A) सुरेश्वरः (B) श्रीहर्षः
(C) जैमिनिः (D) कणादः
स्रोत–

149. परमाणुसिद्धान्तस्य प्रवर्तकः दर्शनकारोऽस्ति - UGC 73 D-2013
(A) बृहस्पतिः (B) कपिलः
(C) जैमिनिः (D) कणादः
स्रोत–भारतीय दर्शन - हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-223,224

150. किं नाम प्रमेयम् ? BHU AET-2012
(A) प्रमायाः विषयः (B) प्रमाता
(C) प्रमायाः करणम् (D) विशेषणम्
स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज–175

151. नव्यन्याय के प्रवर्त्तक हैं - UGC 73 D-1996,2012
(A) उदयनः (B) गङ्गेशः
(C) वाचस्पतिः (D) गौतमः
स्रोत–(i) तर्कभाषा- श्रीनिवास शास्त्री, पेज भू0- 24
(ii) भारतीय दर्शन- चन्द्रधर शर्मा, पेज-174

152. ''अनुमान प्रमाण के द्वारा ईश्वर की सिद्धि होती है''- यह मत है - UGC 73 D-2012
(A) बौद्धानाम् (B) जैनानाम्
(C) चार्वाकाणाम् (D) नैयायिकानाम्
स्रोत–न्यायदर्शन (वात्स्यायन भाष्य) ढुण्ढिराजशास्त्री, पेज-478

153. ''आख्यातार्थ कृति है'' इसे कहते हैं- UGC 73 J-2013
(A) शाब्दिकाः (B) न्यायनयज्ञाः
(C) पूर्वमीमांसकाः (D) वेदान्तिनः
स्रोत–षट् दर्शनम् - नन्दलाल दशोरा, पेज– 265

154. ईश्वरात्मनि सुखं नास्ति - UGC 73 J-2013
(A) धर्माभावात् (B) सामग्र्याभावात्
(C) रूपाभावात् (D) मनः संयोगात्
स्रोत–

155. 'व्यवहारादपि शक्तिग्रहो भवति' इति स्वीकुर्वन्ति - UGC 73 J-2013
(A) पूर्वमीमांसकाः (B) नैयायिकाः
(C) वेदान्तिनः (D) सांख्याः
स्रोत–साहित्यदर्पण – राजेन्द्र मिश्र, पेज-149

156. 'अनुमान प्रमाणगम्य ईश्वर' यह मानते हैं- UGC 73 D-2013
(A) न्यायनयज्ञाः (B) प्रत्यक्षप्रमाणवादिनः
(C) कर्मकाण्डिनः (D) तान्त्रिकाः
स्रोत–न्यायदर्शन (वात्स्यायनभाष्य)-ढुण्ढिराज शास्त्री, पेज–278

157. तम को द्रव्य नहीं मानते हैं - UGC 73 -2013
(A) पूर्वमीमांसकाः (B) वेदान्तिनः
(C) नैयायिकाः (D) योगिनः
स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज– 195

158. 'वेदः पौरुषेयः' ऐसा कहते हैं - UGC 73 S-2013
(A) वेदान्तिनः (B) नैयायिकाः
(C) मीमांसकाः (D) पौराणिकाः
संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास-बलदेव उपाध्याय, भू. पेज–59

145. (B) 146. (D) 147. (B) 148. (C) 149. (D) 150. (A) 151. (B) 152. (D) 153. (C) 154. (A) 155. (B) 156. (A) 157. (C) 158. (D)

159. वेद को पौरुषेयत्व कौन मानता है? BHU AET–2010

(A) वेदान्तिनः (B) मीमांसकाः
(C) चार्वाकाः (D) नैयायिकाः

स्रोत– (i) भारतीय दर्शन - हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज– 10
(ii) संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास - बलदेव उपाध्याय, भू. पेज–59

160. 'प्रामाण्यमनुव्यवसायेन गृह्यते' इति कस्य मतम् - UGC 25 J–2007

(A) नैयायिकस्य (B) वेदान्तिनः
(C) प्रभाकरमीमांसकस्य (D) मुरारिमिश्रस्य

स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज - 168-170

161. ज्ञानस्य प्रत्यक्षत्वं को न स्वीकरोति-UGC 25 J–2011

(A) नैयायिकः (B) प्रभाकरमीमांसकः
(C) भाट्टमीमांसकः (D) मुरारिमिश्रः

स्रोत– तर्कभाषा, श्री निवास शास्त्री, पेज-170

162. न्यायमते पदार्थत्वं किमस्ति - UGC 25 J–2011

(A) जातिः (B) अखण्डोपाधिः
(C) सखण्डोपाधिः (D) पदार्थान्तरम्

स्रोत–तर्कभाषा- श्रीनिवास शास्त्री, पेज-04

163. संसर्गमर्यादावाद को मानते हैं - UGC 73 D–1997

(A) गदाधर (B) रघुनाथ
(C) जयदेव (D) मथुरानाथ

स्रोत–

164. संसर्गानवगाहि ज्ञान है- UGC 73 D–2014

(A) अज्ञानम् (B) निर्विकल्पकम्
(C) सविकल्पकम् (D) शाब्दबोधः

स्रोत–तर्कभाषा - गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज- 67,68

165. असत्कार्यवादस्य अभिप्रायः अस्ति- JNU MET–2014

(A) कार्यं सत् कारणे (B) कार्यम् असत् कारणे
(C) असत् कार्यम् (D) असत् कारणम्

स्रोत–भारतीय दर्शन- हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-191

166. न्यायदर्शने स्वीकृतः प्रमुखसिद्धान्तः कः? GJ SET–2013

(A) सत्कार्यवादः (B) असत्कार्यवादः
(C) देहात्मवादः (D) विवर्तवादः

स्रोत–भारतीय दर्शन-हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-191,192

167. न्यायदर्शने अध्यायाः कति ? BHU AET–2010

(A) चत्वारः (B) पञ्च
(C) षट् (D) त्रयः

स्रोत–भारतीय दर्शन- उमेश मिश्र, पेज-179

168. न्यायदर्शनस्य प्रथमं सूत्रं किम् - BHU AET–2010

(A) दुःखजन्म......... (B) प्रमाणप्रमेय ....
(C) स द्विविध .... (D) आप्तवाक्यम् ....

स्रोत– (i) सर्वदर्शनसंग्रह- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज- 385
(ii) तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज-03

169. निम्नाङ्कित में से कौन दार्शनिक ईश्वर को अलौकिक रूप में स्वीकार करते हैं? UGC-73-D– 2015

(A) चार्वाक (B) बौद्ध/जैन
(C) सांख्य/मीमांसक (D) न्याय/वैशेषिक

स्रोत–भारतीय दर्शन-हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-192-195-196

170. प्रामाण्य - अप्रामाण्यं कस्य दर्शनस्य विषयः? AWES TGT–2010

(A) सांख्यदर्शनस्य (B) न्यायदर्शनस्य
(C) योगदर्शनस्य (D) वेदान्तदर्शनस्य

स्रोत–तर्कभाषा-श्रीनिवासशास्त्री, पेज-169

171. कुमारिलभट्ट इनमें से क्या थे - UP GIC–2009, BHU MET–2000

(A) व्यञ्जनावादी (B) सांख्यमतानुयायी
(C) मीमांसक (D) नैयायिक

स्रोत–भारतीय दर्शन-चन्द्रधर शर्मा, पेज-191

172. (i) 'अथातो धर्मजिज्ञासा' किस दर्शन का सूत्र है?
(ii) 'अथातो धर्मजिज्ञासा' इति सूत्रं कुत्र अस्ति-
(iii) 'अथातो धर्मजिज्ञासा' किसका सूत्र है?
BHU MET–2008, 2013, UGC 73 D–2006

(A) उत्तरमीमांसा का (B) न्यायदर्शन का
(C) पूर्वमीमांसा का (D) जैनदर्शन का

स्रोत–भारतीय दर्शन-चन्द्रधर शर्मा, पेज-191

173. प्रभाकर थे एक- BHU MET–2014

(A) नैयायिक (B) मीमांसक
(C) जैनदार्शनिक (D) वेदान्ती

स्रोत–भारतीय दर्शन-चन्द्रधर शर्मा, पेज-192

159. (C) 160. (A) 161. (A) 162. (A) 163. (A) 164. (B) 165. (C) 166. (B) 167. (B) 168. (B) 169. (D) 170. (B) 171. (C) 172. (C) 173. (B)

174. मीमांसा दर्शन के अनुसार शब्द है–BHU MET–2014

(A) अनित्य (B) नित्य

(C) क्षणिक (D) विकार

स्रोत–भारतीय दर्शन-चन्द्रधर शर्मा, पेज-198

175. अधस्तनेषु पर्यायेषु समीचीनं विचिनुत– 'अथातो ब्रह्मजिज्ञासा' इति सूत्रं कस्य प्रहरणाय निर्मितमिति शङ्कराचार्यमतम्– MH SET–2013

(A) अविद्याहेतोः (B) मायाहेतोः

(C) अनर्थहेतोः (D) जगद्हेतोः

स्रोत–

176. अधस्तनवाक्यानां सत्यासत्यपर्यायेषु समीचीनं विचिनुत– MH SET–2013

(A) शङ्कराचार्यैः अथशब्दः मङ्गलार्थः प्रतिपादितः

(B) शङ्कराचार्यैः अथशब्दः अधिकारार्थः स्वीकृतः

(C) शङ्कराचार्यैः अथशब्दः आनन्तर्यार्थः दत्तः

(D) शङ्कराचार्यैः अथशब्दः प्रश्नार्थः अङ्गीकृतः

(A) असत्यम्, असत्यम्, सत्यम्, असत्यम्

(B) सत्यम्, सत्यम्, असत्यम्, सत्यम्

(C) सत्यम्, असत्यम्, सत्यम्, असत्यम्

(D) असत्यम्, सत्यम्, असत्यम्, सत्यम्

स्रोत–ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यम्-हनुमानदास जी षट्शास्त्री, पेज–20

177. अधोलिखितेषु किं अवैदिकदर्शनं न? K SET–2014

(A) जैनम् (B) बौद्धम्

(C) चार्वाकम् (D) पूर्वमीमांसा

स्रोत–भारतीय दर्शन-चन्द्रधर शर्मा, पेज-191

178. पूर्वमीमांसाशास्त्रं वर्तते - BHU AET–2012

(A) ज्ञानकाण्डप्रधानम् (B) कर्मकाण्डप्रधानम्

(C) कामशास्त्रम् (D) धर्मशास्त्रम्

स्रोत–भारतीय दर्शन- उमेश मिश्र, पेज-240

179. मीमांसासूत्रकार हैं- UGC 73 J–2005

(A) व्यास (B) गौतम

(C) जैमिनि (D) कपिल

स्रोत–भारतीय दर्शन- उमेश मिश्र, पेज-241

180. श्रुतिप्रमाणस्य प्राथम्यं प्रतिपादितम् अस्ति - UGC 73 D–2004

(A) वैशेषिकदर्शन (B) जैनदर्शन

(C) मीमांसादर्शन (D) न्यायदर्शन

स्रोत– भारतीय दर्शन - चन्द्रधर शर्मा, पेज–191

181. (i) अभिहितान्वयवादिनः के?

(ii) अभिहितान्वयवाद के प्रवर्तक हैं?

(iii) अभिहितान्वयवादः कस्य अभिमतः -

BHU AET–2011, UGC 73 D–1992, 1997, 2009

(A) वेदान्तिनः (B) नैयायिकाः

(C) प्राभाकराः (D) भाट्टाः

स्रोत–भारतीय दर्शन- शोभा निगम, पेज-212

182. 'द्वादशी' यह किसका दूसरा नाम है ? UGC 73 J–2008

(A) गौतमनयस्य (B) पातञ्जलिनयस्य

(C) बादरायणनयस्य (D) जैमिनिनयस्य

स्रोत–भारतीय दर्शन- उमेश मिश्र, पेज-241

183. जैमिनिसूत्र में कितने अध्याय हैं - UGC 73 2008

(A) द्वादश (B) चत्वारः

(C) पञ्च (D) अष्टादश

स्रोत–भारतीय दर्शन- उमेश मिश्र,पेज-241

184. (i) मीमांसादर्शन में अध्याय हैं -

(ii) मीमांसादर्शने कति अध्यायाः सन्ति?

UGC 73 D–1992 J–2009

(A) दश (B) चत्वारः

(C) द्वादश (D) पञ्च

स्रोत–भारतीय दर्शन- उमेश मिश्र, पेज 241

185. (i) अन्विताभिधानवाद के पुरस्कर्ता हैं -

(ii) अन्विताभिधानवाद के प्रवर्तक हैं?

(iii) अन्विताभिधानवाद कौन मानता है?

UGC 73 D–1992, 1999, J–2009

(A) कुमारिलभट्टः (B) गौतमः

(C) मुरारिमिश्रः (D) प्रभाकरः

स्रोत–भारतीय दर्शन- शोभा निगम, पेज-212

174. (B) 175. (C) 176. (A) 177. (D) 178. (B) 179. (C) 180. (C) 181. (D) 182. (D) 183. (A) 184. (C) 185. (D)

186. (i) अभाव पदार्थ स्वीकार नहीं करते -
(ii) अभाव को अतिरिक्त पदार्थ नहीं मानते -
UGC 73 J–1998, 2011

(A) भाट्टाः (B) प्राचीननैयायिकाः
(C) नव्यनैयायिकाः (D) प्राभाकराः

स्रोत–भारतीय दर्शन- चन्द्रधर शर्मा, पेज-209

187. (i) प्रभाकारों के अनुसार प्रमाण हैं-
(ii) प्रभाकर के मत में प्रमाण हैं?
UGC 73 J–1991 D–2011

(A) द्वे (B) त्रीणि
(C) चत्वारि (D) पञ्च

स्रोत–भारतीय दर्शन- शोभा निगम, पेज-210

188. (i) मीमांसा में लिङ्ग होता है-
(ii) मीमांसायां लिङ्गं भवति - UGC 73 J–2012

(A) चतुर्विधम् (B) द्विविधम्
(C) षड्विधम् (D) पञ्चविधम्

स्रोत–अर्थसंग्रह- सत्यप्रकाश शर्मा, पेज-76

189. ज्योतिष्टोम में पशुयाग होते हैं- UGC 73 J–2012

(A) पञ्च (B) सप्त
(C) चत्वारः (D) त्रयः

स्रोत–अर्थसंग्रह - सत्यप्रकाश शर्मा, पेज- 121

190. पूर्वमीमांसा में भावना है - UGC 73 D–2012

(A) संस्कारविशेषः (B) व्यापारविशेषः
(C) चिन्ताविशेषः (D) प्रतिज्ञाविशेषः

स्रोत–अर्थसंग्रह – सत्यप्रकाश शर्मा, पेज-19

191. ''पूजितविचारो मीमांसाशब्दः'' इति वचनं भवति - UGC 73 D–2013

(A) वाचस्पतिमिश्रस्य (B) सायणाचार्यस्य
(C) नीलकण्ठभट्टस्य (D) माधवाचार्यस्य

स्रोत–

192. वेदों का प्रामाण्य स्वतः एव सिद्ध है - UGC 73 S–2013

(A) अनवस्थानात् (B) आनन्त्यात्
(C) बुद्धिदोषाभावात् (D) प्रत्यभिज्ञाविरोधात्

स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह – उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-675

193. ''वेदेन प्रयोजनमुदिश्य विधीयमानोऽर्थः धर्मः'' यह धर्म लक्षण है - UGC 73 J–2014

(A) जैमिनिन्यायभाष्ये (B) अर्थसंग्रहे
(C) मीमांसान्यायप्रकाशे (D) कणादमते

संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (नवम खण्ड) पेज-419

194. जैमिनि .... के आचार्य हैं ? BHU MET–2011

(A) पूर्वमीमांसा (B) न्याय
(C) वेदान्त (D) जैनदर्शन

स्रोत–भारतीय दर्शन – उमेश मिश्र, पेज- 240-241

195. ज्ञाततापदार्थः केन स्वीकृतः - UGC 25 J–2011

(A) नैयायिकेन (B) वैशेषिकेण
(C) भट्टमीमांसकेन (D) प्रभाकरमीमांसकेन

स्रोत–(1) भारतीय दर्शन – हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-286
(2) तर्कभाषा, श्रीनिवास शास्त्री, पेज-162

196. कः जीवनमुक्तिं न स्वीकरोति - UGC 25 J–2011

(A) नैयायिकः (B) मीमांसकः
(C) सांख्यः (D) अद्वैतवेदान्ती

स्रोत– भारतीय दर्शन- शोभा निगम, पेज-219

197. (i) सादृश्य को स्वतन्त्र पदार्थ मानते हैं -
(ii) सादृश्य को अतिरिक्त पदार्थ मानते हैं?
UGC 25 J–1995, UGC 73 D–1994, 1996 1992, J–1998, 1999

(A) प्रभाकरमीमांसा (B) भट्टमीमांसा
(C) वेदान्त (D) न्यायवैशेषिक

स्रोत–भारतीय दर्शन-हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-287

198. कुमारिलभट्ट के अनुसार धर्म है-UGC 73 J–1991

(A) पूजा (B) शास्त्रविहित कर्म
(C) यज्ञ (D) भक्ति

स्रोत–भारतीय दर्शन-हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-289

199. कुमारिल मत में प्रामाण्य ग्राहक प्रमाण है - UGC 73 J–1991

(A) प्रत्यक्ष (B) अनुमान
(C) शब्द (D) अर्थापत्ति

स्रोत–तर्कभाषा - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-131

186. (D) 187. (D) 188. (B) 189. (D) 190. (B) 191. (A) 192. (A) 193. (C) 194. (A) 195. (C) 196. (B) 197. (A) 198. (B) 199. (B)

200. (i) भाट्टमत में प्रमाणों की संख्या कितनी है?
(ii) भाट्टमते प्रमाणानि तावत्– UGC 73 D–1992 BHU AET–2012
(A) छः (B) आठ
(C) पाँच (D) सात
स्रोत–भारतीय दर्शन - शोभा निगम, पेज-210

201. 'अभाव' को प्रमाण स्वीकार करते हैं-
(A) प्रभाकर (B) भाट्टमत
(C) वेदान्ती (D) नैयायिक
स्रोत–भारतीय दर्शन - शोभा निगम, पेज-210

202. ''स्वतः प्रामाण्यवाद'' स्वीकारते हैं-UGC 73 D–1994
(A) मीमांसक (B) पौराणिक
(C) वेदान्ती (D) नैयायिक
स्रोत–भारतीय दर्शन - शोभा निगम, पेज-208

203. किस 'प्रामाण्यवाद' को माध्व मानते हैं - UGC 73 D–1994
(A) स्वतः (B) परतः
(C) दोनों (D) कोई नहीं
स्रोत–भारतीय दर्शन - चन्द्रधर शर्मा, पेज-321

204. भाट्टमीमांसकाः वदन्ति - UK SLET–2015
(A) 'वेदाः ईश्वरकृताः' इति
(B) 'तमः पदार्थः नास्ति'
(C) वस्तुनः प्रत्यक्षे कृते सति 'ज्ञातता' उत्पद्यते
(D) अभावः इन्द्रियगोचरः भवति ।
स्रोत– तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज– 161-162

205. शक्ति को अतिरिक्त पदार्थ मानते हैं - UGC 73 D–1996
(A) भाट्ट (B) प्रभाकर
(C) माध्व (D) शङ्कर
स्रोत–भारतीय दर्शन – चन्द्रधर शर्मा, पेज-209

206. 'त्रिपुटी प्रत्यक्ष' को कौन मानता है - UGC 73 D–1996
(A) कमलाकर (B) प्रभाकर
(C) माध्व (D) जयतीर्थ
स्रोत–भारतीय दर्शन - शोभा निगम, पेज-212

207. प्रभाकर कौन ख्याति मानते हैं - UGC 73 D–1997
(A) अख्याति (B) ख्याति
(C) सत्ख्याति (D) असत्ख्याति
स्रोत–भारतीय दर्शन - शोभा निगम, पेज-209

208. ज्ञान को अनुमेय मानते हैं - UGC 73 D–1997
(A) मीमांसक (B) वेदान्ती
(C) नैयायिक (D) वैयाकरण
स्रोत–भारतीय दर्शन - चन्द्रधर शर्मा, पेज-201

209. अन्धकार को द्रव्य मानते हैं - UGC 73 D–1997
(A) प्रभाकर मीमांसक (B) नैयायिक
(C) भाट्ट मीमांसक (D) वेदान्ती
स्रोत–भारतीय दर्शन - उमेश मिश्र, पेज-246

210. 'कुमारिल भट्ट' मानते हैं - UGC 73 J–1999
(A) असत्ख्याति (B) विपरीतख्याति
(C) अन्यथाख्याति (D) अनिर्वचनीयख्याति
स्रोत–भारतीय दर्शन - चन्द्रधर शर्मा, पेज-204

211. तम को अतिरिक्त पदार्थ मानते हैं-UGC 73 D–1999
(A) माध्व (B) प्रभाकर
(C) बौद्ध (D) भाट्ट
स्रोत–तर्कभाषा - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-170

212. उत्पादव्ययध्रौव्यात्मक होता है? UGC 73 D–2013
(A) वस्तुतत्वम् (B) द्रव्यम्
(C) जीवः (D) धर्मः
स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज- 93

213. स्वतः प्रामाण्यं प्रामाण्याचेति - BHU AET–2012
(A) सांख्याः (B) नैयायिकाः
(C) बौद्धाः (D) मीमांसकाः
स्रोत–भारतीय दर्शन - शोभा निगम, पेज- 208

214. प्रामाण्यं मीमांसादृष्ट्या - BHU AET–2012
(A) परतः (B) स्वतः
(C) उभयात्मकम् (D) अनुभयात्मकम्
स्रोत– (i) भारतीय दर्शन - शोभा निगम, पेज-208
(ii) भारतीय दर्शन - चन्द्रधर शर्मा, पेज-193

200. (A) 201. (B) 202. (A) 203. (A) 204. (C) 205. (B) 206. (B) 207. (A) 208. (A) 209. (C) 210. (B) 211. (D) 212. (A) 213. (D) 214. (B)

215. भाट्टमीमांसादर्शने कियन्तः गुणाः सन्ति– JNU M.phil/Ph.D– 2014

(A) एकोनविंशतिः (B) एकविंशतिः
(C) चतुर्विंशतिः (D) पञ्चविंशतिः

स्रोत– भारतीय दर्शन - नन्द किशोर देवराज, पेज– 470

216. बौद्धाः..............भावनया परमपुरुषार्थं साधयन्ति? GJ SET– 2016

(A) द्विविधया (B) त्रिविधया
(C) चतुर्विधया (D) पञ्चविधया

स्रोत– सर्वदर्शनसंग्रह - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज– 31

217. जैनमते जीवः.............. GJ SET– 2016

(A) अबोधात्मकः (B) बोधात्मकः
(C) संबोधात्मकः (D) निर्बोधात्मकः

स्रोत– जैनदर्शनसार - नरेन्द्र कुमार शर्मा, पेज– 17

218. मीमांसासूत्रमिति ग्रन्थे नवमाध्यायस्य विषयः कः? JNU Mphil/Ph.D– 2014

(A) सामान्यातिदेशः (B) बाधः
(C) विशेषातिदेशः (D) ऊहः

स्रोत– अर्थसंग्रह - राजेश्वरशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज– 05

219. ब्रह्म और जीव का भेद है - UGC 73 J–2005

(A) अद्वैतवेदान्त (B) माध्ववेदान्त
(C) चार्वाकदर्शन (D) बौद्धदर्शन

स्रोत–भारतीय दर्शन - चन्द्रधर शर्मा, पेज-321

220. अनिर्वचनीयख्याति स्वीकृत है - UGC 73 J–2005, 2011

(A) नैयायिक (B) सांख्य
(C) माध्ववेदान्त (D) वैशेषिक

स्रोत–भारतीय दर्शन - शोभा निगम, पेज- 240

221. (i) माध्वाचार्यस्य मतमस्ति -
(ii) मध्वाचार्य किस सम्प्रदाय के प्रवर्तक हैं - BHU AET–2010, 2012, UGC (H) J–2007, UGC 73 Jn -2017

(A) विशिष्टाद्वैतम् (B) द्वैतम्
(C) अद्वैतम् (D) द्वैताद्वैतम्

स्रोत–भारतीय दर्शन – उमेश मिश्र, पेज - 426

222. माध्वमते वेदान्तानां कुत्र तात्पर्यम्? UGC 73 D–2008

(A) अद्वितीये ब्रह्मणि (B) सप्रपञ्चे ब्रह्मणि
(C) सोपाधिके ब्रह्मणि (D) श्रीमन्नारायणस्य सर्वोत्तमत्वे

स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-253

223. (i) माध्ववेदान्त के अनुसार जीव और परमात्मा का सम्बन्ध क्या है- UGC 73 D–2008

(A) सेव्यसेवकभावः (B) शेषशेषिभावः
(C) शरीरशरीरिभावः (D) जन्यजनकभावः

स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-223-24

224. (i) मध्वाचार्येणमते जीवब्रह्मणोः
(ii) 'द्वैतवेदान्ते जीवब्रह्मणोः किं प्राप्यते? UGC 73 D–1994, J–2010

(A) अभेदः (B) भेदः
(C) भेदाभेदः (D) अभावः

स्रोत–भारतीय दर्शन - चन्द्रधर शर्मा, पेज-321

225. मध्वाचार्य के मत में आगमों का है - UGC 73 J–2009

(A) आनर्थक्यम् (B) नानार्थत्वम्
(C) अपौरुषेयत्वम् (D) अच्छेद्यत्वम्

स्रोत–भारतीय दर्शन - चन्द्रधर शर्मा, पेज-321

226. (i) मध्वाचार्य के मत में नारायण हैं -
(ii) मध्वाचार्यमते नारायणः? UGC 73 D–1996, 2010 J–2009

(A) अधमः (B) मध्यमः
(C) उत्तमः (D) सर्वोत्तमः

स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-253

227. (i) मध्वाचार्य के मत में प्रमाण हैं -
(ii) मध्ववेदान्तानुसारेण कति प्रमाणानि वर्तन्ते?
(iii) द्वैतमते कति प्रमाणानि सन्ति? UGC 73 D–1992, 1994, 2009, 2012, J–2006, 2011

(A) सप्त (B) षट्
(C) पञ्च (D) त्रीणि

स्रोत–भारतीय दर्शन - चन्द्रधर शर्मा, पेज-321

215. (B) 216. (C) 217. (B) 218. (D) 219. (B) 220. (C) 221. (B) 222. (D) 223. (A) 224. (B) 225. (C) 226. (D) 227. (D)

228. 'त्रैतवाद' के समर्थक हैं? UGC 73 D– 2015

(A) शङ्कराचार्य (B) रामानुजाचार्य
(C) मध्वाचार्य (D) महर्षिदयानन्द

स्रोत–

229. मध्वाचार्य के मत में स्वतन्त्र तत्त्व है- UGC 73 J–2010

(A) शिवः (B) विष्णुः
(C) ब्रह्मा (D) शक्तिः

स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-212-213

230. मध्वाचार्य के मत में सत्य है- UGC 73 D–2010

(A) द्विविधम् (B) त्रिविधम्
(C) चतुर्विधम् (D) पञ्चविधम्

स्रोत–भारतीय दर्शन - जगदीशचन्द्र मिश्र, पेज-633

231. माध्ववेदान्त में दो प्रमुख तत्त्व हैं- UGC 73 D–2011

(A) ब्रह्मजीवौ (B) ब्रह्ममुख्यवायू
(C) जगत्जीवौ (D) स्वतन्त्रम् अस्वतन्त्रम्

स्रोत–भारतीय दर्शन - जगदीशचन्द्र मिश्र, पेज-634

232. माध्वमत के अनुसार 'अहं ब्रह्मास्मि' ऐसा श्रुति कहती हैं- UGC 73 J–2012

(A) पर ब्रह्मणोरैक्यम्
(B) ब्रह्मानुभवत्वम्
(C) शरीरशरीरिभावत्वम्
(D) परब्रह्मणः अध्येत्वं सर्वज्ञत्वं च

संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (दशम खण्ड), पेज-363

233. माध्ववेदान्त साहित्य के अन्तर्गत कथालक्षण के रचयिता हैं - UGC 73 J–2012

(A) वादिराजयतिः (B) व्यासराजः
(C) आनन्दतीर्थः (D) विजयीन्द्रतीर्थः

संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-10)-बलदेव उपाध्याय, पेज-355

234. द्वैतवेदान्तानुसारेण नैजसुखानुभूतिर्भवति - UGC 73 D–2012

(A) ध्यानावस्थायाम् (B) मोक्षावस्थायाम्
(C)कर्मोपासनावस्थायाम् (D) व्यावहारिकदशायाम्

संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास - बलदेव उपाध्याय, पेज-357

235. (i) मध्वदर्शन के लिये दूसरा कौन सा नाम प्रचलित है?
(ii) मध्वदर्शनस्य अपरनाम किम् अस्ति? UGC 73 D– 2015, Jn- 2017

(A) पूर्णप्रज्ञदर्शन (B) रामानुजदर्शन
(C) भेदाभेददर्शन (D) चैतन्यदर्शन

स्रोत–संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-10), पेज-355

236. 'अविद्या मिथ्याज्ञाननिन्दा एव' कहा है - UGC 73 D–2012

(A) रामानुजाचार्येण (B) वीरराघवाचार्येण
(C) आनन्दतीर्थेन (D) सायणाचार्येण

स्रोत–

237. शिल्परचनाकार का प्रदर्शन करने वाले वेदान्ती है - UGC 73 D–2012

(A) श्रीनिवासदासेन (B) पद्मपादाचार्येण
(C) वेदान्तदेशिकेन (D) मध्वाचार्येण

स्रोत–

238. माध्वमत के अनुसार सदागमैक विज्ञेय है - UGC 73 J–2013

(A) हिरण्यगर्भः (B) नारायणः
(C) पवमानः (D) अग्निः

स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज– 250

239. माध्ववेदान्तस्य भेदपञ्चके नान्तर्भवति - UGC 73 J–2013

(A) जीवेश्वरभेदः (B) जीव-जीवभेदः
(C) गुणरूपभेदः (D) जडेश्वरभेदः

स्रोत–भारतीय दर्शन - जगदीशचन्द्र मिश्र, पेज– 636

240. माध्वमत में प्रत्यक्ष होता है- UGC 73 J–2013

(A) पञ्चविधम् (B) द्विविधम्
(C) त्रिविधम् (D) चतुर्विधम्

स्रोत–

241. माध्वमत के अनुसार मोक्ष प्राप्त नहीं होता है- UGC 73 J–2013

(A) ज्ञानेन विना (B) भक्त्या विना
(C) वैराग्येण विना (D) विष्णुप्रसादेन विना

स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-233

228. (C) 229. (B) 230. (A) 231. (D) 232. (D) 233. (C) 234. (B) 235. (A) 236. (C) 237. (D) 238. (B) 239. (C) 240. (B) 241. (D)

242. मध्वदर्शन के अनुसार ईश्वर सेवा कितने प्रकार की होती है? UGC 73 D–2015

(A) एकधा (B) नवधा

(C) त्रिधा (D) चतुर्धा

स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि, पेज-225

243. माध्वमत के अनुसार 'सर्वे एकीभवन्ति' 'एकीभाव' का अर्थ है- UGC 73 J–2013

(A) स्वरूपैक्यम् (B) आत्मैक्यम्

(C) मतैक्यम् (D) ब्रह्मैक्यम्

संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-10), पेज-357-358

244. माध्वमत के अनुसार श्रुतिस्मृतियों का महातात्पर्य है- UGC 73 D–2013

(A) ज्ञानोपदेशे (B) विष्णोः गुणोत्कर्षे

(C) जगत्सत्यत्वे (D) भेदनिरूपणे

स्रोत–संस्कृतवाङ्मय का बृहद् इतिहास (दशम-खण्ड), पेज–363

245. माध्वमत के अनुसार जीव होते हैं - UGC 73 D–2013

(A) ईश्वरसमानाः (B) ब्रह्मोपाधिभूताः

(C) नीचोच्चभावं गताः (D) ईश्वराभिन्नाः

स्रोत–संस्कृतवाङ्मय का बृहद् इतिहास (दशम-खण्ड), पेज–357

246. ब्रह्ममीमांसाविवरणव्याजेन प्रस्थानान्तरमास्थिषत - UGC 73 D–2013

(A) शबरस्वामी (B) वाचस्पतिमिश्रः

(C) आनन्दतीर्थः (D) प्रशस्तपादः

स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि' पेज-211

247. दुरागमों से ज्ञेय नहीं है - UGC 73 J–2014

(A) शिवः (B) नारायणः

(C) स्वर्गलोकः (D) आत्मा

स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-250

248. माध्वमते मोक्ष प्राप्त होता है - UGC 73 J–2014

(A) ज्ञानेन (B) भक्त्या

(C) वैराग्येण (D) विष्णुप्रसादेन

स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-233

249. पञ्चप्रकार भेद प्रपञ्च अनादि ही है-UGC 73 J–2014

(A) विशिष्टाद्वैतिनः (B) शुद्धाद्वैतिनः

(C) द्वैतिनः (D) अद्वैतिनः

स्रोत–संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-10), पेज-370

250. "देह से विशेषरूप से मुक्त होने का नाम मुक्ति है" यह वचन है - UGC 73 J–2014

(A) जयतीर्थस्य (B) राघवेन्द्रयतेः

(C) आनन्दतीर्थस्य (D) वादिराजयतेः

स्रोत–

251. मध्वदर्शन के अनुसार तीन प्रकार की सेवा कौन सी है? UGC 73 D–2015

(A) नामस्मरणम्-स्वरूपदर्शनम् - लोकोपकारश्च त्रिविधा सेवा

(B) सा च सेवा अङ्कन- नामकरण- भजनभेदात् त्रिविधा

(C) पादसेवनम् - अर्चनम् - समर्पणमिति त्रिधा सेवा

(D) भजनम्-अर्चनम् - एकान्तसेवनम् - इत्येताः सेवाप्रकाराः

स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-225

252. माध्वाचार्य ने प्रचार किया - UGC 73 J–1991

(A) विवर्तत्व (B) विष्णुसर्वोत्तमत्व

(C) विष्णुमिथ्यात्व (D) जगन्मिथ्यात्व

स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह - उमाशंकर शर्मा, 'ऋषि', पेज - 253

253. मध्वदर्शन के अनुसार 'भजन' कितने प्रकार का होता है? UGC 73 D–2015

(A) अष्टविधम् (B) पञ्चविधम्

(C) दशविधम् (D) द्वादशविधम्

स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-227

254. माध्ववेदान्त के प्रमुख भाष्यकार हैं -UGC 73 J–1991

(A) व्यासतीर्थ (B) जयतीर्थ

(C) रघूत्तमतीर्थ (D) वासुदेव

स्रोत–भारतीय दर्शन- जगदीश चन्द्र मिश्र, पेज-639

255. बाल्यकाल में माधवाचार्य का नाम था - UGC 73 J–1991

(A) वासुदेव (B) पूर्णप्रज्ञ

(C) जयतीर्थ (D) आनन्दतीर्थ

स्रोत–संस्कृतवाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-10), पेज-355

242. (C) 243. (C) 244. (B) 245. (C) 246. (C) 247. (B) 248. (D) 249. (C) 250. (C) 251. (B) 252. (B) 253. (C) 254. (B) 255. (A)

256. 'भेदस्तु पदार्थस्वरूपमेव' उक्ति है- UGC 73 D–1992

(A) माध्व (B) वल्लभ

(C) मनु (D) शङ्कर

स्रोत–संस्कृत परम्परागत विषय- शत्रुघ्न त्रिपाठी, पेज-102

257. माध्वमतानुसार वेद है - UGC 73 D–1994

(A) अपौरुषेय (B) पौरुषेय

(C) ऋषिप्रणीत (D) कोई नहीं

स्रोत–भारतीयदर्शन - चन्द्रधर शर्मा, पेज–321

258. माध्वमतानुसार सृष्टि है - UGC 73 D–1996

(A) प्रकृति (B) जगत् - परिणाम

(C) प्रकृतिपरिणाम (D) पुरुषपरिणाम

स्रोत–संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-10), पेज-363

259. माध्वविरचित ब्रह्मसूत्रभाष्य की संख्या है- UGC 73 D–1997

(A) चार (B) तीन

(C) पाँच (D) दो

स्रोत–संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-10), पेज-355

260. विष्णु के सर्वोत्तमत्व के प्रतिपादक हैं - UGC 73 J–1998

(A) शङ्करः (B) गौतमः

(C) कपिलः (D) माधवः

स्रोत–संस्कृत परम्परागत विषय -शत्रुघ्न त्रिपाठी, पेज-102

261. 'माध्वमत' के अनुसार जगत् का उपादान कारण है - UGC 73 J–1999

(A) ब्रह्म (B) पुरुष

(C) परमाणु (D) प्रकृति

स्रोत–भारतीय दर्शन - जगदीशचन्द्र मिश्र, पेज-637

262. परब्रह्म श्रीकृष्ण के द्वैतस्वरूप के प्रतिपादक कौन हैं? BHU AET–2010

(A) रामानुजाचार्य (B) रामभद्राचार्य

(C) शङ्कराचार्य (D) मध्वाचार्य

स्रोत–संस्कृत परम्परागत विषय - शत्रुघ्न त्रिपाठी, पेज-100

263. माध्वदर्शन में पदार्थों की संख्या कितनी है - BHU AET–2011

(A) चार (B) पाँच

(C) आठ (D) दश

स्रोत– भारतीय दर्शन - जगदीश चन्द्र मिश्र, पेज– 633

264. नारायण की सर्वोत्तमता स्वीकृत है- UGC 73 J–2005

(A) माध्ववेदान्त (B) अद्वैतवेदान्त

(C) वल्लभवेदान्त (D) विशिष्टाद्वैतवेदान्त

स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-253

265. द्वैतमत में मोक्षसाधन होता है- UGC 73 D–2006

(A) भक्तिः (B) अनिर्वचनीय

(C) कर्म (D) कर्मसमुचितज्ञानम्

स्रोत–संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-10), पेज-357

266. द्वैतवेदान्त में विश्व है - UGC 73 J–2010 D–2010

(A) असत्यम् (B) सत्यम्

(C) अनिर्वचनीयम् (D) शून्यम्

स्रोत–भारतीय दर्शन - जगदीशचन्द्र मिश्र, पेज-638

267. (i) अद्वैतवेदान्त में जीव और ब्रह्म का है-

(ii) अद्वैतवेदान्तमतानुसार ब्रह्म और जीव का सम्बन्ध कैसा है? UGC 25 J–1994, UGC 73 J - 2009

(A) अभेद (B) भेद

(C) असत्वम् (D) अभाव

स्रोत–भारतीय दर्शन - जगदीशचन्द्र मिश्र, पेज-551

268. माधवाचार्य-विरचितसर्वदर्शनसंग्रहे कति दार्शनिकसम्प्रदायाः सन्ति? JNU MET–2015

(A) 6 (B) 8

(C) 12 (D) 16

स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह - उमाशंकर शर्मा, 'ऋषि', भू. पेज–45-55

269. तं केचित् अन्यत्रान्यधर्माध्यास इति वदन्ति-अत्र केचिद् इति पदेन विवक्षिताः के? KL SET– 2016

(A) नैयायिकाः (B) माध्यमिकाः

(C) प्राभाकराः (D) सौत्रान्तिकाः

स्रोत–ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यम्-स्वामीसत्यानन्द सरस्वती, पेज– 56

256. (A) 257. (A) 258. (C) 259. (A) 260. (D) 261. (A) 262. (D) 263. (D) 264. (A) 265. (A) 266. (B) 267. (A) 268. (D) 269. (A)

270. परब्राह्मणः अहेयत्वप्रतिपादकः शब्दोऽस्ति - UGC 73 D–2012

(A) अयम् (B) अहम्
(C) तत् (D) असौ

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–142-143

271. मध्वाचार्य के मत में तत्त्वमसि वाक्य है - UGC 73 D–2009

(A) जीवब्रह्मैक्यपरम् (B) ब्रह्मपरम्
(C) जगन्मिथ्यात्वपरम् (D) जीवब्रह्मभेदपरम्

स्रोत–भारतीय दर्शन- चन्द्रधर शर्मा, पेज-325

272. द्वैतमत में जगत् होता है- UGC 73 D–2006

(A) मिथ्या (B) अनिर्वचनीय
(C) सत्यम् (D) असत्यम्

स्रोत–भारतीय दर्शन - जगदीशचन्द्र मिश्र, पेज–638

273. इस वेदान्त में वायुजीवोत्तमत्व का निरूपण है - UGC 73 J–2007

(A) द्वैतवेदान्त (B) शुद्धाद्वैतवेदान्त
(C) भेदाभेदवेदान्त (D) विशिष्टाद्वैतवेदान्त

स्रोत–भारतीय दर्शन - जगदीशचन्द्र मिश्र, पेज–632

274. जीव और ब्रह्म में अत्यन्त भेदक तत्त्व के प्रतिपादक हैं- UGC 73 D–2007

(A) चैतन्यमहाप्रभुपादाः (B) वल्लभाचार्याः
(C) माध्वाचार्याः (D) निम्बार्काचार्याः

स्रोत–भारतीय दर्शन - जगदीशचन्द्र मिश्र, पेज-633

275. माध्व दर्शन के अनुसार भाव होता है- UGC 73 J–2015

(A) द्विविधः (B) त्रिविधः
(C) सप्तविधः (D) पञ्चविधः

स्रोत–संस्कृतवाङ्मय का बृहद् इतिहास (दशम-खण्ड), पेज–357

276. आनन्दतीर्थस्य ग्रन्थोऽस्ति - UGC 73 J–2015

(A) तत्वविवेकः (B) चौरपञ्चाशिका
(C) औचित्यविचारचर्चा (D) अर्थसंग्रह

स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-803

277. (i) माधवाचार्य का दूसरा नाम है? BHU AET–2012,
(ii) मध्वाचार्य एव अभूत् - UGC 73 D–2015

(A) गौडपादः (B) विद्यारण्यः
(C) माघः (D) मधुसूदनः

स्रोत–भारतीय दर्शन- वाचस्पति गैरोला, पेज-11

278. (i) आदिशङ्कराचार्य किस दर्शन के प्रवर्तक थे -
(ii) आदिशङ्कराचार्यः कस्य दर्शनस्य प्रवर्तकः आसीत्? BHU B.Ed–2012, 2015

(A) सांख्य (B) मीमांसा
(C) योग (D) अद्वैतवेदान्त

स्रोत–भारतीय दर्शन- हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-295

279. (i) 'पीनो देवदत्तो दिवा न भुङ्क्ते' उपयुक्त उदाहरण किसका है - BHU MET–2009, 2011, 2013
(ii) 'पीनो देवदत्तः दिवा न भुङ्क्ते' इति प्रयोगः कस्मिन् प्रमाणे क्रियते? BHU AET–2012

(A) अनुमान (B) अर्थापत्ति
(C) अनुपलब्धि (D) ऐतिह्य

स्रोत–भारतीय दर्शन- चन्द्रधर शर्मा, पेज-198-199

280. प्रस्थानत्रयी मे किसकी गणना नहीं होती ? BHU MET–2010, 2012

(A) गीता (B) ब्रह्मसूत्र
(C) रामायण (D) उपनिषद्

स्रोत–भारतीय दर्शन- चन्द्रधर शर्मा, पेज-212

281. निम्नाङ्कित में से कौन प्रस्थानत्रयी में सम्मिलित है? BHU MET–2016

(A) धर्मसूत्र (B) रामायण
(C) रघुवंश (D) ब्रह्मसूत्र

स्रोत–भारतीय दर्शन- चन्द्रधर शर्मा, पेज-212

282. प्राणी कर्म के द्वारा क्या सञ्चय करता है- UGC 73 J–2005

(A) अपूर्वम् (B) धर्मम्
(C) पापम् (D) अर्थम्

स्रोत–भारतीय दर्शन- हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-291

270. (B) 271. (D) 272. (C) 273. (A) 274. (C) 275. (A) 276. (A) 277. (B) 278. (D) 279. (B) 280. (C) 281. (D) 282. (A)

283.'उपनिषद्- भगवद्गीता- ब्रह्मसूत्रम्' इत्येतेषां त्रयी केन नाम्ना प्रसिद्धा – RPSC-SET–2016

(A) वेदत्रयी (B) गुणत्रयी
(C) शास्त्रत्रयी (D) प्रस्थानत्रयी

स्रोत–भारतीय दर्शन- चन्द्रधर शर्मा, पेज-212

284. (i) ''अथातो ब्रह्मजिज्ञासा'' इस 'अथ' शब्द का बोध होता है-
(ii) अथातो ब्रह्मजिज्ञासा-अत्र 'अथ' शब्दस्य कोऽर्थः UGC 73 J–2012, D–2006, KL SET–2016

(A) मङ्गलार्थ (B) अधिकारार्थ
(C) आनन्तर्यार्थ (D) प्रश्नार्थ

स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-247

285. अनुपलब्धिः प्रमाणं भवति - BHU AET–2012

(A) न्याये (B) सांख्ये
(C) योगे (D) वेदान्ते

स्रोत–भारतीय दर्शन- हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा- पेज-284

286. 'शारीरकभाष्यम्' इति नाम्ना प्रसिद्धं भाष्यं कं ग्रन्थं अधिकृत्य वर्तते– UGC 25 J–2016

(A) चरकसंहिताम् (B) भावप्रकाशम्
(C) ब्रह्मसूत्रम् (D) माण्डूक्योपनिषद्

स्रोत–ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यम्-स्वामी सत्यानन्द सरस्वती, भू0 पेज-12

287. मीमांसा दर्शन के अनुसार शब्द है–BHU MET– 2014

(A) अनित्य (B) नित्य
(C) क्षणिक (D) विकार

स्रोत–भारतीयदर्शन - चन्द्रधर शर्मा, पेज– 198

288. अवच्छेदवाद में जगत् का उपादान कारण है- UGC 73 D–2008

(A) ईश्वरः (B) अविद्या
(C) जीवः (D) ब्रह्म

स्रोत– संस्कृतवाङ्मय का बृहद् इतिहास (दशम खण्ड), पेज–97

289. परब्रह्म में भेदाभाव तत्त्व के प्रतिपादक हैं - UGC 73 J–2011

(A) भास्कराचार्याः (B) मध्वाचार्याः
(C) वल्लभाचार्याः (D) शङ्कराचार्याः

स्रोत–भारतीय दर्शन - जगदीश चन्द्र मिश्र, पेज–543

290. 'ब्रह्मसत्यं जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापरः' इत्युक्तिः कस्य आचार्यस्य अस्ति– JNU MET–2015

(A) शङ्कराचार्यस्य (B) अभिनवगुप्तस्य
(C) माधवाचार्यस्य (D) मध्वाचार्यस्य

स्रोत–ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्य - सत्यानन्द सरस्वती पेज भू0-15

291. 'ब्रह्मसत्यं जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापरः' इति पद्यांशः अस्ति– JNU Mphil/Ph.D– 2015

(A) ब्रह्मनामावल्याम् (B) वाक्यवृत्तौ
(C) ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्ये (D) उपदेशसाहस्र्याम्

स्रोत–ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्य - सत्यानन्द सरस्वती, पेज-17

292. वेदान्तसम्प्रदायेषु भास्कराचार्यस्य सिद्धान्तः अस्ति– JNU Mphil/Ph.D– 2015

(A) भेदाभेदवादः (B) द्वैताद्वैतवादः
(C) स्वरूपाद्वैतवादः (D) शुद्धाद्वैतवादः

स्रोत–भारतीय दर्शन- चन्द्रधर शर्मा, पेज-296

293. (i) शङ्कराचार्याणां ब्रह्मसूत्रभाष्यस्य अपरं नामधेयं किम्?
(ii) ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यस्य अपरं नाम किम् GJ SET-2013, MH SET–2013

(A) श्रीभाष्यम् (B) शारीरकमीमांसाभाष्यम्
(C) अणुभाष्यम् (D) जीवभाष्यम्

स्रोत–ब्रह्मसूत्र शाङ्करभाष्यम्-स्वामी सत्यानन्द सरस्वती, भू0 पेज-12

294. ''ब्रह्मसत्यं जगन्मिथ्या'' इति अभिप्रायः कस्मिन् दर्शनग्रन्थे प्रदर्शिताः– RPSC SET–2010

(A) वेदान्तदर्शने (B) वेदान्तसारे
(C) तर्कभाषायाम् (D) तर्कसंग्रहे

स्रोत–भारतीय दर्शन- हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-296

295. ब्रह्मसूत्रस्य चतुःसूत्री-परिगणितं सूत्रं नास्ति– RPSC SET–2013-14

(A) अथातो ब्रह्मजिज्ञासा (B) जन्माद्यस्य यतः
(C) शास्त्रयोनित्वात् (D) नैकस्मिन्नसंभवात्

स्रोत-संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (दशम खण्ड), पेज-53

283. (D) 284. (C) 285. (D) 286. (C) 287. (B) 288. (C) 289. (D) 290. (A) 291. (C) 292. (A) 293. (B) 294. (B) 295. (D)

296. समाधेः भवन्ति विघ्नाः - UGC 73 J–2012
(A) चत्वारः (B) अष्ट
(C) त्रयोदश (D) पञ्चदश
स्रोत–वेदान्सार-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-179

297. वेदान्ते सत्तात्रैविध्यम् अङ्गीकृतम्- UGC 73 D–2012
(A) अद्वैत (B) माध्व
(C) वल्लभ (D) विशिष्टाद्वैत
स्रोत–भारतीय दर्शन - हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज– 296

298. जगन्मिथ्यात्वं सिद्धान्तितमनेन - UGC 73 D–2012
(A) विजयीन्द्रतीर्थः (B) वाचस्पतिमिश्रेण
(C) वल्लभाचार्येण (D) मध्वाचार्येण
स्रोत– भारतीय दर्शन - हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज– 296

299. स्वयंज्योति होती है- UGC 73 D–2012
(A) जगत् (B) मिथ्या
(C) ब्रह्म (D) अध्यासः
स्रोत– वेदान्तदर्शन (1.3.40) - गीताप्रेस, पेज–107-108

300. जगत् का कारण होता है - UGC 73 D–2012
(A) माया (B) प्रधानम्
(C) बुद्धि (D) अन्तःकरणम्
स्रोत–भारतीय दर्शन- हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-300

301. ब्रह्मवाप्ति होती है- UGC 73 D–2012
(A) समाप्तिः (B) मरणम्
(C) मोक्षः (D) जननम्
स्रोत–भारतीय दर्शन- हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा,पेज-314

302. पञ्चमिथ्यात्वविचारोऽस्ति - UGC 73 J–2013
(A) वेदान्तपरिभाषाग्रन्थे (B) सिद्धान्तबिन्दुग्रन्थे
(C) अद्वैतसिद्धिग्रन्थे (D) शाङ्करभाष्ये
स्रोत–भारतीय दर्शन- चन्द्रधर शर्मा, पेज-282

303. 'प्रपञ्च यदि विद्येत्' -इति श्रुतिवाक्यं निरूपयति - UGC 73 D–2013
(A) प्रपञ्चमिथ्यात्वम्
(B) प्रपञ्चस्य अनादिनित्यत्वम्
(C) प्रपञ्चस्य प्रातिभासिकत्वम्
(D) प्रपञ्चस्य परमात्मभिन्नत्वम्
स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह - उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज–228-229

304. वस्तुस्वरूपस्य भेदत्वे न घटते - UGC 73 D–2013
(A) प्रतियोगिसापेक्षत्वम् (B) इन्द्रियसापेक्षत्वम्
(C) शास्त्रसापेक्षत्वम् (D) स्वतन्त्रनिरपेक्षत्वम्
स्रोत–

305. सदसद्विलक्षण होता है - UGC 73 S–2013
(A) जीवः (B) अज्ञानम्
(C) मनः (D) ब्रह्मः
स्रोत–वेदान्तसार - राकेश शास्त्री, पेज- 152

306. नवकृत्वोपदेश की श्रुति है - UGC 73 S–2013
(A) अतत्त्वमसि (B) अहं ब्रह्मास्मि
(C) सोऽहमस्मि (D) अयमात्मा ब्रह्म
स्रोत– सर्वदर्शनसंग्रह - उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज–235

307. अद्वैतत्व प्रतिपादक उपनिषद् भाष्य है - UGC 73 S–2013
(A) वल्लभाचार्यस्य (B) निम्बार्काचार्यस्य
(C) शङ्कराचार्यस्य (D) श्रीकण्ठाचार्यस्य
स्रोत–भारतीय दर्शन- चन्द्रधर शर्मा, पेज-212

308. अविद्यापदार्थ होता है- UGC 73 J–2014
(A) विद्याया अभावः (B) विद्या प्राग्भावः
(C) विद्याविरोधी (D) विद्याभेदः
स्रोत–

309. तन्मात्रा कितने हैं - BHU AET–2011
(A) चार (B) पाँच
(C) नौ (D) दश
स्रोत– भारतीय दर्शन - उमेश मिश्र, पेज–289

310. केवलं शब्दादिगुणत्रयं कुत्र अभिव्यज्यते - UGC 25 D–2007
(A) पञ्चीकृतवायौ (B) पञ्चीकृताप्सु
(C) पञ्चीकृततेजसि (D) पञ्चीकृतपृथिव्याम्
स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-80

311. निम्बार्क मतानुसार एकादशी प्रमाण है- UGC 73 D–1996
(A) 50 घटी (B) 53 घटी
(C) 58 घटी (D) 60 घटी
स्रोत–

296. (A) 297. (A) 298. (B) 299. (C) 300. (A) 301. (C) 302. (C) 303. (B) 304. (A) 305. (B)
306. (A) 307. (C) 308. (C) 309. (B) 310. (C) 311. (B)

312. अध्यासवाद के प्रतिपादक हैं - UGC 73 J–1999

(A) रामानुज (B) माध्व
(C) शङ्कर (D) श्रीपतिपण्डित

स्रोत–भारतीय दर्शन – चन्द्रधर शर्मा, पेज-239

313. शुद्धाद्वैतवाद दर्शन के प्रवर्तक हैं– UP PGT (H)–2010

(A) शंकराचार्य (B) मध्वाचार्य
(C) वल्लभाचार्य (D) विष्णुस्वामी

स्रोत–भारतीय दर्शन – चन्द्रधर शर्मा, पेज-326

314. श्रीमद्वल्लभाचार्य ने जिस कृष्ण-भक्ति को प्रतिष्ठित किया उसका दार्शनिक आधार है - UP PGT (H)–2009

(A) अद्वैत दर्शन (B) द्वैत दर्शन
(C) शुद्धाद्वैत दर्शन (D) द्वैताद्वैत दर्शन

स्रोत–भारतीय दर्शन – चन्द्रधर शर्मा, पेज-326-327

315. इनमें से कौन वैष्णव भक्ति के आचार्य नहीं हैं - UGC (H) D 2007 J–2013

(A) शंकराचार्य (B) रामानुजाचार्य
(C) वल्लभाचार्य (D) माध्वाचार्य

स्रोत–भारतीय दर्शन – चन्द्रधर शर्मा, पेज-292

316. निम्नलिखित आचार्यों को उनके सिद्धान्तों के साथ सुमेलित कीजिए - UGC (H) J–2012

(क) वल्लभाचार्य (i) विशिष्टाद्वैतवाद
(ख) निम्बार्काचार्य (ii) अद्वैतवाद
(ग) रामानुजाचार्य (iii) द्वैतवाद
(घ) मध्वाचार्य (iv) द्वैताद्वैत
(v) शुद्धाद्वैतवाद

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(A)	v	iv	i	iii
(B)	i	ii	iii	iv
(C)	iii	iv	i	ii
(D)	ii	i	iv	v

स्रोत–भारतीय दर्शन - चन्द्रधर शर्मा, पेज-292

317. वल्लभाचार्य किस सम्प्रदाय के संस्थापक थे - UGC (H) D–2008

(A) अद्वैत (B) द्वैताद्वैत
(C) शुद्धाद्वैत (D) विशिष्टाद्वैत

स्रोत–भारतीय दर्शन – चन्द्रधर शर्मा, पेज-292

318. रामानुजाचार्य ने किस दर्शन का प्रतिपादन किया - MP PSC–1990, BHU AET–2010

(A) अद्वैतवाद (B) शुद्धाद्वैतवाद
(C) विशिष्टाद्वैतवाद (D) द्वैतवाद

स्रोत–भारतीय दर्शन – चन्द्रधर शर्मा, पेज-292

319. विद्यारण्ययतिः कस्मिन् शतके आसीत् - DSSSB PGT–2014

(A) एकादशे (B) द्वादशे
(C) त्रयोदशे (D) चतुर्दशे

स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज–815

320. 555 सूत्र हैं - UGC 73 D–2014

(A) भक्तिसूत्रग्रन्थे (B) रससूत्रग्रन्थे
(C) न्यायसूत्रग्रन्थे (D) ब्रह्मसूत्रग्रन्थे

स्रोत–ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्य-सत्यानन्द सरस्वती, भू0 पेज-6

321. आदि शङ्कराचार्य के द्वारा स्थापित चार मठ कहाँ स्थित है - UP PCS–2006

(A) शृंगेरी, द्वारका, जोशीमठ, प्रयाग
(B) द्वारका, जोशीमठ, प्रयाग, काँची
(C) जोशीमठ, द्वारका, पुरी, शृंगेरी
(D) पुरी, शृंगेरी, द्वारका, वाराणसी

स्रोत–भारतीय दर्शन - चन्द्रधर शर्मा, पेज-237

322. जीवेश्वराभेदो नागमस्य तात्पर्यमिति कहते हैं - UGC 73 D–2014

(A) सुरेश्वराचार्यः (B) भास्कराचार्यः
(C) आनन्दतीर्थः (D) भारतीतीर्थः

स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज–231

323. इन्द्रियाणि कति भवन्ति - C–TET–2014

(A) पञ्च (B) त्रीणि
(C) षट् (D) चत्वारि

स्रोत– वेदान्तसार-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–66

312. (C) 313. (C) 314. (C) 315. (A) 316. (A) 317. (C) 318. (C) 319. (D) 320. (D) 321. (C) 322. (C) 323. (A)

324. (i) वल्लभाचार्य द्वारा रचित ग्रन्थ का नाम है -
(ii) वल्लभाचार्य ने ब्रह्मसूत्र पर कौन-सा भाष्य लिखा है-
UP TGT (H)–2013
(A) सिद्धान्तसंग्रह (B) महाभाष्य
(C) श्रीभाष्य (D) अणुभाष्य
स्रोत–भारतीय दर्शन- चन्द्रधर शर्मा, पेज-326

325. (i) 'विशिष्टाद्वैतवाद' के प्रतिपादक कौन थे -
(ii) विशिष्टाद्वैतस्य प्रवर्तक आसीत्?
(iii) 'विशिष्टाद्वैत' इति दार्शनिकसिद्धान्तस्य प्रतिष्ठापकोऽस्ति? UP TGT (H)–2010, UGC 73 Jn - 2017, BHU Sh.ET-2008, BHU AET-2011, 2012
(A) रामानुजाचार्य (B) रामानन्द
(C) मध्वाचार्य (D) निम्बार्काचार्य
स्रोत–भारतीय दर्शन- हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-295

326. अर्थापत्तिप्रमाणम् - BHU AET–2012
(A) द्विविधम् (B) त्रिविधम्
(C) चतुर्विधम् (D) पञ्चविधम्
स्रोत–भारतीय दर्शन- उमेश मिश्र, पेज-259

327. अद्वैत दर्शन का प्रतिपादन सर्वप्रथम किसमें मिलता है? MP PSC–1997
(A) वेदों में (B) उपनिषदों में
(C) धर्मसूत्रों में (D) स्मृतियों में
स्रोत–भारतीय दर्शन- चन्द्रधर शर्मा, पेज-238

328. वल्लभाचार्य का सम्बन्ध किस दर्शन से है?
BHU AET–2010
(A) बौद्ध दर्शन (B) मीमांसा दर्शन
(C) चार्वाक दर्शन (D) वैशेषिक दर्शन
स्रोत–भारतीय दर्शन- उमेश मिश्र, पेज-228

329. ब्रह्मसूत्र की विष्णुपरक व्याख्या करने वाले आचार्य हैं - BHU AET–2010
(A) याज्ञवल्क्य (B) वसिष्ठ
(C) निम्बार्क (D) रामानुज
स्रोत–भारतीय दर्शन- हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-322

330. रामानुजाचार्य ने प्रतिपादन किया है -
BHU AET–2010
(A) अद्वैतवाद का (B) द्वैतवाद का
(C) अद्वैतविशिष्ट ब्रह्म का (D) मायावाद का
स्रोत–भारतीय दर्शन- हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-295

331. रामानुजाचार्य किस सम्प्रदाय के हैं ?
BHU AET–2010
(A) श्रीसम्प्रदाय (B) ब्रह्मसम्प्रदाय
(C) रुद्रसम्प्रदाय (D) सनकसम्प्रदाय
स्रोत–भारतीय दर्शन- चन्द्रधर शर्मा, पेज-292

332. मध्वाचार्य किस सम्प्रदाय के हैं? BHU AET–2010
(A) श्रीसम्प्रदाय (B) ब्रह्मसम्प्रदाय
(C) रुद्रसम्प्रदाय (D) सनकसम्प्रदाय
स्रोत–भारतीय दर्शन- चन्द्रधर शर्मा, पेज-292

333. वल्लभाचार्य किस सम्प्रदाय के हैं ?
BHU AET–2010
(A) श्रीसम्प्रदाय (B) ब्रह्मसम्प्रदाय
(C) रुद्रसम्प्रदाय (D) सनकसम्प्रदाय
स्रोत–भारतीय दर्शन- चन्द्रधर शर्मा, पेज-326

334. निम्बार्काचार्य किस सम्प्रदाय के हैं ?
BHU AET–2010
(A) श्रीसम्प्रदाय (B) ब्रह्मसम्प्रदाय
(C) रुद्रसम्प्रदाय (D) सनकसम्प्रदाय
स्रोत–भारतीय दर्शन- चन्द्रधर शर्मा, पेज-323

335. आचार्य निम्बार्क का दर्शन किस नाम से प्रसिद्ध है?
BHU AET–2010, 2011
(A) अद्वैत (B) द्वैत
(C) विशिष्टाद्वैत (D) द्वैताद्वैत
स्रोत–भारतीय दर्शन- चन्द्रधर शर्मा, पेज-323

336. निम्बार्क का सनकसम्प्रदाय किस मत से सम्बद्ध है?
BHU AET–2010, 2011
(A) शाक्त (B) शैव
(C) वैष्णव (D) तीनों में कोई नहीं
स्रोत–भारतीय दर्शन- चन्द्रधर शर्मा, पेज-323

324. (D) 325. (A) 326. (A) 327. (B) 328. (D) 329. (D) 330. (C) 331. (A) 332. (B) 333. (C) 334. (D) 335. (D) 336. (C)

337. श्रीराधा की उपासना भक्ति की परम्परा के प्रतिष्ठापक कौन हैं? BHU AET–2010

(A) निम्बार्क (B) वल्लभ
(C) रामभद्र (D) शंकराचार्य

स्रोत–भारतीय दर्शन- चन्द्रधर शर्मा, पेज-324

338. भागवत की सगुणभक्ति परम्परा के संस्थापक कौन हैं? BHU AET–2010

(A) निम्बार्क (B) वल्लभ
(C) रामभद्र (D) रामानुजाचार्य

स्रोत–भारतीय दर्शन - जगदीशचन्द्र मिश्र, पेज - 613

339. पुष्टिमार्ग अथवा रुद्रसम्प्रदाय के संस्थापक कौन थे? BHU AET–2010

(A) वल्लभाचार्य (B) रामानुजाचार्य
(C) शंकराचार्य (D) मध्वाचार्य

स्रोत–भारतीय दर्शन- चन्द्रधर शर्मा, पेज-326.

340. पुष्टिसम्प्रदायः कस्य भवति– CVVET–2015

(A) वल्लभस्य (B) निम्बार्कस्य
(C) श्रीकण्ठस्य (D) चैतन्यस्य

स्रोत–भारतीय दर्शन- चन्द्रधर शर्मा, पेज-326

341. गौडीय वैष्णवसम्प्रदाय के संस्थापक कौन हैं? BHU AET–2010

(A) चैतन्यमहाप्रभु (B) वल्लभाचार्य
(C) रामानुजाचार्य (D) मध्वाचार्य

स्रोत–भारतीय दर्शन- चन्द्रधर शर्मा, पेज-330

342. निम्बार्काचार्यः..............मतस्य प्रवर्तकः अस्ति? KL SET–2015

(A) विशिष्टाद्वैतस्य (B) सांख्यदर्शनम्
(C) शुद्धाद्वैतस्य (D) द्वैताद्वैतस्य

स्रोत–भारतीय दर्शन- चन्द्रधर शर्मा, पेज-323

343. वल्लभ किस सम्प्रदाय के हैं? BHU AET–2011

(A) द्वैताद्वैत (B) विशिष्टाद्वैत
(C) शुद्धाद्वैत (D) कोई नहीं

स्रोत–भारतीय दर्शन- चन्द्रधर शर्मा, पेज - 326

344. वल्लभाचार्य के मत में परब्रह्म कौन हैं? BHU AET–2011

(A) शिव (B) रुद्र
(C) मनु (D) श्रीकृष्ण

स्रोत–भारतीय दर्शन- चन्द्रधर शर्मा, पेज-327

345. वल्लभाचार्य किसके अवतार माने जाते हैं? BHU AET–2011

(A) अग्नि (B) वायु
(C) रुद्र (D) विष्णु

स्रोत–भारतीय दर्शन- चन्द्रधर शर्मा, पेज-326

346. चैतन्य ने किस वाद की स्थापना की? BHU AET–2011

(A) अद्वैतवाद (B) विशिष्टाद्वैत
(C) अचिन्त्यभेदाभेदवाद (D) तीनों में से कोई नहीं

स्रोत–भारतीय दर्शन- चन्द्रधर शर्मा, पेज-330

347. रामानुज के श्रीसम्प्रदाय में किसकी उपासना होती है? UP PGT (H)–2013

(A) शङ्कर (B) ब्रह्मा
(C) विष्णु (D) लक्ष्मी

स्रोत–भारतीय दर्शन- चन्द्रधर शर्मा, पेज-292

348. चैतन्य महाप्रभु किस दर्शन से सम्बद्ध हैं? BHU AET–2011

(A) सांख्य (B) वेदान्त
(C) योग (D) चार्वाक

स्रोत–भारतीय दर्शन- चन्द्रधर शर्मा, पेज-330

349. अद्वैत में जीव ही होता है - UGC 73 J–2012

(A) माया (B) अनित्यम्
(C) ब्रह्म (D) मोक्षः

स्रोत–भारतीय दर्शन - जगदीशचन्द्र मिश्र, पेज - 550

350. मुक्तावलीस्थमङ्गलपद्ये को देवः स्तुतः? BHU AET–2010

(A) विष्णुः (B) शिवः
(C) ब्रह्मा (D) गणेशः

न्यायसिद्धान्तमुक्तावली (प्रत्यक्षखण्ड)-गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर,पेज–1

337. (A) 338. (D) 339. (A) 340. (A) 341. (A) 342. (D) 343. (C) 344. (D) 345. (A) 346. (C) 347. (C) 348. (B) 349. (C) 350. (B)

351. शाङ्करभाष्यस्य पञ्चपादिकाकारः ? UGC 73 J–2014

(A) पद्मपादाचार्यः (B) चित्सुखाचार्यः
(C) आनन्दगिरिः (D) रघुनाथशिरोमणिः

स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-645

352. अणुभाष्यकारो भवति - UGC 73 D–2014

(A) वात्स्यायनः (B) पार्थसारथिमिश्रः
(C) मध्वाचार्यः (D) प्रह्लादाचार्यः

स्रोत–संस्कृतवाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-10), पेज–355

353. ''सर्वं खल्विदं ब्रह्म'' उक्ति मतवाद कस्य - BHU Sh.ET–2008

(A) वेदान्तस्य (B) सांख्यस्य
(C) मीमांसायाः (D) जैनस्य

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-91

354. 'जीवाजीवाख्ये द्वे तत्त्वे स्तः' इति कस्य दर्शनस्य मतम्– BHU RET–2008

(A) बौद्ध (B) जैन
(C) सांख्य (D) वेदान्त

स्रोत–संस्कृतवाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-12), पेज–67

355. आगम के साथ किसका सम्बन्ध है-BHU Sh.ET–2011

(A) अर्थापत्ति का (B) अनुमान का
(C) उपमान का (D) शब्द का

स्रोत–(i) सांख्यकारिका (का0-4) - राकेश शास्त्री, पेज–13
(ii) भारतीयदर्शन - जगदीशचन्द्र मिश्र, पेज–651

356. जातिबाधक होता है- UGC 73 J–2005

(A) स्वरूप (B) असम्बन्ध
(C) समवाय (D) संयोग

न्यायदर्शनम् (वात्स्यायन भाष्य)-आचार्य ढुण्ढिराज शास्त्री, पेज–288

357. प्रत्यय स्वरूप का विचार किया जाता है- UGC 73 D–2005

(A) पूर्वमीमांसा (B) न्याय
(C) आगम (D) बौद्धदर्शन

स्रोत–भारतीयदर्शन - नन्द किशोर देवराज, पेज– 317

358. ईश्वर के अस्तित्व में प्रमाण है - UGC 73 J–2007

(A) अनुपलब्धि (B) प्रत्यक्ष
(C) अनुमान (D) उपमान

न्यायदर्शनम् (वात्स्यायन भाष्य)-आचार्य ढुण्ढिराज शास्त्री, पेज–478

359. चैतन्यं कतिविधं भवति - BHU AET–2012

(A) द्विविधम् (B) त्रिविधम्
(C) चतुर्विधम् (D) पञ्चविधम्

स्रोत–भारतीय दर्शन -उमेश मिश्र, पेज-418

360. किन दो दर्शनों में प्रमाण के विषय में कोई भी विप्रतिपत्ति नहीं है - UGC 73 D–2008

(A) न्यायवैशेषिकयोः (B) बौद्धजैनयोः
(C) अद्वैतचार्वाकयोः (D) जैनसांख्ययोः

स्रोत–संस्कृत परम्परागत विषय-शत्रुघ्न त्रिपाठी, पेज-82

361. मिथ्याज्ञान का आत्मा पर आरोप होने पर होता है? UGC 73-D– 2015

(A) ज्ञानाध्यास (B) अर्थाध्यास
(C) अनिर्वचनीय (D) उपसंहार

स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-683

362. अधस्तनवर्गयोः युग्मपर्यायेषु समीचीनं विचिनुत– MH SET–2013

(A) विज्ञानमात्रं क्षणिकमित्येके 1. योगाचारबौद्धाः
(B) शून्यमित्यपरे 2. नैयायिकाः
(C) अस्ति देहादिव्यतिरिक्तिः संसारी कर्ता भोक्तेत्यपरे 3.माध्यमिकबौद्धाः
(D) भोक्तैव केवलं न कर्तेत्येके 4. सांख्याः

	क	ख	ग	घ
(A)	1	3	2	4
(B)	3	1	4	2
(C)	2	3	1	4
(D)	4	2	3	1

स्रोत–

351. (A) 352. (C) 353. (A) 354. (B) 355. (D) 356. (B) 357. (B) 358. (C) 359. (B) 360. (A) 361. (A) 362. (A)

363. अधस्तनेषु पर्यायेषु समीचीनं विचिनुत– ''तेषामप्येकदेशत्वे पिण्डः स्यादणुकमात्रकः'' एतदुक्त्या निषिध्यते– MH SET–2013

(A) परमाणूनां निरवयवत्वम् (B) अणूनां बहुत्वम्

(C) परमाणूनामस्तित्वम् (D) अणूनामस्तित्वाभावः

स्रोत–

364. ''सर्वज्ञो जितरागादिदोषत्रैलोक्यपूजितः.............''इति अर्हत्स्वरूपमुक्तम्? MH SET–2013

(A) प्रमेयकमलमार्तण्डे (B) तत्त्वार्थसूत्रे

(C) आप्तनिश्चयालङ्कारे (D) वीतरागस्तुल्याम्

स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह, उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-103

365. 'ब्राह्मदर्शनम्' इति कस्य दर्शनस्य नामान्तरम्– CVVET–2015

(A) जैनदर्शनस्य (B) बौद्धदर्शनस्य

(C) चार्वाकदर्शनस्य (D) त्रिकदर्शनस्य

स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह, उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-31

366. 'शब्दनित्यत्ववादिनः' के– CVVET–2015

(A) नैयायिकाः (B) वैभाषिकाः

(C) वैयाकरणाः (D) मीमांसकाः

स्रोत– भारतीयदर्शन - चन्द्रधर शर्मा, पेज– 198

367. प्रथमान्तमुख्यविशेष्य-शाब्दबोधवादिनः के? CVVET–2015

(A) नैरुक्तिकाः (B) नैयायिकाः

(C) मीमांसकाः (D) वैयाकरणाः

न्यायसिद्धान्तमुक्तावली (शब्दखण्ड)-गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज–77

368. शैवदर्शन के अनुसार पदार्थों की संख्या है? UGC 73 D–2015

(A) 5 (B) 7

(C) 3 (D) 10

स्रोत–भारतीयदर्शन - जगदीशचन्द्र मिश्र, पेज–669

369. शैवदर्शन के अनुसार 'रौखतन्त्र' का आविर्भाव शिव के किस मुख से हुआ? UGC 73 D–2015

(A) तत्पुरुषमुखात् (B) अघोरमुखात्

(C) ईशानमुखात् (D) वामदेवमुखात्

स्रोत–तन्त्रागमीय ज्ञानकोश - चन्द्रशेखर शिवाचार्य, पेज-114

370. शैवदर्शन मे 'पशु' कितने प्रकार का है? UGC 73 D–2015

(A) अनेकविधः (B) त्रिविधः

(C) पञ्चविधः (D) षड्विधः

स्रोत–भारतीयदर्शन - जगदीशचन्द्र मिश्र, पेज–670

371. निम्नलिखित में से कौन ब्रह्मसम्प्रदाय का प्रवर्तक है? UGC(H) D–2015

(A) विष्णुस्वामी (B) निम्बार्काचार्य

(C) हित हरिवंश (D) मध्वाचार्य

स्रोत–भारतीय दर्शन- चन्द्रधर शर्मा, पेज-292

372. निम्नलिखित सिद्धान्तों को उनके सिद्धान्तकारों के साथ सुमेलित कीजिये– UGC (H) D–2015

सूची I	**सूची II**
(क) द्वैत	(i) रामानुजाचार्य
(ख) द्वैताद्वैत	(ii) वल्लभाचार्य
(ग) शुद्धाद्वैत	(iii) निम्बार्काचार्य
(घ) विशिष्टाद्वैत	(iv) मध्वाचार्य

	क	ख	ग	घ
(A)	3	2	1	4
(B)	4	3	2	1
(C)	2	4	3	1
(D)	1	3	2	4

स्रोत–भारतीय दर्शन- हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-295

373. कश्मीरशैवदर्शने शिवस्य पञ्चशक्तयः सन्ति– JNU Mphil/Ph.D–2014

(A) कला-काल-विद्या-राग-निपतयः

(B) सृष्टि-स्थिति-संहृति-विलय-अनुग्रहाः

(C) चित्-आनन्द-इच्छा-ज्ञान-क्रिया

(D) शिव-शक्ति-सदाशिव-ईश्वर-सद्विधाः

स्रोत–भारतीय दर्शन- चन्द्रधर शर्मा, पेज-339

374. प्रत्यभिज्ञाशास्त्रे शिवस्य पञ्कार्याणि सन्ति– JNU Mphil/Ph.D–2014

(A) सृष्टि - स्थिति - संहार - विलय - अनुग्रहरूपाणि

(B) इच्छा - ज्ञान - क्रिया - राग - विद्यारूपाणि

(C) ज्ञान - स्मृति - कला - नियति - अपोहरूपाणि

(D) पञ्चकञ्चुकानि

स्रोत–भारतीय दर्शन- चन्द्रधर शर्मा, पेज-336

363. (*) 364. (C) 365. (D) 366. (D) 367. (B) 368. (C) 369. (B) 370. (B) 371. (D) 372. (B) 373. (C) 374. (A)

375. अनधिगतार्थगन्तृप्रमाणमिति..........स्वीक्रियते– GJ SET–2016

(A) मीमांसकैः (B) नैयायिकैः
(C) बौद्धैः (D) चार्वाकैः

स्रोत– तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज–45

376. मानकेन्द्रितोवादः अस्ति - UGC 73 J–2012

(A) ईश्वरास्तित्ववादः (B) अनीश्वरवादः
(C) उपयोगितावादः (D) अस्तित्ववादः

स्रोत–पाश्चात्य दर्शन के सम्प्रदाय-शोभा निगम, पेज-173-174

377. जे० एस० मिल् प्रवर्तक हैं - UGC 73 J–2012

(A) उपयोगितावादस्य (B) मानववादस्य
(C) प्रत्ययवादस्य (D) अनीश्वरवादस्य

स्रोत–पाश्चात्य दर्शन के सम्प्रदाय- शोभा निगम, पेज-225

378. अस्तित्ववादिनः न स्वीकुर्वन्ति - UGC 73 J–2012

(A) विश्वसत्ताम् (B) व्यक्तिस्वतन्त्रसत्ताम्
(C) सुखास्तित्त्वम् (D) आत्मास्तित्त्वम्

स्रोत–पाश्चात्य दर्शन के सम्प्रदाय- शोभा निगम, पेज- 181

379. ईश्वरात्मनि गुणाः सन्ति - UGC 73 J–2012

(A) नव (B) दश
(C) चतुर्दश (D) अष्टौ

स्रोत–

380. उपयोगितावादस्य प्रवर्तकोऽस्ति - UGC 73 D–2013

(A) जे०एस० मिल (B) नीत्से
(C) जास्पर्स (D) मार्शल

स्रोत–

381. परिणामवादविवर्तवादयोः समानतत्त्वम् अस्ति - UGC 73 D–2013

(A) जगत्सत्यत्वम् (B) आत्मसत्यत्वम्
(C) देहात्मैक्यम् (D) व्यक्तिस्वातन्त्र्यम्

स्रोत– भारतीयदर्शन - जगदीशचन्द्र मिश्र, पेज–568

382. प्रतिपत्ति है - UGC 73 J–2013

(A) द्विविधा (B) चतुर्विधा
(C) नवविधा (D) त्रिविधा

स्रोत–

383. प्रकर्षेणणाऽङ्गोपदेशः यत्र भवति सा-UGC 73 J–2013

(A) विधात्री (B) विकृतिः
(C) प्रतिकृतिः (D) प्रकृतिः

स्रोत–

384. ''व्याप्तिविशिष्टहेतवः'' सन्ति - UGC 73 J–2013

(A) त्रयः (B) चत्वारः
(C) पञ्च (D) षट्

स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज-93

385. द्वीन्द्रियग्राह्यं भवति - UGC 73 J–2013

(A) रूपम् (B) अहङ्कार
(C) संख्या (D) इन्द्रिय

न्यायसिद्धान्तमुक्तावली (गुणनिरुपणप्रकरण)-गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज–164-165

386. शब्दमयी देवतेति सिद्धान्त है - UGC 73 J–2013

(A) पूर्वमीमांसायाः (B) बौद्धस्य
(C) जैनस्य (D) पुराणस्य

स्रोत–षट् दर्शन- नन्दलाल दशोरा, पेज-439

387. 'अलोकनिरपेक्षं चक्षुः' कारण है - UGC 73 D–2013

(A) घट-प्रत्यक्षे (B) तमः-प्रत्यक्षे
(C) रस-प्रत्यक्षे (D) अभाव-प्रत्यक्षे

स्रोत–संस्कृतवाङ्मय का बृहद् इतिहास-बलदेव उपाध्याय, पेज–60

388. बाधना लक्षण है - UGC 73 D–2013

(A) सुखम् (B) दुःखम्
(C) फलम् (D) प्रयोजनम्

स्रोत–षट् दर्शन - नन्दलाल दशोरा, पेज-82

389. प्रवृत्तिदोषोत्पन्न का अर्थ है - UGC 73 D–2013

(A) फलम् (B) वादः
(C) प्रतिज्ञा (D) उदाहरणम्

स्रोत–षट् दर्शन - नन्दलाल दशोरा, पेज-82

390. तद्विवेकेन च वस्तुस्वरूपाधारणं आहुः - UGC 73 D–2013

(A) विद्याम् (B) अज्ञानम्
(C) प्रकृतिम् (D) मुक्तिम्

स्रोत–ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्य-सत्यानन्द सरस्वती, पेज–14

375. (A) 376. (D) 377. (B) 378. (D) 379. (D) 380. (A) 381. (B) 382. (A) 383. (*) 384. (A) 385. (C) 386. (A) 387. (B) 388. (B) 389. (A) 390. (A)

391. अथ शब्दो न मङ्गलार्थकः वाक्यार्थे - UGC 73 D–2013

(A) समन्वयाभावात् (B) अन्यर्थकत्वात्
(C) त्यर्थत्वात् (D) सिद्धसाधनवत्त्वात्

स्रोत–ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यम्-स्वामी सत्यानन्द सरस्वती, पेज–21

392. शब्दाभिव्यक्तिविषये वादाः भवन्ति - UGC 73 D–2013

(A) त्रयोदशः (B) त्रयः
(C) चत्वारः (D) षट्

स्रोत–

393. ''ऐकाश्रम्यन्त्वाचार्याः'' इत्युक्तिरस्ति - UGC 73 D–2013

(A) मनोः (B) गौतमस्य
(C) विष्णोः (D) आपदेवस्य

स्रोत–गौतमधर्मसूत्र - प्रमोदवर्धन कौण्डिन्न्यायन, पेज-79

394. प्रामाण्यं स्वतो ग्राह्यं नास्ति - UGC 73 D–2013

(A) संशयानुपपत्तितः (B) सप्रवर्तकत्वात्
(C) विसंवादिप्रवर्तकत्वात् (D) ज्ञानवृत्तित्वात्

स्रोत–

395. कर्तृत्वेन कार्यत्वेन कार्यकारणभाव एव - UGC 73 D–2013

(A) अनुकूलस्तर्कः (B) उपाधिः
(C) गौरवम् (D) व्यतिरेकव्यभिचारः

स्रोत–

396. अन्योन्नजनन मिथुन वृत्तियाँ हैं - UGC 73 D–2013

(A) गुणाः (B) धर्मादयः
(C) व्यक्तादयः (D) भावाः

स्रोत–सांख्यकारिका (का.12)- राकेश शास्त्री, पेज-42

397. फलदीपेश्वरः भवति - UGC 73 D–2013

(A) वपुष्मान् (B) मेधातिथिः
(C) ज्योतिष्मान् (D) द्युतिमान्

स्रोत–

398. योनिमुद्रायें होती हैं - UGC 73 D–2013

(A) अष्टौ (B) नव
(C) पञ्च (D) तिस्रः

स्रोत–तन्त्रागमीय ज्ञानकोश- चन्द्रशेखर शिवाचार्य, पेज-263

399. परस्पर आकांक्षा है - UGC 73 S–2013

(A) प्रमाणम् (B) प्रकरणम्
(C) स्थानम् (D) निरूपणम्

स्रोत–अर्थसंग्रह-सत्यप्रकाश शर्मा, पेज-86

400. व्यापकद्रव्य होता है- UGC 73 S–2013

(A) परमाणुः (B) मनः
(C) आकाशः (D) वायुः

स्रोत–भारतीय दर्शन- हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-207

401. विभिन्न दर्शन के तत्त्वों का प्रमुख उद्देश्य है - UGC 73 S–2013

(A) दुःखनाशः (B) मोक्षप्राप्तिः
(C) संसारबन्धनाशः (D) परमात्मसत्कारः

स्रोत–भारतीय दर्शन- हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-3

402. पुष्कर पलाशवत् निर्लेप होता है- UGC 73 S–2013

(A) प्राणः (B) पुरुषः
(C) प्रधानम् (D) आकाशः

स्रोत–भारतीय दर्शन- उमेश मिश्र, पेज-344

403. अव्याप्यवृत्ति विशेष गुण होता है-UGC 73 S–2013

(A) संस्कारः (B) गन्धः
(C) शब्दः (D) परिमाणम्

स्रोत–तर्कभाषा- गजानन शास्त्री मुसलगाँवकर, पेज-436

404. कर्म का सिद्धान्त है? UP PCS – 1997

(A) न्याय से (B) मीमांसा से
(C) वेदान्त से (D) वैशेषिक से

स्रोत–भारतीय दर्शन- उमेश मिश्र, पेज-348

405. ''मनः भूतत्त्ववत् मूर्तत्त्वात्'' यहाँ मूर्तत्त्व हेतु में दोष है- UGC 73 S–2013

(A) बाधः (B) विरोधः
(C) अव्याप्तिः (D) आश्रयासिद्धिः

स्रोत–

391. (A) 392. (*) 393. (B) 394. (D) 395. (*) 396. (A) 397. (*) 398. (B) 399. (B) 400. (C) 401. (B) 402. (B) 403. (C) 404. (B) 405. (A)

406. धर्माधर्मादि भाव होते हैं - UGC 73 S–2013
(A) पुरुषे (B) मूलप्रधाने
(C) महत्तत्त्वे (D) मनसि
स्रोत–सांख्यकारिका (का023)- राकेश शास्त्री, पेज-73

407. महामोह होते हैं - UGC 73 S–2013
(A) दश (B) नव
(C) एकादश (D) द्वादश
स्रोत–सांख्यकारिका (का048) - राकेश शास्त्री, पेज-135

408. ''षड्गुरू'' यह उपाधि होती है - UGC 73 S–2013
(A) वैदिकस्य (B) जैनस्य
(C) नैयायिकस्य (D) शून्यवादिनः
स्रोत–

409. प्रधानकारणवाद का निरास है - UGC 73 S–2013
(A) महाभाष्ये (B) शाबरभाष्ये
(C) व्यासभाष्ये (D) शांकरभाष्ये
स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शन - सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, भू .पेज-37

410. अनादिभावरूप है और ज्ञान से निवृत्त होता है - UGC 73 S–2013
(A) मनः (B) जगत्
(C) अज्ञानम् (D) मिथ्यात्वम्
स्रोत–भारतीय दर्शन-चन्द्रधर शर्मा, पेज-283

411. पुनरुत्पत्ति .... होती है - UGC 73 J–2014
(A) दोषः (B) लिङ्गम्
(C) प्रेत्यभावः (D) प्रयोजनम्
स्रोत–भारतीय दर्शन- उमेश मिश्र, पेज-187

412. भावों से अधिवासित होकर संसरण करता है - UGC 73 J–2014
(A) प्रकृतिः (B) पुरुषः
(C) लिङ्गम् (D) अहङ्कारः
स्रोत–सांख्यकारिका (का0-52)-राकेश शास्त्री, पेज-149

413. धर्म से गमन होता है- UGC 73 J–2014
(A) ऊर्ध्वम् (B) अधः
(C) परितः (D) तिर्यम्
स्रोत–सांख्यकारिका (का.44) - राकेश शास्त्री, पेज-127

414. भोजवृत्तिरस्ति? UGC 73 D–2014
(A) सांख्यसूत्राणाम् (B) योगसूत्राणाम्
(C) धर्मसूत्राणाम् (D) गौतमसूत्राणाम्
स्रोत–भारतीय दर्शन- उमेश मिश्र, पेज-319

415. 'अश्वसंज्ञपन' का तात्पर्य है - UGC 73 J–2014
(A) स्नपनम्
(B) मार्जनम्
(C) प्राणसञ्जागरणम्
(D) प्राणवियोगजननानुकलोव्यापारः
स्रोत–

416. ''हीगेल'' पाश्चात्त्य पण्डित का वाद है- UGC 73 J–2014
(A) भौतिकवादः (B) प्रत्ययवादः
(C) मानवतावादः (D) संशयवादः
स्रोत–पाश्चात्य दर्शन- शोभा निगम- पेज-62-63

417. ''याथातथ्यतोऽर्थान् त्यदधात् शाश्वतीभ्यः समाम्यः'' इस श्रुति से साधित होता है- UGC 73 J–2014
(A) वर्णनित्यत्वम् (B) जगत्सत्यत्वम्
(C) परमात्मनित्यत्वम् (D) विष्णोः सर्वगतत्वम्
स्रोत–

418. परब्रह्मणः स्वगतभेदवर्जितत्वं प्रतिपादितं परब्रह्म - UGC 73 J–2014
(A) नेह नानास्ति किञ्चन (B) वाचा विरूपनित्यया
(C) प्रपञ्चो यदि विद्येत (D) अनेजदेकं मनसो जवीयः
स्रोत–

419. शिवाद्वैत निरूपण करने वाली श्रुति उदाहृत की जाती है - UGC 73 J–2014
(A) सर्वं खल्विदं ब्रह्म (B) अयमात्मा ब्रह्म
(C) मुत्तिकेत्येव सत्यम् (D) अहं ब्रह्मास्मि
स्रोत–

420. ''तमः प्रकाशवद् विरुद्धस्वभावयोः'' यह कथन है- UGC 73 J–2014
(A) समन्वयाधिकरणे (B) जिज्ञासाधिकरणे
(C) आकाशाधिकरणे (D) स्मृत्याधिकरणे
स्रोत–ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्य - सत्यानन्द सरस्वती, पेज - 02

406. (C) 407. (A) 408. (A) 409. (A) 410. (D) 411. (C) 412. (C) 413. (A) 414. (B) 415. (D)
416. (B) 417. (B) 418. (A) 419. (C) 420. (B)

421. द्रव्यत्व अवच्छेदक होता है- UGC 73 J–2014

(A) निमित्तकारणत्वस्य (B) समवायिकारणत्वस्य
(C) असाधारणकारणत्वस्य (D) असमवायिकारणत्वस्य

स्रोत–

422. द्रव्यादिसप्तान्यतमत्त्वं भवति- UGC 73 J–2014

(A) द्रव्यादिभेदसप्तकभावत्वम्
(B) द्रव्यादिसप्तभिन्नभिन्नत्वम्
(C) द्रव्यादिसप्तकत्वाभावात्वम्
(D) द्रव्यादिसप्ताभिन्नत्वाभावत्वम्

न्यायसिद्धान्त मुक्तावली (प्रत्यक्ष खण्ड)–गजानन शास्त्री मुसलगाँवकर, पेज-58

423. सदागतिमत्त्वाभावात् से तम नहीं होता है - UGC 73 J–2014

(A) वायुः (B) मनः
(C) आकाशः (D) जलम्

स्रोत–

424. उस ज्ञान विषयक ज्ञान का ग्रहण होता है - UGC 73 J–2014

(A) प्रामाण्यम् (B) अप्रमाण्यम्
(C) बुद्धित्वम् (D) संशयत्वम्

स्रोत–तर्कभाषा- श्रीनिवास शास्त्री, पेज-155

425. ''सर्वनयात्मकं सम्यगर्थनिर्णयः'' लक्षणं भवति - UGC 73 J–2014

(A) प्रमाणम् (B) प्रमेयम्
(C) प्रमितिः (D) प्रमाता

स्रोत–

426. उपाधि सम्बन्ध से कल्पित आत्मा में है - UGC 73 J–2014

(A) सुखित्वम् (B) जीवत्वम्
(C) मिथ्यात्वम् (D) जगद्योनित्वम्

स्रोत–

427. उसने ही निर्माण किया - UGC 73 J–2014

(A) सकलं प्रपञ्चम् (B) सर्वजीवजालम्
(C) चतुर्दशभुवनम् (D) पातालादिभुवनम्

स्रोत–

428. पदार्थस्य किं लक्षणम् - UGC 25 J–2007

(A) सत्तावत्वम् (B) भावत्वम्
(C) धेयत्वम् (D) प्रमेयत्वम्

स्रोत–तर्कसंग्रह- अनितासेना गुप्ता, पेज-27

429. सामान्य पदार्थः नास्तीति कस्य मतम् - UGC 25 J–2007

(A) वेदान्तस्य (B) नैयायिकस्य
(C) मीमांसकस्य (D) वैयाकरणस्य

स्रोत–

430. विभुत्वं किमस्ति - UGC 25 J–2007

(A) अपरिच्छिन्नपरिमाणवत्वम्
(B) परिमाणरहित्वम्
(C) सर्वमूर्तद्रव्यसंयोगित्वम्
(D) प्रत्यक्षायोग्यद्रव्यत्वम्

स्रोत–तर्कसंग्रह- कृष्णवल्लभाचार्य,पेज-37

431. अव्याप्यवृत्तित्वं किमस्ति - UGC 25 J–2007

(A) सावच्छिन्नवृत्तिकत्वम् (B) निरवच्छिन्नवृत्तिकत्वम्
(C) एकमात्रवृत्तित्वम् (D) अनेकवृत्तित्वम्

स्रोत–

432. अहङ्कार कतिविधो भवति - UGC 25 D–2007

(A) एकविधः (B) द्विविधः
(C) त्रिविधः (D) चतुर्विधः

स्रोत–सांख्यकारिका - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-208

433. वैराग्यात् किं भवति - UGC 25 D–2007

(A) प्रकृतिलयः (B) बुद्धिलयः
(C) अहङ्कारलयः (D) भूतलयः

स्रोत–सांख्यकारिका- सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-267

434. पारिमाण्डल्यं नाम किम् - UGC 25 D–2007

(A) परमाणुः (B) अणुपरिमाणम्
(C) ब्राह्मण्डम् (D) त्रसरेणुः

स्रोत–तर्कभाषा- श्रीनिवास शास्त्री, पेज-225

421. (B) 422. (A) 423. (A) 424. (A) 425. (A) 426. (B) 427. (C) 428. (D) 429. (*) 430. (C) 431. (B) 432. (C) 433. (A) 434. (B)

435. समीचीनां तालिकां चिनुत - UGC 25 D–2008

(क) आत्मा		**(i) गुणः**	
(ख) शब्दः		**(ii) अभावः**	
(ग) तमस्		**(iii) द्रव्यम्**	
(घ) परत्वम्		**(iv) जातिः**	

	क	ख	ग	घ
(A)	III	II	I	IV
(B)	I	III	II	IV
(C)	III	I	II	IV
(D)	I	II	III	IV

स्रोत–तर्कसंग्रह - अनितासेन गुप्ता, पेज-28,29,58

436. शब्दो न प्रमाणमिति कस्य मतम् - UGC 25 J–2010

(A) सांख्यस्य (B) योगस्य

(C) न्यायस्य (D) बौद्धस्य

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पेज-136

437. कारणैकार्थपत्यासत्या को जनकः - UGC 25 J–2011

(A) घटं प्रति कपालः

(B) घटं प्रति दण्डः

(C) घटरूपं प्रति कपालरूपम्

(D) घटं प्रति कपालम्

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पेज-42

438. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां विचिनुत - UGC 25 J–2011

क- प्रभाकरः	**1. अन्यथाख्यातिः**
ख- शङ्करः	**2. अख्यातिः**
ग- कुमारिलः	**3. अनिर्वचनीयख्यातिः**
घ- गौतमः	**4. विपरीतख्यातिः**

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(A)	1	2	3	4
(B)	2	3	4	1
(C)	3	4	2	1
(D)	4	3	2	1

स्रोत–भारतीय दर्शन – चन्द्रधर शर्मा, पेज-202-208

439. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां विचिनुत - UGC 25 J–2011

क- आरम्भवादः	**1. सांख्यानाम्**
ख- परिणामवादः	**2. नैयायिकानाम्**
ग- विवर्तवादः	**3. अद्वैतवेदान्तिनाम्**
घ- विज्ञानवादः	**4. बौद्धानाम्**

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(A)	3	2	1	4
(B)	2	1	3	4
(C)	2	4	3	1
(D)	1	2	3	4

स्रोत–भारतीय दर्शन–बलदेव उपाध्याय, पेज-134, 258, 371

440. अधोनिर्दिष्टेषु किम् असत्यमस्ति - UGC 25 J–2011

(A) जीवन्मुक्तिरेव विदेहमुक्तिः

(B) इच्छाशक्तिमान् करणरूपः मनोमयकोशः

(C) वस्तुनि अवस्तुन आरोपः अध्यारोपः

(D) सांख्यमते दशेन्द्रियाणि भवन्ति

स्रोत–सांख्यकारिका (का025)–सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-208

441. 'पर्वतो वह्निमान् प्रमेयत्वात्' इत्यत्र दोषो वर्तते - UGC 25 J–2013

(A) साध्याभाववद्वृत्तिः (B) दृष्टान्तरहित्वम्

(C) साध्याभावव्याप्तिः (D) आश्रयासिद्धित्वम्

स्रोत–तर्कसंग्रह - अनितासेन गुप्ता, पेज-96

442. तस्मादिन्द्रियम् ------ UGC 25 S–2013

(A) प्रत्यक्षप्रमाणम् (B) अनुमितिकरणम्

(C) उपमानम् (D) शब्दप्रमाणम्

स्रोत–तर्कसंग्रह - अनितासेन, गुप्ता, पेज-74

443. 'आर्यसमाज' के प्रवर्तक हैं - UGC 73 D–1992

(A) मनु (B) दयानन्दसरस्वती

(C) रामकृष्णपरमहंस (D) राजाराममोहनराय

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–18

444. 'यमल' शब्द का अर्थ होता है - UGC 73 D–1996

(A) जोड़ा (B) स्त्री, पुरुष

(C) एक काल में पैदा (D) कोई नहीं

स्रोत–शब्दकोश- वामन शिवराम आप्टे, पेज-830

435. (C) 436. (D) 437. (C) 438. (B) 439. (B) 440. (D) 441. (A) 442. (A) 443. (B) 444. (B)

445. अनुपलब्धि का विषय क्या है - UGC 73 D–1999

(A) अभाव (B) अर्थापत्ति
(C) सादृश्यज्ञान (D) विभ्रम

स्रोत–भारतीय दर्शन- हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-284

446. भारतीयशिक्षादार्शनिकेषु कस्य प्रभावः – DSSSB PGT–2014

(A) पाश्चात्यशिक्षायाः (B) आश्रमव्यवस्थायाः
(C) पुरुषार्थचतुष्टयस्य (D) आधुनिकतायाः

स्रोत–

447. सामान्य पदार्थ को स्वीकार नहीं करते हैं - UGC 73 D–2014

(A) बौद्ध (B) नैयायिक
(C) वैशेषिक (D) मीमांसक

स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज- 49-50

448. न्यासापहारी होता है- UGC 73 D–2014

(A) षण्ढः (B) अनपत्यः
(C) वातवृषणः (D) छिन्नहस्तः

स्रोत–

449. सही विकल्प चुनिए - UGC 73 D–2014

(A) प्रत्यक्षमेकं प्रमाणम् - जैनानाम्
(B) आलयविज्ञानम् - योगदर्शने
(C) निर्विकल्पकज्ञानं प्रमाणम् - बौद्धे
(D) सत्यप्रपञ्चः इति - अद्वैतवेदान्ते

स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-85

450. सही विकल्प चुनिये - UGC 73 D–2014

(A) भारतीया-संस्कृतिः - नवीनाऽस्ति
(B) संस्कृतिः - संस्कृताश्रिता
(C) भारतीया-संस्कृतिः - धर्ममूला नास्ति
(D) भारतीया-संस्कृतिः - वेदानुगा नास्ति

स्रोत–

451. अधस्तनयुग्मानां तालिकां चिनुत - UK SLET–2015

क- तर्कसंग्रहः **1. वेदान्तदर्शनम्**
ख- वेदान्तसारकारः **2. अन्नम्भट्टः**
ग- विवर्तवादः **3. सांख्यकारिका**
घ- प्रतिविषयाध्यवसायो दृष्टम् **4. सदानन्दः**

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(A)	2	3	4	1
(B)	2	4	1	3
(C)	3	1	4	2
(D)	4	2	3	1

स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज–537,639,773,794

452. शब्दनित्यताधिकरण है - UGC 73 D–2013

(A) प्रथमम् (B) द्वितीयम्
(C) चतुर्थम् (D) पञ्चमम्

स्रोत–

453. 'जगद्व्यापारवर्जम्' इस सूत्र से बोध होता है - UGC 73 S–2013

(A) जीवेश्वरभेदतत्त्वम् (B) जीवनमुक्तिलक्षणम्
(C) जडेश्वरभेदतत्त्वम् (D) ब्रह्मणः तटस्थलक्षणम्

स्रोत–ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्य-सत्यानन्द सरस्वती, पेज-879

454. अग्निदिव्य में मण्डल है - UGC 73 S–2013

(A) एकादश (B) नव
(C) पञ्च (D) चत्वारि

स्रोत– याज्ञवल्क्यस्मृति - उमेशचन्द्र पाण्डेय, पेज–255

455. अनीश्वर होता है - UGC 73 D–2014

(A) ईश्वराभावः (B) ईश्वरभेदः
(C) ईश्वरसदृशः (D) अल्पेश्वरः

स्रोत–भारतीय दर्शन - हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज–124

456. ज्ञाननिवर्त्यत्वं भवति - UGC 73 D–2014

(A) मिथ्यात्वम् (B) सत्यत्वम्
(C) बाधः (D) उपाधिः

स्रोत–भारतीय दर्शन- चन्द्रधर शर्मा, पेज-283

457. अशेषसाधनाश्रयाश्रितसाध्य-सामानाधिकरण्यं भवति- UGC 73 D–2014

(A) व्याप्तिः (B) अनुमितिः
(C) मिथ्यात्वम् (D) सत्त्वम्

स्रोत–

445. (A) 446. (B) 447. (A) 448. (B) 449. (C) 450. (B) 451. (B) 452. (A) 453. (A) 454. (B) 455. (A) 456. (A) 457. (A)

458. 'प्राज्ञमतविरुद्धवाद' यह अर्थ होता है- UGC 73 D–2014

(A) प्रज्ञावादस्य (B) प्रज्ञानस्य
(C) शक्तिवादस्य (D) संघातवादस्य

स्रोत–

459. ब्रह्मसर्वज्ञ सर्वशक्तिसम्पन्न ज्ञात होता है- UGC 73 D–2014

(A) उपमानात् (B) अर्थापत्या
(C) अनुमानात् (D) उपलब्ध्या

स्रोत–ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्य - सत्यानन्द सरस्वती,पेज-281

460. ''अनादिनिधनं ब्रह्म'' भवति– UGC 73 D–2014

(A) शब्दतत्त्वम् (B) अर्थतत्त्वम्
(C) वाक्यतत्त्वम् (D) काव्यतत्त्वम्

स्रोत–वाक्यपदीयम् (1/1) - शिवशंकर अवस्थी, पेज-1

461. अभावस्य ज्ञानं केन प्रमाणेन भवति - JNU MET–2014

(A) प्रत्यक्षेण (B) अनुमानेन
(C) उपमानेन (D) अर्थापत्या

स्रोत–भारतीय दर्शन- हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-220

462. भूतत्व-मूर्त्तत्वयोः का जातिः - JNU MET–2014

(A) भूतत्वम् (B) मूर्त्तत्वम्
(C) द्रव्यत्वम् (D) नैकाऽपि

स्रोत–

463. आत्म-नानात्वं कस्य अभिमतम् - JNU MET–2014

(A) बौद्धस्य (B) वेदान्तस्य
(C) वैशेषिकस्य (D) वैयाकरणस्य

स्रोत–भारतीय दर्शन- हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-209

464. काश्मीरशैवदर्शने कति तत्त्वानि सन्ति - J NU MET–2014

(A) 33 (B) 36
(C) 25 (D) 15

स्रोत–भारतीय दर्शन- चन्द्रधर शर्मा,पेज-339

465. सात तत्त्वों में कौन-सा नहीं है - BHU AET–2011

(A) बन्ध (B) संवर
(C) निर्जरा (D) पुद्गल

स्रोत–भारतीय दर्शन - हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-162

466. चैतन्य का दर्शन किस नाम से प्रसिद्ध है - BHU AET–2010

(A) अचिन्त्यभेदाभेदवाद (B) भेद-भाव
(C) अभेदभाव (D) द्वैतवाद

स्रोत–भारतीय दर्शन- चन्द्रधर शर्मा, पेज-330

467. उपरमस्वत्वाद का प्रतिपादन किसने किया है ? UGC 73 J–2008

(A) विज्ञानेश्वरेण (B) नन्दपण्डितेन
(C) जीमूतवाहनेन (D) कमलाकरेण

स्रोत–

468. किन दो दर्शनों में ईश्वर के अतिरिक्त अन्य सब समान है - UGC 73 J–2008

(A) जैनबौद्धयोः (B) सांख्ययोगयोः
(C) न्यायवैशेषिकयोः (D) सांख्यचार्वाकयोः

स्रोत–भारतीय दर्शन- हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-270

469. 'परत्र पूर्वदृष्टावभासः' - यह लक्षण है - UGC 73 J–2012

(A) अज्ञानस्य (B) मिथ्याज्ञानस्य
(C) अध्यासस्य (D) अविद्यायाः

स्रोत–ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्य- सत्यानन्द सरस्वती- पेज-04

470. सांख्यवक्ता कपिलः कस्य पुत्रः ? BHU AET–2012

(A) ईश्वरकृष्णस्य (B) बृहस्पतेः
(C) कर्दमस्य (D) अत्रेः

स्रोत–भारतीय दर्शन- शोभा निगम- पेज-128

471. ऋषभदेव किस सम्प्रदाय के प्रवर्तक हैं- UGC 73 J–2013

(A) चार्वाकस्य (B) जैनस्य
(C) स्मार्तस्य (D) श्रौतस्य

स्रोत–भारतीय दर्शन- चन्द्रधर शर्मा, पेज-29

458. (A) 459. (C) 460. (A) 461. (A) 462. (*) 463. (C) 464. (B) 465. (D) 466. (A) 467. (C) 468. (B) 469. (C) 470. (C) 471. (B)

472. श्रीअरविन्द आश्रम स्थित है- UP PCS–2007

(A) तमिलनाडु में (B) कर्नाटक में
(C) रामेश्वरम् में (D) पाण्डिचेरी में

स्रोत–भारतीय दर्शन- चन्द्रधर शर्मा, पेज-332

473. आदिशङ्कराचार्य जो बाद में शङ्कराचार्य बने उनका जन्म हुआ था - UP PCS–1999

(A) कश्मीर में (B) केरल में
(C) आन्ध्रप्रदेश में (D) पश्चिम बंगाल में

स्रोत–भारतीय दर्शन- चन्द्रधर शर्मा, पेज-237

474. किस सन्त ने अद्वैतवाद का प्रतिपादन किया - Chh PSC–2012

(A) शङ्कराचार्य (B) रामानन्द
(C) कबीर (D) चैतन्य

स्रोत–भारतीय दर्शन- हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-295

475. निम्नलिखित में से कौन-सा एक सही कालानुक्रम है- J PSC–2010

(A) शङ्कराचार्य - रामानुज - चैतन्य
(B) रामानुज - शङ्कराचार्य - चैतन्य
(C) रामानुज - चैतन्य - शङ्कराचार्य
(D) शङ्कराचार्य - चैतन्य- रामानुज

स्रोत–भारतीय दर्शन- चन्द्रधर शर्मा, पेज-237,295,330

476. महावीर का जन्म कहाँ हुआ था - BHU AET–2011

(A) नागपुर में (B) कुण्डलपुर में
(C) जबलपुर में (D) जगदलपुर में

स्रोत–भारतीय दर्शन- शोभा निगम, पेज-77

477. भगवान् बुद्ध का दूसरा नाम क्या था - BHU AET–2010

(A) तथागत (B) हर्ष
(C) सुयोधन (D) महावीर

स्रोत–भारतीय दर्शन- शोभा निगम, पेज-127

478. गौतमबुद्ध की पत्नी का नाम क्या था - BHU AET–2010, 2011

(A) तारा (B) यशोधरा
(C) यामिनी (D) मोधा

स्रोत–भारतीय दर्शन- हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज 104

479. गौतमबुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति कहाँ हुई थी - BHU AET–2010, 2011

(A) गया (B) पटना
(C) वाराणसी (D) अयोध्या

स्रोत–भारतीय दर्शन- उमेश मिश्र, पेज-135

480. जैनधर्म के आचार्य कौन थे - BHU AET–2010, 2011

(A) बुद्ध (B) महावीर
(C) ईश्वरकृष्ण (D) जैमिनि

स्रोत–भारतीय दर्शन- हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-143

481. महावीर का जन्मस्थान कहाँ है - BHU AET–2010

(A) पाटलिपुत्र (B) वैशाली
(C) गया (D) वाराणसी

स्रोत–भारतीय दर्शन - जगदीश चन्द्र मिश्र, पेज– 203

482. रामानुजाचार्य का जन्म कब हुआ था - BHU AET–2010

(A) 1017 ई० (B) 1018 ई०
(C) 1028 ई० (D) 1040 ई०

स्रोत–भारतीय दर्शन- उमेश मिश्र, पेज-406

483. मध्वाचार्य की अपर संज्ञा क्या है - BHU AET–2010

(A) पूर्णप्रज्ञ (B) ब्रह्म
(C) भागवत (D) जयतीर्थ

स्रोत–भारतीय दर्शन- उमेश मिश्र, पेज-426

484. श्री रामानुजाचार्य के पिता का क्या नाम था - BHU AET–2010

(A) ब्रह्मभट्ट (B) केशवभट्ट
(C) रामभट्ट (D) भूतनाथ

स्रोत–भारतीय दर्शन- उमेश मिश्र, पेज-406

485. श्री मध्वाचार्य के पिता का नाम क्या था - BHU AET–2010

(A) ब्रह्मभट्ट (B) रामभट्ट
(C) केशवभट्ट (D) श्री मघ्वदेव

स्रोत–भारतीय दर्शन- उमेश मिश्र, पेज-426

472. (D) 473. (B) 474. (A) 475. (A) 476. (B) 477. (A) 478. (B) 479. (A) 480. (B) 481. (B) 482. (A) 483. (A) 484. (B) 485. (D)

486. शुद्धाद्वैतवादी आचार्य कौन हैं - BHU AET–2010
(A) निम्बार्काचार्य (B) वल्लभाचार्य
(C) रामभद्र (D) शङ्कर
स्रोत–भारतीय दर्शन - उमेश मिश्र, पेज-451

487. भगवान् बुद्ध का मौलिक नाम क्या है- BHU AET–2011
(A) शुद्धोधन (B) गौतम
(C) राहुल (D) महावीर
स्रोत–भारतीय दर्शन - शोभा निगम, पेज-100

488. भगवान् बुद्ध किस वंश में अवतरित हुए - BHU AET–2011
(A) ब्राह्मण वंश में (B) क्षत्रिय वंश में
(C) वैश्यवंश में (D) शूद्र वंश में
स्रोत–भारतीय दर्शन - जगदीशचन्द्र मिश्र, पेज–250

489. महावीर का पितृप्रदत्त नाम क्या था - BHU AET–2011
(A) वर्धमान (B) पार्श्वनाथ
(C) सिद्धार्थ (D) प्रियव्रत
स्रोत–भारतीय दर्शन - शोभा निगम, पेज -77

490. महावीर के पिता का क्या नाम था - BHU AET–2011
(A) वर्धमान (B) पार्श्वनाथ
(C) सिद्धार्थ (D) प्रियव्रत
स्रोत–भारतीय दर्शन - जगदीशचन्द्र मिश्र, पेज– 203

491. जैनधर्म के अन्तिम तीर्थङ्कर कौन थे - BHU AET–2011
(A) आदिनाथ (B) पार्श्वनाथ
(C) महावीर (D) सिद्धार्थ
स्रोत–भारतीय दर्शन- हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-143

492. आचार्य निम्बार्क का मौलिक नाम क्या था - BHU AET–2011
(A) विजयानन्द (B) नियमानन्द
(C) ज्ञानानन्द (D) कृष्णानन्द
स्रोत–भारतीय दर्शन- चन्द्रधर शर्मा, पेज- 323

493. निम्बार्काचार्य क्या थे - BHU AET–2011
(A) द्रविडब्राह्मण (B) तैलङ्गब्राह्मण
(C) तमिलब्राह्मण (D) कान्यकुब्जब्राह्मण
स्रोत–भारतीय दर्शन- उमेश मिश्र, पेज-420

494. चैतन्य महाप्रभु के अनुयायी कौन थे - BHU AET–2011
(A) रूपगोस्वामी (B) शङ्कर
(C) मण्डन (D) रामानुज
स्रोत–भारतीय दर्शन- चन्द्रधर शर्मा, पेज-330

495. आचार्य माध्व की दूसरी संज्ञा क्या है - BHU AET–2011
(A) आनन्दतीर्थ (B) तीर्थंकर
(C) आनन्दकन्द (D) जयतीर्थ
स्रोत–भारतीय दर्शन- उमेश मिश्र, पेज-426

496. आचार्य माध्व किसके आचार्य माने जाते हैं- BHU AET–2011
(A) अग्नि (B) वरुण
(C) वायु (D) इन्द्र
स्रोत–भारतीय दर्शन- उमेश मिश्र, पेज-426

497. आचार्य माध्व के सम्प्रदाय का क्या नाम है - BHU AET–2011
(A) योगसम्प्रदाय (B) ब्रह्मसम्प्रदाय
(C) ज्ञानसम्प्रदाय (D) वल्लभसम्प्रदाय
स्रोत–भारतीय दर्शन- चन्द्रधर शर्मा, पेज-319

498. शंकराचार्याणां माता का - DSSSB PGT–2014
(A) आर्याम्बा (B) पूर्णाम्बा
(C) उमाम्बा (D) शारदाम्बा
स्रोत–

499. (i) शङ्कराचार्यभगवत्पादाः कुत्र जन्म प्राप्तवन्तः –
(ii) शङ्कराचार्यस्य जन्मस्थानं वर्तते –
DSSSB TGT–2014, UGC 73 J–2012
(A) मधुरायाम् (B) काञ्चीपुर्याम्
(C) कालड्याम् (D) अयोध्यायाम्
स्रोत–भारतीय दर्शन - चन्द्रधर शर्मा, पेज– 237

486. (B) 487. (B) 488. (B) 489. (A) 490. (C) 491. (C) 492. (B) 493. (B) 494. (A) 495. (A) 496. (C) 497. (B) 498. (A) 499. (C)

500. भामती प्रस्थान के प्रथमोपदेष्टा हैं - UGC 73 J–2006

(A) श्रीहर्ष (B) पद्मपादाचार्य
(C) वाचस्पति मिश्र (D) सदानन्द

स्रोत–भारतीय दर्शन- चन्द्रधर शर्मा, पेज-274

501. सदानन्द के गुरु का नाम - UGC 25 D–2008

(A) आत्मानन्दः (B) सदानन्दः
(C) रामानन्दः (D) अद्वयानन्दः

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव- पेज-06

502. शंकराचार्य ने शरीर त्याग कहाँ किया - BHU AET–2010

(A) वाराणसी (B) मिथिला
(C) केदारनाथ (D) उज्जैन

स्रोत–भारतीय दर्शन- चन्द्रधर शर्मा, पेज -237

503. शंकराचार्य द्वारा प्रवर्तित सम्प्रदाय कौन-सा है- BHU AET–2010

(A) दशनामी (B) पञ्चनामी
(C) सप्तनामी (D) एकनामी

स्रोत–भारतीय दर्शन- चन्द्रधर शर्मा, पेज-274

504. शंकराचार्य के परवर्ती आचार्य कौन हैं- BHU AET–2010

(A) आत्रेय (B) जैमिनि
(C) काश्यप (D) वाचस्पतिमिश्र

स्रोत– भारतीय दर्शन - चन्द्रधर शर्मा, पेज– 274

505. शंकराचार्य किस वाद के समर्थक हैं - BHU AET–2011

(A) मायावाद (B) अनीश्वरवाद
(C) विज्ञानवाद (D) तीनों

स्रोत–भारतीय दर्शन- चन्द्रधर शर्मा, पेज-327

506. शंकराचार्य के गुरु का नाम क्या था - BHU AET–2011

(A) गोविन्दभगवद्पाद (B) सुरेश्वराचार्य
(C) मण्डनमिश्र (D) वाचस्पतिमिश्र

स्रोत–भारतीय दर्शन- उमेश मिश्र, पेज-349

507. शङ्कराचार्य के 'गुरूणां गुरुः' हैं? UP PGT–2011

(A) गोविन्दपाद (B) गौड़पाद
(C) बादरायण (D) वाचस्पति मिश्र

स्रोत–वेदान्तसार- राकेश शास्त्री, पेज-25

508. 'अप्रमातृत्व' है– UGC 73 D– 2016

(A) प्रपञ्चत्वम् (B) जीवत्वम्
(C) जडत्वम् (D) तुच्छत्वम्

स्रोत–

509. जन्म, औषधि, मन्त्र, तप और समाधि से उत्पन्न होती है? UGC 73 J– 2016

(A) अन्तरायाः (B) सिद्धयः
(C) कैवल्यहेतवः (D) क्लेशाः

स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शन - सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पेज– 491

510. अभिनवगुप्तः अनेन दर्शनेन सम्बद्धः–CVVET–2015

(A) द्वैताद्वैतेन (B) माध्यमिकेन
(C) प्रत्यभिज्ञादर्शनेन (D) योगाचारेण

स्रोत–भारतीय दर्शन- चन्द्रधर शर्मा, पेज-212-213

511. ख्यातिपञ्चके सिद्धान्तानां दर्शनानाञ्च सम्यक् मेलनं कुरुत– JNU Mphil/Ph.D– 2014

सिद्धान्तः	दर्शनानि
(A) आत्मख्यातिः	1. वेदान्तदर्शनम्
(B) असत्ख्यातिः	2. माध्यमिकबौद्धदर्शनम्
(C) अख्यातिः	3. न्यायदर्शनम्
(D) अनिर्वचनीयख्यातिः	4. विज्ञानवादीबौद्धदर्शनम्
(E) अन्यथाख्यातिः	5. प्राभाकरमीमांसादर्शनम्

स्रोत–भारतीय दर्शन- चन्द्रधर शर्मा, पेज-200-206

512. भारतीयदर्शन के समर्थकों में दो मूलभूत विभाजन है? UGC 09–2013

(A) वेदान्त और बौद्ध (B) अद्वैत और द्वैत
(C) आस्तिक एवं नास्तिक (D) कट्टरवादी एवं अशास्त्रीय

स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, भू0 पेज– 10

513. ब्रह्मसूत्रस्य प्रथमसूत्रे कयोः स्पष्टीकरणं कृतम्? MH SET–2016

(A) आत्मब्रह्मणोः (B) विद्याविद्ययोः
(C) इहपरयोः (D) मायाविद्ययोः

स्रोत–ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यम् - सत्यानन्द सरस्वती, पेज-102

500. (C) 501. (D) 502. (C) 503. (A) 504. (D) 505. (A) 506. (A) 507. (B) 508. (C) 509. (B) 510. (C) 511. (B) 512. (C) 513. (A)

514. अधस्तनवर्गयोः समीचीनं युग्मपर्यायं विचिनुत– MH SET–2013

(क) चार्वाकः (i) प्रज्ञानघन एवानन्दमयः
(ख) बौद्धः (ii) स वा एष पुरुषोऽन्नरसमयः
(ग) भाट्टः (iii) आत्मा वै जायते पुत्रः
(घ) अतिप्राकृतः (iv) अन्योऽन्तर आत्मा विज्ञानमयः

	क	ख	ग	घ
(A)	4	1	2	3
(B)	3	2	1	4
(C)	2	4	1	3
(D)	1	3	4	2

स्रोत–वेदान्तसार-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–93, 96, 103, 106

515. 'शास्त्रयोनित्वात्' इत्यस्मिन् सूत्रे 'योनिः' इत्यस्य शब्दस्य कोऽर्थः? UGC 25 Jn–2017

(A) जन्म (B) कारणम्
(C) कार्यम् (D) व्याख्या

स्रोत–ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यम् - सत्यानन्द सरस्वती, पेज-43

516. हेमचन्द्रसूरिः कस्य दर्शनस्य आचार्योऽस्ति? UGC 25 Jn–2017

(A) बौद्धदर्शनस्य (B) जैनदर्शनस्य
(C) चार्वाकदर्शनस्य (D) सांख्यदर्शन

स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-103

517. 'तज्ज्ञानं पञ्चविधं मतिश्रुतावधिमनःपर्यायकेवलभेदेन' उक्तिरियं केन दर्शनेन सम्बद्धा अस्ति-UGC 25 Jn–2017

(A) आर्हतदर्शनेन (B) बौद्धदर्शनेन
(C) रामानुजदर्शनेन (D) न्यायदर्शनेन

स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि, पेज-119

518. 'तत्र पृथिव्यादीनि भूतानि चत्वारि तत्त्वानि इति कस्य मान्यता अस्ति - UGC 73 Jn–2017

(A) चार्वाकदर्शनस्य (B) न्यायदर्शनस्य
(C) मीमांसादर्शनस्य (D) वेदान्तदर्शनस्य

स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि, पेज-4

519. मध्वदर्शनानुसारं मोक्षपदार्थोऽस्ति-UGC 73 Jn–2017

(A) कर्मकृतस्य देहस्वरूपस्यावरणाभावे जीवस्य सततोर्ध्वगमनम्
(B) जगत्कर्तृत्व-लक्ष्मीपतित्व-श्री-वत्सप्राप्तिरहितं दुःखामिश्रितं पूर्णं सुखम्।
(C) अशेषविशेषगुणोच्छेदः।
(D) स्वर्गादिप्राप्तिः।

स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-232-233

520. माध्वाः कं पदार्थं न स्वीकुर्वन्ति -UGC 73 Jn–2017

(A) गुणपदार्थम् (B) विशेषपदार्थम्
(C) अभावपदार्थम् (D) समवायपदार्थम्

स्रोत–संस्कृतपरम्परागतविषय - शत्रुघ्न त्रिपाठी, पेज– 83

521. 'सर्वमनेकान्तमिति प्रतिज्ञाव्याघातः द्वितीये विवक्षितार्थासिद्धिः'– अनेक कस्य मतस्य साधनं भवति– UGC 73 Jn–2017

(A) अनेकान्तवादस्य (B) सप्तभङ्गिनयस्य
(C) एकान्तवादस्य (D) आर्हतदर्शनस्य

स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-158

522. अधोलिखितेषु केन सह कस्य सम्बन्धः? उचितां तालिकां चिनुत– UGC 73 Jn–2017

(क) चार्वाकाः 1. प्रत्यक्षानुमानप्रमाणवादिनः
(ख) वैशेषिकाः 2. प्रत्यक्षप्रमाणवादिनः
(ग) सांख्याः 3. प्रत्यक्षानुमानोपमानशब्दप्रमाणवादिनः
(घ) नैय्यायिकाः 4. प्रत्यक्षानुमानशब्दप्रमाणवादिनः

	क	ख	ग	घ
(A)	2	3	1	4
(B)	1	3	2	4
(C)	2	1	4	3
(D)	1	4	3	2

स्रोत–भारतीय दर्शन- हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज-81,204,263

514. (C) 515. (B) 516. (B) 517. (A) 518. (A) 519. (B) 520. (D) 521. (A) 522. (C)

523. अधोलिखितेषु केन सह कस्य सम्बन्धः? उचितां तालिकां चिनुत– UGC 73 Jn–2017

(क) सत्कार्यवादः 1. न्यायवैशेषिकाणाम्

(ख) परमाणुवादः 2. बौद्धानाम्

(ग) विवर्तवादः 3. सांख्यानाम्

(घ) विज्ञानवादः 4. अद्वैतवेदान्तिनाम्

	क	ख	ग	घ
(A)	3	2	1	4
(B)	3	4	1	2
(C)	3	1	4	2
(D)	3	1	2	4

स्रोत–भारतीय दर्शन- चन्द्रधर शर्मा, पेज-142,174,238,90

524. न्यायदर्शनस्य मूलम् – CVVET–2017

(A)गौतमप्रणीतं न्यायसूत्रम् (B) न्यायकुसुमाञ्जलिः

(C) न्यायलीलावती (D) न्यायभाष्यम्

स्रोत- तर्कभाषाः – श्रीनिवास शास्त्री, पेज – भू018

525. वैशेषिकदर्शनस्य नामान्तरं किम्? CVVET–2017

(A) श्रमणदर्शनम् (B) शाङ्करदर्शनम्

(C) सौन्दर्यदर्शनम् (D) औलूक्यदर्शनम्

स्रोत- तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज – भू017

526. अधोलिखितेषु बौद्धदर्शनाभिमतमार्यसत्यं नास्ति- UGC 73 Jn–2017

(A) दुःखम् (B) स्वीकरणम्

(C) समुदयः (D) मार्गः

स्रोत– सर्वदर्शनसंग्रह - उमाशंकर शर्मा ऋषि, पेज–76

527. 'यथावस्थितगेयविषयीकारित्वं प्रमाणं' लक्षण है? UGC 73 J–2012

(A) प्रमाणचन्द्रिकायाम् (B) प्रमाणरक्षणे

(C) प्रमाणपद्धत्याम् (D) वेदान्तपरिभाषायाम्

स्रोत–

528. 'प्रमाणविषयनिरूपणार्थं ब्रह्मतर्कमुद्राहृतम्' यह उक्ति है? UGC 73 J–2012

(A) मायावादखण्डने (B) विष्णुतत्त्वविनिर्णये

(C) तत्त्वसंख्याने (D) उपाधिखण्डने

स्रोत– भारतीय दर्शन - जगदीशचन्द्र मिश्र, पेज–619

529. 'भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः' – यह उक्ति कहाँ प्राप्त होती है? BHU MET–2016

(A) गीता (B) ब्रह्मसूत्र

(C) जैमिनीय न्यायमाला (D) सर्वदर्शनसंग्रह

स्रोत– सर्वदर्शन संग्रह - उमाशंकर शर्मा ऋषि, पेज–03

530. प्रमाणसिद्धभिन्नत्व होता है– UGC 73 J–2016

(A) सत्यत्वम् (B) अज्ञानत्वम्

(C) विभुत्वम् (D) मिथ्यात्वम्

स्रोत–

531. शाङ्करदर्शन ने पाँच अर्थवादों मे से एक है? UGC 73 D–2015

(A) प्रवेश (B) तुल्य

(C) गमन (D) आरोहण

स्रोत– सर्वदर्शन संग्रह-उमाशंकर शर्मा ऋषि, पेज–658,659

523. (C) 524. (A) 525. (D) 526. (B) 527. (A) 528. (B) 529. (C) 530. (*) 531. (A)

08 दार्शनिक ग्रन्थ-ग्रन्थकार

1. (i) 'भामती' के रचयिता हैं - UGC 25 J–1994
(ii) भामतीकार हैं?
(iii) 'भामती' केन विरचिता -
UGC 73 D-2012, Jn - 2017, BHU AET–2012

(A) वाचस्पतिमिश्र (B) पद्मपाद
(C) सदानन्द (D) शङ्कर

स्रोत–वेदान्तसार – राकेश शास्त्री, भू. पृष्ठ- 30

2. सांख्यदर्शन से सम्बद्ध लेखक हैं?
BHU MET–2016

(A) प्रभाकर (B) शालिकनाथ
(C) वाचस्पति (D) मुरारि

स्रोत–सांख्यकारिका – राकेश शास्त्री, भू. पृष्ठ- 36

3. (i) वेदान्तसार के रचनाकार हैं - UP PGT–2004,
(ii) वेदान्तसारग्रन्थस्य कर्ता वर्तते? BHU MET–2014,
(iii) वेदान्तसार के प्रणेता कौन हैं? 2009
UGC 25 J–2003, 2014 D–2009

(A) शङ्कर (B) भास्कर
(C) सदानन्द (D) दयानन्द

स्रोत–वेदान्तसार – राकेश शास्त्री, भू. पृष्ठ- 39

4. (i) शङ्कराचार्य ने ब्रह्मसूत्र पर कौन सा भाष्य लिखा है?
(ii) शङ्कराचार्यप्रणीतं भाष्यमस्ति? UGC 73 J–1999,
UGC 25 S–2013, BHU AET–2011

(A) शारीरकसूत्रम् (B) मीमांसासूत्रम्
(C) धर्मसूत्रम् (D) सांख्यसूत्रम्

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ- 07

5. आचार्य शङ्कर किस ग्रन्थ के रचयिता हैं?
BHU MET–2008

(A) वाल्मीकिरामायणम् (B) महाभारतम्
(C) ब्रह्मसूत्रभाष्यम् (D) शिशुपालवधम्

स्रोत–वेदान्तसार – राकेश शास्त्री, भू. पृष्ठ- 27

6. आचार्य शङ्कर ने किस पर भाष्य लिखा है ?
BHU MET–2009, 2013, UGC 73 J–2013

(A) सांख्यकारिका (B) ब्रह्मसूत्र
(C) तर्कसंग्रह (D) महाभारत

स्रोत–भारतीयदर्शन - उमेश मिश्र, पेज–349

7. अद्वैतवेदान्त में वार्तिककार हैं -
UGC 73 J–2006, 2012

(A) सुरेश्वराचार्यः (B) पद्मपादाचार्यः
(C) प्रकाशात्मयतिः (D) मधुसूदन सरस्वती

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, भू. पृष्ठ- (xiii)

8. (i) शाङ्करभाष्य के पञ्चपादिका के कर्त्ता हैं -
(ii) पञ्चपादिकाकारः कः अस्ति?
UGC 73 J–2006, 2014

(A) पद्मपादः (B) विद्यारण्यः
(C) श्रीशङ्करः (D) सुरेश्वरः

संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-10)-बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ- 51

9. 'अद्वैतसिद्धि' के रचयिता हैं - UGC 73 J–2011

(A) प्रकाशात्मयति (B) मधुसूदन सरस्वती
(C) अप्पयदीक्षित (D) श्रीहर्ष

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, भू. पृष्ठ- (xvii)

10. 'रामानुजाचार्य' का ग्रन्थ है - UGC 73 D–2011

(A) आपदेवी (B) मीमांसाकुतूहलम्
(C) तन्त्ररहस्यम् (D) अध्वरमीमांसाकुतूहलवृत्तिः

स्रोत–अर्थसंग्रह – सत्यप्रकाश शर्मा, भू. पृष्ठ- 10

11. 'प्रस्थानत्रयी' के भाष्यकर्ता हैं - UGC 73 J–2012

(A) वल्लभाचार्यः (B) मण्डनमिश्रः
(C) मधुसूदनः (D) शङ्कराचार्यः

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, भू. पृष्ठ- (x)

1. (A) 2. (C) 3. (C) 4. (A) 5. (C) 6. (B) 7. (A) 8. (A) 9. (B) 10. (C) 11. (D)

12. 'मनीषापञ्चक' यह ग्रन्थ है- UGC 73 J–2013
(A) मण्डनाचार्यस्य (B) वाचस्पतिमिश्रस्य
(C) श्रीशङ्कराचार्यस्य (D) गोविन्दपादाचार्यस्य
स्रोत–वेदान्तसार – राकेश शास्त्री, भू. पृष्ठ- 27-28

13. गोविन्दानन्दविरचित व्याख्या है- UGC 73 D–2013
(A) रत्नप्रभा (B) भाष्यभावप्रकाशिका
(C) ब्रह्मविद्याभरणम् (D) न्यायनिर्णयः
संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-10)–बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ-33

14. 'प्रपञ्चसार' ग्रन्थ के रचयिता हैं- UGC 73 S–2013
(A) रामानुजाचार्यः (B) शङ्कराचार्यः
(C) सुरेश्वराचार्यः (D) भास्कराचार्यः
स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 820

15. 'उपदेशसाहस्त्री' के ग्रन्थकार हैं - UGC 73 J–2014
(A) मध्वाचार्य (B) रामानुजाचार्य
(C) गिरिधराचार्य (D) शङ्कराचार्य
स्रोत–वेदान्तसार – राकेश शास्त्री, भू. पृष्ठ- 27

16. 'विष्णुतत्त्वनिर्णय' के रचयिता/लेखक हैं - UGC 73 D–1997, BHU AET–2010
(A) जयतीर्थः (B) व्यासतीर्थः
(C) आनन्दतीर्थः(मध्वाचार्यः) (D) राजतीर्थः
स्रोत–भारतीय दर्शन – चन्द्रधर शर्मा, पृष्ठ- 319

17. 'अणुभाष्य' के कर्त्ता हैं - UGC 73 J–1998
(A) जयतीर्थः (B) राघवेन्द्रतीर्थः
(C) व्यासराजः (D) वल्लभाचार्यः
संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-10)–बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ-423

18. 'माध्व' के टीकाकार हैं - UGC 73 D–1999
(A) रामतीर्थः (B) जयतीर्थः
(C) व्यासराजः (D) पार्थसारथिः
स्रोत–भारतीय दर्शन – चन्द्रधर शर्मा, पृष्ठ- 319

19. 'माध्व' का ग्रन्थ है - UGC 73 D–1999
(A) तत्त्वोद्योत (B) तत्त्वप्रकाशिकाटीका
(C) तत्त्वचिन्तामणि (D) तत्त्वसंख्यानटीका
स्रोत–भारतीय दर्शन – चन्द्रधर शर्मा, पृष्ठ- 319

20. 'वेदान्तसूत्रग्रन्थस्य' भाष्यकारः आसीत् - BHU AET–2012
(A) वाचस्पतिमिश्रः (B) पतञ्जलिः
(C) शङ्कराचार्यः (D) कपिलः
स्रोत–सांख्यकारिका - राकेश शास्त्री, भू. पृष्ठ- 14

21. पतञ्जलिः कस्य दर्शनस्य प्रणेता– CVVET–2017
(A) योगस्य (B) वेदान्तस्य
(C) बौद्धस्य (D) वैशेषिकस्य
स्रोत–भारतीयदर्शन - चन्द्रधर शर्मा, भू0 पेज–158

22. सूची I का मिलान सूची II से कीजिए और दिये गये कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए- UP TGT (H)–2005

(क) शुद्धाद्वैतवाद 1. वल्लभाचार्य
(ख) अद्वैतवाद 2. शङ्कराचार्य
(ग) विशिष्टाद्वैतवाद 3. रामानुजाचार्य
(घ) द्वैतवाद 4. मध्वाचार्य

	क	ख	ग	घ
(A)	2	3	1	4
(B)	3	2	4	1
(C)	1	2	3	4
(D)	4	1	2	3

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, भू. पृष्ठ- VIII

23. वल्लभाचार्य ने ब्रह्मसूत्र पर कौन-सा भाष्य लिखा ? BHU AET–2011
(A) अणुभाष्य (B) परमाणुभाष्य
(C) श्रीभाष्य (D) सुबोधिनी
स्रोत–भारतीय दर्शन – चन्द्रधर शर्मा, पृष्ठ- 326

24. चैतन्य ने किस ग्रन्थ की रचना की ? BHU AET–2011
(A) सुबोधिनी (B) सुवर्णसूत्र
(C) प्रमेयरत्नार्णव (D) तीनों में से कोई नहीं
स्रोत–भारतीय दर्शन – चन्द्रधर शर्मा, पृष्ठ- 330

12. (C) 13. (A) 14. (B) 15. (D) 16. (C) 17. (D) 18. (B) 19. (A) 20. (C) 21. (A) 22. (C) 23. (A) 24. (D)

25. रामानुजाचार्य के श्रीभाष्य पर उनके किस शिष्य ने श्रुतप्रकाशिका टीका लिखी? BHU AET–2011

(A) सुदर्शनसूरि (B) वेङ्कटनाथ
(C) वाचस्पति मिश्र (D) वेदान्तरसिक

स्रोत–भारतीय दर्शन – चन्द्रधर शर्मा, पृष्ठ- 295

26. आचार्य माध्व की प्रमुख कृति कौन-सी है ? BHU AET–2011

(A) ब्रह्मसूत्रभाष्य (B) तत्त्वप्रकाशिका
(C) न्यायसुधा (D) न्यायामृत

स्रोत–भारतीय दर्शन – चन्द्रधर शर्मा, पृष्ठ- 319

27. (i) ब्रह्मसूत्र के लेखक कौन हैं? MP PSC–1997
(ii) ब्रह्मसूत्रस्य रचयिता कोऽस्ति? UGC 25 J–2016
(iii) ब्रह्मसूत्र को किसने बनाया है? BHU MET–2016

(A) शङ्कराचार्य (B) कपिल
(C) बादरायण (D) गौडपाद

स्रोत–वेदान्तसार – राकेश शास्त्री, भू. पृष्ठ- 11,12

28. 'सर्वदर्शनसंग्रह' के कर्ता हैं - UGC 73 J–2010

(A) हरिभद्रसूरिः (B) सायणाचार्यः
(C) माधवाचार्यः (D) शङ्कराचार्यः

संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-10)–बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ-355

29. उपनिषद् भगवद्गीता ब्रह्मसूत्रं चेत्येतेषां त्रयाणां केन शब्देन व्यवहारः - DSSSB PGT–2014, DSSSB TGT–2014

(A) दीपत्रयम् (B) मार्गत्रयम्
(C) प्रस्थानत्रयम् (D) रत्नत्रयम्

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, भू. पृष्ठ- (ix)

30. निम्नलिखित में से कौन-सा प्रस्थानत्रयी में सम्मिलित नहीं है - UP PCS–1997

(A) भागवत (B) भगवद्गीता
(C) ब्रह्मसूत्र (D) उपनिषद्

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, भू. पृष्ठ- (ix)

31. आनन्दतीर्थ द्वारा लिखित ग्रन्थ है- UGC 73 J–2015

(A) तत्त्वविवेकः (B) चौरपञ्चाशिका
(C) औचित्यविचारचर्चा (D) अर्थसंग्रहः

संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-10)–बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ-355

32. ब्रह्मसूत्र के भाष्यकार हैं - BHU AET–2010

(A) मध्वाचार्य (B) शङ्करमिश्र
(C) श्रीकण्ठ (D) वाचस्पतिमिश्र

स्रोत–वेदान्तसार – राकेश शास्त्री, भू. पृष्ठ- 12

33. पञ्चमिथ्यात्व का विचार है - UGC 73 J–2013

(A) वेदान्तपरिभाषा ग्रन्थ में
(B) सिद्धान्तबिन्दु ग्रन्थ में
(C) अद्वैतसिद्धि ग्रन्थ में
(D) शाङ्करभाष्य में

स्रोत–भारतीय दर्शन – चन्द्रधर शर्मा, पृष्ठ- 282

34. ''विवेकिनो विरक्तस्य शमादिगुणशालिनः।
मुमुक्षोरेव हि ब्रह्मजिज्ञासा योग्यता मता॥''
यह अधिकारी प्रशासक श्लोक है-UGC 73 D–2013

(A) आत्मबोधे (B) विवेकचूडामणौ
(C) शाङ्करभाष्ये (D) शतश्लोक्याम्

स्रोत–विवेकचूडामणि – गीताप्रेस, पृष्ठ- 10

35. यं ग्रन्थमधिकृत्य शङ्कराचार्येण भाष्यं न रचितम् - UGC 25 J–2013

(A) ब्रह्मसूत्रम् (B) श्रीमद्भागवतम्
(C) ईशावास्योपनिषद् (D) श्रीमद्भगवद्गीता

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, भू. पृष्ठ- xII

36. (i) जैमिनीयन्यायमाला ग्रन्थस्य कर्त्ता/प्रणेता/रचयिता कः? BHU MET–2009, 2013,
(ii) 'जैमनीयन्यायमाला' किसने लिखी है ? UGC 73 D–2015

(A) जैमिनि (B) माधव
(C) सायण (D) भर्तृहरि

स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह – उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ-815,739

37. 'अर्थसंग्रहकौमुदी' के रचयिता हैं-BHU MET–2014

(A) पट्टाभिरामशास्त्री (B) वाचस्पतिमिश्र
(C) पं० चिन्नस्वामी (D) रामेश्वर मिश्र

स्रोत–अर्थसंग्रह – वाचस्पति उपाध्याय, भू० पृष्ठ- 32

25. (A) 26. (A) 27. (C) 28. (C) 29. (C) 30. (A) 31. (A) 32. (A) 33. (C) 34. (B) 35. (B) 36. (B) 37. (D)

38. (i) मीमांसादर्शन के लेखक हैं -
(ii) 'मीमांसासूत्र' के कर्त्ता/प्रणेता हैं -
(iii) मीमांसासूत्र के रचयिता हैं?
UGC 73 J–2006, 2015, D-1992
(A) जैमिनिः (B) बादरायणः
(C) गौतमः (D) कपिलः
स्रोत–भारतीय दर्शन - बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ- 310

39. 'मीमांसासूत्र' के भाष्यकार हैं - UGC 73 J–2006
(A) शङ्कराचार्यः (B) वात्स्यायनः
(C) रामानन्दाचार्यः (D) शबरस्वामी
स्रोत–अर्थसंग्रह – सत्यप्रकाश शर्मा, भू. पृष्ठ- 5

40. 'टुप्टीका' व्याख्या है - UGC 73 J–2011
(A) जैमिनिसूत्रोपरि (B) शाबरभाष्योपरि
(C) तन्त्रवार्तिकोपरि (D) श्लोकवार्तिकोपरि
स्रोत–अर्थसंग्रह – सत्यप्रकाश शर्मा, भू. पृष्ठ- 7

41. 'शास्त्रदीपिका' के रचयिता हैं-UGC 73 J–2009, 2014
(A) पार्थसारथिमिश्रः (B) रामचन्द्रदीक्षितः
(C) मण्डनमिश्रः (D) माधवाचार्यः
स्रोत–वेदान्तसार – राकेश शास्त्री, भू. पृष्ठ- 16

42. 'द्वादशलक्षणी' यह प्रसिद्ध शास्त्र है -
UGC 73 J–2014
(A) पूर्वमीमांसा का (B) उत्तरमीमांसा का
(C) धर्मशास्त्रम् का (D) जैनदर्शनम् का
स्रोत–अर्थसंग्रह – राजेश्वरशास्त्री मुसलगाँवकर, पृष्ठ- 4

43. जैमिनिसूत्रवृत्तियों के रचयिता हैं-UGC 73 J–2014
(A) उपवर्षः (B) भर्तृमित्रः
(C) भट्टभास्करः (D) मुरारिमिश्रः
स्रोत–(i) वेदान्तसार – राकेश शास्त्री, भू. पृष्ठ- 16
(ii) सर्वदर्शनसंग्रह - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ-804,768

44. 'प्रकरणपञ्चिका' के रचयिता हैं -
UGC 73 D–1992, 2007
(A) भवनाथः (B) मथुरानाथः
(C) कुमारिलः (D) शालिकनाथः
स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ-781

45. 'किरणावली' के लेखक हैं - UGC 73 D–1996
(A) केशवमिश्र (B) कृष्णवल्लभाचार्य
(C) विश्वनाथ पञ्चानन (D) अन्नम्भट्ट
संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-10)–बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ-271

46. 'ऋजुविमला' के रचयिता हैं - UGC 73 D–1997
(A) शालिकनाथ (B) जगदीश
(C) जयतीर्थ (D) रघुनाथ
स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ-765

47. 'बृहती' के रचनाकार हैं - UGC 73 J–1998
(A) कुमारिल (B) शालिकनाथ
(C) वाचस्पति (D) प्रभाकर
स्रोत– (i) सर्वदर्शनसंग्रह - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ-783
(ii) अर्थसंग्रह-सत्यप्रकाश, शर्मा,भू0 पेज-9

48. (i) 'टुप्टीका' के रचयिता हैं-
(ii) टुप्टीका ग्रन्थ के लेखक हैं -
UGC 73 J–1999, D–2015
(A) प्रभाकर (B) रामानुज
(C) वाचस्पति (D) कुमारिल
स्रोत–भारतीय दर्शन - बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ- 311

49. 'जैमिनिसूत्र' के भाष्यकार हैं - UGC 73 D–1999
(A) उव्वटः (B) शबरः
(C) जैमिनिः (D) कुमारिलः
स्रोत–भारतीय दर्शन - बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ- 311

50. (i) मीमांसान्यायप्रकाशस्य रचयिता कः ?
(ii) केन प्रणीतः मीमांसान्यायप्रकाशः?
BHU AET–2011, 2012
(A) कृष्णयज्वा (B) लौगाक्षिभास्करः
(C) कुमारिलभट्टः (D) आपदेवः
स्रोत–अर्थसंग्रह – सत्यप्रकाश शर्मा, भू. पृष्ठ- 9

51. 'द्वादशलक्षणी' कस्य ग्रन्थस्य नाम - BHU AET–2011
(A) प्रातिशाख्यस्य (B) योगदर्शनस्य
(C) बौद्धदर्शनस्य (D) जैमिनिदर्शनस्य
स्रोत–भारतीय दर्शन – उमेश मिश्र, पृष्ठ- 241

38. (A) 39. (D) 40. (B) 41. (A) 42. (A) 43. (A) 44. (D) 45. (B) 46. (A) 47. (D)
48. (D) 49. (B) 50. (D) 51. (D)

52. शङ्करकृत 'ब्रह्मसूत्र' का भाष्य है? UGC 73 J– 1999
(A) अणुभाष्य (B) शारीरकभाष्य
(C) पूर्णप्रज्ञभाष्य (D) विज्ञानामृतभाष्य
स्रोत–ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यम् - सत्यानन्द सरस्वती, भू0 पेज-12

53. 'विवरण-प्रस्थान' के संस्थापक हैं? UGC 73 D–2006
(A) अप्पयदीक्षित (B) प्रकाशात्मयति
(C) वाचस्पतिमिश्र (D) विद्यारण्य
स्रोत–संस्कृत-परम्परागत विषय - शत्रुघ्न त्रिपाठी, पृष्ठ- 112

54. 'विधिविवेक' के रचयिता कौन हैं? UGC 73 D– 2015
(A) शालिकनाथ मिश्र (B) वाचस्पति मिश्र
(C) प्रभाकर (D) मण्डन मिश्र
स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह – उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 792

55. शास्त्रदीपिकाकारः - BHU AET–2012
(A) कुमारिलभट्टः (B) शबरस्वामी
(C) पार्थसारथिमिश्रः (D) प्रभाकरमिश्रः
स्रोत–वेदान्तसार – राकेश शास्त्री, भू. पृष्ठ- 16

56. 'प्रत्यभिज्ञाहृदय' कृति है - UGC 73 J–1991
(A) क्षेमराज (B) अभिनवगुप्त
(C) माहेश्वर (D) सोमानन्द
स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह – उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 782

57. 'श्लोकवार्तिक' के रचयिता हैं-UGC 73 D–1994, 2006
(A) कुमारिलभट्ट (B) प्रभाकर
(C) जयतीर्थ (D) अभिनवगुप्त
स्रोत–भारतीय दर्शन – उमेश मिश्र, पृष्ठ- 242

58. शबरस्वामी का भाष्य जिस पर उपलब्ध होता है, वह है - BHU MET–2015
(A) चार्वाकदर्शन (B) पूर्वमीमांसादर्शन
(C) बौद्धदर्शन (D) जैनदर्शन
स्रोत–अर्थसंग्रह – सत्यप्रकाश शर्मा, भू. पृष्ठ- 5

59. शाबरभाष्य किस दर्शन से सम्बन्धित है ? UGC 73 J–2015
(A) वेदान्त (B) चार्वाक
(C) मीमांसा (D) सांख्य
स्रोत–भारतीय दर्शन – जगदीशचन्द्र मिश्र, पृष्ठ- 488

60. 'अर्थालोक' टीका से सम्बन्धित है-BHU MET–2015
(A) तर्कसंग्रह (B) तर्कभाषा
(C) सर्वदर्शनसंग्रह (D) अर्थसंग्रह
स्रोत–अर्थसंग्रह – कामेश्वरनाथ मिश्र, भू0 पृष्ठ- 14

61. रघुनाथ शिरोमणि ने किस ग्रन्थ की रचना की? UGC 73 D– 2015
(A) दीधिति (B) न्यायभूषण
(C) न्यायलीलावती (D) न्यायकन्दली
स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह – उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 815

62. (i) 'सांख्यकारिका' के रचयिता/लेखक कौन हैं ?
(ii) सांख्यकारिकायाः कर्ता वर्तते?
UP PGT–2000, BHU AET–2010, 2011
UGC 25 D–1997, J–2014, UGC 73 D–1996
(A) कपिल (B) वाचस्पति मिश्र
(C) गौडपाद (D) ईश्वरकृष्ण
स्रोत–भारतीय दर्शन – उमेश मिश्र, पृष्ठ- 276

63. (i) 'ईश्वरकृष्ण' किस ग्रन्थ के लेखक हैं?
(ii) ईश्वरकृष्णस्य का कृतिः वर्तते?
BHU MET–2008, UGC 73 J–2008
(A) वेदान्तसार के (B) तर्कसंग्रह के
(C) सांख्यकारिका के (D) तर्कभाषा के
स्रोत–भारतीय दर्शन – उमेश मिश्र, पृष्ठ- 276

64. (i) 'सांख्यतत्त्वकौमुदी' केन-विरचिता?
(ii) 'सांख्यतत्त्वकौमुदी' के प्रणेता/रचयिता कौन हैं?
BHU MET–2011, 2012, BHU AET–2010, UGC 73 D–1996, 1997
(A) वाचस्पतिमिश्र (B) केशवमिश्र
(C) आद्याप्रसादमिश्र (D) कपिल
स्रोत–भारतीय दर्शन – उमेश मिश्र, पृष्ठ- 278

65. 'सांख्यकारिका' के प्राचीनतम टीकाकार हैं - UGC 73 S–2013
(A) गौडपादः (B) ईश्वरकृष्णः
(C) विद्यारण्यमुनिः (D) परमानन्दमुनिः
स्रोत–भारतीय दर्शन – उमेश मिश्र, पृष्ठ- 277

52. (B) 53. (B) 54. (D) 55. (C) 56. (B) 57. (A) 58. (B) 59. (C) 60. (D) 61. (A) 62. (D) 63. (C) 64. (A) 65. (A)

66. (i) 'वैशारदीव्याख्या' के रचयिता हैं- UGC 73 D–2013
(ii) तत्त्ववैशारदीटीकायाः रचयिता कः? BHU AET–2010
(A) वाचस्पतिमिश्रः (B) ईश्वरकृष्णः
(C) जगदीशभट्टाचार्यः (D) व्यासः
स्रोत–भारतीय दर्शन – बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ- 291

67. 'योगसूत्राणां' रचयिता कः ? BHU AET–2010
(A) व्यासः (B) पतञ्जलिः
(C) कात्यायनः (D) पाणिनिः
स्रोत–भारतीय दर्शन – उमेश मिश्र, पृष्ठ- 318

68. 'योगवार्तिकस्य' रचयिता कः ? BHU AET–2010
(A) पतञ्जलिः (B) व्यासः
(C) वात्स्यायनः (D) विज्ञानभिक्षुः
स्रोत–वेदान्तसार - राकेश शास्त्री, भू0 पेज - 6

69. पूर्णप्रज्ञदर्शनस्य प्रवर्त्तकस्य किं नामधेयम् - UGC 73 Jn–2017
(A) आनन्दतीर्थः (B) अक्षपादः
(C) कणभक्षाक्षिचरणः (D) उत्पलाचार्यः
स्रोत–भारतीय दर्शन – उमेश मिश्र, पृष्ठ- 426

70. 'योगसूत्रभाष्यस्य' रचयिता कः ? BHU AET–2010
(A) पतञ्जलिः (B) व्यासः
(C) वात्स्यायनः (D) वाचस्पतिमिश्रः
स्रोत–भारतीय दर्शन – उमेश मिश्र, पृष्ठ- 318

71. 'योगदर्शन' के प्रतिपादक कौन हैं ? UP PCS–2002, 2007
(A) पतञ्जलि (B) योगी गोरखनाथ
(C) स्वामीरामदेव (D) शङ्कराचार्य
स्रोत–भारतीय दर्शन – उमेश मिश्र, पृष्ठ- 318

72. 'न्यायदर्शन' के प्रणेता/प्रवर्तक हैं - UP PGT–2002, RPCS–2008, BHU AET- 2011
(A) कपिल (B) गौतम
(C) शङ्कर (D) पतञ्जलि
स्रोत–भारतीय दर्शन – उमेश मिश्र, पृष्ठ- 179

73. (i) 'न्यायसूत्र' के रचयिता/लेखक हैं -
(ii) न्यायसूत्र को किसने बनाया? BHU MET–2008, 2009, 2012, 2013, UGC 25 D–1996
(A) कपिल (B) गौतम
(C) कणाद (D) जैमिनि
स्रोत–भारतीय दर्शन – उमेश मिश्र, पृष्ठ- 179

74. 'वीतरागस्तुतिः' इति दर्शनग्रन्थः केन लिखितः? UGC 73 Jn–2017
(A) प्रभाचन्द्रेण (B) हेमचन्द्रेण
(C) जयन्तभट्टेन (D) अनन्तचन्द्रेण
स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह – उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 824

75. (i) 'न्यायबोधिनी' टीका के लेखक हैं -
(ii) 'न्यायबोधिनीकारः कः - BHU MET–2014, BHU AET–2011
(A) आचार्य शङ्कर (B) वाचस्पतिमिश्र
(C) रामानुजाचार्य (D) गोवर्धनमिश्र
स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह – उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 776

76. (i) 'न्यायमञ्जरी' रचित है -
(ii) न्यायमञ्जरीकारः कः - UGC 73 D–2005, BHU AET–2011
(A) उदयनेन (B) शिवादित्येन
(C) गङ्गेशेन (D) जयन्तभट्टेन
स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह – उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 776

77. 'नव्यन्याय' का ग्रन्थ है - UGC 73 D–2005
(A) व्युत्पत्तिवाद (B) न्यायभाष्यम्
(C) न्यायवार्तिकम् (D) न्यायसारः
संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-9)–बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ-144

78. 'नव्यन्याय' का आकर ग्रन्थ है - UGC 73 J–2011
(A) तर्कसंग्रह (B) तत्त्वचिन्तामणि
(C) तर्ककौमुदी (D) तर्कताण्डवम्
स्रोत–भारतीय दर्शन – उमेश मिश्र, पृष्ठ- 181

79. 'जयन्तभट्ट' कृत ग्रन्थ है - UGC 73 D–2011
(A) तत्त्वचिन्तामणिः (B) पदार्थधर्मसंग्रहः
(C) न्यायमञ्जरी (D) न्यायवार्तिकम्
स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह – उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 807

66. (A) 67. (B) 68. (D) 69. (A) 70. (B) 71. (A) 72. (B) 73. (B) 74. (B) 75. (D) 76. (D) 77. (A) 78. (B) 79. (C)

80. 'न्यायरत्नमाला' के रचयिता हैं -
UGC 73 J–2013, Jn - 2017
(A) वाचस्पतिमिश्रः (B) पार्थसारथिमिश्रः
(C) मुरारिमिश्रः (D) भवनाथमिश्रः
स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह – उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 811

81. पार्थसारथिमिश्र की व्याख्याकृति है–UGC 73 D– 2015
(A) तन्त्रवार्तिक (B) न्यायपरायण
(C) न्यायरत्नमाला (D) लघुन्यायसुधा
स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह – उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 811

82. प्रत्यक्षतत्त्वचिन्तामणिकार हैं - UGC 73 J–2013
(A) वर्द्धमानोपाध्यायः (B) गङ्गेशोपाध्याय
(C) यज्ञपत्युपाध्यायः (D) पशुपतिनाथोपाध्याय
स्रोत–संस्कृत परम्परागत विषय - शत्रुघ्न त्रिपाठी, पृष्ठ- 64

83. परीक्षित्तुरामवर्मणः न्यायशास्त्रग्रन्थः कः? KL SET–2016
(A) न्यायरत्नमाला (B) व्युत्पत्तिवादसिद्धान्तमाला
(C) सुबोधिनी (D) हेत्वाभासोदाहरणकाव्यम्
स्रोत–

84. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत–
RPSC SET–2010
(क) सांख्यकारिका 1. अन्नम्भट्टः
(ख) वेदान्तसारः 2. केशवमिश्रः
(ग) तर्कभाषा 3. सदानन्दः
(घ) तर्कसंग्रहः 4. ईश्वरकृष्णः

	क	ख	ग	घ
(A)	3	2	1	4
(B)	1	2	4	3
(C)	1	3	4	2
(D)	4	3	2	1

सर्वदर्शनसंग्रह – उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 794,797,772,773

85. 'न्यायसिद्धान्तमुक्तावली' के रचयिता हैं -
UGC 25 D–2013, UK SLET–2012, BHU AET–2011
(A) उदयनाचार्यः (B) विश्वनाथपञ्चाननभट्टाचार्यः
(C) दिनकरभट्टः (D) गदाधरभट्टाचार्यः
स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, भू. पृष्ठ- 28

86. 'न्यायविवरण' के रचयिता का नाम है-
UGC 73 S–2013
(A) मध्वाचार्यः (B) जयन्तभट्टः
(C) उदयनाचार्यः (D) रघुनाथशिरोमणिः
संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-10)–बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ-355

87. (i) 'न्यायसूत्रभाष्य' के रचयिता हैं -
(ii) न्यायदर्शनभाष्यस्य रचनाकारः कः?
UGC 73 J–2014, BHU AET–2011
(A) पार्थसारथिमिश्रः (B) प्रशस्तपादः
(C) मण्डनमिश्रः (D) वात्स्यायनः
स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, भू. पृष्ठ- 20

88. 'तत्त्वचिन्तामणि' के कर्त्ता/रचयिता हैं -
UGC 73 D–1994, 2006, 2009
(A) रघुनाथः (B) मथुरानाथः
(C) उदयनः (D) गङ्गेशः
स्रोत–भारतीय दर्शन – उमेश मिश्र, पृष्ठ- 181

89. 'तत्त्वचिन्तामणि' के टीकाकार हैं- UGC 73 J–2007
(A) शालिकनाथः (B) वाचस्पतिः
(C) मथुरानाथः (D) शङ्कराचार्यः
स्रोत–संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-9) पेज-139, 140

90. 'न्यायसिद्धान्तदीप' के रचयिता हैं -UGC 73 J–1991
(A) शशधर (B) विद्याधर
(C) गदाधर (D) मथुरानाथ
स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, भू. पृष्ठ- 26

91. 'न्यायामृत' के रचयिता/रचनाकार हैं -
UGC 73 J–1991, D–1992, 1997
(A) जयतीर्थ (B) व्यासतीर्थ
(C) वादिराज (D) भावबोधाचार्य
स्रोत–भारतीय दर्शन - बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ- 402

92. 'तत्त्वप्रकाशिका' कृति है - UGC 73 D–1992
(A) जयतीर्थ की (B) व्यासतीर्थ की
(C) शालिकनाथ की (D) माध्व की
स्रोत–भारतीय दर्शन - बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ- 402

80. (B) 81. (C) 82. (B) 83. (B) 84. (D) 85. (B) 86. (A) 87. (D) 88. (D) 89. (C) 90. (A) 91. (B) 92. (A)

93. 'बच्चा झा' द्वारा लिखित है - UGC 73 D–1997
(A) न्यायामृतम् (B) न्यायभाष्यः
(C) न्यायरत्नमाला भाष्य (D) गूढार्थतत्त्वालोकः
स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह – उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 767

94. 'तर्कामृत' के रचयिता हैं - UGC 73 J–1998
(A) गणेश (B) यज्ञपति
(C) रघुनाथ (D) जगदीश
स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह – उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 773

95. मथुरानाथकृत चिन्तामणि टीका का नाम है - UGC 73 J–1998, 1999
(A) दीधिति (B) शिखामणिः
(C) रहस्यम् (D) प्रकाशः
स्रोत–तर्कसंग्रह – शिवशंकर गुप्त, भू. पृष्ठ- 7

96. 'तर्कताण्डव' के कर्त्ता हैं - UGC 73 J–1998, 1999
(A) जयतीर्थ (B) राघवेन्द्रतीर्थ
(C) व्यासतीर्थ (D) वादिराज
स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह – उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 772

97. व्युत्पत्तिवाद के कर्त्ता हैं - UGC 73 D–1999
(A) जगदीश (B) मथुरानाथ
(C) गदाधर (D) जयदेव
संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-9), पृष्ठ-143,144

98. वात्स्यायनेन न्यायशास्त्रीयः को ग्रन्थो विरचितः BHU AET–2012
(A) न्यायसूत्रम् (B) न्यायभाष्यम्
(C) न्यायवार्तिकम् (D) न्यायवार्तिकतात्पर्यटीका
स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, भू. पृष्ठ- 20

99. केशवमिश्रविरचितः न्यायशास्त्रीयः प्रकरणग्रन्थः कः? BHU AET–2012
(A) तर्कभाषा (B) तर्ककौमुदी
(C) तर्कसंग्रहः (D) तर्कामृतम्
स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, भू. पृष्ठ- 28

100. 'न्यायकुसुमाञ्जलिः' केन संग्रथितः? BHU AET–2012
(A) वाचस्पतिमिश्रेण (B) उदयनाचार्येण
(C) उद्योतकरेण (D) भासर्वज्ञेन
स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, भू. पृष्ठ- 23

101. उदयनाचार्यरचितायाः तात्पर्यटीकाव्याख्यायाः किं नामधेयम् ? BHU AET–2012
(A) तात्पर्यपरिशुद्धिः (B) किरणावली
(C) न्यायकुसुमाञ्जलिः (D) उपस्कारः
स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, भू. पृष्ठ- 23

102. गङ्गेशोपाध्यायरचितस्य न्यायशास्त्रीयग्रन्थस्य किं नाम? BHU AET–2012
(A) आत्मतत्त्वविवेकः (B) तत्त्वचिन्तामणिः
(C) मानमेयोदयः (D) श्लोकवार्तिकम्
स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह – उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 769

103. 'न्यायवार्तिक'-ग्रन्थकारः कः ? BHU AET–2012
(A) वाचस्पतिमिश्रः (B) उदयनाचार्यः
(C) उद्योतकरः (D) गौतमः
स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, भू. पृष्ठ- 22

104. कारिकावल्याः मुक्तावली टीका केन रचिता? BHUAET–2010
(A) रघुनाथेन (B) वैद्यनाथेन
(C) भवनाथेन (D) विश्वनाथेन
स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, भू. पृष्ठ- 28

105. वाचस्पतिमिश्रेण कृतायाः न्यायवार्तिकटीकायाः किं नाम? BHU AET–2010
(A) न्यायकुसुमाञ्जलिः (B) तत्त्ववैशारदी
(C) तात्पर्यटीका (D) भामती
स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, भू. पृष्ठ- 22

106. न्यायसूत्रस्य साक्षाद् व्याख्यानं किम् ? BHU AET–2010
(A) न्यायभाष्यम् (B) तात्पर्यटीका
(C) न्यायवार्तिकम् (D) न्यायपरिशुद्धिः
स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, भू. पृष्ठ- 20

107. आत्मबोधस्तोत्रकर्ता कः - UGC 73 D–2014
(A) जयन्तभट्टः (B) जगन्नाथपण्डितः
(C) रामानुजाचार्यः (D) शङ्कराचार्यः
स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह – उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 763

93. (D) 94. (D) 95. (C) 96. (C) 97. (C) 98. (B) 99. (A) 100. (B) 101. (A) 102. (B) 103. (C) 104. (D) 105. (C) 106. (A) 107. (D)

108. 'न्यायदर्शन' को प्रचारित किया था-UP PCS–2005
(A) चार्वाक ने (B) गौतम ने
(C) कपिल ने (D) जैमिनि ने
स्रोत–भारतीय दर्शन – चन्द्रधर शर्मा, पृष्ठ- 174

109. 'न्यायमुक्तावल्याः' रचयिता अस्ति-UGC 73 J–2014
(A) जयन्तभट्टः (B) उदयनाचार्यः
(C) वाचस्पतिमिश्रः (D) विश्वनाथः
स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, भू. पृष्ठ- 28

110. दीधितिकार हैं - UGC 73 J–1999, 2012 S–2013
(A) रघुनाथशिरोमणिः (B) मथुरानाथः
(C) जगदीशभट्टाचार्यः (D) गङ्गेशोपाध्यायः
स्रोत–संस्कृत परम्परागत विषय - शत्रुघ्न त्रिपाठी, पृष्ठ- 64

111. 'तत्त्वसंग्रह' के रचयिता हैं - BHU AET–2011
(A) शान्तिदेव (B) आर्यदेव
(C) शान्तरक्षित (D) कमलशील
स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह – उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 771

112. 'न्यायलीलावती' के लेखक कौन हैं ? BHU AET–2010
(A) शङ्कराचार्य (B) उदयनाचार्य
(C) वल्लभाचार्य (D) महावीर
स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह – उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 777

113. न्यायसूत्रवृत्ति के रचयिता हैं - BHU MET–2015
(A) विश्वनाथ (B) गौतम
(C) कणाद (D) भर्तृमित्र
स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह – उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 778

114. न्यायसुधा के रचयिता हैं - BHU MET–2015
(A) कपिल (B) ईश्वरकृष्ण
(C) सदानन्द योगी (D) सोमेश्वरभट्ट
स्रोत–(i) अर्थसंग्रह – सत्यप्रकाश शर्मा, पृष्ठ- 08
(ii) सर्वदर्शनसंग्रह - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज–778

115. नव्यन्याय के टीकाकार हैं - UGC 73 D–2010
(A) शङ्कराचार्यः (B) शालिकनाथः
(C) मथुरानाथः (D) विज्ञानभिक्षुः
स्रोत–भारतीय दर्शन - बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ- 175

116. 'शक्तिवाद' के प्रणेता हैं - UGC 73 D–1997
(A) वाचस्पति (B) बच्चा झा
(C) गदाधर (D) अनन्त
स्रोत–भारतीय दर्शन – जगदीशचन्द्र मिश्र, पृष्ठ- 382

117. 'आरम्भवाद' का समर्थन करते हैं-UGC 73 J–1999
(A) रामानुजीय (B) माध्व
(C) अद्वैत (D) नैयायिक
स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पृष्ठ- 25

118. महर्षिकणाद-विरचितं सूत्रं किम् ? BHU AET–2012
(A) न्यायसूत्रम् (B) सांख्यसूत्रम्
(C) योगसूत्रम् (D) वैशेषिकसूत्रम्
स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, भू. पृष्ठ- 18

119. प्रशस्तपादरचितस्य वैशेषिकग्रन्थस्य किरणावली टीका केन कृता ? BHU AET–2012
(A) वाचस्पतिमिश्रेण (B) शङ्करमिश्रेण
(C) उदयनाचार्येण (D) शिवादित्यमिश्रेण
स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, भू. पृष्ठ- 23

120. सप्तपदार्थीग्रन्थस्य रचयिता कः ? BHU AET–2012
(A) शिवादित्यमिश्रः (B) रघुनाथशिरोमणिः
(C) गदाधरभट्टाचार्यः (D) जगदीशतर्कालङ्कारः
स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह – उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 797

121. वैशेषिकसूत्रस्य 'उपस्कार' टीका केन संग्रथिता ? BHU AET–2011, 2012
(A) शङ्करमिश्रेण (B) अन्नम्भट्टेन
(C) पद्मनाभमिश्रेण (D) केशवमिश्रेण
स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह – उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 765

122. प्रशस्तपादेन को ग्रन्थो विरचितः ? BHU AET–2010
(A) पदार्थधर्मसंग्रहः (B) कणादरहस्यम्
(C) न्यायकन्दली (D) न्यायमञ्जरी
स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह – उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 779

108. (B) 109. (D) 110. (A) 111. (C) 112. (C) 113. (A) 114. (D) 115. (C) 116. (C) 117. (D) 118. (D) 119. (C) 120. (A) 121. (A) 122. (A)

123. वैशेषिकदर्शनस्य भाष्यं केन विरचितम् ? **BHU AET–2010**

(A) प्रशस्तपादः (B) वात्स्यायनः
(C) पतञ्जलिः (D) कणादः

स्रोत–तर्कसंग्रह – शिवशंकर गुप्त, भू. पृष्ठ- 8

124. 'पदार्थधर्मसंग्रह' जिसका भाष्य है, वह है - **BHU MET–2015**

(A) सांख्यसूत्र (B) वैशेषिकसूत्र
(C) मीमांसासूत्र (D) वेदान्तसूत्र

स्रोत–तर्कसंग्रह – शिवशंकर गुप्त, भू. पृष्ठ- 8

125. 'शारदातिलक' ग्रन्थ है - **UGC 73 S–2013**

(A) दर्शनस्य (B) चार्वाकस्य
(C) बौद्धस्य (D) आगमस्य

स्रोत–आगमरहस्य (खण्ड-1)–सुधाकर मालवीय, भू. पृष्ठ- 24

126. 'प्रमाणवार्तिक' के लेखक हैं - **UGC 73 J–1991**

(A) धर्मकीर्ति (B) दिङ्नाग
(C) उमास्वामी (D) जयतीर्थ

स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह – उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 782

127. 'नागार्जुन' की रचना है - **BHU AET–2011**

(A) मध्यमार्थसंग्रह (B) माध्यमकावतार
(C) विग्रहव्यावर्तनी (D) इष्टोपदेश

स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह – उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 809

128. नागार्जुन की रचनायें हैं - **BHU AET–2011**

(A) शून्यता सप्ततिवृत्ति, सुहृदल्लेख
(B) चतुःशतक, चतुशतकवृत्ति
(C) अभिधर्मामृत, अभिधर्मकोश
(D) बुद्धानुस्मृतिशास्त्र, निर्वाणशतक

स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह – उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 800

129. 'क्षणभङ्गसिद्धि' के रचयिता हैं - BHU AET–2011

(A) धर्मकीर्ति (B) शुभगुप्त
(C) रत्नकीर्ति (D) ज्ञानश्रीमित्र

स्रोत–संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-12), पेज–380, 384

130. 'तर्कशास्त्र' के प्रणेता हैं - **MP PSC–1992**

(A) शङ्कराचार्य (B) नागसेन
(C) नागार्जुन (D) दिङ्नाग

स्रोत–संस्कृतवाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-12), पेज–379

131. 'स्याद्वादमञ्जरी' ग्रन्थ है - **UGC 73 J–2013**

(A) जैनसिद्धान्तस्य (B) मीमांसासिद्धान्तस्य
(C) वैशेषिकसिद्धान्तस्य (D) सौगतसिद्धान्तस्य

स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह – उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 801

132. मल्लिशेषेण के द्वारा विरचित सुप्रसिद्ध ग्रन्थ है - **UGC 73 D–2013**

(A) स्याद्वादमञ्जरी (B) गोमदृसारः
(C) त्रिलोकसारः (D) त्रिषष्टिशलाका पुरुषचरितम्

स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह – उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 801

133. 'स्याद्वाद' का प्रतिपादक दर्शन है-UGC 73 J–1991

(A) बौद्ध (B) जैन
(C) न्याय (D) चार्वाक

स्रोत–भारतीय दर्शन – चन्द्रधर शर्मा, पृष्ठ- 32

134. समीचीनां तालिकां चिनुत - **UGC 25 D–2008**

(अ) विश्वनाथः **1. अर्थसंग्रहः**
(ब) अन्नम्भट्टः **2. सांख्यकारिका**
(स) ईश्वरकृष्णः **3. तर्कसंग्रहः**
(द) लौगाक्षिभास्करः **4. कारिकावली**

	अ	ब	स	द
(A)	4	3	2	1
(B)	1	2	3	4
(C)	4	3	1	2
(D)	3	4	2	1

स्रोत–(i) भारतीय दर्शन-बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ- 222,253,313
(ii) तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, भू0 पेज-28

135. 'सिद्धान्तलेशसंग्रह' के रचयिता हैं- **UGC 73 D–2008 J–2013**

(A) मधुसूदनसरस्वती (B) प्रकाशात्मयतिः
(C) अप्पयदीक्षितः (D) श्रीहर्षः

स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह – उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 799

123. (A) 124. (B) 125. (D) 126. (A) 127. (B) 128. (A) 129. (B) 130. (D) 131. (A) 132. (A) 133. (B) 134. (A) 135. (C)

136. 'हरिभद्रसूरि' कृत दर्शनग्रन्थ है - UGC 73 D–2010
(A) षड्दर्शनसमुच्चयः (B) सर्वदर्शनसंग्रहः
(C) मानमेयोदयः (D) दर्शनमाला
स्रोत–संस्कृत परम्परागत विषय - शत्रुघ्न त्रिपाठी, पृष्ठ- 90

137. 'गीतार्थसंग्रह' के रचयिता का नाम है- UGC 73 D–2011
(A) यामुनाचार्यः (B) पद्मनाभतीर्थः
(C) जयतीर्थमुनिः (D) राघवेन्द्रयतिः
स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह – उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 767

138. व्यासराज विरचित प्रपञ्चमिथ्यात्वानुमानखण्डन की टिप्पणी का नाम है - UGC 73 J–2012
(A) पदार्थमञ्जरी (B) मन्दारमञ्जरी
(C) टीका (D) वाक्यार्थदीपिका
स्रोत–भारतीय दर्शन – जगदीशचन्द्र मिश्र, पृष्ठ- 639, 640

139. 'युक्तिमल्लिका' के रचयिता हैं - UGC 73 J–2014
(A) वादीन्द्रनाथः (B) सत्यनाथतीर्थः
(C) वेदशतीर्थः (D) वादिराजतीर्थः
स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह – उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 789

140. 'जन्मस्वत्ववाद' का प्रतिपादन किसने किया ? UGC 73 J–2009
(A) विज्ञानेश्वरेण (B) नन्दपण्डितेन
(C) जीमूतवाहनेन (D) कमलाकरेण
स्रोत–

141. 'पुराणन्यायमीमांसाधर्मशास्त्राङ्गमिश्रिताः' के रचयिता हैं - UGC 73 D–1994
(A) जैमिनि (B) भारद्वाज
(C) याज्ञवल्क्य (D) पराशर
स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति (1/3) – उमेशचन्द्र पाण्डेय, पृष्ठ- 3

142. (i) 'गीता रहस्य' पुस्तक के लेखक का नाम है?
(ii) 'श्रीमद्भगवद्गीता रहस्य' के लेखक हैं - UK LWR–2011, UP TGT SS–2010
(A) अरविन्द घोष (B) बालगङ्गाधर तिलक
(C) गोपालकृष्णगोखले (D) मोहनदास करमचन्द गाँधी
स्रोत–भारतीय दर्शन की रूपरेखा–हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पृष्ठ- 66

143. 'दशप्रकरणग्रन्थो' अस्ति - UGC 73 D–2014
(A) आनन्दतीर्थस्य (B) व्यासाचार्यस्य
(C) जयतीर्थस्य (D) सुधीन्द्राचार्यस्य
संस्कृत वाड्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-10)–बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ-379

144. सत्यार्थप्रकाशस्य प्रणेता कः ? BHU AET–2011
(A) सायणः (B) महीधरः
(C) दयानन्दः (D) सत्यव्रतसामञ्जरी
स्रोत–सत्यार्थप्रकाश – दयानन्द सरस्वती, पृष्ठ-3

145. 'तत्त्वार्थसूत्र' किस भाषा में रचित है -BHU AET–2011
(A) हिन्दी (B) संस्कृत
(C) प्राकृत (D) अपभ्रंश
स्रोत–भारतीय दर्शन - श्रीकान्त पाण्डेय, पेज–83

146. 'सर्वार्थसिद्धि' किस ग्रन्थ की टीका है - BHU AET–2011
(A) तत्त्वार्थसूत्र (B) सन्मतिसूत्र
(C) परीक्षामुख (D) समयसार
स्रोत–जैनदर्शनसार - नरेन्द्र कुमार शर्मा, भू0 पेज–viii

147. नियमसार के लेखक हैं - BHU AET–2011
(A) कुन्दकुन्द (B) अमृतचन्द्र
(C) समन्तमन्द्र (D) पूज्यपाद
स्रोत–जैनदर्शनसार - नरेन्द्र कुमार शर्मा, भू0 पेज–viii

148. श्रीभाष्य के लेखक कौन हैं - BHU AET–2010
(A) निम्बार्काचार्य (B) मध्वाचार्य
(C) रुद्राचार्य (D) रामानुजाचार्य
स्रोत–भारतीय दर्शन – चन्द्रधर शर्मा, पृष्ठ- 295

149. निम्बार्काचार्य की कृति का क्या नाम है - BHU AET–2011
(A) वेदान्तसार (B) वेदान्तपारिजातसौरभ
(C) कौस्तुभप्रभा (D) वेदान्तकौस्तुभ
स्रोत–भारतीय दर्शन – उमेश मिश्र, पृष्ठ- 420

150. 'माण्डूक्यकारिका' किसकी रचना है–UP PGT–2011
(A) धर्मकीर्ति (B) गौडपाद
(C) प्रशस्तपाद (D) कुमारदास
स्रोत–वेदान्तसार – राकेश शास्त्री, भू0 पृष्ठ- 24

136. (A) 137. (A) 138. (B) 139. (D) 140. (A) 141. (C) 142. (B) 143. (A) 144. (C) 145. (C)
146. (A) 147. (A) 148. (D) 149. (B) 150. (B)

151. 'तर्कसंग्रह-दीपिका' के लेखक कौन हैं?

BHU MET–2016

(A) गौतम (B) कणाद
(C) अन्नम्भट्ट (D) केशवमिश्र

स्रोत–तर्कसंग्रह – आद्याप्रसाद मिश्र, पृष्ठ- 16

152. तर्कसंग्रह-पदकृत्य का लेखक कौन है?

BHU MET–2016

(A) अन्नम्भट्ट (B) चन्द्रजसिंह
(C) अमरसिंह (D) रामभट्ट

स्रोत–तर्कसंग्रह – गोविन्दाचार्य, भू. पृष्ठ- (v)

153. तर्कसंग्रह पर विमला टीका के रचयिता कौन हैं?

BHU MET–2016

(A) गोविन्द वैजापुरकर (B) हरिहर दीक्षित
(C) चन्द्रदेव (D) अमरसिंह

स्रोत–

154. तर्कसंग्रह-विरला किसकी कृति है? BHU MET–2016

(A) ढुण्ढिराज शास्त्री (B) हरिहर दीक्षित
(C) चन्द्रदेव (D) अमरसिंह

स्रोत–तर्कसंग्रह – गोविन्दाचार्य, भू. पृष्ठ- (v)

155. सुमेलित कीजिये– UGC 09 D–2005

सूची-I	सूची-II
(क) सांख्य	1. पार्श्वनाथ
(ख) बौद्धवाद	2. आदिशङ्कर
(ग) जैनवाद	3. कपिल
(घ) वेदान्त	4. नागार्जुन
	5. कणाद

	क	ख	ग	घ
(A)	3	4	1	2
(B)	1	3	4	2
(C)	2	5	4	3
(D)	4	2	3	1

स्रोत–भारतीय दर्शन – चन्द्रधर शर्मा, पृष्ठ- 139,74,29,237

156. परस्परं सम्यक् मेलनीयाः– JNU MET–2015

आचार्यः	ग्रन्थाः
(क) वात्स्यायनः	(i) तत्त्वचिन्तामणिः
(ख) वाचस्पतिमिश्रः	(ii) न्यायवार्तिक-तात्पर्यटीका
(ग) उदयनाचार्यः	(iii) न्यायवार्तिकम्
(घ) गङ्गेशोपाध्यायः	(iv) परिशुद्धिः

	क	ख	ग	घ
(A)	3	2	4	1
(B)	2	1	3	4
(C)	1	2	3	4
(D)	2	3	1	4

स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह–उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 818,804,805

157. सुमेलित कीजिए– UGC 09 D –2008

सूची-A	सूची-B
(A) सांख्य	1. स्वामी महावीर
(B) वेदान्त	2. गौतम बुद्ध
(C) बौद्ध	3. कपिल
(D) जैन	4. शङ्कराचार्य
	5. कणाद

	क	ख	ग	घ
(A)	1	4	3	2
(B)	4	1	2	5
(C)	3	4	2	1
(D)	5	2	1	3

स्रोत–भारतीय दर्शन – चन्द्रधर शर्मा, पृष्ठ- 139,237,70,29

158. स्थितप्रज्ञस्य लक्षणं गीतायाः कस्मिन्नध्याये कृतमस्ति?

G.GIC–2015

(A) तृतीये (B) द्वितीये
(C) चतुर्थे (D) पञ्चमे

स्रोत–गीता (2/54,55) – गीताप्रेस

159. शङ्कराचार्यकृत ब्रह्मसूत्रस्यापरं नाम किम्?

UGC 73 J–2010

(A) शारीरिकसूत्रम् (B) मीमांसासूत्रम्
(C) धर्मसूत्रम् (D) शारीरकसूत्रम्

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–07

151. (C) 152. (B) 153. (*) 154. (A) 155. (A) 156. (A) 157. (C) 158. (B) 159. (D)

160. 'भाषा-परिच्छेदः' इति नव्यन्यायग्रन्थस्य रचयिता कः?

UGC 73 Jn -2017

(A) अन्नम्भट्टः

(B) वरदराजः

(C) केशवमिश्रः

(D) विश्वनाथ-न्यायपञ्चानन-भट्टाचार्यः

स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह – उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 785

161. पक्षधरमिश्रविरचितो नव्यन्यायग्रन्थः कः–

UGC 73 Jn -2017

(A) किरणावलीप्रकाशः (B) न्यायकुसुमाञ्जलिः

(C) तत्त्वचिन्तामण्यालोकः (D) न्यायलीलावती

स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-810

162. पर्यन्तप्रश्नाः परस्परं सम्यक् मेलनीयाः–JNU MET –2015

आचार्यः	ग्रन्थाः
क- जैमिनिः	1. बृहती
ख- शबरस्वामी	2. श्लोकवार्तिकम्
ग- कुमारिलभट्टः	3. मीमांसासूत्रभाष्यम्
घ- प्रभाकरमिश्रः	4. मीमांसासूत्रम्

	क	ख	ग	घ
(A)	4	3	2	1
(B)	2	3	4	1
(C)	3	4	1	2
(D)	1	2	3	4

स्रोत–अर्थसंग्रह- सत्यप्रकाश शर्मा, भू0 पेज-5,6,7,9

160. (D) 161. (C) 162. (A)

09 गीता

1. (i) ''भगवद्गीता'' किस ग्रन्थ का भाग है ?
(ii) 'गीता' इति कस्य ग्रन्थस्य अंशभूता -
BHU B.Ed –2005, 2013, UGC 73 D–2008

(A) रामायणस्य (B) महाभारतस्य
(C) भागवतपुराणस्य (D) कूर्मपुराणस्य

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ-150

2. (i) श्रीमद्भगवद्गीतायां कति अध्यायाः सन्ति–
(ii) श्रीमद्भगवद्गीता में कितने अध्याय हैं –
BHU B.Ed–2008, 2012, 2014, UGC 73 J–1998, D–2004, BHU AET–2012, BHU MET–2011, BHU Sh.ET–2013, UP PGT–2000, H-TET–2015

(A) दश (B) द्वादश
(C) पञ्चदश (D) अष्टादश

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ-150

3. (i) गीता महाभारत के किस पर्व में वर्णित है ?
(ii) भगवद्गीता महाभारतस्य कस्मिन् पर्वणि विद्यते–
(iii) लोके अतिप्रसिद्धा 'श्रीमद्भगवद्गीता' महाभारतस्य कस्मिन् पर्वण्युपनिबद्धा–
(iv) ''श्रीमद्भगवद्गीता' कस्य पर्वणः खण्डः ?
UGC 25 J–2012, 2016, UP PGT–2004, 2005, 2009, MGKV Ph.D–2016, AWES TGT–2011, UGC 73 J–2015, GGIC–2013

(A) आदिपर्व में (B) अनुशासनपर्व में
(C) भीष्मपर्व मे (D) शान्तिपर्व में

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ-150

4. श्रीमद्भागवतस्य पदरत्नावलीटीका केन प्रणीता?
UGC 73 Jn–2017

(A) वीरराघवाचार्येण (B) वल्लभाचार्येण
(C) शुकदेवाचार्येण (D) विजयध्वजेन

स्रोत–पुराण विमर्श - बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ- 145

5. श्रीमद्भगवद्गीता के द्वितीय अध्याय का नाम है-
UP GIC–2009

(A) विभूतियोग (B) सांख्ययोग
(C) अक्षरब्रह्मयोग (D) ज्ञानविज्ञानयोग

स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (अध्याय-2) – गीताप्रेस

6. आत्मनः स्वरूपं भगवद्गीतायाः कस्मिन् अध्याये वर्णितम् ?
RPSC ग्रेड-II (TGT)–2010

(A) प्रथमाध्याये (B) तृतीयाध्याये
(C) द्वितीयाध्याये (D) चतुर्थाध्याये

स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (2/20-25) – गीताप्रेस

7. 'सांख्ययोग' इति कस्याध्यायस्य नाम -
DSSSB PGT–2014

(A) द्वितीयस्य (B) तृतीयस्य
(C) चतुर्थस्य (D) पञ्चमस्य

स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (अध्याय-2) – गीताप्रेस

8. 'भगवद्गीतायाः' तृतीयाध्यायस्य नाम किम्-
UGC 25 D–2014

(A) ज्ञानयोग (B) कर्मयोग
(C) सांख्ययोग (D) भक्तियोग

स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (अध्याय-3) – गीताप्रेस

9. श्रीमद्भगवद्गीता के एकादश अध्याय का नाम है–
UP PGT–2005

(A) विश्वदर्शनयोग (B) सांख्ययोग
(C) गुणत्रयविभागयोग (D) पुरुषोत्तमयोग

स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (अध्याय-11) – गीताप्रेस

10. गीता के अनुसार 'कर्मयोगी' को कर्म क्यों करना चाहिए-
UP GIC–2009, UP PGT–2003, 2004, 2010

(A) यश के लिए (B) सुख के लिये
(C) लोकसंग्रह के लिए (D) धनसंग्रह के लिए

स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (3/20) – गीताप्रेस

1. (B)	2. (D)	3. (C)	4. (D)	5. (B)	6. (C)	7. (A)	8. (B)	9. (A)	10. (C)

11. गीतानुसारेण ''स्थितधीः .... उच्यते'' इत्यत्र रिक्तस्थानं पूरयतु - RPSC ग्रेड-II (TGT)–2014

(A) ऋषिः (B) साधुः
(C) पण्डितः (D) मुनिः

स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (2/56) – गीताप्रेस

12. ''नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः'' पंक्तिरियं कमुद्दिश्य उदीरितः - RPSC ग्रेड - II (TGT)–2014

(A) कर्म (B) ज्ञानम्
(C) आत्मानम् (D) अर्जुनम्

स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (2/23) – गीताप्रेस

13. 'प्रस्थानत्रयी' में किसकी गणना होती है? BHU AET–2012, BHU MET–2008

(A) शकुन्तला की (B) मेघदूत की
(C) गीता की (D) वैशेषिकदर्शन की

स्रोत–वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, भू. पृष्ठ- ix

14. 'श्रीमद्भगवद्गीता' में अर्जुन को कौन उपदेश देता है ? BHU AET–2008

(A) द्रोणाचार्य (B) भीष्म
(C) कृष्ण (D) धृतराष्ट्र

स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (2/2)– गीताप्रेस

15. 'स्थितप्रज्ञस्य का भाषा' इति कः कम् अपृच्छत् - RPSC ग्रेड - II (TGT)–2010

(A) धृतराष्ट्रः सञ्जयम् अपृच्छत्
(B) अर्जुनः कृष्णम् अपृच्छत्
(C) कृष्णः अर्जुनम् अपृच्छत्
(D) युधिष्ठिरः कृष्णम् अपृच्छत्

स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (2/54) – गीताप्रेस

16. क्रोधाद् भवति - RPSC ग्रेड-II (TGT)–2010

(A) अनुरागः (B) सन्तोषः
(C) सम्मोहः (D) स्नेहः

स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (2/63) – गीताप्रेस

17. (i) 'योगः कर्मसु कौशलम्' यह वाक्य है -
(ii) 'योगः कर्मसु कौशलम्' यह उक्ति किसकी है?
(iii) ''योगः कर्मसु कौशलम्''-पक्त्यंशः कस्मादुद्धतः?
(iv) ''योगः कर्मसु कौशलम्'' - योग का लक्षण है?
(v) ''योगः कर्मसु कौशलम्'' - यह उक्ति है?
UGC 73 D - 1992 –2006, AWES TGT 2009, 2011, UP PGT-2013

(A) भगवद्गीता में (B) शिवगीता में
(C) हरिवंशपुराण में (D) सूतसंहिता में

स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (2/50) – गीताप्रेस

18. 'कर्मफलभोक्ता' कः - BHU AET–2012

(A) ब्रह्म (B) जीवः
(C) शरीरम् (D) ईश्वरः

स्रोत–ईशादि नौ उपनिषद् - गीताप्रेस, पेज–478

19. 'भगवद्गीतायां' कः शिष्यः वर्तते- BHU AET–2012

(A) दुर्योधनः (B) अर्जुनः
(C) कृष्णः (D) सञ्जयः

स्रोत– (i) गीता – स्वामी प्रभुपाद, भू. पृष्ठ- 4
(ii) गीता (2/7) गीताप्रेस

20. श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार निष्कामकर्म का अर्थ है- UP GDC–2008, UP PGT–2000, 2003, 2004

(A) निरुद्देश्य कर्म करना
(B) सकाम कर्म करना
(C) अनासक्त होकर कर्म करना
(D) कर्म संन्यास

स्रोत–गीता (3/19) – स्वामी प्रभुपाद, पृष्ठ- 125

21. गीता का स्वधर्म सिद्धान्त है - UP PGT–2003

(A) वर्णव्यवस्था का सिद्धान्त (B) कर्मसिद्धान्त
(C) आत्मसिद्धान्त (D) इनमें से कोई नहीं

श्रीमद्भगवद्गीता (अध्याय-3/19-25), (4/16-21), (2/47) – गीताप्रेस

22. श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार मनुष्य का अधिकार है- UP PGT–2004

(A) ज्ञान पर (B) कर्म करने पर
(C) फल पर (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (2/47) – गीताप्रेस

11. (D) 12. (C) 13. (C) 14. (C) 15. (B) 16. (C) 17. (A) 18. (B) 19. (B) 20. (C) 21. (B) 22. (B)

23. ''नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः'' गीता का यह सिद्धान्त किस दर्शन से सम्बन्ध रखता है? UP PGT–2005

(A) बौद्धदर्शन से (B) जैनदर्शन से
(C) सांख्यदर्शन से (D) वेदान्तदर्शन से

स्रोत–(i) श्रीमद्भगवद्गीता (2/16) – गीताप्रेस
(ii) सांख्यकारिका - राकेश शास्त्री, पेज–32

24. श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार आत्मा किससे श्रेष्ठ है? UP PGT–2005

(A) मन से (B) बुद्धि से
(C) कर्मेन्द्रियों से (D) ज्ञानेन्द्रियों से

स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (3/42) – गीताप्रेस

25. ''भक्ति से भगवान् की आराधना ही परम धर्म है'' यह वाक्य सम्बन्धित है - UGC 73 J–2014

(A) गीताभाष्ये (B) गीतातात्पर्ये
(C) महाभारते (D) रामायणे

स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (अध्याय-12/6-7)

26. 'भगवद्गीता' के द्वितीय अध्याय में योग का लक्षण है- UP GDC–2008

(A) समाधि
(B) कार्य में कुशलता
(C) चित्तवृत्तिनिरोध
(D) आत्मा या परमात्मा का मिलन

स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (2/50) – गीताप्रेस

27. ज्ञान और कर्म से युक्त है - UGC 73 D–1996

(A) भागवत (B) रामायण
(C) महाभारत (D) गीता

स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता - (अध्याय 4) गीताप्रेस

28. 'कर्मण्येवाधिकारस्ते' श्लोकांश का आशय है- UP TET–2014

(A) तुम कर्म करके अधिकारी बनो।
(B) तुम्हारा अधिकारों से कोई लेना देना नहीं है।
(C) तुम्हारे अधिकार ही तुम्हारे कर्म हैं।
(D) तुम्हारा अधिकार (केवल) कर्म करने में ही है।

स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (2/47) – गीताप्रेस

29. ''योगः कर्मसु कौशलम्'' अस्य श्लोकांशस्य प्रवक्ता- AWES TGT–2010

(A) भवभूतिः (B) मम्मटः
(C) जानकीदासः (D) श्रीकृष्णः

स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (2/50) – गीताप्रेस

30. ''कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन'' – इति केनोक्तम् AWES TGT–2013

(A) नारदः (B) भगवान् विष्णुः
(C) पाराशरः (D) श्रीकृष्णः

स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (2/47) – गीताप्रेस

31. ''स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते'' स्थितप्रज्ञः कः - DSSSB PGT–2014

(A) ये परानुपदिशति (B) यो विपत्तावपि हसति
(C) य आत्मन्येवात्मना तुष्टः (D) यः सततमधीते

स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (2/55) – गीताप्रेस

32. भगवद्गीतानुसारेण स्थितप्रज्ञः कः उच्यते? RPSC PGT–2014

(A) कर्मयोगी (B) निष्कामकर्मयोगी
(C) बुद्धिमान् (D) ज्ञानयोगी

स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (2/55) – गीताप्रेस

33. एतान्न हन्तुमिच्छामि घ्नतोऽपि ......। पूरयत K-SET–2014

(A) सचिवोत्तम (B) रिपुमर्दन
(C) मधूसूदन (D) कमलापते

स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (1/35)

34. कः पौण्ड्रं दध्मौ महाशंखम्– K-SET–2014

(A) धनञ्जयः (B) युधिष्ठिरः
(C) सहदेवः (D) वृकोदरः

स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (1/15)

35. 'कुतस्त्वा कश्मलमिदं विषमे समुपस्थितं' इति वचनं कस्य? K-SET–2014

(A) सञ्जयस्य (B) पार्थस्य
(C) कृष्णस्य (D) भीमस्य

स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (2/2)

23. (C) 24. (B) 25. (B) 26. (B) 27. (D) 28. (D) 29. (D) 30. (D) 31. (C) 32. (B) 33. (C) 34. (D) 35. (C)

36. व्यवसायात्मिका बुद्धिः कुत्र न विधीयते **KL SET–2016**

(A) मोक्षे (B) कर्मणि
(C) लोके (D) समाधौ

स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (2/44)

37. दूरेण ह्यवरं कर्म-कस्मात् – **KL SET–2016**

(A) कर्मयोगात् (B) ध्यानयोगात्
(C) बुद्धियोगात् (D) भक्तियोगात्

स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (2/49)

38. कृष्णेन वर्णितः ऊर्ध्वमूलत्वादिलक्षणः अश्वत्थो वृक्षः केन शस्त्रेण छेदनीयो भवन्ति ? DSSSB PGT–2014

(A) अयोनिर्मितेन (B) वैराग्यरूपेण
(C) करवालेन (D) विषयवैमुख्यरूपेण

स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (15/2-4)

39. ''अन्तवन्त इमे देहाः'' का तात्पर्य है कि - **UP PGT–2013**

(A) ये शरीर नाशवान् है।
(B) आत्मा अजर-अमर है ।
(C) आत्मा नश्वर है।
(D) शरीर का अन्त हो चुका है।

स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (2/18)

40. 'श्रीमद्भगवद्गीता' में माया का कौन-सा गुण नहीं है? **UP PGT–2013**

(A) दैवी (B) दुरत्यया
(C) गुणमयी (D) असती

स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (7/14)

41. गीता में मूल प्रकृति के प्रकार हैं - UP PGT–2013

(A) आठ (B) दो
(C) पाँच (D) दश

स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (7/4)

42. श्रीमद्भगवद्गीता में भीम के शंख का नाम है - **UP PGT–2013**

(A) पाञ्चजन्य (B) पौण्ड्र
(C) देवदत्त (D) दिव्य

स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (1/15)

43. ''तुम्हारा अधिकार कर्म पर है, फल की प्राप्ति पर नहीं'' यह निम्न में से किस ग्रन्थ में कहा गया है? **UP PCS–1992**

(A) अष्टाध्यायी में (B) महाभाष्य में
(C) गीता में (D) महाभारत में

स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (2/47)

44. (i) 'गुडाकेशः' कः अस्ति - AWES TGT–2013
(ii) गुडाकेश कौन कहा जाता है? UP PGT–2011

(A) अर्जुनः (B) एकलव्यः
(C) ध्रुवः (D) प्रह्लादः

स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (2/9)

45. ''योगस्थः कुरु कर्माणि'' श्लोकांशे वर्णितम् - **UP GIC–2012**

(A) तत्त्वम् (B) सत्यम्
(C) संसारभुक्तम् (D) अनासक्ततया कर्म

स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (2/48)

46. सम्मोहस्य कारणं किम् ? UP GIC–2015

(A) क्रोधः (B) तृष्णा
(C) भयम् (D) धनम्

स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (2/63)

47. भगवद्गीतायां भक्तियोगः CVVET–2015

(A) दशमः (B) द्वादशः
(C) एकादशः (D) षोडशः

स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (अध्याय-12)

48. (i) 'समत्वं योग उच्यते पंक्त्यंशः' कस्मादुद्धृता ?
(ii) 'समत्वं योग उच्यते' किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है?
AWES TGT–2009, UP PGT–2004, UGC 73 D–2010

(A) रामायणात् (B) श्रीमद्भगवद्गीतायाः
(C) विदुरनीतेः (D) योगसूत्रात्

स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (2/48)

49. श्रीमद्भगवद्गीतायाः 'विश्वरूपदर्शनयोगः' अस्ति– **UGC 25 D–2015**

(A) दशमेऽध्याये (B) एकादशेऽध्याये
(C) प्रथमाध्याये (D) त्रयोदशाध्याये

स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (अध्याय-11)

36. (D) 37. (C) 38. (B) 39. (A) 40. (D) 41. (A) 42. (B) 43. (C) 44. (A) 45. (D)
46. (A) 47. (B) 48. (B) 49. (B)

50. श्रीमद्भगवद्गीतायाम् अर्जुनं प्रति .... उपदेशः वर्तते - BHU B.Ed–2015

(A) श्रीकृष्णस्य (B) युधिष्ठिरस्य
(C) भीष्मस्य (D) विदुरस्य

स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (अध्याय-2)

51. ''नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः । न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः॥'' प्रस्तुत श्लोक किस ग्रन्थ से लिया गया है? UP TET–2013

(A) श्रीमद्भगवद्गीता (B) नीतिशतकम्
(C) भामिनीविलासः (D) कुमारसम्भवम्

स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (2/23)

52. ''मा कर्मफलहेतुर्भूः'' उक्ति है - UGC 73 J–1999

(A) भगवद्गीता (B) रामायण
(C) शिवगीता (D) अग्निपुराण

स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (2/47)

53. 'सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज' - इति कस्य ग्रन्थस्य पद्यम् - BHU Sh. ET–2013

(A) कुमारसम्भवस्य (B) भगवद्गीतायाः
(C) रघुवंशस्य (D) मनुस्मृतेः

स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (18/66)

54. (i) 'कर्मण्येवाधिकारस्ते' यह उक्ति किस ग्रन्थ की है-
(ii) 'कर्मण्येवाधिकारस्ते' इयं सूक्तिः कुत्र मिलति?
(iii) कर्मण्येवाधिकारस्ते ..... यह पंक्ति किस ग्रन्थ की है? BHU MET–2008, 2010, 2012, UGC 73 J–2006, 2007, D–2004

(A) गीता की (B) भागवत की
(C) वेदान्त की (D) ईशोपनिषद् की

स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (2/47)

55. 'ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि भस्मसात् कुरुते तथा' इति कुत्र उक्तम् ? BHU AET–2012

(A) कठोपनिषदि (B) गीतायाम्
(C) वेदान्तसूत्रग्रन्थे (D) मुण्डकोपनिषदि

स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (4/37)

56. ''यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः'' श्लोकांश श्रीमद्भगवद्गीता के किस अध्याय से सम्बद्ध है - UP PGT–2005

(A) द्वितीय (B) पञ्चम
(C) षोडश (D) अष्टादश

स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (18/78)

57. ''स्वधर्मे निधनं श्रेयः'' इत्युक्तिः कतमेऽध्याये वर्तते? UGC 25 D–2013

(A) द्वितीये (B) तृतीये
(C) पञ्चमे (D) चतुर्थे

स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (3/35)

58. (i) ''सर्वधर्मान् परित्यज्य'' यह कहाँ की उक्ति है?
(ii) ''सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं ....'' यह उक्ति कहाँ की है? UGC 73 D–1992, 1997

(A) गीता की (B) मनुस्मृति की
(C) रामायण की (D) पुराण की

स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (18/66)

59. ''मामेकं शरणं व्रज'' सूक्ति है - UGC 73 J–1991

(A) मनुस्मृति की (B) भागवत की
(C) महाभारत की (D) गीता की

स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (18/66)

60. ''योगक्षेमं वहाम्यहम्'' पंक्तिः वर्तते- AWES TGT–2013

(A) योगवासिष्ठौ (B) श्रीमद्भगवद्गीतायाम्
(C) भृगुसंहितायाम् (D) रावणसंहितायाम्

स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (9/22)

61. ''योगक्षेमं वहाम्यहम्'' इति वाक्यं कस्मिन् अध्याये वर्तते? DSSSB PGT–2014

(A) नवमे (B) दशमे
(C) एकादशे (D) द्वादशे

स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (9/22)

62. ''न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते'' कस्मिन् अध्याये वर्तते ? DSSSB PGT–2014

(A) सप्तमे (B) षष्ठे
(C) पञ्चमे (D) चतुर्थे

स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (4/38)

50. (A) 51. (A) 52. (A) 53. (B) 54. (A) 55. (B) 56. (D) 57. (B) 58. (A) 59. (D) 60. (B) 61. (A) 62. (D)

63. ''नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः'' पंक्ति ली गई है - UP PGT–2013
(A) तर्कभाषा से (B) वेदान्तसार से
(C) श्रीमद्भगवद्गीता से (D) सांख्यकारिका से
स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (2/16)

64. (i) ''वेदानां सामवेदोऽस्मि''-इस श्लोक वाला ग्रन्थ है (ii) वेदानां सामवेदोऽस्मि'' यह वाक्य है - UK SLET–2015, BHU MET–2015
(A) गीता में (B) महाभारत में
(C) रामायण में (D) वेद में
स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (10/22)

65. 'जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः' इति सूक्तिः अस्ति - UP GIC–2012
(A) श्रीमद्भगवद्गीतायाः (B) सांख्यकारिकायाः
(C) तर्कभाषायाः (D) स्याद्वादमञ्जर्याः
स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (2/27)

66. ''सांख्ययोगौ पृथग्बालाः प्रवदन्ति न पण्डिताः'' इत्युक्तिः वर्तते - UGC 73 D–2012, 2013
(A) सांख्यकारिकायाम् (B) मीमांसापरिभाषायाम्
(C) भामतीटीकायाम् (D) श्रीमद्भगवद्गीतायाम्
स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (5/4)

67. 'बुद्धिनाशात्प्रणश्यति' किस ग्रन्थ का सन्दर्भ है– UP PGT–2011
(A) वेद (B) वायुपुराण
(C) गीता (D) कादम्बरी
स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (2/63)

68. 'श्रीमद्भगवद्गीता' इति ग्रन्थस्य उपरि कस्य टीका (व्याख्या) नास्ति– JNU MET–2015
(A) महात्मा गाँधी (B) बालगङ्गाधरतिलक
(C) विनोबाभावे (D) जवाहरलाल नेहरू
स्रोत–(i) संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज–159
(ii) संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (तृतीयखण्ड), पेज–480

69. 'स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः' यह वचन किस ग्रन्थ का है– UP PGT–2011
(A) गीता (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(C) नीतिशतकम् (D)वेदान्तसारः
स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (3/35)

70. भगवद्गीता को अध्यायों के अन्त मे किस शास्त्र के नाम से जाना जाता है। UP PGT–2011
(A) आगमशास्त्र (B) औषधशास्त्र
(C) तन्त्रशास्त्र (D) योगशास्त्र
स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (1/47)

71. स्थितप्रज्ञस्य लक्षणं गीतायाः कस्मिन्नध्याये कृतमस्ति- GGIC–2015
(A) तृतीये (B) द्वितीये
(C) चतुर्थे (D) पञ्चमे
स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (2/54,55)

72. भागवतटीकायाः टीका अतीव प्रसिद्धाऽस्ति - KL SET–2015
(A) कासाञ्जन टीका (B) श्रीधरीटीका
(C) शुकपक्षीया टीका (D) भागवतचन्द्र चन्द्रिका टीका
स्रोत– पुराणविमर्श - बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ - 571

73. नलोपाख्यानं महाभारतस्य कस्मिन् पर्वणि वर्तते- CVVET–2017
(A) अरण्यपर्वणि (B) भीष्मपर्वणि
(C) महाप्रस्थानिकपर्वणि (D) शान्तिपर्वणि
स्रोत– संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा ऋषि, पेज 157

74. राजधर्मानुशासनं महाभारते कस्मिन् पर्वणि अस्ति - CVVET–2017
(A) भीष्मपर्वणि (B) अनुशासनपर्वणि
(C) शान्तिपर्वणि (D) हरिवंशपर्वणि
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा ऋषि, पेज 151

75. श्रीमद्भगवद्गीतानुसारेण अव्यवसायिनां बुद्धयः कीदृश्यः भवन्ति- RPSC–ग्रेड-I PGT-2015
(A) बहुशाखाः (B) अनन्ताः
(C) बहुशाखाः अनन्ताश्च (D) एका
स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (2/41)

63. (C) 64. (A) 65. (A) 66. (D) 67. (C) 68. (D) 69. (A) 70. (D) 71. (B) 72. (B) 73. (A) 74. (C) 75. (C)

10 स्मृति

1. **मनु किस ग्रन्थ के लेखक हैं ? BHU AET–2011**
   (A) पराशरस्मृति (B) याज्ञवल्क्यस्मृति
   (C) आपस्तम्बधर्मसूत्र (D) मनुस्मृति

स्रोत–मनुस्मृति – गिरिधर गोपाल शर्मा, भू. पृष्ठ- 05

2. **मनुस्मृति के लेखक कौन माने जाते हैं ? BHU AET–2011**
   (A) यम (B) मार्कण्डेय
   (C) पराशर (D) मनु

स्रोत–मनुस्मृति – गिरिधर गोपाल शर्मा, भू. पृष्ठ- 05

3. **सर्वप्राचीन स्मृति कौन है ? BHU AET–2011**
   (A) पराशरस्मृति (B) व्यासस्मृति
   (C) मनुस्मृति (D) याज्ञवल्क्यस्मृति

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास -उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-607

4. **मनु किस शास्त्र के आचार्य हैं ? BHU AET–2011**
   (A) धर्मशास्त्र (B) दर्शनशास्त्र
   (C) पुराणशास्त्र (D) अर्थशास्त्र

स्रोत–मनुस्मृति – शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, भू. पृष्ठ- 08

5. **(i) स्मृतिशब्देन किं बोध्यते - BHU AET–2010**
   (ii) स्मृति का क्या अर्थ है ?
   (A) वेद (B) धर्मशास्त्र
   (C) पुराण (D) साहित्य

स्रोत–मनुस्मृति (2/10) – गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ- 63,64

6. **मनुस्मृति की रचना किस वंश के शासनकाल में हुई- MP PSC–1996**
   (A) मौर्य (B) शुंग
   (C) सातवाहन (D) पल्लव

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-वाचस्पति गैरोला, पेज-638

7. **(i) मनुस्मृति में कितने अध्याय हैं-**
   (ii) मनुस्मृतौ कति अध्यायाः सन्ति – BHU MET–2010, BHU AET–2011, MP वर्ग - I (PGT)–2012, UGC 73 D–1997
   (A) 10 (B) 12
   (C) 8 (D) 6

स्रोत–मनुस्मृति – गिरिधर गोपाल शर्मा, भू. पृष्ठ- 07

8. **मनुस्मृति मुख्यतया सम्बन्धित है ? UP PCS–2007**
   (A) समाजव्यवस्था से (B) कानून से
   (C) अर्थव्यवस्था से (D) राज्यकार्यपद्धति से

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-वाचस्पति गैरोला, पेज-632

9. **सृष्टि का वर्णन मनुस्मृति के किस अध्याय में है ? BHU AET–2011**
   (A) प्रथम (B) द्वितीय
   (C) चतुर्थ (D) सप्तम

स्रोत–मनुस्मृति – गिरिधर गोपाल शर्मा, भू. पृष्ठ- 08

10. **मनुस्मृति के द्वितीय अध्याय में वर्णित है ? BHU AET–2011**
   (A) सृष्टिक्रम (B) वर्णधर्म
   (C) राजधर्म (D) संन्यासधर्म

स्रोत–मनुस्मृति – गिरिधर गोपाल शर्मा, भू. पृष्ठ- 08

11. **(i) मनुस्मृति की टीकायें हैं? UGC 73 D–2012**
   (ii) मनुस्मृतेः टीकाः सन्ति? J–2013
   (A) चतस्रः (B) तिस्रः
   (C) नव (D) एकादश

स्रोत–मनुस्मृति – शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, भू. पृष्ठ-14

12. **मनुस्मृते के टीकाकार हैं ? UGC 73 J–1999**
   (A) कुल्लूक (B) काशीनाथ
   (C) कमलाकर (D) जीमूतवाहन

स्रोत–मनुस्मृति – गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ- 1

1. (D) 2. (D) 3. (C) 4. (A) 5. (B) 6. (C) 7. (B) 8. (A) 9. (A) 10. (B)
11. (D) 12. (A)

13. निम्नाङ्कित में कौन मनुस्मृति के टीकाकार नहीं हैं ? BHU AET–2011

(A) मेधातिथि (B) गोविन्दराज
(C) नारद (D) रुचिदत्त

स्रोत–मनुस्मृति-शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन पेज- भू-15,16,18

14. का आसीत् स्वायम्भुवस्य मनोः धर्मपत्नी ? BHU AET–2011

(A) शताङ्कुरा (B) शतप्रज्ञा
(C) शतरूपा (D) शतङ्कारा

स्रोत–रामचरितमानस (खण्ड-1)-विजयानन्द त्रिपाठी, पेज–383

15. (i) आश्रमाः कति भवन्ति - BHU AET–2011,
(ii) आश्रमाः कति........ सन्ति - AWES TGT–2010,
(iii) आश्रमाः कति – BHU B.Ed–2015

(A) त्रयः (B) चत्वारः
(C) पञ्च (D) षट्

स्रोत–मनुस्मृति (6/87)–शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पृष्ठ-444

16. वर्तमानकाल मे किसका मन्वन्तर है? UGC 73 J–2016

(A) स्वायम्भुवस्य (B) चाक्षुषस्य
(C) वैवस्वतस्य (D) सावर्णे

स्रोत–दुर्गासप्तशती – गीताप्रेस, पृष्ठ- 16

17. 'तृणानि भूमिरुदकं वाक्चतुर्थी च सूनृता'-इत्यनेन कः यज्ञः परामृश्यते– DU-M. Phil– 2016

(A) ब्रह्मयज्ञः (B) नृयज्ञः
(C) देवयज्ञः (D) पितृयज्ञः

मनुस्मृति (3/101)–शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पृष्ठ- 228

18. विद्याध्ययनकालस्यान्ते ब्रह्मचर्याश्रमे एष सम्पन्नो भवति– DU-M. Phil– 2016

(A) उपनयनम् (B) विवाहः
(C) कर्णवेधः (D) समावर्तनम्

स्रोत–मनुस्मृति – गिरिधर गोपाल शर्मा, भू. पृष्ठ- 30

19. एकं ब्राह्मं अहः– K SET–2014

(A) दैविकयुगसहस्रम् (B) मनुष्ययुगचतुष्कम्
(C) दैविकयुगशतम् (D) मनुष्ययुगशतम्

स्रोत–मनुस्मृति (1/72) – गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ- 37

20. ''आचारः परमो धर्मः श्रुत्युक्तः स्मार्त एव च''-इतीदं कस्यां स्मृतौ विद्यते? K SET–2015

(A) मनुस्मृतौ (B) हारीतस्मृतौ
(C) याज्ञवल्क्यस्मृतौ (D) भारद्वाजस्मृतौ

स्रोत–मनुस्मृति (1/108) – गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ- 51

21. याज्ञवल्क्यस्मृतेः आचाराध्यायः कति प्रकरणेषु विभक्तः अस्ति? RPSC PGT–2014

(A) द्वाद्वश (B) त्रयोदश
(C) पञ्चदश (D) एकादश

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति – उमेशचन्द्र पाण्डेय, भू0 पृष्ठ- 16

22. (i) याज्ञवल्क्यस्मृति में कितने अध्याय हैं?
(ii) याज्ञवल्क्यस्मृतौ कति अध्यायाः सन्ति? BHU AET–2011, GJ SET -2013

(A) एक (B) दो
(C) तीन (D) चार

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति – उमेशचन्द्र पाण्डेय, भू. पृष्ठ- 16

23. अच्छे पठन के गुण बताए गये हैं– UP TET–2016

(A) मनुस्मृति में (B) याज्ञवल्क्यशिक्षा में
(C) अर्थशास्त्र में (D) निरुक्त में

स्रोत–याज्ञवल्क्यशिक्षा (श्लोक-83) - नरेश झा,पेज-146

24. चार उपायों में एक है– UGC 73 J-1998

(A) दण्डः (B) यागम्
(C) योगः (D) कर्म

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति – उमेशचन्द्र पाण्डेय, पृष्ठ- 153

25. याज्ञवल्क्य कहाँ के निवासी थे ? BHU AET–2010

(A) मिथिला (B) वाराणसी
(C) दक्षिणभारत (D) महाराष्ट्र

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति - उमेशचन्द्र पाण्डेय, भू0 पेज–31

26. याज्ञवल्क्य के शिष्य का नाम क्या था ? BHU AET–2010

(A) काश्यप (B) मनु
(C) गौतम (D) जनक

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति - उमेशचन्द्र पाण्डेय, भू0 पेज–13

13. (C) 14. (C) 15. (B) 16. (C) 17. (B) 18. (D) 19. (A) 20. (A) 21. (B) 22. (C) 23. (B) 24. (A) 25. (A) 26. (D)

27. आश्रमव्यवस्थायां कः आश्रमः श्रेष्ठोऽस्ति ?
RPSC ग्रेड II (TGT)–2014
(A) ब्रह्मचर्याश्रमः (B) गृहस्थाश्रमः
(C) वानप्रस्थाश्रमः (D) संन्यासाश्रमः
स्रोत–मनुस्मृति (6/89)–शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पृष्ठ- 445

28. भारतीयसंस्कृत्यां वेदाध्ययनं कस्मिन्नाश्रमे उत्तम् ?
RPSC ग्रेड II (TGT)–2014
(A) ब्रह्मचर्याश्रमः (B) गृहस्थाश्रमः
(C) वानप्रस्थाश्रमः (D) संन्यासाश्रमः
स्रोत–प्राचीन भारतीय संस्कृति – वीरेन्द्र कुमार सिंह, पृष्ठ- 68

29. षोडशसंस्कारे न परिगणितः-RPSC ग्रेड II (TGT)–2014
(A) उपनयनसंस्कारः (B) मार्जनसंस्कारः
(C) विवाहसंस्कारः (D) अन्त्येष्टिसंस्कारः
स्रोत–प्राचीन भारतीय संस्कृति – वीरेन्द्र कुमार सिंह, पृष्ठ- 11

30. पञ्चमहायज्ञेषु परिगणितोऽस्ति-RPSC ग्रेड II (TGT)–2014
(A) अश्वमेधयज्ञः (B) राजसूययज्ञः
(C) देवयज्ञः (D) ज्ञानयज्ञः
स्रोत–मनुस्मृति (3/70)–शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पृष्ठ- 219

31. (i) कति संस्काराः सन्ति ? AWES TGT–2010, 2013,
(ii) सामान्यतः संस्काराः मन्यन्ते-BHU B.Ed–2012, 2015,
(iii) भारतीय संस्कृति में कितने संस्कार हैं?
(iv) संस्कारों की संख्या है - BHU RET–2008,
UGC 73 D–1996, 1997, 1999, 2012,
RPSC ग्रेड II (TGT)–2010, BHU AET–2013
(A) पञ्च (B) दश
(C) द्वादश (D) षोडश
स्रोत–प्राचीन भारतीय संस्कृति – वीरेन्द्र कुमार सिंह, पृष्ठ- 11

32. धर्म, अर्थ, काम .... च चत्वारः पुरुषार्थाः -
BHU B.Ed–2012
(A) संन्यास (B) मोक्ष
(C) भेद (D) मोह
स्रोत–प्राचीन भारतीय संस्कृति – वीरेन्द्र कुमार सिंह, पृष्ठ- 53

33. पुरा भारते आश्रमव्यवस्थासु किं विभक्तमासीत् ?
RPSC ग्रेड II (TGT)–2010
(A) वनम् (B) मानवजीवनम्
(C) धनम् (D) पशूनां जीवनम्
स्रोत–प्राचीन भारतीय संस्कृति – वीरेन्द्र कुमार सिंह, पृष्ठ- 67

34. ब्रह्मचर्याश्रमस्य मुख्योद्देश्यम् आसीत् ?
RPSC ग्रेड II (TGT)–2010
(A) विद्यार्जनम् (B) धनार्जनम्
(C) यशार्जनम् (D) बलार्जनम्
स्रोत–प्राचीन भारतीय संस्कृति – वीरेन्द्र कुमार सिंह, पृष्ठ- 68

35. धर्मार्थकाममोक्षाः कथ्यन्ते-RPSC ग्रेड-II (TGT)–2010
(A) गुणाः (B) पुरुषार्थाः
(C) ग्रामाः (D) नृपाः
स्रोत–प्राचीन भारतीय संस्कृति – वीरेन्द्र कुमार सिंह, पृष्ठ- 53

36. (i) भारतीयसंस्कृत्यौ वर्णव्यवस्थायाः कः आधारोऽस्ति?
(ii) वर्णव्यवस्थायाः आधारः आसीत् -
RPSC ग्रेड II (TGT)– 2010, 2014
(A) जाति (B) पराक्रम
(C) कर्म-गुण (D) रूप
स्रोत–प्राचीन भारतीय संस्कृति – वीरेन्द्र कुमार सिंह, पृष्ठ- 90

37. शिशोः जन्मात् पूर्वं कति संस्काराः भवन्ति?
MP. वर्ग-I (PGT)–2012
(A) तीन (3) (B) चार (4)
(C) पाँच (5) (D) छः (6)
स्रोत–प्राचीन भारतीय संस्कृति – वीरेन्द्र कुमार सिंह, पृष्ठ- 20

38. अश्मारोहणविधिः भवति - MP वर्ग- I (PGT)–2012
(A) केवलं विवाहे (B) केवलं उपनयने
(C) उपनयने विवाहे च (D) विवाहे निष्क्रमणे च
स्रोत–भारतीय संस्कृति - वीरेन्द्र कुमार सिंह, पेज– 41

39. ''तेषां त्रयाणां शुश्रूषा परमं तप उच्यते''
यहाँ मनु के अनुसार 'त्रयाणां' पद से किनका ग्रहण होता है? UGC 73 J–2016
(A) गार्हपत्याहवनीयदक्षिणाग्नीनाम्
(B) देवपित्रतिथीनाम्
(C) मातृपित्राचार्याणाम्
(D) ब्रह्मचारिवानप्रस्थिसंन्यासिनाम्
मनुस्मृति (2/229)–शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पृष्ठ- 188

27. (B) 28. (A) 29. (B) 30. (C) 31. (D) 32. (B) 33. (B) 34. (A) 35. (B) 36. (C) 37. (A) 38. (A) 39. (C)

40. मनु ने सूर्यचन्द्रग्रहण में द्विजों को कितने काल तक वेदाध्ययन करने से मना किया है? UGC 73 J–2016

(A) एकरात्रम् (B) त्रिरात्रम्
(C) पञ्चरात्रम् (D) द्विरात्रम्

स्रोत–मनुस्मृति (4.110)-शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पेज–320

41. ''गर्भिणी तु द्विमासादिस्तथा प्रव्रजितो मुनिः। ब्राह्मणा लिङ्गिनश्चैव न दाप्यास्तारिकं तरे॥'' यहाँ 'लिङ्गिनः' पद का क्या अर्थ है? UGC 73 J–2016

(A) कुशीलवाः (B) पोषितः
(C) ब्रह्मचारिणः (D) स्वर्णकाराः

मनुस्मृति (8/407)–शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पृष्ठ- 631

42. मनुस्मृति की उक्ति के अनुसार ''अद्भिः खानि च संस्पृशेत्'' इसमें 'खानि' पद का क्या अर्थ है? UGC 73 J–2016

(A) खनिजद्रव्याणि (B) इन्द्रियाणि सछिद्राणि
(C) नभः (D) कृच्छाणि

मनुस्मृति (2/53)–शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पृष्ठ- 133

43. मनु के मतानुसार प्रनष्टाधिगत द्रव्य का कौन सा भाग राजा को ग्रहण करना चाहिए? UGC 73 J–2016

(A) पञ्चमम् (B) षष्ठम्
(C) अष्टमम् (D) एकादशम्

मनुस्मृति (8/33-35)–शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पृष्ठ- 522

44. समावर्तनसंस्कारविधौ स्नातकानां प्रकाराः भवन्ति - MP वर्ग- I (PGT)–2012

(A) चत्वारः (B) त्रयः
(C) पञ्च (D) षट्

स्रोत–हिन्दू संस्कार – राजबली पाण्डेय, पृष्ठ- 189

45. ''सीमन्तोन्नयनम्'' अत्र ''सीमन्त'' पदस्य अर्थोऽस्ति- MP वर्ग - I (PGT)–2012

(A) केशाः (B) धनम्
(C) बलम् (D) वस्त्रम्

स्रोत–प्राचीन भारतीय संस्कृति – वीरेन्द्र कुमार सिंह, पृष्ठ- 18

46. (i) याज्ञवल्क्यस्मृतौ धर्मस्य स्रोतांसि सन्ति -
(ii) याज्ञवल्क्यस्मृति में धर्म के मूल आधार हैं- UGC 73 D–2005, UK SLET–2015

(A) चत्वारि (B) त्रीणि
(C) षट् (D) पञ्च

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति (1/7) – उमेशचन्द्र पाण्डेय, पृष्ठ- 04

47. कन्यकाच्छलात् विवाहोऽस्ति - UGC 73 D–2005

(A) प्राजापत्यः (B) गान्धर्वः
(C) पैशाचः (D) ब्रह्म

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति (1/61)–उमेशचन्द्र पाण्डेय, पृष्ठ- 25

48. गर्भशुद्धि के लिये संस्कार विहित है- UGC 73 D–2006

(A) गर्भाधान (B) सीमन्तोन्नयनम्
(C) पुंसवन (D) विवाह

स्रोत–मनुस्मृति – गिरिधर गोपाल शर्मा, भू0 पृष्ठ- 18,19

49. नारियों के पुनर्विवाह के प्रतिपादक हैं - UGC 73 D–2006

(A) मनु (B) याज्ञवल्क्य
(C) नारद (D) वसिष्ठ

स्रोत–मनुस्मृति (9/176) शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पृष्ठ-685

50. (i) गौतम ने कितने संस्कार प्रतिपादित किये हैं?
(ii) गौतमेन कति संस्काराः कथिताः – UGC 73 J–2007, 2009, BHU AET–2013

(A) 13 (B) 40
(C) 05 (D) 23

स्रोत–मनुस्मृति – गिरिधर गोपाल शर्मा, भू0 पृष्ठ- 17

51. 'प्रायश्चित्त' अध्याय है - UGC 73 J–2005

(A) मनुस्मृतौ (B) विष्णुस्मृतौ
(C) बृहस्पतिस्मृतौ (D) याज्ञवल्क्यस्मृतौ

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति – गङ्गासागरराय, भू0 पृष्ठ- 02

52. संस्कार के कितने उद्देश्य हैं ? UGC 73 D–2007

(A) द्विविधम् (B) चतुर्विधम्
(C) नव (D) षट्

स्रोत–प्राचीन भारतीय संस्कृति – वीरेन्द्र कुमार सिंह, पृष्ठ-53

40. (B) 41. (C) 42. (B) 43. (B) 44. (B) 45. (A) 46. (A) 47. (C) 48. (B) 49. (A) 50. (B) 51. (D) 52. (B)

53. मनु के अनुसार किस प्रकार का पात्र यतिपात्र नहीं माना जाता है? UGC 73 J–2016

(A)अलाबुपात्रम् (B) ताम्रपात्रम्
(C) मृत्पात्रम् (D) दारुपात्रम्

स्रोत–मनुस्मृति (6.54)-शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पेज–434

54. स्त्रीधने स्त्रियोऽधिकारोऽस्ति। भर्ता .... तद् गृहीत्वाऽपि तां न परिशोधयत्? GJ-SET–2016

(A) वाणिज्ये विनिवेश्य (B) धर्मकार्ये विनियोज्य
(C) भगिन्यै अर्पयित्वा (D) द्युतक्रीडायां विनाश्य

स्रोत–

55. विवाहों में श्रेष्ठ है - UGC 73 D–2011

(A) प्राजापत्यः (B) राक्षसः
(C) आसुरः (D) ब्राह्मः

स्रोत–प्राचीन भारतीय संस्कृति – वीरेन्द्र कुमार सिंह, पृष्ठ- 43

56. (i) सुराओं में मुख्य है -
(ii) सुरासु मुख्या भवति-UGC 73 D–2011, J–2012

(A) गौड़ी (B) पैष्टी
(C) माध्वी (D) द्राक्षी

मनुस्मृति (11/94)–शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पृष्ठ- 802

57. विश्वामित्र के मत में श्राद्ध है-UGC 73 J–2012, 2013

(A) एकादशविधम् (B) सप्तविधम्
(C) नवविधम् (D) द्वादशविधम्

स्रोत–निर्णयसिन्धु – व्रजरत्न भट्टाचार्य, पृष्ठ- 628-29

58. वर्णव्यवस्था में ...... एक जाति है- UGC 73 J–2012

(A) ब्राह्मणः (B) क्षत्रियः
(C) वैश्यः (D) शूद्रः

मनुस्मृति (10.4)–शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पृष्ठ- 733

59. कामसमुत्थानि व्यसनानि कति -
UGC 73 J–2012, UK SLET–2015

(A) दश (B) अष्ट
(C) पञ्च (D) एकादश

स्रोत–मनुस्मृति (7/45) – गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ- 166

60. मद्यमात्र में सुरा शब्द का प्रयोग है- UGC 73 J–2013

(A) पारिभाषिकः (B) गौणः
(C) रूढः (D) योगरूढः

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति – उमेशचन्द्र पाण्डेय, पृष्ठ- 528

61. वैश्यस्य गोदानं विधीयते - UGC 73 D–2012

(A) अष्टमे वर्षे (B) नवमे वर्षे
(C) चतुर्विंशति वर्षे (D) षोडशे वर्षे

स्रोत–मनुस्मृति – गिरिधर गोपाल शर्मा, भू. पृष्ठ- 29

62. क्षत्रियस्य मरणाशौचं भवति - UGC 73 D–2012

(A) दशदिनानि (B) एकादशदिनानि
(C) चतुर्दशदिनानि (D) द्वादशदिनानि

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति (3/22)–उमेशचन्द्र पाण्डेय, पृष्ठ- 416, 417

63. राज्यस्याङ्गानि सन्ति - UGC 73 D–2012

(A) नव (B) दश
(C) सप्त (D) एकादश

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति (1.353)–उमेशचन्द्र पाण्डेय, पृष्ठ- 156

64. याज्ञवल्क्यमत में जनन अथवा मरण में वैश्य का अशौच होता है- UGC 73 J–2013

(A) द्वादशाहनि (B) एकादशाहनि
(C) पञ्चदशाहनि (D) नवदिनानि

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति(3.22) – उमेशचन्द्र पाण्डेय, पृष्ठ- 417

65. याज्ञवल्क्यस्मृति के अनुसार द्वादश प्रकार के पुत्रों में कौन परिगणित नहीं है– UGC 73 J–2016

(A) दत्तकः (B) क्रीतः
(C) सहोढजः (D) संसृष्टी

याज्ञवल्क्यस्मृति (व्यवहाराध्याय) - गङ्गासागर राय, भू. पृष्ठ- 24

66. (i) आश्रमाणां योनिरस्ति? UGC 73 J–2013,
(ii) आश्रमों की योनि होती है- 2014

(A) ब्रह्मचारी (B) गृहस्थः
(C) वानप्रस्थः (D) संन्यासः

स्रोत–प्राचीन भारतीय संस्कृति – वीरेन्द्र कुमार सिंह, पृष्ठ-75

53. (B) 54. (B) 55. (D) 56. (B) 57. (D) 58. (D) 59. (A) 60. (C) 61. (C) 62. (D) 63. (C) 64. (C) 65. (D) 66. (B)

67. याज्ञवल्क्यस्मृति में धर्मशास्त्रकारों के नाम हैं - UGC 73 J–2013

(A) एकविंशतिः (B) विंशतिः
(C) अष्टादश (D) चतुर्विंशतिः

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति – उमेशचन्द्र पाण्डेय, भू0 पृष्ठ- 28

68. माता-पिता के द्वारा उत्सृष्ट पुत्र होता है- UGC 73 D–2013

(A) कानीनः (B) अपविद्धः
(C) कृत्रिमः (D) पौनर्भवः

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति (2.132)–उमेशचन्द्र पाण्डेय, पृष्ठ- 287,288

69. त्रयोदश संस्कारों का वर्णन है- UGC 73 D–2013

(A) व्यासस्मृतौ (B) विष्णुस्मृतौ
(C) मनुस्मृतौ (D) याज्ञवल्क्यस्मृतौ

स्रोत–भारतीय संस्कृति – दीपक कुमार, पृष्ठ 109

70. ''यं पुरुषं निःश्रेयसेन संयुक्तिः सः'' - उच्यते- UGC 73 D–2013

(A) धर्मः (B) अर्थः
(C) कामः (D) इन्द्रियविशेषः

स्रोत–

71. दायादों में परिगणित नहीं होता है-UGC 73 D–2013

(A) पितामहधनम्
(B) पितृधनम्
(C) मित्रसकाशाद्यल्लब्धम्
(D) पितृद्रव्यविनिमयेन विद्यया लब्धं धनम्

याज्ञवल्क्यस्मृति (2.118)- उमेशचन्द्र पाण्डेय, पृष्ठ- 273-75

72. स्त्री-शूद्रादि के द्वारा ज्ञातव्य मन्त्र है-UGC 73 D–2013

(A) षडक्षरः (B) त्र्यक्षरः
(C) पञ्चाक्षरः (D) द्वादशाक्षरः

स्रोत–

73. अज्ञानकृत ब्रह्मवधव्रत का अङ्ग होता है- UGC 73 S–2013

(A) सुवर्णदानम् (B) धेनुदानम्
(C) आपद्ग्रस्तब्राह्मत्राणम् (D) तुलादानम्

स्रोत–

74. याज्ञवल्क्यस्मृति में संस्कारों का निरूपण किया गया है- UGC 73 J–2014

(A) दश (B) पञ्चदश
(C) त्रयोदश (D) द्वादश

स्रोत–हिन्दू-संस्कार - राजबली पाण्डेय, पेज - 24

75. याज्ञवल्क्यस्मृत्यनुसारं रिक्ते स्थाने कः शब्दः उपयुक्तः दर्शने प्रत्यये दाने .... विधीयते? UGC 25 J–2016

(A) व्यवहारः (B) प्रातिभाव्यम्
(C) ऋणादानम् (D) वाक्पारुष्यम्

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति (2/53)- उमेशचन्द्र पाण्डेय, पृष्ठ-211

76. मनुः ब्राह्मणेभ्यः किं कार्यं न अकल्पयत्? RPSC SET–2013-14

(A) अध्ययन अध्यापनम् (B) यजनं याजनम्
(C) प्रजानां रक्षणम् (D) दानप्रतिग्रहम्

स्रोत–मनुस्मृति (1/88)- शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पृष्ठ- 106

77. मनुस्मृत्यनुसारं गुरुगतां विद्यां कोऽधिगच्छति? RPSC-SET–2013-14

(A) शुश्रूषुः (B) पिपासुः
(C) बुभुक्षुः (D) धनेच्छुः

स्रोत–मनुस्मृति (2/218) – गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ- 134

78. मनुस्मृत्यनुसारं ब्रह्मा ऋग्वेदं कस्माद् दुदोह– RPSC SET–2013-14

(A) अग्नेः (B) वायोः
(C) रवेः (D) चन्द्रात्

मनुस्मृति (1/23)–शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पृष्ठ- 85-86

79. वृकोदरशब्दे 'वृक' इति शब्दस्य .... अर्थः। GJ SET–2016

(A) अग्निविशेषः (B) वृक्षविशेषः
(C) हस्ती (D) वृषभः

स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/35) – रामसेवक दुबे, पृष्ठ- 123

67. (B) 68. (B) 69. (C) 70. (A) 71. (C) 72. (C) 73. (B) 74. (D) 75. (B) 76. (C) 77. (A) 78. (A) 79. (D)

80. मनोरभिप्रायेण यज्ञीयः देशः कः? K SET–2015

(A) ब्राह्मणः संचारदेशः (B) कृष्णसारमृग-संचारप्रदेशः
(C) गोसंचारप्रदेशः (D) जनसंचारप्रदेशः

स्रोत–मनुस्मृति (2/23) – गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ- 69

81. वेदव्रतानि भवन्ति - UGC 73 J–2014

(A) चत्वारि (B) पञ्च
(C) षट् (D) सप्त

स्रोत–

82. (i) क्रोधजन्य व्यसन होते हैं -
(ii) मनुना क्रोधजानि व्यसनानि कियन्ति अभिहितानि- UGC 25 D–2013, J–2015 UGC 73 J–2014

(A) पञ्च (B) अष्टौ
(C) षट् (D) एकादश

स्रोत–मनुस्मृति (7/45)–गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ- 166

83. वृद्धिश्राद्ध है - UGC 73 J–2014

(A) नैमित्तिकम् (B) नित्यम्
(C) काम्यम् (D)साम्वत्सरिकम्

स्रोत–निर्णयसिन्धु – व्रजरत्न भट्टाचार्य, पृष्ठ- 845

84. नदी शिवालय तीर्थ सूर्यादि के निकट जप होता है- UGC 73 J–2014

(A) निष्फलः (B) सहस्रफलदः
(C) सर्वफलदः (D) अनिष्टफलदः

स्रोत–

85. निष्क्रमणसंस्कारः कर्तव्यः - UGC 25 J–2012

(A) प्रथमे मासि (B) द्वितीये मासि
(C) तृतीये मासि (D) चतुर्थे मासि

स्रोत–मनुस्मृति (2/34) – गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ- 73

86. मृगया गण्यते - UGC 25 J–2012

(A) कामजगणे (B) क्रोधजगणे
(C) लोभजगणे (D) मोहजगणे

स्रोत–मनुस्मृति (7/47) – गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ- 167

87. विवादेषु उपदर्शितो व्यवहारो वर्तते-UGC 25 J–2012

(A) एकपाद् (B) द्विपाद्
(C) त्रिपात् (D) चतुष्पाद्

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति (2/8) – गङ्गासागर राय, पृष्ठ- 171

88. स्मृत्योर्विरोधे कः बलवान् ? UGC 25 J–2012, K SET–2013

(A) व्यवहारः (B) न्यायः
(C) राजा (D) न्यायाधीशः

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति (2/21) – गङ्गासागर राय, पृष्ठ- 179

89. उपनयनसंस्कारे राज्ञः दण्डो भवति - UGC 25 D–2012

(A) केशान्तिकः (B) ललाटसम्मितः
(C) नासिकान्तिकः (D) कर्णान्तिकः

स्रोत–मनुस्मृति (2/46) – गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ- 78

90. अर्थदूषणं वर्तते - UGC 25 D–2012

(A) कामजगणे (B) क्रोधजगणे
(C) लोभजगणे (D) मोहजगणे

स्रोत–मनुस्मृति (7/48) – गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ- 167

91. 'अङ्गुलिमूले' किं तीर्थं भवति ? UGC 25 J–2013

(A) ब्राह्मतीर्थम् (B) प्रजापतितीर्थम्
(C) दैवतीर्थम् (D) पितृतीर्थम्

स्रोत–मनुस्मृति (2/59) – गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ- 83

92. ब्राह्म तीर्थ कहाँ होता है? UGC 73 D–2015

(A) अङ्गुष्ठप्रदेशिन्योर्मध्ये (B) अङ्गुष्ठमूलस्याधोभागे
(C) करतलमध्ये (D) कनिष्ठाङ्गुलिमूले

स्रोत–मनुस्मृति (2/59) – गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ- 83

93. धर्म के विषय में कौन-सा प्रमाण सर्वमान्य है? UGC 73 D–2015

(A) श्रुतिप्रमाणम् (B) स्मृतिप्रमाणम्
(C) आत्मतुष्टिप्रमाणम् (D) ज्ञानमाचारप्रमाणम्

स्रोत–मनुस्मृति (2/13) – गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ- 65

94. मनुना राजा स्वराष्ट्रे कीदृशोऽभिप्रेतः ? UGC 25 J–2013

(A) भृशदण्डः (B) अजिह्मः
(C) क्षमान्वितः (D) न्यायवृत्तः

स्रोत–मनुस्मृति (7/32) – गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ- 160

80. (B)	81. (A)	82. (B)	83. (A)	84. (*)	85. (D)	86. (A)	87. (D)	88. (B)	89. (B)
90. (B)	91. (B)	92. (B)	93. (A)	94. (D)					

95. केशान्तसंस्कारस्य काल उक्तः क्षत्रियार्थम् - **UGC 25 S–2013**

(A) द्वादशे वर्षे (B) षोडशे वर्षे
(C) द्वाविंशे वर्षे (D) चतुर्विंशे वर्षे

स्रोत–मनुस्मृति (2/65) – गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ- 85

96. याज्ञवल्क्यदिशा मानुषं प्रमाणं कतिविधम् ? **UGC 25 S–2013**

(A) एकविधम् (B) द्विविधम्
(C) त्रिविधम् (D) चतुर्विधम्

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति (2/22) – गङ्गासागर राय, पृष्ठ- 180

97. दिवास्वप्नः गण्यते - **UGC 25 S–2013**

(A) लोभजगणे (B) मोहजगणे
(C) क्रोधजगणे (D) कामजगणे

स्रोत–मनुस्मृति (7/47) – गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ- 167

98. मनुना चूडाकर्मणः कालः उक्तः - UGC 25 D–2013

(A) पञ्चमे वर्षे (B) चतुर्थे वर्षे
(C) द्वितीये वर्षे (D) प्रथमे वर्षे

स्रोत–मनुस्मृति (2/35) – गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ- 74

99. स्मृत्यपेतकारिणः सभ्याः कति गुणेन दमेन दण्ड्याः? **UGC 25 D–2013**

(A) पञ्चगुणेन (B) चतुर्गुणेन
(C) त्रिगुणेन (D) द्विगुणेन

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति (2/4) – गङ्गासागर राय, पृष्ठ- 163

100. (i) मनुना अन्नप्राशनस्य काल उक्तः -
(ii) अन्नप्राशनसंस्कारः कस्मिन् मासे विधीयते–
(iii) अन्नप्राशनं कदा क्रियते– **UGC 25 J–2014**
BHU AET–2012, 2013

(A) द्वितीये मासे (B) चतुर्थे मासे
(C) षष्ठे मासे (D) अष्टमे मासे

स्रोत–मनुस्मृति (2/34) – गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ- 73

101. याज्ञवल्क्यदिशा वस्त्रस्य वृद्धिरुक्ता-UGC 25 J–2014

(A) द्विगुणा (B) त्रिगुणा
(C) चतुर्गुणा (D) पञ्चगुणा

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति (2/39) – गङ्गासागर राय, पृष्ठ- 196

102. राजा निधिं लब्ध्वा ततः कियन्तं गृह्णीयात् ? **UGC 25 J–2014**

(A) अर्धम् (B) षष्ठांशम्
(C) दशांशम् (D) सर्वम्

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति (2/34)-गङ्गासागर राय, पृष्ठ- 192,193

103. 'ईर्ष्या' गण्यते - **UGC 25 J–2014**

(A) कामजगणे (B) लोभजगणे
(C) क्रोधजगणे (D) मोहजगणे

स्रोत–मनुस्मृति (7/48) – गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ- 167

104. विश्वरूप के द्वारा किस ग्रन्थ की व्याख्या की गयी है? **UGC 73 J–2016**

(A) ऋग्वेदस्य (B) याज्ञवल्क्यस्मृतेः
(C) अर्थशास्त्रस्य (D) शुक्रनीतेः

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति – उमेशचन्द्र पाण्डेय, भू.पृष्ठ- 22

105. याज्ञवल्क्यस्मृति के अनुसार पैशाच विवाह किस प्रकार होता है? **UGC 73 J–2016**

(A) द्रविणादानात् (B) कन्याकाछलात्
(C) मिथः समयात् (D) युद्धहरणात्

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति (1/61)–उमेशचन्द्र पाण्डेय, पृष्ठ- 25

106. मिताक्षरा के अनुसार 'नाराशंसी' के पद का क्या अर्थ है? **UGC 73 J–2016**

(A) प्रश्नोत्तररूपवेदवाक्यम् (B) धर्मशास्त्रम्
(C) रुद्रदैवत्यमन्त्राः (D) महाभारतम्

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति (1/45) उमेशचन्द्र पाण्डेय, पृष्ठ- 17

107. ''श्रुताध्ययनसम्पन्ना धर्मज्ञाः सत्यवादिनः।
राज्ञा सभासदः कार्या रिपौ मित्रे च ये समाः॥''
इत्ययं श्लोकः कस्मिन् ग्रन्थेऽस्ति–
RPSC SET–2013-14

(A) मनुस्मृतौ (B) याज्ञवल्क्यस्मृतौ
(C) पाराशरस्मृतौ (D) बौधायनस्मृतौ

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति (2/2) – उमेशचन्द्र पाण्डेय, पृष्ठ- 164

95. (C) 96. (C) 97. (D) 98. (D) 99. (D) 100. (C) 101. (C) 102. (A) 103. (C) 104. (B) 105. (B) 106. (C) 107. (B)

108. सुरापणे सुरां पीत्वा बहु ऋणी पिता मृतः, तस्य सुराऋणप्रसङ्गे पुत्रेण .... कर्तव्यमिति याज्ञवल्क्य उपदिशति– GJ SET–2016

(A) एकसम्वत्सरे ऋणः परिशोधनीयः
(B) शक्त्यनुरूपं परिशोधनीयः
(C) असमर्थश्चेत् दातुं न बाध्यः
(D) समर्थोऽपि न दास्यति

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति

109. गोयुग्म लेकर विवाह होता है- UGC 73 D–1992

(A) दैवविवाह (B) आर्षविवाह
(C) ब्रह्मविवाह (D) गान्धर्वविवाह

स्रोत–कौटिलीय अर्थशास्त्र – वाचस्पति गैरोला, पृष्ठ- 261

110. राजा कौन होता है- UGC 73 D–1994

(A) क्षत्रिय (B) गुणवान्
(C) अभिषिक्त (D) महापुरुष

स्रोत–मनुस्मृति (7/2) – गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ- 148

111. 'धर्म' का एक लक्षण है - UGC 73 D–1999

(A) स्वस्य च प्रियमात्मनः (B) स्थिरसुखम्
(C) स्वेच्छाचारः (D) कोई नहीं

स्रोत–मनुस्मृति (2/12) – गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ- 65

112. कः एकः कामजव्यसने न गणितः ? HE–2015

(A) मृगया (B) परिवादः
(C) दिवास्वप्नः (D) असूया

स्रोत–मनुस्मृति (7/47) – गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ- 167

113. याज्ञवल्क्यमत से दण्डभेद हैं - UGC 73 D–2014

(A) पञ्च (B) चत्वारः
(C) षट् (D) अष्टौ

याज्ञवल्क्यस्मृति- (1/367)–उमेशचन्द्र पाण्डेय, पृष्ठ- 162

114. निम्नलिखित में से कौन-सी प्रथा चतुष्टय वेदोत्तर काल में प्रचलित हुई - I.A.S.–1994

(A) धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष
(B) ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र
(C) ब्रह्मचर्य, गृहस्थाश्रम, वानप्रस्थ, संन्यास
(D) इन्द्र, सूर्य, रुद्र, मरुत्

स्रोत–

115. मिथ्याभियोगी कति गुणं धनं दद्यात् – UGC 25 D–2012, 2013

(A) द्विगुणम् (B) त्रिगुणम्
(C) चतुर्गुणम् (D) पञ्चगुणम्

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति (2/11) - गंगासागर राय, पेज-173

116. चूडाकरणं कदा क्रियते ? BHU AET–2012

(A) चतुर्थवर्षे (B) पञ्चमवर्षे
(C) दशमे मासे (D) सम्वत्सरे

स्रोत–मनुस्मृति (2/35) – गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ- 74

117. ''अग्निदानाञ्च ये लोका ये च स्त्रीबालघातिनाम् स तान् सर्वानवाप्नोति'' इति याज्ञवल्क्यवचनं येन सम्बद्धं तत्– UGC 25 J–2016

(A) वाक्पारुष्यम् (B) दण्डपारुष्यम्
(C) मिथ्यासाक्ष्यम् (D) सुरापानम्

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति (2/74)–उमेशचन्द्र पाण्डेय, पृष्ठ- 227

118. वह व्यवस्थाकार जिसने सम्पत्ति के विभाजन की प्रथम बार व्याख्या की? UGC 06 D–2004

(A) विष्णु (B) बृहस्पति
(C) मनु (D) याज्ञवल्क्य

स्रोत–मनुस्मृति

119. शाकविक्रेतुः .... लाभो भवेत् – GJ SET–2016

(A) दश पञ्च वा प्रतिशतम् (B) विंशति प्रतिशतम्
(C) पञ्चाशत् प्रतिशतम् (D) त्रिंशत् प्रतिशतम्

स्रोत–

120. (i) इदमस्ति क्रोधजं व्यसनम् - UK SLET–2015
(ii) किं क्रोधजं व्यसनम् – BHU AET–2011

(A) परिवादः (B) मदः
(C) पैशुन्यम् (D) तौर्यत्रिकम्

स्रोत–मनुस्मृति (7/48) – गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ- 167

121. मनुस्मृत्यनुसारं सर्वव्यसनमूलं किम् ? UGC 25 D–2014, BHU AET–2011

(A) कामः (B) क्रोधः
(C) लोभः (D) मोहः

स्रोत–मनुस्मृति (7/49) – गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ- 168

108. (*) 109. (B) 110. (C) 111. (A) 112. (D) 113. (B) 114. (C) 115. (A) 116. (D) 117. (C) 118. (C) 119. (*) 120. (C) 121. (C)

122. (i) मनुमते साक्षाद्धर्मस्य लक्षणं कतिविधम् ?
(ii) धर्मस्य लक्षणं किम् ? UGC 25 D–2014

(A) एकविधम् (B) द्विविधम्
(C) त्रिविधम् (D) चतुर्विधम्

स्रोत–मनुस्मृति (2/12) – गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ- 65

123. श्रुतिनामर्थानुगामिग्रन्थाः उच्यन्ते - RPSC ग्रेड II (TGT)–2014

(A) पुराणानि (B) कालिदासस्य नाटकानि
(C) भासस्य नाटकानि (D) स्मृतयः

स्रोत–मनुस्मृति (2/10) – गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ- 63

124. आठवें वर्ष में उपनयन विहित है- UGC 73 D–2006

(A) अन्य (B) ब्राह्मण
(C) क्षत्रिय (D) वैश्य

स्रोत–मनुस्मृति (2/36) – गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ- 74

125. व्यवहार के पाद होते हैं - UGC 73 D–2006, 2008

(A) चार (B) तीन
(C) पाँच (D) छः

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति – गङ्गासागर राय, पृष्ठ भू. - 04

126. ब्राह्मणों का मरणाशौच कितने दिन का होता है ? UGC 73 J–2007, 2014

(A) दस (B) नव
(C) पन्द्रह (D) तीस

स्रोत–निर्णयसिन्धु – व्रजरत्न भट्टाचार्य, पृष्ठ- 867

127. (i) धन लेकर किया जाने वाला विवाह है ?
(ii) शुल्कमादाय यो विवाहः क्रियते सः कः? UGC 25 D–2013, UGC 73 J–2013

(A) आसुरः (B) दैवः
(C) प्राजापत्यः (D) पैशाचः

स्रोत–कौटिलीय अर्थशास्त्र – वाचस्पति गैरोला, पृष्ठ- 261

128. (i) सुरा कतिविधा? UGC 73 J–2009
(ii) मनुमत में सुरा कितने प्रकार की है। BHU AET–2011

(A) पञ्चविधा (B) त्रिविधा
(C) नवविधा (D) षड्विधा

स्रोत–मनुस्मृति (11/94)–शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पृष्ठ- 802

129. ''ज्येष्ठं वा श्रेष्ठभागेन सर्वे वा स्युः समांशिनः'' – याज्ञवल्क्यस्मृतेः कस्य प्रकरणस्य श्लोकार्द्धोऽयम्? UGC 73 J–2016

(A) राजधर्मप्रकरणस्य (B) गृहस्थधर्मप्रकरणस्य
(C) दायविभागप्रकरणस्य (D) ऋणादानप्रकरणस्य

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति (2/114) – गङ्गासागर राय, पृष्ठ- 255

130. ''अमावास्या गुरुं हन्ति शिष्यं हन्ति चतुर्दशी।
ब्रह्माऽष्टकापौर्णमास्यौ तस्मात्ताः परिवर्जयेत्॥''
मनु के अनुसार यहाँ तिथियों का परिवर्जन किस निमित्त से है– UGC 73 J–2016

(A) मन्त्रजापनिमित्तिकम् (B) यज्ञानुष्ठाननिमित्तकम्
(C) दक्षिणादाननिमित्तकम् (D) वेदाध्ययनाध्यापननिमित्तकम्

स्रोत–मनुस्मृति (4/114)–शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पृष्ठ-321

131. याज्ञवल्क्यस्मृत्यनुसारं सभासदलक्षणं किम्? K SET–2015

(A) व्यवहारज्ञानवत्वम्
(B) धनाधिकारसम्पन्नत्वम्
(C) श्रुताध्ययनसम्पन्नत्वे सति धर्मज्ञत्वम्
(D) शारीरबलवत्वम्

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति (2/2) – गङ्गासागर राय, पृष्ठ- 162

132. 'असपिण्ड द्विजं प्रेतं विप्रो निर्हृत्य बन्धुवत्' विशुद्ध होता है–

(A) त्रिरात्रेण (B) नवरात्रेण
(C) पञ्चरात्रेण (D) दशरात्रेण

स्रोत–मनुस्मृति (5/101)–शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पृष्ठ-397

133. ''धर्मं जिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः''– कस्य स्मृतौ वर्तते– K-SET–2013

(A) याज्ञवल्क्यस्य (B) पराशरस्य
(C) मनोः (D) आपस्तम्बस्य

स्रोत–मनुस्मृति (2/13)–शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पृष्ठ- 120

134. मनुस्मृत्युनुसारेण सरस्वतीदृषद्वत्योर्देवनद्योर्मध्ये देशोऽस्ति? T-SET–2014

(A) आर्यावर्तः (B) कुरुक्षेत्रम्
(C) मध्यप्रदेशः (D) ब्रह्मावर्तः

स्रोत–मनुस्मृति (2/17) – गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ- 67

122. (D) 123. (D) 124. (B) 125. (A) 126. (A) 127. (A) 128. (B) 129. (C) 130. (D) 131. (C) 132. (A) 133. (C) 134. (D)

135. मनुस्मृत्यनुसारेण कः परमो धर्मः? T-SET–2014, GJ SET -2013

(A) अहिंसा (B) सत्यम्
(C) आचारः (D) परोपकारः

स्रोत–मनुस्मृति (1/108) – गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ- 51

136. याज्ञवल्क्यस्मृत्यनुसारेण सभासदः भवन्ति– T-SET–2014

(A) सत्यवादिनः (B) ब्रह्मचारिणः
(C) शिल्पिनः (D) धनवन्तः

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति (2/2) – गङ्गासागर राय, पृष्ठ- 162

137. स्मार्त्तधर्मः कतिविधः - UGC 73 J–2009

(A) पञ्चविधः (B) षड्विधः
(C) नवविधः (D) चतुर्विधः

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति – उमेशचन्द्र पाण्डेय, पृष्ठ- 01

138. जातकर्म कब करना चाहिये - UGC 73 D–2009

(A) जन्मनः प्राक् (B) प्राङ्नाभिवर्धनात्
(C) अशौचापगमात् प्राक् (D) अशौचापगमात् परम्

स्रोत–मनुस्मृति (2/29) – गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ- 71

139. ब्रह्मचारी के कितने प्रकार हैं ? UGC 73 D–2010, 2012

(A) चतुर्विधः (B) द्विविधः
(C) पञ्चविधः (D) नवविधः

स्रोत–मनुस्मृति – गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ भू. - 32

140. 'आर्त्तवीः' का अर्थ होता है ? UGC 73 D–2010

(A) अत्रिगोत्रोत्पन्ना (B) परिणीता
(C) ऋतुसंख्याः (D) व्यभिचारिणी

स्रोत–

141. 'उद्वाह' शब्द का अर्थ है ? UGC 73 J–2011

(A) वरस्य विवाहः (B) कन्यायाः विवाहः
(C) विधवायाः विवाहः (D) बालविवाहः

स्रोत–मनुस्मृति – गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ भू. – 31

142. कर्त्रशौच होता है- UGC 73 J–2012

(A) चतुर्विधम् (B) पञ्चविधम्
(C) द्विविधम् (D) षड्विधम्

स्रोत–

143. ब्राह्मणपुरुष शूद्रा स्त्री से पैदा होता है-UGC 73 D–2014

(A) पारशवः (B) रथकारः
(C) पुल्कसः (D) सूतः

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति (1/91)–उमेशचन्द्र पाण्डेय, पृष्ठ-40-41

144. मनु के किस शिष्य ने वर्तमान मनुस्मृति का आख्यान किया है ? BHU AET–2011

(A) भृगु (B) वसिष्ठ
(C) प्रचेता (D) नारद

स्रोत–मनुस्मृति (1/59,60)–गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ– 33

145. ब्रह्मचारीधर्म मनुस्मृति के किस अध्याय में वर्णित है? BHU AET–2011

(A) द्वितीय (B) तृतीय
(C) चतुर्थ (D) द्वादश

स्रोत–मनुस्मृति – शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पृष्ठ - 50

146. एकाग्रचित मनु से वर्णादि धर्मों की जिज्ञासा किन लोगों ने की ? BHU AET–2011

(A) मनुष्यों ने (B) महर्षियों ने
(C) देवताओं ने (D) राक्षसों ने

स्रोत–मनुस्मृति (1-4) गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ- 06

147. मारीचि आदि प्रजापतियों की संख्या कितनी है ? BHU AET–2011

(A) सात (B) आठ
(C) नौ (D) दश

स्रोत–मनुस्मृति (1-35) गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ 24,25

148. किस युग में धर्म चारों पादों से युक्त रहता है ? BHU AET–2011

(A) द्वापर (B) त्रेता
(C) सत्ययुग (D) कलियुग

स्रोत–मनुस्मृति (1/81) – गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ- 40

149. कृषि कार्य किस वर्ण का धर्म है? BHU AET–2011

(A) ब्राह्मण का (B) वैश्य का
(C) शूद्र का (D) किसी अन्य का

स्रोत–मनुस्मृति (1/90) – गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ- 45

135. (C) 136. (A) 137. (B) 138. (B) 139. (B) 140. (*) 141. (B) 142. (*) 143. (A) 144. (A) 145. (A) 146. (B) 147. (D) 148. (C) 149. (B)

150. मानवों में सर्वश्रेष्ठ कौन हैं ? BHU AET–2011
(A) क्षत्रिय (B) वैश्य
(C) ब्राह्मण (D) शूद्र
स्रोत–मनुस्मृति (1/94, 95, 96)–गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ- 47

151. सभी तपों का मूल क्या है ? BHU AET–2011
(A) विद्या (B) क्षमा
(C) धैर्य (D) आचार
स्रोत–मनुस्मृति (1/110) – गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ- 51

152. (i) मनुप्रोक्त धर्म का मूल क्या है?
(ii) धर्म का मूल क्या है? BHU AET–2010, 2011
(A) वेद (B) स्मृति
(C) पुराण (D) सदाचार
स्रोत–मनुस्मृति (2/6) – गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ- 59

153. मनोः उक्ति – त्रिवर्ग इति तु स्थितिः?
यहाँ 'त्रिवर्ग' पद का क्या अर्थ है? UGC 25 J–2016
(A) धर्मार्थकामाः (B) अर्थकाममोक्षाः
(C) ब्रह्मचर्यगृहस्थवानप्रस्थाः (D) ब्राह्मणक्षत्रियवैश्याः
स्रोत–मनुस्मृति (2/224) -शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन,पेज-186

154. याज्ञवल्क्यस्मृत्यनुसारेण व्यवहारान् कः पश्यति– K SET–2014
(A) न्यायाधीशः (B) व्यवहारविद्
(C) नृपः (D) मन्त्री
स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति (2/1) – गङ्गासागर राय, पृष्ठ- 161

155. दायविभागप्रकरणमस्ति– K SET–2013
(A) ऐतरेयब्राह्मणे (B) मनुस्मृतौ
(C) याज्ञवल्क्यस्मृतौ (D) चाणक्यनीतौ
स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति – गङ्गासागर राय, पृष्ठ भू॰- 11,6

156. मनुस्मृत्यनुसारं क्षत्रियः अर्हति– K SET–2013
(A) बैल्वपालाशौ (B) वाटखादिरौ
(C) पैलवौदुम्बरौ (D) आश्वत्थाम्रकौ
स्रोत–मनुस्मृति (2/45) – गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ- 78

157. मनुस्मृत्यनुसारं सनातनः अव्यक्तः सर्वप्रथमं किम् असृजत्? K-SET–2014
(A) अपः (B) तेजः
(C) वायुम् (D) पृथिवीम्
स्रोत–मनुस्मृति (1/8) – गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ- 10

158. गर्भ के दोषो का निराकरण किससे होता है ? BHU AET–2011
(A) चूडाकरण से (B) स्वाध्याय से
(C) महायज्ञों से (D) गृहयज्ञों से
स्रोत–मनुस्मृति (2.27) – गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ-70,71

159. पहले अथवा तीसरे वर्ष में कौन-सा संस्कार किया जाना चाहिए ? BHU AET–2011
(A) चूडाकरण (B) उपनयन
(C) वेदारम्भ (D) निष्क्रमण
स्रोत–मनुस्मृति (2/35) – गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ- 74

160. बलार्थी क्षत्रियवटु का उपनयन किस वर्ष में किया जाना चाहिए ? BHU AET–2011
(A) पाँचवें (B) छठवें
(C) सातवें (D) आठवें
स्रोत–मनुस्मृति (2/37) – गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ- 74

161. कपास से निर्मित यज्ञोपवीत किस वर्ण के ब्रह्मचारी के लिए है ? BHU AET–2011
(A) क्षत्रिय (B) वैश्य
(C) ब्राह्मण (D) तीनों का
स्रोत–मनुस्मृति (2/44) – गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ- 77

162. पूर्वाभिमुख होकर भोजन करने से क्या प्राप्त होती है? BHU AET–2011
(A) विद्या (B) आयु
(C) लक्ष्मी (D) यश
स्रोत–मनुस्मृति (2/52) – गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ- 80

163. मनु ने अपने किस शिष्य को धर्मोपदेश के लिए अधिकृत किया ? BHU AET–2011
(A) आरुणि (B) वल्लभ
(C) मरीचि (D) भृगु
स्रोत–मनुस्मृति (1/59) – गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ- 33

150. (C) 151. (D) 152. (A) 153. (A) 154. (C) 155. (C) 156. (B) 157. (A) 158. (A) 159. (A) 160. (B) 161. (C) 162. (B) 163. (D)

164. प्रथमो मनुः कथ्यते - BHU AET–2010

(A) वैवस्वतः (B) उत्तमजः
(C) चाक्षुषः (D) स्वायम्भुवः

स्रोत–मनुस्मृति (1/61) – गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ- 33

165. मनु सृष्टि के उत्पादक किसे मानते हैं ? BHU AET–2011

(A) जल को (B) परमात्मा को
(C) शिव को (D) किसी को भी नहीं

स्रोत–मनुस्मृति (1/8) – गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ- 11

166. मनु के अनुसार ब्राह्मण का सर्वोत्तम तप क्या है ? BHU AET–2011

(A) यज्ञ (B) पूजा
(C) वेदाभ्यास (D) कृषिकार्य

स्रोत–मनुस्मृति (2/166)–गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ-119-120

167. जनक याज्ञवल्क्य के क्या थे ? BHU AET–2011

(A) गुरू (B) भ्राता
(C) शिष्य (D) पिता

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति – उमेशचन्द्र पाण्डेय, पृष्ठ भू.- 33

168. याज्ञवल्क्य के विचारों का आधार कौन-सी स्मृति है– BHU AET–2011

(A) नारदस्मृति (B) पराशरस्मृति
(C) विष्णुस्मृति (D) मनुस्मृति

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति-उमेशचन्द्र पाण्डेय, पेज–325,337,340,344

169. कलियुग में किसकी प्रधानता है? BHU AET–2010

(A) दान की (B) यक्ष की
(C) सत्य की (D) तपस्या की

स्रोत–मनुस्मृति (1/86) – गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ- 44

170. यज्ञ करना किसका धर्म नहीं है ? BHU AET–2010

(A) ब्राह्मण (B) क्षत्रिय
(C) वैश्य (D) शूद्र

स्रोत–मनुस्मृति (1/88-91)–गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ-45, 46

171. ब्राह्मणों में सर्वश्रेष्ठ कौन है ? BHU AET–2010

(A) ब्रह्मविद् (B) विद्वान्
(C) कृतबुद्धि (D) कर्ता

स्रोत–मनुस्मृति (1/97) – गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ- 47

172. कलियुगे का स्मृतिः विहिता – CVVET–2017

(A) नारदस्मृतिः (B) मनुस्मृतिः
(C) पराशरस्मृतिः (D) याज्ञवल्क्यस्मृतिः

स्रोत–

173. धर्म जिज्ञासुओं के लिए प्रमाण क्या है ? BHU AET–2010

(A) श्रुति (B) पुराण
(C) दर्शन (D) ज्योतिष

स्रोत–मनुस्मृति (2/13) – गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ- 65

174. व्रात्य किसे कहते हैं ? BHU AET–2010

(A) समय पर उपनीत को
(B) निर्धारित समय पर उपनयन नहीं करने वाले को
(C) दोनों को
(D) दोनों में से किसी को भी नहीं

स्रोत–मनुस्मृति – गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ भू.- 26

175. ब्राह्मण का केशान्त संस्कार किस वर्ष में करना चाहिए? BHU AET–2011

(A) सोलहवें वर्ष में (B) अठारहवें वर्ष में
(C) बाइसवें वर्ष में (D) चौबीसवें वर्ष में

स्रोत–मनुस्मृति – गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ भू.- 29

176. किस प्रकार का जप सर्वोत्तम फलदायी होता है ? BHU AET–2010

(A) उपांशु (B) उच्चरित
(C) मानस (D) तीनों में से कोई नहीं

स्रोत–मनुस्मृति (2/85) – गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ- 92

177. क्षत्रिय की श्रेष्ठता किससे है ? BHU AET–2010

(A) बल से (B) ज्ञान से
(C) धन से (D) जन्म से

स्रोत–मनुस्मृति (2.37) – गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ- 74

178. गुरु की निन्दा से ब्रह्मचारी कौन सी योनि प्राप्त करता है ? BHU AET–2010

(A) खर (B) कुत्ता
(C) कृमि (D) कीट

स्रोत–मनुस्मृति (2/201)–गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ-129, 130

164. (D) 165. (B) 166. (C) 167. (C) 168. (A) 169. (A) 170. (D) 171. (B) 172. (C) 173. (A) 174. (B) 175. (A) 176. (C) 177. (A) 178. (B)

179. मनु किस शास्त्र से सम्बद्ध हैं ? BHU AET–2010
(A) अर्थशास्त्र (B) साहित्यशास्त्र
(C) पुराणशास्त्र (D) धर्मशास्त्र
स्रोत–मनुस्मृति (2/10)–गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ- 63, भू0-5

180. अभिवादनशील व्यक्ति क्या प्राप्त करता है ? BHU AET–2010
(A) आयु (B) धन
(C) बुद्धि (D) मृत्यु
स्रोत–मनुस्मृति (2/121)–गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ-104

181. धर्म के दशलक्षण किसके मत से हैं ? BHU AET–2010
(A) मनु (B) याज्ञवल्क्य
(C) पराशर (D) नारद
स्रोत–मनुस्मृति (6/92)–शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पृष्ठ-446

182. चूडाकर्म किस वर्ष में होता है ? UGC 73 J–2015
(A) चतुर्थे वर्षे (B) तृतीये वर्षे
(C) षष्ठे वर्षे (D) द्वितीये वर्षे
स्रोत–मनुस्मृति (2/35) – गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ- 74

183. (i) ब्राह्मणस्योपनयनं कदा भवति? BHU AET–2011
(ii) ब्राह्मण का उपनयन गर्भ से किस वर्ष में करना चाहिए?
(iii) ब्राह्मणानामुपनयनकालः – UGC 73 J–2015
CVVET–2015
(A) गर्भाष्टमे वर्षे (B) गर्भैकादशे वर्षे
(C) गर्भद्वादशे वर्षे (D) गर्भनवमे वर्षे
स्रोत–मनुस्मृति (2/36) – गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ- 74

184. अधस्तनेषु युग्मपर्यायेषु समीचीनं विचिनुत? MH SET–2013
(क) लेख्यम् **1. दिव्यम्**
(ख) तुलाविधि **2. साक्षिणः**
(ग) त्र्यवराः **3. पुत्रिकासुतः**
(घ) औरससमः **4. साक्षिमत्**

	क	ख	ग	घ
(A)	2	4	1	3
(B)	4	1	2	3
(C)	1	3	2	4
(D)	3	2	4	1

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति–उमेशचन्द्र पाण्डेय, पृष्ठ-236, 242, 224, 285

185. विप्र ब्रह्मचारी की मेखला कैसी होनी चाहिए ? UGC 73 J–2015
(A) मौञ्जी (B) मौर्वी
(C) शणतान्तवी (D) कार्पासी
स्रोत–मनुस्मृति (2/42) – गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ- 76

186. राजा का परम कर्त्तव्य क्या है ? UGC 73 J–2015
(A) धर्मसंरक्षणम् (B) राज्यविस्तारः
(C) अर्थसंग्रहः (D) प्रजारक्षणम्
स्रोत–मनुस्मृति (7/144) – गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ-488

187. मनुस्मृति के अनुसार राजा किस कारण से सभी प्राणियों को अभिभूत करता है ? UGC 73 J–2015
(A) देवांशेभ्यो निर्मितत्वात् (B) पौरुषवत्वात्
(C) शक्तिशालित्वात् (D) नीतिवत्वात्
स्रोत–मनुस्मृति (7/5) – गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ- 149

188. मनुस्मृति में स्त्रियों की तुलना किससे की गयी है? UGC 73 J–2015
(A) श्रियः (B) दुर्गायाः
(C) पार्वत्याः (D) सरस्वत्याः
स्रोत–मनुस्मृति (9/26)–शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पृष्ठ-642

189. आठ प्रकार के विवाहों का उचित क्रम क्या है ? UGC 73 J–2015
(A) आर्षः, दैवः, ब्राह्मः, प्राजापत्यः, गान्धर्वः, आसुरः, पैशाचः, राक्षसः
(B) ब्राह्मः, प्राजापत्यः, आर्षः, दैवः, पैशाचः, आसुरः, राक्षसः, गान्धर्वः
(C) ब्राह्मः, दैवः, आर्षः, प्राजापत्यः, आसुरः, गान्धर्वः, राक्षसः, पैशाचः
(D) दैवः, आर्षः, ब्राह्मः, प्राजापत्यः, पैशाचः, राक्षसः, गान्धर्वः, आसुरः
स्रोत–मनुस्मृति – गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ- भू031

190. प्राचीनकाले 'शिक्षायां कस्य प्रभावः' सर्वाधिकः आसीत् ? DSSSB PGT–2014
(A) धनस्य (B) राज्ञः
(C) गुरोः (D) संस्कारस्य
स्रोत–प्राचीन भारतीय संस्कृति-वीरेन्द्र कुमार सिंह, पेज–128

179. (D) 180. (A) 181. (A) 182. (B) 183. (A) 184. (B) 185. (A) 186. (D) 187. (A) 188. (A) 189. (C) 190. (C)

191. श्राद्धं कतिविधम् ? BHU AET–2010
(A) द्विविधम् (B) त्रिविधम्
(C) दशविधम् (D) द्वादशविधम्
स्रोत–निर्णयसिन्धु - व्रजरत्नभट्टाचार्य, पेज-629

192. कति पाकयज्ञाः ? BHU AET–2010
(A) दश (B) पञ्च
(C) चत्वारः (D) त्रयः
स्रोत–मनुस्मृति (2/86) -गिरिधर गोपाल शर्मा, पेज-92

193. कति उपायाः ? BHU AET–2010
(A) त्रयः (B) पञ्च
(C) चत्वारः (D) षट्
स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति (1/346)-उमेशचन्द्र पाण्डेय, पृष्ठ-153

194. कति वर्णाः ? BHU AET–2010
(A) त्रयः (B) चत्वारः
(C) सप्त (D) पञ्च
स्रोत–मनुस्मृति (1/31)–शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पृष्ठ- 88

195. ब्राह्मणस्याशौचं कति दिनात्मकम्? BHU AET–2010
(A) दश (B) द्वादश
(C) पञ्चदश (D) त्रिंशत्
स्रोत–निर्णयसिन्धु - व्रजरत्न भट्टाचार्य, पेज-866

196. कति महायज्ञाः? BHU AET–2010
(A) त्रयः (B) सप्त
(C) पञ्च (D) दश
स्रोत–मनुस्मृति (3/69)–शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पृष्ठ-218

197. (i) मनुस्मृति में विवाह के कितने प्रकार बताए गये हैं?
(ii) प्राचीन साहित्य में वर्णित विवाहों के प्रकार होते हैं?
(iii) कति विवाहाः सन्तिः? BHU AET–2010,
(iv) विवाहः कतिविधः? UGC 73 D–1994, 1996, 1999, 2007, J–2006, 2015, MP PSC–1996
(A) पञ्च (B) सप्त
(C) अष्ट (D) दश
स्रोत–मनुस्मृति – गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ भू0-31

198. किं पापं ब्रह्महत्यातुल्यम् ? BHU AET–2010
(A) कौटसाक्ष्यं (B) राजगामिपैशुनम्
(C) निक्षेपस्यापहरणम् (D) वेदनिन्दा
स्रोत–मनुस्मृति (11/55)–शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पृष्ठ-788

199. मनुसंहितानुसारं कामजव्यसनं कतिविधं भवति? UGC 25 J–2016
(A) दशविधम् (B) अष्टविधम्
(C) पञ्चविधम् (D) त्रिविधम्
स्रोत–मनुस्मृति (7/45) – गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ- 166

200. किं कामजं व्यसनम् ? BHU AET–2010
(A) दिवास्वप्नम् (B) अर्थदूषणम्
(C) असूया (D) साहसम्
स्रोत–मनुस्मृति (7/47) – गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ- 167

201. मनुमते पुत्रः कतिविधः ? BHU AET–2010
(A) दशविधः (B) द्वादशविधः
(C) त्रयोदशविधः (D) पञ्चदशविधः
स्रोत–मनुस्मृति (9/158)–शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पृष्ठ-680

202. मनुमते किमुत्तमं दुर्गम् ? BHU AET–2010
(A) महीदुर्गम् (B) जलदुर्गम्
(C) गिरिदुर्गम् (D) नृदुर्गम्
स्रोत–मनुस्मृति (7/71) – गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ- 177

203. (i) कति विद्यास्थानानि ? BHU AET–2010
(ii) याज्ञवल्क्यमतानुसारेण विद्यानां कति स्थानानि सन्ति? RPSC ग्रेड-I PGT-2015
(A) सप्त (B) दश
(C) द्वादश (D) चतुर्दश
स्रोत–काव्यमीमांसा (द्वितीय अध्याय) – गङ्गासागर राय पृष्ठ- 7

204. शूद्रः ब्राह्मण्यां कमुत्पादयति ? BHU AET–2010
(A) निषादम् (B) वैदेहकम्
(C) चाण्डालम् (D) सूतम्
स्रोत–कौटिलीय अर्थशास्त्र - वाचस्पति गैरोला,पेज-284

191. (D) 192. (C) 193. (C) 194. (B) 195. (A) 196. (C) 197. (C) 198. (B) 199. (A) 200. (A) 201. (B) 202. (C) 203. (D) 204. (C)

205. किं नाम देवतीर्थम् ? BHU AET–2010

(A) कनिष्ठामूलम् (B) तर्जनीमूलम्
(C) अङ्गुष्ठमूलम् (D) अङ्गुल्यग्रम्

स्रोत–मनुस्मृति (2/59) – गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ- 83

206. राजधर्मे कति गुणाः सन्ति ? BHU AET–2010

(A) त्रयः (B) षट्
(C) सप्त (D) अष्टौ

स्रोत–मनुस्मृति (7/160)–गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ-211

207. कस्मिन् वर्षे विद्यारम्भः कार्यः ? BHU AET–2010

(A) तृतीये (B) चतुर्थे
(C) पञ्चमे (D) षष्ठे

स्रोत–मनुस्मृति – गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ भू0-24

208. क्षत्रियायां शूद्रादुत्पादितः कः ? BHU AET–2010

(A) उग्रः (B) चाण्डालः
(C) निषादः (D) क्षत्ता

स्रोत–कौटिलीय अर्थशास्त्र - वाचस्पति गैरोला, पेज-284

209. भिक्षुकः कतिविधः? BHU AET–2010

(A) द्विविधः (B) त्रिविधः
(C) चतुर्विधः (D) पञ्चविधः

स्रोत–

210. नववर्षीयायाः कन्यायाः कीदृशी संज्ञा ? BHU AET–2010, 2013

(A) गौरी (B) कन्या
(C) रोहिणी (D) वृषली

स्रोत–सत्यार्थप्रकाश - स्वामीदयानन्द सरस्वती, पेज–72

211. केशान्तसंस्कारः कस्मिन् वर्षे भवति ? BHU AET–2010

(A) पञ्चमे (B) द्वादशे
(C) पञ्चदशे (D) षोडशे

स्रोत–मनुस्मृति (2/65) – गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ- 85

212. संन्यासिनां कृते कदा श्राद्धं विधीयते ? BHU AET–2011

(A) अष्टम्याम् (B) प्रतिपदि
(C) द्वादश्याम् (D) अमावस्यायाम्

स्रोत–निर्णयसिन्धु-व्रजरत्न भट्टाचार्य, पेज–796

213. क्षत्रियस्योपनयनं कदा भवति ? BHU AET–2011

(A) गर्भाष्टमे वर्षे (B) गर्भादैकादशे वर्षे
(C) गर्भाद् द्वादशे वर्षे (D) गर्भाद् दशमे वर्षे

स्रोत–मनुस्मृति – गिरिधर गोपाल शर्मा, भू. पृष्ठ- 25

214. क्षत्रियस्य मरणाशौचं कियत् ? BHU A ET–2011

(A) दशाहम् (B) द्वादशाहम्
(C) पञ्चदशाहम् (D) मासमेकम्

स्रोत–निर्णयसिन्धु - व्रजरत्नभट्टाचार्य, पेज–866

215. विज्ञानेश्वर ने कितने स्मार्तधर्म बताये हैं ? UGC 73 J–2008

(A) षट् (B) पञ्च
(C) चत्वारः (D) नव

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति-उमेशचन्द्र पाण्डेय, पेज-01

216. कः पितृयज्ञः ? BHU AET–2011

(A) देवपूजनम् (B) अतिथिपूजनम्
(C) श्राद्धम् (D) वेदाध्ययनम्

स्रोत–मनुस्मृति (3/70)–शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पृष्ठ 219

217. मनुना कतिविधं दुर्गं कथितम् ? BHU AET–2011

(A) चतुर्विधम् (B) पञ्चविधम्
(C) षड्विधम् (D) अष्टविधम्

स्रोत–मनुस्मृति (7/70)–गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ- 176,177

218. खटवाङ्गकपालधारणपूर्वकं प्रायश्चित्तम् अस्ति– UGC 73 D–2014

(A) ब्रह्मघातकस्य (B) सुरापस्य
(C) गुरुतुल्यस्य (D) स्तेनस्य

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति (3/243)-उमेशचन्द्र पाण्डेय, पेज-514-518

219. व्यवहारपदानि कति संख्यकानि ? BHU AET–2011

(A) द्वादश (B) पञ्चदश
(C) अष्टादश (D) विंशति

स्रोत–मनुस्मृति (8/4-7)-शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पेज-514

220. दण्डस्य कति स्थानानि ? BHU AET–2011

(A) पञ्च (B) त्रीणि
(C) अष्टौ (D) दश

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति (2.211) - उमेशचन्द्र पाण्डेय, पेज-344

205. (D) 206. (B) 207. (C) 208. (D) 209. (C) 210. (C) 211. (D) 212. (C) 213. (B) 214. (B) 215. (A) 216. (C) 217. (C) 218. (A) 219. (C) 220. (B)

221. नारी संदूषणानि कति संख्यकानि? BHU AET–2011

(A) चत्वारि (B) षट्
(C) सप्त (D) पञ्च

स्रोत–मनुस्मृति (9/13)-शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन,पेज-638

222. कः पुत्रः दायादबान्धवेषु नान्तर्भवति? BHU AET–2011

(A) दत्तकः (B) कानीनः
(C) औरसः (D) कृत्रिमः

स्रोत–मनुस्मृति (9/158)-शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन,पेज-680

223. (i) स्त्रीधन कितने प्रकार का है ? BHU AET–2011
(ii) स्त्रीधनं कतिविधं मनुना प्रतिपादितम् ?
UGC 73 D–2008, 2009

(A) चतुर्विधम् (B) पञ्चविधम्
(C) षड्विधम् (D) त्रिविधम्

स्रोत–(i) याज्ञवल्क्यस्मृति – गङ्गासागर राय, पृष्ठ भू.- 20
(ii) मनुस्मृति (9.194)

224. किं धनमविभाज्यम् ? BHU AET–2011

(A) पितृधनम् (B) मातृधनम्
(C) विद्याधनम् (D) पितामहधनम्

याज्ञवल्क्यस्मृति (2/117,119,120)–गङ्गासागर राय, पृष्ठ-258-261

225. किं महापातकं भवति ? BHU AET–2011

(A) गोवधः (B) शूद्रहत्या
(C) सुरापानम् (D) क्षत्रियसुवर्णहरणम्

स्रोत–मनुस्मृति (11/54)-शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पृष्ठ-788

226. कानि राज्याङ्गानि ? BHU AET–2011

(A) त्रीणि (B) पञ्च
(C) षट् (D) सप्त

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति (1/353)-उमेशचन्द्र पाण्डेय,पेज-156

227. मनुसंहितानुसारं सचिवानां संख्या भवेत्–
UGC 25 J–2016

(A) 3-4 (B) 5-6
(C) 7-8 (D) 9-10

स्रोत–मनुस्मृति (7/54)–गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ-170

228. ''अबन्ध्यं यश्च बध्नाति बद्धं यश्च प्रमुञ्चति।
अप्राप्तयव्यवहारं च स दाप्यो दममुत्तमम्॥''
याज्ञवल्क्यस्मृतौ अयं श्लोकः कस्मिन् प्रकरणे दृश्यते?
MH SET–2013

(A) दण्डपारुष्यप्रकरणे (B) साहसप्रकरणे
(C) वेतनदानप्रकरणे (D) स्तेयप्रकरणे

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति (2/243)–गङ्गासागर राय, पृष्ठ-333,335

229. 'अगृहीते समं दाप्यो भृत्यै रक्ष्य उपस्करः।'
याज्ञवल्क्यस्मृतौ कस्मिन् प्रकरणे इदं वाक्यं दृश्यते?
MH SET–2013

(A) दायविभागप्रकरणे (B) क्रीतानुशयप्रकरणे
(C) वेतनदानप्रकरणे (D) द्यूतसमाह्वयप्रकरणे

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति (2/193)–गङ्गासागर राय, पृष्ठ-314

230. क्षत्रियात् शूद्रायां कः जायते ? BHU AET–2011

(A) पारशवः (B) उग्रः
(C) अम्बष्ठः (D) करणः

स्रोत–कौटिलीय-अर्थशास्त्रम् - वाचस्पति गैरोला, पेज-284

231. ब्राह्मणस्य विशिष्टं कर्म किम् ? BHU AET–2011

(A) याजनं (B) वेदाभ्यासः
(C) प्रतिग्रहः (D) दानम्

स्रोत–मनुस्मृति (10.80)-शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पेज–757

232. सुरापानसमं पापं किम् ? BHU AET–2011, 2013

(A) निक्षेपापहरणम् (B) वेदनिन्दा
(C) राजगामिपैशुनम् (D) समुत्कर्षार्थमनृतम्

स्रोत–मनुस्मृति (11/56)-शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पेज–789

233. सप्ताङ्गेषु कः प्रथमः ? BHU AET–2011

(A) अमात्यः (B) स्वामी
(C) कोशः (D) राष्ट्रम्

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति (1/353)-उमेशचन्द्र पाण्डेय, पेज-156

221. (B) 222. (B) 223. (C) 224. (C) 225. (C) 226. (D) 227. (C) 228. (B) 229. (C) 230. (B) 231. (B) 232. (B) 233. (B)

234. (i) बच्चे का नामकरण जन्म से कौन-से दिन होता है?
(ii) मनुमतानुसारं नामकरणं कदा विधीयते ?
(iii) मनुस्मृत्यनुसारं निम्नलिखितेषु जन्मतः कस्मिन् दिने जातकस्य नामकरणं विधेयम्?
(iv) नामकरणं भवति-
BHU AET–2011, UGC 73 D–2014, 2015, Jn-2017

(A) एकादशदिवसे (B) द्वादशदिवसे
(C) षष्ठदिवसे (D) मासात् परम्

स्रोत–मनुस्मृति (2/30) – गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ- 72

235. क्षत्रियस्य कः धर्म्यः विवाहः ? BHU AET–2013

(A) ब्राह्मः (B) आर्षः
(C) प्राजापत्यः (D) गान्धर्वः

स्रोत–मनुस्मृति (3/26)-शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पेज–204

236. अध्यापनेन कः यज्ञः सम्पद्यते ? BHU AET–2013

(A) पितृयज्ञः (B) देवयज्ञः
(C) ब्रह्मयज्ञः (D) नृयज्ञः

स्रोत–मनुस्मृति (3.70)-शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पेज–219

237. मनुष्यः कस्मिन् आश्रमे सङ्गं परित्यजेत् ? BHU AET–2013

(A) संन्यासाश्रमे (B) गृहस्थाश्रमे
(C) ब्रह्मचर्याश्रमे (D) वानप्रस्थाश्रमे

स्रोत–मनुस्मृति (6.33)

238. कामजं व्यसनं किम् ? BHU AET–2013

(A) पैशुन्यः (B) ईर्ष्या
(C) परिवादः (D) पारुष्यम्

स्रोत–मनुस्मृति (7/47) – गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ- 167

239. क्षत्रियाद् ब्राह्मणकन्यायां कः जायते ? BHU AET–2013

(A) उग्रः (B) अम्बष्ठः
(C) पारशवः (D) सूतः

स्रोत–कौटिलीय अर्थशास्त्र - वाचस्पति गैरोला, पेज-284

240. वैश्यस्य विशिष्टं कर्म किम् ? BHU AET–2013

(A) शस्त्रधारणम् (B) प्रतिग्रहम्
(C) वार्ता (D) अध्यापनम्

स्रोत–मनुस्मृति (10.80)-शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पेज–756

241. सीमन्तोन्नयनं कस्मिन् मासे क्रियते ? BHU AET–2013

(A) चतुर्थे (B) पञ्चमे
(C) सप्तमे (D) अष्टमे

स्रोत–मनुस्मृति -गिरिधर गोपाल शर्मा, भू.पृष्ठ-18,19

242. द्रविणदानं कस्मिन् विवाहे क्रियते ? BHU AET–2013

(A) गान्धर्वे (B) आसुरे
(C) राक्षसे (D) आर्षे

स्रोत–मनुस्मृति (3/31)-शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पृष्ठ-206

243. पत्नी कीदृशी न भवेत् ? BHU AET–2013

(A) संयता (B) दक्षा
(C) आलस्यरहिता (D) व्ययशीला

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति (1.43)

244. श्रुतार्थस्योत्तरं कुत्र लेख्यम् ? UGC 73 J–2012

(A) नृपसन्निधौ (B) पूर्वविदकसन्निधौ
(C) सभासदसन्निधौ (D) ब्राह्मणसन्निधौ

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति (2/7) - गंगासागर राय,पेज-167

245. कर्णवेधः कदा प्रशस्यते ? BHU AET–2013

(A) चतुर्थे मासि (B) पञ्चमे मासि
(C) नवमे मासि (D) दशमे मासि

स्रोत–मनुस्मृति - गिरिधर गोपाल शर्मा, भू.पृष्ठ-24

246. वैश्यस्य कः मुख्यः विवाहः ? BHU AET–2013

(A) आसुरः (B) आर्षः
(C) राक्षसः (D) गान्धर्वः

मनुस्मृति (3/24) - शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन,पेज-204

247. निम्नलिखित में से कौन मध्यकालीन भारत के यशस्वी विधिवेत्ता थे - UP PCS–1995

(A) विज्ञानेश्वर (B) हेमाद्रि
(C) राजशेखर (D) जीमूतवाहन

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति - उमेशचन्द्र पाण्डेय, भू.पेज-23

234. (B) 235. (D) 236. (C) 237. (A) 238. (C) 239. (D) 240. (C) 241. (A) 242. (B) 243. (D) 244. (B) 245. (D) 246. (A) 247. (A)

248. किस प्रकार के विवाह में वधू को शुल्क दिया जाता था? MP PSC–2003

(A) गान्धर्वः (B) आसुरः
(C) राक्षसः (D) पैशाचः

स्रोत–मनुस्मृति (3/31)–शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पृष्ठ-206

249. वैदिककाले कस्मात् संस्कारात् परं शिक्षायाः प्रारम्भः? DSSSB TGT–2014

(A) गर्भाधानसंस्कारात् (B) कर्णवेधसंस्कारात्
(C) नामकरणसंस्कारात् (D) उपनयनसंस्कारात्

स्रोत–मनुस्मृति - गिरिधर गोपाल शर्मा, भू. पेज-24,25

250. याज्ञवल्क्यस्य कति भार्याः सन्ति- BHU AET–2011

(A) 2 (B) 5
(C) 4 (D) 3

स्रोत–वैदिक साहित्य और संस्कृति-बलदेव उपाध्याय, पेज-427

251. स्मृतिशब्दः कस्य बोधकोऽस्ति ? BHU AET–2010

(A) व्याकरणस्य (B) अर्थशास्त्रस्य
(C) निरुक्तस्य (D) धर्मशास्त्रस्य

स्रोत–मनुस्मृति (2/10) - गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ-63

252. मनुसंहितायां कस्य दुर्गस्य समाश्रयणं बहुधा प्रशंसितम्? UGC 25 J–2015

(A) धन्वदुर्गस्य (B) अब्दुर्गस्य
(C) महीदुर्गस्य (D) गिरिदुर्गस्य

स्रोत–मनुस्मृति (7/71) -गिरिधर गोपाल शर्मा,पृष्ठ-177

253. स्त्रीधन शब्द यौगिक है– UGC 73 J–2012

(A) जीमूतवाहनमते (B) शूलपाणिमते
(C) विज्ञानेश्वरमते (D) गौतममते

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति (2/143) - गङ्गासागर राय,पेज-284

254. ''श्रुतिस्तु वेदो विज्ञेयो धर्मशास्त्रं तु वै स्मृतिः'' इति मनुसंहितायां कस्मिन्नध्याये उपलभ्यते? UGC 25 J–2015

(A) प्रथमाध्याये (B) द्वितीयाध्याये
(C) तृतीयाध्याये (D) सप्तमाध्याये

स्रोत–मनुस्मृति (2/10) – गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ - 63

255. अभियोगे साक्ष्ये च दोषत्वेन न गण्यते - UGC 25 J–2015

(A) धनविकृतिः (B) कर्मविकृतिः
(C) मनोविकृतिः (D) वाग्विकृतिः

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति (2/15) - गङ्गासागर राय, पृष्ठ-175

256. साक्षिगुणान्यतमो नास्ति - UGC 25 J–2015

(A) तपस्विता (B) सत्यवादिता
(C) कूटसाक्षिता (D) धनान्विता

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति (2/68,69)-गङ्गासागर राय, पृष्ठ-215

257. याज्ञवल्क्यस्मृत्यनुसारं रिक्तस्थानं पूरयत–
स्मृत्योर्विरोधे न्यायस्तु बलवान् व्यवहारतः।
अर्थशास्त्रात्तु बलवद् .... इति स्थितिः॥
UGC 25 D–2015, Jn-2017

(A) धर्मशास्त्रम् (B) राजादेशः
(C) नृपस्येच्छा (D) नीतिशास्त्रम्

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति (2/21) - गङ्गासागर राय, पृष्ठ-179

258. याज्ञवल्क्यानुसारेण सम्बन्धे ऋणे मासि-मासि वृद्धिः भवति– UGC 25 D–2015

(A) पञ्चाशद्भागः (B) अशीतिभागः
(C) त्रिंशद्भागः (D) विंशोभागः

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति (2/37) - उमेशचन्द्र पाण्डेय, पृष्ठ-199

259. स्मृतिग्रन्थे तात्पर्यम् अस्ति - AWES TGT–2011

(A) स्मरणकारयितुः ग्रन्थाः (B) स्मरिताः ग्रन्थाः
(C) धर्मशास्त्रम् (D) स्मरणीयास्य ग्रन्थे

स्रोत–मनुस्मृति (2/10) - गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ-63

260. मनस् पावनतया साधना अस्ति- AWES TGT–2011

(A) तीर्थयात्रा (B) सत्याचरणम्
(C) प्रतिशुद्धि (D) गुरुनयन

स्रोत–

261. शिशुः निष्क्रमणं कस्मिन् मासे - UK SLET–2012

(A) तृतीयमासे (B) द्वितीयमासे
(C) चतुर्थमासे (D) षष्ठमासे

स्रोत–मनुस्मृति - गिरिधर गोपाल शर्मा, भू. पृष्ठ-21

248. (B) 249. (D) 250. (A) 251. (D) 252. (D) 253. (C) 254. (B) 255. (A) 256. (C) 257. (A) 258. (B) 259. (C) 260. (*) 261. (C)

262. हस्ते ब्रह्मतीर्थं कुत्र भवति - UK SLET–2012

(A) अङ्गुष्ठमूले (B) कनिष्ठामूले
(C) कराग्रे (D) हस्तमूले

स्रोत–मनुस्मृति (2/59) – गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ – 83

263. (i) मनुस्मृतेः सप्तमे अध्याये किं वर्णितम् -
(ii) मनुस्मृतेः सप्तमोध्यायस्य प्रधानविषयः कः?
UK SLET–2012, GJ SET- 2013

(A) देवधर्मः (B) राजधर्मः
(C) मनुधर्मः (D) सृष्टिप्रक्रिया

स्रोत–मनुस्मृति (7/1) - गिरिधिर गोपाल शर्मा, पेज–147, 148

264. आपद्यर्थे कं रक्षेत् - UK SLET–2012

(A) मित्रम् (B) गृहम्
(C) धनम् (D) राष्ट्रम्

स्रोत–

265. विवादस्थलेषु कः साक्षी - UK SLET–2012

(A) उपस्थितजनः (B) मित्राणि
(C) परिवारजनः (D) राजा

स्रोत–

266. ज्येष्ठपुत्र का मुण्डन किस मास में शुभ नहीं है ?
UGC 73 J–2015

(A) पितुः जन्ममासे (B) मातुर्जन्ममासे
(C) आषाढमासे (D) ज्येष्ठमासे

स्रोत–

267. मनुस्मृति के अनुसार धर्म का लक्षण नहीं है -
UGC 73 J–2015

(A) धृतिः (B) अक्रोधः
(C) विद्या (D) यज्ञः

मनुस्मृति (6/92)–शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन,पेज-446

268. मनृस्मृति के अनुसार 'अध्यापनम् अध्ययनं यजनं याजनं दानं प्रतिग्रहं च' ये किसके कर्म हैं ?
UGC 73 J–2015

(A) ब्राह्मणानाम् (B) क्षत्रियाणाम्
(C) वैश्यानाम् (D) शूद्राणाम्

स्रोत–मनुस्मृति (1/88) - गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ-45

269. मनुस्मृति के अनुसार क्षत्रिय का कर्त्तव्य कर्म नहीं है-
UGC 73 J–2015

(A) इज्या (B) अध्ययनम्
(C) दानम् (D) कृषिकार्यम्

स्रोत–मनुस्मृति (1/89) - गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ-45

270. मनुसंहितानुसारं एषु किं ब्राह्मणस्य कर्म न भवति–
UGC 25 J–2016

(A) अध्यापनम् (B) प्रजारक्षणम्
(C) यजनम् (D) याजनम्

स्रोत–मनुस्मृति (1/88) - गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ-45

271. आत्रेयी इस शब्द का क्या अर्थ है? UGC 73 J–2010

(A) पतिता (B) व्यभिचारिणी
(C) विवाहिता (D) रजस्वला

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति - उमेशचन्द्र पाण्डेय,पेज-526

272. मनुसंहितातः रिक्तं स्थानं पूरयत– UGC 25 D–2015
नृपतौ कोशराष्ट्रे च .... सन्धिविपर्ययौ–

(A) अमात्ये (B) दूते
(C) सेनापतौ (D) मन्त्रिणि

स्रोत–मनुस्मृति (7/65) - गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ-175

273. ''तमसा बहुरूपेण वेष्टिताः कर्महेतुना।
अन्तःसंज्ञा भवन्त्येते सुखदुःख समन्विताः॥''
इति मनुवचनं केन सम्बद्धम्– UGC 25 D–2015

(A) अण्डजेन प्राणिना (B) उद्भिजा
(C) स्वेदजेन प्राणिना (D) जरायुजेन प्राणिना

स्रोत–मनुस्मृति (1/49) - गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ-29

274. मानव जाति का 'आदि पुरुष' किसे कहा गया है?
H-TET–2015

(A) वशिष्ठ को (B) कपिल को
(C) मनु को (D) विष्णु को

स्रोत–मनुस्मृति - गिरिधर गोपाल शर्मा,पेज भू0-5

275. राजाधिकारिषु एकः रत्नी नास्ति– DU Ph. D–2016

(A) पुरोहितः (B) सेनानी
(C) पालागलः (D) धनाधिपः

स्रोत–वैदिक साहित्य और संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–289

262. (A) 263. (B) 264. (C) 265. (A) 266. (D) 267. (D) 268. (A) 269. (D) 270. (B) 271. (D) 272. (B) 273. (B) 274. (C) 275. (D)

276. मनुस्मृत्या 'षष्ठांशवृत्ति' उच्यते– DU Ph. D–2016

(A) कृषकः (B) धर्मगुरुः
(C) अमात्यः (D) राजा

स्रोत–मनुस्मृति (7/130) गिरिधर गोपाल शर्मा ,पेज-198

277. 'एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः॥'
इत्युक्तम्– DU Ph. D–2016

(A) रामायणे (B) मनुस्मृतौ
(C) भगवद्गीतायाम् (D) याज्ञवल्क्यस्मृतौ

स्रोत–मनुस्मृति (2.20)-गिरिधिर गोपाल शर्मा, पेज–68

278. ''ऊष्मणश्चोपजायन्ते यच्चाऽन्यत् किञ्चिदीदृशम्।''– MH SET–2013

(A) अण्डजवर्णनप्रकरणे (B) जरायुजवर्णनप्रकरणे
(C) स्वेदजवर्णनप्रकरणे (D) उद्भिज्जवर्णनप्रकरणे

स्रोत–मनुस्मृति (1/45) - गिरिधर गोपाल शर्मा, पेज-27

279. पैतृक धन से ज्येष्ठ पुत्र कितना अतिरिक्त भाग ग्रहण करने का अधिकारी है? UGC 73 D–2015

(A) 30 भाग (B) 20 भाग
(C) 10 भाग (D) 5 भाग

मनुस्मृति (9/112)-शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पृष्ठ-666

280. यदि छोटे भाई के द्वारा बड़े भाई की पत्नी से नियोग द्वारा पुत्र उत्पन्न किया जाता है तो उस पुत्र का कितना दाय भाग होगा– UGC 73 D–2015

(A) पितृव्यानां समानभागः
(B) उत्पादयितुः पितुः अन्यपुत्राणां समानभागः
(C) पितृव्यानां सर्वेषां पुत्राणां समानभागः
(D) सर्वसम्पत्यानिर्धारितो भागः

मनुस्मृति (9/120)- शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पृष्ठ-669

281. पुत्रहीन व्यक्ति के धन का निम्नलिखित में से कौन अधिकारी होता है? UGC 73 D–2015

(A) ज्येष्ठभ्राता (B) सर्वेभ्रातरः
(C) दौहित्रः (D) भगिनीपुत्रः

मनुस्मृति (9/132)-शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पृष्ठ-673

282. स्त्री की बुढ़ापे में रक्षा कौन करता है? UGC 73 D–2015

(A) पिता (B) पुत्रः
(C) पतिः (D) भ्राता

स्रोत–मनुस्मृति (9/3)-शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पृष्ठ-635

283. इच्छा से वर-कन्या का एकान्त में संयोग होना कौन सा विवाह कहलाता है? UGC 73 D–2015

(A) गान्धर्वः (B) आसुरः
(C) राक्षसः (D) पैशाचः

स्रोत–मनुस्मृति (3/32)-शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पृष्ठ-206

284. राजा के शरीर में, मनुस्मृति के अनुसार कितने देवताओं का अंश होता है? UGC 73 D–2015

(A) त्रयाणाम् (B) अष्टानाम्
(C) चतुर्णाम् (D) पञ्चानाम्

स्रोत–मनुस्मृति (7/4) - गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ-149

285. ''तपो विद्या च विप्रस्य निःश्रेयस्करं परम्।''
तपसा किल्विषं हन्ति विद्ययाऽमृतमश्नुते॥''
इस पद्य में 'किल्बिषम्' पद का क्या अर्थ है? UGC 73 D–2015

(A) रोगम् (B) अधर्मम्
(C) पापम् (D) दुर्भाग्यम्

स्रोत–मनुस्मृति (12/104)-शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पृष्ठ-882

286. ब्राह्मणो मनुस्मृत्यनुसारं केन सिद्धिं प्राप्नोति GJ SET–2013

(A) जपेन (B) अध्ययनेन
(C) अध्यापनेन (D) देवपूजनेन

स्रोत–मनुस्मृति (2/87) - गिरिधर गोपाल शर्मा,पेज-92,93

287. याज्ञवल्क्यस्मृत्यनुसारेण मानुषं प्रमाणं कतिविधिम्- GJ SET–2013

(A) चतुर्विधम् (B)द्विविधम्
(C) त्रिविधम् (D) सप्तविधम्

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति (2/22) - गङ्गासागर राय, पृष्ठ-180

276. (D) 277. (B) 278. (C) 279. (B) 280. (C) 281. (C) 282. (B) 283. (A) 284. (B) 285. (C) 286. (A) 287. (C)

288. ''वानप्रस्थयतिब्रह्मचारिणां रिक्थभागिनः।
क्रमेणाचार्यसच्छिष्यधर्मभ्रात्रेकतीर्थिनः॥''
इति याज्ञवल्क्यस्मृतौ कस्मिन् प्रकरणे वर्णितम्?
MH-SET-2016

(A) स्वामिपालविवादप्रकरणे (B) सीमाविवादप्रकरणे
(C) दायविभागप्रकरणे (D) दत्ताप्रदानिकप्रकरणे

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति (2/137) -उमेशचन्द्र पाण्डेय, पृष्ठ-297

289. कस्मिन् युगे चतुष्पात् सकलो धर्म आसीत्।
MH-SET-2016

(A) कलियुगे (B) कृतयुगे
(C) द्वापरयुगे (D) त्रेतायुगे

मनुस्मृति (1/81)-शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन,पेज-104

290. 'विद्वद्भिः सेवितः सद्भिर्नित्यमद्वेषरागिभिः हृदयेनाभ्यनुज्ञातः।' कस्य लक्षणम् इदम् ?
MH-SET-2016

(A) अनुरागस्य (B) द्वेषस्य
(C) धर्मस्य (D) मोहस्य

स्रोत–

291. याज्ञवल्क्यमते गृहीतवेतनः कर्म त्यजन् -
UGC 25 Jn–2017

(A) चतुर्गुणमावहेत् (B) त्रिगुणमावहेत्
(C) पञ्चगुणमावहेत् (D) द्विगुणमावहेत्

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति (2/193)-उमेशचन्द्र पाण्डेय,पेज-334

292. मनुसंहितानुसारं एषु कस्य क्रोधजव्यसने गणनं न भवति-
UGC 25 Jn–2017

(A) दिवास्वप्नस्य (B) वाक्पारुष्यस्य
(C) साहसस्य (D) दण्डपारुष्यस्य

स्रोत–मनुस्मृति (7/48) - गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ-167

293. मनुसंहितातः रिक्तं स्थानं पूरयत -
''वेदः स्मृतिः .... स्वस्य च प्रियमात्मनः।
एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम् ॥''
UGC 25 Jn–2017

(A) उपकारः (B) अपकारः
(C) सदाचारः (D) परम्परा

स्रोत–मनुस्मृति (2/12) - गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ-65

294. 'ब्राह्मणस्वर्णहारी तु राज्ञे मुसलमर्पयेत्' - इत्यत्र मिताक्षरामते स्वर्णशब्दस्य कोऽर्थः? UGC 25 Jn–2017

(A) जातिवाचकः (B) परिमाणवाचकः
(C) धात्वन्तरवाचकः (D) जातिपरिमाणोभयवाचकः

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति (3/257)-उमेशचन्द्र पाण्डेय, पृष्ठ-534,536

295. प्राजापत्यं तीर्थं किं भवति - UGC 25 Jn–2017

(A) अङ्गुष्ठस्य मूलम् (B) अनामिकायाः मूलम्
(C) कनिष्ठायाः मूलम् (D) मध्यमायाः मूलम्

स्रोत–मनुस्मृति (2/59) - गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ-83

296. अग्निदिव्ये कति मण्डलानि भवन्ति? UGC 73 Jn–2017

(A) चत्वारि (B) पञ्च
(C) नव (D) एकादश

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति (2/106)-उमेशचन्द्र पाण्डेय,पृष्ठ-255

297. अभावे ज्ञातृचिह्नानां सीम्नः प्रवर्तिता कः भवति-
UGC 73 Jn–2017

(A) गृहस्थः (B) राजा
(C) गोपालकः (D) वृद्धः

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति (2/153)-उमेशचन्द्र पाण्डेय, पृष्ठ-310

298. परीवाद है UGC 73 S–2013

(A) व्यवहारदर्शनम् (B) बहिष्करणम्
(C) साक्ष्यम् (D) दोषकीर्तनम्

स्रोत–मनुस्मृति (2/200) - गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ-129

299. विवाहेषु अधमोऽस्ति - UGC 73 Jn–2012

(A) राक्षसः (B) पैशाचः
(C) गान्धर्वः (D) आसुरः

स्रोत–मनुस्मृति (3/34)-शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पृष्ठ-207

300. गौतमस्य मते कति विवाहाः धर्म्याः सन्ति -
UGC 73 D–2009

(A) अष्टौ (B) चत्वारः
(C) सप्त (D) त्रयः

स्रोत–गौतमधर्मसूत्र - प्रमोदवर्धन कौण्डिन्न्यायन, पृष्ठ-85

288. (C) 289. (B) 290. (C) 291. (D) 292. (A) 293. (C) 294. (A) 295. (C) 296. (C) 297. (B) 298. (D) 299. (B) 300. (A)

301. (i) नास्तिको भवति - GJ SET-2016
(ii) नास्तिक कौन है? BHU AET-2010
(A) ईश्वरभक्तः (B) याजकः
(C) वेदनिन्दकः (D) शूद्रः
स्रोत–मनुस्मृति (2/11) - गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ-64

302. कायवाङ्मनोनिग्रह भेद है - UGC 73 D–2014
(A) संवरस्य (B) गुप्तेः
(C) समिते (D) प्रदेशबन्धस्य
स्रोत–

303. बलयुक्ता राजानोऽपि नष्टा भवन्ति - UGC 73 J–2012
(A) विनयरहिता (B) करियुक्ता
(C) तुरगयुक्ता (D) शस्त्रयुक्ता
मनुस्मृति (7/40)-शिवराज आचार्य कौण्डिन्यायन, पृष्ठ-458,59

304. विद्यार्थी छोड़ें – UGC 73 D–2013
(A) निद्राम् (B) सुखम्
(C) भोजनम् (D) भिक्षायाचनम्
स्रोत–

305. कृतयुगस्य कालावधिः उक्तिः - UGC 25 J–2012
(A) 1000 वर्षात्मकः (B) 2000 वर्षात्मकः
(C) 3000 वर्षात्मकः (D) 4000 वर्षात्मकः
स्रोत–मनुस्मृति (1/69) -गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ-35,36

306. मनुस्मृत्यानुसारं पितृणां रात्रिर्भवति -UGC 25 J–2013
(A) कृष्णपक्षः (B) शुक्लपक्षः
(C) शरदृतुः (D) संवत्सरः
स्रोत–मनुस्मृति (1/66) - गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ-34,35

307. फलनिर्मितानां पात्राणां शुद्धिः कथं भवति? HE–2015
(A) गोमूत्रेण (B) गोमयेन
(C) गोबालेन (D) गोदुग्धेन
स्रोत–

308. प्राजापत्यत्सत्यलोकः .... योजनेन संयुत है - UGC 73 D–2014
(A) कोटित्रयेण (B) कोटिनवेन
(C) कोटिषट्केन (D) एकेन
स्रोत–

309. वेद की एक शाखा का अध्ययन करने से .... कहलाते हैं - UGC 73 D–2014
(A) उपाध्यायाः (B) ऋत्विक्
(C) गुरु (D) ब्रह्म
स्रोत–मनुस्मृति (2/141) -गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ-112

310. सतयुग कितने दिव्यवर्षो का होता है? BHU-AET-2011
(A) एक हजार (B) दो हजार
(C) तीन हजार (D) चार हजार
स्रोत–मनुस्मृति (1/69) - गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ-35

311. पूर्वसमुद्र से पश्चिम समुद्र का क्षेत्र कहलाता है? BHU-AET-2011
(A) आर्यावर्त (B) ब्रह्मावर्त
(C) मध्यदेश (D) कोई नहीं
स्रोत–मनुस्मृति (2/22) - गिरिधर गोपाल शर्मा, पृष्ठ-68

312. अभियोगस्यापह्नवे कियद् धनं राज्ञे दद्यात् - UGC 25 J–2013
(A) द्विगुणम् (B) त्रिगुणम्
(C) चतुर्गुणम् (D) अभियोगसमम्
स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति (2/11) - गङ्गासागर राय, पृष्ठ-177

313. विद्वान् निधिं लब्ध्वा ततः कियन्तं गृह्णीयात्? UGC 25 S–2013
(A) सर्वम् (B) दशांशम्
(C) षष्ठांशम् (D) अर्धम्
स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति (2/34) - गङ्गासागर राय, पृष्ठ-192,193

314. पितृधन विभाग का कालद्वय यह मत है - UGC 73 D–2012
(A) विज्ञानेश्वरस्य (B) जीमूतवाहनस्य
(C) नारदस्य (D) मेधातिथेः
स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति (2/121) - गङ्गासागर राय, पृष्ठ-262

315. मिताक्षरानुसारं सुराशब्दप्रयोगः कीदृशो अस्ति– UGC 73 Jn–2017
(A) पारिभाषिकः (B) यौगरुढः
(C) पानमात्रम् (D) गौणः
स्रोत– याज्ञवल्क्यस्मृति - उमेशचन्द्र पाण्डेय, पेज–528

301. (C) 302. (B) 303. (A) 304. (A) 305. (D) 306. (B) 307. (C) 308. (C) 309. (A) 310. (D)
311. (A) 312. (D) 313. (A) 314. (A) 315. (D)

316. मनुमते धर्मप्रमाणानि सन्ति? UGC 73 J–2011, 2012

(A) 4 (B) 5
(C) 9 (D) 11

स्रोत– मनुस्मृति (2/12-13)-गिरिधर गोपाल शर्मा, पेज–65

317. ''धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः'' – यह उक्ति कहाँ से उद्धृत है? H TET–2015

(A) रामायण (B) रघुवंश
(C) मनुस्मृति (D) महाभारत

स्रोत– मनुस्मृति (8/15)-शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पेज–517

318. द्वादशाहोपवास से व्रत होता है? UGC 73 D–2014

(A) चान्द्रायणम् (B) पराक्रम
(C) सौम्यकृच्छ्रम् (D) अतिकृच्छ्रम्

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति (3.320) - उमेशचन्द्र पाण्डेय, पेज–631

319. अपुत्र का स्वर्गवास होने पर उसके दाय को कौन प्राप्त करता है? UGC 73 D–2005

(A) पिता (B) पत्नी
(C) मित्रम् (D) माता

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति (2/135,136)-गंगासागर राय, पेज–273

316. (A) 317. (C) 318. (D) 319. (B)

11 धर्मशास्त्र

1. धर्मशास्त्र के मुख्य प्रवर्तक कौन हैं ? UGC 73 D–2007

(A) याज्ञवल्क्य (B) मनु
(C) वशिष्ठ (D) नीलकण्ठ

स्रोत–मनुस्मृति-गिरिधर गोपाल शर्मा, पेज भू0-05

2. धर्म का लक्षण है ? UGC 73 D–2004

(A) सदाचार (B) भक्ति
(C) राग (D) निन्दा

स्रोत–मनुस्मृति (2/12)-गिरिधर गोपाल शर्मा, पेज- 65

3. धर्मशास्त्र किस कोटि में आता है? UGC 73 J–2015

(A) स्मृतिः (B) वेदान्तः
(C) श्रुतिः (D) आचारः

स्रोत–मनुस्मृति (2/10)-गिरिधर गोपाल शर्मा, पेज -63

4. धर्मे मूलप्रमाणं किम् – UGC 73 J–2007

(A) वेदः (B) चार्वाकदर्शनम्
(C) लोकाचारः (D) एतेषु किमपि न

स्रोत–मनुस्मृति (2/12)-गिरिधर गोपाल शर्मा, पेज-65

5. (i) आश्रम हैं - UGC 73 D–2004, 2008, 2009, 2010
(ii) आश्रमाः कति सन्ति?

(A) 3 (B) 5
(C) 4 (D) 6

स्रोत–प्राचीन भारतीय संस्कृति-वीरेन्द्र कुमार सिंह, पेज-66

6. धर्मशास्त्र के अनुसार अशौच नहीं लगता - UGC 73 J–2006

(A) पुरुषत्रयानन्तरे (B) पञ्चपुरुषानन्तरे
(C) सप्तपुरुषानन्तरे (D) दशपुरुषानन्तरे

स्रोत–निर्णयसिन्धु-श्रीव्रजरत्नभट्टाचार्य, पेज-868

7. यह मुद्रा पूजा में प्रयुक्त होती है - UGC 73 D–2006

(A) मृगीमुद्रा (B) हंसीमुद्रा
(C) सूकरीमुद्रा (D) धेनुमुद्रा

आगमरहस्यम् (प्रथम खण्ड (26/33)-सुधाकर मालवीय, पेज-714

8. मालामन्त्र में अक्षर संख्या होती है-UGC 73 D–2006

(A) द्वात्रिंशत्यधिका (B) षोडशाधिका
(C) चतुर्विंशत्यधिका (D) दशाधिका

स्रोत–मन्त्ररहस्य-नारायणदत्त – श्रीमाली, पेज-151

9. प्रमुख दश अवतार हैं - UGC 73 D–2007

(A) शिवस्य (B) ब्रह्मणः
(C) विष्णोः (D) गणेशस्य

स्रोत–पुराण-विमर्श-आचार्य बलदेव उपाध्याय, पेज-175

10. पञ्च महायज्ञों का अनुष्ठान कर्तव्य है - UGC 73 D–2007

(A) ब्रह्मचारिणः (B) गृहस्थस्य
(C) वानप्रस्थस्य (D) संन्यासिनः

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-317

11. कितने महापातक हैं - UGC 73 J–1991, 2008

(A) पञ्च (B) चत्वारि
(C) त्रीणि (D) षट्

स्रोत–संस्कृत परम्परागत विषय- शत्रुघ्न त्रिपाठी, पेज-122

12. धर्मशास्त्र में 'सुवर्ण' शब्द का अर्थ है - UGC 73 J–2010

(A) षोडशमाषपरिमितः (B) त्रसरेणुपरिमितः
(C) माषपरिमितः (D) भिक्षापरिमितः

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति - उमेशचन्द्र पाण्डेय, पेज-536

13. (i) धर्मशास्त्र मे दाय के कितने प्रकार हैं -
(ii) दाय भेदोऽस्ति– UGC 73 J–2011 D–2012

(A) त्रिविधः (B) चतुर्विधः
(C) द्विविधः (D) षड्विधः

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति-गंगासागर राय, भू0 पेज-12

14. धर्मशास्त्र में नरकों की संख्या है - UGC 73 D–2011

(A) अष्टादश (B) नव
(C) एकविंशतिः (D) पञ्च

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति - उमेशचन्द्र पाण्डेय, पेज-500

1. (B)	2. (A)	3. (A)	4. (A)	5. (C)	6. (A)	7. (D)	8. (A)	9. (C)	10. (B)
11. (A)	12. (A)	13. (C)	14. (C)						

15. श्राद्ध के लिए प्रशस्तकाल है- UGC 73 D–2011

(A) प्रातः (B) अपराह्नः
(C) मध्याह्नः (D) अरुणोदयः

स्रोत–निर्णयसिन्धु - श्रीव्रजरत्नभट्टाचार्य, पेज-633,636

16. प्राजापत्यतीर्थमस्ति - UGC 73 J–2013

(A) अङ्गुष्ठस्य मूलम् (B) मध्यमायाः मूलम्
(C) अनामिकायाः मूलम् (D) कनिष्ठायाः मूलम्

स्रोत–मनुस्मृति (2/59)-गिरिधर गोपाल शर्मा, पेज भू0-83

17. काम्यश्राद्ध में वैश्वदेव हैं - UGC 73 D–2012

(A) धुरिरौचनौ (B) सत्यवसू
(C) पुरूरवाद्रवौ (D) काम्यकामौ

स्रोत–निर्णयसिन्धु -श्रीव्रजरत्नभट्टाचार्य, पेज-627

18. ''एकाश्रव्यं त्वाचार्याः'' यह उक्ति है - UGC 73 D–2012

(A) मनोः (B) गौतमस्य
(C) बोधायनस्य (D) विज्ञानेश्वरस्य

स्रोत–गौतम धर्मसूत्र (1.3.35)-प्रमोदवर्धन कौण्डिन्यायन, पेज-79

19. जपयज्ञविक्रियाः निष्फलाः भवन्ति- UGC 73 D–2013

(A) स्नानविहीनस्य (B) भक्तिशून्यस्य
(C) अदीक्षितस्य (D) अज्ञानिनः

स्रोत–तन्त्रागमीय ज्ञानकोश-चन्द्रशेखर शिवाचार्य, पेज-37

20. फलवान् वृक्षों को काटने पर प्रायश्चित्त होता है- UGC 73 D–2013

(A) ऋक्शतजप्यम् (B) द्वादशवार्षिकं व्रतम्
(C) नववार्षिकं व्रतम् (D) काष्ठदानम्

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति (3/276)- उमेशचन्द्र पाण्डेय, पेज-574

21. अष्टका श्राद्ध है - UGC 73 D–2013

(A) काम्यम् (B) नैमित्तिकम्
(C) प्रत्यहम् (D) नित्यम्

स्रोत–श्रौतयज्ञ परिचय- वेणीराम शर्मा गौड, पेज-04,05

22. जनन और मरण अशौच के मध्य गुरु है - UGC 73 D–2013

(A) जननम् (B) मरणम्
(C) शवानुगम् (D) गर्भस्रवम्

स्रोत–निर्णयसिन्धु-श्रीव्रजरत्नभट्टाचार्य, पेज-915

23. राजगामिपैशुनं .... होता है- UGC 73 J–2014

(A) ब्रह्महत्यासमम् (B)गोवधसमम्
(C) मिथ्यासमम् (D)सत्यसमम्

स्रोत–मनुस्मृति (11/55) -शिवराज आचार्य कौडिन्न्यायन, पेज-788

24. धर्मशास्त्र शब्द का क्या अर्थ होता है- UGC 73 J–1991

(A) स्मृति (B) तन्त्र
(C) सूत्र (D) आगम

स्रोत–मनुस्मृति (02/10)- गिरिधर गोपाल शर्मा, पेज-63

25. श्राद्ध करने का प्रथम अधिकारी होता है - UGC 73 J–1991

(A) क्रीतपुत्र (B) औरसपुत्र
(C) क्षेत्रजपुत्र (D) दत्तकपुत्र

निर्णयसिन्धु (चतुर्थ परिच्छेद-श्राद्ध प्रकरण)-श्रीव्रजरत्नभट्टाचार्य, पेज-638

26. 'नान्दीश्राद्ध' होता है- UGC 73 D–1992

(A) श्राद्ध में (B) शुभकर्म में
(C) अशुभकर्म में (D) यज्ञ में

स्रोत–यज्ञमीमांसा - श्रीवेणीराम शर्मा गौड, पेज-369

27. 'अशौच' की परमावधि है - UGC 73 D–1992

(A) 15 दिन (B) 10 दिन
(C) 20 दिन (D) 1 माह

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति (3/18) - उमेशचन्द्र पाण्डेय, पेज-407

28. धर्मशास्त्रानुसारं विवाहस्य कति प्रकाराः मन्यन्ते ? BHU AET–2012

(A) चत्वारः (B) षट्
(C) अष्ट (D) दश

मुहूर्तचिन्तामणि (विवाह प्रकरण)-विन्ध्येश्वरी प्रसाद द्विवेदी, पेज-303

29. धर्मशास्त्रीय-व्यवहारस्य को विषयः ? UGC 25 D–2014

(A) स्मृत्याचारनिन्दा
(B) स्मृत्याचार-विरुद्ध-परपीडा
(C) स्मृत्याचारप्रयुक्ता रुग्णता
(D) स्मृत्याचारप्रयुक्ता निर्धनता

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति (2/5) - गङ्गासागर राय, पेज–164

15. (C) 16. (D) 17. (A) 18. (B) 19. (C) 20. (A) 21. (D) 22. (B) 23. (A) 24. (A) 25. (B) 26. (B) 27. (B) 28. (C) 29. (B)

30. वैश्यस्याशौचं कियद्दिनात्मकम् - BHU AET–2010
(A) दश (B) द्वादश
(C) पञ्चदश (D) त्रिंशत्
स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति (3.22)-उमेशचन्द्र पाण्डेय, पेज-416-417

31. हरिशयनं कस्यां तिथौ भवति ? BHU AET–2013
(A) पञ्चम्याम् (B) अमावस्यायाम्
(C) नवम्याम् (D) एकादश्याम्
स्रोत–निर्णयसिन्धु - श्रीव्रजरत्नभट्टाचार्य, पेज–171

32. दूर्वाष्टमी कस्मिन् मासे भवति ? BHU AET–2011
(A) कार्त्तिके (B) भाद्रे
(C) माघे (D) श्रावणे
स्रोत– गरुणपुराण - गीताप्रेस, पेज– 30

33. संन्यासः कतिविधः ? BHU AET–2011
(A) द्विविधः (B) त्रिविधः
(C) चतुर्विधः (D) पञ्चविधः
निर्णयसिन्धु-(पञ्चम परिच्छेद)-श्रीव्रजरत्नभट्टाचार्य, पेज–1060, 1062

34. त्रेतायुग में किसकी प्रधानता है ? BHU AET–2011
(A) तप (B) यज्ञ
(C) दान (D) ज्ञान
स्रोत–मनुस्मृति (1/86)-गिरिधर गोपाल शर्मा, पेज– 44

35. दान लेने का किसको अधिकार है-BHU AET–2011
(A) ब्राह्मण को (B) क्षत्रिय को
(C) वैश्य को (D) शूद्र को
स्रोत–श्रीमद्भागवत महापुराण (7/11/14) पेज-876

36. धर्मविरुद्धनिर्णये कतिपयफलभागिनो भवन्ति - UK SLET–2012
(A) चत्वारः (B) त्रयः
(C) पञ्च (D) सप्त
स्रोत–

37. विद्याः कति विधाः सन्ति ? DSSSB TGT–2014, DSSSB PGT–2014
(A) चतुर्दश (B) षोडश
(C) पञ्चदश (D) दश
स्रोत– काव्यमीमांसा - गङ्गासागर राय, पेज– 7

38. कर्णाटकप्रान्ते अयं धर्मः प्रचुरप्रचारं गतः– CVVET–2015
(A) वैष्णवधर्मः (B) वीरशैवधर्मः
(C) शाक्तधर्मः (D) वैखानसधर्मः
स्रोत–संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-7), पेज–604,608

39. पिता के अभाव में कन्यादान कौन करता है? UGC 73 J–2016
(A) भ्राता (B) सकुल्यः
(C) जननी (D) पितामहः
याज्ञवल्क्यस्मृति (आचाराध्याय 1/63)-उमेशचन्द्र पाण्डेय-पेज-26

40. पारस्कर के अनुसार सीमन्तोन्नयन संस्कार गर्भाधान के पश्चात् किस मास में होता है? UGC 73 J–2016
(A) प्रथमे (B) चतुर्थे
(C) षष्ठे (D) तृतीये
स्रोत–पारस्करगृह्यसूत्र - जगदीशचन्द्र मिश्र, भू0 पेज–17

41. गौतमानुसारं गुरूणां श्रेष्ठ को भवति - UGC 73 Jn–2017
(A) माता (B) पिता
(C) आचार्यः (D) पितृव्यः
स्रोत–गौतम धर्मसूत्र-प्रमोदवर्धन कौण्डिन्न्यायन, पेज–60

42. गौतममतानुसारं कतिविधाः विवाहाः धर्म्याः - UGC 73 Jn–2017
(A) चतुर्विधाः (B) पञ्चविधाः
(C) अष्टविधाः (D) त्रिविधाः
स्रोत–भारतीय संस्कृति- दीपक कुमार- पेज-71

43. यज्ञस्य नाम अस्ति- RPSC ग्रेड II (TGT)–2010
(A) आर्यावर्तः (B) आरुणिः
(C) अग्निहोत्रम् (D) आसन्दः
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–314

44. दत्तकचन्द्रिका न्यायालय द्वारा मानित है - UGC 73 D–2005
(A) बङ्गदेशे (B) मिथिलायाम्
(C) महाराष्ट्रे (D) दक्षिणभारते
स्रोत–

30. (C)	31. (D)	32. (B)	33. (C)	34. (D)	35. (A)	36. (*)	37. (A)	38. (B)	39. (D)
40. (C)	41. (C)	42. (C)	43. (C)	44. (A)					

45. नारदसंहिता में वर्णित प्रमुख विषय है - **UGC 73 J–2012**

(A) शिल्पविचारः (B) विष्णोः दशावतारः
(C) विष्णुपूजाविधानम् (D) नारायणपारम्यम्

स्रोत–

46. भर्तृस्नेहविषयतया स्त्रियः कुलम् अस्ति - **UGC 73 J–2012**

(A) दीप्तम् (B) नष्टम्
(C) दग्धम् (D) जलप्लावितम्

मनुस्मृति (9/26) शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन-पेज-642

47. भारतवर्षमस्ति - **UGC 73 J–2012**

(A) शाकद्वीपे (B) जम्बूद्वीपे
(C) क्रौञ्चद्वीपे (D) पुष्करद्वीपे

स्रोत–संस्कार प्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-11

48. पञ्चमहापातकों में अन्तर्भाव होता है? **UGC 73 D–2012**

(A) संकरीलक्षमणम् (B) संसर्ग
(C) जातिभ्रंशकरम् (D) रजतहरणम्

स्रोत–संस्कृत परम्परागत विषय- शत्रुघ्न त्रिपाठी- पेज-122

49. प्रयोजको भवति- **UGC 73 J–2013**

(A) चतुर्विधः (B) पञ्चविधः
(C) त्रिविधः (D) द्विविधः

स्रोत–

50. साङ्कर्य संज्ञित दोष होते हैं– **UGC 73 D–2013**

(A) द्वादश (B) एकादश
(C) त्रयोदश (D) पञ्चदश

स्रोत–

51. तारं मेषं विषं सर्गि इति षडक्षरः - **UGC 73 D–2013**

(A) विष्णवे (B) वायवे
(C) ब्राह्मणे (D) शिवाय

स्रोत–

52. जातिमात्र ब्राह्मणी वध में देय होता है - **UGC 73 S–2013**

(A) अश्वः (B) मेषः
(C) वत्सः (D) नीलवृषः

स्रोत–

53. सप्तर्षियों में अवर हैं - **UGC 73 S–2013**

(A) राजर्षिः (B) महर्षिः
(C) देवर्षिः (D) ब्रह्मर्षिः

स्रोत–संस्कृत परम्परागत विषय- शत्रुघ्न त्रिपाठी-पेज-122

54. शान्तिवश्यादि कर्म होता है - **UGC 73 S–2013**

(A) षट् (B) पञ्च
(C) सप्त (D) अष्ट

स्रोत–

55. कालीतारादि शक्तियाँ होती हैं - **UGC 73 S–2013**

(A) पञ्च (B) दश
(C) षट् (D) अष्टादश

स्रोत–आगमरहस्यम् (शाक्तागम)-सुधाकर मालवीय, पेज-124

56. दशदल पद्म होता है- **UGC 73 S–2013**

(A) नाभौ (B) कण्ठे
(C) करे (D) शिरसि

स्रोत–

57. पुष्कराधिपति है- **UGC 73 J–2014**

(A) दृश्यः (B) ज्योतिष्मान्
(C) सवनः (D) द्युतिमान्

स्रोत–

58. प्रवृत्त का प्रवर्तक होता है- **UGC 73 J–2014**

(A) अनुमन्ता (B) आज्ञापयिता
(C) उपदेष्टा (D) स्वार्थान्धः

स्रोत–

59. कल्पादि में प्रवचन निमित्त श्रुति सम्भव होती है, यह वेदों का- **UGC 73 J–2014**

(A) पौरुषेयत्वम् (B) अपौरुषेयत्वम्
(C) प्रामाण्यम् (D) अप्रामाण्यम्

स्रोत–

45. (A)	**46. (A)**	**47. (B)**	**48. (B)**	**49. (C)**	**50. (B)**	**51. (D)**	**52. (A)**	**53. (D)**	**54. (A)**
55. (B)	**56. (C)**	**57. (C)**	**58. (A)**	**59. (B)**					

60. गोविन्दार्पण विधि से किया जाने वाला मोक्ष हेतु है- UGC 73 J–2014

(A) अध्ययनम् (B) यागः
(C) प्रायश्चित्त (D) उपवासः

स्रोत–

61. पूजन में श्रेष्ठ मुद्राएँ होती है - UGC 73 J–2014

(A) पञ्चाशत् (B) नव
(C) षोडश (D) पञ्चपञ्चाशत्

स्रोत–आगम-रहस्यम् षड्विंशः पटले - सुधाकर मालवीय

62. जिससे सारा जगत् उत्पन्न होता है, वह परा होती है- UGC 73 J–2014

(A) शक्तिः (B) चितिः
(C) माया (D) उत्यक्ता

स्रोत–भारतीय दर्शन- जगदीशचन्द्र मिश्र, पेज- 559

63. शाक्तेयी सर्वसिद्धिदात्री होती है? UGC 73 J–2014

(A) क्षोभिणीमुद्रा (B) द्राविणीमुद्रा
(C) शंखमुद्रा (D) योनिमुद्रा

स्रोत–

64. 'भक्ति प्रतिपादित है- UGC 73 D–1994

(A) शाण्डिल्यभक्तिसूत्र (B) भागवत
(C) महाभारत (D) देवीभागवत

संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (9वाँ खण्ड)-बलदेव उपाध्याय, पेज-85

65. प्रह्लादगीता के वक्ता हैं - UGC 73 D–1994

(A) व्यास (B) प्रह्लाद
(C) अंगिरा ऋषि (D) अत्रि ऋषि

स्रोत–भागवतपुराण (सप्तम स्कन्ध) नवमाध्याय

66. 'अग्नीनादधीत्' यहाँ संस्कार है - UGC 73 D–2014

(A) विकृतिः (B) आटितः
(C) उत्पत्तिः (D) संस्कृतिः

स्रोत–अर्थसंग्रह-सत्यप्रकाश शर्मा, पेज-50

67. चौसठ हजार प्रकार के प्राणी होते हैं - UGC 73 D–2014

(A) अण्डजाः (B) योनिजाः
(C) उद्भिजाः (D) मनुष्याः

स्रोत–

68. स्वप्न पदार्थ दर्शन में दोष है - UGC 73 D–2014

(A) निद्रा (B) कामला
(C) पित्त (D) ज्वरः

स्रोत–षट्दर्शनम्- नन्दलाल दशोरा, पेज-231

69. यवन आक्रमण का उल्लेख .... में हुआ है। MPPSC - 2003

(A) ऋग्वेद (B) अर्थशास्त्र
(C) मनुस्मृति (D) गार्गी संहिता

स्रोत–

70. निम्नलिखित चार ग्रन्थों में से कौन-सा विश्वकोषीय ग्रन्थ है? IAS–1993

(A) अमरकोश (B) सिद्धान्तशिरोमणि
(C) बृहत्संहिता (D) अष्टांगहृदय

स्रोत–

71. धर्मशास्त्रे कति व्यवहारपदानि निर्दिष्टानि? CVVET–2017

(A) पञ्चदश (B) षोडश
(C) द्वात्रिंशत् (D) अष्टादश

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति - गङ्गासागर राय, भू0 पेज–4

60. (B) 61. (D) 62. (C) 63. (D) 64. (A) 65. (B) 66. (C) 67. (B) 68. (A) 69. (D)
70. (*) 71. (D)

12 आगम

1. शाक्तमते मकारः भवति ? UGC 73 J–2011

(A) एकविधः (B) द्विविधः

(C) त्रिविधः (D) पञ्चविधः

स्रोत–भारतीय दर्शन - जगदीशचन्द्र मिश्र, पेज-683

2. अर्धमागधीभाषायाः प्राचीनतमं रूपं प्राप्यते - UP GDC–2012

(A) दिगम्बरजैनागमेषु (B) श्वेताम्बरजैनागमेषु

(C) वसुदेवहिणीकायाम् (D) कल्पग्रन्थेषु

स्रोत–भारतीय दर्शन- जगदीशचन्द्र मिश्र, पेज-206

3. (i) शैवागम कितने तत्त्वों को स्वीकार करता है?

(ii) सृष्टिकार्ये शैवागमैः अभिमतानि तत्त्वानि– BHU RET–2008, UGC 73 J–2008

(A) 7 (B) 9

(C) 23 (D) 36

स्रोत–भारतीय दर्शन - जगदीशचन्द्र मिश्र, पेज-680

4. किसमें शिव स्वरूप का विचार किया जाता है-

(A) मीमांसा (B) आगम

(C) पुराण (D) दर्शन

स्रोत–(i) आगमरहस्यम् (भाग-1-2/9)- सुधाकर मालवीय , पेज-32

(ii) तन्त्रागमीय ज्ञानकोश-चन्द्रशेखर शिवाचार्य, भू.पेज–(iii)

5. आगम की दृष्टि से मुक्ति का स्वरूप है - UGC 73 D–2004 J–2006, 2007

(A) प्रपत्तिः (B) कर्मानुबन्धक्षयः

(C) सर्वतन्त्रस्वतन्त्रता (D) दुःखत्रयस्यात्यन्तिकक्षयः

स्रोत–संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-11), पेज–206

6. आगम हैं - UGC 73 J–2005 D–2009

(A) अपौरुषेयाः (B) पौरुषेयाः

(C) नास्तिकः (D) निगमः

स्रोत–भारतीय दर्शन - बलदेव उपाध्याय, पेज–444

7. शक्ति के स्वरूप पर विचार किया जाता है ? UGC 73 J–2005 D–2007

(A) आगम (B) सांख्य

(C) वेदान्त (D) बौद्धदर्शन

स्रोत–संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास भाग (2), पेज–320

8. इसमें अनुष्ठान एवं पुरश्चरणों का विवेचन होता है- UGC 73 D–2007

(A) कल्प (B) पुराण

(C) आगम (D) उपनिषद्

स्रोत– आगमरहस्यम् (भाग-1)-सुधाकर मालवीय, पेज–302

9. वैष्णवागमों को किस शब्द से व्यवहृत किया जाता है? UGC 73 J–2008

(A) तन्त्र (B) आगम

(C) संहिता (D) शास्त्र

संस्कृतवाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-2), पेज–501, 502, 503

10. किस मत में पञ्चमकारों से परतत्त्व की आराधना की जाती है ? UGC 73 D–2008

(A) शैव (B) शाक्त

(C) वैष्णव (D) सौर

स्रोत–भारतीय दर्शन - जगदीशचन्द्र मिश्र, पेज–683

11. (i) पशुपतमत का निरूपण किया गया है -

(ii) पशुपति विवेकस्य विचारः कृतः - UGC 73 J–2009 D–2012

(A) शैवागमे (B) जैनागमे

(C) शक्त्यागमे (D) वैष्णवागमे

स्रोत–आगमरहस्यम् (भाग-2)-सुधाकर मालवीय, पेज–677,701

12. 'प्रत्यभिज्ञा' स्वरूप निरूपित किया गया है- UGC 73 J–2009

(A) वैष्णवागमे (B) शैवागमे

(C) शक्त्यागमे (D) जैनागमे

स्रोत–भारतीय दर्शन- चन्द्रधर शर्मा, पेज-335

1. (D) 2. (A) 3. (D) 4. (B) 5. (B) 6. (A) 7. (A) 8. (C) 9. (A) 10. (B) 11. (A) 12. (B)

13. तन्त्रशास्त्र का विषय है - UGC 73 D–2009

(A) सम्मोहनम् (B) दर्शनम्
(C) सेवनम् (D) अवलोकनम्

स्रोत–भारतीय दर्शन- बलदेव उपाध्याय, पेज-447

14. आगम साहित्य किस पद्धति में विभक्त है ? UGC 73 D–2008

(A) ज्ञान-कर्म-भक्त-योगभेदेन
(B) संज्ञा-सन्धि-परिभाषा-कारणभेदेन
(C) आचार-व्यवहार-प्रायश्चित्तभेदेन
(D) ज्ञान-क्रिया-चर्या-योगभेदेन

स्रोत–आगमरहस्य (भाग-1)-सुधाकर मालवीय, भू.पेज- 21

15. मारणमोहन वशीकरण स्तम्भन और उच्चाटन विषय है - UGC 73 D–2009

(A) शैवतन्त्रस्य (B) शक्त्यागमस्य
(C) वैष्णवागमस्य (D) जैनागमस्य

स्रोत–अग्निपुराण (अध्याय-125) तारिणीश झा, पेज-454

16. शैवागमों की संख्या होती है ? UGC 73 J–2010, D–2010

(A) 10 (B) 28
(C) 64 (D) 107

स्रोत–भारतीय दर्शन- चन्द्रधर शर्मा, पेज-335

17. 'संहिता' शब्द के द्वारा व्यवह्रियमाण आगम कौन हैं? UGC 73 J–2010

(A) शैवागमाः (B) शाक्तागमाः
(C) बौद्धागमाः (D) वैष्णवागमाः

स्रोत–भारतीय दर्शन- बलदेव उपाध्याय, पेज-449

18. आगम में तात्त्विक अंशो का विचार करें - UGC 73 J–2010

(A) क्रियापादे (B) योगपादे
(C) ज्ञानपादे (D) चर्यापादे

स्रोत–आगमरहस्यम् (भाग-1)-सुधाकर मालवीय, पेज–15-16

19. शाक्तागम की संख्या है - UGC 73 D–2010

(A) 64 (B) 107
(C) 28 (D) 222

स्रोत–भारतीय दर्शन-बलदेव उपाध्याय, पेज-477

20. मोक्ष प्राप्ति के लिये वामाचार का प्रतिपादन करते हैं? UGC 73 D–2010

(A) वैष्णवागमाः (B) शाक्तागमाः
(C) शैवागमाः (D) वैखानसागमाः

स्रोत–तन्त्रागमीय ज्ञानकोश-चन्द्रशेखर शिवाचार्य, पेज-240

21. आगम के अनुसार आलयाराधन अन्तर्भूत होता है? UGC 73 D–2010

(A) परार्थपूजायाम् (B) आत्मार्थपूजायाम्
(C) लोकार्थपूजायाम् (D) मानसिकपूजायाम्

संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (भाग-1)-बलदेव उपाध्याय, पेज–55

22. ''कलौ आगम सम्भव'' मिलता है- UGC 73 J–2011

(A) महानिर्वाणतन्त्रे (B) वेदे
(C) मनुस्मृतौ (D) कुलार्णवतन्त्रे

स्रोत–पुराणविमर्श- बलदेव उपाध्याय, पेज-450

23. श्मशान, भवन, काञ्चन और चन्दन में सर्वथा भेदभाव शून्य होते हैं - UGC 73 D–2011

(A) कौलाः (B) संन्यासिनः
(C) गृहस्थाः (D) चाण्डालाः

स्रोत–

24. पञ्चमकार स्वीकार करते हैं - UGC 73 D–2011

(A) दार्शनिकाः (B) स्वेच्छाचारिणः
(C) नास्तिकाः (D) कौलाचारिणः

स्रोत–भारतीय दर्शन-जगदीशचन्द्र मिश्र, पेज-682-683

25. आगमों का उपदेश दिया जाता है - UGC 73 D–2011

(A) शङ्करेण (B) निम्बार्केण
(C) भारद्वाजेन (D) वैशम्पायनेन

स्रोत–भारतीय दर्शन- जगदीशचन्द्र मिश्र, पेज-661

26. शैवागमों में इस आगम का अन्तर्भाव नहीं होता है - UGC 73 J–2012 D–2012

(A) कारणागमः (B) वैखानसागमः
(C) अभेदागमः (D) पाशुपतागमः

स्रोत–भारतीय दर्शन- बलदेव उपाध्याय, पेज-449

13. (A)	14. (D)	15. (B)	16. (B)	17. (D)	18. (C)	19. (A)	20. (D)	21. (A)	22. (D)
23. (A)	24. (D)	25. (A)	26. (B)						

27. 'संहिता' शब्द का प्रयोग होता है - UGC 73 J–2012
(A) शैवागमेषु (B) वैष्णवागमेषु
(C) शाक्तागमेषु (D) जैनागमेषु
स्रोत–भारतीय दर्शन - बलदेव उपाध्याय, पेज–449

28. 'आगमाभिधेयः' शब्द है - UGC 73 J–2012
(A) तन्त्रम् (B) पुराणम्
(C) धर्मशास्त्रम् (D) श्रौतसूत्रम्
संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (भाग-11)-बलदेव उपाध्याय, भू0पेज–16

29. शाक्तानां भावाः सन्ति - UGC 73 J–2012
(A) त्रयः (B) सप्त
(C) पञ्च (D) षट्
स्रोत–भारतीय दर्शन- बलदेव उपाध्याय, पेज-439

30. यह वैष्णवागमों में अन्तर्भूत होता है- UGC 73 J–2012, 2015
(A) सौरतन्त्रम् (B) पञ्चरात्रम्
(C) गाणपत्यतन्त्रम् (D) अभेदागमः
स्रोत–संस्कृत परम्परागत विषय-शत्रुघ्न त्रिपाठी, पेज-144

31. शैवागम हैं - UGC 73 J–2013
(A) अष्टादश (B) पञ्चदश
(C) षोडश (D) दश
स्रोत–भारतीय दर्शन- बलदेव उपाध्याय, पेज-446

32. श्रीकण्ठीयसंहिता भवति - UGC 73 J–2013
(A) वेदस्य (B) वेदाङ्गस्य
(C) आगमस्य (D) पुराणस्य
आगमरहस्यम् (शाक्तागम भाग-1)-सुधाकर मालवीय, भू0 पेज-22

33. जयद्रथयामल ग्रन्थ में श्लोक हैं - UGC 73 J–2013
(A) 24 सहस्र (B) 10 सहस्र
(C) 14 सहस्र (D) 15 सहस्र
आगमरहस्यम् (शाक्तागम भाग-1)-सुधाकर मालवीय, भू0 पेज-24

34. पञ्चरात्रम् आगम है - UGC 73 D–2012
(A) वैष्णवागमः (B) बौद्धागमः
(C) शैवागमः (D) जैनागमः
स्रोत–संस्कृत पम्परागत विषय-शत्रुघ्न त्रिपाठी, पेज-144

35. शैवागमों में उपासना विषय का विचार किया गया है- UGC 73 D–2012
(A) क्रियापादे (B) ज्ञानपादे
(C) योगपादे (D) चर्यापादे
स्रोत–भारतीय दर्शन -बलदेव उपाध्याय, पेज-481

36. तन्त्रसार में मुद्राओं की संख्या है- UGC 73 D–2012
(A) दश (B) एकादश
(C) षोडश (D) सप्तदश
स्रोत–तंत्रागमीय ज्ञानकोश-चन्द्रशेखर शिवाचार्य, पेज–263

37. "पाशबद्धो भवेज्जीवः" इस वाक्य का उद्धरणग्रन्थ है- UGC 73 D–2012
(A) तत्त्वसारः (B) क्रियासारः
(C) अभेदागमः (D) पाशुपतागमः
स्रोत–

38. शिल्पविद्या की प्रस्तुति .... है - UGC 73 D–2012
(A) वैखानसागमे (B) जयसंहितायाम्
(C) पाशुपतागमे (D) अभेदागमे
स्रोत–वैखानस आगम : एक अध्यन-शीतलाप्रसाद पाण्डेय, पेज–110

39. अष्टकाः भवन्ति- UGC 73 D–2012
(A) तिस्रः (B) चतस्रः
(C) नव (D) दश
स्रोत–निर्णयसिन्धु-व्रजरत्नभट्टाचार्य, पेज-359

40. वसिष्ठसंहितादि शुभागम हैं - UGC 73 J–2013
(A) पञ्चदश (B) पञ्च
(C) सप्तदश (D) नव
आगम-रहस्यम् (शाक्तागम भाग-1) सुधाकर मालवीय, भू0पेज-23

41. शिवपूजा के विधान में रङ्गवल्यादिकथन प्रस्तुत होता है- UGC 73 D–2013
(A) पाशुपतागमे (B) कारणागमे
(C) सूक्ष्मागमे (D) चन्द्रज्ञानागमे
स्रोत–

27. (B)	28. (A)	29. (A)	30. (B)	31. (A)	32. (C)	33. (A)	34. (A)	35. (A)	36. (A)
37. (A)	38. (A)	39. (A)	40. (B)	41. (B)					

42. कारणागम में पटल होते हैं - UGC 73 D–2013
(A) सप्त (B) दश
(C) नव (D) पञ्च
स्रोत–

43. पति-पशु–पाश इन तीन तत्त्वों का विशद विचार किया गया है- UGC 73 D–2013
(A) चन्द्रज्ञानागमे प्रथमे पटले
(B) कामिकागमे प्रथमे पटले
(C) मुकुटागमे प्रथमे पटले
(D) कारणागमे प्रथमे पटले
स्रोत–

44. भूतवस्तुविषय का प्रामाण्य होता है- UGC 73 D–2006
(A) वस्तुतन्त्रम् (B) पुरुषतन्त्रम्
(C) चोदनातन्त्रम् (D) परतन्त्रम्
स्रोत–

45. यह जगत् गणसंज्ञक है तथा इसका जो गणपति है, वह स्वयं पति है - UGC 73 D–2013
(A) दुर्गा (B) विनायकः
(C) शिवः (D) विष्णुः
स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति (1/271) उमेशचन्द्र पाण्डेय, पेज-126

46. आगम के अनुसार मुख्यसाधन का मार्ग होता है - UGC 73 J–2014
(A) ज्ञानमार्गः (B) षट्स्थलमार्गः
(C) भक्तिमार्गः (D) कर्ममार्गः
स्रोत–आगमरहस्यम् (शाक्तागम)-सुधाकर मालवीय, पेज-699

47. दिगम्बर जैन आगमों की भाषा है-UGC 25 D–2002
(A) शौरसेनी (B) द्रविड़
(C) मराठी (D) संस्कृत
स्रोत–भाषाविज्ञान-कर्णसिंह, पेज-118

48. अभिचारों की संख्या है - UGC 73 D–1991, 1994, 1996, 1999, J–1991
(A) पाँच (B) छः
(C) आठ (D) चार
स्रोत–संस्कृत परम्परागत विषय- शत्रुघ्न त्रिपाठी, पेज-149

49. 'पाश' कितने प्रकार के हैं - UGC 73 D–1992, 1996, J-1991, J–2006
(A) चार (B) पाँच
(C) आठ (D) तीन
स्रोत–संस्कृत परम्परागत विषय- शत्रुघ्न त्रिपाठी, पेज-145

50. शिवदृष्टि है - UGC 73 D–1996
(A) सोमानन्द की (B) उत्पलदेव की
(C) अभिनवगुप्त की (D) क्षेमेन्द्र की
स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-795

51. मूर्ति निर्माण है - UGC 73 D–1996
(A) प्रत्यभिज्ञा में (B) कौल में
(C) शाक्त में (D) वैखानस में
स्रोत–संस्कृत परम्परागत विषय- शत्रुघ्न त्रिपाठी, पेज-146

52. पति, पशु और पाश हैं -UGC 73 D–1997 J–1999
(A) वैष्णव (B) शाक्त
(C) शैव (D) वैखानस
स्रोत–संस्कृत परम्परागत विषय- शत्रुघ्न त्रिपाठी, पेज-144

53. वैष्णव मन्दिर निर्मित होते हैं- UGC 73 D–1997
(A) शाक्त (B) वैष्णव
(C) वैखानस (D) पञ्चरात्र
स्रोत–संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-11), पेज–63

54. 'वतुलागम' का सम्बन्ध है - UGC 73 J–1998
(A) शैवमतेन (B) भागवतमतेन
(C) पाञ्चरात्रमतेन (D) वैखानसमतेन
स्रोत–

55. प्रपत्तिपदार्थव्यवच्छेदक है - UGC 73 J–1998
(A) शैवमत (B) वैष्णवमत
(C) गाणपत्यमत (D) शाक्तमत
स्रोत–

56. आगम का एक पाद होता है - UGC 73 J–1999
(A) कैवल्यपाद (B) चर्यापाद
(C) साधनपाद (D) स्मृतिपाद
स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह- उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-277

42. (B) 43. (A) 44. (A) 45. (B) 46. (B) 47. (A) 48. (B) 49. (A) 50. (A) 51. (D)
52. (C) 53. (C) 54. (C) 55. (A) 56. (B)

57. 'पाशबद्धो भवेज्जीवः' किसका कथन है- UGC 73 D–1999

(A) क्षेमेन्द्र (B) अभिनवगुप्त
(C) अश्वघोष (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–

58. ''पञ्चधा गुणिता पत्नी शम्भोः'' यह पद्य भाग है- UGC 73 D–2014

(A) आगमरहस्ये (B) प्रपञ्चसारे
(C) शारदायाम् (D) ईश्वरसंहितायाम्

स्रोत–आगमरहस्यम् (शाक्तागम भाग-1)-सुधाकर मालवीय, पेज-21

59. शूलपाणि का प्रदेश है- UGC 73 D–2014

(A) पूर्वबङ्गः (B) बिहारः
(C) आसामः (D) महाराष्ट्रः

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति-उमेशचन्द्र पाण्डेय, भू0 पेज-24

60. आगम के अनुसार ''यमल'' शब्द का अर्थ होता है- UGC 73 D–2004, 2006

(A) सुख-दुःख (B) माया-जीव
(C) भुक्ति-मुक्ति (D) स्त्री-पुरुष

स्रोत–तन्त्रागमीय ज्ञानकोश-चन्द्रशेखर शिवाचार्य, पेज-261

61. शिववक्त्रेभ्यः आगतोऽस्ति - UGC-73 S–2013

(A) वेदः (B) पुराणम्
(C) आगमः (D) इतिहासम्

आगमरहस्यम् (शाक्तागम भाग-1) सुधाकर मालवीय, भू0 पेज-20

62. ''पाशुपतसूत्रम्'' सम्बद्धग्रन्थ है - BHU MET–2015

(A) शैवागम (B) वैष्णवागम
(C) शाक्तागम (D) कौलाचार

स्रोत–आगमरहस्यम् (भाग-2) सुधाकर मालवीय-पेज-728

63. कादिविद्या है - UGC 73 J–2015, Jn-2017

(A) पाञ्चरात्रागमस्य (B) शैवागमस्य
(C) त्रैपुरागमस्य (D) वैखानसागमस्य

स्रोत–आगमरहस्य (भाग-2)-सुधाकर मालवीय, पेज–9

64. कामिकागमोक्त दशमधातु है - UGC 73 J–2015

(A) प्राणः (B) जीवः
(C) पराशक्तिः (D) मज्जा

स्रोत–

65. दीप्तादि पञ्चसंहिताओं की उत्पत्ति हुई - UGC 73 J–2015

(A) सद्योजातमुखात् (B) वामदेवमुखात्
(C) अघोरवाक्यात् (D) पुंवाक्यात्

स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज–275

66. पञ्चकृत्यों में नहीं परिगणित है - UGC 73 J–2015

(A) सृष्टिः (B) स्थितिः
(C) अनुग्रहः (D) अध्ययनम्

स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज–283

67. 'मुद्रा' शब्द किस दर्शन का शब्द है ? UGC 73 J–2015

(A) आगमदर्शनस्य (B) सांख्यदर्शनस्य
(C) अवतारवादस्य (D) विशिष्टाद्वैतस्य

आगमरहस्यम् (शाक्तागम भाग-1)-सुधाकर मालवीय, भू0पेज-44

68. 'नरेश्वर परीक्षा' नामक आगमग्रन्थ के रचयिता हैं? UGC 73 D–2015

(A) भोजराजः (B) श्रीकण्ठः
(C) रामकण्ठः (D) सद्योज्योतिः

संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-11)-बलदेव उपाध्याय, पेज–153

69. त्राणं च कुरुते यस्मात् तन्त्रमित्यभिधीयते, इत्युक्तमस्ति? UGC 73 J–2011

(A) रुद्रटाचार्येण (B) मनुना
(C) शङ्कराचार्येण (D) कुमारिलभट्टेन

स्रोत–भारतीय दर्शन-बलदेव उपाध्याय, पेज-432

70. सूक्ष्मागम के अनुसार 'निराभारी' का अर्थ है - UGC 73 J–2014

(A) ईश्वरः (B) जङ्गमः
(C) प्रपञ्चः (D) मुक्तिः

स्रोत–

71. प्रकृत्यण्डे तत्वानि उक्तानि सन्ति शैवागमे - UGC 73 Jn–2017

(A) विंशतिः (B) एकोनविंशतिः
(C) सप्तविंशतिः (D) त्रयोविंशतिः

स्रोत–तन्त्रसार (द्वितीय खण्ड) - परमहंस मिश्र, पेज-257

**57. (B) 58. (A) 59. (A) 60. (C) 61. (C) 62. (A) 63. (B) 64. (*) 65. (B) 66. (D)
67. (A) 68. (C) 69. (*) 70. (*) 71. (C)**

72. शारदातिलकानुसारेण 'हंसः इत्यत्र 'हं' भवति - UGC 73 Jn–2017

(A) शक्तिः (B) पुरुषः
(C) प्रकृतिः (D) योगिनी

स्रोत–आगमरहस्यम् (शाक्तागम भाग-1)-सुधाकर मालवीय, पेज-520

73. आगमरहस्यस्य कस्मिन् पटले मोक्षविचारोऽस्ति - UGC 73 Jn–2017

(A) चतुर्थे (B) नवमे
(C) षोडशे (D) अष्टचत्वारिंशत्पटले

आगमरहस्यम् (शाक्तागम भाग-1)-सुधाकर मालवीय, भू0 पेज-28

74. पार्थिवाण्डाधिष्ठातृरूपेणोच्यते- UGC 73 Jn–2017

(A) ब्रह्मा (B) विष्णुः
(C) रुद्रः (D) शक्तिः

स्रोत–आगमरहस्यम्- (भाग-2) सुधाकर मालवीय, पेज-764

75. 'नवमी विद्या' कुत्र प्राप्यते - UGC 73 Jn–2017

(A) रामायणे (B) महाभारते
(C) शैवागमे (D) शिवपुराणे

स्रोत–

76. आगमानुसारं कः पतिप्रमाता न उच्यते - UGC 73 Jn–2017

(A) अकलः (B) मन्त्रमहेश्वरः
(C) मन्त्रेश्वरः (D) मन्त्रः

स्रोत–तन्त्रागमीय ज्ञानकोश- चन्द्रशेखर शिवाचार्य, पेज-146

77. 'अहम्' इत्यस्य श्रद्धा, असीमा, परिपूर्णा च अवस्था का उच्यते - UGC 73 Jn–2017

(A) परावस्था (B) विच्छिन्नता
(C) विमर्शात्मकता (D) अनभिव्यक्तता

स्रोत–शैवदर्शन एवं स्पन्दशास्त्र - श्यामाकान्त द्विवेदी, पेज–73

78. शुद्धविद्या किमुच्यते - UGC 73 Jn–2017

(A) मन्त्रेश्वरः (B) भेदाभेदमयीदृष्टिः
(C) अभेददृष्टिः (D) भेददृष्टिः

स्रोत–तन्त्रागमीय ज्ञानकोश- चन्द्रशेखर शिवाचार्य, पेज-145

79. विषवेग होता है? UGC 73 D–2014

(A) सप्त (B) नव
(C) दश (D) एकादश

स्रोत–तन्त्रागमीय ज्ञानकोश- चन्द्रशेखर शिवाचार्य, पेज-272

80. 'बिन्दुः शिवात्मकः' यह है - UGC 73 D–2014

(A) योगिनीहृदये (B) शारदायाम्
(C) प्रयोगसारे (D) सौभाग्यसुभगे

आगमरहस्यम् (शाक्तागम भाग-1, 1/51) सुधाकर मालवीय, पेज-8,9

81. गरदः इसका अर्थ है- UGC 73 D–2014

(A) अगारदाही (B) विषदाता
(C) सोमविक्रेता (D) गृहकर्ता

स्रोत–संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेजी शब्दकोश-उमाप्रसाद पाण्डेय, पेज-285

82. महामुद्रा त्रिखण्डेति प्रकीर्तिता अस्ति-UGC 73 D–2014

(A) संक्षोभिणी (B) आवाहनी
(C) आकर्षणी (D) पुटकारा

स्रोत–

83. 'मातृका द्विविधा प्रोक्ता परा च अपरा तथा' यह है- UGC 73 D–2014

(A) उपनिषदि (B) गीतायाम्
(C) देवीसूक्ते (D) आगमरहस्ये

स्रोत–आगमरहस्यम् (शाक्तागम)-सुधाकर मालवीय, पेज-237

84. ''संसारसागरे मग्नाम् यस्तारयति देहिनः'' वह होता है? UGC 73 D–2014

(A) ब्रह्मज्ञानी (B) गुरुः
(C) गृहस्थः (D) अर्चकः

स्रोत–आगमरहस्यम् (शाक्तागम 4/22) सुधाकर मालवीय, पेज-79

85. महाकालसंहिता का प्रतिपाद्य है? UGC 73 D–2007

(A) सृष्टिवादः (B) कर्मवादः
(C) पशुपतिविवेकः (D) अभिचाराणि

स्रोत– आगमरहस्यम् (शैवागम भाग-2)-सुधाकर मालवीय, पृष्ठ-289

86. 'सूना' इत्यस्यार्थो भवति– UGC 73 D–2012

(A) श्मशानम् (B) पशुवधस्थानम्
(C) विवादस्थानम् (D) युद्धस्थलम्

स्रोत– संस्कृत हिन्दी शब्दकोष-वामनशिवराम आप्टे, पेज–1120

72. (A) 73. (A) 74. (A) 75. (C) 76. (A) 77. (*) 78. (A) 79. (A) 80. (B) 81. (B) 82. (B) 83. (D) 84. (B) 85. (B) 86. (B)

13 पुराण

1. (i) विष्णुपुराण में पुराण के कितने लक्षण हैं -
(ii) पुराणस्य सामान्यलक्षणानि कति -
(iii) पुराण के कितने लक्षण हैं-
UGC 73 D–2006, J–2015, UK SLET–2012

(A) 14 (B) 05
(C) 11 (D) 18

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास–कपिलदेव द्विवेदी, पृष्ठ- 94

2. 'प्रतिसर्ग' लक्षण है- UP PGT–2004

(A) धर्ममार्ग का (B) काव्य का
(C) पुराण का (D) नीतिकाव्य का

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास–कपिलदेव द्विवेदी, पृष्ठ- 94

3. (i) सर्ग,प्रतिसर्ग, वंश, मन्वन्तर और वंशानुचरित संकेतक है-BHU B.Ed–2011, UP PCS–2015
(ii) सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च .... इति कस्य लक्षणम् -

(A) नाटकस्य (B) महाकाव्यस्य
(C) गद्यकाव्यस्य (D) पुराणस्य

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास–कपिलदेव द्विवेदी, पृष्ठ- 94

4. (i) पञ्चलक्षणम् अस्ति - MP वर्ग-I PGT–2012
(ii) पञ्चलक्षणम् इति कस्य कृते उक्तम्?
RPSC SET–2010

(A) महाभारतम् (B) पुराणम्
(C) रामायणम् (D) गीता

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास – कपिलदेव द्विवेदी, पृष्ठ- 94

5. निम्नलिखित में सही है - UGC 73 J–2009, 2010

(A) पुराणं सप्तलक्षणम् (B) पुराणं पञ्चलक्षणम्
(C) पुराणं दशलक्षणम् (D) पुराणमष्टादशलक्षणम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास–कपिलदेव द्विवेदी, पृष्ठ- 94

6. पुराणों का स्वरूप है - UGC 73 J–2011

(A) उपदेशप्रधानम् (B) इतिहासप्रधानम्
(C) विनोदप्रधानम् (D) युद्धप्रधानम्

संस्कृत साहित्य का इतिहास – उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 173

7. पुराणशब्दस्य अर्थः - AWES TGT 2011–2012

(A) पौराणिकः (B) प्राचीनः
(C) प्राचीनः यः नवीनः अस्ति (D) निरर्थकं वस्तु

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास–कपिलदेव द्विवेदी, पृष्ठ- 94

8. उपदेशप्रधानं भवति - UGC 73 J–2013

(A) वेदः (B) पुराणम्
(C) कर्मकाण्डम् (D) सांख्यदर्शनम्

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज- 11

9. पुराण लक्षणों में नहीं आता है - UGC 73 J–2013

(A) सर्गः (B) वंशानुचरितम्
(C) विधिः (D) प्रतिसर्गः

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास–कपिलदेव द्विवेदी, पृष्ठ- 94

10. (i) 'सर्गश्च प्रतिसर्गश्च .... पुराणं पञ्चलक्षणम्' इस श्लोक में 'प्रतिसर्गः' शब्द का क्या अर्थ है?
(i) 'सर्गश्च प्रतिसर्गश्च' - यहाँ 'प्रतिसर्ग' का अर्थ है-
UGC 73 J–2014, 2016

(A) उत्पत्तिः (B) स्थितिः
(C) प्रलयः (D) देवभूमिः

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास–कपिलदेव द्विवेदी, पृष्ठ- 94

11. पुराणपञ्चलक्षणे नास्ति - UGC 25 J–2013

(A) वंशः (B) उत्सर्गः
(C) सर्गः (D) प्रतिसर्गः

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास–कपिलदेव द्विवेदी, पृष्ठ- 94

12. 'पुराणं पञ्चलक्षणम्' में एक है - UGC 73 J–1998

(A) वंशः (B) देशः
(C) कालः (D) ज्ञानम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास–कपिलदेव द्विवेदी, पृष्ठ- 94

1. (B) 2. (C) 3. (D) 4. (B) 5. (B) 6. (B) 7. (B) 8. (B) 9. (C) 10. (C) 11. (B) 12. (A)

13. 'पुरा नवं भवति' इति पुराणशब्दनिर्वचनं कः कृतवान्? HE–2015

(A) गार्ग्यः (B) मधुसूदनसरस्वती
(C) व्यासः (D) यास्कः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास – उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 174

14. यास्क के मतानुसार 'पुराण' शब्द की व्युत्पत्ति है? UGC 73 D–2015

(A) पुरा नवं भवति (B) पुरा परम्परां वष्टि
(C) पुरा भवम् (D) पुरा एतद् अभूत्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास – उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 174

15. पुराणों के विषय में यह कथन असत्य है? UGC 73 J–2016

(A) पुराणेषु चतुर्विधसृष्टिविद्याया एव वर्णनमस्ति
(B) पुराणं पञ्चलक्षणमस्ति
(C) पुराणेषु सृष्टिविद्यायाः वैशद्येन वर्णनमस्ति
(D) भागवतपुराणे पुराणस्य दशलक्षणानि वर्णितानि

स्रोत–(i) पुराण-विमर्श-बलदेव उपाध्याय, पेज–125, 274, 128
(ii) श्रीमद्भागवत् (3.10), पेज–278

16. पुराणों में ऐतिहासिक सूचनायें .... में मिलती है - MP PSC–2003

(A) सर्ग (B) प्रतिसर्ग
(C) वंश (D) वंशानुचरित

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास – उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 175

17. पुराणलक्षणस्य घटकम् अस्ति - UK SLET–2015

(A) वंशानुचरितम् (B) आयुः
(C) उन्नतिः (D) तात्पर्यम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास–कपिलदेव द्विवेदी, पृष्ठ- 94

18. ''सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च'' इत्याद्युक्ति केन सम्बद्धा - UGC 25 J–2015

(A) वेदलक्षणेन (B) ज्योतिषलक्षणेन
(C) महाकाव्यलक्षणेन (D) पुराणलक्षणेन

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास–कपिलदेव द्विवेदी, पृष्ठ- 94

19. (i) पुराणमिदमष्टादशमहापुराणेष्वन्यतमं न भवति -
(ii) पुराणमिदमष्टादशमहापुराणेषु न गण्यते - UGC 25 D–2012, 2014

(A) नृसिंहपुराणम् (B) विष्णुपुराणम्
(C) ब्रह्मपुराणम् (D) कूर्मपुराणम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास–कपिलदेव द्विवेदी, पृष्ठ- 96

20. उपपुराण है - UGC 73 J–2009

(A) शिवपुराणम् (B) वायुपुराणम्
(C) कालिकापुराणम् (D) गरुडपुराणम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास–कपिलदेव द्विवेदी, पृष्ठ- 96

21. अठारह पुराणों में नहीं है-UGC 73 D–2012 J–2013

(A) केदारखण्डपुराणम् (B) भविष्यपुराणम्
(C) अग्निपुराणम् (D) वायुपुराणम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास–कपिलदेव द्विवेदी, पृष्ठ- 96

22. अष्टादश महापुराणों में किसकी गणना नहीं होती? UGC 73 D–2015

(A) ऐन्द्रपुराणम् (B) वायुपुराणम्
(C) अग्निपुराणम् (D) ब्रह्मपुराणम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास–कपिलदेव द्विवेदी, पृष्ठ- 96

23. शैव पुराण हैं - UGC 73 J–2013

(A) एकादश (B) द्वादश
(C) दश (D) नव

संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-13)-बलदेव उपाध्याय, भू.पेज–22

24. तामस पुराण है - UGC 73 D–2013

(A) ब्रह्मपुराणम् (B) नारदीयपुराणम्
(C) वामनपुराणम् (D) मत्स्यपुराणम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास – उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 177

25. सात्त्विक पुराण है - UGC 73 D–2013

(A) भविष्यपुराणम् (B) शिवपुराणम्
(C) श्रीमद्भागवतपुराणम् (D) लिङ्गपुराणम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास – उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 177

13. (D) 14. (A) 15. (A) 16. (D) 17. (A) 18. (D) 19. (A) 20. (C) 21. (A) 22. (A) 23. (C) 24. (D) 25. (C)

26. पुराण दशसाहस्त्र है - UGC 73 S–2013
(A) अग्निपुराण (B) नारदपुराण
(C) वामनपुराण (D) मत्स्यपुराण
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास – उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 187

27. उपपुराण में अन्तर्भाव है - UGC 73 S–2013
(A) श्रीमद्भागवतपुराण (B) कल्किपुराण
(C) लिङ्गपुराण (D) स्कन्दपुराण
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 176

28. गरुडपुराण है- UGC 73 J–2014
(A) राजसं पुराणम् (B) सात्त्विकं पुराणम्
(C) तामसं पुराणम् (D) इतिहासात्मकपुराणम्
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 177

29. राजस पुराण है - UGC 73 J–2014
(A) भविष्यपुराणम् (B) मत्स्यपुराणम्
(C) नारदीयपुराणम् (D) वराहपुराणम्
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 177

30. तीन 'ब्र' के अन्तर्गत नहीं है - UGC 73 J–2014
(A) ब्रह्माण्डपुराणम् (B) ब्रह्मपुराणम्
(C) ब्रह्मवैवर्त्तपुराणम् (D) वामनपुराणम्
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 176

31. महापुराणेषु न गण्यते - UGC 25 S–2013
(A) पद्मपुराणम् (B) ब्रह्मपुराणम्
(C) साम्बपुराणम् (D) स्कन्दपुराणम्
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 176

32. खिलभागत्वेनाभिधीयते - UGC 25 S–2013
(A) नारदपुराणम् (B) ब्रह्मपुराणम्
(C) कूर्मपुराणम् (D) हरिवंशपुराणम्
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास – उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 159

33. महापुराणेषु न गण्यते - UGC 25 J–2014
(A) कालिकापुराणम् (B) स्कन्दपुराणम्
(C) विष्णुपुराणम् (D) अग्निपुराणम्
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास–कपिलदेव द्विवेदी, पृष्ठ- 96

34. राजसपुराण है - UGC 73 D–2014
(A) मार्कण्डेयपुराणम् (B) गरुडपुराणम्
(C) अग्निपुराणम् (D) नारदीयपुराणम्
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास – उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 177

35. ''मद्वयं भद्वयम्'' इत्यादि श्लोक में 'मद्वयम्' से दो पुराणों को ग्रहण किया जाता है-
UGC 73 D–2005 J–2007, 2008, 2012
(A) महापुराण मनुस्मृति
(B) मार्कण्डेयपुराण और आदिपुराण
(C) मत्स्यपुराण और मार्कण्डेयपुराण
(D) मत्स्यपुराण और महापुराण
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास–कपिलदेव द्विवेदी, पृष्ठ- 96

36. देवीभागवत ग्रन्थ है - BHU MET–2015
(A) स्मृतिग्रन्थ (B) पुराणग्रन्थ
(C) उपनिषद्ग्रन्थ (D) महापुराणग्रन्थ
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 183

37. उपपुराणम् अस्ति - UK SLET–2015
(A) भागवत (B) मत्स्य
(C) अग्नि (D) औशनस्
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास–कपिलदेव द्विवेदी, पृष्ठ- 96

38. महापुराण नहीं है - UGC 73 J–2015
(A) मार्कण्डेयपुराणम् (B) पद्मपुराणम्
(C) नारदीयपुराणम् (D) कूर्मपुराणम्
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास–कपिलदेव द्विवेदी, पृष्ठ- 96

39. महापुराणेषु न गण्यते– UGC 25 J–2016
(A) एकाम्रपुराणम् (B) ब्रह्मपुराणम्
(C) लिङ्गपुराणम् (D) पद्मपुराणम्
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास – उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 176

40. महापुराण है - UGC 73 J–2015
(A) वराहपुराण (B) कपिलपुराण
(C) नारसिंहपुराण (D) मारीचपुराण
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास–कपिलदेव द्विवेदी, पृष्ठ- 96

26. (C)	**27. (B)**	**28. (B)**	**29. (A)**	**30. (D)**	**31. (C)**	**32. (D)**	**33. (A)**	**34. (A)**	**35. (C)**
36. (B)	**37. (D)**	**38. (C)**	**39. (A)**	**40. (A)**					

41. सूर्यस्य रथः .... परिमितो भवति - UGC 73 J–2014

(A) पञ्चयोजन (B) नवसहस्रयोजन
(C) सप्तयोजन (D) एकयोजन

स्रोत–भागवतमहापुराण (5.21.15) – गीताप्रेस, पृष्ठ- 670

42. 'पञ्चविंशतिसहस्राणि'' कहा जाता है- UGC 73 D–2013

(A) मायवीयम् (B) नारदीयम्
(C) मार्कण्डेयम् (D) गारुडीयम्

स्रोत–पुराण-विमर्श – बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ- 150

43. 'आदिब्राह्म' नाम से भी प्रसिद्ध पुराण कौन सा है? UGC 73 D–2015

(A) ब्रह्मपुराणम् (B) ब्रह्मवैवर्तपुराणम्
(C) ब्रह्माण्डपुराणम् (D) अग्निपुराणम्

स्रोत–पुराणविमर्श – बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ- 140

44. 'मद्वयं भद्वयं चैव ब्रत्रयं वचतुष्टयम्' इति .... वर्तते? GJ SET–2016

(A) देवीभागवतपुराणे (B) ब्रह्माण्डपुराणे
(C) मत्स्यपुराणे (D) लिङ्गपुराणे

स्रोत–पुराणविमर्श – बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ- 75

45. (i) पुराणों की संख्या कितनी है - UP PCS–2009
(ii) महापुराणों की संख्या है - UK TET–2001
(iii) प्रमुखपुराणानां परम्परागतः कति संख्या विद्यते?
AWES TGT–2010, UGC 73 J–1991, 2006, 2008, 2011, 2012, D–2004, 2009, 2010 K-SET–2014, MP PSC–1991, BHU MET–2015, BHU B.Ed–2015, CVVET–2015, UP TET–2016

(A) 16 (B) 17
(C) 18 (D) 20

स्रोत–पुराणविमर्श – बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ- 75

46. अग्निपुराणानुसारेण राज्ञः उपायेषु दानस्य भेदाः भवन्ति- UGC 73 J–2012

(A) पञ्च (B) नव
(C) चत्वारः (D) त्रयः

अग्निपुराण (अध्याय-241)–तारिणीश झा, पृष्ठ- 739,740

47. पुराणानुसारेण ब्रह्माण्डे भुवनानि भवन्ति - UGC 73 D–2012

(A) अष्टादश (B) चतुर्दश
(C) त्रीणि (D) एकादश

स्रोत–पुराणविमर्श – बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ- 343

48. मत्स्यपुराण में दुर्ग की संख्या हैं - UGC 73 D–2012

(A) पञ्च (B) नव
(C) षट् (D) एकादश

स्रोत–(i) संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-13), पेज–478
(ii) मत्स्यपुराण - कालीचरण गौड, पेज–780

49. वायुपुराण में महाद्वीप हैं - UGC 73 D–2012

(A) पञ्च (B) नव
(C) चत्वारः (D) षट्

स्रोत–वायुपुराण (अध्याय-34) – शिवजीत सिंह, पृष्ठ- 237

50. (i) पद्मपुराण के प्रथम सृष्टिखण्ड में अध्यायों की संख्या है - UGC 73 S–2013 D–2014
(ii) पद्मपुराणस्य सृष्टिखण्डे कति अध्यायाः -

(A) 85 (B) 24
(C) 26 (D) 82

स्रोत–पुराणविमर्श – बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ- 141

51. पद्मपुराण में अवतारों की संख्या है- UGC 73 S–2013

(A) द्वादश (B) नव
(C) दश (D) एकादश

स्रोत–पुराणविमर्श – बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ- 175

52. उपपुराणों की संख्या - UGC 73 J–1991

(A) पन्द्रह (B) अठारह
(C) बीस (D) उन्नीस

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास–कपिलदेव द्विवेदी, पृष्ठ- 96

53. देवीभागवत में स्कन्ध हैं - UGC 73 D–1994 RPSC-SET–2010

(A) तेरह (B) बारह
(C) अठारह (D) बीस

संस्कृत साहित्य का इतिहास – उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 183

41. (B) 42. (B) 43. (A) 44. (A) 45. (C) 46. (A) 47. (B) 48. (C) 49. (C) 50. (D) 51. (C) 52. (B) 53. (B)

54. भागवत के दशमस्कन्ध के पूर्वार्ध में अध्याय संख्या है- UGC 73 D–1999
(A) 51 (B) 59
(C) 49 (D) 47
स्रोत–भागवतमहापुराण (10-49) खण्ड-2–गीताप्रेस, पृष्ठ- 444

55. 'अवन्तिखण्ड' है - UGC 73 J–2005
(A) श्रीमद्भागवत (B) ब्रह्मवैवर्तपुराण
(C) स्कन्दपुराण (D) पद्मपुराण
संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 187

56. 'शिवपुराण' में मुख्य रूप से वर्णन है - UGC 73 J–2009
(A) रामस्य (B) विष्णोः
(C) देव्याः (D) शिवस्य
संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 182

57. (i) देवीमाहात्म्यम् अस्मिन् पुराणे वर्णितमस्ति
(ii) प्रसिद्ध दुर्गासप्तशती किस पुराण में है?
(iii) दुर्गासप्तशती अंश विशेष है- UGC 73 D–2011, K-SET-2013, J-2016
(A) देवीभागवतस्य (B) मार्कण्डेयपुराणस्य
(C) रामायणस्य (D) शिवपुराणस्य
संस्कृत साहित्य का इतिहास – उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 184

58. नृसिंहावतारस्य वर्णनम् अस्ति - UGC 73 J–2012
(A) श्रीमद्भागवते (B) अग्निपुराणे
(C) वायुपुराणे (D) कालिकापुराणे
स्रोत–(i) संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-13), पेज–226
(ii) श्रीमद्भागवत्, प्रथमखण्ड, पेज–847

59. कृष्णोद्धव संवाद है- UGC 73 J–2013
(A) भागवतप्रथमस्कन्धे (B) भागवतपञ्चमस्कन्धे
(C) भागवतनवमस्कन्धे (D) भागवतएकादशस्कन्धे
संस्कृत साहित्य का इतिहास – उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 183

60. (i) पद्मपुराण के .... जगन्नाथवर्णन है-
(ii) पद्मपुराणस्य कस्मिन् खण्डे जगन्नाथानुवर्णनमस्ति - UGC 73 J–2013, Jn-2017
(A) तृतीयस्वर्गखण्डे (B) चतुर्थपातालखण्डे
(C) द्वितीयभूमिखण्डे (D) प्रथमसृष्टिखण्डे
स्रोत–पुराण-विमर्श – बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ- 629

61. वायुपुराण में माहात्म्य वर्णित है - UGC 73 S–2013, D–2014
(A) विष्णोः (B) वायोः
(C) सूर्यस्य (D) शिवस्य
संस्कृत साहित्य का इतिहास – उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 182

62. (i) कस्मिन् पुराणे काव्यशास्त्रसम्बन्धिविषयाः वर्तन्ते-
(ii) कस्मिन् पुराणे विविधशास्त्रसम्बन्धिनो विषयाः वर्तन्ते- UGC 25 J–2012, 2013, D–2014
(A) ब्रह्मपुराणे (B) ब्रह्माण्डपुराणे
(C) नारदपुराणे (D) अग्निपुराणे
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास–कपिलदेव द्विवेदी, पृष्ठ- 97

63. मौर्यवंशराज्ञां चरितं कस्मिन् पुराणे वर्णितम् - UGC 25 J–2012
(A) वायुपुराणे (B) वराहपुराणे
(C) वामनपुराणे (D) विष्णुपुराणे
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास–कपिलदेव द्विवेदी, पृष्ठ- 97

64. अठारह पुराणों में किसकी गणना नहीं होती? UGC 73 J–2016
(A) भागवतपुराणस्य (B) नारदपुराणस्य
(C) विष्णुपुराणस्य (D) लक्ष्मीपुराणस्य
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास–कपिलदेव द्विवेदी, पृष्ठ- 96

65. रेवाखण्डं कस्य पुराणस्य भागः - CVVET–2017
(A) शिवमहापुराणस्य (B) स्कन्दपुराणस्य
(C) विष्णुपुराणस्य (D) वायुपुराणस्य
संस्कृत साहित्य का इतिहास – उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 187

66. ललितासंग्रहनामस्तोत्रं कुत्र वर्तते - UGC 25 S–2013
(A) श्रीमद्भागवते (B) रामायणे
(C) ब्रह्माण्डपुराणे (D) अग्निपुराणे
स्रोत–ललितासहस्रनामस्तोत्रम् - देवेन्द्र प्रसाद त्रिपाठी, पेज–79

67. तीर्थानां सविस्तारं वर्णनमुपलभ्यते- UGC 25 D–2013
(A) मत्स्यपुराणे (B) वायुपुराणे
(C) स्कन्दपुराणे (D) शिवपुराणे
स्रोत–संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-13), पेज-278

54. (C) 55. (C) 56. (D) 57. (B) 58. (A) 59. (D) 60. (B) 61. (D) 62. (D) 63. (D)
64. (D) 65. (B) 66. (C) 67. (C)

68. ब्रह्मवैवर्तपुराणं निबद्धं वर्तते - UGC 25 J–2014

(A) खण्डेषु (B) पर्वसु
(C) काण्डेषु (D) स्कन्धेषु

संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 185

69. शक्तिपूजा वर्णित है - UGC 73 J–1991

(A) देवीभागवत में (B) रामायण में
(C) नारदपुराण में (D) भागवत में

संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-13), पेज-250-251

70. कस्मिन् पुराणे 'काशीखण्डः' समुपलभ्यते? UGC 25 D–2015

(A) लिङ्गपुराणे (B) शिवपुराणे
(C) ब्रह्माण्डपुराणे (D) स्कन्दपुराणे

संस्कृत साहित्य का इतिहास – उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 186

71. अधस्तनवर्गयोः युग्मपर्यायेषु समीचीनं विचिनुत– MH SET–2013

(क) पुराणं पुरातनवृत्तान्तकथन-रूपमाख्यानम् — **1. यास्कः**
(ख) पुरा नवं भवति — **2. राजशेखरः**
(ग) पुराणमित्येव न साधु सर्वम् — **3. कालिदासः**
(घ) वेदाख्यानोपनिबन्धप्रायं पुराणम् — **4. सायणः**

	क	ख	ग	घ
(A)	2	3	4	1
(B)	4	1	3	2
(C)	2	4	3	1
(D)	3	4	2	1

स्रोत–(क-ख) पुराण-विमर्श – बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ- 3,6
(ग) कालिदासग्रन्थावली – ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पृष्ठ- 570
(घ) हिन्दी काव्यमीमांसा – गङ्गासागर राय, पेज-6

72. अलङ्कार सामग्री मिलती है - UGC 73 J–1991, K SET–2015

(A) महापुराण में (B) अग्निपुराण में
(C) रामायण में (D) आगम में

संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 578

73. रामानुज सम्प्रदाय की सामग्री प्राप्त है - UGC 73 D–1994

(A) वामनपुराण में (B) ब्रह्मपुराण में
(C) विष्णुपुराण में (D) वराहपुराण में

स्रोत–पुराणविमर्श- बलदेव उपाध्याय, पेज-143

74. (i) गरुडपुराण के अनुसार दूर्वाष्टमी होती है-
(ii) गरुडपुराणोक्तदिशा दूर्वाष्टमी भवति - UGC 73 D–2014, Jn-2017

(A) मार्गशीर्षशुक्लाष्टमी (B) भाद्रशुक्लाष्टमी
(C) आषाढशुक्लाष्टमी (D) पौषशुक्लाष्टमी

स्रोत–गरुडपुराण – गीताप्रेस, पृष्ठ- 230

75. (i) 'आश्रमो वैष्णवो ब्राह्मो हराश्रम' इति तीन आश्रम का विधान है-
(ii) 'आश्रमो वैष्णवो ब्राह्मो हराश्रम इति त्रयः' इति त्रयाणामाश्रमाणां विधानमस्ति- UGC 73 D–2014, Jn -2017

(A) लिङ्गपुराणे (B) ब्रह्मपुराणे
(C) कूर्मपुराणे (D) वामनपुराणे

स्रोत–कूर्मपुराण (पूर्वार्द्ध श्लोक)– शिवजीत सिंह, पृष्ठ- 22

76. भारतस्य महिमा कस्मिन् पुराणे अस्ति - AWES TGT–2011, 2012

(A) श्रीमद्भागवतपुराणे (B) देवलपुराणे
(C) विष्णुपुराणे (D) अग्निपुराणे

अग्निपुराण (अध्याय-118)–तारिणीश झा/घनश्याम त्रिपाठी, पृष्ठ- 430

77. भ्रमरगीतम् अत्र मिलति - UGC 73 D–2004

(A) रामायणे (B) विष्णुपुराणे
(C) श्रीमद्भागवते (D) देवीभागवते

स्रोत–भागवतमहापुराण (10.47) खण्ड-2–गीताप्रेस, पृष्ठ- 421

78. श्रीमद्भागवतपुराणस्य सुबोधिनी टीका लिखिता- UGC 73 D–2004

(A) निम्बार्काचार्येण (B) रामानुजाचार्येण
(C) माध्वाचार्येण (D) वल्लभाचार्येण

स्रोत–संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-10), पेज-421

68. (A) 69. (A) 70. (D) 71. (B) 72. (B) 73. (C) 74. (B) 75. (C) 76. (D) 77. (C) 78. (D)

79. श्रीकृष्णचरित मिलता है-
UGC 73 J–2007, 2008, UGC 25 D–2012

(A) शिवपुराण (B) ब्रह्मवैवर्तपुराण
(C) अग्निपुराण (D) श्रीमद्भागवतपुराण

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास–कपिलदेव द्विवेदी, पृष्ठ- 97

80. (i) श्रीमद्भागवत पुराण में स्कन्ध हैं - RPSC SET- 2010
(ii) श्रीमद्भागवते कति स्कन्धाः - UGC 73 D–1992, 2005, 2008, 2011, J–2007, HE–2015

(A) नव (B) दश
(C) ग्यारह (D) बारह

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास–कपिलदेव द्विवेदी, पृष्ठ- 97

81. (i) रासपञ्चाध्यायी है -
(ii) रासपञ्चाध्यायी कस्मिन् पुराणे विद्यते?
(iii) श्रीकृष्णस्य गोपीभिः सह महारासप्रकरणं कस्मिन् पुराणे विद्यते UGC 73 D–2006, 2011, UGC 25 D–2013 J–2014, 2016, CVVET–2017

(A) महाभारत (B) अग्निपुराण
(C) श्रीमद्भागवत (D) श्रीमद्रामायण

स्रोत–पुराण-विमर्श – बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ- 149

82. श्रीकृष्णचरितं .... दशमस्कन्धे अस्ति -
UGC 73 J–2009 D–2009

(A) महाभारते (B) रामायणे
(C) श्रीमद्भागवते (D) विष्णुपुराणे

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास–कपिलदेव द्विवेदी, पृष्ठ- 97

83. भागवतपुराण को माना जाता है? UGC 73 J–2016

(A) क्षेत्रीयपुराणम् (B) उपपुराणम्
(C) महापुराणम् (D) इतिहासपुराणम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास–कपिलदेव द्विवेदी, पृष्ठ- 97

84. श्रीमद्भागवतं निबद्धं वर्तते - UGC 25 S–2013

(A) पर्वसु (B) स्कन्धेषु
(C) काण्डेषु (D) खण्डेषु

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास–कपिलदेव द्विवेदी, पृष्ठ- 97

85. श्रीमद्भागवते श्रीकृष्णस्य ज्येष्ठपुत्रस्य किं नाम -
UGC 25 J–2014

(A) साम्बः (B) प्रद्युम्नः
(C) सङ्कर्षणः (D) अनिरुद्धः

भागवतमहापुराण (10.90.35) खण्ड-2–गीताप्रेस, पृष्ठ- 706

86. भक्ति से युक्त है - UGC 73 D–1996

(A) रामायण (B) महाभारत
(C) भागवत (D) मनुस्मृति

स्रोत–पुराण-विमर्श-बलदेव उपाध्याय, पेज-145

87. अवधूत के 24 गुरुओं का वर्णन कहाँ है -
UGC 73 J–1999

(A) महाभारत (B) भागवत दशमस्कन्ध
(C) रामायण (D) भागवत एकादशस्कन्ध

भागवतमहापुराण (11/7,8,9) खण्ड-2–गीताप्रेस, पृष्ठ- 752-769

88. भ्रमरगीतकाव्य का मूलस्रोत है-
UP PGT (H) 2008, 2009

(A) श्रीमद्भागवत का पञ्चम स्कन्ध
(B) श्रीमद्भागवत का तृतीय स्कन्ध
(C) श्रीमद्भागवत का सप्तम स्कन्ध
(D) श्रीमद्भागवत का दशम स्कन्ध

स्रोत–भागवत-महापुराण (10.47) खण्ड-2–गीताप्रेस, पृष्ठ- 421

89. वल्लभाचार्यकृता सुबोधिनी टीका– CVVET–2005

(A) रामायणस्य (B) महाभारतस्य
(C) भागवतस्य (D) कठोपनिषदः

स्रोत–संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-10), पृष्ठ-421

90. वकारादिपुराणानि कति– MH SET–2013

(A) त्रीणि (B) चत्वारि
(C) पञ्च (D) द्वे

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 176

91. अम्बरीषोपाख्यानम् अस्ति - UK SLET–2015

(A) वराहपुराणे (B) वामनपुराणे
(C) भागवतपुराणे (D) भविष्यपुराणे

स्रोत–भागवत-महापुराण (9/4) खण्ड-2–गीताप्रेस, पृष्ठ- 20

79. (D) 80. (D) 81. (C) 82. (C) 83. (C) 84. (B) 85. (B) 86. (C) 87. (D) 88. (D) 89. (C) 90. (B) 91. (C)

92. श्रीमद्भागवतस्य विभाजनम् इत्थं रूपेण - AWES TGT–2011
(A) स्कन्धेषु अध्यायेषु च (B) अंशेषु अध्यायेषु च
(C) खण्डेषु उपखण्डेषु अध्यायेषु च (D) पर्वषु
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ-182

93. निगमकल्पतरोर्गलितं फलं किम् - BHU AET–2012
(A) वाल्मीकिरामायणम् (B) भागवतम्
(C) पद्मपुराणम् (D) विष्णुपुराणम्
(i) संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 182
(ii) श्रीमद्भागवत (प्रथम खण्ड) 1.6.80

94. श्रीमद्भागवतं किमस्ति - BHU AET–2012
(A) महापुराणम् (B) उपपुराणम्
(C) उपोपपुराणम् (D) केवलं पुराणम्
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास–कपिलदेव द्विवेदी, पृष्ठ- 97

95. श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य मङ्गलपद्यं कीदृशमस्ति - BHU AET–2011
(A) आशीर्वादात्मकम् (B) नमस्कारात्मकम्
(C) ध्यानात्मकम् (D) विज्ञानात्मकम्
स्रोत–भागवत-महापुराण (1.1) – गीताप्रेस, पृष्ठ-33

96. श्रीमद्भागवतं कस्य कल्पतरोर्गलितं फलम् - BHU AET–2011
(A) बिवुधकल्पतरोः (B) विविधकल्पतरोः
(C) निगमकल्पतरोः (D) सुगमकल्पतरोः
स्रोत–(i) भागवत-महापुराण (1.6.80) खण्ड-1–गीताप्रेस, पेज-77
(ii) संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 182

97. श्रीमद्भागवतस्य प्रथमे स्कन्धे कति सन्त्यध्यायाः - BHU AET–2011
(A) सप्तदश (B) अष्टादश
(C) एकोनविंशतिः (D) विंशतिः
स्रोत–भागवत-महापुराण (1.19) खण्ड-1–गीताप्रेस, पृष्ठ- 180

98. श्रीमद्भागवते श्रीकृष्णलीला वर्तते - UK SLET–2012
(A) अष्टमस्कन्धे (B) दशमस्कन्धे
(C) द्वादशस्कन्धे (D) नवमस्कन्धे
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास–कपिलदेव द्विवेदी, पृष्ठ-97

99. प्रह्लादचरितम् भागवतस्य– CVVET–2015
(A) दशमस्कन्धे (B) षष्ठस्कन्धे
(C) चतुर्थस्कन्धे (D) सप्तमस्कन्धे
संस्कृत साहित्य का इतिहास – उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 183

100. 'विद्यावतां भागवते परीक्षा' अनया सुभाषितवल्या सम्बद्धग्रन्थः - AWES TGT–2011
(A) भगवद्गीता (B) ब्रह्मवैवर्तपुराण
(C) मार्कण्डेयपुराण (D) भागवतपुराण
संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 182

101. हरिवंश है - UGC 73 D–1994
(A) पुराण (B) काव्य
(C) इतिहास (D) खिल
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 159

102. (i) भगवान् विष्णु के अवतार होते हैं -
(ii) भगवतः विष्णोः कति अवताराः बभूवुः –
(iii) पुराणसाहित्यानुसारेण विष्णोर्मुख्याः अवताराः सन्ति?
(iv) भगवद्विष्णोः मुख्याः अवताराः कति सन्ति–
UGC 73 J–2006, 2008, 2010, 2012, D–2004
(A) दश (B) पञ्चदश
(C) अष्टौ (D) अष्टाविंशति
स्रोत–पुराण-विमर्श – बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ- 175

103. कः पञ्चमो वेदः - BHU AET–2012
(A) वाल्मीकिरामायणम् (B) इतिहासपुराणम्
(C) भगवद्गीता (D) छान्दोग्योपनिषद्
स्रोत–पुराणविमर्श– बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ- 10,11
(ii) संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 173

104. शुक्रः कः - BHU AET–2012
(A) शुकः (B) शक्रः
(C) दैत्यगुरुः (D) देवगुरुः
स्रोत–भागवत-महापुराण (7.5.1) खण्ड 1–गीताप्रेस, पृष्ठ- 828

105. प्रह्लादः कस्य पितामहः - BHU AET–2012
(A) बाणस्य (B) विरोचनस्य
(C) बलेः (D) रावणस्य
स्रोत–भागवतमहापुराण (8.15) खण्ड-1–गीताप्रेस, पृष्ठ- 974

**92. (A) 93. (B) 94. (A) 95. (B) 96. (C) 97. (C) 98. (B) 99. (D) 100. (D) 101. (D)
102. (A) 103. (B) 104. (C) 105. (C)**

106. गङ्गा भूमौ केनानीता - BHU AET–2012

(A) अंशुमता (B) भगीरथेन
(C) सगरेण (D) दिलीपेन

वाल्मीकिरामायण (1/42,43) खण्ड-1-गीताप्रेस, पृष्ठ-114

107. ''अष्टादश .... परपीडनम्'' इति केन कथितम् - UK TET–2011

(A) वेदव्यासेन (B) कालिदासेन
(C) भवभूतिना (D) भासेन

संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 190

108. भूमौ पतन्ती गङ्गा केन शिरसि धृता - BHU AET–2012

(A) हिमालयेन (B) शिवेन
(C) ब्रह्मणा (D) भगीरथेन

स्रोत–वाल्मीकिरामायण (1/43) खण्ड-1-गीताप्रेस, पृष्ठ- 114

109. देवयानी कस्य सुता - BHU AET–2012

(A) देवगुरोः (B) शुक्रस्य
(C) भृगोः (D) कश्यपस्य

स्रोत–भागवत-महापुराण (9.18.4) खण्ड-2–गीताप्रेस, पृष्ठ- 86

110. कस्य पुत्र आसीत् भगवत्भक्तोऽम्बरीषः - BHU AET–2011

(A) नभगस्य (B) नाभागस्य
(C) यज्ञसेनस्य (D) वृषेणस्य

स्रोत–भागवत-महापुराण (9.4.13) खण्ड-2–गीताप्रेस, पृष्ठ- 20

111. शर्मिष्ठायाः पितुः किं नाम आसीत्-BHU AET–2011

(A) वृषपर्वा (B) प्रसेनजित्
(C) द्युमत्सेनः (D) उशना

स्रोत–भागवत-महापुराण (9.18.6) खण्ड-2–गीताप्रेस, पृष्ठ- 86

112. कृष्णजन्म कस्यां तिथौ भवति - BHU AET–2011

(A) तृतीयायां (B) अष्टम्यां
(C) एकादश्यां (D) पौर्णमास्याम्

भविष्य-महापुराण (अध्याय-55) खण्ड-3–बाबूराम उपाध्याय, पृष्ठ- 194

113. नरकाः कतिविधाः - BHU AET–2011

(A) एकादशविधाः (B) पञ्चदशविधाः
(C) एकविंशतिविधाः (D) पञ्चविंशतिविधाः

भागवत-महापुराण (5.26.7)–खण्ड-1 गीताप्रेस, पृष्ठ- 687

114. पौराणिक-भूगोलानुसारेण कति समुद्राः - UK SLET–2012

(A) सप्त (B) नव
(C) अष्ट (D) पञ्च

स्रोत–पुराणविमर्श – बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ- 323

115. इदं पुराणं न – K-SET–2013

(A) वराहपुराणम् (B) वामनपुराणम्
(C) कूर्मपुराणम् (D) मकरपुराणम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास–कपिलदेव द्विवेदी, पृष्ठ- 96

116. पुराणानुसारेण मन्वन्तराणि कति संख्यानि? GJ SET–2013

(A) द्वादश (B) चतुर्दश
(C) षोडश (D) अष्टादश

संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-13)-बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ-8

117. अधोलिखितेषु तामसपुराणं किम्– K-SET–2013

(A) पद्मपुराणम् (B) लिङ्गपुराणम्
(C) ब्रह्माण्डपुराणम् (D) मार्कण्डेयपुराणम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 177

118. कुचलोपाख्यानं कस्मिन् पुराणे विद्यते– K-SET–2015

(A) स्कन्दपुराणे (B) भविष्यपुराणे
(C) भागवतपुराणे (D) वायुपुराणे

स्रोत–श्रीमद्भागवत दशमस्कन्ध, पेज–620, 622

119. प्रेतकल्पवत् पुराणं किम्? K-SET–2015

(A) विष्णुपुराणम् (B) गरुडपुराणम्
(C) नारदपुराणम् (D) पद्मपुराणम्

संस्कृत साहित्य का इतिहास – उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 188

106. (B) 107. (A) 108. (B) 109. (B) 110. (B) 111. (A) 112. (B) 113. (C) 114. (A) 115. (D) 116. (B) 117. (B) 118. (C) 119. (B)

120. अधोनिर्दिष्टेषु राजसपुराणं किम्? K-SET–2014
(A) शिवपुराणम् (B) पद्मपुराणम्
(C) ब्रह्माण्डपुराणम् (D) स्कन्दपुराणम्
संस्कृत साहित्य का इतिहास – उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 177

121. पुराणे लक्षणे एतत् न अन्तर्भवति– K-SET–2014
(A) सर्गः (B) प्रतिसर्गः
(C) वंशः (D) जन्मान्तराणि
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 174

122. आन्ध्रप्रदेशीयराज्ञां वंशावली कस्मिन् पुराणे वर्णिता– RPSC SET–2013-14
(A) मत्स्यपुराणे (B) मार्कण्डेयपुराणे
(C) वामनपुराणे (D) विष्णुपुराणे
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास–कपिलदेव द्विवेदी, पृष्ठ- 97

123. मत्स्यपुराणोक्तेषु दिव्यावतारेषु को न गण्यते - UGC 73 Jn -2017
(A) नारायणः (B) नरसिंहः
(C) वामनः (D) बुद्धः
स्रोत–पुराणविमर्श – बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ- 173

124. पुराणलक्षणे संस्था वर्तते - UGC 73 Jn -2017
(A) सर्गः (B) प्रतिसर्गः
(C) वंशः (D) मन्वन्तराणि
स्रोत–पुराणविमर्श – बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ- 126

125. 'वनजौ वनजौ खर्वः'- अत्र प्रथम वनजशब्देन कौ गृह्येते - UGC 73 Jn -2017
(A) मत्स्यकच्छपौ (B) कच्छपवामनौ
(C) श्रीरामश्रीकृष्णौ (D) श्रीकृष्णबुद्धौ
स्रोत–पुराणविमर्श – बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ- 175

126. वामनपुराणदिशा भागवतस्य पुराणस्य वैशिष्ट्येषु को विद्यते– UGC 73 Jn -2017
(A) रावणवधः (B) बकासुरवधः
(C) कंसवधः (D) वृत्रवधः
स्रोत–पुराणविमर्श – बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ- 676

127. ब्रह्मखण्डस्य ब्रह्मारण्यखण्ड-ब्रह्मोत्तर-खण्डरूपेण विभागद्वयं कस्मिन् पुराणे वर्तते - UGC 73 Jn -2017
(A) ब्रह्मपुराणे (B) ब्रह्माण्डपुराणे
(C) स्कन्दपुराणे (D) मार्कण्डेयपुराणे
स्रोत–पुराणविमर्श – बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ-154-157

128. शाकद्वीपेश्वरोऽस्ति - UGC 73 D -2013
(A) मेधातिथिः (B) द्युतिमान्
(C) हव्यः (D) वपुष्मान्
स्रोत–श्रीमद्भागवत् (5.1.33), पेज–580-581

129. वसिष्ठस्य प्रपौत्रोस्ति - UGC 73 S -2013
(A) शुकदेवः (B) पराशरः
(C) व्यासः (D) शांशपायनः
स्रोत–पुराणविमर्श – बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ- 62-63

130. 'ब्रह्मबन्धू' इत्यस्यार्थोऽस्ति - UGC 73 J -2012
(A) जातिमात्रब्राह्माणी (B) व्यभिचारिणी
(C) विधवा (D) रजस्वला
स्रोत–भागवतमहापुराण (1.7) खण्ड-1– गीताप्रेस, पृष्ठ- 112

131. द्वादशस्कन्धसंवलितं महापुराणं किम्? CVVET -2017
(A) भविष्यपुराणम् (B) वायुपुराणम्
(C) भागवतपुराणम् (D) विष्णुपुराणम्
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास–कपिलदेव द्विवेदी, पेज-97

132. उपपुराणेषु अन्तर्गतमस्ति - CVVET -2017
(A) मार्कण्डेयपुराणम् (B) नारदपुराणम्
(C) गणेशपुराणम् (D) ब्रह्माण्डपुराणम्
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-177

120. (C) 121. (D) 122. (A) 123. (D) 124. (B) 125. (A) 126. (D) 127. (C) 128. (A) 129. (C) 130. (A) 131. (C) 132. (C)

14 कौटिलीय – अर्थशास्त्र

1. कौटिल्य लेखक थे? BPSC–2007
(A) राजतरंगिणी के (B) कादम्बरी के
(C) अर्थशास्त्र के (D) अष्टाध्यायी के

स्रोत–कौटिलीय अर्थशास्त्र – वाचस्पति गैरोला, भू. पृष्ठ- 19

2. कौटिल्यस्य अपरनाम किम्? RPSC SET–2013-14
(A) चन्द्रगुप्तः (B) समुद्रगुप्तः
(C) चाणक्यः (D) वाल्मीकिः

स्रोत–कौटिलीय अर्थशास्त्र – वाचस्पति गैरोला, भू. पृष्ठ- 65

3. कौटिल्य का अर्थशास्त्र कितने अधिकरणों में विभाजित है ? BPSC–2007
(A) 11 (B) 12
(C) 14 (D) 15

स्रोत–कौटिलीय अर्थशास्त्र – वाचस्पति गैरोला, पृष्ठ- 07

4. अर्थशास्त्रस्य प्रथमाधिकरणं वर्तते- UGC 25 S–2013
(A) विनयाधिकारिकम् (B) योगवृत्तम्
(C) धर्मवृत्तम् (D) षाड्गुण्यम्

स्रोत–कौटिलीय अर्थशास्त्र – वाचस्पति गैरोला, पृष्ठ- 02

5. अर्थशास्त्रस्य द्वितीयाधिकरणं वर्तते? UGC 25 J–2012
(A) विनयाधिकारिकम् (B) धर्मस्थीयम्
(C) अध्यक्षप्रचारः (D) कण्टकशोधनम्

स्रोत–कौटिलीय अर्थशास्त्र – वाचस्पति गैरोला, पृष्ठ- 03

6. अर्थशास्त्रस्य तृतीयाधिकरणं वर्तते-UGC 25 J–2012
(A) विनयाधिकारिकम् (B) अध्यक्षप्रचारः
(C) योगवृत्तम् (D) धर्मस्थीयम्

स्रोत–कौटिलीय अर्थशास्त्र – वाचस्पति गैरोला, पृष्ठ- 03

7. अर्थशास्त्रस्य चतुर्थाधिकरणं वर्तते - UGC 25 J–2014
(A) कण्टकशोधनम् (B) षाड्गुण्यम्
(C) धर्मस्थीयम् (D) विनयाधिकारिकम्

स्रोत–कौटिलीय अर्थशास्त्र – वाचस्पति गैरोला, पृष्ठ- 04

8. कौटिल्य नाम्ना व्यवह्रियते-RPSC ग्रेड II (TGT)–2010
(A) चन्द्रगुप्तः (B) नन्दराजः
(C) चणकः (D) चाणक्यः

स्रोत–कौटिलीय अर्थशास्त्र – वाचस्पति गैरोला, भू. पृष्ठ- 65

9. अर्थशास्त्रे विद्यासमुद्देशः कुत्र वर्तते? K-SET–2014
(A) विनयाधिकारिके (B) योगवृत्ते
(C) षाड्गुण्ये (D) धर्मस्थीये

स्रोत–कौटिलीय अर्थशास्त्र (1.1.1)–वाचस्पति गैरोला, पृष्ठ-08,09

10. दुर्गविनिवेशः कुत्र उपदिष्टः - UGC 25D- 2012
(A) विनयाधिकारिके (B) धर्मस्थीये
(C) अध्यक्षप्रचारे (D) कण्टकशोधने

स्रोत–कौटिलीय अर्थशास्त्र – वाचस्पति गैरोला, पृष्ठ-02-03

11. इन्द्रियजयः अर्थशास्त्रे कुत्र उपदिष्टः? K-SET–2013
(A) विनयाधिकारिके (B) योगवृत्ते
(C) धर्मस्थीये (D) अध्यक्षप्रचारे

स्रोत–कौटिलीय अर्थशास्त्र – वाचस्पति गैरोला,पृष्ठ-02

12. कौटिल्यार्थशास्त्रानुसारेण आन्वीक्षकी विद्या अस्ति– K-SET–2014
(A) सांख्यं योगो लोकायतं च (B) धर्मीधर्मौ
(C) अर्थानर्थौ (D) सुशासनम्

स्रोत–कौटिलीय अर्थशास्त्र (1.1.1)–वाचस्पति गैरोला, पृष्ठ- 8

13. कौटिल्यार्थशास्त्रानुसारेण कीदृशो दण्डः सर्वाधिकः प्रजामुद्वेजयति? K-SET–2014
(A) यथार्हदण्डः (B) मृदुदण्डः
(C) पाषाणदण्डः (D) तीक्ष्णदण्डः

स्रोत–कौटिलीय अर्थशास्त्र (1.1.3)–वाचस्पति गैरोला, पृष्ठ- 12

14. अमात्यपरीक्षोपायेषु नास्ति - UGC 25 D–2014
(A) धर्मोपधा (B) अर्थोपधा
(C) कामोपधा (D) मोक्षोपधा

स्रोत–कौटिलीय अर्थशास्त्र (1.5.9)–वाचस्पति गैरोला, पृष्ठ- 25-26

1. (C) 2. (C) 3. (D) 4. (A) 5. (C) 6. (D) 7. (A) 8. (D) 9. (A) 10. (C)
11. (A) 12. (A) 13. (D) 14. (D)

15. कति आढको भवेद् द्रोणः – MH SET–2016

(A) चतुराढकाः (B) द्वौ आढकौ

(C) पञ्चाढकाः (D) षट् आढकाः

स्रोत–कौटिलीय अर्थशास्त्र (2.35.19)-वाचस्पति गैरोला, पेज–178

16. दायभाग में श्रेष्ठ भाग का अधिकारी पुत्र होता है - UGC 73 J–2006

(A) कनिष्ठ (B) दत्तक

(C) मध्यम (D) ज्येष्ठ

स्रोत–कौटिलीय अर्थशास्त्र (3.62.6)–वाचस्पति गैरोला, पृष्ठ- 279

17. पुत्रों में कौन श्रेष्ठ होता है ? UGC 73 J–2007

(A) दत्तक (B) कृत्रिम

(C) अपविद्ध (D) औरस

स्रोत–कौटिलीय अर्थशास्त्र (4.63.7)–वाचस्पति गैरोला, पृष्ठ- 282

18. अमात्योत्पत्तिः कुत्र उपदिष्टा ? UGC 25 J–2012

(A) कण्टकशोधने (B) धर्मस्थीये

(C) षाड्गुण्ये (D) विनयाधिकारिके

स्रोत–कौटिलीय अर्थशास्त्र – वाचस्पति गैरोला, पृष्ठ- 02

19. दण्डनीतेः अपरं नाम किम्? RPSC SET–2013-14

(A) आयुर्वेदः (B) तर्कशास्त्रम्

(C) जैमिनीयमीमांसाशास्त्रम् (D) कौटिलीय-अर्थशास्त्रम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ- 610

20. अमात्यानां शौचाशौचज्ञानार्थं कौटिल्येन उपधासु या न निर्दिष्टा ? UGC 25 J–2013

(A) कामोपधा (B) अर्थोपधा

(C) मोक्षोपधा (D) धर्मोपधा

स्रोत–कौटिलीय अर्थशास्त्र (1.5.9)–वाचस्पति गैरोला, पृष्ठ- 25,26

21. मन्त्रिपरिषदं द्वादशामात्यान्कुर्वीत् इति कस्य मान्यता? UGC 25 J–2013

(A) बार्हस्पत्यानाम् (B) कौटिल्यस्य

(C) औशनसाम् (D) मानवानाम्

स्रोत–कौटिलीय अर्थशास्त्र (1.10.14)–वाचस्पति गैरोला, पृष्ठ-47

22. समयाचारिकं कुत्रोपदिष्टमर्थशास्त्रे? UGC 25 S–2013

(A) धर्मस्थीये (B) कण्टकशोधने

(C) अध्यक्षप्रचारे (D) योगवृत्ते

स्रोत–कौटिलीय अर्थशास्त्र (5.93.5)–वाचस्पति गैरोला, पृष्ठ-428

23. कौटिल्येन यो गूढपुरुषेषु न निर्दिष्टः - UGC 25 D–2013

(A) कार्मिकः (B) कापटिकः

(C) तापसः (D) रसदः

कौटिलीय अर्थशास्त्र (1.6.10)–वाचस्पति गैरोला, पृष्ठ-29-32

24. सन्धिकर्म कुत्रोपदिष्टम् ? UGC 25 J–2014

(A) धर्मस्थीये (B) अध्यक्षप्रचारे

(C) योगवृत्ते (D) षाड्गुण्ये

स्रोत–कौटिलीय अर्थशास्त्र – वाचस्पति गैरोला, पृष्ठ- 05

25. कः एकः संस्थागुप्तचरो नास्ति ? HE–2015

(A) कापटिकः (B) तीक्ष्णः

(C) गृहपतिः (D) उदास्थितः

स्रोत–कौटिलीय अर्थशास्त्र (1.6.10)–वाचस्पति गैरोला, पृष्ठ-29,32

26. कौटिल्य के 'अर्थशास्त्र' में किस पहलू पर प्रकाश डाला गया है ? BPSC–2002

(A) आर्थिक जीवन (B) राजनीतिक नीतियाँ

(C) धार्मिक जीवन (D) सामाजिक जीवन

स्रोत–कौटिलीय अर्थशास्त्र – वाचस्पति गैरोला, भू. पृष्ठ- 63

27. अमात्यपरीक्षायाः कतिविधः उपायः ? UGC 25 D–2014

(A) द्विविधः (B) त्रिविधः

(C) चतुर्विधः (D) पञ्चविधः

स्रोत–कौटिलीय अर्थशास्त्र (1.5.9)–वाचस्पति गैरोला, पृष्ठ- 25,26

28. अधोलिखितेषु को गूढपुरुषो न भवति ? UGC 25 D–2014

(A) मन्त्री (B) सत्री

(C) तीक्ष्णः (D) रसदः

स्रोत–कौटिलीय अर्थशास्त्र (1.6.10)–वाचस्पति गैरोला, पृष्ठ-29

15. (A)	16. (D)	17. (D)	18. (D)	19. (D)	20. (C)	21. (D)	22. (D)	23. (A)	24. (D)
25. (B)	26. (B)	27. (C)	28. (A)						

29. (i) कौटिल्यानुसारं विद्याः सन्ति?
(ii) अर्थशास्त्रकारमते विद्या कति विधा ? **UGC 25 J–2015, K-SET–2013**

(A) द्विविधा (B) त्रिविधा
(C) चतुर्विधा (D) पञ्चविधा

स्रोत–कौटिलीय अर्थशास्त्र (1.1.1)–वाचस्पति गैरोला, पृष्ठ- 08

30. अर्थशास्त्रतः रिक्तं स्थानं पूरयत - UGC 25 J–2015
''कृषिपाशुपाल्ये वाणिज्या च ....।''

(A) वार्ता (B) आन्वीक्षकी
(C) त्रयी (D) दण्डनीतिः

स्रोत–कौटिलीय अर्थशास्त्र (1.1.3)–वाचस्पति गैरोला, पृष्ठ- 12

31. अर्थशास्त्रे आन्वीक्षकीत्रयीवार्तानां योगक्षेमसाधनो भवति– **UGC 25 D–2015**

(A) साम (B) दाम
(C) भेद (D) दण्ड

स्रोत–कौटिलीय अर्थशास्त्र (1.1.3)–वाचस्पति गैरोला, पृष्ठ- 12

32. कौटिल्यानुसारं त्रयी के संवरणमात्रं मन्यन्ते? **UGC 25 J–2016**

(A) मानसाः (B) मानवाः
(C) बार्हस्पत्याः (D) औशनसाः

स्रोत–कौटिलीय अर्थशास्त्र (1.1.1)–वाचस्पति गैरोला,पृष्ठ- 08

33. कौटिल्यानुसारं मानवाः कां विद्यां पृथक् न मन्यन्ते? **UGC 25 J–2016**

(A) आन्वीक्षकीम् (B) त्रयीम्
(C) वार्ताम् (D) दण्डनीतिम्

स्रोत–कौटिलीय अर्थशास्त्र (1.1.1)–वाचस्पति गैरोला, पृष्ठ- 08

34. कौटिल्येन विधेः चत्वारः चरणाः स्वीकृताः– **DU Ph. D–2016**

(A) धर्मः, व्यवहारः, चरित्रं, राजशासनश्च
(B) धर्मः, व्यवहारः, चरित्रं, वणिङ्मण्डलश्च
(C) धर्मः, व्यवहारः, संयमः, राजशासनश्च
(D) धर्मः, कोशः, व्यवहारः, राजशासनश्च

स्रोत–कौटिलीय अर्थशास्त्र (3.57.1)-वाचस्पति गैरोला, पेज-259

35. अर्थशास्त्रात् किं बलवत्– **MH SET–2013**

(A) न्यायशास्त्रम् (B) वेदान्तशास्त्रम्
(C) मीमांसाशास्त्रम् (D) धर्मशास्त्रम्

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति (2/21)–उमेशचन्द्र पाण्डेय, पृष्ठ- 183

36. अक्षपटलाध्यक्षस्य कार्यमासीत्? DU Ph. D–2016

(A) आयव्ययविवरणस्य रक्षणम् (B) द्यूतकरसंग्रहणम्
(C) द्यूतक्रीडायां माध्यस्थं (D) आयव्ययवितरणम्

स्रोत–कौटिलीय अर्थशास्त्रम् (2.7.33)-वाचस्पति गैरोला, पेज - 103

37 नीतिविषयकग्रन्थस्य कर्ता– **K-SET–2014**

(A) सोमदेवसूरिः (B) शुक्राचार्यः
(C) मम्मटः (D) आनन्दवर्धनः

स्रोत–शुक्रनीतिः (भाग-1)–जगदीशचन्द्र मिश्र, पृष्ठ- भू0,03

38. कौटिल्येन सेनायाः श्रेण्यः कतिधा उल्लिखिताः– **K-SET–2014**

(A) अष्ट (B) सप्त
(C) नव (D) चतस्रः

कौटिलीय अर्थशास्त्र (9.137-139.2) – वाचस्पति गैरोला, पृष्ठ- 599

39. अधोलिखितेषु क्रमः कुत्र पालितः? K-SET–2014

(A) सन्धिः, यानम्, आसनम्, संश्रयः
(B) यानम्, सन्धिः, विग्रहः, संश्रयः
(C) सन्धिः, विग्रहः, यानं, आसनम्
(D) आसनं, सन्धिः, विग्रहः, यानम्

कौटिलीय अर्थशास्त्र (7.98-99.1)–वाचस्पति गैरोला, पृष्ठ- 453

40. अर्थशास्त्रानुसारम् अधस्तनेषु किं वाक्पारुष्यं न भवति– **K-SET–2013**

(A) अश्लीलम् (B) निष्ठुरम्
(C) तीव्रम् (D) स्निग्धम्

स्रोत–कौटिलीय अर्थशास्त्रम् - वाचस्पति गैरोला, पेज-331

29. (C) 30. (A) 31. (D) 32. (C) 33. (A) 34. (A) 35. (D) 36. (A) 37. (B) 38. (B) 39. (C) 40. (D)

41. अधोलिखितेषु चाणक्यमते कः दूतः न भवति– K-SET–2013

(A) निसृष्टार्थः (B) परिमितार्थः
(C) शासनहरः (D) अभिसारिका

कौटिलीय अर्थशास्त्र (1.11.15) – वाचस्पति गैरोला, पृष्ठ- 49

42. अर्थशास्त्रे उद्धृतं 'पितृपैतामहानमात्यान् कुर्वीत' इति मतं कस्य? UGC 25 J–2016

(A) कौणपदन्तस्य (B) वातव्याधेः
(C) बाहुदन्तीपुत्रस्य (D) कौटिल्यस्य

स्रोत–कौटिलीय अर्थशास्त्र (1.3.7)–वाचस्पति गैरोला, पृष्ठ- 21

43. अर्थशास्त्रे उद्धृतं 'सहाध्यायिनोऽमात्यान्कुर्वीत' इति मतं कस्य? UGC 25 J–2016

(A) विशालाक्षस्य (B) भारद्वाजस्य
(C) पराशरस्य (D) पिशुनस्य

स्रोत–कौटिलीय अर्थशास्त्र (1.3.7)–वाचस्पति गैरोला, पृष्ठ- 20

44. अमात्यानां शौचाशौचज्ञानं कथं ज्ञातव्यमिति कौटिल्यः अभिप्रैति? K-SET–2015

(A) उपधाभिः (B) विद्याभिः
(C) शक्तिभिः (D) बुद्धिभिः

स्रोत–कौटिलीय अर्थशास्त्र (1.5.9)–वाचस्पति गैरोला, पृष्ठ- 25-28

45. ''त्रय्या हि रक्षितो लोकः प्रसीदति न सीदति''– इति कस्याभिप्रायः? K-SET–2015

(A) भारद्वाजस्य (B) याज्ञवल्क्यस्य
(C) बोधायनस्य (D) कौटिल्यस्य

स्रोत–कौटिलीय अर्थशास्त्र (1.1.2)–वाचस्पति गैरोला, पृष्ठ- 11

46. कौटिल्यानुसारं कः मन्त्रं श्रोतुं न अर्हति–K-SET–2013

(A) अश्रुतशास्त्रार्थः (B) अश्रोत्रियः
(C) राजनीतौ अकुशलः (D) धर्महीनः

स्रोत–कौटिलीय अर्थशास्त्र (1.10.14)-वाचस्पति गैरोला, पेज–48

47. कौटिलीयार्थशास्त्रे 'अर्थ' शब्दस्य कोऽर्थः? GJ SET–2013

(A) धनम् (B) धान्यम्
(C) हिरण्यम् (D) मनुष्यवती भूमिः

कौटिलीय अर्थशास्त्र (15.180.1)–वाचस्पति गैरोला, पृष्ठ- 765

48. अर्थशास्त्रानुसारेण वार्ता शब्दस्यार्थः कः -GJ SET–2013

(A) इतिवृत्तं (B) संवादः
(C) कृषिः, पशुपालनं, वाणिज्यम् (D) आन्वीक्षकी

स्रोत–कौटिलीय अर्थशास्त्र (1.1.3)–वाचस्पति गैरोला, पृष्ठ- 12

49. कौटिल्यार्थशास्त्रोल्लेखानुसारं एषु कः कोपात् विननाश इति उल्लिखितः? UGC 25 Jn - 2017

(A) अजबिन्दुः (B) रावणः
(C) करालः (D) जनमेजयः

स्रोत–कौटिलीय अर्थशास्त्र (1.3.5)–वाचस्पति गैरोला, पृष्ठ- 16

50. कौटिलीयार्थशास्त्रे सर्वविद्यानां प्रदीपः सर्वकर्मणाम् उपायः सर्वधर्माणां च आश्रयः का विद्या प्रोक्ता? UGC 25 Jn - 2017

(A) आन्वीक्षकी (B) त्रयी
(C) वार्ता (D) दण्डनीतिः

स्रोत–कौटिलीय अर्थशास्त्र (1.1.1)–वाचस्पति गैरोला, पृष्ठ- 09

51. कौटिलीयार्थशास्त्रे एतत् वैश्यस्य स्वधर्मो न भवति- UGC 25 Jn - 2017

(A) याजनम् (B) दानम्
(C) अध्ययनम् (D) यजनम्

स्रोत–कौटिलीय अर्थशास्त्र (1.1.2)–वाचस्पति गैरोला, पृष्ठ- 10

41. (D) 42. (A) 43. (B) 44. (A) 45. (D) 46. (A) 47. (D) 48. (C) 49. (D) 50. (A) 51. (A)

सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची

1. **अग्निपुराण-** तारिणीश झा, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग–2007
2. **अर्थसंग्रह-** दयाशंकर शास्त्री, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी-2008
3. **अर्थसंग्रह-** वाचस्पति उपाध्याय, चौखम्भा ओरियन्टालिया, दिल्ली–2014
4. **अर्थसंग्रह-** कामेश्वरनाथ मिश्र- चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी-2014
5. **अर्थसंग्रह-** राजेश्वरशास्त्री मुसलगाँवकर-चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी-2009
6. **अर्थसंग्रह-**सत्यप्रकाश शर्मा- साहित्य भण्डार, मेरठ-2010
7. **अलंकार एवं छन्द-** समीर आचार्य-प्राच्य भारतीय संस्थान, गोरखपुर-1996
8. **आगमरहस्य-** सुधाकर मालवीय, चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी-2013
9. **अभिज्ञानशाकुन्तलम् -** कपिलदेव द्विवेदी- रामनारायण लाल विजय कुमार, इलाहाबाद-2014
10. **औचित्य विचार चर्चा-** व्रजमोहन झा- चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी-2013
11. **उत्तररामचरितम्-** कपिलदेव द्विवेदी- रामनारायण लाल विजय कुमार, इलाहाबाद-2015
12. **उत्तररामचरितम्-** राम अवध पाण्डेय, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी-2012
13. **उत्तररामचरितम् -** शिवबालक द्विवेदी, हंसा प्रकाशन, जयपुर-2011
14. **ऋक्सूक्तसंग्रह-**हरिदत्त शास्त्री- साहित्य भण्डार, मेरठ
15. **ऋतुसंहार-**सीताराम चतुर्वेदी
16. **कर्णभारम्-**रामजी मिश्र- चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी-2012
17. **कविर्जयति वाल्मीकिः-** आनन्दकुमार श्रीवास्तव, उत्तरप्रदेश-संस्कृत संस्थान, लखनऊ 2000
18. **कादम्बरीकथामुख-**जयंशकर लाल त्रिपाठी- चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी–2000
19. **कादम्बरीकथामुख-** तारिणीश झा- रामनारायण लाल अरुण कुमार, इलाहाबाद–2014
20. **कादम्बरीकथामुख-** राजेन्द्र मिश्र- अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद-2015
21. **कादम्बरीकथामुख-** समीर शर्मा-चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी-2008
22. **कादम्बरी महाश्वेतावृत्तान्त-**प्रद्युम्न पाण्डेय- चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी-2015
23. **कादम्बरी महाश्वेतावृत्तान्त-** राजदेव मिश्र- चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी-2014
24. **काव्यप्रकाश-** आचार्य विश्वेश्वर-ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी-2014-2016
25. **काव्यमीमांसा-** कृष्णमणि त्रिपाठी, चौखम्बा सुरभारती, वाराणसी-2009
26. **काव्यमीमांसा-** गंगासागर राय- चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी-2013
27. **काव्यप्रकाश-** पारसनाथ द्विवेदी, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा-1986
28. **काव्यप्रकाश-** सीताराम दोतोलिया-हंसा प्रकाशन, जयपुर-2016
29. **काव्यप्रकाश-** श्रीनिवास शास्त्री- साहित्य भण्डार, मेरठ-1960
30. **काव्यालंकार-** देवेन्द्रनाथ शर्मा-बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् पटना, वि0सं0 2042
31. **काव्यालंकारसूत्र-** हरगोविन्द मिश्र- चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी-2016
32. **कारिकावली-** लोकमणि दाहाल-चौखम्बा सुरभारती, वाराणसी-2012

33. **कालिदास ग्रन्थावली-** ब्रह्मानन्दशास्त्री-चौखम्बा सुरभारती, वाराणसी-2014
34. **किरातार्जुनीयम् -** राजेन्द्र मिश्र, अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद–2003-2013
35. **किरातार्जुनीयम् -** रामसेवक दुबे- शारदापुस्तक भण्डार, इलाहाबाद-2010
36. **किरातार्जुनीयम् -** श्रीनिवास शास्त्री-भारतीय विद्याप्रकाशन, वाराणसी-2013
37. **कुमारसम्भव-** राजेश्वरशास्त्री मुसलगाँवकर-संस्कृतभवन, वाराणसी-सं-2057,
38. **कुमारसम्भव-** वेम्पटि कुटुम्बशास्त्री- राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली-2005
39. **कुमारसम्भव-** सुधाकर मालवीय-चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी, 2014
40. **कुर्मपुराण-** शिवजीत सिंह - चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2009
41. **कुवलयानन्द-** भोलाशंकर व्यास - चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी-2013
42. **कौटिलीय अर्थशास्त्र-** वाचस्पति गैरोला- चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी-2013
43. **गरुडपुराण-** गीताप्रेस, गोरखपुर-वि0सं0 2073
44. **गीतगोविन्द-** रामचन्द्र वर्मा शास्त्री- प्रभात प्रकाशन, दिल्ली-2008
45. **गीता-** श्री प्रभुपाद- भक्तिवेदान्त बुकट्रस्ट, मुम्बई-1990
46. **गौतमधर्मसूत्र-** प्रमोदवर्धन कौण्डिन्न्यायन-चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी 2015
47. **चन्द्रालोक-** कृष्णमणि त्रिपाठी, चौखम्बा सुरभारती, वाराणसी, 2012
48. **चाणक्यनीति-** पी0एम0 पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली-2014
49. **चार्वाक दर्शन-** आनन्द झा, उत्तरप्रदेश- हिन्दी संस्थान, लखनऊ–2005, 2013
50. **छन्दोऽलङ्कारसौरभम्-** राजेन्द्रमिश्र- अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद-2011
51. **छन्दोऽलङ्कार मञ्जूषा-** लक्ष्मीकान्त दीक्षित, नारायण पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद-2003
52. **छन्दःप्रवेशिका-**ज्ञानेन्द्रसापकोटा-प्रमा-प्रकाशन, वाराणसी–2014
53. **जातकमाला-** जगदीशचन्द्र मिश्र, चौखम्बा सुरभारती, वाराणसी–2006
54. **जैनदर्शनसार-** नरेन्द्रकुमार शर्मा-हंसा प्रकाशन, जयपुर-2008, 2011
55. **तर्कसंग्रह-** राकेश शास्त्री- चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली-2011
56. **तर्कसंग्रह-** आद्याप्रसाद मिश्र-अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद-2005-2013
57. **तर्कसंग्रह-** दयानन्द भार्गव
58. **तर्कसंग्रह-** कृष्णवल्लभाचार्य-व्यास प्रकाशन, वाराणसी
59. **तर्कसंग्रह-** केदारनाथ त्रिपाठी, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली-2004
60. **तर्कसंग्रह-** गोविन्दाचार्य- चौखम्बा सुरभारती, वाराणसी, 2012
61. **तर्कसंग्रह-** राकेश शास्त्री- चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली-2011
62. **तर्कसंग्रह-** रामभजन शर्मा वात्स्यायन-चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी-2013
63. **तर्कसंग्रह-** शिवशंकर गुप्त-विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी-2012
64. **तर्कभाषा-** आचार्य विश्वेश्वर-चौखम्बा संस्कृत भवन, वाराणसी -2017
65. **तर्कभाषा-** गजानन शास्त्री मुसलगाँवकर- चौखम्बा सुरभारती, वाराणसी–2013, 2015
66. **तर्कभाषा-** बद्रीनाथ शुक्ल- मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली-2010
67. **तर्कभाषा-** सुरेन्द्रदेव शास्त्री चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी-2015
68. **तन्त्रागमीय ज्ञानकोश-**चन्द्रशेखर शिवाचार्य-शैवभारती शोध प्रतिष्ठानम्, वाराणसी-2008

69. **तन्त्रसार-** परमहंस मिश्र- चौखम्बा सुरभारती, वाराणसी, 2017
70. **दशरूपक-** केशवराव मुसलगाँवकर- चौखम्बा संस्कृत भवन, वाराणसी सं0- 2016
71. **दशरूपक-** बैजनाथ पाण्डेय-मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी-2004
72. **दशरूपक-** रमाशंकर त्रिपाठी- विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी-2011
73. **दशरूपक-** लोकमणि दाहाल- चौखम्बा अमर भारती, वाराणसी--1987
74. **दशरूपक-**श्रीनिवास शास्त्री- साहित्य भण्डार, मेरठ-2015
75. **दशकुमारचरितम् -** विश्वनाथ झा- मोतीलाल बनारसी दास, वाराणसी- 2015
76. **दुर्गासप्तशती-** गीताप्रेस, गोरखपुर, सं0-2073
77. **धर्मसिन्धु-** रविदत्त शास्त्री- चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली-2015
78. **ध्वन्यालोक-** आचार्य विश्वेश्वर-ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी-2010
79. **ध्वन्यालोक-**चण्डिका प्रसाद शुक्ल- विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी - 2014
80. **नलचम्पू-** धुरन्धर पाण्डेय- भारतीय विद्या संस्थान, वाराणसी- 2011
81. **नलचम्पू-** धुरन्धर पाण्डेय- भारतीय विद्या संस्थान, वाराणसी- 2011
82. **नाट्यशास्त्र -** बाबूलाल शुक्ल शास्त्री- चौखम्बा संस्कृत-संस्थान, वाराणसी-सं0 2065
83. **नाट्यशास्त्र-** ब्रजमोहन चतुर्वेदी-विद्यानिधि प्रकाशन, दिल्ली- 2014
84. **नाट्यशास्त्र-** थानेशचन्द्र उप्रेती- परिमल पब्लिकेशन, दिल्ली-2012
85. **नित्यकर्म पूजाप्रकाश-** लाल बिहारी मिश्र- गीताप्रेस, गोरखपुर सं0 2073
86. **निर्णयसिन्धु-** व्रजरत्न भट्टाचार्य- चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी-2014
87. **नीतिशतकम् -** गोपाल शर्मा-हंसा प्रकाशन, जयपुर- 2012
88. **नीतिशतकम् -** तारिणीश झा- रामनारायण लाल एण्ड कम्पनी, इलाहाबाद-2013
89. **नीतिशतकम् -** राकेश शास्त्री- परिमल पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली
90. **नीतिशतकम् -** राजेश्वर प्रसाद मिश्र- अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद-2012
91. **नैषधीयचरितम् -** देवर्षि सनाढ्य शास्त्री-चौखम्बा कृष्णदास-अकादमी, वाराणसी-2010
92. **नैषधीयचरितम्-**देवनारायण मिश्र- साहित्य भण्डार, मेरठ
93. **नैषधीयचरितम् -** बद्रीनाथ मालवीय- रामनारायण लाल अरुण कुमार, इलाहाबाद–2016
94. **नैषधीयचरितम् -** सुरेन्द्रदेव शास्त्री- चौखम्बा पब्लिशर्स, वाराणसी-1999
95. **न्यायदर्शन-** ढुण्ढिराज शास्त्री- चौखम्बा संस्कृत भवन, वाराणसी सं.- 2071
96. **न्यायसिद्धान्तमुक्तावली-** (सम्पूर्ण खण्ड)- गजानन शास्त्री मुसलगाँवकर-चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी-2014
97. **न्यायसिद्धान्तमुक्तावली-** महानन्द झा- चौखम्बा संस्कृत भवन, वाराणसी-सं-2066
98. **पातञ्जलयोगदर्शन -** सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव- चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी-2012
99. **प्रतिमानाटक-** धरानन्द शास्त्री**-** मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली- 2003
100. **प्राचीन भारतीय संस्कृति -** वीरेन्द्र कुमार सिंह- अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद-2011
101. **प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख (भाग-1)-** परमेश्वरी लाल गुप्त–2014
102. **प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख (भाग-2)-** परमेश्वरी लाल गुप्त, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी-2013
103 **प्राचीन भारतीय इतिहास-** सौरभ चौबे, यूनिवर्सल बुक, इलाहाबाद-2016
104. **बुद्धचरितम् -** रामचन्द्र दास शास्त्री- चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी-2014

105. **बृहज्जातकम् -** केदारदत्त जोशी-मोतीलाल- बनारसीदास, वाराणसी- 2016
106. **बृहद्धातुकुसुमाकर-** हरेकान्त मिश्र- चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली- 2014
107. **बौद्धदर्शन-मीमांसा-** बलदेव उपाध्याय-चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी-2014
108. **ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यम् -** स्वामी सत्यानन्द सरस्वती, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, वाराणसी-2013
109. **ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यम् -** हनुमानदास जी षट्शास्त्री-चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी-2010
110. **भर्तृहरिशतकम् -** स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती-सुबोध पब्लिकेशन्स, दिल्ली-2014
111. **भविष्यमहापुराण-** बाबूराम उपाध्याय- हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग-2003
112. **भागवत महापुराण-**गीताप्रेस, गोरखपुर- सं0 -2068
113. **भारतीय काव्यशास्त्र का इतिहास-** राजवंश सहाय 'हीरा'- चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2007
114. **भारतीय दर्शन-** उमेश मिश्र- उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ- 2003
115. **भारतीय दर्शन-** चन्द्रधर शर्मा- मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली-2013
116. **भारतीय दर्शन-** जगदीशचन्द्र मिश्र - चौखम्बा सुरभारती, वाराणसी- 2015
117. **भारतीय दर्शन-** बलदेव उपाध्याय- शारदा मन्दिर, वाराणसी-2011
118. **भारतीय दर्शन-** नन्दकिशोर देवराज- उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ - 1992-1999
119. **भारतीय दर्शन-** वाचस्पति गैरोला- लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद-2009
120. **भारतीय दर्शन-** शिवशंकर गुप्त-विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी- 1999
121. **भारतीय दर्शन-** शोभा निगम - मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली- 2011
122. **भारतीय दर्शन की रूपरेखा-** हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा-मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली-1995, 2012
123. **भारतीय दर्शन-** श्रीकान्त पाण्डेय, साहित्य भण्डार, मेरठ–2012
124. **भारतीयशास्त्र एवं शास्त्रकार-**गिरिजाशंकर शास्त्री / मृदुला त्रिपाठी-चौखम्बा संस्कृत भवन, वाराणसी सं-2072
125. **भारतीय संगीत का इतिहास-** शरच्चन्द्र श्रीधर परांजपे, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी-2010
126. **भारतीय संस्कृति-**दीपक कुमार- चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी-2014
127. **भासनाटकचक्रम्-** रामचन्द्र मिश्र / बलदेव उपाध्याय-चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी-2002
128. **भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-** कपिलदेव द्विवेदी-विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी-2012
129. **भाषाविज्ञान-** कर्णसिंह-साहित्य भण्डार, मेरठ-2015
130. **मत्स्यपुराण-** कालीचरण गौड़- चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी-2015
131. **मन्त्ररहस्य-** नारायण दत्त श्रीमाली-पुस्तक महल, दिल्ली
132. **महाभारत-** गीताप्रेस, गोरखपुर- सं0 -2070
133. **मालविकाग्निमित्रम् -** रमाशंकर पाण्डेय- चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी - 2014
134. **मुद्राराक्षस-** परमेश्वरदीन पाण्डेय-चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन,वाराणसी-2014
135. **मुद्राराक्षस-**पुष्पा गुप्ता- ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली-2003
136. **मनुस्मृति-** गिरिधर गोपाल शर्मा- चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली-2014
137. **मनुस्मृति-** शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन- चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2014
138. **मुहूर्तचिन्तामणि -** विन्ध्येश्वरी प्रसाद द्विवेदी - चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी-2014
139. **मृच्छकटिकम् -** जगदीशचन्द्र मिश्र- चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी -2015
140. **मृच्छकटिकम् -** जयशंकर लाल त्रिपाठी - चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी-2013

141. **मृच्छकटिकम् -** रमाशंकर त्रिपाठी- मोतीलाल बनारसी दास, वाराणसी-2014
142. **मृच्छकटिकम् -** श्रीनिवास शास्त्री- साहित्य भण्डार, मेरठ - 2010
143. **मेघदूतम् -** आर.बी.शास्त्री-हंसा प्रकाशन, जयपुर- 2012
144. **मेघदूतम् -** तारिणीश झा-रामनारायण लाल एण्ड कम्पनी, इलाहाबाद-2011
145. **मेघदूतम् -** थानेशचन्द्र उप्रेती- परिमल पब्लिकेशन्स, दिल्ली-2014
146. **मेघदूतम्-** दयाशंकर शास्त्री- चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी-2014
147. **मेघदूतम्-** विजेन्द्र कुमार शर्मा- साहित्य भण्डार, मेरठ-2014, 2016
148. **मेघदूतम् -** शेषराज शर्मा 'रेग्मी'- चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी- 2007
149. **याज्ञवल्क्यस्मृति-** उमेशचन्द्र मिश्र- चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी सं. 2070
150. **याज्ञवल्क्यस्मृति-** गंगासागर राय- चौखम्बा संस्कृत संस्थान, दिल्ली-2015
151. **वक्रोक्तिजीवितम् -**परमेश्वरदीन पाण्डेय- चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी-2014
152. **वक्रोक्तिजीवितम् -** राधेश्याम मिश्र- चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी- सं0 2068
153. **वस्तुनिष्ठ संस्कृत-साहित्यम् -** सर्वज्ञभूषण - संस्कृतगङ्गा प्रकाशन, इलाहाबाद-2015
154. **वाक्यपदीयम् -** सूर्यनारायण शुक्ल-चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी-2016
155. **वायुपुराण-** शिवजीत सिंह- चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी - 2013
156. **वाल्मीकीय रामायण-** गीताप्रेस, गोरखपुर- सं0 2067
157. **वासवदत्ता-** जमुनापाठक- चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी- 2010
158. **विदुरनीति-** गुञ्जेश्वर चौधरी-चौखम्बा सुरभारती, वाराणसी 2012
159. **विदुरनीति-** जगदीश्वरानन्द-सरस्वती सुबोध पब्लिकेशन्स, दिल्ली-2014
160. **विवेकचूडामणि-** गीताप्रेस, गोरखपुर सं0- 2069,2073
161. **वृत्तरत्नाकर-** धरानन्दशास्त्री-मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली–1993
162. **वेणीसंहार-** गंगासागर राय
163. **वेणीसंहार-** परमेश्वरदीन पाण्डेय- चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी- 2014
164. **वेदान्तसार-** आद्याप्रसाद मिश्र- अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद- 2011,2015
165. **वेदान्तसार-** कृष्णकान्त त्रिपाठी- साहित्यभण्डार, मेरठ-2009
166. **वेदान्तसार-** बद्रीनाथ शुक्ल- मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली-2012
167. **वेदान्तसार-** राकेश शास्त्री-परिमल पब्लिकेशन, दिल्ली 2017
168. **वेदान्तसार-** सन्तनारायण श्रीवास्तव -सुदर्शन प्रकाशन, गाजियाबाद-2005
169. **वेदान्तदर्शन -** गीताप्रेस, गोरखपुर- सं0 2070
170. **वेदान्त परिभाषा-**गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर- चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी- 2015
171. **वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-** कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी- 2010
172. **वैदिक साहित्य का इतिहास-**पारसनाथ द्विवेदी-चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी- 2014
173. **वैदिक साहित्य और संस्कृति**-बलदेव उपाध्याय-शारदा संस्थान, वाराणसी-2015
174. **वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-**वाचस्पति गैरोला- चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली-2016
175. **वैराग्यशतकम् -** स्वामी विदेहात्मानन्द-रामकृष्णमठ, नागपुर सं0 - 3000
176. **रघुवंशम् -** कृष्णमणि त्रिपाठी- चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी-2012

177. **रघुवंशम् -** बलवान सिंह यादव- चौखम्बा संस्कृत भवन, वाराणसी सं0- 2067
178. **रघुवंशम् -** हरगोविन्द मिश्र- चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी-सं0 2072
179. **रत्नावली-** तारिणीश झा- रामनारायणलाल विजय कुमार, इलाहाबाद-2013
180. **रत्नावली-** श्रीकृष्ण त्रिपाठी-चौखम्बा संस्कृतभवन, वाराणसी सं0- 2065
181. **रसगंगाधर-** मदनमोहन झा- चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी- 2013
182. **ललितासहस्रनामस्तोत्रम् -**देवेन्द्र प्रसाद त्रिपाठी, दुर्गा पुस्तक भण्डार, इलाहाबाद
183. **लूसेन्ट सामान्यज्ञान-** सुनील कुमार सिंह-लूसेन्ट पब्लिकेशन्स,पटना 2012
184. **शिवदृष्टि -** राधेश्याम चतुर्वेदी - वाराणसेय संस्कृत संस्थान, वाराणसी-2013
185. **शिवराजविजयम् -** देवनारायण मिश्र- साहित्य भण्डार, मेरठ- 2014, 2016
186. **शिवराजविजयम् -** रमाशंकर मिश्र- चौखम्बा सुरभारती, वाराणसी, 2014
187. **शिशुपालवधम् -** जनार्दन गंगाधर रटाटे- विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी-2015
188. **शिशुपालवधम् -** तारिणीश झा- रामनारायण लाल अरुण कुमार, इलाहाबाद-2015
189. **शिशुपालवधम् -** देवनारायण मिश्र- साहित्य भण्डार, मेरठ-2012
190. **शिशुपालवधम् -** शिवदत्त दाधीच-चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी-2012
191. **शिशुपालवधम् -** हरगोविन्द मिश्र- चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी-2015
192. **शुकनासोपदेश-** तारिणीश झा- रामनारायण लाल- अरुण कुमार, इलाहाबाद-2014
193. **शुकनासोपदेश-**राजेश्वर प्रसाद मिश्र-अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद-2007
194. **शुक्रनीति-** जगदीशचन्द्र मिश्र- चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी- 2012
195. **शैवदर्शन एवं स्पन्दशास्त्र-** श्यामाकान्त द्विवेदी
196. **श्रीमद्भगवद्गीता-** गीताप्रेस, गोरखपुर सं0 -2073
197. **श्रौतयज्ञपरिचय-**वेणीरामशर्मा गौड- चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी- 1999
198. **षट्दर्शन-** नन्दलाल-दशोरा-रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार- 2011
199. **सत्यार्थ प्रकाश-** दयानन्द सरस्वती-आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, दिल्ली 2003
200. **सत्यार्थप्रकाश-** श्री घूडमल प्रहलादकुमार-आर्य धर्मार्थ न्यास, हिण्डौन राजस्थान-2015
201. **संस्कृत परम्परागत विषय-** शत्रुघ्न त्रिपाठी - चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी- 2014
202. **संस्कार प्रकाश-** गीताप्रेस, गोरखपुर सं0 - 2072
203. **संस्कृत शिक्षण-** उदयशंकर झा-चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी-2011
204. **संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (सभी खण्ड)-** बलदेव उपाध्याय-उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ सं0 -2056
205. **संस्कृत साहित्य का इतिहास-** उमाशंकर शर्मा 'ऋषि'- चौखम्भा भारती अकादमी, वाराणसी 2014
206. **संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-** कपिलदेव द्विवेदी- रामनारायण लाल विजय कुमार, इलाहाबाद- 2016, 2017
207. **संस्कृत साहित्य का इतिहास-** राकेश कुमार जैन- रचना प्रकाशन, जयपुर-2012
208. **संस्कृत साहित्य का इतिहास-** वाचस्पति गैरोला- चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी-2014
209. **संस्कृत हिन्दी कोश-**वामन शिवराम आप्टे- चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी- 2012
210. **सर्वदर्शनसंग्रह-** उमाशंकर शर्मा 'ऋषि'-चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी- 2012

डिजिटल भारत में डिजिटल संस्कृत

प्रिय संस्कृत मित्रों,

आज पूरी दुनिया में डिजिटलीकरण का दौर चल रहा है, जिसमें भारत भी बढ़-चढ़ कर भूमिका निभा रहा है, मा०प्रधानमन्त्री जी का सपना है कि भारत पूर्णत: डिजिटल भारत हो उसी प्रकार संस्कृतगङ्गा का सपना है कि संस्कृत भी डिजिटलीकरण में पीछे न रहे तो आइये हम सब मिलकर संस्कृत को डिजिटलसंस्कृत बनाने का सङ्कल्प लें-

हमारे डिजिटल उपक्रम-

Sanskritganga online classes
"संस्कृतस्य प्रसाराय"

संस्कृतगङ्गा Online Classes

- TGT, PGT, UGC की कक्षायें घर में बैठकर करें।
- संस्कृत प्रतियोगी परीक्षा सम्बन्धी समाधान (समय निर्धारित)
- सम्पर्क करें - 7800138404

www.sanskritganga.org

- यहाँ आप ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं।
- हमारे प्रकाशन की समस्त पुस्तकें आर्डर कर सकते हैं।
- संस्कृतगङ्गा के विषय में जानकारी प्राप्त करें।

Sanskrit Ganga Channel

- हमारे YouTube चैनल को **Subscribe** करें ताकि आपको मिल सके संस्कृत के विशेष वीडियो
- TGT, PGT, UGC संस्कृत से सम्बन्धित महत्वपूर्ण वीडियो
- महत्वपूर्ण सूक्तियों की व्याख्या
- अन्य शैक्षिक प्रेरणात्मक ऑडियो, वीडियो आदि।

वैदिकवाङ्मय

परीक्षा दृष्टि

(NTA, UGC-NET/JRF, SLET, DSSSB, GIC-Lecturer, GDC, Higher Education
असिस्टेण्ट प्रोफेसर, डायट प्रवक्ता आदि प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए उपयोगी)

लेखक

सर्वज्ञभूषण

प्रकाशक

संस्कृतगङ्गा, दारागञ्ज, प्रयागराज

www.sanskritganga.org

ISBN : 978-81-938257-1-6

☞ **प्रकाशक**

संस्कृतगङ्गा (पञ्जीकृत)
59, मोरी, दारागञ्ज, प्रयागराज
(कोतवाली दारागञ्ज के आगे, गङ्गाकिनारे, संकटमोचन छोटे हनुमान् मन्दिर के पास)
कार्यालय - 7800138404, 9839852033
email-Sanskritganga@gmail.com
बेवसाइट - www.Sanskritganga.org

☞ **वितरक**

* **युनिवर्सल बुक्स**
  अल्लापुर, प्रयागराज
* **राजू पुस्तक केन्द्र**
  अल्लापुर, प्रयागराज (उत्तर प्रदेश) मो० 9453460552

☞ संस्करण - मई-2019

☞ **मूल्य – ₹ 145 /-** (एक सौ पैंतालीस रुपये मात्र)

☞ **पृष्ठविन्यास** – कृष्णा कम्प्यूटर संस्थान, दारागंज, प्रयागराज

☞ **मुद्रक** – एकेडमी प्रेस, दारागंज, प्रयागराज

भूमिका

प्रिय संस्कृतमित्राणि

नमः संस्कृताय!

वेद भारत की अस्मिता है। वेदों के बिना भारत का अस्तित्व नगण्य है। वेदों के पठन-पाठन पर हमारे ऋषि-मुनियों ने सदैव अत्यधिक बल दिया है, क्योंकि सम्पूर्ण मानव जाति का कल्याण वैदिक मार्ग का अनुसरण करने में ही है। मनु ने वेदों को सभी धर्मों का मूल बताया है - 'वेदोऽखिलो धर्ममूलम्'। वेदों में मानवमात्र के कर्तव्यों का निर्देश किया गया है -

यः कश्चित् कस्यचिद्धर्मो मनुना परिकीर्तितः।
स सर्वोऽभिहितो वेदे सर्वज्ञानमयो हि सः।।

पतञ्जलि भी निःस्वार्थभाव से वेदों का साङ्गोपाङ्ग अध्ययन करने हेतु प्रेरित करते हैं - 'ब्राह्मणेन निष्कारणो धर्मः षडङ्गो वेदोऽध्येयो ज्ञेयश्च।' वेदों को प्रमाणरूप में स्वीकार करना ही एक सच्चे आर्य का लक्षण है - 'प्रामाण्यबुद्धिर्वेदेषु।' परन्तु आज की पीढ़ी वैदिकवाङ्मय के अमूल्य ज्ञान से अनभिज्ञ प्राय है, जो कि भारत की अस्मिता के लिए अत्यन्त विचारणीय प्रश्न है। इस विषय पर गम्भीरतापूर्वक अपने इष्ट मित्रों के साथ विचार कर एक ऐसी पुस्तक का निर्माण करने का सङ्कल्प लिया गया, जो आज की युवा पीढ़ी को वैदिक वाङ्मय को सरलतम भाषा में परिचित करा सके। इस पुस्तक के माध्यम से छात्र वैदिक वाङ्मय के सारगर्भित स्वरूप से परिचित हो सकेगा।

चार वेद (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद), चार उपवेद (आयुर्वेद, धनुर्वेद, गान्धर्ववेद, इतिहासवेद), छः वेदाङ्ग (शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष) वेदों के ब्राह्मणग्रन्थ, आरण्यक तथा उपनिषदों के ग्रन्थीय स्वरूप को क्रमशः महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं सहित सरलतम रूप में प्रस्तुत

किया गया है। वैदिक देवताओं के सम्बन्ध में प्रकाश डालते हुए अद्यावधि लिखे गये वेदभाष्यों का भी विवरण प्रस्तुत किया गया है। वैदिक वाङ्मय से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं की सूची इस पुस्तक के महत्त्व को और अधिक बढ़ाती है। **यह पुस्तक UGC-NET/JRF, SLET, DSSSB, GDC, असिस्टेण्ट प्रोफेसर, डायट प्रवक्ता आदि प्रतियोगी परीक्षार्थियों के लिए अत्यन्त उपयोगी होगी - ऐसा मेरा विश्वास है।**

पङ्कजकुमार शर्मा, सत्यप्रकाश साहू, सुमन सिंह, अम्बिकेश प्रताप सिंह, कविता सिंह, नीलम गुप्ता, नितीश उपाध्याय, स्नेहा पाण्डेय, महिमा यादव, कृष्णकुमार, राजेश तिवारी, श्यामकिशोर मिश्र, सन्तोष यादव 'साहब' आदि मित्रों के निरन्तर सहयोग व चिन्तन से ही यह कार्य पूर्णता को प्राप्त कर सका है। इस ग्रन्थ को लिखते समय पूरी सावधानी के साथ यह प्रयत्न किया गया है कि पाठकगण वैदिकवाङ्मय के महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं से अनायास परिचित हो सकें।

श्रीमान् अनन्त प्रसाद त्रिपाठी (गहनौआ, रीवा म.प्र.) एवं प्रो. ललितकुमार त्रिपाठी (प्रयागराज) के श्री चरणों में प्रणाम करते हुए ये आशा है कि यह ग्रन्थ निश्चित ही पाठकों की जिज्ञासा को पूर्णकर वेदों के प्रति उन्हें आकृष्ट करेगा।

विनयावनत

सर्वज्ञभूषण

❑❑

विषयसूची

❑❑

1. वेदों का रचनाकाल एवं ऋग्वेदीय संवादसूक्त

- वेदों का रचनाकाल निर्धारण वैदिक वाङ्मय की एक जटिल समस्या है। विभिन्न विद्वानों ने भाषा, रचनाशैली, धर्म एवं दर्शन, भूगर्भशास्त्र, ज्योतिष, उत्खनन में प्राप्त सामग्री, अभिलेख आदि के आधार पर वेदों का रचनाकाल निर्धारित करने का प्रयास किया है, किन्तु इनसे अभी तक कोई सर्वमान्य रचनाकाल निर्धारित नहीं हो सका है।
- भारतीय षड्दर्शन- पूर्वमीमांसा, उत्तरमीमांसा (वेदान्त), सांख्य-योग, न्याय-वैशेषिक एवं वेदभाष्यकारों ने वेद के अपौरुषेयत्व का कथन किया है। पूर्वमीमांसा वेद को नित्य एवं अनुत्पन्न मानती है।
- पाश्चात्त्य विद्वान् भारतीय परम्परागत 'वेद के अपौरुषेयत्व सिद्धान्त' को स्वीकार नहीं करते। उनका मानना है कि वेद आर्यों की रचना है, मानवकृत (पौरुषेय) हैं; अतएव अपौरुषेय नहीं है।

प्रो. मैक्समूलर का मत-

- प्रो. मैक्समूलर ने सन् 1859 ई. में स्वरचित ग्रन्थ **"A History of Ancient Sanskrit literature"** में वेदों के काल निर्णय का सर्वप्रथम प्रयास किया।
- मैक्समूलर के अनुसार सर्वप्राचीन ऋग्वेद की रचना 1200 ई. पू. (विक्रमपूर्व) में हुई होगी, क्योंकि विक्रम से लगभग 500 वर्ष पूर्व उदित हुआ बौद्ध धर्म वैदिक वाङ्मय की सत्ता को स्वीकार करता है।
- प्रो. मैक्समूलर ने समग्र वैदिककाल को चार विभागों में बाँटा है –

  1. छन्दकाल 2. मन्त्रकाल 3. ब्राह्मणकाल 4. सूत्रकाल इसमें प्रत्येक युग की विचार धारा के उदय तथा ग्रन्थ रचना के लिए उन्होंने 200 वर्षों का काल माना है।

1. सूत्रकाल -	600 ई. पू. से 200 ई. पू. तक
2. ब्राह्मणकाल-	800 ई. पू. से 600 विक्रमपूर्व (ई. पू.)
3. मन्त्रकाल -	1000 से 800 विक्रमपूर्व (ई. पू.)
4. छन्दकाल -	1200 से 1000 विक्रमपूर्व (ई. पू.)

- सन् 1890 ई. में प्रकाशित ''**Physical Religion**'' (भौतिक धर्म) नामक अपनी पुस्तक में प्रो. मैक्समूलर ने अपनी भूल स्वीकार करते हुए लिखा है कि- ''इस भूतल पर कोई भी ऐसी शक्ति नहीं है, जो कभी निश्चय कर सके कि वैदिक मन्त्रों की रचना 1000 या 1500 या 2000 या 3000 विक्रमपूर्व में की गयी हो।''

- परन्तु हम भारतीयों का दुर्भाग्य कि वेदों के काल निर्णय के विषय में मैक्समूलर के 1200 विक्रमपूर्व को ही हम सनातन सत्य मानते आ रहे हैं, परीक्षाओं में भी यह प्रश्न प्रमुखता से पूछा जा रहा है, जबकि इस मत के प्रणेता मैक्समूलर ने स्वयं इसे अपनी भूल मानते हुए, इस मत का खण्डन कर चुके हैं।

ए. वेबर का मत

- जर्मन विद्वान प्रो. ए. वेबर ने कहा है – ''वेदों का समय निश्चित नहीं किया जा सकता। वे उस तिथि के बने हुए हैं, जहाँ तक पहुँचने के लिए हमारे पास उपयुक्त साधन नहीं है। वर्तमान प्रमाण, हम लोगों को उस समय के उन्नत शिखर तक पहुँचाने में असमर्थ हैं।''
- प्रो. वेबर यह भी कहते हैं कि – ''वेदों के समय को कम से कम 1200 ई. पू. या 1500 ई. पू. के बाद का कथमपि स्वीकार नहीं किया जा सकता।''
- प्रो. वेबर ने अपनी पुस्तक ''History of Indian literature'' यहाँ तक लिख दिया कि – ''Any such of attempt of defining the relic antiquity is absolutely fruitless'' अर्थात् वेदों का काल निर्धारण के लिए प्रयत्न करना सर्वथा बेकार है।

डॉ. जैकोबी का मत

- जर्मन विद्वान डॉ. जैकोबी का वैदिक काल विषयक सिद्धान्त ज्योतिष की आधार शिला पर अवलम्बित है; जो बालगंगाधर तिलक के मत से मिलता-जुलता है।
- डॉ. जैकोबी ने कृत्तिका और बसन्तपात के आधार पर वेदमन्त्रों का रचनाकाल 4590 ई. पू. तथा ब्राह्मण ग्रन्थों का रचनाकाल 2500 ई. पू. के पश्चात् स्वीकार किया है।
- इसप्रकार संक्षेप में याकोबी के अनुसार 4500 ई. पू. से 3000 ई. पू. ऋग्वेद का रचनाकाल है तथा 3000 ई. पू. से. 2000 ई. पू. ब्राह्मणों का रचनाकाल है।

बालगंगाधर तिलक का मत

- लोकमान्य बालगंगाधर तिलक ने ऋग्वेद में उपलब्ध ज्योतिष विषयक साक्ष्यों के आधार पर वेदों का काल 4000 से 6000 विक्रमपूर्व स्वीकार किया है।
- तिलक जी ने वैदिक काल को चार विभागों में रखा है-

1. अदितिकाल - 6000 ई. पू. से 4000 विक्रम पूर्व तक
2. मृगशिरा काल - 4000 ई. पू. से. 2500 विक्रमपूर्व तक (ऋग्वेदसंहिता का मन्त्रकाल)
3. कृत्तिका काल - 2500 से 1400 ई. पू. विक्रमपूर्व तक (तैत्तिरीय संहिता व ब्राह्मणकाल)
4. अन्तिम काल - 1400 से 500 विक्रमपूर्व तक (सूत्रग्रन्थों का रचनाकाल)

- लोकमान्य तिलक जी ने **"Orion" (ओरायन)** के पश्चात् लिखे गये अपने ग्रन्थ "Arctic Home in the Vedas" में वेदकाल को 10000 (दस हजार) ई. पू. बतलाया। उन्होंने विज्ञान तथा ज्योतिष के आधार पर यह सिद्ध किया कि भारत में आने से पूर्व आर्य लोग उत्तरी ध्रुव में रहते थे, और वहाँ पर भी वे वैदिक धर्म को ही मानते थे।

एम. विण्टरनित्स का मत

- विण्टरनित्स ने ब्राह्मणग्रन्थों, पाणिनि व्याकरण की संस्कृत भाषा तथा अशोक के शिलालेखों की भाषा – इन सबका वैदिक भाषा से साम्य को ध्यान में रखते हुए, ऋग्वेद का काल जैकोबी तथा तिलक द्वारा निर्धारित तिथि (4500 से 6000 ई. पू.) के बीच में स्वीकार किया है।

भारतीय परम्परागत विचार

- भारतीय परम्परावादी विद्वानों के मतानुसार वेदों का काल निर्धारण करना मूर्खता ही नहीं बल्कि असम्भव है।
- भारतीय परम्परागत विद्वानों का विचार है कि – 'वेद नित्य हैं, और सृष्टि के प्रारम्भ से ही वेदों का आविर्भाव हुआ है, ऋग्वेद का पुरुष सूक्त वेदों की उत्पत्ति के लिए स्वयं प्रमाण हैं-

तस्मात् यज्ञात् सर्वहुतः ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दांसि जज्ञिरे तस्मात् यजुस्मादजायत॥

- भारतीय मत में जिस परमात्मा ने सृष्टि की उत्पत्ति की उसी ने सृष्टि के पूर्व वेदों की रचना की होगी, इसीलिए वेद अपौरुषेय हैं।
- भारतीय परम्परावादी विद्वानों का कहना है कि सृष्टिकर्ता विधाता ने सृष्ट्युत्पत्ति के पूर्व जिस विचारधारा की सर्वप्रथम कल्पना अपनी बुद्धि में की, वही आम्नाय या वेद हैं।
- ऋग्वेद का ही कथन है- "**तस्मादृचो पातक्षन् यजुस्तस्मादपाकयन्। सामानि यस्य लोमानि अथर्वाङ्गिरसो मुखम्॥**"
- आदि शङ्कराचार्य ने वेदों का सर्वज्ञानमयत्व मानते हुए कहते हैं- **महतः ऋग्वेदादेः शास्त्रस्य अनेकविद्यास्थानोपबृंहितस्य प्रदीपवत् सर्वार्थावद्योतिनः सर्वज्ञकल्पस्य योनिः...** अर्थात् ऋग्वेदादि महान् शास्त्र अनेक विद्यास्थानों से विकसित हुआ है, और यह प्रदीपवत् समस्त विषयों को प्रकाशित करता है। इसप्रकार के सर्वज्ञान सम्पन्न शास्त्र का उत्पत्ति स्थान ब्रह्म ही हो सकता है, क्योंकि सर्वज्ञ परब्रह्म परमात्मा के अतिरिक्त अन्य किसी से ऋग्वेदादि सर्वज्ञानसम्पन्न शास्त्र की उत्पत्ति नहीं हो सकती।
- "**ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।**" के अनुसार सर्वज्ञानमय पूर्णवेद की उत्पत्ति पूर्णब्रह्म से ही सम्भव है।

- भगवान् बादरायण व्यास ने भी ब्रह्मसूत्रस्थ **''विप्रतिषेधाच्च''** के द्वारा इसी मत को सूचित किया है।
- भगवान् जैमिनि ने पूर्वमीमांसादर्शन में **''नित्यस्तु स्याद् दर्शनस्य परार्थत्वात्''** इत्यादि छः सूत्रों द्वारा अनित्यवादी पक्षों के तर्कों का खण्डन करते हुए, वेदों का नित्यत्व प्रतिपादित करते हैं।
- उत्तरमीमांसा में महर्षि बादरायण व्यास जी ने **''शास्त्रयोनित्वात्''** इस सूत्र के द्वारा वेदों का उद्गम परब्रह्म से ही हुआ है। इस सिद्धान्त को स्थापित किया है।
- नैयायिकों का मानना है कि- ''सृष्टि के आदि में ईश्वर की निःश्वासवायु से वेदों की उत्पत्ति हुई-

''अनादिनिधना नित्या वागुत्सृष्टा स्वयम्भुवा।
आदौ वेदमयी दिव्या यतः सर्वा प्रवृत्तयः॥''

- इसप्रकार भारतीय परम्परावादी विद्वान् वेदों को नित्य स्वीकार करते हुए अपौरुषेय मानते हैं।

ऋग्वेद के संवाद सूक्त

1. पुरूरवा-उर्वशी संवाद सूक्त (ऋग्वेद 10/95)

मण्डल- 10, **सूक्त** - 95, **कुल मन्त्र** - 18		
ऋषि	-	पुरूरवा ऐळ और उर्वशी।
देवता	-	उर्वशी और पुरूरवा ऐळ।
छन्द	-	त्रिष्टुप्।
स्वर	-	धैवत।

पुरूरवा उर्वशी की कथा को समझने के लिए प्रारम्भ के ये छह श्लोक बृहद्देवता के आधार पर दिये जा रहे हैं।

पुरूरवसि राजवर्षावप्सरास्तूर्वशी पुरा।
न्यवसत्संविदं कृत्वा तस्मिन् धर्मं चचार च॥147॥

प्राचीनकाल में उर्वशी नाम की अप्सरा, पुरूरवा नाम के राजर्षि के साथ रही। नियमपूर्वक वह उसके साथ लोक-धर्म में प्रवृत्त हुई।

तया तस्य च संवासमसूयन् पाकशासनः।
पैतामहं चानुरागमिन्द्रवच्चापि तस्य तु॥148॥

इन्द्र ने उर्वशी के साथ पुरूरवा के सहवास तथा पुरूरवा पर इन्द्र तुल्य ब्रह्मा के प्रेम की ईर्ष्या करते हुए (अपने बगल में बैठे हुए) वज्र से कहा।)

स तयोस्तु तु वियोगार्थं पार्श्वस्थं वज्रमब्रवीत्।
प्रीतिं भिन्द्धि तयोर्वज्र मम चेदिच्छसि प्रियम् ॥149॥

(उस इन्द्र ने उन दोनों अर्थात् पुरूरवा और उर्वशी का वियोग कराने के लिए पार्श्वस्थ वज्र से कहा, हे वज्र! यदि मेरा प्रिय चाहो, तो उन दोनों का प्रेम तोड़ दो।

तथेत्युक्त्वा तयोः प्रीतिं वज्रोऽभिनत् स्वमायया।
ततस्तया विहीनस्तु चचारोन्मत्तवन्नृपः॥150॥

वज्र ने कहा – वैसा ही होगा (तथा) उसने अपनी माया से उनका प्रेम तोड़ दिया; तब उर्वशी से वियुक्त होकर पुरूरवा पागल की भाँति इधर-उधर घूमने लगा।

चरन् सरसि सोऽपश्यदभिरूपामिवोर्वशीम् ।
सखीभिरभिरूपाभिः पञ्चभिः पार्श्वतो वृताम् ॥151॥

इधर-उधर भटकते हुए उस पुरूरवा ने एक सरोवर में पाँच अपने समान रूपवती सखियों के साथ सुन्दरी उर्वशी को देखा।

तामाह पुनरेहीति दुःखात्सा त्वब्रवीन्नृपम् ।
अप्राप्याहं त्वयाद्येहस्वर्गे प्राप्स्यसि मां पुनः॥152॥

(पुरूरवा ने उससे कहा-पुनः मेरे पास आओ; परन्तु उस उर्वशी ने दुःख के साथ राजा को उत्तर दिया – अब मैं तुम्हारे लिए अप्राप्य हूँ। तुम मुझे पुनः स्वर्ग में प्राप्त करोगे।)

नोट – उपर्युक्त श्लोक क्रमाङ्क 147 से 152 तक; ऋग्वेद में उल्लिखित न होने के कारण कथाक्रम को ध्यान में रखते हुए, बृहद्देवता /7/147-152 (पुरूरवा-उर्वशी-वृत्तान्त) के आधार पर दिया गया है। ऋग्वेदस्थ मूल संवाद-सूक्त निम्नलिखित है।

हये जाये मनसा तिष्ठ घोरे वचांसि मिश्रा कृणवावहै नु।
न नौ मन्त्रा अनुदितास एते मयस्करन् परतरे चनाहन् ॥1॥

(पुरूरवा ने उर्वशी से कहा) – हे निर्दय नारी! तुम अपने मन को अनुरागी बनाओ। हम शीघ्र ही परस्पर वार्तालाप करें। यदि हम इस समय मौन रहेंगे तो आने वाले दिनों में सुखी नहीं होंगे।।1।।

किमेता वाचा कृणवा तवाहं प्राक्रमिषमुषसामग्रियेव।
पुरूरवः पुनरस्तं परेहि दुरापना वातइवाहमस्मि॥2॥

(उर्वशी ने उत्तर दिया) – हे पुरूरवा! वार्तालाप से कोई लाभ नहीं। मैं वायु के समान ही दुष्प्राप्य नारी हूँ। उषा के समान तुम्हारे पास से मैं चली जा रही हूँ। तुम अपने गृह को लौट जाओ।।2।।

इषुर्न श्रिय इषुधेरसना गोषाः शतसा न रंहिः।
अवीरे क्रतौ वि दविद्युतन्नोरा न मायुं चितयन्त धुनयः॥3॥

(पुरूरवा ने कहा)- हे उर्वशी! मैं तुम्हारे वियोग में इतना सन्तप्त हूँ कि, अपने तूणीर से बाण निकालने में भी असमर्थ हो रहा हूँ। इस कारण मैं युद्ध जीतकर असीमित गायों को नहीं ला सकता। मैं राजकार्यों से विमुख हो गया हूँ। अतः मेरे सैनिक भी कार्यहीन हो गए हैं।।3।।

सा वसु दधती श्वसुराय वय उषो यदि वष्ट्यन्तिगृहात् ।
अस्तं ननक्षे यस्मिञ्चाकन्दिवा नक्तं श्नथिता वैतसेन॥4॥

हे उषा! उर्वशी यदि श्वसुर को भोजन कराना चाहती तो निकटस्थ घर से पति के पास जाती और दिन रात स्वामी के पास रमणसुख भोगती।।4।।

त्रिः स्म माह्नः श्नथयो वैतसेनोत स्म मेऽव्यत्यै पृणासि।
पुरूरवोऽनु ते केतमायं राजा मे वीर तन्वस्तदासीः॥5॥

(उर्वशी ने कहा) – हे पुरूरवा! मुझे किसी सपत्नी से प्रतिस्पर्द्धा नहीं थी, क्योंकि मैं तुमसे हर प्रकार से सन्तुष्ट थी। जब से मैं तुम्हारे घर से आई तभी से तुमने सुखों का विधान किया।।5।।

या सुजूर्णिः श्रेणिः सुम्नआपिह्रेदेचक्षुर्न ग्रन्थिनी चरण्युः।
ता अञ्जयोऽरुणयो न सस्नुः श्रिये गावो न धेनवोऽनवन्त॥6॥

सुजूर्णि, श्रेणि, सुम्न आदि अप्सराएँ मलिन वेश में यहाँ आती थीं। गोष्ठ में जाती हुई गायें जैसे शब्द करती हैं, वैसे ही शब्द करने वाली वे महिलाएँ मेरे घर में नहीं आती थीं।।6।।

समस्मिञ्जायमान आसत ग्ना उतेमवर्धन्नद्यः स्वगूर्ताः।
महे यत्त्वा पुरूरवो रणायावर्धयन् दस्युहत्याय देवाः॥7॥

जब पुरूरवा उत्पन्न हुआ, तब सभी देवाङ्गनाएँ उसे देखने आयीं। नदियों ने भी उसकी प्रशंसा की। तब हे पुरूरवा! देवताओं ने घोर संग्राम में जाने तथा दस्यु के विनाश हेतु तुम्हारी स्तुति की।।7।।

सचा यदासु जहतीष्वत्कममानुषीषु मानुषो निषेवे।
अप स्म मत्तरसन्ती न भुज्युस्ता अत्रसन्रथस्पृशो नाश्वाः॥8॥

जब पुरूरवा मनुष्य होकर अप्सराओं की ओर गए, तब अप्सराएँ अन्तर्धान हो गई। वह उसी प्रकार वहाँ से चली गई, जैसे भयभीत हरिणी भागती है या रथ में योजित अश्व द्रुतगति से चले जाते हैं।।8।।

यदासु मर्तो अमृतासु निस्पृक्सं क्षोणीभिः क्रतुभिर्न पृङ्क्ते।
ता आतयो न तन्वः शुम्भत स्वा अश्वासो न क्रीळयो दन्दशानाः॥9॥

मनुष्य योनि को प्राप्त हुए पुरूरवा जब दिव्यलोकवासिनी अप्सराओं की ओर बढ़े, तो वे अप्सराएँ वैसे ही भाग गई, जैसा क्रीडाकारी अश्व भाग जाता है।।9।।

विद्युन्न या पतन्ती दविद्योद्भरन्ती मे अप्या काम्यानि।
जनिष्टो अपो नर्यः सुजातः प्रोर्वशी तिरत दीर्घमायुः॥10॥

जो उर्वशी अंतरिक्ष की विद्युत् के समान आभामयी है, उसने मेरी सभी अभिलाषाओं को पूर्ण किया था। वह उर्वशी अपने द्वारा उत्पन्न मेरे पुत्र को दीर्घजीवी करें।।10।।

जज्ञिष इत्था गोपीथ्याय हि दधाथ तत्पुरूरवो म ओजः।
अशासं त्वा विदुषी सस्मिन्नहन्न म आशृणोः किमभुग्वदासि॥11॥

(उर्वशी ने कहा) – हे पुरूरवा! तुमने पृथिवी की रक्षा के लिए पुत्र उत्पन्न किया है। मैं तुमसे अनेक बार कह चुकी हूँ, मैं तुम्हारे पास नहीं रहूँगी। तुम इस समय प्रजा-पालन के कार्य से विमुख होकर व्यर्थ-वार्तालाप क्यों करते हो?।।11।।

कदा सूनुः पितरं जात इच्छाच्चक्रन्नाश्रु वर्तयद्विजानन् ।
को दम्पती समनसा वि यूयोदध यदग्निः श्वशुरेषु दीदयत् ॥12॥

(पुरूरवा ने कहा) – हे उर्वशी! तुम्हारा पुत्र मेरे पास किस प्रकार रहेगा? वह मेरे पास आकर रोवेगा। पारस्परिक प्रेम के बन्धन को कौन सद्गृहस्थ तोड़ना स्वीकार करेगा? तुम्हारे श्वशुर के घर में श्रेष्ठ आलोक जगमगा उठा है।।12।।

प्रति ब्रवाणि वर्तयते अश्रु चक्रन्न क्रन्ददाध्ये शिवायै।
प्र तत्ते हिनवा यत्ते अस्मे परेह्यस्तं नहि मूर मापः॥13॥

(उर्वशी ने कहा) – हे पुरूरवा मेरा उत्तर सुनो। मेरा पुत्र तुम्हारे पास आकर नहीं रोयेगा। मैं सदैव उसकी मंगल-कामना करूँगी। तुम अब मुझे नहीं पा सकोगे। अतः अपने घर को लौट जाओं। मैं तुम्हारे पुत्र को तुम्हारे पास भेज दूँगी।।13।।

सुदेवो अद्य प्रपतेदनावृत्परावतं परमां गन्तवा उ।
अधा शयीत निर्ऋतेरुपस्थेऽधैनं वृका रभसासो अद्युः॥14॥

(पुरूरवा ने कहा) – हे उर्वशी! मैं तुम्हारा पति आज पृथिवी पर गिर पड़ा हूँ। वह (मैं) फिर कभी न उठ सका। वह दुर्गति के बन्धन में फँसकर मृत्यु को प्राप्त हो, और वृक (भेड़िया) आदि उसके शरीर का भक्षण करें।।14।।

पुरूरवो मा मृथा मा प्र पप्तो मा त्वा वृकासो अशिवास उ क्षन् ।
न वै स्त्रैणानि सख्यानि सन्ति सालावृकाणां हृदयान्येता॥15॥

(उर्वशी ने कहा) – हे पुरूरवा! तुम गिरो मत। तुम अपनी मृत्यु की इच्छा मत करो। तुम्हारे शरीर को वृक आदि भक्षण न करें। स्त्रियों का और वृकों का हृदय एक समान होता है, उनकी मित्रता कभी अटूट (स्थायी) नहीं रहती।।15।।

यद्विरूपाचरं मर्त्येष्ववसं रात्रीः शरदश्चतस्त्रः।
घृतस्य स्तोकं सकृदह्न आश्नां तादेवेदं तातृपाणा चरामि॥16॥

(उर्वशी ने कहा) – मैंने विविध रूप धारण करके मनुष्यों में विचरण किया। चार वर्षों तक मैं मनुष्यों में ही वास करती रही। नित्यप्रति एक बार घृतपान करती हुई घूमती रही।।16।।

अन्तरिक्षप्रां रजसो विमानीमुप शिक्षाम्युर्वशीं वशिष्ठः।
उप त्वा रातिः सुकृतस्य तिष्ठान्नि वर्तस्व हृदयं तप्यते मे॥17॥

(पुरूरवा ने कहा) – उर्वशी जल को प्रकट करने वाली तथा अंतरिक्ष को पूर्ण करने वाली है। वशिष्ठ ही उसे अपने वश में कर सके हैं। तुम्हारे पास उत्तमकर्मा पुरूरवा रहे (मैं रहूँ)। हे उर्वशी! मेरा हृदय जल रहा है, अतः लौट आओं।।17।।

इति त्वा देवा इम आहुरैळ यथेमेतद्भवसि मृत्युबन्धुः।
प्रजा ते देवान् हविषा यजाति स्वर्ग उ त्वमपि मादयासे॥18॥

(उर्वशी ने कहा) – हे पुरूरवा! सभी देवताओं का कथन है कि, तुम मृत्यु को जीतने वाले होओगे और हव्य द्वारा देवताओं का यज्ञ करोगे, फिर स्वर्ग में आनन्दपूर्वक वास करोगे।।18।।

2. यम-यमी संवाद सूक्त (ऋग्वेद 10/10)

मण्डल–10, **सूक्त –** 10, **कुल मन्त्र –** 14
ऋषि– यम वैवस्वत, यमी
देवता – यम वैवस्वत, यमी वैवस्वती **छन्द–** त्रिष्टुप्

ओ चित् सखायं सख्या ववृत्यां तिरः पुरू चिदर्णवं जगन्वान् ।
पितुर्नपातमा दधीत वेधा अधि क्षमि प्रतरं दीध्यानः॥1॥

(यमी अपने सहोदर भाई यम से कहती है) – विस्तृत समुद्र के मध्य द्वीप में आकर, इस निर्जन प्रदेश में मैं तुम्हारा सहवास (मिलन) चाहती हूँ, क्योंकि माता की गर्भावस्था से ही तुम मेरे साथी हो। विधाता ने मन ही मन समझा है कि तुम्हारे द्वारा मेरे गर्भ से जो पुत्र उत्पन्न होगा; वह हमारे पिता का एक श्रेष्ठ नाती होगा।

न ते सखा सख्यं वष्ट्येतत् सलक्ष्मा यद्विषुरूपा भवाति।
महस्पुत्रासो असुरस्य वीरा दिवो धर्तार उर्विया परिख्यन्॥2॥

(यम ने कहा) – यमी, तुम्हारा साथी यम, तुम्हारे साथ ऐसा सम्पर्क नहीं चाहता; क्योंकि तुम भी सहोदरा भगिनी हो, अतः अगन्तव्या हो। यह निर्जन प्रदेश नहीं है; क्योंकि द्युलोक को धारण करने वाले महान् बलशाली प्रजापति के पुत्रगण (देवताओं के चर) सब कुछ देखते हैं।

उशन्ति घा ते अमृतास एतदेकस्य चित्त्यजसं मर्त्यस्य।
नि ते मनो मनसि धाय्यस्मे जन्युः पतिस्तन्वमा विविश्याः॥3॥

(यमी ने कहा) – यद्यपि मनुष्य के लिए ऐसा संसर्ग निषिद्ध है, तो भी देवता लोग इच्छा पूर्वक ऐसा संसर्ग करते हैं। अतः मेरी इच्छानुकूल तुम भी करो। पुत्र-जन्मदाता पति के समान मेरे शरीर में बैठो (मेरा सम्भोग करो।)।

न यत्पुरा चकृमा कद्ध नूनमृता वदन्तो अनृतं रपेम।
गन्धर्वो अप्स्वप्या च योषा सा नो नाभिः परमं जामि तन्नौ॥4॥

(यम ने उत्तर दिया) – हमने ऐसा कर्म कभी नहीं किया। हम सत्यवक्ता हैं। कभी

मिथ्या कथन नहीं किया है। अन्तरिक्ष में स्थित गन्धर्व या जल के धारक आदित्य तथा अन्तरिक्ष में रहने वाली योषा (सूर्यस्त्री-सरण्यू) हमारे माता-पिता हैं। अतः, हम सहोदर बन्धु हैं। ऐसा सम्बन्ध उचित नहीं है।

गर्भे नु नौ जनिता दम्पती कर्देवस्त्वष्टा सविता विश्वरूपः।
नकिरस्य प्र मिनन्ति व्रतानि वेद नावस्य पृथ्वी उत द्यौः॥5॥

(यमी ने कहा) - रूपकर्ता, शुभाशुभ प्रेरक, सर्वात्मक, दिव्य और जनक प्रजापति ने तो हमें गर्भावस्था में ही दम्पति बना दिया। प्रजापति का कर्म कोई लुप्त नहीं कर सकता। हमारे इससे सम्बन्ध को द्यावा-पृथ्वी भी जानते हैं।

को अस्य वेद प्रथमस्याह्नः क ईं ददर्श क इह प्र वोचत् ।
बृहन्मित्रस्य वरुणस्य धाम कदु ब्रव आहनो वीच्या नृन् ॥6॥

(यमी ने पुनः कहा) - प्रथम दिन (संगमन) की बात कौन जानता है? किसने उसे देखा है? किसने उसका प्रकाश किया है? मित्र और वरुण का यह जो महान् धाम (अहोरात्र) है, उसके बारे में हे मोक्ष, बन्धनकर्ता यम! तुम क्या कहते हो?

यमस्य मा यम्यं काम आगन्त्समाने योनौ सहशेय्याय।
जायेव पत्ये तन्वं रिरिच्यां वि चिद् वृहेव रथ्येव चक्रा॥7॥

(यमी ने कहा) – जैसे एक शैया पर पत्नी, पति के साथ अपनी देह का उद्घाटन करती है, वैसे ही तुम्हारे पास मैं अपने शरीर को प्रकाशित कर देती हूँ। तुम मेरी अभिलाषा करो। आओ दोनों एक स्थान पर शयन करें। रथ के दोनों चक्कों के समान एक कार्य में प्रवृत्त हों।

न तिष्ठन्ति न नि मिषन्त्येते देवानां स्पश इह ये चरन्ति।
अन्येन मदाहनो याहि तूयं तेन वि वृह रथ्येव चक्रा॥8॥

(यम ने उत्तर दिया) – देवों में जो गुप्तचर हैं, वे रात-दिन विचरण करते हैं। उनकी आँखे कभी बन्द नहीं होती। दुःखदायिनी यमी! शीघ्र दूसरे के पास जाओ, और रथ के चक्कों के समान उसके साथ एक कार्य करो।

रात्रीभिरस्मा अहभिर्दशस्येत् सूर्यस्य चक्षुर्मुहुरुन्मिमीयात् ।
दिवा पृथिव्या मिथुना सबन्धू यमीर्यमस्य बिभृयादजामि॥9॥

(यम ने पुनः कहा) – दिन-रात में यम के लिए जो कल्पित भाग हैं, उसे यजमान दें। सूर्य का तेज यम के लिए उदित हो। परस्पर सम्बद्ध दिन, द्युलोक और भूलोक यम के बन्धु हैं। यमी, यम भ्राता के अतिरिक्त किसी अन्य पुरुष को धारण करें।

आ घा ता गच्छानुत्तरा युगानि यत्र जामयः कृणवन्नजामि।
उप बर्बृहि वृषभाय बाहुमन्यमिच्छस्व सुभगे पतिं मत्॥10॥

(यम ने पुनः कहा) – भविष्य में ऐसा युग आयेगा, जिसमें भगिनियाँ अपने बन्धुत्व विहीन भ्राता को पति बनावेंगी। सुन्दरी! मेरे अतिरिक्त किसी दूसरे को पति बनाओ।

वह वीर्य सिंचन करेगा; उस समय उसे बाहुओं में आलिङ्गन करना।

किं भ्रातासद्यदनाथं भवाति किमु स्वसा यन्निर्ऋतिर्निगच्छात्।
काममूता बह्वे तद्रपामि तन्वा मे तन्वं सं पिपृग्धि॥11।

(यमी ने कहा) – वह कैसा भ्राता है, जिसके रहते भगिनी अनाथा हो जाय, और भगिनी ही क्या है, जिसके रहते भ्राता का दुःख दूर न हो? मैं काम मूर्च्छिता होकर नाना प्रकार से बोल रही हूँ; यह विचार करके भली-भाँति मेरा सम्भोग करो।

न वा उ ते तन्वा तन्वं सं पपृच्यां पापमाहुर्यः स्वसारं निगच्छात् ।
अन्येन मत् प्रमुदः कल्पयस्व न ते भ्राता सुभगे वष्ट्येतत् ॥12॥

(यम ने उत्तर दिया) – हे यमी! मैं तुम्हारे शरीर से अपना शरीर मिलाना नहीं चाहता। जो भ्राता, भगिनी का सम्भोग करता है, उसे लोग पापी कहते हैं। सुन्दरी! मुझे छोड़कर अन्य के साथ आमोद-प्रमोद करो। तुम्हारा भ्राता तुम्हारे साथ मैथुन करना नहीं चाहता।

बतो बतासि यम नैव ते मनो हृदयं चाविदाम।
अन्या किल त्वां कक्ष्येव युक्तं परिष्वजाते लिबुजेव वृक्षम् ॥13॥

(यमी ने कहा) – हाय यम; तुम दुर्बल हो। तुम्हारे मन और हृदय को मैं कुछ नहीं समझ सकती। जैसे-रस्सी घोड़े को बाँधती है, तथा लता जैसे वृक्ष का आलिङ्गन करती है, वैसे ही अन्य स्त्री तुम्हें अनायास ही आलिङ्गन करती है; परन्तु तुम मुझे नहीं चाहते हो।

अन्यमूषु त्वं यम्यन्य उ त्वां परिष्वजाते लिबुजेव वृक्षम्।
तस्य वा त्वं मन इच्छा स वा तवाऽधा कृणुष्व संविदं सुभद्राम् ॥14॥

(यम ने यमी से कहा) – तुम भी अन्य पुरुष का ही भली-भाँति आलिङ्गन करो। जैसे-लता, वृक्ष का आलिङ्गन करती है, वैसे ही अन्य पुरुष तुम्हें आलिङ्गित करें। तुम उसी का मन हरण करो। अपने सहवास का प्रबन्ध उसी के साथ करो। इसी में मङ्गल होगा।

3. सरमा-पणि संवाद सूक्त (ऋग्वेद, 10/108)

मण्डल - 10	**सूक्त-**108	**कुल मन्त्र -** 11
ऋषि– पणि एवं सरमा	**देवता-** सरमा एवं पणि	
छन्द- त्रिष्टुप्	**स्वर-**धैवत	

किमिच्छन्ती सरमा प्रेदमानड् दूरे ह्यध्वा जगुरिः पराचैः।
कास्मेहितिः का परितक्म्यासीत्कथं रसाया अतरः पयांसि॥1॥

(सरमा क्या इच्छा करती हुई इस स्थान पर पहुँची है, क्योंकि मार्ग बहुत दूर उभरा हुआ तथा गमनागमन से रहित है। हममें तुम्हारा कौन-सा अभिप्रेत अर्थ निहित है?

तुम्हारी यात्रा कैसी थी? रसा (नदी) के जल को तुमने कैसे पार किया?)

इन्द्रस्य दूतीरिषिता चरामि मह इच्छन्ती पणयो निधीन्वः।

अतिष्कदो भियसा तन्न आवत्तथा रसाया अतरं पयांसि॥2॥

(हे पणियों! इन्द्र के द्वारा भेजी गई, मैं उसकी दूती हूँ। तुम लोगों के प्रभूत धन की इच्छा करती हुई घूम रही हूँ। मेरे कूदने के भय से उस रसा के जल ने मेरी सहायता की। इस प्रकार रसा के जल को मैंने पार किया।)

कीदृङ्ङिन्द्रः सरमे का दृशीका यस्येदं दूतीरसरः पराकात् ।

आ च गच्छान्मित्रमेना दधामाथा गवां गोपतिर्नो भवाति॥3॥

(हे सरमा! इन्द्र कैसा है? उसकी दृष्टि कैसी है? जिसकी दूती (तुम) दूर से यहाँ आई हो। अगर वह आवे, तो हम उसे मित्र बनावेंगे। तब वह हमारी गायों का संरक्षक (गोपति) होगा।)

नाहं तं वेद दभ्यं दभत्स यस्येदं दूतीरसरं पराकात्।

न तं गूहन्ति स्त्रवतो गभीरा हता इन्द्रेण पणयः शयध्वे॥4॥

(सरमा ने कहा) – मैं उसको कष्ट पहुँचाया जाने वाला नहीं समझती हूँ, अपितु वह (शत्रुओं को) कष्ट देता है। जिसकी मैं दूती बनकर दूर से यहाँ आई हूँ। बहती हुई गहरे जल वाली नदियाँ उसको छिपा नहीं सकतीं। हे पणियों! इन्द्र द्वारा मारे जाकर तुम लोग (पृथ्वी पर) पड़ जाओगे।

इमा गावः सरमे या ऐच्छः परि दिवो अन्तान्त्सुभगे पतन्ती।

कस्त एना अव सृजादयुध्व्युतास्माकमायुधा सन्ति तिग्मा॥5॥

(पणियों ने कहा) – हे सरमा! आकाश की छोर तक चारों तरफ घूमती हुई इन गायों को, जिनकी तुमने इच्छा की है। हे सौभाग्यवती! तुममें से कौन मुक्त कर सकता है? और हमारे शस्त्र भी अत्यन्त तीक्ष्ण हैं।

असेन्या वः पणयो वचांस्यनिषव्यास्तन्वः सन्तु पापीः।

अधृष्टो व एतवा अस्तु पन्था बृहस्पतिर्व उभया न मृळात्॥6॥

(सरमा ने पूछा) – हे पणियों! तुम्हारे वचन शस्त्र के आघात से सुरक्षित हैं, तथा पापी शरीर बाणों के निशाने से बचने वाले हो सकते हैं। तुम्हारे पास पहुँचने के लिए मार्ग भी अगम्य हो सकता है, किन्तु किसी भी प्रकार से बृहस्पति दया नहीं करेंगे।

अयं निधिः सरमे अद्रिबुध्नो गोभिरश्वेभिर्वसुभिर्न्यृष्टः।

रक्षन्ति तं पणयो ये सुगोपा रेकु पदमलकमा जगन्थ॥7॥

(पणियों ने कहा) – हे सरमा! गायों, अश्वों तथा रत्नों से भरा हुआ यह खजाना पर्वतों से ढका हुआ है। कुशल रक्षक पणि, इसकी रक्षा करते हैं। तुम व्यर्थ में इस खाली स्थान पर आई हो।

एह गमन्नृषयः सोमशिता अयास्यो अङ्गिरसो नवग्वाः।
त एतमूर्वं वि भजन्त गोनामथैतद्वचः पणयो वमन्नित्॥8॥

(सरमा ने कहा) – सोमपान से उत्तेजित, अयास्य, अङ्गिरस, नवग्वा आदि ऋषि यहाँ पर आयेंगे। वे गायों के इस विशाल समूह को बाँट लेंगे। तब पणियों को अपने इस वचन को उगलना पड़ेगा।

एवा च त्वं सरम आजगन्थ प्रबाधिता सहसा दैव्येन।
स्वसारं त्वा कृणवै मा पुनर्गा अप ते गवां सुभगे भजाम॥9॥

(पणियों के कहा) – हे सरमा! इस प्रकार यदि तुम देवताओं की शक्ति से पीड़ित की गई हो, तो हम तुम्हें बहन बनाते हैं। फिर मत जाओं। हे सौभाग्यवती! हम तुम्हें गायों का अलग हिस्सा देंगे।

नाहं वेद भ्रातृत्वं नो स्वसृत्वमिन्द्रो विदुरङ्गिरसश्च घोराः।
गोकामा मे अच्छदयन्यदायमपात इत पणयो वरीयः॥10॥

(सरमा ने कहा) - मैं न तो भ्रातृत्व को जानती हूँ न स्वसृत्व को, इन्द्र तथा भयानक अङ्गिरस इसको जानते हैं। जब मैं आई (तत्व) वे गायों की इच्छा करने वाले मालूम पड़े। अतः हे पणियों किसी विस्तृत स्थान पर चले जाओ

दूरमित पणयो वरीय उद्
गावो यन्तु मिनतीर्ऋतेन।
बृहस्पतिर्या अविन्दन्निगूळहाः
सोमो ग्रावाण ऋषयश्च विप्राः॥11॥

(सरमा ने कहा) – हे पणियों! किसी विस्तृत स्थान पर चले जाओ। छिपी हुई गायें, चट्टानों के आवरण को तोड़ती हुई सत्य नियम के अनुकूल बाहर निकलें, जिनको बृहस्पति ने ढूँढ़ निकाला है तथा जिनका, सोम ने, पत्थरों ने तथा बुद्धिमान् ऋषियों ने (पता लगाया है।)।

4. विश्वामित्र–नदी संवाद (ऋग्वेद 3/33)

मण्डल–3 **सूक्त-**33 **कुल मन्त्र-**13 **ऋषि-**विश्वामित्र
देवता-नदियाँ विपाट् शुतुद्री। **छन्द-**पंक्ति, त्रिष्टुप्

प्र पर्वतानामुशती उपस्थादश्वेइव विषिते हासमाने।
गावेव शुभ्रे मातरा रिहाणे विपाट्छुतुद्री पयसा जवेते॥1॥

पर्वतों की गोद से निकलकर समुद्र की ओर जाने की इच्छा करती हुई (परस्पर) स्पर्द्धा से दौड़ती हुई, खुले बाग वाली दो घोड़ियों की तरह (बछड़े) को चाटती हुई दो सफेद माता गायों की तरह विपाट् और शुतुद्री (अपने) प्रवाह से तेजी से बह रही हैं।

इन्द्रेषिते प्रसवं भिक्षमाणे अच्छा समुद्रं रथ्येव याथः।
समाराणे ऊर्मिभिः पिन्वमाने अन्या वामन्यामप्येति शुभ्रे॥2॥

इन्द्र द्वारा भेजी गई, बहने के लिए प्रार्थना करती हुई, दो रथियों की तरह समुद्र की ओर जा रही हो। हे शुभ्रे! एक साथ जाती हुई, लहरों से उमड़ती हुई, तुममें से प्रत्येक एक दूसरे की ओर जा रही हो।

अच्छा सिन्धुं मातृतमामयासं विपाशमुर्वी सुभगामगन्म।
वत्समिव मातरासंरिहाणे समानं योनिमनु सञ्चरन्ती॥3॥

श्रेष्ठ नदी माता (शुतुद्री) के पास आया हूँ। चौड़ी तथा सुन्दर विपाट् के पास आया हूँ। बछड़े को चाटती हुई दो माताओं की तरह, एक ही स्थान (समुद्र) को लक्ष्य करके बहती हुई (शुतुद्री और विपाट्) के पास आया हूँ।

एना वयं पयसा पिन्वमाना अनुयोनिं देवकृतं चरन्तीः।
न वर्तवे प्रसवः सर्गतक्तः किंयुर्विप्रो नद्यो जोहवीति॥4॥

ऐसी हम लोग अपनी धारा से उमड़ रही हैं तथा देव (इन्द्र) द्वारा निर्मित स्थान पर चल रही हैं। स्वाभाविक रूप से प्रवाहित हम लोगों की गति रुकने के लिए नहीं है। किस इच्छा से ऋषि (विश्वामित्र) नदियों की बार-बार स्तुति कर रहा है।

रमध्वं मे वचसे सोम्याय ऋतावरीरुप मुहूर्तमेवैः।
प्र सिन्धुमच्छा बृहती मनीषावस्युरह्वे कुशिकस्य सूनुः॥5॥

हे पवित्र जलवाली (नदियों)! सोमाप्लावित मेरे वचनों के प्रति अपनी यात्रा से क्षणभर के लिए रुक जाओ। अपनी सहायता का इच्छुक, कुशिकपुत्र मैंने ऊँची स्थिति से नदी (शुतुद्री) का आह्वाहन किया है।

इन्द्रो अस्माँ अरदद्वज्रबाहुरपाहन्वृत्रं परिधिं नदीनाम्।
देवोऽनयत्सविता सुपाणिस्तस्य वयं प्रसवे याम उर्वीः॥6॥

वज्रधारी इन्द्र ने हमें खोदकर बाहर किया। उसने नदियों को घेरने वाले वृत्र को मारा। सुन्दर हाथों वाले सवितृ देव ने हम लोगों को लाया। हम जितनी चौड़ी हैं, उसकी आज्ञा में निरन्तर बहती हैं।

प्रवाच्यं शश्वधा वीर्यं तद् इन्द्रस्य कर्म यदहिं विवृश्चत्।
वि वज्रेण परिषदो जघानायन्नापोऽयनमिच्छमानाः॥7॥

इन्द्र का वह पराक्रमयुक्त कार्य, जो उसने अहि को मारा, अवश्य कहने योग्य है। उसने वज्र से (जल के) प्रतिबन्धकों को काट डाला। जल अपना मार्ग खोजता हुआ प्रवाहित हुआ।

एतद्वचो जरितर्मापि मृष्ठा आ यत्ते घोषानुत्तरा युगानि।
उक्थेषु कारो प्रति नो जुषस्व मा नो नि कः पुरुषत्रा नमस्ते॥8॥

हे स्तुतिगायक! इस वचन को कभी भी मत भूलो, ताकि भावियुगों के लोग तुम्हारे इस वचन को सुन सकें। हे कवि! अपनी स्तुतियों में हमारा आदर रखो। हम लोगों को मनुष्यकोटि में नीचा मत लावो। (हमारा) तुम्हें नमस्कार है।

ओ षु स्वसारः कारवे शृणोत ययौ वो दूरादनसा रथेन।

नि षू नमध्वं भवता सुपारा अधोअक्षाः सिन्धवः स्त्रोत्याभिः॥9॥

हे सुन्दर बहनों! (मुझ) कवि की बात सुनों, (क्योंकि मैं) तुम्हारे पास बहुत दूर से गाड़ी तथा रथ से आया हूँ। अच्छी तरह झुक जाओ। हे नदियों अपनी जलधारा से अक्ष के नीचे होकर (बहती हुई) आसानी से पार करने योग्य हो जाओ।

आ ते कारो शृणवामा वचांसि ययाथ दूरादनसा रथेन।

नि ते नंसै पीप्यानेव योषा मर्यायेव कन्या शश्वचै ते॥10॥

हे कवि! हम तुम्हारी बातें सुनती हैं, (क्योंकि तुम) बहुत दूर से गाड़ी तथा रथ से साथ आये हो। तुम्हारे लिये मैं नीचे झुकती हूँ, जैसे दूध से भरे स्तन वाली औरत (अपने पुत्र के लिए) तथा जैसे युवती अपने प्रेमी का आलिङ्गन करने के लिए (झुकती है)।

यदङ्ग त्वा भरताः संतरेयुर्गव्यन्ग्राम इषित इन्द्रजूतः।

अर्षादह प्रसवः सर्गतक्त आ वो वृणे सुमतिं यज्ञियानाम्॥11॥

(हे नदियों) चूँकि (तुम्हारी अनुमति मिल गई है, इसलिये) भरतवंशी (हम लोग) तुम्हें पार करें, पार जाने की इच्छा वाला (तुम्हारे द्वारा) अनुज्ञात एवं इन्द्र द्वारा भेजा गया (भरतवंशियों का) झुंड (पार करें) (तुम्हारा) प्रवाह अपनी स्वाभाविक गति में प्रवाहित होता हुआ बहे। मैं पवित्र नदियों का समर्थन चाहता हूँ।

अतारिषुर्भरता गव्यवः समभक्त विप्रः सुमतिं नदीनाम्।

प्र पिन्वध्वमिषयन्तीः सुराधा आ वक्षणाः पृणध्वं यात शीभम् ॥12॥

पार जाने की इच्छावाले भरतवंशियों ने पार कर लिया। ब्राह्मण ने नदियों का समर्थन प्राप्त कर लिया। सुन्दर धनवाली (तुम लोग) धन लाती हुई अपनी जगह पर प्रवाहित होओ; भर जाओ; शीघ्रता से बहो।

उद्व ऊर्मिः शम्या हन्त्वापो योक्त्राणि मुञ्चत।

मादुष्कृतौ व्येनसाघ्न्यौ शूनमारताम्॥13॥

तुम्हारी धारा जुवा की कील के नीचे से बहे। जल रस्सी को छोड़ दे। दृष्कृतों से रहित, पापरहित तथा तिरस्कार न करने योग्य (ये नदियाँ) वृद्धि न प्राप्त करें।

❑❑

2. ऋग्वेद

ऋग्वेद संहिता का परिचय

- वैदिक साहित्य का सबसे प्राचीन व प्रथम ग्रन्थ का नाम ऋग्वेद है। इसका कारण यह है कि यह सभी वेदों में अभ्यर्हित (पूजित) है। ऋग्वेद शब्द में ऋच् या ऋक् का अर्थ है- स्तुतिपरक मन्त्र, **'ऋच्यते स्तूयतेऽनया इति ऋक्।'** जिन मन्त्रों के द्वारा देवों की स्तुति की जाती है,उन्हें **ऋक् या ऋचा** कहते हैं। ऋग्वेद में विभिन्न देवों की स्तुति वाले मन्त्र हैं, अतः इसे ऋग्वेद कहते हैं। भाषा, शैली, व्याकरण एवं मन्त्रों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि यह किसी एक समय की रचना नहीं, किन्तु विभिन्न काल में विभिन्न ऋषियों द्वारा हुई रचनाओं का संग्रह-ग्रन्थ है। ऐसी ऋचाओं के संग्रह के कारण इसे **ऋग्वेद-संहिता** भी कहते हैं। यहाँ पर 'संहिता' शब्द का प्रयोग संकलन या संग्रह अर्थ में होता है।
- **ऋग्वेद का महत्त्व-**ऋग्वेद को चारों वेदों में सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण, अक्षुण्ण तथा आदरणीय माना जाता है। परिमाण की दृष्टि से भी यह चारों वेदों में विशालकाय ग्रन्थ है। इसमें अधिकांश देव इन्द्र, अग्नि, सोम, विष्णु, मरुत् आदि प्राकृतिक तत्वों के प्रतिनिधि हैं।
- ऋग्वेद के **आचार्य पैल** हैं जो व्यास के शिष्य थे।
- **ऋत्विक् -** चारों वेदों के अनुसार यज्ञ में चार ऋत्विक् (ऋत्विज्) होते हैं- होता, अध्वर्यु, उद्गाता और ब्रह्मा। ऋग्वेद का ऋत्विक् **'होता'** माना जाता है।
- ऋग्वेद में **होता, ऋत्विक्** या ऋचाओं का पाठ करता है। अतएव ऋग्वेद को **होतृवेद** भी कहा जाता है।

ऋग्वेद के अपरनाम

1. दशतयी
2. होतृवेद

ऋग्वेद का द्विधा विभाजन

- अष्टकक्रम
  - अष्टक (8)
  - अध्याय (64)
  - वर्ग (2024)
- मण्डलक्रम
  - मण्डल (10)
  - अनुवाक (85)
  - सूक्त (1017+11=1028)

- आयुर्वेद को ऋग्वेद का उपवेद भी कहा जाता है।
- ऋग्वेद की उत्पत्ति **अग्नि** से बतायी गयी है।
- ऋग्वेद वाक्तत्त्व का संकलन है।

ऋग्वेद का विभाजन

- ऋग्वेद में ऋचाओं का दो प्रकार से विभाजन है – 1. अष्टकक्रम 2. मण्डलक्रम
- प्रत्येक अष्टक में 8 अध्याय होते हैं, इसप्रकार ऋग्वेद में कुल 64 अध्याय हैं।
- प्रत्येक अध्याय के अवान्तर विभागों का नाम 'वर्ग'है।
- वर्गों में ऋचाओं की संख्या निश्चित नहीं है, किन्तु लगभग पाँच ऋचाओं का एक वर्ग होता है। किन्तु एक मन्त्र से लेकर नव मन्त्रों तक के भी वर्ग मिलते हैं।
- ऋग्वेद में समस्त वर्गों की संख्या 2024 है।
- मण्डलक्रम के अनुसार सम्पूर्ण ऋग्वेद दस मण्डलों में विभक्त है। अतः इसे **'दशतयी'** नाम से भी जाना जाता है।
- प्रत्येक मण्डल में अनुवाक, सूक्त और मन्त्र हैं।
- ऋग्वेद के दश मण्डलों में 85 अनुवाक हैं ।
- ऋग्वेद में कुल सूक्तों की संख्या 1028 है, जिसमें 11 बालखिल्य सूक्त माने जाते हैं।
- मन्त्रों की संख्या 10580-1/4 है। कहीं कहीं मन्त्रों की संख्या 10552 भी मानी गयी है।

अष्टक के अनुसार ऋग्वेद

अष्टक	-	8
अध्याय	-	64
वर्ग	-	2024
मन्त्र	-	10552

मण्डलक्रमानुसार ऋग्वेद का विभाजन

मण्डल	अनुवाक	सूक्तसंख्या	मन्त्रसंख्या	ऋषि नाम
प्रथम	24	191	2006	मधुच्छन्दा, मेधातिथि, दीर्घतमा
द्वितीय	4	43	429	गृत्समद
तृतीय	5	62	617	विश्वामित्र
चतुर्थ	5	58	589	वामदेव
पञ्चम	6	87	727	अत्रि
षष्ठ	6	75	765	भरद्वाज
सप्तम	6	104	841	वशिष्ठ
अष्टम	10	92+11 बालखिल्य सूक्त	1716	कण्व, भृगु,अंगिरस
नवम	7	114	1108	सोम, पवमान
दशम	12	191	1754	त्रित, विमद, श्रद्धा, कामायनी
योग	85	1028	10552	

➢ **ऋग्वेद में छन्दोवर्णन- 'यदक्षरपरिमाणं तच्छन्दः'** अर्थात् जिसमें वर्णों या अक्षरों की संख्या निर्धारित हो, उसे छन्द कहते है। आचार्य पिङ्गल को छन्दशास्त्र का प्रणेता कहा जाता है, ऋग्वेद में मुख्यरूपेण सात छन्दों का प्रयोग हुआ है -

छन्द	अक्षर
गायत्री	24
उष्णिक्	28
अनुष्टुप्	32
बृहती	36
पंक्ति	40
त्रिष्टुप्	44
जगती	48

''गा उ अ बृ पं त्रि ज'' यह प्रत्येक छन्द का प्रथम अक्षर है। प्रत्येक छन्द में अक्षरों की संख्या 4-4 बढ़ती जाएगी। जैसे - गायत्री में 24 तो उष्णिक् में 28, अनुष्टुप् में 32 आदि।

ऋग्वेद की शाखायें-

➢ पतञ्जलि के अनुसार, **'एकविंशतिधा बाह्वृच्यम्'** अर्थात् महाभाष्य में ऋग्वेद की 21 शाखाओं का उल्लेख है।

➢ 'चरणव्यूह' के अनुसार वर्तमान में ऋग्वेद की 5 शाखायें प्राप्त हैं-

शाखायें

1. शाकल 2. बाष्कल 3. आश्वलायन 4. शांखायन 5. माण्डूकायन

➢ वर्तमान समय में ऋग्वेद की केवल शाकल शाखा प्राप्त होती है।

ऋग्वेदीय ब्राह्मण-

➢ ऋग्वेद से सम्बद्ध दो ब्राह्मण ग्रन्थ हैं-
1. ऐतरेय ब्राह्मण 2. कौषीतकि (शांखायन) ब्राह्मण

➢ ऐतरेय ब्राह्मण में 40 अध्याय हैं।

➢ प्रत्येक पाँच अध्यायों की एक पञ्चिका और प्रत्येक अध्यायों में कण्डिकाएं हैं, जिसे खण्ड भी कहते हैं। 8 पञ्चिकाएँ और 285 खण्ड हैं।

➢ कौषीतकि ब्राह्मण शांखायन शाखा का ब्राह्मण है, इसलिए इसे 'शांखायन ब्राह्मण' भी कहते हैं।

➢ कौषीतकि ब्राह्मण में 30 अध्याय एवं 226 खण्ड हैं।

➢ प्रत्येक अध्याय में पाँच से लेकर सत्रह तक खण्ड हैं, कुल खण्डों की संख्या 226 है।

ऋग्वेदीय आरण्यक-

- ऋग्वेद से सम्बद्ध दो आरण्यक ग्रन्थ हैं-

  1. ऐतरेय आरण्यक 2. शांखायन आरण्यक
- ऐतरेय आरण्यक में 5 भाग हैं। इन भागों को आरण्यक या प्रपाठक कहते हैं।
- शांखायन आरण्यक में 15 अध्याय हैं।

उपनिषद् -

- ऋग्वेद के दो उपनिषद् प्राप्त होते हैं-

  1. ऐतरेय उपनिषद् 2. कौषीतकि उपनिषद्
- ऐतरेय आरण्यक के द्वितीय अध्याय के चतुर्थ खण्ड से लेकर षष्ठ खण्ड तक का नाम 'ऐतरेय उपनिषद्' है।
- ऐतरेय उपनिषद् में तीन अध्याय हैं।
- कौषीतकि उपनिषद् में चार अध्याय हैं।

कल्पसूत्र-

- जिन ग्रन्थों में यज्ञ-सम्बन्धी विधियों का समर्थन या प्रतिपादन किया जाता है, उन्हें **'कल्प'** कहते हैं। इसके चार भेद हैं-

  1. श्रौतसूत्र 2. गृह्यसूत्र 3. धर्मसूत्र 4. शुल्बसूत्र

ऋग्वेद के दो श्रौतसूत्र हैं-

आश्वलायन (12 अध्याय)

शांखायन (18 अध्याय)

ऋग्वेदीय तीन गृह्यसूत्र प्राप्त होते हैं-

आश्वलायन गृह्यसूत्र (4 अध्याय)

शांखायन गृह्यसूत्र (6 अध्याय)

कौषीतकि गृह्यसूत्र (5 अध्याय)

- एकमात्र ऋग्वेदीय धर्मसूत्र है- वासिष्ठ (वसिष्ठ) धर्मसूत्र, इसमें 4 अध्याय हैं।
- ऋग्वेद का कोई शुल्बसूत्र नहीं प्राप्त होता है।

प्रातिशाख्य-

- 'ऋक्-प्रातिशाख्य' ऋग्वेद का एकमात्र उपलब्ध प्रातिशाख्य है।
- इसके रचयिता शौनक हैं।
- ऋग्वेद प्रातिशाख्य तीन अध्यायों में विभक्त है, प्रत्येक अध्याय में 6पटल हैं, कुल 18 पटल हैं।

ऋग्वेदीय शिक्षा

ऋग्वेद के दो शिक्षा ग्रन्थ

पाणिनीय शिक्षा　　　　वसिष्ठ शिक्षा

ऋग्वेद का वर्ण्य-विषय

- 'यास्क' के अनुसार-ऋग्वेद की विषय वस्तु

  1. धर्म निरपेक्ष　　2. धार्मिक　　3. दार्शनिक सूक्त

- डॉ. विण्टरनित्स के अनुसार-

  1. काव्यात्मक गीत　　2. यज्ञीय स्तुति　　3. दार्शनिक सूक्त

  4. संवाद सूक्त　　5. धर्मनिरपेक्ष सूक्त　　6. ऐन्द्रजालिक यन्त्र

  इसप्रकार ऋग्वेद प्राचीन भारतीय साहित्य का महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है।

- विभिन्न देवों के स्तुतिपरक मन्त्रों का संकलन ऋग्वेद में किया गया है। इस दृष्टि से ऋग्वेद का प्रतिपाद्य देवस्तुति है।
- ऋग्वेद के सम्पूर्ण विषयवस्तु को अनेक विद्वानों ने कई रूपों में विभाजित किया है, कुछ विद्वानों ने प्रतिपाद्य की दृष्टि से ऋग्वेद के सूक्तों को चार श्रेणियों में विभाजित किया है-

  1. धार्मिक सूक्त　2. दार्शनिक सूक्त　3. लौकिक सूक्त　4. संवाद सूक्त

धार्मिक सूक्त

- ऋग्वेद का अधिकांश भाग धार्मिक सूक्तों की श्रेणी में आता है।
- धार्मिक सूक्तों में विभिन्न देवों को सम्बोधित करते हुए उनकी स्तुति की गई है-

  इन्द्र सूक्त (1/32)　　विष्णु सूक्त (1/154)

  अग्नि सूक्त (1/1)　　सवितृ सूक्त (1/35)

  वरुण सूक्त (1/25)　　पर्जन्य सूक्त (5/83)

  उषा सूक्त (1/48)　　उषस् सूक्त (4/51)

  मरुत् सूक्त (1/85)　　अश्विनौ सूक्त (7/71)

- इसके अतिरिक्त अन्य सूक्त भी ऋग्वेद के धार्मिक सूक्तों के अन्तर्गत प्राप्त होते हैं।

दार्शनिक सूक्त-

- ऋग्वेद के लगभग 12 सूक्त ऐसे हैं, जिनमें उच्चकोटि के दार्शनिक विचारों के बीज मिलते हैं।
- दार्शनिक सूक्त अपेक्षाकृत अर्वाचीन दशम मण्डल में उपलब्ध होते हैं।
- दशम मण्डल मे आये हुये नासदीय सूक्त, हिरण्यगर्भ सूक्त, पुरुष सूक्त तथा वाक् सूक्त का दार्शनिक दृष्टिकोण से विशेष महत्त्व है।

(i) पुरुष सूक्त — 10/90
(ii) हिरण्यगर्भ सूक्त — 10/121
(iii) वाक् सूक्त — 10/125
(iv) नासदीय सूक्त — 10/129

➢ इनमें 'नासदीय', 'पुरुष' तथा 'हिरण्यगर्भ सूक्त' **सृष्टि उत्पत्ति सूक्त** माने जाते हैं।

कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण सूक्त

दानस्तुति सूक्त (10/107,117)
संज्ञान सूक्त (10/191)
श्रद्धा सूक्त (10/151)
अस्यवामीय सूक्त (1/164)
मण्डूक सूक्त (7/103)
ज्ञान सूक्त (10/71)

लौकिक सूक्त

➢ जो सूक्त लौकिक जीवन तथा दैनन्दिन व्यवहार से सम्बद्ध विषयों का रोचक वर्णन करते हैं उन सूक्तों को 'लौकिक सूक्त' की संज्ञा प्रदान की गई है।

➢ लौकिक सूक्त भी अधिकांशतया दशम मण्डल में ही हैं।

1. विवाह सूक्त (10/85)
2. अक्षसूक्त (10/34)
3. सपत्नघ्न सूक्त (10/166)
4. ओषधिसूक्त (10/97)
5. आवर्तन सूक्त (10/97)

संवाद सूक्त

➢ ऋग्वेद में कुछ ऐसे सूक्त हैं जिनमें प्राचीनतम कथा-साहित्य की प्रधानता है, उन्हें संवाद सूक्त का नाम दिया गया है।

➢ डॉ. ओल्डेनवर्ग ने संवाद सूक्तों को 'आख्यान सूक्त' कहा है।

➢ डॉ. सिल्वाँ लेवी, वॉन श्रोदर तथा हर्टल का मत है कि ये संवाद सूक्त नाटक के अवशिष्ट अंश हैं।

➢ ये सूक्त संख्या में लगभग 20 माने गये हैं, जिनमें अधिकांशतः दशम मण्डल में उपलब्ध होते हैं-

➢ मुख्य संवाद सूक्त

1. पुरुरवा उर्वशी संवाद (10.95)
2. यम-यमी संवाद (10.10)
3. सरमा-पणि संवाद (10.108)
4. इन्द्र मरुत् संवाद (1/165)
5. अगस्त्य लोपामुद्रा संवाद (1/179)
6. विश्वामित्र नदी संवाद (3/33)

ऋग्वेद के देवता

➢ 'तिस्र एव देवताः' अर्थात् यास्क ने निरुक्त में तीन प्रकार के देवताओं का वर्णन किया

है, जो हैं-

1. पृथिवीस्थानीय (अग्नि, बृहस्पति, सोम आदि)
2. अन्तरिक्ष स्थानीय (इन्द्र, रुद्र आदि)
3. द्युस्थानीय (सूर्य, विष्णु आदि)

मन्त्र-द्रष्टा ऋषिकाएँ

- ऋग्वेद में लगभग 24 मन्त्र द्रष्टा ऋषिकाओं का उल्लेख है।
- ऋग्वेद में इन 24 ऋषिकाओं द्वारा दृष्ट मन्त्र 224 हैं।

ऋग्वेद में 24 ऋषिकायें		
1. सूर्य सावित्री	2. घोषा काक्षीवती	3. सिकता निवावरी
4. इन्द्राणी	5. यमी वैवस्वती	6. दक्षिणा प्राजापत्या
7. अदिति	8. वाक् आम्भृणी	9. अपाला आत्रेयी
10. विश्ववारा आत्रेयी	11. अगस्त्यस्वसा	12. जुहू ब्रह्मजाया
13. उर्वशी	14. सरमा देवशुनी	15. शिखण्डिन्यौ अप्सरसौ
16. पैलोमी शची	17. देवजामयः	18. श्रद्धा कामायनी
19. नदी	20. सार्पराज्ञी	21. गोधा
22. शश्वती आंगिरसी	23. वसुक्रपत्नी	24. रोमशा ब्रह्मवादिनी

ऋग्वेद का रचना विन्यासक्रम

- ऋग्वेद को पौरुषेय मानने वाले, भारतीय एवं पाश्चात्त्य विद्वानों के अनुसार ऋग्वेद के विभिन्न मण्डलों की रचना में शताब्दियों का अन्तर रहा है।
- ऋग्वेद का सबसे प्राचीन अंश द्वितीय से सप्तम मण्डल तक माना जाता है।
- 2 से 7 तक के मण्डल को 'वंश मण्डल ' अथवा 'परिवार मण्डल' कहते हैं।
- 8 वें मण्डल में अधिकांश सूक्त कण्व-परिवार के हैं।
- 9 वें मण्डल में समस्त मन्त्र सोम विषयक हैं। इसे 'पवमान सोम-मण्डल' भी कहा जाता है।
- ऋग्वेद का दशम मण्डल अर्वाचीन है।
- दशम मण्डल में देवताओं की स्तुति से सम्बद्ध सूक्त अपेक्षाकृत बहुत कम हैं।

ऋग्वेद के भाष्यकर्ता

- ऋग्वेद संहिता के भाष्यकर्ताओं में स्कन्दस्वामी, आनन्दतीर्थ, वेङ्कटमाधव, सायण आदि प्रमुख हैं।

1.स्कन्दस्वामी- ऋग्वेद का सबसे प्राचीन भाष्य स्कन्दस्वामी का ही उपलब्ध है।

- स्कन्दस्वामी ने 600-625 के मध्य ऋग्वेद पर भाष्य लिखा।
- स्कन्दस्वामी का भाष्य ऋग्वेद के प्रथम पाँच अष्टक तक प्राप्त होता है।

2. नारायण तथा उद्गीथ- ऋग्वेद के मध्यभाग पर नारायण एवं अन्तिम भाग पर उद्गीथ ने भाष्य लिखा है।

- उद्गीथ ने अपने भाष्य में प्रत्येक अध्याय के अन्त में अपना परिचय दिया है। 'वनवासीविनिर्गताचार्यस्य उद्गीथस्य कृता ऋग्वेदभाष्ये.....'

3. वेङ्कटमाधव- इनका समय 1050 से 1150 ई. के मध्य माना जाता है। इन्होंने प्रथम अध्याय के अन्त में अपना परिचय दिया है।

4. धानुष्क यज्वा-

- इन्हें 'त्रिवेदी भाष्यकार' कहा गया है।
- ये वैष्णव आचार्य थे। इनका समय लगभग 1300 विक्रम पूर्व माना जाता है।

5. आनन्दतीर्थ - इनका समय 1255 से 1335 विक्रम संवत् तक माना जाता है।

- इनका अपरनाम 'मध्व' है।
- इन्होंने ऋग्वेद के कुछ प्रमुख 40 सूक्तों पर पद्यात्मक भाष्य लिखा।

6. आत्मानन्द- आत्मानन्द ऋग्वेद के 'अस्यवामीय सूक्त' पर भाष्य लिखा है।

- इनका भाष्य 'अध्यात्म-परक' है।

7. सायण-

- सायण का समय 1315-1387 ई. तक (72 वर्ष तक जीवित रहे)
- वेदों के भाष्यकर्त्ताओं में आचार्य सायण का नाम विशेष उल्लेखनीय है।
- उन्होंने अपने बड़े भाई माधव के आदेशानुसार वेदभाष्य किया।
- सायण ने अपने भाई के नाम पर भाष्य का नाम **'माधवीय वेदार्थप्रकाश'** रखा।
- सायण ने **'ऋग्वेद-भाष्य-भूमिका'** नामक ग्रन्थ भी लिखा।

ऋग्वेद के पाश्चात्त्य विद्वान् एवं अनुवादक-

1. **फ्रीड्रिश रोजेन** (Friedrich Rosen)- इन्होंने ऋग्वेद के केवल प्रथम अष्टक मूलपाठ लैटिन अनुवाद के साथ 1838 ई. में प्रकाशित किया।
2. **मैक्समूलर** इन्होंने सायण-भाष्य-सहित ऋग्वेद का सम्पादन किया। इनका समय 1849 से लेकर 1875 ई. तक है।
3. **थियोडोर आउफ्रेख्त-** इन्होंने रोमनलिपि में ऋग्वेद संहिता 1861-63 ई. में प्रकाशित की।
4. **विल्सन-विल्सन** ने सर्वप्रथम पूरे ऋग्वेद का अंग्रेजी में अनुवाद 1850 ई. में प्रकाशित किया।
5. **लुडविग -** इन्होंने सम्पूर्ण ऋग्वेद का छः भागों में जर्मन भाषा में अनुवाद किया।
6. **प्रो. ग्रिफिथ-** इन्होंने सम्पूर्ण ऋग्वेद का अंग्रेजी में पद्यानुवाद किया।
7. **प्रो. ओल्डेनबर्ग -** इन्होंने सम्पूर्ण ऋग्वेद का भाष्य जर्मन भाषा में दो भागों में प्रकाशित किया।
8. **लांग्ल्वा-** इन्होंने सम्पूर्ण ऋग्वेद का चार भागों में फ्रेंच भाषा में अनुवाद प्रकाशित किया।

ऋग्वेद के महत्त्वपूर्ण मन्त्र

1. **ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्, बाहू राजन्यः कृतः।**
   अर्थ- इनका मुख ब्राह्मण हुआ, दोनों बाहुओं से क्षत्रिय बनाया गया, दोनों उरुओं (जघनों) से वैश्य हुआ और पैरों से शूद्र उत्पन्न हुआ।
2. **सहस्राक्षेण शतशारदेन शतायुषा हविषा हार्षमेनम् ।** (ऋग्वेद 10.161.3)
   शतं यथेनं शरदो नयातीन्द्रो विश्वस्य दुरितस्य पारम् ॥
   अर्थ- मैंने जो आहुति दी है, उसके एक सहस्र नेत्र सौ वर्ष की परमायु और आयु देते हैं।
3. **अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् ।**
   होतारं रत्नधातमम् ॥ (ऋ. 1.1.1)
   अर्थ- यज्ञ के पुरोहित, दीप्तिमान्, देवों को बुलाने वाले ऋत्विक् और रत्नधारी अग्नि की मैं स्तुति करता हूँ।
4. **तस्मात् यज्ञात् सर्वहुतः ऋचः सामानि जज्ञिरे।**
   छन्दांसि जज्ञिरे तस्मात् यजुस्तस्मादजायत ॥ (ऋ. 10.9.9)
   अर्थ- सर्वात्मक पुरुष के होम से युक्त उस यज्ञ से ऋक् और साम उत्पन्न हुए। उससे गायत्री आदि छन्द उत्पन्न हुए और उसी से यजुः की भी उत्पत्ति हुई।
5. **य आत्मदा बलदा...यस्यच्छायाऽमृतं मृत्युः।** (ऋ. 10.121.2)
   अर्थ- जिन प्रजापति ने जीवात्मा को प्राण दिया है, बल दिया है, जिनकी आज्ञा सारे देवता मानते हैं, जिनकी छाया अमृत-रूपिणी है और जिनके वश में मृत्यु है, उन 'क' नामवाले प्रजापति की स्तुति करता हूँ।
6. **अहं राष्ट्री संगमनी वसूनाम्-** (ऋ. 10.125.3)
   अर्थ- मैं राज्य की अधीश्वरी हूँ और धन देने वाली हूँ।
7. **हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ।** (ऋ. 10.121.1)
   अर्थ- सबसे पहले केवल परमात्मा या हिरण्यगर्भ थे। उत्पन्न होने पर वे सारे प्राणियों के अद्वितीय अधीश्वर थे।
8. **न वै स्त्रैणानि सख्यानि सन्ति।**
   अर्थ- स्त्रियों का प्रेम व मैत्री स्थायी नहीं होती ।
9. **पुरुष एवेदं सर्वं यद् भूतं, यच्च भव्यम् ।** (ऋ. 10.90.2)
   अर्थ- जो कुछ हुआ है और जो कुछ होने वाला है, सो सब ईश्वर (पुरुष) ही है।
10. **सहस्रशीर्षापुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।** (ऋ. 10.90.1)
    अर्थ- विराट् पुरुष (ईश्वर) सहस्र (अनन्त) शिरों, अनन्त चक्षुओं और अनन्त चरणों वाले हैं।
11. **ऋचां त्वः पोषमास्ते पुपुष्वान्।** (ऋ. 10.71.11)
    अर्थ- एक जन अनेक ऋचाओं का स्तव करते हुए, यज्ञानुष्ठान में सहायता करते हैं।

12. **सं गच्छध्वं सं वदध्वं,सं वो मनांसि जानताम्।** (10.191.2)

अर्थ- स्तोताओं, तुम मिलित होओ, एक साथ होकर स्तोत्र पढ़ो और तुम लोगों का मन एक सा हो।

13. **समानी व आकूतिः, समाना हृदयानि वः।**

अर्थ- पुरोहितों की स्तुति एक सी हो,इनका आगमन एक साथ हो, और इनके मन तथा चित्त एक समान हों।

14. **द्यावा चिदस्मै पृथिवी नमेते।** (ऋ. 2.12.13)

अर्थ- इन्द्र के लिये द्युलोक और पृथिवी लोक भी प्रणाम करने के लिये स्वयं झुक जाते हैं।

15. **पापमाहुर्यः स्वसारं निगच्छात्।** (ऋग् -10.10.12)

अर्थ- जो भ्राता भगिनी का सम्भोग करता है, उसे लोग पापी कहते हैं।

16. **बृहस्पतिर्या अविन्दन् निगूढाः सोमो ग्रावाण ऋषयश्च विप्राः।** (ऋग् - 10.108.11)

अर्थ- बृहस्पति, सोम, सोमाभिषव कर्त्ता पत्थर, ऋषि और मेधावी लोग इस गुप्त स्थान में स्थित गायों की बात जान गये हैं।

ऋग्वेद संहिता-एक दृष्टि में

आचार्य	-	पैल
ऋत्विक्	-	होता
उपवेद	-	आयुर्वेद
अपरनाम	-	दशतयी, होतृवेद
विभाजन	-	1. अष्टकक्रम 2. मण्डलक्रम
अष्टक	-	8
मण्डल	-	10
अध्याय	-	64
वर्ग	-	2024
मन्त्र	-	10580-1/4 (10552)
अनुवाक	-	85
सूक्त	-	1028 (11 बालखिल्य सूक्त)
उत्पत्ति देवता	-	अग्नि
शाखा	-	1. शाकल 2. बाष्कल 3. आश्वलायन 4. शांखायन 5. माण्डूकायन
ब्राह्मण	-	* ऐतरेय ब्राह्मण * कौषीतकि (शांखायन) ब्राह्मण
आरण्यक	-	* ऐतरेय आरण्यक * शांखायन आरण्यक
उपनिषद्	-	* ऐतरेय * कौषीतकि

श्रौतसूत्र - 1. आश्वलायन श्रौतसूत्र 2. शांखायन श्रौतसूत्र
गृह्यसूत्र - 1.आश्वलायन 2. शांखायन 3. कौषीतकि (शाम्बव्य)
धर्मसूत्र - 1.वसिष्ठ (वासिष्ठ) 2. विष्णु धर्मसूत्र
शुल्बसूत्र - उपलब्ध नहीं
शिक्षा - 1. पाणिनीय शिक्षा 2. वसिष्ठ शिक्षा
प्रातिशाख्य - ऋक्-प्रातिशाख्य
भाष्यकार - स्कन्दस्वामी, नारायण, उद्‌गीथ , माधवभट्ट, वेङ्कटमाधव, धानुष्क यज्वा, आनन्दतीर्थ, आत्मानन्द, सायण।

वेद	भाष्यकार	भाष्य	सन् (वर्ष)
ऋग्वेद			
	स्कन्दस्वामी	प्रथम पाँच अष्टक पर	625 ई.
	नारायण	षष्ठ तथा सप्तम अष्टक पर	
	उद्‌गीथ	अष्टम अष्टक पर	
	वेङ्कटमाधव	सम्पूर्ण ऋग्वेद पर	1030-1150
	आनन्दतीर्थ	ऋग्वेद प्रथम 40 सूक्तों पर	**1198-1278 ई.**
	आत्मानन्द	अस्यवामीय सूक्त पर भाष्य	1100 ई.
	सायणाचार्य	'वेदार्थप्रकाश' नामक भाष्य	1315-1387 ई. (11वीं शती)
यजुर्वेद (शुक्लयजुर्वेद)			
	उव्वट (उवट)	शुक्लयजुर्वेदीय उव्वट भाष्य	11वीं शती
	महीधर	वेददीप (वाजसनेयि संहिता)	16वीं शती
	हलायुध	काण्व संहिता पर ब्राह्मणसर्वस्व	12वीं शती ई.
	सायण	काण्वसंहिता पर	
	अनन्ताचार्य	काण्वसंहिता के उत्तरार्ध पर	16वीं शती ई.
	आनन्दबोध		
	भट्टोपाध्याय	काण्वसंहिता पर	
	शौनक	माध्यान्दिनसंहिता 31वें अध्याय पर	
कृष्ण यजुर्वेद			
	कुण्डिन	तैत्तिरीय संहिता की वृत्ति	
	भवस्वामी	तैत्तिरीय संहिता भवस्वाम्यादिभाष्य	विक्रम से 800ई.पू

वेद	भाष्यकार	भाष्य	सन् (वर्ष)
	गुहदेव	तैत्तिरीय संहिता	8-9वीं वि.शती
	क्षुर	तैत्तिरीय संहिता	
	भट्टभास्कर मिश्र	ज्ञानयज्ञ तैत्तिरीय संहिता	11वीं शती ई.
	सायण	तैत्तिरीय संहिता	
सामवेद			
	माधव	विवरण (सामवेद संहिता)	600 ई. लगभग
	गुणविष्णु	छान्दोग्य-मन्त्रभाष्य	12वीं शती ई. उत्तरार्ध
	भरत स्वामी	सम्पूर्ण सामवेद पर	13-14वीं शती ई.
	भास्कर मिश्र	आर्षेय ब्राह्मण पर	
	सायण	सामवेदीय ब्राह्मणों पर	
अथर्ववेद			
	सायण	सम्पूर्ण अथर्ववेद पर	

चारों वेदों की शाखायें

शाकल, बाष्कल, माध्यन्दिन (वाजसनेयि), काण्व, तैत्तिरीय, मैत्रायणीय, कठ, कपिष्ठल, कौथुम, राणायनीय, जैमिनीय, शौनक, पैप्पलाद आदि

वैदिक वाङ्मय-एक दृष्टि में

वेद

ऋग्वेद | यजुर्वेद | सामवेद | अथर्ववेद

वेद	आचार्य
ऋग्वेद	पैल
यजुर्वेद	वैशम्पायन
सामवेद	जैमिनि
अथर्ववेद	सुमन्तु

वेद	देवता
ऋग्वेद	अग्नि
यजुर्वेद	वायु
सामवेद	आदित्य (सूर्य)
अथर्ववेद	सोम

वेद	ऋत्विक्
ऋग्वेद	होता
यजुर्वेद	अध्वर्यु
सामवेद	उद्गाता
अथर्ववेद	ब्रह्मा

वेद	उपवेद
ऋग्वेद	आयुर्वेद
यजुर्वेद	धनुर्वेद
सामवेद	गान्धर्ववेद
अथर्ववेद	सर्पवेद आदि

वेद	**–**	**शाखा**
ऋग्वेद	-	शाकल, बाष्कल
यजुर्वेद	-	माध्यन्दिन (वाजसनेयि),
	-	काण्व, तैत्तिरीय, मैत्रायणीय, कठ, कपिष्ठल
सामवेद	-	कौथुम, राणायनीय, जैमिनीय
अथर्ववेद	-	शौनक, पैप्पलाद

वेद	**-**	**ब्राह्मण**
ऋग्वेद	-	ऐतरेय, कौषीतकि (शांखायन)
* शुक्लयजुर्वेद	-	शतपथ ब्राह्मण
* कृष्णयजुर्वेद	-	तैत्तिरीय ब्राह्मण
सामवेद	-	तांड्य (पंचविंश), षड्विंश, सामविधान, आर्षेय देवताध्याय, उपनिषद्, (मन्त्रब्राह्मण), संहितोपनिषद् वंश ब्राह्मण
अथर्ववेद	-	गोपथ ब्राह्मण

वेद	**-**	**आरण्यक**
ऋग्वेद	-	ऐतरेय, शांखायन (कौषीतकि)
* शुक्लयजुर्वेद	-	बृहदारण्यक
* कृष्णयजुर्वेद	-	तैत्तिरीय
सामवेद	-	कोई आरण्यक प्राप्त नहीं होता
अथर्ववेद	-	कोई आरण्यक उपलब्ध नहीं

वेद	**-**	**उपनिषद्**
ऋग्वेद	-	ऐतरेय, शांखायन (कौषीतकि)
यजुर्वेद		
* शुक्लयजुर्वेद	-	ईशोपनिषद् , बृहदारण्यकोपनिषद् ,
* कृष्णयजुर्वेद	-	तैत्तिरीय, कठ, श्वेताश्वतर, मैत्रायणी, महानारायण
सामवेद	-	छान्दोग्य, केनोपनिषद्
अथर्ववेद	-	प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य

वेद	**-**	**शिक्षाग्रन्थ**
ऋग्वेद	-	पाणिनीय शिक्षा, स्वराङ्कुशा, षोडशश्लोकी, शैशिरीय, आपिशलि शिक्षा

यजुर्वेद		
* शुक्लयजुर्वेद	-	याज्ञवल्क्यशिक्षा, वासिष्ठी शिक्षा, कात्यायनी पाराशरी, माध्यन्दिनी शिक्षा आदि।
* कृष्णयजुर्वेद	-	भारद्वाज शिक्षा, व्यास शिक्षा, शम्भु शिक्षा, कौहलीय, सर्वसम्मत, आरण्य, सिद्धान्त शिक्षा आदि।
सामवेद	-	गौतमी शिक्षा, लोमशी शिक्षा, नारदीय शिक्षा।
अथर्ववेद	-	माण्डूकी शिक्षा।

वेद	**–**	**श्रौतसूत्र**
ऋग्वेद	-	शांखायन, आश्वलायन श्रौतसूत्र
यजुर्वेद	-	* शुक्लयजुर्वेद का कात्यायन श्रौतसूत्र * कृष्णयजुर्वेद का बौधायन, वाधूल, मानक, भारद्वाज, आपस्तम्ब, काठक, सत्याषाढ (हिरण्यकेशी), वैखानस, वाराह श्रौतसूत्र
सामवेद	-	आर्षेय, कल्प या मशक, लाट्यायन,द्राह्यायण, जैमिनीय
अथर्ववेद	-	वैतान श्रौतसूत्र

वेद	**–**	**गृह्यसूत्र**
ऋग्वेद	-	आश्वलायन, शांखायन, कौषीतकि
यजुर्वेद	-	* शुक्लयजुर्वेद पारस्कर गृह्यसूत्र, बौधायन, मानव, भारद्वाज, आपस्तम्ब, काठक, अग्निवेश्य, हिरण्यकेशि, वाराह, वैखानस
सामवेद	-	गोभिल, खादिर, द्राह्यायण, जैमिनीय, कौथुम
अथर्ववेद		कौशिक गृह्यसूत्र

वेद	**-**	**धर्मसूत्र**
ऋग्वेद	-	वासिष्ठ धर्मसूत्र
यजुर्वेद	-	बौधायन, वैखानस, आपस्तम्ब, विष्णु, हारीत, हिरण्यकेशी, शंख
सामवेद	-	गौतम धर्मसूत्र
अथर्ववद	-	कोई धर्मसूत्र प्राप्त नहीं है

वेद	**-**	**शुल्बसूत्र**
ऋग्वेद	-	कोई शुल्बसूत्र प्राप्त नहीं होता।
* शुक्लयजुर्वेद	-	कात्यायन शुल्बसूत्र
* कृष्णयजुर्वेद	-	बौधायन, आपस्तम्ब, मानव शुल्बसूत्र
सामवेद	-	कोई शुल्बसूत्र प्राप्त नहीं है।
अथर्ववेद	-	कोई शुल्बसूत्र प्राप्त नहीं है।

पाश्चात्त्य अनुवादक / सम्पादक

वैदिकवाङ्मय	अनुवादक	भाषा	सन् (वर्ष)
ऋग्वेद	विल्सन	अंग्रेजी	1850
	हेरमान ग्रासमान	जर्मन	1876-77
	अल्फ्रेड लुडविग	जर्मन	1876-88
	प्रो. ग्रिफिथ	अंग्रेजी (पद्यमय)	1889-92
	प्रो. ओल्डेनबर्ग	जर्मन	1909-12
	लांग्ल्वा	फ्रेंच	1848-51
ऐतरेयब्राह्मण	प्रो. हाग	अंग्रेजी	1993
	आउफ्रेक्ट	रोमन अक्षर	1879
कौषीतकि ब्राह्मण	प्रो. लिन्डनर	-	1887
	डॉ. कीथ	अंग्रेजी	1930
शुक्लयजुर्वेद	वेबर	देवनागरी	1849-52
वाजसनेयि/माध्यान्दिनसंहिता	प्रो. ग्रिफिथ	अंग्रेजी (पद्य)	1899
शतपथ ब्राह्मण	वेबर	-	1855
	कैलेंड	अंग्रेजी	1926
	ईग्लिंग	अंग्रेजी	-
तैत्तिरीय संहिता	वेबर	रोमन अक्षर	1871-72
मैत्रायणी संहिता	श्रेडर	-	1881-86
काठक संहिता	श्रेडर	-	1910
राणायनीय शाखा	स्टेवेन्सन	अंग्रेजी	1843
कौथुम शाखा	बेन्फे	जर्मन	1848
जैमिनीय शाखा	कैलेन्ड	रोमन अक्षर	1907
सामवेद	ग्रिफिथ	अंग्रेजी (पद्य)	1891-99
अद्भुत ब्राह्मण	वेबर	जर्मन	1858
अथर्ववेद	ग्रिफिथ	अंग्रेजी (पद्य)	1895-98
	ह्विटनी और लानमान	अंग्रेजी	1905
पैप्पलाद संहिता	ब्लूमफील्ड	अंग्रेजी	1901

❑❑

3. यजुर्वेद

- विश्ववाङ्मय का सबसे प्राचीन ग्रन्थ वेद है,वेदों की संख्या चार है- ऋग्वेद,यजुर्वेद, सामवेद,अथर्ववेद। वेद शब्द ज्ञानार्थक **विद् धातु** से **घञ् प्रत्यय** के योग से निष्पन्न होता है जिसका अर्थ है – 'ज्ञान'। अतः वेद शब्द का अर्थ है- **'ज्ञान की राशि'** या **'ज्ञान का संग्रह ग्रन्थ'**। संस्कृत व्याकरण के अनुसार वेद शब्द चार धातुओं से विभिन्न अर्थों में बनता है-

  सत्तायां विद्यते ज्ञाने, वेत्ति विन्ते विचारणे ।
  विन्दति विन्दते प्राप्तौ, श्यन्लुक्श्नम्शेष्विदं क्रमात्॥

- अर्थात् विद् सत्तायाम्, विद् ज्ञाने,विद् विचारणे, विद्लृँ लाभे इन चार अर्थों में विद् धातु का प्रयोग होता है यहाँ पर विद् ज्ञाने धातु का ग्रहण किया गया है।
- आचार्य विष्णुमित्र ऋक्प्रातिशाख्य में इन्हीं (उपर्युक्त) अर्थो को समन्वित करते हुए कहते हैं- **'विद्यन्ते ज्ञायन्ते लभ्यन्ते एभिर्धर्मादि-पुरुषार्था इति वेदाः।'** अर्थात् वेद शब्द का भावार्थ है 'जिन ग्रन्थों के द्वारा धर्म,अर्थ,काम,और मोक्ष रूपी पुरुषार्थ चतुष्टय का बोध हो।
- आचार्य सायण तैत्तिरीय संहिता की भाष्य भूमिका में वेद की व्याख्या करते हुए कहते हैं- **''इष्टप्राप्त्यनिष्टपरिहारयोरलौकिकम् उपायं यो ग्रन्थो वेदयति, स वेदः।''**
- यजुर्वेद कर्मकाण्ड प्रधान ग्रन्थ है जिसका संकलन अध्वर्यु नामक ऋत्विक् के उपयोग के लिए होता था। यजुष् शब्द **यज् धातु से उसि प्रत्यय** के योग से सम्पन्न होता है जिसका अर्थ है– यज्ञ के साधक मन्त्र। यजुष् गद्य पद्यात्मक हैं इसीलिए इसे **'अनियताक्षरावसानम्'** कहा गया है,अर्थात् जिसमें पद्यों के समान अक्षरों की संख्या निश्चित नहीं होती है।
- विद्वानों के द्वारा यजुर्वेद के यजुष् शब्द की अनेक व्याख्याएँ प्रस्तुत की गई जो विभिन्न दृष्टिकोण के सूचक हैं यजुष् के कुछ मुख्य अर्थ इसप्रकार हैं-
- आचार्य यास्क निरुक्त के सातवें अध्याय में यजुष् की व्याख्या करते हुए कहते हैं- **'यजुर्यजतेः'** अर्थात् यज्ञ से सम्बद्ध मन्त्रों को यजुष् कहते हैं।
  'शेषे यजुः शब्दः' अर्थात् पद्यबन्ध और गीति से रहित मन्त्रात्मक रचना को यजुष् कहते हैं।

- तैत्तिरीय संहिता की **भाष्यभूमिका** में सायण यजुर्वेद के महत्त्व का प्रतिपादन इस प्रकार करते हैं-

  'भित्तिस्थानीयो यजुर्वेदः, चित्रस्थानावितरौ। तस्मात् कर्मसु यजुर्वेदस्यैव प्राधान्यम्।' अर्थात् यजुर्वेद भित्ति है अन्य ऋग्वेद एवं सामवेद चित्र हैं इसलिए यजुर्वेद सबसे मुख्य है यज्ञ को आधार बनाकर ही ऋचाओं का पाठ और सामगान होता है।

- यजुर्वेद के दो सम्प्रदाय हैं– ब्रह्म सम्प्रदाय तथा आदित्य सम्प्रदाय । ब्रह्म सम्प्रदाय के अन्तर्गत कृष्ण यजुर्वेद तथा आदित्य सम्प्रदाय के अन्तर्गत शुक्ल यजुर्वेद आता है, इस प्रकार यजुर्वेद के दो भाग हैं। यद्यपि प्राचीनकाल में, यजुर्वेद की सौ या एक सौ एक शाखा **'एकशतमध्वर्युशाखाः' 'यजुरेकशताध्वकम्', 'शाखानां तु शतेनाथ यजुर्वेदमथाकरोत्',** प्राप्त होने का विवरण प्राप्त होता है।
- शुक्लयजुर्वेद की दो संहितायें प्राप्त होती हैं वाजसनेयि संहिता या माध्यन्दिन संहिता तथा काण्व संहिता दोनों ही संहिताओं में चालीस अध्याय प्राप्त होते हैं।
- सम्प्रति कृष्ण यजुर्वेद की केवल चार शाखाएँ ही उपलब्ध होती हैं- **तैत्तिरीय, मैत्रायणी, काठक, कपिष्ठल।**
- यज्ञादि कर्मों के प्रतिपादक गद्यात्मक मन्त्रों को यजुष् कहा जाता है।
- यजुर्वेद कर्मकाण्ड का वेद है जिसका संकलन अध्वर्यु नामक ऋत्विक् के उपयोग के लिए किया गया।

यजुर्वेद के सम्प्रदाय

ब्रह्म सम्प्रदाय (कृष्ण यजुर्वेद)	आदित्य सम्प्रदाय (शुक्ल यजुर्वेद)

- ब्रह्मसम्प्रदाय के अन्तर्गत कृष्ण यजुर्वेद तथा आदित्य सम्प्रदाय के अन्तर्गत शुक्ल यजुर्वेद है।
- पतञ्जलि ने महाभाष्य में यजुर्वेद की सौ या एक सौ एक शाखा का उल्लेख किया है- **'एकशतमध्वर्युशाखाः'**
- चरणव्यूह में यजुर्वेद की ८६ शाखाओं का उल्लेख प्राप्त होता है।
- वर्तमान समय में शुक्ल यजुर्वेद की दो तथा कृष्ण यजुर्वेद की चार शाखाओं का उल्लेख प्राप्त होता है।

यजुर्वेद की शाखाएँ

1. शुक्ल यजुर्वेद -	क - माध्यन्दिन शाखा (वाजसनेयिशाखा)	
	ख - काण्व शाखा	
2. कृष्ण यजुर्वेद -	क - तैत्तिरीय शाखा	ख - मैत्रायणी शाखा
	ग - कठ शाखा	घ - कपिष्ठल शाखा

- ➢ शुक्ल यजुर्वेद को 'वाजसनेयि संहिता' भी कहते हैं।
- ➢ शुक्ल यजुर्वेद के **ऋषि याज्ञवल्क्य हैं** जो मिथिला के निवासी थे।
- ➢ शुक्ल यजुर्वेद में यज्ञों से सम्बद्ध विशुद्ध मन्त्रात्मक भाग है।
- ➢ शुक्ल यजुर्वेद की दो शाखाएँ हैं, माध्यन्दिन या वाजसनेयि संहिता तथा काण्व संहिता।
- ➢ माध्यन्दिन शाखा में चालीस अध्याय, 303 अनुवाक तथा 1975 मन्त्र हैं।
- ➢ काण्व शाखा का विभाजन अध्याय और अनुवाक के रूप में हुआ है।
- ➢ काण्व शाखा में 40 अध्याय 328 अनुवाक और 2086 मन्त्र प्राप्त होते हैं।

शुक्ल यजुर्वेद

माध्यन्दिन या वाजसनेयि संहिता	काण्व संहिता
(40 अध्याय 303 अनुवाक और 1975 मन्त्र)	(40 अध्याय 328 अनुवाक और 2086 मन्त्र)

- ➢ वर्तमान समय में काण्वसंहिता का प्रचार महाराष्ट्र तथा माध्यन्दिन संहिता का प्रचार उत्तर भारत में है।
- ➢ प्राचीनकाल में काण्व शाखा का प्रचार उत्तर भारत में था।
- ➢ काण्वसंहिता में कुरु और पञ्चालों का उल्लेख प्राप्त होता है।

शुक्ल यजुर्वेद की विषय वस्तु

- ➢ प्रथम दो अध्यायों में दर्श एवं पौर्णमास यज्ञों से सम्बन्धित मन्त्र प्राप्त होते हैं।
- ➢ अध्याय तीन में अग्निहोत्र एवं चातुर्मास्य यज्ञों से सम्बन्धित मन्त्र प्राप्त होते हैं।
- ➢ अग्निष्टोम और सोमयाग का वर्णन अध्याय चार से आठ में वर्णित है।
- ➢ वाजपेय और राजसूय याग का वर्णन अध्याय नौ और दस में वर्णित है।
- ➢ अध्याय ग्यारह से अठारह तक अग्निचयन और विविध प्रकार की वेदियों के निर्माण से सम्बद्ध मन्त्र हैं।
- ➢ अध्याय सोलह को 'रुद्राध्याय' कहा जाता है।
- ➢ 'सौत्रामणी याग' का निरूपण अध्याय 19 से 21 में है।
- ➢ अध्याय 22-25 तक 'अश्वमेध यज्ञ' का विधान वर्णित है।
- ➢ 26 से 29 अध्याय को 'खिल अध्याय' कहते हैं।
- ➢ 'पुरुषमेध' का वर्णन अध्याय तीस में प्राप्त होता है।
- ➢ अध्याय 31 को 'पुरुषसूक्त' और 'विष्णुसूक्त' भी कहते हैं।

- विराट् पुरुष के दार्शनिक और आध्यात्मिक स्वरूप का वर्णन अध्याय 32 में है।
- अध्याय 33 में 'सर्वमेध सूक्त' है।
- शिवसंकल्प उपनिषद् या 'शिवसंकल्पसूक्त' अध्याय 34 में है।
- अध्याय 35 में 'पितृमेध' का वर्णन है।
- अध्याय 36-38 में 'प्रवर्ग्यनामक यज्ञ' से सम्बद्ध मन्त्र हैं।
- अध्याय 39 में 'अन्त्येष्टि' से सम्बन्धित मन्त्र हैं।
- अध्याय 39 को 'प्रायश्चित्त अध्याय' भी कहा जाता है।
- अध्याय 40 को 'ईशोपनिषद्' कहा जाता है।

शुक्ल यजुर्वेद के ब्राह्मण

- शुक्ल यजुर्वेद का केवल एक ब्राह्मण ग्रन्थ है - शतपथ ब्राह्मण
- शतपथ ब्राह्मण के रचयिता 'याज्ञवल्क्य' माने गए हैं।
- शतपथ ब्राह्मण का सम्बन्ध शुक्ल यजुर्वेद की माध्यन्दिन तथा काण्व दोनों शाखाओं से है।
- शतपथ ब्राह्मण में अध्यायों की संख्या 100 है।
- 'गणरत्न महोदधि' शतपथ ब्राह्मण को परिभाषित करते हुए कहते हैं, 'शतं पन्थानो मार्गा नामाध्याया यस्य तत् शतपथम्' अर्थात् जिसमें सौ अध्याय रूपी मार्ग हैं उसे शतपथ कहते हैं।
- काण्व शाखीय शतपथ ब्राह्मण का सम्पादन आचार्य **जे॰ एगलिंग** ने किया।
- काण्व शाखीय शतपथ ब्राह्मण में 104 अध्याय हैं।
- माध्यन्दिन शतपथ ब्राह्मण में 14 काण्ड ,100 अध्याय , 438ब्राह्मण तथा 7624 कंडिकाएँ हैं।
- **शतपथ ब्राह्मण के महत्त्वपूर्ण आख्यान -** मनु एवं श्रद्धा, जलप्लावन की कथा तथा मत्स्य, इन्द्र- वृत्र युद्ध, स्त्री - कामुक गन्धर्व, कद्रू - सुपर्णी, च्यवन - सुकन्या, स्वर्भानु और सूर्यग्रहण, नमुचि और वृत्र, पृथु वैन्य, पुरूरवा - उर्वशी, राजा केशिन्, वाणी का आख्यान, सृष्टि सम्बन्धी उपाख्यान।
- **शुक्लयजुर्वेदीय आरण्यक -** बृहदारण्यक
- शुक्ल यजुर्वेद के शतपथ ब्राह्मण की माध्यन्दिन और काण्व दोनों शाखाओं के अन्तिम छः अध्यायों को 'बृहदारण्यक' कहते हैं ।
- बृहदारण्यक का प्रथम प्रकाशन 1889 ई॰ **'आटो वोह्टलिङ्क'** ने किया।
- **शुक्लयजुर्वेद के उपनिषद् -** ईशावास्योपनिषद् , बृहदारण्यकोपनिषद्।

ईशावास्योपनिषद् का सामान्य परिचय

- ईशावास्योपनिषद् शुक्ल यजुर्वेद का 40 वाँ अध्याय है।
- ईशावास्योपनिषद् में कुल 18 मन्त्र हैं।
- ईशावास्योपनिषद् का प्रारम्भ 'ईशावास्यम्' से होता है।

- सबसे छोटा उपनिषद् किन्तु महत्त्व की दृष्टि से सर्वोपरि ।
- ईशावास्योपनिषद् में विद्या- अविद्या तथा सम्भूति- असम्भूति का निरूपण है।

बृहदारण्यकोपनिषद् का सामान्य परिचय

- बृहदारण्यकोपनिषद् शतपथ ब्राह्मण के 14 वें काण्ड का अन्तिम भाग है।
- बृहदारण्यकोपनिषद् सबसे बड़ा एवं प्राचीनतम उपनिषद् है।
- बृहदारण्यकोपनिषद् में तीन भाग हैं, प्रत्येक भाग में दो - दो अध्याय हैं।
- प्रथम भाग को मधुकाण्ड,द्वितीय भाग को याज्ञवल्क्यकाण्ड,तृतीय भाग को खिलकाण्ड कहते हैं।
- बृहदारण्यकोपनिषद् में कुल अध्यायों की संख्या छः है।
- प्रत्येक अध्याय ब्राह्मणों में विभाजित हैं, जो निम्नवत् है -

अध्याय	ब्राह्मण	मन्त्र
प्रथम अध्याय	छः ब्राह्मण	80
द्वितीय अध्याय	छः ब्राह्मण	66
तृतीय अध्याय	नौ ब्राह्मण	92
चतुर्थ अध्याय	छः ब्राह्मण	82
पञ्चम अध्याय	पन्द्रह ब्राह्मण	15
षष्ठ अध्याय	पाँच ब्राह्मण	75

- याज्ञवल्क्य - मैत्रेयी का संवाद बृहदारण्यकोपनिषद् में प्राप्त होता है।
- जनक और याज्ञवल्क्य संवाद, याज्ञवल्क्य और वचक्नु की कन्या गार्गी का संवाद भी इस उपनिषद् में प्राप्त होता है।

शुक्ल यजुर्वेद - एक अध्ययन

- **ऋत्विक् –** अध्वर्यु
- **शाखा–** माध्यन्दिन या वाजसनेयि शाखा -440 अध्याय, 303 अनुवाक, 1975 मन्त्र काण्वशाखा - 40 अध्याय, 328 अनुवाक, 2086 मन्त्र,
- शतपथ ब्राह्मण में यजुर्वेद के अक्षरों की संख्या 2,88000 (दो लाख अट्ठासी हजार) दी गयी है।
- **उपनिषद्-** ईशावास्योपनिषद्- 18 मन्त्र
- बृहदारण्यकोपनिषद्- 6 अध्याय, 47 ब्राह्मण

कल्पसूत्र-

1. **श्रौतसूत्र-** कात्यायन श्रौतसूत्र- 26 अध्याय
2. **गृह्यसूत्र-** पारस्कर गृह्यसूत्र- 3 काण्ड
3. **शुल्बसूत्र-** (क) बौधायन शुल्बसूत्र- 3 परिच्छेद, 419सूत्र

(ख) मानव शुल्बसूत्र

(ग) आपस्तम्ब शुल्बसूत्र (6पटल, 21अध्याय, 498 सूत्र)

(घ) कात्यायन शुल्बसूत्र, दो भाग

(ङ) मैत्रायणीय शुल्बसूत्र
(च) हिरण्यकेशी या सत्याषाढशुल्बसूत्र
(छ) वराह शुल्बसूत्र

- **शिक्षाग्रन्थ-** याज्ञवल्क्य शिक्षा - (116 श्लोक)
- **प्रातिशाख्यग्रन्थ-** वाजसनेयि प्रातिशाख्य - रचयिता - कात्यायन अध्याय-8

कृष्णयजुर्वेद का सामान्य परिचय

- कृष्ण यजुर्वेद का सम्बन्ध 'ब्रह्म सम्प्रदाय' से है।
- इसमें मन्त्रों के साथ व्याख्या और विनियोग वाला अंश मिश्रित है।
- कृष्ण यजुर्वेद के पारायणकर्त्ता को 'मिश्र' नाम दिया गया है।
- चरणव्यूह में कृष्ण यजुर्वेद की 69 शाखा का उल्लेख मिलता है।
- कृष्ण यजुर्वेद में तैत्तिरीय शाखा के दो भेद हैं- औख्य,खांडिकेय।
- खांडिकेय के पाँच भेद - आपस्तम्ब, बौधायन, सत्याषाढ, हैरण्यकेश,काट्यायन।

कृष्ण यजुर्वेद की शाखा

तैत्तिरीयशाखा | मैत्रायणीशाखा | कठशाखा | कपिष्ठलशाखा

- वर्तमान समय में कृष्णयजुर्वेद की तैत्तिरीयसंहिता प्रतिनिधि संहिता है।
- इसके ऋषि तित्तिर हैं जो वैशम्पायन के शिष्य थे।
- तैत्तिरीय शाखा में 7 काण्ड, 44 प्रपाठक, 631अनुवाक हैं।
- तैत्तिरीय शाखा में मन्त्र और ब्राह्मण मिश्रित है।
- तैत्तिरीय संहिता का विशेष प्रचार महाराष्ट्र, आन्ध्र, दक्षिण भारत में है।
- आचार्य सायण ने सर्वप्रथम तैत्तिरीय संहिता का विस्तृत भाष्य किया था।
- भट्टभास्कर मिश्र ने 11वीं शती में ज्ञानयज्ञ नामक भाष्य तैत्तिरीय संहिता के ऊपर लिखा।
- तैत्तिरीय संहिता का अंग्रेजी में अनुवाद डा. कीथ ने किया।

तैत्तिरीय संहिता की विषय वस्तु

काण्ड	विषय-वस्तु
प्रथम काण्ड	दर्शपूर्णमास, अग्निष्टोम, राजसूय।
द्वितीय काण्ड	पशुविधान, इष्टि
तृतीय काण्ड	पवमानग्रह आदि, वैकृतविधि, इष्टिहोम
चतुर्थ काण्ड	अग्निचिति,देवयजनग्रह, चितिवर्णन, वसोर्धारा,संस्कार
पञ्चम काण्ड	उख्य अग्नि, चितिनिरूपण, इष्टकात्रय,वायव्य पशु आदि
षष्ठ काण्ड	सोममन्त्रब्राह्मण
सप्तम काण्ड	अश्वमेध, षड्रात्र,सत्रकर्म आदि।

मैत्रायणी संहिता का परिचय

➢ मैत्रायणी संहिता की सात शाखाओं का उल्लेख चरणव्यूह में प्राप्त होता है। सात शाखाएँ हैं- मानव, दुन्दुभ, ऐकेय, वाराह, हारिद्रवेय, श्याम, श्यामायनीय।

➢ मैत्रायणी संहिता में 4 काण्ड, 54 प्रपाठक, 3144 मन्त्र हैं।

मैत्रायणी संहिता की विषय वस्तु

काण्ड	विषयवस्तु
प्रथम काण्ड	संहिता, दर्शपूर्णमास, अध्वर, अग्निहोत्र, चातुर्मास्य, वाजपेय याग
द्वितीय काण्ड	काम्य इष्टियाँ, राजसूय और अग्निचिति
तृतीय काण्ड	अग्निचिति, अध्वर आदि की विधि, सौत्रामणी और अश्वमेध याग
चतुर्थ काण्ड	खिल नाम से प्रसिद्ध, राजसूय, अध्वर, प्रवर्ग्य आदि से सम्बन्धित सामग्री।

➢ मैत्रायणी संहिता में ऋग्वेद से 1701 ऋचाएँ उद्धृत की गई हैं।

काठक या कठ शाखा का सामान्य परिचय

➢ कठ शाखा चरकों की शाखा मानी जाती है।

➢ काठक शाखा पाँच खण्डों में विभक्त है।

➢ पाँच खण्डों के नाम हैं- इठिमिका, मध्यमिका, ओरिमिका, याज्यानुवाक्या, अश्वमेधादि अनुवचन।

➢ उपखण्डों को 'स्थानक' और अनुवचन नाम से सम्बोधित किया गया है।

➢ कठ शाखा में चालीस स्थानक, तेरह अनुवचन, 843 अनुवाक, 3091 मन्त्र। मन्त्र एवं ब्राह्मण की मिश्रित संख्या 18 हजार है।

खण्ड के नाम	स्थानक	विषय विवेचन
इठिमिका खण्ड	18	पुरोडाश, अध्वर, राजसूय वाजपेय आदि का वर्णन
मध्यमिका खण्ड	12	सावित्री, स्वर्ग,दीक्षित, आयुष्य पञ्चचूड़ आदि का वर्णन
ओरिमिका खण्ड	10	चातुर्मास्य, सौत्रामणी सत्र, प्रायश्चित्त, पुरोडाश ब्राह्मण, यजमान ब्राह्मण आदि का विवेचन याज्यानुवाक्या इसका समावेश ओरिमिका खण्ड
अश्वमेधादि अनुवचन	13	मन्त्र एवं ब्राह्मण भाग का मिश्रण।

➢ कठशाखा के विषय में पतञ्जलि का कथन- 'ग्रामे-ग्रामे काठकं कालापकं च प्रोच्यते'।

कठ-कपिष्ठल शाखा का सामान्य परिचय

➢ यह शाखा चरणव्यूह के अनुसार चरकों की 12 शाखाओं में से एक है।

➢ इस शाखा के प्रवर्तक कपिष्ठल ऋषि थे।

➢ कृष्ण यजुर्वेद की कठ कपिष्ठल शाखा अपूर्ण प्राप्त है।

➢ कठ-कपिष्ठल की केवल एक प्रति उपलब्ध है जो सरस्वती भवन पुस्तकालय काशी

में सुरक्षित है।

- इस शाखा का विभाजन ऋग्वेद के समान अष्टक एवं अध्यायों में हैं।
- कठ-कपिष्ठल शाखा में कुल छः अष्टक, 48 अध्याय हैं।
- **कृष्णयजुर्वेदीय ब्राह्मण-** दो ब्राह्मण- तैत्तिरीय ब्राह्मण तथा मैत्रायणी ब्राह्मण
- तैत्तिरीय ब्राह्मण के रचयिता वैशम्पायन के शिष्य आचार्य तित्तिर हैं।
- तैत्तिरीय ब्राह्मण का प्रथम संस्करण 1890 में कलकत्ता से प्रकाशित।
- तैत्तिरीय ब्राह्मण का द्वितीय संस्करण 1899 ई. में पूना से प्रकाशित।

तैत्तिरीय ब्राह्मण की विषय वस्तु

काण्ड	विषय वस्तु
प्रथम काण्ड	अग्न्याधान, गवामयन, वाजपेय, राजसूय सोमयाग नक्षत्रेष्टि का वर्णन
द्वितीय काण्ड	अग्निहोत्र, सौत्रामणी, बृहस्पतिसव, अनेक सूत्रों का वर्णन
तृतीय काण्ड	नक्षत्रेष्टि का वर्णन विस्तार के साथ, पुरुषमेध

मैत्रायणी ब्राह्मण का परिचय

- मैत्रायणी ब्राह्मण में तीन अध्याय हैं।
- मैत्रायणी ब्राह्मण मैत्रायणी संहिता का चतुर्थ अध्याय ही माना जाता है।
- 'रात्रि की उत्पत्ति' का आख्यान इस ब्राह्मण में प्राप्त होता है।
- 'पर्वतोपाख्यान' भी मैत्रायणी ब्राह्मण में वर्णित है।

कृष्ण यजुर्वेदीय ब्राह्मण

तैत्तिरीय ब्राह्मण (3 काण्ड) | मैत्रायणी ब्राह्मण (तीन अध्याय)

कृष्णयजुर्वेदीय आरण्यक का सामान्य परिचय

- कृष्ण यजुर्वेद के दो आरण्यक उपलब्ध हैं- तैत्तिरीय आरण्यक, मैत्रायणीय आरण्यक।
- **तैत्तिरीय आरण्यक-** राजेन्द्र लाल मिश्र ने 1782ई. में सायण भाष्य के साथ प्रकाशित किया।
- इसमें दस प्रपाठक या परिच्छेद हैं।
- प्रपाठकों का नामकरण उनके प्रथम पद के आधार पर किया गया है।
- तैत्तिरीय आरण्यक के दस प्रपाठक के नाम- भद्र, सह वै, चिति, युञ्जते, देव वै, परे, शिक्षा, ब्रह्मविद्या, भृगु, नारायणीय।
- तैत्तिरीय आरण्यक में कुल 170 अनुवाक हैं।
- सप्तम से नवम प्रपाठक को 'तैत्तिरीयोपनिषद्' कहते हैं।

- दशम प्रपाठक को 'महानारायणीयोपनिषद्' कहते हैं जिसे खिल कहते हैं।
- तैत्तिरीय आरण्यक में कुरुक्षेत्र, खाण्डव, पाञ्चाल, मत्स्य, काशी आदि के भौगोलिक नामों का उल्लेख है।
- 'श्रमण' शब्द का प्रयोग तपस्वी के अर्थ में किया गया है।
- तैत्तिरीय आरण्यक में जल के चार रूप बताए गये हैं- मेघ, विद्युत्, गर्जन, वृष्टि।
- जल के छः प्रकार बताये गए हैं- वृष्टि का जल, कूपजल, तडागजल, नद्यादि जल, पात्रजल, झरने का जल।

तैत्तिरीय आरण्यक में प्रतिपादित विषय

आरण्यक	प्रतिपादित विषय
प्रथम प्रपाठक	आरुण-केतुक नामक अग्नि की उपासना और इष्टका-चयन का वर्णन।
द्वितीय प्रपाठक	स्वाध्याय और पञ्च महायज्ञों का वर्णन
तृतीय प्रपाठक	चातुर्होत्र चिति से सम्बद्ध मन्त्र
चतुर्थ प्रपाठक	प्रवर्ग्य होम से सम्बद्ध मन्त्र
पञ्चम प्रपाठक	यज्ञ सम्बन्धी कतिपय संकेत
षष्ठ प्रपाठक	पितृमेध सम्बन्धी मन्त्रों का संकलन
सप्तम-नवम प्रपाठक	तैत्तिरीय उपनिषद्
दशम प्रपाठक	महानारायणीय उपनिषद् (खिलकाण्ड)

मैत्रायणीय आरण्यक का सामान्य परिचय

- मैत्रायणीय आरण्यक को मैत्रायणीय उपनिषद् भी कहते हैं।
- मैत्रायणीय आरण्यक में सात प्रपाठक हैं।
- इसमें आरण्यक और उपनिषद् दोनों के अंश मिश्रित हैं।
- मैत्रायणीय आरण्यक में परमात्मा को अग्नि और प्राण कहा गया है।
- अश्वपति, हरिश्चन्द्र, अम्बरीष, शर्याति, ययाति, युवनाश्व आदि राजाओं का उल्लेख मैत्रायणीय आरण्यक में प्राप्त होता है।

मैत्रायणीय आरण्यक में प्रतिपादित विषय

आरण्यक	प्रतिपादित विषय
प्रथम प्रपाठक	ब्रह्मयज्ञ। राजा बृहद्रथ को वैराग्य और मुनि शाकायन्य द्वारा उसे उपदेश
द्वितीय प्रपाठक	शाकायन्य द्वारा ब्रह्मविद्या का उपदेश
तृतीय प्रपाठक	जीवात्मा के स्वरूप का वर्णन, कर्मफल और पुनर्जन्म
चतुर्थ प्रपाठक	ब्रह्म-सायुज्य-प्राप्ति के उपाय
पञ्चम प्रपाठक	कौत्सायनी स्तुति, ब्रह्म की अनेक रूपों में स्थिति

षष्ठ प्रपाठक	ओम, प्रणव, उद्गीथ और गायत्री की उपासना, आत्मयज्ञ का वर्णन, षडंग योग, शब्द ब्रह्म, निर्विषय मन से मोक्षप्राप्ति।
सप्तम प्रपाठक	आत्म-स्वरूप वर्णन

कृष्ण यजुर्वेद के उपनिषद्

- तैत्तिरीयोपनिषद्, कठोपनिषद्, श्वेताश्वतरोपनिषद्, मैत्रायणीयोपनिषद्, महानारायणोपनिषद्।

तैत्तिरीयोपनिषद् का सामान्य परिचय

- तैत्तिरीय आरण्यक के तीन प्रपाठकों (7,8,9) को तैत्तिरीय उपनिषद् कहते हैं।
- तैत्तिरीय उपनिषद् का प्रारम्भ 'अथ शीक्षां व्याख्यास्यामः' से होता है।
- तैत्तिरीय उपनिषद् में तीन वल्ली हैं- शीक्षा वल्ली, ब्रह्मानन्द वल्ली, भृगुवल्ली।
- शीक्षा वल्ली में 12 अनुवाक, ब्रह्मानन्द वल्ली में नौ अनुवाक, भृगुवल्ली में 10 अनुवाक हैं।
- भृगु-वरुण संवाद, पञ्चकोश निरूपण का उल्लेख तैत्तिरीयोपनिषद् में प्राप्त होता है।

तैत्तिरीयोपनिषद् का विभाजन

वल्ली	अनुवाक
शीक्षा वल्ली	12
ब्रह्मानन्द वल्ली	9
भृगु वल्ली	10

कठोपनिषद् का सामान्य परिचय

- कठोपनिषद् कृष्णयजुर्वेद की कठ शाखा से सम्बन्धित है।
- कठोपनिषद् में दो अध्याय हैं, प्रत्येक अध्याय में तीन खण्ड हैं।
- यम-नचिकेता की कथा का वर्णन कठोपनिषद् में प्राप्त होता है।
- श्रेय-प्रेय का निरूपण कठोपनिषद् में प्राप्त होता है।

श्वेताश्वतरोपनिषद् का सामान्य परिचय

- श्वेताश्वतरोपनिषद् में कुल छः अध्याय हैं।
- इस उपनिषद् में सांख्य- योग, वेदान्त दर्शन के सिद्धान्त प्रतिपादित हैं।
- श्वेताश्वतरोपनिषद् में जगत् के मिथ्यात्व की कल्पना नहीं है।
- शिव को परमेश्वर कहा गया है।
- कपिल ऋषि का उल्लेख इस उपनिषद् में प्राप्त होता है।

श्वेताश्वतरोपनिषद् में प्रतिपादित विषय

अध्याय	प्रतिपादित विषय
प्रथम	हंस, त्रैतवाद, माया, क्षर-अक्षर, सत्य-तप से आत्मदर्शन
द्वितीय	योग, योगविधि, ब्रह्म तत्त्व का वर्णन
तृतीय	रुद्र, विश्वरूप, जीव का स्वरूप, आत्मा का स्वरूप
चतुर्थ	एकेश्वरवाद, त्रैतवाद, प्रकृति, माया-मायी, शिव ब्रह्मरूप
पञ्चम	क्षर-अक्षर, कपिल ऋषि, जीवात्मा का स्वरूप
षष्ठ	ब्रह्म के अनेक नाम, हंस, ईश्वर प्रकृति एवं जीव का नियन्ता, गुरुभक्ति

मैत्रायणीयोपनिषद् का सामान्य परिचय

- इसे मैत्री उपनिषद् भी कहते हैं।
- इसमें सात अध्याय हैं।
- मैत्रायणीय आरण्यक को ही मैत्रायणी उपनिषद् कहते हैं।
- इसमें वेद विरोधी सम्प्रदायों का उल्लेख है।
- आत्मा का बाह्य प्रतीक सूर्य है और आभ्यन्तर प्रतीक प्राण है।
- प्रकृति के सत्त्व, रजस् , तमस् इन तीन गुणों का ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र से सम्बन्ध बताया गया है।

महानारायणोपनिषद् का सामान्य परिचय

- तैत्तिरीय आरण्यक का दशम प्रपाठक महानारायणोपनिषद् कहा जाता है।
- इसके तीन पाठ मिलते हैं- द्रविण, आन्ध्र, कर्णाटक।
- इसे याज्ञिक्युपनिषद् भी कहते हैं।
- नारायण का परमात्म तत्त्व के रूप में उल्लेख है।

कृष्णयजुर्वेद–एक अध्ययन

ऋत्विक्-अध्वर्यु

शाखा-तैत्तिरीयशाखा- 7 काण्ड,44 प्रपाठक, 631 अनुवाक

मैत्रायणीयशाखा- 4 काण्ड, 54 प्रपाठक, 3144 मन्त्र

कठ(काठक)शाखा- 5खण्ड, 40स्थानक, 13अनुवचन, 843अनुवाक, 3091मन्त्र

कपिष्ठल(कठ)शाखा-6अष्टक, 48अध्याय

ब्राह्मण- * तैत्तिरीय ब्राह्मण-3 काण्ड

* मैत्रायणीय ब्राह्मण-3 अध्याय

आरण्यक- * तैत्तिरीय आरण्यक-10प्रपाठक

* मैत्रायणीय आरण्यक-सात प्रपाठक

उपनिषद्- * तैत्तिरीयोपनिषद्-3वल्ली,

* कठोपनिषद्-2अध्याय

* श्वेताश्वतरोपनिषद्-6अध्याय
* मैत्रायणीयोपनिषद्-7अध्याय
* महानारायणोपनिषद्

श्रौतसूत्र- * बौधायन श्रौतसूत्र-रचयिता बोधायन, 30प्रश्नों में विभाजित
* वाधूल श्रौतसूत्र
* मानव श्रौतसूत्र
* भारद्वाज श्रौतसूत्र
* आपस्तम्ब श्रौतसूत्र रचयिता-आपस्तम्ब
* काठक श्रौतसूत्र
* सत्याषाढ श्रौतसूत्र-24प्रश्न
* वाराह श्रौतसूत्र
* वैखानस श्रौतसूत्र-32 अध्याय

गृह्यसूत्र-
* बौधायन गृह्यसूत्र
* मानव गृह्यसूत्र
* भारद्वाज गृह्यसूत्र
* आपस्तम्ब गृह्यसूत्र
* काठक गृह्यसूत्र
* आग्निवेश्य गृह्यसूत्र
* हिरण्यकेशि गृह्यसूत्र
* वाराह गृह्यसूत्र
* वैखानस गृह्यसूत्र
* चारायणीय गृह्यसूत्र
* वैजवाप गृह्यसूत्र

शुल्ब सूत्र-
* बौधायन शुल्बसूत्र
* मानव शुल्बसूत्र
* आपस्तम्ब शुल्बसूत्र
* कात्यायन शुल्बसूत्र
* मैत्रायणीय शुल्बसूत्र
* हिरण्यकेशि (सत्याषाढ) शुल्बसूत्र
* वाराह शुल्बसूत्र

शिक्षा ग्रन्थ-
* व्यास शिक्षा
* वशिष्ठ शिक्षा
* भारद्वाज शिक्षा
* माण्डव्य शिक्षा

❑❑

4. सामवेद

- **सामवेद का परिचय** - वैदिक वाङ्मय में सामवेद का विशिष्ट स्थान है। सामवेद वेदों का सार है। भारतीय परम्परा के अनुसार कृष्णद्वैपायन व्यास ने साममन्त्रों का भी संकलन किया जो सामवेदसंहिता के नाम से प्रसिद्ध है। बृहद्देवता ने स्पष्ट प्रतिपादित किया है कि 'जो साम को जानता है वह वेद के रहस्य को जानता है' (सामानि यो वेत्ति स वेद तत्त्वम्।
- गीता में भगवान् श्रीकृष्ण ने सामवेद को ही अपना स्वरूप मानकर इसकी महत्ता घोषित की है (वेदानां सामवेदोऽस्मि) ऋग्वेद कहता है कि जो व्यक्ति जागरणशील है उसी को साम की प्राप्ति होती है (यो जागार तमु सामानि यान्ति)। अथर्ववेद में साम को परब्रह्म का लोमभूत माना गया है (सामानि यस्य लोमानि) वस्तुतः साम के वैशिष्ट्य का अर्थ यही है कि वैदिक साहित्य में सामवेद का स्थान किसी भी अन्य वेद की अपेक्षा न्यून नहीं है। सामवेद उपासना का वेद है।
- **सामतात्पर्य-** साम अर्थात् स्वरों के आरोहावरोह से युक्त मन्त्रों का गान करना। साम का अर्थ है– गायन अर्थात् 'गीतियुक्त मन्त्र'। ऋचाएँ जब विशिष्ट गान पद्धति से गायी जाती हैं तो उसे 'साम' कहते हैं। **'साम'** शब्द से (ऋचाओं के) अक्षर एवं उनसे व्यक्त स्वरमालिका का ग्रहण होता है। **'स्वरलापन'** यह साम का प्रधान अंग है। जैमिनीय सूत्र में गीति को ही साम की संज्ञा प्रदान की गई है **(गीतिषु समाख्या)** बृहदारण्यकोपनिषद् में साम शब्द की व्युत्पत्ति इस प्रकार बताई है कि सा का अर्थ है 'ऋक्' और अम् का अर्थ है 'स्वर' अर्थात् ऋक् से सम्बद्ध स्वर प्रधान गायन को साम कहते हैं (सा च अमश्चेति तत्साम्नः सामत्वम्। तया सह सम्बद्धः अयो नाम स्वरः यत्र वर्तते तत्साम)
- **सामवेद संहिता का स्वरूप-**
    - सामवेद का ऋत्विक् उद्गाता है।
    - उद्गाता ऋग्वेद की ऋचाओं का शास्त्रीय तथा परम्परागत रूप में गायन करता है।
    - 'ऋक् और साम' में परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध है।
    - सामवेद में ऋग्वेद के लगभग सभी मण्डलों से मन्त्र संगृहीत हैं किन्तु अधिकांश मन्त्र आठवें तथा नवें मण्डल से ग्रहण किये गये हैं।

- बृहत् साम, रथन्तर साम आदि का ऋग्वेद में उल्लेख है।

सामवेद का विभाजन- प्राचीन दृष्टि से सामवेद को दो संहिताओं में विभाजित किया गया है। 1. आर्चिक संहिता 2. गान संहिता

- आर्चिक शब्द का अर्थ 'ऋक् समूह' है। आर्चिक संहिता के भी दो भेद किये गये हैं।
  1. पूर्वार्चिक 2. उत्तरार्चिक
- गान संहिता को भी दो भागों में विभाजित किया गया है –
  1. ग्रामगेय 2. आरण्यगेय

सामवेद
- आर्चिक संहिता
  - पूर्वार्चिक
  - उत्तरार्चिक
- गान संहिता
  - ग्रामगेय (वेयगान)
    - ऊहगान
  - आरण्यगेय
    - ऊह्यगान

- सामवेद के दो मुख्य भाग हैं 1. पूर्वार्चिक 2. उत्तरार्चिक
- पूर्वार्चिक में चार काण्ड हैं - 1. आग्नेय 2. ऐन्द्र 3. पावमान 4. आरण्य
- परिशिष्ट के रूप में महानाम्नी आर्चिक भी है।
- इसमें 6 अध्याय या प्रपाठक हैं। अध्यायों के अनुसार कांडों को बाँटा गया है।
- अध्यायों के खण्ड किये गये हैं।
- अध्याय 1 को 'आग्नेय काण्ड' माना जाता है।
- अध्याय 2 से 4 को 'ऐन्द्र काण्ड' माना जाता है।
- अध्याय 5 को 'पावमान काण्ड' माना जाता है।
- अध्याय 6 को 'आरण्य काण्ड' और परिशिष्ट को 'महानाम्नी आर्चिक' माना जाता है।

पूर्वार्चिक विवरण

काण्ड	विषय	अध्याय (प्रपाठक)	खण्ड	मन्त्र
1. आग्नेय	अग्नि देवता	1	12	114
2. ऐन्द्र	इन्द्र देवता	2 से 4	12	352
3. पावमान	सोम देवता	5	11	119
4. आरण्यक	इन्द्र, अग्नि,सोम	6	5	55
5. महानाम्नी आर्चिक	इन्द्र	परिशिष्ट	-	10

पूर्वार्चिक मन्त्र संख्या-650

- प्रथम से पञ्चम प्रपाठक '**ग्रामगान**' कहलाता है।
- छठा प्रपाठक '**अरण्यगान**' कहलाता है।

उत्तरार्चिक

- इसमें 9 प्रपाठक (21 अध्याय) हैं, कुल मन्त्र 1225 और कुल सूक्त 400 हैं।
- 400 सूक्तों में 287 सूक्तों में प्रत्येक में 3-3 मन्त्रों का समूह है।
- 66 सूक्तों में 2-2 मन्त्रों का समूह और शेष 47 सूक्तों में 1 से 12 तक मन्त्र समूह हैं।

उत्तरार्चिक

प्रपाठक	मन्त्र	सूक्त
9	1225	400

सामवेद मन्त्र संख्या वर्णन-

पूर्वार्चिक	उत्तरार्चिक
650	1225

कुल

1875

ऋग्वेदीयमन्त्र	नवीन मन्त्र
1771	108

- सामवेद के कुल मन्त्र 1875 हैं।

सामवेदीय शाखाएँ- महाभाष्य में पतंजलि ने सामवेद की एक सहस्र शाखाओं का उल्लेख किया है, (**सहस्रवर्त्मा सामवेदाः**)। जैमिनिगृह्यसूत्र में 13 शाखाओं का उल्लेख मिलता है।

- जैमिनि, तलवकार, सात्युग्र, राणायनीय, दुर्वासस, भागुरि, गौरुण्डि, गौर्गुलजि, औपममन्यव, कारडि, सावर्णि, गार्ग्य, वार्षगण्य और दैवन्त्य।
- उपर्युक्त 13 शाखाओं में से आजकल केवल तीन शाखाएं ही उपलब्ध हैं-

सामवेदीय शाखाएँ

कौथुमीय शाखा (गुजरात) — अध्याय खण्ड मन्त्र

राणायनीय शाखा (महाराष्ट्र) — प्रपाठक अर्धप्रपाठक दशति मन्त्र

जैमिनीय शाखा (कर्णाटक) — मन्त्र

सामवेदीय ब्राह्मण

- सामवेद के उपलब्ध ब्राह्मण 8 हैं।
- सायण ने इनका उल्लेख इस प्रकार किया है-

अष्टौ हि ब्राह्मणग्रन्थाः प्रौढं ब्राह्मणमादिमम्।
षड्विंशाख्यं द्वितीयं स्यात् ततः सामविधिर्भवेत्।
आर्षेयं देवताध्यायो भवेदुपनिषत् ततः।
संहितोपनिषद् वंशो ग्रन्था अष्टावितीरिताः॥

1. तांड्य ब्राह्मण-

- इसे पंचविंश, महाब्राह्मण और ब्राह्मण भी कहते हैं।
- इसमें 25 अध्याय हैं तथा पाँच-पाँच अध्यायों की एक पंचिका है।
- इसका मुख्य प्रतिपाद्य विषय सोमयाग है।

2. षड्विंश ब्राह्मण-

- इसमें 26 अध्याय हैं।
- इसको पंचविंश (तांड्य का परिशिष्ट माना जाता है।)
- इसके अन्तिम अध्याय को 'अद्भुत ब्राह्मण' कहते हैं।

3. सामविधान ब्राह्मण-

- इसमें तीन प्रपाठक और 25 अनुवाक हैं।
- इसमें प्रतिपादित विषय अधिकांशतः धर्मशास्त्र के क्षेत्र में आते हैं।

4. आर्षेय ब्राह्मण-

- इस ब्राह्मण में 3 प्रपाठक हैं, जो 82 खण्डों में विभक्त हैं।
- इसमें सामगानों के नाम तथा उनके अन्य नामों का उल्लेख है।

5. दैवत ब्राह्मण-

- इसमें चार खण्ड हैं।
- यह सूत्र शैली में लिखा गया है।
- इसमें सामगानों के देवताओं का विशेषरूप से वर्णन है।

6. उपनिषद् ब्राह्मण-

- इसे मन्त्र ब्राह्मण और छान्दोग्य ब्राह्मण भी कहा जाता है।
- इसमें 10 प्रपाठक हैं, प्रत्येक प्रपाठक में 8-8 खण्ड हैं।
- इस पर दो व्याख्याएं हैं - 1. गुणविष्णु कृत छान्दोग्य मन्त्र-भाष्य
  2. सायण कृत-वेदार्थप्रकाश।

7. संहितोपनिषद् ब्राह्मण-

- संहितोपनिषद् रहस्य को बताने वाला यह ग्रन्थ ब्राह्मण ग्रन्थ माना जाता है।
- इसमें 5 खण्ड हैं जो सूत्रों में विभक्त हैं।

8. वंश ब्राह्मण-

- यह ब्राह्मण बहुत छोटा है। इसमें तीन खण्ड हैं।
- इसमें स्वयंभू ब्रह्मा से सामवेद की परम्परा का प्रारम्भ माना जाता है।

सामवेदीय अष्ट ब्राह्मण

तांड्य — 25अध्याय
षड्विंश — 26अध्याय
सामविधान — 3 प्रपाठक, 25 अनुवाक्
आर्षेय — 3प्रपाठक
दैवत — 4खण्ड
उपनिषद् — 10प्रपाठक
संहितोपनिषद् — 5खण्ड
वंश — 3खण्ड

अन्य ब्राह्मण-

- आठ ब्राह्मणों के अतिरिक्त इसी वेद से सम्बद्ध जैमिनीय या तलवकार ब्राह्मण भी है जो 9 वाँ ब्राह्मण माना जाता है।
- जैमिनीय ब्राह्मण में 3 काण्ड हैं जो खण्डों में विभक्त हैं।

सामवेदीय आरण्यक-

- इसके दो आरण्यक प्राप्त होते हैं-

तलवकार (4 अध्याय)

छान्दोग्य (छान्दोग्योपनिषद् का प्रथम भाग)

सामवेदीय उपनिषद्-

- सामवेद के दो उपनिषद् प्राप्त होते हैं।

1. केन उपनिषद् 2. छान्दोग्य उपनिषद्

➢ **केन उपनिषद्-** केनोपनिषद् में 4 खण्ड हैं। प्रथम खण्ड-8 मन्त्र, द्वितीय खण्ड-5 मन्त्र, तृतीय खण्ड-12 मन्त्र, चतुर्थ खण्ड-9 मन्त्र

- इसको 'तलवकार उपनिषद्' भी कहते हैं।
- इसमें 4 खण्ड हैं।
- प्रथम दो खण्ड पद्यात्मक हैं और शेष दो गद्यात्मक हैं।

छान्दोग्य उपनिषद्-

- इसमें 8 अध्याय या प्रपाठक हैं।
- इसके प्रथम एवं द्वितीय अध्याय में ॐ, उद्गीथ एवं साम के गूढ़ रहस्यों का मार्मिक विवेचन है।

छान्दोग्योपनिषद्		
अध्याय	खण्ड	मन्त्र
प्रथम	13	104
द्वितीय	24	82
तृतीय	19	94
चतुर्थ	17	78
पञ्चम	24	88
षष्ठ	16	69
सप्तम	26	51
अष्टम	15	62

सामवेदीय प्रातिशाख्य ग्रन्थ-

- सामवेदीय प्रातिशाख्य ग्रन्थ मुख्य तीन हैं-
  1- ऋक्तन्त्र 2- पुष्पसूत्र 3- सामतन्त्र
- ऋक्तन्त्र के प्रणेता आचार्य शाकटायन हैं।
- ऋक्तन्त्र में पाँच प्रपाठक हैं।
- पुष्पसूत्र के रचयिता गोभिल ऋषि हैं ।
- पुष्पसूत्र में 10 प्रपाठक हैं।
- सामतन्त्र के लेखक महर्षि औदव्रजि को माना जाता है।
- इसमें 13 प्रपाठक हैं।

सामवेदीय प्रातिशाख्य		
प्रातिशाख्य	रचनाकार	प्रपाठक
ऋक्तन्त्र	शाकटायन	5
पुष्पसूत्र	गोभिल	10
सामतन्त्र	औदव्रजि	13

सामवेदीय शिक्षाग्रन्थ

सामवेद में 3 शिक्षा ग्रन्थ प्राप्त होते हैं-

शिक्षा	लेखक
1.गौतमी शिक्षा	गौतम
2.लोमशी शिक्षा	लोमश
3. नारदीय शिक्षा	नारद

सामवेदीय श्रौतसूत्र

- सामवेद के श्रौतसूत्र निम्नलिखित हैं -

  आर्षेय (मशक), क्षुद्र कल्पसूत्र, जैमिनीय, लाट्यायन, द्राह्यायण, निदान, तथा उपनिदान।
- इनमें सामवेदीय प्रकाशित श्रौतसूत्रों की संख्या 4 है।

श्रौतसूत्र

आर्षेय या मशक कल्पसूत्र | लाट्यायन | द्राह्यायण | जैमिनीय

सामवेदीय गृह्यसूत्र

1- गोभिल गृह्यसूत्र 2- खादिर गृह्यसूत्र 3- द्राह्यायण गृह्यसूत्र
4- जैमिनीय गृह्यसूत्र 5- कौथुम गृह्यसूत्र

सामवेदीय धर्मसूत्र

- सामवेद का 'गौतम धर्मसूत्र' एकमात्र धर्मसूत्र है।
- इसके प्रणेता 'आचार्य गौतम' हैं।
- इसमें 28 अध्याय 1000 सूत्र हैं।

सामवेदीय कल्पसूत्रों का वर्गीकरण			
श्रौतसूत्र	**गृह्यसूत्र**	**धर्मसूत्र**	**शुल्बसूत्र**
आर्षेय (मशक)	गोभिल	गौतम	कोई शुल्ब
लाट्यायन	खादिर		सूत्र नहीं
द्राह्यायण	द्राह्यायण		प्राप्त होता
जैमिनीय	जैमिनीय कौथुम		

सामवेद में सामगान के भेद -

- सामयोनि मन्त्रों का आश्रय लेकर ऋषियों ने विभिन्न गानों की रचना की है, सामगान के चार प्रकार हैं-
  1- **ग्रामगेयगान-** इसे 'प्रकृतिगान' और 'गेयगान' भी कहते हैं।
  2- **आरण्यगान-** इसे आरण्यक या **'रहस्यगान'** भी कहते हैं। यह वनों या पवित्र स्थानों पर ही गाया जाता है।
  3- **ऊहगान-** ऊह का अर्थ है- विचारपूर्वक विन्यास।
- यह सोमयाग एवं विशेष धार्मिक अवसरों पर गाया जाता है।
  4- **ऊह्यगान-** ऊह्यगान रहस्य गान है।

सामगान

1. ग्रामगेयगान 2. आरण्यगान 3. ऊहगान 4. ऊह्यगान

सामगान के विभाग

- सामगान के पाँच भाग निम्न हैं-

'प्रस्तावोद्गीथप्रतिहारोपद्रवनिधनानि भक्तयः'

अर्थात् सामगान के प्रस्ताव, उद्गीथ, प्रतिहार, उपद्रव और निधन ये पाँच भाग हैं।

भक्ति	गायक	मन्त्र का अंश
प्रस्ताव	प्रस्तोता	हुँ औग्नाइ
उद्गीथ	उद्गाता	ओम् आयाहि वीतये गृणानो हव्यदायते
प्रतिहार	प्रतिहर्ता	नि होता सत्सि बर्हिषि ओम्
उपद्रव	उद्गाता	नि होता सत्सि ब।
निधन	तीनों मिलकर	र्हिषि ओम्

सामविकार-

- सामगान में संगीत के अनुकूल जो शाब्दिक परिवर्तन किया जाता हैं, उसे सामविकार कहा जाता हैं। सामविकार के छः प्रकार होते हैं।

सामविकार

विकार | विश्लेषण | विकर्षण | अभ्यास | विराम | स्तोभ

सामवेद के कुछ स्मरणीय तथ्य-

- सामवेद में गायन पद्धति है। इसमें स्वरों का सम्मिश्रण है।
- सामवेदीय मन्त्रों के ऊपर 1,2,3 संख्यायें दी गई हैं।

1- उदात्त 2- अनुदात्त 3-स्वरित

- नारदीय शिक्षा के अनुसार सामवेद में स्वर आदि के सूचक हैं-

''सप्त स्वराः, त्रयो ग्रामाः, मूर्छनास्त्वेकविंशतिः।
ताना एकोनपञ्चाशत्, इत्येतत् स्वरमण्डलम्।।''

- अर्थात् स्वर सात हैं।
- ग्राम तीन हैं।
- मूर्च्छनाएँ 21 हैं।
- तान 49 हैं।

सप्त स्वर		
षड्ज	-	(स)
ऋषभ	-	(रे)
गान्धार	-	(ग)
मध्यम	-	(म)
पंचम	-	(प)
धैवत	-	(ध)
निषाद	-	(नि)

सामवेदीय भाष्यकार

- सामवेद के भाष्यकार के रूप में इन आचार्यों का वर्णन प्राप्त होता है।

1. माधव- ये सामवेद के प्रथम भाष्यकार हैं। इनके भाष्य का नाम विवरण है।

2. **गुणविष्णु-** इन्होंने सामवेद की कौथुम शाखा पर 'छान्दोग्य- मन्त्रभाष्य' लिखा है।

3. **भरतस्वामी-** इन्होंने सम्पूर्ण सामवेद पर भाष्य लिखा था यह अभी प्रकाशित नहीं है।

भाष्यकार	भाष्य	वर्ष
माधव	विवरण	600 लगभग
गुणविष्णु	छान्दोग्य मन्त्रभाष्य	12 वीं शती ई. उत्तरार्ध
भरतस्वामी	सामवेदीय भाष्य	14 वीं शती ई. पूर्वार्ध

सामवेद के भारतीय अनुवादक-

अनुवादक	भाषा
1. सत्यव्रत	बंगला
2. तुलसीराम स्वामी	हिन्दी- भाष्य
3. जयदेव विद्यालंकार	हिन्दी- भाष्य
4. श्रीराम शर्मा	हिन्दी- भाष्य
5. वीरेन्द्र शास्त्री	हिन्दी- अनुवाद
6. रामनाथ वेदालंकार	संस्कृत हिन्दी- भाष्य

सामवेद के पाश्चात्त्य अनुवादक

अनुवादक	विषय	भाषा	वर्ष
स्टेवेन्सन	राणायनीय शाखा	अंग्रेजी	1843 ई.
बेन्फे	कौथुम शाखा	जर्मन	1848 ई.
कैलेन्ड	जैमिनीय शाखा	रोमन	1907 ई.
ग्रिफिथ	सम्पूर्ण सामवेद	अंग्रेजी	1899 ई.
वेबर	अद्भुत ब्राह्मण	जर्मन	1858 ई.
बर्नेल	सामविधान ब्राह्मण		1873 से
	दैवत ब्राह्मण		1877 तक
	वंश-ब्राह्मण		
	संहितोपनिषद् ब्राह्मण		
	आर्षेय ब्राह्मण		
एर्टल	जैमिनीय उपनिषद्ब्राह्मण	अंग्रेजी	
कैलेण्ड	जैमिनीय ब्राह्मण	जर्मन	
स्टेनो कोनो	सामविधान ब्राह्मण		1893
ग्रास्ट्रा	जैमिनीय गृह्यसूत्र	डच	1906

➢ सामवेद संहिता - एक दृष्टि में

आचार्य	-	जैमिनि
ऋत्विक्	-	उद्गाता
उपवेद	-	गान्धर्ववेद
देवता	-	आदित्य (सूर्य)
विभाजन	-	दो भागों में (पूर्वार्चिक, उत्तरार्चिक)
पूर्वार्चिक	-	4 काण्ड, 6 अध्याय (प्रपाठक)
उत्तरार्चिक	-	9 प्रपाठक, 1225 मन्त्र, 400 सूक्त
शाखा	-	1. कौथुमीय 2. राणायनीय 3. जैमिनीय
ब्राह्मण	-	8 या 9
आरण्यक	-	2 (तलवकार, छान्दोग्य)
उपनिषद्	-	2 (केनोपनिषद्, छान्दोग्योपनिषद्)
प्रातिशाख्य	-	3 (ऋक्तन्त्र, पुष्पसूत्र, सामतन्त्र)
शिक्षा	-	3 (गौतमी, लोमशी, नारदीय)
श्रौतसूत्र	-	4 (आर्षेय, लाट्यायन, द्राह्यायण, जैमिनीय)
गृह्यसूत्र	-	5 (गोभिल, खादिर, द्राह्यायण, जैमिनीय, कौथुम)
धर्मसूत्र	-	1 (गौतम धर्मसूत्र)
शुल्बसूत्र	-	नहीं प्राप्त होता है।
सामगान	-	4 (ग्रामगेयगान, आरण्यगान, ऊहगान, ऊह्यगान)
सामविकार	-	6 (विकार, विश्लेषण, विकर्षण, अभ्यास, विराम, स्तोभ)
सामभक्तियाँ	-	5 (प्रस्ताव, उद्गीथ, प्रतिहार, उपद्रव, निधन)
भाष्यकार	-	माधव, गुणविष्णु, भरतस्वामी।

❑❑

5. अथर्ववेद

- **अथर्ववेद का अर्थ-** 'अथर्वों का वेद।' अर्थात् अभिचार मन्त्रों से सम्बन्धित ज्ञान। वेदों की चारों संहिताओं में अथर्ववेद की एक निजी और अन्यतम विशिष्टता रही है। इस वेद के 'अथर्व' शब्द की सुन्दर व्याख्या यास्काचार्य के निरुक्त तथा गोपथ ब्राह्मण में उपलब्ध है। निरुक्त के अनुसार **'थर्व'** धातु गत्यर्थक है और अथर्व का अर्थ है- गतिहीन अथवा स्थिरता युक्त। अर्थात् जिसमें चित्त में स्थिरता एवं दृढ़ता लाई जा सके। तदनुसार गोपथ ब्राह्मण में प्रस्तुत है कि- समीपस्थ आत्मा को अपने अन्दर देखना।
- पाणिनीय धातु पाठ में **'थर्वी'** धातु हिंसा के अर्थ में पठित है। 'थर्व' धातु कुटिलता एवं हिंसावाची है। अतः अकुटिलता तथा अहिंसा योग से ब्रह्म प्राप्ति कराने के कारण इस संहिता को अथर्ववेद कहा गया।
- अथर्ववेद में विभिन्न ऋषियों के दृष्टमन्त्र हैं तथा अनेक विषयों का प्रतिपादन है, अतः इसके अनेक नाम पड़े हैं। अथर्ववेद तथा अन्य ग्रन्थों में अथर्ववेद के ये नाम प्राप्त होते हैं।

अथर्ववेद की शाखाएँ-

- पतञ्जलि ने महाभाष्य में 'नवधाऽथर्वणो वेदः' कहकर इस वेद की 9 शाखाओं का उल्लेख किया है जो इस प्रकार हैं- 1. पैप्पलाद 2. तौद (स्तौद) 3. मौद 4. शौनकीय 5. जाजल 6. जलद 7. ब्रह्मवद 8. देवदर्श 9. चारणवैद्य
- प्रपंचहृदय, चरणव्यूह और सायण की अथर्ववेद-भाष्य भूमिका में भी नौ शाखाओं का उल्लेख मिलता है।
- इसमें केवल पैप्पलाद एवं शौनकीय शाखा उपलब्ध होती है।

अथर्ववेद के उपवेद

- गोपथ ब्राह्मण में अथर्ववेद के 5 उपवेद का उल्लेख है-

  1. सर्पवेद 2. पिशाचवेद 3. असुरवेद 4. इतिहासवेद 5.पुराणवेद

अथर्ववेद के अपर नाम

- ब्रह्मवेद, अथर्वाङ्गिरोवेद, भिषग्वेद, क्षत्रवेद, महीवेद, छन्दोवेद, अंगिरसवेद, भैषज्यवेद, भृग्वंगिरोवेद

अथर्ववेद की शाखाएँ (9)

पैप्पलाद, तौद, मौद, शौनकीय, जाजल, जलद, ब्रह्मवद, देवदर्श, चारणवैद्य

अथर्ववेद उपलब्ध शाखा (2)

पैप्पलाद, शौनकीय

अथर्ववेद के उपवेद (5)

सर्पवेद, पिशाचवेद, असुरवेद, इतिहासवेद, पुराणवेद

अथर्ववेद के अपर नाम

ब्रह्मवेद, अथर्वाङ्गिरोवेद, भिषग्वेद, क्षत्रवेद, महीवेद, छन्दोवेद

अंगिरसवेद, भैषज्यवेद, भृंग्वगिरोवेद

अथर्ववेद की शाखाओं के उल्लेखकर्त्ता

पतञ्जलि (महाभाष्य)	चरणव्यूह	प्रपंचहृदय	सायण
(9)	(9)	(9)	(9)

अथर्ववेद की उपलब्ध शाखा

पैप्पलाद

1. पिप्पलाद ऋषि के नाम पर नामकरण
2. एकमात्र प्रति काश्मीर में शारदा लिपि
3. प्रपञ्चहृदय माट ने 20 काण्ड बताया

शौनकीय

1. वर्तमान में प्रचलित अथर्ववेद संहिता यही है।
2. 20 काण्ड,730 सूक्त, 5987 मन्त्र
3. सबसे बड़ा-काण्ड-20वाँ (958 मन्त्र)
4. सबसे छोटा काण्ड-17 वाँ (30 मन्त्र)
5. गोपथ ब्राह्मण इसी शाखा से है।

अथर्ववेद की उपलब्ध शाखा

1. **शौनकीय शाखा (शौनक)**

➢ आजकल प्रचलित अथर्ववेद संहिता शौनकीय शाखा ही है ।

- इसमें 20 काण्ड,730 सूक्त, 5987 मन्त्र हैं।
- इसमें सबसे बड़े तीन काण्ड हैं -काण्ड-20 (958 मन्त्र)
  काण्ड- 6 (454 मन्त्र)
  काण्ड-19 (453 मन्त्र)
- सबसे छोटा काण्ड-17 वाँ काण्ड है (30 मन्त्र)

2. **पैप्पलाद शाखा**

- पिप्पलाद ऋषि के नाम पर इस शाखा का नामकरण हुआ पैप्पलाद।
- इस शाखा की संहिता 'पैप्पलाद संहिता' है।
- इस शाखा की एकमात्र प्रति काश्मीर में शारदा लिपि में प्राप्त हुई थी।
- तत्कालीन काश्मीर नरेश ने 1875 ई0 में वह प्रति प्रसिद्ध जर्मन विद्वान् डा0 राय को उपहार रूप में दी।
- प्रपञ्चहृदयकार ने पैप्पलाद शाखा का संकेत किया है। उन्होंने पैप्पलाद शाखा को 20 काण्डों का बताया।
- 1901 ई0 में अमेरिका में इसकी फोटो स्टेट प्रति छपी, बाद में डॉ0 रघुवीर ने भी इसका सुन्दर संस्करण प्रकाशित किया ।
- पतञ्जलि के प्रमाण से यह स्पष्ट है कि महाभाष्य काल में अथर्ववेद की यही शाखा सर्वाधिक प्रचलित थी।
- अथर्ववेद के देवता-सोम
- अथर्ववेद के ऋषि- अथर्वा ऋषि
- अथर्ववेद के ऋत्विक् - ब्रह्मा

अथर्ववेद के महत्त्वपूर्ण सूक्त

1. पृथिवीसूक्त (12वाँ काण्ड)
2. ब्रह्मचर्य सूक्त (11वाँ काण्ड)
3. काल सूक्त (19वाँ काण्ड)
4. विवाह सूक्त (14वाँ काण्ड)
5. व्रात्य सूक्त (15वाँ काण्ड)
6. मधुविद्या सूक्त (9वाँ काण्ड)
7. ब्रह्मविद्या सूक्त
8. रोहित सूक्त (13वाँ काण्ड)
9. कौशिक सूक्त
10. आयुष्यकर्म सूक्त
11. भैषज्यकर्म सूक्त
12. आरोग्य मन्त्र सूक्त
13. पौष्टिक मन्त्र
14. शान्ति सूक्त
15. प्रकीर्ण सूक्त

अथर्ववेद

देवता	ऋषि	ऋत्विक्
सोम	अथर्वाऋषि	ब्रह्मा

अथर्ववेद के कुछ महत्त्वपूर्ण सूक्त

* पृथिवीसूक्त * ब्रह्मचर्यसूक्त * कालसूक्त * विवाहसूक्त * व्रात्यसूक्त * मधुविद्यासूक्त * ब्रह्मविद्यासूक्त * रोहितसूक्त * कौशिकसूक्त * आयुष्यकर्मसूक्त * भैषज्यकर्मसूक्त * आरोग्यमन्त्रसूक्त * पौष्टिकमन्त्र * शान्तिसूक्त * प्रकीर्णसूक्त

अथर्ववेद ब्राह्मण

गोपथ ब्राह्मण

पूर्वभाग — (5 प्रपाठक) — 135 कण्डिकाएँ

उत्तरभाग — (6 प्रपाठक) — 123 कण्डिकाएँ

अथर्ववेदीय-ब्राह्मण

- अथर्ववेद का एकमात्र ब्राह्मण गोपथ ब्राह्मण है।
- गोपथ ब्राह्मण पैप्पलाद शाखा से संबद्ध है।
- पैप्पलाद शाखा के अथर्ववेद का प्रथम मन्त्र- 'शं नो देवीरभिष्टये' है।
- गोपथ ब्राह्मण दो भागों में विभक्त है- पूर्वभाग (5 प्रपाठक) उत्तरभाग (6 प्रपाठक) = 11 प्रपाठक हैं।
- पूर्व गोपथ ब्राह्मण में 135 कण्डिकाएँ हैं। उत्तर गोपथ ब्राह्मण में 123 कण्डिकाएँ। कुल मिलाकर गोपथ ब्राह्मण में 11 प्रपाठक 258 कण्डिकाएँ हैं। अथर्ववेद का आरण्यक नहीं उपलब्ध है।

अथर्ववेदीय उपनिषद्

- अथर्ववेद के उपलब्ध उपनिषद् तीन हैं –
  (1) प्रश्नोपनिषद् (2) मुण्डकोपनिषद् (3) माण्डूक्योपनिषद्

प्रश्न उपनिषद्

- यह अथर्ववेद की पैप्पलाद शाखा से सम्बन्धित है जो सम्पूर्ण गद्यमय है।
- पिप्पलाद ऋषि अपने छह शिष्य ऋषियों द्वारा पूछे गए अध्यात्म विषयक प्रश्नों का समुचित उत्तर देते हैं इन प्रश्नों के कारण ही इस उपनिषद् का नाम प्रश्नोपनिषद् पड़ा।

➤ छह शिष्यों के नाम इस प्रकार हैं-

1. कबन्धी कात्यायन 2. भार्गव वैदर्भि 3. कौसल्य आश्वलायन
4. सौर्य्यायणी 5. शैव्यसत्यकाम 6. सुकेशा भारद्वाज

अथर्ववेदीय उपनिषद्

प्रश्न उपनिषद्	**मुण्डक उपनिषद्**	**माण्डूक्य उपनिषद्**
(सम्पूर्ण गद्यमय) * पिप्पलाद ऋषि द्वारा छः शिष्यों को आध्यात्मिक प्रश्नों का उत्तर देना * इसी कारण प्रश्न उपनिषद् नाम पड़ा	(3 मुण्डक) * हर मुण्डक 2-2 *खण्डों में 'सत्यमेव जयते' महावाक्य * 'द्वा सुपर्णा सयुजा' मन्त्र * 'वेदान्त' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग	(लघुकाय) * कुल 12 वाक्य। खण्ड ऋचा कण्डिका *ॐकार का विशेष वर्णन * ब्रह्म की चार अवस्थाएं वर्णित * चतुष्पाद आत्मा का वर्णन

2. मुण्डकोपनिषद्

➤ अथर्ववेदीय मुण्डकोपनिषद् कुल तीन मुण्डकों तथा प्रत्येक मुण्डक दो-दो खण्डों में विभक्त है।

➤ यह मुण्डक अर्थात् संन्यासियों के लिए विरचित है।

➤ इस उपनिषद् में ब्रह्मा ने अपने ज्येष्ठ पुत्र अथर्वा (अर्थवन्) को ब्रह्मविद्या का उपदेश दिया है।

➤ प्रसिद्ध वाक्य **'सत्यमेव जयते'** इसी उपनिषद् में है।

➤ द्वैतवाद का प्रतिपादक **''द्वा सुपर्णा सयुजा''** मन्त्र इसी उपनिषद् का है।

➤ वेदान्त शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम इसी उपनिषद् में उपलब्ध है।

3. माण्डूक्योपनिषद्

➤ यह उपनिषद् लघुकाय है। लघुता के कारण भी और भाव गाम्भीर्य के कारण बहुत महत्त्वपूर्ण है।

➤ इसमें कुल 12 वाक्य/खण्ड / कण्डिकाएँ हैं।

➤ इसमें विशेष रूप से ओम्कार का रहस्य वर्णित है।

➤ इसमें बताया गया है कि यह सारा संसार, वर्तमान, भूत और भविष्य सब कुछ 'ओम्' की ही व्याख्या है।

➤ इसी में ही ब्रह्म की चार अवस्थाएं बताई गई हैं जागृत, स्वप्न, सुषुप्ति, तुरीय।

➤ इसी सन्दर्भ में चतुष्पाद आत्मा का सूक्ष्मविवेचन भी प्राप्त होता है।

अथर्ववेदीय कल्पसूत्र

श्रौतसूत्र	गृह्यसूत्र	धर्मसूत्र	शुल्बसूत्र
वैतानसूत्र	कौशिक सूत्र	उपलब्ध	उपलब्ध
8 अध्याय	14 अध्याय	नहीं हैं।	नहीं हैं।
43 कण्डिकायें	141 कण्डिकायें		

अथर्ववेदीय श्रौतसूत्र

- अथर्ववेद का वैतान श्रौतसूत्र ही उपलब्ध है।
  वैतान श्रौतसूत्र - ब्रह्मा के सभी कर्तव्य, इस श्रौतसूत्र के पहले ही अध्याय में दर्शपूर्ण मास के विवरण में प्रतिपादित हैं।
- यह श्रौतसूत्र गोपथ ब्राह्मण पर आश्रित है।
- इसमें 8 अध्याय और 43 कण्डिकाएँ हैं।
- ये श्रौत कर्म बतलाए गए हैं- दर्शपूर्णमास, अग्न्याधेय, उक्थ्य, षोडशी अतिरात्र, वाजपेय, अग्निचयन, राजसूय आदि।

अथर्ववेदीय-गृह्यसूत्र

- अथर्ववेद का एक मात्र गृह्यसूत्र कौशिक (कौशिकसूत्र) उपलब्ध है।
- कौशिक गृह्यसूत्र का अथर्ववेद की शौनकीय शाखा से विशेष सम्बन्ध है।
- इसका विभाजन 14 तथा 141 कण्डिकाओं में हुआ है।
- शान्तिकर्म और अभिचार कर्मों का विशद विवेचन है।
- इसमें प्रायः प्रायश्चित्त कर्म और भविष्यवाणी का विशद विवेचन है।
- कौशिक सूत्र को 'संहिता विधि' या **'संहिता कल्प'** संज्ञा प्राप्त है।
- अथर्ववेद का धर्मसूत्र नहीं उपलब्ध है।
- अथर्ववेद का शुल्बसूत्र नहीं उपलब्ध है।

अथर्ववेदीय शिक्षा ग्रन्थ

- अथर्ववेद का केवल एक शिक्षाग्रन्थ है – **माण्डूकी शिक्षा**
- यह श्लोकात्मक है।
- साम स्वरों का इसमें विशद विवेचन है। इसमें कुल 179 श्लोक हैं।
- अथर्ववेद के स्वरों तथा वर्णों को भली-भाँति जानने के लिए यह शिक्षा उपयोगी है।

अथर्ववेदीय प्रातिशाख्य

- अथर्ववेद के दो प्रातिशाख्य ग्रन्थ उपलब्ध हैं।
  * शौनकीय चतुरध्यायिका
  * अथर्ववेद प्रातिशाख्य

अथर्ववेदीय शिक्षाग्रन्थ

माण्डूकी शिक्षा

179 श्लोक

साम स्वरों और वर्णों का वर्णन

अथर्ववेदीय प्रातिशाख्य

* शौनकीय चतुरध्यायिका
* 4 अध्याय
* सूत्र संख्या – 434
* सबसे प्राचीन प्रातिशाख्य

* अथर्ववेद प्रातिशाख्य
* 3 प्रपाठक
* प्रथम प्रपाठक में 3 पाद
* द्वितीय और तृतीय प्रपाठक में 4पाद
* कुल सूत्र संख्या 221 है।

1. शौनकीय चतुरध्यायिका

- इसके लेखक शौनक हैं।
- इसमें चार अध्याय हैं और सूत्रसंख्या 434 है।
- 1. ध्वनि विचार 2. सन्धि विवेचन 3. संहिता पाठ में दीर्घत्व, द्वित्व, णत्व, स्वरसन्धि। 4. अवग्रह, प्रगृह्य आदि का विवेचन।
- यही सबसे प्राचीन अथर्ववेदीय प्रातिशाख्य है।
- इसका इंग्लिश अनुवाद के सहित संस्करण डॉ0 व्हिटनी ने प्रकाशित किया है।
  * प्रथम अध्याय में 105 सूत्र
  * द्वितीय अध्याय में 107 सूत्र
  * तृतीय अध्याय में 96 सूत्र
  * चतुर्थ अध्याय में 126 सूत्र

2. अथर्ववेदीय प्रातिशाख्य

- यह प्रपाठकों में विभक्त है।
- प्रपाठक पुनः पादों तथा सूत्रों में विभक्त हैं।
- प्रथम प्रपाठक में 3 पाद हैं।
- द्वितीय और तृतीय प्रपाठक में चार चार पाद हैं।
- कुल सूत्र संख्या 221 है।
- इस प्रातिशाख्य में सन्धि,स्वर तथा पदपाठ के नियम बताये गए हैं।
- जिनमें स्वरों का वर्णन अधिक विस्तार से किया गया है।
- डॉ. सूर्यकान्त ने इसका एक सुन्दर संस्करण 1940 में लाहौर से प्रकाशित किया था।

- इस ग्रन्थ की भाषा शैली सूत्रात्मक है।
- इस प्रातिशाख्य ग्रन्थ में अथर्ववेद के उच्चारण सम्बन्धी नियमों का भी उल्लेख है।

अथर्ववेद के भारतीय भाष्यकार

दुर्गादास लाहिड़ी

- सायण-भाष्य सहित अथर्ववेद (शौनक शाखा) को 5 भागों में प्रकाशित किया।

शंकर पाण्डुरंग -

- अथर्ववेद का सायण भाष्य-सहित संस्करण 4 भागों में निकाला था (बम्बई 1898 ई.)
- यह बहुत शुद्ध संस्करण है।

सातवलेकर

- अथर्ववेद संहिता (शौनकीय) 1943 ई0 में प्रकाशित की।
- इन्होंने 'अथर्ववेद' का सुबोध-भाष्य 5 भागों में प्रकाशित किया।
- इन्हें आधुनिक युग का 'सायण' कहा जाता है।
- यह अथर्ववेद का सर्वोत्तम व्याख्या ग्रन्थ है।
- यह ग्रन्थ श्री सातवलेकर के अगाध वेदज्ञान और अथक परिश्रम का परिचायक है।

क्षेमकरण त्रिवेदी

- सम्पूर्ण ऋग्वेद का हिन्दी भाष्य किया है।

जयदेव विद्यालंकार

- सम्पूर्ण अथर्ववेद का हिन्दी भाष्य किया ।

श्रीरामशर्मा

- इन्होंने इसे हिन्दी अनुवाद के साथ प्रकाशित किया है।

विश्वबन्धु-

- सायण भाष्य सहित अथर्ववेद 5 भागों में निकाला है।

भगवद्दत्त

- अथर्ववेदीय पंचपटलिका और माण्डूकी शिक्षा पर भाष्य टीका लिखी

विश्वबन्धु-

- अथर्ववेदीय प्रातिशाख्य और अथर्ववेदीय बृहत् सर्वानुक्रमणी पर भाष्यटीका लिखी –
- गोपथ ब्राह्मण पर भाष्य लिखा - **राजेन्द्र लाल मिश्र**

क्षेमकरण त्रिवेदी -

- गोपथ ब्राह्मण हिन्दी अनुवाद सहित प्रकाशित किया।

डॉ0 विजयपाल शास्त्री-

➢ गोपथ ब्राह्मण पर भाष्य मिलता है।

अथर्ववेदीय पाश्चात्त्य विद्वान्

रोठ और ह्विटनी

➢ अथर्ववेद संहिता (शौनकीय शाखा) का सर्वप्रथम संपादन किया और 1856 ई0 में उसे प्रकाशित किया।

ब्लूम फील्ड और गार्बे

➢ अथर्ववेद (पैप्पलाद शाखा) की एक अति जीर्ण काश्मीर से शारदा लिपि में प्राप्त प्रति से फोटो-प्रति तीन बड़ी जिल्दों में 1901 ई0 में छपवाई।

कैलेण्ड-

➢ अथर्ववेद- संहिता का एक आलोचनात्मक संस्करण उट्रिच (हालैंड) से प्रकाशित किया।

ग्रिफिथ-

➢ अथर्ववेद का अंग्रेजी में पद्यानुवाद वाराणसी से 1895-1898 में छपवाया था।

ह्विटनी और लानामान-

➢ अथर्ववेद का अंग्रेजी में अनुवाद 150 पृष्ठ की भूमिका तथा विविध टिप्पणियों से युक्त है।

➢ जो 1905 ई0 में दो भागों में प्रकाशित किया।

ब्लूमफील्ड

➢ पैप्पलाद संहिता का अंग्रेजी में अनुवाद 1901 ई0 में प्रकाशित किया था ।

अथर्ववेदीय ब्राह्मण के पाश्चात्त्य अनुवादक

गास्ट्रा-

➢ गोपथ ब्राह्मण का एक सुन्दर संस्करण 1919 ई0 में प्रकाशित किया।

अथर्ववेदीय कल्पसूत्र के पाश्चात्त्य अनुवादक

ब्लूमफील्ड-

➢ अथर्ववेदीय कौशिक सूत्र 1890 ई0 में प्रकाशित किया था ।

अथर्ववेद संहिता -एक दृष्टि में

➢ **आचार्य -** सुमन्तु, **ऋषि-**अथर्वा, **ऋत्विक्-** ब्रह्मा

➢ **उपवेद-** पिशाचवेद, सर्पवेद,पुराणवेद,इतिहासवेद,असुरवेद

➢ **अपरनाम -** ब्रह्मवेद, क्षत्रवेद, महीवेद, भैषज्यवेद, छन्दोवेद, भिषग्वेद, अथर्वाङ्गिरोवेद, आंगिरसवेद, भृग्वंगिरो वेद

➢ **विभाजन-** 20 काण्ड

➢ **उत्पत्ति देवता-** सोम

➢ **शाखायें-**
- पैप्पलाद
- मौद
- जाजल
- ब्रह्मवद
- चारणवैद्य
- तौद
- शौनकीय
- जलद
- देवदर्श

➢ **उपलब्ध शाखा-** पैप्पलाद, शौनकीय (शौनक)

➢ **ब्राह्मण-** गोपथ ब्राह्मण

➢ **आरण्यक-** नहीं है (उपलब्ध नहीं)

➢ **उपनिषद्-** प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य

➢ **श्रौतसूत्र-** वैतान श्रौतसूत्र

➢ **गृह्यसूत्र-** कौशिक गृह्यसूत्र

➢ **धर्मसूत्र-** उपलब्ध नहीं

➢ **शुल्बसूत्र-** उपलब्ध नहीं

➢ **शिक्षा-** माण्डूकी शिक्षा

➢ **प्रातिशाख्य-** 1. शौनकीय चतुरध्यायिका
2. अथर्ववेद प्रातिशाख्य

भारतीय भाष्यकार-

1. दुर्गादास लाहिड़ी
2. शंकर पांडुरंग पण्डित
3. सातवलेकर
4. क्षेमकरण त्रिवेदी
5. जयदेव विद्यालंकार
6. श्रीराम शर्मा
7. विश्वबन्धु
8. डॉ0 रघुवीर
9. भगवद् दत्त
10. डॉ0 विजयपाल शास्त्री
11. राजेन्द्र लाल मिश्र

पाश्चात्त्य अनुवादक

1. रोठ और ह्निटनी
2. ब्लूमफील्ड और गार्वे
3. कैलेन्ड
4. ग्रिफिथ
5. ह्निट्नी और लानमान
6. गास्ट्रा

❑❑

6. ब्राह्मण-ग्रन्थ

- ब्राह्मण शब्द 'ब्रह्मन्' शब्द से 'अण्' प्रत्यय होने पर बना है।
- **ब्राह्मण शब्द के तीन अर्थ –**

  (1) शतपथ ब्राह्मण के अनुसार 'ब्रह्मन्' शब्द का अर्थ-मन्त्र है **'ब्रह्म वै मन्त्रः'**। (शतपथ ब्राह्मण-7.1.1.5) अतः वेदमन्त्रों की व्याख्या और विनियोग प्रस्तुत करने वाले ग्रन्थ को 'ब्राह्मण' कहते हैं।

  (2) शतपथ के अनुसार ही 'ब्रह्मन्' शब्द का दूसरा अर्थ- 'यज्ञ' है **'ब्रह्म यज्ञः'** (शतपथ-3.1.4.15)

  (3) ब्रह्मन् शब्द का एक अन्य अर्थ है-'पवित्र ज्ञान या रहस्यात्मक विद्या'।
- जिन ग्रन्थों में वैदिक रहस्यों का उद्घाटन किया गया है, उन्हें 'ब्राह्मण' कहते हैं।
- **ब्राह्मण का अर्थ –** मीमांसा-दर्शन का कथन है कि - 'मन्त्रभाग या संहिताग्रन्थों के अतिरिक्त वेद-भाग को ब्राह्मण कहते हैं।'
- **भट्ट भास्कर –** भट्ट भास्कर का कथन है कि - 'कर्मकाण्ड और मन्त्रों के व्याख्यान ग्रन्थों को 'ब्राह्मण' कहते हैं। **'ब्राह्मणं नाम कर्मणस्तन्मन्त्राणां व्याख्यानग्रन्थः'।**
- **वाचस्पति के अनुसार-** ब्राह्मण उन ग्रन्थों को कहते हैं- जिनमें निर्वचन (निरुक्ति), मन्त्रों का विविध यज्ञों में विनियोग, प्रयोजन प्रतिष्ठान (अर्थवाद) और विधि का वर्णन होता है।

  नैरुक्त्यं यत्र मन्त्रस्य विनियोगः प्रयोजनम्।
  प्रतिष्ठानं विधिश्चैव ब्राह्मणं तदिहोच्यते॥
- ग्रन्थ अर्थ में ब्राह्मण शब्द नपुंसकलिङ्ग में होता है।
- ब्राह्मण शब्द का ग्रन्थ अर्थ में प्रयोग अष्टाध्यायी, निरुक्त, शतपथ ब्राह्मण और ऐतरेय ब्राह्मण आदि में प्राप्त होता है।
- पाणिनि की अष्टाध्यायी में 'अनुब्राह्मण' का भी उल्लेख प्राप्त होता है-
  'अनुब्राह्मणादिनिः' (अष्टा. - 4.2.62)
- काशिका में ब्राह्मण के सदृश ग्रन्थ को 'अनुब्राह्मण' कहा गया है।
- ये अनुब्राह्मण लघुकाय ब्राह्मण ग्रन्थ हैं। इनमें किसी एक अंश का ही विवेचन मिलता है।

मन्त्र-ब्राह्मण-

- संहिताओं में उपलब्ध मन्त्र भाग का कर्मकाण्ड में विनियोग होता है।
- ब्राह्मणभाग मन्त्रों के विनियोग की विधि को बताता है।
- एक मूल है दूसरा उसका व्याख्यान या भाष्य।
- यज्ञों में मन्त्रों से आहुति दी जाती है, ब्राह्मण भाग उसकी उपयोगिता और विधि को बताता है।
- वैदिक वाङ्मय एवं वैदिक साहित्य में ब्राह्मण, आरण्यक, और उपनिषदों का भी समावेश है।
- वेद शब्द का गौण अर्थ वैदिक साहित्य लेने पर ब्राह्मण ग्रन्थों को भी वेद कहा जा सकता है।
- 'मन्त्रब्राह्मणयोर्वेदनामधेयम्' (आपस्तम्ब श्रौतसूत्र 1.33) मन्त्र और ब्राह्मणग्रन्थों को वेद कहते हैं।

ब्राह्मण ग्रन्थों का विषय और भाषा-शैली

- मुख्य विषय- विधि अर्थात् यज्ञ कब और कहाँ किया जाय, यज्ञ के अधिकारी, यज्ञ के लिये आवश्यक साधन एवं सामग्री आदि।
- संहिताग्रन्थ स्तुतिप्रधान हैं तो ब्राह्मणग्रन्थ विधि प्रधान।
- ब्राह्मणों की भाषा वैदिक संस्कृत और लौकिक संस्कृत को जोड़ने वाली सुन्दर कड़ी है।
- ब्राह्मणों में वैदिक और लौकिक शब्दावली का समन्वय है।
- वैदिक लेट्लकार का प्रयोग अतिविरल है। तुमर्थक प्रत्ययों के प्राचीनरूप यत्र-तत्र दिखाई पड़ते हैं।
- ब्राह्मणों की भाषा में प्रसादगुण का बाहुल्य है। भाषा सरल, सरस और रोचक है।

ऋषि और आचार्य में अन्तर –

- आश्वलायन गृह्यसूत्र में ऋषि और आचार्य में अन्तर किया गया है।
- मन्त्रद्रष्टा को ऋषि कहते हैं और ब्राह्मणग्रन्थों के द्रष्टा या रचयिता को आचार्य कहते हैं।
- **आचार्यों के तीन गण (वर्ग) बताए गए हैं-**

  (1) माण्डूकेय गण (2) शांखायन गण (3) आश्वलायन गण
- **ब्राह्मणग्रन्थों के रचयिता हैं-** कौषीतकि, भारद्वाज, याज्ञवल्क्य, शांखायन, ऐतरेय, बाष्कल, शाकल, गार्ग्य, शौनक और आश्वलायन।
- **ब्राह्मणग्रन्थों का प्रतिपाद्य विषय**
- ब्राह्मणग्रन्थों का मुख्य प्रतिपाद्य विषय है- यज्ञ एवं यज्ञ- प्रक्रिया का सर्वाङ्गीण विवेचन।

- यज्ञमीमांसा के दो मुख्य भाग – 1. विधि 2. अर्थवाद।
- विधि का अभिप्राय- यज्ञप्रक्रिया का विस्तृत निरूपण।
- आपस्तम्ब का कथन है- **'कर्मचोदना ब्राह्मणानि'** अर्थात् ब्राह्मण ग्रन्थ विविध यज्ञरूप कर्मों में मनुष्यों को प्रेरित करते हैं।
- अर्थवाद का अभिप्राय है- स्तुति या निन्दापरक विविध विषय।
- वाचस्पति मिश्र ने ब्राह्मणग्रन्थों के चार प्रयोजन बताये हैं-

(1) **निर्वचन=**शब्दों की निरुक्ति बताना, किसी वस्तु का नाम क्यों पड़ा, या धातु को बताना आदि।

(2) **विनियोग=** किस यज्ञ की किस विधि में किन-किन मन्त्रों का पाठ किया जायेगा पूरा विवरण बताना।

(3) **प्रतिष्ठान=** प्रतिष्ठान का अर्थ है- अर्थवाद। यज्ञ की विधियों की प्रशंसा या निन्दा करना।

(4) **विधि=** यज्ञ और उससे सम्बद्ध कार्यों का विस्तृत वर्णन बताना। यज्ञ कब, कहाँ, कैसे होगा, किस यज्ञ के लिये क्या सामग्री अपेक्षित है तथा ऋत्विज् क्या कार्य करेगा आदि का वर्णन।

नैरुक्त्यं यत्र मन्त्रस्य विनियोगः प्रयोजनम्।
प्रतिष्ठानं विधिश्चैव ब्राह्मणं तदिहोच्यते।। (वाचस्पति मिश्र)

- मीमांसा दर्शन के भाष्य में शबरस्वामी ने ब्राह्मण विषयों को कुछ और विस्तृत करते हुये ब्राह्मण-ग्रन्थों के प्रतिपादित विषयों की संख्या दश बतायी है।

हेतुर्निर्वचनं निन्दा प्रशंसा संशयो विधिः।
परक्रिया पुराकल्पो व्यवधारण-कल्पना।।
उपमानं दशैते तु विधयो ब्राह्मणस्य वै।। (मीमांसासूत्र- शाबरभाष्य 2.18)

- ब्राह्मण विषय- 1. हेतु 2. निर्वचन 3. निन्दा 4. प्रशंसा 5. संशय 6. विधि 7. परक्रिया 8. पुराकल्प 9. व्यवधारण-कल्पना 10. उपमान

1. **हेतु-** यज्ञ में कोई कार्य क्यों किया जाता है, इसका कारण बताना।
2. **निर्वचन-** शब्दों की निरुक्ति बताना। जैसे- नद् (शब्द करना)
3. **निन्दा-** यज्ञ मे निषिद्ध कर्मों की निन्दा। जैसे- यज्ञ में असत्य भाषण निषिद्ध है। असत्य भाषण की निन्दा करना।
4. **प्रशंसा-** यज्ञ में विहित कार्यों की प्रशंसा करना। जैसे- **'यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म'** अर्थात् यज्ञ सर्वश्रेष्ठ कर्म है, अतः अवश्य करना चाहिए।
5. **संशय-** किसी यज्ञिय कर्म के विषय में कोई सन्देह उपस्थित हो तो उसका निवारण करना।
6. **विधि-** विधि का अभिप्राय है- यज्ञिय क्रियाकलाप की पूरी विधि का विशद निरूपण।

7. **परक्रिया-** इसके अर्थ के विषय में पर्याप्त मतभेद है। परक्रिया का भाव है- परार्थक क्रिया, परहित या परोपकार वाले कर्तव्यों का वर्णन। इसमें इष्टापूर्त का समावेश है। इष्ट का अर्थ है- विविध याग आदि। पूर्त का अर्थ- धर्मार्थ कार्य जैसे- कूप, तडाग आदि का निर्माण।
8. **पुराकल्प-** यज्ञ की विभिन्न विधियों के समर्थन में किसी प्राचीन आख्यान या ऐतिहासिक घटना का वर्णन करना। जैसे- राजा के अभाव में जनता भयभीत रहती थी, अतः राजा के वरण की व्यवस्था की गई।

   हरिश्चन्द्रोपाख्यान में प्रसिद्ध 'चरैवेति' – 'चरैवेति' चलते रहो, चलते रहो आदि का निर्देश।
9. **व्यवधारण- कल्पना-** परिस्थिति के अनुसार कार्य की व्यवस्था करना।

   सायण ने इसका उदाहरण दिया है – जितनें घोड़े हों, उतने जल भरे पात्र रखें। घोड़ों की संख्या के अनुसार आसनों की व्यवस्था की जायेगी।
10. **उपमान-** कोई उपमा या उदाहरण देकर वर्ण्य विषय की पुष्टि करना। जैसे- ऐतरेय ब्राह्मण मे 'चरैवेति' की पुष्टि में सूर्य का उदाहरण प्रस्तुत किया गया है। सूर्य निरन्तर चलता रहता है, अतः उसकी तेजस्विता बनी रहती है।

    सूर्यस्य पश्य श्रेमाणं यो न तन्द्रयते चरन्। चरैवेति

ब्राह्मणग्रन्थों की संख्या

➢ प्रतिशाखा के अनुसार प्रत्येक शाखा के ब्राह्मण ग्रन्थ थे। काल के प्रभाव से अधिकतर लुप्त हो गये हैं, तथापि कुछ ब्राह्मण ग्रन्थ उपलब्ध हैं।

ब्राह्मणग्रन्थ निम्न हैं-

(1). ऋग्वेद- 1. ऐतरेय ब्राह्मण 2. शांखायन ब्राह्मण (कौषीतकि)

(2). यजुर्वेद- 1. शुक्लयजुर्वेद – शतपथब्राह्मण
2. कृष्णयजुर्वेद – तैत्तिरीय ब्राह्मण

(3). सामवेद-

1. ताण्ड्य ब्राह्मण
2. षड्विंश ब्राह्मण
3. सामविधान ब्राह्मण
4. आर्षेय ब्राह्मण
5. दैवत ब्राह्मण
6. छान्दोग्य ब्राह्मण
7. संहितोपनिषद् ब्राह्मण
8. वंश ब्राह्मण
9. जैमिनीय ब्राह्मण

(4) अथर्ववेद- गोपथ ब्राह्मण

ऋग्वेदीय ब्राह्मण

ऐतरेय ब्राह्मण-

- ऋग्वेद का प्रधान ब्राह्मण 'ऐतरेय' है। इस ब्राह्मण का कर्त्ता 'ऐतरेय महीदास' को माना जाता है।
- ऐतरेय ब्राह्मण में 40 अध्याय हैं। पाँच अध्यायों से युक्त एक पञ्चिका है।

अध्याय - 40	पञ्चिका - 8	कण्डिकायें - 285

- इस ब्राह्मण का प्रधान विषय होत्रकर्म हेतु ऋचाओं के विनियोग का निरूपण करना है।
- इस ब्राह्मण में सोमयाग का विस्तृत विवेचन है।
- प्रथम सोलह (16) अध्यायों में अग्निष्टोम याग का विवेचन हुआ है।
  (17) सत्रह एवं अठ्ठारह (18) वें अध्याय में 360 दिवसपर्यन्त सम्पन्न होने वाले गवामयन सत्र का विचार निरूपित है।
- 19 से 24 अध्याय पर्यन्त द्वादशाहयाग का वर्णन है।
- 25 से 32 अध्याय में अग्निहोत्र की व्यवस्था निरूपित है।
- अन्तिम 8 अध्यायों में राज्याभिषेक की विधि विस्तृत रूप में वर्णित है।
- इसके प्रथम और द्वितीय पञ्चिका में एक दिन में सम्पन्न होने वाले 'अग्निष्टोम' नामक सोमयाग में होतृ के विधि-विधानों एवं कर्तव्यों का वर्णन है।
- तृतीय और चतुर्थ पञ्चिका में प्रातः सवन, माध्यन्दिन सवन, सायं सवन विधि के साथ अग्निहोत्र का प्रयोग बताया गया है।
- पञ्चम में द्वादशाह यागों तथा षष्ठ पञ्चिका में सप्ताहों तक चलने वाले सोमयागों एवं उनके होता तथा सहायक ऋत्विजों के कार्यों का विवेचन है।
- सप्तम पञ्चिका में राजसूय यज्ञ तथा शुनःशेप का आख्यान वर्णित है।
- अष्टम पञ्चिका में ऐतिहासिक विवरण है। इसमें प्रथम 'ऐन्द्र महाभिषेक' तदनन्तर चक्रवर्ती नरेशों के अभिषेक का चित्रण है।
- ऐतरेय ब्राह्मण में इन्द्र को सब देवों में श्रेष्ठ बताया गया है। वह सबसे अधिक शक्तिशाली, साहसी और दूर तक पार लगाने वाला है।

'स वै देवानामोजिष्ठो बलिष्ठः सत्तमः पारयिष्णुतमः' (ऐतरेय ब्राह्मण- 7/16)

- जन्म से ही ब्राह्मण पर तीन ऋण होते हैं-

ऋण
1. देव ऋण
2. ऋषि ऋण
3. पितृ ऋण
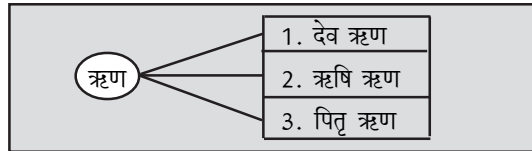
- इन तीनों ऋणों का परिशोधन यज्ञ या पुत्रोत्पत्ति के द्वारा होता है।

- ऐतरेय ब्राह्मण में शुनःशेप का आख्यान अनेक दृष्टियों से पठनीय है।
- शुनःशेप ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के अनेक सूक्तों के द्रष्टा ऋषि हैं।
- इक्ष्वाकुवंशीय राजा हरिश्चन्द्र के कोई सन्तान नहीं थी। नारद के उपदेश से उन्होनें वरुण के पास जाकर व्रत लिया कि यदि मेरे पुत्र होगा तो उसे वरुणदेव को समर्पित कर दूँगा।
- राजा के घर एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम रोहित था। किन्तु राजा बलि देने के लिये उसे उपयुक्त न समझ व्रत को टालता गया और रोहित प्रौढावस्था को प्राप्त हो गया।
- अन्त में राजा पुत्र को बलि देने के लिये तैयार हो गया किन्तु अवसर पाकर रोहित घर से भाग निकला और जंगलों में इधर उधर भटकता रहा। इसी बीच राजा को वरुण के शाप से जलोदर रोग हो गया।
- यह समाचार सुनकर रोहित घर लौट आया और अजीगर्त ब्राह्मण के पास जाकर उसके मध्यम पुत्र शुनःशेप को सौ गायें देकर खरीद लेता है।
- शुनःशेप का पिता अपने पुत्र की बलि देने के लिये तैयार हो जाता है और शुनःशेप को यूप में बाँध दिया किन्तु शुनःशेप ऐसे अवसर पर देवताओं की स्तुति करता है। जैसे-जैसे स्तुति करता गया वैसे-वैसे वरुण का पाश टूटता गया और महाराज हरिश्चन्द्र का रोग भी घटता गया।
- अन्त में 'शुनःशेप' पाशमुक्त हो गया। राजा भी रोग से मुक्त हो गया। अन्त में शुनःशेप ने अपने लोभी पिता को छोड़ दिया और विश्वामित्र ने उसे दत्तक पुत्र के रूप में स्वीकार कर लिया।
- ऐतरेय ब्राह्मण में सोम-हरण का भी आख्यान प्राप्त होता है।
- गोविन्दस्वामी तथा सायणाचार्य के भाष्यों से यह ब्राह्मण विभूषित है। इसका सम्पादन एवं प्रकाशन सर्वप्रथम प्रो0 हाउग ने बम्बई से 1893 ई. में किया था।
- इसके बाद आउफ्रेख्त महोदय ने कई उपयोगी सूचियों के साथباननगर से 1879 ई. में प्रकाशित किया जिसकी लिपि रोमन है।
- **ऐतरेय ब्राह्मण के अन्य वर्णन-**
  - देवासुर युद्ध
  - सोमोत्पत्ति
  - यज्ञदेवता
  - वषट्कार के षट्तत्त्व
  - साम्राज्याभिषेक
  - विश्वामित्र एवं वामदेव
  - क्षत्रिय और यज्ञ
  - सुब्रह्मण्य वाक्

2. शांखायन ब्राह्मण या कौषीतकि ब्राह्मण-

- ऋग्वेद का द्वितीय ब्राह्मण शांखायन ब्राह्मण है। इस ब्राह्मण का अपर नाम कौषीतकि है।
- यह शांखायन शाखा का ब्राह्मण है इसलिये इसे शांखायन ब्राह्मण कहते हैं।
- कौषीतकि ब्राह्मण का प्रथम सम्पादन 1887 ई. में लिण्डनर ने किया । तदनन्तर 1920 ई. में ए. बी. कीथ ने अंग्रेजी अनुवाद के साथ इसका प्रकाशन किया।
- 1911 में गुलाब राय द्वारा सम्पादित शांखायन ब्राह्मण आनन्दाश्रम पूना से प्रकाशित हो चुका है।
- इस ब्राह्मण ग्रन्थ में **30 अध्याय** हैं। प्रत्येक अध्याय में पाँच से लेकर सत्रह खण्ड हैं। खण्डों की संख्या 266 है।
- प्रथम छः अध्यायों में अग्न्याधान, अग्निहोत्र, दर्शपूर्णमास इष्टि ऋतुयाग का निरूपण है।
- सात अध्याय से 30 अध्याय तक ऐतरेय ब्राह्मण के समान सोमयाग का वर्णन है।
- चरणव्यूह की महीदास कृत टीका में एक श्लोक उद्धृत है, जिसमें स्पष्ट कहा है कि शांखायनी शाखा एवं ब्राह्मण कौषीतकि है।
- इस ब्राह्मण के प्रसार का वर्णन निम्न श्लोक में है –

उत्तरे गुर्जरे देशे वेदो बह्वृच ईरितः।
कौषीतकिब्राह्मणं च शाखा शांखायनी स्थिता।।

- इसके प्रधान प्रवक्ता कौषीतकि ऋषि थे।

अध्याय	कुल खण्ड संख्या
30	266

- **अध्यायों के अनुसार प्रतिपाद्य विषय-**

अध्याय-1 अग्न्याधान

अध्याय-2 अग्निहोत्र

अध्याय-3 दर्श और पूर्णमास यज्ञ

अध्याय-4 अनुनिर्वाप्या, अभ्युदिता, अभ्युद्दृष्टा आदि 11 विशेष इष्टियाँ

अध्याय-5 चातुर्मास्य यज्ञ

अध्याय-6 ब्रह्मा के कर्तव्य, हविर्यज्ञ

अध्याय-7-30 सोमयज्ञ का विस्तृत वर्णन

यजुर्वेदीय ब्राह्मण-

यजुर्वेद की दो शाखा	1.कृष्णयजुर्वेद
	2. शुक्लयजुर्वेद

शुक्लयजुर्वेद का ब्राह्मण -शतपथ ब्राह्मण

- इसके रचयिता वाजसनि के पुत्र याज्ञवल्क्य माने जाते हैं।

- वाजसनि के पुत्र होने से इन्हें 'वाजसनेय' भी कहा जाता है।
- सूर्य की कृपा से प्राप्त शुक्ल यजुर्वेद की व्याख्या वाजसनेय याज्ञवल्क्य ने की।

'आदित्यानीमानि शुक्लानि यजूंषि वाजसनेयेन याज्ञवल्क्येन आख्यायन्ते।'

(शत. -14.9.4.33)

- याज्ञवल्क्य के पिता वाजसनि के विषय में सायण ने लिखा है कि वे अन्नदाता (वाज=अन्न, सनि=दाता) के रूप में विख्यात थे, अतः उनका नाम वाजसनि पड़ा।
- भागवत के अनुसार याज्ञवल्क्य के पिता का नाम 'देवरात' था।
- ब्रह्मरात और देवरात का अर्थ है- ब्रह्मदत्त और देवदत्त।
- स्कन्दपुराण के अनुसार याज्ञवल्क्य की माता का नाम 'सुनन्दा' था।
- बृहदारण्यकोपनिषद् के अनुसार याज्ञवल्क्य की दो पत्नियाँ थीं- मैत्रेयी और कात्यायनी।
- स्कन्दपुराण में कात्यायन और पारस्कर को एक मानकर उन्हें याज्ञवल्क्य का पुत्र बताया गया है।
- यजुर्वेद का गृह्यसूत्र 'पारस्कर गृह्यसूत्र' पारस्कर की रचना है।
- पुराणों में याज्ञवल्क्य की अनेक सिद्धियों का उल्लेख है। वे शुक्लयजुर्वेद और शतपथ ब्राह्मण के सम्पादन के अतिरिक्त याज्ञवल्क्य शिक्षा, याज्ञवल्क्यस्मृति आदि के प्रणेता माने जाते हैं।
- नामकरण- शतपथ में 100 अध्याय हैं, अतः उसे 'शतपथ' कहा जाता है।
- इसकी व्याख्या गणरत्न महोदधि ने इस प्रकार की है जिसमें सौ अध्याय-रूपी मार्ग हैं उसे शतपथ कहतें हैं- **'शतं पन्थानो मार्गा नामाध्याया यस्य तत् शतपथम्'**
- काण्व शतपथ में 104 अध्याय हैं, तथापि शत-संख्या के महत्त्व के कारण उसे शतपथ ही कहा जाता है।
- यह माध्यन्दिन और काण्व दोनों शाखाओं में प्राप्त होता है।
- माध्यन्दिन शाखा के शतपथ ब्राह्मण में अध्याय = 100
- काण्व शाखा के शतपथ ब्राह्मण में अध्याय = 104

शतपथ ब्राह्मण (माध्यन्दिनशाखा) में प्रतिपादित विषय-

- माध्यन्दिन (शुक्लयजुर्वेदीय) शतपथ ब्राह्मण में 14 काण्ड, 100 अध्याय, 438 ब्राह्मण और 7624 कण्डिकायें हैं।

काण्ड	अध्याय	ब्राह्मण	कण्डिकायें
14	100	438	7624

- सम्पूर्ण ग्रन्थ 14 भागों में विभक्त है, इन्हें काण्ड कहते हैं।
- काण्डों के उपविभाग अध्याय हैं और अध्यायों के उपविभाग ब्राह्मण हैं।

- इन ब्राह्मणों के भी उपविभाग हैं, इन्हें कण्डिका कहते हैं।
- इसप्रकार इसके सन्दर्भ- निर्देश के लिए 4 संख्याएँ आती हैं-
  पहली संख्या काण्ड को, दूसरी अध्याय तीसरी ब्राह्मण तथा चौथी कण्डिका की सूचना देती है।
- काण्ड-1 = दर्श और पूर्णमास याग
- काण्ड-2 = अग्निहोत्र पिण्डपितृयज्ञ, दाक्षायण याग, नवान्नेष्टि, चातुर्मास्य याग।
- काण्ड-3 और 4= सोमयाग
- काण्ड-5 = वाजपेय और राजसूय यज्ञ
- काण्ड-6 = सृष्टि-उत्पत्ति, चयन-निरूपण
- काण्ड-7/8 = चयन निरूपण, वेदि-निर्माण
- काण्ड-9/10= चयननिरूपण, छोटी और बड़ी वेदियों का निर्माण
- काण्ड-11 = दर्श-पूर्णमास, दाक्षायण यज्ञ, उपनयन, पञ्च महायज्ञ, स्वाध्याय-प्रशंसा।
- काण्ड-12 = द्वादशाह, संवत्सर सत्र, ज्योतिष्टोम, सौत्रामणी याग, प्रायश्चित्त।
- काण्ड-13 = अश्वमेध, पुरुषमेध, सर्वमेध, दशरात्र, पितृमेध
- काण्ड-14 = प्रवर्ग्ययाग, ब्रह्मविद्या, बृहदारण्यक उपनिषद्

शतपथ ब्राह्मण (काण्व शाखा) का प्रतिपाद्य विषय

- काण्व शतपथ ब्राह्मण में माध्यन्दिन शतपथ ब्राह्मण से कुछ क्रम-विन्यास में अन्तर है।
- इसमें 17 काण्ड, 104 अध्याय, 435 ब्राह्मण और 6806 कण्डिकाएँ हैं।
- माध्यन्दिन के काण्ड 2 का वर्ण्य विषय काण्ड एक में कर दिया गया है और काण्ड एक का विषय काण्ड दो में है।

वर्ण्य विषय इस प्रकार है-

- काण्ड-1 = अग्निहोत्र, नवान्न इष्टि (आग्रयण इष्टि) दाक्षायण, चातुर्मास्य
- काण्ड-2 = दर्श और पूर्णमास याग
- काण्ड-3 = अग्निहोत्र और दर्श-पूर्णमास यागों का अर्थवाद
- काण्ड-4/5 = सोमयाग
- काण्ड 6 और 7= वाजपेय और राजसूय
- काण्ड- 8 = उखासंभरण
- काण्ड 9 से 12= विभिन्न चयन याग
- काण्ड-13 = आधानकाल, पथिकृत्, ब्रह्मचर्य, दर्श-पूर्णमास
- काण्ड-14 = सौत्रामणी, प्रायश्चित्त
- काण्ड-15 = अश्वमेध
- काण्ड-16 = प्रवर्ग्य याग
- काण्ड-17 = बृहदारण्यक उपनिषद्, ब्रह्मविद्या
- दोनों ब्राह्मणों में प्रतिपाद्य विषय एक होने पर भी क्रम में भेद है।

- शतपथ की अन्य विशेषता यह है कि इसमें वाजसनेयी संहिता के 18 अध्यायों की क्रमबद्ध व्याख्या प्रथम 9 काण्डों में मिल जाती है।
- केवल अन्तर यह है कि संहिता में पिण्ड-पितृयज्ञ का वर्णन दर्श-पूर्णमास याग के बाद है और ब्राह्मण में अग्निहोत्र के बाद।

शतपथ ब्राह्मण का समय-

- डॉ. मैक्डानल आदि पाश्चात्त्य विद्वान् ब्राह्मण ग्रन्थों का काल 800 ई. पू. से 500 ई. पू. के मध्य मानते हैं।
- श्रीशंकर बालकृष्ण दीक्षित ने शतपथ ब्राह्मण का रचना काल 2500 ई. पू. के लगभग माना है।
- शतपथ ब्राह्मण और तैत्तिरीय ब्राह्मण ही संहिता ग्रन्थों के तुल्य स्वरचिह्नों से युक्त हैं। यह इसकी प्राचीनता का द्योतक है। इन कारणों से इसका रचनाकाल 2500 ई.पू. के लगभग मानना उचित है।

शतपथ के महत्त्वपूर्ण आख्यान-

1. मनु एवं श्रद्धा (1.1.4.14 से 16)
2. जलप्लावन की कथा तथा मत्स्य (1.8.1)
3. इन्द्र-वृत्र-युद्ध तथा इन्द्रशत्रुर्वर्धस्व (1.6.3.)
4. स्त्री-कामुक गन्धर्व (3.2.4.3.)
5. कद्रू-सुपर्णी (3.6.2.)
6. च्यवन-सुकन्या (4.1.5.)
7. पुरूरवा-उर्वशी (11.5.1.)

- इन सबका इतिहास और पुराणों में बहुत विस्तार से वर्णन हुआ है।

यजुर्वेदीय ब्राह्मण (कृष्ण यजुर्वेद) = तैत्तिरीय ब्राह्मण

- तैत्तिरीय ब्राह्मण के रचयिता वैशम्पायन के शिष्य आचार्य तित्तिरि हैं।
- महाभारत के शान्तिपर्व में वैशम्पायन को याज्ञवल्क्य का मातुल (मामा) बताया गया है।
- वैशम्पायन का झुकाव तित्तिरि की ओर था, अतः उन्होंने याज्ञवल्क्य को अपमानित कर उसे अपनी शिष्यता से वंचित कर दिया था।
- तित्तिर ने तैत्तिरीय संहिता और तैत्तिरीय ब्राह्मण की रचना की। दूसरी ओर याज्ञवल्क्य ने यजुर्वेद की माध्यन्दिन शाखा और शतपथ ब्राह्मण का संकलन किया।
- तैत्तिरीय ब्राह्मण के अन्तर्गत सम्मिलित काठकभाग (3.10. से 12) के प्रवक्ता काठक आचार्य हैं।
- इस शाखा का दक्षिण भारत के आन्ध्रप्रदेश, नर्मदा के दक्षिणी भाग तथा गोदावरी के तटवर्ती प्रदेशों में अधिक प्रचार था।

तैत्तिरीय ब्राह्मण में प्रतिपादित विषय-

- कृष्णयजुर्वेदीय शाखा का एकमात्र ये ही ब्राह्मण संप्रति पूरा उपलब्ध है। काठक के कुछ अंश प्राप्त हैं।
- शतपथ ब्राह्मण के तुल्य विशालकाय है।
- यह तीन काण्डों या अष्टकों में विभाजित है।
- प्रथम और द्वितीय काण्ड में 8-8 अध्याय /प्रपाठक हैं।
- तृतीयकाण्ड में 12 अध्याय (प्रपाठक) हैं। इनके उपखण्डों को 'अनुवाक' कहते हैं। अनुवाकों की संख्या – 353 है।
- काण्डों में प्रतिपाद्य विषय

काण्ड		विषय
काण्ड-1	–	अग्न्याधान, गवामयन, वाजपेय, राजसूय-याग
काण्ड-2	–	अग्निहोत्र, सौत्रामणी, उपहोम आदि।
काण्ड-3	–	पुरुषमेध और नक्षत्रेष्टियाँ

काण्डत्रयम्

काण्ड		अध्याय
1. प्रथम काण्ड	=	8
2. द्वितीय काण्ड	=	8
3. तृतीय काण्ड	=	12

- ऋग्वेद से अधिकतर ऋचाएँ ली गयी हैं कुछ ऋचाएँ नवीन हैं।
- काण्ड 2 में ऋग्वेद के नासदीयसूक्त (ऋग्. 10.129) के मन्त्रों का विनियोग एक उपहोम (2.8) के लिए किया गया है।
- यज्ञ को पृथिवी का अन्त और मध्य माना गया है।

  वेदिमाहुः परमन्तं पृथिव्याः। वेदिमाहुर्भुवनस्य नाभिम्। (तैत्ति. 2.7.4 से 10)
- तृतीय काण्ड अवान्तरकालीन रचना माना जाता है जिसमें प्रथमतः 'नक्षत्रेष्टि' का विस्तृत वर्णन है।
- चतुर्थ प्रपाठक में पुरुषमेध के उपयुक्त पशुओं का वर्णन है, जो कृष्णयजुर्वेद की संहिता में उपलब्ध नहीं होता प्रत्युत माध्यन्दिन-संहिता से वहाँ उद्धृत किया गया है।
- कठोपनिषद् में इसी आख्यान का विकसित रूप हमें उपलब्ध होता है।
- द्वादश प्रपाठक में चातुर्होत्र तथा वैश्वसृज याग का वर्णन है।

सामवेदीय ब्राह्मण

- सामवेद के ब्राह्मणों की संख्या अन्य वेदों के ब्राह्मणों की अपेक्षा कहीं अधिक है।
- सामवेदीय ब्राह्मणों की संख्या आठ है जिनका नामोल्लेख सायण ने इस प्रकार किया है-

अष्टौ हि ब्राह्मणग्रन्थाः प्रौढं ब्राह्मणमादिमम्।
षड्विंशाख्यं द्वितीयं स्यात् ततः सामविधिर्भवेत्॥
आर्षेयं देवताध्यायो भवेदुपनिषत् ततः।
संहितोपनिषद् वंशो ग्रन्था अष्टावितीरिताः॥

- उपर्युक्त आठ ब्राह्मणों में से केवल प्रथम और द्वितीय अर्थात् ताण्ड्य और षड्विंश को पूर्ण ब्राह्मण का स्थान प्राप्त है।
- शेष सामविधान आदि छः ब्राह्मण 'अनुबाह्मण' में गिने जाते हैं। ये वेदों की अनुक्रमणिकाओं के तुल्य लघुकाय ग्रन्थ हैं, अतः इन्हें ब्राह्मणग्रन्थों के तुल्य बताकर 'अनुब्राह्मण' कहा गया है।

ताण्ड्य ब्राह्मण का परिचय

- तांड्य ब्राह्मण को ही 'पंचविंश ब्राह्मण' और 'प्रौढ ब्राह्मण' कहा जाता है। यह विशालकाय ग्रन्थ है, अतः इसे ब्राह्मण के स्थान पर महाब्राह्मण भी कहते हैं।
- इसके रचयिता सामवेदीय आचार्य 'तांडि' माने जाते हैं।
- जैमिनीय ब्राह्मण में इसे ताण्ड्य कहा गया है- 'तदु होवाच ताण्ड्यः'
- आपस्तम्ब श्रौतसूत्र में भी 'ताण्ड्यम्' कहा गया है।
- शंकराचार्य ने ब्रह्मसूत्र (3.3.27) के भाष्य में ताण्डिन् और शाट्यायिन् शाखाओं का उल्लेख किया है।

ताण्ड्य ब्राह्मण का विषय-

- ताण्ड्य ब्राह्मण 25 अध्यायों में विभक्त है, अतः इसे **'पञ्चविंश ब्राह्मण'** भी कहते हैं।
- विषय विवेचन की प्रौढता के कारण इसे **'प्रौढ ब्राह्मण'** भी कहते हैं।
- इसमें पाँच-पाँच अध्यायों की पाँच पञ्चिकाएँ हैं।
- इसका सम्बन्ध सामवेद की कौथुम शाखा से है।

अध्याय	पञ्चिका
25	5 × 5=25

- इसका मुख्य प्रतिपाद्य विषय सोमयाग है। इसमें ज्योतिष्टोम से लेकर एक हजार वर्ष तक चलने वाले सोमयागों का वर्णन है।
- यह उद्गाता के कार्यों की विस्तृत विवेचना के कारण आदरणीय ब्राह्मण माना जाता है।
- **अध्यायों के अनुसार प्रतिपाद्य विषय-**

  अध्याय 1- उद्गाता के लिये पठनीय मन्त्रों का निर्देश।

  अध्याय 2 और 3- त्रिवृत्, पञ्चदश, सप्तदश आदि स्तोमों की विष्टुतियाँ।

  अध्याय 4 और 5- वर्षभर चलने वाले 'गवामयन' याग का वर्णन।

अध्याय 6 और 9- (बारहवें भाग तक) ज्योतिष्टोम, उक्थ्य और अतिरात्र का वर्णन 12 से आगे के खण्डों में विभिन्न प्रायश्चित्तों की विधियाँ हैं।

अध्याय 10 से 15- द्वादशाह यागों का वर्णन।

अध्याय 16 से 19- एकाह यागों का वर्णन।

अध्याय 20 से 22- अहीन यागों का वर्णन।

अध्याय 22 से 25- सत्र यागों का वर्णन।

- इसमें कुल 178 सोमयागों का वर्णन है।
- अहीन याग ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य तीनों के लिये है। इसमें दक्षिणा दी जाती है। 13 दिन से लेकर वर्षों तक चलता है। इसमें ब्राह्मण यजमान होंगे। दक्षिणा नहीं दी जायेगी। 17 से 24 तक यजमान हो सकते हैं। यह सोमयाग का ही अंग है।

ताण्ड्य ब्राह्मण के प्रमुख तथ्य-

- ताण्ड्य ब्राह्मण अत्यन्त सुव्यवस्थित है। इसकी भाषाशैली, रचनासौष्ठव और वाक्यविन्यास सुनियोजित है। अतएव धर्म और आचार संहिता के लिये यह सुविख्यात है।
- इसमें 'व्रात्य यज्ञ' विशेष महत्त्वपूर्ण है। यह संस्कारहीन व्यक्तियों की शुद्धि के लिये होता है। यह एकाह (एक दिन का) याग होता है।
- भौगोलिक ज्ञान के लिए इसमें विपुल सामग्री है। कुरुक्षेत्र और सरस्वती के क्षेत्र को स्वर्गतुल्य बताया गया है।
- सरस्वती नदी के लुप्त होने के स्थान 'विनशन' और उसके पुनः प्रकट होने के स्थान 'प्लक्ष-प्रास्रवण' का वर्णन है।
- इसमें यमुना नदी, नैमिषारण्य, खाण्डव वन, कुरु-पाञ्चाल एवं मगध जनपद आदि का उल्लेख है। निषाद आदि जातियों का भी उल्लेख मिलता है। (ता.- 16.6.7)
- इसमें यज्ञ का बहुत महत्त्व वर्णित है। यज्ञ न करने वालों को निकृष्ट और वध्य बताया गया है।

षड्विंश ब्राह्मण का परिचय

- यह कौथुम शाखीय सामवेद का महत्त्वपूर्ण ब्राह्मण है।
- यह पञ्चविंश के स्थान पर षड्विंश ब्राह्मण है, अर्थात् इसमें 25 के स्थान पर 26 अध्याय हैं।
- यह पञ्चविंश (ताण्ड्य) ब्राह्मण का ही परिशिष्ट समझा जाता है।
- सायण ने अपने भाष्य में इसे **'ताण्ड्यैकशेष ब्राह्मण'** अर्थात् ताण्ड्य का एक भाग या परिशिष्ट कहा है।
- षड्विंश ब्राह्मण में 6 अध्याय हैं। इनके अवान्तर भेद खण्ड हैं। इसके प्रथम पाँच अध्यायों में यज्ञ का ही विषय वर्णित है।

- अन्तिम अध्याय (अ0-6) को 'अद्भुत ब्राह्मण' कहते हैं।
- इसमें भूकम्प, अतिवृष्टि, अकाल, अनिष्ट, कुस्वप्न और अपशकुनों आदि के साथ ही विभिन्न उत्पातों की शान्ति के लिए विभिन्न याग आदि का वर्णन है।
- यह ब्राह्मण तत्कालीन मान्यताओं, प्रथाओं आदि के ज्ञान के लिए बहुत उपयोगी है।
- इसके प्रथम अध्याय में 'सुब्रह्मण्या' ऋचा का विशेष वर्णन है।
- भूः, भुवः और स्वः इन तीन महाव्याहृतियों से क्रमशः ऋग्वेद, यजुर्वेद, और सामवेद की उत्पत्ति का वर्णन है।
- ब्राह्मणों के लिये सन्ध्योपासना का समय अहोरात्र की सन्धि अर्थात् प्रातः और सायं सन्धिवेला बताया गया है।

  'तस्माद् ब्राह्मणोऽहोरात्रस्य संयोगे सन्ध्यामुपास्ते।' (षड्0 5.5.8)
- षड्विंश ब्राह्मण में यज्ञिय विधानों के प्रसंग में 24 आख्यायिकाएँ आई हैं। इनमें इन्द्र और अहल्या वाला आख्यान बहुत प्रसिद्ध है।

3. सामविधान ब्राह्मण का परिचय

- यह ब्राह्मण प्रतिपाद्य विषय की दृष्टि से अन्य ब्राह्मणों से सर्वथा भिन्न है। इसमें जादू-टोने से सम्बद्ध सामग्री प्राप्त होती है।
- विभिन्न उपद्रवों की शान्ति के लिये सामगान के साथ ही विभिन्न अनुष्ठानों का भी विधान है।
- सामविधान ब्राह्मण में श्रौत यागों के साथ ही प्रायश्चित्त-विधान, कृच्छ्र आदि व्रत, काम्य याग और अभिचार कर्मों का भी वर्णन है।
- विषय-वस्तु की दृष्टि से इस ब्राह्मण का क्षेत्र बहुत व्यापक है।
- सामविधान-ब्राह्मण में तीन प्रपाठक और 25 अनुवाक हैं।

  इनमें वर्णित विषय-वस्तु संक्षेप में इस प्रकार है -
- **प्रपाठक-1** प्रजापति से सृष्टि की उत्पत्ति, साम-प्रशंसा, सामस्वरों के देवता, देवों के लिये यज्ञ, कृच्छ्र और अतिकृच्छ्र व्रतों का वर्णन, स्वाध्याय और अग्न्याधान के नियम, दर्श-पूर्णमास, अग्निहोत्र सौत्रामणी आदि यागों का वर्णन, श्रौतसूत्रों के साथ देव-प्रीत्यर्थ सामगान, विभिन्न पापों के लिये प्रायश्चित्तों का वर्णन।

प्रपाठक 2 और 3 में

- काम्य-कर्म, रोग निवृत्ति एवं क्षेम के लिये विभिन्न प्रयोग, अभीष्ट सिद्धि, राज्याभिषेक, अभिचार शान्ति, युद्ध-विजय आदि के लिए विभिन्न प्रयोग दिए गये हैं।
- अन्त में साम-सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्यों का वर्णन, अध्ययन के अधिकारी और दक्षिणा का वर्णन है।

सामविधान ब्राह्मण के कुछ तथ्य-

इसमें श्रौत और तान्त्रिक विधियों का समन्वय है। इसमें अभिचार कार्यों के लिये सामगान के साथ कतिपय अनुष्ठानों के विधान हैं।

जैसे- शत्रु को भगाने के लिये चिता की भस्म शत्रु के घर या बिस्तर पर डालना।

- शत्रु को मारने के लिये शत्रु की आटे की मूर्ति बनाकर उसका चाकू से गला काटना और उसे आग में डालना।
- इसमें काम्य प्रयोग और प्रायश्चित्तों का विधान विशेष रूप से है।
- यह ब्राह्मण धर्मसूत्रों की पूर्वपीठिका है। इसमें विविध पापों के लिए प्रायश्चित्तों का वर्णन है। यह ब्राह्मणग्रन्थ पापों, अपराधों और कुकर्मों के सामाजिक अध्ययन के लिए महत्त्वपूर्ण है।

4. आर्षेय ब्राह्मण का परिचय

- यह ब्राह्मण एक प्रकार से आर्ष-अनुक्रमणी का काम करता है। जिन ऋषियों ने जो गान प्रचलित किए थे या जो उन गानों के प्रवर्तक हैं, उन गानों के नाम उन ऋषियों के नाम पर रखे गए हैं।
- इस ब्राह्मण में 3 प्रपाठक हैं, जो 82 खण्डों में विभाजित हैं।
- सामगान के वैज्ञानिक अध्ययन के लिए यह ब्राह्मण विशेष उपयोगी है।
- सामगान के केवल दो गानों का ही आर्षेय ब्राह्मण में वर्णन है,ये हैं-

  1. ग्रामगेय 2. अरण्यगेय
- इसमें ऊह और ऊह्यगानों पर विचार नहीं किया गया है।
- सामगानों का नामकरण प्रायः पाँच आधारों पर हुआ है। इनके कारण सामगानों की पाँच कोटियाँ हो गई हैं।
- पाँच आधार ये हैं-

  1. उन ऋषियों के नामों पर, जिन्होनें उनका साक्षात्कार किया था।
  2. ऋचा के प्रारम्भिक पदों के आधार पर।
  3. गान के अन्तिम भाग (निधन) के आधार पर।
  4. प्रयोजन के आधार पर। जैसे- रक्षोघ्न (राक्षसों के नाशार्थ)
  5. इनसें भिन्न अन्य आधार पर जैसे- वीङ्क आदि सामगान।
- आर्षेय ब्राह्मण ऋषि के नाम के साथ उनके गोत्र-नाम का भी उल्लेख कर देता है। जैसे- हविष्मत् गान के ऋषि हैं – हविष्मान्। इनका सम्बन्ध अंगिरा (अंगिरस्) गोत्र से है।
- अधिकतर विद्वानों का मत है कि आर्षेय ब्राह्मण और देवताध्याय ब्राह्मण एक ही ग्रन्थ के दो भाग हैं।

- एक में सामगान के ऋषियों का वर्णन है और दूसरे में देवों का।
- आर्षेय ब्राह्मण में ग्रामगेय गानों का उल्लेख सामवेद संहिता के क्रम से है।

देवताध्याय ब्राह्मण का परिचय

- आकार की दृष्टि से यह बहुत छोटा ब्राह्मण है । यह सूत्रशैली में लिखा गया है।
- इसमें चार खण्ड हैं। कुछ संस्करणों में केवल तीन खण्ड हैं। इसमें सामगानों के देवताओं का विशेष रूप से वर्णन है।

  खण्डों के अनुसार वर्ण्य-विषय इस प्रकार है-

  खण्ड-1 इसमें विभिन्न सामों के सम्बन्ध में देवताओं का वर्णन है। सामगान के देवताओं के रूप में सर्वप्रथम इन देवताओं का वर्णन है- अग्नि, इन्द्र, प्रजापति, सोम, वरुण, त्वष्टा, अंगिरस्, पूषा (पूषन्), सरस्वती और इन्द्राग्नी।

  खण्ड-2 इस खण्ड में छन्दों के देवता और उनके वर्णों का विशेष वर्णन है।

  खण्ड-3 इस खण्ड में सामवेदीय छन्दों के नामों की निरुक्तियाँ दी गयी हैं। इन निरुक्तियों में से अनेक निरुक्तियों को यास्क ने अपने निरुक्त में ग्रहण किया है। जैसे- 'गायत्री गायतेः स्तुतिकर्मणः' (निरुक्त 7.12) अर्थात् स्तुति अर्थ वाली गै धातु से गायत्री शब्द बना है।

  इसीप्रकार निरुक्त में- अनुष्टुप्, उष्णिक्, ककुभ्, जगती, पंक्ति, बृहती, त्रिष्टुप् आदि के निर्वचन दिए गए हैं।

  खण्ड-4 इसमें गायत्र साम की आधाररूप गायत्री के विभिन्न अङ्गों की देवरूपता का वर्णन है।
- भाषाशास्त्र की दृष्टि से इसका निर्वचन वाला खण्ड अतिमहत्त्व का है। इसमें निर्वचन बहुत प्रामाणिक ढंग से दिए गए हैं।

6. उपनिषद् ब्राह्मण का परिचय

- इसका दूसरा नाम 'छान्दोग्यब्राह्मण' है। इसमें 10 प्रपाठक हैं। यह ब्राह्मण दो ग्रन्थों का सम्मिलित रूप है।
- * **मन्त्र ब्राह्मण-** प्रथम दो प्रपाठकों को मन्त्र ब्राह्मण या मन्त्र पर्व कहते हैं।
- प्रत्येक प्रपाठक के 8-8 खण्ड हैं। इनमें गृह्य संस्कारों में विनियुक्त मन्त्रों का संकलन है।
- इन मन्त्रों का ही गोभिल और खादिर गृह्यसूत्रों में विभिन्न गृह्य संस्कारों में विनियोग है।
- इन मन्त्रों की संख्या 268 है। प्रथम प्रपाठक में गर्भाधान, सीमन्तोन्नयन, चूडाकर्म, उपनयन, विवाह और समावर्तन के मन्त्र दिए गए हैं।
- द्वितीय प्रपाठक में भूतबलि, आग्रहायणी कर्म, पितृ-पिण्डदान, देवबलिहोम, दर्श-पूर्णमास, आदित्योपस्थान,नवगृहप्रवेश और प्रसादप्राप्ति के मन्त्र हैं।
- इसमें अन्य संहिताओं और ब्राह्मणों से भी मन्त्र लिये गये हैं, जैसे लाजाहोम का मन्त्र है-

इयं नार्युपब्रूतेऽग्नौ लाजानावपन्ती ।
दीर्घायुरस्तु मे पतिः शतं वर्षाणि जीवतु॥ (1.3.8-9)

- ➢ छान्दोग्य ब्राह्मण पर दो व्याख्याएँ हैं-
- * 1. गुणविष्णु कृत 'छान्दोग्यमन्त्र-भाष्य'
- * 2. सायणकृत- वेदार्थप्रकाश।
- ➢ गुणविष्णु ने ऋषि, देवता, छन्द और विनियोग का विस्तृत वर्णन किया है।
- ➢ अर्थ के महत्त्व को दिखाने के लिये उन्होनें 'स्थाणुरयं भारहारः किलाभूद्----(निरुक्त- 1.18) को उद्धृत किया है कि जो अर्थ नहीं जानता वह मूर्ख है और जो अर्थ जानता है, उसी को सफलता प्राप्त होती है।
- ➢ सायण ने अपने भाष्य में गुणविष्णु का अनुकरण किया है।

*** छान्दोग्य उपनिषद् ब्राह्मण-**

- ➢ छान्दोग्य ब्राह्मण के शेष 8 प्रपाठक छान्दोग्य उपनिषद् है।
- ➢ यह कौथुम शाखा से सम्बद्ध है।
- ➢ शंकराचार्य ने इसे 'ताण्डिनाम् उपनिषद्' अर्थात् ताण्ड्य ब्राह्मण से सम्बद्ध उपनिषद् कहा है।
- ➢ इसमें तत्त्वज्ञान और उससे सम्बद्ध कर्म और उपासनाओं का सुन्दर वर्णन है।
- ➢ श्री शंकराचार्य ने इसका भाष्य किया है, अतः इसका महत्त्व बढ़ गया है। इसके प्रथम अध्याय में ओंकार का महत्त्व और उसकी उपासना का वर्णन है।
- ➢ द्वितीय अध्याय में विविध सामों की उपासना का वर्णन है।
- ➢ तृतीय अध्याय में सूर्योपासना, गायत्री का महत्त्व, ब्रह्मयज्ञ, प्राण और मन का विवेचन है।
- ➢ इसमें अनेक आख्यानों का भी वर्णन है यथा-
    1. दाल्भ्य और प्रवाहण का संवाद
    2. सत्यकाम का आख्यान
    3. अश्वपति का आख्यान
    4. राजा जानश्रुति और रैक्व का उपाख्यान
    5. उपस्ति का आख्यान
    6. उद्दालक और श्वेतकेतु का संवाद
    7. सनत्कुमार और नारद का संवाद आदि।

(7) संहितोपनिषद् ब्राह्मण का परिचय

- ➢ संहितोपनिषद् का अर्थ है- संहिता के उपनिषद् अर्थात् रहस्य को बताने वाला ब्राह्मण ग्रन्थ।

- यहाँ संहिता शब्द का अर्थ सामवेदसंहिता आदि नहीं है अपितु 'संहिता' शब्द का अर्थ- साम के गान की संहिता अर्थात् सातत्य।
- संहितोपनिषद् ब्राह्मण शास्त्रीयगान की दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण है।
- शास्त्रीय गान में सप्त स्वरों का मन्द्र मध्य और तार स्थानों से समन्वय अत्यावश्यक है।
- सायण के अनुसार यह समन्वय ही संहिता है, इसके रहस्य का प्रतिपादन करना इस ब्राह्मण का उद्देश्य है।

सायण का कथन- साम्नां सप्त स्वरा भवन्ति।.....मन्द्रमध्यताराणि वाचः स्थानानि भवन्ति। एतेषां यः सन्निकर्षः सा संहिता।

संहितोपनिषद् ब्राह्मण का प्रमुख विषय

- इस ब्राह्मण में पाँच खण्ड हैं, जो सूत्रों में विभक्त हैं। इनका संक्षिप्त विवरण है-

  खण्ड-1 इसमें तीन प्रकार की गान-संहिताओं का विस्तृत वर्णन है। ये तीन गान-संहिताएँ हैं- देवहू संहिता, वाक्शबहू ,अमित्रहू
- देवहू संहिता का उच्चारण मन्द्र स्वर से होता है। इसके गान से देवता शीघ्र पधारते हैं।
- देवहू के उद्गाता को धन-धान्य, श्री की प्राप्ति होती है। यह कल्याणकारिणी है। अन्य दो संहिताएँ अमंगलकारक हैं।
- वाक्शबहू में अस्पष्ट उच्चारण के कारण उद्गाता को हानि होती है।
- इसी प्रकार अमित्रहू अशास्त्रीय गान के कारण हानिकारक है। संहिता का एक अन्य प्रकार से विभाजन किया गया है। 1. शुद्धा 2. दुःस्पृष्टा 3. निर्भुजा
- शुद्ध और मधुर स्वर से उच्चरित सामगान शुभ है।
- अशुद्ध और असंगत सामगान सदा कष्टकारी है।

  खण्ड 2 और 3= सामगान का शास्त्रीय वर्णन प्राप्त होता है।
- सामगान की विधि, स्तोम, अनुलोम स्वर तथा विविध स्वरों का विशद विवेचन है।
- ये अध्याय शास्त्रीय गान के ज्ञान के लिये अत्यन्त उपयोगी हैं।

  खण्ड 4 और 5= इसमें पूर्वोक्त विषय का ही विस्तृत वर्णन किया गया है।

  इस ब्राह्मण की दो टीकायें हैं-

1. द्विजराज भट्टकृत-भाष्य
2. सायणभाष्य- वेदार्थप्रकाश

- इस ब्राह्मण पर सायण की अपेक्षा द्विजराज भट्ट का भाष्य अधिक विस्तृत और प्रामाणिक है।
- द्विजराज सायण से पूर्ववर्ती आचार्य हैं।

(8) वंश ब्राह्मण का परिचय

- यह ब्राह्मण बहुत छोटा है। सामगान के प्रवर्तक ऋषियों की वंश-परम्परा के ज्ञान के लिए यह ब्राह्मण उपयोगी है।
- इसमें तीन खण्ड हैं। इसमें स्वयंभू ब्रह्मा से सामवेद की परम्परा का प्रारम्भ माना गया है।
- स्वयंभू ब्रह्मा से कश्यप तक तथा कश्यप से शर्वदत्त गार्ग्य तक की वंश परम्परा इस प्रकार दी गई है।
- स्वयंभू ब्रह्मा से प्रजापति ने, प्रजापति से मृत्यु ने, मृत्यु से वायु ने, वायु से इन्द्र ने, इन्द्र से अग्नि ने और अग्नि से कश्यप ने सामवेद प्राप्त किया।
- तदनन्तर यह परम्परा कश्यप ऋषि से शर्वदत्त गार्ग्य तक आई।

(9) जैमिनीय-ब्राह्मण का परिचय

सामवेद की जैमिनीय शाखा के तीन ब्राह्मण प्राप्त होते हैं-

1. जैमिनीय ब्राह्मण 2. जैमिनीय आर्षेय ब्राह्मण 3. जैमिनीय उपनिषद् ब्राह्मण

- सामवेद की कौथुम और राणायनीय शाखा के साथ ही जैमिनीय शाखा भी प्रचलित रही।
- जैमिनीय शाखा वाले ब्राह्मणों में प्राचीन वैदिक रूप मिलते हैं।
- इनकी वर्णनशैली प्राचीन है और आख्यानों में भी पुरातनता मिलती है।
- जैमिनीय ब्राह्मण में तीन काण्ड हैं। ये खण्डों में विभक्त हैं। प्रथम खण्ड में 364 खण्ड हैं। द्वितीय में 442 और तृतीय खण्ड में 386 इसप्रकार कुल खण्डों की संख्या 1192 हैं।

काण्ड

प्रथम	**द्वितीय**	**तृतीय**
364 खण्ड	442 खण्ड	386 खण्ड = कुल 1192 खण्ड
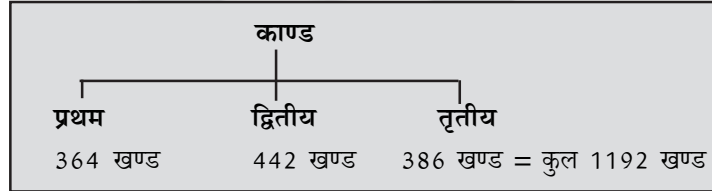
- मंगलाचरण के श्लोकों में महर्षि जैमिनि की स्तुति की गई है। उन्हें व्यास का शिष्य और तलवकार का गुरु बताया गया है –

  (क) व्यासशिष्याय मुनये तस्मै जैमिनये नमः।

  (ख) तं जैमिनिं तलवकारगुरुं नमामि।।
- जैमिनीय ब्राह्मण का प्रतिपाद्य विषय तीन काण्डों में विभक्त है -
- **काण्ड-1** इसमें अग्निहोत्र के दो भेदों, नित्य और काम्य का वर्णन है। काम्य अग्निहोत्र अधिक प्रचलित था।
- खण्ड 66 से 364 तक अग्निहोत्र का विस्तृत वर्णन है। राजा वर्ष में एक बार अग्निष्टोम याग करता था।

- राजकुमार द्वादशाह याग और अन्य लोग छन्दस्य तथा अग्निहोत्र याग करते थे।

  खण्ड-2 इसमें एकाह (एक दिन वाला) से लेकर द्वादशाह (12 दिन तक चलने वाला) तक के यागों का वर्णन है।
- इनके नाम द्विरात्र, त्रिरात्र, सप्तरात्र, नवरात्र, दशरात्र आदि हैं।
- इसमें 12 दिन से अधिक चलने वाले यागों का भी वर्णन है। वर्षभर चलने वाले 'गवामयन' का पूर्ण विवरण इस खण्ड में दिया गया है।
- सरमा और पणि की कथा और भौगोलिक महत्त्व के अनेक नाम इस खण्ड में प्राप्त होते हैं।

  खण्ड-3 इसमें 12 दिन चलने वाले (द्वादशाह) यागों का विस्तृत वर्णन है। अनेक सामों का भौतिक लाभ के लिए उपयोग बताया गया है।
- इसमें अनेक भौगोलिक तथ्य वर्णित हैं। अर्थवन् के पुत्र दधीचि की कथा विस्तार से दी गई है।

* जैमिनीय ब्राह्मण की कुछ विशेष बातें-

- अनुष्टुप् छन्द को गायत्री छन्द की माता कहा गया है।
- 'भूर्भुवः स्वः' इन तीन महाव्याहृतियों को सारे पापों का प्रायश्चित्त कहा गया है। ये सारे पापों को दूर करने में समर्थ हैं।
- गायत्री का महत्त्व बताते हुए कहा गया है कि यह तीनों सवनों (प्रातः, मध्याह्न और सायं) की आत्मा है।
- यह तीनों सवनों का यथास्थान देवों तक पहुँचाती है।
- मुख्यरूप से 33 देव हैं। इनका ही विस्तार 303 और 3003 देवता हैं।
- सृष्टि की उत्पत्ति का विस्तृत वर्णन किया गया है।

* जैमिनीय आर्षेय ब्राह्मण-

- कौथुम शाखा के आर्षेय ब्राह्मण के तुल्य इसमें भी स्वाध्याय और यज्ञ की दृष्टि से ऋषि, देवता और छन्द के ज्ञान पर विशेष बल दिया जाता है।
- सामवेद के ऋषियों से सम्बद्ध विवरण इसमें दिया गया है। ग्रामगेय गानों के ऋषि-विवरण में अध्यायों और खण्डों की व्यवस्था और विन्यास प्रायः समान है।

* जैमिनीय उपनिषद् ब्राह्मण-

- इसको जैमिनीय तलवकार उपनिषद् ब्राह्मण भी कहते हैं। जैमिनीय ब्राह्मण के मङ्गलाचरण में जैमिनि को तलवकार ऋषि का गुरु बताया गया है।
- इस प्रकार यह जैमिनि ऋषि के शिष्य की रचना है।
- यह ब्राह्मण चार अध्यायों में विभक्त है। अध्यायों के उपविभाग अनुवाक और खण्ड हैं।
- प्रारम्भ में ओंकार और हिंकार के महत्त्व का प्रतिपादन किया गया है।

- सृष्टिविद्या का सम्बन्ध तीनों वेदों से है। ओम् से गायत्री की रचना हुई। गायत्री से ही प्रजापति, देवता और ऋषि अमर हुए। गायत्री अमृत है।

  'तदेतद् अमृतं गायत्रम्। एतेन वै प्रजापतिरमृतत्वम् अगच्छत्।'

  'एतेन देवाः। एतेन– ऋषयः'
- इस ब्राह्मण में यह वर्णन है कि पवित्र ज्ञान ब्रह्म से कश्यप ऋषि तक किस क्रम से गया।
- इसके अनुसार ब्रह्म से > प्रजापति > परमेष्ठी > सविता > अग्नि > इन्द्र > कश्यप।
- तत्पश्चात् कश्यप से **गुप्त लौहित्य** तक यह ज्ञान किस परम्परा से गया, इसका भी विस्तृत विवरण दिया गया है।
- वंश ब्राह्मण ने भी मानवों में सर्वप्रथम कश्यप ऋषि को यह पवित्र ज्ञान प्राप्त होने का उल्लेख किया है। इसके पश्चात् 'केन उपनिषद्' है।

ओंकार का महत्त्व

- इस ब्राह्मण में ओम् के महत्त्व पर बहुत बल दिया गया है। ओम् ही परम ज्ञान और बुद्धि का आदि कारण है।
- ओम् अक्षर है। अविनाशी और अमृत है, ओम् वेदों का मूर्धन्य है।
- ओम् का ही विस्तार तीनों वेद हैं। जिस प्रकार कोमल पत्तों में सुई प्रविष्ट होती है, इसी प्रकार तीनों लोकों में 'ओम्' व्याप्त है।

गायत्री की महिमा

- गायत्री गान करने वाले की रक्षा करती है। गय और गाय का अर्थ – प्राण।
- प्राण की रक्षा करने के कारण यह गायत्री है, ब्रह्म का ही नाम गायत्री है।
- इसमें वैदिक भाषा, शब्दावली और व्याकरण के प्राचीन रूप उपलब्ध हैं। इसमें अनेक प्राचीन देवशास्त्रीय आख्यान वर्णित हैं।
- इसमें प्राचीन मान्यताओं और रीतियों का वर्णन है। जैसे- मृत व्यक्तियों का पुनः प्रकट होना, प्रेतात्माओं के द्वारा मार्गनिर्देशन, अतिमानवीय शक्तियों की प्राप्ति के लिये श्मशान-साधना आदि।

अथर्ववेदीय- ब्राह्मण (गोपथ ब्राह्मण)

- अथर्ववेद का एकमात्र ब्राह्मण गोपथ ब्राह्मण है।
- पहले इसे शौनकीय शाखा से संबद्ध समझा जाता था, क्योंकि इसमें उस शाखा के कुछ मन्त्रों के प्रतीक हैं।
- पैप्पलाद शाखा के अथर्ववेद का प्रथम मन्त्र **'शं नो देवीरभिष्टय......'** है। गोपथ ब्राह्मण में उल्लेख है कि अथर्ववेद का पाठ **'शं नो देवीरभिष्टय...'** इस मन्त्र से प्रारम्भ होता है।
- वेंकट माधव की ऋग्वेदानुक्रमणी में 'पैप्पलादम् अथर्वणाम्' कहकर गोपथ ब्राह्मण को पैप्पलाद शाखा से सम्बद्ध बताया गया है।

गोपथ का नामकरण-

- गोपथ ब्राह्मण के रचयिता गोपथ ऋषि हैं, क्योंकि अथर्ववेद के ऋषियों की नामावली में गोपथ ऋषि का नाम आया है।
- गोपथ ब्राह्मण के दो भाग हैं 1. पूर्वगोपथ 2. उत्तरगोपथ
- पूर्वगोपथ में पाँच प्रपाठक या अध्याय हैं और उत्तरगोपथ में छः प्रपाठक या अध्याय हैं।
- प्रत्येक प्रपाठकों में कई कण्डिकाएँ हैं कुल 258 कण्डिकाएँ हैं।

गोपथ ब्राह्मण

पूर्वगोपथ	उत्तरगोपथ
5 प्रपाठक/अध्याय	छः प्रपाठक/अध्याय
135 कण्डिकाएँ	123 कण्डिकाएँ
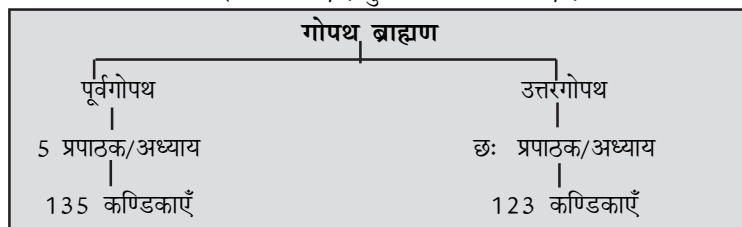
गोपथ ब्राह्मण में कुल कण्डिकाएँ = 258

- गोपथ 'गुप्' धातु से बना है। अथर्वाङ्गिरसों को **'गोप्तारः'** कहा गया है, ये रक्षक हैं।
- इसमें पूर्व और उत्तर भाग मिलाकर 11 प्रपाठक हैं।
- गायों का पथ (गोपथ) अंगिरस् जानते थे, अतः गोपथ नाम पड़ा। इनमें प्रथम मत ही ग्राह्य है। शेष अनुमान-प्रधान हैं।

गोपथ ब्राह्मण का प्रतिपाद्य विषय-

गोपथ ब्राह्मण का पूर्वभाग

- प्रपाठक-1 सृष्टि-उत्पत्ति, प्रणव उपनिषद् और गायत्री उपनिषद्।
- प्रपाठक-2 ब्रह्मचारी के कर्तव्य, होता आदि की भूमिका, यज्ञिय तत्त्वों की मीमांसा।
- प्रपाठक-3 यज्ञविवेचन, ब्रह्मा का महत्त्व, दर्श-पूर्णमास, अग्निहोत्र और अग्निष्टोम की रहस्यात्मक व्याख्या।
- प्रपाठक-4 गवामयन आदि सत्रयागों की मीमांसा, आध्यात्मिक विवरण।
- प्रपाठक-5 संवत्सर सत्र, अश्वमेध, अग्निष्टोम आदि का विवरण, अंगिरस् की उत्पत्ति, ऋत्विजों के कर्तव्यों का विवेचन।

गोपथ ब्राह्मण का उत्तर भाग

- प्रपाठक-1 ब्रह्मा का आसन, दर्श-पूर्णमास याग, काम्य इष्टियाँ, चातुर्मास्य।
- प्रपाठक-2 काम्य इष्टियाँ, सोमयाग, प्रायश्चित्त, दर्श-पूर्णमास

- प्रपाठक-3 वषट्कार और अनुवषट्कार, ऋतु-ग्रहादि एकाह यज्ञ।
- प्रपाठक-4 एकाह यज्ञ, तृतीय सवन, षोडशी याग
- प्रपाठक-5 अतिरात्र, वाजपेय, अप्तोर्याम, अहीनयज्ञ
- प्रपाठक-6 अहीनयज्ञ, उक्थ और शिल्प, षडह यज्ञ, कुन्ताप सूक्त।

गोपथ ब्राह्मण का समय-

- गोपथ ब्राह्मण के रचनाकाल के सम्बन्ध में पर्याप्त विवाद है। प्रो. ब्लूमफील्ड गोपथ ब्राह्मण को वैतान श्रौतसूत्र से बाद की रचना मानते हैं।
- डॉ. कीथ और कैलेन्ड प्रो. ब्लूमफील्ड के मत से सहमत नहीं हैं वे इसे प्राचीन मानते हैं।
- यास्क का समय ८०० ई. पू. के लगभग माना जाता है।

गोपथ ब्राह्मण के प्रमुख तथ्य-

- गोपथ ब्राह्मण में शब्दों का निर्वचन भाषाशास्त्र की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। जैसे- दीक्षित शब्द की व्युत्पत्ति 'धीक्षित' से की गयी है।
- 'धीक्षित' शब्द का अर्थ- श्रेष्ठ(बुद्धि) वाला व्यक्ति है।

'**श्रेष्ठां धियं क्षियतीति वा एतं धीक्षितं सन्तं दीक्षित इत्याचक्षते।**' (गो. ब्रा.-3/19)

- इसीप्रकार वरुण शब्द की व्युत्पत्ति 'वरुण' शब्द से (राजा का वरण किये जाने के कारण) की गयी है। ('तं वा एतं वरणं सन्तं वरुण इत्याचक्षते')
- गोपथ ब्राह्मण में बताया गया है कि प्रत्येक मनुष्य पर तीन ऋण होते हैं –

  1. देवऋण 2. ऋषिऋण 3. पितृऋण
- इन त्रिविध ऋणों के परिशोधन के लिए पुरुष को विवाह कर सन्तानोत्पादन करना चाहिए।
- किसी भी अनुष्ठान के प्रारम्भ में ओ३म् का उच्चारण कर तीन बार आचमन करना चाहिये।
- गोपथ का कथन है कि शान्तचित्त होकर एक हजार बार ओम् का प्रतिदिन जप करने से सारी कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

  '**एतदक्षरं (ओंकारं).....सहस्त्रकृत्त्व आवर्तयेत्, सिध्यन्त्यस्यार्थाः सर्वकर्माणि च।**' (1.1.22)
- गोपथ ने 21 प्रकार के यज्ञ बनाए हैं 7 सुत्या, 7 पाकयज्ञ और 7 हविर्यज्ञ। इसका विस्तृत विवरण भी दिया है।

- अग्निष्टोम, वाजपेय आदि 7 सुत्या हैं। दैनिक अग्निहोत्र, पितृयज्ञ आदि 7 पाकयज्ञ हैं। दर्श-पूर्णमास, चातुर्मास्य आदि 7 हविर्यज्ञ हैं।
- ब्रह्मा यज्ञ के विघ्नों को नष्ट करता है - **'ब्रह्मा .... यज्ञस्य विरिष्टं शमयति'**
- गोपथ में अनेक शब्दों के निर्वचन दिए गए हैं। यास्क ने निरुक्त में इसी पद्धति को अपनाया है। जैसे- ओम् (अव् और आप् धातु से)
- अंगिरस् (अंगिरा)- अंग+रस से
- वरुण- वृ (वरण) धातु से
- जाया – जन् धातु से, जायते अस्याम्, पति ही पुनः गर्भ में आकर पुत्ररूप में उत्पन्न होता है।
- अर्थवन् (अथर्वा) अथ+अर्वाक् = अथर्वन्
- गोपथ ब्राह्मण वैदिक साहित्य का सबसे परवर्त्ती रचना माना गया है।
- गोपथ ब्राह्मण में शिव का उल्लेख है जिससे प्रतीत होता है कि यह ब्राह्मण, ब्राह्मण काल की अपेक्षा वेदोत्तर काल की रचना है।

❑❑

7. आरण्यक ग्रन्थ

- आरण्यकों का विकास ब्राह्मण ग्रन्थों के **परिशिष्ट** के रूप में हुआ। ब्राह्मण के जिस भाग में वानप्रस्थाश्रम के लिए उपयोगी यज्ञादि का विधान किया गया है उन्हें आरण्यक कहते हैं।
- वन में पढ़े जाने के कारण इन्हें 'आरण्यक' कहा गया है जैसा कि भाष्यकार सायण ने कहा है- **'अरण्याध्ययनादेतद् आरण्यकमितीर्यते।'**
- **'अरण्ये भवम् आरण्यकम्'** अर्थात् अरण्य में होने वाले अध्ययन- अध्यापन, मनन- चिन्तन शास्त्रीय चर्चा और अध्यात्मविवेचन आरण्यक के अन्तर्गत आते हैं।

आरण्यकों का महत्त्व

- आरण्यक ग्रन्थ ब्राह्मण ग्रन्थों और उपनिषद् को जोड़ने वाली कड़ी है।
- यह आरण्यक सकाम से निष्काम की ओर प्रवृत्ति कराता है।
- यह स्थूल से सूक्ष्म की ओर ले जाता है तथा भौतिकवाद से अध्यात्म की ओर, मूर्त से अमूर्त की ओर ले जाने वाला है।
- आरण्यकों में यज्ञ प्रक्रिया के दार्शनिक पक्ष का विवेचन है।
- **वेदों का नवनीत -** आरण्यक वेदों के सारभाग हैं जैसे दही से मक्खन, मलय से चन्दन और औषधियों से अमृत प्राप्त होता है वैसे ही वेदों से आरण्यक प्राप्त हुए हैं-

नवनीतं यथा दध्नो मलयाच्चन्दनं यथा
आरण्यकं च वेदेभ्य ओषधिभ्योऽमृतं यथा॥

(महाभारत 1.331.3)

- आरण्यकों में पवित्र ब्रह्मविद्या का वर्णन है ।
- यज्ञोपवीत का सर्वप्रथम उल्लेख तैत्तिरीय ब्राह्मण में आता है तैत्तिरीय आरण्यक में भी यज्ञोपवीत का महत्त्व वर्णित है।
- **प्रव्रज्या का उल्लेख-** बृहदारण्यक में संन्यासी के अर्थ में प्रव्रज्या शब्द का उल्लेख है। प्रव्रज्या का अर्थ है- घर छोड़कर जाना अर्थात् तत्त्वदर्शन या ब्रह्मज्ञान के लिए घर छोड़कर वन आदि में जाना।

- मैत्रायणी आरण्यक में भारत के चक्रवर्ती सम्राटों के नाम मिलते हैं जिनके नाम हैं- सुद्युम्न- भूरिद्युम्न- इन्द्रद्युम्न- कुवलयाश्व-यौवनाश्व-वध्र्यश्व-अश्वपति-शशबिन्दु- हरिश्चन्द्र- अम्बरीष- ननक्तु-शर्याति-ययाति- अनरण्य- अक्षसेनादयः।

आरण्यकग्रन्थों के प्रवक्ता ऋषि

- ऐतरेय ब्राह्मण के प्रवक्ता महिदास ऐतरेय हैं उनको ही ऐतरेय आरण्यक का प्रवक्ता माना जाता है । (1-3 आरण्यक तक)

  'एतद् हस्य वै तद् विद्वान् आह महिदास ऐतरेय' (ऐत. 2.1.8)
- ऐतरेय आरण्यक के चतुर्थ आरण्यक के प्रवक्ता 'आश्वलायन' माने जाते हैं।
- पञ्चम आरण्यक के रचयिता शौनक माने जाते हैं।
- शांखायन आरण्यक के प्रवक्ता 'गुण शांखायन' हैं इनके गुरु का नाम कहोल कौषीतकि था।
- बृहदारण्यक के प्रवचन कर्त्ता 'महर्षि याज्ञवल्क्य' हैं। ये सम्पूर्ण शतपथ ब्राह्मण के प्रवक्ता हैं।
- तैत्तिरीय आरण्यक कृष्ण यजुर्वेदीय आरण्यक है सायण ने अपने भाष्य में कठ ऋषि को इसका प्रवक्ता बताया है।
- मैत्रायणी आरण्यक के प्रवक्ता भी कठ ऋषि को ही मानना चाहिए।
- तवलकार आरण्यक 'जैमिनीय उपनिषद् ब्राह्मण' ही है इसके प्रवक्ता 'जैमिनि मुनि' हैं।

आरण्यक प्रवक्ता

- ऐतरेय आरण्यक (1-3 अध्याय- महिदास, चौथा अध्याय- आश्वलायन पाँचवाँ अध्याय- शौनक)
- शांखायन (कहोल कौषीतकि)
- बृहदारण्यक (याज्ञवल्क्य)
- तैत्तिरीय (कठ ऋषि)
- मैत्रायणी (कठ ऋषि)
- तवलकार (जैमिनि)

ऋग्वेद के आरण्यक

- ऐतरेय आरण्यक
- शांखायन आरण्यक या कौषीतकि आरण्यक
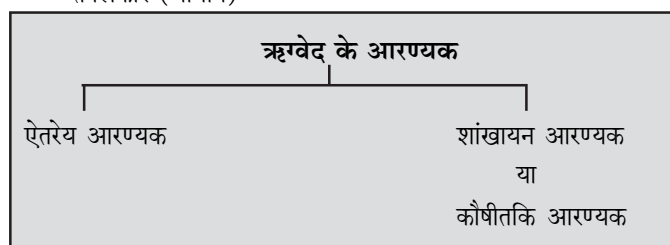
ऐतरेय आरण्यक का परिचय

- यह ऐतरेय ब्राह्मण का ही परिशिष्ट भाग है।
- इसमें 5 भाग हैं, कुल 18 अध्याय हैं।

ऐतरेय आरण्यक का वर्ण्य विषय

- अध्याय 1- इसमें महाव्रत का वर्णन है।
- अध्याय 2- इसके प्रथम 3 अध्यायों में उक्थ (3 निष्केवल्य प्राण विद्या और पुरुष) का विवेचन है।
- अध्याय 3- इसमें संहिता, पदपाठ, क्रमपाठ तथा स्वर और व्यञ्जन आदि के स्वरूप का विवेचन है।
- अध्याय 4- इसमें महानाम्नी ऋचाओं का वर्णन है। जो महाव्रत में बोली जाती है।
- अध्याय 5- इसमें निष्केवल्य **शस्त्र** (मन्त्रों) का वर्णन है।
- ऐतरेय आरण्यक में प्राणविद्या का वर्णन है।
- प्रज्ञा का महत्त्व, आत्मस्वरूप का वर्णन वैदिक अनुष्ठान, स्त्रियों का महत्त्व, शास्त्रीय महत्त्व, आचार संहिता (नैतिकता) का वर्णन है।

शांखायन आरण्यक का परिचय

- यह ऋग्वेदीय आरण्यक है। इसमें 15 अध्याय हैं।
- अध्याय 3-6 तक को 'कौषीतकि उपनिषद्' कहते हैं।
- अध्याय 7-8 संहितोपनिषद्
- अध्याय-9- इसमें प्राणविद्या की श्रेष्ठता का वर्णन है।
- अध्याय- 10 इसमें आध्यात्मिक अग्निहोत्र का सांगोपांग वर्णन है।
- अध्याय-11- इसमें मृत्यु के निराकरण के लिए एक विशेष याग का विधान है।
- अध्याय-12 इसमें समृद्धि के लिए बिल्व (बेल) के फल से एक मणि बनाने का वर्णन है।
- अध्याय-13 इसमें श्रवण, मनन, आदि के लिए शरीर- शुद्धि, तपस्या, श्रद्धा और दम आदि की आवश्यकता का वर्णन है।
- अध्याय-14 इसमें **'अहं ब्रह्मास्मि'** और वेदों के अर्थज्ञान का महत्त्व बताया गया है।
- अध्याय-15 इसमें आचार्यों की वंश परम्परा दी गयी है।
- कौषीतकि शांखायन के गुरु हैं।

बृहदारण्यक का सामान्य परिचय

- यह शुक्लयजुर्वेदीय आरण्यक है।
- यह शतपथ ब्राह्मण के अन्तिम 14 वें काण्ड के अन्त में दिया गया है।
  नोट- इसे यथार्थतः आरण्यक नहीं उपनिषद् ही माना जाता है।

कृष्णयजुर्वेदीय आरण्यक

तैत्तिरीय शाखा	मैत्रायणी शाखा
तैत्तिरीय आरण्यक	मैत्रायणीय आरण्यक
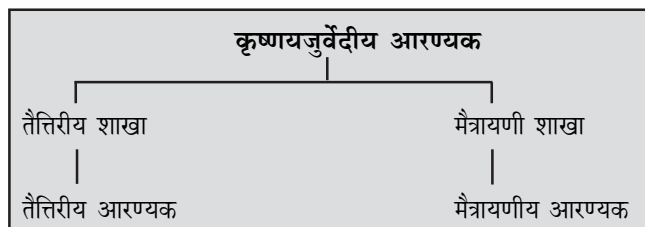
तैत्तिरीय आरण्यक का परिचय

- यह कृष्णयजुर्वेदीय आरण्यक है।
- इसमें 10 प्रपाठक या परिच्छेद हैं प्रपाठकों के उपविभाग अनुवाक हैं।
- 10प्रपाठकों के नाम-
  1 भद्र 2. सह वै 3. चिति 4. युञ्जते 5. देव वै 6. परे 7. शिक्षा 8. ब्रह्मविद्या9. भृगु 10. नारायणीय
- प्रथम प्रपाठक 'भद्रं कर्णेभिः' मन्त्र से प्रारम्भ हुआ है। अतः इस प्रपाठक का नाम 'भद्र' है।

तैत्तिरीय आरण्यक का वर्ण्य विषय-

- प्रपाठक - 1 इसमें आरुण- केतुक नामक अग्नि की उपासना और तदर्थ इष्टका-चयन का वर्णन है।
- प्रपाठक 2 इसमें स्वाध्याय और पञ्चमहायज्ञों का वर्णन हैं।
- प्रपाठक 3 इसमें चातुर्होत्र चिति से सम्बद्ध मन्त्र हैं।
- प्रपाठक 4 इसमें प्रवर्ग्य होम से सम्बद्ध मन्त्र हैं।
- प्रपाठक 5 इसमें यज्ञ सम्बन्धी कतिपय संकेत दिये गये हैं।
- प्रपाठक 6 इसमें पितृमेध- सम्बन्धी मन्त्रों का संकलन है इसमें ऋग्वेद के भी मन्त्र दिये गये हैं।
- प्रपाठक 7-9 यह 'तैत्तिरीय उपनिषद्' है।
- प्रपाठक 10 यह महानारायणीय उपनिषद् है इसको 'खिल काण्ड' भी कहते हैं।

पाँच महायज्ञ-

* 1 ब्रह्मयज्ञ- (संध्या)
* 2 देवयज्ञ- (अग्निहोत्र)
* 3 पितृयज्ञ- (मातृ-पितृ सेवा, इसे श्राद्ध- तर्पण भी कहते हैं।)
* 4 मनुष्ययज्ञ- (अतिथिसत्कार)
* 5 भूतयज्ञ- (बलिवैश्वदेव यज्ञ, पशु पक्षियों आदि को अन्नादि देना, व्यासमुनि का पाराशर्य (पराशर के पुत्र) नाम से उल्लेख है।

मैत्रायणी आरण्यक का सामान्य परिचय

- यह कृष्णयजुर्वेद की मैत्रायणीय शाखा का आरण्यक है। इसको मैत्रायणीय उपनिषद् भी कहते हैं।
- इसमें 7 प्रपाठक हैं। प्रपाठक खण्डों में विभक्त हैं।

वर्ण्य विषय-

- प्रपाठक 1 – ब्रह्मयज्ञ राजा बृहद्रथ को वैराग्य और मुनि शाकायन्य द्वारा उसे उपदेश।
- प्रपाठक 2 – शाकायन्य द्वारा ब्रह्मविद्या का उपदेश
- प्रपाठक 3 – जीवात्मा के स्वरूप का वर्णन। कर्म फल और पुनर्जन्म।
- प्रपाठक 4 – ब्रह्म- सायुज्य- प्राप्ति के उपाय।
- प्रपाठक 5 – कौत्सायनी स्तुति। ब्रह्म की नानारूपों में स्तुति।
- प्रपाठक 6 – ओम्, प्रणव, उद्गीथ और गायत्री की उपासना। आत्मयज्ञ का वर्णन, षडङ्ग योग, शब्द ब्रह्म, निर्विषय मन से मोक्ष प्राप्ति।
- प्रपाठक 7 – आत्म स्वरूप का वर्णन।
- ज्ञान के विघ्न - मोह का प्रपञ्च, मनोरंजन- प्रियता, प्रवास, भिक्षावृत्ति आदि।

सामवेद के आरण्यक

तवलकार आरण्यक	छान्दोग्यारण्यक
	यह वस्तुतः छान्दोग्योपनिषद् का ही प्रारम्भिक भाग है।
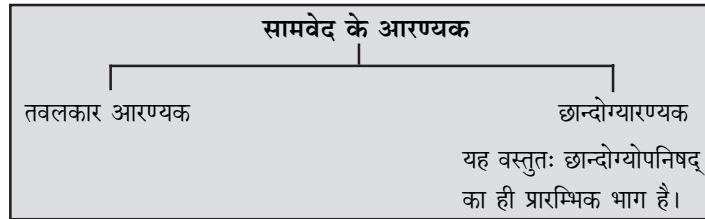
तवलकार आरण्यक का परिचय

- जैमिनीय शाखा से सम्बद्ध है।
- यह चार अध्यायों में है।

- चतुर्थ अध्याय का दशम अनुवाक केनोपनिषद् कहलाता है।
- ब्राह्मण आरण्यक उपनिषद् का मिश्रण है।
- इसे जैमिनीयोपनिषद् ब्राह्मण भी कहते हैं।
- अथर्ववेद का कोई आरण्यक उपलब्ध नहीं है।

आरण्यकों का महत्त्व

1. कर्मकाण्ड व ज्ञानकाण्ड का समन्वय है।
2. वानप्रस्थ के लिए विशेष उपयोगी है।
3. सूक्ष्म अध्यात्मवाद।
4. निष्काम कर्म का महत्त्व।
5. वैदिक यज्ञों की आध्यात्मिक व्याख्या।

❑❑

8. उपनिषद् ग्रन्थ

- 'उपनिषद्' शब्द उप और नि उपसर्गपूर्वक सद् धातु से क्विप् प्रत्यय करने पर बनता है- **उप+नि+सद्+क्विप् = उपनिषद्।**
- उपनिषद् का अर्थ है-

उप	=	समीप
नि	=	निश्चय या निष्ठापूर्वक
सद्	=	बैठना

- अर्थात् तत्त्वज्ञान के लिए गुरु के पास सविनय बैठना।
- श्रीशंकराचार्य ने उपनिषद् का अर्थ 'ब्रह्मविद्या' माना है।
- शंकराचार्य के अनुसार सद् धातु के तीन अर्थ हैं-

  1. विशरण- नाश होना 2. गति- पाना या जानना 3. अवसादन- शिथिल होना
- मुक्तिकोपनिषद् के अनुसार उपनिषदों की संख्या 108 है।

वेद	**उपनिषदों की संख्या**
ऋग्वेद	10
शुक्लयजुर्वेद	19
कृष्णयजुर्वेद	32
सामवेद	16
अथर्ववेद	31
	कुल 108

- आचार्य शंकर ने 10 उपनिषदों पर अपना भाष्य लिखा वे इस प्रकार हैं-

  ''ईश-केन-कठ-प्रश्न-मुण्ड-माण्डूक्य-तित्तिरः।
  ऐतरेयं च छान्दोग्यं बृहदारण्यकं दश।।''

  ये उपनिषद् प्राचीन तथा प्रमाणिक हैं।
- इसके अतिरिक्त कौषीतकि उपनिषद्, श्वेताश्वतर तथा मैत्रायणीय भी प्राचीन माने जाते हैं।

वेद	उपनिषद् नाम	शान्तिपाठ
ऋग्वेद	ऐतरेय, कौषीतकि आदि।	वाङ् मे मनसि ...
शुक्लयजुर्वेद	ईश, बृहदारण्यक आदि।	पूर्णमदः पूर्णमिदं ...
कृष्णयजुर्वेद	कठ, तैत्तिरीय आदि।	सह नाववतु ...
सामवेद	केन, छान्दोग्य आदि।	आप्यायन्तु ...
अथर्ववेद	प्रश्न, मुण्डक आदि।	भद्रं कर्णेभि ...

➢ **ऋग्वेद के उपनिषद्-**
1. ऐतरेय उपनिषद्
2. कौषीतकि उपनिषद्

➢ **शुक्लयजुर्वेद के उपनिषद्-**
1. ईशोपनिषद्
2. बृहदारण्यकोपनिषद्

➢ **कृष्णयजुर्वेद के उपनिषद्-**
1. तैत्तिरीयोपनिषद्
2. कठोपनिषद्
3. श्वेताश्वतरोपनिषद्
4. मैत्रायणी उपनिषद्
5. महानारायणोपनिषद्

➢ **सामवेद के उपनिषद्-**
1. केनोपनिषद्
2. छान्दोग्योपनिषद्

➢ **अथर्ववेद के उपनिषद्-**
1. मुण्डकोपनिषद्
2. माण्डूक्योपनिषद्
3. प्रश्नोपनिषद्

➢ कुछ विद्वान् उपनिषद् का रचनाकाल 700 ई. पू. मानते हैं।

➢ बालगंगाधर तिलक ने ज्योतिष गणना के आधार पर उपनिषद् का रचनाकाल 1600 ई.पू. माना है।

1- ऐतरेय उपनिषद्-

➢ यह ऐतरेय आरण्यक का एक अंश है।

➢ ऐतरेय आरण्यक के द्वितीय अध्याय के चतुर्थ खण्ड से लेकर षष्ठ खण्ड तक का नाम 'ऐतरेय उपनिषद्' है।

➢ इसमें तीन अध्याय हैं।

➢ प्रथम अध्याय में परमात्मा के ईक्षण से सृष्टि का उल्लेख प्राप्त है।

➢ द्वितीय अध्याय में पुनर्जन्म के सिद्धान्त का वर्णन है।

➢ तृतीय अध्याय में 'प्रज्ञानं ब्रह्म' का वर्णन है।

2. कौषीतकि उपनिषद्-

- कौषीतकि उपनिषद् कौषीतकि ब्राह्मण से सम्बद्ध है। कौषीतकि ब्राह्मण से कौषीतकि आरण्यक है।
- कौषीतकि आरण्यक के तृतीय अध्याय से षष्ठ अध्याय तक को 'कौषीतकि उपनिषद्' कहते हैं।
- इसे ही 'कौषीतकि ब्राह्मणोपनिषद्' भी कहते हैं।
- इस उपनिषद् में कुल 4 अध्याय हैं।
- प्रथम अध्याय में देवयान और पितृयान का वर्णन है।
- द्वितीय अध्याय में प्राण को ब्रह्म माना गया है, इसका वर्णन है।
- तृतीय अध्याय में प्राण और प्रज्ञा के महत्त्व का वर्णन है।
- चतुर्थ अध्याय में काशिराज अजातशत्रु और बालाकि का दार्शनिक संवाद वर्णित है।

3. ईशोपनिषद्-

- यह शुक्लयजुर्वेद की काण्व शाखा से सम्बन्धित है।
- यह वाजसनेयी संहिता का 40 वाँ अध्याय है।
- इसमें 18 मन्त्र हैं।
- ईशोपनिषद् को ही ईशावास्योपनिषद् कहते हैं।

4. तैत्तिरीय उपनिषद्

- कृष्णयजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा से सम्बद्ध है। तैत्तिरीय ब्राह्मण का अन्तिम भाग तैत्तिरीय आरण्यक है।
- तैत्तिरीय आरण्यक के 10 प्रपाठकों में सप्तम, अष्टम एवं नवम प्रपाठकों को तैत्तिरीयोपनिषद् कहते हैं।
- इस उपनिषद् में 3 वल्ली हैं।

  1. शीक्षा वल्ली 2. ब्रह्मानन्द वल्ली 3. भृगुवल्ली

वर्ण्य विषय

- **1-शीक्षा वल्ली-** शिक्षा शास्त्र, संहिता के अनेक रूप, भूः, भुवः, स्वः तीन व्याहृतियाँ आत्मा का निवास, आत्म- ब्रह्म की व्याख्या, सत्य, तप और स्वाध्याय का महत्त्व, दीक्षान्त उपदेश।

2. **ब्रह्मानन्द वल्ली-** अन्न, प्राण, मन, विज्ञान, आनन्दमय इन पाँच कोशों का वर्णन, ब्रह्म रस रूप है, सूर्य और पुरुष दोनों में एक ही शक्ति है।
3. **भृगुवल्ली-** पञ्च कोशों का वर्णन, अन्न का स्वरूप, अन्न का विराट् रूप।

कठोपनिषद्

- कृष्णयजुर्वेद की कठशाखा को कठोपनिषद् कहते हैं।

- इसमें कुल 2 अध्याय एवं 6 वल्लियाँ हैं।
- इसके प्रत्येक अध्याय में 3 खण्ड हैं।
- इसमें सुप्रसिद्ध यम और नचिकेता की कथा है।
- यम ने नचिकेता को तीन वर प्रदान किये।

यम द्वारा नचिकेता को प्राप्त तीन वर

1. मेरे यमलोक से लौटने पर पिता मुझे देखकर प्रसन्न हों।
2. दिव्य अग्निविद्या।
3. जीवन और मृत्यु का रहस्य।

- नचिकेता के पिता वाजश्रवा थे।
- वाजश्रवा के पिता उद्दालक थे।

श्वेताश्वतरोपनिषद्

यह उपनिषद् कृष्णयजुर्वेद से सम्बद्ध अनुपलब्ध श्वेताश्वतर संहिता का एक अंश है। इसमें कुल छः अध्याय हैं।

श्वेताश्वतरोपनिषद् में प्रतिपादित विषय-

- **अध्याय-1-** हंस, त्रैतवाद, माया, क्षर, अक्षर सत्य और तप से आत्मदर्शन।
- **अध्याय-2-** योग, योगविधि, ब्रह्मतत्त्व का वर्णन।
- **अध्याय-3-** रुद्र विश्वरूप, जीव का स्वरूप, आत्मा का वर्णन।
- **अध्याय-4-** एकेश्वरवाद, त्रैतवाद प्रकृति, माया-मायी शिव ब्रह्मरूप का वर्णन।
- **अध्याय-5-** क्षर-अक्षर, कपिल, ऋषि, जीवात्मा का स्वरूप।
- **अध्याय-6-** ब्रह्म के अनेक नाम, हंस, ईश्वर प्रकृति एवं जीव का नियन्ता, गुरुभक्ति।

बृहदारण्यकोपनिषद्

- यह शतपथ ब्राह्मण के 14वें काण्ड का अन्तिम भाग है।
- यह शुक्ल यजुर्वेद से सम्बद्ध है।
- यह आकार में विशालकाय नहीं अपितु तत्त्वज्ञान में भी अग्रगण्य है।
- यह अध्यात्म शिक्षा से ओतप्रोत है।
- इसमें 6 छः अध्याय हैं।
- यह उपखण्डों में विभक्त है।

बृहदारण्यक उपनिषद् के वर्ण्य विषय-

- **अध्याय 1.** यज्ञिय अश्व के रूप में परम पुरुष का वर्णन, मृत्यु का विकराल रूप, जगत् की उत्पत्ति, प्राण की श्रेष्ठता का वर्णन।

- **अध्याय 2.** अभिमानी गार्ग्य और काशिराज, अजातशत्रु का संवाद, ब्रह्म के दो रूप मूर्त और अमूर्त, याज्ञवल्क्य का अपनी दोनों पत्नियों, कात्यायनी और मैत्रेयी में सम्पत्ति का विभाजन, मैत्रेयी का सम्पत्ति लेने से अस्वीकार करना और याज्ञवल्क्य से ब्रह्मविद्या का उपदेश प्राप्त करना।
- **अध्याय 3.** जनक की सभा में याज्ञवल्क्य का अपने प्रतिपक्षियों को हराना, गार्गी और याज्ञवल्क्य के प्रश्नोत्तर।
- **अध्याय 4.** याज्ञवल्क्य का जनक को ब्रह्मविद्या का उपदेश।
- **अध्याय 5.** प्रजापति का देव मनुष्य और असुरों को द द द का उपदेश, ब्रह्म के विभिन्न रूपों का वर्णन प्राण ही वेदरूप है, गायत्री के विभिन्न रूप।
- **अध्याय 6.** प्राण की श्रेष्ठता, ऋषि प्रवाहण जैबलि और श्वेतकेतु का दार्शनिक संवाद, पञ्चाग्नि मीमांसा, उपनिषदीय ऋषियों की वंश परम्परा का विस्तृत वर्णन।

मैत्रायणी उपनिषद्

- यह कृष्णयजुर्वेद की मैत्रायणी संहिता से सम्बद्ध है।
- यह परवर्ती काल की रचना है।
- यह गद्यबद्ध रचना है।
- इसमें कुल सात अध्याय हैं।
- सात अध्यायों में षष्ठ अध्याय के अन्तिम आठ प्रपाठक और सप्तम अध्याय परिशिष्ट रूप है।
- इस उपनिषद् का विषय विवेचन तीन प्रश्नों के उत्तर के रूप में किया गया है।
- प्रथम प्रश्न है- आत्मा मौलिक शरीर में किस प्रकार प्रवेश पाता है?
- द्वितीय प्रश्न है- यह परमात्मा किस प्रकार भूतात्मा बनता है?
- तृतीय प्रश्न है- इस दुःखात्मक स्थिति से मुक्ति किस प्रकार मिल सकती है?

महानारायणोपनिषद्-

- यह कृष्णयजुर्वेद से सम्बद्ध तैत्तिरीय आरण्यक का दशम प्रपाठक है।
- इसमें द्रविणों के अनुसार 64 अनुवाक हैं, आन्ध्रों के अनुसार 80 अनुवाक हैं, कर्नाटकों के अनुसार 74 अनुवाक हैं।
- इस उपनिषद् में नारायण का परमात्म तत्त्व के रूप में उल्लेख है।
- इसमें सत्य, तप, दया, दान, धर्म, अग्निहोत्र यज्ञ आदि का उल्लेख है।
- इसमें तत्त्वज्ञानी के जीवन का यज्ञ के रूप में चित्रण है।

छान्दोग्य उपनिषद्-

- यह सामवेदीय उपनिषद् है।
- इस उपनिषद् में आठ अध्याय हैं।

- प्रत्येक अध्याय में अनेक खण्ड हैं-

अध्याय	खण्ड
प्रथम अध्याय	13
द्वितीय अध्याय	24
तृतीय अध्याय	19
चतुर्थ अध्याय	17
पञ्चम अध्याय	24
षष्ठ अध्याय	16
सप्तम अध्याय	26
अष्टम अध्याय	15

- इसके वर्ण्य-विषय इस प्रकार हैं-
- **अध्याय 1.** ओम् (प्रणव, उद्‌गीथ) की उपासना, ऋक् और साम का युग्म, वाक् मन और प्राण की उपासना, प्रणव और उद्गीथ की एकता, साम का आधार स्वर, प्राण आदित्य और अन्न का महत्त्व, शौव उद्गीथ
- **अध्याय 2.** पञ्चविध साम की उपासना, सप्तविध साम, त्रयी विद्या धर्म के तीन स्कन्द, ओम् ही वेदत्रयी का सार।
- **अध्याय 3.** देवमधु के रूप में सूर्य की उपासना, गायत्री का महत्त्व, सर्वं खल्विदं ब्रह्म का वर्णन, प्राण ही वसु रुद्र और आदित्य है, घोर अंगिरस् द्वारा कृष्ण को अध्यात्म की शिक्षा, चतुष्पाद ब्रह्म।
- **अध्याय 4.** रैक्व द्वारा अध्यात्म शिक्षा, सत्यकाम जाबाल की कथा, सत्यकाम जाबाल द्वारा उपकोशल को ब्रह्मज्ञान की शिक्षा।
- **अध्याय 5.** प्राण की श्रेष्ठता, प्रवाहण जैबलि के दार्शनिक सिद्धान्त, परलोक विज्ञान, राजा अश्वपति द्वारा सृष्टि- उत्पत्ति विषयक प्रश्नों के उत्तर में 6 दार्शनिक सिद्धान्तों का समन्वय
- **अध्याय 6.** महर्षि आरुणि द्वारा अपने पुत्र श्वेतकेतु को अद्वैतवाद का उपदेश, 'तत् त्वमसि' का विस्तृत प्रतिपादन।
- **अध्याय 7.** ऋषि सनत्कुमार नारद को उपदेश 'यो वै भूमा तत् सुखम्' भूमा दर्शन की शिक्षा।
- **अध्याय 8.** देवराज इन्द्र और असुरराज विरोचन को प्रजापति द्वारा आत्मज्ञान की शिक्षा।
- आत्मप्राप्ति के कुछ व्यवहारिक उपाय।

केनोपनिषद्-

- यह उपनिषद् सामवेद की जैमिनीय शाखा से सम्बद्ध है।
- इसे 'तवल्कारोपनिषद्' भी कहते हैं। इसमें 4 खण्ड हैं -प्रथम दो खण्ड पद्यात्मक शेष दो गद्यात्मक।
- 1 पद्यमय भाग- यह वेदान्त के विकास काल की रचना प्रतीत होती है।
- 2. गद्यमय भाग- यह भाग अत्यन्त प्राचीन है।
- प्रथम खण्ड में उपास्य ब्रह्म और निर्गुण ब्रह्म में अन्तर बताया गया है।
- द्वितीय खण्ड में ब्रह्म के रहस्यमय स्वरूप का विवेचन है।
- तृतीय और चतुर्थ खण्डों में **'उमा हैमवती के आख्यान'** द्वारा परब्रह्म की सर्वशक्तिमत्ता का विवेचन है।

प्रश्नोपनिषद्

- यह अथर्ववेद की पिप्पलाद शाखा से सम्बद्ध है।
- इसमें महर्षियों द्वारा छः प्रश्न पूछे गये हैं जिसके कारण इसका नाम प्रश्नोपनिषद् पड़ा।
- 1- प्रथम प्रश्न कबन्धी कात्यायन का है- भगवन्! समस्त प्रजा की उत्पत्ति कैसे और कहाँ से हुई?
- 2- द्वितीय प्रश्न भार्गव का है- कितने देवता प्रजाओं को धारण करते हैं, कौन उन्हें प्रकाशित करता है और उनमें सबसे श्रेष्ठ कौन है?
- 3- तृतीय प्रश्न आश्वलायन का है- प्राणों की उत्पत्ति कहाँ से हुई? उसका शरीर में आवागमन और उत्क्रमण किस प्रकार होता है?

  4- चतुर्थ प्रश्न गार्ग्य सौर्यायणी का है- आत्मा की जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति इन तीन अवस्थाओं का आध्यात्मिक रहस्य क्या है?
- 5- पञ्चम प्रश्न सत्यकाम का है-ॐ की उपासना का क्या रहस्य है? और उसके ध्यान से किस लोक की प्राप्ति होती है?
- 6- षष्ठ प्रश्न सुकेशा का है- षोडशकला सम्पन्न पुरुष का स्वरूप क्या है?

मुण्डकोपनिषद्-

- यह अथर्ववेद की शौनक शाखा से सम्बद्ध है।
- यह मुण्डित अर्थात् संन्यासियों के लिए विरचित हुई है।
- इसमें 3 मुण्डक (अध्याय) हैं। प्रत्येक के दो - दो खण्ड हैं।
- इस उपनिषद् में ब्रह्म ने अपने ज्येष्ठ पुत्र अथर्वा (अर्थवन्) को ब्रह्मविद्या का उपदेश दिया है।

- इसमें परा और अपरा नामक दो विद्याओं का विवेचन है।
- इसमें द्वैतवाद का स्पष्ट उल्लेख है।
- दो पक्षियों के रूपक द्वारा जीव और ब्रह्म का भेद बताया गया है।

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया

- इसमें बताया गया है कि जीवात्मा भोक्ता तथा परमात्मा साक्षी है।

माण्डुक्योपनिषद्-

- यह एक लघुकाय उपनिषद् है।
- इसमें कुल बारह वाक्य हैं यह गद्यात्मक है।
- इसमें ओङ्कार का रहस्य वर्णित है।
- वेदान्त की मूलभावना इसी उपनिषद् में प्राप्त होती है।
- इसमें ब्रह्म और आत्मविषय का विवेचन है।
- इसमें ब्रह्म की चार अवस्थायें बतायी गयी हैं।

  1. जाग्रत 2. स्वप्न 3. सुषुप्ति 4. तुरीय

- ओम् की अवस्थाओं का वर्णन

ओम् की मात्रा	अवस्था	आत्मा का स्वरूप	विषय
अ	जागरित	वैश्वानर	स्थूलभुक् (स्थूल)
उ	स्वप्न	तैजस्	प्रविविक्तभुक्त (सूक्ष्म)
म्	सुषुप्ति	प्राज्ञ	आनन्द भुक् (आनन्द)
--	तुरीय	अद्वैत शिव	अवर्णनीय

❑❑
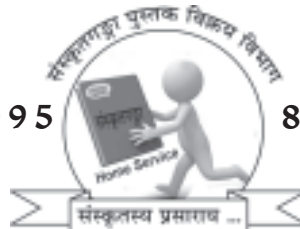
९. वेदाङ्ग

- वेदों के गूढ़ एवं वास्तविक अर्थों को जानने के लिए जिन सहायक तत्त्वों की आवश्यकता होती है। उन्हे वेदाङ्ग कहते हैं।
- वेदाङ्ग का अर्थ है- वेद के अङ्ग।
- 'वेदाङ्ग' में अङ्ग शब्द का अर्थ है 'वे उपकारक तत्त्व जिनसे वस्तु के स्वरूप का बोध होता है।' 'अङ्ग्यन्ते ज्ञायन्ते एभिरिति अङ्गानि।'
- वेदाङ्गों के द्वारा मन्त्रों का अर्थ उनकी व्याख्या तथा यज्ञ में उनके विनियोग आदि का बोध होता है।
- वेदाङ्गों की संख्या छः है -

शिक्षा व्याकरणं छन्दो निरुक्तं ज्योतिषं तथा।
कल्पश्चेति षडङ्गानि वेदस्याहुर्मनीषिणः।।

शिक्षा, व्याकरण, छन्द, निरुक्त, ज्योतिष, कल्प, वेदाङ्ग के विषय में पाणिनीय शिक्षा में निम्न श्लोक प्राप्त होता है-

'छन्दः पादौ तु वेदस्य, हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते।
ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते।।
शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य, मुखं व्याकरणं स्मृतम्।
तस्मात् साङ्गमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते।। (पा०शि०41-42)'

1. छन्द	पाद (पैर)
2. कल्प	हस्त (हाथ)
3. ज्योतिष	चक्षु (नेत्र)
4. निरुक्त	श्रोत्र (कान)
5. शिक्षा	घ्राण (नाक/नासिका)
6. व्याकरण	मुख (मुँह)

- वेदाङ्गो का सर्वप्रथम उल्लेख मुण्डकोपनिषद् में अपरा विद्या के अन्तर्गत चार वेदों के नाम के बाद हुआ।
- उपनिषदों में दो प्रकार की विद्या का उल्लेख प्राप्त होता है-पराविद्या,अपराविद्या। अपराविद्या के अन्तर्गत चार वेद तथा छः वेदाङ्ग आते हैं।

शिक्षा

- शिक्षा का अर्थ है- वर्णोच्चारण की शिक्षा देना
- 'स्वरवर्णाद्युच्चारणप्रकारो यत्र शिक्ष्यते उपदिश्यते सा शिक्षा' अर्थात् जिसमें स्वर वर्ण आदि के उच्चारण की शिक्षा दी जाती है उसे शिक्षा कहते हैं ।
- शिक्षा को वेद पुरुष का घ्राण कहा गया है **'शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य'**।
- तैत्तिरीयोपनिषद् में शिक्षा के छः अङ्गों का उल्लेख है जो हैं- वर्ण, स्वर, मात्रा, बल, साम, सन्तान।

वर्ण-

- वर्णोऽकारादिः अर्थात् अकार आदि को वर्ण कहते हैं । वेदों के ज्ञान के लिए वर्णों का ज्ञान होना आवश्यक है।
- वेदों में 52 वर्ण प्राप्त हैं– स्वर 13,स्पर्श 27, य र ल व तथा श ष स ह - 8, विसर्ग, अनुस्वार, जिह्वामूलीय उपध्मानीय- एक एक वर्ण होते हैं।
- पाणिनीय शिक्षा में संस्कृत में वर्णों की संख्या 63 है। संवृत और विवृत अ को अलग-अलग मानने पर 64 वर्ण हो जाते हैं स्वर की संख्या तीन है- उदात्त, अनुदात्त, स्वरित।
- स्वर का अभिप्राय स्वराघात है स्वर भेद से अर्थ भेद होता है।
- **मात्रा -** स्वर के उच्चारण में जो समय लगता है उसे मात्रा कहते हैं।
- ह्रस्व,दीर्घ,प्लुत के भेद से मात्रा के तीन भेद हैं।

ह्रस्व	**-**	**एक मात्रा**
दीर्घ	**-**	**दो मात्रा**
प्लुत	**-**	**तीन मात्रा**

- व्यञ्जन की आधी मात्रा होती है।

  पलक गिरने में जितना समय लगता है उतने समय को एक मात्रा कहते हैं- नारदीय शिक्षा

बल-

- वर्णों के उच्चारण में होने वाले प्रयत्न और उनके उच्चारण स्थान को बल कहते हैं।
- प्रयत्न दो हैं - आभ्यन्तर तथा बाह्य।
- जिन स्थानों से टकराकर वायु बाहर निकलती है उसे 'स्थान' कहते हैं।
- स्थान आठ हैं- हृदय,कण्ठ,शिर, जिह्वामूल,दन्त,नासिका,ओष्ठ,तालु।

साम-

- वर्णों के दोष रहित एवं शुद्ध माधुर्य आदि गुणों से युक्त उच्चारण को 'साम' कहते हैं। साम का अभिप्राय है- समविधि से सुस्पष्ट एवं सुस्वर से उच्चारण।

सन्तान-

- सन्तान का अर्थ है संहिता। पदों की अतिशय सन्निधि को संहिता कहते हैं इसके लिए सन्धि नियमों को जानना और उनका यथास्थान उपयोग करना।

शिक्षाग्रन्थ-

- उपलब्ध शिक्षाग्रन्थ 35 हैं। 32 शिक्षा ग्रन्थों का एक संकलन 'शिक्षा-संग्रह' नाम से प्रकाशित हुआ।
- इसमें ध्वनिविज्ञान से सम्बन्ध उनेक महत्त्वपूर्ण तथ्य दिए गए हैं।

पाणिनीय शिक्षा-

- पाणिनीय शिक्षा वैदिक और लौकिक दोनों के लिए उपयुक्त है।
- पाणिनीय शिक्षा में साठ श्लोक हैं।
- पाणिनीय शिक्षा में वर्णों की संख्या,उच्चारण-प्रक्रिया का ध्वनि-शास्त्रीय वर्णन,स्थान और प्रयत्न का विवरण,संवृत-विवृत,घोष-अघोष,पाठक के गुण-दोषों का वर्णन आदि प्राप्त होता है।
- **भारद्वाज शिक्षा-** पदों की शुद्धता तथा ध्वनि भेद से उदात्त आदि स्वरों में भेद का वर्णन किया है।
- **याज्ञवल्क्य शिक्षा-** याज्ञवल्क्य शिक्षा में 232 श्लोक हैं।

* इसमें वैदिक स्वरों का विवेचन है।
* वर्णों के भेद,स्वरूप,परस्पर साम्य,वैषम्य,लोप आगम-विकार,प्रकृतिभाव आदि का वर्णन है।

- **प्रातिशाख्य प्रदीप शिक्षा-**
  इसमें स्वर-वर्ण आदि की शिक्षा का विवेचन तथा प्राचीन वैयाकरण के मतों का उल्लेख प्राप्त होता है।
- **नारदीय शिक्षा-**
  नारदीय शिक्षा में सामवेद के स्वरों का विस्तार से वर्णन है।
- **अन्य महत्त्वपूर्ण शिक्षा ग्रन्थ-** व्यासशिक्षा, वशिष्ठशिक्षा ,कात्यायनी शिक्षा, पाराशरी शिक्षा,माण्डव्य शिक्षा,माध्यन्दिनी शिक्षा,वर्णरत्नप्रदीपिका,केशवी शिक्षा,स्वरांकन शिक्षा,स्वरभक्ति लक्षण शिक्षा।

व्याकरण वेदाङ्ग –

वेद को व्याकरण का मुख माना जाता है – **'मुखं व्याकरणं स्मृतम्'।**

- जिस शास्त्र के द्वारा शब्दों के प्रकृति प्रत्यय का विवेचन किया जाता है उसे व्याकरण कहते हैं **'व्याक्रियन्ते विविच्यन्ते शब्दाः अनेन इति व्याकरणम्'**
- व्याकरण शास्त्र को दो भागों में बाँटा जा सकता है- वैदिक व्याकरण तथा लौकिक व्याकरण।
- व्याकरण शास्त्र में पद-पदार्थ, वाक्य-वाक्यार्थ आदि का विवेचन प्राप्त होता है। ऋग्वेद के एक मन्त्र में व्याकरण शास्त्र को एक वृषभ के रूपक में बाँधा गया है-

चत्वारि शृंगा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य।
त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्यां आविवेश॥

* चत्वारि शृंगा - नाम, आख्यात, उपसर्ग, निपात।

* त्रयो पादा	-	भूत, भविष्य, वर्तमान काल
* सप्त हस्ता	-	सात विभक्तियाँ
* त्रिधा बद्धो	-	उर,कण्ठ,शिर तीन स्थानों से बँधा हुआ।

➢ शब्दों की व्युत्पत्ति तथा अर्थबोध के लिए व्याकरण का ज्ञान आवश्यक है। व्याकरणशास्त्र के पाँच प्रयोजन हैं **'रक्षोहागमलघ्वसन्देहाः'**

रक्षा	-	वेदों की रक्षा के लिए।
ऊह (तर्क)	-	यथास्थान विभक्ति-परिवर्तन,वाच्य-परिवर्तन आदि के लिए।
आगम	-	ब्राह्मण को निष्काम भाव से वेद पढ़ना चाहिए
लघु	-	सरल ढंग से शब्द ज्ञान के लिए
असन्देह	-	शब्द और अर्थ विषयक सन्देह के निराकरण के लिए।

संस्कृत व्याकरण के आचार्य एवं महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ

पाणिनि के पूर्ववर्ती वैयाकरण-

➢ आचार्य पाणिनि ने दस आचार्यों का उल्लेख अष्टाध्यायी में किया है- आपिशलि, काश्यप, गार्ग्य, भारद्वाज, शाकटायन, स्फोटायन ये मुख्य हैं।

➢ प्रातिशाख्य आदि में पाणिनि से पूर्ववर्ती लगभग 75 आचार्यों का उल्लेख है जिसमें प्रमुख आचार्य हैं- शिव (महेश्वर), बृहस्पति , इन्द्र, आचार्य व्याडि, आत्रेय, कात्यायन, काण्व,गौतम,यास्क,वाल्मीकि,शाकल्य, शाकल,शौनक, शांखायन, हारीत आदि।

आचार्य पाणिनि एवं परवर्ती आचार्य

➢ आचार्य पाणिनि को दाक्षीपुत्र,शालातुरीय और आहिक नाम से भी जाना जाता है।

➢ आचार्य कात्यायन ने अष्टाध्यायी के सूत्रों पर वार्तिक लिखा।इनका समय चतुर्थ शती ई0पू0 माना जाता है।

➢ आचार्य पतञ्जलि को गोणिकापुत्र,गोनर्दीय, अहिपति,शेषाहि नाम से जाना जाता है।

➢ आचार्य पतञ्जलि ने पाणिनि के अष्टाध्यायी और कात्यायन के वार्तिक पर भाष्य लिखा जिसे **महाभाष्य** कहा जाता है।

➢ पाणिनि,कात्यायन और पतञ्जलि की गणना **'मुनित्रय'** के रूप में होती है।

➢ आचार्य भर्तृहरि का समय 340ई0पू0 के लगभग है।

➢ आचार्य भर्तृहरि का निवास उज्जैन माना जाता है। इनके द्वारा रचित 'वाक्यपदीय' दार्शनिक व्याकरण का सर्वोत्तम ग्रन्थ है।

➢ वाक्यपदीयम् में तीन काण्ड हैं– ब्रह्मकाण्ड (आगमकाण्ड),वाक्यकाण्ड,पदकाण्ड या प्रकीर्ण काण्ड।

➢ जयादित्य और वामन का समय 660 ई0 के लगभग है इन्होंने अष्टाध्यायी पर काशिका टीका लिखी।

➢ आचार्य कैय्यट का समय 1035 ई0 के लगभग है ये काश्मीर के निवासी थे इन्होंने महाभाष्य पर 'प्रदीप' नाम की टीका लिखी।

➢ भट्टोजिदीक्षित का समय 1450ई॰ के लगभग है इन्होंने अष्टाध्यायी के सूत्रों पर

वृत्ति सहित 'सिद्धान्तकौमुदी' नामक ग्रन्थ लिखा।

- **नागेशभट्ट-** नागेशभट्ट महाराष्ट्रीय ब्राह्मण थे।
  उद्योत टीका (महाभाष्य की टीका) लघुशब्देन्दुशेखर,बृहत्शब्देन्दुशेखर, परिभाषेन्दुशेखर,स्फोटवाद, मञ्जूषा,लघुमञ्जूषा,परमलघुमञ्जूषा नागेशभट्ट द्वारा रचित ग्रन्थ हैं।
- लघुसिद्धान्त कौमुदी तथा मध्यसिद्धान्त कौमुदी के लेखक वरदराज हैं, इनका समय 1475 ई0 के लगभग माना जाता है।

➢ अन्य वैयाकरण -

वैयाकरण	-	ग्रन्थ/टीका
वृषभदेव	-	वाक्यपदीय प्रथम काण्ड पर टीका
पुण्यराज	-	वाक्यपदीय द्वितीय काण्ड के टीकाकार
हेलाराज	-	सम्पूर्ण वाक्यपदीय के टीकाकार
मण्डनमिश्र	-	स्फोट सिद्धान्त के रचयिता
कौण्डभट्ट	-	वैयाकरणभूषण और वैयाकरणभूषणसार के रचयिता
भट्टि	-	भट्टिकाव्य के रचयिता

- **प्रातिशाख्य ग्रन्थ-**
  प्रातिशाख्य शब्द का अर्थ है 'प्रत्येक शाखा से सम्बद्ध व्याकरण आदि का बोध कराने वाला ग्रन्थ।'
- प्रातिशाख्य ग्रन्थों का शिक्षा, व्याकरण और छन्द तीनों से साक्षात् सम्बन्ध है। वेदों के यथार्थ ज्ञान के लिए वर्णोच्चारणशिक्षा, सन्धि नियम, शब्दरूप, धातुरूप उदात्तादि स्वर और छन्दों का ज्ञान आवश्यक है इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए प्रातिशाख्य ग्रन्थों की रचना हुई।

ऋक्प्रातिशाख्य का परिचय

- ऋक्प्रातिशाख्य का सम्बन्ध ऋग्वेद की शाकल शाखा से है।
- ऋक्प्रातिशाख्य को पार्षद या पारिषद सूत्र भी कहा जाता है।
- ऋक्प्रातिशाख्य के रचयिता आचार्य शौनक हैं।

  ऋक्प्रातिशाख्य में प्रतिपादित विषय-
- पारिभाषिक शब्दों के लक्षण, विभिन्न सन्धियों का विवेचन, क्रमपाठ का विवरण, पद विभाग और व्यञ्जनों के स्वरूप का विवेचन।
- ऋक्प्रातिशाख्य पर दो भाष्य प्राप्त होते हैं-
- उव्वट का भाष्य जिसका समय 11वीं शती ई. भाष्य है।
  नोट- इसके अतिरिक्त उव्वट ने शुक्ल यजुर्वेद का भी भाष्य किया। विष्णुमित्र कृत वृत्ति।

शुक्ल यजुः प्रातिशाख्य या वाजसनेयि प्रातिशाख्य-

- इस प्रातिशाख्य के रचयिता कात्यायन हैं।
- शुक्ल यजुःप्रातिशाख्य में आठ अध्याय हैं।
- शुक्ल यजुःप्रातिशाख्य में दस प्राचीन ऋषियों के नामों का उल्लेख है जो हैं- काण्व, काश्यप, गार्ग्य, माध्यन्दिन, शाकटायन, शाकल्य, शौनक आदि।
- इस प्रातिशाख्य के वर्ण्य विषय हैं- वर्णविचार, स्वरविचार, सन्धिविचार, पदपाठ विचार, क्रमपाठ विचार, वेदाध्ययन-विषयक विचार।
- आचार्य पाणिनि इसी प्रातिशाख्य से पारिभाषिक शब्द को लिए हैं जैसे- उदात्त, अनुदात्त, स्वरित, लोप, उपधा, आम्रेडित, अपृक्त।
- शुक्लयजुर्वेद प्रातिशाख्य की दो व्याख्या प्राप्त होती है -
  1. उव्वट द्वारा मातृवेद नामक भाष्य
  2. अनन्तभट्ट कृत पदार्थ प्रकाशक नामक भाष्य।

तैत्तिरीयप्रातिशाख्य-

- तैत्तिरीय प्रातिशाख्य का सम्बन्ध कृष्ण यजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा से है। दो प्रश्नों में बारह-बारह अध्याय हैं, इसप्रकार इस प्रातिशाख्य में कुल चौबीस अध्याय हैं।
- वर्ण-समाम्नाय, स्वर एवं व्यञ्जन सन्धियाँ, अनुस्वार एवं अनुनासिक का भेद, स्वरों के भेद, संहिता का स्वरूप आदि।
- तैत्तिरीय प्रातिशाख्य की तीन व्याख्याएँ प्राप्त होती हैं-
  1 माहिषेय कृत 'पदक्रम सदन' भाष्य।
  2 सोमयार्य कृत त्रिभाष्य रत्न भाष्य।
  3 गोपालयज्वा कृत वैदिकाभरण।

सामवेदीय प्रातिशाख्य

पुष्पसूत्र

- पुष्पसूत्र के प्रणेता पुष्प ऋषि हैं।
- इसमें 10 प्रपाठक हैं जिनका सम्बन्ध सामगान से है।
- पुष्पसूत्र पर अजातशत्रु की व्याख्या उपलब्ध है।
- पुष्पसूत्र में स्तोभ का मुख्य रूप से विवेचन है।

ऋक्तन्त्र-

- 'ऋक्तन्त्र' सामवेद की कौथमुशाखा से सम्बन्धित प्रातिशाख्य ग्रन्थ है।
- 'ऋक्तन्त्र व्याकरण' भी इसे कहा जाता है।
- ऋक्तन्त्र में पाँच प्रपाठक तथा 280 सूत्र हैं।
- ऋक्तन्त्र के रचयिता 'शाकटायन' हैं।
- वर्णोच्चारण शिक्षा, सन्धिविचार, पदान्त वर्णों के विभिन्न परिवर्तन, आदि इसके वर्ण्य विषय हैं।

- ऋकतन्त्र में पारिभाषिक संज्ञाएँ तीन प्रकार की हैं - कृत्रिम, आदि या अन्त का अक्षर तथा अन्वर्थक।

अथर्ववेदीय प्रातिशाख्य

- अथर्ववेद से सम्बन्धित दो प्रातिशाख्य उपलब्ध हैं-
  (1) शौनकीय चतुरध्यायिका (2) अथर्ववेद प्रातिशाख्य।

शौनकीय चतुरध्यायिका-

- इसके लेखक शौनक माने गए हैं।
- अंग्रेजी अनुवाद के साथ डा. **व्हिटनी** ने इसे प्रकाशित किया। इसमें चार अध्याय हैं।
- ध्वनि विचार, सन्धिविवेचन, संहिता पाठ, अवग्रह, प्रगृह्य आदि का वर्णन इस प्रातिशाख्य में है।

अथर्ववेद प्रातिशाख्य-

- डॉ. सूर्यकान्त ने 1940 में लाहौर से प्रकाशित किया इसमें सन्धि, स्वर और पदपाठ के नियमों का वर्णन है।

छन्द-वेदाङ्ग

- छन्द शब्द छद् धातु (ढँकना) से बना है।
- 'छन्दांसि छादनात्' अर्थात् छन्द भावों को आच्छादित करके उसे समष्टि रूप प्रदान करता है- आचार्य यास्क।
- **'यदक्षरपरिमाणं तच्छन्दः'** जिसमें वर्णों या अक्षरों की संख्या निर्धारित होती है, उसे छन्द कहते हैं- आचार्य कात्यायन।
- वैदिक छन्दों का आधार अक्षर या वर्णों की संख्या है।
- छन्द को वेद का पाद (पैर) कहा जाता है **'छन्दः पादौ तु वेदस्य'**।
- आठ अध्यायों में विभक्त छन्दःसूत्र के रचयिता आचार्य पिङ्गल हैं।
- वैदिक छन्द वृत्तात्मक हैं तथा इनमें मात्रिक छन्दों का अभाव है।
- निदानसूत्र में छन्दों के नाम और लक्षण दिये गए हैं।
- **पिंगल के छन्दःसूत्र** के पूर्वभाग में वैदिक छन्दों का तथा उत्तरभाग में लौकिक छन्दों का विवेचन प्राप्त होता है।
- वैदिक छन्दों को 'अक्षर छन्द' भी कहा जाता है।
- वैदिक छन्द दो प्रकार के होते हैं- अक्षरगणनानुसारी तथा पादाक्षरगणनानुसारी।
- जिसमें अक्षरों की गणना हो उसे अक्षरगणनानुसारी तथा जिसमें पदों की गणना हो उसे 'पादाक्षरगणनानुसारी' छन्द कहते हैं।
- वैदिक छन्दों की कुल संख्या 26 है।
- ऋग्वेद में प्रयुक्त छन्दों की संख्या बीस है।
- वेदों में मुख्य रूप से सात छन्दों का प्रयोग है जो हैं- गायत्री, उष्णिक्, अनुष्टुप्, बृहती, पंक्ति, त्रिष्टुप्, जगती।

- हलायुध ने छन्दसूत्र पर 'मृतसंजीवनी' टीका लिखी।
- ऋग्वेद में अधिकांश 20 अक्षरों वाले छन्दों से लेकर 48 अक्षरों वाले छन्द प्रयुक्त हैं।

छन्द विषयक नियम

- पद के अन्त के साथ शब्द का अन्त होता है।
- ह्रस्व स्वर के बाद संयुक्त वर्ण होंगे तो पूर्ववर्ती लघु स्वर को गुरु माना जाता है। बाद में कोई स्वर हो तो पूर्ववर्ती दीर्घस्वर को ह्रस्व कर दिया जाता है।
- शब्द के अन्तर्गत और सन्धि स्थानों में प्राप्त य् व् को आवश्यक्तानुसार क्रमशः इ,उ पढ़ा जाता है।
- एकादेश हुए स्वरों को उच्चारण के समय आवश्यकतानुसार एकादेश से पूर्व की स्थिति में पढ़ा जाता है।
- ए और ओ के बाद पूर्वरूप हुए अ को आवश्यक्तानुसार फिर अ पढ़ा जाता है।

छन्द नाम	अक्षर/वर्ण	पाद
1. गायत्री	24	3
2. उष्णिक्	28	3
3. अनुष्टुप्	32	4
4. बृहती	36	4
5. पंक्ति	40	5
6. त्रिष्टुप्	44	4
7. जगती	48	4
8. अतिजगती	52	5
9. अतिशक्वरी	60	5
10. अष्टि	64	5

- छन्द में एक अक्षर कम होने पर निचृत् कहलाता है जैसे- निचृत् गायत्री, निचृत् उष्णिक् आदि। निचृत् गायत्री में 23 अक्षर होते हैं।
- छन्द में एक अक्षर अधिक होने पर भुरिक् कहलाता है जैसे- भुरिक् गायत्री, भुरिक् उष्णिक् भुरिक अनुष्टुप् आदि। भुरिक् गायत्री में 25 अक्षर होते हैं।
- छन्द में दो अक्षर कम होने पर विराट् कहा जाता है जैसे- विराट् गायत्री, विराट् उष्णिक् आदि। इस प्रकार विराट् गायत्री में 22 अक्षर होंगे।
- छन्द में दो अक्षर अधिक होने पर स्वराट् कहा जाता है जैसे- स्वराट् गायत्री, स्वराट् उष्णिक् स्वराट् अनुष्टुप् आदि। इस प्रकार स्वराट् गायत्री में 26 अक्षर होंगे।

निरुक्त वेदाङ्ग

- निरुक्त आचार्य यास्क की कृति है जिसमें बारह अध्याय है तथा दो अध्याय परिशिष्ट के रूप में है। परिशिष्ट सहित 14 अध्याय है।

- निरुक्त वेदपुरुष का श्रोत्र (कान) है – **'निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते'**
- निरुक्त निघण्टु का व्याख्यान ग्रन्थ है जिसमें ऋग्वेद के शब्दों का संग्रह है।
- निरुक्त के प्रारम्भिक तीन अध्याय **'नैघण्टुक काण्ड'** कहे जाते हैं।
- चार, पाँच, छः अध्याय को **'नैगम काण्ड'** कहा जाता है।
- अन्तिम छः अध्याय (7-12) को **'दैवत काण्ड'** के नाम से जाना जाता है।
- निरुक्त में शब्दों का निर्वचन तीन प्रकार से किया गया है - प्रत्यक्ष, परोक्ष, अतिपरोक्ष।
- निरुक्त को **'शब्द व्युत्पत्ति शास्त्र'** भी कहा जाता है।
- निरुक्त में तीन काण्ड हैं- नैघण्टुक काण्ड, नैगम काण्ड,दैवत काण्ड।
- नैगम काण्ड को 'ऐकपदिक' भी कहा जाता है।
- वैदिक शब्दों का संग्रह निघण्टु में तथा उनकी व्याख्या निरुक्त में है।
- दुर्गाचार्य, यास्क कृत निरुक्त के प्रसिद्ध टीकाकार हैं।
- वेदों के अर्थों को स्पष्ट करने में निरुक्त आवश्यक है और व्याकरण शास्त्र का पूरक है।
- वेदमन्त्रों के कठिन शब्दों की व्युत्पत्ति निरुक्त करता है- **'अर्थावबोधे निरपेक्षतया पदजातं यत्रोक्तं तन्निरुक्तम्'** - सायण
- निरुक्त में चार प्रकार के पद हैं- नाम, आख्यात, उपसर्ग, निपात **'चत्वारि पदजातानि नामाख्याते च, उपसर्गनिपाताश्च'**

यास्क के पूर्ववर्ती निरुक्तकार-

- आग्रायण, औपमन्यव, और्णवाभ, गार्ग्य, गालव, वार्ष्यायणि, शाकपूणि आदि।
  निरुक्त के टीकाकार- निरुक्त की तीन टीकाएँ प्राप्त होती है जो हैं-
  1 दुर्गाचार्य कृत ऋज्वर्थ वृत्ति टीका
  2 स्कन्द महेश्वर कृत टीका जो लाहौर से प्रकाशित हुई।
  3 वररुचि कृत निरुक्त निचय टीका
- निरुक्त के पाँच प्रतिपाद्य विषय हैं-
  वर्णागम, वर्णविपर्यय, वर्णविकार, वर्णनाश, धातु का अनेक अर्थों में प्रयोग।

**''वर्णागमो वर्णविपर्ययश्च द्वौ चापरौ वर्णविकारनाशौ।
धातोस्तदर्थातिशयेन योगस्तदुच्यते पञ्चविधं निरुक्तम्॥''**

निरुक्त में प्रतिपादित विषय-

प्रतिपादितविषय	अध्याय
निघण्टु, नाम आख्यात आदि पद विभाग, शब्दनित्यता का विवेचन मन्त्रों की सार्थकता का प्रतिपादन, अर्थ ज्ञान का महत्त्व	अध्याय-एक
निर्वचन, वर्णपरिवर्तन आदि से सम्बन्ध भाषाशास्त्रीय विवेचन।	अध्याय 2-3

वेदों के निघण्टु में पढ़े गए कठिन शब्दों की उदाहरण सहित व्याख्या।	अध्याय 4-6
देवतावाची शब्दों की विस्तृत व्याख्या, द्युलोक, अन्तरिक्ष, पृथिवी स्थानीय देवों का निरूपण।	7-12
निर्वचन प्रक्रिया, सृष्टि उत्पत्ति, आदि अनेक विषयों का विवेचन।	अध्याय 13-14

नोट- निरुक्त का अध्याय 13,14 परिशिष्ट के रूप में हैं।

ज्योतिष वेदाङ्ग

- आचार्य पाणिनि ने ज्योतिष को वेदपुरुष का नेत्र कहा है **'ज्योतिषामयनं चक्षुः'**
- ज्योतिष का अर्थ है- ज्योतिर्विज्ञान। सूर्य, चन्द्र, ग्रह, नक्षत्र आदि आकाशीय पदार्थों की गणना ज्योतिर्मय पदार्थों के अन्तर्गत होती है।
- वेदाङ्ग ज्योतिष भारतीय ज्योतिष शास्त्र का प्राचीनतम ग्रन्थ है, जिसके रचयिता **लगध** नामक ऋषि हैं।
- वेदाङ्ग ज्योतिष के दो पाठ प्राप्त होते हैं।
- एक का नाम आर्चज्योतिष अर्थात् ऋग्वेद सम्बन्धी ज्योतिष तथा दूसरे का नाम **याजुष्** ज्योतिष अर्थात् यजुर्वेद सम्बन्धी ज्योतिष।
- ऋग्वेद ज्योतिष में 36 श्लोक तथा यजुर्वेद ज्योतिष में 44 श्लोक हैं।

विद्वानों के अनुसार वेदाङ्ग ज्योतिष का समय-

- शङ्करबालकृष्ण दीक्षित 1400 ई.पू. मानते हैं।

  ह्विटनी -1338 ई.पू. कालब्रुक-1410 ई.पू.

  बेवर- 500 ई.पू. मैक्समूलर- 300 ई.पू.
- शोभाकार द्वारा वेदाङ्ग ज्योतिष पर एक भाष्य प्रकाशित है। सुधाकर द्विवेदी ने भी वेदाङ्गज्योतिष पर भाष्य लिखा है।
- वेदाङ्गज्योतिष के प्रथम आचार्य ब्रह्मा हैं।
- ब्रह्मा ने अपने पुत्र वसिष्ठ को ज्योतिष विद्या सिखायी।
- विष्णु ने उस ज्ञान को सूर्य को सिखाया जो 'सूर्य सिद्धान्त' कहा जाता है।
- सूर्य ने उस सिद्धान्त को मय को पढ़ाया जो 'वासिष्ठ सिद्धान्त' नाम से प्रसिद्ध हुआ। ज्योतिषशास्त्र का प्राचीनरूप वैदिक संहिताओं में प्राप्त होता है।

वेदाङ्ग ज्योतिष में प्रतिपादित विषय-

- काल का विभाजन, नक्षत्र और नक्षत्र देवता, युग के वर्ष, काल और तिथि का निर्णय, अयन और पर्व निर्धारण, नक्षत्रों का काल विभाजन, तिथि-नक्षत्र, नक्षत्र और पर्व का काल निर्धारण, अधिक मास आदि।
- 'वेदाङ्ग ज्योतिष' के अनुसार **पाँच सौर वर्षों का** एक युग होता है।
- पाँच सौर वर्षों के नाम हैं- संवत्सर, परिवत्सर, इदावत्सर, इद्वत्सर, वत्सर।
- पाँच वर्ष का युग मानने का कारण- पाँच वर्ष बाद सूर्य और चन्द्रमा राशिचक्र के उसी नक्षत्र पर पुनः एक सीध में होते हैं।

सत्ताइस नक्षत्रों के नाम-

- जौ (अश्विनी), द्रा (आर्द्रा), गः -भगः (उत्तराफल्गुनी), खे-विशाखे (विशाखा), श्वे-विश्वेदेवाः (उत्तरा आषाढा), अहिः - अहिर्बुध्न्य (उत्तरा भाद्रपदा), रो (रोहिणी), षा - आश्लेषा, चित् - चित्रा, मू-मूल, ष-शतभिषक्, ण्यः - भरण्यः (भरणी), सू - पुनर्वसू (पुनर्वसु), मा - अर्यमा (पूर्वाफल्गुनी), धा - अनुराधा, णः - श्रवणः (श्रवणा), रे- रेवती, मृ - मृगशिरस् (मृगशिरा), घाः - मघाः (मघा), स्वा - स्वाति, आपः - आपः (पूर्वा अषाढा), अजः - अज एक पाद् (पूर्वा भाद्रपदा), कृ - कृत्तिका, ष्यः - पुष्य, ह - हस्त, ज्ये - ज्येष्ठा, ष्ठाः - श्रविष्ठा।
- अथर्ववेद के अनुसार सात सौर मण्डल हैं।
- ऋग्वेद में सूर्य अनेक हैं तथा सात दिशाएँ है, ऐसा वर्णन प्राप्त होता है।
- अथर्ववेद के अनुसार सूर्य की सात किरणें है इन्हीं के कारण वर्षा होती है।
- सूर्य अपनी किरणों से पृथ्वी को रोके है ऐसा वर्णन ऋग्वेद और यजुर्वेद में प्राप्त होता है।
- ऐतरेय ब्राह्मण और गोपथ ब्राह्मण के अनुसार न कभी सूर्य का उदय होता है और न कभी अस्त।
- एक अहोरात (दिनरात) में तीस मुहूर्त होते हैं, मन्त्र में मुहूर्त के लिए धाम शब्द का प्रयोग किया गया है।
- विषुवत् रेखा का उल्लेख ऋग्वेद और अथर्ववेद में प्राप्त होता है।
- वेदाङ्ग ज्योतिष के अनुसार सूर्य और चन्द्रमा दोनों **श्रविष्ठा** नक्षत्र के आदि में उत्तर की ओर गति करते हैं।
- सूर्योदय से लेकर अगले दिन सूर्योदय तक के 24 घण्टे के समय को सावन दिन कहते हैं।
- सावन शब्द **सवन (यज्ञ)** से बना है।
- सावन वर्ष में केवल 360 दिन होते हैं।
- सूर्य और चन्द्र की **युती अमावस्या** है।

कल्प वेदाङ्ग

- कल्पसूत्र ग्रन्थ का तात्पर्य प्रयोगविधि के यथार्थ प्रतिपादक ग्रन्थों से है।
- जिनसे सिद्ध प्रयोग का ज्ञान हो, वह कल्प है।
- सिद्ध प्रयोगों के बोधक होने के कारण कल्प अनुष्ठान के साधन होते हैं।
- जिन ग्रन्थों में यज्ञ-सम्बन्धी विधियों का समर्थन या प्रतिपादन किया जाता है उन्हें कल्प कहते हैं- आचार्य सायण।
- जिन ग्रन्थों में वैदिक कर्मों का सांगोपांग विवेचन किया जाता है उन्हें कल्प कहते हैं।
- कल्पसूत्र के भेद- कल्पसूत्र के चार भेद हैं- श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र, धर्मसूत्र, शुल्बसूत्र।

श्रौतसूत्रों का परिचय

- श्रौत शब्द का अर्थ है 'श्रुति द्वारा प्रतिपादित या वेदों में वर्णित।
- श्रौतसूत्रों में यज्ञ-याग इष्टियों का विस्तृत विवेचन और वर्णन है।
- दर्श-पूर्णमास याग, सोमयाग, वाजपेययाग, राजसूययाग, अश्वमेधयाग, सौत्रामणीयाग आदि का विवेचन श्रौतसूत्र में प्राप्त होता है।
- दर्शपौर्णमास यज्ञ में चार ऋत्विक् होते हैं- अध्वर्यु, ब्रह्मा, होता, आग्नीध्र।
- दर्श-पूर्णमास याग अमावस्या और पूर्णिमा को किया जाता है।
- अमावस्या वाले याग में अग्नि के लिए पुरोडाश और इन्द्र के लिए दूध तथा दही की आहुति की जाती है।
- पूर्णिमा को किए जाने वाले यज्ञ में अग्नि और सोम के लिए घी और पुरोडाश (पिसा हुआ चावल) की आहुति दी जाती है।
- दर्शयाग अमावस्या को तथा पूर्णमासयाग पूर्णिमा को (पूर्णमासी को) किया जाता है।
  दर्श-पूर्णमास में तीन-तीन याग होते हैं।
  दर्शयाग के तीन भेद-
  1 अग्नि के लिए पुरोडाश याग 2 इन्द्र के लिए दधियाग
  3 इन्द्र के लिए दुग्धयाग
- पूर्णमासयाग के तीन भेद
  1 अग्नि के लिए अष्टकपालों में संस्कृत पुरोडाशयाग।
  2 अग्निष्टोम के लिए घृत का उपांशुयाग।
  3 अग्निष्टोम के लिए एकादशकपाल पुरोडाश याग।
- सान्नाय्यपद दधि और दुग्ध का बोधक होता है।
- **सात हविर्यज्ञ के नाम-** अग्न्याधान,अग्निहोत्र, दर्शपूर्णमास, आग्रहायण, चातुर्मास्य, निरूपढपशुबन्ध, सौत्रामणि।
- **सात सोमयाग के नाम-** अग्निष्टोम, अत्यग्निष्टोम, उक्थ्य, षोडशी, वाजपेय, अतिरात्र, आप्तोर्याम।
- चातुर्मास्य यज्ञ में चार पर्व होते हैं- वैश्वदेव, वरुणप्रघास, साकमेध, शुनासीरीय।
- सौत्रामणी एक पशुयाग है जो इन्द्र के निमित्त किया जाता है।

ऋग्वेद से सम्बन्धित श्रौतसूत्र-

- ऋग्वेद से सम्बन्धित दो श्रौतसूत्र प्राप्त होते हैं- आश्वलायन श्रौतसूत्र तथा शांखायन श्रौतसूत्र

आश्वलायन श्रौतसूत्र का परिचय

- आश्वलायन श्रौतसूत्र के रचयिता ऋषि आश्वलायन हैं।
- आश्वलायन शौनक ऋषि के शिष्य थे।
- ऐतरेय ब्राह्मण के अन्तिम दो अध्यायों के रचयिता आश्वलायन और शौनक माने जाते हैं।

- आश्वलायन श्रौतसूत्र का सम्बन्ध ऋग्वेद की शाकल और बाष्कल दोनों शाखाओं से है। इसमें बारह अध्याय हैं।

आश्वलायन श्रौतसूत्र में प्रतिपादित विषय-

- दर्श-पूर्णमास, अग्न्याधेय, अग्निहोत्र, आग्रयणेष्टि, काम्य इष्टियाँ, चातुर्मास्य, सौत्रामणी,
- ज्योतिष्टोम, सत्रयाग, एकाह, अहीनयाग, गवामयन आदि।
- श्रौतयागों के ऋत्विज् - होता, मैत्रावरुण, अच्छावाक्, ग्रावस्तुत।

शांखायन श्रौतसूत्र का परिचय

- शांखायन श्रौतसूत्र के रचयिता शांखायन ऋषि माने जाते हैं।
- शांखायन श्रौतसूत्र में 18 अध्याय हैं।

शांखायन श्रौतसूत्र में प्रतिपादित विषय-

- दर्श-पूर्णमास याग, अग्निहोत्र, आग्रयणेष्टि, चातुर्मास्य, अग्निष्टोम, अतिरात्र, द्वादशाह, विश्वजित्, हविर्याग, वाजपेय, बृहस्पति सव, सोम संस्थाएँ, आप्तोर्याम, राजसूय अश्वमेध, सर्वमेध, पुरुषमेध आदि।

शुक्लयजुर्वेदीय श्रौतसूत्र

- शुक्लयजुर्वेदीय श्रौतसूत्र कात्यायन श्रौतसूत्र है।
- कात्यायन श्रौतसूत्र के रचयिता कात्यायन ऋषि हैं। इसमें कुल 26 अध्याय हैं।

कात्यायन श्रौतसूत्र का परिचय

- कात्यायन श्रौतसूत्र का सम्बन्ध शुक्ल यजुर्वेद की माध्यन्दिन एवं काण्व दोनों शाखाओं से है।
- कात्यायन श्रौतसूत्र में 26 अध्याय हैं, प्रत्येक अध्याय का विभाजन कण्डिकाओं में हुआ है।
- कात्यायन श्रौतसूत्र की मुख्य आधारशिला शतपथ ब्राह्मण है।
- कात्यायन श्रौतसूत्र के तीन अध्याय (22-24) सामवेद की ताण्ड्य ब्राह्मण पर निर्भर हैं।
- कर्काचार्य का विस्तृत भाष्य गूढ रहस्यों को समझने के लिए विशेष उपयोगी है।
- कात्यायन श्रौतसूत्र पर पूर्वमीमांसा का प्रभाव है,- श्रुति, लिङ्ग, वाक्य, प्रकरण, स्थान, समाख्या इन छः प्रमाणों का प्रभाव इस श्रौतसूत्र में प्राप्त होता है।

कात्यायन श्रौतसूत्र में प्रतिपादित विषय-

- याग-सम्बन्धी परिभाषाएँ, दर्शपूर्णमास याग, दाक्षायण याग, आग्रयणेष्टि, अग्निहोत्र, चातुर्मास्य, अग्निष्टोम, द्वादशाह, गवामयन वाजपेय, राजसूय, सौत्रामणी, अश्वमेध, पुरुषमेध, सर्वमेध, एकाह, अहीन, प्रवर्ग्य।

कृष्ण यजुर्वेद से सम्बन्धित श्रौतसूत्र

- कृष्ण यजुर्वेद से सम्बन्धित आठ श्रौतसूत्र प्राप्त होते हैं-
  बौधायन, आपस्तम्ब, सत्याषाढ या हिरण्यकेशी, वैखानस, भारद्वाज, वाधूल, वाराह, मानवश्रौतसूत्र।

बौधायन श्रौतसूत्र का परिचय

- बौधायन श्रौतसूत्र के रचयिता बोधायन हैं जिनका समय ९०० ई.पू. से ८५० ई.पू. के मध्य माना जाता है।
- बौधायन श्रौतसूत्र की रचना ब्राह्मण ग्रन्थों के समान प्रवचन शैली में हुई है।
- बौधायन श्रौतसूत्र 30 प्रश्नों (अध्यायों) में विभाजित है।
- बौधायन श्रौतसूत्र का सम्पादन कैलेण्ड ने किया।
- दर्शपूर्णमास, अग्रयाधेय, अग्निहोत्र, चातुर्मास्य, अग्निष्टोम, प्रवर्ग्य, वाजपेय, राजसूय, औपानुवाक्य, अश्वमेध, द्वादशाह, अतिरात्र, एकाह, शुल्ब, प्रवर इसके प्रमुख वर्ण्य विषय हैं।

आपस्तम्ब श्रौतसूत्र का परिचय

- आपस्तम्ब श्रौतसूत्र का सम्बन्ध कृष्णयजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा से है।
- आपस्तम्ब श्रौतसूत्र के रचयिता आपस्तम्ब हैं जो बोधायन के शिष्य हैं।
- आपस्तम्ब का समय सातवीं शती ई.पू. माना जाता है।
- आपस्तम्ब कल्पसूत्र में 30 प्रश्न (अध्याय) हैं।
- आपस्तम्ब कल्पसूत्र श्रौत, गृह्य, धर्म, शुल्बसूत्र का मिश्रित रूप है।
- आपस्तम्ब श्रौतसूत्र पर धूर्तस्वामी का प्रसिद्ध भाष्य प्राप्त होता है, जो मैसूर से प्रकाशित है।

सत्याषाढ या हिरण्यकेशी श्रौतसूत्र-

- सत्याषाढ श्रौतसूत्र कृष्णयजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा से सम्बन्धित है।
- इसके रचयिता सत्याषाढ हैं।
- सत्याषाढ़ का उपनाम हिरण्यकेशी है।
- सत्याषाढ़ श्रौतसूत्र में 24 प्रश्न (अध्याय) हैं।
- इस श्रौतसूत्र में पितृमेध से पहले धर्मसूत्रों का समावेश है।
- सत्याषाढ़ श्रौतसूत्र का एक संस्करण अनेक टीकाओं से युक्त आनन्द आश्रम पुणे से 1932 ई. में प्रकाशित हुआ जिसमें दस खण्ड हैं।

वैखानस श्रौतसूत्र का परिचय

- वैखानस श्रौतसूत्र का सम्बन्ध कृष्ण यजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा से है।
- वैखानस गृह्यसूत्र में इसके रचयिता का नाम विखनस दिया गया है।
- वैखानस श्रौतसूत्र में 21 अध्याय हैं।
- वैखानस श्रौतसूत्र में अश्वमेध याग का निरूपण नहीं है।
- 1941 ई. में कैलेण्ड द्वारा सम्पादित संस्करण कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।

वैखानस श्रौतसूत्र में प्रतिपादित विषय-

- अग्न्याधान, पुनराधान, अग्निहोत्र, दर्शपूर्णमास, आग्रायण, चातुर्मास्य, निरुढपशुबन्ध, सौत्रामणी, परिभाषा, अग्निष्टोम, वाजपेय, अग्निचयन, प्रायश्चित आदि विषयों का उल्लेख।

भारद्वाज श्रौतसूत्र का परिचय

- भारद्वाज श्रौतसूत्र का सम्बन्ध कृष्णयजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा से है।
- भारद्वाज श्रौतसूत्र बौधायन श्रौतसूत्र का पश्चात्वर्ती तथा आपस्तम्ब श्रौतसूत्र का पूर्ववर्ती है।
- भारद्वाज श्रौतसूत्र 15 वें प्रश्न की 5वीं कण्डिका तक ही उपलब्ध है।
- भारद्वाज श्रौतसूत्र का गृह्यसूत्र और परिशिष्ट सूत्र भी प्राप्त होता है।
- श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र, परिशिष्ट सूत्र ग्रन्थों को संकलित करके अंग्रेजी अनुवाद के साथ डा. चिन्तामणि गणेश काशीकर ने वैदिक संशोधन मण्डल पूना से 1964 ई. में प्रकाशित कराया है।

वाधूल श्रौतसूत्र का परिचय

- वाधूल श्रौतसूत्र का सम्बन्ध कृष्णयजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा से है।
- वाधूल श्रौतसूत्र में 15 प्रपाठक (अध्याय) हैं। इनके उपविभाग अनुवाक और पटल हैं।
- डॉ. ब्रजबिहारी चौबे ने सम्पादित करके होशियारपुर से 1993 में प्रकाशित किया।

वाधूल श्रौतसूत्र में प्रतिपादित विषय-

- अग्न्याधेय, अग्निहोत्र, पुरोडाशी, याजमान, आग्रयण, बह्मत्व, चातुर्मास्य, पशुबन्ध, ज्योतिष्टोम, वाजपेय, राजसूय अश्वमेध, पवित्रेष्टि आदि।

वराह श्रौतसूत्र का परिचय

- वराह श्रौतसूत्र का सम्बन्ध कृष्णयजुर्वेद की मैत्रायणी शाखा से है।
- वराह श्रौतसूत्र में तीन अध्याय हैं और उनके उपखण्ड हैं।
- प्रथम अध्याय **प्राक्सौमिक** में है।
- **डा. कैलेन्ड और डा. रघुवीर** के द्वारा सम्पादित इसका संस्करण 1993 में मेहरचन्द्र लक्ष्मणदास लाहौर ने प्रकाशित किया।

वराह श्रौतसूत्र में प्रतिपादित विषय-

- परिभाषा, याजमान, ब्रह्मत्व, दर्शपूर्णमास, अग्न्याधेय, अग्निहोत्र, आग्रायण, पशुबन्ध चातुर्मास्य ये प्रथम अध्याय में वर्णित हैं।
- द्वितीय अध्याय में अग्निचयन से सम्बद्ध सामग्री प्राप्त होती है।
- तृतीय अध्याय में वाजपेय द्वादशाह, गवामयन, उत्सर्गाणाम् अयन, महाव्रत, सौत्रामणी, राजसूय, अश्वमेध का वर्णन प्राप्त होता है।
- वराह श्रौतसूत्र में अपत्नीक को भी अग्न्याधान का अधिकार दिया गया है।

मानव श्रौतसूत्र का परिचय

- मानव श्रौतसूत्र का सम्बन्ध मैत्रायणी शाखा से है।
- मानव श्रौतसूत्र प्राचीनतम श्रौतसूत्र है।
- मानव श्रौतसूत्र में पाँच भाग और ग्यारह अध्याय हैं।
- मानव श्रौतसूत्र के पाँच भाग-प्राक सोम, इष्टिकल्प, अग्निष्टोम, राजसूय, चयन।
- इस श्रौतसूत्र की शैली कृष्ण यजुर्वेद के ब्राह्मणग्रन्थों के समान है इसमें आख्यान नहीं है।

- फ्रीड्रिश क्राउएर ने प्रारम्भिक पाँच अध्यायों को सेंट पीटर्सवर्ग से प्रकाशित किया।
- सन् 1961 ई. में जे. एम. गेल्डर ने सम्पूर्ण मानव श्रौतसूत्र को सम्पादित कर दिल्ली से प्रकाशित किया।
- श्रीमती गेल्डर ने इसका अंग्रेजी में अनुवाद किया।

सामवेदीय श्रौतसूत्र

- सामवेदीय श्रौतसूत्रों की संख्या चार है- आर्षेय कल्प, लाट्यायन श्रौतसूत्र, द्राह्यायण श्रौतसूत्र, जैमिनीय श्रौतसूत्र।

आर्षेय कल्पसूत्र का परिचय

- आर्षेय कल्पसूत्र सामवेदीय तांड्य महाब्राह्मण से सम्बद्ध है।
- मशक ऋषि द्वारा लिखे जाने के कारण इसे **'मशक कल्पसूत्र'** भी कहा जाता है।
- आर्षेय कल्पसूत्र दो भागों में विभक्त है- आर्षेय कल्पसूत्र, क्षुद्रकल्पसूत्र।
- आर्षेय कल्पसूत्र में छोटे भागों का वर्णन।
- आर्षेय कल्पसूत्र में ग्यारह अध्याय हैं जिनका मुख्य उद्देश्य यह बताना है कि किस याग में किस विशेष साम का गान किया जाता है।

सोमयाग के तीन प्रकार-

- एकाह - एक दिन में पूर्ण होने वाला।
- अहीन- 2-11 दिन तक चलने वाला यज्ञ इसे 'क्रतु' भी कहते हैं।
- सम- 12 दिन से लेकर एक वर्ष या उससे भी अधिक समय तक चलने वाला याग।
- चार प्रकार के अभिचार-श्येन, इषु, सन्दंश, वज्र।
- ज्योतिष्टोम संख्या के चार प्रकार- अग्निष्टोम, उक्थ्य, षोडशी, अतिरात्र।

क्षुद्रकल्पसूत्र का परिचय

- क्षुद्रकल्पसूत्र के रचयिता भी मशक ऋषि हैं। यह आर्षेय, कल्प का ही दूसरा भाग है।
- यह ग्रन्थ तीन प्रपाठक और छः अध्यायों में विभक्त है।

क्षुद्रकल्पसूत्र में प्रतिपादित विषय-

विभिन्न काम्य इष्टियाँ और प्रायश्चित	अध्याय एक और दो
षृष्ठ्य षडह, द्वादशाह अनुकल्प	अध्याय तीन और चार
विभिन्न द्वादशाह याग	अध्याय पाँच और छः

- क्षुद्रकल्पसूत्र पर ताताचार्य के पुत्र श्रीनिवास की विस्तृत टीका प्राप्त होती है।
- डा. वी. आर. शर्मा द्वारा सम्पादित विश्वेश्वरानन्द संस्थान होशियारपुर से 1974 में प्रकाशित हुआ।

लाट्यायन श्रौतसूत्र का परिचय

- लाट प्रदेश गुजरात के आधार पर इसका नाम लाट्यायन पड़ा।
- इसमें दस प्रपाठक और 2641 सूत्र हैं।
- लाट्यायन श्रौतसूत्र पञ्चविंश ब्राह्मण से सम्बद्ध है।

लाट्यायन श्रौतसूत्र में प्रतिपादित विषय-

प्रतिपादित विषय	प्रपाठक
परिभाषाएँ और ऋत्विक् वरण	प्रथम प्रपाठक
अग्निष्टोम और उससे सम्बद्ध याग	द्वितीय प्रपाठक
षोडशी विषयक द्रव्य विधान	तृतीय प्रपाठक
वाजिभक्षण	चतुर्थ प्रपाठक
चातुर्मास्य, वरुणप्रघास और सोमचमस	पञ्चम प्रपाठक
सामविधान और द्व्यक्षर-प्रतिहार	षष्ठ प्रपाठक
चतुरक्षा प्रतिहार, गायत्र गान	सप्तम प्रपाठक
एकाह, अहीन, वाजपेय याग, राजसूय याग	नवम प्रपाठक
सत्रयाग और उसकी परिभाषाएँ	दशम प्रपाठक

- ➢ लाट्यायन श्रौतसूत्र पर अग्निस्वामी का प्राचीन भाष्य उपलब्ध है।
- ➢ सम्पूर्ण लाट्यायन श्रौतसूत्र, अग्निस्वामी के भाष्य के साथ बिब्लियोथिका इण्डिका ग्रन्थमाला में सन् 1870-72 में प्रकाशित हुआ।

द्राह्यायण श्रौतसूत्र का परिचय

- ➢ द्राह्यायण श्रौतसूत्र का सम्बन्ध राणायनीय शाखा से है।
- ➢ द्राह्यायण श्रौतसूत्र के अपर नाम- छान्दोग्यसूत्र, प्रधानसूत्र, वाशिष्ठसूत्र
- ➢ द्राह्यायण श्रौतसूत्र का प्रचार दक्षिण भारत में अधिक है।
- ➢ कर्नाटक, तमिलनाडु, आन्ध्रप्रदेश, उड़ीसा में यह श्रौतसूत्र अधिक प्रचलित है।
- ➢ द्राह्यायण श्रौतसूत्र में 3 पटल या अध्याय हैं।

द्राह्यायण श्रौतसूत्र में प्रतिपादित विषय-

प्रतिपादित विषय	अध्याय
ज्योतिष्टोम, अग्निष्टोम	1-7
गवामयन सत्रयाग	8-11
ब्रह्मा के कार्य, हविर्याग, सोमयाग से सम्बद्ध कार्य कलाप	12-21
एकाहयाग	22-25
अहीनयाग	26-27
सत्रयाग	28-29
अयनयाग	30-31

- ➢ द्राह्यायण श्रौतसूत्र पर धन्विन् भाष्य उपलब्ध है।

- प्रो. बी. आर. शर्मा द्वारा सन् 1983 में गङ्गानाथ झा विद्यापीठ प्रयाग से इसका परिष्कृत रूप प्रकाशित कराया।

जैमिनीय श्रौतसूत्र का परिचय

- जैमिनीय श्रौतसूत्र का सम्बन्ध जैमिनीय शाखा से है।
- जैमिनीय श्रौतसूत्र के रचयिता **जैमिनि** माने गए हैं।
- जैमिनीय श्रौतसूत्र का बौधायन श्रौतसूत्र के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है।
- जैमिनीय श्रौतसूत्र तीन खण्डों में विभाजित है।
- तीन खण्डों के नाम- सूत्रखण्ड, कल्पखण्ड, पर्याध्याय या परिशेष खण्ड।
- जैमिनीय श्रौतसूत्र में कुल अध्यायों की संख्या अठारह है।

अथर्ववेदीय श्रौतसूत्र

- अथर्ववेद का एकमात्र श्रौतसूत्र वैतान श्रौतसूत्र है।
- वैतान श्रौतसूत्र गोपथ ब्राह्मण पर आश्रित है।
- वैतान श्रौतसूत्र के पूर्वार्द्ध पर कात्यायन श्रौतसूत्र तथा कौशिक श्रौतसूत्र का प्रभाव है।
- वैतान श्रौतसूत्र में आठ अध्याय और 43 कण्डिकाएँ हैं।

वैतान श्रौतसूत्र में प्रतिपादित विषय-

- परिभाषा, दर्श-पूर्णमास, अग्न्याधेय, अग्निहोत्र, आग्रयणीय, इष्टि, चातुर्मास्य, अश्वमेध, पुरुषमेध, सर्वमेध, एकाह, अहीन याग, काम इष्टियाँ।

गृह्यसूत्रों का सामान्य परिचय

- गृह्यसूत्र में गृहस्थ से सम्बद्ध षोडश संस्कार, पञ्चमहायज्ञ, सातपाकयज्ञ, गृहनिर्माण, गृहप्रवेश, पशुपालन और कृषिकर्म, आदि से सम्बद्ध यज्ञों की विधियों का वर्णन प्राप्त होता है।
- गृह्यसूत्र का सम्बन्ध गृहस्थ जीवन से है, गृहस्थ जीवन से सम्बन्धित सभी संस्कार इसमें वर्णित हैं।
- गृह्यसूत्रों से आर्यों की सामाजिक स्थिति और परम्पराओं का ज्ञान प्राप्त होता है।
- गर्भाधान से लेकर मृत्युपर्यन्त और मृत्यु के बाद भी किए जाने वाले संस्कारों तथा अनुष्ठान विधियों का विवरण प्राप्त होता है।
- गृह्यसूत्र में 42 संस्कारों का वर्णन है किन्तु गौतम चालीस संस्कार मानते हैं।
- गृह्यसूत्रों से जनपदों और ग्रामों में प्रचलित लोकधर्म और प्रथाओं का ज्ञान होता है।

ऋग्वेदीय गृह्यसूत्र

- ऋग्वेद के तीन गृह्यसूत्र प्राप्त होते हैं-
- आश्वलायन श्रौतसूत्र, शांखायन श्रौतसूत्र, कौषीतकि श्रौतसूत्र

आश्वलायन गृह्यसूत्र का परिचय

- आश्वलायन गृह्यसूत्र के रचयिता आश्वलायन ऋषि थे।
- आश्वलायन गृह्यसूत्र में चार अध्याय हैं।

आश्वलायन गृह्यसूत्र में वर्णित विषय-

वर्णित विषय	अध्याय
पाकयज्ञ, दैनिक होम, स्थानीक, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, अन्नप्राशन, मधुपर्क	**एक**
श्रवणाकर्म, अष्टका, वास्तु निर्माण गृहप्रवेश —	**दो**
पञ्चमहायज्ञ, ऋषितर्पण, उपाकर्म, समावर्तन —	**तीन**
दाहकर्म, श्राद्ध —	**चार**

- इस गृह्यसूत्र की **चार टीकाएँ** प्राप्त होती हैं
  1. जयन्त-स्वामी कृत विमलोदय
  2. देवस्वामी का भाष्य
  3. नारायण कृत विवरण टीका
  4. हरदत्त कृत अनाविला टीका

शांखायन गृह्यसूत्र का परिचय

- शांखायन गृह्यसूत्र ऋग्वेद की बाष्कल शाखा से है।
- शांखायन गृह्यसूत्र के रचयिता 'सुयज्ञ' हैं। इस गृह्यसूत्र में छः अध्याय हैं।
- टीकाकार नारायण के अनुसार पञ्चम अध्याय परिशिष्ट के रूप में है।
- वैदिक संहिताओं और उपनिषदों आदि के अध्ययन का नियम छठें अध्याय में है।
- प्रो. ओल्डेनबर्ग ने जर्मन भाषा में इस गृह्यसूत्र का अनुवाद किया।
- सीताराम सहगल द्वारा सम्पादित दिल्ली से 1960 में प्रकाशित हुआ।

कौषीतकि गृह्यसूत्र का परिचय

- कौषीतकि गृह्यसूत्र के रचयिता शाम्भव्य या शांबव्य हैं।
- इस गृह्यसूत्र में पाँच अध्याय हैं।
- पाँचवें अध्याय में अन्त्येष्टि का निरूपण है।
- कौषीतकि गृह्यसूत्र के दो संस्करण प्राप्त होते हैं-
  1 टी. आर. चिन्तामणि द्वारा सम्पादित, मद्रास विश्वविद्यालय से प्रकाशित
  2 पं. रत्नगोपाल द्वारा सम्पादित, काशी संस्कृत सीरीज से प्रकाशित।

शुक्लयजुर्वेद के गृह्यसूत्र

- शुक्ल यजुर्वेद का केवल एक गृह्यसूत्र पारस्कर गृह्यसूत्र प्राप्त होता है।

पारस्कर गृह्यसूत्र का परिचय

- पारस्कर गृह्यसूत्र का सम्बन्ध शुक्लयजुर्वेद की दोनों शाखाओं से है।
- पारस्कर गृह्यसूत्र में तीन काण्ड तथा प्रत्येक काण्ड कण्डिकाओं में विभक्त हैं।
- इस गृह्यसूत्र के रचयिता आचार्य पारस्कर हैं जिनका समय 200ई.पू. के लगभग माना जाता है।

- पारस्कर गृह्यसूत्र पर पाँच विद्वानों ने भाष्य किए हैं- कर्क, जयराम, हरिहर, गदाधर, विश्वनाथ

पारस्कर गृह्यसूत्र में वर्णित विषय-

होम के सामान्य नियम, विवाह विधि
गर्भाधान,पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म — प्रथम काण्ड
नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन

चूडाकर्म, उपनयन, समावर्तन, पञ्चमहायज्ञ
उपाकर्म, अनध्याय, इन्द्रयज्ञ, सीतायज्ञ — द्वितीय काण्ड

आग्रहायणी कर्म, अष्टका, शालाकर्म, दाहविधि
सभाप्रवेश, रथारोहण, हस्ति आरोहण — तृतीय काण्ड

कृष्ण यजुर्वेद के गृह्यसूत्र

- कृष्ण यजुर्वेद के नौ गृह्यसूत्र प्राप्त हैं।
- नौ गृह्यसूत्रों के नाम- बौधायन; मानव, भारद्वाज, आपस्तम्ब, काठक आग्निवेश्य, हिरण्यकेशि, वाराह, वैखानस।

बौधायन गृह्यसूत्र का परिचय

- बौधायन गृह्यसूत्र के रचयिता बोधायन हैं।
- बोधायन का समय ९००ई.पू. के लगभग है।
- शामशास्त्री द्वारा सम्पादित 1920 ई. में एक संस्करण मैसूर से प्रकाशित हुआ।
- बौधायन गृह्यसूत्र में चार प्रश्न (अध्याय) हैं।
- इस गृह्यसूत्र का प्रचार दक्षिण भारत में रहा है।
  विवाह, गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण श्राद्ध आदि इसके मुख्य विषय हैं।

मानव गृह्यसूत्र का परिचय

- मानव गृह्यसूत्र का सम्बन्ध कृष्णयजुर्वेद की मैत्रायणी शाखा से है।
- मानव गृह्यसूत्र को मैत्रायणीय मानव गृह्यसूत्र भी कहा जाता है।
- गृह्यसूत्र के रचयिता आचार्य मानव को माना जाता है।
- इसमें दो पुरुष या अध्याय हैं।

मानव गृह्यसूत्र में प्रतिपादित विषय-

- ब्रह्मचारी के कर्तव्य, समावर्तन संस्कार, पुंसवन, जातकर्म, नामकरण आदि।

भारद्वाज गृह्यसूत्र का परिचय

- भारद्वाज गृह्यसूत्र भारद्वाज कल्पसूत्र का एक अंश है।
- इस गृह्यसूत्र में तीन प्रश्न या अध्याय हैं।

- उपनयन, विवाह, सीमन्तोन्नयन, पुंसवन, जातकर्म, नामकरण, गृहप्रवेश, श्राद्ध आदि इसके प्रतिपादित विषय हैं।

आपस्तम्ब गृह्यसूत्र का परिचय

- आपस्तम्ब गृह्यसूत्र आपस्तम्ब कल्पसूत्र का अंश है जिसमें तीस प्रश्न हैं। 25, 26, 27 अध्याय गृह्यसूत्र के नाम से जाना जाता है। 25वें तथा 26वें अध्याय में विनियोज्य मन्त्रों का तथा 27वें अध्याय में गृह कर्मों का वर्णन है।
- आपस्तम्ब गृह्यसूत्र का हिरण्यकेशि गृह्यसूत्र के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है।
- आपस्तम्ब गृह्यसूत्र पर दो टीकाएँ प्राप्त होती है।
  1 हरदत्तमिश्र की अनाकुला टीका 2 सुदर्शनाचार्य की तात्पर्यदर्शन टीका

आपस्तम्ब गृह्यसूत्र में प्रतिपादित विषय

- परिभाषाएँ, पाकयज्ञ, विवाह, स्थालीपाक, वैश्वदेवकर्म, उपाकरण, उपनयन, गायत्री उपदेश, चौलकर्म, होम, स्विष्टकृत् , रथारोहण आदि।

काठक गृह्यसूत्र का परिचय

- काठक गृह्यसूत्र का सम्बन्ध कृष्णयजुर्वेद की कठ शाखा से है।
- काठक गृह्यसूत्र का अपरनाम 'लौगाक्षि गृह्यसूत्र' है।
- इस गृह्यसूत्र का मानव और वाराह गृह्यसूत्रों के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है।
- इस गृह्यसूत्र में पाँच अध्याय 75 कण्डिकाएँ हैं।
- काठक गृह्यसूत्र की तीन व्याख्या प्राप्त होती हैं-
  1 आदित्यदर्शन की विवरण 2 ब्राह्मणबल गृह्यपद्धति
  3 देवपल कृत भाष्य
- डॉ. कैलेन्ड ने तीनों व्याख्याओं के सारांश के साथ सम्पादित कर लाहौर से 1922 में प्रकाशित किया।

काठक गृह्यसूत्र में प्रतिपादित विषय

ब्रह्मचर्य के नियम, समावर्तन, उपाकर्म, पाकयज्ञ, विवाह, वेदाध्ययन, होम, स्वस्त्ययन, श्राद्ध है।

आग्निवेश्य गृह्यसूत्र का परिचय

- आग्निवेश्य गृह्यसूत्र के रचयिता अग्निवेश हैं।
- आग्निवेश्य गृह्यसूत्र में तीन प्रश्न या अध्याय हैं।
- इस गृह्यसूत्र में मूर्तिपूजा का विधान तथा तान्त्रिक यन्त्रों का उल्लेख है।
- आग्निवेश्य गृह्यसूत्र श्री.एल.ए. रविवर्मा द्वारा सम्पादित 1940 में त्रिवेन्द्रम् से प्रकाशित हुआ।

हिरण्यकेशि गृह्यसूत्र का परिचय

- हिरण्यकेशि गृह्यसूत्र को सत्याषाढ गृह्यसूत्र भी कहा जाता है।
- हिरण्यकेशि गृह्यसूत्र में दो प्रश्न (अध्याय) हैं, तथा प्रत्येक प्रश्न में आठ पटल हैं।

- हिरण्यकेशि गृह्यसूत्र में प्रतिपादित विषय उपनयन, समावर्तन, प्रायश्चित, विवाह, शालाकर्म का वर्णन प्रथम प्रश्न में वर्णित हैं।
- सीमन्तोन्नयन, पुंसवन, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, चूडाकर्म, उपाकरण का वर्णन द्वितीय प्रश्न में वर्णित है।

वाराह गृह्यसूत्र का परिचय

- वाराह गृह्यसूत्र का सम्बन्ध मैत्रायणीय संहिता से है।
- वाराह गृह्यसूत्र की वस्तु मानव गृह्यसूत्र के समान है।
  इस गृह्यसूत्र के दो संस्करण हैं
  1. सन् 1920 में मैसूर से डा. शामशास्त्री द्वारा सम्पादित
  2. सन् 1932 में लाहौर से डा. रघुवीर द्वारा सम्पादित

वैखानस गृह्यसूत्र का परिचय

- वैखानस गृह्यसूत्र का सम्बन्ध तैत्तिरीय शाखा से है।
- वैखानस गृह्यसूत्र के रचयिता विखनस् मुनि माने गये हैं।
- इस गृह्यसूत्र में विनियोग वाले मन्त्र प्रतीक रूप में दिए गए हैं।
- मन्त्रों के एक संकलन वैखानसीया मन्त्रसंहिता नाम से प्रकाशित हुआ है।
- वैखानस गृह्यसूत्र में सात प्रश्न और 120 खण्ड हैं।
- संस्कारों की संख्या अठारह है जिसे 'शरीर' नाम दिया है।
- अठारह संस्कारों के नाम- गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तकर्म, जातकर्म, नामकरण, चूडाकर्म, उपनयन, उपाकर्म, समावर्तन, पाणिग्रहण।
- ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, भूतयज्ञ, मनुष्ययज्ञ पाँच यज्ञों का वर्णन है।
- हविर्यज्ञ तथा सोमयज्ञ का उल्लेख भी प्राप्त होता है।
- डा. कैलेन्ड ने अंग्रेजी अनुवाद के साथ कलकत्ता से 1929 में प्रकाशित किया

सामवेदीय गृह्यसूत्र

- सामवेद के निम्नलिखित गृह्यसूत्र उपलब्ध हैं- गोभिल, खादिर, द्राह्यायण और जैमिनीय गृह्यसूत्र। इसके अतिरिक्त कौथुमगृह्यसूत्र का सम्पादन डा. सूर्यकान्त ने किया, यह भी प्राप्त होता है।

गोभिल गृह्यसूत्र का परिचय

- गोभिल धर्मसूत्र सामवेद की कौथुम शाखा से सम्बन्धित है।
- सामवेदीय गोभिल गृह्यसूत्र सबसे प्रसिद्ध गृह्यसूत्र है।
- इसमें मन्त्र प्रतीकरूप में दिए गए हैं, सामवेद के मन्त्र भी इस गृह्यसूत्र में प्राप्त होते हैं।
- गोभिल गृह्यसूत्र में चार प्रपाठक हैं जो 39 खण्डों में विभक्त हैं।

गोभिल गृह्यसूत्र में प्रतिपादित विषय-

- सामान्य विधियाँ, होम के अधिकार, अग्न्याधान, आचमनविधि, वैश्वदेव विधि, दर्शपूर्णमास का वर्णन प्रथम प्रपाठक में है।

- विवाह, गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, उपनयन का वर्णन द्वितीय प्रपाठक में है।
- गोदान, ब्रह्मचारी के कर्म, उपाकर्म, अनध्याय समावर्तन का वर्णन तृतीय प्रपाठक में है।
- पितृयज्ञ, काम्यकर्म, वास्तुनिर्माण, वास्तुयोग यशस्काम कर्म का वर्णन चतुर्थ प्रपाठक में है।

खादिर गृह्यसूत्र का परिचय

- खादिर गृह्यसूत्र का सम्बन्ध राणायनीय शाखा से है।
- खादिर गृह्यसूत्र पर रुद्रस्कन्द की वृत्ति प्राप्त होती है।
- 1913 में महादेव शास्त्री ने इसका एक संस्करण मैसूर से प्रकाशित किया।

द्राह्यायण गृह्यसूत्र का परिचय

- द्राह्यायण गृह्यसूत्र के दो संस्करण प्राप्त होते हैं।
- आनन्द आश्रम पूना से 1914 तथा हिन्दी अनुवाद सहित मुजफ्फरपुर से 1934 ई. में प्रकाशित।

जैमिनीय गृह्यसूत्र का परिचय

- जैमिनीय गृह्यसूत्र में दो अध्याय हैं।
- प्रथम अध्याय में चौबीस और द्वितीय में नौ कण्डिकाएँ हैं।
- संस्कारों का वर्णन प्रथम अध्याय में तथा श्राद्ध, अष्टकाएँ, अन्त्येष्टि और शान्तिकृत्य का उल्लेख द्वितीय अध्याय में है।
- जैमिनीय गृह्यसूत्र पर श्रीनिवासाध्वरी की सुबोधिनी टीका प्राप्त होती है।

कौथुम गृह्यसूत्र का परिचय

- कौथुम गृह्यसूत्र का सम्पादन सूर्यकान्त ने किया जो एशियाटिक सोसायटी कलकत्ता से प्रकाशित है।
- कौथुमगृह्यसूत्र में सबसे पहले प्रायश्चित्तों का वर्णन है।

अथर्ववेद के गृह्यसूत्र

- अथर्ववेद का एकमात्र गृह्यसूत्र प्राप्त होता है जो **कौशिक गृह्यसूत्र** है।
- कौशिक गृह्यसूत्र मे चौदह अध्याय हैं जिसका विभाजन कण्डिकाओं में है।
- कौशिक गृह्यसूत्र में शान्ति कर्म और अभिचार कर्मों का वर्णन है जो अथर्ववेद से गृहीत है।
- कौशिक गृह्यसूत्र में गृह कर्मों का वर्णन कम है। अभिचार कर्मों, यातुविद्या, मन्त्र-तन्त्र, रोगनाशक उपाय, आदि का वर्णन अधिक है।

धर्मसूत्रों का परिचय

- धर्मसूत्र आचार संहिता से सम्बद्ध ग्रन्थ हैं।
- धर्मसूत्र स्मृतियों के पूर्वरूप हैं।
- समाज को शान्ति और स्थिरता प्रदान करना धर्मसूत्रों का उद्देश्य है।
- करनिर्धारण, कर के प्रकार, कर का उपयोग, सम्पत्ति विभाजन, स्त्रीधन का स्वरूप आदि विषयों का वर्णन धर्मसूत्रों में प्राप्त होता है।

ऋग्वेद के धर्मसूत्र

➢ ऋग्वेद के दो धर्मसूत्र प्राप्त हैं- वासिष्ठ धर्मसूत्र तथा विष्णु धर्मसूत्र।

वासिष्ठ धर्मसूत्र का परिचय

➢ वासिष्ठ धर्मसूत्र महर्षि वसिष्ठ की रचना है।
इसमें अध्यायों की संख्या भिन्न-भिन्न है, आनन्दाश्रम और फ्यूहरर के संस्करण में तीस-तीस अध्याय हैं।

➢ 25-28 अध्याय पद्यात्मक रूप में हैं तथा अध्याय 29–30 में गद्य एवं पद्य दोनों है।

➢ वासिष्ठ धर्मसूत्र में **'आचारः परमो धर्मः'** कहकर सदाचार पर बहुत बल दिया गया है।

विष्णु धर्मसूत्र का परिचय

➢ विष्णु धर्मसूत्र गद्य एवं पद्य से मिश्रित है।

➢ इस धर्मसूत्र में स्मृति, गौतम धर्मसूत्र, वासिष्ठ धर्मसूत्र के श्लोक एवं सूत्र प्राप्त होते हैं।

➢ डा. जोली ने इसे अंग्रेजी अनुवाद के साथ प्रकाशित किया।

यजुर्वेद के धर्मसूत्र

हारीत धर्मसूत्र का परिचय

➢ इसमें पद्यात्मक वचन प्राप्त होता है।

➢ आठ प्रकार के विवाहों में आर्ष और प्राजापत्य के स्थान पर क्षात्र और मानुष नाम का उल्लेख है।

➢ आनन्द आश्रम पूना संस्करण से वृद्ध हारीत नाम से प्रकाशित हुआ है जिसमें दस अध्याय हैं।

बौधायन धर्मसूत्र का परिचय

➢ बौधायन धर्मसूत्र बौधायन कल्पसूत्र का अंश है ।

➢ बौधायन धर्मसूत्र में चार प्रश्न (अध्याय) हैं। डॉ0 कीथ ने चतुर्थ प्रश्न को प्रक्षिप्त माना है।

➢ चतुर्थ प्रश्न पद्यात्मक है और पूर्व प्रश्नों के ही विषय हैं ।

➢ बौधायन धर्मसूत्र आपस्तम्ब से पूर्ववर्ती तथा गौतम से परवर्ती है ।

बौधायन धर्मसूत्र में प्रतिपादित विषय

विषय	प्रश्न
ब्रह्मचर्य के नियम,दायभाग, भक्ष्याभक्ष्य, चातुर्वर्ण्य विचार वर्णसङ्कर, राजा के कर्तव्य, पाँच महापाप और उनके दण्ड, आठ प्रकार के विवाह।	प्रथम प्रश्न
महापातकों के प्रायश्चित्त,कृच्छ्र आदि व्रत, संन्यास के नियम आदि।	द्वितीय प्रश्न
वानप्रस्थ, संन्यासी के धर्म, चान्द्रायण व्रत।	तृतीय प्रश्न
प्रायश्चित्त, काम्य सिद्धियाँ।	चतुर्थ प्रश्न

आपस्तम्ब धर्मसूत्र का परिचय

➢ आपस्तम्ब धर्मसूत्र के रचयिता आपस्तम्ब हैं ।

- आपस्तम्ब कल्पसूत्र के दो प्रश्न 28-29 आपस्तम्ब धर्मसूत्र कहे जाते हैं ।
- दोनों प्रश्नों में 11-11 पटल हैं।
- आपस्तम्ब धर्मसूत्र में प्राचीन दस आचार्यो का उल्लेख है।
- श्रुति,अंग, विधि आदि मीमांसा के पारिभाषिक शब्दों का उल्लेख है।
- प्राजापत्य और पैशाच विवाह को अवैध माना गया है।
- आपस्तम्ब धर्मसूत्र में ब्याज लेना निन्द्य है ऐसा वर्णन प्राप्त होता है।
- हरदत्त मिश्र की उज्ज्वला व्याख्या प्राप्त होती है।

सामवेद के धर्मसूत्र

- सामवेद का एक ही धर्मसूत्र प्राप्त होता है - गौतमधर्मसूत्र

गौतम धर्मसूत्र का परिचय

- गौतम धर्मसूत्र का सम्बन्ध सामवेद से है।
- गौतम धर्मसूत्र के रचयिता गौतम हैं।
- गौतम धर्मसूत्र में 28 अध्याय तथा एक हजार सूत्र प्राप्त होते हैं ।
- गौतम धर्मसूत्र का 26 वाँ अध्याय सामविधान ब्राह्मण के समान है ।

गौतम धर्मसूत्र में प्रतिपादित विषय

प्रतिपादित विषय	अध्याय
धर्मस्रोत,उपनयन,चार आश्रमों का वर्णन ब्रह्मचारी, गृहस्थ, भिक्षु और वैखानस के कर्तव्य, आठ प्रकार के विवाह,पंचमहाव्रत	अध्याय 1-5
माता-पिता-गुरु का सत्कार,आपद्धर्म, 40 संस्कार चारों वर्णों के कर्तव्य, राजधर्म, कर, सम्पत्ति की सुरक्षा	अध्याय 6-10
अपराध और दण्ड-विधान, साक्षी साक्ष्य के नियम	अध्याय 11-15
भक्ष्याभक्ष्य विचार, स्त्रीधर्म,नियोग विविध पातक और प्रायश्चित्त	अध्याय 16-20
विविध पातक और प्रायश्चित्त, कृच्छ्र आदि व्रत, चान्द्रायण व्रत, सम्पत्ति का विभाजन दायभाग	अध्याय 21-28

शुल्बसूत्रों का परिचय

- शुल्बसूत्र गणितशास्त्रीय वैज्ञानिक ग्रन्थ हैं।
- शुल्बसूत्र में गणितशास्त्र के अङ्ग ज्यामितीयशास्त्र से सम्बद्ध अनेक प्रमेय दिए गए हैं।
- यज्ञ की वेदी के निर्माण की विधि एवं छोटी - बड़ी वेदियों का वर्णन शुल्बसूत्र में प्राप्त होता है।
- शुल्ब शब्द का अर्थ रस्सी है।
- रेखागणित की दृष्टि से शुल्बसूत्रों का काफी महत्त्व है।

बौधायन शुल्बसूत्र का परिचय

- बौधायन शुल्बसूत्र का सम्बन्ध कृष्णयजुर्वेद से है, इसके रचयिता बोधायन मुनि हैं।
- बोधायन का समय 900ई.पू. से 850 ई.पू. के मध्य माना जाता है ।

- बौधायन शुल्बसूत्र सबसे प्राचीन शुल्बसूत्र है।
- बौधायन शुल्बसूत्र में तीन परिच्छेद तथा 519 सूत्र हैं।
- तीनों परिच्छेद में सूत्रों की संख्या -

परिच्छेद		सूत्र
प्रथम	-	113 सूत्र
द्वितीय	-	83 सूत्र
तृतीय	-	323 सूत्र

- बौधायन शुल्बसूत्र पर दो टीकाएँ प्राप्त हैं -
  1. द्वारकानाथ यज्वा की शुल्बदीपिका टीका।
  2. वेंकटेश्वर दीक्षित की शुल्बमीमांसा टीका।

आपस्तम्ब शुल्बसूत्र का परिचय

- आपस्तम्ब शुल्बसूत्र कृष्णयजुर्वेद से सम्बन्धित है ।
- आपस्तम्ब शुल्बसूत्र के रचयिता आपस्तम्ब हैं, जिनका समय 7 वीं शती ई.पू. माना जाता है ।
- आपस्तम्ब शुल्बसूत्र में छः पटल, 21 अध्याय तथा 498 सूत्र हैं ।

आपस्तम्ब शुल्बसूत्र के प्रतिपादित विषय -

- एक से तीन अध्यायों में वेदियों की रचना के आधारभूत रेखागणितीय सिद्धान्त का विवरण - प्रथम पटल
- अध्याय 4-6 में वेदियों के क्रमिक स्थान और उनकी विभिन्न आकृतियों का वर्णन तथा उनके बनाने के ढंग का वर्णन - द्वितीय पटल
- पन्द्रह अध्यायों में काम्य इष्टियों के लिए आवश्यक वेदियों के आकार प्रकार का वर्णन - अध्याय 3-6 में।

कात्यायन शुल्बसूत्र का परिचय

- कात्यायन शुल्बसूत्र का सम्बन्ध शुक्ल यजुर्वेद से है।
- कात्यायन शुल्बसूत्र को कात्यायन शुल्ब परिशिष्ट या कातीय शुल्ब परिशिष्ट कहते हैं।
- इसके दो भाग हैं, प्रथम भाग सूत्रों में हैं, इसमें छः कण्डिकाओं में 102 सूत्र हैं ।
- द्वितीय भाग श्लोकात्मक है जिसमें चालीस श्लोक हैं।
- कात्यायन ने वेदिनिर्माण के नियमों का विशेष क्रमबद्ध रूप से वर्णन किया है ।
- कात्यायन शुल्बसूत्र की तीन टीकाएँ प्राप्त होती हैं।

मानव शुल्बसूत्र का परिचय

- मानव शुल्बसूत्र गद्य-पद्य मिश्रित एक छोटा ग्रन्थ है।
- इसमें प्रसिद्ध 'सुपर्णा चिति' वेदी का विवरण है, जो अन्यत्र नहीं प्राप्त होती।
- इसमें अनेक नवीन वेदियों का वर्णन मिलता है, जो अन्य शुल्बसूत्रों में नहीं है।

❑❑

10. वैदिक देवता

वैदिक देवता

वेदों में सर्वोत्कृष्ट तत्त्व ही 'देव' शब्द से वाच्य है। (ऋग्वेद 1/139/119) के अनुसार कुल 33 देवता हैं, जिनमें से 11 पृथ्वी में, 11 अन्तरिक्ष में तथा 11 द्युलोक में हैं। शतपथ ब्राह्मण (11/6/3/5) के अनुसार 8 वसु, 11 रुद्र, 12 आदित्य तथा 1 इन्द्र ,1प्रजापति, कुल 33 देवता हैं। यद्यपि ऋग्वेद (11/53/6), शतपथ ब्राह्मण (11/6/3/4) तथा शांखायन श्रौतसूत्र (8/21/14) में देवताओं की संख्या 3339 निर्दिष्ट है। यहाँ ध्यान देने योग्य तथ्य है कि पुराणों में जो 33 कोटि देवता का उल्लेख मिलता है, वहाँ 'कोटि' शब्द प्रकार वाचक है, संख्या वाचक नहीं।

अग्नि देवता

- अग्नि पृथ्वी स्थानीय देवता हैं।
- इनकी स्तुति 200 सूक्तों में की गयी है।
- अग्नि देवता ऋग्वेद के प्रथममण्डल के प्रथमसूक्त के देवता हैं।
- अग्नि सूक्त (1.1) के ऋषि 'मधुच्छन्दा' हैं।
- अग्नि देवता का प्रधान कर्म हविष्य का वहन करना है।
- **अग्नि देवता के प्रमुख विशेषण/उपाधियाँ-** ऋत्विक्, होता, पुरोहित, रत्नधातमम्, कविक्रतु, चित्रश्रवस्तम्, कवि, हव्यवाह, धूमकेतु, गृहपति, दमूनस्, अंगिरस्, दूत, विश्ववेदाः, सप्तरश्मि, घृतपृष्ठ, घृतलोम, घृतप्रतीक, शोचिषकेश, विश्पति, असुर, सहस्राक्ष, त्रिमूर्द्धा, मन्द्रजिह्व, अपानपात्, उर्जोनपात् इत्यादि।

अग्नि देवता से जुड़ी कुछ विशेष ऋचाएँ-

* अग्निमीळे पुरोहितम्।
* होतारं रत्नधातमम्।
* स देवाँ एह वक्षति।
* अग्निर्होता कविक्रतुः।
* राजन्तमध्वराणाम्।
* सः न पितेव सूनवे।

अग्नि देवता का स्वरूप -

अग्नि के विराट् रूप का वर्णन करते हुए अथर्ववेद (8.1.11) में कहा गया है कि वह चार प्रकार का है- भौतिक अग्नि, जलीय अग्नि, सूर्य, विद्युत्।

- वेदों में तीन अग्नियों का उल्लेख है - गार्हपत्य अग्नि, आहवनीय अग्नि, दक्षिणाग्नि
- अग्नि का मुख्य आहार घृत है।
- घृत और ईंधन के अतिरिक्त सोम भी इनका प्रिय पेय है। इनको 'सोमगोपा' भी कहते हैं।
- अग्नि अपने उपासकों का कल्याण उसी प्रकार करते हैं, जैसे- पिता-पुत्र का- 'सः न पितेव सूनवेऽग्ने........' (ऋक् 1/1/9)
- ऋग्वेद पुरुषसूक्त के अनुसार, अग्नि की उत्पत्ति, विराट्-पुरुष के मुख से हुई है- **'मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च'**
- वैदिक ऋषि अग्नि के पिता को 'द्यौ' की संज्ञा देते हैं- **'यदेनं द्यौर्जनयत् सुरेताः।'**
- कहीं पर इन्हें त्वष्टा का पुत्र तो कहीं पर द्यावापृथिवी का पुत्र कहा गया है।
- ऋग्वैदिक विवरण के अनुसार इन्द्र ने दो पत्थरों के बीच अग्नि को उत्पन्न किया- **'यो अश्मनोरन्तरग्निं जजान'**
- इसके अतिरिक्त अग्नि का जन्म दो अरणियों के घर्षण से अथवा दश युवतियों से हुआ माना जाता है।
- अग्नि को पृथिवी तथा अमृत की 'नाभि' कहा गया है।
- अन्तरिक्ष में स्थित जल से भी अग्नि की उत्पत्ति बतायी गयी है।

निरुक्त के अनुसार 'अग्नि' की व्युत्पत्ति-

* अङ्गं नयति सन्नममानः।
* अक्नोपनो भवति।
* अग्रं यज्ञेषु प्रणीयते।
* अग्रणीर्भवति इति।

इन्द्र देवता का परिचय

- इन्द्र अन्तरिक्षस्थानीय देवता हैं।
- इन्द्र की स्तुति 250 सूक्तों में की गयी है। ऋग्वेद में सर्वाधिक स्तुति इन्द्र की ही है।
- इन्द्र सूक्त (2.12) के ऋषि 'गृत्समद्' हैं।

इन्द्र की प्रमुख उपाधियाँ

वृत्रहा, सुशिप्र, सोमपा, शक्र, पुरन्दर, वज्री, वज्रहस्त, मरुत्सखा, वज्रबाहु, हरिकेश, हरिश्मश्रु, हिरण्यबाहु, चित्रभानु, पुरुहूत, वृषा, शचीपति, आखण्डल, सोमी, मरुत्वान्, धनञ्जय, गोत्रभिद्, मनस्वान्, संवृक्समत्सु, सप्तरश्मि, अच्युतच्युत, अपांनेता इत्यादि।

इन्द्र देवता का स्वरूप

- इनके होठों के अत्यन्त सुन्दर होने के कारण इन्हें 'सुशिप्र' कहा गया है।
- इन्द्र का प्रधान शस्त्र 'वज्र' है। इसी वज्र को धारण करने के कारण इन्हें 'वज्रिन्' या 'वज्रबाहु' आदि नामों से पुकारा गया है।
- इन्द्र का सर्वश्रेष्ठ पेय 'सोम' है। इसीलिए इन्हें 'सोमपा' कहा गया है- 'यो सोमपा निचितो वज्रबाहुः।'
- उत्पन्न होते ही इन्द्र ने अपने पराक्रम का परिचय दिया, जिससे आकाश और पृथ्वी काँपने लगे- 'यस्य शुष्माद्रोदसी अभ्यषेताम्।'
- ऋग्वेद पुरुषसूक्त के अनुसार इन्द्र की उत्पत्ति, विराट् पुरुष के मुख से हुई है- 'मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च'।
- मरुत् का मित्र होने के कारण इन्द्र को मरुत्सखा, मरुत्वान् आदि नामों से सम्बोधित किया गया है।

इन्द्र के महत्त्वपूर्ण कार्य

- इनका सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य वृत्रवध है।
- इन्होंने 'बल' नामक असुर का वध करके गायों को उसकी गुफा से मुक्त किया।
- इन्द्र ने ही सूर्य तथा उषा को उत्पन्न किया- 'यो सूर्यं उषसं जजान।'
- इन्द्र ने ही 'शम्बर' नामक असुर को 40 वर्ष पर्यन्त ढूँढ कर मार डाला।
- इन्होंने ही द्युलोक में चढ़ते हुए रौहिण नामक असुर को झटका देकर नीचे गिरा दिया।

इन्द्र की व्युत्पत्ति

- इरां दृणाति।
- इरां ददाति।
- इरां दधाति।
- इरां दारयते।
- इरां धारयते।
- इन्दवे द्रवति।
- इन्दौ रमत, इन्दञ्छत्रूणां दारयिता।

इन्द्र		
स्थान	स्तुति	ऋषि
(अन्तरिक्षस्थानीय)	(250 सूक्तों में)	(गृत्समद)

इन्द्र (2.12) सम्बन्धित प्रमुख ऋचाएँ

- **यो जात एव प्रथमो मनस्वान्** (जो उत्पन्न होते ही सब देवताओं मे प्रमुख मनस्वी हुआ।)
- **येनेमा विश्वा च्यवना कृतानि।** (जिसने इन सम्पूर्ण नश्वर भुवनों को स्थिर किया है।)
- **यो रध्रस्य चोदिता यः कृशस्य।**
  (अर्थात् जो समृद्धिशाली व्यक्ति को प्रेरणा देने वाला है, जो निर्धन को प्रेरणा देने वाला है।)
- **यः सूर्यं य उषसं जजान।**
  (अर्थात् जिसने सूर्य को और जिसने ऊषा को उत्पन्न किया)
- **यः शश्वतो मह्येनो दधानान्।**
  (जिसने अत्यधिक पाप को धारण करने वाले व्यक्तियों का वध कर डाला)

वरुण देवता

- वरुण द्युस्थानीय देवता हैं।
- इनकी स्तुति 12 सूक्तों में की गयी है।
- वरुण सूक्त (1/25) के ऋषि 'शुनः शेप' हैं।

वरुण देवता की प्रमुख उपाधियाँ

असुर, क्षत्रिय, धृतव्रत, ऋतगोपा, अमृतस्यगोपा, उरुशंशः, दूतदक्षः, स्वराट्, मायावी इत्यादि।

वरुण देवता का स्वरूप

- इनका सुनहरा कवच दर्शकों के हृदय को चकाचौंध कर देता है।
- ये दूर से दूर की वस्तु को भी देख सकते हैं।
- सूर्य इनके नेत्र हैं।

महत्त्वपूर्ण कार्य

- इनकी आज्ञायें अत्यन्त कठोर हैं। इन कठोर नियमों के अनुशीलन के ही कारण इन्हें 'धृतव्रत' भी कहा गया है।
- ये अपने उपासकों को केवल उसी के द्वारा किये गये पापों से मुक्त नहीं करते हैं, बल्कि उसके पिता द्वारा, दूसरों के द्वारा तथा अज्ञान व भ्रमवश किये गये सभी पापों से मुक्त कर देते हैं।
- विश्व के नैतिक अध्यक्ष के रूप में वरुण से बढ़कर कोई भी देवता नहीं है।

वरुण		
स्थान	स्तुति	ऋषि
(द्युस्थानीय)	(12 सूक्तों में)	(शुनःशेप)
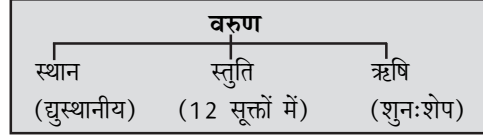
वरुण' की व्युत्पत्ति

- वरुणो वृणोतीति सतः।

वरुण (1/25) से सम्बन्धित ऋचाएँ

- **तदित्समानमाशाते वेनन्ता न प्र युच्छातः।** (1.25.6)
  (अर्थात् शुभ कामना करते हुए मित्र और वरुण समान रूप से एक सी ही उस हवि को प्राप्त करते हैं)
- **वेद वातस्य वर्तनिमुरोर्ऋष्वस्य बृहतः।** (1.25.9)
  (अर्थात् ये वरुण देवता विस्तीर्ण या व्यापक, दर्शनीय और गुणों से महान् वायु के मार्ग को जानते हैं।)
- **उत यो मानुषेष्वा यशश्चक्रे असाम्या।** (1.25.15)
  (जिस देवता ने मनुष्यों में अन्न को उत्पन्न किया।)

सवितृ देवता का परिचय

- सवितृ द्युस्थानीय देवता हैं।
- इनकी स्तुति 11 सूक्तों में की गयी है।

सवितृ देवता की उपाधियाँ

असुर, हिरण्यपाणि, सुपर्ण, सुनीथ, हिरण्याक्ष, हिरण्यस्तूप, स्वर्णपाद, सुमृतळीक, दमूना, स्वर्णनेत्र, स्वर्णहस्त, स्वर्णपाद, स्वर्णजिह्व इत्यादि।

सवितृ देवता का स्वरूप

- सवितृ देव मुख्य रूप से स्वर्णिम देवता हैं। इसीलिए इन्हें स्वर्णनेत्र, स्वर्णहस्त, स्वर्णपाद एवं स्वर्णजिह्व, की सञ्ज्ञा दी गयी है।
- इनको लौह, जबडों वाला भी कहा गया है।
- इनके केश, पीले तथा सुनहले हैं।
- ये विविध रूपवाले स्वर्णिम रथ पर चढ़कर चलते हैं, जिसे सफेद पैर वाले दो घोड़े खींचते हैं।

महत्त्वपूर्ण कार्य

- सवितृ मुख्य रूप से सबके प्रकाशक देवता हैं।
- ये पृथिवी, अन्तरिक्ष एवं द्युलोक सबको प्रकाशित करते हैं।
- कोई भी प्राणी इनकी आज्ञा का उल्लंघन नहीं करता।
- इन्हें एक प्रेरक देवता के रूप में देखा गया है।

➢ गायत्री मन्त्र का सम्बन्ध सीधे सवितृ देव से ही है।

सवितृ (1/35)		
स्थान	स्तुति	ऋषि
(द्युस्थानीय)	(11 सूक्तों में)	(हिरण्यस्तूप)
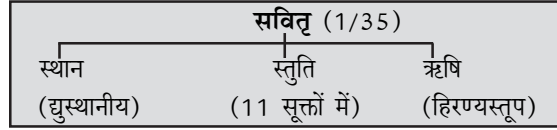
सवितृ की व्युत्पत्ति

➢ सविता सर्वस्य प्रसविता, अन्धकार मध्यादागच्छन् प्रकाशः सवितेति कथ्यते।

सवितृ सूक्त (1/35) से सम्बन्धित प्रमुख ऋचाएँ-

➢ **ह्वयाम्यग्निं प्रथमं स्वस्तये।**
(अर्थात् अपने कल्याण के लिए मैं सबसे पहले अग्नि देवता का आह्वान करता हूँ।)

➢ **याति देवः प्रवता यात्युद्धता याति।**
(अर्थात् देदीप्यमान सविता देवता प्रवण मार्ग से जा रहा है और उत्कृष्ट ऊर्ध्व मार्ग से जा रहा है।)

➢ **तिस्रो द्यावः सवितुर्द्वा उपस्थाँ।**
(अर्थात् स्वर्ग से उपलक्षित प्रकाशमान लोक तीन हैं। उनमें से दो लोक सूर्य के समीप हैं।)

➢ **अष्टौ व्यख्यत्ककुभः पृथिव्यास्त्री।**
(सूर्य ने पृथिवी की आठों दिशाओं को प्रकाशित किया)

विष्णु देवता का परिचय

➢ विष्णु द्युस्थानीय देवता हैं।
➢ विष्णु की स्तुति 5 सूक्तों में की गयी है।
➢ विष्णु (1/154) सूक्त के ऋषि 'दीर्घतमा' है।

विष्णु के विशेषण

उरुक्रम, उरुगाय, कुचर, गिरिष्ठा, वृष्ण, गिरिक्षित, विक्रम, त्रिविक्रम, भीम इत्यादि।

विष्णु देवता का स्वरूप

➢ मानवाकृति के रूप में विष्णु के तीन कदमों का विशेष रूप से उल्लेख किया गया है- 'विचक्रमाणस्त्रेधोरुगायः' 'यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेषु', 'उरुक्रमस्य स हि बन्धुरित्था', सधस्थमेको त्रिभिरित्पदेभिः' इत्यादि।
➢ विष्णु के परमधाम में सहस्त्र सींगों वाली गायें हैं-
'ता वां वास्तून्युशमसि गमध्यै। यत्र गावो भूरिशृंगा अयासः।।'
➢ वेदों में विष्णु को इन्द्र का मित्र तथा पुराणों में उपेन्द्र भी कहा गया है।
➢ पक्षियों में श्रेष्ठ गरुड इनके वाहन हैं।

विष्णु

स्थान	स्तुति	ऋषि
(द्युस्थानीय)	(5 सूक्तों में)	(दीर्घतमा)
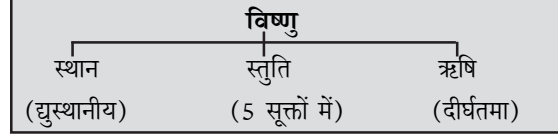
विष्णु के महत्त्वपूर्ण कार्य

- विष्णु ने अपने तीन कदमों के द्वारा सम्पूर्ण लोकों को नापा था
- विष्णु गर्भ के रक्षक माने जाते हैं।
- गर्भाधान के निमित्त अन्य देवताओं के साथ विष्णु की भी स्तुति की जाती है।
- ये परोपकारी, प्रचुर धन का दान करने वाले, उदार, सबके रक्षक तथा विश्व का भरण पोषण करने वाले हैं।
- शाकपूणि के मत में सूर्य के तीनों लोक- पृथिवी, अन्तरिक्ष तथा द्युलोक ही विष्णु के तीनों कदम हैं जबकि **और्णवाभ** के मत में विष्णु के तीनों कदम ही सूर्य के उदय, मध्याह्न तथा अस्त के द्योतक हैं।

विष्णु की व्युत्पत्ति

- विष्णातेर्विशतेर्वा स्याद् वेवेष्टेर्व्याप्तिकर्मणः।

विष्णु (1/154) से सम्बन्धित प्रमुख ऋचाएँ-

- **यः पार्थिवानि विममे रजांसि।**
  (अर्थात् जिस विष्णु ने पृथिवी सम्बन्धी रजःकणों अर्थात् अग्नि, वायु, आदित्य विशेष लोकों की विशेष रूप से रचना की ।
- **यस्य त्री पूर्णा मधुना।**
  (अर्थात् जिस विष्णु के मधुर दिव्य अमृत से भरे हुए तीन पद कभी क्षीण न होते हुए अन्न के द्वारा आनन्दित करते हैं)
- **यत्र गावो भूरिशृङ्गा अयासः।**
  (जहाँ बड़े-बड़े ऊँचे सींगो वाली गायें अथवा अनेक प्रकार से फैलने वाली किरणें निवास करती हैं।)

रुद्र देवता

- रुद्र अन्तरिक्ष-स्थानीय देवता हैं।
- इनकी स्तुति 3 सूक्तों में की गयी है।
- रुद्र सूक्त (2/33) के ऋषि गृत्समद हैं।

रुद्र के विशेषण

त्रयम्बक, कृत्तिवास, नीललोहित, भव, शर्व, पशुपति, मरुत्पिता, असुर, मरुत्वान्, मीळवान्, तव्यान्, भिषक्तम्, वङ्कु, जलाषभेषज, सुशिप्र, रक्तवर्णी, मृण्याकुः, शिव इत्यादि।

रुद्र देवता का स्वरूप

- रुद्र का वर्ण भूरा है तथा होंठ बहुत सुन्दर हैं। इसी कारण से इनके लिए ऋग्वेद में क्रमशः 'बभ्रु' तथा 'सुशिप्र' विशेषण का प्रयोग किया गया है।
- इनको वाजसनेयी संहिता में रक्तवर्णी बताया गया है।
- वाजसनेयी संहिता में ही इन्हें नाना प्रकार के रूपों को धारण करने वाले तथा सूर्य की भाँति प्रकाशमान कहा गया है।
- ये चर्मवस्त्र को धारण करते हैं।
- ये पर्वतों पर निवास करते हैं।
- ये शस्त्र के रूप में धनुष तथा बाण धारण करते है-'अहं रुद्राय धनुरातनोमि।'
- रुद्र का कृपाण विद्युत् से निर्मित हुआ है।

रुद्र

स्थान	स्तुति	ऋषि
(अन्तरिक्षस्थानीय)	(3 सूक्तों में)	(गृत्समद)
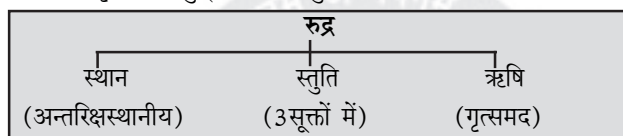
रुद्र देवता के कार्य

- ऋग्वेद, रुद्र के विनाशकारी तथा कल्याणकारी द्विविध स्वरूपों का चित्रण प्रस्तुत करता है।
- ये एक भयानक पशु के समान विध्वंसक तथा शक्तिशाली वृषभ हैं।
- रुद्र के लिए 'असुर' विशेषण का प्रयोग हुआ है।
- जब रुद्र प्रसन्न होते हैं, तो अपने लोकोपकारक शिवस्वरूप में आते हैं और मनुष्यों एवं पशु-पक्षी सभी जीवों की रक्षा करते हैं।
- रुद्र के हाथों को मृण्याकुः (सुखदेनेवाला), जलाषः (शीतलता प्रदान करने वाला), भेषजः (आरोग्यता प्रदान करने वाला) कहा गया है।
- रुद्र देवताओं के कुशल वैद्य के रूप में प्रसिद्ध हैं।

'रुद्र' की व्युत्पत्ति-

रौतीति सतो रोरूयमाणो द्रवतीति वा रोदयतेर्वा।

रुद्र (2/33) से सम्बन्धित ऋचाएँ

- **आ ते पितर्मरुतां सम्नमेतु :**

  (अर्थात् हे मरुत् नामक देवताओं के पिता रुद्र! तुम्हारे द्वारा हमें देने योग्य सुख प्राप्त होवें।)

➢ **श्रेष्ठो जातस्य रुद्र श्रियांसि।**

(अर्थात् हे रुद्र! उत्पन्न हुए इस सम्पूर्ण जगत् में तुम अपने ऐश्वर्य से सबसे श्रेष्ठ हो।)

➢ **मा त्वा रुद्र चुक्रुधामा नमोभिः।**

(अर्थात् हे रुद्र! हम तुमको अनुचित प्रकार से किये गये नमस्कारों से क्रोधित न करें।)

➢ **अहन्बिभर्षि सायकानि धन्व।**

(अर्थात् हे रुद्र! योग्य होते हुये तुम बाणों और धनुष को धारण करते हो।)

➢ **परि णो हेती रुद्रस्य वृज्याः।**

(अर्थात् रुद्र देवता का शस्त्र हमें छोड़ दे अर्थात् हमारी हिंसा न करें।)

❑❑

11. वेदों के भाष्य एवं भाष्यकार

- वैदिक काल में मानव का मस्तिष्क जितना उर्वरक एवं विकसित रहा है उतना परवर्त्तीकाल में नहीं रहा है। वेदों पर संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद् आदि भागों पर हजारों वर्षों से कितने ही भाष्य लिखे गये और कितनी टीकाएँ रची गयी परन्तु अभी वेद जैसे गूढ़ विषयों का अर्थावबोध उनके लिये कठिन होता गया ।
- वर्तमान में वैदिक वाङ्मय पर उपलब्ध भाष्य एवं टीकाओं के विशाल साहित्य को देखकर आश्चर्य होता है। अब तक प्रकाशित भाष्य एवं टीका ग्रन्थ, उस प्रकाशित विशाल साहित्य के समक्ष अत्यल्प हैं कुछ भाष्यकारों के तो नाम उपलब्ध हैं और कुछ के नाम अभी तक प्राप्त नहीं हैं। कालान्तर में जब वेद- मन्त्रों का अर्थावबोध में कुछ कठिनाइयाँ उपस्थित हुईं तो वेदभाष्यों का निर्माण होने लगा।
- इसप्रकार समस्त संहिताओं, ब्राह्मणों एवं उपनिषदों पर अनेक भाष्य लिखे गये। वेद भाष्यकर्त्ताओं में स्कन्दस्वामी, आनन्दतीर्थ, वेङ्कटमाधव, सायण आदि प्रमुख हैं परिचय का क्रम वेदत्रयी अर्थात् ऋक् -यजु- साम- के क्रमानुसार ही है।

स्कन्दस्वामी -

- ऋग्वेद के भाष्यकारों में स्कन्दस्वामी सबसे प्राचीन हैं।
- ये गुजरात की राजधानी वलभी के रहने वाले थे-

वलभीविनिवासस्येतामृगर्थागमसंहृतिम् ।
भर्तृध्रुवसुतश्चक्रे स्कन्दस्वामी यथास्मृतिः॥

(ऋग्वेदभाष्य प्रथमाष्टक)

- इनके पिता का नाम भर्तृध्रुव था।
- ये शतपथ ब्राह्मण के भाष्यकार हरिस्वामी के गुरु थे।
- स्कन्दस्वामी ने 600 - 625 ई. के मध्य ऋग्वेद पर भाष्य लिखा था।
- यास्क के निरुक्त पर भी टीका लिखी।
- ऋग्वेद पर स्कन्दस्वामी का भाष्य अत्यन्त विशद है।
- इसके प्रत्येक सूक्त के प्रारम्भ में सूत्र के ऋषि तथा देवता का उल्लेख है।
- स्कन्दस्वामी का भाष्य केवल चतुर्थ अष्टक तक ही प्राप्त है।
- ऋग्वेद के भाष्य में वेंकटमाधव ने लिखा है कि स्कन्दस्वामी, नारायण और उद्गीथ आचार्यों ने मिलकर ऋग्वेद का भाष्य किया था-

स्कन्दस्वामी नारायण उद्‌गीथ इति ते क्रमात्।
चक्रुः सहैकम् ऋग्भाष्यं, पदवाक्यार्थगोचरम्॥

- स्कन्दस्वामी ने केवल चार अष्टकों तक ही ऋग्वेद भाष्य की रचना की थी, शेष भाग की पूर्ति नारायण एवं उद्‌गीथ द्वारा की गयी है।
- स्कन्दस्वामी हर्ष तथा बाणभट्ट के समकालीन हैं।
- निरुक्त टीका में 'प्रयस्' शब्द का तथा वेदभाष्य में 'श्रवस्' शब्द का स्कन्दस्वामी के द्वारा 'अन्न' अर्थ किये जाने का स्पष्ट उल्लेख किया गया है।
- 'उप प्रयोमिरागत् इत्यादिषु निरुक्तटीकायां स्कन्दस्वामिना प्रय इत्यन्नं नाम उच्यते , तथा च 'अक्षिति श्रवः' इत्यादिनिगमेषु वेदभाष्ये श्रव इत्यन्नं नाम इति स्पष्टमुच्यते ।

नारायण और उद्‌गीथ -

- ऋग्वेद के पूर्वभाग पर स्कन्दस्वामी मध्यभाग पर नारायण और अन्तिम भाग पर उद्‌गीथ ने भाष्य लिखा है।
- उद्‌गीथ ने अपने भाष्य में प्रत्येक अध्याय के अन्त में अपना परिचय दिया है- **वनवासीविनिर्गताचार्यस्य उद्‌गीथस्य कृता ऋग्वेदभाष्ये ....अध्यायः समाप्तः।**
- प्राचीनकाल में कर्णाटक का पश्चिमी भाग वनवासी प्रान्त के नाम से प्रसिद्ध था।
- आचार्य उद्‌गीथ सम्भवतः इसी प्रान्त के रहने वाले रहे होंगे।
- इनका समय सप्तम शताब्दी का उत्तरार्द्ध माना जाता है।
- उद्‌गीथ के नाम का उल्लेख सायण तथा आत्मानन्द ने अपने भाष्य में किया है।
- उद्‌गीथाचार्य का वनवासी से कोई न कोई सम्बन्ध प्रतीत होता है।
- आचार्य उद्‌गीथ इसी प्रान्त अर्थात कर्णाटक देश के समीप के ही रहने वाले जान पड़ते हैं।
- उद्‌गीथ सायण से पूर्ववर्ती भाष्यकार हैं, क्योंकि सायण ने उद्‌गीथ के भाष्य का उल्लेख किया है।
- यह भाष्य ऋग्वेद के दशम मण्डल के सूक्त 5 से लेकर सूक्त ८3 के पाँचवें मन्त्र तक उपलब्ध होता है। जिसमें आदि के अंश को डी.ए.वी. कालेज के शोध विभाग ने प्रकाशित किया।

माधवभट्ट

- यह सामवेद संहिता के भाष्यकार हैं।
- माधव नामधारी तीन भाष्यकारों का सम्बन्ध ऋग्वेद के साथ है। इनमें से एक तो सायण-माधव ही हैं।
- दूसरे माधव वेंकटमाधव हैं, जिनका निर्देश प्राचीन भाष्यों में मिलता है। एक अन्य माधव यह भी है, जिनकी प्रथम अष्टक की टीका अभी हाल में मद्रास विश्वविद्यालय से प्रकाशित हुई है। देवराज यज्वा ने अपनी निघण्टु टीका में वेंकटमाधव और माधवभट्ट के व्यक्तित्व को सम्मिलित कर दिया है।

- इस टीका के आरम्भ करने से पहले उन्होंने ग्यारह अनुक्रमणियाँ लिखी थी , जिनमें से हर एक कोश रूप में रखकर ऋग्वेद के शब्दार्थ को प्रकट करने में समर्थ हैं। इनमें से दो उपलब्ध अनुक्रमणी छप चुकी हैं। वे है नामानुक्रमणी और आख्यातानुक्रमणी ।

अनुक्रमणी

1. नामानुक्रमणी
2. आख्यातानुक्रमणी

वेंकट माधव -

- ऋग्वेद के प्रथम अध्याय के अन्त में वेङ्कटमाधव ने अपना परिचय दिया है।
- इनके पितामह का नाम माधव था और इनके पिता का नाम वेङ्कट था।
- इनके नाना का नाम भवगोल और माता का नाम सुन्दरी था।
- इनका गोत्र कौशिक और मातृगोत्र वसिष्ठ था।
- इनका एक छोटा भाई था जिसका नाम संकर्षण था और वेङ्कट तथा गोविन्द नामक दो पुत्र थे।
- ये दक्षिणापथ के चोलदेश के निवासी थे।
- इनका समय बारहवीं शताब्दी से बाद का नहीं माना जा सकता ।
- इनका भाष्य अत्यन्त संक्षिप्त और सुबोध है- 'वर्जयन् शब्दविस्तारं शब्दैः कतिपयैरिति'
- इनका भाष्य डॉ. लक्ष्मणस्वरूप ने संपादित कर 4 भागों में प्रकाशित किया है।
- इसके प्रकाशक मोतीलाल बनारसी दास दिल्ली हैं।

वेंकट माधव का संक्षिप्त परिचय

निवास	-	चोलदेश
पितामह	-	माधव
पिता	-	वेंकट
माता	-	सुन्दरी
नाना	-	भवगोल
गोत्र	-	कौशिक
भाई	-	संकर्षण
पुत्र	-	1. वेंकट 2. गोविन्द

धानुष्कयज्वा -

- धानुष्कयज्वा नाम के किसी तीनों वेदों के भाष्यकार का नाम वेदाचार्य की सुदर्शनमीमांसा में कई बार आया है।
- इन स्थानों पर ये 'त्रिवेणी भाष्यकार' तथा त्रयीनिष्टवृद्ध कहे गये हैं ।
- ये एक वैष्णव आचार्य थे। इनका समय विक्रम संवत् 1600 से पूर्व होना चाहिए।

आनन्दतीर्थ-

- इनका दूसरा नाम 'मध्व' है। ये द्वैत सिद्धान्त के आचार्य थे।
- इन्होंने 'मध्व सम्प्रदाय' को चलाया। इनके 'मध्व' और 'पूर्णप्रज्ञ' आदि भी नाम हैं।
- ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के चालीस सूक्तों पर भाष्य लिखा है।
- इन्होंने वेद का प्रतिपाद्य नारायण को माना है। इनका समय 1255 से 1355 ई. के मध्य माना जाता है।
- जिनमें ऋग्वेद के कतिपय मन्त्रों की व्याख्यावाला वेदभाष्य भी है। यह भाष्य छन्दोबद्ध है।
- इसमें राघवेन्द्र यति का यह कथन पर्याप्त रूप से प्रमाणित है -
  ''ऋक्शाखागतैकोत्तरसहस्त्रसूक्तमध्ये कानिचित् चत्वारिंशत् सूक्तानि भगवत्पादैः व्याख्यातानि।''
- मध्वभाष्य के ऊपर सुप्रसिद्ध माध्व आचार्य जयतीर्थ ने ग्रन्थ रचना के तीस साल के भीतर ही अपनी टीका लिखी।
- इस टीका पर नरसिंह ने (1718 सं.वि.) अपनी विवृत्ति तथा नारायण ने 'भावरत्नप्रकाशिका' नामक दूसरी विवृत्ति लिखी।

आत्मानन्द -

- आत्मानन्द ने ऋग्वेद के अन्तर्गत आने वाले प्रथम मण्डल के 1/164 वें सूक्त जो अस्य वामीय सूक्त है, पर अपना स्वतन्त्र भाष्य लिखा है।
- इस भाष्य में उद्धृत ग्रन्थकारों में स्कन्द, भास्कर आदि का नाम मिलता है, परन्तु सायण का नाम नहीं मिलता।
- ये सायण से पूर्व के भाष्यकार प्रतीत होते हैं।
- इनके द्वारा उद्धृत लेखकों में मिताक्षरा के कर्ता विज्ञानेश्वर तथा स्मृतिचन्द्रिका के रचयिता देवणभट्ट (13 वी. शती.ई॰) के नाम होने से हम कह सकते हैं कि इनका आविर्भाव - काल विक्रम की चौदहवीं शताब्दी है।
- प्रसिद्ध अद्वैतवादी विद्वान् आत्मानन्द ने सूक्त पर आध्यात्मिक भाष्य लिखा है।
- आत्मानन्द ने अपने भाष्य के अन्त में स्वयं कहा है कि स्कन्दस्वामी आदि के भाष्य 'यज्ञपरक ' है निरुक्त अधिदेव परक है, परन्तु यह भाष्य 'अध्यात्म विषयक' है -
  अधियज्ञविषयकं स्कन्दादिभाष्यम् निरुक्तमधिदैवतविषयम्, इदन्तु भाष्यमध्यात्मविषयमिति। न च भिन्नविषयाणां विरोधः अस्य भाष्यस्य मूलं विष्णुधर्मोत्तरम्।

सायण -

- सायण आन्ध्रप्रान्त के अन्तर्गत तुङ्गभद्रा नदी के दक्षिणतट पर स्थित विजयनगर राज्य के निवासी थे।
- वैदिक भाष्यकारों में सायण का स्थान सर्वोच्च है।
- सायण मेधावी मनीषी तो थे ही इसके अतिरिक्त वे विजयनगर के संस्थापक राजा 'बुक्क' तथा महाराज 'हरिहर' के अमात्य भी थे।

- सायण के पिता का नाम मायण और माता का नाम श्रीमती/श्रीमायी था।
- सायण का समय 1317-1387 ई. तक माना जाता है।
- बड़े भाई का नाम माधव तथा छोटे भाई का नाम भोगनाथ था।
- सायण के तीन गुरु थे - विद्यातीर्थ, भारतीतीर्थ तथा श्रीकण्ठ।
- सायण भारद्वाज गोत्र के थे।
- सायण के तीन पुत्र थे - कम्पण, मायण और शिंगण।
- इन्होंने अपने शरीर का त्याग (72 वर्ष की अवस्था में) 1387 ई॰ में किया।
- सायण ने अनेक विद्वानों की सहायता से चारों वेदों पर प्रामाणिक एवं महत्त्वपूर्ण भाष्य लिखा है। उनके सहयोगी विद्वान् नरहरि सोमयाजी, नारायण वाजपेयी और पण्डरी दीक्षित थे।
- सायण ने इन सुप्रसिद्ध वैदिक संहिताओं एवं ब्राह्मण ग्रन्थों के ऊपर अपने भाष्यों की रचना की है-
    1. तैत्तिरीय संहिता (कृष्णयजुर्वेद)
    2. ऋग्वेद संहिता
    3. सामवेद संहिता
    4. काण्व संहिता (शुक्लयजुर्वेद)
    5. अथर्ववेद संहिता

सायणाचार्य द्वारा व्याख्यात ब्राह्मण तथा आरण्यक

1. कृष्णयजुर्वेदीय ब्राह्मण

1. तैत्तिरीय ब्राह्मण 2. तैत्तिरीय आरण्यक

2. ऋग्वेदीय ब्राह्मण

1. ऐतरेय ब्राह्मण 2. ऐतरेय आरण्यक

3. सामवेदीय ब्राह्मण

1. ताण्ड्य ब्राह्मण 2. षड्विंश ब्राह्मण 3. सामविधान ब्राह्मण
4. आर्षेय ब्राह्मण 5. देवताध्याय ब्राह्मण 6. उपनिषद् ब्राह्मण
7. संहितोपनिषद् ब्राह्मण 8. वंशब्राह्मण

- शुक्लयजुर्वेदीय शतपथ ब्राह्मण पर भी सायण का भाष्य उपलब्ध है।
- सायण ने अन्त में अथर्वभाष्य लिखा है।
- सायणाचार्य ने 5 संहिताओं के भाष्य तथा 13 ब्राह्मण आरण्यकों की व्याख्या लिखी ।
- सायण ने अपने ऋग्वेदभाष्य का नाम 'वेदार्थप्रकाश' रखा है। इसके अतिरिक्त इन्होंने अपने कई ग्रन्थों के पहले 'माधवीय' शब्द का प्रयोग किया है।
- सायण की एक रचना 'माधवीया धातुवृत्ति' के नाम से प्रसिद्ध है।
- सम्भवतः इन्होंने अपने बड़े भाई माधव के सम्मान के लिए 'माधवीया' नामकरण किया है।
- सायणाचार्य ने वैदिक ग्रन्थों के उपरान्त अपनी विद्वत्ता को अनेक साहित्यिक क्षेत्रों में प्रसृत किया।

वेद भाष्य के उपरान्त भी सायण ने अनेक ग्रन्थों का प्रणयन किया - ये ग्रन्थ अधोलिखित हैं -

1. सुभाषित सुधानिधि -

- इस ग्रन्थ का प्रणयन प्रथम आश्रयदाता कम्पण के राज्यकाल (1340 -1354) में हुआ था।

2. प्रायश्चित्त सुधानिधि -

इस ग्रन्थ की रचना सायण ने (1355ई॰) में की थी।

3. आयुर्वेद सुधानिधि -

- इस ग्रन्थ में सायण ने आयुर्वेद के रहस्यों को उद्घाटित किया है। इसका उल्लेख स्वयं सायण ने 'अलङ्कारसुधानिधि ' में किया है।

4. अलङ्कार सुधानिधि -

- इस ग्रन्थ में ग्रन्थकार ने समस्त अलंकारों के लक्षण तथा उदाहरण प्रस्तुत किये हैं। दक्षिण के प्रसिद्ध विद्वान् अप्पयदीक्षित ने इस ग्रन्थ का उल्लेख किया है।

धातुवृत्ति -

- वैयाकरणों में यह धातुवृत्ति 'माधवीया धातुवृत्ति' के नाम से जानी जाती है।
- वस्तुतः यह रचना सायण की है तथापि ग्रन्थारम्भ में भी सायण विरचित होने पर भी इसे 'माधवीया' नाम से व्यवहृत किया गया है।

मुद्गल -

- मुद्गल भाष्य प्रथमाष्टक पर पूर्ण और चतुर्थाष्टक पर पाँच अध्यायों तक मिलता है।
- मुद्गल सायणानुयायी थे एक तरह से सायण भाष्य का ही संक्षेप मुद्गल भाष्य है।
- मुद्गल का काल 15 वीं शताब्दी माना जाता है।

रावण -

- वेद भाष्यकारों में 'रावण' का नाम भी आदर के साथ लिया जाता है।
- वेद - भाष्यकारों रावण एवं रामायण के प्रसिद्ध रावण (दशानन) एक हैं अथवा भिन्न इस विषय में अनेक विसंगतियाँ हैं।

सायण (वंश परम्परा)

गुरु श्रीकण्ठ | पिता मायण | माता श्रीमती | बड़े भाई माधव

छोटे भाई भोगनाथ | पुत्र

- 1. कम्पण
- 2. भायण
- 3. शिंगण
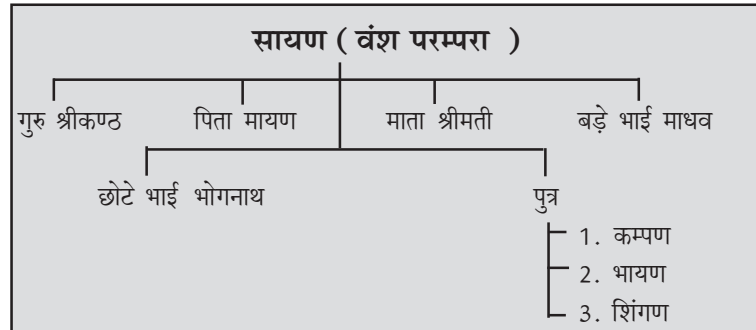
- सायण ने सर्वप्रथम कृष्ण यजुर्वेदीय तैत्तिरीय संहिता पर अपना भाष्य लिखा। ये तैत्तिरीय शाखाध्यायी ब्राह्मण थे। अतः उस पर प्रथमतः भाष्य लिखना स्वाभाविक था।

सायणभाष्य क्रमानुसार

- कृष्ण यजुर्वेद
- ऋग्वेद की शाकल संहिता
- शुक्लयजुर्वेद की काण्वसंहिता
- सामवेद की कौथुम संहिता
- अथर्ववेद की शौनक संहिता
- सामवेद के आठों ब्राह्मणों पर भाष्य

1. ताण्ड्य ब्राह्मण 2. षड्विंश ब्राह्मण 3. सामविधान ब्राह्मण
4. आर्षेय ब्राह्मण 5. देवताध्याय 6. उपनिषद् ब्राह्मण
7. संहितोपनिषद् ब्राह्मण 8. वंश ब्राह्मण

यजुर्वेद भाष्यकार (माध्यन्दिन संहिता)

- **उव्वट-** यह नाम उव्वट और उवट दोनों प्रकार से लिखा जाता है ।
- माध्यन्दिन भाष्यों में उवट का भाष्य अतीव विख्यात है ।
- ये आनन्दपुर निवासी 'वज्रट' के पुत्र थे । इन्होनें 11 वीं शती के अन्त में महाराजा भोज के शासनकाल में अवन्ती में रहकर इस भाष्य की रचना की ।

आनन्दपुरवास्तव्यवज्रटाख्यस्य सूनुना ।
उव्वटेन कृतं भाष्यं पदवाक्यैः सुनिश्चितैः ॥
ऋष्यादींश्च पुरस्कृत्य अवन्त्यामुव्वटो वसन् ।
मन्त्राणां कृतवान् भाष्यं महीं भोजे प्रशासति ॥

- उव्वट का समय ग्यारहवीं शताब्दी का मध्यकाल माना जाता है ।
  इन्होंने शुक्लयजुर्वेद की माध्यन्दिन संहिता पर एक भाष्य लिखा है जिसका नाम उव्वट भाष्य है।
- इसके दो पाठ हैं - काशी पाठ और महाराष्ट्र पाठ ,इनका भाष्य अत्यन्त प्रामाणिक माना जाता है ।
- इसके अतिरिक्त इन्होंने ऋक्प्रातिशाख्य की टीका ,यजुः प्रातिशाख्य की टीका, ऋक्सर्वानुक्रमणी पर भाष्य और ईशावास्योपनिषद् पर भाष्य लिखा है । ये ग्रन्थ प्रकाशित हैं-
- उव्वट-भाष्य-
  - * शुक्लयजुर्वेद (वेददीप)
  - * ऋक् प्रातिशाख्य की टीका
  - * यजुः प्रातिशाख्य की टीका
  - * ऋक्सर्वानुक्रमणी पर भाष्य
  - * ईशोपनिषद् पर भाष्य

निवास स्थान	पिता	राजा	समय	भाष्य नाम
आनन्दपुर	वज्रट	महाराजा भोज	11 वीं शती	उव्वट भाष्य

महीधर -

- वाजसनेय संहिता का अन्य प्रसिद्ध भाष्य महीधर भाष्य कृत 'वेददीप' है । महीधर 'काशी' के निवासी नागर ब्राह्मण थे ।
- इस भाष्य की रचना सत्रहवीं शती में हुई । इन्होंने एक तन्त्रग्रन्थ 'मन्त्रमहोदधि' (1588 ई.) भी लिखा है ।
- वेद शब्दप्रधान शास्त्र हैं उनके त्रिविध अर्थ हैं - आधिदैविक , आधिभौतिक एवं आध्यात्मिक।
- इन्होंने यजुर्वेद पर उव्वट के भाष्य को ही आधार बनाया है और उसका विस्तार किया है।
- इन्होंने सम्बद्ध अंशों पर शतपथ ब्राह्मण आदि के अंश प्रमाण रूप में उद्धृत हैं।

शौनक

- माध्यन्दिन संहिता के 31 वें अध्याय पर ऋषि शौनक का भाष्य उपलब्ध है।
- इसमें 'अपरे' 'केचित्' कहकर उन्होंने अपने पूर्ववर्ती एवं समकालीन भाष्यकारों के मतों का उल्लेख किया है ।

धर्मसम्राट् करपात्री स्वामी -

- आज से लगभग 2500 वर्ष पूर्व सम्पूर्ण भारतवर्ष में नास्तिकवाद चरम सीमा पर था।
- सर्वत्र वेद-निन्दा, यज्ञ-निन्दा, ईश्वर-निन्दा का प्रचार व्याप्त था ।
- उस समय विद्वानों के समक्ष एक समस्या अत्यधिक ज्वलन्त थी कि 'को वेदानुद्धरिष्यति' वेदों का उद्धार कौन करेगा? ऐसे विषम समय में आद्य जगद्गुरुशंकरभगवत्पाद ने आर्यावर्त में अवतरित होकर निरीश्वरवादी मतमतान्तरों का समूलोन्मूलन कर वैदिक धर्म को पुनः प्रतिष्ठित किया था ।
- शुक्लयजुर्वेद संहिता के 20 वीं शताब्दी के प्रमुख भाष्यकार स्वामी करपात्री जी हैं जिन्होंने अत्यन्त दुरूह प्रतीत होने वाले मन्त्रों का रहस्य पुनः प्रकाशित किया। करपात्री स्वामी जी के कतिपय प्रमुख ग्रन्थ निम्नलिखित हैं -

  1- वेद -प्रामाण्यमीमांसा 2- वेदस्वरूपविमर्श
  3- वेद का स्वरूप और प्रामाण्य (दो खण्ड)
  4- श्रीविद्यारत्नाकर 5- भक्तिरसार्णव
  6- श्रीविद्यावरिवस्या 7- चातुर्वर्ण्यसंस्कृतविमर्श
  8- मार्क्सवाद और रामराज्य 9- रामायण मीमांसा
  10- राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ और हिन्दू धर्म
  11- धर्म और राजनीति 12- भक्तिसुधा
  13- समन्वय साम्राज्य संरक्षण
- वेदभाष्य चारों वेदों पर लिखा है,जिसका प्रकाशन शनैः शनैः चल रहा है। इसप्रकार साहित्य सेवा करते हुए युगद्रष्टा महापुरुष श्री महाराज करपात्री स्वामी का महानिर्वाण सन् 1982 ई. में हुआ।

स्वामी दयानन्द -

- आधुनिक युग में वेदोद्धार का सूत्रपात 'स्वामी दयानन्द सरस्वती' ने किया।

- अंग्रेजी शासकों की 'विभाजन करो और राज करो' की नीति से विस्खलित हिन्दू समुदाय को एकत्रित करने का महान् प्रयास कर स्वामी दयानन्द ने भारतीय इतिहास को नया मोड़ प्रदान किया था।
- स्वामी जी का जन्म संवत् 1881 में हुआ था। वे सामवेदी औदीच्य ब्राह्मण थे।
- स्वामी जी ने 'ऋग्वेदभाष्य भूमिका' लिखी थी , जिसका प्रकाशन संवत् 1935 में हुआ था।
- यह भाष्य ऋग्वेद के 7 मण्डल, 2 सूक्त और 2 मन्त्र तक ही हो सका था, इसी बीच स्वामी जी का देहान्त 1940 संवत् में हो गया।
- स्वामी दयानन्द ने अपने वेदोद्धार के प्रयास में अनेक असफल वैदिक मान्यताओं का उपस्थापन किया था, अनेक विसंगतियाँ उत्पन्न हो गयी थी, जिनका खण्डन अनेक विद्वानों ने किया है जिनमें प्रमुख भारतीय कांग्रेस के जन्मदाता मि0 ह्यूम, प्रो0 ग्रिफिथ एवं परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री करपात्रीस्वामी आदि विद्वान् हैं।

काण्वसंहिता-भाष्य

आनन्दबोध -

- 'जातवेद भट्टोपाध्याय' के पुत्र आनन्दबोध ने सम्पूर्ण काण्वसंहिता पर 'काण्ववेदमन्त्र-भाष्य-संग्रह' की रचना की है।
- सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय की 'सारस्वतसुषमा' पत्रिका में (संवत् - 2009-2011) आनन्दबोध भाष्य के अन्तिम दश अध्याय का भाष्य प्रकाशित हुआ था ।
- अपने भाष्य में इन्होंने ऋषि, देवता, छन्द आदि का निर्देश किया है।
  इनके भाष्य पर पूर्ववर्ती भाष्यकार उवट एवं महीधर के भाष्य का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

हलायुध -

- हलायुध ने काण्वसंहिता पर 'ब्राह्मणसर्वस्व' नामक भाष्य लिखा है । इसके अतिरिक्त मीमांसासर्वस्व,वैष्णवसर्वस्व, शैवसर्वस्व और पण्डितसर्वस्व आदि ग्रन्थ भी हलायुध प्रणीत माने जाते हैं किन्तु ये अप्रकाशित और अनुपलब्ध हैं ।
- हलायुध बङ्गाल नरेश लक्ष्मणसेन के दरबार में धर्माधिकारी थे ।
  'बाल्ये ख्यापितराजपण्डितपदं श्वेतार्चिबिम्बोज्ज्वल
  छत्रोस्तिक्तमहामहस्तमुपदं दत्वा नवे यौवने।
  यस्मै यौवनशेषयोग्यमखिलक्ष्मापालनारायणः
  श्रीमान् लक्ष्मणसेनदेवनृपतिर्धर्माधिकारः ददौ।।'
- लक्ष्मणसेन ने (1170-1200) के मध्य शासन किया था। अतः हलायुध का समय बारहवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध रहा होगा।
- ये वत्सगोत्रीय ब्राह्मण थे । इनके पिता धनञ्जय थे।

हलायुध

ब्राह्मणसर्वस्व | मीमांसासर्वस्व | पण्डितसर्वस्व | वैष्णवसर्वस्व | शैवसर्वस्व
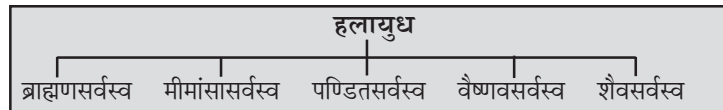
अनन्ताचार्य-

- ये काण्वशाखीय ब्राह्मण थे । इनके पिता का नाम 'नागेशभट्ट' और माता का नाम 'भागीरथी' था।
- ये काशी-निवासी थे। इन्होंने संहिता के उत्तरार्ध (21अध्याय से 40अध्याय) पर अपना भाष्य लिखा है।
- इसके अतिरिक्त 'भाषिकसूत्र-भाष्य' 'यजुः प्रातिशाख्य-भाष्य' और 'शतपथब्राह्मण भाष्य' (13वें काण्ड) भी बनाया।
- इनका स्थिति-काल 16वीं शती माना जाता है।
- पं0 रामगोविन्द त्रिवेदी जी ने इन्हें 18 वीं शताब्दी का भाष्यकार माना है । अनन्ताचार्य (भाष्य)- 1.संहिता के उत्तरार्ध पर 2.भाषिकसूत्र-भाष्य 3.प्रातिशाख्य भाष्य 4. शतपथ ब्राह्मण भाष्य

कृष्णयजुर्वेद (तैत्तिरीय संहिता)

भवस्वामी-

- इन्होनें तैत्तिरीयसंहिता पर अपना भाष्य लिखा।
- भट्टभास्कर मिश्र ने अपनी तैत्तिरीय - संहिता के भाष्यारम्भ में 'भवस्वाम्यादिभाष्य' से भवस्वामी के भाष्य का अस्तित्व स्वीकार किया है। परन्तु यह भाष्य उपलब्ध नहीं हो सका है।
- इनका स्थितिकाल अनुमानतः 'विक्रम' से 800 वर्ष पूर्व होना चाहिए।

गुहदेव -

- 8वीं या 9वीं शती ई0.में इन्होंने तैत्तिरीय संहिता का भाष्य लिखा था।
- देवराज यज्वा ने अपने निघण्टु भाष्य में इन्हें भाष्यकार कहा है।
- रामानुजाचार्य ने अपने ग्रन्थ 'वेदार्थ संग्रह' ग्रन्थ में स्वशिष्यरूपेण गुहदेव का उल्लेख किया है।
- इनका समय विक्रम से 800 वर्ष पूर्व होना चाहिए ।

भट्टभास्कर मिश्र -

- तैत्तिरीय संहिता के उपलब्ध भाष्यों में भट्टभास्कर मिश्र के भाष्य का प्रथम स्थान है।
- स्थितिकाल की दृष्टि से ये 11 वीं शताब्दी के भाष्यकार हैं।
- आचार्य भास्कर मिश्र ने मङ्गलाचरण में शिव को प्रणाम किया है। इससे प्रतीत होता है कि ये शैव थे।
- ये कौशिक गोत्रीय शैव थे।
- देवराज यज्वा एवं सायण ने भाष्यों में बहुशः भट्टभास्कर भाष्य को उद्धृत किया है।
- इनके भाष्य का नाम 'ज्ञानयज्ञ' है ।
- तैत्तिरीय संहिता के उल्लिखित प्रमुख भाष्यकारों के अतिरिक्त क्षुर,वेंकटेश,बालकृष्ण,शत्रुघ्न आदि विद्वान् आचार्यों के भाष्य होने के संकेत हैं ,परन्तु उनके विषय में विस्तृत उल्लेख नही किया है।

सामवेद के भाष्यकार

माधव -

- सामवेद के प्रथम भाष्यकार हैं। इन्होने सम्पूर्ण सामवेद पर भाष्य लिखा है । भाष्य का नाम 'विवरण' है।

- इनका प्रथम भाष्यकार (7वीं शती) के समय प्रतीत होता है ।
- इन्होंने संहिता के पूर्वार्द्ध के विवरण को 'छन्दरसिका' एवं उत्तरार्द्ध को उत्तरविवरण नाम से विवृत किया है।
- प्रसिद्ध वेदानुसन्धानकर्त्ता पं0 सत्यव्रत सामश्रमी ने सामवेद के सायण भाष्य के साथ 'सामविवरण' को टिप्पणी के रूप में सर्वप्रथम प्रकाशित किया है ।

भरतस्वामी-

- सम्पूर्ण साम-संहिता पर भाष्य लिखने वाले विद्वान् आचार्यों में 'भरत स्वामी' का भाष्य भी समादृत है।
- इनका गोत्र कश्यप था। इनके पिता का नाम 'नारायण' और माता का नाम 'यज्ञदा' था -

इत्थं श्री भरतस्वामी काश्यपो यज्ञदासुतः।
नारायणार्यतनयो व्याख्यात् साम्नामृचोऽखिलः॥

- भाष्यकार भरत स्वामी ने भाष्यारम्भ में स्वविषयक कुछ वृत्त दिया है । इन पद्यों से यह ज्ञात होता है कि '**श्री रङ्गपट्टम्**' में रहते हुए होसलाधीश्वर रामनाथ के राज्यकाल में भरतस्वामी ने अपने भाष्य की रचना की।
- इतिहासकारों के अनुसार होसलावंश के ख्यातनामा वीर रामनाथ का शासनकाल 13 वीं शती माना जाता है। अतः भरतस्वामी का भी स्थिति काल 13 वीं शताब्दी सिद्ध होता है।

गुणविष्णु

- (12 वीं शती ई॰ का उत्तरार्ध) इन्होंने सामवेद की कौथुम शाखा पर छान्दोग्य-मन्त्रभाष्य लिखा है।
- इसके दो अन्य ग्रन्थ भी प्राप्त होते हैं-

1. मन्त्रब्राह्मण भाष्य 2. पारस्कर गृह्यसूत्र - भाष्य

अथर्ववेद-संहिता भाष्य

- अथर्ववेद संहिता पर केवल सायण का ही भाष्य प्राप्त होता है और प्रकाशित भी है।
- सायणाचार्य ने अन्य वैदिक संहिताओं पर भाष्य लिखने के बाद अन्त में यह भाष्य लिखा।
- भाष्य के आरम्भ में इन्होंने इस वेद की असाधारण विशेषता को बताया है।
- इसका आशय यह है कि 'परलोक में फल देने वाले तीनों वेदों का (ऋक्, यजु, साम)' भाष्य रचने के पश्चात् लोक, परलोक दोनों में फल देने वाले चतुर्थ वेद अथर्ववेद का भाष्य किया है।

ऐहिकामुष्मिकफलं चतुर्थं व्याचिकीर्षति ॥

- सायण ने पूरे अथर्ववेद पर भाष्य लिखा था, परन्तु प्रकाशित ग्रन्थों में केवल इन काण्डों 1 से 4,6से 8,11,17 से 20 काण्ड) का ही भाष्य मिलता है।

❑❑

12. वैदिक सूक्त संग्रह

1. अग्निसूक्त (1.1)

मण्डल-1, **सूक्त**-1 **कुल मन्त्र**-9, **ऋषि**- मधुच्छन्दा, **देवता** - अग्नि, **छन्द**-गायत्री, **स्वर** - षड्ज

1. अग्निमीळे पुरोहितं, यज्ञस्य देवमृत्विजम्।
होतारं रत्नधातमम्॥

अर्थ- यज्ञ के पुरोहित, दीप्तिमान्, देवों को बुलाने वाले ऋत्विक् और रत्नधारी अग्नि की मैं स्तुति करता हूँ।

2. अग्निः पूर्वेभिर्ऋषिभिरीड्यो नूतनैरुत।
स देवाँ एह वक्षति॥

अर्थ- प्राचीन ऋषियों ने जिसकी स्तुति की थी, आधुनिक ऋषि जिसकी स्तुति करते हैं, वह अग्नि, देवों को इस यज्ञ में बुलावें।

3. अग्निना रयिमश्नवत्, पोषमेव दिवे दिवे।
यशसं वीरवत्तमम्॥

अर्थ- अग्नि के अनुग्रह से यजमान को धन मिलता है और वह धन अनुदिन बढ़ता और कीर्तिकर होता है तथा उनसे अनेक वीर पुरुषों की नियुक्ति की जाती है।

4. अग्ने यं यज्ञमध्वरं, विश्वतः परिभूरसि।
स इद् देवेषु गच्छति॥

अर्थ- हे अग्निदेवता! जिस यज्ञ को तुम चारों ओर से घेरे रहते हो, उसमें राक्षसादि-द्वारा हिंसा कर्म सम्भव नहीं है और वही यज्ञ देवों को तृप्ति देने स्वर्ग जाता है या देवताओं का सामीप्य प्राप्त करता है।

5. अग्निर्होता कविक्रतुः, सत्यश्चित्रश्रवस्तमः।
देवो देवेभिरा गमत्॥

अर्थ- हे अग्नि! तुम होता, अशेषबुद्धिसम्पन्न या सिद्ध-कर्मा, सत्यपरायण, अतिशय कीर्ति से युक्त और दीप्तिमान् हो। देवों के साथ इस यज्ञ में आओ।

6. यदङ्ग दाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि।
तवेत्तत्सत्यमङ्गिरः॥

अर्थ- हे अग्नि! तुम जो हविष् देने वाले यजमान का कल्याण साधन करते हो, वह कल्याण, हे अङ्गिर! तुम्हारा ही प्रीति साधक है।

7. उप त्वाग्ने दिवेदिवे, दोषावस्तर्धिया वयम्।
नमो भरन्त एमसि॥

अर्थ- हे अग्नि! हम अनुदिन, दिन-रात, अन्तस्तल के साथ तुम्हें नमस्कार करते-करते तुम्हारे पास आते हैं।

8. राजन्तमध्वराणां गोपामृतस्य दीदिविम्।
वर्धमानं स्वे दमे॥

अर्थ- हे अग्नि! तुम प्रकाशमान, यज्ञ रक्षक, कर्मफल के द्योतक और यज्ञशाला में वर्धनशाली हो।

9. स नः पितेव सूनवे, अग्ने सूपायनो भव।
सचस्वा नः स्वस्तये॥

अर्थ- जिस तरह पुत्र-पिता को आसानी से पा जाता है, उसी तरह हम भी तुम्हें पा सकें या तुम हमारे अनायास-लभ्य बनो और हमारा मंगल करने के लिए हमारे पास निवास करो।

2. वरुणसूक्त (1.25)

मण्डल-1, **सूक्त-**25 **कुल मन्त्र-**21, **ऋषि-** अजीगर्त शुनःशेप, **देवता -** वरुण, **छन्द-**गायत्री, **स्वर-**षड्ज

1. यच्चिद्धि ते विशो यथा प्र देव वरुण व्रतम्।
मिनीमसि द्यविद्यवि॥

अर्थ- जिस तरह संसार के मनुष्य वरुणदेव के व्रतानुष्ठान में भ्रम करते हैं, उसी तरह हम लोग भी दिन-दिन प्रमाद करते हैं।

2. मा नो वधाय हत्नवे जिहीळानस्य रीरधः।
मा हृणानस्य मन्यवे॥

अर्थ- वरुण! अनादर कर और घातक बनकर तुम हमारा वध नहीं करना। क्रुद्ध होकर हमारे ऊपर क्रोध नहीं करना।

3. वि मृळीकाय ते मनो रथीरश्वं न संदितम्।
गीर्भिर्वरुण सीमहि॥

अर्थ- वरुणदेव, जिस प्रकार रथ का स्वामी अपने थके हुए घोड़ों को शान्त करता है, उसी प्रकार सुख के लिए स्तुति-द्वारा हम तुम्हारे मन को प्रसन्न करते हैं।

4. परा हि मे विमन्यवः पतन्ति वस्यइष्टये।
वयो न वसतीरुप॥

अर्थ- जिस तरह चिड़ियाँ अपने घोसलों की ओर दौड़ती हैं, उसी तरह हमारी क्रोध-रहित चिन्तायें भी धन-प्राप्ति की ओर दौड़ रही हैं।

5. कदा क्षत्रश्रियं नरमा वरुणं करामहे। मृळीकायोरुचक्षसम्॥

अर्थ- वरुणदेव बलवान् नेता और असंख्य लोगों के द्रष्टा हैं। सुख के लिए हम कब उन्हें यज्ञ में ले आवेंगे।

6. तदित्समानमाशाते वेनन्ता न प्र युच्छतः। धृतव्रताय दाशुषे॥

अर्थ- यज्ञ करने वाले हव्यदाता के प्रति प्रसन्न होकर मित्र और वरुण यह साधारण हव्य ग्रहण करते हैं, त्याग नहीं करते।

7. वेदा यो वीनां पदमन्तरिक्षेण पतताम्। वेद नावः समुद्रियः॥

अर्थ- जो वरुण अन्तरिक्षचारी चिड़ियों का मार्ग और समुद्र की नौकाओं का मार्ग जानते हैं।

8. वेद मासो धृतव्रतो द्वादश प्रजावतः। वेदा य उपजायते॥

अर्थ- जो व्रतावलम्बन करके अपने-अपने फलोत्पादक बारह महीनों को जानते हैं और उत्पन्न होने वाले तेरहवें मास को भी जानते हैं।

9. वेद वातस्य वर्तनिमुरोर्ऋष्वस्य बृहतः। वेदा ये अध्यासते॥

अर्थ- जो वरुणदेव विस्तृत शोभन और महान् वायु का भी पथ जानते हैं और जो ऊपर आकाश में, निवास करते हैं, उन देवों को भी जानते हैं।

10. नि षसाद धृतव्रतो वरुणः पस्त्या३स्वा। साम्राज्याय सुक्रतुः॥

अर्थ- धृतव्रत और शोभन कर्मा वरुणदैवी सन्तानों के बीच साम्राज्य संसिद्धि के लिए आकर बैठे थे।

11. अतो विश्वान्यद्भुता चिकित्वाँ अभि पश्यति।
कृतानि या च कर्त्वा॥

अर्थ- ज्ञानी मनुष्य वरुण की कृपा से वर्तमान और भविष्यत् - सारी अद्भुत घटनाओं को देखते हैं।

12. स नो विश्वाहा सुक्रतुरादित्यः सुपथा करत्।
प्र ण आयूंषि तारिषत्॥

अर्थ- वही सत्कर्म परायण और अदिति-पुत्र वरुण हमें सदा सुपथगामी बनावें,। हमारी आयु बढ़ावें।

13. बिभ्रद्द्रापिं हिरण्ययं वरुणो वस्त निर्णिजम्।
परि स्पशो नि षेदिरे॥

अर्थ- वरुण सोने का वस्त्र धारण कर अपना पुष्ट शरीर ढ़ँकते हैं, जिससे चारों ओर हिरण्यस्पर्शी किरणें फैलती हैं।

14. न यं दिप्सन्ति दिप्सवो न द्रुह्वाणो जनानाम्।
न देवमभिमातयः॥

अर्थ- जिस वरुण देव से शत्रु लोग शत्रुता नहीं कर सकते, मनुष्यपीड़क जिसे पीड़ा नहीं दे सकते, और पापी लोग जिस देव के प्रति पापाचरण नहीं कर सकते।

15. उत यो मानुषेष्वा यशश्चक्रे असाम्या। अस्माकमुदरेष्वा।।
अर्थ- जिन्होंने मनुष्यों विशेषतः हमारी उदर-पूर्ति के लिए यथेष्ट अन्न तैयार कर दिया है।
16. परा मे यन्ति धीतयो। गावो न गव्यूतीरनु। इच्छन्तीरुरुचक्षसम्।।
अर्थ- बहुतों ने उस वरुण को देखा है। जिस प्रकार गौएँ गौशाला की ओर जाती हैं, उसी प्रकार निवृत्तिरहित होकर हमारी चिन्ताएँ वरुण की ओर जा रही हैं।
17. सं नु वोचावहै पुनर्यतो मे मध्वाभृतम्। होतेव क्षदसे प्रियम्।।
अर्थ- वरुण! चूँकि मेरा मधुर हव्य तैयार है। इसलिए होता की तरह तुम वही प्रिय हव्य भक्षण करो। अनन्तर हम दोनों बाते करेंगे।
18. दर्शं नु विश्वदर्शतं दर्शं रथमधि क्षमि। एता जुषत मे गिरः।।
अर्थ- सर्व- दर्शनीय वरुण को मैंने देखा है। भूमि पर कई बार, उनका रथ मैंने देखा है। उन्होंने मेरी स्तुति ग्रहण की है।
19. इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृळय। त्वामवस्युरा चके।।
अर्थ- वरुण! मेरा यह आह्वान सुनो। आज मुझे सुखी करो। तुम्हारी रक्षा का अभिलाषी होकर मैं तुम्हें बुलाता हूँ।
20. त्वं विश्वस्य मेधिर दिवश्च ग्मश्च राजसि। स यामनि प्रति श्रुधि ।।
अर्थ- मेधावी वरुण! तुम द्युलोक, भूलोक और समस्त संसार में दीप्तिमान् हो। हमारी रक्षा-प्राप्ति के लिए प्रार्थना सुनने के अनन्तर तुम उत्तर दो।
21. उदुत्तमं मुमुग्धि नो वि पाशं मध्यमं चृत। अवाधमानि जीवसे।
अर्थ- हमारे ऊपर का पाश ऊपर से खोल दो, मध्य नीचे का पाश भी खोल दो, जिससे हम जीवित रह सकें।

3. सूर्य सूक्त (1.115)

मण्डल-1, **सूक्त-**115 **कुल मन्त्र-**6, **ऋषि-** अङ्गिरस कुत्स, **देवता -** सूर्य, **छन्द-**त्रिष्टुप्, **स्वर-**धैवत।

1. चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः।
आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च ।।
अर्थ- विचित्र तेजः पुञ्ज तथा मित्र, वरुण और अग्नि को चक्षुस्वरूप सूर्य उदित हुये हैं। उन्होंने द्यावा-पृथिवी और अन्तरिक्ष को अपनी किरणों से परिपूर्ण किया है। सूर्य जंगम और स्थावर-दोनों की आत्मा है।
2. सूर्यो देवीमुषसं रोचमानां, मर्यो न योषामभ्येति पश्चात्।
यत्रा नरो देवयन्तो युगानि, वितन्वते प्रति भद्राय भद्रम् ।।
अर्थ- जैसे पुरुष स्त्री का अनुगमन करता है, वैसे ही सूर्य भी दीप्तिमती उषा के पीछे-पीछे आते हैं। इसी समय देवाभिलाषी मनुष्य बहु-युग-प्रचलित यज्ञ कर्म का विस्तार करते हैं। सुफल के लिए कल्याण-कर्म को सम्पन्न करते हैं।

3. भद्रा अश्वा हरितः सूर्यस्य चित्रा एतग्वा अनुमाद्यासः।
नमस्यन्तो दिव आ पृष्ठमस्थुः परि द्यावापृथिवी यन्ति सद्यः ॥

अर्थ- सूर्य की कल्याण-रूप हरि नाम के विचित्र घोड़े इस पथ से जाते हैं। वे सबके स्तुति-भाजन हैं। हम उनको नमस्कार करते हैं। वे आकाश के पृष्ठ-देश में उपस्थित हुए हैं। वे घोड़े तुरन्त ही द्यावापृथिवी चारों दिशाओं का परिभ्रमण कर डालते हैं।

4. तत्सूर्यस्य देवत्वं तन्महित्वं मध्या कर्तोर्विततं सं जभार।
यदेदयुक्त हरितः सधस्थादाद्रात्री वासस्तनुते सिमस्मै ॥

अर्थ- सूर्य देव का ऐसा ही देवत्व और माहात्म्य है कि वे मनुष्यों के कर्म समाप्त होने के पहले ही अपने विशाल किरण-जाल का उपसंहार कर डालते हैं। जिस समय सूर्य अपने रथ से हरि नाम के घोड़ों को खोलते हैं, उस समय सारे लोकों में रात्रि अन्धकाररूप आवरण विस्तृत करती है।

5. तन्मित्रस्य वरुणस्याभिचक्षे सूर्यो रूपं कृणुते द्योरुपस्थे।
अनन्तमन्यद्रुशदस्य पाजः कृष्णमन्यद्धरितः सं भरन्ति ॥

अर्थ- उस समय मित्र और वरुण के अर्थात् उनसे उपलक्षित समग्र विश्व के देखने के लिए वास्तविक स्वरूप ज्ञान के लिए सूर्य आकाश के शिखर पर मध्य में अपने तेजोमय रूप प्रकाश को प्रकट करता है। इस सूर्य के हरे रंग के घोड़े या किरणें कभी तो विलक्षण व्यापक अपार चमकदार बल को अर्थात् तेज को निष्पादित करती हैं। दिन और रात्रि के चक्र को सूर्य ही प्रवर्तित करता है।

6. अद्या देवा उदिता सूर्यस्य, निरंहसः पिपृता निरवद्यात्।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ॥

अर्थ- प्रदीप्त होती हुई हे सूर्य की रश्मियों! आज सूर्य के उदय होने पर तुम हमें पाप से छुड़ाओं और निन्द्यकर्मो से हमें बचाओं, और हमारी उस प्रार्थना का मित्र (हिंसा से रक्षा करने वाले सूर्य), वरुण (आवरण शक्ति से युक्त वरुण देव), अदिति (अखण्डनीय शक्तिशाली देवमाता), सिन्धु (स्यन्दन जलाभिमानी देवी), पृथिवी (भूलोक की अधिष्ठात्री धारणशील शक्ति) और द्यौ (द्यु लोक की अधिष्ठात्री दीप्तियुक्त शक्ति) अनुमोदन करें।

4. इन्द्र सूक्त (2.12)

मण्डल-2, **सूक्त-**12 **कुल मन्त्र-**15, **ऋषि-** गृत्समद,
देवता - इन्द्र, **छन्द-**त्रिष्टुप्, **स्वर-**धैवत।

1. यो जात एव प्रथमो मनस्वान्, देवो देवान्क्रतुना पर्यभूषत्।
यस्य शुष्माद्रोदसी अभ्यसेतां, नृम्णस्य मह्ना स जनास इन्द्रः।

अर्थ- मनुष्यों या असुरों! जो प्रकाशित हैं, जिन्होंने जन्म के साथ ही देवों में प्रधान और मनुष्यों में अग्रणी होकर वीरकर्म-द्वारा सारे देवों को विभूषित किया था, जिनके शरीर-बल से द्यावा-पृथिवी भयभीत हुई थी और जो महती सेना के नायक थे, वे ही इन्द्र हैं।

2. यः पृथिवीं व्यथमानामदृंहद् यः पर्वतान्प्रकुपिताँ अरम्णात्।
यो अन्तरिक्षं विममे वरीयो यो द्यामस्तभ्नात्स जनास इन्द्रः ॥

अर्थ- मनुष्यों या असुरों! जिन्होंने व्यथित, पृथिवी को दृढ़ किया है, जिन्होंने प्रकुपित पर्वतों को नियमित किया है। जिन्होंने प्रकाण्ड अन्तरिक्ष को बनाया है और जिन्होंने द्युलोक को निस्तब्ध किया है, वे ही इन्द्र हैं।

3. यो हत्वाहिमरिणात्सप्त सिन्धून् यो गा उदाजदपधा वलस्य।
यो अश्मनोरन्तरग्निं जजान संवृक्समत्सु स जनास इन्द्रः ॥

अर्थ- मनुष्यों या असुरों! जिन्होंने वृत्र का विनाश करके सात नदियों को प्रवाहित किया है, जिन्होंने बल असुर-द्वारा रोकी हुई गायों का उद्धार किया था। जो दो मेघों के बीच से अग्नि को उत्पन्न करते हैं और जो समर-भूमि में शत्रुओं का नाश करते हैं, वे ही इन्द्र हैं।

4. येनेमा विश्वा च्यवना कृतानि, यो दासं वर्णमधरं गुहाकः।
श्वघ्नीव यो जिगीवाँल्लक्षमाददर्यः पुष्टानि स जनास इन्द्रः॥

अर्थ- मनुष्यों या असुरों! जिन्होंने समस्त विश्व का निर्माण किया है, जिन्होंने दासों को निकृष्ट और गूढ़ स्थान में स्थापित किया है, जो लक्ष्य जीतकर व्याध की तरह शत्रु के सारे धन को ग्रहण करते हैं, वे ही इन्द्र हैं।

5. यं स्मा पृच्छन्ति कुह सेति घोरम् उतेमाहुर्नैषो अस्तीत्येनम्।
सो अर्यः पुष्टीर्विज इवा मिनाति श्रदस्मै धत्त स जनास इन्द्रः॥

अर्थ- मनुष्यों या असुरों! जिन भयंकर देव के सम्बन्ध में लोग जिज्ञासा करते हैं, वे कहाँ हैं? जिनके विषय में लोग बोलते हैं कि वे नहीं हैं और जो शासक की तरह शत्रुओं का सारा धन विनष्ट करते हैं। विश्वास करो, वही इन्द्र हैं।

6. यो रध्रस्य चोदिता यः कृशस्य यो ब्रह्मणो नाधमानस्य कीरेः।
युक्तग्राव्णो योऽविता सुशिप्रः सुतसोमस्य स जनास इन्द्रः॥

अर्थ- मनुष्यों या असुरों! जो समृद्ध धन प्रदान करते हैं, जो दरिद्र याचक और स्तोता को धन देते हैं और जो शोभन हनु या केहुनी वाले होकर सोमाभिषव-कर्ता और हाथों में पत्थर वाले यजमान के रक्षक हैं वे ही इन्द्र हैं।

7. यस्याश्वासः प्रदिशि यस्य गावो यस्य ग्रामा यस्य विश्वे रथासः।
यः सूर्यं य उषसं जजान यो अपां नेता स जनास इन्द्रः ॥

अर्थ- मनुष्यों या असुरों! घोड़े, गायें, गाँव और रथ जिनकी आज्ञा के अधीन हैं, जो सूर्य और उषा को उत्पन्न करते हैं और जो जल प्रेरित करते हैं, वे ही इन्द्र हैं।

8. यं क्रन्दसी संयती विह्वयेते परेऽवर उभया अमित्राः।
समानं चिद्रथमातस्थिवांसा नाना हवेते स जनास इन्द्रः॥

अर्थ- मनुष्यों या असुरों! दो सेनादल परस्पर मिलने पर जिन्हें बुलाते हैं, उत्तम-अधम दोनों प्रकार के शत्रु जिन्हें बुलाते हैं और एक ही तरह के रथों पर बैठे हुए दो मनुष्य जिन्हें नाना प्रकार से बुलाते हैं। वे ही इन्द्र हैं।

9. यस्मान्न ऋते विजयन्ते जनासो यं युध्यमाना अवसे हवन्ते।
यो विश्वस्य प्रतिमानं बभूव यो अच्युतच्युत्स जनास इन्द्रः ॥

अर्थ- मनुष्यों या असुरों! जिनके न रहने से कोई विजयी नहीं हो सकता, युद्ध काल में रक्षा के लिए जिन्हें लोग बुलाते हैं, जो सारे संसार के प्रतिनिधि हैं और जो क्षय-रहित पर्वतादि को भी नष्ट करते हैं, वे ही इन्द्र हैं।

10. यः शश्वतो मह्येनो दधानान् अमन्यमानाञ्छर्वा जघान।
यः शर्धते नानुददाति शृध्यां यो दस्योर्हन्ता स जनास इन्द्रः ॥

अर्थ- मनुष्यों या असुरों! जिन्होंने वज्र द्वारा अनेक महापापी अपूजकों का विनाश किया है, जो गर्वकारी मनुष्य को सिद्धि प्रदान करते हैं और जो दस्युओं के हन्ता हैं वे ही इन्द्र हैं।

11. यः शम्बरं पर्वतेषु क्षियन्तं चत्वारिंश्यां शरद्यन्वविन्दत्।
ओजायमानं यो अहिं जघान दानुं शयानं स जनास इन्द्रः॥

अर्थ- मनुष्यों या असुरों! जिन्होंने पर्वत में छिपे शम्बर असुर को चालीस वर्ष खोजकर प्राप्त किया था और जिन्होंने बल-प्रकाशक अहि नाम के सोये हुये दैत्य का विनाश किया था, वे ही इन्द्र हैं।

12. यः सप्तरश्मिर्वृषभस्तुविष्मान् अवासृजत्सर्तवे सप्त सिन्धून्।
यो रौहिणमस्फुरद् वज्रबाहुर्द्यामारोहन्तं स जनास इन्द्रः॥

अर्थ- मनुष्यों या असुरों! जो सप्तवर्ण या वराह, स्वपत, विद्युत्, महः, धूपि, स्वापि, गृहमेघ आदि सात रश्मिओं वाले, अभीष्टवर्षा और जिन्होंने वज्रबाहु होकर स्वर्ग जाने को तैयार रौहिण को विनष्ट किया था, वे ही इन्द्र हैं।

13. द्यावा चिदस्मै पृथिवी नमेते शुष्माच्चिदस्य पर्वता भयन्ते।
यः सोमपा निचितो वज्रबाहुर्यो वज्रहस्तः स जनास इन्द्रः॥

अर्थ- मनुष्यों या असुरों! द्यावा-पृथिवी उन्हें प्रणाम करती है। उनके बल के सामने पर्वत काँपते हैं और जो सोमपान कर्ता दृढांग वज्रबाहु और वज्र युक्त हैं, वे ही इन्द्र हैं।

14. यः सुन्वन्तमवति यः पचन्तं यः शंसन्तं यः शशमानमूती।
यस्य ब्रह्म वर्धनं यस्य सोमो यस्येदं राधः स जनास इन्द्रः॥

अर्थ- मनुष्यों जो सोमाभिषवकर्ता यजमान की रक्षा करते हैं, जो पुरोडाश आदि पकानेवाले, स्तोता और स्तुतिपाठक यजमान की रक्षा करते हैं, वे ही इन्द्र हैं।

15. यः सुन्वते पचते दुध्र आ चिद्वाजं दर्दर्षि स किलासि सत्यः।
वयं त इन्द्र विश्वह प्रियासः सुवीरासो विदथमा वदेम॥

अर्थ- इन्द्र, दुर्धर्ष होकर सोमाभिषव-कर्ता और पाककारी यजमान को अन्न प्रदान करते हैं, इसीलिए तुम्हें सत्य हो। हम प्रिय और वीर पुत्र-पौत्र आदि से युक्त होकर चिरकाल तक तुम्हारे स्तोत्र का पाठ करेंगे।

5. उषस् सूक्त (3.61)

मण्डल-3, **सूक्त**-61 **कुल मन्त्र**-7, **ऋषि**- विश्वामित्र, **देवता** - उषस्, **छन्द**-त्रिष्टुप्

1. **उषो वाजेन वाजिनि प्रचेताः स्तोमं जुषस्व गृणतो मघोनि।**
   पुराणी देवि युवतिः पुरंधिरनु व्रतं चरसि विश्ववारे॥

अर्थ- हे अन्नवती तथा धनवती उषा! प्रकृष्ट ज्ञानवती होकर तुम स्तोत्र करने वाले स्तोता के स्तोत्र को ग्रहण करो। हे सबके द्वारा वरणीया, पुरातनी युवती की तरह शोभमाना और बहुस्तोत्रवती उषा, तुम यज्ञ कर्म को लक्ष्यकर आगमन करो।

2. **उषो देव्यमर्त्या वि भाहि चन्द्ररथा सूनृता ईरयन्ती।**
   आ त्वा वहन्तु सुयमासो अश्वा हिरण्यवर्णां पृथुपाजसो ये॥

अर्थ- हे मरणधर्म-रहिता, सुवर्णमय रथ वाली उषा देवी, तुम प्रिय सत्यरूप वचन का उच्चारण करने वाली हो। तुम सूर्य किरण के सम्बन्ध से शोभमाना होओ। प्रभूतबल युक्त जो अरुण-वर्ण अश्व हैं, वे सुखपूर्वक रथ में योजित किये जा सकते हैं। वे तुम्हें आवाहन करें।

3. **उषः प्रतीची भुवनानि विश्वोर्ध्वा तिष्ठस्यमृतस्य केतुः।**
   समानमर्थं चरणीयमाना चक्रमिव नव्यस्या ववृत्स्व॥

अर्थ- हे उषा देवी, तुम निखिल भूतजात के अभिमुख आगमनशीला, मरणधर्म-रहिता और सूर्य की केतु-स्वरूपा हो। तुम आकाश में उन्नत होकर बहती हो। वे नवतरा उषा, तुम एक मार्ग में विचरण करने की इच्छा करती हुई आकाश में चलने वाले सूर्य के रथाङ्ग की तरह पुनः पुनः उसी मार्ग में प्रवृत्त हो।

4. **अव स्यूमेव चिन्वती मघोन्युषा याति स्वसरस्य पत्नी ।**
   स्व१र्जनन्ती सुभगा सुदंसा आन्ताद्दिवः पप्रथ आ पृथिव्याः॥

अर्थ- जो धनवती उषा वस्त्र की तरह विस्तीर्ण अन्धकार को क्षयित करती हुई सूर्य की पत्नी होकर गमन करती हैं, वही सौभाग्यवती और सत्य-कार्य शालिनी उषा द्युलोक और पृथिवी के अवसान से प्रकाशित होती है।

5. **अच्छा वो देवीमुषसं विभातीं प्र वो भरध्वं नमसा सुवृक्तिम्।**
   ऊर्ध्वं मधुधा दिवि पाजो अश्रेत् प्र रोचना रुरुचे रण्वसंदृक्॥

अर्थ- हे स्तोताओं, तुम लोगों के अभिमुख उषादेवी शोभमाना होती हैं। तुम लोग नमस्कार-द्वारा उसकी शोभन स्तुति करो। स्तुति को धारण करने वाली उषा आकाश में उर्ध्वाभिमुख तेज को आश्रित करती है। रोचनशीला और रमणीय दर्शना उषा अतिशय दीप्त होती है।

6. **ऋतावरी दिवो अर्कैरबोध्या रेवती रोदसी चित्रमस्थात् ।**
   आयतीमग्न उषसं विभातीं वाममेषि द्रविणं भिक्षमाणः ॥

अर्थ- जो उषा सत्यवती है, उसे सब कोई द्युलोक के तेजः प्रभाव से जानते हैं। धनवती उषा नानाविध, रूप से युक्त होकर द्यावा-पृथिवी को व्याप्त करके रहती है। हे अग्नि, तुम्हारे अभिमुख आने वाली भासमाना उषा देवी से हवि की याचना करने वाले तुम रमणीय धन को प्राप्त करते हो।

7. **ऋतस्य बुध्न उषसामिषण्यन्वृषा मही रोदसी आ विवेश ।**
मही मित्रस्य वरुणस्य माया चन्द्रेव भानुं वि दधे पुरुत्रा ॥

अर्थ- वृष्टि द्वारा जल के प्रेरक आदित्य सत्यभूत दिवस के मूल में उषा का प्रेरण करके विस्तीर्ण द्यावा पृथिवी के मध्य में प्रवेश करते हैं। तदन्तर महती उषा मित्र और वरुण की प्रभास्वरूपा होकर सवर्ण की तरह अपनी प्रभा को अनेक देशों में प्रसारित करती हैं।

6. पर्जन्य-सूक्त (5.83)

मण्डल-5, **सूक्त-**83 **कुल मन्त्र-**10, **ऋषि-** अत्रि, **देवता -** पर्जन्य, **छन्द-**1, 5, 6, 7, 8, और 10 वे मन्त्र में त्रिष्टुप् 2, 3, 4 में जगती तथा 9 वें मन्त्र में अनुष्टुप्

1. **अच्छा वद तवसं गीर्भिराभिः स्तुहि पर्जन्यं नमसा विवास।**
कनिक्रदद् वृषभो जीरदानू रेतो दधात्योषधीषु गर्भम्॥

अर्थ- हे स्तोता, तुम बलवान् पर्जन्य देव के अभिमुखवर्ती होकर उनकी प्रार्थना करो। स्तुति वचनों से उनका स्तवन करो। हविर्लक्षण अन्न से उनकी परिचर्या करो। जल वर्षक, दानशील, गर्जनकारी पर्जन्य वृष्टिपात द्वारा ओषधियों को गर्भ-युक्त करते हैं।

2. **वि वृक्षान् हन्त्युत हन्ति रक्षसो विश्वं बिभाय भुवनं महावधात् ।**
उतानागा ईषते वृष्ण्यावतो यत्पर्जन्यः स्तनयन् हन्ति दुष्कृतः ॥

अर्थ- पर्जन्य वृक्षों को नष्ट करते हैं, राक्षसों का वध करते हैं और महान् वध-द्वारा समग्र भुवन को भय प्रदर्शित करते हैं। गरजने वाले पर्जन्य पापियों का संहार करते हैं, अतएव निरपराधी भी वर्षण करने वाले पर्जन्य के निकट से भीत होकर पलायमान कर जाते हैं।

3. **रथीव कशयाश्वाँ अभिक्षिपन्नाविर्दूतान्कृणुते वर्ष्याँ३अह ।**
दूरात्सिंहस्य स्तनथा उदीरते यत्पर्जन्यः कृणुते वर्ष्यं१नभः ॥

अर्थ- रथी जिस प्रकार से कसाघात-द्वारा अश्वों को उत्तेजित करके योद्धाओं को आविष्कृत करते हैं, उसी प्रकार पर्जन्य भी मेघों को प्रेरित करके वारिवर्षक मेघों को प्रकटित करते हैं। जब तक पर्जन्य जलद-समूह को अन्तरिक्ष में व्याप्त करते हैं, तब तक सिंह की तरह गरजने वाले मेघ का शब्द दूर में ही उत्पन्न होता है।

4. **प्र वाता वान्ति पतयन्ति विद्युत उदोषधीर्जिहते पिन्वते स्वः ।**
इरा विश्वस्मै भुवनाय जायते यत्पर्जन्यः पृथिवीं रेतसावति ॥

जब तक पर्जन्य वृष्टि द्वारा पृथिवी की रक्षा करते हैं, तब तक वृष्टि के लिए हवा बहती है। चारों तरफ बिजलियाँ चमकती रहती हैं, ओषधियाँ बढ़ती रहती हैं अन्तरिक्ष स्रवित होता

रहता है और सम्पूर्ण भुवन की हितसाधना में पृथिवी समर्थ होती रहती है।

5. यस्य व्रते पृथिवी नन्नमीति यस्य व्रते शफवज्जर्भुरीति।
यस्य व्रत ओषधीर्विश्वरूपाः स नः पर्जन्य महि शर्म यच्छ॥

अर्थ- हे पर्जन्य, तुम्हारे ही कर्म से पृथिवी अवनत होती है, तुम्हारे ही कर्म से पाद-युक्त या खुर विशिष्ट पशु समूह पुष्ट बलवान् होते हैं या गमन करते हैं। तुम्हारे ही कर्म से ओषधियाँ विविध वर्ण धारण करती हैं। तुम हम लोगों को महान् सुख प्रदान करो।

6. दिवो नो वृष्टिं मरुतो ररीध्वं प्र पिन्वत वृष्णो अश्वस्य धाराः।
अर्वाङेतेन स्तनयित्नुनेह्यपो निषिञ्चन्नसुरः पिता नः॥

अर्थ- हे मरुतों, तुम लोग अन्तरिक्ष से हमलोगों के लिए वृष्टि प्रदान करो। वर्षणकारी और सर्वव्यापी मेघ की उदक धारा को क्षरित करो (वर्षाओ)। हे पर्जन्य, तुम जल सेंचन करके गर्जनशील मेघ के साथ हमलोगों के साथ अभिमुख आगमन करो। तुम वारिवर्षक और हम लोगों के पालक हो।

7. अभि क्रन्द स्तनय गर्भमा धा उदन्वता परि दीया रथेन।
दृतिं सु कर्ष विषितं न्यञ्चं समा भवन्तूद्वतो निपादाः॥

अर्थ- पृथिवी के ऊपर तुम शब्द करो– गर्जन करो, उदक द्वारा ओषधियों को गर्भ-धारण कराओं, वारिपूर्ण रथ-द्वारा अन्तरिक्ष में परिभ्रमण करो, उदक धारक मेघ को वृष्टि के लिए आकृष्ट करो या विमुक्त बन्धन करो, उस बन्धन को अधोमुख करो, उन्नत और निम्नतम प्रदेश को समतल करो अर्थात् सब उदकपूर्ण हो।

8. महान्तं कोशमुदचा निषिञ्च स्यन्दन्तां कुल्या विषिताः पुरस्तात्।
घृतेन द्यावापृथिवी व्युन्धि सुप्रपाणं भवत्वघ्न्याभ्यः॥

अर्थ- हे पर्जन्य, तुम कोश स्थानीय (जल-भण्डार) महान् मेघ को ऊर्ध्व भाग में उत्तोलित करो एवं वहाँ से उसे नीचे की ओर क्षारित करो अर्थात् वारि वर्षण कराओ। अप्रतिहत वेगशालिनी नदियाँ पूर्वाभिमुख या पुरोभाग में प्रवाहित हों। जल-द्वारा द्यावा-पृथिवी को क्लिन्न (आर्द्र) करो। गौओं के लिए पानयोग्य सुन्दर जल प्रचुर मात्रा में हो।

9. यत्पर्जन्य कनिक्रदत् स्तनयन् हंसि दुष्कृतः।
प्रतीदं विश्वं मोदते यत्किं च पृथिव्यामधि॥

अर्थ- हे पर्जन्य, जब तुम गंभीर गर्जन करके पापिष्ठ मेघों को विदीर्ण करते हो, तब यह सम्पूर्ण विश्व और भूमि में अधिष्ठित चराचरात्मक पदार्थ हृष्ट होते हैं अर्थात् वृष्टि होने से सम्पूर्ण जगत् प्रसन्न होता है।

10. अवर्षीर्वर्षमुदु षू गृभायाकर्धन्वान्यत्येतवा उ।
अजीजन ओषधीर्भोजनाय कमुत प्रजाभ्योऽविदो मनीषाम्॥

अर्थ- हे पर्जन्य, तुमने वृष्टि की है। अभी वृष्टि संहारण करो। तुमने मरुभूमियों को सुगम्य बनाने के लिए जलयुक्त किया है। मनुष्यों के भोग के लिए ओषधियों को उत्पन्न किया है। प्रजाओं के समीप से तुमने स्तुतियाँ प्राप्त की है।

7. अक्ष-सूक्त (10.34)

मण्डल-10, **सूक्त-**34 **कुल मन्त्र-**14,
ऋषि- कवष ऐलूष, **देवता -** अक्षकृषि प्रशंसा, अक्षकितवनिन्दा
छन्द-सातवें मन्त्र में जगती, शेष में त्रिष्टुप्।

1. प्रावेपा मा बृहतो मादयन्ति प्रवातेजा इरिणे वर्वृतानाः।
सोमस्येव मौजवतस्य भक्षो विभीदको जागृविर्मह्यमच्छान्।

अर्थ- बड़े-बड़े पासे जिस समय नक्शे (पाशा खेलने के स्थानों) के ऊपर इधर-उधर चलते हैं, उस समय उन्हें देखकर मुझे बड़ा आनन्द होता है। मूजवान् पर्वत पर उत्पन्न उत्तम सोमलता का रस पीकर जैसे प्रसन्नता होती है, वैसे ही बहेरे (वृक्ष) के काठ से बना अक्ष (पाशा) मेरे लिये प्रीति-प्रद और उत्साह-दाता है।

2. न मा मिमेथ न जिहीळ एषा शिवा सखिभ्य उत मह्यमासीत्।
अक्षस्याहमेकपरस्य हेतोरनुव्रतामप जायामरोधम्॥

अर्थ- मेरी यह रूपवती पत्नी कभी मुझसे उदासीन नहीं हुई, न कभी मुझसे लज्जित हुई वह पत्नी मेरी और मेरे बन्धुओं की विशेष सेवा-शुश्रषा करती थी। किन्तु केवल पासे के कारण मैंने उस परम अनुरागिणी भार्या को छोड़ दिया।

3. द्वेष्टि श्वश्रूरप जाया रुणद्धि न नाथितो विन्दते मर्डितारम्।
अश्वस्येव जरतो वस्न्यस्य नाहं विन्दामि कितवस्य भोगम्॥

अर्थ- जो जुआड़ी (कितव) जुआ खेलता है, उसकी सास उसकी निन्दा करती है,और उसकी स्त्री उसे छोड़ देती है। जुआड़ी किसी से कुछ माँगता है, तो उसे कोई नहीं देता। जैसे बूढ़े घोड़े को कोई नहीं खरीदता, वैसे ही जुआड़ी का कोई आदर नहीं करता।

4. अन्ये जायां परि मृशन्त्यस्य यस्यागृधद्वेदने वाज्य१क्षः।
पिता माता भ्रातर एनमाहुर्न जानीमो नयता बद्धमेतम्॥

अर्थ- पासे का आकर्षण बड़ा कठिन है। यदि किसी के धन के प्रति अक्ष (पासे) की लोभ-दृष्टि हो जाय, तो पासे वाले की पत्नी व्यभिचारिणी हो जाती है। जुआड़ी के माता, पिता और सहोदर भ्राता कहते हैं- ''हम इसे नहीं जानते, जुआड़ियों, इसे पकड़कर ले जाओ''।

5. यदादीध्ये न दविषाण्येभिः परायद्भ्योऽव हीये सखिभ्यः।
न्युप्ताश्च बभ्रवो वाचमक्रतँ एमीदेषां निष्कृतं जारिणीव।

अर्थ- जिस समय मैं इच्छा करता हूँ कि, मैं अब पाशा नहीं खेलूँगा, उस समय साथी जुआड़ियों के पास से हट जाता हूँ किन्तु नक्शे पर पीले पासों को देखकर नहीं ठहरा जाता। जैसे भ्रष्टा नारी उपपति के पास जाती है, वैसे ही मैं भी जुआड़ियों के घर जाता हूँ।

6. सभामेति कितवः पृच्छमानो जेष्यामीति तन्वा३शूशुजानः।
अक्षासो अस्य वि तिरन्ति कामं प्रतिदीव्ने दधत आ कृतानि॥

अर्थ- जुआड़ी अपनी छाती फुलाकर कूदता हुआ जुए के अड्डे पर आता और कहता है कि, ''मैं जीतूगाँ''। कभी-कभी पासा जुआड़ी की इच्छा पूरी करता है और कभी-कभी विपक्ष के जुआड़ी के लिए वह जो कुछ चाहता है, वह सब भी कभी सिद्ध हो जाता है।

7. अक्षास इदङ्कुशिनो नितोदिनो निकृत्वानस्तपनास्तापयिष्णवः ।
कुमारदेष्णा जयतः पुनर्हणो मध्वा संपृक्ताः कितवस्य बर्हणा ॥

अर्थ- किन्तु कभी-कभी वही पासा बेहाथ हो जाता है- अंकुश के समान चुभता है, बाण के सदृश छेदता है, छूरे के समान काटता है, तप्त पदार्थ के समान संताप देता है। जो जुआड़ी विजयी होता है, उसके लिये पासा पुत्र जन्म के समान आनन्द दाता होता है, मधुरिमा से युक्त होता है और मानो मीठे वचनों से संभाषण करता है; किन्तु हारे हुए जुआड़ी को तो प्रायः मार ही डालता है।

8. त्रिपञ्चाशः क्रीळति व्रात एषां देव इव सविता सत्यधर्मा ।
उग्रस्य चिन्मन्यवे ना नमन्ते राजा चिदेभ्यो नम इत्कृणोति ॥

अर्थ- तिरपन पासे नक्शे के ऊपर मिलकर विहार करते हैं- मानों सत्य-स्वरूप सूर्य देव संसार में विचरण करते हैं। कोई कितना बड़ा उग्र क्यों न हो। परन्तु पासा किसी के वश में नहीं आ सकता। राजा भी पासे को नमस्कार करते हैं।

9. नीचा वर्तन्त उपरि स्फुरन्त्यहस्तासो हस्तवन्तं सहन्ते ।
दिव्या अङ्गारा इरिणे न्युप्ताः शीताः सन्तो हृदयं निर्दहन्ति ॥

अर्थ- पासे कभी नीचे उतरते हैं और कभी ऊपर उठते हैं। इनके हाथ नहीं है, परन्तु जिनके हाथ हैं, वे इनसे हार जाते हैं। ये श्रीसम्पन्न हैं, जलते हुए अंगारे के समान ये नक्शे के ऊपर बैठे हैं। ये छूने में ठंडे हैं; किन्तु हृदय को जलाते हैं।

10. जाया तप्यते कितवस्य हीना माता पुत्रस्य चरतः क्व स्वित् ।
ऋणावा बिभ्यद्धनमिच्छमानोऽन्येषामस्तमुप नक्तमेति ॥

अर्थ- जुआड़ी की स्त्री दीन-हीन वेश में यातना भोगती रहती है, पुत्र कहाँ-कहाँ घूमा करता है- ऐसा सोचकर जुआड़ी की माता व्याकुल रहा करती है। जो जुआड़ी को उधार देता है, वह इस सन्देह में रहता है कि– ''मेरा धन फिर मिलेगा या नहीं।'' जुआड़ी बेचारा दूसरे के घर में रात काटा करता है।

11. स्त्रियं दृष्ट्वाय कितवं ततापान्येषां जायां सुकृतं च योनिम्।
पूर्वाह्णे अश्वान् युयुजे हि बभ्रून्त्सो अग्नेरन्ते वृषलः पपाद ॥

अर्थ- अपनी स्त्री की दशा देखकर जुआड़ी का हृदय फटा करता है। अन्यान्य स्त्रियों का सौभाग्य और सुन्दर अट्टालिका देखकर जुआड़ी को सन्ताप होता है। जो जुआड़ी प्रातः काल घोड़े की सवारी कर आता है, वही सन्ध्या-समय, दरिद्र के समान जाड़े से बचने के लिए आग तापता है- शरीर पर वस्त्र भी नहीं रहता।

12. यो वः सेनानीर्महतो गणस्य राजा व्रातस्य प्रथमो बभूव ।
तस्मै कृणोमि न धना रुणध्मि दशाहं प्राचीस्तदृतं वदामि ॥

अर्थ- पासो, तुम्हारे दल में जो प्रधान, सेनापति व राजा के समान हैं, उसको मैं अपनी

दसों अँगुलियाँ जोड़कर प्रणाम करता हूँ। मैं सच्ची बात कहता हूँ कि मैं तुम लोगों से अर्थ नहीं चाहता।

13. अक्षैर्मा दीव्यः कृषिमित् कृषस्व वित्ते रमस्व बहु मन्यमानः।
तत्र गावः कितव तत्र जाया तन्मे वि चष्टे सवितायमर्यः॥

अर्थ- जुआड़ी, कभी जुआ नहीं खेलना; खेती करना। कृषि से जो कुछ लाभ हो, उसी से सन्तुष्ट रहना- अपने को कृतार्थ समझना। इसी से स्त्री प्राप्त करोगे और अनेक गायें भी पाओगे। प्रभु सूर्य देव ने मुझसे ऐसा कहा है।

14. मित्रं कृणुध्वं खलु मृळता नो मा नो घोरेण चरताभि धृष्णु ।
नि वो नु मन्युर्विशतामरातिरन्यो बभ्रूणां प्रसितौ न्वस्तु ॥

अर्थ- पासो (अक्षो), हमें बन्धु जानो; हमारा कल्याण करो। हमारे ऊपर अपने दुर्द्धर्ष प्रभाव का प्रयोग नहीं करना। हमारा शत्रु ही तुम्हारी कोप-दृष्टि में गिरे। दूसरे तुममें फँसे रहें।

8. ज्ञान सूक्त (10.71)

मण्डल-10, **सूक्त**-71 **कुल मन्त्र**-11, **ऋषि-** बृहस्पति,
देवता - परब्रह्म ज्ञान, **छन्द-** नवम मन्त्र में जगती छन्द,
शेष दस मन्त्रों में त्रिष्टुप्

1. बृहस्पते प्रथमं वाचो अग्रं यत् प्रैरत नामधेयं दधानाः।
यदेषां श्रेष्ठं यदरिप्रमासीत्प्रेणा तदेषां निहितं गुहाविः॥

अर्थ- बृहस्पति (स्वात्मन्), बालक प्रथम पदार्थों का नाम भर ("तात") आदि रखते हैं; यह उनकी भाषा-शिक्षा का प्रथम सोपान है। इनका जो उत्कृष्ट और निर्दोष ज्ञान (वेदार्थज्ञान) गोपनीय है, वह सरस्वती के प्रेम से प्रकट होता है।

2. सक्तुमिव तितउना पुनन्तो यत्र धीरा मनसा वाचमक्रत।
अत्रा सखायः सख्यानि जानते भद्रैषां लक्ष्मीर्निहिताधि वाचि॥

अर्थ- जैसे-सूप से सतू को परिष्कृत किया जाता है, वैसे ही बुद्धिमान् लोग बुद्धि-बल से परिष्कृत भाषा को प्रस्तुत करते हैं। उस समय विद्वान् लोग अपने अभ्युदय को जानते हैं। इनके वचन में मंगलमयी लक्ष्मी निवास करती हैं।

3. यज्ञेन वाचः पदवीयमायन् तामन्वविन्दन्नृषिषु प्रविष्टाम्।
तामाभृत्या व्यदधुः पुरुत्रा तां सप्तरेभा अभि सन्नवन्ते॥

अर्थ- बुद्धिमान् लोग यज्ञ के द्वारा वचन (भाषा) का मार्ग पाते हैं। ऋषियों के अन्तकरण में जो वाक् (भाषा) थी, उसको उन्होंने प्राप्त किया। उस वाणी (भाषा) को लेकर उन्होंने सारे मनुष्यों को पढ़ाया सातों छन्द इसी भाषा में स्तुति करते हैं।

4. उतत्वः पश्यन्न ददर्श वाचमुत त्वः शृण्वन्नशृणोत्येनाम्।
उतो त्वस्मैतन्वं विसस्रे जायेव पत्य उशती सुवासाः॥

अर्थ- कोई-कोई समझकर व देखकर भी भाषा को नहीं समझते व देखते, कोई-कोई उसे

सुनकर भी नहीं सुनते। किसी-किसी के पास वाग्देवी स्वयं वैसे ही प्रकट होती हैं, जैसे सम्भोगाभिलाषी भार्या, सुन्दर वस्त्र धारण करके, अपने स्वामी के पास अपने शरीर को प्रकाश करती है।

5. उतत्वं सख्ये स्थिरपीतमाहुः नैनं हिन्वन्त्यपि वाजिनेषु।
अधेन्वाचरति माययैष वाचं शुश्रुवान् अफलाम पुष्पाम्॥

अर्थ- विद्वन्मण्डली में किसी-किसी की यह प्रतिष्ठा है कि, वह उत्तम भावग्राही है और उसके बिना कोई कार्य नहीं हो सकता (ऐसे लोगों के कारण ही वेदार्थ ज्ञान होता है)। कोई-कोई असार-वाक्य का अभ्यास करते हैं। वे वास्तविक धेनु नहीं हैं- काल्पनिक, माया-मात्र धेनु हैं।

6. यस्तित्याज सचिविदं सखायं न तस्य वाच्यपि भागो अस्ति।
यदीं श्रृणोत्यलकं श्रृणोति नहि प्रवेद सुकृतस्य पन्थाम्॥

अर्थ- जो विद्वान् मित्र को छोड़ देता है, उसकी वाणी से कोई फल नहीं है। वह जो कुछ सुनता है, व्यर्थ ही सुनता है। वह सत्कर्म का मार्ग नहीं जान सकता।

7. अक्षण्वन्तः कर्णवन्तः सखायो मनोजवेष्वसमा बभूवुः।
आदघ्नास उपकक्षास उत्वे ह्रदा इव स्नात्वा उत्वे ददृश्रे॥

अर्थ- जिन्हें आँखें हैं, कान हैं, ऐसे सखा समान-(ज्ञानी) मन के भाव को (ज्ञान को) प्रकाश करने में असाधारण होते हैं। कोई-कोई मुख तक जल वाले पुष्कर और कोई-कोई कटिपर्यन्त जल वाले तड़ाग के समान होते हैं कोई-कोई स्नान करने के उपयुक्त गंभीर ह्रद् के समान होते हैं।

8. ह्रदा तष्टेषु मनसो जवेषु यद् ब्राह्मणाः संयजन्ते सखायः।
अत्राह त्वं विजहुर्वेद्याभिरोहब्राह्मणो विचरन्त्युत्वे॥

अर्थ- जिस समय अनेक समान ज्ञानी ब्राह्मण ह्रदय से मनोगम्य वेदार्थों के गुण-दोष-परीक्षण के लिए एकत्र होते हैं, उस समय किसी-किसी व्यक्ति को कुछ ज्ञान नहीं होता। कोई-कोई स्तोत्रज्ञ (ब्राह्मण) वेदार्थ ज्ञाता होकर विचरण करते हैं।

9. इमे ये नार्वाङ् न परश्चरन्ति न ब्राह्मणासो न सुतेकरासः।
त एते वाचमभिपद्य पापया सिरीस्तन्त्रं तन्वते अप्रजज्ञयः॥

अर्थ- जो व्यक्ति इस लोक में वेदज्ञ ब्राह्मणों के और परलोकीय देवों के साथ (यज्ञादि) कर्म नहीं करते, जो न तो स्तोता (ऋत्विक्) हैं, न सोम-यज्ञ कर्त्ता हैं, वे पापाश्रित लौकिक भाषा की शिक्षा के द्वारा, मूर्ख व्यक्ति के समान, लाङ्गल-चालक (हल जोतने वाले) बनकर कृषि - रूप बाना बुनते हैं।

10. सर्वे नन्दन्ति यशसागतेन सभासाहेन सख्या सखायः।
किल्बिषस्पृत पितुषणिर्ह्येषामरं हितो भवति वाजिनाय॥

अर्थ- यश (सोम) मित्र के समान कार्य करता है, यह सभा में प्राधान्य प्रदान करता है। इसे प्राप्त कर सब प्रसन्न होते हैं; क्योंकि यश के द्वारा दुर्नाम दूर होता है, अन्न-प्राप्ति होती है, बल मिलता है, नाना प्रकार से उपकार होता है।

11. ऋचां त्वः पोषमास्ते पुपुष्वान् गायत्रं त्वो गायति शक्वरीषु।
ब्रह्मा त्वा वदति जातविद्यां यज्ञस्य मात्रां विमिमीत उत्वः॥

अर्थ- एक जन अनेक ऋचाओं का स्तव करते हुये यज्ञानुष्ठान में सहायता करते हैं, दूसरे गायत्री छन्द में साम-गान करते हैं। ब्रह्मा नामक जो पुरोहित हैं, वे ज्ञात-विद्या (प्रायश्चित्त आदि) की व्याख्या करते हैं। अध्वर्यु पुरोहित यज्ञ के विभिन्न कार्य करते हैं।

9. पुरुष सूक्त (10.90)

मण्डल-10, **सूक्त**-90 **कुल मन्त्र**-16, **ऋषि**- नारायण,
देवता -पुरुष, **छन्द**-अनुष्टुप्, अन्तिम मन्त्र में त्रिष्टुप्

1. सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमिं विश्वतो वृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥

अर्थ- परमपुरुष (परमेश्वर) हजारों शिरों वाला, हजारों नेत्रों वाला तथा हजारों पैरों वाला है। वह भूमि को सभी ओर से आवृत्त कर दश अंगुल का अतिक्रमण कर अवस्थित हो गया है।

2. पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति॥

अर्थ- यह सब कुछ-जो उत्पन्न हो चुका है, जो उत्पन्न होगा, इसके अतिरिक्त अमरता का स्वामी (पुरुष) तथा जो अन्न से बढ़ता है- वह सब पुरुष ही है।

3. एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्च पूरुषः।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि॥

अर्थ- इतना इस पुरुष का ऐश्वर्य है और पुरुष इससे भी बड़ा है। समस्तप्राणी इसका चतुर्थांश मात्र हैं। इसका तीन-चौथाई अमृतरूप से द्युलोक में अवस्थित है।

4. त्रिपादूर्ध्व उदैत् पुरुषः पादोऽस्येहाभवत् पुनः।
ततो विष्वङ्व्यक्रामत् साशनानशने अभि॥

अर्थ- तीन पादों से युक्त पुरुष ऊपर को उठ गया, फिर भी इसका चतुर्थांश यहीं रह गया। वह (पुरुष) भोजन करने वाले (चेतन) तथा न करने वाले (अचेतन) सभी को चारों ओर से व्याप्त कर लिया।

5. तस्माद् विराळजायत विराजो अधि पूरुषः।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः॥

अर्थ- उस (आदिपुरुष) से विराट् उत्पन्न हुआ। विराट् (व्यक्त जगत्) से अधिष्ठाता के रूप में पुरुष (जीवात्मा) उत्पन्न होकर जगत् के पीछे तथा आगे की भूमि से अतिक्रमण कर गया।

6. यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत ।
वसन्तो अस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः ॥

अर्थ- जब देवताओं ने पुरुषरूप हवि के द्वारा यज्ञ को सम्पन्न किया, तब इस (यज्ञ) का घृत-वसन्त ऋतु, ईंधन-ग्रीष्मऋतु तथा हवि-शरद्ऋतु थी।

7. तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः।
तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये॥

अर्थ- सर्वप्रथम उत्पन्न यज्ञ साधनभूतपुरुष को कुश पर (रखकर) जल छिड़कर (पवित्र किया)। उससे देवताओं तथा ऋषियों ने यजन (यज्ञ) किया।

8. तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम्।
पशून्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्यान्ग्राम्याश्च ये।

अर्थ- जिसमें सब कुछ होम कर दिया गया, उस यज्ञ से दधिमिश्रित घृत इकट्ठा किया गया (जिससे) वायु में विचरण करने वाले (पक्षियों) तथा वन्य पशुओं और ग्राम्य-पशुओं को उत्पन्न किया।

9. तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद् यजुस्तस्मादजायत॥

अर्थ- जिसमें सब कुछ होम कर दिया गया, उस यज्ञ से ऋचायें तथा साम उत्पन्न हुए, उससे छन्द उत्पन्न हुए तथा उससे यजुष् उत्पन्न हुआ।

10. तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात् तस्माज्जाता अजावयः॥

अर्थ- उस (यज्ञ) से अश्व उत्पन्न हुए और जो कोई ऊपर-नीचे दोनों ओर दाँतों वाले (पशु हैं) उत्पन्न हुए। उससे गायें उत्पन्न हुईं। उससे भेड़-बकरियाँ पैदा हुईं।

11. यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखं किमस्य कौ बाहू का ऊरू पादा उच्येते॥

अर्थ- जब पुरुष को देवों ने विभक्त किया, तब (उसे) कितने भागों में विविधरूप से कल्पित किया। इसका मुख क्या था?, इसकी भुजाएँ कौन थीं ?, (इसकी) जंघाएं क्या (हुईं) और पैर क्या कहे जाते हैं?

12. ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत॥

अर्थ- ब्राह्मण इस (पुरुष) का मुख था। दोनों भुजाओं को क्षत्रिय बनाया गया। जो वैश्य हैं, वह इसकी जंघाओं के रूप में था। दोनों पैरों से शूद्र उत्पन्न हुआ।

13. चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत।
मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च प्राणाद्वायुरजायत॥

अर्थ- (पुरुष के) मन से चन्द्रमा उत्पन्न हुआ। नेत्र से सूर्य उत्पन्न हुआ। मुख से इन्द्र और अग्नि तथा प्राण से वायु उत्पन्न हुआ।

14. नाभ्या आसीदन्तरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात् तथा लोकाँ अकल्पयन्॥

अर्थ- (पुरुष की) नाभि से अन्तरिक्ष उत्पन्न हुआ। सिर से द्युलोक उत्पन्न हुआ। पैरों से

भूमि और कानों से दिशाएं (उत्पन्न हुई)- इस प्रकार लोकों की रचना की।

15. सप्तास्यासन् परिधयस् त्रिः सप्त समिधः कृताः।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुम्॥

अर्थ- जिस समय देवताओं ने यज्ञ का विस्तार करते हुए पुरुष रूपी पशु को (यूप में) बाँधा (उस समय) उस (पुरुष) की सात परिधियाँ थीं (और) इक्कीस समिधाएं बनाई गई।

16. यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥

अर्थ- देवताओं ने यज्ञ के द्वारा यज्ञस्वरूप (प्रजापति) का यजन किया। वे धर्म सबसे मुख्य हुए। वे महिमाशाली (उपासक) दिव्य स्वर्ग को प्राप्त करते हैं, जहाँ प्राचीन साध्यदेव हैं।

10. हिरण्यगर्भ सूक्त (10.121)

मण्डल-10, **सूक्त-**121 **कुल मन्त्र-**10, **ऋषि-** हिरण्यगर्भ,
देवता -क संज्ञक प्रजापति, **छन्द-** त्रिष्टुप्

1. हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

अर्थ- हिरण्यगर्भ (प्रजापति) सर्वप्रथम उत्पन्न हुआ। उत्पन्न होते ही वह सम्पूर्ण प्राणियों का अद्वितीय स्वामी हो गया (तथा) उसने इस पृथिवी और द्युलोक को धारण किया (उसे छोड़कर) हम किस देवता के लिए हवि से विधान (पूजन) करें।

2. य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः।
यस्य छायामृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

अर्थ- जो (हिरण्यगर्भ) प्राण (आत्मा) दाता (और) बलदाता है। जिसके आदेश की समस्त (प्राणी तथा) देवता उपासना करते हैं, जिसकी छाया अमृत है, जिसकी (छाया) मृत्यु है, (उसके अतिरिक्त) किस देवता के लिए हवि से विधान करें।

3. यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव।
य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

अर्थ- जो (हिरण्यगर्भ) अपनी महिमा से- श्वास-प्रश्वास लेने वाले, पलकों का संचालन करने वाले और गतिशील प्राणिजगत् का अकेला ही राजा हो गया और जो दो पैरों वाले (मनुष्यों) तथा चार पैरों वाले (पशुओं) का स्वामित्व करता है, (उसके अतिरिक्त) किसके लिए हवि से विधान करें।

4. यस्येमे हिमवन्तो महित्वा यस्य समुद्रं रसया सहाहुः।
यस्येमाः प्रदिशो यस्य बाहू कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

अर्थ- जिस (हिरण्यगर्भ) की महिमा से ये बर्फीले पर्वत (स्थित) हैं, नदियों के साथ समुद्र को जिसका बताया जाता है, जिसकी ये प्रधान दिशाएँ हैं (तथा) जिसकी भुजाएँ (रक्षिका) हैं, (उसके अतिरिक्त) किस देवता के लिए हवि से विधान करें।

5. येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृळहा येन स्वः स्तभितं येन नाकः।
यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

अर्थ- जिसके द्वारा उन्नत द्युलोक और पृथिवी को दृढ़ (स्थिर) किया गया, जिसके द्वारा स्वर्गलोक और नागलोक स्तब्ध कर दिया गया; जो अन्तरिक्ष में लोकों को नापने वाला है, (उसके अतिरिक्त) किस देवता के लिए हवि से विधान करें।

6. यं क्रन्दसी अवसा तस्तभाने अभ्यैक्षेतां मनसा रेजमाने।
यत्राधि सूर उदितो विभाति कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

अर्थ- (प्राणियों की) रक्षा के लिए स्थिर बनाए गए तथा मन से काँपते हुए द्युलोक और पृथिवीलोक जिस (प्रजापति) की ओर देखते हैं, जिसे आधार बना कर सूर्य उदित होकर चमकता है, (उसके अतिरिक्त) किस देवता के लिए हवि से विधान करें।

7. आपो ह यद्बृहतीर्विश्वमायन्गर्भं दधाना जनयन्तीरग्निम्।
ततो देवानां समवर्ततासुरेकः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

अर्थ- जब गर्भ धारण करती हुई और अग्नि को उत्पन्न करती हुई, विशाल जल राशि ने विश्व को व्याप्त कर लिया, तब देवताओं का एकमात्र प्राणभूत (प्रजापति) उत्पन्न हुआ, (उसके अतिरिक्त किस देवता के लिए हवि से विधान करें।

8. यश्चिदापो महिना पर्यपश्यद्दक्षं दधाना जनयन्तीर्यज्ञम्।
यो देवेष्वधि देव एक आसीत्कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

अर्थ- जिसने अपनी महिमा से दक्ष (प्रजापति) को धारण करती हुई तथा यज्ञ को उत्पन्न करती हुई जलराशि को चारों ओर देखा, जो देवताओं में एक अद्वितीय देव हो गया, (उसके अतिरिक्त) किस देवता के लिए हवि से विधान करें।

9. मा नो हिंसीज्जनिता यः पृथिव्या यो वा दिवं सत्यधर्मा जजान।
यश्चापश्चन्द्रा बृहतीर्जजान कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

अर्थ- वह (प्रजापति) हमें कष्ट न दे, जो पृथिवी को उत्पन्न करने वाला है, तथा सत्यनियमवाला जिसने द्युलोक को उत्पन्न किया है, (तथा) जिसने आनन्ददायक विशाल जलराशि को उत्पन्न किया है, (उसके अतिरिक्त) हम किस देवता के लिए हवि से विधान करें।

10. प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम्॥

अर्थ- हे प्रजापति! तुम्हारे अतिरिक्त अन्य कोई इन (वर्तमान तथा) उन (भूत) सम्पूर्ण उत्पन्न पदार्थों को व्याप्त नहीं कर पाया; जिस (फल) की कामना करते हुए हम तुम्हें हवि प्रदान करते हैं, वह (फल) हमारा हो जाय। हम लोक समृद्धियों (धनों) के स्वामी हो जायें।

11. वाक् सूक्त (10.125)

मण्डल-10, **सूक्त**-125 **कुल मन्त्र**-8, **ऋषि**- वागाम्भृणी, **देवता** -परमात्मा वाक्, **छन्द**-दूसरे मन्त्र में जगती और सबमें त्रिष्टुप्

1. **अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चराम्यहमादित्यैरुत विश्वदेवैः।**
अहं मित्रावरुणोभा बिभर्म्यहमिन्द्राग्नी अहमश्विनोभा॥

अर्थ- मैं (वागाम्भृणी) रुद्रों तथा वसुओं के साथ चलती हूँ। मैं आदित्यों और विश्वदेवों के साथ (चलती हूँ), मैं मित्र तथा वरुण दोनों को धारण करती हूँ। मैं इन्द्र तथा अग्नि और दोनों अश्विनों को (धारण करती हूँ)।

2. **अहं सोममाहनसं बिभर्म्यहं त्वष्टारमुत पूषणं भगम्।**
अहं दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्राव्ये३ यजमानाय सुन्वते॥

अर्थ- मैं आवेश उत्पन्न करने वाले सोम को धारण करती हूँ और मैं त्वष्टा, पूषा तथा भग को (धारण करती हूँ), मैं सोम निचोड़ते हुए हवि-प्रदाता (तथा) भली-भाँति सहायता के योग्य यजमान के लिए धन धारण करती हूँ।

3. **अहं राष्ट्री संगमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम्।**
तां मा देवा व्यदधुः पुरुत्रा भूरिस्थात्रां भूर्यावेशयन्तीम्॥

अर्थ- मैं (सम्पूर्ण विश्व की) स्वामिनी हूँ,धनों को प्राप्त कराने वाली हूँ, पूजनीयों में प्रमुख ज्ञानवती हूँ। अनेकों स्थानों में स्थित तथा अनेक प्राणियों में (अपना) प्रवेश कराती हुई मुझको देवताओं ने अनेक स्थानों में पृथक्-पृथक् (विविध रूपों में) स्थापित किया।

4. **मया सो अन्नमत्ति यो विपश्यति यः प्राणिति य ईं शृणोत्युक्तम्।**
अमन्तवो मां त उप क्षियन्ति श्रुधि श्रुत श्रद्धिवं ते वदामि॥

अर्थ- जो अन्न खाता है, जो देखता है, जो श्वास लेता है, जो इस कहे हुए को सुनता है, वह मेरे द्वारा (ही होता है)। मुझे न मानने वाले (जो लोग हैं) वे नष्ट हो जाते हैं। हे विद्वान्! सुनो (मैं) तुम्हारे लिए विश्वसनीय (बात) कहती हूँ।

5. **अहमेव स्वयमिदं वदामि जुष्टं देवेभिरुत मानुषेभिः।**
यं कामये तं तमुग्रं कृणोमि तं ब्रह्माणं तमृषिं तं सुमेधाम्॥

अर्थ- मैं स्वयं ही देवताओं तथा मनुष्यों के लिए प्रिय यह (बात) कहती हूँ। जिसे-जिसे चाहती हूँ, उसे-उसे बलयुक्त, उसे ब्रह्मा, उसे ऋषि (तथा) उसे ज्ञानी बनाती हूँ।

6. **अहं रुद्राय धनुरा तनोमि ब्रह्मद्विषे शरवे हन्तवा उ।**
अहं जनाय समदं कृणोम्यहं द्यावापृथिवी आ विवेश॥

अर्थ- ब्रह्मद्वेषी हिंसक को मारने के निमित्त मैं निश्चय ही रुद्र के लिए धनुष को तान देती हूँ। मैं मनुष्यों के लिए युद्ध करती हूँ। मैं द्युलोक तथा पृथ्वीलोक में समाई हुई हूँ।

7. **अहं सुवे पितरमस्य मूर्धन्मम योनिरप्स्व१न्तः समुद्रे।**
ततो वि तिष्ठे भुवनानु विश्वोतामूं द्यां वर्ष्मणोप स्पृशामि॥

अर्थ- मैं इस (भूलोक) के ऊपर पितास्वरूप द्युलोक को उत्पन्न करती हूँ। मेरा उत्पत्ति स्थान जल के भीतर समुद्र में है, वहाँ से मैं सब लोकों में अनेक रूपों में स्थित हो जाती हूँ और शीर्षभाग से उस द्युलोक को स्पर्श करती हूँ।

8. **अहमेव वात इव प्र वाम्यारभमाणा भुवनानि विश्वा।**
परो दिवा पर एना पृथिव्यैतावती महिना सं बभूव॥

अर्थ- मैं ही सकल भुवनों को उत्पन्न करती हुई, वायु के समान प्रवाहित होती हूँ। मैं द्युलोक से परे तथा इस पृथ्वीलोक से (भी) परे (बढ़कर) हूँ। (मैं) अपनी महिमा से इतनी (विशाल) हो गई हूँ।

12. नासदीय सूक्त (10.129)

मण्डल-10, **सूक्त-**129 **कुल मन्त्र-**7, **ऋषि-** परमेष्ठी प्रजापति, **देवता -**सृष्टि-स्थिति-प्रलय कर्त्ता परमात्मा, **छन्द-** त्रिष्टुप्

1. **नासदासीन्नो सदासीत्तदानीं नासीद्रजो नो व्योमा परो यत्।**
किमावरीवः कुह कस्य शर्मन्नम्भः किमासीद्गहनं गभीरम्॥

अर्थ- उस समय न नामरूपादि-रहित अवस्था थी, न नामरूपात्मक अवस्था ही थी, न कोई लोक था, न आकाश ही था, जो ऊपर है। किसने आवृत किया था? कहाँ किसकी सुरक्षा में? क्या अपार गम्भीर जल था?

2. **न मृत्युरासीदमृतं न तर्हि न रात्र्या अह्न आसीत्प्रकेतः।**
आनीदवातं स्वधया तदेकं तस्माद्धान्यन्न परः किं चनास॥

अर्थ- तब मृत्यु नहीं थी, अमृतत्व भी नहीं था। रात्रि तथा दिन का भेदात्मक ज्ञान भी नहीं था। एक वायु के बिना (भी) अपनी इच्छा शक्ति से श्वाँस ले रहा था। उससे बढ़कर अलग पहले कुछ भी नहीं था।

3. **तम आसीत्तमसा गूळहमग्रेऽप्रकेतं सलिलं सर्वमा इदम्।**
तुच्छ्येनाभ्वपिहितं यदासीत्तपसस्तन्महिनाजायतैकम्॥

अर्थ- महान् अन्धकार से ढँका हुआ सर्वप्रथम अन्धकार था। इस सम्पूर्ण (विश्व का कारणभूत) जल से भिन्न कोई चिन्ह नहीं था। (वह) जो स्थित था, सर्वव्यापी भावरूप अज्ञान था। अपनी तपस्या की महिमा से वह एक उत्पन्न हुआ।

4. **कामस्तदग्रे समवर्तताधि मनसो रेतः प्रथमं यदासीत्।**
सतो बन्धुमसति निरविन्दन् हृदि प्रतीष्या कवयो मनीषा॥

अर्थ- काम, जो मन का प्रथम विकार था, उसमें सर्वप्रथम उत्पन्न हुआ। बुद्धिमानों ने हृदय में प्रज्ञा से विचार कर नामरूपात्मक जगत् का कारण नामरूपरहित तत्त्व में ही पाया।

5. **तिरश्चीनो विततो रश्मिरेषामधः स्विदासी३दुपरि स्विदासी३त्।**
रेतोधा आसन्महिमान आसन्त्स्वधा अवस्तात्प्रयतिः परस्तात्॥

अर्थ- उनका (कार्यजाल जो) किरणों की तरह शीघ्र फैला हुआ था, क्या वह मध्य में था? अथवा क्या वह नीचे था? अथवा क्या वह ऊपर था? (सृष्टि का) बीज धारण करने वाले थे; (आकाशादि) महाभूत थे; नीचे भोग्य था, ऊपर भोक्ता।

6. **को अद्धा वेद क इह प्र वोचत्कुत आजाता कुत इयं विसृष्टिः।**
अर्वाग्देवा अस्य विसर्जनेनाथा को वेद यत आबभूव॥

अर्थ- कौन सही रूप में जानता है? कौन यहाँ कहेगा कि यह कहाँ से उत्पन्न हुई हैं? यह विविध प्रकार की सृष्टि कहाँ से? देवता इस सृष्टि की अपेक्षा अर्वाचीन हैं। तब यह कौन जानता है, जहाँ से यह (सृष्टि) उत्पन्न हुई है?

7. **इयं विसृष्टिर्यत आबभूव यदि वा दधे यदि वा न।**
यो अस्याध्यक्षः परमे व्योमन् सो अङ्ग वेद यदि वा न वेद॥

अर्थ- यह विविध रूपों वाली सृष्टि जहाँ से आई है (उसको उसने) या तो धारण किया था, या अगर नहीं (तो किसने धारण किया था?))। जो इसका ईश्वर है, वह सर्वोच्च स्वर्ग में है; वही निश्चित रूप से इसे जानता है; यदि वह नहीं जानता (तो कौन जानता है?)

शुक्लयजुर्वेद

13. शिवसंकल्प सूक्त (अध्याय-34)

शुक्लयजुर्वेद माध्यन्दिनवाजसनेयिसंहिता
अध्याय-34 **कण्डिका** 1-6 **कुल मन्त्र-**06, **ऋषि-** याज्ञवल्क्य,
देवता -मनस्, **छन्द-**त्रिष्टुप्

1. **यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति।**
दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥

अर्थ- जो मन पुरुष की जाग्रतावस्था में अधिक दूर चला जाता है, जो एकमात्र आत्मा का दर्शन करने वाला है; जो पुरुष की सुषुप्तावस्था में उसी प्रकार लौट आता है (तथा) जो समस्त बाह्य इन्द्रियों का एकमात्र प्रकाशक है; वह मेरा मन शुभ सङ्कल्प वाला होवे।

2. **येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः।**
यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥

अर्थ- जिस मन में कर्मनिष्ठ बुद्धिमान् पुरुष यज्ञ में तथा उपासनाओं में कर्म करते हैं, जो सब (इन्द्रियों) से पहले उत्पन्न होता है, और यज्ञ करने में समर्थ है, तथा जो प्राणिमात्र के शरीर के भीतर रहता है, वह मेरा मन शुभ संकल्प वाला होवे।

3. **यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु।**
यस्मान्न ऋते किञ्चन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥

अर्थ- जो मन विशेषज्ञान तथा सामान्यज्ञान (का साधन) है, जो धैर्य रूप है, जो प्राणियों के भीतर (इन्द्रियों की प्रेरक) अमर ज्योति है तथा जिसके बिना कोई भी काम नहीं किया जा सकता, वह मेरा मन शुभ सङ्कल्प वाला होवे।

4. येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत्परिगृहीतममृतेन सर्वम्।
येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥

अर्थ- जिस अमर मन के द्वारा इस संसार में भूत, भविष्यत् और वर्तमानकाल के सब पदार्थ जाने जाते हैं, और जिसके द्वारा सात होता वाला (अग्निष्टोम) यज्ञ किया जाता है, वह मेरा मन शुभ संकल्प वाला होवे।

5. यस्मिन्नृचः साम यजूँषि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः।
यस्मिँश्चित्तं सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥

अर्थ- रथ चक्र की नाभि में तीलियों की भाँति जिस मन में ऋचाएँ, साम और यजुः प्रतिष्ठित होते हैं, जिसमें प्राणियों का सर्वपदार्थविषयक ज्ञान निहित है, वह मेरा मन शुभसङ्कल्प वाला होवे।

6. सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिन इव।
हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥

अर्थ- जैसे अच्छा सारथी घोड़ों को इधर-उधर प्रेरित करता है और अपने वश में रखता है, उसी प्रकार जो मन प्राणियों को बार-बार इधर-उधर प्रेरित करता है और अपने वश में रखता है, जो हृदय में स्थित है, जो जरा से रहित तथा अत्यन्त वेगवान् है, वह मेरा मन शुभ संङ्कल्प वाला होवे।

14. प्रजापति सूक्त

(शुक्लयजुर्वेद अध्याय-23, मन्त्र-1-5 तक)

ऋषि - प्रजापति, **देवता -** परमेश्वर।

1. हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

अर्थ- सृष्टि के आदिकाल में एक मात्र हिरण्यगर्भ पुरुष ही विद्यमान था। वह अकेला ही सर्व उत्पन्न मात्र भूतों का अधिपति या पालक था। उसी ने इस पृथिवी को धारण किया और इस द्युलोक को भी। उस प्रजापति को श्रद्धा भक्ति से परिचारित करें।

2. उपयामगृहीतोसि प्रजापतये त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिः सूर्यस्ते महिमा।
यस्तेऽहन्संवत्सरे महिमा संबभूव यस्ते वायावन्तरिक्षे महिमा संबभूव यस्ते।
दिवि सूर्ये महिमा संबभूव तस्मै ते महिम्ने प्रजापतये स्वाहा देवेभ्यः॥

अर्थ- (महिम ग्रह को ग्रहण करना।) हे ग्रह! तुम उपयाम पात्र के द्वारा ग्रहण किये गये हो। प्रजापति के लिए प्रिय तुम्हें मैं ग्रहण करता हूँ। (ग्रह को वेदि पर धरना।) यह तुम्हारा स्थान है। हे ग्रह! यह सूर्य तुम्हारी महिमा है। तुम्हारी जो महिमा दिन में, संवत्सर में उत्पन्न हुई, तुम्हारी जो महिमा वायु में, अन्तरिक्ष में उत्पन्न हुई तथा तुम्हारी जो महिमा द्युलोक में, सूर्य में उत्पन्न हुई- उस तुम्हारी महिमा के लिए, प्रजापति और अन्य देवों के लिए यह आहुति है।

3. यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव।
य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

अर्थ- जो प्रजापति अपनी महिमा के कारण जगत् के सम्पूर्ण प्राणननिमेषोन्मेष करने वालों का स्वामी हुआ और जो इस समस्त द्विपाद-चतुष्पाद ऐश्वर्य का स्वामी है, उसी प्रजापति देव के लिए हम अपने धन-धान्यादि से सदा यज्ञादि करते रहें।

4. उपयामगृहीतोऽसि प्रजापतये त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिश्चन्द्रमास्ते महिमा यस्ते रात्रौ संवत्सरे महिमा संबभूव यस्ते पृथिव्यामग्नौ महिमा संबभूव यस्ते नक्षत्रेषु चन्द्रमसि महिमा संबभूव तस्मै ते महिम्ने प्रजापतये देवेभ्यः स्वाहा॥

अर्थ- हे पात्र! तुम उपयाम पात्र के द्वारा ग्रहण किये गये हो। प्रजापति के लिए प्रिय तुम्हें मैं ग्रहण करता हूँ। (ग्रह को वेदि पर धरना।) हे ग्रह! यह तुम्हारा स्थान है। हे ग्रह! यह चन्द्रमा तुम्हारी महिमा है। तुम्हारी जो महिमा रात्रि-संवत्सर में उत्पन्न हुई, तुम्हारी जो महिमा पृथ्वी-अग्नि में उत्पन्न हुई और तुम्हारी जो महिमा नक्षत्रों-चन्द्रमा में उत्पन्न हुई है, उस तुम महिमावान् प्रजापति तथा अन्य देवों के लिए यह आहुति है।

5. युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषं चरन्तं परि तस्थुषः रोचन्ते रोचना दिवि॥

अर्थ- इस स्थिर जगत् के ऊपर रक्ताभ, स्व-कीली पर घूमने वाले तथा आकाशचारी सूर्य को ऋत्विज् अपनी स्तुतियों से स्वकार्यरत करते हैं। उसी की ज्योति से द्युलोक में यह रोचमानग्रह- नक्षत्र आदि प्रकाशित होते हैं।

अथर्ववेद

15. राष्ट्राभिवर्धन सूक्त

कुल मन्त्र-6, **ऋषि-** वशिष्ठ, **देवता -**ब्रह्मणस्पति, अभीवर्तमणि
छन्द-अनुष्टुप्

1. अभीवर्तेन मणिना येनेन्द्रो अभिवावृधे।
तेनास्मान् ब्रह्मणस्पतेभि राष्ट्राय वर्धय॥

अर्थ- हे ब्रह्मणस्पते! जिस समृद्धिदायक मणि से इन्द्र की वृद्धि हुई है, उसी मणि के द्वारा तू हमें देश के हित के निमित्त विस्तृत कर।

2. अभिऽवृत्य सपत्नानभि या नो अरातयः।
अभि पृतन्यन्तं तिष्ठाभि यो नो दुरस्यति॥

अर्थ- हे मणे! हमारे विरोधी हिंसक शत्रु सेनाओं को जो हमसे युद्ध करने की कामना करते हैं, जो हमसे द्वेष करते हैं, तू उन्हें घेरकर पराक्रमहीन कर।

3. अभि त्वा देवः सविताभि सोमो अवीवृधत्।
अभि त्वा विश्वा भूतान्यभीवर्तो यथाससि॥

अर्थ- हे मणे! सविता देवता ने तुझे समृद्ध और सोम ने तुझे विस्तृत किया है। सभी प्राणी

तेरी वृद्धि करते हैं। तू उसके शौर्य और यश को फैलाती है जो तुझे धारण करता है।

4. अभीवर्तो अभिभवः सपत्नक्षयणो मणिः।
राष्ट्राय मह्यं बध्यतां सपत्नेभ्यः पराभुवे॥

अर्थ- शत्रुओं को वश में कर उन्हें नष्ट करने वाली इस मणि को विरोधियों का शमन करने के लिए तथा देश की उन्नति के लिए, देह से बाँधकर रखें।

5. उदसौ सूर्यो अगादुदिदं मामकं वचः।
यथाहं शत्रुहोऽसान्यसपत्नः सपत्नहा॥

अर्थ- सब प्राणियों को प्रेरित करने के निमित्त सूर्य उदित हुआ। हमारी मंत्ररूप वाणी भी प्रकट हो गई। हम इनके प्रभाव हेतु शत्रुनाशक, पापियों पर आघात करने वाले बैरियों से सर्वथा रहित हों।

6. सपत्नक्षयणो वृषाभिराष्ट्रो विषासहिः।
यथाहमेषा वीराणां विराजानि जनस्य च॥

अर्थ- हे मणे! तेरी प्राप्त शक्ति से हम शत्रुओं का हनन करने वाले, बलवान् तथा विजयी होकर शत्रुओं के वीरों और उनकी प्रजा पर शासन करने में समर्थ हों।

16. काल सूक्त (10.53)

कुल मन्त्र-10, **ऋषि-** भृगु, **देवता** -काल, **छन्द-**त्रिष्टुप्, बृहती, अनुष्टुप्

1. कालो अश्वो वहति सप्तरश्मिः सहस्राक्षो अजरो भूरिरेताः।
तमा रोहन्ति कवयो विपश्चितस्तस्य चक्रा भुवनानि विश्वा॥

अर्थ- जरारहित, प्रचुर पराक्रम से सम्पन्न, सप्तरश्मियों और सहस्र चक्षुओं से युक्त कालस्वरूप अश्व जगत्‌रूपी रथ के वाहक हैं। समस्त लोक उस रथ के चक्र हैं उस अश्वयुक्त रथ पर विद्वान् ही आरूढ़ होते हैं।

2. सप्त चक्रान् वहति काल एष सप्तास्य नाभीरमृतं न्वक्षः।
स इमा विश्वा भुवनान्यञ्जत् कालः स ईयते प्रथमो नु देवः॥

अर्थ- उस सात चक्रों के वाहक काल की सात नाभियाँ हैं। उसका अक्ष (धुरा) अमृतरूप है। वह काल (देवता) सभी भुवनों को उत्पन्न (प्रकट) करता हुआ गतिमान् है।

3. पूर्णः कुम्भोधि काल आहितस्तं वै पश्यामो बहुधा नु सन्तः।
स इमा विश्वा भुवनानि प्रत्यङ् कालं तमाहुः परमे व्योमन्॥

अर्थ- काल के ऊपर स्थित यह कुम्भ ब्रह्माण्ड रूप से भरा हुआ है। सन्त एवं ज्ञानीजन उसकाल को अनेक रूपों में देखते हैं। प्राणियों के समक्ष प्रकट होने वाला काल उन्हें अपने में व्याप्त कर लेता है। साधुजन उस काल को अनेक भेद से देखते हुए उसे आकाश के समान निर्लेप बनाते हैं।

4. स एव सं भुवनान्याभरत् स एव सं भुवनानि पर्यैत्।
पिता सन्नभवत् पुत्र एषां तस्माद् वै नान्यत् परमस्ति तेजः।।

अर्थ- वह (काल) समस्त भुवनों का पोषण करने वाला, सभी में उत्तम ढंग से व्याप्त है। भूतकाल में वो ही इनका (प्राणियों का) पिता और अगले जन्म में इनका पुत्र हो जाता है। इस काल से श्रेष्ठ अन्य कोई तेज नहीं है।

5. कालोमूं दिवमजनयत् काल इमाः पृथिवीरुत।
काले ह भूतं भव्यं चेषितं ह वि तिष्ठते।।

अर्थ- समस्त प्राणियों की आश्रयभूत भूमि को तथा दिव्यलोक को समय ने उत्पन्न किया। भूत, भविष्य तथा वर्तमान आदि इस समय के ही अधीन हैं।

6. कालो भूतिमसृजत काले तपति सूर्यः।
काले ह विश्वा भूतानि काले चक्षुर्विपश्यति।।

अर्थ- सृष्टि का सृजनकर्त्ता भी समय (काल) ही है। जगत् को प्रकाशित करने वाला सूर्य काल से ही प्रेरित है। सभी प्राणी इस काल के आश्रित हैं। इसी काल के आश्रित होकर नेत्र भी सब पदार्थों को देखने में समर्थ होते हैं।

7. काले मनः काले प्राणः काले नाम समाहितम्।
कालेन सर्वा नन्दन्त्यागतेन प्रजा इमाः।।

अर्थ- समयानुसार प्रकट होने वाले काल में ही मन, प्राण तथा नाम भी समाहित हैं। समस्त प्रजाजन काल के अनुकूलता से ही हर्षित होते हैं।

8. काले तपः काले ज्येष्ठं काले ब्रह्म समाहितम्।
कालो ह सर्वस्येश्वरो यः पितासीत् प्रजापतेः।।

अर्थ- काल सभी का ईश्वर, पिता और प्रजापति है। काल में ही तपः शक्ति, ज्येष्ठता (महानता) तथा ब्रह्म-विद्या समाहित हैं।

9. तेनेषितं तेन जातं तदु तस्मिन् प्रतिष्ठितम्।
कालो ह ब्रह्म भूत्वा बिभर्ति परमेष्ठिनम्।।

अर्थ- समय (काल) ही अपनी ब्राह्मी चेतना को विशाल करके परमेष्ठी को धारण करता है। काल द्वारा ही यह जगत् प्रेरित है और उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ है तथा उसी के आश्रय में स्थित है।

10. कालः प्रजा असृजत कालो अग्रे प्रजापतिम्।
स्वयम्भूः कश्यपः कालात् तपः कालादजायत।।

अर्थ- काल स्वयंभू है। सबका द्रष्टा कश्यप काल से उत्पन्न हुआ तथा काल से ही तपः शक्ति की उत्पत्ति हुई। सृष्टि के आरम्भ में भी काल ने सबसे पहले प्रजापति का सृजन किया और उसके पश्चात् प्रजाजनों की रचना की।

17. पृथ्वी सूक्त (12.1)

कुल मन्त्र-63, **ऋषि**- अथर्वा, **देवता** -भूमि, **छन्द**-त्रिष्टुप्, जगती, पंक्ति, अष्टि, शक्वरी, बृहती, अनुष्टुप्,गायत्री

1. सत्यं बृदृतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति।
सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरुं लोकं पृथिवी नः कृणोतु॥

अर्थ- सत्य, महत्ता, ऋत, उग्रता (शक्ति), दीक्षा, तपस्या, ब्रह्म और यज्ञ पृथिवी को धारण करते हैं। भूत और भविष्यत् की पत्नी वह पृथ्वी हमारे लोक को (हमारे लिए) विस्तृत बना दे।

2. असंबाधं बध्यतो मानवानां यस्या उद्वतः प्रवतः समं बहु।
नानावीर्या ओषधीर्या बिभर्ति पृथिवी नः प्रथतां राध्यतां नः॥

अर्थ- जिस (पृथ्वी) के बहुत से ऊँचे, नीचे और समतल (क्षेत्र) मनुष्यों के बीच बाधा रहित स्थित हैं, जो अनेक प्रकार की शक्तियों से युक्त औषधियों को धारण करती है, (वह) पृथ्वी हमारे लिए विस्तृत हो और हमारे लिए समृद्ध बने।

3. यस्यां समुद्र उत सिन्धुरापो यस्यामन्नं कृष्टयः संबभूवुः।
यस्यामिदं जिन्वति प्राणदेजत् सा नो भूमिः पूर्वपेये दधातु॥

अर्थ- जिस (पृथ्वी) पर समुद्र, नदियाँ तथा जल (हैं) जिस पर अन्न और खेतियाँ (फसलें) उत्पन्न होती हैं; जिस पर यह श्वास लेने वाला और गतिशील जगत् आनन्दित होता है, वह पृथिवी हमें प्रथम पेय में (उत्तम पेय वाले प्रदेश में) स्थापित करें।

4. यस्याश्चतस्त्रः प्रदिशः पृथिव्या यस्यामन्नं कृष्टयः संबभूवुः।
या बिभर्ति बहुधा प्राणदेजत् सा नो भूमिर्गोष्वप्यन्ने दधातु॥

अर्थ- जिस पृथिवी की चार प्रमुख दिशाएँ हैं, जिस पर अन्न और फसलें उत्पन्न होती हैं, जो श्वास लेने वाले तथा गतिशील (जगत्) को अनेक प्रकार से धारण करती है, वह पृथिवी हमें गायों और अन्न में स्थापित करें।

5. यस्यां पूर्वे पूर्वजना विचक्रिरे यस्यां देवा असुरानभ्यवर्तयन्।
गवामश्वानां वयसश्च विष्ठा भगं वर्चः पृथिवी नो दधातु॥

अर्थ- जिस (पृथ्वी) पर (हमारे) प्राचीन पूर्वजों ने विशिष्ट कर्म किया, जिस पर देवताओं ने असुरों को आक्रमणपूर्वक भगा दिया,जो (पृथिवी) गायों, अश्वों और पक्षियों का निवास-स्थान है, (वह पृथिवी) हमें ऐश्वर्य और तेज प्रदान करे।

6. यार्णवेधि सलिलमग्र आसीद् यां मायाभिरन्वचरन् मनीषिणः।
यस्या हृदयं परमे व्योमन्त्सत्येनावृतममृतं पृथिव्याः।
सा नो भूमिस्त्विषिं बलं राष्ट्रे दधातूत्तमे॥

अर्थ- जो (पृथ्वी) पहले समुद्र में जल के भीतर थी, जिसे मनीषियों ने (अपनी) बुद्धि से प्राप्त किया (और) जिस पृथ्वी का, सत्य से ढँका हुआ अमर्त्य हृदय परम व्योम में स्थित है, वह भूमि हमको बल और तेज प्रदान करे तथा हमें उत्तम राष्ट्र में प्रतिष्ठित करे।

7. यस्यामापः परिचराः समानीरहोरात्रे अप्रमादं क्षरन्ति।
सा नो भूमिर्भूरिधारा पयो दुहामथो उक्षतु वर्चसा॥

अर्थ- जिस पृथ्वी पर चारों ओर विचरण करने वाला जल समान भाव से दिन-रात निर्बाध रूप में बहता रहता है, अनेक धाराओं वाली वह पृथिवी हमें दुग्ध (जल) प्रदान करें तथा हमें तेज से अभिसिञ्चित करें।

8. यामश्विनावमिमातां विष्णुर्यस्यां विचक्रमे।
इन्द्रो यां चक्र आत्मनेनमित्रां शचीपतिः।
सा नो भूमिर्विसृजतां माता पुत्राय मे पयः॥

अर्थ- जिस (पृथ्वी) को अश्विनीकुमारों ने नापा है, जिस पर विष्णु ने (अपना) पादन्यास किया, जिसे शक्ति के स्वामी इन्द्र ने अपने (हित के) लिए शत्रुहीन कर दिया। वह हमारी माता तुल्य भूमि (अपने) पुत्रस्वरूप मुझे (अपना) दूध प्रदान करें।

9. गिरयस्ते पर्वता हिमवन्तोरण्यं ते पृथिवि स्योनमस्तु।
बभ्रुं कृष्णां रोहिणीं विश्वरूपां ध्रुवां भूमिं पृथिवीमिन्द्रगुप्ताम्।
अजीतोहतो अक्षतोध्यष्ठां पृथिवीमहम्॥

अर्थ- हे पृथिवी! तुम्हारी पहाड़ियाँ, हिमाच्छादित पर्वत और तुम्हारे वन (हमारे लिए) सुखकर होवें। भूरी, काली, लाल, अनेक रूपों वाली स्थिर और इन्द्र द्वारा रक्षित सुविस्तृत-पृथिवी पर मैं अजेय, अहिंसित (तथा) अक्षत (होकर) अधिष्ठित हो जाऊँ।

10. यत् ते मध्यं पृथिवि यच्च नभ्यं यास्त ऊर्जस्तन्वः संबभूवुः।
तासु नो धेह्यभि नः पवस्व माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः।
पर्जन्यः पिता स उ नः पिपर्तु॥

अर्थ- हे पृथिवी! जो तुम्हारा मध्यभाग है, जो नाभि का क्षेत्र है, तथा जो तुम्हारे शरीर से उत्पन्न रस हैं, उस सब में हमें प्रतिष्ठित करो। हमें पवित्र करो। भूमि माँ है। मैं पृथिवी का पुत्र हूँ। पर्जन्य पिता हैं, वह हमारा पालन-पोषण (रक्षा) करें।

11. त्वज्जातास्त्वयि चरन्ति मर्त्यास्त्वं बिभर्षि द्विपदस्त्वं चतुष्पदः।
तवे मे पृथिवि पञ्च मानवा येभ्यो ज्योतिरमृतं मर्त्येभ्य उद्यन्त्सूर्यो रश्मिभिरातनोति॥

अर्थ- तुमसे उत्पन्न हुए प्राणी तुम्हारे ऊपर (ही) कर्म करते हैं, तुम दो पैरों वाले (मनुष्यों तथा) चार पैरों वाले (पशुओं) को धारण करती हो। हे पृथिवी! ये सभी मनुष्य तुम्हारे (ही हैं), जिनके लिए उदित होता हुआ सूर्य (अपनी) किरणों से अमृत तुल्य प्रकाश का विस्तार करता है।

12. जनं बिभ्रती बहुधा विवाचसं नानाधर्माणं पृथिवी यथौकसम्।
सहस्त्रं धारा द्रविणस्य मे दुहां ध्रुवेव धेनुरनपस्फुरन्ती॥

अर्थ- विविध बोली वाले, विभिन्न धर्मों वाले (तथा) वाञ्छित स्थान पर घर बनाकर रहने वाले लोगों को अनेक प्रकार से धारण करती हुई पृथ्वी, स्थिर (और) अचपल गाय के समान, मेरे लिए धन की हजारों धाराएँ दुह दे देवें।

❑❑

13. वैदिक-वाङ्मय का बिन्दुवार अध्ययन

1. वैदिक संहिता

➢ 'श्रुति' किसे कहते हैं	- **वेद को**
➢ वेदः कः	- **अपौरुषेयं वाक्यम्**
➢ वेदों की संख्या है	- **चार**
➢ वेदों को किसने विभाजित किया है	- **कृष्णद्वैपायन (व्यास)**
➢ वर्ण व्यवस्था का प्रथम उल्लेख होता है	- **ऋग्वेद में**
➢ 'श्रुति' शब्दः कस्यार्थस्य बोधकोऽस्ति	- **वेदस्य**
➢ 'वेदा अपौरुषेयाः' इति स्वीकुर्वन्ति	- **मीमांसकाः**
➢ मीमांसा की दृष्टि से वेद के प्रकार हैं	- **पाँच, विधि-मन्त्र-नामधेय-निषेध-अर्थवाद**
➢ 'श्रुतिः' पद का व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ है	- **शृणोति धर्मं यः**
➢ इतिहासपुराणाभ्यां ..... समुपबृंहयेत्	- **वेदम्**
➢ अपौरुषेयाः वेदाः भवन्ति	- **नित्याः**
➢ वेद इन्हें कहते हैं	- **मन्त्र-ब्राह्मण को**
➢ मन्त्राणां समुदायस्य किं नाम अस्ति	- **संहिता**
➢ वेदों के काव्यात्मक हिस्से को कहा जाता है	- **संहिता**
➢ संहितापाठानन्तरं क्रियते	- **पदपाठः**
➢ 'वेदत्रयी' समूह क्या है	- **ऋग्वेद, यजुर्वेद,सामवेद**
➢ 'त्रयी' इति संज्ञा	- **वेदस्य**
➢ अपौरुषेयग्रन्थः को विद्यते	- **वेदः**
➢ वेदारम्भः कुतः प्रारभ्यते	- **संहितातः**
➢ सायणमते वेदस्य स्वरूपं किम्	- **'इष्टप्राप्त्यनिष्टपरिहारस्य अलौकिकोपायभूतं ज्ञानम्'**
➢ आर्षेयपरम्परा के अनुसार वेद हैं	- **अपौरुषेयः**
➢ वेदः कोऽस्ति	- **अपौरुषेयः**

- वेदस्य स्वतः प्रामाण्यत्वे किं मानम् - **ईश्वरप्रोक्तम्**
- 'वेदत्रयी' में किसकी गणना नहीं होती है - **अथर्ववेद की**
- वेदशब्दस्य निष्पत्तौ का निष्पत्तिः समीचीना नास्ति - **विद्निवारणे**
- कः कथ्यते वेदनिन्दकः - **नास्तिकः**
- धर्म का मूल प्रमाण है - **वेद (श्रुति)**
- धर्म का मूल स्रोत है - **वेद**
- 'वेदेन प्रयोजनमुद्दिश्यविधीयमानोऽर्थः धर्मः' एतल्लक्षणं केन कृतम् - **आपदेवेन**
- आद्युदात्तः वेदशब्दः कस्य वाचकः - **ग्रन्थवाचकः**
- अन्त्योदात्तः वेदशब्दः कस्य वाचकः - **कुशमुष्टिवाचकः**
- 'ऋक्-प्रातिशाख्य' सम्बन्धित है - **ऋग्वेद से**
- ऋग्वेदीयः ऋत्विक् - **होता**
- 'होता' कस्य वेदस्य मन्त्रैः देवानामाह्वानं करोति - **ऋग्वेदस्य**
- छन्दोबद्धः वेदोऽस्ति - **ऋग्वेदः**
- सबसे पुराना वेद कौन सा है - **ऋग्वेद**
- पाश्चात्त्य विद्वानों के अनुसार प्राचीनतम वेद कौन है - **ऋग्वेद**
- ऋग्वेद का दूसरा नाम है - **दशतयी**
- आयुर्वेदः कस्य वेदस्योपवेदः - **ऋग्वेदस्य**
- होतुः सम्बद्धः वेदः कः - **ऋग्वेदः**
- मण्डलक्रमः केन वेदेन सम्बद्धः - **ऋग्वेदेन**
- ऋग्वेद की सृष्टि किससे हुयी है - **अग्नि से**
- ऋग्वेदः सम्प्राप्तः - **अग्नि से**
- ऋग्वेद का प्रथमसूक्त है - **अग्निसूक्त**
- ऋग्वेदे प्रथममण्डलस्य प्रथमसूक्तं किम् - **अग्निसूक्त**
- ऋग्वेद में सूक्तों की संख्या - **1028**
- पतञ्जलि के अनुसार ऋग्वेद की शाखाओं की संख्या है - **एकविंशतिः**
- प्रसिद्ध ऋग्वेद सम्बद्ध है - **शाकलशाखा से**
- 'शाकलसंहिता' किस वेद की है - **ऋग्वेद**
- 'बाष्कलसंहिता' वर्तते - **ऋग्वेदस्य**
- माण्डूकायनशाखा से सम्बन्धित है - **ऋग्वेद**
- ऋग्वेद के दशम मण्डल में कितने सूक्त हैं - **191**
- ऋग्वेद की मूल लिपि थी - **ब्राह्मी**

- स्कन्दस्वामी का भाष्य किससे सम्बद्ध है - **ऋग्वेद से**
- ऋग्वेदस्य शाखाः सन्ति - **5 (पाँच)**
- ऋग्वेद के पदपाठकार हैं - **शाकल्य**
- वंशीयमण्डलानि उपलभ्यन्ते - **ऋग्वेदे**
- दानस्तुतिसूक्तानि संहितायां सन्ति - **ऋग्वेद-संहिता**
- पुरुषसूक्त का सम्बन्ध है - **ऋग्वेद से**
- पुरुषसूक्त ऋग्वेद के किस मण्डल में है - **दशममण्डल में**
- ऋग्वेदे स्वरितस्वरः प्रदर्श्यते - **उपरिष्यत्**
- शाकलशाखा से सम्बद्ध वेद है - **ऋग्वेद**
- ऋग्वेद में मन्त्रों की संज्ञा है - **ऋचा**
- आयुर्वेद किस वेद का उपवेद है - **ऋग्वेद**
- पुरूरवा-उर्वशी संवाद किस वेद में है - **ऋग्वेद में**
- ऋग्वेद में 'पारिवारिक-मण्डल' कहे गये हैं - **दो से सात**
- 'समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः'
  किस वेद का अन्तिम मन्त्र है - **ऋग्वेद का**
- 'ऋक्'-शब्दस्यार्थः भवति - **स्तुतिः**
- ''पावका नः सरस्वती'' इति मन्त्रः वर्तते - **तृतीयसूक्तस्य**
- प्रसिद्ध गायत्रीमन्त्र किस धर्म-ग्रन्थ में हैं - **ऋग्वेद**
- किसका संकलन ऋग्वेद पर आधारित है - **सामवेद का**
- ऋग्वैदिककाल के प्रारम्भ में निम्न में से किसे
  महत्त्वपूर्ण मूल्यवान् सम्पत्ति समझा जाता था - **गाय को**
- ऋग्वेद संहिता का नवम मण्डल पूर्णतः
  किसको समर्पित है - **सोम और इस पेय पर नामांकित देवता को**
- ऋग्वेद का कौन सा मण्डल पूर्णतः 'सोम'
  को समर्पित है - **9वाँ मण्डल**
- ऋग्वेद के किस मण्डल में 'बालखिल्य सूक्त' है - **अष्टम मण्डल में**
- बालखिल्यसूक्तानि विद्यन्ते - **ऋग्वेदे**
- ऋग्वेद में बालखिल्य सूक्त कितने हैं - **ग्यारह**
- ऋग्वेद का कौन-सा मण्डल सबसे अर्वाचीन है - **दशम मण्डल**
- अवेस्ता की तुलना किस वेद से की जाती है - **ऋग्वेद से**
- सामगान का जिस वेद पर गायन किया
  जाता है, वह वेद है - **ऋग्वेद**
- प्रसिद्ध 'शुनःशेपाख्यान' जिसमें मिलता है, वह वेद है - **ऋग्वेद**

- सामवेद के मन्त्र सबसे अधिक किस वेद से लिये गये हैं - **ऋग्वेद से**
- ऋग्वेदेऽग्निसूक्तेऽग्निरुच्यते - **पुरोहितः**
- 'ऋक्'-शब्दस्य दार्शनिकः अर्थः कः - **ब्रह्म**
- यागे शस्त्रं केन पठ्यते - **होत्रा**
- कः ऋग्वेदस्य मन्त्रैः देवानामाह्वानं करोति - **होता**
- ऋग्वेद की रचना कहाँ हुयी थी - **सप्तसैन्धव प्रदेश में**
- ऋग्वेदस्य कस्य मण्डलस्य नाम पवमानमण्डलम् अस्ति - **नवमस्य**
- कः वेदः अभ्यर्हितः - **ऋक्**
- 'अस्यवामीयसूक्त' मिलता है - **ऋग्वेद में**
- ऋग्वेदस्य मुख्यविषयः अस्ति - **उपासना**
- वर्णव्यवस्था का सर्वप्रथम विवरण कहाँ प्राप्त होता है - **ऋग्वेद के अन्तिम मण्डल (पुरुषसूक्त) में**
- चारों वर्णों का प्रथमबार उल्लेख किस वेद में किया गया है - **ऋग्वेद के अन्तिम मण्डल (पुरुषसूक्त) में**
- ऋग्वेदकाल में जनता निम्न में से मुख्यतया किसमें विश्वास करती थी - **बलि एवं कर्मकाण्ड में**
- ऋग्वेद में वर्णित धर्म का आधार था - **प्रकृति-पूजा**
- वेद में वर्णित सबसे सामान्य अपराध निम्नलिखित में से क्या था - **पशुओं की चोरी**
- 'होतृगणे' कति ऋत्विजः भवन्ति - **चत्वारः**
- आर्य-अनार्य युद्ध का वर्णन मिलता है - **ऋग्वेद में**
- स्तुतिप्रधान वेद है - **ऋग्वेद**
- ऋग्वेद के किस मण्डल में सोमयज्ञ के मन्त्र उपलब्ध होते हैं - **नवम मण्डल में**
- 'आश्वलायन श्रौतसूत्र' से सम्बन्धित वेद है - **ऋग्वेद**
- 'Langlois' ने ऋग्वेद का जिस भाषा में अनुवाद किया है वह है - **French (फ्रेंच)**
- 'अग्निमीळे पुरोहितम्' इति मन्त्रांशं कस्य वेदस्यास्ति - **ऋग्वेदस्य**
- यम-यमी-संवादसूक्त किस वेद में है - **ऋग्वेद में**
- यम-यमी-संवादे 'यमी' आसीत् यमस्य - **भगिनी**
- ''किं भ्रातासद्यनाथम्'' इति कस्मिन् सूक्ते पठ्यते - **यम-यमी-संवादसूक्ते**
- विश्वामित्र-नदी-संवाद किसमें मिलता है - **ऋग्वेद में**
- 'सरमा-पणि-संवाद' किस वेद में मिलता है - **ऋग्वेद में**

- 'पुरूरवा-उर्वशी' संवादसूक्त ऋग्वेद के किस मण्डल में है - **दशम मण्डल में**
- 'नासदीयसूक्त' है - **ऋग्वेद में**
- 'यम-यमी-संवाद' ऋग्वेद के किस मण्डल में है - **दशम मण्डल में**
- ''न वै स्त्रैणानि सख्यानि सन्ति'' इति वर्तते - **पुरूरवा-उर्वशी-संवादे**
- ''मा नो नि कः पुरुषत्रा नमस्ते'' वर्तते - **विश्वामित्र-नदी-संवादे**
- ''नाहं वेद भ्रातृत्वं नो स्वसृत्वम्'' इति मन्त्रपादः कुत्र विराजते - **सरमा-पणि-संवादे**
- 'यमी' प्रतीक है - **रात्रि की**
- 'विपाशा शुतुद्री' इति नाम्नोः नद्योः वर्णनं कस्मिन् संवादसूक्ते विद्यते - **विश्वामित्र-नदी-सूक्ते**
- विश्वामित्र नदी संवाद सूक्त में ऋषिका नदियाँ कौन है - **विपाट्छुतुद्री**
- ''एना वयं पयसा पिन्वमाना अनुयोनिं देवकृतं चरन्तीः'' इति ऋचायाः केन संवाद-सूक्तेन सम्बन्धः - **विश्वामित्र-नदी-सूक्तेन**
- ''आ घा ता गच्छा'' इति पठ्यते - **यम-यमी-संवादे**
- ''तस्य वयं प्रसवे याम् उर्वीः'' मन्त्रांशोऽयं कस्य सूक्तस्य वर्तते - **विश्वामित्र-नदी-सूक्तस्य**
- ऋग्वेद के किस मण्डल में विश्वामित्र-नदी-संवाद सूक्त है - **तृतीय मण्डल में**
- 'इन्द्रेषिते प्रसवं भिक्षमाणे अच्छा समुद्रं रथ्येव याथः' से सम्बन्धित सूक्त है - **विश्वामित्र-नदी-संवाद**
- 'सरमा-पणि' संवादसूक्तस्य मण्डलक्रमः कः - **10/108**
- ''कदा सूनुः पितरं जात इच्छात्'' मन्त्रांशोऽयं वर्तते - **पुरूरवा-उर्वशी-सूक्ते**
- 'आ वो वृणे सुमतिं यज्ञियानाम्'' मन्त्रांशोऽयं कस्य सूक्तस्य वर्तते - **विश्वामित्र-नदी-सूक्तस्य**
- 'न वै स्त्रैणानि सख्यानि सन्ति' इयमुक्तिर्भवति - **उर्वश्याः**
- सृष्ट्युत्पत्तिविषयकं विवेचनं वर्तते - **नासदीयसूक्ते**
- ऋग्वेद के किन दो मण्डलों में सूक्तों की संख्या समान है - **प्रथम और दशम**
- ''पयसा जवेते'' से सम्बन्धित सूक्त है - **विश्वामित्र-नदी-संवादसूक्त**
- ''स्वसारं त्वा कृणवै मा पुनर्गा, अप ते गवां सुभगे भजाम'' इति मन्त्रांशः कुतः उद्धृतः - **सरमा-पणि-संवादात्**
- वेदानुसारेण ''चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः

सूर्यो अजायत'' इयं पंक्तिः अस्ति - **पुरुषसूक्तस्य**
- 'नासदीयसूक्त' का सम्बन्ध है - **ऋग्वेद से**
- 'स देवाँ एह वक्षति' इति कस्मिन् सूक्ते उपलभ्यते - **अग्निसूक्ते**
- कस्मिन् सूक्ते चतुर्णां वर्णानामुल्लेखोऽस्ति - **पुरुषसूक्ते**
- 'आ कृष्णेन रजसा' इति कस्मिन् सूक्ते पठ्यते - **सवितृसूक्ते**
- 'तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु' से सम्बन्धित सूक्त है - **शिवसङ्कल्पसूक्त**
- ऋक्सामच्छन्दोयजूंषि कस्मात् समुत्पन्नानि - **पुरुषविशेषात्**
- 'सृष्टि-स्थिति-प्रलय' विषयकं विवेचनम् उपलभ्यते - **नासदीयसूक्ते**
- ''संविदाना दिवा कवे श्रियां मा धेहि भूत्याम्'' मन्त्रांशोऽयं वर्तते - **पृथिवीसूक्ते**
- 'अग्निमीळे पुरोहितम्' इत्यस्मिन् मन्त्रे 'इळे' पदस्य अर्थः अस्ति - **स्तौमि**
- विराट्पुरुषस्य कस्मादङ्गात् वैश्यो जातः - **ऊरुतः**
- ब्राह्मण की उत्पति ब्रह्मा के किस अङ्ग से हुयी है - **मुख**
- ब्रह्मा के ऊरु से किसकी उत्पत्ति हुयी है - **वैश्य**
- सबसे पहले किसकी सृष्टि हुयी - **जल**
- पुरुषसूक्त में हमें मिलता है - **चातुर्वर्ण्य का सिद्धान्त**
- जल से उत्पत्ति का सिद्धान्त किस सूक्त में है - **नासदीयसूक्त में**
- 'नासत्या वृक्तबर्हिषा' यह किस सूक्त में है - **अश्विनौसूक्त**
- 'रोहितसूक्त' किस वेद में उपलब्ध होता है - **अथर्ववेद में**
- 'यो जात एव प्रथमो मनस्वान्' यह मन्त्रांश किस सूक्त का है - **इन्द्रसूक्त का**
- 'स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव' इति मन्त्रांशः कस्मिन् सूक्ते लभ्यते - **अग्निसूक्ते**
- संज्ञानसूक्तं कस्मिन् मण्डले प्राप्यते - **10 (दसवें)**
- ''देवानां चक्षुः सुभगा वहन्ती'' इति मन्त्रांशः कस्य सूक्तस्य - **उषस्-सूक्तस्य**
- नासदीयसूक्तस्य प्रतिपाद्यं किम् - **सृष्टिः**
- ''मध्या कर्तोर्विततं सञ्जभार'' इति पठ्यते - **सूर्यसूक्ते**
- ''पर्जन्यः पिता'' इति कस्मिन् सूक्ते प्रतिपाद्यते - **पृथिवीसूक्ते**
- ''श्रिये गावो न धेनवोऽनवन्त'' मन्त्रांशोऽयं वर्तते- **पुरूरवा-उर्वशी-सूक्ते**
- सृष्ट्युत्पत्तिविषयं विवेचनं वर्तते - **पुरुषसूक्ते**
- ''अहमस्मि सहमान उत्तरो नाम भूम्याम्''

मन्त्रांशोऽयं वर्तते - **पृथिवीसूक्ते**
- ➢ 'वाक्सूक्तम्' ऋग्वेदस्य कस्मिन् मण्डले विद्यते - **दशमे**
- ➢ 'मया सो अन्नमत्ति यो विपश्यति' किस सूक्त में प्राप्त होता है – - **वाक्सूक्त में**
- ➢ ऋग्वेद में कौन दार्शनिक सूक्त है - **पुरुषसूक्त**
- ➢ 'ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्' यह किस सूक्त में उपनिबद्ध है - **पुरुषसूक्त में**
- ➢ रिक्तस्थान की पूर्ति के लिए सर्वाधिक उपयुक्त अंश क्या है– 'स्वस्ति नो........' - **बृहस्पतिर्दधातु**
- ➢ 'स जातो अत्यरिच्यत' में 'सः' पद का अर्थ - **पुरुष**
- ➢ किस सूक्त को सर्वेश्वरवाद का मूल माना जाता है - **पुरुष**
- ➢ नासदीयसूक्तम् अस्ति - **दार्शनिक-सूक्त**
- ➢ ''वृषायमाणोऽवृणीत सोमम्'' से सम्बन्धित सूक्त है - **इन्द्र**
- ➢ 'को अद्धा वेद क इह प्र वोचत' इत्यादयः प्रश्नाः कस्मिन् सूक्ते लभ्यते - **नासदीयसूक्ते**
- ➢ कस्मिन् सूक्ते सृष्टिप्रक्रिया वर्णितास्ति - **पुरुषसूक्ते**
- ➢ मन्त्राः कस्मात् - **मननात्**
- ➢ अक्षसूक्तं कस्मिन् मण्डले प्राप्यते - **दशममण्डले**
- ➢ ''हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्'' अस्मिन् मन्त्रे 'हिरण्यगर्भः' इति पदस्य कः अर्थः - **हिरण्यगर्भः प्रजापतिः**
- ➢ 'कृषिमित्कृषस्व' किस सूक्त का है - **अक्षसूक्त**
- ➢ 'भूमिसूक्त' (पृथिवीसूक्त) किस वेद में है - **अथर्ववेद में**
- ➢ ''सह वामेन'' से सम्बद्ध सूक्त है - **उषासूक्त**
- ➢ 'एतावानस्य महिमा' से सम्बन्धित सूक्त है - **पुरुषसूक्त**
- ➢ ऋग्वेदस्य (1.154) सूक्ते विष्णुदेवाय मन्त्राणां संख्या अस्ति– - **6 (छह)**
- ➢ '..... समवर्तताग्रे' मन्त्रस्य रिक्तांशे प्रयोज्यमस्ति - **हिरण्यगर्भः**
- ➢ 'यस्यामापः परिचराः समानीरहोरात्रे अप्रमादं क्षरन्ति।' मन्त्रांशोऽयं केन सूक्तेन सम्बद्धः - **पृथिवीसूक्तेन**
- ➢ अग्नि की कितने सूक्तों में स्तुति की गयी है - **200**
- ➢ ऋग्वेद के कितने सूक्तों में बृहस्पति देवता की स्वतन्त्र रूप में उपासना की गयी है - **11 सूक्तों में**
- ➢ 'विश्वामित्र-नदी-संवादो' वर्तते - **ऋग्वेदस्य तृतीयमण्डले**

- शाकलशाखा अस्ति - **ऋग्वेदस्य**
- शांखायनशाखा कस्य वेदस्य - **ऋग्वेदस्य**
- शांखायन-गृह्यसूत्रस्य सम्बन्धः अस्ति - **ऋग्वेदीयबाष्कलशाखातः**
- ऋग्वेद में मण्डलों की संख्या है - **दश (10)**
- किस वेद का अष्टक और मण्डल दो प्रकार का विभाजन है - **ऋग्वेद**
- 'पुरुषसूक्त' ऋग्वेद के किस मण्डल में आता है - **दशम**
- ऋग्वेद में कितने अष्टक हैं - **आठ (8)**
- ऋग्वेदे कति मन्त्राः सन्ति - **10552**
- खिलसूक्तैः सह ऋग्वेदे कति सूक्तानि सन्ति - **1028**
- वेद विकृतियाँ हैं - **8 (आठ)**
- ऋग्वेद का विभाजन क्रम है - **मण्डल और अष्टक क्रम**
- ऋग्वेदस्य प्रत्येकम् अष्टकेषु कति अध्यायाः भवन्ति - **अष्ट**
- ऋग्वेद के अक्षसूक्त में कितने मन्त्र हैं - **चतुर्दश**
- वेदाध्ययने विकृतिपाठः कतिविधो विद्यते - **अष्टविधः**
- अष्टकक्रमे ऋग्वेदे कति अध्यायाः सन्ति - **64**
- 'ऋग्वेदीयपुरुषसूक्ते' कति मन्त्राः सन्ति - **षोडश**
- 'नासदीयसूक्ते' कति मन्त्राः सन्ति - **सप्त**
- 'अष्टकक्रम' में विभक्त ग्रन्थ है - **ऋग्वेद**
- ऋग्वेद के प्रथमसूक्त में मन्त्रों की संख्या है - **9 (नव)**
- ऋग्वेद की सूक्तव्यवस्था किसके अनुसार है - **मण्डल**
- किस वेद का विभाजन अष्टकों में किया गया है - **ऋग्वेद**
- 'दाशुषे' का अर्थ है - **हविर्दाता यजमान के लिए**
- 'रोदसी' का क्या अर्थ है - **द्यावापृथिवी**

- 'मृगो न भीमः' मे 'न' पद का क्या अर्थ है - **इव**
- 'कर्मण्यपसो मनीषिणः' में 'अपसः' का क्या अर्थ है - **कर्मनिष्ठ**
- 'रायः' शब्दस्य कोऽर्थः - **धन**
- 'मेदिनी' किसे कहते हैं - **पृथ्वी**
- ऋग्वैदिकसूक्तविशेषे 'दोषावस्तर्' इति पदस्य कोऽर्थः - **रात्रिन्दिवा**
- यास्कमते 'वृत्रम्' कस्य प्रतीकः अस्ति - **मेघः**
- 'क्रतुः' इत्यस्य कोऽर्थः - **यज्ञः**
- शुल्बशब्दस्य कोऽर्थः - **रज्जुः**
- 'देवासः' इति प्रयोगः - **छान्दसः**

- 'सान्नाय्य' शब्द का अर्थ है - **दधिपयसी**
- 'ग्मा' जिसका पर्यायवाची शब्द है, वह है - **पृथ्वी**
- गद्यात्मक वेद है - **यजुर्वेद**
- जिस वेद की रचना गद्य और पद्य दोनों में की गयी है उसका नाम है - **यजुर्वेद**
- यजुर्वेद का प्रतिपाद्य विषय है - **कर्मकाण्ड**
- कः वेदः 'अध्वर्युवेद' नाम्नाऽपि ज्ञायते - **यजुर्वेदस्य**
- वेदव्यासः यजुर्वेदस्य ज्ञानं कस्मै दत्तवान् - **वैशम्पायनाय**
- 'यजुर्वेदः' सम्प्राप्तः - **वायोः**
- 'धनुर्वेदः कस्य वेदस्योपवेदः - **यजुर्वेदस्य**
- पतञ्जलि के अनुसार यजुर्वेद की कितनी शाखायें हैं - **एक सौ (100)**
- कः यजुषां वमनं कृतवानासीत् - **याज्ञवल्क्यः**
- कः यज्ञस्य नेता - **अध्वर्युः**
- यजुर्वेदः केषां योनिः - **क्षत्रियाणाम्**
- ब्रह्मा वायोः सकाशात् किं प्रकाशितवान् - **यजुर्वेदम्**
- अध्वर्यु किस वेद का पुरोहित है - **यजुर्वेद का**
- 'अध्वर'-शब्दस्यार्थो भवति - **यज्ञः**
- यजुर्वेदाध्यायी भवति - **अध्वर्युः**
- यजुर्वेदीयः ऋत्विक् - **अध्वर्युः**
- आध्वर्यकर्मणः कृते कः वेदः भवति - **यजुर्वेदः**
- अध्वर्युः कस्य वेदस्य प्रातिनिध्यं करोति - **यजुर्वेदस्य**
- अध्वर्यु से युक्त वेद है - **यजुर्वेद**
- श्रौतयागेषु भित्तिस्थानीयो वेदः को विद्यते - **यजुर्वेदः**
- यजुर्मन्त्रः कीदृशो भवति - **गद्यात्मकः**
- शुक्लत्वकृष्णत्वभेदः कस्य वेदस्य विद्यते - **यजुर्वेदस्य**
- यजुर्वेदे यजुषां संग्रहः किमर्थम् अस्ति - **अध्वर्युत्वम्**
- ''देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्'' इति मन्त्रः कस्मिन् वेदे अस्ति - **यजुर्वेदे**
- कः वेदः अनियताक्षरावसानात्मको भवति - **यजुर्वेदः**
- सायणाचार्यः प्रथमतया कस्य वेदस्य व्याख्यां कृतवान् - **यजुर्वेदस्य**
- 'विद्ययाऽमृतमश्नुते' शुक्लयजुर्वेदस्य कस्मिन् अध्याये प्राप्यते - **चत्वारिंशे**
- माध्यन्दिनसंहितायाः अपरं नाम किमस्ति - **वाजसनेयिसंहिता**
- शुक्लयजुर्वेद से सम्बन्धित है - **शतपथब्राह्मण**

- 'वाजसनेयी-संहिता' नाम है - **शुक्लयजुर्वेद का**
- 'परमावटिक' शाखीय वेद है - **शुक्लयजुर्वेद**
- माध्यन्दिनसंहितायाम् अनुदात्तस्वरचिह्नं कुत्र दीयते - **अधः**
- 'माध्यन्दिनम्' शाखा कस्य वेदस्य - **यजुर्वेदस्य**
- ईशावास्योपनिषद् किस संहिता से सम्बद्ध है - **काण्वसंहिता से**
- याज्ञवल्क्य का सम्बन्ध किस वेद से है - **शुक्लयजुर्वेद से**
- शुक्लयजुर्वेदस्य शाखा अस्ति - **माध्यन्दिन**
- माध्यन्दिनशाखा से सम्बद्ध वेद है - **शुक्लयजुर्वेद**
- 'ईशोपनिषद्' कस्य वेदस्यान्तिमोऽध्यायः - **यजुर्वेदस्य**
- शुक्लयजुर्वेद की शाखा है - **काण्व शाखा**
- कस्मिन् वेदे मन्त्रैः सह विनियोगवाक्यानां संग्रहो नास्ति - **शुक्लयजुर्वेदे**
- वाजसनेयिसंहिता कस्य वेदस्य संहिताऽस्ति. - **शुक्लयजुर्वेदस्य**
- माध्यन्दिनशाखा मुख्यतः कुत्र उपलभ्यते - **उत्तरभारते**
- महीधरभाष्य से सम्बन्धित वेद है - **शुक्लयजुर्वेद**
- कात्यायनश्रौतसूत्र किस वेद से सम्बद्ध है - **शुक्लयजुर्वेद से**
- 'शिवसङ्कल्पसूक्त' किस वेद से सम्बन्धित है - **शुक्लयजुर्वेद से**
- पितृयज्ञस्य वर्णनं वाजसनेयि-संहितायाः कस्मिन् अध्याये प्राप्यते - **द्वितीये अध्याये**
- वाजसनेयिसंहितायाः कस्मिन् अध्याये अग्निहोत्रस्य वर्णनमस्ति - **तृतीये अध्याये**
- हस्तेन त्रैस्वर्यं प्रदर्श्यत - **माध्यन्दिनसंहितायाम्**
- हस्तस्वर होता है - **शुक्लयजुर्वेदे**
- शुक्लयजुर्वेद किस नाम से भी जाना जाता है - **वाजसनेयिसंहिता**
- वाजसनेयिसंहितायाः कस्मिन् अध्याये शिवसङ्कल्पोपनिषद् अस्ति - **चतुस्त्रिंशे अध्याये**
- आदित्यसम्प्रदायस्य प्रातिनिध्यं कः करोति - **शुक्लयजुर्वेदः**
- काण्वसंहिता किस वेद से सम्बन्धित है - **शुक्लयजुर्वेद से**
- काण्वशाखायाः प्रचारः विशेषतया कस्मिन् प्रदेशे वर्तते - **महाराष्ट्रे**
- वाजसनेयिसंहितायाः प्रथमाध्याये कस्य यज्ञस्य वर्णनमस्ति - **दर्शपौर्णमासस्य**
- यजुर्वेद की मुख्यतया कितनी शाखायें हैं - **दो**
- यजुर्वेदेन सम्बद्धे वेदाङ्गज्योतिषे कति श्लोकाः सन्ति - **चतुःचत्वारिंशत्**
- ब्रह्मगणे कति ऋत्विजो भवन्ति - **चत्वारः**

- यजुर्वेदस्य आहत्य कति शाखाः स्वीक्रियन्ते - **86**
- यजुर्वेदस्य मैत्रायणीशाखायां कति काण्डानि सन्ति - **चत्वारः**
- शुक्लयजुर्वेदमाध्यन्दिनसंहितायां मन्त्रसंख्या वर्तते - **1975**
- शिवसङ्कल्पसूक्तं कस्यां शाखायाम् उपदिष्टम् - **माध्यन्दिनीयशाखायाम्**
- शुक्लयजुर्वेदीय शिवसङ्कल्पसूक्त का अध्याय है - **34**
- शुक्लयजुर्वेद में कितने अध्याय हैं? - **40 (चत्वारिंशत्)**
- वाजसनेयिसहितायां कति अध्यायाः सन्ति - **40**
- प्रधानतया वाजसनेयिसंहितायाः कति शाखाः सन्ति - **02**
- शुक्लयजुःप्रातिशाख्ये कति अध्यायाः सन्ति - **अष्ट**
- कात्यायनस्य अनुक्रमणीग्रन्थे कति अध्यायाः सन्ति - **पञ्च**
- अध्वर्युगणे कति ऋत्विजो भवन्ति - **चत्वारः**
- वाजसनेयिसंहितायां प्रथमाध्याये कियन्तः मन्त्राः राराजन्ते - **31**
- वर्तमान में शुक्लयजुर्वेद की कितनी शाखायें उपलब्ध हैं? - **2**
- शुक्लयजुर्वेद का चालीसवाँ अध्याय है - **ईशोपनिषत्**
- '40 अध्याय' हैं – - **वाजसनेयिसंहिता में**
- इष्टौ कति ऋत्विजो भवन्ति - **चत्वारः**
- शुक्लयजुर्वेदे रुद्राध्यायाः सन्ति - **अष्ट**
- शुक्लयजुर्वेदीय शिवसङ्कल्पसूक्ते कति मन्त्राः सन्ति - **षट् (6)**
- माध्यन्दिनशाखायां कति अध्यायाः खिलरूपेण सन्ति - **पञ्चदश**
- वाजसनेयी शाखा के कितने भेद हैं - **पञ्चदश(15)**
- माध्यन्दिनशतपथस्य कस्मिन् काण्डे अग्निरहस्यं वर्णितमस्ति - **दशमे काण्डे**
- मैत्रायणी शाखा से सम्बन्धित वेद है - **कृष्णयजुर्वेद**
- कृष्णयजुर्वेदस्य कति शाखाः सम्प्रति उपलभ्यन्ते - **02**
- तैत्तिरीयशाखायां कति अष्टकाः खण्डाः वा सन्ति- **05**
- तैत्तिरीयसंहितायां कति काण्डानि सन्ति - **सप्त**
- तैत्तिरीयसंहितायां कति प्रपाठकाः सन्ति - **चतुश्चत्वारिंशत् (44)**
- तैत्तिरीयप्रातिशाख्ये कत्यध्यायाः सन्ति - **चतुर्विंशतिः(24)**
- काण्वशाखा किस वेद की है - **यजुर्वेद की**
- काण्वसंहितायां कति मन्त्राः प्राप्यन्ते - **2086**
- तैत्तिरीयसंहितायां कति अनुवाकाः स्वीक्रियन्ते - **631**
- कृष्णयजुर्वेदे कति काण्डानि सन्ति - **सप्त (7)**

- मैत्रायणी उपनिषद् कुल कितने अध्यायों में विभक्त है - **7 (सप्त)**
- 'कठशाखा' सम्बन्धित है - **यजुर्वेद से**
- 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' इति मन्त्रः कस्मिन् वेदे दृक्पथमुपयाति - **शुक्लयजुर्वेदे**
- मन्त्रब्राह्मणयोः सम्मिश्रणं वर्तते - **कृष्णयजुर्वेदे**
- कस्मात् कृष्णयजुर्वेदः कथ्यते - **मन्त्रब्राह्मणयोः साङ्कर्यात्**
- तित्तिररूपेण शिष्याः कं वेदं स्वीकृतवन्तः - **कृष्णयजुर्वेदम्**
- काण्वशाखा मुख्यतः कुत्र उपलभ्यते - **महाराष्ट्रे**
- कृष्णयजुर्वेद की प्रसिद्ध शाखा किस नाम से जानी जाती है - **तैत्तिरीय शाखा**
- कृष्णयजुर्वेद में है - **मन्त्र और ब्राह्मण**
- तैत्तिरीयसंहितायाः अध्यायानां प्रश्नानां वा अपरमभिधानं किमस्ति - **प्रपाठकः**
- कृष्णयजुर्वेदस्य का शाखा सम्प्रत्यपि सम्पूर्णतया न प्राप्यते - **कठकापिष्ठलसंहिता**
- ब्रह्मसम्प्रदायस्य प्रातिनिध्यं कः करोति - **कृष्णयजुर्वेदः**
- तैत्तिरीयसंहिता सम्बन्धित है - **कृष्णयजुर्वेद से**
- प्राजापत्यकाण्डं कस्यां संहितायां विद्यते - **तैत्तिरीयसंहितायाम्**
- कृष्णयजुर्वेदः केन सम्प्रदायेन सम्बध्यते - **ब्रह्मसम्प्रदायेन**
- मन्त्रब्राह्मणवाक्ययोर्मिश्रणं बाहुल्येन कुत्र प्राप्यते - **कृष्णयजुर्वेदे**
- काण्वसंहिता कस्मिन् वेदे अन्तर्भावो भवेत् - **यजुसि**
- मैत्रायणी-संहिता कस्य वेदस्य वर्तते - **कृष्णयजुर्वेदस्य**
- मन्त्रैः सह ब्राह्मणस्य नियोजनमस्ति - **कृष्णयजुर्वेदे**
- कृष्णयजुर्वेदेन सह सम्बद्धमस्ति - **बौधायनगृह्यसूत्रम्**
- तैत्तिरीयसंहितायाः तृतीयकाण्डस्य किं नाम - **आग्नेयकाण्डम्**
- तैत्तिरीयसंहितायाः नामान्तरमस्ति - **कृष्णयजुर्वेदः**
- कौन सी संहिता ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्, धर्मसूत्रादि से सर्वाङ्गपूर्ण है - **तैत्तिरीय-संहिता**
- कृष्णयजुर्वेद की प्रसिद्ध शाखा किस नाम से जानी जाती है - **तैत्तिरीय शाखा**
- 'आपस्तम्बगृह्यसूत्र' से सम्बन्धित वेद - **कृष्णयजुर्वेद**
- 'मन्त्र तथा ब्राह्मण' की सम्मिलित संज्ञा क्या है - **वेद**
- वाजपेययाग का अनुष्ठान करने वाला होता है - **सम्राट्**
- अश्वमेध यज्ञ में अश्व के साथ सोती है - **महिषी**

- अग्निष्टोम याग में ऋत्विज होते हैं - **षोडश**
- दर्शपूर्णमासयागस्य का दक्षिणा - **अन्वाहार्यम्**
- इष्टौ कति प्रयाजाः भवन्ति - **पञ्च**
- पौर्णमासेष्टौ कति प्रयाजाः भवन्ति - **पञ्च**
- 'पञ्च महायज्ञाः' किमर्थम् अनुष्ठीयन्ते - **पञ्चसूनादोषनाशाय**
- अग्निष्टोमयागो वर्तते - **सोमयज्ञः**
- 'दर्शयागः' कदानुष्ठीयते - **प्रतिपदि**
- 'अग्निहोत्रम्' अनुष्ठीयते– - **प्रतिदिनम्**
- आध्यात्मिकव्याख्यापद्धतौ वेदे प्रयुक्तस्य 'अग्नि' शब्दस्य अयमर्थः - **परमात्मा**
- महामखाः कति- - **पञ्च**
- अग्निर्नित्यो भवति - **गार्हपत्ये**
- वेदाभ्यासेन व्यवह्रियते - **ब्रह्मयज्ञः**
- दर्शेष्टिः कस्मिन् दिवसे भवति - **शुक्लपक्षप्रतिपदि**
- पूर्णमासेष्टिः कस्मिन् दिवसे भवति - **कृष्णपक्षप्रतिपदि**
- दर्शेष्टौ कति ऋत्विजो भवन्ति - **चत्वारः**
- दर्शपूर्णमासयज्ञे 'दर्श'–शब्दस्य अर्थोऽस्ति - **अमावस्या**
- कः ब्रह्मयज्ञः - **अध्ययनम्**
- दर्शपूर्णमासयज्ञे प्रथमा इष्टिका - **पौर्णमासेष्टिः**
- पाकयज्ञाः भवन्ति - **सप्त**
- यज्ञ सम्बन्धी विधि-विधानों का पता चलता है - **यजुर्वेद में**
- 'अध्वरः' इति शब्दस्य कोऽर्थः - **यज्ञः**
- होतुः किं कर्म भवति - **आह्वानम्**
- 'पुरोडाश' इति शब्दस्य कोऽर्थः - **द्रव्यम्**
- 'व्रीहि' इति शब्दस्य कोऽर्थः - **द्रव्यम्**
- ब्रह्मा यागे किं वदति - **अनुज्ञाम्**
- गार्हपत्याग्निः कस्यां दिशि प्रकल्प्यते - **पश्चिमायाम्**
- आहवनीयाग्निः कस्यां दिशि भवति - **पूर्वस्याम्**
- दक्षिणाग्निः कस्यां दिशि भवति - **दक्षिणस्याम्**
- अग्निहोत्रहोमस्य कालः को विद्यते - **सायं प्रातः**
- सोमयज्ञस्य प्रधानहविः किं भवति - **सोमः**
- दीक्षा कस्य यागस्य अङ्गं विद्यते - **सोमयागस्य**
- दीक्षासंस्कारः कस्य भवति - **यजमानस्य**
- महायज्ञाः कति भवन्ति - **पञ्च**

- ऋतवः कति परिगणिताः सन्ति - **षट्**
- दर्शपूर्णमास्ययागः कस्य प्रकृतिर्विद्यते - **इष्टियागस्य**
- दर्शे कति प्रधानयागाः भवन्ति - **त्रयः**
- पौर्णमासे कति प्रधानयागाः भवन्ति - **पञ्च**
- दर्शपौर्णमासेष्टियागे प्रयाजानां संख्या विद्यते - **पञ्च**
- दर्शपूर्णमासयागे कति अनुयाजाः भवन्ति - **त्रयः**
- हविर्यज्ञसंस्थाः कति भवन्ति - **सप्त**
- हविर्यागानां प्रकाराः सन्ति - **सप्त**
- पाकयज्ञसंस्थाः कति भवन्ति - **सप्त**
- सोमयज्ञसंस्थाः कति भवन्ति - **दश**
- रथन्तर है, एक - **साम**
- 'वैराज' है, एक - **साम**
- याग के जो दो रूप हैं, वे हैं - **द्रव्य एवं देवता**
- सभी इष्टियों की प्रकृति है - **दर्शपूर्णमासेष्टि**
- दर्शमासयागः कदा विधीयते - **प्रतिपदायाम्**
- दर्शयागस्य आधानकालः - **अमावस्या**
- प्रयाज कितने हैं - **पञ्च**
- पवमानेष्टयः सन्ति - **तिस्रः**
- वैदिकधर्म आधारित था - **यज्ञ पर**
- सामवेद का दूसरा नाम है - **गानवेद**
- उत्तरार्चिक किस वेद से सम्बद्ध है - **सामवेद से**
- सङ्गीत का प्राचीनतम ग्रन्थ है - **सामवेद**
- 'उद्गाता' का सम्बन्ध किस वेद से है? - **सामवेद से**
- सामवेदः सम्प्राप्तः - **रवेः (सूर्य से)**
- सामवेद संहिता का उपवेद कौन है - **गान्धर्ववेद**
- सामवेदस्य शाखाः सन्ति - **3 (तीन)**
- सहस्रशाखो वेदः - **सामवेदः**
- 'राणायनीयशाखा' कस्य वेदस्य - **सामवेदस्य**
- 'जैमिनिशाखा' किस वेद से सम्बन्धित है - **सामवेद से**
- 'कौथुम-शाखा' से सम्बद्ध वेद है - **सामवेद**
- सामवेदः केषां प्रसूतिः - **ब्राह्मणानाम्**
- उद्गातृगणे कति ऋत्विजो भवन्ति - **चत्वारः**
- गानस्य प्राधान्यमस्ति - **सामवेदे**
- कौन-सा वेद सङ्गीतशास्त्र से सम्बन्धित है - **सामवेद**

- सामवेदे गानं कतिधा भवति - **5 (पाँच)**
- ऋक्तन्त्रं कस्य वेदस्य कृते - **सामवेदस्य**
- सामवेदस्य प्रमुख–प्रतिपाद्यविषयोऽस्ति - **गानम्**
- सामवेदस्य पूर्वार्चिकस्य अपरा संज्ञा का अस्ति - **छन्दसंहिता**
- सामवेद में 'साम' का अर्थ है - **गायन**
- 'रथन्तर' जिसका प्रकार है, वह है - **सामगान**
- 'साम्नः' व्यवहारिकोऽर्थोऽस्ति - **गायनम्**
- स्तोमस्य प्रधानता - **सामवेदे**
- 'तत्त्वमसि' श्रुतिः - **सामवेदे**
- कः सामवेदस्य मन्त्राणां गायनं करोति - **उद्गाता**
- 'संहितोपनिषद् ब्राह्मणं' कस्मिन् वेदे विद्यते - **सामवेदे**
- ऋग्वेदात् उद्धृतानाम् ऋचां संख्या सामवेदे - **1504**
- सामाख्या कुत्र भवति - **गीतिषु**
- 'गीतिषु सामाख्या' इति कस्मिन् ग्रन्थे उक्तमस्ति - **जैमिनीयसूत्रे**
- अङ्गुलीषु स्वरसञ्चालनं क्रियते - **सामवेदे**
- 'उपद्रव' जिसकी विधा है, वह है - **सामगान**
- 'दैवतब्राह्मण' से सम्बन्धित वेद का नाम है - **सामवेद**
- 'मशकसूत्र' से सम्बन्धित वेद है - **सामवेद**
- सामवेदस्य कति ब्राह्मणानि सन्ति - **08 (आठ)**
- साममन्त्राणां गायने कति स्वराणां प्रयोगो भवति - **सप्त**
- माधव ने जिस वेद की व्याख्या की है, वह है - **सामवेद**
- सत्यव्रतसामश्रमी कस्य वेदस्य प्रकाण्डविद्वान् आसीत् - **सामवेदस्य**
- पतञ्जलिमतानुसारं सामवेदस्य शाखाः सन्ति - **1000**
- 'जैमिनीयशाखा' कस्य वेदस्य - **सामवेदस्य**
- उत्तरार्चिके प्रपाठकस्य संख्या - **9 (नव)**
- ऋक्तन्त्रं सामवेदस्य कस्यां शाखायामन्तर्भवति - **कौथुमशाखायाम्**
- पूर्वार्चिक-उत्तरार्चिक-भेदेन विभक्तो वेदः - **सामवेदः**
- सामवेदस्य भागाः कति - **2**
- सामवेदस्य मन्त्राणां (ऋचाणां) संख्या - **1549**
- सामवेदे कति ऋचः स्वतन्त्ररूपेण सन्ति - **75**
- सामसंहिता कति भागेषु विभक्ताऽस्ति - **भागद्वये**
- पूर्वार्चिक में प्रपाठकों की संख्या - **10(दश)**
- उत्तरार्चिक में कितने भाग (प्रपाठक) हैं - **9 (नव)**
- सामवेदीयपूर्वार्चिके कियन्तः मन्त्राः विलसन्ति - **650**

- सामवेदीयशिक्षाग्रन्थाः - **3 (तीन)**
- जैमिनीयशाखायां मन्त्रसंख्या - **1687**
- जैमिनीयगानसंख्या - **3681**
- ''सङ्गीत के अनुकूल जो शाब्दिक परिवर्तन होता है, उसे कहते हैं।'' - **सामविकार**
- सामविकाराः परिगणिताः सन्ति - **षट्**
- कः ऋषिः अथर्वसंहितायाः द्रष्टा अस्ति - **अथर्वः**
- 'ब्रह्मवेद' का अर्थ है - **अथर्वः**
- किस संहिता को 'ब्रह्मवेद' कहा गया है - **अथर्ववेद को**
- 'अथर्वाङ्गिरस' नाम्ना कः वेदः ज्ञायते - **अथर्ववेदः**
- 'ब्रह्मा' किस वेद से सम्बद्ध ऋत्विक् है - **अथर्ववेद**
- वेदों में सबसे अर्वाचीन वेद है - **अथर्ववेद**
- 'भैषज्यवेद' यह किसका नामान्तर है - **अथर्ववेदस्य**
- भैषज्यसूक्तानि (भैषज्यमन्त्राः) वर्तन्ते - **अथर्ववेदे**
- वैतानश्रौतसूत्रमस्ति - **अथर्ववेदीयम्**
- इस समय प्रचलित अथर्ववेद किस शाखा का है - **शौनकशाखा का**
- 'जाजलशाखा' जिस वेद की शाखा है, वह है - **अथर्ववेद**
- 'पैप्पलादशाखा' जिस वेद की है, वह है - **अथर्ववेद**
- कौन सा वेद वेदत्रयी का भाग नहीं है - **अथर्ववेद**
- कालसूक्तं युज्यते......... - **अथर्ववेदे**
- अभिचारसूक्तानि दृश्यन्ते - **अथर्ववेदे**
- पृथिवीसूक्तम् - **अथर्ववेदे**
- 'पृथ्वीसूक्तम्' कस्य वेदस्य अस्ति - **अथर्ववेदस्य**
- पृथिवी की पूजा इसमें है - **अथर्ववेद में**
- चार वेदों में से किस एक में जादुई माया और वशीकरण का वर्णन है - **अथर्ववेद में**
- आयुर्वेद अर्थात् 'जीवन का विज्ञान' का उल्लेख सर्वप्रथम मिलता है - **अथर्ववेद में**
- 'व्रात्य' का वर्णन किस वेद में पाया जाता है - **अथर्ववेद में**
- अथर्ववेद में स्कम्भ के रूप में कौन वर्णित है - **ब्रह्म**
- पैप्पलादशाखा जिस लिपि में प्राप्त हुई थी, उसका नाम है - **शारदा लिपि**
- 'स्कम्भ' का वर्णन कहाँ प्राप्त होता है - **अथर्ववेद में**

- अथर्ववेद का गृह्यसूत्र कौन है - **वैखानस गृह्यसूत्र**
- अथर्ववेद से सम्बद्ध कौन सी शिक्षा है - **माण्डूकी शिक्षा**
- प्रचुर आयुर्वेदिक सामग्री किस वेद में है - **अथर्ववेद में**
- अभिचारक्रियाणां वर्णनं मुख्यतया कस्मिन् वेदे प्राप्यते - **अथर्ववेदे**
- अथर्ववेद में पाया जाता है– - **विज्ञानकाण्ड**
- औषधि वनस्पतियों के विषय में सूचना किस वेद में मिलती है - **अथर्ववेद में**
- 'कौशिकगृह्यसूत्र' से सम्बन्धित वेद है - **अथर्ववेद**
- लौकिकविषयस्य सर्वाधिकं वर्णनं कस्मिन् वेदे विद्यते - **अथर्ववेदे**
- शौनक व पिप्पलादशाखा का सम्बन्ध किस वेद से है - **अथर्ववेद से**
- चरणव्यूहानुसारम् अथर्ववेदस्य कति शाखाः - **नव**
- अथर्ववेद संहिता की कितनी शाखायें प्राप्त हैं - **नव**
- पातञ्जलमहाभाष्यानुसारम् अथर्ववेदस्य शाखाः सन्ति - **नव**
- अथर्ववेद कितने काण्डों में विभाजित है - **विंशतिः(20)**
- राष्ट्राभिवर्धनसूक्तं अथर्ववेदस्य कस्यां शाखायां विद्यते - **शौनकशाखायाम्**
- अथर्वसंहिता कति खण्डेषु विभक्ताऽस्ति - **20**
- अथर्ववेदे कति प्रपाठकाः सन्ति - **34**
- अथर्ववेदे कति अनुवाकाः सन्ति - **111**
- अथर्ववेदे कति सूक्तानि सन्ति - **731**
- अथर्ववेदे कति मन्त्राः सन्ति - **5987**
- अथर्ववेदस्य विभाजनं प्राप्यते - **काण्डेषु**
- विलुप्ता 'मौद'–शाखा कस्य वेदस्य वर्तते - **अथर्ववेदस्य**
- 'सुमन्तु' – ऋषये व्यासः कं वेदं प्रोक्तवान् - **अथर्ववेदम्**
- 'आग्नीध्र' – नाम्ना ऋत्विक् कस्य गणस्य वर्तते - **ब्रह्मगणस्य**

❑❑

2. ब्राह्मणग्रन्थ

- 'नैरुक्त्यं यस्य मन्त्रस्य विनियोगः प्रयोजनम् **- ब्राह्मणम्**
- प्रतिष्ठानं विधिश्चैव......... तदिहोच्यते' इति पूरयत **- ब्राह्मणम्**
- ग्रन्थवाचकः ब्राह्मणलक्षणं कतिधा प्रतिपाद्यते **- दश**
- कति लक्षणात्मकः ब्राह्मणग्रन्थो भवति **- दश**
- विधिवाक्यम् वर्तते **- ब्राह्मणः**
- ब्राह्मणं नाम **- यज्ञविधिप्रकाशनम्**
- ब्राह्मणग्रन्थों का विषय नहीं है **- छन्दविवेचन**
- वह कौन सा वेद है, जिसके दो ब्राह्मण लगभग समान नाम वाले हैं **- शुक्लयजुर्वेद**
- ऋग्वेद के कितने ब्राह्मणग्रन्थ हैं **- 2**
- सामवेद-सम्बद्धानि कति ब्राह्मणानि सन्ति **- अष्ट**
- सायणभाष्यमतेन सामवेदीयानां ब्राह्मणानां संख्या **- अष्ट**
- 'चरैवेति-चरैवेति' उपदेशः कुत्र लभ्यते **- शुनःशेपाख्याने**
- विधिभागरूपेण स्वीक्रियते **- ब्राह्मणग्रन्थः**
- 'हेतुर्निर्वचनं निन्दा प्रशंसा संशयो विधिः' जिसको परिभाषित करता है, वह ग्रन्थ है **- ब्राह्मण**
- ब्राह्मणग्रन्थानां प्रतिपाद्यविषयस्य कति प्रकाराः **- दश**
- ब्राह्मणग्रन्थाः कस्य विस्तृतवर्णनं कुर्वन्ति **- यज्ञानुष्ठानस्य**
- ऐतरेयब्राह्मणे कति अध्यायाः सन्ति **- चत्वारिंशत्**
- ऐतरेय ब्राह्मण में अध्यायों की संख्या कितनी है **- चत्वारिंशत्**
- ऐतरेयब्राह्मण किस वेद से सम्बद्ध है **- ऋग्वेद से**
- ऋग्वेदस्य ब्राह्मणम् **- ऐतरेयब्राह्मणम्**
- 'चरैवेति चरैवेति' इति वाक्यांशोऽस्मिन् ग्रन्थे अस्ति **- ऐतरेयब्राह्मणे**
- 'हरिश्चन्द्रोपाख्यानं' कस्मिन् ब्राह्मणे उपलभ्यते **- ऐतरेयब्राह्मणे**
- 'शुनःशेप आख्यान' किस ब्राह्मण में है **- ऐतरेय ब्राह्मण में**
- 'शुनःशेपाख्यान' सर्वप्रथम कहाँ प्राप्त होता है **- ऐतरेय ब्राह्मण में**
- 'अग्निर्वैदेवानामवमः' का उल्लेख जिसमें है, वह है **- ऋग्वेदस्य**
- 'शांखायनब्राह्मण' कस्य वेदस्य **- ऋग्वेदस्य**
- शांखायनब्राह्मणे कियन्तोऽध्यायाः विद्यन्ते **- 30**
- शांखायनब्राह्मणस्य अपरं नाम किम् अस्ति **- कौषीतकि**
- शतपथब्राह्मण किस वेद से सम्बन्धित है **- शुक्लयजुर्वेद से**
- शतपथ-ब्राह्मण में काण्डों की संख्या है **- चतुर्दश (14)**
- माध्यन्दिनशतपथब्राह्मण में काण्ड हैं **- चतुर्दश (14)**
- शुक्लयजुर्वेद के शतपथब्राह्मण में कितने अध्याय हैं **- 100**

- माध्यन्दिन शतपथब्राह्मण में कितने अध्याय हैं **- 100**
- शुक्लयजुर्वेद की काण्वशाखा का ब्राह्मण है **- शतपथब्राह्मणम्**
- शतपथ ब्राह्मण कितने हैं **- 2 (दो)**
- 'बृहदारण्यकोपनिषद्' किस ब्राह्मण में है **- शतपथ ब्राह्मण में**
- जिस ग्रन्थ में 'पुरुषमेध' का उल्लेख हुआ है, वह है **- शतपथब्राह्मण**
- 'शतपथब्राह्मण' के किस काण्ड में दर्शयाग वर्णित है **- प्रथमकाण्ड में**
- 'शतं पन्थानो यत्र.......' इत्युक्त्या यस्य ग्रन्थस्य परिचयो भवति सोऽस्ति **- 'शतपथ' ब्राह्मण**
- शतपथब्राह्मण में उल्लिखित राजा विदेह माधव से सम्बन्धित ऋषि थे **- ऋषि गौतम राहुगण**
- शतपथब्राह्मणं कया संहितया संयुक्तमस्ति **- माध्यन्दिनसंहितया**
- शतपथ ब्राह्मण के त्रयोदश काण्ड में किस यज्ञ का विधान किया गया **- अश्वमेध यज्ञ का**
- 'मनुमत्स्यकथा' किस ब्राह्मणग्रन्थ में उपलब्ध होती है **- शतपथब्राह्मण में**
- माध्यन्दिनशतपथे कति प्रपाठकाः सन्ति **- 68 (अष्टषष्टिः)**
- 'यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म' इति वाक्यं कुत्र प्राप्यते **- शतपथब्राह्मणे**
- ''स्वाध्यायोऽध्येतव्यः'' इति वाक्यं कुत्र प्राप्यते **- शतपथब्राह्मणे**
- 'शतपथब्राह्मणस्य' आंग्लानुवादः कृतो वर्तते **- जे. एग्लिंगमहोदयेन**
- ताण्ड्य ब्राह्मण किस वेद से सम्बन्धित है **- सामवेद से**
- 'प्रौढब्राह्मण' सम्बन्धित है **- सामवेद**
- सामवेदीयं ब्राह्मणम् **- ताण्ड्यम्**
- ताण्ड्यब्राह्मणस्य मुख्यविषयः **- सामविधानं सोमयागविधानं च**
- पञ्चविंशब्राह्मणं कस्य ब्राह्मणस्य अपरं नाम अस्ति **- ताण्ड्यस्य**
- अद्भुतब्राह्मण से सम्बन्धित वेद है **- सामवेद**
- षड्विंश ब्राह्मण किस वेद से सम्बद्ध है **- सामवेद से**
- आर्षेयब्राह्मणं केन वेदेन सम्बद्धम् **- सामवेदेन**
- देवताध्यायब्राह्मणम् कस्य वेदस्य **- सामवेदस्य**
- 'संहितोपनिषद्ब्राह्मण' से सम्बद्ध वेद है **-सामवेद**
- 'जैमिनीयब्राह्मणं' केन वेदेन सम्पृक्तम् **- सामवेदेन**

- पञ्चविंशब्राह्मणं कस्य वेदस्य **- सामवेदीयम्**
- अथर्ववेद का ब्राह्मणग्रन्थ है **- गोपथ**
- गोपथब्राह्मणं सम्बद्धमस्ति **- अथर्ववेद से**
- गोपथ ब्राह्मण के अनुसार 'सर्पवेद' जिसका उपवेद है, वह है **-अथर्ववेद**

❑❑

3. आरण्यक

- सायणमतानुसारम् अरण्ये पठनीयाः सन्ति **- आरण्यकाः**
- को नाम आरण्यकस्य मुख्यविषयः **- ज्ञानम्**
- आरण्यकं केन आश्रमेण सम्बद्धम् **- वानप्रस्थाश्रमेण**
- सामवेदीय आरण्यकों की संख्या है **- दो**
- माध्यन्दिनशतपथस्य कः काण्डः आरण्यकनाम्ना प्रसिद्धोऽस्ति **- चतुर्दशः**
- 'आरण्यकञ्च वेदेभ्यः औषधिभ्योऽमृतं यथा' इति उक्तम् **- कृष्णद्वैपायनेन**
- के ग्रन्थाः वनेषु रचिताः **- आरण्यकाः**
- ऐतरेय आरण्यक सम्बन्धित है **- ऋग्वेद से**
- 'बृहदारण्यकं' कया शाखया संयुक्तमस्ति **- काण्वशाखया**
- . 'बृहदारण्यकम्' किस वेद का है **- यजुर्वेद का**
- तैत्तिरीय-आरण्यक किस वेद से सम्बद्ध है **- कृष्णयजुर्वेद से**
- पञ्चमहायज्ञ इसमें होता है **- तैत्तिरीयारण्यक**
- 'तैत्तिरीयारण्यकस्य' कस्मिन् प्रपाठके तैत्तिरीयोपनिषद् विद्यते **- सप्तमे**
- तैत्तिरीयारण्यके कति काण्डानि (प्रपाठकाः) सन्ति **- दश**
- तैत्तिरीयारण्यकस्य प्रपाठकसंख्या का विद्यते **- दश**
- कृष्णयजुर्वेदस्य आरण्यकम् अस्ति **- तैत्तिरीयारण्यकम्**
- यजुर्वेदेन सम्बद्धस्य आरण्यकस्य किं नाम अस्ति **- तैत्तिरीयारण्यकम्**
- तैत्तिरीयारण्यकं कस्य ब्राह्मणस्य शेषांशरूपेणास्ति **- तैत्तिरीयस्य**
- 'तैत्तिरीयारण्यकस्य' प्रथम-प्रपाठकः केन मन्त्रेण आरभ्यते **- भद्रं कर्णेभिः**
- 'तैत्तिरीयारण्यके' पञ्चयज्ञानां वर्णनं कस्मिन् प्रपाठके विद्यते **- द्वितीये**
- 'महानारायणीय उपनिषद्' कस्मिन्नारण्यके अस्ति **- तैत्तिरीये**
- मैत्रायणी आरण्यक में कितने प्रपाठक हैं **- 7(सात)**
- सामवेदस्य आरण्यकम् अस्ति **- तलवकारः**
- 'तलवकार आरण्यक' सम्बन्धित है **- सामवेद से**
- तलवकारारण्यकस्य नामान्तरम् **- जैमिनीयोपनिषद् ब्राह्मणम्**
- तलवकारारण्यके अध्यायाः **- 4 (चार)**
- 'छान्दोग्य आरण्यक' किस वेद से सम्बन्धित है **- सामवेद से**

- कस्य वेदस्यारण्यकं नोपलभ्यते **- अथर्ववेदस्य**

❑❑

4. उपनिषद्

- 'उपनिषद्' शब्द का अर्थ है **- आत्मविद्या**
- ज्ञानकाण्ड इनका विषय है **- उपनिषद्**
- उपनिषदों का प्रथम भाषान्तर फारसी भाषा में कब हुआ **-17 वीं सदी में**
- जिसके द्वारा ब्रह्म की समीपता निश्चित रूप से प्राप्त हो, उसे कहते हैं **- उपनिषद्**
- भगवान् आद्यशङ्कराचार्यः कियतीनामुपनिषदां भाष्यं कृतवान् **- 10**
- उपनिषद् शब्दे कः धातुरस्ति **- सद्**
- उपनिषदा प्रतिपाद्यते **- ज्ञानकाण्डम्**
- उपनिषद् पुस्तकें हैं **-वैदिक दर्शन पर**
- कौन प्रस्थानत्रयी में सम्मिलित है **-उपनिषद्**
- उपनिषदों में क्या वर्णित है **- ब्रह्मविद्या**
- वेदानाम् अन्तिमभागं .... इत्युच्यते **- उपनिषद्**
- वैदिकसाहित्यस्य कः भागः वेदान्तनाम्ना कथ्यते **-उपनिषद्**
- उपनिषद् इति पदे कः प्रत्ययो अस्ति **- क्विप्**
- उपनिषदनुसारं कया मृत्युः तीर्यते **- अविद्यया**
- उपनिषदों का मुख्य प्रतिपाद्य क्या रहा है **- कर्मकाण्ड**
- उत्तरवैदिककाल में धार्मिक क्रियाओं में मुख्य था **- कर्मकाण्ड**
- महानारायणोपनिषद् कस्मिन् ग्रन्थे प्राप्यते **-तैत्तिरीयारण्यके**
- मुख्योपनिषदः सन्ति **– एकादश**
- सांख्य-योग शैवदर्शन प्रतिपादक उपनिषद् ग्रन्थ है **-श्वेताश्वतरोपनिषद्**
- भारतीय संस्कृति का आध्यात्मिक साहित्य है **-उपनिषत्साहित्यम्**
- कौषीतकि-उपनिषद् किस वेद से सम्बन्धित है **-ऋग्वेद से**
- ईशावास्योपनिषद् किस वेद से सम्बन्धित है **-शुक्लयजुर्वेद से**
- 'ईशावास्योपनिषद्' किस वेद में है **-शुक्लयजुर्वेद में**
- ईशावास्योपनिषद् है **-काण्वसंहितायाम्**
- माध्यन्दिन शुक्लयजुर्वेद का अन्तिम अध्याय क्या कहलाता है **- ईशोपनिषद्**
- विद्यया किम् अश्नुते **- अमृतम्**
- 'न कर्म लिप्यते नरे' इत्यत्र कस्य कर्मणः वर्णनमस्ति **-अनासक्तकर्म**
- माध्यन्दिनशाखायाः कस्मिन्नध्याये 'ईशावास्योपनिषद्' अस्ति **-चत्वारिंशे**

- ईशावास्योपनिषदनुसारं कया रीत्या अमृतत्त्वस्य प्राप्तिर्जायते– **-विद्यया**
- केन प्रकारेण जिजीविषेत् **-कर्म कुर्वन्**
- ईशावास्यदिशा कथं मृत्युं तरति **-विनाशेन**
- का 'संहितोपनिषदि' गण्यते **- ईशोपनिषद्**
- 'ईशावास्योपनिषद्' के अनुसार पूर्ण क्या है **- परब्रह्म**
- मनुष्य को शास्त्रनियत कर्म का पालन करते हुये कितनी आयु की कल्पना करनी चाहिए **-सौ वर्ष**
- अमृत की प्राप्ति में हेतु कौन है **-विद्या**
- अमृतत्व की प्राप्ति किससे होती है **-विद्या से**
- विद्या एवं अविद्या को एक साथ प्राप्त करने वाला प्राप्त करता है **-अमृत को**
- ईशावास्योपनिषद् में प्रयुक्त 'सुपथा' शब्द का अर्थ है **-उत्तरायण**
- 'ईशोपनिषद्' क्या कहलाता है **- वेदान्त**
- यह समस्त जगत् किससे व्याप्त है **-ईश्वर से**
- अविद्या का अर्थ है **-कर्मानुष्ठान**
- अज्ञानरूप घोर अन्धकार में कौन नहीं प्रवेश करता है **-परमेश्वर का उपासक**
- सत्यस्वरूप परमात्मा का मुख कैसे पात्र से ढका है **-सुवर्णमय**
- काण्व-संहिता का भाग है **-ईशावास्योपनिषद्**
- 'ईशावास्योपनिषद्' किस विषय से सम्बन्धित है **-ज्ञानकाण्ड और कर्मनिष्ठा**
- शुक्लयजुर्वेद से सम्बन्धित उपनिषद् है **- ईशावास्योपनिषद्**
- शुक्लयजुर्वेद सम्बद्ध उपनिषद् हैं **- उनविंशतिः (19)**
- ईशावास्योपनिषदि किं वर्णनमस्ति **– ब्रह्मचिन्तनम्**
- 'विद्ययाऽमृतमश्नुते' से सम्बन्धित ग्रन्थ है **-ईशावास्योपनिषद्**
- 'ईशावास्योपनिषदि' कति मन्त्राः सन्ति **- 18**
- ईशावास्योपनिषद् शुक्लयजुर्वेदस्य कतमोऽध्यायो वर्तते **- 40**
- 'बृहदारण्यक' उपनिषद् सम्बद्ध है **- शुक्लयजुर्वेद से**
- बृहदारण्यकोपनिषदस्ति **- शतपथब्राह्मणे**
- बृहदारण्यकोपनिषद् है **- शुक्लयजुर्वेद का**
- 'श्रीमन्थ-विद्या' का उपदेश है **- बृहदारण्यकोपनिषद् में**
- 'मैत्रेयी-याज्ञवल्क्य-संवादः' कस्यामुपनिषदि उपलभ्यते **- बृहदारण्यकोपनिषदि**
- 'आत्मनस्तु कामाय सर्वं प्रियं भवति' इति उक्तं कुत्र **- बृहदारण्यकोपनिषदि**
- शुनःशेपस्य पितुर्नामास्ति **- अजीगर्तः**
- नचिकेतसे अग्नेः उपदेष्टाऽभवत् **- यमः**
- कठोपनिषदनुसारं महतः परं किमस्ति **- अव्यक्तम्**

- 'रथ-रूपकं' कुत्र विद्यते अथवा रथरूपकमुपलभ्यते - **कठोपनिषदि**
- एतेषु 'सारथिः' कः उच्यते - **बुद्धिः**
- कठोपनिषद् सम्बद्ध है - **कृष्णयजुर्वेद**
- कठोपनिषद् केन वेदेन सम्बद्धा - **कृष्णयजुर्वेदेन**
- 'कठोपनिषद्' किस वेद से सम्बन्धित है - **कृष्णयजुर्वेदेन**
- कस्मिन् वरे यमस्त्रिणाचिकेतसम् अग्निम् अदात् - **द्वितीयवरे**
- कठोपनिषदि नचिकेता द्वितीयवररूपेण किं लब्धवान् - **अग्निविद्याम्**
- यम-नचिकेता संवाद से सम्बद्ध उपनिषद् है - **कठोपनिषद्**
- नचिकेता और यम के बीच सुप्रसिद्ध संवाद किस उपनिषद् में उल्लिखित है - **कठोपनिषद्**
- यमनचिकेतसोः संवादः कस्यामुपनिषदि वर्तते - **कठोपनिषदि**
- आध्यात्मिक ज्ञान के विषय में नचिकेता और यम के संवाद किस उपनिषद् में प्राप्त होता है - **कठोपनिषद् में**
- कठोपनिषद् में नचिकेता के पिता ने कौन सा यज्ञ किया था - **सर्वमेध यज्ञ**
- कठोपनिषद् में कितने अध्याय हैं - **2**
- कठोपनिषद् के अनुसार आत्मा किस प्रकार से प्राप्तव्य है - **परमेश्वर के अनुग्रह द्वारा**
- कठोपनिषद् के अनुसार बुद्धिमान् व्यक्ति किसका वरण करता है - **श्रेय का**
- कठोपनिषद् में 'सृङ्का' का अर्थ है - **अकुत्सितकर्ममयीगति**
- कठशाखायाः उपनिषदः किं नाम अस्ति - **कठोपनिषद्**
- कठोपनिषद् कस्याः शाखायाः प्रातिनिध्यं करोति - **कठशाखायाः**
- 'नचिकेतोपाख्यानं' कस्मिन्नुपनिषदि प्राप्यते - **कठोपनिषदि**
- नचिकेतसः पिता कस्मै तं प्रादात् - **मृत्यवे**
- कठोपनिषदनुसारं प्राणेन सम्भवति - **अदितिः**
- मन से अधिक गति वाला कौन है - **परमेश्वर**
- कठोपनिषदि नचिकेतसा किं प्राप्तम् - **वरत्रयम्**
- यमेन श्रेयप्रेयविवेचनं कस्याम् उपनिषदि विद्यते - **कठोपनिषदि**
- ''इन्द्रियेभ्यः परा ह्यर्था अर्थेभ्यश्च परं मनः'' इत्यंशो वर्तते - **कठोपनिषदि**
- उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत' इति कस्मिन् उपनिषदि विद्यते -**कठोपनिषदि**
- नचिकेता कस्मात् वरत्रयं लब्धवान् - **यमात्**
- विद्यया कं लोकं प्राप्यते - **देवलोकम्**
- 'न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यः' इत्ययं श्लोकांशः अस्ति - **कठोपनिषदि**
- 'तैत्तिरीय उपनिषद्' का वेद है - **यजुर्वेद**
- ''रसो वै सः। रसं ह्येवायं लब्ध्वानन्दी भवति''

इति वाक्यं कस्यामुपनिषदि अस्ति - **तैत्तिरीयोपनिषदि**

- 'तैत्तिरीयोपनिषद्' कस्मिन् ग्रन्थे प्राप्यते - **तैत्तिरीयारण्यके**
- तैत्तिरीयोपनिषदि केन वेदेन सम्बद्धा - **कृष्णयजुर्वेदेन**
- तैत्तिरीयोपनिषदि कत्यनुवाकाः सन्ति - **द्वादश**
- शिक्षावल्ली प्राप्यते - **तैत्तिरीयोपनिषदि**
- 'मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्यदेवो भव' इत्यादि वाक्य किस उपनिषद् से उद्धृत है - **तैत्तिरीयोपनिषद्**
- 'अथ शीक्षां व्याख्यास्यामः' इति उक्तिः कुतः उद्धृता - **तैत्तिरीयोपनिषदः**
- 'श्वेताश्वतरोपनिषद्' केन वेदेन सम्बद्धा - **कृष्णयजुर्वेदेन**
- दस उपनिषदों के अन्तर्गत किस उपनिषद् की गणना नहीं की गई है - **श्वेताश्वतरोपनिषद्**
- 'नारद-सनत्कुमारसंवाद' आता है - **छान्दोग्योपनिषद्**
- 'उद्दालक-श्वेतकेतु-संवाद' किस उपनिषद् में है - **छान्दोग्य में**
- 'छान्दोग्योपनिषद्' किस वेद से सम्बन्धित है - **सामवेद से**
- 'सत्यकाम-जाबालि कथा' किस उपनिषद् में है - **छान्दोग्य में**
- छान्दोग्योपनिषदः अध्यायानां संख्या - **8**
- श्वेतकेतुकथां छान्दोग्योपनिषदः कस्मिन् अध्याये विद्यते - **षष्ठे**
- सत्यकामस्य जाबालेः कथा छान्दोग्योपनिषदि कस्मिन् अध्याये विद्यते - **चतुर्थे**
- किस ग्रन्थ में सर्वप्रथम देवकी के पुत्र कृष्ण का वर्णन किया गया है - **छान्दोग्य में**
- कौन सा उपनिषद् सामवेद का अंश है - **छान्दोग्योपनिषद्**
- छान्दोग्योपनिषदि कयोः भूतयोः सृष्टिः नोक्ता - **अप्पृथिव्योः**
- आरुणेः शिष्यः आसीत् - **श्वेतकेतुः**
- उपनिषद् ब्राह्मणम् - **छान्दोग्योपनिषद्**
- सामवेद से सम्बद्ध उपनिषद् कौन है - **छान्दोग्योपनिषद्**
- 'तत्त्वमसि' इति महावाक्यं विद्यते - **छान्दोग्योपनिषदि**
- 'तलवकारोपनिषद्' का सम्बन्ध है - **सामवेदेन**
- 'केनोपनिषद्' केन वेदेन सम्बद्धा - **सामवेदेन**
- 'यक्ष और देवता' का संवाद है - **केनोपनिषद् में**
- 'तपो दमः कर्मेति प्रतिष्ठा' अयं विचारः कुत्रोपदिश्यते - **केनोपनिषद्**
- 'प्रतिबोधविदितं मतम् अमृतत्वं हि विन्दते' इति पद्यांशः अस्ति - **छान्दोग्ये**
- 'उमा हेमवती कथा' किस उपनिषद् में वर्णित है - **केनोपनिषद् में**
- जानुश्रुतेरुपाख्यानं कुत्र वर्तते - **छान्दोग्योपनिषदि**

- सामवेदोपनिषद् कौन है **- केनोपनिषद्**
- केनोपनिषद् केन ब्राह्मणग्रन्थेन सम्बद्धा **- तलवकारब्राह्मणेन**
- यक्षरूपधारिणः परब्रह्मणः आख्यायिका उपलभ्यते **- केनोपनिषदि**
- केनोपनिषदः सम्बन्धः अस्ति **- सामवेदस्य तवलकारशाखया**
- 'प्राणाग्निहोत्र-विद्या' किस उपनिषद् में है **- प्रश्नोपनिषद्**
- प्रश्नोपनिषद् **- अथर्ववेदीया**
- मुण्डकोपनिषद् से सम्बन्धित वेद है **- अथर्ववेद**
- ओंकारस्य व्याख्या विशेषरूपेण कस्मिन् उपनिषदि भवति? **- मुण्डकोपनिषदि**
- अथर्ववेदीया उपनिषत् अस्ति **- माण्डूक्योपनिषद्**
- सबसे पहले चार आश्रमों का वर्णन आया है, वह उपनिषद् है **- जाबालोपनिषद्**
- वाजश्रवसः पुत्रस्य नाम अस्ति **- नचिकेता**
- इन्द्र-विरोचनस्य कथा कस्यामुपनिषदि प्राप्यते **- छान्दोग्ये**
- 'भक्ति' शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख कहाँ मिलता है **- उपनिषद् में**

❑❑

5. वेदाङ्ग

- वेदाङ्गानां संख्या भवति **- षड्**
- उपाङ्गानि कति सन्ति– **-चत्वारि (4)**
- शब्दप्रक्रियाशास्त्र का मूल कौन सा वेदाङ्ग है **-व्याकरण**
- 'प्रातिशाख्य' किस वेदाङ्ग से सम्बद्ध है **-शिक्षा से**
- वेदाङ्ग शिक्षा का सम्बन्ध है **-उच्चारणम्**
- वेदपुरुष का शिक्षा है **- घ्राण**
- ऋग्वेदस्य शिक्षा का **- पाणिनीया**
- 'शिक्षाग्रन्थेषु' प्रतिपाद्यते **- उच्चारणधर्मः**
- वेदस्य नासिकात्वेनोपमीयते **- शिक्षा**
- शिक्षाङ्गस्य विषयाः कियन्तः उपदिष्टा **- षट्**
- 'माण्डव्यशिक्षा' सम्बद्ध है **- शुक्लयजुर्वेद**
- 'शिक्षा' वेदाङ्ग का प्रतिपाद्य विषय क्या है **-उच्चारण**
- पाणिनीय-शिक्षायां वर्णानाम् उच्चारणस्थानानि सन्ति **-अष्ट**
- प्रातिशाख्यं नाम **- शिक्षा**
- शिक्षायाम् उद्देश्यम् **-वर्णस्वरादिविधानम्**
- 'बलम्' इत्यनेन किं गृह्यते **-स्थानप्रयत्नौ**
- 'भारद्वाजशिक्षा' केन सम्बद्धा विद्यते **-कृष्णयजुर्वेदेन**

- शिक्षायाः प्रतिपाद्यो विषयः को विद्यते **-उच्चारणविधिः**
- याज्ञवल्क्यशिक्षायां वर्ण्यविषयः कः **-वर्णोच्चारणविधिः**
- शुक्लयजुर्वेदेन सम्बद्धा शिक्षा का अस्ति **-याज्ञवल्क्यशिक्षा**
- शिक्षाग्रन्थेषु कः शिक्षाग्रन्थः यजुर्वेदेन सम्बद्धो नास्ति **-नारदीयशिक्षा**
- कस्य वेदाङ्गस्य प्रतिपादनं वेदपुरुषस्य घ्राणरूपेणास्ति **-शिक्षायाः**
- शिक्षावेदाङ्गे कस्य विषयस्य वर्णनमस्ति **-वर्णानाम्**
- कस्मिन् वेदाङ्गे मुख्यतया उच्चारण–प्रक्रियायाः वर्णनमस्ति **-शिक्षायाम्**
- याज्ञवल्क्यशिक्षा केन वेदेन सम्बद्धा अस्ति **-शुक्लयजुर्वेदेन**
- याज्ञवल्क्यशिक्षानुसारं कति विवृत्तयः **-चतस्त्रः**
- वाजसनेयिसंहिताया सम्बद्धः शिक्षाग्रन्थः कोऽस्ति **-माण्डव्यशिक्षा**
- वासिष्ठीशिक्षा केन वेदेन सम्बद्धा अस्ति **-शुक्लयजुर्वेदेन**
- पाणिनीयशिक्षा केन वेदेन सम्बद्धा अस्ति **-ऋग्वेदेन**
- वर्णस्वराद्युच्चारण प्रकार नहीं है **- कल्पे**
- सामवेदस्य शिक्षा भवति **-गौतमी**
- शिक्षाग्रन्थाः वेदानां निरूपकाः सन्ति **- उच्चारणम्**
- नारदीयशिक्षा सम्बद्धा वर्तते **- सामवेदेन**
- माण्डूकीशिक्षा कस्य वेदस्य **-अथर्ववेदस्य**
- पाणिनीयशिक्षानुसारं लिखितपाठकः कः भवति **-अधमः**
- वृत्तिसमवायार्थः अनुबन्धकरणार्थः इष्टबुध्यर्थश्च केषाम् उपदेशः भवति **-वर्णानाम्**
- मैत्रेयी शिक्षामवाप **- याज्ञवल्क्यात्**
- 'अक्षरं न क्षरति' इति कुत्र उक्तमस्ति **- निरुक्ते**
- प्रथमः भावविकारः कः अस्ति **- जायते**
- 'आचार्यश्चिद् इदं ब्रूयात्' इत्यत्र 'चित्' निपातस्य अर्थः कः **-पूजा**
- औदुम्बरायणाचार्यमते वचनं कीदृशम् **-इन्द्रियनित्यम्**
- 'ऋक्प्रातिशाख्य' किस वेदाङ्ग से सम्बन्धित है **-शिक्षा से**
- शिक्षावेदाङ्गस्य सम्बन्धोऽस्ति **-मन्त्रोच्चारणेन**
- ऋग्वेद का गृह्यसूत्र है **-आश्वलायनगृह्यसूत्रम्**
- 'आश्वलायन-गृह्यसूत्र' किससे सम्बद्ध है **-ऋग्वेदेन**
- गौतमधर्मसूत्र के अनुसार संस्कार होता है **-चत्वारिंशत्**
- दारिल वृत्ति है **-कौशिकगृह्यसूत्रे**
- शुक्लयजुर्वेद का गृह्यसूत्र है **-पारस्करगृह्यसूत्रम्**
- सामवेदीय श्रौतसूत्र है **-लाट्यायनश्रौतसूत्रम्**
- आश्वलायन-गृह्यसूत्र में संस्कार हैं **- एकादश**

- कत्यङ्गुलखातावेदिर्भवति **-त्र्यङ्गुला**
- वेदीनिर्माण की प्रक्रिया यहाँ उपलब्ध है **-शुल्बसूत्र में**
- 'गृह्यसूत्र' किसके भाग हैं **-कल्प के**
- कल्पसूत्र का विषय है **यज्ञ-वेदी-निर्माण**
- श्रौतसूत्रों का वर्ण्य विषय है **वैदिकयज्ञ**
- 'वेदाङ्ग' है **कल्प**
- 'धर्मसूत्रम्' आयाति **कल्पे**
- 'श्रौतसूत्रं' किं वेदाङ्गं विषयीकरोति **कल्पम्**
- कः कल्पसूत्रविषयः **-यागप्रयोगक्रमप्रतिपादनम्**
- कल्पग्रन्थेषु किं गण्यते **-श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र, धर्मसूत्र, शुल्बसूत्र**
- कात्यायनश्रौतसूत्र किससे सम्बद्ध है **-शुक्लयजुर्वेद से**
- कल्प वेदाङ्ग से सम्बद्ध है **-बौधायनशुल्बसूत्र**
- 'पारस्करगृह्यसूत्र' की गणना किस वेदाङ्ग में की जाती है **- कल्प में**
- शुल्बसूत्रकार 'कात्यायन' किस वेद से सम्बद्ध है **-यजुर्वेद से**
- 'गौतमधर्मसूत्र' किस वेद से सम्बद्ध है **- सामवेद से**
- कल्पः वेदस्य **- हस्तौ**
- 'वशिष्ठ-धर्मसूत्र' किस वेद से सम्बद्ध है **- ऋग्वेद से**
- 'अथर्ववेद' का गृह्यसूत्र है **-कौशिकगृह्यसूत्र**
- 'धर्मसूत्र' किस वेदाङ्ग में गिना जाता है **-कल्प में**
- 'कल्प वेदाङ्ग' से सम्बद्ध है **-कात्यायनश्रौतसूत्र**
- 'बौधायनधर्मसूत्र' में प्रश्नों (अध्यायों) की संख्या है **-चार (4)**
- 'तृतीय-शिष्टागमः' का उल्लेख है, वह ग्रन्थ है **-बौधायनधर्मसूत्र**
- 'पारस्करगृह्यसूत्र' जिस वेद का है, वह वेद है **-शुक्लयजुर्वेद**
- शुल्बसूत्रों की जिसमें गणना होती है, वह है **-कल्पः**
- श्रौतसूत्राणां प्रतिपाद्यो विषयः **- वैदिकयागविधानम्**
- प्राचीनतमं धर्मसूत्रम् **- गौतमकृतम्**
- 'गौतमधर्मसूत्रस्य' मूलग्रन्थो वेदः **– सामवेदः**
- 'रेखागणित' मिलता है **-शुल्बसूत्र में**
- शुल्बसूत्राणां प्रतिपाद्यो विषयः **– वेदिनिर्माणम्**
- 'बौधायनश्रौतसूत्रं' कया शाखया सम्बद्धम् **-तैत्तिरीयशाखया**
- 'बौधायनश्रौतसूत्रे' कति प्रश्नाः सन्ति **-त्रिंशत्**
- 'बौधायनश्रौतसूत्रे' द्वितीयप्रश्नस्य प्रतिपाद्यो विषयः कः **- अग्न्याधेयम्**
- 'बौधायनश्रौतसूत्रस्य' अष्टादशे प्रश्ने को यागो वर्ण्यते **- अतिरात्रः**

- 'बौधायनश्रौतसूत्रस्य' त्रिंशत्तमे प्रश्ने किं वर्ण्यते **- प्रवरः**
- 'आपस्तम्बश्रौतसूत्रं' केन वेदेन सह सम्बद्धम् **- कृष्णयजुर्वेदेन**
- कल्पे सूत्रग्रन्थाः कतिविधाः भवन्ति **-चतुर्विधाः**
- श्रौतकर्म कस्मिन् अग्नौ क्रियते **- वैतानिकाग्नौ**
- स्मार्तकर्म कस्मिन् अग्नौ क्रियते **- लौकिकाग्नौ**
- पुष्पसूत्रं कस्मिन् वेदेऽन्तर्भावः भवति **- सामवेदः**
- शुक्लयजुर्वेदस्य श्रौतसूत्राणि कति **- एकम्**
- यजुर्वेदसम्बद्धं श्रौतसूत्रम् **-हिरण्यकेशीयम्**
- अथर्ववेदीयं श्रौतसूत्रं किम् **वैतानम्**
- शुल्बसूत्रे शुल्बशब्दस्यार्थः कोऽस्ति **-परिमाण**
- कात्यायनश्रौतसूत्रस्य प्रथमाध्यायस्य विषयः कः **-परिभाषा**
- षोडशसंस्कारः कस्य विषयः **-गृह्यसूत्रम्**
- धर्मसूत्रेषु कस्य प्राचीनत्वं स्वीकरोति **-गौतमीयम्**
- यजुर्वेदस्य श्रौतसूत्रं किमस्ति - **कात्यायनश्रौतसूत्रम्**
- कृष्णयजुर्वेदस्य कति गृह्यसूत्राणि **- नौ**
- आपस्तम्बश्रौतसूत्रे कति प्रश्नाः सन्ति **-चतुर्विंशति**
- कल्पान्तर्गतो वर्तते **-गृह्यसूत्रम्**
- बौधायनशुल्बसूत्रं केन वेदेन सह सम्बद्धं वर्तते **-यजुर्वेदेन**
- कल्पसूत्रान्तर्गतं न वर्तते **-ब्रह्मसूत्रम्**
- मुख्यतया कर्मकाण्डं कतमद् वेदाङ्गं प्रतिपादयति **- कल्पः**
- 'कल्पसूत्रम्' इति पारिभाषिकी संज्ञा अस्ति **-श्रौत-गृह्य-धर्मशुल्बसूत्राणाम्**
- 'गौतमधर्मसूत्रम्' केन सम्बद्धम् **-सामवेदेन**
- कल्पग्रन्थेषु कः गण्यते **-कात्यायनश्रौतसूत्रम्**
- कौशिकगृह्यसूत्रं केन सम्बद्धम् **-अथर्ववेदेन**
- ऋग्वेदस्य शुल्बसूत्रस्य नाम किम् **- न कोऽपि**
- 'वाधूलशुल्बसूत्रम्' केन वेदेन सम्बद्धमस्ति **-यजुर्वेदेन**
- 'वाधूलश्रौतसूत्रं' केन सम्बद्धं विद्यते **-कृष्णयजुर्वेदेन**
- शुक्लयजुर्वेद का श्रौतसूत्र है **-कात्यायनश्रौतसूत्रम्**
- 'वैतानश्रौतसूत्र' से सम्बन्धित है **-अथर्ववेद से**
- षट् वेदाङ्ग में प्रधान है **-व्याकरणम्**
- व्याकरण को वेद का .... कहते हैं **– मुख**
- वेदाङ्गेषु 'व्याकरणम्' उपमीयते **– मुखेन**
- वेदशरीरे व्याकरणशास्त्रस्य स्थानमस्ति **– मुख**

- ''ऊहः खल्वपि'' इति कस्य प्रयोजनम् अस्ति - **व्याकरणवेदाङ्गस्य**
- पदानां प्रकृतेः प्रत्ययस्य च उपदेशकं वेदाङ्गम् अस्ति - **व्याकरणम्**
- वेदपुरुष का 'मुख' किसे कहते हैं - **व्याकरणम्**
- वेदाङ्गेषु किं शास्त्रं शब्दशास्त्रं कथ्यते - **व्याकरणम्**
- 'वेदाङ्गेषु' कस्य मुख्यत्वम् **-व्याकरणस्य**
- वैदिकवाङ्मये ध्वनिविज्ञानस्य प्राचीनं नाम अस्ति **-शिक्षा**
- निरुक्त का प्रतिपाद्य विषय है – **पञ्चविधम्**
- निरुक्ते एकस्य पदस्य बह्वर्थमादाय किं काण्डं प्रवर्तते **-नैगमम्**
- निघण्टु-शब्देनोच्यते - **वैदिकशब्दकोशः**
- निरुक्तानुसारं द्वितीयो भावविकारः कः - **अस्ति**
- अग्रणीर्भवति इति निरुक्त्या क उच्यते - **अग्निः**
- 'निरुक्त' किसका अङ्ग है **-वेद का**
- परिशिष्टभाग को छोड़कर निरुक्त में कितने अध्याय हैं – **12**
- निरुक्तेऽस्ति - **वैदिकशब्दानां निर्वचनम्**
- निरुक्तशब्दे को धातुरस्ति **-वच्**
- श्रौतस्थानीयं वेदाङ्गं निरूपितमस्ति - **निरुक्तम्**
- वेदपुरुषस्य' श्रोत्रं किमस्ति - **निरुक्तम्**
- यास्कमते पदभेदाः सन्ति - **चत्वारः**
- 'नैगमकाण्डं' कुत्र वर्तते - **निरुक्ते**
- आख्यातस्य लक्षणं कुत्र वर्तते - **निरुक्ते**
- देवतानां स्थानानि वर्णितानि सन्ति **-निरुक्ते**
- वेदाङ्गेषु निरुक्तं भवति **-श्रोत्रम्**
- नैघण्टुकं काण्डं वर्तते - **निघण्टुग्रन्थे**
- अर्थप्रधानं वर्तते - **निरुक्तम्**
- निरुक्तानुसारं पञ्चमो भावविकारः कः - **अपक्षीयते**
- 'समुद्द्रवन्त्यस्मादापः' इत्यनेन को निर्दिश्यते **-समुद्रः**
- यास्कीय–निरुक्तग्रन्थे काण्डानि विद्यते **-त्रीणि**
- निरुक्तग्रन्थे काण्डसंख्या वर्तते **-त्रीणि**
- निरुक्तानुसारं तृतीयो भावविकारः कः - **विपरिणमते**
- 'अक्नोपनः' कः भवति - **अग्निः**
- व्याकरण का कात्स्न्र्य है **-निरुक्तम्**
- निघण्टु में कितने काण्ड हैं **-3 (तीन)**

- ''इन्द्रियनित्यं वचनमौदुम्बरायणः'' का पाठ जिसमें है, वह ग्रन्थ है **- निरुक्त**
- वेदाङ्गेषु किं व्याकरणस्य पूरकं भवति **- निरुक्तम्**
- निरुक्ते 'षड्भावविकाराः' कस्य सिद्धान्तः **- वार्ष्यायणेः**
- निरुक्तकारः 'समुद्र'-पदस्य कतिविधं निर्वचनं करोति **- पञ्चविधम्**
- निरुक्ते कीदृशो विधिः स्वीकृतः **– निर्वचनम्**
- निरुक्तमस्ति– **-निर्वचनविज्ञानम्**
- यास्कानुसारेण 'निरुक्तस्य' मूलग्रन्थः **- निघण्टुः**
- 'निघण्टु'-ग्रन्थे विद्यमानाः काण्डाः **- 3 (तीन)**
- निरुक्ते विषयान् प्रतिपादयति **-यास्कः**
- निघण्टुग्रन्थे कति अध्यायाः सन्ति **-5 (पाँच)**
- निरुक्तस्य वर्ण्यविषयः कः **- निर्वचनम्**
- कौत्सानुसारेण मन्त्राः कीदृशाः **- अनर्थकाः**
- यास्कमते आख्यातलक्षणं किं **- भावप्रधानः**
- यास्कानुसारं 'नाम' कीदृशं भवति **- सत्त्वप्रधानः**
- यास्कमते 'नाम्नः' लक्षणं किम् **- सत्त्वप्रधानः**
- 'विश्वान् नरान् नयति' कस्य निर्वचनम् अस्ति **- वैश्वानरः**
- निरुक्तं कस्य ग्रन्थस्य व्याख्यारूपेणास्ति **- निघण्टोः**
- निघण्टुग्रन्थः कीदृशोऽस्ति **-शब्दसंकलनात्मकः**
- कस्मिन् वेदाङ्गे निर्वचनं प्राप्यते निरुक्ते **- चतुर्दश**
- सामान्यतया निरुक्ताध्यायानां संख्या कति मन्यते **- चतुर्दश**
- यास्करचितस्य निरुक्तस्य आधारग्रन्थः कोऽस्ति **- निघण्टुः**
- निरुक्तानुसारं चत्वारि 'शृङ्गा' इत्यस्य कोऽभिप्रायः **- चत्वारो वेदाः**
- 'निरुक्तं' किमस्ति **- वेदाङ्गम्**
- निरुक्तेऽस्ति **- वैदिकशब्दानां निर्वचनम्**
- 'आचारं ग्राह्यति' कस्य निर्वचनम् **-आचार्यस्य**
- भाव-काल-कारक-संख्याश्च इति चत्वारः अर्थाः भवन्ति **- आख्यातस्य**
- वैदिकशब्दानां सविस्तरं विवेचनं कुत्र उपलभ्यते **- निरुक्ते**
- अर्थावबोधे निरपेक्षतया पदजातं यत्रोक्तं तत् **- निरुक्तम्**
- 'निघण्टु' इति वैदिककोशस्य भाष्यरूपेण अस्ति **- निरुक्तम्**
- 'उनत्तीति' निरुक्त्या अभिधीयते **- उदक्**
- उच्छतीति निरुक्त्या उच्यते **-उषाः**
- यास्कमतेन कति भावविकाराः **-षट्**

- यास्कीय-निरुक्तानुसारम् कस्य पदत्वेन स्वीकारः नास्ति - **प्रत्ययस्य**
- यजुर्यजतेः इति निरुक्तिः केन प्रदत्ता अस्ति - **यास्केन**
- निरुक्तानुसारं चतुर्थो भावविकारः कः -**वर्धते**
- वेदशरीरे निरुक्तशास्त्रस्य स्थानमस्ति - **श्रोत्रवत्**
- दुर्गाचार्य की व्याख्या से सम्बन्धित ग्रन्थ है - **निरुक्त**
- 'समाम्नायः समाम्नातः' जिस ग्रन्थ का पहला वाक्य है, वह है - **निरुक्त**
- 'अध्वरं युनक्ति, अध्वरस्य नेता' इति वाक्यं कुत्र प्राप्यते - **निरुक्ते**
- निघण्टोः शब्दराशेः निर्वचनाय वेदाङ्गोऽस्ति - **निरुक्तम्**
- 'सत्त्वप्रधानम्' इति मन्यते - **नाम**
- ''तदिदं विद्यास्थानं व्याकरणस्य कात्स्न्र्यम्'' इत्यनेन लक्षितम् -**निरुक्तम्**
- यास्कस्य उक्तिः अस्ति - **तदिदं व्याकरणस्य कात्स्न्र्यम्**
- 'यद् दूरङ्गता भवति' इति निरुक्त्या किम् उपलक्ष्यते -**गौः**
- निरुक्तशास्त्रे 'अर्थनित्यः परीक्षेत' इति प्राप्यते - **द्वितीयाध्याये**
- भावप्रधानं भवति - **आख्यातम्**
- निघण्टोः चतुर्थाध्यायः केन नाम्ना ज्ञायते - **नैगमनाम्ना**
- निघण्टोः पञ्चमाध्यायाः केन नाम्ना ज्ञायते - **दैवतनाम्ना**
- 'चित्' इति निपातो वर्तते - **कुत्सार्थे**
- पादपूरणार्थकः निपातः अस्ति - **इत्**
- 'वा' इति निपातो वर्तते - **विचारणार्थे**
- षड्भावविकाराणां चर्चामकरोत् - **वार्ष्यायणिः**
- यास्कः अस्ति - **निरुक्तकारः**
- यास्क का सम्बन्ध है - **निरुक्त से**
- निर्वचनसिद्धान्त-प्रतिपादकं वेदाङ्गं विद्यते - **निरुक्तम्**
- निरुक्तशास्त्रसम्मताः देवताः सन्ति - **तिस्त्रः**
- वेदाङ्ग है - **छन्दस्**
- वेदाङ्ग 'छन्दस्' के प्रणेता हैं - **पिङ्गल**
- किस वेदाङ्ग को पाद कहा गया है - **छन्द को**
- वेदाङ्ग में 'छन्दस्' कहलाता है - **पाद**
- पिङ्गलच्छन्दःसूत्रे वर्ण्यविषयः कः - **छन्दः**
- परम्परानुसारं कः देवः छन्दशास्त्रस्य प्रवर्तको मन्यते - **पिङ्गलः**
- किं शास्त्रं वृत्तशास्त्रं कथ्यते - **छन्दः**
- वैदिकमन्त्रोच्चारणप्रयोजनार्थं कस्य वेदाङ्गस्य अध्ययनम् अनिवार्यम् - **छन्दसः**
- प्रसिद्धानि वैदिकछन्दांसि कति सन्ति - **सप्त**

- गायत्री छन्द का सर्वाधिक प्रयोग किस वेद में हुआ है **- ऋग्वेद में**
- गायत्रीछन्द में अक्षर होते हैं **- 24 (चतुर्विंशतिः)**
- 'अग्निमीळे-----' इति सूक्तस्य छन्दः किम् **-गायत्री**
- अस्यवामीयसूक्तस्य छन्दः किम् **-गायत्री**
- गायत्रीच्छन्दः वर्तते **-प्रथमसूक्तस्य**
- वरुणसूक्ते छन्दः वर्तते **-गायत्री**
- त्रिपादविराड्गायत्री-छन्दसि प्रतिपादं कत्यक्षराणि भवन्ति **- एकादश**
- गायत्री-छन्दसि कति पादाः भवन्ति **- त्रयः पादाः**
- वेदे 'गायत्री' एकम् **-छन्दः**
- गायत्री कस्याभिधानम् **- छन्दसः**
- उष्णिक्वृत्ते कति वर्णाः भवन्ति **- 28**
- अनुष्टुप्-छन्दसि प्रतिपादं कत्यक्षराणि **– अष्ट**
- अनुष्टुप्-छन्दसि कति पादाः भवन्ति **– चत्वारः**
- कौन सा वेदाङ्ग पद्य रचना से जुड़ा हैं **- छन्द**
- अनुष्टुप् छन्द में अक्षरों की संख्या कितनी है **- 32**
- द्वात्रिंशत् अक्षराणि भवन्ति **-अनुष्टुप्-छन्दसि**
- बृहती छन्दसः अक्षरसंख्या **- 36**
- त्रिष्टुप्-छन्दसि कियन्तो वर्णाः भवन्ति **-44**
- वैदिकछन्दः **-त्रिष्टुप्**
- इन्द्रसूक्ते प्रयुक्तं छन्दो वर्तते **-त्रिष्टुप्**
- विष्णु (1.154) सूक्ते किं छन्दः प्रयुक्तः **– त्रिष्टुप्**
- हिरण्यगर्भ-सूक्तस्य किं छन्दः **- त्रिष्टुप्**
- सरमा-पणि-सूक्तस्य छन्दो वर्तते **- त्रिष्टुप्**
- जगती-छन्दसि प्रतिपादं कति अक्षराणि भवन्ति **- द्वादश**
- जगती-वृत्ते कति वर्णाः भवन्ति **-48**
- अतिजगती-वृत्ते कति वर्णाः भवन्ति **- 52**
- वैदिकछन्दसि कस्मिन्नपि पादे एकाक्षरन्यूनता अधिकतां कथयति **- निचृत्/भुरिक्**
- निपातस्य लक्षणमस्ति **-उच्चावचेष्वर्थेषु**
- 'इन्द्रियनित्यम्' वचनमस्ति **– औदुम्बरायणस्य**
- यज्ञयागादिविधानानि प्राप्यन्ते वेदाङ्गे **–कल्पे**
- वेद का नेत्र है **- ज्योतिषम्**
- किस वेदाङ्ग को 'चक्षु' कहा जाता है **- ज्योतिषम्**

- वेदाङ्गेषु ज्योतिषमुपमीयते **-चक्षुषा**
- यज्ञकालनिर्णयार्थं कस्य वेदाङ्गस्य उपयोगः **-ज्योतिषस्य**
- वेद का 'चक्षु' कहा जाने वाला वेदाङ्ग कौन है **- ज्योतिष**
- कालविधानशास्त्रं किं कथ्यते **- ज्योतिषम्**
- ज्योतिषशास्त्रस्य स्कन्धाः सन्ति **- त्रयः**
- चन्द्रस्योच्चराशिः अस्ति **- वृषः**
- अष्टोत्तरीदशायां वर्षसंख्या भवति **-108**
- मुहूर्तचिन्तामणेः कर्ताऽस्ति **- रामदैवज्ञः**
- चन्द्रग्रहणं कदा भवति **-पूर्णिमायां शराभावे (पूर्णिमायां प्रतिपत्सन्धौ)**
- सौरवर्षे दिनानि भवन्ति **-365**
- गणेशः कस्य तिथेः स्वामी भवति **– चतुर्थ्याः**
- नक्षत्राणि कति स्वीकृतानि **- सप्तविंशतिः (27)**
- बुधस्योच्चराशिरस्ति **-कन्या**
- नियतसमये संस्कारो भवति **-नामकरणम्**
- महायुगानां सौरवर्षात्मकं कियन्मितम् **- 432000**
- दिव्यमहोरात्रम्भवति **-सौरवर्षात्मकम्**
- सूर्यस्य उच्चराशिः अस्ति **-मेषः**
- विंशोत्तरी-दशायां वर्षाणि भवन्ति **- 120**
- गुरुः पश्यति **-पञ्चमं नवमञ्च स्थानम्**
- दिनरात्रिमाने समाने भवति **-विषुवद्दिने**
- कस्य कक्षा ग्रहेषु सर्वोपरि वर्तते **- शनैश्चरस्य**
- बुधोऽस्य स्वामी वर्तते **-मिथुनस्य**
- रविदशावर्षाणि **-6**
- अस्य कोऽपि ग्रहः शत्रुर्न भवति **-चन्द्रस्य**
- विवाहमुहूर्ते कतिविधाः दोषाः भवन्ति **– 10**
- दिनमानं वर्धते **-उत्तरायणे**
- कस्य कक्षा भूमेः निकटमस्ति **–चन्द्रस्य**
- सूर्यग्रहणं भवति **- अमायां शराभावे**
- सूर्यस्य संक्रमणे उत्तरगोलः भवति **- मेषे**
- पापग्रहः अस्ति **- रविः**
- अधिमासो भवति **- असंक्रान्तिमासः**
- एकस्मिन् कल्पे महायुगानि भवन्ति **– 1000**
- भूभ्रमणसिद्धान्त अनेन प्रतिपादितः **- आर्यभट्टेन**

- मलमासः भवति प्रति **-तृतीयवर्षे**
- जन्मकुण्डल्यां निरीक्ष्यते विवाहविषयः केन भावेन **-सप्तमेन**
- क्षयमासो भवति **- द्विसंक्रान्तिमासः**
- भूमेः दूरतमा कक्षा वर्तते अस्य **- शनैश्चरस्य**
- राशियों की संख्या होती है **- द्वादश (12)**

❑❑

6. वेदों का रचनाकाल

- नित्याः खलु वेदा इति केषाम् अभिमतम् **- प्राचीनभारतीयपरम्परायाः**
- वेदस्य अपौरुषेयत्वं कः स्वीकरोति **– जैमिनिः**
- वेदकालविषये भारतीयपरम्परागतविचारं कः परिपोषयति **- सायणः**
- किस विद्वान् के अनुसार ऋग्वेद का आरम्भकाल 6000 ई० पू० है **-बालगङ्गाधरतिलक**
- 'उत्तर ध्रुव' को वेदों का रचना स्थान माना जाता है **- बालगङ्गाधर तिलक**
- वेदकालस्य निर्धारणे भारतीयज्योतिषपरम्परा केन परिपालिता **- बालगङ्गाधरतिलकः**
- ज्योतिर्विज्ञानमाश्रित्य कः वेदानां कालनिर्धारणमकरोत् **- बालगङ्गाधरतिलकः**
- नक्षत्रसम्पातादिना वेदकालं कः प्रतिपादयति **- बालगङ्गाधरतिलकः**
- लोकमान्यबालगङ्गाधरतिलकमते वैदिकरचनाकालः कः **- 6000 – 4500 BC**
- लोकमान्यतिलकमते वेदस्य कालः **- पञ्चसहस्त्रवर्षेभ्यः पूर्वम्**
- 'वेदा अपौरुषेयाः सन्ति'-इति मतम् अस्ति **-दयानन्दस्य**
- छन्दः कालादिनामभिः वेदकालं प्रथमतः कः प्रतिपादयति **– मैक्समूलरः**
- मैक्समूलर के अनुसार वेद का समय है **- 1200 वि० पू०**
- मैक्समूलरमतानुसारं वेदस्य मन्त्र रचना कदा अभवत् **- 1000 ई० पू०**
- प्रथमः वेदकालनिर्णायकोऽस्ति **- मैक्समूलरः**
- सूत्रसाहित्यस्य रचनाकालः पी० वी० काणे-मतानुसारम् **- ई० पू० 500 तः 300 पर्यन्तम्**
- विन्टरनित्स के अनुसार ऋग्वेद का समय है **- 2500 BC**
- वेदस्य अपौरुषेयत्वं कः न स्वीकरोति **–विन्टरनित्सः**
- वेबरमहाभागः यजुर्वेदीयानां शतपथब्राह्मणग्रन्थानाम् आलोचनात्मकं संस्करणं कदा अप्रकाशयत् **- 1855 ई०**
- दीनानाथ चुलेटमहोदयानुसारं वेदस्य रचना कदा अभवत् **- 3 लक्षवर्षपूर्वम्**

❑❑

7. वैदिक-व्याकरण

- वेदस्य मुख्याः स्वराः **- 3**
- संख्यया स्वराङ्कनं भवति **- सामवेदे**
- माध्यन्दिनीय-संहितायामुदात्तस्वरस्य अङ्कनं भवति **- किमपि न**
- मन्त्रेषु अनुदात्तस्वराङ्कनं क्रियते **- अधः**
- स्वरितात् परो अनुदात्तः किम् उच्यते **- प्रचयः**
- उदात्तादिस्वराः कति भवन्ति **- त्रयः**
- स्वराः इत्यनेन के गृह्यन्ते **- उदात्तादयः**
- वैदिकमन्त्रस्य उच्चारणे स्वराणां मुख्यभेदः **-3 तीन**
- ऋक्प्रातिशाख्यानुसारेण स्वराणां .... सन्ति **- त्रिविधभेदाः**
- स्वरित के कितने भेद होते हैं **- अष्टौ**
- समाहारो भवति **- स्वरितः**
- ऋग्वेदीय-प्रातिशाख्यानुसारेण रक्तसंज्ञः कः **- अनुनासिकः**
- ''यज्ञस्य देवम्'' इत्यत्र 'देवम्' पदस्य स्वरोऽस्ति **- देवम्**
- ऋग्वेद में व्ळ् उपलब्ध होता है **- दो स्वरों के मध्य में**
- ''तिस्रः प्लुत उच्यते स्वरः'' इति कथनं वर्त्तते **- ऋक्प्रातिशाख्ये**
- ऋग्वेदे प्रमुखप्रयुक्तस्वरसंख्याः कियत्यः **- 3**
- वेदाध्ययने विकृतिपाठः कतिधा विद्यते **- 8**
- कौन सा लकार केवल वेदों में पाया जाता है **- लेट् लकार**
- लेट् लकारः कुत्र प्राप्यते **- वेदे**
- 'गमत्' किस लकार से सम्बद्ध है **- लेट् लकार**
- 'तारिषत्' पद किस लकार से सम्बद्ध है **- लेट् लकार**
- को लकारः छन्दसि (वेदे) प्रसिद्धः **- लेट् लकार**
- लुङ्-लङ्-लिट्लकाराणां बह्वर्थकः प्रयोगो दृश्यते **- वैदिकसंस्कृते**
- लेट्लकार प्रयुक्त हुआ है **- वैदिक संस्कृत में**
- प्रायः वेदेषु एव लभ्यते **- लेट्लकारः**
- 'पाहि' इति पदं कस्मिन् लकारे विद्यते **- लोट्लकारे**
- प्लुतसंज्ञा भवति **- स्वरस्य**
- आमन्त्रितज ओकारो भवति **- प्रगृह्यः**
- अस्ति बाह्यप्रयत्नः **- नादः**
- कौन सा प्रत्यय केवल वेदों में प्रयुक्त है **- अध्यै**
- 'जीवसे' मे प्रत्यय है **- असे**

- ➤ तुमर्थक प्रत्ययों का प्रचुर प्रयोग हुआ है **- वेदों में**
- ➤ प्लुतमात्रोच्चारणकालः **-मात्रा तीन**
- ➤ व्यञ्जनोच्चारणकालः **-अर्ध मात्रा**
- ➤ ह्रस्वोच्चारणकालः **-एक मात्रा**
- ➤ दीर्घमात्रोच्चारणकालः **-दो मात्रा**
- ➤ ऋग्वेद में 'देवासः' रूप किस विभक्ति का है **- प्रथमा विभक्ति बहुवचन**
- ➤ 'दाशुषे' में विभक्ति है **- चतुर्थी**
- ➤ वैदिकव्याकरणे कियन्तः अध्यायाः सन्ति **- 8 (आठ)**
- ➤ ऋग्वेदस्य शाकलसंहितायां कति सन्ध्यक्षराणि स्वीकृतानि **- चत्वारि**
- ➤ समानाक्षराणि कियन्ति **- अष्टौ**
- ➤ प्रसिद्ध व्याकरण संख्या है **- 9 (नव)**
- ➤ तैत्तिरीयप्रातिशाख्यानुसारं कति सन्धयो भवन्ति **- षट्**
- ➤. तैत्तिरीयप्रातिशाख्यानुसारं कति स्वराः भवन्ति **- षोडश**
- ➤ तैत्तिरीयप्रातिशाख्यानुसारं कति ऊष्माणो भवन्ति **-षट्**
- ➤ ऋक्प्रातिशाख्यानुसारम् अघोषवर्णः कः **– श**
- ➤ ऋक्प्रातिशाख्यानुसारं सोष्मवर्णः कः **- ख**
- ➤ ऋक्प्रातिशाख्यानुसारम् अघोषवर्णः कः **- त**
- ➤ अष्टविकृतपाठेषु कः पाठः सर्वाधिककठिनः विलक्षणश्चास्ति **- घनः**
- ➤ घनपाठे प्रथमपदस्य कतिवारमावृत्तिर्भवति **- पञ्चवारम्**
- ➤ वेदानां रक्षार्थं कति विकृतिपाठाः मन्यन्ते **- अष्ट**
- ➤ संहिताध्ययनानन्तरं कः पाठः विधीयते **- पदपाठः**
- ➤ 'निर्भुज संहितापाठ' है **- आर्षपाठ**
- ➤ पदपाठ इत्यस्य परमप्रयोजनम् अस्ति **- वेदपाठरक्षणम्**
- ➤ अर्थ समझते हुये वैदिक मन्त्रों के सस्वर पाठ को कहा जाता है **- पारायण विधि**
- ➤ कः पाठः अष्टविधः **- विकृतिपाठः**
- ➤ 'साम' इति शब्देन किं गृह्यते **- साम्यम्**
- ➤ शुक्लयजुःप्रातिशाख्यस्य कस्मिन् अध्याये संज्ञापरिभाषयोः वर्णनम् अस्ति **- प्रथमे**
- ➤ "शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम्"
  इति कस्यां शिक्षायां विलसति **- पाणिनीयशिक्षा**
- ➤ "स वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति यथेन्द्रशत्रुः स्वरतोऽपराधात्"
  इत्यंशः कुत्रास्ति **-पाणिनीयशिक्षा**
- ➤ 'पत्सुतः शी' पदस्य अभिप्रेतार्थः **—वृत्रः**
- ➤ 'तत्त्वा यामि' मन्त्रे 'यामि' पदस्य आशयः **— याचे**

❑❑

8. वैदिक-सूक्तियाँ

- 'स्वाध्यायोऽध्येतव्यः' इति वचनं कस्य **-श्रुतेः**
- 'अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्
  होतारं रत्नधातमम्।।' इति मन्त्रः कस्य वेदस्य प्रथमो मन्त्रोऽस्ति। **- ऋग्वेदस्य**
- ''ओ३म् क्रतो स्मर'' इति प्राप्यते **-यजुर्वेदे**
- ''द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया'' प्राप्यते **- ऋग्वेदे**
- 'स नः पितेव सूनवे' किस सूक्त से सम्बद्ध है **- अग्निसूक्तेन**
- तिस्रोदेव्यः इति कस्यां संहितायां प्राप्यते **- ऋग्वेदस्य**
- ''विद्ययामृतमश्नुते'' इति वाक्यांशः वाजसनेयि–संहितायाः
  कस्मिन्नध्याये अस्ति **- चत्वारिंशे**
- ''वसोः पवित्रमसि शतधारम्'' इति मन्त्रः शुक्ल–
  कस्मिन्नध्याये प्राप्यते **- प्रथमे**
- ''अहं ब्रह्मास्मि'' कस्मिन् वेदान्तर्गतो भवति **-यजुर्वेदे**
- ''असुर्या नाम ते लोकाः'' इत्युक्तिः कस्य वेदस्य **-यजुर्वेदस्य**
- ''कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः''-इति सूक्तिः केन वेदेन सम्बद्धा **- यजुवेर्देन**
- ''तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः'' कहाँ की पंक्ति है **- यजुर्वेद की**
- ''आनन्दं ब्रह्मणो विद्वान् न बिभेति कुतश्चन'' वर्तते **- तैत्तिरीये**
- 'विश्वं भवत्येकनीडम्' इति पद्यांशः कस्मिन् ग्रन्थे प्राप्यते **- वेदे**
- 'स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम्' इति वचनं कस्यामुपनिषदि विराजते **- तैत्तिरीयोपनिषदि**
- 'स्वाध्यायान्मा प्रमदः' वर्तते **- तैत्तिरीयोपनिषदि**
- ''आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे'' इति मन्त्रः अस्ति **- वाजसनेयसंहितायाः**
- ''विद्ययाऽमृतमश्नुते'' यह सूक्ति प्राप्त होती है **- शुक्लयजुर्वेदे**
- ''मा गृधः कस्यस्विद्धनम्'' यह सूक्ति मिलती है **- शुक्लयजुर्वेदे**
- 'योऽसावादित्ये पुरुषः सोऽसावहम्' – इति वाक्यं कुत्र वर्तते **- यजुर्वेदे**
- 'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः' यह उक्ति कहाँ प्राप्त होती है **- अथर्ववेदस्य पृथिवीसूक्ते**
- 'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः' इति कस्य वचनम् अस्ति **- अथर्ववेदस्य**
- ''ऋचः सामानि छन्दांसि पुराणं यजुषा सह'' इति कुतः उद्धृतः **- अथर्ववेदात्**
- ''सा नो भूमिर्विसृजतां माता पुत्राय मे पयः'' मन्त्रांशोऽयं कुत्रास्ति **- अथर्ववेदे**
- 'कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूः' कुत्र इयम् उक्तिः **- ईशावास्योपनिषदि**
- ''तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाह्यतः'' कुत्र इयम् उक्तिः **- ईशावास्योपनिषदि**

- ''विद्ययाऽमृतमश्नुते'' वाक्य किससे सम्बद्ध है **- ईशावास्योपनिषदि**
- 'विद्ययाऽमृतमश्नुते' किस उपनिषद् में है **- ईशावास्योपनिषदि**
- 'खं ब्रह्म' एतद् वाक्यं कस्याम् उपनिषदि प्राप्यते **- बृहदारण्यकोपनिषदि**
- ''तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः'' यह पंक्ति किस उपनिषद् में मिलती है **-ईशावास्योपनिषद् में**
- ''मा गृधः कस्यस्विद्धनम्'' यह वाक्य है **- ईशावास्योपनिषद्**
- ''अन्धं तमः प्रविशन्ति'' इति वचनं कस्यामुपनिषदि वर्तते **- ईशोपनिषदि**
- 'योऽसावसौ पुरुषः सोऽहमस्मि' - इत्यस्य कुत्रोपदेशः **- ईशोपनिषदि**
- ''कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः''–किस उपनिषद् से है**- ईशावास्योपनिषद्**
- 'न कर्म लिप्यते नरे' यह वेदवाक्य कहाँ उल्लिखित है **- ईशावास्योपनिषदि**
- ''तमसो मा ज्योतिर्गमय'' इति कुत्र विद्यते **- बृहदारण्यके**
- ''उत्तब्धं वागेव गीथोच्च गीथा चेति स उद्गीथः'' कुत्रेयमुक्तिः **- बृहदारण्यकोपनिषदि**
- ''पूर्णमदः पूर्णमिदम्'' पाया जाता है **- बृहदारण्यकोपनिषद् में**
- ''अहं ब्रह्मास्मि'' इति कुत्र उक्तम् **- बृहदारण्यकोपनिषदि**
- ''विज्ञानमानन्दं ब्रह्म'' इति वाक्यं वर्तते **- बृहदारण्यकोपनिषदि**
- 'आत्मैवेदमग्र आसीत् पुरुषविधः'' इति कुत्रोक्तम् **- बृहदारण्यकोपनिषदि**
- 'अमृतं च स्थितं च यच्च सच्च त्यच्च' कुत्र इयम् उक्तिः **- बृहदारण्यकोपनिषदि**
- ''आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः'' इति कस्य वचनम् **- बृहदारण्यकोपनिषदः**
- 'आत्मनस्तु कामाय सर्वं प्रियं भवति' इति समुक्तम् **- बृहदारण्यकोपनिषदि**
- 'वाचं धेनुमुपासीत' इति कुत्र उपदिश्यते **- बृहदारण्यकोपनिषदि**
- 'असतो मा सद्गमय' यह उक्ति किस उपनिषद् में है **- बृहदारण्यकोपनिषदि**
- ''असद् वा इदमग्र आसीत्'' अयं विचारः कुत्र निर्दिष्टः **- तैत्तिरीय**
- 'युवा स्यात् साधु युवा' इति कुत्र उपदिश्यते **- तैत्तिरीयोपनिषदि**
- ''श्रुतं मे गोपाय'' के उल्लेख वाला ग्रन्थ है **- तैत्तिरीयोपनिषद्**
- ''यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते'' इति कुत्र उक्तम् **- तैत्तिरीयोपनिषदि**
- 'सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म' यह उद्धरण कहाँ पर है **- तैत्तिरीयोपनिषदि**
- 'यतो वाचो निवर्तन्ते' इति कस्य वाक्यम् **- तैत्तिरीयोपनिषद्**
- 'अन्नाद् भूतानि जायन्ते जातान्यन्नेन वर्धन्ते' इयमुक्तिः कुत्रास्ति **- तैत्तिरीयोपनिषद्**
- ''उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान् निबोधत'' इति कुत्र उपदिश्यते **- कठोपनिषदि**
- 'मानी पुनः पुनर्वशमापद्यते मे' कुत्र इयम् उक्तिः **- कठोपनिषदि**
- ''येयं प्रेते विचिकित्सा मनुष्येऽस्तीत्येके नायमस्तीति चैके''

यह किसका कथन है - **नचिकेता का**

- "श्रेयश्च प्रेयश्च मनुष्यमेतः" यह उक्ति कहाँ प्राप्त होती है - **कठोपनिषद् में**
- 'योगो हि प्रभवाप्ययौ' कुत्र इयम् उक्तिः -**कठोपनिषदि**
- "सस्यमिव मर्त्यः पच्यते सस्यमिवाजायते पुनः" इति केनोक्तम् - **नचिकेतसा**
- "इन्द्रियेभ्यः परा ह्यर्था अर्थेभ्यश्च परं मनः" इति कुत्रत्या उक्तिरियम्- **कठोपनिषद्**
- "आत्मानं रथिनं विद्धि" उपलब्ध है -**कठोपनिषद् में**
- 'स्वर्गे लोके न भयं किञ्चिनास्ति, न तत्र त्वं न जरया बिभेति' किस उपनिषद् से सम्बद्ध है - **कठोपनिषद् से**
- "मृत्यवे त्वा ददामीति" किसने कहा -**उद्दालक ने**
- "ॐ सह नाववतु सह नौ भुनक्तु सह वीर्यं करवावहै तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।" यह शान्तिपाठ किस उपनिषद् में प्राप्त होता है -**कठोपनिषद् में**
- 'अङ्गुष्ठमात्रः पुरुषोऽन्तरात्मा' इयमुक्तिः कुत्रास्ति - **कठोपनिषदि**
- "न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यः" उद्धृतोऽस्ति - **कठोपनिषदि**
- "अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणः" इयमुक्तिः कुत्रास्ति - **कठोपनिषदि**
- "सर्वं खल्विदं ब्रह्म" यह महावाक्य किस ग्रन्थ में है - **छान्दोग्योपनिषद् में**
- "तरति शोकमात्मवित्" इति उक्तम् - **छान्दोग्योपनिषदि**
- 'तत्त्वमसि' इति महावाक्यं कस्यां उपनिषदि प्राप्यते - **छान्दोग्योपनिषदि**
- "प्रज्ञा प्रतिष्ठा प्रज्ञानं ब्रह्म" वाला उपनिषद् है - **छान्दोग्योपनिषद्**
- "ऋग्वेदं भगवोऽध्येमि" इति वाक्यमस्ति - **छान्दोग्योपनिषदि**
- "विद्यया विन्दतेऽमृतम्" इति कुत्रोपदिष्टम् - **केनोपनिषदि**
- 'अतिमुच्य धीराः प्रेत्यास्माल्लोकादमृता भवन्ति' कुत्र इयम् उक्तिः - **केनोपनिषदि**
- 'यन्मनसा न मनुते येनाहुर्मनो मतम्' कुत्र इयम् उक्तिः - **केनोपनिषदि**
- 'आत्मना विन्दते वीर्यम्' अयं विचारः कुत्रोपदिश्यते - **केनोपनिषदि**
- 'आदित्यो ह वै प्राणोरयिरेव चन्द्रमाः' से सम्बन्धित ग्रन्थ है - **केनोपनिषदि**
- 'सत्यमेव जयते' शब्द कहाँ से लिया गया है - **मुण्डकोपनिषद् से**
- "भिद्यते हृदयग्रन्थिः" कुत्रास्ति - **मुण्डकोपनिषद्**
- "द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया" कस्याम् उपनिषदि प्राप्यते - **मुण्डकोपनिषदि**
- "क्षीयन्ते चास्य कर्माणि" इति कस्य वाक्यम् - **मुण्डकोपनिषद्**
- रिक्तस्थान की पूर्ति के लिए सबसे उपयुक्त अंश कौन है स्वस्ति नो............ - **बृहस्पतिर्दधातु**

- ''ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू'...... कृतः'' इत्यत्र वर्णव्यवस्थामधिकृत्य रिक्तस्थानं प्रपूरयत **- राजन्यः**
- ''तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्'' इति कस्य सूक्तस्य ऋचांशोऽस्ति **- पुरुषसूक्तस्य**
- पुरुषसूक्तेन सम्बद्धा उक्तिः अस्ति– 'स भूमिं विश्वतो वृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्' **- मुण्डकोपनिषद्**
- 'कामस्तदग्रे' इति कस्य सूक्तस्य मन्त्रांशोऽस्ति **- नासदीयः**
- 'य आत्मदा बलदा' ये सम्बन्धित सूक्त है **- हिरण्यगर्भसूक्त**
- ''अहं राष्ट्री संगमनी वसूनाम्'' मन्त्रोऽयं कस्मिन्–सूक्ते वर्तते **- वाक्सूक्ते**
- ''यत्र गावो भूरिशृङ्गा अयासः'' यह किस मन्त्र का है **- विष्णुसूक्त का**
- ''यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं'' इत्यनेन मन्त्रांशेन सम्बद्धं सूक्तम् अस्ति**- शिवसङ्कल्पसूक्तम्**
- ''हृतप्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठम्'' इति श्लोकांशः सूचकः अस्ति **- मनसः**
- ''ब्रह्मा सर्वविद्यः सर्वं वेदितुमर्हति'' का जहाँ उल्लेख है, वह ग्रन्थ है **- निरुक्त**
- 'अनर्थकाः हि मन्त्राः' इति कस्य वचनम् **– कौत्सस्य**
- ''अर्थावबोधे निरपेक्षतया पदजातं यत्र उक्तं तन्निरुक्तम्'' इति कस्य उक्तिः**- सायणाचार्यस्य**
- 'मुखं व्याकरणं स्मृतम्' इति कस्य वचनम् **-पाणिनेः**
- ''अङ्गानि वेदाश्चत्वारो मीमांसा न्यायविस्तरः। पुराणधर्मशास्त्रञ्च विद्या ह्येताश्चतुर्दश'' इति कस्य वचनमस्ति **- हारीतस्य**
- ''उपजीव्यस्य यजुर्वेदस्य प्रथमतो व्याख्यानं युक्तम्'' इति कः कथितवान् **- सायणः**
- 'कपिष्ठलो' इति कुत्र प्राप्यते **-अष्टाध्याय्याम्**
- ''साक्षात्कृतधर्माण ऋषयो बभूवुः'' इति केन उक्तमस्ति **- यास्केन**
- ''रक्षोहागमलघ्वसन्देहाः प्रयोजनम्'' वचनमिदं कस्योक्तिः **- पतञ्जलिः**
- 'शेषे ब्राह्मणशब्दः' कस्य वचनम् **- जैमिनिः**
- 'सर्वः शेषो व्यञ्जनान्येव' इति कुतः उद्धृतम् **- ऋक्प्रातिशाख्यतः**
- 'संविदाना दिवा कवे श्रियां मा धेहि भूत्याम्' मन्त्रांशोऽयं वर्तते **- पृथिवीसूक्ते**
- ''सर्वज्ञानमयो हि सः'' यह उक्ति कहाँ प्राप्त होती है **– मनुस्मृति में**
- ''येनाहं नामृता स्यां किमहं तेन कुर्याम्'' कया इदम् उच्यते **- मैत्रेय्या**
- ''वृषायमाणोऽवृणीत सोमम्'' से सम्बन्धित सूक्त है **- इन्द्र**
- ''न वा अरे जायायै कामाय जाया प्रिया भवति, आत्मनस्तु कामाय जाया प्रिया भवति'' कस्य इयम् उक्तिः **- याज्ञवल्क्यस्य**
- ''केवलाघो भवति केवलादी'' से सम्बन्धित ग्रन्थ है **- ऋग्वेद**
- ''मन एव त्वच्छ्रेयो मनसो वै त्वं ....'' इति उक्तम् **- प्रजापतिना**

- ''इतिहासपुराणं पञ्चमं वेदानां वेदम्'' एतया पंक्त्या सम्बद्धा उपनिषद् **- छान्दोग्योपनिषद्**
- 'इन्द्रेषिते प्रसवं भिक्षमाणे अच्छा समुद्रं रथ्येव याथः'' से सम्बन्धित सूक्त है **- विश्वामित्रनदीसंवाद**
- ''कस्य नूनं कतमस्यामृतानाम्'' जिस सूक्त में पठित है, वह है **- सूर्यसूक्त**
- किं सत्यमस्ति पिङ्गलः **- छन्दशास्त्रकारः**
- ''आत्रायं पुरुषः स्वयं ज्योतिरिति'' वाक्य है **- बृहदारण्यकोपनिषद् में**
- ''महान् प्रभुर्वै पुरुषः'' का जिसमें पाठ है, वह ग्रन्थ है **- श्वेताश्वतरोपनिषद्**
- 'तमीश्वराणां परमं महेश्वरं तं देवातानां परमं च दैवतम्'' इत्यादि मन्त्र किस उपनिषद् से उद्धृत है **- श्वेताश्वतरोपनिषद्**
- 'भक्तिलक्ष्मीसमृद्धानां किमन्यदुपयाचितम्' यह उक्ति किसकी है **- उत्पलाचार्यस्य**
- 'कस्मिन्नु भगवो विज्ञाते सर्वमिदं विज्ञातं भवति' इति प्रश्नः केन पृष्टः **- शौनकेन**
- ''भगवन् कुतो ह वा इमाः प्रजाः प्रजायन्त''–इत्यस्य प्रश्नस्य कर्ता कः **- कबन्धी**

❑❑

9. वैदिक-देवता

- निरुक्तानुसारं मुख्यतः कति देवताः **- तिस्रः**
- देवतानाम् आकारः कतिविधः **- त्रिविधः**
- यास्क ने देवताओं को कितने भागों में बाँटा है **- तीन**
- यास्कमतानुसारं प्रकारदृष्ट्या कति देवताः **- त्रिस्रः**
- निरुक्तमते देवतानां स्थानं न विद्यते **- स्वर्गः**
- ऋग्वेद में देवताओं की संख्या है **- 33**
- ऋचाओं के द्वारा आह्वान किया जाता है **- देवों का**
- अन्तरिक्षस्थानीय देवता है **– इन्द्र**
- वृत्र का नाश किस देवता ने किया **-इन्द्र ने**
- वृत्रहन्ता कौन है **-इन्द्र**
- इन्द्र का कार्य है **- वर्षा**
- 'मरुत्वान्' यह विशेषण किसका है **– इन्द्र का**
- देवता इन्द्रोऽस्ति **- अन्तरिक्षस्थानीया**
- 'यो अश्मनोरन्तरग्निं जजान' अनेन मन्त्रभागेन कः परामृश्यते **- इन्द्रः**
- 'रसानुप्रदानः वृत्रवधः' इत्यस्ति **- इन्द्रकर्म**
- 'दस्योर्हन्ता' को देवः **- इन्द्रः**

- ऋग्वेद में सर्वाधिक सूक्त किस देवता के हैं **-इन्द्र**
- ऋग्वेदे प्रधानतया स्तुतो देवः **-इन्द्र**
- ''यः सोमपा निचितो'' में 'यः' पद किसके लिए आया है **- इन्द्र के लिये**
- 'मघवा' विशेषण किस देवता के लिए है **- इन्द्र**
- 'यस्मान्न ऋते विजयन्ते' में 'यस्मात्' का क्या अभिप्राय है **-इन्द्र**
- 'यः सूर्यं य उषसं जजान' इसमें किस देव की स्तुति की गयी है **-इन्द्र**
- 'द्यावाचिदस्मै पृथिवी नमेते'–यहाँ 'अस्मै' पद किसको व्यक्त करता है **- इन्द्र**
- इन्द्र को ऋग्वेद में किस नाम से पुकारा गया है **- पुरन्दर**
- 'वज्रबाहु' के रूप में कौन देवता प्रसिद्ध है **- इन्द्र**
- वृत्रासुर का वध करने वाले देवता थे **-इन्द्र**
- ऋग्वेद में कौन देवता चमत्कार युक्त कार्यों का सम्पादन करते हैं **-इन्द्र**
- सोमपा किस देवता की उपाधि है **-इन्द्रः**
- अग्निहोत्रे अग्निना सह देवता का विद्यते **-प्रजापतिः**
- 'शतक्रतुः' विशेषणोपेतः कः अस्ति **-इन्द्रः**
- वैदिकसंहितासु सर्वाधिकपराक्रमी देवः वर्णितः **-इन्द्रः**
- पापाचारिणो दस्योर्नाशकः वैदिकः देवः **- इन्द्रः**
- 'वज्रहस्तः' इति विशेषणं कस्य देवस्य **-इन्द्रस्य**
- इन्द्र का प्रधान अस्त्र है **- वज्र**
- इन्द्र के साथ स्तुत्य देवता कौन हैं **- सोम**
- ऋग्वेद संहिता में मन्त्रों का एक चौथाई भाग किस देवता को समर्पित है **- इन्द्र को**
- 'हिरण्यबाहुः' इसका क्या अर्थ है **- इन्द्रः**
- 'शचीपति' किसका नाम है **- इन्द्र का**
- ऋग्वेद के प्रथममण्डल के प्रथमसूक्त में 'पुरोहित' विशेषण किस देवता से सम्बद्ध है **- अग्नि से**
- ऋग्वेद के प्रथममण्डल के प्रथमसूक्त का देवता है **- अग्नि**

  ऋग्वेद के प्रथमसूक्त में कौन सा देवता वर्णित है **- अग्नि**

  ऋग्वेद के प्रथमसूक्त में किस देवता की स्तुति है **- अग्नि**
- 'कविक्रतुः' किसका विशेषण है **- अग्नि का**
- 'पुरोहित' किसका विशेषण है **- अग्नि का**
- अग्नि का सम्बन्ध किस ऋतु से है **- बसन्त से**
- यास्कमते अग्निर्भवति **- पृथिवीस्थानः**

- ‘गृहपतिः’ इति विशेषणं कस्य देवस्य प्रसिद्धम् **- अग्नि**
- ऋग्वेदस्य प्रथममण्डलस्य प्रथमसूक्ते कः स्तूयते **- अग्निः**
- देवताओं में से किसे अक्सर अतिथि की उपाधि देकर सम्बोधित किया जाता है **-अग्नि को**
- ‘स नः पितेव सूनवे’ किस सूक्त से सम्बद्ध है **-अग्नि**
- पृथिवीलोक के प्रधान देवता कौन हैं **- अग्नि**
- ‘होता’ देव कौन हैं **- अग्नि**
- ‘स देवाँ एह वक्षति’ में ‘स’ किसको बतलाता है **- अग्नि**
- अग्नि किस लोक के देवता हैं? **-पृथिवीलोक के**
- ऋग्वेदानुसारेण ‘होता’ इति विशेषणम् अस्ति **- अग्नेः**
- ‘घृतलोम’ इति शब्दः कस्याः देवतायाः विशेषणम् अस्ति **- अग्नेः**
- ‘जातवेदाः’ कः अस्ति **-अग्निः**
- ‘दमूनाः’ इति कस्य विशेषणम् अस्ति **-अग्निः**
- यास्कमते अग्नेः निर्वचनं किं न हि **- अग्रे नयति**
- पौनः पुन्येन संस्तुत देवता है **- अग्नि**
- ‘रत्नधातमम्’ इति कस्य विशेषणम् **- अग्नेः**
- अग्नि का प्रधान कर्म क्या है **- हविष्य का वहन**
- अग्नि के साथ स्तुत्य देवता है **- इन्द्र**
- शाकपूणि के वैश्वानर किसे कहा गया है **- अग्नि**
- ‘हव्यवाह’ जिसका नाम है, वह है **- अग्नि**
- ऋग्वेद की प्रथम ऋचा किस देवता के प्रति है **- अग्नि**
- द्युस्थान देवता हैं **- विष्णुः**
- विष्णु का परमपद है **- द्युस्थान (आकाश)**
- ‘यस्य त्री-पूर्णा मधुना पदानि’ इसका सम्बन्ध है **- विष्णुसूक्त से**
- ‘मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः’ यह मन्त्रांश सम्बन्धित है **- अग्नेः**
- ‘उरुक्रम’ विशेषण किस देवता का है **- विष्णु**
- ‘‘त्रीणि पदानि’’ कस्य देवस्य प्रसिद्धानि **- विष्णोः**
- विष्णोः त्रीणि पदानि केन पूर्णानि भवन्ति **-मधुना**
- ‘त्रेधा निदधे पदम्’ इति केन सह सम्बध्यते **-विष्णुसूक्तेन**
- श्रुतौ यज्ञस्वरूपेण स्तूयते **- विष्णुः**
- ‘उरुगाय’ का अर्थ है **- बहुत लोगों द्वारा स्तुत्य**

- तदस्य प्रियमभि पाथो अश्यां नरो अत्र देवयवो मदन्ति'
  इस मन्त्र में किस देवता की स्तुति की गयी है **-विष्णु**
- कौन सा देवता 'त्रिविक्रम' नाम से जाना जाता है **-विष्णु**
- 'विचक्रमाणस्त्रेधोरुगायः' यह किस देवता को व्यक्त करता है **- विष्णु**
- विष्णोः निवासस्थानं कुत्रास्ति **- द्युलोकः**
- 'उरुगाय' किसका विशेषण है **- विष्णु का**
- स्वर्ग का देवता कौन है **- विष्णु**
- द्युस्थानीय देवता हैं **- सूर्य**
- प्रातः और सायं का देवता है **- सविता**
- 'ऋताधिपति' किसकी उपाधि है **- सविता की**
- का द्युस्थानदेवता **- सविता**
- सवितृदेवस्य नामोल्लेखः प्रायः भूतः अस्ति **- 170 बारम्**
- गायत्री-मन्त्रस्य उपास्य देवता वर्तते **–सविता**
- याज्ञवल्क्यः यजुषां प्राप्त्यर्थं कस्य देवस्य आराधनां कृतवान् **- सूर्यस्य**
- कः देवः वाजिरूपेण वाजसनेयिसंहितायाः उपदेशं कृतवान् **- सूर्यः**
- 'आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन् अमृतं मर्त्यं च' अनेन सम्बन्धः **- सविता**
- कस्य देवस्य अनुग्रहेण महामुनिः याज्ञवल्क्यः शुक्लयजुषः
  उपलब्धिं कृतवान् **- भास्करस्य**
- सूर्य किस लोक से सम्बद्ध हैं **- द्युलोक से**
- ''कस्यनूनं कतमस्यामृतानां मनामहे चारुदेवस्य नाम''
- यह मन्त्र ऋग्वेद के किस सूक्त से सम्बद्ध है **-सूर्यः**
- ऋग्वेद के नवममण्डल से सम्बद्ध देवता है **- सोम**
- सोम का निवासस्थान है **- पृथिवीलोक में**
- ऋग्वेदस्य नवममण्डलस्य देवतानाम् अस्ति **- पवमानसोमः**
- ऋग्वेदस्य कस्मिन् मण्डले सोमस्य स्तुतिः दृक्पथमुपयाति **- नवममण्डले**
- पवमानः कस्याः देवतायाः नाम अस्ति **-सोमः**
- 'हेति' शस्त्र से किसका सम्बन्ध है **- रुद्र का**
- 'दस्रा' इति उपाधिमान् कः अस्ति **- अश्विन्**
- 'सोमादपि मधूनि अधिकं रुचिं कः स्थापयति **- अश्विन्**
- 'दिव्यभिषक्' इति उपाधिमान् कः अस्ति **-अश्विन्**
- ऋजास्वं प्रति नेत्रं कः प्रदत्तवान् **- अश्विन्**

- यास्कमते कस्याः देवतायाः कालः अर्धरात्रीतः सूर्योदयपर्यन्तम् - **अश्विन्**
- 'नासत्यौ' इति कस्य नाम अस्ति - **अश्विनोः**
- यह द्युलोक का देवता है - **वरुण**
- वरुणदेवः - **द्युस्थानः**
- 'असुर' विशेषण किसका है -**वरुण का**
- 'जलोदर व्याधि' का कारण है - **वरुण**
- ऋग्वेदे नैतिकाध्यक्षरूपेण को देवः श्रेष्ठो वर्तते - **वरुणः**
- वरुण किस वर्ण का देवता है - **क्षत्रियवर्ण का**
- शुनःशेपाख्याने प्राधान्येन स्तुतः देवः कः -**वरुणः**
- जल का अधिष्ठातृ देव कौन है - **वरुण**
- कस्य देवस्य चाराः प्रसिद्धाः - **वरुणस्य**
- वेदोक्तऋतस्य का देवता - **वरुणः**
- वरुणस्य विशेषणम् अस्ति– - **उरुचक्षाः**
- 'धृतव्रतः' कस्य विशेषणम् अस्ति - **वरुणस्य**
- अन्तरिक्षस्थानीय देवता कौन हैं - **वायु**
- 'भिषक्तं त्वा भिषणां श्रृणोमि' इसका किस देवता से सम्बन्ध है - **रुद्र से**
- 'जलाषः' इति कस्य विशेषणम् - **रुद्रस्य**
- कपर्दी कः देवः - **रुद्रः**
- 'विलोहितः' इति कस्याः देवतायाः विशेषणम् अस्ति - **रुद्रस्य**
- ''मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु'' इस मन्त्र के देवता हैं - **रुद्र**
- शुक्लयजुर्वेदे पिनाकः धनुषः सम्बद्धः कः अस्ति - **रुद्रः**
- अन्तरिक्षस्थानीया देवता का - **रुद्रः**
- ज्ञान के देवता हैं - **बृहस्पति**
- 'ब्रह्मणस्पतिः' इति विशेषणवान् कोऽस्ति -**बृहस्पतिः**
- पुरुषसूक्तस्य देवता का - **पुरुषः**
- 'स जातो अत्यरिच्यत' में 'सः' पद का अर्थ है - **पुरुष**
- 'हिरण्यगर्भ' इति पदेन अभिधीयते – **प्रजापतिः**
- कस्याहुतिः मनसा दीयते - **प्रजापतिः**
- 'कस्मै देवाय हविषा विधेम' यह उक्ति किस देवता के लिए है -**प्रजापति**
- 'भूतस्य जातः पतिः' इति कस्य देवस्य परिचयोऽस्ति - **हिरण्यगर्भस्य**
- ऋग्वैदिकहिरण्यगर्भसूक्तस्य का देवता -**प्रजापतिः**

- 'पुराणी देवी' किसका विशेषण है **- उषस् का**
- 'ऋतावरी' यह विशेषण किसका है **- उषस् का**
- ऋग्वैदिक स्त्री देवता है **- उषा**
- चन्द्ररथा का वर्तते **- उषा**
- 'मघोनी' कौन देवता है **- उषा**
- यास्कमते 'उषा' शब्दस्य निर्वचनं किम् **- उच्छति**
- 'अवस्यूमेव चिन्वती' का वर्णनीय विषय है **- उषा**
- 'सुदृशीकसन्दृक्' विशेषण है **- उषा का**
- वाक्सूक्तस्य (ऋग्वेदे 10-125) का देवता **- वागाम्भृणी (परमात्मा)**
- नासदीयसूक्त का देवता है **- परमात्मा**
- प्रथमवेदे 'असुर' शब्दः कस्मै प्रयुक्तः **- देवता**
- का देवता सूर्यस्य पत्नी माता च कथ्यते **- उषा**
- एशिया माइनर के बोगजकोई अभिलेख में निम्नलिखित वैदिक देवताओं का उल्लेख है **-इन्द्र, नासत्या, मित्र, वरुण**
- वैदिककाल में निम्न में से किसकी उपासना नहीं की गयी है **-लक्ष्मी की**
- वैदिक देवता नहीं है **-कृष्ण**
- रुद्रो देवता अस्ति **- अन्तरिक्षस्थानीयाः**

❑❑

10. वैदिक ऋषि और भाष्यकार

- माध्यन्दिनसंहिता के भाष्यकर्त्ता कौन हैं **– उव्वट**
- काण्वसंहिता के भाष्यकार कौन हैं **- हलायुध**
- माध्यन्दिनसंहिता के भाष्यकार नहीं हैं **- सायण**
- काण्वसंहिता के भाष्यकार हैं **- सायणः**
- महीधर किस वेद के भाष्यकार हैं **- शुक्लयजुर्वेद के**
- वेंकटमाधव किस वेद के भाष्यकार हैं **- ऋग्वेद के**
- चारों वेदों के भाष्यकार हैं **-सायणाचार्य**
- शतपथब्राह्मणस्य भाष्यकारः कः **- हरिस्वामी**
- कात्यायनश्रौतसूत्र के भाष्यकार हैं **-कर्काचार्यः**
- आश्वलायनश्रौतसूत्रस्य भाष्यकारः कः **- नारायणः**
- ऋग्वेदस्य प्रसिद्धभाष्यकारः कोऽस्ति **- सायणाचार्यः**

- ऋग्वेदस्य प्राचीनतमं भाष्यं कस्य **- सायणस्य**
- पूर्वमीमांसादर्शनस्य भाष्यकारः कः **- शबरस्वामी**
- ऋक्संहितायाः समुपलब्धेषु भाष्येषु प्रथमो भाष्यकारः वर्तते **- स्कन्दस्वामिनः**
- ऋग्वेदस्य प्राचीनतमो भाष्यकारो अस्ति **- स्कन्दस्वामिनः**
- उव्वटोऽस्ति भाष्यकारः **- शुक्लयजुर्वेदस्य**
- महर्षिदयानन्दः कस्य भाष्यकारः अस्ति **- यजुर्वेदस्य**
- यज्ञविधिमधिकृत्य मन्त्रव्याख्यानं क्रियते **- सायणेन**
- एषु प्राचीनवेदभाष्यकारो न वर्तते **- अरविन्दः**
- वैदिकग्रन्थों के प्रसिद्ध भाष्यकार सायण किस काल में सक्रिय थे **- विजयनगरराज्यकाल में**
- उव्वट ने किस वेद पर भाष्य लिखा है - **यजुर्वेद पर**
- कौन ऋग्वेद के भाष्यकार हैं **- स्कन्दस्वामी**
- सायण ने सर्वप्रथम किस वेद पर भाष्य लिखा **- यजुर्वेद**
- गुणविष्णु ने जिस पर भाष्य लिखा है, वह ग्रन्थ है **- छान्दोग्यब्राह्मण**
- धूर्तस्वामी भाष्यकारः अस्ति **- आपस्तम्बश्रौतसूत्रस्य**
- स्कन्दस्वामिना भाष्यं प्रणीतम् **- शाकलसंहितायाः**
- 'ऋग्वेदभाष्य' के लेखक हैं **- वेङ्कटमाधव**
- एषु प्राचीनव्याख्याकारो वर्तते **- सायणः**
- सायण ने वेदों पर अपनी टीका किस भाषा में लिखी **- संस्कृत में**
- सायणाचार्य अभवत् **- वेदभाष्यकारः**
- ऋग्वेदस्य आदिमं भाष्यं कस्य **- सायणस्य**
- वेदस्य आधुनिकव्याख्याता कः **- सातवलेकरः**
- महीधरकृतभाष्यस्य अपरं नाम किम् अस्ति **- वेदद्दीपः**
- शुक्लयजुर्वेदोपरि महीधरभाष्यस्य किं नाम अस्ति **- वेदद्दीपः**
- वेदव्याख्यातुः वेङ्कटमाधवस्य समयः ई **-1100 तमवत्सरात् प्राक्**
- माध्यन्दिनसंहितायां कस्य भाष्यं प्राप्यते **- उव्वटस्य**
- शुक्लयजुर्वेदभाष्यस्य मङ्गलाचरणे महीधरः कं स्मरति **- उव्वटम्**
- यजुर्वेदस्य कस्यां संहितायां सायणाचार्यस्य भाष्यमस्ति **- तैत्तिरीयसंहितायाम्**
- ऋग्वेदसंहिताया आंग्लपद्यानुवादकः वैदेशिकः विद्वान् वर्तते **- आर० टी० एच० ग्रीफिथः**
- सायणाचार्यः कस्यां संहितायां भाष्यं नैव रचितवान् **- बाष्कलसंहितायाम्**

- वाजसनेयिप्रातिशाख्ये उपलब्धस्य भाष्यस्य किं नाम अस्ति - **मातृमोदः**
- शुक्लयजुर्वेद के भाष्यकार हैं - **उव्वट**
- वेद के व्याख्याकार के रूप में सर्वाधिक प्रख्यात भारतीय आचार्य हैं - **सायण**
- ऋग्वेदव्याख्यानकारो भवति - **मध्वाचार्यः**
- उव्वटमहीधरयोः भाष्यमस्ति - **शुक्लयजुर्वेदस्य**
- 'पदक्रमसदन'–नामकं भाष्यं कस्य प्रातिशाख्यस्य विद्यते - **तैत्तिरीयप्रातिशाख्यस्य**
- शुक्लयजुर्वेदस्य काण्वशाखायाः भाष्यकारोऽस्ति - **सायणः**
- शुक्लयजुर्वेदस्य माध्यन्दिनशाखायाः हिन्दीभाषया आदिभाष्यकारोऽस्ति - **महर्षिदयानन्दः**
- शुक्लयजुर्वेदस्य संस्कृत-हिन्दी–भाषायां कृतं भाष्यं प्राप्यते - **महर्षिदयानन्दसरस्वतेः**
- स्वामीकरपात्रीजी का भाष्य है - **शुक्लयजुर्वेद पर**
- आत्मानन्द ने जिस पर भाष्य लिखा, वह है - **अस्यवामीयसूक्त**
- 'उव्वट' ने व्याख्या की है जिस वेद शाखा की, वह है - **माध्यन्दिन**
- महीधर क्या हैं -**भाष्यकार**
- 'ब्राह्मणसर्वस्व' नामकं वेदभाष्यं केन विरचितम् - **हलायुधेन**
- वैदिकस्वरप्रक्रियायाः वृत्तिकारः कः -**भट्टोजिदीक्षितः**
- कः अग्निसूक्तस्य ऋषिः - **मधुच्छन्दाः**
- ऋग्वेद के पदपाठकार हैं - **शाकल्य**
- हिरण्यगर्भसूक्तस्य ऋषिः कः - **हिरण्यगर्भः**
- ऋषिः कः आसीत् - **मन्त्रद्रष्टा**
- ऋग्वेद के प्रथमसूक्त के ऋषि कौन हैं - **मधुच्छन्दा**
- अक्षसूक्त के ऋषि कौन हैं - **कवषऐलूष**
- वंशमण्डल का ऋषि कौन है - **वामदेव**
- पुरुषसूक्तस्य (10.90) ऋषिः अस्ति - **नारायणः**
- ऋग्वेद का प्रथम अध्येता कौन है - **पैल**
- ऋग्वेदसंहिता के द्वितीय मण्डल के ऋषि कौन हैं - **गृत्समद**
- ऋग्वेदस्य द्वितीयमण्डलान्तर्गतस्य इन्द्रसूक्तस्य ऋषिः कः - **गृत्समदः**
- ''स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव'' अस्य मन्त्रस्य ऋषिः वर्तते - **मधुच्छन्दाः**
- ''सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः ....'' अस्य मन्त्रस्य ऋषिरस्ति - **नारायणः**
- 'दीर्घतमा' कस्य सूक्तस्य ऋषिः विद्यते - **विष्णुसूक्तस्य**
- तैत्तिरीयसंहिता केन प्रवर्तिता - **तित्तिरिणा**
- सोमयागे कति ऋत्विजो भवन्ति - **षोडश**

➢ गायत्रीमन्त्र की रचना किसने की थी **- विश्वामित्र**
➢ सुदास के विरुद्ध ऋग्वेद में उल्लिखित दस राजाओं का युद्ध किसके नेतृत्व में लड़ा गया था **-विश्वामित्र**
➢ सामवेदस्य प्रकाण्डविद्वान् कः आसीत् **-सायणः**
➢ वेदव्यासमहामुनिः यजुर्वेदं कस्मै समर्पितवान् **- वैशम्पायनाय**
➢ निम्नलिखित पुरोहितों में से कौन यज्ञ के सम्पादन का निरीक्षण करता था **-ब्रह्मा**
➢ ऋषयः मन्त्राणां के सन्ति **- द्रष्टारः**
➢ याज्ञवल्क्यः कस्य सभायामासीत् **- जनकस्य**
➢ सर्वप्रथम वेदों का निर्वचन किया है **- यास्क ने**
➢ वेदों के पुनरुत्थान का श्रेय किसे है **- स्वामीदयानन्दसरस्वती**
➢ कौन सी वह ब्रह्मवादिनी थी, जिसने कुछ वेद मन्त्रों की रचना की थी **- सूर्या सावित्री**
➢ उपनिषदों के समय में वह विदुषी महिला कौन थी जो दार्शनिकों की सभा में उच्च ज्ञान पर सम्भाषण कर सकती थी **- गार्गी**
➢ मन्त्रदर्शनं के अकुर्वन् **- ऋषयः**
➢ ऋग्वैदिकस्य वरुणसूक्तस्य ऋषिरस्ति **- शुनःशेपः**
➢ वरुणसूक्तस्य ऋषिरस्ति **- वसिष्ठः**
➢ ऋग्वेदीय सप्तममण्डल के ऋषि हैं **- वसिष्ठः**
➢ "ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः"–अस्य मन्त्रस्य ऋषिरस्ति **- नारायणः**
➢ वाजसनेय कौन हैं **- याज्ञवल्क्यः**
➢ विश्वामित्र जिस मण्डल के ऋषि हैं, वह है **- तीसरा**
➢ "उप त्वाग्ने दिवे-दिवे दोषावस्तर्धिया वयम्" अस्य मन्त्रस्य ऋषिः वर्तते **-मधुच्छन्दाः**
➢ चतुर्थ मण्डल के ऋषि हैं **- वामदेव**
➢ विष्णुसूक्तस्य ऋषिः अस्ति **- दीर्घतमाः**
➢ निरुक्तस्य व्याख्याकारः वर्तते **- दुर्गाचार्यः**
➢ सायणस्य व्याख्यापद्धतिरस्ति **-याज्ञिकी**
➢ ऋग्वेदीयषष्ठमण्डलस्य ऋषिः वर्तते **- भरद्वाजः**
➢ सायणाचार्यस्य गुरुः कः आसीत् **- विद्यातीर्थः**

- सायण का भ्राता किसे कहा गया है **- भोगनाथः**
- सायणस्य अनुजस्य नाम किम् **- भोगनाथः**
- नचिकेतसः पितुर्नाम **- वाजस्त्रवा**
- आपदेवस्य गुरुः कः **- अनन्तः**
- उव्वटाचार्यस्य स्थानं कस्मिन् पुरे वर्तते **- आनन्दपुरे**
- आचार्यसायणस्य मातुः नाम किम् **- श्रीमती**
- सायणस्य अग्रजस्य किं नाम आसीत् **- माधवः**
- सायणस्य को भ्राता **- माधवः**
- योगिनः याज्ञवल्क्यस्य गुरुः कः आसीत् **- वैशम्पायनः**
- याज्ञवल्क्यस्य पितुः वाजसनेः अपरं नाम किमस्ति **- देवरातः**
- उव्वटस्य पितुः नाम किमासीत् **- वज्रटः**
- यजुषां वमनकर्ता याज्ञवल्क्यः कस्य शिष्यः आसीत् **- वैशम्पायनस्य**
- 'शतपथानुसारं याज्ञवल्क्स्य गुरोः नाम किमस्ति **- आरुणिः**
- सायणः अस्ति **- वेदभाष्यकर्ता**
- महर्षिः वेदव्यासः कम् ॠग्वेदं समर्पितवान् **- पैलम्**
- ''यजुर्यजतेः'' इति निर्वचनं कस्यास्ति **- यास्कस्य**
- ''एकशतमध्वर्युशाखा'' इति केन कथितमस्ति **- पतञ्जलिना**
- ''मन्त्रब्राह्मणयोर्वेदनामधेयम्'' इति कः उक्तवानस्ति **- आपस्तम्बः**
- ''अर्थावबोधे निरपेक्षतया पदजातं यत्रोक्तं तन्निरुक्तम्'' कस्य वचनमस्ति **- यास्कस्य**
- ''रजः शब्दो लोकवाची'' इसके वक्ता हैं **- मैक्समूलर**
- ''सम्पूर्णमृषिवाक्यन्तु सूक्तमित्यभिधीयते'' वाक्यमिदं कस्य **- शौनकस्य**
- ''यः पृथिवीं व्यथमानामदृंहद्यः पर्वतान्प्रकुपिताँ अरम्णात्''
  -अस्य मन्त्रस्य द्रष्टा ऋषि कः **- गृत्समदः**
- इष्टप्राप्त्यनिष्टपरिहारयोरलौकिकमुपायं यो ग्रन्थो
  वेदयति स वेदः–इति लक्षणं कस्य **- सायणस्य**
- 'शून्य' का आविष्कार किया था **- आर्यभट्ट ने**
- प्राचीन भारत का पहला प्रसिद्ध ज्योतिषशास्त्र का ज्ञाता कौन था - **आर्यभट्ट**
- स्वामिदयानन्दसरस्वतीमहोदयस्य जन्म अस्मिन् वर्षे आसीत् **- ई0 1824 तमे वर्षे**
- प्राचीन भारत के आयुर्वेद शास्त्र से सम्बन्ध नहीं है **- भास्कराचार्य का**
- वास्तुशास्त्रस्य प्राचीनतमः आचार्यः अस्ति **- वराहमिहिरः**
- मिथिला में गार्गी वाचक्नवी ने किस ऋषि से

शास्त्रार्थ किया था - **याज्ञवल्क्य**

- ''पुरुषार्थानां वेदयिता वेद उच्यते''। इस परिभाषा के कर्ता हैं - **भट्टभास्करः**
- कुल्लूकभट्टस्य समयः - **त्रयोदशशतकम्**
- 'लीलावती' इति गणितग्रन्थस्य कः रचयिता - **भास्कराचार्यः**
- बृहत्संहिता की रचना किसने की थी - **वराहमिहिर ने**

❑❑

11. वैदिकग्रन्थ और ग्रन्थकार

- 'वैदिक-देवशास्त्र' (Vedic Mythology) के लेखक हैं -**मैक्डॉनल**
- 'वैदिकव्याकरण' के आधुनिक लेखक हैं - **लुई रेनू**
- निरुक्तकार कौन हैं - **यास्क**
- निरुक्त के लेखक हैं - **यास्क**
- 'वेदाङ्गज्योतिष' के रचयिता हैं - **लगध**
- "Vedic Concordance" (वैदिक वाक्यकोश) के लेखक हैं - **लगध**
- ''Orion'' (ऑरिआन) किसकी रचना है - **बालगङ्गाधरतिलक**
- ऋग्वेदप्रातिशाख्यस्य प्रणेता कः - **शौनकः**
- कस्य ग्रन्थस्य प्रणेताचार्यः सायणः - **ऋग्वेदभाष्यभूमिका**
- यज्ञतत्त्वप्रकाशग्रन्थस्य कर्ता कः - **चिन्नस्वामी**
- 'वैदिकविज्ञान और भारतीय संस्कृति' इति ग्रन्थस्य कर्ता कः - **गिरधरशर्माचतुर्वेदी**
- 'वाजसनेयि-प्रातिशाख्य' के रचयिता कौन हैं - **कात्यायन**
- 'बृहद्देवता' किसकी रचना है - **शौनक की**
- 'जैमिनीय-न्यायमाला' किसने लिखी है - **माधव ने**
- शतपथब्राह्मणस्य कर्ता अस्ति - **याज्ञवल्क्यः**
- चरणव्यूहग्रन्थः केन रचितः - **शौनकः**
- 'निघण्टु' के रचयिता हैं - **यास्कः**
- ऋक्तन्त्रस्य रचयिता - **शाकटायनः**
- भट्टोजिदीक्षितमतानुसारम् ऋक्तन्त्रस्य प्रणेता कः - **औद्व्रजिः**
- 'धर्मसूत्र' के प्रवर्तक हैं - **गौतमः**
- ऋक्प्रातिशाख्यस्य वर्ण्यविषयः कः – **वर्णस्वरादिविवेचनम्**
- 'सर्वानुक्रमणी' इति ग्रन्थस्य रचयितुः नाम किमस्ति - **कात्यायनः**
- चुलेटस्य ग्रन्थस्य किं नाम अस्ति - **वेदकालनिर्णयः**
- 'निरुक्तश्लोकवार्त्तिक' के कर्त्ता हैं - **दुर्गाचार्यः**

- वैदिकव्याकरणस्य रचनां कः कृतवान् **-मैक्डॉनल**
- 'ऋग्वेदभाष्यभूमिका' के रचयिता हैं **-सायणः**
- गुप्तकाल का प्रसिद्ध खगोलशास्त्री कौन था **-आर्यभट्ट**
- कौन विदुषी महिला वैदिकमन्त्रों की रचयिता नहीं थी **-गार्गी**
- कौन-सा वेद अंशतः गद्य में है **- यजुर्वेद**
- किस विदुषी ने वैदिक मन्त्रों की रचना की थी **- विश्ववारा घोषा**
- ऋग्वेद में कौन से वैदिक देवता सहस्र स्तम्भों वाले भवन में निवास करते हुए वर्णित हैं **- इन्द्र व अग्नि**
- वैदिक साहित्य में सभा और समिति को किस देवता की दो पुत्रियाँ कहा गया है **- प्रजापति**
- तन्त्रयुक्तियों का विवरण है **-गौतमधर्मसूत्र**
- गोविन्दस्वामी के भाष्य वाला ग्रन्थ है **- ऐतरेयब्राह्मण**
- ''पीटर-पीटर्सन'' की रचना है **- ऋग्वेद से स्तोत्र**
- 'On the Vedas' के रचनाकार हैं **- योगिराज अरविन्द**
- 'ऐतरेय ब्राह्मण' के अंग्रेजी अनुवादक हैं **- ए० बी० कीथ**
- ''गीतिषु सामाख्या'' इस सूत्र के रचनाकार हैं **- जैमिनिः**
- 'वेदभाष्यभूमिकासंग्रह'– के रचयिता हैं **- आचार्य सायण**
- 'श्रीसातवलेकर' द्वारा रचित वेदभाष्य का नाम है **- सुबोधभाष्यम्**
- 'वेददीपभाष्य' के कर्ता हैं **- महीधरः**
- 'तैत्तिरीयप्रातिशाख्य' सम्बद्ध है **- कृष्णयजुर्वेद से**
- 'मशकश्रौतसूत्र' सम्बद्ध है **- सामवेद से**
- शुक्लयजुषः श्रौतसूत्रकर्ता **- कात्यायनः**
- निघण्टुग्रन्थस्य संग्रहः कृतः केन **- प्रजापतिकश्यपेन**
- 'जैमिनीयन्यायमाला' ग्रन्थस्य व्याख्याग्रन्थः कः **- विस्तरः**
- कातीयेष्टिदीपकस्य कर्ता कः **- नित्यानन्दः**
- 'निरुक्तालोचनम्' इति ग्रन्थस्य कः लेखकः **- सत्यव्रतसामश्रमी**
- 'ऐतरेयालोचनम्' इति ग्रन्थस्य कः लेखकः **- सत्यव्रतसामश्रमी**
- शुक्लयजुः प्रातिशाख्यस्य टीकाकारः कोऽस्ति **- उव्वटः**
- दुर्गाचार्यमतेन निघण्टुग्रन्थरचयिता **- अर्वाचीनः**
- ऋक्तन्त्रं नाम प्रातिशाख्यग्रन्थः **- सामवेदस्य**
- शुक्लयजुर्वेदस्य प्रातिशाख्यं केन रचितमस्ति **- कात्यायनेन**
- "The Orion" इति पुस्तकं केन रचितमस्ति **- तिलकेन**

- वैदिकव्याकरणस्य व्याख्याकारः कः **- भारद्वाजः**
- ऋक्तन्त्रं नाम किम् अस्ति **- प्रातिशाख्यम्**
- सायणभाष्यसहितं ऋग्वेदं सर्वप्रथमं यः सम्पादयामास सोऽस्ति पाश्चात्त्यविद्वान्- **मैक्समूलरः**
- ऋग्वेदभाष्यभूमिकायां पुराणस्य लक्षणानि कति प्रतिपादितानि **- पाँच**
- वैदिकस्वरमीमांसायाः कर्ता कोऽस्ति **- युधिष्ठिरमीमांसकः**
- विदेघ माधव का अपने पुरोहित गोतम राहूगण के साथ पूर्व दिशा की ओर जाने का कथानक किसमें उल्लिखित है **- शतपथ ब्राह्मण**
- वैदिककाल में किस जानवर को 'अघन्या' माना जाता **- गाय**
- प्राचीनकाले वेदाध्ययनं कुत्र भवति स्म **- गुरुकुलेषु**
- चरणव्यूहग्रन्थस्य विषयः कः **- वेदशाखापर्यालोचनम्**
- ऋग्वेदभाष्यभूमिकायां विद्यास्थानानि कति प्रतिपादितानि **-14**
- चातुर्मास्यं कदा प्रभृति प्रारभ्यते **-फाल्गुनपूर्णिमातः**
- अग्न्याधाने ब्राह्मणस्य कः कालः **- वसन्तः**
- ब्राह्मणस्य अग्न्याधाने किं नक्षत्रम् **- कृत्तिका**
- राज्ञः कः अग्न्याधानकालः **- ग्रीष्मः**
- वैश्यस्य कः अग्न्याधानकालः **- शरदः**
- बहुदेववादिनः के आसन् **- वैदिकार्याः**
- वैदिक समाज में किसका अस्तित्व था **- प्रकृति-पूजा**
- संस्कारों का वर्णन किस मूल-पाठ में है **- धर्मसूत्र**
- वैदिक काल की सबसे सामान्य शासनव्यवस्था क्या थी **- प्रजातन्त्र**
- सौत्रामणि स्तोत्र है **- सामवेदे**
- 'शुनःशेप-आख्याने' कस्य उल्लेखो नास्ति **- अजीगर्तस्य**
- वैदिकसाहित्यस्य एषु ग्रन्थेषु यज्ञवेदिविधानं वर्णितम् **- शुल्बसूत्रेषु**
- विधेयाः के **- अर्थवादाः**
- विज्ञानमयस्य शिरः किमुच्यते **- श्रद्धा**
- 'यास्केन' कतिविधः व्याख्याविधिः स्वीकृतः **- त्रिविधः**
- राजा सुदास जिसके विषय में ऋग्वेद में वर्णन है कि उसने दस राजाओं को पराजित किया, किस जन से सम्बद्ध था **- तृत्सु**

❑❑

सन्दर्भग्रन्थसूची

1. **अथर्ववेद -** आचार्य वेदान्त तीर्थ, मनोज पब्लिकेशन्स, दिल्ली नौवाँ संस्करण-2015
2. **अथर्ववेद संहिता -** सम्पादक-पं. रामस्वरूपशर्मा गौड, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, संस्करण-2011
3. **ऋग्वेद (4 भाग) -** आचार्य वेदान्त तीर्थ, मनोज पब्लिकेशन्स, दिल्ली आठवाँ संस्करण-2015
4. **ऋग्वेद -** महर्षि दयानन्द, सम्पादक - श्री सत्यवीर शास्त्री, डी.पी.बी. पब्लिकेशन्स, दिल्ली-2009
5. **ऋग्वेद संहिता** (सायणभाष्य एवं हिन्दी अनुवाद) - अनुवादक पं. रामगोविन्द त्रिवेदी, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, पुनर्मुद्रित संस्करण 2011 (1-9 भाग सम्पूर्ण)
6. **ऋक्सूक्तसंग्रह -** डॉ. हरिदत्त शास्त्री एवं डॉ. कृष्ण कुमार, साहित्य भण्डार, सुभाष बाजार, मेरठ
7. **ऋग्वेद प्रातिशाख्यम् -** डॉ. वीरेन्द्र कुमार वर्मा, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली संस्करण 2011
8. **निरुक्तम् -** डॉ. उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी-2016
9. **निरुक्तम् -** आचार्य विश्वेश्वर, ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी-2014
10. **निरुक्त -** छज्जूराम शास्त्री, मेहरचन्द लछमनदास पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली-2012
11. **यजुर्वेद -** आचार्य वेदान्त तीर्थ, मनोज पब्लिकेशन्स, दिल्ली नौवाँ संस्करण-2015
12. **वैदिक साहित्य का इतिहास -** डॉ. गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, विक्रमी संवत्-2066
13. **वैदिक साहित्य का इतिहास -** डॉ. पारसनाथ द्विवेदी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, संस्करण - 2011-12
14. **वैदिक साहित्य एवं संस्कृति -** डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, षष्ठ संस्करण - 2015 ई.
15. **वैदिक साहित्य और संस्कृति -** आचार्य बलदेव उपाध्याय, शारदा संस्थान, एन 1/75, नगवा, लंका, वाराणसी, सप्तम संस्करण - 2015
16. **वैदिक वाङ्मय का इतिहास -** मूल लेखक - सी.वी. वैद्य, अनुवादक एवं सम्पादक - विपिन कुमार, परिमल पब्लिकेशन्स, दिल्ली संस्करण-2011
17. **वैदिकसूक्तसङ्ग्रहः -** डॉ. विजयशङ्कर पाण्डेय, अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद प्रकाशनवर्ष-2010
18. **शुक्लयजुर्वेद संहिता** (हिन्दी टीका सहित) - पं. रामकृष्ण शास्त्री, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, संस्करण - 2015
19. **संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास**, 2 खण्ड - पद्मभूषण आचार्य श्री बलदेव उपाध्याय एवं प्रो. ब्रज बिहारी चौबे, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ द्वितीय संस्करण - 2012
20. **संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास -** डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, रामनारायणलाल विजयकुमार, 2, कटरा रोड, इलाहाबाद - 211002, संस्करण - 2017

❑❑

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) द्वारा प्रायोजित एवं वर्तमान में राष्ट्रीय परीक्षा एजेन्सी (NTA) द्वारा आयोजित –

- राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (NET) एवं कनिष्ठ अनुसन्धान अध्येतावृत्ति (JRF) एवं महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों में लेक्चररशिप हेतु

आख्यातास्मि

NTA, UGC-NET/JRF

संस्कृतम्

प्रश्नपत्रम्-II, III

सम्पादक

सर्वज्ञभूषण

सह-सम्पादक

सत्यप्रकाश साहू

अम्बिकेश प्रताप सिंह

प्रकाशक

युनिवर्सल बुक्स

1519 अल्लापुर, प्रयागराज

☛ **प्रकाशक**
युनिवर्सल बुक
1519 अल्लापुर, प्रयागराज (उत्तर प्रदेश)

☛ पुस्तक डाक द्वारा भी मँगवा सकते हैं–
Mob. : 8004545096 (गोपेश मिश्र)

☛ प्रथमसंस्करण – फरवरी - 2015
द्वितीयसंस्करण – अगस्त - 2015
तृतीयसंस्करण – जून - 2016
चतुर्थसंस्करण – जनवरी - 2017
पञ्चमसंस्करण – जून - 2019

☛ **मूल्य – ₹ 180/-** (एक सौ अस्सी रुपये मात्र)

☛ **मुख्यवितरक**
राजू पुस्तक केन्द्र
अल्लापुर, प्रयागराज (उत्तर प्रदेश)
मो० –9453460552

☛ **प्रकाशनाधिकारिणी संस्था**
संस्कृतगङ्गा (पञ्जीकृत)
59, मोरी, दारागञ्ज, प्रयागराज
(कोतवाली दारागञ्ज के आगे, गङ्गाकिनारे
संकटमोचन छोटे हनुमान मन्दिर के पास)
कार्यालय - 9839852033
email-Sanskritganga@gmail.com
www.Sanskritganga.org

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

1. राजू पुस्तक भण्डार, अल्लापुर, प्रयागराज
   सम्पर्क सूत्र : 0532-2503638, 9453460552
2. संस्कृतगङ्गा, दारागञ्ज, प्रयागराज - 7800138404
3. गौरव बुक एजेन्सी, कैण्ट, वाराणसी
4. विजय मैग्जीन सेन्टर, बलरामपुर
5. जायसवाल बुक सेन्टर, हरदोई – 9415414569
6. शिवशंकर बुक स्टाल, जौनपुर
7. न्यू पूर्वांचल बुक स्टाल, जौनपुर – 9235743254
8. कृष्णा बुक डिपो बस्ती – 8182854095
9. मौर्या बुक डिपो, पाण्डेयपुर, वाराणसी– 9454735892
10. मनीष बुक स्टोर, गोरखपुर – 9415848788
11. द्विवेदी ब्रदर्स, गोरखपुर – 0551-344862
12. विद्यार्थी पुस्तक मन्दिर, गोरखपुर – 9838172713
13. रंजन मिश्रा, गोरखपुर (बस स्टैण्ड)
14. आशीर्वाद बुक डिपो, अमीनाबाद, लखनऊ
15. मालवीय पुस्तक केन्द्र, अमीनाबाद, लखनऊ – 9918681824
16. मॉडर्न मैग्जीन बुक शॉप, कपूरशाला, लखनऊ
17. साहू बुक स्टॉल, अलीगंज, लखनऊ – 9838640164
18. भूमि मार्केटिंग, लखनऊ – 9450520503
19. दुर्गा स्टोर, राजा की मण्डी, आगरा – 9927092063
20. महामाया पुस्तक केन्द्र, बिलासपुर – 09907418171
21. डायमण्ड बुक स्टाल, ज्वालापुर, हरिद्वार
22. कम्पटीशन बुक हाउस, सब्जी मण्डी रोड, बरेली – 9897529906
23. अजय गुप्ता बुक स्टोर, लखीमपुर – 809062054
24. शिवशंकर बुक स्टाल, रीवा – 9616355944
25. कृष्णा बुक एजेन्सी, वाराणसी – 9415820103
26. गर्ग बुक डिपो, जयपुर
27. अग्रवाल बुक सेन्टर, मुखर्जी नगर, नयी दिल्ली
28. चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी (सभी बुक स्टालों पर)
    मो. – 9839243286, 9415508311, 0532-2420414
29. विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक वाराणसी – 0542-2413741
30. मोतीलाल बनारसी दास, वाराणसी
31. केशवी बुक डिस्ट्रीब्यूटर्स, नयी दिल्ली – 93
32. महावीर बुक स्टाल, खजूरी बाजार, इन्दौर
33. हिन्दी बुक डिपो, मुरादाबाद – 94566888596
34. माँ बुक स्टेशनर्स, शहडोल छत्तीसगढ़ – 9406754644
35. परिमल प्रकाशन, नयी दिल्ली – 9891143247

संस्कृतगङ्गा उवाच

प्रियसंस्कृतमित्राणि!

नमः संस्कृताय।

- संस्कृतगङ्गा दारागञ्ज प्रयाग की प्रस्तुति के रूप में **UGC - NET/JRF** (संस्कृत) परीक्षा हेतु **'आख्यातास्मि'** के नाम से यह हलप्रश्नपत्र संस्कृतमित्रों की सेवा में प्रस्तुत है। पुस्तक का यह नाम ''आख्यातोपयोगे'' (1.4.29) सूत्र से प्रेरित है।
- इस पुस्तक में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) द्वारा आयोजित **जून-1994** से लेकर अब तक के लगभग **52 प्रश्नपत्रों के 3300 प्रश्नों** का सप्रमाण हल प्रस्तुत किया जा रहा है। जुलाई 2019 तक इसका व्याख्यात्मक हल भी प्रस्तुत करने की योजना है।
- संस्कृतमित्रों को UGC का प्रामाणिक पेपर तथा उसका सही उत्तर खोजने में काफी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा था, उसी को ध्यान में रखते हुए इस पुस्तक की योजना बनायी गयी है। इस पुस्तक में प्रारम्भ के कुछ प्रश्नपत्र स्मृति के आधार पर जोड़े गये हैं तथा बाद के प्रश्नपत्र UGC के मूल प्रश्नपत्र ही हैं।
- मित्रों! पूर्व में निर्गत चतुर्थ संस्करण की अपेक्षा यह **पञ्चम संस्करण** अधिक शुद्ध, प्रामाणिक एवं उपादेय हो गया है, क्योंकि अब प्रत्येक प्रश्नों का प्रामाणिक स्रोत भी प्रश्नों के नीचे लिख दिया गया है।
- उन सभी संस्कृतमित्रों को हार्दिक धन्यवाद; जिन्होंने इस पुस्तक के लिए प्रश्नपत्रों को उपलब्ध कराने तथा प्रूफ संशोधन, टाइपिंग तथा प्रकाशन आदि कार्यों में संस्कृतगङ्गा का मनसा, वाचा, कर्मणा सहयोग किया, जिनमें **श्रीमती गिरिराज मिश्रा** (पीलीभीत),, **सुमन सिंह, अर्पितात्रिपाठी** (A.U.), **अमित सिंह, मनीषशर्मा, विकास सिंह एवं सुशील सिंह 'चञ्चल', संगीता राय, स्वागतम् मौर्य, श्याम किशोर मिश्र, योगेश मिश्र (राधे राधे), संतोष कुमार यादव 'साहब', राकेश कुमार (R.K. पाल), गोपेश मिश्र, जितेन्द्र तिवारी 'मामा बवाली', कृष्ण कुमार, जितेन्द्र मिश्र** आदि मुख्य हैं।
- इस विकीर्ण सामग्री को अपनी टाइपिंग कला द्वारा पुस्तकीय आकार प्रदान करने वाले कृष्णा कम्प्यूटर संस्थान, दारागंज, प्रयागराज एवं प्रकाशकीय कार्यों के सहयोगी एवं मुख्य वितरक **राजू पुस्तक केन्द्र, अल्लापुर, प्रयागराज** के स्वामी श्री राजकुमार गुप्ता (राजू) भी धन्यवाद के पात्र हैं।
- यह प्रयास किया गया है कि पुस्तक पूर्णरूपेण शुद्ध हो, फिर भी प्रमाद या अज्ञानवशात् कुत्रचित् मुद्रणदोष या गलत उत्तर छप गया हो तो कृपया हमें सूचित करें – 9839852033, 8004545095

संस्कृतगङ्गा, दारागञ्ज, प्रयाग **सम्पादकः**
जून–2019 **सर्वज्ञभूषणः**

यूजीसी (राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा) (यूजीसी-नेट) - जून 2019

सार्वजनिक सूचना

दिनाँक - 1 मार्च 2019

राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी (एन.टी.ए.) की स्थापना मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा एक स्वतंत्र, स्वायत्त, आत्मनिर्भर, स्वपोषित प्रमुख परीक्षा संगठन के रूप में की गई है। यूजीसी-नेट परीक्षा के संचालन का कार्य भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी (NTA) को सौपा गया है। एनटीए द्वारा **'सहायक प्रोफेसर'** अथवा **'कनिष्ठ शोध फेलोशिप और सहायक प्रोफेसर'** के लिए आगामी यूजीसी-नेट का संचालन 20 जून से 28 जून, 2019 तक किया जाएगा। परीक्षा में निम्नानुसार दो प्रश्न पत्र होंगे -

प्रश्न पत्र	प्रश्नों की संख्या (सभी प्रश्न अनिवार्य हैं)	अंक	समयावधि/ प्रथम पाली	समयावधि/ द्वितीय पाली
1	50	100	03 घण्टे (प्रातः 09.30 बजे से अपराह्न 12.30 तक) भारतीय मानक समय	03 घण्टे अपराह्न 02.30 बजे से सायं 05.30 बजे तक) भारतीय मानक समय
2	100	200		

परीक्षा का आयोजन केवल **कम्प्यूटर आधारित परीक्षा (सीबीटी)** विधि से ही किया जायेगा ।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग

पाठ्यक्रम

संस्कृत (विषयकोड-25)

इकाई 1

वैदिक साहित्य

वैदिक साहित्य का सामान्य परिचय-

- **वेदों का काल -** मैक्समूलर, ए.वेबर, जैकोबी, बालगंगाधर तिलक, एम.विन्टरनिट्ज, भारतीय परम्परागत विचार,
- **संहिता साहित्य**
- **संवाद सूक्त-** पुरूरवा-उर्वशी (10-95), यम-यमी (10.10), सरमा-पणि (10.108), विश्वामित्र-नदी (3.33)
- **ब्राह्मण साहित्य**
- **आरण्यक साहित्य**
- **वेदांग-** शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष

इकाई 2

वैदिक साहित्य का विशिष्ट अध्ययन

- **निम्नलिखित सूक्तों का अध्ययन -**
- **ऋग्वेद -** अग्नि (1.1), वरुण (1.25), सूर्य (1.115), इन्द्र (2.12), उषस् (3.61), पर्जन्य (5. 83), अक्ष (10.34), ज्ञान (10.71), पुरुष (10.90), हिरण्यगर्भ (10.121), वाक् (10.125), नासदीय (10.129),
- **शुक्लयजुर्वेद -** शिवसंकल्प,अध्याय- 34 (1-6) प्रजापति, अध्याय- 23(1-5)
- **अथर्ववेद -** राष्ट्राभिवर्धनम् (1.29), काल (10.53), पृथिवी (12.1)
- **ब्राह्मण साहित्य-** प्रतिपाद्य विषय, विधि एवं उसके प्रकार, अग्निहोत्र, अग्निष्टोम, दर्शपूर्णमास यज्ञ, पञ्चमहायज्ञ, आख्यान (शुनःशेप, वाङ्मनस्)।
- **उपनिषद् साहित्य-** निम्नलिखित उपनिषदों की विषयवस्तु तथा प्रमुख अवधारणाओं का अध्ययन -
  ईश, कठ, केन, बृहदारण्यक, तैत्तिरीय, श्वेताश्वतर।
- **वैदिक व्याकरण निरुक्त एवं वैदिक व्याख्या पद्धति-**
- **ऋक्प्रातिशाख्य-** निम्नलिखित परिभाषाएँ -
  समानाक्षर, सन्ध्यक्षर, अघोष,सोष्म, स्वरभक्ति, यम, रक्त, संयोग, प्रगृह्य, रिफित।
- **निरुक्त-** (अध्याय 1 तथा 2)
  चार पद- नाम विचार, आख्यात विचार, उपसर्गों का अर्थ, निपात की कोटियाँ,
- **निरुक्त अध्ययन के प्रयोजन**
- **निर्वचन के सिद्धान्त**
- **निम्नलिखित शब्दों की व्युत्पत्ति**
  आचार्य, वीर, ह्रद, गो, समुद्र, वृत्र, आदित्य, मेघ, वाक्, उदक, नदी, अश्व, अग्नि, जातवेदस्, वैश्वानर, निघण्टु

निरुक्त- (अध्याय 7 दैवत काण्ड)

वैदिक स्वर- उदात्त, अनुदात्त तथा स्वरित ।

वैदिक व्याख्या पद्धति- प्राचीन एवं अर्वाचीन ।

इकाई 3

दर्शन साहित्य

(क) प्रमुख भारतीय दर्शनों का सामान्य परिचय

प्रमाणमीमांसा, तत्त्वमीमांसा, आचारमीमांसा
(चार्वाक, जैन, बौद्ध, सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा एवं उत्तरमीमांसा के सन्दर्भ में)

इकाई 4

(ख) दर्शन साहित्य का विशिष्ट अध्ययन

- **ईश्वरकृष्ण- सांख्यकारिका-** सत्कार्यवाद, पुरुषस्वरूप, प्रकृतिस्वरूप, सृष्टिक्रम, प्रत्ययसर्ग, कैवल्य
- **सदानन्द, वेदान्तसार-** अनुबन्ध-चतुष्टय, अज्ञान, अध्यारोप-अपवाद, लिंगशरीरोत्पत्ति, पञ्चीकरण, विवर्त महावाक्य, जीवन्मुक्ति ।

- **अन्नंभट्ट, तर्कसंग्रह/ केशव मिश्र, तर्कभाषा-** पदार्थ, कारण, प्रमाण (प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द,) प्रामाण्यवाद, प्रमेय ।
- **लौगाक्षिभास्कर-अर्थसंग्रह-**
- **पतंजलि-योगसूत्र-** (व्यासभाष्य) - चित्तभूमि, चित्तवृत्तियाँ, ईश्वर का स्वरूप, योगाङ्ग, समाधि, कैवल्य ।
- **बादरायण-ब्रह्मसूत्र 1.1 (शाङ्करभाष्य)**
- **विश्वनाथपञ्चानन-न्यायसिद्धान्तमुक्तावली (अनुमानखण्ड)**
- **सर्वदर्शनसंग्रह- जैनमत, बौद्धमत**

इकाई 5

व्याकरण एवं भाषाविज्ञान

- **सामान्य परिचय- निम्नलिखित आचार्यों का परिचय-**
  पाणिनि, कात्यायन, पतञ्जलि, भर्तृहरि, वामनजयादित्य, भट्टोजिदीक्षित, नागेशभट्ट, जैनेन्द्र, कैय्यट,शाकटायन, हेमचन्द्रसूरि, सारस्वतव्याकरणकार।
- **पाणिनीय शिक्षा**
- **भाषाविज्ञान -**
  भाषा की परिभाषा, भाषा का वर्गीकरण, (आकृतिमूलक एवं पारिवारिक), ध्वनियों का वर्गीकरण, स्पर्श, संघर्षी, अर्धस्वर, स्वर, (संस्कृत ध्वनियों के विशेष सन्दर्भ में), मानवीय ध्वनियन्त्र, ध्वनि परिवर्तन के कारण, ध्वनि नियम (ग्रिम,ग्रासमान,वर्नर), अर्थ परिवर्तन की दिशाएँ एवं कारण, वाक्य का लक्षण व भेद, भारोपीय परिवार का सामान्य परिचय, वैदिक संस्कृत एवं लौकिक संस्कृत में अन्तर, भाषा तथा वाक् में अन्तर, भाषा तथा बोली में अन्तर

इकाई 6

(ख) व्याकरण का विशिष्ट अध्ययन

- **परिभाषाएँ-** संहिता, संयोग,गुण, वृद्धि, प्रातिपदिक, नदी,घि, उपधा,अपृक्त, गति, पद, विभाषा, सवर्ण, टि, प्रगृह्य, सर्वनामस्थान, भ, सर्वनाम, निष्ठा।
- **सन्धि-** अच् सन्धि, हल् सन्धि, विसर्ग सन्धि, (लघुसिद्धान्तकौमुदी के अनुसार)
- **सुबन्त-अजन्त-** राम, सर्व, (तीनों लिंगों में), विश्वपा, हरि, त्रि, (तीनों लिंगों में), सखि, सुधी, गुरु, पितृ, गौ, रमा, मति, नदी, धेनु, मातृ, ज्ञान, वारि, मधु ।
- **हलन्त-** लिह, विश्ववाह, चतुर् (तीनों लिंगों में), इदम् (तीनों लिंगों में), किम् (तीनों लिंगों में), तत् (तीनों लिंगों में), राजन्, मघवन्, पथिन्, विद्वस्, अस्मद्, युष्मद् ।
- **समास-** अव्ययीभाव, तत्पुरुष, बहुव्रीहि, द्वन्द्व, (लघुसिद्धान्तकौमुदी के अनुसार)
- **तद्धित-** अपत्यार्थक एवं मत्वर्थीय (सिद्धान्तकौमुदी के अनुसार)
- **तिङन्त-** भू,एध् ,अद् ,अस् ,हु, दिव् ,षुञ् ,तुद् ,तन् ,कृ, रुध् ,क्रीञ् ,चुर्
- **प्रत्ययान्त-** णिजन्त, सन्नन्त, यङन्त, यङ्लुगन्त, नामधातु।
- **कृदन्त-** तव्य/तव्यत्, अनीयर्, यत्, ण्यत्, क्यप्, शतृ, शानच्, क्त्वा, क्तवतु, तुमुन्, णमुल् ।
- **स्त्रीप्रत्यय-** लघुसिद्धान्तकौमुदी के अनुसार
- **कारकप्रकरण-** सिद्धान्तकौमुदी के अनुसार
- **परस्मैपद एवं आत्मनेपद विधान-** सिद्धान्तकौमुदी के अनुसार
- **महाभाष्य (पस्पशाह्निक)-**
  शब्दपरिभाषा, शब्द एवं अर्थ सम्बन्ध, व्याकरण अध्ययन के उद्देश्य, व्याकरण की परिभाषा, साधु शब्द के प्रयोग का परिणाम, व्याकरण पद्धति।
- **वाक्यपदीयम् (ब्रह्मकाण्ड)-**
  स्फोट का स्वरूप, शब्द-ब्रह्म का स्वरूप, शब्द-ब्रह्म की शक्तियाँ, स्फोट एवं ध्वनि का सम्बन्ध, शब्द-अर्थ का सम्बन्ध,ध्वनि के प्रकार, भाषा के स्तर।

इकाई 7

संस्कृत साहित्य, काव्यशास्त्र एवं छन्दपरिचय

- **निम्नलिखित का सामान्य परिचय -**
  भास, अश्वघोष, कालिदास, शूद्रक, विशाखदत्त, भारवि, माघ, हर्षवर्धन, बाणभट्ट, दण्डी,भवभूति, भट्टनारायण, बिल्हण, श्रीहर्ष, अम्बिकादत्तव्यास, पण्डिता क्षमाराव, वी. राघवन्, श्रीधरभास्कर वर्णेकर

- **काव्यशास्त्र-** रससम्प्रदाय, अलंकारसम्प्रदाय, रीतिसम्प्रदाय, ध्वनिसम्प्रदाय, वक्रोक्तिसम्प्रदाय, औचित्यसम्प्रदाय ।
- **पाश्चात्त्य काव्यशास्त्र-** अरस्तू, लॉन्जाइनस, क्रोचे

इकाई 8

निम्नलिखित ग्रन्थों का विशिष्ट अध्ययन

- **पद्य-** बुद्धचरितम् (प्रथम सर्ग), रघुवंशम् (प्रथमसर्ग), किरातार्जुनीयम् (प्रथमसर्ग), शिशुपालवधम् (प्रथमसर्ग), नैषधीयचरितम् (प्रथमसर्ग)
- **नाट्य-** स्वप्नवासवदत्तम्, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, वेणीसंहारम्, मुद्राराक्षसम्, उत्तररामचरितम्, रत्नावली, मृच्छकटिकम्,
- **गद्य-** दशकुमारचरितम् (अष्टम उच्छ्वास), हर्षचरितम् (पञ्चम उच्छ्वास) कादम्बरी (शुकनासोपदेश)
- **चम्पूकाव्य-** नलचम्पू (प्रथम उच्छ्वास)
- **साहित्यदर्पण-**
  काव्यपरिभाषा, काव्य की अन्य परिभाषाओं का खण्डन, शब्दशक्ति (संकेतग्रह, अभिधा, लक्षणा, व्यंजना), काव्यभेद (चतुर्थ परिच्छेद), श्रव्यकाव्य (गद्य,पद्य, मिश्र काव्य-लक्षण)
- **काव्यप्रकाश-**

काव्यलक्षण, काव्यप्रयोजन, काव्यहेतु, काव्यभेद, शब्दशक्ति, अभिहितान्वयवाद, अन्विताभिधानवाद, रसस्वरूप एवं रससूत्र विमर्श, रसदोष, काव्यगुण, व्यञ्जनावृत्ति की स्थापना (पञ्चम उल्लास)

- **अलंकार-**
  वक्रोक्ति, अनुप्रास, यमक, श्लेष, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, समासोक्ति, अपह्नुति, निदर्शना, अर्थान्तरन्यास, दृष्टान्त, विभावना, विशेषोक्ति, स्वभावोक्ति, विरोधाभास, संकर, संसृष्टि।
- **ध्वन्यालोक (प्रथम उद्योत)**
- **वक्रोक्तिजीवितम् (प्रथम उन्मेष)**
- **भारत-नाट्यशास्त्र (द्वितीय एवं षष्ठ अध्याय)**

दशरूपकम् (प्रथम एवं तृतीय प्रकाश)

छन्दपरिचय-

आर्या, अनुष्टुप् , इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा,वसन्ततिलका, उपजाति, वंशस्थ, द्रुतविलम्बित, शालिनी, मालिनी, शिखरिणी, मन्दाक्रान्ता, शार्दूलविक्रीडित, स्रग्धरा।

इकाई 9

पुराणेतिहास, धर्मशास्त्र एवं अभिलेखशास्त्र

निम्नलिखित का सामान्य परिचय -

- **रामायण-** विषयवस्तु, काल, रामायणकालीन समाज, परवर्ती ग्रन्थों के लिए प्रेरणास्रोत, साहित्यिक महत्त्व, रामायण में आख्यान।
- **महाभारत-** विषयवस्तु, काल, महाभारतकालीन समाज, परवर्ती ग्रन्थों के लिए प्रेरणास्रोत, साहित्यिक महत्त्व, महाभारत में आख्यान।
- **पुराण-** पुराण की परिभाषा, महापुराण-उपपुराण, पौराणिक सृष्टि-विज्ञान पौराणिक आख्यान ।
- **प्रमुख स्मृतियों का सामान्य परिचय**
- **अर्थशास्त्र का सामान्य परिचय**
- **लिपि-** ब्राह्मी लिपि का इतिहास एवं उत्पत्ति के सिद्धान्त
- **अभिलेख का सामान्य परिचय**

इकाई 10

निम्नलिखित ग्रन्थों का विशिष्ट अध्ययन

कौटिलीय-अर्थशास्त्र (प्रथम-विनयाधिकारिक)

मनुस्मृति- (प्रथम,द्वितीय एवं सप्तम अध्याय)

याज्ञवल्क्यस्मृति- (व्यवहाराध्याय)

लिपि तथा अभिलेख- गुप्तकालीन तथा अशोक कालीन ब्राह्मी लिपि

अशोक के अभिलेख- प्रमुख शिलालेख, प्रमुख स्तम्भलेख।

मौर्योत्तरकालीन अभिलेख- कनिष्क के शासन वर्ष 3 का सारनाथ बौद्ध प्रतिमा लेख, रुद्रदामन् का गिरनार शिलालेख, खारवेल का हाथीगुम्फा अभिलेख ।

गुप्तकालीन एवं गुप्तोत्तर कालीन अभिलेख-
समुद्रगुप्त का इलाहाबाद स्तम्भलेख, यशोधर्मन् का मन्दसौर शिलालेख, हर्ष का बांसखेड़ा ताम्रपट्ट अभिलेख, पुलकेशिन् द्वितीय का ऐहोल शिलालेख

अनुक्रमणिका

NTA UGC-NET/JRF संस्कृतम् (कोड-25) हलप्रश्नपत्रम्

॥ नमः संस्कृताय ॥

1	जून 1994	UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् II

नोट : इस प्रश्नपत्र में **पचास (50)** बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के **दो (2) अङ्क** हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. 'वेद' शब्द से क्या अभिप्रेत है –
(A) दर्शन (B) ऋषिमत
(C) ज्ञान (D) सिद्धान्त
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–01

2. विष्णु का 'परमपद' (निवासस्थान) है –
(A) द्युस्थान (B) हृदय
(C) अन्तरिक्ष (D) भूलोक
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–15

3. ऋग्वेद में कितने मण्डल हैं –
(A) पन्द्रह (B) आठ
(C) दस (D) सात
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी पेज–47

4. ज्ञानकाण्ड किसका विषय है –
(A) शुक्ल-यजुर्वेद का (B) प्रातिशाख्य का
(C) उपनिषदों का (D) ब्राह्मणग्रन्थों का
स्रोत–तैत्तिरीयोपनिषद्-चुन्नीलाल शुक्ल, पेज–01 प्रस्तावना

5. 'नारद-सनत्कुमार' संवाद आता है –
(A) केन उपनिषद् में (B) तैत्तिरीय उपनिषद् में
(C) छान्दोग्य उपनिषद् में (D) प्रश्न उपनिषद् में
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–181

6. 'पुरुष-सूक्त' आता है –
(A) केन उपनिषद् में (B) तैत्तिरीय उपनिषद् में
(C) ऋग्वेद में (D) ईशोपनिषद् में
स्रोत– ऋक्सूक्तसंग्रह (10.90) - हरिदत्तशास्त्री, पेज-392

7. 'बृहदारण्यक उपनिषद्' सम्बद्ध है –
(A) ऋग्वेद से (B) शुक्ल यजुर्वेद से
(C) अथर्ववेद से (D) सामवेद से
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–9

8. 'वैदिक-देवशास्त्र' (वैदिक मैथोलॉजी) के लेखक कौन हैं –
(A) मैक्समूलर (B) वेबर
(C) मैक्डोनल (D) कीथ
स्रोत– वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–20

9. 'उत्तर ध्रुव' को वेदों का रचना स्थान किसने माना है –
(A) मैक्डोनल ने (B) मैक्समूलर ने
(C) वेबर ने (D) बालगङ्गाधर तिलक ने
संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशंकर शर्मा ऋषि, पेज–103

10. सर्वप्रथम 'वेदों' का निर्वचन किसने किया है –
(A) वेदव्यास ने (B) शाण्डिल्य ने
(C) यास्क ने (D) श्वेतकेतु ने
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–16

11. शब्द-प्रक्रियाशास्त्र का मूल वेदाङ्ग है –
(A) शिक्षा (B) कल्प
(C) व्याकरण (D) निरुक्त
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–193

12. प्राणाग्निहोत्र-विद्या किस उपनिषद् में है –
(A) ईशावास्योपनिषद् में (B) मुण्डकोपनिषद् में
(C) प्रश्नोपनिषद् में (D) छान्दोग्योपनिषद् में
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति–कपिलदेव द्विवेदी, पेज–177

13. सांख्यमतानुसार यथार्थस्वभाव में पुरुष कैसा होता है –
(A) सदैव सक्रिय (B) सृष्टिकाल-सक्रिय
(C) सदैव निष्क्रिय (D) प्रलये एव निष्क्रिय
स्रोत–सांख्यकारिका (कारिका-19,20)-राकेशशास्त्री, पेज–62

14. सांख्य में स्वीकृत प्रमाणों की संख्या कितनी है –
(A) दो (B) तीन
(C) चार (D) पाँच
स्रोत–सांख्यकारिका (कारिका 4) - राकेशशास्त्री, पेज–12

15. प्रकृति का अस्तित्व जानने का प्रमाण कौन-सा है –
(A) प्रत्यक्ष (B) अनुमान
(C) उपमान (D) अर्थापत्ति
स्रोत–सांख्यकारिका (कारिका-6) - राकेशशास्त्री, पेज–23

1. (C)	**2.** (A)	**3.** (C)	**4.** (C)	**5.** (C)	**6.** (C)	**7.** (B)	**8.** (C)	**9.** (D)	**10.** (C)
11. (C)	**12.** (C)	**13.** (C)	**14.** (B)	**15.** (B)					

16. सांख्यमतानुसार मोक्ष का साक्षात् कारण है –
(A) ब्रह्मज्ञान (B) प्रकृति-पुरुष विवेकज्ञान
(C) अष्टाङ्गयोग (D) ईश्वरज्ञान
स्रोत–सांख्यकारिका (कारिका 68) - राकेशशास्त्री, पेज–173

17. अद्वैतवेदान्तमतानुसार 'अज्ञान' का स्वरूप होता है –
(A) सत् (B) असत्
(C) सदसत् (D) सदसद्विलक्षण
स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–37

18. अद्वैतवेदान्तमतानुसार जगत् का स्वरूप है –
(A) मायाविवर्त (B) मायापरिणाम
(C) ब्रह्मविवर्त (D) जीवपरिणाम
स्रोत–वेदान्तसार-सन्तनारायण श्रीवास्तव पेज–117

19. 'भामती' के रचयिता हैं –
(A) वाचस्पतिमिश्र (B) पद्मपाद
(C) सदानन्द योगीन्द्र (D) शङ्कर
स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज भू.–viii

20. अद्वैतवेदान्तमतानुसार ब्रह्म और जीव का सम्बन्ध कैसा है –
(A) भेद (B) अभेद
(C) भेदाभेद (D) अनिर्वचनीय
स्रोत–वेदान्तसार-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–30

21. अनुमिति का कारण है –
(A) हेतुज्ञान (B) पक्षधर्मताज्ञान
(C) सपक्षधर्मताज्ञान (D) व्याप्तिज्ञान
स्रोत–तर्कसंग्रह-केदारनाथ त्रिपाठी, पेज–40

22. कार्य का अन्तिम कारक है –
(A) अवान्तर-व्यापार (B) करण
(C) कर्ता (D) साधारणकारण
स्रोत–तर्कभाषा-श्रीनिवासशास्त्री, पेज–58

23. घटाभाव और भूतल का सम्बन्ध होता है –
(A) संयोग-सम्बन्ध
(B) समवाय-सम्बन्ध
(C) स्वरूप-सम्बन्ध
(D) विशेषण-विशेष्यभाव-सम्बन्ध
स्रोत–तर्कभाषा-श्रीनिवास शास्त्री, पेज–68

24. न्यायमतानुसार जीवात्मा का परिणाम होता है –
(A) देहपरिणाम (B) विभुपरिणाम
(C) अणुपरिणाम (D) मध्यमपरिणाम
स्रोत–तर्कभाषा श्रीनिवासशास्त्री, पेज–175

25. 'उपधा' का लक्षण पाणिनि के अनुसार है :
(A) क्तक्तवतू (B) अलोऽन्त्यात्पूर्व
(C) यू स्त्र्याख्यौ (D) सुप्तिङन्तम्
स्रोत–अष्टाध्यायी (1-1-64) ईश्वरचन्द्र, पेज–48

26. पाणिनि के अनुसार "आ, ऐ, औ" की संज्ञा है :
(A) गुण संज्ञा (B) टि संज्ञा
(C) गति संज्ञा (D) वृद्धि संज्ञा
स्रोत–अष्टाध्यायी (1-1-2) ईश्वरचन्द्र, पेज–05

27. पाणिनि के अनुसार 'कर्म' का लक्षण है :
(A) ध्रुवमपाये (B) कर्तुरीप्सिततमम्
(C) आधारः (D) स्वतन्त्रः
स्रोत–अष्टाध्यायी (1-4-49) ईश्वरचन्द्र, पेज–127

28. 'चोरभयम्' पद में समास है –
(A) तत्पुरुष (B) बहुव्रीहि
(C) कर्मधारय (D) द्वन्द्व
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज–76

29. 'हरित्रातः' का विग्रहवाक्य है –
(A) हरये त्रातः (B) हरिणा त्रातः
(C) हरौ त्रातः (D) हरि त्रातः
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज–66

30. 'समया' के योग में विभक्ति होती है –
(A) षष्ठी (B) पञ्चमी
(C) द्वितीया (D) चतुर्थी
स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी कारकप्रकरण - राममुनि पाण्डेय, पेज–31

31. 'द्वादश' पद में समास है –
(A) तत्पुरुष (B) कर्मधारय
(C) बहुव्रीहि (D) द्वन्द्व
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज–165

16. (B) **17.** (D) **18.** (C) **19.** (A) **20.** (B) **21.** (B) **22.** (A) **23.** (D) **24.** (B) **25.** (B) **26.** (D)
27. (B) **28.** (A) **29.** (B) **30.** (C) **31.** (D)

32. 'द्विमूर्धः' पद में समास है –
(A) अव्ययीभाव (B) द्विगु
(C) तत्पुरुष (D) बहुव्रीहि
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज–209

33. 'वैदिक भाषा' किस भाषा के सबसे निकट है –
(A) Hittite (हिटाइट) (B) Indo-European
(C) Avestan (अवेस्ता) (D) Persia (पर्सिया)
स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र–कपिलदेव द्विवेदी, पेज–416

34. ध्वनि के आधार पर भारोपीयभाषा के मुख्य विभाग हैं
(A) दो (B) तीन
(C) चार (D) पाँच
स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र–कपिलदेव द्विवेदी, पेज–384

35. भारोपीय भाषा से संस्कृत 'च-वर्ग' की उत्पत्ति बताने वाला है –
(A) Grimm (ग्रिम) (B) Collitz (कॉलित्स)
(C) Verner (वर्नर) (D) Grassman (ग्रासमान)
स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–247-248

36. दिगम्बर जैन अनुयायियों की मुख्य भाषा है –
(A) शौरसेनी (B) महाराष्ट्री
(C) संस्कृत (D) वैदिकभाषा
स्रोत–भाषाविज्ञान - कर्ण सिंह, पेज–118

37. "सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः परमापदां पदम् ।" इस सूक्ति से युक्त काव्य है –
(A) रघुवंशम् (B) किरातार्जुनीयम्
(C) शिशुपालवधम् (D) बुद्धचरितम्
स्रोत–किरातार्जुनीयम् (2/30)-आचार्य श्रीनिवास शर्मा, पेज-41

38. 'शाल्मली-वृक्ष' का वर्णन किसमें पाया जाता है –
(A) कादम्बरी में (B) हर्षचरित में
(C) दशकुमारचरित में (D) स्वप्नवासवदत्ता में
स्रोत–कादम्बरी कथामुख-तारिणीश झा, पेज–195

39. 'वसन्तक' किसमें है –
(A) रत्नावली में (B) मृच्छकटिकम् में
(C) उत्तररामचरितम् में (D) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में
स्रोत–रत्नावली-तारिणीश झा, पेज भू.–43

40. "अहो उदाररमणीया पृथिवी" यह वाक्य किस नाटक में है–
(A) मुद्राराक्षसम् में (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में
(C) वेणीसंहारम् में (D) मालविकाग्निमित्रम् में
स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (अङ्क-7)–कपिलदेव द्विवेदी, पेज–400

41. 'अजविलाप' किसमें है –
(A) स्वप्नवासवदत्तम् में (B) नैषधीयचरितम् में
(C) रघुवंशम् में (D) कुमारसम्भवम् में
स्रोत–रघुवंशम् (8/43) - कृष्णमणि त्रिपाठी, पेज–254

42. "ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति"- इस सूक्ति से युक्त रचना है –
(A) उत्तररामचरितम् (B) कुन्दमाला
(C) मुद्राराक्षसम् (D) मालतीमाधवम्
स्रोत–उत्तररामचरितम् (1/10) कपिलदेव द्विवेदी, पेज–22

43. 'शकार' किस रचना में है –
(A) किरातार्जुनीयम् में (B) मृच्छकटिकम् में
(C) वेणीसंहारम् में (D) नागानन्दम् में
स्रोत–मृच्छकटिकम् श्रीनिवासशास्त्री, पेज–01

44. आचार्य विश्वनाथ का काव्यलक्षण है –
(A) शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्
(B) रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्
(C) वाक्यं रसात्मकं काव्यम्
(D) शरीरं तावदिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली
स्रोत–साहित्यदर्पण (1/3) शालिग्राम शास्त्री, पेज–19

45. साक्षात्सङ्केतित अर्थ की बोधिका है –
(A) अभिधा (B) लक्षणा
(C) तात्पर्या (D) व्यञ्जना
स्रोत–साहित्यदर्पण (2/4) शालिग्राम शास्त्री, पेज–26

46. 'रति-स्थायीभाव' वाला रस है –
(A) करुण (B) शृङ्गार
(C) अद्‌भुत (D) वीर
स्रोत–साहित्यदर्पण (3/187) शालिग्राम शास्त्री, पेज–106

32. (D)	**33.** (C)	**34.** (A)	**35.** (B)	**36.** (A)	**37.** (B)	**38.** (A)	**39.** (A)	**40.** (B)	**41.** (C)	**42.** (A)
43. (B)	**44.** (C)	**45.** (A)	**46.** (B)							

47. यह प्रहसन है –

(A) प्रियदर्शिका (B) प्रतिज्ञायौगन्धरायण
(C) मत्तविलास (D) मृच्छकटिक

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशंकर शर्मा ऋषि, पेज–548

48. रूपक कितने प्रकार के होते हैं –

(A) तीन (B) दो
(C) पाँच (D) दस

स्रोत–साहित्यदर्पण (6/3) शान्तिग्राम शास्त्री, पेज–170

49. इनमें से कौन-सा महाकाव्य नहीं है –

(A) रघुवंशम् (B) शिशुपालवधम्
(C) हर्षचरितम् (D) नैषधीयचरितम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-396

50. नाटक सन्धियों में प्रथम है –

(A) निर्वहण (B) प्रतिमुख
(C) गर्भ (D) मुख

स्रोत–साहित्यदर्पण (6/75) शालिग्राम शास्त्री, पेज–184

47. (C) **48.** (D) **49.** (C) **50.** (D)

2	जून 1995	UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् II

नोट : इस प्रश्नपत्र में **पचास (50)** बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के **दो (2) अङ्क** हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के प्रथमसूक्त में 'पुरोहित' विशेषण किस देवता से सम्बद्ध है –
(A) इन्द्र से (B) सवितृ से
(C) अग्नि से (D) वरुण से
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास – पारसनाथ द्विवेदी, पेज–44

2. वृत्र का नाश किस देवता ने किया –
(A) अग्नि ने (B) वरुण ने
(C) विष्णु ने (D) इन्द्र ने
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–41

3. 'यम-यमी' संवादसूक्त किस वेद में है –
(A) सामवेद में (B) ऋग्वेद में
(C) यजुर्वेद में (D) अथर्ववेद में
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–58

4. 'शाकल-शाखा' से सम्बद्ध वेद है –
(A) अथर्ववेद (B) सामवेद
(C) यजुर्वेद (D) ऋग्वेद
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–46

5. 'शतपथब्राह्मण' से सम्बद्ध वेद है –
(A) यजुर्वेद (B) सामवेद
(C) अथर्ववेद (D) ऋग्वेद
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव, द्विवेदी पेज–9

6. 'यम-नचिकेता' संवाद से सम्बद्ध उपनिषद् है –
(A) कठ (B) केन
(C) श्वेताश्वतर (D) बृहदारण्यक
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–175

7. 'असतो मा सद्गमय' यह उक्ति किस उपनिषद् में है–
(A) बृहदारण्यक में (B) कठ में
(C) केन में (D) ईश में
स्रोत–बृहदारण्यकोपनिषद् (02-3-28)-गीताप्रेस, पेज–153

8. 'शुनःशेप-आख्यान' किस ब्राह्मण में है –
(A) ऐतरेय (B) तैत्तिरीय
(C) गोपथ (D) शतपथ
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–125

9. किस विद्वान् के अनुसार ऋग्वेद का आरम्भकाल 6000 से 4000 ई०पू० है –
(A) बालगङ्गाधर तिलक (B) मैक्समूलर
(C) याकोबी (D) वेबर
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–40

10. ऋग्वेद की सूक्त-व्यवस्था निम्नलिखित में से किसके अनुसार है –
(A) मण्डल (B) प्रपाठक
(C) लम्बक (D) सर्ग
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–47

11. किस वेदाङ्ग को वेद का 'मुख' कहा गया है –
(A) छन्द (B) कल्प
(C) शिक्षा (D) व्याकरण
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–190

12. 'निरुक्त' के रचयिता हैं –
(A) कालिदास (B) भामह
(C) यास्क (D) पाणिनि
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–204

13. 'कारण में कार्य विद्यमान ही है' - यह किसका मत है –
(A) न्याय का (B) वैशेषिक का
(C) सांख्य का (D) मीमांसा का
स्रोत–सांख्यकारिका (कारिका 9) सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–100

14. सांख्यमतानुसार पुरुष और प्रकृति का सम्बन्ध है –
(A) नित्यः (B) असत्यः
(C) सत्यासत्यः (D) ज्ञानजन्यः
स्रोत–सांख्यकारिका - राकेशशास्त्री, पेज–6

1. (C) **2.** (D) **3.** (B) **4.** (D) **5.** (A) **6.** (A) **7.** (A) **8.** (A) **9.** (A) **10.** (A)
11. (D) **12.** (C) **13.** (C) **14.** (A)

15. सांख्यमतानुसार अपवर्ग होता है –

(A) ज्ञानजन्यः (B) वैराग्यजन्यः
(C) अभ्यासजन्यः (D) विवेकजन्यः

स्रोत–सांख्यकारिका (कारिका-4) - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज भू.-67

16. सांख्यमतानुसार प्रमाण हैं –

(A) चत्वारि (B) पञ्च
(C) त्रीणि (D) षट्

स्रोत–सांख्यकारिका - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–47

17. 'तत्त्वमसि' इस वाक्य को कहते हैं –

(A) अभेदवाक्य (B) महावाक्य
(C) ब्रह्मवाक्य (D) अद्वयवाक्य

स्रोत–वेदान्तसार-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–121

18. अद्वैतमतानुसार संसारबन्ध का कारण है –

(A) अज्ञान (B) विशेषज्ञानाभाव
(C) ममत्वज्ञान (D) जीवज्ञान

स्रोत–वेदान्तसार सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–57

19. अद्वैतमतानुसार जीव कहलाता है –

(A) सर्वज्ञ (B) किञ्चिदज्ञ
(C) आत्मज्ञ (D) त्रिकालज्ञ

स्रोत–वेदान्तसार-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–31

20. 'अहं ब्रह्मास्मि' यहाँ 'अहम्' पद में वृत्ति है –

(A) अभिधा (B) लक्षणा
(C) व्यञ्जना (D) जहदजहल्लक्षणा

21. सादृश्य को स्वतन्त्र पदार्थ मानते हैं –

(A) प्रभाकर-मीमांसा (B) भट्ट-मीमांसा
(C) वेदान्त (D) न्यायवैशेषिक

स्रोत–भारतीयदर्शन की रूपरेखा-हरेन्द्रप्रसाद सिन्हा, पेज–287

22. वैशेषिक मतानुसार 'करण' का लक्षण है –

(A) व्यापारवदसाधारणं कारणम्
(B) फलोत्पादकम्
(C) साधकतमम्
(D) फलसाधनम्

स्रोत–तर्कसंग्रह-रामभजनशर्मा वात्स्यायन, पेज–39

23. न्याय-वैशेषिक मतानुसार 'पद' का लक्षण है –

(A) शक्तम् (B) सुबन्तम्
(C) तिङन्तम् (D) सुप्तिङन्तम्

स्रोत–तर्कसंग्रह-रामभजनशर्मा वात्स्यायन, पेज–86

24. न्यायवैशेषिक मतानुसार 'अप्रमा' का लक्षण है –

(A) प्रत्यक्षभिन्नं ज्ञानम्
(B) प्रत्यक्षानुमानभिन्नं ज्ञानम्
(C) तदभाववति तत्प्रकारकं ज्ञानम्
(D) असाक्षिज्ञानम्

स्रोत–तर्कसंग्रह-रामभजनशर्मा वात्स्यायन, पेज–37

25. पाणिनि के अनुसार 'प्रातिपदिक' का लक्षण है –

(A) आद्यन्तौ टकितौ (B) तुल्यास्यप्रयत्नम्
(C) नवेति (D) अर्थवदधातुरप्रत्ययः

स्रोत–अष्टाध्यायी (1-2-45) ईश्वरचन्द्र, पेज–69

26. पाणिनि के अनुसार 'निष्ठा' है –

(A) अचोऽन्त्यादि (B) क्तक्तवतू
(C) ईदूदेद्द्विवचनम् (D) नवेति

स्रोत–अष्टाध्यायी (1-1-25) ईश्वरचन्द्र, पेज–19

27. पाणिनि के अनुसार 'कर्म' है –

(A) कर्मणा यमभिप्रैति सः (B) साधकतमम्
(C) कर्तुरीप्सिततमम् (D) आधारः

स्रोत–अष्टाध्यायी (1-4-49) ईश्वरचन्द्र, पेज 127

28. 'नीलोत्पलम्' में समास है –

(A) अव्ययीभाव (B) द्विगु
(C) द्वन्द्व (D) कर्मधारय

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज–112

29. 'पीताम्बरः' का विग्रहवाक्य है –

(A) पीतं च तत् अम्बरं च
(B) पीतम् अम्बरं यस्य सः
(C) पीतम् अम्बरं येन सः
(D) पीतम् अम्बरं यस्मिन् सः

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी-गोविन्दाचार्य, पेज–954

15. (D) **16.** (C) **17.** (B) **18.** (A) **19.** (B) **20.** (B) **21.** (A) **22.** (A) **23.** (A) **24.** (C) **25.** (D)
26. (B) **27.** (C) **28.** (D) **29.** (B)

30. 'नमः' के योग में प्रयुक्त विभक्ति है –
(A) तृतीया (B) पञ्चमी
(C) षष्ठी (D) चतुर्थी
स्रोत– अष्टाध्यायी (2-3-16) ईश्वरचन्द्र, पेज–199
कारकप्रकरण - राममुनि पाण्डेय, पेज–55

31. 'अनुरूपम्' पद में समास है –
(A) अव्ययीभाव (B) तत्पुरुष
(C) द्विगु (D) द्वन्द्व
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड-4), पेज–33

32. 'त्रिलोकी' पद में समास है –
(A) द्विगु (B) द्वन्द्व
(C) अव्ययीभाव (D) बहुव्रीहि
स्रोत–लघुसिद्धान्त कौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज–111

33. 'उ' ऐसा स्वर है, जो है –
(A) केन्द्रीय (B) विवृत
(C) पश्च (D) अग्र
स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–150

34. 'd' का अघोष रूप निम्नलिखित में से कौन-सा है–
(A) द् (B) ठ्
(C) त् (D) थ्
स्रोत–भाषा विज्ञान-कर्ण सिंह, पेज–158

35. 'मराठी' निम्नलिखित में से किस भाषा परिवार के अन्तर्गत है –
(A) पालि (B) चीनी
(C) जर्मन (D) आधुनिक भारतीय आर्यभाषा
स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र – कपिलदेव द्विवेदी, पेज–443

36. दो क्रमिक व्यञ्जन महाप्राण ध्वनियों में से एक के महाप्राणत्वह्रास का प्रस्ताव जिसने किया, वह है –
(A) ग्रिम (B) वर्नर
(C) बूचट (D) ग्रासमान
स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–246

37. ''याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा''– यह सूक्ति जिस रचना में है, वह है –
(A) वेणीसंहार (B) नैषधीयचरित
(C) किरातार्जुनीय (D) मेघदूत
स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ श्लोक–6)

38. बाणभट्ट की आत्मकथा जिस रचना में वर्णित है, वह रचना है –
(A) दशकुमारचरित (B) हर्षचरित
(C) बुद्धचरित (D) शिशुपालवध
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज–396

39. भट्टनारायण जिस रूपक के रचयिता हैं वह रूपक है-
(A) मृच्छकटिकम् (B) रत्नावली
(C) वेणीसंहारम् (D) स्वप्नवासवदत्तम्
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा ऋषि, पेज–518

40. 'राक्षस' पात्र जिस रूपक में है, वह है –
(A) मुद्राराक्षस (B) प्रतिज्ञायौगन्धरायण
(C) उत्तररामचरित (D) स्वप्नवासवदत्ता
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा ऋषि, पेज–505

41. ''एको रसः करुण एव निमित्तभेदाद् भिन्नः पृथक् पृथगिव श्रयते विवर्तान्'' यह उद्धरण किस ग्रन्थ से है–
(A) स्वप्नवासवदत्तम् (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(C) मृच्छकटिकम् (D) उत्तररामचरितम्
स्रोत–उत्तररामचरितम् (3/47) – कपिलदेव द्विवेदी, पेज–260

42. ''लिम्पतीव तमोऽङ्गानि वर्षतीवाञ्जनं नभः। असत्पुरुषसेवेव दृष्टिर्विफलतां गता'' यह उद्धरण किस ग्रन्थ से है –
(A) वेणीसंहार (B) मेघदूत
(C) मृच्छकटिक (D) रत्नावली
स्रोत–मृच्छकटिकम् (1/34) - श्रीनिवासशास्त्री, पेज–30

43. 'सानुमती' पात्र जिस काव्य में है, वह ग्रन्थ है –
(A) किरातार्जुनीयम् (B) शिशुपालवधम्
(C) उत्तररामचरितम् (D) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम्-कपिलदेव द्विवेदी, भू.पेज–100

30. (D) **31.** (A) **32.** (A) **33.** (C) **34.** (C) **35.** (D) **36.** (D) **37.** (D) **38.** (B) **39.** (C) **40.** (A)
41. (D) **42.** (C) **43.** (D)

44. **''वाक्यं रसात्मकं काव्यम्'' - यह काव्यलक्षण जिसने प्रतिपादित किया, वह लक्षणकार हैं –**

(A) मम्मट
(B) आनन्दवर्द्धन
(C) विश्वनाथ
(D) धनञ्जय

स्रोत–साहित्यदर्पण (1/3) – शालिग्राम शास्त्री, पेज–19

45. **'अभिधा' द्वारा जिस अर्थ का बोध होता है, वह अर्थ है–**

(A) लक्ष्यार्थ (B) व्यङ्ग्यार्थ
(C) तात्पर्यार्थ (D) अभिधेयार्थ

स्रोत–साहित्यदर्पण (2/4) – शालिग्राम शास्त्री, पेज–26

46. **'करुणरस' का स्थायीभाव है –**

(A) शोक (B) रति
(C) भय (D) उत्साह

स्रोत–साहित्यदर्पण (6/223) – शालिग्राम शास्त्री, पेज–116

47. **'मालतीमाधव' रूपक के प्रकार का नाम है –**

(A) प्रकरण (B) नाटक
(C) ईहामृग (D) प्रहसन

साहित्यदर्पण 6/225 शालिग्राम शास्त्री पेज–214

48. **नाटक में सन्धियों की संख्या होती है –**

(A) पञ्च (B) एक
(C) नव (D) दश

स्रोत–साहित्यदर्पण (6/76) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–184

49. **निम्नलिखित में से खण्डकाव्य कौन है –**

(A) रघुवंश (B) शिशुपालवध
(C) मेघदूत (D) सौन्दरनन्द

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशंकर शर्मा ऋषि, पेज–332

50. **रूपक भेदों की संख्या कितनी है –**

(A) पञ्च (B) एक
(C) नव (D) दस

स्रोत–साहित्यदर्पण (6/3) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–170

44. (C) **45.** (D) **46.** (A) **47.** (A) **48.** (A) **49.** (C) **50.** (D)

3	दिसम्बर 1996	UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् II

नोट : इस प्रश्नपत्र में **पचास (50)** बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के **दो (2) अङ्क** हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. 'ऋग्वेद' के प्रथम मण्डल के प्रथमसूक्त का देवता है–
(A) इन्द्र (B) वरुण
(C) अग्नि (D) बृहस्पति
स्रोत–वैदिक सूक्तसंग्रह - विजयशङ्कर पाण्डेय, पेज–31

2. 'ऋग्वेद' में मन्त्रों की संज्ञा है –
(A) साम (B) ऋचा
(C) यजुः (D) इनमें से कोई नहीं
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–44

3. 'सामवेद' की कितनी शाखाएँ मानी जाती हैं –
(A) 9 (B) 21
(C) 101 (D) 1000
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–83

4. 'आयुर्वेद' किस वेद का उपवेद है –
(A) ऋग्वेद का (B) सामवेद का
(C) यजुर्वेद का (D) अथर्ववेद का
स्रोत– वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–10

5. 'शुक्ल-यजुर्वेद' से सम्बन्धित ब्राह्मण है –
(A) गोपथ ब्राह्मण (B) शतपथ ब्राह्मण
(C) ऐतरेय ब्राह्मण (D) तैत्तिरीय ब्राह्मण
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–9

6. विन्टरनित्स के अनुसार ऋग्वेद का समय है –
(A) 1500 B.C. (B) 2500 B.C.
(C) 3500 B.C. (D) 4500 B.C.
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–42

7. इन्द्र का कार्य है –
(A) वर्षा (B) प्रकाश
(C) विद्या (D) धन
स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्त शास्त्री, पेज भू.–11

8. 'पुरूरवा-उर्वशी संवाद' किस वेद में है –
(A) ऋग्वेद में (B) यजुर्वेद में
(C) सामवेद में (D) अथर्ववेद में
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–58

9. ''कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः'' यह सूक्ति किस उपनिषद् से है –
(A) कठोपनिषद् से (B) केनोपनिषद् से
(C) ईशोपनिषद् से (D) मुण्डकोपनिषद् से
स्रोत–ईशोपनिषद् (मन्त्र–2) गीता प्रेस, पेज–28

10. 'पृथिवी-सूक्त' किस वेद में है –
(A) अथर्ववेद में (B) सामवेद में
(C) यजुर्वेद में (D) ऋग्वेद में
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–109

11. किस वेदाङ्ग को 'चक्षु' कहा गया है –
(A) छन्द को (B) व्याकरण को
(C) ज्योतिष को (D) शिक्षा को
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–190

12. 'निरुक्त' के रचयिता हैं –
(A) शौनक (B) कात्यायन
(C) गार्ग्य (D) यास्क
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–204

13. 'पदार्थ सात ही होते हैं' - यह किसका मत है –
(A) न्याय-दर्शन का (B) वैशेषिक-दर्शन का
(C) सांख्य-दर्शन का (D) योग-दर्शन का
स्रोत–तर्कसंग्रह - रामभजन शर्मा वात्स्यायन, पेज–04

14. 'मन' का लक्षण है –
(A) सङ्कल्प-विकल्प (B) अभिमान
(C) अध्यवसाय (D) अवधारणा
स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–66

1. (C) **2.** (B) **3.** (D) **4.** (A) **5.** (B) **6.** (B) **7.** (A) **8.** (A) **9.** (C) **10.** (A)
11. (C) **12.** (D) **13.** (B) **14.** (A)

15. 'न्यायसूत्र' के रचयिता हैं –
(A) कपिल (B) बादरायण
(C) गौतम (D) जैमिनि
स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवासशास्त्री, पेज भू.–18

16. 'वैशेषिक' मतानुसार प्रमाण हैं –
(A) त्रीणि (B) द्वे
(C) पञ्च (D) षट्
स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवासशास्त्री, पेज–136

17. सांख्य का सिद्धान्त है –
(A) शून्यवाद (B) विवर्तवाद
(C) असत्कार्यवाद (D) सत्कार्यवाद
स्रोत–सांख्यकारिका (कारिका-09) - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–100

18. 'तर्कभाषा' के ग्रन्थकार हैं –
(A) सदानन्द (B) केशवमिश्र
(C) वात्स्यायन (D) उदयनाचार्य
स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवासशास्त्री, पेज भू.–28

19. शाङ्करवेदान्त है –
(A) द्वैत (B) विशिष्टाद्वैत
(C) अद्वैत (D) अचिन्त्यभेदाभेद
स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज भू.–8

20. मीमांसकों के अनुसार किससे प्रामाण्यग्रहण होता है –
(A) अनुव्यवसाय से (B) विषयता से
(C) संवित्ति से (D) ज्ञातता से
स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवासशास्त्री, पेज–160

21. मीमांसा के अनुसार 'धर्म' का लक्षण है –
(A) चोदनालक्षणोऽर्थो धर्मः
(B) यतोऽभ्युदयनिःश्रेयसंसिद्धिः स धर्मः
(C) धारणाद्धर्म इत्याहुः
(D) वेदोऽखिलो धर्ममूलम्
स्रोत–अर्थसंग्रह - सत्यप्रकाश शर्मा, पेज–14

22. 'न्यायदर्शन' के अनुसार जीवन का लक्ष्य है –
(A) कैवल्य (B) निःश्रेयस
(C) मोक्ष (D) निर्वाण
स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवासशास्त्री, पेज–04

23. व्यास किसके भाष्यकार हैं –
(A) सांख्यसूत्र के (B) ब्रह्मसूत्र के
(C) न्यायसूत्र के (D) योगसूत्र के
स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् - सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पेज भू.–21

24. 'पञ्चीकरण' किसका सिद्धान्त है –
(A) न्याय का (B) मीमांसा का
(C) सांख्य का (D) वेदान्त का
स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–79

25. 'मनोरथः' में सन्धि है –
(A) गुण सन्धि (B) पूर्वरूप सन्धि
(C) प्रकृतिभाव सन्धि (D) विसर्ग सन्धि
स्रोत–लघुसिद्धान्त कौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–122

26. 'पञ्चाननः' में समास है –
(A) तत्पुरुष समास (B) बहुव्रीहि समास
(C) द्विगु समास (D) कर्मधारय समास
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड-4), पेज–192

27. 'अलम्' के योग में विभक्ति होती है –
(A) पञ्चमी (B) चतुर्थी
(C) षष्ठी (D) द्वितीया
स्रोत–कारकप्रकरण - राममुनि पाण्डेय, पेज–55

28. 'पाकः' में कौन-सा प्रत्यय है –
(A) क (B) ण्वुल्
(C) क्त (D) घञ्
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमीव्याख्या भाग-3), पेज–193

29. 'अबोधीत्' में लकार है –
(A) लिट् लकार (B) लङ् लकार
(C) लुङ् लकार (D) लृङ् लकार
स्रोत–बृहद्धातुकुसुमाकर - हरेकान्तमिश्र, पेज–224

30. 'चित्रगुः' का विग्रहवाक्य है –
(A) चित्रा चासौ गौः (B) चित्रा गावो यस्य सः
(C) चित्राणां गवां समाहारः (D) चित्रायाः गौः
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज–198

15. (C) **16.** (B) **17.** (D) **18.** (B) **19.** (C) **20.** (D) **21.** (A) **22.** (B) **23.** (D) **24.** (D) **25.** (D)
26. (B) **27.** (B) **28.** (D) **29.** (C) **30.** (B)

31. पाणिनि के अनुसार 'पद' का लक्षण है –

(A) अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्

(B) वा पदान्तस्य

(C) पदान्ताद्वा

(D) सुप्तिङन्तं पदम्

स्रोत–अष्टाध्यायी (1-4-14) - ईश्वरचन्द्र, पेज–114

32. पाणिनि के अनुसार कर्म का लक्षण है –

(A) कर्तुरीप्सिततमं कर्म

(B) कर्मण्यधिकरणे च

(C) कर्मण्यण्

(D) कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्

स्रोत–अष्टाध्यायी (1-4-49) - ईश्वरचन्द्र, पेज-127

33. 'ङ' का उच्चारण स्थान है –

(A) कण्ठतालु (B) कण्ठोष्ठ

(C) दन्तोष्ठ (D) कण्ठनासिका

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–17

34. 'व' का सम्प्रसारण है –

(A) इ (B) उ

(C) ऋ (D) ऌ

स्रोत–अष्टाध्यायी (1.1.44) - ईश्वरचन्द्र, पेज–26

35. 'अवेस्ता' का भाषापरिवार है –

(A) द्राविड़ (B) सामी-हामी

(C) भारतीय-आर्यभाषा (D) जर्मानिक

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–385

36. 'स' का घोषरूप है –

(A) ज् (B) व्

(C) द् (D) ग्

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र–कपिलदेव द्विवेदी, पेज–225

37. ''किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्''– यह सूक्ति जिस रचना में है, वह रचना है –

(A) मेघदूतम् (B) मुद्राराक्षसम्

(C) शिशुपालवधम् (D) अभिज्ञानशाकुन्तलम्

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/20) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–46

38. हर्षचरितम् है –

(A) कथा (B) आख्यायिका

(C) नाटिका (D) प्रकरण

संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास–कपिलदेव द्विवेदी पेज–491

39. विशाखदत्त की रचना है –

(A) मृच्छकटिकम् (B) वेणीसंहारम्

(C) नागानन्दम् (D) मुद्राराक्षसम्

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–354

40. वेणीसंहार का अङ्गीरस है –

(A) रौद्र (B) वीर

(C) वीभत्स (D) भयानक

स्रोत–वेणीसंहार - परमेश्वरदीन पाण्डेय, भू. पेज –06

41. यौगन्धरायण किसका प्रमुखपात्र है –

(A) उत्तररामचरितम् का (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम् का

(C) स्वप्नवासवदत्तम् का (D) कादम्बरी का

स्रोत–स्वप्नवासवदत्तम् - जयपाल विद्यालंकार, पेज–1

42. वह रचना जिसमें शुकनासोपदेश है –

(A) दशकुमारचरितम् (B) स्वप्नवासवदत्तम्

(C) शिवराजविजयम् (D) कादम्बरी

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा ऋषि, पेज–399

43. ''हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः''– यह सूक्ति जिस रचना में है, वह रचना है –

(A) रघुवंशम् (B) किरातार्जुनीयम्

(C) बुद्धचरितम् (D) नैषधीयचरितम्

स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/4) - अभिराजराजेन्द्र मिश्र, पेज–42

44. ''रहस्यं साधूनामनुपधि विशुद्धं विजयते'' जिस कवि की उक्ति है, वह कवि है –

(A) कालिदास (B) अश्वघोष

(C) भवभूति (D) दिङ्नाग

स्रोत–उत्तररामचरितम् (2.12) कपिलदेव द्विवेदी, पेज–99

45. ''शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्'' लक्षण जिस आचार्य का है, वह आचार्य हैं –

(A) भामह (B) दण्डी

(C) कुन्तक (D) मम्मट

स्रोत–साहित्यदर्पण - अभिराजराजेन्द्र मिश्र, भू. पेज–44

31. (D) **32.** (A) **33.** (D) **34.** (B) **35.** (C) **36.** (A) **37.** (D) **38.** (B) **39.** (D) **40.** (B) **41.** (C) **42.** (D) **43.** (B) **44.** (C) **45.** (A)

46. सङ्केतग्रह का सम्बन्ध है –

(A) अभिधा से (B) लक्षणा से
(C) व्यञ्जना से (D) तात्पर्या से

स्रोत–साहित्यदर्पण (2/4) शालिग्राम शास्त्री, पेज–26-27

47. साधारणीकरण सिद्धान्त के उद्‌भावक आचार्य हैं –

(A) आनन्दवर्धन
(B) अभिनवगुप्त
(C) भट्टनायक
(D) महिमभट्ट

स्रोत–साहित्य दर्पण - अभिराजराजेन्द्र मिश्र, भू. पेज–83

48. 'बीभत्सरस' का स्थायीभाव है –

(A) रति (B) हास
(C) शोक (D) जुगुप्सा

स्रोत–साहित्यदर्पण (3/239) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–120

49. यह उपरूपक का एक भेद है –

(A) नाटिका (B) भाण
(C) प्रहसन (D) डिम

स्रोत–साहित्यदर्पण (6/4-6) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–170

50. प्रकरण का नायक होता है –

(A) धीरोदात्त (B) धीरललित
(C) धीरोद्धत्त (D) धीरप्रशान्त

स्रोत– साहित्यदर्पण (6/225) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–214

46. (A) **47.** (C) **48.** (D) **49.** (A) **50.** (D)

4	दिसम्बर 1997	UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् II

नोट : इस प्रश्नपत्र में **पचास (50)** बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के **दो (2) अङ्क** हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. 'ऋग्वेद' का दूसरा नाम है –
(A) श्रोत्रवेद (B) त्रयी
(C) गानवेद (D) दशतयी
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज–35

2. वेद इन्हें कहते हैं –
(A) धर्मसूत्र और उपनिषद् को
(B) श्रौतसूत्र और गृह्यसूत्र को
(C) शिक्षा और प्रातिशाख्य को
(D) मन्त्र और ब्राह्मण को
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–5

3. 'पुराणी देवी' किसका विशेषण है –
(A) सरस्वती का (B) उषस् का
(C) पृथिवी का (D) वाक् का
स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्त शास्त्री, भू. पेज–17

4. पृथिवी की पूजा किसमें है –
(A) तैत्तिरीयब्राह्मण में (B) सामवेद में
(C) अथर्ववेद में (D) पारस्करगृह्यसूत्र में
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 109

5. जल से उत्पत्ति का सिद्धान्त किसमें है –
(A) शिवसङ्कल्प-सूक्त में (B) नासदीयसूक्त में
(C) पुरुषसूक्त में (D) विश्वकर्मासूक्त में
स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह (10.129) - हरिदत्त शास्त्री, पेज–430

6. 'उमा-हेमवती कथा' किस उपनिषद् में है –
(A) श्वेताश्वतरोपनिषद् में
(B) छान्दोग्योपनिषद् में
(C) केनोपनिषद् में
(D) मुण्डकोपनिषद् में
स्रोत–केनोपनिषद् खण्ड-4 (ईशादि नौ उपनिषद्), पेज–67

7. 'वैदिकव्याकरण' के पाश्चात्त्य आधुनिक लेखक हैं–
(A) बॉप (B) मायरहोफर
(C) लुई रेनू (D) आर०एन० दण्डेकर
स्रोत–संस्कृतवाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-2), पेज–331

8. 'पैप्पलादशाखा' का सम्बन्ध है –
(A) ऋग्वेद से (B) अथर्ववेद से
(C) यजुर्वेद से (D) सामवेद से
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–10

9. पञ्चमहायज्ञों का वर्णन किसमें है –
(A) बृहदारण्यकोपनिषद् में (B) तैत्तिरीयारण्यक में
(C) ऋग्वेद में (D) पैप्पलादशाखा में
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–164

10. ''शब्द अनेक धातुओं से बनते हैं'' - यह किसका मत है–
(A) शाकटायन का (B) यास्क का
(C) वार्ष्यायिण का (D) गार्ग्य का
स्रोत–निरुक्तम् आचार्य - विश्वेश्वर, पेज–81

11. ऋग्वेद में ये 'पारिवारिक-मण्डल' कहे जाते हैं –
(A) एक से पाँच (B) पाँच से दस
(C) आठ से नौ (D) दो से सात
स्रोत–वैदिकसाहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–49

12. यह द्युलोक का देवता है –
(A) वरुण (B) सोम
(C) बृहस्पति (D) अग्नि
स्रोत–वैदिकसाहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–296

13. सत्कार्यवाद का साधक हेतु है –
(A) संघातपरार्थत्वात् (B) कारणभावात्
(C) त्रैगुण्यविपर्ययात् (D) भोक्तृभावात्
स्रोत–सांख्यकारिका (कारिका-9)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–100

1. (D) **2.** (D) **3.** (B) **4.** (C) **5.** (B) **6.** (C) **7.** (C) **8.** (B) **9.** (B) **10.** (A) **11.** (D) **12.** (A) **13.** (B)

14. सांख्यदर्शन में तन्मात्र का मूल है –

(A) पुरुष (B) महत्
(C) अहङ्कार (D) पञ्चभूत

स्रोत–सांख्यतत्त्वकौमुदी (कारिका-22) आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–217

15. सांख्यमतानुसार कार्य है –

(A) सदसत् (B) असत्
(C) सदसद्विलक्षण (D) सत्

स्रोत–सांख्यकारिका (कारिका-9) आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–153

16. सांख्यकारिका का रचयिता कौन है –

(A) उदयन (B) ईश्वरसेन
(C) ईश्वरकृष्ण (D) ईश्वरनन्दिन्

स्रोत–सांख्यकारिका - सन्तनारायण श्रीवास्तव, भू. पेज–15

17. वेदान्त का एक अनुबन्ध है –

(A) उपनिषद् (B) सम्बन्ध
(C) अज्ञान (D) आत्मा

स्रोत–वेदान्तसार-सन्तनारायण, श्रीवास्तव पेज–09

18. जीव को बन्धन में डालने वाली शक्ति को कहते हैं–

(A) आवरणशक्ति (B) विक्षेपशक्ति
(C) परिणामशक्ति (D) विवर्तशक्ति

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–56

19. वेदान्तानुसार 'मन' का स्वरूप है –

(A) अभिमान (B) सङ्कल्प-विकल्प
(C) अनुसन्धान (D) निश्चय

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–66

20. 'रज्जु' में सर्प का ज्ञान कहलाता है –

(A) परिणाम (B) अपवाद
(C) विक्षेप (D) विवर्त

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–116

21. न्यायवैशेषिक मतानुसार 'सुवर्ण' है –

(A) रूप (B) द्रवत्व
(C) तेजस् (D) रूपाभाव

स्रोत–तर्कसंग्रह - अनितासेन गुप्ता, पेज–39

22. न्यायमतानुसार 'समवायिकारण' होता है –

(A) द्रव्य (B) सामान्य
(C) विशेष (D) प्रागभाव

स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवासशास्त्री, पेज–30

23. उपमान-प्रमाण का फल है –

(A) निर्विकल्पक ज्ञान (B) शाब्दबोध
(C) शब्दप्रत्यक्ष (D) संज्ञासंज्ञिसम्बन्धज्ञान

स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवासशास्त्री, पेज–120

24. शब्दत्व के प्रत्यक्ष में सन्निकर्ष होता है –

(A) समवेत समवाय (B) संयोग
(C) संयुक्त समवाय (D) समवाय

स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवासशास्त्री, पेज–67

25. 'घि' संज्ञा किसकी नहीं होती है –

(A) भूपति (B) सखि
(C) नरपति (D) हरि

स्रोत–अष्टाध्यायी (1.4.7) ईश्वरचन्द्र, पेज–112

26. इनमें 'प्रातिपदिक' है –

(A) गच्छति (B) जस्
(C) वनम् (D) अहन्

स्रोत–अष्टाध्यायी (1-2-45) ईश्वरचन्द्र, पेज–69-70

27. 'हेतौ' इस सूत्र का उदाहरण है –

(A) धूमात् वह्निमान् (B) अध्ययनेन वसति
(C) धनेन किम् (D) बाणेन हतः

स्रोत–कारकप्रकरण - राममुनि पाण्डेय, पेज–45

28. इनमें शुद्ध रूप है –

(A) व्याकरणम् अधीती (B) व्याकरणेन अधीती
(C) व्याकरणे अधीती (D) व्याकरणस्य अधीती

स्रोत–कारकप्रकरण - राममुनि पाण्डेय, पेज–94

29. 'बलिं वसुधां याचते' - यहाँ 'बलि' की कर्मसंज्ञा विधायक सूत्र है –

(A) अकथितं च (B) तथायुक्तं चानीप्सितम्
(C) दिवः कर्म च (D) अभिनिविशश्च

स्रोत–कारकप्रकरण - राममुनि पाण्डेय, पेज–19

14. (C) **15.** (D) **16.** (C) **17.** (B) **18.** (A) **19.** (B) **20.** (D) **21.** (C) **22.** (C) **23.** (D) **24.** (A) **25.** (B) **26.** (D) **27.** (B) **28.** (C) **29.** (A)

30. इनमें सवर्ण संज्ञक हैं –

(A) इ, श (B) आ, ह
(C) ऋ, ऌ (D) अ, उ

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–16

31. ''रूपस्य योग्यम्'' इससे बनता है –

(A) यथारूपम् (B) प्रतिरूपम्
(C) अनुरूपम् (D) अतिरूपम्

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4) पेज–33

32. 'द्वियमुनम्' किस सूत्र से बनता है –

(A) अव्ययीभावश्च (B) नदीभिश्च
(C) संख्यापूर्वो द्विगुः (D) अव्ययीभावे चाकाले

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमदी (भैमी व्याख्या भाग-4) पेज–42

33. चीनी भाषा इस प्रकार में आती है –

(A) Isolating (अयोगात्मक)
(B) Incorporating (समासप्रधान)
(C) Agglutinating (प्रत्ययप्रधान)
(D) Inflecting (विभक्तिप्रधान)

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–357

34. 'शतम्' वर्ग की भाषा है –

(A) तोखारी (B) आर्मीनी
(C) जर्मानिक (D) केल्टिक

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–385

35. इनमें मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा है –

(A) वैदिक-संस्कृत (B) मराठी
(C) मागधी (D) उड़िया

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–435

36. 'स्वराघात के कारण ध्वनि परिवर्तन होता है' - इस नियम के प्रवर्तक हैं –

(A) वर्नर (B) ग्रिम
(C) ग्रासमान (D) फोर्तुनातोव

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–246

37. ''स्नेहक्षयात् केवलमेति शान्तिम्''– यह सूक्ति किस काव्य से है –

(A) मेघदूतम् से (B) बुद्धचरितम् से
(C) शिशुपालवधम् से (D) किरातार्जुनीयम् से

38. 'पत्रलेखा' किसकी पात्र है –

(A) मृच्छकटिकम् की (B) रत्नावली की
(C) हर्षचरितम् की (D) कादम्बरी की

स्रोत–कादम्बरी - कृष्णमोहनशास्त्री, पेज–38

39. किस काव्य में एक पात्र के पाँच रूप हैं –

(A) बुद्धचरित में (B) नैषधीयचरित में
(C) मुद्राराक्षस में (D) वेणीसंहार में

स्रोत–नैषधीयचरितम् (सर्ग-13)-देवर्षि सनाढ्य शास्त्री, पेज–127

40. अभिसारिकाओं (वेश्याओं) का वर्णन है –

(A) कादम्बरी में (B) मृच्छकटिकम् में
(C) दशकुमारचरितम् में (D) रत्नावली में

स्रोत–मृच्छकटिकम् - श्रीनिवासशास्त्री, भू. पेज–18

41. किस रूपक में रथ परिवर्तन से कथानक आगे चलता है–

(A) मुद्राराक्षस में (B) मृच्छकटिक में
(C) वेणीसंहार में (D) उत्तररामचरित में

स्रोत–मृच्छकटिकम् (अङ्क-6)-श्रीनिवासशास्त्री, भू. पेज–19

42. 'शकारी प्राकृत' का प्रयोग किस ग्रन्थ में है –

(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में (B) स्वप्नवासवदत्तम् में
(C) मृच्छकटिकम् में (D) वेणीसंहारम् में

स्रोत–मृच्छकटिकम् - रमाशंकर त्रिपाठी, भू. पेज–40

43. उपमा, अर्थगौरव और पदलालित्य- ये तीनों गुण किस महाकाव्य में है –

(A) बुद्धचरित में (B) किरातार्जुनीय में
(C) रघुवंश में (D) शिशुपालवध में

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा ऋषि, पेज–269

30. (C) **31.** (C) **32.** (B) **33.** (A) **34.** (B) **35.** (C) **36.** (A) **37.** (B) **38.** (D) **39.** (B) **40.** (B) **41.** (B) **42.** (C) **43.** (D)

44. ''राजनीतिरपस्पशा'' किस काव्य से है –

(A) रघुवंश से (B) शिशुपालवध से
(C) बुद्धचरित से (D) किरातार्जुनीय से

स्रोत–शिशुपालवधम् (2/112) हरगोविन्द शास्त्री, पेज–120

45. 'ईश्वरानुद्भाविता' का किससे सम्बन्ध है –

(A) अभिधा से (B) तात्पर्या से
(C) ध्वनि से (D) लक्षणा से

स्रोत–साहित्यदर्पण - शालिग्राम शास्त्री, पेज–29

46. यह भाण है –

(A) रत्नावली (B) मुद्राराक्षस
(C) धूर्तसमागम (D) कर्पूरमञ्जरी

स्रोत–साहित्यदर्पण (6/227) शालिग्राम शास्त्री, पेज–215

47. 'रसभावनैरन्तर्य' किसमें होता है –

(A) रूपक में (B) खण्डकाव्य में
(C) महाकाव्य में (D) चम्पू में

स्रोत–साहित्यदर्पण (6/8) शालिग्रामशास्त्री, पेज–171

48. यह खण्डकाव्य है –

(A) दशकुमारचरितम्
(B) नलचम्पू
(C) मेघदूतम्
(D) किरातार्जुनीयम्

स्रोत–साहित्यदर्पण - शालिग्रामशास्त्री, पेज–226

49. यह सामान्य गुणों से युक्त नायक है –

(A) धीरोदात्त
(B) धीरप्रशान्त
(C) धीरललित
(D) दक्षिण

स्रोत–साहित्यदर्पण (3/34) शालिग्रामशास्त्री, पेज–66

50. ''व्यापी प्रासङ्गिक वृत्त'' कहलाता है –

(A) प्रकरी (B) बिन्दु
(C) पताका (D) सन्धि

स्रोत–साहित्यदर्पण (6/67) शालिग्रामशास्त्री, पेज–182

44. (B) **45.** (D) **46.** (C) **47.** (A) **48.** (C) **49.** (B) **50.** (C)

5	जून 1998	UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् II

नोट : इस प्रश्नपत्र में **पचास (50)** बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के **दो (2) अङ्क** हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. 'पुरोहित' - यह विशेषण किसका है –

(A) इन्द्र का (B) रुद्र का
(C) अग्नि का (D) मरुत् का

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–44

2. 'यस्य त्री पूर्णा मधुना पदानि' इसका किससे सम्बन्ध है-

(A) वायु से (B) विष्णु से
(C) इन्द्र से (D) अश्विनौ से

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्त शास्त्री, पेज–168

3. 'नासत्याभ्यां बर्हिरिव'- यह किस सूक्त में है –

(A) अग्निसूक्त में (B) विष्णुसूक्त में
(C) इन्द्रसूक्त में (D) अश्विनसूक्त में

स्रोत–ऋग्वेद 1.116.1

4. 'यम-नचिकेता' संवाद किस उपनिषद् में है –

(A) केन में (B) ऐतरेय में
(C) कठ में (D) छान्दोग्य में

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति–कपिलदेव द्विवेदी, पेज–175

5. 'रोहित-सूक्त' किसमें उपलब्ध होता है –

(A) ऋग्वेद में (B) अथर्ववेद में
(C) सामवेद में (D) यजुर्वेद में

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–111

6. 'विश्वामित्र-नदी संवाद' किसमें मिलता है –

(A) ऋग्वेद में (B) सामवेद में
(C) अथर्ववेद में (D) कृष्णयजुर्वेद में

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–57

7. 'केनोपनिषद्' किस वेद से सम्बद्ध है –

(A) अथर्ववेद से (B) सामवेद से
(C) शुक्लयजुर्वेद से (D) ऋग्वेद से

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति – कपिलदेव द्विवेदी, पेज–10

8. 'काण्व संहिता'- किस वेद से सम्बद्ध है –

(A) ऋग्वेद से (B) शुक्लयजुर्वेद से
(C) सामवेद से (D) कृष्णयजुर्वेद से

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–9

9. महीधर- किस वेद के भाष्यकार हैं -

(A) अथर्ववेद के (B) कृष्णयजुर्वेद के
(C) शुक्लयजुर्वेद के (D) सामवेद के

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति – कपिलदेव द्विवेदी, पेज–24

10. ऋग्वेद के पदपाठकार हैं –

(A) शाकल्य (B) आत्रेय
(C) यास्क (D) कात्यायन

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति – कपिलदेव द्विवेदी, पेज–22

11. 'प्रातिशाख्य' किस वेदाङ्ग से सम्बद्ध है –

(A) व्याकरण से (B) ज्योतिष से
(C) शिक्षा से (D) कल्प से

संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (भाग-2)-बलदेव उपाध्याय पेज–05

12. वेदाङ्ग में छन्दस् कहलाता है –

(A) पाद (B) हस्त
(C) चक्षु (D) मुख

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति – कपिलदेव द्विवेदी, पेज–190

13. 'सत्कार्यवाद' का एक साधक हेतु है –

(A) त्रैगुण्यविपर्यय (B) उपलब्धि
(C) सर्वसम्भवाभाव (D) त्रैगुण्य

स्रोत–सांख्यतत्त्वकौमुदी (कारिका-09)-आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–143

14. 'सांख्यमतानुसार' आकाश किससे उत्पन्न होता है –

(A) ईश्वर से (B) अव्यक्त से
(C) अहङ्कार से (D) शब्दतन्मात्र से

स्रोत–सांख्यतत्त्वकौमुदी (कारिका-22)-आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–224

1. (C) **2.** (B) **3.** (D) **4.** (C) **5.** (B) **6.** (A) **7.** (B) **8.** (B) **9.** (C) **10.** (A) **11.** (C) **12.** (A) **13.** (C) **14.** (D)

15. 'प्रत्ययसर्ग' में यह अन्तर्भूत है –
(A) तन्मात्र (B) विपर्यय
(C) पुरुष (D) अहङ्कार
स्रोत–सांख्यकारिका (कारिका 46) आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–285

16. सांख्यमतानुसार प्रधान है –
(A) अपरिणामी (B) भोक्ता
(C) अप्रसवधर्मी (D) प्रकृति
स्रोत–सांख्यकारिका (का.-11) सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–129

17. वेदान्त का एक अनुबन्ध है –
(A) अधिकारी (B) अद्वैत
(C) ब्रह्म (D) ज्ञान
स्रोत–वेदान्तसार-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–09

18. वेदान्तमतानुसार आवरणशक्ति किसकी है –
(A) ब्रह्म की (B) ईश्वर की
(C) अज्ञान की (D) ज्ञान की
स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–56

19. संसार है ब्रह्म का –
(A) परिणाम (B) अपवाद
(C) विवर्त (D) अद्वैत
स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–117

20. 'पञ्चीकरण सिद्धान्त' किसका है –
(A) सांख्य का (B) योग का
(C) वैशेषिक का (D) अद्वैतवेदान्त का
स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–78

21. मनस् है –
(A) सामान्य (B) गुण
(C) द्रव्य (D) विशेष
स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–28

22. समवाय इनके बीच होता है –
(A) गुण-कर्म के बीच
(B) अवयव-अवयवी के बीच
(C) सामान्य विशेष के बीच
(D) घटाभाव-भूतल के बीच
स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–120

23. पट का समवायिकारण है –
(A) तन्तुवाय (B) तन्तुसंयोग
(C) तन्तुत्व (D) तन्तु
स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–71

24. 'शब्दत्व' के प्रत्यक्ष में सन्निकर्ष होता है –
(A) संयोग सन्निकर्ष (B) समवेतसमवाय सन्निकर्ष
(C) संयुक्तसमवाय सन्निकर्ष (D) समवाय सन्निकर्ष
स्रोत–तर्कसंग्रह - अनितासेन गुप्ता, पेज–80

25. 'टि' - संज्ञा का लक्षण है –
(A) परः सन्निकर्षः (B) एकाल्
(C) अचोऽन्त्यादि (D) अदेङ्
स्रोत–अष्टाध्यायी (1-1-63) ईश्वरचन्द्र, पेज–47

26. इसमें प्रगृह्यसंज्ञक है –
(A) पचेते (B) सेवते
(C) विमतिः (D) नदी
स्रोत–अष्टाध्यायी (1-1-11) ईश्वरचन्द्र, पेज–13

27. लिङ्गमात्राधिक्ये प्रथमा - इसका उदाहरण है –
(A) एकः, द्वौ, बहवः (B) द्रोणो व्रीहिः
(C) तटः, तटी, तटम् (D) श्रीः, कृष्णः, ज्ञानम्
स्रोत–कारकप्रकरण - राममुनि पाण्डेय, पेज–13

28. 'इत्थम्भूतलक्षणे' - इस सूत्र का उदाहरण है –
(A) मुखेन त्रिलोचनः (B) जटाभिः तापसः
(C) पादेन गच्छति (D) प्रकृत्या शोभनः
स्रोत–कारकप्रकरण - राममुनि पाण्डेय, पेज–43

29. 'अभिव्यापक आधार' का उदाहरण है -
(A) कटे आस्ते (B) केशेषु गृहीतः
(C) तिलेषु तैलम् (D) गुरौ भक्तिः
स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण) आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–102

30. 'आरात्' के योग में विभक्ति होती है –
(A) तृतीया विभक्ति (B) द्वितीया विभक्ति
(C) चतुर्थी विभक्ति (D) पञ्चमी विभक्ति
स्रोत–कारकप्रकरण (2-3-29) राममुनि पाण्डेय, पेज–65

15. (B) **16.** (D) **17.** (A) **18.** (C) **19.** (C) **20.** (D) **21.** (C) **22.** (B) **23.** (D) **24.** (B) **25.** (C)
26. (A) **27.** (C) **28.** (B) **29.** (C) **30.** (D)

31. 'सतृणम्' यहाँ समास किस अर्थ में है –

(A) समीप अर्थ में (B) साकल्य अर्थ में
(C) समृद्धि अर्थ में (D) विभक्ति अर्थ में

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4) पेज–40

32. 'भूतपूर्वः' यहाँ समासविधायक सूत्र है –

(A) प्राक्कडारात्समासः (B) कुगतिप्रादयः
(C) सह सुपा (D) उपसर्जनं पूर्वम्

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4) पेज–09

33. यह पश्चस्वर है –

(A) ए (B) इ
(C) अ (D) आ

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–150

34. विभक्तिप्रधान भाषा है –

(A) संस्कृत (B) तुर्की
(C) द्रविड़ (D) चीनी

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–363

35. 'तालव्यीकरण' का नियम किसमें लागू होता है –

(A) चकार में (B) बभूव में
(C) तस्थौ में (D) पपात में

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–248

36. यह सन्ध्यक्षर पालि-भाषा में नहीं है –

(A) ए (B) ओ
(C) ऐ (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–434

37. ''किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्''- यह सूक्ति किसमें है –

(A) उत्तररामचरितम् में (B) मालतीमाधवम् में
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में (D) विक्रमोर्वशीयम् में

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/20)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–46

38. 'रैवतक-पर्वत' का वर्णन किसमें है –

(A) कुमारसम्भव में (B) शिशुपालवध में
(C) नैषधीयचरित में (D) किरातार्जुनीय में

स्रोत–शिशुपालवधम् (सर्ग-4) - तारिणीश झा, भू. पेज–24

39. 'बुद्धचरितमहाकाव्य' का रचयिता कौन है –

(A) भारवि (B) अश्वघोष
(C) माघ (D) कालिदास

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा ऋषि, पेज–228

40. 'महाभारत' पर आधारित महाकाव्य है –

(A) कुमारसम्भवमहाकाव्य
(B) रघुवंशमहाकाव्य
(C) रावणवधमहाकाव्य
(D) शिशुपालवधमहाकाव्य

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशंकर ऋषि, पेज–259

41. 'गर्भाङ्क' किस नाटक में है –

(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में (B) उत्तररामचरितम् में
(C) स्वप्नवासवदत्तम् में (D) वेणीसंहारम् में

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा ऋषि, पेज–528-529

42. 'मृच्छकटिकम्' में विदूषक का नाम है –

(A) आत्रेय (B) माधव्य
(C) मैत्रेय (D) वसन्तक

स्रोत–मृच्छकटिकम् - श्रीनिवास शास्त्री, पेज–01

43. 'मुद्राराक्षस' का प्रधानरस है –

(A) शृङ्गार (B) शान्त
(C) करुण (D) वीर

स्रोत–मुद्राराक्षस - पुष्पा गुप्ता, पेज भू.–xxiv

44. 'शाल्मली-वृक्ष' का वर्णन किस गद्यकाव्य में है –

(A) हर्षचरित में (B) दशकुमारचरित में
(C) कादम्बरी में (D) वासवदत्ता में

स्रोत–कादम्बरी कथामुख - तारिणीश झा, पेज–195

45. विश्वनाथ ने किसके काव्यलक्षण का खण्डन किया है-

(A) भामह के (B) मम्मट के
(C) दण्डी के (D) जगन्नाथ के

स्रोत–साहित्यदर्पण - शालिग्राम शास्त्री, पेज–12, 13

46. 'लक्षणा' - स्वीकृति का आधार है –

(A) योग्यता (B) आसत्ति
(C) सङ्केत (D) मुख्यार्थबाध

स्रोत–साहित्यदर्पण (1/5) शालिग्राम शास्त्री, पेज–28

31. (B)	**32.** (C)	**33.** (D)	**34.** (A)	**35.** (A)	**36.** (C)	**37.** (C)	**38.** (B)	**39.** (B)	**40.** (D)	**41.** (B)
42. (C)	**43.** (D)	**44.** (C)	**45.** (B)	**46.** (D)						

47. वीररस का स्थायीभाव है –

(A) उत्साह (B) जुगुप्सा
(C) शोक (D) भय

स्रोत–साहित्यदर्पण (3/232)-शालिग्राम शास्त्री, पेज–118

48. नाटक में सन्धियों की संख्या है –

(A) षट् (B) नव
(C) पञ्च (D) दश

स्रोत–साहित्यदर्पण (6/76) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–184

49. 'मृच्छकटिक' किस प्रकार का रूपक है –

(A) नाटक (B) भाण
(C) व्यायोग (D) प्रकरण

स्रोत–साहित्यदर्पण (6/225) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–214

50. यह धीरललित नायक है –

(A) उदयन (B) भीम
(C) दुष्यन्त (D) राम

स्रोत–साहित्यदर्पण (3/34) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–66

47. (A) **48.** (C) **49.** (D) **50.** (A)

6	दिसम्बर 1998	UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् II

नोट : इस प्रश्नपत्र में **पचास (50)** बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के **दो (2) अङ्क** हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. 'मरुत्वान्' यह विशेषण किसका है –
(A) इन्द्र का (B) विष्णु का
(C) अग्नि का (D) रुद्र का
स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह-हरिदत्त शास्त्री, भू. पेज–11

2. 'भिषक्तमं त्वा भिषजां शृणोमि' इसका किस देवता से सम्बन्ध है –
(A) वायु (B) विष्णु
(C) रुद्र (D) सोम
स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह (2-33-4)-हरिदत्तशास्त्री, पेज–196

3. ''यो जात एव प्रथमो मनस्वान्'' यह किस सूक्त में है-
(A) अग्नि-सूक्त में (B) रुद्र-सूक्त में
(C) वरुण-सूक्त में (D) इन्द्र-सूक्त में
स्रोत–ऋक् सूक्त संग्रह (2-12-1)-हरिदत्तशास्त्री, पेज–177

4. ''उद्दालक-श्वेतकेतु संवाद'' किस उपनिषद् में है –
(A) कठ में (B) केन में
(C) ईश में (D) छान्दोग्य में
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–181

5. कौनसी संहिता ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्, धर्मसूत्रादि से सर्वाङ्गपूर्ण है–
(A) अथर्ववेदसंहिता में (B) सामवेद संहिता में
(C) तैत्तिरीयसंहिता में (D) वाजसनेयी संहिता में
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–68

6. 'सरमा-पणि संवाद' किसमें मिलता है –
(A) ऋग्वेद में (B) सामवेद में
(C) अथर्ववेद में (D) कृष्णयजुर्वेद में
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–57

7. छान्दोग्योपनिषद् किस वेद से सम्बद्ध है –
(A) ऋग्वेद से (B) सामवेद से
(C) अथर्ववेद से (D) शुक्लयजुर्वेद से
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–10

8. 'माध्यन्दिन-संहिता' किस वेद से सम्बद्ध है –
(A) ऋग्वेद से (B) सामवेद से
(C) शुक्लयजुर्वेद से (D) कृष्णयजुर्वेद से
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–9

9. 'वेङ्कटमाधव' किस वेद के भाष्यकार हैं –
(A) ऋग्वेद के (B) कृष्णयजुर्वेद के
(C) अथर्ववेद के (D) सामवेद के
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–23

10. वेदीनिर्माण की प्रक्रिया यहाँ उपलब्ध है –
(A) श्रौतसूत्र में (B) गृह्यसूत्र में
(C) शुल्बसूत्र में (D) धर्मसूत्र में
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–214

11. यह वेदाङ्ग है –
(A) आरण्यक (B) छन्द
(C) ब्राह्मण (D) उपनिषद्
स्रोत– वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–190

12. वेदाङ्गों में व्याकरण कहलाता है –
(A) पाद (B) हस्त
(C) नेत्र (D) मुख
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–194

13. 'सत्कार्यवाद' का एक साधक हेतु है –
(A) उपादानग्रहण (B) त्रैगुण्यविपर्यय
(C) उपलब्धि (D) त्रैगुण्य
स्रोत–सांख्यकारिका (कारिका-09) - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–143

1. (A) **2.** (C) **3.** (D) **4.** (D) **5.** (C) **6.** (A) **7.** (B) **8.** (C) **9.** (A) **10.** (C) **11.** (B) **12.** (D) **13.** (A)

14. 'तन्मात्र' किससे उत्पन्न होता है –
(A) पुरुष से (B) महत् से
(C) अहङ्कार से (D) पञ्चभूत से
स्रोत–सांख्यकारिका (कारिका-22) - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–224

15. 'प्रत्ययसर्ग' में यह अन्तर्भूत है –
(A) तन्मात्र (B) अशक्ति
(C) पुरुष (D) अहङ्कार
स्रोत–सांख्यकारिका (कारिका-46) - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–288

16. सांख्य के अनुसार बन्ध का कारण है –
(A) विवेकग्रह (B) विवेकख्याति
(C) अनिर्वचनीयख्याति (D) सत्ख्याति
स्रोत–सांख्यकारिका (कारिका-44) - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–263

17. वेदान्तानुसार विक्षेपशक्ति किसकी है –
(A) ब्रह्म की (B) ईश्वर की
(C) अज्ञान की (D) ज्ञान की
स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–56

18. 'साधनचतुष्टय' के अन्तर्गत है –
(A) ईश्वर
(B) नित्यानित्यवस्तुविवेक
(C) ब्रह्मज्ञान
(D) उपनिषद्
स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–20

19. 'रज्जु में सर्प का ज्ञान' किसका उदाहरण है –
(A) परिणाम का (B) अपवाद का
(C) विवर्त का (D) अद्वैत का
स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–116

20. वेदान्तानुसार 'सूक्ष्मशरीर' के अवयवों की संख्या है –
(A) पञ्च (B) सप्तदश
(C) चतुर्दश (D) अष्टादश
स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–65

21. आकाश है –
(A) गुण (B) द्रव्य
(C) सामान्य (D) विशेष
स्रोत–तर्कसंग्रह - अनितासेनगुप्ता, पेज–28

22. 'विशेष' पदार्थ इसमें ही रहता है –
(A) अनित्यद्रव्य में (B) समवाय में
(C) अभाव में (D) नित्यद्रव्य में
स्रोत–तर्कसंग्रह - अनितासेनगुप्ता, पेज–32

23. ज्ञान का समवायिकारण है –
(A) शरीर (B) इन्द्रिय
(C) आत्मा (D) मन
स्रोत–तर्कसंग्रह - अनितासेनगुप्ता, भू. पेज–13

24. घटरूप का असमवायिकारण है –
(A) कपालरूप (B) दण्डरूप
(C) कपालत्व (D) कुम्भकार
स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज–36

25. संहिता का लक्षण है –
(A) अदेङ् (B) एकाल्
(C) हलोऽनन्तराः (D) परः सन्निकर्षः
स्रोत–अष्टाध्यायी (1-4-108) - ईश्वरचन्द्र, पेज–147

26. सर्वनामस्थान संज्ञाविधायक सूत्र है –
(A) सुप्तिङन्तम् (B) न वेति
(C) शि सर्वनामस्थानम् (D) तुल्यास्यप्रयत्नम्
स्रोत–अष्टाध्यायी (1-1-41) - ईश्वरचन्द्र, पेज–24

27. अकथितकर्म का उदाहरण है –
(A) विषं भुङ्क्ते (B) ग्रामं गच्छति
(C) मासमास्ते (D) देवदत्तं शतं मुष्णाति
स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–22

28. हेतु तृतीया का उदाहरण है –
(A) प्रकृत्या चारु (B) अध्ययनेन वसति
(C) दुःखेन याति (D) मासेन व्याकरणम्
स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनिपाण्डेय, पेज–45

29. 'इदम् एषां शयितम्'- यहाँ षष्ठीविधायक सूत्र है –
(A) क्तस्य च वर्तमाने (B) कृत्यानां कर्तरि वा
(C) अधिकरणवाचिनश्च (D) कर्तृकर्मणोः कृति
स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–85

14. (C) **15.** (B) **16.** (A) **17.** (C) **18.** (B) **19.** (C) **20.** (B) **21.** (B) **22.** (D) **23.** (C) **24.** (A)
25. (D) **26.** (C) **27.** (D) **28.** (B) **29.** (C)

30. 'अधिहरि'- यह समास किस अर्थ में है –
(A) समीप अर्थ में (B) समृद्धि अर्थ में
(C) व्यृद्धि अर्थ में (D) विभक्ति अर्थ में
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज–21

31. 'पञ्चगङ्गम्' यहाँ समास है –
(A) द्विगुसमास (B) तत्पुरुषसमास
(C) अव्ययीभावसमास (D) बहुव्रीहिसमास
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज–43

32. 'छात्राणां रामः श्रेष्ठः' इसका वैकल्पिक रूप है –
(A) छात्रेभ्यः रामः श्रेष्ठः (B) छात्रेषु रामः श्रेष्ठः
(C) छात्रैः रामः श्रेष्ठः (D) छात्रान् रामः श्रेष्ठः
स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी कारक प्रकरण - राममुनि पाण्डेय, पेज–98

33. यह श्लिष्ट भाषा परिवार है –
(A) Dravedian (द्रविड)
(B) Chinese (चीनी)
(C) Greenlandish (ग्रीनलैण्डिस)
(D) Indo-European (भारोपीय)
स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-383, 385

34. यह अग्र स्वर है –
(A) उ (B) य
(C) इ (D) ओ
स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–150

35. इसमें ग्रासमान का नियम लागू होता है –
(A) बभूव में (B) चकार में
(C) जगाम में (D) तस्थौ में
स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–246

36. संस्कृत का 'ऐ' प्राकृत भाषा में हो जाता है –
(A) अ (B) ए
(C) औ (D) उ
स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–434

37. ''हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः'' -यह किस काव्य में है-
(A) नैषधीयचरित में (B) मेघदूत में
(C) शिशुपालवध में (D) किरातार्जुनीय में
स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/4)-अभिराजराजेन्द्र मिश्र, पेज–42

38. किसमें नारद का वर्णन है –
(A) रघुवंश में (B) बुद्धचरित में
(C) शिशपालवध में (D) हर्षचरित में
स्रोत–शिशुपालवधम् (1/1)-तारिणीश झा, पेज–02

39. 'वेणीसंहार' के रचयिता हैं –
(A) कालिदास (B) भवभूति
(C) श्रीहर्ष (D) भट्टनारायण
स्रोत–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–381

40. 'महाभारत' पर आश्रित नाटक है –
(A) रत्नावली (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(C) स्वप्नवासवदत्तम् (D) मालतीमाधवम्
स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू. पेज–41

41. छाया-सीता इनमें से किस नाटक में आती हैं –
(A) मृच्छकटिक में (B) मुद्राराक्षस में
(C) उत्तररामचरित में (D) रत्नावली में
स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू. पेज–58

42. 'अभिज्ञानशाकुन्तल' में विदूषक का नाम है –
(A) आत्रेय (B) माधव्य (माढव्य)
(C) मैत्रेय (D) वसन्तक
स्रोत– अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू. पेज–90

43. 'उत्तररामचरित' नाटक का प्रधानरस है –
(A) शृङ्गार (B) शान्त
(C) करुण (D) वीर
स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू. पेज–86

44. 'दुर्भिक्ष' का वर्णन किस काव्य में है –
(A) हर्षचरित में (B) दशकुमारचरित में
(C) कादम्बरी में (D) वासवदत्ता में
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज–397

45. विश्वनाथ का काव्यलक्षण है –
(A) शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्
(B) अदोषं गुणवत्काव्यम्
(C) वाक्यं रसात्मकं काव्यम्
(D) रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्
स्रोत–साहित्यदर्पण (1/3)-शालिग्राम शास्त्री, पेज–19

46. 'गङ्गायां घोषः' - इसमें व्यङ्ग्यार्थ है –
(A) गङ्गाप्रवाह (B) गङ्गातट
(C) मीन (D) शैत्यपावनत्वादि
स्रोत–साहित्यदर्पण - अभिराजराजेन्द्र मिश्र, पेज–185

30. (D)	**31.** (C)	**32.** (B)	**33.** (D)	**34.** (C)	**35.** (A)	**36.** (B)	**37.** (D)	**38.** (C)	**39.** (D)	**40.** (B)
41. (C)	**42.** (B)	**43.** (C)	**44.** (A)	**45.** (C)	**46.** (D)					

47. **'बीभत्सरस' का स्थायीभाव है –**

(A) जुगुप्सा (B) शोक
(C) उत्साह (D) भय

स्रोत–साहित्यदर्पण (3/239)-शालिग्राम शास्त्री, पेज–120

48. **यह खण्डकाव्य है –**

(A) बुद्धचरित (B) कुमारसम्भव
(C) मेघदूत (D) नैषधीयचरित

स्रोत–साहित्यदर्पण - शालिग्राम शास्त्री, पेज–226

49. **नाटक में 'अर्थ-प्रकृति' की संख्या कितनी होती है –**

(A) षट् (B) अष्ट
(C) नव (D) पञ्च

स्रोत–साहित्यदर्पण (6/64) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–182

50. **यह धीरोदात्त नायक है –**

(A) उदयन (B) भीम
(C) दुष्यन्त (D) चारुदत्त

स्रोत– अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू. पेज–86

47. (A) **48.** (C) **49.** (D) **50.** (C)

7	जून 1999	UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् II

नोट : इस प्रश्नपत्र में **पचास (50)** बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के **दो (2) अङ्क** हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. 'ऋग्वेद' में मण्डल हैं –
(A) 4 (B) 6
(C) 10 (D) 8
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–47

2. 'सामवेद' का दूसरा नाम है –
(A) स्तुतिवेद (B) कर्मवेद
(C) गानवेद (D) यजुर्वेद
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–77

3. पौनः पुन्येन संस्तुत देवता है –
(A) अग्नि (B) सविता
(C) विष्णु (D) वरुण
स्रोत–संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (भाग-एक) पेज–139

4. 'उरुगाय' किसका विशेषण है –
(A) इन्द्र का (B) वरुण का
(C) विष्णु का (D) अग्नि का
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–299

5. 'शाकलशाखा' का सम्बन्ध है –
(A) ऋग्वेद से (B) यजुर्वेद से
(C) सामवेद से (D) अथर्ववेद से
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी पेज–09

6. 'सत्यकाम-जाबालि कथा' किस उपनिषद् में है –
(A) श्वेताश्वतरोपनिषद् में (B) छान्दोग्योपनिषद् में
(C) बृहदारण्यकोपनिषद् में (D) केनोपनिषद् में
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–181

7. 'शिक्षा' वेदाङ्ग का सम्बद्ध है –
(A) वर्णोत्पत्ति तथा उच्चारण से (B) दण्डनीति से
(C) सामाजिक नियमों से (D) कर्मकाण्ड से
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–190-191

8. वेद का समय '6000 ई० पू०' किनके मत में है –
(A) मैक्समूलर के मत में
(B) वेबर के मत में
(C) जैकोबी के मत में
(D) बालगङ्गाधर तिलक के मत में
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–39

9. 'ताण्ड्य-ब्राह्मण' का सम्बन्ध है –
(A) ऋग्वेद से (B) यजुर्वेद से
(C) सामवेद से (D) अथर्ववेद से
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–10

10. 'यम-यमी संवाद' किस वेद में है –
(A) ऋग्वेद में (B) यजुर्वेद में
(C) सामवेद में (D) अथर्ववेद में
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–57

11. 'वेदाङ्गों' की संख्या है –
(A) 1 (B) 4
(C) 6 (D) 8
स्रोत– वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–190

12. 'शब्द अनेक धातुओं से बनते हैं' - यह किसका मत है–
(A) शाकटायन का (B) यास्क का
(C) वार्ष्यायण का (D) गार्ग्य का
स्रोत–निरुक्तम् - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–81

13. 'उत्पत्तेः प्राक् कार्यं सत्' - इस मत का समर्थक है –
(A) मीमांसा (B) न्याय
(C) वैशेषिक (D) सांख्य
स्रोत–सांख्यकारिका (कारिका-09)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–100

14. 'प्रधान' का एक लक्षण है –
(A) प्रसवधर्मित्वम् (B) चैतन्यम्
(C) उदासीनत्वम् (D) अपरिणामित्वम्
स्रोत–सांख्यकारिका (कारिका-11)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–129

1. (C) **2.** (C) **3.** (A) **4.** (C) **5.** (A) **6.** (B) **7.** (A) **8.** (D) **9.** (C) **10.** (A) **11.** (C) **12.** (A) **13.** (D) **14.** (A)

15. 'प्रकृति' का द्वितीय परिणाम है –

(A) पुरुष (B) तन्मात्र
(C) महत् (D) अहङ्कार

स्रोत–सांख्यकारिका (कारिका-22)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–196

16. सांख्य के अनुसार पुरुष है –

(A) अहङ्काररूप (B) चैतन्यस्वरूप
(C) पाञ्चभौतिक (D) त्रिगुणात्मक

स्रोत–सांख्यकारिका (कारिका-11)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–129

17. अधिकारी का एक साधन है –

(A) अद्वैतबुद्धि (B) ईश्वर
(C) नित्यानित्यवस्तुविवेक (D) उपनिषद्

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–20

18. अज्ञान की एक शक्ति है –

(A) अभिमान (B) अनुसन्धान
(C) परिणाम (D) आवरण

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–57

19. वेदान्तानुसार बुद्धि का स्वरूप है –

(A) निश्चय (B) अनुसन्धान
(C) अभिमान (D) सङ्कल्प-विकल्प

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–66

20. वेदान्त का एक अनुबन्ध है –

(A) उपनिषद् (B) अधिकारी
(C) अध्यास (D) परमात्मा

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–09

21. न्यायवैशेषिक मतानुसार 'तमः' है –

(A) अभाव (B) द्रव्य
(C) गुण (D) छाया

स्रोत–तर्कसंग्रह - केदारनाथ त्रिपाठी, पेज–04
भारतीयदर्शन - बलदेव उपाध्याय, पेज–224

22. घट का समवायिकारण है –

(A) कुम्भकार (B) कपालरूप
(C) कपालसंयोग (D) दण्ड

स्रोत–तर्कसंग्रह - गोविन्दाचार्य, पेज–143

23. अनुमिति की उत्पत्ति में कारण है –

(A) परामर्श (B) सन्निकर्ष
(C) सादृश्यज्ञान (D) नियमन

स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–83

24. शब्द के 'प्रत्यक्ष' में सन्निकर्ष होता है –

(A) संयोग सन्निकर्ष (B) संयुक्तसमवाय सन्निकर्ष
(C) समवेतसमवाय सन्निकर्ष (D) समवाय सन्निकर्ष

स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–79

25. 'नदी' संज्ञा इसकी होती है –

(A) सुधी की (B) ग्रामणी की
(C) वधू की (D) मुनि की

स्रोत– अष्टाध्यायी (1.4.3) - ईश्वरचन्द्र, पेज–109

26. 'विभाषा' संज्ञा का अर्थ है –

(A) निषेध (B) विकल्प
(C) निषेध-विकल्प (D) प्राप्ति

स्रोत– अष्टाध्यायी (1.1.43) - ईश्वरचन्द्र, पेज 25

27. 'अक्ष + ऊहिनी' - सन्धि का रूप होता है –

(A) अक्षोहिनी (B) अक्षौहिनी
(C) अक्षैहिणी (D) अक्षौहिणी

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–54

28. 'अलम्' शब्द के योग में विभक्ति होती है –

(A) पञ्चमी (B) द्वितीया
(C) चतुर्थी (D) प्रथमा

स्रोत–अष्टाध्यायी (2.3.16) ईश्वरचन्द्र, पेज–199

29. 'विषं भक्षयति' - यहाँ कर्मसंज्ञा विधायक सूत्र है –

(A) अकथितं च (B) तथायुक्तं चानीप्सितम्
(C) दिवः कर्म च (D) अभिनिविशश्च

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–19

30. 'महान् च असौ राजा' इससे रूप बनता है–

(A) महाराजः (B) महद्राजः
(C) महराजा (D) महाराजा

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–945

15. (D) **16.** (B) **17.** (C) **18.** (D) **19.** (A) **20.** (B) **21.** (A) **22.** (C) **23.** (A) **24.** (D) **25.** (C) **26.** (C) **27.** (D) **28.** (C) **29.** (B) **30.** (A)

31. इसमें सवर्ण नहीं होते हैं –

(A) उ-उ (B) आ-आ
(C) ऋ-ऌ (D) अ-इ

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–17-18

32. 'येनाङ्गविकारः' - इस सूत्र का उदाहण है –

(A) जटाभिस्तापसः (B) वपुषा चतुर्भुजः
(C) दण्डेन ताडितः (D) बाणेन हतः

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–43

33. अभिव्यापक आधार का उदाहरण है –

(A) कटे आस्ते (B) केशेषु गृहीतः
(C) तिलेषु तैलम् (D) वने व्याघ्रः

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–102

34. संस्कृतभाषा है –

(A) प्रत्ययप्रधान (B) विभक्तिप्रधान
(C) अयोगात्मक (D) समासप्रधान

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–363

35. 'बभूव' इस पद में यह नियम लागू होता है –

(A) Grasmann's Law (ग्रासमान नियम)
(B) Verner's Law (वर्नर नियम)
(C) Grimm's Law (ग्रिम नियम)
(D) Fortunator's Law (फोर्तुनातोव नियम)

स्रोत– भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–246

36. 'पूर्वेभिः' इस पद का प्रयोग किस भाषा में होता है –

(A) Classical Sanskrit (क्लासिकल संस्कृत)
(B) Vedic Sanskrit (वैदिक संस्कृत)
(C) Pali (पालि)
(D) Prakrit (प्राकृत)

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज– 427

37. 'प्रांशुलभ्ये फले लोभादुद्बाहुरिव वामनः' यह सूक्ति किस काव्य से है –

(A) किरातार्जुनीय से (B) रघुवंश से
(C) शिशुपालवध से (D) बुद्धचरित से

स्रोत–रघुवंशम् (1/3) कृष्णमणि त्रिपाठी, पेज–03

38. 'उत्तर-कादम्बरी' को किसने पूरा किया है –

(A) दण्डी ने (B) सुबन्धु ने
(C) श्रीहर्ष ने (D) पुलिनभट्ट ने

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–496

39. 'नैषधीयचरित' का आधार है –

(A) महाभारत (B) ऋग्वेद
(C) बृहत्कथा (D) रामायण

स्रोत–नैषधीयचरितम् - बद्रीनाथ मालवीय, भू. पेज–10

40. ''दैवायत्तं कुले जन्म मदायत्तं तु पौरुषम्'' यह सूक्ति किस काव्य से है –

(A) वेणीसंहारम् से (B) मुद्राराक्षसम् से
(C) स्वप्नवासवदत्तम् से (D) नैषधीयचरितम् से

स्रोत–वेणीसंहार (3/37) - परमेश्वरदीन पाण्डेय, पेज–173

41. 'धन्यो माघकविर्वयं च कृतिनः तत्सूक्तिसंसेवनात्' - इस बात को कहने वाले थे –

(A) माघकवि (B) वल्लभदेव
(C) मल्लिनाथसूरि (D) उद्भट

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशंकर शर्मा ऋषि, पेज–265

42. 'एक आभरण खो जाने से' किस कथा में स्थिति बदल गई है –

(A) रत्नावली में (B) स्वप्नवासवदत्तम् में
(C) बुद्धिचरितम् में (D) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (अंक-5)

43. ''ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति'' यह सूक्ति किस कवि की है :

(A) कालिदास की (B) भवभूति की
(C) भारवि की (D) भास की

स्रोत–उत्तररामचरितम् (1/10) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–22

44. भाण का एक मात्र पात्र होता है –

(A) विट (B) कञ्चुकी
(C) नायक (D) विदूषक

स्रोत–साहित्यदर्पण (6/228) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–215

31. (D) **32.** (B) **33.** (C) **34.** (B) **35.** (A) **36.** (B) **37.** (B) **38.** (D) **39.** (A) **40.** (A) **41.** (C) **42.** (D) **43.** (B) **44.** (A)

45. 'लक्षणावृत्ति' का आधार है –

(A) मुख्यार्थबाध (B) सङ्केत
(C) व्यङ्ग्यार्थसम्बन्ध (D) काव्यसौन्दर्य

स्रोत– साहित्यदर्पण (2.15) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–28

46. 'वीररस' का स्थायीभाव है –

(A) क्रोध (B) उत्साह
(C) भय (D) विस्मय

स्रोत– साहित्यदर्पण (3/232) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–117

47. ''यान्त्येवं गृहिणीपदं युवतयो वामाः कुलस्याधयः'' यह सूक्ति किस नाटक में है –

(A) उत्तररामचरित में (B) अभिज्ञानशाकुन्तल में
(C) मुद्राराक्षस में (D) वेणीसंहार में

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (5/18) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–229

48. 'शकटविपर्यास' किसमें होता है –

(A) वेणीसंहारम् में (B) मुद्राराक्षसम् में
(C) मृच्छकटिकम् में (D) स्वप्नवासवदत्तम् में

स्रोत–मृच्छकटिकम् (अंक-6) - श्रीनिवासशास्त्री, भू. पेज–19

49. 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक का नायक उदयन किस कोटि का है –

(A) धीरोदात्त (B) धीरोद्धत
(C) धीरललित (D) धीरप्रशान्त

स्रोत–स्वप्नवासवदत्तम् - शेषराज शर्मा, भू. पेज–14

50. ''हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः''-यह सूक्ति किस काव्य में है –

(A) रघुवंशम् में (B) वाल्मीकिरामायणम् में
(C) किरातार्जुनीयम् में (D) नैषधीयचरितम् में

स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/4) - अभिराजराजेन्द्र मिश्र, पेज–42

45. (A) **46.** (B) **47.** (B) **48.** (C) **49.** (C) **50.** (C)

8	दिसम्बर 1999	UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् II

नोट : इस प्रश्नपत्र में **पचास (50)** बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के **दो (2) अङ्क** हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. 'वेदत्रयी' में किसकी गणना नहीं होती है –
(A) ऋग्वेद की (B) यजुर्वेद की
(C) सामवेद की (D) अथर्ववेद की
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–101

2. किस वेदाङ्ग को वेद का मुख कहते हैं –
(A) शिक्षा को (B) कल्प को
(C) व्याकरण को (D) छन्दस् को
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–172

3. 'कविक्रतुः' किसका विशेषण है –
(A) अग्नि (B) विष्णु
(C) इन्द्र (D) वरुण
स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह (1.1.5) - हरिदत्तशास्त्री, पेज–57

4. 'पुरूरवा-उर्वशी संवाद' किस वेद में है –
(A) ऋग्वेद में (B) यजुर्वेद में
(C) सामवेद में (D) अथर्ववेद में
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–55

5. मैक्समूलर के अनुसार वेद का समय है –
(A) 4500 B.C. (B) 3500 B.C.
(C) 1200 B.C. (D) 2500 B.C.
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–78

6. 'गोपथ-ब्राह्मण' का सम्बन्ध किस वेद से है –
(A) ऋग्वेद से (B) यजुर्वेद से
(C) सामवेद से (D) अथर्ववेद से
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी पेज–140

7. प्रातः और सायं का देवता है –
(A) अग्नि (B) इन्द्र
(C) सविता (D) विष्णु
स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री, भू. पेज–16

8. वेदाङ्ग 'छन्दशास्त्र' के प्रणेता हैं –
(A) वेदव्यास (B) श्वेतकेतु
(C) पिङ्गल (D) जैमिनि
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–188

9. 'निरुक्त' के लेखक हैं –
(A) पाणिनि (B) कात्यायन
(C) पतञ्जलि (D) यास्क
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज 184

10. 'ईशावास्योपनिषद्' का सम्बन्ध किस वेद से है –
(A) ऋग्वेद से (B) यजुर्वेद से
(C) सामवेद से (D) अथर्ववेद से
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–153

11. 'यम-नचिकेता कथा' किस उपनिषद् में है –
(A) श्वेताश्वतरोपनिषद् में (B) केनोपनिषद् में
(C) कठोपनिषद् में (D) मुण्डकोपनिषद् में
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–156

12. 'शतपथ-ब्राह्मण' का सम्बन्ध किस वेद से है –
(A) ऋग्वेद से (B) यजुर्वेद से
(C) अथर्ववेद से (D) सामवेद से
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–129

13. सत्कार्यवादसाधक एक हेतु है –
(A) उपादानग्रहणात् (B) त्रैगुण्यविपर्ययात्
(C) उपलब्धेः (D) त्रैगुण्यात्
स्रोत–सांख्यकारिका (का.-09)-सन्तनारायण श्रीवास्तव पेज–100

14. सांख्य के अनुसार 'आकाश' का कारण है –
(A) ईश्वर (B) अव्यक्त
(C) अहङ्कार (D) शब्द तन्मात्रा
स्रोत–सांख्यकारिका (का.-22)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–196

1. (D) **2.** (C) **3.** (A) **4.** (A) **5.** (C) **6.** (D) **7.** (C) **8.** (C) **9.** (D) **10.** (B) **11.** (C)
12. (B) **13.** (A) **14.** (D)

15. प्रकृति का प्रथम परिणाम है –
(A) पुरुष (B) तन्मात्र
(C) महत् (D) अहङ्कार
स्रोत–सांख्यकारिका (का.-22)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–196

16. सांख्य के अनुसार 'प्रमाणों' की संख्या है –
(A) दश (B) त्रीणि
(C) पञ्च (D) षट्
स्रोत–सांख्यकारिका (का.-04)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–47

17. वेदान्त के अनुसार 'अनुबन्ध' होते हैं –
(A) पञ्च (B) त्रीणि
(C) चत्वारः (D) नव
स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–09

18. 'अज्ञान' का स्वरूप है –
(A) अनिर्वचनीय (B) वस्तु
(C) अभाव (D) सत्
स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–37

19. अज्ञान का अस्तित्व बोधक प्रमाण है –
(A) उपमान (B) अपरोक्षानुभव
(C) अनुपलब्धि (D) अर्थापत्ति
स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–42

20. निम्नलिखित में से एक कर्मेन्द्रिय है –
(A) श्रोत्र (B) वाक्
(C) घ्राण (D) चक्षु
स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-69

21. 'न्याय वैशेषिक' के अनुसार द्रव्य नहीं है –
(A) तेज (B) जल
(C) तम (D) मन
स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–28

22. न्यायमतानुसार असमवायिकारण होता है –
(A) द्रव्य (B) सामान्य
(C) अभाव (D) गुण
स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवासशास्त्री, पेज–44

23. इन दोनों में समवाय सम्बन्ध होता है –
(A) घट-भूतल (B) जाति-व्यक्ति
(C) घटाभाव-भूतल (D) ज्ञान-विषय
स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवासशास्त्री, पेज–29

24. विशेष पदार्थ रहते हैं –
(A) नित्यद्रव्य में (B) अनित्यद्रव्य में
(C) समवाय में (D) अभाव में
स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–32

25. 'टि' संज्ञा विधायक सूत्र है –
(A) अर्थवदधातुरप्रत्ययः (B) ईदूदेद्द्विवचनम्
(C) न वा (D) अचोऽन्त्यादि
स्रोत–अष्टाध्यायी (1-1-63) - ईश्वरचन्द्र, पेज–47

26. 'आ, ऐ, औ' की संज्ञा होती है –
(A) गुणसंज्ञा (B) वृद्धिसंज्ञा
(C) सवर्णसंज्ञा (D) पदसंज्ञा
स्रोत–अष्टाध्यायी (1-1-1) - ईश्वरचन्द्र, पेज–05

27. 'निष्ठा संज्ञा' विधायक सूत्र है –
(A) तुल्यास्यप्रयत्नम् (B) यूस्त्र्याख्यौ
(C) अदेङ् (D) क्तक्तवतू
स्रोत–अष्टाध्यायी (1-1-25) - ईश्वरचन्द्र, पेज–19

28. 'अपादान संज्ञा' विधायक सूत्र है –
(A) स्वतन्त्रः (B) साधकतमम्
(C) ध्रुवमपाये (D) कर्मणा यमभिप्रैति
स्रोत–अष्टाध्यायी (1-4-24) - ईश्वरचन्द्र, पेज–119

29. 'अभि + क्रुध्' धातु के योग में विभक्ति आती है –
(A) द्वितीया विभक्ति (B) तृतीया विभक्ति
(C) चतुर्थी विभक्ति (D) पञ्चमी विभक्ति
स्रोत–अष्टाध्यायी (1-4-38) - ईश्वरचन्द्र, पेज–124

30. इसमें शुद्ध रूप है –
(A) ग्रामात् परितः (B) ग्रामस्य परितः
(C) ग्रामेण परितः (D) ग्रामं परितः
स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–31

15. (C) **16.** (B) **17.** (C) **18.** (A) **19.** (D) **20.** (B) **21.** (C) **22.** (D) **23.** (B) **24.** (A) **25.** (D) **26.** (B) **27.** (D) **28.** (C) **29.** (A) **30.** (D)

31. इनमें से दन्त्यवर्ण हैं –

(A) क, ख (B) च, छ
(C) ट, ठ (D) त, थ

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–17

32. 'यथारूपम्' पद में समास है –

(A) अव्ययीभावसमास (B) द्विगुसमास
(C) द्वन्द्वसमास (D) बहुव्रीहिसमास

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - धरानन्दशास्त्री, पेज–827

33. 'रूपवद्भार्यः' - पद में समास है –

(A) द्विगु (B) द्वन्द्व
(C) तत्पुरुष (D) बहुव्रीहि

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज–199

34. ग्रिम नियम के अन्तर्गत 'भ' का परिवर्तित रूप है –

(A) प् (B) फ्
(C) ब् (D) म्

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–242

35. एकाक्षरी भाषा है –

(A) तुर्की भाषा (B) चीनी भाषा
(C) जर्मन भाषा (D) अवेस्ता भाषा

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–399

36. वर्नर नियम के अनुसार 'क' का परिवर्तित रूप है –

(A) ख् (B) ग्
(C) घ् (D) ङ्

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–246

37. ''याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा'' यह सूक्ति किस काव्य से है –

(A) उत्तररामचरितम् से (B) बुद्धचरितम् से
(C) मेघदूतम् से (D) नैषधीयचरितम् से

स्रोत–पूर्वमेघ (श्लोक 6) - तारिणीश झा, पेज–13

38. 'शर्विलक' किस नाटक का पात्र है –

(A) मृच्छकटिकम् का (B) रत्नावली का
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् का (D) उत्तररामचरितम् का

स्रोत–मृच्छकटिकम् - श्रीनिवासशास्त्री, भू. पेज–38

39. 'प्रकरण' में अङ्कों की संख्या होती है –

(A) 7 (B) 10
(C) 5 (D) 4

स्रोत–साहित्यदर्पण (6/8) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–171

40. किस कथा का आधार पुनर्जन्म सिद्धान्त पर विश्वास है–

(A) दशकुमारचरित का (B) शुकसप्तति का
(C) कादम्बरी का (D) शिशुपालवध का

स्रोत–कादम्बरी - तारिणीश झा, भू. पेज–67

41. किस नाटक में स्त्री पात्रों का प्रयोग नहीं है –

(A) वेणीसंहार में (B) मुद्राराक्षस में
(C) कादम्बरी में (D) शिशुपालवध में

संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–360

42. किस उपरूपक को सट्टक के नाम से जाना जाता है –

(A) रत्नावली को (B) मालविकाग्निमित्र को
(C) कर्पूरमञ्जरी को (D) विक्रमोर्वशीय को

स्रोत–साहित्यदर्पण (6/277) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–221

43. ''माघे मेघे गतं वयः'' यह सूक्ति किस विद्वान् की है –

(A) मल्लिनाथसूरि की (B) राजशेखर की
(C) वल्लभदेव की (D) भास्कराचार्य की

स्रोत– मेघदूतम् - दयाशंकर शास्त्री, पेज–44

44. ''चक्रारपङ्क्तिरिव गच्छति भाग्यपङ्क्तिः'' यह सूक्ति किसमें है –

(A) मेघदूतम् में (B) मृच्छकटिकम् में
(C) हितोपदेश में (D) स्वप्नवासवदत्तम् में

स्रोत–स्वप्नवासवदत्तम् (1/4) – जयपाल विद्यालङ्कार, पेज–06

45. 'अभिहितान्वयवाद' का किससे सम्बन्ध है –

(A) तात्पर्यार्थ से (B) व्यङ्ग्यार्थ से
(C) प्रभाकरमत से (D) सङ्केतितार्थ से

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–37

46. अष्टविधा नायिकाओं का सम्बन्ध किस 'रस' से होता है –

(A) वीररस से (B) अद्भुतरस से
(C) हास्यरस से (D) शृङ्गाररस से

स्रोत–साहित्यदर्पण (3/73) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–79

31. (D)	**32.** (A)	**33.** (D)	**34.** (C)	**35.** (B)	**36.** (B)	**37.** (C)	**38.** (A)	**39.** (B)	**40.** (C)	**41.** (B)
42. (C)	**43.** (A)	**44.** (D)	**45.** (A)	**46.** (D)						

47. 'हेम्नः संलक्ष्यते ह्यग्नौ विशुद्धिः श्यामिकाऽपि वा' यह सूक्ति किस काव्य से है –

(A) रघुवंश से (B) रामायणचम्पू से
(C) किरातार्जुनीय से (D) पञ्चतन्त्र से

स्रोत–रघुवंशम् (1/10) - कृष्णमणि त्रिपाठी, पेज–06

48. 'बुद्धचरितम्' महाकाव्य का कर्ता है –

(A) सुबन्धु (B) अश्वघोष
(C) नागार्जुन (D) असङ्ग

संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–168

49. किसमें प्राकृत का प्रयोग आवश्यक है –

(A) शुद्ध विष्कम्भक में (B) पताकास्थान में
(C) प्रस्तावना में (D) प्रवेशक में

स्रोत–दशरूपक (प्रथम प्रकाश) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज–101

50. 'स्फुटता न पदैरपाकृता न च न स्वीकृतमर्थगौरवम्'- यह सूक्ति किस काव्य से है –

(A) किरातार्जुनीयम् से (B) नैषधीयचरितम् से
(C) बुद्धचरितम् से (D) कुमारसम्भवम् से

स्रोत–किरातार्जुनीयम् (2/27) - श्रीनिवास शर्मा, पेज–40

47. (A) **48.** (B) **49.** (D) **50.** (A)

9	जून 2000	UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् II

नोट : इस प्रश्नपत्र में **पचास (50)** बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के **दो (2) अङ्क** हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. 'ऋतावरी' यह विशेषण किसका है –
(A) इन्द्र का (B) सवितृ का
(C) उषा का (D) वरुण का
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–306

2. 'मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः' इसका किससे सम्बन्ध है–
(A) रुद्र से (B) विष्णु से
(C) बृहस्पति से (D) सोम से
स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री, पेज–165

3. ''स नः पितेव सूनवे-----सूपायनो भव'' यह किस सूक्त में है –
(A) उषःसूक्त में (B) वरुणसूक्त में
(C) बृहस्पतिसूक्त में (D) अग्निसूक्त में
स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह (1-1-9) - हरिदत्तशास्त्री, पेज–60

4. 'सत्यकाम-जाबालि' की कथा किस उपनिषद् में है –
(A) तैत्तिरीयोपनिषद् में (B) कठोपनिषद् में
(C) छान्दोग्योपनिषद् में (D) बृहदारण्यकोपनिषद् में
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–181

5. 'शुनःशेप उपाख्यान' किस ब्राह्मण में है –
(A) शतपथ ब्राह्मण में (B) ऐतरेय ब्राह्मण में
(C) गोपथ ब्राह्मण में (D) जैमिनीय ब्राह्मण में
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–125

6. 'पुरूरवा-उर्वशी संवादसूक्त' ऋग्वेद के किस मण्डल में है –
(A) दशममण्डल में (B) प्रथममण्डल में
(C) तृतीयमण्डल में (D) पञ्चममण्डल में
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–57

7. तैत्तिरीयोपनिषद् किस वेद का है –
(A) ऋग्वेद का (B) यजुर्वेद का
(C) सामवेद का (D) अथर्ववेद का
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–9

8. मैक्समूलर के अनुसार ऋग्वेद का काल है –
(A) 6000 ई०पू० (B) 10000 ई०पू०
(C) 1200 ई०पू० (D) 3000 ई०पू०
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–39

9. 'कौथुम-शाखा' किस वेद से सम्बद्ध है–
(A) ऋग्वेद से (B) सामवेद से
(C) यजुर्वेद से (D) अथर्ववेद से
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–10

10. अष्टकों में विभाजन किस वेद में है –
(A) अथर्ववेद में (B) सामवेद में
(C) यजुर्वेद में (D) ऋग्वेद में
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–46

11. 'गृह्यसूत्र' किसके भाग हैं –
(A) शिक्षा के (B) कल्प के
(C) निरुक्त के (D) ज्योतिष के
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–214

12. वेदाङ्गों में किसको 'मुख' कहा गया है –
(A) छन्दस् को (B) व्याकरण को
(C) कल्प को (D) ज्योतिष को
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–194

13. 'सत्कार्यवाद' का साधक हेतु है –
(A) उपादानग्रहणात् (B) त्रैगुण्यविपर्ययात्
(C) उपलब्धेः (D) त्रैगुण्यात्
स्रोत–सांख्यकारिका (कारिका-9) - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–143

1. (C) **2.** (B) **3.** (D) **4.** (C) **5.** (B) **6.** (A) **7.** (B) **8.** (C) **9.** (B) **10.** (D) **11.** (B) **12.** (B) **13.** (A)

14. 'तन्मात्रा' की उत्पत्ति का कारण है –

(A) पुरुष (B) प्रकृति
(C) अहङ्कार (D) पञ्चभूत

स्रोत–सांख्यकारिका (कारिका 22) - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–224

15. सांख्य के अनुसार तत्वों की संख्या कितनी है –

(A) पञ्चविंशतिः (B) दश
(C) पञ्च (D) पञ्चदश

स्रोत–सांख्यकारिका (कारिका-03) - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–93

16. सांख्य के अनुसार पुरुष है –

(A) एक (B) पञ्च
(C) द्वौ (D) सप्त

स्रोत–सांख्यकारिका (कारिका-03) - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–93

17. वेदान्त के अनुसार अनुबन्धों की संख्या है –

(A) पञ्च (B) अष्ट
(C) नव (D) चत्वारः

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण, श्रीवास्तव पेज–09

18. अज्ञान के अस्तित्व में प्रमाण है –

(A) उपमानम् (B) अपरोक्षानुभवः
(C) अनुपलब्धिः (D) अर्थापत्तिः

स्रोत–वेदान्तसार-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–42

19. रज्जु में सर्प की भ्रान्ति इसका उदाहरण है –

(A) परिणाम का (B) अपवाद का
(C) विवर्त का (D) अद्वैत का

स्रोत–वेदान्तसार-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–115

20. यह 'कर्मेन्द्रिय' है –

(A) श्रोत्र (B) पाणि
(C) घ्राण (D) चक्षु

स्रोत–वेदान्तसार-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–69

21. 'विशेष' का आश्रय है –

(A) नित्यद्रव्य (B) अनित्यद्रव्य
(C) समवाय (D) अभाव

स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–32

22. जाति और व्यक्ति का सम्बन्ध है –

(A) संयोग (B) समवाय
(C) तादात्म्य (D) स्वरूप

स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज–29

23. घटरूप का असमवायिकारण है –

(A) दण्डरूप (B) कपालत्व
(C) कुम्भकार (D) कपालरूप

स्रोत–तर्कभाषा-श्रीनिवास शास्त्री, पेज–36

24. न्याय-वैशेषिक के अनुसार 'मनस्' का परिणाम है–

(A) विभु (B) अणु
(C) महत् (D) दीर्घ

स्रोत–तर्कसंग्रह - गोविन्दाचार्य, पेज – 77

25. 'टि' संज्ञा किसकी होती है –

(A) यचि (B) अलोऽन्त्यात् पूर्व
(C) अचोऽन्त्यादि (D) परः सन्निकर्षः

स्रोत–अष्टाध्यायी (1-1-63) - ईश्वरचन्द्र, पेज–47

26. यह सवर्ण है –

(A) अ-इ (B) इ-ई
(C) इ-उ (D) ए-ओ

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी—गोविन्दाचार्य, पेज–18

27. किस अर्थ में 'परि' कर्मप्रवचनीय होता है –

(A) पूजा अर्थ में (B) भाग अर्थ में
(C) अतिक्रमण अर्थ में (D) समुच्चय अर्थ में

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)–राममुनि पाण्डेय, पेज–66

28. 'अकथित कर्म' का उदाहरण है –

(A) विषं भुङ्क्ते (B) ग्रामं गच्छति
(C) मासमास्ते (D) माणवकं पन्थानं पृच्छति

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)- राममुनि पाण्डेय, पेज–21

29. 'तस्मै कुप्यति' में चतुर्थी विभक्ति किस सूत्र से है –

(A) स्पृहेरीप्सितः
(B) क्रुधद्रुहरुपसृष्टयोः कर्म
(C) क्रुध्-द्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः
(D) येनाङ्गविकारः

स्रोत–अष्टाध्यायी (1-4-37) - ईश्वरचन्द्र, पेज–124

14. (C)	**15.** (A)	**16.** (A)	**17.** (D)	**18.** (D)	**19.** (C)	**20.** (B)	**21.** (A)	**22.** (B)	**23.** (D)	**24.** (A)
25. (C)	**26.** (B)	**27.** (B)	**28.** (D)	**29.** (C)						

30. 'पञ्चमी विभक्ते' इस सूत्र का उदाहरण है –
(A) शतात् बद्धः
(B) माथुराः पाटलिपुत्रकेभ्यः आढ्यतराः
(C) जाड्याद् बद्धः
(D) चोराद् रक्षति
स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–99

31. ''पाणिश्च पादश्च'' इससे बनता है –
(A) पाणिपादौ (B) पाणिपादाः
(C) पादपाणिः (D) पाणिपादम्
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–974

32. 'अधिहरि' में समास किस अर्थ में है –
(A) समीप अर्थ में (B) समृद्धि अर्थ में
(C) विभक्ति अर्थ में (D) साकल्य अर्थ में
स्रोत– लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–894

33. 'शतम्' परिवार की भाषा है –
(A) केल्टिक (B) इटेलिक
(C) अवेस्ता (D) हिटाइट
स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–385

34. द्रविड़ भाषा है –
(A) अश्लिष्टयोगात्मक (B) श्लिष्टयोगात्मक
(C) अयोगात्मक भाषा (D) प्रश्लिष्ट योगात्मक
स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–396

35. 'बभार' - इस पद में यह नियम लागू होता है –
(A) Grassmann's Law (B) Verner's Law
(C) Grimm's Law (D) Collitz Law
स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–246

36. 'पूर्वेभिः' यह किसका रूप है –
(A) Classical Sanskrit (B) Pali
(C) Vedic Sanskrit (D) Prakrit
स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–427

37. ''वाक्यं रसात्मकं काव्यम्'' यह मत किसका है –
(A) मम्मट का (B) आनन्दवर्धन का
(C) विश्वनाथ का (D) जगन्नाथ का
स्रोत–साहित्यदर्पण (1/3)-शालिग्राम शास्त्री, पेज–19

38. ''एको रसः करुण एव'' यह कथन किस कवि का है–
(A) कालिदास का (B) भवभूति का
(C) माघ का (D) श्रीहर्ष का
स्रोत–उत्तररामचरितम् (3/47) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–260

39. विश्वनाथ ने किसके 'काव्यलक्षण' का खण्डन किया है–
(A) पण्डितराजजगन्नाथ के (B) मम्मट के
(C) अप्पयदीक्षित के (D) भरतमुनि के
स्रोत–साहित्यदर्पण (प्रथम परिच्छेद)-शालिग्राम शास्त्री, पेज-12, 13

40. 'मेघदूत' का अङ्गी रस है –
(A) करुणरस (B) करुण-विप्रलम्भ
(C) सम्भोगशृङ्गार (D) वियोगशृङ्गार
स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वभाग) - तारिणीश झा, भू. पेज–21

41. 'वक्रोक्ति-सम्प्रदाय' के प्रवर्तक हैं –
(A) भरतमुनि (B) अभिनवगुप्त
(C) कुन्तक (D) राजशेखर
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा ऋषि, पेज–595

42. ''काव्यस्यात्मा ध्वनिः'' यह कथन है –
(A) अभिनवगुप्त का (B) आनन्दवर्धन का
(C) मम्मट का (D) जगन्नाथ का
स्रोत–ध्वन्यालोक (1/1) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-2

43. 'वीभत्स-रस' का स्थायीभाव है –
(A) भय (B) क्रोध
(C) जुगुप्सा (D) शोक
स्रोत–साहित्यदर्पण (3/239) - शालिग्रामशास्त्री, पेज–120

44. शब्दों की शक्तियों की संख्या है –
(A) 1 (B) 2
(C) 3 (D) 4
स्रोत–साहित्यदर्पण (2/3) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–26

45. एक अङ्क का रूपक है –
(A) नाटक (B) प्रकरण
(C) भाण (D) नाटिका
स्रोत–साहित्यदर्पण (6/228) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–215

30. (B) **31.** (D) **32.** (C) **33.** (C) **34.** (A) **35.** (A) **36.** (C) **37.** (C) **38.** (B) **39.** (B) **40.** (D)
41. (C) **42.** (B) **43.** (C) **44.** (C) **45.** (C)

46. रूपक के भेद होते हैं –

(A) 4 (B) 6
(C) 8 (D) 10

स्रोत–साहित्यदर्पण (6/3) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–170

47. नाटक का नायक होता है –

(A) धीरप्रशान्त (B) धीरललित
(C) धीरोदात्त (D) धीरोद्धत

स्रोत–साहित्यदर्पण (3/31) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–65

48. आनन्दवर्धन के अनुसार 'काव्य की आत्मा' है –

(A) रस (B) ध्वनि
(C) रीति (D) अलङ्कार

स्रोत–ध्वन्यालोक (1/1) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-2

49. ''किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्'' यह सूक्ति मिलती है –

(A) रामायण में (B) अभिज्ञानशाकुन्तल में
(C) उत्तररामचरित में (D) रघुवंश में

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/20) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–46

50. ''अपि ग्रावा रोदित्यपि दलति वज्रस्य हृदयम्''-यह सूक्ति मिलती है –

(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में
(B) उत्तररामचरितम् में
(C) रामायणम् में
(D) किरातार्जुनीयम् में

स्रोत–उत्तररामचरितम् (1/28) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–52

46. (D) **47.** (C) **48.** (B) **49.** (B) **50.** (B)

10	दिसम्बर 2000	UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् II

सूचना : अस्मिन् प्रश्नपत्रे पञ्चाशत् (50) बहुवैकल्पिकप्रश्नाः सन्ति। एकैकस्य प्रश्नस्य अङ्कद्वयं वर्तते। सर्वे प्रश्नाः समाधेयाः।

1. सवितृदेवस्य नामोल्लेखः प्रायः भूतः अस्ति –

(A) 200 बारम् (B) 170 बारम्
(C) 150 बारम् (D) 140 बारम्

स्रोत–वैदिक माइथोलॉजी - रामकुमार राय, पेज–58

2. विष्णुः निवसति –

(A) अन्तरिक्षे (B) द्युलोके
(C) पाताललोके (D) पृथिवीलोके

स्रोत–वैदिक माइथोलॉजी - रामकुमार राय, पेज–70

3. ''हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्'' इत्यस्मिन् मन्त्रे 'हिरण्यगर्भः' इति पदस्य कः अर्थः?

(A) हिरण्यस्य गर्भः (B) हिरण्यगर्भ-प्रजापतिः
(C) गर्भे हिरण्यः (D) हिरण्यः इव

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह (10.121.1) - हरिदत्तशास्त्री, पेज–405

4. यजुर्वेदः कति भागेषु विभक्तः –

(A) द्वि (B) त्रि
(C) पञ्च (D) अष्ट

स्रोत– वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–64

5. पतञ्जलिमतानुसारं सामवेदस्य शाखाः सन्ति –

(A) 1,000 (B) 800
(C) 950 (D) 990

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–88

6. बालगङ्गाधरतिलकमनुसृत्य वेदस्य रचनाकालम् अस्ति–

(A) 6000 ई. पू. तः 4000 ई. पू. पर्यन्तम्
(B) 5000 ई. पू. तः 3000 ई. पू. पर्यन्तम्
(C) 5000 ई. पू. तः 4000 ई. पू. पर्यन्तम्
(D) 6000 ई. पू. तः 5000 ई. पू. पर्यन्तम्

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–40

7. सायणमतानुसारम् अरण्ये पठनीयाः सन्ति –

(A) वेदाः (B) आरण्यकाः
(C) उपनिषदः (D) ब्राह्मणग्रन्थाः

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–156

8. 'विपाशा शुतुद्रि' इति नाम्नोः नद्योः वर्णनं कस्मिन् संवादसूक्ते विद्यते?

(A) यम-यमी-सूक्ते (B) सरमा-पणि-सूक्ते
(C) विश्वामित्र-नदी-सूक्ते (D) पुरूरवा-उर्वशी-सूक्ते

स्रोत–ऋग्वेद (3-33) विश्वामित्र नदी संवाद-सूक्त

9. 'एना वयं पयसा पिन्वमाना अनु योनिं देवकृतं चरन्ती' इति ऋचायाः केन संवादसूक्तेन सम्बन्धः –

(A) यम-यमी-संवादसूक्तेन
(B) विश्वामित्र-नदी-संवादसूक्तेन
(C) पुरूरवा-उर्वशी-संवादसूक्तेन
(D) सरमा-पणि-संवादसूक्तेन

स्रोत–ऋग्वेद (3-33-4) विश्वामित्र नदी संवाद सूक्त

10. जलेन उत्पत्तेः सिद्धान्तं कस्मिन् सूक्तेऽस्ति –

(A) नासदीयसूक्ते (B) शिव-सङ्कल्प-सूक्ते
(C) पुरुषसूक्ते (D) विश्वकर्मा-सूक्ते

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह (10.129.1) - हरिदत्तशास्त्री, पेज–430

11. वेबरमहाभागः यजुर्वेदीयानां शतपथब्राह्मणग्रन्थानां आलोचनात्मकं संस्करणं कदा अप्रकाशयत् –

(A) 1855 ईसवीये वर्षे (B) 1955 ईसवीये वर्षे
(C) 1850 ईसवीये वर्षे (D) 1852 ईसवीये वर्षे

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–129

12. पदानां प्रकृतेः प्रत्ययस्य च उपदेशकं वेदाङ्गम् अस्ति –

(A) कल्पम् (B) शिक्षा
(C) व्याकरणम् (D) छन्दस्

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–193

1. (B) **2.** (B) **3.** (B) **4.** (A) **5.** (A) **6.** (A) **7.** (B) **8.** (C) **9.** (B) **10.** (A) **11.** (A) **12.** (C)

13. रोगनाशकानां विधीनां वर्णनम् अस्ति –

(A) गृह्यसूत्रे (B) श्रौतसूत्रे

(C) धर्मसूत्रे (D) पाणिनीयसूत्रे

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–197

14. रूपरहितं स्पर्शं किमस्ति –

(A) तेजस् (B) वायुः

(C) पृथ्वी (D) आकाशः

स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–41

15. सत्त्वगुणं ददाति –

(A) दुःखम् (B) प्रीतिः

(C) विषादम् (D) मोहम्

स्रोत–सांख्यकारिका (का. 9)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–135

16. अज्ञानादिसकलजडसमूहः अस्ति –

(A) वस्तु (B) अवस्तु

(C) विवर्तः (D) अध्यारोपः

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–37

17. जीवः सुषुप्तिकाले कथ्यते –

(A) ब्रह्मा (B) विराट्

(C) प्राज्ञः (D) विश्वः

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–46

18. पापक्षयसाधनानि 'चान्द्रायणादीनि' कर्म अस्ति –

(A) नित्यकर्म (B) नैमित्तिककर्म

(C) उपासनाकर्म (D) प्रायश्चित्तकर्म

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–14

19. जश्त्व-सन्धेः सूत्रमस्ति –

(A) झलां जशोऽन्ते (B) खरि च

(C) शश्छोऽटि (D) तोर्लि

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–89

20. लृट्लकारः कस्य कालस्य बोधकः अस्ति –

(A) वर्तमानकालस्य (B) भूतकालस्य

(C) भविष्यत्-कालस्य (D) एतेषु न कोऽपि

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–399

21. शुद्धमस्ति –

(A) उपर्युक्तम् (B) उपरोक्तम्

(C) उप्रयुक्तम् (D) उपर्यक्तम्

स्रोत–संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-186

22. ''चक्रपाणिः'' अत्र कः समासः –

(A) द्वन्द्वः (B) द्विगुः

(C) तत्पुरुषः (D) बहुव्रीहिः

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज–189

23. कृ + क्तवतु = ... भवति –

(A) कुर्वाणः (B) कर्तवान्

(C) कृतवान् (D) क्रियमाणः

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–808

24. 'सहयुक्तेऽप्रधाने' इति सूत्रमस्ति –

(A) प्रथमा-विभक्तेः (B) तृतीया-विभक्तेः

(C) पञ्चमी-विभक्तेः (D) षष्ठी-विभक्तेः

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–42

25. ध्वनिपरिवर्तनस्य अन्तःकारणं नास्ति –

(A) प्रयत्नलाघवम् (B) क्षिप्रभाषणम्

(C) ध्वनिनां परिवेशम् (D) बलाघातम्

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–227-229

26. 'आङ्ग्लभाषा' भारोपीयपरिवारस्य कया भाषया सम्बद्धा अस्ति –

(A) इटालिक-भाषया (B) केल्टिक-भाषया

(C) ग्रीक-भाषया (D) जर्मनिक-भाषया

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–392

27. ग्रिमनियमस्य सम्बन्धः कति स्पर्शध्वनिभिः अस्ति –

(A) 9 (B) 6

(C) 3 (D) 12

स्रोत–भाषाविज्ञान - कर्ण सिंह, पेज–168

28. मौसलपर्वणः उल्लेखोऽस्ति –

(A) रामायणे (B) महाभारते

(C) भगवद्गीतायाम् (D) रघुवंशे

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–117

13. (A) **14.** (B) **15.** (B) **16.** (B) **17.** (C) **18.** (D) **19.** (A) **20.** (C) **21.** (A) **22.** (D) **23.** (C) **24.** (B) **25.** (C) **26.** (D) **27.** (A) **28.** (B)

29. भारविः कस्योपासकः आसीत् –

(A) ब्राह्मणः (B) विष्णोः

(C) शिवस्य (D) पार्वत्याः

किरातार्जुनीयम् (प्रथम सर्ग)-अभिराजराजेन्द्र मिश्र, भू. पेज–16

30. 'जानकीहरणम्' इति महाकाव्ये कति सर्गाणि सन्ति –

(A) 18 (B) 20

(C) 22 (D) 21

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि' पेज–257

31. ऋतुसंहारे कति ऋतूनां वर्णनमस्ति –

(A) 5 (B) 6

(C) 3 (D) 4

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि' पेज–330

32. 'वेणीसंहारम्' इति ग्रन्थस्य कः रचनाकारः अस्ति –

(A) बाणभट्टः (B) भट्टनारायणः

(C) भवभूतिः (D) भासः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि पेज–518

33. उदयपुरस्य राजाजगतसिंहस्य वर्णनं जगन्नाथः कस्मिन् ग्रन्थे अकरोत् –

(A) प्राणाभरणे (B) जगदाभरणे

(C) यमुनावर्णने (D) गंगालहर्याम्

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेवद्विवेदी पेज–555

34. एतेषु प्रसिद्धं गद्यकाव्यं किमस्ति –

(A) शिशुपालवधम् (B) विष्णुपुराणम्

(C) वासवदत्ता (D) वेदान्तदर्शनम्

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेवद्विवेदी पेज–485

35. भामहस्य काव्यालङ्कारे श्लोकसंख्या अस्ति –

(A) 500 (B) 400

(C) 425 (D) 300

संस्कृत का अर्वाचीन समीक्षात्मक काव्यशास्त्र–अभिराज राजेन्द्र मिश्र पेज–89

36. 'तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि' इति अनेन सम्बद्धः आचार्यः अस्ति –

(A) मम्मटः (B) रुद्रटः

(C) विश्वनाथः (D) भामहः

स्रोत–काव्यप्रकाश (1/1)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज–19

37. 'वस्तु च द्विधा' इति केन ग्रन्थेन सम्बद्धोऽस्ति –

(A) काव्यप्रकाशेन (B) साहित्यदर्पणेन

(C) दशरूपकेन (D) रसगङ्गाधरेण

स्रोत–दशरूपक (1/11) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज–13

38. 'कश्चित् कान्ताविरहगुरुणा स्वाधिकारात्प्रमत्तः' अत्र किं छन्दः अस्ति –

(A) मन्दाक्रान्ता (B) शिखरिणी

(C) स्रग्धरा (D) उपजातिः

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ 1/1) - तारिणीश झा, पेज–04

39. ''ननमयययुतेयं मालिनीभोगिलोकैः'' इदं लक्षणमस्ति –

(A) मालिनीछन्दसः (B) शालिनीछन्दसः

(C) वंशस्थछन्दसः (D) वसन्ततिलकाछन्दसः

स्रोत–वृत्तरत्नाकर - धरानन्द शास्त्री, पेज–136

40. वेदस्य मुखं कथ्यते –

(A) छन्दस् (B) व्याकरणम्

(C) ज्योतिषस् (D) कल्पम्

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–194

41. भीमः प्रतिज्ञातवान् –

(A) दुर्योधनेन वैरत्वं

(B) दुर्योधनेन कृतं द्रौपद्याः तिरस्कारम् अपकर्तुम्

(C) दुःशासनेन कृतं तिरस्कारेण

(D) भानुमत्या द्रौपद्याः तिरस्कारेण

स्रोत–वेणीसंहार (प्रथम अंक)-परमेश्वरदीन पाण्डेय, भू. पेज-11

29. (C) **30.** (B) **31.** (B) **32.** (B) **33.** (B) **34.** (C) **35.** (B) **36.** (A) **37.** (C) **38.** (A) **39.** (A) **40.** (B) **41.** (B)

42. विश्वनाथेन कस्य काव्यलक्षणस्य खण्डनं कृतम् –

(A) जगन्नाथस्य (B) भामहस्य

(C) मम्मटस्य (D) रुद्रटस्य

स्रोत–साहित्यदर्पण (प्रथम परिच्छेद)-शालिग्राम शास्त्री पेज–12-13

43. सुमेलयतु –

(क) शिक्षा 1. पादः

(ख) व्याकरणम् 2. नासिका

(ग) छन्दस् 3. मुखम्

(घ) निरुक्तम् 4. श्रोत्रम्

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(A)	1	2	3	4
(B)	2	3	4	1
(C)	2	3	1	4
(D)	3	2	4	1

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–190

44. शिक्षाग्रन्थाः वेदानां निरूपकाः सन्ति –

(A) निर्वचनम् (B) उच्चारणम्

(C) व्याकरणम् (D) काल-निर्धारणम्

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–190

45. सुमेलयतु –

(क) किरातार्जुनीयम् 1. शृङ्गाररसः

(ख) नैषधीयचरितम् 2. वीररसः

(ग) उत्तररामचरितम् 3. वियोगशृङ्गारः

(घ) मेघदूतम् 4. करुणरसः

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(A)	2	1	4	3
(B)	3	4	1	2
(C)	1	2	3	4
(D)	4	3	2	1

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी पेज– क = 188, ख = 228, ग = 403, घ = 530

46. निरुक्ते काण्डानि सन्ति –

(A) 3

(B) 7

(C) 2

(D) 4

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–185

47. लक्षणायाः हेतवः सन्ति –

(A) 3

(B) 4

(C) 5

(D) 9

स्रोत–साहित्यदर्पण (2/5) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–29

48. 'ग्रामं गच्छन् तृणं स्पृशति' इत्यत्र केन सूत्रेण द्वितीया विभक्तिः भवति –

(A) 'अकथितं च' सूत्रेण

(B) 'शब्दायतेर्न' सूत्रेण

(C) 'तथायुक्तं चानीप्सितम्' सूत्रेण

(D) 'दिवः कर्म च' सूत्रेण

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–19

49. 'इति हेतुस्तदुद्भवे' इति उद्धृतः अस्ति –

(A) काव्यप्रकाशात् (B) दशरूपकात्

(C) नाट्यशास्त्रात् (D) ध्वन्यालोकात्

स्रोत–काव्यप्रकाश (1/2) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-16

50. 'माघे मेघे गतं वयः' उक्तिः अस्ति –

(A) राजशेखरस्य

(B) मल्लिनाथ-सूरिमहोदयस्य

(C) वल्लभदेवस्य

(D) भास्कराचार्यस्य

स्रोत–मेघदूतम् - दयाशंकर शास्त्री, पेज–44

42. (C) **43.** (C) **44.** (B) **45.** (A) **46.** (A) **47.** (A) **48.** (C) **49.** (A) **50.** (B)

11	जून 2001	UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् II

नोट : इस प्रश्नपत्र में **पचास (50)** बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के **दो (2) अङ्क** हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. ''हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः'' सूक्ति किस ग्रन्थ की है –

(A) मेघदूतम् की (B) रघुवंशम् की
(C) किरातार्जुनीयम् की (D) शिशुपालवधम् की

स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/4) - रामसेवक दुबे, पेज-50

2. साहित्यदर्पणकार के अनुसार 'रस' कितने हैं –

(A) 2 (B) 5
(C) 7 (D) 9

स्रोत–साहित्यदर्पण (3/182) - शालिग्रामशास्त्री, पेज–106

3. वीर रस प्रधान नाटक है –

(A) वेणीसंहारम् (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(C) स्वप्नवासवदत्तम् (D) उत्तररामचरितम्

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेवद्विवेदी, पेज–388

4. 'हेति' शस्त्र से सम्बद्ध हैं –

(A) रुद्र (B) अग्नि
(C) वरुण (D) उषस्

स्रोत–ऋक्सूक्त संग्रह - हरिदत्तशास्त्री, पेज–205

5. 'साहित्यदर्पण' विभक्त है –

(A) परिच्छेदों में (B) उच्छ्वासों में
(C) सर्गों में (D) अङ्कों में

स्रोत–साहित्यदर्पण - शालिग्राम शास्त्री, भू. पेज–19

6. 'दशकुमारचरित' में उल्लिखित किसी एक कुमार का नाम है –

(A) राजवाहन (B) राजहंस
(C) नल (D) बुद्ध

स्रोत–दशकुमारचरितम् (प्रथम उच्छ्वास)-श्रीनिवासशर्मा, पेज–36

7. निम्नलिखित में कालक्रमानुसार कौन सही है –

(A) कालिदास, माघ, भारवि, वाल्मीकि
(B) वाल्मीकि, कालिदास, भारवि, माघ
(C) माघ, भारवि, वाल्मीकि, कालिदास
(D) भारवि, कालिदास, वाल्मीकि, माघ

स्रोत–संस्कृतगंगा साहित्यम् - सर्वज्ञभूषण, पेज–291-292

8. 'शाल्मली-वृक्ष' का वर्णन किसमें है –

(A) कादम्बरी में (B) रघुवंशम् में
(C) बुद्धचरितम् में (D) किरातार्जुनीयम् में

स्रोत–कादम्बरी (कथामुख)-तारिणीश झा, पेज–195

9. कालिदास विरचित 'मालविकाग्निमित्रम्' नाटक में अग्निमित्र की द्वितीय पत्नी है –

(A) मदनिका (B) मालविका
(C) धारिणी (D) इरावती

स्रोत–कालिदासग्रन्थावली - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज-568

10. एक पात्र प्रयोजित रूपक है –

(A) अङ्क (B) ईहामृग
(C) भाण (D) डिम

स्रोत–साहित्यदर्पण (6/228) - शालिग्रामशास्त्री, पेज–215

11. रूपकों की संख्या है –

(A) 8 (B) 9
(C) 10 (D) 11

स्रोत–साहित्यदर्पण (6/3) - शालिग्रामशास्त्री, पेज–170

12. ''विरतास्वभिधाद्यासु ययार्थो बोध्यते परः'' यह किस वृत्ति का लक्षण है –

(A) अभिधा (B) लक्षणा
(C) व्यञ्जना (D) तात्पर्या

स्रोत–साहित्यदर्पण (2/12) - शालिग्रामशास्त्री, पेज–39

13. सांख्यानुसार प्रधान है –

(A) प्रकृति (B) महत्
(C) पञ्चतन्मात्र (D) मन

स्रोत–सांख्यकारिका - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–123

1. (C) **2.** (D) **3.** (A) **4.** (A) **5.** (A) **6.** (A) **7.** (B) **8.** (A) **9.** (D) **10.** (C) **11.** (C) **12.** (C) **13.** (A)

14. सत्कार्यवाद का हेतु है –
(A) सामीप्य (B) पुरुषस्वभाव
(C) प्रकृतिस्वरूप ज्ञान (D) सर्वसम्भवाभाव
स्रोत–सांख्यकारिका (कारिका-09) - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–143

15. 'अज्ञान' का लक्षण है –
(A) असत् (B) सत्
(C) सदसद्विलक्षण (D) जगत्
स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–37

16. 'साधनचतुष्टयसम्पन्न' होता है –
(A) अधिकारी (B) अज्ञान
(C) ब्रह्म (D) जगत्
स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–11

17. न्याय-वैशेषिक मत में 'व्याप्तिविशिष्टपक्षताज्ञान' है –
(A) व्यक्ति (B) साध्य
(C) परामर्श (D) अनुमान
स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–84

18. 'सांख्यमत' में स्वीकृत प्रमाणों की संख्या है –
(A) दो (B) तीन
(C) चार (D) पाँच
स्रोत–सांख्यकारिका (का. 4) - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–47

19. सांख्यमत में यथार्थ स्वभाव में पुरुष रहता है –
(A) सदैव सक्रिय (B) सृष्टिकाल में सक्रिय
(C) प्रलयकाल में निष्क्रिय (D) सदैव निष्क्रिय
स्रोत–सांख्यकारिका (कारिका 19, 20)-राकेश शास्त्री पेज-62

20. प्रकृति का अस्तित्वबोधक प्रमाण है –
(A) प्रत्यक्षप्रमाण (B) अनुमानप्रमाण
(C) उपमानप्रमाण (D) अर्थापत्तिप्रमाण
स्रोत–सांख्यकारिका (का. 6) - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–88

21. 'उ' का सम्प्रसारण है –
(A) प (B) व
(C) द (D) य
स्रोत–अष्टाध्यायी (1.1.44) - ईश्वरचन्द्र, पेज–26

22. 'येनाङ्गविकारः' सम्बन्धित है –
(A) तृतीया (B) चतुर्थी
(C) पञ्चमी (D) षष्ठी
स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–43

23. निम्न में से 'हरी' शब्द है –
(A) प्रगृह्य (B) टि
(C) सवर्ण (D) पद
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-1), पेज–83

24. 'रूपवद्भार्यः' में समास है –
(A) अव्ययीभावसमास (B) बहुव्रीहिसमास
(C) केवलसमास (D) द्वन्द्वसमास
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज–199

25. 'अ, ए, ओ' की संज्ञा क्या है –
(A) वृद्धिसंज्ञा (B) गुणसंज्ञा
(C) संहितासंज्ञा (D) प्रातिपदिकसंज्ञा
स्रोत–अष्टाध्यायी (1.1.2) - ईश्वरचन्द्र, पेज–06

26. 'कर्म' का लक्षण है –
(A) ध्रुवमपाये (B) कर्तुरीप्सिततमम्
(C) आधारः (D) स्वतन्त्रः
स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–16

27. 'ऐ' कैसा स्वर है –
(A) अर्द्धविवृत (B) विवृत
(C) स्पर्श (D) संवृत
स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–152

28. 'वैदिकभाषा' किस भाषा के सबसे निकट है –
(A) पर्शियन (B) अवेस्ता
(C) इण्डो-यूरोपियन (D) हिट्टाइट
स्रोत–भाषाविज्ञान - कर्णसिंह, पेज–89

29. 'भारोपीय भाषा' के मुख्य भाग हैं –
(A) दो (B) तीन
(C) चार (D) पाँच
स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–385

14. (D)	**15.** (C)	**16.** (A)	**17.** (C)	**18.** (B)	**19.** (D)	**20.** (B)	**21.** (B)	**22.** (A)	**23.** (A)	**24.** (B)
25. (B)	**26.** (B)	**27.** (A)	**28.** (B)	**29.** (A)						

30. 'ऋक्-प्रातिशाख्य' सम्बन्धित है –
(A) सामवेद से (B) अथर्ववेद से
(C) ऋग्वेद से (D) यजुर्वेद से
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–197

31. 'वेदाङ्गज्योतिष' के रचयिता हैं –
(A) लगध (B) पाणिनि
(C) पतञ्जलि (D) कालिदास
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–208

32. 'मैक्समूलर' के अनुसार वेदों का समय है –
(A) 1200 B.C. (B) 6000 B.C.
(C) 1200 A.D. (D) 2500 B.C.
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–39

33. वेदपुरुष का 'शिक्षा' है –
(A) घ्राण (B) मुख
(C) हस्त (D) पाद
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–190

34. 'उमा-हेमवती संवाद' किससे सम्बन्धित है –
(A) केनोपनिषद् से (B) कठोपनिषद् से
(C) बृहदारण्यकोपनिषद् से (D) मुण्डकोपनिषद् से
स्रोत–केनोपनिषद् - (खण्ड-4)

35. 'गोपथ-ब्राह्मण' किससे सम्बन्धित है –
(A) अथर्ववेद से (B) सामवेद से
(C) ऋग्वेद से (D) यजुर्वेद से
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–10

36. 'ताण्ड्य-ब्राह्मण' किससे सम्बन्धित है –
(A) ऋग्वेद से (B) अथर्ववेद से
(C) सामवेद से (D) यजुर्वेद से
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–10

37. 'छान्दोग्योपनिषद्' किस वेद से सम्बन्धित है –
(A) ऋग्वेद से (B) सामवेद से
(C) अथर्ववेद से (D) यजुर्वेद से
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–10

38. 'निरुक्त' रचना है –
(A) यास्क की (B) पाणिनि की
(C) पतञ्जलि की (D) लगध की
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–204

39. 'उत्तरार्चिक' में कितने प्रपाठक हैं –
(A) 6 (B) 7
(C) 8 (D) 9
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–81

40. 'पुरुषसूक्त' आता है –
(A) ऋग्वेद में (B) सामवेद में
(C) अथर्ववेद में (D) उपनिषद् में
स्रोत–ऋग्वेद (10/90)

41. 'उत्तरध्रुव' को वेदों का रचना माना है –
(A) बालगङ्गाधरतिलक ने (B) मैक्समूलर ने
(C) वेबर ने (D) मैकडॉनल ने
स्रोत–संस्कृतसाहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज–103

42. विश्वनाथ के अनुसार काव्यलक्षण है –
(A) शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्
(B) वाक्यं रसात्मकं काव्यम्
(C) रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्
(D) शरीरं तावदिष्टार्थ-व्यवच्छिन्ना पदावली
स्रोत–साहित्यदर्पण (1/3) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–19

43. 'समया' के योग में कौन-सी विभक्ति होगी –
(A) षष्ठी विभक्ति (B) पञ्चमी विभक्ति
(C) द्वितीया विभक्ति (D) चतुर्थी विभक्ति
स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–31

44. 'करुणरस' का स्थायीभाव है –
(A) शोक (B) रति
(C) शम (D) उत्साह
स्रोत–साहित्यदर्पण (3/223) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–116

45. 'शुनःशेप आख्यान' किस ब्राह्मण में है –
(A) तैत्तिरीय ब्राह्मण में (B) शतपथ ब्राह्मण में
(C) गोपथ ब्राह्मण में (D) ऐतरेय ब्राह्मण में
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–125

30. (C) **31.** (A) **32.** (A) **33.** (A) **34.** (A) **35.** (A) **36.** (C) **37.** (B) **38.** (A) **39.** (D) **40.** (A)
41. (A) **42.** (B) **43.** (C) **44.** (A) **45.** (D)

46. ऋग्वेद के नवम मण्डल से सम्बद्ध देवता है –

(A) इन्द्र (B) अग्नि
(C) सोम (D) उषा

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–47

47. 'पुरोहित' है –

(A) वरुण (B) इन्द्र
(C) सविता (D) अग्नि

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–44

48. करुणरस प्रधान नाटक है –

(A) उत्तररामचरितम् (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(C) मुद्राराक्षसम् (D) स्वप्नवासवदत्तम्

स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू. पेज–82

49. 'ऋग्वेद' में देवताओं की संख्या है –

(A) 33
(B) 35
(C) 39
(D) 45

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–295

50. बृहत्कथा की भाषा है –

(A) संस्कृतभाषा
(B) प्राकृतभाषा
(C) मागधीभाषा
(D) पैशाचीभाषा

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का इतिहास-उमाशंकरशर्मा 'ऋषि', पेज–422

46. (C) **47.** (D) **48.** (A) **49.** (A) **50.** (D)

12	दिसम्बर 2001	UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् II

नोट : इस प्रश्नपत्र में **पचास (50)** बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के **दो (2) अङ्क** हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. 'ऐतरेय-आरण्यक' सम्बन्धित है –
(A) ऋग्वेद से (B) यजुर्वेद से
(C) सामवेद से (D) अथर्ववेद से
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–09

2. 'अग्निमीळे पुरोहितं-----' किस वेद का है –
(A) ऋग्वेद का (B) यजुर्वेद का
(C) सामवेद का (D) अथर्ववेद का
स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह (1-1-1) - हरिदत्त शास्त्री, पेज-55

3. 'उरुक्रम' विशेषण है –
(A) इन्द्र का (B) रुद्र का
(C) विष्णु का (D) अग्नि का
स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्त शास्त्री, भू. पेज–16

4. 'असुर' विशेषण है –
(A) अश्विनौ का (B) वरुण का
(C) इन्द्र का (D) विष्णु का
स्रोत–ऋक्सूक्त संग्रह - हरिदत्तशास्त्री, भू. पेज–14

5. 'ताण्ड्य-ब्राह्मण' किस वेद से सम्बन्धित है –
(A) ऋग्वेद से (B) यजुर्वेद से
(C) सामवेद से (D) अथर्ववेद से
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–10

6. 'पुरूरवा-उर्वशी संवाद' किस वेद में है –
(A) ऋग्वेद में (B) यजुर्वेद में
(C) सामवेद में (D) अथर्ववेद में
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–57

7. मैक्समूलर के मतानुसार वैदिक रचनाकाल है –
(A) 6000 B.C. (B) 4500 B.C
(C) 1200 B.C. (D) 2500 B.C
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–39

8. 'कौथुम-शाखा' से सम्बद्ध वेद है –
(A) ऋग्वेद (B) यजुर्वेद
(C) सामवेद (D) अथर्ववेद
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–10

9. वेदपुरुष का 'मुख' कहलाने वाला वेदाङ्ग है –
(A) शिक्षा (B) कल्प
(C) व्याकरण (D) निरुक्त
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–194

10. ''असतो मा सद्गमय'' वाक्य किस उपनिषद् में पाया जाता है –
(A) मुण्डकोपनिषद् में (B) छान्दोग्योपनिषद् में
(C) ईशोपनिषद् में (D) बृहदारण्यकोपनिषद् में
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–185

11. 'सत्यकाम-जाबालि' की कथा है –
(A) मुण्डकोपनिषद् में (B) छान्दोग्योपनिषद् में
(C) ईशोपनिषद् में (D) बृहदारण्यकोपनिषद् में
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–181

12. 'वेद' कहलाते हैं –
(A) ब्राह्मण (B) आरण्यक
(C) मन्त्र एवं ब्राह्मण (D) उपनिषद्
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–05

13. 'कल्पसूत्र' का विषय है –
(A) यज्ञ-वेदी का निर्माण
(B) मन्त्रों के शुद्धातिशुद्ध उच्चारण का होना
(C) वैदिक पदों का निर्वचन
(D) भावबोधन
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–214

14. सांख्यकारिका के अनुसार प्रमाण हैं –
(A) एक (B) दो
(C) तीन (D) चार
स्रोत–सांख्यकारिका (का. 4) - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–47

15. सांख्यकारिका के अनुसार सिद्धि के भेद हैं –
(A) 8 (B) 9
(C) 18 (D) 28
स्रोत–सांख्यकारिका (का. 47)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–271

1. (A) **2.** (A) **3.** (C) **4.** (B) **5.** (C) **6.** (A) **7.** (C) **8.** (C) **9.** (C) **10.** (D) **11.** (B) **12.** (C) **13.** (A) **14.** (C) **15.** (A)

16. उत्प्रेक्षालङ्कार में समर्थ कवि है –
(A) कालिदास (B) माघ
(C) श्रीहर्ष (D) भारवि
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–230

17. 'इन्दुमती' किस महाकाव्य की पात्र है –
(A) शिशुपालवधम् की (B) रघुवंशम् की
(C) नैषधीयचरितम् की (D) किरातार्जुनीयम् की
स्रोत–रघुवंशम् (सर्ग-6) - कृष्णमणि त्रिपाठी, भू. पेज–16

18. वेदान्तसार के अनुसार 'अज्ञान' की शक्तियाँ हैं –
(A) आवरण एवं विक्षेप (B) परिणाम
(C) विवर्त (D) अध्यास
स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–56

19. तर्कभाषानुसार कारण माने गए हैं –
(A) तीन (B) चार
(C) पाँच (D) षट्
स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज–24

20. सांख्यानुसार कर्मेन्द्रियों का मूल है –
(A) पुरुष (B) महत्
(C) अहङ्कार (D) प्रकृति
स्रोत–सांख्यकारिका (का. 22)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–196

21. 'पुरुष' विपरीत है –
(A) अहङ्कार के (B) पञ्चमहाभूत के
(C) प्रकृति के (D) पञ्चतन्मात्रा के
स्रोत–सांख्यकारिका (का. 11)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–129

22. 'यू स्त्र्याख्यौ'- - -- - है –
(A) अपृक्त (B) टि
(C) प्रगृह्य (D) नदी
स्रोत–अष्टाध्यायी (1.4.3) - ईश्वरचन्द्र, पेज–109

23. 'अपृक्तसंज्ञा' होती है –
(A) परः सन्निकर्षः (B) एकाल्प्रत्ययः
(C) अचोऽन्त्यादि (D) अदेङ्
स्रोत–अष्टाध्यायी (1.2.41) - ईश्वरचन्द्र, पेज–68

24. 'ईदूदेद्द्विवचनम्' है –
(A) प्रगृह्य संज्ञक (B) उपधा संज्ञक
(C) टि संज्ञक (D) नदी संज्ञक
स्रोत–अष्टाध्यायी (1.1.11) - ईश्वरचन्द्र, पेज–13

25. 'अनुक्त-कर्म' में विभक्ति होती है –
(A) प्रथमाविभक्ति (B) द्वितीयाविभक्ति
(C) तृतीयाविभक्ति (D) चतुर्थीविभक्ति
स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–17

26. 'पूर्वपदप्रधान' समास है –
(A) अव्ययीभाव (B) तत्पुरुष
(C) कर्मधारय (D) द्वन्द्व
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज–02

27. 'द्वादश' में समास है –
(A) तत्पुरुष (B) बहुव्रीहि
(C) द्वन्द्व (D) कर्मधारय
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज–165

28. 'भारोपीय-भाषा' के प्रकार हैं –
(A) दो (B) तीन
(C) चार (D) पाँच
स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–384

29. भारतीयभाषा की अवस्थाएँ हैं –
(A) दो (B) तीन
(C) चार (D) पाँच
स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–425

30. 'उ' ऐसा स्वर है, जो है –
(A) केन्द्रीय (B) विवृत
(C) पश्च (D) अग्र
स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–150

31. 'वैदिकभाषा' इसके निकट है –
(A) हिट्टाइट (B) इण्डो-यूरोपियन
(C) अवेस्ता (D) पर्सियन
स्रोत–भाषाविज्ञान - कर्णसिंह, पेज–89

16. (C) **17.** (B) **18.** (A) **19.** (A) **20.** (C) **21.** (C) **22.** (D) **23.** (B) **24.** (A) **25.** (B) **26.** (A) **27.** (C) **28.** (A) **29.** (B) **30.** (C) **31.** (C)

32. बृहत्कथा आधारित ग्रन्थ है –

(A) नैषधीयचरितम् (B) वेणीसंहारम्
(C) रघुवंशम् (D) दशकुमारचरितम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास - बलदेव उपाध्याय, पेज–435

33. दस अङ्कों का रूपक है –

(A) मुद्राराक्षसम् (B) मृच्छकटिकम्
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (D) उत्तररामचरितम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेवद्विवेदी पेज–307

34. किसमें आरभटी वृत्ति होती है –

(A) रौद्ररस में (B) शृङ्गाररस में
(C) वीररस में (D) अद्भुतरस में

स्रोत–साहित्यदर्पण (6/122) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–199

35. 'महाकाव्य' नहीं है –

(A) किरातार्जुनीयम् (B) मेघदूतम्
(C) नैषधीयचरितम् (D) रघुवंशम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी पेज–525

36. 'उत्तररामचरित' नाटक की विशेषता है –

(A) गर्भाङ्क की योजना
(B) छाया सीता का प्रयोग
(C) विदूषकविहीन रचना
(D) सभी

स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू. पेज–58, 59, 62

37. वाक्य के लिए आवश्यक है –

(A) आकांक्षा (B) योग्यता
(C) सन्निधि (D) तीनों

स्रोत–साहित्यदर्पण (2/1) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–25

38. मुख्यार्थ का बोध कराने वाली वृत्ति है :

(A) अभिधा (B) व्यञ्जना
(C) लक्षणा (D) शाब्दी व्यञ्जना

स्रोत–साहित्यदर्पण (2/4) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–26-27

39. लक्षणा में प्रयोजन की प्रतीति कराने वाली वृत्ति है–

(A) अभिधावृत्ति (B) व्यञ्जनावृत्ति
(C) लक्षणावृत्ति (D) तात्पर्यावृत्ति

स्रोत–काव्यप्रकाश (2/14) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–70

40. 'वीभत्सरस' का स्थायीभाव है –

(A) रति (B) हास
(C) शोक (D) जुगुप्सा

स्रोत–साहित्यदर्पण (3/239) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–120

41. 'मुद्राराक्षस' है –

(A) प्रकरण (B) भाण
(C) समवकार (D) नाटक

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–358

42. 'नाना' के योग में कौन-सी विभक्ति होती है –

(A) प्रथमाविभक्ति (B) तृतीयाविभक्ति
(C) षष्ठीविभक्ति (D) सप्तमीविभक्ति

स्रोत–अष्टाध्यायी (2-3-32) - ईश्वरचन्द्र, पेज–205

43. 'उपपत्ति' है –

(A) आरम्भ
(B) आपत्ति
(C) क्रमसन्तति
(D) षड्विधलिङ्गों में अन्यतम

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–152

44. 'वेदान्तसार' को जानने के लिए -----लिङ्गों की आवश्यकता है –

(A) तीन (B) चार
(C) पाँच (D) षड्विध

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–152

45. सुमेलित कीजिए –

(अ) वाक्यपदीयम् 1. हर्ष
(ब) मुद्राराक्षसम् 2. भर्तृहरि
(स) अभिज्ञानशाकुन्तलम् 3. विशाखदत्त
(द) रत्नावली 4. कालिदास

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	2	3	4	1
(B)	3	1	4	2
(C)	1	2	3	4
(D)	2	1	3	4

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज – अ = 564, ब = 501, स = 482, द = 514

32. (D) **33.** (B) **34.** (A) **35.** (B) **36.** (D) **37.** (D) **38.** (A) **39.** (B) **40.** (D) **41.** (D) **42.** (B) **43.** (D) **44.** (D) **45.** (A)

46. 'अनुनासिक' वर्णों की संख्या है –

(A) पाँच (B) आठ

(C) दस (D) बारह

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–17

47. 'किरातार्जुनीयम्' के प्रत्येकसर्ग का अन्तिम पद है–

(A) लक्ष्मी (B) विभु

(C) शिव (D) श्री

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–186

48. आचार्य विश्वनाथ ने काव्य में 'वक्रोक्ति' को किस रूप में माना है –

(A) रीतिरूप में (B) गुणरूप में

(C) अलंकाररूप में (D) आत्मारूप में

स्रोत–साहित्यदर्पण - भवानीशंकर शर्मा, पेज–137-138

49. 'वीथी' क्या है –

(A) वृत्ति

(B) सन्धि

(C) अभिनय

(D) रूपक

स्रोत–साहित्यदर्पण (6/3) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–170

50. तर्कभाषानुसार अनुमान के भेद हैं –

(A) एक

(B) दो

(C) पाँच

(D) नौ

स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज–91

46. (A) **47.** (A) **48.** (C) **49.** (D) **50.** (B)

13	जून 2002	UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् II

नोट : इस प्रश्नपत्र में **पचास (50)** बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के **दो (2) अङ्क** हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. 'अन्तरिक्षस्थानीय' देवता है –
(A) विष्णु (B) इन्द्र
(C) अग्नि (D) सवितृ
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–296

2. 'कविक्रतुः' उपाधि किस देवता की है –
(A) अग्नि की (B) इन्द्र की
(C) अश्विनौ की (D) वरुण की
स्रोत–वैदिक माइथोलाजी - रामकुमार राय, पेज–184

3. 'नवम-मण्डल' के देवता हैं –
(A) अग्नि (B) सोम
(C) उषा (D) कण्व
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–47

4. 'मैत्रायणी-शाखा' किस वेद से सम्बन्धित है –
(A) शुक्लयजुर्वेद से (B) कृष्णयजुर्वेद से
(C) सामवेद से (D) ऋग्वेद से
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–9

5. 'शतपथ-ब्राह्मण' सम्बन्धित है –
(A) यजुर्वेद से (B) ऋग्वेद से
(C) सामवेद से (D) अथर्ववेद से
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–9

6. 'केनोपनिषद्' सम्बन्धित है –
(A) सामवेद से (B) ऋग्वेद से
(C) यजुर्वेद से (D) अथर्ववेद से
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–10

7. 'यमयमी-संवाद-सूक्त' किस वेद में है –
(A) ऋग्वेद में (B) सामवेद में
(C) यजुर्वेद में (D) अथर्ववेद में
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–57

8. बालगङ्गाधर तिलक के अनुसार 'ऋग्वेद' का समय है–
(A) 1200 B.C. (B) 4000 B.C
(C) 6000 B.C. (D) 4500 B.C
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–39

9. 'निरुक्त' अङ्ग है –
(A) व्याकरण का (B) वेद का
(C) उपनिषद् का (D) भाषा का
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–190

10. सांख्य के अनुसार प्रमाण हैं –
(A) 2 (B) 3
(C) 4 (D) 6
स्रोत–सांख्यकारिका (का. 04)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–47

11. 'सत्कार्यवाद' के हेतु हैं –
(A) दो (B) चार
(C) पाँच (D) छः
स्रोत–सांख्यकारिका (का. 09)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–100

12. 'षोडशगणों' की उत्पत्ति किससे हुई है –
(A) पञ्चमहाभूतों से (B) महत् से
(C) प्रकृति से (D) अहङ्कार से
स्रोत–सांख्यकारिका (का. 22)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–196

13. 'अद्वैतवादियों' के अनुसार प्रमाण हैं –
(A) 3 (B) 4
(C) 6 (D) 5
स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज–136

14. 'पञ्चकोश' हैं –
(A) पृथ्वी, जल, तेल, वायु, आकाश
(B) वाक्, पाणि, पाद, पायु, उपस्थ
(C) विज्ञानमय, मनोमय, प्राणमय, अन्नमय, आनन्दमय
(D) श्रोत्र, त्वक्, चक्षु, जिह्वा, प्राण
स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–46

1. (B) **2.** (A) **3.** (B) **4.** (B) **5.** (A) **6.** (A) **7.** (A) **8.** (C) **9.** (B) **10.** (B) **11.** (C) **12.** (D) **13.** (C) **14.** (C)

15. 'साधनचतुष्टय' की संख्या है –

(A) 2 (B) 4
(C) 3 (D) 5

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–20

16. 'अज्ञान' है –

(A) नित्य तथा अनित्य (B) व्यष्टि तथा समष्टि
(C) परा और अपरा (D) वस्तु और अवस्तु

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–42

17. पट का 'समवायिकारण' है –

(A) तन्तु (B) तन्तुसंयोग
(C) पटसंयोग (D) तन्तुपटसंयोग

स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–71

18. 'सन्निकर्ष' कितने प्रकार का होता है –

(A) 2 (B) 4
(C) 5 (D) 6

स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–76

19. तर्कभाषानुसार 'अनुमान' होता है –

(A) 2 (B) 4
(C) 3 (D) 5

स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज–91

20. तर्कसंग्रह के अनुसार कर्म का लक्षण है –

(A) वेदोऽखिलो कर्म (B) कर्तुरीप्सिततमं कर्म
(C) चलनात्मकं कर्म (D) अकथितं च

स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–118

21. 'कारक' होते हैं –

(A) 2 (B) 4
(C) 6 (D) 7

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकारण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–10

22. 'उपधा-संज्ञा' होती है –

(A) अन्तिम अल् से पूर्व वर्णों की
(B) अन्तिम अल् वर्णों की
(C) अच् से पूर्व वर्णों की
(D) अन्तिम हल् वर्णों की

स्रोत–अष्टाध्यायी, (1-6-64) - ईश्वरचन्द्र, पेज–48

23. 'वृद्धि-संज्ञा' का सूत्र है –

(A) आद्गुणः (B) वृद्धिरेचि
(C) वृद्धिरादैच् (D) अचोऽन्त्यादि टि

स्रोत–अष्टाध्यायी, (1-1-1) - ईश्वरचन्द्र, पेज–05

24. 'निष्ठा' संज्ञा विधायक सूत्र है –

(A) क्तक्तवतू निष्ठा (B) सुप्तिङन्तं पदम्
(C) अपृक्त एकाल्प्रत्ययः (D) इको गुणवृद्धी

स्रोत–अष्टाध्यायी, (1-1-25) - ईश्वरचन्द्र, पेज–19

25. 'न' और 'वा' की संज्ञा होती है –

(A) निष्ठासंज्ञा (B) सर्वनामसंज्ञा
(C) निषेधसंज्ञा (D) विभाषासंज्ञा

स्रोत–अष्टाध्यायी, (1-1-43) - ईश्वरचन्द्र, पेज–25

26. षष्ठी विभक्ति सम्बन्धित है –

(A) सम्बन्धमात्र की विवक्षा (B) अपादान
(C) अधिकरण (D) करण

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–72

27. 'द्विकर्मक' धातुओं में होती है –

(A) तृतीया विभक्ति (B) द्वितीया विभक्ति
(C) पञ्चमी विभक्ति (D) सप्तमी विभक्ति

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–19-20

28. 'कर्मसंज्ञा' का सूत्र नहीं है –

(A) कर्तुरीप्सिततमं कर्म (B) कर्मणि द्वितीया
(C) तथायुक्तं चानीप्सितम् (D) अकथितं च

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–17

29. ''अधिशीङ्स्थासां कर्म'' का उदाहरण है –

(A) कटे आस्ते (B) हरिः वैकुण्ठम् अधिशेते
(C) जटाभिः तापसः (D) अधिवसति वैकुण्ठं हरिः

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–29

30. 'अविग्रह' (जिसका विग्रह न हो) युक्त समास है –

(A) नित्यसमास (B) तत्पुरुषसमास
(C) बहुव्रीहिसमास (D) द्वन्द्वसमास

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज–19

15. (B)	**16.** (B)	**17.** (A)	**18.** (D)	**19.** (A)	**20.** (C)	**21.** (C)	**22.** (A)	**23.** (C)	**24.** (A)	**25.** (D)
26. (A)	**27.** (B)	**28.** (B)	**29.** (B)	**30.** (A)						

31. 'स्पर्शवर्णों' का समूह है –

(A) क् च् ट् त् प् (B) व् प् ङ् श् म्
(C) श् च् स् ड् (D) त् थ् द् ध् स्

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी-गोविन्दाचार्य, पेज–20

32. 'संस्कृतभाषा' किस भाषा-परिवार में आती है –

(A) द्राविड़ में (B) चीनीपरिवार में
(C) भारोपीय में (D) अमेरिकी में

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–378

33. बृहत्त्रयी के अन्तर्गत नहीं है –

(A) किरातार्जुनीयम् (B) शिशुपालवधम्
(C) रघुवंशम् (D) नैषधीयचरितम्

स्रोत–शिशुपालवधम् (प्रथम सर्ग) - तारिणीश झा, भू. पेज–12

34. 'रत्नावली' के रचयिता हैं –

(A) भट्टनारायण (B) शूद्रक
(C) हर्षवर्धन (D) कालिदास

संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–365

35. 'पदलालित्य' के लिए प्रसिद्ध हैं –

(A) कालिदास (B) दण्डी
(C) भारवि (D) माघ

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–477

36. 'रुमण्यवान्' पात्र का वर्णन है –

(A) स्वप्नवासवदत्तम् में (B) वेणीसंहारम् में
(C) मृच्छकटिकम् में (D) उत्तररामचरितम् में

स्रोत–स्वप्नवासवदत्तम् - शेषराज शर्मा, रेग्मी भू. पेज–5

37. एक पात्र प्रयोजित रचना है –

(A) भाण (B) प्रकरण
(C) प्रहसन (D) व्यायोग

स्रोत–साहित्यदर्पण (6/228) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–215

38. आख्यायिका है –

(A) हर्षचरितम् (B) दशकुमारचरितम्
(C) कादम्बरी (D) मृच्छकटिकम्

संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेवद्विवेदी, पेज-491

39. सुमेलित कीजिए –

(अ) मृच्छकटिकम् 1. भवभूति
(ब) उत्तररामचरितम् 2. भट्टनारायण
(स) वेणीसंहारम् 3. कालिदास
(द) अभिज्ञानशाकुन्तलम् 4. शूद्रक

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	4	1	2	3
(B)	3	2	1	4
(C)	1	2	3	4
(D)	3	1	4	2

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज – अ = 307, ब = 395, स = 381, द = 326

40. 'अद्भुतरस' का स्थायीभाव है –

(A) विस्मय (B) शोक
(C) शम (D) उत्साह

स्रोत–साहित्यदर्पण (3/242) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–120

41. सुमेलित कीजिए –

(अ) पाणिनि 1. महाभाष्य
(ब) पतञ्जलि 2. अष्टाध्यायी
(स) सायणाचार्य 3. न्यायकोश
(द) भीमाचार्य 4. ऋग्वेदभाष्यभूमिका

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	2	1	4	3
(B)	4	1	3	2
(C)	3	1	2	4
(D)	2	3	1	4

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–अ = 02, ब = संस्कृत सा. का इतिहास-उमाशंकर शर्मा ऋषि, पेज–3, स = 561

42. 'छन्दसूत्र' के रचयिता हैं –

(A) पिङ्गल (B) लगध
(C) वामन (D) भामह

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–199

43. मम्मट के अनुसार काव्य के प्रमुख भेद होते हैं –

(A) 3 (B) 4
(C) 2 (D) 5

स्रोत–काव्यप्रकाश (प्रथम उल्लास) सूत्र – 2, 3, 4

31. (A) **32.** (C) **33.** (C) **34.** (C) **35.** (B) **36.** (A) **37.** (A) **38.** (A) **39.** (A) **40.** (A) **41.** (A) **42.** (A) **43.** (A)

44. धीरललित नायक है –
(A) भीम (B) दुर्योधन
(C) उदयन (D) राम
स्रोत–स्वप्नवासवदत्तम् - शेषराज शर्मा रेग्मी, भू. पेज–14

45. रूपक नहीं है –
(A) भाण (B) डिम
(C) सट्टक (D) अङ्क
स्रोत–साहित्यदर्पण (6/3) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–170

46. 'मुखसन्धि' के कितने अङ्ग हैं –
(A) 13 (B) 12
(C) 64 (D) 5
स्रोत–साहित्यदर्पण (6/81-82) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–185

47. 'शिशुपालवधम्' महाकाव्य में प्रमुख रस है –
(A) वीररस (B) शृङ्गाररस
(C) करुणरस (D) शान्तरस
स्रोत–शिशुपालवधम् (प्रथम सर्ग) - तारिणीश झा, भू. पेज–57

48. 'रघुवंशमहाकाव्य' का पात्र नहीं है –
(A) राम
(B) दिलीप
(C) भीम
(D) लक्ष्मण
संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–152

49. 'सङ्केतग्रह' के साधन हैं –
(A) 4 (B) 6
(C) 8 (D) 10
स्रोत–साहित्यदर्पण - अभिराज राजेन्द्र मिश्र, पेज–149

50. 'मृच्छकटिक' नाटक में विदूषक का नाम है –
(A) आत्रेय
(B) माधव्य (माढव्य)
(C) मैत्रेय
(D) वसन्तक
स्रोत–मृच्छकटिकम् - श्रीनिवास शास्त्री, पेज–01

44. (C) **45.** (C) **46.** (B) **47.** (A) **48.** (C) **49.** (C) **50.** (C)

14	दिसम्बर 2002	UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् II

नोट : इस प्रश्नपत्र में **पचास (50)** बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के **दो (2) अङ्क** हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. वेदाङ्ग में वेदपुरुष का 'मुख' कहा जाता है –
(A) कल्प (B) ज्योतिष
(C) व्याकरण (D) निरुक्त
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–194

2. 'छन्दसूत्र' के रचयिता हैं –
(A) पिङ्गल (B) यास्क
(C) पाणिनि (D) लगध
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति – कपिलदेव द्विवेदी, पेज–199

3. 'कविक्रतुः' उपाधि वाला है –
(A) बृहस्पति (B) इन्द्र
(C) विष्णु (D) अग्नि
स्रोत–वैदिक माइथोलॉजी - रामकुमार राय, पेज–184

4. 'गोपथ-ब्राह्मण' से सम्बद्ध वेद है –
(A) ऋग्वेद (B) यजुर्वेद
(C) सामवेद (D) अथर्ववेद
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–10

5. 'छान्दोग्योपनिषद्' सम्बन्धित है –
(A) ऋग्वेद से (B) सामवेद से
(C) यजुर्वेद से (D) अथर्ववेद से
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–10

6. 'ऋताधिपति' उपाधि है –
(A) अग्नि की (B) अश्विनौ की
(C) सविता की (D) इन्द्र की

7. 'यम-नचिकेता-संवाद' किस उपनिषद् में है –
(A) कठोपनिषद् (B) छान्दोग्योपनिषद्
(C) तैत्तिरीयोपनिषद् (D) बृहदारण्यकोपनिषद्
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–175

8. 'वंशीयमण्डल' में विभक्त है –
(A) ऋग्वेद (B) सामवेद
(C) यजुर्वेद (D) अथर्ववेद
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–49

9. ऋग्वैदिक 'स्त्री देवता' है –
(A) उषा (B) सविता
(C) अश्विनौ (D) अग्नि
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–306

10. देवताओं में पुरोहित हैं –
(A) अग्नि (B) इन्द्र
(C) वरुण (D) सूर्य
स्रोत–वैदिक माइथोलॉजी - रामकुमार राय, पेज–183

11. चारों वेदों के भाष्यकार हैं –
(A) सायणाचार्य (B) भास्कराचार्य
(C) लगधाचार्य (D) पतञ्जलि
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–23, 24

12. अज्ञान है –
(A) कर्मरूप (B) भावरूप
(C) पदार्थरूप (D) विवर्त्तरूप
स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–37

13. अनिष्ट साधना कर्म है –
(A) नित्यकर्म (B) नैमित्तिककर्म
(C) उपासनाकर्म (D) निषिद्धकर्म
स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–14

14. सांख्य के अनुसार पुरुष का स्वरूप है –
(A) न प्रकृतिः (B) न विकृतिः
(C) न प्रकृतिः न विकृतिः (D) प्रकृतिः विकृतिः
स्रोत–सांख्यकारिका (का. 3) - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–39

1. (C) **2.** (A) **3.** (D) **4.** (D) **5.** (B) **6.** (C) **7.** (A) **8.** (A) **9.** (A) **10.** (A) **11.** (A) **12.** (B) **13.** (D) **14.** (C)

15. 'ऋग्वेदभाष्य' के लेखक हैं –

(A) वेङ्कटमाधव (B) शङ्कराचार्य
(C) महीधर (D) भवस्वामी

स्रोत– वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–23

16. 'उपष्टम्भक'-------लक्षण है –

(A) रजोगुण का (B) तमोगुण का
(C) सत्वगुण का (D) माधुर्यगुण का

स्रोत–सांख्यकारिका (का. 13)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–145

17. 'तुष्टि' के प्रकार हैं –

(A) 9 (B) 8
(C) 28 (D) 10

स्रोत–सांख्यकारिका (का. 47)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–271

18. 'पञ्चगवम्' में समास है –

(A) कर्मधारयसमास (B) अव्ययीभावसमास
(C) द्विगुसमास (D) द्वन्द्वसमास

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज–110

19. 'रूपवद्भार्यः' में समास है –

(A) बहुव्रीहिसमास (B) कर्मधारयसमास
(C) अव्ययीभावसमास (D) द्वन्द्वसमास

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड-4), पेज–199

20. 'विपर्यय' के प्रकार हैं –

(A) 5 (B) 20
(C) 15 (D) 8

स्रोत–सांख्यकारिका (का. 47)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–271

21. 'शिशुपालवधम्' में सर्गों की संख्या है –

(A) 20 (B) 22
(C) 18 (D) 19

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा ऋषि, पेज–262

22. 'वेणीसंहारम्' में रस है –

(A) वीररस (B) करुणरस
(C) हास्यरस (D) शृङ्गाररस

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेवद्विवेदी, पेज–386

23. 'माघ' के गुण हैं –

(A) पदलालित्य, ओज, प्रसाद
(B) ओज, माधुर्य, उपमा
(C) उपमा, अर्थगौरव, पदलालित्य
(D) अर्थगौरव, उपमा, प्रसाद

संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेवद्विवेदी, पेज–202

24. 'राज्यश्री' पात्र है –

(A) हर्षचरितम् का (B) दशकुमारचरितम् का
(C) कादम्बरी का (D) शिशुपालवधम् का

संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेवद्विवेदी, पेज–492

25. सवर्ण हैं –

(A) इ, श (B) अ, आ
(C) ह, विसर्ग (D) अनुनासिक

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–16

26. 'दिगम्बर' जैन आगमों की भाषा है –

(A) शौरसेनीभाषा (B) द्रविड़भाषा
(C) मराठीभाषा (D) संस्कृतभाषा

स्रोत–भाषाविज्ञान - कर्ण सिंह, पेज–118

27. वर्नर-नियम में 'क्' का परिवर्तित रूप है –

(A) ग् (B) घ्
(C) क् (D) ख्

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–241

28. प्रायः पूर्वपद की प्रधानता वाला समास है –

(A) अव्ययीभावसमास (B) द्वन्द्वसमास
(C) द्विगुसमास (D) तत्पुरुषसमास

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज–02

29. कारण का लक्षण है –

(A) पूर्वभावो नियतोऽनन्यथासिद्धश्च
(B) प्रतिपक्षयुतम्
(C) अनिष्टप्रसङ्गानुकूलम्
(D) यथार्थानुभवः

स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवासशास्त्री, पेज–18

15. (A) **16.** (A) **17.** (A) **18.** (C) **19.** (A) **20.** (A) **21.** (A) **22.** (A) **23.** (C) **24.** (A) **25.** (B) **26.** (A) **27.** (A) **28.** (A) **29.** (A)

30. कारक की श्रेणी में नहीं आता है –
(A) कर्ता (B) करण
(C) सम्बन्ध (D) अधिकरण
स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–10

31. 'अलोऽन्त्यात्पूर्वः' से संज्ञा होगी –
(A) उपधासंज्ञा (B) नदीसंज्ञा
(C) प्रगृह्यसंज्ञा (D) अपृक्तसंज्ञा
स्रोत–अष्टाध्यायी, (1-1-64) - ईश्वरचन्द्र, पेज–48

32. 'न वा' की संज्ञा है –
(A) विभाषा संज्ञा (B) निष्ठा संज्ञा
(C) वृद्धि संज्ञा (D) संहिता संज्ञा
स्रोत–अष्टाध्यायी (1-1-43) - ईश्वरचन्द्र, पेज–25

33. 'संहिता' का लक्षण है –
(A) परः सन्निकर्षः (B) सुप्तिङन्तं
(C) सुडनपुंसकस्य (D) यू स्त्र्याख्यौ
स्रोत–अष्टाध्यायी, (1-4-108) - ईश्वरचन्द्र, पेज–147

34. 'प्रगृह्य-संज्ञा' का सूत्र है –
(A) सुडनपुंसकस्य (B) ईदूदेद्द्विवचनं
(C) क्तक्तवतू (D) अलोऽन्त्यात्पूर्व
स्रोत–अष्टाध्यायी (1-1-11) - ईश्वरचन्द्र, पेज–13

35. सुमेलित कीजिए –
(अ) आकाश 1. कर्म
(ब) गमन 2. गुण
(स) अयुतसिद्ध 3. द्रव्य
(द) पृथकत्व 4. समवाय

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	3	1	4	2
(B)	2	3	1	4
(C)	1	2	3	4
(D)	4	3	1	2

स्रोत–तर्कसंग्रह-अनिता सेनगुप्ता, पेज–अ = 28, ब = 29, स = 120, द = 29

36. 'उन्माद' है –
(A) विभाव (B) अनुभाव
(C) सात्त्विकभाव (D) व्यभिचारीभाव
स्रोत–साहित्यदर्पण (3/141) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–95

37. हास्यप्रधान इतिवृत्त वाला रूपक है –
(A) प्रकरण (B) प्रहसन
(C) अङ्क (D) भाण
स्रोत–साहित्यदर्पण (3/264-265) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–220

38. जगन्नाथ का काव्यलक्षण है –
(A) वाक्यं रसात्मकं काव्यम्
(B) काव्यस्यात्मा ध्वनिः
(C) रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्
(D) ननु शब्दार्थौ काव्यम्
स्रोत–रसगंगाधर (प्रथम आनन) - मदनमोहन झा, पेज–10

39. 'तत्त्वमसि' की लक्षणा है –
(A) जहल्लक्षणा (B) अजहल्लक्षणा
(C) जहदजहल्लक्षणा (D) इनमें से कोई नहीं
स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–127

40. 'शाण्डिल्य-विद्यादीनि' कर्म है –
(A) प्रायश्चित्तकर्म (B) उपासनाकर्म
(C) नित्यकर्म (D) निषिद्धकर्म
स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–14

41. 'न्याय' के मतानुसार समवाय है –
(A) पदार्थ (B) द्रव्य
(C) गुण (D) कर्म
स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज–26

42. 'वायु' का लक्षण है –
(A) स्पर्शसहित (B) रूपसहित
(C) रूपरहित स्पर्शसहित (D) रूपसहित स्पर्शरहित
स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–41

43. विशेषणविशेष्यभाव-------का प्रकार है –
(A) प्रत्यक्ष (B) उपमान
(C) अर्थापत्ति (D) शब्द
स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–76

44. 'चूलिका' है –
(A) सन्धिभेद (B) अर्थोपक्षेपक भेद
(C) कथावस्तु भेद (D) रूपक भेद
स्रोत–साहित्यदर्पण (6/54) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–180

30. (C) **31.** (A) **32.** (A) **33.** (A) **34.** (B) **35.** (A) **36.** (D) **37.** (B) **38.** (C) **39.** (C) **40.** (B)
41. (A) **42.** (C) **43.** (A) **44.** (B)

45. **'महाभारत' पर आधारित ग्रन्थ है –**

(A) रघुवंशम् (B) दशकुमारचरितम्
(C) किरातार्जुनीयम् (D) बुद्धचरितम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा ऋषि, पेज–243

46. **'वीररस' का स्थायीभाव है –**

(A) रौद्र (B) उत्साह
(C) जुगुप्सा (D) शोक

स्रोत–साहित्यदर्पण (3/232) – शालिग्राम शास्त्री, पेज–117

47. **छायाङ्क किसमें है –**

(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में (B) उत्तररामचरितम् में
(C) मुद्राराक्षसम् में (D) वेणीसंहारम् में

स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू. पेज–58

48. **'नाट्यशास्त्र' में अलङ्कारों की संख्या है –**

(A) 4 (B) 20
(C) 36 (D) 25

स्रोत–नाट्यशास्त्र - ब्रजमोहन चतुर्वेदी, भू. पेज–17

49. **'शुद्धोधन' नामक पात्र है –**

(A) दशकुमारचरितम् में (B) बुद्धचरितम् में
(C) हर्षचरितम् में (D) उत्तररामचरितम् में

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास–कपिलदेव द्विवेदी, पेज–169

50. **सुमेलित कीजिए –**

(अ) अश्वघोष	1. रत्नावली
(ब) विशाखदत्त	2. सौन्दरनन्द
(स) हर्ष	3. मुद्राराक्षस
(द) कुमारदास	4. जानकीहरण

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	1	2	3	4
(B)	2	3	1	4
(C)	2	3	4	1
(D)	4	2	3	1

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज – अ = 170, ब = 354, स = 365, द = 244

45. (C) **46.** (B) **47.** (B) **48.** (A) **49.** (B) **50.** (B)

15	जून 2003	UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् II

नोट : इस प्रश्नपत्र में **पचास (50)** बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के **दो (2) अङ्क** हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. Vedic Concordene (वैदिक वाक्यकोश) के लेखक हैं–
(A) मैक्समूलर (B) डॉ. ब्लूमफील्ड
(C) वेबर (D) विण्टरनित्स
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–37

2. 'नासदीय सूक्त' है –
(A) ऋग्वेद में (B) यजुर्वेद में
(C) सामवेद में (D) अथर्ववेद में
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–53

3. 'पृथ्वीसूक्त' है –
(A) सामवेद में (B) ऋग्वेद में
(C) अथर्ववेद में (D) कृष्णयजुर्वेद में
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–109

4. 'गायत्री' छन्द में अक्षरसंख्या है –
(A) 24 (B) 32
(C) 36 (D) 40
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–49

5. 'जलोदर' व्याधि का कारण है –
(A) इन्द्र (B) वरुण
(C) सोम (D) वायु
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–125

6. 'ज्ञान' के देवता हैं –
(A) बृहस्पति (B) इन्द्र
(C) वरुण (D) सूर्य
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–308

7. 'सङ्गीत' का प्राचीनतम ग्रन्थ है –
(A) सामवेद (B) आयुर्वेद
(C) ऋग्वेद (D) यजुर्वेद
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–87

8. 'आयुर्वेद' किसका उपवेद है –
(A) ऋग्वेद में (B) अथर्ववेद में
(C) सामवेद में (D) यजुर्वेद में
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–10

9. 'निरुक्त' के लेखक हैं –
(A) यास्काचार्य (B) सायणाचार्य
(C) कपिलाचार्य (D) गार्ग्याचार्य
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–204

10. 'शारीरिक दुःख' होता है –
(A) आत्मिक (B) आध्यात्मिक
(C) आधिदैविक (D) आधिभौतिक
स्रोत–सांख्यकारिका-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–10

11. 'अभिमान' का गुण है –
(A) अहङ्कार (B) मोह
(C) मद (D) मान
स्रोत–सांख्यकारिका (का. 24) - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–206

12. 'वेदान्तसार' के लेखक हैं –
(A) सदानन्द (B) ईश्वरकृष्ण
(C) पाणिनि (D) केशवमिश्र
स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, भू. पेज–XXII

13. 'सांख्य' में अपवर्ग की प्राप्ति होती है –
(A) कर्म से (B) ज्ञान से
(C) मोक्ष से (D) गुण से
स्रोत–सांख्यकारिका (का. 44)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–263

14. 'सुबन्त' और 'तिङन्त' की संज्ञा है –
(A) पद (B) निष्ठा
(C) नदी (D) सर्वनाम
स्रोत–अष्टाध्यायी (1-4-14) - ईश्वरचन्द्र, पेज–114

1. (B) **2.** (A) **3.** (C) **4.** (A) **5.** (B) **6.** (A) **7.** (A) **8.** (A) **9.** (A) **10.** (B) **11.** (A) **12.** (A) **13.** (B) **14.** (A)

15. 'निष्ठा' संज्ञा होती है –

(A) क्तक्तवतू की (B) नदी की
(C) सुबन्त की (D) सखि की

स्रोत–अष्टाध्यायी (1-1-25) - ईश्वरचन्द्र, पेज–19

16. 'परः सन्निकर्षः' की संज्ञा है –

(A) संहिता (B) निष्ठा
(C) घि (D) नदी

स्रोत–अष्टाध्यायी (1-4-108) - ईश्वरचन्द्र, पेज–147

17. तर्कसंग्रह के अनुसार 'कर्म' का लक्षण है –

(A) यजनात् यज्ञः कर्म (B) चलनात्मकं कर्म
(C) कर्तुरीप्सिततमं कर्म (D) कर्तृकरणयोस्तृतीया

स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–118

18. 'येनाङ्गविकारः' में विभक्ति होती है :

(A) प्रथमा (B) द्वितीया
(C) तृतीया (D) पञ्चमी

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–43

19. अन्यपद के अर्थ की प्रधानता होती है –

(A) द्वन्द्व में (B) तत्पुरुष में
(C) बहुव्रीहि में (D) द्विगु में

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज–02

20. 'रूपस्य योग्यम्' का समस्तपद है –

(A) अनुरूपम् (B) यथारूपम्
(C) रूपयोग्यम् (D) योग्यरूपम्

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज–33

21. 'यथाशक्ति' में समास है –

(A) अव्ययीभाव (B) द्वन्द्व
(C) द्विगु (D) तत्पुरुष

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग–4), पेज–33

22. 'य' का सम्प्रसारण है –

(A) ऋ (B) इ
(C) अय् (D) उ

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–264

23. ग्रिमनियम में 'भ' का परिवर्तित रूप है –

(A) भ (B) ब
(C) द (D) ख

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–241

24. ध्वनि नियम नहीं है –

(A) ग्रिमनियम (B) ग्रासमाननियम
(C) वर्नरनियम (D) धातुनियम

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-241

25. 'अग्निवर्ण' पात्र था –

(A) मेघदूतम् का (B) रघुवंशम् का
(C) वेणीसंहारम् का (D) मुद्राराक्षसम् का

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–152

26. 'शुश्रूषस्व गुरून्' श्लोक है –

(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में (B) रघुवंशम् में
(C) उत्तररामचरितम् में (D) मुद्राराक्षसम् में

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/18)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–229

27. 'सोमपा' उपाधि वाला है –

(A) इन्द्र (B) विष्णु
(C) वरुण (D) अग्नि

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–298

28. 'अग्नि' की स्तुति की गई है –

(A) 200 बार (B) 250 बार
(C) 400 बार (D) 100 बार

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्त शास्त्री, भू. पेज–13

29. 'छान्दोग्यारण्यक' किस वेद से सम्बद्ध है –

(A) ऋग्वेद से (B) सामवेद से
(C) अथर्ववेद से (D) यजुर्वेद से

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–161

30. 'अथर्ववेदीय' उपनिषद् है –

(A) मुण्डकोपनिषद् (B) ईशावास्योपनिषद्
(C) बृहदारण्यकोपनिषद् (D) केनोपनिषद्

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–10

15. (A) **16.** (A) **17.** (B) **18.** (C) **19.** (C) **20.** (A) **21.** (A) **22.** (B) **23.** (B) **24.** (D) **25.** (B)
26. (A) **27.** (A) **28.** (A) **29.** (B) **30.** (A)

31. किस 'वेदाङ्ग' को वेदपुरुष के नेत्र के रूप में स्वीकारा गया है –

(A) छन्द (B) कल्प
(C) शिक्षा (D) ज्योतिष

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–190

32. 'न्यायशास्त्र' में पदार्थ माने गए हैं –

(A) 16 (B) 8
(C) 10 (D) 7

स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज–04

33. संसार में भाषाएँ प्रचलित हैं –

(A) लगभग 3,100 (B) लगभग 3,000
(C) लगभग 2500 (D) लगभग 4,000

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–355

34. 'लृतुलसानां' सूत्र है –

(A) कण्ठ का (B) दन्त का
(C) तालु का (D) मूर्धा का

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–17

35. 'बुद्धचरितम्' के लेखक हैं –

(A) भारवि (B) अश्वघोष
(C) माघ (D) भवभूति

संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज–228

36. सुमेलित कीजिए –

(अ)	रत्नावली	1.	10 अङ्क
(ब)	वेणीसंहारम्	2.	4 अङ्क
(स)	अभिज्ञानशाकुन्तलम्	3.	6 अङ्क
(द)	मृच्छकटिकम्	4.	7 अङ्क

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	2	3	4	1
(B)	3	4	2	1
(C)	1	2	3	4
(D)	4	3	1	2

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशंकर शर्मा ऋषि,
पेज – अ = 515, ब = 518, स = 483, द = 493

37. 'मानकभाषा' किस परिवार की है –

(A) हेमेटिक परिवार (B) सूडान परिवार
(C) बाण्टू परिवार (D) वुशमैन भाषापरिवार

38. 'साधकतमं करणम्' सूत्र किस विभक्ति का है –

(A) प्रथमा (B) तृतीया
(C) पञ्चमी (D) सप्तमी

स्रोत–अष्टाध्यायी (1-4-42) - ईश्वरचन्द्र, पेज–125

39. 'अहङ्कार' से उत्पन्न है –

(A) पञ्चमहाभूत (B) महत् (बुद्धि)
(C) प्रकृति (D) षोडश-गण

स्रोत–सांख्यकारिका (का. 22)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–196

40. 'वक्रोक्तिसम्प्रदाय' के प्रतिष्ठापक हैं –

(A) वामन (B) मम्मट
(C) भामह (D) कुन्तक

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा ऋषि, पेज–595

41. 'मेघदूतम्' में छन्द प्रयुक्त हुआ है –

(A) अनुष्टुप् (B) उपजाति
(C) मालिनी (D) मन्दाक्रान्ता

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ) - तारिणीश झा, भू. पेज–21

42. 'शाण्डिल्यविद्यादीनि' कर्म है –

(A) प्रायश्चित्त (B) उपासना
(C) नित्य (D) निषिद्ध

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–14

43. 'नाटिका' को कहा गया है –

(A) रूपक (B) उपरूपक
(C) खण्डकाव्य (D) चम्पू

स्रोत–साहित्यदर्पण (6/4) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–170

44. 'पञ्चीकरण सिद्धान्त' किसका है –

(A) सांख्य का (B) वेदान्त का
(C) योग का (D) वैशेषिक का

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–78

45. 'शकार' किस रचना में है –

(A) किरातार्जुनीयम् (B) मृच्छकटिकम्
(C) मुद्राराक्षसम् (D) रत्नावली

स्रोत–मृच्छकटिकम् - श्रीनिवास शास्त्री, पेज–01

31. (D) **32.** (A) **33.** (B) **34.** (B) **35.** (B) **36.** (A) **37.** (B) **38.** (B) **39.** (D) **40.** (D) **41.** (D)
42. (B) **43.** (B) **44.** (B) **45.** (B)

46. इनमें 'खण्डकाव्य' है –

(A) कुमारसम्भवम् (B) बुद्धचरितम्
(C) रघुवंशम् (D) मेघदूतम्

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वभाग) - तारिणीश झा, भू. पेज–15

47. 'मनोरथः' में सन्धि है –

(A) गुण (B) पूर्वरूप
(C) प्रकृतिभाव (D) विसर्ग

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–122

48. 'राक्षस' पात्र किस रूपक में है –

(A) प्रतिज्ञायौगन्धरायणम् (B) रत्नावली
(C) स्वप्नवासवदत्तम् (D) मुद्राराक्षसम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–358

49. किसमें 'नारद' का वर्णन है –

(A) बुद्धचरितम्
(B) रघुवंशम्
(C) शिशुपालवधम्
(D) हर्षचरितम्

स्रोत–शिशुपालवधम् (1/3) - तारिणीश झा, पेज-8

50. 'हनुमते नमः' में विभक्ति है –

(A) चतुर्थी
(B) द्वितीया
(C) पञ्चमी
(D) षष्ठी

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–55

46. (D) **47.** (D) **48.** (D) **49.** (C) **50.** (A)

16	दिसम्बर 2003	UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् II

नोट : इस प्रश्नपत्र में **पचास (50)** बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के **दो (2) अङ्क** हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. 'द्युस्थानीय' देवता –
(A) विष्णु (B) सोम
(C) बृहस्पति (D) इन्द्र
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–35

2. 'अन्तरिक्ष' के देवता हैं –
(A) इन्द्र (B) अग्नि
(C) बृहस्पति (D) सोम
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–296

3. आर्षेय परम्परा के अनुसार वेद हैं –
(A) अपौरुषेय (B) मानवकृत
(C) ऋषिकृत (D) देवकृत
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–11-12

4. 'ऑरिआन्' (Orion) किसकी रचना है –
(A) याकोबी (B) बालगङ्गाधरतिलक
(C) वेबर (D) मैक्समूलर
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–30

5. ऋग्वेद का क्रम है –
(A) वर्ग (B) काण्ड
(C) मण्डल (D) अध्याय
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–47

6. 'कठ शाखा' सम्बन्धित है –
(A) ऋग्वेद से (B) सामवेद से
(C) अथर्ववेद से (D) यजुर्वेद से
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–09

7. यमयमी संवादसूक्त है –
(A) ऋग्वेद में (B) सामवेद में
(C) यजुर्वेद में (D) अथर्ववेद में
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–57

8. 'शिक्षा' का विषय है –
(A) वर्णोच्चारण (B) यज्ञवेदी निर्माण
(C) कालनिर्णय (D) वैदिकयज्ञ
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–190

9. 'छन्दसूत्र' के रचनाकार हैं –
(A) पिङ्गल (B) वरदराज
(C) कात्यायन (D) पतञ्जलि
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–199

10. 'अष्टाध्यायी' के रचनाकार हैं –
(A) पाणिनि (B) व्यास
(C) पतञ्जलि (D) व्याडि
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–195

11. 'महत्' का उत्पत्तिस्थान है –
(A) अहङ्कार (B) प्रधान (प्रकृति)
(C) इन्द्रियाँ (D) तन्मात्रा
स्रोत–सांख्यकारिका (का. 22)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–196

12. 'वेदान्त' के अनुसार पदार्थ हैं –
(A) 4 (B) 6
(C) 2 (D) 5
स्रोत–भारतीय दर्शन - बलदेव उपाध्याय, पेज-363

13. 'अधिकारी' है –
(A) अनुबन्ध (B) सूत्र
(C) जीव (D) शक्ति
स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–09

14. 'विवर्त्त' है –
(A) अतत्त्वतोऽन्यथा (B) सतत्त्वतोऽन्यथा
(C) आवरण (D) विक्षेप
स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–115

1. (A) **2.** (A) **3.** (A) **4.** (B) **5.** (C) **6.** (D) **7.** (A) **8.** (A) **9.** (A) **10.** (A) **11.** (B) **12.** (C) **13.** (A) **14.** (A)

15. 'अज्ञान' है –
(A) अनिर्वचनीय (B) नित्यानित्य
(C) परिणाम (D) विशेष
स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–37

16. 'न्यायमतानुसार' पदार्थ हैं –
(A) 25 (B) 16
(C) 9 (D) 7
स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज–04

17. 'तर्कसंग्रह' के रचनाकार हैं –
(A) केशवमिश्र (B) अन्नंभट्ट
(C) ईश्वरकृष्ण (D) पतञ्जलि
स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, भू. पेज–05

18. 'गुणसंज्ञा' का सूत्र है –
(A) अदेङ्गुणः (B) आद्गुणः
(C) अचोऽन्त्यादि टि (D) शि सर्वनामस्थानम्
स्रोत–अष्टाध्यायी (1-1-2) - ईश्वरचन्द्र, पेज–06

19. 'वृद्धिसंज्ञा' का सूत्र है –
(A) वृद्धिरादैच् (B) वृद्धिरेचि
(C) अदसो मात् (D) तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम्
स्रोत–अष्टाध्यायी (1-1-1) - ईश्वरचन्द्र, पेज–05

20. 'संहिता' है –
(A) परः सन्निकर्षः (B) सुडनपुंसकस्य
(C) मन्त्र ब्राह्मण (D) अचोऽन्त्यादि
स्रोत–अष्टाध्यायी (1-4-108) - ईश्वरचन्द्र, पेज–147

21. 'प्रातिपदिक' है –
(A) अर्थवदधातुरप्रत्ययः (B) सुडनपुंसकस्य
(C) क्तक्तवतू (D) सुप्तिङन्तम्
स्रोत–अष्टाध्यायी (1-2-45) ईश्वरचन्द्र, पेज–69

22. अर्थयुक्त है –
(A) प्रातिपदिक (B) विभाषा
(C) अपृक्त (D) उपधा
स्रोत–अष्टाध्यायी (1-2-45) - ईश्वरचन्द्र, पेज-69

23. 'गां दोग्धि पयः' से सम्बन्धित सूत्र है –
(A) अकथितं च (B) कर्तुरीप्सिततमं कर्म
(C) अपादाने पञ्चमी (D) कर्मप्रवचनीयाः
स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–20

24. 'जटाभिः तापसः' किस सूत्र से सम्बन्धित है –
(A) हेतौ (B) कर्तृकरणयोस्तृतीया
(C) इत्थम्भूतलक्षणे (D) कर्तुरीप्सिततमं कर्म
स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–43

25. 'भाषा' की परिभाषा में अन्तर्भूत नहीं है –
(A) व्यक्त वाणी
(B) यादृच्छिक ध्वनिप्रतीकों की व्यवस्था
(C) विभाषा
(D) सांकेतिक
स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र – कपिलदेव द्विवेदी, पेज–30

26. 'बुद्धचरितम्' के रचयिता हैं –
(A) अश्वघोष (B) भारवि
(C) भवभूति (D) कालिदास
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा ऋषि, पेज–229

27. 'अर्थसङ्कोच' का उदाहरण है –
(A) कुशल (B) असुर
(C) वारिज (D) गवेषणा
स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–338

28. 'किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्' से सम्बन्धित है -
(A) उत्तररामचरितम्
(B) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(C) वेणीसंहारम्
(D) रत्नावली
स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/20) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–46

29. 'हंसविलाप' का वर्णन है –
(A) रघुवंशम् में (B) बुद्धचरितम् में
(C) नैषधीयचरितम् में (D) हरविजयम् में
स्रोत–नैषधीयचरितम् (1/135) - बद्रीनाथ मालवीय, पेज–231

15. (A) **16.** (B) **17.** (B) **18.** (A) **19.** (A) **20.** (A) **21.** (A) **22.** (A) **23.** (A) **24.** (C) **25.** (C) **26.** (A) **27.** (C) **28.** (B) **29.** (C)

30. दश अङ्कों की रचना है –
(A) भाण (B) प्रकरण
(C) डिम (D) व्यायोग
स्रोत–साहित्यदर्पण (6/8) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–171

31. 'शूद्रक' का वर्णन है –
(A) कादम्बरी में (B) हर्षचरितम् में
(C) नैषधीयचरितम् में (D) दशकुमारचरितम् में
स्रोत–कादम्बरी कथामुख - तारिणीश झा, पेज–32

32. 'रूपक' होते हैं –
(A) 7 (B) 5
(C) 10 (D) 8
स्रोत–साहित्यदर्पण (6/3) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–170

33. 'बाण' की आत्मकथा है –
(A) दशकुमारचरितम् में (B) हर्षचरितम् में
(C) कादम्बरी में (D) उत्तररामचरितम् में
स्रोत–कादम्बरी कथामुख - तारिणीश झा, भू., पेज–17

34. 'साहित्यदर्पण' किसकी रचना है –
(A) विश्वनाथ (B) मम्मट
(C) भामह (D) वामन
स्रोत–साहित्यदर्पण - अभिराज राजेन्द्र, भू. पेज–39

35. 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' वर्णित है –
(A) काव्यप्रकाश में (B) साहित्यदर्पण में
(C) ध्वन्यालोक में (D) काव्यालङ्कार में
स्रोत–साहित्यदर्पण (1/3) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–19

36. 'कर्मणि कुशलः' उदाहरण है –
(A) अभिधा (B) लक्षणा
(C) व्यञ्जना (D) तात्पर्या
स्रोत–साहित्यदर्पण - शालिग्राम शास्त्री, पेज–30

37. 'शान्तरस' का स्थायीभाव होता है –
(A) निर्वेद (B) रति
(C) जुगुप्सा (D) उत्साह
स्रोत–काव्यप्रकाश (सूत्र - 47) - विश्वेश्वर, पेज–138

38. भरत के अनुसार 'नाट्य' में रस होते हैं –
(A) 9 (B) 8
(C) 6 (D) 5
स्रोत–नाट्यशास्त्र (6/16) - बाबूलाल शुक्ल, पेज–218

39. जिस समानाधिकरण तत्पुरुष में प्रथमपद संख्यावाची होता है, वह कहलाता है –
(A) तत्पुरुष (B) कर्मधारय
(C) द्विगु (D) अव्ययीभाव
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज-109

40. 'आकृतिमूलक वर्गीकरण' को किस नाम से जाना जाता हैं –
(A) ध्वनि वर्गीकरण (B) रूपात्मक
(C) अभिधार्थक (D) इनमें से कोई नहीं
स्रोत–भाषाविज्ञान - कर्ण सिंह, पेज–63

41. 'भाषा' की उत्पत्ति का मूल कारण है –
(A) अर्थ (B) शब्द
(C) पद (D) ध्वनि
स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र – कपिलदेव द्विवेदी, पेज–65

42. 'दशकुमारचरितम्' के लेखक हैं –
(A) भवभूति (B) कालिदास
(C) दण्डी (D) माघ
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा ऋषि, पेज–381

43. भास की रचना है –
(A) विक्रमोर्वशीयम् (B) वेणीसंहारम्
(C) मृच्छकटिकम् (D) स्वप्नवासवदत्तम्
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा ऋषि, पेज–466

44. कथा साहित्यकार नहीं है –
(A) विष्णुशर्मा (B) नारायणपण्डित
(C) सोमदेव (D) कालिदास
स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू. पेज–12

45. 'ऋचाओं' द्वारा आह्वान किया जाता है –
(A) राक्षसों का (B) देवों का
(C) मनुष्यों का (D) जंगली जीवों का
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–55

30. (B) **31.** (A) **32.** (C) **33.** (B) **34.** (A) **35.** (B) **36.** (B) **37.** (A) **38.** (B) **39.** (C) **40.** (B)
41. (D) **42.** (C) **43.** (D) **44.** (D) **45.** (B)

46. 'उपनिषदों' का प्रथम भाषान्तर फारसी भाषा में कब हुआ –

(A) 15वीं सदी में
(B) 16वीं सदी में
(C) 17वीं सदी में
(D) 18वीं सदी में

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–169

47. 'पूर्णमदः पूर्णमिदम्' पाया जाता है –

(A) बृहदारण्यकोपनिषद् में
(B) छान्दोग्योपनिषद् में
(C) प्रश्नोपनिषद् में
(D) तैत्तिरीयोपनिषद् में

स्रोत–बृहदारण्यकोपनिषद् (शाङ्करभाष्य) - गीताप्रेस, पेज–27

48. 'यम-यमी संवाद' ऋग्वेद के किस मण्डल का है –

(A) 10वें (B) 8वें
(C) 9वें (D) 7वें

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–57

49. 'श्रौतसूत्रों' का वर्ण्यविषय है –

(A) आश्रमकर्त्तव्य (B) यज्ञवेदीनिर्माण
(C) वैदिकयज्ञ (D) संस्कार

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–214

50. कर्म का भेद है –

(A) पर (B) पृथ्वी
(C) शब्द (D) प्रसारण

स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–29

46. (C) **47.** (A) **48.** (A) **49.** (C) **50.** (D).

17	जून 2004	UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् II

नोट : इस प्रश्नपत्र में **पचास (50)** बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के **दो (2) अङ्क** हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. 'ऋग्वेद' के कितने सूक्तों में बृहस्पति देवता की स्वतन्त्र रूप से उपासना की गई है ?
(A) 11 सूक्तों में (B) 15 सूक्तों में
(C) 13 सूक्तों में (D) 10 सूक्तों में
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–308

2. सोम का निवासस्थान है –
(A) द्युलोक (B) पाताललोक
(C) पृथ्वीलोक (D) अन्तरिक्षलोक
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–296

3. 'सामवेदीय आरण्यकों' की संख्या है –
(A) पाँच (B) चार
(C) दो (D) तीन
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–161

4. जिसके द्वारा 'ब्रह्म' की समीपता निश्चय रूप से प्राप्त हो, उसे कहते हैं –
(A) वेद (B) ब्राह्मण
(C) उपनिषद् (D) आरण्यक
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–167

5. सांख्यानुसार पदार्थों की संख्या है –
(A) 25 (B) 26
(C) 7 (D) 6
स्रोत–सांख्यकारिका (का. 03)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–39

6. ''अभितः-परितः-समया-निकषा-हा-प्रतियोगेऽपि'' सूत्र किस विभक्ति का है –
(A) प्रथमा (B) चतुर्थी
(C) षष्ठी (D) द्वितीया
स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–31

7. ''नृणां नृषु वा ब्राह्मणः श्रेष्ठः'' में सूत्र प्रयुक्त हुआ है –
(A) यस्य च भावेन भावलक्षणम्
(B) यतश्च निर्धारणम्
(C) सहयुक्तेऽप्रधाने
(D) षष्ठी चानादरे
स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–98

8. 'नखभिन्नः' का लौकिकविग्रह है –
(A) नखात् भिन्नः (B) नखेभ्यः भिन्नः
(C) नखं भिन्नः (D) नखैः भिन्नः
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज–70

9. 'अपुत्रः' में समास है –
(A) अव्ययीभाव (B) द्वन्द्वसमास
(C) बहुव्रीहि (D) कर्मधारय
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज–196

10. रघुवंशी राजाओं में सर्वप्रथम नाम आता है –
(A) रघु (B) अज
(C) अग्निवर्ण (D) वैवस्वत (मनु)
संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेवद्विवेदी, पेज–152

11. मेघदूतम् कितने भागों में विभक्त है –
(A) चार (B) तीन
(C) दो (D) पाँच
स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वभाग) - तारिणीश झा, भू. पेज–15

12. ''हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः'' सूक्ति सम्बन्धित है –
(A) उत्तररामचरितम् से (B) किरातार्जुनीयम् से
(C) शिशुपालवधम् से (D) कादम्बरी से
स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/4) - अभिराज राजेन्द्र मिश्र, पेज–42

13. 'गीतगोविन्दम्' के लेखक हैं –
(A) कालिदास (B) जयदेव
(C) जयप्रकाश (D) जगन्नाथ
स्रोत–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–548

1. (A) **2.** (C) **3.** (C) **4.** (C) **5.** (A) **6.** (D) **7.** (B) **8.** (D) **9.** (C) **10.** (D) **11.** (C) **12.** (B) **13.** (B)

14. बाणभट्ट के पितामह हैं –
(A) पाशुपत (B) चित्रभानु
(C) अर्थपति (D) कुबेर
स्रोत–कादम्बरी कथामुख - तारिणीश झा, भू. पेज–18

15. 'करुणरस' प्रधान नाटक है –
(A) वेणीसंहारम् (B) मृच्छकटिकम्
(C) उत्तररामचरितम् (D) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू. पेज–82

16. 'उपरूपकों' की संख्या है –
(A) 10 (B) 8
(C) 18 (D) 20
स्रोत–साहित्यदर्पण (6/6) शालिग्राम शास्त्री, पेज–170

17. 'प्रहसन' की कथावस्तु होती है –
(A) इतिहासप्रसिद्ध (B) कविकल्पित
(C) मिश्रित (D) लौकिक
स्रोत–साहित्यदर्पण (6/264) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–220

18. नाट्यसन्धियों के अङ्ग हैं –
(A) 5 (B) 12
(C) 13 (D) 64
स्रोत–साहित्यदर्पण (6/75) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–184

19. 'कल्हण' की रचना है –
(A) श्रीकण्ठचरितम् (B) राजतरङ्गिणी
(C) सोमपालविजयम् (D) तत्त्वचिन्तामणि
स्रोत–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेवद्विवेदी, पेज–597

20. 'अग्नि' का किस ऋतु से सम्बन्ध है –
(A) बसन्त से (B) हेमन्त से
(C) ग्रीष्म से (D) वर्षा से
स्रोत–वैदिकसाहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–259
संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–37

21. वरुण को किस वर्ण का देवता माना गया है –
(A) ब्राह्मणवर्ण का (B) क्षत्रियवर्ण का
(C) वैश्यवर्ण का (D) शूद्रवर्ण का
स्रोत–वैदिक साहित्य और संस्कृति - बलदेव उपाध्याय, पेज–481

22. 'समानी व आकूती समाना हृदयानि च' किस वेद का अन्तिम मन्त्र है –
(A) शुक्लयजुर्वेद का (B) सामवेद का
(C) कृष्णयजुर्वेद का (D) ऋग्वेद का
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–55

23. 'मैत्रायणी-आरण्यक' में प्रपाठक हैं –
(A) 5 (B) 7
(C) 10 (D) 8
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–165

24. मैत्रायणी उपनिषद् कितने अध्यायों में विभक्त है –
(A) 5 (B) 10
(C) 8 (D) 7
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–188

25. 'यमी' प्रतीक है –
(A) दिन की (B) रात्रि की
(C) सूर्य की (D) उषा की
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–60

26. 'वेङ्कटमाधव' किस वेद के भाष्यकार हैं –
(A) ऋग्वेद के (B) सामवेद के
(C) यजुर्वेद के (D) अथर्ववेद के
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–23

27. इनमें 'वेदाङ्ग' हैं –
(A) ऋग्वेद (B) कल्प
(C) सामवेद (D) कृष्णयजुर्वेद
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–190

28. 'सर्दी-गर्मी' को सहन करना कहा जाता है –
(A) तितिक्षा (B) समाधि
(C) उपासना (D) श्रद्धा
स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–20

29. वेदान्तानुसार 'सूक्ष्मशरीर' की रचना में कितने अवयव हैं-
(A) 20 (B) 25
(C) 24 (D) 17
स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–65

14. (C) **15.** (C) **16.** (C) **17.** (B) **18.** (D) **19.** (B) **20.** (A) **21.** (B) **22.** (D) **23.** (B) **24.** (D)
25. (B) **26.** (A) **27.** (B) **28.** (A) **29.** (D)

30. व्याकरण से सम्बन्धित सन्धि नहीं है –

(A) स्वरसन्धि (B) यण्सन्धि
(C) मुखसन्धि (D) हल्सन्धि

स्रोत–साहित्यदर्पण (6/75) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–184

31. संस्कृत में लिङ्ग होते हैं –

(A) 2 (B) 3
(C) 4 (D) 1

स्रोत–लिङ्गानुशासन - नरेश झा, पेज–97

32. 'ब्रील महोदय' के अनुसार अर्थविकास की दिशाएँ होती हैं –

(A) 3 (B) 5
(C) 6 (D) 4

स्रोत–भाषाविज्ञान - भोलानाथ तिवारी, पेज–263

33. ''अलं महीपाल! तव श्रमेण'' यह कथन किसने किसके लिए कहा है :

(A) सिंह ने दिलीप से (B) दिलीप ने मन्त्री से
(C) दिलीप ने सिंह से (D) दिलीप ने गुरु से

स्रोत–रघुवंशम् (2/34) - कृष्णमणि त्रिपाठी, पेज–57

34. 'नाट्यशास्त्र' के प्रणेता हैं –

(A) भरतमुनि (B) जड़भरत
(C) मम्मट (D) विश्वनाथ

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा ऋषि, पेज–577

35. 'ध्वन्यालोक' के लेखक हैं –

(A) वामन (B) कुन्तक
(C) मम्मट (D) आनन्दवर्धन

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा ऋषि, पेज–580

36. 'उज्ज्वलनीलमणि' के लेखक हैं –

(A) रूपगोस्वामी (B) भट्टिस्वामी
(C) वामन (D) मम्मट

स्रोत–संस्कृत शास्त्रों का इतिहास - बलदेव उपाध्याय, पेज–266

37. 'जतौ तु .... उदीरितं जरौ' यह लक्षण है –

(A) इन्द्रवज्रा का (B) उपेन्द्रवज्रा का
(C) वंशस्थ का (D) मालिनी का

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–468

38. छन्दोमयी रचना को कहते हैं –

(A) पद्य (B) गद्य
(C) चम्पू (D) मिश्रित

स्रोत–साहित्यदर्पण (6/314) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–224

39. 'मन' किस प्रकार की इन्द्रिय है –

(A) कर्मेन्द्रिय (B) ज्ञानेन्द्रिय
(C) उभयात्मक (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–सांख्यकारिका (का. 27) - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–212

40. 'महाकाव्य' विभक्त होता है –

(A) काण्डों में (B) अङ्कों में
(C) उच्छ्वासों में (D) सर्गों में

स्रोत–साहित्यदर्पण (6/315) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–225

41. यह भाण है –

(A) रत्नावली (B) मुद्राराक्षस
(C) चन्द्रकली (D) धूर्तसमागम

स्रोत–साहित्यदर्पण (6/227) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–215

42. शृङ्गाररस का स्थायीभाव है –

(A) शोक (B) हास
(C) रति (D) उत्साह

स्रोत–साहित्यदर्पण (3/186) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–106

43. 'पण्डित जी > पण्डीजी' इसमें ध्वनिपरिवर्तन का कारण है –

(A) प्रयत्नलाघव (B) बलाघात
(C) सन्धि (D) अनुनासिकता

स्रोत–भाषाविज्ञान - भोलानाथ तिवारी, पेज-61

44. 'शतकत्रय' में सम्मिलित नहीं है –

(A) नीतिशतकम् (B) अमरुशतकम्
(C) वैराग्यशतकम् (D) शृङ्गारशतकम्

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–541

45. 'प्रकरण' का नायक होना चाहिए –

(A) धीरप्रशान्त (B) धीरललित
(C) धीरोदात्त (D) धीरोद्धत

स्रोत–साहित्य दर्पण (6/225) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–214

46. 'मुनि' शब्द की संज्ञा है –

(A) घि (B) नदी
(C) उपधा (D) टि

स्रोत–अष्टाध्यायी (1-4-7) - ईश्वरचन्द्र, पेज–111

30. (C) **31.** (B) **32.** (A) **33.** (A) **34.** (A) **35.** (D) **36.** (A) **37.** (C) **38.** (A) **39.** (C) **40.** (D)
41. (D) **42.** (C) **43.** (A) **44.** (B) **45.** (A) **46.** (A)

47. 'आप्तवाक्य' है –

(A) रूप (B) शब्द

(C) अनुमान (D) उपमान

स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज-107

48. 'कारक' नहीं है –

(A) कर्म (B) अधिकरण

(C) सम्बन्ध (D) सम्प्रदान

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–10

49. इनमें शुद्ध रूप है –

(A) ग्रामात् परितः (B) ग्रामस्य परितः

(C) ग्रामं परितः (D) ग्रामाय परितः

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–31

50. 'अर्थो हि कन्या परकीय एव' सूक्ति सम्बद्ध है –

(A) वेणीसंहारम् से (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से

(C) मृच्छकटिकम् से (D) रत्नावली से

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/22) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–240

47. (B) **48.** (C) **49.** (C) **50.** (B)

18	दिसम्बर 2004	UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् II

नोट : इस प्रश्नपत्र में **पचास (50)** बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के दो **(2) अङ्क** हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. 'देवेषु भूयिष्ठैः सूक्तैः' कः स्तुतः –
(A) अग्निः (B) रुद्रः
(C) इन्द्रः (D) वरुणः
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–40

2. 'शतपथब्राह्मणम्' कस्य वेदस्य अस्ति –
(A) ऋग्वेदस्य (B) सामवेदस्य
(C) शुक्लयजुर्वेदस्य (D) कृष्णयजुर्वेदस्य
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–129

3. 'धर्मसूत्रम्' आयाति –
(A) शिक्षायाम् (B) छन्दसि
(C) कल्पे (D) निरुक्ते
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–193

4. वेदपाठस्य कति विकृतयः भवन्ति –
(A) तिस्रः (B) चतस्रः
(C) अष्ट (D) नव
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–8

5. वेदस्य नेत्रं किम् अस्ति –
(A) व्याकरणम् (B) छन्दः
(C) ज्योतिषम् (D) निरुक्तम्
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–190

6. 'यम-यमी-संवादः' कुत्र वर्तते –
(A) ऋग्वेदे (B) यजुर्वेदे
(C) सामवेदे (D) अथर्ववेदे
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–57

7. 'पृथिवीसूक्तम्' कस्य वेदस्य अस्ति –
(A) ऋग्वेदस्य (B) सामवेदस्य
(C) अथर्ववेदस्य (D) यजुर्वेदस्य
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–109

8. 'मैत्रेयी' शिक्षाम् अवाप –
(A) याज्ञवल्क्यात् (B) पैलात्
(C) जैमिनेः (D) कौत्सात्
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–184

9. निरुक्ते किम् अस्ति –
(A) वेदमन्त्राणां संग्रहः
(B) वैदिकशब्दानां निर्वचनम्
(C) वेदमन्त्राणां स्वरविवेचनम्
(D) वैदिकयज्ञानां प्रक्रिया
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–206

10. 'ताण्ड्यब्राह्मणम्' कस्य वेदस्य अस्ति –
(A) ऋग्वेदस्य (B) शुक्लयजुर्वेदस्य
(C) कृष्णयजुर्वेदस्य (D) सामवेदस्य
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–10

11. 'नचिकेतसः' पिता कः अस्ति –
(A) वाजश्रवाः (B) श्वेतकेतुः
(C) याज्ञवल्क्यः (D) जाबालिः
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–175

12. बालगङ्गाधरतिलकानुसारम् ऋग्वेदस्य कालः ख्रीस्तपूर्वः–
(A) 3000 (B) 3500
(C) 6000 (D) 1200
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–39

13. सांख्यमते प्रकृतिविकृतयः कति भवन्ति –
(A) सप्त (B) पञ्च
(C) तिस्रः (D) नव
स्रोत–सांख्यकारिका (का. 09) - सन्तनारायणश्रीवास्तव, पेज–39

14. 'सांख्यमते' विकृतयः कति सन्ति –
(A) सप्त (B) नव
(C) षोडश (D) अष्टादश
स्रोत–सांख्यकारिका (का. 09) - सन्तनारायणश्रीवास्तव, पेज–39

1. (C) **2.** (C) **3.** (C) **4.** (C) **5.** (C) **6.** (A) **7.** (C) **8.** (A) **9.** (B) **10.** (D) **11.** (A) **12.** (C) **13.** (A) **14.** (C)

15. 'सांख्यमते' एकादशेन्द्रियाणि कुतः जायन्ते –

(A) अहङ्कारात् (B) महतः
(C) प्रकृतेः (D) पञ्चतन्मात्रेभ्यः

स्रोत–सांख्यकारिका (का. 22)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–196

16. 'वेदान्तो नाम' किम् अस्ति –

(A) रामायणप्रमाणम् (B) धर्मशास्त्रप्रमाणम्
(C) उपनिषत्प्रमाणम् (D) अर्थशास्त्रप्रमाणम्

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–07

17. 'सांख्यमते' अन्तःकरणं कतिविधं भवति –

(A) द्विविधम् (B) त्रिविधम्
(C) चतुर्विधम् (D) पञ्चविधम्

स्रोत–सांख्यकारिका (का. 33)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–234

18. अद्वैतवेदान्ते जीवब्रह्मणोः स्वरूपम् अस्ति –

(A) जीव एव ब्रह्म (B) जीव एव ईश्वरः
(C) जीव एव अज्ञानम् (D) जीव एव पुरुषः

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–54

19. 'अनुबन्धः' कतिविधः भवति –

(A) त्रिविधः (B) चतुर्विधः
(C) पञ्चविधः (D) षड्विधः

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–09

20. 'अध्यारोपस्य' लक्षणं किम् अस्ति –

(A) वस्तुनि अवस्त्वारोपः (B) अवस्तुनि वस्त्वारोपः
(C) जीवे ब्रह्मण आरोपः (D) न किमपि

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–37

21. अद्वैते सुषुप्तेः देवता कः अस्ति –

(A) वैश्वानरः (B) ईश्वरः
(C) हिरण्यगर्भः (D) अग्निः

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–51

22. 'न्यायदर्शनानुसारं' प्रमाणानि कति भवन्ति –

(A) त्रीणि (B) चत्वारि
(C) पञ्च (D) षट्

स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज–50

23. 'न्यायमते' वाक्यम् –

(A) पदवर्णशब्दाः
(B) अभिधालक्षणाव्यञ्जनाः
(C) आङ्क्षाक्षायोग्यतासन्निधिमतां पदानां समूहः
(D) पदपदार्थयोजना

स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज–122

24. परार्थानुमाने कति अवयवाः सन्ति –

(A) त्रयः (B) पञ्च
(C) सप्त (D) नव

स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज–92

25. 'परः सन्निकर्षः' कः अस्ति –

(A) संहिता (B) वृद्धिः
(C) नदी (D) घि

स्रोत–अष्टाध्यायी (1-4-108) - ईश्वरचन्द्र, पेज–147

26. 'अदेङ् -- - --' इति सूत्रेण किं भवति –

(A) गुणः (B) प्रातिपदिकम्
(C) अपृक्तः (D) पदम्

स्रोत–अष्टाध्यायी (1-1-2) - ईश्वरचन्द्र, पेज–06

27. 'न वेति--------' रिक्तस्थानं पूरयतु –

(A) उपधा (B) विभाषा
(C) निष्ठा (D) संहिता

स्रोत–अष्टाध्यायी (1-4-43) - ईश्वरचन्द्र, पेज–25

28. 'तुल्यास्यप्रयत्नं-----' किम् –

(A) घि (B) सवर्णम्
(C) निष्ठा (D) प्रगृह्यम्

स्रोत–अष्टाध्यायी (1-1-9) - ईश्वरचन्द्र, पेज–11

29. कर्मादीनामपि सम्बन्धमात्रविवक्षायां विभक्तिः भवति –

(A) प्रथमा (B) पञ्चमी
(C) चतुर्थी (D) षष्ठी

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)–राममुनि पाण्डेय, पेज–72

15. (A) **16.** (C) **17.** (B) **18.** (A) **19.** (B) **20.** (A) **21.** (B) **22.** (B) **23.** (C) **24.** (B) **25.** (A)
26. (A) **27.** (B) **28.** (B) **29.** (D)

30. प्रायेण पूर्वपदार्थप्रधानः किं भवति –

(A) द्वन्द्वः (B) अव्ययीभावः
(C) तत्पुरुषः (D) बहुव्रीहिः

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज–02

31. 'उपपदविभक्तेः------बलीयसी' भवति –

(A) अनुपपदविभक्तिः (B) कारकविभक्तिः
(C) प्रथमाविभक्तिः (D) न काऽपि विभक्तिः

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–55

32. 'भाषा' कस्य विनिमयस्य साधनम् अस्ति –

(A) विचारस्य (B) आचारस्य
(C) वित्तस्य (D) वस्तु

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–30

33. भाषाणां वर्गीकरणस्य आधारः स्वीकृतः –

(A) कालः (B) धर्मः
(C) प्रकृतिः (D) आकृतिः

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–357

34. 'कादयो मावसानाः' किम् अस्ति –

(A) स्वराः (B) अर्धस्वराः
(C) स्पर्शाः (D) ऊष्माणः

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–20

35. भारतीय आर्यभाषासु प्राचीनतमा भाषा का अस्ति –

(A) पालिभाषा (B) प्राकृतभाषा
(C) वैदिकसंस्कृतभाषा (D) लौकिकसंस्कृतभाषा

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–416

36. भारोपीयपरिवारस्य भाषा नास्ति –

(A) संस्कृतभाषा (B) आङ्ग्लभाषा
(C) तमिलभाषा (D) प्राकृतभाषा

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–396

37. ''वागर्थाविवसम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये'' इत्युक्तिः कस्मिन् ग्रन्थे अस्ति –

(A) बुद्धचरिते (B) रघुवंशे
(C) नैषधीयचरिते (D) शिशुपालवधे

स्रोत–रघुवंशम् (1/1) - कृष्णमणि त्रिपाठी पेज–02

38. केवलं मन्दाक्रान्ताछन्दसि निबद्धम् अस्ति –

(A) किरातार्जुनीयम् (B) मेघदूतम्
(C) बुद्धचरितम् (D) नैषधीयचरितम्

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वभाग)–तारिणीश झा, भू. पेज–21

39. कालानुसारी क्रमः अस्ति –

(A) कालिदासः, भासः, बाणभट्टः, भवभूतिः
(B) भासः, कालिदासः, बाणभट्टः, भवभूतिः
(C) भवभूतिः, कालिदासः, भासः, बाणभट्टः,
(D) बाणभट्टः, भासः, कालिदासः, भवभूतिः,

स्रोत–संस्कृतगङ्गा साहित्यम्–सर्वज्ञभूषण, पेज–291-292

40. शुकनासोपदेशः कुत्र वर्तते –

(A) दशकुमारचरिते (B) कादम्बर्याम्
(C) हर्षचरिते (D) अभिज्ञानशाकुन्तले

स्रोत–शुकनासोपदेश - राजेश्वरप्रसाद मिश्र, भू. पेज–37

41. करुणरसप्रधानं नाटकम् –

(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (B) स्वप्नवासवदत्तम्
(C) उत्तररामचरितम् (D) मृच्छकटिकम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकरशर्मा 'ऋषि', पेज–528

42. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत –

(अ) वेणीसंहारम् (i) भवभूतिः
(ब) स्वप्नवासवदत्तम् (ii) कालिदासः
(स) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (iii) भट्टनारायणः
(द) उत्तररामचरितम् (iv) भासः

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	(ii)	(i)	(iii)	(iv)
(B)	(i)	(iii)	(iv)	(ii)
(C)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)
(D)	(iii)	(iv)	(ii)	(i)

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, अ = 381, ब = 275, स = 326, द = 395

43. ''तत्राऽपि च चतुर्थोऽङ्कस्तत्र श्लोकचतुष्टयम्'' इत्युक्तिः कस्य कृते अस्ति –

(A) मृच्छकटिकम् (B) वेणीसंहारम्
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (D) उत्तररामचरितम्

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–341

30. (B) **31.** (B) **32.** (A) **33.** (D) **34.** (C) **35.** (C) **36.** (C) **37.** (B) **38.** (B) **39.** (B) **40.** (B) **41.** (C) **42.** (D) **43.** (C)

44. साहित्यदर्पणस्य प्रणेता कः अस्ति –

(A) पण्डितराजजगन्नाथः
(B) कविराजविश्वनाथः
(C) दीपशिखा-कालिदासः
(D) श्रीकण्ठपदलाञ्छनो भवभूतिः

स्रोत–साहित्यदर्पण - अभिराज राजेन्द्र मिश्र, भू. पेज–38

45. अग्रिमा शब्दशक्तिः का अस्ति –

(A) तात्पर्याख्या (B) लक्षणा
(C) व्यञ्जना (D) अभिधा

स्रोत–साहित्यदर्पण (2/4) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–26

46. शब्दस्यार्थादिकस्य वृत्तिः का अस्ति –

(A) अभिधा (B) लक्षणा
(C) व्यञ्जना (D) तात्पर्याख्या

स्रोत–साहित्यदर्पण (2/13) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–39-40

47. सर्गबन्धो किं भवति –

(A) नाटकम् (B) गद्यकाव्यम्
(C) महाकाव्यम् (D) चम्पूकाव्यम्

स्रोत–साहित्यदर्पण (6/315) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–225

48. रूपकभेदाः कति भवन्ति –

(A) अष्टौ
(B) नव
(C) दश
(D) एकादश

स्रोत–साहित्यदर्पण (6/3) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–170

49. विश्वनाथोक्तं काव्यलक्षणम् अस्ति –

(A) तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि
(B) रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्
(C) वाक्यं रसात्मकं काव्यम्
(D) शरीरं तावदिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली

स्रोत–साहित्यदर्पण (1/3) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–19

50. 'वीररसस्य' स्थायीभावः अस्ति –

(A) क्रोधः (B) उत्साहः
(C) भयम् (D) विस्मयम्

स्रोत–-साहित्यदर्पण (3/232) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–117

44. (B) **45.** (D) **46.** (C) **47.** (C) **48.** (C) **49.** (C) **50.** (B)

19	जून 2005	UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् II

नोट : इस प्रश्नपत्र में **पचास (50)** बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के **दो (2) अङ्क** हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. 'सत्यमेव जयते नानृतम्' इति वचनं कस्याम् उपनिषदि लभ्यते ?

(A) केनोपनिषदि (B) कठोपनिषदि
(C) मुण्डकोपनिषदि (D) ऐतरेयोपनिषदि

स्रोत–मुण्डकोपनिषद् - (3-1-6)

2. ''विश्वामित्र-नदी-संवाद'' ऋग्वेदस्य कस्मिन् मण्डले उपलभ्यते ?

(A) प्रथममण्डले (B) तृतीयमण्डले
(C) दशममण्डले (D) अष्टममण्डले

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–57

3. 'शतपथब्राह्मणम्' केन वेदेन सम्बद्धम् ?

(A) सामवेदेन (B) शुक्लयजुर्वेदेन
(C) ऋग्वेदेन (D) अथर्ववेदेन

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–09

4. त्रीणि पदानि कस्य देवस्य प्रसिद्धानि ?

(A) अग्नेः (B) इन्द्रस्य
(C) सवितुः (D) विष्णोः

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्त शास्त्री, पेज–169

5. 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' इति मन्त्रः कस्मिन् वेदे दृक्पथमुपयाति ?

(A) कृष्णयजुर्वेदे (B) ऋग्वेदे
(C) अथर्ववेदे (D) शुक्लयजुर्वेदे

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–75

6. 'पैप्पलादशाखा' केन वेदेन सम्पृक्ता –

(A) ऋग्वेदेन (B) सामवेदेन
(C) अथर्ववेदेन (D) यजुर्वेदेन

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–10

7. तैत्तिरीयारण्यकं कं वेदमवलम्बते –

(A) यजुर्वेदम् (B) ऋग्वेदम्
(C) सामवेदम् (D) अथर्ववेदम्

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–09

8. को नाम वेदः 'दशतयी' इति शब्देन व्यपदिश्यते –

(A) सामवेदः (B) यजुर्वेदः
(C) अथर्ववेदः (D) ऋग्वेदः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा ऋषि, पेज–35

9. ऋग्वेदस्य नवमे मण्डले को देवः स्तुतिं लभते ?

(A) इन्द्रः (B) विष्णुः
(C) रुद्रः (D) सोमः

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–47

10. वेदाङ्गानि कति –

(A) पञ्च (B) दश
(C) षट् (D) द्वादश

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–190

11. त्रिष्टुप्-छन्दसि कति अक्षराणि विराजन्ते –

(A) द्वाविंशतिः (B) चतुर्विंशतिः
(C) चतुश्चत्वारिंशत् (D) चत्वारिंशत्

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–49

12. श्रौतसूत्रं किं वेदाङ्गविषयीकरोति –

(A) कल्पम् (B) निरुक्तम्
(C) ज्योतिषम् (D) व्याकरणम्

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–214

13. सांख्यस्य मतमिदम् –

(A) आरम्भवादः (B) विवर्तवादः
(C) असत्कार्यवादः (D) सत्कार्यवादः

स्रोत–सांख्यकारिका (का. 09)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–100

1. (C) **2.** (B) **3.** (B) **4.** (D) **5.** (D) **6.** (C) **7.** (A) **8.** (D) **9.** (D) **10.** (C) **11.** (C) **12.** (A) **13.** (D)

14. त्रिगुणातीतोऽयम् –

(A) महत् (B) अहङ्कारः
(C) पुरुषः (D) प्रकृतिः

स्रोत–सांख्यकारिका (का. 17)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–171

15. विषादोऽस्य स्वरूपम् अस्ति –

(A) सत्त्वगुणस्य (B) तमोगुणस्य
(C) रजोगुणस्य (D) पुरुषस्य

स्रोत–सांख्यकारिका (का. 12)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–135

16. तमोगुणांशाद्यहङ्कारात् उत्पद्यते –

(A) ज्ञानेन्द्रियपञ्चकम् (B) कर्मेन्द्रियपञ्चकम्
(C) तन्मात्रपञ्चकम् (D) मनः

स्रोत–सांख्यकारिका (का. 25)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–208

17. अनुबन्धोऽयम् –

(A) पञ्चीकरणम् (B) अज्ञानम्
(C) विषयः (D) लक्षणम्

स्रोत–वेदान्तसार-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–09

18. नैमित्तिकं कर्मेदम् –

(A) ज्योतिष्टोमयज्ञम् (B) ब्रह्महत्या
(C) जातेष्टिः (D) सन्ध्यावन्दनम्

स्रोत–वेदान्तसार-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–14

19. विज्ञानमयकोशोऽयम् –

(A) पञ्चज्ञानेन्द्रियाणि + बुद्धिः
(B) पञ्चज्ञानेन्द्रियाणि + मनः
(C) पञ्चज्ञानेन्द्रियाणि + प्राणादिपञ्चकम्
(D) पञ्चकर्मेन्द्रियाणि + बुद्धिः

स्रोत–वेदान्तसार-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–68

20. ''जीवन्मुक्तः'' इत्यस्य अर्थो विद्यते –

(A) जीवनात् मुक्तः
(B) जीवितः सन् मुक्तः
(C) प्रारब्धकर्मभ्यो मुक्तः
(D) शुभवासनानुवृत्तेर्मुक्तः

स्रोत–वेदान्तसार-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-205

21. न्यायवैशेषिकानुसारं गुणाः कति सन्ति –

(A) त्रयः (B) चत्वारः
(C) चतुर्विंशतिः (D) सप्तदश

स्रोत–तर्कसंग्रह-अनिता सेनगुप्ता, पेज–29

22. घटः स्वगतरूपादेः –

(A) असमवायिकारणम् (B) समवायिकारणम्
(C) निमित्तकारणम् (D) न कारणम्

स्रोत–तर्कभाषा-श्रीनिवास शास्त्री, पेज–33

23. श्रोत्रेण शब्दसाक्षात्कारे सन्निकर्षः –

(A) संयोगः (B) विशेषणविशेष्यभावः
(C) समवायः (D) संयुक्तसमवायः

स्रोत–तर्कभाषा-श्रीनिवास शास्त्री, पेज–67

24. सादृश्यज्ञानं करणम् –

(A) अनुमितेः (B) उपमितेः
(C) शाब्दबोधस्य (D) चाक्षुषप्रत्यक्षस्य

स्रोत–तर्क-अनिता सेनगुप्ता, पेज–104

25. वृद्धिसंज्ञाविधायकं सूत्रम् अस्ति –

(A) वृद्धिरेचि (B) वृद्धिरादैच्
(C) मृजेर्वृद्धिः (D) इको गुणवृद्धी

स्रोत–अष्टाध्यायी (1-1-1) - ईश्वरचन्द्र, पेज–05

26. निषेधविकल्पयोः का संज्ञा भवति –

(A) निषेधविकल्पः (B) विकल्पनिषेधः
(C) विभाषा (D) विकल्पः

स्रोत–अष्टाध्यायी, (1-1-43) - ईश्वरचन्द्र, पेज–25

27. 'एकाल् प्रत्ययस्य' का संज्ञा –

(A) नदी (B) समाहारः
(C) एकः वर्णः (D) अपृक्तम्

स्रोत–अष्टाध्यायी (1-2-41)-ईश्वरचन्द्र, पेज–68

28. अपादाने का विभक्तिः भवति –

(A) प्रथमा (B) पञ्चमी
(C) सप्तमी (D) तृतीया

स्रोत–अष्टाध्यायी (2-3-28) - ईश्वरचन्द्र, पेज-203

14. (C) **15.** (B) **16.** (C) **17.** (C) **18.** (C) **19.** (A) **20.** (B) **21.** (C) **22.** (B) **23.** (C) **24.** (B) **25.** (B) **26.** (C) **27.** (D) **28.** (B)

29. समीचीनां तालिकां चिनुत –

(अ) प्रगृह्यम् 1. यू स्त्र्याख्यौ
(ब) टि 2. अदेङ्
(स) गुणः 3. ईदूदेद्द्विवचनम्
(द) नदी 4. अचोऽन्त्यादि

कूट :

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	4	2	1	3
(B)	2	4	3	1
(C)	1	2	3	4
(D)	3	4	2	1

स्रोत–अष्टाध्यायी-ईश्वरचन्द्र, पेज–अ=13, ब=47, स=06 द=109

30. 'अक्ष्णा काणः' - केन सूत्रेण तृतीया विभक्तिः –

(A) कर्तृकरणयोस्तृतीया (B) येनाङ्गविकारः
(C) दिवः कर्म च (D) जनिकर्तुः प्रकृतिः

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–43

31. कर्तुः क्रियया ईप्सिततमं कारकम् –

(A) कर्ता-कारकम् (B) करण-कारकम्
(C) कर्म-कारकम् (D) अधिकरण-कारकम्

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–16

32. 'अधिहरि' इत्यत्र कः समासः अस्ति –

(A) केवलसमासः (B) उपपदसमासः
(C) तत्पुरुषः (D) अव्ययीभावः

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग–4), पेज–21

33. नित्यसमासो नाम –

(A) अस्वपदविग्रहः (B) विकल्पो न भवति
(C) स्वपदविग्रहः (D) विग्रहवान्

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग–4), पेज–19

34. संयोगात्मकभाषा –

(A) उर्दू (B) संस्कृतम्
(C) चीनी (D) हिन्दी

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–357

35. निर्दिष्टेषु स्पर्शः कः ?

(A) म् (B) ह्
(C) अ (D) ल्

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–20

36. तालव्येषु अन्तर्भवति –

(A) अ (B) क्
(C) ष् (D) श्

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–149

37. "याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा" इत्यस्ति -

(A) रघुवंशमहाकाव्ये (B) किरातार्जुनीये
(C) कादम्बर्याम् (D) मेघदूते

स्रोत–मेघदूतम् पूर्वमेघ (श्लोक - 6) - तारिणीश झा, पेज–13

38. बाणभट्टविरचितम् अस्ति –

(A) बुद्धचरितम् (B) हर्षचरितम्
(C) नैषधीयचरितम् (D) दशकुमारचरितम्

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज–395

39. प्रकरणमस्ति –

(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (B) मृच्छकटिकम्
(C) रत्नावली (D) वेणीसंहारम्

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज–495

40. 'मृच्छकटिकस्य' रचयिता कः अस्ति –

(A) भासः (B) कालिदासः
(C) शूद्रकः (D) भट्टनारायणः

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज–490

41. मुद्राराक्षसेऽङ्गीरसः वर्तते –

(A) शृङ्गाररसः (B) करुणरसः
(C) हास्यरसः (D) वीररसः

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज–508

42. 'ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति' इत्यस्ति –

(A) अभिज्ञानशाकुन्तले (B) मृच्छकटिके
(C) उत्तररामचरिते (D) मुद्राराक्षसे

स्रोत–उत्तररामचरितम् (1/10) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–22

29. (D) **30.** (B) **31.** (C) **32.** (D) **33.** (A) **34.** (B) **35.** (A) **36.** (D) **37.** (D) **38.** (B) **39.** (B)
40. (C) **41.** (D) **42.** (C)

43. अधोलिखितेषु किं रूपकं नास्ति ?
(A) भाणः (B) समवकारः
(C) आख्यायिका (D) वीथी
स्रोत–साहित्यदर्पण (6/3) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–170

44. 'काव्यादर्शकारः' कः अस्ति ?
(A) रुद्रटः (B) वामनः
(C) दण्डी (D) राजशेखरः
स्रोत–साहित्यदर्पण - अभिराज राजेन्द्र मिश्र, भू. पेज–18

45. ''अनलङ्कृती पुनः क्वापि'' इति केनोक्तम् –
(A) विश्वनाथेन (B) मम्मटेन
(C) भामहेन (D) दण्डिना
स्रोत–काव्यप्रकाश (सूत्र संख्या -1)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज–19

46. 'अद्भुतरसस्य' स्थायीभावः कः अस्ति –
(A) रतिः (B) शोकः
(C) विस्मयः (D) जुगुप्सा
स्रोत–साहित्यदर्पण (3/242) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–120

47. सान्तरार्थनिष्ठो व्यापारो भवति –
(A) व्यञ्जनाव्यापारः (B) अभिधाव्यापारः
(C) लक्षणाव्यापारः (D) तात्पर्याभिधोव्यापारः
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–52

48. नाटके न्यूनतः कति अङ्काः भवन्ति –
(A) पञ्च (B) षट्
(C) दश (D) सप्त
स्रोत–साहित्यदर्पण (6/8) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–171

49. शृङ्गाररसः कतिविधः –
(A) द्विविधः (B) चतुर्विधः
(C) त्रिविधः (D) पञ्चविधः
स्रोत–साहित्यदर्पण (3/186) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–106

50. 'अलकापुर्याः' वर्णनं कुत्र प्राप्यते ?
(A) कादम्बर्याम् (B) रघुवंशे
(C) मेघदूते (D) अभिज्ञानशाकुन्तले
स्रोत–मेघदूतम् (उत्तरमेघ) - तारिणीश झा, भू. पेज–28

43. (C) **44.** (C) **45.** (B) **46.** (C) **47.** (C) **48.** (A) **49.** (A) **50.** (C)

20	दिसम्बर 2005	UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् II

नोट : इस प्रश्नपत्र में **पचास (50)** बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के **दो (2)** अङ्क हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. को नाम देवः द्युस्थानीयः –
(A) इन्द्रः (B) अग्निः
(C) वायुः (D) सूर्यः
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–296

2. 'जैमिनीय-ब्राह्मणम्' केन वेदेन सम्पृक्तम् –
(A) ऋग्वेदेन (B) यजुर्वेदेन
(C) सामवेदेन (D) अथर्ववेदेन
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–10

3. वेदकालनिरूपणे कः ज्योतिषमवलम्बते –
(A) विन्टरनित्सः (B) मैक्समूलरः
(C) वेबरः (D) बालगङ्गाधरतिलकः
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–40

4. 'मैत्रेयी-याज्ञवल्क्य-संवादः' कस्यामुपनिषदि उपलभ्यते-
(A) कठोपनिषदि (B) केनोपनिषदि
(C) ईशोपनिषदि (D) बृहदारण्यकोपनिषदि
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–184

5. कस्य देवस्य 'चाराः' प्रसिद्धाः –
(A) वरुणस्य (B) सोमस्य
(C) अग्नेः (D) इन्द्रस्य
स्रोत–वैदिक साहित्य और संस्कृति - बलदेव उपाध्याय, पेज–483

6. यास्कमते कति पदजातानि सन्ति –
(A) पञ्च (B) त्रीणि
(C) चत्वारि (D) सप्त
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–206

7. कः प्रणेता वेदाङ्गज्योतिषस्य -
(A) पाणिनिः (B) कात्यायनः
(C) भर्तृहरिः (D) लगधाचार्यः
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–208

8. 'हरिश्चन्द्रोपाख्यानं' कस्मिन् ब्राह्मणे उपलभ्यते –
(A) ऐतरेयब्राह्मणम् (B) गोपथब्राह्मणम्
(C) शतपथब्राह्मणम् (D) पञ्चविंशब्राह्मणम्
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–125

9. 'भूमिसूक्तम्' कं वेदं विषयीकरोति –
(A) अथर्ववेदम् (B) ऋग्वेदम्
(C) सामवेदम् (D) यजुर्वेदम्
स्रोत– वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–109

10. को नाम देवः 'वृत्रहा' इत्युच्यते –
(A) अग्निः (B) रुद्रः
(C) बृहस्पतिः (D) इन्द्रः
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–58

11. सामवेदस्य प्रमुखः प्रतिपाद्यविषयोऽस्ति –
(A) स्तुतिः (B) ज्ञानम्
(C) गानम् (D) यागयज्ञादिकम्
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–77

12. कति मण्डलानि ऋग्वेदे विलसन्ति –
(A) पञ्च (B) नव
(C) एकादश (D) दश
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–47

13. कारणभावाच्च इत्यनेन पुष्यते –
(A) पुरुषबहुत्वम् (B) प्रकृतिसिद्धिः
(C) सृष्टिप्रक्रिया (D) सत्कार्यवादः
स्रोत–सांख्यकारिका (का. 9)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–100

14. कार्यं भवति –
(A) केवलं प्रकृतिस्वरूपम्
(B) केवलं विकृतिरूपम्
(C) प्रकृतिस्वरूपमपि विकृतिरूपमपि
(D) न प्रकृतिस्वरूपं न विकृतिस्वरूपम्
स्रोत–सांख्यकारिका (का. 03)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–39

1. (D) **2.** (C) **3.** (D) **4.** (D) **5.** (A) **6.** (C) **7.** (D) **8.** (A) **9.** (A) **10.** (D) **11.** (C) **12.** (D) **13.** (D) **14.** (B)

15. अकर्तृत्त्वमस्य धर्मः –

(A) प्रधानस्य (B) अहङ्कारस्य
(C) पुरुषस्य (D) ज्ञानेन्द्रियाणाम्

स्रोत–सांख्यकारिका (का. 19)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–186

16. प्रकृतिर्वस्तुतो बध्नाति –

(A) स्वात्मानम् (B) पुरुषम्
(C) अहङ्कारम् (D) आनन्दम्

स्रोत–सांख्यकारिका (का. 63)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–321

17. विहितकर्मणां विधिना परित्यागः –

(A) तितिक्षा (B) उपरतिः
(C) दमः (D) श्रद्धा

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–20

18. वेदान्तानुसारं लिङ्गशरीरस्य अवयवाः सन्ति –

(A) सप्तदश (B) षोडश
(C) पञ्चविंशतिः (D) अष्टादश

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–65

19. अखिलशरीरवर्ती वायुः विद्यते –

(A) प्राणः (B) अपानः
(C) व्यानः (D) उदानः

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–69

20. शब्दस्पर्शौ अभिव्यज्येते –

(A) पञ्चीकृताकाशे (B) पञ्चीकृतवायौ
(C) पञ्चीकृततेजसि (D) पञ्चीकृतपृथिव्याम्

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–80

21. कारणं तदुच्यते यत् कार्यात् भवति –

(A) पूर्ववर्ति (B) परवर्ति
(C) नियतपूर्ववृत्ति (D) समकालवर्ति

स्रोत–तर्कसंग्रह - अनितासेन गुप्ता, पेज–69

22. 'यत्र धूमस्तत्राग्निः' इति साहचर्यनियमः –

(A) परामर्शः (B) पक्षधर्मता
(C) द्वितीयधूमज्ञानम् (D) व्याप्तिः

स्रोत–तर्कसंग्रह - अनितासेन गुप्ता, पेज–85

23. संज्ञासंज्ञिसम्बन्धज्ञानस्य कारणम् –

(A) प्रत्यक्षप्रमाणम् (B) शब्दप्रमाणम्
(C) अनुमानप्रमाणम् (D) उपमानप्रमाणम्

स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–104

24. 'अग्निना सिञ्चति' इति उदाहरणम् अस्ति –

(A) योग्यताविषयम् (B) आकांक्षाविषयम्
(C) सन्निधिविषयम् (D) उपमानविषयम्

स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–109

25. गुणसंज्ञाविधायकं सूत्रम् –

(A) मिदेर्गुणः (B) आद्गुणः
(C) अदेङ्गुणः (D) गुणो यङ्लुकोः

स्रोत–अष्टाध्यायी (1.1.2) - ईश्वरचन्द्र, पेज–06

26. क्तक्तवतूप्रत्यययोः का संज्ञा –

(A) घि (B) स्त्री
(C) निष्ठा (D) नदी

स्रोत–अष्टाध्यायी (1.1.25) - ईश्वरचन्द्र, पेज–19

27. स्वादिपञ्चप्रत्ययानां का संज्ञा –

(A) प्रत्याहारः (B) अनुनासिकः
(C) सर्वनामस्थानम् (D) प्रातिपदिकम्

स्रोत–अष्टाध्यायी (1.1.42) - ईश्वरचन्द्र, पेज–25

28. 'सम्प्रदाने' का विभक्तिः –

(A) चतुर्थी (B) द्वितीया
(C) षष्ठी (D) प्रथमा

स्रोत–अष्टाध्यायी (2-3-13) - ईश्वरन्द्र, पेज–197

29. समीचीनां तालिकां चिनुत –

(अ) वृद्धिः 1. न वेति
(ब) उपधा 2. एकाल् प्रत्ययः
(स) अपृक्तम् 3. आदैच्
(द) विभाषा 4. अलोऽन्त्यात्पूर्वः

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	(iii)	(iv)	(ii)	(i)
(B)	(i)	(ii)	(iv)	(iii)
(C)	(iii)	(i)	(iv)	(ii)
(D)	(ii)	(i)	(iii)	(iv)

स्रोत–अष्टाध्यायी अ=1.1.1, ब = 1.1, 64, स = 1.2, 41, द = 1.1.43

15. (C) **16.** (A) **17.** (B) **18.** (A) **19.** (C) **20.** (B) **21.** (C) **22.** (D) **23.** (D) **24.** (A) **25.** (C) **26.** (C) **27.** (C) **28.** (A) **29.** (A)

30. 'पुष्पेभ्यः स्पृहयति' - अत्र केन सूत्रेण विभक्तिः –
(A) अपादाने पञ्चमी (B) रुच्यर्थानां प्रीयमाणः
(C) कर्तृकर्मणोः कृति (D) स्पृहेरीप्सितः
स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–49

31. क्रियया यमभिप्रैति सोऽपि –
(A) कर्म (B) सम्प्रदानम्
(C) अपादानम् (D) अधिकरणम्
स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–47

32. ''पञ्चानां गङ्गानां समाहारः=पञ्चगङ्गम्'' इत्यत्र कः समासः-
(A) तत्पुरुषः (B) द्विगुः
(C) कर्मधारयः (D) अव्ययीभावः
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज–43

33. 'उपराजम्' - अत्र समासान्तः कः –
(A) टच् (B) अच्
(C) अ (D) अम्
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज–52

34. वियोगात्मकभाषा अस्ति –
(A) संस्कृतम् (B) प्राकृतम्
(C) हिन्दी (D) लैटिन
स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–365

35. 'च' वर्णः कुत्र अन्तर्भवति –
(A) अनुनासिकः (B) स्पर्शः
(C) स्वरः (D) संघर्षः
स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–148

36. मूर्धन्येषु अन्तर्भवति –
(A) ष् (B) य्
(C) व् (D) ल्
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–17

37. 'शैशवेऽभ्यस्तविद्यानाम्' इत्यस्ति –
(A) किरातार्जुनीये (B) बुद्धचरिते
(C) मेघदूते (D) रघुवंशमहाकाव्ये
स्रोत–रघुवंशम् (1/8) - कृष्णमणि त्रिपाठी, पेज-4

38. अश्वघोषविरचितम् अस्ति –
(A) रघुवंशमहाकाव्यम् (B) दशकुमारचरितम्
(C) बुद्धचरितम् (D) हर्षचरितम्
संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेवद्विवेदी, पेज–168

39. नाटिकाऽस्ति –
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (B) मृच्छकटिकम्
(C) रत्नावली (D) वेणीसंहारम्
स्रोत–साहित्यदर्पण - शालिग्रामशास्त्री, पेज–221

40. वेणीसंहारस्य रचयिता कः –
(A) भासः (B) कालिदासः
(C) शूद्रकः (D) भट्टनारायणः
स्रोत–वेणीसंहारनाटकम् - परमेश्वरदीन पाण्डेय, भू. पेज–03

41. उत्तररामचरिते अङ्गीरसः –
(A) शृङ्गाररसः (B) करुणरसः
(C) हास्यरसः (D) वीररसः
स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू. पेज–82

42. ''पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलम्'' इत्यस्ति –
(A) स्वप्नवासवदत्ते (B) उत्तररामचरिते
(C) अभिज्ञानशाकुन्तले (D) मृच्छकटिके
स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/9) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–213

43. चत्वारः सन्धयो कुत्र भवन्ति –
(A) नाटके (B) प्रकरणे
(C) नाटिकायाम् (D) भाणे
स्रोत–रत्नावली - तारिणीश झा, भू. पेज–18

44. काव्यालङ्कारसूत्रवृत्तिकारः कः अस्ति –
(A) भामह (B) वामन
(C) दण्डी (D) रुद्रट
स्रोत–साहित्यदर्पण – अभिराज राजेन्द्रमिश्र, भू. पेज–20

45. 'शरीरं तावदिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली' इति केनोक्तम् –
(A) भामहेन (B) वामनेन
(C) दण्डिना (D) विश्वनाथेन
स्रोत–काव्यप्रकाश - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–19

30. (D) **31.** (B) **32.** (D) **33.** (A) **34.** (C) **35.** (B) **36.** (A) **37.** (D) **38.** (C) **39.** (C) **40.** (D)
41. (B) **42.** (C) **43.** (C) **44.** (B) **45.** (C)

46. वीररसस्य स्थायीभावः कः अस्ति –

(A) क्रोधः (B) शोकः
(C) उत्साहः (D) भयः

स्रोत–साहित्यदर्पण (3/332) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–117-118

47. वाच्यार्थप्रतिपादिका शक्तिर्भवति –

(A) अभिधा (B) लक्षणा
(C) व्यञ्जना (D) तात्पर्या

स्रोत–साहित्यदर्पण (2/3) – शालिग्रामशास्त्री, पेज–26

48. प्रकरणे कति अङ्काः भवन्ति –

(A) पञ्च (B) षट्
(C) दश (D) सप्त

स्रोत–साहित्यदर्पण-शालिग्राम शास्त्री, पेज–214

49. महाकाव्ये न्यूनतः कति सर्गाः भवन्ति –

(A) पञ्चदश
(B) विंशतिः
(C) अष्ट
(D) सप्त

स्रोत–साहित्यदर्पण (6/320) – शालिग्राम शास्त्री, पेज–225

50. 'अच्छोदवर्णनं' कुत्र प्राप्यते –

(A) हर्षचरिते
(B) कादम्बर्याम्
(C) मेघदूते
(D) रघुवंशे

स्रोत–कादम्बरी कथामुख - तारिणीश झा, भू. पेज–34

46. (C) **47.** (A) **48.** (C) **49.** (C) **50.** (B)

21	जून 2006	UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् II

नोट : इस प्रश्नपत्र में **पचास (50)** बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के **दो (2)** अङ्क हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. 'नासत्यौ' इति कस्य विशेषणम् अस्ति –
(A) अग्नेः (B) अश्विनोः
(C) वरुणस्य (D) इन्द्रस्य
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–302

2. देवता इन्द्रोऽस्ति –
(A) पृथिवीस्थानीया (B) अन्तरिक्षस्थानीया
(C) द्युस्थानीया (D) पातालस्थानीया
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–296

3. ''आनन्द ब्रह्मणो विद्वान् न बिभेति कुतश्चन'' वर्तते –
(A) बृहदारण्यके (B) तैत्तिरीये
(C) केनोपनिषदि (D) छान्दोग्ये
स्रोत–तैत्तिरीय उपनिषद् (2.9.1) चुन्नीलाल शुक्ल, पेज–78

4. वेदाङ्गेषु 'व्याकरणम्' उपमीयते –
(A) हस्तेन (B) मुखेन
(C) पादेन (D) चक्षुषा
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–194

5. 'श्वेताश्वतरोपनिषत्' केन संपृक्ता –
(A) ऋग्वेदेन (B) सामवेदेन
(C) अथर्ववेदेन (D) कृष्णयजुर्वेदेन
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–09

6. चतुर्णामेव वेदानां भाष्यकारोऽस्ति –
(A) स्कन्दस्वामी (B) सायणाचार्यः
(C) उव्वटः (D) वेङ्कटमाधवः
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–23-24

7. 'जगतीछन्दसि' एकस्मिन् पादे अक्षराणि सन्ति –
(A) पञ्च (B) दश
(C) षट् (D) द्वादश
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–203

8. 'नैगमकाण्डं' कुत्र वर्तते –
(A) कल्पे (B) निरुक्ते
(C) ज्योतिषे (D) व्याकरणे
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–204

9. ऋग्वेदे अधिकतमानां सूक्तानां देवता अस्ति –
(A) अग्निः (B) वरुणः
(C) सोमः (D) इन्द्रः
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–40

10. ''न वै स्त्रैणानि सख्यानि सन्ति'' इति वर्तते –
(A) सरमापणिसंवादे (B) यमयमीसंवादे
(C) पुरूरवा-उर्वशीसंवादे (D) विश्वामित्रनदीसंवादे
ऋग्वेद (10/95/15) पुरुवा-उर्वशी संवाद-वेदान्ततीर्थ, पेज–431

11. 'शाकल्यशाखा' कस्य वेदस्य अस्ति –
(A) ऋग्वेदस्य (B) सामवेदस्य
(C) यजुर्वेदस्य (D) अथर्ववेदस्य
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–09

12. 'याज्ञवल्क्यमैत्रेयी-संवादः' कुत्र विद्यते –
(A) छान्दोग्ये (B) बृहदारण्यके
(C) तैत्तिरीये (D) कठोपनिषदि
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–184

13. सत्कार्यवादे उत्पत्तेः पूर्वं कार्यं कीदृशम् –
(A) व्यक्तरूपेण सत् (B) अव्यक्तरूपेण सत्
(C) उभयरूपेण असत् (D) सदसत्
स्रोत–सांख्यकारिका (का. 09)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–100
भारतीयदर्शन - बलदेव उपाध्याय, पेज–257

14. सांख्यमते वायोः प्रादुर्भावः कस्मात् –
(A) शब्दतन्मात्रात् (B) स्पर्शतन्मात्रात्
(C) गन्धतन्मात्रात् (D) रसतन्मात्रात्
स्रोत–सांख्यकारिका - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–248

1. (B) **2.** (B) **3.** (B) **4.** (B) **5.** (D) **6.** (B) **7.** (D) **8.** (B) **9.** (D) **10.** (C) **11.** (A) **12.** (B) **13.** (B) **14.** (B)

15. महत् इत्यस्य का वृत्तिः –

(A) अभिमानः (B) सङ्कल्पः
(C) अध्यवसायः (D) आलोचनम्

स्रोत–सांख्यकारिका (का. 23)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–198

16. तुष्टिः कतिविधा –

(A) सप्तविधा (B) अष्टविधा
(C) नवविधा (D) दशविधा

स्रोत–सांख्यकारिका (का. 47)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–271

17. अद्वैतवेदान्तस्य विषयः कः अस्ति –

(A) जीवब्रह्मैक्यम् (B) ईश्वरः
(C) अज्ञानम् (D) शुद्धं चैतन्यम्

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–30

18. वेदान्तानुसारेण भूतानां केभ्यो अंशेभ्यः कर्मेन्द्रियाणि उत्पद्यन्ते

(A) सात्त्विकेभ्यः (B) राजसेभ्यः
(C) तामसेभ्यः (D) सर्वेभ्यः

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–69

19. पञ्चीकृते वायौ जलस्य कियान् भागः –

(A) 50% (B) 25%
(C) 30% (D) $12^1/_2$ %

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–79

20. जीवन्मुक्तौ सत्यां कस्य कर्मणः फलम् उपभोक्तव्यमेव –

(A) सञ्चितस्य (B) क्रियमाणस्य
(C) प्रारब्धस्य (D) सर्वेषाम्

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–192

21. न्यायमते कति प्रमाणानि –

(A) त्रीणि (B) चत्वारि
(C) पञ्च (D) षट्

स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवासशास्त्री, पेज–50

22. समवेत-समवाय-सन्निकर्षेण कस्य प्रत्यक्षं भवति –

(A) गन्धस्य (B) शब्दस्य
(C) स्पर्शस्य (D) शब्दत्वस्य

स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवासशास्त्री, पेज–67

23. असिद्धो हेत्वाभासः कतिविधः –

(A) द्विविधः (B) त्रिविधः
(C) चतुर्विधः (D) पञ्चविधः

स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवासशास्त्री, पेज–111

24. अतिदेशवाक्यार्थस्मरणं कुत्र व्यापारः –

(A) प्रत्यक्षे (B) अनुमितौ
(C) उपमितौ (D) शाब्दबोधे

स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवासशास्त्री, पेज–119

25. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत –

(अ) संहिता — 1. अचोऽन्त्यादि
(ब) गुणः — 2. अलोऽन्त्यात् पूर्व
(स) उपधा — 3. परः सन्निकर्षः
(द) टि — 4. अदेङ्

कूट :

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	3	4	2	1
(B)	1	2	4	3
(C)	1	2	3	4
(D)	4	3	2	1

स्रोत–अष्टाध्यायी-ईश्वरचन्द्र, अ = 1.4-108, पेज–147, ब-1.1.2, पेज–06, स = 1.1.64, पेज–48, द = 1.1.63, पेज–47

26. क्तक्तवतूप्रत्यययोः का संज्ञा –

(A) नदी (B) सवर्णम्
(C) निष्ठा (D) घि

स्रोत–अष्टाध्यायी (1.1.25) - ईश्वरचन्द्र, पेज–19

27. अर्थवदधातुरप्रत्ययः –

(A) प्रगृह्यम् (B) सुप्
(C) तद्धितः (D) प्रातिपदिकम्

स्रोत–अष्टाध्यायी (1.2.45) - ईश्वरचन्द्र, पेज–69

28. सर्वनामस्थानसंज्ञकप्रत्ययः –

(A) अण् (B) जस्
(C) अच् (D) सुप्

स्रोत–अष्टाध्यायी (1.1.42) - ईश्वरचन्द्र, पेज–25

15. (C) **16.** (C) **17.** (A) **18.** (B) **19.** (D) **20.** (C) **21.** (B) **22.** (D) **23.** (B) **24.** (C) **25.** (A) **26.** (C) **27.** (D) **28.** (B)

29. अधोनिर्दिष्टेषु ऊष्मवर्णः –

(A) ह् (B) य्
(C) क् (D) अ

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–20

30. ऋटुरषाणां किं स्थानम् –

(A) तालु (B) दन्तः
(C) जिह्वा (D) मूर्धा

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–17

31. समीचीनां तालिकां चिनुत –

(अ)	लोपः	1.	अयोगात्मक
(ब)	चीनी	2.	संघर्षी
(स)	हकारः	3.	Geneological classification
(द)	पारिवारिकवर्गीकरणम्	4.	ध्वनिपरिवर्तनहेतुः

कूट :

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	4	1	2	3
(B)	1	4	3	2
(C)	1	2	3	4
(D)	4	3	1	2

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी,
पेज – अ-235, ब-357, स-176 द-371

32. 'समासे प्रथमानिर्दिष्टम् उपसर्जनं' कुत्र प्रयोक्तव्यम् –

(A) पूर्वम् (B) अन्ते
(C) मध्ये (D) यथेच्छम्

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज–20

33. 'उपशरदम्' - अत्र कः समासः –

(A) बहुव्रीहिः (B) द्विगुः
(C) अव्ययीभावः (D) द्वन्द्वः

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज–49

34. 'प्रातिपदिकार्थे' का विभक्तिः –

(A) सप्तमी (B) प्रथमा
(C) द्वितीया (D) तृतीया

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–13

35. 'हरये रोचते'- अत्र सम्प्रदानसंज्ञा केन सूत्रेण भवति –

(A) स्पृहेरीप्सितः (B) चतुर्थी सम्प्रदाने
(C) कर्मणा यमभिप्रैति (D) रुच्यर्थानां प्रीयमाणः

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–47

36. स्वतन्त्रः –

(A) कर्ता (B) सम्प्रदानम्
(C) कर्म (D) अधिकरणम्

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–40

37. 'महीयांसः प्रकृत्या मितभाषिणः' इदं वाक्यमस्ति –

(A) रघुवंशे (B) नैषधीयचरिते
(C) शिशुपालवधे (D) रामायणे

स्रोत–शिशुपालवध (2/13) - हरगोविन्द शास्त्री, पेज-63

38. ''प्रतिबध्नाति हि श्रेयः पूज्यपूजाव्यतिक्रमः'' इदं वाक्यमस्ति –

(A) रघुवंशे (B) महाभारते
(C) शिशुपालवधे (D) किरातार्जुनीये

स्रोत–रघुवंशम् (1/79) - कृष्णमणि त्रिपाठी, पेज–35

39. 'वज्रायुधस्य' वर्णनमस्ति –

(A) कादम्बर्याम् (B) वासवदत्तायाम्
(C) हर्षचरिते (D) दशकुमारचरिते

40. ''सतां हि प्रियवदता कुलविद्या'' इदं वाक्यमस्ति –

(A) हर्षचरिते (B) कादम्बर्याम्
(C) दशकुमारचरिते (D) बुद्धचरिते

स्रोत–हर्षचरितम् (प्रथम उच्छ्वास) - मोहनदेव पन्त, पेज-45

41. ''वेश्याः श्मशानसुमना इव वर्जनीयाः'' इदं वाक्यमस्ति -

(A) उत्तररामचरिते (B) मुद्राराक्षसे
(C) स्वप्नवासवदत्ते (D) मृच्छकटिके

स्रोत–मृच्छकटिकम् (4/14) - श्रीनिवास शास्त्री–122

42. 'मृच्छकटिकम्' अस्ति –

(A) नाटकम् (B) प्रकरणम्
(C) नाटिका (D) व्यायोगः

स्रोत–मृच्छकटिकम् - श्रीनिवास शास्त्री, भू. पेज–14

29. (A) **30.** (D) **31.** (A) **32.** (A) **33.** (C) **34.** (B) **35.** (D) **36.** (A) **37.** (C) **38.** (A) **39.** (C) **40.** (A) **41.** (D) **42.** (B)

43. साहित्यदर्पणानुसारं 'लक्षणायाः' प्रभेदाः भवन्ति –
(A) 16 (B) 27
(C) 36 (D) 80
स्रोत–साहित्यदर्पण - शालिग्राम शास्त्री, पेज–39

44. विश्वनाथमते काव्यत्वसिद्धिः भवति –
(A) शब्दार्थाभ्याम् (B) गुणालङ्काराभ्याम्
(C) रीतिवृत्तिभ्याम् (D) रसात्
स्रोत–साहित्यदर्पण - शालिग्राम शास्त्री, पेज–19

45. 'उत्साहः' स्थायीभावोऽस्ति –
(A) रौद्ररसस्य (B) शान्तरसस्य
(C) अद्‌भुतरसस्य (D) वीररसस्य
स्रोत–साहित्यदर्पण - (3/232) शालिग्रामशास्त्री, पेज–117

46. नाटके कति सन्धयो भवन्ति –
(A) 10 (B) 8
(C) 5 (D) 3
स्रोत–साहित्यदर्पण - (6/75) शालिग्रामशास्त्री, पेज–184

47. नाटके अङ्गीरसो भवति –
(A) शान्तः (B) करुणः
(C) हास्यः (D) वीरः
स्रोत–साहित्यदर्पण (6/10) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–171

48. कस्य रसस्य चत्वारः प्रभेदाः सन्ति –
(A) शृङ्गारस्य (B) हास्यस्य
(C) करुणस्य (D) वीरस्य
स्रोत–साहित्यदर्पण (3/234) - शालिग्राम शास्त्री पेज–118

49. 'गङ्गायां घोषः' इति इदं वाक्यं कस्य उदाहरणं भवति -
(A) अभिधायाः (B) रूढिपूर्वकलक्षणायाः
(C) रूपकालङ्कारस्य (D) प्रयोजनवतीलक्षणायाः
स्रोत–साहित्यदर्पण - शालिग्राम शास्त्री, पेज–29

50. साहित्यदर्पणकारमते काव्यगुणाः सन्ति -
(A) 10 (B) 8
(C) 5 (D) 3
स्रोत–साहित्यदर्पण (8/1) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–264

43. (D) **44.** (D) **45.** (D) **46.** (C) **47.** (D) **48.** (D) **49.** (D) **50.** (D)

22	दिसम्बर 2006	UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् II

नोट : इस प्रश्नपत्र में **पचास (50)** बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के **दो (2)** अङ्क हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. 'शौनकशाखा' केन वेदेन सम्पृक्ता –
(A) सामवेदेन (B) ऋग्वेदेन
(C) अथर्ववेदेन (D) यजुर्वेदेन
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–10

2. 'गोपथ-ब्राह्मणं' कं वेदम् अवलम्बते –
(A) यजुर्वेदम् (B) ऋग्वेदम्
(C) सामवेदम् (D) अथर्ववेदम्
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–10

3. 'त्रिष्टुप्छन्दसि' कति अक्षराणि सन्ति –
(A) द्वात्रिंशत् (B) एकादश
(C) चतुश्चत्वारिंशत् (D) षट्त्रिंशत्
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–49

4. वरुणदेवःअस्ति –
(A) द्युस्थानीयः (B) पृथिवीस्थानीयः
(C) अन्तरिक्षस्थानीयः (D) पातालस्थानीयः
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–296

5. वेदाङ्गेषु शिक्षा उपमीयते –
(A) हस्तेन (B) पादेन
(C) चक्षुषा (D) घ्राणेन
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–190

6. ''मा नो नि कः पुरुषत्रा नमस्ते'' वर्तते –
(A) सरमापणिसंवादे (B) यमयमीसंवादे
(C) पुरूरवा-उर्वशीसंवादे (D) विश्वामित्रनदीसंवादे
स्रोत–ऋग्वेद (3/33/08) - वेदान्ततीर्थ, पेज–83

7. 'जलाषः' इति कस्य देवस्य विशेषणम् –
(A) वरुणस्य (B) अश्विनोः
(C) रुद्रस्य (D) सोमस्य
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–304

8. ऋग्वेदस्य नवमण्डलस्य देवतानाम अस्ति –
(A) अग्निः शुचिः (B) अग्निः पावकः
(C) अग्नीषोमौ (D) पवमानसोमः
स्रोत– वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–47

9. उव्वटोऽस्ति भाष्यकारः -
(A) ऋग्वेदस्य (B) शुक्लयजुर्वेदस्य
(C) सामवेदस्य (D) अथर्ववेदस्य
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–24

10. 'शुनःशेप आख्यानं' कुत्र वर्तते –
(A) शतपथब्राह्मणे (B) ऐतरेयब्राह्मणे
(C) जैमिनीयब्राह्मणे (D) ताण्ड्यब्राह्मणे
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–125

11. ऋग्वेदस्य प्रथममण्डलस्य ऋषिः अस्ति –
(A) वसिष्ठः (B) विश्वामित्रः
(C) मधुच्छन्दाः (D) वामदेवः
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–47

12. भैषज्यमन्त्राः कुत्र लभ्यते –
(A) अथर्ववेदे (B) सामवेदे
(C) यजुर्वेदे (D) ऋग्वेदे
स्रोत–वैदिकसाहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–98

13. पुरुषस्य स्वरूपं किम् –
(A) अपरिणामि (B) परिणामि
(C) त्रिगुणात्मकम् (D) सक्रियम्
स्रोत–सांख्यकारिका (का. 11)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–129

14. पञ्चतन्मात्राणि कुतः प्रादुर्भवन्ति –
(A) प्रधानात् (B) महतः
(C) अहङ्कारात् (D) मनसः
स्रोत–सांख्यकारिका (का. 22)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–196

1. (C) **2.** (D) **3.** (C) **4.** (A) **5.** (D) **6.** (D) **7.** (C) **8.** (D) **9.** (B) **10.** (B) **11.** (C) **12.** (A) **13.** (A) **14.** (C)

15. कैवल्यं कस्माद् भवति –
(A) विवेकख्यातेः (B) सत्ख्यातेः
(C) अनिर्वचनीयख्यातेः (D) अख्यातेः
स्रोत–सांख्यकारिका (का. 44)-सन्तनारायण श्रीवास्तव पेज–263

16. सदसद्भ्याम् अनिर्वचनीयं किम् –
(A) ब्रह्म (B) जीवः
(C) ईश्वरः (D) अज्ञानम्
स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–37

17. भूतानां केभ्यो अंशेभ्यः ज्ञानेन्द्रियाणि उत्पद्यन्ते –
(A) राजसेभ्यः (B) तामसेभ्यः
(C) सात्विकेभ्यः (D) सर्वेभ्यः
स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–66

18. वेदान्तसारमते लिङ्गशरीरघटकानि कति –
(A) पञ्चदश (B) षोडश
(C) सप्तदश (D) अष्टादश
स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–65

19. अज्ञाने कति गुणाः –
(A) द्वौ (B) त्रयः
(C) चत्वारः (D) पञ्च
स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–37

20. न्यायशास्त्रे 'साहचर्यनियमशब्देन' किम् उच्यते –
(A) व्याप्तिः (B) उपाधिः
(C) सन्निकर्षः (D) अपवर्गः
स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवासशास्त्री, पेज–79

21. इन्द्रियार्थसन्निकर्षः कतिविधः –
(A) पञ्चविधः (B) षड्विधः
(C) सप्तविधः (D) अष्टविधः
स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवासशास्त्री, पेज–61

22. अनुमितिः कस्माद् अनन्तरं जायते –
(A) परामर्शात् (B) व्याप्तिज्ञानात्
(C) पदज्ञानात् (D) सादृश्यज्ञानात्
स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज–78

23. कारणं कतिविधम् –
(A) एकविधम् (B) द्विविधम्
(C) त्रिविधम् (D) चतुर्विधम्
स्रोत–तर्कसंग्रह - अनितासेन गुप्ता, पेज–71

24. सादृश्यज्ञानकरणकं ज्ञानं किम् –
(A) प्रत्यक्षम् (B) अनुमितिः
(C) शब्दबोधः (D) उपमितिः
स्रोत–तर्कसंग्रह - अनितासेन गुप्ता, पेज–104

25. अधस्तनयुगमानां समीचीनां तालिकां चिनुत -
(अ) गुणः 1. यू स्याख्यौ
(ब) नदी 2. अदेङ्
(स) टि 3. अलोऽन्त्यात् पूर्व
(द) उपधा 4. अचोऽन्त्यादि
कूट :

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	1	2	3	4
(B)	4	3	2	1
(C)	2	1	4	3
(D)	2	1	3	4

स्रोत–अष्टाध्यायी - ईश्वरचन्द्र, अ = 1.1.2 पेज–06, ब = 1.4.3 पेज–109, स = 1.1.63 पेज–47, द = 1.1.64 पेज–48

26. तुल्यास्यप्रयत्नं किं भवति –
(A) उपधा (B) सवर्णम्
(C) अपृक्तम् (D) वृद्धिः
स्रोत–अष्टाध्यायी (1.1.9) - ईश्वरचन्द्र, पेज–11

27. एकाल्प्रत्ययः –
(A) अपृक्तम् (B) विभाषा
(C) गतिः (D) निष्ठा
स्रोत–अष्टाध्यायी (1.2.41) - ईश्वरचन्द्र, पेज–68

28. ईदूदेद्द्विवचनं –
(A) प्रातिपदिकम् (B) नदी
(C) सवर्णम् (D) प्रगृह्यम्
स्रोत–अष्टाध्यायी (1.1.111) - ईश्वरचन्द्र, पेज–13

15. (A) **16.** (D) **17.** (C) **18.** (C) **19.** (B) **20.** (A) **21.** (B) **22.** (A) **23.** (C) **24.** (D) **25.** (C) **26.** (B) **27.** (A) **28.** (D)

29. अधोनिर्दिष्टेषु स्पर्शः –

(A) म् (B) य्
(C) इ (D) व्

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–20

30. इचुयशानां किं स्थानम् –

(A) दन्तः (B) मूर्धा
(C) मुखम् (D) तालु

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–17

31. समीचीनां तालिकां चिनुत –

(अ) स्पर्शः 1. शल्
(ब) स्वरः 2. कवर्णः
(स) जिह्वामूलीयम् 3. अच्
(द) ऊष्मवर्णः 4. जिह्वामूलम्

कूट :

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	2	3	4	1
(B)	1	2	3	4
(C)	4	3	2	1
(D)	3	2	1	4

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी-गोविन्दाचार्य, पेज–अ, ब, द–20, स =17

32. समासशास्त्रे उपसर्जनं नाम –

(A) द्वितीयानिर्दिष्टम् (B) सप्तमीनिर्दिष्टम्
(C) प्रथमानिर्दिष्टम् (D) तृतीयानिर्दिष्टम्

स्रोत–लघुसिद्धान्त कौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज–20

33. 'सप्तर्षयः' अत्र समासविधायकं सूत्रं किम् –

(A) विशेषणं विशेष्येण बहुलम् (B) दिक्संख्ये संज्ञायाम्
(C) चार्थे द्वन्द्वः (D) दिङ्नामान्यन्तराले

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज–99

34. ''तथायुक्तं चानीप्सितम्'' इति सूत्रस्योदाहरणम् –

(A) ओदनं पचति (B) गां दोग्धि पयः
(C) अग्नेर्माणवकं वारयति (D) ग्रामं गच्छन् तृणं स्पृशति

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–19

35. सम्प्रदाने का विभक्तिः वर्तते –

(A) चतुर्थी (B) पञ्चमी
(C) प्रथमा (D) द्वितीया

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–46

36. साधकतमं –

(A) कर्म (B) कर्ता
(C) अधिकरणम् (D) करणम्

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–40

37. 'न तितिक्षासममस्ति साधनम्' इदं वाक्यमस्ति –

(A) शिशुपालवधे (B) किरातार्जुनीये
(C) बुद्धचरिते (D) मेघदूते

स्रोत–किरातार्जुनीयम् (2/43)-आचार्य श्रीनिवास शर्मा, पेज-48

38. ''मृगयाऽघ्राय न भूभृतां हनताम्'' इति वाक्यमस्ति –

(A) नैषधीयचरिते (B) बुद्धचरिते
(C) किरातार्जुनीये (D) रघुवंशे

स्रोत–नैषधीयचरितम्–(2/10)

39. ''गन्धर्वनगरलेखेव पश्यत एव नश्यति'' इदं वाक्यमस्ति–

(A) दशकुमारचरिते (B) हर्षचरिते
(C) मुद्राराक्षसे (D) कादम्बर्याम्

स्रोत–कादम्बरी शुकनासोपदेश - राजेश्वरप्रसाद मिश्र, पेज–62

40. 'हर्षचरितस्य' कर्ता कः अस्ति –

(A) अश्वघोषः (B) श्रीहर्षः
(C) बाणः (D) दण्डी

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का इतिहास-उमाशंकरशर्मा 'ऋषि', पेज–395

41. ''श्रिया दुरापः कथमीप्सितो भवेत्'' इदं वाक्यमस्ति -

(A) स्वप्नवासवदत्ते
(B) मुद्राराक्षसे
(C) अभिज्ञानशाकुन्तले
(D) मृच्छकटिके

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (3/11)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–155

29. (A) **30.** (D) **31.** (A) **32.** (C) **33.** (B) **34.** (D) **35.** (A) **36.** (D) **37.** (B) **38.** (A) **39.** (D) **40.** (C) **41.** (C)

42. रत्नावली किम् अस्ति –

(A) नाटकम् (B) प्रकरणम्
(C) नाटिका (D) भाणम्

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का इतिहास-उमाशंकरशर्मा 'ऋषि', पेज–515

43. गुणीभूतव्यङ्ग्यस्य प्रभेदाः कति सन्ति –

(A) 8 (B) 15
(C) 24 (D) 36

स्रोत–साहित्यदर्पण (4/14) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–149

44. विश्वनाथ मते काव्यम् –

(A) शब्दः (B) शब्दार्थौ
(C) वाक्यम् (D) पदावलिः

स्रोत–साहित्यदर्पण (1/3) - शालिग्रामशास्त्री, पेज–19

45. साहित्यदर्पणानुसारं शान्तरसस्य स्थायीभावोऽस्ति –

(A) शमः (B) रतिः
(C) विवेकः (D) माया

स्रोत–साहित्यदर्पण (3/245) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–121

46. गणिका नायिका भवति –

(A) नाटके (B) प्रकरणे
(C) भाणे (D) समवकारे

स्रोत–साहित्यदर्पण (6/226) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–215

47. नाटके नायको भवति –

(A) धीरप्रशान्तः (B) धृष्टः
(C) शठः (D) धीरोदात्तः

स्रोत–साहित्यदर्पण (6/9) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–171

48. आत्मस्थः परस्थश्चेति द्विविधो रसः -

(A) हास्यः
(B) बीभत्सः
(C) अद्भुतः
(D) भयानकः

स्रोत–दशरूपक (4/75) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज–361

49. 'अभिधापुच्छमिति' व्यवह्रियते-

(A) अभिधा
(B) लक्षणा
(C) व्यञ्जना
(D) तात्पर्या

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–251

50. युग्मकं काव्यं भवति -

(A) गद्यम् (B) चम्पूः
(C) पद्यम् (D) नाटकम्

स्रोत–साहित्यदर्पण (6/336) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–227

प्रियसंस्कृतमित्राणि!

आप तभी पढ़ें, जब मन प्रसन्न हो
दुःखी मन से की गयी पढ़ाई
एक प्रकार से चट्टान पर की
जाने वाली जुताई के समान लगभग व्यर्थ है।

–संस्कृतगङ्गा

42. (C) **43.** (A) **44.** (C) **45.** (A) **46.** (B) **47.** (D) **48.** (A) **49.** (B) **50.** (B)

23	जून 2007	UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् II

नोट : इस प्रश्नपत्र में **पचास (50)** बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के **दो (2)** अङ्क हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. 'नासत्यौ' इति कस्य विशेषणं भवति –
(A) अग्नेः (B) अश्विनोः
(C) वरुणस्य (D) सोमस्य
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–302

2. ''यो अश्मनोरन्तरग्निं जजान'' - अनेन मन्त्रभागेन कः परामृश्यते –
(A) विष्णुः (B) सविता
(C) बृहस्पतिः (D) इन्द्रः
स्रोत–ऋग्वेद (2-12-3) ऋक्सूक्तसंग्रह-हरिदत्तशास्त्री, पेज–180

3. कठोपनिषदि नचिकेतसा किं प्रार्थितम् –
(A) हिरण्यादिकम् (B) वरत्रयम्
(C) स्त्रीरत्नम् (D) पुत्रपरिजनादिकम्
स्रोत–उपनिषद् अंक (कठोपनिषद् 1-1-09)-गीताप्रेस, पेज–196

4. ऋग्वेदस्य प्राचीनतमो भाष्यकारो अस्ति –
(A) सायणाचार्यः (B) वेङ्कटमाधवः
(C) स्कन्दस्वामी (D) रावणः
स्रोत–वैदिकसाहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–22-23

5. 'जानश्रुतेरुपाख्यानं' कुत्र वर्तते –
(A) केनोपनिषदि (B) छान्दोग्योपनिषदि
(C) कठोपनिषदि (D) बृहदारण्यकोपनिषदि
स्रोत–उपनिषद् अंक–गीताप्रेस, पेज–437

6. ऋग्वेदस्य नामान्तरम् –
(A) दशाध्यायी (B) दशतयी
(C) दशमण्डली (D) गानवेदः
स्रोत–संस्कृतसाहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज–35

7. 'यमयमीसंवादे' यमी आसीत् यमस्य –
(A) कन्या (B) माता
(C) भगिनी (D) जाया
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–58

8. गानस्य प्राधान्यमस्ति –
(A) सामवेदे (B) यजुर्वेदे
(C) अथर्ववेदे (D) ऋग्वेदे
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेवद्विवेदी, पेज–77

9. 'गोपथ-ब्राह्मणस्य' सम्बन्धोऽस्ति –
(A) सामवेदेन (B) अथर्ववेदेन
(C) यजुर्वेदेन (D) ऋग्वेदेन
स्रोत–वैदिकसाहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेवद्विवेदी, पेज–10

10. वेदाङ्गेषु व्याकरणं किं भवति –
(A) घ्राणम् (B) हस्तः
(C) श्रोत्रम् (D) मुखम्
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेवद्विवेदी, पेज–190

11. 'आख्यातस्य' लक्षणं कुत्र वर्तते –
(A) शिक्षायाम् (B) ज्योतिषे
(C) छन्दसि (D) निरुक्ते
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेवद्विवेदी, पेज–204

12. 'बालखिल्यसूक्तानि' कुत्र विद्यन्ते –
(A) ऋग्वेदे (B) सामवेदे
(C) अथर्ववेदे (D) यजुर्वेदे
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेवद्विवेदी पेज–47

13. 'सतः सत् जायते' इति कस्य मतम् अस्ति –
(A) बौद्धस्य (B) नैयायिकस्य
(C) सांख्यस्य (D) वेदान्तिनः
स्रोत–सांख्यकारिका (का. 09)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–100

14. 'कर्तृत्वं' कुत्र विद्यते –
(A) पुरुषे (B) मनसि
(C) प्रकृतौ (D) अहङ्कारे
स्रोत–सांख्यकारिका (का. 20)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–191

15. 'बुद्धिसर्गः' (प्रत्ययसर्गः) कतिविधो भवति –
(A) एकविधः (B) द्विविधः
(C) त्रिविधः (D) चतुर्विधः
स्रोत–सांख्यकारिका (का. 46)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–269

1. (B) **2.** (D) **3.** (B) **4.** (C) **5.** (B) **6.** (B) **7.** (C) **8.** (A) **9.** (B) **10.** (D) **11.** (D) **12.** (A) **13.** (C) **14.** (C) **15.** (D)

16. 'कैवल्यं' किमस्ति –
(A) नित्यसुखाभिव्यक्तिः
(B) आत्यन्तिकदुःखनिवृत्तिः
(C) ऐकान्तिकदुःखनिवृत्तिः
(D) ऐकान्तिकात्यन्तिकदुःखनिवृत्तिः

स्रोत–सांख्यकारिका (का. 68)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–336

17. अज्ञानस्य कतिविधा शक्तिर्भवति –
(A) एकविधा (B) द्विविधा
(C) चतुर्विधा (D) अनेकविधा

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–56

18. जीवस्य कतिविधाः अवस्थाः भवन्ति –
(A) त्रिविधाः (B) चतुर्विधाः
(C) पञ्चविधाः (D) षड्विधाः

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–46

19. 'विवर्तो' नाम किं विद्यते –
(A) कारणस्य समसत्ताकपरिणामः
(B) कारणस्य कार्यावस्था
(C) कारणात् विषमसत्ताकोत्पत्तिः
(D) कारणगुणात्मिका कार्योत्पत्तिः

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–117

20. पदार्थस्य किं लक्षणम् ?
(A) सत्तावत्त्वम् (B) भावत्वम्
(C) अभिधेयत्वम् (D) प्रमेयत्वम्

स्रोत–तर्कसंग्रह - अनितासेन गुप्ता, पेज–27

21. सामान्यः पदार्थः नास्तीति कस्य मतम् ?
(A) वेदान्तिनः (B) नैयायिकस्य
(C) मीमांसकस्य (D) वैयाकरणस्य

22. विभुत्वं किमस्ति –
(A) अपरिच्छिन्नपरिमाणवत्वम् (B) परिमाणरहितत्वम्
(C) सर्वमूर्तद्रव्यसंयोगित्वम् (D) प्रत्यक्षायोग्यद्रव्यत्वम्

स्रोत–तर्कसंग्रह-कृष्णबल्लभाचार्य, पेज–37

23. प्रामाण्यमनुव्यवसायेन गृह्यते इति कस्य मतम् –
(A) नैयायिकस्य (B) वेदान्तिनः
(C) प्रभाकरमीमांसकस्य (D) मुरारिमिश्रस्य

स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवासशास्त्री, पेज–168

24. अव्याप्यवृत्तित्वं किमस्ति –
(A) सावच्छिन्नवृत्तिकत्वम् (B) निरवच्छिन्नवृत्तिकत्वम्
(C) एकमात्रवृत्तित्वम् (D) अनेकवृत्तित्वम्

25. नदीसंज्ञाविधायकं सूत्रम् –
(A) यू स्त्र्याख्यौ (B) अलोऽन्त्यात्पूर्वः
(C) इदूदेद्द्विवचनम् (D) क्तक्तवतू

स्रोत–अष्टाध्यायी (1.4.3) - ईश्वरचन्द्र, पेज–109

26. 'एकाल्प्रत्ययस्य' का संज्ञा भवति –
(A) घि (B) सर्वनामस्थानम्
(C) गतिः (D) अपृक्तः

स्रोत–अष्टाध्यायी (1.2.41) - ईश्वरचन्द्र, पेज–68

27. समीचीनां तालिकां चिनुत –

(अ) संहिता	1. अदेङ्
(ब) गुणः	2. अचोऽन्त्यादि
(स) पदम्	3. परः सनिकर्षः
(द) टि	4. सुप्तिङन्तम्

कूट :

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	1	2	4	3
(B)	4	2	3	1
(C)	2	3	1	4
(D)	3	1	4	2

स्रोत–अष्टाध्यायी - ईश्वरचन्द्र, अ = 1.4.108 पेज–147, ब = 1.1.2 पेज–06, स = 1.4.14 पेज–114, द = 1.1.63 पेज–47

28. कर्मणा यमभिप्रैति सः –
(A) करणम् (B) कर्म
(C) सम्प्रदानम् (D) अपादानम्

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–46

29. 'अक्ष्णा काणः' - अत्र केन सूत्रेण विभक्तिः –
(A) सहयुक्तेऽप्रधाने (B) हेतौ
(C) स्पृहेरीप्सितः (D) येनाङ्गविकारः

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–43

16. (D) **17.** (B) **18.** (A) **19.** (A) **20.** (C) **21.** (D) **22.** (C) **23.** (A) **24.** (B) **25.** (A) **26.** (D) **27.** (D) **28.** (C) **29.** (D)

30. वैषयिकाधिकरणस्य उदाहरणं किम् –
(A) तिलेषु तैलम् (B) मोक्षे इच्छास्ति
(C) गङ्गायां घोषः (D) वने व्याघ्रः
स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–93

31. ''यतश्च निर्धारणम्'' - अनेन सूत्रेण विधीयते –
(A) द्वितीया तृतीया वा (B) तृतीया चतुर्थी वा
(C) प्रथमा द्वितीया वा (D) षष्ठी सप्तमी वा
स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–98

32. 'अधिहरि' - अस्मिन् पदे कः समासः –
(A) तत्पुरुषः (B) द्वन्द्वः
(C) कर्मधारयः (D) अव्ययीभावः
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज–21

33. समाहारद्वन्द्वः सदैव प्रयुज्यते –
(A) पुँल्लिङ्गे (B) स्त्रीलिङ्गे
(C) नपुंसकलिङ्गे (D) उभयलिङ्गे
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज–232

34. 'पितरौ' - इत्यस्य पदस्य विग्रहः –
(A) पिता च कन्या च (B) माता च पिता च
(C) भ्राता च पिता च (D) स्वसा च पिता च
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज–239

35. कॉलिजनियमस्य उपयोगो भवति अस्मिन् –
(A) ददौ (B) दधौ
(C) चकार (D) करोति
स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–247

36. बाह्यप्रयत्नस्तु –
(A) पञ्चधा (B) दशधा
(C) एकादशधा (D) त्रयोदशधा
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–19

37. 'अमी अश्वाः' इत्यत्र प्रगृह्यसंज्ञा-विधायकं सूत्रम् –
(A) ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम्
(B) अदसो मात्
(C) निपात एकाजनाङ्
(D) प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम्
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–74

38. 'श्रेयसि केन तृप्यते', इत्यस्ति –
(A) बुद्धचरिते (B) शिशुपालवधे
(C) किरातार्जुनीये (D) नैषधमहाकाव्ये
स्रोत–शिशुपालवधम् (1/29) - तारिणीश झा, पेज–63

39. प्रकरणे अङ्कसंख्या भवति –
(A) सप्त (B) पञ्च
(C) चत्वारः (D) दश
स्रोत–साहित्यदर्पण - शालिग्राम शास्त्री, पेज–214

40. 'स्वप्नवासवदत्तस्य' रचयिता कः अस्ति –
(A) कालिदासः (B) शूद्रकः
(C) भासः (D) श्रीहर्षदेवः
स्रोत–संस्कृतसाहित्य का इतिहास-उमाशंकरशर्मा 'ऋषि', पेज–466

41. 'अभिज्ञानशाकुन्तले' अङ्गीरसः कः अस्ति –
(A) शृङ्गाररसः (B) वीररसः
(C) शान्तरसः (D) करुणरसः
स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू. पेज–60

42. 'मुद्राराक्षसस्य' रचयिता कः अस्ति –
(A) शूद्रकः (B) विशाखदत्तः
(C) भट्टनारायणः (D) कालिदासः
स्रोत–संस्कृतसाहित्य का इतिहास-उमाशंकरशर्मा 'ऋषि', पेज–501

43. वीथ्यां प्रयुक्ता वृत्तिः –
(A) भारती (B) सात्त्वती
(C) कैशिकी (D) आरभटी
स्रोत–साहित्यदर्पण (6/254) शालिग्राम शास्त्री, पेज–217

44. 'रघुवंशमहाकाव्ये' कति सर्गाः सन्ति –
(A) एकोनविंशतिः (B) अष्टादश
(C) द्वाविंशतिः (D) विंशतिः
स्रोत–संस्कृतसाहित्य का इतिहास-उमाशंकरशर्मा 'ऋषि', पेज–212

45. मुख्यार्थबाधे सति भवति –
(A) अभिधाव्यापारः (B) लक्षणाव्यापारः
(C) व्यञ्जनाव्यापारः (D) तात्पर्यायवृत्तिः
स्रोत–साहित्यदर्पण (2/5) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–28

30. (B) **31.** (D) **32.** (D) **33.** (C) **34.** (B) **35.** (C) **36.** (C) **37.** (B) **38.** (B) **39.** (D) **40.** (C) **41.** (A) **42.** (B) **43.** (C) **44.** (A) **45.** (B)

46. **''आराधनाय लोकस्य मुञ्चतो नास्ति मे व्यथा'' इत्यस्ति –**

(A) अभिज्ञानशाकुन्तले (B) उत्तररामचरिते
(C) मृच्छकटिके (D) महावीरचरिते

स्रोत–उत्तररामचरितम् (1/12) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–25

47. **किरातार्जुनीयमहाकाव्ये 'किरातः' कः अस्ति –**

(A) अर्जुनः (B) शिवः
(C) कृष्णः (D) धर्मराजः

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का इतिहास-उमाशंकरशर्मा 'ऋषि', पेज–243

48. **'करुणरसस्य' स्थायीभावः अस्ति –**

(A) शमः (B) रतिः
(C) उत्साहः (D) शोकः

स्रोत–साहित्यदर्पण (3/223) शालिग्राम शास्त्री, पेज–116

49. **व्यायोगे नायकः –**

(A) धीरोदात्तः
(B) धीरप्रशान्तः
(C) धीरललितः
(D) धीरोद्धतः

स्रोत–साहित्यदर्पण (6/233) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–215

50. **हर्षचरितम् अस्ति –**

(A) कथा
(B) आख्यायिका
(C) कथानिका
(D) नाटिका

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का इतिहास-उमाशंकरशर्मा 'ऋषि', पेज–395

46. (B) **47.** (B) **48.** (D) **49.** (D) **50.** (B)

24	दिसम्बर 2007	UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् II

नोट : इस प्रश्नपत्र में **पचास (50)** बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के **दो (2)** अङ्क हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. यास्कमते अग्निर्भवति –
(A) अन्तरिक्षस्थानीयः (B) पृथिवीस्थानीयः
(C) द्युस्थानीयः (D) गृहस्थानीयः
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–296

2. विष्णोस्त्रीणि पदानि केन पूर्णानि भवन्ति –
(A) उदकेन (B) अमृतेन
(C) मधुना (D) घृतेन
स्रोत–ऋक्सूक्त संग्रह - हरिदत्तशास्त्री पेज–168

3. 'द्युस्थानीयः' देवता अस्ति –
(A) वरुणः (B) इन्द्रः
(C) सोमः (D) अग्निः
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–296

4. 'भैषज्यसूक्तानि' कुत्र वर्तन्ते –
(A) सामवेदे (B) ऋग्वेदे
(C) यजुर्वेदे (D) अथर्ववेदे
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–98

5. 'वंशीयमण्डलानि' कुत्र उपलभ्यन्ते –
(A) यजुर्वेदे (B) ऋग्वेदे
(C) सामवेदे (D) अथर्ववेदे
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–49

6. वैदिककालनिर्णये ज्योतिषस्य उपयोगः केन कृतः –
(A) वेबरेण
(B) मोक्षमूलरेण (मैक्समूलरेण)
(C) न केनापि
(D) बालगङ्गाधरतिलकेन
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–40

7. हेमवत्याः उपाख्यानमुपलभ्यते –
(A) केनोपनिषदि (B) कठोपनिषदि
(C) ईशोपनिषदि (D) बृहदारण्यके
स्रोत–केनोपनिषद् - खण्ड-4

8. 'रथरूपकं' कुत्र विद्यते –
(A) छान्दोग्ये (B) बृहदारण्यके
(C) श्वेताश्वतरे (D) कठे
स्रोत–कठोपनिषद् - 1.3.3

9. ऋग्वेदस्य पदपाठस्य कर्ता कः आसीत् –
(A) सायणाचार्यः (B) स्कन्दस्वामी
(C) यास्कः (D) शाकल्यः
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–22

10. ''न वै स्त्रैणानि सख्यानि सन्ति'' - इयम् उक्तिर्भवति –
(A) विश्वामित्रस्य (B) सरमायाः
(C) उर्वश्याः (D) यम्याः
स्रोत–ऋग्वेद (10/95/15) - पुरूरवा उर्वशी संवाद

11. वेदाङ्गेषु निरुक्तं किं रूपं भवति –
(A) चक्षुः (B) श्रोत्रम्
(C) घ्राणम् (D) मुखम्
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–190

12. देवतानां स्थानानि कुत्र वर्णितानि सन्ति –
(A) व्याकरणे (B) शिक्षायाम्
(C) कल्पे (D) निरुक्ते
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–204

13. 'अहङ्कारः' कतिविधो भवति –
(A) एकविधः (B) द्विविधः
(C) त्रिविधः (D) चतुर्विधः
स्रोत–सांख्यकारिका - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–208

14. 'समन्वयात्' किं सिद्ध्यति –
(A) प्रकृतिः (B) पुरुषः
(C) गुणाः (D) कैवल्यम्
स्रोत–सांख्यकारिका (का. 15)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–160

1. (B) **2.** (C) **3.** (A) **4.** (D) **5.** (B) **6.** (D) **7.** (A) **8.** (D) **9.** (D) **10.** (C) **11.** (B) **12.** (D) **13.** (C) **14.** (A)

15. 'वैराग्यात्' किं भवति –

(A) प्रकृतिलयः (B) बुद्धिलयः
(C) अहङ्कारलयः (D) भूतलयः

स्रोत–सांख्यकारिका (का. 45)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–267

16. 'ज्ञानं' कस्य धर्मः –

(A) पुरुषस्य (B) प्रकृतेः
(C) अहङ्कारस्य (D) बुद्धेः

स्रोत–सांख्यकारिका (का. 23)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–198

17. केवलं शब्दादिगुणत्रयं कुत्र अभिव्यज्यते –

(A) पञ्चीकृतवायौ (B) पञ्चीकृताप्सु
(C) पञ्चीकृततेजसि (D) पञ्चीकृतपृथिव्याम्

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–80

18. वेदान्तसारे 'लिङ्गशरीरस्य' कति अवयवाः सन्ति –

(A) पञ्चदश (B) षोडश
(C) सप्तदश (D) अष्टादश

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–65

19. अद्वैतवेदान्तमते मुक्तिः –

(A) ब्रह्मज्ञानप्राप्तिः (B) ब्रह्मसादृश्यप्राप्तिः
(C) ब्रह्मसायुज्यम् (D) ब्रह्मनिष्ठः

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–185

20. विशेषगुणः कस्मिन् द्रव्ये नास्ति –

(A) आकाशे (B) वायौ
(C) मनसि (D) आत्मनि

स्रोत–तर्कसंग्रह - गोविन्दाचार्य, पेज–30

21. लौकिकसन्निकर्षः कतिविधः –

(A) द्विविधः (B) त्रिविधः
(C) षड्विधः (D) चतुर्विधः

स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज–61

22. प्रमाणं द्विविधमिति कस्य मतम् –

(A) वैशेषिकस्य (B) नैयायिकस्य
(C) मीमांसकस्य (D) सांख्यस्य

स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवासशास्त्री, पेज–136

23. पारिमाण्डल्यं नाम किम् –

(A) परमाणुः (B) अणुपरिमाणम्
(C) ब्रह्माण्डम् (D) त्रसरेणुः

स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज–225

24. पीलुपाकवादिनः के सन्ति –

(A) नैयायिकाः (B) बौद्धाः
(C) वैशेषिकाः (D) जैनाः

स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–53

25. अर्थवदधातुरप्रत्ययः –

(A) संहिता (B) प्रातिपदिकम्
(C) गतिः (D) वृद्धिः

स्रोत–अष्टाध्यायी (1.2.45) - ईश्वरचन्द्र, पेज–69

26. तुल्यास्यप्रयत्नं ------किमुच्यते –

(A) निष्ठा (B) पदम्
(C) सवर्णम् (D) सन्धिः

स्रोत–अष्टाध्यायी (1.1.9) - ईश्वरचन्द्र, पेज–11

27. पदस्य किं लक्षणम् –

(A) सन्धियुक्तम्
(B) योग्यताकांक्षासत्तियुक्तम्
(C) समासयुक्तम्
(D) सुप्तिङन्तम्

स्रोत–अष्टाध्यायी (1.4.14) - ईश्वरचन्द्र, पेज–114

28. 'निष्ठा' पदेन उच्येते –

(A) ल्युट्ण्वुलौ (B) क्तक्तवतू
(C) ण्वुल्-तृचौ (D) अल् - घञौ

स्रोत–अष्टाध्यायी (1.1.25) – ईश्वरचन्द्र, पेज–19

29. 'मुनि' इति पदस्य का संज्ञा –

(A) टि (B) घि
(C) गति (D) नदी

स्रोत–अष्टाध्यायी (1.4.7) – ईश्वरचन्द्र, पेज–111

15. (A) **16.** (D) **17.** (C) **18.** (C) **19.** (D) **20.** (B) **21.** (C) **22.** (A) **23.** (B) **24.** (C) **25.** (B)
26. (C) **27.** (D) **28.** (B) **29.** (B)

30. समीचीनां तालिकां चिनुत –

(अ) नदी 1. गतिश्च
(ब) उपधा 2. ईदूदेद्द्विवचनम्
(स) गतिः 3. यू स्त्र्याख्यौ
(द) प्रगृह्यम् 4. अलोऽन्त्यात्पूर्वः

कूट :

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	3	2	1	4
(B)	3	4	1	2
(C)	4	2	3	1
(D)	1	4	2	3

स्रोत–अष्टाध्यायी - ईश्वरचन्द्र, अ = 1.4.3, पेज–109, ब = 1.1.64 पेज–48, स = 1.4.59 पेज–133, द = 1.1.11पेज–13

31. 'कर्तुरीप्सिततमं' कारकं किम् उच्यते –

(A) करणम् (B) सम्प्रदानम्
(C) कर्म (D) अपादानम्

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–16

32. "क्रुधद्रुहेर्ष्याऽसूयार्थानां यं प्रति कोपः" - तत्र का विभक्तिः भवति –

(A) चतुर्थी (B) तृतीया
(C) द्वितीया (D) पञ्चमी

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–50

33. 'विशेषसंज्ञाविनिर्मुक्तः' - कः समासः –

(A) बहुव्रीहिः (B) द्विगुः
(C) केवलः (D) कर्मधारयः

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज–02

34. 'अनुरूपम्' - इत्यस्य पदस्य विग्रहः किं वर्तते –

(A) रूपस्य प्रति (B) रूपस्य योग्यम्
(C) रूपस्य सादृश्यम् (D) रूपस्य पश्चात्

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज–33

35. ऋटुरषाणाम् उच्चारणस्थानं किम् –

(A) तालु (B) कण्ठः
(C) ओष्ठः (D) मूर्धा

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–17

36. दन्त्येषु अन्तर्भवति –

(A) क् (B) प्
(C) ल् (D) म्

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–17

37. "कादयो मावसानाः" वर्णाः –

(A) स्पर्शाः (B) अन्तःस्थाः
(C) अनुनासिकाः (D) अस्पर्शाः

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–20

38. 'रत्नावल्याः' रचयिता कः अस्ति –

(A) श्रीहर्षः (B) हर्षवर्धनः
(C) भासः (D) बाणः

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेवद्विवेदी, पेज–365

39. "सञ्चारिणी दीपशिखेव रात्रौ" इति रघुवंशमहाकाव्ये कस्मिन् सन्दर्भे वर्णितम् अस्ति –

(A) दिलीपस्य गोसेवा (B) रामवनगमनम्
(C) सीताविसर्जनम् (D) इन्दुमती–स्वयंवरः

स्रोत–रघुवंशम् (6/67) - कृष्णमणि त्रिपाठी, पेज–196

40. अभिज्ञानशाकुन्तले विदूषकः अस्ति –

(A) माधव्यः (माढव्यः) (B) वसन्तकः
(C) मैत्रेयः (D) शार्ङ्गरवः

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू. पेज–90

41. "सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः परमापदां पदम्" इति वाक्यस्य कर्ता कः अस्ति –

(A) कालिदासः (B) भारविः
(C) माघः (D) श्रीहर्षः

स्रोत–किरातार्जुनीयम् (2/30) - आचार्य श्रीनिवास शर्मा, पेज-41

30. (B) **31.** (C) **32.** (A) **33.** (C) **34.** (B) **35.** (D) **36.** (C) **37.** (A) **38.** (B) **39.** (D) **40.** (A) **41.** (B)

42. रूपकाणां भेदाः –

(A) त्रयः (B) चत्वारः
(C) पञ्च (D) दश

स्रोत–साहित्यदर्पण (6/3) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–170

43. 'प्रहसनस्य' उदाहरणम् अस्ति –

(A) प्रियदर्शिका
(B) प्रतिज्ञायौगन्धरायणम्
(C) मत्तविलासः
(D) मृच्छकटिकम्

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज–548

44. 'बीभत्सरसस्य' स्थायिभावः किम् अस्ति –

(A) शोकः (B) हासः
(C) भयः (D) जुगुप्सा

स्रोत–साहित्यदर्पण (3/239) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–120

45. 'करुणरसस्य' वर्णः अस्ति –

(A) श्वेतः (B) श्यामः
(C) नीलः (D) कपोतः

स्रोत–साहित्यदर्पण (3/222) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–116

46. ''वाक्यं रसात्मकं काव्यम्'' - इति केन उक्तम् –

(A) कुन्तकेन (B) विश्वनाथेन
(C) दण्डिना (D) भरतेन

स्रोत–साहित्यदर्पण (1/3) – शालिग्राम शास्त्री, पेज–19

47. विश्वनाथमतानुसारेण काव्ये रसो भवति –

(A) आत्मा (B) अवयवसंस्थानम्
(C) आभूषणम् (D) शरीरम्

स्रोत–साहित्यदर्पण (1/3) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–19

48. साक्षात्सङ्केतितार्थस्य बोधिका अस्ति –

(A) अभिधा (B) लक्षणा
(C) व्यञ्जना (D) तात्पर्यम्

स्रोत–साहित्यदर्पण (2.14) – शालिग्राम शास्त्री, पेज–26

49. ''एको रसः करुण एव निमित्तभेदात्'' इति केनोक्तम् -

(A) कालिदासेन (B) भवभूतिना
(C) भासेन (D) वाल्मीकिना

स्रोत–उत्तररामचरितम् (3/47) कपिलदेव द्विवेदी, पेज–260

50. 'मृच्छकटिके' कति अङ्काः सन्ति -

(A) पञ्चदश (B) सप्त
(C) दश (D) पञ्च

संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेवद्विवेदी, पेज–307

42. (D) **43.** (C) **44.** (D) **45.** (D) **46.** (B) **47.** (A) **48.** (A) **49.** (B) **50.** (C)

25	जून 2008	UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् II

नोट : इस प्रश्नपत्र में **पचास (50)** बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के **दो (2)** अङ्क हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. 'ऐतरेयब्राह्मणं' केन वेदेन सम्पृक्तम् –
(A) सामवेदेन (B) यजुर्वेदेन
(C) ऋग्वेदेन (D) अथर्ववेदेन
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–09

2. सामसंज्ञा भवति –
(A) ऋचाम् (B) गानानाम्
(C) ब्राह्मणानाम् (D) उपनिषदाम्
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–77

3. यास्कमतेन कति भावविकाराः –
(A) पञ्च (B) षट्
(C) सप्त (D) अष्ट
स्रोत–निरुक्तम् - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–26

4. 'यमयमीसंवादः' ऋग्वेदस्य कस्मिन् मण्डले वर्तते –
(A) दशममण्डले (B) पञ्चममण्डले
(C) नवममण्डले (D) अष्टममण्डले
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–57

5. 'ऋग्वेदे' कति अष्टकानि सन्ति –
(A) दश (B) सप्त
(C) नव (D) अष्टौ
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–46

6. 'कौथुमशाखा' अस्ति –
(A) सामवेदस्य (B) यजुर्वेदस्य
(C) अथर्ववेदस्य (D) ऋग्वेदस्य
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–10

7. अनुष्टुप् छन्दसि प्रतिपादं कति अक्षराणि भवन्ति –
(A) पञ्च (B) अष्ट
(C) दश (D) द्वादश
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–49

8. 'नित्याः खलु वेदा' इति केषाम् अभिमतम् –
(A) मोक्षमूलरस्य
(B) जैकोबीमहोदयस्य
(C) वेबरस्य
(D) प्राचीनभारतीयपरम्परायाः
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–17-18

9. ऋग्वेदस्य कस्मिन् मण्डले 'सोमस्य' स्तुतिः दृक्पथमुपयाति ?
(A) द्वितीयमण्डले (B) पञ्चममण्डले
(C) दशममण्डले (D) नवममण्डले
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–47

10. ''हरिश्चन्द्रोपाख्यानम्'' - कस्मिन् ब्राह्मणे समुपलभ्यते?
(A) ऐतरेयब्राह्मणे (B) शतपथब्राह्मणे
(C) गोपथब्राह्मणे (D) तैत्तिरीयब्राह्मणे
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–125

11. ''स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम्'' इतिवचनं कस्यामुपनिषदि विराजते ?
(A) केनोपनिषदि (B) कठोपनिषदि
(C) तैत्तिरीयोपनिषदि (D) मुण्डकोपनिषदि
स्रोत–ईशादि नौ उपनिषद् (तैत्तिरीयोपनिषद्)-गीताप्रेस, पेज–362

12. को नाम 'आरण्यकस्य' मुख्यविषयः ?
(A) ज्ञानम् (B) उपासनादिकम्
(C) गानम् (D) स्तुतिः
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–158

13. सांख्यैः स्वीकृतानि तत्त्वानि –
(A) 20 (B) 25
(C) 15 (D) 11
स्रोत–सांख्यकारिका (का. 3) - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–39

14. सांख्यैः गुणाः............इति वर्णिता –
(A) सुख-दुःख-मोहात्मकाः (B) इष्टानिष्टोभयात्मकाः
(C) प्रीत्यप्रीतिविषादात्मकाः (D) सुख-दुःखरागात्मकाः
स्रोत–सांख्यकारिका (का. 12)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–135

1. (C) **2.** (B) **3.** (B) **4.** (A) **5.** (D) **6.** (A) **7.** (B) **8.** (D) **9.** (D) **10.** (A) **11.** (C) **12.** (A) **13.** (B) **14.** (C)

15. सांख्यस्वीकृतानि प्रमाणानि –

(A) 4 (B) 5
(C) 3 (D) 2

स्रोत–सांख्यकारिका (का. 4)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–47

16. पुरुष-प्रकृत्योः............संसर्गः वर्णितः –

(A) जडाजडवत् (B) मूक-बधिर-वत्
(C) अन्धमालावत् (D) पङ्ग्वन्धवत्

स्रोत–सांख्यकारिका (का. 21)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–193

17. बुद्धिः..........सहिता विज्ञानमयकोशः भवति –

(A) कर्मेन्द्रियैः (B) ज्ञानेन्द्रियैः
(C) अन्तःकरणैः (D) सूक्ष्मशरीरैः

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–68

18. 'अध्यासः' किं रूपम् –

(A) कार्यरूपः (B) स्मृतिरूपः
(C) कारणरूपः (D) नित्यरूपः

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–36

19. द्रव्यप्रत्यक्षे सर्वदा सन्निकर्षः –

(A) समवायः (B) तादात्म्यम्
(C) संयोगः (D) संयुक्त-समवायः

स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–77

20. न्याये कति पदार्थाः स्वीकृताः ?

(A) 7 (B) 4
(C) 9 (D) 16

स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज–4

21. तद्वति तत्प्रकारकं ज्ञानं भवति –

(A) अयथार्थः (B) यथार्थः
(C) स्मृतिः (D) विपर्ययः

स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–65

22. कार्यनियतपूर्ववृत्तित्वम् –

(A) कारणत्वम् (B) कार्यत्वम्
(C) करणत्वम् (D) अकारणत्वम्

स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–69

23. समीचीनां तालिकां चिनुत –

(अ) संयुक्त-समवेतसमवायः 1. मनस्
(ब) विशेषणता 2. गुणः
(स) समवायः 3. तमस्
(द) संयोगः 4. घटरूपत्वम्

कूट :

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	4	3	2	1
(B)	4	3	1	2
(C)	1	2	3	4
(D)	3	2	1	4

स्रोत–तर्कभाषा-श्रीनिवास शास्त्री पेज– अ=66, ब=68, स=67, द=63

24. सम्यग्ज्ञानवान् शरीरं...............इव धारयति –

(A) मूढवत् (B) चक्रभ्रमिवत्
(C) जडवत् (D) पिशाचवत्

स्रोत–सांख्यकारिका (का. 67)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–334

25. यू स्त्र्याख्यौ...............भवति –

(A) घि (B) नदी
(C) समासः (D) उपधा

स्रोत–अष्टाध्यायी (1.4.3) - ईश्वरचन्द्र, पेज–109

26. सर्वनामस्थानसंज्ञाविधायकं सूत्रं किम् ?

(A) स्वादिष्वसर्वनामस्थाने
(B) सुडनपुंसकस्य
(C) सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ
(D) सर्वादीनि सर्वनामानि

स्रोत–अष्टाध्यायी (1.1.42) - ईश्वरचन्द्र, पेज–25

27. अन्त्यादलः पूर्वो वर्णः...............

(A) उपधा (B) विभाषा
(C) उपसर्गः (D) टि

स्रोत–अष्टाध्यायी (1.1.64) - ईश्वरचन्द्र, पेज–48

15. (C) **16.** (D) **17.** (B) **18.** (B) **19.** (C) **20.** (D) **21.** (B) **22.** (A) **23.** (A) **24.** (B) **25.** (B) **26.** (B) **27.** (A)

28. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत –

(अ)	निष्ठा	1.	अपृक्तम्
(ब)	आत् ऐच्	2.	क्तक्तवतू
(स)	ईकारान्तद्विवचनम्	3.	वृद्धिः
(द)	एकाल्प्रत्ययः	4.	प्रगृह्यम्

कूट :

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	4	3	1	2
(B)	1	4	3	2
(C)	2	3	4	1
(D)	4	1	2	3

स्रोत–अष्टाध्यायी - ईश्वरचन्द्र, अ = 1.1.25 पेज–19, ब=1.1.1 पेज–05, स = 1.1.11 पेज–13, द = 1.2.41 पेज–68

29. स्वतन्त्रः................

(A) कर्ता (B) करणम्
(C) उत्तमः (D) कारकम्

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–40

30. 'जपमनु प्रावर्षत्'................अत्र द्वितीया केन सूत्रेण ?

(A) अनुर्लक्षणे
(B) कर्मप्रवचनीययुक्ते द्वितीया
(C) कर्मणि द्वितीया
(D) लक्षणेत्थम्भूताख्यान .... प्रतिपर्य नवः

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनिपाण्डेय, पेज–32

31. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत –

(अ)	ग्रामादायाति	1.	आख्यातोपयोगे
(ब)	पुष्पेभ्यः स्पृहयति	2.	ध्रुवमपायेऽपादानम्
(स)	पुत्रेण सहागतः	3.	स्पृहेरीप्सितः
(स)	उपाध्यायादधीते	4.	सहयुक्तेऽप्रधाने

कूट :

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	4	3	2	1
(B)	2	3	4	1
(C)	2	3	1	4
(D)	3	4	1	2

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज– अ = 59, ब = 49, स = 42, द = 62

32. 'अधिहरि' इत्यत्र कः समासः ?

(A) अव्ययीभावः (B) द्वन्द्वः
(C) कर्मधारयः (D) तत्पुरुषः

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज–21

33. समीचीनां तालिकां चिनुत –

(अ)	कर्मधारयः	1.	पीताम्बरः
(ब)	अव्ययीभावः	2.	त्रिभुवनम्
(स)	द्विगुः	3.	निर्मक्षिकम्
(द)	बहुव्रीहिः	4.	कृष्णसर्पः

कूट :

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	1	3	2	4
(B)	3	1	4	2
(C)	2	3	4	1
(D)	4	3	2	1

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4) अ=115, ब = 28, स = 111, द = 191

34. अधोनिर्दिष्टेषु वियोगात्मकभाषा का –

(A) संस्कृतम् (B) ग्रीक
(C) लैटिन (D) हिन्दी

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–358

35. अधोनिर्दिष्टेषु कण्ठ्यवर्णः.............

(A) ग् (B) ट्
(C) ज् (D) इ

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–148

36. एतेषु संवृतस्वरः कः –

(A) ए (B) ऊ
(C) आ (D) न

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–149

37. ''आ परितोषाद् विदुषां न साधु मन्ये प्रयोगविज्ञानम्'' इति वाक्यं वर्तते –

(A) भासस्य (B) भवभूतेः
(C) भारवेः (D) कालिदासस्य

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/2) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–08

28.(C) **29.**(A) **30.**(B) **31.**(B) **32.** (A) **33.** (D) **34.** (D) **35.** (A) **36.** (B) **37.** (D)

38. प्रबोधचन्द्रोदयः –

(A) चम्पूकाव्यम् (B) गद्यकाव्यम्
(C) पद्यकाव्यम् (D) रूपकम्

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा'ऋषि', पेज–543

39. 'छायाङ्कः' कस्मिन् नाटके निबद्धम् –

(A) अभिज्ञानशाकुन्तले (B) उत्तररामचरिते
(C) मुद्राराक्षसे (D) प्रतिमानाटके

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का इतिहास-उमाशंकरशर्मा 'ऋषि', पेज–529

40. समीचीनां तालिकां चिनुत –

(अ)	ऋतुसंहारम्	1.	चारित्रिककाव्यम्
(ब)	भजगोविन्दम्	2.	महाकाव्यम्
(स)	राजतरङ्गिणी	3.	खण्डकाव्यम्
(द)	नैषधीयचरितम्	4.	स्तोत्रकाव्यम्

कूट :

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	4	1	3	2
(B)	1	3	2	4
(C)	3	4	1	2
(D)	1	2	4	3

संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकरशर्मा 'ऋषि', पेज–330, 315, 285

**41. स्तनयुगमश्रुस्नातं समीपतरवर्तिहृदयशोकाग्नेः।
चरति विमुक्ताहारं व्रतमिव भवतो रिपुस्त्रीणाम् ॥
इति श्लोकः निबद्धः वर्तते –**

(A) रघुवंशे (B) हर्षचरिते
(C) दशकुमारचरिते (D) कादम्बर्याम्

स्रोत–कादम्बरी कथामुख-तारिणीश झा, पेज–100

42. 'प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः' इति वचनं वर्तते –

(A) वनेचरस्य (B) युधिष्ठिरस्य
(C) नारदस्य (D) द्रौपद्याः

स्रोत–किरातार्जुनीयम् - (1/25) - रामसेवक दुबे, पेज-103

43. 'शरीरभाजां भवदीयदर्शनं व्यनक्ति कालत्रितयेऽपि योग्यताम्' इदं वाक्यमस्ति –

(A) माघकाव्ये (B) किरातार्जुनीये
(C) नैषधे (D) कुमारसंभवे

स्रोत–शिशुपालवधम् (1/26) - हरगोविन्द शास्त्री, पेज-19

44. 'मालतीमाधवम्' – नाटकस्य इतिवृत्तं वर्तते –

(A) प्रसिद्धम् (B) उत्पाद्यम्
(C) कविकल्पितम् (D) चरित्रकम्

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का इतिहास - बलदेव उपाध्याय, पेज–543

45. 'उपसंहृतिः' नाम -

(A) अवस्थाविशेषः
(B) अर्थोपक्षेपकविशेषः
(C) रूपकविशेषः
(D) सन्धिविशेषः

स्रोत–दशरूपक - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज–27

46. 'चूलिका' तावत् -

(A) अर्थोपक्षेपकः (B) सन्धिः
(C) अवस्था (D) रूपकम्

स्रोत–साहित्यदर्पण (6/54) – शालिग्राम शास्त्री, पेज–180

47. अद्भुतरसस्य स्थायीभावः भवति -

(A) हासः (B) उत्साहः
(C) विस्मयः (D) जुगुप्सा

स्रोत–साहित्यदर्पण (3/242) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–120

48. 'स्मितम्' -

(A) शृङ्गाररसभेदः (B) हास्यरसभेदः
(C) वीररसभेदः (D) शान्तरसभेदः

स्रोत–साहित्यदर्पण (3/217) – शालिग्राम शास्त्री, पेज–115

49. सङ्केतः कुत्र गृह्यते -

(A) जातौ
(B) व्यक्तौ
(C) जातिविशिष्टव्यक्तौ
(D) जातिव्यक्त्याकृतिषु

स्रोत–साहित्यदर्पण (2/4) – शालिग्राम शास्त्री, पेज–27

50. कस्य काव्यलक्षणं खण्डितं विश्वनाथेन –

(A) मम्मटस्य (B) भामहस्य
(C) राजशेखरस्य (D) दण्डिनः

स्रोत–साहित्यदर्पण - शालिग्राम शास्त्री, पेज–12-13

38. (D) **39.** (B) **40.** (C) **41.** (D) **42.** (A) **43.** (A) **44.** (C) **45.** (D) **46.** (A) **47.** (C) **48.** (B) **49.** (C) **50.** (A)

26	दिसम्बर 2008	UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् II

नोट : इस प्रश्नपत्र में **पचास (50)** बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के **दो (2)** अङ्क हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. 'गोपथ-ब्राह्मणं' केन वेदेन सह सम्बद्धं वर्तते –

(A) यजुर्वेदेन (B) सामवेदेन
(C) अथर्ववेदेन (D) ऋग्वेदेन

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–10

2. 'गृहपतिः' इति विशेषणं कस्य देवस्य प्रसिद्धम् –

(A) इन्द्रस्य (B) सवितुः
(C) अश्विनोः (D) अग्नेः

स्रोत–वैदिक माइथोलॉजी - रामकुमार राय, पेज–181

3. ''नाहं वेद भ्रातृत्वं नो स्वसृत्वम्'' इति मन्त्रपादः कुत्र विराजते ?

(A) यमयमीसंवादे (B) सरमापणिसंवादे
(C) विश्वामित्रनदीसंवादे (D) पुरूरवा-उर्वशीसंवादे

स्रोत–ऋग्वेद (सरमा-पणि संवाद) –10-108-10

4. वेदाङ्गेषु ज्योतिषमुपमीयते –

(A) हस्तेन (B) मुखेन
(C) पादेन (D) चक्षुषा

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–190

5. ''अन्धं तमः प्रविशन्ति'' इति वचनं कस्यामुपनिषदि वर्तते ?

(A) कठोपनिषदि (B) ईशोपनिषदि
(C) केनोपनिषदि (D) मुण्डकोपनिषदि

स्रोत–ईशावास्योपनिषद् (मन्त्र–9)

6. नैरुक्तमते कति देवताः ?

(A) तिस्रः (B) पञ्च
(C) चतस्रः (D) षट्

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–296

7. चरणव्यूहानुसारम् अथर्ववेदस्य कति शाखाः –

(A) षट् (B) सप्त
(C) नव (D) दश

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–98

8. कस्य स्थानस्य देव इन्द्रः –

(A) द्युस्थानस्य (B) अन्तरिक्षस्थानस्य
(C) पृथिवीस्थानस्य (D) जनस्थानस्य

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–296

9. ''देवानां चक्षुः सुभगा वहन्ती'' इति मन्त्रांशः कस्य सूक्तस्य-

(A) इन्द्रसूक्तस्य (B) उषस्सूक्तस्य
(C) अश्विनोः सूक्तस्य (D) अग्निसूक्तस्य

स्रोत–वैदिकसूक्तसंग्रह - विजय शंकर पाण्डेय, पेज–82

10. सामवेदसम्बद्धानि कति ब्राह्मणानि सन्ति –

(A) दश (B) अष्टौ
(C) पञ्च (D) एकादश

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–10

11. यज्ञकालनिर्णयार्थं कस्य वेदाङ्गस्योपयोगः भवति –

(A) कल्पस्य (B) ज्योतिषस्य
(C) शिक्षायाः (D) निरुक्तस्य

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–208

12. अथर्ववेदे कति काण्डानि सन्ति –

(A) विंशतिः (B) दश
(C) षट् (D) अष्टादश

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–102

13. अध्यासं पण्डिताः...................इति मन्यन्ते –

(A) माया (B) प्रकृतिः
(C) अविद्या (D) ज्ञानम्

स्रोत–भारतीयदर्शन - चन्द्रधर शर्मा, पेज–240

14. वेदान्ते 'अथ' शब्दस्य अर्थो भवति –

(A) मङ्गलः (B) अधिकारः
(C) आनन्तर्यः (D) निरर्थकः

स्रोत–ब्रह्मसूत्र शांकरभाष्य - सत्यानन्द सरस्वती, पेज–21

15. सदानन्दस्य गुरोः नाम किम् –

(A) आत्मानन्दः (B) विद्यानन्दः
(C) रामानन्दः (D) अद्वयानन्दः

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–6

1. (C) **2.** (D) **3.** (B) **4.** (D) **5.** (B) **6.** (A) **7.** (C) **8.** (B) **9.** (B) **10.** (B) **11.** (B) **12.** (A) **13.** (A) **14.** (C) **15.** (D)

16. शब्दसाक्षात्कारे ....सन्निकर्षः –
(A) संयोगः (B) समवायः
(C) विशेष्यविशेषणभावः (D) समवेतसमवायः
स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–79

17. न्यायवैशेषिकमतानुसारं कति गुणाः स्वीकृताः –
(A) 12 (B) 20
(C) 25 (D) 24
स्रोत–तर्कसंग्रह - अनितासेन गुप्ता, पेज–29

18. प्रागभावप्रतियोगि भवति –
(A) कारणम् (B) कार्यम्
(C) करणम् (D) अभावः
स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–70

19. अनादि सान्तः भवति –
(A) प्रागभावः (B) अन्योन्याभावः
(C) प्रध्वंसाभावः (D) अत्यन्ताभावः
स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–122

20. तन्तवः पटस्य............भवति –
(A) निमित्त-कारणम् (B) असमवायि-कारणम्
(C) समवायि-कारणम् (D) सहकारि-कारणम्
स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–71

21. सांख्यानुसारं प्रकृतिः...................इव –
(A) माता (B) गृहिणी
(C) सुता (D) नर्तकी
स्रोत–सांख्यकारिका (का. 59)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–312

22. समीचीनां तालिकां चिनुत –
(अ) आत्मा 1. गुणः
(ब) शब्दः 2. अभावः
(स) तमस् 3. द्रव्यम्
(द) परत्वम् 4. जातिः

कूट :

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	3	2	1	4
(B)	1	3	2	4
(C)	3	1	2	4
(D)	1	2	3	4

स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता-अ = 28, ब = 29, द = 58

23. समीचीनां तालिकां चिनुत –
(अ) विश्वनाथः 1. अर्थसंग्रहः
(ब) अन्नंभट्टः 2. सांख्यकारिका
(स) ईश्वरकृष्णः 3. तर्कसंग्रहः
(द) लौगाक्षिभास्करः 4. कारिकावली

कूट :

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	4	3	2	1
(B)	1	2	3	4
(C)	4	3	1	2
(D)	3	4	2	1

स्रोत–भारतीय दर्शन - बलदेव उपाध्याय, पेज–222, 253, 313

24. सदानन्दमतेन ब्रह्म...................अस्ति –
(A) ज्ञानम् (B) विज्ञानम्
(C) अवस्तु (D) वस्तु
स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–37

25. वर्णानामतिशयितः सन्निधिः.............संज्ञः स्यात् –
(A) प्रातिपदिकम् (B) नदी
(C) संहिता (D) उपसर्जनम्
स्रोत–अष्टाध्यायी (1.4.108) - ईश्वरचन्द्र, पेज–147

26. सखिभिन्नस्य इवर्णान्तस्य.......का संज्ञा –
(A) नदी (B) निष्ठा
(C) गुणः (D) घि
स्रोत–अष्टाध्यायी (1.4.7) ईश्वरचन्द्र, पेज–111

27. निषेधविकल्पयोः..............संज्ञा -
(A) उपधा (B) विभाषा
(C) परिभाषा (D) प्रातिपदिकम्
स्रोत–अष्टाध्यायी (1.1.43) ईश्वरचन्द्र, पेज–25

28. ईदूदेद्द्विवचनं...............
(A) प्रकृतिभावः (B) निष्ठा
(C) प्रगृह्यम् (D) विभाषा
स्रोत–अष्टाध्यायी (1.1.11) ईश्वरचन्द्र, पेज–13

16. (B) **17.** (D) **18.** (B) **19.** (A) **20.** (C) **21.** (D) **22.** (C) **23.** (A) **24.** (D) **25.** (C) **26.** (D) **27.** (B) **28.** (C)

29. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत -

(अ) क्तक्तवतू — 1. सवर्णम्
(ब) तुल्यास्यप्रयत्नं — 2. गुणः
(स) अत् एङ् — 3. टि
(द) अचोऽन्त्यादि — 4. निष्ठा

कूट :

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	4	3	1	2
(B)	4	1	2	3
(C)	1	4	3	2
(D)	3	2	4	1

स्रोत–अष्टाध्यायी - ईश्वरचन्द्र - अ = 1.1.25 पेज–19, ब = 1.1.9 पेज–11, स = 1.1.2 पेज–06, द = 1.1.63 पेज–47

30. अपादानादिविशेषैः अविवक्षितं कारकं..........

(A) अपादानम् (B) कर्म
(C) करणम् (D) किमपि न

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–19

31. क्रियासिद्धौ प्रकृष्टोपकारकं.............

(A) करणम् (B) अपादानम्
(C) तादर्थ्यम् (D) उपकारकम्

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–40

32. 'जटाभिः तापसः' - अत्र तृतीया केन सूत्रेण ?

(A) कर्तृकरणयोस्तृतीया (B) इत्थम्भूतलक्षणे
(C) येनाङ्गविकारः (D) हेतौ

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–43

33. 'सर्पिषः ज्ञानम्' - अत्र षष्ठी केन सूत्रेण ?

(A) ज्ञोऽविदर्थस्य करणे (B) षष्ठी शेषे
(C) अधीगर्थदयेशां कर्मणि (D) कर्तृकर्मणोः कृति

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–76

34. अधोनिर्दिष्टेषु तालव्यवर्णः.......कः अस्ति –

(A) ज (B) ख
(C) ड (D) म

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–17

35. अधोनिर्दिष्टेषु संयोगात्मकभाषा..............

(A) अंग्रेजी (B) संस्कृतम्
(C) हिन्दी (D) बांग्ला

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–365

36. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत –

(अ) सहरि — 1. नञ् तत्पुरुषः
(ब) कण्ठेकालः — 2. द्वन्द्वः
(स) पाणिपादम् — 3. अव्ययीभावः
(द) अनश्वः — 4. बहुव्रीहिः

कूट :

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	1	2	4	3
(B)	3	2	1	4
(C)	2	4	3	1
(D)	3	4	2	1

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4)
पेज–अ=35, ब=188, स=240, द=196

37. ''सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तः करणप्रवृत्तयः'' इति कस्य वाक्यम् अस्ति –

(A) भर्तृहरेः (B) भासस्य
(C) कालिदासस्य (D) भवभूतेः

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/22) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–54

38. 'मधुराविजयम्' नाम काव्यम् अन्तर्भवति –

(A) लघुकाव्येषु (B) चारित्रिककाव्येषु
(C) गद्यकाव्येषु (D) स्तोत्रकाव्येषु

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का अभिनव इतिहास-राधाबल्लभत्रिपाठी, पेज–433

39. वरतन्तुशिष्यस्य कौत्सस्य वृत्तान्तमस्मिन् काव्ये निबद्धं वर्तते –

(A) कुमारसम्भवे (B) रघुवंशे
(C) माघे (D) किरातार्जुनीये

स्रोत–रघुवंशम् (5/1)-कृष्णमणि त्रिपाठी, पेज–138 एवं भू. पेज–13

29. (B) **30.** (B) **31.** (A) **32.** (B) **33.** (A) **34.** (A) **35.** (B) **36.** (D) **37.** (C) **38.** (B) **39.** (B)

40. समीचीनां तालिकां चिनुत –

(अ) मुरारिः		1. मुद्राराक्षसम्	
(ब) शूद्रकः		2. प्रतिमानाटकम्	
(स) भासः		3. मृच्छकटिकम्	
(द) विशाखदत्तः		4. अनर्घराघवम्	

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	3	4	1	2
(B)	4	3	2	1
(C)	2	1	4	3
(D)	1	2	3	4

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–अ=429, ब = 299, स = 275, द = 354

41. 'अनिर्वर्णनीयं परकलत्रम्' इति वाक्यम् अस्ति –

(A) भरतस्य (B) दुष्यन्तस्य
(C) युधिष्ठिरस्य (D) रघोः

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (अंक-5)–कपिलदेव द्विवेदी, पेज–267

42. 'मुद्राराक्षसनाटकस्य' कथावस्तु भवति –

(A) प्रसिद्धम् (B) उत्पाद्यम्
(C) कविकल्पितम् (D) चारित्रकम्

स्रोत–मुद्राराक्षसम् - परमेश्वरदीन पाण्डेय, भू. पेज–06

43. 'प्राप्त्याशा' भवति –

(A) सन्धिविशेषः (B) अवस्थाविशेषः
(C) रूपकविशेषः (D) अनुभावविशेषः

स्रोत–साहित्यदर्पण (6/71) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–183

44. अश्वघोषस्य कृतिरियम् –

(A) हर्षचरितम् (B) नलचरितम्
(C) नैषधीयचरितम् (D) बुद्धचरितम्

संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेवद्विवेदी, पेज–169

45. 'करुणरसस्य' स्थायीभावः कः –

(A) शोकः (B) हर्षः
(C) हासः (D) उत्साहः

स्रोत–साहित्यदर्पण (3/226) – शालिग्राम शास्त्री, पेज–117

46. पताकाप्रकरीभेदात् द्विधा भवति –

(A) प्राकरणिकम् (B) प्रासङ्गिकम्
(C) प्रधानम् (D) चारित्रकम्

स्रोत–साहित्यदर्पण (6/67) – शालिग्राम शास्त्री, पेज–182

47. हास्यरसप्रभेदाः सन्ति -

(A) त्रयः (B) चत्वारः
(C) पञ्च (D) षट्

स्रोत–साहित्यदर्पण (6/217) – शालिग्राम शास्त्री, पेज–115

48. अर्थोपक्षेपकाः उपयुज्यन्ते -

(A) रूपकेषु (B) काव्येषु
(C) प्रकरणग्रन्थेषु (D) धर्मशास्त्रेषु

स्रोत–साहित्यदर्पण (6/54-55) – शालिग्रामशास्त्री, पेज–180

49. 'गौर्वाहीकः' इत्युदाहरणम् अस्ति -

(A) जहल्लक्षणायाः
(B) अजहल्लक्षणायाः
(C) सारोपालक्षणायाः
(D) साध्यवसानालक्षणायाः

स्रोत–साहित्यदर्पण - शालिग्रामशास्त्री, पेज–36

50. तात्पर्यार्थमङ्गीकुर्वन्ति -

(A) अन्विताभिधानवादिनः
(B) अभिहितान्वयवादिनः
(C) नैरुक्तिकाः
(D) शब्दब्रह्मवादिनः

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–36

40. (B) **41.** (B) **42.** (A) **43.** (B) **44.** (D) **45.** (A) **46.** (B) **47.** (D) **48.** (A) **49.** (C) **50.** (B)

27	जून 2009	UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् II

नोट : अस्मिन् प्रश्नपत्रे **पञ्चाशत् (50)** बहुवैकल्पिकप्रश्नाः सन्ति। एकैकस्य प्रश्नस्य **अङ्कद्वयं (2)** वर्तते। सर्वे प्रश्नाः समाधेयाः।

1. 'आवाहनं देवानां वहनञ्च हविषाम्' इत्यस्ति –
(A) अग्निकर्म (B) विष्णुकर्म
(C) रुद्रकर्म (D) इन्द्रकर्म

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री, भू. पेज–14

2. 'रसानुप्रदानं वृत्रवधः' इत्यस्ति –
(A) बृहस्पतिकर्म (B) रुद्रकर्म
(C) सवितृकर्म (D) इन्द्रकर्म

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–298

3. काण्वसंहिता वर्तते –
(A) कृष्णयजुर्वेदस्य (B) सामवेदस्य
(C) शुक्लयजुर्वेदस्य (D) अथर्ववेदस्य

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–09

4. संख्यया स्वराङ्कनं कस्मिन् वेदे भवति –
(A) यजुर्वेदे (B) सामवेदे
(C) अथर्ववेदे (D) ऋग्वेदे

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–87

5. ''स्वाध्यायान्मा प्रमदः'' वर्तते –
(A) ईशोपनिषदि (B) कठोपनिषदि
(C) तैत्तिरीयोपनिषदि (D) ऐतरेयोपनिषदि

स्रोत–ईशादि नौ उपनिषद् (तैत्तिरीयोपनिषद्) गीताप्रेस, पेज–362

6. 'पुरूरवा-उर्वशी-संवादो' कुत्र वर्तते –
(A) ऋग्वेदस्य दशममण्डले
(B) अथर्ववेदस्य नवमकाण्डे
(C) शतपथब्राह्मणस्य प्रथमकाण्डे
(D) यजुर्वेदस्य पञ्चदशाध्याये

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–57

7. 'सरमापणिसूक्ते' छन्दो वर्तते –
(A) त्रिष्टुप् (B) जगती
(C) बृहती (D) गायत्री

स्रोत–ऋग्वेद (10.108) - वेदान्ततीर्थ, पेज–463

8. बालगङ्गाधरतिलकानुसारं ऋग्वेदस्य कालः ख्रीस्तपूर्वं वर्तते –
(A) 6000 ई०पू० (B) 8000 ई०पू०
(C) 2500 ई०पू० (D) 3500 ई०पू०

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–40

9. 'माध्यन्दिनीयसंहितायाम्' उदात्तस्वरस्य अङ्कनं भवति –
(A) अधः (B) उपरिष्टात्
(C) तिर्यक् (D) किमपि न

स्रोत–संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (भाग-एक) पेज–269

10. मन्त्रब्राह्मणयोः सम्मिश्रणं कुत्र वर्तते –
(A) ऋग्वेदे (B) कृष्णयजुर्वेदे
(C) सामवेदे (D) अथर्ववेदे

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–68-69

11. शुक्ल-यजुर्वेदमाध्यन्दिनसंहितायां मन्त्रसंख्या वर्तते–
(A) 1975 (B) 2000
(C) 1852 (D) 1900

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–65

12. 'शिक्षाग्रन्थेषु' प्रतिपाद्यते –
(A) वेदार्थनिर्णयधर्मः (B) कालज्ञानम्
(C) उच्चारणधर्मः (D) शब्दसाधुत्वम्

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–190

13. सत्कार्यवादे उत्पत्तेः पूर्वं कार्यं भवति –
(A) सदसत् (B) अव्यक्तरूपेण सत्
(C) उभयरूपेण सत् (D) व्यक्तरूपेण सत्

स्रोत–सांख्यकारिका (का. 09)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–100
भारतीय दर्शन - बलदेव उपाध्याय, पेज–257

1. (A) **2.** (D) **3.** (C) **4.** (B) **5.** (C) **6.** (A) **7.** (A) **8.** (A) **9.** (D) **10.** (B) **11.** (A) **12.** (C) **13.** (B)

14. सांख्यदर्शने पृथिव्याः प्रादुर्भावः अस्ति –
(A) रसतन्मात्रात् (B) गन्धतन्मात्रात्
(C) शब्दतन्मात्रात् (D) स्पर्शतन्मात्रात्
स्रोत–सांख्यकारिका (का. 23)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–197

15. त्रिविधं प्रमाणं विद्यते –
(A) न्यायदर्शने (B) वेदान्तदर्शने
(C) मीमांसादर्शने (D) सांख्यदर्शने
स्रोत–सांख्यकारिका (का. 4) - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–47

16. त्रिकालमाभ्यन्तरकरणम् –
(A) सदानन्दमते (B) केशवमिश्रमते
(C) ईश्वरकृष्णमते (D) जैमिनिमते
स्रोत–सांख्यकारिका (का. 33)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–234

17. अद्वैतवेदान्ते जीवब्रह्मणोः स्वरूपम् –
(A) जीवब्रह्मैक्यम् (B) जीव एव पुरुषः
(C) जीव एव अज्ञानम् (D) जीव एव ईश्वरः
स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–30

18. अध्यारोपलक्षणमस्ति –
(A) जीवे ब्रह्मणारोपः (B) अवस्तुनि वस्त्वारोपः
(C) वस्तुनि अवस्त्वारोपः (D) न किमपि
स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–37

19. अनुबन्धः अस्ति –
(A) द्विविधः (B) त्रिविधः
(C) चतुर्विधः (D) पञ्चविधः
स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–09

20. सदसद्भ्याम् अनिर्वचनीयम् अस्ति –
(A) ज्ञानम् (B) ज्ञानाज्ञानम्
(C) अज्ञानम् (D) न किमपि
स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–37

21. न्यायदर्शने प्रमाणानि सन्ति –
(A) त्रीणि (B) चत्वारि
(C) पञ्च (D) षट्
स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज–50

22. 'गगनारविन्दं सुरभि' अत्र कः हेत्वाभासः –
(A) आश्रयासिद्धः (B) स्वरूपासिद्धः
(C) व्याप्यत्वासिद्धः (D) विरुद्धः
स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज–111

23. न्यायानुसारं कति प्रमेयाः सन्ति –
(A) दश (B) एकादश
(C) द्वादश (D) त्रयोदश
स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज–175

24. वेमादिकं पटस्य अस्ति –
(A) समवायिकारणम् (B) असमवायिकारणम्
(C) निमित्तकारणम् (D) किमपि न
स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवासशास्त्री, पेज–43

25. 'एकाल् प्रत्ययः' भवति –
(A) कृत् (B) सन्
(C) अपृक्तम् (D) तिङ्
स्रोत–अष्टाध्यायी (1.2.41) - ईश्वरचन्द्र, पेज–68

26. 'क्तक्तवतू' किमुच्यते –
(A) गतिः (B) निष्ठा
(C) गुणः (D) सवर्णम्
स्रोत–अष्टाध्यायी (1.1.25) - ईश्वरचन्द्र, पेज–19

27. विभाषायाः किं लक्षणम् अस्ति –
(A) सुप्तिङन्तम् (B) सामर्थ्यम्
(C) परः सन्निकर्षः (D) नवेति
स्रोत–अष्टाध्यायी (1.1.43) - ईश्वरचन्द्र, पेज–25

28. 'नदीसंज्ञया' उल्लिख्येते –
(A) ण्वुल्तृचौ (B) क्तक्तवतू
(C) उञः (D) यू स्र्याख्यौ
स्रोत–अष्टाध्यायी (1.4.3) ईश्वरचन्द्र, पेज–109

29. 'अदेङ्' इत्यस्य का संज्ञा –
(A) भ (B) टि
(C) गुणः (D) घु
स्रोत–अष्टाध्यायी (1.1.2) ईश्वरचन्द्र, पेज–06

14. (B) **15.** (D) **16.** (C) **17.** (A) **18.** (C) **19.** (C) **20.** (C) **21.** (B) **22.** (A) **23.** (C) **24.** (C) **25.** (C) **26.** (B) **27.** (D) **28.** (D) **29.** (C)

30. समीचीनां तालिकां चिनुत –

(अ) प्रातिपदिकम् (i) आदैच्
(ब) वृद्धिः (ii) सुप्तिङन्तम्
(स) पदम् (iii) अचोऽन्त्यादि
(द) टि (iv) अर्थवदधातुरप्रत्ययः

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	(ii)	(iii)	(i)	(iv)
(B)	(iii)	(i)	(iv)	(ii)
(C)	(iv)	(i)	(ii)	(iii)
(D)	(i)	(iv)	(iii)	(ii)

स्रोत–अष्टाध्यायी - ईश्वरचन्द्र, अ = 1.2.45 पेज–69, ब = 1.1.1 पेज–5, स = 1.4.14 पेज–114, द = 1.1.63 पेज–47

31. 'साधकतमं' कारकं किमुच्यते –

(A) कर्म (B) अधिकरणम्
(C) करणम् (D) अपादानम्

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–40

32. 'अन्तर्धौ येनादर्शनमिच्छति' अत्र का विभक्तिः –

(A) द्वितीया (B) पञ्चमी
(C) सप्तमी (D) तृतीया

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–61

33. 'संख्यापूर्वः' कः समासः भवति –

(A) केवलः (B) तत्पुरुषः
(C) द्विगुः (D) बहुव्रीहिः

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज–109

34. 'उपकृष्णम्' इत्यस्य पदस्य विग्रहः वर्तते –

(A) कृष्णस्य सादृश्यम् (B) कृष्णस्य पश्चात्
(C) कृष्णस्य समीपम् (D) कृष्णं प्रति

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज–26

35. 'अकुहविसर्जनीयानाम्' उच्चारणस्थानं किम् अस्ति-

(A) मूर्धा (B) ओष्ठौ
(C) कण्ठः (D) तालु

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–17

36. मूर्धन्यो भवति –

(A) प (B) ड
(C) ल (D) न

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–17

37. यरलवाः वर्णाः भवन्ति –

(A) स्पृष्टाः (B) अन्तःस्थाः
(C) ऊष्मवर्णाः (D) अनुनासिकाः

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–19

38. 'हितोपदेशस्य' रचयिता कः अस्ति –

(A) नारायणपण्डितः (B) विष्णुशर्मा
(C) दण्डी (D) बाणः

संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–582

39. नाटकस्य उदाहरणं भवति –

(A) मृच्छकटिकम् (B) मालतीमाधवम्
(C) वेणीसंहारम् (D) त्रिपुरविजयः

संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मकइतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–382

40. 'प्रतिमानाटकस्य' रचयिता वर्तते –

(A) कालिदासः (B) भवभूतिः
(C) भट्टनारायणः (D) भासः

संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–275

41. ''अज्ञातहृदयेष्वेवं वैरीभवति सौहृदम्'' इति वाक्यस्य कर्ता वर्तते –

(A) भारविः (B) कालिदासः
(C) माघः (D) श्रीहर्षः

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (5/24) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–291

42. ''रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्'' इति केन उक्तम् -

(A) कुन्तकेन (B) जगन्नाथेन
(C) आनन्दवर्धनेन (D) मम्मटेन

स्रोत–रसगङ्गाधर (1.1) - मदनमोहन झा, पेज–10

43. आनन्दवर्धनाचार्यमतानुसारं 'काव्यस्यात्मा' भवति –

(A) ध्वनिः (B) रसः
(C) रीतिः (D) अलङ्कारः

स्रोत–ध्वन्यालोक (1/1) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–2

30. (C) **31.** (C) **32.** (B) **33.** (C) **34.** (C) **35.** (C) **36.** (B) **37.** (B) **38.** (A) **39.** (C) **40.** (D) **41.** (B) **42.** (B) **43.** (A)

44. 'करुणरसस्य' स्थायिभावः वर्तते –

(A) भयम् (B) क्रोधः
(C) जुगुप्सा (D) शोकः

स्रोत–साहित्यदर्पण (3/223) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–116

45. 'मदेन भाति कलभः प्रतापेन महीपतिः' इति वाक्यं कस्यालङ्कारस्य उदाहरणम् अस्ति –

(A) उपमालङ्कारस्य (B) दीपकालङ्कारस्य
(C) अर्थान्तरन्यासालङ्कारस्य (D) दृष्टान्तालङ्कारस्य

46. 'सौन्दर्यमलङ्कारः' इति केन प्रतिपादितम् –

(A) रुय्यकेन (B) रुद्रटेन
(C) भामहेन (D) वामनेन

स्रोत–छन्दोलंकारसौरभम् - अभिराजराजेन्द्र मिश्र, पेज–54

47. विश्वनाथः अस्ति –

(A) रसवादी (B) अलङ्कारवादी
(C) ध्वनिवादी (D) वक्रोक्तिवादी

स्रोत–साहित्यदर्पण (1/3) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–19

48. भरतेनोक्ताः कति अलङ्काराः सन्ति –

(A) चत्वारः
(B) विंशतिः
(C) पञ्च
(D) सप्त

स्रोत—नाट्यशास्त्र - ब्रजमोहन चतुर्वेदी, भू. पेज–17

49. 'गङ्गायां घोषः' इत्यत्र वर्तते –

(A) उपादानलक्षणा
(B) गौणी लक्षणा
(C) प्रयोजनवती लक्षणा
(D) सारोपा लक्षणा

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–53

50. 'व्यक्तिविवेकस्य' रचयिता का वर्तते –

(A) अभिनवगुप्तः (B) भट्टनायकः
(C) भट्टतौतः (D) महिमभट्टः

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का इतिहास-उमाशंकरशर्मा 'ऋषि', पेज–582

44. (D) **45.** (D) **46.** (D) **47.** (A) **48.** (A) **49.** (C) **50.** (D)

28	दिसम्बर 2009	UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् II

नोट : अस्मिन् प्रश्नपत्रे पञ्चाशत् (50) बहुवैकल्पिकप्रश्नाः सन्ति। एकैकस्य प्रश्नस्य अङ्कद्वयं (2) वर्तते। सर्वे प्रश्नाः समाधेयाः।

1. कः द्युस्थानीयो देवः अस्ति –

(A) वायुः (B) सूर्यः
(C) इन्द्रः (D) रुद्रः

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–296

2. दशतयी शब्देन कः उच्यते –

(A) ऋग्वेदः (B) यजुर्वेदः
(C) सामवेदः (D) अथर्ववेदः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकरशर्मा 'ऋषि', पेज–35

3. निरुक्तानुसारं मुख्यतः कति देवताः –

(A) चतस्रः (B) पञ्च
(C) तिस्रः (D) सप्त

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–296

4. 'मैत्रायणीसंहिता' कुत्र वर्तते –

(A) ऋग्वेदे (B) यजुर्वेदे
(C) सामवेदे (D) अथर्ववेदे

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–09

5. कति लक्षणात्मकः ब्राह्मणग्रन्थो भवति –

(A) दश (B) द्वादश
(C) पञ्च (D) एकादश

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–115

6. 'विश्वामित्रनदीसंवादः' कुत्र वर्तते –

(A) ऋग्वेदस्य दशममण्डले
(B) ऋग्वेदस्य तृतीयमण्डले
(C) यजुर्वेदस्य पञ्चमाध्याये
(D) अथर्ववेदस्य द्वितीयकाण्डे

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–57

7. ''आत्मनस्तु कामाय सर्वं प्रियं भवति'' इति उक्तम् -

(A) कठोपनिषदि (B) बृहदारण्यकोपनिषदि
(C) मुण्डकोपनिषदि (D) छान्दोग्योपनिषदि

स्रोत–बृहदारण्यकोपनिषद् - गीताप्रेस, पेज–546

8. उपनिषदा प्रतिपाद्यते –

(A) कर्मकाण्डम् (B) ज्ञानकाण्डम्
(C) यन्त्रज्ञानम् (D) वास्तुज्ञानम्

स्रोत–तैत्तिरीयोपनिषद् - चुन्नीलाल शुक्ल प्रस्तावना, पेज–1

9. वेदस्य अपौरुषेयत्त्वं कः स्वीकरोति –

(A) वेबरः (B) मैक्समूलरः
(C) विल्सनः (D) जैमिनिः

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–12

10. मैक्समूलरमतानुसारम् ऋग्वेदस्य कालो वर्तते –

(A) 1200 ई. पू. (B) 3000 ई. पू.
(C) 5000 ई. पू. (D) 4000 ई. पू.

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–39

11. ऋग्वेदसंहितायाम् अष्टकसंख्या अस्ति –

(A) दश (B) द्वादश
(C) अष्टौ (D) चतुष्षष्टिः

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–46

12. वेदाङ्गेषु छन्दः उपमीयते –

(A) पादाभ्याम् (B) चक्षुषा
(C) मुखेन (D) श्रोत्रेण

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–190

13. 'उपादानग्रहणात्' इत्येतेन कः पुष्यते –

(A) सत्कार्यवादः (B) पुरुषसिद्धिः
(C) प्रकृतिसिद्धिः (D) सृष्टिप्रक्रिया

स्रोत–सांख्यकारिका (का. 09)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-100

1. (B) **2.** (A) **3.** (C) **4.** (B) **5.** (A) **6.** (B) **7.** (B) **8.** (B) **9.** (D) **10.** (A) **11.** (C) **12.** (A) **13.** (A)

14. जन्ममरणकरणानाम् इत्येतेन सिद्धम् –

(A) प्रकृतिस्वरूपम् (B) गुणस्वरूपम्
(C) दुःखस्वरूपम् (D) पुरुषबहुत्त्वम्

स्रोत–सांख्यकारिका (का. 18)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–180

15. कर्तृत्वं कस्य धर्मः अस्ति –

(A) पुरुषस्य (B) अहङ्कारस्य
(C) मूलप्रकृतेः (D) ज्ञानेन्द्रियाणाम्

स्रोत–सांख्यकारिका-20 - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–191

16. चैतन्यम् अस्ति –

(A) प्रकृतेः (B) पुरुषस्य
(C) गुणत्रयस्य (D) महाभूतस्य

स्रोत–सांख्यकारिका (का. 20)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–191

17. जीवन्मुक्तिः कस्मिन् दर्शने अस्ति –

(A) जैनदर्शने (B) बौद्धदर्शने
(C) चार्वाकदर्शने (D) वेदान्तदर्शने

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–185

18. व्यानः वायुर्वर्तते –

(A) हृदि (B) नाभिमण्डले
(C) कण्ठदेशे (D) सर्वशरीरगः

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–69

19. 'वेदान्तसारस्य' कर्त्ता कः अस्ति –

(A) ईश्वरकृष्णः (B) सदानन्दः
(C) सुरेश्वराचार्यः (D) शङ्कराचार्यः

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, भू. पेज–xix

20. अनुबन्धः अस्ति –

(A) पञ्च (B) त्रयः
(C) चत्वारः (D) द्वौ

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–09

21. प्रत्यक्षं ज्ञानमस्ति –

(A) योगार्थसन्निकर्षजम् (B) इन्द्रियार्थसन्निकर्षजम्
(C) पदार्थसन्निकर्षजम् (D) तत्त्वार्थसन्निकर्षजम्

स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–16

22. 'तन्तुपटयोः' कः सम्बन्धः –

(A) समवायिसम्बन्धः (B) असमवायिसम्बन्धः
(C) निमित्तसम्बन्धः (D) न कोऽपि सम्बन्धः

स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–71

23. हेत्वाभासः कतिविधः ?

(A) चतुर्विधः (B) पञ्चविधः
(C) द्विविधः (D) त्रिविधः

स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–95

24. न्यायमते कति प्रमाणानि सन्ति ?

(A) षट् (B) चत्वारि
(C) पञ्च (D) त्रीणि

स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज–50

25. क्तक्तवतूप्रत्यययोः का संज्ञा अस्ति –

(A) टि (B) घि
(C) नदी (D) निष्ठा

स्रोत–अष्टाध्यायी (1.1.25) - ईश्वरचन्द्र, पेज–19

26. ईदूदेद्द्विवचनं किं भवति –

(A) प्रातिपदिकम् (B) सुप्
(C) प्रगृह्यम् (D) तद्धितः

स्रोत–अष्टाध्यायी (1.1.11) - ईश्वरचन्द्र, पेज–13

27. 'इचुयशानां' किं स्थानम् –

(A) दन्तः (B) मूर्धा
(C) तालु (D) ओष्ठौ

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–17

28. पदम् अस्ति –

(A) योग्यताकांक्षासत्तियुक्तम् (B) सुप्तिङन्तम्
(C) समासयुक्तम् (D) सन्धियुक्तम्

स्रोत–अष्टाध्यायी (1.4.14) - ईश्वरचन्द्र, पेज–114

29. ''सह साकं सार्धम्'' इतियोगे किं कारकं भवति –

(A) कर्त्ता (B) कर्म
(C) करणम् (D) सम्प्रदानम्

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–43

14. (D) **15.** (C) **16.** (B) **17.** (D) **18.** (D) **19.** (B) **20.** (C) **21.** (B) **22.** (A) **23.** (B) **24.** (B)
25. (D) **26.** (C) **27.** (C) **28.** (B) **29.** (C)

30. 'एकाल् प्रत्ययः' किम् –

(A) घि (B) नदी
(C) उपधा (D) अपृक्तम्

स्रोत–अष्टाध्यायी (1.2.41) - ईश्वरचन्द्र, पेज–68

31. कादयो मावसानाः सन्तिः –

(A) स्पर्शाः (B) अर्धस्वराः
(C) तालव्याः (D) मूर्धन्याः

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–20

32. 'भारतीय-आर्यभाषायाः' कति अवस्थाः सन्ति –

(A) चतस्रः (B) पञ्च
(C) तिस्रः (D) षट्

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–425

33. 'परः सन्निकर्षः' अस्ति –

(A) वृद्धिः (B) प्रातिपदिकम्
(C) सर्वनामस्थानम् (D) संहिता

स्रोत–अष्टाध्यायी (1.4.108) - ईश्वरचन्द्र, पेज–147

34. ''पञ्चानां गङ्गानां समाहारः'' इत्यत्र समासः अस्ति –

(A) द्विगुः (B) तत्पुरुषः
(C) अव्ययीभावः (D) बहुव्रीहिः

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज–43

35. मूर्धन्येषु अन्तर्भवति –

(A) य् (B) ल्
(C) ष् (D) ह्

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–17

36. समीचीनां तालिकां चिनुत –

(अ) अपृक्तम् (i) अदेङ्
(ब) वृद्धिः (ii) इग्यणः
(स) गुणः (iii) एकाल् प्रत्ययः
(द) सम्प्रसारणम् (iv) आदैच्

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	(iii)	(iv)	(i)	(ii)
(B)	(ii)	(i)	(iii)	(iv)
(C)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)
(D)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)

स्रोत–अष्टाध्यायी - ईश्वरचन्द्र, अ = 1.2.41 पेज–68, ब = 1.1.1 पेज–05, स = 1.1.2 पेज–06, द = 1.1.44 पेज–26

37. ''पुष्पेभ्यः स्पृहयति'' अत्र केन सूत्रेण विभक्तिः –

(A) कर्तृकर्मणोः कृति
(B) अपादाने पञ्चमी
(C) रुच्यर्थानां प्रीयमाणः
(D) स्पृहेरीप्सितः

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–49

38. 'हर्षचरितस्य' रचयिता अस्ति –

(A) बाणभट्टः (B) श्रीहर्षः
(C) दण्डी (D) हर्षदेवः

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का इतिहास-उमाशंकरशर्मा 'ऋषि', पेज–395

39. ''वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः'' - इत्यस्ति –

(A) शिशुपालवधे (B) बुद्धचरिते
(C) किरातार्जुनीये (D) नैषधीयचरिते

स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/8) –अभिराज राजेन्द्र मिश्र, पेज–50

40. 'अर्थो हि कन्या परकीय एव' - इति वाक्यस्य कर्ता वर्तते –

(A) कालिदासः (B) माघः
(C) श्रीहर्षः (D) भारविः

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/22)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–240

41. 'पदलालित्याय' सुप्रसिद्धः कविरस्ति –

(A) भारविः (B) कालिदासः
(C) दण्डी (D) भवभूतिः

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–477

42. प्रतीयमानार्थस्य प्रतिपादिका शक्तिर्भवति –

(A) व्यञ्जना (B) लक्षणा
(C) अभिधा (D) तात्पर्या

स्रोत–ध्वन्यालोक (1/4) – आचार्य विश्वेश्वर, पेज–13

43. 'शान्तरसस्य' स्थायीभावः वर्तते –

(A) शोकः (B) शमः (निर्वेदः)
(C) उत्साहः (D) भयम्

स्रोत–साहित्यदर्पण (3/245) – शालिग्राम शास्त्री, पेज–121

30. (D) **31.** (A) **32.** (C) **33.** (D) **34.** (C) **35.** (C) **36.** (A) **37.** (D) **38.** (A) **39.** (C) **40.** (A) **41.** (C) **42.** (A) **43.** (B)

44. **'सौन्दरनन्दमहाकाव्यस्य' रचयिता वर्तते –**

(A) शङ्कराचार्यः (B) कालिदासः
(C) अश्वघोषः (D) हर्षदेवः

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का इतिहास-उमाशंकरशर्मा 'ऋषि', पेज–228

45. **'डिम' इति रूपके अङ्काः भवन्ति –**

(A) 5 (B) 6
(C) 10 (D) 4

स्रोत–साहित्यदर्पण (6/242) शालिग्राम शास्त्री, पेज–216

46. **'प्रकरणस्य' उदाहरणं भवति –**

(A) मुद्राराक्षसम् (B) मृच्छकटिकम्
(C) मालविकाग्निमित्रम् (D) वेणीसंहारम्

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मकइतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–307

47. **कादम्बरी अस्ति –**

(A) आख्यायिका (B) कथा
(C) परिकथा (D) कथानिका

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का इतिहास-उमाशंकरशर्मा 'ऋषि', पेज–395

48. **''श्रुतेरिवार्थं स्मृतिरन्वगच्छत्'' इत्यस्ति –**

(A) रामायणे
(B) महाभारते
(C) रघुवंशे
(D) वेणीसंहारे

स्रोत–रघुवंशम् (2/2) कृष्णमणि त्रिपाठी, पेज–43

49. **वाल्मीकिरामायणे प्रधानरसः अस्ति –**

(A) शान्तः (B) करुणः
(C) वीरः (D) रौद्रः

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेवद्विवेदी, पेज–112

50. **'हनुमानब्धिमतरत् दुष्करं किं महात्मनाम्' - इति वाक्यं कस्यालङ्कारस्य उदाहरणम् –**

(A) उपमालङ्कारस्य
(B) दृष्टान्तालङ्कारस्य
(C) दीपकालङ्कारस्य
(D) अर्थान्तरन्यासालङ्कारस्य

स्रोत–चन्द्रालोक (5.68), कृष्णमणि त्रिपाठी, पेज–133

44. (C) **45.** (D) **46.** (B) **47.** (B) **48.** (C) **49.** (B) **50.** (D)

29	जून 2010	UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् II

नोट : अस्मिन् प्रश्नपत्रे पञ्चाशत् (50) बहुवैकल्पिकप्रश्नाः सन्ति। एकैकस्य प्रश्नस्य अङ्कद्वयं (2) वर्तते। सर्वे प्रश्नाः समाधेयाः।

1. 'दशतयी' इति शब्देन कः विधीयते –
(A) यजुर्वेदः (B) सामवेदः
(C) ऋग्वेदः (D) अथर्ववेदः
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकरशर्मा 'ऋषि', पेज–35

2. का 'अन्तरिक्षदेवता' अस्ति –
(A) विष्णुः (B) इन्द्रः
(C) वरुणः (D) अग्निः
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–296

3. 'ईशोपनिषद्' केन सह सम्बद्धा वर्तते –
(A) ऋग्वेदेन (B) यजुर्वेदेन
(C) सामवेदेन (D) अथर्ववेदेन
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–09

4. 'पुरूरवा-उर्वशी-संवादः' कस्मिन् मण्डले वर्तते –
(A) सप्तममण्डले (B) दशममण्डले
(C) नवममण्डले (D) तृतीयमण्डले
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–57

5. 'वेदस्यापौरुषेयत्वं' कः न स्वीकरोति –
(A) विन्टरनिट्त्जः (B) सायणः
(C) माधवः (D) दयानन्दः
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेवद्विवेदी, पेज–17, 18, 23

6. कस्मात् कृष्णयजुर्वेदः कथ्यते –
(A) वैशम्पायनप्रणीतत्वात्
(B) मन्त्रब्राह्मणयोः साङ्कर्यात्
(C) दक्षिणदेशप्रसिद्धत्वात्
(D) पाठभेदात्
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–68

7. कति विकृतयः सन्ति –
(A) पञ्च (B) सप्त
(C) अष्ट (D) दश
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–08

8. ऋग्वेदस्य ब्राह्मणम् अस्ति –
(A) ऐतरेयब्राह्मणम् (B) तैत्तिरीयब्राह्मणम्
(C) आर्षेय-ब्राह्मणम् (D) गोपथब्राह्मणम्
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–09

9. कः कल्पसूत्रविषयः अस्ति –
(A) यागप्रयोगक्रमप्रतिपादनम् (B) शब्दार्थनिरूपणम्
(C) वेदार्थनिरूपणम् (D) पाठभेदनिरूपणम्
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–213

10. 'अहेडमानः' इति कुत्र वर्तते –
(A) वरुणसूक्ते (B) रुद्रसूक्ते
(C) विष्णुसूक्ते (D) बृहस्पतिसूक्ते
स्रोत–ऋग्वेद - 1.24.11

11. 'लोकमान्यतिलकमते' वेदस्य कालः –
(A) त्रिसहस्रवर्षेभ्यः पूर्वम्
(B) सार्धत्रिसहस्रवर्षेभ्यः पूर्वम्
(C) पञ्चसहस्रवर्षेभ्यः पूर्वम्
(D) दशसहस्रवर्षेभ्यः पूर्वम्
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–40

12. कः कोशः 'कारणशरीरम्' अस्ति –
(A) मनोमयकोशः (B) आनन्दमयकोशः
(C) विज्ञानमयकोशः (D) प्राणमयकोशः
स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–43

13. न्यायमते कति 'प्रमाणानि' सन्ति –
(A) त्रीणि (B) चत्वारि
(C) पञ्च (D) षट्
स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज–50

14. 'शब्दो न प्रमाणम्' इति कस्य मतम् –
(A) सांख्यस्य (B) योगस्य
(C) न्यायस्य (D) बौद्धस्य
स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज–136

1. (C) **2.** (B) **3.** (B) **4.** (B) **5.** (A) **6.** (B) **7.** (C) **8.** (A) **9.** (A) **10.** (A) **11.** (C) **12.** (B) **13.** (B) **14.** (D)

15. अनिर्वचनीयशब्दार्थः कः अस्ति –

(A) सद्भिन्नत्वम् (B) असद्भिन्नत्वम्

(C) सदसद्भिन्नत्वम् (D) अन्यद् यत् किञ्चित्

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–37

16. वेदान्तमते 'लिङ्गशरीरघटकाः' कति सन्ति –

(A) पञ्चदश (B) षोडश

(C) सप्तदश (D) अष्टादश

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–65

17. ज्ञानेन्द्रियाणां कस्माद् भूतांशाद् उत्पत्तिः भवति –

(A) राजसात् (B) सात्त्विकात्

(C) तामसात् (D) सम्मिलितात्

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–65

18. सत्कार्यवादसाधकाः कति हेतवः ?

(A) त्रयः (B) चत्वारः

(C) पञ्च (D) षट्

स्रोत–सांख्यकारिका (का. 09)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–100

19. 'शब्दः' कस्य विशेषगुणः अस्ति –

(A) वायोः (B) आकाशस्य

(C) आत्मनः (D) कालस्य

स्रोत–तर्कसंग्रह - अनितासेन गुप्ता, पेज–43

20. संस्कारः कस्मिन् पदार्थे अन्तर्भवति –

(A) द्रव्ये (B) गुणे

(C) कर्मणि (D) अभावे

स्रोत–तर्कसंग्रह - अनितासेन गुप्ता, पेज–29

21. सत्त्वरजस्तमसां साम्यावस्था किं कथ्यते –

(A) मूलप्रकृतिः (B) बुद्धिः

(C) अहङ्कारः (D) कैवल्यम्

स्रोत–सांख्यकारिका - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–39

22. अकुहविसर्जनीयानाम् उच्चारणस्थानं किम् ?

(A) मूर्धा (B) दन्ताः

(C) कण्ठः (D) तालु

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–17

23. 'वृद्धिसंज्ञाविधायकं' सूत्रं किम् अस्ति –

(A) वृद्धिरादैच् (B) वृद्धिरेचि

(C) अदेङ् गुणः (D) एचोऽयवायावः

स्रोत–अष्टाध्यायी (1.1.1) - ईश्वरचन्द्र, पेज–05

24. 'दम्पती' - अस्मिन् पदे समास-विग्रहः भवति :

(A) पिता च भ्राता च (B) पिता च पतिश्च

(C) पिता च पुत्रश्च (D) जाया च पतिश्च

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज–235

25. स्पर्शवर्णाः के ?

(A) ऊष्मवर्णाः (B) स्वराः

(C) कादयो मावसानाः (D) अन्तःस्थाः

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–20

26. 'संहितासंज्ञाविधायकं' सूत्रं किम् अस्ति –

(A) उच्चैः........... (B) नीचैः..........

(C) समाहारः....... (D) परः सन्निकर्षः......

स्रोत–अष्टाध्यायी (1.4.108) - ईश्वरचन्द्र, पेज–147

27. 'क्तक्तवतू ....' इति सूत्रेण का संज्ञा विधीयते –

(A) गतिः (B) निष्ठा

(C) उपधा (D) सवर्णम्

स्रोत–अष्टाध्यायी (1.1.25) - ईश्वरचन्द्र, पेज–19

28. 'भी' धातुप्रयोगे भयहेतौ का विभक्तिः भवति –

(A) तृतीया (B) षष्ठी

(C) पञ्चमी (D) सप्तमी

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–60

29. 'पुष्पेभ्यः स्पृहयति' इत्यत्र चतुर्थी-विधायकं सूत्रं किम् अस्ति –

(A) अकथितं च (B) दिवः कर्म च

(C) स्पृहेरीप्सितः (D) आख्यातोपयोगे

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–49

15. (C) **16.** (C) **17.** (B) **18.** (C) **19.** (B) **20.** (B) **21.** (A) **22.** (C) **23.** (A) **24.** (D) **25.** (C) **26.** (D) **27.** (B) **28.** (C) **29.** (C)

30. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत –

(अ) सवर्णम् (i) सुप्तिङन्तम्
(ब) उदात्तः (ii) यू स्त्र्याख्यौ
(स) पदम् (iii) तुल्यास्यप्रयत्नम्
(द) नदी (iv) उच्चैः

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	(ii)	(i)	(iv)	(iii)
(B)	(ii)	(iii)	(i)	(iv)
(C)	(iv)	(ii)	(iii)	(i)
(D)	(iii)	(iv)	(i)	(ii)

स्रोत–अष्टाध्यायी - ईश्वरचन्द्र, अ = 1.1.9 पेज–11, ब = 1.2.29 पेज–66, स = 1.4.14 पेज–114, द = 1.4.3 पेज–109

31. कः अर्धस्वर इति निर्दिश्यताम् –

(A) अ (B) ई
(C) ह् (D) य्

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–147

32. कः सन्ध्यक्षरः –

(A) अ (B) औ
(C) ऌ (D) ई

स्रोत–ऋग्वेदप्रातिशाख्यम् - वीरेन्द्र कुमार वर्मा, पेज–43

33. ''हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः'' इत्यस्ति –

(A) शिशुपालवधे (B) नैषधीयचरिते
(C) रघुवंशे (D) किरातार्जुनीये

स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/4) अभिराज राजेन्द्र मिश्र, पेज–42

34. उत्तररामचरिते अङ्गीरसः कः –

(A) वीरः (B) शृङ्गारः
(C) करुणः (D) हास्यः

स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू. पेज–82

35. कः पदस्य मुख्यार्थः –

(A) लक्ष्यार्थः (B) व्यङ्ग्यार्थः
(C) वाच्यार्थः (D) तात्पर्यार्थः

स्रोत–साहित्यदर्पण (2/3-4) - शालिग्रामशास्त्री, पेज–26

36. नाटके इतिवृत्तं किं भवति –

(A) कल्पितम् (B) प्रसिद्धम्
(C) अप्रसिद्धम् (D) मिश्रम्

स्रोत–साहित्यदर्पण (6/7) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–170

37. कस्य रूपकेषु प्रस्तावना 'स्थापना' इत्युच्यते –

(A) शूद्रकस्य (B) श्रीहर्षस्य
(C) भासस्य (D) भट्टनारायणस्य

स्रोत–स्वप्नवासवदत्तम् - शेषराज शर्मा रेग्मी, भू.पेज–12

38. कस्मिन् सन्ति त्रयो गुणाः –

(A) मेघदूते (B) रघुवंशे
(C) नैषधीये (D) शिशुपालवधे

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–212

39. ''भगवद्गीता'' महाभारतस्य कस्मिन् पर्वणि दृश्यते–

(A) सभापर्वणि (B) शल्यपर्वणि
(C) भीष्मपर्वणि (D) द्रौणपर्वणि

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकरशर्मा 'ऋषि', पेज–158

40. स्थायिभावाः कति सन्ति –

(A) अष्ट (B) पञ्च
(C) दश (D) सप्त

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–99

41. 'रत्नावली' कस्मिन् काव्यप्रभेदे अन्तर्भवति –

(A) नाटिकायाम् (B) सट्टके
(C) प्रकरणिकायाम् (D) भाणे

स्रोत–रत्नावली - तारिणीश झा, भू. पेज–17

42. अभिधापुच्छभूता का –

(A) व्यञ्जना (B) लक्षणा
(C) तात्पर्या (D) भावना

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–251

43. भाणे नायकः कः भवति –

(A) चेटः (B) विदूषकः
(C) विटः (D) शकारः

स्रोत–साहित्यदर्पण (6/227-228) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–215

30. (D) **31.** (D) **32.** (B) **33.** (D) **34.** (C) **35.** (C) **36.** (B) **37.** (C) **38.** (D) **39.** (C) **40.** (A) **41.** (A) **42.** (B) **43.** (C)

44. 'शान्तरसस्य' स्थायीभावः कः अस्ति –

(A) शोकः (B) निर्वेदः
(C) भयम् (D) उत्साहः

स्रोत–काव्यप्रकाश (सूत्र-47) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–138

45. 'रसप्रस्थानस्य' प्रवर्त्तकः कः –

(A) भामहः (B) भरतः
(C) विश्वनाथः (D) वामनः

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का इतिहास-उमाशंकरशर्मा 'ऋषि', पेज–591

46. सन्देशकाव्यप्रस्थानं केन समारब्धम् –

(A) अश्वघोषेण (B) कालिदासेन
(C) कुन्तकेन (D) वामनेन

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का इतिहास-उमाशंकरशर्मा 'ऋषि', पेज–334

47. नाटके अर्थप्रकृतयः कति भवन्ति –

(A) तिस्रः (B) पञ्च
(C) सप्त (D) दश

स्रोत–साहित्यदर्पण (6/64-65) शालिग्राम शास्त्री, पेज–182

48. स्वप्नवासवदत्ते कति अङ्काः सन्ति –

(A) पञ्च (B) षट्
(C) सप्त (D) अष्ट

स्रोत–स्वप्नवासवदत्तम् - शेषराज शर्मा 'रेग्मी', भू. पेज–04

49. का कृतिः भासविरचिता नास्ति ?

(A) प्रतिमानाटकम् (B) ऊरुभङ्गम्
(C) स्वप्नवासवदत्तम् (D) वासवदत्ता

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेवद्विवेदी, पेज–482

50. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत –

(अ) नागानन्दम् (i) विष्णुशर्मा
(ब) गीतगोविन्दम् (ii) बाणभट्टः
(स) पञ्चतन्त्रम् (iii) जयदेवः
(द) हर्षचरितम् (iv) हर्षवर्धनः

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	(iii)	(ii)	(iv)	(i)
(B)	(iv)	(iii)	(i)	(ii)
(C)	(i)	(ii)	(3)	(iv)
(D)	(i)	(iii)	(ii)	(iv)

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज– अ = 365, ब = 548, स = 575, द = 491

44. (B) **45.** (B) **46.** (B) **47.** (B) **48.** (B) **49.** (D) **50.** (B)

30	दिसम्बर 2010	UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् II

नोट : अस्मिन् प्रश्नपत्रे पञ्चाशत् (50) बहुवैकल्पिकप्रश्नाः सन्ति। एकैकस्य प्रश्नस्य अङ्कद्वयं (2) वर्तते। सर्वे प्रश्नाः समाधेयाः।

1. का द्युस्थानदेवता अस्ति –

(A) सविता (B) चन्द्रमा
(C) वायुः (D) बृहस्पति

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–296

2. 'सामवेदस्य' कति ब्राह्मणानि सन्ति –

(A) अष्टौ (B) दश
(C) चत्वारि (D) नव

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–10

3. 'मैत्रायणीसंहिता' कस्य वेदस्य अस्ति –

(A) ऋग्वेदस्य (B) यजुर्वेदस्य
(C) सामवेदस्य (D) अथर्ववेदस्य

स्रोत–वैदिकसाहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–09

4. छान्दोग्योपनिषद् कस्य वेदस्य अस्ति –

(A) सामवेदस्य (B) ऋग्वेदस्य
(C) अथर्ववेदस्य (D) यजुर्वेदस्य

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–10

5. 'विश्वामित्र-नदीसंवादः' कस्मिन् मण्डले वर्तते –

(A) दशममण्डले (B) अष्टममण्डले
(C) तृतीयमण्डले (D) षष्ठमण्डले

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–57

6. 'जगतीछन्दसि' प्रत्येकस्मिन् पादे कत्यक्षराणि भवन्ति–

(A) दश (B) षोडश
(C) अष्ट (D) द्वादश

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–49

7. कति भावविकाराः भवन्ति –

(A) पञ्च (B) सप्त
(C) नव (D) षट्

स्रोत–निरुक्त - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–26

8. 'वाष्कलसंहिता' कुत्र वर्तते –

(A) शुक्लयजुर्वेदे
(B) सामवेदे
(C) ऋग्वेदे
(D) कृष्णयजुर्वेदे

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज 46

9. संहिताध्ययनानन्तरं कः पाठः विधीयते –

(A) क्रमपाठः (B) पदपाठः
(C) जटापाठः (D) घनपाठः

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–08

10. वेदस्य नासिकात्वेनोपमीयते –

(A) निरुक्तम् (B) छन्दः
(C) शिक्षा (D) कल्पः

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–190

11. 'याज्ञवल्क्यमैत्रेयीसंवादः' कुत्र प्राप्यते –

(A) बृहदारण्यकोपनिषदि (B) छान्दोग्योपनिषदि
(C) जाबालोपनिषदि (D) ऐतरेयोपनिषदि

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–184

12. अथर्ववेदे कति काण्डानि सन्ति –

(A) पञ्चविंशतिः (B) विंशतिः
(C) एकोनविंशतिः (D) अष्टादश

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–102

13. निष्प्रकारकं ज्ञानं किम् –

(A) स्मृतिः (B) अनुमितिः
(C) प्रत्यभिज्ञा (D) निर्विकल्पकः

स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–75

14. उपमानं प्रमाणं किम् –

(A) इन्द्रियम् (B) व्याप्तिज्ञानम्
(C) सादृश्यज्ञानम् (D) शक्तिज्ञानम्

स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–104

1. (A) **2.** (A) **3.** (B) **4.** (A) **5.** (C) **6.** (D) **7.** (D) **8.** (C) **9.** (B) **10.** (C) **11.** (A) **12.** (B) **13.** (D) **14.** (C)

15. न्यायमते शब्दशक्तिः कुत्र –
(A) जातौ
(B) व्यक्तौ
(C) आकृतौ
(D) जात्याकृतिविशिष्टव्यक्तौ
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–49

16. वेदान्तमते कतिविधं शरीरम् –
(A) त्रिविधम् (B) द्विविधम्
(C) एकविधम् (D) चतुर्विधम्
स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–42

17. पञ्चप्राणादिवायूनां कुतः उत्पत्तिः वेदान्तमते –
(A) तामसाद् भूतांशात् (B) व्यस्ताद् राजसादंशात्
(C) समस्ताद् राजसादंशात् (D) सात्विकादंशात्
स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–72

18. सांख्यमते माध्यस्थ्यं कस्य स्वरूपम् –
(A) पुरुषस्य (B) प्रधानस्य
(C) बुद्धेः (D) अहङ्कारस्य
स्रोत–सांख्यकारिका (का. 19)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–186

19. सांख्यमते कार्यकारणसिद्धान्तः कः अस्ति –
(A) आरम्भवादः (B) परिणामवादः
(C) संघातवादः (D) विवर्तवादः
स्रोत–सांख्यकारिका (का. 09)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–100

20. कैवल्यं सांख्यमते कतिविधम् अस्ति –
(A) द्विविधम् (B) त्रिविधम्
(C) एकविधम् (D) बहुविधम्
स्रोत–सांख्यकारिका (का. 68)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–337

21. साध्याभावव्याप्तो हेत्वाभासः कः –
(A) बाधितविषयः (B) सत्प्रतिपक्षः
(C) साधारणः (D) विरुद्धः
स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–98

22. अज्ञानं किं रूपम् अस्ति –
(A) भावरूपम् (B) अभावरूपम्
(C) भावाऽभावरूपम् (D) अनुभवरूपम्
स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–37

23. 'उपधा'- संज्ञा केन सूत्रेण भवति –
(A) परः सन्निकर्षः (B) हलोऽनन्तराः
(C) कृत्तद्धितसमासाश्च (D) अलोऽन्त्यात्पूर्व
स्रोत–अष्टाध्यायी (1.1.64) - ईश्वरचन्द्र, पेज–48

24. 'हलोऽनन्तराः ....' इति सूत्रेण का संज्ञा भवति –
(A) संहितासंज्ञा (B) उपसर्गः
(C) लघुसंज्ञा (D) संयोगः
स्रोत–अष्टाध्यायी (1.1.7) - ईश्वरचन्द्र, पेज–10

25. 'कर्मधारयसमास-विधायकं' सूत्रं किम् अस्ति –
(A) सह सुपा (B) अनेकमन्यपदार्थे
(C) विशेषणं विशेष्येण बहुलम् (D) अर्धं नपुंसकम्
स्रोत–अष्टाध्यायी (2.1.56) - ईश्वरचन्द्र, पेज–171

26. 'वीरपुरुषको ग्रामः' इत्यत्र कः समासः –
(A) अव्ययीभावः (B) बहुव्रीहिः
(C) तत्पुरुषः (D) द्वन्द्वः
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज–192

27. 'श्रीः' इत्यत्र कस्मिन्नर्थे प्रथमा –
(A) प्रातिपदिकार्थमात्रे (B) परिमाणमात्रे
(C) लिङ्गमात्रे (D) वचनमात्रे
स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–14

28. 'अनुक्ते कर्मणि' का विभक्तिः भवति –
(A) द्वितीया (B) तृतीया
(C) प्रथमा (D) चतुर्थी
स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–17

29. 'आख्यातोपयोगे' इत्यनेन किं विधीयते ?
(A) अपादानसंज्ञा (B) सम्प्रदानसंज्ञा
(C) अधिकरणसंज्ञा (D) कर्मसंज्ञा
स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–62

30. 'स्वाहा'-शब्दयोगे का विभक्तिः भवति –
(A) पञ्चमी (B) चतुर्थी
(C) सप्तमी (D) तृतीया
स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–55

15. (D) **16.** (A) **17.** (C) **18.** (A) **19.** (B) **20.** (A) **21.** (D) **22.** (A) **23.** (D) **24.** (D) **25.** (C)
26. (B) **27.** (A) **28.** (A) **29.** (A) **30.** (B)

31. 'कर्तृकर्मणोः कृति' इति सूत्रेण किं विधीयते –

(A) चतुर्थी (B) पञ्चमी

(C) सप्तमी (D) षष्ठी

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–82

32. आधारः कतिविधः –

(A) त्रिविधः (B) चतुर्विधः

(C) पञ्चविधः (D) षड्विधः

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–93

33. ''रीतिरात्मा काव्यस्य'' इति कस्य मतम् –

(A) रुद्रटस्य (B) भामहस्य

(C) वामनस्य (D) उद्भटस्य

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकरशर्मा 'ऋषि', पेज–592

34. ''प्रज्ञा नवनवोन्मेषशालिनी प्रतिभा मता'' इति केनोक्तम् ?

(A) भट्टतौतेन (B) अभिनवगुप्तेन

(C) भट्टनायकेन (D) महिमभट्टेन

स्रोत–रसगंगाधर - मदनमोहन झा, पेज–29

35. आनन्दवर्धनः कस्य सभापण्डितः आसीत् –

(A) अशोकस्य (B) शाहजहानस्य

(C) अवन्तिवर्मणः (D) औसफ्-अलेः

स्रोत–ध्वन्यालोक - आचार्य विश्वेश्वर, भू. पेज–34

36. कविकुलगुरुः कः –

(A) माघः (B) कालिदासः

(C) अश्वघोषः (D) भारविः

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेवद्विवेदी, पेज–167

37. 'लोचनं' कस्य ग्रन्थस्य व्याख्यानम् अस्ति –

(A) नाट्यशास्त्रस्य (B) काव्यादर्शस्य

(C) ध्वन्यालोकस्य (D) काव्यालङ्कारस्य

स्रोत–ध्वन्यालोक - विश्वेश्वर, पेज–02

38. नाटके कति सन्धयः भवन्ति –

(A) द्वौ (B) त्रयः

(C) नव (D) पञ्च

स्रोत–साहित्यदर्पण (6/74-75) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–184

39. माधुर्यगुणस्य कस्मिन् रसे प्रकर्षः वर्तते –

(A) शृङ्गारे (B) करुणे

(C) हास्ये (D) वीरे

स्रोत–साहित्यदर्पण (8/2) - शालिग्रामशास्त्री, पेज–264-265

40. 'वीभत्सरसस्य' स्थायीभावः कः –

(A) भयम् (B) जुगुप्सा

(C) उत्साहः (D) विस्मयः

स्रोत–साहित्यदर्पण (3/242) शालिग्राम शास्त्री, पेज–120

41. ''स वाक्य एकस्मिन् यत्रानेकार्थता भवेत्'' इत्यत्र 'स' इत्यस्य कोऽर्थः –

(A) निदर्शना (B) समासोक्तिः

(C) श्लेषः (D) रूपकम्

स्रोत–काव्यप्रकाश (सूत्र-146) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–473

42. ''अव्यापन्नः कुशलमबले पृच्छति त्वां वियुक्तः'' अत्र छन्दः किम् –

(A) विद्युन्माला (B) मन्दाक्रान्ता

(C) अनुष्टुप् (D) शिखरिणी

स्रोत–मेघदूतम् (उत्तरमेघ-41) - दयाशंकर शास्त्री, पेज-140

43. लोके यानि कारणानि तानि काव्ये नाटके च केन नाम्ना व्यपदिश्यन्ते –

(A) भावाः (B) अनुभावाः

(C) सञ्चारिणः (D) विभावाः

स्रोत–साहित्यदर्पण - शालिग्राम शास्त्री, पेज–64

44. नाटके न्यूनतमाः अङ्काः कति ?

(A) पञ्च (B) सप्त

(C) अष्ट (D) नव

स्रोत–साहित्यदर्पण (6/8) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–171

45. 'सा च काव्यघटनानुकूलशब्दार्थोपस्थितिः' इत्यत्र 'सा' का –

(A) निपुणता (B) अभ्यासः

(C) भावना (D) प्रतिभा

स्रोत–रसगंगाधर (प्रथम आनन) - मदनमोहन झा, पेज–27

31. (D)	**32.** (A)	**33.** (C)	**34.** (B)	**35.** (C)	**36.** (B)	**37.** (C)	**38.** (D)	**39.** (A)	**40.** (B)	**41.** (C)
42. (B)	**43.** (D)	**44.** (A)	**45.** (D)							

46. काव्ये रसस्य येऽङ्गिनमर्थमवलम्बन्ते ते के –

(A) संघटनाः (B) गुणाः
(C) अलङ्कााराः (D) भावाः

स्रोत–साहित्यदर्पण (8/1) शालिग्राम शास्त्री, पेज–264

47. ऊरुभङ्गे नायकः कः –

(A) दुर्योधनः (B) भीमः
(C) धृतराष्ट्रः (D) श्रीकृष्णः

स्रोत–संस्कृत कवि दर्शन - भोला शंकर व्यास, पेज–193

48. ''शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्'' इति कुत्र वर्तते –

(A) रघुवंशे (B) शाकुन्तले
(C) मेघदूते (D) कुमारसम्भवे

स्रोत–कुमारसम्भवम् (5/33) प्रद्युम्न पाण्डेय, पेज–131

49. 'करुणरसस्य' स्थायीभावः कः –

(A) क्रोधः
(B) भयम्
(C) शोकः
(D) शमः

स्रोत–साहित्यदर्पण (3/223) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–116

50. 'काव्यप्रकाशे' कति उल्लासाः सन्ति –

(A) सप्त
(B) दश
(C) एकादश
(D) पञ्च

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, भू. पेज–63

46. (B) **47.** (B) **48.** (D) **49.** (C) **50.** (B)

31	जून 2011	UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् II

नोट : इस प्रश्नपत्र में **पचास (50)** बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं।प्रत्येक प्रश्न के दो **(2) अङ्क** हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. 'विष्णुसूक्तस्य' ऋषिः अस्ति –

(A) दीर्घतमा (B) हिरण्यस्तूपः
(C) गृत्समदः (D) हिरण्यगर्भः

स्रोत–वैदिकसूक्तसंग्रह - विजयशंकर पाण्डेय, पेज–57

2. ''त्रेधा निदधे पदम्'' इति केन सह सम्बध्यते ?

(A) इन्द्रसूक्तेन (B) रुद्रसूक्तेन
(C) विष्णुसूक्तेन (D) उषस्सूक्तेन

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्त शास्त्री, पेज–168

3. ''चरैवेति चरैवेति'' इति वाक्यांशो कस्मिन् ग्रन्थेऽस्ति–

(A) शतपथब्राह्मणे (B) गोपथब्राह्मणे
(C) तैत्तिरीयब्राह्मणे (D) ऐतरेयब्राह्मणे

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–121

4. अधोऽङ्कितानां समीचीनां तालिकां चिनुत –

(अ) ब्रह्मचारीसूक्तम् 1. घ्राणम्
(ब) मैत्रायणी आरण्यकम् 2. अथर्ववेदः
(स) अथेदं भस्मान्तं शरीरम् 3. कृष्णयजुर्वेदः
(द) शिक्षा 4. ईशावास्योपनिषद्

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	2	4	1	3
(B)	3	2	1	4
(C)	3	2	4	1
(D)	2	3	4	1

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, अ-पेज–101, ब-पेज–165, स-ईशोपनिषद् मन्त्र-17, द-पेज–190

5. अधोऽङ्कितानां युग्मानां तालिकां विचिनुत –

(अ) मातृदेवो भव 1. बृहदारण्यकोपनिषद्
(ब) असतो मा सद् गमय 2. तैत्तिरीयोपनिषद्
(स) द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया 3. छान्दोग्योपनिषद्
(द) तत्त्वमसि 4. मुण्डकोपनिषद्

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	2	1	4	3
(B)	1	2	3	4
(C)	4	2	3	1
(D)	1	3	2	4

स्रोत–ईशादि नौ उपनिषद्–गीताप्रेस (अ) 364, (स) 265, वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–(ब)-185, (द)-182

6. महर्षिः दयानन्दः कस्य भाष्यकारोऽस्ति

(A) अथर्ववेदस्य (B) सामवेदस्य
(C) यजुर्वेदस्य (D) शतपथब्राह्मणस्य

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–28

7. वेदस्य मुखं किमस्ति ?

(A) निरुक्तम् (B) शिक्षा
(C) व्याकरणम् (D) साहित्यम्

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–190

8. किं सत्यमस्ति ?

(A) 'श्रीमद्भगवद्गीता' अस्ति ऋग्वेदस्य आदिमसूक्तस्य व्याख्या
(B) प्रातिशाख्यस्य लेखकोऽस्ति पाणिनिः
(C) यजुर्वेदे सन्ति विंशतिः अध्यायाः
(D) वेदभाष्यकारोऽस्ति आचार्यः सायणः

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–17

1. (A) **2.** (C) **3.** (D) **4.** (D) **5.** (A) **6.** (C) **7.** (C) **8.** (D)

9. ''माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः'' इति वचनमस्ति –
(A) ऋग्वेदे (B) सामवेदे
(C) श्रीमद्भगवद्गीतायाम् (D) अथर्ववेदे
स्रोत–अथर्ववेद - (12.1.12) - वेदान्ततीर्थ, पेज-91

10. किं सत्यम् अस्ति –
(A) शुनःशेपाख्यानमस्ति कौषीतकिब्राह्मणे
(B) नचिकेतसः कथा अस्ति - ऋग्वेदे
(C) कर्मकाण्डं चर्चितम् -आरण्यकेषु
(D) ऋग्वेदस्य प्रथमशब्दोऽस्ति - 'अग्निम्'
स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह - (1.1.1) - हरिदत्त शास्त्री, पेज-55

11. ''ऊहः खल्वपि'' इति प्रयोजनम् अस्ति –
(A) कल्पवेदाङ्गस्य (B) ज्योतिर्वेदाङ्गस्य
(C) निरुक्तवेदाङ्गस्य (D) व्याकरणवेदाङ्गस्य
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–194

12. वेदकालस्य निर्धारणे भारतीयज्योतिषपरम्परा केन परिपालिता –
(A) बालगङ्गाधरतिलकमहोदयेन (B) महर्षिदयानन्देन
(C) एम् विन्टरनिट्जमहोदयेन (D) महर्षिरमणेन
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–40

13. किं सत्यमस्ति ?
(A) महर्षिदयानन्दः - अथर्ववेदभाष्यकारः
(B) महर्षिरमणः - ताण्ड्यमहाब्राह्मणकारः
(C) यास्कः - प्रातिशाख्यकारः
(D) पिङ्गलः - छन्दशास्त्रकारः
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–199

14. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां विचिनुत –
(अ) प्रभाकरः 1. अन्यथाख्यातिः
(ब) शङ्करः 2. अख्यातिः
(स) कुमारिलः 3. अनिर्वचनीयख्यातिः
(द) गौतमः 4. विपरीतख्यातिः

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	1	2	3	4
(B)	2	3	4	1
(C)	3	4	2	1
(D)	4	2	3	1

स्रोत–भारतीयदर्शन - चन्द्रधर शर्मा, पेज-202, 208, 204

15. कारणैकार्थपत्यासत्या को जनकः ?
(A) घटं प्रति कपालः (B) घटं प्रति दण्डः
(C) घटरूपं प्रति कपालरूपम् (D) घटं प्रति कपालम्
स्रोत–तर्कभाषा-श्रीनिवास शास्त्री, पेज–42

16. सांख्ये सर्गः कतिविधो भवति ?
(A) द्विविधः (B) चतुर्विधः
(C) षड्विधः (D) अष्टविधः
स्रोत–सांख्यकारिका (का. 52)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–295

17. ज्ञाततापदार्थः केन स्वीकृतः ?
(A) नैयायिकेन (B) वैशेषिकेण
(C) भट्टमीमांसकेन (D) प्रभाकरमीमांसकेन
स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री पेज–160

18. असमवायिकारणनाशात् कस्य नाशो भवति ?
(A) द्रव्यस्य (B) गुणस्य
(C) कर्मणः (D) न कस्यापि
स्रोत–तर्कभाषा - गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज-36

19. त्रिवृत्करणं केषां भूतानां प्रतिपादितम् :
(A) पृथ्वीजलतेजसाम् (B) आकाशवायुतेजसाम्
(C) जलतेजवायूनाम् (D) पृथ्वीजलवायूनाम्
स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–49

20. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां विचिनुत :
(अ) आरम्भवाद : 1. सांख्यानाम्
(ब) परिणामवादः 2. नैयायिकानाम्
(स) विवर्तवादः 3. अद्वैतवेदान्तिनाम्
(द) विज्ञानवादः 4. बौद्धानाम्

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	3	2	1	4
(B)	2	1	3	4
(C)	2	4	3	1
(D)	1	2	3	4

स्रोत–भारतीय दर्शन - बलदेव उपाध्याय, पेज–134, 258, 371

21. ज्ञानस्य प्रत्यक्षत्वं को न स्वीकरोति ?
(A) नैयायिकः (B) प्रभाकरमीमांसकः
(C) भट्टमीमांसकः (D) मुरारीमिश्रः
स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवासशास्त्री, पेज–170

9. (D) **10.** (D) **11.** (D) **12.** (A) **13.** (D) **14.** (B) **15.** (C) **16.** (A) **17.** (C) **18.** (A) **19.** (A) **20.** (B) **21.** (A)

22. न्यायमते 'पदार्थत्वं' किमस्ति ?

(A) जातिः (B) अखण्डोपाधिः
(C) सखण्डोपाधिः (D) पदार्थान्तरम्

स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवासशास्त्री, पेज–04

23. ''उपरतिः'' इत्यस्य कोऽर्थ ः?

(A) इन्द्रियाणां निग्रहः
(B) मनसो निग्रहः
(C) निगृहीतस्य मनसः श्रवणादौ स्थिरता
(D) निगृहीतानाम् इन्द्रियाणां विषयाकर्षणाभावः

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–20

24. कः जीवन्मुक्तिं न स्वीकरोति ?

(A) नैयायिकः (B) मीमांसकः
(C) सांख्यः (D) अद्वैतवेदान्ती

स्रोत–भारतीय दर्शन की रूपरेखा - हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज–292

25. अधोनिर्दिष्टेषु किम् असत्यम् अस्ति ?

(A) जीवन्मुक्तिरेव विदेहमुक्तिः
(B) इच्छाशक्तिमान् करणरूपः मनोमयकोशः
(C) सांख्यमते दशेन्द्रियाणि भवन्ति
(D) वस्तुनि अवस्तुन आरोपः अध्यारोपः

स्रोत–सांख्यकारिका (का. 25)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–208

26. कस्य प्रातिपदिकसंज्ञा भवितुम् अर्हति –

(A) कृष्ण + अम् + श्रित +सु (B) भू +अ + ति
(C) हरि + ङि (D) यज्

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4) पेज–62

27. 'अग्निचित् ' इत्यत्र उपधासंज्ञा अस्ति –

(A) 'इत्' समुदायस्य (B) 'चित्' समुदायस्य
(C) 'त' वर्णस्य (D) 'इ' वर्णस्य

स्रोत–अष्टाध्यायी (1.1.64) - ईश्वरचन्द्र, पेज–48

28. 'पशुना रुद्रं यजते' - इत्यत्र 'पशुना' पदे या तृतीया, सा वस्तुतः कस्मिन् कारकेऽस्ति –

(A) करणकारके (B) सम्प्रदानकारके
(C) कर्मकारके (D) कर्तृकारके

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–47

29. 'पुष्पाणि स्पृहयन्ति' - इत्यत्र 'पुष्पाणि' इत्यस्य कर्मसंज्ञा भवति –

(A) अनीप्सितत्वात् (B) ईप्सिततमत्वात्
(C) स्पृहधातोः प्रयोगात् (D) प्रकर्षाभावात्

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–49

30. अव्ययीभावसमासे अव्यय संज्ञायाः फलं किम् ?

(A) अव्ययसंज्ञा (B) प्रातिपदिकसंज्ञा
(C) सुब्लुक् (D) सुप्प्रत्यायानां प्राप्तिः

स्रोत–वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (भाग-2)-गोविन्दाचार्य, पेज–382

31. 'सुमद्रम्' - अत्र 'सु' अव्ययः कस्मिन्नर्थे वर्तते ?

(A) 'सुन्दरम्' इत्यस्मिन् अर्थे
(B) 'सुष्ठु' इत्यस्मिन् अर्थे
(C) 'समृद्धि' इत्यस्मिन् अर्थे
(D) 'समीपम्' इत्यस्मिन् अर्थे

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज–28

32. 'स नपुंसकम् ' इत्यनेन सूत्रेण नपुंसकत्वं भवति –

(A) अव्ययीभावसमासे (B) बहुव्रीहिसमासे
(C) कर्मधारयसमासे (D) समाहारद्विगुसमासे

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4) पेज–110

33. विशेष-संज्ञा-विनिर्मुक्तः समासः कः –

(A) अव्ययीभावसमासः (B) केवलसमासः
(C) तत्पुरुषसमासः (D) अनित्यसमासः

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज–02

34. अधोनिर्दिष्टानां समीचीनां तालिकां विचिनुत –

(अ) उपधा — 1. सम्प्रदानम्
(ब) रुच्यर्थानां धातूनां प्रयोगे — 2. अलोऽन्त्यात् पूर्वः
(स) अक्ष्णा काणः — 3. कर्मकारकम्
(द) अधिशीङ्योगे — 4. येनाङ्गविकारः

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	1	3	4	2
(B)	3	1	2	4
(C)	2	4	1	3
(D)	2	1	4	3

स्रोत–अष्टाध्यायी - ईश्वरचन्द्र, अ = 1.1.64 पेज–48, ब = 1.4.33 पेज–123, स = 2.3.20 पेज–201, द = 1.4.46 पेज–126

22.(A) **23.**(D) **24.**(B) **25.**(C) **26.** (A) **27.**(D) **28.**(C) **29.**(B) **30.**(C) **31.**(C) **32.**(D) **33.**(B) **34.**(D)

35. कादयो मावसानाः वर्णाः भवन्ति –

(A) अन्तस्थाः (B) स्पर्शाः
(C) ऊष्माण: (D) जिह्वामूलीया:

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमदी - गोविन्दाचार्य, पेज–20

36. एते वर्णाः तालुस्थानीयाः सन्ति –

(A) इ उ ऋ लृ (B) अ क ह विसर्ग
(C) इ च य श (D) ऋ ट र ष

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–17

37. अयोगात्मकभाषासु न भवन्ति –

(A) उपसर्गाः (B) क्रियाः
(C) कारकाणि (D) लिङ्गानि

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–359

38. रघुवंशस्य कस्मिन् सर्गे दिलीपस्य गोसेवा वर्णिता ?

(A) प्रथमे (B) द्वितीये
(C) तृतीये (D) चतुर्थे

स्रोत–रघुवंशम् (सर्ग-2) - कृष्णमणि त्रिपाठी, भू. पेज-5-7

39. रघुः किन्नामकं यज्ञं चकार ?

(A) राजसूयम् (B) विश्वजित्
(C) अश्वमेधः (D) पुत्रेष्टिः

स्रोत–रघुवंशम् (4/86) - हरगोविन्द मिश्र, पेज–106

40. खण्डकाव्यम् अस्ति –

(A) दशकुमारचरितम् (B) नलचम्पूः
(C) मेघदूतम् (D) किरातार्जुनीयम्

संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–525

41. किरातार्जुनीयस्य प्रतिसर्गस्य अन्तिमं पदं भवति –

(A) लक्ष्मीः (B) विभुः
(C) शिवः (D) श्रीः

संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–186

42. ''क्षणे क्षणे यन्नवतामुपैति तदेव रूपं रमणीयतायाः'' इयम् उक्तिः अस्ति –

(A) किरातार्जुनीये (B) शिशुपालवधे
(C) नैषधीयचरिते (D) कुमारसम्भवे

स्रोत–शिशुपालवधम् (4/17) - हरगोविन्द शास्त्री, पेज-181

43. सत्यं किमस्ति ?

(A) हर्षचरितं कथा अस्ति
(B) हर्षचरितम् आख्यायिका अस्ति
(C) हर्षचरितं चम्पूः अस्ति
(D) हर्षचरितं महाकाव्यम् अस्ति

संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–463

44. अभिज्ञानशाकुन्तले विदूषकः कः ?

(A) वसन्तकः (B) माधव्यः (माढव्यः)
(C) मैत्रेयः (D) माणवकः

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू. पेज–90

45. स्वप्ननाटके 'भर्तृस्नेहात् सा हि दग्धाऽप्यदग्धा' कस्य वचनम् इदम् ?

(A) ब्रह्मचारिणः (B) यौगन्धरायणस्य
(C) विदूषकस्य (D) उदयनस्य

स्रोत–स्वप्नवासवदत्तम् (1/13) - शेषराजशर्मा रेग्मी, पेज–41

46. शोको हि .... रसस्थायिभावः ।

(A) शृङ्गारः (B) वीरः
(C) करुणः (D) भयानकः

स्रोत–साहित्यदर्पण (3/226) शालिग्राम शास्त्री, पेज–117

47. 'अचिरेण च तस्याः स्वयं पतितैः फलैरपूर्यत भिक्षाभाजनम् '- कस्याः सम्बन्धे उक्तिः ?

(A) कादम्बर्याः सम्बन्धे (B) महाश्वेतायाः सम्बन्धे
(C) पत्रलेखायाः सम्बन्धे (D) मदलेखायाः सम्बन्धे

स्रोत–कादम्बरी (महाश्वेतावृत्तान्त) - प्रद्युम्न पाण्डेय, पेज–26

35.(B) **36.**(C) **37.**(A) **38.** (B) **39.**(B) **40.** (C) **41.** (A) **42.** (B) **43.** (B) **44.** (B) **45.** (A) **46.** (C) **47.** (B)

48. व्यभिचार्यञ्जितः को भवति –

(A) भावध्वनिः (B) रसः

(C) अलङ्कारः (D) रसाभासः

स्रोत–साहित्यदर्पण (परिच्छेद-3) - शालिग्राम शास्त्री पेज–47

49. अधो विन्यस्तानां कालानुसारिक्रमं चिनुत –

(A) कालिदासः । भासः । बाणभट्टः । भवभूतिः

(B) भासः । कालिदासः । बाणभट्टः । भवभूतिः

(C) भवभूतिः । कालिदासः । भासः। बाणभट्टः

(D) बाणभट्टः । भासः। भवभूतिः। कालिदासः

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् - सर्वज्ञभूषण, पेज–291

50. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां विचिनुत –

(अ) नाटकम् 1. निन्दनीयः पुरुषः

(ब) प्रकरणम् 2. विटः

(स) भाणम् 3. धीरप्रशान्तः

(द) प्रहसनम् 4. धीरोदात्तः

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	4	3	2	1
(B)	1	2	4	3
(C)	3	4	2	1
(D)	1	2	3	4

स्रोत–साहित्यदर्पण - शालिग्राम शास्त्री

पेज – अ = 171, ब = 214, स = 215, द = 220

48. (B) **49.** (B) **50.** (A)

32	दिसम्बर 2011	UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् II

1. 'मघवन्' कस्या देवताया उपाधिर्वर्तते?

(A) इन्द्रस्य (B) सवितुः
(C) उषसः (D) रुद्रस्य

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–42

2. यास्काचार्येण कतिविधा देवताः स्वीकृताः?

(A) चतस्रः (B) तिस्रः
(C) द्वे (D) त्रयस्त्रिंशत्

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–296

3. याज्ञवल्क्यः कया उपनिषदा सह सम्बद्धः?

(A) ईशावास्योपनिषदा (B) छान्दोग्योपनिषदा
(C) बृहदारण्यकोपनिषदा (D) श्वेताश्वतरोपनिषदा

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–184

4. अधोऽङ्कितानां युग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत

(अ) पुरूरवा-उर्वशीसंवादः 1. अथर्ववेदः
(ब) शिवसङ्कल्पसूक्तम् 2. ऋग्वेदः
(स) त्रिषष्टिश्चतुष्षष्टिर्वा वर्णाः 3. शुक्लयजुर्वेदः
(द) भूमिसूक्तम् 4. पाणिनीयशिक्षा

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	1	3	4	2
(B)	2	3	4	1
(C)	4	3	2	1
(D)	3	2	1	4

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी,
अ-पेज–57, ब-पेज–67, 75, द-पेज–109, स-पाणिनीय शिक्षा श्लोक-3

5. अधोऽङ्कितानां युग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत

(अ) यास्कः 1. ऋग्वेदः
(ब) यम-यमी 2. सामवेदः
(स) तैत्तिरीयब्राह्मणम् 3. निरुक्तम्
(द) तवलकार-आरण्यकम् 4. कृष्णयजुर्वेदः

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	3	4	2	1
(B)	1	3	4	2
(C)	3	1	4	2
(D)	3	2	1	4

स्रोत–वैदिकसाहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी,
पेज–अ-204, ब-57, स-09, द-161

6. यज्ञे यजुर्वेदसम्बद्धोऽस्ति–

(A) होता (B) अध्वर्युः
(C) उद्गाता (D) ब्रह्मा

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–45

7. त्रिष्टुप्-छन्दसि अक्षराणि भवन्ति।

(A) 37 (B) 40
(C) 32 (D) 44

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–49

8. ज्योतिर्विज्ञानमाश्रित्य कः वेदानां कालनिर्धारणमकरोत्

(A) मैक्समूलरः (B) लोकमान्यतिलकः
(C) मैक्डॉनलः (D) सायणाचार्यः

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–40

9. किं सत्यमस्ति?

(A) कालिदासो वेदभाष्यमकरोत्।
(B) दाराशिकोहः उपनिषदाम् अनुवादं कृतवान्।
(C) मम्मटो व्याकरणग्रन्थान् विरचितवान्।
(D) निरुक्तस्य प्रणेताऽस्ति पिङ्गलः।

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–169

10. ''रक्षार्थं वेदानामध्येयं व्याकरणम्'' इति कथनमस्ति–

(A) यास्काचार्यस्य (B) पाणिनेः
(C) पतञ्जलेः (D) दयानन्दस्य

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–194

11. कल्पसाहित्ये न परिगण्यते

(A) पारस्करगृह्यसूत्रम् (B) कात्यायनश्रौतसूत्रम्
(C) बौधायनशुल्बसूत्रम् (D) कात्यायनप्रणीतं वार्तिकम्

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–09

12. किं सत्यमस्ति

(A) महर्षिदयानन्दः - अथर्ववेदभाष्यकारः
(B) महर्षिरमणः - ताण्ड्यमहाब्राह्मणकारः
(C) यास्कः - ऋग्वेदप्रातिशाख्यकारः
(D) पिङ्गलः - छन्दशास्त्रकारः

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–199

1. (A) **2.** (B) **3.** (C) **4.** (B) **5.** (C) **6.** (B) **7.** (D) **8.** (B) **9.** (B) **10.** (C) **11.** (D) **12.** (D)

13. महर्षिपतञ्जल्यनुसारेण ऋग्वेदस्य शाखाः सन्ति

(A) 22 (B) 21
(C) 11 (D) 25

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–46

14. सांख्यमते सूक्ष्मशरीरे कति अवयवाः सन्ति?

(A) पञ्चदश (B) षोडश
(C) सप्तदश (D) अष्टादश

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–65

15. अधोनिर्दिष्टेषु अवैदिकं शास्त्रं किमस्ति?

(A) न्यायशास्त्रम् (B) योगशास्त्रम्
(C) वैशेषिकम् (D) जैनदर्शनम्

स्रोत–भारतीय दर्शन की रूपरेखा - हरेन्द्र प्रताप सिन्हा, पेज–6

16. 'तत्त्वमसि' इत्यत्र कीदृशी लक्षणा?

(A) जहल्लक्षणा (B) अजहल्लक्षणा
(C) जहदजहल्लक्षणा (D) लक्षितलक्षणा

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–127

17. परमाणुविशेषयोः कः सम्बन्धः?

(A) संयोगः (B) स्वरूपसम्बन्धः
(C) समवायः (D) तादात्म्यम्

स्रोत–तर्कसंग्रह - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–76

18. अधोनिर्दिष्टेषु अलौकिकसन्निकर्षः केन न स्वीकृतः?

(A) विश्वनाथ महाचार्येण (B) अन्नम्भट्टेन
(C) केशवमिश्रेण (D) जगदीशेन

स्रोत–तर्कभाषा - गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज–87

19. केवलान्वयित्वं किमस्ति?

(A) स्वभाववद्वृत्तित्वम् (B) उभयवृत्तित्वम्
(C) अत्यन्ताभावाप्रतियोगित्वम् (D) अवृत्तित्वम्

स्रोत–तर्कसंग्रह - गोविन्दाचार्य, पेज–195

20. अधोनिर्दिष्टेषु किं सत्यमस्ति?

(A) न्यायमते अप्रामाण्यं स्वतोग्राह्यम्
(B) न्यायमते शब्दो विशेषगुणः
(C) वैशेषिकमते प्रमाणं त्रिविधम्
(D) न्यायमते मनसो विभुत्वमस्ति

स्रोत–तर्कसंग्रह - गोविन्दाचार्य, पेज–77

21. सांख्यमते अहङ्कारः कतिविधः

(A) एकविधः (B) द्विविधः
(C) त्रिविधः (D) चतुर्विधः

स्रोत–सांख्यकारिका - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–208

22. न्यायमते पदार्थयोः सम्बन्धनियामकः कः?

(A) योग्यता (B) आसत्तिः
(C) आकांक्षा (D) लक्षणा

स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज–122

23. मङ्गलाचरणं कतिविधं भवति?

(A) एकविधम् (B) द्विविधम्
(C) त्रिविधम् (D) चतुर्विधम्

स्रोत–साहित्यदर्पण - अभिराज राजेन्द्र मिश्र, पेज–98

24. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत।

(अ) माठरवृत्तिः 1. वैशेषिकसूत्रम्
(ब) भारद्वाजवृत्तिः 2. न्यायसूत्रम्
(स) विश्वनाथवृत्तिः 3. सांख्यसूत्रम्
(द) भोजवृत्तिः 4. योगसूत्रम्

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	1	2	3	4
(B)	3	1	2	4
(C)	2	1	3	4
(D)	4	3	1	2

स्रोत– अ=सांख्यकारिका - सन्तनारायण श्रीवास्तव, भू. पेज–xviii, द=सांख्यकारिका - सन्तनारायण श्रीवास्तव, भू. पेज–xvii, स=भारतीय दर्शन - बलदेव उपाध्याय, पेज–222

25. अधोनिर्दिष्टेषु किं सत्यमस्ति?

(A) वस्तुनः तत्समसत्ताकः अन्यथाभावः विवर्तः
(B) कारणाभिन्नं कार्यं विवर्तः
(C) अतत्त्वतोऽन्यथाप्रथा विवर्तः
(D) उपादानसमसत्ताकं कार्यविवर्तः

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–115

26. गुणसंज्ञाविधायकं सूत्रमिदं वर्तते

(A) इको गुणवृद्धी (B) अदेङ्गुणः।
(C) आद्गुणः। (D) स्थानेऽन्तरतमः।

स्रोत–अष्टाध्यायी (1.1.2) - ईश्वरचन्द्र, पेज–06

27. अपृक्तसंज्ञा वर्तते–

(A) एकाल्प्रत्ययस्य (B) धातोः
(C) प्रातिपदिकस्य (D) यस्य कस्यापि

स्रोत–अष्टाध्यायी (1.2.41) - ईश्वरचन्द्र, पेज–68

13. (B) **14.** (D) **15.** (D) **16.** (C) **17.** (C) **18.** (A) **19.** (C) **20.** (D) **21.** (C) **22.** (A) **23.** (C) **24.** (B) **25.** (C) **26.** (B) **27.** (A)

28. 'नदी' संज्ञकः शब्दः नास्ति

(A) नदी (B) वधू

(C) सरित् (D) बहुश्रेयसी

स्रोत–अष्टाध्यायी (1.4.3) - ईश्वरचन्द्र, पेज–109

29. ईदूदेदन्तस्य द्विवचनस्य शब्दस्य का संज्ञा भवति–

(A) प्रगृह्यसंज्ञा (B) प्रकृतिभावः

(C) प्लुतसंज्ञा (D) टिसंज्ञा

स्रोत–अष्टाध्यायी (1.1.11) ईश्वरचन्द्र, पेज–13

30. 'गां दोग्धि पयः'-इत्यत्र 'गाम्' पदे कर्मसंज्ञा केन सूत्रेण भवति?

(A) कर्मणि द्वितीया (B) अकथितं च

(C) तथायुक्तं चानीप्सितम् (D) कर्तुरीप्सिततमं कर्म

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण), राममुनि पाण्डेय, पेज–19

31. 'कटे आस्ते'-इत्यत्र कीदृश आधारो वर्तते?

(A) औपश्लेषिकः (B) वैषयिकः

(C) अभिव्यापकः (D) व्यापकः

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–93

32. द्वितीया-चतुर्थ्यौ भवतः–

(A) अधि-शी-धातोः प्रयोगे (B) 'विना' शब्दस्य योगे

(C) नमः योगे (D) गत्यर्थकर्मणि

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–57

33. 'नीलोत्पलम्' इत्यत्र नपुंसकत्वं केन सूत्रेण भवति?

(A) स नपुंसकम्

(B) परवल्लिङ्गं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः

(C) अव्ययीभावश्च

(D) ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज–113

34. 'भूतपूर्वः' इत्यत्र भूतशब्दस्य पूर्वप्रयोगः कस्मात् भवति?

(A) आचार्याणाम् आचारात्

(B) 'उपसर्जनं पूर्वम्' इति सूत्रात्।

(C) 'भूतपूर्वे चरट्' इति केवलसमासत्वात्।

(D) लोकतः।

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज–09

35. अधस्तनानां समीचीनां तालिकां चिनुत–

(अ) पूर्वपदार्थप्रधानः — 1. हरौ इति

(ब) अस्वपदविग्रहः — 2. अव्ययीभावः

(स) नदीभिश्च — 3. पञ्चगङ्गम्

(द) अलौकिकविग्रहः — 4. प्राप्त सु + उदक सु

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	1	3	4	2
(B)	2	3	1	4
(C)	2	1	3	4
(D)	3	1	4	2

स्रोत–लघुसिद्धान्त कौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4),
पेज – अ = 02, ब = 18, स = 42, द = 190

36. केन्टुम-वर्गस्य भाषा अस्ति–

(A) लैटिनभाषा (B) संस्कृतभाषा

(C) फारसीभाषा (D) अवेस्ता

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–385

37. संस्कृतभाषायाः घ्, ध्, भ् वर्णाः जर्मनिक्भाषायां भवन्ति–

(A) ग् द् ब् (B) क् द् ब्

(C) ग् द् फ् (D) ट् द् ब्

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–241

38. ''सञ्चारिणी दीपशिखेव रात्रौ.......'' इयमुक्तिः रघुवंशस्य कस्मिन् कथाप्रसङ्गे वर्णिता अस्ति।

(A) सीतापरित्यागे (B) इन्दुमतीस्वयंवरे

(C) 'विश्वजित्'-यज्ञे (D) राज्याभिषेके

स्रोत–रघुवंशम् (6/67) कृष्णमणि त्रिपाठी, पेज–196

39. मेघदूते यक्षाणां वसतिः कुत्र वर्तते?

(A) मानसरोवरे (B) हिमालये

(C) मालवभूमौ (D) अलकायाम्

स्रोत–पूर्वमेघ (श्लोक-7) - दयाशंकर शास्त्री, पेज–63

40. ''रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय''- इयमुक्तिः केन सम्बद्धा?

(A) कुबेरेण (B) मेघेन

(C) यक्षेण (D) यक्षिण्या

स्रोत–पूर्वमेघ (श्लोक-20) - तारिणीश झा, पेज–43

28.(C) **29.**(A) **30.**(B) **31.**(A) **32.**(D) **33.**(B) **34.**(C) **35.**(C) **36.**(A) **37.**(A) **38.**(B) **39.**(D) **40.**(B)

41. किरातार्जुनीये 'किरात' इति कस्य बोधकः?

(A) वनेचरस्य (B) किरीटधारिणः

(C) शङ्करस्य (D) कार्तिकेयस्य

संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मकइतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–184

42. रैवतकपर्वतस्य वर्णनं कस्मिन् काव्ये वर्तते?

(A) उत्तररामचरिते (B) कुमारसम्भवे

(C) शिशुपालवधे (D) कादम्बर्याम्

संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–201

43. सत्यं किमस्ति–

(A) दशकुमारचरिते पञ्चोच्छ्वासाः सन्ति

(B) दशकुमारचरिते सप्तोच्छ्वासाः सन्ति

(C) दशकुमारचरिते अष्टोच्छ्वासाः सन्ति

(D) दशकुमारचरिते द्वादशोच्छ्वासाः सन्ति

संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–467

44. ''आर्जवं हि कुटिलेषु न नीतिः''-इयमुक्तिः कस्य ग्रन्थस्य?

(A) नैषधीयचरितस्य (B) शिशुपालवधस्य

(C) किरातार्जुनीयस्य (D) कुमारसम्भवस्य

स्रोत–नैषधीयचरितम् (5/103)

45. 'तस्य अशेषत्रिभुवनसुन्दरं अतिशयितनलकूबरं रूपमासीत्'-कस्य?

(A) पुण्डरीकस्य (B) कपिञ्जलस्य

(C) श्वेतकेतोः (D) चन्द्रापीडस्य

स्रोत–कादम्बरी - कृष्णमोहन शास्त्री, पेज– 433

46. कस्य रूपकेषु आमुखं 'स्थापना' इत्युच्यते?

(A) शूद्रकस्य (B) श्रीहर्षस्य

(C) विशाखदत्तस्य (D) भासस्य

स्रोत–स्वप्नवासवदत्तम् - शेषराज शर्मा रेग्मी, भू. पेज–12

47. अभिधापुच्छभूता का भवति?

(A) लक्षणा (B) व्यञ्जना

(C) तात्पर्या (D) अर्थापत्तिः

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–251

48. श्रीशङ्कुकमते कीदृशः स्थायी रसो भवति?

(A) भावितः (B) अनुमितिः

(C) उत्पन्नः (D) अभिव्यक्तः

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–103

49. कालक्रमानुसृतां तालिकां चिनुत।

(A) भामहः। दण्डी। वामनः। विश्वनाथः।

(B) वामनः। भामहः। विश्वनाथः। दण्डी।

(C) भामहः। विश्वनाथः। दण्डी। वामनः।

(D) भामहः। वामनः। दण्डी। विश्वनाथः।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा साहित्यम् - सर्वज्ञभूषण, पेज–292-293

50. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत।

(अ) अभिज्ञानशाकुन्तलम् 1. भाणः

(ब) त्रिपुरदाहः 2. प्रहसनम्

(स) कन्दर्पकेलिः 3. डिमः

(द) लीलामधुकरम् 4. नाटकम्

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	1	2	3	4
(B)	3	4	2	1
(C)	4	3	2	1
(D)	1	2	4	3

स्रोत–(अ) संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–334, (ब) साहित्यदर्पण - शालिग्राम शास्त्री, पेज–216, (स) साहित्यदर्पण - शालिग्राम शास्त्री, पेज–220, (द) साहित्यदर्पण - शालिग्राम शास्त्री, पेज–215

41. (C)	42. (C)	43. (C)	44. (A)	45. (A)	46. (D)	47. (A)	48. (B)	49. (A)	50. (C)

33	जून 2012	UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् II

नोट : इस प्रश्नपत्र में **पचास (50)** बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के **दो (2)** अङ्क हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. ऋग्वेदस्य प्रथममण्डलस्य प्रथमसूक्ते कः स्तूयते ?
(A) अग्निः (B) यमः
(C) विष्णुः (D) वरुणः
स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह (1.1.1) - हरिदत्त शास्त्री, पेज-55

2. 'पवमानः' कः उच्यते ?
(A) इन्द्रः (B) बृहस्पतिः
(C) विष्णुः (D) सोमः
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–300

3. 'शांखायनशाखा' कस्य वेदस्य अस्ति –
(A) कृष्णयजुर्वेदस्य (B) शुक्लयजुर्वेदस्य
(C) ऋग्वेदस्य (D) अथर्ववेदस्य
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–09

4. छन्दः कालादिनामभिः वेदकालं प्रथमतः कः प्रतिपादयति ?
(A) मैक्समूलरः (B) वेबरः
(C) बालगङ्गाधरतिलकः (D) विन्टरनित्सः
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–42

5. 'नैघण्टुकं काण्डं' वर्तते –
(A) निघण्टुग्रन्थे (B) शुल्बसूत्रे
(C) छन्दःसूत्रे (D) व्याकरणे
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–205

6. वेदाङ्गेषु छन्दः उपमीयते –
(A) पादत्वेन (B) हस्तत्वेन
(C) घ्राणत्वेन (D) नेत्रत्वेन
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–190

7. अर्थप्रधानं वर्तते –
(A) निरुक्तम् (B) छन्दः
(C) शिक्षा (D) कल्पः
स्रोत–निरुक्त - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–10

8. विश्वामित्रनदीसंवादः कस्मिन् मण्डले वर्तते ?
(A) प्रथममण्डले (B) तृतीयमण्डले
(C) दशममण्डले (D) पञ्चममण्डले
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–57

9. 'मैत्रायणीसंहिता' केन वेदेन सह सम्बद्धा वर्तते –
(A) सामवेदेन (B) अथर्ववेदेन
(C) शुक्लयजुर्वेदेन (D) कृष्णयजुर्वेदेन
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–09

10. 'आरण्यकं' केन आश्रमेण सम्बद्धम् ?
(A) गृहस्थाश्रमेण (B) वानप्रस्थाश्रमेण
(C) ब्रह्मचर्याश्रमेण (D) संन्यासाश्रमेण
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–142

11. अधोऽङ्कितानां समीचीनम् उत्तरं चिनुत –
(अ) पूर्णमदः पूर्णमिदम् 1. निरुक्तम्
(ब) मा गृधः कस्यस्विद्धनम् 2. अथर्ववेदीया
(स) समाम्नायः समाम्नातः 3. ईशावास्योपनिषद्
(द) पैप्पलादसंहिता 4. बृहदारण्यकोपनिषद्

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	4	3	1	2
(B)	3	2	1	4
(C)	2	3	4	1
(D)	1	2	3	4

स्रोत– अ=बृहदारण्यकोपनिषद् शाङ्करभाष्य गीताप्रेस, पेज–1161, ब=ईशावास्योपनिषद् - मन्त्र-1, स=निरुक्तम् छज्जूराम शास्त्री, पेज–1, द=वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–10

12. ''मध्या कर्तोर्विततं सञ्जभार'' इति पठ्यते –
(A) अग्निसूक्ते (B) इन्द्रसूक्ते
(C) सूर्यसूक्ते (D) उषस्सूक्ते
स्रोत–ऋग्वेद (1.115.4) - वेद कथांक - गीताप्रेस, पेज–448

1. (A) **2.** (D) **3.** (C) **4.** (A) **5.** (A) **6.** (A) **7.** (A) **8.** (B) **9.** (D) **10.** (B) **11.** (A) **12.** (C)

13. कतिलक्षणयुक्तो ग्रन्थवाचको ब्राह्मणशब्दः ?

(A) नव (B) दश
(C) द्वादश (D) पञ्चदश

स्रोत–वैदिकसाहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–115

14. अर्थापत्तेः कस्मिन् प्रमाणेऽन्तर्भावः भवितुमर्हति ?

(A) प्रत्यक्षे (B) अनुमाने
(C) शब्दे (D) उपमितौ

स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज–141

15. सादृश्यज्ञानकरणं ज्ञानं किमस्ति ?

(A) प्रत्यक्षम् (B) अनुमितिः
(C) शब्दबोधः (D) उपमितिः

स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–104

16. विवर्तो .... विद्यते ?

(A) कारणस्य कार्यावस्था
(B) कारणस्य समसत्ताकपरिणामः
(C) कारणगुणात्मकता कार्योत्पत्तिः
(D) अतत्त्वतोऽन्यथा प्रथा

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–115

17. 'सतः सत् जायते' इति कस्य मतम् ?

(A) सांख्यस्य (B) बौद्धस्य
(C) वेदान्तिनः (D) नैयायिकस्य

स्रोत–सांख्यकारिका (का. 09)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–100
भारतीय दर्शन - बलदेव उपाध्याय, पेज–257

18. कतिविधः बुद्धिसर्गः ?

(A) त्रिविधः (B) चतुर्विधः
(C) पञ्चविधः (D) सप्तविधः

स्रोत–सांख्यकारिका (का. 46)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–269

19. सांख्यैः स्वीकृतानि तत्त्वानि कति सन्ति ?

(A) त्रयोदश (B) पञ्चदश
(C) विंशतिः (D) पञ्चविंशतिः

स्रोत–सांख्यकारिका (का. 3)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–39

20. तदभाववतितत्प्रकारकं ज्ञानं कीदृशम् ?

(A) प्रमा (B) अप्रमा
(C) स्मृतिः (D) विपर्ययः

स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–65

21. कार्यनियतपूर्ववृत्तित्वं भवति ....?

(A) कारणत्वम् (B) करणत्वम्
(C) कार्यत्वम् (D) अकारणत्वम्

स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–69

22. वेदान्तो नाम .... वर्तते ?

(A) उपनिषद्प्रमाणम् (B) अनुमानगम्यम्
(C) आप्तोपदेशः (D) उपासनादिकम्

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–07

23. अज्ञानस्य शक्तिः .... उच्यते ?

(A) आवरणावस्था
(B) विशेषरूपता
(C) आवरणविक्षेपनामकं शक्तिद्वयम्
(D) शून्यरूपा

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–56

24. विशेषः .... द्रव्यवृत्तिः?

(A) अनित्यः (B) नित्यः
(C) कारणात्मकः (D) स्मृतिरूपः

स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–32

25. बुद्धेः का प्रकृतिः अस्ति ?

(A) अहङ्कारः (B) पुरुषः
(C) मूलप्रकृतिः (D) तन्मात्राणि

स्रोत–सांख्यकारिका (का. 22)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–196

26. वृद्धिसंज्ञाविधायकं सूत्रं किम् अस्ति ?

(A) वृद्धिरेचि (B) वृद्धिरादैच्
(C) इको यणचि (D) आद्गुणः

स्रोत–अष्टाध्यायी (1.1.1) - ईश्वरचन्द्र, पेज–05

13. (B) **14.** (B) **15.** (D) **16.** (D) **17.** (A) **18.** (B) **19.** (D) **20.** (B) **21.** (A) **22.** (A) **23.** (C) **24.** (B) **25.** (C) **26.** (B)

27. 'घि-संज्ञा' केन सूत्रेण भवति ?

(A) यू स्त्र्याख्यौ नदी (B) अचोऽन्त्यादि टि
(C) परः संन्निकर्षः संहिता (D) शेषो घ्यसखि

स्रोत–अष्टाध्यायी (1.4.7) - ईश्वरचन्द्र, पेज–111

28. हेत्वर्थे का विभक्तिः ?

(A) द्वितीया (B) तृतीया
(C) चतुर्थी (D) पञ्चमी

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–44

29. 'पाणिपादम्' - अस्मिन् पदे समासविग्रहः भवति-

(A) पाणी च पादौ च (B) पाणिः च पादं च
(C) पाणिना च पादेन च (D) पाणि च पादौ च

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज–241

30. 'ध्रुवमपाये' ....इत्यत्र किं कारकम् ?

(A) करणम् (B) अपादानम्
(C) सम्प्रदानम् (D) कर्म

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–59

31. 'कुक्कुटमयूर्यौ'-इत्यस्य पदस्य लौकिकविग्रहः भवति-

(A) कुक्कुटश्च मयूरी च (B) कुक्कुटञ्च मयूरञ्च
(C) कुक्कुटस्य च मयूर्याश्च (D) कुक्कुटौ च मयूर्यौ च

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज–169

32. अधोनिर्दिष्टानां समीचीनां तालिकां विचिनुत-

(अ) अभिनिविशश्च 1. तुल्यास्यप्रयत्नम्
(ब) अपृक्तम् 2. बहुव्रीहिः
(स) चित्रगुः 3. कर्मसंज्ञा
(द) सवर्णम् 4. एकाल्प्रत्ययः

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	2	1	3	4
(B)	1	2	4	3
(C)	3	4	2	1
(D)	4	3	1	2

स्रोत–अष्टाध्यायी - ईश्वरचन्द्र, अ=पेज–126, ब=पेज–68, लघुसिद्धान्तकौमुदी-गोविन्दाचार्य, स=पेज–955, द=पेज–16

33. वर्णानामतिशयितः सन्निधिः किं संज्ञकः स्यात् ?

(A) उदात्तः (B) अनुदात्तः
(C) स्वरितः (D) संहिता

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–22

34. 'चोराद् बिभेति' इत्यत्र अपादानं केन सूत्रेण विधीयते ?

(A) पराजेरसोढः (B) भीत्रार्थानां भयहेतुः
(C) वारणार्थानामीप्सितः (D) विभाषा गुणेऽस्त्रियाम्

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–60

35. 'चर्मणि द्वीपिनं हन्ति' -इत्युदाहरणं कस्य भवति ?

(A) निमित्तात् कर्मयोगे (B) साध्वसाधुप्रयोगे च
(C) षष्ठी चानादरे (D) यतश्च निर्धारणम्

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–94

36. भाषापरिवर्तनस्य कति बाह्यकारणानि ?

(A) चत्वारि (B) षट्
(C) अष्टौ (D) दश

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–96-102

37. भारोपीयभाषापरिवारे शतमवर्गस्य कति प्रमुखभेदाः?

(A) चत्वारः (B) सप्त
(C) नव (D) एकादश

स्रोत–भाषा विज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–385

38. नायिकारहितं नाटकम् अस्ति –

(A) उत्तररामचरितम् (B) रत्नावली
(C) मुद्राराक्षसम् (D) वेणीसंहारम्

संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेवद्विवेदी, पेज–360

39. ''व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवम्'' इति कस्मिन् काव्ये उक्तम् ?

(A) शिशुपालवधे (B) किरातार्जुनीये
(C) भट्टिकाव्ये (D) कुमारसम्भवे

स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/30) - अभिराजराजेन्द्र मिश्र, पेज–98

27.(D) **28.**(B) **29.**(A) **30.**(B) **31.**(A) **32.**(C) **33.**(D) **34.**(B) **35.**(A) **36.**(C) **37.**(A) **38.**(C) **39.**(B)

40. विश्रुतस्य वृत्तान्तं कुत्रवर्णितम् –

(A) कादम्बर्याम् (B) दशकुमारचरिते
(C) हर्षचरिते (D) चम्पूरामायणे

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेवद्विवेदी, पेज–475

41. ''सुभाषितं हारि विशत्यधोगलान्न दुर्जनस्या-कंरिपोरिवामृतम्'' इति केन कविनोक्तम् ?

(A) वेदव्यासेन (B) कालिदासेन
(C) बाणभट्टेन (D) भासेन

स्रोत–कादम्बरी (कथामुख श्लोक-7) - तारिणीश झा, पेज–09

42. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत –

(अ) मृच्छकटिकम् 1. अश्वघोषः
(ब) वेणीसंहारम् 2. शूद्रकः
(स) बालचरितम् 3. भट्टनारायणः
(द) बुद्धचरितम् 4. भासः

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	4	3	2	1
(B)	3	2	4	1
(C)	2	3	4	1
(D)	2	4	1	3

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज अ=309, ब = 381, स = 275, द = 167

43. 'तत्र श्लोकचतुष्टयम्' इति कं दृश्यकाव्यम् उद्दिश्य उक्तम् ?

(A) विक्रमोर्वशीयम् (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(C) स्वप्नवासवदत्तम् (D) मृच्छकटिकम्

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेवद्विवेदी, पेज–341

44. रघुवंशे कति सर्गेषु श्रीरामकथा वर्णिता कालिदासेन–

(A) अष्टसु (B) चतुर्दशसु
(C) षट्त्सु (D) अष्टादशसु

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेवद्विवेदी, पेज–151

45. दशकुमारचरिते अयं प्रतिनायकः भवति –

(A) राजहंसः (B) मानसारः
(C) राजवाहनः (D) पुष्पोद्भवः

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेवद्विवेदी, पेज–474

46. रसनिष्पत्तिविषये साधारणीकरणं प्रथमं केन प्रतिपादितम् ?

(A) शङ्कुकेन (B) भट्टलोल्लटेन
(C) भट्टनायकेन (D) भरतेन

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–107

47. नाटके इतिवृत्तं कीदृशं भवेत् –

(A) प्रसिद्धम् (B) कल्पितम्
(C) असिद्धम् (D) मिश्रम्

स्रोत–साहित्यदर्पण (6/7) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–170

48. कस्य रूपकेषु प्रस्तावना 'स्थापना' इत्युच्यते ?

(A) कालिदासस्य (B) भवभूतेः
(C) श्रीहर्षस्य (D) भासस्य

स्रोत–स्वप्नवासवदत्तम् - शेषराज शर्मा रेग्मी, भू. पेज–12

49. आनन्दवर्धनमते मधुरतमः रसः कः ?

(A) करुणरसः (B) विप्रलम्भशृङ्गाररसः
(C) सम्भोगशृङ्गाररसः (D) हास्यरसः

स्रोत–ध्वन्यालोक (1/5) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–29

50. करुणरसस्य वर्णः कः ?

(A) श्यामः (B) रक्तः
(C) कपोतः (D) कृष्णः

स्रोत–साहित्यदर्पण (3/222) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–116

40. (B) **41.** (C) **42.** (C) **43.** (B) **44.** (C) **45.** (B) **46.** (C) **47.** (A) **48.** (D) **49.** (A) **50.** (C)

34	जून 2012	UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् III

नोट : इस प्रश्नपत्र में **पचहत्तर (75)** बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के **दो (2)** अङ्क हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. 'राजन्तमध्वराणाम् .... इति' पठ्यते –
(A) पृथिवीसूक्ते (B) अग्निसूक्ते
(C) विष्णुसूक्ते (D) वाक्सूक्ते
स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह (1-1-8) - हरिदत्त शास्त्री, पेज-59, 60

2. कति लक्षणयुक्तो ग्रन्थवाचको ब्राह्मणशब्दः ?
(A) द्वादश (B) पञ्चदश
(C) दश (D) अष्ट
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–115

3. पौर्णमासेष्टौ कति प्रयाजाः भवन्ति ?
(A) सप्त (B) दश
(C) अष्ट (D) पञ्च
स्रोत–श्रौतयज्ञपरिचय - वेणीरामशर्मा गौड़, पेज–13

4. पञ्चमहायज्ञाः किमर्थम् अनुष्ठीयन्ते ?
(A) ज्वरशान्तये (B) वास्तुदोषनिवृत्तये
(C) पञ्चसूनदोषनाशाय (D) धनलाभाय
स्रोत–यज्ञमीमांसा - वेणीराम शर्मा गौड़, पेज–30

5. शुनःशेपाख्याने प्राधान्येन स्तुतः देवः कः ?
(A) कुबेरः (B) इन्द्रः
(C) विष्णुः (D) वरुणः
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–125

6. मन्त्रेषु अनुदात्तस्वराङ्कनं क्रियते –
(A) मध्ये (B) उपरिष्टात्
(C) अधः (D) वामतः
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति -कपिलदेव द्विवेदी, पेज–326

7. यज्ञविधिमधिकृत्य मन्त्रव्याख्यानं क्रियते –
(A) अरविन्देन (B) विन्टरनित्सेन
(C) दयानन्देन (D) सायणेन
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–17

8. एषु अर्वाचीनो वेदभाष्यकारो न वर्तते –
(A) मैक्समूलरः (B) वेबरः
(C) अरविन्दः (D) सायणः
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–22-23

9. ईशावास्योपनिषद् केन वेदेन सम्बद्धा ?
(A) ऋग्वेदेन (B) कृष्णयजुर्वेदेन
(C) शुक्लयजुर्वेदेन (D) सामवेदेन
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–09

10. 'कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूः' कुत्रेयमुक्तिः ?
(A) श्रीमद्भगवद्गीतायाम् (B) ईशावास्योपनिषदि
(C) कठोपनिषदि (D) श्रीमद्भागवते
स्रोत–ईशावास्योपनिषद् (मन्त्र-8)

11. एतेषु सारथिः कः उच्यते ?
(A) आत्मा (B) शरीरम्
(C) मनः (D) बुद्धिः
स्रोत–कठोपनिषद् (1.3.3)

12. अश्वस्य मेध्यस्य लोमानि कानि उच्यन्ते ?
(A) ऋतवः (B) दिशः
(C) नक्षत्राणि (D) ओषधयश्च वनस्पतयश्च
स्रोत–बृहदारण्यकोपनिषद् (शांकरभाष्य) गीताप्रेस, पेज–38

13. 'विद्यया विन्दतेऽमृतम्' इति कुत्रोपदिष्टम् ?
(A) ईशावास्योपनिषदि (B) केनोपनिषदि
(C) तैत्तिरीयोपनिषदि (D) कठोपनिषदि
स्रोत–केनोपनिषद् (2/4) - ईशादि नौ उपनिषद्, पेज-57

14. 'उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान् निबोधत' इति कुत्रोपदिश्यते ?
(A) श्रीमद्भगवद्गीतायाम् (B) श्रीमद्भागवते
(C) कठोपनिषदि (D) बृहदारण्यकोपनिषदि
स्रोत–कठोपनिषद् (1/3/14) - ईशादि नौ उपनिषद, पेज-132

1. (B) **2.** (C) **3.** (D) **4.** (C) **5.** (D) **6.** (C) **7.** (D) **8.** (D) **9.** (C) **10.** (B) **11.** (D) **12.** (D) **13.** (B) **14.** (C)

15. 'युवा स्यात् साधु युवा' इति कुत्रोपदिश्यते ?

(A) तैत्तिरीयोपनिषदि (B) बृहदारण्यकोपनिषदि
(C) कठोपनिषदि (D) केनोपनिषदि

स्रोत–तैत्तिरीयोपनिषद् (2.8.1) चुन्नीलाल शुक्ल, पेज–70

16. सन्ध्यक्षराणि कति सन्ति ?

(A) त्रीणि (B) चत्वारि
(C) अष्टौ (D) द्वादश

स्रोत–ऋग्वेदप्रातिशाख्यम् - वीरेन्द्रकुमार वर्मा, पेज–43

17. ह्रस्वस्वरभक्तेः उच्चारणकालो भवति –

(A) त्रिमात्राकालः (B) द्विमात्राकालः
(C) अर्धोनमात्राकालः (चौथाई मात्रा) (D) अर्धमात्राकालः

स्रोत–ऋग्वेदप्रातिशाख्यम् - वीरेन्द्रकुमार वर्मा, पेज–69

18. राष्ट्राभिवर्द्धनसूक्तं कस्यां शाखायां विद्यते ?

(A) शाकलशाखायाम् (B) काण्वशाखायाम्
(C) जैमिनीयशाखायाम् (D) शौनकशाखायाम्

स्रोत–अथर्ववेद शौनकशाखा (1.29)

19. अग्निष्टोमयागो वर्तते –

(A) पाकयज्ञः (B) हविर्यज्ञः
(C) सोमयज्ञः (D) स्मार्तयज्ञः

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–315

20. गायत्रीच्छन्दसि कियन्तो वर्णाः भवन्ति ?

(A) 20 (B) 24
(C) 28 (D) 32

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–49

21. निरुक्तानुसारं पञ्चमो भावविकारः कः ?

(A) जायते (B) अपक्षीयते
(C) वर्धते (D) विनश्यति

स्रोत–निरुक्तम् - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–26

22. 'समुद्द्रवन्त्यस्मादापः' इत्यनेन को निर्दिश्यते ?

(A) मेघः (B) ह्रदः
(C) समुद्रः (D) नदी

स्रोत–निरुक्तम् - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–179

23. 'चित्' इति निपातो वर्तते –

(A) निषेधार्थे (B) उपमार्थे
(C) शब्दार्थे (D) प्रयोगार्थे

स्रोत–निरुक्तम् - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–45

24. माङ्गलिक आचार्यो महतो शास्त्रौधस्य मङ्गलार्थमादितः किं प्रयुङ्क्ते ?

(A) काव्यम् (B) नित्यशब्दम्
(C) अनित्यशब्दम् (D) सिद्धशब्दम्

स्रोत–व्याकरणमहाभाष्य (पश्पशाह्निक)-मधुसूदन मिश्र, पेज–38

25. 'इजादेश्च गुरुमतोऽनृच्छः' इति सूत्रेण किं विधीयते ?

(A) आम् (B) इट्
(C) वृद्धिः (D) गुणः

स्रोत–अष्टाध्यायी (3.1.36) - ईश्वरचन्द्र, पेज–267

26. अधोऽङ्कितानां युग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत –

(अ) प्राचां ष्फ — 1. क्रियातिपत्तौ
(ब) लिङ्निमित्ते लृङ् — 2. तृतीयान्यतरस्याम्
(स) प्रेष्यब्रुवोर्हविषो — 3. तद्धितः
(द) तुल्यार्थैरतुलोपमाभ्याम् — 4. देवतासम्प्रदाने

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	2	3	1	4
(B)	3	2	4	1
(C)	3	1	4	2
(D)	4	2	3	1

स्रोत–अष्टाध्यायी - ईश्वरचन्द्र, अ = 4.1.17 पेज–426, ब = 3.3.139 पेज–384, स = 2.3.61 पेज–214, द = 2.3.72 पेज–219

27. ''आख्यातोपयोगे'' इति सूत्रस्य उदाहरणं किम् ?

(A) मातुर्निलीयते कृष्णः (B) नटस्य गाथां शृणोति
(C) उपाध्यायादधीते (D) हिमवतो गङ्गा प्रभवति

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–62

28. 'केशकः' इत्यत्र 'कन्' प्रत्ययः केन सूत्रेण विधीयते ?

(A) विमुक्तादिभ्योऽण् (B) स्वाङ्गेभ्यः प्रसिते
(C) कुल्माषादञ् (D) पूर्वादिनिः

स्रोत–अष्टाध्यायी (5.2.66) - ईश्वरचन्द्र, पेज–592

15. (A) **16.** (B) **17.** (C) **18.** (D) **19.** (C) **20.** (B) **21.** (B) **22.** (C) **23.** (B) **24.** (D) **25.** (A) **26.** (C) **27.** (C) **28.** (B)

29. पाणिनीयशिक्षानुसारं लिखितपाठकः कः भवति ?

(A) उत्तमः (B) उत्तमोत्तमः
(C) अधमः (D) श्रेष्ठः

स्रोत–पाणिनीयशिक्षा (श्लोक–32)-रमाशङ्कर मिश्र, पेज–16

30. पारिवारिकवर्गीकरणस्य कति प्रमुखभेदाः ?

(A) चतुर्दश (B) षोडश
(C) अष्टादश (D) विंशतिः

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–371

31. भारोपीयपरिवारे 'भारत-ईरानीवर्गः' कस्मिन् वर्गे ?

(A) केन्टुमवर्गः (B) शतमवर्गः
(C) चीनीपरिवारः (D) आमीनीपरिवारः

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–385

32. रुद्रदाम्नः 'गिरनारशिलालेखे' सुदर्शनतडागस्य कः पुनर्निर्माता ?

(A) पुष्पगुप्तः (B) तुषारस्फः
(C) चक्रपालितः (D) सुविशाखः

प्राचीनभारत के प्रमुख अभिलेख (खण्ड-1)-परमेश्वरीलालगुप्ता, पेज–203

33. 'शोणो धावति' इत्यत्र का लक्षणा ?

(A) भागलक्षणा (B) जहल्लक्षणा
(C) अजहल्लक्षणा (D) जहदजहल्लक्षणा

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–136

34. 'वेदान्तानुसारं' कतिविधः समाधिः ?

(A) द्विविधः (B) त्रिविधः
(C) चतुर्विधः (D) पञ्चविधः

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–157

35. 'वेदान्त' - शब्दस्य पर्यायः कः ?

(A) न्यायदर्शनम् (B) पूर्वमीमांसा
(C) उत्तरमीमांसा (D) सांख्यदर्शनम्

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, भू. पेज–VIII

36. सांख्यदर्शने कति प्रमाणानि स्वीकृतानि ?

(A) एकः (B) द्वौ
(C) त्रीणि (D) चत्वारि

स्रोत–सांख्यकारिका (का. 4)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–47

37. सांख्यदर्शने सूक्ष्मशरीरं कति तत्त्वात्मकम् ?

(A) एकादश (B) द्वादश
(C) अष्टादश (D) पञ्चविंशतिः

स्रोत–सांख्यकारिका (का. 40)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–251

38. पुरुषस्य निवर्तकं वाक्यम् उच्यते –

(A) विधिः (B) मन्त्रः
(C) निषेधः (D) अर्थवादः

स्रोत–अर्थसंग्रह - सत्यप्रकाश शर्मा, पेज–169

39. अर्थसंग्रहस्य कः प्रणेता ?

(A) लौगाक्षिभास्करः (B) कुमारिलभट्टः
(C) शम्भुभट्टः (D) आपदेवः

स्रोत–अर्थसंग्रह - सत्यप्रकाश शर्मा, भू. पेज–12

40. विनियोगविधेः सहकारिभूतानि प्रमाणानि कति ?

(A) पञ्च (B) षट्
(C) दश (D) एकादश

स्रोत–अर्थसंग्रह - सत्यप्रकाश शर्मा, पेज–58

41. ''सुलभाः पुरुषाः राजन् सततं प्रियवादिनः। अप्रियस्य तु पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः॥'' - श्लोकममुं रावणासुरम्प्रति कः उक्तवान् ?

(A) कुम्भकर्णः (B) सुग्रीवः
(C) रावणः (D) मारीचः

स्रोत–वाल्मीकिरामायण अरण्यकाण्ड - (37/2)

42. लोके अतिप्रसिद्धा 'श्रीमद्भगवद्गीता' महाभारतस्य कस्मिन पर्वणि उपनिबद्धा ?

(A) अरण्यपर्वणि (B) भीष्मपर्वणि
(C) शान्तिपर्वणि (D) विराटपर्वणि

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज–150

43. रावणासुरात् सीतायाः विमुक्तिः कया स्वप्नेन दृष्टा –

(A) मन्दोदर्या (B) तारया
(C) त्रिजट्या (D) कैकेय्या

स्रोत–वाल्मीकिरामायण (सुन्दरकाण्ड सर्ग-27)

29. (C) **30.** (C) **31.** (B) **32.** (D) **33.** (C) **34.** (A) **35.** (C) **36.** (C) **37.** (C) **38.** (C) **39.** (A) **40.** (B) **41.** (D) **42.** (B) **43.** (C)

44. कीचकस्य वधं महाभारतस्य कस्मिन् पर्वणि उपवर्णितम्?
(A) उद्योगपर्वणि (B) विराटपर्वणि
(C) शल्यपर्वणि (D) द्रोणपर्वणि
स्रोत–संस्कृतसाहित्य का अभिनव इतिहास-राधावल्लभत्रिपाठी, पेज–80

45. कस्मिन् पुराणे काव्यशास्त्रसम्बन्धिविषयाः सर्वे उट्टङ्किताः वर्तन्ते ?
(A) ब्रह्मपुराणे (B) ब्रह्माण्डपुराणे
(C) नारदपुराणे (D) अग्निपुराणे
स्रोत–संस्कृतसाहित्य का इतिहास-उमाशंकरशर्मा 'ऋषि', पेज–184

46. मौर्यवंशराजानां चरितं कस्मिन् पुराणे वर्णितम् ?
(A) वायुपुराणे (B) वराहपुराणे
(C) वामनपुराणे (D) विष्णुपुराणे
स्रोत–संस्कृतसाहित्य का इतिहास-उमाशंकरशर्मा 'ऋषि', पेज–181

47. ऋष्यशृङ्गमुनेः वृत्तान्तं रामायणस्य कस्मिन् काण्डे वर्णितम्?
(A) अयोध्याकाण्डे (B) अरण्यकाण्डे
(C) सुन्दरकाण्डे (D) बालकाण्डे
स्रोत–वाल्मीकिरामायण (बालकाण्ड सर्ग-15)

48. अर्थशास्त्रस्य द्वितीयाधिकरणं वर्तते –
(A) विनयाधिकारिकम् (B) धर्मस्थीयम्
(C) अध्यक्षप्रचारः (D) कण्टकशोधनम्
स्रोत–कौटिलीय - अर्थशास्त्रम् - वाचस्पति गैरोला, पेज–2

49. अमात्योत्पत्तिः कुत्र उपदिष्टा ?
(A) कण्टकशोधने (B) धर्मस्थीये
(C) षाड्गुण्ये (D) विनयाधिकारिके
स्रोत–कौटिलीय - अर्थशास्त्रम् - वाचस्पति गैरोला, पेज–2

50. कृतयुगस्य कालावधिः उक्तः –
(A) 1000 वर्षात्मकः (B) 2000 वर्षात्मकः
(C) 3000 वर्षात्मकः (D) 4000 वर्षात्मकः
स्रोत–मनुस्मृति (1/69) - गिरिधर गोपाल शर्मा, पेज–35

51. निष्क्रमणसंस्कारः कर्तव्यः –
(A) प्रथमे मासि (B) द्वितीये मासि
(C) तृतीये मासि (D) चतुर्थे मासि
स्रोत–मनुस्मृति (2/34) - गिरिधर गोपाल शर्मा, पेज–73

52. मृगया गण्यते –
(A) कामजगणे (B) क्रोधजगणे
(C) लोभजगणे (D) मोहजगणे
स्रोत–मनुस्मृति (7/47) – गिरिधर गोपाल शर्मा, पेज–167

53. विवादेषु उपदर्शितो व्यवहारो वर्तते –
(A) एकपाद् (B) द्विपाद्
(C) त्रिपाद् (D) चतुष्पाद्
स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति (2/8) – गंगासागर राय, पेज–171

54. स्मृत्योर्विरोधे कः बलवान् ?
(A) व्यवहारः (B) न्यायः
(C) राजा (D) न्यायाधीशः
स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति (2/21) – गंगासागर राय, पेज–179

55. 'प्रतिबध्नाति हि श्रेयः पूज्यपूजाव्यतिक्रमः' ...कस्य इयम् उक्तिः –
(A) कामधेनोः (B) नन्दिन्याः
(C) दिलीपस्य (D) वसिष्ठस्य
स्रोत–रघुवंशम् (1/79) - कृष्णमणि त्रिपाठी, पेज–35

56. 'नमुचिद्विषा' इत्यस्य पदस्य कोऽर्थः ?
(A) नारदेन (B) इन्द्रेण
(C) रावणेन (D) माघेन
स्रोत–शिशुपालवधम् (1/51) - तारिणीश झा, पेज–107

57. 'सर्वथा न कञ्चन स्पृशन्ति शरीरधर्माणमुपतापाः' .....कस्माद् ग्रन्थादेतत् वाक्यमुद्धृतम् –
(A) दशकुमारचरितम् (B) हर्षचरितम्
(C) नैषधीयचरितम् (D) कादम्बरी
स्रोत–कादम्बरी (महाश्वेतावृत्तान्त) - राजेदव मिश्र, पेज-31

58. श्रीकृष्णस्य सम्मुखं गौरवर्णः नारदः कस्याभिरामताम् अचोरयत् ?
(A) सूर्यस्य (B) कृष्णस्य
(C) चन्द्रमसः (D) बलदेवस्य
स्रोत–शिशुपालवधम् (1/16) - तारिणीश झा, पेज–37

59. 'इति हेतुस्तदुद्भवे' इति कस्य मतम् ?
(A) जगन्नाथस्य (B) हेमचन्द्रस्य
(C) वाग्भट्टस्य (D) मम्मटस्य
स्रोत–काव्यप्रकाश (1/3) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–16

44. (B) **45.** (D) **46.** (D) **47.** (D) **48.** (C) **49.** (D) **50.** (D) **51.** (D) **52.** (A) **53.** (D) **54.** (B)
55. (D) **56.** (B) **57.** (D) **58.** (C) **59.** (D)

60. उपमानोपमेययोः बिम्बप्रतिबिम्बत्वं चेत् कः तत्रालङ्कारः?
(A) निदर्शनालङ्कारः (B) दीपकालङ्कारः
(C) व्यतिरेकालङ्कारः (D) दृष्टान्तालङ्कारः
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–486

61. ध्वनिप्रभेदेषु उत्कृष्टः कः ?
(A) अलङ्कारध्वनिः (B) भावध्वनिः
(C) रसध्वनिः (D) वस्तुध्वनिः
स्रोत–काव्यप्रकाश (4/26) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–94

62. ''हतोऽपि लभते स्वर्गं जित्वा तु लभते यशः'' इति कुत्र वर्तते ?
(A) ऊरुभङ्गे (B) दूतकाव्ये
(C) कर्णभारे (D) मध्यमव्यायोगे
स्रोत–कर्णभारम् (श्लोक-12) - रामजी मिश्र, पेज–13

63. ''यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया'' कस्य वचनमिदम् ?
(A) दुष्यन्तस्य (B) कण्वस्य
(C) शारद्वतस्य (D) गौतम्याः
स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/6) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–208

64. ''वितरति गुरुः प्राज्ञे विद्यां यथैव तथा जडे'' इत्युक्तिः कस्मिन् नाटके आयाति ?
(A) महावीरचरिते (B) मालतीमाधवे
(C) मालविकाग्निमित्रे (D) उत्तररामचरिते
स्रोत–उत्तररामचरितम् (2/4) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–105

65. मुखसन्धेः अङ्गानि कति ?
(A) द्वादश (B) त्रयोदश
(C) चतुर्दश (D) एकादश
स्रोत–दशरूपक (1/24) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज–27

66. 'मुद्राराक्षसनाटके' मुद्रा केन सम्बद्धा भवति ?
(A) मलयकेतुना (B) चाणक्येन
(C) चन्द्रगुप्तेन (D) राक्षसेन
स्रोत–मुद्राराक्षस - परमेश्वरदीन पाण्डेय, भू. पेज–5

67. नाट्यशास्त्रस्य 'अभिनवभारती' इति व्याख्यायाः कर्त्ता कः ?
(A) आनन्दवर्धनः (B) भरतः
(C) अभिनवगुप्तः (D) धनञ्जयः
स्रोत–नाट्यशास्त्र – ब्रजमोहन चतुर्वेदी, भू. पेज–25

68. सात्त्विकभावानां संख्या भवति –
(A) त्रयस्त्रिंशत् (B) नव
(C) अष्टौ (D) अष्टादश
स्रोत–दशरूपक - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज–251

69. पण्डितराजजगन्नाथानुसारं सामान्यवस्तुध्वनिः गुणीभूतव्यंग्यप्रकाराश्च कस्मिन् काव्यप्रभेदेऽन्तर्भवन्ति ?
(A) उत्तमोत्तमकाव्ये
(B) उत्तमकाव्ये
(C) मध्यमकाव्ये
(D) अधमकाव्ये
स्रोत–रसगंगाधर (प्रथम आनन) - मदन मोहन झा, पेज–66

70. तर्कसंग्रहे कति द्रव्याणि ?
(A) चत्वारि (B) सप्त
(C) नव (D) षट्
स्रोत–तर्कसंग्रह - अनितासेन गुप्ता पेज–28

71. तर्कसंग्रहे अभावस्य कति भेदाः ?
(A) द्वौ (B) चत्वारः
(C) षट् (D) अष्टौ
स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता पेज–34

72. न्यायस्य अनुमानप्रमाणे कति अवयवाः सन्ति ?
(A) त्रयः (B) पञ्च
(C) सप्त (D) नव
स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवासशास्त्री पेज–92

73. तर्कसंग्रहे गुणाः सन्ति –
(A) द्वादश (B) पञ्चदश
(C) अष्टादश (D) चतुर्विंशतिः
स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–29

74. कतिविधः रसः तर्कसंग्रहानुसारम् ?
(A) द्विविधः (B) चतुर्विधः
(C) षट्विधः (D) अष्टविधः
स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–50

75. कति सन्ति हेत्वाभासाः ?
(A) त्रयः (B) पञ्च
(C) नव (D) द्वादश
स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–95

60. (D) **61.** (C) **62.** (C) **63.** (B) **64.** (D) **65.** (A) **66.** (D) **67.** (C) **68.** (C) **69.** (B) **70.** (C) **71.** (B) **72.** (B) **73.** (D) **74.** (C) **75.** (B)

35	दिसम्बर 2012	UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् II

नोट : इस प्रश्नपत्र में **पचास (50)** बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के **दो (2)** अङ्क हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. 'नासत्यौ' इति कस्य नाम ?
(A) द्यावापृथिव्योः (B) इन्द्रावरुणयोः
(C) अश्विनोः (D) इन्द्राग्न्योः
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–302

2. 'चन्द्ररथा' का वर्तते ?
(A) नदी (B) उर्वशी
(C) उषा (D) यमी
स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह (3.61.2) - हरिदत्तशास्त्री, पेज-235

3. ऋग्वेदे कति मण्डलानि सन्ति ?
(A) नव (B) विंशतिः
(C) दश (D) द्वादश
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–47

4. कपर्दी देवः कः ?
(A) अग्निः (B) वरुणः
(C) रुद्रः (D) बृहस्पतिः
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–303

5. 'जैमिनीयशाखा' कस्य वेदस्य ?
(A) ऋग्वेदस्य (B) यजुर्वेदस्य
(C) सामवेदस्य (D) अथर्ववेदस्य
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–10

6. नक्षत्रसम्पातगणनया केन वेदकालो निर्धार्यते ?
(A) मैक्समूलरः (B) वेबरः
(C) बालगङ्गाधरतिलकः (D) जैकोबी
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–40

7. 'निघण्टु' ग्रन्थे कति काण्डसंख्या वर्तते –
(A) चतुर्दश (B) द्वादश
(C) पञ्च (D) त्रीणि
स्रोत–निरुक्तम् - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–02

8. ''आ घा ता गच्छा'' इति पठ्यते –
(A) इन्द्रसूक्ते (B) वरुणसूक्ते
(C) विश्वामित्रनदी-संवादे (D) यमयमीसंवादे
स्रोत–ऋग्वेद-यमयमी संवाद (10/10) मन्त्र-10

9. ''तमसो मा ज्योतिर्गमय'' इति कुत्र विद्यते ?
(A) ऋग्वेदे (B) बृहदारण्यके
(C) अथर्ववेदे (D) सामविधाने
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–185

10. अधोऽङ्कितानां समीचीनमुत्तरं चिनुत –

(अ)	सरमा-पणिसंवादः	1.	बृहदारण्यकोपनिषद्
(ब)	स्वाध्यायान्मा प्रमदः	2.	ऋग्वेदस्य दशममण्डले
(स)	कल्पः	3.	तैत्तिरीयोपनिषद्
(द)	आत्मनस्तु कामाय सर्वं प्रियं भवति	4.	हस्तः

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	1	3	2	4
(B)	4	2	3	1
(C)	2	3	4	1
(D)	3	2	1	4

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी
पेज– अ = 58, ब=तैत्तिरीयोपनिषद् (1.11.1),
स = 190, बृहदारण्यकोपनिषद् शाङ्करभाष्य गीताप्रेस (4.5.6) पेज–1130,

11. श्रुतौ यज्ञस्वरूपेण स्तूयते –
(A) गङ्गा (B) गोदावरी
(C) विष्णुः (D) वरुणः
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–310

12. अथर्ववेदस्य ब्राह्मणं विद्यते –
(A) शतपथब्राह्मणम् (B) गोपथब्राह्मणम्
(C) ताड्यब्राह्मणम् (D) ऐतरेयब्राह्मणम्
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–10

1. (C) **2.** (C) **3.** (C) **4.** (C) **5.** (C) **6.** (C) **7.** (D) **8.** (D) **9.** (B) **10.** (C) **11.** (C) **12.** (B)

13. कृष्णयजुर्वेदेन सम्बद्धास्ति –

(A) छान्दोग्योपनिषद् (B) कठोपनिषद्
(C) ऐतरेयोपनिषद् (D) ईशावास्योपनिषद्

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–09

14. तर्कभाषानुसारं कारणं त्रिविधम् –

(A) समवायि - असमवायि - निमित्तभेदात्
(B) समवायि - संयुक्तसमवायि - निमित्तभेदात्
(C) संयोग - संयुक्ततादात्म्य - निमित्तभेदात्
(D) सहकारि - तादात्म्य - समवायिभेदात्

स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवासशास्त्री, पेज–24

15. .... वाक्यं भवति –

(A) ध्वनिसमूहः (B) साकांक्षपदसमूहः
(C) शब्दसमूहः (D) वर्णसमूहः

स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज–122

16. कीदृशः तर्कभाषासम्मतः अपवर्गः ?

(A) दुःखस्यात्यन्तिकी निवृत्तिः
(B) दुःखस्यैकान्तिकी निवृत्तिः
(C) ब्रह्मसायुज्यम्
(D) स्वर्गात्मकः

स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवासशास्त्री, पेज–260

17. उपमितिज्ञानं कथं जायते ?

(A) व्याप्तिज्ञानात् (B) इन्द्रियसन्निकर्षात्
(C) सादृश्यात् (D) पदज्ञानात्

स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–104

18. तर्कसंग्रहानुसारं किमस्ति नवमं द्रव्यम् ?

(A) जीवः (B) जगत्
(C) दिक् (D) मनः

स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–28

19. तर्कभाषायां कति प्रमाणानि ?

(A) द्वौ (B) त्रीणि
(C) चत्वारि (D) सप्त

स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज–50

20. सांख्यकारिकायां कीदृशाः गुणाः?

(A) इष्टानिष्टोभयात्मकाः
(B) प्रकाशप्रवृत्तिनियमार्थाः
(C) सुखदुःखरागात्मकाः
(D) विषादात्मकाः

स्रोत–सांख्यकारिका (का. 12)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–135

21. सांख्यकारिकायां कीदृशं कैवल्यम् ?

(A) आत्यन्तिकदुःखनिवृत्तिः
(B) ऐकान्तिकदुःखनिवृत्तिः
(C) सुखाभिव्यक्तिः
(D) ऐकान्तिकात्यन्तिकदुःखनिवृत्तिः

स्रोत–सांख्यकारिका (का. 68)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–336

22. सांख्यकारिकायां ज्ञानं कस्य धर्मः ?

(A) अहङ्कारस्य (B) प्रकृतेः
(C) पुरुषस्य (D) बुद्धेः

स्रोत–सांख्यकारिका (का. 23)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–198

23. 'वेदान्तसारे' अज्ञानस्य कतिविधा शक्तिः ?

(A) द्विविधा (B) त्रिविधा
(C) चतुर्धा (D) पञ्चधा

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–56

24. 'वेदान्तसारे' अनिर्वचनीयं किम् ?

(A) ईश्वरः (B) जीवः
(C) जगत् (D) ब्रह्म

स्रोत–भारतीय दर्शन - चन्द्रधर शर्मा, पेज–250

25. वेदान्तसारे लिङ्गशरीरस्य कति अवयवाः ?

(A) त्रयोदश (B) पञ्चदश
(C) सप्तदश (D) एकोनविंशतिः

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–65

26. कर्मणा यमभिप्रैति .... इत्यत्र किं कारकम् ?

(A) कर्म (B) करणम्
(C) सम्प्रदानम् (D) अधिकरणम्

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–46

13. (B) **14.** (A) **15.** (B) **16.** (A) **17.** (C) **18.** (D) **19.** (C) **20.** (B) **21.** (D) **22.** (D) **23.** (A) **24.** (D) **25.** (C) **26.** (C)

27. 'निर्मक्षिकम्' अस्य पदस्य अलौकिकविग्रहः भवति -
(A) निर् + मक्षिका + अम् (B) मक्षिका + जस् + निर्
(C) मक्षिक + सुँ + निर् (D) मक्षिका + आम् + निर्
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4) पेज–28

28. पाणिनिमते 'मुनि' शब्दस्य का संज्ञा भवति ?
(A) नदी (B) घि
(C) टि (D) अपृक्त
स्रोत–अष्टाध्यायी (1.4.7) - ईश्वरचन्द्र, पेज–111-112

29. समासशास्त्रे प्रथमानिर्दिष्टं किं भवति ?
(A) उपसर्गः (B) अव्ययम्
(C) उपसर्जनम् (D) प्रातिपदिकम्
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज–20

30. 'गुणसंज्ञा' विधायकं सूत्रं किम् ?
(A) वृद्धिरेचि (B) अकः सवर्णे दीर्घः
(C) आद्गुणः (D) अदेङ्गुणः
स्रोत–अष्टाध्यायी (1.1.2) - ईश्वरचन्द्र, पेज–06

31. 'ग्रामं गच्छन् तृणं स्पृशति' - इत्यत्र द्वितीयाविधायकं सूत्रं किम् ?
(A) अकथितञ्च (B) स्पृहेरीप्सितः
(C) कर्तुरीप्सिततमं कर्म (D) तथायुक्तं चानीप्सितम्
स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–19

32. 'द्वियमुनम्' इत्यत्र कः समासः ?
(A) द्विगुः (B) द्वन्द्वः
(C) अव्ययीभावः (D) तत्पुरुषः
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज–42

33. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां विचिनुत –
(अ) हलोऽनन्तराः 1. केवलसमासः
(ब) विशेषसंज्ञाविनिर्मुक्तः 2. संयोगः
(स) प्रायेणान्यपदार्थप्रधानः 3. इत्थम्भूतलक्षणे
(द) जटाभिस्तापसः 4. बहुव्रीहिः

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	3	4	2	1
(B)	1	2	3	4
(C)	2	1	4	3
(D)	4	3	1	2

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य अ पेज–23, ब पेज–887, स=पेज–887, द=कारक प्रकरण - राममुनि पाण्डेय, पेज–43

34. 'भूतबलिः' इत्यत्र समासः केन सूत्रेण विधीयते ?
(A) कर्तृकरणे कृता बहुलम्
(B) चतुर्थी तदर्थार्थबलिहितसुखरक्षितैः
(C) पञ्चमी भयेन
(D) सप्तमी शौण्डैः
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज–73-75

35. क्रियायां स्वातन्त्र्येण विवक्षितोऽर्थः कः स्यात् ?
(A) कर्म (B) करणम्
(C) कर्ता (D) अधिकरणम्
स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनिपाण्डेय, पेज–40

36. भाषाविज्ञाने बलाघातस्य भेदाः सन्ति –
(A) चत्वारः (B) सप्त
(C) दश (D) द्वादश
स्रोत–भाषाविज्ञान - भोलानाथ तिवारी, पेज–326

37. अर्थावबोधस्य कति प्रमुखसाधनानि ?
(A) सप्त (B) आठ
(C) एकादश (D) त्रयोदश
स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–326

38. मम्मटानुसारम् अतादृशिगुणीभूतव्यङ्ग्यं व्यङ्ग्ये किं काव्यम् ?
(A) उत्तमोत्तमम् (B) उत्तमम्
(C) मध्यमम् (D) अधमम्
स्रोत–काव्यप्रकाश (सूत्र-3) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–31

39. साहित्यदर्पणानुसारं प्रयोजनवती साध्यवसानालक्षण-लक्षणायाः उदाहरणं किं भवति ?
(A) गङ्गायां घोषः (B) कुन्ताः प्रविशन्ति
(C) श्वेतो धावति (D) गौर्वाहीकः
स्रोत–साहित्यदर्पण - अभिराज राजेन्द्र मिश्र, पेज–164

40. व्यायोगे नायकः कीदृशः?
(A) धीरोदात्तः (B) धीरप्रशान्तः
(C) धीरोद्धतः (D) धीरललितः
स्रोत–साहित्यदर्पण (6/232-233) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–215

27.(D) **28.**(B) **29.**(C) **30.**(D) **31.**(D) **32.**(C) **33.**(C) **34.**(B) **35.**(C) **36.**(A) **37.**(B) **38.**(C) **39.**(A) **40.**(C)

41. मृच्छकटिकं कस्य रूपकस्य उदाहरणं भवति ?

(A) नाटकस्य (B) प्रकरणस्य
(C) डिमस्य (D) वीथ्याः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–307

42. रौद्ररसस्य स्थायिभावः कः ?

(A) उत्साहः (B) भयम्
(C) जुगुप्सा (D) क्रोधः

स्रोत–साहित्यदर्पण (3/227) – शालिग्राम शास्त्री, पेज–117

43. भट्टनायकस्य भुक्तिवादः कस्य मतस्यानुकूलम् ?

(A) मीमांसामतस्य (B) सांख्यमतस्य
(C) न्यायमतस्य (D) वेदान्तमतस्य

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–107

44. मल्लिनाथेन कस्य काव्यस्य अष्टमसर्गपर्यन्तमेव व्याख्यानं रचितम् –

(A) रघुवंशस्य (B) किरातार्जुनीयस्य
(C) कुमारसम्भवस्य (D) नैषधीयचरितस्य

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेवद्विवेदी, पेज–150

45. लक्ष्मीचाञ्चल्यं कस्मिन् उपवर्णितमस्ति –

(A) शाकुन्तले (B) कादम्बर्याम्
(C) हर्षचरिते (D) रघुवंशे

स्रोत–कादम्बरी (शुकनासोपदेश) - तारिणीश झा, पेज–30

46. वीररसप्रधानं नाटकमिदम् –

(A) स्वप्नवासवदत्तम् (B) वेणीसंहारम्
(C) मालतीमाधवम् (D) नागानन्दम्

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेवद्विवेदी, पेज–388

47. एनं ''कवीनामिह चक्रवर्ती'' इति वदन्ति विपश्चितः –

(A) कालिदासः (B) श्रीहर्षः
(C) वाल्मीकिः (D) बाणः

स्रोत–संस्कृत गङ्गा साहित्यम् - सर्वज्ञभूषण, पेज–12

48. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां विचिनुत –

(अ) द्वाविंशतिसर्गात्मकम् 1. शिशुपालवधम्
(ब) विंशतिसर्गात्मकम् 2. रघुवंशमहाकाव्यम्
(स) एकोनविंशतिसर्गात्मकम् 3. किरातार्जुनीयम्
(द) अष्टादशसर्गात्मकम् 4. नैषधमहाकाव्यम्

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	3	1	4	2
(B)	2	3	1	4
(C)	1	4	3	2
(D)	4	1	2	3

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज अ = 224, ब = 201-202, स = 152, द = 185

49. भवभूतिमहाकवेरिमां ''निरर्गलतरङ्गिणी'' इति वदन्ति–

(A) स्रग्धरा (B) मन्दाक्रान्ता
(C) शिखरिणी (D) वसन्ततिलका

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-523

50. ''सरस्वतीश्रुतमहतां महीयताम्'' इति केनोक्तम् ।

(A) वाल्मीकिना (B) भवभूतिना
(C) कालिदासेन (D) श्रीहर्षेण

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (7/35) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–453

41.(B) **42.**(D) **43.**(B) **44.** (C) **45.**(B) **46.**(B) **47.**(D) **48.**(D) **49.**(C) **50.**(C)

36	दिसम्बर 2012	UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् III

नोट : इस प्रश्नपत्र में **पचहत्तर (75)** बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के **दो (2)** अङ्क हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. 'हिरण्यगर्भ' इति पदेनाभिधीयते –
(A) रुद्रः (B) वरुणः
(C) इन्द्रः (D) प्रजापतिः
स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री, पेज–405

2. विधिभागरूपेण स्वीक्रियते –
(A) ब्राह्मणग्रन्थः (B) उपनिषद्ग्रन्थः
(C) धर्मशास्त्रम् (D) आरण्यकम्
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–115

3. 'दर्शयागः' कदानुष्ठीयते ?
(A) चतुर्दश्याम् (B) प्रतिपदि
(C) अष्टम्याम् (D) पूर्णिमायाम्
स्रोत–श्रौतयज्ञ परिचय - वेणीराम शर्मा गौड़, पेज–09

4. कस्याहुतिः मनसा दीयते ?
(A) विष्णोः (B) इन्द्रस्य
(C) प्रजापतेः (D) रुद्रस्य
स्रोत–वैदिकसूक्तसंग्रह - विजयशंकर पाण्डेय, पेज–116-117

5. संहितापाठानन्तरं क्रियते –
(A) सन्धिपाठः (B) समासपाठः
(C) पदपाठः (D) यमपाठः
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–08

6. 'देवासः' इति प्रयोगः –
(A) तान्त्रिकः (B) वार्तिकः
(C) छान्दसः (D) ऐतिहासिकः
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–22

7. एषु प्राचीनवेदभाष्यकारो न वर्तते –
(A) सायणः (B) स्कन्दस्वामी
(C) अरविन्दः (D) गुणविष्णुः
स्रोत–वैदिकसाहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेवद्विवेदी, पेज–22-23-25
संस्कृत वाङ्मय का वृहद् इतिहास (खण्ड-2) पेज–551

8. 'यास्केन' कतिविधः व्याख्याविधिः स्वीकृतः ?
(A) त्रिविधः (B) पञ्चविधः
(C) चतुर्विधः (D) अष्टविधः
स्रोत–(i) निरुक्त - उमाशंकर शर्मा ऋषि, पेज–02
(ii) वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–17

9. 'पर्जन्यः पिता' इति कस्मिन् सूक्ते प्रतिपाद्यते ?
(A) पृथिवीसूक्ते (B) इन्द्रसूक्ते
(C) हिरण्यगर्भसूक्ते (D) पुरुषसूक्ते
स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्त शास्त्री, भू.पेज–21

10. कठोपनिषद् केन वेदेन सम्बद्धा ?
(A) ऋग्वेदेन (B) कृष्णयजुर्वेदेन
(C) शुक्लयजुर्वेदेन (D) अथर्ववेदेन
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–9

11. 'तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाह्यतः' कुत्र इयम् उक्तिः?
(A) श्रीमद्भगवद्गीतायाम् (B) श्रीमद्भागवते
(C) ईशावास्योपनिषदि (D) कठोपनिषदि
स्रोत–ईशावास्योपनिषद् (मन्त्रसंख्या-5) - दीपक कुमार, पेज-42

12. कस्मिन् वरे यमस्त्रिणाचिकेतसमग्निम् अदात् ?
(A) प्रथमवरे (B) द्वितीयवरे
(C) तृतीयवरे (D) चतुर्थवरे
स्रोत–कठोपनिषद् (1.1.13) – बैजनाथ पाण्डेय पेज–21

13. अश्वस्य मेध्यस्य पर्वाणि कानि उच्यन्ते ?
(A) ऋतवः (B) अहोरात्राणि
(C) नक्षत्राणि (D) मासाश्चार्धमासाश्च
स्रोत–बृहदारण्यकोपनिषद् (शांकरभाष्य) - गीताप्रेस, पेज–38

14. 'असद् वा इदमग्र आसीत्' - अयं विचारः कुत्र निर्दिष्टः ?
(A) ईशावास्योपनिषदि (B) तैत्तिरीयोपनिषदि
(C) केनोपनिषदि (D) बृहदारण्यकोपनिषदि
स्रोत–तैत्तिरीयोपनिषद् - ब्रह्मानन्द वल्ली (1/1)
ईशादि नौ उपनिषदि गीताप्रेस, पेज–390

1. (D) **2.** (A) **3.** (B) **4.** (C) **5.** (C) **6.** (C) **7.** (C) **8.** (A) **9.** (A) **10.** (B) **11.** (C) **12.** (B) **13.** (D) **14.** (B)

15. 'इन्द्रियेभ्यः परा ह्यर्था अर्थेभ्यश्च परं मनः' इति कुत्रस्था उक्तिरियम् –

(A) कठोपनिषदि (B) केनोपनिषदि
(C) बृहदारण्यकोपनिषदि (D) तैत्तिरीयोपनिषदि

स्रोत–ईशादि नौ उपनिषद् (कठोपनिषद् 1.3.10)-गीताप्रेस, पेज-128

16. 'उमा-हैमवती-आख्यानं' कस्यामुपनिषदि निर्दिष्टा ?

(A) कठोपनिषदि (B) तैत्तिरीयोपनिषदि
(C) केनोपनिषदि (D) ईशावास्योपनिषदि

स्रोत–केनोपनिषद् (खण्ड-4)

17. शिक्षाङ्गस्य विषयाः कियन्तः उपदिष्टाः –

(A) त्रयः (B) चत्वारः
(C) पञ्च (D) षट्

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–191

18. समानाक्षराणि कियन्ति ?

(A) त्रीणि (B) चत्वारि
(C) षट् (D) अष्टौ

स्रोत–ऋग्वेदप्रातिशाख्यम् - वीरेन्द्र कुमार वर्मा, पेज–42

19. सोष्मसञ्ज्ञो वर्णः कः ?

(A) क (B) ख
(C) ग (D) ङ

स्रोत–ऋग्वेदप्रातिशाख्यम् - वीरेन्द्रकुमार वर्मा, पेज–55

20. शिवसङ्कल्पसूक्तं कस्यां शाखायामुपदिष्टम् –

(A) शाकलशाखायाम्
(B) माध्यन्दिनीयशाखायाम्
(C) शौनकशाखायाम्
(D) राणायनीयशाखायाम्

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–98

21. 'अग्निहोत्रम्' अनुष्ठीयते –

(A) प्रतिमासम् (B) प्रतिवर्षम्
(C) प्रतिदिनम् (D) प्रतिपक्षम्

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–314

22. निरुक्तानुसारं तृतीयो भावविकारः कः ?

(A) अस्ति (B) वर्धते
(C) विनश्यति (D) विपरिणमते

स्रोत–निरुक्तम् - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–26

23. 'अक्नोपनः' कः भवति ?

(A) आदित्यः (B) अश्वः
(C) अग्निः (D) आचार्यः

स्रोत–निरुक्तम् - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज–236

24. 'चित्' इति निपातो वर्तते –

(A) कुत्सार्थे (B) निषेधार्थे
(C) अभावार्थे (D) विकल्पार्थे

स्रोत–निरुक्तम् - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–45

25. वृत्तिसमवायार्थः अनुबन्धकरणार्थः इष्टबुध्यर्थश्च केषां उपदेशः भवति ?

(A) प्रत्ययानाम् (B) धातूनाम्
(C) सन्धीनाम् (D) वर्णानाम्

स्रोत–महाभाष्य पश्पशाह्निक-जयशंकरलाल त्रिपाठी, पेज–135

26. अनुदात्तेत उपदेशे यो ङित् तदन्ताच्च धातोः लस्य स्थाने किं स्यात् ?

(A) परस्मैपदम् (B) आत्मनेपदम्
(C) प्रातिपदिकम् (D) आर्धधातुकम्

स्रोत–वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (भाग-5)-गोविन्दाचार्य, पेज–359

27. अधोऽङ्कितानां युग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत –

(अ) दूरान्तिकार्थैः — 1. डारौरसः
(ब) वयसि — 2. षष्ठ्यन्यतरस्याम्
(स) लुटः प्रथमस्य — 3. लिटि
(द) कृञ्चानुप्रयुज्यते — 4. प्रथमे

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	3	4	1	2
(B)	2	4	1	3
(C)	2	3	4	1
(D)	4	3	2	1

स्रोत–अष्टाध्यायी - ईश्वरचन्द्र, पेज– अ=2.3.35 पेज–205, ब=4.1.20 पेज–427, स=2.4.85 पेज–248, द=3.1.40 पेज–268

15. (A) **16.** (C) **17.** (D) **18.** (D) **19.** (B) **20.**(B) **21.** (C) **22.** (D) **23.**(C) **24.**(A) **25.**(D) **26.**(B) **27.**(B)

28. ''कृत्यल्युटो बहुलम्'' इति सूत्रस्योदाहरणं किम् ?

(A) प्रयाणीयम् (B) स्नानीयं चूर्णम्
(C) प्रभव्यम् (D) प्रयाम्यम्

स्रोत–अष्टाध्यायी (3.3.113) - ईश्वरचन्द्र, पेज–377

29. ''प्राङ्मुखी'' इत्यत्र 'ङीप्' केन सूत्रेण विधीयते ?

(A) नखमुखात्संज्ञायाम्
(B) जातेरस्त्रीविषयादयोपधात्
(C) क्रीतात्करणपूर्वात्
(D) दिक्पूर्वपदान्ङीप्

स्रोत–अष्टाध्यायी (4.1.60) - ईश्वरचन्द्र, पेज–441

30. शब्दस्याभिव्यक्तेः ऊर्ध्वं वृत्तिभेदे तु वैकृताः ध्वनयः समुपोहन्ते, तैः कः न भिद्यते ?

(A) जीवात्मा (B) स्फोटात्मा
(C) परमात्मा (D) काव्यात्मा

स्रोत–वाक्यपदीयम् (ब्रह्मकाण्ड कारिका-76)

31. प्रयागे 'समुद्रगुप्तस्य' स्तम्भ - अभिलेखरचयिता कः ?

(A) तिलकभट्टः (B) हरिषेणः
(C) ध्रुवभूतिः (D) रविकीर्तिः

प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख (भाग-2) परमेश्वरीलाल गुप्त, पेज–09

32. 'अध्यारोपः' .... उच्यते ?

(A) वस्तुनि अवस्त्वारोपः (B) स्मृतिरूपः
(C) लोकानुभवः (D) अवस्तुनि वस्त्वारोपः

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–37

33. स्थूलशरीराणि कतिविधानि वेदान्तमते ?

(A) द्विविधानि (B) चतुर्विधानि
(C) पञ्चविधानि (D) विविधानि

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–82

34. 'व्यक्ताव्यक्तज्ञविज्ञानात्' इत्यत्र 'ज्ञ' शब्देन कः बोद्धव्यः ?

(A) प्रकृतिः (B) सूक्ष्मशरीरम्
(C) अहङ्कारः (D) पुरुषः

स्रोत–सांख्यकारिका (का. 2)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–21

35. सांख्यमते 'एकादशेन्द्रियाणि' कस्मात् समुद्भूतानि ?

(A) अहङ्कारात् (B) आकाशात्
(C) पुरुषात् (D) पञ्चमहाभूतात्

स्रोत–सांख्यकारिका (का. 24)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–206

36. पूर्वमीमांसामते धर्मः कः ?

(A) सदाचारः (B) यागादिः
(C) अपवर्गः (D) अभ्युदयप्राप्तिः

स्रोत–अर्थसंग्रह - सत्यप्रकाश शर्मा, पेज–10

37. अर्थसंग्रहमते 'वेदभागः' कतिविधः ?

(A) द्विविधः (B) त्रिविधः
(C) चतुर्विधः (D) पञ्चविधः

स्रोत–अर्थसंग्रह - सत्यप्रकाश शर्मा, पेज–38

38. कीदृशो भवति प्रयोगविधिः ?

(A) अङ्गप्रधाननिबन्धबोधकः
(B) कर्मस्वरूपमात्रबोधकः
(C) प्रयोगप्राशुभावबोधकः
(D) कर्मजन्मफलस्वाम्यबोधकः

स्रोत–अर्थसंग्रह - सत्यप्रकाश शर्मा, पेज–109

39. परिसंख्याविधेरुदाहरणं किम् ?

(A) यजेत स्वर्गकामः (B) दध्ना जुहोति
(C) व्रीहीन् अवहन्ति (D) पञ्च पञ्चनखा भक्ष्याः

स्रोत–अर्थसंग्रह - सत्यप्रकाश शर्मा, पेज–147

40. श्रीरामचन्द्रः कं व्याकरणशास्त्रज्ञं प्रशंसति –

(A) सुग्रीवम् (B) भरतम्
(C) लक्ष्मणम् (D) हनूमन्तम्

स्रोत–वाल्मीकिरामायणम् (4.3.25-35)

41. एनं 'शतसाहस्त्रीसंहिता' इति ब्रुवन्ति विपश्चितः –

(A) श्रीमद्रामायणम् (B) महाभारतम्
(C) विष्णुपुराणम् (D) श्रीमद्भागवतम्

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेवद्विवेदी, पेज–123

28.(B) **29.**(D) **30.**(B) **31.**(B) **32.**(A) **33.** (B) **34.** (D) **35.** (A) **36.**(B) **37.** (D) **38.**(C) **39.** (D) **40.** (D) **41.** (B)

42. ''अहल्याशापविमोचनम्'' कस्मिन् काण्डे वर्णितम् –
(A) अयोध्याकाण्डे (B) अरण्यकाण्डे
(C) बालकाण्डे (D) सुन्दरकाण्डे
स्रोत–वाल्मीकिरामायण - बालकाण्ड सर्ग-51

43. 'अक्षुद्रान् दानशीलांश्च सत्यशीलाननास्तिकान् ।
कार्ष्णं वेदमिमं विद्वान् श्रावयित्वार्थमश्नुते ।'
इत्यस्मिन् श्लोके प्रस्तुतीकृतः 'कार्ष्णवेदः' कः ?
(A) भगवद्गीता (B) जानकीहरणम्
(C) श्रीमद्रामायणम् (D) महाभारतम्
स्रोत–महाभारत (खण्ड-1) आदिपर्व (62.18) गीताप्रेस, पेज-207

44. भगवतः श्रीकृष्णस्य बृहच्चरित्रं कस्मिन् पुराणे वर्णितम् ?
(A) विष्णुपुराणे (B) भागवतपुराणे
(C) वामनपुराणे (D) देवीभागवते
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज–183

45. पुराणमिदम् अष्टादशमहापुराणेष्वन्यतमं न भवति -
(A) भागवतमहापुराणम् (B) विष्णुपुराणम्
(C) नृसिंहपुराणम् (D) ब्रह्माण्डपुराणम्
स्रोत–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेवद्विवेदी, पेज–96

46. महाभारतस्य अष्टादशसु पर्वसु इदं द्वादशतमं भवति –
(A) अनुशासनपर्व (B) सौप्तिकपर्व
(C) शान्तिपर्व (D) स्त्रीपर्व
स्रोत–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेवद्विवेदी, पेज–118

47. अर्थशास्त्रस्य तृतीयाधिकरणं वर्तते –
(A) विनयाधिकारिकम् (B) अध्यक्षप्रचारः
(C) योगवृत्तम् (D) धर्मस्थीयम्
स्रोत–कौटिल्य अर्थशास्त्र - वाचस्पति गैरोला, पेज–03

48. 'दुर्गविनिवेशः' कुत्र उपदिष्टः ?
(A) विनयाधिकारिके (B) धर्मस्थीये
(C) अध्यक्षप्रचारे (D) कण्टकशोधने
स्रोत–कौटिल्य अर्थशास्त्रम् - वाचस्पति गैरोला, पेज–02

49. यजुर्वेदः सम्प्राप्तः –
(A) अग्नेः (B) वायोः
(C) इन्द्रात् (D) वरुणात्
स्रोत–मनुस्मृति (1/23) - गिरिधर गोपाल शर्मा, पेज–19

50. 'उपनयनसंस्कारे' राज्ञः दण्डो भवति –
(A) केशान्तिकः (B) ललाटसम्मितः
(C) नासिकान्तिकः (D) कर्णान्तिकः
स्रोत–मनुस्मृति (2/46) – गिरिधर गोपाल शर्मा, पेज–78

51. अर्थदूषणं वर्तते –
(A) कामजगणे (B) क्रोधजगणे
(C) लोभजगणे (D) मोहजगणे
स्रोत–मनुस्मृति (7/48) – गिरिधर गोपाल शर्मा, पेज–167

52. मिथ्याभियोगी कतिगुणं धनं दद्यात् ?
(A) द्विगुणम् (B) त्रिगुणम्
(C) चतुर्गुणम् (D) पञ्चगुणम्
स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति (2/11) - गंगासागर राय, पेज–173

53. रसस्य वृद्धिः उक्ता –
(A) द्विगुणा (B) चतुर्गुणा
(C) षड्गुणा (D) अष्टगुणा
स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति (2/39) - गंगासागर राय, पेज–196

54. 'मणौ वज्रसमुत्कीर्णे सूत्रस्येवास्ति मे गतिः' - इत्यत्र कः अलङ्कारः ?
(A) निदर्शना (B) उपमा
(C) उत्प्रेक्षा (D) दृष्टान्तः
स्रोत–रघुवंशम् (1.4) - श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी, पेज-04

55. नारदमुनेः स्वागतार्थं को जवेन पीठादुदतिष्ठत् ?
(A) बलदेवः (B) शिशुपालः
(C) हिरण्यकशिपुः (D) अच्युतः (कृष्णः)
स्रोत–शिशुपालवधम् (1/12) तारिणीश झा, पेज–29

56. 'त्यजन्त्यसूञ्शर्म च मानिनो वरं त्यजन्ति न त्वेकमयाचितव्रतम्'.....इयमुक्तिः कस्माद् ग्रन्थात् उद्धृता?
(A) शिशुपालवधात् (B) किरातार्जुनीयात्
(C) नैषधीयचरितात् (D) रघुवंशात्
स्रोत–नैषधीयचरितम् (1/50) – बद्रीनाथ मालवीय, पेज–100

42. (C) **43.** (D) **44.** (B) **45.** (C) **46.** (C) **47.** (D) **48.** (C) **49.** (B) **50.** (B) **51.** (B) **52.** (A) **53.** (D) **54.** (B) **55.** (D) **56.** (C)

57. अधोनिर्दिष्टानां समीचीनां तालिकां विचिनुत –

(अ)	पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम्	1.	रघुवंशः
(ब)	अथवा श्रेयसि केन तृप्यते	2.	कादम्बरी
(स)	सहस्रगुणमुत्स्रष्टुमादत्ते हि रसं रविः	3.	शिशुपालवधम्
(द)	न हि क्षुद्रनिर्घातपाताभिहता चलति वसुधा	4.	किरातार्जुनीयम्

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	3	1	2	4
(B)	4	3	1	2
(C)	2	4	3	1
(D)	1	2	4	3

स्रोत– अ-किरातार्जुनीयम् (1/41), ब-शिशुपालवधम् (1/29), स-रघुवंशम् (1/18), द-कादम्बरी (महाश्वेतावृत्तान्त)-प्रद्युम्नपाण्डेय, पेज–29

58. वाच्यवाचकचारुत्वहेतूनां विविधात्मनां रसादिपरता यत्र सः विषयः कस्य ?

(A) रीतेः (B) रसवदलङ्कारस्य
(C) गुणीभूतव्यंग्यस्य (D) ध्वनेः

स्रोत–ध्वन्यालोक - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–37

59. मम्मटानुसारम् अप्रस्तुतप्रशंसालङ्कारः कतिविधः ?

(A) द्विविधः (B) पञ्चविधः
(C) चतुर्विधः (D) दशविधः

स्रोत–काव्यप्रकाश (10/99) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–476

60. शान्तरसस्य स्थायिभावः कः ?

(A) उत्साहः (B) शमः
(C) हासः (D) शोकः

स्रोत–साहित्यदर्पण (3/245) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–121

61. ''चतुर्दशत्वं कृतवान् कुतः स्वयं, न वेद्मि विद्यासु चतुर्दशस्वयम्'' - कः सः ?

(A) दुष्यन्तः (B) अर्जुनः
(C) नलः (D) कृष्णः

स्रोत–नैषधीयचरितम् (1/4) तारिणीश झा, पेज–12

62. ''मां च शशाप कालविफलान्यस्त्राणि ते सन्त्विति'' अत्र कः शशाप?

(A) कर्णः (B) जमदग्निः
(C) शल्यः (D) शक्रः

स्रोत–कर्णभारम् (श्लोकसंख्या-10)-रामजी मिश्र, पेज-11

63. उत्तररामचरितनाटकस्य कः अङ्कः 'छाया' इति अभिधीयते ?

(A) प्रथमाङ्कः (B) द्वितीयाङ्कः
(C) तृतीयाङ्कः (D) चतुर्थाङ्कः

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का इतिहास-उमाशंकरशर्मा 'ऋषि', पेज–529

64. 'उन्मत्तराघवं' कस्य रूपकस्य उदाहरणं भवति ?

(A) अङ्कस्य (B) वीथेः
(C) डिमस्य (D) समवकारस्य

65. ब्रह्मा कस्माद् वेदात् अभिनयं स्वीकृतवान् –

(A) यजुर्वेदात् (B) ऋग्वेदात्
(C) सामवेदात् (D) अथर्ववेदात्

स्रोत–नाट्यशास्त्र (1/17) - ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज–92

66. ''वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि'' इत्यत्र किं छन्दः ?

(A) अनुष्टुप् (B) वसन्ततिलका
(C) शिखरिणी (D) पुष्पिताग्रा

स्रोत–उत्तररामचरितम् (2/7) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-117

67. कः प्रेक्षागृहाणां प्रमाणं लक्षणञ्च निर्दिशति ?

(A) आदित्यः (B) रुद्रः
(C) विश्वकर्मा (D) यमः

स्रोत–नाट्यशास्त्र (2/7) - बाबूलाल शुक्ल, पेज–34

68. 'रत्नावली' कस्य उपरूपकप्रभेदस्य उदाहरणं भवति ?

(A) त्रोटकस्य (B) नाटिकायाः
(C) भाणस्य (D) सट्टकस्य

स्रोत–रत्नावली - तारिणीश झा, भू. पेज–17

69. 'कुन्तकानुसारं' कविव्यापारवक्रत्वप्रकाराः कति ?

(A) अष्टौ (B) सप्त
(C) षट् (D) पञ्च

स्रोत–वक्रोक्तिजीवितम् - दशरथ द्विवेदी, पेज–78

57. (B) **58.** (D) **59.** (B) **60.** (B) **61.** (C) **62.** (B) **63.** (C) **64.** (A) **65.** (A) **66.** (A) **67.** (C) **68.** (B) **69.** (C)

70. 'यथार्थानुभवः' कतिविधः ?
(A) चतुर्विधः (B) पञ्चविधः
(C) सप्तविधः (D) नवविधः
स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–66

71. 'द्रव्यप्रत्यक्षे' सर्वदा सन्निकर्षः भवति ?
(A) समवायः (B) तादात्म्यम्
(C) संयोगः (D) संयुक्तसमवायः
स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–77

72. 'सन्निकर्षः' कतिविधः ?
(A) द्विविधः (B) चतुर्विधः
(C) षड्विधः (D) अष्टविधः
स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–76

73. 'अनुमापकस्य हेतवः' कति सन्ति ?
(A) त्रयः (B) पञ्च
(C) अष्टौ (D) एकादश
स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–89

74. तर्कसंग्रहे 'कर्माणि' कति सन्ति ?
(A) पञ्च (B) सप्त
(C) नव (D) द्वादश
स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–29

75. 'तर्कसंग्रहे' साहचर्यनियमशब्देन किमुच्यते ?
(A) उपाधिः (B) सन्निकर्षः
(C) अपवर्गः (D) व्याप्तिः
स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–85

70. (A) **71.** (C) **72.** (C) **73.** (B) **74.** (A) **75.** (D)

37	जून 2013	UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् II

नोट : इस प्रश्नपत्र में **पचास (50)** बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के **दो (2)** अङ्क हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. ''उप त्वाग्ने दिवे दिवे दोषावस्तर्धिया वयम्'' अस्य मन्त्रस्य ऋषिर्वर्तते –

(A) अग्निः (B) कण्वः
(C) दीर्घतमा (D) मधुच्छन्दाः

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्त शास्त्री, पेज–59

2. 'दस्योर्हन्ता' को देवः ?

(A) इन्द्रः (B) विष्णुः
(C) वरुणः (D) कोऽपि न

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्त शास्त्री, पेज–186

3. 'काण्वशाखा' कस्य वेदस्य ?

(A) सामवेदस्य (B) यजुर्वेदस्य
(C) अथर्ववेदस्य (D) ऋग्वेदस्य

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–09

4. ''तस्य वयं प्रसवे याम उर्वीः'' मन्त्रांशोऽयं कस्य सूक्तस्य वर्तते ?

(A) रुद्रसूक्तस्य
(B) विश्वामित्रनदीसूक्तस्य
(C) सरमापणिसूक्तस्य
(D) यमयमीसूक्तस्य

स्रोत–ऋग्वेद (3.33.06)–विश्वामित्र नदीसंवाद सूक्त

5. ''श्रिये गावो न धेनवोऽनवन्त'' मन्त्रांशोऽयं कुत्र वर्तते -

(A) विश्वामित्रनदीसूक्ते (B) यमयमीसूक्ते
(C) पुरूरवा-उर्वशीसूक्ते (D) सरमापणिसूक्ते

स्रोत–ऋग्वेद (10.95.06)-पुरूरवा-उर्वशी संवाद सूक्त

6. ''वेदा अपौरुषेयाः सन्ति'' -इति कस्य मतमस्ति –

(A) मैक्समूलरस्य (B) महर्षिदयानन्दस्य
(C) विन्टरनित्सस्य (D) सर्वेषामेव

स्रोत–वैदिकसाहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–18

7. आर्षेयब्राह्मणं केन वेदेन सम्बद्धोऽस्ति –

(A) सामवेदेन (B) अथर्ववेदेन
(C) ऋग्वेदेन (D) यजुर्वेदेन

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–10

8. 'कठोपनिषद्' केन वेदेन सम्बद्धा ?

(A) ऋग्वेदेन (B) अथर्ववेदेन
(C) कृष्णयजुर्वेदेन (D) शुक्लयजुर्वेदेन

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–09

9. शिक्षावेदाङ्गस्य को विषयः ?

(A) यज्ञः (B) उपासना
(C) मोक्षः (D) उच्चारणम्

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–190

10. ''व्याकरणस्य कात्स्न्यर्म्'' किमस्ति –

(A) छन्दशास्त्रम् (B) निरुक्तम्
(C) ज्योतिषम् (D) कल्पशास्त्रम्

स्रोत–निरुक्त (1/5) - छज्जूराम शास्त्री, पेज–41

11. अधोऽङ्कितानां समीचीनमुत्तरं चिनुत –

(a) पुरुषविद्याऽनित्यत्वात् कर्मसम्पत्तिर्मन्त्रो वेदे	1. ईशोपनिषद्
(b) ओऽम् क्रतो स्मर	2. ऋग्वेदः
(c) कौषीतकिब्राह्मणम्	3. अथर्ववेदः
(d) शौनकसंहिता	4. निरुक्तम्

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	4	1	2	3
(B)	1	4	3	2
(C)	3	4	2	1
(D)	1	2	4	3

स्रोत–अ-निरुक्त छज्जूराम शास्त्री, पेज–07, ब-इशोपनिषद् मन्त्र-17, स,द-वैदिकसाहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–09-10

1. (D)	**2.** (A)	**3.** (B)	**4.** (B)	**5.** (C)	**6.** (B)	**7.** (A)	**8.** (C)	**9.** (D)	**10.** (B)	**11.** (A)

12. कल्पग्रन्थेषु किं न गण्यते –
(A) आपस्तम्बश्रौतसूत्रम् (B) कात्यायनश्रौतसूत्रम्
(C) बौधायनधर्मसूत्रम् (D) उणादिसूत्रम्
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–09

13. वेदकालविषये भारतीयपरम्परागतविचारं कः परिपोषयति–
(A) मैक्समूलरः (B) वेबरः
(C) विण्टरनित्सः (D) सायणः
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–23

14. सांख्याभिमतं प्रमाणत्रयं वर्तते –
(A) प्रत्यक्षम्, अनुमानम्, उपमानम् ।
(B) प्रत्यक्षम्, उपमानम्, अर्थापत्तिः ।
(C) प्रत्यक्षम्, शब्दः, अनुपलब्धिः ।
(D) दृष्टम् (प्रत्यक्षम्), अनुमानम्, आप्तवचनम्।
स्रोत–सांख्यकारिका (का. 4)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–47

15. सांख्ये सत्कार्यवादस्वरूपम् एवम् अस्ति –
(A) सतो विज्ञानादसज्जायते इति
(B) सतो विवर्तभूतं कार्यजातं मिथ्यात्मकं जायते इति ।
(C) पूर्वमसत् कार्यं सदेव कारणात् सदात्मकं जायते इति ।
(D) पूर्वं सदेव कार्यं कारणात्मना पश्चाज्जायते इति ।
स्रोत–सांख्यकारिका (का. 09)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–100

16. सांख्यमते सत्त्वगुणस्य स्वभावो विद्यते –
(A) सुखात्मकः (B) मोहात्मकः
(C) दुःखात्मकः (D) अभावात्मकः
स्रोत–सांख्यकारिका (का. 12)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–135

17. सांख्ये पंग्वन्धन्याये पङ्गुवद् वर्तते –
(A) प्रधानम् (B) पुरुषः
(C) गुणत्रयम् (D) प्रलयः
स्रोत–सांख्यकारिका (का. 21)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–193

18. सांख्यानुसारं नर्तकी वर्तते –
(A) प्रकृतिः (B) माया
(C) सर्गः (D) मनः
स्रोत–सांख्यकारिका (का. 59)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–312

19. 'षष्टितन्त्रं' किम् ?
(A) न्यायग्रन्थः (B) वैशेषिकग्रन्थः
(C) सांख्यग्रन्थः (D) वेदान्तग्रन्थः
स्रोत–सांख्यकारिका (का. 72)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–342

20. 'दमः' उच्यते –
(A) अन्तरिन्द्रियनिग्रहः
(B) विहितानां कर्मणां विधिना परित्यागः
(C) बाह्येन्द्रियनिग्रहः
(D) वेदान्तवाक्येषु विश्वासः
स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–20

21. 'वेदान्तसारे' लिङ्गशरीराणि वर्णितानि –
(A) षोडशावयवानि (B) पञ्चदशावयवानि
(C) एकादशावयवानि (D) सप्तदशावयवानि
स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–65

22. विज्ञानमयकोशे भवति –
(A) ज्ञानशक्तिमान् कर्तृरूपः
(B) इच्छाशक्तिमान् कर्तृरूपः
(C) क्रियाशक्तिमान् कार्यरूपः
(D) क्रियात्मकत्वेन कार्यरूपः
स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–73

23. वेदान्तमते निर्विकल्पकविषये कति विघ्नाः सम्भवन्ति –
(A) त्रयः (B) चत्वारः
(C) द्वौ (D) पञ्च
स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–179

24. 'वह्निरनुष्णः' इति स्थले कः हेत्वाभासो वर्तते
(A) सव्यभिचारः (B) सोपाधिकः
(C) बाधितः (D) आश्रयासिद्धः
स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–103

25. परार्थानुमाने कति अवयवाः भवन्ति –
(A) त्रयः (B) पञ्च
(C) षट् (D) द्वौ
स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–89

26. कस्य प्रातिपदिकसंज्ञा नास्ति –
(A) भवति (B) पठितुम्
(C) पाणिपादम् (D) दाशरथिः
स्रोत–अष्टाध्यायी (1.4.17) - ईश्वरचन्द्र, पेज–114

27. सर्वनामस्थानसंज्ञा कस्य भवति ?
(A) 'सुप्'- प्रत्ययस्य (B) 'शि'- प्रत्ययस्य
(C) सर्वनाम -शब्दस्य (D) सर्व-शब्दस्य
स्रोत–अष्टाध्यायी (1.1.41) - ईश्वरचन्द्र, पेज–25

12. (D) **13.** (D) **14.** (D) **15.** (D) **16.** (A) **17.**(B) **18.** (A) **19.** (C) **20.** (C) **21.**(D) **22.** (A)
23. (B) **24.**(C) **25.**(B) **26.**(A) **27.**(B)

28. कारकप्रयोगदृष्ट्या वाक्यमिदं शुद्धं वर्तते –
(A) नृपात् गां याचते
(B) देवदत्ताय अभिक्रुध्यति
(C) देवदत्तम् अभिक्रुध्यति
(D) पुष्पं स्पृहयति
स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–50

29. अनीप्सितस्य का संज्ञा ?
(A) करणसंज्ञा (B) सम्प्रदानसंज्ञा
(C) कर्मसंज्ञा (D) अपादानसंज्ञा
स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–19

30. 'अकथितं च' - इत्यस्य सूत्रस्य उदाहरणम् अस्ति –
(A) माणवकं धर्मं ब्रूते
(B) धर्मं जानाति वेदेन
(C) वनं गच्छति रथेन
(D) माणवकाय दीक्षां ददाति
स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–20

31. अयम् उपपदविभक्तेः प्रयोगः वर्तते –
(A) ग्रामाद् आयाति (B) हरिः सेव्यते
(C) लक्ष्म्या सहितः (D) रामात् पृथक्
स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–69

32. 'अधिगोपम्' इत्यत्र कः समासः ?
(A) उपपदतत्पुरुषः (B) कर्मधारयः
(C) तत्पुरुषः (D) अव्ययीभावः
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज–24

33. लघुसिद्धान्तकौमुदीकारमते समासः कतिधा वर्तते ?
(A) पञ्चधा (B) सप्तधा
(C) सप्तधा (D) चतुर्धा
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज–02

34. 'अक्षशौण्डः' - अस्य अलौकिकविग्रहः भवति –
(A) अक्ष सु + शौण्ड सु
(B) अक्ष सुप् + शौण्ड सु
(C) अक्षेषु शौण्डः
(D) अक्ष ङि + शौण्ड ङि
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज–91

35. 'अल्पाच्तरम्' - इत्यस्य सूत्रस्य उदाहरणम् अस्ति –
(A) शिवकेशवौ (B) ईशकृष्णौ
(C) मातापितरौ (D) हरिहरौ
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज–237

36. भाषाविज्ञानदृशा अर्धस्वरो भवति –
(A) उ (B) अं
(C) व् (D) ए
स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–147

37. निम्नाङ्कितेषु ध्वनिनियमस्य प्रवर्तको न वर्तते –
(A) ग्रिम (Grimm)
(B) ग्रासमान (Grassman)
(C) वेबर (Weber)
(D) वर्नर (Verner)
स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषा शास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–241

38. शकुन्तलायाः 'अङ्गुलीयकं' कुत्र प्रभ्रष्टम् ?
(A) गङ्गातीर्थसलिले (B) मालिनीनदीतीरे
(C) शचीतीर्थसलिले (D) कण्वाश्रमे
स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू. पेज–40

39. 'प्रकरणस्य उदाहरणम् अस्ति –
(A) मुद्राराक्षसम् (B) वेणीसंहारम्
(C) मृच्छकटिकम् (D) प्रतिमानाटकम्
स्रोत–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–307

40. ''हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः'' - कस्य इयम् उक्तिः ?
(A) युधिष्ठिरस्य (B) द्रौपद्याः
(C) वनेचरस्य (D) अर्जुनस्य
स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/4) अभिराज राजेन्द्र मिश्र, पेज–42

41. कस्मिन् काव्ये वीररसः अङ्गीरसः भवति –
(A) नैषधीयचरिते (B) शिशुपालवधे
(C) मेघदूते (D) रघुवंशे
स्रोत–शिशुपालवधम् - तारिणीश झा, भू. पेज–57

42. ''करुणस्य मूर्तिरथवा शरीरिणी'' - इदं वर्णनं कस्मिन् काव्येऽस्ति ?
(A) उत्तररामचरिते (B) अभिज्ञानशाकुन्तले
(C) मुद्राराक्षसे (D) रत्नावल्याम्
स्रोत–उत्तररामचरितम् (3/4) – कपिलदेव द्विवेदी, पेज–164

28.(C) **29.**(C) **30.**(A) **31.**(D) **32.**(D) **33.**(A) **34.**(B) **35.** (A) **36.**(C) **37.**(C) **38.**(C) **39.**(C) **40.**(C) **41.**(B) **42.** (A)

43. 'नैषधीयचरिते' कति सर्गाः सन्ति ?

(A) अष्टादश (B) एकोनविंशतिः
(C) विंशतिः (D) द्वाविंशतिः

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का इतिहास-उमाशंकरशर्मा 'ऋषि', पेज–287

44. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत –

(अ) किरातार्जुनीयम् 1. भासः
(ब) दशकुमारचरितम् 2. दण्डी
(स) स्वप्नवासवदत्तम् 3. भारविः
(द) बुद्धचरितम् 4. अश्वघोषः

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	4	3	2	1
(B)	2	1	3	4
(C)	3	2	1	4
(D)	1	4	3	2

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज– अ = 182, ब = 466, स = 275, द = 168

45. पुण्यवर्मा कस्य देशस्य नृपः आसीत् ?

(A) वत्सदेशस्य (B) उज्जयिन्याः
(C) वाराणस्याः (D) विदर्भदेशस्य

स्रोत–दशकुमारचरितम् (अष्टमोच्छ्वास)-विश्वनाथ झा, पेज–239

46. ''चतुर्वर्गफलप्राप्तिः सुखादल्पधियामपि'' कस्य इयम् उक्तिः?

(A) मम्मटस्य (B) विश्वनाथस्य
(C) वामनस्य (D) दण्डिनः

स्रोत–साहित्यदर्पण (1/2) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–7

47. संस्कृतनाटकेषु 'विदूषकस्य' को वर्गः ?

(A) ब्राह्मणवर्गः (B) क्षत्रियवर्गः
(C) वैश्यवर्गः (D) शूद्रवर्गः

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू. पेज–91

48. 'लोकवृत्तानुकरणं नाट्यमेतन्मया कृतम्' श्लोकपादोऽयं कस्मिन् शास्त्रग्रन्थे वर्तते ?

(A) धर्मशास्त्रे (B) अर्थशास्त्रे
(C) नाट्यशास्त्रे (D) शिल्पशास्त्रे

स्रोत–नाट्यशास्त्र (1/112) - बाबूलाल शुक्ल, पेज–28

49. ''मुख्यार्थबाधे तद्युक्तो ....ययान्योऽर्थः प्रतीयते'' सा शक्तिः का ?

(A) अभिधा (B) लक्षणा
(C) व्यञ्जना (D) तात्पर्या

स्रोत–साहित्यदर्पण (2/5) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–28

50. रसनिष्पत्तिविषये अनुमितिवादं कः प्रस्तौति ?

(A) भट्टलोल्लटः (B) अभिनवगुप्तः
(C) भट्टनायकः (D) श्रीशङ्कुकः

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–102

43.(D) 44.(C) 45. (D) 46.(B) 47. (A) 48. (C) 49. (B) 50. (D)

38	जून 2013	UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् III

नोट : इस प्रश्नपत्र में **पचहत्तर (75)** बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के **दो (2)** अङ्क हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. सृष्ट्युत्पत्तिविषयकं विवेचनं कुत्र वर्तते –

(A) पुरुषसूक्ते (B) अग्निसूक्ते

(C) इन्द्रसूक्ते (D) पृथिवीसूक्ते

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–53

2. ''ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः''......... अस्य मन्त्रस्य ऋषिः कः अस्ति –

(A) मधुच्छन्दाः (B) अजीगर्तः

(C) कण्वः (D) नारायणः

स्रोत–ऋग्वेद (10.90.16) ऋक्सूक्तसंग्रह-हरिदत्तशास्त्री, पेज–404

3. 'वाक्-सूक्तस्य' (ऋग्वेदे 10.125) का देवता ?

(A) वाक् (परमात्मा, वागाम्भृणी) (B) आत्मा

(C) वेनी भार्गवः (D) अम्भृण

स्रोत–ऋग्वेद (10.125.1) ऋक्सूक्तसंग्रह-हरिदत्तशास्त्री, पेज–416

4. ''यज्ञस्य देवम्'' इत्यत्र 'देवम्' पदस्य स्वरोऽस्ति –

(A) देवम् (B) देवम्

(C) देवम् (D) देवम्

स्रोत–ऋग्वेद (1.1.1), ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री, पेज–55

5. ''अहमस्मि सहमान उत्तरो नाम भूम्याम्'' मन्त्रांशोऽयं कुत्र वर्तते –

(A) पृथिवीसूक्ते (B) वाक्सूक्ते

(C) पुरुषसूक्ते (D) हिरण्यगर्भसूक्ते

स्रोत–पृथ्वीसूक्त (मन्त्र-54) अथर्ववेद-12.01.54

6. 'शुनःशेप-आख्याने' कस्य उल्लेखो नास्ति –

(A) वरुणस्य (B) वसिष्ठस्य

(C) बादरायणस्य (D) अजीगर्तस्य

स्रोत–शुनःशेपाख्यान - गद्यालोक प्रकाश, पेज–35, 39

7. आध्यात्मिकव्याख्यापद्धतौ वेदे प्रयुक्तस्य 'अग्नि' शब्दस्य कः अर्थः –

(A) श्रौताग्निः (B) विद्युत्

(C) परमात्मा (D) स्मार्ताग्निः

संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (भाग-दो)-बलदेव उपाध्याय, पेज–224

8. अधोऽङ्कितानां समीचीनम् उत्तरं चिनुत –

(अ)	अग्निः सूर्य आपो विश्वे देवाश्च सं ददुः	1.	शतपथब्राह्मणम्
(ब)	सो अङ्ग वेद यदि वा न वेद	2.	अथर्ववेदः
(स)	सा यन्मम त्वं कृतानुकाराऽनु वर्त्मासि	3.	ऐतरेयब्राह्मणम्
(द)	भीम एव सौयवसिः शासेन विशिशासिषुः	4.	ऋग्वेदे

कूट :

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	2	4	3	1
(B)	2	4	1	3
(C)	3	1	4	2
(D)	3	1	2	4

स्रोत–ऋग्वेद 10.129.7

9. 'तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाह्यतः' इत्यस्य कुत्रोपदेशः ?

(A) ईशोपनिषदि (B) तैत्तिरीयोपनिषदि

(C) श्रीमद्भागवते (D) बृहदारण्यकोपनिषदि

स्रोत–ईशावास्योपनिषद् (मन्त्र-5) -आद्याप्रसाद मिश्र, पेज-51

10. 'यन्मनसा न मनुते येनाहुर्मनो मतम्' कुत्र इयम् उक्तिः ?

(A) ईशोपनिषदि (B) केनोपनिषदि

(C) कठोपनिषदि (D) भगवद्गीतायाम्

स्रोत–केनोपनिषद् (1/5) ईशादि नौ उपनिषद् गीताप्रेस, पेज–51

1. (A) **2.** (D) **3.** (A) **4.** (D) **5.** (A) **6.** (C) **7.** (C) **8.** (B) **9.** (A) **10.** (B)

11. 'अन्नाद् भूतानि जायन्ते जातान्यन्नेन वर्धन्ते' - इयम् उक्तिः कुत्र अस्ति ?
(A) कठोपनिषदि (B) बृहदारण्यकोपनिषदि
(C) केनोपनिषदि (D) तैत्तिरीयोपनिषदि
स्रोत–ईशादि नौ उपनिषद् - गीताप्रेस, पेज–374

12. 'अङ्गुष्ठमात्रः पुरुषोऽन्तरात्मा' - इयम् उक्तिः कुत्रास्ति ?
(A) ईशोपनिषदि (B) तैत्तिरीयोपनिषदि
(C) कठोपनिषदि (D) केनोपनिषदि
स्रोत–ईशादि नौ उपनिषद् - गीताप्रेस, पेज–168

13. 'न वा अरे जायायै कामाय जाया प्रिया भवति, आत्मनस्तु कामाय जाया प्रिया भवति' - कस्य इयम् उक्तिः ?
(A) कात्यायनस्य (B) मैत्रेय्याः
(C) याज्ञवल्क्यस्य (D) गार्ग्यस्य
स्रोत–बृहदारण्यकोपनिषद् शांकरभाष्य (4.5.6)-गीताप्रेस, पेज–1130

14. 'वाचं धेनुमुपासीत्' - इति कुत्र उपदिश्यते ?
(A) श्रीमद्भागवते (B) बृहदारण्यकोपनिषदि
(C) तैत्तिरीयोपनिषदि (D) ईशोपनिषदि
स्रोत–बृहदारण्यकोपनिषद् (5.8.1) शांकरभाष्य-गीताप्रेस, पेज–1203

15. अधस्तनानां समीचीनमुत्तरं चिनुत –
(a) सामवेदः 1. कठोपनिषद्
(b) कृष्णयजुर्वेदः 2. बृहदारण्यकोपनिषद्
(c) शुक्लयजुर्वेदः 3. तैत्तिरीयोपनिषद्
(d) एष आदेशः, एष उपदेशः, एषा वेदोपनिषद् 4. केनोपनिषद्

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	4	1	2	3
(B)	4	2	1	3
(C)	1	2	3	4
(D)	3	2	1	4

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–9

16. 'बृहती-छन्दसि' कियन्तो वर्णाः भवन्ति ?
(A) 44 (B) 40
(C) 36 (D) 38
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–49

17. चातुर्मास्ययागे वर्तते –
(A) अग्निहोत्रम् (B) आग्रयणम्
(C) सौत्रामणी (D) साकमेधीयम्
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–314

18. 'नारदीयशिक्षा' सम्बद्धा वर्तते –
(A) सामवेदेन (B) ऋग्वेदेन
(C) कृष्णयजुर्वेदेन (D) शुक्लयजुर्वेदेन
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–193

19. समानाक्षराणि कति –
(A) 9 (B) 12
(C) 8 (D) 10
स्रोत–ऋग्वेदप्रातिशाख्यम् - वीरेन्द्रकुमार वर्मा, पेज–42

20. अन्तरिक्षस्थाना देवता अस्ति –
(A) अश्विनौ (B) सोमः
(C) सूर्यः (D) वायुः
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–296

21. यास्कीयनिरुक्तानुसारं कस्य पदत्वेन स्वीकारः नास्ति–
(A) नाम्नः (B) उपसर्गस्य
(C) आख्यातस्य (D) प्रत्ययस्य
स्रोत–निरुक्तम् - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–18

22. 'आचिनोत्यर्थान्' इति आचार्यपदनिर्वचने कः धातुः ?
(A) चिञ् (B) आ + चिन्
(C) चिन् (D) आ + चि

23. कस्य किं मतम् ?
(अ) अनर्थकाः हि मन्त्राः 1. नैरुक्तसमयः
(ब) सर्वाणि नामानि आख्यातजानि 2. वार्ष्यायणिः
(स) षड्भावविकाराः 3. कौत्सः
(द) सर्वाणि नामानि आख्यातजानि न 4. गार्ग्यः

कूट :

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	3	1	2	4
(B)	1	2	4	3
(C)	3	2	1	4
(D)	4	1	2	3

स्रोत–निरुक्तम् - छज्जूराम शास्त्री, पेज–8, 33, 42

11. (D) **12.** (C) **13.** (C) **14.** (B) **15.** (A) **16.** (C) **17.** (D) **18.** (A) **19.** (C) **20.** (D) **21.** (D) **22.** (D) **23.** (A)

24. ''लोपागमवर्णविकारज्ञो हि सम्यग् वेदान् – परिपालयिष्यतीत्यत्र'' - लोपागमस्य उदाहरणम् अस्ति

(A) देवा अदुह्र । (B) उद्ग्राभम् ।
(C) देवा अदुहत । (D) देवै दुह्यते ।

स्रोत–महाभाष्य पश्पशाह्निक-जयशंकरलाल त्रिपाठी, पेज–22

25.महाभाष्यानुसारं सिद्धान्ततः 'व्याकरण' शब्दस्य कोऽर्थः?

(A) सूत्रम् (B) शब्दः
(C) लक्ष्यम् (D) लक्ष्य-लक्षणे

स्रोत–महाभाष्य पश्पशाह्निक-जयशंकरलाल त्रिपाठी, पेज–126

26. 'भू + शप् > अ + अन्ति' इति स्थिते द्वयोः अकारयोः केन सूत्रेण किं भवति ?

(A) अतो गुणे - इत्यनेन पूर्वरूपत्वम्
(B) अतो गुणे - इत्यनेन पररूपत्वम् ।
(C) अतो गुणे - इत्यनेन गुणादेशत्वम् ।
(D) आद् गुणः - इत्यनेन गुणादेशत्वम् ।

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–381

27. धातोः विधीयमानः तव्यत्प्रत्ययः कस्मिन् अर्थे भवति ?

(A) कर्तरि अर्थे (B) भावे अर्थे
(C) भावे कर्मणि च अर्थे (D) कर्मणि अर्थे

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–774

28. 'द्वेस्तीयः' (-पा.सू. 5.2.54) इत्यनेन कः प्रत्ययः विधीयते कश्च तस्य अर्थः ?

(A) तीय-प्रत्ययः, पूरणे अर्थे ।
(B) तीय-प्रत्ययः, संख्यायाम् अर्थे ।
(C) स्तीय-प्रत्ययः, पूरणे अर्थे ।
(D) द्वेस्तीय-प्रत्ययः, मत्वर्थे ।

वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (भाग-2)-गोपालदत्त पाण्डेय, पेज–961

29. 'गोपस्य स्त्री गोपी' - इत्यत्र स्त्रियां केन सूत्रेण कः प्रत्ययो भवति ?

(A) ऋन्नेभ्यो ङीप् - इति ङीप् ।
(B) पुंयोगादाख्यायाम् - इति ङीष् ।
(C) उगितश्च - इति ङीप् ।
(D) पत्युर्नो यज्ञसंयोगे - इति ङीप् ।

वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (भाग एक)-गोपालदत्तपाण्डेय, पेज–653

30. 'वर्गस्य प्रथमवर्णस्य परिवर्तनं केवलम् असंयुक्तध्वनिषु एव भवति न तु संयुक्तध्वनिषु' - इति अपवादनियमः केन प्रदत्तः ?

(A) ग्रिममहोदयेन
(B) ग्रासमानमहोदयेन
(C) वर्नरमहोदयेन
(D) आचार्येण भोलाशङ्करेण

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–242

31. उत्तपते । वितपते । - इत्यनयोः क्रियापदयोः कोऽर्थः ?

(A) विलापयतीत्यर्थः (B) संतापयतीत्यर्थः
(C) 'दीप्यते' - इत्यर्थः (D) उष्णं करोतीत्यर्थः

स्रोत–वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (भाग-5)-गोविन्दाचार्य, पेज–382

32. समुद्रगुप्तस्य 'प्रयागप्रशस्तेः' कः रचयिता ?

(A) वासुलः (B) वत्सभट्टिः
(C) हरिषेणः (D) वीरसेनः

प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख (भाग-2)-परमेश्वरीलाल गुप्त, पेज–09

33. ब्रह्मसूत्राणां भगवत्पादशङ्कराचार्यस्य व्याख्यायाः केन नाम्ना व्यवहारः ?

(A) श्रीभाष्यम् (B) जयः
(C) शारीरकमीमांसाभाष्यम् (D) द्वादशलक्षणी

स्रोत–ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यम् - स्वामी सत्यानन्द सरस्वती, पेज-12

34. 'तत्त्वमसि' इति वाक्यसमन्वये वेदान्ताभिमतलक्षणा वर्तते -

(A) जहल्लक्षणा (B) जहदजहल्लक्षणा
(C) अजहल्लक्षणा (D) उपादानलक्षणा

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–127

35. 'षड्विधलिङ्गैः' समुपेतं किम् ?

(A) श्रवणम् (B) मननम्
(C) निदिध्यासनम् (D) अभ्यासः

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–152

36. सांख्ये अन्तःकरणं कतिविधं भवति ?

(A) त्रिविधम् (B) चतुर्विधम्
(C) षड्विधम् (D) दशविधम्

स्रोत–सांख्यकारिका (का. 33)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–234

24.(A) **25.**(D) **26.**(B) **27.**(C) **28.**(A) **29.**(B) **30.**(A) **31.**(C) **32.**(C) **33.**(C) **34.**(B) **35.**(A) **36.**(A)

37. सांख्याभिमतख्यातिः का ?
(A) अनिर्वचनीयख्यातिः (B) अन्यथाख्यातिः
(C) विवेकख्यातिः (D) असत्ख्यातिः
स्रोत–सांख्यकारिका - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–263

38. सांख्यानुसारं पुरुषबहुत्वप्रस्थापने कारणं भवति
(A) जननमरणकरणानां प्रतिनियमात्
(B) शरीराकारभेदात्
(C) इन्द्रियसंख्याभेदात्
(D) प्रतिपुरुषं ज्ञानभेदात्
स्रोत–सांख्यकारिका (का. 18)-सन्तनारायणश्रीवास्तव, पेज–180

39. अङ्गानां क्रमबोधको विधिर्वर्तते –
(A) विनियोगविधिः (B) नियमविधिः
(C) परिसंख्याविधिः (D) प्रयोगविधिः
स्रोत–अर्थसंग्रह - सत्यप्रकाश शर्मा, पेज–54

40. अधोनिर्दिष्टेषु कुत्र गुणवादो दृश्यते –
(A) अग्निर्हिमस्य भेषजम् (B) आदित्यो यूपः
(C) इन्द्रो वृत्राय वज्रमुदयच्छत् (D) बर्हिषि रजतं न देयम्
स्रोत–अर्थसंग्रह - सत्यप्रकाश शर्मा, पेज–198

41. रामायणमाश्रित्य यस्य कथास्ति –
(A) कुन्दमाला (B) रत्नावली
(C) मालविकाग्निमित्रम् (D) पञ्चरात्रम्
स्रोत–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेवद्विवेदी, पेज–116

42. यं ग्रन्थमधिकृत्य शङ्कराचार्येण भाष्यं न रचितम् –
(A) ब्रह्मसूत्रम् (B) श्रीमद्भागवतम्
(C) ईशावास्योपनिषद् (D) श्रीमद्भगवद्गीता
स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, भू. पेज–XII

43. 'जटायुरावणयुद्धं' रामायणस्य कस्मिन् काण्डे ?
(A) अरण्यकाण्डे (B) सुन्दरकाण्डे
(C) किष्किन्धाकाण्डे (D) बालकाण्डे
स्रोत–संस्कृतसाहित्य का इतिहास-उमाशंकरशर्मा 'ऋषि', पेज–125

44. रामायणे हनुमतः अङ्गुलीयकप्रदानवृत्तान्तः कस्मिन् काण्डे वर्तते ?
(A) सुन्दरकाण्डे (B) युद्धकाण्डे
(C) किष्किन्धाकाण्डे (D) उत्तरकाण्डे
स्रोत–संस्कृतसाहित्य का इतिहास-उमाशंकरशर्मा 'ऋषि', पेज–126

45. पुराणपञ्चलक्षणे नास्ति –
(A) वंशः (B) सर्गः
(C) उत्सर्गः (D) प्रतिसर्गः
स्रोत–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेवद्विवेदी, पेज–94

46. कस्मिन् पुराणे विविधशास्त्रसम्बन्धिनो विषयाः वर्तन्ते ?
(A) मत्स्यपुराणे (B) शिवपुराणे
(C) विष्णुधर्मोत्तर-पुराणे (D) अग्निपुराणे
स्रोत–पुराण विमर्श - बलदेव उपाध्याय, पेज–151

47. बालिवधस्य वर्णनमस्ति रामायणस्य –
(A) सुन्दरकाण्डे (B) किष्किन्धाकाण्डे
(C) अरण्यकाण्डे (D) बालकाण्डे
स्रोत–संस्कृतसाहित्य का इतिहास-उमाशंकरशर्मा 'ऋषि', पेज–126

48. अमात्यानां शौचाशौचज्ञानार्थं कौटिल्येन उपधासु या न निर्दिष्टा सा –
(A) कामोपधा (B) अर्थोपधा
(C) मोक्षोपधा (D) धर्मोपधा
स्रोत–कौटिल्य - अर्थशास्त्रम् - वाचस्पति गैरोला, पेज–25

49. 'मन्त्रिपरिषदं द्वादशामात्यान्कुर्वीत' इति कस्य मान्यता ?
(A) बार्हस्पत्यानाम् (B) कौटिल्यस्य
(C) औशनसाम् (D) मानवानाम्
स्रोत–कौटिलीय - अर्थशास्त्रम् - वाचस्पति गैरोला, पेज–47

50. 'देवानां दिनं' भवति –
(A) कृष्णपक्षः (B) शुक्लपक्षः
(C) उत्तरायणम् (D) दक्षिणायनम्
स्रोत–मनुस्मृति (1/67) - गिरिधर गोपाल शर्मा, पेज–35

51. 'अङ्गुलिमूले' किं तीर्थं भवति ?
(A) ब्राह्म-तीर्थम् (B) कायम् (प्रजापतितीर्थम्)
(C) दैव-तीर्थम् (D) पितृ-तीर्थम्
स्रोत–मनुस्मृति (2/59) - गिरिधर गोपाल शर्मा, पेज–83

52. मनुना राजा स्वराष्ट्रे कीदृशोऽभित्रेतः ?
(A) भृशदण्डः (B) अजिह्मः
(C) क्षमान्वितः (D) न्यायवृत्तः
स्रोत–मनुस्मृति (7/32) - गिरिधर गोपाल शर्मा, पेज–160

37. (C) **38.** (A) **39.** (A) **40.** (B) **41.** (A) **42.** (B) **43.** (A) **44.** (A) **45.** (C) **46.** (D) **47.** (B) **48.** (C) **49.** (D) **50.** (C) **51.** (B) **52.** (D)

53. श्रुतार्थस्योत्तरं कुत्र लेख्यम् ?
(A) नृपसन्निधौ (B) पूर्ववेदकसन्निधौ
(C) सभासदसन्निधौ (D) ब्राह्मणसन्निधौ
स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति (2/7) - गंगासागर राय, पेज–167

54. अभियोगस्यापह्नवे कियद् धनं राज्ञे दद्यात् ?
(A) द्विगुणम् (B) त्रिगुणम्
(C) चतुर्गुणम् (D) अभियोगसमम्
स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति (2/11) - गंगासागर राय, पेज–173

55. ''तवाभिधानाद् व्यथते नताननः स दुःसहान्मन्त्रपदादिवोरगः'' - इत्यत्र नताननः कः ?
(A) सुयोधनः (B) धर्मराजः
(C) वनेचरः (D) भीमसेनः
स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/24) - अभिराज राजेन्द्र मिश्र, पेज–72

56. रुग्णः प्रभाकरवर्धनः उपचारहेतोः कुत्र गतः?
(A) उद्याने (B) वने
(C) धवलगृहे (D) स्नानगृहे
स्रोत–हर्षचरितम् - पञ्चम उच्छ्वास - शिवनाथ पाण्डेय, पेज–45

57. रत्नावलीनाटिकायाः 'प्रथमाङ्कस्य' नाम किम् ?
(A) सङ्केतः (B) मदन-महोत्सवः
(C) कदलीगृहः (D) ऐन्द्रजालिकः
स्रोत–रत्नावली - तारिणीश झा, पेज–70

58. अधोऽङ्कितानां युग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत
(अ) प्रसिद्धमूर्ध्वज्वलनं हविर्भुजः 1. किरातार्जुनीयम्
(ब) अनङ्गोऽयमनङ्गत्वमद्य निन्दिष्यति ध्रुवम् 2. अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(स) अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता 3. शिशुपालवधम्
(द) किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम् 4. रत्नावली

कूट :

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	2	3	4	1
(B)	4	2	1	3
(C)	3	4	1	2
(D)	1	3	2	4

स्रोत–अ=शिशुपालवधम् (1/2), ब=रत्नावली (1/22), स=किरातार्जुनीयम् (1/23), द=अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/20)

59. 'अल्पमात्रं समुद्दिष्टं बहुधा यद्विसर्पति' - इति कस्य लक्षणम् ?
(A) मुखस्य (B) निर्वहणस्य
(C) बीजस्य (D) पताकायाः
स्रोत–दशरूपक - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज–20

60. ''आशाबन्धः कुसुमसदृशं प्रायशो ह्यङ्गनानां सद्यः पाति प्रणयि हृदयं विप्रयोगे रुणद्धि ।'' कोऽत्रालङ्कारः ?
(A) उपमा (B) दृष्टान्तः
(C) निदर्शना (D) अर्थान्तरन्यासः
स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ श्लोक-9)

61. फलार्थिभिः प्रारब्धस्य कार्यावस्थाः कति सन्ति ?
(A) षट् (B) पञ्च
(C) सप्त (D) दश
स्रोत–दशरूपक (1/19) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज–23

62. ''न हि खलु सर्वः सर्वं जानाति'' - इति कुत्र वर्तते ?
(A) वेणीसंहारे (B) रत्नावल्याम्
(C) मध्यमव्यायोगे (D) मुद्राराक्षसे
स्रोत–मुद्राराक्षस (प्रथम अंक) - परमेश्वर दीन पाण्डेय, पेज–29

63. वासवदत्तया कुसुमायुधस्य पूजा कुत्र सम्पादिता ?
(A) बकुल-पादप-तले (B) रक्ताशोक-पादप-तले
(C) सहकार-वृक्ष-तले (D) दाडिम-वृक्ष-तले
स्रोत–रत्नावली (प्रथम अंक) - तारिणीश झा, पेज-52

64. वचो भारवेः –
(A) कदलीफल-सम्मितम् (B) द्राक्षाफल-सम्मितम्
(C) दाडिमफल-सम्मितम् (D) नारिकेलफल-सम्मितम्
स्रोत–किरातार्जुनीयम् - राजेन्द्र मिश्र, भू. पेज–27

65. 'कारणान्यथ कार्याणि सहकारीणि यानि च' कस्य विषये आयाति ?
(A) रसस्वरूप-विषये (B) वस्तुस्वरूप-विषये
(C) ध्वनि-विषये (D) अलङ्कारविषये
स्रोत–काव्यप्रकाश (सूत्र-43) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–95

66. 'अश्वघोषः' कस्य धर्मस्य प्रचारार्थं काव्यानि अलिखत् ?
(A) जैनधर्मस्य (B) बौद्धधर्मस्य
(C) सिखधर्मस्य (D) ख्रिष्टधर्मस्य
स्रोत–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेवद्विवेदी, पेज–168

53. (B) **54.** (D) **55.** (A) **56.** (C) **57.** (B) **58.** (C) **59.** (C) **60.** (D) **61.** (B) **62.** (D) **63.** (B) **64.** (D) **65.** (A) **66.** (B)

67. विश्वनाथानुसारं 'शाब्दीव्यञ्जना' कतिविधा ?
(A) चतुर्धा (B) द्विधा
(C) त्रिधा (D) पञ्चधा
स्रोत–साहित्यदर्पण (2/13) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–40

68. ''वत्से ! सुशिष्यपरिदत्ता विद्येवाशोचनीया संवृत्ता'' - कस्येयमुक्तिः ?
(A) दुष्यन्तस्य (B) गौतम्याः
(C) कण्वस्य (D) शकुन्तलायाः
स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-197

69. 'रसो मुख्यतया अनुकार्ये रामादावेव भवति' इति कस्य मतम् ?
(A) भट्टलोल्लटस्य (B) शङ्कुकस्य
(C) भट्टनायकस्य (D) अभिनवगुप्तस्य
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-101

70. ''प्रमाकरणं प्रमाणम्'' - इति कस्य लक्षणम् ?
(A) प्रमायाः (B) प्रत्यक्षस्य
(C) प्रमाणस्य (D) लक्षणस्य
स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, भू. पेज–15

71. ''गौरश्वः पुरुषो हस्तीति'' कस्माद् हेतोर्न वाक्यम्?
(A) पदत्वात् (B) सन्निधेरभावात्
(C) परस्पराकांक्षाविरहात् (D) योग्यताविरहात्
स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–108

72. ''पर्वतो वह्निमान् प्रमेयत्वात्'' इत्यत्र दोषे वर्तते –
(A) साध्याभाववद्वृत्तिः
(B) दृष्टान्तरहितत्वम्
(C) साध्याभावव्याप्तिः
(D) आश्रयासिद्धित्वम्
स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–96

73. तर्कसंग्रहानुसारं परिमाणं कतिविधम् ?
(A) द्विविधम् (B) पञ्चविधम्
(C) चतुर्विधम् (D) षड्विधम्
स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–55

74. पटं प्रति तुरीवेमादिकं कीदृशं कारणं भवति ?
(A) समवायिकारणम्
(B) असमवायिकारण्
(C) स्वरूपकारणम्
(D) निमित्तकारणम्
स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–72

75. ''पृथिवी इतरेभ्यो भिद्यते गन्धवत्त्वात्'' - अत्र साध्यः कः ?
(A) पृथिवी (B) गन्धवत्त्वम्
(C) इतरभेदः (D) गन्धत्वम्
स्रोत–तर्कसंग्रह - गोविन्दाचार्य, पेज–197

67. (B) **68.** (C) **69.** (A) **70.** (C) **71.** (C) **72.** (A) **73.** (C) **74.** (D) **75.** (C)

39	सितम्बर 2013	UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् II

नोट : इस प्रश्नपत्र में **पचास (50)** बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के **दो (2)** अङ्क हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. 'रत्नधातममिति' कस्य विशेषणम् ?

(A) बृहस्पतेः (B) अग्नेः
(C) रुद्रस्य (D) वायोः

स्रोत–ऋग्वेद (1.1.1), ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्त शास्त्री, पेज–55

2. अपां नेता कः ?

(A) सोमः (B) रुद्रः
(C) वरुणः (D) इन्द्रः

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह (2.12.7) - हरिदत्त शास्त्री, पेज–184

3. 'पैप्पलाद-संहिता' केन वेदेन सम्बद्धा ?

(A) यजुर्वेदेन (B) अथर्ववेदेन
(C) सामवेदेन (D) ऋग्वेदेन

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–10

4. ग्रन्थवाचक-ब्राह्मण-लक्षणं कतिधा प्रतिपाद्यते ?

(A) नवधा (B) दशधा
(C) पञ्चदशधा (D) षोडशधा

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–115

5. वेदारम्भो विधीयते –

(A) संहितातः (B) पदपाठतः
(C) जटापाठतः (D) घनपाठतः

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–08

6. 'नारदीय-शिक्षा' केन वेदेन सम्बद्धा ?

(A) ऋग्वेदेन (B) यजुर्वेदेन
(C) सामवेदेन (D) अथर्ववेदेन

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–193

7. एषु प्राचीनव्याख्याकारो वर्तते –

(A) जैकोबी (B) मैक्समूलर
(C) ए. वेबर (D) सायणः

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–23

8. वेदभगवतः मुखत्वेनोपमीयते –

(A) शिक्षा (B) कल्पः
(C) निरुक्तम् (D) व्याकरणम्

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–190

9. अङ्गुलीषु स्वरसञ्चालनं क्रियते –

(A) ऋग्वेदे (B) यजुर्वेदे
(C) सामवेदे (D) अथर्ववेदे

स्रोत–संस्कृत वाङ्मयका बृहद् इतिहास (भाग-2), पेज–40

10. अधोऽङ्कितानां समीचीनमुत्तरं चिनुत –

(अ) कालगणनायोपयुज्यते 1. सामवेदीयम्
(ब) ईशावास्यमिदं सर्वम् 2. ऋग्वेदः
(स) षड्विंशब्राह्मणम् 3. ज्योतिषम्
(द) दशतयी 4. यत्किञ्च जगत्यां जगत्

कूट :

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	1	3	4	2
(B)	2	4	3	1
(C)	3	4	1	2
(D)	4	3	2	1

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–अ = 208, स = 10, ब-ईशावास्योपनिषद् मन्त्र-1, द=संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज–35

11. कति भावविकाराः –

(A) सप्त (B) षट्
(C) अष्ट (D) दश

स्रोत–निरुक्तम् - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–26

12. राणायनीयशाखा कस्य वेदस्य ?

(A) ऋग्वेदस्य (B) यजुर्वेदस्य
(C) सामवेदस्य (D) अथर्ववेदस्य

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–10

1. (B) **2.** (D) **3.** (B) **4.** (B) **5.** (A) **6.** (C) **7.** (D) **8.** (D) **9.** (C) **10.** (C) **11.** (B) **12.** (C)

13. 'आ कृष्णेन रजसा' इति कस्मिन् सूक्ते पठ्यते ?
(A) नवग्रहसूक्ते (B) सवितृसूक्ते
(C) उषस्सूक्ते (D) रात्रिसूक्ते
स्रोत–ऋक्सूक्त संग्रह - हरिदत्तशास्त्री, पेज–105

14. तर्कसंग्रहस्य कर्ता –
(A) केशवमिश्रः (B) जगदीशः
(C) अन्नंभट्टः (D) कौण्डभट्टः
स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, भू. पेज–1

15. तर्कसंग्रहानुसारं करणम् –
(A) कार्यनियतपूर्ववृत्तिः (B) साधारणं कारणम्
(C) निमित्तकारणम् (D) असाधारणं कारणम्
स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–68

16. तर्कसंग्रहानुसारं द्रव्याणि –
(A) नवैव (B) दशैव
(C) एकादश (D) द्वादश
स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–28

17. तर्कसंग्रहानुसारम् आत्मा –
(A) अणुः (B) विभुः
(C) दीर्घः (D) मध्यमपरिमाणः
स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–47

18. तस्मादिन्द्रियम् ....।
(A) प्रत्यक्षप्रमाणम् (B) अनुमितिकरणम्
(C) उपमानम् (D) शब्दप्रमाणम्
स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–74

19. तर्कसंग्रहानुसारम् अभावः कतिविधः –
(A) एक एव (B) द्विविधः
(C) चतुर्विधः (D) त्रिविधः
स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–34

20. सांख्यमते पुरुषो वर्तते –
(A) अचेतनः (B) चेतनः
(C) प्रकृतिः (D) विकृतिः
स्रोत–सांख्यकारिका (का. 11)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–129

21. सांख्यमते लघु प्रकाशकञ्च वर्तते –
(A) तमः (B) सत्त्वम्
(C) रजः (D) रूपम्
स्रोत–सांख्यकारिका (का. 13)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–145

22. सांख्यानामनुमानं कतिविधम् ?
(A) चतुर्विधम (B) त्रिविधम्
(C) पञ्चविधम् (D) षड्विधम्
स्रोत–सांख्यकारिका (का. 5)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–52

23. 'विवर्तवादः' कस्य सिद्धान्तः ?
(A) नैयायिकानाम् (B) अद्वैतवेदान्तिनाम्
(C) मीमांसकानाम् (D) सांख्यानाम्
स्रोत–सांख्यकारिका - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–96

24. 'अध्यासो' वर्तते –
(A) कार्यरूपः (B) स्मृतिरूपः
(C) कारणरूपः (D) नित्यरूपः
स्रोत–भारतीय दर्शन - चन्द्रधर शर्मा, पेज–242

25. रिक्तस्थानं पूरयत - 'वेदान्तसारमनुसृत्य सूक्ष्मशरीराणि .... अवयवानि' ।
(A) पञ्चदश (B) षोडश
(C) सप्तदश (D) चतुर्दश
स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–65

26. 'वर्णानामतिशयितः सन्निधिः' उच्यते –
(A) संयोगः (B) संहिता
(C) सवर्णम् (D) अनुनासिकः
स्रोत–अष्टाध्यायी (1.4.108) - ईश्वरचन्द्र, पेज–147

27. 'वृद्धिसंज्ञाविधायकं' सूत्रं किम् ?
(A) वृद्धिरेचि (B) वृद्धिरादैच्
(C) आद्गुणः (D) एङि पररूपम्
स्रोत–अष्टाध्यायी (1.1.1) - ईश्वरचन्द्र, पेज–05

28. 'क्तक्तवतू' इत्यनयोः का संज्ञा भवति ?
(A) नदी (B) घि
(C) उपधा (D) निष्ठा
स्रोत–अष्टाध्यायी (1.1.25) - ईश्वरचन्द्र, पेज–19

13. (B) **14.** (C) **15.** (D) **16.** (A) **17.** (B) **18.** (A) **19.** (C) **20.** (B) **21.** (B) **22.** (B) **23.** (B) **24.** (B) **25.** (C) **26.** (B) **27.** (B) **28.** (D)

29. कर्तुः क्रियया आप्तुमिष्टतमस्य कारकस्य का संज्ञा भवति ?

(A) कर्ता (B) कर्म
(C) करणम् (D) अधिकरणम्

स्रोत–कारक प्रकरण (1.4.49) - राममुनिपाण्डेय, पेज–16

30. 'प्रायेण पूर्वपदार्थप्रधानः' कः समासः ?

(A) द्विगुः (B) द्वन्द्वः
(C) बहुव्रीहिः (D) अव्ययीभावः

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज–02

31. 'एकाल् प्रत्ययः' कः भवति ?

(A) संयोगः (B) अपृक्तः
(C) उपधा (D) वृद्धिः

स्रोत–अष्टाध्यायी (1.2.41) – ईश्वरचन्द्र, पेज–68

32. 'अपादानादिविशेषैरविवक्षितस्य कारकस्य' का संज्ञा ?

(A) कर्ता (B) कर्म
(C) करणम् (D) अधिकरणम्

स्रोत–कारक प्रकरण (1.4.51) - राममुनि पाण्डेय, पेज–19

33. 'पञ्चगङ्गम्' इत्यत्र समासविधायकं सूत्रं किम् ?

(A) संख्यापूर्वो द्विगुः (B) नदीभिश्च
(C) चार्थे द्वन्द्वः (D) अनेकमन्यपदार्थे

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज–42

34. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत –

(अ) सवर्णम् 1. उपसर्जनं पूर्वम्
(ब) नदी 2. हेतौ
(स) अधिहरि 3. तुल्यास्यप्रयत्नम्
(द) दण्डेन घटः 4. यू स्त्र्याख्यौ

कूट :

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	1	2	3	4
(B)	2	3	4	1
(C)	3	4	1	2
(D)	4	1	3	2

स्रोत–अष्टाध्यायी - ईश्वरचन्द्र अ = 1.1.9 पेज–11, ब = 1.4.3 पेज–109, स-लघुसिद्धान्त कौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4) पेज–21, द-सिद्धान्त कौमुदी (कारक प्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज–44

35. 'हिमवतो गङ्गा प्रभवति' - इत्यत्र किं सूत्रं प्रवर्तते ?

(A) पराजेरसोढः (B) धारेरुत्तमर्णः
(C) जनिकर्तुः प्रकृतिः (D) भुवः प्रभवः

स्रोत–सिद्धान्त कौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनिपाण्डेय, पेज–63

36. अपवर्गे कयोस्तृतीया भवति ?

(A) कर्तृकर्मणोः (B) हेतुकरणयोः
(C) कालाध्वनोः (D) संज्ञासर्वनाम्नोः

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–42

37. ध्वनिनियमेषु क्रमेण प्रथमः को गण्यते ?

(A) वर्नरनियमः (B) ग्रिमनियमः
(C) कालित्सनियमः (D) ग्रासमाननियमः

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–241

38. उत्तररामचरितस्य प्रथमाङ्कः उच्यते –

(A) कुमारप्रत्यभिज्ञानम् (B) पञ्चवटीप्रवेशः
(C) चित्रदर्शनम् (D) छाया

स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू. पेज–58

39. कालिदासेन रचिता कृतिः न वर्तते –

(A) स्वप्नवासवदत्तम्
(B) रघुवंशमहाकाव्यम्
(C) मेघदूतम्
(D) अभिज्ञानशाकुन्तलम्

संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–137

40. मदनमहोत्सवस्य वर्णनं कस्मिन् ग्रन्थे प्रथमाङ्के उपलभ्यते ?

(A) उत्तररामचरिते (B) रत्नावल्याम्
(C) अभिज्ञानशाकुन्तले (D) मृच्छकटिके

स्रोत–रत्नावली - तारिणीश झा, पेज–70

41. गुरूपदेशस्य महत्त्वमस्मिन्नुपवर्णितं विस्तरेण –

(A) हर्षचरिते (B) दशकुमारचरिते
(C) नैषधीयचरिते (D) कादम्बर्याम्

स्रोत–कादम्बरी (शुकनासोपदेश) – तारिणीश झा, पेज–09

29.(B) **30.**(D) **31.**(B) **32.**(B) **33.**(B) **34.**(C) **35.**(D) **36.**(C) **37.**(B) **38.**(C) **39.**(A) **40.**(B) **41.**(D)

42. नैषधीयचरिते कति सर्गाः ?

(A) एकोनविंशतिः (19) (B) विंशतिः (20)
(C) द्वाविंशतिः (22) (D) एकविंशतिः (21)

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेवद्विवेदी, पेज–224

43. रघुवंशमहाकाव्ये सर्वप्रथमं कस्य राज्ञः वर्णनं कृतम् ?

(A) रामस्य (B) रघोः
(C) अजस्य (D) दिलीपस्य

संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेवद्विवेदी, पेज–151, 152

44. मेघदूतकाव्यानुसारं यक्षस्य पत्नी कुत्र वसति स्म ?

(A) रामगिर्याश्रमेषु (B) वाराणस्याम्
(C) अलकापुर्याम् (D) प्रयागे

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ 07) - तारिणीश झा, पेज–16

45. दण्डिना रचितं काव्यमस्ति –

(A) नैषधीयचरितम् (B) बुद्धचरितम्
(C) उत्तररामचरितम् (D) दशकुमारचरितम्

संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेवद्विवेदी, पेज–466

46. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत –

(अ) श्रीहर्षः 1. उत्तररामचरितम्
(ब) बाणभट्टः 2. बुद्धचरितम्
(स) भवभूतिः 3. नैषधीयचरितम्
(द) अश्वघोषः 4. हर्षचरितम्

कूट :

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	2	3	4	1
(B)	3	4	1	2
(C)	1	2	3	4
(D)	4	1	2	3

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज– अ = 224, ब = 491, स - 395, द =167

47. सम्राट्हर्षवर्धनस्य पितुः नाम किमासीत् –

(A) प्रभाकरवर्द्धनः
(B) राज्यवर्द्धनः
(C) अवन्तिवर्मा
(D) ग्रहवर्मा

स्रोत–हर्षचरितम् (पञ्चमोच्छ्वास) - शिवनाथ पाण्डेय, पेज–19

48. विश्वनाथेन कस्य काव्यलक्षणस्य खण्डनं प्रधानत्वेन कृतम् ?

(A) वामनस्य
(B) आनन्दवर्धनस्य
(C) मम्मटस्य
(D) कुन्तकस्य

स्रोत–साहित्यदर्पण (प्रथम परिच्छेद)-शालिग्राम शास्त्री, पेज–12-13

49. 'वाग्वैदग्ध्यप्रधानेऽपि रस एवात्र जीवितम्' इत्युक्तिः दर्पणकारेण कुतः उद्धृता ?

(A) काव्यप्रकाशात्
(B) रामायणात्
(C) अग्निपुराणात्
(D) नाट्यशास्त्रात्

स्रोत–साहित्यदर्पण - शालिग्राम शास्त्री, पेज-18

50. विश्वनाथमतानुसारं लक्षणायाः कति भेदाः सन्ति ?

(A) विंशतिः
(B) चतुर्विंशतिः
(C) अशीतिः
(D) सप्ततिः

स्रोत–साहित्यदर्पण (2/11) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–39

॥ पठामि संस्कृतं नित्यं वदामि संस्कृतं सदा ॥
॥ ध्यायामि संस्कृतं सम्यक् वन्दे संस्कृतमातरम्॥

42. (C) **43.**(D) **44.**(C) **45.** (D) **46.**(B) **47.** (A) **48.** (C) **49.** (C) **50.** (C)

40	सितम्बर 2013	UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् III

नोट : इस प्रश्नपत्र में **पचहत्तर (75)** बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के **दो (2)** अङ्क हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. ऋग्वेदस्य द्वितीयमण्डलान्तर्गतस्य इन्द्रसूक्तस्य ऋषिः कः अस्ति ?

(A) गृत्समदः (B) हिरण्यगर्भः
(C) विश्वामित्रः (D) अत्रिः

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्त शास्त्री, पेज–177

2. विधेयाः के ?

(A) मन्त्राः (B) ब्राह्मणाः
(C) अर्थवादाः (D) प्रश्लिष्टाः

स्रोत–वैदिकसाहित्य का इतिहास-गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज–12

3. दर्शेष्टौ कति ऋत्विजो भवन्ति ?

(A) **चत्वारः** (B) **षोडश**
(C) **अष्टौ** (D) **दश**

स्रोत–श्रौतयज्ञपरिचय - वेणीरामशर्मा गौड़, पेज–10

4. पञ्चमहायज्ञाः केषां कृते विहिताः ?

(A) संन्यासिनां कृते (B) गृहस्थानां कृते
(C) ब्रह्मचारिणां कृते (D) बालानां कृते

स्रोत–वैदिकसाहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–317

5. माध्यन्दिनसंहितायाम् अनुदात्तस्वरचिह्नं कुत्र दीयते ?

(A) उपरिष्टात् (B) तिर्यक्
(C) अधः (D) सर्वतः

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–326

6. सायणस्य व्याख्यापद्धतिरस्ति –

(A) वैज्ञानिकी (B) याज्ञिकी
(C) तान्त्रिकी (D) ऐतिहासिकी

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–17

7. आह्वनीयस्य स्वरूपम् –

(A) वृत्तम् (B) चतुरस्रम्
(C) वर्तुलम् (D) षट्कोणम्

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–311

8. नासदीयसूक्ते कतिमन्त्राः सन्ति ?

(A) सप्त (B) दश
(C) सप्तदश (D) विंशतिः

स्रोत–वेदकथांक - गीताप्रेस, पेज–461-62

9. तैत्तिरीयोपनिषद् केन वेदेन सम्बद्धा ?

(A) शुक्लयजुर्वेदेन (B) कृष्णयजुर्वेदेन
(C) सामवेदेन (D) अथर्ववेदेन

स्रोत–वैदिकसाहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–9

10. कठोपनिषदनुसारं प्राणेन सम्भवति –

(A) अदितिः (B) आत्मा
(C) बुद्धिः (D) मनः

स्रोत–कठोपनिषद् (2.1.7)

11. ईशावास्यदिशा कथं मृत्युं तरति –

(A) ज्ञानेन (B) विनाशेन
(C) सम्भूत्या (D) विद्यया

स्रोत–ईशावास्योपनिषद् (मन्त्र-14)

12. 'आत्मना विन्दते वीर्यम्' - अयं विचारः कुत्रोपदिश्यते ?

(A) केनोपनिषदि (B) कठोपनिषदि
(C) तैत्तिरीयोपनिषदि (D) बृहदारण्यके

स्रोत–केनोपनिषद् (2/4)

13. 'मानी पुनः पुनर्वशमापद्यते मे' - कुत्र इयम् उक्तिः?

(A) तैत्तिरीयोपनिषदि (B) बृहदारण्यके
(C) कठोपनिषदि (D) केनोपनिषदि

स्रोत–कठोपनिषद् (1.2.6)

1. (A) **2.** (A) **3.** (A) **4.** (B) **5.** (C) **6.** (B) **7.** (B) **8.** (A) **9.** (B) **10.** (A) **11.** (B) **12.** (A) **13.** (C)

14. ''अमृतञ्च स्थितञ्च यच्च सच्च त्यच्च'' - कुत्रेयमुक्तिः ?
(A) केनोपनिषदि (B) तैत्तिरीयोपनिषदि
(C) छान्दोग्योपनिषदि (D) बृहदारण्यकोपनिषदि
स्रोत–बृहदारण्यकोपनिषद् शांकरभाष्य (2.3.1), गीताप्रेस, पेज–511

15. आनन्दमयस्य शिरः किमुच्यते ?
(A) आनन्दः (B) मोदः
(C) प्रियम् (D) प्रमोदः
स्रोत–तैत्तिरीयोपनिषद् - चुन्नीलाल शुक्ल, पेज–58

16. ''मृत्यवे त्वा ददामि'' इति केनोक्तम् ?
(A) यमेन (B) नचिकेतसा
(C) उद्दालकेन (D) कुमारेण
स्रोत–कठोपनिषद् (1.1.4) - बैजनाथ पाण्डेय, पेज-8

17. ऋक्प्रातिशाख्यानुसारं सोष्मवर्णः कः ?
(A) च (B) छ
(C) ज (D) ट
स्रोत–ऋग्वेदप्रातिशाख्यम् - वीरेन्द्रकुमार वर्मा, पेज–55

18. ऋक्प्रातिशाख्यानुसारम् अघोषवर्णः कः ?
(A) श (B) ड
(C) ढ (D) ण
स्रोत–ऋग्वेदप्रातिशाख्यम् - वीरेन्द्रकुमार वर्मा, पेज–54

19. ऋक्प्रातिशाख्यम् अनुसृत्य बह्वृचानां यमसंख्या वर्तते –
(A) 5 (B) 10
(C) 20 (D) 25
स्रोत–ऋग्वेदप्रातिशाख्यम् - वीरेन्द्रकुमार वर्मा, पेज–75, 411

20. कौशिकगृह्यसूत्रं केन सम्बद्धम् ?
(A) ऋग्वेदेन (B) कृष्णयजुर्वेदेन
(C) सामवेदेन (D) अथर्ववेदेन
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–233

21. 'उष्णिक्' - छन्दसि कियन्तो वर्णाः भवन्ति –
(A) 20 (B) 24
(C) 28 (D) 32
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–203

22. निरुक्तानुसारं चतुर्थो भावविकारः कः अस्ति ?
(A) अस्ति (B) वर्धते
(C) अपक्षीयते (D) विनश्यति
स्रोत–निरुक्तम् - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–26

23. 'उच्छतीति' निरुक्त्या उच्यते –
(A) वाक् (B) उदकम्
(C) उषाः (D) आदित्यः
स्रोत–निरुक्तम् - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–210

24. 'वा' इति निपातो कस्मिन् अर्थे वर्तते –
(A) निषेधार्थे (B) विचारणार्थे
(C) उपमार्थे (D) प्रयोगार्थे
स्रोत–निरुक्तम् - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–50

25. महाभाष्यरीत्या 'चत्वारि शृङ्ग' इत्यत्र किं चत्वारि पदेन गृह्यते ?
(A) चत्वारो वेदाः
(B) चत्वारो विद्याभ्यासकालाः
(C) चत्वारः ऋत्विजः
(D) नामाख्यातोपसर्गनिपाताश्च
स्रोत–व्याकरणमहाभाष्य पश्पशाह्निक-मधुसूदन मिश्र, पेज–18

26. काकुदमित्यत्र काकुशब्देनाभिप्रेतं किम् ?
(A) लक्ष्यार्थः (B) व्यङ्ग्यम्
(C) जिह्वा (D) ध्वनिः
स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेवद्विवेदी, पेज–135-136

27. 'भोजनकाले उपतिष्ठते' इत्यत्र आत्मनेपदविधायकं सूत्रं किम् अस्ति ?
(A) अकर्मकाच्च (B) उपान्मन्त्रकरणे
(C) समवप्रविभ्यः स्थः (D) उदोऽनूर्ध्वकरणे
स्रोत–वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (भाग-5)-गोविन्दाचार्य, पेज–382

28. 'सीमा' इत्यत्र 'ङीप्' निषेधकं सूत्रं किम् अस्ति ?
(A) मनः (B) अनो बहुव्रीहेः
(C) टाबृचि (D) न यासयोः
स्रोत–वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (भाग-एक)-गोपालदत्तपाण्डेय, पेज–587

14. (D) **15.** (C) **16.** (C) **17.** (B) **18.** (A) **19.** (C) **20.** (D) **21.** (C) **22.** (B) **23.** (C) **24.** (B)
25. (D) **26.** (C) **27.** (A) **28.** (A)

29. अव्ययीभाव-समासे 'साग्नि' इत्युदाहरणे अग्निः उच्यते –
(A) देवः (B) दाहकः
(C) पाचकः (D) ग्रन्थः
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज–41

30. 'सुपात्' इत्यत्र कः समासः ?
(A) तत्पुरुषः (B) बहुव्रीहिः
(C) द्वन्द्वः (D) अव्ययीभावः
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज–214

31. ऐहोलशिलालेखः कस्य वर्तते ?
(A) द्वितीय चन्द्रगुप्तस्य (B) द्वितीय धरसेनस्य
(C) द्वितीय जीवितगुप्तस्य (D) द्वितीय पुलकेशिनः
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज–242

32. अद्वैतमते 'ब्रह्मणो' वर्तते –
(A) व्यावहारिकत्वम् (B) प्रतिभासिकत्वम्
(C) पारमार्थिकत्वम् (D) मिथ्यात्वम्
स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, भू. पेज–IX

33. 'ब्रह्मसूत्रस्यापरं' नाम किम् अस्ति ?
(A) शारीरकसूत्रम् (B) मीमांसासूत्रम्
(C) धर्मसूत्रम् (D) सांख्यसूत्रम्
स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–08

34. सांख्यमते गुरु वरणकञ्च किम् उच्यते –
(A) सत्त्वम् (B) तमः
(C) रजः (D) रूपम्
स्रोत–सांख्यकारिका (का. 13)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–145

35. सांख्यमते अकर्तृत्वं कस्य स्वरूपम् अस्ति ?
(A) प्रधानस्य (B) बुद्धेः
(C) अहङ्कारस्य (D) पुरुषस्य
स्रोत–सांख्यकारिका (का. 13)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–186

36. अर्थसंग्रहानुसारं भावना कतिधा –
(A) द्विविधा (B) त्रिविधा
(C) चतुर्विधा (D) पञ्चविधा
स्रोत–अर्थसंग्रह - सत्यप्रकाश शर्मा, पेज–19

37. गुणविधेः उदाहरणं किम् अस्ति ?
(A) अग्निहोत्रं जुहोति (B) समिधो यजति
(C) दध्ना जुहोति (D) सोमेन यजेत
स्रोत–अर्थसंग्रह - सत्यप्रकाश शर्मा, पेज–42

38. प्रयोग-प्राशु-भावबोधकः भवति
(A) उत्पत्तिविधिः (B) विशिष्टविधिः
(C) गुणविधिः (D) प्रयोगविधिः
स्रोत–अर्थसंग्रह - सत्यप्रकाश शर्मा, पेज–109

39. 'तत्प्रख्यन्यायः' कुत्र उपयुज्यते ?
(A) निषेधनिर्णये (B) नियमविधिनिर्णये
(C) नामधेयनिर्णये (D) अर्थवादनिर्णये
स्रोत–अर्थसंग्रह - सत्यप्रकाश शर्मा, पेज–155

40. 'प्रतिपत्पाठशीलस्य विद्येव तनुतां गता' इयम् उक्तिः कुत्र उपलभ्यते ?
(A) श्रीमद्भागवते (B) विष्णुपुराणे
(C) रामायणे (D) भगवद्गीतायाम्
स्रोत–वाल्मीकीयरामायणम् (5.59.31)

41. महाभारतस्य तृतीयं पर्व किमुच्यते ?
(A) उद्योगपर्व (B) भीष्मपर्व
(C) द्रोणपर्व (D) वनपर्व
स्रोत–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेवद्विवेदी, पेज–117

42. व्यासस्य पितामहः कः आसीत् ?
(A) शक्तिः (B) पराशरः
(C) द्वैपायनः (D) विश्वामित्रः
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास - राकेशकुमार जैन, पेज–71

43. श्रीमद्भागवतपुराणं निबद्धम् अस्ति ?
(A) पर्वसु (B) काण्डेषु
(C) स्कन्धेषु (D) खण्डेषु
स्रोत–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेवद्विवेदी, पेज–97

44. महापुराणेषु न गण्यते –
(A) पद्मपुराणम् (B) ब्रह्मपुराणम्
(C) साम्बपुराणम् (D) स्कन्दपुराणम्
स्रोत–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेवद्विवेदी, पेज–96

29. (D) **30.** (B) **31.** (D) **32.** (C) **33.** (A) **34.** (B) **35.** (D) **36.** (A) **37.** (C) **38.** (D) **39.** (C)
40. (C) **41.** (D) **42.** (A) **43.** (C) **44.** (C)

45. ललिता-सहस्त्र-नामस्तोत्रं कुत्र वर्तते ?

(A) श्रीमद्भागवते (B) रामायणे
(C) ब्रह्माण्डपुराणे (D) अग्निपुराणे

स्रोत–पुराण विमर्श - बलदेव उपाध्याय, पेज–161

46. खिलभागत्वेन अभिधीयते –

(A) नारदपुराणम् (B) ब्रह्मपुराणम्
(C) कूर्मपुराणम् (D) हरिवंशपुराणम्

स्रोत–संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (भाग-3), पेज–514

47. अर्थशास्त्रस्य प्रथमाधिकरणं वर्तते –

(A) विनयाधिकारिकम् (B) योगवृत्तम्
(C) धर्मस्थीयम् (D) षाड्गुण्यम्

स्रोत–कौटिलीय अर्थशास्त्रम् - वाचस्पति गैरोला, भू. पेज–75

48. समयाचारिकं कुत्र उपदिष्टम् अर्थशास्त्रे –

(A) धर्मस्थीये (B) कण्टकशोधने
(C) अध्यक्षप्रचारे (D) योगवृत्ते

स्रोत–कौटिलीय अर्थशास्त्रम् - वाचस्पति गैरोला, पेज–428

49. ऋग्वेदः कस्मात् सम्प्राप्तः –

(A) अग्नेः (B) वायोः
(C) आदित्यात् (D) सोमात्

स्रोत–मनुस्मृति (1/33) - गिरिधर गोपाल शर्मा, पेज–19

50. केशान्तसंस्कारस्य काल उक्तः क्षत्रियार्थम् –

(A) द्वादशे वर्षे (B) षोडशे वर्षे
(C) द्वाविंशे वर्षे (D) चतुर्विंशे वर्षे

स्रोत–मनुस्मृति (2/65) - गिरिधरगोपाल शर्मा, पेज–85

51. याज्ञवल्क्यदिशा मानुषं प्रमाणं कतिविधम् ?

(A) एकविधम् (B) द्विविधम्
(C) त्रिविधम् (D) चतुर्विधम्

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति (2/22) - गंगासागर राय, पेज–180

52. विद्वान् निधिं लब्ध्वा ततः कियन्तं गृह्णीयात् ?

(A) सर्वम् (B) दशांशम्
(C) षष्ठांशम् (D) अर्धम्

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति (2/34) - गंगासागर राय, पेज–192

53. दिवास्वप्नः गण्यते –

(A) लोभजगणे (B) मोहजगणे
(C) क्रोधजगणे (D) कामजगणे

स्रोत–मनुस्मृति (7/47) - गिरिधरगोपाल शर्मा, पेज–167

54. ''तवाभिधानाद् व्यथते नताननः स दुःसहान्मन्त्र–पदादिवोरगः'' - इत्यत्र कः अलङ्कारः ?

(A) दीपकः (B) दृष्टान्तः
(C) रूपकः (D) श्लेषः

स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/24) - राजेन्द्र मिश्र, पेज–85

55. 'हैयङ्गवीनम्' इति शब्दस्य को अर्थः –

(A) क्षीरम् (B) घृतम्
(C) जलम् (D) अग्निः

स्रोत–रघुवंशम् (1/45) - कृष्णमणि त्रिपाठी, पेज–21

56. अधोनिर्दिष्टानां समीचीनां तालिकां चिनुत –

(अ) प्रावृषेण्यं पयोवाहं विद्युदैरावताविव — 1. दशकुमारचरितम्
(ब) वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः — 2. उत्तररामचरितम्
(स) तस्य वसुमती नाम सुमती लीलावती कुलशेखरमणी रमणी बभूव — 3. रघुवंशम्
(द) जनकानां रघूणां च सम्बन्धः कस्य न प्रियः? — 4. किरातार्जुनीयम्

कूट :

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	3	4	1	2
(B)	1	2	3	4
(C)	2	1	4	3
(D)	2	3	1	4

स्रोत–अ = रघुवंशम् (1/36), ब = किरातार्जुनीयम् (1/8), द = उत्तररामचरितम् (1/51)

45. (C) **46.** (D) **47.** (A) **48.** (D) **49.** (A) **50.** (C) **51.** (C) **52.** (A) **53.** (D) **54.** (D) **55.** (B) **56.** (A)

57. ''काव्यज्ञशिक्षयाभ्यासम् इति हेतुस्तदुद्भवे'' इयमुक्तिः कस्माद् ग्रन्थादुद्धृता अस्ति ?

(A) साहित्यदर्पणात् (B) काव्यप्रकाशात्
(C) ध्वन्यालोकात् (D) नाट्यशास्त्रात्

स्रोत–काव्यप्रकाश (1/3) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–16

58. 'अपारे काव्यसंसारे कविरेकः प्रजापतिः' इति कुत्र भण्यते–

(A) ध्वन्यालोके (B) काव्यप्रकाशे
(C) नाट्यशास्त्रे (D) दशकुमारचरिते

स्रोत–ध्वन्यालोक - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–312

59. 'अद्भुत-रसस्य' स्थायिभावः कः अस्ति ?

(A) रतिः (B) शोकः
(C) हासः (D) विस्मयः

स्रोत–साहित्यदर्पण (3/242) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–120

60. सोपहास - निगूढार्था नालिकैव –

(A) नाटिका (B) प्रहेलिका
(C) प्रकरणिका (D) भाणिका

स्रोत–साहित्यदर्पण (6/261) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–219

61. 'मुखं विकसित-स्मितं वशितवक्रिमप्रेक्षितं' कस्य उदाहरणम् इदम् ?

(A) अगूढ-व्यङ्ग्यस्य (B) गूढ-व्यङ्ग्यस्य
(C) व्यञ्जनायाः (D) अभिधायाः

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–68

62. नाट्यशास्त्रानुसारं नाट्यमण्डपस्य रक्षणे कः नियुक्तः अस्ति ?

(A) चन्द्रः (B) सूर्यः
(C) अग्निः (D) वरुणः

स्रोत–नाट्यशास्त्र (1/84) – बाबूलाल शुक्ल, पेज–22

63. नाट्यशास्त्रे प्रेक्षागृहस्य वर्णनं कस्मिन्नध्यायेऽस्ति ?

(A) तृतीयेऽध्याये (B) पञ्चमेऽध्याये
(C) द्वितीयेऽध्याये (D) चतुर्थेऽध्याये

स्रोत–नाट्यशास्त्र (2/7) - बाबूलाल शुक्ल, पेज–34

64. शृङ्गाररसप्रधानं नाटकम् इदम् अस्ति –

(A) उत्तररामचरितम् (B) वेणीसंहारम्
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (D) प्रतिमानाटकम्

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेवद्विवेदी, पेज–339

65. अच्छोदसरः केन खानितम् ?

(A) चित्ररथेन (B) चन्द्रापीडेन
(C) चित्रसेनेन (D) दक्षप्रजापतिना

स्रोत–कादम्बरी- कृष्णमोहन शास्त्री, पेज–412

66. 'यथा नराणां नृपतिः शिष्याणां च यथा गुरुः एवं हि सर्वभावानां' महानिह पूरयत ।

(A) विभावः (B) सात्त्विकभावः
(C) अनुभावः (D) स्थायिभावः

स्रोत–नाट्यशास्त्र (भाग-एक) (7/8)-बाबूलाल शुक्ल, पेज–379

67. काव्यस्वरूपमिदम् –

(A) तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि ।
(B) इदमुत्तममतिशयिनि व्यङ्ग्ये वाच्याद् ध्वनिर्बुधैः कथितः ।
(C) अतादृशि गुणीभूतव्यङ्ग्यं व्यङ्ग्ये तु मध्यमम् ।
(D) तात्पर्यार्थोऽपि केषुचित् ।

स्रोत–काव्यप्रकाश - (सूत्र-1) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–19

68. ध्वन्यालोके प्रतीयमानस्य तृतीयः प्रभेदः कः ?

(A) अलङ्कारादिः (B) गुणादिः
(C) रसादिः (D) वृत्त्यादिः

स्रोत–ध्वन्यालोक (1/4) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–13

69. अलक्षितद्विजं धीरमुत्तमानां .... भवेत् ।

(A) हसितम् (B) विहसितम्
(C) उपहसितम् (D) स्मितम्

स्रोत–नाट्यशास्त्र (6/54) - ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज–205

70. तर्कसंग्रहानुसारं मनः..........।

(A) विभु (B) परमाणु
(C) दीर्घम् (D) मध्यमपरिमाणम्

स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–49

71. 'उष्णस्पर्शवत्त्वं' .... लक्षणम् ।

(A) पृथिव्याः (B) अपाम्
(C) तेजसः (D) आत्मनः

स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–38

57. (B) **58.** (A) **59.** (D) **60.** (B) **61.** (B) **62.** (A) **63.** (C) **64.** (C) **65.** (A) **66.** (D)
67. (A) **68.** (C) **69.** (D) **70.** (B) **71.** (C)

72. तर्कसंग्रहानुसारं गन्धः कतिविधः अस्ति –

(A) द्विविधः (B) त्रिविधः
(C) चतुर्विधः (D) पञ्चविधः

स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–51

73. युग्मानां समीचीनतालिकां चिनुत –

(अ)	संयुक्तसमवायः	1.	रूपत्वग्राहकः
(ब)	समवायः	2.	रूपग्राहकः
(स)	समवेतसमवायः	3.	शब्दग्राहकः
(द)	संयुक्त-समवेत-समवायः	4.	शब्दत्वग्राहकः

कूट :

	(अ)	(ब)	(ब)	(स)
(A)	3	4	1	2
(B)	2	3	4	1
(C)	4	3	2	1
(D)	3	2	1	4

स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता
पेज– अ = 78, ब = 79, स = 80, द = 79

74. तर्कसंग्रहानुसारं लिङ्गं कतिविधम् –

(A) द्विविधम्
(B) त्रिविधम्
(C) चतुर्विधम्
(D) पञ्चविधम्

स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–91

75. 'वह्निव्याप्यधूमवानयं पर्वतः' इति ज्ञानम् अस्ति –

(A) व्याप्तिः
(B) अनुमितिः
(C) परामर्शः
(D) पक्षधर्मता

स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–87

72. (A) **73.** (B) **74.** (B) **75.** (C)

41	दिसम्बर 2013	UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् II

नोट : इस प्रश्नपत्र में **पचास (50)** बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के **दो (2)** अङ्क हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. ''स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव'' अस्य मन्त्रस्य ऋषिः वर्तते –
(A) वसिष्ठः (B) मधुच्छन्दाः
(C) कण्वः (D) अङ्गिराः
स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री, पेज–60

2. 'वज्रहस्तः' इति विशेषणं कस्य देवस्य अस्ति –
(A) उषसः (B) विष्णोः
(C) अग्नेः (D) इन्द्रस्य
स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्त शास्त्री, पेज–189

3. 'माध्यन्दिनशाखा' कस्य वेदस्य अस्ति ?
(A) यजुर्वेदस्य (B) ऋग्वेदस्य
(C) अथर्ववेदस्य (D) कस्यापि न
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–09

4. ''आ वो वृणे सुमतिं यज्ञियानाम्'' मन्त्रांशः अयं कस्य - सूक्तस्य वर्तते –
(A) पुरूरवा-उर्वशी-सूक्तस्य
(B) यमयमी-सूक्तस्य
(C) सरमा-पणि-सूक्तस्य
(D) विश्वामित्र-नदी-सूक्तस्य
स्रोत–ऋग्वेद (3.33.11) – विश्वामित्र नदी संवाद सूक्त मन्त्र-11

5. ''कदा सूनुः पितरं जात इच्छात्'' अयं मन्त्रांशः कुत्र वर्तते -
(A) विश्वामित्र-नदी-सूक्ते
(B) यम-यमी-सूक्ते
(C) पुरूरवा-उर्वशी-सूक्ते
(D) सरमा-पणि-सूक्ते
स्रोत–ऋग्वेद (10.95.12), पुरूरवा-उर्वशीसंवाद सूक्त मन्त्र-12

6. नक्षत्रसम्पातादिना वेदकालं कः प्रतिपादयति –
(A) बालगङ्गाधरतिलकः (B) महर्षिदयानन्दः
(C) सायणः (D) मैक्समूलरः
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–40

7. 'गोपथब्राह्मणं' केन वेदेन सम्बद्धम् अस्ति –
(A) ऋग्वेदेन (B) सामवेदेन
(C) अथर्ववेदेन (D) यजुर्वेदेन
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–10

8. 'ईशोपनिषद्' केन वेदेन सम्बद्धा अस्ति –
(A) ऋग्वेदेन (B) अथर्ववेदेन
(C) कृष्णयजुर्वेदेन (D) शुक्लयजुर्वेदेन
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–09

9. 'माण्डूकी-शिक्षा' कस्य वेदस्य अस्ति –
(A) अथर्ववेदस्य (B) सामवेदस्य
(C) यजुर्वेदस्य (D) ऋग्वेदस्य
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास-गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज–254

10. वेदाङ्गेषु 'श्रोत्रत्वेन' कः उपमीयते –
(A) ज्योतिषम् (B) छन्दशास्त्रम्
(C) निरुक्तम् (D) शिक्षा
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–190

11. अधोङ्कितानां समीचीनम् उत्तरं चिनुत –
(अ) प्रश्नोपनिषद् 1. निरुक्तम्
(ब) पञ्चविंशब्राह्मणम् 2. अथर्ववेदः
(स) अथेदं भस्मान्तं शरीरम् 3. सामवेदः
(द) व्याप्तिमत्त्वात् शब्दस्य 4. ईशोपनिषद्

कूट :

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	4	1	2	3
(B)	1	3	4	2
(C)	2	3	4	1
(D)	3	4	1	2

स्रोत–वैदिकसाहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी अ, ब = पेज–10, स = ईशावास्योपनिषद् मन्त्र-17, द =निरुक्त - विश्वेश्वर - पेज–31

1. (B) **2.** (D) **3.** (A) **4.** (D) **5.** (C) **6.** (A) **7.** (C) **8.** (D) **9.** (A) **10.** (C) **11.** (C)

12. कल्पग्रन्थेषु कः गण्यते –

(A) कात्यायनश्रौतसूत्रम् (B) उणादिसूत्रम्
(C) जैमिनीयसूत्रम् (D) सांख्यसूत्रम्

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–09

13. 'विकृतिपाठाः' कियन्तः सन्ति –

(A) 9 (B) 10
(C) 6 (D) 8

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–08

14. अनिर्वचनीयवादिनः के –

(A) वैशेषिकाः (B) पूर्वमीमांसकाः
(C) बौद्धाः (D) अद्वैतवेदान्तिनः

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–38

15. सांख्ये केवलविकृतिरूपात्मकानि तत्त्वानि कति –

(A) षोडश (B) नव
(C) पञ्च (D) पञ्चविंशतिः

स्रोत–सांख्यकारिका (का. 3)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–39

16. अव्यक्तं कीदृशं तत्त्वं निरूपितम् –

(A) चेतनम् (B) उदासीनम्
(C) जडम् (D) अभावरूपम्

स्रोत–सांख्यकारिका (का. 11)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–129

17. प्रत्ययसर्गः कतिविधः –

(A) पञ्चाशद्विधः (B) नवविधः
(C) शतविधः (D) सप्तविधः

स्रोत–सांख्यकारिका (का. 46)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–269

18. 'शाण्डिल्यविद्याविषयः' कुत्र निर्दिष्टः अस्ति –

(A) माण्डूक्योपनिषदि
(B) छान्दोग्योपनिषदि
(C) बृहदारण्यके
(D) कठोपनिषदि

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–17

19. काम्यकर्माणि कीदृशानि –

(A) अकरणे पापसाधनानि
(B) निमित्तवशात् कृतानि
(C) पापविनाशसाधनानि
(D) फलोद्देश्येन विधीयमानानि

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–14

20. वेदान्तसारानुसारम् 'अज्ञानं' किं रूपं भवति –

(A) भावरूपम् (B) अभावरूपम्
(C) शून्यरूपम् (D) निष्क्रियरूपम्

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–37

21. 'निर्वातदीपवदचलं' भवति -

(A) सविकल्पकसमाधिः (B) सगुणब्रह्मस्वरूपम्
(C) समष्टिजीवस्वरूपम् (D) निर्विकल्पकसमाधिः

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–179

22. गन्धं प्रति पृथिवी भवति –

(A) समवायिकारणम्
(B) असमवायिकारणम्
(C) निमित्तकारणम्
(D) उपादानकारणम्

स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–35

23. सपक्षस्योदाहरणं विद्यते –

(A) महाह्रदः (B) पर्वतः
(C) महानसः (D) आकाशः

स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–94

24. प्रागभावस्य लक्षणं भवति –

(A) सादिरनन्तः
(B) त्रैकालिकसंसर्गाभावः
(C) अनादिः सान्तः
(D) तादात्म्यसम्बन्धावच्छिन्नप्रतियोगिताकाभावः

स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–122

12. (A) **13.** (D) **14.** (D) **15.** (A) **16.** (C) **17.** (A) **18.** (B) **19.** (D) **20.** (A) **21.** (D) **22.** (A) **23.** (C) **24.** (C)

25. अधोनिर्दिष्टानां समीचीनां तालिकां विचिनुत –

(अ)	आप्तवाक्यम्	1.	आप्तः
(ब)	अर्थाबाधः	2.	सन्निधिः
(स)	पदानाम् अविलम्बेनोच्चारणम्	3.	शब्दः
(द)	यथार्थवक्ता	4.	योग्यता

कूट :

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	4	3	2	1
(B)	3	4	1	2
(C)	3	4	2	1
(D)	1	2	3	4

स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–107, 108

26. 'ग्रामणी + सु > स्' इत्यत्र अपृक्तसंज्ञा कस्य भवति –

(A) 'सु' इत्यस्य (B) 'स्' इत्यस्य

(C) 'ग्रामणी' इत्यस्य (D) 'ग्रामणी + सु' इत्यस्य

स्रोत–अष्टाध्यायी (1.2.41) - ईश्वरचन्द्र, पेज–68

27. कस्य शब्दस्य 'नदीसंज्ञा' नास्ति –

(A) नदी (B) साध्वी

(C) स्त्री (D) ग्रामणीः

स्रोत–अष्टाध्यायी (1.4.3) - ईश्वरचन्द्र, पेज–109

28. कारकप्रयोगदृष्ट्या वाक्यमिदं शुद्धम् अस्ति –

(A) भक्तः रोचते भक्तिः (B) देवदत्तं श्लाघते

(C) वैकुण्ठम् अध्यास्ते हरिः (D) वैकुण्ठे अध्यास्ते हरिः

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–29

29. 'पुष्पाणि स्पृहयति' - अत्र 'पुष्पाणि' इति पदम् अस्ति –

(A) ईप्सिततमम् (B) ईप्सितम्

(C) अनीप्सितम् (D) अनीप्सिततमम्

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–49

30. ''परिक्रयणे सम्प्रदानमन्यतरस्याम्'' - इति सूत्रेण 'अन्यतरस्यां' का संज्ञा भवति –

(A) अपादानसंज्ञा (B) करणसंज्ञा

(C) कर्मसंज्ञा (D) अधिकरणसंज्ञा

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–52

31. 'उपपदविभक्तेः कारकविभक्तिः बलीयसी' - इत्यस्य उदाहरणम् अस्ति –

(A) रामं नमामि

(B) नमस्करोति देवान्

(C) गुरुणा सह शिष्यः गच्छति

(D) यागाय याति

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–55

32. 'सुमद्रम्' इत्यत्र 'सु' अव्ययस्य अर्थः अस्ति –

(A) समीपम् (B) शोभनम्

(C) समृद्धिः (D) युगपत्

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज–28

33. तत्पुरुषे समासे कस्य पदार्थस्य प्रधानता भवति –

(A) पूर्वपदार्थस्य (B) उत्तरपदार्थस्य

(C) अन्यपदार्थस्य (D) उभयपदार्थस्य

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज–02

34. 'राजदन्ताः' अस्य लौकिकं विग्रहवाक्यं भवति –

(A) राज्ञां दन्ताः (B) दन्तानां राजानः

(C) दन्तानां राजानम् (D) दन्त आम् राजन् जस्

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज–234

35. 'कर्मधारयसंज्ञा' कस्य भवति –

(A) अव्ययीभावस्य

(B) समानाधिकरणस्य तत्पुरुषस्य

(C) असमानाधिकरणस्य तत्पुरुषस्य

(D) समानाधिकरणस्य बहुव्रीहेः

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज–108

36. भाषाविज्ञानदृशा अर्धस्वरो भवति -

(A) अ (B) य्

(C) इ (D) अः

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–149

37. आर्यभाषापरिवारस्य भाषा न मन्यते –

(A) प्राकृतम् (B) पालि

(C) संस्कृतम् (D) तमिल

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–431

25.(C) **26.**(B) **27.**(D) **28.**(C) **29.**(A) **30.**(B) **31.**(B) **32.**(C) **33.**(B) **34.**(B) **35.**(B) **36.**(B) **37.**(D)

38. अधस्तनेषु एकाङ्किरूपकम् अस्ति –

(A) प्रतिज्ञायौगन्धरायणम् (B) चारुदत्तम्
(C) कर्णभारम् (D) अविमारकम्

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेवद्विवेदी, पेज–276

39. 'श्रुतेरिवार्थं स्मृतिरन्वगच्छत्' इति सूक्तिः कुत्र अस्ति –

(A) रामायणे (B) महाभारते
(C) रघुवंशे (D) वेणीसंहारे

स्रोत–रघुवंशम् (2/2) - कृष्णमणि त्रिपाठी, पेज–43

40. 'शाल्मलीवृक्षवर्णनं' कस्मिन् काव्ये दृश्यते ?

(A) नलचम्पौ (B) कादम्बर्याम्
(C) हर्षचरिते (D) वासवदत्तायाम्

स्रोत–कादम्बरी कथामुख - तारिणीश झा, पेज–195

41. संस्कृतवाङ्मये करुणरसस्य वर्णने कः विशिष्यते –

(A) कालिदासः (B) बाणभट्टः
(C) अश्वघोषः (D) भवभूतिः

स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू. पेज–97-98

42. बृहत्त्रय्याम् अस्य ग्रन्थस्य गणना न भवति –

(A) किरातार्जुनीयस्य (B) शिशुपालवधस्य
(C) कुमारसम्भवस्य (D) नैषधीयचरितस्य

स्रोत–शिशुपालवधम् - तारिणीश झा, भू. पेज–12

43. 'अकारणाविष्कृतवैरदारुणादसज्जनात् कस्य भयं न जायते' - इति केन कविनोक्तम् –

(A) कालिदासेन (B) भारविणा
(C) श्रीहर्षेण (D) बाणभट्टेन

स्रोत–कादम्बरी कथामुख (श्लोक-5) – तारिणीश झा, पेज–7

44. ''अधारि पद्मेषु तदङ्घ्रिणा घृणा क्व तच्छयच्छायलवोऽपि पल्लवे ।'' अस्मिन् पद्यांशे कस्य सौन्दर्यं वर्णितम् –

(A) दमयन्त्याः (B) नलस्य
(C) रामस्य (D) सीतायाः

स्रोत–नैषधीयचरितम् (1/20) – बद्रीनाथ मालवीय, पेज–47-48

45. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत –

(अ) हर्षः 1. मुद्राराक्षसम्
(ब) भवभूतिः 2. स्वप्नवासवदत्तम्
(स) विशाखदत्तः 3. उत्तररामचरितम्
(द) भासः 4. रत्नावली

कूट :

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	3	2	4	1
(B)	4	3	1	2
(C)	2	1	3	4
(D)	1	4	2	3

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज– अ=365, ब = 395, स = 354, द = 275

46. मम्मटस्य व्यङ्ग्यमूला-व्यञ्जनायाः उदाहरणं वर्तते –

(A) निःशेषच्युतचन्दनम्
(B) पश्य निश्चलनिष्पन्दा
(C) ग्रामतरुणं तरुण्या
(D) मातः गृहोपकरणं नास्ति

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–41

47. 'रसः' इति कः पदार्थः –

(A) आस्वाद्यमानः (B) श्रवणपेयः
(C) भोज्यमानः (D) दृश्यमानः

स्रोत–साहित्यदर्पण (3/3) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–49

48. नाट्यशास्त्रानुसारं कति स्थायिभावाः सन्ति –

(A) नव (B) अष्टौ
(C) दश (D) सप्त

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–99

49. संग्रहकारिका-निरुक्तानां वर्णनं नाट्यशास्त्रस्य कस्मिन् अध्याये वर्तते ?

(A) द्वितीये (B) तृतीये
(C) चतुर्थे (D) षष्ठे

स्रोत–नाट्यशास्त्र (6.3) - ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज-149

50. 'प्रकृतं प्रतिषिध्यान्यस्थापनं' चेत् तदा कोऽलङ्कारः –

(A) उपमा (B) भ्रान्तिमान्
(C) श्लेषः (D) अपह्नुतिः

स्रोत–साहित्यदर्पण (10/39) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–313

38. (C) **39.** (C) **40.** (B) **41.** (D) **42.** (C) **43.** (D) **44.** (B) **45.** (B) **46.** (B) **47.** (A) **48.** (B) **49.** (D) **50.** (D)

42	दिसम्बर 2013	UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् III

नोट : इस प्रश्नपत्र में **पचहत्तर (75)** बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के **दो (2)** अङ्क हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. सृष्ट्युत्पत्तिविषयकं विवेचनं वर्तते –

(A) अग्निसूक्ते (B) इन्द्रसूक्ते
(C) नासदीयसूक्ते (D) पृथिवीसूक्ते

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–53

2. ''सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः ....'' अस्य मन्त्रस्य ऋषिः अस्ति –

(A) नारायणः (B) कण्वः
(C) मेधातिथिः (D) अङ्गिराः

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्त शास्त्री, पेज–403

3. हिरण्यगर्भसूक्तस्य किं छन्दः ?

(A) आर्षी निचृद् (B) आसुरी गायत्री
(C) त्रिष्टुप् (D) पंक्तिः

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्त शास्त्री, पेज–405।

4. अग्निमीळे इत्यत्र ''अग्निम्'' पदस्य स्वरो भवति –

(A) अग्निम् (B) अग्निम्
(C) अग्निम् (D) अग्निम्

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्त शास्त्री, पेज–55

5. ''संविदाना दिवा कवे श्रियां मा धेहि भूत्याम्'' मन्त्रांशोऽयं वर्तते –

(A) वाक्सूक्ते (B) हिरण्यगर्भसूक्ते
(C) पृथिवीसूक्ते (D) पुरुषसूक्ते

स्रोत–अथर्ववेद (12.1.63)

6. दर्शपूर्णमासयज्ञे 'दर्श' - शब्दस्य अर्थोऽस्ति –

(A) पयस्या (B) दर्विः
(C) शूर्पम् (D) अमावस्या

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–314

7. वेदमन्त्राणां त्रिविधा प्राचीनतमा व्याख्या भवति –

(A) याज्ञिक - वैज्ञानिक - आधिदैविकरूपेण
(B) आध्यात्मिक - आधिभौतिक - आधिदैविकरूपेण
(C) याज्ञिक - ऐतिहासिक - आधिदैविकरूपेण
(D) आध्यात्मिक - याज्ञिक - भाषावैज्ञानिकरूपेण

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–17

8. अधोऽङ्कितानां समीचीनम् उत्तरं चिनुत –

(अ)	ये के च भ्रातरः स्थ नास्मै ज्येष्ठाय कल्पध्वमिति	1.	शतपथ-ब्राह्मणम्
(ब)	श्रेयसो वै पापीयान् कृतानुकरः वर्त्मा भवति	2.	ऋग्वेदः
(स)	यो वा दिवं सत्यधर्मा जजान	3.	अथर्ववेदः
(द)	ये संग्रामाः समितयस्तेषु चारु वदेम	4.	ऐतरेय–ब्राह्मणम्

कूट :

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	4	2	1	3
(B)	3	4	2	1
(C)	3	2	1	4
(D)	4	1	2	3

9. 'योऽसावसौ पुरुषः सोऽहमस्मि' - इत्यस्य कुत्रोपदेशः ?

(A) ईशोपनिषदि (B) तैत्तिरीयोपनिषदि
(C) केनोपनिषदि (D) श्रीमद्भागवते

स्रोत–ईशोपनिषद् (मन्त्र-16)

10. 'अतिमुच्य धीराः प्रेत्यास्माल्लोकादमृता भवन्ति' - कुत्र इयम् उक्तिः?

(A) ईशोपनिषदि (B) केनोपनिषदि
(C) भगवद्गीतायाम् (D) कठोपनिषदि

स्रोत–केनोपनिषद् (प्रथम खण्ड श्लोक-2)

1. (C) **2.** (A) **3.** (C) **4.** (B) **5.** (C) **6.** (D) **7.** (B) **8.** (D) **9.** (A) **10.** (B)

11. 'यतो वाचो निवर्तन्ते अप्राप्य मनसा सह' - कुत्र इयम् उक्तिः ?

(A) कठोपनिषदि (B) केनोपनिषदि
(C) तैत्तिरीयोपनिषदि (D) बृहदारण्यकोपनिषदि

स्रोत–तैत्तिरीयोपनिषद् (2.4.1)

12. 'अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणः' - इयम् उक्तिः कुत्रास्ति ?

(A) बृहदारण्यकोपनिषदि (B) ईशोपनिषदि
(C) तैत्तिरीयोपनिषदि (D) कठोपनिषदि

स्रोत–कठोपनिषद् (1.2.18)

13. 'येनाहं नामृता स्याम किमहं तेन कुर्याम्' - कया इदम् उच्यते ?

(A) मैत्रेय्या (B) कात्यायन्या
(C) गायत्र्या (D) उमया

स्रोत–बृहदारण्यकोपनिषद् (2.4.3)-शांकरभाष्य-गीताप्रेस, पेज–544

14. 'आत्मैवेदमग्र आसीत् पुरुषविधः' - इति कुत्र उक्तम् ?

(A) कठोपनिषदि (B) तैत्तिरीयोपनिषदि
(C) बृहदारण्यकोपनिषदि (D) केनोपनिषदि

स्रोत–बृहदारण्यकोपनिषद् (शांकरभाष्य) गीताप्रेस, पेज–162

15. अधस्तनानां समीचीनम् उत्तरं चिनुत –

(अ) काण्वसंहिता — 1. बृहदारण्यकोपनिषद्
(ब) शतपथब्राह्मणम् — 2. मैत्रेयी
(स) वाजश्रवाः — 3. ईशोपनिषद्
(द) याज्ञवल्क्यः — 4. नचिकेता

कूट :

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	1	4	2	3
(B)	3	4	2	1
(C)	3	1	4	2
(D)	2	1	3	4

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज – अ = ईशावास्योपनिषद् - आद्याप्रसाद मिश्र, भू. पेज–18, ब = 130, स = 175, द = 183

16. 'उष्णिक्' छन्दसि कियन्तो वर्णाः भवन्ति ?

(A) 27 (B) 28
(C) 32 (D) 29

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–49

17. 'चातुर्मास्ययागे' वर्तते –

(A) शुनासीरीयम् (B) अग्निहोत्रम्
(C) आग्रयणम् (D) सौत्रामणी

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–314

18. 'याज्ञवल्क्यशिक्षा' केन सम्बद्धा वर्तते –

(A) ऋग्वेदेन (B) सामवेदेन
(C) अथर्ववेदेन (D) शुक्लयजुर्वेदेन

स्रोत–वैदिक साहित्य संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–131

19. ऋग्वेदीयप्रातिशाख्यानुसारेण रक्तसंज्ञः कः ?

(A) स्पर्शः (B) अनुनासिकः
(C) संयोगः (D) विसर्गः

स्रोत–ऋग्वेदप्रातिशाख्यम् - वीरेन्द्र कुमार वर्मा, पेज–69

20. 'अन्तरिक्षस्थाना' देवता अस्ति –

(A) अश्विनौ (B) अग्निः
(C) इन्द्रः (D) सूर्यः

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–296

21. समुचितं सम्बन्धं प्रस्थापयत –

(अ) सत्त्वप्रधानानि — 1. निघण्टवः
(ब) निगमा इमे भवन्ति — 2. तद्यथा-पाचकः पंक्तिः
(स) संविज्ञातानि तानि — 3. नामानि
(द) तद्यत्र उभे — 4. भावप्रधाने भवतः

कूट :

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	1	2	4	3
(B)	2	1	3	4
(C)	3	1	2	4
(D)	4	3	2	1

स्रोत–निरुक्त - छज्जूराम शास्त्री, पेज–3, 2, 4

22. 'आचार्यश्चिद् इदं ब्रूयात्' - इत्यत्र चित् निपातस्य अर्थः कः ?

(A) पादपूरणः (B) उपमा
(C) पूजा (D) धनम्

स्रोत–निरुक्त - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–44

11.(C)	**12.**(D)	**13.**(A)	**14.**(C)	**15.**(C)	**16.**(B)	**17.**(A)	**18.**(D)	**19.**(B)	**20.**(C)	**21.**(C)
22.(C)										

23. 'हस्तः' इत्यत्र कः धातुः स्वीकृतः यास्केन ?
(A) हन् (B) हा
(C) हस् (D) अस्
स्रोत–निरुक्तम् (1/3) छज्जूराम शास्त्री/देवशर्मा शास्त्री, पेज–22-23

24. स्थूला चासौ पृषती च स्थूलपृषती - इति विग्रहे कीदृशी स्वरव्यवस्था प्रवर्तते ?
(A) पूर्वपदप्रकृतिस्वरत्वम्
(B) उत्तरपदप्रकृतिस्वरत्वम्
(C) समासान्तानुदात्तत्वम्
(D) समासान्तोदात्तत्वम्
स्रोत–व्याकरणमहाभाष्य पश्पशाह्निक - मधुसूदन मिश्र, पेज–10

25. 'अथ गौरित्यत्र' कः शब्दः ?
(A) सास्ना-लाङ्गूल-ककुद-खुर-विषाण्यर्थरूपं स शब्दः
(B) इङ्गितं चेष्टितं निमिषितं स शब्दः
(C) भिन्नेष्वभिन्नं छिन्नेष्वछिन्नं सामान्यभूतं स शब्दः
(D) येनोच्चारितेन सास्ना-लाङ्गूल-ककुद-खुर-विषाणिनां सम्प्रत्ययो भवति स शब्दः
स्रोत–व्याकरणमहाभाष्य पश्पशाह्निक - मधुसूदन मिश्र, पेज–7

26. 'भू + लिट् > ल् > तिप् > णल् > अ = भू + अ' - इति स्थिते किं कार्यं भवति ?
(A) इको यणचि - इति यणादेशः
(B) लिटि धातोरनभ्यासस्य - इति द्वित्वम्
(C) भुवो वुग्लुङ्लिटोः - इति वुगागमः
(D) सार्वधातुकार्धधातुकयोः - इति गुणः
स्रोत–अष्टाध्यायी (6.4.88) – ईश्वरचन्द्र, पेज–805

27. 'स्नात्यनेन स्नानीयं चूर्णम् ।' - इत्यत्र 'स्ना' धातोः विधीयमानः अनीयर्-प्रत्ययः कस्मिन् अर्थे वर्तते ?
(A) कर्तरि (B) कर्मणि
(C) भावे (D) करणे
स्रोत–अष्टाध्यायी (3.3.113) - ईश्वरचन्द्र, पेज–377

28. 'चतुरश्छयतावाद्यक्षरलोपश्च' इत्यस्य किमुदाहरणम् ?
(A) चतुर्थः (B) चतुरः
(C) तुरीयः (D) तृतीयः
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-5), पेज–283

29. पच् + शप् > अ + शतृ > अत् = पचत् - इत्यत्र स्त्रियां केन सूत्रेण कः प्रत्ययः भवति ?
(A) उगितश्च - इति ङीप्
(B) उगितश्च - इति ङीष्
(C) अजाद्यतष्टाप् - इति टाप्
(D) ऋन्नेभ्यो ङीप् - इति ङीप्
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–1155

30. पाणिनीयशिक्षानुसारं वर्णानाम् उच्चारणस्थानानि कति सन्ति ?
(A) एकादश (B) दश
(C) अष्टौ (D) द्वादश
स्रोत–पाणिनीयशिक्षा (श्लोक-13)-शिवराजआचार्यकौण्डिन्यायन, पेज–88

31. 'शतम्' वर्गस्य कति शाखाः सन्ति ?
(A) तिस्रः (B) चतस्रः
(C) पञ्च (D) सप्त
स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–385

32. 'सुदर्शनतडाकस्य' कः निर्माता ?
(A) चक्रपालितः (B) सुविशाखः
(C) तुषास्कः (D) पुष्यगुप्तः
स्रोत–भारतीय पुरालिपि अभिलेख एवं मुद्राएं-शोभा सत्यदेव, पेज-104

33. सांख्यानुसारं 'कैवल्यं' भवति –
(A) ज्ञानैकस्वरूपत्वम्
(B) उपकारापकारशक्त्याहित्यम्
(C) इच्छाद्वेषप्रयत्नादिशून्यत्वम्
(D) आत्यन्तिकदुःखशून्यत्वम्
स्रोत–सांख्यकारिका (कारिका-68)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–336

34. आधिभौतिकदुःखं सांख्यमतेन उदाह्रियते –
(A) ज्वरातिसारादुत्पन्नं दुःखम्
(B) स्वजनवियोगाप्रियजनसंयोगजन्यं दुःखम्
(C) सर्पादिसमुद्भवं दुःखम्
(D) भूतप्रेतादिवशाज्जायमानं दुःखम्
स्रोत–सांख्यकारिका - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–11

23.(A) **24.**(D) **25.**(D) **26.**(C) **27.**(D) **28.**(C) **29.**(A) **30.**(C) **31.**(B) **32.**(D) **33.**(D) **34.**(C)

35. भौतिकः सर्गः कतिविधो भवति ?

(A) चतुर्दशविधः (B) पञ्चविधः
(C) अष्टविधः (D) एकविधः

स्रोत–सांख्यकारिका (का. 53)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–299

36. 'स्थूलप्रपञ्चोत्पत्तिः' केभ्यः सम्भवति ?

(A) अपञ्चीकृतपञ्चभूतेभ्यः (B) ईश्वरादिभ्यः
(C) मानवशरीरेभ्यः (D) पञ्चीकृतपञ्चभूतेभ्यः

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–78

37. वेदान्तसारे प्रयोजनं निरूपितम् –

(A) दुःखनिवृत्तिः
(B) अभ्युदयलाभः
(C) अज्ञाननिवृत्तिः स्वस्वरूपानन्दावाप्तिश्च
(D) पाण्डित्यसम्पादनम्

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–30

38. 'शाब्दीभावना' निरूपिता भवति –

(A) आख्याततत्वांशेन (B) लिङ्गत्वांशेन
(C) ज्ञापकांशेन (D) सामान्यांशेन

स्रोत–अर्थसंग्रह - सत्यप्रकाश शर्मा, पेज–21

39. अर्थसंग्रहमनुसृत्य यागो नाम -

(A) देवतोद्देशेन द्रव्यत्यागः
(B) देवतोद्देशेन द्रव्यस्य प्रक्षेपः
(C) स्वस्वत्वनिवृत्तिपूर्वकं परस्वत्वापादनम्
(D) मन्त्रपठनम्

स्रोत–अर्थसंग्रह - सत्यप्रकाश शर्मा, पेज–53

40. परिसंख्याविधेः दोषाः के ?

(A) श्रुतहानिः, अश्रुतप्रकल्पनम्, प्राप्तबाधः
(B) श्रुतहानिः, प्राप्तबाधः, वाक्यभेदः
(C) अप्रामाण्यस्वीकारः, प्रामाण्यपरित्यागः
(D) वचनबलाद् विकल्पः, एकार्थत्वाद् विकल्पः

स्रोत–अर्थसंग्रह - सत्यप्रकाश शर्मा, पेज–151

41. कस्य कथा रामायणाश्रिता नास्ति –

(A) महावीरचरितस्य (B) अभिषेकनाटकस्य
(C) मृच्छकटिकस्य (D) उत्तररामचरितस्य

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–116

42. 'स्वधर्मे निधनं श्रेयः' - इत्युक्तिः गीतायाः कतमेऽध्याये वर्तते ?

(A) द्वितीये (B) तृतीये
(C) पञ्चमे (D) चतुर्थे

स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (3/35)

43. रामायणे 'शबरीवृत्तान्तः' कस्मिन् काण्डे अस्ति ?

(A) अयोध्याकाण्डे (B) अरण्यकाण्डे
(C) किष्किन्धाकाण्डे (D) सुन्दरकाण्डे

स्रोत–वाल्मीकिरामायण (मूलमात्रम्) - गीताप्रेस, पेज–305

44. महाभारते 'नलोपाख्यानं' कस्मिन् पर्वणि अस्ति ?

(A) आदिपर्वणि (B) वनपर्वणि
(C) कर्णपर्वणि (D) अनुशासनपर्वणि

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का इतिहास-उमाशंकरशर्मा 'ऋषि', पेज–149

45. तीर्थानां सविस्तरं वर्णनम् उपलभ्यते –

(A) मत्स्यपुराणे (B) वायुपुराणे
(C) स्कन्दपुराणे (D) शिवपुराणे

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेवद्विवेदी, पेज–99

46. 'रासपञ्चाध्यायी' कुत्र वर्तते –

(A) विष्णुपुराणे (B) ब्रह्मपुराणे
(C) श्रीमद्भागवतपुराणे (D) ब्रह्मवैवर्तपुराणे

स्रोत–पुराण विमर्श - बलदेव उपाध्याय, पेज–149

47. महाभारते 'शिशुपालवधवृत्तान्तः' कस्मिन् पर्वणि वर्तते ?

(A) सभापर्वणि (B) भीष्मपर्वणि
(C) वनपर्वणि (D) विराटपर्वणि

स्रोत–शिशुपालवधम् - तारिणीश झा, भू. पेज–15

48. कौटिल्येन यो गूढपुरुषेषु न निर्दिष्टः –

(A) कार्मिकः (B) कापटिकः
(C) तापसः (D) रसदः

स्रोत–कौटिलीय अर्थशास्त्रम् - वाचस्पति गैरोला, पेज–29

49. शुल्कमादाय यो विवाहः क्रियते सः कः –

(A) प्राजापत्यः (B) आसुरः
(C) दैवः (D) ब्राह्मः

स्रोत–कौटिलीय अर्थशास्त्रम् - वाचस्पति गैरोला, पेज–261

35. (A) **36.**(D) **37.**(C) **38.** (B) **39.**(A) **40.** (A) **41.** (C) **42.** (B) **43.** (B) **44.**(B) **45.** (C) **46.** (C) **47.** (A) **48.** (A) **49.**(B)

50. मनुस्मृत्यनुसारं पितॄणां रात्रिर्भवति –
(A) कृष्णपक्षः (B) शुक्लपक्षः
(C) शरदृतुः (D) संवत्सरः
स्रोत–मनुस्मृति (1/66) - गिरिधर गोपाल शर्मा, पेज–35

51. मनुना चूडाकर्मणः कालः उक्तः –
(A) पञ्चमे वर्षे (B) चतुर्थे वर्षे
(C) द्वितीये वर्षे (D) प्रथमे वर्षे
स्रोत–मनुस्मृति (2/35) - गिरिधर गोपाल शर्मा, पेज–74

52. मनुना क्रोधजानि व्यसनानि कियन्ति अभिहितानि ?
(A) पञ्च (B) षट्
(C) सप्त (D) अष्टौ
स्रोत–मनुस्मृति (7/45) - गिरिधर गोपाल शर्मा, पेज–166

53. स्मृत्यपेतकारिणः सभ्याः कतिगुणेनः दमेन दण्डयाः ?
(A) पञ्चगुणेन (B) चतुर्गुणेन
(C) त्रिगुणेन (D) द्विगुणेन
स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति (2/4) - गंगासागर राय, पेज–163

54. मिथ्याभियोगी कतिगुणं धनं राज्ञे दद्यात् ?
(A) द्विगुणम् (B) त्रिगुणम्
(C) चतुर्गुणम् (D) पञ्चगुणम्
स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति (2/11) - गंगासागर राय, पेज–173

55. ''प्रीतः प्रीतिप्रमुखवचनं स्वागतं व्याजहार'' कुत्र इयम् उक्तिः?
(A) मेघदूते (B) कुमारसम्भवे
(C) ऋतुसंहारे (D) रघुवंशे
स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ श्लोक-4) - तारिणीश झा, पेज–9

56. 'कथाप्रसङ्गेषु मिथः सखीमुखात्तृणेऽपि तन्व्या नलनामानि श्रुते' अत्र 'नल' इत्यस्य पदस्य कोऽर्थः ?
(A) नलः (B) कामः
(C) तृणम् (D) स्तुतिपाठकः
स्रोत–नैषधीयचरितम् (1/35) - बद्रीनाथ मालवीय, पेज–72

57. 'सतीव योषित्प्रकृतिः सुनिश्चला पुमांसमभ्येति भवान्तरेष्वपि' .... इति पद्यांशानुसारं भवान्तरेषु पुमांसं किम् अभ्येति ?
(A) जातिः (B) सती
(C) योषित् (D) स्वभावः
स्रोत–शिशुपालवधम् (1/72) – तारिणीश झा, पेज–149

58. एकदा प्रत्युषसि हर्षः स्वप्ने अग्निना दह्यमानं कम् अपश्यत् ?
(A) गजम् (B) अश्वम्
(C) केसरिणम् (D) सर्पम्
स्रोत–हर्षचरितम् (पञ्चम उच्छ्वास) - शिवनाथ पाण्डेय, पेज–6

59. 'शोकस्थायितया भिन्नो विप्रलम्भादयं रसः' कः सः रसः ?
(A) शृङ्गारः (B) वीरः
(C) हास्यः (D) करुणः
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–129

60. रङ्गमञ्चस्य देवपूजनं केन तुल्यं भवति ?
(A) यज्ञेन तुल्यम् (B) तपसा तुल्यम्
(C) दानेन तुल्यम् (D) धर्मेण तुल्यम्
स्रोत–नाट्यशास्त्र (1/124) - ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज–116

61. 'माधुर्यौजःप्रसादाख्यास्त्रयस्ते न पुनर्दश' - के ते ?
(A) काव्यदोषाः (B) काव्यभेदाः
(C) काव्यगुणाः (D) काव्यलक्षणम्
स्रोत–काव्यप्रकाश (सूत्र-88) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–388

62. 'आर्तत्राणाय वः शस्त्रं न प्रहर्तुमनागसि' - अभिज्ञान-शाकुन्तले कस्य वचनमिदम् ?
(A) वैखानसस्य (B) दुष्यन्तस्य
(C) कण्वस्य (D) अनसूयायाः
स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/11) – कपिलदेव द्विवेदी, पेज–26

63. 'गुरूपदिष्टेन रिपौ सुतेऽपि वा, निहन्ति दण्डेन स धर्मविप्लवम्' अत्र राजनीतौ कोऽयमंशः परामर्शितः?
(A) दण्डनीतिः (B) युद्धनीतिः
(C) समाजनीतिः (D) धार्मिकनीतिः
स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/13) - राजेन्द्र मिश्र, पेज–62

64. 'इक्ष्वाकूणां दुरापेऽर्थे त्वदधीना हि सिद्धयः' - इति कः कं प्रति आह ?
(A) वसिष्ठः दिलीपं प्रति (B) दिलीपः वसिष्ठं प्रति
(C) वसिष्ठः सुदक्षिणां प्रति (D) सुदक्षिणा दिलीपं प्रति
स्रोत–रघुवंशम् (1/72) – कृष्णमणि त्रिपाठी, पेज–33

50. (B) **51.** (D) **52.** (D) **53.** (D) **54.** (A) **55.** (A) **56.** (C) **57.** (D) **58.** (C) **59.** (D) **60.** (A) **61.** (C) **62.** (A) **63.** (A) **64.** (B)

65. यस्यां लक्षणायां मुख्यार्थस्यापि ग्रहणं भवति सा लक्षणा भवति ?
(A) उपादान-लक्षणा
(B) लक्षण-लक्षणा
(C) जहत्स्वार्था
(D) रूढिमूला लक्षण-लक्षणा
स्रोत–काव्यप्रकाश (2/10) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–53

66. समवकारे पात्राणि के भवन्ति ?
(A) मानवाः (B) दैत्याः
(C) देवाः (D) अप्सरसः
स्रोत–दशरूपक (3/62-63) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज–237

67. 'वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि...' पद्यांशोऽयं कस्मिन् नाटके आयाति ?
(A) मालतीमाधवे (B) महावीरचरिते
(C) उत्तररामचरिते (D) अभिज्ञानशाकुन्तले
स्रोत–उत्तररामचरितम् (2/7) – कपिलदेव द्विवेदी, पेज–117

68. ''वृत्तवर्तिष्यमाणानां कथांशानां निदर्शकः संक्षिप्तार्थस्तु..... आदावङ्कस्य दर्शितः॥'' ..... कः ?
(A) प्रवेशकः (B) विष्कम्भकः
(C) सूत्रधारः (D) अङ्कावतारः
स्रोत–दशरूपक (1/59) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज–99

69. ''गुरुजनपरतन्त्रतया दूरतरं देशमुद्यतो गन्तुम् । अलिकुलकोकिलललिते नैष्यति सखि सुरभिसमयेऽसौ॥'' अत्र को नामालङ्कारः ?
(A) उपमा (B) रूपकः
(C) श्लेषवक्रोक्तिः (D) काकुवक्रोक्तिः
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–403

70. इन्द्रियार्थसन्निकर्षः कतिविधः ?
(A) पञ्चविधः (B) षड्विधः
(C) नवविधः (D) त्रिविधः
स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–76

71. गुणगुणिनोः कः सम्बन्धः ?
(A) समवायः (B) आधाराधेयः
(C) व्याप्यत्वसम्बन्धः (D) स्वस्वामिसम्बन्धः
स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री पेज–29

72. 'रजते इदं रजतम्' इति ज्ञानं वर्तते –
(A) तर्कः (B) भ्रमः
(C) सन्देहः (D) प्रमा
स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–65

73. तन्तूनां पटं प्रति किं कारणं भवति ?
(A) समवायिकारणम्
(B) निमित्तकारणम्
(C) असमवायिकारणम्
(D) मिथ्याकारणम्
स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज–24

74. अनुमानं नाम -
(A) व्याप्तिः (B) पक्षः
(C) हेतुः (D) लिङ्गपरामर्शः
स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज–78

75. लक्षितस्यैतत् लक्षणमुपपद्यते न वेति विचार उच्यते -
(A) परीक्षा (B) लक्षणम्
(C) उद्देश्यम् (D) विमर्शः
स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज–7

65. (A) **66.** (C) **67.** (C) **68.** (B) **69.** (D) **70.** (B) **71.** (A) **72.** (D) **73.** (A) **74.** (D) **75.** (A)

43	जून 2014	UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् II

नोट : इस प्रश्नपत्र में **पचास (50)** बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के **दो (2)** अङ्क हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. अन्तरिक्षस्थानीया देवता का ?

(A) सूर्यः (B) अग्निः
(C) समुद्रः (D) इन्द्रः

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–296

2. कस्य वेदस्य आरण्यकं नोपलभ्यते ?

(A) ऋग्वेदस्य (B) यजुर्वेदस्य
(C) सामवेदस्य (D) अथर्ववेदस्य

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–161

3. काण्वसंहितासम्बद्धब्राह्मणम् अस्ति –

(A) कठब्राह्मणम् (B) कपिष्ठलब्राह्मणम्
(C) शतपथब्राह्मणम् (D) ताण्ड्यब्राह्मणम्

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–131

4. 'तैत्तिरीयशाखा' केन वेदेन सम्बद्धा ?

(A) ऋग्वेदेन (B) यजुर्वेदेन
(C) सामवेदेन (D) अथर्ववेदेन

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–09

5. 'जगतीछन्दसि' प्रतिपादं कति अक्षराणि भवन्ति ?

(A) दश (B) द्वादश
(C) षोडश (D) अष्ट

स्रोत–वैदिकसाहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–49

6. भावप्रधानं भवति –

(A) व्याख्यानम् (B) आख्यातम्
(C) कारकम् (D) क्रियापदम्

स्रोत–निरुक्तम् - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–18

7. निरुक्ते एकस्य पदस्य बह्वर्थमादाय किं काण्डं प्रवर्तते ?

(A) नैघण्टुकम् (B) दैवतम्
(C) नैगमम् (D) उत्तरषट्कम्

स्रोत–निरुक्तम् - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–2 तथा 367

8. 'हस्तेन त्रैस्वर्यं' प्रदर्श्यते –

(A) पैप्पलादसंहितायाम् (B) अथर्ववेदे
(C) कृष्णयजुर्वेदे (D) माध्यन्दिनसंहितायाम्

स्रोत–संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास, भाग-1, पेज–270

9. ''किं भ्रातासद्यनाथमिति'' कस्मिन् सूक्ते पठ्यते ?

(A) नासदीयसूक्ते
(B) विश्वामित्रनदीसंवादसूक्ते
(C) यम-यमीसंवादसूक्ते
(D) पृथिवीसूक्ते

स्रोत–ऋग्वेद (10.10.11) - यम यमीसंवाद, पेज–226

10. अधोङ्कितानां समीचीनम् उत्तरं चिनुत –

(अ)	नचिकेतोपाख्यानम्	1.	पुत्रोऽहं पृथिव्याः
(ब)	सत्यं वद धर्मं चर	2.	कठोपनिषद्
(स)	माता भूमिः	3.	तैत्तिरीयोपनिषद्
(द)	शुल्बसूत्रम्	4.	कल्पान्तर्गतम्

कूट :

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	1	3	4	2
(B)	4	2	3	1
(C)	3	1	4	2
(D)	2	3	1	4

स्रोत–(अ) कठोपनिषद् (1.1), (ब) तैत्तिरीय उपनिषद् (1.11), वैदिकसाहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी (स) = 109, (द) = 214

11. 'निघण्टुशब्देन' उच्यते –

(A) वैदिकशब्दकोशः (B) निरुक्तम्
(C) निधानम् (D) कारकम्

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–204

12. 'आपस्तम्बश्रौतसूत्रं' केन वेदेन सह सम्बद्धम् ?

(A) शुक्लयजुर्वेदेन (B) कृष्णयजुर्वेदेन
(C) सामवेदेन (D) अथर्ववेदेन

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–09

1. (D) **2.** (D) **3.** (C) **4.** (B) **5.** (B) **6.** (B) **7.** (C) **8.** (D) **9.** (C) **10.** (D) **11.** (A) **12.** (B)

13. ''नि षसाद धृतव्रत'' इति कस्मिन् सूक्ते पठ्यते ?
(A) वाक्सूक्ते (B) वरुणसूक्ते
(C) सूर्यसूक्ते (D) नदीसूक्ते
स्रोत–ऋक्सूक्त संग्रह - हरिदत्त शास्त्री, पेज–74

14. 'तर्कसङ्ग्रहानुसारं' कति पदार्थाः सन्ति –
(A) षोडश (B) सप्त
(C) षट् (D) दश
स्रोत–तर्कसंग्रह - अनितासेन गुप्ता, पेज–27

15. 'तर्कसङ्ग्रहानुसारं' विशेषाः सन्ति –
(A) नित्यद्रव्यवृत्तयः (B) अनित्यद्रव्यवृत्तयः
(C) द्रव्यवृत्तयः (D) गुणवृत्तयः
स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–32

16. 'तर्कसङ्ग्रहानुसारं' कति गुणाः सन्ति –
(A) सप्तदश (B) अष्टचत्वारिंशत्
(C) चतुर्विंशतिः (D) दश
स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–29

17. 'उत्क्षेपणं' कस्य प्रकारः –
(A) गमनस्य (B) भ्रमणस्य
(C) कर्मणः (D) करणस्य
स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–29

18. गन्धवत्त्वं कस्य लक्षणम् –
(A) पृथिव्याः (B) दिशः
(C) जलस्य (D) वायोः
स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–35

19. उपमितिकरणं किम् ?
(A) इन्द्रियम् (B) पदज्ञानम्
(C) व्याप्तिज्ञानम् (D) सादृश्यज्ञानम्
स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–104

20. सांख्यमते मूलप्रकृतिर्वर्तते –
(A) विकृतिः (B) अविकृतिः
(C) प्रकृतिविकृतिः (D) न प्रकृतिः न विकृतिः
स्रोत–सांख्यकारिका (का. 3) - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–38

21. सांख्यमते प्रमाणमिष्टम् –
(A) चतुर्विधम् (B) पञ्चविधम्
(C) त्रिविधम् (D) षड्विधम्
स्रोत–सांख्यकारिका (का. 4) - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–47

22. 'सांख्यकारिकायाः' कर्ता वर्तते –
(A) सदानन्दः (B) ईश्वरकृष्णः
(C) कपिलमुनिः (D) गौतमः
स्रोत–सांख्यकारिका - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–2

23. 'वेदान्तसारग्रन्थस्य' कर्ता वर्तते –
(A) ईश्वरकृष्णः (B) सदानन्दः
(C) सुरेश्वरः (D) शङ्कराचार्यः
स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, भू. पेज–xix

24. 'अनुबन्धाः' कति सन्ति –
(A) द्वौ (B) चत्वारः
(C) त्रयः (D) पञ्च
स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–09

25. 'जीवन्मुक्तिः' कस्मिन् 'दर्शने' स्वीक्रियते ?
(A) जैनदर्शने (B) बौद्धदर्शने
(C) चार्वाकदर्शने (D) वेदान्तदर्शने
स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–185

26. 'व्याकरणशास्त्रानुसारं पद-संज्ञकं' भवति –
(A) योग्यताकांक्षासत्तियुक्तम् (B) सुप्तिङन्तम्
(C) तुल्यास्यप्रयत्नम् (D) सर्वनामस्थानम्
स्रोत–अष्टाध्यायी (1.4.14) - ईश्वरचन्द्र, पेज–114

27. 'अधिहरि' इत्यस्य अलौकिक-विग्रहः भवति
(A) अधि + हरि + सु (B) हरि + अधि + ङि
(C) हरि + ङि + अधि (D) हरौ + इति + ङि
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज–21

28. 'विष्णू इमौ' अत्र का संज्ञा प्रवर्तते ?
(A) घि (B) संयोगः
(C) नदी (D) प्रगृह्यम्
स्रोत–अष्टाध्यायी (1.1.11) - ईश्वरचन्द्र, पेज–13-14)

13. (B) **14.** (B) **15.** (A) **16.** (C) **17.** (C) **18.** (A) **19.** (D) **20.** (B) **21.** (C) **22.** (B) **23.** (B)
24. (B) **25.** (D) **26.** (B) **27.** (C) **28.** (D)

29. 'वषड्' योगे का विभक्तिर्भवति ?

(A) द्वितीया (B) तृतीया
(C) चतुर्थी (D) पञ्चमी

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–55

30. 'कृत्तद्धितसमासाश्च' - इत्यनेन का संज्ञा विधीयते ?

(A) नदी-संज्ञा (B) प्रातिपदिक-संज्ञा
(C) गति-संज्ञा (D) सर्वनाम-संज्ञा

स्रोत–अष्टाध्यायी (1.2.46) - ईश्वरचन्द्र, पेज–70

31. 'नदीमन्ववसिता सेना' इत्यत्र कस्मिन्नर्थे कर्मप्रवचनीयसंज्ञा भवति ?

(A) प्रथमार्थे (B) पञ्चम्यर्थे
(C) तृतीयार्थे (D) सप्तम्यर्थे

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–33

32. 'हरिहरौ' इत्यत्र द्वन्द्वे घिसंज्ञकस्य पूर्वप्रयोगे किं सूत्रम् ?

(A) द्वन्द्वे घि (B) अजाद्यदन्तम्
(C) अल्पाच्तरम् (D) निष्ठा

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज–235

33. व्यधिकरणबहुव्रीहिसमासस्य उदाहरणं किम् ?

(A) प्राप्तोदको ग्रामः (B) पीताम्बरो हरिः
(C) कण्ठेकालः (D) वीरपुरुषको ग्रामः

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज–205

34. 'चर्मणि द्वीपिनं हन्ति' .... अत्र चर्मशब्दे आदौ कतमा विभक्तिः प्राप्ता भवति ?

(A) हेतौ तृतीया (B) अपादाने पञ्चमी
(C) कर्मणि द्वितीया (D) सम्प्रदाने चतुर्थी

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–94

35. अव्ययीभावसमासे 'सह' स्थाने 'स' इति आदेशः केन सूत्रेण विधीयते ?

(A) अव्ययीभावश्च (B) अनश्च
(C) अव्ययीभावे चाकाले (D) नस्तद्धिते

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज–36

36. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां विचिनुत –

(अ) अलोऽन्त्यात्पूर्वः 1. अध्ययनात् पराजयते
(ब) माणवकं पन्थानं पृच्छति 2. नीलोत्पलम्
(स) पराजेरसोढः 3. अकथितं च
(द) विशेषणं विशेष्येण बहुलम् 4. उपधा

कूट :

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	3	2	4	1
(B)	2	1	3	4
(C)	4	3	1	2
(D)	1	4	2	3

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज– अ=175, ब = 874, द = 930, स = कारक प्रकरण - राममुनि पाण्डेय, पेज–60

37. ध्वनिनियमेषु द्वितीयः को गण्यते ?

(A) ग्रासमाननियमः (B) वर्नरनियमः
(C) ग्रिमनियमः (D) कालित्जनियमः

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषा शास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–241

38. 'ज्ञातसारोऽपि खल्वेकः सन्दिग्धे कार्यवस्तुनि' इत्युक्तिः कुत्रास्ति ?

(A) नैषधीयचरिते (B) रघुवंशे
(C) माघकाव्ये (D) भट्टिकाव्ये

स्रोत–शिशुपालवधम् (2/12) – हरगोविन्द शास्त्री, पेज-63

39. 'वैशम्पायन-वृत्तान्तः' कुत्रोपवर्णितः ?

(A) दशकुमारचरिते (B) मृच्छकटिके
(C) कादम्बर्याम् (D) हर्षचरिते

स्रोत–कादम्बरी कथामुख - तारिणीश झा, पेज–98

40. ''एको रसः करुण एव निमित्तभेदाद् भिन्नः'' - इयमुक्तिः कुत्रोपलभ्यते ?

(A) अभिज्ञानशाकुन्तले (B) वेणीसंहारे
(C) मुद्राराक्षसे (D) उत्तररामचरिते

स्रोत–उत्तररामचरितम् (3/47) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–260

41. मेघदूते यक्षः कुत्र वसतिं चक्रे ?

(A) रामगिरौ (B) हिमालये
(C) अलकायाम् (D) मानसरोवरे

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ श्लोक-1) - तारिणीश झा, पेज–1

29.(C) **30.**(B) **31.**(C) **32.**(A) **33.**(C) **34.**(A) **35.**(C) **36.** (C) **37.** (A) **38.**(C) **39.**(C) **40.** (D) **41.**(A)

42. अधस्तनयुग्मानां समीचीनतालिकां चिनुत–

(अ) मुद्राराक्षसम् 1. भासः
(ब) वेणीसंहारम् 2. विशाखदत्तः
(स) रत्नावली 3. श्रीहर्षः
(द) स्वप्नवासवदत्तम् 4. भट्टनारायणः

कूट :

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	4	2	1	3
(B)	2	4	3	1
(C)	1	2	3	4
(D)	3	1	2	4

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज– अ = 354, ब = 381, स = 365, द = 275

43. किरातार्जुनीये 'किरातः' कः ?

(A) युधिष्ठिरः (B) वनेचरः
(C) अर्जुनः (D) शिवः

संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेवद्विवेदी, पेज–184

44. ''गच्छति पुरः शरीरं धावति पश्चादसंस्तुतं चेतः'' – कस्य उक्तिरियम् ?

(A) कण्वस्य (B) गौतम्याः
(C) दुष्यन्तस्य (D) शाङ्र्गरवस्य

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/34) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–89

45. त्रयमेतत् बृहत्त्रय्यां गण्यते –

(A) किरातार्जुनीयम्, शिशुपालवधम्, नैषधीयचरितम्
(B) किरातार्जुनीयम्, रघुवंशम्, नैषधीयचरितम्
(C) नैषधीयचरितम्, कुमारसम्भवम्, किरातार्जुनीयम्
(D) शिशुपालवधम्, नैषधीयचरितम्, रघुवंशम्

स्रोत–शिशुपावधम् - तारिणीश झा, भू. पेज–12

46. 'मग्नस्य दुःखे जगतो हिताय' इति कस्य वर्णनम् ?

(A) पाटलिपुत्रस्य
(B) शुद्धोदनपुत्रस्य
(C) उद्यानस्य
(D) देवदत्तस्य

स्रोत–बुद्धचरितम् (1/20) - रामचन्द्रदास शास्त्री, पेज–4

47. 'बाणः कवीनामिह चक्रवर्ती' इत्युक्तम् –

(A) कालिदासेन
(B) माघेन
(C) सोड्ढलेन
(D) श्रीहर्षेण

स्रोत–संस्कृतगंगा साहित्यम् - सर्वभूषण, पेज–12

48. किरातार्जुनीये प्रतिसर्गस्यान्तिमं पदमस्ति –

(A) श्रीः (B) लक्ष्मीः
(C) शिवः (D) कश्चित्

स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/46) राजेन्द्र मिश्र, पेज–132

49. रिक्तस्थानं पूरयत –

अविरुद्धा विरुद्धा वा यं तिरोधातुमक्षमाः ।
आस्वादाङ्कुरकन्दोऽसौ भावः .... इति सम्मतः ॥

(A) सात्त्विकः (B) सञ्चारी
(C) स्थायी (D) अनुभावः

स्रोत–साहित्यदर्पण (3/174) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–105

50. 'स्वीया' नायिकायाः कति भेदाः ?

(A) एकादश (B) त्रयोदश
(C) चतुर्दश (D) अष्टादश

स्रोत–साहित्यदर्पण (3/65) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–77

॥ कार्यं वा साधयेयं देहं वा पातयेयम् ॥

41. (A) **42.** (B) **43.** (D) **44.** (C) **45.** (A) **46.** (B) **47.** (C) **48.** (B) **49.** (C) **50.** (B)

44	जून 2014	UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् III

नोट : इस प्रश्नपत्र में **पचहत्तर (75)** बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के **दो (2)** अङ्क हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. ऋग्वेदीयपुरुषसूक्ते कति मन्त्राः सन्ति ?
(A) सप्तदश (B) षोडश
(C) द्वाविंशतिः (D) अष्टादश
स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्त शास्त्री, पेज–392-404

2. सामवेदस्यारण्यकम् अस्ति –
(A) तवल्कारः (B) जैमिनीयम्
(C) नारदीयम् (D) गोपथम्
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–166

3. कत्यङ्गुलखातावेदिः भवति ?
(A) षडङ्गुला (B) सप्ताङ्गुला
(C) द्वादशाङ्गुला (D) त्र्यङ्गुला
स्रोत–शतपथब्राह्मण (भाग-एक)-सत्यप्रकाश सरस्वती, पेज–40

4. ऋग्वेदे स्वरितस्वरः प्रदर्श्यते –
(A) अधः (B) उपरिष्यित्
(C) तिर्यक् (D) परितः
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–326

5. 'देवासः' इति प्रयोगः –
(A) लौकिकः (B) कार्मिकः
(C) वैदिकः (D) यादृच्छिकः
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–22

6. दर्शपूर्णमासयागस्य का दक्षिणा ?
(A) पूर्णपात्रम् (B) गौः
(C) अन्वाहार्यम् (D) सुवर्णम्
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–314

7. कालसूक्तं युज्यते –
(A) मूलवेदे (B) यजुर्वेदे
(C) अथर्ववेदे (D) कुत्रापि न हि
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–109

8. शुक्लयजुर्वेदीये शिवसङ्कल्पसूक्ते कति मन्त्राः सन्ति ?
(A) षट् (B) सप्त
(C) अष्ट (D) दश
स्रोत–वैदिकसूक्तसंग्रह - विजयशंकर पाण्डेय, पेज–51-55

9. केनोपनिषद् केन वेदेन सम्बद्धा ?
(A) कृष्णयजुर्वेदेन (B) सामवेदेन
(C) ऋग्वेदेन (D) अथर्ववेदेन
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–10

10. कठोपनिषदनुसारं महतः परं किमस्ति ?
(A) मनः (B) अव्यक्तम्
(C) पुरुषः (D) आत्मा
स्रोत–कठोपनिषद् (1.3.11)

11. ईशावास्यदिशा कथम् अमृतम् अश्नुते –
(A) एकत्वेन (B) सम्भवात्
(C) सम्भूत्या (D) सत्येन
स्रोत–ईशावास्योपनिषद् (मन्त्र-14)

12. ''तपो दमः कर्मेति प्रतिष्ठा'' अयं विचारः कुत्र उपदिश्यते–
(A) केनोपनिषदि (B) कठोपनिषदि
(C) तैत्तिरीयोपनिषदि (D) बृहदारण्यके
स्रोत–केनोपनिषद् चतुर्थखण्ड-8वीं कारिका

13. 'योगो हि प्रभवाप्ययौ' - कुत्र इयम् उक्तिः ?
(A) बृहदारण्यके (B) केनोपनिषदि
(C) भगवद्गीतायाम् (D) कठोपनिषदि
स्रोत–कठोपनिषद् (2-3-11)

14. 'उत्तब्धं वागेव गीथोत्त्वगीथा चेति उद्गीथः' कुत्र इयम् उक्तिः ?
(A) केनोपनिषदि (B) तैत्तिरीयोपनिषदि
(C) कठोपनिषदि (D) बृहदारण्यकोपनिषदि
स्रोत–बृहदारण्यकोपनिषद् (1.3.23) - गीताप्रेस, पेज–145

1. (B) **2.** (A) **3.** (D) **4.** (B) **5.** (C) **6.** (C) **7.** (C) **8.** (A) **9.** (B) **10.** (B) **11.** (C) **12.** (A) **13.** (D) **14.** (D)

15. विज्ञानमयस्य शिरः किमुच्यते ?
(A) श्रद्धा (B) सत्यम्
(C) ऋतम् (D) महः
स्रोत–तैत्तिरीय उपनिषद् - वल्ली-2 अनुवाक-4

16. 'सस्यमिव मर्त्यः पच्यते सस्यमिवाजायते पुनः' - इति केन उक्तम् –
(A) नचिकेतसा (B) वाजश्रवसा
(C) यमेन (D) अग्निना
स्रोत–कठोपनिषद् (1.1.6)

17. ऋक्प्रातिशाख्यानुसारं सोष्मवर्णः कः ?
(A) थ (B) द
(C) प (D) ब
स्रोत–ऋग्वेदप्रातिशाख्यम् - वीरेन्द्रकुमार वर्मा, पेज–55

18. ऋक्प्रातिशाख्यानुसारम् अघोषवर्णः कः ?
(A) त (B) द
(C) ध (D) ब
स्रोत–ऋग्वेदप्रातिशाख्यम् - वीरेन्द्रकुमार वर्मा, पेज–54

19. आमन्त्रितज ओकारो भवति –
(A) रक्तः (B) प्रगृह्यः
(C) रिफितः (D) यमः
स्रोत–ऋग्वेदप्रातिशाख्यम् - वीरेन्द्रकुमार वर्मा, पेज–96

20. आश्वलायनगृह्यसूत्रं केन सम्बद्धम् ?
(A) अथर्ववेदेन (B) सामवेदेन
(C) यजुर्वेदेन (D) ऋग्वेदेन
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–227

21. 'त्रिष्टुप्छन्दसि' कियन्तो वर्णाः भवन्ति ?
(A) 28 (B) 36
(C) 44 (D) 48
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–203

22. निरुक्तानुसारं द्वितीयो भावविकारः कः ?
(A) अस्ति (B) विपरिणमते
(C) अपक्षीयते (D) विनश्यति
स्रोत–निरुक्त - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–26

23. 'अग्रणीर्भवतीति' निरुक्त्या कः उच्यते ?
(A) वीरः (B) आदित्यः
(C) अश्वः (D) अग्निः
स्रोत–निरुक्तम् (7/4) छज्जूराम शास्त्री/देव शर्मा शास्त्री, पेज–354

24. 'वा' इति निपातो वर्तते –
(A) उपमार्थे (B) शब्दार्थे
(C) निषेधार्थे (D) समुच्चयार्थे
स्रोत–निरुक्तम् - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–50

25. महाभाष्ये 'कूपखानकवत्' इत्युदाहरणं कस्मिन् प्रसङ्गे उक्तम् ?
(A) शब्दस्य ज्ञाने धर्मः (B) गौरित्यत्र कः शब्दः
(C) किमर्थं वर्णानामुपदेशः (D) सिद्धे शब्दार्थसम्बन्धे
स्रोत–व्याकरणमहाभाष्य-पश्पशाह्निक मधुसूदन मिश्र, पेज–59

26. 'तुन्नवत्' इति किमुच्यते ?
(A) सक्तुः (B) परिपवनम्
(C) टङ्कारध्वनिः (D) तन्तुशाटिका
स्रोत–निरुक्तम् 4/2 छज्जूराम शास्त्री/देवशर्मा शास्त्री, पेज–171

27. 'भिक्षुः प्रभुमुपतिष्ठते' इत्यत्र आत्मनेपदविधायकं किम् ?
(A) अकर्मकाच्च
(B) वा लिप्सायामिति वक्तव्यम्
(C) उपान्मन्त्रकरणे
(D) समप्रविभ्यः स्थः
स्रोत–वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (भाग-5)-गोविन्दाचार्य, पेज–380

28. 'वीरपत्नी' इति कस्य सूत्रस्य उदाहरणं वर्तते –
(A) पत्युर्नो यज्ञसंयोगे (B) नित्यं सपत्न्यादिषु
(C) अन्तर्वत्पतिवतोर्नुक् (D) विभाषा सपूर्वस्य
स्रोत–अष्टाध्यायी (4.1.35) - ईश्वरचन्द्र, पेज–431

29. तत्पुरुषसमासे 'देवब्राह्मण' इत्युदाहरणे ब्राह्मणः इति पदेन कः अभिप्रेतः –
(A) देवरूपः (B) देवप्रियः
(C) देवपूजकः (D) देवाधीनः
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज–120

30. 'अलं कुमार्यै' इत्यस्य समस्तं रूपं किम् ?
(A) अलङ्कुमारी (B) कुमार्यै अलम्
(C) अलङ्कुमारिः (D) अलङ्कुमारिन्
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4) पेज–174

15. (A) **16.** (A) **17.** (A) **18.** (A) **19.** (B) **20.** (D) **21.**(C) **22.**(A) **23.**(D) **24.**(D) **25.**(A) **26.**(B) **27.** (B) **28.**(B) **29.**(C) **30.** (C)

31. 'द्विभाषाशिलालेखः' केन सम्बद्धः ?
(A) कान्धार (B) मास्कि
(C) गुर्जर (D) रुम्मनदेई

32. 'अद्वैतमते' जगतः अस्ति –
(A) नित्यत्वम्
(B) मिथ्यात्वम्
(C) पारमार्थिकत्वम्
(D) ब्रह्मपरिणामात्मकत्वम्
स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, भू. पेज–IX

33. 'विवर्तस्य' उदाहरणमस्ति –
(A) गगनकुसुमम् (B) वन्ध्यासुतः
(C) शुक्तिकारजतम् (D) खपुष्पम्
स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–117

34. 'सांख्यैः' स्वीकृतानि तत्त्वानि सन्ति –
(A) षोडश (B) सप्तदश
(C) पञ्चविंशतिः (D) दश
स्रोत–सांख्यकारिका (का. 3)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–39

35. पुरुषप्रकृत्योः संसर्गो वर्णितः –
(A) जडाजडवत् (B) पङ्ग्वन्धवत्
(C) मूकबधिरवत् (D) अन्धमालावत्
स्रोत–सांख्यकारिका (का. 21)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–193

36. अर्थसंग्रहे विशिष्टविधेः उदाहरणमस्ति –
(A) दध्ना जुहोति
(B) अग्निहोत्रं जुहुयात्स्वर्गकामः
(C) सोमेन यजेत
(D) राजा राजसूयेन स्वराज्यकामो यजेत
स्रोत–अर्थसंग्रह - सत्यप्रकाश शर्मा, पेज–42

37. विनियोगविधेः सहकारिप्रमाणानि सन्ति –
(A) त्रीणि (B) सप्त
(C) पञ्च (D) षट्
स्रोत–अर्थसंग्रह - सत्यप्रकाश शर्मा, पेज–58

38. अर्थसंग्रहानुसारम् आख्यातेन किमुच्यते ?
(A) कर्ता (B) भावना
(C) कर्म (D) करणम्
स्रोत–अर्थसंग्रह - सत्यप्रकाश शर्मा, पेज–29

39. अर्थवादस्य लक्षणं किम् ?
(A) स्तुति-निन्दान्यतरपरं वाक्यम्
(B) समभिव्यवहारो वाक्यम्
(C) अपौरुषेयं वाक्यम्
(D) अङ्ग-प्रधान-सम्बन्धबोधकं वाक्यम्
स्रोत–अर्थसंग्रह - सत्यप्रकाश शर्मा, पेज–194

40. 'चतुर्विंशतिसाहस्रीसंहिता' का उच्यते ?
(A) रामायणम् (B) महाभारतम्
(C) विष्णुपुराणम् (D) श्रीमद्भागवतम्
स्रोत–संस्कृतसाहित्य का इतिहास-उमाशंकरशर्मा 'ऋषि', पेज–123

41. 'विष्णुसहस्रनामस्तोत्रम्' कुत्र वर्तते ?
(A) श्रीमद्भागवते (B) रामायणे
(C) ब्रह्माण्डपुराणे (D) महाभारते
स्रोत–संस्कृतसाहित्य का इतिहास-उमाशंकरशर्मा 'ऋषि', पेज–152

42. महाभारतस्य द्वितीयं पर्व किम् ?
(A) वनपर्व (B) सभापर्व
(C) भीष्मपर्व (D) विराटपर्व
स्रोत–संस्कृतसाहित्य का इतिहास-उमाशंकरशर्मा 'ऋषि', पेज–149

43. 'ब्रह्मवैवर्तपुराणं' निबद्धं वर्तते –
(A) खण्डेषु (B) पर्वसु
(C) काण्डेषु (D) स्कन्धेषु
स्रोत–संस्कृतसाहित्य का इतिहास-उमाशंकरशर्मा 'ऋषि', पेज–184

44. महापुराणेषु न गण्यते –
(A) कालिकापुराणम् (B) स्कन्दपुराणम्
(C) विष्णुपुराणम् (D) अग्निपुराणम्
संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–96

45. श्रीमद्भागवते श्रीकृष्णस्य ज्येष्ठपुत्रस्य किं नाम ?
(A) साम्बः (B) प्रद्युम्नः
(C) सङ्कर्षणः (D) अनिरुद्धः
स्रोत–श्रीमद्भागवतपुराण (10.90.35) - गीताप्रेस, पेज-706

46. 'रासपञ्चाध्यायी' कुत्र वर्तते ?
(A) महाभारते (B) रामायणे
(C) अग्निपुराणे (D) श्रीमद्भागवते
स्रोत–पुराण विमर्श - बलदेव उपाध्याय, पेज–149

31.(A) **32.** (B) **33.** (C) **34.** (C) **35.** (B) **36.** (C) **37.** (D) **38.** (B) **39.** (A) **40.**(A) **41.**(D) **42.**(B) **43.**(A) **44.**(A) **45.**(B) **46.** (D)

47. अर्थशास्त्रस्य चतुर्थाधिकरणं वर्तते –

(A) कण्टकशोधनम् (B) षाड्गुण्यम्
(C) धर्मस्थीयम् (D) विनयाधिकारिकम्

स्रोत–कौटिलीय अर्थशास्त्रम् - वाचस्पति गैरोला, भू. पेज–77

48. सन्धिकर्म कुत्रोपदिष्टम् ?

(A) धर्मस्थीये (B) अध्यक्षप्रचारे
(C) योगवृत्ते (D) षाड्गुण्ये

स्रोत–कौटिलीय अर्थशास्त्रम् - वाचस्पति गैरोला, भू. पेज–79

49. 'सामवेदः' सम्प्राप्तः –

(A) रवेः (B) अग्नेः
(C) वायोः (D) वरुणात्

स्रोत–मनुस्मृति (1/23) - गिरिधर गोपाल शर्मा, पेज–19

50. मनुना अन्नप्राशनस्य काल उक्तः –

(A) द्वितीये मासे (B) चतुर्थे मासे
(C) षष्ठे मासे (D) अष्टमे मासे

स्रोत–मनुस्मृति (2/34) - गिरिधर गोपाल शर्मा, पेज–73

51. याज्ञवल्क्यदिशा वस्त्रस्य वृद्धिरुक्ता –

(A) द्विगुणा (B) त्रिगुणा
(C) चतुर्गुणा (D) पञ्चगुणा

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति (2/39) - गंगासागर राय, पेज–196

52. राजा निधिं लब्ध्वा ततः कियन्तं गृह्णीयात् ?

(A) अर्धम् (B) षष्ठांशम्
(C) दशांशम् (D) सर्वम्

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति (2/34) - गंगासागर राय, पेज–192

53. 'ईर्ष्या' गण्यते –

(A) कामजगणे (B) लोभजगणे
(C) मोहजगणे (D) क्रोधजगणे

स्रोत–मनुस्मृति (7/48) - गिरिधर गोपाल शर्मा, पेज–167

54. 'रथाङ्गपाणेः पटलेन रोचिषामृषित्विषः संवलिता विरेजिरे' - इत्यत्र 'रथाङ्गपाणिः' कः ?

(A) नारदः (B) रावणः
(C) कृष्णः (D) शिशुपालः

स्रोत–शिशुपालवधम् (1/21) तारिणीश झा, पेज–47

55. 'फलेन मूलेन च वारिभूरुहां, मुनेरिवेत्थं मम यस्य वृत्तयः।' - कं प्रति कस्य इयम् उक्तिः?

(A) हंसं प्रति नलस्य (B) नलं प्रति हंसस्य
(C) दमयन्तीं प्रति नलस्य (D) नलं प्रति दमयन्त्याः

स्रोत–नैषधीयचरितम् (1/133)-बद्रीनाथमालवीय, पेज–227

56. लीलावधूतपद्मा कथयन्ती पक्षपातमधिकं नः । मानसमुपैति केयं चित्रगता राजहंसीव ॥ - इयम् उक्तिः कामुद्दिश्य कथिता ?

(A) शकुन्तलाम् (B) द्रौपदीम्
(C) महाश्वेताम् (D) सागरिकाम्

स्रोत–रत्नावली (2/9) तारिणीश झा, पेज–109

57. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत –

(अ) विचित्ररूपा खलु चित्तवृत्तयः — 1. उत्तररामचरितम्
(ब) पतत्यधो धाम विसारि सर्वतः — 2. हर्षचरितम्
(स) तीर्थोदकं च वह्निश्च नान्यतः शुद्धिमर्हतः — 3. किरातार्जुनीयम्
(द) लोके हि लोहेभ्यः कठिनतरा खलु स्नेहमया बन्धनपाशाः — 4. शिशुपालवधम्

कूट :

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	4	2	3	1
(B)	1	3	4	2
(C)	2	1	3	4
(D)	3	4	1	2

स्रोत– (अ) किरात 1/37, (ब) शिशुपाल-1/2 (स) उत्तरराम. 1/13

58. अवान्तरार्थविच्छेदे किमच्छेदकारणम् ?

(A) बीजम् (B) बिन्दुः
(C) पताका (D) प्रकरी

स्रोत–दशरूपक (1/17) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज–21

59. 'अभवन्वस्तुसम्बन्ध उपमापरिकल्पकः' - कस्यालङ्कारस्य लक्षणमिदम् ?

(A) उपमा (B) अपह्नुतिः
(C) निदर्शना (D) उत्प्रेक्षा

स्रोत–काव्यप्रकाश (10/97) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–474

60. 'वृत्तवर्तिष्यमाणानां कथांशानां निदर्शकः संक्षेपार्थः मध्यपात्रप्रयोजितः' - कः ?

(A) अङ्कास्यम् (B) अङ्कावतारः
(C) प्रवेशकः (D) विष्कम्भकः

स्रोत–दशरूपक (1/59) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज–99

47.(A) **48.**(D) **49.** (A) **50.**(C) **51.** (C) **52.** (A) **53.** (D) **54.** (C) **55.** (B) **56.** (D) **57.**(D) **58.** (B) **59.** (C) **60.**(D)

61. हर्षचरिते 'रसायनः' कः ?

(A) व्याधिः (B) औषधिः
(C) वैद्यकुमारकः (D) राजसूनुः

स्रोत–हर्षचरितम् (पञ्चम उच्छ्वास) - शिवनाथ पाण्डेय, पेज–31

62. रावणभयात् हेमाद्रिगुहागृहान्तरं कः दिवसानि निनाय ?

(A) कृष्णः (B) कौशिकः
(C) नारदः (D) वसुदेवः

स्रोत–शिशुपालवधम् (1/53) तारिणीश झा, पेज–111

63. विबुधसद्मनि अप्सरसां कति कुलानि कादम्बर्याम् उक्तानि ?

(A) द्वादश (B) त्रयोदश
(C) चतुर्दश (D) पञ्चदश

स्रोत–कादम्बरी - राजदेव मिश्र, पेज–32

64. 'सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तःकरणप्रवृत्तयः।' - इत्यत्र कोऽलङ्कारः ?

(A) उपमा (B) उत्प्रेक्षा
(C) सन्देहः (D) अर्थान्तरन्यासः

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/22) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–54

65. 'अन्यदेवसहृदयलोचनामृतं तत्त्वान्तरे तद्वदेव सोऽर्थः' - ध्वन्यालोककारमते 'सोऽर्थ' इत्यस्य कः आशयः ?

(A) अभिधेयार्थः (B) प्रतीयमानार्थः
(C) लक्ष्यार्थः (D) सर्वार्थः

स्रोत–ध्वन्यालोक (1/4) वृत्तिभाग - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–13

66. अङ्गिनः रसस्य अचलस्थितयो धर्माः के ?

(A) गुणाः (B) रीतयः
(C) अलङ्काराः (D) रसः

स्रोत–काव्यप्रकाश (8/66) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–380

67. मण्डपसन्निवेशेषु नाट्यशास्त्रे न गण्यते ?

(A) चतुरस्रः (B) त्र्यस्रः
(C) वर्तुलः (D) विकृष्टः

स्रोत–नाट्यशास्त्र (2/8) - बाबूलाल शुक्ल, पेज–34

68. 'कथं न मन्युर्ज्वलयत्युदीरितः शमीतरुं शुष्कमिवाग्निरुच्छिखः।' इत्युक्त्या कः प्रेरितः ?

(A) अर्जुनः (B) युधिष्ठिरः
(C) वनेचरः (D) सुयोधनः

स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/32) - अभिराज राजेन्द्र मिश्र, पेज–103

69. 'यत्किञ्चिल्लोके शुचि मेध्यमुज्ज्वलं दर्शनीयं' नाट्यशास्त्रे तत् केन उपमीयते ?

(A) हास्येन (B) शृङ्गारेण
(C) शान्तेन (D) वीरेण

स्रोत–नाट्यशास्त्र - ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज–198

70. तर्कसंग्रहानुसारं शीतस्पर्शवत्वं कस्य लक्षणम् ?

(A) पृथिव्याः (B) जलस्य
(C) वायोः (D) परदुःखस्य

स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–37

71. तर्कसंग्रहानुसारं तैजसविषयः कतिविधः ?

(A) त्रिविधः (B) द्विविधः
(C) चतुर्विधः (D) पञ्चविधः

स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–39

72. तर्कसङ्ग्रहानुसारं पृथिव्यां रूपम् –

(A) चतुर्विधम् (B) त्रिविधम्
(C) पञ्चविधम् (D) सप्तविधम्

स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–49

73. 'शुक्तौ इदं रजतम्' इति ज्ञानम् अस्ति –

(A) प्रमा (B) उपमितिः
(C) यथार्थानुभवः (D) अप्रमा

स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–65

74. पञ्चावयवप्रयोग एव–

(A) स्वार्थानुमानम् (B) निगमनम्
(C) उदाहरणम् (D) परार्थानुमानम्

स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–89

75. अधोलिखितयुग्मानां समीचीनतालिकां चिनुत –

(अ) अर्थाबाधो — 1. अप्रमाणम्
(ब) गौरश्वः पुरुष इति — 2. योग्यता
(स) प्रहरे प्रहरे उच्चरितपदानि — 3. योग्यताभाववत्
(द) अग्निना सिञ्चति — 4. सन्निधिं अभाववन्ति

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	2	1	4	3
(B)	1	3	2	4
(C)	3	2	4	1
(D)	2	3	4	1

स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–108

61. (C) **62.** (B) **63.** (C) **64.** (D) **65.** (B) **66.** (A) **67.** (C) **68.** (B) **69.** (B) **70.** (B) **71.** (C) **72.** (D) **73.** (D) **74.** (D) **75.** (A)

45	दिसम्बर 2014	UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् II

नोट : इस प्रश्नपत्र में **पचास (50)** बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के **दो (2)** अङ्क हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. 'कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतँ समाः' इति सूक्तिः केन वेदेन सम्बद्धा ?

(A) ऋग्वेदेन (B) यजुर्वेदेन
(C) सामवेदेन (D) अथर्ववेदेन

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–76

2. 'नासत्यौ' इति कयोः नाम ?

(A) द्यावापृथिव्योः (B) इन्द्रवरुणयोः
(C) अग्निसोमयोः (D) अश्विनोः

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–302

3. काण्वशाखा कस्य वेदस्य ?

(A) सामवेदस्य (B) यजुर्वेदस्य
(C) अथर्ववेदस्य (D) ऋग्वेदस्य

स्रोत–वैदिकसाहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–09

4. समीचीनम् उत्तरं चिनुत –

(अ)	प्रश्नोपनिषद्	1.	शुक्लयजुर्वेदः
(ब)	शिक्षावल्ली	2.	अथर्ववेदस्य पैप्पलादशाखा
(स)	ईशावास्योपनिषद्	3.	कृष्णयजुर्वेदः
(द)	श्वेताश्वतरोपनिषद्	4.	तैत्तिरीयोपनिषद्

कूट :

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	1	2	4	3
(B)	2	4	1	3
(C)	2	4	3	1
(D)	1	4	2	3

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–9, 10

5. सामवेदेन सम्बद्धा अस्ति ?

(A) छान्दोग्योपनिषद् (B) कठोपनिषद्
(C) ईशावास्योपनिषद् (D) ऐतरेयोपनिषद्

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–10

6. 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' इति कुत्र विद्यते ?

(A) ऋग्वेदे (B) बृहदारण्यकोपनिषदि
(C) अथर्ववेदे (D) ऐतरेयोपनिषदि

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–185

7. वरुणस्य विशेषणम् अस्ति –

(A) उरूचक्षा (B) वज्रहस्तः
(C) गोपाः (D) बलदाः

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह (1.25.5) - हरिदत्त शास्त्री, पेज–71

8. 'ज्योतिषम्' इति वैदिककालनिर्धारणस्य आधारः केन प्रतिपादितः ?

(A) मोक्षमूलरेण (B) कीथमहोदयेन
(C) बालगङ्गाधरतिलकेन (D) विण्टरनित्समहोदयेन

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–40

9. याज्ञवल्कीयशिक्षा केन वेदेन सम्बद्धा ?

(A) ऋग्वेदेन (B) अथर्ववेदेन
(C) यजुर्वेदेन (D) सामवेदेन

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–131

10. भाव-काल-कारक-संख्याश्च इति चत्वारः अर्थाः भवन्ति –

(A) नाम्नः (B) निपातस्य
(C) उपसर्गस्य (D) आख्यातस्य

स्रोत–निरुक्तम् - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–18

11. वैदिकशब्दानां सविस्तरं विवेचनं कुत्र उपलभ्यते ?

(A) व्याकरणे (B) कल्पे
(C) निरुक्ते (D) शिक्षायाम्

स्रोत–निरुक्तम् - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–3

12. अर्थावबोधे निरपेक्षतया पदजातं यत्रोक्तं तत् –

(A) निरुक्तम् (B) व्याकरणम्
(C) छन्दस् (D) ज्योतिषम्

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–184

1. (B) **2.** (D) **3.** (B) **4.** (B) **5.** (A) **6.** (B) **7.** (A) **8.** (C) **9.** (C) **10.** (D) **11.** (C) **12.** (A)

13. वैदिकमन्त्रोच्चारणप्रयोजनार्थं कस्य वेदाङ्गस्य अध्ययनम् अनिवार्यम् ?

(A) छन्दसः (B) कल्पस्य
(C) ज्योतिषस्य (D) निरुक्तस्य

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–187

14. 'छन्दःसूत्रम्' इत्यस्य रचयिता कः ?

(A) दुर्गाचार्यः (B) यास्काचार्यः
(C) पिङ्गलाचार्यः (D) माधवाचार्यः

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–188

15. प्रत्ययसर्गः कतिविधः ?

(A) द्विविधः (B) त्रिविधः
(C) चतुर्विधः (D) पञ्चविधः

स्रोत–सांख्यकारिका (का. 46)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–269

16. सांख्यानुसारं सृष्टिकारणं किम् ?

(A) पुरुषः (B) प्रकृतिः
(C) ब्रह्म (D) प्रकृति-पुरुषसंयोगः

स्रोत–सांख्यकारिका (का. 21)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–193

17. सांख्ये कति तत्त्वानि स्वीकृतानि ?

(A) त्रयोदश (B) पञ्चदश
(C) चतुर्विंशतिः (D) पञ्चविंशतिः

स्रोत–सांख्यकारिका (का. 3)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–39

18. उपमितिः नाम –

(A) संज्ञा-संज्ञि-सम्बन्धज्ञानम् (B) संज्ञा-ज्ञानम्
(C) संज्ञिज्ञानम् (D) सादृश्यज्ञानम्

स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–104

19. शाब्दज्ञानं नाम –

(A) अक्षरज्ञानम् (B) शब्दज्ञानम्
(C) शक्तिज्ञानम् (D) वाक्यार्थज्ञानम्

स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–111

20. इन्द्रियार्थसन्निकर्षः कतिविधः ?

(A) पञ्चविधः (B) चतुर्विधः
(C) षड्विधः (D) त्रिविधः

स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–76

21. नित्यद्रव्यवृत्तिः विशेषास्तु............एव।

(A) अनन्ताः (B) पञ्च
(C) षट् (D) चत्वारः

स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–32

22. वेदान्तसारानुसारम् अधिकारी भवति –

(A) ब्रह्मचारी
(B) गृहस्थः
(C) साधनचतुष्टयसम्पन्नः प्रमाता
(D) अज्ञः

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–11

23. वेदान्तसारानुसारं कर्माणि –

(A) त्रिविधानि (B) पञ्चविधानि
(C) षड्विधानि (D) चतुर्विधानि

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–14

24. वेदान्तसारानुसारं शरीराणि कतिविधानि –

(A) चतुर्विधानि (B) पञ्चविधानि
(C) त्रिविधानि (D) षड्विधानि

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–46

25. वेदान्तसारे लिङ्गशरीराणि वर्णितानि –

(A) षोडशावयवानि (B) सप्तदशावयवानि
(C) एकादशावयवानि (D) द्वादशावयवानि

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–65

26. विभाषा-संज्ञाविधायकं सूत्रं किम् ?

(A) विभाषा चेः (B) विभाषा ङिश्योः
(C) विभाषा दिक्समासे बहुव्रीहौ (D) न वेति विभाषा

स्रोत–अष्टाध्यायी (1.1.43) - ईश्वरचन्द्र पेज–25

27. 'अपृक्त एकाल् प्रत्ययः' इति सूत्रे अल् इत्यनेन किं गृह्यते ?

(A) वर्णाः (B) धातवः
(C) स्वराः (D) प्रातिपदिकम्

स्रोत–अष्टाध्यायी (1.2.41) - ईश्वरचन्द्र, पेज–68

28. भावलक्षणविषये का विभक्तिः ?

(A) सप्तमी (B) षष्ठी
(C) पञ्चमी (D) चतुर्थी

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–95

13. (A)	**14.** (C)	**15.** (C)	**16.** (D)	**17.** (D)	**18.** (A)	**19.** (D)	**20.** (C)	**21.** (A)	**22.** (C)	**23.** (C)
24. (C)	**25.** (B)	**26.** (D)	**27.** (A)	**28.** (A)						

29. कारकप्रकरणे ण्यन्ताण्यन्तविचारः अधस्तनेषु कस्मिन् सूत्रे कृतः ?

(A) गतिबुद्धिप्रत्यवसानार्थशब्दकर्माकर्मकाणामणि कर्त्ता स णौ
(B) अणुदित्सवर्णस्य चाप्रत्ययः
(C) णेरनिटि
(D) णो नः

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–24

30. पञ्चमीं विना सार्वविभक्तिकः 'अम्' भावः कस्मिन् समासे विधीयते ?

(A) तत्पुरुषे (B) बहुव्रीहौ
(C) द्वन्द्वे (D) अव्ययीभावे

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज–24

31. 'द्व्यङ्गुलम्' इत्यत्र को लौकिकविग्रहः ?

(A) द्वयोः अङ्गुल्योः समाहारः (B) द्वे अङ्गुली प्रमाणमस्य
(C) द्वे अङ्गुली यस्य (D) द्वि च अङ्गुलिश्च

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज–154

32. अधस्तनयुग्मानां तालिकां सुमेलयतु –

(अ) रात्राह्नाहाः पुंसि — 1. उच्चैः नीचैः, कृष्णः श्रीः, ज्ञानम्
(ब) अक्ष्णोऽदर्शनात् — 2. अह्ना क्रोशेन वा अनुवाकोऽधीतः
(स) नियतोपस्थितिकः प्रातिपदिकार्थः — 3. अहोरात्रः
(द) अपवर्गे तृतीया — 4. गवाक्षः

कूट :

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	4	3	2	1
(B)	3	4	1	2
(C)	2	1	4	3
(D)	1	4	3	2

स्रोत–अष्टाध्यायी - ईश्वरचन्द्र पेज– अ= 2.4.29 पेज–228, ब = 5.4.76 पेज–644, स = 2.3.46 पेज–209, द = 2.3.6 पेज–196

33. सामान्यतया 'घि' इति संज्ञा कस्य भवति ?

(A) पुँल्लिङ्ग-शब्दस्य (B) स्त्रीलिङ्ग-शब्दस्य
(C) नपुंसकलिङ्ग-शब्दस्य (D) अलिङ्ग-शब्दस्य

स्रोत–अष्टाध्यायी (1.4.7) - ईश्वरचन्द्र, पेज–111

34. निर्धारणविषये कीदृशी विभक्तिव्यवस्था ?

(A) तृतीया-पञ्चम्यौ (B) चतुर्थी-पञ्चम्यौ
(C) पञ्चमी-षष्ठ्यौ (D) षष्ठी-सप्तम्यौ

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–98

35. 'चोराद् भयं चोरभयम्' इत्यत्र पञ्चमीविभक्तिः केन सूत्रेण ?

(A) पराजेरसोढः (B) भीत्रार्थानां भयहेतुः
(C) रुच्यर्थानां प्रीयमाणः (D) हेतौ

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–60

36. अघोषध्वनिः अस्ति –

(A) ज् (B) ध्
(C) त् (D) अ

स्रोत–ऋग्वेदप्रतिशाख्यम् - वीरेन्द्रकुमार वर्मा, पेज–54

37. समीचीनम् उत्तरं चिनुत –

(अ) यणः — 1. स्पर्शाः
(ब) शलः — 2. प्रातिपदिकम्
(स) कादयो मावसानाः — 3. अन्तःस्थाः
(द) अर्थवदधातुरप्रत्ययः — 4. ऊष्माणः

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	4	3	1	2
(B)	3	4	1	2
(C)	2	3	1	4
(D)	1	3	4	2

स्रोत–लघुसिद्धान्त कौमुदी-गोविन्दाचार्य पेज-अ, ब, स–20, द–129

38. "निपीय यस्य क्षितिरक्षिणः कथां तथाद्रियन्ते न बुधाः सुधामपि।" इति कस्य कथा अत्र उल्लिखिता ?

(A) दुष्यन्तस्य (B) नलस्य
(C) रघोः (D) रामचन्द्रस्य

स्रोत–नैषधीयचरितम् (1.1) - बद्रीनाथ मालवीय, पेज–1

39. वेणीसंहारे दुर्योधनस्य कञ्चुकी कः ?

(A) विनयन्धरः (B) जयन्धरः
(C) रुधिरप्रियः (D) सुन्दरकः

स्रोत–वेणीसंहार - परमेश्वरदीन पाण्डेय, भू. पेज–15

29.(A) **30.**(D) **31.**(B) **32.**(B) **33.**(A) **34.**(D) **35.**(B) **36.**(C) **37.**(B) **38.**(B) **39.**(A)

40. 'मनोरथा नाम तटप्रपाताः' इयम् उक्तिः उपलभ्यते –
(A) रत्नावल्याम् (B) वेणीसंहारे
(C) अभिज्ञानशाकुन्तले (D) मृच्छकटिके
स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (6/10)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–344

41. 'लक्ष्मीचाञ्चल्यम्' अस्मिन्नुपवर्णितमस्ति –
(A) नैषधीयचरिते (B) रघुवंशे
(C) दशकुमारचरिते (D) कादम्बर्याम्
स्रोत–कादम्बरी शुकनासोपदेश - तारिणीश झा, पेज–24

42. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां विचिनुत–

(अ)	रत्नावली	1.	अश्वघोषः
(ब)	वेणीसंहारम्	2.	हर्षः
(स)	बालचरितम्	3.	भट्टनारायणः
(द)	बुद्धचरितम्	4.	भासः

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	4	3	2	1
(B)	3	2	4	1
(C)	2	3	4	1
(D)	2	4	1	3

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज– अ = 365, ब = 381, स = 275, द = 169

43. दशकुमारचरिते अयं प्रतिनायको भवति ?
(A) राजहंसः (B) मानसारः
(C) राजवाहनः (D) पुष्पोद्भवः
स्रोत–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेवद्विवेदी, पेज–473

44. रत्नावल्यां द्वितीयाङ्कस्य नाम –
(A) मदनमहोत्सवः (B) कदलीगृहम्
(C) सङ्केतः (D) इन्द्रजालिकम्
स्रोत–रत्नावली - तारिणीश झा, पेज–142

45. कस्य काव्यं नारिकेलफलसम्मितम् –
(A) भारवेः (B) कालिदासस्य
(C) माघस्य (D) बाणस्य
स्रोत–किरातार्जुनीयम् - राजेन्द्र मिश्र, भू. पेज–27

**46. "सतीव योषित् प्रकृतिः सुनिश्चला
पुमांसमभ्येति भवान्तरेष्वपि।।"
कुत्र अस्ति अयं पद्यांशः ?**
(A) नैषधीयचरिते (B) रघुवंशे
(C) शिशुपालवधे (D) मेघदूते
स्रोत–शिशुपावधम् (1/72) - तारिणीश झा, पेज–149

47. 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' इत्यत्र रसमध्ये ग्रहणं कृतम् –
(A) केवलं रसस्य
(B) केवलं भावस्य
(C) केवलं रसाभासस्य
(D) रस-भाव-तदाभासादीनाम्
स्रोत–साहित्यदर्पण (प्रथमपरिच्छेद)-शालिग्राम शास्त्री, पेज–19-20

48. साहित्यदर्पणे साकल्येन लक्षणायाः कति भेदाः ?
(A) षोडश (B) चतुर्विंशतिः
(C) अशीतिः (D) द्वादश
स्रोत–साहित्यदर्पण (2/11) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–39

49. 'उत्साहः' कस्य रसस्य स्थायिभावः ?
(A) रौद्रस्य (B) करुणस्य
(C) वीरस्य (D) बीभत्सस्य
स्रोत–साहित्यदर्पण (3/232) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–117

50. विश्वनाथमते काव्यशरीरे रसस्य का स्थितिर्वर्तते ?
(A) अलङ्कारवत्
(B) आत्मवत्
(C) गुणवत्
(D) रीतिवत्
स्रोत–साहित्यदर्पण - शालिग्राम शास्त्री, पेज–19

क्षणत्यागे कुतो विद्या कणत्यागे कुतो धनम्
एक एक क्षण का त्याग करने वाले को विद्या नहीं।
एक एक कण का त्याग करने वाले को धन नहीं।

40. (C) **41.** (D) **42.** (C) **43.** (B) **44.** (B) **45.** (A) **46.** (C) **47.** (D) **48.** (C) **49.** (C) **50.** (B)

46	दिसम्बर 2014	UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् III

नोट : इस प्रश्नपत्र में **पचहत्तर (75)** बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के **दो (2)** अङ्क हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. ऋक्सामच्छन्दोयजूंषि कस्मात् समुत्पन्नानि ?

(A) पुरुषविशेषात् (B) यज्ञ-विशेषात्
(C) वाचः (D) पृथिव्याः

स्रोत–वैदिकसूक्तसंग्रह - विजयशंकर पाण्डेय, पेज–109

2. ऋग्वैदिकसूक्तविशेषे 'दोषावस्तर्' इति पदस्य कोऽर्थः ?

(A) प्रतिदिनम् (B) रात्रिन्दिवा
(C) अन्धकारः (D) अन्धकारनाशकः

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह (1.1.7) - हरिदत्तशास्त्री, पेज–59

3. पापाचारिणो दस्योर्नाशकः वैदिकदेवः ?

(A) इन्द्रः (B) अग्निः
(C) पूषन् (D) वरुणः

स्रोत–वैदिकसूक्तसंग्रह - विजयशंकर पाण्डेय, पेज–73

4. ऋग्वैदिकहिरण्यगर्भसूक्तस्य का देवता ?

(A) अग्निः (B) इन्द्रः
(C) प्रजापतिः (D) वरुणः

स्रोत–वैदिकसूक्तसंग्रह - विजयशंकर पाण्डेय, पेज–116

5. छान्दोग्यब्राह्मणं केन सम्बद्धम् ?

(A) ऋग्वेदेन (B) यजुर्वेदेन
(C) सामवेदेन (D) अथर्ववेदेन

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–118

6. 'सृष्टि-स्थिति-प्रलय' विषयकं विवेचनम् उपलभ्यते –

(A) नासदीयसूक्ते (B) इन्द्रसूक्ते
(C) पृथिवीसूक्ते (D) कालसूक्ते

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्त शास्त्री, पेज–430

7. 'कठोपनिषद्' केन वेदेन सम्बद्धा ?

(A) ऋग्वेदेन (B) अथर्ववेदेन
(C) शुक्लयजुर्वेदेन (D) कृष्णयजुर्वेदेन

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–09

8. कृष्णयजुर्वेदस्य आरण्यकम् अस्ति –

(A) छान्दोग्यारण्यकम् (B) ऐतरेयारण्यकम्
(C) शांखायनारण्यकम् (D) तैत्तिरीयारण्यकम्

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–09

9. कः वेदानां भाष्यकारः न अस्ति ?

(A) माधवाचार्यः (B) सायणाचार्यः
(C) मल्लिनाथः (D) यास्काचार्यः

स्रोत–वैदिकसाहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–22-23

10. ऋक्प्रातिशाख्यानुसारेण स्वराणां ....सन्ति।

(A) त्रिविधभेदाः (B) चतुर्विधभेदाः
(C) पञ्चविधभेदाः (D) नवविधभेदाः

स्रोत–ऋग्वेदप्रातिशाख्यम् - वीरेन्द्रकुमार वर्मा, पेज–213

11. 'आत्मना विन्दते वीर्यं विद्यया विन्दतेऽमृतम्' इति उक्ति अस्ति –

(A) ईशावास्योपनिषदि (B) केनोपनिषदि
(C) कठोपनिषदि (D) बृहदारण्यकोपनिषदि

स्रोत–केनोपनिषद् (खण्ड-2 मन्त्र संख्या-4)

12. 'नैरुक्त्यं यत्र मन्त्रस्य विनियोगः प्रयोजनम्। प्रतिष्ठानं विधिश्चैव-----तदिहोच्यते॥' इति पूरयत

(A) आरण्यकम् (B) पुराणम्
(C) ब्राह्मणम् (D) सूक्तम्

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–113

13. आरण्यकानि सम्बद्धानि सन्ति–

(A) ब्रह्मचर्याश्रमेण (B) गृहस्थाश्रमेण
(C) वानप्रस्थाश्रमेण (D) संन्यासाश्रमेण

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–142

1. (B) **2.** (B, D) **3.** (A) **4.** (C) **5.** (C) **6.** (A) **7.** (D) **8.** (D) **9.** (C) **10.** (A) **11.** (B) **12.** (C) **13.** (C)

14. ''उच्चैरुदात्तः, नीचैरनुदात्तः, समाहारः स्वरितः'' इति सूत्राणां सूत्रकारः कः ?
(A) पतञ्जलिः (B) पाणिनिः
(C) सायणः (D) यास्कः
स्रोत–अष्टाध्यायी - ईश्वरचन्द्र, पेज–66-67

15. कः पाठः अष्टविधः ?
(A) क्रमपाठः (B) पदपाठः
(C) विकृतिपाठः (D) संहितापाठः
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–08

16. पाणिनीयशिक्षानुसारं वेदस्य श्रोत्रम् अस्ति –
(A) छन्दः (B) निरुक्तम्
(C) शिक्षा (D) व्याकरणम्
स्रोत–पाणिनीयशिक्षा (श्लोक-42)

17. 'कल्पसूत्रम्' इति पारिभाषिकी संज्ञा अस्ति –
(A) श्रौतसूत्राणाम् (B) गृह्यसूत्राणाम्
(C) धर्मसूत्राणाम् (D) श्रौत-गृह्य-धर्मसूत्राणाम्
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–214

18. 'छन्दः' इति वेदाङ्गस्य प्रतिनिधिग्रन्थः 'छन्दःसूत्रम्' केन रचितः ?
(A) पाणिनिना (B) पतञ्जलिना
(C) व्याडिमुनिना (D) पिङ्गलेन
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–199

19. 'निघण्टु' इति वैदिककोशस्य भाष्यरूपेण अस्ति –
(A) छन्दःसूत्रम् (B) महाभाष्यम्
(C) निरुक्तम् (D) शिक्षासूत्राणि
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–204

20. समीचीनम् उत्तरं चिनुत –
(अ) रक्तसंज्ञः 1. व्यञ्जनसन्निपातः
(ब) ईदूदेद्द्विवचनम् 2. समानाक्षराण्यादितः
(स) संयोगः 3. अनुनासिकः
(द) अष्टौ 4. प्रगृह्यम्

कूट :

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	4	2	3	1
(B)	3	4	1	2
(C)	1	2	3	4
(D)	3	2	4	1

स्रोत–ऋग्वेदप्रातिशाख्यम् - वीरेन्द्रकुमार वर्मा, पेज अ = 69, स = 70, द = 42, अष्टाध्यायी - ईश्वरचन्द्र, ब = 1.1.11 पेज–13

21. 'गौतमधर्मसूत्रम्' केन सम्बद्धम् ?
(A) ऋग्वेदेन (B) यजुर्वेदेन
(C) सामवेदेन (D) अथर्ववेदेन
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–236

22. 'उनत्तीति' निरुक्त्या अभिधीयते –
(A) उदक् (B) उषा
(C) आदित्यः (D) अग्निः
स्रोत–निरुक्तम् - विश्वेश्वर, पेज–224

23. कति भावविकाराः ?
(A) पञ्च (B) षड्
(C) सप्त (D) नव
स्रोत–निरुक्तम् - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–26

24. वर्णलोपस्य उदाहरणम् अस्ति –
(A) आस्थत् (B) ज्योतिः
(C) गतम् (D) द्वारः
स्रोत–निरुक्तम् - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–135

25. ''अथ गौरित्यत्र कः शब्दः'' इत्यनेन किं प्रतिपाद्यते ?
(A) ध्वनिः (B) स्फोटः
(C) मात्रा (D) स्वरः
स्रोत–महाभाष्य पश्पशाह्निक - मधुसूदन मिश्र, पेज–04

26. 'आनि लोट्' इत्यनेन किं विधीयते ?
(A) णत्वम् (B) षत्वम्
(C) कुत्वम् (D) मत्वम्
स्रोत–अष्टाध्यायी (8.4.16) - ईश्वरचन्द्र, पेज–1085

27. अधोऽङ्कितानां युग्मानां शुद्धां तालिकां चिनुत–
(अ) टिड्ढाणञ्द्वयसज्दघ्नञ्मात्रच्त-यप्ठक्ठञ्कञ्क्वरपः 1. ईद्यति
(ब) लोमादिपामादिपिच्छादिभ्यः शनेलचः 2. ऐधिषत
(स) आत्मनेपदेष्वनतः 3. यादृशी
(द) ग्लेयम् 4. पिच्छलः

कूट :

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	4	2	1	3
(B)	1	3	1	3
(C)	4	3	2	1
(D)	3	4	2	1

स्रोत–अष्टाध्यायी - ईश्वरचन्द्र, पेज– अ = (4.1.15) पेज–425, ब=(5.2.100) पेज–597, स=(7.1.5) पेज–835, द=(6.4.65) पेज–798

14. (B) **15.** (C) **16.** (B) **17.** (D) **18.** (D) **19.** (C) **20.** (B) **21.** (C) **22.** (A) **23.** (B) **24.** (C) **25.** (A) **26.** (A) **27.** (D)

28. 'धर्ममुच्चरते' इत्यत्र क्रियापदे आत्मनेपदविधायकं सूत्रं किम् ?

(A) उदश्चरः सकर्मकात् (B) अकर्मकाच्च
(C) पूर्ववत्सनः (D) समस्तृतीयायुक्तात्

स्रोत–व्याकरणसिद्धान्तकौमुदी (भाग-5) - गोविन्दाचार्य, पेज–413

29. 'अनुकरोति' इत्यत्र परस्मैपदविधायकं सूत्रं किम् ?

(A) अभिप्रत्यतिभ्यः क्षिपः (B) अनुपराभ्यां कृञः
(C) परेर्मृषः (D) व्याङ्परिभ्यो रमः

स्रोत–व्याकरणसिद्धान्तकौमुदी (भाग-5) - गोविन्दाचार्य, पेज–439

30. वाक्यपदीयकारेण स्फोटग्रहणाय कीदृशो ध्वनिर्निर्दिष्टः ?

(A) नित्यः (B) अनित्यः
(C) प्राकृतः (D) वैकृतः

स्रोत–वाक्यपदीयम् (ब्रह्मकाण्ड) कारिका–76

31. रङ्गवर्णे कति मात्राः निर्दिष्टाः ?

(A) एका मात्रा (B) द्वे मात्रे
(C) तिस्रो मात्राः (D) बह्व्यो मात्राः

स्रोत–पाणिनीयशिक्षा (श्लोक-28)

32. 'ग्रासमान-नियमः' केन सम्बद्धः अस्ति ?

(A) अर्थतत्त्वेन (B) ध्वनितत्त्वेन
(C) वाक्यतत्त्वेन (D) साहित्येन

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–241

33. का भारोपीया भाषा अस्ति ?

(A) ग्रीक (B) कन्नड
(C) तेलुगू (D) मलयालम

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–390

34. समुद्रगुप्तस्य भारतदिग्विजयः कस्मिन् शिलालेखे अस्ति ?

(A) मन्दसोरशिलालेखे
(B) एलाहाबादशिलालेखे
(C) गिरनारशिलालेखे
(D) एहोलशिलालेखे

स्रोत–भारतीय पुरालिपि अभिलेख एवं मुद्राएँ-शोभासत्यदेव, पेज–109,110

35. पृथिव्यां कतिविधं रूपमस्ति ?

(A) द्विविधम् (B) सप्तविधम्
(C) षड्विधम् (D) पञ्चविधम्

स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–49

36. गुणविधेः उदाहरणमस्ति –

(A) सोमेन यजेत
(B) दध्ना जुहोति
(C) राजा राजसूयेन
(D) दर्शपूर्णमासाभ्यां स्वर्गकामो यजेत

स्रोत–अर्थसंग्रह - सत्यप्रकाश शर्मा, पेज–42

37. प्रयोगविधेः सहकारिकारणानि भवन्ति –

(A) पञ्च (B) षट्
(C) सप्त (D) नव

स्रोत–अर्थसंग्रह - सत्यप्रकाश शर्मा, पेज–112

38. वेदान्तशास्त्रे प्रमेयं किं भवति ?

(A) ईश्वरः (B) जीवः
(C) विराट् (D) तुरीयचैतन्यम्

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–53

39. तत्त्वसाक्षात्कारोपायेष्वन्यतमः ?

(A) उपक्रमः (B) उपसंहारः
(C) अभ्यासः (D) निदिध्यासनम्

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–151

40. प्रकृतिः कतिभिः रूपैरात्मानं बध्नाति ?

(A) सप्तभिः (B) अष्टभिः
(C) पञ्चभिः (D) चतुर्भिः

स्रोत–सांख्यकारिका (का.63)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–321

**41. ''सुलभाः पुरुषा राजन् सततं प्रियवादिनः।
अप्रियस्य तु पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः॥''
श्लोकमुं रावणासुरम्प्रति कः उक्तवान् ?**

(A) कुम्भकर्णः (B) सुग्रीवः
(C) बालिः (D) मारीचः

स्रोत–वाल्मीकिरामायण - अरण्यकाण्ड, सर्ग-37 श्लोक-2

28.(A) **29.**(B) **30.**(C) **31.**(B) **32.**(B) **33.**(A) **34.**(B) **35.**(B) **36.**(B) **37.**(B) **38.**(D) **39.**(D) **40.**(A) **41.**(D)

42. रामायणे कस्मिन् काण्डे अहल्याशाप-विमोचन-वृत्तान्तोऽस्ति –

(A) अयोध्याकाण्डे (B) अरण्यकाण्डे
(C) बालकाण्डे (D) सुन्दरकाण्डे

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का इतिहास-उमाशंकरशर्मा 'ऋषि', पेज–125

43. भगवद्गीतायाः तृतीयाध्यायस्य नाम किम् –

(A) ज्ञानयोगः (B) कर्मयोगः
(C) साङ्ख्ययोगः (D) भक्तियोगः

स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (कोड-20) - गीताप्रेस, पेज-63

44. कस्मिन् पुराणे विविधशास्त्रसम्बन्धिनो विषयाः वर्तन्ते ?

(A) मत्स्यपुराणे (B) शिवपुराणे
(C) विष्णुधर्मोत्तरपुराणे (D) अग्निपुराणे

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का इतिहास-उमाशंकरशर्मा 'ऋषि', पेज–184

45. 'शतसाहस्री' इति कस्याभिधानमस्ति ?

(A) शब्दकल्पद्रुमस्य (B) रामायणस्य
(C) महाभारतस्य (D) वराहपुराणस्य

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का इतिहास-उमाशंकरशर्मा 'ऋषि', पेज–145

46. पुराणमिदमष्टादश-महापुराणेषु न गण्यते –

(A) नृसिंहसपुराणम् (B) विष्णुपुराणम्
(C) ब्रह्मपुराणम् (D) कूर्मपुराणम्

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का इतिहास-उमाशंकरशर्मा 'ऋषि', पेज–177

47. 'जय' इति कस्य नामान्तरम् ?

(A) रामायणस्य (B) महाभारतस्य
(C) रघुवंशस्य (D) किरातार्जुनीयस्य

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का इतिहास-उमाशंकरशर्मा 'ऋषि', पेज–147

48. ''ऋचः सामानि छन्दांसि पुराणं यजुषा सह'' इति कुतः उद्धृतः ?

(A) ऋग्वेदात् (B) अथर्ववेदात्
(C) रामायणात् (D) महाभारतात्

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–98

49. धर्मशास्त्रीय-व्यवहारस्य को विषयः ?

(A) स्मृत्याचारनिन्दा
(B) स्मृत्याचारविरुद्ध-परपीडा
(C) स्मृत्याचारप्रयुक्ता रुग्णता
(D) स्मृत्याचारप्रयुक्ता निर्धनता

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति (2/5) - गंगासागर राय, पेज–168

50. मनुस्मृत्यनुसारं सर्वव्यसनमूलं किम् ?

(A) कामः (B) क्रोधः
(C) लोभः (D) मोहः

स्रोत–मनुस्मृति (7/49) - गिरिधर गोपाल शर्मा, पेज–168

51. मनुमते साक्षाद्धर्मस्य लक्षणं कतिविधम् ?

(A) एकविधम् (B) द्विविधम्
(C) त्रिविधम् (D) चतुर्विधम्

स्रोत–मनुस्मृति (2/12) - गिरिधर गोपाल शर्मा, पेज–65

52. अमात्यपरीक्षोपायेषु नास्ति –

(A) धर्मोपधा (B) अर्थोपधा
(C) कामोपधा (D) मोक्षोपधा

स्रोत–कौटिलीय अर्थशास्त्र - वाचस्पति गैरोला, पेज–25-26

53. अधोलिखितेषु को गूढपुरुषो न भवति ?

(A) मन्त्री (B) सत्री
(C) तीक्ष्णः (D) रसदः

स्रोत–कौटिलीय अर्थशास्त्र - वाचस्पति गैरोला, पेज–29

54. अमात्यपरीक्षायाः कतिविध उपायः ?

(A) द्विविधः (B) त्रिविधः
(C) चतुर्विधः (D) पञ्चविधः

स्रोत–कौटिलीय अर्थशास्त्र - वाचस्पति गैरोला, पेज–28

55. 'स्त्रीणामशिक्षितपटुत्वममानुषीषु सन्दृश्यते' इति उक्ति कुत्र?

(A) उत्तररामचरिते (B) मालतीमाधवे
(C) मुद्राराक्षसे (D) अभिज्ञानशाकुन्तले

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (5/22) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–287

42.(C) **43.**(B) **44.** (D) **45.**(C) **46.** (A) **47.** (B) **48.** (B) **49.** (B) **50.** (C) **51.**(D) **52.** (D) **53.** (A) **54.**(C) **55.** (D)

56. रत्नावल्यां प्रधानरसः कः ?

(A) वीररसः (B) रौद्ररसः
(C) शान्तरसः (D) शृङ्गाररसः

स्रोत–रत्नावली - तारिणीश झा, भू. पेज–32

57. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत –

(अ) चलापाङ्गां दृष्टिं स्पृशसि बहुशो वेपथुमतीम् — 1. किरातार्जुनीयम्
(ब) गुणानुरोधेन विना न सत्क्रिया — 2. अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(स) क्षणमिह मम कण्ठे बाहुपाशं विधेहि — 3. शिशुपालवधम्
(द) पुरातनं त्वां पुरुषं पुराविदः — 4. रत्नावली

कूट :

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	1	2	3	4
(B)	2	1	4	3
(C)	3	2	1	4
(D)	4	3	2	1

स्रोत– अ=अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/24), ब =किरातार्जुनीयम् (1/12), स = रत्नावली (3/17), द = शिशुपालवधम् (1/33)

58. 'वियति विसारिणी शष्पपंक्तिमिव आरचयन्तः' इत्यत्र कः अलङ्कारः ?

(A) उपमा (B) अर्थान्तरन्यासः
(C) उत्प्रेक्षा (D) विरोधाभासः

स्रोत–कादम्बरी कथामुख - तारिणीश झा, पेज–200

59. 'कादम्बरी' इति शब्दस्य कोऽर्थः ?

(A) भीरुस्त्री (B) अप्सरा
(C) मदिरा (D) परिचारिका

स्रोत–कादम्बरी कथामुख - तारिणीश झा, भू. पेज–41

60. शान्तमिदमाश्रमपदं स्फुरति च बाहुः कुतः फलमिहास्य। अथवा भवितव्यानां द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र॥ अत्र कोऽलङ्कारः ?

(A) उपमा (B) अर्थान्तरन्यासः
(C) रूपकम् (D) विभावना

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/16) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–38

61. कति अर्थप्रकृतयः ?

(A) षट् (B) पञ्च
(C) सप्त (D) दश

स्रोत–दशरूपक (1/18) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज–22

62. दृष्टनष्टस्य बीजस्य अन्वेषणं भवति –

(A) प्रतिमुखसन्धिः (B) मुखसन्धिः
(C) निर्वहणसन्धिः (D) गर्भसन्धिः

स्रोत–दशरूपक (1/36) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज–55

63. 'इति हेतुस्तदुद्भवे' काव्यनिर्माणविषये कस्य मतमेतत् ?

(A) जगन्नाथस्य (B) हेमचन्द्रस्य
(C) मम्मटस्य (D) वाग्भटस्य

स्रोत–काव्यप्रकाश (1/3) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–16

64. क्रियायाः प्रतिषेधेऽपि फलव्यक्तिः..........।

(A) विशेषोक्तिः (B) समासोक्तिः
(C) विभावना (D) निदर्शना

स्रोत–काव्यप्रकाश (सूत्र-161) - विश्वेश्वर, पेज–498

65. 'ध्वन्यालोकः' इत्यस्मिन् ग्रन्थे कति उद्योताः सन्ति ?

(A) चत्वारः (B) पञ्च
(C) षट् (D) सप्त

स्रोत–ध्वन्यालोक - आचार्य विश्वेश्वर, भू. पेज–36

66. नाट्यशास्त्रस्य 'अभिनवभारती' व्याख्यायाः कर्ता कः ?

(A) आनन्दवर्धनः (B) अभिनवगुप्तः
(C) धनञ्जयः (D) भरतः

स्रोत–नाट्यशास्त्र - ब्रजमोहन चतुर्वेदी, भू. पेज–10

67. कालक्रमानुसारेण कस्तावत् अर्वाचीनः ?

(A) भरतः (B) जगन्नाथः
(C) विश्वनाथः (D) भामहः

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का इतिहास-उमाशंकरशर्मा 'ऋषि', पेज–589

68. काव्यप्रकाशस्य मङ्गलश्लोके कस्याः प्रशंसा कृता ?

(A) सरस्वत्याः (B) पार्वत्याः
(C) कविभारत्याः (D) दुर्गायाः

स्रोत–काव्यप्रकाश (1/1) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–5

56.(D) **57.**(B) **58.**(C) **59.**(C) **60.**(B) **61.**(B) **62.**(D) **63.**(C) **64.**(C) **65.**(A) **66.**(B) **67.**(B) **68.**(C)

69. 'यत्रार्थः शब्दो वा तमर्थमुपसर्जनीकृतस्वार्थौ व्यङ्क्तः काव्यविशेषो' भवति –

(A) गुणीभूतव्यङ्ग्यम् (B) ध्वनिः
(C) अलङ्कारध्वनिः (D) चित्रकाव्यम्

स्रोत–ध्वन्यालोक (1/13) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–37

70. तर्कसङ्ग्रहानुसारं कति द्रव्याणि ?

(A) पञ्च (B) सप्त
(C) नव (D) एकादश

स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–28

71. वाक्यार्थज्ञाने हेतुः अस्ति –

(A) निगमनम् (B) प्रतिज्ञा
(C) हेतुः (D) सन्निधिः

स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–108

72. 'द्रव्यगुणकर्मसामान्यविशेषसमवायाभावाः' इति –

(A) गुणाः (B) अपवादाः
(C) पदार्थाः (D) स्पर्शाः

स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–27

73. तर्कसङ्ग्रहानुसारं प्रमाणानि सन्ति –

(A) त्रीणि (B) चत्वारि
(C) पञ्च (D) षट्

स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, भू. पेज–16

74. 'प्रमा' इत्युच्यमाने अधोलिखितेषु कस्य निरसनं भवति ?

(A) प्रमितिः (B) अनुमितिः
(C) स्मृतिः (D) उपमितिः

स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज–13

75. प्रमायाः करणं किम् ?

(A) प्रमाता (B) प्रमेयः
(C) प्रमाणम् (D) इन्द्रियार्थसन्निकर्षः

स्रोत–तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पेज–12

69. (B) **70.** (C) **71.** (D) **72.** (C) **73.** (B) **74.** (C) **75.** (C)

47	जून 2015	UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् II

सूचना – अस्मिन् प्रश्नपत्रे पञ्चाशत् परिमिताः **(50)** बहु-वैकल्पिकाः प्रश्नाः सन्ति। प्रत्येकं प्रश्नस्य अङ्कद्वयं वर्तते।

1. श्वेताश्वतरोपनिषद् केन वेदेन सम्बद्धा?
(A) अथर्ववेदेन (B) ऋग्वेदेन
(C) यजुर्वेदेन (D) सामवेदेन
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–09

2. 'उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान् निबोधत' इति कुत्र उपदिष्टम्?
(A) ईशावास्योपनिषदि (B) कठोपनिषदि
(C) आपस्तम्बधर्मसूत्रे (D) माण्डूक्योपनिषदि
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–176

3. 'मण्डलक्रमः' केन वेदेन सम्बद्धः?
(A) अथर्ववेदेन (B) ऋग्वेदेन
(C) यजुर्वेदेन (D) सामवेदेन
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–47

4. अथर्ववेदीयं ब्राह्मणं किम्?
(A) शतपथब्राह्मणम् (B) गोपथब्राह्मणम्
(C) तैत्तिरीयब्राह्मणम् (D) ऐतरेयब्राह्मणम्
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–10

5. ''स्वसारं त्वा कृणवै मा पुनर्गा,
अप ते गवां सुभगे भजाम।''
इति मन्त्रांशः कुतः उद्धृतः?
(A) पुरुरवा-उर्वशी-संवादात्
(B) यम-यमी-संवादात्
(C) सरमा-पणि-संवादात्
(D) विश्वामित्र-नदी-संवादात्
स्रोत–ऋग्वेद (10.108-09) - सरमापणि संवादसूक्त मन्त्र-09

6. अन्तरिक्षस्थानीया देवता का?
(A) रुद्रः (B) सोमः
(C) अग्निः (D) बृहस्पतिः
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–296

7. 'प्रधानञ्च षट्स्वङ्गेषु' किम्?
(A) कल्पः (B) छन्दः
(C) शिक्षा (D) व्याकरणम्
स्रोत–महाभाष्य पश्पशाह्निक - मधुसूदन मिश्र, पेज–10

8. 'सर्वलघुः' इति को गणः?
(A) जगणः (B) मगणः
(C) नगणः (D) सगणः
स्रोत–वृत्तरत्नाकर - धरानन्द शास्त्री, पेज–20

9. 'व्' वर्णः अस्ति–
(A) ओष्ठ्यः (B) ऊष्मः
(C) अन्तःस्थः (D) दन्त्यः
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–20

10. 'शुल्बसूत्राणि' केन वेदाङ्गेन सम्बद्धानि?
(A) व्याकरणेन (B) कल्पेन
(C) छन्दसा (D) निरुक्तेन
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–214

11. 'सत्त्वप्रधानम्' इति मन्यते–
(A) उपसर्गः (B) नाम
(C) आख्यातम् (D) निपातः
स्रोत–निरुक्तम् - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–18

12. 'पदपाठ' इत्यस्य परमं प्रयोजनम् अस्ति–
(A) पदनिर्माणम् (B) शब्दनिर्माणम्
(C) वेदपाठरक्षणम् (D) मन्त्रगानम्
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–08

13. प्रायश्चित्तकर्माणि भवन्ति–
(A) हननादीनि (B) सन्ध्यावन्दनादीनि
(C) ज्योतिष्टोमादीनि (D) चान्द्रायणादीनि
स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–14

1. (C) **2.** (B) **3.** (B) **4.** (B) **5.** (C) **6.** (A) **7.** (D) **8.** (C) **9.** (C) **10.** (B) **11.** (B) **12.** (C) **13.** (D)

14. अधोलिखितेषु अनिर्वचनीयं भवति–

(A) जीवस्वरूपम् (B) अज्ञानम्
(C) जगत्स्वरूपम् (D) ईश्वरस्वरूपम्

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–37

15. वेदान्तसारे अज्ञानस्य शक्तिः–

(A) द्विविधा (B) त्रिविधा
(C) चतुर्विधा (D) पञ्चविधा

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–56

16. वेदान्तसारे लिङ्गशरीराणि–

(A) षोडशावयवानि (B) पञ्चदशावयवानि
(C) सप्तदशावयवानि (D) एकादशावयवानि

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–65

17. साङ्ख्यमतानुसारं सत्त्वगुणः–

(A) सुखात्मकः (B) दुःखात्मकः
(C) अभावात्मकः (D) मोहात्मकः

स्रोत–सांख्यकारिका (का. 12)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–135

18. साङ्ख्यमते पङ्गुवद् वर्तते–

(A) प्रधानम् (B) पुरुषः
(C) गुणत्रयम् (D) अन्तःकरणम्

स्रोत–सांख्यकारिका (का. 21)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–193

19. त्रैगुण्यविपर्ययात् किं सिद्धम्?

(A) प्रधानम् (B) पुरुषैकत्वम्
(C) पुरुषबहुत्वम् (D) अज्ञानम्

स्रोत–सांख्यकारिका (का. 18)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–180

20. साङ्ख्यकारिकायां सर्गस्य कारणम्–

(A) पुरुषः (B) ईश्वरः
(C) प्रधानम् (D) पुरुष-प्रकृति-संयोगः

स्रोत–सांख्यकारिका (का. 21)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–193

21. न्यायवैशेषिकमतानुसारं पदार्थाः–

(A) षट् (B) षोडश
(C) नव (D) सप्त

स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–27

22. तर्कसङ्ग्रहानुसारं पृथिव्यां रूपम्–

(A) षड्विधम् (B) सप्तविधम्
(C) अष्टविधम् (D) नवविधम्

स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–49

23. तर्कसङ्ग्रहानुसारं 'न्यूनदेशवृत्ति' इति लक्षणम्–

(A) अभावस्य (B) परसामान्यस्य
(C) अपरसामान्यस्य (D) विशेषस्य

स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–31

24. तर्कसङ्ग्रहानुसारं अनुमानं नाम–

(A) लिङ्गज्ञानम् (B) व्याप्तिः
(C) उदाहरणम् (D) लिङ्गपरामर्शः

स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–84

25. सर्वनामस्थानसंज्ञकं सूत्रं किम्?

(A) सर्वादीनि सर्वनामानि (B) सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ
(C) सुडनपुंसकस्य (D) स्वादिष्वसर्वनामस्थाने

स्रोत–अष्टाध्यायी (1.1.42) - ईश्वरचन्द्र, पेज–25

26. 'सुप्तिङन्तं पदम्' इति सूत्रम् अतिरिच्य पदसंज्ञाविधायकं सूत्रं किम्?

(A) पदस्य (B) पदात्
(C) पदान्तस्य (D) स्वादिष्वसर्वनामस्थाने

स्रोत–अष्टाध्यायी (1.4.14) - ईश्वरचन्द्र, पेज–114

27. वीप्सार्थे द्योत्ये का विभक्तिर्गम्यते?

(A) तृतीया (B) पञ्चमी
(C) द्वितीया (D) सप्तमी

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–34

28. उपपदसञ्ज्ञाविधायकं सूत्रं किम्?

(A) कर्मण्यण् (B) उपपदमतिङ्
(C) तत्रोपपदं सप्तमीस्थम् (D) कुगतिप्रादयः

स्रोत–अष्टाध्यायी (3.1.92) - ईश्वरचन्द्र, पेज–289

29. 'शोभनो राजा' इत्यस्य समस्तपदं किम्?

(A) सुराजः (B) सुराजा
(C) सुराजी (D) सुराज्ञी

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज–133

14. (B) **15.** (A) **16.** (C) **17.** (A) **18.** (B) **19.** (C) **20.** (D) **21.** (D) **22.** (B) **23.** (C) **24.** (D) **25.** (C) **26.** (D) **27.** (C) **28.** (C) **29.** (B)

30. अधस्तनयुग्मेभ्यः समीचीना तालिका चेतव्या–

(अ) कृञः प्रतियत्ने (i) योजनं योजने वा

(ब) अभाषितपुंस्काच्च (ii) गङ्कका, गङ्गिका

(स) कालात् सप्तमी च वक्तव्या (iii) कुम्भकारः

(द) तत्रोपपदं सप्तमीस्थम् (iv) एधो दकस्योपस्करणम्

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	(iv)	(ii)	(i)	(iii)
(B)	(iii)	(ii)	(i)	(iv)
(C)	(iv)	(iii)	(i)	(ii)
(D)	(ii)	(i)	(iii)	(iv)

स्रोत–अष्टाध्यायी - ईश्वरचन्द्र, पेज– अ 2.3.53 पेज–211, ब = 7.3.48 पेज–935, स = कारक प्रकरण आद्याप्रसाद पेज–69, द = 3.1.92 पेज–289

31. गुणवाचकास्त्रीलिङ्गे का विभक्तिव्यवस्था?

(A) तृतीया-पञ्चम्यौ (B) द्वितीया-तृतीया-पञ्चम्यः

(C) षष्ठी-सप्तम्यौ (D) द्वितीया-चतुर्थ्यौ

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–69

32. अधस्तनेषु निष्ठा-संज्ञा कस्य भवति?

(A) तव्यत्-इत्यस्य (B) तव्य-इत्यस्य

(C) क्तवतु-इत्यस्य (D) अनीयर्-इत्यस्य

स्रोत–अष्टाध्यायी (1.1.25) - ईश्वरचन्द्र, पेज–19

33. संज्ञार्थप्रयुक्ते 'मामकी' इति पदे ''ङीप्'' इत्यस्य–

(A) नित्यविधिः (B) निषेधः

(C) वैकल्पिक-प्रवृत्तिः (D) अशुद्ध-प्रयोगः

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी भैमी व्याख्या भाग-6, पेज–92

34. किं तत्त्वं वियोगात्मक-भाषा-प्रकृति-लक्षणम्?

(A) सङ्ख्या (B) अर्थः

(C) सन्धिः (D) प्रकृति-प्रत्यय-पार्थक्यम्

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–358

35. का भाषा 'केन्टुम'-वर्गेण असम्बद्धा–

(A) ग्रीकभाषा (B) इताली

(C) लैटिनभाषा (D) संस्कृतभाषा

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–385

36. तुलनात्मक-भाषाशास्त्रस्य अध्ययनस्य आरम्भकाले कयोः भाषयोः मध्ये ध्वनिसाम्यं प्रत्यक्षीकृतम्?

(A) संस्कृत-हिन्दी-मध्ये

(B) संस्कृत-लैटिन-मध्ये

(C) संस्कृत-फ़ारसी-मध्ये

(D) संस्कृत-फ्रांसीसी-मध्ये

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेवद्विवेदी, पेज–377-378

37. ''निर्गतासु न वा कस्य कालिदासस्य सूक्तिषु।
प्रीतिर्मधुरसान्द्रासु मञ्जरीष्विव जायते॥''
कस्मिन् ग्रन्थे उपलभ्यतेऽयं श्लोकः?

(A) हर्षचरिते

(B) अभिज्ञानशाकुन्तले

(C) रघुवंशे

(D) कादम्बर्याम्

स्रोत–हर्षचरितम् (1/16) - मोहनदेव पन्त, पेज-९

38. ''अकारणाविष्कृतवैरदारुणादसज्जनात् कस्य भयं न जायते।'' इत्यादि-श्लोकः कस्मिन् ग्रन्थेऽस्ति?

(A) रत्नावल्याम् (B) शिशुपालवधे

(C) कुमारसम्भवे (D) कादम्बर्याम्

स्रोत–कादम्बरी-कथामुख (श्लोक-5) - तारिणीश झा, पेज–7

39. 'मृच्छकटिकम्' इति कस्य रूपकस्य उदाहरणं भवति?

(A) समवकारस्य (B) नाटकस्य

(C) प्रकरणस्य (D) भाणस्य

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेवद्विवेदी, पेज–307

40. दशकुमारचरितस्य कस्मिन् चरिते सुरतमञ्जर्याः उपाख्यानमस्ति?

(A) अपहारवर्मचरिते (B) उपहारवर्मचरिते

(C) राजवाहनचरिते (D) पुष्पोद्भवचरिते

स्रोत–दशकुमारचरितम् (प्रथमोच्छ्वास) - विश्वनाथ झा, पेज-10

41. कृतककोपवृत्तान्तः कस्मिन् दृश्यकाव्ये वर्तते?

(A) मुद्राराक्षसे (B) मृच्छकटिके

(C) उत्तररामचरिते (D) वेणीसंहारे

स्रोत–मुद्राराक्षस (अंक-3) - पुष्पा गुप्ता, पेज–192

30. (A) **31.** (A) **32.** (C) **33.** (C) **34.** (D) **35.** (D) **36.** (B) **37.** (A) **38.** (D) **39.** (C) **40.** (C) **41.** (A)

42. अधस्तनयुग्मानां समीचीनतालिकां चिनुत–

(अ) उत्तररामचरितम् **(i) भासः**
(ब) बुद्धचरितम् **(ii) भवभूतिः**
(स) वेणीसंहारम् **(iii) भट्टनारायणः**
(द) स्वप्नवासवदत्तम् **(iv) अश्वघोषः**

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	(ii)	(iv)	(iii)	(i)
(B)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(C)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)
(D)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज– अ = 395, ब = 167, स = 381, द = 275

43. दुष्यन्तपुत्रस्य प्रथमं नाम किम् आसीत्?

(A) भरतः (B) दौष्यन्तिः
(C) सर्वदमनः (D) गौतमः

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू. पेज–99

44. शिशुपालवधमहाकाव्यस्य प्रथमसर्गस्य नाम किम्?

(A) कृष्णनारदसम्भाषणम् (B) नारदावतरणम्
(C) नारदगुणकीर्तनम् (D) कृष्णगुणकीर्तनम्

स्रोत–शिशुपालवधम् (प्रथम सर्ग) - तारिणीश झा, पेज–158

45. किं नाम अभिधापुच्छभूता भवति?

(A) व्यञ्जना (B) लक्षणा
(C) तात्पर्यम् (D) अर्थापत्तिः

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–251

46. विश्वनाथमते सङ्केतः गृह्यते................

(A) जातौ गुणे द्रव्ये क्रियायाञ्च
(B) केवलं जातिगुणयोः
(C) केवलं द्रव्ये
(D) केवलं क्रियायाम्

स्रोत–साहित्यदर्पण (2/4) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–27

47. विश्वनाथमते हास्यं कतिविधं भवति?

(A) चतुर्विधम् (B) त्रिविधम्
(C) द्विविधम् (D) षड्विधम्

स्रोत–साहित्यदर्पण (3/217) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–115

48. शृङ्गाररसो भवति–

(A) प्रमथदैवतः (B) विष्णुदैवतः
(C) गन्धर्वदैवतः (D) नारायणदैवतः

स्रोत–साहित्यदर्पण (3/186) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–106

49. काव्यलक्षणखण्डनविचारे कस्य मतं 'स्ववचनविरोधाद् अपास्तम्' इति विश्वनाथेन कथितम्?

(A) आनन्दवर्धनस्य (B) वामनस्य
(C) मम्मटस्य (D) व्यक्तिविवेककारस्य

स्रोत–ध्वन्यालोक (1/2) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–11

50. ''श्यामास्वङ्गं चकितहरिणीप्रेक्षणे दृष्टिपातं..........।'' इति पद्यांशः कस्मिन् ग्रन्थे उपलभ्यते?

(A) रघुवंशे (B) नैषधीयचरिते
(C) मेघदूते (D) बुद्धचरिते

स्रोत–उत्तरमेघ (श्लोक-46) - तारिणीश झा, पेज–82

42. (A) **43.** (C) **44.** (A) **45.** (B) **46.** (A) **47.** (D) **48.** (B) **49.** (A) **50.** (C)

48	जून 2015	UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् III

निर्देश – इस प्रश्नपत्र में **पचहत्तर (75)** बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं। प्रत्येक के **दो (2)** अङ्क हैं। **सभी** प्रश्न अनिवार्य है।

1. 'यस्यामापः परिचराः समानी-
रहोरात्रे अप्रमादं क्षरन्ति।'
मन्त्रांशोऽयं केन सूक्तेन सम्बद्धः?

(A) अग्निसूक्तेन (B) नासदीयसूक्तेन
(C) पृथिवीसूक्तेन (D) हिरण्यगर्भसूक्तेन

स्रोत–वैदिकसूक्तसंग्रह - विजयशंकर पाण्डेय, पेज–140

2. पुरुषसूक्तेन सम्बद्धा उक्तिः अस्ति–

(A) 'राजन्तमध्वराणां गोपामृतस्य दीदिविम्'
(B) 'यः पर्वतान् प्रकुपिताँ अरम्णात्'
(C) 'सः भूमिं विश्वतो वृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्'
(D) 'न मृत्युरासीदमृतं न तर्हि'

स्रोत–ऋग्वेद (10.90.01) ऋक्सूक्तसंग्रह-हरिदत्तशास्त्री, पेज–392

3. कः अग्निसूक्तस्य ऋषिः?

(A) मधुच्छन्दाः (B) प्रजापतिः
(C) हिरण्यगर्भः (D) विश्वामित्रः

स्रोत–वैदिकसूक्तसंग्रह - विजयशंकर पाण्डेय, पेज–31

4. ब्राह्मणग्रन्थानां प्रतिपाद्यविषयस्य कति प्रकाराः?

(A) द्वादश (B) षोडश
(C) चत्वारः (D) दश

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–115

5. ''आरण्यकञ्च वेदेभ्यः औषधिभ्योऽमृतं यथा'' इति उक्तम्–

(A) सायणेन (B) कृष्णद्वैपायनेन
(C) यास्केन (D) मनुना

स्रोत–वैदिकसाहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–157

6. 'त्रयः स्वराः' इत्यन्तर्गते न गण्यते–

(A) उदात्तः (B) आगमः
(C) स्वरितः (D) अनुदात्तः

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–326

7. प्रायः वेदेषु एव लभ्यते–

(A) लट्लकारः (B) लृट्लकारः
(C) लिट्लकारः (D) लेट्लकारः

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्त शास्त्री, पेज–32

8. अस्ति बाह्यप्रयत्नः–

(A) नादः (B) ईषत्स्पृष्टम्
(C) स्पृष्टम् (D) विवृतम्

स्रोत–ऋग्वेदप्रातिशाख्यम् - वीरेन्द्रकुमार वर्मा, पेज–679

9. ''तदिदं विद्यास्थानं व्याकरणस्य कात्स्न्र्यम्'' इत्यनेन लक्षितम्–

(A) कल्पः (B) छन्दस्
(C) निरुक्तम् (D) ज्योतिष्

स्रोत–निरुक्तम् - आचार्य विश्वेश्वर पेज–96

10. द्वात्रिंशत् अक्षराणि भवन्ति–

(A) बृहतीच्छन्दसि (B) पङ्क्तिच्छन्दसि
(C) जगतीच्छन्दसि (D) अनुष्टुप्

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–49

11. पादपूरणार्थकः निपातः अस्ति–

(A) इत् (B) च
(C) ननु (D) इव

स्रोत–निरुक्तम् - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–75

12. 'व्यञ्जनसन्निपातः' इति कथ्यते–

(A) प्रगृह्यः (B) अघोषः
(C) संयोगः (D) यमः

स्रोत–ऋग्वेदप्रातिशाख्यम् - वीरेन्द्रकुमार वर्मा, पेज–70

1. (C) **2.** (C) **3.** (A) **4.** (D) **5.** (B) **6.** (B) **7.** (D) **8.** (A) **9.** (C) **10.** (D) **11.** (A) **12.** (C)

13. यक्षरूपधारिणः परब्रह्मणः आख्यायिका उपलभ्यते–

(A) ईशावास्योपनिषदि (B) केनोपनिषदि

(C) कठोपनिषदि (D) तैत्तिरीयोपनिषदि

स्रोत–केनोपनिषद् (तृतीय खण्ड) - शिवप्रसाद द्विवेदी, पेज–23

14. ''मन एव त्वच्छ्रेयो मनसो वै त्वं...........'' इति उक्तम्–

(A) मनसा (B) वाचा

(C) नचिकेतसा (D) प्रजापतिना

स्रोत–शतपथब्राह्मण (1.4.5.11) वाङ्मनस् आख्यान

15. 'यद् दूरङ्गता भवति' इति निरुक्त्या किम् उपलक्ष्यते?

(A) गौः (B) समुद्रः

(C) नदी (D) मेघः

स्रोत–निरुक्तम् (2/2) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–153

16. 'अथ शीक्षां व्याख्यास्यामः' इत्युक्तिः कुतः उद्धृता–

(A) कठोपनिषदः (B) तैत्तिरीयोपनिषदः

(C) पाणिनीयशिक्षातः (D) याज्ञवल्क्यशिक्षातः

स्रोत–तैत्तिरीयोपनिषद् - चुन्नीलाल शुक्ल, पेज–07

17. अधोलिखितेषु नित्यकर्म भवति–

(A) ज्योतिष्टोमादि (B) सन्ध्यावन्दनादि

(C) चान्द्रायणादि (D) जातेष्ट्यादि

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–14

18. अजहल्लक्षणाया उदाहरणं भवति–

(A) शोणो धावति (B) तत्त्वमसि

(C) गङ्गायां घोषः (D) सोऽयं देवदत्तः

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–136

19. अधोलिखितेषु साक्षात्कारोपयोगि भवति–

(A) उपक्रमः (B) अपूर्वता

(C) निदिध्यासनम् (D) फलम्

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–157-158

20. अधस्तनेषु साधनचतुष्टये अन्तर्भवति–

(A) शमदमादिषट्कसम्पत्तिः (B) चन्दनम्

(C) उपक्रमः (D) उपसंहारः

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–20

21. वेदः कः?

(A) अपौरुषेयं वाक्यम्

(B) अङ्ग-प्रधान-सम्बन्ध-बोधकं वाक्यम्

(C) कर्मबोधकं वाक्यम्

(D) समभिव्याहारः वाक्यम्

स्रोत–अर्थसंग्रह - सत्यप्रकाश शर्मा, पेज–38

22. प्रयोगविधेः सहकारिप्रमाणानि–

(A) पञ्च (B) षट्

(C) सप्त (D) चत्वारि

स्रोत–अर्थसंग्रह - सत्यप्रकाश शर्मा, पेज–112

23. 'तत्र चान्यत्र च प्राप्तौ' इति कस्य लक्षणं भवति?

(A) अपूर्वविधेः (B) नियमविधेः

(C) अधिकारविधेः (D) परिसङ्ख्यायाः

स्रोत–अर्थसंग्रह - सत्यप्रकाश शर्मा, पेज–144

24. 'विरोधे गुणवादः स्यात्' इति लक्षणम्–

(A) नामधेयस्य (B) गुणविधेः

(C) अर्थवादस्य (D) मन्त्रस्य

स्रोत–अर्थसंग्रह - सत्यप्रकाश शर्मा, पेज–198

25. समीचीनतालिकां चिनुत–

(अ) घटः पटः न (i) प्रागभावः

(ब) इह घटो भविष्यति (ii) अन्योन्याभावः

(स) भूतले घटः न (iii) प्रध्वंसाभावः

(द) घटो ध्वस्तः (iv) अत्यन्ताभावः

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(B)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)
(C)	(iii)	(ii)	(i)	(iv)
(D)	(ii)	(i)	(iv)	(iii)

स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–122-124

26. अभावस्य प्रत्यक्षं भवति–

(A) संयोगसम्बन्धेन

(B) समवायसम्बन्धेन

(C) संयुक्त-समवाय-सन्निकर्षेण

(D) विशेषण-विशेष्य-भावसन्निकर्षेण

स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–80

13. (B) **14.** (D) **15.** (A) **16.** (B) **17.** (B) **18.** (A) **19.** (C) **20.** (A) **21.** (A) **22.** (B) **23.** (D) **24.** (C) **25.** (D) **26.** (D)

27. 'आप्तवाक्यं शब्दः' इति लक्षणम्–

(A) पदस्य (B) वाक्यस्य

(C) शब्दप्रमाणस्य (D) महावाक्यस्य

स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–107

28. 'एकस्मिन् धर्मिणि नानाधर्मावगाहि ज्ञानम्' इति लक्षणं भवति–

(A) अज्ञानस्य (B) समूहालम्बनज्ञानस्य

(C) संशयस्य (D) शाब्दज्ञानस्य

स्रोत–तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज–112

29. 'प्रतिविषयाध्यवसायः' इत्यस्य सम्बन्धः केन?

(A) अनुमानेन (B) आप्तवचनेन

(C) प्रत्यक्षेण (D) उपमानेन

स्रोत–सांख्यकारिका (का. 5) - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–52

30. 'प्रदीपवच्चार्थतो वृत्तिः' कस्य?

(A) प्रकृतेः (B) गुणत्रयस्य

(C) जलस्य (D) तेजसः

स्रोत–सांख्यकारिका (का. 13)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–145

31. 'ततोऽहङ्कारः' इति अहङ्कारस्य उत्पत्तिः कुतः भवति?

(A) प्रकृतेः (B) महतः

(C) षोडशगणात् (D) पञ्चभूतेभ्यः

स्रोत–सांख्यकारिका (का. 22)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–196

32. साङ्ख्यदर्शनानुसारं अध्यवसायात्मकं तत्त्वं किम्?

(A) बुद्धिः (B) चक्षुः

(C) त्वक् (D) कर्णः

स्रोत–सांख्यकारिका (का. 23)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–198

33. 'स वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति' इत्यनेन महाभाष्ये किमभिप्रेतम्?

(A) शब्दशुद्धिः (B) चित्तशुद्धिः

(C) कायशुद्धिः (D) व्यवहारशुद्धिः

स्रोत–महाभाष्य पशपशाह्निक - मधुसूदन मिश्र, पेज–12

34. 'यागात् स्वर्गो भवति' इत्यत्र भू-धातोः कः अर्थः?

(A) सत्ता (B) यागः

(C) स्वर्गः (D) उत्पत्तिः

35. अधोऽङ्कितानां युग्मानां समीचीना तालिका चेतव्या–

(अ) झयः **(i) भृत्यः**

(ब) मनोरौवा **(ii) शताद् बद्धः**

(स) भृञोऽसंज्ञायाम् **(iii) विद्युत्वान्**

(द) अकर्तर्यृणे पञ्चमी **(iv) मनुः**

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	(ii)	(iv)	(iii)	(i)
(B)	(iii)	(iv)	(i)	(ii)
(C)	(i)	(iii)	(ii)	(iv)
(D)	(iii)	(iv)	(ii)	(i)

स्रोत–अष्टाध्यायी - ईश्वरचन्द्र, अ = 5.4.11 पेज–652, ब = 4.1.38 पेज–432, स = 3.1.112 पेज–295, द = 2.3.24 पेज–202

36. 'सर्पिषो जानीते' इत्यत्र क्रियापदे आत्मनेपदविधायकं सूत्रं किम्?

(A) तङाऽऽनावाऽऽत्मनेपदम्

(B) कर्तरि कर्मव्यतिहारे

(C) अनुदात्तङित आत्मनेपदम्

(D) अकर्मकाच्च

स्रोत–वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (भाग-5)-गोविन्दाचार्य, पेज–406

37. 'उपरमति' इत्यत्र परस्मैपदविधायकं सूत्रं किम्?

(A) व्याङ्परिभ्यो रमः (B) अभिप्रत्यतिभ्यः क्षिपः

(C) अनुपराभ्यां कृञः (D) उपाच्च

स्रोत–व्याकरणसिद्धान्तकौमुदी (भाग-5) - गोविन्दाचार्य, पेज–444

38. ध्वनिस्फोटयोर्मध्ये कः सम्बन्धः?

(A) कार्यकारणभावः (B) शक्तिशक्तिमद्भावः

(C) गुणगुणिभावः (D) क्रियाक्रियावद्भावः

स्रोत–वाक्यपदीयम् ब्रह्मकाण्ड कारिका-25

27. (C) **28.** (C) **29.** (C) **30.** (B) **31.** (B) **32.** (A) **33.** (A) **34.** (D) **35.** (B) **36.** (D) **37.** (D) **38.** (A)

39. स्वीकृतं भर्तृहरिमते वाचः–

(A) चातुर्विध्यम् (B) त्रैविध्यम्

(C) द्वैविध्यम् (D) ऐकविध्यम्

स्रोत–वाक्यपदीयम् (ब्रह्मकाण्ड कारिका-20)

40. तृतीये सवने कीदृशः स्वरः प्रयोज्यः?

(A) गम्भीरः (B) मध्यमः

(C) तारः (D) कम्पः

स्रोत–पाणिनीयशिक्षा (श्लोक-8)

41. 'वज्रं पतति मस्तके' इति पद्यांशः कुत्रोक्तः?

(A) महाभाष्ये (B) अष्टाध्याय्याम्

(C) वाक्यपदीये (D) पाणिनीयशिक्षायाम्

स्रोत–पाणिनीयशिक्षा (श्लोक-53)

42. प्रसिद्धध्वनिनियमेषु अर्वाचीनतमः कः?

(A) वर्नरनियमः (B) ग्रासमाननियमः

(C) ग्रिमनियमः (D) विण्टरनिट्जनियमः

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–241

43. जिह्वाभागविशेषोच्चारणदृष्ट्या मध्यस्वरोऽस्ति–

(A) अकारः (B) इकारः

(C) उकारः (D) एकारः

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–150

44. आकृतिमूलकवर्गीकरणेन असम्बद्धम्–

(A) प्रकृतिः (B) प्रत्ययः

(C) उपसर्गः (D) व्यापारः

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेवद्विवेदी, पेज–364-365

45. पारिवारिकवर्गीकरणेन असम्बद्धम्–

(A) फलसाम्यम् (B) ध्वनिसाम्यम्

(C) पदसाम्यम् (D) अर्थसाम्यम्

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–373

46. संस्कृतभाषायाः 'शतम्' इति पदं गॉथिकभाषायाम् 'हुन्द' भवति; इति कस्य मतम्?

(A) ग्रिममहोदयस्य (B) वर्नरमहोदयस्य

(C) ग्रासमानमहोदयस्य (D) थॉम्पसनमहोदयस्य

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–247

47. अर्थपरिवर्तनकारणेष्वन्यतमम्–

(A) सादृश्यम् (B) आगमः

(C) लोपः (D) स्वरभक्तिः

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–342

48. ''ह्रतेऽपि भारे महतस्त्रपाभरादुवाह दुःखेन भृशानतं शिरः।'' कस्य वर्णना इयम्?

(A) कुबेरस्य (B) यमवाहनमहिषस्य

(C) इन्द्रस्य (D) वरुणस्य

स्रोत–शिशुपालवधम् (1/57) - तारिणीश झा, पेज–119

49. ''मदेकपुत्रा जननी जरातुरा............'' कस्येयमुक्तिः?

(A) दमयन्त्याः (B) हंसस्य

(C) भीमस्य (D) नलस्य

स्रोत–नैषधीयचरितम् (1/135) - बद्रीनाथ मालवीय, पेज–230

50. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत–

(अ) चीयते बालिशस्यापि सत्क्षेत्रपतिता कृषिः। (i) मृच्छकटिकम्

(ब) आसीत् स दोलाचलचित्तवृत्तिः। (ii) कर्णभारम्

(स) हृदये गृह्यते नारी यदीदं नास्ति गम्यताम्। (iii) रघुवंशम्

(द) हुतं च दत्तं च तथैव तिष्ठति। (iv) मुद्राराक्षसम्

	(अ)	(ब)	(स)	(स)
(A)	(iv)	(i)	(ii)	(iii)
(B)	(iii)	(ii)	(i)	(iv)
(C)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)
(D)	(iv)	(iii)	(i)	(ii)

स्रोत– अ=मुद्राराक्षस (1/3), ब=रघुवंशम् (14/34), स=मृच्छकटिकम् (1/50), द=कर्णभारम् (1/22)

51. ''न जाने भोक्तारं कमिह समुपस्थास्यति विधिः।'' केन छन्दसा विनिर्मितोऽयं श्लोकः?

(A) मन्दाक्रान्ता (B) हरिणी

(C) शिखरिणी (D) स्रग्धरा

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (2/10)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–115

52. ''वैदेहिबन्धोर्हृदयं विदद्रे'' इत्यत्र कस्तावत् वैदेहिबन्धुः–

(A) रामः (B) लक्ष्मणः

(C) रावणः (D) भरतः

स्रोत–रघुवंशम् (14/33) - कृष्णमणि त्रिपाठी, पेज–472

39. (B) **40.** (C) **41.** (D) **42.** (A) **43.** (A) **44.** (D) **45.** (A) **46.** (B) **47.** (A) **48.** (B) **49.** (B) **50.** (D) **51.** (C) **52.** (A)

53. रत्नावल्यां उदयनस्य कञ्चुकी कः?

(A) बाभ्रव्यः (B) यौगन्धरायणः
(C) वसन्तकः (D) विक्रमबाहुः

स्रोत–रत्नावली - तारिणीश झा, भू. पेज–43

54. कुरङ्गकेन हर्षचरिते किं कर्म कृतम्?

(A) चिकित्साकर्म (B) पूजाकर्म
(C) वार्ताप्रदानम् (D) भाग्यगणनम्

स्रोत–हर्षचरितम् (पञ्चम उच्छ्वास) - शिवनाथ पाण्डेय, पेज–16

55. ''सुवर्णपुष्पां पृथिवीं चिन्वन्ति पुरुषास्त्रयः।'' इत्यादि–श्लोकः कस्य उदाहरणरूपेण ध्वन्यालोके उल्लिखितः?

(A) आक्षेपालङ्कारस्य
(B) विशेषोक्त्यलङ्कारस्य
(C) अविवक्षितवाच्यस्य
(D) विवक्षितान्यपरवाच्यस्य

स्रोत–ध्वन्यालोक - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–56

56. ''नृत्तं..........।'' शून्यं स्थानं पूरयत।

(A) भावाश्रयम् (B) केवलं लयाश्रयम्
(C) केवलं तालाश्रयम् (D)ताललयाश्रयम्

स्रोत–दशरूपक (1/9) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज–11

57. प्राप्त्याशा भवति–

(A) फललाभाय औत्सुक्यमात्रम्।
(B) उपायापायशङ्काभ्यां प्राप्तिसम्भवः
(A) अप्राप्तौ अतित्वरान्वितः व्यापारः
(D) अपायाभावतः प्राप्तिः

स्रोत–दशरूपक - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज–24

58. ''निः शेषच्युतचन्दनं......''इत्यादि-श्लोके 'अत्र तदन्तिकमेव रन्तुं गतासि' इति व्यङ्ग्यं मम्मटेन कथं निर्धारितम्?

(A) प्राधान्येन 'अधम' पदेन।
(B) प्राधान्येन 'मिथ्यावादिनी' पदेन।
(C) 'निःशेष' शब्देन।
(D) 'निर्मृष्टरागोऽधरः' इति पदेन।

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–30

59. ''किञ्चित् पृष्टमपृष्टं वा कथितं यत् प्रकल्प्यते। तादृगन्यव्यपोहाय.............तु सा स्मृता॥'' रिक्तस्थानं पूरयत।

(A) उपमा (B) व्याजस्तुतिः
(C) अपह्नुतिः (D) परिसंख्या

स्रोत–काव्यप्रकाश - (सूत्र-184) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–526

60. दशरूपकमते नाटकस्य अङ्कसंख्या भवति–

(A) 5-7 (B) 5-8
(C) 5-10 (D) 7-10

स्रोत–दशरूपक (3/38) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज–226

61. रिक्तं स्थानं पूरयत–

''नाट्याख्यं.................वेदं सेतिहासं करोम्यहम्।''

(A) उत्तमम् (B) अपूर्वम्
(C) द्वितीयम् (D) पञ्चमम्

स्रोत–नाट्यशास्त्र (1/15) - बाबूलाल शुक्ल शास्त्री, पेज–5

62. ''सामान्यस्य द्विरेकस्य यत्र वाक्यद्वये स्थितिः।'' काव्यप्रकाशकारमते कोऽयम् अलङ्कारः?

(A) निदर्शना (B) प्रतिवस्तूपमा
(C) दृष्टान्तः (D) विशेषोक्तिः

स्रोत–काव्यप्रकाश (10/101) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–484

63. 'स तप्तकार्त्तस्वरभास्वराम्बरः..............'' इति शिशुपालवधस्य श्लोकांशे 'कार्त्तस्वर'–पदस्य कोऽर्थः?

(A) रजतम् (B) ताम्रम्
(C) सुवर्णम् (D) स्फटिकम्

स्रोत–शिशुपावधम् (1/20) - तारिणीश झा, पेज–45

64. कस्य काव्यं 'विद्वदौषधं' कथ्यते?

(A) माघस्य (B) श्रीहर्षस्य
(C) कालिदासस्य (D) अश्वघोषस्य

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेवद्विवेदी, पेज–234

53. (A)	**54.** (C)	**55.** (C)	**56.** (D)	**57.** (B)	**58.** (A)	**59.** (D)	**60.** (C)	**61.** (D)	**62.** (B)	**63.** (C)	**64.** (B)

65. ''सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च।''

इत्याद्युक्तिः केन सम्बद्धा?

(A) वेदलक्षणेन (B) ज्योतिषलक्षणेन

(C) महाकाव्यलक्षणेन (D) पुराणलक्षणेन

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेवद्विवेदी, पेज–94

66. एषु कस्य देशस्य नाम हरिषेणस्य एलाहाबाद-शिलालेखे नास्ति?

(A) समतटः (B) डवाकः

(C) कामरूपः (D) चीनः

प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख (भाग-2)-परमेश्वरीलाल गुप्ता, पेज-09

67. अर्थशास्त्रकारमते विद्या कतिविधा?

(A) द्विविधा (B) त्रिविधा

(C) चतुर्विधा (D) पञ्चविधा

स्रोत–कौटिलीय-अर्थशास्त्र - वाचस्पति गैरोला, पेज–8

68. अर्थशास्त्रतः रिक्तं स्थानं पूरयत–

''कृषिपशुपाल्ये वणिज्या च...............।''

(A) वार्त्ता (B) आन्वीक्षिकी

(C) त्रयी (D) दण्डनीतिः

स्रोत–कौटिलीय-अर्थशास्त्र (1/3) वाचस्पति गैरोला, पेज–12

69. यस्य कथा रामायणाश्रिता नास्ति–

(A) रघुवंशस्य (B) भट्टिकाव्यस्य

(C) जानकीहरणस्य (D) किरातार्जुनीयस्य

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का इतिहास-उमाशंकरशर्मा 'ऋषि', पेज–243

70. 'जय' इति कस्य महाकाव्यस्य नामान्तरम्?

(A) रामायणस्य (B) महाभारतस्य

(C) रघुवंशस्य (D) शिशुपालवधस्य

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का इतिहास-उमाशंकरशर्मा 'ऋषि', पेज–147

71. मनुसंहितायां कस्य दुर्गस्य समाश्रयणं बहुधा प्रशंसितम्?

(A) धन्वदुर्गस्य (B) अब्दुर्गस्य

(C) महीदुर्गस्य (D) गिरिदुर्गस्य

स्रोत–मनुस्मृति (7/71) - गिरिधर गोपाल शर्मा, पेज–177

72. मनुसंहितायां कति क्रोधजानि व्यसनानि?

(A) अष्टौ (B) नव

(C) दश (D) सप्त

स्रोत–मनुस्मृति (7/45) – गिरिधर गोपाल शर्मा, पेज–166

73. ''श्रुतिस्तु वेदो विज्ञेयो धर्मशास्त्रं तु वै स्मृतिः।''– इति मनुसंहितायां कस्मिन्नध्याये उपलभ्यते?

(A) प्रथमाध्याये (B) द्वितीयाध्याये

(C) तृतीयाध्याये (D) सप्तमाध्याये

स्रोत–मनुस्मृति (2/10) - गिरिधर गोपाल शर्मा, पेज–63

74. अभियोगे साक्ष्ये च दोषत्वेन न गण्यते–

(A) धनविकृतिः (B) कर्मविकृतिः

(C) मनोविकृतिः (D) वाग्विकृतिः

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति (2/15) - गंगासागर राय, पेज–175

75. साक्षिगुणान्यतमो नास्ति–

(A) तपस्विता (B) सत्यवादिता

(C) कूटसाक्षिता (D) धनान्विता

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति (2/68-69) - गंगासागर राय, पेज–215

65. (D) **66.** (D) **67.** (C) **68.** (A) **69.** (D) **70.** (B) **71.** (D) **72.** (A) **73.** (B) **74.** (A) **75.** (C)

49	दिसम्बर 2015	UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् II

नोट : इस प्रश्नपत्र में **पचास (50)** बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के **दो (2) अङ्क** हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. 'रोदसी' - पदस्य कोऽर्थः ?

(A) अन्तरिक्षम् (B) अहोरात्रे
(C) द्यावापृथिवी (D) रुद्रः

स्रोत–वैदिकसूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 2.12.1)–विजयशंकर पाण्डेय, पेज–65

2. अधस्तादृत्तेषु कः वंशमण्डलेन सम्बद्धः नास्ति ?

(A) अत्रिः (B) गौतमः
(C) वामदेवः (D) विश्वामित्रः

स्रोत– वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-47,49

3. पातञ्जलमहाभाष्यानुसारम् अथर्ववेदस्य शाखाः सन्ति –

(A) 5 (B) 100
(C) 21 (D) 9

स्रोत– वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-98

4. 'योऽसावादित्ये पुरुषः सोऽसावहम्'– इति वाक्यं कुत्र वर्तते ?

(A) ऋग्वेदे (B) अथर्ववेदे
(C) यजुर्वेदे (D) सामवेदे

स्रोत– वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-76

5. सायणाचार्यः सर्वप्रथमं कं वेदं व्याख्यातवान् ?

(A) यजुर्वेदम् (B) ऋग्वेदम्
(C) सामवेदम् (D) अथर्ववेदम्

स्रोत– वैदिक साहित्य का इतिहास- पारसनाथ द्विवेदी, पेज- 13

6. द्युस्थानदेवता विद्यते –

(A) इन्द्रः (B) सूर्यः
(C) विष्णुः (D) वायुः

स्रोत– वैदिक माइथोलॉजी- रामकुमार राय, पेज- 70

7. 'त्रिष्टुप्'–छन्दसि कियन्तो वर्णाः भवन्ति ?

(A) 28 (B) 36
(C) 44 (D) 48

स्रोत– वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-203

8. आश्वलायनगृह्यसूत्रं केन वेदेन सम्बद्धं विद्यते ?

(A) अथर्ववेदेन (B) यजुर्वेदेन
(C) ऋग्वेदेन (D) सामवेदेन

स्रोत– वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-227

9. वाधूलश्रौतसूत्रं कस्य वेदस्य वर्तते ?

(A) सामवेदस्य (B) कृष्णयजुर्वेदस्य
(C) ऋग्वेदस्य (D) अथर्ववेदस्य

स्रोत– वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-215

10. श्रोत्रस्थानीयं वेदाङ्गं निरूपितमस्ति–

(A) निरुक्तम् (B) शिक्षा
(C) कल्पः (D) छन्दः

स्रोत– वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-190

11. कठोपनिषदि नचिकेतसः पिता कं यागमनुष्ठितवान् ?

(A) अश्वमेधयागम् (B) सर्वमेधयागम्
(C) सर्वजिद्यागम् (D) पितृमेधयागम्

स्रोत– वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-175

1. (C)	**2.** (B)	**3.** (D)	**4.** (C)	**5.** (A)	**6.** (C)	**7.** (C)	**8.** (C)	**9.** (B)	**10.** (A)	**11.** (B)

12. माध्यन्दिनीयसंहितायां 'शतरुद्रीय-होममन्त्राः' कस्मिन् अध्याये समुक्ताः ?

(A) अष्टादशे (B) सप्तदशे

(C) पञ्चदशे (D) षोडशे

स्रोत– वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-74

13. 'शतपथब्राह्मणस्य' आङ्ग्लानुवादः कृतो वर्तते –

(A) जी. थीबोमहोदयेन (B) जे. एग्लिंगमहोदयेन

(C) एम. विलियम्समहोदयेन (D) डब्लू. कैलेण्डमहोदयेन

स्रोत– वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-34

14. विलुप्ता 'मौद' शाखा कस्य वेदस्य वर्तते ?

(A) सामवेदस्य (B) ऋग्वेदस्य

(C) अथर्ववेदस्य (D) शुक्लयजुर्वेदस्य

स्रोत– वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-98

15. निर्वचनसिद्धान्त-प्रतिपादकं वेदाङ्गं विद्यते –

(A) कल्पशास्त्रम् (B) छन्दःशास्त्रम्

(C) शिक्षा (D) निरुक्तम्

स्रोत– वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-203

16. सांख्यदर्शनानुसारं पुरुषस्वरूपेण सम्बद्धा उक्तिः अस्ति –

(A) रूपैः सप्तभिरेव तु बध्नात्यात्मानमात्मना

(B) पुरुषस्य दर्शनार्थं, कैवल्यार्थं तथा प्रधानस्य

(C) तद्विपरीतस्तथा च पुमान्

(D) संसरति बद्ध्यते मुच्यते च

स्रोत– सांख्यकारिका- (का0-11)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-129

17. अहङ्कारस्य उत्पत्तिः कुतः भवति ?

(A) महतः (B) प्रकृतेः

(C) पञ्चभूतेभ्यः (D) इन्द्रियेभ्यः

स्रोत– सांख्यकारिका-(का.-22)-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-196

18. सांख्यदर्शनानुसारं प्रमाणानां संख्या अस्ति –

(A) द्वौ (B) त्रयः

(C) चत्वारः (D) षड्

स्रोत– सांख्यकारिका - (का.-4) सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-47

19. सांख्यमते 'सत्त्वरजस्तमसां साम्यावस्था' भवति –

(A) पुरुषस्य (B) सृष्टेः

(C) प्रकृतेः (D) बुद्धेः

स्रोत– सांख्यकारिका- (तत्त्वकौमुदी) आद्याप्रसादमिश्र, पेज-172

20. अनुबन्धचतुष्टये न गण्यते –

(A) सम्बन्धः (B) विषयः

(C) चैतन्यम् (D) प्रयोजनम्

स्रोत– वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-09

21. वेदान्तसारानुसारम् 'अग्नेः' किम् उत्पद्यते ?

(A) आपः (B) पृथिवी

(C) वायुः (D) आकाशः

स्रोत– वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-62

22. 'गुरूपदिष्टवेदान्तवाक्येषु विश्वासः' किं कथ्यते ?

(A) मुमुक्षुत्वम् (B) उपरतिः

(C) श्रद्धा (D) शमः

स्रोत– वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-20

23. 'अज्ञानादिसकलजडसमूहः' इति उच्यते –

(A) वस्तु (B) अवस्तु

(C) अध्यारोपः (D) समष्टिः

स्रोत– वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-37

24. न्यायदर्शनानुसारं किं प्रमाणरूपेण न स्वीक्रियते ?

(A) अनुमानम् (B) अर्थापत्तिः

(C) उपमानम् (D) शब्दः

स्रोत– तर्कभाषा - श्रीनिवासशास्त्री, पेज-50

12. (D) **13.** (B) **14.** (C) **15.** (D) **16.** (C) **17.** (A) **18.** (B) **19.** (C) **20.** (C) **21.** (A) **22.** (C) **23.** (B) **24.** (B)

25. 'सुखाद्युपलब्धिसाधनमिन्द्रियं' किम् ?

(A) रसना (B) घ्राणम्

(C) मनः (D) चक्षुः

स्रोत– तर्कसंग्रह - आद्याप्रसादमिश्र, पेज-28

26. 'शक' इत्यत्र टिसंज्ञा कस्यांशस्य भवति ?

(A) 'क' इत्यस्य

(B) 'श' इत्यस्य

(C) ककारोत्तरवर्तिनः अकारस्य

(D) शकारोत्तरवर्तिनः अकारस्य

स्रोत–अष्टाध्यायी (अचोऽन्त्यादि टि 1.1.63)-ईश्वरचन्द्र, पेज–47

27. 'सखन्' इत्यत्र उपधासंज्ञा कस्य भवति ?

(A) खकारोत्तरवर्तिनः 'अन्' इत्यस्य

(B) सकारस्य

(C) खकारोत्तरवर्तिनः अकारस्य

(D) सकारोत्तरवर्तिनः अकारस्य

स्रोत– लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज-177

28. 'दिक्पूर्वपदादसंज्ञायां ञः' इत्यनेन किं विधीयते ?

(A) टच् - प्रत्ययः (B) ञ- प्रत्ययः

(C) पुंवद्भावः (D) एकवद्भावः

स्रोत– लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज-927

29. 'रूपवती भार्या यस्य' इत्यस्य समस्तपदं भवति –

(A) रूपवतीभार्यः (B) रूपवतीभार्यम्

(C) रूपवद्भार्यः (D) रूपवद्भार्या

स्रोत– लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज-957

30. 'महांश्च असौ राजा' इत्यस्य समस्तपदं भवति –

(A) महाराजः (B) महाराजम्

(C) महाराजा (D) महद्राजः

स्रोत– लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज-945

31. 'गवाम् अक्षि इव' इत्यत्र समस्तपदमस्ति –

(A) गवाक्षी (B) गवाक्षा

(C) गवाक्षम् (D) गवाक्षः

स्रोत– लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज-249

32. उपकर्मप्रवचनीययोगे सप्तमी कस्मिन्नर्थे द्योत्येऽस्ति?

(A) हीने (B) अधिके

(C) वीप्सायाम् (D) स्वस्वामिभावे

अष्टाध्यायी (2-3-09) ईश्वरचन्द्र,पेज-196, कारकप्रकरण-राममुनि पाण्डेय-102

33. 'अधि'-कर्मप्रवचनीययोगे सप्तमी कस्मिन् अर्थे द्योत्ये अस्ति-

(A) हीने (B) अधिके

(C) वीप्सायाम् (D) स्वस्वामिभावे

स्रोत– कारक-प्रकरण (1.4.97)- राममुनि पाण्डेय-102

34. अधस्तनयुग्मेभ्यः समीचीना तालिका चेतव्या –

(क) कर्तृकर्मणोः कृतिः (i) युक्तयोगः

(ख) निष्ठा (ii) शतस्य शतं वा प्रतिदीव्यति

(ग) विभाषोपसर्गे (iii) वीरपुरुषको ग्रामः

(घ) अनेकमन्यपदार्थे (iv) जगतः कर्ता कृष्णः

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(A)	(iv)	(i)	(ii)	(iii)
(B)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(C)	(ii)	(iv)	(iii)	(i)
(D)	(ii)	(i)	(iv)	(iii)

स्रोत–अष्टाध्यायी - ईश्वरचन्द्र

(क) 2.3.65 (ख) 2.2.36, (ग) 2.3.59 (घ) 2.2.24

25. (C) **26.** (C) **27.** (C) **28.** (B) **29.** (C) **30.** (A) **31.** (D) **32.** (B) **33.** (D) **34.** (A)

35. भाषाविज्ञानदृष्ट्या अर्धस्वरः कः ?

(A) य (B) श

(C) च (D) ढ

स्रोत– भाषाविज्ञान - कर्ण सिंह, पेज-152

36. भाषाविज्ञानदृष्ट्या संघर्षी ध्वनिः कः ?

(A) ल (B) र

(C) श (D) ट

स्रोत– भाषाविज्ञान - कर्ण सिंह, पेज-151

37. धा - धातोः 'दधाति' इति रूपं केन भाषावैज्ञानिक-नियमेन प्रतिपाद्यते ?

(A) ग्रासमैन-नियमेन (B) ग्रिम-नियमेन

(C) वर्नर-नियमेन (D) तालव्य-नियमेन

स्रोत– भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज -246

38. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत –

(क)	हर्षः	(i)	मुद्राराक्षसम्
(ख)	भवभूतिः	(ii)	कर्णभारम्
(ग)	विशाखदत्तः	(iii)	उत्तररामचरितम्
(घ)	भासः	(iv)	रत्नावली

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(A)	(iii)	(ii)	(iv)	(i)
(B)	(iv)	(iii)	(i)	(ii)
(C)	(ii)	(i)	(iii)	(iv)
(D)	(i)	(iv)	(ii)	(iii)

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–(क) 365, (ख) 395, (ग) 354, (घ) 275

39. ''अहिणवमहुलोलुवो तुमं तह परिचुम्बि अ'' इत्यादिसङ्गीतं भवति–

(A) हंसपदिकायाः (B) शकुन्तलायाः

(C) अनसूयायाः (D) प्रियंवदायाः

स्रोत– अभिज्ञानशाकुन्तलम् (5/1)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-242

40. ''सतीमपि ज्ञातिकुलैकसंश्रयां जनोऽन्यथा भर्तृमतीं विशङ्कते'' - कस्येयमुक्तिः ?

(A) दुष्यन्तस्य (B) शारद्वतस्य

(C) शार्ङ्गरवस्य (D) कण्वस्य

स्रोत– अभिज्ञानशाकुन्तलम् (5/17)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज -273

41. विप्रलम्भशृङ्गारः अङ्गीरसः भवति अस्मिन् काव्ये –

(A) रघुवंशे (B) मेघदूते

(C) शिशुपालवधे (D) नैषधीयचरिते

स्रोत– मेघदूतम् (पूर्वभाग) - तारिणीश झा, भू0 पेज -21

42. ''कुमुदवनमपश्रि श्रीमदम्भोजखण्डम्'' इत्यादि-पद्यं केन सम्बद्धम्?

(A) माघेन (B) कालिदासेन

(C) श्रीहर्षेण (D) भासेन

स्रोत– शिशुपालवधम् -जनार्दन गंगाधर रटाटे, पेज-3

43. ''व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवं भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः'' - इत्याद्युक्तिः किरातार्जुनीये भवति –

(A) अर्जुनस्य (B) युधिष्ठिरस्य

(C) द्रौपद्याः (D) वनेचरस्य

स्रोत– किरातार्जुनीयम् (1/30) - रामसेवक दुबे, पेज-114

44. 'श्रीकण्ठपदलाञ्छनः पदवाक्यप्रमाणज्ञः' इति केन सम्बद्धम् ?

(A) भासेन (B) भवभूतिना

(C) श्रीहर्षेण (D) अश्वघोषेण

संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेवद्विवेदी, पेज- 395

45. 'अमृतेनेव संसिक्ताः चन्दनेनेव चर्चिताः' - इत्युक्ति कं लक्षयति ?

(A) भासम् (B) बाणभट्टम्

(C) शूद्रकम् (D) कालिदासम्

स्रोत– कालिदास ग्रन्थावली - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज-8

35. (A) **36.** (C) **37.** (A) **38.** (B) **39.** (A) **40.** (C) **41.** (B) **42.** (A) **43.** (C) **44.** (B) **45.** (D)

46. लौकिकानां हि साधूनामर्थं वागनुवर्तते।

ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति।।

- उत्तररामचरिते कस्येयमुक्तिः ?

(A) अष्टावक्रस्य (B) लक्ष्मणस्य

(C) शम्बूकस्य (D) रामस्य

स्रोत– उत्तररामचरितम्- (1/10)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-23

47. ''वाक्यं रसात्मकं काव्यम्'' - इत्यत्र रसमध्ये कस्य ग्रहणं कृतम् –

(A) केवलं रसस्य

(B) केवलं भावस्य

(C) केवलं रसाभासस्य

(D) रस-भाव - तदाभासादीनाम्

स्रोत– साहित्यदर्पण - भवानीशंकर शर्मा, पेज-157,158

48. साहित्यदर्पणे साकल्येन लक्षणायाः कति भेदाः स्वीकृताः ?

(A) षोडश (B) चतुर्विंशतिः

(C) अशीतिः (D) अष्टचत्वारिंशत्

स्रोत– साहित्यदर्पण - भवानीशंकर शर्मा, पेज-भू0 - 59

49. ''श्रवणाद्दर्शनाद्वापि मिथः संरूढरागयोः

दशाविशेषो योऽप्राप्तौ ------स उच्यते।।

रिक्तस्थानं साहित्यदर्पणतः पूरयत।

(A) पूर्वरागः (B) मानः

(C) प्रवासः (D) करुणविप्रलम्भः

साहित्यदर्पण (3/188) - शालिग्राम शास्त्री, पेज-106

50. साहित्यदर्पणानुसारं फलावाप्तौ अतित्वरान्वितः व्यापारः भवति –

(A) आरम्भः (B) नियताप्तिः

(C) प्राप्त्याशा (D) प्रयत्नः

स्रोत– साहित्यदर्पण (6/72) - शालिग्राम शास्त्री, पेज-183

46. (D) **47.** (D) **48.** (C) **49.** (A) **50.** (D)

50	दिसम्बर 2015	UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् III

नोट : इस प्रश्न-पत्र में **पचहत्तर (75)** बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के **दो (2) अङ्क** हैं। **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं–

1. दानस्तुतिसूक्तानि संहितायां सन्ति -
(A) काण्वसंहितायाम् (B) तैत्तिरीयसंहितायाम्
(C) ऋग्वेदसंहितायाम् (D) माध्यन्दिनसंहितायाम्
स्रोत– वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-55

2. ऋग्वेदीयषष्ठमण्डलस्य ऋषिः वर्तते -
(A) भरद्वाजः (B) वामदेवः
(C) वसिष्ठः (D) विश्वामित्रः
स्रोत– वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-47

3. 'बृहदारण्यकम्' कस्य वेदस्य वर्तते ?
(A) सामवेदस्य (B) यजुर्वेदस्य
(C) ऋग्वेदस्य (D) अथर्ववेदस्य
स्रोत– वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-163

4. 'आग्नीध्र' - नामा ऋत्विक् कस्य गणस्य वर्तते ?
(A) ब्रह्मगणस्य (B) अध्वर्युगणस्य
(C) होतृगणस्य (D) उद्गातृगणस्य
स्रोत–श्रौतयज्ञपरिचय–वेणीरामशर्मा गौड पेज-28

5. 'सुमन्तु' - ऋषये व्यासः कं वेदं प्रोक्तवान् ?
(A) यजुर्वेदम् (B) ऋग्वेदम्
(C) अथर्ववेदम् (D) सामवेदम्
स्रोत– वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज-4

6. दर्शपौर्णमासेष्टियागे प्रयाजानां संख्या विद्यते -
(A) एकादश (B) पञ्च
(C) त्रयः (D) नव
स्रोत– श्रौतयज्ञपरिचय - वेणीरामशर्मा गौड, पेज-13

7. याज्ञवल्क्यशिक्षानुसारं कति विवृत्तयः ?
(A) चतस्रः (B) तिस्रः
(C) पञ्च (D) षट्
स्रोत– याज्ञवल्क्यशिक्षा - (वर्णप्रकरण श्लोक-10)

8. ऋक्संहितायाः समुपलब्धेषु भाष्येषु प्रथमो भाष्यकारः वर्तते -
(A) आनन्दतीर्थः (B) सायणः
(C) स्कन्दस्वामी (D) वेङ्कटमाधवः
स्रोत– वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-22

9. वैदिकस्वरप्रक्रियायाः वृत्तिकारः कः ?
(A) भट्टोजिदीक्षितः (B) पाणिनिः
(C) पतञ्जलिः (D) कात्यायनः
स्रोत– संस्कृतवाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-15), पेज-221

10. 'ब्राह्मणसर्वस्व' - नामकं वेदभाष्यं केन विरचितम् ?
(A) हरिस्वामिना (B) हलायुधेन
(C) गुणविष्णुना (D) उवटेन
स्रोत– वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-24

11. 'वाक्सूक्तम्' ऋग्वेदस्य कस्मिन् मण्डले विद्यते ?
(A) दशमे (B) पञ्चमे
(C) अष्टमे (D) सप्तमे
स्रोत– वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-54

12. ऋग्वेदसंहिताया आंग्लपद्यानुवादकः वैदेशिकः विद्वान् वर्तते -
(A) एच. विल्सनः (B) ए.ए. मैक्डानलः
(C) आर.टी.एच. ग्रीफिथः (D) विलियम–कैलेण्डः
स्रोत– वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज-20

13. सामविकाराः परिगणिताः सन्ति -
(A) सप्त (B) चत्वारः
(C) त्रयः (D) षट्
स्रोत– वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-88

14. 'पदक्रमसदन' - नामकं भाष्यं कस्य प्रातिशाख्यस्य विद्यते ?
(A) वाजसनेयप्रातिशाख्यस्य (B) ऋक्प्रातिशाख्यस्य
(C) अथर्वप्रातिशाख्यस्य (D) तैत्तिरीयप्रातिशाख्यस्य
स्रोत– वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-198

1. (C) **2.** (A) **3.** (B) **4.** (A) **5.** (C) **6.** (B) **7.** (A) **8.** (C) **9.** (A) **10.** (B) **11.** (A) **12.** (C) **13.** (D) **14.** (D)

15. पाणिनीयशिक्षायां कति श्लोकाः सन्ति ?

(A) चतुःषष्ठिः (B) त्रिषष्ठिः
(C) षष्ठिः (D) सप्ततिः

स्रोत– वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-192

16. 'मघवा' देवः कः ?

(A) इन्द्रः (B) विष्णुः
(C) वरुणः (D) हिरण्यगर्भः

स्रोत– ऋक्सूक्तसंग्रह–हरिदत्त शास्त्री, भूमिका पेज-12

17. 'यः पृथिवीं व्यथमानामदृंहद्यः पर्वतान्प्रकुपिताँ अरम्णात्' अस्य मन्त्रस्य द्रष्टा ऋषिः कः ?

(A) विश्वामित्रः (B) मधुच्छन्दा
(C) गृत्समदः (D) इन्द्रः

स्रोत– ऋक्सूक्तसंग्रह (2.12.2) हरिदत्त शास्त्री, पेज-178

18. ऋग्वेदस्य शाकलसंहितायां कति सन्ध्यक्षराणि स्वीकृतानि ?

(A) एकम् (B) द्वे
(C) चत्वारि (D) त्रीणि

स्रोत– ऋग्वेदप्रातिशाख्यम् - वीरेन्द्रकुमार वर्मा, पेज-43

19. 'इष्टप्राप्त्यनिष्टपरिहारयोरलौकिकमुपायं यो ग्रन्थो वेदयति स वेदः' - इति लक्षणं कस्य ?

(A) महीधरस्य (B) लौगाक्षिभास्करस्य
(C) सायणस्य (D) पारस्करस्य

स्रोत– वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-01

20. 'वाधूलशुल्बसूत्रम्' केन वेदेन सम्बद्धमस्ति ?

(A) अथर्ववेदेन (B) सामवेदेन
(C) ऋग्वेदेन (D) यजुर्वेदेन

स्रोत– वैदिकसाहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-9

21. 'विलोहितः' इति कस्याः देवतायाः विशेषणम् अस्ति ?

(A) विष्णोः (B) वायोः
(C) रुद्रस्य (D) इन्द्रस्य

स्रोत– वैदिकसूक्तसंग्रह - गीताप्रेस, पेज-19

22. 'छन्दःसूत्रम्' इति वेदाङ्गग्रन्थस्य प्रणेता विद्यते -

(A) हलायुधः (B) पिङ्गलः
(C) लगधः (D) भरतः

स्रोत– वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-199

23. यास्कीयनिरुक्तग्रन्थे काण्डानि विद्यन्ते -

(A) पञ्च (B) त्रीणि
(C) सप्त (D) नव

स्रोत– वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-204

24. 'भद्रैषां लक्ष्मीर्निहिताधिवाचि' इति पंक्तिः कस्मिन् प्रसङ्गे महाभाष्ये उद्धृता ?

(A) शब्दपरिभाषाप्रसङ्गे
(B) व्याकरणाध्ययनप्रयोजनप्रसङ्गे
(C) शब्दार्थसम्बन्धप्रसङ्गे
(D) व्याकरणलक्षणप्रसङ्गे

स्रोत– महाभाष्य (पश्पशाह्निक)-जयशङ्करलाल त्रिपाठी, पेज-56

25. 'लोटो लङ्वत्' इति सूत्रेण अधोलिखितविकल्पमात्रेषु किमभिप्रेतम् ?

(A) अडागमः (B) आडागमः
(C) ह्यादेशः (D) सलोपः

स्रोत– लघुसिद्धान्तकौमुदी (3.4.85)- गोविन्दाचार्य, पेज-401

26. 'इजादेश्च गुरुमतोऽनृच्छः' इति सूत्रेण किं विधीयते ?

(A) आम्प्रत्ययः (B) लुक्
(C) क्राद्यनुप्रयोगः (D) सलोपः

स्रोत– अष्टाध्यायी (3.1.36) - ईश्वरचन्द्र, पेज-267

27. अधोऽङ्कितयुग्मभ्यः समीचीना तालिका चेतव्या –

(क) कृत्यानां कर्तरि वा (2.3.71) (i) दण्डिकः
(ख) उगितश्च (4.1.6) (ii) मम मया वा सेव्यो हरिः
(ग) ई च खनः (3.1.111) (iii) भवती
(घ) अत इनि-ठनौ (5.2.115) (iv) खेयम्

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(A)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)
(B)	(ii)	(iv)	(iii)	(i)
(C)	(i)	(iii)	(iv)	(ii)
(D)	(ii)	(i)	(iii)	(iv)

स्रोत– अष्टाध्यायी - ईश्वरचन्द्र पेज-219, 423, 295, 600

28. 'दन्तुरः' इत्यत्र कः प्रत्ययः ?

(A) र (B) अच्
(C) इरच् (D) उरच्

स्रोत– लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, खण्ड-5) पेज-311

15. (C) **16.** (A) **17.** (C) **18.** (C) **19.** (C) **20.** (D) **21.** (C) **22.** (B) **23.** (B) **24.** (B) **25.** (D) **26.** (A) **27.** (A) **28.** (D)

29. 'सुमुखा शाला' इत्यत्र स्वाङ्गलक्षणङीष् कथं न ?
(A) अप्राणिस्थत्वात् (B) अमूर्तत्वात्
(C) विकारजत्वात् (D) द्रवत्वात्
स्रोत– लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-6), पेज-63

30. 'शत्रुमधिकुरुते' इत्यत्र क्रियापदे आत्मनेपदविधायकं सूत्रं किम् ?
(A) वेः शब्दकर्मणः (B) अकर्मकाच्च
(C) अधेः प्रहसने (D) उपपराभ्याम्
स्रोत– अष्टाध्यायी (1.3.33) - ईश्वरचन्द्र, पेज-91

31. 'अध्यापयति वेदम्' इत्यत्र क्रियापदे परस्मैपदविधायकं सूत्रं किम् ?
(A)विभाषाऽकर्मकात्
(B)निगरणचलनार्थेभ्यश्च
(C)परेर्मृषः
(D)बुधयुधनशजनेङ् प्रुद्रुस्रुभ्यो णेः
स्रोत– वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (भाग-5)-गोविन्दाचार्य,पेज-445,

32. 'एको निमित्तं शब्दानामपरोऽर्थे प्रयुज्यते' इति पंक्तिः कुत्र उपलभ्यते ?
(A) महाभाष्ये (B) वाक्यपदीये
(C) पाणिनिशिक्षायाम् (D) अष्टाध्याय्याम्
वाक्यपदीय (ब्रह्मकाण्ड) कारिका-43-सूर्यनारायणशुक्ल, पेज–60

33. 'शास्त्रानुपूर्वं तद्विद्यात् यथोक्तं लोकवेदयोः' इति पंक्तिः कस्मिन् ग्रन्थे उपलभ्यते ?
(A) पाणिनिशिक्षायाम् (B) अष्टाध्याय्याम्
(C) वाक्यपदीये (D) महाभाष्ये
स्रोत– पाणिनीयशिक्षा (प्रथम श्लोक)–रमाशङ्करमिश्र, पेज–03

34. संस्कृतभाषाध्वनिसन्दर्भेऽधोलिखितेषु 'अर्धस्वरः' कः ?
(A) क (B) ष
(C) म (D) व
स्रोत– भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-149

35. अर्थविस्तारोदाहरणेष्वन्यतमो नास्ति -
(A) तैलम् (B) मुग्धः
(C) गौः (D) सभ्यः
स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-337

36. अर्थसङ्कोचोदाहरणेष्वन्यतमो नास्ति -
(A) जलदः (B) सभ्यः
(C) मनुष्यः (D) पङ्कजम्
स्रोत– भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-340

37. ध्वनिवैज्ञानिकैः करणत्वेन किं स्वीक्रियते ?
(A) मृदुतालु (B) वर्त्सः
(C) ऊर्ध्वैष्ठिः (D) नासिकाविवरः

38. ''सा च त्रिविधा-विधात्री, अभिधात्री विनियोक्त्री च'' इत्यत्र 'सा' का ?
(A) वैदिकी समाख्या (B) श्रुतिः
(C) लौकिकी समाख्या (D) शब्दशक्तिः
स्रोत– अर्थसंग्रह - वाचस्पति उपाध्याय, पेज-57

39. अर्थसंग्रहानुसारं 'शाब्दीभावना' इत्यनेन कः अभिप्रायः ?
(A) अपौरुषेयवाक्यम्
(B) समभिव्यवहारः
(C) पुरुषप्रवृत्त्यनुकूलो भावयितुर्व्यापारविशेषः
(D) प्रयोजनेच्छाजनितक्रियाविषयव्यापारः
स्रोत– अर्थसंग्रह - वाचस्पति उपाध्याय, पेज-19

40. अर्थसंग्रहानुसारं विधिश्चतुर्विधः - उत्पत्तिविधिः, विनियोगविधिः अधिकारविधिः-------- च।
(A) नियमविधिः B) प्रयोगविधिः
(C) यज्ञविधिः (D) परिसङ्ख्याविधिः
स्रोत– अर्थसंग्रह - वाचस्पति उपाध्याय, पेज-48

41. योगदर्शनानुसारं कः 'योगाङ्गैः' सह सम्बद्धः न अस्ति ?
(A) विकल्पः (B) नियमः
(C) प्रत्याहारः (D) प्राणायामः
स्रोत– योगसूत्र (साधनपाद सूत्र - 29)

42. 'अथातो ब्रह्मजिज्ञासा' इत्यत्र 'अथ' शब्दः कस्मिन् अर्थे अस्ति ?
(A) हेत्वर्थे (B) अधिकारार्थे
(C) अन्वयार्थे (D) आनन्तर्यार्थे
स्रोत– ब्रह्मसूत्र (शाङ्करभाष्य) स्वामी सत्यानन्द सरस्वती, पेज-19

43. 'व्याप्यस्य पक्षधर्मत्वधीः' इति किम् ?
(A) परामर्शः (B) अनुमितिः
(C) पक्षता (D) प्रतिज्ञा
स्रोत–न्यायसिद्धान्तमुक्तावली (अनुमानोपमान खण्ड)-महानन्द झा, पेज–21

29. (A) **30.** (C) **31.** (D) **32.** (B) **33.** (A) **34.** (D) **35.** (C) **36.** (B) **37.** (A) **38.** (B) **39.** (C) **40.** (B) **41.** (A) **42.** (D) **43.** (A)

44. जैनदर्शनानुसारं 'सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चरित्राणि------'।

(A) जीवः (B) मोक्षमार्गः
(C) मनःपर्यायः (D) मोक्षः

स्रोत– भारतीयदर्शन–जगदीशचन्द्र मिश्र, पेज- 233

45. 'सर्वं शून्यम्' इति केन बौद्धसम्प्रदायेन स्वीकृतम् ?

(A) माध्यमिकेन (B) सौत्रान्तिकेन
(C) योगाचारेण (D) वैभाषिकेन

स्रोत– भारतीयदर्शन–जगदीशचन्द्र मिश्र, पेज- 305

46. तर्कसंग्रहानुसारं 'संस्कारमात्रजनकं ज्ञानम्' अस्ति -

(A) अनुभवः (B) यथार्थः
(C) स्मृतिः (D) प्रमाणम्

स्रोत– तर्कसंग्रह–आद्याप्रसाद मिश्र, पेज- 38

47. तर्कसंग्रहानुसारं शब्दसाक्षात्कारे कः सन्निकर्षः ?

(A) समवायः (B) संयोगः
(C) समवेतसमवायः (D) विशेषण-विशेष्यभावः

स्रोत– तर्कसंग्रह-आद्याप्रसाद मिश्र, पेज- 48

48. ''श्रीहीरः सुषुवे जितेन्द्रियचयं मामल्लदेवी च यम्'' - इति वार्ता केन सम्बद्धा ?

(A) माघेन (B) भारविणा
(C) श्रीहर्षेण (D) भासेन

स्रोत– नैषधीयचरितम्, (1/145)-सुरेन्द्रदेव शास्त्री, पेज-287

49. ''नन्दोन्मूलनदृष्टवीर्यमहिमा बुद्धिस्तु मा गान्मम'' - मुद्राराक्षसे कस्येयमुक्तिः ?

(A) चन्द्रगुप्तस्य (B) चाणक्यस्य
(C) राक्षसस्य (D) चन्दनदासस्य

स्रोत– मुद्राराक्षसम् (1/26) परमेश्वरदीन पाण्डेय, पेज-73

50. समीचीनां तालिकां चिनुत -

(क) अभिज्ञानशाकुन्तलम्	(i) उत्तररामचरितम्
(ख) तीर्थोदकञ्च वह्निश्च नान्यतः शुद्धिमर्हतः	(ii) श्रीहर्षो निपुणः कविः
(ग) रत्नावली	(iii) हर्षचरितम्
(घ) परिवर्तमानः एकः कालः शैलानिवानन्तः	(iv) श्रद्धा वित्तं विधिश्चेति त्रितयं तत् समागतम्

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(A)	(iv)	(i)	(ii)	(iii)
(B)	(iii)	(i)	(ii)	(iv)
(C)	(iv)	(ii)	(i)	(iii)
(D)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)

स्रोत– (क) अभि0 7/29, (ख) उत्तररामचरितम् 1/13
(ग) रत्नावली - श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी, पेज-7
(घ) हर्षचरितम् 5/2

51. अभिज्ञानशाकुन्तले षष्ठाङ्कगतः धीवरवृत्तान्तः कस्य उदाहरणं भवति ?

(A) प्रवेशकस्य (B) विष्कम्भकस्य
(C) अङ्कावतारस्य (D) प्रस्तावनायाः

स्रोत– अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-317

52. ''तीव्राघातप्रतिहततरुः स्कन्धलग्नैकदन्तः'' - केन छन्दसा विनिर्मितोऽयं श्लोकपादः ?

(A) हरिणी (B) शिखरिणी
(C) मन्दाक्रान्ता (D) मालिनी

स्रोत– अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/33)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-85

53. ''शरीरभाजां भवदीयदर्शनं व्यनक्तिकालत्रितयेऽपि योग्यताम्'' - शिशुपालवधे कस्य प्रशंसेयम् ?

(A) नारदस्य (B) श्रीकृष्णस्य
(C) वसुदेवस्य (D) बलरामस्य

स्रोत– शिशुपालवधम् - (1/26) - आद्या प्रसाद मिश्र, पेज-46

**54. ''ज्ञाने मौनं क्षमा शक्तौ त्यागे श्लाघाविपर्ययः।
गुणा गुणानुबन्धित्वात् तस्य सप्रसवा इव ॥''
कस्य गुणाः श्लोकेऽस्मिन् उल्लिखिताः ?**

(A) रघोः (B) रामस्य
(C) अजस्य (D) दिलीपस्य

स्रोत– रघुवंशम् - (1/22)

55. ''पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः'' - उत्तररामचरिते उक्तिरियं भवति -

(A) सीतायाः (B) मुरलायाः
(C) तमसायाः (D) वासन्त्याः

स्रोत– उत्तररामचरितम् - (3/1)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-156

56. रत्नावल्याः मङ्गलाचरणस्य प्रथमे श्लोके कस्य स्तुतिः प्राप्यते ?

(A) विष्णोः (B) ब्रह्मणः
(C) शिवस्य (D) गणेशस्य

स्रोत– रत्नावली-नाटिका (1/1)-तारिणीश झा, पेज-1

57. पुण्यवर्मा कस्य देशस्य राजा आसीत् दशकुमारचरिते ?

(A) विदर्भस्य (B) वाराणस्याः
(C) गौडस्य (D) मगधस्य

स्रोत– दशकुमारचरितम् (अष्टम उच्छ्वास)-विश्वनाथ झा, पेज-238

44. (B) **45.** (A) **46.** (C) **47.** (A) **48.** (C) **49.** (B) **50.** (A) **51.** (A) **52.** (C) **53.** (A) **54.** (D) **55.** (B) **56.** (C) **57.** (A)

58. मम्मटमते कति काव्यगुणाः ?

(A) दश (B) पञ्च
(C) त्रयः (D) अष्टौ

स्रोत– काव्यप्रकाश (8/68)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज- 388

59. ध्वन्यालोकतः रिक्तं स्थानं पूरयत - ''यत्नतः------ तौ शब्दार्थौ महाकवेः।''

(A) अवगन्तव्यौ (B) प्रत्यभिज्ञेयौ
(C) परिहर्त्तव्यौ (D) संस्मरणीयौ

स्रोत– ध्वन्यालोक (1/8) – आचार्य विश्वेश्वर, पेज-33

60. दशरूपकानुसारं फलस्याप्राप्तावुपाययोजनादिरूप-चेष्टाविशेषः भवति -

(A) आरम्भः (B) प्रयत्नः
(C) प्राप्त्याशा (D) नियताप्तिः

स्रोत– दशरूपक - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज- 23

61. शक्तिर्निपुणता लोकशास्त्रकाव्याद्यवेक्षणात् ।
------ इति हेतुस्तदुद्भवे ॥
काव्यप्रकाशतः रिक्तस्थानं पूरयत।

(A) काव्यज्ञशिक्षयाभ्यासः (B) लोकतत्त्वानुशीलनम्
(C) रसभावयोश्चिन्तनम् (D) भावाभासस्य चिन्तनम्

स्रोत– काव्यप्रकाश (1/3) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज- 16

62. काव्यप्रकाशे उपमानोपमेययोः विपर्यासे कोऽलङ्कारः ?

(A) अनन्वयः (B) विभावना
(C) विशेषोक्तिः (D) उपमेयोपमा

स्रोत– काव्यप्रकाश (सूत्र -135)-पारसनाथ द्विवेदी, पेज- 552

63. कालक्रमानुसारेण तालिकां चिनुत -

(a) अप्पयदीक्षितः (b) भरतः
(c) आनन्दवर्धनः (d) दण्डी

(A) (a) (b) (c) (d)
(B) (b) (c) (a) (d)
(C) (c) (a) (b) (d)
(D) (b) (d) (c) (a)

स्रोत– संस्कृतगङ्गा वस्तुनिष्ठ संस्कृत-साहित्यम् पेज-278-291

64. ''दोषा गुणा-गुणा दोषा यत्र स्युर्मृदवं हि तत्'' - दशरूपके कस्मिन् प्रसङ्गे इयमुक्तिः ?

(A) वीथ्यङ्गप्रसङ्गे (B) नृत्यलक्षणप्रसङ्गे
(C) सन्धिभेदप्रसङ्गे (D) प्रहसनलक्षणप्रसङ्गे

स्रोत– दशरूपक - श्रीनिवास शास्त्री, पेज- 226

65. ''न तज्ज्ञानं न तच्छिल्पं न सा विद्या न सा कला।'' - इत्यादि-श्लोकः भवति -

(A) काव्यप्रशंसा (B) गुणप्रशंसा
(C) नाट्यप्रशंसा (D) अलङ्कारप्रशंसा

स्रोत– नाट्यशास्त्रम्-(1/116)-ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज-113

66. ''तमसा बहुरूपेण वेष्टिताः कर्महेतुना।
अन्तः संज्ञा भवन्त्येते सुखदुःखसमन्विताः॥''
इति मनुवचनं केन सम्बद्धम् ?

(A) अण्डजेन प्राणिना (B) उद्भिदा
(C) स्वेदजेन प्राणिना (D) जरायुजेन प्राणिना

स्रोत– मनुस्मृति - (1/49)-गिरिधर गोपाल शर्मा, पेज-29

67. मनुसंहितातः रिक्तं स्थानं पूरयत -
''नृपतौ कोषराष्ट्रे च --------सन्धिविपर्ययौ।''

(A) अमात्ये (B) दूते
(C) सेनापतौ (D) मन्त्रिणि

स्रोत– मनुस्मृति - (7/65)–गिरिधर गोपाल शर्मा, पेज-175

68. कस्मिन् पुराणे 'काशी-खण्डः' समुपलभ्यते ?

(A) लिङ्गपुराणे (B) शिवपुराणे
(C) ब्रह्माण्डपुराणे (D) स्कन्दपुराणे

संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा ऋषि,पेज- 186

69. याज्ञवल्क्यस्मृत्यनुसारं रिक्तस्थानं पूरयत -
''स्मृत्योर्विरोधे न्यायस्तु बलवान् व्यवहारतः।
अर्थशास्त्रात्तु बलवद् --------इति स्थितिः॥''

(A) धर्मशास्त्रम् (B) राजादेशः
(C) नृपस्येच्छा (D) नीतिशास्त्रम्

स्रोत– याज्ञवल्क्यस्मृति (2/21)-उमेशचन्द्र पाण्डेय, पेज-183

58. (C) **59.** (B) **60.** (B) **61.** (A) **62.** (D) **63.** (D) **64.** (A) **65.** (C) **66.** (B) **67.** (B) **68.** (D) **69.** (A)

70. **याज्ञवल्क्यस्मृत्यनुसारेण सबन्धके ऋणे मासि-मासि वृद्धिः भवति -**

(A) पञ्चाशद्भागः (B) अशीतिभागः
(C) त्रिंशद्भागः (D) विंशोभागः

स्रोत– याज्ञवल्क्यस्मृति (2/37) -उमेशचन्द्र पाण्डेय, पेज-199

71. **श्रीमद्भगवद्गीतायाः विश्वरूपदर्शनयोगः अस्ति -**

(A) दशमेऽध्याये (B) एकादशेऽध्याये
(C) प्रथमाध्याये (D) त्रयोदशाध्याये

स्रोत– श्रीमद्भगवद्गीता (अध्याय-11) गीताप्रेस

72. **'शतसाहस्रीसंहिता' इति कस्य अपरं नाम ?**

(A) रामायणस्य (B) भविष्यपुराणस्य
(C) स्कन्दपुराणस्य (D) महाभारतस्य

स्रोत– संस्कृत साहित्य का इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज- 123

73. **रामायणस्य श्लोकसंख्या भवति -**

(A) 31000-40000 (B) 22000-25000
(C) 11000-15000 (D) 5000-10000

स्रोत– संस्कृत साहित्य का इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज- 103

74. **हरिषेणविरचिते इलाहाबादशिलालेखे 'कविराज' इत्युपाधिः भवति -**

(A) चन्द्रगुप्तस्य (B) अशोकस्य
(C) समुद्रगुप्तस्य (D) स्कन्दगुप्तस्य

प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख (भाग-2)-परमेश्वरीलाल गुप्त, पेज-9

75. **अर्थशास्त्रे आन्वीक्षिकीत्रयीवार्तानां योगक्षेमसाधनो भवति -**

(A) साम (B) दानम्
(C) भेदः (D) दण्डः

स्रोत– कौटिलीय अर्थशास्त्रम् -वाचस्पति गैरोला, पेज- 12

70. (B) **71.** (B) **72.** (D) **73.** (B) **74.** (C) **75.** (D)

51	जुलाई 2016	UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् II

1. **वाजसनेयिमाध्यन्दिनसंहिता सम्बन्धिता अस्ति–**
   (A) कृष्णयजुर्वेदेन (B) शुक्लयजुर्वेदेन
   (C) सामवेदेन (D) अथर्ववेदेन

स्रोत -वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-09

2. **वेदा अपौरुषेयाः सन्तीति मतमस्ति–**
   (A) महर्षिदयानन्दस्य (B) ए. वेबरस्य
   (C) मैक्समूलरस्य (D) विन्टरनिट्जस्य

स्रोत -वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-18

3. **वैतानश्रौतसूत्रं केन वेदेन सह सम्बद्धमस्ति?**
   (A) सामवेदेन (B) ऋग्वेदेन
   (C) अथर्ववेदेन (D) कृष्णयजुर्वेदेन

स्रोत -वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-10

4. **'स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव।**
   सचस्वा नः स्वस्तये ॥' अस्य मन्त्रस्य का देवता अस्ति?
   (A) रुद्रः (B) अग्निः
   (C) सोमः (D) सविता

स्रोत -ऋक्सूक्तसंग्रह (1.1.) - हरिदत्त शास्त्री, पेज-55

5. **मुण्डकोपनिषत् केन वेदेन सह सम्बद्धा अस्ति?**
   (A) यजुर्वेदेन (B) अथर्ववेदेन
   (C) ऋग्वेदेन (D) सामवेदेन

स्रोत -वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-10

6. **'षड्विंशब्राह्मणम्' इति ग्रन्थः केन वेदेन सह सम्बद्धोऽस्ति?**
   (A) यजुर्वेदेन (B) ऋग्वेदेन
   (C) अथर्ववेदेन (D) सामवेदेन

स्रोत -वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-10

7. **'तलवकार-आरण्यकम्' केन वेदेन सह सम्बद्धमस्ति?**
   (A) ऋग्वेदेन (B) यजुर्वेदेन
   (C) अथर्ववेदेन (D) सामवेदेन

स्रोत -वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-166

8. **'विश्वामित्र-नदी' सूक्तस्य कः ऋषिरस्ति?**
   (A) वसिष्ठः (B) विश्वामित्रः
   (C) मधुच्छन्दाः (D) दीर्घतमाः

स्रोत -ऋक्सूक्तसंग्रह (3.33)-हरिदत्तशास्त्री, पेज-207

9. **'पुरूरवा-उर्वशी' सूक्ते कति मन्त्राः सन्ति?**
   (A) 17 (B) 18
   (C) 19 (D) 20

स्रोत -ऋग्वेद (10.95) - वेदान्त तीर्थ, पेज-431

10. **अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत –**
    (क) यम-यमी-संवादसूक्तम् (i) यजुर्वेदः
    (ख) कठोपनिषद् (ii) सामवेदः
    (ग) लाट्यायनश्रौतसूत्रम् (iii) ऋग्वेदः
    (घ) माण्डूक्योपनिषद् (iv) अथर्ववेदः
    कूटः

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(A)	(iii)	(iv)	(ii)	(i)
(B)	(iii)	(ii)	(iv)	(i)
(C)	(iii)	(iv)	(i)	(ii)
(D)	(iii)	(i)	(ii)	(iv)

वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-क-57, ख ग घ-9-10

11. **अधस्तनेषु को ग्रन्थः कल्पवेदाङ्गान्तर्गतोऽस्ति?**
    (A) पारस्करगृह्यसूत्रम्
    (B) काशकृत्स्नव्याकरणम्
    (C) ऋग्वेदप्रातिशाख्यम्
    (D) पाणिनीयशिक्षा

स्रोत - वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-228

12. **अधोऽङ्कितेषु वेदाङ्गमस्ति–**
    (A) ईशोपनिषद् (B) ऐतरेयारण्यकम्
    (C) मानवशुल्बसूत्रम् (D) शतपथब्राह्मणम्

स्रोत– वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-241

1. (B) **2.** (A) **3.** (C) **4.** (B) **5.** (B) **6.** (D) **7.** (D) **8.** (B) **9.** (B) **10.** (D) **11.** (A) **12.** (C)

13. 'अधिवसति वैकुण्ठं हरिः' इत्यत्र कर्मसञ्ज्ञाविधायकं सूत्रं किमस्ति?

(A) उपान्वध्याङ्वसः
(B) अधि-शीङ्-स्थाऽऽसां कर्म
(C) अधिरीश्वरे
(D) अधिपरी अनर्थकौ

स्रोत -सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज-30

14. 'इत्थम्भूतलक्षणे' इति सूत्रस्योदाहरणं किम्भवति?

(A) जटाभिस्तापसः
(B) जपमनु प्रावर्षत्
(C) मासं कल्याणी
(D) लक्षणेत्थम्भूताख्यानभागवीप्सासु प्रतिपर्यनवः

स्रोत -सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज-43

15. 'अधिगोपम्' इत्यत्राव्ययीभावसमासः कस्मिन्नर्थे भवति?

(A) समीपार्थे (B) अत्ययार्थे
(C) विभक्त्यर्थे (D) साकल्यार्थे

स्रोत -लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज-894

16. व्यधिकरणबहुव्रीहिसमासे किं ज्ञापकम् ?

(A) 'अनेकमन्यपदार्थे, इत्यत्र 'अनेक' ग्रहणम्
(B) 'हलदन्तात् सप्तम्याः सञ्ज्ञायाम्' इत्यत्र 'सञ्ज्ञायाम्' इत्यस्य ग्रहणम्
(C) 'सप्तमीविशेषणे बहुव्रीहौ' इत्यत्र 'सप्तमी' त्यस्य ग्रहणम्
(D) 'शेषो बहुव्रीहिः' इत्यत्र 'शेष' ग्रहणम्

स्रोत -सिद्धान्तकौमुदी (भाग-2) - गोविन्दाचार्य, पेज-786

17. वर्णानामतिशयितः सन्निधिः को भवति?

(A) 'घि'सञ्ज्ञः (B) उपधासञ्ज्ञः
(C) निष्ठासञ्ज्ञः (D) संहितासञ्ज्ञः

स्रोत -अष्टाध्यायी (1.4.108) - ईश्वरचन्द्र, पेज–147

18. अधोलिखितेषु कस्य सर्वनामस्थानसञ्ज्ञा भवति?

(A) 'टा' इत्यस्य (B) 'ङे' इत्यस्य
(C) 'शि' इत्यस्य (D) 'ङि' इत्यस्य

स्रोत -अष्टाध्यायी (1.1.41) - ईश्वरचन्द्र, पेज-24

19. 'निमित्तात् कर्मयोगे' इत्यत्र 'योग' शब्दस्य भट्टोजिदीक्षितमते कोऽर्थः ?

(A) चित्तवृत्तिनिरोधः
(B) संयोगसम्बन्धः केवलम्
(C) संयोग-समवायसम्बन्धौ
(D) स्वरूपसम्बन्धः

स्रोत -सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज-95

20. 'अधि रामे भूः इत्यत्र 'अधि' शब्दस्य कर्मप्रवचनीयसञ्ज्ञाविधायकं सूत्रं किमस्ति?

(A) अधिरीश्वरे (B) उपोऽधिके च
(C) अधि-परी अनर्थकौ (D) हीने

स्रोत-सिद्धान्तकौमुदी (1.4.97)-राममुनि पाण्डेय, पेज-102-103

21. को ध्वनिः अघोषमहाप्राणः अस्ति?

(A) घ् (B) छ्
(C) ज् (D) ढ्

स्रोत भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-171

22. ग्रिमनियमानुसारं संस्कृतस्य 'क्,त्,प्' इति ध्वनयः जर्मनभाषायां केषु ध्वनिषु परिवर्तिताः?

(A) च्,छ्,ज् (B) ख्,थ्,फ्
(C) ग्,द्,ब् (D) ऊष्मसु

स्रोत -भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-242

23. संस्कृतभाषा कीदृशी अस्ति?

(A) श्लिष्टयोगात्मिका (B) प्रश्लिष्टयोगात्मिका
(C) अयोगात्मिका (D) अश्लिष्टयोगात्मिका

स्रोत-भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-384-385

24. ग्रीकभाषा कस्य भाषापरिवारस्य भाषा अस्ति–

(A) सैमेटिकपरिवारस्य (B) बान्टूपरिवारस्य
(C) भारोपीयपरिवारस्य (D) काकेशीपरिवारस्य

स्रोत -भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-384

25. संस्कृतस्य 'शतम्' इत्यस्य कृते 'केन्तुम्' इत्ययं शब्दः कस्यां भाषायां विद्यते?

(A) लैटिनभाषायाम् (B) ग्रीकभाषायाम्
(C) जर्मनभाषायाम् (D) ईरानीभाषायाम्

स्रोत -भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-385

13. (A) **14.** (A) **15.** (C) **16.** (C) **17.** (D) **18.** (C) **19.** (C) **20.** (A) **21.** (B) **22.** (B) **23.** (A) **24.** (C) **25.** (A)

26. सिन्धीभाषायाः विकासः कस्याः प्राकृतभाषायाः अभवत्?

(A) शौरसेनी-प्राकृतात् (B) पैशाची-प्राकृतात्

(C) मागधी -प्राकृतात् (D) अर्धमागधी-प्राकृतात्

स्रोत -भाषाविज्ञान - भोलानाथ तिवारी, पेज–174-186

27. सत्कार्यवादस्य सिद्धिः कस्माद् हेतोः न भवति?

(A) असदकरणात्

(B) सर्वस्मात् सर्वसम्भवात्

(C) शक्तस्य शक्यकरणात्

(D) कारणभावात्

स्रोत -सांख्यकारिका (का.-9) - राकेशशास्त्री, पेज-29

28. प्रधानपुरुषयोः को धर्मः समानः?

(A) त्रिगुणत्वम् (B) अहेतुत्वम्

(C) सामान्यत्वम् (D) अचेतनत्वम्

स्रोत -सांख्यकारिका (का. 10-11)-राकेशशास्त्री, पेज-37,38

29. अव्यक्तं कस्माद् हेतोः कारणं भवति?

(A) नित्यत्वात् (B) परिमाणवत्त्वात्

(C) चैतन्यात् (D) निष्क्रियत्वात्

स्रोत सांख्यकारिका (का. 15-16)-राकेश शास्त्री, पेज- 51,52

30. प्रकृतिपुरुषयोः सम्बन्धः कीदृशो भवति?

(A) जलाग्निवत् (B) कार्यकारणवत्

(C) मातृपुत्रवत् (D) पङ्ग्वन्धवद्

स्रोत सांख्यकारिका (का.-21) - राकेश शास्त्री, पेज-68

31. अध्यारोपः किं भवति?

(A) मिथ्याज्ञानम् (B) अस्पष्टं ज्ञानम्

(C) यथार्थज्ञानम् (D) वस्तुनि अवस्त्वारोपः

स्रोत वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-37

32. आवरणम् कस्य शक्तिरस्ति?

(A) रजोगुणस्य (B) अज्ञानस्य

(C) जीवस्य (D) चैतन्यस्य

स्रोत - वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-57

33. वेदान्तसारानुसारं लिङ्गशरीरे कस्य गणना न भवति?

(A) बुद्धेः (B) मनसः

(C) प्राणस्य (D) आकाशस्य

स्रोत -वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-65-66

34. गौतमसूत्रोक्तषोडशपदार्थेषु कस्य पदार्थस्य निम्नाङ्कितेषु ग्रहणं नास्ति?

(A) 'संशय' पदार्थस्य (B) 'विशेष' पदार्थस्य

(C) 'अवयव' पदार्थस्य (D) 'निर्णय' पदार्थस्य

स्रोत -तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज-03

35. 'मृत्पिण्डः घटस्य कीदृशं कारणमुच्यते?

(A) निमित्तकारणम् (B) समवायिकारणम्

(C) असमवायिकारणम् (D) समवाय्यसमवायिकारणम्

स्रोत - तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज-33

36. यदा चक्षुरादिना घटगतरूपादिकं गृह्यते तदाऽनयोरिन्द्रियार्थसन्निकर्षः कः?

(A) संयोगः (B) समवायः

(C) संयुक्तसमवायः (D) समवेतसमवायः

स्रोत -तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज-64

37. 'जीवच्छरीरं सात्मकं प्राणादिमत्त्वात्' कीदृशो हेतुः?

(A) केवलान्वयी (B) केवलव्यतिरेकी

(C) अन्वय-व्यतिरेकी (D) असद्धेतुः

स्रोत -तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज-97

38. 'साध्याभावसाधकं हेत्वन्तरं यस्य विद्यते सः' हेत्वाभासोऽन्नम्भट्टेन केन नाम्ना प्रोक्तः?

(A) 'सत्प्रतिपक्ष' नाम्ना (B) 'असिद्ध' नाम्ना

(C) 'सव्यभिचार' नाम्ना (D) 'विरुद्ध' नाम्ना

स्रोत -तर्कसंग्रह – गोविन्दाचार्य, पेज-218

39. तर्कसंग्रहे तर्कलक्षणं किमुक्तम् ?

(A) मिथ्याज्ञानम्

(B) व्याप्यारोपेण व्यापकारोपः

(C) सन्निकृष्टसंयोगहेतुः

(D) एकस्मिन् धर्मिणि विरुद्ध-नानाधर्मवैशिष्ट्यावगाहि ज्ञानम्

स्रोत - तर्कसंग्रह-अनिता सेनगुप्ता पेज-113

26. (B) **27.** (B) **28.** (B) **29.** (B) **30.** (D) **31.** (D) **32.** (B) **33.** (D) **34.** (B) **35.** (B) **36.** (C) **37.** (B) **38.** (A) **39.** (B)

40. अभावप्रत्यक्षे अन्नम्भट्टानुसारं कः सन्निकर्षोऽङ्गीकृतः?

(A) विशेषण-विशेष्यभावः (B) समवायः

(C) संयुक्तसमवेत-समवायः (D) संयोगः

स्रोत -तर्कसंग्रह - गोविन्दाचार्य, पेज- 166

41. गन्धवत्त्वं कस्य लक्षणम् ?

(A) अपः (B) पृथिव्याः

(C) वायोः (D) अग्नेः

स्रोत - तर्कसंग्रह - गोविन्दाचार्य, पेज-38

42. कविराजराजिमुकुटालङ्कारहीरः मामल्लदेवी च कस्य पितरौ?

(A) भासस्य (B) श्रीहर्षस्य

(C) दण्डिनः (D) भारवेः

स्रोत-नैषधीयचरितम् (1/145)-सुरेन्द्रदेव शास्त्री, पेज-287

43. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत –

(क) श्रीहर्षः (i) हर्षचरितम्

(ख) दण्डी (ii) मुद्राराक्षसम्

(ग) बाणभट्टः (iii) नैषधीयचरितम्

(घ) विशाखदत्तः (iv) दशकुमारचरितम्

कूटः

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(A)	(i)	(iii)	(iv)	(ii)
(B)	(iii)	(iv)	(i)	(ii)
(C)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)
(D)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)

स्रोत -संस्कृतगङ्गा साहित्यम्-सर्वज्ञभूषण, पेज-278-279

44. दशकुमारचरितस्य नायकः कः ?

(A) राजहंसः (B) उपहारवर्मा

(C) राजवाहनः (D) अपहारवर्मा

स्रोत-संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि' पेज-383

45. विश्वनाथमतानुसारं वीररसः कतिविधः?

(A) द्विविधः (B) त्रिविधः

(C) पञ्चविधः (D) चतुर्विधः

स्रोत -साहित्यदर्पण – शालिग्राम शास्त्री, पेज-118

46. बृहत्त्रय्यां न गण्यते–

(A) नैषधीयचरितम् (B) रघुवंशम्

(C) किरातार्जुनीयम् (D) शिशुपालवधम्

स्रोत-संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-208

47. गद्यकाव्यं नास्ति–

(A) कादम्बरी

(B) दशकुमारचरितम्

(C) बुद्धचरितम्

(D) हर्षचरितम्

स्रोत-संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-228

48. केन कविना बौद्धधर्मस्य प्रचारार्थं काव्यानि लिखितानि?

(A) कालिदासेन (B) माघेन

(C) अश्वघोषेण (D) भवभूतिना

स्रोत-संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-228

49. नैषधीयचरिते कति सर्गाः सन्ति?

(A) एकोनविंशतिः (B) द्वाविंशतिः

(C) अष्टाविंशतिः (D) चतुर्विंशतिः

स्रोत-संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-287

50. किरातार्जुनीयमहाकाव्यस्य कथावस्तु कुतः गृहीतम्?

(A) महाभारतस्य आदिपर्वतः

(B) महाभारतस्य भीष्मपर्वतः

(C) महाभारतस्य वनपर्वतः

(D) रामायणमहाकाव्यात्

स्रोत-संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-243

40. (A) **41.** (B) **42.** (B) **43.** (B) **44.** (C) **45.** (D) **46.** (B) **47.** (C) **48.** (C) **49.** (B) **50.** (C)

52	जुलाई 2016	UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् III

1. ऋग्वेदीय-नासदीयसूक्तस्य (10.129) ऋषिरस्ति–
(A) प्रजापतिः परमेष्ठी (B) सुकीर्तिः काक्षीवतः
(C) यज्ञः प्राजापत्यः (D) कुल्मलबर्हिषः
स्रोत -ऋक्सूक्तसंग्रह-हरिदत्त शास्त्री, पेज-430

2. अथर्ववेदस्य पृथिवीसूक्ते (12.1) कति मन्त्राः सन्ति?
(A) 23 (B) 33
(C) 53 (D) 63
स्रोत -अथर्ववेद (12.1) - वेदान्ततीर्थ, पेज-101

3. सृष्ट्युत्पत्तिविषयकं सूक्तमस्ति ऋग्वेदे–
(A) पुरुषसूक्तम् (10.90) (B) अग्निसूक्तम् (1.1)
(C) इन्द्रसूक्तम् (2.12) (D) वाक्सूक्तम् (10.125)
स्रोत -ऋक्सूक्तसंग्रह-हरिदत्त शास्त्री, पेज-392-404

4. 'शुनःशेपम्' इत्याख्यानं कस्मिन् ग्रन्थे प्राप्यते?
(A) कौषीतकिब्राह्मणग्रन्थे (B) ऐतरेयब्राह्मणग्रन्थे
(C) सामविधानब्राह्मणग्रन्थे (D) ऐतरेयारण्यकग्रन्थे
स्रोत-वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-125

5. महर्षिणा दयानन्देन कस्य वेदस्य भाष्यं कृतमस्ति?
(A) पैप्पलादसंहितायाः (B) शौनकसंहितायाः
(C) काण्वसंहितायाः (D) वाजसनेयिमाध्यन्दिनसंहितायाः
स्रोत -वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-18

6. 'शतायुषः पुत्रपौत्रान् वृणीष्व बहून् पशून् हस्ति-हिरण्यमश्वान्' इति कथनमस्ति–
(A) वाजश्रवसः (B) नचिकेतसः
(C) यमराजस्य (D) याज्ञवल्क्यस्य
ईशादि नौ उपनिषद् (कठोपनिषद् 1.1.23)-शाङ्करभाष्य-गीताप्रेस, पेज-220

7. अधोऽङ्कितेषु एकमसत्यमस्ति–
(A) 'विद्यां च अविद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह' इति ईशोपनिषदि वर्तते।
(B) ईशोपनिषद् तैत्तिरीयशाखायाः वर्तते।
(C) याज्ञवल्क्य-मैत्रेयी-संवादो बृहदारण्यकोपनिषदि वर्तते।
(D) नचिकेतसः वर्णनं कठोपनिषदि वर्तते।
स्रोत -(A) ईशादि नौ उपनिषद् (ईशोपनिषद्-11) गीताप्रेस, पेज-36
(C) वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज-154
(D) वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज-156

8. (क) 'शिक्षावल्ली' कठोपनिषदि वर्तते।
(ख) शिक्षावल्यां गुरुसम्बन्धितो व्यवहारो निरूपितः।
अनयोः कथनयोर्विषये उचितं युग्मं चिनुत।
(A) (क) असत्यम् (ख) सत्यम्
(B) (क) सत्यम् (ख) असत्यम्
(C) उभे सत्ये स्तः।
(D) उभे असत्ये स्तः।
स्रोत - वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज-156

9. 'उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत' इत्युद्धरणं कुत्र वर्तते?
(A) केनोपनिषदि (B) कठोपनिषदि
(C) तैत्तिरीयोपनिषदि (D) बृहदारण्यकोपनिषदि
स्रोत-वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-176

10. अधोलिखितानां केन सह कस्य सम्बन्धः? इति समीचीनां तालिकां चिनुत।
(क) मा गृधः कस्यस्विद्धनम् (i) केनोपनिषद्
(ख) उमाया उपदेशः (ii) बृहदारण्यकोपनिषद्
(ग) अथ शीक्षां व्याख्यास्यामः (iii) ईशोपनिषद्
(घ) आत्मा वाऽरे द्रष्टव्यो मन्तव्यः श्रोतव्यो निदिध्यासितव्यः। (iv) तैत्तिरीयोपनिषद्

कूटः

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(A)	(ii)	(iv)	(iii)	(i)
(B)	(i)	(iii)	(iv)	(ii)
(C)	(iv)	(ii)	(iii)	(i)
(D)	(iii)	(i)	(iv)	(ii)

स्रोत- (क) ईशादि नौ उपनिषद् (ईशोपनिषद् मन्त्र-1)-गीताप्रेस, पेज-28
(ख) केनोपनिषद्-खण्ड-4
(ग) ईशादि नौउपनिषद् (तैत्तिरीयोपनिषद्)-गीताप्रेस, पेज-333
(घ) वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-179
वैदिकसाहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-A-174 B-175 C-179 D-171

1. (A) **2.** (D) **3.** (A) **4.** (B) **5.** (D) **6.** (C) **7.** (B) **8.** (A) **9.** (B) **10.** (D)

11. षड्वेदाङ्गेषु किं न गण्यते?

(A) निरुक्तम् (B) छन्दस्

(C) मीमांसा (D) कल्पः

स्रोत -वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज-172

12. यास्कमते पदानां प्रकाराः कति भवन्ति?

(A) चत्वारः (B) पञ्च

(C) द्वौ (D) षड्

स्रोत - हिन्दी निरुक्त-कपिलदेव शास्त्री, पेज-08

13. षड्भावविकारेषु कतमो नास्ति?

(A) जायते (B) नश्यति

(C) वर्धते (D) स्मरति

स्रोत -हिन्दी निरुक्त – कपिलदेव शास्त्री, पेज-23

14. याज्ञवल्क्यशिक्षा केन वेदेन सम्बद्धा अस्ति–

(A) ऋग्वेदेन (B) यजुर्वेदेन

(C) सामवेदेन (D) अथर्ववेदेन

वैदिक साहित्य का इतिहास-गजानन शास्त्री मुसलगाँवकर, पेज-253

15. 'नैगमकाण्डम्' कस्मिन् ग्रन्थे वर्तते?

(A) आपस्तम्बगृह्यसूत्रे (B) निरुक्ते

(C) गौतमधर्मसूत्रे (D) बौधायनधर्मसूत्रे

स्रोत -हिन्दी निरुक्त- कपिलदेव शास्त्री, भू. पेज-11

16. 'सिद्धे शब्दार्थसम्बन्धे' इति भाष्यवार्त्तिके नित्यपर्यायवाची 'सिद्ध' शब्द एवोपात्तो, न त्वसन्दिग्धो 'नित्य' शब्दस्तत्र को हेतुः?

(A) अवधारणार्थे 'सिद्ध' शब्दप्रयोगात्

(B) पूर्वपदलोप-परकस्य 'सिद्ध' शब्दस्य प्रयोगात्

(C) व्याख्यानतो विशेषप्रतिपत्तेः 'सिद्ध'शब्दस्य नित्यार्थकत्वात्

(D) नित्यपर्यायिणः 'सिद्ध' शब्दस्य मङ्गलार्थत्वादपि

स्रोत-व्याकरणमहाभाष्य (पस्पशाह्निक)-जयशंकर लाल त्रिपाठी, पेज-82

17. 'वृत्तिसमवायार्थो वर्णानामुपदेशः' इत्यत्र 'समवाय' शब्दस्य कोऽर्थः?

(A) नित्यसम्बन्धः

(B) समूहः

(C) वर्णानामानुपूर्व्येण सन्निवेशः

(D) वृत्तिनियामकसम्बन्धः

स्रोत–व्याकरणमहाभाष्यम् (पस्पशाह्निक)-मधुसूदन मिश्र, पेज-69

18. अधोलिखितप्रयोगेषु 'इणः षीध्वं-लुङ् -लिटां धोऽङ्गात्' इति भ्वादिगणीयसूत्रस्योदाहरणं किमस्ति?

(A) एधध्वे (B) एधाञ्चकृढ्वे

(C) एधिष्यध्वे (D) एधध्वम्

स्रोत -लघुसिद्धान्तकौमुदी-गोविन्दाचार्य, पेज-486

19. एषु शुद्धो मत्वर्थीयप्रयोगः कः?

(A) विद्युद्वान् (B) विद्युद्मान्

(C) विद्युत्वान् (D) विद्युत्मान्

स्रोत–वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (भाग-3)-गोविन्दाचार्य, पेज-856

20. 'वास्तव्यः' इत्यत्र 'वस्' धातोः 'तव्यत्' प्रत्ययो भवति कस्मिन्नर्थे?

(A) कर्तरि (B) कर्मणि

(C) भावे (D) स्वार्थे

स्रोत -वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (भाग-6)-गोविन्दाचार्य, पेज-8

21. निम्नलिखितेषु शब्देषु अर्थसंकोचस्य उदाहरणं किमस्ति?

(A) सिंहः (B) वृकः

(C) कुशलः (D) मृगः

स्रोत -भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-338

22. निम्नलिखितेषु को ध्वनिः महाप्राणो नास्ति?

(A) ध् (B) भ्

(C) ह् (D) ड्

स्रोत -भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-149

23. ऐश्वर्यम् कस्य लक्षणं भवति?

(A) रजोगुणस्य (B) सत्त्वगुणस्य

(C) तमोगुणस्य (D) पुरुषस्य

स्रोत -सांख्यकारिका (का.-23) - राकेश शास्त्री, पेज-76

24. वेदान्तसारानुसारं तितिक्षायाः किं लक्षणम् अस्ति?

(A) विहितानां कर्मणां विधिना परित्यागः

(B) मोक्षेच्छा

(C) शीतोष्णादिद्विन्द्वसहिष्णुता

(D) जन्ममरणबन्धनात् मुक्तिः

स्रोत- वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-20

11. (C) **12.** (A) **13.** (D) **14.** (B) **15.** (B) **16.** (D) **17.** (C) **18.** (B) **19.** (C) **20.** (A) **21.** (D) **22.** (D) **23.** (B) **24.** (C)

25. 'अथातो धर्मजिज्ञासा' इति जैमिनीयसूत्रे वेदाध्ययनस्य दृष्टार्थत्वं को ब्रूते?

(A) 'अथ' शब्दः (B) 'अतः' शब्दः

(C) 'धर्म' शब्दः (D) 'जिज्ञासा' शब्दः

स्रोत- अर्थसंग्रह - सत्यप्रकाश शर्मा, पेज-5

26. 'आदित्यो यूपः' इत्यत्र किंविधोऽर्थवादः?

(A) भूतार्थवादः (B) अनुवादः

(C) निषेधशेषः (D) गुणवादः

स्रोत -अर्थसंग्रह - सत्यप्रकाश शर्मा, पेज-198

27. 'यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत् क्वचित्' इति उक्तिः कस्य विषये?

(A) योगवासिष्ठस्य (B) श्रीमद्भागवतस्य

(C) महाभारतस्य (D) मृच्छकटिकस्य

स्रोत-संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-145

28. श्रीमद्भगवद्गीता महाभारतस्य कस्मिन् पर्वणि वर्तते?

(A) कर्ण-पर्वणि (B) भीष्म-पर्वणि

(C) अनुशासन-पर्वणि (D) शान्ति-पर्वणि

स्रोत-संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा ऋषि, पेज-158

29. वाल्मीकिरामायणानुसारं दशरथस्य पुत्रेष्टियज्ञे पुरोहित आसीत् –

(A) वसिष्ठः (B) ऋष्यशृङ्गः

(C) भारद्वाजः (D) विश्वामित्रः

वाल्मीकिरामायण प्रथम खण्ड (बालकाण्ड सर्ग-15) गीताप्रेस, पेज-62

30. वाल्मीकिरामायणानुसारं शम्बूकः केन हतः?

(A) दशरथेन (B) रामेण

(C) परशुरामेण (D) भरतेन

स्रोत-संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा ऋषि, पेज-127

31. महापुराणेषु न गण्यते–

(A) एकाम्रपुराणम् (B) ब्रह्मपुराणम्

(C) लिङ्गपुराणम् (D) पद्मपुराणम्

संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशङ्कर शर्मा ऋषि, पेज-176

32. कौटिल्यानुसारं मानवाः कां विद्यां पृथक् न मन्यन्ते?

(A) आन्वीक्षिकीम् (B) त्रयीम्

(C) वार्ताम् (D) दण्डनीतिम्

स्रोत– कौटिलीय अर्थशास्त्रम् - वाचस्पति गैरोला, पेज-08

33. कौटिल्यानुसारं त्रयीं के संवरणमात्रं मन्यन्ते?

(A) मानसाः (B) मानवाः

(C) बार्हस्पत्याः (D) औशनसाः

स्रोत- कौटिलीय अर्थशास्त्रम्-वाचस्पति गैरोला, पेज-08

34. मनुसंहितानुसारं एषु किं ब्राह्मणस्य कर्म न भवति?

(A) अध्यापनम् (B) प्रजारक्षणम्

(C) यजनम् (D) याजनम्

स्रोत मनुस्मृति (1.89) - शिवराजकौण्डिन्न्यायनः, पेज-106

35. मनुसंहितानुसारं सचिवानां संख्या भवेत् –

(A) 3-4 (B) 5-6

(C) 7-8 (D) 9-10

स्रोत -मनुस्मृति (7.54) - गिरिधर गोपाल शर्मा, पेज-170

36. याज्ञवल्क्यस्मृत्यनुसारं रिक्ते स्थाने कः शब्दः उपयुक्तः- 'दर्शने प्रत्यये दाने .... विधीयते।'

(A) व्यवहारः (B) प्रातिभाव्यम्

(C) ऋणादानम् (D) वाक्पारुष्यम्

स्रोत-याज्ञवल्क्यस्मृति - उमेशचन्द्र पाण्डेय, पेज-211

37. रघुवंशस्य चतुर्दशसर्गस्य नाम किम् ?

(A) सीतापवादः (B) सीतापरित्यागः

(C) श्रीराममनस्तापः (D) सीतावनवासः

स्रोत- रघुवंशमहाकाव्यम् - हरगोविन्द मिश्र, पेज-369

38. 'अतिदुर्धरो बान्धवस्नेहः सर्वप्रमाथी' हर्षचरिते इयमुक्तिर्भवति।

(A) प्रभाकरवर्धनस्य (B) हर्षवर्धनस्य

(C) भण्डिनः (D) यशोमत्याः

स्रोत -हर्षचरितम् (पञ्चम उच्छ्वास)-शिवनाथ पाण्डेय, पेज-60

25. (B) **26.** (D) **27.** (C) **28.** (B) **29.** (B) **30.** (B) **31.** (A) **32.** (A) **33.** (C) **34.** (B) **35.** (C) **36.** (B) **37.** (B) **38.** (A)

39. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां मेलनतालिकां चिनुत–

(क) अनङ् गोऽयमनङ्गत्वमद्य निन्दिष्यति ध्रुवम् (i) उत्तररामचरितम्

(ख) उदेति पूर्वं कुसुमं ततः फलम् (ii) कादम्बरी

(ग) प्रभवति शुचिर्बिम्बग्राहे मणिर्न मृदादयः (iii) रत्नावली

(घ) न हि क्षुद्रनिर्घातपाताभिहता चलति वसुधा (iv) अभिज्ञानशाकुन्तलम्

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(A)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(B)	(iii)	(iv)	(i)	(ii)
(C)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)
(D)	(iv)	(i)	(ii)	(iii)

स्रोत- (A) रत्नावली (1.22)–श्रीकृष्ण त्रिपाठी, पेज-38

(B) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (7.30)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-442

(C) उत्तररामचरितम् (2.4)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-105

(D) कादम्बरी (महाश्वेतावृत्तान्त)-आचार्य राजदेव मिश्र पेज-31

40. 'अखण्डेषु कारणेषु फलावचः' - कस्य अलङ्कारस्य लक्षणम् ?

(A) विशेषोक्तेः (B) विभावनायाः

(C) समासोक्तेः (D) वक्रोक्तेः

स्रोत -काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-498

41. 'शिखरिणि क्व नु नाम कियच्चिरं, किमभिधानमसावकरोत्तपः।' इत्यादि-श्लोकः ध्वन्यालोके उदाहरणरूपेण उल्लिखितः।

(A) अविवक्षितवाच्य-प्रसङ्गे

(B) अप्रस्तुतप्रशंसालङ्कारप्रसङ्गे

(C) विवक्षितान्यपरवाच्य-प्रसङ्गे

(D) दीपकालङ्कारप्रसङ्गे

स्रोत – ध्वन्यालोक - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-56

42. कालक्रमानुसारं तालिकां चिनुत।

(i) अप्पयदीक्षितः (ii) भरतः

(iii) विश्वनाथकविराजः (iv) वामनः

(A)	(ii)	(iv)	(iii)	(i)
(B)	(ii)	(iv)	(i)	(iii)
(C)	(ii)	(i)	(iii)	(iv)
(D)	(i)	(ii)	(iv)	(iii)

स्रोत-काव्यप्रकाश-आचार्य विश्वेश्वर, पेज भू.-18, 44, 87, 91

43. 'प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः, प्रारभ्य विघ्नविहताः विरमन्ति मध्याः।' - मुद्राराक्षसे कस्येयमुक्तिः?

(A) विराधगुप्तस्य (B) चाणक्यस्य

(C) राक्षसस्य (D) चन्द्रगुप्तस्य

स्रोत -मुद्राराक्षसम् - परमेश्वरदीन पाण्डेय, पेज-118

44. 'सिद्धेर्भ्रान्तिर्नास्ति सत्यं तथापि स्वेच्छाचारी भीत एवास्मि भर्तुः। इत्युक्तिः रत्नावल्यां केन सम्बद्धा?

(A) उदयनेन (B) वसन्तकेन

(C) बाभ्रव्येण (D) यौगन्धरायणेन

स्रोत -रत्नावली (1.7) - श्रीकृष्ण त्रिपाठी, पेज-12

45. दशरूपकानुसारं–

'बीजवन्तो मुखाद्यर्था विप्रकीर्णा यथायथम् । ऐकार्थ्यमुपनीयन्ते' इत्यादिलक्षणं भवति –

(A) मुखसन्धेः (B) गर्भसन्धेः

(C) निर्वहणसन्धेः (D) प्रतिमुखसन्धेः

स्रोत -दशरूपक (1.48) - श्रीनिवास शास्त्री, पेज-81

46. 'प्रशंसात उन्मुखीकरणं दशरूपके कस्य लक्षणं भवति?

(A) भारत्याः (B) वीथ्याः

(C) प्ररोचनायाः (D) प्रहसनस्य

स्रोत -साहित्यदर्पण - शालिग्राम शास्त्री, पेज-175

39. (B) **40.** (A) **41.** (C) **42.** (A) **43.** (A) **44.** (D) **45.** (C) **46.** (C)

47. तर्कसङ्ग्रहदीपिकानुसारं 'परमाणुष्वेव पाको, न द्व्यणुकादावपी' ति केषाम्मते?
(A) नैयायिकानाम् (B) वैशेषिकानाम्
(C) साङ्ख्यानाम् (D) वेदान्तिनाम्

स्रोत- तर्कसंग्रह - गोविन्दाचार्य, पेज-92

48. तर्कसङ्ग्रहानुसारम् आत्ममात्रविशेष-गुणेषु कस्य परिगणनं नास्ति?
(A) बुद्धेः (B) इच्छायाः
(C) स्थिति-स्थापकसंस्कारस्य (D) धर्मस्य

स्रोत- तर्कसंग्रह - गोविन्दाचार्य, पेज-267,303

49. तर्कभाषानुसारं प्रमायाः करणं किम्भवति?
(A) प्रमाता (B) प्रमेयम्
(C) तर्कः (D) इन्द्रियसंयोगादिः

स्रोत- तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज-68,69,70

50. 'व्याप्यस्य पक्षवृत्तित्वधीः' किमुच्यते?
(A) पक्षता (B) सपक्षः
(C) परामर्शः (D) व्याप्तिः

न्याय सिद्धान्तमुक्तावली (अनुमानोपमानखण्ड)-महानन्द झा, पेज-10

51. 'मही मित्रस्य वरुणस्य माया चन्द्रेव भानुं विदधे पुरुत्रा' इति मन्त्रांशो वर्तते।
(A) उषस्सूक्ते (B) कालसूक्ते
(C) वरुणसूक्ते (D) पर्जन्यसूक्ते

स्रोत -ऋक्सूक्तसंग्रह (13.61.7) - हरिदत्त शास्त्री, पेज-241

52. ऋग्वेदीय-पर्जन्यसूक्तस्य कः ऋषिरस्ति?
(A) विश्वामित्रः (B) गौतमः
(C) अत्रिः (D) कण्वः

स्रोत- ऋक्सूक्तसंग्रह (5.83) हरिदत्तशास्त्री, पेज-283

53. यजुर्वेदीय-शिवसंकल्पमन्त्राणां का देवता?
(A) मनस् (B) शिवः
(C) संकल्पः (D) विष्णुः

स्रोत- वैदिकसूक्तसंग्रह - विजयशंकर पाण्डेय, पेज-51

54. ऋग्वेदप्रातिशाख्यानुसारं रक्त-संज्ञका के सन्ति?
(A) कण्ठ्यवर्णाः (B) अयोगवाहाः
(C) निरनुनासिकवर्णाः (D) अनुनासिकवर्णाः

स्रोत- ऋग्वेद-प्रातिशाख्यम् - वीरेन्द्र कुमार वर्मा, पेज-69

55. 'तिस्र एव देवताः' इति कथनमस्ति–
(A) निरुक्ते दैवतकाण्डे (B) ऋक्प्रातिशाख्ये
(C) निरुक्ते द्वितीयेऽध्याये (D) अथर्ववेदे राष्ट्राभिवर्धनसूक्ते

स्रोत- हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज- 280

56. जन्मादयो विकाराः ब्रह्मणः कां शक्तिमुपाश्रिताः भवन्ति?
(A) आवरणशक्तिम् (B) आध्यात्मिकीं शक्तिम्
(C) कालशक्तिम् (D) भिन्नात्मिकां शक्तिम्

वाक्यपदीयम् (ब्रह्मकाण्डम् 1.3)-शिवशंकर अवस्थी, पेज-58

57. अत्रातीतविपर्यासः केवलामनुपश्यति।
छन्दस्यश्छन्दसां योनिमात्मा छन्दोमयीं तनुम् ॥
अस्यां कारिकायाम् 'छन्दस्य' इत्यस्य शब्दस्य कोऽर्थः?
(A) वेदार्थग्रहणसमर्थः (B) स्वतन्त्रः
(C) वैदिकछन्दसां निर्माता (D) वैदिकछन्दसां प्रयोगे निष्णातः

वाक्यपदीयम् (ब्रह्मकाण्डम् 1.17)-शिवशंकर अवस्थी, पेज-126

58. स्फोटः भेदवान् कथं प्रतीयते?
(A) भिन्नद्रव्यानाम् अभिव्यक्तिसाधनात्
(B) भिन्नोच्चारणात्
(C) भिन्नार्थेषु प्रयोगात्
(D) नादस्य क्रमजन्मत्वात्

वाक्यपदीयम् (ब्रह्मकाण्ड) कारिका-47-शिवशंकर अवस्थी पेज-218

59. एषूदाहरणेषु वैषयिकाधारस्योदाहरणं किमस्ति?
(A) मोक्षे इच्छाऽस्ति (B) कटे आस्ते
(C) स्थाल्यां पचति (D) सर्वस्मिन्नात्मास्ति

स्रोत-सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज-93

60. पाणिनीयशिक्षानुसारम् उदात्तस्वरोच्चारणकाले हस्तः कुत्र निधेयः?
(A) हृदि (B) कर्णमूले
(C) सर्वास्ये (D) मूर्ध्नि

पाणिनीयशिक्षा (श्लोक-48)-शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पेज-158

61. व्यासभाष्यानुसारेण का उक्तिः सत्या?
(A) चित्तं हि प्रख्याप्रवृत्तिस्थितिशीलत्वात् त्रिगुणम्।
(B) चित्तवृत्तीनां निरोधः असाध्यः।
(C) सर्ववृत्तिनिरोधे सम्प्रज्ञातः समाधिः।
(D) चित्तवृत्तिबोधे पुरुषस्य अनादिः सम्बन्धः न हेतुः।

स्रोत - पातञ्जलयोगदर्शनम् - सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पेज-09

47. (B) **48.** (C) **49.** (D) **50.** (C) **51.** (A) **52.** (C) **53.** (A) **54.** (D) **55.** (A) **56.** (C) **57.** (A) **58.** (D) **59.** (A) **60.** (D) **61.** (A)

62. ब्रह्मसूत्रस्य रचयिता कोऽस्ति?
(A) शङ्कराचार्यः (B) बादरायणः
(C) कपिलः (D) सदानन्दः
स्रोत - वेदान्तसार - राकेश शास्त्री, पेज-भू.-04

63. शब्दप्रमाणस्य फलं किम्भवति?
(A) पदज्ञानम् (B) वाक्यार्थज्ञानम्
(C) शक्तिज्ञानम् (D) पदजन्यपदार्थस्मरणम्
स्रोत तर्कसंग्रह - अनिता सेनगुप्ता, पेज-111

64. न्यायसिद्धान्तमुक्तावल्यां साध्यशून्यो यत्र पक्षस्त्वसौ क उदाहृतः?
(A) विरुद्धः (B) बाधः
(C) अनैकान्तिकः (D) सत्प्रतिपक्षः
न्यायसिद्धान्तमुक्तावली (अनुमानोपमान खण्ड)-महानन्द झा पेज-127

65. बौद्धदर्शने भावनाचतुष्टये किं नोपदिष्टम् ?
(A) सर्वं क्षणिकं क्षणिकम्
(B) स्वलक्षणम् स्वलक्षणम्
(C) सामान्यम् सामान्यम्
(D) शून्यं शून्यम्
स्रोत– सर्वदर्शनसंग्रह - उमाशंकर शर्मा ऋषि, पेज-31

66. 'शयिता सविधेऽप्यनीश्वरा सफलीकर्त्तुमहो मनोरथान्।'-
पण्डितराजजगन्नाथेन कस्य काव्यस्य उदाहरणरूपे उद्धृतोऽयं श्लोकः?
(A) अधमस्य (B) उत्तमोत्तमस्य
(C) उत्तमस्य (D) मध्यमस्य
स्रोत - रसगङ्गाधर – मदनमोहन झा, पेज- 38

67. 'उपकारकत्वादलङ्कारः सप्तमङ्गम् इति यायावरीयः।' उक्तिरियं कुत्रास्ति?
(A) नाट्यशास्त्रे (B) काव्यप्रकाशे
(C) काव्यमीमांसायाम् (D) वक्रोक्तिजीविते
स्रोत – काव्यमीमांसा - कृष्णमणि त्रिपाठी, पेज-11

68. वक्रोक्तिजीवितानुसारं कविव्यापारवक्रत्वप्रकाराः कति सम्भवन्ति?
(A) त्रयः (B) चत्वारः
(C) पञ्च (D) षट्
स्रोत -वक्रोक्तिजीवितम् - राधेश्याम मिश्र भू. पेज-24

69. काव्यप्रकाशानुसारं शृङ्गारे द्रुतिकारणम् आह्लादकत्वं कस्य?
(A) माधुर्यस्य (B) ओजसः
(C) प्रसादस्य (D) समतायाः
स्रोत -काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-388

70. पण्डितराजजगन्नाथमते काव्यस्य कति भेदाः स्वीकृताः?
(A) त्रयः (B) द्वौ
(C) चत्वारः (D) पञ्च
स्रोत -रसगङ्गाधर - मदन मोहन झा, पेज-37

71. ब्राह्मीलिपेः उद्वाचने प्रथमां सफलतां कः प्राप्तवान्?
(A) मैक्समूलरः (B) विलियम-जोन्सः
(C) जेम्स प्रिंसेपः (D) व्हिटने
स्रोत -प्राचीन भारत-सौरभ चौबे, पेज-207

72. अशोकस्य शिलालेखानां भाषा का अस्ति?
(A) प्राकृतम् (B) संस्कृतम्
(C) अपभ्रंशः (D) अवेस्ता
स्रोत - प्राचीन भारत - सौरभ चौबे, पेज-207

73. कुत्र अशोकस्य नाम प्रदत्तम् ?
(A) मास्कि-शिलालेखे
(B) प्रयाग-स्तम्भ-लेखे
(C) गिरनार-शिलालेखे
(D) गन्धार-द्विभाषी-शिलालेखे
स्रोत-प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख (भाग-1)-परमेश्वरीलाल गुप्ता, पेज-09

74. गिरनारस्य तडागेन सम्बद्धो नासीत् ।
(A) चन्द्रगुप्तः मौर्यः (B) अशोकः मौर्यः
(C) कनिष्कः कुषाणः (D) रुद्रदामा शकः
स्रोत -प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख (भाग-1), परमेश्वरीलाल गुप्त, पे 18,19

75. अत्र वर्तते कालिदासस्य नामोल्लेखः।
(A) तन्तुवाय-श्रेण्याः मन्दसौर-शिलालेखे
(B) प्रभावतीगुप्तायाः पूना-ताम्रपट्ट-लेखे
(C) पुलिकेशिद्वितीयस्य एहोले-शिलालेखे
(D) मिहिरभोजस्य ग्वालियार-शिलालेखे
स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम्-कपिलदेव द्विवेदी, पेज भू.-13

62. (B) **63.** (B) **64.** (B) **65.** (C) **66.** (B) **67.** (C) **68.** (D) **69.** (A) **70.** (C) **71.** (C) **72.** (A) **73.** (A) **74.** (C) **75.** (C)

53	जनवरी 2017	CBSE UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् II

सूचना : इस प्रश्नपत्र में पचास (50) बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के दो (2) अंक हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. अधस्तनेषु उचितसम्बन्धयुतं विकल्पं चिनुत –

(A) द्यावाचिदस्मै पृथिवी नमेते...... – अग्निदेवता

(B) यस्य ब्रह्मवर्धनं यस्य सोमः .... – सोमसूक्तम्

(C) राजन्तमध्वराणां गोपामृतस्य दीदिविम्..... – रुद्रदेवता

(D) ता वां वास्तून्युश्मसि गमध्यै यत्र गावो भूरिशृङ्गा अयासः – विष्णुसूक्तम्

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह (1.154.6)-हरिदत्तशास्त्री, पेज–170

2. अधस्तनयुग्मानां समुचितां तालिकां चिनुत–

(क) पुराणी देवि युवतिः पुरन्धिरनु व्रतं चरसि विश्ववारे .... (i) इन्द्रसूक्तम्

(ख) स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव....... (ii) विष्णुसूक्तम्

(ग) यः पृथिवीं व्यथमानामदृंहद्यः पर्वतान्प्रकुपिताँ अरम्णात्...... (iii) उषस्सूक्तम्

(घ) तदस्य प्रियमभिपाथो अश्यां नरो यत्र देवयवो मदन्ति....... (iv) अग्निसूक्तम्

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(A)	(iii)	(iv)	(i)	(ii)
(B)	(iv)	(i)	(iii)	(ii)
(C)	(i)	(iii)	(ii)	(iv)
(D)	(ii)	(iv)	(i)	(iii)

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्त शास्त्री, पेज– क-233, ख-60, ग-178, घ-169

3. ''नाहं वेद भ्रातृत्वं नो स्वसृत्वमिन्द्रो विदुरङ्गिरसश्च घोराः'' इति मन्त्रांशो वर्तते–

(A) विश्वामित्र-नदीसूक्ते

(B) सरमा-पणिसूक्ते

(C) यम-यमीसूक्ते

(D) पुरुरवा-उर्वशीसूक्ते

स्रोत– ऋग्वेद (10-108-10) - वेदान्ततीर्थ, पेज–465

4. ''को दम्पती समनसा वि यूयोदध यदग्निः श्वशुरेषु दीदयत्'' इति मन्त्रांशो वर्तते–

(A) सरमा - पणिसूक्ते (B) विश्वामित्र - नदीसूक्ते

(C) पुरुरवा - उर्वशीसूक्ते (D) यम - यमीसूक्ते

स्रोत–ऋग्वेद (10-95-12) - वेदान्ततीर्थ, पेज–430

5. अधस्तनेषु सामवेदस्य ब्राह्मणमस्ति–

(A) शांखायनब्राह्मणम् (B) कौषीतकिब्राह्मणम्

(C) षड्विंशब्राह्मणम् (D) तैत्तिरीयब्राह्मणम्

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–10

6. ''अन्धन्तमः प्रविशन्ति येऽविद्यामुपासते/ततो भूय इव ते तमो ये उ विद्यायां रताः'' सन्दर्भोऽयं वर्तते–

(A) कठोपनिषदि (B) ईशोपनिषदि

(C) श्वेताश्वतरोपनिषदि (D) बृहदारण्यकोपनिषदि

स्रोत–ईशादि नौ उपनिषद् (ईशा0-9) - गीताप्रेस, पेज–34

7. ''सृष्ट्युत्पत्तिकाल एव वेदानामुत्पत्तिकालः'' इति कः स्वीकरोति?

(A) मेक्डानलः (B) मैक्षमूलरः

(C) एम0 विन्टरनिट्जः (D) महर्षिदयानन्दः

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–39

8. अधस्तनयुग्मानां समुचितां तालिकां चिनुत–

(क) कात्यायनशुल्बसूत्रम् (i) व्याकरणम्

(ख) त्रिमुनि (ii) कृष्णयजुर्वेदः

(ग) ऋक्तन्त्रप्रातिशाख्यम् (iii) शुक्लयजुर्वेदः

(घ) आपस्तम्बगृह्यसूत्रम् (iv) सामवेदः

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(A)	(ii)	(i)	(iii)	(iv)
(B)	(iii)	(i)	(iv)	(ii)
(C)	(ii)	(iii)	(i)	(iv)
(D)	(ii)	(i)	(iv)	(iii)

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज– क-241, ख-196, ग-198, घ-230

9. वेदानां विकृतिपाठः कतिविधः?

(A) त्रिविधः (B) पञ्चविधः

(C) अष्टविधः (D) नवविधः

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–8

1. (D) **2.** (A) **3.** (B) **4.** (C) **5.** (C) **6.** (B) **7.** (D) **8.** (B) **9.** (C)

10. द्विविधो विभाजनक्रमो वर्तते–

(A) अथर्ववेदस्य (B) ऋग्वेदस्य
(C) ईशोपनिषदः (D) कठोपनिषदः

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–46

11. शुक्लयजुर्वेदस्य कति शाखाः समुपलभ्यन्ते?

(A) 4 (B) 3
(C) 5 (D) 2

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–9

12. अधस्तनयुग्मानां समुचितां तालिकां चिनुत–

(क) पिङ्गलः (i) ज्योतिषम्
(ख) शुल्बसूत्राणि (ii) निरुक्तम्
(ग) लगधः (iii) छन्दःशास्त्रम्
(घ) तदिदं विद्यास्थानं व्याकरणस्य कार्त्स्न्यं स्वार्थसाधकञ्च (iv) कल्पः

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(A)	(i)	(iii)	(iv)	(ii)
(B)	(iii)	(i)	(ii)	(iv)
(C)	(ii)	(iv)	(iii)	(i)
(D)	(iii)	(iv)	(i)	(ii)

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–199, 214, 208, घ - निरुक्तम् - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–96

13. महत् किमस्ति?

(A) प्रकृतिः (B) विकृतिः
(C) प्रकृतिविकृती (D) न प्रकृतिः न विकृतिः

स्रोत–सांख्यकारिका (का0-3) - राकेश शास्त्री, पेज–8

14. 'तल्लिङ्गलिङ्गिपूर्वकम्' लक्षणमिदं कस्य विद्यते?

(A) शब्दप्रमाणस्य (B) अनुमानप्रमाणस्य
(C) प्रत्यक्षप्रमाणस्य (D) उपमानप्रमाणस्य

स्रोत–सांख्यकारिका (का0-5) - राकेश शास्त्री, पेज–16

15. व्यक्तं कीदृग् न भवति?

(A) हेतुमत् (B) अव्यापि
(C) अनाश्रितम् (D) सावयवम्

स्रोत–सांख्यकारिका (का0-10) - राकेश शास्त्री, पेज–32-33

16. ''तदैक्यप्रमेयस्य तत्प्रतिपादकोपनिषत्प्रमाणस्य च बोध्यबोधकभावः'' वेदान्तसारानुसारं लक्षणमिदं कस्यास्ति?

(A) अधिकारिणः (B) विषयस्य
(C) सम्बन्धस्य (D) प्रयोजनस्य

स्रोत–वेदान्तसार - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–36

17. 'समष्टिव्यष्ट्यभिप्रायेणैकमनेकमिति' उक्तिरियं वेदान्तसारे कस्य सन्दर्भेऽस्ति?

(A) विद्यायाः (B) अज्ञानस्य
(C) अध्यारोपस्य (D) समाधेः

स्रोत–वेदान्तसार - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–42

18. अज्ञानोपहितं चैतन्यं कीदृशं कारणं भवति?

(A) निमित्तकारणम्
(B) उपादानकारणम्
(C) निमित्तकारणम् उपादानकारणं च
(D) कीदृशमपि कारणं न

स्रोत–वेदान्तसार - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–55

19. वेदान्तसारानुसारं सूक्ष्मशरीराणि कति अवयवानि भवन्ति?

(A) षोडशावयवानि (B) पञ्चदशावयवानि
(C) सप्तदशावयवानि (D) त्रयोदशावयवानि

स्रोत–वेदान्तसार - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–60

20. तर्कसङ्ग्रहानुसारं रूपं कतिविधम्?

(A) पञ्चविधम् (B) सप्तविधम्
(C) षड्विधम् (D) नवविधम्

स्रोत– तर्कसंग्रह - गोविन्दाचार्य, पेज–80

21. 'गौरश्वः पुरुषो हस्ती' इत्यादिपदसमुदायः प्रमाणं कथं न भवति?

(A) योग्यताविरहात् (B) आकाङ्क्षाविरहात्
(C) सान्निध्याभावात् (D) पदसमूहाभावात्

स्रोत– तर्कसंग्रह - गोविन्दाचार्य, पेज–245

22. असाधारणधर्मः कस्य लक्षणम्?

(A) लक्षणस्य (B) उद्देशस्य
(C) परीक्षायाः (D) आत्मनः

स्रोत– तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज–7

23. तर्कभाषायां 'प्रकरणसम' हेत्वाभासस्य काऽपरा सञ्ज्ञा?

(A) बाधितविषयः (B) सत्प्रतिपक्षः
(C) सव्यभिचारः (D) अनुपसंहारी

स्रोत– तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज–117

24. तर्कभाषानुसारं समवायिकारणं किम्भवति?

(A) गुणः (B) द्रव्यम्
(C) कर्म (D) सामान्यम्

स्रोत– तर्कभाषा - गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज–44

10. (B) **11.** (D) **12.** (D) **13.** (C) **14.** (B) **15.** (C) **16.** (C) **17.** (B) **18.** (C) **19.** (C) **20.** (B)
21. (B) **22.** (A) **23.** (B) **24.** (B)

25 'पठति' इति क्रियापदं कीदृश्याः भाषायाः उदाहरणमस्ति?
(A) अयोगात्मिकायाः (B) प्रश्लिष्टयोगात्मिकायाः
(C) श्लिष्टयोगात्मिकायाः (D) अश्लिष्टयोगात्मिकायाः
स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–365

26. ग्रीकभाषा कस्य परिवारस्य भाषा अस्ति?
(A) भारोपीय-परिवारस्य (B) सेमेटिक-परिवारस्य
(C) सूडानी-परिवारस्य (D) काकेशी-परिवारस्य
स्रोत– भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–384

27. निम्नलिखितासु भाषासु का भाषा 'सतम्' वर्गस्य नास्ति?
(A) संस्कृतभाषा (B) ईरानीभाषा
(C) ग्रीकभाषा (D) फारसीभाषा
स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–385

28. अंग्रेजी-भाषायाः सम्बन्धः कया भाषाशाखया अस्ति?
(A) कैल्टिकशाखया (B) जर्मनिकशाखया
(C) इटैलिकशाखया (D) ग्रीकशाखया
स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–392

29. संस्कृतभाषायां निम्नलिखितेषु स्वरेषु कस्य स्वरस्य दीर्घो नास्ति?
(A) ऋकारस्य (B) अकारस्य
(C) इकारस्य (D) लृकारस्य
स्रोत– लघुसिद्धान्तकौमुदी - धरानन्दशास्त्री, पेज–16

30. अन्त्यादलः पूर्ववर्णस्य का सञ्ज्ञा भवति?
(A) अपृक्तसञ्ज्ञा (B) उपधा-सञ्ज्ञा
(C) टि-सञ्ज्ञा (D) सर्वनामस्थानसञ्ज्ञा
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (1.1.65) - गोविन्दाचार्य, पेज–175

31. निषेध-विकल्पयोः सञ्ज्ञा का?
(A) अपृक्तसञ्ज्ञा (B) विभाषासञ्ज्ञा
(C) उपधासञ्ज्ञा (D) प्रगृह्यसञ्ज्ञा
स्रोत–अष्टाध्यायी (1.1.43) - ईश्वरचन्द्र, पेज–25

32. 'सुडनपुंसकस्य' इति सूत्रेण का सञ्ज्ञा क्रियते?
(A) सर्वनामस्थानसञ्ज्ञा (B) निष्ठासञ्ज्ञा
(C) प्रातिपदिकसञ्ज्ञा (D) पदसञ्ज्ञा
स्रोत– लघुसिद्धान्तकौमुदी (1.1.43) - गोविन्दाचार्य, पेज–166

33. 'अनुविष्णु' इत्यत्र 'अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि इत्यादिसूत्रेण कस्मिन् अर्थेऽव्ययीभावसमासः?
(A) समीपार्थे (B) असम्प्रत्यर्थे
(C) पश्चादर्थे (D) आनुपूर्व्यार्थे
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–900

34. 'व्यूढोरस्कः' इत्यत्र कीदृशः समासः?
(A) अव्ययीभावः (B) तत्पुरुषः
(C) द्वन्द्वः (D) बहुव्रीहिः
स्रोत– लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–966

35. 'सर्पिषोऽपि स्याद्' इत्यत्र 'अपि' शब्दस्य कर्मप्रवचनीयसञ्ज्ञा कस्मिन् अर्थे भवति?
(A) सम्भावनाद्योतकतायाम्
(B) अन्ववसर्गद्योतकतायाम्
(C) समुच्चयद्योतकतायाम्
(D) पदार्थद्योतकतायाम्
सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण -1.4.96)-राममुनि पाण्डेय, पेज–36

36. 'अधिकरणवाचिनश्च' इति सूत्रस्योदाहरणं किं भवति?
(A) राज्ञां मतः
(B) द्विरह्नो भोजनम्
(C) शब्दानामनुशासनमाचार्यस्य
(D) इदम् एषाम् आसितम्
सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण -2.3.68)-राममुनि पाण्डेय, पेज–85

37. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत–
(क) भासः (i) मालतीमाधवम्
(ख) कालिदासः (ii) मृच्छकटिकम्
(ग) भवभूतिः (iii) मालविकाग्निमित्रम्
(घ) शूद्रकः (iv) पञ्चरात्रम्

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(A)	(iv)	(iii)	(i)	(ii)
(B)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)
(C)	(iii)	(iv)	(ii)	(i)
(D)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज– क-275, ख-137, ग-395, घ-301

38. शिशुपालवधमहाकाव्यस्य प्रथमसर्गस्य नाम भवति–
(A) श्रीकृष्णगुणकीर्तनम् (B) नारदगुणकीर्तनम्
(C) कृष्णनारदसम्भाषणम् (D) नारदावतरणम्
स्रोत– शिशुपालवधम् - हरगोविन्द शास्त्री, पेज–54

39. सानुमत्याः उपाख्यानम् अभिज्ञानशाकुन्तले कस्मिन् अङ्के अस्ति?
(A) सप्तमे (B) षष्ठे
(C) पञ्चमे (D) चतुर्थे
स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (अङ्क-6)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–375

25. (C) **26.** (A) **27.** (C) **28.** (B) **29.** (D) **30.** (B) **31.** (B) **32.** (A) **33.** (C) **34.** (D) **35.** (D) **36.** (D) **37.** (A) **38.** (C) **39.** (B)

40. आसु कस्याः उल्लेखो मेघदूते नास्ति–

(A) रेवायाः (B) शिप्रायाः

(C) तुङ्गभद्रायाः (D) गन्धवत्याः

स्रोत– मेघदूतम् - शेषराज शर्मा रेग्मी, भू0 पेज–35

41. मृच्छकटिकम् इति कस्य रूपकस्य उदाहरणं भवति?

(A) नाटकस्य (B) प्रकरणस्य

(C) व्यायोगस्य (D) समवकारस्य

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–307

42. कृतककोपवृत्तान्तः मुद्राराक्षसे कस्मिन्नङ्केऽस्ति?

(A) प्रथमे (B) द्वितीये

(C) तृतीये (D) चतुर्थे

स्रोत– मुद्राराक्षसम् - पुष्पा गुप्ता, पेज–192

43. कालानुसारेण तालिकां चिनुत–

(अ) भारविः (ब) भासः

(स) कालिदासः (द) साहित्यदर्पणकारः विश्वनाथः

(A) (अ) (ब) (स) (द)

(B) (ब) (अ) (स) (द)

(C) (स) (अ) (ब) (द)

(D) (ब) (स) (अ) (द)

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज–अ - 242, ब - 465, स - 201, द - 587

44. विश्वनाथमते हास्यं कतिविधं भवति?

(A) चतुर्विधम् (B) पञ्चविधम्

(C) षड्विधम् (D) द्विविधम्

स्रोत– साहित्यदर्पण (3/217) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–115

45. काव्यलक्षणविचारे ''स्ववचनविरोधाद् अपास्तम्'' इति कथनेन कस्य मतं विश्वनाथेन निराकृतम्?

(A) आनन्दवर्धनस्य (B) वामनस्य

(C) मम्मटस्य (D) व्यक्तिविवेककारस्य

स्रोत– साहित्यदर्पण - शालिग्राम शास्त्री, पेज–18

46. साहित्यदर्पणमते नीलवर्णः महाकालदैवतः रसः कः भवति?

(A) रौद्रः (B) वीरः

(C) भयानकः (D) बीभत्सः

स्रोत– साहित्यदर्पण (3/239) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–120

47. जतुकर्णीपुत्रः भवति–

(A) भवभूतिः (B) कालिदासः

(C) माघः (D) श्रीहर्षः

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–395

48. शाकुन्तले दुष्यन्तपुत्रस्य प्रथमं नाम किम् आसीत्?

(A) भरतः (B) सर्वदमनः

(C) गौतमः (D) वातायनः

स्रोत– अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–448

49. साहित्यदर्पणानुसारेण एषु कस्य रूपकमध्ये गणनं न भवति–

(A) समवकारस्य (B) नाटिकायाः

(C) प्रकरणस्य (D) प्रहसनस्य

स्रोत– साहित्यदर्पण (6/3) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–170

50. एषु गतिसञ्ज्ञाविधायकं सूत्रं किमस्ति?

(A) ऊर्यादिच्विडाचश्च

(B) कुगतिप्रादयः

(C) तत्रोपपदं सप्तमीस्थम्

(D) एकविभक्ति चापूर्वनिपाते

स्रोत– लघुसिद्धान्तकौमुदी (1.4.61) - गोविन्दाचार्य, पेज–935

40. (C) **41.** (B) **42.** (C) **43.** (D) **44.** (C) **45.** (A) **46.** (D) **47.** (A) **48.** (B) **49.** (B) **50.** (A)

54	जनवरी 2017	CBSE UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् III

सूचना : अस्मिन् प्रश्नपत्रे पञ्चसप्ततिः (75) बहुविकल्पीयाः प्रश्नाः सन्ति। प्रत्येकं प्रश्नस्य अङ्कद्वयं वर्तते। सर्वे प्रश्नाः समाधेयाः।

1. निरुक्तानुसारेण 'अति' इत्यस्य उपसर्गस्य कोऽर्थः?
(A) निषेधः (B) एकीभावः
(C) पूजा (D) अनादरः
स्रोत– निरुक्तम् - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–39

2. निरुक्तानुसारेण ''चित्'' इत्यस्य निपातस्य अर्थो नास्ति–
(A) प्रतिषेधः (B) उपमा
(C) पूजा (D) अवकुत्सितः
स्रोत–निरुक्तम् - आचार्य विश्वेश्वर, पेज– 44-45

3. निरुक्ते अधोलिखितेषु उपधाविकारस्य उदाहरणमस्ति–
(A) प्रत्तम् (B) स्तः
(C) गत्वा (D) राजा
स्रोत– निरुक्तम् - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–135

4. ब्राह्मणग्रन्थानां विषयो नास्ति–
(A) छन्दोविवेचनम् (B) पुराकल्पः
(C) विधिः (D) निर्वचनम्
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–115

5. शिक्षावेदाङ्गे गणना नास्ति–
(A) तैत्तिरीयप्रातिशाख्यस्य (B) ऋक्तन्त्रस्य
(C) पारस्करगृह्यसूत्रस्य (D) नारदशिक्षायाः
स्रोत– वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–228

6. ऐतरेयब्राह्मणस्य शुनःशेपाख्याने शुनःशेपस्य पितुर्नाम अस्ति–
(A) वाजश्रवाः (B) अजीगर्तः
(C) कण्वः (D) सौयवसी
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–125

7. 'वाङ्मनस्' इत्याख्यानं वर्तते –
(A) कौषीतकिब्राह्मणे (B) ऐतरेयब्राह्मणे
(C) षड्विंशब्राह्मणे (D) शतपथब्राह्मणे
स्रोत–शतपथ ब्राह्मण (1.4.5)-स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती, पेज–88

8. ''यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति तत्ते पदं संग्रहेण ब्रवीम्योमित्येतत्'' कठोपनिषदि इदं कथनम् अस्ति–
(A) कण्वस्य (B) यमस्य
(C) नचिकेतसः (D) इन्द्रस्य
स्रोत– ईशादि नौ उपनिषद् (कठो० 1.2.15), गीताप्रेस, पेज–111

9. ''तस्यै तपो दमः कर्मेति प्रतिष्ठा वेदाः सर्वाङ्गानि सत्यमायतनम्'' इत्युद्धरणं वर्तते–
(A) तैत्तिरीयोपनिषदि (B) कठोपनिषदि
(C) केनोपनिषदि (D) बृहदारण्यकोपनिषदि
स्रोत–ईशादि नौ उपनिषद् (केनो० खण्ड-4/8) - गीताप्रेस, पेज–72

10. अधस्तनेषु स्वरितस्वरस्य भेदोऽस्ति –
(A) क्षैप्रः (B) सन्नतरः
(C) निघातः (D) सन्नतमः
वैदिक साहित्य का इतिहास - गजानन शास्त्री मुसलगाँवकर, पेज–391

11. ऋग्वेदीयशाकलसंहितायां उदात्तस्वरः केन प्रकारेण प्रदर्श्यते?
(A) अ (B) अ॑
(C) अ³ (D) अ [अचिह्नितम्]
स्रोत– ऋग्वेदप्रातिशाख्यम्-वीरेन्द्रकुमार वर्मा, पेज-214

12. ऋग्वेदप्रातिशाख्यानुसारेण रक्तसंज्ञका वर्णा भवन्ति–
(A) अनुनासिकवर्णाः (B) सोष्मवर्णाः
(C) अघोषवर्णाः (D) समानाक्षरवर्णाः
स्रोत– ऋग्वेद-प्रातिशाख्यम् - वीरेन्द्रकुमार वर्मा, पेज–69

13. ऋग्वेदप्रातिशाख्यानुसारेण अधस्तनयुग्मानां समुचितां तालिकां चिनुत–
(अ) ऋ (i) अघोषः
(ब) क (ii) सन्ध्यक्षरम्
(स) घ (iii) समानाक्षरम्
(द) ए (iv) सोष्म

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	(i)	(iii)	(iv)	(i)
(B)	(iv)	(ii)	(i)	(iii)
(C)	(iii)	(i)	(iv)	(ii)
(D)	(ii)	(iv)	(iii)	(i)

स्रोत–ऋग्वेद-प्रातिशाख्यम् - वीरेन्द्र कुमार वर्मा, पेज– अ-42, ब-54, स-55, द-43

14. सर्वादौ वेदस्य अंग्रेजीभाषायाम् अनुवादः केन कृतः?
(A) ए वेबरेण (B) विल्सनेन
(C) ब्लूमफिल्डेन (D) ओल्डनबर्गेण
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–32

1. (C) **2.** (A) **3.** (D) **4.** (A) **5.** (C) **6.** (B) **7.** (D) **8.** (B) **9.** (C) **10.** (A) **11.** (D) **12.** (A) **13.** (C) **14.** (B)

15. माध्यन्दिनसंहितायाः हिन्दीभाषायाम् अनुवादः सर्वादौ केन कृतः?
(A) अरविन्देन
(B) महर्षिदयानन्देन
(C) श्रीपाददामोदरसातवलेकरेण
(D) स्वामी-विवेकानन्देन

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–18

16. अधोनिर्दिष्टेषु 'मनोः स्त्री' इति विग्रहे स्त्रीलिङ्गे अशुद्धः प्रयोगः कः?
(A) मनायी (B) मनावी
(C) मन्वी (D) मनुः

स्रोत–वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी भाग-2, (4.1.38)-गोविन्दाचार्य, पेज–102

17. 'अध्यापयति वेदम्' इत्यत्र क्रियापदे परस्मैपदविधायको नियमः कः?
(A) अणावकर्मकाच्चित्तवत्कर्तृकात्
(B) विभाषाऽकर्मकात्
(C) निगरणचलनार्थेभ्यश्च
(D) बुध-युध-नश-जनेङ्-प्रु-द्रु-स्रुभ्यो णेः

स्रोत–वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी भाग-5, (1.3.86) गोविन्दाचार्य, पेज–445

18. 'वच्' धातोरशब्दसञ्ज्ञायां ण्यत्प्रत्ययान्तं किं रूपम्?
(A) वाच्यम् (B) वाक्यम्
(C) वच्यम् (D) उच्यम्

स्रोत–वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी भाग-6, (7.3.67)-गोविन्दाचार्य, पेज–60

19. 'एध' धातोः आशीर्लिङि उत्तमपुरुषैकवचने किं रूपम्?
(A) एधेय (B) एधिषीय
(C) एधिताहे (D) ऐधिषि

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी-गोविन्दाचार्य, पेज–495

20. क्रियामात्रविषयं व्यापारनियतञ्च किम्भवति?
(A) हेतुः (B) करणम्
(C) अधिकरणम् (D) सम्बन्धः

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक-प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–44

21. 'लोमन्' शब्दस्य मत्वर्थीयः शुद्धप्रयोगः कः?
(A) लोमनः (B) लोमिकः
(C) लोमिलः (D) लोमशः

स्रोत– लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–1113

22. 'शास्त्रपूर्वके प्रयोगेऽभ्युदयः ....' – अत्र महाभाष्यानुसारं रिक्तस्थानं पूरयत।
(A) कूपखननन्यायेन (B) तत्तुल्यं वेदशब्देन
(C) स्नातानुलिप्तप्रकारेण (D) पांसूदकन्यायेन

स्रोत–व्याकरणमहाभाष्यम् - जयशङ्करलाल त्रिपाठी, पेज– 113

23. एषु पाठकगुणेषु कः गण्यते?
(A) अक्षरव्यक्तिः (B) गीती
(C) लिखितपाठकः (D) शीघ्री

पाणिनीयशिक्षा (श्लोक-33)-शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पेज–125

24. निम्नलिखितेषु अन्तःस्थेषु को ध्वनिः न गण्यते?
(A) ट् (B) र्
(C) ल् (D) य्

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस, पेज–17

25. निम्नलिखितेषु विषमीकरणस्य उदाहरणं किम् अस्ति?
(A) बभूव (B) ससार
(C) गमिष्यति (D) पपाठ

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–233

26. चीनी भाषा कीदृशी भवति?
(A) योगात्मिका (B) अयोगात्मिका
(C) प्रश्लिष्टयोगात्मिका (D) श्लिष्टयोगात्मिका

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–357, 359

27. अर्थसङ्ग्रहे 'वेदप्रतिपाद्यः प्रयोजनवदर्थो धर्मः' इति धर्मलक्षणे 'वेदप्रतिपाद्यः' इति पदं किमर्थं गृहीतम्?
(A) द्यूतक्रीडादावतिव्याप्तिवारणाय
(B) स्वर्गादिप्रयोजनेऽतिव्याप्तिवारणाय
(C) श्येनयागादावतिव्याप्तिवारणाय
(D) भोजनादावतिव्याप्तिवारणाय

स्रोत–अर्थसंग्रह - सत्यप्रकाश शर्मा, पेज–10

28. शाब्दीभावनायाः साध्यं किम्भवति?
(A) लिङ्गादिज्ञानम् (B) अर्थवादज्ञाप्यप्राशस्त्यम्
(C) स्वर्गादिफलम् (D) आर्थीभावना

स्रोत–अर्थसंग्रह - सत्यप्रकाश शर्मा, पेज–28

29. तर्कसङ्ग्रहदीपिकादिशा एषु गोर्लक्षणेषु कस्मिन् अतिव्याप्तिदोषः सङ्घटते?
(A) शृङ्गित्वम् (B) एकशफत्वम्
(C) कपिलत्वम् (D) सास्नादिमत्त्वम्

स्रोत–तर्कसंग्रह - गोविन्दाचार्य, पेज–12

30. 'तन्तुसंयोगः पटस्य' कीदृशं कारणम्?
(A) असमवायिकारणम् (B) समवायिकारणम्
(C) समवाय्यसमवायिकारणम् (D) निमित्तकारणम्

स्रोत–तर्कसंग्रह - गोविन्दाचार्य, पेज–145

15. (B) **16.** (C) **17.** (D) **18.** (A) **19.** (B) **20.** (B) **21.** (D) **22.** (B) **23.** (A) **24.** (A) **25.** (A) **26.** (B) **27.** (D) **28.** (D) **29.** (A) **30.** (A)

31. न्यायसिद्धान्तदृशा व्याप्तिः का?

(A) साध्यवदन्यस्मिन्नसम्बन्धः

(B) व्याप्यस्य पक्षवृत्तित्वधीः

(C) सिषाधयिषाविरहसहकृतसिद्ध्यभावः

(D) साध्यवत्त्वेन पक्षस्य पचनम्

स्रोत–न्यायसिद्धान्तमुक्तावली - महानन्द झा, पेज–19

32. योगसूत्रभाष्ये निर्बीजः समाधिः क उक्तः?

(A) सम्प्रज्ञातसमाधिः (B) असम्प्रज्ञातसमाधिः

(C) सवितर्कसमाधिः (D) सविचारसमाधिः

स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् - सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पेज–66

33. 'तस्मिन् परमगुरौ सर्वकर्मार्पणम्' इति व्यासभाष्येण किं लक्षितम्?

(A) सन्तोषः (B) तपः

(C) स्वाध्यायः (D) ईश्वरप्रणिधानम्

स्रोत–पातञ्जलयोगदर्शनम् - सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पेज–273

34. वाक्यपदीयानुसारं 'स्फोटनादयोः' सम्बन्धः कीदृशो भवति?

(A) तरङ्गप्रतिबिम्बवत् (B) कार्यकारणवत्

(C) जन्यजनकवत् (D) धूमाग्निवत्

स्रोत–वाक्यपदीयम् (का0 49) - सूर्यनारायण शुक्ल, पेज–66

35. वाक्यपदीयानुसारं स्फोटः कीदृशो भवति?

(A) सक्रमः (B) भेदवान्

(C) अक्रमः (D) वर्णानुपूर्वी

स्रोत–वाक्यपदीयम् (का048) - सूर्यनारायण शुक्ल, पेज–66

36. 'आनन्दमयोऽभ्यासात्' इत्यस्मिन् सूत्रे 'मयट्' प्रत्ययः कस्मिन्नर्थे वर्तते?

(A) विकारार्थे (B) जनकार्थे

(C) कारणार्थे (D) प्राचुर्यार्थे

स्रोत–ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यम्-स्वामी सत्यानन्द सरस्वती, पेज–105

37. 'शास्त्रयोनित्वात्' इत्यस्मिन् सूत्रे 'योनिः' इत्यस्य शब्दस्य कोऽर्थः?

(A) जन्म (B) कारणम्

(C) कार्यम् (D) व्याख्या

स्रोत–ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यम् - स्वामी सत्यानन्द सरस्वती, पेज–43

38. हेमचन्द्रसूरिः कस्य दर्शनस्य आचार्योऽस्ति?

(A) बौद्धदर्शनस्य (B) जैनदर्शनस्य

(C) चार्वाकदर्शनस्य (D) सांख्यदर्शनस्य

स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह - उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज–103

39. सांख्यकारिकानुसारं किं तत्त्वं प्रधानपुरुषयोः अन्तरं विशिनष्टि?

(A) मनः (B) बुद्धिः

(C) अहङ्कारः (D) ज्ञः

स्रोत– सांख्यकारिका (का0-37) - राकेशशास्त्री, पेज–109

40. सांख्यकारिकानुसारं करणं कतिविधम्

(A) षोडश (B) चतुर्दश

(C) सप्तदश (D) त्रयोदश

स्रोत–सांख्यकारिका (का0 32) - राकेशशास्त्री, पेज–98-99

41. 'तज्ज्ञानं पञ्चविधं मतिश्रुतावधिमनः पर्यायकेवलभेदेन' उक्तिरियं केन दर्शनेन सम्बद्धा अस्ति?

(A) आर्हतदर्शनेन (B) बौद्धदर्शनेन

(C) रामानुजदर्शनेन (D) न्यायदर्शनेन

स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह - उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज–119

42. वेदान्तसारानुसारं निर्विकल्पकस्य समाधेः कति विघ्नाः भवन्ति?

(A) त्रयः (B) पञ्च

(C) चत्वारः (D) षट्

स्रोत–वेदान्तसार - बद्रीनाथ शुक्ल, पेज–260

43. रुद्रदाम्नः शिलालेखः कुत्र विद्यते?

(A) प्रयागे (B) जूनागढे

(C) तक्षशिलायाम् (D) पाटलिपुत्रे

प्राचीन भारत के प्रमुख शिलालेख (भाग-1) - परमेश्वरी लाल गुप्ता, पेज–198

44. इलाहाबादशिलालेखे अस्य नाम नास्ति–

(A) रुद्रदेवः (B) शशाङ्कः

(C) चन्द्रवर्मा (D) नागदत्तः

प्राचीन भारत के प्रमुख शिलालेख (भाग-02)-परमेश्वरी लाल गुप्ता, पेज–11

45. खरोष्ठ्यां लिप्यां कस्य अभिलेखाः उपलभ्यन्ते?

(A) अशोकस्य (B) समुद्रगुप्तस्य

(C) कनिष्कस्य (D) खारवेलस्य

प्राचीन भारत के प्रमुख शिलालेख (भाग-1)-परमेश्वरी लाल गुप्ता, पेज–05

31. (A) **32.** (B) **33.** (D) **34.** (A) **35.** (C) **36.** (D) **37.** (B) **38.** (B) **39.** (B) **40.** (D) **41.** (A) **42.** (C) **43.** (B) **44.** (B) **45.** (A)

46. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत–

(क) लोके हि लोहेभ्यः कठिनतराः खलु स्नेहमया बन्धनपाशाः — (i) रत्नावली
(ख) वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः — (ii) हर्षचरितम्
(ग) श्रीहर्षो निपुणः कविः परिषदप्येषा गुणग्राहिणी — (iii) मुद्राराक्षसम्
(घ) गजेन्द्राश्च नरेन्द्राश्च प्रायः सीदन्ति दुःखिताः — (iv) किरातार्जुनीयम्

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(A)	(iii)	(ii)	(i)	(iv)
(B)	(ii)	(iv)	(i)	(iii)
(C)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)
(D)	(iv)	(i)	(iii)	(ii)

स्रोत– (क) हर्षचरितम् - शिवनाथ पाण्डेय, पेज–06
(ख) किरातार्जुनीयम् (1/8)-रामसेवक दुबे, पेज–61
(ग) रत्नावली - श्रीकृष्णत्रिपाठी, पेज–7
(घ) मुद्राराक्षस-1/16

47. एषु किं रामायणाश्रितं भवति–
(A) नैषधीयचरितम् (B) किरातार्जुनीयम्
(C) शिशुपालवधम् (D) रघुवंशम्
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–116

48. एषु किं पर्व महाभारते नास्ति–
(A) द्रोणपर्व (B) भीष्मपर्व
(C) युधिष्ठिरपर्व (D) शल्यपर्व
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–117

49. महाभारताश्रितं न भवति–
(A) वेणीसंहारम् (B) दूतवाक्यम्
(C) मध्यमव्यायोगः (D) अभिषेकनाटकम्
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–129

50. 'ज्ञानविज्ञानयोगः' श्रीमद्भगवद्गीतायाः कतमोऽध्यायः–
(A) द्वितीयोऽध्यायः (B) तृतीयोऽध्यायः
(C) पञ्चमोऽध्यायः (D) सप्तमोऽध्यायः
स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–311

51. एषु कस्य महापुराणेषु अन्तर्भावो नास्ति–
(A) मत्स्यपुराणस्य (B) ब्रह्मपुराणस्य
(C) अग्निपुराणस्य (D) साम्बपुराणस्य
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–96

52. 'फलेन मूलेन च वारिभूरुहां मुनेरिवेत्थं मम यस्य वृत्तयः' - नैषधीयचरिते इयमुक्तिर्भवति–
(A) नलस्य (B) दमयन्त्याः
(C) हंसपत्न्याः (D) हंसस्य
स्रोत–नैषधीयचरितम् (1/133) - सुरेन्द्रदेव शास्त्री, पेज–268

53. 'पौरेषु सोऽहं बहुलीभवन्तमपां तरङ्गेष्विव तैलबिन्दुम्। सोढुं न तत्पूर्वमवर्णमीशे आलानिकं स्थाणुमिव द्विपेन्द्रः॥' रघुवंशे कस्येयमुक्तिः?
(A) लक्ष्मणस्य (B) रामस्य
(C) भरतस्य (D) शत्रुघ्नस्य
स्रोत–रघुवंशम् (14/38) - श्रीहरगोविन्द मिश्र, पेज–355

54. ''गतं तिरश्चीनमनूरुसारथेः प्रसिद्धमूर्ध्वज्वलनं हविर्भुजः।'' - शिशुपालवधे अस्मिन् पद्यांशे 'अनूरुसारथिः' भवति–
(A) अग्निः (B) सूर्यः
(C) चन्द्रः (D) विद्युत्
स्रोत–शिशुपालवधम् (1/2) - देवनारायण मिश्र, पेज–4

55. ''ईदृशानां विपाकोऽपि जायते परमाद्भुतः'' - उत्तररामचरिते इयमुक्तिर्भवति–
(A) सीतायाः (B) मुरलायाः
(C) तमसायाः (D) लक्ष्मणस्य
स्रोत–उत्तररामचरितम् (3/3) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–160

56. मुद्राराक्षसे कौमुदीमहोत्सवः केन निषिद्धः?
(A) राक्षसेन (B) चन्द्रगुप्तेन
(C) चाणक्येन (D) मलयकेतुना
स्रोत–मुद्राराक्षसम् - पुष्पा गुप्ता, पेज–129

57. ''स्त्रीणामशिक्षितपटुत्वममानुषीषु संदृश्यते किमुत याः प्रतिबोधवत्यः॥'' अभिज्ञानशाकुन्तले इयमुक्तिः कस्य?
(A) शार्ङ्गरवस्य (B) शारद्वतस्य
(C) दुष्यन्तस्य (D) सोमरातस्य
स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (5/22) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–287

58. हर्षचरिते पञ्चमे उच्छ्वासे - 'विश्वस्तानां यशसा स्थातुमिच्छामि लोके न वपुषा' - इत्युक्तिर्भवति–
(A) हर्षवर्धनस्य (B) प्रभाकरवर्धनस्य
(C) यशोमत्याः (D) कुरङ्गकस्य
स्रोत–हर्षचरितम् - शिवनाथ पाण्डेय, पेज–108

59. ''सूरिभिः कथितः' इति विद्वदुपज्ञेयमुक्तिः।'' - अत्र विषये के तावत् आनन्दवर्धनमते प्रथमे विद्वांसः?
(A) मीमांसकाः (B) तार्किकाः
(C) कवयः (D) वैयाकरणाः
स्रोत–ध्वन्यालोक - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–53

60. ''क्रियायाः प्रतिषेधेऽपि फलव्यक्तिः..........।'' काव्यप्रकाशानुसारेण कस्यालङ्कारस्य लक्षणमिदम्–
(A) उपमालङ्कारस्य (B) निदर्शनालङ्कारस्य
(C) विभावनालङ्कारस्य (D) उत्प्रेक्षालङ्कारस्य
स्रोत–काव्यप्रकाश (सूत्र-161) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–498

46. (B) **47.** (D) **48.** (C) **49.** (D) **50.** (D) **51.** (D) **52.** (D) **53.** (B) **54.** (B) **55.** (B) **56.** (C) **57.** (C) **58.** (C) **59.** (D) **60.** (C)

61. ''ग्रामतरुणं तरुण्या नववञ्जुलमञ्जरीसनाथकरम्। पश्यन्त्या भवति मुहुर्नितरां मलिना मुखच्छाया।।'' काव्यप्रकाशे प्रथमोल्लासे श्लोकोऽयं कस्य काव्य-भेदस्य उदाहरणरूपेण उल्लिखितः?

(A) ध्वनिकाव्यस्य (B) गुणीभूतव्यङ्ग्यकाव्यस्य
(C) शब्दचित्रकाव्यस्य (D) वाच्यचित्रकाव्यस्य

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–31

62. दशरूपकानुसारेण – (साहित्यदर्पणानुसारेण) 'अल्पमात्रं समुद्दिष्टं बहुधा यद्विसर्पति। फलावसानं यच्चैव ....।' तत् किम् अभिधीयते?

(A) बीजम् (B) बिन्दुः
(C) पताका (D) प्रकरी

स्रोत–साहित्यदर्पण (6/65) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–182

63. दशरूपकमतानुसारं दृष्टनष्टस्य बीजस्य अन्वेषणं भवति–

(A) मुखसन्धिः (B) गर्भसन्धिः
(C) प्रतिमुखसन्धिः (D) निर्वहणसन्धिः

स्रोत–दशरूपक (1/36) - रमाशङ्कर त्रिपाठी, पेज–55

64. आसु कस्याः वक्रतामध्ये गणनं नास्ति?

(A) वर्णविन्यासवक्रतायाः (B) समासवक्रतायाः
(C) पदपूर्वार्द्धवक्रतायाः (D) प्रकरणवक्रतायाः

स्रोत–वक्रोक्तिजीवितम् - राधेश्याम मिश्र, भू0 पेज–24

65. राजशेखरेण काव्यमीमांसायां दोषाधिकरण-विषये कस्य ग्रन्थकारस्य नाम उल्लिखितम्?

(A) सुवर्णनाभस्य (B) शेषस्य
(C) धिषणस्य (D) भरतस्य

स्रोत–काव्यमीमांसा - गंगासागर राय, पेज–02

66. ''दुःखार्तानां श्रमार्तानां शोकार्तानां तपस्विनाम्। ...... लोके नाट्यमेतद्भविष्यति।।'' नाट्यशास्त्रतः रिक्तस्थानं पूरयत–

(A) मोक्षप्रदायकम् (B) ज्ञानप्रदायकम्
(C) आह्लादजननम् (D) विश्रामजननम्

स्रोत–नाट्यशास्त्र (1/114) - ब्रजमोहनचतुर्वेदी, पेज–113

67. ''मित्रात्रिपुत्रनेत्राय त्रयीशात्रवशत्रवे। गोत्रारिगोत्रजत्राय गोत्रात्रे ते नमो नमः।।'' रसगङ्गाधरे प्रथमे आनने श्लोकोऽयम् उदाहरणं भवति–

(A) उत्तमकाव्यस्य (B) अधमकाव्यस्य
(C) उत्तमोत्तमकाव्यस्य (D) मध्यमकाव्यस्य

स्रोत–रसगङ्गाधर - मदनमोहन झा, पेज–79

68. ''यत्र व्यङ्ग्यमप्रधानमेव सच्चमत्कारकारणम्'' जगन्नाथमते तत् भवति–

(A) मध्यमकाव्यम् (B) उत्तमोत्तमकाव्यम्
(C) उत्तमकाव्यम् (D) अधमकाव्यम्

स्रोत–रसगङ्गाधर - मदन मोहन झा, पेज–66

69. कौटिल्यार्थशास्त्रोल्लेखानुसारं एषु कः कोपात् विननाश इति उल्लिखितः?

(A) अजबिन्दुः (B) रावणः
(C) करालः (D) जनमेजयः

स्रोत–कौटिलीय अर्थशास्त्रम् - वाचस्पति गैरोला, पेज–16

70. कौटिलीयार्थशास्त्रे सर्वविद्यानां प्रदीपः, सर्वकर्मणाम् उपायः सर्वधर्माणां च आश्रयः का विद्या प्रोक्ता?

(A) आन्वीक्षिकी (B) त्रयी
(C) वार्ता (D) दण्डनीतिः

स्रोत–कौटिलीय अर्थशास्त्रम् - वाचस्पति गैरोला, पेज–09

71. कौटिलीयार्थशास्त्रे एतत् वैश्यस्य स्वधर्मो न भवति–

(A) याजनम् (B) दानम्
(C) अध्ययनम् (D) यजनम्

स्रोत–कौटिलीय अर्थशास्त्रम् - वाचस्पति गैरोला, पेज–10

72. याज्ञवल्क्यमते गृहीतवेतनः कर्म त्यजन्–

(A) चतुर्गुणमावहेत् (B) त्रिगुणमावहेत्
(C) पञ्चगुणमावहेत् (D) द्विगुणमावहेत्

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति (2/193) - उमेशचन्द्र पाण्डेय, पेज–334

73. स्मृत्योर्विरोधे न्यायस्तु बलवान् व्यवहारतः। अर्थशास्त्रात्तु बलवद् .... इति स्थितिः।। –याज्ञवल्क्यसंहितातः रिक्तं स्थानं पूरयत।

(A) राजादेशः (B) धर्मशास्त्रम्
(C) नृपस्येच्छा (D) नीतिशास्त्रम्

स्रोत–याज्ञवल्क्यस्मृति (2/21) उमेशचन्द्र पाण्डेय, पेज–183

74. मनुसंहितानुसारं एषु कस्य क्रोधजव्यसने गणनं न भवति–

(A) दिवास्वप्नस्य (B) वाक्पारुष्यस्य
(C) साहसस्य (D) दण्डपारुष्यस्य

स्रोत–मनुस्मृति (7/48)-शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पेज–461

75. मनुसंहितातः रिक्तं स्थानं पूरयत– वेदः स्मृतिः .... स्वस्य च प्रियमात्मनः। एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम्।।

(A) उपकारः (B) अपकारः
(C) सदाचारः (D) परम्परा

स्रोत–मनुस्मृति (2/12)-शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पेज–120

61. (B) **62.** (A) **63.** (B) **64.** (B) **65.** (C) **66.** (D) **67.** (B) **68.** (C) **69.** (D) **70.** (A) **71.** (A) **72.** (D) **73.** (B) **74.** (A) **75.** (C)

55	नवम्बर 2017	CBSE UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् II

संस्कृत
प्रश्नपत्रम् - II

सूचना :- इस प्रश्नपत्र में **पचास (50)** बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के **दो (2)** अंक हैं। **सभी** प्रश्न **अनिवार्य** हैं।

सूचना :- अस्मिन् प्रश्नपत्रे **पञ्चाशत्** परिमिताः **(50)** बहु-वैकल्पिकाः प्रश्नाः सन्ति। प्रत्येकं प्रश्नस्य **अङ्कद्वयं** वर्तते। **सर्वे** प्रश्नाः समाधेयाः।

1. ऋग्वेदे प्रथमसूक्तस्य द्रष्टा कः?
(A) कण्वः (B) विश्वामित्रः
(C) मधुच्छन्दाः (D) गृत्समदः
स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-47

2. सायणाचार्येण कस्य वेदस्य व्याख्यानं सर्वान्ते कृतम्?
(A) ऋग्वेदस्य (B) यजुर्वेदस्य
(C) सामवेदस्य (D) अथर्ववेदस्य
स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-24,25

3. 'स्वधा अवस्तात् प्रयतिः परस्तात्'-इति कुत्र वर्णितम्?
(A) इन्द्रसूक्ते (B) पितृसूक्ते
(C) हिरण्यगर्भसूक्ते (D) नासदीयसूक्ते
स्रोत- ऋक्सूक्तसंग्रह (10.129.5)- हरिदत्त शास्त्री, पेज- 436

4. ऋग्वेदे 'रुशद्वत्सा' इति कस्याः विशेषणम्?
(A) सरस्वत्याः (B) उषसः
(C) नद्याः (D) रात्र्याः
स्रोत- निरुक्त- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-212-213

5. सपत्नक्षयणो मणिः कस्मिन् सूक्ते उपदिश्यते?
(A) पृथिवीसूक्ते (B) इन्द्रसूक्ते
(C) राष्ट्राभिवर्द्धनसूक्ते (D) सोमसूक्ते
स्रोत- अथर्ववेद राष्ट्राभिवर्द्धनसूक्त (1.29.6)

6. 'यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवम्'- इत्यत्र उव्वटमतेन 'दैवम्' पदस्य कोऽर्थः?
(A) देवो विज्ञानात्मा सोऽनेन गृह्यत इति दैवम्
(B) देवो ज्ञानकर्ता सोऽनेन ज्ञानी इति दैवम्
(C) देवो यज्ञे एव दीप्यते तद् द्रव्यम् दैवम्
(D) देवो गृहे गृहे निर्मलीकरोति तज्जलं दैवम्
स्रोत- वैदिकसूक्तसंग्रह (यजु0-34.2)- विजयशंकर पाण्डेय, पेज-52

7. निम्नाङ्कितेषु प्रकृतिपाठः कः?
(A) मालापाठः (B) रेखापाठः
(C) पदपाठः (D) दण्डपाठः
स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-198

8. निचृद्गायत्रीच्छन्दसि कियन्तो वर्णा भवन्ति पिङ्गलदिशा?
(A) 22 (B) 23
(C) 24 (D) 25
स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-203

9. 'रात्रीभिरस्मा अहभिर्दशस्य'- इति कुत्र वर्णितम्?
(A) सूर्यसूक्ते (B) यमयमीसूक्ते
(C) रात्रिसूक्ते (D) कालसूक्ते
स्रोत- ऋग्वेद (10.10.9) यम-यमी सूक्त

10. कठारण्यकं केन वेदेन सम्बद्धं वर्तते?
(A) ऋग्वेदेन (B) शुक्लयजुर्वेदेन
(C) सामवेदेन (D) कृष्णयजुर्वेदेन
स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-51

11. 'इदं विद्यास्थानं व्याकरणस्य कार्त्स्न्यं स्वार्थसाधकञ्च'- इत्युक्तिः कुत्र प्राप्यते?
(A) पाणिनीयशिक्षायाम् (B) निरुक्ते
(C) ऋक्प्रातिशाख्ये (D) सिद्धान्तकौमुद्याम्
स्रोत- निरुक्त (1/5) - छज्जूराम शास्त्री, पेज- 41

1-C	2-D	3-D	4-B	5-C	6-A	7-C	8-B	9-B	10-D	11-B

12. 'ओरायन'- ग्रन्थस्य लेखकः कः?
(A) शङ्करपाण्डुरङ्गपण्डितः
(B) बालगङ्गाधरतिलकः
(C) शङ्करबालकृष्णदीक्षितः
(D) विन्टरनित्सः

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-30

13. 'दमूना' इति कस्य देवस्य विशेषणम्?
(A) इन्द्रस्य (B) अग्नेः
(C) वरुणस्य (D) रुद्रस्य

स्रोत-ऋक्सूक्तसंग्रह- हरिदत्त शास्त्री, भूमिका पेज-14

14. 'य एक इद्धव्यः चर्षणीनामिन्द्रम्' - मन्त्रेऽस्मिन् कस्यार्षम्?
(A) भरद्वाजस्य (B) वामदेवस्य
(C) अत्रेः (D) कण्वस्य

स्रोत- ऋग्वेद (6.22.1)- वेदान्त तीर्थ, पेज-457

15. धातुं प्रत्ययं प्रत्ययान्तं च वर्जयित्वार्थवच्छब्दस्वरूपं किम्भवति?
(A) पदसञ्ज्ञम् (B) प्रातिपदिकसञ्ज्ञम्
(C) संहितासञ्ज्ञम् (D) घिसञ्ज्ञम्

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी- गीताप्रेस, पेज-32

16. 'द्रोणो व्रीहिः' इत्यत्र 'द्रोण' शब्दोत्तरप्रथमा विभक्तिः कस्मिन्नर्थे भवति?
(A) प्रातिपदिकार्थमात्रे (B) लिङ्गमात्राधिक्ये
(C) परिमाणमात्राधिक्ये (D) वचनमात्रे

स्रोत- सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)- राममुनि पाण्डेय,पेज-24

17. 'गतिबुद्धिप्रत्यवसानार्थशब्दकर्माकर्मकाणामणि कर्ता स णौ' इति सूत्रस्य प्रत्यवसानार्थे किमुदाहरणम्?
(A) आशयच्चामृतं देवान् (B) वेदमध्यापयद्विधिम्
(C) आसयत् सलिले पृथ्वीम् (D) वेदार्थं स्वानवेदयत्

स्रोत- सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)- राममुनि पाण्डेय, पेज-36-37

18. 'नमस्कुर्मो नृसिंहाय' इत्यत्र अप्रयुज्यमानस्य तुमुनः कर्मणि चतुर्थीविधायकम् अनुशासनं किमस्ति?
(A) तादर्थ्ये चतुर्थी वाच्या
(B) तुमर्थाच्च भाववचनात्
(C) क्रियार्थोपपदस्य च कर्मणि स्थानिनः
(D) नमः-स्वस्ति-स्वाहा-स्वधाऽलं-वषड्योगाच्च

स्रोत- सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) राममुनि पाण्डेय, पेज-75

19. अष्टौ च दश चेति विग्रहे 'अष्टादश' इति प्रयोगे आकारान्तादेशः केन विधीयते?
(A) 'आन्महतः समानाधिकरणजातीययोः' इत्यनेन
(B) 'अष्टनः कपाले हविषि' इत्यनेन
(C) 'विभाषा चत्वारिंशत्प्रभृतौ सर्वेषाम्' इत्यनेन
(D) 'द्व्यष्टनः सङ्ख्यायामबहुव्रीह्यशीत्योः' इत्यनेन

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4) पेज- 166

20. 'परार्थाभिधानं वृत्तिः' इति वृत्तिलक्षणं कस्मिन् प्रयोगे न प्रवर्तते?
(A) विद्यते (B) कुम्भकारः
(C) औपगवः (D) पीताम्बरः

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग- 4) पेज- 10-11

21. 'हरि-शब्दस्य प्रकाशः' 'इतिहरि' इत्यत्र 'अव्ययं विभक्ति'---- इत्यादिना कस्मिन्नर्थेऽव्ययीभावः?
(A) विभक्त्यर्थे (B) शब्दप्रादुर्भावे
(C) यौगपद्ये (D) अर्थाभावे

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग- 4) पेज- 32

22. 'यतश्च निर्धारणम्' इति सूत्रेण जातिविशिष्टसमुदायादेकस्य निर्धारणे विहितायाः षष्ठ्याः किमुदाहरणम्?
(A) गवां कृष्णा बहुक्षीरा (B) गच्छतां धावन् शीघ्रः
(C) नृणां द्विजः श्रेष्ठः (D) छात्राणां मैत्रः पटुः

स्रोत- सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) - राममुनि पाण्डेय, पेज-101

23. चीनीभाषा निम्नलिखितेषु कस्मिन् वर्गे वर्तते?
(A) श्लिष्टयोगात्मके (B) अश्लिष्टयोगात्मके
(C) प्रश्लिष्टयोगात्मके (D) अयोगात्मके

स्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज- 357

24. ग्रीकभाषा कस्य परिवारस्य भाषा वर्तते?
(A) सामीपरिवारस्य (B) हामीपरिवारस्य
(C) भारोपीयपरिवारस्य (D) बान्तूपरिवारस्य

स्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज- 378

25. निम्नलिखितासु का भाषा 'केन्तुम्' वर्गस्य नास्ति?
(A) ग्रीकभाषा (B) केल्टिकभाषा
(C) जर्मनभाषा (D) रूसीभाषा

स्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज- 385

12-B	13-B	14-A	15-B	16-C	17-A	18-C	19-D	20-A	21-B
22-C	23-D	24-C	25-D						

26. 'अश्वः' इत्यस्य शब्दस्य 'अवेस्ता' भाषायां किं रूपं विद्यते?

(A) अश्बः (B) अश्बो
(C) अश्पः (D) अस्पो

स्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज- 417

27. सञ्ज्ञासञ्ज्ञिसम्बन्धप्रतीतिः किमुच्यते न्यायनये?

(A) अनुमितिः (B) उपमितिः
(C) प्रत्यक्षम् (D) शब्दः

स्रोत- तर्कभाषा-श्रीनिवास शास्त्री, पेज- 120

28. तुरी-वेमादिकं न्यायनये पटस्य कीदृशं कारणं मन्यते?

(A) निमित्तकारणम्
(B) समवायिकारणम्
(C) समवाय्यसमवायिकारणम्
(D) असमवायिकारणम्

स्रोत- तर्कभाषा-श्रीनिवास शास्त्री, पेज- 43

29. तर्कसङ्ग्रहदिशा अन्वय-व्यतिरेकदृष्टान्तरहितो हेत्वाभासः कः?

(A) अनुपसंहारी (B) साधारणः
(C) असाधारणः (D) विरुद्धः

स्रोत- तर्कसंग्रह-आद्याप्रसाद मिश्र, पेज- 63

30. 'वह्निरनुष्णो द्रव्यत्वात्' इत्युदाहरणं कस्य हेत्वाभासस्य?

(A) आश्रयासिद्धहेत्वाभासस्य
(B) व्याप्यत्वासिद्धहेत्वाभासस्य
(C) स्वरूपासिद्धहेत्वाभासस्य
(D) बाधितहेत्वाभासस्य

स्रोत- तर्कसंग्रह-गोविन्दाचार्य, पेज- 229

31. वेदान्तसारानुसारं 'नित्यनैमित्तिकप्रायश्चित्तोपासनानां त्ववान्तरफलम्' किम्?

(A) स्वर्गलोकप्राप्तिः (B) पितृलोकसत्यलोकप्राप्तिः
(C) शरीरशुद्धिः (D) पापकर्मफलविनाशः

स्रोत- वेदान्तसार-सन्तनारायण श्रीवास्तव्य, पेज- 18

32. वेदान्तसारस्य 'विद्वन्मनोरञ्जनी' इति नाम्न्याः टीकायाः रचयिता कोऽस्ति?

(A) सदानन्दः (B) नृसिंह सरस्वती
(C) रामतीर्थः (D) कृष्णतीर्थः

स्रोत- वेदान्तसार-सन्तनारायण श्रीवास्तव्य, भू.पेज- XVII

33. विज्ञानमयकोशः किं भवति?

(A) निर्गुणं ब्रह्म
(B) सगुणं ब्रह्म
(C) ज्ञानेन्द्रियसहिता बुद्धिः
(D) ज्ञानेन्द्रियसहितं मनः

स्रोत- वेदान्तसार-सन्तनारायण श्रीवास्तव्य, पेज- 68

34. 'अखण्डवस्त्वनवलम्बनेन चित्तवृत्तेर्निद्रा' स्थितिरियं समाधेः कीदृशो विघ्नः?

(A) विक्षेपः (B) कषायः
(C) लयः (D) रसास्वादः

स्रोत- वेदान्तसार-सन्तनारायण श्रीवास्तव्य, पेज- 179

35. सांख्यकारिकानुसारं सृष्टेरुत्पत्तिः कस्माद् भवति?

(A) असतः (B) सतः
(C) नासतः न सतः (D) पुरुषात्

स्रोत- सांख्यतत्त्वकौमुदी प्रभा (का0-9)- आद्याप्रसाद मिश्र, पेज- 153

36. पुरुषस्य सत्ता कस्मात् सिद्ध्यति?

(A) कारणभावात् (B) कार्यभावात्
(C) भोक्तृभावात् (D) उत्पत्तिभावात्

स्रोत- सांख्यकारिका (का. 17) - राकेश शास्त्री, पेज- 56

37. सांख्यदर्शनानुसारं करणं कतिविधं वर्तते?

(A) चतुर्दशविधम् (B) षोडशविधम्
(C) एकादशविधम् (D) त्रयोदशविधम्

स्रोत- सांख्यकारिका (का.32) राकेश शास्त्री, पेज- 98

38. 'स्वालक्षण्यं वृत्तिस्त्रयस्य सैषा भवत्यसामान्या' इत्यस्यां पङ्क्तौ 'त्रय' इत्यनेन पदेन किमभिधीयते?

(A) बुद्धिः अहङ्कारः मनश्च
(B) मनः ज्ञानेन्द्रियाणि कर्मेन्द्रियाणि च
(C) पञ्चतन्मात्राणि पञ्चमहाभूतानि पञ्चप्राणाश्च
(D) पुरुषः अव्यक्तम् व्यक्तम् च

स्रोत- सांख्यकारिका (का. 29) राकेश शास्त्री, पेज- 89

26-D 27-B 28-A 29-A 30-D 31-B 32-C 33-C 34-C 35-B 36-C 37-D 38-A

39. समीचीनां तालिकां चिनुत-

(a) मेघदूतम् (i) भट्टनारायणः
(b) रत्नावली (ii) अश्वघोषः
(c) वेणीसंहारः (iii) कालिदासः
(d) बुद्धचरितम् (iv) हर्षः

(a) (b) (c) (d)
(A) (iv) (iii) (ii) (i)
(B) (iii) (i) (ii) (iv)
(C) (iii) (iv) (i) (ii)
(D) (iii) (iv) (ii) (i)

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकरशर्मा 'ऋषि', पेज- 332

40. बुद्धचरिते सिद्धार्थस्य हृदि संवेगोत्पत्तौ प्रथमं कारणं किं वर्णितम्?

(A) रुग्णस्य दर्शनम् (B) वृद्धस्य दर्शनम्
(C) मृतस्य दर्शनम् (D) उद्यानस्य दर्शनम्

स्रोत- बुद्धचरितम् (3.26)

41. दशकुमारचरिते सुरतमञ्जर्याः उपाख्यानमस्ति-

(A) राजवाहनचरिते (B) अपहारवर्मचरिते
(C) पुष्पोद्भवचरिते (D) उपहारवर्मचरिते

स्रोत- दशकुमारचरितम् (प्रथमोच्छ्वासः) विश्वनाथ झा, पेज- 10

42. शिशुपालवधस्य सर्गसंख्या भवति-

(A) ऊनविंशतिः (B) विंशतिः
(C) एकविंशतिः (D) द्वाविंशतिः

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकरशर्मा 'ऋषि', पेज- 262

43. एषु किं खण्डकाव्यं भवति?

(A) मेघदूतम् (B) शिशुपालवधम्
(C) कादम्बरी (D) किरातार्जुनीयम्

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकरशर्मा 'ऋषि',पेज- 332

44. अभिज्ञानशाकुन्तले धीवरवृत्तान्तः कस्य उदाहरणम्?

(A) प्रवेशकस्य (B) विष्कम्भकस्य
(C) अङ्कावतारस्य (D) अङ्कमुखस्य

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम्- कपिलदेव द्विवेदी, पेज- 317

45. मृच्छकटिके चारुदत्तस्य पुत्रः अस्ति-

(A) चन्दनकः (B) रोहितः
(C) रोहसेनः (D) आर्यकः

स्रोत-संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज- 494

46. ''नारिकेलफलसम्मितं वचः'' इति कस्य कवेः विषये प्रोक्तम्?

(A) माघस्य (B) भारवेः
(C) कालिदासस्य (D) श्रीहर्षस्य

स्रोत-संस्कृत साहित्य का प्रामाणिक इतिहास- रमाशंकर त्रिपाठी, पेज- 150

47. साहित्यदर्पणानुसारेण एतेषु कस्य रूपकमध्ये गणना नास्ति?

(A) प्रकरणस्य (B) त्रोटकस्य
(C) व्यायोगस्य (D) भाणस्य

स्रोत- साहित्यदर्पण (6/3) - शालिग्राम शास्त्री, पेज- 170

48. साहित्यदर्पणे ''कुन्देन्दुसुन्दरच्छायः'' इति कस्य रसस्य वर्णः वर्णितः?

(A) वीरस्य (B) हास्यस्य
(C) शृङ्गारस्य (D) शान्तस्य

स्रोत- साहित्यदर्पण (3.246) शालिग्राम शास्त्री, पेज- 121

49. साहित्यदर्पणे साकल्येन कतिप्रकारा लक्षणा प्रोक्ता?

(A) अशीतिः (B) षोडश
(C) द्वात्रिंशत् (D) अष्ट

स्रोत- साहित्यदर्पण- सत्यव्रत सिंह, पेज- 74

50. साहित्यदर्पणानुसारेण रिक्तं स्थानं पूरयत-
''.......स्याद् योग्यताकाङ्क्षासत्तियुक्तः पदोच्चयः।''

(A) लक्षणा (B) अभिधा
(C) व्यञ्जना (D) वाक्यम्

स्रोत- साहित्यदर्पण, भवानीशङ्करशर्मा, पेज- 171

39-C	40-B	41-A	42-B	43-A	44-A	45-C	46-B	47-B	48-D
49-A	50-D								

56	नवम्बर 2017	CBSE UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् III

1. **'मया सो अन्नमत्ति यो विपश्यति' इति कस्य ऋग्वेदीयसूक्तस्य अंशः?**
   (A) अग्निसूक्तस्य (B) वाक्सूक्तस्य
   (C) इन्द्रसूक्तस्य (D) नासदीयसूक्तस्य
   स्रोत- ऋक्सूक्तसंग्रह- हरिदत्त शास्त्री, पेज-419
2. **'हिरण्यगर्भसूक्तम्' ऋग्वेदस्य कस्मिन् मण्डले आयाति?**
   (A) प्रथमे (B) अष्टमे
   (C) नवमे (D) दशमे
   स्रोत- ऋक्सूक्तसंग्रह- हरिदत्त शास्त्री, पेज-405
3. **ऋग्वेदस्य भाष्यकारः कः?**
   (A) महीधरः (B) स्कन्दस्वामी
   (C) हलायुधः (D) भट्टभास्करः
   स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-22
4. **'व्रात्यकाण्डम्' कस्मिन् वेदे प्राप्यते?**
   (A) अथर्ववेदे (B) सामवेदे
   (C) ऋग्वेदे (D) यजुर्वेदे
   स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-104
5. **शुनःशेपस्य आख्यानं कुत्र प्राप्यते ?**
   (A) ऐतरेयब्राह्मणे (B) तैत्तिरीयब्राह्मणे
   (C) शतपथब्राह्मणे (D) ताण्ड्यब्राह्मणे
   स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-120,121
6. **वेदस्य नासिकास्थानीयमङ्गं किमस्ति ?**
   (A) शिक्षा (B) ज्योतिषम्
   (C) निरुक्तम् (D) व्याकरणम्
   स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-190
7. **'यज्ञस्य देवमृत्विजम्' इत्यत्र देवम् इति पदं कीदृशमस्ति?**
   (A) आद्युदात्तम् (B) मध्योदात्तम्
   (C) अन्तोदात्तम् (D) सर्वानुदात्तम्
   स्रोत- ऋक्सूक्तसंग्रह (अग्निसूक्त 1.1.1) - हरिदत्त शास्त्री, पेज-55
8. **स्वरितपरे अनुदात्ताः किमुच्यन्ते ?**
   (A) उदात्ताः (B) स्वरिताः
   (C) प्रचयाः (D) अनुदात्ताः
   स्रोत- ऋग्वेदप्रातिशाख्य (स्वरपटल -19) - वीरेन्द्र कुमार वर्मा, पेज-230
9. **'भवाति' इति कस्मिन् लकारे रूपमस्ति ?**
   (A) लेट् (B) लोट्
   (C) लङ् (D) लुङ्
   स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-321
10. **सामवेदस्य ब्राह्मणमस्ति ?**
   (A) गोपथब्राह्मणम् (B) शांखायनब्राह्मणम्
   (C) संहितोपनिषद्ब्राह्मणम् (D) शतपथब्राह्मणम्
   स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-10
11. **बृहदारण्यकम् केन वेदेन सम्बद्धमस्ति ?**
   (A) ऋग्वेदेन (B) यजुर्वेदेन
   (C) सामवेदेन (D) अथर्ववेदेन
   स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-09
12. **'अरा इव रथनाभौ संहता यत्र नाड्यः' इत्युक्तिः कुत्र विद्यते ?**
   (A) मुण्डकोपनिषदि (B) कठोपनिषदि
   (C) बृहदारण्यकोपनिषदि (D) छन्दोग्योपनिषदि
   स्रोत- ईशादि नौ उपनिषद्- गीताप्रेस, पेज-260
13. **अतिमुक्तिः कुत्र वर्णिता ?**
   (A) ईशावास्योपनिषदि (B) ऐतरेयोपनिषदि
   (C) बृहदारण्यकोपनिषदि (D) प्रश्नोपनिषदि
   स्रोत- बृहदारण्यकोपनिषद् (गीताप्रेस) पेज-627
14. **'आत्मा वा इदमेक एवाग्र आसीत्' - इत्युक्तिः कुत्र प्राप्यते ?**
   (A) ईशावास्योपनिषदि (B) तैत्तिरीयोपनिषदि
   (C) ऐतरेयोपनिषदि (D) मुण्डकोपनिषदि
   स्रोत- ईशादि नौ उपनिषद् - ऐतरेयोपनिषद् (1.1.1), पेज-300
15. **'अन्नं बहु कुर्वीत'-अयमुपदेशः कुत्र प्राप्यते ?**
   (A) ईशावास्योपनिषदि (B) तैत्तिरीयोपनिषदि
   (C) छान्दोग्योपनिषदि (D) प्रश्नोपनिषदि
   स्रोत- तैत्तिरीयोपनिषद् (भृगुवल्ली, नवम अनुवाक),पेज- 419
16. **'मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः'- इत्यत्र 'न' कीदृशः?**
   (A) उपमार्थीयः (B) प्रतिषेधार्थीयः
   (C) विचिकित्सार्थीयः (D) समुच्चयार्थः
   स्रोत- निरुक्त- छज्जूराम शास्त्री, पेज- 59

1-B	2-D	3-B	4-A	5-A	6-A	7-C	8-C	9-A	10-C
11-B	12-A	13-C	14-C	15-B	16-A				

17. 'पुरुषः'- इति पदस्य निर्वचने किं नास्ति ?
(A) पुरिषादः (B) परुषः
(C) पुरिशयः (D) पूरयतेः
स्रोत- निरुक्तम् - छज्जूराम शास्त्री, पेज- 70

18. 'धर्मसूत्रम्'- केन वेदाङ्गेन सह सम्बद्धमस्ति ?
(A) शिक्षावेदाङ्गेन (B) कल्पवेदाङ्गेन
(C) व्याकरणवेदाङ्गेन (D) निरुक्तवेदाङ्गेन
स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-214

19. निरुक्तदिशा पदजातानि कति सन्ति ?
(A) त्रीणि (B) चत्वारि
(C) पञ्च (D) षट्
स्रोत- निरुक्त- आचार्य विश्वेश्वर, पेज- 18

20. अथर्ववेदस्य किं गृह्यसूत्रम् अस्ति ?
(A) खादिरगृह्यसूत्रम् (B) कात्यायनगृह्यसूत्रम्
(C) कौशिकगृह्यसूत्रम् (D) वैखानसगृह्यसूत्रम्
स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज -10

21. ऋग्वेदप्रातिशाख्यस्य प्रवक्ता कः अस्ति ?
(A) शौनकः (B) उवटः
(C) कात्यायनः (D) अनन्तभट्टः
स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज- 197

22. 'स्वरान्तरे व्यञ्जनानि' कस्याङ्गं भवन्ति ऋक्प्रातिशाख्यमते?
(A) पूर्वस्य (B) उत्तरस्य
(C) अपूर्वस्य (D) मध्यस्य
स्रोत- ऋग्वेदप्रातिशाख्यम् - वीरेन्द्र कुमार वर्मा, पेज- 62

23. ऋक्प्रातिशाख्यदिशा व्यञ्जनानामाद्याः किं भवन्ति ?
(A) अन्तःस्थाः (B) ऊष्माणः
(C) सन्ध्यक्षराणि (D) स्पर्शाः
स्रोत- ऋग्वेदप्रातिशाख्यम्- वीरेन्द्र कुमार वर्मा, पेज- 51

24. ऋक्प्रातिशाख्यमतेन वक्ष्यमाणेषु सोष्मवर्णः कः ?
(A) ह (B) श
(C) ष (D) झ
स्रोत- ऋग्वेदप्रातिशाख्यम्- वीरेन्द्र कुमार वर्मा, पेज- 55

25. 'आर्ष्टिषेणः' इत्यत्र कियान् स्वरभक्तिकालः ?
(A) एकमात्राकालः (B) अर्धमात्राकालः
(C) पादमात्राकालः (D) द्विमात्राकालः
स्रोत- ऋग्वेदप्रातिशाख्यम्- वीरेन्द्र कुमार वर्मा, पेज- 69

26. पाणिनीयशिक्षानुसारं स्वरितस्वरोच्चारणकाले हस्तप्रदर्शनविधिः कुत्र विधातव्यः ?
(A) कर्णमूले (B) हृदि
(C) मूर्ध्नि (D) सर्वास्ये कोऽर्थः
स्रोत- पाणिनीयशिक्षा, श्लोक - 48

27. कथं ज्ञायते महाभाष्यदृष्ट्या 'सिद्धः शब्दोऽर्थः सम्बन्धश्चे' ति?
(A) अर्थक्रियार्थिभ्यः (B) लोकतः
(C) शास्त्रतः (D) कोशतः
स्रोत- महाभाष्य- जयशंकर प्रसाद त्रिपाठी, पेज- 91

28. 'पदे न वर्णा विद्यन्ते वर्णेष्ववयवा न च । वाक्यात् पदानामत्यन्तं प्रविवेको न कश्चन ॥' अनया कारिकया भर्तृहरिः किं बोधितवान्?
(A) वर्णानां सत्यत्वम् (B) पदानां सत्यत्वम्
(C) वाक्यस्य सत्यत्वम् (D) सर्वेषां सत्यत्वम्
स्रोत- वाक्यपदीयम् (ब्रह्मकाण्ड का.-73) सूर्यनारायण शुक्ल, पेज- 81

29. 'एध्' धातोः लुङि उत्तमपुरुषैकवचने कः प्रयोगः?
(A) ऐधिषि (B) एधिषीय
(C) ऐधिष्ये (D) ऐधे
स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी- गोविन्दाचार्य, पेज- 495

30. 'भवती' त्यर्थे 'यत्' प्रत्ययान्तः कः प्रयोगः?
(A) भव्यम् (B) भव्यः
(C) भाव्यम् (D) भाव्यः
स्रोत- अष्टाध्यायी (3.4.68) - ईश्वरचन्द्र, पेज- 406

31. एषु 'मतुप्' प्रत्ययान्तोऽशुद्धः प्रयोगोऽन्वेष्टव्यः ?
(A) यववान् (B) ज्ञानवान्
(C) विद्यावान् (D) लक्ष्मीवान्
स्रोत- अष्टाध्यायी- ईश्वरचन्द्र (भाग-2), पेज- 1022

32. स्त्रियां 'सीमन्' शब्दस्य प्रथमायां कः प्रयोगो भवति?
(A) सीमन् (B) सीम्नी
(C) सीमा (D) सीमना
स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-6), पेज- 90,91

33. 'वृद्धो जनो दुःखशतानि भुङ्क्ते' इत्यत्रात्मनेपद-विधायकं सूत्रं किम्?
(A) भावकर्मणोः (B) अकर्मकाच्च
(C) कर्तृस्थे चाशरीरे कर्मणि (D) भुजोऽनवने
स्रोत- वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (1.3.66) - गोविन्दाचार्य, पेज- 424

17-B	18-B	19-B	20-C	21-A	22-B	23-D	24-D	25-C	26-A	27-B
28-C	29-A	30-B	31-A	32-C	33-D					

34. 'अख्यातोपयोगे' इत्यत्र प्रयुक्तस्योपयोगशब्दस्य कोऽर्थः?
(A) वक्ता
(B) नियमपूर्वकविद्यास्वीकारः
(C) नियतकालं भृत्या स्वीकरणम्
(D) अन्यकर्तृकोऽभिलाषः
स्रोत- कारकप्रकरण (1.4.29) - राममुनि पाण्डेय, पेज- 83

35. 'अरबी' भाषा कस्य भाषापरिवारस्य भाषा अस्ति?
(A) सामीपरिवारस्य (B) हामीपरिवारस्य
(C) काकेशीपरिवारस्य (D) हित्तीपरिवारस्य
स्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र- कपिलदेव द्विवेदी, पेज- 402

36. कलिङ्गराजखारवेलस्य उल्लेखः कस्मिन्नभिलेखे वर्तते?
(A) एहोल-शिलालेखे (B) हाथीगुम्फालेखे
(C) गिरनारलेखे (D) जूनागढलेखे
स्रोत- प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख (भाग-1)- परमेश्वरीलाल गुप्त, पेज- 102

37. निम्नलिखितेषु कस्यैकोऽभिलेखो यूनानीलिप्यां वर्तते?
(A) समुद्रगुप्तस्य (B) पुलकेशिनः
(C) अशोकस्य (D) रुद्रदाम्नः
स्रोत- प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख- परमेश्वरीलाल गुप्त,पेज- 5

38. अधोलिखितानां 'केन सह कस्य सम्बन्ध' इति समीचीनां तालिकां चिनुत ।

(क)	नैयायिकाः	1	प्रामाण्यं स्वतोऽप्रामाण्यं परतः
(ख)	पूर्वमीमांसकाः	2	प्रामाण्याप्रामाण्ये परतः
(ग)	जैनाः	3	अप्रामाण्यं स्वतः प्रामाण्यं परतः
(घ)	बौद्धाः	4	प्रामाण्याप्रामाण्ये स्वतः

	क	ख	ग	घ
(A)	2	1	4	3
(B)	3	2	1	4
(C)	4	3	2	1
(D)	1	2	3	4

स्रोत- तर्कभाषा- आचार्य विश्वेश्वर, पेज- 130

39. तर्कसंग्रहदीपिकायामीश्वरस्य लक्षणं किमुक्तम्?
(A) ज्ञानाधिकरणत्वम् (B) नित्यज्ञानाधिकरणत्वम्
(C) प्रत्यक्षग्राह्यत्वम् (D) सुखादिमत्त्वम्
स्रोत- तर्कसंग्रह- गोविन्दाचार्य, पेज- 73

40. न्यायसिद्धान्तमुक्तावलीरीत्याऽनुमितौ व्याप्तिज्ञानं किम्भवति?
(A) व्यापारः (B) परामर्शः
(C) पक्षः (D) करणम्
स्रोत- न्यायसिद्धान्तमुक्तावली- महानन्द झा, पेज- 10

41. 'वेदप्रतिपाद्यः प्रयोजनवदर्थो धर्मः' इति धर्मलक्षणे लौगाक्षिभास्करेण 'अर्थ' पदोपादानं किमर्थम्?
(A) स्वर्गादिप्रयोजनेऽतिव्याप्तिवारणाय
(B) भोजनादावतिव्याप्तिवारणाय
(C) श्येनयागादावतिव्याप्तिवारणाय
(D) हस्तप्रक्षालनादावतिव्याप्तिवारणाय
स्रोत- अर्थसंग्रह- राजेश्वरशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज- 15,17

42. बौद्धानां कति प्रस्थानानि प्रसिद्धानि सन्ति ?
(A) चत्वारि (B) त्रीणि
(C) पञ्च (D) षड्
स्रोत- सर्वदर्शनसंग्रह - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज- 88

43. बौद्धदर्शनानुसारं चित्तस्कन्धः कतिविधः?
(A) चतुर्विधः (B) पञ्चविधः
(C) षड्विधः (D) सप्तविधः
स्रोत- सर्वदर्शनसंग्रह - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज- 75

44. 'ईक्षतेर्नाशब्दम्' इत्यस्मिन् सूत्रे निम्नलिखितेषु शाङ्करभाष्यानुसारं किं मतं निरस्यते ?
(A) ब्रह्म जगतः कारणमस्ति
(B) प्रधानं जगतः कारणमस्ति
(C) ब्रह्म सर्वज्ञमस्ति सर्वकारणात्
(D) ईक्षणशक्तिर्ब्रह्मणि नास्ति
स्रोत- ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यम् (1/5) - सत्यानन्द सरस्वती, पेज- 83

45. 'तद् ब्रह्म सर्वज्ञं सर्वशक्तिजगदुत्पत्तिस्थितिलयकारणम्' इत्यवबोधः शाङ्करभाष्यानुसारं कस्माद् भवति ?
(A) प्रत्यक्षदर्शनात् (B) वेदान्तशास्त्रात्
(C) जगद्वैचित्र्यात् (D) कारणकार्यभावात्
स्रोत- ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यम् (1/4), सत्यानन्द सरस्वती, पेज- 49

46. 'दृग्दर्शनशक्त्योरेकात्मता' इति लक्षणं योगसूत्रे कस्य विद्यते?
(A) अविद्यायाः (B) अभिनिवेशस्य
(C) अस्मितायाः (D) रागस्य
स्रोत- पातञ्जलयोगसूत्र (2/6) - सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पेज- 174

47. वेदान्तसारानुसारं अनुबन्धे किं न गण्यते ?
(A) अधिकारी (B) विषयः
(C) साधनानि (D) सम्बन्धः
स्रोत- वेदान्तसार- राकेश शास्त्री, पेज- 116

48. वेदान्तदर्शनानुसारं व्यष्ट्युपहितं चैतन्यं किमुच्यते?
(A) ईश्वरः (B) प्राज्ञः
(C) आत्मा (D) ब्रह्म
स्रोत- वेदान्तसार- राकेश शास्त्री, पेज- 159,160

34-B	**35-A**	**36-B**	**37-C**	**38-A**	**39-B**	**40-B**	**41-C**	**42-A**	**43-B**	**44-B**
45-B	**46-C**	**47-C**	**48-B**							

49. 'पुद्गलः' इति शब्दः कस्य दर्शनस्य वर्तते?
(A) बौद्धदर्शनस्य (B) जैनदर्शनस्य
(C) सांख्यदर्शनस्य (D) वेदान्तदर्शनस्य
स्रोत- सर्वदर्शनसंग्रह- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज- 153

50. जिनदत्तसूरिमते जिनः को भवितुमर्हति ?
(A) वेदवेदाङ्गविद् (B) अष्टादशदोषेभ्यो मुक्तः
(C) तत्त्वज्ञानी (D) जैनदर्शने दीक्षितः
स्रोत- सर्वदर्शनसंग्रह- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज- 153

51. एषु किं रामायणाश्रितं न भवति ?
(A) पञ्चरात्रम् (B) उत्तररामचरितम्
(C) महानाटकम् (D) रघुवंशम्
स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज- 466

52. एषु किं पर्व महाभारते नास्ति ?
(A) सभापर्व (B) भीमपर्व
(C) वनपर्व (D) शल्यपर्व
स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज- 149,151

53. एषु किं महापुराणम् अस्ति ?
(A) कूर्मपुराण (B) साम्बपुराण
(C) एकाम्रपुराण (D) आदित्यपुराण
स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज- 176,177

54. काव्यमीमांसायां प्रथमेऽध्याये रीतिनिर्णयविषये अस्य नाम अस्ति?
(A) सुवर्णनाभः (B) चित्राङ्गदः
(C) प्रचेतायनः (D) भरतः
स्रोत- काव्यमीमांसा (प्रथमोऽध्यायः)- गंगासागर राय, पेज- 48

55. 'त्वयि दृष्ट एव तस्या निर्वाति मनो मनोभवज्वलितम्। आलोके हि हिमांशोर्विकसति कुसुमं कुमुद्वत्याः॥ अत्र मनसः प्रतिबिम्बनं केन सह वर्तते' ?
(A) हिमांशुना सह (B) कुसुमेन सह
(C) कुमुद्वत्या सह (D) मनोभवेन सह
स्रोत- काव्यप्रकाश (दशम उल्लास)- आचार्य विश्वेश्वर, पेज- 486,487

56. राघवविरहज्वालासन्तापितसह्यशैलशिखरेषु । शिशिरे सुखं शयानाः कपयः कुप्यन्ति पवनतनयाय ॥ रसगंगाधरे प्रथमे आनने श्लोकोऽयमुदाहरणं भवति?
(A) उत्तमोत्तमकाव्यस्य (B) उत्तमकाव्यस्य
(C) मध्यमकाव्यस्य (D) अधमकाव्यस्य
स्रोत- रसगंगाधर (प्रथम आनन)- मदनमोहन झा, पेज- 69

57. 'सुवर्णपुष्पां पृथिवीं चिन्वन्ति पुरुषास्त्रयः' इत्यादिश्लोकः ध्वन्यालोके प्रथमे उद्द्योते कस्य उदाहरणं भवति ?
(A) अविवक्षितवाच्यस्य (B) विवक्षितान्यपरवाच्यस्य
(C) आक्षेपालङ्कारस्य (D) विशेषोक्त्यलङ्कारस्य
स्रोत- ध्वन्यालोक- आचार्य विश्वेश्वर, पेज- 56

58. दशरूपकमते मुखसन्धेः अङ्गानि भवन्ति ?
(A) एकादश (B) द्वादश
(C) त्रयोदश (D) चतुर्दश
स्रोत- दशरूपक (1/25) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज- 27

59. धनञ्जयमते भूयसे फललाभाय औत्सुक्यमात्रं भवति?
(A) आरम्भः (B) यत्नः
(C) प्राप्त्याशा (D) फलागमः
स्रोत- दशरूपक- रमाशंकर त्रिपाठी, पेज- 23

60. कालक्रमानुसारं तालिकां चिनुत ?
(a) जगन्नाथः (b) भरतः
(c) विश्वनाथ-कविराजः (d) मम्मटः
(A) b d c a (B) b d a c
(C) b a c d (D) a b c d
स्रोत- भारतीय काव्यशास्त्र का इतिहास- राजवंश सहाय हीरा, पेज- 05,166,202,229

61. धर्मादिसाधनोपायः सुकुमारक्रमोदितः । काव्यबन्धोऽभिजातानां हृदयाह्लादकारकः ॥ अत्र कुन्तकेन किं प्रतिपादितम् ?
(A) काव्यलक्षणम् (B) काव्यहेतुः क
(C) काव्यप्रयोजनम् (D) काव्यवैविध्यम्
स्रोत- वक्रोक्तिजीवितम् (1/3)- राधेश्याम मिश्र, पेज- 10

49-B	50-B	51-A	52-B	53-A	54-A	55-B	56-B	57-A	58-B	59-A
60-A	61-C									

62. अधस्तनयुग्मानां समीचीनमेलनतालिकां चिनुत- कखगघ

(क) चीयते बालिशस्यापि सत्क्षेत्रपतिता कृषिः — 1 मृच्छकटिकम्
(ख) आसीत् स दोलाचलचित्तवृत्तिः — 2 कर्णभारम्
(ग) हृदये गृह्यते नारी यदीदं नास्ति गम्यताम् — 3 रघुवंशम्
(घ) हुतं च दत्तं च तथैव तिष्ठति — 4 मुद्राराक्षसम्

	क	ख	ग	घ
(A)	4	1	2	3
(B)	4	2	1	3
(C)	3	4	1	2
(D)	4	3	1	2

स्रोत- मुद्राराक्षस (1.3), मृच्छकटिकम् (1.50) कर्णभारम् (1.22), रघुवंश (14.34)

63. 'हृतेऽपि भारे महतस्त्रपाभरादुवाह दुःखेन भृशानतं शिरः' -शिशुपालवधे महाकाव्ये इयं वर्णना केन सम्बद्धा ?

(A) यमवाहनमहिषेण (B) वरुणेन
(C) कुबेरेण (D) इन्द्रेण

स्रोत- शिशुपालवधम् (1/57) - जनार्दन गंगाधर रटाटे, पेज-128,

64. अभिज्ञानशाकुन्तले दुष्यन्तस्य पुरोहितः भवति ?

(A) वातायनः (B) सोमरातः
(C) गालवः (D) मारीचः

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् - राकेश शास्त्री, भू0 पेज- 85

65. मुद्राराक्षसे चन्द्रगुप्तस्य अन्तःपुरचरः कञ्चुकी भवति?

(A) सिद्धार्थकः (B) चन्दनदासः
(C) वैहीनरिः (D) भागुरायणः

स्रोत- मुद्राराक्षस- परमेश्वरदीन पाण्डेय, भू0 पेज- 12

66. दशकुमारचरिते अष्टमे उच्छ्वासे विदर्भदेशस्य भोजवंशभूषणस्य कस्य राज्ञः वर्णनमस्ति ?

(A) पुण्यवर्मणः (B) मानसारस्य
(C) राजहंसस्य (D) प्रहारवर्मणः

स्रोत- दशकुमारचरितम् - विश्वनाथ झा, पेज- 238

67. 'तदन्वये शुद्धिमति प्रसूतः शुद्धिमत्तरः' रघुवंशेऽयं पद्यांशः केन सम्बद्धः ?

(A) श्रीरामेण (B) रघुणा
(C) अजेन (D) दिलीपेन

स्रोत- रघुवंशम् (1/12) - हरगोविन्द मिश्र, पेज- 06

68. 'मदेकपुत्रा जननी जरातुरा' नैषधचरिते इयमुक्तिर्भवति?

(A) दमयन्त्याः (B) हंसस्य
(C) भीमस्य (D) नलस्य

स्रोत- नैषधीयचरितम् (1.135)

69. 'हर्षचरितम्' कतिषु उच्छ्वासेषु रचितमस्ति ?

(A) त्रिषु (B) पञ्चसु
(C) सप्तसु (D) अष्टसु

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज- 396

70. उत्तररामचरिते 'मैत्रावरुणिः' पदं कस्य कृते प्रयुक्तम्?

(A) विश्वामित्रस्य कृते (B) वसिष्ठस्य कृते
(C) अष्टावक्रस्य कृते (D) ऋष्यशृङ्गस्य कृते

स्रोत- उत्तररामचरितम् (1/12) - शिवबालक द्विवेदी, पेज-156

71. 'अलब्धलाभार्था लब्धपरिरक्षणी' इत्यादि-विशेषणानि कौटिलीयार्थशास्त्रे कां लक्षयन्ति ?

(A) भेदनीतिम् (B) दण्डनीतिम्
(C) वार्ताम् (D) आन्वीक्षिकीम्

स्रोत- कौटिलीय अर्थशास्त्रम् - वाचस्पति गैरोला, पेज- 12

72. 'संख्यातार्थेषु कर्मसु नियुक्ता ये यथादिष्टमर्थं सविशेषं वा कुर्युः तानमात्यान् कुर्वीत'- कौटिलीयार्थशास्त्रे उल्लिखितमेतत् मतं भवति ?

(A) भारद्वाजस्य (B) विशालाक्षस्य
(C) बाहुदन्तीपुत्रस्य (D) पिशुनस्य

स्रोत- कौटिलीय अर्थशास्त्रम् - वाचस्पति गैरोला, पेज- 21

73. याज्ञवल्क्यमते पैतामहे द्रव्ये अनेकपितृकपुत्राणां भागविभागः कथं भवति ?

(A) पितृतः (B) कामतः
(C) समभावतः (D) ज्येष्ठकनिष्ठभावतः

स्रोत- याज्ञवल्क्यस्मृति (2/120)- उमेशचन्द्र पाण्डेय, पेज- 276

74. मनुमते वैश्यस्य मेखला कीदृशी कार्या ?

(A) मुञ्जमयी (B) मूर्वामयी
(C) शणतान्तवी (D) कुशमयी

स्रोत- मनुस्मृति (2/42) - गिरिधर गोपाल शर्मा, पेज- 77

75. मनुमते एतेषां कस्य मात्रा नृपस्य निर्माणे न गृहीता ?

(A) इन्द्रस्य (B) चन्द्रस्य
(C) अश्विनोः (D) अनिलस्य

स्रोत- मनुस्मृति (7/4) - गिरिधर गोपाल शर्मा, पेज- 149

62-D 63-A 64-B 65-C 66-A 67-D 68-B 69-D 70-B 71-B 72-D 73-A 74-C 75-C

57	जुलाई 2018	NTA UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् II

1. **शांखायन-शाखायाः सम्बन्धः वर्तते-**
(A) अथर्ववेदेन (B) ऋग्वेदेन
(C) सामवेदेन (D) कृष्णयजुर्वेदेन
स्रोत-वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-09

2. **'द्राह्यायण श्रौतसूत्रम्' कस्य वेदस्य विद्यते?**
(A) अथर्ववेदस्य (B) कृष्णयजुर्वेदस्य
(C) ऋग्वेदस्य (D) सामवेदस्य
स्रोत-वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-10

3. **'एतद्वचो जरितर्मापिमृष्ठा आयत्तेघोषानुत्तरा युगानि'- इति मन्त्रांशो वर्तते-**
(A) पुरूरवा-उर्वशीसूक्ते (B) सरमा-पणिसूक्ते
(C) विश्वामित्र-नदीसूक्ते (D) यम-यमीसूक्ते
स्रोत- ऋग्वेद (3.33.8)- सत्यवीर शास्त्री, पेज-413

4. **अधस्तनेषु उचितसम्बन्धयुतं विकल्पं चिनुत-**
(A) 'यो रध्रस्य चोदिता यः कृशस्य'-इन्द्रदेवता
(B) 'राजन्तमध्वराणां गोपामृतस्य दीदिविम्'-विष्णुसूक्तम्
(C) 'विश्वं प्रतीची सप्रथः उदस्थात्'-सावित्रीसूक्त
(D) 'अहं सुवे पितरमस्य मूर्धन्'- रुद्रदेवता
स्रोत- ऋग्वेद (2.12.6)- सत्यवीर शास्त्री, पेज-323

5. **'यो वाघते ददाति सूनरं वसु'- अत्र 'वाघते' पदस्य कोऽर्थः-**
(A) यज्ञकर्त्रे (B) राज्ञे
(C) बाधकाय (D) सूर्याय
स्रोत- ऋग्वेद (1.40.4)- रामगोविन्द त्रिवेदी

6. **नामाख्याताभ्यां वियुक्ता अपि उपसर्गाः वाचकाः भवन्तीति कः मन्यते-**
(A) वार्ष्यायणिः (B) शाकटायनः
(C) गार्ग्यः (D) कौत्सः
स्रोत- निरुक्त-छज्जूराम शास्त्री, पेज-11

7. **वेदेष्वेव प्रयुज्यते प्रत्ययः-**
(A) अध्यै (B) तुमुन्
(C) क्त्वा (D) क्त
स्रोत- ऋक्सूक्तसंग्रह- हरिदत्त शास्त्री, भू. पेज-32

8. **'यस्मान्न ऋते विजयन्ते'-इत्यत्र 'यस्मात्' पदेन कः गृह्यते -**
(A) विष्णुः (B) रुद्रः
(C) इन्द्रः (D) वरुणः
स्रोत- ऋक्सूक्तसंग्रह (2.12.9) हरिदत्त शास्त्री, पेज-186

9. **ऋग्वेदस्य कस्मिन् मण्डले 'विश्वामित्रनदीसंवादसूक्तम्' विद्यते-**
(A) द्वितीये (B) दशमे
(C) तृतीये (D) अष्टमे
स्रोत-वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-57

10. **परिशिष्टभागमतिरिच्य निरुक्ते कति अध्यायाः सन्ति-**
(A) सप्त (B) द्वादश
(C) पञ्च (D) चतुर्दश
स्रोत-वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-204

11. **'प्रचोदयात्' इति कस्मिन् लकारे रूपमस्ति-**
(A) लिङ् (B) लोट्
(C) लृट् (D) लेट्
स्रोत-ऋग्वेद (3.62.10) - राम गोविन्द त्रिवेदी, पेज-346

12. **'स जातो अत्यरिच्यत'- इत्यत्र 'सः' पदेन कः गृह्यते-**
(A) इन्द्रः (B) पुरुषः
(C) प्रजापतिः (D) विष्णुः
स्रोत- ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 10.90.5) - हरिदत्त शास्त्री, पेज-396

13. **"Vedic Grammar" इत्याख्यस्य ग्रन्थस्य प्रणेता वैदेशिको विद्वान् कः-**
(A) एच.टी. कोलब्रुक् (B) एफ. मैक्समूलरः
(C) ए. मैक्डानलः (D) एच. विल्सनः
स्रोत-वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-36

14. **सामवेदीयाः षड्ज-मध्यम-पञ्चमस्वराः कतमे त्रैस्वर्यस्वरे अन्तर्भवन्ति-**
(A) अनुदात्ते (B) स्वरिते
(C) प्रचये (D) उदात्ते
स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-93

1-B	2-D	3-C	4-A	5-A	6-C	7-A	8-C	9-C	10-B
11-D	12-B	13-C	14-B						

15. 'बृहती'-छन्दसि अक्षराणां संख्या विद्यते-
(A) 48 (B) 28
(C) 36 (D) 32
स्रोत-वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-203

16. दर्शपौर्णमासेष्टियागे अनुयाजानां संख्या विद्यते-
(A) पञ्च (B) त्रयः
(C) एकादश (D) अष्ट
स्रोत- श्रौतयज्ञ परिचय- वेणीराम शर्मा गौड़, पेज-8-14

17. 'वृक्षस्य नु ते पुरुहूत वयाः'- इत्यत्र 'नु' विद्यते-
(A) उपमार्थीयः (B) हेत्वपदेशार्थीयः
(C) अनुप्रश्नार्थीयः (D) अवकुत्सार्थीयः
स्रोत- निरुक्तम्- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-47

18. 'नियतवाचो युक्तयो नियतानुपूर्व्या भवन्ति'- इति कथनं वर्तते-
(A) शाकटायनस्य (B) औदुम्बरायणस्य
(C) गार्ग्यस्य (D) कौत्सस्य
स्रोत-निरुक्तम्- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-98

19. ऋक्संहितायाः समुपलब्धभाष्येषु प्रथमो भाष्यकारः विद्यते-
(A) सायणः (B) आनन्दतीर्थः
(C) स्कन्दस्वामी (D) वेङ्कटमाधवः
स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-22

20. ऋक्प्रातिशाख्यस्य पटलसंख्या कियती-
(A) 16 (B) 14
(C) 12 (D) 18
स्रोत- वैदिक वाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-2), पेज-13

21. अथर्ववेदेन सम्बद्धा शिक्षा का वर्तते-
(A) लोमशी शिक्षा (B) माण्डूकी शिक्षा
(C) गौतमी शिक्षा (D) केशवी शिक्षा
स्रोत- संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास, (द्वितीय खण्ड), भू. पे-55

22. 'शिवसंकल्पसूक्तम्' माध्यन्दिनसंहितायां कस्मिन् अध्याये समुपलभ्यते-
(A) षोडशे (B) चतुस्त्रिंशे
(C) एकत्रिंशे (D) चत्वारिंशे
स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-75

23. भर्तृहरिदिशा को ब्रह्मामृतमश्नुते?
(A) शब्दप्रवृत्तितत्त्वज्ञः
(B) पञ्चविंशतितत्त्वज्ञः
(C) प्रमाणादिषोडशपदार्थनिष्णातः
(D) याज्ञिकः
स्रोत-वाक्यपदीयम् (1.133)- जयदत्त उप्रेती, पेज- 89

24. परेषामसमाख्येयं मणिरूप्यादिविज्ञानं भर्तृहरिदिशा कस्माज्जायते?
(A) शाब्दात् (B) अनुमानाद्
(C) अभ्यासाद् (D) उपमानात्
स्रोत- वाक्यपदीयम्- (का॰35) डॉ0 जयदत्त उप्रेती, पेज-25

25. 'एध्' धातोः लुङ्लकारे प्रथमपुरुषबहुवचने कः प्रयोगः?
(A) ऐधन्त (B) ऐधिष्ट
(C) ऐधिषत (D) ऐधत
स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी- गोविन्दाचार्य, पेज-495

26. 'लोटो लङ्वत्' इति सूत्रप्रवृत्तिः कस्मिन् प्रयोगे जाता?
(A) अभवः (B) भवाम
(C) भवेताम् (D) अभविष्यत्
स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी- (3.4.85) गोविन्दाचार्य, पेज-401

27. 'महद् यशो यस्य सः' इति विग्रहे बहुव्रीहिसमासे कः प्रयोगः?
(A) महायशः (B) महायशसः
(C) महायशाः (D) महायशष्कः
स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी- गोविन्दाचार्य, पेज-967

28. 'कुगतिप्रादयः' इति समासविधायकसूत्रस्य किमुदाहरणं नास्ति?
(A) पटपटाकृत्य (B) कुम्भकारः
(C) सुपुरुषः (D) हस्तेकृत्य
स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी- गोविन्दाचार्य, पेज-935

29. 'प्रगृह्यम्' इत्यत्र कः कृत्यप्रत्ययः?
(A) ण्यत् (B) यत्
(C) क्यप् (D) तव्यत्
स्रोत- अष्टाध्यायी (3.1.119), ईश्वरचन्द्र, पेज-297

30. 'विद्वांसः सन्ति अस्मिन्' इति विग्रहे को मत्वर्थीयः प्रयोगः?
(A) विद्वद्वान् (B) विदुष्मान्
(C) विद्वत्वान् (D) विद्वत्मान्
स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी- गोविन्दाचार्य, पेज-1112

15-C	16-B	17-A	18-D	19-C	20-D	21-B	22-B	23-A	24-C
25-C	26-B	27-C	28-B	29-C	30-B				

31. या स्वयमेवाध्यापिका सा किमुच्यते?

(A) उपाध्यायानी (B) उपाध्याया

(C) आचार्यानी (D) आचार्याणी

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या,खण्ड-6), पेज-55

32. 'वृत्तिसर्गतायनेषु क्रमः' इत्यात्मनेपदविधायकसूत्रस्य सर्गार्थक-'क्रम्' धातोरुदाहरणं चिनुत।

(A) अध्ययनाय क्रमते (B) ऋचि क्रमते बुद्धिः

(C) क्रमन्तेऽस्मिन् शास्त्राणि (D) आक्रमते सूर्यः

स्रोत- अष्टाध्यायी (1.3.38)- ईश्वरचन्द्र, पेज-92

33. 'बोधयति पदम्' इत्यत्र परस्मैपदविधायकं किमस्ति पाणिनिसूत्रम्?

(A) विभाषाऽकर्मकात्

(B) निगरणचलनार्थेभ्यश्च

(C) बुध-युध-नश-जनेङ्-प्रु-द्रु-स्रुभ्यो णेः

(D) अणावकर्मकाच्चित्तवत्कर्तृकात्

स्रोत- अष्टाध्यायी (1.3.86) ईश्वरचन्द्र, पेज-104

34. अधोलिखितानां केन सह कस्य सम्बन्धः? इति समीचीनां तालिकां चिनुत।

(क)	अपवर्गे तृतीया	(i)	ओदनं भुञ्जानो विषं भुङ्क्ते।
(ख)	तथायुक्तं चाऽनीप्सितम्	(ii)	प्रद्युम्नः कृष्णात् प्रति।
(ग)	धारेरुत्तमर्णः	(iii)	क्रोशेन अनुवाकोऽधीतः।
(घ)	प्रतिनिधि-प्रतिदाने च यस्मात्	(iv)	भक्ताय धारयति मोक्षं हरिः।

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(A)	(iii)	(i)	(iv)	(ii)
(B)	(iii)	(ii)	(iv)	(i)
(C)	(ii)	(iii)	(i)	(iv)
(D)	(iv)	(ii)	(iii)	(i)

स्रोत-कारकप्रकरण-राममुनि पाण्डेय, पेज-60,30,68,90

35. ''पराजेरसोढः'' इत्यनेन सूत्रेण कतमं कारकं भवति?

(A) अधिकरणम् (B) सम्प्रदानम्

(C) अपादानम् (D) करणम्

स्रोत- कारकप्रकरण-राममुनि पाण्डेय, पेज-82

36. ''प्रातिपदिकम्'' इति संज्ञा केन सूत्रेण विधीयते?

(A) प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा।

(B) प्रातिपदिकान्तनुम्विभक्तिषु च।

(C) ङ्याप्प्रातिपदिकात्।

(D) अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्।

स्रोत-लघुसिद्धान्तकौमुदी- गोविन्द प्रसाद शर्मा, पेज-129

37. निम्नाङ्कितेषु 'प्रगृह्यम्' इति संज्ञाविधायकं सूत्रं किमस्ति?

(A) ओत् (B) तरप्तमपौ घः

(C) तृतीयासमासे (D) आद्यन्तवदेकस्मिन्

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी- गोविन्दाचार्य, पेज-77

38. 'ब्राह्मणेनावश्यं शब्दा ज्ञेयाः' कथनमिदं पतञ्जलिना कस्य व्याकरणप्रयोजनस्य विषये कृतम्?

(A) रक्षाविषये (B) ऊहविषये

(C) आगमविषये (D) लघुविषये

स्रोत- व्याकरणमहाभाष्यम् (पस्पशाह्निक)- मधुसूदन मिश्र, पेज-10

39. पतञ्जलिमतानुसारं शब्दः कः?

(A) अर्थरूपम्

(B) यद् इङ्गितं चेष्टितम्

(C) यद् भिन्नेष्वभिन्नं, छिन्नेष्वच्छिन्नम्

(D) प्रतीतपदार्थको लोके ध्वनिः

स्रोत- महाभाष्य (पस्पशाह्निक) जयशंकर लाल त्रिपाठी, पेज-19

40. पाणिनीयशिक्षानुसारं स्वराणां संख्या का?

(A) विंशतिः (B) एकविंशतिः

(C) पञ्चविंशतिः (D) अष्टादश

स्रोत- पाणिनीयशिक्षा- (श्लोक-4)- शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पेज-07

41. 'समीकरणम्' कस्य दिशा वर्तते?

(A) ध्वनिपरिवर्तनस्य (B) रूपपरिवर्तनस्य

(C) अर्थपरिवर्तनस्य (D) वाक्यपरिवर्तनस्य

स्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-233

42. हिब्रू-भाषा कस्य भाषापरिवारस्य भाषाऽस्ति?

(A) चीनीपरिवारस्य (B) भारोपीयपरिवारस्य

(C) सूडानीपरिवारस्य (D) सामी-हामीपरिवारस्य

स्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-402

31-B 32-A 33-C 34-A 35-C 36-D 37-A 38-D 39-D 40-B 41-A 42-D

43. संस्कृतभाषायाः यूरोपीयभाषाभिः सम्बन्धः सर्वप्रथमं केनोद्घाटितः?
(A) मैक्समूलरमहोदयेन (B) विन्टरनित्ज़ महोदयेन
(C) सर विलियमजोन्स-महोदयेन (D) वेबरमहोदयेन
स्रोत-भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-4

44. बान्तूपरिवारः कस्य खण्डस्य भाषापरिवारोऽस्ति?
(A) यूरेशियाखण्डस्य (B) अफ्रीकाखण्डस्य
(C) प्रशान्तमहासागरीयखण्डस्य (D) अमेरिकाखण्डस्य
स्रोत-भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-372

45. अर्थसङ्ग्रहे प्रत्ययस्य लिङंशेन कीदृशी भावना प्रोक्ता?
(A) शाब्दी (B) आर्थी
(C) शाब्दी आर्थी च (D) स्वर्गभावना
स्रोत- अर्थसंग्रह- राजेश्वरशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज-30

46. अर्थसङ्ग्रहानुसारं 'शब्दसामर्थ्यम्' इत्यनेन कतमं प्रमाणं लक्षितम्?
(A) श्रुतिः (B) प्रकरणम्
(C) लिङ्गम् (D) वाक्यम्
स्रोत- अर्थसंग्रह- राजेश्वरशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज-121

47. तर्कसङ्ग्रहदीपिकानुसारं स्पर्शानुमेयः कः पदार्थः?
(A) आकाशम् (B) मनः
(C) आत्मा (D) वायुः
स्रोत- तर्कसंग्रह- गोविन्दाचार्य, पेज-89

48. तर्कसङ्ग्रहानुसारम् आत्मनो विशेषगुणः कः?
(A) वेगसंस्कारः (B) स्थितिस्थापकः संस्कारः
(C) प्रयत्नः (D) शब्दः
स्रोत- तर्कसंग्रह-गोविन्दाचार्य, पेज-266

49. तर्कभाषानुसारम् आत्मा कीदृशः?
(A) सर्वस्मिन् एकोऽणुश्च
(B) विभुरनित्यश्च
(C) देहेन्द्रियाद्यनतिरिक्तः
(D) प्रतिशरीरं भिन्नो विभुर्नित्यश्च
स्रोत- तर्कभाषा- श्रीनिवास शास्त्री, पेज-175

50. साध्यशून्यो यत्र पक्षः सः कीदृशो हेत्वाभासः?
(A) बाधः (B) आश्रयासिद्धः
(C) असाधारणोऽनैकान्तिकः (D) विरुद्धः
स्रोत-न्यायसिद्धान्तमुक्तावली (का॰78) (अनुमानोपमानखण्ड) गजानन शास्त्री मुसलगाँवकर), पेज-71

51. तर्कभाषारीत्या समवायस्य प्रत्यक्षग्राह्यत्वे इन्द्रियार्थसन्निकर्षः कः?
(A) संयोगः
(B) संयुक्तसमवायः
(C) विशेषण-विशेष्यभावः
(D) संयुक्तसमवेतसमवायः
स्रोत- तर्कभाषा- श्रीनिवास शास्त्री, पेज-64

52. वेदान्तसारानुसारं 'सगुणब्रह्मविषयमानसव्यापाररूपाणि' कर्माणि निम्नलिखितेषु कानि भवन्ति?
(A) काम्यकर्माणि (B) नित्यकर्माणि
(C) उपासनाकर्माणि (D) साध्यकर्माणि
स्रोत-वेदान्तसार-सन्तनारायण श्रीवास्तव्य, पेज-14

53. 'जीवब्रह्मैक्यं शुद्धचैतन्यं प्रमेयम्' इत्ययम् अनुबन्धः कतमः?
(A) अधिकारी (B) विषयः
(C) सम्बन्धः (D) प्रयोजनम्
स्रोत- वेदान्तसार- सन्तनारायण श्रीवास्तव्य, पेज-30

54. समष्ट्यज्ञानोपहितं चैतन्यं किं भवति?
(A) जीवः (B) ईश्वरः
(C) ब्रह्म (D) प्राज्ञः
स्रोत- वेदान्तसार- सन्तनारायण श्रीवास्तव्य, पेज-42

55. 'अतत्त्वतोऽन्यथाप्रथा' किमुच्यते?
(A) विकारः (B) विवर्तः
(C) शब्दः (D) अनुपहितचैतन्यम्
स्रोत- वेदान्तसार-सन्तनारायण श्रीवास्तव्य, पेज-115

56. 'ब्रह्मसूत्रम्' इत्यस्य ग्रन्थस्य रचयिता कोऽस्ति?
(A) बादरायणः (B) पाराशरः
(C) शङ्कराचार्यः (D) जैमिनिः
स्रोत- वेदान्तसार- राकेश शास्त्री, भू॰पेज-04

57. 'शारीरकम्' इति नाम्ना किं भाष्यं प्रसिद्धमस्ति?
(A) सांख्यकारिकाभाष्यम् (B) मीमांसाभाष्यम्
(C) ब्रह्मसूत्रभाष्यम् (D) उपनिषद्भाष्यम्
स्रोत- वेदान्तसार- राकेश शास्त्री, भू॰ पेज-04

58. 'दृष्टवदानुश्रविकः' इत्यस्मिन् सांख्यकारिकाप्रयोगे 'आनुश्रविकः' इत्यस्य पदस्य कोऽर्थः?
(A) श्रुतिः (B) स्मृतिः
(C) वेदाङ्गम् (D) पुराणम्
स्रोत-सांख्यकारिका (का॰2) राकेश शास्त्री, पेज-05

43-C	44-B	45-A	46-C	47-D	48-C	49-D	50-A	51-B	52-C
53-B	54-B	55-B	56-A	57-C	58-A				

59. अव्यक्तं कीदृशं भवति?

(A) सक्रियम् (B) निष्क्रियम्

(C) आश्रितम् (D) सावयवम्

स्रोत-सांख्यकारिका (का.10)- राकेश शास्त्री, पेज-37

60. व्यक्तस्य च प्रधानस्य च कः समानधर्मः?

(A) त्रिगुणत्वम् (B) सक्रियत्वम्

(C) हेतुमत्त्वम् (D) लिङ्गत्वम्

स्रोत- सांख्यकारिका (का.11)- राकेश शास्त्री, पेज-37

61. सांख्यदर्शनानुसारं ''त्रैगुण्यविपर्ययात्'' किं सिध्यति?

(A) अव्यक्तस्य नित्यत्वम्

(B) पुरुषबहुत्वम्

(C) व्यक्तस्य त्रिगुणात्मकत्वम्

(D) अव्यक्तस्य कारणत्वम्

स्रोत- सांख्यकारिका (का.18)-राकेश शास्त्री, पेज-59

62. अधस्तनानां केन सह कस्य सम्बन्धः? समीचीनां तालिकां चिनुत-

(क) मिथ्याज्ञानमतद्रूपप्रतिष्ठम् (i) स्वाध्यायात्

(ख) इष्टदेवतासम्प्रयोगः (ii) यमाः

(ग) अनुभूतविषयासम्प्रमोषः (iii) विपर्ययः

(घ) सार्वभौमा महाव्रतम् (iv) स्मृतिः

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(A)	(iii)	(i)	(iv)	(ii)
(B)	(i)	(iii)	(ii)	(iv)
(C)	(ii)	(i)	(iii)	(iv)
(D)	(iv)	(ii)	(i)	(iii)

स्रोत- पातञ्जलयोगदर्शनम् - सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पेज-36,45,

63. ''यथा मधुकरराजं मक्षिका उत्पतन्तमनूत्पतन्ति, निविशमानमनुनिविशन्ते तथेन्द्रियाणि चित्तनिरोधे निरुद्धानीत्येषः.....।'' एषा व्याख्या कस्य योगाङ्गस्य, व्यासभाष्यानुसारेण?

(A) प्रत्याहारस्य (B) धारणायाः

(C) ध्यानस्य (D) ब्रह्मचर्यस्य

स्रोत-पातञ्जलयोगदर्शनम् (2/54)- सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पेज-314

64. योगदर्शनस्य व्यासभाष्यानुसारेण चित्तभूमीनां समुचितः क्रमोऽस्ति-

(A) क्षिप्तम्,विक्षिप्तम्,मूढम्,एकाग्रम्,निरुद्धम्।

(B) क्षिप्तम्,मूढम्,विक्षिप्तम्,एकाग्रम्,निरुद्धम्।

(C) विक्षिप्तम्,मूढम्,एकाग्रम्,क्षिप्तम्,निरुद्धम्।

(D) निरुद्धम्,मूढम्,विक्षिप्तम्,क्षिप्तम्,एकाग्रम्।

स्रोत-पातञ्जलयोगदर्शन- सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पेज-01

65. जैनदर्शनानुसारेण निम्नाङ्कितस्य सप्तभङ्गिन्यायस्य समुचितः क्रमः कोऽस्ति?

(A) स्यादस्ति च नास्ति च, स्याद्वक्तव्यः, स्यान्नास्ति, स्यादस्ति चावक्तव्यः, स्यान्नास्ति चावक्तव्यः, स्यादस्ति च नास्ति चावक्तव्यः।

(B) स्यादस्ति, स्यान्नास्ति, स्यादस्ति च नास्ति च, स्यादवक्तव्यः, स्यादस्ति चावक्तव्यः, स्यान्नास्ति चावक्तव्यः, स्यादस्ति च नास्ति चावक्तव्यः।

(C) स्यादस्ति च नास्ति चावक्तव्यः, स्यान्नास्ति चावक्तव्यः, स्यादस्ति चावक्तव्यः, स्यादवक्तव्यः, स्यादस्ति च नास्ति च, स्यान्नास्ति स्यादस्ति।

(D) स्यादस्ति, स्याद्वक्तव्यः, स्यादिस्त चावक्तव्यः, स्यान्नास्ति, स्यादस्ति च नास्ति च, स्यान्नास्ति चावक्तव्यः, स्यादस्ति च नास्ति चावक्तव्यः।

स्रोत- सर्वदर्शनसंग्रह-उमाशङ्कर शर्मा ऋषि, पेज-146

66. अधोलिखितानां केन सह कस्य सम्बन्धः? समीचीनां तालिकां चिनुत।

(क) माध्यमिकाः (i) बाह्यार्थानुमेयत्वम्

(ख) योगाचाराः (ii) सर्वशून्यत्वम्

(ग) सौत्रान्तिकाः (iii) बाह्यार्थप्रत्यक्षत्वम्

(घ) वैभाषिकाः (iv) बाह्यार्थशून्यत्वम्

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(A)	(iii)	(i)	(ii)	(iv)
(B)	(iv)	(i)	(iii)	(ii)
(C)	(ii)	(iv)	(i)	(iii)
(D)	(i)	(iii)	(iv)	(iii)

स्रोत- सर्वदर्शनसंग्रह- उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-31

59-B 60-A 61-B 62-A 63-A 64-B 65-B 66-C

67. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत-

(क) हर्षचरितम् (i) शूद्रकः
(ख) मुद्राराक्षसम् (ii) दण्डी
(ग) दशकुमारचरितम् (iii) विशाखदत्तः
(घ) मृच्छकटिकम् (iv) बाणभट्टः

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(A)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)
(B)	(iii)	(ii)	(i)	(iv)
(C)	(ii)	(iv)	(iii)	(i)
(D)	(i)	(ii)	(iv)	(iii)

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास, डॉ. उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज- 396, 504, 318, 491

68. अभिज्ञानशाकुन्तले शकुन्तलायाः प्रतिकूलदैवशमनार्थं कण्वः कुत्र गतः?

(A) काशीतीर्थम् (B) प्रयागतीर्थम्
(C) काञ्चीतीर्थम् (D) सोमतीर्थम्

स्रोत-अभिज्ञानशाकुन्तलम् (प्रथमोऽङ्कः)- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-31

69. ''उपपन्ना हि दारेषु प्रभुता सर्वतोमुखी''- अभिज्ञानशाकुन्तले इयमुक्तिर्भवति-

(A) मारीचस्य (B) शारद्वतस्य
(C) कण्वस्य (D) शार्ङ्गरवस्य

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (5/26)- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-294

70. मेघदूते अस्याः नद्याः उल्लेखो नास्ति-

(A) तुङ्गभद्रा (B) रेवा
(C) गन्धवती (D) गम्भीरा

स्रोत- मेघदूतम्, दयाशंकर शास्त्री, पूर्वमेघ, श्लोक- 20,37,45 - पेज-89,123,139

71. ''सुलभेष्वर्थलाभेषु परसंवेदने जनः। क इदं दुष्करं कुर्यादिदानीं शिविना विना।'' एषा उक्तिः कं लक्षयति?

(A) चाणक्यम् (B) राक्षसम्
(C) चन्दनदासम् (D) भागुरायणम्

स्रोत- मुद्राराक्षसम् (1/24)- पुष्पा गुप्ता, पेज-61

72. मृच्छकटिके विदूषकस्य नाम भवति-

(A) आर्यकः (B) मैत्रेयः
(C) शर्विलकः (D) संस्थानकः

स्रोत- मृच्छकटिकम्- रमाशंकर त्रिपाठी, पेज- xiii

73. ''निपीय यस्य क्षितिरक्षिणः कथास्तथाद्रियन्ते न बुधाः सुधामपि।।''-इति कस्य कथा अत्र उल्लिखिता?

(A) दुष्यन्तस्य (B) रघोः
(C) रामचन्द्रस्य (D) नलस्य

स्रोत- नैषधीयचरितम् (1/1) सुरेन्द्रदेव शास्त्री, पेज-01

74. किरातार्जुनीयस्य प्रधानो रसोऽस्ति-

(A) शृङ्गारः (B) वीरः
(C) शान्तः (D) अद्भुतः

स्रोत-संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-244

75. वेणीसंहारे दुर्योधनस्य कञ्चुकी भवति-

(A) विनयन्धरः (B) जयन्धरः
(C) रुधिरप्रियः (D) सुन्दरकः

स्रोत- वेणीसंहारम्- डॉ. रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-27

76. ''अर्पणं स्वस्य वाक्यार्थे परस्यान्वयसिद्धये। उपलक्षणहेतुत्वादेषा...........।।''-साहित्यदर्पणानुसारतः रिक्तस्थानं पूरयत।

(A) लक्षण-लक्षणा (B) उपादानलक्षणा
(C) सारोपा लक्षणा (D) साध्यवसाना लक्षणा

स्रोत- साहित्यदर्पण- (1/7)-शालिग्राम शास्त्री पेज-32

77. अधस्तनयुग्मानां समीचीनतालिकां चिनुत-

(क) आशङ्कसे यदग्निं तदिदं स्पर्शक्षमं रत्नम्। (i) रत्नावली
(ख) अल्पक्लेशं मरणं दारिद्र्यमनन्तकं दुःखम्। (ii) मुद्राराक्षसम्
(ग) गजेन्द्राश्च नरेन्द्राश्च प्रायः सीदन्ति दुःखिताः। (iii) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(घ) आनीय झटिति घटयति विधिरभिमतमभिमुखीभूतः। (iv) मृच्छकटिकम्

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(A)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)
(B)	(iii)	(iv)	(ii)	(i)
(C)	(iv)	(ii)	(i)	(iii)
(D)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)

स्रोत-संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-244

67-A	68-D	69-B	70-A	71-C	72-B	73-D	74-B	75-A	76-A
77-B									

78. ''लोके हि लोहेभ्यः कठिनतराः खलु स्नेहमयाः बन्धनपाशाः''-इति हर्षचरिते कस्य मनसि समजायत?

(A) राज्यवर्धनस्य (B) प्रभाकरवर्धनस्य
(C) कुरङ्गकस्य (D) हर्षवर्धनस्य

स्रोत- हर्षचरितम् - शिवनाथ पाण्डेय, पेज-06

79. ''श्रीहीरः सुषुवे जितेन्द्रियचयं मामल्लदेवी च यम्''- इति वार्त्ता केन सम्बद्धा?

(A) माघेन (B) भारविणा
(C) श्रीहर्षेण (D) कालिदासेन

स्रोत-नैषधीयचरितम् (1/145) सुरेन्द्रदेव शास्त्री, पेज-287

80. ''स बाल आसीद् वपुषा चतुर्भुजो मुखेन पूर्णेन्दुनिभस्त्रिलोचनः।''-इति शिशुपालवधस्य पद्यांशः केन सम्बद्धः?

(A) शिशुपालेन (B) श्रीकृष्णेन
(C) नारदेन (D) रावणेन

स्रोत-शिशुपालवधम् (1/70) तारिणीश झा, पेज-146

81. ''वैदेहिबन्धोर्हृदयं विदद्रे''-रघुवंशस्य अस्मिन् पद्यांशे वैदेहिबन्धुः भवति-

(A) लक्ष्मणः (B) भरतः
(C) रामः (D) रघुः

स्रोत-रघुवंशम् 14/33- श्रीहरिगोविन्द मिश्र, पेज-354

82. काव्यमीमांसोक्तकथानुसारं पुरा पुत्रीयन्ती सरस्वती कुत्र तपस्यामास?

(A) विन्ध्यगिरौ (B) तुषारगिरौ
(C) सह्यगिरौ (D) मेरुगिरौ

स्रोत-हिन्दी काव्यमीमांसा (काव्यपुरुषोत्पत्ति) गंगासागर राय, पेज-12

83. जगन्नाथमते काव्यं कतिविधं भवति-

(A) द्विविधम् (B) त्रिविधम्
(C) चतुर्विधम् (D) पञ्चविधम्

स्रोत- रसगङ्गाधर- मदन मोहन झा, पेज-37

84. ''त्रयः समुदिताः, न तु व्यस्ताः''-इति काव्यप्रकाशे प्रथमे उल्लासे किम् अधिकृत्य उल्लिखितम्?

(A) काव्यलक्षणम् (B) काव्यभेदम्
(C) काव्यहेतुम् (D) काव्यफलम्

स्रोत-काव्यप्रकाश (1.3)-सीताराम दोतोलिया, पेज- 41-43

85. काव्यप्रकाशे उपमानोपमेययोः अभेदे अयमलङ्कारः भवति-

(A) रूपकम् (B) उपमा
(C) उत्प्रेक्षा (D) श्लेषः

स्रोत-काव्यप्रकाश (सू.-139)- सीताराम दोतोलिया, पेज-445

86. आसु का नाट्यवृत्तिर्न भवति-

(A) अभिधा (B) आरभटी
(C) सात्त्वती (D) भारती

स्रोत-दशरूपक (2/47) डॉ. श्रीनिवास, पेज-182-83

87. ''भम धम्मिअ-'' इत्यादिश्लोकः ध्वन्यालोके प्रथमे उद्द्योते अस्य उदाहरणं भवति-

(A) वाच्ये प्रतिषेधे विधिरूपस्य
(B) वाच्ये विधिरूपे प्रतिषेधरूपस्य
(C) वाच्ये विधिरूपेऽनुभयरूपस्य
(D) वाच्ये प्रतिषेधेऽनुभयरूपस्य

स्रोत- ध्वन्यालोक (1/4)- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-13

88. 'दशरूपकतः रिक्तस्थानं पूरयत-''आनन्दनिस्यन्दिषु रूपकेषु व्युत्पत्तिमात्रं फलमल्पबुद्धिः। योऽपीतिहासादिवदाह साधुस्तस्मै नमः ....॥''

(A) काव्यपराङ्मुखाय (B) नाट्यपराङ्मुखाय
(C) शास्त्रपराङ्मुखाय (D) स्वादुपराङ्मुखाय

स्रोत- दशरूपक (1/5)- रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-05

89. ''कटुकौषधवच्छास्त्रमविद्याव्याधिनाशनम्।''-इत्युक्तिः एषु कस्मिन् अलङ्कारग्रन्थेऽस्ति-

(A) साहित्यदर्पणे (B) वक्रोक्तिजीविते
(C) रसगङ्गाधरे (D) काव्यप्रकाशे

स्रोत-वक्रोक्तिजीवितम् (1/7)- राधेश्याम मिश्र, पेज-15

90. एषु किं काण्डं रामायणे नास्ति?

(A) किष्किन्धाकाण्डम् (B) सीताकाण्डम्
(C) बालकाण्डम् (D) युद्धकाण्डम्

स्रोत-संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-122

91. अस्य महापुराणेषु गणनं नास्ति-

(A) पद्मपुराणस्य (B) ब्रह्मपुराणस्य
(C) विष्णुपुराणस्य (D) आदित्यपुराणस्य

स्रोत-संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा, पेज-176

78-D	79-C	80-A	81-C	82-B	83-C	84-C	85-A	86-A	87-B
88-D	89-B	90-B	91-D						

92. एषु किम् उपपुराणं न भवति?

(A) कूर्मपुराणम् (B) साम्बपुराणम्
(C) नृसिंहपुराणम् (D) एकाम्रपुराणम्

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा, पेज-177

93. एषु किं पर्व महाभारते नास्ति-

(A) मौसलपर्व (B) कुन्तीपर्व
(C) शान्तिपर्व (D) उद्योगपर्व

स्रोत-संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि',पेज- 145

94. कौटिलीयार्थशास्त्रे सर्वविद्यानां प्रदीपः सर्वकर्मणाम् उपायः, सर्वधर्माणामाश्रयः भवति-

(A) आन्वीक्षिकी (B) त्रयी
(C) वार्ता (D) दण्डनीतिः

स्रोत- कौटिल्य का अर्थशास्त्र- श्री वाचस्पति, पेज-9

95. मनुसंहितानुसारं राज्ञः सचिवानां संख्या भवति-

(A) 10-12 (B) 7-8
(C) 3-4 (D) 5-6

स्रोत- मनुस्मृति (7/54) - गिरिधर गोपाल शर्मा, पेज-170-171

**96. ''तमसा बहुरूपेण वेष्टिताः कर्महेतुना।
अन्तःसंज्ञा भवन्त्येते सुखदुःखसमन्विताः॥''
इति मनुवचनं केन सम्बद्धम्?**

(A) उद्भिदेन (B) अण्डजेन
(C) जरायुजेन (D) स्वेदजेन

स्रोत-मनुस्मृति- (1/49)- गिरिधर गोपाल शर्मा, पेज-29

97. श्रीमद्भगवद्गीतायां कर्मयोगः कतमोऽध्यायः?

(A) द्वितीयोऽध्यायः (B) तृतीयोऽध्यायः
(C) चतुर्थोऽध्यायः (D) पञ्चमोऽध्यायः

स्रोत- गीता- अध्याय तीन

98. एपिग्रेफिया इंडिका इति पत्रिकायाः प्रकाशनं केन प्रारब्धम्?

(A) जेम्स प्रिंसेपमहोदयेन
(B) सर विलियमजोंसमहोदयेन
(C) जे. बर्जेसमहोदयेन
(D) कीलहार्नमहोदयेन

स्रोत- गूगल विकीपीडिया

99. 'धम्मलिपि' नाम कस्य लेखेषु प्राप्यते?

(A) अशोकस्य (B) समुद्रगुप्तस्य
(C) खारवेलस्य (D) कनिष्कस्य

स्रोत-भारतीय पुरालेख- डॉ. शिवस्वरूप सहाय, पेज-90

100. भारतवर्षे दानलेखानाम् उत्कीर्णनं बाहुल्येन कस्मिन् धातौ कृतम्?

(A) लौहधातौ (B) ताम्रधातौ
(C) रजतधातौ (D) स्वर्णधातौ

92-A 93-B 94-A 95-B 96-A 97-B 98-C 99-A 100-B

58	दिसम्बर 2018	NTA UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् II

1. माण्डूकायनी शाखा कस्य वेदस्य विद्यते–
(A) यजुर्वेदस्य (B) अथर्ववेदस्य
(C) ऋग्वेदस्य (D) सामवेदस्य
स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज - 46

2. साङ्ख्यरीत्या मोक्षप्राप्तिः कस्मादङ्गीक्रियते–
(A) ज्ञानात् (B) धर्मात्
(C) ऐश्वर्यात् (D) वैराग्यात्
स्रोत- सांख्यकारिका (का. -44) - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज -276

3. 'खलु कृत्वा' निरुक्तानुसारं 'खलु' पदं विद्यते-
(A) प्रतिषेधार्थे (B) पदपूरणार्थे
(C) समुच्चयार्थे (D) निश्चयार्थे
स्रोत- निरुक्तम् (प्रथम अध्याय) -आचार्य विश्वेश्वर, पेज-54

4. तर्कसङ्ग्रहदीपिकानुसारं 'तज्जन्यत्वे सति तज्जन्यजनकः' कः -
(A) हेतुः (B) परामर्शः
(C) व्यापारः (D) उपनयः
स्रोत - तर्कसंग्रह - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज -41

5. 'व्रीहीनवहन्तीति कस्य विधेरुदाहरणम् अर्थसङ्ग्रहदिशा–
(A) नियमविधेः (B) आर्थी-परिसङ्ख्याविधेः
(C) श्रौती-परिसङ्ख्याविधेः (D) अपूर्वविधेः
स्रोत- अर्थसंग्रह - राजेश्वर शास्त्री मुसलगाँवकर, पेज- 263

6. 'मानवश्रौतसूत्रम्' केन वेदेन सह सम्बद्धम् विद्यते–
(A) ऋग्वेदेन (B) अथर्ववेदेन
(C) सामवेदेन (D) कृष्णयजुर्वेदेन
स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा ऋषि,पेज-91

7. पुरुषस्यास्तित्वं साङ्ख्यरीत्या कस्माद् हेतोः–
(A) त्रैगुण्यात् (B) अधिष्ठानात्
(C) भेदानां परिमाणात् (D) विषयत्वात्
स्रोत- सांख्यतत्त्वकौमुदीप्रभा- आद्याप्रसाद मिश्र, पेज-200

8. शब्दनित्यत्वे वार्त्तिककृतः किं प्रमाणम्–
(A) सर्वे सर्वपदादेशाः दाक्षीपुत्रस्य पाणिनेः
(B) तदशिष्यं सञ्ज्ञाप्रमाणत्वात्
(C) पृषोदरादीनि यथोपदिष्टम्
(D) सिद्धन्तु नित्यशब्दत्वात्
स्रोत- व्याकरण महाभाष्य (तृतीय आह्निक)-चारुदेव शास्त्री, पेज -132

9. 'अखण्डेषु कारणेषु फलावचः' इत्यनेन कस्यालङ्कारस्य लक्षणं प्रोक्तमाचार्यमम्मटेन–
(A) सङ्करस्य (B) समासोक्तेः
(C) विभावनायाः (D) विशेषोक्तेः
स्रोत- काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर (10/107)- पेज- 498

10. 'अग्निष्टोमाख्यः' सोमयागः कदा अनुष्ठीयते–
(A) शरदि (B) वसन्ते
(C) ग्रीष्मे (D) प्रावृषि
स्रोत- यज्ञमीमांसा- श्रीवेणीराम शर्मा गौड, पेज-127

11. 'सच्चिदानन्दाद्वयं ब्रह्म' इत्यादिना वेदान्तसारे किं लक्षितम्–
(A) अवस्तु (B) वस्तु
(C) अज्ञानम् (D) अधिकारी
स्रोत- वेदान्तसार- सन्तनारायण श्रीवास्तव्य, पेज- 37

12. पाणिनीयशिक्षानुसारेण विसर्गस्य रूपपरिवर्तनं (गतिः) कतिविधं भवति–
(A) सप्तविधम् (B) नवविधम्
(C) अष्टविधम् (D) त्रिविधम्
स्रोत- पाणिनीयशिक्षा (श्लोक-14)- शिवराज, पेज- 18,19

13. फललक्षणा निम्नलिखितासु लक्षणासु कस्याः पर्याया विद्यते–
(A) गौणीलक्षणायाः (B) रूढिवतीलक्षणायाः
(C) प्रयोजनवतीलक्षणायाः (D) शुद्धालक्षणायाः
स्रोत- साहित्यदर्पण (2/10) - सत्यव्रत सिंह, पेज- 68

1-C	2-A	3-A	4-C	5-A	6-D	7-B	8-D	9-D	10-B
11-B	12-C	13-C							

14. ''कथाप्रसङ्गेषु मिथः सखीमुखात्तृणेऽपि तन्व्या नलनामनि श्रुते'' अत्र नलपदस्यार्थोऽस्ति-

(A) शत्रुः (B) नृपः
(C) अग्निः (D) तृणम्

स्रोत- नैषधीयचरितम् (1/35) - बद्रीनाथ मालवीय, पेज-72

15. साहित्यदर्पणानुसारं रसस्य किं विशेषणं न साधु–

(A) लोकानुभूतिः (B) ब्रह्मस्वादसहोदरः
(C) अभिन्नः (D) स्वप्रकाशः

स्रोत- साहित्यदर्पण (3/2) - सत्यव्रत सिंह, पेज-105

**16. तस्मादकृतकं शास्त्रं स्मृतिं च सनिबन्धनाम् ।
आश्रित्यारभ्यते शिष्टैः शब्दानामनुशासनम् ॥
वाक्यपदीयस्यास्यां कारिकायाम् 'अकृतकं शास्त्रम्' इति किम् ?**

(A) ब्रह्मसूत्रम् (B) व्याकरणशास्त्रम्
(C) मीमांसाशास्त्रम् (D) अपौरुषेयं शास्त्रम्

स्रोत- वाक्यपदीयम् - जयदेव उप्रेती, पेज- 31

17. 'तादात्म्यसम्बन्धावच्छिन्नप्रतियोगिताकः' तर्कसङ्ग्रहे कः प्रोक्तः–

(A) प्रागभावः (B) प्रध्वंसाभावः
(C) अन्योन्याभावः (D) अत्यन्ताभावः

स्रोत- तर्कसंग्रह- राकेश शास्त्री, पेज- 266

18. ''सहस्रगुणमुत्स्रष्टुमादत्ते हि रसं रविः'' उक्तिरियं कुत्र प्राप्यते–

(A) किरातार्जुनीये (B) रघुवंशे
(C) मेघदूते (D) मालविकाग्निमित्रे

स्रोत- रघुवंशमहाकाव्यम् (1.18) - हरगोविन्द मिश्र, पेज-8

19. कतिविधास्तुष्टयः साङ्ख्ये परिगणिताः?

(A) अष्टौ (B) सप्त
(C) नव (D) तिस्रः

स्रोत- सांख्यकारिका (का0-47) - राकेश शास्त्री, पेज- 134,135

20. 'शब्दज्ञानानुपाती वस्तुशून्यः' इति लक्षणलक्षिता चित्तवृत्तिः का योगदर्शनानुसारेण ?

(A) विपर्ययः (B) निद्रा
(C) प्रमाणम् (D) विकल्पः

स्रोत- पातञ्जलयोगदर्शनम् (1.9) - सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पेज- 38

21. 'ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति' उक्तिरियं कुत्र प्राप्यते ?

(A) हर्षचरिते (B) मालविकाग्निमित्रे
(C) उत्तररामचरिते (D) नैषधीयचरिते

स्रोत- उत्तररामचरित (1.10)- शिवबालक द्विवेदी, पेज-153

22. 'राजन्तमध्वराणां गोपामृतस्य दीदिविम् '– अत्र 'दीदिविम् ' पदस्य कोऽर्थः?

(A) इन्द्रम् (B) प्रकाशमानम्
(C) द्युलोकम् (D) पुनर्जायमानम्

स्रोत- ऋक्सूक्तसंग्रह (1.1.8) - हरिदत्त शास्त्री, पेज- 59,60

23. कस्माद् हेतोः प्रधानस्यानुपलब्धिः सांख्यरीत्या?

(A) समानाभिहारात् (B) सौक्ष्म्यात्
(C) अतिदूरात् (D) मनोऽनवस्थानात्

स्रोत- सांख्यकारिका (का० -8) - राकेश शास्त्री, पेज- 27

24. तर्कभाषारीत्या अभावात्मककार्यस्य कारणं कीदृशम्भवति?

(A) निमित्तकारणम् (B) असमवायिकारणम्
(C) समवाय्यसमवायिकारणम् (D) समवायिकारणम्

स्रोत- तर्कभाषा- श्रीनिवास शास्त्री, पेज- 43

25. साहित्यदर्पणानुसारं रसास्वादने को हेतुः?

(A) काव्यपाठः (B) पात्राणि
(C) सहृदयता (D) सत्त्वोद्रेकः

स्रोत- साहित्यदर्पण (3/2) - सत्यव्रत सिंह, पेज- 105

26. जहदजहल्लक्षणाया वेदान्ते किमपरं नाम प्रयुक्तम्?

(A) भागलक्षणा (B) सारोपालक्षणा
(C) जहल्लक्षणा (D) अजहल्लक्षणा

स्रोत- वेदान्तसार- सन्तनारायण श्रीवास्तव्य, पेज- 127

27. अधोऽङ्कितेषु केन सह कस्य सम्बन्धः? समुचितां तालिकां चिनुत -

(a) अयोगात्मकभाषा (i) संस्कृत भाषा
(b) श्लिष्टयोगात्मकभाषा (ii) तुर्की
(c) प्रश्लिष्टयोगात्मकभाषा (iii) तिब्बती भाषा
(d) अश्लिष्टयोगात्मकभाषा (iv) चेरोफी

Options

(A) (a) (iv), (b) (iii), (c) (ii), (d) (i)
(B) (a) (ii), (b) (i), (c) (iv), (d) (iii)
(C) (a) (i), (b) (ii), (c) (iii), (d) (iv)
(D) (a) (iii), (b) (i), (c) (iv), (d) (ii)

स्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र- कपिलदेव द्विवेदी, पेज- 357

14-D	15-A	16-D	17-C	18-B	19-C	20-D	21-C	22-B	23-B
24-A	25-D	26-A	27-D						

28. अजहत्स्वार्था लक्षणा का भवति?

(A) लक्षणलक्षणा (B) फललक्षणा
(C) उपादानलक्षणा (D) साध्यवसानिका

स्रोत- साहित्यदर्पण (का0-6) - अभिराज राजेन्द्र मिश्र, पेज- 157,158

29. 'तपसा ब्रह्मचर्येण श्रद्धया विद्यया आत्मानम् अन्विष्यात्' - इत्युक्तिः कस्याम् उपनिषदि प्राप्यते?

(A) केनोपनिषदि (B) श्वेताश्वतरोपनिषदि
(C) प्रश्नोपनिषदि (D) मुण्डकोपनिषदि

स्रोत- ईशादि नौ उपनिषद् (1.10)- गीताप्रेस, पेज-180

30. साङ्ख्यदर्शनेऽन्तःकरणं किमात्मकम्?

(A) मनोबुद्धी एव (B) बुद्धिरेव
(C) बुद्ध्यहङ्कारमनांसि (D) बुद्ध्यहङ्कारावेव

स्रोत- सांख्यतत्त्वकौमुदीप्रभा- आद्याप्रसाद मिश्र, पेज- 246

31. 'रीतिरात्मा काव्यस्य' मतमिदं कस्य विद्यते?

(A) वामनस्य (B) रुद्रटस्य
(C) भामहस्य (D) रुय्यकस्य

स्रोत- काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर- पेज- 25

32. ग्रिमनियमानुसारेण प्रथमवर्णपरिवर्तने तवर्गीयध्वनीनां कः परिवर्तनक्रमोऽस्ति?

(A) त-थ, द-त, ध-द (B) त-ध, द-त, ध-द
(C) त-द, द-थ, ध-द (D) त-थ, ध-त, द-थ

स्रोत- भाषाविज्ञान- कर्णसिंह, पेज- 168

33. अधस्तनेषु किं मेलनं समुचितम्?

(A) आ मुक्तेः - आङ्मर्यादाभिविध्योः
(B) दम्पती - स्त्रियां संज्ञायाम्
(C) घृतगन्धि - वोपसर्जनात्
(D) मुहूर्तसुखम् - यस्य चायामः

स्रोत- कारक प्रकरण- राममुनि पाण्डेय, पेज- 89

34. 'मौद' शाखा केन वेदेन सह सम्बद्धा वर्तते?

(A) सामवेदेन (B) ऋग्वेदेन
(C) अथर्ववेदेन (D) कृष्णयजुर्वेदेन

स्रोत- अथर्ववेद (भाग-1) - आचार्य वेदान्ततीर्थ, भू0 पेज- 7

35. 'स्वच्छजलवत् सहसैव...सर्वत्र विहितस्थितिः' इत्यादिना काव्यप्रकाशकृता को गुणो मतः?

(A) माधुर्यगुणः (B) समाधिगुणः
(C) ओजोगुणः (D) प्रसादगुणः

स्रोत- काव्यप्रकाश (8/93)- आचार्य विश्वेश्वर, पेज- 390

36. अधोऽङ्कितेषु समासप्रकरणानुसारं केन सह कस्य सम्बन्धः? समुचितां तालिकां चिनुत -

(a) हंसौ (i) जातेश्च
(b) ब्राह्मणक्षत्रियविट्शूद्राः (ii) पुमान् स्त्रिया
(c) शूद्रभार्यः (iii) न निर्धारणे
(d) नृणां द्विजः श्रेष्ठः (iv) वर्णानामानुपूर्व्येण

Options
(A) (a) (ii), (b) (iv), (c) (i), (d) (iii)
(B) (a) (iii), (b) (iv), (c) (ii), (d) (i)
(C) (a) (i), (b) (iv), (c) (ii), (d) (iii)
(D) (a) (iv), (b) (i), (c) (iii), (d) (ii)

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी (खण्ड-4)- भैमी व्याख्या, पेज- 83,240,238

37. 'सारङ्गी' इत्यत्र स्त्रियां ङीष्-प्रत्यय-विधायकं किमस्ति सूत्रम् ?

(A) अन्यतो ङीष्
(B) वर्णादनुदात्तात् तोपधात्तो नः
(C) जातेरस्त्रीविषयादयोपधात्
(D) षिद्गौरादिभ्यश्च

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी (खण्ड-6)- भैमी व्याख्या, पेज- 36

38. 'तेजो यत्ते रूपं कल्याणतमं तत्ते पश्यामि' -इत्युद्धरणं वर्तते -

(A) कठोपनिषदि (B) ईशोपनिषदि
(C) बृहदारण्यकोपनिषदि (D) तैत्तिरीयोपनिषदि

स्रोत- ईशादि नौ उपनिषद् (मन्त्र-16) - गीताप्रेस, पेज-42

39. 'सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च' अस्य मन्त्रस्य द्रष्टा ऋषिः कः ?

(A) दीर्घतमा (B) मधुच्छन्दा
(C) वसिष्ठः (D) कुत्स आङ्गिरसः

स्रोत- ऋक्सूक्तसंग्रह- हरिदत्त शास्त्री, पेज- 146

28-C 29-C 30-C 31-A 32-A 33-A 34-C 35-D 36-A 37-A 38-B 39-D

40. वेदे 'सूनरी' कस्याः विशेषणम् ?
(A) उषसः (B) सरस्वत्याः
(C) अपालायाः (D) घोषायाः
स्रोत- ऋक्सूक्तसंग्रह (1.48.8)- हरिदत्त शास्त्री, पेज- 123

41. 'नित्यज्ञानाधिकरणत्वम्' इति तर्कसङ्ग्रहदीपिकायां कस्य लक्षणं प्रोक्तम् ?
(A) मनसः (B) ईश्वरस्य
(C) परमाणोः (D) जीवात्मनः
स्रोत- तर्कसंग्रह- गोविन्दाचार्य, पेज- 73

42. निरुक्ते कति पदजातानि उपदिष्टानि ?
(A) त्रीणि (B) षट्
(C) चत्वारि (D) पञ्च
स्रोत- निरुक्त- आचार्य विश्वेश्वर, पेज- 18

43. 'गौतमधर्मसूत्रम्' केन वेदेन सह सम्बद्धं विद्यते ?
(A) अथर्ववेदेन (B) कृष्णयजुर्वेदेन
(C) ऋग्वेदेन (D) सामवेदेन
स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा ऋषि,पेज- 91

44. महाभाष्ये व्याकरणस्य आनुषङ्गिकप्रयोजनेषु ''विभक्तिं कुर्वन्ति'' इत्यस्य क्रमोऽस्ति -
(A) सप्तमः (B) षष्ठः
(C) दशमः (D) पञ्चमः
स्रोत- महाभाष्य- चारुदेव शास्त्री, पेज- 7

45. 'मशककल्पसूत्रम्' कस्य वेदस्य वर्तते ?
(A) अथर्ववेदस्य (B) ऋग्वेदस्य
(C) सामवेदस्य (D) कृष्णयजुर्वेदस्य
स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी,पेज- 216

46. भरतमुनिना रसस्य संख्या कियती स्वीकृता ?
(A) षट् (B) दश
(C) अष्टौ (D) नव
स्रोत- नाट्यशास्त्र (6.15)- ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज- 157

47. 'उभयप्राप्तौ कर्मणि' इति कारकसूत्रस्योदाहरणं किम् ?
(A) आश्चर्यो गवां दोहोऽगोपेन (B) अधिकरणवाचिनश्च
(C) कृत्यानां कर्तरि वा (D) कर्तृकर्मणोः कृति
स्रोत- कारकप्रकरण- राममुनि पाण्डेय, पेज- 122

48. ''वागर्थाविव'' इत्यत्र कतमः समासः ?
(A) केवलसमासः (B) अव्ययीभावसमासः
(C) द्विगुसमासः (D) कर्मधारयसमासः
स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी- गोविन्द प्रसाद शर्मा,पेज- 890,891

49. 'लोकेऽधिको हरिः' इत्यत्र सप्तमीविभक्तौ को नियमः?
(A) यस्मादधिकं यस्य चेश्वरवचनं तत्र सप्तमी
(B) अधिरीश्वरे
(C) 'तदस्मिन्नधिकमिति दशान्ताड्डः' इति सूत्रनिर्देशात्
(D) सप्तमी-पञ्चम्यौ कारकमध्ये
स्रोत- कारकप्रकरण- राममुनि पाण्डेय, पेज- 106

50. एध् धातोः लङ्लकारे उत्तमपुरुषबहुवचनस्य किं रूपं भवति ?
(A) एधामहि (B) ऐधेमहि
(C) एधामहै (D) ऐधामहि
स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी- गोविन्द प्रसाद शर्मा, पेज-494

51. 'सत्या विशुद्धिस्तत्रोक्ता विद्यैवैकपदागमा' वाक्यपदीयस्य अस्यां कारिकायां 'विद्यैवैकपदागमा' इत्यनेन पदेन किं स्वरूपा विद्या लक्ष्यते?
(A) अर्थरूपा (B) शब्दरूपा
(C) प्रणवरूपा (D) वर्णरूपा
स्रोत- वाक्यपदीयम् (1/10) - जयदत्त उप्रेती, पेज-8

52. अज्ञानस्य समष्ट्योपहितं चैतन्यं वेदान्ते किमुच्यते?
(A) प्राज्ञः (B) वैश्वानरः
(C) ईश्वरः (D) विराट्
स्रोत- वेदान्तसार- राकेश शास्त्री, पेज-88

53. 'केवलाघो भवति केवलादी' - अस्य मन्त्रस्य द्रष्टा कः ?
(A) कण्वः (B) गविष्ठिरः
(C) भिक्षुराङ्गिरसः (D) ब्रह्मा
स्रोत- ऋग्वेद-10.117.6

54. साङ्ख्यदर्शने कैवल्यं कस्य मन्यते?
(A) अहङ्कारस्य (B) महतः
(C) पुरुषस्य (D) प्रधानस्य
स्रोत- सांख्यकारिका (का0-19) - राकेश शास्त्री, पेज-62

55. 'रि च' इत्यनेन सूत्रेण किं कार्यं भवति ?
(A) उपधायाः दीर्घः रेफस्य च लोपः
(B) पूर्वस्वरस्य दीर्घः रादौ प्रत्यये परे
(C) रेफस्य लोपः रादौ प्रत्यये परे
(D) तासस्त्योः सस्य लोपः रादौ प्रत्यये परे
स्रोत- अष्टाध्यायी- ईश्वरचन्द्र, पेज- 975

40-A 41-B 42-C 43-D 44-B 45-C 46-C 47-A 48-A 49-A
50-D 51-C 52-C 53-C 54-C 55-D

56. अधस्तनेषु उचितसम्बन्धयुतं विकल्पं चिनुत -
(A) वि मृळीकाय ते मनो रथीरश्वं न संदितम् - इन्द्रसूक्तम्
(B) ऋतस्य बुध्न उपसमिषण्यन् वृषा मही रोदसी आ विवेश- वरुणसूक्तम्
(C) यो रध्रस्य चोदिता यः कृशस्य यो ब्रह्मणो नाधमानस्य कीरेः -अग्निसूक्तम्
(D) यस्य व्रते पृथिवी नन्नमीति यस्य व्रते शफवज्जर्भुरीति - पर्जन्यसूक्तम्
स्रोत- ऋक्सूक्तसंग्रह (5.83.5) - हरिदत्त शास्त्री, पेज-286

57. काव्यस्यात्मा ध्वनिरिति सिद्धान्तः प्रधानतया केन प्रतिपादितः ?
(A) अभिनवगुप्तेन (B) भरतमुनिना
(C) मम्मटेन (D) आनन्दवर्धनेन
स्रोत- काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, भू0 पेज-18

58. ''अदूरवर्तिनीं सिद्धिं राजन्विगणयात्मनः'' रघुवंशे इयमुक्तिः कस्य?
(A) कौत्सस्य (B) सिंहस्य
(C) वसिष्ठस्य (D) अरुन्धत्याः
स्रोत- रघुवंशमहाकाव्यम् (1/87) - श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी,पेज- 38

59. कस्याम् उपनिषदि 'भृगुवल्ली' उपदिष्टा?
(A) तैत्तिरीयोपनिषदि (B) केनोपनिषदि
(C) ऐतरेयोपनिषदि (D) बृहदारण्यकोपनिषदि
स्रोत- ईशादि नौ उपनिषद् - गीताप्रेस, पेज-405

60. अधस्तनेषु किं मेलनं सत्यमस्ति -
(A) त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति- सक्तुमिव
(B) म्लेच्छो ह वा एष यदपशब्दः -दुष्टः शब्दः
(C) प्रायश्चित्तीया मा भूमेत्यध्येयं व्याकरणम् -सारस्वतीम्
(D) न चान्तरेण व्याकरणं कृतस्तद्धिता वा शक्या विज्ञातुम् - सुदेवोऽसि
स्रोत- महाभाष्य- चारुदेव शास्त्री, पेज-15

61. अधोऽङ्कितेषु समुचितं विकल्पं चिनुत -
(A) वैभाषिकाः - तत्र बोधात्मको जीवः । अबोधात्मस्त्वजीवः
(B) योगाचाराः - हीनयानम्
(C) माध्यमिकाः - महायानम्
(D) सौत्रान्तिकाः -तज्ज्ञानं पञ्चविधं मतिश्रुतावधिमनः पर्यायकेवलभेदेन
स्रोत- सर्वदर्शनसंग्रह- उमाशंकर शर्मा ऋषि, पेज-32,124

62. 'आग्निवेश्य-गृह्यसूक्तम्' कस्य वेदस्य वर्तते?
(A) कृष्णयजुर्वेदस्य (B) सामवेदस्य
(C) ऋग्वेदस्य (D) अथर्ववेदस्य
स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी,पेज-231

63. अर्थशास्त्रस्य चतुर्थमधिकरणं वर्तते -
(A) धर्मस्थीयम् (B) षाड्गुण्यम्
(C) योगवृत्तम् (D) कण्टकशोधनम्
स्रोत- कौटिलीय अर्थशास्त्र- वाचस्पति गैरोला, भू0 पेज-77

64. 'शोणो धावति' इत्युदाहरणे वेदान्तरीत्या का लक्षणा?
(A) जहल्लक्षणा (B) साध्यवसानालक्षणा
(C) अजहल्लक्षणा (D) भागलक्षणा
स्रोत- वेदान्तसार- राकेश शास्त्री, पेज- 243

65. 'नीतिमञ्जरीप्रतिपाद्यविषयाः केन सम्बद्धाः ?
(A) अथर्ववेदेन (B) ऋग्वेदेन
(C) कृष्णयजुर्वेदेन (D) सामवेदेन
स्रोत- संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (भाग-2), पेज-518

66. 'तं राजा प्रणयन् सम्यक् त्रिवर्गेणाभिवर्धते' अत्र त्रिवर्गस्याभिप्रायः कः ?
(A) ब्राह्मणः क्षत्रियः वैश्यश्च
(B) भूः भुवः स्वश्च
(C) साम दानं भेदश्च
(D) धर्मः अर्थः कामश्च
स्रोत- मनुस्मृति (7.37)- गिरिधर गोपाल शर्मा, पेज-158

67. अर्थसङ्ग्रहरीत्या शाब्दीभावनाया लक्षणं किम् ?
(A) भवितुर्भवनानुकूलो भावकव्यापारविशेषः
(B) भवितुर्भवनानुकूलो भावयितुर्व्यापारविशेषः
(C) प्रयोजनेच्छाजनितक्रियाविषयव्यापारः
(D) पुरुषप्रवृत्त्यनुकूलो भावयितुर्व्यापारविशेषः
स्रोत- अर्थसंग्रह- राजेश्वरशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज- 23,30

68. रुद्रदाम्नः गिरनारलेखः कस्यां भाषायां विद्यते ?
(A) संस्कृतभाषायाम् (B) पालिभाषायाम्
(C) अपभ्रंशभाषायाम् (D) प्राकृतभाषायाम्
स्रोत- भारतीय पुरालेखों का अध्ययन- शिवस्वरूप सहाय,पेज-209

69. 'वाग्ग्मी' इत्यत्र को मत्वर्थीयप्रत्ययः ?
(A) ग्मिनि (B) विनि
(C) मिनि (D) इनिः
स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी (5.2.124)- गोविन्द प्रसाद शर्मा, पेज-1119

56-D	**57-D**	**58-C**	**59-A**	**60-C**	**61-C**	**62-A**	**63-D**	**64-C**	**65-B**
66-D	**67-D**	**68-A**	**69-A**						

70. कथाप्रसङ्गेन जनैरुदाहृतादनुस्मृताखण्डलसूनुविक्रमः। तवाभिधानाद् व्यथते नताननः सुदुःसहान्मन्त्रपदादिवोरगः।। अत्र कोऽलंकारः ?

(A) लुप्तोपमा (B) मालोपमा

(C) श्लिष्टोपमा (D) उत्प्रेक्षा

स्रोत- किरातार्जुनीयम् (1.24) - अभिराज राजेन्द्र मिश्र, पेज- 73,

71. 'तस्मादृचः साम यजूंषि दीक्षा' -पंक्तिरियं कुत्र प्राप्यते?

(A) ऋग्वेदे (B) ईशोपनिषदि

(C) शुक्लयजुर्वेदे (D) मुण्डकोपनिषदि

स्रोत- ईशादि नौ उपनिषद्- गीताप्रेस, पेज-252

72. मनुस्मृतौ 'सर्वतेजोमयो हि सः' अस्मिन् श्लोकांशे 'सः' पदेन कः प्रोक्तः ?

(A) सूर्यः (B) नृपः

(C) प्राज्ञः (D) गुरुः

स्रोत- मनुस्मृति (7/11) - गिरिधर गोपाल शर्मा, पेज-151

73. ऋग्वेदप्रातिशाख्ये कियन्ति समानाक्षराणि उक्तानि?

(A) दश (B) पञ्चविंशतिः

(C) चत्वारि (D) अष्टौ

स्रोत- ऋग्वेदप्रातिशाख्यम् (1.1) - वीरेन्द्र कुमार वर्मा,पेज- 42

74. 'महदरण्यम्' इत्यर्थे स्त्रीप्रत्यये किं भवति?

(A) अरण्या (B) अरण्यानी

(C) महारण्या (D) महारण्यानी

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी (4.1.49)- गोविन्दाचार्य, पेज- 1164

75. तर्कसङ्ग्रहरीत्या मनः कीदृक् ?

(A) एकमनित्यं परमाणुरूपञ्च

(B) अनन्तं परमाणुरूपं नित्यञ्च

(C) एकं विभु नित्यञ्च

(D) अनन्तं विभु नित्यञ्च

स्रोत- तर्कसंग्रह- गोविन्दाचार्य, पेज- 76

76. शिशुपालवधस्य सर्गसंख्या काऽस्ति?

(A) विंशतिः (B) एकविंशतिः

(C) सप्तविंशतिः (D) पञ्चविंशतिः

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज-262

77. 'मा नो वधाय हत्नवे जिहीळानस्य रीरधः।' अत्र स्तूयमानो देवः कः ?

(A) रुद्रः (B) मित्रः

(C) वरुणः (D) अग्निः

स्रोत- ऋक्सूक्तसंग्रह (1.25.2) - हरिदत्त शर्मा, पेज-69

78. काव्यमीमांसानुसारं काव्यकविः कतिधा भवति?

(A) चतुर्धा (B) त्रिधा

(C) पञ्चधा (D) अष्टधा

स्रोत- हिन्दी काव्यमीमांसा- गंगासागर राय, पेज- 37

79. जातिवाच्ये सति 'हस्त' शब्दस्य मत्वर्थीयः कः प्रयोगः?

(A) हस्तवान् (B) हस्ती

(C) हस्तालुः (D) हस्तिकः

स्रोत- वैयाकरण सिद्धान्तकौमुदी- गोविन्दाचार्य, पेज-901

80. 'बुध-युध-नश-जनेङ्-प्र-द्रु-स्रुभ्यो णेः' इति नियमेन शुद्धः प्रयोगः कः ?

(A) बोधयति पद्मम् (B) योधयते काष्ठानि

(C) बोधयते पद्मम् (D) वेदमध्यापयते

स्रोत- वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (खण्ड-5) - गोविन्दाचार्य, पेज-445

81. भाषाविज्ञानानुसारेण भारोपीयपरिवारस्य भाषा नास्ति?

(A) मय (B) तोखारी

(C) इटालिक (D) आर्मीनी

स्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र- कपिलदेव द्विवेदी, पेज- 385

82. हर्षचरितं कति उच्छ्वासेषु विभक्तम् ?

(A) सप्तसु (B) अष्टसु

(C) चतुर्षु (D) दशसु

स्रोत- संस्कृतसाहित्य का इतिहास- उमाशंकरशर्मा ऋषि, पेज-396

83. शमप्रधानेषु तपोधनेषु गूढं हि दाहात्मकमस्ति तेजः। स्पर्शानुकूला इव सूर्यकान्तास्तदन्यतेजोऽभिभवाद् वमन्ति।। अत्र 'तत्' पदेन किं द्योतते?

(A) शमः (B) तपः

(C) धनम् (D) तेजः

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (2/7)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-108

70-C 71-D 72-B 73-D 74-B 75-B 76-A 77-C 78-D 79-B 80-A 81-A 82-B 83-D

84. तर्कसङ्ग्रहरीत्या आद्यस्यन्दनासमवायिकारणं किम्भवति?

(A) द्रव्यत्वम् (B) द्रवत्वम्

(C) गुरुत्वम् (D) स्नेहः

स्रोत- तर्कसंग्रह- राकेश शास्त्री, पेज-168

85. 'मेदश्छेदकृशोदरं लघु भवत्युत्थानयोग्यं वपुः' इत्येवं कस्य वैशिष्ट्यं प्रतिपादितम्?

(A) मृगयायाः (B) पर्यटनस्य

(C) तपश्चर्यायाः (D) पादपसिञ्चनस्य

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (2/5)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-104

86. पण्डितराज-जगन्नाथानुसारं निम्नलिखितेषु को न रसदोषः?

(A) स्थायि-व्यभिचारिणां शब्दवाच्यत्वम्

(B) रसस्य व्यङ्ग्यत्वम्

(C) विच्छिन्नरसस्य पुनर्दीपनम्

(D) समबल-प्रबलप्रतिकूलरसाङ्गानां निबन्धनम्

स्रोत- रसगङ्गाधर- मदन मोहन झा, पेज-208

87. साध्यशून्यः पक्षो मुक्तावल्यां क उदाहृतः?

(A) बाधः (B) व्याप्यत्वासिद्धः

(C) सत्प्रतिपक्षः (D) अनैकान्तिकः

स्रोत- न्यायसिद्धान्तमुक्तावली (अनुमान खण्ड का0-78) - गजानन शास्त्री मुसलगाँवकर, पेज-71

88. याज्ञवल्क्यस्मृत्यनुसारं किं स्त्रीधनं नास्ति?

(A) अध्यग्नि (B) आधिवेदनिकम्

(C) अन्वाधेयकम् (D) सामान्यार्थः

स्रोत- याज्ञवल्क्यस्मृति (2.143)- गङ्गासागर राय,पेज-284

89. 'अग्निष्टोमाख्ये' सोमयागे कति शस्त्राणि भवन्ति?

(A) द्वादश (B) पञ्चदश

(C) एकादश (D) अष्ट

स्रोत- श्रौतयागपरिचय- श्रीवेणीरामशर्मा गौड, पेज- 30,32

90. 'प्रतिहर्त्ता' ऋत्विक् कस्य गणस्य विद्यते

(A) ब्रह्मगणस्य (B) उद्गातृगणस्य

(C) होतृगणस्य (D) अध्वर्युगणस्य

स्रोत- श्रौतयाग परिचय- श्रीवेणीरामशर्मा गौड, पेज- 28

91. 'जन्माद्यस्य यतः' इत्यस्मिन् सूत्रे 'यतः' पदेन किमभिधीयते?

(A) प्रकृतेः (B) जगतः

(C) ब्रह्मणः (D) सृष्टेः

स्रोत- ब्रह्मसूत्र (शाङ्करभाष्य-1.12) - स्वामी दयानन्द सरस्वती, पेज-34

92. अधोऽङ्कितेषु केन सह कस्य सम्बन्धः? समुचितां तालिकां चिनुत -

(क) अचोऽन्त्यादि (i) प्रगृह्यम्

(ख) इ इन्द्रः (ii) उपधा

(ग) कृत्तद्धितसमासाश्च (iii) टि

(घ) अन्त्यादलः पूर्वो वर्णः (iv) प्रातिपदिकम्

Options

	क	ख	ग	घ
(A)	(i)	(ii)	(iv)	(iii)
(B)	(iv)	(ii)	(iii)	(i)
(C)	(ii)	(i)	(iii)	(iv)
(D)	(iii)	(i)	(iv)	(ii)

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी- गोविन्दप्रसाद शर्मा, पेज- 61,76,131,175

93. 'सन्निहितसाधनादधिकस्यानुपादित्सा' इत्यनेन योगाङ्गनियमेषु कः?

(A) सन्तोषः (B) ईश्वरप्रणिधानम्

(C) शौचम् (D) तपः

स्रोत- पातञ्जलयोगदर्शन- सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पेज- 273

94. 'वेः शब्दकर्मणः' इति सूत्रस्योदाहरणम्भवति-

(A) चित्तं विकरोति कामः (B) स्वरान् विकुरुते

(C) शत्रुमधिकुरुते (D) छात्राः विकुर्वते

स्रोत- वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (1.3.34) - गोविन्द प्रसाद शर्मा, पेज- 397

95. 'दण्डिक' इत्यस्मिन् पदे कः तद्धितप्रत्ययः?

(A) इक् (B) ठन्

(C) ठञ् (D) ठक्

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी- गोविन्दाचार्य, पेज- 1116

84-B	85-A	86-B	87-A	88-D	89-A	90-B	91-C	92-D	93-A
94-B	95-B								

96. 'मनसा हरिं व्रजति' इत्यत्र 'गत्यर्थकर्मणि' - इत्यादिसूत्रेण कर्मणि चतुर्थी कथन्न भवति?

(A) व्रजधातोः गत्यर्थाभावात्
(B) गत्यर्थकर्मणोऽभावात्
(C) अध्ववाचिकर्मत्वात्
(D) चेष्टायाः प्रतीत्यभावात्

स्रोत- सिद्धान्तकौमुदी- राममुनि पाण्डेय, पेज- 79

97. 'त्रयो धर्मस्कन्धा, यज्ञो अध्ययनं दानम् इति' -इत्युक्तिः कस्याम् उपनिषदि लभ्यते?

(A) तैत्तिरीयोपनिषदि (B) छान्दोग्योपनिषदि
(C) बृहदारण्यकोपनिषदि (D) ऐतरेयोपनिषदि

स्रोत- छान्दोग्य (2/23/1) - गीताप्रेस, पेज- 198

98. अथर्ववेदीयकृषिसूक्तस्य द्रष्टा ऋषिः कः?

(A) मधुच्छन्दाः (B) भिक्षुः
(C) विश्वामित्रः (D) बुधः

स्रोत- अथर्ववेद (भाग-1), पेज- 126

99. अधोऽङ्कितेषु समुचितं विकल्पं चिनुत -

(A) जीवाजीवास्रवबन्धसम्वरनिर्जरमोक्षास्तत्त्वानि- सौत्रान्तिकाः
(B) भावनाभिर्भावितानि पञ्चभिः पञ्चधाक्रमात्,महाव्रतानि - व्यासभाष्यम्
(C) तत्र जीवा द्विविधाः संसारिणो मुक्ताश्च-आर्हताः
(D) स्यान्नास्ति चावक्तव्यः - वैभाषिकाः

स्रोत- सर्वदर्शनसंग्रह- उमाशंकर शर्मा ऋषि, पेज, 130

100. योगदर्शने सर्वा चित्तभूमयः काः?

(A) निद्रा, तन्द्रा, प्रमादः, मोदः, दुःखम्
(B) क्षिप्तम्, मूढम्, विक्षिप्तम्, एकाग्रम्, निरुद्धम्
(C) क्षिप्तम्, प्रक्षिप्तम्, मूढम्, विमूढम्, सम्मूढम्
(D) स्मृतिः, विस्मृतिः, निरुद्धम्, एकाग्रम्, मोहः

स्रोत- पातञ्जलयोगदर्शन- सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पेज- 01,06

96-D 97-B 98-C 99-C 100-B

स्रोत ग्रन्थसूची

1. **अष्टाध्यायी** (भाग-1, 2) - पं. ईश्वरचन्द्र, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान दिल्ली - 2015
2. **अथर्ववेद** (भाग-1-2)-वेदान्ततीर्थ, मनोज पब्लिकेशन्स दिल्ली- 2015
3. **अर्थसंग्रह**-सत्यप्रकाश शर्मा, साहित्य भण्डार मेरठ - 2010
4. **अर्थसंग्रह**-वाचस्पति उपाध्याय, चौखम्भा पब्लिशर्स - 2014
5. **ईशादि नौ उपनिषद्** - गीताप्रेस, गोरखपुर संवत् - 2071
6. **ईशावास्योपनिषद्** - आद्याप्रसाद मिश्र - अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद –2014
7. **उपनिषद्-अङ्क** - गीताप्रेस, गोरखपुर संवत्–2071
8. **उत्तररामचरितम्** - कपिलदेव द्विवेदी - रामनारायणलाल विजयकुमार, इलाहाबाद–2015
9. **ऋग्वेद** (1, 2, 3, 4) - वेदान्ततीर्थ - मनोज पब्लिकेशन्स, दिल्ली –2015
10. **ऋग्वेद-प्रातिशाख्यम्** - वीरेन्द्रकुमार वर्मा - चौखम्भा संस्कृत संस्थान, दिल्ली –2011
11. **ऋक्सूक्तसंग्रह** - हरिदत्त शास्त्री - साहित्य भण्डार, मेरठ
12. **कालिदास-ग्रन्थावली** - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी - चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी – 2014
13. **किरातार्जुनीयम्** – श्रीनिवास शर्मा - भारतीय विद्या प्रकाशन, वाराणसी – 2013

14.(A) **किरातार्जुनीयम्** - रामसेवक दुबे - शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद –2013

14.(B) **किरातार्जुनीयम्**-डा0 राजेन्द्रमिश्र-अक्षयवट प्रकाशन–2008

15. **केनोपनिषद्** - गीताप्रेस, गोरखपुर - संवत् – 2072
16. **कठोपनिषद्** - आद्याप्रसाद मिश्र - अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद –2011
17. **कठोपनिषद्** - बैजनाथ पाण्डेय - मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली –2014
18. **कर्णभारम्** - रामजी मिश्र - चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी– 2012
19. **कादम्बरी** (महाश्वेतावृत्तान्त) - प्रद्युम्न पाण्डेय - चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी – 2015
20. **कुमारसम्भवम्** - प्रद्युम्न पाण्डेय - चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी – 2015
21. **काव्यप्रकाश** - आचार्य विश्वेश्वर - ज्ञानमण्डल लिमिटेड वाराणसी – 2014
22. **काव्यप्रकाश**-पारसनाथ द्विवेदी - विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
23. **कादम्बरी-कथामुख** - तारिणीश झा - रामनारायणलाल अरुण कुमार, इलाहाबाद – 2014
24. **कादम्बरी** (शुकनाशोपदेश) - तारिणीश झा - रामनारायण लाल अरुण कुमार, इलाहाबाद – 2010
25. **केनोपनिषद्** - शिवप्रसाद द्विवेदी - चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी–2009
26. **गद्यालोक-प्रकाश** - करुणा अग्रवाल - विद्या प्रकाशन, इलाहाबाद – 2006
27. **छन्दोऽलंकारसौरभम्** - अभिराजराजेन्द्र मिश्र - अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद – 2011
28. **तर्कसंग्रह** - अनितासेन गुप्ता - शारदा पुस्तक भवन, वाराणसी – 2012
29. **तर्कसंग्रह** - रामभजनशर्मा वात्स्यायन - चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी
30. **तर्कसंग्रह** - गोविन्दाचार्य - चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी – 2012
31. **तर्कसंग्रह** - कृष्णबल्लभाचार्य - व्यास प्रकाशन, वाराणसी
32. **तैत्तिरीयोपनिषद्** - चुन्नीलाल शुक्ल - साहित्य भण्डार मेरठ – 2012
33. **तर्कभाषा**-श्रीनिवास शास्त्री - साहित्यभण्डार, मेरठ – 2008
34. **तर्कभाषा** - गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर - चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी – 2013
35. **तर्कसंग्रह** - केदारनाथ त्रिपाठी - मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली – 2008
36. **तर्कसंग्रह** - आद्याप्रसाद मिश्र - अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद– 2013
37. **दशकुमारचरितम्** - श्रीनिवास शर्मा - शारदा संस्कृत संस्थान, वाराणसी – 2000
38. **दशरूपक** - रमाशङ्कर त्रिपाठी - विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी – 2011
39. **दशरूपक**-श्रीनिवास शास्त्री-साहित्य भण्डार, मेरठ – 2015
40. **दशकुमारचरितम्** - विश्वनाथ झा - मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली – 2015
41. **ध्वन्यालोक** - आचार्य विश्वेश्वर - ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी – 2010
42. **नैषधीयचरितम्** - बद्रीनाथ मालवीय - रामनारायण लाल विजयकुमार, इलाहाबाद – 2013
43. **नैषधीयचरितम्** - सुरेन्द्रदेव शास्त्री - चौखम्बा पब्लिशर्स, वाराणसी – 1999
44. **नाट्यशास्त्र** - बाबूलाल शुक्ल - चौखम्भा संस्कृत संस्थान, वाराणसी संवत् – 2071
45. **नाट्यशास्त्र** - ब्रजमोहन चतुर्वेदी - विद्यानिधि प्रकाशन,

दिल्ली – 2014
46. **निरुक्तम्** - छज्जूराम शास्त्री/देवशर्मा शास्त्री - मेहरचन्द लक्ष्मनदास पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली – 2012
47. **निरुक्तम्**-आचार्यविश्वेश्वर-ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी- 2014
48. **निरुक्तम्**-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि'-चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी – 2011
49. **पाणिनीयशिक्षा** - शिवराज आचार्य कौण्डिन्यायन - चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी – 2012
50. **प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख** (भाग-1, 2) - श्री परमेश्वरीलाल गुप्ता - विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी– 2014
51. **पातञ्जल योगदर्शन** – सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन – 2013
52. **पुराण विमर्श** - आचार्य बलदेव उपाध्याय - चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी – 2013
53. **ब्रह्मसूत्र शाङ्करभाष्य** - स्वामी सत्यानन्द सरस्वती - चौखम्भा संस्कृत संस्थान, वाराणसी – 2013
54. **बृहद्धातुकुसुमाकर** - हरेकान्त मिश्र - चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली – 2003
55. **बृहदारण्यकोपनिषद्** (शाङ्करभाष्य) - गीताप्रेस, गोरखपुर, संवत् – 2071
56. **भारतीयदर्शन** - बलदेव उपाध्याय - शारदा मन्दिर, वाराणसी– 2011
57. **भारतीय पुरालिपि अभिलेख एवं मुद्राएँ** - शोभा सत्यदेव - भवदीय प्रकाशन अयोध्या, फैजाबाद – 2002
58. **भारतीयदर्शन**-जगदीशचन्द्र मिश्र-चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन– 2015
59. **भारतीय दर्शन की रूपरेखा** - हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा - मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली – 2012
60. **भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र** - कपिलदेव द्विवेदी - विश्वविद्यालय प्रकाशन – 2014
61. **भाषाविज्ञान** - भोलानाथ तिवारी - किताब महल, वाराणसी– 2014
62. **भाषाविज्ञान**-कर्ण सिंह - साहित्य भण्डार, मेरठ – 2006
63. **भारतीय दर्शन आलोचन और अनुशीलन** - चन्द्रधर शर्मा - मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली – 2013
64. **मनुस्मृति** - गिरिधर गोपाल शर्मा - चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, वाराणसी – 2014
65. **मुद्राराक्षसम्** - श्रीपरमेश्वरदीन पाण्डेय - चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी – 2014
66. **मेघदूतम्**-तारिणीश झा-रामनारायणलाल विजयकुमार, इलाहाबाद– 2011
67. **मेघदूतम्** - दयाशङ्कर शास्त्री, चौखम्बा सुरभारती, प्रकाशन– 2014
68. **मृच्छकटिकम्** - श्रीनिवास शास्त्री - साहित्य भण्डार, मेरठ – 2010
69. **मृच्छकटिकम्**-रमाशङ्कर त्रिपाठी-मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली–2012
70. **मुण्डकोपनिषद्** - गीताप्रेस, गोरखपुर, संवत् – 2071
71. **याज्ञवल्क्यस्मृति** - उमेशचन्द्र पाण्डेय - चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी संवत् – 2070
72. **याज्ञवल्क्यशिक्षा** - नरेश झा - चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी – 2014
73. **यज्ञमीमांसा**-वेणीरामशर्मा गौड़ - चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी
74. **रघुवंशमहाकाव्यम्** - कृष्णमणि त्रिपाठी
75. **रसगङ्गाधर** (भाग-1) - मदन मोहन झा - चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी – 2012
76. **रत्नावली** - तारिणीश झा
77.(a) **लघुसिद्धान्तकौमुदी** (भाग-5)-भीमसेन शास्त्री-भैमी प्रकाशन, दिल्ली – 2010
76.(b) **लघुसिद्धान्तकौमुदी,** गीताप्रेस, गोरखपुर
78. **लघुसिद्धान्तकौमुदी** (भाग-6)-भीमसेन शास्त्री-भैमी प्रकाशन, दिल्ली – 2005
79. **लघुसिद्धान्तकौमुदी** (भाग-4)-भीमसेनशास्त्री-भैमी प्रकाशन, दिल्ली – 2004
80. **लघुसिद्धान्तकौमुदी** (भाग-3)-भीमसेन शास्त्री-भैमी प्रकाशन, दिल्ली – 2011
81. **लघुसिद्धान्तकौमुदी-**गोविन्दाचार्य-चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी – 2013
82. **लघुसिद्धान्तकौमुदी**-धरानन्दशास्त्री-मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली – 2012
83. **लिङ्गानुशासनम्** - नरेश झा
84. **वक्रोक्तिजीवितम्** - दशरथ द्विवेदी - विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी – 2007
85. **वैयाकरण-सिद्धान्तकौमुदी** (भाग-एक) - गोपालदत्त पाण्डेय-चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी – 2012
86. **वैयाकरण सिद्धान्तकौमुदी** (भाग-दो) - गोपालदत्त पाण्डेय-चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी – 2013
87. **वैदिक साहित्य का इतिहास** - गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर-चौखम्भा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, वि.सं. –2072
88. **वैदिकसूक्तसंग्रह**-राधेश्याम खेमका-गीताप्रेस, गोरखपुर संवत्– 2071
89. **वैदिक साहित्य एवं संस्कृति** - कपिलदेव द्विवेदी - विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी – 2010
90. **वैदिक साहित्य का इतिहास** - पारसनाथ द्विवेदी - चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी – 2011-12
91. **वैदिकसूक्तसंग्रह**-विजयशङ्कर पाण्डेय-अक्षयवट प्रकाशन,

इलाहाबाद – 2011

92. **वेद-कथाङ्क** - गीताप्रेस, गोरखपुर - संवत्–2071

93. **वैदिक माइथोलॉजी** (मैकडॉनल) - रामकुमारराय - चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी – 2007

94. **वैयाकरण सिद्धान्तकौमुदी** (भाग-5) - गोविन्दाचार्य - चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी – 2012

95.(A) **वाक्यपदीयम्** - शिवशङ्कर अवस्थी - चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी – 2013

95.(B) **वाक्यपदीयम्** - सूर्यनारायण शुक्ल - चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी – 2012

96. **वृत्तरत्नाकर**-धरानन्द शास्त्री-मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली– 1993

97.(a) **वेदान्तसार**-सन्तनारायण श्रीवास्तव-सुदर्शन प्रकाशन, गाजियाबाद– 2005

97.(b) **वेदान्तसार, बद्रीनाथ शुक्ल -** मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली– 1999

98. **वेणीसंहार** - श्रीपरमेश्वरदीन पाण्डेय - चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी – 2014

99. **वैदिक साहित्य और संस्कृत** - आचार्य बलदेव उपाध्याय - शारदा संस्थान, वाराणसी – 2015

100. **व्याकरणमहाभाष्यम्** (पश्पशाह्निक) - मधुसूदन मिश्र - चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी – 2014

101. **व्याकरणमहाभाष्यम्** (पश्पशाह्निक) - जयशङ्करलाल त्रिपाठी- चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी – 2013

102. **श्रीमद्वाल्मीकीयरामायणम्** - गीताप्रेस, गोरखपुर

103. **श्रीमद्भगवद्गीता** - गीताप्रेस, गोरखपुर

● **शतपथ ब्राह्मण** - स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती - विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, दिल्ली– 2014

104. **शिशुपालवधम्**-आद्याप्रसाद मिश्र-अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद– 2008

105. **शिशुपालवधम्** - तारिणीश झा - रामनारायणलाल अरुणकुमार, इलाहाबाद – 2014

106. **श्रौतयज्ञपरिचय**-वेणीराम शर्मा गौड़-चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी – 1999

107. **शिशुपालवधम्** - जनार्दनगङ्गाधर रटाटे - विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी – 2013

108. **शुकनासोपदेश** - राजेश्वरप्रसाद मिश्र - अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद – 2007

109. **संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास** (भाग-1, 2, 3)- बलदेव उपाध्याय-उत्तरप्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ– 2012

110. **संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास** - कपिलदेव द्विवेदी - रामनारायणलाल विजयकुमार, इलाहाबाद

111. **संस्कृत साहित्य का इतिहास** - उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि' - चौखम्बा सुरभारती अकादमी, वाराणसी – 2014

112. **संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास** - राधाबल्लभ त्रिपाठी - विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी – 2013

113. **सांख्यकारिका** - सन्तनारायण श्रीवास्तव - सुदर्शन प्रकाशन गाजियाबाद – 2006

114. **सांख्यतत्त्वकौमुदी प्रभा**-आद्याप्रसाद मिश्र-अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद – 2015

115. **सांख्यकारिका** - राकेशशास्त्री - संस्कृत ग्रन्थागार, दिल्ली – 2004

116. **साहित्यदर्पण** - मिश्रोऽभिराजराजेन्द्र मिश्र - अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद – 2004

117. **साहित्यदर्पण**-शालिग्राम शास्त्री-मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली – 2004

118. **साहित्यदर्पण** - भवानीशङ्कर शर्मा - हंसा प्रकाशन, जयपुर– 2010

119. **संस्कृतगङ्गा वस्तुनिष्ठ संस्कृतसाहित्यम्** - सर्वज्ञभूषण - संस्कृतगङ्गा प्रकाशन, प्रयाग – 2016

120. **संस्कृतगङ्गा वस्तुनिष्ठ संस्कृतव्याकरणम्** - सर्वज्ञभूषण - संस्कृतगङ्गा प्रकाशन, प्रयाग – 2016

121. **स्वप्नवासवदत्तम्** - जयपाल विद्यालङ्कार - मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली – 2011

122. **स्वप्नवासवदत्तम्** - शेषराजशर्मा 'रेग्मी' - चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी

123. **संस्कृत-कवि-दर्शन** - भोलाशङ्कर व्यास - चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी – 2004

124. **संस्कृत शास्त्रों का इतिहास** - बलदेव उपाध्याय - चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी – 1994

125. **संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास** (भाग-15) - बलदेव उपाध्याय गोपालदत्त पाण्डेय - उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ – 2001

126. **संस्कृत साहित्य का इतिहास** - बलदेव उपाध्याय - शारदा निकेतन, वाराणसी – 2001

127. **संस्कृत का अर्वाचीन समीक्षात्मक काव्यशास्त्र**- अभिराज राजेन्द्र मिश्र - विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी – 2010

128. **सिद्धान्तकौमुदी** (कारक प्रकरण) - आद्याप्रसाद मिश्र - अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद – 2014

129. **सिद्धान्तकौमुदी** (कारक प्रकरण) - आनन्द श्रीवास्तव, राममुनि पाण्डेय - विभा प्रकाशन, इलाहाबाद – 2012

130. **हर्षचरितम्** - मोहनदेव पन्त - मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली – 2014

❑❑❑

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) द्वारा प्रायोजित एवं वर्तमान में
राष्ट्रीय परीक्षा एजेन्सी (NTA) द्वारा आयोजित –

- राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (NET) एवं कनिष्ठ अनुसन्धान अध्येतावृत्ति (JRF) एवं महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों में लेक्चररशिप हेतु

प्राख्याता

NTA, UGC-NET/JRF

संस्कृतम् (कोड-25)

प्रश्नपत्रम्-II, III

सम्पादक
सर्वज्ञभूषण

व्याख्यात्री
अर्पिता त्रिपाठी
सुमन सिंह

- **प्रकाशनाधिकारी संस्था**
  संस्कृतगङ्गा (पञ्जीकृत)
  59, मोरी, दारागञ्ज, प्रयागराज
  (कोतवाली दारागञ्ज के आगे, गङ्गाकिनारे संकटमोचन छोटे हनुमान् मन्दिर के पास), Mb. : 9839852033
  email-Sanskritganga@gmail.com
- **प्रकाशन सहयोग**
  यूनिवर्सल बुक्स
  अल्लापुर, प्रयागराज
- मुख्यवितरक
  राजू पुस्तक केन्द्र
  अल्लापुर, प्रयागराज (उत्तर प्रदेश)
  मो० 9453460552, www.bookpaper.in
- पुस्तकें डाक द्वारा भी आर्डर कर सकते हैं–
  Mob. : 8004545095
  8004545096
- **अक्षर संयोजक- नितिन कुमार, संदीप कुमार**

- प्रथमसंस्करण – 'शिक्षक दिवस'
  05 सितम्बर - 2020
- द्वितीय संस्करण– संशोधित एवं परिवर्धित
  चैत्र रामनवमी 21 अप्रैल 2021
- **मूल्य – 260/-** (दो सौ साठ रुपये मात्र)

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

1. राजू पुस्तक भण्डार, अल्लापुर, इलाहाबाद
   सम्पर्क सूत्र : 0532-2460638, 9453460552
2. संस्कृतगङ्गा, दारागञ्ज, इलाहाबाद - 8004545096
3. गौरव बुक एजेन्सी, कैण्ट, वाराणसी
4. विजय मैग्जीन सेन्टर, बलरामपुर
5. जायसवाल बुक सेन्टर, हरदोई
6. शिवशंकर बुक स्टाल, जौनपुर
7. न्यू पूर्वांचल बुक स्टाल, जौनपुर
8. कृष्णा बुक डिपो बस्ती
9. मौर्या बुक डिपो, पाण्डेयपुर, वाराणसी
10. मनीष बुक स्टोर, गोरखपुर
11. द्विवेदी ब्रदर्स, गोरखपुर
12. विद्यार्थी पुस्तक मन्दिर, गोरखपुर
13. रंजन मिश्रा, गोरखपुर (बस स्टैण्ड)
14. आशीर्वाद बुक डिपो, अमीनाबाद, लखनऊ
15. मालवीय पुस्तक केन्द्र, अमीनाबाद, लखनऊ
16. मॉडर्न मैग्जीन बुक शॉप, कपूरथला, लखनऊ
17. साहू बुक स्टॉल, अलीगंज, लखनऊ
18. भूमि मार्केटिंग, लखनऊ
19. दुर्गा स्टोर, राजा की मण्डी, आगरा
20. महामाया पुस्तक केन्द्र, बिलासपुर
21. डायमण्ड बुक स्टाल, ज्वालापुर, हरिद्वार
22. कम्पटीशन बुक हाउस, सब्जी मण्डी रोड, बरेली
23. अजय गुप्ता बुक स्टोर, लखीमपुर
24. शिवशंकर बुक स्टाल, रीवा
25. कृष्णा बुक एजेन्सी, वाराणसी
26. गर्ग बुक डिपो, जयपुर
27. अग्रवाल बुक सेन्टर, मुखर्जी नगर, नयी दिल्ली
28. चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी (सभी बुक स्टालों पर)
29. विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक वाराणसी
30. मोतीलाल बनारसी दास, वाराणसी
31. केशवी बुक डिस्ट्रीब्यूटर्स, नयी दिल्ली
32. महावीर बुक स्टाल, खजूरी बाजार, इन्दौर
33. हिन्दी बुक डिपो, मुरादाबाद
34. माँ बुक स्टेशनर्स, शहडोल छत्तीसगढ़
35. ज्ञानगंगा, राँची, झारखण्ड

संस्कृतगङ्गा उवाच

प्रियसंस्कृतमित्राणि!

नमः संस्कृताय।

- संस्कृतगङ्गा दारागञ्ज प्रयागराज की प्रस्तुति के रूप में **NTA** (राष्ट्रीय परीक्षा एजेन्सी) द्वारा आयोजित **UGC-NET/JRF** (संस्कृत- 25 कोड) परीक्षा हेतु **'प्राख्याता'** नाम से यह व्याख्यात्मक हल संस्कृतमित्रों की सेवा में प्रस्तुत है। पुस्तक का यह नाम **'आख्यातोपयोगे'** सूत्र से प्रेरित है।
- इस पुस्तक में जून 2015 से लेकर सितम्बर 2020 तक के कुल **नौ प्रश्नपत्रों से लगभग 800 प्रश्नों** की व्याख्या की गयी है। सभी प्रश्नों के सही उत्तर के साथ-साथ प्रामाणिक पुस्तकों से स्रोत भी लिखा गया है।
- सभी प्रश्नों के चारों विकल्पों की व्याख्या की गयी है, जिससे किसी भी प्रश्न का पूरा कॉन्सेप्ट आपको समझ में आयेगा।
- उन सभी संस्कृतमित्रों को हार्दिक धन्यवाद जिन्होंने इन पुस्तक में व्याख्याकार्य को पूर्ण किया। कुछ लोगों ने प्रूफ संशोधन, स्रोतान्वेषण, टाइपिंग, प्रकाशन आदि कार्यों में संस्कृतगङ्गा का मनसा वाचा कर्मणा सहयोग किया, जिनमें सत्यप्रकाश साहू, शंकरदत्त त्रिपाठी, श्यामकिशोर मिश्र, अरुण कुमार पाण्डेय (शोधच्छात्र, गङ्गानाथ झा), अरुण कुमार पाण्डेय 'निर्मोही', कमलेश तिवारी, आशुतोष शुक्ल, केदारनाथ तिवारी, नीलोत्पल नाथ तिवारी, शिवम चतुर्वेदी,सचिन राजोरिया, गौरव पाण्डेय, शुभम ममगाई, संगीता राय, स्वागतम् मौर्य, पूनम दुबे, ज्योतिमा सिंह, प्रतिमा त्रिपाठी, शफीना बेगम, गायत्री पाण्डेय, रिंकी, राधा आदि मुख्य हैं।
- पुस्तक के व्याख्याकार्य में अर्पिता त्रिपाठी एवं सुमन सिंह का कार्य अत्यन्त सराहनीय रहा, जिन्होंने इस कार्य को सन् 2015 से ही प्रारम्भ किया था........शनैः शनैः यह कार्य पाँच वर्ष बाद 05 सितम्बर 2020 ''शिक्षक दिवस'' के दिन संस्कृत जगत् को पुस्तक रूपी सुमन अर्पित करने का मुझे अवसर प्राप्त हुआ और यह द्वितीय संस्करण चैत्र रामनवमी 2021 को प्रकाशित किया जा रहा है।
- इस पुस्तकीय सामग्री को अपनी टाइपिंग कला द्वारा पुस्तकीय आकार प्रदान करने वाले सन्दीप जी, नितिन जी एवं पुस्तक को बाह्यावरण (कवर पेज) से सुसज्जित करने वाले ब्रह्मानन्द मिश्र एवं हमारे प्रकाशकीय कार्यों के सहयोगी एवं मुख्य वितरक राजू पुस्तक केन्द्र, अल्लापुर प्रयागराज के स्वामी श्री राजकुमार गुप्ता (राजू) जी विशेष धन्यवाद के पात्र हैं।
- यह प्रयास किया गया है कि पुस्तक पूर्णरूपेण शुद्ध हो, फिर भी प्रमाद या अज्ञानवशात् कुत्रचित् मुद्रणदोष या गलत उत्तर या व्याख्या में तथ्यात्मक त्रुटि हो गयी हो तो कृपया हमें इन नम्बरों पर सूचित करें – 9839852033, 8004545095

संस्कृतगङ्गा, दारागञ्ज, प्रयागराज — **सम्पादकः**

21 अप्रैल–2021 — **सर्वज्ञभूषणः**

चैत्र रामनवमी

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग

पाठ्यक्रम

संस्कृत (विषयकोड-25)

इकाई 1

वैदिक साहित्य

वैदिक साहित्य का सामान्य परिचय-

- **वेदों का काल -** मैक्समूलर, ए.वेबर, जैकोबी, बालगंगाधर तिलक, एम.विन्टरनिट्ज, भारतीय परम्परागत विचार,
- **संहिता साहित्य**
- **संवाद सूक्त-** पुरूरवा-उर्वशी (10-95), यम-यमी (10.10), सरमा-पणि (10.108), विश्वामित्र-नदी (3.33)
- **ब्राह्मण साहित्य**
- **आरण्यक साहित्य**
- **वेदांग-** शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष

इकाई 2

वैदिक साहित्य का विशिष्ट अध्ययन

- **निम्नलिखित सूक्तों का अध्ययन -**
- **ऋग्वेद -** अग्नि (1.1), वरुण (1.25), सूर्य (1.115), इन्द्र (2.12), उषस् (3.61), पर्जन्य (5. 83), अक्ष (10.34), ज्ञान (10.71), पुरुष (10.90), हिरण्यगर्भ (10.121), वाक् (10.125), नासदीय (10.129),
- **शुक्लयजुर्वेद -** शिवसंकल्प,अध्याय- 34 (1-6) प्रजापति, अध्याय- 23(1-5) 32वाँ अध्याय भी पढें।
- **अथर्ववेद -** राष्ट्राभिवर्धनम् (1.29), काल (10.53), पृथिवी (12.1)
- **ब्राह्मण साहित्य-** प्रतिपाद्य विषय, विधि एवं उसके प्रकार, अग्निहोत्र, अग्निष्टोम, दर्शपूर्णमास यज्ञ, पञ्चमहायज्ञ, आख्यान (शुनःशेप, वाङ्मनस्)।
- **उपनिषद् साहित्य-** निम्नलिखित उपनिषदों की विषयवस्तु तथा प्रमुख अवधारणाओं का अध्ययन - ईश, कठ, केन, बृहदारण्यक, तैत्तिरीय, श्वेताश्वतर।
- **वैदिक व्याकरण निरुक्त एवं वैदिक व्याख्या पद्धति-**
- **ऋक्प्रातिशाख्य-** निम्नलिखित परिभाषाएँ - समानाक्षर, सन्ध्यक्षर, अघोष,सोष्म, स्वरभक्ति, यम, रक्त, संयोग, प्रगृह्य, रिफित।
- **निरुक्त-** (अध्याय 1 तथा 2) चार पद- नाम विचार, आख्यात विचार, उपसर्गों का अर्थ, निपात की कोटियाँ,
- **निरुक्त अध्ययन के प्रयोजन**
- **निर्वचन के सिद्धान्त**
- **निम्नलिखित शब्दों की व्युत्पत्ति** आचार्य, वीर, ह्रद, गो, समुद्र, वृत्र, आदित्य, मेघ, वाक्, उदक, नदी, अश्व, अग्नि, जातवेदस्, वैश्वानर, निघण्टु

निरुक्त- (अध्याय 7 दैवत काण्ड)

वैदिक स्वर- उदात्त, अनुदात्त तथा स्वरित ।

वैदिक व्याख्या पद्धति- प्राचीन एवं अर्वाचीन ।

इकाई 3

दर्शन साहित्य

(क) प्रमुख भारतीय दर्शनों का सामान्य परिचय

प्रमाणमीमांसा, तत्त्वमीमांसा, आचारमीमांसा (चार्वाक, जैन, बौद्ध, सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा एवं उत्तरमीमांसा के सन्दर्भ में)

इकाई 4

(ख) दर्शन साहित्य का विशिष्ट अध्ययन

- **ईश्वरकृष्ण- सांख्यकारिका-** सत्कार्यवाद, पुरुषस्वरूप, प्रकृतिस्वरूप, सृष्टिक्रम, प्रत्ययसर्ग, कैवल्य
- **सदानन्द, वेदान्तसार-** अनुबन्ध-चतुष्टय, अज्ञान, अध्यारोप-अपवाद, लिंगशरीरोत्पत्ति, पञ्चीकरण, विवर्त महावाक्य, जीवन्मुक्ति ।

- **अन्नंभट्ट, तर्कसंग्रह/ केशव मिश्र, तर्कभाषा-** पदार्थ, कारण, प्रमाण (प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द,) प्रामाण्यवाद, प्रमेय ।
- **लौगाक्षिभास्कर-अर्थसंग्रह-**
- **पतंजलि-योगसूत्र-** (व्यासभाष्य) - चित्तभूमि, चित्तवृत्तियाँ, ईश्वर का स्वरूप, योगाङ्ग, समाधि, कैवल्य ।
- **बादरायण-ब्रह्मसूत्र 1.1 (शाङ्करभाष्य)**
- **विश्वनाथपञ्चानन-न्यायसिद्धान्तमुक्तावली (अनुमानखण्ड)**
- **सर्वदर्शनसंग्रह- जैनमत, बौद्धमत**

इकाई 5

व्याकरण एवं भाषाविज्ञान

- **सामान्य परिचय- निम्नलिखित आचार्यों का परिचय-** पाणिनि, कात्यायन, पतञ्जलि, भर्तृहरि, वामनजयादित्य, भट्टोजिदीक्षित, नागेशभट्ट, जैनेन्द्र, कैय्यट,शाकटायन, हेमचन्द्रसूरि, सारस्वतव्याकरणकार।
- **पाणिनीय शिक्षा**
- **भाषाविज्ञान -** भाषा की परिभाषा, भाषा का वर्गीकरण, (आकृतिमूलक एवं पारिवारिक), ध्वनियों का वर्गीकरण, स्पर्श, संघर्षी, अर्धस्वर, स्वर, (संस्कृत ध्वनियों के विशेष सन्दर्भ में), मानवीय ध्वनियन्त्र, ध्वनि परिवर्तन के कारण, ध्वनि नियम (ग्रिम,ग्रासमान,वर्नर), अर्थ परिवर्तन की दिशाएँ एवं कारण, वाक्य का लक्षण व भेद, भारोपीय परिवार का सामान्य परिचय, वैदिक संस्कृत एवं लौकिक संस्कृत में अन्तर, भाषा तथा वाक् में अन्तर, भाषा तथा बोली में अन्तर

इकाई 6

(ख) व्याकरण का विशिष्ट अध्ययन

- **परिभाषाएँ-** संहिता, संयोग,गुण, वृद्धि, प्रातिपदिक, नदी,घि, उपधा,अपृक्त, गति, पद, विभाषा, सवर्ण, टि, प्रगृह्य, सर्वनामस्थान, भ, सर्वनाम, निष्ठा।
- **सन्धि-** अच् सन्धि, हल् सन्धि, विसर्ग सन्धि, (लघुसिद्धान्तकौमुदी के अनुसार)
- **सुबन्त-अजन्त-** राम, सर्व, (तीनों लिंगों में), विश्वपा, हरि, त्रि, (तीनों लिंगों में), सखि, सुधी, गुरु, पितृ, गौ, रमा, मति, नदी, धेनु, मातृ, ज्ञान, वारि, मधु ।
- **हलन्त-** लिह्, विश्ववाह्, चतुर् (तीनों लिंगों में), इदम् (तीनों लिंगों में), किम् (तीनों लिंगों में), तत् (तीनों लिंगों में), राजन्, मघवन्, पथिन्, विद्वस्, अस्मद्, युष्मद् ।
- **समास-** अव्ययीभाव, तत्पुरुष, बहुव्रीहि, द्वन्द्व, (लघुसिद्धान्तकौमुदी के अनुसार)
- **तद्धित-** अपत्यार्थक एवं मत्वर्थीय (सिद्धान्तकौमुदी के अनुसार)
- **तिङन्त-** भू,एध् ,अद् ,अस् ,हु, दिव् ,षुञ् ,तुद् ,तन् ,कृ, रुध् ,क्रीञ् ,चुर्
- **प्रत्ययान्त-** णिजन्त, सन्नन्त, यङन्त, यङ्लुगन्त, नामधातु।
- **कृदन्त-** तव्य/तव्यत्, अनीयर्, यत्, ण्यत्, क्यप्, शतृ, शानच्, क्त्वा, क्तवतु, तुमुन्, णमुल् ।
- **स्त्रीप्रत्यय-** लघुसिद्धान्तकौमुदी के अनुसार
- **कारकप्रकरण-** सिद्धान्तकौमुदी के अनुसार
- **परस्मैपद एवं आत्मनेपद विधान-** सिद्धान्तकौमुदी के अनुसार
- **महाभाष्य (पस्पशाह्निक)-** शब्दपरिभाषा, शब्द एवं अर्थ सम्बन्ध, व्याकरण अध्ययन के उद्देश्य, व्याकरण की परिभाषा, साधु शब्द के प्रयोग का परिणाम, व्याकरण पद्धति।
- **वाक्यपदीयम् (ब्रह्मकाण्ड)-** स्फोट का स्वरूप, शब्द-ब्रह्म का स्वरूप, शब्द-ब्रह्म की शक्तियाँ, स्फोट एवं ध्वनि का सम्बन्ध, शब्द-अर्थ का सम्बन्ध,ध्वनि के प्रकार, भाषा के स्तर।

इकाई 7

संस्कृत साहित्य, काव्यशास्त्र एवं छन्दपरिचय

- **निम्नलिखित का सामान्य परिचय -** भास, अश्वघोष, कालिदास, शूद्रक, विशाखदत्त, भारवि, माघ, हर्षवर्धन, बाणभट्ट, दण्डी,भवभूति, भट्टनारायण, बिल्हण, श्रीहर्ष, अम्बिकादत्तव्यास, पण्डिता क्षमाराव, वी. राघवन्, श्रीधरभास्कर वर्णेकर

◆ **काव्यशास्त्र-** रससम्प्रदाय, अलंकारसम्प्रदाय, रीतिसम्प्रदाय, ध्वनिसम्प्रदाय, वक्रोक्तिसम्प्रदाय, औचित्यसम्प्रदाय ।

◆ **पाश्चात्त्य काव्यशास्त्र-** अरस्तू, लॉन्जाइनस, क्रोचे

इकाई 8

निम्नलिखित ग्रन्थों का विशिष्ट अध्ययन

◆ **पद्य-** बुद्धचरितम् (प्रथम सर्ग), रघुवंशम् (प्रथमसर्ग), किरातार्जुनीयम् (प्रथमसर्ग), शिशुपालवधम् (प्रथमसर्ग), नैषधीयचरितम् (प्रथमसर्ग)

◆ **नाट्य-** स्वप्नवासवदत्तम्, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, वेणीसंहारम्, मुद्राराक्षसम्, उत्तररामचरितम्, रत्नावली, मृच्छकटिकम्,

◆ **गद्य-** दशकुमारचरितम् (अष्टम उच्छ्वास), हर्षचरितम् (पञ्चम उच्छ्वास) कादम्बरी (शुकनासोपदेश)

◆ **चम्पूकाव्य-** नलचम्पू (प्रथम उच्छ्वास)

◆ **साहित्यदर्पण-**

काव्यपरिभाषा, काव्य की अन्य परिभाषाओं का खण्डन, शब्दशक्ति (संकेतग्रह, अभिधा, लक्षणा, व्यंजना), काव्यभेद (चतुर्थ परिच्छेद), श्रव्यकाव्य (गद्य,पद्य, मिश्र काव्य-लक्षण)

◆ **काव्यप्रकाश-**

काव्यलक्षण, काव्यप्रयोजन, काव्यहेतु, काव्यभेद, शब्दशक्ति, अभिहितान्वयवाद, अन्विताभिधानवाद, रसस्वरूप एवं रससूत्र विमर्श, रसदोष, काव्यगुण, व्यञ्जनावृत्ति की स्थापना (पञ्चम उल्लास)

◆ **अलंकार-**

वक्रोक्ति, अनुप्रास, यमक, श्लेष, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, समासोक्ति, अपह्नुति, निदर्शना, अर्थान्तरन्यास, दृष्टान्त, विभावना, विशेषोक्ति, स्वभावोक्ति, विरोधाभास, संकर, संसृष्टि।

◆ **ध्वन्यालोक (प्रथम उद्योत)**

◆ **वक्रोक्तिजीवितम् (प्रथम उन्मेष)**

◆ **भरत-नाट्यशास्त्र (द्वितीय एवं षष्ठ अध्याय)**

दशरूपकम् (प्रथम एवं तृतीय प्रकाश)

छन्दपरिचय-

आर्या, अनुष्टुप् , इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा,वसन्ततिलका, उपजाति, वंशस्थ, द्रुतविलम्बित, शालिनी, मालिनी, शिखरिणी, मन्दाक्रान्ता, शार्दूलविक्रीडित, स्रग्धरा।

इकाई 9

पुराणेतिहास, धर्मशास्त्र एवं अभिलेखशास्त्र

निम्नलिखित का सामान्य परिचय -

◆ **रामायण-** विषयवस्तु, काल, रामायणकालीन समाज, परवर्ती ग्रन्थों के लिए प्रेरणास्त्रोत, साहित्यिक महत्त्व, रामायण में आख्यान।

◆ **महाभारत-** विषयवस्तु, काल, महाभारतकालीन समाज, परवर्ती ग्रन्थों के लिए प्रेरणास्त्रोत, साहित्यिक महत्त्व, महाभारत में आख्यान।

◆ **पुराण-** पुराण की परिभाषा, महापुराण-उपपुराण, पौराणिक सृष्टि-विज्ञान पौराणिक आख्यान ।

◆ **प्रमुख स्मृतियों का सामान्य परिचय**

◆ **अर्थशास्त्र का सामान्य परिचय**

◆ **लिपि-** ब्राह्मी लिपि का इतिहास एवं उत्पत्ति के सिद्धान्त

◆ **अभिलेख का सामान्य परिचय**

इकाई 10

निम्नलिखित ग्रन्थों का विशिष्ट अध्ययन

कौटिलीय-अर्थशास्त्र (प्रथम-विनयाधिकारिक)

मनुस्मृति- (प्रथम,द्वितीय एवं सप्तम अध्याय)

याज्ञवल्क्यस्मृति- (व्यवहाराध्याय)

लिपि तथा अभिलेख- गुप्तकालीन तथा अशोक कालीन ब्राह्मी लिपि

अशोक के अभिलेख- प्रमुख शिलालेख, प्रमुख स्तम्भलेख।

मौर्योत्तरकालीन अभिलेख- कनिष्क के शासन वर्ष 3 का सारनाथ बौद्ध प्रतिमा लेख, रुद्रदामन् का गिरनार शिलालेख, खारवेल का हाथीगुम्फा अभिलेख ।

गुप्तकालीन एवं गुप्तोत्तर कालीन अभिलेख- समुद्रगुप्त का इलाहाबाद स्तम्भलेख, यशोधर्मन् का मन्दसौर शिलालेख, हर्ष का बांसखेड़ा ताम्रपट्ट अभिलेख, पुलकेशिन् द्वितीय का ऐहोल शिलालेख

अनुक्रमणिका

NTA UGC-NET/JRF संस्कृत व्याख्यात्मक हल

1	सितम्बर 2020	NTA UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् II

1. कालक्रमानुसारम् अधोलिखितवैयाकरणानां समुचितं क्रमं चिनुत-

(a) वरदराजः, भट्टोजिदीक्षितः, पतञ्जलिः, भर्तृहरिः

(b) भट्टोजिदीक्षितः, वरदराजः, पतञ्जलिः, भर्तृहरिः

(c) पतञ्जलिः, भट्टोजिदीक्षितः, भर्तृहरिः, वरदराजः

(d) पतञ्जलिः, भर्तृहरिः, भट्टोजिदीक्षितः, वरदराजः

अत्र समुचितम् उत्तरं चिनुत-

(A) (a) **(B)** (b)
(C) (c) **(D)** (d)

व्याख्या- पतञ्जलि-

- अष्टाध्यायी पर भाष्य लिखा, जिसे 'महाभाष्य' कहते हैं, इसमें 84 आह्निक हैं, व्याकरण के 'त्रिमुनि' (पाणिनि, कात्यायन, पतञ्जलि) में गिने जाते हैं।
- यह योगदर्शन के प्रणेता हैं।
- योगदर्शन का आधार 'योगसूत्र' नामक ग्रन्थ है, जो पतञ्जलि प्रणीत है।

योगसूत्र में चार पाद हैं

पाद	विषय	सूत्र संख्या
समाधिपाद	समाधि स्वरूप	51
साधनपाद	अष्टाङ्ग योग	55
विभूतिपाद	योग सिद्धि	55
कैवल्यपाद	मोक्ष	34
		कुल सूत्र = 195

- योगसूत्र पर व्यास ने 'योगभाष्य' लिखा है।
- योगदर्शन को 'सेश्वर सांख्य' कहा जाता है, क्योंकि यह ईश्वर तत्त्व को मानता है।
- सांख्यदर्शन को 'निरीश्वर सांख्य' कहा जाता है, क्योंकि यह ईश्वर तत्त्व को नहीं मानता है।

भर्तृहरि

- भर्तृहरि का समय छठीं शताब्दी ई. माना जाता है।
- इनके पिता-गन्धर्वसेन (मालव देश के राजा) पत्नी- पिङ्गला तथा गुरु गोरखनाथ हैं।
- 'वाक्यपदीयम्' इनके द्वारा रचित व्याकरण ग्रन्थ है।
- भर्तृहरि मुक्तककाव्य के प्रणेता हैं।
  इनके तीन प्रसिद्ध मुक्तककाव्य हैं-
  1. नीतिशतकम् (111 श्लोक)
  2. शृंगारशतकम् (103 श्लोक)
  3. वैराग्यशतकम् (111 श्लोक)

भट्टोजिदीक्षित

- इनका समय सोलहवीं शताब्दी माना जाता है।
- इनका जन्म महाराष्ट्र के ब्राह्मण दीक्षित परिवार में हुआ, इनके पिता-लक्ष्मीधर एवं गुरु-शेषकृष्ण हैं।
- इन्होंने पाणिनि के सूत्रों तथा कात्यायन के वार्तिकों का संग्रहकर 'वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी' नामक ग्रन्थ की रचना की।
- इन्होंने शब्दकौस्तुभ (अष्टाध्यायी की टीका) नामक बृहत्तम ग्रन्थ एवं वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी की टीकात्मक ग्रन्थ प्रौढमनोरमा लिखी।

वरदराज

- यह भट्टोजिदीक्षित के शिष्य थे।
- इनकी रचनाएँ- मध्यसिद्धान्त- कौमुदी, लघुसिद्धान्त- कौमुदी सारसिद्धान्त– कौमुदी वरदराज की 'लघुसिद्धान्त-कौमुदी' प्रायः सर्वत्र व्याकरण प्रवेशिका के रूप में स्वीकृत की गई है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि पतञ्जलि, भर्तृहरि, भट्टोजिदीक्षित फिर वरदराज जी हैं। **अतः विकल्प (D) सही है।**

स्रोत- संस्कृत व्याकरणशास्त्र का इतिहास- युधिष्ठिर मीमांसक, पेज-135,142,177

2. अधुना-प्राप्तेषु सामवेदस्य ब्राह्मणेषु द्वौ ब्राह्मणौ कौ स्तः?

(A) चरक-ब्राह्मणम् **(B)** गालव-ब्राह्मणम्
(C) संहितोपनिषद्-ब्राह्मणम् **(D)** वंशब्राह्मणम्

अधस्तनेषु समुचितं विकल्पं चिनुत–

(A) (a) एवम् (c) **(B)** (a) एवम् (d)
(C) (c) एवम् (d) **(D)** (b) एवम् (c)

व्याख्या-

* वेदों की संख्या चार है- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद।
* चारों वेदों के स्व-स्व ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद् आदि भाग होते हैं।

ब्राह्मण

* शतपथ ब्राह्मण के अनुसार 'ब्रह्मन्' शब्द का अर्थ-मन्त्र है 'ब्रह्म वै मन्त्रः' (शतपथ ब्राह्मण- 7.1.1.5) अतः वेदमन्त्रों की व्याख्या और विनियोग प्रस्तुत करने वाले ग्रन्थ को 'ब्राह्मण' कहते हैं।
* जिन ग्रन्थों में वैदिक रहस्यों का उद्घाटन किया गया है, उन्हें 'ब्राह्मण' कहते हैं।

आरण्यक

* आरण्यकों का विकास ब्राह्मण ग्रन्थों के परिशिष्ट के रूप में हुआ। ब्राह्मण के जिस भाग में वानप्रस्थाश्रम के लिए उपयोगी यज्ञादि का विधान किया गया है उन्हें 'आरण्यक' कहते हैं।
* 'अरण्ये भवम् आरण्यकम्' अर्थात् अरण्य में होने वाले अध्ययन अध्यापन, मनन-चिन्तन शास्त्रीय चर्चा और अध्यात्मविवेचन आरण्यक के अन्तर्गत आते हैं।
* आरण्यक स्थूल से सूक्ष्म की ओर तथा भौतिकवाद से अध्यात्म की ओर एवं मूर्त से अमूर्त की ओर ले जाता है।
* आरण्यक में यज्ञ प्रक्रिया के दार्शनिक पक्ष का विवेचन होता है।

उपनिषद्

* उपनिषद् का अर्थ है- उप = समीप, नि = निश्चय/निष्ठापूर्वक, सद् = बैठना। अर्थात्- तत्त्वज्ञान के लिए गुरु के पास बैठना।
* श्री शङ्कराचार्य ने उपनिषद् का अर्थ 'ब्रह्मविद्या' माना है।
* मुख्य रूप से **10 उपनिषद्** माने जाते हैं, जिनका शङ्कराचार्य ने भाष्य लिखा है-

''ईश-केन-कठ-प्रश्न-मुण्ड-माण्डूक्य-तित्तिरः।
ऐतरेयं च छान्दोग्यं बृहदारण्यकं दश''।।

* कुछ विद्वान् उपनिषद् का रचनाकाल **700 ई.पू.** मानते हैं।
* बालगंगाधर तिलक ने ज्योतिष गणना के आधार पर उपनिषद् का रचनाकाल **1600 ई.पू.** माना है।

1. **ऋग्वेद का ब्राह्मण**- शांखायन, ऐतरेय,कौषीतकि
2. **यजुर्वेद**- (i) **शुक्लयजुर्वेद का ब्राह्मण-** शतपथब्राह्मण
3. (ii) **कृष्णयजुर्वेद का ब्राह्मण-** तैत्तिरीय ब्राह्मण
4. **सामवेद का ब्राह्मण-** ताण्ड्य, षड्विंश,सामविधान,आर्षेय, दैवत, छान्दोग्य, संहितोपनिषद्, वंश, जैमिनीय, ब्राह्मण
5. **अथर्ववेद का ब्राह्मण-** गोपथ ब्राह्मण

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि सामवेद के दो ब्राह्मण ग्रन्थ-संहितोपनिषद् ब्राह्मण एवं वंशब्राह्मण हैं।

अतः विकल्प (C) सही है।

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-09

3. अधोलिखितेषु कतमेन पाश्चात्त्यविदुषा ए वैदिक कॉन्कार्डेन्स् (A VEDIC CONCORDANCE) इति नामको ग्रन्थो रचितः?

(A) रूडाल्फ-रॉथ-इत्यनेन **(B)** कीथ-इत्यनेन
(C) विल्सन-इत्यनेन **(D)** ब्लूम-फील्ड-इत्यनेन

व्याख्या- * भारतीय वाङ्मय की ओर पाश्चात्त्य विद्वानों का ध्यान 'सर विलियम जोन्स' 1746-1794 ने किया।
* यह कलकत्ता उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश थे।
* इन्होंने 'ON THE VEDAS' वेदविषयक लेख लिखकर पाश्चात्त्य जगत् का ध्यान वेदों की ओर आकृष्ट किया।
* यहाँ उसकी संक्षिप्त रूपरेखा दी जा रही है-

रूडाल्फ रॉथ

* इन्होंने अथर्ववेद संहिता (शौनकीय शाखा) का सर्वप्रथम संपादन किया और 1856 में उसे प्रकाशित किया।

ए. वी. कीथ

* इन्होंने ऐतरेय एवं कौषीतकि ब्राह्मण ग्रन्थ का अंग्रेजी अनुवाद 1930 में प्रकाशित किया।
* प्रो. कीथ ने ही शांखायन आरण्यक का भी अंग्रेजी अनुवाद किया तथा वैदिक कोश (VEDIC INDEX) को दो भागों में प्रकाशित किया, जो वैदिक संस्कृति का छोटा विश्वकोश है।
* कीथ ने 'RELIGION AND PHILOSOPHY OF THE VEDA AND UPANISADS' ग्रन्थ की दो भागों में वैदिकधर्म एवं दर्शन की मीमांसा की।
* कीथ ने 'HISTORY OF SANSKRIT LITERATURE' (1941) में लिखी।

एच. एन. विल्सन

* सर्वप्रथम इन्होंने पूरे ऋग्वेद का अंग्रेजी में अनुवाद **1850 ई.** में प्रकाशित किया, जो कि सायण-भाष्य पर आश्रित है।
* विल्सन सायण के प्रबल समर्थक थे।

एम. ब्लूमफील्ड

* इन्होंने अथर्ववेद (पैप्पलाद शाखा) की एक अतिजीर्ण काश्मीर से शारदा लिपि में प्राप्त प्रति से फोटो-प्रति तीन बड़ी जिल्दों में 1901 में छपवाई।
* ब्लूमफील्ड ने मंत्र-महासूची (VEDIC CONCORDANCE) नामक विशाल ग्रन्थ **1102 पृष्ठों** में 1906 में प्रकाशित किया। इसमें चारों वेदों के प्रत्येक मन्त्र के प्रत्येक पाद (चरण) की सूची तथा उनके पाठभेद दिए हैं।
* इनका दूसरा ग्रन्थ 'ऋग्वेद में पुनरावृत्ति' (RIGVEDA REPETITION) है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है 'A VEDIC CONCORDANCE' के लेखक ब्लूमफील्ड हैं।
अतः विकल्प (D) सही है।
स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 37

4. अत्र कथनद्वयम् - तत्र एकम् अभिकथनम् (A), अपरञ्च तस्य कारणम् (R) इति।
अभिकथनम् (A)- न्यायदर्शनरीत्या आत्मत्त्वसामान्यवान् आत्मा इति।
कारणम् (R)- बुद्धि-सुख-दुःखः-इच्छा-द्वेष-प्रयत्नगुणलिङ्गकत्वात्।
उपर्युक्तम् अभिकथनं कारणञ्चाश्रित्य समुचितं विकल्पं चिनुत-
(A) (A) तथा (R) उभयं सत्यमस्ति (A) इत्यस्य (R) इति उचितं कारणम्
(B) (A) तथा (R) उभावपि असमीचीनौ।
(C) (A) तथा (R) उभावपि समीचीनौ, परं (A) इत्यस्य (R) इति समुचितं कारणं नास्ति
(D) (A) इति असमीचीनं, परं (R) इति समीचीनम्

व्याख्या- आचार्य केशव मिश्र जी द्वारा प्रणीत तर्कभाषा के प्रमेयनिरूपण में आत्मा के विषय में कहते हैं कि' **तत्रात्मत्वसामान्यवानात्मा। स च देहेन्द्रियादिव्यतिरिक्तः प्रतिशरीरं भिन्नो नित्यो विभुश्च। स च मानसप्रत्यक्षः। विप्रतिपत्तौ तु बुद्ध्यादिगुणलिङ्गकः। तथा हि बुद्ध्यादयस्तावद् गुणाः, अनित्यत्वे सति एकेन्द्रियमात्रगाह्यत्वात्। गुणश्च गुण्याश्रित एव। तथा च बुद्ध्यादीनां गुणानामाश्रयो गुणी वक्तव्यः स एव आत्मा।**
अर्थ- आत्म जाति से युक्त ही आत्मा कहलाती है, तथा बुद्धि सुख-दुःख-द्वेष-प्रयत्न ये सभी गुणलिङ्गक हैं इन सभी के द्वारा ही आत्मा की सिद्धि होती है, क्योंकि इन सभी गुणों का आश्रय आत्मा ही है।
स्पष्टीकरण- आत्मत्व जाति (सामान्य) से युक्त ही आत्मा होती है, तथा-बुद्धि-सुख इत्यादि गुण ही आत्मा की सिद्धि में कारण हैं इसलिए (A) और (R) दोनों सही हैं, तथा (A) का उचित कारण (R) है।
निष्कर्ष- उक्त अभिकथन के आधार से स्पष्ट है कि- (A) तथा (R) दोनों सही हैं, तथा (A) का (R) उचित कारण है, इसीलिए **सही विकल्प (A) होगा।**
स्रोत- तर्कभाषा-गजानन शास्त्री मुसलगाँवकर, पेज 249

5. महाभारतीयपर्वणां समुचितः क्रमोऽस्ति–
(a) अनुशासनपर्व **(b)** आश्रमेधिकपर्व
(c) शान्तिपर्व **(d)** मौसलपर्व
(e) आश्रमवासिकपर्व
अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत–
(A) (a), (d), (b), (c), (e)
(B) (b), (c), (a), (d), (e)
(C) (c), (a), (b), (e), (d)
(D) (d), (b), (c), (a), (e)

व्याख्या-
* महाभारत संस्कृत साहित्य का प्राचीनतम ग्रन्थ है।
* इसे जय/भारत/शतसाहस्रीसंहिता भी कहते हैं।
* महाभारत के लेखक वेदव्यास हैं।
* महाभारत में ही कौरवों-पाण्डवों के भीषण युद्ध तथा अनेक संवादों,कथाओं का वर्णन मिलता है।
* महाभारत के छठें पर्व- 'भीष्मपर्व' में श्रीकृष्ण ने अर्जुन को गीता का उपदेश कुरुक्षेत्र में दिया है।
* महाभारत को **18 पर्वों** में बाँटा गया है-

1. आदिपर्व	2. सभापर्व	3. वनपर्व
4. विराटपर्व	5. उद्योगपर्व	6. भीष्मपर्व
7. द्रोणपर्व	8. कर्णपर्व	9. शल्यपर्व
10. सौप्तिकपर्व	11. स्त्रीपर्व	12. शान्तिपर्व
13. अनुशासनपर्व	14. आश्वमेधिकपर्व	
15. आश्रमवासिकपर्व	16. मौसलपर्व	
17. महाप्रस्थानिकपर्व	18. स्वर्गारोहणपर्व	

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि महाभारत के पर्वों का सही क्रम-शान्ति, अनुशासन, आश्वमेधिक, आश्रमवासिक, मौसल होगा। **अतः विकल्प (C) सही है।**
स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा, पेज-151

6. अधोलिखितेषु ग्रन्थेषु अम्बिकादत्तव्यासस्य रचना वर्तते-
(A) प्रतिज्ञायौगन्धरायणम् **(B)** प्रतिमानाटकम्
(C) शिवराजविजयः **(D)** मृच्छकटिकम्

व्याख्या-

प्रतिज्ञायौगन्धरायणम्

लेखक-भास, **विभाजन-** 4 अङ्क, **विधा-** रूपक
नायक- उदयन, **नायिका-** वासवदत्ता

अन्य पात्र- प्रद्योत, यौगन्धरायण,सालंक, हँसक, रुमण्वान्, महर्षिव्यास, बादरायण।

* यह ग्रन्थ छठी शताब्दी ई.पू. की ऐतिहासिक घटना पर आधारित है।

* भास का समय-**100 ई.पू.** से **200 ई.** के मध्य।

* भास का प्रिय **छन्द**-अनुष्टुप्, वसन्ततिलका **रस**-शृङ्गार और **रस**-वीररस, **रीति**-वैदर्भी, **गुण**-प्रसाद, माधुर्य।

प्रतिमानाटकम्

लेखक- महाकवि भास, **काव्यविधा-**नाटक, **अङ्क-**7 **उपजीव्य-** रामायण कुल श्लोक **= 157**

नायक- राम, **नायिका**-सीता, **प्रतिनायक**-रावण, **कञ्चुकी**-बालाकि, **प्रतीहारी**-विजया, **प्रधान/अङ्गीरस**-करुण रस, अन्य **रस**- वीर, शृङ्गार, अद्‌भुत,

अलङ्कार- उपमा, स्वभावोक्ति, **प्रमुख छन्द**-अनुष्टुप्, **रीति**-वैदर्भी म.टी. गणपति शास्त्री प्रतिमानाटकम् में **'धर्मवीर रस'** मानते हैं।

शिवराजविजय

लेखक - अम्बिकादत्तव्यास, **विधा**-ऐतिहासिक उपन्यास,
विभाजन - 3 विराम, 12 निःश्वास,
प्रधान रस - वीर, **उपजीव्य**-इतिहास प्रसिद्ध
रीति - पाञ्चाली, **नायक**-शिवाजी
कथानक - शिवाजी का जीवन चरित,
प्रमुख पात्र- शिवाजी, गौरसिंह, श्यामसिंह, यवनयुवक, यशवन्त सिंह, औरंगज़ेब, रसनारी (रोशन आरा)

* 'शिवराजविजयः **1870 ई.** में लिखा गया था, जो काशी से **1901 ई.** में प्रकाशित हुआ।

* संस्कृतवाङ्मय का प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास **'शिवराजविजयः'** है।

मृच्छकटिकम्

लेखक- शूद्रक, विधा-प्रकरण, विभाजन-**10 अङ्क**, प्रधान रस-शृङ्गार, **उपजीव्य**- कविकल्पित (लोकाश्रित) **नायक**-चारुदत्त, **नायिका-** वेश्या (वसन्तसेना) और कुलस्त्री (धर्मपत्नी धूता), अन्य पात्र-धूर्त, द्यूतकर, विट, चेट आदि।

* मृच्छकटिकम् के **10 अङ्कों** के नाम इस प्रकार हैं–

अङ्क	नाम	श्लोक संख्या
1	अलंकार न्यास	58
2	द्यूतकर संवाहक	20
3	संधिच्छेद	30
4	मदनिका शर्विलक	33
5	दुर्दिन	52
6	प्रवहण विपर्यय	27
7	आर्यकापहरण	09
8	वसन्तसेनामोटन	47
9	व्यवहार	43
10	संहार	61
	योग	380

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि अम्बिकादत्त व्यास की रचना शिवराजविजय है। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा, पेज 410

7. ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यानुसारं ब्रह्मणोऽस्तित्त्व-प्रसिद्धिः कस्माद् ज्ञायते?

(a) बृहतेर्धातोरनुगमात् **(b)** पञ्चप्रयाजेभ्यः
(c) प्रकृतियागाद् **(d)** सर्वस्यात्मत्वाद्

अधस्तनेषु समुचितं विकल्पं चिनुत-

(A) (a) एवम् (b) (B) (b) एवम् (c)
(C) (c) एवम् (d) (D) (a) एवम् (d)

व्याख्या-ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्य के प्रथम अधिकरण में 'आद्यशङ्कराचार्य जी कहते हैं- यदि ब्रह्म प्रसिद्ध है तो उसकी जिज्ञासा नहीं होनी चाहिए, और यदि अप्रसिद्ध है तो फिर उसकी जिज्ञासा हो ही नहीं सकती–'

तत्पुनर्ब्रह्म प्रसिद्धम् अप्रसिद्धं वा स्यात्। यदि प्रसिद्धं न जिज्ञासितव्यम्। अथाऽप्रसिद्धं नैव शक्यं जिज्ञासितुमिति।

• उच्यते- अस्तितावद् ब्रह्म नित्यशुद्धबुद्धमुक्तस्वभावं, सर्वज्ञं, सर्वशक्तिसमन्वितम्, ब्रह्मशब्दस्य हि व्युत्पाद्यमानस्य नित्यशुद्धत्वादयोऽर्थाः प्रतीयन्ते, बृहतेर्धातोरर्थानुगमात्। सर्वस्यात्मत्वाच्च ब्रह्मास्तित्त्वप्रसिद्धिः

(A) ब्रह्मशब्दस्य हि व्युत्पाद्यमानस्य नित्यशुद्धत्वादयोऽर्थाः प्रतीयन्ते बृहतेर्धातोरर्थानुगमात् **'बृह्'** धातु के अर्थ से तो ब्रह्म के नित्यशुद्धत्त्वादि अर्थों की प्रतीति होती है।

(B) पञ्च प्रयाज मीमांसा दर्शन में प्रसिद्ध हैं, तथा इनका यज्ञों में प्रयोग होता है।

(C) प्रकृतियाग भी मीमांसा में प्रसिद्ध है।

(D) **''सर्वस्यात्मत्वाच्च ब्रह्मत्वप्रसिद्धिः''** सभी में आत्मा के होने से ब्रह्म का अस्तित्त्व प्रसिद्ध है।

स्पष्टीकरण- उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि ब्रह्मणोऽस्तित्त्व प्रसिद्धिः सर्वस्यात्मत्वात् है। **अतः विकल्प (D) सही है।**

स्रोत- ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यम्-स्वामी सत्यानन्द सरस्वती, पेज-30

8. ''अहिंसा सत्यं शौचमनसूयाऽऽनृशंस्यं क्षमा च'' इति कौटिलीयमते केषां धर्मः?

(a) सर्वेषामाश्रमाणाम् (b) सर्वेषां वर्णानाम्

(c) सर्वेषां प्राणिनाम् (d) सर्वेषां सम्प्रदायानाम्

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत-

(A) (a) एवम् (b) (B) (b) एवम् (c)

(C) (c) एवम् (d) (D) (d) एवम् (a)

व्याख्या- अर्थशास्त्र के रचयिता कौटिल्य हैं, यह एक राजनीतिक ग्रन्थ है, इस ग्रन्थ में **15 अधिकरण** हैं, इसके प्रथम अधिकरण का नाम **विनयाधिकारिक** है, विनयाधिकारिक अधिकरण में, **18 प्रकरण** हैं जो निम्न हैं–

1. विद्यासमुद्देशः **2.** वृद्धसंयोगः **3.** इन्द्रियजयः **4.** अमात्योत्पत्तिः **5.** मन्त्रिपुरोहितोत्पत्तिः **6.** उपधाभिः शौचाशौचज्ञानममात्यानाम् **7.** गूढपुरुषोत्पत्तिः **8.** गूढपुरुषप्रणिधिः **9.** स्वविषये कृत्याकृत्यपक्षरक्षणम् **10.** परविषये कृत्याकृत्यपक्षोपग्रहः **11.** मन्त्राधिकारः **12.** दूतप्रणिधिः **13.** राजपुत्ररक्षणम् **14.** अवरुद्धवृत्तम् **15.** अवरुद्धे च वृत्तिः **16.** राजप्रणिधिः **17.** निशान्तप्रणिधिः **18.** आत्मरक्षितकम्

इसके प्रथम 'विद्यासमुद्देशः' प्रकरण के 'त्रयी स्थापना' के क्रम में सभी वर्णों तथा आश्रमों के कर्त्तव्याकर्त्तव्य को बताया गया है जिसके तृतीय क्रम में- ''सर्वेषामहिंसा सत्यं शौचमनसूयाऽऽनृशंस्यं क्षमा च'' इस प्रकार का वर्णन आया है, जिसका तात्पर्य है कि, प्रत्येक वर्ण और आश्रम का धर्म है कि वह किसी भी प्रकार की हिंसा न करे, सत्य बोलें, पवित्र बना रहे, किसी से ईर्ष्या न करे दयावान् और क्षमा शील बना रहे।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है **कि विकल्प (A) सही है।**

स्रोत- कौटिलीय अर्थशास्त्र– वाचस्पति गैरोला, पेज-11

9. ''हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥'' अस्मिन् मन्त्रे को ऋषिः किं छन्दः?

(a) हिरण्यगर्भऋषिः (b) जगती छन्दः

(c) प्रजापतिऋषिः (d) त्रिष्टुप् छन्दः

अधस्तनेषु समुचितं विकल्पं चिनुत-

(A) (a) एवम् (c) (B) (a) एवम् (d)

(C) (c) एवम् (d) (D) (b) एवम् (c)

व्याख्या- वैदिक वाङ्मय में सर्वप्रथम नाम ऋग्वेद का आता है, ऋग्वेद में विभिन्न प्रकार के देवताओं की स्तुतियाँ सूक्तों में की गई हैं, इसी क्रम में सूक्तों का विभाजन भी अलग है, जिनमें कुछ स्तुतिपरक, कुछ संवाद-सूक्त, कुछ दार्शनिक सूक्त इस प्रकार के हैं।

* इन्हीं सूक्तों में हिरण्यगर्भ सूक्त भी आता है, इसका क्रम (10.121) है, अर्थात् दशममण्डल का 121 वाँ सूक्त, इस सूक्त में 10 मन्त्र हैं, तथा ऋषि-हिरण्यगर्भ, तथा देवता 'क' संज्ञक प्रजापति, छन्द-त्रिष्टुप् है।

* इसके प्रत्येक मन्त्र के (10वें मन्त्र को छोड़कर) चतुर्थ पाद में 'कस्मै देवाय हविषा विधेम' आया है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि हिरण्यगर्भ सूक्त के ऋषि हिरण्यगर्भ और छन्द त्रिष्टुप् है। **अतः विकल्प (B)सही है।**

स्रोत- वैदिक वाङ्मय परीक्षा दृष्टि- सर्वज्ञभूषण, पेज-168

10. पाश्चात्त्यविचारकस्य अरस्तूमहोदयस्य काव्यशास्त्रीयौ ग्रन्थौ स्तः?

(a) पेरिइप्सुस (On the sublime)

(b) भाषणशास्त्रम् (Rhetoric)

(c) सौन्दर्यशास्त्रम् (Aesthetica)

(d) काव्यशास्त्रम् (Poetics)

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत-

(A) (a) एवम् (b) (B) (b) एवम् (c)

(C) (b) एवम् (d) (D) (c) एवम् (d)

व्याख्या- पाश्चात्त्य काव्यशास्त्रीय विचारकों में अरस्तू, क्रोञ्चे, लोंगिनुस इत्यादियों का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। अरस्तू का जन्म मकदूनिया में **384 ई.पू.** में हुआ था, इनके पिता राजदरबार में चिकित्सक थे, उनकी शिक्षा एथेन्स में हुई थी। वे जिस अकादमी में शिक्षा ग्रहण किये जिसका निर्माण प्लेटो ने किया था, अरस्तू का काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ **पेरिपोइएतिकेस** है, इसी को आङ्लभाषा में 'ऑनपोएटिक्स' कहा जाता है।

इनके काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ सौन्दर्यशास्त्र (AESTEETICA)तथा काव्यशास्त्र (POETICS) भी है।

ग्रन्थ **'पेरिइप्सुस'** है जिसे 'भाषणशास्त्र' भी कहते हैं। लोंगिनुस का 'उदात्तवाद' प्रसिद्ध है, तथा अरस्तू के अनुकरण तथा विवेचन सिद्धान्त, इसी क्रम में **बेनेदेत्तो क्रोचे** का 'अभिव्यञ्जनावाद' भी आता है। इनका ग्रन्थ **'इस्थेटिक'** इटालवी भाषा में प्रकाशित हुआ।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण के अनुसार **विकल्प (D) सही है।**

स्रोत- भारतीय व पाश्चात्त्य काव्यशास्त्र तथा हिन्दी आलोचना-डाँ. रामचन्द्र तिवारी, पेज-98,114,134

11. कथन इयमधोलिखितम्। एवम् (A) इति अभिकथनम् अपरञ्च (R) इति कारणम्।

अभिकथनम् (A) मन्त्रिस्त्रिभिश्चतुर्भिर्वा सह मन्त्रयेत

कारणम् (R)- एकेनार्थकृच्छ्रेषु निश्चयं नाधिगच्छेत्। द्वाभ्यां मन्त्रयमाणो- द्वाभ्यां संहताभ्यामवगृह्यते विगृहीताभ्यां विनाश्यते। ततः परेषु कृच्छ्रेणार्थनिश्चयो गम्यते।

उपर्युक्तम् अभिकथनम्- कारणमाश्रित्य समुचितं विकल्पं चिनुत–

(A) A तथा R उभावपि असत्यम्

(B) A तथा R उभावपि सत्यम् इति उचितं कारणमस्ति A इत्यस्य

(C) A तथा R उभावपि सत्यं किन्तु R इति उचितं कारणं नास्ति A इत्यस्य

(D) A सत्यम् R असत्यम्

व्याख्या- कौटिल्य अर्थशास्त्र में मन्त्राधिकार के अन्तर्गत आचार्य कौटिल्य पिशुन (नारद) आदि के द्वारा बताई गई युक्तियों के अनुसार मन्त्र व्यवस्थित नहीं हो सकता उस पर अपनी असहमति प्रकट करते हुए कहते हैं कि तीन या चार मन्त्रियों को साथ बैठाकर राजा को मन्त्रणा करनी चाहिए। क्योंकि एक ही मन्त्री से सलाह करता हुआ राजा किसी कठिनतम कार्य के अड़ जाने पर उचित समाधान नहीं कर पाता और मन्त्री प्रतिद्वन्दी के रूप में मनमाना करने लगता है। दो मन्त्रियों के साथ बैठाकर सलाह करता है तो असम्भव नहीं कि वे दोनों मिलकर राजा को अपने वश में कर ले अथवा दोनों लड़ने लग जायें तो सारी मन्त्रणा ही धूल में मिल जायेगी। यदि चार से अधिक मन्त्री हो जायें तो कार्य का निश्चय करना कठिन हो जाता है और उस दशा में मन्त्र की सुरक्षा में भी सन्देह हो जाता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त कथन A और R दोनों कथन सत्य है और A, R का उचित कारण है। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- कौटिलीय अर्थशास्त्र- वाचस्पति गैरोला, पेज-16

12. भाषावैज्ञानिकैः भाषाः कतिधा वर्गीकृताः?

(A) चतुर्धा (B) त्रिधा

(C) द्विधा (D) पञ्चधा

व्याख्या- भाषा- भाषा भावाभिव्यक्ति और विचार विनिमय का सांकेतिक साधन है, संसार में तीन हजार से ज्यादा भाषायें बोली जाती हैं, जिनका स्वरूप, वर्ण, लिपि, शैली, एक दूसरे से सर्वथा भिन्न है, इसीलिए भाषावैज्ञानिकों ने इनको एक स्थान पर लाकर रख दिया जहाँ से पृथक्-पृथक् स्वरूप और स्थान तथा देश के हिसाब से उनका वर्गीकरण किया जाता है।

भाषाओं का भाषा वैज्ञानिकों ने द्विधा वर्गीकरण किया है-

1. आकृतिमूलक वर्गीकरण
2. पारिवारिक वर्गीकरण

इनके आधार पर ही आकृतिमूलक से अयोगात्मक, योगात्मक श्लिष्टादि भेद होते हैं।

तथा पारिवारिक से भारोपीय, यूरेशिया सामी-हामी इत्यादि।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से ज्ञात होता है **कि विकल्प (C) सही है।**

स्रोत- भाषाविज्ञान- भोलानाथ तिवारी, पेज-94,95

13. 'चत्वारि शृङ्गा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्तहस्तासो अस्य' इत्यत्र 'द्वे शीर्षे' इत्यनेन महाभाष्ये पतञ्जलिना किं गृहीतम् ?

(a) नित्यशब्दः (b) शिरः स्थानम्

(c) कार्यशब्दः (d) कण्ठस्थानम्

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत-

(A) (a) एवम् (c) (B) (a) एवम् (b)

(C) (a) एवम् (d) (D) (b) एवम् (d)

व्याख्या- यह मन्त्र ऋग्वेद के अग्निसूक्त का है, इस मन्त्र का आश्रय लेकर महाभाष्यकार 'पतञ्जलि' ने व्याकरणशास्त्र रूपी वृषभ का विवेचन किया है, इसका प्रतिपादन महर्षि पतञ्जलि' ने व्याकरण के गौणप्रयोजनों के क्रम में जो कि तेरह हैं, उसके अन्तर्गत **'चत्वारि'** प्रयोजन में किया है जिसका तात्पर्य है कि–

* इस वृषभ के चार सीगें हैं- जो कि नाम, आख्यात, उपसर्ग और निपात रूपी हैं।
* तीन पैर हैं जो कि- कालवाची भूत, भविष्य, वर्तमान रूपी है।
* दो सिर हैं- जो कि- दो प्रकार के शब्द नित्य और कार्य (अनित्य) रूपी हैं।
* सात हाँथ हैं जो कि- सात विभक्ति रूपी हैं।
* यह वृषभ तीन प्रकार से बँधा है जो कि- उर, कण्ठ, और सिर रूपी हैं। और वर्षा के कारण वृषभ कहा जाता है, तथा बार-बार शब्द करता है।

निष्कर्ष- उपर्युक्त विवरण से ज्ञात होता है **कि विकल्प (A) सही है।**

स्रोत- व्याकरण महाभाष्यम्-डॉ. जयशंकर लाल त्रिपाठी, पेज- 46

14. न्यायसिद्धान्तमुक्तावलीदिशा व्याप्तेर्लक्षणमस्ति-

(a) साध्यवदन्यस्मिन्नसम्बन्धः

(b) व्याप्यस्य पक्षवृत्तित्वधीः

(c) हेतुमन्निष्ठविरहाप्रतियोगिना साध्येन हेतोरैकाधिकरण्यम्

(d) सिषाधयिषाविरहविशिष्टासिद्ध्यभावः

(A) (a) एवम् (c) (B) (b) एवम् (d)

(C) (a) एवम् (d) (D) (c) एवम् (d)

व्याख्या- न्यायसिद्धान्तमुक्तावली न्यायशास्त्र (न्यायदर्शन) का ग्रन्थ है। इसे कारिकावली भी कहते हैं, इस ग्रन्थ के अनुमान खण्ड में विभिन्न तत्त्वों का लक्षण प्रतिपादित है **जैसे-** व्याप्ति, हेतु, आदि। इस ग्रन्थ के रचयिता **श्री विश्वनाथपञ्चानन** हैं।

इस ग्रन्थ में अनुमानखण्ड में व्याप्ति के दो लक्षण विद्यमान है- जिनमें पहला पूर्वपक्ष द्वारा निर्धारित है-

1. व्याप्ति साध्यवदन्यस्मिन्नसम्बन्ध उदाहृतः (पूर्वपक्ष व्याप्ति)

2. अथवा हेतुमन्निष्ठविरहाप्रतियोगिना साध्येनहेतोरैकाधिकरण्यं व्याप्तिरुच्यते। (सिद्धान्तव्याप्ति)

प्रश्न में वर्णित- 'व्याप्यस्य पक्ष वृत्तित्वधीः परामर्श उच्यते' यह लक्षण परामर्श का है, तथा **'सिषाधयिषाविरहविशिष्टसिद्ध्यभावः'** यह पक्षधर्मता का लक्षण है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से ज्ञात होता है **कि विकल्प (A) सही है।**

स्रोत- न्यायसिद्धान्तमुक्तावली-लोकमणिदाहाल, पेज 10,15

15. मनुमते वेदप्रदानाचार्यं परिचक्षते–

(a) गुरुम् **(b)** उपाध्यायम्

(c) पितरम् **(d)** गुरुतरम्

व्याख्या- (A) गुरु की परिभाषा मनुस्मृति के द्वितीयाऽध्याय के **142वें** श्लोक में-

निषेदकादीनि कर्माणि यः करोति यथाविधि।
सम्भावयति चान्नेन स विप्रो गुरुरुच्यते ॥

(B) उपाध्याय की परिभाषा मनुस्मृति के द्वितीयाऽध्याय के **141वें** श्लोक में–

एकदेशं तु वेदस्य वेदाङ्गान्यपि वा पुनः ।
योऽध्यापयति वृत्त्यर्थमुपाध्यायः स उच्यते ॥

(C) मनुस्मृति के द्वितीयाध्याय के **171वें** श्लोक में कहा गया है– वेद का दान करने से आचार्य को पिता कहा गया है।

वेदप्रदानादाचार्यं पितरं परिचक्षते ।
न ह्यस्मिन् युज्यते कर्म
किञ्चिदा मौञ्जिबन्धनात् ॥ (2/171)

(D) मनुस्मृति में गुरुतरं (उत्कर्ष-गौरव) के विषय में कहा गया है–

उपाध्यायान्दशाचार्य आचार्याणां शतं पिता ।
सहस्रं तु पितृन्माता गौरवेणातिरिच्यते॥ (2/145)

स्पष्टीकरण- उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि **'पितरम्'** सही है। **अतः विकल्प (C) सही है।**

स्रोत- मनुस्मृति (2/171)

16. रणेषु तस्य प्रहिताः प्रचेतसा सरोषहुंकारपराङ्मुखीकृताः। प्रहर्तुरेवोरगराजरज्जवो जवेन कण्ठं सभयाः प्रपेदिरे॥ शिशुपालवधस्य श्लोकेऽस्मिन् कस्य दिक्पालस्य वर्णनं कृतम्?

(A) रावणस्य (B) वरुणस्य

(C) यमस्य (D) इन्द्रस्य

व्याख्या- 'शिशुपालवध' एक महाकाव्य है, जिसकी गणना बृहत्त्रयी में की जाती है, इसका उपजीव्य महाभारत का सभापर्व है, शिशुपालवध के कवि **'श्री माघ'** हैं, इस महाकाव्य में **20 सर्ग** हैं, इसके प्रथम सर्ग में 75 श्लोक हैं। प्रथम सर्ग में नारद का आगमन होता है, और भगवान् श्री कृष्ण उनकी स्तुति करते हैं, और आने का कारण पूछते हैं, तब देवर्षि नारद शिशुपाल के पूर्व जन्मों की कथा दिक्पाल बताते हैं, उसी प्रसङ्ग में वरुण का उल्लेख करते हैं, जो कि रावण के प्रताप और बल से पराजित हो चुके हैं- यथा-

रणेषु तस्य प्रहिताः प्रचेतसा सरोषहुङ्कारपराङ्मुखीकृताः।
प्रहर्तुरेवोरगराजरज्जवो जवेन कण्ठं सभयाः प्रपेदिरे॥1/56

इस श्लोक में वरुण का वर्णन है कि-

युद्ध के अवसर में वरुण के नागपाश फेंकने पर रावण के हुङ्कार से भयभीत हो वह वरुण के ही गले में आकर लिपट गया।

स्पष्टीकरण- इससे ज्ञात होता है **कि विकल्प (B) सही है।**

स्रोत- शिशुपालवधम् (1/56)

17. सम्पूर्णम् इन्द्रसूक्तम् अधोलिखितेषु कतमेन छन्दसा ग्रथितमस्ति?

(A) जगती -छन्दसा (B) अनुष्टुप् -छन्दसा

(C) त्रिष्टुप् -छन्दसा (D) गायत्री -छन्दसा

व्याख्या- * ऋग्वेद में सूक्तों का संग्रह है, सब मिलाकर **1028 सूक्त** हैं, जिनमें **11 खिल सूक्त** हैं, ये सभी सूक्त

विभिन्न प्रकार के हैं, जिनमें प्रमुखता स्तुति परक सूक्तों की है, ऋग्वेद में सर्वाधिक सूक्त इन्द्र के प्राप्त होते हैं, जिनकी संख्या 250 है।

* ऋग्वेद पुरुष सूक्त के अनुसार इन्द्र की उपत्ति विराट् पुरुष के मुख से हुई है- 'मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च'।

* इन्द्रसूक्त में त्रिष्टुप् छन्द, स्वर धैवत, तथा ऋषि गृत्समद हैं, इसके देवता स्वयं इन्द्र हैं।

स्पष्टीकरण- इस विवरण से ज्ञात होता है **कि विकल्प (C) सही है।**

स्रोत- वैदिक वाङ्मय– सर्वज्ञभूषण पेज 156,133

18. बर्नेल-महोदयानुसारं ब्राह्मीलिपेरक्षराणामुत्पत्तिः सञ्जाता?

(A) हिमिअरेटिक- अक्षरेभ्यः
(B) अरमइक- अक्षरेभ्यः
(C) सिलोन - अक्षरेभ्यः
(D) मिसर - अक्षरेभ्यः

व्याख्या– ब्राह्मीलिपि का परिचय– ब्राह्मीलिपि को वर्तमान समय में हमारे समक्ष प्रकट करने का श्रेय अंग्रेज अधिकारी जेम्स प्रिंसेप (1837 ई.) को जाता है। उन्होंने ही सर्वप्रथम साँची के स्तूप पर अङ्कित ब्राह्मी अक्षरों में **दानं** शब्द को पढ़ा तथा इसी शब्द के आधार पर जेम्स प्रिंसेप ने ब्राह्मी लिपि की वर्णमाला तैयार की। ब्राह्मी लिपि की उत्पत्ति को लेकर अनेक विद्वानों में मतभेद है। कोई विद्वान् इसे भारतीय उत्पत्ति कहते हैं तो कोई विद्वान् विदेशी लिपि सिद्ध करने का प्रयास करते हैं।

(1) स्वदेशी उत्पत्ति का सिद्धान्त (2) विदेशी उत्पत्ति का सिद्धान्त

विदेशी उत्पत्ति का सिद्धान्त अपने तर्कों के माध्यम से ब्राह्मी को विदेशी लिपि के समन्वय से उत्पन्न मानता है।

(1) यूनानी उत्पत्ति (2) सेमेटिक मूल से उत्पत्ति
(3) फोनेशियन मूल से उत्पत्ति

(1) यूनानी उत्पत्ति का सिद्धान्त– कुछ यूरोपीय विद्वानों का विचार है कि ब्राह्मी की उत्पत्ति यूनानी वर्णों से हुई है। मूलर, सेनार्ट,प्रिंसेप और विल्सन ने अपने तर्कों के माध्यम से ब्राह्मी को विदेशी लिपि स्वीकार करने पर तर्क दिया है।

(2) सेमेटिक मूल– सन् 1806 ई. में सर विलियम जोन्स ने ब्राह्मी की उत्पत्ति के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया उन्होंने ब्राह्मी लिपि को सेमेटिक मूल से विकसित लिपि माना, किन्तु सेमेटिक मूल को लेकर विद्वानों के विचारों में असमानताएँ हैं।

(1) उत्तरी सेमेटिक मूल– इस मत को सर्वप्रथम व्यक्त करने का श्रेय मुख्यतः डॉ. बूलर को जाता है। **बर्नेल का मत है कि फिनिशियन से अरमाइक लिपि तथा इससे ब्राह्मी लिपि का जन्म हुआ।**

(2) दक्षिण सेमेटिक – टेलर, डीक और कैनन महोदय ब्राह्मी लिपि की उत्पत्ति दक्षिण सेमेटिक मूल से मानते हैं।

(3) फोनेशियन मूल से उत्पत्ति– ब्राह्मी लिपि तथा फोनेशियन वर्णों के छ वर्णों में साम्यता द्रष्टव्य है जैसे ट, थ, ठ, झ, क, और ग वर्णों की समानता है।

स्पष्टीकरण– उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि बर्नेल महोदयानुसार ब्राह्मीलिपि अक्षरों की उत्पत्ति अरमाइक लिपि के अक्षरों से हुई है। अतः विकल्प **(B)** सही है।

19. अभिकथनम् (A) - तिब्बतीभाषा योगात्मिका भाषा।
कारणम् (R) - प्रकृतिप्रत्यययोः संयोगात्
उपर्युक्तम् अभिकथनं (A) तथा कारणं (R) चाश्रित्य समुचितं विकल्पं चिनुत-

(A) अभिकथनम् (A) कारणम् (R) उभयम् असत्यम्
(B) अभिकथनम् (A) कारणम् (R) उभयं सत्यम्
(C) अभिकथनम् (A) सत्यम् तथा कारणम् (R) असत्यम्
(D) अभिकथनम् (A) असत्यम् तथा कारणम् (R) सत्यम्

व्याख्या- भाषाविज्ञान में भाषाओं का वर्गीकरण **2 प्रकार** का है, **1.** आकृतिमूलक वर्गीकरण **2.** पारिवारिक वर्गीकरण

इनमें प्रथम जो आकृतिमूलक वर्गीकरण है, उसके वस्तुतः कई भेद हैं, लेकिन उनमें भी अयोगात्मक तथा योगात्मक प्रमुख हैं, जैसा कि नाम से ही ज्ञात होता है, आकृतिमूलक-अर्थात् जिनमें आकृति की समानता हो।

अयोगात्मक भाषाओं में चीनी, तिब्बती इत्यादि भाषाऐं आती हैं, और योगात्मक भाषाओं में संस्कृत, हिन्दी आदि जैसा कि संस्कृत भाषा में प्रकृति, प्रत्यय उपसर्ग इत्यादि का योग होने से अर्थ में परिवर्तन हो जाता है, तथा उसी क्रम में चीनी, तिब्बती आदि में इनका कोई योग नहीं होता, इसलिए ये अयोगात्मक भाषायें हैं। तथा संस्कृत, हिन्दी आदि भाषाओं में इनका योग होता है, और अर्थ परिवर्तन हो जाता है इसलिये ये योगात्मक भाषायें हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण के अनुसार **विकल्प (A) सही है।**

स्रोत- भाषाविज्ञान-भोलानाथ तिवारी, पेज-96,97

20. बृहच्छब्देन्दुशेखरः इति ग्रन्थस्य कर्ता?

(a) कैय्यटः **(b)** नागेशभट्टः
(c) चिन्तामणिः **(d)** वामनः

व्याख्या- • कैयट कृत- महाभाष्यप्रदीप के प्रत्येक अध्याय के अन्त में उपलब्ध वाक्य के अनुसार कैयट के पिता का नाम **'जैयट उपाध्याय'** था।

• **नागेश भट्ट-** का नागेश्वर और नागोजी नाम भी प्रसिद्ध है।

• नागेश्वरभट्ट ने महाभाष्यप्रदीप पर **'उद्योत'** अपर नाम विवरण नामक प्रौढव्याख्या लिखकर प्रदीप की भावना की पूर्ण अभिव्यक्ति के द्वारा जनमानस में **'महाभाष्य'** के प्रति अभिनव अभिरुचि उत्पन्न करने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया।

• इनके लघुशब्देन्दुशेखर, बृहच्छब्देन्दुशेखर, परिभाषेन्दुशेखर, लघुमञ्जूषा, परमलघुमञ्जूषा, स्फोटवाद, महाभाष्यप्रत्याख्यानसंग्रह सात व्याकरण ग्रन्थ हैं।

चिन्तामणि- चिन्तामणि ने 'महाभाष्यप्रदीप' की एक संक्षिप्त व्याख्या महाभाष्यकैयटप्रकाश नाम से लिखी है।

वामन- काशिकावृत्ति के रचयिता **जयादित्य वामन** हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट होता है कि बृहच्छब्देन्दुशेखर ग्रन्थ के कर्ता नागेशभट्ट जी हैं। **अतः विकल्प (B) सही है।**

स्रोत- संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास- युधिष्ठिर मीमांसक, पेज 146,159,170

21. योगदर्शनानुसारेण अधोऽङ्कितेषु कस्य ग्रहणं क्रियायोगेऽस्ति?

(A) शौचस्य (B) प्राणायामस्य

(C) ध्यानस्य (D) स्वाध्यायस्य

व्याख्या- योगदर्शन के प्रवर्तक महर्षि पतञ्जलि माने जाते हैं, इनके द्वारा प्रणीत ग्रन्थ योगसूत्र है, जिसमें चार पाद हैं- समाधिपाद, साधनपाद, विभूतिपाद, कैवल्यपाद।

* तपः स्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि क्रियायोगः ।।1।।
* तप, स्वाध्याय, ईश्वरप्रणिधान ये तीनों क्रियायोग हैं।
  यमनियमाऽऽसनप्राणायामप्रत्याहारधारणाध्यान-
  समाधयोऽष्टावङ्गानि– ये आठ योग के अङ्ग हैं।

यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि ये आठ योग के अङ्ग हैं।

यम के अन्तर्गत-अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह आते हैं। अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहाः यमाः । (2/30)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि स्वाध्याय क्रियायोग के अन्तर्गत आता है। **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत- पातञ्जलयोगसूत्र (2/1)

22. महाभारतस्य वनपर्वणि के उपाख्याने स्तः?

(a) शकुन्तलोपाख्यानम् (b) मत्स्योपाख्यानम्

(c) शिशुपालोपाख्यानम् (d) रामोपाख्यानम्

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत-

(A) (a) एवम् (b) **(B)** (c) एवम् (d)

(C) (b) एवम् (d) **(D)** (d) एवम् (a)

व्याख्या- (a) शकुन्तलोपाख्यानम् - महाभारत के आदि पर्व में दुष्यन्त और शकुन्तला की मनोहरकथा वर्णित है।

(b) मत्स्योपाख्यानम् - महाभारत वनपर्व में मत्स्यावतार की कथा है।

(c) शिशुपालोपाख्यानम् - महाभारत सभापर्व में शिशुपाल के वध की कथा।

(d) रामोपाख्यानम् - वनपर्व में वाल्मीकि रामायण की कथा संक्षेप में वर्णित है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि महाभारत के वनपर्व में मत्स्योपाख्यान तथा रामोपाख्यान है। **अतः विकल्प 'C' उत्तर है।**

स्रोत- संस्कृतसाहित्य का इतिहास-राकेश कुमार जैन, पेज 74

23. सर्वप्राचीनरचनायाः प्राथम्येन कालक्रमानुसारमुचितमुत्तरं चिनुत-

(a) हर्षचरितम् (b) नैषधीयचरितम्

(c) रघुवंशम् (d) नलचम्पूः

अत्र समुचितं क्रमं चिनुत-

(A) (a) (c) (b) (d)

(B) (c) (a) (d) (b)

(C) (b) (a) (d) (c)

(D) (d) (b) (c) (a)

व्याख्या-

लेखक	रचना	अनुमानित समय
कालिदास	रघुवंशमहाकाव्यम्	ई.पू. प्रथमशताब्दी
बाणभट्ट	हर्षचरितम्, कादम्बरी	सातवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध
त्रिविक्रमभट्ट	नलचम्पू, मदालसाचम्पू	दसवी शताब्दी का पूर्वार्द्ध
श्रीहर्ष	नैषधीयचरितम्	बारहवी शताब्दी का उत्तरार्द्ध

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि पहले रघुवंश उसके बाद हर्षचरितम्, तदनन्तर, नलचम्पू फिर नैषधीयचरितम् कालक्रम के अनुसार विरचित हुए। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- संस्कृतगङ्गा साहित्यम्-सर्वज्ञभूषण, पेज 291-292

24. नैषधीयचरिते कति सर्गाः सन्ति?

(A) एकोनविंशतिः **(B)** विंशतिः

(C) एकविंशतिः **(D)** द्वाविंशतिः

व्याख्या-

महाकाव्य	सर्ग	लेखक
नैषधीयचरितम्	22	श्रीहर्ष
किरातार्जुनीयम्	18	भारवि
शिशुपालवधम्	20	माघ
रघुवंशम्	19	कालिदास

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि नैषधीयचरितम् में 22 सर्ग हैं तथा इसके रचयिता श्रीहर्ष हैं एवं नायक राजा नल हैं तथा नायिका दमयन्ती है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- संस्कृतगंगा साहित्यम्-सर्वज्ञभूषण, पेज 279

25. अधोऽङ्कितेषु कोऽर्थापत्तिप्रमाणं स्वीकरोति?

(A) चार्वाकदर्शनम् **(B)** जैनदर्शनम्
(C) योगदर्शनम् **(D)** मीमांसादर्शनम्

व्याख्या-

दर्शन		प्रमाण
चार्वाकदर्शनम्	–	प्रत्यक्ष
जैनदर्शनम्	–	प्रत्यक्ष, परोक्ष
योगदर्शनम्	–	प्रत्यक्ष, अनुमान, आगम(शब्द)
मीमांसा (भाट्टमत)	–	प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, अर्थापत्ति अनुपलब्धि
मीमांसक (प्रभाकर)	–	प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, अर्थापत्ति

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि मीमांसा दर्शन अर्थापत्ति प्रमाण को स्वीकार करता है। **अतः विकल्प (D) सही है।**

स्रोत- भारतीयदर्शनसार - सर्वज्ञभूषण, पेज 85

26. प्रथमां सूचीं द्वितीयया सह मेलयतु-

प्रथमा सूची	द्वितीया सूची
(a) वाव्रज्यते	(i) नामधातु–क्रियापदम्
(b) अजिज्ञपत्	(ii) यङ्लुगन्तपदम्
(c) स्वति	(iii) यङन्तक्रियापदम्
(d) बोभवीति	(iv) सन्नन्त-क्रियापदम्

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत-

(A) (a)-(iii), (b)-(iv), (c)-(i), (d)-(ii)
(B) (a)-(ii), (b)-(iii), (c)-(iv), (d)-(i)
(C) (a)-(i), (b)-(ii), (c)-(iii), (d)-(iv)
(D) (a)-(iv), (b)-(iii), (c)-(ii), (d)-(i)

व्याख्या-

सन्नन्त प्रक्रिया

सूत्र- धातोः कर्मणः समानकर्तृकादिच्छायां वा-

अर्थ- जो इच्छार्थक इष् धातु का कर्म हो और इष्-धातु के साथ। समानकर्तृक भी हो उस धातु से इच्छा अर्थ में विकल्प से सन् प्रत्यय होता है।

यथा- पठितुमिच्छति पिपठिषति। अजिज्ञपत् ।

यङन्तप्रक्रिया

सूत्र- धातोरेकाचो हलादेः क्रियासमभिहारे यङ्

अर्थ- क्रिया का बार-बार होना अथवा अतिशय होना अर्थ द्योत्य होने पर एक अच् वाले हलादि धातुओं से परे यङ् प्रत्यय होता है।

यथा- पुनः पुनः अतिशयेन वा भवति बोभूयते। वाव्रज्यते।

यङ्लुक्प्रक्रिया

सूत्र- यङोऽचि च

अर्थ- अच् प्रत्यय के परे होने पर यङ् का लुक् हो जाता है, चकारात् अच् के बिना भी कहीं-कहीं इसका लुक् होता है।

यथा- पुनः-पुनः अतिशयेन भवति बोभवीति, बोभोति

नामधातुप्रक्रिया

सूत्र- सुप आत्मनः क्यच्

अर्थ- इच्छार्थक इष् धातु के कर्म तथा इच्छुक के सम्बन्धी सुबन्त से चाहना अर्थ में विकल्प से क्यच् प्रत्यय होता है।

यथा- आत्मनः पुत्रमिच्छति पुत्रीयति।

वार्तिक- सर्वप्रातिपदिकेभ्यः क्विब्वा वक्तव्यः।

अर्थ- उपमान रूप सभी प्रातिपदिकों से आचार अर्थ में विकल्प से क्विप् प्रत्यय होता है।

यथा- स्व इवाचरति स्वति । कृष्ण इवाचरति कृष्णाति ।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि वाव्रज्यते यङन्तक्रियापद है, अजिज्ञपत् सन्नन्त क्रियापद है, स्वति नामधातुक्रियापद है तथा बोभवीति यङ्लुगन्तक्रियापद है। **अतः विकल्प (A) सही है।**

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी-गोविन्दप्रसाद शर्मा, पेज 711, 699, 726, 718

27. हर्षस्य कृती इमे स्तः-

(a) रत्नावली **(b)** नैषधीयचरितम्
(c) कर्पूरमञ्जरी **(d)** प्रियदर्शिका

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत-

(A) (a) एवम् (d) **(B)** (b) एवम् (c)
(C) (c) एवम् (d) **(D)** (b) एवम् (d)

व्याख्या-

लेखक	रचना
हर्षवर्धन (हर्ष) –	प्रियदर्शिका, रत्नावली
राजशेखर –	कर्पूरमञ्जरी, बालभारत
श्रीहर्ष –	नैषधीयचरितम्
भवभूति –	महावीरचरितम्, उत्तररामचरितम्, मालतीमाधवम्
अश्वघोष –	बुद्धचरितम्, सौन्दरानन्द

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि रत्नावली, प्रियदर्शिका हर्षवर्धन की कृतियाँ हैं। **अतः विकल्प 'A' सही उत्तर है।**

स्रोत- संस्कृतगंगा साहित्यम्- सर्वज्ञभूषण, पेज 279

28. अधस्तनेषु पतञ्जलिप्रतिपादितेषु व्याकरण-प्रयोजनेषु नास्ति-

(A) रक्षार्थम् **(B)** ऊहः
(C) आगमः **(D)** सन्देहार्थम्

व्याख्या- महाभाष्य पतञ्जलि द्वारा विरचित है, इसमें 84 आह्निक हैं। प्रथम आह्निक पस्पशाह्निक नाम से प्रसिद्ध है। भाष्यकार ने पाँच प्रयोजन बताये हैं- रक्षोहागमलघ्वसन्देहाः प्रयोजनम्

* रक्षा, ऊह, आगम, लघु और असन्देह ये व्याकरणाध्ययन के पाँच मुख्य प्रयोजन हैं।

* व्याकरणाध्ययन के 13 आनुषङ्गिक (गौण) प्रयोजन हैं जो निम्न हैं- (1) तेऽसुराः (2) दुष्टः शब्दः (3) यदधीतम् (4) यस्तु प्रयुङ्क्ते (5) अविद्वांसः (6) विभक्तिं कुर्वन्ति (7) यो वा इमाम् (8) चत्वारि (9) उत त्वः (10) सक्तुमिव (11) सारस्वतीम् (12) दशम्यां पुत्रस्य (13) सुदेवो असि वरुण इति।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि रक्षार्थम्, ऊहः और आगमः व्याकरण अध्ययन के मुख्य प्रयोजन के अन्तर्गत आते हैं और सन्देहार्थम् व्याकरण प्रयोजन के अन्तर्गत नहीं आता है।

अतः विकल्प 'D' सही उत्तर है।

स्रोत- व्याकरणमहाभाष्यम्-जयशङ्कर लाल त्रिपाठी, भू., पेज-10,29

29. योगसूत्रानुसारेण लिखित अधोऽङ्कितेषु कयोः द्वयोः समुचितः सम्बन्धोऽस्ति?

(a) अनुमानप्रमाणम् **(b) यमाः**
(c) चित्तभूमिः **(d) चित्तवृत्तिः**

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत-

(A) (a) एवम् (c) **(B)** (a) एवम् (d)
(C) (c) एवम् (d) **(D)** (b) एवम् (d)

व्याख्या- *योगदर्शन के प्रणेता महर्षि पतञ्जलि हैं।

योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः (1/2) योग का लक्षण है-

* योग में चित्त की पाँच भूमियों तथा पाँच चित्तवृत्तियों का उल्लेख प्राप्त होता है-

पञ्चचित्तभूमियाँ - क्षिप्त, मूढ, विक्षिप्त, एकाग्र, निरुद्ध।

पञ्चचित्तवृत्तियाँ प्रमाणविपर्ययविकल्पनिद्रास्मृतयः। (1/6) अर्थात् प्रमाण, विपर्यय, विकल्प, निद्रा और स्मृति ये चित्त की पाँच वृत्तियाँ होती हैं।

प्रत्यक्षानुमानागमाः प्रमाणानि (1/7) प्रत्यक्ष, अनुमान, आगम (शब्द) ये तीन प्रमाण योगदर्शन में स्वीकृत हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि प्रमाण चित्तवृत्ति के अन्तर्गत अनुमान प्रमाण स्वीकृत है। **अतः विकल्प 'B' सही उत्तर है।**

स्रोत- पातञ्जलयोगदर्शनम्-सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पेज-06

30. कस्य मतानुसारं फिनिशिअन- लिपेः 22 अक्षरेभ्यः ब्राह्मीलिपेः 22 अक्षराणामुत्पत्तिरभवत् -

(A) बूलरमहोदयस्य **(B)** आइजकटेलरमहोदयस्य
(C) लेनोर्मंट-महोदयस्य **(D)** बर्नेल-महोदयस्य

व्याख्या- ➢ ब्राह्मी लिपि के 22 अक्षरों की उत्पत्ति के सम्बन्ध में-

➢ बूलरमहोदय ने कहा है कि ब्राह्मी लिपि में प्रयुक्त 22 अक्षर उत्तरी सेमेटिक अक्षरों से बने हैं।

कुछ पुरातन फिनिशिअन अभिलेखों के अक्षरों से निर्मित हैं।

सेमेटिक लिपि मोटे रूप से तीन शाखाओं में बाँटी जा सकती है- उत्तरी सेमेटिक, दक्षिणी सेमेटिक फिनिशिअन।

इस प्रकार से फिनिशिअन भी सेमेटिक, लिपि का ही प्रभेद है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि फिनिशिअन लिपि के 22 अक्षरों से ही ब्राह्मी लिपि के 22 अक्षरों की उत्पत्ति हुई है।

अतः विकल्प 'A' सही है।

स्रोत-भारतीय पुरालेखों का अध्ययन-शिवस्वरूप सहाय,पेज– 16

31. अधोऽङ्कितेषु कयोर्द्वयोः समुचितं सम्बन्धोऽस्ति?

(a) सम्यग्दर्शनज्ञानचरित्राणि मोक्षमार्गः
(b) धम्मपदम्
(c) त्रिरत्नानि
(d) योगदर्शनम्

अधोऽङ्कितेषु समुचितं विकल्पं चिनुत-

(A) (b) एवम् (d) (B) (a) एवम् (c)
(C) (a) एवम् (b) (D) (a) एवम् (d)

व्याख्या- सम्यग्दर्शनज्ञानचरित्राणि मोक्षमार्गः

- जैनदर्शन के त्रिरत्न- सम्यक् दर्शन, सम्यक्ज्ञान और सम्यक्चरित्र ये मोक्ष प्राप्ति के मार्ग माने गये हैं।
- धम्मपदम् बौद्धदर्शन से सम्बन्धित है।
- योगदर्शनम् - योगदर्शन के प्रणेता महर्षि पतञ्जलि हैं। इनके द्वारा रचित ग्रन्थ का नाम योगसूत्र है। इसमें चार पाद हैं–

(1) समाधिपाद (2) साधनपाद (3) विभूतिपाद (4) कैवल्यपाद

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि जैनदर्शन के त्रिरत्न- सम्यक्दर्शन, सम्यक्ज्ञान और सम्यक्चरित्र मोक्षप्राप्ति के मार्ग माने गये हैं। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- भारतीयदर्शन - चन्द्रधर शर्मा, पेज 42

32. ''कर्षको वृत्तिक्षीणः प्रज्ञाशौचयुक्तः'' इति कौटिलीयमते कस्य वैशिष्ट्यमस्ति?

(A) वैदेहकस्य (B) तापसस्य
(C) गृहपतिकस्य (D) ब्रह्मचारिणः

व्याख्या- कौटिल्य प्रणीत अर्थशास्त्र में गुप्तचरों की व्याख्या से की गयी है–

• **वाणिजको वृत्तिक्षीणः प्रज्ञाशौचयुक्तोवैदेहकव्यञ्जनः।**
बुद्धिमान् पवित्र हृदय और गरीब व्यापारी के वेष में रहने वाले गुप्तचर को '**वैदेहक**' कहते हैं।

• **कर्षको वृत्तिक्षीणः प्रज्ञाशौचयुक्तो गृहपतिव्यञ्जनः।**
बुद्धिमान् पवित्र हृदय और गरीब किसान के वेष में रहने वाले गुप्तचर को '**गृहपतिक**' कहते हैं।

• **मुण्डो जटिलो वा वृत्तिकामस्तापसव्यञ्जनः।**
जीविका के लिए सिर मुँडाये या जटाधारण किये हुए राजा का कार्य करने वाला गुप्तचर ही तापस है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'कर्षको वृत्तिक्षीणः प्रज्ञाशौचयुक्तो गृहपतिकव्यञ्जनः' यह गृहपतिक गुप्तचर का लक्षण है। **अतः विकल्प 'C' सही उत्तर है।**

स्रोत- कौटिलीय अर्थशास्त्रम् - वाचस्पति गैरोला, पेज 30

33. 'उपाध्यायाद् अधीते' इत्यत्र अपादानसञ्ज्ञाविधायकः पाणिनेर्नियमः कः?

(A) जनिकर्तुः प्रकृतिः (B) भुवः प्रभवः
(C) पराजेरसोढः (D) आख्यातोपयोगे

व्याख्या- पाणिनि प्रणीत सूत्रों की सोदाहरण व्याख्या इस प्रकार है–

जनिकर्तुः प्रकृतिः- उत्पन्न होने वाले का हेतु अपादान संज्ञक होता है। जैसे- ब्रह्मणः प्रजाः प्रजायन्ते।

भुवः प्रभवः- प्रकट होने के कर्ता का मूल स्थल अपादान कारक होता है। जैसे- हिमवतः गङ्गा प्रभवति।

आख्यातोपयोगे- नियमपूर्वक विद्याध्ययन में पढ़ाने वाले वक्ता की अपादान संज्ञा होती है। जैसे- उपाध्यायादधीते।

पराजेरसोढः - 'परा' उपसर्ग पूर्वक जि धातु के प्रयोग में असह्य की अपादान संज्ञा होती है। जैसे-अध्ययनात् पराजयते।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'उपाध्यायाद् अधीते' यहाँ आख्यातोपयोगे इस सूत्र के द्वारा अपादान संज्ञा हुई है। **अतः विकल्प 'D' सही उत्तर है।**

स्रोत- कारकप्रकरणम् - बजरंगलाल शर्मा, पेज 57,60,61

34. अथवा कृतवाग्द्वारे वंशेऽस्मिन्पूर्वसूरिभिः।
मणौ वज्रसमुत्कीर्णे सूत्रस्येवास्ति मे गतिः॥
पद्येऽस्मिन् 'मे' इति पदं केन सम्बद्धम् ?

(A) माघेन (B) भारविणा
(C) कालिदासेन (D) श्रीहर्षेण

व्याख्या- उपर्युक्त श्लोक महाकवि कालिदास प्रणीत रघुवंशमहाकाव्यम् के प्रथमसर्ग का चौथा श्लोक है-

अथवा कृतवाग्द्वारे वंशेऽस्मिन्पूर्वसूरिभिः।
मणौ वज्रसमुत्कीर्णे सूत्रस्येवास्ति मे गतिः॥4॥

पूर्व में वर्तमान विद्वानों द्वारा वर्णन किये गये इस वंश में सूई से छेदे हुए मणि में सूत्र के समान मेरी गति है।

- रघुवंश महाकाव्य की गणना लघुत्रयी में होती है इसमें 19 सर्ग हैं और वैदर्भी रीति का प्रयोग हुआ है।

महाकवि माघ के 'शिशुपालवधम्' से सम्बन्धित प्रमुख सूक्तियाँ-

(i) **सदोपयोगेऽपि गुरुस्त्वमक्षयो**
निधिः श्रुतीनां धनसम्पदामिव॥28॥
अर्थ- धन सम्पत्तियों की तरह वेदो का सदा उपयोग करते रहने पर भी कभी क्षीण न होने वाली निधि बताया है।

(ii) श्रेयसि केन तृप्यते ॥29॥
अर्थ- कल्याण के विषय में कौन (व्यक्ति) तृप्त होता है, अर्थात् कोई नहीं ।

श्रीहर्ष के 'नैषधीयचरितम्' से सम्बन्धित प्रमुख सूक्तियाँ-

(iii) नलः सितच्छत्रितकीर्तिमण्डलः
स राशिरासीन्महसां महोज्ज्वलः ॥1॥
अर्थ- यश-कीर्ति के मण्डल को धवल छत्र बनाने वाला उत्सवों से देदीप्यमान , तेजों की राशि, वह नल था।

(iv) श्रीहर्षं कविराजराजिमुकुटालङ्कारहीरःसुतं
श्रीहीरः सुषुवे जितेन्द्रियचयं मामल्लदेवी च यम् ॥

अर्थ- श्रेष्ठ कवियों की परम्परा के मुकुट के अलंकार ''हीरे'' के तुल्य श्री हीर (पिता) और मामल्लदेवी (माता) ने जितेन्द्रिय श्री हर्ष नाम के पुत्र को जन्म दिया।

महाकवि भारवि के 'किरातार्जुनीयम्' से सम्बन्धित प्रमुख सूक्तियाँ-

(i) हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः ॥4॥

अर्थ- हितकर और मनोरम वचन दुष्प्राप्य है।

(ii) स किं सखा साधु न शास्ति योऽधिपं ॥5॥

अर्थ- जो स्वामी को हित का उपदेश नहीं देता वह कुत्सित मित्र है।

(iii) वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः ॥8॥

अर्थ- महात्माओं के साथ विरोध भी दुर्जनों के सङ्ग से अच्छा है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि श्लोक ''अथवा कृतवाग्द्वारे........... मे गतिः'' कालिदास विरचित रघुवंश के प्रथम अङ्क से सम्बन्धित है। इसलिए यहाँ 'मे' पद से कालिदास का बोध हो रहा है। **अतः विकल्प (C) सही है।**

स्रोत- रघुवंशम् (1/4)

35. अधोऽङ्कितानां केन सह कस्य सम्बन्धः?

(a)	**पुरुषः**	**(i)**	**विकृतिः**
(b)	**वाक्**	**(ii)**	**प्रकृतिर्विकृतिः**
(c)	**शब्दः**	**(iii)**	**प्रकृतिः**
(d)	**मूलप्रकृतिः**	**(iv)**	**न प्रकृतिर्न विकृतिः**

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत-

(A) (a)-(iv), (b)-(iii), (c)-(i), (d)-(ii)
(B) (a)-(iv), (b)-(ii), (c)-(i), (d)-(iii)
(C) (a)-(iv), (b)-(i), (c)-(ii), (d)-(iii)
(D) (a)-(iii), (b)-(i), (c)-(iv), (d)-(ii)

व्याख्या-

मूलप्रकृतिरविकृतिर्महदाद्याः प्रकृतिविकृतयः सप्त।
षोडशकस्तु विकारो न प्रकृतिर्न विकृतिः पुरुषः॥3॥

मूलप्रकृति अविकृति है (किसी से उत्पन्न नहीं होती) महदादि सात (प्रकृति से) उत्पन्न भी होते हैं और (अहङ्कार आदि को) उत्पन्न भी करते हैं। सोलह का समूह केवल उत्पन्न होता है पुरुष न तो किसी से उत्पन्न होता है न किसी को उत्पन्न करता है।

सत्व, रजस्, तमस् की साम्यावस्था का नाम प्रकृति है। मूलप्रकृति ही प्रकृति है।

(वाक्) षोडश विकृति के अन्तर्गत आती है। (शब्द) पञ्चतन्मात्रा के अन्तर्गत आता है अतः प्रकृति विकृति है, पुरुष न ही प्रकृति है और न ही विकृति है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि पुरुष न प्रकृति है और न विकृति है, वाक् विकृति है, शब्द प्रकृतिविकृति है और मूलप्रकृति प्रकृति है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- सांख्यकारिका-(का.-3)

36. रससम्प्रदायस्य आचार्यौ स्तः?

(a)	**भरतमुनिः**	**(b)**	**वामनः**
(c)	**क्षेमेन्द्रः**	**(d)**	**अभिनवगुप्तः**

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत-

(A) (a) एवम् (b) (B) (a) एवम् (c)
(C) (a) एवम् (d) (D) (b) एवम् (d)

व्याख्या- संस्कृत काव्यशास्त्र में छः सम्प्रदाय प्रसिद्ध हैं-

1. रससम्प्रदाय- भरत (प्रवर्तक), अभिनवगुप्त, भट्टनायक, विश्वनाथ।
2. अलङ्कारसम्प्रदाय- भामह (प्रवर्तक), दण्डी, उद्भट
3. रीतिसम्प्रदाय- वामन (प्रवर्तक)
4. ध्वनिसम्प्रदाय- आनन्दवर्धन (प्रवर्तक), रुय्यक, मम्मट
5. वक्रोक्तिसम्प्रदाय- कुन्तक (प्रवर्तक)
6. औचित्यसम्प्रदाय- क्षेमेन्द्र (प्रवर्तक)

विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः॥

आचार्य भरत के इस रससूत्र सिद्धान्त पर अनेक व्याख्याकारों ने अपने-अपने अनुसार व्याख्या की है। अभिनवगुप्त का मत '**अभिव्यक्तिवाद**' के नाम से प्रसिद्ध है।

आचार्य भरत प्रतिपादित ''रससूत्र'' के व्याख्याकार

व्याख्याकार	**मत**	**दर्शन**
भट्टलोल्लट	उत्पत्तिवाद	मीमांसा
शङ्कुक	अनुमितिवाद	न्याय
भट्टनायक	भुक्तिवाद	सांख्य
अभिनवगुप्त	अभिव्यक्तिवाद	शैव/वेदान्त

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि आचार्य भरत और अभिनवगुप्त ये दोनों रससम्प्रदाय से सम्बन्धित आचार्य हैं। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- संस्कृतगंगा-साहित्यम्– सर्वज्ञभूषण, पेज 302

37. बालगंगाधर-तिलकेन मृगशिरा-काले ऋग्वेदस्य अधिकांश-मन्त्राणां रचना स्वीकृतास्ति। अधोलिखितेषु मृगशिरा-कालः वर्तते?

(A) 6000-4000 वि.पू. (B) 4000-2500 वि.पू.
(C) 2500-1400 वि.पू. (D) 1400-500 वि.पू.

व्याख्या- श्री तिलक ने ज्योतिष-गणना के आधार पर वैदिक काल को चार भागों में विभक्त किया है-

	काल	ई.पू. (वर्ष)	दृष्ट या प्रणीत ग्रन्थ
1.	अदितिकाल	6000-4000	निविद मंत्र (गद्य-पद्यात्मक, यज्ञिय विधिवाक्य)
2.	मृगशिराकाल	4000-2500	ऋग्वेद के अधिकांश सूक्त।
3.	कृत्तिकाकाल	2500-1400	चारों वेदों का संकलन तैत्तिरीय संहिता कौर कुछ ब्राह्मण ग्रन्थ
4.	सूत्र-काल	1400-500	सूत्रग्रन्थ और ब्राह्मणग्रन्थ

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि मृगशिरा काल के 4000-2500 ई.पू. में ऋग्वेद के अधिकांश सूक्तों की रचना मानी गयी है। **अतः विकल्प (B) सही है।**

स्रोत- वैदिकसाहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 40

38. अधोऽङ्कितेषु कयोर्द्वयोः समुचितः सम्बन्धोऽस्ति?

(a) षोडशपदार्थाः सन्ति (b) सप्तपदार्थाः सन्ति

(c) न्यायदर्शनम् (d) जैमिनिः

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत-

(A) (a) एवम् (d) (B) (c) एवम् (d)

(C) (a) एवम् (c) (D) (b) एवम् (c)

व्याख्या- महर्षि गौतम द्वारा प्रणीत न्यायसूत्र में सोलह (16) पदार्थों का निरूपण किया गया है उन्हीं 16 पदार्थों का निरूपण केशव मिश्र प्रणीत तर्कभाषा में निम्न प्रकार से है-

(1) प्रमाण (2) प्रमेय (3) संशय (4) प्रयोजन (5) दृष्टान्त (6) सिद्धान्त (7) अवयव (8) तर्क (9) निर्णय (10) वाद (11) जल्प (12) वितण्डा (13) हेत्वाभास (14) छल (15) जाति (16) निग्रहस्थान

➢ वैशेषिक दर्शन का प्रकरणग्रन्थ अन्नम्भट्टविरचित तर्कसंग्रह है इसमें सात (7) पदार्थों का निरूपण किया गया है।

द्रव्यगुणकर्मसामान्यविशेषसमवायाभावाः सप्तपदार्थाः

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि न्यायदर्शन सोलह (16) पदार्थों को स्वीकार करता है। **अतः विकल्प 'C' सही उत्तर है।**

स्रोत- भारतीयदर्शनसार - सर्वज्ञभूषण, पेज 43

39. मनुमते कः द्विजः सान्वयः शूद्रत्वं प्राप्नोति अधोलिखितेषु?

(A) वेदं परित्यज्य अन्यत्र श्रमं कुर्वन्

(B) प्रातरुत्थाय स्नानमकुर्वन्

(C) ब्राह्मणग्रन्थान् वेदं स्वीकुर्वन्

(D) एकेश्वरवादं निन्दयन्

व्याख्या- महर्षि मनु मनुस्मृति के दूसरे अध्याय में द्विजों के लिए वेद की महत्ता का प्रतिपादन निम्न प्रकार से करते हैं।

योऽनधीत्य द्विजो वेदमन्यत्र कुरुते श्रमम् ।
स जीवन्नेव शूद्रत्वमाशु गच्छति सान्वयः ॥2/168॥

जो द्विज वेद को न पढ़कर और शास्त्रों में परिश्रम करता है वह जीवित रहते ही सकुटुम्ब शीघ्र शूद्रत्व को प्राप्त हो जाता है।

वेदमेव सदाभ्यस्येत्तपस्तप्स्यन्द्विजोत्तमः।
वेदाभ्यासो हि विप्रस्य तपः परमिहोच्यते ॥2/166॥

द्विज तप करता हुआ सदा वेद का ही अभ्यास करता रहे, क्योंकि इस लोक में वेद का अभ्यास ही ब्राह्मण का बड़ा भारी तप कहा गया है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि जो द्विज वेद का परित्याग कर अन्य स्थान पर श्रम करता है वह शीघ्र ही सकुटुम्ब शूद्रत्व को प्राप्त हो जाता है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- मनुस्मृति-(2/166, 2/168)

40. किं पुराणं महाभारतस्य परिशिष्टम् ?

(A) वायुपुराणम् (B) पद्मपुराणम्

(C) मत्स्यपुराणम् (D) हरिवंशपुराणम्

व्याख्या- महर्षि कृष्णद्वैपायन वेदव्यास को पुराणों एवं महाभारत का रचयिता माना जाता है। पुराणों की संख्या 18 है।

मद्वयं भद्वयं चैव ब्रत्रयं वचतुष्टयम् ।
अनापलिङ्गकूस्कानि पुराणानि प्रचक्षते॥

अर्थात् -

मद्वयं - (1) मत्स्यपुराण (2) मार्कण्डेयपुराण

भद्वयं - (1) भविष्यपुराण (2) भागवतपुराण

ब्रत्रयं - (1) ब्रह्मपुराण (2) ब्रह्मवैवर्तपुराण (3) ब्रह्माण्डपुराण

वचतुष्टयम् - (1) विष्णुपुराण (2) वराहपुराण (3) वामनपुराण (4) वायुपुराण

अ- अग्निपुराण **ना-** नारदपुराण

प- पद्मपुराण **लिङ्ग-** लिङ्गपुराण

कू- कूर्मपुराण **स्क-** स्कन्दपुराण

इस तरह से ये 18 पुराणों के नाम हैं। इनके अतिरिक्त महाभारत के परिशिष्ट में हरिवंशपुराण है, इसमें यादवों की कथा विस्तारपूर्वक दी गयी है। इसके तीन पर्व हैं-

हरिवंशपर्व- श्रीकृष्ण के पूर्वजों का वर्णन

विष्णुपर्व- श्रीकृष्ण के लीलाओं का वर्णन

भविष्यपर्व- कलियुग के प्रभाव का वर्णन

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि हरिवंशपुराण महाभारत के परिशिष्ट के रूप में वर्णित है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- संस्कृतसाहित्य का इतिहास - डॉ राकेश कुमार जैन, पेज 74

41. महाभारतस्य टीकाकाराणां कया टीकया सह सम्बन्धः?

(a)	**विमलबोधः**	**(i)**	**ज्ञानदीपिका**
(b)	**देवबोधः**	**(ii)**	**लक्षाभरणटीका**
(c)	**नारायणः**	**(iii)**	**विषमश्लोकी**
(d)	**वादिराजः**	**(iv)**	**निगूढार्थ-पदबोधिनी**

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत-

(A) (a)-(iii), (b)-(i), (c)-(iv), (d)-(ii)
(B) (a)-(i), (b)-(iii), (c)-(ii), (d)-(iv)
(C) (a)-(ii), (b)-(i), (c)-(iii), (d)-(iv)
(D) (a)-(iv), (b)-(ii), (c)-(i), (d)-(iii)

व्याख्या- महर्षि वेदव्यास प्रणीत महाभारत में 18 पर्व हैं, जो उपपर्वों में विभक्त हैं, महाभारत में 1,00000 श्लोक हैं, जिसके कारण उसे **'शतसाहस्त्री संहिता'** भी कहा जाता है। इसकी कुछ टीकायें प्राप्त होती हैं, जिसमें से कुछ निम्नलिखित हैं-

- विमलबोध की विषमश्लोकी टीका - सम्पूर्ण महाभारत पर है।
- देवबोध की ज्ञानदीपिका टीका
- नारायण की निगूढार्थ-पदबोधिनी टीका
- वादिराज की लक्षाभरण टीका
- नीलकण्ठ की भारतभावदीप टीका- ये महाभारत के सर्वाधिक लोकप्रिय टीकाकार हैं।
- चतुर्भुज मिश्र की भरतोपायप्रकाश टीका

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि **विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर 'ऋषि',पेज 156

42. याज्ञवल्क्यस्मृतौ व्यवहाराध्यायस्य प्रकरणे स्तः?

(a) राजधर्मप्रकरणम् (b) विवाहप्रकरणम्
(c) लेख्यप्रकरणम् (d) दिव्यप्रकरणम्

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत-

(A) (a) एवम् (b) (B) (b) एवम् (c)
(C) (c) एवम् (d) (D) (d) एवम् (a)

व्याख्या- याज्ञवल्क्यस्मृति - इसके लेखक महर्षि याज्ञवल्क्य हैं, इसका समय, द्वितीय शताब्दी माना जाता है, इसमें मुख्य तीन अध्याय हैं-

(1) आचाराध्याय (2) व्यवहाराध्याय (3) प्रायश्चित्ताध्याय

इसके व्यवहाराध्याय में 25 प्रकरण है, जिनके नाम निम्नलिखित हैं-

(1) साधारणव्यवहारमातृक– प्रकरण
(2) असाधारणव्यवहारमातृकप्रकरण
(3) ऋणादान (4) उपनिधि (5) साक्षि (6) लेख्य (7) दिव्य (8) दायविभाग (9) सीमाविवाद (10) स्वामिपालविवाद (11) स्वामिविक्रय (12) दत्ताप्रदानिक (13) क्रीतानुशय (14) अभ्युपेत्याशुश्रूषा (15) संविद्व्यतिक्रम (16) वेतनादान (17) द्यूतसमाह्वय (18) वाक्पारुष्य (19) दण्डपारुष्य (20) साहस (21) विक्रीयासम्प्रदान (22) संभूयसमुत्थान (23) स्तेय (24) स्त्रीसंग्रहण (25) प्रकीर्णप्रकरण।

मनुस्मृति- मनुस्मृति के रचयिता के रूप में विद्वानों ने मनु का नाम ही स्वीकार किया है, वर्तमान मनुस्मृति में '12' अध्याय तथा '2694' श्लोक है, राजधर्म की चर्चा 7वें अध्याय में है, जिसमें राजा के धर्मों तथा कर्तव्याकर्तव्य को बताया गया है। , आठ प्रकार के विवाह की जानकारी 'तृतीय अध्याय' में है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि लेख्य और दिव्य प्रकरण की चर्चा याज्ञवल्क्यस्मृति के व्यवहाराध्याय में ही है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- याज्ञवल्क्यस्मृति-गङ्गासागर राय, भूमिका पेज 4

43. अधोऽङ्कितेषु केन अभिलेखेन सह कस्य सम्बन्धः?

(a)	**हर्षः**	**(i)**	**सारनाथ-बौद्धप्रतिमालेखः**
(b)	**पुलकेशिनद्वितीयः**	**(ii)**	**इलाहाबाद-स्तम्भलेखः**
(c)	**समुद्रगुप्तः**	**(iii)**	**बांसखेडा-ताम्रपट्टाभिलेखः**
(d)	**कनिष्कः**	**(iv)**	**ऐहोलशिलालेखः**

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत-

(A) (a)-(i), (b)-(iii), (c)-(ii), (d)-(iv)
(B) (a)-(ii), (b)-(iii), (c)-(i), (d)-(iv)
(C) (a)-(iv), (b)-(i), (c)-(iii), (d)-(ii)
(D) (a)-(iii), (b)-(iv), (c)-(ii), (d)-(i)

व्याख्या- हर्ष का बॉसखेड़ा का ताम्रपत्र लेख-

स्थान - बॉसखेड़ा, जिला शाहजहाँपुर (उ.प्र.)
लिपि - उत्तर ब्राह्मी
विषय - हर्षवर्धन के पूर्वजों तथा उसकी उपलब्धियों का वर्णन

पुलकेशिन द्वितीय- पुलकेशिन द्वितीय का ऐहोल शिलालेख

स्थान - ऐहोल जिला- बीजापुर
भाषा - संस्कृत
लिपि - दक्षिणी ब्राह्मी
काल - वि.सं. 556 (499ई.)
विषय - पुलकेशिन द्वितीय तक चालुक्य शासकों का वर्णन पुलकेशिन द्वितीय की कीर्ति का उल्लेख।

समुद्रगुप्त- समुद्रगुप्त का प्रयाग स्तम्भ अभिलेख
स्थान- इलाहाबाद, उत्तरप्रदेश (यह मूलतः कौशाम्बी में था, जहाँ से इलाहाबाद किले में लाया गया)
भाषा - संस्कृत
लिपि - ब्राह्मी
काल - लगभग- 335-76ई.
विषय - समुद्रगुप्त का जीवन चरित्र तथा उपलब्धियों का विवरण

कनिष्क प्रथम- कनिष्क प्रथम कालीन सारनाथ बौद्ध प्रतिमालेख।
स्थान - सारनाथ, जिला- वाराणसी (उ.प्र.)
भाषा - प्राकृत संस्कृत से प्रभावित
लिपि - ब्राह्मी
काल - प्रथम शताब्दी ई. **उत्तरार्ध सम्वत् 3 (81ई.)**
विषय - भिक्षु बल द्वारा विभिन्न लोगों के साथ, **छत्र और यष्टि** की स्थापना हित और सुख के लिए।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त जानकारी से प्राप्त होता है कि हर्ष का सम्बन्ध बाँसखेड़ा से, पुलकेशिन का एहोल से, समुद्रगुप्त का इलाहाबाद स्तम्भ से और कनिष्क का सारनाथ बौद्ध प्रतिमालेख से सम्बन्ध है। **अतः विकल्प (D) सही है।**

स्रोत- भारतीय पुरालेखों का अध्ययन– शिवस्वरूप सहाय, पेज 232, 246, 356, 363

44. वैशेषिकदर्शनानुसारमधोऽङ्कितेषु समुचितमुत्तरं चिनुत-
(A) प्रत्यक्षानुमानोपमानानि त्रीणि प्रमाणानि
(B) प्रत्यक्षानुमाने द्वे प्रमाणे
(C) प्रत्यक्षानुमानागमैतिह्यानि चत्वारि प्रमाणानि
(D) प्रत्यक्षानुमानशब्दाः त्रीणि प्रमाणानि

व्याख्या- भारतीय दर्शन दो प्रकार के हैं- आस्तिक दर्शन एवं नास्तिक दर्शन। षड् आस्तिक दर्शन के प्रमाण निम्न हैं-
सांख्य - प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द (तीन प्रमाण)
योग - प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द (तीन प्रमाण)
न्याय - प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द (चार प्रमाण)
वैशेषिक - प्रत्यक्ष, अनुमान (दो प्रमाण)
मीमांसा - प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, अर्थापत्ति, अनुपलब्धि
वेदान्त - प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, अर्थापत्ति, अनुपलब्धि
पौराणिक- प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, अर्थापत्ति, अनुपलब्धि, सम्भव एवं ऐतिह्य।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि **विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- भारतीयदर्शनसार-सर्वज्ञभूषण, पेज 6

45. आकृतिमूलकवर्गीकरणमाश्रित्य अधस्तनासु का भाषा योगात्मकभाषासु नास्ति?
(A) अरबी (B) संस्कृतम्
(C) चीनी (D) तुर्की

व्याख्या- भाषाओं का दो प्रकार का वर्गीकरण है-
(1) आकृतिमूलक (2) पारिवारिक
अयोगात्मक और योगात्मक, आकृतिमूलक के दो मुख्य भेद हैं।
अरबी भाषा- श्लिष्ट योगात्मक भेद के अंतर्मुखी उपभेद की प्रमुख भाषा है।
संस्कृतम्- ये श्लिष्ट योगात्मक भेद के बहिर्मुखी उपभेद की प्रमुख भाषा है।
चीनी (मण्डारिन)- यह भाषा अयोगात्मक वर्ग की प्रमुख भाषा है।
तुर्की- अश्लिष्ट योगात्मक भाषाओं की तुर्की प्रमुख भाषा है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि सभी भाषायें योगात्मक वर्ग की हैं तथा चीनी भाषा 'अयोगात्मक वर्ग' की है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र -कपिलदेव द्विवेदी, पेज 359, 361, 363

46. वाक्यपदीये भर्तृहरिणा कतमौ शब्दार्थयोः सम्बन्धौ स्वीकृतौ?
(a) संयोगः **(b) कार्यकारणभावः**
(c) समवायः **(d) योग्यता**
अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत-
(A) (a) एवम् (b) (B) (b) एवम् (c)
(C) (c) एवम् (d) (D) (b) एवम् (d)

व्याख्या- 'वाक्यपदीयम्' व्याकरणशास्त्र का दार्शनिक ग्रन्थ है। इसकी रचना भर्तृहरि ने की, इसमें तीन काण्ड हैं-
(1) ब्रह्मकाण्ड (2) वाक्यकाण्ड (3) पद (प्रकीर्ण) काण्ड
ब्रह्मकाण्ड की कारिका में वर्णित शब्दार्थ सम्बन्ध-

कार्यकारणभावेन योग्यभावेन च स्थिताः।
धर्मे ये प्रत्यये चाङ्गं सम्बन्धाः साध्वसाधुषु॥

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि भर्तृहरि जी ने शब्द और अर्थ के दो सम्बन्ध बतायें हैं, कार्यकारणभाव सम्बन्ध और योग्यता सम्बन्ध। संयोग और समवाय न्यायशास्त्र के अनुसार हैं, लेकिन शब्दार्थ के नहीं। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- वाक्यपदीयम् - (1/25)

47. काव्यप्रकाशानुसारं काव्यप्रयोजनं किमभीप्सितं भवति?

(a) शक्तिः **(b) यशः**

(c) व्यवहारः **(d) निपुणता**

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत-

(A) (a) एवम् (b) (B) (b) एवम् (c)

(C) (c) एवम् (d) (D) (a) एवम् (d)

व्याख्या- काव्यप्रकाश एक काव्यशास्त्रीय लक्षण ग्रन्थ है, इसके रचयिता आचार्य मम्मट हैं, यह ग्रन्थ 10 उल्लासों में विभक्त है, इसके प्रथम उल्लास में काव्य प्रयोजन, काव्य हेतु, काव्यलक्षण, काव्यप्रकारों की चर्चा है।

जैसे कि-

काव्यप्रयोजन

काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये।
सद्यः परनिर्वृतये कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे॥

काव्यहेतु

शक्तिर्निपुणता लोकशास्त्रकाव्याद्यवेक्षणात् ।
काव्यज्ञशिक्षयाभ्यास इति हेतुस्तदुद्भवे॥

स्पष्टीकरण- इन कारिकाओं से ज्ञात होता है कि शक्ति और निपुणता काव्य के हेतु हैं और यश तथा व्यवहार काव्य प्रयोजन हैं। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- काव्यप्रकाश-आचार्य विश्वेश्वर, पेज-10, 16

48. वेदभाष्यकारेषु कौ याज्ञिकौ भाष्यकारौ स्तः?

(a) स्वामी दयानन्दसरस्वती

(b) सायणः

(c) उव्वटः

(d) आत्मानन्दः

अधस्तनेषु समुचितं विकल्पं चिनुत-

(A) (a) एवम् (c) (B) (a) एवम् (d)

(C) (c) एवम् (d) (D) (b) एवम् (c)

व्याख्या- वैदिक भाष्यकारों में बहुत प्रसिद्ध नाम प्राप्त होते हैं, जिनमें कुछ निम्नलिखित हैं-

आत्मानन्द- आत्मानन्द का ऋग्वेद के 'अस्यवामीय' सूक्त पर अध्यात्म परक भाष्य है। ये सायण के पूर्ववर्ती प्रतीत होते हैं।

स्वामी दयानन्द- स्वामी दयानन्द सरस्वती ने ऋग्वेद के 7 मण्डलों (80 सूक्त) का संस्कृत और हिन्दी में भाष्य किया है।

सायण- इनका चारों वेदों में भाष्य प्राप्त होता है, ये आन्ध्र प्रान्त के विजयनगर राज्य के निवासी थे, वैदिक भाष्यकारों में सायण का स्थान सर्वोच्च है।

उव्वट- इन्होंने मुख्यतः यजुर्वेद की माध्यन्दिन संहिता पर भाष्य किया है, जो कि यज्ञपरक है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि सायण और उव्वट वेदों का व्याख्यान याज्ञिक दृष्टि से करते हैं **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा, पेज 100

49. अधोनिर्दिष्टयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत-

(a) अग्नि-सूक्तः **(i) आङ्गिरस-बृहस्पतिः**

(b) रुद्रसूक्तः **(ii) मधुच्छन्दा-ऋषिः**

(c) पर्जन्यसूक्तः **(iii) गृत्समद-ऋषिः**

(d) ज्ञानसूक्तः **(iv) भौमोऽत्रि-ऋषिः**

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत-

(A) (a)-(ii), (b)-(iii), (c)-(iv), (d)-(i)

(B) (a)-(i), (b)-(ii), (c)-(iii), (d)-(iv)

(C) (a)-(ii), (b)-(i), (c)-(iv), (d)-(iii)

(D) (a)-(iii), (b)-(iv), (c)-(i), (d)-(ii)

व्याख्या- वैदिक सूक्तों के मंत्रद्रष्टा ऋषि हुए हैं, जिन्होंने मन्त्रों को संगृहीत किया, प्रत्येक सूक्त के प्रत्येक ऋषि हैं, जैसे कि-

अग्निसूक्त के ऋषि	-	मधुच्छन्दा
इन्द्रसूक्त एवं रुद्रसूक्त के ऋषि	-	गृत्समद
पर्जन्य के ऋषि	-	अत्रि
ज्ञानसूक्त के ऋषि	-	आङ्गिरस बृहस्पति

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि **विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- वैदिकवाङ्मय -सर्वज्ञभूषण, पेज 152, 160, 164

50. अधोङ्कितेषु वाल्मीकिरामायणं कयोः काव्ययोः उपजीव्यम् ?

(a) नैषधीयचरितम् **(b) सेतुबन्धः**

(c) भट्टिकाव्यम् **(d) किरातार्जुनीयम्**

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत-

(A) (a) एवम् (b) (B) (b) एवम् (c)

(C) (c) एवम् (d) (D) (d) एवम् (a)

व्याख्या- 'नैषधीयचरितम्' एक महाकाव्य है, जिसमें 22 सर्ग हैं, इसके लेखक श्रीहर्ष हैं। इस महाकाव्य के नायक निषध देश के राजा नल हैं, नायिका दमयन्ती हैं इसका मुख्य रस श‍ृङ्गार है, यह महाभारत के वनपर्व के नलोपाख्यान से उद्धृत है।

सेतुबन्ध- यह महाकाव्य **15 आश्वासों** में विभक्त है, इसके रचयिता महाकवि प्रवरसेन 'महीपति' हैं। इसके नायक राम हैं और अङ्गीरस वीर है। इस ग्रन्थ का उपजीव्य वाल्मीकि रामायण है।

भट्टिकाव्यम् - इसके लेखक '**महाकवि भट्टि**' हैं, इस काव्य में राम के जन्म से पूर्व का वर्णन भी है तथा बाकी मुख्य कथा जन्म के बाद की है, इसके नायक श्रीराम हैं, मुख्य रस वीर है, यह काव्य 22 सर्गों में विभक्त है। इसका उपजीव्य वाल्मीकि रामायण है।

किरातार्जुनीयम् - यह एक महाकाव्य है, जो कि बृहत्त्रयी में आता है, इसमें 18 सर्ग हैं और अङ्गी रस 'वीर' है इसके नायक 'अर्जुन' और 'नायिका' द्रौपदी हैं, यह महाकाव्य महाभारत आश्रित है, इसके प्रतिनायक किरात वेशधारी शिव हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि **विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- मिशन (L.T.) - सर्वज्ञभूषण, पेज 37, 390

51. पूर्ववर्तिनः आचार्यस्य प्राथम्येन कालक्रमानुसारमुचितमुत्तरं निर्दिशत -

(a) विश्वनाथः **(b) दण्डी**

(c) धनञ्जयः **(d) कुन्तकः**

अत्र समुचितं क्रमं चिनुत-

(A) (a), (b), (c), (d)

(B) (b), (c), (d), (a)

(C) (c), (b), (a), (d)

(D) (b), (a), (c), (d)

व्याख्या- संस्कृतसाहित्य के आलोचना शास्त्र को काव्यशास्त्र कहते हैं, इस काव्यशास्त्र की परम्परा में कुछ आचार्यों ने अपना सहयोग प्रदान किया है, जैसे कि- भामह, दण्डी, रुद्रट, वामन आदि।

इनका कालक्रम भी निर्धारित है, जो कि उत्तरोत्तर है, काव्यशास्त्रीय समीक्षकों में भामह के बाद दण्डी का नाम प्रमुखता से आता है, फिर धनञ्जय, कुन्तक, मम्मट, विश्वनाथ, जगन्नाथ आदि।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि दण्डी इनमें सबसे प्राचीन आचार्य हैं और विश्वनाथ अर्वाचीन हैं। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- भारतीय काव्यशास्त्र का इतिहास-राजवंश सहाय 'हीरा', पेज 47, 115, 202

52. अधुना तैत्तिरीय-नाम्ना प्रसिद्धौ कौ ग्रन्थौ स्तः?

(a) ब्राह्मणम् **(b) व्याकरणम्**

(c) उपनिषद् **(d) छन्दः**

अधस्तनेषु समुचितं विकल्पं चिनुत-

(A) (a) एवम् (c) (B) (a) एवम् (d)

(C) (c) एवम् (d) (D) (b) एवम् (c)

व्याख्या- वैदिकवाङ्मय में चार वेदों का नाम अग्रगण्य है और इन वेदों के संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद् नाम से चार भाग भी हैं।

प्रत्येक वेद की अपनी-अपनी संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद् हैं। इनमें –

➢ कृष्ण यजुर्वेद का एकमात्र तैत्तिरीय ब्राह्मण है।

➢ और उपनिषद् ग्रन्थों में 'तैत्तिरीय उपनिषद्' प्राप्त होता है जो कि यजुर्वेद की तैत्तिरीय संहिता से है।

➢ तैत्तिरीय नाम से न कोई छन्द प्राप्त होता और न ही कोई व्याकरण।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से ज्ञात होता है कि **विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- वैदिकवाङ्मय 'परीक्षा दृष्टि'- सर्वज्ञभूषण, पेज 71, 99

53. अधोऽङ्कितानां केन सह कस्य सम्बन्धः?

(a) एतान्याकाशादीनां सात्त्विकांशेभ्यो व्यस्तेभ्यः पृथक् पृथक् क्रमेणोत्पद्यन्ते **(i) मनबुद्धिचित्ताहंकाराः**

(b) एते पुनराकाशादि-गतसात्त्विकांशेभ्यो मिलितेभ्य उत्पद्यन्ते **(ii) विज्ञानमयकोशः**

(c) एतानि पुनराकाशादीनां रजोंऽशेभ्यो व्यस्तेभ्यः पृथक् पृथक् क्रमेणोत्पद्यन्ते **(iii) ज्ञानेन्द्रियाणि**

(d) बुद्धिर्ज्ञानेन्द्रियैः सहिता भवति **(iv) कर्मेन्द्रियाणि**

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत-

(A) (a)-(iii), (b)-(i), (c)-(iv), (d)-(ii)

(B) (a)-(iv), (b)-(iii), (c)-(ii), (d)-(i)

(C) (a)-(i), (b)-(ii), (c)-(iii), (d)-(iv)

(D) (a)-(iii), (b)-(ii), (c)-(i), (d)-(iv)

व्याख्या- भारतीय आस्तिक दर्शनों में 'वेदान्त दर्शन' का भी नाम आता है, जिसे 'उत्तरमीमांसा' भी कहते हैं। इस दर्शन का एक प्रकरण ग्रन्थ है 'वेदान्तसार' जिसे श्री सदानन्द योगीन्द्र ने लिखा है।

इस ग्रन्थ में सूक्ष्मशरीर का विवेचन किया गया है जो कि इस प्रकार है–

ज्ञानेन्द्रियाँ- आकाश आदि सूक्ष्मभूतों के सात्विक अंशों से पृथक्-पृथक् उत्पन्न होती है।

मनबुद्धिचित्ताहंकार- ये सभी आकाश आदि में स्थित सात्त्विक अंशों के मिश्रित अंशों से उत्पन्न होते हैं।

कर्मेन्द्रियाँ- ये सभी आकाश आदि के रजोगुण विषयक अंशों से क्रमशः अलग-अलग उत्पन्न होती है।

विज्ञानमयकोश- पञ्चज्ञानेन्द्रियों सहित बुद्धि विज्ञानमयकोश कहलाती है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि **विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- वेदान्तसार - डॉ. राकेश शास्त्री, पेज 185, 190

54. के वर्णाः स्वयंप्रकाशन्ते?

(a) मूलस्वराः **(b) अन्तस्थाः**

(c) संयुक्तस्वराः **(d) ऊष्मवर्णाः**

अत्र समीचीनं विकल्पं चिनुत-

(A) (a) एवम् (b) (B) (b) एवम् (d)

(C) (a) एवम् (c) (D) (c) एवम् (d)

व्याख्या- संस्कृत वर्णमाला में दो प्रकार के वर्ण होते हैं-

(1) स्वर वर्ण (2) व्यञ्जन वर्ण।

इनके भी बहुत से भाग होते हैं, जैसे कि - स्वर, ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत से या उदात्त, अनुदात्त, स्वरित से अलग-अलग हो जाते हैं। इसी प्रकार व्यञ्जन वर्ण भी, स्पर्शादि के भेद से अलग-अलग हो जाते हैं।

- स्वर के सन्दर्भ में 'स्वयं राजन्ते इति स्वराः' इस प्रकार की पंक्ति प्राप्त होती है।
- **अन्तस्थ -** भेद व्यञ्जनों का होता है जैसे कि 'यणो अन्तस्थाः' कहा गया है।
- **ऊष्म-** यह भी व्यंजन वर्णों का भेद है, शलो ऊष्माणः ऐसा कहा गया है।
- **स्पर्श-** 'कादयोमावसानाः स्पर्शाः' इत्यादि।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरणों से ज्ञात होता है कि **विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्द प्रसाद शर्मा, पेज 19

55. महाभारताश्रितं रचनाद्वयं किमस्ति?

(A) उत्तररामचरितम्, महावीरचरितम्

(B) प्रतिज्ञायौगन्धरायणम्, रत्नावली

(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम्, वेणीसंहारम्

(D) बुद्धचरितम्, स्वप्नवासवदत्तम्

व्याख्या- संस्कृतसाहित्य में महाभारत और रामायण का योगदान अनिर्वचनीय है, इनके कथानक के ऊपर कवियों ने कई महाकाव्य, नाटक, चम्पू इत्यादि लिखे हैं जिनमें से ये कुछ निम्न हैं-

उत्तररामचरितम् - महाकवि 'भवभूति' द्वारा प्रणीत यह नाटक 7 अङ्कों वाला है, इसके नायक राम और नायिका सीता हैं। इसका अङ्गी रस करुण है तथा उपजीव्य वाल्मीकि रामायण है।

महावीरचरितम् - यह नाटक भी 'भवभूति' द्वारा लिखित है, इसके नायक राम हैं और अङ्गी रस 'वीर' है तथा उपजीव्य रामायण है।

अभिज्ञानशाकुन्तलम् - यह महाकवि कालिदास द्वारा प्रणीत नाटक है, इसमें 7 अङ्क हैं, नायक दुष्यन्त तथा नायिका शकुन्तला जो कि ऋषि कण्व की पोषित पुत्री है, अङ्गीरस शृंगार है तथा उपजीव्य, महाभारत का शकुन्तलोपाख्यान है।

वेणीसंहारम् - यह नाटक भट्ट नारायण द्वारा रचित है, इसमें 6 अङ्क हैं, तथा 'वीर रस' अङ्गी है, इसके नायक भीम तथा नायिका द्रौपदी है, इसका उपजीव्य महाभारत है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि **विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा, पेज-484,518

56. ''कविक्रतुः'' अधोलिखितेषु कस्य विशेषणं विद्यते?

(A) इन्द्रस्य (B) बृहस्पतेः

(C) अग्नेः (D) शुक्रस्य

व्याख्या- वैदिक वाङ्मय में सबसे महत्त्वपूर्ण विषय वैदिक सूक्त है, ये वैदिक सूक्त देवताओं की स्तुति परक हैं।

ऋग्वेद में सबसे ज्यादा सूक्त इन्द्र के हैं। इन देवताओं के कुछ अन्य नाम भी हैं। जैसे-

इन्द्र - सोमपा, वज्रिन्, मघवा आदि।

अग्नि - हुतभुक्, कविक्रतु, घृतपृष्ठ, दमूनस् आदि।

सवितृ - दमूना, स्वर्णहस्त, हिरण्यपाणि, सुनीथ आदि।

विष्णु - उरुक्रम, उरुगाय, गिरिष्ठा आदि।

शुक्र - वैदिक देवता नहीं हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि **विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- वैदिकवाङ्मय (परीक्षा दृष्टि) -सर्वज्ञभूषण, पेज 137, 136, 132

57. आलोकविशाला मे सहसा तिमिरप्रवेशविच्छिन्ना।
उन्मीलितापि दृष्टिर्निमीलितेवान्धकारेण॥
श्लोकेऽस्मिन् किं छन्दः कश्चालङ्कारः?

(a) रूपकम् **(b) आर्या**
(c) वसन्ततिलका **(d) उत्प्रेक्षा**

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत-

(A) (a) एवम् (b) (B) (b) एवम् (c)
(C) (b) एवम् (d) (D) (c) एवम् (d)

व्याख्या- अलङ्कार दो प्रकार के होते हैं, शब्दालङ्कार और अर्थालङ्कार रूपक और उत्प्रेक्षा अर्थालङ्कार के भेद हैं-

रूपक अलङ्कार वहाँ होता है, जहाँ उपमान और उपमेय अभेद हो जायें। आर्या छन्द का लक्षण इस प्रकार है-

यस्याः पादे प्रथमे द्वादशमात्रास्तथा तृतीयेऽपि।
अष्टादश द्वितीये चतुर्थके पञ्चदश साऽऽर्या॥

- इस पद्य में आर्या छन्द ही है।
- **वसन्ततिलका** छन्द का लक्षण- 'उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः' उपर्युक्त श्लोक में वसन्ततिलका छन्द नहीं हैं।
- **उत्प्रेक्षा-** जहाँ उपमान और उपमेय में समानता का आरोपण हो, वहाँ उत्प्रेक्षा अलङ्कार होता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि **विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- काव्यप्रकाश– आचार्य विश्वेश्वर, पेज-460, 463

58. कौटिलीय-अर्थशास्त्रस्य विनयाधिकरणे प्रकरणानां समुचितः क्रमोऽस्ति-

(a) इन्द्रियजयः **(b) वृद्धसंयोगः**
(c) मन्त्रिपुरोहितोत्पत्तिः **(d) अमात्योत्पत्तिः**
(e) विद्यासमुदेशः

अत्र समुचितं क्रमं चिनुत-

(A) (a), (c), (d), (e), (b)
(B) (b), (a), (c), (d), (e)
(C) (c), (d), (b), (a), (e)
(D) (e), (b), (a), (d), (c)

व्याख्या- अर्थशास्त्र एक राजनीतिक ग्रन्थ है, इसके रचयिता आचार्य कौटिल्य हैं, इस ग्रन्थ में 15 अधिकरण हैं- प्रथम अधिकरण का नाम विनयाधिकारिक है, इसमें अठारह प्रकरण हैं जो निम्न हैं- (1) विद्यासमुद्देशः (2) वृद्धसंयोगः (3) इन्द्रियजयः (4) अमात्योत्पत्तिः (5) मन्त्रिपुरोहितोत्पत्तिः (6) उपधाभिः शौचाशौचज्ञानममात्यानाम् (7) गूढपुरुषोत्पत्तिः (8) गूढपुरुषप्रणिधिः (9) स्वविषये कृत्याकृत्यपक्षरक्षणम् (10) परविषये कृत्या-कृत्यपक्षोपग्रहः (11) मन्त्राधिकारः (12) दूतप्रणिधिः (13) राजपुत्ररक्षणम् (14) अवरुद्धवृत्तम् (15) अवरुद्धे च वृत्तिः (16) राजप्रणिधिः (17) निशान्तप्रणिधिः (18) आत्मरक्षितकम् ।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त इस विवरण से ज्ञात हुआ कि **विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- अर्थशास्त्र -वाचस्पति गैरोला, पेज 2

59. दशरूपकानुसारं फलार्थिभिः प्रारब्धस्य कार्यस्य कति अवस्थाः भवन्ति?

(A) पञ्च (B) षट्
(C) सप्त (D) अष्ट

व्याख्या- दशरूपक एक नाट्यशास्त्रीय ग्रन्थ है, इसके लेखक धनञ्जय हैं, इसमें चार प्रकाश है, इसका मूल प्रतिपाद्य विषय नाट्य के नाटक, प्रकरण आदि 10 भेदों नायक, नायिका, कथा, सन्धियाँ इत्यादियों का वर्णन है। इसमें कार्य की पाँच अवस्थायें बताई गई हैं-

अवस्थाः पञ्च कार्यस्य प्रारब्धस्य फलार्थिभिः।
आरम्भयत्नप्राप्त्याशानियताप्तिफलागमाः॥

आरम्भ, यत्न, प्राप्त्याशा, नियताप्ति और फलागम ये पाँच अवस्थायें हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से ज्ञात होता है कि **विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- दशरूपकम् - बैजनाथ पाण्डेय, पेज 33

60. अधोऽङ्कितानां योगदर्शनव्यासभाष्यानुसारं समुचितं क्रमं चिनुत-

(a) क्षिप्तम् **(b) विक्षिप्तम्**
(c) निरुद्धम् **(d) एकाग्रम्**
(e) मूढम्

अधोङ्कितेषु समुचितं क्रमं चिनुत-

(A) (a), (e), (d), (b), (c)
(B) (a), (e), (b), (d), (c)
(C) (e), (a), (d), (b), (c)
(D) (b), (d), (a), (c), (e)

व्याख्या- भारतीय आस्तिक दर्शनों में साङ्ख्य के बाद दूसरा नाम योगदर्शन का आता है, इसके प्रतिपादक या प्रवर्तक महर्षि

पतञ्जलि हैं, योगदर्शन में चार पाद हैं-
(1) समाधिपाद (2) साधनपाद (3) विभूतिपाद (4) कैवल्यपाद। इसमें ईश्वर सहित 26 तत्त्वों की चर्चा है, अतएव यह सेश्वर साङ्ख्य कहलाता है, इसमें कुल 195 सूत्र हैं। इसमें पाँच चित्तभूमियाँ वर्णित हैं- जो निम्न हैं-
(1) क्षिप्त (2) मूढ (3) विक्षिप्त (4) एकाग्र (5) निरुद्ध
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से ज्ञात होता है कि **विकल्प 'B'** सही है।
स्रोत- भारतीयदर्शनसार - सर्वज्ञभूषण, पेज 26

61. वेदानामपौरुषेयत्वमधोऽङ्कितेषु कुत्र वर्णितम्?
(A) बौद्धदर्शने (B) मीमांसादर्शने
(C) योगदर्शने (D) सांख्यदर्शने

व्याख्या- * भारतीयदर्शन दो प्रकार के हैं- आस्तिक और नास्तिक। नास्तिक दर्शन वेदों को स्वीकार नहीं करता 'नास्तिको वेदनिन्दकः' मिलता है।
* आस्तिक दर्शनों में सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और वेदान्त हैं।

इन सभी में मीमांसा दर्शन कर्मकाण्डपरक है, जिसमें वैदिक अनुष्ठानों, यज्ञों तथा मन्त्रों का अभिप्रयोग है। मीमांसा दर्शन के प्रवर्तक महर्षि जैमिनि हैं, इनका 'दर्शन द्वादशलक्षणी' नाम से भी जाना जाता है, इस दर्शन में जैमिनि ने वेदों को अपौरुषेय कहा है।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि **विकल्प 'B' सही है।**
स्रोत- अर्थसङ्ग्रह - कामेश्वरनाथ मिश्र, भूमिका- पेज 9

62. सुडनपुंसकस्य इति पाणिनिसूत्रेण का सञ्ज्ञा विधीयते?
(A) संहिता सञ्ज्ञा (B) उपधा सञ्ज्ञा
(C) विभाषा सञ्ज्ञा (D) सर्वनामस्थान सञ्ज्ञा

व्याख्या- महर्षि पाणिनि ने अष्टाध्यायी नामक ग्रन्थ लिखा जिसमें व्याकरण के चार हजार सूत्र हैं, इन सूत्रों के द्वारा ही पाणिनीय व्याकरण नाम पड़ा इसमें अलग-अलग प्रकार के सूत्र हैं, जैसे- संज्ञासूत्र, नियमसूत्र, अधिकारसूत्रादि।

संज्ञासूत्रों के द्वारा - संहिता, उपधा, विभाषा, सर्वनामस्थान इत्यादि संज्ञायें हुई। जैसे-

संहिता - परः सन्निकर्षः संहिता
उपधा - अलोऽन्त्यात्पूर्व उपधा
विभाषा - न वेति विभाषा
सर्वनामस्थान - सुडनपुंसकस्य
संयोग - हलोऽनन्तराः संयोगः इत्यादि।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि **विकल्प 'D' सही है।**
स्रोत- अष्टाध्यायी - गोपालदत्त पाण्डेय, पेज. 03

63. अधस्तनेषु केन सह कस्य सम्बन्धः?

(a)	**वाक्यपदीयम्**	**(i)**	**हरदत्तः**
(b)	**पदमञ्जरी**	**(ii)**	**भर्तृहरिः**
(c)	**अष्टाध्याय्याः मिताक्षरावृत्तिः**	**(iii)**	**नागेशभट्टः**
(d)	**स्फोटवादः नाम ग्रन्थः**	**(iv)**	**अन्नम्भट्टः**

अधस्तनेषु समीचीनां तालिकां चिनुत-
(A) (a)-(i), (b)-(iii), (c)-(ii), (d)-(iv)
(B) (a)-(ii), (b)-(i), (c)-(iv), (d)-(iii)
(C) (a)-(iii), (b)-(ii), (c)-(i), (d)-(iv)
(D) (a)-(iv), (b)-(ii), (c)-(iii), (d)-(i)

व्याख्या- वाक्यपदीयम् - इसके रचयिता श्री भर्तृहरि हैं, यह व्याकरणशास्त्र का दार्शनिक ग्रन्थ है, इसमें तीन काण्ड हैं-
(1) ब्रह्मकाण्ड (2) पदकाण्ड (3) वाक्यकाण्ड ।
पदमञ्जरी- इसके लेखक 'हरदत्त' जी हैं, यह 'काशिका' नामक व्याकरणग्रन्थ का भाष्य है, यह ग्यारहवीं शताब्दी की रचना है।
अष्टाध्यायी की मिताक्षरा वृत्ति- इसके लेखक अन्नम्भट्ट हैं, ये तैलङ्ग ब्राह्मण हैं, इन्होंने पाणिनि अष्टाध्यायी पर मिताक्षरा वृत्ति लिखी।
स्फोटवाद- 'नागेशभट्ट' इसके लेखक हैं, 'परमलघुमञ्जूषा' में भी इन्होंने स्फोटवाद का वर्णन किया है और स्फोट को आठ भागों में विभक्त करके स्फोट को आठ प्रकार माना है।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरणों से ज्ञात होता है कि **विकल्प (B) सही है।**
स्रोत- संस्कृतव्याकरण शास्त्र का इतिहास- रामनाथ त्रिपाठी, पेज 160, 354, 156, 190

64. अर्थसङ्ग्रहदिशा विधिः कतिविधः?
(A) षड्विधः (B) पञ्चविधः
(C) चतुर्विधः (D) त्रिविधः

व्याख्या- अर्थसङ्ग्रह मीमांसादर्शन का प्रकरणग्रन्थ है, इसके लेखक 'लौगाक्षिभास्कर' जी है। अर्थसङ्ग्रह के प्रतिपाद्य विषय वेद तथा उसमें पाँच भाग हैं-
(1) विधि (2) मन्त्र (3) नामधेय (4) निषेध (5) अर्थवाद।
* विधियाँ चार प्रकार की हैं जो कि अर्थसङ्ग्रह के प्रतिपाद्य विषय के अन्तर्गत हैं, ये विधियाँ निम्नलिखित हैं-

(1) उत्पत्तिविधिः (2) विनियोगविधिः (3) अधिकारविधिः (4) प्रयोगविधिः

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि **विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- अर्थसङ्ग्रह - कामेश्वरनाथ मिश्र, पेज 56

65. वैशेषिकदर्शनानुसारं निम्नाङ्कितानां समुचितः क्रमोऽस्ति?

(a) अभावः **(b) विशेषः**

(c) कर्मः **(d) सामान्यम्**

(e) समवायः

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत-

(A) (d), (b), (c), (a), (e)

(B) (c), (d), (b), (e), (a)

(C) (a), (c), (d), (b), (e)

(D) (a), (b), (c), (d), (e)

व्याख्या- वैशेषिकदर्शन का नाम भारतीय दर्शनों के क्रम में आता है, इसके प्रवर्तक महर्षि कणाद हैं, इस दर्शन को औलूक्य दर्शन भी कहा जाता है। वैशेषिकदर्शन दो प्रमाण स्वीकार करता है- (1) प्रत्यक्ष (2) अनुमान।

वैशेषिकदर्शन सात पदार्थों को स्वीकार करता है, जो कि निम्न हैं- (1) द्रव्य (2) गुण (3) कर्म (4) सामान्य (5) विशेष (6) समवाय (7) अभाव।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि **विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- तर्कसङ्ग्रह - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज 18

66. तर्कसङ्ग्रहानुसारं वाक्यार्थज्ञाने 'अग्निना सिञ्चेद्' इति वाक्यं कथं न प्रमाणम्?

(A) योग्यताविरहात्

(B) सान्निध्याभावात्

(C) आकाङ्क्षाविरहात्

(D) पदानामविलम्बेनोच्चारणाभावात्

व्याख्या- तर्कसङ्ग्रह नामक ग्रन्थ के कर्ता श्री 'अन्नम्भट्ट' हैं, तर्कसङ्ग्रह न्याय तथा वैशेषिक दर्शन का मिश्रित प्रकरणग्रन्थ है, इसमें चार प्रमाण स्वीकार किये गये हैं-

(1) प्रत्यक्ष (2) अनुमान (3) उपमान (4) शब्द

शब्द प्रमाण के ज्ञान में वाक्य ज्ञान हेतु होता है और 'वाक्य' आकाङ्क्षा, योग्यता, सन्निधि से युक्त हो, लेकिन ये तीनों क्या है, इसका प्रतिपादन करते हैं, जैसे-

आकांक्षा- राम कहने के बाद मन में आकांक्षा होती है कि राम क्या, जाता है, खाता है या और कुछ इस प्रकार की इच्छा की आकांक्षा कहलाती है।

योग्यता- जैसे- 'अग्नि से सींचता है' इस वाक्य में योग्यता नहीं है, क्योंकि अग्नि सिञ्चन में समर्थ नहीं है, इसलिये वाक्य योग्यता से युक्त नहीं है, जो योग्यता से युक्त वाक्य होगा वही सही है।

सन्निधि- परस्पर एक के बाद एक बिना विलम्ब किये उच्चारण करना सन्निधि है, इसप्रकार इन तीनों से युक्त वाक्य तथा किसी यथार्थ वक्ता का वाक्य शब्द प्रमाण हो सकता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि **विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- तर्कसङ्ग्रह - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज 61

67. अधस्तनेषु मात्रिकापश्रुतेरुदाहरणे स्तः -

(a) पित्सति-पतति-पातयति

(b) गेएन-गिंग-गेगांगेन

(c) गतः-गमनम्-जगाम

(d) कत्ल्-कतिल-मकतूल

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत-

(A) (a) एवम् (b) (B) (a) एवम् (c)

(C) (b) एवम् (d) (D) (c) एवम् (d)

व्याख्या- भाषाविज्ञान में ध्वनि परिवर्तन कई प्रकार के होते हैं, जिनमें आगम, लोप, अभिश्रुति, अपश्रुति आदि आते हैं। अपश्रुति के दो भेद होते हैं- (1) गुणीय अपश्रुति (2) मात्रिक अपश्रुति।

गुणीय अपश्रुति के उदाहरण-

अरबी - कत्ल, कातिल, मकबूल।

जर्मन - गेएन, गिंग, गेगांगेन आदि।

मात्रिक अपश्रुति-

संस्कृत- गतः, गमनम्, जगाम-पित्सति, पतति, पातयति आदि।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से ज्ञात होता है कि **विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र -कपिलदेव द्विवेदी, पेज 239

68. इन्द्र-सूक्ते (2.12.4) चतुर्थे मन्त्रे प्राप्तस्य दासं वर्णम् इत्यस्य सायण-भाष्यानुसारम् अधोलिखितेषु कतमः अर्थोऽस्ति?

(A) कृष्णवर्णम् (B) दुष्टवर्णम्

(C) शूद्रादिकम् (D) अन्त्यवर्णम्

व्याख्या- ऋग्वैदिक सूक्तों में सबसे ज्यादा सूक्त इन्द्र के हैं, ये अग्नि की तरह प्रधान देवता हैं तथा अन्तरिक्ष स्थानीय देवता हैं, इन्द्र की स्तुति 250 सूक्तों में की गई है।

सायण ने चारों वेदों में भाष्य लिखा है- उसी क्रम में ऋग्वेद के सूक्त का भी भाष्य किया गया है, जिसके चतुर्थ मन्त्र में दास का वर्णन किया गया है। सायण के अनुसार दास का अर्थ शूद्र से है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से ज्ञात होता है कि **विकल्प (C) सही है।**

स्रोत- वैदिकसूक्तसंग्रह (2.12.4)– विजयशङ्कर पाण्डेय, पेज-68

69. अधोऽङ्कितेषु ब्राह्मीलिपेरुद्भवसिद्धान्तेषु कतमो विदेशी-सिद्धान्तो नास्ति?

(A) फोनिशियन-उद्भवसिद्धान्तः
(B) द्रविड-उद्भवसिद्धान्तः
(C) दक्षिणी-सामीलिपि-उद्भवसिद्धान्तः
(D) उत्तरी-सामीलिपि-उद्भवसिद्धान्तः

व्याख्या- भारतीय लिपियों में सर्वप्रथम नाम 'ब्राह्मी लिपि' का आता है, इसका काल विद्वानों ने ई.पू. चतुर्थ शताब्दी (350) स्वीकार किया है। ब्राह्मी लिपि में 9 स्वर तथा 32 व्यञ्जन वर्ण प्राप्त होते हैं।

ब्राह्मी नाम ब्रह्मा या ब्राह्मण या ब्रह्म से उत्पन्न होने के कारण पड़ा ब्राह्मी लिपि के उद्भवसिद्धान्त में कुछ पाश्चात्य विद्वानों ने इसकी उत्पत्ति अन्य लिपियों से मानी है, जो निम्न हैं-

(1) चीनी लिपि से (2) ग्रीक या फोनाशी लिपि से
(3) सभी लिपि से

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि **विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र -कपिलदेव द्विवेदी, पेज 492, 493, 494

70. कथनद्वयम् अधोलिखितम् - तत्र एकम् अभिकथनम् (A) अपरञ्च तस्य कारणम् (R) इति।

अभिकथनम् (A) - उत्पत्तिपरिपूतायाः किमस्याः पावनान्तरैः।

कारणम् (R)- तीर्थोदकं च वह्निश्च नान्यतः शुद्धिमर्हतः।।

उपर्युक्तम् अभिकथनकारणमाश्रित्य समुचितं विकल्पं चिनुत-

(A) (A) तथा (R) उभावपि असत्यं
(B) (A) तथा (R) उभयं सत्यमस्ति यतः (A) इत्यस्य (R) समुचितं कारणमस्ति
(C) (A) तथा (R) उभावपि सत्यं परं (A) इत्यस्य (R) समुचितं कारणं नास्ति
(D) (A) इति सत्यम् परं (R) इति असत्यम्

व्याख्या- अभिकथन (A) और कारणं (R) 'उत्तररामचरितम्' नामक नाटक के 'प्रथम-अङ्क' से गृहीत हैं, इसके लेखक 'भवभूति' हैं। इसमें नायक राम और नायिका सीता हैं तथा अङ्गीरस करुण है, इसमें 7 अङ्क हैं।

अभिकथन (A)- 'उत्पत्तिपरिपूतायाः किमस्याः पावनान्तरैः।'

अर्थ- जन्म से ही पवित्र इनके लिए अन्य पवित्र करने वाले उपायों से क्या प्रयोजन?

कारणम् (R) -'तीर्थोदकं च वह्निश्च नान्यतः शुद्धिमर्हतः'

अर्थ- तीर्थ का जल और अग्नि दूसरे से शुद्धि नहीं प्राप्त करते।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से ज्ञात होता है कि **विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-20

71. कथनद्वयमधोलिखितम् एकम् A इति अभिकथनम् अपरञ्च (R) इति कारणम् ।

अभिकथनम् (A) पारोवर्यवित्सु तु खलु वेदितृषु भूयोविद्यः प्रशस्यो भवति।

कारणम् (R) यथा तेन गहनरूपेण वारम्वारं स्वाध्यायेन बहु परिश्रमेण वेदाभ्यासः कृतोऽस्ति।

उपर्युक्ताभिकथन– कारणमाश्रित्य समुचितं विकल्पं चिनुत

(A) A तथा R उभावपि सत्यं किन्तु R इति उचितं कारणं नास्ति A इत्यस्य
(B) A तथा R उभावपि सत्यं R इति उचितकारणमस्ति A इत्यस्य
(C) A सत्यं, परन्तु R इति असत्यम्
(D) A तथा R उभावपि असत्यम्

व्याख्या– यास्क कृत निरुक्त के प्रथमोध्याय के अन्तर्गत कहा गया है-

पारावर्यवित्सु तु खलु वेदितृषु भूयोविद्यः प्रशस्यो भवति कथन **(A)** में कहा गया है-

आचार्य- परम्परया शास्त्र का श्रवण करने वाले वेदितृषु विद्वान् में भूयोविद्यः अधिक विद्यावान् प्रशस्यः भवति श्रेष्ठ गिना जाता है। ऐसा विद्वान् अस्पष्टार्थक मन्त्रों का भी सरलता से अर्थ करके दिखला देता है। उसके लिए किसी भी मन्त्र का अर्थ करने में कोई कठिनाई नहीं होती। **जैसे-** चक्षुष्मान् ऊबड़-खाबड़ सम-विषम सब प्रकार के मार्गो को आराम से तय कर लेता है किन्तु अन्धा मनुष्य साफ-सुथरी सड़क पर भी ठोकर खाकर गिर पड़ता है। कथन **R** में कहा गया है-

यथा येन गहनरूपेण वारम्वारं स्वाध्यायेन बहुपरिश्रमेण वेदाभ्यासः कृतोऽस्ति।

विद्वानों के द्वारा गहन रूप से बार-बार स्वाध्याय करने से बहुत परिश्रम के द्वारा वेदों का अभ्यास किया जाता है। उपर्युक्त कथन से

स्पष्ट है कि **A** तथा **R** दोनों सत्य है **R, A** का उचित कारण है।
अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- निरुक्त- छज्जूराम शास्त्री, पेज 48

72. 'तनु विस्तारे' धातोः विधिलिङि प्रथमपुरुषैकवचने रूपद्वयं भवति -

(a) तन्यात् **(b) तनुयात्**

(c) तनिषीष्ट **(d) तन्वीत**

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत-

(A) (a) एवम् (b) (B) (a) एवम् (c)

(C) (a) एवम् (d) (D) (b) एवम् (d)

व्याख्या- 'तनु विस्तारे' धातु यह धातु 'तनादिगण' की प्रमुख धातु है, यह सेट् धातु है तथा उभयपदी है।
इसके विधिलिङ् के रूप निम्न हैं-

परस्मैपद

तनुयात् - तनुयाताम् - तनुयुः
तनुयाः - तनुयातम् - तनुयात
तनुयाम् - तनुयाव - तनुयाम

आत्मनेपद

तन्वीत - तन्वीयाताम् - तन्वीरन्
तन्वीथाः - तन्वीयाथाम् - तन्वीध्वम्
तन्वीय - तन्वीवहि - तन्वीमहि

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरणों से ज्ञात हुआ है कि **विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- रूपचन्द्रिका-ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज-9

73. अधोलिखितानां कालक्रमानुसारं समुचितं क्रमं चिनुत-

(a) गोपथब्राह्मणम् **(b) अथर्ववेदः**

(c) ऐतरेय-ब्राह्मणम् **(d) ऋग्वेदः**

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत-

(A) (a), (b), (c), (d)

(B) (b), (c), (d), (a)

(C) (c), (a), (b), (d)

(D) (d), (b), (c), (a)

व्याख्या- वैदिक वाङ्मय को चार भागों में बाँटा गया है-

(1) संहिता (2) ब्राह्मण (3) आरण्यक (4) उपनिषद्
संहिताओं में ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद है।

इसी क्रम के अनुसार अन्य भी हैं। अर्थात् ब्राह्मण आदि में भी वेदों के अनुसार क्रम आयेगा, जैसे- ऋग्वेद का ऐतरेय ब्राह्मण, यजुर्वेद का शतपथ ब्राह्मण आदि। सामवेद का पञ्चविंश तथा अथर्ववेद का गोपथ ब्राह्मण।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि **विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- वैदिक वाङ्मय 'परीक्षा दृष्टि' - सर्वज्ञभूषण, पेज 71

74. 'को अद्धा वेद क इह प्र वोचत् कुत आजाता कुत इयं विसृष्टिः।' अस्य मन्त्रांशस्य को ऋषिः कश्च देवता?

(a) परमेष्ठी नाम प्रजापतिर्ऋषिः

(b) नारायणः ऋषिः

(c) विसृष्टिः देवता

(d) परमात्मा देवता

अधस्तनेषु समुचितं विकल्पं चिनुत-

(A) (a) एवम् (c) (B) (a) एवम् (d)

(C) (c) एवम् (d) (D) (b) एवम् (c)

व्याख्या- ऋग्वेद में 1017 सूक्त तथा 11 खिलसूक्त कुल मिलाकर 1028 सूक्त हैं, ये सूक्त प्रायः स्तुतिपरक हैं। कुछ सूक्त आध्यात्मिक तथा कुछ दार्शनिक सूक्त हैं। जैसे- 'नासदीय सूक्त' यह सूक्त 10वें मण्डल का 129 वाँ सूक्त है, कुल मन्त्र 7 तथा छन्द त्रिष्टुप् है। इसके ऋषि परमेष्ठी प्रजापति तथा देवता परमात्मा हैं। 'को अद्धा वेद क इह प्र वोचत्' इसी सूक्त का मन्त्रांश है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि **विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- वैदिक वाङ्मय परीक्षा दृष्टि- सर्वज्ञभूषण, पेज 171

75. 1846 तमे ख्रीस्ताब्दे अधोलिखितेषु कतमेन पाश्चात्त्य विदुषा वैदिक-साहित्यम् इतिहासञ्च (Vedic literature and history) इति ग्रन्थः रचितः?

(A) मैक्समूलर- इत्यनेन

(B) रूडाल्फ्-रॉथ-इत्यनेन

(C) विलियम-जोन्स इत्यनेन

(D) मोनियर-विलियम-इत्यनेन

व्याख्या– (रूडाल्फ रॉथ 1821-95 ई.) वैदिक भाषाशास्त्र के क्षेत्र में सर्वाधिक क्रान्तिपूर्ण कार्य करने वाले जर्मन विद्वान् रॉथ (Roth) भी मैक्समूलर के समान यूजीन बर्नूफ के शिष्य थे। केवल 25 वर्ष की आयु में 'वेद का साहित्य तथा इतिहास' (Vedic Literature and history) (1846 ई.) नामक जर्मन ग्रन्थ लिखकर उन्होनें समीक्षात्मक वैदिक अनुशीलन का आरम्भ किया।

रॉथ की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कृति है 'संस्कृत महाकोश' (Sanskrit worterbuch 1852-75) जिसमें वैदिक शब्दों की समीक्षा तो उन्होंने स्वयं की, लौकिक संस्कृत के शब्दों पर टिप्पणियाँ भोतलिंक (OttoBontligk) ने लिखीं।

मैक्समूलर- (1823-1900 ई.) यूरोपीय प्राच्य विद्याविदों में सर्वाधिक व्यापक विषयों पर काम करने वाले फ्रीडरिख मैक्समूलर भारत में भी पर्याप्त लोकप्रिय हुए। उनके पिता जर्मन भाषा के प्रसिद्ध कवि थे। पेरिस में उन्हीं से शिक्षा प्राप्त करते हुए मैक्समूलर को ऋग्वेद के संस्करण के प्रकाशन की प्रेरणा मिली।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 1846 तमे खीस्ताब्दे 'वैदिक साहित्य तथा इतिहास' के रचनाकार रूडाल्फ रॉथ हैं। **अतः विकल्प (B) सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर ऋषि, पेज-117

76. सदूषणापि निर्दोषा सखरापि सुकोमला।
नमस्तस्मै कृता येन रम्या रामायणी कथा ॥
कस्माद् ग्रन्थादुद्धृतोऽयं श्लोकः?

(A) रामायणात् (B) उत्तररामचरितात्
(C) रघुवंशात् (D) नलचम्पोः

व्याख्या- नलचम्पू एक चम्पूकाव्य है, इसके लेखक श्रीत्रिविक्रम भट्ट हैं। इस ग्रन्थ में निषधराज नल तथा भीम की पुत्री दमयन्ती की प्रणयकथा का वर्णन है, मुख्य रस शृङ्गार है तथा श्लेष अलङ्कार का प्रमुख प्रयोग है, इसके मङ्गलाचरण में शिव पार्वती की वन्दना की गई है तथा त्रिविक्रमभट्ट का 'सदूषणापि निर्दोषा ....' यह श्लोक नलचम्पू का है, जिसमें वाल्मीकि को नमस्कार किया गया है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि **विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- नलचम्पू -परमेश्वरदीन पाण्डेय, पेज 7

77. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत-

(a) दण्डी	**(i) सौन्दरनन्दम्**
(b) बिल्हणः	**(ii) हर्षचरितम्**
(c) अश्वघोषः	**(iii) दशकुमारचरितम्**
(d) बाणभट्टः	**(iv) विक्रमाङ्कदेवचरितम्**

एषु समीचीनमुत्तरं चिनुत-

(A) (a)-(ii), (b)-(i), (c)-(iv), (d)-(iii)
(B) (a)-(iii), (b)-(iv), (c)-(i), (d)-(ii)
(C) (a)-(i), (b)-(ii), (c)-(iii), (d)-(iv)
(D) (a)-(iv), (b)-(iii), (c)-(ii), (d)-(i)

व्याख्या- संस्कृतसाहित्य में विभिन्न कवियों ने अपनी-अपनी काव्य कला को प्रसारित किया है, जिनमें कुछ निम्नलिखित हैं-

दण्डी- दण्डी का ग्रन्थ **'दशकुमारचरितम्'** है जिसमें दश राजकुमारों की कथा है, इसमें पूर्वपीठिका मध्यभाग तथा उत्तर पीठिका है। मध्यभाग में आठ उच्छ्वास है। विद्वानों ने इसी को दण्डी का मुख्य भाग स्वीकार किया है।

बिल्हण- बिल्हण ने **विक्रमांकदेवचरितम्** नाम का ग्रन्थ लिखा है। जिसमें चालुक्य राजा 'विक्रमादित्य पञ्चम' के पराक्रम का वर्णन है।

अश्वघोष- इन्होंने बुद्धचरितम् तथा **सौन्दरानन्द** काव्य लिखा। इस ग्रन्थ में बुद्ध के सौतेले भाई आनन्द के बौद्ध धर्म में दीक्षित होने का प्रसङ्ग वर्णित है।

बाणभट्ट- बाणभट्ट का नाम संस्कृत साहित्य में अमर है, इन्होंने कादम्बरी तथा **हर्षचरितम्** नाम की आख्यायिकायें लिखी हैं, हर्षचरितम् में राजा हर्षवर्धन का चरित्र तथा शौर्य-पराक्रम वर्णित है। हर्षचरितम् में आठ उच्छ्वास हैं, जिनमें प्रथम दो उच्छ्वासों में बाण ने अपने वंश के बारे में विस्तारपूर्वक बताया है तथा आगे के उच्छ्वासों में राजा हर्षवर्धन के बारे में।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि **विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज 226, 378, 394

78. कालक्रमानुसारमधोलिखितं ग्रन्थानां समुचितं क्रमं चिनुत-

(a) शब्दकौस्तुभम् **(b) काशिकावृत्तिः**
(c) महाभाष्यम् **(d) वैय्याकरणभूषणसारः**
(e) शब्देन्दुशेखरः

अत्र समुचितं क्रमं चिनुत-

(A) (c), (a), (b), (e), (d)
(B) (d), (b), (a), (e), (c)
(C) (b), (a), (c), (d), (e)
(D) (c), (b), (a), (d), (e)

व्याख्या- वर्तमान समय में सम्पूर्ण विश्व में संस्कृत व्याकरण के रूप में हम पाणिनीय व्याकरण पढ़ते हैं, महर्षि पाणिनि ने अष्टाध्यायी ग्रन्थ लिखा, जिसमें लगभग 4000 सूत्र हैं, महर्षि पाणिनि के सूत्रों पर, कात्यायन (वररुचि) ने वार्तिक लिखे तथा महर्षि पतञ्जलि ने इन दोनों के सूत्रों तथा वार्तिकों को लेकर महाभाष्य लिखा जिसमें 84 आह्निक हैं।

महाभाष्य- इसमें 84 आह्निक है, प्रथम आह्निक का नाम पस्पशाह्निक है, पस्पश का तात्पर्य प्रस्तावना या भूमिका से है। आह्निक का तात्पर्य 'एक दिन में पढ़ा जाने वाला' है।

काशिकावृत्ति- वामन तथा जयादित्य ने इसे लिखा। इसमें आठ अध्याय हैं, प्रथम पाँच वामन तथा शेष तीन जयादित्य कृत हैं, ऐसा विद्वानों ने स्वीकार किया है, इनका समय 7वी. शताब्दी है।

शब्दकौस्तुभ- इसके लेखक भट्टोजिदीक्षित हैं, यह ग्रन्थ पाणिनीय अष्टाध्यायी के ऊपर लिखा गया है, जिसमें बृहती वृत्ति प्राप्त होती है।

वैयाकरणभूषणसार- इस ग्रन्थ के लेखक भी कौण्डभट्ट हैं, इस ग्रन्थ में कारिकायें हैं, इस ग्रन्थ के अन्त में 'सार' शब्द से स्पष्ट होता है कि यह वैयाकरणभूषण ग्रन्थ का सार है। इसका काल (1660) 17वीं शताब्दी है।

शब्देन्दुशेखर- इसके रचयिता नागेशभट्ट हैं, यह नव्य वैयाकरणों का ग्रन्थ है, नागेशभट्ट ने हरिदीक्षितव्याकरण का अध्ययन किया। इनका काल 1730 से 1810 है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि **विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- संस्कृत व्याकरणशास्त्र का इतिहास - रामनाथ त्रिपाठी, पेज-160, 170, 358

79. अश्वघोषकृतं रचनाद्वयं किमस्ति?

(A) हर्षचरितम्, बुद्धचरितम्

(B) बुद्धचरितम्, सौन्दरानन्दम्

(C) विक्रमाङ्कदेवचरितम्, दशकुमारचरितम्

(D) उत्तररामचरितम्, महावीरचरितम्

व्याख्या- अश्वघोष बौद्ध महाकवि तथा दार्शनिक थे, इनका समय प्रथम शताब्दी का अन्त तथा दूसरी शताब्दी का आरम्भ है। ये कुषाण नरेश कनिष्क के समकालीन हैं। जिनकी दो रचनायें प्राप्त होती है- (1) बुद्धचरितम् 2. सौन्दरानन्दकाव्यम्

बुद्धचरितम् - इसमें महात्मा बुद्ध के जीवन का वृत्तान्त है, जो कि 28 सर्गों में है तथा संस्कृत भाषा में है लेकिन पूरा ग्रन्थ संस्कृत में नहीं है, इसमें बुद्ध के जन्म से लेकर बुद्धत्व प्राप्ति तक का वर्णन है।

सौन्दरानन्द- ये बुद्ध के सौतेले भाई आनन्द के ऊपर लिखा गया काव्य है, जिसमें उनके बौद्ध शिक्षा ग्रहण का वर्णन है। इसमें 18 सर्ग है तथा प्रधान रस शान्त रस है। नायक 'नन्द' तथा नायिका 'सुन्दरी' है, इन्ही के कारण इस ग्रन्थ का नाम 'सौन्दरानन्द' पड़ा।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि **विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- संस्कृतसाहित्य का इतिहास- उमाशङ्करशर्मा, पेज-229

80. ब्राह्मीलिपेराविष्कारका भारतीया आसन् इति को मन्यते?

(A) जार्जब्यूलरमहोदयः (B) बर्नेलमहोदयः

(C) वेबरमहोदयः (D) एडवर्डथामसमहोदयः

व्याख्या- ब्राह्मी लिपि का उद्भव भारत में भारतीयों के द्वारा हुआ इसके तीन उद्भव सिद्धान्त हैं जो निम्न हैं-

(1) चीनी लिपि (2) ग्रीक या फोनाशी लिपि (3) सामी लिपि

इससे तात्पर्य है कि कुछ प्रमुख पाश्चात्य विद्वानों ने 'ब्राह्मी लिपि' की उत्पत्ति विदेशों में मानी है, उनका कथन है कि चीनी लिपि या ग्रीक या सामी लिपि का ब्राह्मी से साम्य है और इसी आधार पर ब्राह्मी विदेश से उद्भूत हुई है-

एडवर्ड थॉमस का यह मत है कि ब्राह्मी अक्षर भारतवासियों के ही बनाए हुए हैं और उनकी सरलता से उनके वालों की बड़ी बुद्धिमानी प्रकट की है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से ज्ञात होता है कि **विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- (i) भाषा विज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 492

(ii) भारतीय पुरालेखों का अध्ययन - शिवस्वरूप सहाय, पेज 15

81. 'दोषावस्तः' इति पदस्य सायणानुसारम् अधोलिखितेषु कतम अर्थः विद्यते?

(A) गुणदोषौ **(B)** उदयास्तौ

(C) रात्रावह्नी **(D)** सूर्याचन्द्रमसौ

व्याख्या-

उप त्वाग्ने दिवेदिवे दोषावस्तर्धिया वयम्।

नमो भरन्त एमसि ।। (अग्निसूक्त मन्त्र-7)

अर्थ- हे अग्नि देव! हम यज्ञ का अनुष्ठान करने वाले और दिन-रात उत्तम बुद्धि से नमस्कार करते हुए प्रतिदिन तुम्हारे समीप आते हैं।

शब्दार्थ- उप-समीप, दिवेदिवे-प्रतिदिन, दोषावस्तः-रात दिन, धिया-उत्तम बुद्धि, नमो भरन्तः-नमस्कार करते हुए, एमसि-आते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'दोषावस्तः' का अर्थ रात्रावह्नी है **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- अग्निसूक्त (ऋग्वेद- 1.1.7)

82. 'ऐधेताम्' इति प्रयोगे कानि धातु-लकार-पुरुष-वचनानि?

(A) एध् धातुः, लङ्लकारः, प्रथमपुरुषः, द्विवचनम्

(B) एध् धातुः, लोट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्

(C) एध् धातुः, लोट्लकारः, प्रथमपुरुषः, द्विवचनम्

(D) एध् धातुः, लोट्लकारः, मध्यमपुरुषः, द्विवचनम्

व्याख्या-

लट्लकार			
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	एधते	एधेते	एधन्ते
मध्यम पुरुष	एधसे	एधेथे	एधध्वे
उत्तम पुरुष	एधे	एधावहे	एधामहे
लोट्लकार			
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	एधताम्	एधेताम्	एधन्ताम्
मध्यम पुरुष	एधस्व	एधेथाम्	एधध्वम्
उत्तम पुरुष	एधै	एधावहै	एधामहै
लङ्लकार			
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ऐधत	ऐधेताम्	ऐधन्त
मध्यम पुरुष	ऐधथाः	ऐधेथाम्	ऐधध्वम्
उत्तम पुरुष	ऐधे	ऐधावहि	ऐधामहि
लृट् लकार			
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	एधिष्यते	एधिष्येते	एधिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	एधिष्यसे	एधिष्येथे	एधिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	एधिष्ये	एधिष्यावहे	एधिष्यामहे

लुट्लकार			
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	एधिता	एधितारौ	एधितारः
मध्यम पुरुष	एधितासे	एधितासाथे	एधिताध्वे
उत्तम पुरुष	एधिताहे	एधितास्वहे	एधितास्महे

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि ऐधेताम् लङ्लकार प्रथम पुरुष द्विवचन का रूप है **अतः विकल्प 'A' सही है।**
स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी-गोविन्दाचार्य, पेज 494

83. अधोनिर्दिष्टयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत–

(क) गोपथ-ब्राह्मणम्	**I** कृष्णयजुर्वेदः
(ख) बृहदारण्यकम्	**II** सामवेदः
(ग) आर्षेय-बाह्मणम्	**III** अथर्ववेदः
(घ) तैत्तिरीय-ब्राह्मणम्	**IV** शुक्लयजुर्वेदः

अत्र समुचिंत विकल्पं चिनुत-
(A) (a)-(iii), (b)-(iv), (c)-(ii), (d)-(i)
(B) (a)-(iv), (b)-(i), (c)-(iii), (d)-(ii)
(C) (a)-(ii), (b)-(iii), (c)-(iv), (d)-(i)
(D) (a)-(i), (b)-(ii), (c)-(iii), (d)-(iv)

व्याख्या-

वेद	ब्राह्मण	आरण्यक
ऋग्वेद	ऐतरेय ब्राह्मण, कौषीतकि या शांखायन ब्राह्मण	ऐतरेय आरण्यक, शांखायन आरण्यक
शुक्ल यजुर्वेद	शतपथ ब्राह्मण	बृहदारण्यक
कृष्णयजुर्वेद	तैत्तिरीय ब्राह्मण	तैत्तिरीय आरण्यक
सामवेद	ताण्ड्य ब्राह्मण, षड्विंश सामविधान, आर्षेय, मन्त्र देवताध्याय, वंश सहितोपनिषद्	कोई आरण्यक नहीं
अथर्ववेद	गोपथ ब्राह्मण	कोई आरण्यक नहीं

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि **विकल्प 'A' सही** है।
स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-09

84. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत–

(क) शमप्रधानेषु तपोधनेषु गूढं हि दाहात्मकमस्ति तेजः	**I** नलचम्पूः
(ख) आनीय झटिति घटयति विधिरभिमतमभिमुखीभूतः	**II** नैषधीयचरितम्
(ग) अक्षमालापवृत्तिज्ञा कुशासनपरिग्रहा ब्राह्मीव दौर्जनी संसद्वन्दनीया समेखला	**III** रत्नावली
(घ) अदृष्टमप्यर्थमदृष्टवैभवात्करोति सुप्तिर्जनदर्शनातिथिम्	**IV** अभिज्ञानशाकुन्तलम्

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत–

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(A)	II	I	III	IV
(B)	I	II	IV	III
(C)	III	II	IV	I
(D)	IV	III	I	II

व्याख्या- ➢ कालिदास द्वारा रचित अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के द्वितीय अंक के प्रसंग में राजा सेनापति से कहता है-

शमप्रधानेषु तपोधनेषु गूढं हि दाहात्मकमस्ति तेजः।
स्पर्शानुकूला इव सूर्यकान्तास्तदन्यतेजोऽभिभवाद् वमन्ति ।।

अर्थात् शान्तिप्रधान तपस्वियों में जला देने वाला गुप्त तेज रहता है क्योंकि स्पर्श के योग्य सूर्यकान्तमणियों के तुल्य अन्य तेज से तिरस्कृत होने पर भी उस को प्रकट करते हैं। (अभि.2.7)

➢ हर्षदेव प्रणीत रत्नावली नाटिका के प्रथम अङ्क में सूत्रधार कहता है,

द्वीपादन्यस्मादपि मध्यादपि जलनिधेर्दिशोऽप्यन्तात्।
आनीय झटिति घटयति विधिरभिमतमभिमुखीभूतः ।।

अनुकूल भाग्य दूसरे से भी समुद्र के भीतर से भी और दिशा के अन्तिम भाग से इष्ट वस्तु को शीघ्र लाकर मिला देता है। (रत्ना. 1.7)

➢ त्रिविक्रमभट्ट प्रणीत नलचम्पू के प्रथम उच्छ्वास में दुर्जनों के विषय में कहा गया है–

अक्षमालापवृत्तिज्ञा कुशासनपरिग्रहा ।
ब्राह्मीव दौर्जनी संसद्वन्दनीया समेखला ।। (नल. 1.7)

असहनशीलतापूर्वक बात करने का व्यवहार जानने वाली, कुशिक्षा स्वीकार करने वाली तथा सज्जन के प्रति दुष्टता करने वाली दुर्जनों की सभा विप्रों की सभा की तरह वन्दनीय है अर्थात् दूर से ही परिहरणीय है।

विप्रसभा पक्ष में- रुद्राक्ष माला फेरने का ज्ञान रखने वाली, कुशों का आसन स्वीकार करने वाली, मूँज की बनी मेखला (करधनी) से युक्त दुर्जनों की सभा विप्रों की सभा की तरह वन्दनीय है।

➢ नैषधीयचरितम् के प्रथम सर्ग में दमयन्ती के स्वप्न का वर्णन करते हुए श्रीहर्ष कहते हैं-

मनोरथेन स्वपतीकृतं नलं निशि क्व सा न स्वपती स्म पश्यति ।
अदृष्टमप्यर्थमदृष्टवैभवात्करोति सुप्तिर्जनदर्शनातिथिम् ।। (1.39)

मन के संकल्प के द्वारा अपना पति बनाए हुए नल को सोती हुई वह दमयन्ती किस रात में नहीं देखती थी क्योंकि स्वप्न सौभाग्यवश बिना देखी हुई वस्तु को भी लोगों की दृष्टि का अतिथि बना देता है अर्थात् प्रत्यक्ष दिखला देती है।

स्पष्टीकरण - उपर्युक्त व्याख्या से सुस्पष्ट है कि **विकल्प (D) सही है।**

85. 'द्वित्राः' इत्यत्र कः समास?

(A) अव्ययीभावः (B) तत्पुरुषः

(C) बहुव्रीहिः (D) द्वन्द्वः

व्याख्या- **द्वित्रा**

लौकिक विग्रह- द्वौ वा त्रयो वा

अलौकिक विग्रह- द्वि औ त्रि जस्

'संख्ययाऽव्ययासन्नादूराधिकसंख्याः संख्येये' सूत्र से अलौकिक विग्रह में बहुव्रीहि समास, प्रातिपदिक सञ्ज्ञा सुप् का लुक्-

द्वित्रि बना

'बहुव्रीहौ संख्येये डच्बहुगणात्' सूत्र से समासान्त डच् प्रत्यय-

द्वित्रि डच्

डच् प्रत्यय का अनुबन्ध लोप- द्वि त्रि अ

डित् परे होने के कारण टेः सूत्र से टिसंज्ञक भाग इकार का लोप

द्वित्र

'एकदेशविकृतमनन्यवत्' के बल से विकृत होने पर भी वह प्रातिपदिक बना रहा अतः सु आदि कार्य करने पर प्रथमा बहुवचन में द्वित्राः रूप सिद्ध हुआ।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि द्वित्राः इति पदे बहुव्रीहिः समासोऽस्ति। **अतः विकल्प (C) सही है।**

स्रोत- सिद्धान्तकौमुदी-गोपालदत्त पाण्डेय, पेज-290

86. शांखायनारण्यकः अधोनिर्दिष्टेषु केन सह सम्बद्धोऽस्ति?

(A) सामवेदेन सह **(B)** यजुर्वेदेन सह

(C) अथर्ववेदेन सह **(D)** ऋग्वेदेन सह

व्याख्या-

➢ **ऋग्वेद के आरण्यक ग्रन्थ-** ऋग्वेद के दो आरण्यक ग्रन्थ प्राप्त होते हैं–

* **ऐतरेय आरण्यक-** ऐतरेय आरण्यक ऐतरेय ब्राह्मण का ही परिशिष्ट भाग है। इसमें पाँच भाग हैं इन भागों को आरण्यक या प्रपाठक कहते हैं। ये पुनः अध्यायों में विभक्त हैं। ऐतरेय आरण्यक में महाव्रत का वर्णन है जो गवामयन सत्र का ही अंश है, इसमें उक्त का विवेचन है। ऐतरेय आरण्यक में महानाम्नी ऋचाओं का वर्णन है।

* **शांखायन आरण्यक-** शांखायन आरण्यक ऋग्वेदीय आरण्यक है। शांखायन आरण्यक में **15 अध्याय** हैं। अध्याय 3-6 तक को इसे कौषीतकि उपनिषद् कहते हैं। अध्याय 7-8 को संहितोपनिषद् कहते हैं एवं कौषीतकि आरण्यक भी कहते हैं।

➢ **यजुर्वेद के आरण्यक ग्रन्थ-** यजुर्वेद के निम्नलिखित आरण्यक ग्रन्थ प्राप्त होते हैं-

* **बृहदारण्यक-** बृहदारण्यक शुक्ल यजुर्वेदीय आरण्यक हैं। यह शतपथ ब्राह्मण के अन्तिम **14वें** काण्ड के अन्त में दिया गया है। इसमें आत्मतत्त्व का विशद विवेचन है।

* **तैत्तिरीय आरण्यक-** तैत्तिरीय आरण्यक कृष्ण यजुर्वेदीय शाखा का आरण्यक है। इसमें **10 प्रपाठक** या परिच्छेद हैं। प्रपाठकों के उपविभाग अनुवाक हैं। तैत्तिरीय आरण्यक के दस प्रपाठकों के नाम- 1. भद्र 2. सहवै 3. चिति 4. युञ्जते 5. देव वै 6. परे 7. शिक्षा 8. ब्रह्मविद्या 9. भृगु 10. नारायणीय।

* **मैत्रायणीय आरण्यक-** मैत्रायणीय आरण्यक भी कृष्ण यजुर्वेदीय शाखा का आरण्यक है इसे मैत्रायणीयोपनिषद् भी कहते हैं।

➢ **सामवेदीय आरण्यक-** सामवेद से सम्बन्धित तलवकार आरण्यक प्राप्त होता है इसे जैमिनीयोपनिषद् ब्राह्मण भी कहते हैं। जिसमें चार अध्याय हैं।

➢ **अथर्ववेद के आरण्यक-** अथर्ववेद का कोई भी आरण्यक नहीं प्राप्त होता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि शांखायन आरण्यक ऋग्वेद से सम्बन्धित है **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति– कपिलदेव द्विवेदी, पेज-09

87. तर्कभाषानुसारम् अयुतसिद्धयोः कः सम्बन्धः–

(A) संयोगः **(B)** समवायः

(C) विषय-विषयिभावः **(D)** आधाराधेयभावः

व्याख्या- केशवमिश्र प्रणीत तर्कभाषा में सम्बन्ध को निम्नवत् परिभाषित किया गया है-

* 'तत्रायुतसिद्धयोः सम्बन्धः समवायः अन्योस्तु संयोग एव।'

उनमें जो दो अयुतसिद्ध अर्थात् अपृथक् सिद्ध पदार्थों का सम्बन्ध है वह समवाय कहलाता है किन्तु जो अन्य दो पदार्थों का सम्बन्ध है वह संयोग ही है।

* सम्बन्ध दो प्रकार का होता है प्रथम समवाय सम्बन्ध तथा दूसरा संयोग सम्बन्ध।

* ययोर्मध्ये एकमविनश्यदपराश्रितमेवावतिष्ठते तावयुतसिद्धौ अर्थात् जिन दो पदार्थ में से एक अविनश्यदवस्था में दूसरे पर आश्रित ही रहता है वे दोनों पदार्थ अयुतसिद्ध कहलाते हैं। **उदाहरण-** तन्तु पट, पट तन्तु पर आश्रित है वह तन्तुओं के आश्रय के बिना नहीं रह सकता।

➢ पुस्तक और मेज का सम्बन्ध संयोग सम्बन्ध है क्योंकि ये दोनों एक दूसरे पर आश्रित हुए बिना भी अलग-अलग रह सकते हैं अतः इन दोनों का सम्बन्ध संयोग सम्बन्ध है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि अयुतसिद्ध पदार्थों में समवाय सम्बन्ध होता है- **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- तर्कभाषा-बदरीनाथ शुक्ल, पेज-36

88. सांख्यकारिकानुसारं प्रत्ययसर्गः इत्यस्य कोऽर्थः?

(A) प्रत्ययो बुद्धिः, तस्य सर्गः कार्यम् ।
(B) प्रत्ययो मनः, तस्य सर्गः कार्यम्।
(C) प्रत्ययः संसारः, तस्य सर्गः उत्पत्तिः।
(D) प्रत्ययोऽहंकारः, तस्य सर्गः कार्यम्।

व्याख्या- सांख्यकारिका ईश्वरकृष्ण द्वारा रचित दर्शन का एक प्रकरण ग्रन्थ है जिसमें प्रकृति पुरुष का विवेचन है।

एष प्रत्ययसर्गो विपर्ययाशक्तितुष्टिसिद्ध्याख्यः ।
गुणवैषम्यविमर्दात् तस्य च भेदास्तु पञ्चाशत् ।। (का. 46)

विपर्यय, अशक्ति, तुष्टि, सिद्धि नामक बौद्धिक सर्ग गुणों की विषमता के कारण एक दूसरे के अभिभव से उसके पचास भेद होते हैं। सांख्य के अनुसार बौद्धिक सृष्टि के अन्तर्गत परिगणित सभी तत्त्वों को विपर्यय, अशक्ति, तुष्टि एवं सिद्धि नामक चार भागों में विभाजित करके उसे प्रत्ययसर्ग बुद्धि की सृष्टि कहा है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि विकल्प 'A' सही है।

स्रोत- सांख्यकारिका-(का.46)

89. मनुमतेरनधीयानो विप्रो कीदृशो भवति?

(क) काष्ठमयो हस्ती (ख) शक्तिमयो सिंहः
(ग) चर्ममयो मृगः (घ) गतिमयोऽश्वः

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत–

(A) क एवं ख (B) ख एवं ग
(C) ग एवं क (D) घ एवं ख

व्याख्या- मनुस्मृति के द्वितीय अध्याय में चारों वर्णों के वर्णन प्रसंग में ब्राह्मण के विषय में कहा गया है-

यथा काष्ठमयो हस्ती यथा चर्ममयो मृगः ।
यश्च विप्रोऽनधीयानस्त्रयस्ते नाम बिभ्रति ।। (मनु. 2.157)

काठ का हाथी, चमड़े का मृग और बिना पढ़ा ब्राह्मण ये तीनों केवल नाम धारण करते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि बिना पढ़ा हुआ ब्राह्मण काष्ठमय हस्ती एवं चर्ममय मृग के समान है **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- मनुस्मृति (2.157)

90. अधोलिखितानां कालक्रमानुसारं समुचितं क्रमं चिनुत–

(1) उव्वट-भाष्यम् (2) दयानन्द-भाष्यम्
(3) स्कन्दस्वामी-भाष्यम् (4) सायण-भाष्यम्

अत्र समुचितं क्रमं चिनुत–

(A) 1, 4, 3, 2 (B) 4, 2, 3, 1
(C) 3, 1, 4, 2 (D) 2, 3, 1, 4

व्याख्या-

➢ **उव्वट-** उव्वट आनन्दपुर के निवासी वज्रट के पुत्र थे, अवन्ती में रहकर राजा भोज के शासनकाल में भाष्य का प्रणयन किया, उव्वट का समय **11वीं** शताब्दी माना जाता है, इन्होनें शुक्ल यजुर्वेद की माध्यन्दिन संहिता पर भाष्य लिखा जिसका नाम उव्वटभाष्य है। इसके अतिरिक्त ऋक् प्रातिशाख्य की टीका, यजुः प्रातिशाख्य की टीका, ऋक् सर्वानुक्रमणी पर भाष्य और ईशावास्योपनिषद् पर भाष्य लिखा।

➢ **स्कन्दस्वामी-** ऋग्वेद का सबसे प्राचीन भाष्य स्कन्दस्वामी का ही उपलब्ध है जिनका समय **625 ई.** के लगभग है। स्कन्दस्वामी का भाष्य ऋग्वेद के चतुर्थ अष्टक तक प्राप्त होता है शेष भाग नारायण और उद्गीथ ने पूर्ण किया। स्कन्दस्वामी ने यास्क के निरुक्त पर भी एक टीका लिखी।

➢ **आचार्य सायण-** आचार्य सायण विजयनगर के संस्थापक महाराज बुक्क और महाराज हरिहर के अमात्य एवं सेनानी थे जिनका समय **14वीं** शताब्दी ई. है। इन्होनें अपने बड़े भाई माधव के आदेशानुसार वेदभाष्य किया और उनका नाम अमर करने के लिए भाष्य का नाम 'माधवीय वेदार्थ प्रकाश' रखा गया। आचार्य सायण ने ऋग्वेद सहित **5 वैदिक संहिताओं, 11 ब्राह्मण ग्रन्थ और दो आरण्यकों** पर पाण्डित्यपूर्ण भाष्य लिखा है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है **कि विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-22,23

परिच्छेदः -

उपर उपलो मेघो भवति। उपरमन्तेऽस्मिन्नभ्राणि। उपरता आप इति वा। तेषामेषा भवति- देवानां माने प्रथमा अतिष्ठन्कृन्तत्रादेषामुपरा उदायन्। त्रयस्तपन्ति पृथिवीमनूपा द्वा बृबूकं वहतः पुरीषम्॥- देवानां निर्माणे प्रथमा अतिष्ठन् माध्यमिका देवगणाः। प्रथम इति मुख्यनाम प्रथमो भवति। कृन्तत्रमन्तरिक्षं विकर्तनं मेघानां विकर्त्तनेन मेघानामुदकं जायते। त्रयस्तपन्ति पृथिवीमनूपाः। पर्जन्योः वायुरादित्यः शीतोष्णवर्षैरोषधीः पाचयन्त्यनूपा अनुवपन्ति लोकान्स्वनेन स्वेन कर्म्मणा। अयमपीतरोऽनूप एतस्मादेवानूप्यत उदकेनापि वान्वाविति स्याद्यथा प्रागिति तस्यानूप इति स्याद्यथा प्रागिति तस्यानूप इति स्याद्यथा प्राचीनमिति। द्वा बृबूकं वहतः पुरीषम्। वाय्वादित्या उदकं बृबूकमित्युदकनाम.....।

अनुवाद- उपर और उपल मेघ के वाचक हैं क्योंकि इसमें मेघ के धुधियाले पूर्वरूप रमण करते हैं। र और ल में कोई भेद नहीं। अतः उपर और उपल दोनों की एक सी व्युत्पत्ति है। इनमें जल ठहरते हैं।

उन मेघों के विषय में यह ऋचा है। सृष्टि निर्माण के समय या जब प्रजापति ने देवों का निर्माण प्रारम्भ किया तब वे माध्यमिक देवगण अर्थात् बादल मुख्य थे। सबसे पूर्व इन्हीं की सृष्टि की। क्योंकि वर्षा के बिना जगत् की स्थिति ही सम्भव नहीं है। अतः इन्हें पहले ही बनाया। इनके कर्त्तन से या अन्तरिक्ष से जल आये बादलों

के काटने से वर्षा होने लगी या अन्तरिक्ष से मेघों के जल टपकने लगे। यद्यपि **उपर शब्द मेघ वाचक है, जल-वाचक नहीं** तथापि उपर में रहने वाले जल भी उपर शब्द से लिये गए हैं। अनुग्रह करने वाले तीन **वायु, आदित्य** और **पर्जन्य पृथ्वी पर रहने वाले औषधियों को पकाते हैं। वायु शीत से, आदित्य उष्णता से** और **पर्जन्य वर्षा से सब वनस्पति** तथा **औषधों को पकाते हैं।** दो अर्थात् वायु और आदित्य तृप्त कर देने वाले या भर देने वाले जल को इस पृथ्वी लोक से ऊपर ले जाते हैं सुखा देते हैं। मध्यमलोक अन्तरिक्ष में रहने वाले देवगण बादल प्रथम यह मुख्य नाम है क्योंकि लोक वह सबसे उत्कृष्ट होता है। **कृन्तत्र अन्तरिक्ष को कहते हैं।** मेघों को काटने वाला है। या अन्तरिक्ष में मेघों का कर्त्तन छेदन होता रहता है। इससे **अन्तरिक्ष को कृन्तत्र** कहते हैं। बादलों के कर्त्तन से पानी गिरने लगता है। **पर्जन्य, वायु और आदित्य ये तीनों शीत, उष्णता और वर्षा से सब अन्नों को पका देते हैं।** इन्हें अनूप इसलिए कहते हैं कि ये तीनों अपने-अपने वर्षादि कार्य से लोकों पर अनुग्रह करते रहते हैं। यह भी दूसरा जलप्राय देश जल से तर रहता है। सदा पानी बिखरा रहता है। जहाँ पानी आता रहता है उस स्थान को अन्वाप् कहते हैं। और अन्वाप् ही अनूप बन गया। **जैसे-** प्राक् की जगह प्राचीन बोला जाता है। वायु और आदित्य ये दोनों उदक को ले जाते हैं। पर्जन्य पानी बरसाता है, और फिर वायु और आदित्य ये दोनों सुखा देते हैं। यदि ये शोषण न करें तो अन्न ही नहीं पक सकता। **बृबूक यह जल का वाचक है।**

91. उपरिलिखित परिच्छेदमनुसृत्य अधोलिखितेषु 'बृबूकम्' इति पदस्यार्थं चिनुत-

(A) मेघः **(B)** उदकम्
(C) वायुः **(D)** आदित्यः

व्याख्या-

- यास्क कृत निरुक्त निघण्टु ग्रन्थ की व्याख्या है।
- निघण्टु ग्रन्थ पाँच अध्याय और तीन काण्डों में विभक्त है।
- प्रथम तीन अध्याय 'ऐकपदिक' या 'नैगमकाण्ड' कहलाता है।
- पाँचवा अध्याय 'दैवतकाण्ड' कहलाता है।

निरुक्त के द्वितीय अध्याय के षष्ठ पाद में मेघ शब्द का निर्वचन किया गया है जिसके अन्तर्गत 'बृबूकम्' शब्द आया है- इसका अर्थ जल है।

बृबूकम् इति उदक नाम। बृबूक यह जल (उदक) का वाचक है।

- ब्रवीतेः वा शब्दकर्मणः भ्रंशतेः वा।

ब्रूञ् धातु से बनता है, क्योंकि जल शब्द करता है।

- या अधः पतनार्थक 'भ्रंश्' धातु से बृबूक बन जाएगा क्योंकि पानी मेघ से नीचे गिरता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट होता है कि 'बृबूक' का अर्थ उदक (जल) होता है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

92. उपरिलिखित परिच्छेदमनुसृत्य अधोलिखितेषु त्रयस्तपन्ति इत्यस्य वाक्यस्य अभिप्रायः कः?

(A) त्रयो तापाः पृथिवीं तपन्ति
(B) मनुष्याणां पापानि पृथिवीं तपन्ति
(C) पर्जन्यो-वायुरादित्याः पृथिवीं तपन्ति
(D) सूर्यरश्मयः वडवानश्च पृथिवीं तपन्ति

व्याख्या- उपर्युक्त पंक्ति में 'त्रयस्तपन्ति' का अर्थ- पर्जन्य, वायु और आदित्य। ये तीनों वर्षा, शीत और उष्णता से सब अन्नों को पका देते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'त्रयस्तपन्ति' का अर्थ पर्जन्य, वायु और आदित्य से है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

93. उपरिलिखित-परिच्छेदमनुसृत्य अधोलिखितेषु 'कृन्तत्रम्' इति पदस्य अर्थं चिनुत-

(A) अन्तरिक्षम् **(B)** विकर्तनम्
(C) उदकम् **(D)** मेघः

व्याख्या- ऊपर लिखे हुए गद्यांश में 'कृन्तत्रम्' पद का अर्थ 'अन्तरिक्ष' है। 'कृन्तत्रम्' अन्तरिक्षम् ।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'कृन्तत्रम्' पद का अर्थ 'अन्तरिक्ष' है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

94. उपरिलिखित- परिच्छेदमनुसृत्य अधोलिखितेषु 'उपर' इति पदस्य अर्थं चिनुत-

(A) नभः **(B)** मेघः
(C) जलम् **(D)** अश्वः

व्याख्या- उपर्युक्त गद्यांश में उपर पद का अर्थ मेघ है। 'उपर उपलो मेघो भवति।' उपल या उपर ये दोनों मेघ के वाचक हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'उपर' पद का अर्थ मेघ होता है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

95. उपरिलिखित- परिच्छेदमनुसृत्य अधोलिखितेषु 'अनूपाः' इति पदं केषां विशेषणमस्ति?

(A) रवि-पृथिवी-जलानाम्
(B) अपस्तेजसादित्यानाम्
(C) पृथिवी-जल-वायूनाम्
(D) वायुरादित्यपर्जन्यानाम्

व्याख्या- उपर्युक्त गद्यांश में उल्लिखित अनूपाः शब्द का विशेषण है- वायुः, आदित्य और पर्जन्य।

पर्जन्यो वायुः आदित्यः शीतोष्ण-वर्षैः ओषधीः पाचयन्ति। पर्जन्य, वायु और आदित्य ये तीनों शीत, उष्णता और वर्षा से सब

अन्नों को पकाते हैं। अतः ये अनूप कहलाते हैं।

अनूपाः अनूवपन्ति लोकान् स्वेन स्वेन कर्मणा-

इन्हें अनूप इसलिए कहते हैं कि ये तीनों अपने-अपने वर्षादि कार्य से लोकों पर अनुग्रह करते रहते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि अनूपाः पद का विशेषण 'वायुरादित्यपर्जन्यानाम्' से सम्बन्धित है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- निरुक्त- छज्जूराम शास्त्री, पेज-104,105

परिच्छेदः -

इयं संवर्धनवारिधारा तृष्णा विषवल्लीनाम्, व्याधगीतिरिन्द्रियमृगाणाम्, परामर्शधूमलेखा सच्चरितचित्राणाम्, तिमिरोद्गतिः शास्त्रदृष्टीनाम् पुरःपताका सर्वाविनयानाम्, उत्पत्तिनिम्नगा क्रोधावेगग्राहाणाम्, आपानभूमिर्विषयमधूनाम्, सङ्गीतशाला भ्रूविकारनाट्यानाम्, आवासदरी दोषाशीविषाणाम्, उत्सारणवेत्रलता सत्पुरुषव्यवहाराणाम्, प्रस्तावना कपटनाटकस्य, कदलिका कामकरिणः, वध्यशाला साधुभावस्य, राहुजिह्वा धर्मेन्दुमण्डलस्य लतेव विटपकानध्यारोहति। गङ्गेव वसुजनन्यपि तरङ्गबुद्बुदचञ्चला, पातालगुहेव तमोबहुला, हिडिम्बेव भीमसाहसैकहार्यहृदया प्रावृडिवाचिरद्युतिकारिणी, दुष्टपिशाचीव दर्शितानेकपुरुषोच्छ्राया स्वल्पसत्त्वमुन्मत्तीकरोति।

अनुवाद- क्योंकि यह तृष्णारूपी विष की लताओं को (अर्थात् विष लताओं को बढ़ाने वाली) जलधारा है, इन्द्रिय-रूपी हरिणों की व्याधगीति है (अर्थात् उन्हें आकृष्ट करने हेतु गाया जाने वाला बहेलियों का गीत है।) सच्चरित्र (सदाचार) रूपी चित्रों की आच्छादन-धूमलेखा है (अर्थात् चित्रों को ढँकने के लिए धुयें की रेखा है), मोहरूपी लम्बी नींद की विलास शय्या है (अर्थात् लम्बी नींद के लिए सुविधापूर्ण विलास करने की सेज है), धनमदरूपी पिशाचिनियों की (अर्थात् प्रेतनियों के रहने के लिए) टूटी-फूटी अटारी है, शास्त्ररूपी दृष्टियों की तिमिररोग की उत्पत्ति है। अर्थात् शास्त्र-दृष्टि रखने वालों के लिए तिमिर नामक नेत्र-रोग को उत्पन्न करने वाली है, सर्वविध (सब प्रकार के) अविनयों दुर्बुद्धियों की (अर्थात् विनयों के आगे फहराने वाली) अग्र पताका है, क्रोध के आवेग रूपी मगरमच्छों की उत्पत्ति करने वाली नदी है, (अर्थात् ग्रहों की उत्पत्ति के लिए नदी है), विषयरूपी मदिरा की पानस्थली है (अर्थात् शब्द-स्पर्श आदि विषय रूपी मदिरा के पीने का स्थान है), भौहों (भृकुटी) के विकाररूपी नाट्यों की संगीतशाला है, दोषरूपी विषैले सर्पों के रहने की गुफा है , सज्जन पुरुषों के व्यवहारों (अर्थात् शिष्टाचारों को हटाने की बेत की छड़ी है। गुणरूपी हंसों की मधुर भाषी हंसों के लिए अकाल वर्षा है, लोकनिन्दा रूपी फोड़ो के फैलने की उपयुक्त भूमि है, कपट-रूपी नाटक की प्रस्तावना है, कामरूपी हाथी के लिए केले का पौधा है। सज्जनता की हिंसा भूमि अर्थात् (वध्यशाला) है। धर्म रूपी चन्द्रमण्डल की (अर्थात् चन्द्रमण्डल को ग्रसने के लिए) राहु की जिह्वा है।

लता की भाँति यह (लक्ष्मी) विटपों अर्थात् दुष्टों को पालने वालों का आश्रय ग्रहण करती है अर्थात् उनके पास चली जाती है। आठ वसुओं (देवों अथवा भीष्म) की माता होते हुए भी तरङ्गों तथा बुलबुलों के समान चञ्चल है। अनेक (राशियों में) संक्रान्तियों से युक्त सूर्य की गति के समान (यह लक्ष्मी) विविध (अनेक) व्यक्तियों में सञ्चरण करती है। अत्यधिक अन्धकार से युक्त पाताल की गुफा के समान अधिक तमो गुण वाली है। केवल भीम के साहस से (प्रभावित हो जाने के कारण उसके प्रति) खींचे जाने वाले हृदय से युक्त हिडिम्बा राक्षसी के समान (यह लक्ष्मी) केवल प्रचण्ड साहस से वश में करने योग्य हृदय वाली है। विद्युत् को उत्पन्न करने वाली वर्षा की भाँति यह अल्पकालीन प्रकाश अर्थात् सम्पन्नता को उत्पन्न करने वाली है। अनेक पुरुषों की ऊँचाई प्रदर्शित करके अल्प साहस वाले व्यक्ति को उन्मत्त (अर्थात् भय के कारण पागल सा करने वाली दुष्ट पिशाची के समान (यह लक्ष्मी) अनेक पुरुषों की समृद्धि (उन्नति दिखाकर निर्बल कमजोर) हृदय वाले व्यक्ति को (उन्नति पाने की आशा में) पागल बना देती है।

स्रोत- शुकनासोपदेश-राजेश्वर शास्त्री, पेज-67,76

96. उपरिलिखित-परिच्छेदमनुसृत्य अधोलिखितेषु ''तिमिरोद्गतिः शास्त्रदृष्टीनाम्'' इति गद्यांशानुसारं तिमिरोद्गतिः कुत्र भवति?

(A) कर्णे **(B)** हस्ते

(C) शिरसि **(D)** नेत्रे

व्याख्या- महाकवि बाणभट्ट द्वारा विरचित गद्यकाव्य कादम्बरी के उत्तरार्ध भाग शुकनासोपदेश जिसमें तारापीड के मन्त्री शुकनास युवराज चन्द्रापीड को राज्याभिषेक के समय उपदेश देते हुए लक्ष्मी (धन) के विषय में कहते हैं कि-

'तिमिरोद्गतिः शास्त्रदृष्टीनाम्' अर्थात् -

(यह चञ्चला लक्ष्मी) शास्त्र रूपी दृष्टियों की तिमिररोग की उत्पत्ति है अर्थात् शास्त्र दृष्टि रखने वालों के लिए तिमिर नामक नेत्र-रोग को उत्पन्न करने वाली है। तिमिर रोग (रतौंधी) से आँखों के सामने अँधेरा छा जाता है और देखने की शक्ति क्षीण हो जाती है। लक्ष्मी भी इसी रोग जैसी है, क्योंकि वह वेद-स्मृति आदि शास्त्रों की मर्यादा नष्ट करने वाली है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि तिमिररोग नेत्र से सम्बन्धित है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- शुकनासोपदेश-राजेश्वर शास्त्री, पेज 67,76

97. उपरिलिखित- परिच्छेदमनुसृत्य अधोलिखितेषु 'पुरः पताका सर्वाविनयानाम्' इति गद्यांशे 'पुरः पताका' उच्यते?

(A) सरस्वती (B) चण्डी
(C) लक्ष्मीः (D) कालिका

व्याख्या- इसमें भी शुकनास युवराज चन्द्रापीड को लक्ष्मी के दुर्गुणों के विषय में बताते हुए कहते हैं कि- 'पुरः पताका सर्वाविनयानाम्' अर्थात् यह लक्ष्मी सभी प्रकार के अविनयों (दुर्बुद्धियों की) अर्थात् विनयों के आगे फहराने वाली अग्र पताका है।

जिस प्रकार आगे-आगे चलने वाली पताका अपने पीछे चलने वाली रथ-हाथी-घोड़ा पैदल सभी सेनाओं की संकेतिका है वैसे ही लक्ष्मी भी अपने पीछे हर प्रकार के दुराचारों की संकेतिका है। **अतः विकल्प (C) सही है।**

98. उपरिलिखित-परिच्छेदमनुसृत्य अधोलिखितेषु 'कदलिका कामकरिणः' इत्यत्र करिणः तुलना केन सह कृता?

(A) शुकनासेन (B) जलेन
(C) क्रोधेन (D) कामेन

व्याख्या- शुकनासोपदेश में शुकनास चन्द्रापीड को लक्ष्मी के विषय में उपदेश देते हुए कहते हैं कि 'कदलिका कामकरिणः' अर्थात् (लक्ष्मी) कामरूपी हाथी की (अर्थात् हाथी के लिए) केले का पौधा अर्थात् कदलीवन है।

जिस प्रकार कदली के वाटिका में हाथी का स्वच्छन्द विहार होता है उसी प्रकार लक्ष्मी से युक्त व्यक्ति में कामना का निर्बाध आवागमन होता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट होता है कि 'करिण' की तुलना 'काम' से किया गया है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

99. उपरिलिखित-परिच्छेदमनुसृत्य अधोलिखितेषु 'हिडिम्बेव भीमसाहसैकहार्यहृदया' इत्यंशे कोऽलङ्कारः?

(A) विरोधाभासः (B) विभावना
(C) शिलष्टोपमा (D) विशेषोक्तिः

व्याख्या- महाकवि बाणभट्ट द्वारा विरचित शुकनासोपदेश में लक्ष्मी के विषय में शुकनास चन्द्रापीड से कहते हैं- **'हिडिम्बेव भीमसाहसैकहार्यहृदया'** अर्थात् केवल भीम के साहस से प्रभावित हो जाने के कारण उसके प्रति खींचे जाने वाले हृदय से युक्त (घटोत्कच की माँ) हिडिम्बा राक्षसी के समान यह लक्ष्मी केवल प्रचण्ड साहस से वश में करने योग्य हृदय वाली है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट होता है कि 'हिडिम्बेव भीमसाहसैकहार्यहृदया' में शिलष्टोपमा अलङ्कार है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

100. उपरिलिखित-परिच्छेदमनुसृत्य अधोलिखितेषु 'वल्लीनां संवर्धने कस्यापेक्षा भवति' इति प्रश्नस्य समीचीनमुत्तरं चिनुत-

(A) अग्नेः (B) वायोः
(C) जलस्य (D) काष्ठस्य

व्याख्या- महाकवि बाण ने शुकनासोपदेश में लक्ष्मी के अवगुणों की विशेष रूप से चर्चा की है जो शुकनास के द्वारा उपदेश में चन्द्रापीड को दिया गया है-

'इयं संवर्धनवारिधारा तृष्णाविषवल्लीनाम्'

अर्थात् यह जो लक्ष्मी है तृष्णारूपी विष की लताओं को बढ़ाने वाली जलधारा है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'वल्लीनां संवर्धने जलस्य अपेक्षा भवति।' **अतः विकल्प 'C' सही है।**

उत्तरमाला

1-(D)	2-(C)	3-(D)	4-(A)	5-(C)	6-(C)	7-(D)	8-(A)	9-(B)	10-(C)	11-(B)	12-(C)
13-(A)	14-(A)	15-(C)	16-(B)	17-(C)	18-(B)	19-(A)	20-(B)	21-(D)	22-(C)	23-(B)	24-(D)
25-(D)	26-(A)	27-(A)	28-(D)	29-(B)	30-(A)	31-(B)	32-(C)	33-(D)	34-(C)	35-(C)	36-(C)
37-(B)	38-(C)	39-(A)	40-(D)	41-(A)	42-(C)	43-(D)	44-(B)	45-(C)	46-(D)	47-(B)	48-(D)
49-(A)	50-(B)	51-(B)	52-(A)	53-(A)	54-(C)	55-(C)	56-(C)	57-(C)	58-(D)	59-(A)	60-(B)
61-(B)	62-(D)	63-(B)	64-(C)	65-(B)	66-(A)	67-(B)	68-(C)	69-(B)	70-(B)	71-(B)	72-(D)
73-(D)	74-(B)	75-(B)	76-(D)	77-(B)	78-(D)	79-(B)	80-(D)	81-(C)	82-(A)	83-(A)	84-(D)
85-(C)	86-(D)	87-(B)	88-(A)	89-(C)	90-(C)	91-(B)	92-(C)	93-(A)	94-(B)	95-(D)	96-(D)
97-(C)	98-(D)	99-(C)	100-(C)								

2	दिसम्बर 2019	NTA UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् II

1. अनुकरणसिद्धान्तस्य समर्थकः मुख्यतया अस्ति?
(A) अरस्तू **(B)** लॉन्जाइनस
(C) क्रोचे **(D)** प्लेटो

व्याख्या- अरस्तू का अनुकरण सिद्धान्त-

अनुकरण का अर्थ-

* प्लेटो की तरह अरस्तू ने भी काव्य को अनुकरण सिद्धान्त पर आधारित स्वीकार किया है, इसीलिए वह भी कलाकारों की तरह कवि को भी अनुकर्त्ता कहता है।

* अरस्तू ने अपने गुरु प्लेटो से अनुकरण (मिमैसिस) शब्द को ग्रहण किया और उनकी मान्यता कला अनुकरण है, को ही स्वीकार किया, लेकिन उनकी व्याख्या उसने अपने ढंग से की और कहा कि कलाकार प्रकृति की गोचर वस्तुओं का नहीं वरन् प्रकृति की सर्जन प्रक्रिया का भी अनुकरण करता है।

* प्लेटो एवं अरस्तू की अनुकरण विषयक मान्यताओं में मूलभूत अन्तर यह है कि प्लेटो ने अनुकरण का विषय बाह्यप्रकृति की वस्तुओं को माना है और अरस्तू ने गोचर वस्तुओं के अस्तित्व में आधारभूत रूप में निहित प्राकृतिक नियमों को अनुकरण का विषय माना।

* अरस्तू अपने ग्रन्थ 'पोएटिक्स' में कहता है कि कविता केवल अनुभवजन्य घटनाओं का अनुकरण नहीं, कविता की दुनिया अनुभव की दुनिया की अपेक्षा अधिक बोधगम्य है और जहाँ प्रकृति सफलता प्राप्त नहीं करती, वहाँ कवि सफल हो जाता है।

* अरस्तू ने अनुकरण के लिए एकमात्र आधार मानव जीवन को स्वीकार किया है। उसके अनुसार मानव जीवन ही वह प्रकृति है जिसका अनुकरण कला करती है।

* अरस्तू का मत है कि कलाकार को वस्तुओं की तीन स्थितियों में से किसी एक का अनुकरण करना चाहिये।

(1) जैसी वह थी या है। (2) जैसी वह कही या समझी जाती है। (3) जैसी वह होनी चाहिए।

* अरस्तू के काव्य एवं इतिहास के विवेचन से भी अनुकरण के इसी तथ्य का बोध होता है कि अनुकरण का अभिप्राय भावपरक अनुकरण से है न कि यथार्थ वस्तुपरक प्रत्यंकन से।

* अरस्तू ने विषय, माध्यम और शैली के अन्तर के आधार पर एक ओर काव्य और अन्य कलाओं में भेद किया। इस तरह पहली बार उसने एक कलाकृति के रूप में काव्य को महत्त्व दिया।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि अनुकरण-सिद्धान्त के समर्थक अरस्तू हैं। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र तथा आलोचना-योगेन्द्र प्रताप सिंह, पेज 197

2. अमृतसहोदरापि कटुविपाका .... शुकनासोपदेशे वर्णनमिदं वर्तते?
(A) सरस्वत्याः **(B)** कादम्बर्याः
(C) लक्ष्म्याः **(D)** महाश्वेतायाः

व्याख्या- ➤ बाणभट्ट की सर्वोत्कृष्ट कृति कादम्बरी है, जो एक गद्यकाव्य है। यह ग्रन्थ पूर्वार्ध और उत्तरार्ध दो भागों में लिखा गया है। पूर्वभाग महाकवि बाणभट्ट की रचना है और उत्तरभाग उनके पुत्र पुलिनभट्ट या भूषणभट्ट द्वारा लिखा गया है।

➤ कादम्बरी के प्रारम्भ में प्रस्तावना के रूप में 20 श्लोक हैं जिसमें मङ्गलाचरण, सज्जनप्रशंसा आदि विषय निहित हैं।

➤ सम्पूर्ण कृति में चन्द्रापीड और पुण्डरीक के तीन जन्मों की कथा वर्णित है।

➤ राजा तारापीड का पुत्र चन्द्रापीड था और प्रधानमन्त्री शुकनास का पुत्र वैशम्पायन था।

➤ यथासमय राजकुमार चन्द्रापीड के यौवराज्याभिषेक की तैयारियाँ आरम्भ हुईं। इसी समय शुकनास ने राजकुमार चन्द्रापीड को जो उपदेश दिया था, वही शुकनासोपदेश है।

➤ मन्त्री शुकनास ने राजकुमार चन्द्रापीड को लक्ष्मी के अवगुणों के विषय में बताया है-

परस्परविरुद्धञ्चेन्द्रजालमिव दर्शयन्ती प्रकटयति जगति निजं चरितम्।

(इस प्रकार यह लक्ष्मी) इन्द्रजाल (जादू) के समान परस्पर विरोधी बातें दिखाती हुयी जगत् में अपना चरित्र प्रकट करती है।

तथाहि, सततमूष्माणमुपजनयन्त्यपि जाड्यमुपजनयति।

(उदाहरण के लिये) निरन्तर ऊष्मा उत्पन्न करती हुई भी जड़ता उत्पन्न करती है।

* **उन्नतिमादधानापि नीचस्वभावतामाविष्करोति।**
  उन्नति को धारण करती हुई भी नीच स्वभावता को प्रकट करती है।
* **तोयराशिसंभवापि तृष्णां संवर्धयति।**
  समुद्र से उत्पन्न हुई भी तृष्णा को बढ़ाती है।
* **ईश्वरतां दधानाप्यशिवप्रकृतित्वमातनोति।**
  प्रभुता को धारण करती हुई भी अशिव स्वभाव (अमङ्गल) का विस्तार करती है।
* **बलोपचयमाहरन्त्यपि लघिमानमापादयति।**
  बल समूह को लाती हुयी भी लघुता को प्राप्त कराती है अर्थात् लाती है।
* **अमृतसहोदरापि कटुविपाका। विग्रहवत्यप्यप्रत्यक्षदर्शना।**
  अमृत की सगी बहन होकर भी कड़वे फल वाली है। विग्रह वाली होकर भी प्रत्यक्ष न दिखाई देने वाली है।
* **पुरुषोत्तमरतापि खलजनप्रिया। रेणुमयीव स्वच्छमपि कलुषीकरोति।**

पुरुषोत्तम में आसक्त होते हुए भी दुष्टजनों से प्रेम करने वाली है। रेणुमयी यह लक्ष्मी स्वच्छ को भी कलुषित बना देती है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'अमृतसहोदरापि कटुविपाका ......' यह पंक्ति शुकनासोपदेश में मन्त्री शुकनास चन्द्रापीड को उपदेश देते हुए लक्ष्मी के सम्बन्ध में कहते हैं।

अतः विकल्प 'C' सही है।

स्रोत- शुकनासोपदेश- राजेश्वरप्रसाद मिश्र, पेज 72

3. अलोऽन्त्यात् पूर्ववर्णस्य का सञ्ज्ञा भवति?

(A)	निष्ठा	**(B)**	उपधा
(C)	गति	**(D)**	संहिता

व्याख्या- * अलोऽन्त्यात्पूर्व उपधा (1.1.65) उपधासंज्ञा करने वाला सूत्र है-

अन्त्यादलः पूर्वो वर्ण उपधासंज्ञः।

वर्णों के समुदाय में से जो अन्तिम वर्ण हो, उससे पूर्व के वर्ण की यह उपधासंज्ञा होती है।

जैसे- राम = र् आ म् अ

राम में अन्त्य वर्ण 'अ' है और उससे पूर्व का वर्ण है 'म्' अतः 'म्' की उपधा संज्ञा हो जायेगी।

* **क्तक्तवतू निष्ठा (1.1.26)** निष्ठासंज्ञा करने वाला सूत्र है- **एतौ निष्ठासञ्ज्ञौ स्तः।**

➢ क्त और क्तवतु प्रत्यय निष्ठासंज्ञक होते हैं।

➢ निष्ठासंज्ञक क्त और क्तवतु प्रत्यय भूतकाल अर्थ में सभी धातुओं से होते हैं।

* **गतिश्च (1.4.60)**
  प्रादयः क्रियायोगे गतिसञ्ज्ञाः स्युः।
  प्र, परा आदि क्रिया के योग में गतिसंज्ञक होते हैं।
* **संयोगसञ्ज्ञा- हलोऽनन्तराः संयोगः (1.1.7)**
  अज्भिरव्यवहिता हलः संयोगसञ्ज्ञाः स्युः।
  अचों (स्वरों) से अव्यवहित हल् संयोगसञ्ज्ञक होते हैं।

जैसे- पत्नी में त् और न् के बीच में कोई भी अच् नहीं है, अतः त् - न् इस हल् समुदाय की संयोग सञ्ज्ञा हो जाती है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'उपधासंज्ञा' वर्णों के समूह के अन्तिम वर्ण से पूर्व वर्ण की होती है।

अतः विकल्प 'B' सही है।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज 175

4. महाकविकालिदासस्य प्रसिद्धौ कस्यालङ्कारस्योदाहरण-रूपेण उपयोगः क्रियते?

(A) उपमालङ्कारस्य
(B) उत्प्रेक्षालङ्कारस्य
(C) समासोक्त्यलङ्कारस्य
(D) अतिशयोक्त्यलङ्कारस्य

व्याख्या- महाकवि कालिदास की विशिष्टता उपमा के कारण है, भारवि का प्रधान गुण अर्थगौरव है, दण्डी (या नैषधचरित) की विशिष्टता पदलालित्य के कारण है तो माघ में तीनों गुणों का समन्वित प्रयोग प्रमुख वैशिष्ट्य है। इसलिए कहा गया है-

उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्।
दण्डिनः (नैषधे) पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयो गुणाः।।

कवियों के प्रिय अलङ्कार

कवि		अलङ्कार
कालिदास	-	उपमा
भारवि	-	चित्रालङ्कार, अर्थालङ्कार
माघ	-	उपमा, उत्प्रेक्षा, अर्थान्तरन्यास, चित्रालङ्कार
श्रीहर्ष	-	उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति,

श्लेष, अनुप्रास, यमक		
भवभूति	-	उपमा, उत्प्रेक्षा, काव्यलिङ्ग, रूपक
बाणभट्ट	-	विरोधाभास, श्लेष,
परिसंख्या, उत्प्रेक्षा, उपमा,		
रूपक		
अश्वघोष	-	उपमा, रूपक, अनुप्रास
रत्नाकर	-	उत्प्रेक्षा अलङ्कार
विशाखदत्त	-	उपमा, रूपक, श्लेष
हर्षवर्धन	-	उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक
भट्टनारायण	-	उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा
सुबन्धु	-	श्लेष, विरोधाभास,
परिसंख्या, उत्प्रेक्षा		
अम्बिकादत्तव्यास	-	विरोधाभास

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'उपमा कालिदासस्य' उपमा अलङ्कार कालिदास के लिए प्रसिद्ध है।

अतः विकल्प 'A' सही है।

स्रोत- संस्कृतसाहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज 269
संस्कृतगङ्गा साहित्यम् - सर्वज्ञभूषण, पेज 288

5. याज्ञवल्क्यमते उत्तरा क्रिया कुत्र बलवती भवति?
(A) सर्वेष्वर्थविवादेषु
(B) आधौ प्रतिग्रहे
(C) सर्वेषु भूमिविवादेषु
(D) दायविभागविवादेषु

व्याख्या- याज्ञवल्क्यस्मृति के रचयिता याज्ञवल्क्य वैदिक ऋषि हैं, वे शुक्लयजुर्वेद के द्रष्टा थे।

याज्ञवल्क्यस्मृति के अतिरिक्त याज्ञवल्क्य के नाम से सम्बद्ध तीन अन्य स्मृतियाँ भी हैं-

(i) वृद्धयाज्ञवल्क्य (ii) योगयाज्ञवल्क्य (iii) बृहद्-याज्ञवल्क्य

* याज्ञवल्क्यस्मृति के सुप्रसिद्ध टीकाकार विश्वरूप, विज्ञानेश्वर और अपरार्क ने वृद्धयाज्ञवल्क्य को अनेक बार उद्धृत किया है।
* याज्ञवल्क्यस्मृति सुस्पष्ट व सुसंश्लिष्ट शैली में निबद्ध है। यह अनुष्टुप् छन्द में बद्ध है।
* इसमें लगभग 1000 श्लोक हैं।
* याज्ञवल्क्यस्मृति तीन भागों में विभक्त है-

प्रथम आचाराध्याय है जिसमें 14 विद्याएँ, धर्मोपादान, आचार के दस सिद्धान्त आदि तेरह प्रकरण हैं।

* द्वितीय व्यवहाराध्याय, इसमें पञ्चीस प्रकरण हैं।
* तृतीय प्रायश्चित्ताध्याय, इसमें आपद्धर्म, यतिधर्म, प्रायश्चित्त आदि छः प्रकरण हैं।
* 'व्यवहाराध्याय' याज्ञवल्क्यस्मृति का हृदय है। इसमें सर्वाधिक प्रकरण समाया हुआ है।

  व्यवहाराध्याय के अन्तर्गत ही यह कारिका कही गयी है-

  सर्वेष्वर्थविवादेषु बलवत्युत्तरा क्रिया (2/23)

  सभी प्रकार के अर्थ (धन) के विवादों में उत्तरक्रिया (बाद के कार्य) प्रबल होते हैं।

* **आधौ प्रतिग्रहे क्रीते पूर्वा तु बलवत्तरा (॥2/23॥)**

  किन्तु आधि (बन्धन) दान और क्रय में पूर्वकार्य (पहले का अधिकार-पत्र) प्रबल होता है।

* **दर्शने प्रत्यये दाने प्रातिभाव्यं विधीयते।**
  आद्यौ तु वितथे दाप्यावितरस्य सुता अपि (॥2/53॥)

  प्रातिभाव्य (जमानतदार- वह अन्य व्यक्ति जो शर्त या विश्वास दिलाता है), दर्शन (आवश्यकता पड़ने पर उपस्थित करने या दिखाने), प्रत्यय (विश्वास कि यह देने लायक है) और दान (न देने पर स्वयं देना) के कार्य में प्रातिभाव्य (जामिन) होता है। प्रथम दो दर्शन और प्रत्यय के असत्य होने पर राजा उससे धन दिलावे और तीसरे के असत्य होने पर उसके पुत्रों से भी धन दिलावे।

* **संततिः स्त्रीपशुष्वेव धान्यं त्रिगुणमेव च।**
  वस्त्रं चतुर्गुणं प्रोक्तं रसश्चाष्टगुणस्तथा (॥2/57॥)

  प्रतिभू के स्त्री और पशु दिलाने की स्थिति में तो बच्चे सहित स्त्री और पशु दे। धान्य होने पर तीन गुना, वस्त्र होने पर चौगुना और रस (तेल घृतादि) होने पर आठ गुना दिलावे।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि याज्ञवल्क्यमते 'उत्तरा क्रिया सर्वेष्वर्थविवादेषु बलवती भवति।'

अतः विकल्प 'A' सही है।

स्रोत- याज्ञवल्क्यस्मृति (2/23)- गङ्गासागर राय, पेज 182

6. अधोलिखितेषु केन सह कस्य सम्बन्धः?

(क) द्यूतक्रीडा		(i)	भीष्मपर्व
(ख) गीता-उपदेशः		(ii)	महाप्रस्थानिकपर्व
(ग) अभिमन्यु-वधः		(iii)	सभापर्व
(घ) पाण्डवानां हिमालययात्रा		(iv)	द्रोणपर्व

	क	ख	ग	घ
(A)	(i)	(iv)	(iii)	(ii)
(B)	(iii)	(i)	(ii)	(iv)
(C)	(iv)	(ii)	(iii)	(i)
(D)	(iii)	(i)	(iv)	(ii)

व्याख्या- महर्षि वेदव्यास द्वारा विरचित ऐतिहासिक महाकाव्य महाभारत अठारह पर्वों में विभक्त है जिनमें अनेक उपपर्व मुख्य घटनाओं के शीर्षक के रूप में हैं। यहाँ पर्वों की मुख्य विषय-वस्तु का संक्षिप्त परिचय बताया गया है-

(1) आदिपर्व - इस पर्व में 11 उपपर्व तथा 233 अध्याय हैं। प्रथम दो उपपर्व अनुक्रमणिका तथा पर्वसंग्रह के रूप में एक-एक अध्याय वाले हैं।

➢ शकुन्तला का आख्यान एवं पुरुवंश के राजाओं का वर्णन है।

➢ धृतराष्ट्र का अपनी पत्नी गान्धारी से 100 पुत्रों की प्राप्ति तथा पाण्डु की पत्नियों (कुन्ती एवं माद्री) से नियोग द्वारा पाँच पुत्रों के जन्म की घटनाएँ वर्णित हैं।

➢ कौरवों एवं पाण्डवों की शिक्षा-दीक्षा तथा विवाहादि वर्णन भी इसी पर्व में है।

➢ इस विशाल पर्व में प्रायः नौ सहस्र श्लोक हैं।

(2) सभापर्व - इस पर्व में 81 अध्याय और दस उपपर्व हैं।

➢ मुख्यरूप से पाण्डवों की दिग्विजय यात्रा, जरासन्धवध युधिष्ठिर द्वारा राजसूय यज्ञ का अनुष्ठान और शिशुपालवध वर्णित है।

(3) वनपर्व - इस पर्व में 315 अध्याय एवं 22 उपपर्व हैं। पाण्डवों के वनवास की घटना से सम्बद्ध आख्यान है। नल और राम के आख्यान प्रधान हैं। सावित्री तथा सत्यवान् की कथा यहाँ पर आयी है। मुख्य दो घटनायें- जयद्रथ द्वारा द्रौपदी का हरण और इन्द्र द्वारा कर्ण के कवच-कुण्डल माँग ले जाना।

(4) विराट पर्व - इस पर्व में पाँच उपपर्व तथा 72 अध्याय हैं। प्रायः 2700 श्लोक इसमें हैं।

➢ पाण्डवों के अज्ञातवास की घटना का वर्णन, पाण्डवों का वेश बदलकर मत्स्यराज विराट के राजप्रसाद में अज्ञात रूप से रहना।

➢ यहीं द्रौपदी के प्रति आसक्त कीचक का भीमद्वारा वध

➢ अन्तिम उपपर्व में विराट की पुत्री उत्तरा का विवाह अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु से होता है।

(5) उद्योग पर्व - इसमें दस उपपर्व तथा 196 अध्याय हैं। श्लोकों की संख्या प्रायः 7100 है।

➢ इसमें मुख्य वृत्त शान्ति के लिये वार्तालाप एवं युद्ध की पूर्वपीठिका की प्रस्तुति है।

➢ इसमें अम्बोपाख्यान के रूप में पूर्वकथा सुनायी गयी है।

➢ शान्ति प्रस्ताव में पाण्डव केवल पाँच गाँव लेकर भी सन्तुष्ट होने की बात कहते हैं।

(6) भीष्मपर्व - इसमें पाँच उपपर्व तथा प्रायः 6100 श्लोक हैं। इसका विभाजन 122 अध्यायों में हुआ है।

➢ भीष्म के सेनापतित्व में दस दिनों के भारत युद्ध का वर्णन है।

➢ सञ्जय धृतराष्ट्र को युद्ध का समस्त वृत्तान्त दिव्यदृष्टि से देखकर बतलाता है।

➢ युद्ध के आरम्भ में कृष्णार्जुन संवाद के रूप में 18 अध्यायों का अंश है जिसे 'भगवद्गीता' कहते हैं।

(7) द्रोणपर्व - इस पर्व में आठ उपपर्व, 202 अध्याय तथा प्रायः दस सहस्र श्लोक हैं।

➢ युद्ध में क्रमशः संशप्तकों, अभिमन्यु, जयद्रथ, घटोत्कच तथा द्रोणाचार्य का वध होता है।

* द्रोण का वध छलपूर्वक होने पर उनका पुत्र अश्वत्थामा कुपित होकर नारायणास्त्र का प्रयोग करता है।

(8) कर्णपर्व - इस पर्व में 96 अध्याय तथा प्रायः साढ़े पाँच सहस्र श्लोक हैं। इसका विभाजन उपपर्वों में नहीं हुआ है।

➢ कर्ण और शल्य का परस्पर वाग्युद्ध बड़ा रोचक है।

➢ कौरव-सेना का अध्यक्ष कर्ण बनता है।

(9) शल्यपर्व - इसमें दो उपपर्व (ह्रद प्रवेश तथा गदापर्व), 65 अध्याय तथा प्रायः 3700 श्लोक हैं।

➢ इसमें भारत युद्ध के अन्तिम (18) दिन के युद्ध का वर्णन है।

➢ शल्य का वध, दुर्योधन का गदायुद्ध और ऊरुभङ्ग इस पर्व की मुख्य घटनाएँ हैं।

➢ शल्यपर्व में कुछ प्राचीन आख्यान भी हैं जिनमें तीर्थों का माहात्म्य वर्णित है।

(10) **सौप्तिक पर्व -** इसमें एक उपपर्व, 18 अध्याय तथा 810 श्लोक हैं।

➢ मुख्य कथा पाण्डवों की सोयी हुयी सेना पर आक्रमण करके द्रौपदी के पाँचों पुत्रों के मारे जाने की है।

➢ पाण्डव अश्वत्थामा को पकड़कर उसके सिर की मणि निकाल लेते हैं।

(11) **स्त्रीपर्व -** इसमें तीन उपपर्व, 27 अध्याय तथा 820 श्लोक हैं।

➢ कुन्ती युधिष्ठिर को कर्ण के जन्म का वृत्तान्त सुनाकर उसका भी श्राद्ध करने का अनुरोध करती है।

➢ युधिष्ठिर स्त्रीजाति को शाप देते हैं कि अब से स्त्रियों के मन में रहस्य की कोई बात छिपी नहीं रहेगी।

(12) **शान्तिपर्व -** इसमें तीन उपपर्व हैं- राजधर्मानुशासन, आपद्धर्म तथा मोक्षधर्म।

➢ इसमें वर्तमान में 365 अध्याय तथा 14,725 श्लोक हैं। इस दृष्टि से यह महाभारत का सबसे बड़ा पर्व है।

➢ इस पर्व में पराशर-गीता, हंस-गीता इत्यादि ग्रन्थ महत्त्वपूर्ण हैं।

➢ शरशय्या पर लेटे हुये भीष्म के द्वारा युधिष्ठिर आदि को दिये गये उपदेश के रूप में इस पर्व का विन्यास हुआ है।

(13) **अनुशासन पर्व -** इस पर्व में मुख्यरूप से धर्मशास्त्रीय उपदेश हैं जो भीष्म द्वारा अपने समक्ष उपस्थित युधिष्ठिर आदि को दिये गये हैं।

➢ इसमें दो उपपर्व, 168 अध्याय तथा दस सहस्र से कुछ कम श्लोक हैं।

➢ भीष्म का स्वर्गारोहण (उपपर्व) में केवल दो ही अध्याय हैं।

➢ इसी पर्व के 17वें अध्याय में शिवसहस्रनामस्तोत्र है।

(14) **आश्वमेधिक पर्व -** इस पर्व में 92 अध्याय तथा प्रायः सवा चार सहस्र श्लोक हैं।

➢ अनुगीता नामक उपपर्व में दर्शनशास्त्र की सामग्री है।

➢ व्यास के आदेश से युधिष्ठिर अश्वमेध-यज्ञ करते हैं और अर्जुन एक वर्ष तक यज्ञाश्व की रक्षा करते हैं।

(15) **आश्रमवासिकपर्व -** इसमें तीन उपपर्व, 39 अध्याय तथा 1100 श्लोक हैं।

इसका मुख्य इतिवृत्त धृतराष्ट्र के साथ गान्धारी, कुन्ती और विदुर का वन में आश्रम बनाकर निवास करना है।

(16) **मौसल पर्व -** यह केवल आठ अध्यायों और 304 श्लोकों का लघुकाय पर्व है।

➢ युधिष्ठिर के सिंहासनारोहण के 26 वर्षों के बाद गान्धारी का शाप सत्य होता है और यादव वंश के लोग परस्पर युद्ध करके समाप्त हो जाते हैं।

(17) **महाप्रस्थानिक पर्व -** यह तीन अध्यायों का महाभारत का सबसे छोटा पर्व है।

➢ जिसमें केवल 115 श्लोक हैं।

➢ इसमें पाण्डवों की हिमालय यात्रा का वर्णन है।

➢ हिमालय में क्रमशः द्रौपदी सहदेव आदि गिरते जाते हैं और युधिष्ठिर उनके पतन का कारण बतलाते हैं।

(18) **स्वर्गारोहणपर्व -** यह केवल पाँच अध्यायों और 220 श्लोकों का छोटा सा पर्व है इसमें युधिष्ठिर के स्वर्ग पहुँचने तथा देवदूत के साथ नरक में जाकर अपने अनुजों के करुण क्रन्दन सुनने का वृत्तान्त है।

➢ अन्तिम अध्याय में महाभारत का माहात्म्य तथा इसके उपदेश प्रतिपादित हैं। इसे भारत सावित्री भी कहते हैं।

स्पष्टीकरण - उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि **विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा ऋषि, पेज 149, 150, 152

7. छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते ।
ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते॥
अत्र श्लोके केषां वर्णनं प्राप्यते-

(A) आरण्यकानाम् **(B)** उपनिषदाम्
(C) वेदाङ्गानाम् **(D)** वेदानाम्

व्याख्या- पाणिनीय शिक्षा में इन छह वेदाङ्गों का वेदपुरुष के छः अङ्गों के रूप में वर्णन है।

जैसे- छन्द वेदपुरुष के पैर हैं, कल्प हाथ हैं, ज्योतिष नेत्र हैं, निरुक्त कान हैं, शिक्षा नाक है और व्याकरण मुख है।

छन्दः पादौ तु वेदस्य, हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते ।
ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते ॥
शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य, मुखं व्याकरणं स्मृतम् ।

तस्मात् साङ्गमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते ॥

(पा.शि.-41-42)

वेदाङ्ग	नाम
1. छन्द	पैर
2. कल्प	हाथ
3. ज्योतिष	नेत्र
4. निरुक्त	कान
5. शिक्षा	नाक
6. व्याकरण	मुख

➢ **शिक्षा व्याकरणं छन्दो निरुक्तं ज्योतिषं तथा ।**
कल्पश्चेति षडङ्गानि वेदस्याहुर्मनीषिणः ॥

वेदाङ्गों की संख्या और उनके नाम हैं- शिक्षा, व्याकरण, छन्द, निरुक्त, ज्योतिष, कल्प।

➢ **आरण्यक ग्रन्थ -** ब्राह्मणग्रन्थों और उपनिषदों को जोड़ने वाली कड़ी है। ब्राह्मणग्रन्थों में यज्ञों के दार्शनिक और आध्यात्मिक पक्ष का जो अङ्कुरण हुआ है, उसका पल्लवित रूप आरण्यक ग्रन्थ हैं।

महाभारत में कहा गया है-

नवनीतं यथा दध्नो मलयाच्चन्दनं यथा ।
आरण्यकं च वेदेभ्य ओषधिभ्योऽमृतं यथा॥

(महा. 1.331.3)

महाभारत में कथन है कि आरण्यक ग्रन्थ वेदों के सारभाग हैं। जैसे दही से मक्खन, मलय से चन्दन और ओषधियों से अमृत प्राप्त होता है, वैसे ही वेदों से आरण्यक प्राप्त हुए हैं।

➢ **उपनिषद् ग्रन्थ -** उपनिषद् शब्द उप + नि + सद् + क्विप् अर्थात् उप और नि उपसर्गपूर्वक सद् धातु से क्विप् प्रत्यय करने पर बनता है। इसका अर्थ है- 'तत्त्वज्ञान के लिये गुरु के पास निष्ठापूर्वक बैठना।'

मुख्य उपनिषदों की संख्या दश मानी है -

ईश-केन-कठ-प्रश्न-मुण्ड-माण्डूक्य-तित्तिरः।
ऐतरेयं च छान्दोग्यं बृहदारण्यकं तथा॥ (मुक्तिक. 1.30)

➢ **वेद -** वेदों की संख्या चार है- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'छन्दः पादौ तु वेदस्य' यह पंक्ति वेदाङ्ग से सम्बन्धित है।

अतः विकल्प 'C' सही है।

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज 190

8. इन्द्रियार्थयोस्तु यः सन्निकर्षः साक्षात्कारिप्रमाहेतुः? स कतिविधः?

(A) सप्तविधः **(B)** चतुर्विधः
(C) षड्विधः **(D)** पञ्चविधः

व्याख्या- आचार्य गौतमप्रणीत न्यायदर्शन का प्रकरणग्रन्थ तर्कभाषा है जिसके प्रणेता केशवमिश्र हैं। तर्कभाषा के प्रारम्भ में मङ्गलाचरण, षोडश पदार्थ आदि का निरूपण करने के पश्चात् षोडश पदार्थों में सर्वप्रथम परिगणित 'प्रमाण' को बताते हुये उसके अन्तर्गत आने वाले षोढा सन्निकर्ष को परिभाषित करते हैं-

इन्द्रियार्थयोस्तु यः सन्निकर्षः साक्षात्कारिप्रमाहेतुः स षड्विध एव। तद्यथा, संयोगः, संयुक्तसमवायः, संयुक्तसमवेतसमवायः, समवायः, समवेतसमवायः, विशेष्यविशेषण- भावश्चेति।

इन्द्रिय तथा अर्थ का जो सन्निकर्ष प्रत्यक्षज्ञान साक्षात्कारिणी प्रमा का निमित्त होता है, वह छः प्रकार का ही है, जैसे- (1) संयोग (2) संयुक्तसमवाय (3) संयुक्तसमवेत समवाय (4) समवाय (5) समवेत समवाय (6) विशेष्यविशेषणभाव।

(1) संयोग सन्निकर्ष - चक्षुषा घटविषयं ज्ञानं जन्यते तदा चक्षुरिन्द्रियं घटोऽर्थः। अनयोः सन्निकर्षः संयोग एव, अयुतसिद्ध्यभावात्।

उनमें से जब चक्षु द्वारा घट आदि विषय का ज्ञान होता है, तब चक्षु इन्द्रिय है, घट विषय है। इन दोनों का सन्निकर्ष संयोग ही है, क्योंकि ये दोनों अयुतसिद्ध नहीं हैं।

(2) संयुक्तसमवाय - यदा चक्षुरादिना घटगतरूपादिकं गृह्यते, घटे श्यामं रूपमस्तीति, तदा चक्षुरिन्द्रियं, घटरूपमर्थः, अनयोः सन्निकर्षः संयुक्तसमवाय एव।

जब चक्षु आदि से घट में रहने वाले रूप आदि का ग्रहण होता है कि घट में श्याम रूप है तब चक्षु इन्द्रिय है, घट का रूप विषय है। इन दोनों का संयुक्तसमवाय सन्निकर्ष है।

(3) संयुक्तसमवेत समवाय - चक्षुषा घटरूपसमवेतं रूपत्वादि-सामान्यं गृह्यते, तदा चक्षुरिन्द्रियं, रूपत्वादिसामान्यमथ, अनयो सन्निकर्षः संयुक्तसमवेतसमवाय एव।

जब चक्षु के द्वारा घट के रूप में समवेत रूपत्व आदि सामान्य जाति का ग्रहण होता है। तब चक्षु इन्द्रिय है। रूपत्व आदि सामान्य

ही अर्थ (विषय) है। इन दोनों का सन्निकर्ष संयुक्त समवेतसमवाय है।

(4) समवाय सन्निकर्ष - यदा श्रोत्रेन्द्रियेण शब्दो गृह्यते तदा श्रोत्रमिन्द्रियं, शब्दोऽर्थः, अनयोः सन्निकर्षः समवाय एव। कर्णशष्कुल्यवच्छिन्नं नभः श्रोत्रम्।

जब श्रोत्रेन्द्रिय से शब्द का ग्रहण होता है तब श्रोत्र इन्द्रिय है, शब्द अर्थ है इन दोनों का सन्निकर्ष समवाय ही है, क्योंकि कर्णविवर से अवच्छिन्न आकाश ही श्रोत्र है।

(5) समवेतसमवाय सन्निकर्ष - यदा पुनः शब्दसमवेतं शब्दत्वादिकं सामान्यं श्रोत्रेन्द्रियेण गृह्यते, तदा श्रोत्रमिन्द्रियं, शब्दत्वादिसामान्यमर्थः। अनयोः सन्निकर्षः समवेतसमवाय एव। श्रोत्रसमवेते शब्दे शब्दत्वस्य समवायात् ।

जब शब्द में समवेत शब्दत्व आदि जाति का श्रोत्र इन्द्रिय से ग्रहण किया जाता है तब श्रोत्र इन्द्रिय है, शब्दत्व आदि जाति अर्थ विषय है। इन दोनों का सन्निकर्ष समवेतसमवाय ही है। क्योंकि श्रोत्र में समवेत शब्द में समवाय सम्बन्ध होता है।

(6) विशेष्यविशेषण भाव - यदा चक्षुषा संयुक्ते भूतले घटाभावो गृह्यते इह भूतले घटो नास्ति इति तदा विशेष्यविशेषणभावः सम्बन्धः।

जब चक्षु से संयुक्त भूमि पर 'यहाँ भूतल पर घट नहीं है'- इस प्रकार घट के अभाव का ग्रहण होता है तब विशेष्य विशेषण भाव सन्निकर्ष हुआ करता है।

षोढा सन्निकर्ष -

सन्निकर्ष	इन्द्रिय	विषय
संयोग सन्निकर्ष	चक्षु	घट
संयुक्तसमवाय सन्निकर्ष	चक्षु	घटरूप
संयुक्तसमवेत समवाय	चक्षु	घटरूपत्व जाति
समवाय सन्निकर्ष	श्रोत्र	शब्द
समवेतसमवाय सन्निकर्ष	श्रोत्र	शब्दत्व
विशेषण-विशेष्यभाव सन्निकर्ष	चक्षु	भूतले घटाभाव

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'इन्द्रियार्थयोस्तु यः सन्निकर्षः साक्षात्कारिप्रमा हेतुः सः षड्विधः'

अतः विकल्प 'C' सही है।

स्रोत- तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज 61

9. न तेन सज्यं क्वचिदुद्यतं धनुः
कृतं न वा तेन विजिह्ममाननम्।
गुणानुरागेण शिरोभिरुह्यते
नराधिपैर्माल्यमिवास्य शासनम् ॥
अस्मिन् श्लोके प्रशंसा वर्तते?

(A) युधिष्ठिरस्य **(B)** वनेचरस्य
(C) दुर्योधनस्य **(D)** अर्जुनस्य

व्याख्या- महाकवि भारवि द्वारा प्रणीत बृहत्त्रयी के अन्तर्गत परिगणित अष्टादशसर्गात्मक महाकाव्य किरातार्जुनीयम् है।

इस ग्रन्थ के प्रथम सर्ग में वनेचर हस्तिनापुर से दुर्योधन के राज्य वृत्तान्त को जानकर द्वैतवन में युधिष्ठिर के पास आकर उस वृत्तान्त को कहता है -

न तेन सज्यं क्वचिदुद्यतं धनुः
कृतं न वा कोपविजिह्ममाननम् ।
गुणानुरागेण शिरोभिरुह्यते
नराधिपैर्माल्यमिवास्य शासनम् ॥1/21॥

दुर्योधन के मित्र राजाओं की स्थिति के विषय में वनेचर दुर्योधन की प्रशंसा का वर्णन कर रहा है -

उस दुर्योधन के द्वारा कहीं पर भी चढ़ी हुयी प्रत्यञ्चा वाला धनुष नहीं उठाया गया अथवा क्रोध के कारण मुख टेढ़ा नहीं किया गया। राजाओं के द्वारा गुणों के प्रति प्रेम के कारण उसकी आज्ञा को माला के समान शिरोधार्य किया जाता है।

किरातार्जुनीयम् की महत्त्वपूर्ण सूक्तियाँ-

* **अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता (1/23)**

वनेचर का कथन है- अहो (आश्चर्य है कि) बलवानों से विरोध बड़ा ही दुःखान्त होता है।

* **प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः ॥1/25॥**

वनेचर युधिष्ठिर से कहता है- दूसरे लोगों के द्वारा कहे गये वचनों का सङ्ग्रह करने वाले मुझ जैसों की बातें तो वृत्तान्तमात्र पर्यवसायिनी होती हैं।

* **प्रविश्य हि घ्नन्ति शठास्तथाविधान्**
असंवृताङ्गान्निशिता इवेषवः ॥1/30॥

द्रौपदी का कथन युधिष्ठिर से- धूर्त लोग बिना ढके हुए अङ्गों वाले उन जैसे लोगों को तीक्ष्ण बाणों के समान भीतर प्रविष्ट होकर मार डालते हैं।

* **शमीतरुं शुष्कमिवाग्निरुच्छिखः ॥1/32॥**

द्रौपदी का कथन है- आपको सूखे हुए शमी के वृक्ष को जला देने वाली प्रज्वलित अग्नि के समान उद्दीप्त क्रोध क्यों नहीं क्रोधित करता?

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'न तेन सज्यं क्वचिदुद्यतं धनुः ....' यह वनेचर का कथन है जिसमें दुर्योधन की प्रशंसा हो रही है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- किरातार्जुनीयम् (1/21)

10. कथनद्वयम् अधोलिखितं तत्र एकम् अभिकथनम् (A) अपरश्च तस्य कारणम् (R) इति।

अभिकथनम् (A) - एकनवतिवर्षीयस्य प्रणवस्य प्रपौत्रः ओङ्कारः ओङ्कारस्य युवापत्यसञ्ज्ञा भवति।

कारणम् (R) - जीवति तु वंश्ये युवा इति विधानात्।

उपर्युक्तम् अभिकथन- कारणमाश्रित्य समुचितं विकल्पं चिनुत-

(A) (A) तथा (R) उभयं सत्यमस्ति। (A) इत्यस्य (R) उचितं कारणमस्ति।

(B) (A) तथा (R) उभावपि असमीचीनौ

(C) (A) तथा (R) उभावपि समीचीनौ, परं (A) इत्यस्य (R) इति समुचितं कारणं नास्ति।

(D) (A) इति असमीचीनं परं (R) इति समीचीनम्

व्याख्या- जीवति तु वंश्ये युवा (4.1.163)

वंश्ये पित्रादौ जीवति (सति) पौत्रादेर्यदपत्यं चतुर्थादि तद् युवसंज्ञमेव स्यात् ।

वंश में होने वाले पिता, पितामह आदि के जीवित रहते जो पौत्र आदि का अपत्य चतुर्थ आदि पीढ़ी से स्थित हो वह युवन् संज्ञक ही हो। (गोत्रसंज्ञक नहीं)

अपत्य शब्द लोक में पुत्र अर्थ में प्रसिद्ध है परन्तु यहाँ शास्त्र में पुत्र, पौत्र आदि पीढ़ी के अर्थ में आता है। इस शास्त्र में अपत्य तीन प्रकार से प्रयुक्त होता है-

(1) अनन्तरापत्य - अनन्तरापत्य केवल पुत्र अर्थात् दूसरी पीढ़ी को कहते हैं। इसका विग्रह केवल 'अपत्यम्' लगाकर ही किया जाता है।

जैसे- गर्गस्यापत्यं गार्गिः

दक्षस्यापत्यं दाक्षिः

उपगोरपत्यम् औपगवः

(2) गोत्रापत्य - गोत्रापत्य पुत्र के पुत्र अर्थात् तीसरी पीढ़ी से आरम्भ होता है और आगे की सब पीढ़ियों में चला जाता है। इसका विग्रह गोत्रापत्यम् शब्द लगाकर ही किया जाता है।

जैसे- गर्गस्य गोत्रापत्यं गार्ग्यः

दक्षस्य गोत्रापत्यं दाक्षिः

(3) युवापत्य - यदि बाप दादा आदि जीवित हों तो प्रपौत्र अर्थात् चतुर्थ पीढ़ी से लेकर आगे युवन् सञ्ज्ञा हो जाती है, तब गोत्रसंज्ञा नहीं रहती। इसका विग्रह 'गर्गस्य गोत्रापत्यं युवा' या 'गर्गस्य युवापत्यम्' इस प्रकार से किया जाता है गार्ग्यायणः, दाक्षायणः इत्यादि उदाहरण हैं।

विशेष - कथन (A) 'एकनवतिवर्षीयस्य प्रणवस्य प्रपौत्रः ओङ्कारः। ओङ्कारस्य युवापत्य संज्ञा भवति।' यह सत्य है।

कारण (R) में 'जीवति तु वंश्ये युवा' इस सूत्र से इसका विधान हुआ है।

स्पष्टीकरण - उपर्युक्त कथन से स्पष्ट है कि (A) तथा (R) दोनों सत्य कथन है और (R) कथन (A) कथन का उचित कारण है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमीव्याख्या, भाग-5), पेज 25

11. अधस्तनेषु चित्तभूमिषु न गण्यते-

a चलम् **b मूढम्**

c विक्षिप्तम् **d अचलम्**

समुचितं विकल्पं चिनुत -

(A) a एवं c **(B)** a एवं d

(C) a एवं b **(D)** b एवं c

व्याख्या- महर्षि पतञ्जलि प्रणीत योगदर्शन है। जिसमें चार पाद- (1) समाधिपाद (2) साधनपाद (3) विभूतिपाद (4) कैवल्यपाद हैं।

➢ प्रथमपाद में 51 सूत्र, द्वितीय पाद में 55, तृतीय पाद में 55 सूत्र और चतुर्थपाद में 34 सूत्र हैं।

➢ महर्षि पतञ्जलि प्रथम पाद में पञ्चचित्तभूमियों को बताते हैं- (1) क्षिप्त (2) मूढ (3) विक्षिप्त (4) एकाग्र (5) निरुद्ध

1. क्षिप्तम् - रजसा विषयेष्वेव वृत्तिमत्

रजोगुण के उद्रेक के कारण विषयों में ही व्यापृत रहने वाली चित्त की अवस्था क्षिप्त भूमि है।

2. मूढम् - तमसा निद्रादिवृत्तिमत्

तमोगुण के उद्रेक के कारण मूर्च्छादि व्यापारवान् चित्त की स्थिति मूढ भूमि कहीं जाती है।

3. विक्षिप्तम् - क्षिप्ताद्विशिष्टं विक्षिप्तं, सत्त्वाधिक्येन समादधदपि चित्तं रजोमात्रयाऽन्तरा विषयान्तरवृत्तिमद्

क्षिप्तादि भूमि से कुछ बेहतर या अच्छी भूमि। इसमें सत्त्वगुणाधिक्य रहता है। इसमें किञ्चित् कालपर्यन्त समाधि लगने पर भी रजोगुण के जोर मारते रहने के कारण बीच में अन्य विषयों की ओर चित्त दौड़ जाता है चित्त की यह अवस्था उसकी विक्षिप्त नामक भूमि कही जाती है।

4. एकाग्रम् - एकस्मिन्नेव विषयेऽग्रं शिखा यस्य चित्तदीपस्येत्येकाग्रं, विशुद्ध-सत्त्वतयैकस्मिन्नेव विषये वक्ष्यमाणावधीकृतकालपर्यन्तमचञ्चलं निवातस्थदीपवत्। तथा च क्षिप्तादित्रयेऽपि किञ्चिदैकाग्र्यसत्त्वेऽपि तत्र नातिप्रसङ्गः।

इस अवस्था में चित्त की सात्त्विकवृत्ति किसी एक विषय की ओर लगी रहती है। रजोगुण और तमोगुण दबे रहते हैं। अतः उस एक विषय की ओर अग्र या उन्मुख वृत्ति वाली अवस्था को एकाग्रभूमि कहते हैं।

5. निरुद्धम् - 'निरुद्धं च निरुद्धसकलवृत्तिकं संस्कारमात्र-शेषमित्यर्थः।'

जिस अवस्था में चित्त की तामस और राजस वृत्तियों के साथ-साथ सात्त्विक वृत्ति का भी निरोध हो जाता है, केवल संस्कारमात्र चित्त में रहते हैं, उसे निरुद्ध भूमि कहते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण स्पष्ट है कि चित्तभूमियों में चल और अचलत्व की गणना नहीं होती है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- पातञ्जलयोगदर्शन (1/1)-सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पेज 6

12. निरुक्तकारेण केन क्रमेण पदजातानि वर्णितानि?

1 आख्यातम् **2 उपसर्गाः**

3 निपाताः **4 नाम**

अत्र कः क्रमः? स्पष्टयत-

(A) 4 1 2 3
(B) 1 3 2 4
(C) 2 1 3 4
(D) 3 2 4 1

व्याख्या- आचार्य यास्क प्रणीत निरुक्त है। यह निरुक्त निघण्टु का व्याख्या ग्रन्थ है। मूलग्रन्थ निघण्टु कहलाता है।

➢ निरुक्त के प्रारम्भिक तीन अध्याय नैघण्टुक काण्ड 4-6 तक, अगले तीन अध्याय नैगमकाण्ड और अन्तिम छः अध्याय दैवतकाण्ड नाम से कहे जाते हैं।

➢ **चत्वारि पदजातानि नामाख्याते च, उपसर्ग-निपाताश्च, तानीमानि भवन्ति।**

ये नाम और आख्यात तथा उपसर्ग एवं निपात रूप चार प्रकार के पद प्रसिद्ध हैं।

➢ **'भावप्रधानमाख्यातम् सत्त्वप्रधानानि नामानि'**

क्रिया की जिसमें प्रधानता होती है, वह आख्यात है और जिसमें सत्त्व अर्थात् द्रव्य की प्रधानता हो वह नाम पद कहलाता है।

➢ **षड् भावविकारा भवन्तीति वार्ष्यायणिः। जायते, अस्ति, विपरिणमते, वर्धते, अपक्षीयते, विनश्यति इति।**

छः प्रकार के क्रियाओं के भेद होते हैं-

यह वार्ष्यायणि आचार्य का मत है - जायते (उत्पन्न होना) अस्ति (रहता है।), विपरिणमते (परिवर्तित होता है।), वर्धते (बढ़ता है।), अपक्षीयते (क्षीण होता है), विनश्यति (नष्ट होता है।)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि निरुक्त के अनुसार चत्वारि पदजातानि का क्रम- नाम, आख्यात, उपसर्ग, निपात है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- निरुक्त - आचार्य विश्वेश्वर, पेज 18

13. महाभारताश्रितं भासविरचितं ग्रन्थद्वयं किमस्ति?

a अभिज्ञानशाकुन्तलम् **b ऊरुभङ्गम्**

c स्वप्नवासवदत्तम् **d दूतघटोत्कचम्**

अधस्तनेषु समीचीनं विकल्पं चिनुत-

(A) a एवं d **(B)** b एवं c
(C) c एवं d **(D)** b एवं d

व्याख्या-

कवि	ग्रन्थ	उपजीव्य
भास	ऊरुभङ्गम्	महाभारत
भास	दूतवाक्यम्	महाभारत
भास	पञ्चरात्रम्	महाभारत
भास	दूतघटोत्कचम्	महाभारत

भास	कर्णभार	महाभारत
भास	मध्यमव्यायोग	महाभारत
भास	बालचरितम्	महाभारत
भास	प्रतिमानाटकम्	रामायण
भास	अभिषेकनाटकम्	रामायण
भास	प्रतिज्ञायौगन्धरायण	उदयनकथामूलक
भास	स्वप्नवासवदत्तम्	उदयनकथामूलक
कालिदास	अभिज्ञानशाकुन्तलम्	महाभारत
कालिदास	रघुवंशम्	रामायण
भारवि	किरातार्जुनीयम्	महाभारत
श्रीहर्ष	नैषधीयचरितम्	महाभारत
माघ	शिशुपालवधम्	महाभारत
भट्टनारायण	वेणीसंहार	महाभारत
भवभूति	उत्तररामचरितम्	रामायण
त्रिविक्रमभट्ट	नलचम्पू	महाभारत

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि महाभारत आश्रित और भास विरचित ग्रन्थ - ऊरुभङ्ग और दूतघटोत्कच हैं। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशङ्कर शर्मा ऋषि, पेज 465-466

14. पुरूरवा-उर्वशीसंवादसूक्ते कियन्तो मन्त्राः सन्ति?

(A) एकादश **(B)** पञ्चदश
(C) सप्तदश **(D)** अष्टादश

व्याख्या- * ऋग्वेद के संवाद सूक्त *

➢पुरूरवा - उर्वशी संवाद सूक्त

मण्डल - 10
सूक्त - 95
कुल मन्त्र - 18
ऋषि - पुरूरवा ऐळ और उर्वशी
देवता - उर्वशी और पुरूरवा ऐळ
छन्द - त्रिष्टुप्
स्वर - धैवत

➢यम - यमी संवाद सूक्त

मण्डल - 10
सूक्त - 10
कुल मन्त्र - 14
ऋषि - यम वैवस्वत, यमी
देवता - यम वैवस्वत, यमी वैवस्वती
छन्द - त्रिष्टुप्

➢सरमा - पणि संवाद सूक्त

मण्डल - 10
सूक्त - 108
कुल मन्त्र - 11
ऋषि - पणि एवं सरमा
देवता - सरमा एवं पणि
छन्द - त्रिष्टुप्
स्वर - धैवत

➢विश्वामित्र नदी संवाद-

मण्डल - 3
सूक्त - 33
कुल मन्त्र - 13
ऋषि - विश्वामित्र
देवता - नदियाँ विपाट्, शुतुद्री
छन्द - पंक्ति, त्रिष्टुप्

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि पुरूरवा-उर्वशी संवाद सूक्त में कुल 18 मन्त्र हैं। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- वैदिकवाङ्मय दृष्टि - सर्वज्ञभूषण, पेज 10

15. दर्शं नु विश्वदर्शतं दर्शं रथमधि क्षमि।
एता जुषत मे गिरः॥
उपर्युक्तमन्त्रे 'गिरः' पदस्य अर्थौ स्तः -

a पर्वतः **b गिरिः**
c वाणी **d स्तुतिः**

अत्र समीचीनमुत्तरं चिनुत-

(A) b एवं c **(B)** a एवं b
(C) c एवं d **(D)** b एवं d

व्याख्या- वरुण सूक्त संक्षिप्त परिचय-

मण्डल - 1
सूक्त - 25
कुल मन्त्र - 21
ऋषि - अजीगर्त शुनःशेप

देवता - वरुण

छन्द - गायत्री

स्वर - षड्ज

दर्शं नु विश्वदर्शतं दर्शं रथमधि क्षमि।
एता जुषत मे गिरः ॥ (1.25.18)

सम्पूर्ण विश्व के द्वारा देख सकने योग्य उस वरुण को निश्चित रूप से मैंने देख लिया है। भूमि पर उस वरुण के रथ को मैंने देख लिया है। उस वरुण देवता ने इन मेरी स्तुतियों को ग्रहण कर लिया है।

शब्दार्थ -

दर्शम् - देख लिया है।

जुषत - ग्रहण कर लिया है।

गिरः - स्तुतियों को

अधिक्षमि - भूमि पर

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'गिरः' शब्द का अर्थ वाणी और स्तुति दोनों होगा। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- वरुण सूक्त - (1.25.18)

16. नाट्यशास्त्रे विश्वकर्मणा प्रेक्षागृहस्य त्रैविध्ये वर्णितम्?

a **विकृष्टम्** b **त्र्यस्त्रम्**
c **चतुरस्त्रम्** d **अष्टास्त्रम्**

उपर्युक्तेषु समीचीनमुत्तरं चिनुत -

(A) a एवं b **(B)** a एवं d
(C) b एवं d **(D)** c एवं d

व्याख्या- आचार्य भरतमुनि प्रणीत नाट्यशास्त्र में कुल 36 अध्याय हैं। इसमें श्लोकों की संख्या 6000 है। इसलिये इसे 'षट्साहस्रीसंहिता' के नाम से भी जाना जाता है।

➤ नाट्यशास्त्र के प्रथम अध्याय में नाट्यशास्त्र की दिव्य उत्पत्ति का मनोरंजक एवं विशद वर्णन हुआ है।

➤ द्वितीय अध्याय में नाट्यमण्डप के भेदोपभेदों का निरूपण हुआ है।

➤ नाट्यशास्त्र में नाट्यमण्डप के दो प्रकार से भेद किये गये हैं। पहला आकार की दृष्टि से, दूसरा प्रमाण की दृष्टि से।

➤ आकार की दृष्टि से नाट्य-मण्डप के तीन प्रकार होते हैं - विकृष्ट, चतुरस्र और त्र्यस्र।

प्रेक्षागृहाणां सर्वेषां त्रिप्रकारो विधिः स्मृतः।
विकृष्टश्चतुरस्रश्च त्र्यस्रश्चैव प्रयोक्तृभिः॥
त्रिविधः सन्निवेशश्च शास्त्रतः परिकल्पितः।
विकृष्टश्चतुरस्रश्च त्र्यस्रश्चैव तु मण्डपः॥

इसी प्रकार शास्त्रीय रीति से प्रेक्षागृह के तीन भेद - विकृष्ट, चतुरस्र और त्र्यस्र होते हैं।

1. विकृष्ट - वह मण्डप है जो आयत अर्थात् ऐसे चतुर्भुज के आकार के समान होता है जिसकी आमने-सामने की भुजाएँ समानान्तर एवं तुल्य होती है तथा प्रत्येक कोण समकोण होता है।

2. चतुरस्र - यह मण्डप वर्गाकार अर्थात् उस चतुर्भुज के आकार का होता है जिसकी चारों भुजाएँ और कोण तुल्य होते हैं।

3. त्र्यस्र - त्रिभुजाकार नाट्यमण्डप जिसकी तीनों भुजाएँ और कोण तुल्य होते हैं। त्र्यस्र कहलाता है।

त्र्यस्रं त्रिकोणं कर्तव्यं नाट्यवेश्म प्रयोक्तृभिः॥

प्रमाण की दृष्टि से भी नाट्यमण्डप तीन प्रकार के होते हैं - (1) ज्येष्ठ (2) मध्य और (3) कनीय

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि नाट्यशास्त्र में प्रेक्षागृह या नाट्यमण्डप को विश्वकर्मा को बनाने की आज्ञा दी गई थी। वह नाट्यमण्डप तीन प्रकार- विकृष्ट, चतुरस्र और त्र्यस्र है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- नाट्यशास्त्र - ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज 126

17. ध्वन्यालोके प्रतीयमानस्य तृतीयः प्रभेदः कः?

(A) अलङ्कारादिः **(B)** गुणादिः
(C) रसादिः **(D)** वृत्यादिः

व्याख्या- ध्वनि सम्प्रदाय के प्रतिष्ठापक आचार्य आनन्दवर्धन प्रणीत ध्वन्यालोक में चार उद्योत हैं। इसके प्रथम उद्योत में काव्यलक्षण 'काव्यस्यात्मा ध्वनिः' काव्य की आत्मा ध्वनि है, का प्रतिपादन किया गया है। इसके बाद वाच्यादि को बताते हुए प्रतीयमान को बताते हैं-

प्रतीयमानं पुनरन्यदेव वस्त्वस्ति वाणीषु महाकवीनाम्।
यत् तत् प्रसिद्धावयवातिरिक्तं विभाति लावण्यमिवाङ्ग-नासु ॥ (1/4)

प्रतीयमान कुछ और ही चीज है जो रमणियों के प्रसिद्ध (मुख, नेत्र, श्रोत्र, नासिकादि) अवयवों से भिन्न उनके लावण्य के समान, महाकवियों की सूक्तियों में वाच्य अर्थ से अलग ही भासित होता है।

1. वस्तुध्वनि का वाच्यार्थ से स्वरूपकृत भेद-

वह प्रतीयमान अर्थ वाच्य सामर्थ्य से आक्षिप्त वस्तुमात्र, अलङ्कार और रसादि भेद से अनेक प्रकार का दिखाया जायेगा।

➢ उन सभी भेदों में वह वाच्य से अलग ही है। जैसे पहला वस्तुध्वनि भेद वाच्य से अत्यन्त भिन्न है।

➢ क्योंकि कहीं वाच्य के विधिरूप होने पर भी वह प्रतीयमान निषेध रूप होता है।

उदाहरण- स हि कदाचित् वाच्ये विधिरूपे प्रतिषेधरूपः-

भ्रम धार्मिक विस्रब्धः स शुनकोऽद्य मारितस्तेन।
गोदावरीकच्छकुञ्जवासिना दृप्तसिंहेन ॥

पण्डित जी महाराज! गोदावरी के किनारे कुञ्ज में रहने वाले मदमत्त सिंह ने आज उस कुत्ते को मार डाला है। आप निश्चिन्त होकर घूमिये।

विशेष - इस श्लोक का वाच्यार्थ तो विधिरूप है परन्तु जो उससे प्रतीयमान अर्थ (वस्तुध्वनि) है, वह निषेधरूप है इसलिए वाच्यार्थ से प्रतीयमान अर्थ अत्यन्त भिन्न है।

क्वचिद् वाच्ये प्रतिषेधरूपे विधिरूपो यथा-

श्वश्रूरत्र निमज्जति अत्राहं दिवसकं प्रलोकय।
मा पथिक रात्र्यन्धक शय्यायां मम निमंक्ष्यसि॥

कही वाच्यार्थ प्रतिषेधरूप होने पर प्रतीयमानार्थ विधिरूप होता है- जैसे- हे पथिक! दिन में अच्छी तरह देख लो, यहाँ सास जी सोती हैं, और यहाँ मैं सोती हूँ। रात को रतौंधीग्रस्त होकर कहीं हमारी खाट पर न गिर पड़ना।

यहाँ वाच्यार्थ निषेधरूप है, परन्तु व्यङ्ग्यार्थ (प्रतीयमानार्थ) विधिरूप है।

2. अलङ्कारध्वनि का वाच्यार्थ से भेद-

इस प्रकार वाच्यार्थ से भिन्न प्रतीयमान (वस्तुध्वनि) के और भी भेद हो सकते हैं। यह तो इनका केवल दिग्दर्शनमात्र है। दूसरा अलङ्कारध्वनिरूप प्रकार भी वाच्यार्थ से भिन्न है।

3. रसध्वनि का वाच्यार्थ से भेद-

'तृतीयस्तु रसादिलक्षणः प्रभेदो वाच्यसामर्थ्याक्षिप्तः प्रकाशते ....' तीसरा रसध्वनि रसादिरूप भेद वाच्य के सामर्थ्य से आक्षिप्त होकर ही प्रकाशित होता है, साक्षात् शब्दव्यापार अभिधा, लक्षणा, तात्पर्या, शक्तिव्यापार का विषय नहीं होता, इसलिए वाच्यार्थ से भिन्न ही है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि ध्वन्यालोक में प्रतीयमान के तीन भेद हैं- वाच्य, अलङ्कार, रसध्वनि। इसलिये तृतीय प्रभेद रसध्वनि है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- ध्वन्यालोक (1.4) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज 13-18

18. राम शब्दस्य पञ्चम्येकवचनस्य विषये समुचितं कथनं नास्ति?

(A) रामात् इति रूपं सम्भवति
(B) रामाद् इति रूपम्भवति
(C) अवसाने खरः स्थाने चरो भवति
(D) अवसाने झलां चरो वा स्युः

व्याख्या- राम शब्द की सिद्धिप्रक्रिया के अन्तर्गत राम शब्द का पञ्चमी एकवचन रामात् और रामाद् रूप बनता है।

वाऽवसाने (8.4.55)- अवसाने झलां चरो वा। रामात्, रामाद्, रामाभ्याम्। रामेभ्यः।

यदि झल् प्रत्याहार में स्थित वर्ण के बाद वर्णों का अभाव (अवसान) हो तो उसके (झल् के) स्थान पर विकल्प से चर् हो जाता है। इसके फलस्वरूप दो रूप प्राप्त होते हैं, रामात् और रामाद्।

इससे स्पष्ट है कि अकारान्त राम आदि शब्दों के पञ्चमी विभक्ति के एकवचन में अन्त में आने वाले प्रत्यय 'ङसि' के स्थान में 'टाङसिँङसामिनात्स्याः' सूत्र से जो 'आत्' आता है उसके तकार के स्थान पर जब 'झलां जशोऽन्ते' से 'द्' हो जाता है तब 'वाऽवसाने' नियम के अनुसार पुनः द् को विकल्प से 'त्' होकर दोनों रूप प्राप्त होते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट होता है कि राम शब्द के पञ्चमी विभक्ति एकवचन के विषय में 'अवसाने खरः स्थाने चरो भवति' यह अशुद्ध कथन है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी, भैमी व्याख्या (भाग-1), पेज 183-187

19. वैदिकसाहित्ये अधोलिखितानां सुनिश्चितक्रमो लेख्यः-

(1) ब्राह्मणम् **(2) उपनिषद्**
(3) शुक्लयजुर्वेदः **(4) सूत्रसाहित्यम्**

अधोलिखितेषु उचितक्रमं चिनुत-

(A) 2 1 4 3
(B) 3 1 2 4
(C) 1 2 3 4
(D) 4 1 2 3

व्याख्या- ➤ वेद शब्द ज्ञानार्थक विद् धातु (विद ज्ञाने) से घञ् (अ) प्रत्यय करने पर बनता है।

➤ इसका आशय है- 'ज्ञान' अतः वेद शब्द का अर्थ होता है- ज्ञान की राशि या ज्ञान का संग्रह-ग्रन्थ।

➤ प्राचीन ऋषियों ने जो ज्ञान अपनी आर्ष दृष्टि से प्राप्त किया था, उसका संग्रह वेदों में है।

➤ संस्कृत व्याकरण के अनुसार वेद शब्द चार धातुओं से विभिन्न अर्थों में बनता है।

1. विद सत्तायाम् (होना दिवादिगण)
2. विद ज्ञाने (जानना, अदादिगण)
3. विद विचारणे (विचारना, रुधादिगण)
4. विद्लृ लाभे (प्राप्त करना, तुदादिगण)

सत्तायां विद्यते ज्ञाने, वेत्ति विन्ते विचारणे।
विन्दति विन्दते प्राप्तौ, श्यन्लुक्श्नम्शेष्विदं क्रमात्॥

इन अर्थों का समन्वय करते हुए ऋक्प्रातिशाख्य की व्याख्या में विष्णुमित्र ने वेद का अर्थ किया है -

विद्यन्ते ज्ञायन्ते लभ्यन्ते एभिर्धर्मादिपुरुषार्था इति वेदाः।

अर्थात् वेद शब्द का भावार्थ होता है -

(1) जिन ग्रन्थों के द्वारा धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष रूपी पुरुषार्थ चतुष्टय के अस्तित्व का बोध होता है।
(2) इनसे पुरुषार्थ चतुष्टय का ज्ञान प्राप्त होता है।
(3) इनसे पुरुषार्थ चतुष्टय की प्राप्ति होती है।
(4) इनसे पुरुषार्थ चतुष्टय का विवेचन किया गया है इस प्रकार वेद पुरुषार्थ चतुष्टय के सर्वांगीण विवेचन करने वाले ग्रन्थ हैं।

आचार्य सायण ने वेद शब्द की एक अन्य व्याख्या की है-

इष्टप्राप्त्यनिष्ट-परिहारयोरलौकिकम् उपायं यो ग्रन्थो वेदयति, स वेदः।

अर्थात् जो ग्रन्थ इष्टप्राप्ति और अनिष्ट निवारण का अलौकिक उपाय बताता है उसे वेद कहते हैं।

*** वैदिक साहित्य का विभाजन-** वैदिक साहित्य को सुविधा की दृष्टि से चार भागों में बाँटा गया है-

(1) वेदों की संहिताएँ (2) ब्राह्मणग्रन्थ (3) आरण्यकग्रन्थ (4) उपनिषद्

➤ वेदों की चार संहिताएँ हैं- (1) ऋग्वेदसंहिता (2) यजुर्वेदसंहिता (3) सामवेदसंहिता (4) अथर्ववेदसंहिता

➤ यजुर्वेद संहिता में दो भाग हैं- कृष्णयजुर्वेदसंहिता तथा शुक्लयजुर्वेदसंहिता

➤ **ब्राह्मण ग्रन्थ-** ब्राह्मणग्रन्थों में मुख्यतः ऐतरेयब्राह्मण, शतपथब्राह्मण, तैत्तिरीयब्राह्मण, पंचविंशब्राह्मण, षड्विंशब्राह्मण, जैमिनीयब्राह्मण और गोपथब्राह्मण आदि प्रमुख हैं।

➤ **आरण्यकग्रन्थ-** अरण्य (जंगल) में होने वाले अध्ययन, अध्यापन, मनन, चिन्तन, शास्त्रीय चर्चा आदि आरण्यक के अन्तर्गत आते हैं। ऐतरेय, शांखायन, बृहदारण्यक, तैत्तिरीयारण्यक, तलवकार आरण्यक आदि प्रमुख हैं।

➤ **उपनिषद् ग्रन्थ-** ऐतरेयोपनिषद् , तैत्तिरीयोपनिषद्, ईशोपनिषद्, बृहदारण्यकोपनिषद्, कठोपनिषद्, केनोपनिषद्, छान्दोग्योपनिषद्, प्रश्नोपनिषद् आदि प्रमुख उपनिषद् हैं।

➤ **वेदाङ्ग-** वेदाङ्ग छः हैं- शिक्षा, व्याकरण, छन्द, निरुक्त, ज्योतिष और कल्प

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि वैदिकसाहित्य का सुनिश्चित क्रम इस प्रकार है- सर्वप्रथम शुक्लयजुर्वेदसंहिता, ब्राह्मणग्रन्थ, उपनिषद् और अन्तिम में कल्पसूत्र है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज 01

20. पैलः इति पदं विद्यते -

a गणविशेषस्यादिमः शब्दः **b** पीलाया गोत्रापत्यम्
c पैले भवा **d** पैलस्य इयम्

अधोलिखितेषु समुचितं विकल्पं चिनुत -

(A) a एवं b **(B)** c एवं d
(C) a एवं c **(D)** b एवं d

व्याख्या- (a) ''पैलादिभ्यश्च'' (2.4.59) सूत्र के अनुसार पैल आदि गण का प्रथम शब्द ''पैल'' है। पैलादि गण आकृति गण है इसमें आने वाले शब्दों की संख्या निश्चित नहीं है। इसमें से कुछ प्रसिद्ध शब्द -पैल। शालङ्कि, सात्यकि, सात्यकामि, दैवि, औदमज्जि, औदव्रजि। औदमेधि, औदबुद्धि, दैवस्थानि, पैङ्गलायनि, राणायनि, शैहक्षिति, भौलिङ्गि, औङ्गाहमानि, औज्जिहानि।

(b) ''पीलाया वा'' (4.1.118) - सूत्र के अनुसार पीला शब्द से गोत्रापत्य अर्थ में अण् प्रत्यय होता है। अण् प्रत्यय होने के कारण ''पीलायाः गोत्रापत्यम्'' इस अर्थ में ''पैलः'' शब्द बनता है।

(c), (d) "पैले भवा" इस अर्थ में "तत्र भवः" से अण् प्रत्यय होगा तथा "पैलस्य इयम्" में "तस्येदम्" सूत्र से अण् प्रत्यय होगा परन्तु उक्त दोनों विग्रहवाक्यों में "भवा" और "इयम्" शब्द दिया है फलस्वरूप स्त्रीलिङ्ग हो जाने के कारण "पैली" शब्द बनेगा।

स्पष्टीकरण- उक्त विवरण से स्पष्ट है कि **विकल्प 'C' सही हैं।**

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी भैमी व्याख्या (भाग-5), पेज 23

21. हरी + एतौ इत्यत्र भवतः-

a यण् सन्धि b पररूपम्
c प्रगृह्यसंज्ञा d प्रकृतिभावः

अधोलिखितेषु समुचितं विकल्पं चिनुत -

(A) a एवं b **(B)** b एवं c
(C) c एवं d **(D)** a एवं d

व्याख्या- ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम् (1.1.11)

ईदूदेदन्तं द्विवचनं प्रगृह्यं स्यात्। हरी एतौ। विष्णू इमौ। गङ्गे अमू। ईदन्त, ऊदन्त तथा एदन्त द्विवचन प्रगृह्य सञ्ज्ञक हो।

उदाहरण- हरी एतौ- (ये दो हरि अर्थात् घोड़े व बन्दर हैं।)

यहाँ रेफोत्तर ईकार ईदन्त द्विवचन हैं। इसकी इस सूत्र से प्रगृह्य संज्ञा होती है।

प्रगृह्यसंज्ञा होने से 'प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम्' सूत्र द्वारा प्रकृतिभाव हो जाता है। अतः एकार = अच् परे होने पर भी 'इको यणचि' से ईकार को यण् नहीं होता।

* **विष्णू इमौ -** (ये दो विष्णू हैं।)
* **गङ्गे अमू -** (ये दो गङ्गाएँ हैं।)

प्रकृतिभाव करने वाला सूत्र -

➢ **प्लुत-प्रगृह्या अचि नित्यम् (6.1.121)**

प्लुत और प्रगृह्यसंज्ञक अच् परे होने पर प्रकृति से रहते हैं।

उदाहरण- आगच्छ कृष्ण 3! अत्र गौश्चरति

➢ **अदसो मात् (1.1.12)-**

अदस् शब्द के मकार से परे ईत् और ऊत् प्रगृह्यसंज्ञक हों।

जैसे- अमी ईशाः

रामकृष्णावमू आसाते

➢ **ओत् (1.1.15)**

ओकार अन्त वाला निपात प्रगृह्य सञ्ज्ञक हो।

जैसे- अहो ईशाः।

➢ **सम्बुद्धौ शाकल्यस्येतावनार्षे (1.1.16)**

सम्बुद्धि निमित्तक ओकार - अवैदिक अर्थात् वेद में न पाये जाने वाले 'इति' शब्द के परे होने पर विकल्प करके प्रगृह्य संज्ञक होता है।

जैसे- विष्णो इति

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'हरी + एतौ' में प्रगृह्य संज्ञा और प्रकृतिभाव हुआ है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-1), पेज 83

22. पाणिनीयशिक्षानुसारं ऌकारस्य भेदाः सम्भवन्ति-

(A) ह्रस्वदीर्घौ **(B)** दीर्घप्लुतौ
(C) ह्रस्वप्लुतौ **(D)** ह्रस्वदीर्घप्लुताः

व्याख्या- स्वरा विंशतिरेकश्च स्पर्शानां पञ्चविंशतिः।
यादयश्च स्मृता ह्यष्टौ चत्वारश्च यमाः स्मृताः ॥4॥
अनुस्वारो विसर्गश्च ᳵक ᳵपौ चाऽपि पराश्रितौ।
दुस्स्पृष्टश्चेति विज्ञेय ऌकारः प्लुत एव च ॥5॥

स्वर बीस और (इक्कीस), स्पर्श पच्चीस, यकारादि अन्तःस्थ और ऊष्म वर्ण आठ और यम वर्ण चार, अनुस्वार (एक) विसर्ग क ख परक तथा प फ परक जिह्वामूलीय तथा उपध्मानीय वर्ण दो, दुस्स्पृष्टता को प्राप्त ऌकार (एक) जानना चाहिये।

विंशतिरेकः - 21 स्वर कौन-कौन से हैं -

ह्रस्व - अ ह्रस्व - इ ह्रस्व - उ ह्रस्व- ऋ
दीर्घ - आ दीर्घ - ई दीर्घ - ऊ दीर्घ - ॠ
प्लुत - अ3 प्लुत - इ3 प्लुत - उ3 प्लुत - ऋ3
3+ 3+ 3+ 3+
ह्रस्व ऌ - 01 = 12 + 01 = 13
दीर्घ - ए दीर्घ - ओ दीर्घ - ऐ दीर्घ - औ
प्लुत - ए3 प्लुत - ओ3 प्लुत - ऐ3 प्लुत - औ3
+2 +2 +2 +2

इस तरह कुल 13 + 08 = 21 स्वर हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि पाणिनीयशिक्षानुसार ऌकार ह्रस्व और प्लुत होगा क्योंकि ऌ का दीर्घ नहीं होता। 'ऌकारस्य दीर्घाभावात्'। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- पाणिनीय शिक्षा (4-5 श्लोक) - दामोदर महतो, पेज 6

23. जैनमतानुसारं सप्ततत्त्वानां समुचितः क्रमोऽस्ति-

(A) आस्रवः, संवरः, बन्धः, निर्जरा, जीवः, अजीवः, मोक्षः
(B) बन्धः, आस्रवः, संवरः, निर्जरा, जीवः, अजीवः, मोक्षः
(C) जीवः, अजीवः, आस्रवः, बन्धः, संवरः, निर्जरा, मोक्षः
(D) बन्धः, जीवः, अजीवः, आस्रवः, संवरः, निर्जरा, मोक्षः

व्याख्या- जैनदर्शन का अपर नाम आर्हत दर्शन है।

जैन दर्शन के तीन रत्न - (1) सम्यक् दर्शन (2) सम्यक् ज्ञान (3) सम्यक् चरित्र

'सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्ग'

तज्ज्ञानं पञ्चविधं मतिश्रुतावधिमनः पर्यायकेवलभेदेन।

वह ज्ञान- (1) मति (2) श्रुत (3) अवधि (4) मनः पर्याय (5) केवल, इन भेदों के कारण पाँच प्रकार का है।

जैन तत्त्व-मीमांसा -

तावज्जीवाजीवाख्ये द्वे तत्त्वे स्तः। तत्र बोधात्मको जीवः। अबोधात्मस्त्वजीवः।

जीव और अजीव नामक दो तत्त्व हैं। उनमें ज्ञान के रूप में जीव है और अज्ञान के रूप में अजीव है।

सात तत्त्व -

जीवाजीवास्त्रवबन्धसम्वरनिर्जरमोक्षास्तत्त्वानि इति।

जीव, अजीव, आस्त्रव, बन्ध, संवर, निर्जरा और मोक्ष ये तत्त्व हैं।

सप्तभङ्गीनय -

सप्तभङ्गिनयाख्यं न्यायमवतारयन्ति जैनाः।

स्यादस्ति, स्यान्नास्ति, स्यादस्ति च नास्ति च, स्यादवक्तव्यः, स्यादस्ति चावक्तव्यः, स्यान्नास्ति चावक्तव्यः, स्यादस्ति च नास्ति चावक्तव्यः इति।

जैन लोग सर्वत्र सप्तभङ्गी-नय उपस्थित करते हैं।

1. स्यादस्ति - किसी प्रकार है।
2. स्यान्नास्ति - किसी प्रकार नहीं है।
3. स्यादस्ति च नास्ति च - किसी प्रकार है और नहीं है।
4. स्यादवक्तव्यः - किसी प्रकार अवर्णनीय है।
5. स्यादस्ति चावक्तव्यः - किसी प्रकार है और अवर्णनीय है।
6. स्यान्नास्ति चावक्तव्यः - किसी प्रकार नहीं है और अवर्णनीय है।
7. स्यादस्ति च नास्ति चावक्तव्यः - किसी प्रकार है, नहीं है और अवर्णनीय है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि जैनमतानुसार सप्त तत्त्व हैं क्रमशः जीव, अजीव, आस्त्रवः, बन्धः, संवरः, निर्जरा, मोक्ष है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- सर्वदर्शनसंग्रह - उमाशंकर शर्मा, ऋषि, पेज 135

24. पूर्ववर्ती आचार्यस्य प्राथम्येन कालक्रमानुसारमुचितमुत्तरं निर्दिशत-

(a) क्षेमेन्द्रः **(b) अभिनवगुप्तः**

(c) भरतः **(d) रुय्यकः**

एषु क्रमं चिनुत-

(A) d c b a
(B) c b a d
(C) a d b c
(D) b d c a

व्याख्या-

आचार्य	कालक्रम	ग्रन्थ
भरतमुनि	300 ई.	नाट्यशास्त्र
अभिनवगुप्त	980-1010ई.	तन्त्रालोक
क्षेमेन्द्र	1000-1070ई.	औचित्यविचारचर्चा
रुय्यक	1100-50ई.	अलङ्कारसर्वस्व
भामह	500 ई. लगभग	काव्यालङ्कार
आनन्दवर्धन	9वीं शताब्दी उत्तरार्ध	ध्वन्यालोक
रुद्रट	9वीं शताब्दी पूर्वार्द्ध	काव्यालङ्कार
दण्डी	7वीं शताब्दी	काव्यादर्श
वामन	800-850 ई. लगभग	काव्यालङ्कारसूत्र
उद्भट	8वीं शताब्दी उत्तरार्द्ध	काव्यालङ्कारसारसंग्रह
धनञ्जय	10वीं शताब्दी उत्तरार्द्ध	दशरूपक
कुन्तक	11वीं शताब्दी पूर्वार्द्ध	वक्रोक्तिजीवितम्
मम्मट	1050ई. लगभग	काव्यप्रकाश
भोजराज	11वीं शताब्दी लगभग	सरस्वतीकण्ठाभरण
विश्वनाथ	14वीं शताब्दी	साहित्यदर्पण
पण्डितराज जगन्नाथ	17वीं शताब्दी	रसगङ्गाधर

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि आचार्यों का सही क्रम-भरत, अभिनवगुप्त, क्षेमेन्द्र, रुय्यक है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा ऋषि, पेज 577,581,583,584

25. भर्तृहरेः कृती इमे -

a दीपिका **b प्रदीपः**

c द्योतनम् **d वाक्यपदीयम्**

अधोलिखितेषु समुचितं विकल्पं चिनुत -

(A) a एवं b **(B)** b एवं c

(C) a एवं d **(D)** b एवं d

व्याख्या- पाणिनि की अष्टाध्यायी के सूत्रों पर कात्यायनादि द्वारा प्रणीत वार्तिकों के आधार पर विशिष्ट शैली में लिखा गया व्याख्यान ग्रन्थ महाभाष्य नाम से प्रसिद्ध है।

सूत्रार्थो वर्ण्यते यत्र वाक्यैः सूत्रानुसारिभिः।
स्वपदानि च वर्ण्यन्ते भाष्यं भाष्यविदो विदुः॥

➢ इसका विभाजन आह्निकों में है - 'अह्ना निवृत्तम् आह्निकम्'-

इस व्युत्पत्ति से यह प्रतीत होता है कि एक-एक दिन के अध्यापनीय या अध्यापित विषय का संग्रह एक-एक आह्निक में किया गया है।

➢ प्रथम आह्निक भूमिकात्मक है और इसे 'पस्पशा' नाम से कहा जाता है।

➢ प्रथम आह्निक में मुख्य रूप से शब्द का स्वरूप, व्याकरणाध्ययन के प्रयोजन, शब्दानुशासन की पद्धति, शब्द-अर्थ-सम्बन्ध की नित्यता, व्याकरणशास्त्र द्वारा नियम का बोधन, अप्रयुक्त शब्दों के भी अन्वाख्यान की आवश्यकता, शुद्ध शब्दों के ज्ञान में धर्म की उत्पत्ति, व्याकरण पद का अर्थ और अइउण् आदि वर्णसमाम्नाय के उपदेश के प्रयोजन प्रतिपादित हैं।

महाभाष्य की व्याख्याएँ -

दीपिका -

➢ भर्तृहरि की 'महाभाष्यदीपिका' ही सबसे प्राचीन मानी जाती है।

➢ भर्तृहरि की 'दीपिका' प्रारम्भिक तीन आह्निकों पर ही प्रकाशित है।

➢ वाक्यपदीय भी भर्तृहरि की अमर कृति है।

➢ वाक्यपदीयम् में ब्रह्मकाण्ड, वाक्यकाण्ड और पदकाण्ड तीन काण्ड हैं।

➢ भर्तृहरि का समय चतुर्थ और पञ्चम शती के मध्य माना जाता है।

➢ जैय्यट पुत्र कैयट का 'प्रदीप' व्याख्यान सर्वातिशयी है। यह पूरे महाभाष्य पर लिखा गया है।

➢ कैयटकृत 'प्रदीप' टीका पर विद्वानों ने अनेक व्याख्याएँ लिखीं। जिनकी संख्या 15 है। इनमें नागेशभट्ट कृत उद्द्योत सर्वश्रेष्ठ और अत्यन्त गम्भीर है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि भर्तृहरि की दो कृतियाँ-दीपिका और वाक्यपदीयम् हैं। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- महाभाष्यम् - जयशङ्करलाल त्रिपाठी, पेज भू. 06

26. अधोऽङ्कितानां केन सह कस्य सम्बन्धः?

(a) प्रत्यक्षमेव प्रमाणम्	**(i) जैनाः**
(b) सप्तभङ्गिनयः	**(ii) सांख्यदर्शनम्**
(c) हेत्वाभासाः	**(iii) चार्वाकाः**
(d) सत्कार्यवादः	**(iv) नैयायिकाः**

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत -

(A) 4 1 3 2
(B) 3 1 4 2
(C) 2 4 3 1
(D) 1 3 2 4

व्याख्या- * दर्शन शब्द दृश् धातु से ल्युट् प्रत्यय करने से निष्पन्न होता है। दर्शन शब्द का अर्थ है- जिसके द्वारा किसी वस्तु को देखा या समझा जाय।

* भारतीयदर्शन की दो शाखाएँ हैं- आस्तिक तथा नास्तिक
* जो दर्शन वेदों को प्रमाण रूप में स्वीकार करते हैं, उन्हें आस्तिक दर्शन कहते हैं जिनमें सांख्य, योग, न्याय-वैशेषिक पूर्वमीमांसा एवं उत्तरमीमांसा (वेदान्त) की गणना करते हैं।
* जो दर्शन वेदों को प्रमाण रूप में स्वीकार नहीं करते हैं उन्हें नास्तिक दर्शन कहते हैं। जिनमें चार्वाक, बौद्ध, जैन प्रमुख रूप से हैं।
* सांख्य-योग, न्याय-वैशेषिक, पूर्व मीमांसा-उत्तरमीमांसा इन्हें षड्दर्शन भी कहते हैं।

➢ **चार्वाकदर्शन -** चार्वाकदर्शन को 'लोकायत' के नाम से भी जाना जाता है।

* चार्वाकदर्शन में चार महाभूत तत्त्व हैं - पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु।
* यह दर्शन प्रत्यक्षमात्र को ही प्रमाण मानता है। 'प्रत्यक्षमेव प्रमाणम्'

➢ **जैन दर्शन -**

* जैन दर्शन को आर्हत दर्शन के नाम से भी जाना जाता है।
* जैन दर्शन दो तत्त्व मानता है - जीव और अजीव
* जैन दर्शन में त्रिरत्न हैं - सम्यग्दर्शन, सम्यक् ज्ञान, सम्यक् चरित्र। 'सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः।'
* सप्त भङ्गीनय है - स्यादस्ति, स्यान्नास्ति, स्यादस्ति च नास्ति च, स्यादवक्तव्यः, स्यादस्ति चावक्तव्यः, स्यान्नास्ति चावक्तव्यः, स्यादस्ति च नास्ति चावक्तव्यः। 'सप्तभङ्गिनयाख्यं न्यायमवतारयन्ति जैनाः।'

➢ **न्यायदर्शन -** न्यायदर्शन का प्रथम ग्रन्थ न्यायसूत्र है, जिसमें पाँच अध्याय हैं। इसके प्रणेता गौतम हैं।

* न्यायदर्शन में सोलह पदार्थों के ज्ञान से मोक्षप्राप्ति बताई गई है।
* न्यायदर्शन चार प्रमाण मानता है- प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द। 'तच्चतुर्विधं प्रत्यक्षानुमानोपमानशब्दभेदात्।'
* न्यायदर्शन में पाँच प्रकार के हेत्वाभास माने गये हैं- सव्यभिचार, विरुद्ध, प्रकरणसम, असिद्ध और बाधित

हेत्वाभासः पञ्चविधः - सव्यभिचार-विरुद्ध-प्रकरणसम-असिद्धबाधितभेदात्।

➢ **सांख्यदर्शन-** सांख्यदर्शन के प्रणेता कपिलमुनि हैं। सांख्यदर्शन का प्रकरणग्रन्थ सांख्यकारिका है, जिसके प्रणेता आचार्य ईश्वरकृष्ण हैं।

* सांख्यदर्शन तीन प्रमाण मानता है- प्रत्यक्ष, अनुमान, आगम
दृष्टमनुमानमाप्तवचनं च सर्वप्रमाणसिद्धत्वात् ।
त्रिविधं प्रमाणमिष्टं प्रमेयसिद्धिः प्रमाणाद्धि॥ (सा. का. 04)

* सांख्यदर्शन सत्कार्यवाद मानता है-
असदकरणादुपादानग्रहणात्सर्वसम्भवाभावात् ।
शक्तस्य शक्यकरणात्कारणभावाच्च सत्कार्यम् ॥
(सा. का. 09)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि **विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- सर्वदर्शनसंग्रह- उमाशङ्कर शर्मा ऋषि, पेज 04,146,545, 403

27. संस्कृत-आलोचनापरम्परायां वाल्मीकिरामायणं कीदृशं काव्यं मन्यन्ते?

(A) अरससिद्धकाव्यम् **(B)** सिद्धरसकाव्यम्
(C) असिद्धरसकाव्यम् **(D)** सिद्धासिद्धरसकाव्यम्

व्याख्या- आचार्य आनन्दवर्धन प्रणीत ध्वन्यालोक के प्रथम उद्योत में (कहे गये प्रकार से) ध्वनि के दो भेद बताये हैं - इनके निरूपण के अनन्तर द्वितीयोद्योत में व्यङ्ग्य की दृष्टि से ही भेदपूर्वक ध्वनि के निरूपण के बाद ध्वनिकार पुनः तीसरे उद्योत में व्यञ्जक की दृष्टि से ध्वनि के स्वरूप का निरूपण करते हैं।

प्रबन्ध के रसाभिव्यञ्जकत्व का प्रथम हेतु -

सन्ति सिद्धरसप्रख्या ये च रामायणादयः।
कथाश्रया न तैर्योज्या स्वेच्छा रसविरोधिनी॥

सिद्धरस के समान रामायण आदि जो कथा के आश्रय हैं, उनमें स्वेच्छा का प्रयोग नहीं करना चाहिये, क्योंकि स्वेच्छा रस की विरोधिनी होती है।

'सिद्धरसप्रख्या' पद के सिद्ध शब्द का अर्थ है कि वे केवल आस्वादन के ही योग्य हैं। उनमें रस भावनीय नहीं है। कथाओं के आश्रय इतिहास हैं। उन इतिहासों के अर्थों के साथ स्वेच्छा को नहीं जोड़ना चाहिए।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि संस्कृत आलोचना परम्परा में वाल्मीकिरामायण को 'सिद्धरस काव्य' माना जाता है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- ध्वन्यालोक (तृतीय उद्योत) - शिवप्रसाद द्विवेदी, पेज 401

28. रथाङ्गपाणेः पटलेन रोचिषामृषित्विषः संवलिता विरेजिरे।
चलत्पलाशान्तरगोचरास्तरोस्तुषारमूर्तेरिव नक्तमंशवः॥
अस्मिन् श्लोके 'तुषारमूर्तिः' इति शब्दः कस्य वाचकः?

(A) सूर्यस्य **(B)** चन्द्रस्य
(C) श्रीकृष्णस्य **(D)** रथस्य

व्याख्या- महाकवि माघ द्वारा प्रणीत एकमात्र महाकाव्य शिशुपालवधम् बृहत्त्रयी के अन्तर्गत आता है। शिशुपालवध महाकाव्य बीस सर्गात्मक है। जिसके प्रथम सर्ग में नारद जी की कान्ति की हरि के श्यामल किरणों से मिश्रित होने का वर्णन किया गया है -

रथाङ्गपाणेः पटलेन रोचिषामृषित्विषः संवलिता विरेजिरे।
चलत्पलाशान्तरगोचरास्तरोः तुषारमूर्तेरिव नक्तमंशवः॥ (1/21)

चक्रपाणि (श्रीकृष्ण) के कान्तिपुञ्ज से मिली हुई मुनि की किरणें रात्रि में हिलते-डुलते पत्तों के बीच में पड़ने वाली चन्द्र किरणों की तरह सुशोभित हुई।

टिप्पणी -

रथाङ्गपाणेः - हाथ में चक्र धारण करने वाले (श्रीकृष्ण)
ऋषित्विषः - नारद जी की आभायें
नक्तम् - रात में
तुषारमूर्तेः - हिम शरीर वाले चन्द्रमा की
अंशवः - किरणें
विरेजिरे - सुशोभित हुई

अन्य विशेषण -

वसुदेवसद्मनि - वसुदेव के घर में
हिरण्यगर्भाङ्गभुवम् - ब्रह्मा के पुत्र
मुनिम् - नारद को
अनूरुसारथेः - सूर्य
व्रततीततीः - लताओं के समूहों
धराधरेन्द्रम् - हिमालय
शितिवाससः - बलभद्र जी (बलराम)
हिमशुभ्रम् - तुषार के समान गौर
घनान्ते - शरद् ऋतु में
नागेन्द्रम् - गजराज
महती - नारद की वीणा का नाम
तपोनिधिः - नारद
अच्युतः - कृष्ण

देवकीसुतं - श्रीकृष्ण
धातुश्चरणौ - नारद जी के चरणों में
आदिपूरुषः - श्रीकृष्ण
तप्तकार्तस्वर - तपे सोने के समान
पुण्डरीकाक्षः - श्रीकृष्ण
कैटभद्विषः - कैटभ नामक असुर के शत्रु
भानुना - सूर्य
विष्टरे - आसन पर
व्रती - नियमी, तपस्वी (नारद)
पुराविदः - प्राचीन तत्त्व को जानने वाले (कपिल आदि मुनि)
ओकसः - गृह का
हेलया - अनायास, खेल-खेल में
धरित्री - पृथ्वी
त्रिदिवात् - स्वर्ग से
विश्वम्भर - श्रीकृष्ण से
रवेः ऋते - सूर्य के बिना
उपेन्द्र - श्रीकृष्ण
अहिद्विषः - इन्द्र का
तपनद्युति - सूर्य सदृश तेजस्वी
द्युसदाम् - स्वर्ग में रहने वाले देवताओं के
पिनाकिनः - शङ्करः
नमुचिद्विषा - इन्द्र से
कौशिकः - इन्द्र अथवा उल्लू

स्पष्टीकरण - उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'तुषारमूर्तेः' शब्द का अर्थ 'चन्द्रमा' है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- शिशुपालवधम् (1/21)

29. (A) स किंसखा साधु न शास्ति यो नृपम्। इयं पंक्तिः भारवेः किरातार्जुनीयादुद्धृतोऽस्ति।

(R) वनेचरः युधिष्ठिरं प्रति दुर्योधनस्य सत्यं वृत्तान्तमवबोध-यितुं वदति अधोलिखितेषु उचितं कारणं लिखत-

(A) (A) कथनं मित्रस्य साधुशीलतां प्रमाणी करोति
(R) कथनं वनेचरस्य स्वामिनः वञ्चनां निषेधयति

(B) (A) कथने नृपस्य स्वरूपं वर्णितमस्ति
(R) कथने दुर्योधनं प्रति वनेचरस्य सहृदयता ज्ञायते

(C) (A) कथने सः पदेन वनेचरः नृपम् पदेन सुयोधनं कथितमस्ति।
(R) कथनेन सुयोधनं प्रति सेवाभावोऽस्ति।

(D) (A) कथने सखा वनेचर अस्ति
(R) वनेचरः युधिष्ठिरं सत्यं वृत्तान्तं न कथयति

व्याख्या- महाकवि भारविप्रणीत किरातार्जुनीयम् महाकाव्य बृहत्त्रयी के अन्तर्गत परिगणित अठारह सर्गों वाला महाकाव्य है। जिसके नायक अर्जुन और नायिका द्रौपदी है।

राजा युधिष्ठिर के द्वारा नियुक्त ब्रह्मचारी वेश वाला वनेचर दुर्योधन के राज्यकार्यों को जानकर आया है और कहता है-

स किंसखा साधु न शास्ति योऽधिपं
हितान्न यः संशृणुते स किम्प्रभुः।
सदाऽनुकूलेषु हि कुर्वते रतिं
नृपेष्वमात्येषु च सर्वसम्पदः (॥1/5॥)

जो राजा को समुचित उपदेश नहीं देता है क्या वह मित्र है? (कभी नहीं) अथवा वह कुत्सित मित्र है। इसी प्रकार जो शुभाकांक्षी व्यक्ति से सदुपदेश नहीं सुनता है क्या वह प्रभु है? (कभी नहीं) अथवा वह निन्दनीय नरेश है। क्योंकि राजाओं तथा सचिवों के परस्पर अनुकूल रहने पर ही समग्र सम्पत्तियाँ सदैव अनुराग करती हैं। (अन्यथा नहीं)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त पंक्ति से स्पष्ट होता है कि वनेचर कथन (A) में मित्र की साधुशीलता को प्रमाणित कर रहा है। और कथन (R) में स्वामी को धोखा नहीं देना चाहिये या झूठ नहीं बोलना चाहिये। धोखा देने का निषेध कर रहा है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- किरातार्जुनीयम् (1/5)

30. वेदान्तसारानुसारं तत्त्वमसि इत्यत्र अखण्डार्थबोधक-सम्बन्धः कतिविधः?

(A) चतुर्विधः **(B)** त्रिविधः
(C) द्विविधः **(D)** पञ्चविधः

व्याख्या- आचार्य बादरायणकृत ब्रह्मसूत्र वेदान्त या उत्तरमीमांसा का आधारग्रन्थ है। इसी का दूसरा नाम वेदान्तसूत्र भी है।

* ब्रह्मसूत्र पर लिखा गया आचार्य शङ्कर का 'शारीरकभाष्य' इस दर्शन का अद्भुत ग्रन्थ माना गया है।
* प्रस्थानत्रयी के नाम से प्रसिद्ध उपनिषद्, गीता एवं ब्रह्मसूत्र सभी वेदान्त सम्प्रदायों के प्रमुख आधार ग्रन्थ हैं।
* ब्रह्म और जीव का ऐक्य प्रतिपादन करना ही इस दर्शन का मुख्य उद्देश्य रहा है।

➤ महावाक्य के अर्थ का वर्णन किया जा रहा है-

यह 'तत्त्वमसि' (वह तू है) इत्यादि वाक्य तीन सम्बन्धों से अखण्ड अर्थ का बोध कराने वाला होता है। वे तीन सम्बन्ध

वस्तुतः दो पदों का समानाधिकरण्य सम्बन्ध, दो पदों के अर्थों का विशेषणविशेष्यभाव सम्बन्ध एवं आन्तरिक आत्मा तथा उसको बताने वाले लक्षण दोनों में लक्ष्यलक्षणभाव सम्बन्ध है।

अथ महावाक्यार्थो वर्ण्यते। इदं तत्त्वमसीतिवाक्यं सम्बन्धत्रयेणाखण्डार्थबोधकं भवति। सम्बन्धत्रयं नाम पदयोः समानाधिकरण्यं पदार्थयोर्विशेषणविशेष्यभावः प्रत्यगात्मलक्षणयोर्लक्ष्यलक्षणभावश्चेति। तदुक्तम् -

समानाधिकरण्यं च विशेषणविशेष्यता
लक्ष्यलक्षणसम्बन्धः पदार्थप्रत्यगात्मनाम् ॥ इति

* वेदान्त में चार महावाक्यों की चर्चा की गयी है-

(i) प्रज्ञानं ब्रह्म (एतरेयोपनिषद् -5)
(ii) तत्त्वमसि (छान्दोग्योपनिषद् -6.8.7)
(iii) अहं ब्रह्मास्मि (बृहदारण्यकोपनिषद् 1.4.10)
(iv) अयमात्मा ब्रह्म (माण्डूक्य 02)

➢ यहाँ लक्ष्यलक्षणसम्बन्ध को 'भागलक्षणा' भी कहा जाता है।
➢ लक्षणा तीन प्रकार से होती है-

(i) जहत् लक्षणा (ii) अजहत् लक्षणा (iii) जहत् अजहत् लक्षणा। इसी को भागलक्षणा भी कहा गया है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि तत्त्वमसि अखण्डार्थबोधक सम्बन्ध तीन प्रकार से सम्बद्ध है।

अतः विकल्प 'B' सही है।

स्रोत- वेदान्तसार - राकेश शास्त्री, पेज 232-233

31. रामायणस्य बालकाण्डस्य सर्गानुसारम् उपाख्यानानां समुचितः क्रमोऽस्ति -

(A) शुनःशेपाख्यानम्-ऋष्यशृङ्गाख्यानम्-क्रौञ्चवधाख्यानम्-अहिल्योद्धाराख्यानम्
(B) क्रौञ्चवधाख्यानम्-ऋष्यशृङ्गाख्यानम्-अहिल्योद्धाराख्यानम्-शुनःशेपाख्यानम्
(C) क्रौञ्चवधाख्यानम्-शुनःशेपाख्यानम्-अहिल्योद्धाराख्यानम्-ऋष्यशृङ्गाख्यानम्
(D) ऋष्यशृङ्गाख्यानम्-शुनःशेपाख्यानम्-अहिल्योद्धाराख्यानम्-क्रौञ्चवधाख्यानम्

व्याख्या- * यह काव्य का आदिरूप है जिसकी रचना महर्षि वाल्मीकि ने की थी। वाल्मीकि को आदिकवि कहा गया है।

* रामायण सात काण्डों में विभक्त है -

बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, युद्धकाण्ड और उत्तरकाण्ड।

* प्रत्येक काण्ड सर्गों में विभक्त है। इस काव्य में सर्वाधिक संख्या अनुष्टुप् छन्द की है, जिसे श्लोक भी कहा जाता है।
* सम्पूर्ण ग्रन्थ में 24 सहस्र पद्य या श्लोक हैं। इसीलिए इसे 'चतुर्विंशतिसाहस्री संहिता' कहते हैं।

➢ **बालकाण्ड -**

* नारद जी का वाल्मीकि मुनि को संक्षेप से श्रीरामचरित्र सुनाना
* रामायण काव्य का उपक्रम तमसा के तट पर क्रौञ्चवध से सन्तप्त हुए महर्षि वाल्मीकि के शोक का श्लोकरूप में प्रकट होना तथा ब्रह्मा जी का उन्हें रामचरित्रमय काव्य के निर्माण का आदेश देना।
* सुमन्त्र का राजा को ऋष्यशृङ्ग मुनि को बुलाने की सलाह देते हुए उनके अङ्ग देश में जाने और शान्ता से विवाह करने का प्रसङ्ग सुनाना।
* गङ्गावतरण के उपाख्यान की महिमा
* श्रीराम के द्वारा अहल्या का उद्धार
* विश्वामित्र द्वारा शुनःशेप की रक्षा का सफल प्रयत्न
* विश्वामित्र ऋषि एवं महर्षि पद की प्राप्ति मेनका द्वारा उनका तपोभङ्ग तथा ब्रह्मर्षि पद की प्राप्ति के लिए उनकी घोर तपस्या
* श्रीराम द्वारा धनुर्भङ्ग चारों भाइयों का विवाह
* श्रीराम का वैष्णव धनुष को चढ़ाकर अमोघ बाण के द्वारा परशुराम के तपःप्राप्त पुण्यलोकों का नाश करना तथा परशुराम का महेन्द्र पर्वत को लौट जाना
* राजा दशरथ का पुत्रों और वधुओं के साथ अयोध्या में प्रवेश।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि रामायण के बालकाण्ड में सर्गानुसार उपाख्यान क्रमशः हैं- क्रौञ्चवध उपाख्यान, ऋष्यशृङ्ग उपाख्यान, अहल्या उपाख्यान तत्पश्चात् शुनःशेप आख्यान है।

अतः विकल्प 'B' सही है।

स्रोत - रामायण (प्रथम खण्ड), पेज 10, 12, 13

32. 'क्लेशकर्मविपाकाशयैरपरामृष्टः पुरुषविशेष ईश्वरः' इति कथनमस्ति-

(A) साङ्ख्यदर्शने **(B)** योगदर्शने
(C) मीमांसादर्शने **(D)** वैशेषिकदर्शने

व्याख्या- * योगदर्शन के प्रणेता महर्षि पतञ्जलि हैं।

* योग शब्द 'युज् + घञ्' से बना है, जिसका अर्थ है- समाधि।

* योगसूत्र के लेखक महर्षि पतञ्जलि हैं।
* योग को 'सेश्वरसांख्य' कहा जाता है क्योंकि यह ईश्वर तत्त्व को मानता है।
* योगसूत्र में चार पाद हैं- समाधिपाद - 51 सूत्र, साधनपाद- 55 सूत्र, विभूतिपाद - 55 और कैवल्यपाद - 34 सूत्र कुल 195 सूत्र हैं।
* योगदर्शन में पदार्थों (तत्त्वों) की संख्या 26 है।
* योगदर्शन में 26वाँ पदार्थ है 'ईश्वर', जिसको बताया जा रहा है-

'क्लेशकर्मविपाकाशयैरपरामृष्टः पुरुषविशेष ईश्वरः।' (1/24)

* ईश्वर, क्लेश, कर्म, विपाक और आशय (वासनाओं) के परामर्श से रहित एक विशेष प्रकार का पुरुष है। अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश 'क्लेश' हैं। धर्म और अधर्म 'कर्म' है। कर्म का फल 'विपाक' है। उस विपाक से बनने वाले संस्कार 'वासना' कहलाते हैं, वही 'आशय' है। ये चारों बुद्धि में रहते हुए पुरुष में वर्तमान कहे जाते हैं और पुरुष बुद्धिगत फल का भोक्ता कहा जाता है जो पुरुष विशेष इस भोग से भी अपरामृष्ट है, वही ईश्वर है।
* योगदर्शन में तीन प्रमाण माने गये हैं -
  प्रत्यक्ष, अनुमान और आगम ये तीन प्रमाण हैं।
  'प्रत्यक्षानुमानागमाः प्रमाणानि' (1/7)
* योगदर्शन में पाँच वृत्तियों की चर्चा की गयी है -
  प्रमाण, विपर्यय, विकल्प, निद्रा और स्मृति ये पाँच वृत्तियाँ हैं।
  'प्रमाणविपर्ययविकल्पनिद्रास्मृतयः' (1/6)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'क्लेशकर्मविपाकाशयैरपरामृष्टः पुरुषविशेष ईश्वरः' यह योगदर्शन का कथन है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- पातञ्जलयोगदर्शन (1/24)-सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पेज 80

33. ननु तन्तुसम्बन्ध इव तुर्यादिसम्बन्धोऽपि पटस्य विद्यते, तत्कथं तन्तुष्वेव पटः समवेतो जायते, न तुर्यादिषु? सत्यम् द्विविधः सम्बन्धः संयोगः समवायश्चेति। तत्रायुतसिद्धयोः सम्बन्धः समवायः, अन्ययोस्तु संयोग एव।

अत्र उचितमुत्तरं चिनुत -

(A) तन्तुः पटस्य समवायिकारण, अयुतसिद्धत्वात्
(B) न तन्तुः पटस्य समवायिकारणम्, अयुतसिद्धत्वात्
(C) तन्तुः पटस्य असमवायिकारणम्, अयुतसिद्धत्वात्
(D) तुर्यादि पटस्य समवायिकारणम्, अयुतसिद्धत्वात्

व्याख्या- उक्त वाक्य तर्कभाषा ग्रन्थ में 'कारण' का विशद वर्णन देते हुए कहा गया है। इस वाक्य में 'समवाय' और 'संयोग' सम्बन्ध में भेद बताया गया है। सामान्यतः हम जिन दो पदार्थों को एक दूसरे से कभी अलग नहीं कर सकते, उनमें समवाय सम्बन्ध होता है। जैसे 'घड़ा और मिट्टी' 'कपड़ा और धागा' इनके सम्बन्ध को अलग नहीं किया जा सकता तथा जिन दो पदार्थों में सम्बन्ध को इच्छानुसार दूर किया जा सकता है उनमें संयोग सम्बन्ध होता है। जैसे- 'मेज और पुस्तक' इत्यादि।

न्यायदर्शन के अनुसार कारण तीन प्रकार के होते हैं। (1) समवायिकारण (2) असमवायिकारण (3) निमित्तकारण।

(1) समवायिकारण वह कारण होता है जो कार्य में नित्य रूप से सम्बद्ध होकर रहता है। जैसे घट का समवायिकारण मिट्टी, कपाल इत्यादि, पट (कपड़ा) का कारण तन्तु (धागे)। समवायिकारण हमेशा कोई न कोई द्रव्य ही होता है।

(2) यदि गुण या क्रिया को कारण के रूप में बताया जाता है तो वह असमवायिकारण ही होता है। जैसे घट के प्रति 'कपाल-संयोग' तथा पट के प्रति 'तन्तुसंयोग' इत्यादि।

(3) कार्य के निर्माण होने में जो साधनरूप सहायक होते हैं वे निमित्त कारण कहलाते हैं जैसे घट रूपी कार्य के निर्माण में 'चाक, दण्ड, चीवर' इत्यादि तथा पट रूपी कार्य के निर्माण में 'तुरी, वेमा' इत्यादि।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि 'तन्तु पट का समवायि कारण है'। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- तर्कभाषा-गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज 30

34. ऋग्वेदसंहिताया वैशिष्ट्यमस्ति -

(A) यज्ञवर्णनम् **(B)** देवस्तुतिः
(C) स्मार्तकार्यम् **(D)** वास्तुनिर्देशः

व्याख्या- ऋग्वेद-संहिता

ऋक् का अर्थ -

* ऋक् का अर्थ है- स्तुतिपरक मन्त्र **ऋच्यते स्तूयतेऽनया इति ऋक्।**
* जिन मन्त्रों के द्वारा देवों की स्तुति की जाती है, उन्हें ऋक् कहते हैं।
* ऋग्वेद में विभिन्न देवों की स्तुति वाले मन्त्र हैं, अतः इसे ऋग्वेद कहते हैं।
* इन मन्त्रों के द्वारा देवों का आह्वान किया जाता है।

* ऐसी ऋचाओं के संग्रह के कारण इसे ऋग्वेदसंहिता कहते हैं।
* संहिता शब्द संकलन या संग्रह का बोधक है।
* ब्राह्मणग्रन्थों में ऋक्, यजुः और साम शब्दों की आध्यात्मिक और दार्शनिक व्याख्या प्रस्तुत की गयी है।
* ऋक् भूलोक है (अग्नि देवता प्रधान)
* यजुः अन्तरिक्षलोक है। (वायु देवता प्रधान)
* साम द्युलोक है (सूर्य देवता प्रधान)
* अग्नि से ऋग्वेद, वायु से यजुर्वेद और सूर्य से सामवेद की उत्पत्ति बतायी गयी है।
* ऋग्वेद वाक्तत्त्व (ज्ञानतत्त्व या विचारतत्त्व) का संकलन है।
* यजुर्वेद मनस्तत्त्व (चिन्तन, कर्मपक्ष, कर्मकाण्ड, संकल्प) का संग्रह है तथा सामवेद प्राणतत्त्व का संग्रह है।
* इन तीनों तत्त्वों के समन्वय से ब्रह्म की प्राप्ति होती है।
* वैदिक यज्ञ में चारों वेदों के प्रतिनिधि के रूप में चार ऋत्विज् होते हैं। ऋग्वेद में इन चारों ऋत्विजों के कर्तव्यों का निर्देश है।
* यज्ञ में चार ऋत्विज् होते हैं- (1) होता (2) उद्गाता (3) अध्वर्यु (4) ब्रह्मा

*** होता -** यह ऋग्वेद का प्रतिनिधित्व करता है। यज्ञ में ऋग्वेद के मन्त्रों का पाठ करता है।

* ऐसी देवस्तुति वाली ऋचाओं का पारिभाषिक नाम शस्त्र है।

*** उद्गाता -** यह सामवेद का प्रतिनिधित्व करता है। यह यज्ञ में देवस्तुति में सामवेद के मन्त्रों का गान करता है।

*** अध्वर्यु -** इसका सम्बन्ध यजुर्वेद से है। यह यज्ञ के विविध कर्मों का निष्पादक है। यह प्रमुख ऋत्विज् है।

* यज्ञ में घृत की आहुति देना आदि इसका ही कार्य है।

*** ब्रह्मा -** यह अथर्ववेद का प्रतिनिधित्व करता है। यह यज्ञ का अधिष्ठाता और संचालक होता है।

ऋग्वेद का महत्त्व -

* चारों वेदों में ऋग्वेद सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण और आदरणीय माना जाता है। ऋग्वेद सबसे प्राचीन है।
* इसमें अधिकांश देव, इन्द्र, विष्णु, मरुत् आदि प्राकृतिक तत्त्वों के प्रतिनिधि हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि ऋग्वेदसंहिता का वैशिष्ट्य 'देवों की स्तुति' करना है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 44

35. अधस्तनेषु केन सह कस्य सम्बन्धः?

(क) शिक्षा **(i) पादव्यवस्था**
(ख) कल्प **(ii) शब्दानुशासनम्**
(ग) व्याकरणम् **(iii) यज्ञविधानविमर्शः**
(घ) छन्द **(iv) वर्णस्वरमात्रादिविमर्शः**

समुचितां तालिकां चिनुत -

	क	ख	ग	घ
(A)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(B)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)
(C)	(ii)	(i)	(iv)	(iii)
(D)	(iii)	(i)	(iv)	(ii)

व्याख्या- * वेदाङ्ग शब्द का अर्थ- वेद के अङ्ग का अर्थ है- वे उपकारक तत्त्व जिनसे वस्तु के स्वरूप का बोध होता है।

* वेदों के गूढ़ एवं वास्तविक अर्थों को जानने के लिए जिन सहायक तत्त्वों की आवश्यकता होती है, उन्हें वेदाङ्ग कहते हैं।

वेदाङ्गों की संख्या और उनके नाम-

वेदाङ्ग छः हैं - शिक्षा, व्याकरण, छन्द, निरुक्त, ज्योतिष और कल्प।

शिक्षा व्याकरणं छन्दो निरुक्तं ज्योतिषं तथा।
कल्पश्चेति षडङ्गानि वेदस्याहुर्मनीषिणः॥

1. शिक्षा - शिक्षा का अर्थ वर्णोच्चारण की शिक्षा देना है। सायण ने ऋग्वेदभाष्यभूमिका में शिक्षा का अर्थ दिया है- जिसमें स्वर, वर्ण आदि के उच्चारण की शिक्षा दी जाती है, उसे शिक्षा कहते हैं। **'स्वरवर्णाद्युच्चारणप्रकारो यत्र शिक्ष्यते उपदिश्यते सा शिक्षा'** तैत्तिरीय उपनिषद् में शिक्षा के छः अङ्गों का उल्लेख है। वर्ण, स्वर, मात्रा, बल, साम और संतान। (तै.उ. 1.2)

2. व्याकरण - व्याकरण का अर्थ - 'व्याक्रियन्ते विविच्यन्ते शब्दा अनेनेति व्याकरणम्' अर्थात् जिस शास्त्र के द्वारा शब्दों के प्रकृति-प्रत्यय का विवेचन किया जाता है, उसे व्याकरण कहते हैं। इसमें शब्द कैसे बनता है? इसमें क्या प्रकृति और प्रत्यय लगा है तदनुसार शब्द का अर्थ निश्चित किया जाता है।

3. छन्द - छन्दस् (छन्द) शब्द 'छद्' ढँकना धातु से बना है। यास्क ने निरुक्त में छन्दस् का निर्वचन दिया है 'छन्दांसि छादनात्' अर्थात् छन्द भावों को आच्छादित करके उसे समष्टि रूप प्रदान करता है।

'यदक्षरपरिमाणं तच्छन्दः' जिसमें वर्णों या अक्षरों की संख्या निर्धारित होती है, उसे छन्द कहते हैं।

* वैदिक छन्दों में प्रत्येक पाद में वर्णों की संख्या गिनी जाती है इसी के आधार पर छन्दों में भेद किया जाता है।

* एक चरण को पाद कहते हैं। एक पाद में कम से कम 5 वर्ण होते हैं, प्रचलित गायत्री आदि छन्दों में प्रत्येक पाद में 8, 11 या 12 वर्ण होते हैं।

4. निरुक्त - निरुक्त का अर्थ है - निर्वचन या व्युत्पत्ति। शब्द के मूलरूप का ज्ञान कराना, शब्द में प्रकृति-प्रत्यय का स्पष्टीकरण, धात्वर्थ और प्रत्ययार्थ का विशदीकरण, समानार्थक और नानार्थक शब्दों का विवेचन आदि कार्य निरुक्त का है।

5. ज्योतिष - ज्योतिष का अर्थ है - ज्योतिर्विज्ञान।

सूर्य, चन्द्र, ग्रह, नक्षत्र आदि आकाशीय पिण्डों की गणना ज्योतिर्मय पदार्थों में है।

लगध ने इसको 'ज्योतिषाम् अयनम्' अर्थात् नक्षत्रों आदि की गति का विवेचन करने वाला शास्त्र कहा जाता है।

6. कल्प - आचार्य सायण ने कल्प का अर्थ दिया है - जिन ग्रन्थों में यज्ञ-सम्बन्धी विधियों का समर्थन किया जाता है, उन्हें कल्प कहते हैं।

कल्प्यते समर्थ्यते यागप्रयोगेऽत्र इति व्युत्पत्तेः।
वेदविहितानां कर्मणाम् आनुपूर्व्येण कल्पनाशास्त्रम्।।
(विष्णु ऋक् -13)

कल्पसूत्रों के भेद - कल्पसूत्रों के प्रमुख चार भेद हैं -

(i) श्रौतसूत्र (ii) गृह्यसूत्र (iii) धर्मसूत्र (iv) शुल्बसूत्र

स्पष्टीकरण - उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि शिक्षा-वर्णस्वरमात्रादिविमर्शः से, कल्प-यज्ञविधानविमर्शः से, व्याकरण-शब्दानुशासन से, छन्द-पादव्यवस्था से सम्बन्धित है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 190

36. यदङ्ग दाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि।
तवेतत्सत्यमङ्गिरः।
अत्र अङ्ग इति कस्मिन्नर्थे प्रयुक्तोऽयं शब्दः? सायणदिशा निर्दिश्यताम् -

(A) अभिमुखीकरणार्थे **(B)** शारीरार्थे
(C) अवयवार्थे **(D)** विषयार्थे

व्याख्या- ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के प्रथम सूक्त का छठवाँ मन्त्र है-

यदङ्ग दाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि।
तवेतत्सत्यमङ्गिरः॥ (1.1.6)

हे अग्ने! जो तुम हवि का दान करने वाले यजमान के लिए धन, गृह, प्रजा, पशु आदि कल्याण करने वाले पदार्थ प्रदान करोगे, वे सब पदार्थ तुम्हारे ही हैं। हे अग्नि देवता यह बात सच ही है। इसमें कोई संशय नहीं है।

सायणभाष्य - अङ्ग इत्यभिमुखीकरणार्थो निपातः। अङ्ग अग्ने! हे अग्ने त्वं दाशुषे हविर्दत्तवते यजमानाय तत्प्रीत्यर्थं यत् भद्रं वित्तगृहप्रजापशुरूपं कल्याणं करिष्यति तत् भद्रं तव इत् तवैव। सुखहेतुरिति शेषः। हे अङ्गिरः! अग्ने एतच्च सत्यं न त्वत्र विसंवादोऽस्ति। यजमानस्य वित्तादिसंपत्तौ सत्यामुत्तर- क्रत्वनुष्ठानेनाग्नेरेव सुखं भवति।

स्पष्टीकरण - इस सायणभाष्य से स्पष्ट है कि अङ्ग शब्द का प्रयोग- 'अभिमुखीकरणार्थ' है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- वैदिकसूक्तसंग्रह- विजयशङ्कर पाण्डेय, पेज 35

37. ऐतरेयब्राह्मणग्रन्थानुसारेण शुनःशेपस्य पितुर्नाम किमासीत् ?

(A) कुक्षीवान् **(B)** ऐतरेयः
(C) अजीगर्तः **(D)** महीदासः

व्याख्या- * ऋग्वेद का ब्राह्मणग्रन्थ है- ऐतरेय ब्राह्मण। ऐतरेय ब्राह्मण में 40 अध्याय हैं। प्रत्येक पाँच अध्यायों की एक पंचिका होती है। कुल 8 पंचिकाएँ हैं।

* पूरे ऐतरेय ब्राह्मण में 40 अध्याय, 8 पंचिकाएँ और 285 खण्ड हैं।

* ऐतरेय ब्राह्मण के रचयिता महिदास ऐतरेय ऋषि माने जाते हैं।

* ऐतरेय ब्राह्मण के पंचिका सात में राजसूय यज्ञ है। इसके तृतीय अध्याय में सुप्रसिद्ध शुनःशेप उपाख्यान है जो 'चरैवेति चरैवेति' गाथाओं के कारण विख्यात है।

* 'चरैवेति चरैवेति' ऐतरेय ब्राह्मण की प्रमुख शिक्षा है- चर-एव-इति अर्थात् चलते रहो, चलते रहो। सदा कर्म करते रहो, सदा उद्योगशील रहो। निरन्तर कर्मठ बने रहो। कर्मनिष्ठ जीवन ही जीवन है।

शुनःशेप आख्यान - इस आख्यान को हरिश्चन्द्र उपाख्यान भी कहते हैं। इसका 'चरैवेति' गान विश्वविश्रुत है।

शुनःशेप ऋषि ऋग्वेद प्रथम मण्डल के सात सूक्तों के द्रष्टा हैं। इनके दृष्ट मन्त्रों की संख्या 17 है।

संक्षिप्त कथा - राजा हरिश्चन्द्र को कोई पुत्र नहीं था वरुण की

उपासना से पुत्र की प्राप्ति हुई। पुत्र का नाम रोहित था। निर्धन, लोभी ब्राह्मण अजीगर्त का पुत्र शुनःशेप था। अजीगर्त वरुण के यज्ञ में स्वयं अपने पुत्र शुनःशेप की बलि देने के लिये तैयार हो जाता है।

* शुनःशेप मृत्यु से बचने के लिए वरुण, अग्नि आदि देवों की स्तुति की। अन्त में मृत्यु से बच जाता है।

* शुनःशेप अपने लोभी पिता का परित्याग करके विश्वामित्र की गोद में बैठ जाता है।

* विश्वामित्र ने उसे अपना दत्तक पुत्र बना लिया और उसका नाम देवरात रखा।

* विश्वामित्र के 101 पुत्र थे। 50 मधुच्छन्दस् से बड़े थे और 50 छोटे।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि शुनःशेप का पिता अजीगर्त था। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 125

38. पदे न वर्णा विद्यन्ते वर्णेष्ववयवा न च।
वाक्यात् पदानामत्यन्तं प्रविवेको न कश्चन॥
अस्याः कारिकायाः सम्बन्धः केन सिद्धान्तेन सह भवितुमर्हति?

(A) ध्वनिवादः **(B)** स्फोटवादः
(C) व्यञ्जनावादः **(D)** लक्षणावादः

व्याख्या- * पाणिनीय व्याकरण तन्त्र में वैयाकरण दार्शनिक भर्तृहरि का अनुपम स्थान है। इन्होंने वाक्यपदीय के रूप में व्याकरण दर्शन की एक अद्भुत कृति के द्वारा अपनी प्रतिभा का परिचय दिया।

* महाभाष्य में निरूपित दार्शनिक सिद्धान्तों तथा अर्थविज्ञान के नियमों का पद्यात्मक कारिकाओं के रूप में विवेचन वाक्यपदीय में है।

* इसके अतिरिक्त महाभाष्य की दीपिका नामक व्याख्या भी भर्तृहरि ने लिखी थी जिसके प्रथम सात आह्निक प्रकाशित हैं। सम्भवतः उन्होंने केवल तीन पादों की व्याख्या लिखी थी।

* वाक्यपदीय तीन काण्डों में विभक्त है - ब्रह्मकाण्ड -156 कारिकाएँ, वाक्यकाण्ड-486 कारिकाएँ तथा प्रकीर्णकाण्ड या पदकाण्ड 14 समुद्देशों में विभक्त, 1323 कारिकाएँ हैं।

* ब्रह्मकाण्ड, शब्दरूप तथा स्फोट का विवेचन करता है, इसमें वाणी के तीन स्तरों (पश्यन्ती, मध्यमा तथा वैखरी) का निर्देश है।

वाक्यपदीयम् के ब्रह्मकाण्ड में कहा गया है-

पदे न वर्णा विद्यन्ते वर्णेष्ववयवा न च।
वाक्यात् पदानामत्यन्तं प्रविवेको न कश्चन॥1/73॥

वर्णों में अवयवों के समान पद में वर्णों की सत्ता नहीं होती और वाक्य से पदों का कोई अत्यन्त पार्थक्य नहीं है। इस प्रकार वर्ण और पद के भेद से रहित एक अनवयव वाक्य रूप शब्दात्मा है, ऐसा अखण्डवाक्यस्फोटवादी मानते हैं।

अर्थ, सम्बन्ध और फल शब्दमूलक है, अतः व्याकरण-सम्मत शब्द का क्या स्वरूप है, इसका निरूपण करते हैं-

द्वावुपादानशब्देषु शब्दौ शब्दविदो विदुः।
एको निमित्तं शब्दानामपरोऽर्थे प्रयुज्यते॥1/44॥

शब्दविद् वैयाकरण उपादान या वाचक शब्दों में दो अन्य शब्द निहित हैं, ऐसा मानते हैं। एक शब्दों का निमित्त है, जिसे स्फोट कहते हैं और दूसरा स्वरूपार्थ के रूप में प्रयुक्त होता है।

अनादिनिधनं ब्रह्म शब्दतत्त्वं यदक्षरम् ।
विवर्ततेऽर्थभावेन प्रक्रिया जगतो यतः ॥1/1॥

आदि और अन्त से रहित अर्थात् कालकृत परिच्छेद से शून्य अथवा पूर्वापर विभाग से हीन अर्थात् देशकृत परिच्छेद से मुक्त, अकारादि अक्षरों का निमित्त होने के कारण अक्षर अर्थात् परप्रणवात्मक, शब्दतत्त्व पराप्रकृति परापश्यन्ती या संविद्रूप ब्रह्म, अर्थ रूप में स्वरूपात्मक एवं गो-घटादि बाह्यार्थ रूप में सन्निवेश विशेष द्वारा अनेकधा प्रतिभासित होता है, जिससे समस्त वाङ्मय जगत् तथा सरित्सागर, वन पर्वतात्मक चराचर जगत् उत्पन्न होता है।

अव्याहताः कला यस्य कालशक्तिमुपाश्रिताः।
जन्मादयो विकाराः षड् भावभेदस्य योनयः ॥1/3॥

जिस शब्दब्रह्म की आरोपित कलाओं या भेदों वाली कालशक्ति का आश्रय लेकर जन्म, सत्ता, विपरिणाम, वृद्धि, अपक्षय और नाश ये 6 विकारभाव अर्थात् मूर्ति और क्रिया भेद के कारण बनते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'पदे न वर्णा विद्यन्ते वर्णेष्ववयवा न च ....' यह सिद्धान्त स्फोटवाद से सम्बन्धित है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- वाक्यपदीयम् (1/73)

39. सर्वप्राचीनरचनायाः प्राथम्येन कालक्रमानुसारमुचितमुत्तरं चिनुत-

(1) बुद्धचरितम् **(2) नैषधीयचरितम्**
(3) स्वप्नवासवदत्तम् **(4) मुद्राराक्षसम्**

एषु क्रमं चिनुत -

(A) 1 4 2 3
(B) 4 3 1 2
(C) 3 2 1 4
(D) 3 1 4 2

व्याख्या- संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख लेखकों का अनुमानित कालक्रम -

लेखक	**प्रमुख ग्रन्थ**	**अनुमानित काल**
भास	स्वप्नवासवदत्तम्	100ई.पू.-200ई. के मध्य
मनु	मनुस्मृति	200ई.पू. से 200 ई. के बीच
कालिदास	रघुवंशम्, अभिज्ञान-शाकुन्तलम् आदि	ई.पू. प्रथम शताब्दी
अश्वघोष	बुद्धचरितम्, सौन्दरानन्द	प्रथम शताब्दी ई.
शूद्रक	मृच्छकटिकम्	तीसरी-चौथी शताब्दी ई.
विशाखदत्त	मुद्राराक्षसम्	पाँचवी छठी शताब्दी ई.
भारवि	किरातार्जुनीयम्	6 शता. ई. (560-615)
दण्डी	दशकुमारचरितम्	6 शताब्दी ई.
भर्तृहरि	वाक्यपदीयम्	6 शता. ई.
माघ	शिशुपालवधम्	7 शता. का पूर्वार्द्ध
भवभूति	उत्तररामचरितम्	7 शता. के आस-पास
श्रीहर्ष	नैषधीयचरितम्	12वीं शता. का उत्तरार्द्ध

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि कालक्रमानुसार सर्वप्रथम भास की रचना स्वप्नवासवदत्तम्, अश्वघोष की रचना बुद्धचरितम्, विशाखदत्त की रचना मुद्राराक्षस और श्रीहर्ष की रचना नैषधीयचरितम् है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशङ्कर शर्मा ऋषि, पेज 465,226,501,284

40. चत्वारो वेदाः जगति प्रसिद्धा सन्ति। एते ऋग्वेदः यजुर्वेदः, सामवेदः, अथर्ववेदश्च। एतेषां मन्त्राणामर्थख्यापनाय बहवः आचार्याः प्रयत्नं कृतवन्तः। तत्रर्ग्वेदस्य प्रथमो भाष्यकारः स्कन्दस्वामी आसीत् । विस्तारपूर्वकयज्ञपद्धतेः प्रथमं भाष्यं आचार्यसायणेन कृतम् । स एव कृष्णयजुर्वेदस्य भाष्यं प्रथमतया विरचितवान् । आनन्दतीर्थः दयानन्दश्च वेदभाष्यं रचितवन्तौ। उपर्युक्तेषु ऋग्वेदस्य प्रथमभाष्यकारः कः आसीत् -

(A) सायणः **(B)** स्कन्दस्वामी
(C) आनन्दतीर्थः **(D)** दयानन्दः

व्याख्या- उपर्युक्त पूछे गये प्रश्न का हिन्दी अर्थ है - चार वेद जगत् में प्रसिद्ध हैं। वे ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद हैं। इन मन्त्रों के अर्थ को जानने के लिए अनेक आचार्यों ने प्रयत्न किया। ऋग्वेद के प्रथम भाष्यकार स्कन्दस्वामी थे। विस्तारपूर्वक यज्ञपद्धति प्रथम भाष्य आचार्य सायण ने किया। वह ही कृष्णयजुर्वेद के भाष्य को सर्वप्रथम किया। आनन्दतीर्थ और दयानन्द सरस्वती ने वेदभाष्य की रचना की।

प्राचीन वेदभाष्यकार

आचार्य स्कन्दस्वामी -

* ऋग्वेद का सबसे प्राचीन भाष्य स्कन्दस्वामी का ही उपलब्ध है।
* स्कन्दस्वामी का भाष्य ऋग्वेद के चतुर्थ अष्टक तक प्राप्त होता है। शेषभाग नारायण और उद्गीथ ने किया है।
* स्कन्दस्वामी ने यास्क के निरुक्त पर टीका भी लिखी है।

आचार्य सायण -

* वेदों की व्याख्या करने वाले आचार्यों में सायण का स्थान अग्रगण्य है। वे केवल ऐसे आचार्य हैं, जिन्होंने सभी वेदों तथा ब्राह्मणग्रन्थों आदि की भी व्याख्या की है।
* ये वेदों को अपौरुषेय और नित्य मानते हैं।
* सायण ने ऋग्वेद सहित पाँच वैदिक संहिताओं, 11 ब्राह्मण ग्रन्थों और दो आरण्यकों पर पाण्डित्यपूर्ण भाष्य लिखा है। इन ग्रन्थों का क्रम यह रहा है - **संहिताएँ -**

(1) तैत्तिरीय संहिता (2) ऋग्वेदसंहिता (3) सामवेदसंहिता (4) काण्वसंहिता (5) अथर्ववेद संहिता

ब्राह्मण ग्रन्थ - तैत्तिरीय ब्राह्मण ऐतरेय ब्राह्मण, ताण्ड्य महाब्राह्मण, षड्विंश, सामविधान, आर्षेय, देवताध्याय उपनिषद्, संहितोपनिषद् वंश ब्राह्मण, शतपथ ब्राह्मण

आरण्यक - तैत्तिरीय आरण्यक, ऐतरेय आरण्यक

आनन्दतीर्थ - इनका दूसरा नाम मध्व है। इन्होंने ऋग्वेद के कुछ चुने हुये 40 सूक्तों का पद्यात्मक भाष्य किया है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती -

* आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती आधुनिक युग में वेदों के पुनरुद्धारक माने जाते हैं।
  ऋग्वेद की व्याख्या मण्डल 7 के 80 सूक्त तक ही कर सके। असामयिक निधन से ऋग्वेद भाष्य पूरा नहीं हो सका।
* उन्होंने शुक्लयजुर्वेद सम्पूर्ण की संस्कृत और हिन्दी में व्याख्या की है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त पूछे गये गद्यांश से ही स्पष्ट हो जाता है कि ऋग्वेद के प्रथम भाष्यकार स्कन्दस्वामी जी हैं। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज 22

41. यजुर्वेदसंहितायां प्राधान्येन निरूपणं प्राप्यते -
(A) संवादस्य (B) यज्ञानाम्
(C) गानानाम् (D) दार्शनिकविचाराणाम्

व्याख्या- यजुष् (यजुस्, यजुः) का अर्थ

* यजुर्वेद के यजुष् शब्द की कई व्याख्याएँ प्रस्तुत की गई हैं, जो विभिन्न दृष्टिकोणों की सूचक हैं।
* यजुष् के मुख्य अर्थ हैं - 'यजुर्यजतेः' अर्थात् यज्ञ से सम्बद्ध मन्त्रों को यजुष् कहते हैं।
* 'इज्यतेऽनेनेति यजुः' अर्थात् जिन मन्त्रों से यज्ञ किया जाता है, उन्हें यजुष् कहते हैं।
* यजुर्वेद का यज्ञ के कर्मकाण्ड से साक्षात् सम्बन्ध है अतः इसे अध्वर्युवेद भी कहा जाता है।
* यज्ञ में अध्वर्यु नामक ऋत्विज् यजुर्वेद का प्रतिनिधित्व करता है और वही यज्ञ का नेतृत्व करता है। इसलिए सायण ने कहा है कि वह यज्ञ के स्वरूप का निष्पादक है-

''अध्वर्युनामक एक ऋत्विग् यज्ञस्य स्वरूपं निष्पादयति अध्वरं युनक्ति, अध्वरस्य नेता।''

* 'अनियताक्षरावसानो यजुः' अर्थात् जिन मन्त्रों में पद्यों के तुल्य अक्षरसंख्या निर्धारित नहीं होती है, वे यजुष् हैं।
* 'शेषे यजुः शब्दः' अर्थात् पद्यबन्ध और गीति से रहित मन्त्रात्मक रचना को यजुष् कहते हैं।
* तैत्तिरीयसंहिता के भाष्य की भूमिका में सायण ने यजुर्वेद का महत्त्व बताते हुए कहा है कि यजुर्वेद भित्ति (दीवार) है और अन्य ऋग्वेद एवं सामवेद चित्र हैं। इसलिए यजुर्वेद सबसे मुख्य है।
* यज्ञ को आधार बनाकर ही ऋचाओं का पाठ सामगान होता है।

➢ **ऋग्वेद-संहिता - ऋक् का अर्थ -**

* ऋच् या ऋक् का अर्थ है - स्तुतिपरक मन्त्र
  'ऋच्यते स्तूयतेऽनया इति ऋक्'
* जिन मन्त्रों के द्वारा देवों की स्तुति की जाती है, उन्हें ऋक् कहते हैं।
* ऋग्वेद में विभिन्न देवों की स्तुति वाले मन्त्र हैं, अतः इसे ऋग्वेद कहते हैं।

➢ **सामवेद-संहिता - सामन् (साम) का अर्थ-**

* सामन् या साम का अर्थ- 'गीतियुक्त मन्त्र' है। साम के लिये गीतियुक्त होना अनिवार्य है।
* पूर्वमीमांसा में गीति या गान को साम कहा गया है 'गीतिषु सामाख्या'

➢ **अथर्ववेद-संहिता - 'अथर्वन्' का अर्थ**

* निरुक्त और गोपथब्राह्मण में 'अथर्वन्' शब्द की इस प्रकार से व्याख्या की गई है -
* अथर्वन् - गतिहीन या स्थिरता से युक्त योग
* निरुक्त के अनुसार 'थर्व्' धातु का अर्थ है गति या चेष्टा, अतः अथर्वन् का अर्थ है - गतिहीन या स्थिर।
* इसका अभिप्राय है कि जिस वेद में स्थिरता या चित्तवृत्तियों के निरोधरूपी योग का उपदेश है, वह अथर्वन् वेद है।

'अथर्वाणोऽथर्वणवन्तः'

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि यजुर्वेदसंहिता की प्रधानता यज्ञ करना है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज

42. भाषाणां सतम् वर्गे स्वीक्रियते-
(A) लैटिन (B) ग्रीक
(C) संस्कृतम् (D) फ्रेन्च

व्याख्या- * 'भारोपीय' शब्द 'भारत+यूरोपीय' का संक्षिप्त रूप है।

* यह Indo-European का अनुवाद है।
* भारोपीय में भारतवर्ष से लेकर यूरोप तक फैली हुई भाषाओं का संग्रह है। इस परिवार में दस शाखाएँ हैं-

1. भारत-ईरानी (आर्य)
क - भारतीय
ख - ईरानी
2. बाल्टो स्लाविक
क - बाल्टिक
ख - स्लाविक
3. आर्मीनी 4. अल्बानी (इलीरी)
5. ग्रीक (हेलेनिक) 6. केल्टिक
7. जर्मानिक (ट्यूटानिक) 8. इटालिक
9. हिटाइट (हित्ती) 10. तोखारी

➢ **केन्टुम् और शतम् वर्ग -**

* भारोपीय परिवार की भाषाओं को ध्वनि के आधार पर दो भागों में विभक्त किया जाता है। (क) केन्टुम् (ख) शतम्
* इस विभाजन का श्रेय प्रो. अस्कोली को है।
* इन्होंने 1870 ई. में यह प्रस्तुत किया कि मूल भारोपीय

भाषा की कण्ठ्य ध्वनियाँ कुछ भाषाओं में कण्ठ्य रह गई हैं और कुछ भाषाओं में वे संघर्षी हो गई हैं।

* इसको स्पष्ट करने के लिए दो प्रतिनिधि भाषाएँ लैटिन और अवेस्ता ली गईं।
* सौ के लिए मूल भारोपीय भाषा का शब्द Kmtom (क्मतोम्) माना जाता है। इसका विभिन्न भाषाओं में विकास इस प्रकार माना जाता है-

➢ **मूल भारोपीय शब्द - Kmtom (क्मतोम् = शतम्)**

शतम् (सतम्) वर्ग	केन्टुम् वर्ग
संस्कृत - शतम्	लैटिन - केन्टुम्
अवेस्ता - सतम्	ग्रीक - हेकटोन
फारसी - सद	केल्टिक - (आयरिश) केत्
हिन्दी - सौ	तोखारी - कन्ध
रूसी - स्तो	गाथिक - हुन्ड
लिथुआनियन - स्जिम्तास	जर्मन - हुन्डर्ट
	फ्रेंच - सं (सेंट cent)
	इटालियन - केन्तो

* प्रारम्भ में यह विचार प्रस्तुत किया गया था कि केन्टुम् वर्ग की भाषाएँ पश्चिम में प्रचलित हैं और शतम् वर्ग की भाषाएँ पूर्व में।
* प्रो. हर्ट ने विश्चुला नदी के पश्चिम में केन्टुम् वर्ग और शतम् वर्ग माना था। बाद में तोखारी और हिटाइट भाषाओं के मिलने पर यह सिद्धान्त निरस्त हो गया, क्योंकि तोखारी और हिटाइट भाषाएँ पूर्वी क्षेत्र में और इनमें केन्टुम् के तुल्य क् ध्वनि मिलती है, स् ध्वनि नहीं।

➢ **केन्टुम् और शतम् वर्ग (भारोपीय परिवार-विभाजन)**

भारोपीय परिवार को केन्टुम् और शतम् वर्ग के आधार पर इस प्रकार बाँटा जाता है-

शतम् वर्ग	केन्टुम् वर्ग
1. भारत-ईरानी (आर्य)	5. ग्रीक
2. बाल्टो-स्लाविक	6. केल्टिक
3. आर्मीनी	7. जर्मानिक (ट्यूटानिक)
4. अल्बानी (इलीरी)	8. इटालिक
	9. हिटाइट
	10. तोखारी

ईरानी-भारती चैव, बाल्टी-सुस्लाविकी तथा
आर्मीनी अल्बनी चैताः शतम् वर्गे समाश्रिताः ॥1॥
इटालिकी च ग्रीकी च, जर्मानिक् केल्टिकी तथा
हित्ती तोखारिकी चैताः, केन्टुम् वर्गे प्रकीर्तिताः ॥2॥

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि भाषाओं में सतम् वर्ग में 'संस्कृतम्' है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 385

43. आर्हतदर्शनानुसारं सप्तभङ्गीनयः कुत्र न स्वीकृतोऽस्ति
(A) स्यादस्ति च नास्ति च
(B) स्यादस्ति च नास्ति चावक्तव्यः
(C) स्यादस्ति च वक्तव्यः
(D) स्यान्नास्ति चावक्तव्यः

व्याख्या- * जैनदर्शन को ही आर्हत दर्शन के नाम से जाना जाता है।

* जैनदर्शन में परामर्श के पूर्व 'स्यात्' लगाते हैं।
* इसी सिद्धान्त को 'स्याद्वाद' कहते हैं। इसका दूसरा नाम 'अनेकान्तवाद' है, क्योंकि किसी ज्ञान का निश्चय या एकान्त इसमें नहीं हो सकता।
* जैन लोग सर्वत्र सप्तभङ्गीनय नामक Logic उपस्थित करते हैं। इसके सात निम्नाङ्कित रूप हैं-

स्यादस्ति - किसी प्रकार है
स्यान्नास्ति - किसी प्रकार नहीं है।
स्यादस्ति च नास्ति च - किसी प्रकार है और नहीं है
स्यादवक्तव्यः - किसी प्रकार अवर्णनीय है
स्यादस्ति चावक्तव्यः - किसी प्रकार है और अवर्णनीय है
स्यान्नास्ति चावक्तव्यः - किसी प्रकार नहीं है और अवर्णनीय है।
स्यादस्ति च नास्ति चावक्तव्यः - किसी प्रकार है, नहीं है और अवर्णनीय है।

* **स्याद्वाद (जैन दर्शन) के दो प्रमाण हैं-** प्रत्यक्ष और अनुमान
* **त्रिरत्न -** 'सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्ग'
(1) सम्यक् दर्शन (2) सम्यक् ज्ञान (3) सम्यक् चारित्र
* **जैन तत्त्व मीमांसा -** दो तत्त्व हैं- जीव और अजीव ज्ञान के रूप में जीव है और अज्ञान के रूप में अजीव है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि आर्हत दर्शनानुसार सप्तभङ्गीनय में 'स्यादस्ति च वक्तव्यः' स्वीकृत नहीं है। **अतः विकल्प 'C' सही है**

स्रोत- सर्वदर्शनसंग्रह - उमाशङ्कर शर्मा ऋषि, पेज 146

44. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत-

(a) हर्षः (i) मुद्राराक्षसम्

(b) भवभूतिः (ii) कर्णभारम्

(c) विशाखदत्तः (iii) उत्तररामचरितम्

(d) भासः (iv) रत्नावली

एषु समीचीनमुत्तरं चिनुत-

(A) 3 2 4 1

(B) 4 3 1 2

(C) 2 1 3 4

(D) 1 4 2 3

व्याख्या-

संस्कृत वाङ्मय के प्रमुख नाट्यग्रन्थ

ग्रन्थ	अङ्क	लेखक
प्रतिज्ञायौगन्धरायण	4	भास
स्वप्नवासवदत्तम्	6	भास
ऊरुभङ्गम्	1	भास
दूतवाक्यम्	1	भास
पञ्चरात्रम्	3	भास
बालचरितम्	5	भास
दूतघटोत्कचम्	1	भास
मुद्राराक्षसम्	7	विशाखदत्त
कर्णभारम्	1	भास
रत्नावली	4	हर्ष (हर्षवर्धन)
उत्तररामचरितम्	7	भवभूति
मृच्छकटिकम्	10	शूद्रक (शिमुक)
अभिज्ञानशाकुन्तलम्	7	कालिदास
वेणीसंहारम्	6	भट्टनारायण
महावीरचरितम्	7	भवभूति
मालतीमाधवम्	10	भवभूति
बालरामायणम्	10	राजशेखर

संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख गद्यकाव्य

गद्यरचना	लेखक
दशकुमारचरितम्	दण्डी
वासवदत्ता	सुबन्धु
कादम्बरी	बाणभट्ट
हर्षचरितम्	बाणभट्ट
शिवराजविजय	अम्बिकादत्त व्यास
मुकुटताडितक	बाणभट्ट
तिलकमञ्जरी	धनपाल
मन्दारमञ्जरी	विश्वेश्वर पाण्डेय

संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख गीतिकाव्य

गीतिकाव्य	लेखक
ऋतुसंहारम्	कालिदास
मेघदूतम्	कालिदास
नीतिशतकम्	भर्तृहरि
शृङ्गारशतकम्	भर्तृहरि
वैराग्यशतकम्	भर्तृहरि
अमरुशतकम्	अमरुक

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त तालिकाओं से स्पष्ट है कि हर्ष की रचना रत्नावली, भवभूति की रचना उत्तररामचरितम्, विशाखदत्त की मुद्राराक्षस और भास की रचना कर्णभार है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा, पेज 513,522,502,465

45. वैशेषिकदर्शनानुसारं सप्तपदार्थेषु न गण्येते-

a पुरुषः **b विशेषः**

c गुणः **d अहङ्कारः**

समुचितं विकल्पमत्र चिनुत -

(A) a एवं c **(B)** b एवं c

(C) c एवं d **(D)** a एवं d

व्याख्या- अन्नम्भट्टप्रणीत तर्कसंग्रह में सप्तपदार्थों की चर्चा करते हैं-

* **पदार्थनिरूपण-**

'द्रव्यगुणकर्मसामान्यविशेषसमवायाभावाः सप्तपदार्थाः।'

द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय और अभाव ये सात ही पदार्थ हैं।

* **द्रव्यनिरूपण-**

'पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशकालदिगात्ममनांसि नवैव'

उन पदार्थों में द्रव्यों की संख्या नौ है- पृथिवी, जल, तेज,

वायु, आकाश, काल, दिक्, आत्मा और मन।

*** गुणनिरूपण-**

रूप-रस-गन्ध-स्पर्श-संख्या-परिमाण-पृथक्त्व-संयोग-विभाग-परत्वापरत्व-गुरुत्व-द्रवत्व-स्नेह-शब्द-बुद्धि-सुख-दुःखेच्छा-द्वेष, प्रयत्न, धर्माधर्म-संस्काराश्चतुर्विंशतिर्गुणाः।

रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, संख्या, परिमाण, पृथक्त्व, संयोग, विभाग, परत्व, अपरत्व, गुरुत्व, द्रवत्व, स्नेह, शब्द, बुद्धि, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, धर्म, अधर्म और संस्कार ये चौबीस गुण हैं।

*** कर्मनिरूपण-** उत्क्षेपणापक्षेणाकुञ्चनप्रसारणगमनानि पञ्चकर्माणि।

उत्क्षेपण, अपक्षेपण, आकुञ्चन, प्रसारण और गमन- ये पाँच कर्म हैं।

*** सामान्यनिरूपण-** परमपरं चेति द्विविधं सामान्यम्।

पर (सामान्य) और अपर (सामान्य) यह दो प्रकार का सामान्य (जाति) है।

*** विशेष पदार्थ-** 'नित्यद्रव्यवृत्तयो विशेषास्त्वनन्ता एव'

नित्यद्रव्यों में रहने वाले विशेष पदार्थ हैं और वे अनन्त हैं।

*** अभाव निरूपण-** अभावश्चतुर्विधः प्रागभावः, प्रध्वंसाभावोऽत्यन्ताभावोऽन्योन्याभावश्चेति।

अभाव पदार्थ चार प्रकार का होता है- प्रागभाव, प्रध्वंसाभाव, अत्यन्ताभाव और अन्योन्याभाव।

*** कारण निरूपण-** कारणं त्रिविधम् -समवाय्यसमवायिनिमित्तभेदात्।

कारण तीन प्रकार के होते हैं- समवायि, असमवायि और निमित्त।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि वैशेषिक दर्शनानुसार सप्त पदार्थों में पुरुष और अहङ्कार परिगणित नहीं हैं। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- तर्कसंग्रह - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज 18

46. ऋग्वेदस्य वरुणसूक्ते (1.25) कियन्तो मन्त्राः सन्ति?

(A) दश **(B)** द्वादश

(C) एकविंशतिः **(D)** द्वाविंशतिः

व्याख्या-

सूक्त	मण्डल/सूक्त	ऋषि	देवता	मन्त्रों की संख्या
अग्निसूक्त	1/1	मधुच्छन्दा	अग्नि	9
वरुणसूक्त	1/25	अजीगर्त शुनःशेप	वरुण	21
सूर्यसूक्त	1/115	अङ्गिरस्, कुत्स	सूर्य	06
इन्द्रसूक्त	2/12	गृत्समद	इन्द्र	15
उषस्सूक्त	3/61	विश्वामित्र	उषस्	07
पर्जन्यसूक्त	5/83	अत्रि	पर्जन्य	10
अक्षसूक्त	10/34	कवष ऐलूष	अक्षकृषि प्रशंसा	14
ज्ञानसूक्त	10/71	बृहस्पति	परब्रह्म ज्ञान	11
पुरुषसूक्त	10/90	नारायण	पुरुष	16
हिरण्यगर्भसूक्त	10/121	हिरण्यगर्भ	क संज्ञक प्रजापति	10
वाक्सूक्त	10/125	वागाम्भृणी	परमात्मा वाक्	08
नासदीयसूक्त	10/129	परमेष्ठी प्रजापति	सृष्टि-स्थिति प्रलयकर्ता परमात्मा	07

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि ऋग्वेद के वरुणसूक्त में कुल 21 मन्त्र हैं। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री, पेज 83

47. कल्पसाहित्ये गण्येते -

a गौतमधर्मसूत्रम् **b वाजसनेयिप्रातिशाख्यम्**

c मानवशुल्बसूत्रम् **d निघण्टुः**

अधोलिखितेषु समुचितमुत्तरं चिनुत -

(A) a एवं b **(B)** c एवं d

(C) a एवं c **(D)** b एवं d

व्याख्या- वेदाङ्ग में अङ्ग शब्द का अर्थ है वे उपकारक तत्त्व जिनसे वस्तु के स्वरूप का बोध होता है।

'अङ्ग्यन्ते ज्ञायन्ते एभिरिति अङ्गानि'

वेदाङ्गों की संख्या छह है -

शिक्षा व्याकरणं छन्दो निरुक्तं ज्योतिषं तथा।
कल्पश्चेति षडङ्गानि वेदस्याहुर्मनीषिणः॥

शिक्षा, व्याकरण, छन्द, निरुक्त, ज्योतिष, कल्प, वेदाङ्ग हैं।

कल्प वेदाङ्ग - कल्पसूत्र ग्रन्थ का तात्पर्य प्रयोगविधि के यथार्थ प्रतिपादक ग्रन्थों से है।

* जिन ग्रन्थों में यज्ञ-सम्बन्धी विधियों का समर्थन या प्रतिपादन किया जाता है, उन्हें कल्प कहते हैं।

* **कल्पसूत्र के भेद-** कल्पसूत्र के चार भेद हैं-
श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र, धर्मसूत्र, शुल्बसूत्र

ऋग्वेद के श्रौतसूत्र - शांखायन, आश्वलायन श्रौतसूत्र
ऋग्वेद का धर्मसूत्र - वासिष्ठ धर्मसूत्र
ऋग्वेद के गृह्यसूत्र - आश्वलायन, शांखायन, कौषीतकि
ऋग्वेद का शुल्बसूत्र - कोई शुल्बसूत्र प्राप्त नहीं होता
यजुर्वेद के श्रौतसूत्र - (i) शुक्लयजुर्वेद का कात्यायन श्रौतसूत्र
(ii) कृष्णयजुर्वेद का बौधायन, वाधूल, मानव, भारद्वाज, आपस्तम्ब, काठक, सत्याषाढ, वैखानस, वाराह श्रौतसूत्र
यजुर्वेद के गृह्यसूत्र - शुक्लयजुर्वेद पारस्कर गृह्यसूत्र, बौधायन, मानव, भारद्वाज, आपस्तम्ब काठक, अग्निवेश्य, हिरण्यकेशि, वाराह, वैखानस
यजुर्वेद के धर्मसूत्र - बौधायन, वैखानस, आपस्तम्ब, विष्णु, हारीत, हिरण्यकेशी, शंख
यजुर्वेद के शुल्बसूत्र - शुक्लयजुर्वेद- कात्यायन शुल्बसूत्र
कृष्णयजुर्वेद- बौधायन, आपस्तम्ब, मानव शुल्बसूत्र
सामवेद के श्रौतसूत्र - आर्षेय, कल्प या मशक, लाट्यायन, द्राह्यायण, जैमिनीय
सामवेद के गृह्यसूत्र - गोभिल, खादिर, दाह्यायण, जैमिनीय, कौथुम
सामवेद का धर्मसूत्र - गौतम धर्मसूत्र
सामवेद का शुल्बसूत्र - कोई शुल्बसूत्र प्राप्त नहीं होता
अथर्ववेद का श्रौतसूत्र - वैतान श्रौतसूत्र
अथर्ववेद का गृह्यसूत्र - कौशिक गृह्यसूत्र
अथर्ववेद का धर्मसूत्र - कोई धर्मसूत्र प्राप्त नहीं है।
अथर्ववेद का शुल्बसूत्र - कोई शुल्बसूत्र प्राप्त नहीं है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि कल्पसाहित्य के अन्तर्गत सामवेद का गौतमधर्मसूत्र और कृष्णयजुर्वेद का मानव शुल्बसूत्र समाहित है। **अतः विकल्प 'C' सही हैं**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज 236,241

48. भवभूतिकृतं रचनाद्वयं किमस्ति?

(A) महावीरचरितम्, प्रतिज्ञायौगन्धरायणम्
(B) उत्तररामचरितम्, महावीरचरितम्
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम्, मुद्राराक्षसम्
(D) मृच्छकटिकम्, महावीरचरितम्

व्याख्या-

लेखक	ग्रन्थ (नाटक)	अङ्क
भवभूति	उत्तररामचरितम्	07
भवभूति	महावीरचरितम्	07
भवभूति	मालतीमाधवम्	10
कालिदास	अभिज्ञानशाकुन्तलम्	07
कालिदास	मालविकाग्निमित्रम्	05
कालिदास	विक्रमोर्वशीयम्	05
शूद्रक	मृच्छकटिकम्	10
विशाखदत्त	मुद्राराक्षसम्	07
भास	प्रतिज्ञायौगन्धरायण	04
भास	स्वप्नवासवदत्तम्	06
भास	बालचरितम्	05
भास	पञ्चरात्रम्	03
भास	प्रतिमानाटकम्	07
भास	अभिषेकनाटकम्	06
भास	अविमारकम्	06
भास	चारुदत्तम्	04
भास	ऊरुभङ्गम्	01
भास	दूतवाक्यम्	01
भास	दूतघटोत्कचम्	01
भास	कर्णभारम्	01
भास	मध्यमव्यायोगः	01

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि भवभूति की रचना है- उत्तररामचरितम्, महावीरचरितम्, मालतीमाधवम्। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशङ्कर शर्मा, पेज 526,528

49. तैत्तिरीयब्राह्मणस्य प्रथमे काण्डे के द्वे वर्णिते?

a उपहोमः **b अग्निहोत्रम्**
c अग्न्याधानम् **d गवामयनम्**

अधोलिखितेषु समुचितमुत्तरं चिनुत -

(A) b एवं c **(B)** a एवं d
(C) c एवं d **(D)** a एवं b

व्याख्या- ब्राह्मण शब्द की व्युत्पत्ति -

* ब्राह्मणग्रन्थों के अर्थ में 'ब्राह्मण' शब्द विभिन्न तीन अर्थों को लेकर ब्रह्मन् शब्द से अण् (अ) प्रत्यय करके बना है।
* ये तीन अर्थ हैं - शतपथ ब्राह्मण के अनुसार ब्रह्मन् शब्द का अर्थ है 'मन्त्र'। अतः वेदमन्त्रों की व्याख्या और विनियोग प्रस्तुत करने वाले ग्रन्थ को 'ब्राह्मण' कहते हैं।
* शतपथ के अनुसार ही ब्रह्मन् शब्द का दूसरा अर्थ है- 'यज्ञ'। अतः यज्ञों की व्याख्या और विवरण प्रस्तुत करने वाले ग्रन्थों को 'ब्राह्मण' कहते हैं।
* ब्रह्मन् शब्द का एक अन्य अर्थ है- 'पवित्र ज्ञान या रहस्यात्मक विद्या।' अतः जिन ग्रन्थों में वैदिक रहस्यों का उद्घाटन किया गया है, उसे 'ब्राह्मण' कहते हैं।

➢ **वाचस्पति मिश्र के अनुसार ब्राह्मण हैं-**

नैरुक्त्यं यत्र मन्त्रस्य विनियोगः प्रयोजनम् ।
प्रतिष्ठानं विधिश्चैव ब्राह्मणं तदिहोच्यते॥

(वाचस्पति मिश्र)

* ब्राह्मण ग्रन्थों के चार प्रयोजन बताए हैं - निर्वचन, विनियोग, प्रतिष्ठान और विधि।
* मीमांसादर्शन के भाष्य में शबरस्वामी ने इन्हीं विषयों को कुछ और विस्तृत करते हुए ब्राह्मणग्रन्थों के प्रतिपाद्य विषयों की संख्या दस बताई है।

हेतुर्निर्वचनं निन्दा प्रशंसा संशयो विधिः।
परक्रिया पुराकल्पो व्यवधारण-कल्पना।
उपमानं दशैते तु विधयो ब्राह्मणस्य वै॥

(मीमांसासूत्र शाबरभाष्य 2.18)

हेतु, निर्वचन, निन्दा, प्रशंसा, संशय, विधि, परक्रिया, पुराकल्प, व्यवधारण, कल्पना और उपमान।

➢ **कृष्णयजुर्वेद में परिगणित एकमात्र ब्राह्मण तैत्तिरीयब्राह्मण है-**

* तैत्तिरीयब्राह्मण के रचयिता वैशम्पायन के शिष्य आचार्य तित्तिर हैं। तित्तिर ने तैत्तिरीय संहिता और तैत्तिरीय ब्राह्मण की रचना की।
* दूसरी ओर याज्ञवल्क्य ने यजुर्वेद की माध्यन्दिन शाखा और शतपथ ब्राह्मण का संकलन किया।
* शतपथब्राह्मण के समान इसमें भी स्वरचिन्ह हैं। इसकी प्राचीनता का द्योतक है।
* यह तीन काण्डों या अष्टकों में विभाजित है।
* प्रथम और द्वितीय काण्ड में 8-8 अध्याय या प्रपाठक हैं। तृतीय काण्ड में 12 अध्याय हैं।
* इनके उपखण्डों को 'अनुवाक' कहते हैं। इनकी संख्या 353 हैं।

➢ **काण्डों के अनुसार प्रतिपाद्य विषय**

काण्ड-1 - अग्न्याधान, गवामयन, वाजपेय, सोम, नक्षत्रेष्टि और राजसूय याग।

काण्ड-2 - अग्निहोत्र, उपहोम, सौत्रामणी बृहस्पति सव, वैश्य सव आदि।

काण्ड-3 - नक्षत्रेष्टियाँ और पुरुषमेध।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि तैत्तिरीयब्राह्मण के प्रथम काण्ड में अग्न्याधान और गवामयन का वर्णन है।

अतः विकल्प 'C' सही है।

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज 136

50. 'सोऽर्थस्तद्व्यक्तिसामर्थ्ययोगी'- अत्र सः पदस्य क आशयः -

(A) शब्दः **(B)** व्यंग्यः
(C) लक्ष्यः **(D)** वाच्यः

व्याख्या- आचार्य आनन्दवर्धन ध्वनि सम्प्रदाय के प्रवर्तक माने जाते हैं। इनकी रचना ध्वन्यालोक में चार उद्योत हैं। प्रथम उद्योत में मङ्गलाचरण, अभाववादी आदि पक्ष के तीनों भेदों का निरूपण, ध्वनि निरूपण का प्रयोजन आदि की व्याख्या के पश्चात् वाच्यार्थ से भिन्न व्यङ्ग्य की सत्ता को सिद्ध करते हुए कहते हैं-

सोऽर्थस्तद्व्यक्तिसामर्थ्ययोगी शब्दश्च कश्चन।
यत्नतः प्रत्यभिज्ञेयौ तौ शब्दार्थौ महाकवेः॥1/8॥

इस प्रकार वाच्यार्थ से भिन्न व्यङ्ग्य की सत्ता को सिद्ध करके प्राधान्य भी उसी का है यह दिखाते हैं- वह प्रतीयमान अर्थ और उसकी अभिव्यक्ति में समर्थ विशेष शब्द। इन दोनों को भली प्रकार पहचानने का प्रयत्न महाकवि को करना चाहिये।

'स व्यङ्ग्योऽर्थस्तद्व्यक्तिसामर्थ्ययोगी शब्दश्च कश्चन न शब्दमात्रम्'

➢ वह व्यङ्ग्य अर्थ और उसको अभिव्यक्त करने की शक्ति से युक्त कोई विशेष शब्द ही है। शब्दमात्र नहीं।

➢ महाकवि को वही शब्द और अर्थ भली प्रकार पहचानने चाहिये।

➢ व्यङ्ग्य और व्यञ्जक के सुन्दर प्रयोग से ही महाकवियों को महाकविपद की प्राप्ति होती है, वाच्य वाचक रचनामात्र से नहीं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'सोऽर्थस्तद्व्यक्तिसामर्थ्ययोगी ....' यहाँ 'स' पद का अर्थ- 'व्यङ्ग्य' है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- ध्वन्यालोक - (1/8)

51. मनुस्मृतेः टीकाकाराणां केन सह कस्य सम्बन्धः

क.	**गोविन्दराजः**	**(i)**	**मनुष्यभाष्यम्**
ख.	**कुल्लूकभट्टः**	**(ii)**	**मन्वाशयानुसारिणीमनुटीका**
ग.	**सर्वज्ञनारायणः**	**(iii)**	**मन्वर्थमुक्तावली**
घ.	**मेधातिथिः**	**(iv)**	**मन्वर्थविवृत्ति**

अधस्तनेषु समीचीनं विकल्पं चिनुत-

(A) 3 1 2 4
(B) 2 3 4 1
(C) 4 2 1 3
(D) 1 4 3 2

व्याख्या- मनुस्मृति की टीकायें

टीका	**टीकाकार**	**समय**
मनुभाष्य	मेधातिथि	824-900ई.
मनुटीका	गोविन्दराज	1050-1140ई.
मन्वर्थमुक्तावली	कुल्लूकभट्ट	1150-1300ई.
मन्वर्थवृत्ति	सर्वज्ञनारायण	1400-ई. से पूर्व
मन्वर्थचन्द्रिका	राघवानन्द	1300ई. के पश्चात्
मन्वर्थबोधिनी	मणिराम	1630-1660ई.
चन्द्रिका	रामचन्द्र	समय अनिश्चित
नन्दिनी	नन्दन	समय अनिश्चित
मनुशास्त्रविवरण	भारुचि	छठी शताब्दी अथवा 1050ई से पूर्व

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि मनुस्मृति के टीकाकार क्रमशः सम्बन्धित हैं- गोविन्दराज-मनुटीका, कुल्लूकभट्ट-मन्वर्थमुक्तावली, सर्वज्ञनारायण-मन्वर्थवृत्ति, मेधातिथि-मनुभाष्य से सम्बन्धित है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- मनुस्मृति - राकेश शास्त्री, पेज भू. xxviii

52. काव्यप्रकाशे ''विशेषवपुरपदार्थोऽपि वाक्यार्थः'' अत्र क उच्यते -

(A) अननन्वितार्थः **(B)** लक्ष्यार्थः
(C) व्यंग्यार्थः **(D)** तात्पर्यार्थः

व्याख्या- आचार्य मम्मटकृत काव्यप्रकाश जिसमें दस उल्लास हैं। उपाधि के भेद से एक ही शब्द कभी वाचक, कभी लक्षक और कभी व्यञ्जक कहा जा सकता है, उसी प्रकार अर्थ भी तीन प्रकार के होते हैं-

वाच्यादयस्तदर्थाः स्युः वाच्य-लक्ष्य-व्यङ्ग्याः।

वाच्य, लक्ष्य तथा व्यङ्ग्य आदि उन वाचक, लक्षक तथा व्यञ्जक शब्दों के अर्थ भी तीन प्रकार के हैं।

तात्पर्यार्थोऽपि केषुचित्।

अर्थ का चतुर्थ भेद - तात्पर्यार्थ

कुमारिलभट्ट के अनुयायी पार्थसारथिमिश्र आदि (अभिहितान्वयवादी मीमांसकों) के मत में (तीन प्रकार के वाच्यादि अर्थों के अतिरिक्त चौथे प्रकार का) तात्पर्यार्थ को भी मानते हैं, परन्तु मीमांसक व्यञ्जना शक्ति को नहीं मानते इसलिये यह 3 शक्तियाँ ही हैं। अभिहितान्वयवाद का अभिप्राय यह है कि पहले पदों से पदार्थों की प्रतीति होती है।

अर्थात् वाक्यार्थ बोध के लिये अभिहित पदार्थों का अन्वय मानने के कारण कुमारिलभट्ट आदि का यह सिद्धान्त अभिहितान्वयवाद कहा जाता है।

आकांक्षा-योग्यता-सन्निधिवशात् वक्ष्यमाणस्वरूपाणां पदार्थानां समन्वये तात्पर्यार्थो विशेषवपुरपदार्थोऽपि वाक्यार्थः समुल्लसतीति 'अभिहितान्वयवादिनां' मतम् ।

पदार्थों का आकांक्षा, योग्यता, सन्निधि के बल से परस्पर सम्बन्ध होने से पदों से प्रतीत होने वाला अर्थ न होने पर भी विशेष प्रकार का तात्पर्य रूप वाक्यार्थ प्रतीत होता है यह अभिहितान्वयवादियों का मत है।

वाच्य एव वाक्यार्थ इति 'अन्विताभिधानवादिनः'।

पदों के द्वारा अन्वित पदार्थों की ही उपस्थिति होती है इसलिए पदार्थों का परस्पर सम्बन्ध रूप वाक्यार्थ वाच्य ही होता है। यह अन्विताभिधानवादियों का मत है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि काव्यप्रकाश में 'विशेष- वपुरपदार्थोऽपि वाक्यार्थः' यहाँ तात्पर्यार्थ शक्ति को बताया जा रहा है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज 36,37

53. नाट्यशास्त्रानुसारं रसानां वर्णाः सन्ति-

(A) शृङ्गारः श्यामः हास्यः कपोतः
(B) हास्यः सितः शृङ्गारः श्यामः
(C) हास्यः सितः शृङ्गारः कपोतः
(D) करुणः कपोतः शृङ्गारः श्यामः

समीचीनमुत्तरं चिनुत-

(A) a एवं b **(B)** b एवं d
(C) c एवं d **(D)** a एवं d

व्याख्या- रससूत्र के प्रथम आचार्य भरतमुनि प्रणीत ग्रन्थ नाट्यशास्त्र है जिसके छठवें अध्याय में रसों की चर्चा की गयी है-

श्यामो भवति शृङ्गारः सितो हास्यः प्रकीर्त्तितः।
कपोतः करुणश्चैव रक्तो रौद्रः प्रकीर्त्तितः॥ 42॥
गौरो वीरस्तु विज्ञेयः कृष्णश्चैव भयानकः।
नीलवर्णस्तु बीभत्सः पीतश्चैवाद्भुतः स्मृतः ॥43॥

* भारतीय वाङ्मय में व्यक्ताव्यक्त सभी विषयों के रूप-रङ्ग एवं आकार-प्रकार का वर्णन उपलब्ध होता है।
* भरतमुनि भी यहाँ शृङ्गारादि रसों के रूप-रङ्ग एवं देवताओं का निरूपण कर रहे हैं।
* शृङ्गारादि रस भी भावरूप होने से मूर्त्त ही होते हैं तथापि उनका व्यक्तीकरण करके यह निरूपण किया गया है।
* शृङ्गार का रङ्ग साँवला होता है तथा हास्य सित अर्थात् शुभ्र वर्ण का कहा गया है।
* करुण का वर्ण कपोत अर्थात् चितकबरा तो रौद्र रस का वर्ण रक्त होता है।
* वीर रस को गौर समझना चाहिए तथा भयानक को काले रङ्ग का।
* बीभत्स रस का वर्ण नीला है तो अद्भुत रस पीले रङ्ग का माना गया है।

शृङ्गारो विष्णुदैवत्यो हास्यः प्रमथदैवतः।
रौद्रो रुद्राधिदैवत्यः करुणो यमदैवतः ॥44॥
बीभत्सस्य महाकालः कालदेवो भयानकः।
वीरो महेन्द्रदेवः स्यादद्भुतो ब्रह्मदैवतः ॥45॥

अब रसों के तत्तत् अधिष्ठातृ देवताओं का निरूपण करते हैं।

* शृङ्गार रस के देवता विष्णु हैं तथा हास्य के देवता प्रमथ हैं जो भगवान् शिव के गण माने गये हैं।
* रौद्र रस के अधिष्ठाता साक्षात् रुद्र ही हैं तथा करुणरस के देवता यम हैं।
* बीभत्स रस के देवता महाकाल हैं।
* भयानक रस के अधिष्ठाता के रूप में कालदेव को माना गया है।
* महेन्द्र वीररस के देवता हैं तो अद्भुत रस के देवता ब्रह्मा माने गए हैं।

साहित्यशास्त्र में रसों की संख्या

	रस	स्थायीभाव	वर्ण	देवता
1.	शृङ्गार	रति	श्याम	विष्णु
2.	वीर	उत्साह	सुवर्णवत्	महेन्द्र
3.	बीभत्स	जुगुप्सा	नील	महाकाल
4.	रौद्र	क्रोध	रक्त	रुद्र
5.	हास्य	हास	शुक्ल	प्रमथ
6.	अद्भुत	विस्मय	पीत	ब्रह्मा
7.	भयानक	भय	कृष्ण	महाकाल
8.	करुण	शोक	कपोत	यम

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि नाट्यशास्त्र के अनुसार रसों का वर्ण है- हास्य का सित अर्थात् श्वेतवर्ण और शृङ्गाररस का श्याम (साँवला) वर्ण होता है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- नाट्यशास्त्र (6/42-43)

54. अशोकस्य गिरनार- अभिलेखानां सन्दर्भे समुचितं कथनमस्ति-

(a) अभिलेखानां भाषा संस्कृतमस्ति
(b) अभिलेखानां भाषा प्राकृतम् (पालिः) अस्ति
(c) अभिलेखानां लिपिः देवनागरी अस्ति
(d) अभिलेखानां लिपि ब्राह्मी अस्ति

अधस्तनेषु समीचीनं विकल्पं चिनुत -

(A) a एवं b **(B)** b एवं c
(C) c एवं d **(D)** b एवं d

व्याख्या- अशोक का गिरनार अभिलेख

स्थान - गिरनार **जिला -** जूनागढ़ (महाराष्ट्र)
भाषा - प्राकृत (पालि) **लिपि -** ब्राह्मी
काल - अशोक कालीन (लगभग 272-32ई.पू.)
विषय - हिंसा और समाज का विरोध, व्यक्तिगत जीवन

1. इयं धंम-लिपी देवानं प्रियेन
2. प्रि यदसिना राञा लेखा पिता (।) इध न किं -
3. चि जीवं आरभित्पा प्रजूहितव्यं (।)

1. यह धम्मलिपि देवानंप्रिय (देवताओं में प्रिय)
2. प्रियदर्शी राजा (अशोक) द्वारा लिखवाई गयी
3. कोई भी जीव बलि के लिए नहीं मारा जायेगा

➢ **खारवेल का हाथीगुम्फा अभिलेख**

स्थान - हाथीगुम्फा-भुवनेश्वर के निकट उदयगिरि पहाड़ी

जिला - पुरी उड़ीसा

लिपि - ब्राह्मी

काल - लगभग प्रथम शती ई.पू. का उत्तरार्ध

विषय - चेदिवंशी राजा कलिंगाधिपति खारवेल के जीवन की घटनाओं का क्रमिक विवरण एवं उसकी राजनैतिक उपलब्धियों तथा लोकमंगल के कार्यों का उल्लेख

मूलपाठ - नमो अरहंतानं। नमो सव-सिधानं।। ऐरेण महाराजेन महावेघवाहनेन चेति राज व स-वधनेन पसथ-सुभ-लखनेन चतुरंत लुठण गुण उपितेन कलिंगाधिपतिना सिरि-खारवेलेन

अर्हतों को नमस्कार। सब सिद्धों को नमस्कार। आर्य, महाराज, महामेधवाहन चेदिराज वंशवर्धन करने वाले, प्रशस्त एवं शुभ लक्षण युक्त चतुर्दिक् प्रशस्त गुणों में पूर्ण कलिंगाधिपति श्रीखारवेल ने।

➢ **समुद्रगुप्त का प्रयाग स्तम्भ-अभिलेख**

स्थान - इलाहाबाद उत्तर प्रदेश (यह मूलतः कौशाम्बी में था जहाँ से इलाहाबाद किले में लाया गया)

भाषा - संस्कृत

लिपि - ब्राह्मी

काल - समुद्रगुप्त (लगभग 335-76)

विषय - समुद्रगुप्त का जीवन चरित्र तथा उपलब्धियों का विवरण

लेख का नाम - इस स्तम्भ में समुद्रगुप्त की प्रशस्ति का उल्लेख है तथा यह प्रयाग में है। इससे इसको प्रयाग-प्रशस्ति कहा जाता है। चूँकि इसका लेखक हरिषेण है इससे इसको हरिषेण की प्रयाग प्रशस्ति नाम से भी जाना जाता है।

➢ अग्रेंजी मे इसे Allahabad Pillar Insription कहते हैं।

➢ **रुद्रदामन का जूनागढ शिलालेख**

स्थान - जूनागढ़ गुजरात

भाषा - संस्कृत

लिपि - ब्राह्मी

काल - रुद्रदामन के राजत्वकालान्तर्गत 72वाँ वर्ष

विषय - रुद्रदामन के प्रान्तीय शासक सुविशाख द्वारा सुदर्शन बाँध का पुनर्निर्माण, बाँध का पूर्व इतिहास एवं रुद्रदामन की राजनैतिक उपलब्धियों का विवरण

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि अशोक का गिरनार अभिलेख के सन्दर्भ में अभिलेख की लिपि ब्राह्मी लिपि और भाषा प्राकृत भाषा में है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- भारतीय पुरालेखों का अध्ययन-शिवस्वरूप सहाय, पेज 90-91

55. आधिदैविकदुःखेषु गण्येते -

a **झञ्झावातः** **b** **अश्वाघातः**

c **पश्चाघातः** **d** **भूकम्पः**

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत -

(A) a एवं c **(B)** a एवं d

(C) c एवं d **(D)** b एवं c

व्याख्या- सांख्यदर्शन का प्रकरणग्रन्थ सांख्यकारिका है जो ईश्वरकृष्ण द्वारा प्रणीत है।

दुःखत्रयाभिघाताज् जिज्ञासा तदपघातके हेतौ।
दृष्टे साऽपार्था चेन्नैकान्तात्यन्ततोऽभावात् ॥1॥

तीन प्रकार के दुःखों आध्यात्मिक, आधिभौतिक एवं आधिदैविक द्वारा किए गए प्रहार के कारण उनके विनाश करने वाले कारण के सम्बन्ध में जिज्ञासा अत्यन्त स्वाभाविक होती है।

प्रत्यक्ष दिखाई देने वाले उपायों के होने से वह शास्त्र विषयक व्यर्थ है तो दुःखों के अनिवार्य रूप से, हमेशा के लिए समाप्त न होने से (उचित) नहीं है।

दुःख तीन प्रकार का होता है-

(1) आध्यात्मिक (2) आधिभौतिक (3) आधिदैविक

(1) आध्यात्मिक- दुःख जिसका आन्तरिक तत्त्वों से सम्बन्ध है जो दो प्रकार का होता है-

(क) शारीरिक (ख) मानसिक

जो शरीर के प्रमुख तत्त्व वात, पित्त और कफ की विषमता के कारण उत्पन्न होता है, शारीरिक दुःख कहलाता है। जैसे- ज्वरादि।

यह भी दो प्रकार का होता है - नैसर्गिक (भूखादि), त्रिदोषजन्य (ज्वरादि)।

(ख) काम, क्रोध, लोभ, मोह, भय और ईर्ष्या आदि भावों के कारण उत्पन्न होने वाला दुःख मानसिक कहलाता है।

(2) आधिभौतिक - बाह्यकारणों अथवा पदार्थों जिन्हें हम देख सकते हैं, से उत्पन्न होने वाला दुःख आधिभौतिक कहलाता है।

जैसे- पशु, पक्षी, सर्प, मनुष्यादि पदार्थों से उत्पन्न दुःख अथवा कष्ट।

(3) आधिदैविक - प्रत्यक्ष न दिखाई देने वाली देवयोनियों जैसे- यक्ष, राक्षस, विकार, ग्रहादि के दुष्प्रभाव से होने वाला कष्ट आधिदैविक कहलाता है।

दुःखत्रय

आध्यात्मिक — आधिभौतिक — आधिदैविक

आध्यात्मिक → शारीरिक, मानसिक

मानसिक → काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या भयादि से उत्पन्न कष्ट

शारीरिक → नैसर्गिक (भूखादि), त्रिदोषजन्य (ज्वरादि)

आधिभौतिक → मनुष्य, पशु, सर्प, मृगादि से होने वाला कष्ट

आधिदैविक → यक्ष, राक्षस, किन्नर, भूत, प्रेत, आँधी, तूफान आदि से होने वाला कष्ट

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि आधिदैविक दुःख में देव आदि से अर्थात् यक्ष, राक्षस आदि से उत्पन्न कष्ट झंझावात, भूकम्प आदि भी हैं। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- सांख्यकारिका (कारिका 01)

56. 'अग्निना रयिमश्नवत्पोषमेव दिवे दिवे' इत्यस्मिन् मन्त्रांशे (रयिः) पदस्य अर्थं निर्दिशतु -

a रात्रिः b रत्नम्

c धनम् d वसु

अत्र उचितमुत्तरं चिनुत -

(A) a एवं b **(B)** c एवं d

(C) b एवं c **(D)** a एवं d

व्याख्या- ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के प्रथम सूक्त में अग्नि देवता की स्तुति की गयी है।

अग्निना रयिमश्नवत् पोषमेव दिवे दिवे।
यशसं वीरवत्तमम् ॥ (1.1.3)

स्तुति किये जाते हुए अग्नि से यह यजमान प्रतिदिन ही निरन्तर पोषण को प्राप्त होने वाले, पान आदि के द्वारा यश को प्राप्त होने वाले और पुत्र भृत्य आदि वीरों से अत्यधिक युक्त धन को प्राप्त करता है।

शब्दार्थ -

रयिम् - धन को

अश्नवत् - प्राप्त करता है

पोषम् - पोषण को प्राप्त होने पर

दिवे दिवे - प्रतिदिन

यशसम् - यश को प्राप्त होने वाले

वीरवत्तमम् - पुत्र, भृत्य आदि वीरों से युक्त

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'रयिः' पद का अर्थ धन होता है। वसु शब्द का भी अर्थ धन ही होता है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- ऋग्वेद (1.1.1)- किरातार्जुनीयम् (1/3)

57. 'काव्यं ग्राह्यमलङ्कारात्' इत्युक्ति अस्ति-

(A) दण्डिनः **(B)** वामनस्य

(C) अभिनवगुप्तस्य **(D)** भोजस्य

व्याख्या- आचार्य वामन कृत काव्यालङ्कारसूत्र प्रथम अधिकरण के 'प्रयोजनस्थापना' नामक प्रथम अध्याय में काव्य को बताते हैं-

➢ **काव्यं ग्राह्यम् अलङ्कारात् ॥1.1॥**

काव्य अलङ्कार से युक्त होने के कारण ग्रहण करने योग्य होता है।

काव्यं खलु ग्राह्यमुपादेयं भवति, अलङ्कारात्। काव्यशब्दोऽयं गुणाऽलङ्कारसंस्कृतयोः शब्दार्थयोर्वर्तते। भक्त्या तु शब्दार्थमात्रवचनोऽत्र गृह्यते।

काव्य अलङ्कार से युक्त होने से उपादेय है। यह काव्य शब्द गुण ओज, प्रसाद आदि और अलङ्कार उपमा, यमक आदि से संस्कारसम्पन्न शब्द और अर्थ का बोध कराता है, परन्तु उपचार से केवल शब्दार्थ का बोधक 'काव्य' शब्द का ग्रहण होता है।

➢ **सौन्दर्यमलङ्कारः ॥1.1.2॥**

यह अलङ्कार क्या वस्तु है? इस शब्द का उत्तर द्वितीय सूत्र में देते हैं-

सुन्दरता की स्थापना पद्य में करना अलङ्कार है।

अलङ्कृतिरलङ्कारः। करणव्युत्पत्त्या पुनरलङ्कार-शब्दोऽयम् उपमादिषु वर्तते-

भाव में विग्रह करने पर अलङ्कृति ही अलङ्कार है। ('अलङ्क्रियतेऽनेन' ऐसी) करण में व्युत्पत्ति करने पर तो वह अलङ्कार शब्द उपमा, यमक आदि में प्रयुक्त होता है।

स दोषगुणालङ्कारहानादानाभ्याम् ॥1.1.3॥

वह (सौन्दर्यस्वरूप अलङ्कार दोषों) दुष्ट पदों (दुष्ट पद,

असाधु पद आदि) के त्याग और गुणों (ओज, प्रसाद आदि) के ग्रहण से होता है।

शास्त्रतस्ते ॥1.1.4॥

वे दोनों (दोषों का त्याग तथा गुणों का ग्रहण) शास्त्र से होते हैं।

काव्यं सद्दृष्टाऽदृष्टार्थं प्रीतिकीर्तिहेतुत्वात् (1.1.5)

अलङ्कारयुक्त काव्य से क्या फल है, जिससे इस (अलङ्कार) के लिए प्रयत्न है?

उत्तम काव्य का फल प्रीतिजनक होने से दृष्ट (इस लोक में-ऐहलौकिक) और कीर्तिजनक होने से अदृष्ट (पारलौकिक) दोनों प्रकार से प्राप्त होता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'काव्यं ग्राह्यमलङ्कारात्' यह उक्ति वामन की है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- काव्यालङ्कारसूत्रवृत्ति (1.1.1)

58. कथनद्वयमधोलिखितम् एकम् अभिकथनम् (A) अपरञ्च कारणम् (R)

अभिकथनम् (A) - सांख्यकारिकायां पुरुषस्य सत्ता स्वीक्रियते।

कारणम् (R) - सङ्घातपरार्थत्वात्

अत्र समुचितमुत्तरं चिनुत -

(A) (A) असत्यम् (R) सत्यम्
(B) (A) तथा (R) उभे सत्ये स्तः
(C) (A) तथा (R) उभे असत्ये स्तः
(D) (A) सत्यम् (R) असत्यम्

व्याख्या- कपिलमुनि द्वारा रचित सांख्यदर्शन का ही प्रकरणग्रन्थ ईश्वरकृष्णद्वारा प्रणीत सांख्यकारिका है। सांख्यकारिका में विशेषतः प्रकृति और पुरुष की सत्ता का वर्णन किया गया है, पुरुष की सत्ता को इस कारिका के द्वारा बताया गया है-

संघातपरार्थत्वात् त्रिगुणादिविपर्ययादधिष्ठानात् ।
पुरुषोऽस्ति भोक्तृभावात् कैवल्यार्थं प्रवृत्तेश्च ॥17॥

संघटनात्मक समूहरूप वस्तुओं के दूसरों के लिए होने के कारण, गुणत्रययुक्त धर्मों से विपरीत धर्म वाले की अपेक्षा होने के कारण (व्यक्तरूप संघात का) अधिष्ठाता होने की अपेक्षा से भोक्ता होने की अपेक्षा से मोक्ष के लिए प्रवृत्ति होने से पुरुष (की सत्ता) है।

पुरुष की सिद्धि के लिए पाँच युक्तियों को प्रस्तुत करते हैं- (1) संघातपरार्थत्वात् (2) त्रिगुणादिविपर्ययात् (3) अधिष्ठानात् (4) भोक्तृभावात् (5) कैवल्यार्थं प्रवृत्तेः

➢ प्रकृति (अव्यक्त) की सिद्धि के लिए भी पाँच युक्तियों को बताया गया है-

भेदानां परिमाणात् समन्वयत्वात् शक्तितः प्रवृत्तेश्च ।
कारणकार्यविभागादविभागाद् वैश्वरूप्यस्य ॥15॥

महत् आदि कार्यों के परिमित होने से, कारण के समान होने से, (कारण की) शक्ति से उत्पन्न होने से और कारण से ही कार्य के आविर्भूत होने से, उसी कारण में लीन हो जाने से विविध रूपों वाले सभी कार्यों का एक कारण (प्रधान) अव्यक्त अवश्य है। (1) भेदानां परिमाणात् (2) भेदानां समन्वयात् (3) शक्तितः प्रवृत्तेः (4) कारणकार्यविभागात् (5) वैश्वरूप्यस्य अविभागात्

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि कथन (A) सांख्यकारिका में पुरुष की सत्ता स्वीकार की जाती है। कथन (R) में जो कारण है- 'संघातपरार्थत्वात्' यह उचित कारण है।

अतः विकल्प 'B' सही है।

स्रोत- सांख्यकारिका (कारिका - 17)

59. महाभारताश्रितं भासविरचितं नाटकमस्ति-

a **दूतवाक्यम्** **b** **प्रतिमानाटकम्**
c **मध्यमव्यायोगम्** **d** **बालभारतम्**

अधस्तनेषु समीचीनं विकल्पं चिनुत -

(A) a एवं b **(B)** a एवं d
(C) a एवं c **(D)** b एवं c

व्याख्या- संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख नाट्यग्रन्थ एवं उनके उपजीव्यग्रन्थ

नाट्यग्रन्थ	लेखक	विधा	उपजीव्य
दूतवाक्यम्	भास	एकांकी	महाभारत
मध्यमव्यायोग	भास	एकांकी	महाभारत
प्रतिमानाटकम्	भास	सात अङ्क	रामायण
प्रतिज्ञायौगन्धरायण	भास	4 अङ्क	उदयनकथाश्रित
स्वप्नवासवदत्तम्	भास	6 अङ्क	उदयन लोककथा
ऊरुभङ्गम्	भास	एकांकी	महाभारत
दूतघटोत्कचम्	भास	एकांकी	महाभारत
कर्णभारम्	भास	एकांकी	महाभारत
बालचरितम्	भास	तीन अङ्क	महाभारत
अभिषेकनाटकम्	भास	6 अङ्क	रामायण

पञ्चरात्रम्	भास	3 अङ्क	महाभारत

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि महाभारत पर आश्रित और भास द्वारा रचित ग्रन्थ 'दूतवाक्यम्' और 'मध्यमव्यायोग' हैं। 'प्रतिमानाटक' रामायण पर आश्रित है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- मिशन L.T. - सर्वज्ञभूषण, पेज 371,388

60. याज्ञवल्क्यस्मृतौ व्यवहाराध्यायस्य विषयोऽस्ति-

a ऋणादानप्रकरणम् **b दानप्रकरणम्**

c गृहस्थधर्मप्रकरणम् **d साक्षिप्रकरणम्**

अधस्तनेषु समुचितमुत्तरं चिनुत -

(A) a एवं b **(B)** a एवं d

(C) b एवं d **(D)** c एवं d

व्याख्या- * महर्षि याज्ञवल्क्य प्रणीत याज्ञवल्क्यस्मृति में तीन अध्याय हैं- (1) आचाराध्याय (2) व्यवहाराध्याय (3) प्रायश्चित्ताध्याय

* इसमें एक हजार श्लोक हैं जो अनुष्टुप् छन्द में है।
* प्रथम आचाराध्याय है- इसमें चौदह विद्याएँ, धर्मोपादान, आचार के दस सिद्धान्त आदि तेरह प्रकरण हैं।
* द्वितीय व्यवहाराध्याय है, इसमें पच्चीस प्रकरण हैं। व्यवहाराध्याय विशेष ध्यातव्य है।
* व्यवहाराध्याय याज्ञवल्क्यस्मृति का हृदय है।
* इसमें ही सर्वाधिक प्रकरण समाहित हैं। जो क्रमशः इस प्रकार हैं -

1. साधारणव्यवहारमातृकप्रकरणम्
2. असाधारणव्यवहारमातृकप्रकरणम्
3. ऋणादानप्रकरणम्
4. उपनिधिप्रकरणम्
5. साक्षिप्रकरणम्
6. लेख्यप्रकरणम्
7. दिव्यप्रकरणम्
8. दायविभागप्रकरणम्
9. सीमाविवादप्रकरणम्
10. स्वामिपालविवादप्रकरणम्
11. स्वामिविक्रयप्रकरणम्
12. दत्ताप्रदानिकप्रकरणम्
13. क्रीतानुशयप्रकरणम्
14. अभ्युपेत्याशुश्रूषाप्रकरणम्
15. संविद्व्यतिक्रमप्रकरणम्
16. वेतनादानप्रकरणम्
17. द्यूतसमाह्वयप्रकरणम्
18. वाक्पारुष्यप्रकरणम्
19. दण्डपारुष्यप्रकरणम्
20. साहसप्रकरणम्
21. विक्रीयासंप्रदानप्रकरणम्
22. संभूयसमुत्थानप्रकरणम्
23. स्तेयप्रकरणम्
24. स्त्रीसंग्रहणप्रकरणम्
25. प्रकीर्णप्रकरणम्

तृतीय प्रायश्चित्ताध्याय है, इसमें आपद्धर्म, यतिधर्म, प्रायश्चित्त आदि छह प्रकरण हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि याज्ञवल्क्यस्मृति के व्यवहाराध्याय में ऋणादानप्रकरण और साक्षिप्रकरण हैं। जबकि दानप्रकरण और गृहस्थधर्मप्रकरण इसमें नहीं हैं।

अतः विकल्प 'B' सही है।

स्रोत- याज्ञवल्क्यस्मृति - गङ्गासागर राय, भू. पेज 1-14

61. 'यस्य शुष्माद्रोदसी अभ्यसेताम्' अस्मिन् मन्त्रांशे 'शुष्मात्' पदस्य अर्थो निर्धार्यताम् -

a बलात् **b पूजनात्**

c पराक्रमात् **d शस्त्रात्**

अधोचितमुत्तरं चिनुत -

(A) a एवं b **(B)** c एवं d

(C) a एवं d **(D)** a एवं c

व्याख्या- * इन्द्रसूक्त ऋग्वेद के दूसरे मण्डल का बारहवाँ सूक्त है।

* इस सूक्त के ऋषि गृत्समद और देवता इन्द्र हैं और छन्द अनुष्टुप् है।
* इन्द्रसूक्त का पहला मन्त्र है-

यो जात एव प्रथमो मनस्वान् देवो देवान्क्रतुना पर्यभूषत्।
यस्य शुष्माद्रोदसी अभ्यसेतां, नृम्णस्य मह्ना स जनास इन्द्रः॥

(2.12.1)

जिस प्रमुख मनस्वी देव ने उत्पन्न होते ही अपने पराक्रम से देवों को अभिभूत कर लिया, जिसकी शक्ति से द्युलोक और पृथिवी लोक काँप गये, हे मनुष्यों! महान् बल की महिमा से युक्त वह इन्द्र है।

शब्दार्थ - प्रथमः - प्रधान, प्रमुख, **मनस्वान् -** मनस्वी, बुद्धिमान्, **देवः** - देव ने, **जातः एव** उत्पन्न होते हैं।

क्रतुना - पराक्रम से, शक्ति से, कर्म से

शुष्मात् - बल से, शक्ति से, पराक्रम से

रोदसी - द्युलोक - पृथिवीलोक

अभ्यसेताम् - डर गये, काँप गये।

नृम्णस्य - महान् बल की

मह्ना - महिमा से, महत्त्व से

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'यस्य शुष्माद्रोदसी अभ्यसेताम्' इस मन्त्र के शुष्मात् पद का अर्थ है- बलात्, पराक्रमात्।

(बल से, शक्ति से, पराक्रम से) **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- ऋग्वेद (2.12.1)

62. आत्मा बुद्ध्या समर्त्यार्थान् मनो युङ्क्ते विवक्षया।
मनः कायाग्निमाहन्ति स प्रेरयति मारुतम् ॥
उपर्युक्तेन श्लोकेन उपदिश्यते-
(A) वर्णोत्पत्तिप्रक्रिया
(B) वर्णानां स्थानम्
(C) वर्णानां प्रयत्नः
(D) वर्णानाम् उच्चारणकालः

व्याख्या- पाणिनि प्रणीत पाणिनीय शिक्षा है जिसमें 60 श्लोक हैं। इसमें वर्णोत्पत्तिप्रक्रिया का इस श्लोक के द्वारा वर्णन किया गया है-

त्रिषष्टिः चतुःषष्टिर्वा वर्णाः शम्भुमते मताः।
प्राकृते-संस्कृते चापि स्वयं प्रोक्ताः स्वयम्भुवा॥3॥

प्राकृत और संस्कृत भाषा में शम्भु के मत में तिरसठ या चौसठ वर्ण कहे गये हैं। स्वयं ब्रह्मा के द्वारा भी यही कहा गया है।

आत्मा बुद्ध्या समर्थ्यार्थान् मनो युङ्क्ते विवक्षया।
मनः कायाग्निमाहन्ति स प्रेरयति मारुतम् ॥6॥

आत्मा बुद्धि के द्वारा पदार्थों को संकलित कर बोलने की इच्छा से (उच्चारण करने की इच्छा से) मन को प्रेरित करता है। (वही) मन कायाग्नि मारुत अर्थात् प्राणवायु को प्रेरित करता है।

स्वरा विंशतिरेकश्च स्पर्शानां पञ्चविंशतिः ।
यादयश्च स्मृता ह्यष्टौ चत्वारश्च यमाः स्मृताः ॥4॥
अनुस्वारो विसर्गश्च ᳲ क ᳲ पौ चाऽपि पराश्रितौ।
दुःस्पृष्टश्चेति विज्ञेयो ऌकारः प्लुत एव च ॥5॥

स्वर - 21, स्पर्श वर्ण = 25, यादय - 08, यम = 4 अनुस्वार - :, विसर्ग - ।, जिह्वामूलीय और उपध्मानीय - 2 हैं। ᳲ क ᳲ फ ये दोनों पराश्रित हैं। दुःस्पृष्ट - 1, प्लुत ऌकार - 1 है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'आत्मा बुद्धया समेर्त्यार्थान् ....' यह श्लोक वर्णोत्पत्तिप्रक्रिया को उपदेशित करता है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- पाणिनीयशिक्षा - (श्लोक 6)

63. 'इह पुष्यमित्रं याजयामः इत्ययं वाक्यांशः' कस्य आचार्यस्य कालनिर्धारणाय विद्वद्भिः उपयुज्यते-
(A) पतञ्जलेः **(B)** कात्यायनस्य
(C) पाणिनेः **(D)** भर्तृहरेः

व्याख्या- महर्षि पतञ्जलि का भाष्य अपने अनुपम वैशिष्ट्य के कारण महाभाष्य कहा जाता है।

पतञ्जलि का जन्मकाल भी विवादग्रस्त है। पाश्चात्य विद्वान् और उनके अनुयायी इनका काल ई. पू. 150 वर्ष मानते हैं जो कि पुष्यमित्र का शासन काल माना जाता है।

प्रवृत्तस्याविरामे शासितव्या भवन्ती (लटः पूर्वाचार्यसंज्ञाः)। .... इह पुष्यमित्रं याजयामः।

(म.भा. 3.2.126)

* पतञ्जलि पाणिनि के सैकड़ों वर्षों बाद ही उत्पन्न हुए थे। इनके समय तक पाणिनीय नियमों का प्रचलन हो चुका था।
* शब्दों का साधुत्व दर्शाने के लिए पतञ्जलि ने इष्टियों का आश्रयण लिया है और शास्त्रीय नियमों की अपेक्षा लोकव्यवहार की प्रधानता स्वीकार की है।
* पतञ्जलि शब्द की व्युत्पत्ति के आधार पर इनका जन्म माना जाता है- पतन्ति अञ्जलयो नमस्कार्यतया तस्मिन् सः पतत् + अञ्जलि में अत् = टि का पररूप करने पर यह रूप बनता है।
* अञ्जलेः पतितः - इस विग्रह में भी मयूरव्यंसकादि मानकर निपातन से इत का लोप करके पत् अञ्जलि = पतञ्जलि बनता है।
* इनके महाभाष्य में एक साथ अनेक प्रश्नों और उत्तरों को देखकर विद्वानों ने इन्हें सहस्र जिह्वाओं वाले शेषनाग का अवतार माना है।
* इसीलिये इन्हें फणी, फणिभृत्, शेषाहि, नागनाथ आदि कहा जाता है।
* इन्हें गोणिकापुत्र भी कहा जाता है। यह सम्भवतः माता के नाम के अनुसार है।
* पाणिनि की अष्टाध्यायी के सूत्रों पर कात्यायनादि द्वारा प्रणीत वार्त्तिकों के आधार पर विशिष्ट शैली में लिखा गया व्याख्यान ग्रन्थ महाभाष्य नाम से प्रसिद्ध है।

सूत्रार्थो वर्ण्यते यत्र वाक्यैः सूत्रानुसारिभिः।
स्वपदानि च वर्ण्यन्ते भाष्यं भाष्यविदो विदुः॥

* महाभाष्य का विभाजन आह्निकों में है-
'अह्ना निर्वृत्तम् आह्निकम्' - इस व्युत्पत्ति से यह प्रतीत होता है कि एक-एक दिन के अध्यापनीय विषय का संग्रह एक-एक आह्निक में हुआ है।

➢ **आचार्य कात्यायन-**

आचार्य पाणिनि ने अपने समय में विद्यमान भाषा का सम्यक्

परिशीलन करके नियमों (सूत्रों) का प्रणयन किया था। उनके समय में भाषा के रूप में संस्कृत प्रयुक्त होती थी।

* अतः पाणिनि के बाद सैकड़ों वर्षों के अन्तराल में जो नवीन शब्द प्रयुक्त होने लगे उनके लिए उन्होंने नियम नहीं बनाये थे। इस कार्य को आचार्य कात्यायन ने किया।
* पाणिनि सुदूर पश्चिम भारत में उत्पन्न हुए थे और महाभाष्यानुसार कात्यायन दक्षिण भारत में।
* पाणिनि के सूत्रों पर समीक्षात्मक और परिशिष्टात्मक रूप में नियम बनाने का सफल प्रयास कात्यायन ने वार्तिक प्रणयन के माध्यम से किया।
* इनका काल पाणिनि से कम से कम 200 वर्षों के बाद ही होना चाहिए। अतः इन्हें भी ईसा पूर्व 2600 से लेकर ई.पू. 3000 वर्षों के मध्य का माना जाता है।
* बड़े खेद की बात है कि आज तक कात्यायन के वार्त्तिकों का स्वतन्त्र तथा प्रामाणिक ग्रन्थ नहीं मिल सका।
* महाभाष्य के माध्यम से ही वार्तिकों का अध्ययन किया जाता है।
* उसमें कात्यायन के अतिरिक्त सुनाग आदि अन्य आचार्यों के भी वार्तिक उपलब्ध होते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'इह पुष्यमित्रं याजयामः' यह वाक्य पतञ्जलि से सम्बन्धित है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- महाभाष्य - जयशंकर लाल त्रिपाठी, भू. पेज 04

64. सांख्यदर्शनानुसारं पञ्चविंशतितत्त्वेषु गणना नास्ति-

(A) रसस्य **(B)** पुद्गलस्य
(C) श्रोत्रस्य **(D)** जलस्य

व्याख्या- सांख्यदर्शन के प्रणेता कपिलमुनि हैं। सांख्यदर्शन का ही प्रकरणग्रन्थ ईश्वरकृष्ण द्वारा प्रणीत सांख्यकारिका है जिसमें 25 तत्त्वों को बताया गया है-

मूलप्रकृतिरविकृतिर्महदाद्याः प्रकृतिविकृतयः सप्त।
षोडशकस्तु विकारो न प्रकृतिर्न विकृतिः पुरुषः॥3।

सांख्याभिमत मूल कारणरूप प्रकृति का विकार नहीं, महत् आदि सात तत्त्व (महत्, अहङ्कार एवं पञ्चतन्मात्राएँ) कारण और विकार दोनों हैं।

सोलह पदार्थों का समुदाय तो केवल विकार ही है। पुरुष न किसी का कारण होता है न विकार होता है।

सांख्यशास्त्र में उल्लिखित प्रमुख 25 तत्त्वों को चार भागों में विभाजित किया गया है-

प्रकृति (अविकृति) = मूलप्रकृति (प्रधान या अव्यक्त)
प्रकृति एवं विकृति = महत् (बुद्धि), अहङ्कार, पञ्चतन्मात्राएँ
केवल विकृति = पञ्चज्ञानेन्द्रियाँ, पञ्चकर्मेन्द्रियाँ, मन, पञ्चमहाभूत
न प्रकृति न विकृति = पुरुष

प्रकृति - 1
↓
महत् - 1
↓
अहङ्कार - 1
↓ ↓ ↓ ↓
(5) पञ्चज्ञानेन्द्रियाँ (5) पञ्चकर्मेन्द्रियाँ (1) मन (5) पञ्चतन्मात्राएँ
↓ ↓ ↓
(श्रोत्र, नेत्र, घ्राण, त्वक्, रसना) (वाक्, पाणि, पाद, पायु, उपस्थ) (शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध)

न प्रकृति न विकृति = पुरुष (1) (5) पञ्चमहाभूत
↓
(आकाश, वायु, तेज, जल, पृथिवी)

प्रकृति - 1	महत् - 1
अहङ्कार - 1	ज्ञानेन्द्रिय - 5
कर्मेन्द्रिय - 5	मन - 1
पञ्चतन्मात्रा - 5	पुरुष - 1

= 25 तत्त्व

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि सांख्यकारिका में पच्चीस तत्त्वों की गणना में 'पुद्गल' सम्मिलित नहीं है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- सांख्यकारिका - (कारिका 03)

65. कौटिलीयमते प्रव्रज्याप्रत्यवसितः प्रज्ञाशौचयुक्तः गूढपुरुषोऽस्ति-

(A) कापटिकः **(B)** गृहपतिकः
(C) वैदेहकः **(D)** उदास्थितः

व्याख्या- कौटिल्य कृत अर्थशास्त्र में पन्द्रह अधिकरण हैं। विनयाधिकारिक प्रथम अधिकरण में गूढपुरुष की चर्चा करते हैं-

- **उपधाभिः शुद्धामात्यवर्गो गूढपुरुषानुत्पादयेत् । कापटिकोदास्थितगृहपतिवैदेहकतापसव्यञ्जनान्**

सत्रितीक्ष्णरसदभिक्षुकीश्च।

धर्मोपधा आदि उपायों के द्वारा अमात्यवर्ग की परीक्षा कर लेने के अनन्तर राजा गुप्तचरों की नियुक्ति करें।

कापटिक, उदास्थित, गृहपतिक, वैदेहक, तापस, सत्री, तीक्ष्ण, रसद और भिक्षुकी आदि अनेक प्रकार के गुप्तचर होते हैं।

- **परमर्मज्ञः प्रगल्भश्छात्रः कापटिकः।**

  दूसरों के रहस्य को जानने वाला, बड़ा प्रगल्भ और विद्यार्थी की वेष-भूषा में रहने वाला गुप्तचर कापटिक कहलाता है।
- **प्रव्रज्याप्रत्यवसितः प्रज्ञाशौचयुक्त उदास्थितः।**

  बुद्धिमान्, सदाचारी, संन्यासी के वेष में रहने वाले गुप्तचर का नाम उदास्थित है।
- **कर्षको वृत्तिक्षीणः प्रज्ञाशौचयुक्तो गृहपतिकव्यञ्जनः।**

  बुद्धिमान्, पवित्र हृदय, और गरीब किसान के वेष में रहने वाले गुप्तचर को गृहपतिक कहते हैं।
- **वाणिजको वृत्तिक्षीणः प्रज्ञाशौचयुक्तो वैदेहक-व्यञ्जनः।**

  बुद्धिमान्, पवित्र हृदय और गरीब व्यापारी के वेष में रहने वाला गुप्तचर वैदेहक है।
- **मुण्डो जटिलो वा वृत्तिकामस्तापसव्यञ्जनः।**

  जीविका के लिए सिर मुड़ाये या जटाधारण किये हुए राजा का कार्य करने वाला तापस गुप्तचर ही तापस है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि गुप्तचरों में प्रव्रज्या प्रत्यवसितः प्रज्ञाशौचयुक्त 'उदास्थितः' है।

अतः विकल्प 'D' सही है।

स्रोत- कौटिलीय अर्थशास्त्र - वाचस्पति गैरोला, पेज 30-31

66. याज्ञवल्क्यस्मृतेः व्यवहाराध्याये प्रकरणानां क्रमोऽस्ति-

(A) ऋणादान-उपनिधि-साक्षि-लेख्य-दिव्य-सीमाविवाद-दायविभागप्रकरणम्

(B) दिव्य-लेख्य-साक्षि-उपनिधि-ऋणादान-सीमाविवाद-दायविभागप्रकरणम्

(C) ऋणादान-उपनिधि-साक्षि-लेख्य-दिव्य-दायविभाग-सीमाविवादप्रकरणम्

(D) साक्षि-लेख्य-दिव्य-उपनिधि-ऋणादान-सीमाविवाद-दायविभागप्रकरणम्

व्याख्या- * महर्षि याज्ञवल्क्यप्रणीत याज्ञवल्क्यस्मृति है।

* यह शुक्लयजुर्वेद के द्रष्टा थे।
* इसमें वेदाङ्ग और चौदह विद्याओं = चार वेद, छः वेदाङ्ग, पुराण, न्याय-मीमांसा और धर्मशास्त्र की चर्चा हुई है।
* याज्ञवल्क्यस्मृति के सुप्रसिद्ध टीकाकार विश्वरूप, विज्ञानेश्वर, अपरार्क ने वृद्ध याज्ञवल्क्य को अनेक बार उद्धृत किया है।
* याज्ञवल्क्य स्मृति में एक हजार श्लोक हैं, जो अनुष्टुप् छन्द में हैं।
* याज्ञवल्क्यस्मृति तीन अध्यायों में विभक्त है- आचाराध्याय, व्यवहाराध्याय, प्रायश्चित्ताध्याय। व्यवहाराध्याय में क्रमशः प्रकरण हैं-

1. साधारणव्यवहारमातृकप्रकरणम्
2. असाधारणव्यवहारमातृकप्रकरणम्
3. ऋणादानप्रकरणम्
4. उपनिधिप्रकरणम्
5. साक्षिप्रकरणम्
6. लेख्यप्रकरणम्
7. दिव्यप्रकरणम्
8. दायविभागप्रकरणम्
9. सीमाविवादप्रकरणम्
10. स्वामिपालविवादप्रकरणम्
11. स्वामिविक्रयप्रकरणम्
12. दत्ताप्रदानिकप्रकरणम्
13. क्रीतानुशयप्रकरणम्
14. अभ्युपेत्याशुश्रूषाप्रकरणम्
15. संविद्व्यतिक्रमप्रकरणम्
16. वेतनादानप्रकरणम्
17. द्यूतसमाह्वयप्रकरणम्
18. वाक्पारुष्यप्रकरणम्
19. दण्डपारुष्यप्रकरणम्
20. साहसप्रकरणम्
21. विक्रीयासंप्रदानप्रकरणम्
22. संभूयसमुत्थानप्रकरणम्
23. स्तेयप्रकरणम्
24. स्त्रीसंग्रहणप्रकरणम्
25. प्रकीर्णप्रकरणम्

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि याज्ञवल्क्यस्मृति के व्यवहाराध्याय में क्रमशः प्रकरण हैं- ऋणादान-उपनिधि-साक्षि-लेख्य-दिव्य-दायविभाग-सीमाविवाद प्रकरण। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- याज्ञवल्क्यस्मृति- गङ्गासागर राय, भू. पेज 1-14

67. यत्समवायिकारणप्रत्यासन्नमवधृतसामर्थ्यं तदसमवायिकारणम् यथा- तन्तुसंयोगः पटस्यासमवायि-कारणम्। तन्तुसंयोगस्य गुणस्य, पटसमवायिकारणेषु तन्तुषु गुणिषु समवेतत्वेन प्रत्यासन्नत्वात्। अनन्यथासिद्ध नियतपूर्वभावित्वेन पटं प्रति कारणत्वाच्च। इति सिद्धान्तानुसारेण तन्तुसंयोगः पटस्य कीदृशं कारणम् भवति?

(A) असमवायिकारणम् **(B)** समवायिकारणम्

(C) संयोगकारणम् **(D)** निमित्तकारणम्

व्याख्या- आचार्य गौतम प्रणीत न्यायदर्शन का प्रकरण ग्रन्थ

तर्कभाषा है जो केशव मिश्र द्वारा रचित है। इसमें तीन कारणों की चर्चा हुई है- समवायि कारण, असमवायि कारण और निमित्त कारण।

1. समवायिकारण- यत्समवेतं कार्यमुत्पद्यते तत्समवायिकारणम्। अतस्तन्तुरेव समवायिकारणं पटस्य न तु तुर्यादि।

जिसमें समवेत होकर कार्य उत्पन्न होता है वह समवायि कारण है। इसलिये तन्तु ही पट के समवायि कारण हैं, तुरी आदि नहीं।

2. असमवायिकारणम्-

यत्समवायिकारणप्रत्यासन्नमवधृतसामर्थ्यं तदसमवायिकारणम्। यथा तन्तुसंयोगः पटस्यासमवायिकारणम् तन्तुसंयोगस्य गुणस्य, पटसमवायिकारणेषु तन्तुषु गुणिषु समवेतत्वेन समवायिकारणे प्रत्यासन्नत्वात् अनन्यथासिद्धनियतपूर्वभावित्वेन पटं प्रति कारणत्वाच्च। एवं तन्तुरूपं पटरूपस्य असमवायिकारणम्।

तन्तुसंयोग पट का असमवायि कारण है, क्योंकि तन्तुसंयोग गुण है, वह पट के समवायि कारण तन्तु नामक गुणों में समवाय सम्बन्ध से रहता है। अतः पट के समवायि कारण में प्रत्यासन्न है और वह अनन्यथासिद्ध पूर्वभावी होने से पट के प्रति कारण भी है।

इसी प्रकार तन्तु का रूप पट के रूप का असमवायि कारण है।

3. निमित्तकारण-

निमित्तकारणं तदुच्यते यन्न समवायिकारणम् नाप्य समवायिकारणम् अथ च कारणम्। यथा वेमादिकं पटस्य निमित्तकारणम्।

जो न समवायि कारण है, न ही असमवायि कारण है, किन्तु कारण है वह निमित्त कारण कहलाता है, जैसे वेमा आदि पट का निमित्त कारण है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'यत्समवायिकारण-प्रत्यासन्नमवधृतसामर्थ्यं तदसमवायिकारणम्।' यह असमवायि कारण है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- तर्कभाषा - श्रीनिवासशास्त्री - 33-39

68. 'गो अग्रम्' इत्यत्र न सम्भवति-

(A) प्रकृतिभावः **(B)** पूर्वरूपम्
(C) अवङादेशः **(D)** संहिताया अभावः

व्याख्या-

सूत्र- प्रकृतिभावविधायक विधिसूत्र

पदपरिचय - सर्वत्र (अव्ययपद), पदान्तस्य (6.1) एङः (6.1), गोः (6.1), अति (7.1), विभाषा (1.1), प्रकृत्या (3.1)

अनुवृत्ति/ अधिकार- 'एङः पदान्तादति' से 'पदान्तात्' की 'एङः' की तथा 'अति' की अनुवृत्ति एवं 'प्रकृत्यान्तः पादमव्ययपरे' से 'प्रकृत्या' की अनुवृत्ति।

सूत्रार्थ- लौकिक एवं वैदिक संस्कृत के प्रयोगों में एङन्त 'गो' शब्द को पदान्त में विकल्प से प्रकृतिभाव होता है।

जैसे- गो + अग्रम् = गोअग्रम् / गोऽग्रम् (गाय का अग्रभाग)

➢ प्रकृतिभाव न होने के पक्ष में अवङ् आदेश होकर गवाग्रम् भी बनता है जो आगे 'अवङ् स्फोटायनस्य' सूत्र में बताया गया है।

➢ एङन्त गो के बाद अग्रम् के अ स्वर आने पर पूर्वरूप सन्धि होकर 'गोऽग्रम्' 'एङः पदान्तादति' से, प्रकृतिभाव के अभाव में बना।

➢ सन्धि के लिये संहिता का होना अनिवार्य है यदि संहिता नहीं होगी पदों में तो सन्धि सम्भव नहीं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि गो अग्रम् प्रकृतिभाव, पूर्वरूप और अवङ् आदेश होता है परन्तु संहिता का अभाव होने से सन्धि होना सम्भव नहीं है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- L.T. मिशन - सर्वज्ञभूषण, पेज 101

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज 55-57

69. कथनद्वयमधोलिखितम् एकम् (A) इति अभिकथनम् अपरञ्च (R) इति कारणम् ।

अभिकथनम् (A) - वाल्मीके रामः सीता-वियोगे कारुण्य-आनृशंस्य-शोके-मदनरूप-चतुर्मुखी-सन्तापेन सन्तप्तो भवति।

कारणम् (R) - सर्वेऽपि पुरुषा भार्या-वियोगे सन्तप्ताः भवन्ति।

उपर्युक्तानुसारं समीचीनं विकल्पं चिनुत-

(A) (A) तथा (R) उभौ अपि सत्यम् (R) इति समुचितं कारणमस्ति (A) इत्यस्य।
(B) (A) तथा (R) उभौ अपि सत्यं किन्तु (R) इति उचितं नास्ति (A) इत्यस्य
(C) (A) इति सत्यम् (R) इति असत्यम्
(D) (A) तथा (R) उभौ अपि सत्यम्

व्याख्या- उपर्युक्त कथन (A) में कहा गया है कि वाल्मीकि

के राम सीता वियोग में करुणा से भरे हुये शोक में मदनरूपी चतुर्मुखी सन्ताप से सन्तप्त होते हैं। अर्थात् वाल्मीके रामः सीतावियोगे कारुण्य .... सन्तप्तो भवति।

कथन (R) में कहा गया है कि 'सर्वेऽपि पुरुषा भार्या वियोगे सन्तप्ताः भवन्ति।' अर्थात् सभी पुरुष भार्या अर्थात् पत्नी के वियोग में सन्तप्त होते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट होता है कि कथन (A) और (R) दोनों सही है। किन्तु कथन (A) का कथन (R) उचित कारण नहीं है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

70. दीप्त्या च धैर्येण च यो रराज बालो रविर्भूमिमिवावतीर्णः।
तथातिदीप्तोऽपि निरीक्ष्यमाणो जहार चक्षूंषि यथा शशाङ्कः।।
श्लोकेऽस्मिन् किं छन्दः कश्चात्र अलङ्कारः?

(A) मालिनी वृत्तम्, परिकरालङ्कारः
(B) आर्यावृत्तम् , उत्प्रेक्षालङ्कारः
(C) उपजातिवृत्तम्, उपमालङ्कारः
(D) वंशस्थवृत्तम्, रूपकालङ्कारः

व्याख्या- अश्वघोष कृत बुद्धचरितम् 28 सर्गों का एक महाकाव्य है। भगवत्प्रसूति नामक प्रथम सर्ग में बुद्ध के विषय में कहा गया है-

दीप्त्या च धैर्येण च यो रराज बालो रविर्भूमिमिवावतीर्णः।
तथातिदीप्तोऽपि निरीक्ष्यमाणो जहार चक्षूंषि यथा शशाङ्कः
॥ 1/12॥

तेज एवं धैर्य से वह, भूमि पर आये हुए बाल सूर्य की भाँति, शोभित हुआ और अत्यन्त तेजस्वी होने पर भी, देखे जाने पर, नेत्र चन्द्रमा के समान हर लेता था।

आचार्य मम्मट के अनुसार

उपमा का लक्षण - साधर्म्यमुपमा भेदे।

उपमान और उपमेय का भेद होने पर उनके साधर्म्य का वर्णन उपमा कहलाता है।

उपमा के प्रमुख अंग हैं- उपमेय, उपमान, साधारण धर्म और वाचक शब्द।

जैसे- दीप्त्या च धैर्येण च यो रराज बालो, रविर्भूमिमिवावतीर्णः।

उपर्युक्त उदाहरण में बुद्ध उपमेय है, बालसूर्य उपमान है, तेज साधारणधर्म तथा 'इव' उपमावाचक शब्द है। इस प्रकार इसमें उपमा अलंकार है।

उपजाति छन्द - उपजाति छन्द के भी प्रत्येक चरण में 11 वर्ण होते हैं। इस प्रकार चारों चरणों में कुल 11 x 4 = 44 वर्ण होते हैं।

छन्द लक्षण-

अनन्तरोदीरितलक्ष्मभाजौ, पादौ यदीयावुपजातयस्ताः।
(वृत्तरत्नाकर 3/30)

जिस छन्द के दो चरण इन्द्रवज्रा तथा उपेन्द्रवज्रा के लक्षण से युक्त हों, उसे उपजाति छन्द कहते हैं।

उदाहरण-

तगण तगण जगण गुरु गुरु
ऽ ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ।
दीप्त्या च धैर्येण च यो रराज (इन्द्रवज्रा)
ऽ ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ
बालो रविर्भूमिमिवावतीर्णः।
जगण तगण जगण गुरु गुरु
। ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ । ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ
तथापिदीप्तोऽपि निरीक्ष्यमाणो जहार चक्षूंषि यथा शशाङ्कः।
(उपेन्द्रवज्रा)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'दीप्त्या च धैर्येण च यो रराज ....' इसमें उपमा अलङ्कार और उपजाति छन्द है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- (बुद्धचरितम् 1/12)

71. अधोऽङ्कितेषु केन सह कस्य सम्बन्धः -

(a)	**माध्यमिकाः**	**(i)**	**बाह्यार्थशून्यम्**
(b)	**योगाचाराः**	**(ii)**	**बाह्यार्थप्रत्यक्षम्**
(c)	**सौत्रान्तिकाः**	**(iii)**	**सर्वं शून्यम्**
(d)	**वैभाषिकाः**	**(iv)**	**बाह्यार्थानुमेयम्**

समुचितं विकल्पं चिनुत -

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	(iii)	(i)	(iv)	(ii)
(B)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(C)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)
(D)	(iii)	(ii)	(iv)	(i)

व्याख्या- बौद्ध दर्शन के सुप्रसिद्ध चार सम्प्रदाय हैं- (1) माध्यमिक (2) योगाचार (3) सौत्रान्तिक (4) वैभाषिक

ते च बौद्धाश्चतुर्विधया भावनया परमपुरुषार्थं कथयन्ति। ते च माध्यमिक-योगाचार-सौत्रान्तिक वैभाषिकसंज्ञाभिः प्रसिद्धा बौद्धा यथाक्रमं सर्वशून्यत्व-बाह्यार्थशून्यत्व-बाह्यार्थानुमेयत्वबाह्यार्थ-प्रत्यक्षत्ववादानातिष्ठन्ते।

* वे बौद्ध लोग चार प्रकार की भावना (दृष्टिकोण) से परम पुरुषार्थ का वर्णन करते हैं।
* ये बौद्ध माध्यमिक, योगाचार, सौत्रान्तिक और वैभाषिक नाम से प्रसिद्ध हैं।

1. माध्यमिक - सर्वं शून्यत्वं सब कुछ शून्य होना
2. योगाचार - बाह्यार्थशून्यं (बाह्य पदार्थों का शून्य होना)
3. सौत्रान्तिक - बाह्यार्थानुमेयत्वम् (बाह्य पदार्थों का अनुमान से ज्ञात होना)
4. वैभाषिक - बाह्यार्थप्रत्यक्षत्वम् (बाह्य पदार्थों का प्रत्यक्ष से ज्ञान होना।)

भावना चतुष्ट्य -

सर्वं क्षणिकं क्षणिकं, दुखं दुःखं, स्वलक्षणं स्वलक्षणं, शून्यं-शून्यमिति भावनाचतुष्टयमुपदिष्टं द्रष्टव्यम् ।

चारों भावनाएँ इस प्रकार उपदिष्ट हुई हैं-

1. सब कुछ क्षणिक है क्षणिक
2. सब कुछ दुःख है दुःख
3. सभी का लक्षण अपने आपमें है
4. सब कुछ शून्य है शून्य

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि माध्यमिकाः - सर्वं शून्यम्, योगाचाराः - बाह्यार्थशून्यम्, सौत्रान्तिकाः - बाह्यार्थानुमेयम् वैभाषिकाः - बाह्यार्थप्रत्यक्षम् यह सुमेलित है।

अतः विकल्प 'A' सही है।

स्रोत- सर्वदर्शनसंग्रह - उमाशङ्कर शर्मा ऋषि, पेज 31

72. ससायणभाष्यर्ग्वेदसंहितां सम्पाद्य तस्याः प्रकाशनकार्यं प्रथमं केन वैदेशिकेन कृतमस्ति?

(A) मैक्समूलरेण **(B)** वेबरेण
(C) जैकोबी महोदयेन **(D)** विण्टरनित्समहोदयेन

व्याख्या- * भारतीय वाङ्मय की ओर पाश्चात्त्य विद्वानों का ध्यान आकृष्ट करने का श्रेय सर विलियम जोन्स को है।

* यह संस्कृत, अरबी, फारसी के विद्वान् थे। इन्होंने रॉयल एशियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल की स्थापना की।
* फ्रांस के प्रो. बर्नफ ने कई योग्य संस्कृत प्रेमी विद्वान् तैयार किए, इनमें मैक्समूलर, रोठ और ह्विटनी मुख्य हैं।
* **मैक्समूलर -** मैक्समूलर का जन्म जर्मनी के डेशों नामक स्थान में 6 दिसम्बर 1823 को हुआ था। 19 वर्ष में डाक्टर ऑफ फिलासफी की उपाधि प्राप्त की।
  इन्होंने सर्वप्रथम सायणभाष्य के साथ ऋग्वेद के प्रकाशन की एक योजना बनाई।
  सन् 1849-1875 ई. तक इनका प्रकाशन का कार्य पूरा हुआ।
  यह कार्य 27 वर्षों के घोर परिश्रम के बाद पूर्ण हुआ।
* **वेबर -** डा. वेबर ने यजुर्वेदसंहिता एवं तैत्तिरीयसंहिता का सम्पादन किया है।
* **विन्टरनित्स -** इन्होंने तीन भागों में History of Indian Literature (भारतीय साहित्य का इतिहास) निकाला था। मूल ग्रन्थ जर्मन भाषा में है। इसका अंग्रेजी अनुवाद है जिसके भाग-1 का हिन्दी अनुवाद भी निकला है।
* **विल्सन -** डा. विल्सन ने 1850 ई. में सायणभाष्य के साथ सम्पूर्ण ऋग्वेद का अंग्रेजी में अनुवाद प्रकाशित किया है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि ससायणभाष्य ऋग्वेद संहिता का प्रथम बार प्रकाशन मैक्समूलर ने करवाया था।

अतः विकल्प 'A' सही है।

स्रोत- वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज 19

73. भोजप्रबन्धानुसारं शिलालेख-लिपिवाचनं कथ्यते-

(A) लिपिपरीक्षा **(B)** शिलापरीक्षा
(C) जतुपरीक्षा **(D)** पाण्डुपरीक्षा

व्याख्या- भोजप्रबन्ध बल्लाल कवि विरचित राजा भोज पर आश्रित दन्तकथाओं का एक संग्रह ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ में कालिदास आदि अनेक कवियों को किम्वदन्तियों और कल्पनाओं के आधार पर राजा भोज के समकालीन दर्शाया है।

भोजप्रबन्ध की एक कथा में नर्मदा की एक बड़ी झील में धीवरों ने कुछ मिटे हुए अक्षरों वाला एक पत्थर देखा। उस पर लिखे लेख का जतु (लाख) द्वारा परीक्षण कर के शुद्धपाठ ज्ञात किया, इसी प्रक्रिया को भोज प्रबन्ध में जतुपरीक्षा कहा गया है। जैसे-

ततः किमिदं लिखितमित्यवश्यं विचार्यमिति लिपिज्ञानं कार्यम्। जतुपरीक्षयाऽक्षराणि परिज्ञाय पठति।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि भोजप्रबन्धानुसार

शिलालेख लिपिवाचन को 'जतुपरीक्षा' कहा जाता है।

अतः विकल्प 'C' सही है।

स्रोत- भोजप्रबन्ध - केदारनाथ, पेज 146

74. अधोलिखितानां ग्रन्थानां रचनाकालदृष्ट्या समुचितं क्रमं चिनुत-

(A) काशिका, वाक्यपदीयम्, सारस्वतव्याकरणम्, प्रदीपः
(B) वाक्यपदीयम्, काशिका, सारस्वतव्याकरणम्, प्रदीपः
(C) वाक्यपदीयम्, काशिका, प्रदीपः, सारस्वतव्याकरणम्
(D) वाक्यपदीयम्, प्रदीपः, काशिका, सारस्वतव्याकरणम्

व्याख्या- (1) जयादित्य और वामन - (सं. 650-700 वि.)

* जयादित्य और वामन दोनों की सम्मिलित रूप से रचित वृत्ति 'काशिका' नाम से प्रसिद्ध है।
* महाभाष्य और भर्तृहरि विरचित ग्रन्थों के बाद काशिकावृत्ति सर्वाधिक समादृत और महत्त्वपूर्ण मानी जाती है।
* काशिका की प्राचीनतम व्याख्या जिनेन्द्रबुद्धि विरचित 'काशिकाविवरणपञ्जिका' अपर नाम 'न्यास' है।
* जयादित्य और वामन का काल लगभग सं. 650-700 वि. माना जाता है।

(2) वाक्यपदीयम् - महावैयाकरण भर्तृहरि महाभाष्य के टीकाकार, वाक्यपदीय के कर्ता और भागवृत्ति के वृत्तिकार के साथ कतिपय अन्य कृतियों के भी लेखक माने जाते हैं।

भर्तृहरि नाम का एक व्यक्ति था या अनेक इस विषय पर विचार करने के लिए भर्तृहरि के नाम से प्रसिद्ध ग्रन्थों पर पहले विचार करना आवश्यक है।

संस्कृत वाङ्मय में भर्तृहरिविरचित निम्न ग्रन्थ प्रसिद्ध हैं-

महाभाष्य-दीपिका

वाक्यपदीय - तीनों काण्ड

वाक्यपदीय की स्वोपज्ञवृत्ति प्रथम और द्वितीय काण्ड, नीतिशतक, शृङ्गारशतक और वैराग्यशतक, जैमिनीय मीमांसावृत्ति, वेदान्तसूत्रवृत्ति, शब्दधातु समीक्षा, भट्टिकाव्य, भागवृत्ति।

इनमें से प्रथम तीन ग्रन्थों की परस्पर तुलना करने से विदित हो जाता है कि इन तीनों का कर्ता एक ही व्यक्ति है, वह है महावैयाकरण भर्तृहरि। वाक्यपदीय की रचना वि. सं. 400 से अर्वाचीन नहीं है। वह सप्रमाण सिद्ध किया जा चुका है, अतः वही काल महाभाष्यदीपिका की रचना का भी है।

(3) कैयट कृत महाभाष्य की प्रदीप टीका-

* कैयट कृत महाभाष्य की टीका प्रदीप, प्रदीपभाष्य और महाभाष्यप्रदीप इन विभिन्न तीन नामों से व्यवहृत होती है।
* कैयट ने अपनी टीका के प्रारम्भ में लिखा है कि मैने यह व्याख्या भर्तृहरि निबद्ध साररूप ग्रन्थसेतु के आश्रय से रची है। यहाँ * सार शब्द के निर्देश से स्पष्ट है कि कैयट का अभिप्राय भर्तृहरि विरचित वाक्यपदीय और प्रकीर्ण काण्ड से है।
* कैयट का काल अधिक से अधिक विक्रम की ग्यारहवीं शती का उत्तरार्द्ध माना जा सकता है।

(4) सारस्वत-व्याकरणकार (सं. 1150 वि. के लगभग)

* सारस्वतसूत्रों का मूल रचयिता नरेन्द्राचार्य नामक वैयाकरण है।
* विट्ठल ने प्रक्रियाकौमुदी की टीका में नरेन्द्राचार्य को अनेकत्र उद्धृत किया है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि कालदृष्टि के अनुसार क्रमशः भर्तृहरि- वाक्यपदीयम् सं.- 400, वामन कृत काशिका सं. 650-700 वि., कैयट कृत प्रदीप टीका- 11वीं शती उत्तरार्द्ध, सारस्वतव्याकरण- नरेन्द्रकृत जिसका समय 1150 वि. के लगभग है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- व्याकरणशास्त्र का इतिहास युधिष्ठिर मीमांसा, भू. पेज 237,171,169,147

75. 'ब्रह्मचर्यं भूमौ शय्या जटाऽजिनधारणमग्निहोत्राभिषेकौ देवतापित्रतिथिपूजा वन्यश्चाहारः' इति कौटिलीयमते कस्य धर्मोऽस्ति?

(A) ब्रह्मचारिणः **(B)** गृहस्थस्य
(C) वानप्रस्थस्य **(D)** परिव्राजकस्य

व्याख्या- कौटिल्य कृत अर्थशास्त्र जिसमें पन्द्रह अधिकरण, 180 प्रकरण तथा 150 अध्याय हैं।

* प्रथम अधिकरण का नाम है- विनयाधिकारिक। इसमें कुल 21 अध्याय हैं।
* प्रथम अधिकरण में राजा के अनुशासन, शास्त्र शिक्षा, मन्त्रियों तथा पुरोहित के गुण, उनके प्रलोभन, गुप्तचर, सभा, राजदूत आदि का वर्णन है।
* त्रयी स्थापना के अन्तर्गत त्रयी की चर्चा हुई है-

सामर्ग्यजुर्वेदास्त्रयस्त्रयी।

साम, ऋक् तथा यजुः इन तीनों वेदों का समन्वित नाम ही त्रयी है।

* **स्वधर्मो ब्राह्मणस्याध्ययनमध्यापनं यजनं याजनं दानं**

प्रतिग्रहश्चेति।

ब्राह्मण का धर्म अध्ययन अध्यापन, यजन याजन और दान देना तथा दान लेना है।

* **क्षत्रियस्याध्ययनं यजनं दानं शस्त्राजीवो भूतरक्षणं च।** क्षत्रिय का धर्म पढ़ना, यज्ञ करना, दान देना, शस्त्र बल से जीविकोपार्जन करना और प्राणियों की रक्षा करना।
* **वैश्यस्याध्ययनं यजनं दानं कृषिपाशुपाल्ये वाणिज्या च।** वैश्य का धर्म पढ़ना, यज्ञ करना, दान देना, कृषिकार्य एवं पशुपालन और व्यापार करना है।
* **शूद्रस्य द्विजातिशुश्रूषा वार्ता कारुकुशीलवकर्म च।** शूद्र का अपना धर्म है कि वह ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य की सेवा करे और शिल्प तथा रंगमञ्चीय कार्य करें।
* **गृहस्थस्य स्वकर्माजीवस्तुल्यैरसमानर्षिभिर्वैवाह्यमृतुगामित्वं देवपित्रतिथिभृत्येषु त्यागः शेषभोजनं च।** गृहस्थ अपनी परम्परा के अनुकूल कार्यों द्वारा जीविकोपार्जन करें, अनुरूप श्रेणी के व्यक्तियों तथा असगोत्र समाज में विवाह, ऋतुगामी हो, देव, पितर, अतिथि और भृत्यजनों को देकर सबसे अन्त में भोजन करें।
* **ब्रह्मचारिणः स्वाध्यायोऽग्निकार्याभिषेकौ भैक्षव्रतत्त्वमाचार्ये प्राणान्तिकी वृत्तिस्तदभावे गुरुपुत्रे सब्रह्मचारिणि वा।**

ब्रह्मचारी का धर्म है कि वह नियमित स्वाध्याय करे, अग्निहोत्र करे, नित्य स्नान करे, गुरु के लिए प्राण तक त्यागने को उद्यत रहे, भिक्षाटन करे, गुरु की अनुपस्थिति में गुरुपुत्र अथवा अपने किसी समान शाखाध्यायी के निकट रहे।

* **वानप्रस्थस्य ब्रह्मचर्यं भूमौ शय्या जटाऽजिनधारणमग्निहोत्राभिषेकौ देवतापित्रतिथिपूजा वन्यश्चाहारः -**

वानप्रस्थी का धर्म है- ब्रह्मचर्यपूर्वक रहना, भूमि पर शयन करना, जटा मृगचर्म को धारण किये रहना, अग्निहोत्र तथा प्रतिदिन स्नान करना, देव, पितर एवं अभ्यागतों की सेवा-पूजा करना और वन के कन्द मूल फल पर निर्वाह करना।

* **परिव्राजकस्य संयतेन्द्रियत्वमनारम्भो निष्किञ्चनत्वं सङ्गत्यागो भैक्षमनेकत्रारण्यवासो बाह्याभ्यन्तरं च शौचम् ।**

संन्यासी का धर्म है- जितेन्द्रिय होना, वह किसी भी सांसारिक कार्य को न करे, निष्किंचन बना रहे, एकाकी रहे, प्राणरक्षा मात्र के लिए स्वल्प आहार, समाज में न रहे, जंगल में भी एक स्थान पर न रहता रहे, मन, वचन, कर्म से अपना बाह्याभ्यन्तर पवित्र रखे।

* **सर्वेषामहिंसा सत्यं शौचमनसूयाऽऽनृशंस्यं क्षमा च**

प्रत्येक वर्ण और प्रत्येक आश्रम का धर्म है कि वह किसी भी प्रकार की हिंसा न करे, सत्य बोले, पवित्र बना रहे, किसी से ईर्ष्या न करे, दयावान् और क्षमाशील बना रहे।

* **स्वधर्मः स्वर्गायानन्त्याय च। तस्यातिक्रमे लोकः सङ्करादुच्छिद्येत।**

अपने धर्म का पालन करने से स्वर्ग और मोक्ष की प्राप्ति होती है। उसका पालन न करने से वर्ण और कर्म में संकरता आ जाती है, जिससे लोक का नाश हो जाता है।

* **तस्मात्स्वधर्मं भूतानां राजा न व्यभिचारयेत् ।**
स्वधर्मं संदधानो हि प्रेत्य चेह च नन्दति॥ (1.3.16)
व्यवस्थितार्यमर्यादः कृतवर्णाश्रमस्थितिः।
त्रय्या हि रक्षितो लोकः प्रसीदति न सीदति॥ (1.3.17)

इसलिए राजा का कर्तव्य है कि वह ब्रह्म प्रजा को धर्म और कर्म मार्ग से भ्रष्ट न होने दे। अपनी प्रजा को धर्म और कर्म में प्रवृत्त रखने वाला राजा लोक और परलोक में सुखी रहता है। पवित्र आर्यमर्यादा में अवस्थित, वर्णाश्रम धर्म में नियमित और त्रयी धर्म से रक्षित प्रजा दुःखी नहीं होती, सदा सुखी रहती है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'ब्रह्मचर्यं भूमौ शय्या जटाऽजिनधारणमग्निहोत्राभिषेकौ ....' यह पंक्ति कौटिलीयमते वानप्रस्थधर्म से सम्बन्धित है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- कौटिलीय अर्थशास्त्र - वाचस्पति गैरोला, पेज 11

76. शुक्लयजुर्वेदसंहितायाः कतमोऽध्याय ईशोपनिषद् -
(A) विंशतितम् **(B)** षोडशतमः
(C) चत्वारिंशत्तमः **(D)** एकोनविंशतितमः

व्याख्या- ➢ ईशावास्योपनिषद् शुक्लयजुर्वेद काण्वशाखीय संहिता का चालीसवाँ अध्याय है।

➢ मन्त्रभाग का अंश होने से इसका विशेष महत्त्व है। इसी को सबसे पहला उपनिषद् माना जाता है।

➢ शुक्लयजुर्वेद के प्रथम उनतालीस अध्यायों में कर्मकाण्ड का निरूपण हुआ है। यह उस काण्ड का अन्तिम अध्याय है और इसमें भगवत्तत्वरूप ज्ञानकाण्ड का निरूपण किया गया है।

* इसके पहले मन्त्र में 'ईशावास्यम्' वाक्य आने से इसका नाम

'ईशावास्य' माना गया है।

ॐ ईशा वास्यमिद ँ सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत् ।
तेन व्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम् ॥1॥

अखिल ब्रह्माण्ड में, जो कुछ भी, जडचेतन स्वरूप जगत् है, यह समस्त ईश्वर से व्याप्त है, उस ईश्वर को साथ रखते हुए त्यागपूर्वक इसे भोगते रहो आसक्त मत होओ। धन, भोग्यपदार्थ किसका है अर्थात् किसी का भी नहीं है।

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छत ँ समाः।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे ॥2॥

जगत् के एकमात्र कर्ता, धर्ता, हर्ता, सर्वशक्तिमान्, सर्वमय परमेश्वर का सतत स्मरण रखते हुए सब कुछ उन्हीं का समझकर उन्हीं की पूजा के लिए शास्त्रनियत कर्तव्याकर्मों का आचरण करते हुए ही सौ वर्षों तक जीने की इच्छा करो।

असुर्या नाम ते लोका अन्धेन तमसाऽऽवृताः।
ता ँ स्ते प्रेत्याभिगच्छन्ति ये के चात्महनो जनाः ॥3॥

असुरों की प्रसिद्ध नाना प्रकार की योनियाँ एवं नरकरूप लोक हैं, वे सभी अज्ञान तथा दुःख क्लेश रूप महान् अन्धकार से आच्छादित है, जो कोई भी आत्मा की हत्या करने वाले मनुष्य हों वे मरकर उन्हीं भयङ्कर लोकों को बार-बार प्राप्त होते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि शुक्लयजुर्वेदसंहिता के चालीसहवें अध्याय में ईशोपनिषद् है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- ईशादि नौ उपनिषद् - गीताप्रेस, पेज 01

77. महाभारतस्य खिलपर्व कथ्यते-

(A) मत्स्यपुराणम् **(B)** स्कन्दपुराणम्
(C) हरिवंशपुराणम् **(D)** पद्मपुराणम्

व्याख्या- वर्तमान महाभारत अठारह पर्वों में विभक्त है। जिसमें अनेक उपपर्व मुख्य घटनाओं के शीर्षक के रूप में हैं।

* यहाँ महाभारत के परिशिष्ट के रूप में स्वतन्त्र ग्रन्थ होने के कारण हरिवंशपुराण को खिलपर्व कहा जाता है।
* इसमें 16374 श्लोक हैं। इसे भी वैशम्पायन ने जनमेजय को सुनाया था।
* यह भी महाभारत के समान अनेक लेखकों की रचना के रूप में है।
* इसका अन्तिम पर्व (भविष्यपर्व) परिशिष्ट है और काल की दृष्टि से बहुत बाद की रचना है।
* इस ग्रन्थ के तीन खण्ड (पर्व) हैं- हरिवंश पर्व, विष्णुपर्व और भविष्यपर्व।
* हरिवंशपर्व में कृष्ण के वंश (वृष्णि, अन्धक) की कथा विस्तार से वर्णित है, इसी के नाम पर पूरे ग्रन्थ का नाम दिया गया है।
* पुराणों की दृष्टि से सृष्टि का वर्णन ध्रुव, दक्ष, वेन और पृथु के आख्यान, सूर्यवंश के वर्णन के प्रसंग में विश्वामित्र और वसिष्ठ की कथा एवं चन्द्रवंश के वर्णनक्रम में उर्वशी पुरूरवा नहुष, ययाति, यदु, वसुदेव तथा कृष्ण की कथाएँ वर्णित हैं।
* विष्णुपर्व सबसे बड़ा भाग है जिसमें महाभारत के नायक कृष्ण की विविध लीलाओं का वर्णन है।
* कृष्ण के पुत्र प्रद्युम्न तथा पौत्र अनिरुद्ध के विवाहों का भी विस्तृत विवरण है।
* भागवत में निरूपित कृष्णकथा से कहीं-कहीं विवरणों में पार्थक्य है। अतः प्राचीनतम कृष्णकथा का प्रतिनिधित्व इसमें मिलता है।
* भविष्यपर्व में विविध वृत्तों का पौराणिक शैली में परस्पर असम्बद्ध विवरण है।
* विष्णु के अवतारों का वर्णन, शिव और विष्णु की उपासना का समन्वय एवं शिव के दो उपासकों (हंस तथा डिम्भ) की कृष्ण द्वारा पराजय की कथा के अतिरिक्त अन्त में महाभारत और हरिवंश के माहात्म्य का निरूपण है।
* ध्वन्यालोक में आनन्दवर्धन ने कहा है कि कृष्णद्वैपायन ने महाभारत का हरिवंश के द्वारा समापन करके शान्तरस की पुष्टि की है।
* इस प्रकार हरिवंश को प्राचीन काल से ही महाभारत का अंश माना गया है।
* आदिपर्व के द्वितीयाध्याय में जो महाभारत में 100 पर्व माने गये हैं उनमें हरिवंश भी सम्मिलित हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि महाभारत के हरिवंश पर्व को ही 'खिल पर्व' कहा जाता है।
अतः विकल्प 'C' सही है।

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा ऋषि, पेज 159

78. पाणिनीयशिक्षानुसारं शम्भुमते मताः वर्णा सन्ति-

a 61 **b** 62
c 63 **d** 64

अधोलिखितेषु समुचितं विकल्पं चिनुत -

(A) a एवं d **(B)** b एवं c
(C) c एवं d **(D)** a एवं d

याख्या- पाणिनि कृत पाणिनीयशिक्षा में वर्णों से सम्बन्धित श्लोक हैं। इस श्लोक में वर्णों की संख्या बतायी गयी है- जिसमें पूरे श्लोकों की संख्या 60 है।

त्रिषष्टिः चतुःषष्टिर्वा वर्णाः शम्भुमते मताः।
प्राकृते-संस्कृते चापि स्वयं प्रोक्ताः स्वयम्भुवा॥3॥

प्राकृत और संस्कृत भाषा में शम्भु के मत में 63 या 64 वर्ण कहे गये हैं। स्वयं ब्रह्मा के द्वारा भी यही कहा गया है।

स्वरा विंशतिरेकश्च स्पर्शानां पञ्चविंशतिः।
यादयश्च स्मृता ह्यष्टौ चत्वारश्च यमाः स्मृताः ॥4॥
अनुस्वारो विसर्गश्च ᳲक ᳲपौ चापि पराश्रितौ।
दुःस्पृष्टश्चेति विज्ञेय ऌकारः प्लुत एव च ॥5॥

स्वर = 21 हैं
स्पर्श वर्ण = 25 हैं
यादयः = 08 हैं
यम = 04 हैं
अनुस्वार = 01
विसर्ग = 01
जिह्वामूलीय = 01
उपध्मानीय = 01
(ᳲक ᳲप ये दोनों पराश्रित हैं)
दुःस्पृष्ट = 01
प्लुत ऌकार = 01

➤ इस तरह = 21+25+8+4+1+1+2+1+1 = 64
➤ जहाँ प्लुत की गिनती नहीं होती है वहाँ वर्णों की कुल संख्या 63 सिद्ध है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि पाणिनीयशिक्षानुसार शम्भु के 63 या 64 वर्ण हैं। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- पाणिनीय शिक्षा - (3,4,5 श्लोक)

79. मनुस्मृत्यनुसारं समुचितमस्ति-
(A) आचार्यो ब्रह्मणो मूर्तिः
(B) आचार्यो मूर्ति प्रजापतेः
(C) आचार्यो मूर्तिरात्मनः
(D) आचार्यः पृथिव्या मूर्तिः

व्याख्या- आचार्य मनु द्वारा प्रणीत मनुस्मृति जिसमें बारह अध्याय हैं और 2694 श्लोक हैं।

* मनुस्मृति की सबसे प्राचीन टीका मेधातिथि की है। जिसका समय 900 ई. है।
* मनुस्मृति के द्वितीय अध्याय में धर्म की परिभाषा, धर्म के उपादान आदि का वर्णन किया गया है-

आचार्यो ब्रह्मणो मूर्तिः, पिता मूर्तिः प्रजापतेः।
माता पृथिव्या मूर्तिस्तु, भ्राता स्वो मूर्तिरात्मनः॥ 2/226॥

आचार्य परमात्मा की मूर्ति है, पिता ब्रह्मा की मूर्ति, माता पृथ्वी की मूर्ति और भाई अपनी ही मूर्ति है।

आचार्यश्च पिता चैव माता भ्राता च पूर्वजः।
नार्तेनाप्यवमन्तव्या ब्राह्मणेन विशेषतः ॥2/225॥

आचार्य, पिता, माता, बड़ा भाई- इनका दुखी होने पर भी मनुष्य और विशेषकर ब्राह्मण कदापि अपमान न करे।

अन्य महत्त्वपूर्ण सूक्तियाँ-

* **न स्नानमाचरेत् भुक्त्वा (4/129)**
  मनु कहते हैं- भोजन करके स्नान न करे।
* **यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः (3/56)**
  मनु कहते हैं- जिस कुल में स्त्रियाँ सम्मानित होती हैं, उस कुल से देवगण प्रसन्न होते हैं।
* **वेदोऽखिलो धर्ममूलम् । (2/6)**
  मनु कहते हैं- सम्पूर्ण वेद सभी विद्याओं के मूल हैं और वेदों के ज्ञाता स्मृतिशील हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि मनुस्मृति के अनुसार 'आचार्यो ब्रह्मणो मूर्तिः' यह पंक्ति सही है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- मनुस्मृति (2/226)

80. यथा हिरण्यं शुचि धातुमध्ये मेरुर्गिरीणां सरसां समुद्रः।
तारासु चन्द्रस्तपतां च सूर्यः पुत्रस्तथा ते द्विपदेषु वर्यः॥
.... श्लोकेऽस्मिन् कस्य पुत्रस्य वर्णनमस्ति -
(A) दशरथस्य **(B)** दुष्यन्तस्य
(C) दुर्योधनस्य **(D)** शुद्धोदनस्य

व्याख्या- * अश्वघोष द्वारा विरचित बुद्धचरितम् महाकाव्य जिसमें 28 सर्ग हैं।

* प्रथम सर्ग भगवत्प्रसूतिः (भगवान् का जन्म) नामक सर्ग है।
* प्रथम सर्ग में इक्ष्वाकुवंश के शुद्धोदन नामक राजा हुए।

इक्ष्वाकुवंशार्णवसम्प्रसूतः प्रेमाकरश्चन्द्र इव प्रजानाम् ।
शाक्येषु साकल्यगुणाधिवासः शुद्धोदनाख्यो नृपतिर्बभूव ॥1/1॥

इक्ष्वाकुवंश रूपी समुद्र में उत्पन्न, प्रजाओं के लिए चन्द्र सदृश

प्रेम का आकर, सम्पूर्ण गुणों का निधान-शुद्धोदन नामक राजा, शाक्यों में हुआ।

आसीन्महेन्द्रादिसमस्य तस्य पृथ्वीव गुर्वी महिषी नृपस्य।
मायेति नाम्नी शिवरत्नसारा शीलेन कान्त्याऽप्यधिदेवतेव ॥1/2॥

महेन्द्र पर्वत के सदृश उस राजा की कल्याणमय रत्नों से सार वाली, पृथ्वी के समान गौरवशालिनी शील एवं कान्ति से अधिदेवता के तुल्य माया नाम की रानी थी।

यथा हिरण्यं शुचि धातुमध्ये मेरुर्गिरीणां सरसां समुद्रः।
तारासु चन्द्रस्तपतां च सूर्यः पुत्रस्तथा ते द्विपदेषु वर्यः ॥1/37॥

जिस प्रकार धातुओं में शुद्ध स्वर्ण, पर्वतों में सुमेरु, जलाशयों में समुद्र, ताराओं में चन्द्रमा तथा तपाने वालों में में सूर्य श्रेष्ठ है, उसी प्रकार मनुष्यों में आपका पुत्र श्रेष्ठ है।

दीप्त्या च धैर्येण च यो रराज बालो, रविर्भूमिमिवावतीर्णः।
तथातिदीप्तोऽपि निरीक्ष्यमाणो जहार चक्षूंषि यथा शशाङ्कः ॥1/12॥

तेज एवं धैर्य से वह, भूमि पर आये हुए बाल सूर्य की भाँति शोभित हुआ और अत्यन्त तेजस्वी होने पर भी देखे जाने पर नेत्र चन्द्रमा के समान हर लेता था।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'यथा हिरण्यं शुचि धातुमध्ये ....' इस पंक्ति में शुद्धोदन के पुत्र का वर्णन है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- बुद्धचरितम् (1/37)

81. अधस्तनयुग्मानां समीचीनतालिकां चिनुत-

(a)	**श्रीहर्षः**	**(i)**	**हर्षचरितम्**
(b)	**दण्डी**	**(ii)**	**मुद्राराक्षसम्**
(c)	**बाणभट्टः**	**(iii)**	**नैषधीयचरितम्**
(d)	**विशाखदत्तः**	**(iv)**	**दशकुमारचरितम्**

समुचितां तालिकां चिनुत -

(A) a-(ii), b-(iii), c-(iv), d-(i)
(B) a-(iii), b-(iv), c-(i), d-(ii)
(C) a-(iv), b-(i), c-(ii), d-(iii)
(D) a-(i), b-(ii), c-(iii), d-(iv)

व्याख्या-

ग्रन्थकार	**ग्रन्थ**
शूद्रक	मृच्छकटिकम् 10 अङ्क
विशाखदत्त	मुद्राराक्षसम् 7 अङ्क
भवभूति	उत्तररामचरितम् 7 अङ्क
कालिदास	अभिज्ञानशाकुन्तलम् 7 अङ्क
दण्डी	दशकुमारचरितम् 8 उच्छ्वास
बाणभट्ट	हर्षचरितम् 8 उच्छ्वास
श्रीहर्ष	नैषधीयचरितम् 22 सर्ग
सुबन्धु	वासवदत्ता
भारवि	किरातार्जुनीयम् 18 सर्ग
माघ	शिशुपालवधम् 20 सर्ग
भट्टनारायण	वेणीसंहारम् 6 अङ्क
भास	स्वप्नवासवदत्तम् 6 अङ्क
कालिदास	रघुवंशम् 19 सर्ग
कालिदास	कुमारसम्भवम् 17 सर्ग
बिल्हण	विक्रमाङ्कदेवचरितम्
नारायण पण्डित	हितोपदेश
अश्वघोष	बुद्धचरितम्

महत्त्वपूर्ण तथ्य-

बृहत्त्रयी

किरातार्जुनीयम्	शिशुपालधम्	नैषधीयचरितम्
भारवि	माघ	श्रीहर्ष

लघुत्रयी

रघुवंशम्	कुमारसम्भवम्	मेघदूतम्
कालिदास	कालिदास	कालिदास

गद्यबृहत्त्रयी

वासवदत्ता	कादम्बरी	दशकुमारचरितम्
सुबन्धु	बाणभट्ट	दण्डी

उपजीव्यग्रन्थत्रयी

रामायणम्	महाभारतम्	भागवतपुराणम्
वाल्मीकि	वेदव्यास	वेदव्यास

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि श्रीहर्ष - नैषधीयचरितम्,

दण्डी - दशकुमारचरितम्, बाणभट्ट - हर्षचरितम्, विशाखदत्त - मुद्राराक्षसम्। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- L.T. मिशन - सर्वज्ञभूषण, पेज 391-92

82. बौद्धदर्शनानुसारं चतुर्णाम् आर्यसत्यानाम् उचितः क्रमोऽस्ति-

(A) दुःखम्, समुदायः, निरोधः, मार्गः
(B) मार्गः, दुःखम्, निरोधः, समुदायः
(C) समुदायः, दुःखम्, मार्गः, निरोधः
(D) निरोधः, मार्गः, दुःखम्, समुदायः

व्याख्या- * बौद्ध दर्शन भारत एक अत्यन्त प्राचीन नास्तिक दर्शन है।

* **बौद्धधर्म की विशेषताएँ -**
अनीश्वरवादी, पुनर्जन्म में विश्वास, वेद विरोधी, नास्तिक, आत्मवादी, जन्म कारण ईश्वर नहीं

तदिदं सर्वं दुःखं दुःखायतनं दुःखसाधनं चेति भावयित्वा तन्निरोधोपायं तत्त्वज्ञानं संपादयेत्। अत एवोक्तम् दुःखसमुदाय-निरोधमार्गाश्चत्वार आर्यबुद्धस्याभिमतानि तत्त्वानि। तत्र दुःखं प्रसिद्धम्।

यह समूचा संसार दुःख है, दुःख का घर है और दुःख का साधन है। यहीं से दुःख मिलता है। इसीलिए कहा है- दुःख, समुदाय, निरोध और मार्ग।

ये चार तत्त्व आर्य बुद्ध के द्वारा सम्मत है। इनमें दुःख तो प्रसिद्ध है।

बौद्धदर्शन के चार सम्प्रदाय हैं-
(1) माध्यमिक (2) योगाचार (3) सौत्रान्तिक (4) वैभाषिक

भावनाचतुष्टय - भावनाचतुष्टय चार हैं-
1. सब कुछ क्षणिक है क्षणिक
2. सब कुछ दुःख है दुःख
3. सब का लक्षण अपने आप में है
4. सब कुछ शून्य है शून्य

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि बौद्धदर्शन के अनुसार चार आर्य सत्य हैं- दुखम्, समुदायः, निरोधः और मार्गः।

अतः विकल्प 'A' सही है।

स्रोत- सर्वदर्शनसंग्रह - उमाशङ्कर शर्मा ऋषि, पेज 76

83. मनुस्मृतिकारेण 'नारा' इति शब्देन किं गृहीतम्

(A) आपः **(B)** मनुष्यः
(C) पशुः **(D)** पक्षी

व्याख्या- * मनु कृत मनुस्मृति में बारह अध्याय हैं। 2694 श्लोक हैं, प्राचीनतम तथा सर्वाधिक मान्य है।

* इसमें समाजशास्त्र, नीतिशास्त्र, धर्मशास्त्र और अर्थशास्त्र- सभी का समावेश है। अतः सामाजिक व्यवस्था का आधारभूत ग्रन्थ है।

* मनुस्मृति में काम, अर्थ, मोक्ष और धर्मरूप चारों पुरुषार्थों का विशद विवेचन है-

आपो नारा इति प्रोक्ता आपो वै नरसूनवः।
ता यदस्यायनं पूर्वं तेन नारायणः स्मृतः ॥1/10॥

जल को नार कहते हैं क्योंकि जल नर (रूप परमात्मा) से उत्पन्न हुआ है। यही जल इस परमात्मा का प्रथम वासस्थान है इस कारण परमात्मा 'नारायण' कहा गया है।

यत्तत्कारणमव्यक्तं नित्यं सदसदात्मकम् ।
तद्विसृष्टः स पुरुषो लोके ब्रह्मेति कीर्त्यते ॥1/11॥

लोक और वेद में प्रसिद्ध, अव्यक्त नित्य और सत् असत् का आत्मा ऐसा कारण से उत्पन्न हुआ वह पुरुष 'ब्रह्मा' इस नाम से संसार से विख्यात है।

तदण्डमभवद्धैमं सहस्रांशुसमप्रभम् ।
तस्मिञ्जज्ञे स्वयं ब्रह्मा सर्वलोकपितामहः ॥1/9॥

वह बीज सूर्य के समान कान्ति वाला सुवर्ण का अण्डा हो गया और उसमें सब लोकों का कर्ता ब्रह्मा स्वयं उत्पन्न हुआ।

अन्य सूक्तियाँ-

* **आचारः परमो धर्मः (1/108)**
वेद और स्मृति दोनों में कहा गया है- आचार ही परम धर्म है।

* **नास्तिको वेदनिन्दकः (2/11)**
जो ब्राह्मण शास्त्र द्वारा धर्म के मूल वेद तथा स्मृति का निरादर करता है वह वेदनिन्दक होने से नास्तिक है।

* **ब्राह्मे मुहूर्ते बुध्येत। (4/92)**
सूर्योदय के पूर्व ब्राह्ममुहूर्त्त में जगकर धर्म और अर्थ की चिन्ता करे।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि 'नारा' शब्द का अर्थ (जल) आपः होता है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- मनुस्मृति (1/10)

84. अधोलिखितेषु केन सह कस्य सम्बन्धः?

(क)	भट्टोजिदीक्षितः	1	काशिका
(ख)	नरेन्द्राचार्यः	2	शब्दकौस्तुभः
(ग)	वामनः	3	लघुमञ्जूषा
(घ)	नागेशः	4	सारस्वतव्याकरणम्

समुचितां तालिकां चिनुत -

	क	ख	ग	घ
(A)	4	3	1	2
(B)	1	4	3	2
(C)	3	2	1	4
(D)	2	4	1	3

व्याख्या- भट्टोजिदीक्षित-

* डा. वेल्वलकर भट्टोजिदीक्षित का काल सन् 1600-1650 (वि.सं.-1657-1707) मानते हैं। अन्य ऐतिहासिक वि. सं. 1637 मानते हैं।

भट्टोजिदीक्षित ने शब्दकौस्तुभ के अतिरिक्त सिद्धान्तकौमुदी और उसकी व्याख्या प्रौढ़मनोरमा लिखी है।

सिद्धान्तकौमुदी के उत्तरकृदन्त के अन्त में शब्दकौस्तुभ का उल्लेख किया है-

इत्थं लौकिकशब्दानां दिङ्मात्रमिह दर्शितम् ।
विस्तरस्तु यथाशास्त्रं दर्शितः शब्दकौस्तुभे।।

➢ **शब्दकौस्तुभ के टीकाकार-**

नागेश - विषमपदी
राघवेन्द्राचार्य - प्रभा
वैद्यनाथ पायगुण्ड - प्रभा
कृष्णमित्र - भावप्रदीप
विद्यानथ शुक्ल - उद्योत
भास्कर दीक्षित- शब्दकौस्तुभदूषण

➢ **सारस्वत-व्याकरणकार (सं. - 1150 वि. के लगभग)**

क्षेमेन्द्रकृत सारस्वतप्रक्रिया के अन्त में लिखा है-

* इति श्रीनरेन्द्राचार्यकृते सारस्वते क्षेमेन्द्रटिप्पनं समाप्तम् ।

इससे प्रतीत होता है कि सारस्वतसूत्रों का मूल रचयिता नरेन्द्राचार्य नामक वैयाकरण है।

* एक नरेन्द्रसेन वैयाकरण 'प्रमाणप्रमेयकलिका' का कर्त्ता है।
* इसके गुरु का नाम कनकसेन और परमगुरु का नाम (गुरु का गुरु) का नाम अजितसेन था।

➢ **जयादित्य और वामन (सं. 650-700वि.)**

* जयादित्य और वामन दोनों की रचित सम्मिलित वृत्ति 'काशिका' नाम से प्रसिद्ध है।
* महाभाष्य और भर्तृहरि विरचित ग्रन्थों के बाद काशिकावृत्ति सर्वाधिक समादृत और महत्त्वपूर्ण मानी जाती है।
* इसमें बहुत से सूत्रों की वृत्ति और उदाहरण प्राचीन वृत्तियों से संगृहीत हैं।

➢ **नागेशभट्ट -**

* नागेशभट्ट महाराष्ट्रीय ब्राह्मण थे। इनके पिता का नाम शिवभट्ट और माता का नाम सती था।
* नागेशभट्ट ने हरिदीक्षित से व्याकरण का अध्ययन किया था। हरिदीक्षित भट्टोजिदीक्षित के पौत्र थे।
* महाभाष्यप्रदीपोद्योत में नागेश ने अपने दो ग्रन्थ लघुमञ्जूषा और शब्देन्दुशेखर उद्धृत किये हैं।
* नागेशभट्ट के वृत्तिदाता, प्रयाग के समीपस्थ शृङ्गवेरपुर के राजा रामसिंह थे।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि भट्टोजिदीक्षित-शब्दकौस्तुभ, नरेन्द्राचार्य-सारस्वतव्याकरण, वामन-काशिका, नागेश-लघुमञ्जूषा सम्बन्धित है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- संस्कृत व्याकरण का इतिहास-युधिष्ठिर मीमांसक, 160,169,177,178

85. सूत्रोदाहरणयोः युग्मं यथोचितं मेलयतु -

(क)	तुमुण्वुलौ क्रियायां क्रियार्थायाम् -	1. पठितुं प्रवीणः
(ख)	समानकर्तृकेषु तुमुन् -	2. वेला भोक्तुम्
(ग)	पर्याप्तिवचनेष्वलमर्थेषु -	3. ज्ञातुम् इच्छामि
(घ)	कालसमयवेलासु तुमुन् -	4. कृष्णं दर्शको याति

	क	ख	ग	घ
(A)	1	3	4	2
(B)	4	3	1	2
(C)	2	3	4	1
(D)	4	1	2	3

व्याख्या- * भट्टोजिदीक्षित ने स्वयं सिद्धान्तकौमुदी की प्रौढ़मनोरमा नाम से प्रसिद्ध व्याख्या लिखी है।

* भट्टोजिदीक्षित का काल सन् 1600 से 1650 मानते हैं।
* भट्टोजि दीक्षित ने अष्टाध्यायी की शब्दकौस्तुभ नाम्नी महती वृत्ति लिखी है।

* 'शब्दकौस्तुभ' के प्रथम अध्याय के प्रथम पाद में भट्टोजिदीक्षित ने अपने शब्दों में प्रायः पतञ्जलि, कैयट और हरदत्त के ग्रन्थों से संग्रह है।

* **तुमण्ण्वुलौ क्रियायां क्रियार्थायाम् (3.3.10)**

एक क्रिया के लिए दूसरी क्रिया समीप में होने पर भविष्यत् काल में धातु परे तुमुन् और ण्वुल् प्रत्यय होते हैं।

उदाहरण- कृष्णं दर्शको याति- कृष्ण को देखने के लिए जाता है। कृष्णं द्रष्टुं याति- कृष्ण को देखने के लिए जाता है।

* **समानकर्तृकेषु तुमुन् (3.3.158)**

इच्छा अर्थ वाली एक कर्तृक धातुओं के उपपद होने पर धातु से तुमुन् प्रत्यय होता है।

उदाहरण-

1. ज्ञातुम् इच्छामि - जानना चाहता है।
2. इच्छति भोक्तुम् - खाना चाहता है।
3. वष्टि भोक्तुम् - खाना चाहता है।
4. वाञ्छति भोक्तुम् - खाना चाहता है।

* **पर्याप्तिवचनेष्वलमर्थेषु (3.4.66)**

अलमर्थेषु सामर्थ्य अर्थ वाले परिपूर्णतावाची शब्दों के उपपद रहते धातु से तुमुन् होता है।

उदाहरण- पठितुं प्रवीणः -

पर्याप्तो भोक्तुम् = खाने के लिए पर्याप्त है।

* **कालसमयवेलासु तुमुन् (3.3.167)**

काल, समय, वेला जैसे काल, अर्थवाची शब्दों के उपपद रहते धातुओं से तुमुन् प्रत्यय होता है।

उदाहरण- वेला भोक्तुम् - भोजन के लिए समय

भोक्तुं अनेहा, भोक्तुं कालः, भोक्तुं समयः।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि सूत्र और उदाहरण का क्रम इस प्रकार है- तुमुण्ण्वुलौ क्रियायां क्रियार्थायाम् - कृष्णं दर्शको याति

समानकर्तृकेषु तुमुन् - ज्ञातुम् इच्छामि

पर्याप्तिवचनेष्वलमर्थेषु - पठितुं प्रवीणः

कालसमयवेलासु तुमुन् - वेला भोक्तुम्

अतः विकल्प 'B' सही है।

स्रोत- वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज 870,874

86. 'प्रत्यर्थम्' इत्यत्र अव्ययीभावसमासो विद्यते-

(A) योग्यतार्थे **(B)** वीप्सार्थे
(C) पदार्थानतिवृत्यर्थे **(D)** सादृश्यार्थे

व्याख्या- अव्ययीभाव समास-

सूत्र- अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि-व्यृद्धि-अर्थाभाव-अत्यय-असम्प्रति-शब्दप्रादुर्भाव-पश्चात्-यथा-आनुपूर्व्य-यौगपद्य-सादृश्य-सम्पत्ति-साकल्य-अन्तवचनेषु।

'पूर्वपदार्थप्रधानः अव्ययीभावः।' जहाँ पूर्वपद की प्रधानता होती है, वहाँ अव्ययीभाव समास होता है।

सामासिक पद	अर्थ	लौकिक विग्रह
अधिहरि	हरि में (विभक्ति अर्थ में)	हरौ इति
अधिगोपम्	गोप में (विभक्ति अर्थ में)	गोपि इति
उपकृष्णम्	कृष्ण के समीप (समीप अर्थ में)	कृष्णस्य समीपम्
सुमद्रम्	मद्रदेशवासियों की (समृद्धि के अर्थ में)	मद्राणां समृद्धिः
दुर्यवनम्	यवनों की समृद्धि का अभाव (वृद्धि का अभाव अर्थ में)	यवनानां वृद्धिः
निर्मक्षिकम्	मक्खियों का अभाव (अभाव अर्थ में)	मक्षिकाणाम् अभावः
अतिहिमम्	हिम का अत्यय = नाश (अत्यय अर्थ में)	हिमस्य अत्ययः
अतिनिद्रम्	निद्रा इस समय उचित नहीं है (असम्प्रति इस समय उचित नहीं अर्थ में)	निद्रा सम्प्रति न युज्यते
इतिहरि	हरि नाम की प्रसिद्धि (शब्दप्रादुर्भाव)	हरिशब्दस्य प्रकाशः
अनुविष्णु	विष्णु के पीछे (पश्चात् अर्थ में)	विष्णोः पश्चात्
अनुरूपम्	रूप के योग्य यथा के (योग्यता अर्थ में)	रूपस्य योग्यम्
प्रत्यर्थम्	प्रत्येक अर्थ के प्रति (यथा के वीप्सा अर्थ में)	अर्थम् अर्थं प्रति
यथाशक्ति	शक्ति के अनुसार	शक्तिम् अनतिक्रम्य
सहरि	हरि के सदृश	हरेः सादृश्यम्

अनुज्येष्ठम्	ज्येष्ठ के क्रम से (आनुपूर्व्य अर्थ में)	ज्येष्ठस्य आनुपूर्व्येण
सचक्रम्	चक्र के साथ एक ही काल में (यौगपद्य)	चक्रेण युगपत्
ससखि	सखा के समान (सादृश्य अर्थात् समान अर्थ में)	सदृशः सख्या
सक्षत्रम्	क्षत्रियों के अनुसार (सम्पत्ति अर्थ में)	क्षत्राणां सम्पत्तिः
सतृणम्	तिनके को भी छोड़े बिना सम्पूर्ण खाता है (साकल्य) (सम्पूर्ण अर्थ में)	तृणम् अपि अपरित्यज्य
साग्नि	अग्निग्रन्थ की समाप्ति तक पढ़ता है	अग्निग्रन्थपर्यन्तम्

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'प्रत्यर्थम्' वीप्सा अर्थ में समास हुआ है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- L.T. मिशन - सर्वज्ञभूषण, पेज 151-152

87. 'स्थूलोऽहं, कृशोऽहं' इत्यत्र शाङ्करभाष्यानुसारं भवति-
(A) विकारः (B) अध्यासः
(C) अपवादः (D) परिणामः

व्याख्या- * महर्षि बादरायण व्यास प्रणीत ब्रह्मसूत्र है। भगवान् बादरायण मुनि ने ब्रह्मसूत्रों की रचना की। यह स्वल्प कलेवर ग्रन्थ समस्त वेदान्तसिद्धान्तों का आकर है।

* समस्त उपनिषदों का सूत्रों द्वारा ब्रह्म में तात्पर्य से समन्वय होने से इस ग्रन्थ का नाम ब्रह्मसूत्र है।
* इसी को वेदान्तदर्शन भी कहते हैं।
* आचार्य शङ्करमतानुसार सूत्रों और अधिकरणों की संख्या क्रमशः 555 और 191 है।
* ब्रह्मसूत्र में चार अध्याय और प्रत्येक अध्याय में चार पाद हैं।

अध्यासो नाम अतस्मिंस्तद्बुद्धिरित्यवोचम्। तद्यथा- पुत्रभार्यादिषु विकलेषु सकलेषु वा अहमेव विकलः सकलो वेति बाह्यधर्मानात्मन्यध्यस्यति; तथा देह-धर्मान् स्थूलोऽहं, कृशोऽहं, गौरोऽहं, तिष्ठामि, गच्छामि, लङ्घयामि चेति।

जैसे कि कोई पुत्र, स्त्री आदि के अपूर्ण और पूर्ण होने पर मैं ही अपूर्ण और पूर्ण हूँ, इस प्रकार बाह्यपदार्थों के धर्मों का अपने में अध्यास करता है तथा मैं स्थूल हूँ, मैं कृश हूँ, मैं गौर हूँ, मैं खड़ा हूँ, मैं जाता हूँ, मैं लाँघता हूँ, इस प्रकार देह के धर्मों का अध्यास करता है। वेदान्तमीमांसा शास्त्र का यह आदिसूत्र है अथवा प्रथम सूत्र है-

अथातो ब्रह्मजिज्ञासा (1.1)

पदच्छेद - अथ, अतः, ब्रह्मजिज्ञासा

सूत्रार्थ - विवेक आदि साधनचतुष्टय रूप सम्पत्तिसिद्धि के अनन्तर कर्मफल के अनित्य और ज्ञान फल मोक्ष के नित्य होने से मुमुक्षु को ब्रह्मजिज्ञासा करनी चाहिए।

जन्माद्यस्य यतः ॥2॥

पदच्छेद - जन्मादि, अस्य, यतः।

सूत्रार्थ - (अस्य) इस जगत् की (जन्मादि) उत्पत्ति, स्थिति तथा लय (यतः) जिससे होते हैं, वह ब्रह्म है।

शास्त्रयोनित्वात् ॥3॥

ऋग्वेद आदि शास्त्र का (योनि) कारण होने से ब्रह्म सर्वज्ञ है अथवा ब्रह्म केवल ऋग्वेद आदि शास्त्र प्रमाणक है अर्थात् ब्रह्म के यथार्थ स्वरूप के ज्ञान में ऋग्वेदादि शास्त्र ही प्रमाण है।

शास्त्र - ऋग्वेद आदि

योनि - कारण

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'स्थूलोऽहं, कृशोऽहं यह शाङ्करभाष्यानुसार अध्यास माना गया हैं। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्य - सत्यानन्दसरस्वती, पेज 17

88. अत्र द्वौ कथनांशौ स्तः -

A - पशुपादप्रकृतिः प्रभागपादः

B - पशुः चतुष्पादयुक्ता भवन्ति। तेषामियं प्रकृतिर्भवति। अतः छन्दस्सु चत्वारः पाद भवन्ति। पद्यो चत्वारः पादाः छन्दनिरूपणे गण्यन्ते।

(A) (a) तथा (b) उभये सत्य कथने (b), (a) अंशस्य उचितमुदाहरणम्
(B) (a) कथनं सत्यम् (b) कथनं तथा न निर्दिशति (a) स्वरूपम्
(C) (a) कथनमसत्यम् (b) कथनं सत्यमस्ति
(D) (a) सत्यमस्ति (b) परिभाषां न प्रस्तौति

व्याख्या- उपर्युक्त कथन A में कहा गया है कि पशुओं के चार पाद अर्थात् चार पैर होते हैं। यह इनकी प्रकृति है।

और कथन B में कहा गया है कि 'पशुः चतुष्पादयुक्ता

भवन्ति' अर्थात् पशुओं के चार पाद अर्थात् पैर होते हैं। (पशु चार पैरों वाले होते हैं।)

जो कि पशुओं का स्वभाव है। ऐसे ही 'छन्दस्सु चत्वारः पादाः भवन्ति' अर्थात् छन्द में भी चार पाद अर्थात् चरण होते हैं। पद्यों में चार चरण होते हैं जो छन्दों में होते हैं। ऐसा छन्दःशास्त्र में निरूपण किया गया है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि कथन A और B दोनों सत्य हैं। कथन B, A अंश का उचित उदाहरण है।

अतः विकल्प 'A' सही है।

89. 'प्रवीणः' इति पदं कयोः उदाहरणं वर्तते-

a अर्थसङ्कोचस्य **b अर्थपरिवर्तनस्य**

c अर्थविस्तारस्य **d अर्थहानेः**

अधोलिखितेषु समुचितं विकल्पं चिनुत -

(A) a एवं b **(B)** b एवं c

(C) c एवं d **(D)** a एवं c

व्याख्या- अर्थपरिवर्तन (अर्थविकास) की दिशाएँ

* अर्थपरिवर्तन को विकास सिद्धान्त की दृष्टि से अर्थविकास भी कहा जाता है।
* कहीं पर अर्थ का विस्तार होता है।
* कहीं पर अर्थ में संकोच होता है।
* कहीं पर पुराने अर्थ के स्थान पर नया अर्थ आ जाता है।

1. अर्थविस्तार (Expansion of meaning)
2. अर्थसंकोच (Contraction of meaning)
3. अर्थादेश (Transjerence of meaning)

* इन तीनों के जो उदाहरण मिलते हैं, उन पर विचार करने से ज्ञात होता है कि कुछ स्थानों पर अर्थ अपने मूल अर्थ से उत्कृष्ट हो गया और कहीं पर वह अपने मूल अर्थ से निकृष्ट, अपकृष्ट हो गया है।
* इस दृष्टि से भी इनको दो भागों में रखा जाता है-

(क) अर्थोत्कर्ष (Elevation of Meaning)

(ख) अर्थापकर्ष (Deterioration of meaning)

1. अर्थविस्तार- कुछ शब्द मूलरूप में किसी विशेष या संकुचित अर्थ में प्रयुक्त होते थे। बाद में उनके अर्थ में विस्तार हो गया-

जैसे- प्रवीण- प्रवीण का अर्थ था- प्रकृष्टो वीणायाम् (वीणावादन में श्रेष्ठ या निपुण)

यह शब्द वीणा-वादन का निपुणता को छोड़कर केवल निपुण या दक्ष अर्थ में प्रयुक्त होने लगा है। इसमें अर्थविस्तार हुआ है।

अन्य उदाहरण- तैल- सबसे पहले तिल का तेल निकला था, उसके आधार पर तेल नाम पड़ा।

गोशाला, गोष्ठ - गायों के रहने के स्थान को गोशाला या गोष्ठ कहते थे।

उसमें बैल, भैंस, बकरी आदि भी बाधते हैं तो गोशाला नाम है। इस प्रकार अर्थ का विस्तार हुआ है।

2. अर्थसंकोच - अर्थविस्तार के विपरीत कुछ शब्दों के अर्थों में संकोच हुआ है।

जैसे- मृग- पशुमात्र के लिए था, अब केवल हिरन अर्थ रह गया।

वारिज, अम्बुज, सरसिज, सरोज, पंकज, नीरज-

इनका शाब्दिक अर्थ है- जल तालाब या कीचड़ में होने वाला। ये शब्द कमल अर्थ में रूढ़ हो गये।

पर्वत- पर्व (गाँठ) वाला। पहाड़ अर्थ में रूढ़ हो गया है। पर्व वाले गन्ने को पर्वत नहीं कहेंगे।

मन्दिर- मन्दिर अर्थ भवन था। यह देवमन्दिर अर्थ में प्रसिद्ध हो गया है।

3. अर्थादेश- अर्थादेश का अर्थ है- एक अर्थ के स्थान पर दूसरे अर्थ का आ जाना। आदेश का अर्थ है- एक को हटाकर दूसरे का आना।

उदाहरण- असुर- मूल अर्थ असु + र - देवता था। बाद में सुर (देवता) का उल्टा अ + सुर (राक्षस) अर्थ हो गया।

वर- मूल अर्थ श्रेष्ठ था। अब केवल दूल्हा अर्थ रह गया है।

सह्- वेद में सह् धातु का अर्थ जीतना था। अब सहन करना अर्थ रह गया है।

मौन- पाषण्ड, मुग्ध, कर्पट-कपड़ा आदि उदाहरण हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'प्रवीणः' पद अर्थविस्तार का उदाहरण है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज 336,337,340

90. रामायणाश्रितं रचनाद्वयं किमस्ति-

(A) मालविकाग्निमित्रम्, रत्नावली

(B) उत्तररामचरितम्, महावीरचरितम्

(C) प्रतिमानाटकम्, वेणीसंहारम्

(D) मालविकाग्निमित्रम्, स्वप्नवासवदत्तम्

व्याख्या- महावीरचरितम् -

* यह रामायण के छः काण्डों पर (बालकाण्ड से युद्ध काण्ड) आश्रित रामकथा का सार अङ्कों में प्रदर्शन करने वाला नाटक है।
* तदनुसार सीता-विवाह से लेकर राम-राज्याभिषेक तक की घटनाएँ इसमे वर्णित हैं।
* भवभूति के पूर्व रामकथा के इतने विस्तृत प्रसङ्गों को किसी के रूप में प्रस्तुत नहीं किया था, अतः सात अङ्कों में रामकथा की घटनाएँ कसी हुई हैं।
* इस रूपक में राम को महावीर दिखाया गया है किन्तु रावण की कूटनीति की असफलता में राम के पौरुष से अधिक उनका भाग्य काम करता दिखाया गया है।
* वीररस प्रधान इस नाटक में ओजगुणमयी गौडी शैली का प्राचुर्य है।

उत्तररामचरितम् -

* यह भवभूति के रूपकों में श्रेष्ठ है। कवित्व तथा नाट्यकौशल दोनों का प्रकर्ष इसमें प्रकट किया गया है।
* पूरे नाटक में राम का चरित्र शील, सत्य, और शक्ति का उत्स बनकर प्रकाशित हुआ है।
* रामायण के उत्तरकाण्ड के सीता निर्वासन के कथानक पर यह आश्रित है।
* यह सात अङ्कों का नाटक है।
* राम लोकाराधन के लिए स्नेह, दया, सुख की मूर्ति अपनी प्रियतमा सीता का परित्याग कर देते हैं-

स्नेहं दयां च सौख्यं च यदि वा जानकीमपि
आराधनाय लोकस्य मुञ्चतो नास्ति मे व्यथा॥
(उत्तर 1/12)

* राम का जीवन एकमात्र करुण रस के फलक पर विभिन्न रसों के चित्र अङ्कित करता है-

एको रसः करुण एव निमित्तभेदात् (3/47)

* यह करुण रस प्रधान नाटक है।

➢ **मालविकाग्निमित्रम् -**

* यह कालिदास की रचना है। जिसमें पाँच अङ्क हैं।
* यह ऐतिहासिक नाटक है जिसमें शुङ्गवंशी राजा अग्निमित्र तथा विदर्भराज कुमारी मालविका के विवाह की कथा है।
* इसका नायक अग्निमित्र और नायिका मालविका है।

भास के 13 नाटक हैं -

उदयनकथा मूलक- 1. प्रतिज्ञायौगन्धरायण
2. स्वप्नवासवदत्तम्

रामायणमूलक - 3. प्रतिमानाटक
4. अभिषेकनाटक

महाभारतमूलक - 5. ऊरुभङ्ग
6. दूतवाक्य
7. पञ्चरात्र
8. दूतघटोत्कच
9. कर्णभार
10. मध्यमव्यायोग
11. बालचरित

लोककथा मूलक - 12. अविमारक 13. चारुदत्त

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि रामायण पर आश्रित दो रचनाएँ हैं-

उत्तररामचरितम् और मालविकाग्निमित्रम् है जब कि प्रतिमानाटक भी है परन्तु, वेणीसंहार महाभारत-आश्रित है।

अतः विकल्प 'B' सही है।

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशङ्कर शर्मा, पेज 426-466

91. सिद्धान्तकौमुदीमाश्रित्यप्रकरणानां समीचीनं क्रमं चिनुत-

(A) कारकम्, परस्मैपदप्रक्रिया, कृदन्तम्, तद्धितम्
(B) कारकम्, तद्धितम्, परस्मैपदप्रक्रिया, कृदन्तम्
(C) परस्मैपदप्रक्रिया, कारकम्, तद्धितम्, कृदन्तम्
(D) परस्मैपदप्रक्रिया, कृदन्तम्, तद्धितम्, कारकम्

व्याख्या- आचार्य भट्टोजिदीक्षित कृत वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी व्याकरणशास्त्र का एक प्रक्रियाग्रन्थ है। जिसमें पाणिनि द्वारा रचित चार हजार सूत्रों की व्याख्या की गयी है। इसमें कात्यायन द्वारा रचित वार्तिकों का भी समावेश है।

इनके प्रमुख प्रकरणों का क्रम निम्नलिखित है-

1. संज्ञाप्रकरणम् 2. परिभाषाप्रकरणम्
3. सन्धिप्रकरणम् 4. षड्लिङ्गप्रकरणम्
5. अव्ययप्रकरणम् 6. स्त्रीलिङ्गप्रकरणम्
7. कारकप्रकरणम् 8. समासप्रकरणम्
9. तद्धितप्रकरणम् 10. तिङन्तप्रकरणम्
11. प्रत्ययान्ततिङन्त (णिच्, सन् आदि) प्रकरणम्
12. आत्मनेपदप्रकरणम्

13. परस्मैपदप्रकरणम्
14. कृदन्तप्रकरणम्
15. वैदिकप्रकरणम्
16. स्वरप्रकरणम्

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि सिद्धान्तकौमुदी के अनुसार प्रकरणों का क्रम इस प्रकार है-

(1) कारकप्रकरणम् (2) तद्धितप्रकरणम्
(3) परस्मैपदप्रकरणम् (4) कृदन्तप्रकरणम् है।

अतः विकल्प 'B' सही है।

स्रोत- वैयाकरण सिद्धान्तकौमुदी (मूलमात्रम्)- गोविन्दाचार्य, पेज भू. 80,147,372,385

92. मृगाक्षीशब्दे विद्यमानः मृग इति शब्दः उदाहरणं विद्यते-
(A) अर्थादेशस्य **(B)** अर्थविस्तारस्य
(C) अर्थसङ्कोचस्य **(D)** अर्थागमस्य

व्याख्या- अर्थपरिवर्तन की दिशाएँ

संसार की वस्तुएँ परिवर्तनशील हैं। भाषा भी परिवर्तनशील है। जिस प्रकार ध्वनियों में परिवर्तन होता है, उसी प्रकार प्रत्येक भाषा के शब्दों के अर्थों में भी परिवर्तन होता रहता है। इस अर्थपरिवर्तन को विकास सिद्धान्त की दृष्टि से अर्थविकास भी कहा जाता है।

यह अर्थ-परिवर्तन तीन प्रकार का होता है-
(1) अर्थविस्तार (2) अर्थसंकोच (3) अर्थादेश

1. अर्थविस्तार- कुछ शब्द मूलरूप से किसी विशेष या संकुचित अर्थ में प्रयुक्त होते थे। बाद में उनके अर्थ में विस्तार हो गया।

*** कुशल-** कुशल शब्द का अर्थ था- कुशान् लाति (कुशों को लाना)। कुश का अग्र भाग तीक्ष्ण होता है, उससे हाथ में छेद होने या कटने का भय रहता था। अतः कुश लाना चतुरता का सूचक था। यह शब्द धीरे-धीरे कुश लाना छोड़कर चतुरता या निपुणता का सूचक हो गया। इस प्रकार अर्थ में विस्तार हो गया।

अन्य उदाहरण- प्रवीण, गोशाला, महाराज, गवेषणा आदि।

2. अर्थसंकोच- अर्थ विस्तार के विपरीत कुछ शब्दों के अर्थों में संकोच हो गया। उनका विस्तृत अर्थ संकुचित या सीमित हो गया है। सभी वस्तु नाम अर्थ संकोच के उदाहरण हैं। व्युत्पत्ति के आधार पर उनका व्यापक अर्थ है, परन्तु वस्तु नाम होने पर वे उस अर्थ में रूढ़ हो गए हैं-

*** मृग-** पशुमात्र के लिए था। अब केवल हिरन अर्थ रह गया है। अंग्रेजी का Dear भी पशु मात्र का वाचक था, अब 'हिरन' अर्थ रह गया है।

*** वारिज, अम्बुज, सरसिज, सरोज, पंकज, नीरज**
इनका शाब्दिक अर्थ है- जल, तालाब या कीचड़ में होने वाला। परन्तु ये सब कमल अर्थ में रूढ़ हो गए हैं। मछली, कीड़े आदि को नहीं कह सकते हैं।

* **वारिधि, नीरधि, अम्बुधि, तोयधि-** (समुद्र) का अर्थ है- जल धारण करने वाला। ये शब्द समुद्र अर्थ में रूढ़ हो गया।

* **सर्प-** रेंगने वाला। यह साँप अर्थ में रूढ़ हो गया है।

3. अर्थादेश- अर्थादेश का अर्थ है, एक अर्थ के स्थान पर दूसरे अर्थ का आ जाना। आदेश का अर्थ है- एक को हटाकर दूसरे का आना।

अर्थादेश में शब्द का प्राचीन अर्थ लुप्त हो जाता है और नया अर्थ आ जाता है।

जैसे-
असुर- मूल अर्थ असु + र (प्राण शक्ति सम्पन्न) देवता था। बाद में सुर देवता का उल्टा अ + सुर (राक्षस) हो गया।
वर- मूल अर्थ श्रेष्ठ था, अब केवल दूल्हा अर्थ रह गया है।
देवानां प्रियः - देवों का प्रिय अब मूर्ख अर्थ रह गया।
मुग्ध- मूल अर्थ था मूर्ख अब मोहित होना, सौन्दर्य पर मुग्ध होना।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'मृगाक्षी' शब्द में विद्यमान 'मृग' शब्द अर्थसङ्कोच का उदाहरण है।

अतः विकल्प 'C' सही है।

स्रोत- भाषा विज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज 338

93. अनैकान्तो विरुद्धश्चाप्यसिद्धः प्रतिपक्षितः।
कालात्ययापदिष्टश्च हेत्वाभासास्तु पञ्चधा॥
इति कस्य दार्शनिकस्य कथनमस्ति?
(A) विश्वनाथपञ्चाननस्य **(B)** अन्नम्भट्टस्य
(C) सदानन्दस्य **(D)** केशवमिश्रस्य

व्याख्या- आचार्य विश्वनाथ पञ्चानन कृत न्यायसिद्धान्तमुक्तावली में पञ्चहेत्वाभास की चर्चा की गयी है-

अनैकान्तो विरुद्धश्चाप्यसिद्धः प्रतिपक्षितः।
कालात्ययापदिष्टश्च हेत्वाभासास्तु पञ्चधा ॥7॥

अनैकान्त, विरुद्ध, असिद्ध, प्रतिपक्षित एवं कालात्ययापदिष्ट

इस प्रकार हेत्वाभास पाँच प्रकार के होते हैं। (जो केवल हेतु जैसे लगते हैं किन्तु हेतु नहीं होते, वह हेत्वाभास है।)

आद्यः साधारणस्तु स्यादसाधारणकोऽपरः।
तथैवानुपसंहारी त्रिधाऽनैकान्तिको भवेत् ॥72॥

पहला साधारण, दूसरा असाधारण एवं तीसरा अनुपसंहारी भेद से अनैकान्तिक हेत्वाभास तीन प्रकार का होता है।

यः सपक्षे विपक्षे च भवेत् साधारणस्तु सः ॥

जो हेतु सपक्ष एवं विपक्ष में भी होता है, वह साधारण कहलाता है।

यस्तूभयस्माद् व्यावृत्तः स चासाधारणो मतः ॥73॥

जो दोनों सपक्ष एवं विपक्ष से अलग रहे, वह हेतु असाधारण माना जाता है।

तथैवानुपसंहारी केवलान्वयिपक्षकः॥
पर्वतो वह्निमान् सत्वादिति तत्रादिमो भवेत् ॥
पृथ्वी नित्या गन्धवत्त्वादिति स्यादपरस्तथा।
सर्वं तुच्छं प्रमेयत्वादिति तत्रान्तिमो भवेत् ॥

उसी तरह केवलान्वयी पक्ष वाला अनुपसंहारी होता है।

यः साध्यवति नैवाऽस्ति स विरुद्ध उदाहृतः ॥74॥

जो साध्य के अधिकरण में नहीं है, वैसा हेतु विरुद्ध कहलाता है।

आश्रयासिद्धिराद्या स्यात्स्वरूपासिद्धिरप्यथ।
व्याप्यत्वासिद्धिरपरा स्यादसिद्धिरतस्त्रिधा ॥75॥

पहली आश्रयासिद्धि, उसके बाद स्वरूपासिद्धि, तीसरी व्याप्यत्वासिद्धि इस प्रकार असिद्धि तीन प्रकार की होती है।

पक्षासिद्धिर्यत्र पक्षो भवेन्मणिमयो गिरिः।

पक्षसिद्धि वहाँ होती है जहाँ मणिमय गिरि पक्ष होता है।

ह्रदो द्रव्यं धूमवत्त्वादत्रासिद्धिरथापरा ॥76॥

ह्रदो द्रव्यं धूमवत्त्वात् में दूसरी असिद्धि होती है।

व्याप्यत्वासिद्धिरपरा नीलधूमादिके भवेत् ।

नीलधूम आदि में व्याप्यत्वासिद्धि होती है।

विरुद्धयोः परामर्शे हेत्वोः सत्प्रतिपक्षता ॥77॥

परस्पर असमान अधिकरणवाले साध्यों के जो हेतु हैं, उनके साध्य व्याप्यवान् पक्ष तथा साध्याभाव व्याप्यवान् पक्ष, ऐसे दोनों परामर्शों में सत्प्रतिपक्षता होती है और उससे युक्त सत्प्रतिपक्ष होता है।

साध्यशून्यो यत्र पक्षस्त्वसौ बाध उदाहृतः ।
उत्पत्तिकालीनघटे गन्धादिर्यत्र साध्यते ॥78॥

जहाँ पक्ष साध्य से शून्य होता है, वह बाध कहलाता है। जहाँ उत्पत्ति कालीन घट में गन्ध आदि बाधित किया जाता है।

बाध को ही कालात्ययापदिष्ट नाम से जाना जाता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि न्यायसिद्धान्तमुक्तावली में पाँच हेत्वाभास बताये गये हैं- 'अनैकान्तो विरुद्धश्चाप्यसिद्धिः प्रतिपक्षितः .....' यह पंक्ति आचार्य विश्वनाथपञ्चानन की है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- न्यायसिद्धान्तमुक्तावली - अनुमानोपखण्ड, पेज 44,71

94. अधस्तनेषु वेदान्तानुसारं षट्कसम्पत्तिषु गण्येते-

a **श्रवणम्**	**b** **मननम्**
c **श्रद्धा**	**d** **समाधानम्**

समुचितं विकल्पं चिनुत -

(A) a एवं d	**(B)** b एवं c
(C) c एवं d	**(D)** c एवं a

व्याख्या- आचार्य सदानन्द प्रणीत वेदान्तसार में अनुबन्धचतुष्टय वर्णनोपरान्त साधनचतुष्टय को परिभाषित करते हुए षट्कसम्पत्ति की चर्चा करते हैं-

साधनानि नित्यानित्यवस्तुविवेकेहामुत्रार्थफलभोगविरागशमादिषट्कसम्पत्तिमुमुक्षुत्वानि।

नित्य एवं अनित्यवस्तु का विवेक, इहलौकिक एवं पारलौकिक फल को भोगने के प्रति वैराग्य शम दम, उपरति, तितिक्षा, समाधान और श्रद्धा आदि छः प्रकार की सम्पत्ति तथा मोक्षप्राप्ति के प्रति इच्छा ये चार साधन हैं।

ब्रह्म ही नित्य वस्तु है, उसके अतिरिक्त अन्य सभी कुछ अनित्य है, इस प्रकार समझना ही नित्य-अनित्य वस्तु विवेक है।

शमादयस्तु शमदमोपरतितितिक्षासमाधानश्रद्धाख्याः शमस्तावच्छ्रवणादिव्यतिरिक्तविषयेभ्यो मनसो निग्रहः।

शम आदि तो शम, दम, उपरति, तितिक्षा, समाधान, श्रद्धा नाम वाले हैं। शम-श्रवण आदि से अतिरिक्त (सांसारिक) विषयों से मन को रोकना ही शम है।

दमो बाह्येन्द्रियाणां तद्व्यतिरिक्तविषयेभ्यो निवर्तनम्

बाह्य इन्द्रियों का उन (श्रवणादि) से अतिरिक्त विषयों से रोकना ही दम है।

निवर्तितानामेतेषां तद्व्यतिरिक्तविषयेभ्य उपरमणमुपरतिरथवा विहितानां कर्मणां विधिना परित्यागः

बाह्यविषयों से रोकी गयी इन (इन्द्रियों) को उस (ब्रह्मादि) से अतिरिक्त विषयों से पूर्णतया अवरुद्ध करना ही उपरति है अथवा शास्त्रोक्त (नित्यादि) कर्मों का विधिपूर्वक त्याग ही उपरति है।

तितिक्षा शीतोष्णादिद्विन्द्वसहिष्णुता।

सर्दी-गर्मी (सुख-दुःख) आदि द्वन्द्वों को सहन करना ही तितिक्षा है।

निगृहीतस्य मनसः श्रवणादौ तदनुगुणविषये च समाधिः समाधानम्

पूर्णतया नियन्त्रित मन का श्रवण आदि तथा उनके अनुकूल विषयों में भली प्रकार लगना ही समाधि है।

गुरूपदिष्ट वेदान्तवाक्येषु विश्वासः श्रद्धा

गुरु के द्वारा उपदिष्ट वेदान्त के वाक्यों में विश्वास श्रद्धा है।

मुमुक्षुत्वं मोक्षेच्छा।

मोक्ष की इच्छा ही मुमुक्षुत्व है।

इस प्रकार की विशेषताओं से युक्त हुआ प्रमाता ही अधिकारी है। 'जितेन्द्रिय ही शान्तचित्त रहता है।' इत्यादि श्रुतिवचन भी हैं

*** अनुबन्ध चतुष्टय-** 1. अधिकारी 2. विषय 3. सम्बन्ध 4. प्रयोजन

*** साधनचतुष्टय-** नित्यानित्यवस्तु विवेक, इहामुत्रार्थफलभोगविराग, शमादिषट्कसम्पत्ति, मुमुक्षुत्व

*** षट् कर्म-** नित्यकर्म, नैमित्तिककर्म, प्रायश्चित्तकर्म, उपासना कर्म, काम्यकर्म और निषिद्धकर्म

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि षट्कसम्पत्ति में शम, दम, उपरति, तितिक्षा, समाधान, श्रद्धा परिगणित हैं। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- वेदान्तसार - राकेश शास्त्री, पेज 132

95. अधोलिखितेषु केन सह कस्य सम्बन्धः?

(a)	**आख्यातम्**	**(i)**	**अदः**
(b)	**नाम**	**(ii)**	**भवति**
(c)	**निपातः**	**(iii)**	**परि**
(d)	**उपसर्गः**	**(iv)**	**नु**

समुचितं तालिकां चिनुत -

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	(iii)	(ii)	(i)	(iv)
(B)	(i)	(iii)	(ii)	(iv)
(C)	(iv)	(iii)	(i)	(ii)
(D)	(ii)	(i)	(iv)	(iii)

व्याख्या- आचार्य यास्क द्वारा प्रणीत निरुक्त है, जिसमें तीन काण्ड एवं बारह अध्याय हैं। यास्क का निरुक्त निघण्टु की व्याख्या है।

अद इति सत्त्वानामुपदेशो गौरश्वः पुरुषो हस्तीति।

भवतीति भावस्य, आस्ते, शेते व्रजति, तिष्ठतीति।

'अदः' अर्थात् अदस् इदम् आदि सर्वनाम पदों के द्वारा सत्त्व अर्थात् द्रव्यों का निर्देश किया जाता है और गौ, अश्व, पुरुष, हस्ति आदि संज्ञावाचक पदों से द्रव्यों का विशेष रूप से निर्देश होता है।

इसी प्रकार भू धातु से भवति पद से यहाँ भू धातु का ग्रहण करना चाहिए भाव अर्थात् क्रिया का सामान्य रूप से तथा आस्ते, शेते, व्रजति, तिष्ठति आदि से (विशेष रूप से क्रिया का निर्देश होता है।)

'अप' इत्युपजनम्। 'परि' इति सर्वतोभावम्।

'अधि' इत्यु परिभावमैश्वर्यं वा।

एवमुच्चावचानर्थान् प्राहुः। त उपेक्षितव्याः ॥3॥

अप उपजन को। परि यह उपसर्ग सर्वतोभाव को 'अधि' यह उपसर्ग उपपरिभाव अथवा ऐश्वर्य को कहता है।

इस प्रकार उपसर्ग भिन्न-भिन्न उच्चावच अर्थों को कहते हैं।

नु इत्येषोऽनेककर्मा। 'इदं नु करिष्यति' इति हेत्वपदेशे। 'कथं नु करिष्यति' इत्यनुपृष्टे। 'न न्वेतदकार्षीत्' इति च।

नु यह (निपात भी चित् के समान) अनेकार्थक है। 'इदं नु करिष्यति' यह जो करेगा, यहाँ हेतु के कथन में 'नु' का प्रयोग है।

षड्भावविकारा भवन्तीति वार्ष्यायणिः।

जायते, अस्ति, विपरिणमते, वर्धते, अपक्षीयते, विनश्यति इति।

क्रियाओं के छः भेद-

मुख्यरूप से- छः प्रकार के क्रियाओं के भेद विकार होते हैं, यह वार्ष्यायणि आचार्य का मत है-

1. जायते - उत्पन्न होता है।
2. अस्ति - रहता है।
3. विपरिणमते - परिवर्तित होता है।
4. वर्धते - बढ़ता है।
5. अपक्षीयते - क्षीण होता है।
6. विनश्यति - नष्ट होता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से होता है कि आख्यातम् - भवति, नाम- अदः, निपात-नु, उपसर्ग-परि से सम्बन्धित है। **अतः**

विकल्प 'D' सही है।

स्रोत- निरुक्त - छज्जूराम शास्त्री, पेज 25,41,46

96. निम्नाङ्कितेषु समुचितः सम्बन्धो वर्तते-

a हर्षस्य वांसखेडा - ताम्र अभिलेख

b पुलकेशिन् द्वितीयस्य - मन्दसौर अभिलेख

c यशोधर्मण - इलाहाबाद अभिलेख

d रुद्रदामन - गिरनार अभिलेख

अधस्तनेषु समीचीनं विकल्पं चिनुत -

(A) a एवं b **(B)** b एवं c

(C) c एवं d **(D)** a एवं d

व्याख्या- हर्ष का बाँसखेड़ा का ताम्रपत्र

स्थान - बासखेड़ा, जिला शाहजहाँपुर उत्तरप्रदेश

भाषा - संस्कृत

लिपि - उत्तर ब्राह्मी

काल - लगभग 628 ई.

विषय - हर्षवर्धन के पूर्वजों तथा उसकी उपलब्धियों का वर्णन

पुलकेशिन् द्वितीय का एहोल शिलालेख

स्थान - एहोल जिला - बीजापुर

भाषा - संस्कृत

लिपि - दक्षिणी ब्राह्मी

काल - वि. सं. 566 (499ई.)

विषय - पुलकेशिन् द्वितीय तक चालुक्य शासकों का वर्णन, पुलकेशिन् द्वितीय की कीर्ति का उल्लेख

समुद्रगुप्त का प्रयाग स्तम्भ अभिलेख

स्थान - इलाहाबाद, उत्तरप्रदेश (यह मूलतः कौशाम्बी में था जहाँ से इलाहाबाद किले में लाया गया।)

भाषा - संस्कृत

लिपि - ब्राह्मी

काल - समुद्रगुप्त (लगभग 335-76ई.)

विषय - समुद्रगुप्त का जीवन चरित तथा उपलब्धियों का विकास

रुद्रदामन का जूनागढ़ शिलालेख (गिरनार)

स्थान - जूनागढ़, गुजरात

भाषा - संस्कृत

लिपि - ब्राह्मी

काल - रुद्रदामन के राजत्वकालान्तर्गत 72वाँ वर्ष

विषय - रुद्रदामन के प्रान्तीय शासक सुविशाख द्वारा सुदर्शन बाँध का पुनर्निर्माण, बाँध का पूर्व इतिहास एवं रुद्रदामन की राजनैतिक उपलब्धियाँ का विवरण

* यह अभिलेख काठियावाड़ के जूनागढ़ जिले में गिरिनार पर्वत के कण्ट प्रदेश में घाटी की ओर जाने वाली भाग में शुद्ध संस्कृत भाषा में उत्कीर्ण है।

* इस अभिलेख का नायक रुद्रदामन है जिसकी उपाधि 'महाक्षत्रप' है। इस अभिलेख से रुद्रदामन के वंश, कृतित्व, व्यक्तित्व और सुदर्शन झील के इतिहास पर प्रकाश पड़ना है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि हर्ष वासखेड़ा का ताम्र अभिलेख पुलकेशिन् द्वितीय का एहोल शिलालेख समुद्रगुप्त का (इलाहाबाद) प्रयाग स्तम्भ रुद्रदामन (गिरनार) जूनागढ़ अभिलेख से सम्बन्धित है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- भारतीय पुरालेखों का अध्ययन-शिवस्वरूप सहाय, पेज 209,246,356,363

97. अधोऽङ्कितेषु योगसूत्रानुसारं योगाङ्गेषु गण्येते-

a स्वाध्यायः **b निरुद्धम्**

c प्रत्यक्षम् **d समाधिः**

समुचितं विकल्पं चिनुत -

(A) a एवं d **(B)** a एवं b

(C) a एवं c **(D)** b एवं d

व्याख्या- * योगदर्शन के प्रणेता महर्षि पतञ्जलि हैं।

* योग शब्द 'युज् + घञ्' से बना है जिसका अर्थ है - 'समाधि।'

* योग को 'सेश्वरसांख्य' कहा जाता है क्योंकि यह ईश्वरतत्त्व को मानता है।

योगसूत्र में चार पाद हैं-

(1) समाधिपाद (2) साधनपाद (3) विभूतिपाद (4) कैवल्य पाद

* योगदर्शन में पदार्थों (तत्त्वों) की संख्या 26 है।

* योगसूत्र तीन प्रमाण मानता है-

(1) प्रत्यक्ष (2) अनुमान (3) आगम (शब्द)

* **यमनियमाऽऽसनप्राणायामप्रत्याहारधारणाध्यानस-माधयोऽष्टावङ्गानि (2/29)**

यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि ये योग के आठ अङ्ग हैं।

* **अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमाः (2/30)**

अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह ये पाँच यम कहे जाते हैं।

शौचसन्तोषतपःस्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि नियमाः (2/32)

शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान नियम कहे जाते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि योगसूत्र के अनुसार योगाङ्गों में यम, नियम, आसन, प्राणायाम, धारण, ध्यान, समाधि है। शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय नियम के अन्तर्गत आते हैं। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- पातञ्जलयोगदर्शन (2/29,30,32)

98. याज्ञवल्क्यस्मृतेरनुसारं 'लिखितं भुक्तिः साक्षिण श्चेति' किम् ?

(A) प्रमाणम् **(B)** प्रकरणम्

(C) अनुमानम् **(D)** साधनम्

व्याख्या- याज्ञवल्क्यस्मृति के रचनाकार आचार्य याज्ञवल्क्य हैं। तीन भागों में विभाजित याज्ञवल्क्यस्मृति के द्वितीय भाग व्यवहाराध्याय के साक्षिप्रकरण में प्रमाणों को बताते हुये यह कारिका प्रस्तुत करते हैं-

प्रमाणं लिखितं भुक्तिः साक्षिणश्चेति कीर्तितम् ।
एषामन्यतमाभावे दिव्यान्यतममुच्यते ॥22॥

(किसी भी वाद के) लिखित, उपभोग और साक्षी ये तीन प्रमाण हैं। इनमें किसी के न होने पर दिव्य प्रमाणों में कोई प्रमाण होता है।

तपस्विनो दानशीलाः कुलीनाः सत्यवादिनः।
धर्मप्रधाना ऋजवः पुत्रवन्तो धनान्विताः ॥68॥
त्र्यवराः साक्षिणो ज्ञेयाः श्रौतस्मार्तक्रियापराः
यथाजाति यथावर्णं सर्वे सर्वेषु वा स्मृतः ॥69॥

तपस्वी, दानशीला, कुलीन, सत्यवक्ता, धर्मप्रधान, सरलस्वभाव, पुत्रवान्, धनयुक्त तथा श्रौतस्मार्त क्रिया में रत कम से कम तीन साक्षी होते हैं। ये जाति तथा वर्ण के अनुसार अथवा सभी जाति और वर्ग के लिए होते हैं।

ऋणादान प्रकरण- इस प्रकरण में ऋण से सम्बन्धित श्लोक का वर्णन है -

अशीतिभागो वृद्धिः स्यान्मासि मासि सबन्धके।
वर्णक्रमाच्छतं द्वित्रिचतुष्पञ्चकमन्यथा ॥37॥

बन्धक रखे जाने पर प्रत्येक मास में उसका अस्सीवाँ भाग ब्याज होता है। अन्य स्थिति में (बन्धक न होने पर) वर्ण क्रम (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र क्रम) से दो, तीन, चार और पाँच प्रतिशत वृद्धि होती है।

सन्ततिस्तु पशुस्त्रीणाम् ॥38॥

पशु और स्त्री की वृद्धि ब्याज उसकी सन्तान है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि याज्ञवल्क्यस्मृति के अनुसार लिखित, भुक्ति और साक्षी तीन प्रमाण है।

अतः विकल्प 'A' सही है।

स्रोत- याज्ञवल्क्यस्मृति (2/22)

99. गगनारविन्दं सुरभि, अरविन्दत्वात्, सरोजारविन्दवत् इत्यत्र तर्कभाषानुसारं कतमो हेत्वाभासः?

(A) स्वरूपासिद्धः **(B)** विरुद्धः

(C) आश्रयासिद्धः **(D)** व्याप्यत्वासिद्धः

व्याख्या- आचार्य गौतम प्रणीत न्यायदर्शन का प्रकरण ग्रन्थ तर्कभाषा जो आचार्य केशव मिश्र द्वारा प्रणीत है।

तर्कभाषा में पाँच हेत्वाभास का निरूपण किया गया है-

असिद्ध-विरुद्ध-अनैकान्तिकप्रकरणसम-
कालात्ययापदिष्टभेदात् पञ्चैव।

हेत्वाभास- (1) असिद्ध (2) विरुद्ध (3) अनैकान्तिक (4) प्रकरणसम (5) कालात्ययापदिष्ट भेद से पाँच प्रकार का होता है।

1. असिद्ध हेत्वाभास-

तत्र लिङ्गत्वेनानिश्चितो हेतुरसिद्ध तत्रासिद्धस्त्रिविधः। आश्रयासिद्धः, स्वरूपासिद्धः, व्याप्यत्वासिद्धश्चेति।

उसमें लिङ्ग के रूप में निश्चित न होने वाला हेतु असिद्ध हेत्वाभास कहलाता है।

वह असिद्ध तीन प्रकार का होता है-

(1) आश्रयासिद्ध (2) स्वरूपासिद्ध (3) व्याप्यत्वासिद्ध

आश्रयासिद्धो यथा गगनारविन्दं सुरभि, अरविन्दत्वात् सरोजारविन्दवत् । अत्र गगनारविन्दमाश्रयः, स च नास्त्येव।

आश्रयासिद्ध यह है जैसे आकाशकमल सुगन्धित होता है (प्रतिज्ञा), क्योंकि वह कमल (अथवा उसमें कमलत्व) है (हेतु), सरोवर में उत्पन्न कमल के समान उदाहरण। यहाँ आकाशकमल आश्रय है और वहाँ होता ही नहीं।

स्वरूपासिद्धो यथा, अनित्यः शब्दः, चाक्षुषत्वात् घटवत्

अत्र चाक्षुषत्वं हेतुः, स च शब्दे नास्त्येव तस्य श्रावणत्वात्।

स्वरूपासिद्ध यह है, जैसे शब्द, अनित्य है, क्योंकि वह चाक्षुष (चक्षु से ग्राह्य है) है (हेतु), घट के समान (उदाहरण)। यहाँ चाक्षुषत्व हेतु है और वह शब्द में नहीं है क्योंकि शब्द तो श्रोत्र से ग्राह्य होता है।

2. विरुद्ध हेत्वाभास-

साध्यविपर्ययव्याप्तो हेतुर्विरुद्धः। स यथा शब्दो नित्यः कृतकत्वादात्मवत् ।

साध्य के अभाव विपर्यय से व्याप्त हेतु विरुद्ध हेत्वाभास कहलाता है। वह इस प्रकार है, शब्द नित्य है, क्योंकि वह कृतक (जन्म) है (हेतु) आत्मा (उदाहरण)।

3. अनैकान्तिक हेत्वाभास-

सव्यभिचारोऽनैकान्तिकः।

स द्विविधः साधारणानैकान्तिकोऽसाधारणानैकान्तिकश्चेति। तत्र पक्षसपक्षविपक्षवृत्तिः साधारणः। यथा शब्दो नित्यः प्रमेयत्वात् व्योमवत्। अत्र हि प्रमेयत्वं हेतुस्तच्च नित्यानित्यवृत्ति।

स यथा- भूर्नित्या गन्धवत्त्वात् गन्धवत्त्वं हि सपक्षान्नित्याद् विपक्षाच्चानित्याद् व्यावृत्तं भूमात्रवृत्ति।

सव्यभिचार हेतु अनैकान्तिक हेत्वाभास कहलाता है। यह दो प्रकार का होता है - साधारण अनैकान्तिक और असाधारण अनैकान्तिक।

उनमें पक्ष, सपक्ष और विपक्ष में रहने वाले साधारण अनैकान्तिक है, जैसे शब्द नित्य है, क्योंकि वह प्रमेय है, आकाश के समान। यहाँ प्रमेयत्व हेतु है जो नित्य (पक्ष एवं सपक्ष) एवं अनित्य (विपक्ष) दोनों से व्यावृत्त होकर केवल पक्ष में ही रहता है वह साधारण अनैकान्तिक हेत्वाभास है।

जैसे भूमि नित्य है। क्योंकि यह गन्धवाली है। यहाँ गन्धत्व है, वह सपक्ष-नित्य से तथा विपक्ष अनित्य से व्यावृत्त है केवल पृथिवी में रहता है।

4. प्रकरणसम -

प्रकरणसमस्तु स एव यस्य हेतोः साध्यविपरीतसाधकं हेत्वन्तरं विद्यते। स यथा शब्दोऽनित्यो नित्यधर्मरहितत्वात्। शब्दो नित्योऽनित्यधर्मरहितत्वादिति। अयमेव हि सत्प्रतिपक्ष इति चोच्यते।

प्रकरणसम तो वह हेत्वाभास है जिस हेतु के साध्य के विपरीत अर्थ का साधक दूसरा हेतु विद्यमान होता है। वह इस प्रकार है, जैसे शब्द अनित्य है, क्योंकि वह नित्य के धर्म से रहित (हेतु)। शब्द नित्य है, क्योंकि वह अनित्य के धर्म से रहित है। यह प्रकरणसम ही सत्प्रतिपक्ष कहलाता है।

5. कालात्ययापदिष्ट हेत्वाभास-

पक्षे प्रमाणान्तरावधृतसाध्याभावो हेतुर्बाधित-विषयः कालात्ययापदिष्ट इति चोच्यते।

यथा अग्निरनुष्णः कृतकत्वाज्जलवत् ।

जिसके साध्य का अभाव अन्य प्रमाण से निश्चित कर दिया जाता है वह हेतु बाधितविषय तथा कालात्ययापदिष्ट कहलाता है। जैसे अग्नि अनुष्ण है, क्योंकि वह जन्य है, जैसे जल।

यहाँ कृतकत्व हेतु का साध्य अनुष्णत्व है उसका अभाव प्रत्यक्ष से ही निश्चित कर लिया गया है क्योंकि स्पर्शन प्रत्यक्ष से अग्नि में उष्णता की उपलब्धि होती है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि गगनारविन्दं सुरभि, अरविन्दत्वात् सरोजारविन्दवत् यह तर्कभाषा के अनुसार आश्रयासिद्ध का उदाहरण है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज 111

100. नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम् ।
देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत् ॥
उपर्युक्त श्लोकेन सम्बन्धोऽस्ति-

(A) वाल्मीकिरामायणस्य **(B)** महाभारतस्य
(C) जयपुराणस्य **(D)** भारतविजयस्य

व्याख्या- * महाभारत महर्षि वेदव्यास द्वारा विरचित महाकाव्य है।

* इस महाकाव्य को 'शतसाहस्रीसंहिता' के नाम से भी जाना जाता है।
* महाभारत का विकास क्रमशः जय, भारत तथा महाभारत इस रूप में तीन विविध उद्देश्यों की पूर्ति के लिए पृथक्-पृथक् अवसरों पर हुआ है।

➤ **जय -** महाभारत का मूलरूप जय के नाम से प्रसिद्ध था- **जयो नामेतिहासोऽयं श्रोतव्यो विजिगीषुणा।** महाभारत (1.62.20)

* महाभारत के मङ्गलश्लोक में नारायण, नर और सरस्वती को नमस्कार करके जय नामक ग्रन्थ के पाठ का स्पष्ट निर्देश है-

नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम् ।
देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत् ॥

* वर्तमान महाभारत के आदिपर्व के 65वें अध्याय से जय की सामग्री का आरम्भ हुआ था जिसमें क्षत्रियों की उत्पत्ति का वर्णन है। व्यास के इस ग्रन्थ में 8800 श्लोक थे।

अष्टौ श्लोकसहस्राणि अष्टौ श्लोकशतानि च ।
अहं वेद्मि शुको वेत्ति संजयो वेत्ति वा न वा ॥

* व्यास ने इस ग्रन्थ को वैशम्पायन को सुनाया था। इसमें अधर्म पर धर्म की विजय का निरूपण था।

➢ **भारत-** द्वितीय अवस्था में जय का विस्तार भारत के रूप में हुआ जिसमें 24000 (चौबीस सहस्र) श्लोक हो गये।

* इस ग्रन्थ में उपाख्यानों को सम्मिलित नहीं किया गया था। महाभारत में ही इस ग्रन्थ का संकेत दिया गया है-

चतुर्विंशतिसाहस्त्रीं चक्रे भारतसंहिताम् ।
उपाख्यानैर्विना तावद् भारतं प्रोच्यते बुधैः॥

भारत का प्रवचन वैशम्पायन ने जनमेजय के समक्ष नागयज्ञ के अवसर पर किया था।

➢ **महाभारत -** अन्तिम अवस्था में एक लाख से अधिक श्लोकों का महाभारत ग्रन्थ प्रस्तुत हुआ। इसी रूप में यह आज उपलब्ध है।

* भारत को 'महाभारत' के रूप में परिणत करने का अवसर नैमिषारण्य नामक पवित्र स्थान में होने वाला यज्ञ था जिसे शौनक ऋषि ने अनुष्ठित किया था।

* इसके प्रवक्ता सौति नामक ऋषि थे, जिन्होंने वैशम्पायन से सुने हुये भारत नामक ग्रन्थ को पर्याप्त परिवर्धित करके शौनकादि ऋषियों को सुनाया था।

* महाभारत में अध्यात्म, इतिहास, भूगोल, आख्यान, नीतिशास्त्र, आचार-विचार आदि समस्त सांस्कृतिक विषयों को इसमें समाविष्ट किया गया।

* इससे यह भारतवर्ष का विश्वकोश बन गया।

* विशालता और महत्ता ही इसके 'महाभारत' कहे जाने की पृष्ठभूमि में थी-

महत्त्वाद् भारवत्त्वाच्च महाभारतमुच्यते (1.1.274)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम्' यह मङ्गलाचरण महाभारत का है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा ऋषि, पेज 147

उत्तरमाला

1-(A)	2-(C)	3-(B)	4-(A)	5-(A)	6-(D)	7-(C)	8-(C)	9-(C)
10-(A)	11-(B)	12-(A)	13-(D)	14-(D)	15-(C)	16-(A)	17-(C)	18-(C)
19-(B)	20-(C)	21-(C)	22-(C)	23-(C)	24-(B)	25-(C)	26-(B)	27-(B)
28-(B)	29-(A)	30-(B)	31-(B)	32-(B)	33-(A)	34-(B)	35-(B)	36-(A)
37-(C)	38-(B)	39-(D)	40-(B)	41-(B)	42-(C)	43-(C)	44-(B)	45-(D)
46-(C)	47-(C)	48-(B)	49-(C)	50-(B)	51-(B)	52-(D)	53-(B)	54-(D)
55-(B)	56-(B)	57-(B)	58-(B)	59-(C)	60-(B)	61-(D)	62-(A)	63-(A)
64-(B)	65-(D)	66-(C)	67-(A)	68-(D)	69-(B)	70-(C)	71-(A)	72-(A)
73-(C)	74-(C)	75-(C)	76-(C)	77-(C)	78-(C)	79-(A)	80-(D)	81-(B)
82-(A)	83-(A)	84-(D)	85-(B)	86-(B)	87-(B)	88-(A)	89-(B)	90-(B)
91-(B)	92-(C)	93-(A)	94-(C)	95-(D)	96-(D)	97-(A)	98-(A)	99-(C)
100-(B)								

3	जून 2019	NTA UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् II

1. 'नमो अरिहंतानां नमो सवसिधानां ऐरेण महाराजेन..।' इति वाक्यं कस्मिन्नभिलेखे प्राप्यते?
(A) इलाहाबादलेखे (B) ऐहोल-शिलालेखे
(C) गिरनारलेखे (D) हाथीगुम्फा-लेखे

व्याख्या- ➢ **इलाहाबाद लेख-** समुद्रगुप्त का प्रयाग स्तम्भ अभिलेख **स्थान-** इलाहाबाद, उत्तर-प्रदेश (यह मूल रूप से कौशाम्बी में था जहाँ से इलाहाबाद किले में लाया गया)
भाषा- ब्राह्मी
काल- समुद्रगुप्त (लगभग 335-76 ई.)
विषय- समुद्रगुप्त के जीवनचरित एवं उपलब्धियों का वर्णन।इस स्तम्भलेख में समुद्रगुप्त की प्रशस्ति का उल्लेख है तथा यह प्रयाग में है। इसी कारण इसे 'प्रयाग-प्रशस्ति' कहा जाता है। इसके लेखक हरिषेण हैं, इसलिए इसे हरिषेण कृत 'प्रयाग-प्रशस्ति' नाम से भी जाना जाता है।
➢ **प्रत्यन्त सीमावर्ती राज्यों की विजय-** प्रशस्ति की 22वीं पंक्ति में इनका उल्लेख है। ऐसे राज्यों की दो कोटियाँ–राजतन्त्र और गणतन्त्र थीं।
(1) राजतन्त्र- समतट, डवाक, कामरूप, कर्तृपुर एवं नेपाल।
(2) गणतन्त्र- प्रशस्ति में कुल 9 गणतन्त्रों का उल्लेख है। खरपरिक, प्रार्जुन, मालव, यौधेय, अर्जुनायन, काक, सनकानिक, आभीर एवं मद्रक।
➢ **समुद्रगुप्त के सिक्के-** समुद्रगुप्त ने छह प्रकार की स्वर्ण मुद्राओं का प्रचलन किया।
(1) ध्वजधारी या दण्डधारी या गरुड़ प्रकार के सिक्के
(2) धनुर्धारी प्रकार (3) परशुधारी (4) अश्वमेध (5) व्याघ्रनिहन्ता
(6) वीणावादन
➢ **एहोल शिलालेख-** पुलकेशिन् द्वितीय का एहोल लेख-
स्थान- एहोल, जिला-बीजापुर
भाषा- संस्कृत
लिपि- दक्षिणी ब्राह्मी
काल- वि॰सं॰ 556 (499ई॰)
विषय- पुलकेशिन् द्वितीय तक चालुक्य शासकों का वर्णन तथा पुलकेशिन् द्वितीय की कीर्ति का उल्लेख।

येनायोजि न वेश्म स्थिरमर्थविधौ विवेकिना जिनवेश्म।
स विजयतां रविकीर्तिः कविताश्रितकालिदासभारविकीर्तिः॥

अर्थात् काव्य के क्षेत्र में कालिदास एवं भारवि के समान यशस्वी वह रविकीर्ति विजयी हो, जिस विवेकी के द्वारा जैन मन्दिरों का निर्माण कराया गया, अपना भवन निर्माण आदि नहीं किया गया।
हाथीगुम्फा अभिलेख-
स्थान- हाथीगुम्फा भुवनेश्वर के निकट उदयगिरि पहाड़ी, जिला-पुरी, उड़ीसा
लिपि- ब्राह्मी
काल- लगभग प्रथम शती ई॰पू॰ का उत्तरार्ध
विषय- चेदिवंशी राजा कलिंगाधिपति खारवेल के जीवन की घटनाओं का क्रमिक विवरण एवं उसकी राजनैतिक उपलब्धियाँ तथा लोकमंगल के कार्यों का उल्लेख
'नमो अरिहंतानां नमो सवसिधानं ऐरेण महाराजेन।'
अर्हतों को नमस्कार। सब सिद्धों को नमस्कार। इस लेख के पढ़ने का प्रयास जेम्स प्रिंसेप, कनिंघम, राजेन्द्रलाल मित्र, भगवान् लाल इन्द्रजी, व्हीलर,फ्लीट, ल्यूडर, राखालदास बनर्जी, काशी प्रसाद, जायसवाल, बेनीमाधव बरुआ, स्टेन कोनो, थामस, मुनि जिनविजय, रामप्रसाद चन्दा आदि ने किया है।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'नमो अरिहंतानां नमो..' यह वाक्य हाथीगुम्फा लेख में प्राप्त होता है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**
स्रोत- प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख (भाग-1)-परमेश्वरी लाल गुप्त, पेज–94

2. ऋक्प्रातिशाख्यानुसारं समानाक्षराणां का संख्या?
(A) षड् (B) अष्ट
(C) पञ्च (D) सप्त

व्याख्या- एक-एक शाखा से सम्बद्ध होने के कारण ही ये ग्रन्थ 'प्रातिशाख्य' कहलाते हैं। (शाखायां शाखायां प्रतिशाखम्, प्रतिशाखं भवं प्रातिशाख्यम्)
शौनक कृत ऋग्वेदप्रातिशाख्य में अठारह पटल हैं।
➢ समानाक्षर संज्ञा- **अष्टौ समानाक्षराण्यादितः (1)**
आदि में आठ अक्षर समानाक्षर हैं।
जैसे- अ, आ, ऋ, ॠ, इ, ई, उ, ऊ।
➢ सन्ध्यक्षर संज्ञा- **ततश्चत्वारि संध्यक्षराण्युत्तराणि (2)**

तत्पश्चात् आगे वाले चार अक्षर संध्यक्षर हैं।
जैसे- ए, ओ, ऐ, औ।

➤ ह्रस्व स्वरस्य उच्चारणकालः **मात्रा ह्रस्वः (27)**
ह्रस्व स्वर का उच्चारण काल एक मात्रा काल वाला होता है।
जैसे- अ, ऋ, इ, उ, ऌ ।

➤ दीर्घस्वरस्य उच्चारणकालः– **द्वे दीर्घः (29)**
दीर्घस्वर वर्ण दो (मात्रा) वाला कहा जाता है।
जैसे- आ, ॠ, ई, ऊ, ए, ओ, ऐ, औ ।

➤ प्लुतस्य **स्वरसंज्ञा उच्चारणकालः**
तिस्रः प्लुत उच्यते स्वरः (30) प्लुत स्वर वर्ण तीन मात्रा वाला कहा जाता है।

➤ रक्तसंज्ञा- **रक्तसंज्ञोऽनुनासिकः (36)**
अनुनासिक वर्ण रक्तसंज्ञक हैं।
जैसे- ङञणनमाः

➤ संयोगसंज्ञा- **संयोगस्तु व्यञ्जनसंन्निपातः (37)**
व्यञ्जन वर्णों का मेल सन्निपात संयोग कहलाता है।
जैसे- कार्त्स्यायन, 'प्रप्र वस्त्रिष्टुभमिषम्' इत्यादि।

➤ प्रगृह्यसंज्ञा- **ओकार आमन्त्रितजः प्रगह्यः (68)**
सम्बोधन आमन्त्रित से उत्पन्न ओकार प्रगृह्य संज्ञक होता है।
जैसे- ओकारः

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि ऋक्प्रातिशाख्यानुसारं समानाक्षरों की संख्या आठ है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- ऋक्प्रातिशाख्यम्-वीरेन्द्रकुमार वर्मा, पेज 43

3. बाष्कलशाखा कस्य वेदस्य विद्यते-
(A) ऋग्वेदस्य **(B) सामवेदस्य**
(C) यजुर्वेदस्य **(D) अथर्ववेदस्य**

व्याख्या- वेद	**शाखा**
ऋग्वेद -	1. शाकल 2. बाष्कल 3. आश्वलायन 4. शांखायन 5. माण्डूकायन
शुक्लयजुर्वेद -	1. माध्यन्दिन (वाजसनेयि) 2. काण्व
कृष्णयजुर्वेद-	1. तैत्तिरीय 2. मैत्रायणी 3. कठ 4. कपिष्ठल
सामवेद-	1. कौथुमीय 2. राणायनीय 3. जैमिनीय
अथर्ववेद-	1. पैप्पलाद 2. तौद 3.मौद 4. शौनकीय 5. जाजल 6.जलद 7. ब्रह्मवद 8. देवदर्श 9.चारणवैद्य

ऋग्वेद के अपर नाम- 1. दशतयी
2. होतृवेद

ऋग्वेद का द्विधा विभाजन

अष्टक क्रम	मण्डलक्रम
अष्टक (8)	मण्डल 10
अध्याय (64)	अनुवाक 85
वर्ग (2024)	सूक्त 1017+11=1028

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि बाष्कल शाखा ऋग्वेद की है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज 46

4. यजुर्वेदस्य निम्नलिखित भाष्यकारेषु कोऽर्वाचीनतमः?
(A) स्वामिदयानन्दः **(B) रावणः**
(C) उव्वटः **(D) महीधरः**

व्याख्या-स्वामी दयानन्द सरस्वती-
➤ आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती आधुनिक युग में वेदों के पुनरुद्धारक माने जाते हैं।
➤ उन्होंने नैरुक्त प्रक्रिया का आश्रय लेकर वेदों की नई व्याख्या प्रस्तुत की है।
➤ उन्होंने सम्पूर्ण शुक्लयजुर्वेद की संस्कृत और हिन्दी में व्याख्या की है।
➤ ऋग्वेद की व्याख्या मण्डल 7 के 80 सूक्त तक ही कर सके।
➤ वेद को अपौरुषेय की मान्यता प्रदान करते हैं।

रावणः - आचार्य रावण ने ऋग्वेद का पदपाठ प्रस्तुत किया है और ऋग्वेद पर भाष्य भी किया हैं।

उव्वटः - यह नाम उव्वट और उवट दोनों प्राप्त होते हैं
➤ यजुर्वेदभाष्य के अन्त में इन्होंने अपना परिचय भी दिया है। ये आनन्दपुर निवासी वज्रट के पुत्र थे।
➤ राजा भोज के शासनकाल में इन्होंने वेदभाष्य किया।
➤ इनका समय 11वीं शती ई॰ है।

अन्य ग्रन्थ- 1. ऋक्प्रातिशाख्य की टीका 2. यजुः प्रातिशाख्य की टीका 3. ऋक्सार्वानुक्रमणी पर भाष्य 4. ईशोपनिषद् पर भाष्य

महीधरः - ये काशी निवासी नागर ब्राह्मण थे।
➤ इन्होंने यजुर्वेदभाष्य का नाम 'वेददीप' रखा है।
➤ इनका समय 16वीं शती ई॰ का उत्तरार्ध है।
➤ इन्होंने एक तन्त्रग्रन्थ मन्त्रमहोदधि (1588) ई॰ में लिखा है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि यजुर्वेद के अर्वाचीन

भाष्यकार स्वामी दयानन्द हैं। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज 18

5. शारिपुत्रप्रकरणमस्ति-
(A) माघप्रणीतम् **(B) श्रीहर्षप्रणीतम्**
(C) अश्वघोषप्रणीतम् **(D) बिल्हणप्रणीतम्**

व्याख्या- अश्वघोष ''आर्यसुवर्णाक्षीपुत्रस्य साकेतस्य भिक्षोराचार्यस्य भदन्ताश्वघोषस्य महाकवेर्महावादिनः कृतिरियम्-'' इस वाक्य से यह स्पष्ट होता है कि इनकी माता का नाम सुवर्णाक्षी था। ये साकेत (अयोध्याक्षेत्र) के निवासी थे। ये बौद्ध भिक्षु आचार्य थे, जिन्हें भदन्त, महाकवि और महावादी भी कहा जाता था।

रचनायें- अश्वघोष की प्रमाणसिद्ध काव्यकृतियाँ हैं-

1-बुद्धचरित - यह मूलतः 28 सर्गो का महाकाव्य था, किन्तु अभी संस्कृत में अधूरा ही प्राप्त है।

2- सौन्दरनन्द- 18 सर्गों का पूर्णतः उपलब्ध संस्कृत महाकाव्य

3- शारिपुत्रप्रकरण- नौ अङ्कों का रूपक जो अंशतः प्राप्त है।

माघ- *सर्वाधिकारी सुकृताधिकारी श्रीवर्मलाख्य तस्य बभूव राज्ञः असक्तदृष्टिर्विरजा सदैव देवोऽपरः सुप्रभदेवनामा।।*

माघ के पितामह सुप्रभदेव थे, जो राजा वर्मलात के सर्वाधिकारी अर्थात् दीवान थे। वे पुण्यात्मा, अनासक्त तथा सात्त्विक वृत्ति के पुरुष थे।

➤ सुप्रभदेव के पुत्र का नाम दत्तक था, जो उदार, क्षमाशील, कोमल स्वभाव के एवं धर्मपरायण थे, इन्हें लोग सर्वाश्रय भी कहते थे।

➤ माघ का निवासस्थान श्रीमाल या भिन्नमाल नामक नगर में था इनका समय 700ई॰ के आस-पास माना जाता है।

➤ शिशुपालवधम् नामक महाकाव्य के रचयिता महाकवि माघ का संस्कृत महाकवियों में विशेष स्थान है।

➤ विद्वानों ने श्रेष्ठ महाकाव्य का प्रणेता माना है-**'काव्येषु माघः'**

शिशुपालवधम्- यह माघकवि की एकमात्र कृति, 20 सर्गों के महाकाव्य के रूप में है। देवर्षि नारद के द्वारा इन्द्र का सन्देश द्वारकापुरी में कृष्ण को मिलता है, जिसमें शिशुपाल के अत्याचार से जगत् की रक्षा की प्रार्थना है। इसी प्रकार अन्तिम सर्ग में श्रीकृष्ण शिशुपाल का वध कर देते हैं। इस मूल कथानक को माघ ने कलात्मकता और विविध वर्णनों का प्रयोग करके बड़ा बना दिया है, जिसमें किरातार्जुनीय की अपेक्षा, बड़े-बड़े सर्गों में विभक्त 1645 पद्य हैं। पन्द्रहवें सर्ग में 34 प्रक्षिप्त श्लोक अतिरिक्त हैं जिनकी व्याख्या मल्लिनाथ ने नहीं की है। पाँच पद्य कविवंश वर्णन के हैं, उन्हें लगाकर माघ की रचना 1650 पद्यों की है।

श्रीहर्ष- श्रीहर्षं कविराज-राजि मुकुटालङ्कारहीरः सुतम्।
श्रीहीरः सुषुवे जितेन्द्रियचयं मामल्लदेवी च यम्॥
(नैषध 1/145)

श्रीहर्ष के पिता का नाम श्रीहीर और माता का नाम मामल्ल देवी था। कान्यकुब्ज नरेश जयचन्द्र उनके आश्रयदाता थे।

नैषधीयचरितम्- महाकवि श्रीहर्ष रचित महाकाव्य के रूप में नैषधीयचरित अत्यन्त प्रसिद्ध है। इसमें नल और दमयन्ती के परस्पर प्रणय एवं परिणय का कथानक है, जो महाभारत के वनपर्व से संकलित है। यह कथा बाइस सर्गों में निबद्ध है, जो बृहत्त्रयी के अन्तर्गत आती है।

अन्य रचनाएँ- 1. श्रीविजयप्रशस्ति 2. खण्डनखण्डखाद्य 3. गौडोर्वीशिकुलप्रशस्ति 4. अणर्ववर्णन 5. छिन्दप्रशस्ति 6. शिवशक्तिसिद्धि तथा 7. नवसाहसाङ्कचरितचम्पू। इनके अतिरिक्त खण्डनखण्डखाद्य में 'ईश्वराभिसन्धि' का उल्लेख है।

बिल्हण - एको भागः प्रकृतिसुभगं कुङ्कुमं यस्य सूते द्राक्षामन्यः सरस-सरयू-पुण्ड्रकच्छेद-पाण्डुम्। अपनी जन्मभूमि कश्मीर के प्रति बिल्हण की गवपूर्ण ममता थी। काश्मीर की तात्कालिक राजधानी प्रवरपुर (श्रीनगर) से तीन कोश की दूरी पर स्थित उत्तुङ्ग त्यों वाले 'जयवन' नामक स्थान के निकट 'खोनमुख' गाँव में उनका जन्म हुआ। यह स्थान केसर और अंगूर के लिए प्रसिद्ध था।

रचनाएँ- बिल्हण के नाम से तीन रचनाएँ मिलती हैं। विक्रमाङ्कदेवचरित महाकाव्य के अतिरिक्त कर्णसुन्दरी नामक नाटिका इन्होंने चालुक्य राजसभा में रहकर ही लिखी थी। इनकी तीसरी रचना चौरपञ्चाशिका नामक सुन्दर गीतिकाव्य है।

विक्रमाङ्कदेवचरित- बिल्हण को अमर बनाने वाला 18 सर्गों का ऐतिहासिक महाकाव्य है। कल्याण के चालुक्य राजा विक्रमादित्य षष्ठ के ऐतिहासिक चरित का इसमें वर्णन है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि शारिपुत्रप्रकरण के लेखक अश्वघोष हैं। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा ऋषि, पेज–228

6. ऋग्वेदसंहितायाः पदपाठकारो निम्नलिखितेषु कोऽस्ति?
(A) गार्ग्यः **(B) शाकल्यः**
(C) शौनकः **(D) यास्कः**

व्याख्या- आचार्य शाकल्य ने ऋग्वेद का पदपाठ किया है। ब्रह्माण्डपुराण में इनको प्रथम शाखाप्रवर्तक कहा गया है। इनके साथ ही रथीतर, बाष्कलि और भरद्वाज को भी शाखाप्रवर्तक कहा गया है।

शाकल्यः प्रथमस्तेषां तस्मादन्यो रथीतरः।
बाष्कलिश्च भरद्वाज इति शाखाप्रवर्तकाः॥

➢ **शौनक-** बृहद्देवता शौनक की कृति है। यह अतिमहत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। इसमें 8 अध्यायों में 1200 पद्य हैं। इसमें देवताओं का स्वरूप, उनका स्थान और उनकी विशेषताओं का वर्णन है। इसमें देवों से सम्बद्ध आख्यानों का भी संकलन पद्यों में है। यह देवशास्त्र का प्रामाणिक ग्रन्थ है। कात्यायन ने अपनी 'सर्वानुक्रमणी' में बृहद्देवता का बहुत उपयोग किया है।

➢ **गार्ग्य-** इन्होंने सामवेद का पदपाठ किया है।

➢ **रावण-** आचार्य रावण ने भी ऋग्वेद का पदपाठ प्रस्तुत किया है। कुछ स्थलों पर शाकल्य से पदपाठ भिन्न है। रावण ने ऋग्वेद पर भाष्य भी किया था।

➢ **यास्क-** यास्क ने निरुक्त में कहीं-कहीं शाकल्य के पदपाठ को अस्वीकार भी किया है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि ऋग्वेदसंहिता के पदपाठकार शाकल्य हैं। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 22

7. ग्रिमनियमानुसारेण तवर्गीयध्वनीनां परिवर्तनक्रमोऽस्ति-
(A) द > ध > ध > थ > थ > त
(B) त > थ > द > ध > ध > त
(C) थ > ध > त > द > ध > द
(D) त > थ > ध > द > द > त

व्याख्या- ग्रिम, ग्रासमान और वर्नर मूल भारोपीय भाषा से सम्बद्ध हैं। इन नियमों में मूल भारोपीय भाषा की ध्वनियों में परिवर्तन का वर्णन है

1. ग्रिम नियम (Grimm's Law):- यह ध्वनि नियम प्रो॰ याकोब ग्रिम (Jacob Grimm 1785-1863) के नाम से प्रसिद्ध है। इस नियम को ध्वनि परिवर्तन जर्मन में लाउत ध्वनि, फेशीबुंग-परिवर्तन, अंग्रेजी में साउन्ड ध्वनि नाम दिया गया था। प्रो॰ मैक्समूलर ने इसे ग्रिम नियम नाम दिया है। प्रो॰ ओटो येस्पर्सन का कथन है कि इस नियम को Rask's Law रास्क नियम नाम दिया जाना चाहिये, क्योंकि यह नियम डैनिश विद्वान् रास्क ने ही सर्वप्रथम प्रामाणिक रूप में अपनी Unddrsogelse पुस्तक में प्रकाशित किया था। प्रो॰ ग्रिम ने 1822ई॰ में जर्मन व्याकरण दायत्श जर्मन, ग्रामातिक-व्याकरण का द्वितीय संस्करण निकाला था। इस नियम की ओर पहले संकेत करने के विषय में प्रो॰ रास्क के अतिरिक्त प्रो॰ ईरे (Ihre) का भी नाम लिया जाता है।

प्रथम वर्ण-परिवर्तन (First sound shifting) :- यह वर्ण परिवर्तन ईसा के जन्म से पूर्व हो चुका था। इसका प्रभाव समान रूप से गाथिक, निम्न जर्मन और अंग्रेजी, डच आदि भाषाओं पर पड़ा है। भारोपीय मूलभाषा की व्यञ्जन ध्वनियाँ संस्कृत, लैटिन, ग्रीक आदि में सुरक्षित है। अंग्रेजी का उद्भव निम्न जर्मन से है, अतः इसके द्वारा संस्कृत और अंग्रेजी की तुलना से यह परिवर्तन स्पष्ट हो जाता है। इस वर्ण परिवर्तन में एक ओर संस्कृत, लैटिन, ग्रीक, स्लावोनिक भाषाएँ हैं, इनमें यह परिवर्तन हुआ है।

वर्ण परिवर्तन का क्रम—

क् त् प्
(अघोष अल्पप्राण)

(घोष अल्पप्राण)
ग् द् ब्

महाप्राण
ख् (ह्) थ् फ्
घ् ध् भ्

1- ग्रिम नियम के अनुसार मूल भारोपीय भाषा की निम्नलिखित ध्वनियों को अंग्रेजी और जर्मन भाषा में ये ध्वनियाँ हो जाती हैं- प्रथम को द्वितीय 1 को 2, क्रमशः क् त् प् को ह् ख् थ् फ् (चतुर्थ को तृतीय 4 को 3) क्रमशः घ् ध् भ् को ग् द् ब् (तृतीय को प्रथम 3 को। क्रमशः ग् द् ब् को क् त् प्।

2- ग्रासमान नियम- मूल भारोपीय दो अक्षर वाली धातुओं में दो महाप्राण (ह्) ध्वनियाँ थीं। सामान्यतया प्रथम महाप्राण (ह्) ध्वनि हट जाती है। द्वितीय वर्ण में महाप्राण (ह्) ध्वनि हटने पर प्रथम वर्ण में महाप्राण ध्वनि रहती है।

3- वर्नर नियम- यह ग्रिम नियम का संशोधन है। यदि मूल-ग्रिम नियमानुसार प्रथम वर्ण परिवर्तन नियम लगेगा। यदि उदात्त स्वर क् त् प् आदि से पूर्व उदात्त स्वर होगा, तो ग्रिम उदात्त स्वर क् त् प् के बाद होगा तो क् त् प् को ग् द् ब् होगा।

स्पटीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि ग्रिम-नियमानुसार तवर्गीयध्वनि क्रम परिवर्तन त, थ, ध, द, द, त। है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-242

8. अधस्तनेषु 'ध्वन्यते इति ध्वनिः' इत्यनेन कोऽभिप्रायः?
(A) व्यञ्जकशब्दार्थौ (B) व्यञ्जनाशक्तिः
(C) व्यङ्ग्यार्थः (D) व्यङ्ग्यकाव्यम्

व्याख्या- आचार्य आनन्दवर्धन प्रणीत ध्वन्यालोक के प्रथम उद्योत में 'ध्वनि का लक्षण' प्रतिपादित करते हुए कहते हैं-

यत्रार्थः शब्दो वा तमर्थमुपसर्जनीकृतस्वार्थौ।
व्यङ्क्तः काव्यविशेषः स ध्वनिरिति सूरिभिः कथितः॥
(ध्वन्या.का. -13)

जहाँ अर्थ अपने को अथवा शब्द अपने अर्थ को गुणीभूत करके उस प्रतीयमान अर्थ को अभिव्यक्त करते हैं, उस काव्यविशेष को विद्वान् लोग 'ध्वनिकाव्य' कहते हैं। **'सूरिभिः कथितः'** इस व्याख्या में 'प्रथमे हि विद्वांसो वैयाकरणाः' ऐसा कहते हैं। प्रथम विद्वान् वैयाकरण हैं, क्योंकि व्याकरण सब विद्याओं का मूल है। वे वैयाकरण सुनाई देने वाले वर्णों को ध्वनि कहते हैं। उसी प्रकार उनके मत को मानने वाले काव्यतत्त्वार्थदर्शी अन्य विद्वानों ने भी 1- वाच्य 2- वाचक 3- व्यङ्ग्यार्थ 4- व्यञ्जनाव्यापार 5- काव्य पद से व्यवहार्य काव्य इन पाँचों को ध्वनि कहा है।

* 'ध्वन्यते अनेन इति ध्वनिः' इस व्युत्पत्ति से वाच्य शब्द और वाच्यार्थ को बताते हैं।
* 'ध्वन्यते इति ध्वनिः' इस व्युत्पत्ति से व्यङ्ग्यार्थ को
* 'ध्वननं ध्वनिः' इस व्युत्पत्ति से व्यञ्जना व्यापार को
* 'ध्वन्यतेऽस्मिन्निति ध्वनिः' इस व्युत्पत्ति से पूर्वोक्त ध्वनिचतुष्टय काव्य को ध्वनि कहते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'ध्वन्यते इति ध्वनिः' इसका अभिप्राय व्यङ्ग्यार्थ से है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- ध्वन्यालोक (1/13)- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-37-53

9. 'भवाति' रूपमिदं कस्य लकारस्य विद्यते?
(A) लोट्लकारस्य (B) विधिलिङ्लकारस्य
(C) लेट्लकारस्य (D) लुट्लकारस्य

व्याख्या- लेट्लकार अत्यन्त जटिल लकार है। इसीलिए वैदिक काल के बाद लौकिक युग में इसके रूप प्रायः लुप्त हो गए। इस लकार में भू धातु के लेट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन के निम्नलिखित 12 प्रकार के रूप बनते हैं- भवति, भवाति, भाविषति, भाविषाति, भविषति, भविषाति, भाविषत्, भाविषात्, भवत्, भवात्, भविषत् तथा भविषात्। इन्हीं जटिलताओं के कारण ही इस लकार के प्रयोग लौकिक संस्कृत भाषा में नहीं पाये जाते।

'भू' धातु लेट्लकार-

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पु॰	भवाति, भवात्	भवातः	भवान्
मध्यम पु॰	भवासि, भवाः	भवाथः	भवाथ
उत्तम पु॰	भवानि, भवा	भवाव	भवाम

➢ अकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्दों से तृतीया बहुवचन में भिस् प्रत्यय के स्थान पर ऐस् आदेश विकल्प से होता है। जैसे- देवैः, देवेभिः, प्रियैः, प्रियेभिः, रामैः, रामेभिः इत्यादि।

➢ अन्य रूप- देवासः जनासः, रथासः, ब्राह्मणासः रूप भी वैदिक भाषा में प्राप्त होता है।

➢ **प्रत्यय-** वैदिक भाषा के प्रत्ययों में भी लौकिक संस्कृत के प्रत्ययों से कुछ विशेषताएँ पाई जाती हैं।

➢ **पूर्वकालिक क्रियारूप-** इस प्रकार के रूप लौकिक भाषा में क्त्वा और ल्यप् प्रत्यय जोड़कर बनाये जाते हैं, परन्तु वैदिक भाषा में 'त्वी', 'त्वाय' तथा त्वा प्रत्यय जोड़कर भी बनाये जाते हैं। जैसे- त्वी जोड़कर- कृत्वी, गत्वी, भूत्वी आदि

➢ **तुमर्थक प्रत्यय-** तुमुन् प्रत्यय के अर्थ में वैदिक भाषा में से, सेन्, असे, असेन, क्से, कसेन्, अध्यै, अध्यैन्, कध्यै, कध्यैन्, तवै, तवेङ् तथा तवेन् शध्यै, शध्यैन् ये 15 प्रत्यय होते हैं।

उदाहरण– से - ✓वच् + से = 'वक्षे' बोलने के लिए
सेन्- ✓इ + सेन् = 'एषे' जाने के लिए
असे - ✓जीव + असे = 'जीवसे' जीने के लिए
असेन् - ✓जीव + असेन् = जीवसे जीने के लिए (आदि उदात्त)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'भवाति' रूप लेट्लकार से सम्बन्धित है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- वैदिकसूक्त संग्रह- विजयशङ्कर पाण्डेय, पेज- (व्याकरण) -23

10. अधस्तनेषु वाल्मीकिरामायणस्य काण्डानां समुचितक्रमोऽस्ति
(A) बाल-अयोध्या-सुन्दर-अरण्य-किष्किन्धा-युद्ध-उत्तराणि
(B) बाल-अयोध्या-किष्किन्धा-अरण्य-सुन्दर-युद्ध-उत्तराणि
(C) अयोध्या-बाल-किष्किन्धा-अरण्य-सुन्दर-युद्ध-उत्तराणि
(D) बाल-अयोध्या-अरण्य-किष्किन्धा-सुन्दर-युद्ध-उत्तराणि

व्याख्या- रामायण महाकाव्य की रचना आदिकवि वाल्मीकि ने की थी। रामायण सात काण्डों में विभक्त है- 1-बालकाण्ड 2-अयोध्याकाण्ड 3-अरण्यकाण्ड 4- किष्किन्धाकाण्ड 5- सुन्दरकाण्ड 6- युद्धकाण्ड तथा 7- उत्तरकाण्ड। प्रत्येक काण्ड सर्गों में विभक्त है। सर्गों में रमणीय संस्कृत पद्य हैं, जो अनुष्टुप्, उपजाति, वंशस्थ आदि सुन्दर गेयात्मक छन्दों में निबद्ध हैं।

➢ **बालकाण्ड-** बालकाण्ड में 77 सर्ग हैं। इसके आरम्भ के चार सर्गों में रामायण की रचना की पूर्वपीठिका दी गयी है कि

नारद ने महर्षि वाल्मीकि को रामकथा सुनायी।
अयोध्या में दशरथ द्वारा अश्वमेध यज्ञ का अनुष्ठान, राम की बाल्यावस्था, विश्वामित्र द्वारा राम लक्ष्मण को ले जाने की याचना, तारकावध, अहल्या–उद्धार, राम द्वारा धनुर्भङ्ग, राम–सीता विवाह, अयोध्य–प्रस्थान आदि का वर्णन प्राप्त होता है।

➢ **अयोध्याकाण्ड-** इस काण्ड में 119 सर्ग हैं। अयोध्या के राजप्रासाद की घटनाएँ, भरत की अनुपस्थिति में राम के राज्याभिषेक की तैयारी, मन्थरा के परामर्श से कैकेयी द्वारा दशरथ से राम के वनवास का वर माँगना, राम के वियोग में दशरथ की मृत्यु, भरत का चित्रकूट गमन, आदि घटनायें वर्णित हैं।

➢ **अरण्यकाण्ड-** इस काण्ड में 75 सर्ग हैं। राम-लक्ष्मण-सीता का दण्डकारण्य में निवास, विराध आदि राक्षसों का वध, पञ्चवटी में निवास, रावण का छल से सीता को हर लेना, जटायु की रावण द्वारा हत्या, राम का करुण विलाप, राम की कबन्ध से भेंट, राम का सुग्रीव से मैत्री करने का परामर्श दिया जाना, ये वृत्तान्त वर्णित हैं।

➢ **किष्किन्धाकाण्ड-** इस काण्ड में 67 सर्ग हैं। प्रारम्भ में पम्पा सरोवर में वसन्त ऋतु की छटा देखकर राम का सीता के वियोग में दुःखी होना, हनुमान् द्वारा राम और और सुग्रीव की मैत्री होना राम द्वारा वाली वध, वाली की भार्या तारा का विलाप, सुग्रीव तथा अङ्गद का राज्याभिषेक, राम का प्रस्रवण गिरि पर चतुर्मास यापन, वर्षा वर्णन, शरद्वर्णन आदि का वर्णन है।

➢ **सुन्दरकाण्ड-** इस काण्ड में 68 सर्ग हैं। प्रारम्भ में हनुमान् द्वारा सागर पार करके लङ्का प्रवेश करना, रावण के अन्तःपुर में प्रत्येक स्थल में सीता की खोज, अशोक वन में सीता दर्शन, राम की दी हुई अँगूठी सीता को देना, हनुमान् की पूँछ में आग लगाना, लङ्का दहन आदि का वर्णन है।

➢ **युद्धकाण्ड-** इसमें 128 सर्ग हैं। प्रारम्भ में राम और रावण के बीच युद्ध का वर्णन है, रावण को मारकर राम के अयोध्या लौटने एवं राज्य पाकर प्रजा को प्रसन्न करने की कथा है। नल द्वारा समुद्र पर सेतु बन्धन, इन्द्रजित् का लक्ष्मण द्वारा वध, शक्ति से लक्ष्मण की मूर्च्छा और संजीवन, सीता की अग्निपरीक्षा, अयोध्या आना और राम का राज्याभिषेक आदि वृत्तान्त वर्णित हैं।

➢ **उत्तरकाण्ड-** इसमें 111 सर्ग हैं। प्रारम्भ में बालकाण्ड के समान अनेक इतिहास-पुराणात्मक आख्यान हैं। राम की कथा का अंश कम ही है। सीता का परित्याग, लव-कुश जन्म, शम्बूक वध, अश्वमेध यज्ञ का राम द्वारा अनुष्ठान, सीता का पाताल प्रवेश, लवकुश का राज्याभिषेक, राम का महाप्रस्थान आदि का वर्णन है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि रामायण के सात काण्डों के नाम क्रमशः बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, युद्धकाण्ड, उत्तरकाण्ड हैं। **अतः विकल्प 'D' है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा ऋषि, पेज 124-127

11. सारनाथ-बौद्धप्रतिमालेखस्य भाषाऽस्ति-

(A) संस्कृतम् **(B) प्राकृतम्**
(C) पालिः **(D) अपभ्रंशः**

व्याख्या ➢ कनिष्क प्रथम कालीन सारनाथ बौद्ध प्रतिमाभिलेख–
स्थान- सारनाथ जिला- वाराणसी, उत्तर प्रदेश
भाषा- प्राकृत, संस्कृत से प्रभावित
लिपि- ब्राह्मी
काल- प्रथम शताब्दी ई॰ उत्तरार्द्ध, सं.- 3=81ई॰
विषय- भिक्षु बल द्वारा विभिन्न लोगों के साथ छत्र और यष्टि की स्थापना, हित और सुख के लिए

➢ **समुद्रगुप्त का प्रयाग स्तम्भ अभिलेख–**
स्थान- इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश (यह मूलतः कौशाम्बी में था, जहाँ से इलाहाबाद किले में लाया गया)
भाषा- संस्कृत
लिपि- ब्राह्मी
काल- समुद्रगुप्त (लगभग-335-76ई॰)
विषय- समुद्रगुप्त का जीवन चरित तथा उपलब्धियों का वर्णन

➢ **पुलकेशिन् द्वितीय का एहोल लेख**
स्थान- एहोल जिला बीजापुर
भाषा- संस्कृत
लिपि- दक्षिणी ब्राह्मी
काल- वि॰स॰556 (499ई॰)
विषय- पुलकेशिन् द्वितीय तक चालुक्य शासकों का वर्णन।

➢ **रुद्रदामन का जूनागढ़ शिलालेख–**
स्थान- जूनागढ़ गुजरात
भाषा- संस्कृत
लिपि- दक्षिणी ब्राह्मी
काल- रुद्रदामन के राजत्व कालान्तर्गत
विषय- रुद्रदामन के प्रान्तीय शासक सुविशाख द्वारा सुदर्शन बाँध का पुनर्निर्माण, बाँध का पूर्व इतिहास एवं रुद्रदामन की राजनैतिक उपलब्धियाँ।

➢ **अशोक अभिलेख- प्रथम शिलालेख**
स्थान- गिरनार, जिला- जूनागढ़ महाराष्ट्र
भाषा- प्राकृत (पालि)

लिपि- ब्राह्मी
काल- अशोक कालीन (लगभग 272-32ई॰पू॰)
विषय- हिंसा और समाज का विरोध, व्यक्तिगत जीवन
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि सारनाथ बौद्ध प्रतिमाभिलेख की भाषा प्राकृत है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**
स्रोत- भारतीय पुरालेखों का अध्ययन- शिवस्वरूप सहाय, पेज-223

12. मुद्राराक्षसस्य तृतीयाङ्कस्य नाम अस्ति-
(A) मुद्राप्राप्तिः **(B) भूषणविक्रयः**
(C) प्रलोभनम् **(D) कृतककलहः**

व्याख्या- विशाखदत्त का परिचयः–
नाम- विशाखदत्त
पिता का नाम- भास्करदत्त
पितामह- बटेश्वरदत्त
निवासस्थान- बंगाल अथवा बिहार (अनुमान के आधार पर)
उपासक- शिव के
प्रिय छन्द- अनुष्टुप्, वसन्ततिलका, शार्दूलविक्रीडित
प्रिय अलङ्कार- अर्थालङ्कार
रीति- वैदर्भी, किन्तु उग्रता या भयङ्करता का वर्णन करने के लिए गौडी रीति का प्रयोग
समय- अधिकांश विद्वानों के अनुसार चतुर्थ शताब्दी
आश्रयदाता- तैलङ्ग महोदय के अनुसार- अवन्तिवर्मा
रचनाएँ- मुद्राराक्षस, देवीचन्द्रगुप्तम् अभिसारिकवञ्चितकम्
मुद्राराक्षस ही विशाखदत्त की एकमात्र प्रामाणिक रचना है।
*** मुद्राराक्षस का परिचय-**
लेखक - विशाखदत्त
काव्यविधा - नाटक (ऐतिहासिक)
विभाजन - 7 (सात अङ्कों में)
श्लोक संख्या- 169

अङ्क अङ्कों के नाम	श्लोक संख्या
प्रथम मुद्रा लाभ	27
द्वितीय राक्षस-विचार	23
तृतीय कृतक-कलह	33
चतुर्थ राक्षस-उद्योग	22
पञ्चम राक्षस-निकार	24
षष्ठ राक्षस-निर्वेद	21
सप्तम राक्षस-निग्रह	19
योग	= 169

गुण- ओज, माधुर्य तथा प्रसाद गुणों का समन्वय।
मुख्य रस- वीर रस
उपजीव्य- विष्णु पुराण तथा श्रीमद्भागवतमहापुराण
नायक- चाणक्य (कौटिल्य, विष्णुगुप्त) कुछ विद्वान् चन्द्रगुप्त को मानते हैं।
नायिका- (नायिकाविहीन नाटक) नायिका का अभाव
प्रतिनायक - राक्षस (सुबुद्धि शर्मा)
कञ्चुकी - 1- जाजलि (मलयकेतु का) 2- वैहीनर (चन्द्रगुप्त का)
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि मुद्राराक्षस के तृतीय अङ्क का नाम 'कृतककलह' है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**
स्रोत- मुद्राराक्षस- पुष्पा गुप्ता, पेज-192

13. अधस्तनेषु पुराणस्य पञ्चलक्षणेषु नास्ति-
(A) वंशः **(B) मन्वन्तराणि**
(C) संसर्गः **(D) प्रतिसर्गः**

व्याख्या- ➤ पुराण शब्द की व्युत्पत्ति पाणिनि, यास्क तथा स्वयं पुराणों ने भी दी है। 'पुरा भवम्' प्राचीन काल में होने वाला।
➤ पुराण शब्द ऋग्वेद में एक दर्जन से अधिक स्थानों पर मिलता है। यह वहाँ विशेषण है तथा उसका अर्थ है- प्राचीन (पूर्व में होने वाला)।
➤ यास्क के निरुक्त (3/19) के अनुसार पुराण की व्युत्पत्ति है- 'पुरा नवं भवति' (जो प्राचीन होकर भी नया है)
➤ वायुपुराण के अनुसार यह व्युत्पत्ति है- 'पुरा अनति' अर्थात् प्राचीन काल में जो जीवित था।
➤ अथर्ववेद के अनुसार पुराण का आविर्भाव ऋक्, साम, छन्द और यजुष् के साथ ही हुआ था।
'ऋचः सामानि छन्दांसि पुराणं यजुषा सह' (11/7/24)
➤ इतिहास तथा पुराण को संयुक्त रूप से नारद ने 'पञ्चम वेद' कहा है- 'इतिहासपुराणं पञ्चमं वेदानां वेदम्' (बृहदारण्यकोपनिषद् 2/4/10)
पुराण का लक्षण- प्रमुख पुराणों तथा अमरकोश जैसे प्राचीन ग्रन्थों में पुराण के लक्षण तथा विषयवस्तु के सम्बन्ध में यह श्लोक मिलता है-

सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च।
वंशानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम्।।
(विष्णुपुराण- 3.6.24, अमरकोश-1.6.5)

सर्ग - विश्व की सृष्टिप्रक्रिया।
प्रतिसर्ग - प्रलय तथा पुनः सृष्टि का वर्णन।
वंश - देवताओं और ऋषियों के वंशों का वर्णन।
मन्वन्तर - प्रत्येक मनु का काल और उस काल की प्रमुख घटनाओं का निरूपण।
वंशानुचरित - सूर्यवंश और चन्द्रवंश में उत्पन्न राजाओं का जीवन-चरित

पुराणों की संख्या- पुराणों का विकास दो प्रकार से हुआ है- महापुराण और उपपुराण
महापुराण प्राचीनतर हैं, जिनकी संख्या अठारह है।
उपपुराणों की भी संख्या अठारह ही है।

महापुराण	उपपुराण
ब्रह्मपुराण	सनत्कुमार
पद्मपुराण	नारसिंह
विष्णुपुराण	स्कान्द या शिव
वायुपुराण	शिवधर्म
भागवतपुराण	आश्चर्य
नारदपुराण	नारदीय
मार्कण्डेयपुराण	कापिल
अग्निपुराण	औशनस
भविष्यपुराण	वारुण
ब्रह्मवैवर्तपुराण	कल्कि
लिङ्गपुराण	कालिका
वराहपुराण	माहेश्वर
स्कन्दपुराण	साम्ब
वामनपुराण	सौर (सूर्य)
कूर्मपुराण	पराशर
मत्स्यपुराण	मारीच
गरुडपुराण	भार्गव
ब्रह्माण्डपुराण	नन्द

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि पुराण के पञ्चलक्षणों में 'संसर्ग' नहीं आता है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्त्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा ऋषि, पेज 174

14. पुराणसन्दर्भे सप्तद्वीपेषु गणना नास्ति?
(A) कुशद्वीपः **(B) प्लक्षद्वीपः**
(C) शाकद्वीपः **(D) आम्रद्वीपः**

व्याख्या- भुवनकोष के विषय में प्राचीन मत यही था कि पृथ्वी चार द्वीपों से घिरी है, परन्तु पुराणों के नवीन संस्करण में सात द्वीपों का सिद्धान्त मान लिया गया।
सात द्वीपों के नाम इस प्रकार हैं-
1. जम्बूद्वीप (क्षारसमुद्र या लवणोदधि द्वारा वेष्टित)
2. प्लक्षद्वीप या गोमेदक द्वीप (इक्षुरस समुद्र द्वारा वेष्टित)
3. शाल्मलिद्वीप (सुरासमुद्र के द्वारा वेष्टित)
4. कुशद्वीप (घृतसमुद्र द्वारा वेष्टित)
5. क्रौञ्चद्वीप (दधिसमुद्र द्वारा वेष्टित)
6. शाकद्वीप (क्षीरसमुद्र द्वारा वेष्टित)
7. पुष्करद्वीप (स्वादुजल समुद्र द्वारा वेष्टित)

➢ प्रत्येक द्वीप में सात नदियाँ तथा सात पर्वत होते हैं।
➢ द्वीपों का यह क्रम वायु, विष्णु, भागवत तथा मार्कण्डेय के अनुसार है।
➢ **मत्स्य के अनुसार द्वीपों का क्रम इस प्रकार है-**
1. जम्बूद्वीप 2. शाकद्वीप 3. कुशद्वीप 4. क्रौञ्चद्वीप 5. शाल्मलिद्वीप 6. प्लक्ष या गोमेद द्वीप 7. पुष्कर द्वीप

शाकद्वीप में सात पर्वत- 1. मेरु (उदय पर्वत) 2. जलधार (चन्द्र नाम से भी ख्यात, विष्णुपुराण में जलाधार) 3. दुर्ग शैल (नारद से भी प्रख्यात) 4. श्याम (दुन्दुभि) 5. अस्तगिरि (अपरनाम सोमक)
6. आम्बिकेय (अपर नामसुमनस्) 7. विभ्राज (अपरनाम केशव)

शाकद्वीप की सात नदियाँ-
1. सुकुमारी (मुनितप्ता)
2. कुमारी (तपःसिद्धा नाम से भी प्रख्यात)
3. नन्दा (अपरनाम पावनी)
4. शिविका (द्विविधा नाम भी)
5. इक्षु (अपरनाम कुहू)
6. वेणुका (अपरनाम अमृता)
7. सुकृता (अपरनाम गभस्ति)

शाकद्वीप के सात वर्षों के नाम-
1. उदयवर्ष (उदय पर्वत का प्रदेश)
2. सुकुमारवर्ष (अपर नाम शैशिर, जलधार पर्वत का प्रदेश)
3. कौमार (अपर नाम सुखोदय, नारद पर्वत का प्रदेश)
4. मणिचक (अपर नाम आनन्दक, श्यामपर्वत का प्रदेश)
5. कुसुमोत्कर (अपर नाम असित, सोमक पर्वत का देश)
6. मैनाक (क्षेमक नाम से भी ख्यात, आम्बिकेय पर्वत का देश
7. विश्राज (ध्रुव नाम से भी ख्यात, विश्राज पर्वत का देश)

⇒ **'कुलपर्वतों की संख्या सात मानी गयी है- जिनके नाम हैं–**
1. महेन्द्र कुलपर्वत 2. मलय कुलपर्वत 3. सह्य कुलपर्वत
4. शुक्तिमान् कुलपर्वत 5. ऋक्ष कुलपर्वत 6. विन्ध्य कुलपर्वत
7. पारियात्र कुलपर्वत

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि सप्तद्वीपों में 'आम्रद्वीप' की गणना नहीं होती है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- पुराण विमर्श- बलदेव उपाध्याय, पेज-323

15. कस्य वचः नारिकेलफलसम्मितं कल्पितम्?
(A) विशाखदत्तस्य (B) भारवेः
(C) दण्डिनः (D) बाणभट्टस्य

व्याख्या- भारविकृत किरातार्जुनीयम् महाकाव्य है, जिसमें 18 सर्ग हैं, जो बृहत्त्रयी के अन्तर्गत आता है। किरातार्जुनीयम् की टीका मल्लिनाथकृत 'घण्टापथ' टीका है, जिसमें मल्लिनाथ ने भारवि के विषय में कहा है- **नारिकेलफलसम्मितं वचो भारवेः** भारवि की प्रशंसा करते हुए कहा है कि बाह्यरूप से आपाततः अत्यन्त कठिन स्वरूप में प्रतीत होता है, परन्तु अर्थबोध होने पर नारिकेलफल के समान रसगर्भनिर्भर है।

⇒ भारवि के विषय में कुछ उक्तियाँ प्रचलित हैं-

1. 'भारवेरर्थगौरवम्' 2. 'भारवेरिव भारवेः'
3. 'प्रकृतिमधुरा भारविगिरः' (अभिनन्दः)

दण्डी के विषय में उक्ति-

1. दण्डिप्रबन्धाश्च त्रिषु लोकेषु विश्रुताः (राजशेखरस्य)
2. **उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्।**
दण्डिनः पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयो गुणाः।

महाकवि कालिदास की विशिष्टता उपमा के कारण है, भारवि का प्रधानगुण अर्थगौरव है, दण्डी की विशिष्टता पदलालित्य के कारण है, तो माघ में तीन गुणों का समन्वित प्रयोग प्रमुख वैशिष्ट्य है। माघ में ये सारी विशिष्टताएँ (उपमा, अर्थगौरव और पदलालित्य) वर्तमान हैं।

⇒ बाणभट्ट के विषय में कुछ उक्तियाँ-

1. वाणी बाणो बभूवेति (गोवर्धन)
2. बाणः कवीनामिह चक्रवर्ती
3. वाणी बाणस्य मधुरशीलस्य (धर्मदास)
4. बाणस्तु पञ्चाननः (श्रीचन्द्रदेव)
5. पञ्चबाणस्तु बाणः (जयदेव)

⇒ कालिदास विषयक उक्तियाँ-

1. कनिष्ठिकाधिष्ठितकालिदासः
2. न कालिदासादपरस्य वाणी (श्रीकृष्ण कवि)
3. काव्येषु माघः कविकालिदासः (घटखर्परस्य)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'नारिकेल-फलसम्मितंःवचः' यह भारवि के लिए प्रयोग किया गया है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा ऋषि, पेज 245

16. अधोलिखितेषु वैदिकभाषादृशा साधुप्रयोगो मन्यते-
(A) देवेभिः (B) विश्वा
(C) एमसि (D) उक्ताः सर्वेऽपि साधवः

व्याख्या- अग्निर्होता कविक्रतुः, सत्यश्चित्रश्रवस्तमः।
देवो देवेभिरा गमत्॥ (ऋषि 1.1.5)
उप त्वाग्ने दिवेदिवे, दोषावस्तर्धिया वयम्।
नमो भरन्त एमसि॥ (ऋ. 1.1.7)
याति देवः प्रवता यात्युद्वता याति शुभ्राभ्यां यजतो हरिभ्याम्।
आ देवो याति सविता परावतोऽप विश्वा दुरिता बाधमानः॥
(ऋग्. 1.35.3)

➢ देवा, देवौ दोनों रूप मिलते हैं। बहुवचन में आः और आसः (देवाः, देवासः, जनाः, जनासः, मर्त्याः, मर्त्यासः दो प्रकार के रूप बनते हैं।
➢ तृतीया विभक्ति के एकवचन में एन और एना (देवेन, देवेना) एवं बहुवचन में ऐः और एभिः (देवैः, देवेभिः) रूप बनते हैं।
➢ वैदिक संस्कृत में संज्ञा के अधिकारक उपसर्गों का स्वतन्त्र पृथक् प्रयोग बहुधा मिलता है। जैसे- रोचनात् अधि (1.49.1), मानुषान् अधि (1.48.7) अध्वरान् उप (1.48.11), गिरिभ्यः आ, (6.95.1) उत्तानपदः परि (10.72.3) आदि में है।
➢ वैदिक संस्कृत में अनेक शब्द ऐसे हैं, जिनका प्रयोग लौकिक संस्कृत में नहीं है।
जैसे- विचर्षणी, उक्थ, ऊति, उर्गिया, सीम्, रिक्वन् आदि शब्द वेदों में ही हैं और लौकिक संस्कृत में प्रयुक्त होते हैं।
➢ वेदों में इव के अर्थ के लिए 'न' का प्रचुर प्रयोग हुआ है। संस्कृत में यह अर्थ प्रयोग नहीं होता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि वैदिक-भाषा में देवेभिः, विश्वा, एमसि ये तीनों शब्द साधु हैं।
अतः विकल्प 'D' सही है।

स्रोत- ऋक्सूक्तसंग्रह- हरिदत्तशास्त्री, पेज 57, 59, 106

17. ''सत्यं बृहदृतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति''– मन्त्रांशोऽयं कस्मिन् वेदे विद्यते?
(A) ऋग्वेदे (B) यजुर्वेदे
(C) सामवेदे (D) अथर्ववेदे

व्याख्या- अथर्ववेद के बारहवें काण्ड में पृथिवीसूक्त वर्णित है।
सत्यं बृहदृतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति।
सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरुं लोकं पृथिवी नः कृणोतु॥
(12.1.1)

सत्य, महत्ता, ऋत, उग्रता (शक्ति), दीक्षा, तपस्या, ब्रह्म और यज्ञ पृथिवी को धारण करते हैं। भूत और भविष्यत् की पत्नी वह पृथ्वी हमारे लोक को (हमारे लिए विस्तृत बना दे)।

⇒ **पृथिवीसूक्त की अन्य महत्त्वपूर्ण सूक्तियाँ -**

(i) यस्यामापः परिचराः समानीरहोरात्रे अप्रमादं क्षरन्ति।

सा नो भूमिर्भूरिधारा पयोदुहामथो उक्षतु वर्चसा (12.1.9) जिस पृथिवी के चारों ओर विचरण करने वाला जल समान भाव से रात-दिन निर्बाध रूप से प्रवाहित होता है, अनेक धाराओं वाली वह पृथिवी में दुग्ध (जल) प्रदान करें तथा हमें तेज से सम्पृक्त करें।

(ii) सा नो भूमिर्विसृजतां माता पुत्राय मे पयः (12.1.8) वह हमारी पृथिवी माता मुझ पुत्र के लिए दूध प्रदान करें (जैसे माता पुत्र को दूध देती है हमें उसी प्रकार दूध दे)

(iii) माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः। (12.1.10)

भूमि माता है, मैं पृथिवी का पुत्र हूँ, पर्जन्य पिता है, वह हमारा पालन पोषण करें।

स्पष्टीकरण - उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि 'सत्यं बृहदृतमग्रं दीक्षा तपो .... पृथिवीं धारयन्ति' यह सूक्ति अथर्ववेद के पृथिवीसूक्त से उद्धृत है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- वैदिकसूक्त संग्रह (12.1.1)- विजयशङ्कर पाण्डेय, पेज 136

18. वानीरकुञ्जोड्डीनशकुनिकोलाहलं शृण्वन्त्याः।
गृहकर्मव्यापृताया वध्वाः सीदन्त्यङ्ग्यस्य॥
काव्यप्रकाशानुसारम् उपर्युक्तमुदाहरणं कस्य?

(A) काक्वाक्षिप्तगुणीभूतव्यङ्ग्स्य
(B) असुन्दरगुणीभूतव्यंग्यस्य
(C) अस्फुटगुणीभूतव्यंग्यस्य
(D) सन्दिग्धप्राधान्यगुणीभूतव्यंग्यस्य

व्याख्या- आचार्य मम्मट प्रणीत काव्यप्रकाश के प्रथम उल्लास में काव्य के तीन भेद बताये गये हैं-

1. उत्तमकाव्य (ध्वनि काव्य) 2. मध्यमकाव्य (गुणीभूतव्यङ्ग्य) 3. अधमकाव्य (अवरकाव्य या चित्रकाव्य)

आचार्य मम्मट गुणीभूतव्यङ्ग्यकाव्य का लक्षण करते हुए कहते हैं-

अतादृशि गुणीभूतव्यङ्ग्यं व्यङ्ग्ये तु मध्यमम्।

वाच्य से अधिक चमत्कारी व्यङ्ग्य अर्थ न होने पर गुणीभूतव्यङ्ग्य नामक दूसरे प्रकार का काव्य मध्यमकाव्य कहा जाता है।

आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश के पाचवें उल्लास में गुणीभूतव्यङ्ग्य के आठ भेदों की चर्चा करते हैं-

अगूढमपरस्याङ्गं वाच्यसिद्ध्यङ्गमस्फुटम्।
सन्दिग्धतुल्यप्राधान्ये काक्वाक्षिप्तमसुन्दरम्।
व्यङ्ग्यमेव गुणीभूतव्यङ्ग्यस्याष्टौ भेदाः स्मृताः॥

1. अगूढ़ व्यङ्ग्य 2. इतर का अङ्ग (भूतव्यङ्ग्य) 3. वाच्यसिद्धि का अङ्ग 4. अस्फुट (गूढ़ व्यङ्ग्य) 5. सन्दिग्धप्राधान्य 6. तुल्य प्राधान्य 7. काकु से आक्षिप्त 8. असुन्दर व्यङ्ग्य- इस प्रकार गुणीभूतव्यङ्ग्य के आठ भेद बताये गये हैं।

⇒ **असुन्दर व्यङ्ग्य का उदाहरण-**

वानीरकुञ्जोड्डीनशकुनिकोलाहलं शृण्वन्त्याः
गृहकर्मव्यापृताया वध्वाः सीदन्त्यङ्गानि।।

बेत- वानीर की लताओं के कुञ्ज में उड़ते हुए पक्षियों के कोलाहल को सुनकर घर के काम में लगी हुई वधू के अङ्ग शिथिल हो रहे हैं। यहाँ 'दत्तसंकेत कोई लतागृह में प्रविष्ट हो गया' इस व्यङ्ग्य से बहू के अङ्ग शिथिल हो रहे हैं, यह वाच्य अधिक चमत्कारजनक है। यह असुन्दर गुणीभूतव्यङ्ग्य का उदाहरण है।

⇒ **काक्वाक्षिप्तगुणीभूतव्यङ्ग्य का उदाहरण-**

मथ्नामि कौरवशतं समरे न कोपाद्।
दुःशासनस्य रुधिरं न पिबाम्युरस्तः।।

⇒ **अस्फुटगुणीभूतव्यङ्ग्य का उदाहरण-**

अदृष्टे दर्शनोत्कण्ठा दृष्टे विच्छेदभीरुता।
नादृष्टेन न दृष्टेन भवता लभ्यते सुखम्।।

⇒ **सन्दिग्ध गुणीभूतव्यङ्ग्य का उदाहरण-**

हरस्तु किञ्चित् परिवृत्तधैर्यश्चन्द्रोदयारम्भ इवाम्बुराशिः।
उमामुखे बिम्बफलाधरोष्ठे व्यापारयामास विलोचनानि।।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'वानीरकुञ्जोड्डीनशकुनि..' यह 'असुन्दरगुणीभूतव्यङ्ग्य' का उदाहरण है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-211

19. 'प्रदीपः सर्वविद्यानामुपायः सर्वकर्मणाम्' पंक्तिरियं कस्याः?

(A) त्रय्याः **(B) आन्वीक्षिक्याः**
(C) वार्तायाः **(D) दण्डनीतेः**

व्याख्या- कौटिलीय अर्थशास्त्र में पन्द्रह अधिकरण, एक सौ पचास अध्याय, एक सौ अस्सी प्रकरण और छः हजार श्लोक हैं। सर्वप्रथम आचार्य कौटिल्य ने शुक्राचार्य और बृहस्पति के लिए नमस्कार किया है- 'नमः शुक्रबृहस्पतिभ्याम्' तदनन्तर विद्यासमुद्देश आन्वीक्षकी आदि की चर्चा करते हुए कहते हैं-

'आन्वीक्षकी त्रयी वार्ता दण्डनीतिश्चेति विद्याः।'
आन्वीक्षकी, त्रयी, वार्ता और दण्डनीति- ये चार विद्याएँ हैं-
⟹ **आन्वीक्षकी का लक्षण-**
प्रदीपः सर्वाविद्यानामुपायः सर्वकर्मणाम्।
आश्रयः सर्वधर्माणां शश्वदान्वीक्षकी मता।।
यह आन्वीक्षकी विद्या सर्वदा ही सब विद्याओं का प्रदीप सभी कार्यों का साधन और सब धर्मों का आश्रय मानी गयी है।
⟹ **त्रयी का लक्षण-** 'सामर्ग्यजुर्वेदास्त्रयस्त्रयी।' साम, ऋक्, तथा यजु इन तीनों वेदों का समन्वित नाम ही त्रयी है।
⟹ **वार्ता का लक्षण-** 'कृषि पाशुपाल्ये वाणिज्या च वार्ता' कृषि, पशुपालन और व्यापार ये वार्ताविद्या के विषय हैं।
⟹ **दण्डनीति का लक्षण-** 'आन्वीक्षकीत्रयीवार्तानां योगक्षेमसाधनो दण्डः तस्य नीतिर्दण्डनीतिः।' आन्वीक्षकी, त्रयी और वार्ता, इन सभी विद्याओं की सुख-समृद्धि दण्ड पर निर्भर है। दण्ड (शासन) को प्रतिपादित करने वाली नीति ही दण्डनीति कहलाती है।
* मनुसम्प्रदाय के अनुयायी आचार्य त्रयी, वार्ता और दण्डनीति, इन विद्याओं को मानते हैं। उनका मत है कि आन्वीक्षकी का समावेश त्रयी के अन्तर्गत हो जाता है। **त्रयी वार्ता दण्डनीतिश्चेति मानवाः।** त्रयीविशेषो ह्यान्वीक्षकीति
* आचार्य बृहस्पति के अनुयायी विद्वान् केवल दो ही विद्याएँ मानते हैं- वार्ता और दण्डनीति। उनके अनुसार त्रयी तो दुनियादार लोकयात्राविद् लोगों की आजीविका का साधनमात्र है।
वार्ता दण्डनीतिश्चेति बार्हस्पत्याः संवरणमात्रं हि त्रयी लोकयात्राविद इति।
* शुक्राचार्य के अनुयायी विद्वानों ने तो केवल दण्डनीति को ही विद्या माना है, उसी को सम्पूर्ण विद्याओं का स्थान एवं कारण स्वीकार किया है।
दण्डनीतिरेका विद्येत्यौशनसाः। तस्यां हि सर्वविद्यारम्भाः प्रतिबद्धा इति।
चतस्त्र एव विद्या इति कौटिल्यः। ताभिर्धर्माथौं यद्विद्यात्तद्विद्यानां विद्यात्वम्। त्रयी, वार्ता, दण्डनीति कौटिल्य चारों विद्याओं को मानते हैं और उनकी यथार्थता धर्म तथा अधर्म के ज्ञान में बताते हैं।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'प्रदीपः सर्वविद्यानामुपाय'.. आन्वीक्षकी का लक्षण है।
अतः विकल्प 'B' सही है।
स्रोत - कौटिलीय अर्थशास्त्र-वाचस्पति गैरोला, पेज 09

20. सत्कार्यवादस्य समर्थने हेतुर्नास्ति-
(A) असदकरणम् **(B) सर्वसम्भवाभावः**
(C) शक्तस्य शक्यकरणम् **(D) सर्वसम्भव-भावः**

व्याख्या- ईश्वरकृष्ण द्वारा प्रणीत सांख्यकारिका की नवीं कारिका में सत्कार्यवाद की विवेचना करते हुए कहते हैं-
असदकरणादुपादानग्रहणात् सर्वसम्भवाभावात्।
शक्तस्य शक्यकरणात् कारणभावाच्च सत्कार्यम्॥9॥
कारण-व्यापार के पूर्व भी कार्य (कारण में) विद्यमान रहता है, क्योंकि असत् या अविद्यमान होने पर कार्य की उत्पत्ति हो ही नहीं सकती। कार्य की उत्पत्ति के लिए उसके उपादानकारण का ग्रहण अवश्य करना पड़ता है। अर्थात् कार्य अपने उपादानकारण से नियतरूप से सम्बद्ध होता है, सभी कार्य सभी कारणों से उत्पन्न नहीं होते, जो कारण जिस कार्य को उत्पन्न करने में शक्त या समर्थ है, उससे उसी कार्य की उत्पत्ति होती है और कार्य कारणात्मक अर्थात् कारण से अभिन्न या उसी के स्वरूप का होता है।
⟹ ईश्वरकृष्ण ने सत्कार्यवाद के समर्थन में पाँच हेतुओं को बताते हैं-
1. असत्अकरणात्- उत्पत्ति से पहले भी कार्य, कारण में विद्यमान रहता है।
2. उपादानग्रहणात्- वस्तु के निर्माण के लिए मूलकारण, उपादान या समवायिकारण कहलाता है।
3. सर्वसम्भव-अभावात्- यदि हम सत्कार्यवाद के सिद्धान्त को मान्यता प्रदान नहीं करते हैं, तो उस स्थिति में प्रत्येक वस्तु से प्रत्येक वस्तु की उत्पत्ति माननी होगी।
जैसे- तेल को रेत, चावल, गेहूँ आदि सभी पदार्थों से प्राप्त होना चाहिये, किन्तु ऐसा नहीं होता। सभी कारणों से सभी कार्यों की उत्पत्ति नहीं होती। अतः उत्पत्ति से पूर्व में भी कार्य को कारण में सत् मानना उचित है।
4- शक्तस्य शक्यकरणात्- शक्त अर्थात् कार्यविशेष को उत्पन्न करने की शक्ति रखने वाला कारण ही, शक्य अर्थात् उस कार्य को (जिसे उत्पन्न करने की कारण में शक्ति है) उत्पन्न होता है, बालू में नहीं।
5- कारणभावात्- कार्य कारण से अलग न होकर कारण का ही एक रूप होता है। कार्य ही अविकसित रूप में कारण है तथा कारण ही विकसित रूप में कार्य है। जैसे- दही अपने मूलकारण दूध का विकसित रूप ही है और इस दही रूप में आने से पहले वह अपने मूलकारण दूध में सत् था।
6- शक्तस्य शक्य करणात्
दही के लिए दूध ही समर्थ कारण है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि सत्कार्यवाद के पाँच हेतुओं में सर्वसम्भव भावः हेतु परिगणित नहीं है।

अतः विकल्प 'D' सही है।

स्रोत- सांख्यकारिका (कारिका-9)- राकेश शास्त्री, पेज-29-12।

21. काव्यप्रकाशस्य कस्मिन्नुल्लासे व्यञ्जनायाः स्थापना अभवत्-
(A) सप्तमोल्लासे (B) अष्टमोल्लासे
(C) पञ्चमोल्लासे (D) प्रथमोल्लासे

व्याख्या- आचार्य मम्मट कृत काव्यप्रकाश में दश उल्लास हैं। प्रत्येक उल्लास के नाम निम्नलिखित हैं-

उल्लास संख्या	उल्लासों के नाम
प्रथम	काव्यप्रयोजन, कारण, स्वरूपनिर्णय
द्वितीय	शब्दार्थस्वरूप निर्णय
तृतीय	अर्थव्यञ्जकता निर्णय
चतुर्थ	ध्वनिनिर्णय
पञ्चम	ध्वनिगुणीभूतव्यङ्ग्य, संकीर्ण भेद निर्णय
षष्ठ	शब्दार्थचित्र निरूपण
सप्तम	दोष दर्शन
अष्टम	गुणालङ्कार भेद
नवम	शब्दालङ्कार निर्णय
दशम	अर्थालङ्कार निर्णय

प्रथम उल्लास- प्रथमोल्लास में मङ्गलाचरण, काव्य प्रयोजन, काव्य के हेतु, मम्मट का काव्यलक्षण, काव्यभेद आदि की चर्चा की गयी है।

द्वितीयोल्लास- शब्द के तीन भेद, अर्थ के तीन भेद अभिहितान्वयवाद, अन्विताभिधानवाद, अभिधा-लक्षणा, लक्षणा के लक्षण, भेद आदि का वर्णन किया गया है।

तृतीयोल्लास- अर्थ के भेद, आर्थी व्यञ्जना के भेद आदि का वर्णन किया गया है।

चतुर्थोल्लास- अविवक्षितवाच्य लक्षणामूलध्वनि के दो भेद, रस निरूपण, भरतमुनि के रससूत्र आदि का वर्णन प्राप्त होता है।

पञ्चमोल्लास- गुणीभूतव्यङ्ग्य के आठ भेद, रस प्रतीति के लिए व्यञ्जना अनिवार्य, व्यञ्जना की अनिवार्यता, व्यञ्जनावादी की ओर से उनका खण्डन आदि का वर्णन किया गया है।

षष्ठ उल्लास - शब्दार्थ चित्र निरूपण आदि का **वर्णन। सप्तम उल्लास -** दोष सामान्य लक्षण, श्रुतिकटु आदि पदगत 16 दोष और उनके उदाहरण। रसदोषों के अपवाद आदि का वर्णन प्राप्त होता है।

अष्टमोल्लास - गुण तथा अलङ्कारों का भेद,गुणों के भेद, वामनोक्त दस अर्थ गुणों का खण्डन आदि का वर्णन किया गया है।

नवमोल्लास - शब्दालङ्कार का वर्णन, अलङ्कार का लक्षण, अलङ्कारों की संख्या अनुप्रास, यमक, श्लेष आदि अलङ्कारों का वर्णन प्राप्त होता है।

दशमोल्लास - अलङ्कारों का वर्गीकरण, उपमा, उपमा के भेद, रूपक, रूपक के भेद, उत्प्रेक्षा, अपह्नुति, समासोक्ति, विभावना, विशेषोक्ति आदि अर्थालङ्कारों का वर्णन किया गया है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि व्यञ्जना का निरूपण पञ्चमोल्लास में किया गया है।

अतः विकल्प 'C' सही है।

स्रोत- काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज 197, 262

22. कौषीतकिब्राह्मणं केन वेदेन सम्बद्धमस्ति?
(A) शुक्लयजुर्वेदेन (B) कृष्णयजुर्वेदेन
(C) ऋग्वेदेन (D) सामवेदेन

व्याख्या-

वेद	ब्राह्मण	उपनिषद्
ऋग्वेद	1.ऐतरेय 2.शांखायन (कौषीतकि)	1. ऐतरेयोपनिषद् 2.कौषीतकि 3.बाष्कलोपनिषद्
शुक्लयजुर्वेद	1. शतपथ (माध्यन्दिन)	1.ईशावास्योपनिषद् 2. बृहदारण्यक
कृष्णयजुर्वेद	1. तैत्तिरीय 1.कठोपनिषद् 2.मैत्रायणी, 3.कठ,	2. मैत्रायणी 3.तैत्तिरीयोपनिषद्, 4.श्वेताश्वतरोपनिषद्
सामवेद	1. प्रौढ़ 2. षड्विंश, 3. सामविधान,4.आर्षेय, 5. देवताध्याय,6. उपनिषद् 7. संहितोपनिषद्,8. वंश, 9. जैमिनीय	1. छान्दोग्योपनिषद् 2.केनोपनिषद्
अथर्ववेद	1. गोपथ ब्राह्मण	1. प्रश्नोपनिषद् 2. माण्डूक्योपनिषद् 3. मुण्डकोपनिषद्

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि कौषीतकिब्राह्मण ऋग्वेद से सम्बन्धित है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 127

23. मनुस्मृतिः कति अध्यायेषु विभक्ताऽस्ति?
(A) दशाध्यायेषु (B) एकादशाध्यायेषु
(C) त्रयोदशाध्यायेषु (D) द्वादशाध्यायेषु

व्याख्या-* मनु कृत मनुस्मृति हिन्दू धर्म का एक प्राचीन धर्मशास्त्र (स्मृति) है। इसे मानव धर्म-शास्त्र, मनुसंहिता आदि नामों से भी जाना जाता है। यह उपदेश के रूप में है, जो मनु द्वारा ऋषियों को दिया गया।

* धर्मशास्त्रीय ग्रन्थकारों के अतिरिक्त शङ्कराचार्य, शबरस्वामी जैसे दार्शनिक भी प्रमाणरूपेण इस ग्रन्थ को उद्धृत करते हैं।

* धर्मशास्त्र के रूप में मनुस्मृति को विश्व की अमूल्य निधि माना जाता है।

* भारत में वेदों के उपरान्त सर्वाधिक मान्यता और प्रचलन मनुस्मृति का है। इसमें चारों वर्णो, चारों आश्रमों, सोलह संस्कारों तथा सृष्ट्युत्पत्ति उत्पत्ति के अतिरिक्त राज्य की व्यवस्था, राज्य के कर्तव्य, भाँति-भाँति के विवादों, सेना के प्रबन्ध आदि उन सभी विषयों पर परामर्श दिया गया है।

* मनु आदिपुरुष थे और उनका यह शास्त्र 'आदिशास्त्र' है।

* मनुस्मृति में कुल बारह अध्याय हैं और 2694 श्लोक हैं।

* मनु पर कई टीकाएँ प्राप्त होती हैं-

1. मेधातिथिकृत भाष्य
2. कुल्लूकभट्ट द्वारा रचित मन्वर्थमुक्तावली टीका
3. नारायणकृत मन्वर्थविवृत्ति टीका
4. राघवानन्दकृत मन्वर्थचन्द्रिका टीका
5. नन्दनकृतनन्दिनी टीका
6. गोविन्दराजकृत मन्वाशयानुसारिणी टीका आदि

⇒ **मनुस्मृति की विषयवस्तु-** मनुस्मृति भारतीय आचारसंहिता का विश्वकोश है, मनुस्मृति में बारह अध्याय दो हजार छः सौ चौरानबे श्लोक हैं। जिनमें सृष्टि की उत्पत्ति, संस्कार, नित्य और नैमित्तिक कर्म, आश्रमधर्म, वर्णधर्म, राजधर्म व प्रायश्चित्त आदि विषयों का उल्लेख है।

1. जगत् की उत्पत्ति, 2. संस्कारविधि, व्रतचर्या, उपचार 3. स्नान, विवाहलक्षण, महायज्ञ, श्राद्धकल्प 4. वृत्तिलक्षण, स्नातक व्रत 5. भक्ष्याभक्ष्य, शौच, अशुद्धि, स्त्रीधर्म 6. गृहस्थाश्रम, वानप्रस्थ, मोक्ष, संन्यास 7. राजधर्म 8. कार्यविनिर्णय, साक्षिप्रश्नविधान 9. स्त्रीपुंसधर्म, विभाग धर्म, धूत, कंटकशोधन, वैश्यचूडोपचार 10. संकीर्णजाति आपद्धर्म 11. प्रायश्चित्त 12. संसारगति, कर्म, कर्मगुणदोष, देशजाति, कुलधर्म, निःश्रेयस्

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि मनुस्मृति में बारह अध्याय हैं। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- मनुस्मृति- गिरिधर गोपाल शर्मा, भू. पेज 04

24. माध्यन्दिनशाखायाः अपरनाम किं प्रचलितमस्ति?
(A) कौथुमशाखा (B) बौधायनीशाखा
(C) वाजसनेयिशाखा (D) मैत्रायणीशाखा

व्याख्या- ऋग्वेद का अपर नाम 'दशतयी' है।
यजुर्वेद की दो शाखाएँ हैं- (1) शुक्लयजुर्वेद (2) कृष्णयजुर्वेद
शुक्लयजुर्वेद की भी शाखाएँ हैं- (1) माध्यन्दिन या वाजसनेयि (2) काण्वसंहिता

➢ माध्यन्दिनसंहिता का अपरनाम वाजसनेयिसंहिता है।

➢ अथर्ववेद के अपरनाम- आंगिरस वेद, अथर्वाङ्गिरस, ब्रह्मवेद, भृग्वंगिरोवेद, क्षत्रवेद, भैषज्यवेद, छन्दोवेद, महीवेद आदि हैं।

➢ **माध्यन्दिन या वाजसनेयि-** इसमें चालीस अध्याय और 1975 मन्त्र हैं। अतएव यजुर्वेद के सन्दर्भ में केवल दो संख्याएँ रहती हैं- एक अध्याय की और दूसरी मन्त्र की।
जैसे- ईशा वास्यम् (यजुर्वेद 40.1) अर्थात् यह 40वें अध्याय का प्रथम मन्त्र है। शतपथब्राह्मण में यजुर्वेद के अक्षरों की संख्या 2,88000 अर्थात् 8 हजार 36 अक्षरों वाले बृहती छन्द के बराबर। अष्टौ बृहती सहस्राणि (8000×36=2,28000 अक्षराणि)

⇒ **काण्व संहिता-** इसमें भी 40 अध्याय हैं और मन्त्रसंख्या 2086 है; अर्थात् वाजसनेयि शाखा से इसमें 111 मन्त्र अधिक हैं। इसका विभाजन अध्याय, अनुवाक और मन्त्र के रूप में हुआ है। अध्याय 40, अनुवाक 328 और मन्त्र 2086 हैं।
आदित्य पुराण के अनुसार कण्व के पिता बोधायन थे और याज्ञवल्क्य उनके गुरु थे। महर्षि कण्व इस शाखा के प्रवर्तक हैं। आजकल काण्वसंहिता का प्रचार महाराष्ट्र में ही है और माध्यन्दिन का उत्तर भारत में।

⇒ **सामवेदीय शाखा-** सामवेद की तीन शाखाएँ हैं-
1. कौथुमीय (कौथुम) शाखा 2. राणायनीय शाखा 3. जैमिनीय शाखा

अथर्ववेद की शाखाएँ- महर्षि पतञ्जलि ने महाभाष्य में 'नवधाऽऽथर्वणो वेदः' (महा॰ आह्निक 1) कहकर अथर्ववेद की नौ शाखाओं का उल्लेख किया है-
1. पैप्पलाद 2. तौद 3. मौद 4. शौनकीय 5. जाजल 6. जलद 7. ब्रह्मवद 8. देवदर्श 9. चारणवैद्य

कृष्णयजुर्वेद की शाखाएँ- (1) तैत्तिरीयसंहिता (2) मैत्रायणी संहिता (3) काठकसंहिता (4) कपिष्ठल

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि माध्यन्दिन शाखा का अपर नाम 'वाजसनेयि' है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-65

25. याज्ञवल्क्यस्मृतौ व्यवहाराध्यायः कतमोऽस्ति?

(A) प्रथमः **(B)** द्वितीयः
(C) तृतीयः **(D)** चतुर्थः

व्याख्या- महर्षि याज्ञवल्क्य प्रणीत याज्ञवल्क्यस्मृति तीन अध्यायों में विभक्त है-(1) आचाराध्याय (2) व्यवहाराध्याय (3) प्रायश्चित्ताध्याय

आचाराध्याय- प्रथम आचाराध्याय में 13 प्रकरण हैं।

व्यवहाराध्याय- द्वितीय व्यवहाराध्याय में 25 प्रकरण हैं।

प्रायश्चित्ताध्याय- तृतीय प्रायश्चित्ताध्याय में 5 प्रकरण हैं।

⇒ **याज्ञवल्क्यस्मृति की टीकायें-** याज्ञवल्क्यस्मृति पर मुख्य चार टीकाकारों की टीकाएँ हैं, वे हैं- विश्वरूप, विज्ञानेश्वर, अपरार्क और शूलपाणि।

1. विज्ञानेश्वर की मिताक्षरा टीका का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है।
2. विश्वरूप की बालक्रीडा नाम की टीका गणपतिशास्त्री ने त्रिवेन्द्रम् संस्कृत ग्रन्थमाला में प्रकाशित की है।
3. अपरादित्य की टीका अपरार्क-धर्मशास्त्र-निबन्ध नाम से अभिहित है। यह आनन्दाश्रम प्रेस पूना से प्रकाशित है।
4. शूलपाणि की टीका दीपकलिका है, जो छोटे आकार की है।

⇒ **याज्ञवल्क्यस्मृति की श्लोक संख्या-** याज्ञवल्क्य-स्मृति की श्लोक संख्या के विषय में विश्वरूपाचार्य, विज्ञानेश्वर तथा अपरादित्य का मत एक नहीं है।

विश्वरूपाचार्य के अनुसार याज्ञवल्क्यस्मृति में 1003, विज्ञानेश्वर के मत में 1009 और अपरादित्य की व्याख्या में 1006 श्लोक पाये जाते हैं।

कुछ मूल पुस्तकों में उपलब्ध ''श्लोकानामपि विज्ञेयं सहस्रं चतुरुत्तरम्'' के आधार पर तो मूल श्लोकों की संख्या 1004 प्रतीत होती है। शूलपाणि ने अपनी व्याख्या में 1010 श्लोक माने हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि याज्ञवल्क्यस्मृति के द्वितीय अध्याय का नाम 'व्यवहाराध्याय' है।

अतः विकल्प 'B' सही है।

स्रोत- याज्ञवल्क्यस्मृति- उमेशचन्द्र पाण्डेय, पेज-6

26. अशोकस्य शहवाजगढीलेखः कस्यां लिप्यां प्राप्यते?

(A) ब्राह्मी **(B)** खरोष्ठी
(C) शारदा **(D)** पुष्करी

व्याख्या-

अशोक के अभिलेख और उनकी लिपि-

अशोक के अभिलेखों को सर्वप्रथम 1750 में टी. फैन्थेलर ने खोजा था। इन्होंने दिल्ली-मेरठ अभिलेख खोजा। अशोक के अभिलेखों को सर्वप्रथम 1837 में कलकत्ता टकसाल के अधिकारी एवं एशियाटिक सोसायटी के सचिव जेम्स प्रिंसेप ने पढ़ा था। इन्होंने दिल्ली-टोपरा अभिलेख को पढ़ा था। इस समय अलेक्जेण्डर कनिंघम इनके सहायक थे। अतः जेम्स प्रिंसेप ने ही पहली बार ब्राह्मी लिपि का सफलतापूर्वक उद्वाचन किया।

डी॰आर॰ भण्डारकर महोदय ने केवल अभिलेखों के ही आधार पर अशोक का इतिहास लिखने का प्रयास किया है।

चापड ही वह एक मात्र अभिलेख लेखक है, जिसका नाम अशोक के अभिलेखों में मिलता है।

लिपि- अशोक के शिलालेखों में कुल चार लिपियों ब्राह्मी, खरोष्ठी अरामाइक एवं यूनानी का प्रयोग हुआ है। अशोक के स्तम्भलेख एवं गुहालेख में केवल ब्राह्मी लिपि का प्रयोग हुआ है।

खरोष्ठी लिपि- शहवाजगढ़ी एवं मानसेहरा अभिलेख।

अरामाइक लिपि- लघमान एवं तक्षशिला अभिलेख।

द्वि-भाषिक लिपि- कन्दहार का अभिलेख। इसमें यूनानी एवं अरामाइक लिपियों का एक साथ प्रयोग हुआ है।

अशोक पहला भारतीय शासक था, जिसने अभिलेखों के सहारे सीधे अपनी प्रजा को सम्बोधित किया।

अशोक के अभिलेखों की भाषा 'प्राकृत' थी, क्योंकि यह आम जन की भाषा थी और अधिकतर लोगों के द्वारा बोली एवं समझी जाती थी।

अशोक ने 37 वर्ष तक शासन किया। उसने शिलालेखों में उसके शासनकाल के 8वें से लेकर 27वें वर्ष की घटनाएँ वर्णित हैं।

अशोक के अभिलेखों का विभाजन तीन प्रकार से हुआ है-

1- शिलालेख 2- स्तम्भलेख 3- गुहालेख

शिलालेख (I) दीर्घ शिलालेख, (II)लघु शिलालेख

दीर्घ शिलालेख- इनको चतुर्दश (14) शिलालेख भी कहते हैं, क्योंकि यह 14 लेखों का समुच्चय है, जो कि 8 स्थानों से प्राप्त हुए हैं।

बृहद् शिलालेख	स्थिति	खोजकर्ता	वर्ष
शहवाजगढ़ी	पाकिस्तान का पेशावर जिला	जनरल कोर्ट	1836
मनसेहरा	पाकिस्तान का हाजरा जिला	कनिंघम	1836
कालसी	उत्तराखण्ड का देहरादून जिला	कैप्टन ले फोरेस्ट	1860
गिरनार	गुजरात के जूनागढ़ में	कर्नल राड	1822
एर्रगुडि	आन्ध्रप्रदेश के कर्नूल जिला	अणुघोष	1929
धौली	ओडिशा का पुरी जिला	किटो	1837
जौगड़	ओडिशा का गंजाम जिला	वाल्टर इलियट	1837
सोपारा	महाराष्ट्र का थाने जिला	वाल्टर इलियट्	1850

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि शहवाजगढ़ी के लेख 'खरोष्ठी लिपि' में है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- प्राचीन भारत - सौरभ चौबे, पेज 207

27. अधोऽङ्कितेषु योगदर्शनानुसारेण समुचितः क्रमोऽस्ति-

(A) अस्तेय-अपरिग्रह-सत्य-ब्रह्मचर्य-अहिंसाः

(B) अपरिग्रह-ब्रह्मचर्य-सत्य-अस्तेय-अहिंसाः

(C) अहिंसा-सत्य-अस्तेय-ब्रह्मचर्य-अपरिग्रहाः

(D) सत्य-अहिंसा-अस्तेय-ब्रह्मचर्य-अपरिग्रहाः

व्याख्या- महर्षि पतञ्जलि मुनि प्रणीत पातञ्जलयोगदर्शन सूत्र में चार पाद हैं-

(i) समाधिपाद- 51 सूत्र
(ii) साधनपाद- 55 सूत्र
(iii) विभूतिपाद- 55 सूत्र
(iv) कैवल्यपाद- 34 सूत्र
= 51 सूत्र

पातञ्जलयोगदर्शन के द्वितीय पाद में पाँच यमों का वर्णन किया गया है- 'अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमाः' (2/30)।

अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह ये पाँच यम कहे जाते हैं।

1. अहिंसा- अहिंसाप्रतिष्ठायां तत्सन्निधौ वैरत्यागः (2/35) अहिंसा के प्रतिष्ठित हो जाने पर उस योगी के पास वैरभाव छूट जाता है।

2. सत्य- सत्यप्रतिष्ठायां क्रियाफलाश्रयत्वम् (2/36) सत्य के प्रतिष्ठत हो जाने पर क्रियाओं और उनके फलों की आश्रयता आ जाती है।

3. अस्तेय- अस्तेयप्रतिष्ठायां सर्वरत्नोपस्थानम्। (2/37) अस्तेय के प्रतिष्ठित हो जाने पर सभी रत्नों की उपस्थित होती है।

4. ब्रह्मचर्य- ब्रह्मचर्यप्रतिष्ठायां वीर्यलाभः। (2/38) ब्रह्मचर्य के प्रतिष्ठित हो जाने पर सामर्थ्य लाभ होता है।

5. अपरिग्रह- अपरिग्रहस्थैर्ये जन्मकथन्तासम्बोधः (2/39) अपरिग्रह के स्थिर होने पर जन्मों तथा उनके प्रकार का सम्यग्ज्ञान होता है।

* पातञ्जलयोगदर्शन के प्रथमपाद में पाँच वृत्तियों की चर्चा की गयी है- प्रमाणविपर्ययविकल्पनिद्रास्मृतयः।।1/6।।

प्रमाण, विपर्यय, विकल्प, निद्रा और स्मृति ये पाँच प्रकार की वृत्तियाँ होती हैं।

⇒ **योग का लक्षण है-** 'योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः' (1/2)

चित्त की वृत्तियों के निरोध को ही योग कहते हैं।

चित्त की पाँच भूमियों या अवस्थाओं का उल्लेख प्राप्त होता है- (1) क्षिप्त (2) मूढ़ (3) विक्षिप्त (4) एकाग्र (5) निरुद्ध

योगदर्शन का पहला सूत्र है- अथ योगानुशासनम्। (1/1) अथ इति अयम् शब्दः = अधिकारार्थः

प्रमाण नामक वृत्ति के भेद हैं- तीन (1) प्रत्यक्ष (2) अनुमान (3) आगम (शब्द) 'प्रत्यक्षानुमानागमाः प्रमाणानि' (1/7)

पञ्चक्लेश- अविद्याऽस्मितारागद्वेषाभिनिवेशाः पञ्चक्लेशाः

(1) विद्या (2) अस्मिता (3) राग (4) द्वेष (5) अभिनिवेश।

⇒ **अष्टाङ्ग योग-** यमनियमाऽऽसन- प्राणायाम- प्रत्याहार धारणाध्यान-समाधयोऽष्टावङ्गानि। (2/29) यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि।

⇒ **नियम-** शौच-सन्तोष-तपः-स्वाध्यायेश्वर-प्रणिधानानि नियमाः। (2/32) शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वरप्रणिधान नियम कहे जाते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि पाँच यम होते हैं- क्रमशः अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रहः। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- योगदर्शन-(2/30)- गीताप्रेस, पेज-53

28. 'श्लोकवार्तिकम्' कस्य दर्शनस्य ग्रन्थोऽस्ति?

(A) मीमांसादर्शनस्य **(B) वेदान्तदर्शनस्य**

(C) न्यायदर्शनस्य **(D) सांख्यदर्शनस्य**

व्याख्या- मीमांसादर्शन

महर्षि जैमिनि को 'मीमांसासूत्र' का रचयिता कहा जाता है।

मीमांसासूत्र (जैमिनिसूत्र) 12 अध्यायों में विभक्त है। अतः इसे 'द्वादशलक्षणी' भी कहा जाता है।

जैमिनिसूत्रों पर शबरस्वामीकृत विशद भाष्य है, जो 'शाबरभाष्य'

नाम से प्रसिद्ध है।

भाष्यकार के पश्चात् मीमांसादर्शन के व्याख्याकारों की दीर्घ परम्परा में सर्वाधिक अम्लानप्रतिभासम्पन्न कुमारिलभट्ट एवं प्रभाकरगुरु माने जाते हैं।

कुमारिल ने शाबरभाष्य पर अपनी वैदुष्यपूर्ण मौलिक व्याख्या की रचना कर एक प्रकार से भाष्यकार का महत्त्व बढ़ा दिया है। इनके तीन ग्रन्थ उपलब्ध हैं। तीनों ग्रन्थ शाबरभाष्य के भिन्न-भिन्न अंशों पर लिखी हुई व्याख्याएँ हैं- प्रथम ग्रन्थ का नाम 'श्लोकवार्तिक' है। इसमें शाबरभाष्य के प्रथम अध्याय के प्रथम पाद की टीका है।

द्वितीय ग्रन्थ का नाम- 'तंत्रवार्तिक' है। शाबरभाष्य के प्रथम अध्याय के अवशिष्ट तीन पाद, द्वितीय अध्याय एवं तृतीय अध्याय की गद्यात्मक टीका इसमें की गयी है।

तृतीय ग्रन्थ का नाम- 'टुप्टीका' है। इसमें शेष नौ अध्यायों की संक्षिप्त टीका है।

मीमांसा पर आधारित अन्यग्रन्थ-

मध्वाचार्य की 'जैमिनीयन्यायमाला' है।

जयन्तभट्ट ने 'न्यायमंजरी' लिखी है।

मण्डनमिश्र ने विधिविवेक, भावनाविवेक, विभ्रमविवेक लिखे हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'श्लोकवार्तिक' मीमांसादर्शन से सम्बन्धित है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- अर्थसंग्रह- राजेश्वरशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज भू. 19

29. 'न वञ्चनीयाः प्रभवोऽनुजीविभिः' इति केनोक्तम्?

(A) विशाखदत्तेन **(B) दण्डिना**

(C) भासेन **(D) भारविणा**

व्याख्या- भारविकृत एकमात्र ग्रन्थ किरातार्जुनीयम् महाकाव्य, जो बृहत्त्रयी के अन्तर्गत परिगणित है, जिसमें 18 सर्ग हैं। प्रथम सर्ग में युधिष्ठिर द्वारा भेजा गया वनेचर दुर्योधन के राजकार्यों को जानकर द्वैतवन में आया है और युधिष्ठिर से कहता है–

क्रियासु युक्तैर्नृप! चारचक्षुषो न वञ्चनीयाः प्रभवोऽनुजीविभिः।
अतोऽर्हसि क्षन्तुमसाधु साधु वा हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः॥

(1/4) हे राजन्। किसी कार्य को करने के लिए नियुक्त किए गए सेवकों के द्वारा स्वामी (झूठी तथा प्रिय बातें बताकर) नहीं ठगे जाने चाहिये। इसलिए मैं अप्रिय अथवा प्रिय बाते करूँ, उन्हें आप क्षमा करेंगे, क्योंकि मधुर तथा परिणाम में कल्याण देने वाली वाणी दुर्लभ होती है।

अन्य प्रमुख सूक्तियाँ- * हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः (1/4) मधुर तथा परिणाम में कल्याण देने वाली वाणी दुर्लभ होती है।

न हि प्रियं प्रवक्तुमिच्छन्ति मृषा हितैषिणः (1/2) कल्याण चाहने वाले लोग मिथ्याभूत मधुर वचन बोलने की इच्छा नहीं करते हैं।

वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः (1/8) महापुरुषों के साथ किया गया विरोधभाव भी दुष्टों के संसर्ग की अपेक्षा अच्छा है।

अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता (1/23) बलवान् के साथ किया गया वैर विरोध अनर्थपर्यवसायी होता है।

⇒ **विशाखदत्त-** विशाखदत्तकृत मुद्राराक्षस सात अङ्कों का नाटक है।

⇒ **मुद्राराक्षस की प्रमुख सूक्तियाँ-**

न हि खलु सर्वं जानाति।

प्रथम अङ्क में गुप्तचर कहता है, ''सभी लोग सब कुछ नहीं जानते हैं।''

अत्यादरः शङ्कनीयः।

प्रथम अङ्क में चाणक्य के घर जाकर चन्दनदास मन में सोचता है, ''आज अत्यधिक आदर किया जाना शङ्कनीय है।

पुरन्ध्रीणां प्रज्ञा पुरुषगुणविज्ञानविमुखी (2/7)।

राक्षस कहता है, कासपुष्प के अग्रभाग के समान स्त्रियों की बुद्धि ही पुरुषों के शौर्यादि गुणों की जानकारी से पराङ्मुख होती है।

⇒ **दण्डी-** दण्डी कृत ग्रन्थ दशकुमारचरितम् है, जिसमें आठ उच्छ्वास हैं। इसके नायक राजवाहन और नायिका अवन्तिसुन्दरी है।

*** दशकुमारचरितम् की प्रमुख सूक्तियाँ-**

दुष्करसाधनं प्रज्ञा इति

मित्रगुप्त कहता है कि जो कार्य करना कठिन है, उसके करने का उपाय बुद्धि है।

गृहिणः प्रियहिताय दारगुणाः इति

मित्रगुप्त कहता है कि पत्नी के गुण गृहस्थ के प्रिय और हित के लिये होते हैं।

दैव्याः शक्तेः पुरो न बलवती मानवी शक्तिः।

विश्रुत कहता है कि ईश्वरीय ताकत के आगे आदमी की ताकत बली नहीं है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'न वञ्चनीयाः प्रभवोऽनुजीविभिः' यह सूक्ति किरातार्जुनीयम् से उद्धृत है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- किरातार्जुनीयम् (1/4)- श्रीनिवास शर्मा, पेज 04

30. अधस्तनानां केन अभिलेखेन सह कस्य सम्बन्धः? समीचीनां तालिकां चिनुत-

तालिका-I	तालिका-II
(क) रुद्रदाम्नः	1. हाथीगुम्फा
(ख) खारवेलस्य	2. मन्दसौर
(ग) यशोधर्मणः	3. एहोलः
(घ) पुलकेशिनः	4. गिरनारः

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(A)	4	1	2	3
(B)	1	2	3	4
(C)	4	3	2	1
(D)	3	1	4	2

व्याख्या⇒ खारवेल का हाथीगुम्फा अभिलेख-
खारवेल के हाथीगुम्फा अभिलेख में सर्वप्रथम भारतवर्ष का विवरण मिलता है।
स्थान- हाथीगुम्फा भुवनेश्वर के निकट उदयगिरि पहाड़ी, जिला-पुरी, उड़ीसा
लिपि- ब्राह्मी
काल- लगभग प्रथम शती ई॰पू॰ का उत्तरार्ध
विषय- चेदिवंशी राजा कलिंगाधिपति खारवेल के जीवन की घटनाओं का क्रमिक विवरण एवं उसकी राजनैतिक उपलब्धियों तथा लोकमंगल के कार्यों का उल्लेख।

⇒ पुलकेशिन् का एहोल शिलालेख-
पुलकेशिन् द्वितीय का एहोल अभिलेख- यह अभिलेख कर्नाटक के बीजापुर में है, जिसकी भाषा संस्कृत है। इसके लेखक रविकीर्ति हैं। रविकीर्ति ने इसमें अपनी तुलना कालिदास एवं भारवि से की है।

⇒ यशोधर्मन् का मन्दसौर अभिलेख- यशोधर्मन् सम्भवतः औलिकर वंश का था। मन्दसौर से इसके दो अभिलेख मिलते हैं। इसने सारे उत्तर भारत में अपना प्रभुत्व स्थापित करने के उपलक्ष्य में 532 ई॰ में विजय स्तम्भ स्थापित किया।
यशोधर्मन् की मन्दसौर प्रशस्ति का लेखक वासुल था। इसमें लिखा है कि जिस मिहिरकुल ने शिव के अतिरिक्त अन्य किसी के सामने सिर नहीं झुकाया, उससे यशोधर्मन् ने अपनी चरण वन्दना करायी। मन्दसौर प्रशस्ति में उसे 'जनेन्द्र' कहा गया है।

⇒ रुद्रदामन् का जूनागढ़ अभिलेख-
सौराष्ट्र में जूनागढ़ से एक मील पूरब स्थित गिरनार पर्वत के उस प्रस्तरखण्ड पर जिस पर गुप्तवंशीय नरेश स्कन्दगुप्त का अभिलेख है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि **विकल्प 'A' सही है।**
स्रोत- भारतीय पुरालेखों का अध्ययन- पेज 173

31. अधस्तनयुग्मानां समीचीनमेलनतालिकां चिनुत-

तालिका-I	तालिका-II
(क) भारविः	1. बुद्धचरितम्
(ख) कालिदासः	2. रघुवंशम्
(ग) अश्वघोषः	3. किरातार्जुनीयम्
(घ) शूद्रकः	4. मृच्छकटिकम्

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(A)	3	2	1	4
(B)	2	1	4	3
(C)	1	2	3	4
(D)	4	3	2	1

व्याख्या महाकाव्यों की सूची-

ग्रन्थ	ग्रन्थकार	सर्ग
किरातार्जुनीयम्	भारवि	18सर्ग
बुद्धचरितम्	अश्वघोष	20सर्ग
रघुवंशम्	कालिदास	19सर्ग
कुमारसम्भवम्	कालिदास	17सर्ग
शिशुपालवधम्	माघ	20सर्ग
नैषधीयचरितम्	श्रीहर्ष	22सर्ग
हरविजयम्	रत्नाकर	50सर्ग
जानकीहरणम्	कुमारदास	20से 25सर्ग प्राप्त
भट्टिकाव्यम् (रावणवधम्)	भट्टि	22सर्ग
धर्मशर्माभ्युदयम्	हरिश्चन्द्र	21सर्ग
राघवपाण्डवीयम्	माधवभट्ट	13सर्ग

➤ **नाटकों की सूची-**

ग्रन्थ	ग्रन्थकार	अङ्क
मृच्छकटिकम्	शूद्रक	10
अभिज्ञानशाकुन्तलम्	कालिदास	07
उत्तररामचरितम्	भवभूति	07
मुद्राराक्षसम्	विशाखदत्त	07
प्रतिमानाटकम्	भास	07
अनर्घराघवम्	मुरारि	07
प्रसन्नराघवम्	जयदेव	07
स्वप्नवासवदत्तम्	भास	06
अभिषेकनाटकम्	भास	06
अविमारकम्	भास	06

वेणीसंहारम्	भट्टनारायण	06
कुन्दमाला	दिङ्नाग	06
मालविकाग्निमित्रम्	कालिदास	05
विक्रमोर्वशीयम् (त्रोटक)	कालिदास	05
रत्नावली (नाटिका)	हर्ष	04
कर्पूरमञ्जरी (सट्टक)	राजशेखर	04
चारुदत्तम्	भास	04
प्रियदर्शिका (नाटिका)	हर्ष	04
प्रतिज्ञायौगन्धरायण	भास	04

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि विकल्प A का जोड़ा सही है। **अतः विकल्प 'A'सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशङ्कर शर्मा ऋषि, पेज 243, 208, 229, 490

32. कौटिलीय-अर्थशास्त्रं कति अधिकरणेषु विभक्तमस्ति-
(A) अष्टदशाधिकरणेषु (B) द्वादशाधिकरणेषु
(C) दशाधिकरणेषु (D) पञ्चदशाधिकरणेषु

व्याख्या-

	अधिकरण संख्या		**नाम**
1.	प्रथम	–	विनयाधिकारिक (राजवृत्ति) निरूपण
2.	द्वितीय	–	अध्यक्षों का निरूपण
3.	तृतीय	–	धर्मस्थीयम् (न्याय का निरूपण)
4.	चतुर्थ	–	कण्टकशोधन
5.	पञ्चम	–	योगवृत्तम्
6.	षष्ठ	–	मण्डलयोनि (प्रकृतियों का निरूपण)
7.	सप्तम	–	षाड्गुण्य (छः गुणों का) निरूपण
8.	अष्टम	–	व्यसनाधिकारिकम्(व्यसनों का निरूपण)
9.	नवम	–	अभियास्यत्कर्म (आक्रमण का निरूपण)
10.	दशम	–	साङ्ग्रामिक (संग्राम का निरूपण)
11.	एकादश	–	संघवृत्तम् (संघवृत्त निरूपण)
12.	द्वादश	–	आबलीयसं निरूपण
13.	त्रयोदश	–	दुर्गलम्भोपायः (दुर्गप्राप्ति निरूपण)
14.	चतुर्दश	–	औपनिषदं (औपनिषदिक निरूपण)
15.	पञ्चदश	–	तन्त्रयुक्ति का निरूपण

⇒ गुप्तचरों की नियुक्ति-

धर्मोपधा आदि उपायों के द्वारा अमात्यवर्ग की परीक्षा कर लेने के अनन्तर राजा गुप्तचरों की नियुक्ति करे।

1. कापटिक 2. उदास्थित 3. गृहपतिक 4. वैदेहक 5. तापस 6. सत्री 7. तीक्ष्ण 8. रसद और 9. भिक्षुक आदि अनेक प्रकार के गुप्तचर होते हैं।

दूत तीन प्रकार के होते हैं-

1- निसृष्टार्थ 2- परिमितार्थ 3- शासनहर

अमात्यसम्पदोपेतो निसृष्टार्थः, पादगुणहीनः परिमितार्थः, अर्धगुणहीनः शासनहरः।

⇒ दुर्ग- चतुर्दिशं जनपदान्ते साम्परायिकं दैवकृतं दुर्गं कारयेत् अन्तर्द्वीपं स्थलं वा निम्नावरुद्धमौदकं, प्रास्तरं गुहां वा पार्वतं, निरुदकस्तम्बमिरिणं वा धान्वनं, खञ्जनोदकं स्तम्भगहनं वा वनदुर्गम्।

दुर्ग चार प्रकार के हैं-

1- औदक 2- पार्वत 3- धान्वन और 4- वन दुर्ग।

'प्रतिबन्धः प्रयोगो व्यवहारोऽवस्तारः परिहापणमुपभोगः परिवर्तनमपहारश्चेति कोषक्षयः।'

कोषक्षय के आठ कारण- 1- प्रतिबन्ध 2- प्रयोग 3- व्यवहार 4-अवस्तर 5- परिहायण 6- उपभोग 7- परिवर्तन 8- अपहार

⇒ लेखक की छः योग्यताएँ- 1- अर्थक्रम 2- सम्बन्ध 3- परिपूर्णता 4- माधुर्य 5- औदार्य 6- स्पष्टता

अर्थक्रमः सम्बन्धः, परिपूर्णता, माधुर्यमौदार्यं स्पष्टत्वम्, इति लेखसम्पत्।

उपाय- उपायाः सामोपप्रदानभेददण्डाः।

उपाय चार हैं- 1. साम, 2. दान, 3. दण्ड, 4. भेद

⇒ कौटिल्य के अनुसार आठ प्रकार के विवाह होते हैं-

1. विवाहपूर्वो व्यवहारः	धर्म विवाह
2. कन्यादानं कन्यामलङ्कृत्य	ब्राह्म विवाह
3. सहधर्मचर्या प्राजापत्यः	प्राजापत्य विवाह
4. गोमिथुनादानादार्षः	आर्ष विवाह
5. अन्तर्वेद्यामृत्विजे दानाद् दैवः	दैव विवाह
6. मिथस्समवायाद् गान्धर्वः	गान्धर्व विवाह
7. शुल्कादानादासुरः	आसुर विवाह

8. प्रसह्यादानाद् राक्षसः राक्षस विवाह

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि कौटिलीय अर्थशास्त्र पन्द्रह अधिकरणों में विभक्त है। **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत- कौटिलीय अर्थशास्त्र-वाचस्पति गैरोला, पेज 02-07

33. वेदान्तदर्शनानुसारं जगतः प्रपञ्चः किं कथ्यते?
(A) ईश्वरस्य स्वरूपम् **(B) अनन्तसत्ता**
(C) अनादितत्त्वम् **(D) विवर्तः**

व्याख्या ⇒ जगत् प्रपञ्च–
शांकर वेदान्त में ब्रह्म को छोड़कर और सभी पदार्थ 'असत्' हैं। इन पदार्थों का आरोप ब्रह्म पर होता है। ब्रह्म आरोप का 'अधिष्ठान' है। माया की विक्षेप-शक्ति के कारण जो सृष्टि होती है, वह मायिक है या भ्रान्ति है; यह आरोप तत्त्वज्ञान के द्वारा बाधित हो जाता है। ब्रह्म को अधिष्ठान मानकर जितने कार्य जगत् में होते हैं, वे ही नहीं, अपितु समस्त जगत् ही ब्रह्म का विवर्त है।

⇒ **विवर्त का अर्थ-** तत्त्व में अतत्त्वों के भान को ही विवर्त कहते हैं- **'अतत्त्वतोऽन्यथाप्रथा 'विवर्त' इत्युदाहृतः।'**
अर्थात् जब किसी वस्तु में अन्य वस्तु की मिथ्याप्रतीति होती है, तो इस प्रक्रिया को हम विवर्त कहते हैं। जैसे- रस्सी में सर्प की प्रतीति होना, सीपी में चाँदी की भ्रान्ति होना विवर्त है। क्योंकि इन दोनों स्थानों पर रस्सी एवं सीपी अपने स्वरूप का परित्याग किए बिना ही अन्यरूप को ग्रहण कर लेती है। यद्यपि यह रूप भ्रान्ति ही है, फिर भी इसको क्षणिक ही सही, अस्तित्व को नकारा नहीं जा सकता।

⇒ **परिणाम या विकार का अर्थ-** परिणाम में एक तत्त्व से यथार्थरूप में दूसरा तत्त्व अभिव्यक्त होता है-
'सतत्त्वतोऽन्यथा प्रथा 'विकार' इत्युदीरितः।'
अर्थात् जब वस्तु अपने स्वरूप का परित्याग करके किसी अन्य रूप को ग्रहण कर लेती है, तो उसे विकार के अन्तर्गत मानना होगा जैसे- दूध का दही के रूप में परिवर्तित होना विकार है; क्योंकि दही बनने के बाद उसे पुनः दूध रूप में बनाना असम्भव है। अपने रूप का त्याग करके ही दूध दही बनाता है। इस प्रक्रिया को परिणाम भी कहा जाता है।
अतः स्पष्ट है कि चराचररूप सम्पूर्ण जगत् प्रपञ्च शुद्ध चैतन्यस्वरूप परब्रह्म का विवर्त है, परिणाम नहीं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि जगत् का प्रपञ्च 'विवर्त' है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- वेदान्तसार- सन्तनारायण श्रीवास्तव्य,पेज-115

34. अधोलिखितेषु का वैदिकभाषायाः विशेषता नास्ति?
(A) सानुनासिकस्वराणां प्रयोगः
(B) लेट्लकारस्य प्रयोगः
(C) तुमुन्नर्थे तवैप्रत्ययस्य प्रयोगः
(D) क्त्वार्थे तवेङ्प्रत्ययस्य प्रयोगः

व्याख्या- वैदिक भाषा की प्रमुख विशेषताएँ-
वैदिक भाषा की पदरचना श्लिष्ट– योगात्मक थी। पदरचना में विविधता और अनेकरूपता थी। यह विविधता लौकिक संस्कृत में अत्यन्त कम हो गई।
जैसे- देवौ, देवा, देवाः, देवासः (वैदिक साहित्य में) देवैः, देवेभिः लौकिक संस्कृत में एक-एक रूप रह गये।
* धातुरूपों में लेट् लकार का प्रयोग होता था। संस्कृत में नहीं रहा।
कृत् प्रत्ययों में तुमुन् के अर्थ में से, असे, अध्यै आदि 15 प्रत्यय थे। संस्कृत में तुमुन् ही शेष रहा है।
* वेद में संगीतात्मक स्वर (Accent) की मुख्यता थी। संस्कृत में बलाघातात्मक स्वर हो गया।
* दो स्वरों के मध्य में ड > ळ और ढ > ळ्ह हो जाता था। ईळे > इले, मीळ्हुषे > मीळ्हुषे।
संस्कृत में ये दोनों ध्वनियाँ नहीं हैं, हिन्दी में ळ, ळ्ह के विकसित रूप ड,ढ़ हैं।
* वैदिक संस्कृत में मध्य स्वरागम या स्वरभक्ति के अनेक उदाहरण मिलते हैं। जैसे- पृथ्वी > पृथिवी, स्वर्ण > सुवर्ण, स्वर् > सुवर् दर्शत > दरशत।
* वैदिक संस्कृत में अनुस्वार के स्थान पर ह्रस्व और दीर्घ ग्वुं - ग्वूं मिलते हैं। ये नासिक्य के साथ कण्ठ्य भी हैं। अल्प प्रयुक्त होने से इनकी गणना पृथक् नहीं की जाती है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि सानुनासिक स्वरों का प्रयोग, लेट्लकार का प्रयोग, तुमुन् के अर्थ में तवै प्रत्यय का प्रयोग वैदिक संस्कृत में प्रयोग होता है। 'क्त्वार्थे तवेङ्' -इसका प्रयोग नहीं होता है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- वैदिकसूक्त संग्रह- विजयशङ्कर पाण्डेय, पेज 14, 21, 04

35. निम्नलिखितेषु दर्शनेषु किं दर्शनं परमात्मनः सृष्टि-कर्तृत्वं न मन्यते?
(A) आर्हतदर्शनम् **(B) न्यायदर्शनम्**
(C) वेदान्तदर्शनम् **(D) योगदर्शनम्**

व्याख्या- भारतवर्ष में मुख्यरूप से नौ दर्शनों की प्रसिद्धि है- छह आस्तिक और तीन नास्तिक। वेद को प्रमाण मानने वाले

दर्शनों को आस्तिक और वेद को प्रमाण न मानने वाले दर्शनों को नास्तिक दर्शन कहा गया है।

आस्तिक दर्शन	नास्तिक दर्शन
1. पूर्वमीमांसा	1. चार्वाक
2. उत्तरमीमांसा	2. बौद्ध
3. साङ्ख्य	3. जैन
4. योग	
5. न्याय	
6. वैशेषिक	

ईश्वर को जगत् का कर्ता मानने के विषय में विभिन्न दर्शनों के विचार/मत निम्नलिखित हैं-

1. आर्हत अथवा जैन दर्शन- जैन दर्शन ईश्वर की सत्ता नहीं मानता। यह ईश्वर के अस्तित्व और जगत्कर्तृत्व का तर्क से खण्डन करता है। इनका कहना है कि कर्म की स्वतन्त्रता ईश्वर की अध्यक्षता के अभाव में भी तत्तत् फल देने में स्वयं कारण मानी जा सकती है, अतः ईश्वर की सत्ता मानना अयुक्त है।

2. न्याय दर्शन- उत्तरकालीन वैशेषिकों और नैयायिकों ने ईश्वर की सत्ता मुक्तकण्ठ से स्वीकार की है एवं उनकी सिद्धि के लिए तर्क भी दिए हैं। वे ईश्वर को जगत् का कर्ता, धर्ता, हर्ता और नियन्ता बताते हैं। ईश्वर सर्वज्ञ हैं, नित्यज्ञानाधिकरण हैं, उनमें ऐश्वर्यादि गुण हैं। सृष्टि और प्रलय उनकी इच्छा से होते हैं।

3. योग दर्शन- योग प्रतिपादित ईश्वर क्लेश, कर्म, विपाक, आशय से सर्वथा अस्पृष्ट पुरुष विशेष है- ''क्लेशकर्मविपाकाशयैरपरामृष्टः पुरुषविशेष ईश्वरः।।'' (योगसूत्र 1.24) ईश्वर नित्यमुक्त है। मुक्त पुरुष पूर्वकाल में बद्ध था। प्रकृतिलीन पुरुष की भविष्य में बन्ध की सम्भावना बनी रहती है, किन्तु ईश्वर सदैव मुक्त और ऐश्वर्यवान् है। अतः योग ईश्वर को भी पृथक् रूप स्वीकार करता है।

4. वेदान्तदर्शन- उपनिषदों को प्रमाण मानने वाले वेदान्त दर्शन में ईश्वर को ही जगत् का निमित्तोपादान कारण स्वीकार किया गया है। इसी से जगत् की उत्पत्ति, स्थिति और लय होता है- ''जन्माद्यस्य यतः।'' (ब्रह्मसूत्र 1.1.2)

5. वैशेषिक दर्शन- कणाद सूत्रों में ईश्वर का स्पष्ट उल्लेख नहीं हुआ है, तथापि प्रशस्तपाद से लेकर बाद के सभी वैशेषिकों ने ईश्वर की सत्ता स्पष्ट रूप से स्वीकार की है और कुछ ने ईश्वर सिद्धि के लिए प्रमाण भी प्रस्तुत किये हैं। ईश्वर इस जगत् के निमित्तकारण और परमाणु-उपादान कारण हैं। ईश्वर का कार्य सर्ग के समय अदृष्ट से गति लेकर परमाणुओं में आद्यस्पन्दन के रूप में सञ्चरित कर देना और प्रलय के समय इस गति का अवरोध करके वापस अदृष्ट में सङ्क्रमित कर देना है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि आर्हत दर्शन ईश्वर अर्थात् परमात्मा के द्वारा जगत् का कर्तृत्व स्वीकार नहीं करता। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- सर्वदर्शनसंग्रह- उमाशङ्कर शर्मा ऋषि, पृष्ठ 115

36. कर्मकाण्डस्य प्रधानता कस्मिन् दर्शने प्रतिपाद्यते?

(A) न्यायदर्शने (B) चार्वाकदर्शने

(C) मीमांसादर्शने (D) योगदर्शने

व्याख्या- मीमांसा शब्द की व्युत्पत्ति मान् धातु से जिज्ञासा अर्थ में सन् प्रत्यय करके की जाती है। अतः व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ से जिज्ञासा ही मीमांसा शब्द का वाचक होगा।

मीमांसा दर्शन के सूत्रकार महर्षि जैमिनि ने प्रतिज्ञासूत्र 'अथातो धर्मजिज्ञासा' में जिज्ञासा पद का प्रयोग किया है।

उपनिषद् वाङ्मय में मीमांसा का अर्थ उच्च दार्शनिक विषयों पर विचार विमर्श करने से है।

वस्तुतः इस शास्त्र का मुख्य प्रतिपाद्य विषय कर्मकाण्ड के स्वरूप का निरूपण करना है।

कर्मकाण्ड सम्बन्धी विशद प्रतिपादन ब्राह्मणवाङ्मय में मिलता है। इस प्रकार मीमांसाशास्त्र का आदिस्वरूप कर्मकाण्ड के अनुष्ठानों तथा विधि-निषेध और मन्त्रों के विनियोग से सम्बन्धित विषयों को प्रामाणिक रूप में उपस्थापित कराने वाला रहा होगा।

चार्वाक दर्शन- बृहस्पति के मत को मानने वाले, नास्तिकों के शिरोमणि (प्रधान) चार्वाक का दर्शन है।

- चार्वाक का जड़वाद या भौतिकवाद अवैदिक दर्शनों में सर्वाधिक प्राचीन है।
- 'बृहस्पति' को चार्वाक दर्शन का प्रथम आचार्य माना जाता है।
- यह शब्द चर्व् धातु से बना है, क्योंकि चार्वाक का मत ऊपर से सुन्दर और मीठा प्रतीत होता है।
- इस मत का नाम 'लोकायत' भी है, जिसका अर्थ है कि यह मत साधारण निम्नकोटि के मन्दबुद्धि लोगों के लिए है।
- चार्वाक मत में प्रत्यक्ष एकमात्र प्रमाण है, अनुमान, शब्द आदि को प्रमाण मानना निराधार है।
- चार्वाक के अनुसार पृथ्वी, जल, अग्नि और वायु ये चार महाभूत ही तत्त्व हैं।
- चार्वाक का सिद्धान्त (लक्ष्य) है- **यावज्जीवेत् सुखं जीवेत् ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत्। भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः?** खाओ, पीओ और मौज करो, यही जीवन का लक्ष्य है। जब तक जीये, सुख से जीये, द्रव्य न हो तो ऋण लेकर घृत पीये, क्योंकि

देह के भस्म हो जाने के बाद फिर उसका आना असम्भव है।

न्यायदर्शन- न्याय तथा वैशेषिक दर्शन परस्पर सम्बद्ध हैं तथा समानतन्त्र कहे जाते हैं।

वैशेषिक में तत्त्वमीमांसा प्रधान है, न्याय में तर्कशास्त्र और ज्ञानमीमांसा का प्राधान्य है।

वैशेषिक में सप्तपदार्थ तथा परमाणुवाद के विवरण द्वारा तत्त्व निरूपण किया गया है।

न्याय में प्रमा तथा प्रमाण की मीमांसा द्वारा तत्त्व विषयक सम्यक् ज्ञान का निरूपण किया गया है।

न्याय का प्रथम पदार्थ प्रमाण है तथा द्वितीय प्रमेय है।

वैशेषिक केवल दो प्रमाण मानता है- प्रत्यक्ष और अनुमान

न्याय ने प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द और उपमान इन चारों को प्रमाण माना है।

योगदर्शन- महर्षि पतञ्जलि योगसूत्र के रचयिता हैं।

भारतीयदर्शन में योग का अत्यधिक महत्त्व है।

योग के कई प्रकार हैं- गीता में ज्ञानयोग, भक्तियोग और कर्मयोग तथा ध्यानयोग का वर्णन है।

➢ योग शब्द 'युज्' धातु से बनता है, जिसका अर्थ है- समाधि। पतञ्जलि ने योग को 'चित्तवृत्तिनिरोध' बताया है। योग ने ईश्वर की सत्ता स्वीकार की है, अतः इसे 'सेश्वर सांख्य' भी कहा जाता है।

➢ योग शब्द का प्रचलित अर्थ मिलन है, अर्थात् जीवात्मा का परमात्मा से मिलन।

* पातञ्जल योग-सूत्र में चार पाद हैं- प्रथम समाधि पाद है, जिसमें समाधि के रूप एवं भेदों का और चित्त तथा उसकी वृत्तियों का वर्णन है।

* द्वितीय साधनापाद में क्रियायोग, क्लेश, क्लेश दूर करने के साधन योग के बहिरङ्गों आदि का वर्णन है।

* तृतीय विभूतिपाद में योग के अन्तरङ्गों का एवं योगशक्ति से उत्पन्न विभूतियों का वर्णन है।

* अन्तिम चतुर्थ कैवल्यपाद में समाधिसिद्धि तथा कैवल्य आदि का निरूपण है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि मीमांसा दर्शन में कर्मकाण्ड का विषय प्रतिपादित है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- अर्थसंग्रह- राजेश्वरशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज भू. 08

37. अधोलिखितेषु अर्थविस्तारस्योदाहरणं नास्ति-

(A) गवेषणा **(B) तैलम्**

(C) प्रवीणः **(D) श्राद्धः**

व्याख्या- अर्थविकास या अर्थपरिवर्तन की दिशाएँ-

संसार की सभी वस्तुएँ परिवर्तनशील हैं। भाषा भी परिवर्तनशील है। जिस प्रकार ध्वनियों में परिवर्तन होता है, उसी प्रकार प्रत्येक भाषा के शब्दों के अर्थों में भी परिवर्तन होता रहता है। यह **अर्थपरिवर्तन तीन प्रकार का होता है-**

1. कहीं पर अर्थ का विस्तार होता है।
2. कहीं पर अर्थ का संकोच होता है।
3. कहीं पर पुराने अर्थ के स्थान पर नया अर्थ आ जाता है।

(i) अर्थविस्तार (ii) अर्थसंकोच

(iii) अर्थादेश (iv) अर्थोत्कर्ष

(vi) अर्थापकर्ष

⟹ **अर्थविस्तार-**

कुछ शब्द मूलरूप में किसी विशेष या संकुचित अर्थ में प्रयुक्त होते थे।

कुशल- कुशल शब्द का अर्थ था- कुशान् लाति (कुशों को लाना या लेना) कुश का अग्रभाग तीक्ष्ण होता है, जिससे हाथ में कटने का भय रहता था, अतः कुश लाना चतुरता का सूचक था। यह शब्द धीरे-धीरे कुश लाना अर्थ को छोड़कर चतुरता, निपुणता अर्थ देने लगा।

अन्य उदाहरण- प्रवीण, तैल, गवेषणा, महाराज, गोशाला आदि।

⟹ **अर्थसंकोच-** अर्थविस्तार के विपरीत कुछ शब्दों के अर्थों में संकोच हुआ है। यास्क ने निरुक्त में वस्तुओं के नामकरण पर विचार करते हुए- गो, अश्व, पृथ्वी आदि का उदाहरण देकर बताया है कि इनका व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ बहुत विस्तृत है, परन्तु ये किसी विशेष अर्थ में रूढ़ हो गए हैं। 'गच्छतीति गौः' चलने वाले को गो (गाय) कहते हैं। वारिज, अम्बुज, सरसिज, सरोज, पंकज, नीरज- इनका शाब्दिक अर्थ है- जल, तालाब या कीचड़ में होने वाला, परन्तु ये शब्द कमल अर्थ में रूढ़ हो गए हैं।

अन्य उदाहरण- जलद, तोयद, अम्बुद, वारिवाह (बादल), वारिधि, नीरधि, अम्बुधि, तोयधि (समुद्र), सर्प, पर्वत, मृग, सभ्य, श्राद्ध, वेदना, घृणा, समास, उपसर्ग, प्रत्यय, विशेषण, नामकरण आदि।

⟹ **अर्थादेश-** अर्थादेश का अर्थ है- एक अर्थ के स्थान पर दूसरे अर्थ का आ जाना। आदेश का अर्थ है- एक को हटाकर दूसरे को आना। अर्थादेश में शब्द का प्राचीन अर्थ लुप्त हो जाता है और नया अर्थ आ जाता है।

असुर- मूल अर्थ 'असु+र' प्राणशक्तिसम्पन्न 'देवता' था। बाद में सुर (देवता) का उल्टा अ+सुर राक्षस अर्थ हो गया।

वर- मूल अर्थ श्रेष्ठ था और अब केवल दूल्हा अर्थ रह गया है।
सह- वेद में सह् धातु का अर्थ जीतना था। अब सहन करना अर्थ रह गया है।
मौन- मूल अर्थ मुनि कर्म या मुनियों का आचरण था। अब चुप रहना अर्थ रह गया।
अन्य उदाहरण- देवानां प्रियः, बौद्ध बुद्धू, पाषण्ड, आकाशवाणी, साहस, खाद्य-खाद, भद्र-भद्दा, मुग्ध, वाटिका-बाड़ी, कर्पट-कपड़ा आदि।
⇒ **अर्थोत्कर्ष-** अर्थ की दृष्टि से विचार करने पर ज्ञात होता है कि अर्थ विकास की जो तीन दिशाएँ बताई गई हैं- उनमें कुछ में शब्दों में अर्थपरिवर्तन से अर्थ में उत्कर्ष आया है और कुछ में अर्थ में अपकर्ष (निकृष्टता)।
उदाहरण- मुग्ध, साहस-साहसी, गोष्ठ-गोष्ठी, सभ्य।
⇒ **अर्थापकर्ष-** इसी प्रकार अर्थपरिवर्तन से कुछ शब्दों के अर्थों में अपकर्ष (हीनता, निकृष्टता) आया है। असुर- ऋग्वेद में देव वाचक था, संस्कृत में राक्षस हो गया।
जुगुप्सा- पालन करना, छिपाना अर्थ था, अब घृणा अर्थ रह गया।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि अर्थविस्तार का उदाहरण गवेषणा, तैलम्, प्रवीण है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**
स्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र- कपिलदेव द्विवेदी, पेज 336-338

38. कुन्तकानुसारम् अधस्तनेषु सुकुमारमार्गस्य प्रथमो गुणः वर्तते?
(A) माधुर्यम् **(B) सौन्दर्यम्**
(C) स्वाभाविकम् **(D) लावण्यम्**

व्याख्या- आचार्य राजानक कुन्तक की एकमात्र प्रकृतशास्त्रीय कृति 'वक्रोक्तिजीवितम्' है। आचार्य कुन्तक के प्रकृत ग्रन्थ में कुल चार उन्मेष हैं। जिनमें चतुर्थ उन्मेष अपूर्ण ही रह गया है।
कवि ग्रन्थ की निर्विघ्न परिसमाप्ति हेतु शक्ति के परिस्पन्द मात्र उपकरण वाले, त्रिभुवन में विचित्र कर्म करने वाले परमतत्त्व शिव की वन्दना करता है, तदनन्तर कवीन्द्र वक्त्रेन्दु-लास्यमन्दिर-नर्तकी, सुभाषित विलास रूप अभिनवोज्ज्वला वाग्देवी को प्रणाम कर लोकोत्तरचमत्कारकारि वैचित्र्यसिद्धि के लिए इस काव्यविषयक अलङ्कारग्रन्थ की रचना की घोषणा करता है।
➢ अलङ्कार के ग्रन्थ एवं अलङ्कार्य काव्य के लक्षणों और प्रयोजनों का वर्णन कर काव्य के प्राणभूत शब्द तथा अर्थ की तर्क-युक्त विवेचना की जाती है।
इस प्रकार काव्य तथा साहित्य के अभिनव लक्षण नियत करने के पश्चात् आचार्य कुन्तक कवियों के व्यापार (काव्य) की वक्रता का व्याख्यान करते हैं। सर्वप्रथम वक्रता के छह भेद आचार्य ने माने हैं- 1. वर्णविन्यासवक्रता 2. पदपूर्वार्द्धवक्रता 3. प्रत्ययाश्रितवक्रता 4. वाक्यवक्रता 5. प्रकरणवक्रता 6. प्रबन्धवक्रता।
इस प्रकार काव्य के सामान्य लक्षण को बताकर उसके विशेष लक्षण का विषय बताने के लिए मार्ग-भेद के कारण होने वाले त्रैविध्य का कथन करते हैं-
सम्प्रति तत्र ये मार्गाः कविप्रस्थानहेतवः।
सुकुमारो विचित्रश्च मध्यमश्चोभयात्मकः॥ (1/24)
उस (काव्य) में कवि की प्रवृत्ति के कारणभूत जो सुकुमार-विचित्र और उभयात्मक मध्यम मार्ग सम्भव हैं, उन्हें बताते हैं।
सुकुमार मार्ग का लक्षण-
असमस्तमनोहारिपदविन्यासजीवितम्।
माधुर्यं सुकुमारस्य मार्गस्य प्रथमो गुणः॥ (1/30)
इस प्रकार 'सुकुमार' नामक मार्ग का लक्षण बताकर उसी सुकुमार मार्ग के गुणों को लक्षित करते हैं-
समास (की प्रचुरता से) हीन हृदयहारी पदों के विन्यासरूप प्राण वाला 'माधुर्य' नामक गुण सुकुमार मार्ग का पहला गुण है।
अक्लेशव्यञ्जिताकूतं झगित्यर्थसमर्पणम्।
रसवक्रोक्तिविषयं यत्प्रसादः स कथ्यते॥ (1/31)
इस प्रकार माधुर्य नामक सुकुमार मार्ग के प्रथम एवं प्रधान गुण का कथन कर प्रसाद नामक दूसरे गुण को बताते हैं-
शृङ्गारादि रस एवं (सर्वालङ्कारसामान्य) वक्रोक्तिविषयक अभिप्राय को अनायास ही प्रकट कर देने वाला एवं अर्थ की तुरन्त प्रतीति कराने वाला जो गुण है, वह प्रसाद गुण होता है, ऐसा कहा जाता है।
वर्णविन्यासविच्छित्तिपदसंधानसंपदा।
स्वल्पया बन्धसौन्दर्यं लावण्यमभिधीयते॥ (1/32)
इस प्रकार सुकुमार मार्ग के द्वितीय गुण प्रसाद का कथन कर तृतीय गुण लावण्य को लक्षित करते हैं-
अक्षरों की विचित्र संघटना की शोभा से लक्षित पदों की योजना की अत्यल्प सम्पत्ति से उत्पन्न शोभा द्वारा निष्पन्न वाक्य-रचना का सौन्दर्य 'लावण्य' नामक गुण कहा जाता है।
श्रुतिपेशलताशालि सुस्पर्शमिव चेतसा।
स्वभावमसृणच्छायमाभिजात्यं प्रचक्षते॥ (1/33)
इस प्रकार सुकुमार मार्ग के माधुर्य, प्रसाद तथा लावाण्य तीन गुणों का प्रतिपादन कर अब चौथे गुण आभिजात्य का कथन करते हैं- सुनने में रमणीयता से सम्पन्न एवं हृदय के साथ सुन्दर स्पर्श के समान स्वभावतः स्निग्ध कान्ति से युक्त वस्तु आभिजात्य नामक

गुण कही जाती है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि कुन्तक के अनुसार सुकुमारमार्ग का प्रथम गुण माधुर्य गुण है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- वक्रोक्तिकाव्यजीवितम् (1/30) राधेश्याम मिश्र, पेज 113

39. पञ्चमहायज्ञेषु किं न गण्यते?

(A) देवयज्ञः **(B) पितृयज्ञः**

(C) ब्रह्मयज्ञः **(D) विष्णुयज्ञः**

व्याख्या- मनु प्रणीत मनुस्मृति में द्वादश अध्याय हैं। स्मृति धर्मशास्त्र है- 'धर्मशास्त्रं तु वै स्मृतिः' (2/10)

वेद के वाक्यों ने जिसके करने की आज्ञा दी है, उसी का नाम 'धर्म' है- **'चोदनालक्षणोऽर्थोः धर्मः'**।

वेद का धर्म मूल है- **वेदोऽखिलो धर्ममूलम्**

मनुस्मृति के अनुसार धर्म के उपादान प्रमाण पाँच हैं **-**

वेदोऽखिलो धर्ममूलं स्मृतिशीले च तद्विदाम्।

आचारश्चैव साधूनामात्मनस्तुष्टिरेव च॥ (2.6)

सम्पूर्ण वेद, वेद-शास्त्र जानने वालों के रचे हुए धर्म-शास्त्र-स्मृतियाँ, वेदवेत्ताओं के मन की स्वाभाविक प्रवृत्तिशीलता, वेदवेत्ता साधुओं-शिष्टजनों के मन का सन्तोष, ये सब धर्म के प्रमाण हैं।

⇒ **धर्म का लक्षण-**

वेदः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः।

एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षाद् धर्मस्य लक्षणम्॥ (2/12)

श्रुति-वेद, स्मृति-धर्मशास्त्र, सदाचार, भद्रपुरुषों का आचार-व्यवहार, जो अपने को प्रिय लगे तथा उचित संकल्प से उत्पन्न अभिकांक्षा या इच्छा ये चार धर्म के मूल कहे गये हैं।

⇒ **पञ्चमहायज्ञ-**

अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञस्तु तर्पणम्।

होमो दैवो बलिर्भौतो नृयज्ञोऽतिथिपूजनम्॥ (3/70)

पितरों का तर्पण करना, वेद का पठन-पाठन, ब्रह्मयज्ञ, पितृयज्ञ, देवयज्ञ, भूतयज्ञ, होम करना, जीवों को अन्न की बलि देना और नृयज्ञ एवं अतिथि का आदर सत्कार करना, ये ही पञ्चमहायज्ञ हैं।

⇒ **पञ्चयज्ञ-अहुतं च हुतं चैव तथा प्रहुतमेव च।**

ब्राह्मं हुतं प्राशितं च पञ्चयज्ञान्प्रचक्षते॥ (3/73)

अहुत, हुत, प्रहुत, ब्राह्महुत और प्राशित ये पञ्चयज्ञ कहलाते हैं।

*** संस्कारों की संख्या-**

➢ गौतम के अनुसार चालीस संस्कारों और आत्मा के आठ-शील-गुणों का वर्णन किया है।

➢ वैखानस ने अठारह संस्कारों के नाम गिनाये हैं।

➢ अङ्गिरा ने पच्चीस संस्कार गिनाये हैं।

➢ व्यास ने सोलह संस्कार गिनाये हैं।

*** सोलह संस्कार-** गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूडाकर्म, कर्णवेध, विद्यारम्भ, उपनयन, वेदारम्भ, केशान्त, समावर्तन, विवाह और अन्त्येष्टि।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि पञ्चमहायज्ञों में 'विष्णुयज्ञ' परिगणित नहीं है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- श्रौतयज्ञ परिचय- वेणीराम शर्मा गौड़, पेज 4

40. 'उद्भिदा यजेत पशुकामः' इत्यत्र उद्भिद् शब्दो यागस्य नामधेयो भवति-

(A) मत्वर्थलक्षणाभयात् **(B) वाक्यभेदभयात्**

(C) तत्प्रख्यशास्त्रात् **(D) तद्व्यपदेशात्**

व्याख्या-मीमांसा शब्द की व्युत्पत्ति मान् धातु से जिज्ञासा के अर्थ में सन् प्रत्यय करके की जाती है। यह पूजित विचार या पूजित जिज्ञासा के अर्थ में भी प्रसिद्ध है।

* लौगाक्षिभास्कर कृत 'अर्थसंग्रह' है। महर्षि जैमिनि कृत 'मीमांसादर्शन' है; इसका प्रकरणग्रन्थ 'अर्थसंग्रह' है।

* जैमिनि सूत्र 12 अध्यायों में विभक्त है। अतः इसे द्वादशलक्षणी भी कहा जाता है।

* लौगाक्षि इनके वंश (कुल) का नाम था और भास्कर स्वयं का नाम था।

* कीथ के अनुसार इनके पिता का नाम मुद्गल एवं पितामह का नाम रुद्र था।

* अर्थसंग्रह के मङ्गलाचरण में और तर्ककौमुदी के प्रारम्भिक तथा अन्तिम के दो श्लोकों में वासुदेव और रमा इन दो नामों का उल्लेख किया है।

तत्र 'उद्भिदा यजेत पशुकामः'-

चार कारणों में प्रथम 'उद्भिदा यजेत पशुकामः' है। यहाँ मत्वर्थलक्षणा के भय से 'उद्भिद्' शब्द को याग का नामधेय माना जाता है। क्योंकि 'उद्भिदा यजेत' इस वाक्य से फल (पशु) को उद्देश्य करके याग का विधान एवं याग को उद्देश्य करके गुण का विधान नहीं माना जा सकता और मानने पर 'वाक्यभेद' उपस्थित होगा। यदि उद्भिद् शब्द को गुणपरक मानकर प्रमाणान्तर से अप्राप्त याग का विधान करते हैं तो प्रकृत स्थल में 'गुणविशिष्ट कर्मविधि' मानना होगा। ऐसी स्थिति में 'उद्भिदा यजेत पशुकामः' का वाक्यबोध 'उद्भिद्वता यागेन पशुं भावयेत्' होगा और विशिष्ट विधि में मत्वर्थलक्षणा होती ही है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'उद्भिदा यजेत

पशुकामः' यहाँ उद्भिद् शब्द के याग का नामधेय 'मत्वर्थलक्षणाभयात्' है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- अर्थसंग्रह- राजेश्वर शास्त्री मुसलगाँवकर, पेज 280

41. अधोलिखितेषु उपन्यासकारं चिनुत-
(A) बाणभट्टः (B) बिल्हणः
(C) दण्डी (D) अम्बिकादत्तव्यासः

व्याख्या⇒ बाणभट्ट- बाणभट्ट संस्कृत गद्य-काव्य के मूर्धाभिषिक्त सम्राट् हैं। बाण ने गद्य में पद्यों से अधिक चमत्कार प्रदर्शन किया है। बाण की रीति पाञ्चाली है। पाञ्चाली की विशेषता है कि उसमें शब्द और अर्थ का समन्वय और सन्तुलन रहता है। 'शब्दार्थयोः समो गुम्फः पाञ्चाली रीतिरिष्यते।' कादम्बरी बाण की प्रौढ़ और अन्तिम कृति है। इसमें एक काल्पनिक कथा वर्णित है। यह गद्यकाव्य का 'कथा' भेद है।

रचनाएँ- मुख्यरूप से दो ग्रन्थ- हर्षचरित और कादम्बरी
इनके तीन ग्रन्थ और माने जाते हैं- चण्डीशतक, मुकुटताडितक, पार्वतीपरिणय।

हर्षचरित- यह महाकवि बाण की प्रथम रचना है। ऐतिहासिक वृत्त पर आश्रित होने से यह गद्यकाव्य का भेद आख्यायिका है। इसमें 8 उच्छ्वास हैं।

⇒ **दण्डी-** दण्डी भी गद्यकाव्य के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं। इनकी रचना का नाम दशकुमारचरितम् है, जो गद्यकाव्य है, जिसमें कथा और आख्यायिका नामक दोनों गद्य भेदों के लक्षण उपन्यस्त हैं।

अन्य रचनाएँ- अवन्तिसुन्दरीकथा

काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ- काव्यादर्श-यह तीन परिच्छेदों का पद्यात्मक काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ है।

⇒ **बिल्हण-** कश्मीर निवासी बिल्हण ने विक्रमाङ्कदेवचरित नामक महाकाव्य 18 सर्गों में प्रायः 1085 ई॰ में लिखा। इसके अन्तिम सर्ग में कवि ने आत्म-वृत्तान्त भी दिया है।
बिल्हण की तीन रचनाएँ मिलती हैं- **विक्रमाङ्कदेवचरित (महाकाव्य), कर्णसुन्दरी (नाटिका), चौरपञ्चाशिका (गीतिकाव्य)** है। विक्रमाङ्कदेवचरित बिल्हण को अमर बनाने वाला 18 सर्गों का ऐतिहासिक महाकाव्य है।

⇒ **अम्बिकादत्त व्यास-** प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास के प्रणेता अम्बिकादत्त व्यास हैं। व्यास जी ने शिवराजविजय 1870 ई॰ में लिखा, जो काशी से 1901ई॰ में उनकी मृत्यु के बाद प्रकाशित हुआ। एक घड़ी (24 मिनट) 100 श्लोकों की रचना करने से व्यास जी को 'घटिकाशतक' की उपाधि दी गयी थी।
सौ प्रश्नों को एक साथ ही सुनकर उन सभी प्रश्नों का उत्तर उसी क्रम में देने के की अद्भुत क्षमता होने के कारण उन्हें 'शतावधान' की उपाधि दी गयी थी।
शिवराजविजय में व्यास जी की चेतना प्राचीन-नवीन दोनों के संगम की है। देशभक्ति, इतिहास, स्वाधीनता तथा धर्मरक्षा की भावनाएँ इसमें समन्वित हैं। यवनों के अत्याचार और शिवाजी के न्यायपूर्ण कार्यों का सूर्योदय दोनों का यथार्थ निरूपण करने में कवि को सफलता मिली है। मुख्य रस 'वीर' है, किन्तु अन्य रसों की भी उचित उद्भावना हुई है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि उपन्यासकार अम्बिकादत्त व्यास जी हैं। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा ऋषि, पेज 412

42. अधोलिखितेषु भर्तृहरिमतेन ध्वनेः भेदद्वयं चिनुत-
(A) पश्यन्ती, वैखरी (B) प्राकृत, वैखरी
(C) प्राकृतः वैकृतः (D) वैखरी, वैकृतः

व्याख्या- भर्तृहरि प्रणीत 'वाक्यपदीयम्' है। इस ग्रन्थ का नाम वाक्यपदीय रखा, जिसका अर्थ है कि वाक्य और पद के विषय में विचार के लिए आरम्भ ग्रन्थ (वाक्यं च पदं च वाक्यपदे ते अधिकृत्य कृतो ग्रन्थो वाक्यपदीयम्)। इस वाक्यपदीय में तीन काण्ड हैं, इसीलिए इसे त्रिकाण्डी भी कहा जाता है।

* ब्रह्मकाण्ड में 156, वाक्यकाण्ड में 486, पदकाण्ड में लगभग1218 कारिकाएँ प्राप्त होती हैं।
* वाक्यपदीयम् के प्रथमकाण्ड ब्रह्मकाण्ड में प्राकृत, वैकृत दो प्रकार की ध्वनि बतायी गयी है-

स्वभावभेदान्नित्यत्वे ह्रस्वदीर्घप्लुतादिषु।
प्राकृतस्य ध्वनेः कालः शब्दस्येत्युपचर्यते।। (1/76)

प्राकृत ध्वनि को स्फोट का एक विशेष रूप मान लेने से प्राकृत ध्वनि का ही एकमात्रिक आदि काल ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत में स्थिर रहता है, जो स्फोट के नित्य होने पर भी शब्द में आरोपित है वास्तविक नहीं।

ध्वनि दो प्रकार की है एक प्राकृत और दूसरी वैकृत- 'प्राकृतो वैकृतश्चेति द्विविधो ध्वनिः' जिसमें प्राकृत ध्वनि के बिना सामान्य रूप से या विशेष रूप से स्फोट की प्रतीत नहीं हो सकती। अतः प्राकृत ध्वनि को स्फोट का स्वरूप मानते हैं। वैकृत ध्वनि तो प्राकृत ध्वनि के बाद 'यह वही है' इस प्रतीति का नियामक होता है। अतः स्फोट रूप नहीं है और उसके कालभेद, द्रुत आदि स्फोट में प्रतीति नहीं होते, जिनसे द्रुत आदि वृत्तियों के ग्रहण को रोकने के लिए कोई प्रयत्न नहीं करना पड़ता।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि भर्तृहरि के द्वारा ध्वनि के दो भेद माने गये हैं- प्राकृत ध्वनि और वैकृत ध्वनि।
अतः विकल्प 'C' सही है।

स्रोत- वाक्यपदीयम् (1/76)- सूर्यनारायण शुक्ल, पेज- 85-86

43. अधस्तनानां महाभारतीयपर्वणां समुचितः क्रमोऽस्ति?
(A) शान्तिपर्व, स्त्रीपर्व, अनुशासनपर्व, आश्वमेधिकपर्व
(B) स्त्रीपर्व, शान्तिपर्व, अनुशासनपर्व, आश्वमेधिकपर्व
(C) अनुशासनपर्व, स्त्रीपर्व, आश्वमेधिकपर्व, शान्तिपर्व
(D) आश्वमेधिकपर्व, अनुशासनपर्व, स्त्रीपर्व, शान्तिपर्व

व्याख्या- विश्व-साहित्य में सबसे बड़ा ग्रन्थ 'महाभारत' ही है, जिसमें एक लाख से कुछ अधिक श्लोक हैं, इसे 'शत-साहस्री संहिता' भी कहते हैं। इसे अठारह पर्वों में विभक्त किया गया है, जो पुनः अनेक उपपर्वों तथा अध्यायों में विभक्त है।
महाभारत के लेखक का नाम व्यास, कृष्णद्वैपायन, वेदव्यास है। वे पराशर ऋषि के पुत्र थे। महाभारत के विषय में कहा गया है- जो बातें महाभारत में नहीं हैं, वे भारतवर्ष में नहीं है।
'यन्न भारते तन्न भारते'
⟹ महाभारत के अठारह पर्वों के नाम इस प्रकार हैं-
1- आदिपर्व 2- सभापर्व 3- वनपर्व 4- विराट्पर्व 5- उद्योगपर्व 6- भीष्मपर्व 7- द्रोणपर्व 8- कर्णपर्व 9- शल्यपर्व 10- सौप्तिक पर्व 11- स्त्रीपर्व 12- शान्तिपर्व 13- अनुशासनपर्व 14- आश्वमेधिकपर्व 15- आश्रमवासिकपर्व 16- मौसलपर्व
17- महाप्रस्थानिकपर्व 18- स्वर्गारोहणपर्व।
इसके परिशिष्ट के रूप में 'हरिवंश-पर्व' है, जिसमें भगवान् कृष्ण का जीवनचरित वर्णित है। इस पर्व को मिलाकर ही श्लोक संख्या एक लाख होती है।
इन पर्वों में शान्तिपर्व बहुत बड़ा है (चौदह सहस्र श्लोक)। दूसरा महाप्रस्थानिकपर्व सबसे छोटा (115 श्लोक) हैं।
महाभारत का विकास- महाभारत का विकास क्रमशः जय, भारत तथा महाभारत–इस रूप में विविध उद्देश्यों की पूर्ति के लिए पृथक् पृथक् अवसरों पर हुआ।
जय- महाभारत का मूलरूप जय के नाम से प्रसिद्ध था। **'जयो नामेतिहासोऽयं श्रोतव्यो विजिगीषुणा'** (महाभारत-1/62/20)
महाभारत के मङ्गलश्लोक में नारायण, नर और सरस्वती को नमस्कार करके 'जय' नामक ग्रन्थ के पाठ का स्पष्ट निर्देश है-
नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम्।
देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत्॥
जय को बढ़ाने का काम दूसरे लोगों ने किया। व्यास के इस ग्रन्थ में 8800 श्लोक थे।
भारत- द्वितीय अवस्था में जय का विस्तार 'भारत' के रूप में हुआ, जिसमें 24000 श्लोक हो गये।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि महाभारतीय पर्वों का क्रम है- स्त्रीपर्व, शान्तिपर्व, अनुशासनपर्व, आश्वमेधिक पर्व।
अतः विकल्प 'B' सही है।
स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा ऋषि, पेज 151

44. जीवाजीवाख्ये द्वे तत्त्वे कस्मिन् दर्शने मन्येते?
(A) बौद्धदर्शने **(B) सांख्यदर्शने**
(C) वेदान्तदर्शने **(D) जैनदर्शने**

व्याख्या⟹ जैनदर्शन- जैन शब्द 'जिन' शब्द से बना है, जिसका अर्थ है- विजयी अर्थात् रागद्वेषादि शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला मुक्त पुरुष, जिसे 'वीतराग' भी कहते हैं। जैन अपने धर्मप्रचारक सिद्धों को तीर्थंकर कहते हैं और इनकी संख्या चौबीस बताते हैं। ऋषभदेव प्रथम तीर्थंकर माने जाते हैं।
तत्त्वमीमांसा - जैन तत्त्वमीमांसा वस्तुवादी और सापेक्षतावादी बहुतत्त्ववाद है, जिसे अनेकान्तवाद कहते हैं। चेतन जीव और अचेतन जीव दो प्रमुख और स्वतन्त्र तत्त्व हैं।
जैन दर्शन के त्रिरत्न- सम्यक् दर्शन, सम्यक्ज्ञान और सम्यक् चरित्र–मोक्षप्राप्ति के मार्ग माने गये हैं।
⟹ **चार्वाक दर्शन-** चार्वाक के अनुसार पृथ्वी, जल, अग्नि, और वायु ये चार महाभूत ही तत्त्व हैं। आकाश का अनुमान होता है, अतः चार्वाक उसे तत्त्व नहीं मानते, वह आवरणभाव मात्र है।
⟹ **सांख्यदर्शन-** महर्षि कपिलमुनि प्रणीत सांख्यदर्शन में पच्चीस तत्त्वों की चर्चा हुई है- प्रकृति, महत् या बुद्धि, अहङ्कार, पञ्चज्ञानेन्द्रियाँ, पञ्चकर्मेन्द्रियाँ, पञ्चतन्मात्राएँ, पञ्चमहाभूत मन और पुरुष = 25
मूलप्रकृतिरविकृतिर्महदाद्याः प्रकृतिविकृतयः सप्त।
षोडशकस्तु विकारो न प्रकृतिर्न विकृतिः पुरुषः॥
(सा॰ का॰-03)
⟹ **योगदर्शन-** महर्षि पतञ्जलिकृत योगदर्शन है। इसमें चार पाद हैं- समाधिपाद, साधनापाद, विभूतिपाद, कैवल्यपाद। योग शब्द युज् धातु से बनता है, जिसका अर्थ है- समाधि।
योग सांख्य के पच्चीस तत्त्वों के अतिरिक्त ईश्वर की सत्ता भी स्वीकार करता है। योगदर्शन में तत्त्वों की संख्या 26 मानी गयी है। प्रकृति, महत् (बुद्धि), अहङ्कार, पञ्चज्ञानेन्द्रियाँ, पञ्चकर्मेन्द्रियाँ, पञ्चतन्मात्राएँ, पञ्चमहाभूत, मन, पुरुष और ईश्वर = 26
⟹ **वेदान्तदर्शन-** शङ्कराचार्य कृत वेदान्तदर्शन में दो तत्त्वों की चर्चा की गयी है- ब्रह्म और जीव।

दर्शन	ग्रन्थ	अध्याय	सूत्र	प्रमाण	पदार्थ-तत्त्व
सांख्य	सांख्यसूत्र	6	537	3	25
योग	योगसूत्र	4पाद	195	3	26
न्याय	न्यायसूत्र	5	60-70	4	16
वैशेषिक	वैशेषिकसूत्र		10	370	2 7
पूर्वमीमांसा	मीमांसासूत्र	12	2644	6	-
उत्तरमीमांसा (वेदान्त)	ब्रह्मसूत्र	4	555	6	2

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'जीवाजीवाख्ये द्वे तत्त्वे'- यह जैन दर्शन मानता है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- सर्वदर्शनसंग्रह- उमाशङ्कर शर्मा ऋषि, पेज 124

45. पाणिनीयशिक्षानुसारं कस्य प्राणिनः ध्वनिः एकमात्रिकवर्ण-तुल्यः भवति-

(A) नकुलस्य **(B) शिखिनः**

(C) वायसस्य **(D) चाषस्य**

व्याख्या- * वेदों के गूढ़ एवं वास्तविक अर्थों को जानने के लिए जिन सहायक तत्त्वों की आवश्यकता होती है, उन्हें वेदाङ्ग कहते हैं।

* वेदाङ्ग की संख्या छह है- शिक्षा, व्याकरण, छन्द, निरुक्त ज्योतिष, कल्प।

* वेदाङ्ग के विषय में पाणिनीय शिक्षा में निम्न श्लोक प्राप्त होता है-

छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते।
ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते॥
शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य, मुखं व्याकरणं स्मृतम्।
तस्मात् साङ्गमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते॥ (41-42)

छन्द - पाद (पैर)
कल्प - हस्त (हाथ)
ज्योतिष - चक्षु (नेत्र)
निरुक्त - श्रोत्र (कान)
शिक्षा- घ्राण (नाक)
व्याकरण - मुख

* वेदाङ्गों में शिक्षा सर्वप्रथम परिगणित है, जिसका अर्थ है- वर्णोच्चारण की शिक्षा देना।

'स्वरवर्णाद्युच्चारणप्रकारो यत्र शिक्ष्यते उपदिश्यते सा शिक्षा' अर्थात् जिसमें स्वर वर्ण आदि के उच्चारण की शिक्षा दी जाती है, उसे शिक्षा कहते हैं।

* शिक्षा को वेद का घ्राण कहा गया है- 'शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य'। तैत्तिरीयोपनिषद् में शिक्षा के छः अङ्गों का उल्लेख है - वर्ण, स्वर, मात्रा, बल, साम, सन्तान।

पाणिनीय शिक्षा- पाणिनीय शिक्षा वैदिक और लौकिक दोनों के लिए उपयुक्त है। पाणिनीय शिक्षा में साठ (60) श्लोक हैं। पाणिनीय शिक्षा में वर्णों की संख्या, उच्चारणप्रक्रिया का ध्वनि-शास्त्रीय वर्णन, स्थान और प्रयत्न का विवरण, संवृत, विवृत, घोष, अघोष, पाठक के गुण-दोषों का वर्णन आदि प्राप्त होता है।

चाषस्तु वदते मात्रां द्विमात्रं चैव वायसः।
शिखी रौति त्रिमात्रं तु नकुलस्त्वर्धमात्रकम्॥ (पा.शि.-49)

नीलकण्ठ पक्षी एक मात्राकालिक शब्द बोलता है, कौआ द्विमात्रिक शब्द बोलता है, मयूर तीन मात्रा का शब्द बोलता है, नेवला आधी मात्रा का शब्द बोलता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि एक-मात्राकालिक बोलने वाला नीलकण्ठ (चाषः) है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- पाणिनीयशिक्षा - (श्लोक 49)

46. अधोलिखितेषु वेदान्तमते असमीचीनं कथनं चिनुत-

(A) काम्यकर्माणि स्वर्गादिसाधनानि

(B) निषिद्धानि कर्माणि अनिष्टसाधनानि

(C) नित्यानि कर्माणि अनिष्टसाधनानि

(D) नैमित्तिकानि प्रायश्चित्तादीनि कर्माणि पापक्षयादिसाधनानि

व्याख्या- वेदान्त दर्शन- आचार्य बादरायण विरचित 'ब्रह्मसूत्र' इसका आधारग्रन्थ है। इसी का दूसरा नाम 'वेदान्त सूत्र' भी है। ब्रह्मसूत्र पर लिखा गया आचार्य शङ्कर का 'शारीरक-भाष्य' इस दर्शन का अद्भुत ग्रन्थ माना गया है।

इसमें ब्रह्मसूत्रों की अद्वैतवादी व्याख्या प्रस्तुत की गयी है। शङ्कराचार्य को अद्वैतवाद का प्रवर्तक आचार्य माना जाता है। अद्वैतमत को शाङ्करमत या शाङ्करदर्शन भी कहते हैं।

आचार्य शङ्कर का सिद्धान्त अद्वैतवाद के नाम से प्रसिद्ध है। तदनुसार उन्होंने ब्रह्म के अतिरिक्त अन्य समस्त जगत् का मिथ्या प्रतिपादित किया (ब्रह्मसत्यं जगन्मिथ्या)। उन्होंने मायावाद की स्थापना की।

शङ्कराचार्य के अनुसार सम्पूर्ण दृश्यमान् जगत् ब्रह्म का विवर्तमात्र है। जैसे हमें रज्जु में सर्प की भ्रान्ति हो जाती है, ठीक उसी प्रकार ब्रह्मतत्त्व में ही हमें जगत् की भ्रान्ति हो रही है। उन्होंने आत्मा को स्वतः सिद्ध माना।

सदानन्दयोगीन्द्र ने अद्वैतवेदान्त पर अत्यन्त सरस शैली में वेदान्तसार नामक प्रकरण ग्रन्थ की रचना की।

वेदान्तसार के मङ्गलाचरण में इन्होंने श्लेष के माध्यम से अपने गुरु अद्वयानन्द को नमन किया है।

अनुबन्धचतुष्टय की चर्चा करते हैं- अधिकारी, विषय, सम्बन्ध और प्रयोजन, तत्पश्चात् छह प्रकार के कर्मों का विवेचन करते हुए कहते हैं-

षड्विधकर्म-

1. काम्यानि स्वर्गादीष्टसाधनानि ज्योतिष्टोमादीनि।
स्वर्गादि कामनाओं के साधनस्वरूप ज्योतिष्टोमयाग आदि काम्यकर्म हैं।

2. निषिद्धानि नरकाद्यनिष्टसाधनानि ब्राह्मणहननादीनि। नरक आदि अनिष्ट के साधनरूप ब्राह्मणहनन आदि निषिद्ध कर्म हैं।

3. नित्यान्यकरणे प्रत्यवायसाधनानि सन्ध्यावन्दनादीनि।
जिसके न करने पर भविष्य में दुःख की सम्भावना हो, सन्ध्यावन्दन आदि नित्यकर्म हैं।

4. नैमित्तिकानि पुत्रजन्माद्यनुबन्धीनि जातेष्ट्यादीनि।
पुत्रजन्म के अवसर पर किए जाने वाले जातेष्टि यज्ञ आदि नैमित्तिक कर्म हैं।

5. प्रायश्चित्तानि पापक्षयसाधनानि चान्द्रायणादीनि।
पाप के प्रक्षालन हेतु किए जाने वाले चान्द्रायण व्रत आदि प्रायश्चित्त कर्म हैं।

6. उपासनानि सगुणब्रह्मविषयमानसव्यापाररूपाणि शाण्डिल्य-विद्यादीनि।
मन की वृत्ति को स्थिर करने के लिए सगुण ब्रह्म-विषयक मानसिक व्यापाररूप शाण्डिल्यविद्या आदि उपासना कर्म हैं।

स्पष्टीकरण- विवरण से स्पष्ट है कि वेदान्तानुसार छः कर्म माने गये हैं, जिसमें 'नित्यानि कर्माणि अनिष्टसाधनानि' यह अशुद्ध है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- वेदान्तसार- राकेश शास्त्री, पेज 127

47. षड्भावविकारा भवन्ति मतमिदं कस्य विद्यते?
(A) वार्ष्यायणेः **(B) शाकपूणेः**
(C) शाकटायनस्य **(D) यास्कस्य**

व्याख्या- यास्क कृत निरुक्त निघण्टु का व्याख्या ग्रन्थ है। मूलग्रन्थ निघण्टु कहलाता है।

'षड्भावविकारा भवन्तीति वार्ष्यायणिः। जायते, अस्ति, विपरिणमते, वर्धते, अपक्षीयते, विनश्यति इति।'
छह प्रकार की क्रियाओं के भेद (विकार) होते हैं। यह वार्ष्यायणि आचार्य का मत है।

1. जायते - उत्पन्न होता है
2. अस्ति - रहता है
3. विपरिणमते- परिवर्तित होता है
4. वर्धते - बढ़ता है
5. अपक्षीयते - क्षीण होता है
6. विनश्यति - नष्ट होता है।

'इन्द्रियनित्यं वचनमौदुम्बरायणः।'
वचन अर्थात् शब्द इन्द्रिय में नियत है। अर्थात् जब तक वक्ता बोलता है, तब तक उसकी वाक् इन्द्रिय में और जब तक श्रोता सुनता है तब तक उसकी श्रोत्रेन्द्रिय में विद्यमान रहता है। न उसके पहले था और न बाद में रहता है। इसलिए यह अनित्य है, यह औदुम्बरायण का मत है।

न निर्बद्धा उपसर्गा अर्थान्निराहुरिति शाकटायनः। नामाख्यातयोस्तु कर्मोपसंयोगद्योतका भवन्ति।
(नाम तथा आख्यात से) अलग करके गुम्फित किये हुए उपसर्ग, अर्थों को निश्चित रूप से नहीं कहते हैं।
नाम और आख्यात के अर्थ को उनके साथ मिलकर द्योतन करने वाले होते हैं, यह शाकटायन का मत है।

यदि मन्त्रार्थप्रत्ययानर्थकं भवतीति कौत्सः। अनर्थका हि मन्त्राः।
यदि मन्त्रों के अर्थ का बोध कराने के लिए है, तो व्यर्थ है; यह कौत्स का मत है। क्योंकि मन्त्रों का कोई अर्थ नहीं होता है।

उच्चावचाः पदार्था भवन्तीति गार्ग्यः। तद् य एषु पदार्थः प्राहुरिमे तं नामाख्यातयारर्थविकरणम्।
इन उपसर्गों के भी उच्चावच अर्थात् नाना प्रकार के शब्द निरुक्त में नाना प्रकार के इस अर्थ में प्रयुक्त होते हैं। इसलिए इनका जो अर्थ होता है नाम तथा आख्यात से अलग प्रयुक्त होने पर भी नाम और आख्यात के अर्थ परिवर्तन करने वाले उस अर्थ को ये उपसर्ग कहते ही हैं, यह गार्ग्य का मत है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि षड्भावविकार आचार्य वार्ष्यायणि का मत है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- निरुक्त- कपिलदेव शास्त्री, पेज 23

48. एध् वृद्धौ इत्यस्माद् धातोः 'ऐधिष्ट' इति रूपं निष्पद्यते-
(A) विधिलिङ्लकारे **(B) लुङ्लकारे**
(C) आशीर्लिङ्लकारे **(D) लङ्लकारे**

व्याख्या- **लुङ् लकार**

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमपुरुष	ऐधिष्ट	ऐधिषाताम्	ऐधिषत
मध्यमपुरुष	ऐधिष्ठाः	ऐधियाथाम्	ऐधिढ्वम्
उत्तमपुरुष	ऐधिषि	ऐधिष्वहि	ऐधिष्महि

विधिलिङ्लकार			
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	एधेत	एधेयाताम्	एधेरन्
मध्यमपुरुष	एधेथाः	एधेयाथाम्	एधेध्वम्
उत्तमपुरुष	एधेय	एधेवहि	एधेमहि
आशीर्लिङ्लकार			
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	एधिषीष्ट	एधिषीयास्ताम्	एधिषीरन्
मध्यमपुरुष	एधिषीष्ठाः	एधिषीयास्थाम्	एधिषीध्वम्
उत्तमपुरुष	एधिषीय	एधिषीवहि	एधिषीमहि
लङ्लकार			
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	ऐधत	ऐधेताम्	ऐधन्त
मध्यमपुरुष	ऐधथाः	ऐधेथाम्	ऐधध्वम्
उत्तमपुरुष	ऐधे	एधावहि	ऐधामहि
लृङ्लकार			
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	ऐधिष्यत	ऐधिष्येताम्	ऐधिष्यन्त
मध्यमपुरुष	ऐधिष्यथाः	ऐधिष्येथाम्	ऐधिष्यध्वम्
उत्तमपुरुष	ऐधिष्ये	ऐधिष्यावहि	ऐधिष्यामहि

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'एध्-वृद्धौ' धातु से 'ऐधिष्ट' रूप लुङ्लकार प्रथमपुरुष एकवचन में बनता है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी-गोविन्दाचार्य, पेज-495

49. 'मालामतिक्रान्तः- अतिमालः' इत्यत्र समासविधायकं वर्तते?
(A) अत्यादयः क्रान्त्याद्यर्थे द्वितीयया
(B) अवादयः कुष्टाद्यर्थे द्वितीयया
(C) कुगतिप्रादयः
(D) एकविभक्ति चापूर्वनिपाते

व्याख्या- लघुसिद्धान्तकौमुदीकार आचार्य वरदराज तत्पुरुष समास के अन्तर्गत कुछ वार्तिकों को उद्धृत करते हैं-

⇒ **प्रादयो गताद्यर्थे प्रथमया-** यह वार्तिक है। गत आदि अर्थों में वर्तमान प्र आदि निपातों का प्रथमान्त सुबन्त के साथ नित्य समास होता है और वह तत्पुरुष समास कहलाता है।

प्रादि समास के क्षेत्र को फैलाने के लिए ही यह वार्तिक है।

प्राचार्यः - प्रगत आचार्यः। दूर गया हुआ आचार्य, श्रेष्ठ आचार्य, अपने विषय में दक्ष या आचार्य का भी आचार्य।

⇒ **अत्यादयः क्रान्त्याद्यर्थे द्वितीयया-** क्रान्त अर्थात् पार गया हुआ। लांघ चुका, पारगामी आदि अर्थों में वर्तमान 'अति' आदि निपातों का द्वितीया समर्थ सुबन्त के साथ समास होता है। उसे तत्पुरुष समास कहा जाता है।

अतिमालः - माला का अतिक्रमण करने वाला, सुगन्ध से माला आदि को मात दे चुका कोई पदार्थ।

मालाम् अतिक्रान्तः- यह लौकिक विग्रह है।

माला अम् अति- अलौकिक विग्रह है।

'अति' इस प्रादि निपात का माला अम् इस सुबन्त के साथ 'अत्यादयः क्रान्ताद्यर्थे द्वितीयया' से समास हुआ। प्रातिपदिकसंज्ञा, सुप् का लुक् करके 'माला अति' बनने के बाद 'प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' से अति की उपसर्जनसंज्ञा होकर पूर्वप्रयोग हुआ। पुनः ह्रस्व करने के लिए 'एकविभक्ति चापूर्वनिपाते' से माला की भी उपसर्जनसंज्ञा हुई और 'गोस्त्रियोरुपसर्जनस्य' से उपसर्जन माला को ह्रस्व होकर अतिमाल बना। सु, रुत्वविसर्ग करके अतिमालः सिद्ध हुआ। इसी तरह 'अतिक्रान्तो' मानुषम् अतिमानुषः, अतिक्रान्तः अर्थम् अत्यर्थः आदि जगहों पर इस वार्तिक से समास किया जा सकता है।

⇒ **अवादयः क्रुष्टाद्यर्थे तृतीयया-** यह भी वार्तिक है। क्रुष्ट- (कूजित,आहूत)

⇒ **पर्यादयो ग्लानाद्यर्थे चतुर्थ्या-** ग्लान (खिन्न, दुःखी, थका हुआ)

⇒ **निरादयः क्रान्ताद्यर्थे पञ्चम्या-** क्रान्त (निकला हुआ, पार किया हुआ)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि मालामतिक्रान्तः अतिमालः में समास विधायक सूत्र-'अत्यादयः क्रान्ताद्यर्थे द्वितीयया' है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी-गोविन्दाचार्य, पेज-939

50. कौटिल्यमते 'कृषिपाशुपाल्ये वाणिज्या' इति विषयाः सन्ति?
(A) त्रय्याः **(B) दण्डनीतेः**
(C) वार्तायाः **(D) आन्वीक्षक्याः**

व्याख्या- कौटिल्य कृत अर्थशास्त्र में पन्द्रह अधिकरण एक सौ पचास अध्याय, एक सौ अस्सी प्रकरण और छः हजार श्लोक हैं। प्रथम अधिकरण के प्रथम अध्याय में चार प्रकार की विद्या आदि का वर्णन किया गया है।

आन्वीक्षकी त्रयी वार्ता दण्डनीतिश्चेति विद्याः। आन्वीक्षकी, त्रयी, वार्ता और दण्डनीति ये चार विद्याएँ हैं।

⇒ **आन्वीक्षिकी का लक्षण-**
प्रदीपः सर्वविद्यानामुपायः सर्वकर्मणाम्।
आश्रयः सर्वधर्माणां शश्वदान्वीक्षकी मता।। (1.1.1)
यह आन्वीक्षकी विद्या सर्वदा ही सब विद्याओं की प्रदीप, सभी कार्यों का साधन और सब धर्मों का आश्रय मानी गयी है।
⇒ **त्रयी का लक्षण-** सामर्ग्यजुर्वेदास्त्रयी। साम, ऋक् तथा यजु इन तीनों वेदों का समन्वित नाम ही **'त्रयी'** है। अथर्ववेद और इतिहासवेद ही वेद कहे जाते हैं।
शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्दोविचिति (विचिति=विवेक, विचार) और ज्योतिष, ये छह वेदांग हैं।
त्रयी में निरूपित यह धर्म, चारों वर्णों और चारों आश्रमों को अपने -अपने धर्म में स्थिर रखने के कारण लोक का बहुत ही उपकारक है।
ब्राह्मण का धर्म अध्ययन-अध्यापन, यज्ञ, याजन और दान देना तथा दान लेना है।
'स्वधर्मो ब्राह्मणस्याध्ययनमध्यापनं यजनं याजनं दानं प्रतिग्रहश्चेति।'
क्षत्रिय का धर्म है- पढ़ना, यज्ञ करना, दान देना, शस्त्रबल से जीविकोपार्जन और प्राणियों की रक्षा करना।
क्षत्रियस्याध्ययनं यजनं दानं शास्त्राजीवो भूतरक्षणं च।
वैश्य का धर्म पढ़ना, यज्ञ करना, दान देना, कृषिकार्य एवं पशुपालन और व्यापार करना है।
वैश्यस्याध्ययनं यजनं दानं कृषिपाशुपाल्ये वाणिज्या च।
इसी प्रकार शूद्र का अपना धर्म है कि वह ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य की सेवा करें, खेती, पशुपालन तथा व्यापार करें और शिल्प, गायन, वादन एवं चारण, भाट आदि का कार्य करें।
शूद्रस्य द्विजातिशुश्रूषा वार्ता कारुकुशीलवकर्म च।
⇒ **वार्ता का लक्षण-** कृषिपाशुपाल्ये वाणिज्या च वार्ता।
कृषि, पशुपालन और व्यापार ये वार्ताविद्या के विषय हैं।
⇒ **दण्डनीति का लक्षण-** आन्वीक्षकी त्रयीवार्तानां योगक्षेमसाधनो दण्डः। तस्य नीतिः दण्डनीतिः।
आन्वीक्षकी, त्रयी, वार्ता इन सभी विद्याओं की सुख-समृद्धि दण्ड पर निर्भर है। दण्ड को प्रतिपादित करने वाली नीति ही दण्डनीति कहलाती है।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'कृषिपाशुपाल्ये वाणिज्या च वार्ता' यह वार्ता का लक्षण है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**
स्रोत- कौटिलीय अर्थशास्त्र- वाचस्पति गैरोला, पेज-12

51. निम्नलिखितेषु को हेत्वाभासो नास्ति-
(A) असिद्धः (B) विरुद्धः
(C) अनैकान्तिकः (D) असत्प्रतिपक्षः

व्याख्या- केशवमिश्र प्रणीत तर्कभाषा में पाँच हेत्वाभासों का निरूपण करते हुये कहते हैं कि-
असिद्ध-विरुद्ध-अनैकान्तिक-प्रकरणसम-कालात्य-यापदिष्ट-भेदात् पञ्चैव।
वह हेत्वाभास पाँच प्रकार के हैं- 1. असिद्ध 2. विरुद्ध 3. अनैकान्तिक 4. प्रकरणसम (सत्प्रतिपक्ष) 5. कालात्ययापदिष्ट (बाधित)।
1. असिद्ध हेत्वाभास- स त्रिविधः- 1 आश्रयासिद्ध 2. स्वरूपासिद्ध 3. व्याप्यत्वासिद्ध–भेदात्।
(i) **आश्रयासिद्धः -** यस्य हेतोराश्रयो नावगम्यते स आश्रयासिद्धः यथा गगनारविन्दं सुरभि, अरविन्दत्वात्, सरोजारविन्दवत्, जिस हेतु का आश्रय सिद्ध न हो, वह हेतु आश्रयासिद्ध होता है। गगनारविन्दं सुरभि, अरविन्दत्वात्।
(ii) **स्वरूपासिद्धः** - स उच्यते यो हेतुराश्रये नावगम्यते
'यथा सामान्यमनित्यं कृतकत्वादिति'
जो हेतु आश्रय में ज्ञात नहीं होता, उसे स्वरूपासिद्ध कहा जाता है। जैसे- 'सामान्यम् अनित्य' सामान्य जाति अनित्य है। कृतकत्वात् कृतक उत्पन्न होने से।
(iii) **व्याप्यत्वासिद्धः -** व्याप्यत्वासिद्धस्तु स एव यत्र हेतोर्व्याप्ति-र्नावगम्यते।
जिस हेतु में व्याप्ति का ज्ञान नहीं होता, वह व्याप्यत्वासिद्ध होता है।
2. विरुद्ध- साध्यविपर्ययव्याप्तो हेतुः विरुद्धः। यथा शब्दो नित्यः कृतकत्वात् इति।
साध्याभाव का व्याप्य हेतु विरुद्ध कहा जाता है।
जैसे- शब्दः नित्यः कृतकत्वात्। शब्द नित्य है कृतक उत्पन्न होने से।
3. अनैकान्तिक- साध्यसंशयहेतुरनैकान्तिकः सव्यभिचार इति वा उच्यते। स द्विविधः साधारणानैकान्तिको असाधारणानैकान्तिकश्चेति।
जो हेतु साध्यसंशय का जनक होता है, उसे अनैकान्तिक या व्यभिचार कहा जाता है। उसके दो भेद होते हैं-
साधारण अनैकान्तिक और असाधारण अनैकान्तिक।
4. प्रकरणसम- (सत्प्रतिपक्ष)- यस्य प्रतिपक्षभूतं हेत्वन्तरं विद्यते स प्रकरणसमः। स एव सत्प्रतिपक्ष इति चोच्यते। तद्यथा-शब्दोऽनित्यो नित्यधर्मानुपलब्धेः, शब्दो नित्योऽनित्य-धर्मानुपलब्धेः इति।
जिस हेतु का प्रतिपक्षभूत अन्य हेतु होता है, वह प्रकरण-सम होता है। उसे सत्प्रतिपक्ष भी कहा जाता है।

यथा- शब्दः अनित्यः नित्यधर्मानुपलब्धेः- शब्द अनित्य है, क्योंकि उसमें नित्यधर्म नित्यत्वनियत धर्म की उपलब्धि नहीं होती।

5. कालात्ययापदिष्ट (बाधित)- यस्य प्रत्यक्षादिप्रमाणेन पक्षे साध्याभावः परिच्छिन्नः स कालात्ययापदिष्टः। स एव बाधितविषय इत्युच्यते।

यथा- अग्निरनुष्णः कृतकत्वाज्जलवत्। जिस हेतु के साध्य का अभाव पक्ष में प्रत्यक्ष आदि प्रमाण से निश्चित होता है, वह हेतु कालात्ययापदिष्ट होता है। उसे बाधितविषयक भी कहा जाता है।

यथा- अग्निः अनुष्णः कृतकत्वात् जलवत् अग्नि अनुष्णत्व-उष्णस्पर्शाभाव का आश्रय है कृतक कार्य होने से, जल के समान।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि हेत्वाभास में असत्प्रतिपक्ष परिगणित नहीं है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- तर्कभाषा- आचार्य विश्वेश्वर, पेज 246

52. अभिनिहितस्वरितो भेदोऽस्ति-

(A) आश्रितस्वरितस्य **(B) जात्यस्वरितस्य**

(C) तैरोविरामस्वरितस्य **(D) स्वतन्त्रस्वरितस्य**

व्याख्या- वेदों के अध्ययन में स्वर शास्त्र का विशेष महत्त्व है। क्योंकि वैदिक मन्त्रों के शुद्ध उच्चारण एवं अर्थबोध के लिए स्वरों का ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है। किसी शब्द के किसी अक्षर को स्वर में पढ़े जाने पर ही उस शब्द के अर्थ का निर्णय होता है। यदि किसी शब्द के अक्षर के स्वर को बदल दिया जाये, तो उसका अर्थ परिवर्तित हो जाता है। यथा- इन्द्रशत्रुः शब्द है। इसमें दो पद हैं- इन्द्र और शत्रु। यदि आप पद को उदात्त समझे तो इसका विग्रह बहुव्रीहि समास में 'इन्द्रः शत्रुः यस्य सः' होगा अर्थात् ''इन्द्र है मारने वाला जिसका।'' यदि अन्तिम पद को उदात्त माना जाये तो इसका विग्रह तत्पुरुष समास में 'इन्द्रस्य शत्रुः' होगा, जिसका अर्थ होगा- इन्द्र को मारने वाला।

⟹ **स्वर के प्रकार-** वैदिक वाङ्मय में मुख्यतः तीन स्वर मान्य हैं- उदात्त, अनुदात्त और स्वरित।

उदात्त- उच्चैरुदात्तः। कण्ठ, तालु आदि स्थानों के ऊपर के भाग से जिस स्वर का उच्चारण होता है, वह उदात्त कहलाता है।

अनुदात्त- नीचैरनुदात्तः। कण्ठ, तालु आदि स्थानों के नीचे के भाग से उच्चरित स्वर अनुदात्त कहलाता है।

स्वरित- 'समाहारः स्वरितः' उदात्तत्व और अनुदात्तत्व दोनों धर्मों का मेल जिस वर्ण में होता है, वह स्वरित होता है। इस प्रकार स्वरित में उदात्त और अनुदात्त दोनों स्वरों के धर्म का मिश्रण होता है।

स्वरित दो प्रकार का होता है- स्वतन्त्र और आश्रित

स्वरित
स्वतन्त्र — आश्रित
स्वतन्त्र: नित्य (जात्य), संधिज
संधिज: क्षैप्र, प्रश्लिष्ट, अभिनिहित
आश्रित: पादवृत्त, प्रातिहत, तैरोव्यञ्जन, तैरोविराम, तायाभाव

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि अभिनिहित स्वर स्वतन्त्र स्वरित का भेद है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

53. ऑन दि सब्लाइम (On the Sublime) **ग्रन्थस्य प्रणेता वर्तते?**

(A) अरस्तू **(B) क्रोञ्चे**

(C) प्लेटो **(D) लान्जाइनस**

व्याख्या- अरस्तू का अनुकरण सिद्धान्त एक स्तर पर प्लेटो के अनुकरण सिद्धान्त की प्रतिक्रिया है और दूसरे स्तर पर उसका विकास भी। अरस्तू (384 ई.पूर्व. से 322 ई.पूर्व.) यूनानी दार्शनिक थे। यह प्लेटो के शिष्य व सिकन्दर के गुरु थे। उनका जन्म स्टेगेरिया नामक नगर में हुआ था। अरस्तु ने भौतिकी, अध्यात्म, कविता, नाटक, संगीत, तर्कशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, नीतिशास्त्र सहित कई विषयों पर रचना की।

अरस्तू के प्रमुख ग्रन्थ- हिस्ट्री ऑफ एनिमल्स, पॉएटिक्स, मेटाफिजिक्स, प्रोब्लेम्स, ऑन मेमोरी, ऑन स्लीप, ऑन ड्रीम्स, ऑन दी हेअवेंस, ऑन दी यूनिवर्स, ऑन दी सोल आदि ग्रन्थ हैं।

⟹ **लान्जाइनस-**यह अंग्रेजी (Longinus) ग्रीक परम्परागत रूप से काव्य में 'उदात्त तत्त्व' (On the Sublime) नामक कृति का रचनाकार माना जाता है। लान्जाइनस का असली नाम ज्ञात नहीं है। वह यूनानी काव्यालोचन का शिक्षक था। उसका काल पहली से लेकर तीसरी सदी तक होने का अनुमान है।

⟹ **क्रोन्चे-** जन्म- 25 फरवरी, 1866 इटली

मृत्यु - 20 नवम्बर, 1952 नापोलि इटली

पत्नी- अडेले रॉसी

⟹ **प्लेटो-** जन्म 428/427 या 424/423 ईसा पूर्व एथेंस

मृत्यु- 348/347 ईसापूर्व (उम्र 80) एथेंस

राष्ट्रीयता- यूनानी

किताब- रिपब्लिक

रिपब्लिक प्लेटो द्वारा 380 ईसापूर्व के आस-पास रचित ग्रन्थ है, जिसमें सुकरात के जीवन का वर्णन है। प्लेटो के अनुसार मानव के व्यक्तित्व के तीन आन्तरिक तत्त्व होते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'ऑन दि सब्लाइम' यह लांजाइनस की रचना है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- भारतीय पाश्चात्त्य काव्यशास्त्र तथा आलोचना –योगेन्द्र प्रतापसिंह, पेज 197

54. विश्वनाथकविराजेन प्रतिपादितं काव्यस्वरूपं किम्?
(A) रीतिरात्मा काव्यस्य
(B) वाक्यं रसात्मकं काव्यम्
(C) रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्
(D) काव्यस्यात्मा ध्वनिः

व्याख्या-

ग्रन्थ	ग्रन्थकार	काव्यलक्षण
काव्यप्रकाश	आचार्य मम्मट	तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनःक्वापि।
साहित्यदर्पण	आचार्य विश्वनाथ	वाक्यं रसात्मकं काव्यम्
रसगङ्गाधर	पण्डितराज जगन्नाथ	रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्
काव्यालङ्कारसूत्र	वामन	रीतिरात्मा काव्यस्य
ध्वन्यालोक	आनन्दवर्धन	काव्यस्यात्मा ध्वनिः
काव्यालङ्कार	भामह	शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्
वक्रोक्तिजीवितम्	कुन्तक	वक्रोक्तिः काव्यजीवितम्
काव्यादर्श	दण्डी	शरीरं तावदिष्टार्थव्यवच्छिन्ना -पदावली
औचित्यविचारचर्चा	क्षेमेन्द्र	औचित्यं रससिद्धस्य स्थिरं-काव्यस्य जीवितम्
शृङ्गारप्रकाश	भोज	अदोषं गुणवद्काव्यमलङ्कारै-रलङ्कृतम् रसान्वितं कविः-कुर्वन् कीर्तिं प्रीतिं च विदन्ति

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि विश्वनाथ जी का काव्यलक्षण है- 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- साहित्यदर्पण- शालिग्रामशास्त्री, पेज 19

55. यशोधर्मणः मन्दसौरस्तम्भलेखस्य लिपिरस्ति–
(A) देवनागरी **(B) ब्राह्मी**
(C) खरोष्ठी **(D) शारदा**

व्याख्या- यशोधर्मन् छठी शताब्दी के आरम्भिक काल में मालवा के महाराजा थे। छठी शती ई. के द्वितीय चरण में मालवा प्रान्त के स्थानीय शासक के रूप से आगे बढ़कर यशोधर्मन् पूरे उत्तरी भारत पर छा गया। यह लेख मन्दसौर (मध्यप्रदेश) नगर में नदी के बाएँ किनारे पर स्थित महादेव घाट की सीढ़ियों पर लगे एक शिला फलक पर अंकित मिला था। इसे 1885 में पीटर पेटर्सन ने प्रकाशित किया, किन्तु इसे ढूँढ निकालने का श्रेय फ्लीट के एक लिपिक को दिया जाता है, जिसे उन्होंने वहाँ यशोधर्मन् के अभिलेख की प्रतिलिपि करने के लिए भेजा था। तदन्तर फ्लीट ने इसे सम्पादन कर प्रकाशित किया, बाद में उनके पाठ, अनुवाद एवं व्याख्या सम्बन्धी भूलों को लेकर अनेक लेख प्रकाशित हुए हैं। इस लेख की भाषा संस्कृत एवं लिपि ब्राह्मी है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि यशोधर्मण्न् के मन्दसौर के स्तम्भ लेख की लिपि ब्राह्मी है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख (भाग-2)- परमेश्वरीलाल गुप्ता, पेज-102

56. निम्नलिखितेषु कतमं ब्राह्मणं सामवेदीयं नास्ति?
(A) ताण्ड्यब्राह्मण **(B) शतपथब्राह्मण**
(C) षड्विंशब्राह्मण **(D) छान्दोग्यब्राह्मण**

व्याख्या-ब्राह्मण ग्रन्थों के अर्थ में ब्राह्मण शब्द विभिन्न तीन अर्थों को लेकर ब्रह्मन् शब्द से अण् प्रत्यय करके बना है।
(1) वेदमन्त्रों की व्याख्या और विनियोग प्रस्तुत करने वाले ग्रन्थ को ब्राह्मण कहते हैं।
(2) शतपथ के अनुसार यज्ञों की व्याख्या और विवरण प्रस्तुत करने वाले ग्रन्थों को ब्राह्मण कहते हैं।
(3) जिन वैदिक ग्रन्थों में वैदिक रहस्यों का उद्घाटन किया गया है, उन्हें ब्राह्मण कहते हैं।
ब्राह्मण ग्रन्थों का मुख्य प्रतिपाद्य विषय यज्ञ एवं यज्ञप्रक्रिया का सर्वाङ्गीण विवेचन है।
चारों वेदों के ब्राह्मण ग्रन्थ निम्नलिखित हैं-
ऋग्वेद के ब्राह्मण- ऋग्वेद से सम्बन्धित दो ब्राह्मण ग्रन्थ हैं - 1. ऐतरेय ब्राह्मण 2. शांखायन ब्राह्मण
शुक्लयजुर्वेदीय-शतपथ ब्राह्मण
कृष्णयजुर्वेदीय- तैत्तिरीय ब्राह्मण
सामवेदीय ब्राह्मण- 1. पञ्चविंश ब्राह्मण 2. षड्विंश ब्राह्मण 3. सामविधान ब्राह्मण 4. आर्षेय ब्राह्मण 5. देवताध्याय ब्राह्मण 6. मन्त्र ब्राह्मण 7. संहितोपनिषद् ब्राह्मण 8. वंश ब्राह्मण 10 जैमिनीय या आर्षेय ब्राह्मण 11. जैमिनीय उपनिषद् या छान्दोग्य ब्राह्मण।
अथर्ववेदीय ब्राह्मण- गोपथ ब्राह्मण
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि ताण्ड्य ब्राह्मण,

षड्विंश ब्राह्मण, छान्दोग्य ब्राह्मण सामवेद से सम्बन्धित हैं। जबकि शतपथ ब्राह्मण, शुक्लयजुर्वेद से सम्बन्धित है।

अतः विकल्प 'B' सही है।

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-130

57. काण्वशतपथब्राह्मणम् केन वेदेन सम्बद्धम् अस्ति?

(A) ऋग्वेदेन **(B)** अथर्ववेदेन
(C) यजुर्वेदेन **(D)** सामवेदेन

व्याख्या- यजुर्वेद मुख्य रूप से दो भागों में विभक्त है- शुक्ल यजुर्वेद तथा कृष्णयजुर्वेद। शुक्लयजुर्वेद की भी दो शाखाएँ हैं। उनकी एक-एक संहिता प्राप्त होती है। माध्यन्दिन या वाजसनेयि संहिता तथा काण्वसंहिता।

सौ अध्याय होने के कारण शतपथ कहा जाता है, जिसकी व्याख्या गणरत्नमहोदधि आदि ने निम्न प्रकार से की है- **शतं पन्थानो मार्गानामाध्याया यस्य तत् शतपथम्** अर्थात् जिसमें सौ अध्याय रूपी मार्ग हैं, उसे शतपथ कहते हैं। काण्व शतपथ में 104 अध्याय हैं, तथापि शत संख्या के महत्त्व के कारण उसे शतपथ ही कहा जाता है। यह माध्यन्दिन और काण्व दोनों शाखाओं में उपलब्ध है। माध्यन्दिन में सौ अध्याय और काण्व में 104 अध्याय हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि काण्वशतपथ ब्राह्मण यजुर्वेद से सम्बद्ध है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-132

58. अधस्तनयुग्मानां वाल्मीकिरामायणस्योपजीविग्रन्थेषु केन सह कस्य सम्बन्धः? समुचितां तालिकां चिनुत

तालिका-I	तालिका-II
(क) रामायण मञ्जरी	**i.** विलोमकाव्यम्
(ख) यादवराघवीयम्	**ii.** चित्रकाव्यम्
(ग) अनर्घराघवम्	**iii.** महाकाव्यम्
(घ) रामलीलामृतम्	**iv.** नाटकम्

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(A)	iii	i	iv	ii
(B)	iii	iv	i	ii
(C)	ii	iv	iii	i
(D)	iv	ii	i	iii

व्याख्या ⇒ रामायणमञ्जरी- आचार्य क्षेमेन्द्र के ग्रन्थों को चार श्रेणी में विभक्त किया गया है, जिसमें रामायणमञ्जरी महाकाव्य है। इस महाकाव्य में रामायण की प्रख्यात कथाओं को संक्षेप रूप में प्रस्तुत किया गया है।

⇒ **यादवराघवीयम्-** वेंकटाध्वरी (16 शतक के पूर्वार्ध) ने यादव-राघवीय नामक लघुकाव्य में विलोम पद्धति से राम और कृष्ण दोनों का एकत्र वर्णन किया है। यह श्लेषकाव्य न होकर विलोम काव्य है, जिसमें साधारण क्रम से पढ़ने पर राम का चरित निकलता है और श्लोक को उलटे क्रम से पढ़ने पर कृष्ण का इसमें 300 श्लोक हैं।

⇒ **अनर्घराघव-** मुरारि की एकमात्र कृति अनर्घराघव प्राप्त होती है। यह सात अङ्कों का नाटक है, इसमें रामायण की कथावस्तु वर्णित है। विश्वामित्र यज्ञ की रक्षा के लिए दशरथ से राम और लक्ष्मण को माँगते हैं यहाँ से लेकर रामराज्याभिषेक तक की कथा वर्णित है।

⇒ **रामलीलामृतम्-** यह एक चित्रकाव्य है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि रामायणमञ्जरी महाकाव्य, यादवराघवीयम् विलोमकाव्य, अनर्घराघवम् नाटक है रामलीलामृतम् चित्रकाव्य है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा ऋषि, पेज-532
संस्कृत साहित्य का इतिहास- बलदेव उपाध्याय, पेज-309,223

59. 'यं ब्रह्माणमियं देवी वाग्वश्येवानुवर्तते' इति केन उद्घोषितम्-

(A) भवभूतिना **(B)** भासेन
(C) माघेन **(D)** भट्टनारायणेन

व्याख्या- भवभूति प्रणीत उत्तररामचरितम् के प्रथम अङ्क में नान्दीपाठ के पश्चात् सूत्रधार भवभूति का परिचय देते हुए कहता है-

यं ब्रह्माणमियं देवी वाग्वश्येवानुवर्तते।
उत्तरं रामचरितं तत्प्रणीतं प्रयोक्ष्यते॥ (उ.रा.1.2)

यह देवी सरस्वती वशवर्तिनी के तुल्य जिस ब्रह्म भवभूति का अनुसरण करती है, उसके द्वारा बनाए हुए उत्तररामचरित नाटक का हम अभिनय करेंगे।

* राजशेखर ने निम्न श्लोक के द्वारा भास के नाटकों में स्वप्नवासवदत्तम् को सर्वश्रेष्ठ बताया है-

भासनाटकचक्रेऽपिच्छेकैः क्षिप्ते परीक्षितुम्।
स्वप्नवासवदत्तस्य दाहकोऽभून्न पावकः॥

अर्थात् समालोचकों ने भास के सभी नाटकों की कठोर परीक्षा की, किन्तु समालोचनारूपी अग्नि स्वप्नवासवदत्तम् नाटक को न जला सकी, अर्थात् स्वप्नवासवदत्तम् निर्दोष नाटक सिद्ध हुआ।

* भारतीय विद्वानों ने महाकवि माघ की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है।

माघेन विघ्नितोत्साहा नोत्सहन्ते पदक्रमे।
स्मरन्तो भारवेरेव कवयः कपयो यथा॥

जैसे माघ महीने की ठण्डक से पीड़ित बन्दर दुबक कर बैठे रहते हैं और केवल सूर्य की कान्ति का ध्यान करते हैं, वैसे ही कवि लोग माघ की प्रतिभा से अभिभूत होकर काव्य-रचना त्यागकर केवल भारवि का नाम लेते हैं।

* महाकवि भट्टनारायण द्वारा रचित एकमात्र ग्रन्थ वेणीसंहार प्राप्त होता है, जिसमें छह अङ्क हैं। इसके नायक भीम तथा नायिका द्रौपदी हैं। वेणीसंहार का प्रधान रस वीर है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि 'यं ब्रह्माणमियं देवी वाग्वश्येवानुवर्तते' यह वाक्य भवभूति के लिए है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- उत्तररामचरितम् (1.2)- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-4

60. अधस्तनीयानां युग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत

तालिका-I	तालिका-II
(क) पाणिनिः	i. वृत्तिः
(ख) कात्यायनः	ii. सूत्रम्
(ग) पतञ्जलिः	iii. वार्तिकम्
(घ) जयादित्यः	iv. इष्टिः

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(A)	i	ii	iii	iv
(B)	i	iii	ii	iv
(C)	iii	ii	iv	i
(D)	ii	iii	iv	i

व्याख्या- पाणिनि- संस्कृत भाषा के समस्त प्राचीन आर्ष व्याकरणों में एकमात्र पाणिनीय व्याकरण अपने साङ्गोपाङ्ग रूप में सम्प्रति उपलब्ध होने से प्राचीन आर्ष वाङ्मय की एक अनुपम निधि है। पाणिनीय शास्त्र के चार नाम व्यवहृत उपलब्ध होते हैं - अष्टक, अष्टाध्यायी, शब्दानुशासन और वृत्तिसूत्र।

पाणिनि ग्रन्थ आठ अध्यायों में विभक्त है, अतः उसके अष्टक और अष्टाध्यायी ये दो नाम प्रसिद्ध हुए। अष्टाध्यायी आठ अध्यायों में तथा प्रत्येक अध्याय पादों में विभक्त है। अष्टाध्यायी में लगभग चार हजार सूत्र हैं।

पाणिनीय ग्रन्थ का शब्दानुशासन नाम महाभाष्य के आरम्भ में मिलता है .... **'शब्दानुशासनं नाम शास्त्रमधिकृतं वेदितव्यम्'।** पाणिनीय ग्रन्थ के वृत्तिसूत्र पद का प्रयोग महाभाष्य आदि अनेक ग्रन्थों में उपलब्ध होता है।

कात्यायन- पाणिनीय व्याकरण पर रचे वार्तिकों में कात्यायन के ही वार्तिक को अधिक प्रसिद्धि मिली। महाभाष्य में प्रायः इन्हीं के वार्तिकों का व्याख्यान है। कात्यायन का वार्तिक पाठ,पाणिनीय व्याकरण का एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अङ्ग है। इसके बिना पाणिनीय व्याकरण अधूरा रहता है।

पतञ्जलि - पतञ्जलि का महाभाष्य कात्यायनीय वार्तिकों के आधार पर ही रचा गया है। कात्यायन का वार्तिक पाठ सम्प्रति स्वतन्त्र रूप में उपलब्ध नहीं होता।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि **विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- व्याकरण महाभाष्य- जयशंकरलाल त्रिपाठी, पेज-4-5

61. ऋग्वेदे वरुणसूक्तस्य (1.2) ऋषिः कः?

(A) शुनःशेपः **(B) मधुच्छन्दाः**
(C) हिरण्यस्तूपः **(D) गौतमः**

व्याख्या-

सूक्त	ऋषि	देवता	मन्त्र संख्या
अग्निसूक्त	मधुच्छन्दा	अग्नि	09
वरुणसूक्त	शुनःशेप	वरुण	21
इन्द्रसूक्त	गृत्समद	इन्द्र	15
विष्णुसूक्त	दीर्घतमा	विष्णु	6
सवितृसूक्त	हिरण्यस्तूप	सविता	11
पुरुषसूक्त	नारायण	पुरुष	16
हिरण्यगर्भसूक्त	हिरण्यगर्भ	क सञ्ज्ञक प्रजापति	10
वाक् सूक्त	वाक्	परमात्मा	8

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि ऋग्वेदीय वरुणसूक्त के ऋषि शुनःशेप हैं। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- ऋक्सूक्तसंग्रह-हरिदत्त शास्त्री, पेज-68

62. 'क्व सूर्यप्रभवो वंशः क्व चाल्पविषया मतिः'। इत्यत्र 'अल्पविषया मतिः' इति कस्य कृते प्रयुक्तम्?

(A) विशाखदत्तस्य **(B) भासस्य**
(C) कालिदासस्य **(D) बाणभट्टस्य**

व्याख्या-

⟹ **क्व सूर्यप्रभवो वंशः क्व चाल्पविषया मतिः।**
तितीर्षुर्दुस्तरं मोहादुडुपेनास्मि सागरम्॥ (रघु. 1.2)

प्रस्तुत श्लोक कालिदास विरचित रघुवंशम् के प्रथम सर्ग से उद्धृत है, जिसमें कालिदास अपने विषय में कहते हैं कि कहाँ सूर्य से उत्पन्न वंश और कहाँ अल्प विषय जानने वाली मेरी बुद्धि! दुस्तर समुद्र को अज्ञानता के कारण छोटी नाव से पार करना चाहता हूँ।

⟹ विशाखदत्त प्रणीत मुद्राराक्षस नाटक में सात अङ्क हैं, जिसके नायक चाणक्य चन्द्रगुप्त हैं, एवं इस नाटक में नायिका का अभाव है।

सुलभेष्वर्थलाभेषु परसंवेदने जनः।
क इदं दुष्करं कुर्यादिदानीं शिविना विना।। (मुद्रा. 1.24)
चाणक्य द्वारा बार-बार राक्षस का परिवार माँगे जाने पर भी चन्दनदास जब अपने जीवन, परिवार व धन की परवाह किये बिना उसे नहीं सौंपता, तब चाणक्य मन-ही-मन उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए कहता है कि दूसरे की वस्तु दे देने पर, धन की प्राप्ति आसान होने पर अब अर्थात् इस कलियुग में शिवि के अतिरिक्त कौन सा मनुष्य इस कठिन कार्य को कर सकता है?

⟹ महाकवि भास द्वारा रचित प्रतिमानाटक के द्वितीय अङ्क में सीता के विषय में कहते हैं-

सूर्य इव गतो रामः सूर्य दिवस इव लक्ष्मणोऽनुगतः।
सूर्यदिवसावसाने छायेव न दृश्यते सीता।। (प्रतिमा. 2.7)
सायंकालीन सूर्य के समान राम वन चले गए। सूर्य के पीछे जैसे दिवस चला जाता है, उसी प्रकार राम के पीछे लक्ष्मण चले गए। सूर्य और दिवस की समाप्ति पर छाया नहीं दिखती, उसी प्रकार अब सीता भी दिखाई नहीं पड़ती हैं।

⟹ हर्षचरितम् के प्रथम उच्छ्वास में बाणभट्ट कालिदास के विषय में कहते हैं-

निर्गतासु न वा कस्य कालिदासस्य सूक्तिषु।
प्रीतिर्मधुरसान्द्रासु मञ्जरीष्विव जायते।। (हर्षचरितम् 1.16)
नई उकसी हुई मञ्जरी के समान मधुर एवं सरस कालिदास की सूक्तियों में उत्तरमात्र से ही किसे आनन्द नहीं आता।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'क्व सूर्यप्रभवो वंशः क्व चाल्पविषया मतिः', में 'अल्पविषया मतिः' कालिदास के लिए प्रयुक्त है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- रघुवंशम् (1/2)- हरगोविन्द शास्त्री, पेज 02

63. दुर्गेण कस्मिन् ग्रन्थे टीका लिखिता?
(A) बृहद्देवतायाम् **(B) बौधायनगृह्यसूत्रे**
(C) कात्यायनशुल्बसूत्रे **(D) निरुक्ते**

व्याख्या- दुर्गाचार्य द्वारा निरुक्त पर ऋज्वर्थ वृत्ति है। इसमें निरुक्त के प्रत्येक शब्द को उद्धृत करके उसकी व्याख्या की गई है। यह टीका अत्यन्त विद्वत्तापूर्ण और प्रामाणिक है। निरुक्त के उपलब्ध व्याख्याकारों में दुर्गासिंह अथवा दुर्गाचार्य, समय की दृष्टि से सर्वप्रथम माने जा सकते हैं। दुर्गाचार्य का भाष्य बहुत विस्तृत है तथा अनेक स्थानों पर इस विद्वान् भाष्यकार ने निरुक्त के वाक्यों के एक से अधिक अर्थ प्रस्तुत किए हैं। दुर्ग की टीका के अध्ययन से यह पता चलता है कि दुर्ग के समय में भी निरुक्त के कुछ प्रामादिक पाठ तथा पाठभेद विद्यमान थे।

बृहद्देवता- बृहद्देवता के रचयिता आचार्य शौनक माने गए हैं। यह आठ अध्यायों में विभक्त है, जिसमें 1200 श्लोक हैं। प्रत्येक अध्याय में प्रायः पाँच-पाँच पद्यों का वर्ग है। निरुक्त में की गयी देवता विवेचना को इसमें पल्लवित किया गया है। निरुक्त से इसमें अन्य सामग्री भी ली गयी है। बृहद्देवता निरुक्त पर आश्रित ही नहीं, अपितु उसकी आलोचना भी करती है।

बौधायन गृह्यसूत्र- बौधायन गृह्यसूत्र कृष्णयजुर्वेदीय गृह्यसूत्र है। बौधायन गृह्यसूत्र के रचयिता बोधायन हैं, इनका समय 900 ई.पू. के लगभग माना जाता है। यह बौधायन कल्पसूत्र का एक विशिष्ट अंश है। श्री शामशास्त्री द्वारा सम्पादित इसका संस्करण 1920 ई. में मैसूर से प्रकाशित हुआ।

कात्यायन शुल्बसूत्र- कात्यायन शुल्बसूत्र का सम्बन्ध शुक्ल यजुर्वेद से है। कात्यायन का समय चतुर्थ शती ई.पू. माना जाता है। इस शुल्बसूत्र को कात्यायन शुल्ब परिशिष्ट या कातीय शुल्ब परिशिष्ट भी कहते हैं। इसमें वेदियों के निर्माण के लिए आवश्यक रेखागणितीय निर्देश है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि दुर्ग द्वारा निरुक्त पर टीका लिखी गयी है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-205

64. आर्हतदर्शने चतुर्विधबन्धेषु परिगणितो नास्ति-
(A) प्रकृतिबन्धः **(B) विषयबन्धः**
(C) स्थितिबन्धः **(D) प्रदेशबन्धः**

व्याख्या- बन्ध-
'मिथ्यादर्शनाविरतिप्रमादकषायवशाद्योगवशाच्चात्मा सूक्ष्मैकक्षेत्राव-गाहिनामनन्तप्रदेशानां पुद्गलानां कर्मबन्ध-योग्यानामादानमुपश्लेषणं यत्करोति स बन्धः' अर्थात् जब मिथ्या-दर्शन, अविरति (आसक्ति) प्रमाद (असावधानी) और कषाय (पाप) के कारण तथा योग के भी कारण आत्मा उन पुद्गलों का आदान अर्थात् आलिङ्गन करती है, जो पुद्गल (शरीर) अपने सूक्ष्म क्षेत्र में प्रवेश करते हैं, अनन्त सभी स्थानों में निवास करते हैं तथा अपने पूर्वकृत कर्मों के बन्धन में पकने लायक होते हैं; इसी क्रिया का नाम बन्ध है।

बन्धन के भेद-
'बन्धश्चतुर्विध इत्युक्तं, प्रकृतिस्थित्यनुभवप्रदेशास्तद्विधयः' प्रकृतिबन्ध, स्थितिबन्ध, अनुभवबन्ध तथा प्रदेशबन्ध के भेद से बन्धन के चार भेद हैं।

➢ **प्रकृतिबन्ध-** प्रकृतिबन्धन आठ प्रकार का होता है, इसे मूल प्रकृति भी कहते हैं तथा द्रव्यों के धर्म और अधर्म नामक कर्मों

के अनुसार इसमें अन्तर भेद भी होता है।

➢ **स्थितबन्ध-** जैसे बकरी, गाय, भैंस आदि के दूध अपने माधुर्य के स्वभाव से किसी निश्चित काल तक च्युत नहीं होते, उसी प्रकार मूल प्रकृतियों में प्रथम तीन ज्ञानवरणादि तथा अन्तराय कुल मिलाकर चार कर्मों का इस सूत्र के अनुसार उत्कृष्ट स्थिति का परिणाम करोड़ों-करोड़ों तीस सागरोपम जैसे काल हैं, इतने समय तक मतवाले (हाथी) की तरह अपने स्वभाव को न छोड़ना स्थितिबन्ध है।

➢ **अनुभवबन्ध-** जैसे बकरी, गाय, भैंस आदि के दूध में तीव्र, मन्द आदि स्वभाव के अनुसार अपने-अपने कार्य करने की विशेष सामर्थ्य की उत्पत्ति होती है, उसी प्रकार कर्म पुद्गलों की अपने कार्य करने की विशेष सामर्थ्य उत्पन्न होती है। यही अनुभवबन्ध है।

➢ **प्रदेशबन्ध-** कर्म के रूप में परिणत पुद्गलों के जो द्वयणुकादि स्कन्ध हैं, जिनके अनन्त स्थान हुआ करते हैं, उनका अपने अवयवों में प्रवेश कर जाना ही प्रदेशबन्ध है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि प्रकृतिबन्ध, स्थितिबन्ध तथा प्रदेशबन्ध ये बन्ध के अन्तर्गत परिगणित है जबकि विषयबन्ध बन्ध के अन्तर्गत परिगणित नहीं हैं। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- सर्वदर्शनसंग्रह- उमाशंकर शर्मा ऋषि,पेज-137-141

65. स्वेच्छाकेसरिणः स्वच्छस्वच्छायायासितेन्दवः।
त्रायन्तां वो मधुरिपोः प्रपन्नार्तिच्छिदो नखाः॥
इत्यस्मिन् मङ्गलाचरणे ग्रन्थकारेण इष्टदेवस्य कस्य रसाभिव्यञ्जक-स्वरूपस्य स्मरणं कृतम् -

(A) शृङ्गाररसाभिव्यञ्जकस्य
(B) वीररसाभिव्यञ्जकस्य
(C) शान्तरसाभिव्यञ्जकस्य
(D) करुणरसाभिव्यञ्जकस्य

व्याख्या- आनन्दवर्धन ध्वन्यालोक के मंगलाचरण में नृसिंह रूपी विष्णु की स्तुति करते हुए कहते हैं-

स्वेच्छाकेसरिणः स्वच्छस्वच्छायायासितेन्दवः।
त्रायन्तां वो मधुरिपोः प्रपन्नार्तिच्छिदो नखाः॥

स्वयं अपनी इच्छा से सिंह (नृसिंह) रूप धारण किए हुए मधुरिपु विष्णु भगवान् के, अपनी निर्मल कान्ति से चन्द्रमा को लज्जित करने वाले शरणागतों के दुःखनाशन में समर्थ, नख तुम सब की रक्षा करें।

स्पष्टीकरण- ग्रन्थकार ने विघ्नों के नाश और उन पर विजय प्राप्ति के लिए वीर रस के स्थायिभाव उत्साह की विशेष उपयोगिता की दृष्टि से ही ग्रन्थकार ने अपने इष्ट देव के वीररसाभिव्यञ्जक स्वरूप का स्मरण किया है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- ध्वन्यालोक (1.1)- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-1

66. पाणिनीयशिक्षायाम् अधमपाठकेषु को न परिगणितः?

(A) गीती (B) लिखितपाठकः
(C) पदानि विच्छिद्यपाठकः (D) शीघ्री

व्याख्या- महर्षि पाणिनि द्वारा रचित पाणिनीय शिक्षा ऋग्वेद का शिक्षा ग्रन्थ है, जिसमें साठ श्लोक हैं। पाणिनीय शिक्षा में स्वर, व्यञ्जन, अधम पाठक, उत्तम पाठक आदि के लक्षण वर्णित हैं-

गीती शीघ्री शिरःकम्पी तथा लिखितपाठकः।
अनर्थज्ञोऽल्पकण्ठश्च षडेते पाठकाधमाः॥ (पा.शि.32)

गाने की तरह पढ़ने वाला, ज्यादा शीघ्रता से पढ़ने वाला, शिर हिलाकर पढ़ने वाला, अनभ्यस्त अकण्ठस्थीकृत वेदादिशास्त्र को लेखन के आधार पर पढ़ने वाला, अर्थज्ञान के बिना पढ़ने वाला और शुष्ककण्ठत्व-न्यूनप्राणत्वादि दोषयुक्त रूप में पढ़ने वाला ये छह प्रकार के पाठक पाठकों में अधम हैं।

उत्तम पाठक के लक्षण-

माधुर्यमक्षरव्यक्तिः पदच्छेदस्तु सुस्वरः।
धैर्यं लयसमर्थं च षडेते पाठका गुणाः॥ (पा.शि.33)

मधुरता, वर्णों की स्पष्टता, पद विभाग, सुस्वरता, लययुक्तता ये छह पाठक सम्बन्धी गुण जानने चाहिए।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि गीती, लिखित पाठक तथा शीघ्री ये अधम पाठक के लक्षण हैं, जबकि पदानि विच्छिद्य पाठकः' यह अधम पाठक के लक्षण में नहीं है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- पाणिनीय शिक्षा- शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन,पेज-43

67. 'विभागं चेत्पिता कुर्यादिच्छया विभजेत्सुतान्।' इति कस्य ग्रन्थस्य वचनमस्ति?

(A) मनुस्मृत्याः (B) याज्ञवल्क्यस्मृत्याः
(C) पराशरस्मृत्याः (D) नारदस्मृत्याः

व्याख्या-

विभागं चेत्पिता कुर्यादिच्छया विभजेत्सुतान्।
ज्येष्ठं वा श्रेष्ठभागेन सर्वे वा स्युः समांशिनः॥ (याज्ञ.2.114)

उपर्युक्त श्लोक याज्ञवल्क्यस्मृति के व्यवहाराध्याय से उद्धृत है, जिसमें दाय के दो भेद करते हुए याज्ञवल्क्य कहते हैं- यदि पिता सम्पत्ति का विभाग करें, तो उसे अपनी इच्छानुसार पुत्रों में बाँटे।

ज्येष्ठ पुत्र को श्रेष्ठभाग, मझले को मध्यम और सबसे छोटे को कनिष्ठ भाग देकर विभाजन करें; अथवा सबको समान अंश दे। याज्ञवल्क्यस्मृति में लेख्य के दो प्रकार बताए हैं-

यः कश्चिदर्थो निष्णातः स्वरुच्या तु परस्परम्।
लेख्यं तु साक्षिमत्कार्यं तस्मिन्धनिकपूर्वकम्।। (याज्ञ 2.84)

जब धनी और अधमर्ण ऋण में अपनी इच्छा से परस्पर कोई बात तय हुई हो, तो साक्षियों के सामने उसे लिख देना चाहिए। लेख में धनिक का उल्लेख करें।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि विभागं चेत्पिता कुर्यादिच्छया विभजेत्सुतान्, यह पंक्ति याज्ञवल्क्यस्मृति के द्वितीय अध्याय (व्यवहाराध्याय) में वर्णित है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- याज्ञवल्क्यस्मृति (2.114)

68. आकृतिमूलकवर्गीकरणे हिन्दीभाषा मन्यते-
(A) प्रश्लिष्ट बहिर्मुखी
(B) श्लिष्ट बहिर्मुखी वियोगात्मिका
(C) श्लिष्ट बहिर्मुखी संयोगात्मिका
(D) श्लिष्टान्त वियोगात्मिका

व्याख्या- विश्व की भाषाओं के दो प्रकार के वर्गीकरण हैं- आकृतिमूलक और पारिवारिक। आकृतिमूलक वर्गीकरण के दो भेद हैं- योगात्मक और अयोगात्मक। योगात्मक के तीन भेद हैं- श्लिष्ट योगात्मक, अश्लिष्ट योगात्मक तथा प्रश्लिष्ट योगात्मक। योगात्मक भाषाएँ प्रकृति और प्रत्यय के संयोग से बनी हुई होती हैं। इस वर्गीकरण का श्रेय 'प्रो. श्लेगल' को है।

आकृतिमूलक वर्गीकरण-

आकृतिमूलक वर्गीकरण का आधार पदों और वाक्यों की रचना है। पद किस प्रकार बनते हैं, वाक्यों की रचना किस प्रकार होती है, इस आधार पर किए जाने वाले वर्गीकरण को आकृतिमूलक कहते हैं। इसे पदरचनात्मक वर्गीकरण भी कहते हैं। इस वर्गीकरण को सिन्टैक्स वाक्यरचना के आधार पर होने से 'वाक्य रचनात्मक' और टाइप के आधार पर होने से 'टिपिकल रूपात्मक' भी कहते हैं।

आकृतिमूलक वर्गीकरण

भाषा **अश्लिष्ट** **योगात्मक**

श्लिष्ट
अन्तर्मुखी — संयोगात्मक (अरबी), वियोगात्मक (हिब्रू)
बहिर्मुखी — संयोगात्मक (संस्कृत), वियोगात्मक (हिन्दी)

प्रश्लिष्ट
पूर्णप्रश्लिष्ट (चेरोफी)
आंशिक प्रश्लिष्ट (बास्क)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि श्लिष्ट बहिर्मुखी वियोगात्मिका, यह आकृतिमूलक वर्गीकरण से सम्बन्धित है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र- कपिलदेव द्विवेदी, पेज 357

69. निम्नलिखितेषु ऋग्वेदस्य प्राचीनतमो भाष्यकारः कोऽस्ति?
(A) वेङ्कटमाधव **(B) सायण**
(C) उव्वट **(D) स्कन्दस्वामी**

व्याख्या- स्कन्दस्वामी- मन्त्रक्रम से ऋग्वेद के भाष्य करने वाले उपलब्ध भाष्यकारों में स्कन्दस्वामी सबसे प्राचीन भाष्यकार हैं। उनके भाष्य के प्रत्येक अध्याय के अन्त में यह श्लोक उद्धृत है-

बलभीविनिवासस्येतामृगर्थागमसंहृतिम्।
भर्तृध्रुवसुतश्चक्रे स्कन्दस्वामी यथास्मृति।।

ये स्कन्दस्वामी गुजरात की प्रसिद्ध नगरी बलभी के निवासी थे। इनके पिता का नाम भर्तृध्रुव था। ये शतपथ ब्राह्मण के भाष्यकार हरिस्वामी के गुरु थे। स्कन्दस्वामी ने 600-625 ई. के मध्य ऋग्वेद पर भाष्य लिखा था।

वेंकटमाधव- सम्पूर्ण ऋग्वेद पर वेंकटमाधव ने अपना भाष्य लिखा है और वह आज उपलब्ध है। वेंकटमाधव के पितामह का नाम माधव, पिता का नाम वेंकट तथा माता का नाम सुन्दरी था। वेंकटमाधव का समय 13वीं शती से पूर्व है। वेंकटमाधव का भाष्य अभी तक चार स्थानों से प्रकाशित हुआ है। सर्वप्रथम पं.

साम्बशिव शास्त्री के सम्पादकत्व में त्रिवेन्द्रम् संस्कृत सीरीज में दो भागों में क्रमशः 1929ई. तथा 1935ई. में इसका प्रकाशन हुआ।
सायण- वेद के भाष्यकारों में सायण का स्थान सर्वोपरि है। वैदिक साहित्य में उपलब्ध प्रायः सभी ग्रन्थों पर इन्होंने अपना भाष्य लिखा। सायण आन्ध्र प्रान्त के अन्तर्गत तुङ्गभद्रा नदी के दक्षिण तट पर स्थित विजयनगर राज्य के निवासी थे। इनके पिता का नाम मायण तथा माता का नाम श्रीमती या श्रीमायी था। आचार्य सायण का समय 1315ई.से 1387ई. तक है।
उव्वट- यह नाम उव्वट और उवट दोनों प्रकार से लिखा जाता है। यजुर्वेद भाष्य के अन्त में इन्होंने अपना परिचय दिया है। ये आनन्दपुर निवासी वज्रट के पुत्र थे। राजा भोज के शासनकाल में इन्होंने वेदभाष्य किया। इनका समय 11वीं शती ई. है। इन्होंने यजुर्वेद भाष्य के अतिरिक्त निम्नलिखित ग्रन्थ लिखे-
1. ऋक्प्रातिशाख्य की टीका
2. यजुःप्रातिशाख्य की टीका
3. ऋक्सर्वानुक्रमणी पर भाष्य
4. ईशोपनिषद् पर भाष्य।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि ऋग्वेद के सबसे प्राचीन भाष्यकार स्कन्दस्वामी हैं। **अतः विकल्प 'D' सही है।**
स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज 22

70. शब्दे व्याकरणे स्वीकारे महाभाष्ये का शङ्का नोत्थापिता?
(A) ल्युडर्थस्य अनुपपन्नतायाः
(B) तत्र भव इत्यस्य अनुपपन्नतायाः
(C) प्रोक्तादीनां तद्धितार्थानाम् अनुपपन्नतायाः
(D) षष्ठ्यर्थस्य अनुपपन्नतायाः

व्याख्या- व्याकरण महाभाष्य के पस्पशाह्निक में व्याकरण को शब्द मानने पर तीन दोष तथा सूत्र मानने पर दो दोष होते हैं-
व्याकरण का अर्थ शब्द मानने पर तीन दोष-
1. ल्युट् प्रत्यय के अर्थ की अनुपपत्ति- 'शब्द पक्ष में' व्याक्रियते शब्दा अनेन इस व्युत्पत्ति में वि+आङ्+कृ+ल्युट् =अन यहाँ करण अर्थ में ल्युट् होता है, किन्तु व्याकरण का अर्थ शब्द मानने पर यह अर्थ उत्पन्न नहीं हो सकता, क्योंकि व्याकरण = शब्द के द्वारा किसी की व्युत्पत्तिव्याकृति नहीं की जाती है। इसके विपरीत शब्द की ही व्याकृति (प्रकृति-प्रत्यय विभागादि-ज्ञान) की जाती है। अतः शब्द व्याकृति का कारण नहीं अपितु कर्म है।
2. 'तत्र भवः' भव अर्थ वाले तद्धित प्रत्यय की 'अनुपपत्ति- व्याकरणे भवो योगः वैयाकरणः' कहा जाता है, परन्तु व्याकरण=शब्द में तो कोई योग नहीं होता है, अपितु एक सूत्र में ही कहीं-कहीं दूसरा योग सूत्र कल्पित कर लिया जाता है।
3. प्रोक्त अर्थ वाले तद्धित प्रत्यय भी नहीं उपपन्न होते हैं, क्योंकि पाणिनिना प्रोक्तम् इस अर्थ में पाणिनीयम् आदि शब्द बनाने के लिए 'तेन प्रोक्तम्' से तद्धित प्रत्यय होते हैं, परन्तु व्याकरण शब्द मानने पर ये प्रत्यय नहीं हो सकते, क्योंकि पाणिनि आदि के द्वारा प्रोक्त शब्द नहीं अपितु सूत्र ही प्रोक्त है।

व्याकरण का अर्थ सूत्र मानने पर दोष-
1. व्याकरणसूत्रम् - यहाँ षष्ठी का अर्थ उपपन्न नहीं हो सकता, क्योंकि षष्ठी का अर्थ सम्बन्ध है और वह दो भिन्न पदार्थों में ही होता है, जैसे राज्ञः पुरुषः। परन्तु जब व्याकरण शब्द का अर्थ सूत्र माना जाता है, तब व्याकरण और सूत्र एक ही हो जाते हैं, दोनों में भेद नहीं है, अतः षष्ठ्यर्थ भेद सम्बन्ध की उपपत्ति नहीं हो सकती।
2. दूसरा दोष यह है कि 'व्याकरणात् शब्दान् प्रतिपद्यामहे' अर्थात् व्याकरण से शब्दों का ज्ञान करते हैं, ऐसा व्यवहार होता है, किन्तु इस सूत्रपक्ष में नहीं हो सकता क्योंकि केवल सूत्र से शब्दों की प्रतिपत्ति का ज्ञान नहीं होता है। उसके लिए तो व्याख्यान की भी आवश्यकता पड़ती है। उदाहरण, प्रत्युदाहरण, वाक्य का अध्याहार ये सब मिलकर ही व्याख्यान होते हैं। केवल सूत्र का सन्धिविच्छेद कर देना व्याख्यान नहीं है।
अतः व्याकरण का अर्थ सूत्र को मानने पर उक्त दो दोष हैं।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि व्याकरण का अर्थ शब्द मानने पर षष्ठ्यर्थ अनुपपन्नता के विषय में शंका नहीं उठायी गयी। **अतः विकल्प D सही है।**
स्रोत- व्याकरण महाभाष्य- जयशङ्करलाल त्रिपाठी, पेज 119-123

71. अशोकस्य शाहबाजगढी अभिलेखः कुत्र प्राप्यते?
(A) जूनागढ़ गुजरातप्रान्ते (B) पेशावर-पाकिस्तानदेशे
(C) गुर्जरा मध्यप्रदेशे (D) भावू राजस्थान प्रदेशे

व्याख्या- अशोक पहला भारतीय शासक था, जिसने अभिलेखों के सहारे सीधे अपनी प्रजा को सम्बोधित किया। अशोक के अभिलेखों की भाषा प्राकृत थी। दक्षिण भारत में अशोक के जो भी अभिलेख मिले हैं, वे अधिकतर दक्षिण के सोने की खानों के आस-पास मिले हैं। अशोक के अभिलेखों का विभाजन तीन वर्गों में किया जा सकता है-
शिलालेख, स्तम्भलेख, और गुहालेख।

शिलालेख
दीर्घशिलालेख — लघुशिलालेख

दीर्घ शिलालेख- इनको चतुर्दश शिलालेख भी कहते हैं, क्योंकि

यह 14 लेखों का समुच्चय है; जो कि आठ स्थानों से प्राप्त हुए हैं।

बृहद् शिलालेख	स्थिति	खोजकर्ता	वर्ष
शाहबाजगढ़ी	पाकिस्तान का पेशावर जिला	जनरलकोर्ट	1836
मानसेहरा	पाकिस्तान का हाजरा जिला	कनिंघम, कैप्टन ले.	
कालसी	उत्तराखण्ड का देहरादून जिला	फोरेस्ट	1860
गिरनार	गुजरात के जूनागढ़ में	कर्नलटाड	1822
एर्रगुडि	आन्ध्रप्रदेश का कर्नूल जिला	अणुघोष	1929
धौली	ओडिशा का पुरी जिला	किटो	1837
जौगड़	ओडिशा का गंजाम जिला	वाल्टर इलियट	1850
सोपारा	महाराष्ट्र का थाने जिला	--	--

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि अशोक का शाहबाजगढ़ी अभिलेख पाकिस्तान के पेशावर जिले से जनरल कोर्ट के द्वारा 1836ई. में प्राप्त हुआ। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- प्राचीन भारत- सौरभ चौबे, पेज-208

72. तर्कभाषानुसारम् इन्द्रियार्थसन्निकर्षः कस्य करणम्?
(A) अनुमानस्य (B) प्रत्यक्षस्य
(C) उपमानस्य (D) इन्द्रियस्य

व्याख्या- आचार्य केशवमिश्र प्रणीत तर्कभाषा न्यायदर्शन का प्रकरण ग्रन्थ है, जिसमें सोलह पदार्थों का विवेचन है। तर्कभाषा में चार प्रकार के प्रमाणों का वर्णन है-

प्रत्यक्ष प्रमाण- साक्षात्कारिप्रमाकरणं प्रत्यक्षम्। साक्षात्कारिणी च प्रमा सैवोच्यते या इन्द्रियजा, अर्थात् साक्षात्कार करने वाली प्रमा का करण प्रत्यक्ष कहलाता और साक्षात्कार करने वाली प्रमा वह है, जो इन्द्रिय से उत्पन्न होती है।

प्रत्यक्ष प्रमा के दो भेद हैं- सविकल्पक तथा निर्विकल्पक और इसका करण तीन प्रकार का है-

(i) कभी इन्द्रिय
(ii) कभी इन्द्रियार्थ–सन्निकर्ष
(iii) कभी ज्ञान।

प्रत्यक्ष प्रमा का द्वितीय करण है। इन्द्रियार्थसन्निकर्ष उसके विषय में कहते हैं- **'यदा निर्विकल्पकानन्तरं सविकल्पकं नामजात्यादियोजनात्मकं डित्थोऽयं, ब्राह्मणोऽयं, श्यामोऽयमेति विशेषणविशेष्यावगाहि ज्ञानमुत्पद्यते, तदेन्द्रियार्थसन्निकर्षः करणम्'** अर्थात् निर्विकल्पक ज्ञान के अनन्तर नाम जाति आदि से विशिष्ट यह डित्थ है, ब्राह्मण है, यह श्याम है, इस प्रकार का विशेषण तथा विशेष्य का ग्रहण करने वाला सविकल्पक ज्ञान उत्पन्न होता है, तब इन्द्रियार्थसन्निकर्ष करण होता है।

इन्द्रिय तथा अर्थ का जो सन्निकर्ष प्रत्यक्ष ज्ञान का निमित्त होता है, वह छः प्रकार का होता है- 1. संयोग 2. संयुक्तसमवाय 3. संयुक्तसमवेत समवाय 4. समवाय 5. समवेत समवाय 6. विशेष्य-विशेषणभाव

अनुमान प्रमाण- 'लिङ्गपरामर्शोऽनुमानम्। येन हि अनुमीयते तदनुमानम्। लिङ्गपरामर्शेन चानुमीयतेऽतो लिङ्गपरामर्शोऽनुमानम्' लिङ्गपरामर्श ही अनुमान है, जिससे अनुमिति की जाती है वह अनुमान कहलाता है। लिङ्गपरामर्श से अनुमिति की जाती है, अतः लिङ्गपरामर्श ही अनुमान है।

उपमान प्रमाण- 'अतिदेशवाक्यार्थस्मरणसहकृतं गोसादृश्यविशिष्ट-पिण्डज्ञानमुपमानम्' अतिदेश वाक्य के अर्थ का स्मरण करने के साथ गौ की समानता से युक्त पिण्ड का ज्ञान ही उपमान है।

उपमान प्रमाण में उपमिति प्रमा का करण है। गौ की समानता से युक्त पिण्ड ज्ञान के पश्चात् यह पिण्ड गवय शब्द का वाच्य है। इस प्रकार जो गवय शब्द तथा सञ्ज्ञी वस्तु गोसदृश पिण्ड के सम्बन्ध की प्रतीति होती है, वह उपमिति कहलाती है।

'सञ्ज्ञासञ्ज्ञिसम्बन्धप्रतीतिरुपमितिः' अर्थात् सञ्ज्ञा और सञ्ज्ञी के सम्बन्ध की प्रतीति ही उपमिति है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि इन्द्रियार्थसन्निकर्ष प्रत्यक्ष प्रमा का करण है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- तर्कभाषा- आचार्य विश्वेश्वर, पेज 53

73. अनुमितिज्ञाने व्यापार उच्यते?
(A) करणम् (B) परामर्शः
(C) व्याप्तिः (D) हेतुः

व्याख्या- विश्वनाथपञ्चानन भट्टाचार्य द्वारा रचित न्यायसिद्धान्तमुक्तावली में अनुमान प्रमाण के प्रसंग में अनुमिति का लक्षण करते हुए कहते हैं- अनुमिति में व्याप्ति का ज्ञान ही करण होता है और परामर्श ही व्यापार होता है। जैसे कि जिस पुरुष ने महानस आदि में, धुएँ

आदि में आग की व्याप्ति का ग्रहण किया है अर्थात् धुआँ और आग का व्यभिचाररहित सम्बन्ध जान लिया है, बाद में वही पुरुष कहीं पर्वत आदि में मूल से विच्छेद न हुए धुएँ की रेखा को देख लेता है, उसके बाद धुआँ वह्नि से व्याप्य है इस प्रकार की व्याप्ति का स्मरण उसको हो जाता है और बाद में यह वह्नि से व्याप्य धुएँ वाला है ऐसा ज्ञान हो जाता है। यही ज्ञान परामर्श कहा जाता है। उसके बाद पर्वत वह्नि से युक्त है, ऐसी अनुमिति हो जाती है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि अनुमिति ज्ञान में परामर्श ही व्यापार होता है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- न्यायसिद्धान्तमुक्तावली (अनुमानखण्ड-66)- गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज-1

74. अधोलिखितेषु केन्टुम् वर्गे नास्ति

(A) जर्मनभाषा **(B) रूसीभाषा**
(C) फ्रेञ्चभाषा **(D) ग्रीकभाषा**

व्याख्या- भारोपीय परिवार की भाषाओं को ध्वनि के आधार पर दो भागों में विभाजित किया गया है- 1. केन्टुम् वर्ग 2. शतम् वर्ग। इस विभाजन का श्रेय 'प्रो. अस्कोली' को जाता है। यह विभाजन उन्होंने 1870 ई. में किया। भारोपीय परिवार का विभाजन निम्नवत् है-

भारोपीय परिवार

शतम् वर्ग	केन्टुम् वर्ग
(1) भारत-ईरानी	(1) ग्रीक
(2) बाल्टो-स्लाविक	(2) केल्टिक
(3) आर्मीनी	(3) जर्मानिक या ट्यूटानिक
(4) अल्बानी	(4) इटालिक
	(5) हिटाइट
	(6) तोखारी

इटालिक या रोमान्स वर्ग का क्षेत्रीय विभाजन इस प्रकार है- 1. इटालियन 2. फ्रेञ्च 3. स्पेनिश 4. रूमानियन 5. पुर्तगाली

बाल्टो-स्लाविक- शतम् वर्ग- रूसी भाषा

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि जर्मन, फ्रेञ्च, ग्रीक, केन्टुम् वर्ग के अन्तर्गत हैं, जबकि रूसी भाषा शतम् वर्ग के अन्तर्गत परिगणित है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-385

75. कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः, अत्र 'जिजीविषेत्' पदस्य कोऽर्थः ?

(A) जीवितुमिच्छेत् **(B) जेतुमिच्छेत्**
(C) ज्ञातुमिच्छेत् **(D) प्राप्तुमिच्छेत्**

व्याख्या-

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे॥ (ईशो.-2)

उपर्युक्त मन्त्र शुक्लयजुर्वेद से सम्बन्धित ईशावास्योपनिषद् से उद्धृत है। प्रस्तुत मन्त्र में श्रुति का यह उपदेश है कि आत्मतत्त्व से अपरिचित व्यक्ति के आत्मोपलब्धि (आत्मज्ञान) के अयोग्य होने के कारण उसके पूर्व चित्तशुद्ध्य शास्त्र विहित अग्निहोत्र कर्म निष्काम भाव से करें।

मन्त्रार्थ- इस लोक में शास्त्र विहित कर्मों को करते हुए ही सौ वर्ष जीवित रहने की इच्छा करें। जिस प्रकार तुझ मनुष्य में कर्म लिप्त नहीं होता है, इससे भिन्न अन्य कोई मार्ग नहीं है।

पदों के अर्थ-

कुर्वन्नेव- निर्वर्तयन्नेवेह कर्माण्यग्निहोत्रादीनि
जिजीविषेत् - जीवितुमिच्छेत्
शतम् - शतसंख्याकाः समाः संवत्सरान्

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि जिजीविषेत् पद का अर्थ जीवितुमिच्छेत् है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- ईशादि नौ उपनिषद्- गीता प्रेस, पेज-28

76. महाभारतोपजीविकाव्यं नास्ति

(A) बृहत्कथामञ्जरी **(B) शिशुपालवधम्**
(C) मध्यमव्यायोग **(D) भारतमञ्जरी**

व्याख्या-

बृहत्कथामञ्जरी- आचार्य क्षेमेन्द्र ने आचार्य गुणाढ्य की बृहत्कथा का अनुवाद इस ग्रन्थ में प्रस्तुत किया। बृहत्कथामञ्जरी में 18 लम्बक अर्थात् अध्याय हैं। इस कथा का नायक वत्सराज उदयन का पुत्र नरवाहनदत्त है। प्राचीन कथानकों को सरस शैली में क्षेमेन्द्र ने निबद्ध किया है। क्षेमेन्द्र ने सूचित किया है कि उन्हें मूल बृहत्कथा की प्रति उपलब्ध थी।

शिशुपालवधम्- महाकवि माघ द्वारा रचित शिशुपालवध महाकाव्य में 20 सर्ग हैं, जिसका उपजीव्य महाभारत का सभापर्व है। शिशुपालवध महाकाव्य का नायक श्रीकृष्ण तथा प्रतिनायक शिशुपाल है।

मध्यमव्यायोग- महाकवि भास द्वारा मध्यमव्यायोग नामक एकांकी नाटक है। मध्यम पाण्डव भीम के द्वारा घटोत्कच के हाथ से एक ब्राह्मण पुत्र को बचाने का वर्णन है। भीम अपने पुत्र घटोत्कच को

देखकर आनन्दित होता है तथा पत्नी हिडिम्बा से उसका पुनर्मिलन होता है। यह महाभारताश्रित रूपक है।

भारतमञ्जरी- आचार्य क्षेमेन्द्र द्वारा भारतमञ्जरी महाभारत का संक्षिप्त रूपान्तर है। इस रचना के द्वारा क्षेमेन्द्र ने साहित्य जगत् में बड़ी प्रतिष्ठा प्राप्त की और उन्हें इसी रचना के कारण 'व्यासदास' की उपाधि दी गयी। इसमें 10892 श्लोक तथा 19 पर्व हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि शिशुपालवधम्, मध्यमव्यायोग तथा भारतमञ्जरी महाभारत पर आश्रित हैं, जबकि बृहत्कथामञ्जरी गुणाढ्य की बृहत्कथा पर आश्रित है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा ऋषि, पेज-424

77. दर्शयज्ञः कस्यां तिथौ क्रियते

(A) पौर्णमास्याम् **(B) अमावस्याम्**
(C) अष्टम्याम् **(D) चतुर्दश्याम्**

व्याख्या- अथर्ववेद में उल्लेख है कि सर्वप्रथम अथर्वा ऋषि ने ही यज्ञपद्धति का आविष्कार किया और उसका प्रचार किया। अंगिरस् ऋषियों ने यज्ञ की उपयोगिता आदि पर मनन-चिन्तन किया और उसके फलस्वरूप अन्न आदि प्राप्त किया।

* ऐतरेय ब्राह्मण में समस्त श्रौतयज्ञों को पाँच भागों में बाँटा गया है- 1. अग्निहोत्र 2. दर्शपौर्णमास 3. चातुर्मास्य 4. पशु 5. सोम दर्शपौर्णमास यज्ञ दो यज्ञों का सम्मिलित रूप है- दर्शयज्ञ तथा पौर्णमास यज्ञ।

दर्शयज्ञ अमावस्या तथा पौर्णमास यज्ञ पूर्णिमा को किया जाता है। दर्शयज्ञ (अमावस्या) में अग्नि के लिए पुरोडाश और इन्द्र के लिए दही तथा दूध के बने द्रव्य की आहुतियाँ दी जाती हैं। पौर्णमास यज्ञ (पूर्णिमा) में अग्नि और सोम के लिए घी और पुरोडाश (पिसे हुए चावल का पूआ) की आहुति दी जाती है।

स्पष्टीकरण- विवेचन से स्पष्ट है कि दर्शयज्ञ अमावस्या तिथि को किया जाता है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- श्रौतयज्ञ परिचय-वेणीरामशर्मा गौड़, पेज-8

78. 'यो जात एव प्रथमो मनस्वान् देवो देवान् क्रतुना पर्यभूषत्' मन्त्रांशोऽयं कस्य सूक्तस्य विद्यते?

(A) सूर्यसूक्तस्य **(B) वरुणसूक्तस्य**
(C) अग्निसूक्तस्य **(D) इन्द्रसूक्तस्य**

व्याख्या ⇒ इन्द्रसूक्त-

यो जात एव प्रथमो मनस्वान् देवो देवान् क्रतुना पर्यभूषत्।
यस्य शुष्माद्रोदसी अभ्यसेतां नृम्णस्य महना स जनास इन्द्रः॥
(ऋ. 2.12.1)

उपर्युक्त मन्त्र ऋग्वेद के द्वितीय मण्डल के 12वें सूक्त से उद्धृत, है जिसे इन्द्रसूक्त के नाम से जाना जाता है। इस सूक्त के ऋषि गृत्समद तथा देवता इन्द्र हैं। मन्त्र में प्रयुक्त छन्द त्रिष्टुप् है।

मन्त्रार्थ- हे मनुष्यों! अथवा हे असुरों! जो उत्पन्न होते ही सब देवताओं में प्रमुख परम मनस्वी हुआ, दिव्य गुणों से युक्त होते हुए जिसने यज्ञ से या वृत्र के वध आदि कर्मों से अन्य देवताओं को अलंकृत किया, या अन्य देवताओं की शक्ति का अतिक्रमण किया, जिसके शारीरिक बल से द्युलोक, पृथिवी लोक डरते थे, या काँपते थे, महती सेना के महत्त्व से युक्त वही इन्द्र है।

⇒ सूर्यसूक्त-

चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः।
आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च॥
(ऋ. 1.115.1)

उपर्युक्त ऋचा ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के 115वें सूक्त के रूप में उद्धृत है, जिसे सूर्यसूक्त के रूप में जाना जाता है, इस सूक्त के ऋषि कुत्स तथा देवता सूर्य हैं। मन्त्र में प्रयुक्त छन्द त्रिष्टुप् है।

मन्त्रार्थ- किरणों का या देवताओं का समूह रूप, आश्चर्यजनक और मित्र, वरुण एवं अग्नि का अर्थात् सम्पूर्ण संसार का चक्षु अर्थात् प्रकाशक वह सूर्य देवता उदय हुआ है। उदय होने के बाद उसने द्युलोक, पृथिवी लोक और अन्तरिक्ष लोक को सब ओर से प्रकाश से भर दिया है। वह सूर्य जङ्गम अर्थात् गतिशील और तस्थुष अर्थात् स्थावर संसार की आत्मा है। सूर्य उदय होने पर स्थावर और जङ्गम की संसार में वृद्धि होती है।

⇒ वरुण सूक्त-

यच्चिद्धि ते विशो यथा प्र देव वरुण व्रतम्।
मिनीमसि द्यविद्यवि॥ (ऋ.1.25.1)

उपर्युक्त मन्त्र ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के 25वें सूक्त के रूप में उद्धृत है जिसे वरुण सूक्त के रूप में जाना जाता है। इस सूक्त के ऋषि शुनःशेप तथा देवता वरुण हैं। मन्त्र में प्रयुक्त छन्द गायत्री है।

मन्त्रार्थ- हे वरुण देव! जिस प्रकार संसार में प्रजाजन कभी प्रमाद करते हैं, उसी प्रकार हम भी आपके नियमों का जो कुछ भी प्रतिदिन प्रमाद से उल्लंघन करते हैं, हमारे प्रमादों का परिमार्जन करके उन नियमों को पूर्ण बनाइए।

अग्निसूक्त- अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्।
होतारं रत्नधातमम्॥ (ऋ. 1.1.1)

यजमान की कामनाओं को पूरा करने वाले यज्ञ के पुरोहित, दान आदि गुणों से सम्पन्न, देवताओं के ऋत्विक् और होता एवं रत्नों अर्थात् यज्ञ के फलस्वरूप प्राप्त होने वाले श्रेष्ठ पदार्थों को धारण करने वाले अग्नि देवता की मैं ऋषि स्तुति करता हूँ।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि 'यो जात एव प्रथमो मनस्वान् देवो देवान् क्रतुना पर्यभूषत्,' मन्त्र इन्द्र सूक्त से उद्धृत है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- ऋक्सूक्तसंग्रह (2.12.1)- हरिदत्त शास्त्री, पेज-177

79. भावनायां लिङ्गादिज्ञानं करणं भवति -

(A) भावनोत्पादकत्वेन
(B) शब्दभावनानिवर्तकत्वेन
(C) आर्थीभावनोत्पादकत्वेन
(D) शब्दभावनाभाव्यनिर्वर्तकत्वेन

व्याख्या- लौगाक्षिभास्कर प्रणीत अर्थसंग्रह मीमांसा का प्रकरण ग्रन्थ है, जिसमें भावना का लक्षण निम्नवत् है-

'भावना नाम भवितुर्भवनानुकूलो भावयितुर्व्यापारविशेषः' उत्पन्न होने वाली की उत्पत्ति में अनुकूल, उत्पत्ति का कारणभूत जो उत्पादयिता का व्यापारविशेष होता है, उसका नाम भावना है। भावना के दो भेद हैं- शाब्दीभावना तथा आर्थीभावना।

⇒ **शाब्दीभावना- 'तत्र पुरुषप्रवृत्त्यनुकूलो भावयितुर्व्यापारविशेषः शाब्दीभावना'–** अर्थात् उनमें भावयिता का पुरुष में प्रवृत्ति उत्पन्न करने वाला व्यापारविशेष शाब्दी भावना है।

शाब्दी भावना वैदिक वाक्य में प्रयोजक पुरुष का अभाव होने के कारण लिङ्गादिशब्दनिष्ठ होती है। इसीलिए 'शाब्दीभावना' इस नाम का व्यवहार किया जाता है। शाब्दी भावना के तीन अंश होते हैं– साध्य, साधन तथा इतिकर्त्तव्यता, साधन की आकांक्षा होने पर लिङ्ग आदि का ज्ञान करण के रूप में अन्वित होता है, किन्तु उसका करणत्व भावनोत्पादक के रूप में नहीं है, क्योंकि उसके लिङ्गादिज्ञान के पहले भी शब्द में उसकी सत्ता रहती है किन्तु भावना का प्रकाशक होने से अथवा शाब्दी भावना के भाव्य का सम्पादक होने से ही लिङ्गादिज्ञान शाब्दीभावना का हेतु है-

'किन्तु भावनाज्ञापकत्वेन शब्दभावनाभाव्यनिर्वर्तकत्वेन वा'।

⇒ **आर्थी भावना- 'प्रयोजनेच्छाजनितक्रियाविषयव्यापार आर्थीभावना'**

अर्थात् प्रयोजन विषयक इच्छा से उत्पन्न क्रिया विषयक व्यापार आर्थी भावना है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि भावना में लिङ्गादि ज्ञान करण में शब्दभावनाभाव्यनिर्वर्तकत्वेन है।

अतः विकल्प 'D' सही है।

स्रोत- अर्थसंग्रह- वाचस्पति उपाध्याय, पेज-25

80. अधोलिखितेषु खकारस्य बाह्यप्रयत्नविषयकम् उपयुक्तं विकल्पं चिनुत-

(A) विवारः श्वासः अघोषः अल्पप्राणः
(B) संवारः नादः घोषः अल्पप्राणः
(C) विवारः श्वासः अघोषः महाप्राणः
(D) संवारः नादः घोषः महाप्राणः

व्याख्या- यत्न या प्रयत्न दो प्रकार के होते हैं- आभ्यन्तर प्रयत्न तथा बाह्य प्रयत्न। आभ्यन्तर प्रयत्न पाँच प्रकार के होते हैं- 1. स्पृष्ट 2. ईषत्स्पृष्ट 3. विवृत 4. ईषत्विवृत 5. संवृत

बाह्यप्रयत्न के 11 भेद होते हैं-

1. विवार 2. संवार 3. श्वास 4. नाद 5. घोष 6. अघोष 7. अल्पप्राण 8. महाप्राण 9. उदात्त 10. अनुदात्त 11. स्वरित।

बाह्यप्रयत्न का प्रत्याहारों के आधार पर विभाजन निम्नवत् है-

विवार,श्वास,अघोष	संवार,नाद,घोष	अल्पप्राण	महाप्राण	उदात्त अनुदात्त स्वरित
क ख श	ग घ ङ य	क ग ङ य	ख घ श	अ ए
च छ ष	ज झ ञ व	च ज ञ व	छ झ ख	इ ओ
ट ठ स	ड ढ ण र	ट ड ण र	ठ ढ स	उ ऐ
त थ	द ध न ल	त द न ल	थ ध ह	ॠ औ
प फ	ब भ म	प ब म	फ भ	ॡ

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि खकार का उच्चारण विवार, श्वास, अघोष तथा महाप्राण है।

अतः विकल्प 'C' सही है।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी- गीताप्रेस- पेज-13

81. बौद्धदर्शन पञ्चविधस्कन्धेषु परिगणितो नास्ति-

(A) विज्ञानम् **(B) वेदना**
(C) सञ्ज्ञा **(D) विशेषणम्**

व्याख्या- बौद्धदर्शन में चित्त और उसके विकारों को पञ्चस्कन्ध के नाम से जाना जाता है। पञ्चस्कन्ध हैं-

'सोऽयं चित्तचैत्तात्मकः स्कन्धः पञ्चविधो रूप-विज्ञान-वेदना सञ्ज्ञा संस्कारसञ्ज्ञकः' चित्त और चित्त के विकारों में यह स्कन्ध अर्थात् अमूर्त तत्त्व पाँच प्रकार का है- 1. रूप स्कन्ध 2. विज्ञान स्कन्ध 3. वेदना स्कन्ध 4. सञ्ज्ञा स्कन्ध और 5. संस्कार स्कन्ध

रूपस्कन्ध- विषयों के साथ इन्द्रियों का नाम रूपस्कन्ध है, जिसकी व्युत्पत्तियाँ हैं, जिनमें विषयों का निरूपण होता है और जो निरूपित होते हैं।

विज्ञान स्कन्ध- आलयविज्ञान और प्रवृत्तिविज्ञान का प्रवाह विज्ञान स्कन्ध है।

वेदना स्कन्ध- पहले कहे गए इन दोनों स्कन्धों के सम्बन्ध से उत्पन्न सुख-दुःख आदि प्रतीतियों का प्रवाह वेदना सम्बन्ध है।
सञ्ज्ञा स्कन्ध- गौ इत्यादि शब्दों को व्यक्त करने वाले ज्ञानों का प्रवाह सञ्ज्ञा स्कन्ध है।
संस्कार स्कन्ध- वेदनास्कन्ध पर आधारित रागद्वेषादि क्लेश, मद मानादि उपक्लेश तथा धर्म-अधर्म को संस्कार स्कन्ध कहते हैं।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचना से स्पष्ट है कि पञ्चस्कन्धों में विज्ञान, वेदना तथा सञ्ज्ञा आते हैं, जबकि विशेषणम् पञ्चस्कन्ध में नहीं आता। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- सर्वदर्शनसंग्रह- उमाशंकर शर्मा ऋषि, पेज-75

82. 'दीर्घाज्जसि च' इत्यनेन भवति -
(A) पूर्वसवर्णदीर्घः (B) पूर्वसवर्णदीर्घस्य निषेधः
(C) वृद्धिः एकादेशः (D) गुणादेशस्याभावः

व्याख्या- दीर्घाज्जसि च (6.1.101)-
'दीर्घाज्जसि च' पूर्वसवर्णदीर्घनिषेधक विधिसूत्र है। संहिता के विषय में दीर्घवर्ण से उत्तर इच् वर्ण या जस् प्रत्यय परे रहते पूर्वसवर्ण दीर्घ नहीं होता है।
उदाहरण- कुमारी जस् (अस्) -यण् प्राप्त हुआ
'प्रथमयोः पूर्वसवर्णः' ने यण् का बाध किया, परन्तु 'दीर्घाज्जसि च' सूत्र के द्वारा पूर्वसवर्ण दीर्घ का निषेध होकर कुमार्यः बना।
प्रथमयोः पूर्वसवर्णः (6.1.102)
'प्रथमयोः पूर्वसवर्णः' पूर्वसवर्णदीर्घ विधायक विधिसूत्र है। अक् प्रत्याहार से प्रथमा और द्वितीया विभक्ति सम्बन्धी अच् के परे रहने पर पूर्व और पर के स्थान पर पूर्वसवर्ण दीर्घ एकादेश होता है।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'दीर्घाज्जसि च' इस सूत्र से पूर्वसवर्ण दीर्घ का निषेध होता है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- अष्टाध्यायी (6.1.101)- ईश्वरचन्द्र, पेज- 692

83. 'सर्पिषो नाथनम्' इह षष्ठी विभक्तिर्भवति -
(A) कर्मणः शेषत्वेन विवक्षायाम्
(B) करणस्य शेषत्वेन विवक्षायाम्
(C) सम्बन्धस्य सम्बन्धत्वेन विवक्षायाम्
(D) अधिकरणस्य शेषत्वेन विवक्षायाम्

व्याख्या- आशिषि नाथः (2.3.55)-
आशीर्वाद अर्थ में नाथ् धातु के कर्म में सम्बन्धमात्र की विवक्षा में षष्ठी विभक्ति होती है।
उदाहरण- सर्पिषो नाथनम् - घी सम्बन्धी इच्छा, इस वाक्य में नाथ् धातु के कर्म सर्पिष् में सम्बन्ध की विवक्षा होने पर सर्पिषः में षष्ठी विभक्ति 'आशिषि नाथः' सूत्र से हुई। सूत्र में आशिषि पद का प्रयोग इसलिए किया गया है, क्योंकि नाथ् धातु का आशिष् से भिन्न अर्थात् याचना के अर्थ में उसके कर्म में द्वितीया विभक्ति ही होती है।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि सर्पिषो नाथनम् में षष्ठी विभक्ति का विधान कर्म की शेषत्व की विवक्षा में हुआ है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**
स्रोत- सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) (2.3.55)- राममुनि पाण्डेय, पेज-115

84. अलङ्कारसम्प्रदायस्य प्रवर्तकाचार्यः कः?
(A) वामनः (B) भरतः
(C) भामह (D) रुद्रटः

व्याख्या-

सम्प्रदाय	प्रवर्तकआचार्य	काल	ग्रन्थ
रस सम्प्रदाय	आचार्य भरतमुनि	ई.पू.द्वितीय शताब्दी	नाट्यशास्त्र
अलङ्कार सम्प्रदाय	आचार्य भामह	500ई.	काव्यालङ्कार
रीति सम्प्रदाय	आचार्य वामन	800-850ई.	काव्यालङ्कार सूत्रवृत्ति
ध्वनि सम्प्रदाय	आचार्य आनन्दवर्धन	नवम शताब्दी उत्तरार्ध	ध्वन्यालोक
वक्रोक्ति सम्प्रदाय	आचार्य कुन्तक	11वीं शताब्दी पूर्वार्ध	वक्रोक्ति-जीवितम्
औचित्य सम्प्रदाय	आचार्य क्षेमेन्द्र	11वीं शताब्दी उत्तरार्ध	औचित्य-विचारचर्चा

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि अलङ्कार सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य भामह हैं। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा ऋषि, पेज-578

85. निम्नलिखितेषु केन ज्योतिश्शास्त्रमाधृत्य ऋग्वेदस्य कालो निर्धारितः?
(A) वेबरमहोदयेन
(B) मैक्डानल
(C) बालगंगाधरतिलकमहोदयेन
(D) विल्सनमहोदयेन

व्याख्या- बालगंगाधर तिलक-
आचार्य बालगंगाधर तिलक ने ज्योतिषीय गणना के आधार पर ऋग्वेद का रचनाकाल छह हजार ई.पू. से चार हजार ई.पू. माना है। उन्होंने विभिन्न नक्षत्रों में वसन्त सम्पात के आधार पर तिथि निर्धारित की है। उन्होंने वैदिक काल को चार भागों में विभक्त किया

है और विभिन्न स्तरों में वैदिक साहित्य के अङ्गों का उल्लेख है।

(1) अदिति काल 6 हजार से 4 हजार ई.पू.
(2) मृगशिरा काल 4 हजार से 2500 ई.पू.
(3) कृत्तिका काल 2500 से 1400 ई.पू.
(4) सूत्र काल 1400 से 500 ई.पू.

ए0 वेबर- जर्मन विद्वान् प्रो. ए बेवर ने कहा है वेदों का समय निश्चित नहीं किया जा सकता। वे उस तिथि के बने हुए हैं, जहाँ तक पहुँचने के लिए हमारे पास उपयुक्त साधन नहीं है। प्रो. बेवर यह भी कहते हैं कि वेदों के समय को कम-से-कम 1200 ई.पू. या 1500 ई.पू. के बाद का कथमपि स्वीकार नहीं किया जा सकता।

मैक्डानल- 1300 ई.पू. ऋग्वेद की रचना का प्रारम्भ माना है, जो बोगाजकोई अभिलेख के आधार पर माना है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि बालगंगाधर तिलक ने ऋग्वेद का काल निर्धारण ज्योतिषशास्त्र के आधार पर किया है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-39

86. चक्षुषा घटरूपत्वग्रहणे कः सन्निकर्षः ?
(A) समवायः
(B) संयुक्तसमवायः
(C) संयुक्तसमवेतसमवायः
(D) विशेषणविशेष्यभावः

व्याख्या- प्रत्यक्ष ज्ञान का हेतु इन्द्रिय और पदार्थ का सन्निकर्ष-संयोग सन्निकर्ष, संयुक्तसमवायसन्निकर्ष, संयुक्तसमवेतसमवाय सन्निकर्ष, समवाय सन्निकर्ष, समवेतसमवायसन्निकर्ष और विशेषण विशेष्य भावरूप से सन्निकर्ष के छः प्रकार होते हैं।

संयोग सन्निकर्ष- चक्षुषा घट प्रत्यक्षजनने संयोगः सन्निकर्षः। अर्थात् नेत्र से घट का प्रत्यक्ष होने में संयोग नामक सन्निकर्ष होता है।

संयुक्तसमवायसन्निकर्ष-

घटरूपप्रत्यक्षजनने संयुक्तसमवायः सन्निकर्षः चक्षुः संयुक्ते घटे रूपस्य समवायात् अर्थात्घट के रूप का प्रत्यक्ष करने में संयुक्तसमवाय नाम सन्निकर्ष है, क्योंकि नेत्र से संयुक्त घट में रूप समवायसम्बन्ध से स्थित रहता है।

संयुक्तसमवेतसमवाय सन्निकर्ष-

रूपत्वसामान्यप्रत्यक्षे संयुक्तसमवेतसमवायः सन्निकर्षः। चक्षुः संयुक्ते घटे रूपं समवेतं, तत्र रूपत्वस्य समवायात् अर्थात् रूपत्व जाति के प्रत्यक्ष में संयुक्त समवेत समवाय नामक सन्निकर्ष होता है, क्योंकि चक्षु से संयुक्त घट में रूप समवेत है तथा उसमें रूपत्व समवाय सम्बन्ध से स्थित है।

समवायसन्निकर्ष-

श्रोत्रेण शब्दसाक्षात्कारे समवायः सम्बन्धः। कर्णविवर वर्त्याकाशस्य श्रोत्रत्वाच्छब्दस्याकाशगुणत्वाद् गुणगुणिनोश्च समवायात् अर्थात् कर्ण विवर में स्थित आकाश ही श्रोत्र होने से तथा आकाश का गुण शब्द होने के कारण एवं गुण-गुणी का समवाय सम्बन्ध होने से श्रोत्र द्वारा शब्द का साक्षात्कार करने से समवाय सन्निकर्ष है।

समवेत-समवाय सन्निकर्ष-

शब्दत्वसाक्षात्कारे समवेतसमवायः सन्निकर्षः, श्रोत्रसमवेते शब्दे शब्दत्वस्य समवायात्। अर्थात् श्रोत्र में समवेत रूप में विद्यमान शब्द में शब्दत्व जाति के समवाय सम्बन्ध से स्थित रहने के कारण शब्दत्व के साक्षात्कार में समवेत समवाय नामक सन्निकर्ष होता है।

विशेषणविशेष्यभाव सन्निकर्ष-

अभावप्रत्यक्षे विशेषणाविशेष्यभावः सन्निकर्षः। घटाऽभाववद्भूतलमित्यत्र चक्षुः संयुक्ते भूतले घटाऽभावस्य विशेषणत्वात् अर्थात् भूतल घट के अभाव वाला है। यहाँ नेत्र से संयुक्त भूतल में घट का अभाव विशेषण है। अतः अभाव का प्रत्यक्ष करने में विशेषण विशेष्यभाव सन्निकर्ष होता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि चक्षु से घटरूपत्व में संयुक्त समवेत समवाय सन्निकर्ष है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- तर्कसंग्रह- आद्याप्रसाद मिश्र, पेज 47

87. प्र + एजते = प्रेजते इत्यत्र एकारो भवति
(A) आद्गुणः सूत्रेण गुणत्वात्
(B) वृद्धिरेचि सूत्रेण वृद्धित्वात्
(C) एङि पररूपम् सूत्रेण पररूपत्वात्
(D) एङः पदान्तादति सूत्रेण पूर्वरूपत्वात्

व्याख्या- 'प्र + एजते' इस पद में आद्गुणः सूत्र से गुण की प्राप्ति थी, परन्तु उसे बाधकर वृद्धिरेचि सूत्र से वृद्धि प्राप्त हुई, उसे भी बाधकर 'एङि पररूपम्' सूत्र से अवर्णान्त उपसर्ग से एङादि धातु के परे रहने पर पूर्व और पर के स्थान पर पररूप एकदेश होता है। यहाँ पर अवर्णान्त उपसर्ग है- प्र और एङादि धातु परे है- एजते। पूर्व में प्र का अ और परे है एजते का ए, दोनों के स्थान पर परसवर्ण ए ही हुआ- प्र + ए + जते = प्रेजते प्रयोग सिद्ध हुआ।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि प्र + एजते में एकार 'एङि पररूपम्' सूत्र से पररूप हुआ।

अतः विकल्प 'C' सही है।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी- गोविन्दाचार्य, पेज-61

88. मनुस्मृत्यनुसारं कति पाकयज्ञाः -

(A) चत्वारः (B) पञ्च
(C) षट् (D) दश

व्याख्या- धर्मशास्त्रीय ग्रन्थ के अन्तर्गत परिगणित मनुस्मृति के द्वितीय अध्याय में चार प्रकार के पाकयज्ञों का वर्णन है-

ये पाकयज्ञाश्चत्वारो विधियज्ञसमन्विताः।
सर्वे ते जपयज्ञस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम्॥ (मनु.2.86)

जो विधियज्ञ सहित चार पाकयज्ञ (वैश्वदेव, होम,बलिकर्म, नित्यश्राद्ध और अतिथिभोजन) हैं। वे सब जपयज्ञ की सोलहवीं कला के योग्य भी नहीं हैं।

* मनुस्मृति के प्रथम अध्याय में क्षत्रियों के पाँच कर्म बताए गए हैं-

प्रजानां रक्षणं दानमिज्याध्ययनमेव च
विषयेष्वप्रसक्तिश्च क्षत्रियस्य समासतः॥ (मनु.1.89)

प्रजा की रक्षा, दान देना, यज्ञ करना, पढ़ना और विषयों में न लगना ये क्षत्रियों के कर्म संक्षेप में बताये गये हैं।

*** अध्यापनमध्ययनं यजनं याजनं तथा**
दानं प्रतिग्रहं चैव ब्राह्मणानामकल्पयत्॥ (मनु.1.88)

पढ़ना, पढ़ाना, यज्ञ करना, यज्ञ कराना, दान देना, दान लेना, ये छः कर्म ब्राह्मणों के हैं।

*** काम से उत्पन्न दोषों की संख्या दस है-**

मृगयाऽक्षो दिवास्वप्नः परिवादः स्त्रियो मदः।
तौर्यत्रिकं वृथाट्या च कामजो दशको गणः॥ (मनु.7.47)

मृगया, जुआ खेलना, दिन में सोना, पराया दोष कहना, स्त्रियों में आसक्ति, मद्यपान, बजाना, नाचना, गाना और वृथा घूमना, ये दश दोष 'काम' से उत्पन्न होते हैं।

स्पष्टीकरण- विवेचन से स्पष्ट है कि मनुस्मृति के अनुसार पाकयज्ञों की संख्या चार है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- मनुस्मृति (2.86)- गिरिधर गोपालशर्मा,पेज-92

89. वेदान्तसारमतेन कर्मेन्द्रियाणामुत्पत्तिः भवति-

(A) आकाशादीनां रजोंऽशेभ्यः समस्तेभ्यः
(B) आकाशादीनां रजोंऽशेभ्योः व्यस्तेभ्यः
(C) आकाशादीनां सत्त्वांशेभ्यो व्यस्तेभ्यः
(D) आकाशादीनां सत्त्वांशेभ्यो समस्तेभ्यः

व्याख्या- सदानन्द प्रणीत वेदान्तसार में कर्मेन्द्रियों की उत्पत्ति के विषय में निम्न वर्णन प्राप्त होता है-

'कर्मेन्द्रियाणि वाक्पाणिपादपायूपस्थाख्यानि' वाक् (वाणी), पाणि (हाथ), पाद (पैर), पायु (गुदा) और उपस्थ (जननेन्द्रिय) ये कर्मेन्द्रियाँ हैं। इन कर्मेन्द्रियों की उत्पत्ति आकाश आदि रजो अंश से क्रमशः अलग-अलग होती है-

'एतानि पुनराकाशादीनां रजोंऽशेभ्यो व्यस्तेभ्यः पृथक् पृथक् क्रमेणोत्पद्यन्ते'। अर्थात् इन आकाश आदि सूक्ष्मभूतों के रजोगुणांश से ये क्रमशः अलग-अलग उत्पन्न होती है।

*** ज्ञानेन्द्रियों की उत्पत्ति-**

'एतानि आकाशादीनां सात्त्विकांशेभ्यो व्यस्तेभ्यः पृथक् पृथक् क्रमेणोत्पद्यन्ते' अर्थात् आकाश आदि सूक्ष्मभूतों में रहने वाले सत्त्वगुण के अंश से अलग-अलग क्रमानुसार उत्पन्न होती है।

ज्ञानेन्द्रियों की संख्या पाँच है- श्रोत्र (कान), त्वक् (त्वचा), चक्षु (आँख), जिह्वा (जीभ या रसना) घ्राण (नाक)।

*** बुद्धि, मन की उत्पत्ति-**

'एते पुनराकाशादिगतसात्विकांशेभ्यो मिलितेभ्यो उत्पद्यन्ते' मन और बुद्धि आकाशादि सूक्ष्मभूतों में रहने वाले सत्त्वगुण के सामूहिक अंश से उत्पन्न होते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि कर्मेन्द्रियों की उत्पत्ति आकाश आदि के रजो अंश के सामूहिक अंश से अलग-अलग होती है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- वेदान्तसार- सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-69

90. 'अल्पक्लेशं मरणं दारिद्र्यमनन्तकं दुःखमिति' केनोक्तम्?

(A) बाणभट्टेन (B) माघेन
(C) शूद्रकेण (D) भारविणा

व्याख्या- महाकवि शूद्रक प्रणीत मृच्छकटिकम् के प्रथम अङ्क में गरीबी (दरिद्रता) के विषय में चारुदत्त कहता है-

द्रारिद्र्यान्मरणाद्वा मरणं मम रोचते न दारिद्र्यम्।
अल्पक्लेशं मरणं, दारिद्र्यमनन्तकं दुःखम्॥ (मृच्छ.1.11)

निर्धनता और मृत्यु में से मृत्यु मुझे अच्छी लगती है, निर्धनता नहीं मृत्यु में थोड़ा कष्ट है, किन्तु निर्धनता कभी न समाप्त होने वाला दुःख है।

महाकवि माघ द्वारा रचित शिशुपालवध के प्रथम सर्ग में माघ 'विद्वानों (सत्पुरुषों) के आगमन से लाभ होता है,' का वर्णन करते हैं-

'गृहानुपैतुं प्रणयादभीप्सवो भवन्ति नापुण्यकृतां मनीषिणः' (शिशु.1.14)

भागवान् श्रीकृष्ण ने पूजनीय नारद महामुनि की यथाविधि पूजा की ठीक ही है, सत्पुरुष, पुण्यकर्म नहीं करने वालों के यहाँ जाना नहीं चाहते।

बाणभट्ट विरचित कादम्बरी के शुकनासोपदेश में विषयभोगरूपी मृगतृष्णा के विषय में निम्न वर्णन प्राप्त होता है-

'इन्द्रियहरिणहारिणी च सततदुरन्तेयमुपभोगमृगतृष्णिका' (कादम्बरी)

इन्द्रियरूपी हरिणों का हरण करने वाली यह विषयभोगरूपी मृगतृष्णा परिणाम में सदा दुःख देने वाली होती है।

⟹ महाकवि भारवि प्रणीत किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग में मायावी पुरुषों के विषय में निम्न वर्णन प्राप्त होता है-

व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवं, भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः।
प्रविश्य हि घ्नन्ति शठास्तथाविधान् असंवृताङ्गान्निशिता इवेषवः॥
(किरात.1.30)

जो मायावियों के प्रति मायावी नहीं होते हैं, वे मन्दबुद्धि पराजय को प्राप्त होते हैं। धूर्त लोग ऐसे लोगों के आत्मीय बनकर उन्हें वैसे ही मार डालते हैं, जैसे तीक्ष्ण बाण कवचहीन शरीर वालों में प्रवेश करके उन्हें मार डालते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि- 'अल्पक्लेशं मरणं दारिद्र्यमनन्तकं दुःखम्', यह पंक्ति शूद्रक द्वारा रचित मृच्छकटिकम् के प्रथम अङ्क से उद्धृत है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- मृच्छकटिकम् (1.11) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-31

91. 'रुदति प्राव्राजीत्' अत्र रुदति पदे सप्तमी विभक्तिः अस्ति-
(A) निर्धारणे
(B) सामीप्ये अधिकरणे
(C) अनादराधिक्ये भावलक्षणे
(D) कर्मप्रवचनीययोगे

व्याख्या- षष्ठी चानादर(2.3.38)-
अनादराधिक्ये भावलक्षणे षष्ठीसप्तम्यौ स्तः।
अनादर के आधिक्य होने पर जिसकी क्रिया से दूसरी क्रिया लक्षित हो उससे षष्ठी और सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे-
'रुदति रुदतो वा प्राव्राजीत्' रोते हुए को छोड़कर संन्यास ले लिया। इस वाक्य में रोदन (रोने की क्रिया) क्रिया से प्रव्रजन क्रिया लक्षित होती है और अनादर अर्थ में भी प्रतीत होती है। अतः 'षष्ठी चानादरे' सूत्र से रुदत् शब्द सप्तमी विभक्ति में रुदति और षष्ठी विभक्ति एकवचन में रुदतः बना।

⟹ **यतश्च निर्धारणम्** (2.3.41)-
'जातिगुणक्रियासंज्ञाभिः समुदायादेकदेशस्य पृथक्करणं निर्धारणं यतस्ततः षष्ठीसप्तम्यौ स्तः'- अर्थात् जाति, गुण, क्रिया और सञ्ज्ञा के द्वारा किसी समुदाय से एक भाग को पृथक् किया जाता है तो उस समुदाय वाचक शब्द से षष्ठी एवं सप्तमी विभक्ति होती है।

जाति द्वारा निर्धारण का उदाहरण-
नृणां नृषु वा द्विजः श्रेष्ठः - मनुष्यों में ब्राह्मण श्रेष्ठ होता है।

गुण द्वारा निर्धारण का उदाहरण-
गवां गोषु वा कृष्णा बहुक्षीरा-गायों में काली गाय बहुत दूध देती है।

क्रिया के द्वारा निर्धारण का उदाहरण-
गच्छतां गच्छत्सु वा धावञ्छीघ्रः- चलने वालों में दौड़ने वाला श्रेष्ठ होता है।

सञ्ज्ञा द्वारा निर्धारण का उदाहरण- छात्राणां छात्रेषु वा मैत्रः पटुः- छात्रों में मैत्र पटु अर्थात् कुशल है। कर्मप्रवचनीय योग में द्वितीया, तृतीया एवं पञ्चमी विभक्ति का विधान होता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि रुदति प्राव्राजीत् यहाँ 'रुदति' इस पद में सप्तमी विभक्ति का विधान 'अनादराधिक्ये भावलक्षणे' से हुआ। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत-सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज-100

92. अरस्तूविरचितं पुस्तकमस्ति -
(A) दि रिपब्लिक **(B) आन द सब्लाइम**
(C) पॉएटिक्स **(D) टेल ऑफ टू सीरीज**

व्याख्या- 'पॉएटिक्स' अरस्तू द्वारा लगभग 350 ई.पू. में लिखी गयी साहित्य चिन्तन और सिद्धान्त सम्बन्धी पुस्तक है। यह नाट्य सिद्धान्त सम्बन्धी विश्व की सर्वाधिक प्राचीन उपलब्ध पुस्तक है। यह पाश्चात्य साहित्य सिद्धान्तों का विस्तृत परिचय देने वाली पहली पुस्तक है। इसमें अरस्तू ने काव्य के अर्थ में ग्रीक काव्य और नाटक दोनों को शामिल किया है। उन्होंने काव्य में प्रणीत काव्य और महाकाव्य दोनों को शामिल किया है।

⟹ 'दि रिपब्लिक' पुस्तक प्लेटो द्वारा 380 ईसा पूर्व के आस-पास रचित ग्रन्थ है, जिसमें सुकरात की वार्ताएँ वर्णित हैं। इन वार्ताओं में न्याय, नगर तथा न्यायप्रिय मानव की चर्चा है। यह प्लेटो की सर्वश्रेष्ठ रचना मानी जाती है।

⟹ 'लान्जाइनस' एक महान् समीक्षक के रूप में परिचित हैं। उनके नाम पर 'आन द सब्लाइम' नामक एक ही रचना का उल्लेख मिलता है। उनके जीवन तथा रचनात्मकता पर प्रकाश डालने वाले प्रमाण सन्देहास्पद हैं।

⟹ **टेल ऑफ टू सीरीज–** फ्रांसीसी क्रान्ति के पहले और दौरान पेरिस और लन्दन की पृष्ठभूमि में रचित 1859ई. में चार्ल्स डिकेन्स द्वारा लिखित उपन्यास है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि अरस्तू द्वारा रचित 'पॉएटिक्स' है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र तथा आलोचना - योगेन्द्र प्रतापसिंह, पेज 197

93. तर्कसंग्रहानुसारं पदार्थाः कति सन्ति?
(A) सप्त **(B) षोडश**
(C) नव **(D) दश**

व्याख्या- आचार्य अन्नंभट्ट प्रणीत तर्कसंग्रह न्याय-वैशेषिक का प्रकरण ग्रन्थ है, जिसमें सात पदार्थों का वर्णन है-

'द्रव्य-गुण-कर्म-सामान्य-विशेष-समवायाभावाः सप्तपदार्थाः' अर्थात् द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय एवं अभाव ये सात पदार्थ हैं।

तर्कसंग्रह के अनुसार द्रव्य की संख्या नौ है-

तत्र द्रव्याणि पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशकालदिगात्ममनांसि नवैव। पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, काल, दिशा, आत्मा और मन ये नौ द्रव्य हैं।

* केशवमिश्र प्रणीत, तर्कभाषा में सोलह पदार्थों का वर्णन है- प्रमाण, प्रमेय, संशय, प्रयोजन, दृष्टान्त, सिद्धान्त, अवयव, तर्क, निर्णय, वाद, जल्प, वितण्डा, हेत्वाभास, छल जाति, निग्रहस्थान।
* तर्कसंग्रह के अनुसार कर्म के पाँच भेद हैं-

उत्क्षेपण, अपक्षेपण, आकुञ्चन, प्रसारण, गमन।

सामान्य के दो भेद हैं। पर तथा अपर।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि तर्कसंग्रह के अनुसार पदार्थों की संख्या सात है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- तर्कसंग्रह- अनितासेन गुप्ता, पेज-27

94. मनुमते अनारोग्यमनायुष्यमस्वर्ग्यं चाऽस्ति?

(A) अविधा **(B) अतिभोजनम्**
(C) उच्छिष्टभोजनम् **(D) अवशिष्टभोजनम्**

व्याख्या- मनुस्मृति के द्वितीय अध्याय में अतिभोजन के दोषों में निम्नवत् वर्णन प्राप्त होता है-

अनारोग्यमनायुष्यमस्वर्ग्यं चातिभोजनम्
अपुण्यं लोकविद्विष्टं तस्मात्तत्परिवर्जयेत्॥ (मनु.2.57)

अधिक भोजन करना, आरोग्य, आयु, स्वर्ग, पुण्य का नाशक और लोकनिन्दित है, इसलिए उसे त्याग दें।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'अनारोग्यमनायुष्यमस्वर्ग्यं' का कारण अतिभोजन है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- मनुस्मृति (2.57)- गिरिधरगोपाल शर्मा, पेज-82

95. कुरुचरः इत्यत्र 'चरेष्टः' सूत्रेण ट प्रत्ययो विधीयते

(A) अधिकरणे उपपदे **(B) सुबन्ते उपपदे**
(C) कर्मण्युपपदे **(D) उपसर्गे उपपदे**

व्याख्या- चरेष्टः 3.2.16

अधिकरण के उपपद होने पर 'चर्' धातु से 'ट' प्रत्यय होता है।

कुरुचरः- कुरुषु यह अधिकरण उपपद में है। अतः चर् धातु से 'ट' प्रत्यय होकर अनुबन्ध लोप। 'उपपदमतिङ्' से उपपद समास होकर सुप् विभक्ति का 'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' से लुक् होकर 'कुरुचर् + अ' बना। वर्णसम्मेलन होने पर कुरुचर बना। सु विभक्ति एवं उसका रुत्व और विसर्ग करके 'कुरुचरः' सिद्ध हुआ।

स्पष्टीकरण - उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि कुरुचरः में 'ट' प्रत्यय का विधान अधिकरण उपपद अर्थ में हुआ है।

अतः विकल्प 'A' सही है।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी- गोविन्दाचार्य, पेज-790

96. त्रिविक्रमभट्टप्रणीतं चम्पूकाव्यमस्ति

(A) नलचम्पू **(B) राजचम्पू**
(C) रामायणचम्पू **(D) जीवन्धरचम्पू**

व्याख्या-

ग्रन्थ	**ग्रन्थकार**	**काल**
नलचम्पू	त्रिविक्रमभट्ट	915 ई. लगभग
मदालसाचम्पू	त्रिविक्रमभट्ट	915 ई. लगभग
जीवन्धरचम्पू	हरिश्चन्द्र	897 ई. पश्चात्
रामायणचम्पू	राजा भोज	1005-1054 ई.
यशस्तिलकचम्पू	सोमदेव सूरि	959 ई.
भारतचम्पू	अनन्तभट्ट	1500 ई.
भागवतचम्पू	अनन्तभट्ट	1500 ई.
भरतेश्वराभ्युदयचम्पू	आशाधर सूरि	1243 ई.
पुरुदेवचम्पू	अर्हदास	13वीं शती उत्तरार्ध
यतिराजविजयचम्पू	अहोबल सूरि	14वीं शती उत्तरार्ध

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि त्रिविक्रमभट्ट द्वारा प्रणीत नलचम्पू है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा,पेज-415

97. सवितर्का समापत्तिः उच्यते-

(A) शब्दार्थज्ञानविकल्पैः सङ्कीर्णा
(B) स्वरूपशून्येवार्थमात्रनिर्भासा
(C) श्रुतानुमानप्रज्ञाभ्यामन्य विषया
(D) उक्तेषु त्रिषु न कापि

व्याख्या- महर्षि पतञ्जलिकृत पातञ्जलयोगदर्शन के समाधिपाद में समापत्ति का लक्षण निम्नवत् है-

क्षीणवृत्तेरभिजातस्येव मणेर्ग्रहीतृग्रहणग्राह्येषु तत्स्थतदञ्जनता समापत्तिः (योगसूत्र 1.41)

श्रेष्ठ मणि के समान क्षीणवृत्तियों वाले तथा ग्रहीता, ग्रहण और ग्राह्य विषयों में स्थित होने वाला चित्त का उनके आकार को ग्रहण कर लेना समापत्ति है-

सवितर्का और निर्वितर्का के भेद से समापत्ति के दो भेद हैं-

तत्र शब्दार्थज्ञानविकल्पैः संकीर्णा सवितर्का समापत्तिः (योगसूत्र 1.42)

उनमें से शब्द, अर्थ और ज्ञान के विकल्पों से मिली-जुली हुई

समापत्ति सवितर्का समापत्ति है।
निर्वितर्का समापत्ति है।

स्मृतिपरिशुद्धौ स्वरूपशून्येवार्थमात्रनिर्भासा निर्वितर्का। (योगसूत्र.1.43)

स्मृति की निवृत्ति हो जाने पर अपने ज्ञानात्मक रूप से शून्य जैसी केवल अर्थ को ही प्रकाशित करने वाली निर्वितर्का समापत्ति होती है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि शब्दार्थ ज्ञानविकल्पैः सङ्कीर्णा सवितर्का समापत्ति कही जाती है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- पातञ्जलयोगदर्शनम् (समाधिपाद/42) गीताप्रेस, पेज-32

98. 'न हि रसादृते कश्चिदर्थः' प्रवर्तते इति केनोक्तम् -

(A) भामहेन **(B) भरतेन**
(C) विश्वनाथेन **(D) मम्मटेन**

व्याख्या- रस सम्प्रदाय के प्रवर्तक भरतमुनि द्वारा रचित नाट्यशास्त्र में 36 अध्याय हैं, जिसमें रस, भाव एवं नाट्य के अङ्कों आदि का विवेचन है।
नाट्यशास्त्र के छठे अध्याय में रस निरूपण के विषय में निम्न वर्णन प्राप्त होता है-

न हि रसादृते कश्चिदर्थः प्रवर्त्तते।
तत्र विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः॥ (नाट्यशास्त्र 6.32)

रस के बिना अन्य नाट्याङ्ग रूप अर्थ की प्रवृत्ति नहीं होती। विभाव, अनुभाव तथा सञ्चारी भावों के संयोग से रस निष्पन्न होता है।
अलङ्कार सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य भामह के काव्यालङ्कार में काव्य लक्षण निम्नवत् है-

'शब्दार्थौ सहितौ काव्यं गद्यं पद्यं च तद्द्विधा' (काव्यालङ्कार1.16)

शब्द और अर्थ दोनों मिलकर काव्य कहलाते हैं, उसके दो भेद होते हैं- गद्य और पद्य।

* रसवादी आचार्य विश्वनाथ द्वारा रचित साहित्यदर्पण के प्रथम परिच्छेद में काव्य का लक्षण निम्नवत् है-

'वाक्यं रसात्मकं काव्यं' (सा.दा.1.3) रसात्मक वाक्य ही काव्य है।

* समन्वयवादी आचार्य मम्मट के काव्यप्रकाश के प्रथम उल्लास में काव्य का लक्षण निम्नवत् है-

'तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि' (काव्य प्रकाश सूत्र-1)

दोषों से रहित गुणों से युक्त यदि कहीं पर अलङ्कार न भी हो, तो शब्द और अर्थ की समष्टि काव्य है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि 'न हि रसादृते कश्चिदर्थः प्रवर्तते' मत आचार्य भरत के नाट्यशास्त्र के छठे अध्याय में वर्णित है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- नाट्यशास्त्र (षष्ठ अध्याय)- ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज-182

99. चार्वाकदर्शनस्य कृते किम् अपरनाम प्रचलितमस्ति?

(A) ब्रह्मदर्शनम् **(B) परलोकदर्शनम्**
(C) ऐहलौकिकदर्शनम् **(D) लोकायतदर्शनम्**

व्याख्या- माधवाचार्य विरचित सर्वदर्शनसंग्रह के चार्वाक दर्शन प्रकरण में चार्वाक दर्शन के लिए 'लोकायतम्' इस शब्द का प्रयोग किया गया है-

'चार्वाकमतस्य 'लोकायतम्' इत्यन्वर्थम् अपरं नामधेयम्'।

सभी लोग नीतिशास्त्र और कामशास्त्र के अनुसार अर्थ और काम को ही पुरुषार्थ समझते हैं, परलोक की बात स्वीकार नहीं करते तथा चार्वाक मत का अनुसरण करते हैं। इसलिए चार्वाक मत का दूसरा नाम अर्थ के अनुकूल ही है लोकायत। लोक अर्थात् संसार में, 'आयत' अर्थात् व्याप्त या फैला हुआ।

* चार्वाक दर्शन केवल प्रत्यक्ष प्रमाण को मानता है।
* चार्वाक दर्शन ईश्वर की सत्ता को नहीं मानता है।
* चार्वाक दर्शन में चार प्रकार के भूत तत्त्व हैं- पृथ्वी, जल, तेज और वायु।

चार्वाक दर्शन से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण तथ्य-

त्रयो वेदस्य कर्तारः भण्डधूर्तनिशाचराः
लोकसिद्धो राजा परमेश्वरः
भूतेभ्यश्चैतन्यमुपजायते

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि चार्वाक दर्शन का अपर नाम लोकायत दर्शन है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- सर्वदर्शनङ्ग्रह - उमाशंकर शर्मा ऋषि, पेज-3

100. यस्य हलः इत्यत्र यस्य इत्यनेन ग्रहणं भवति

(A) केवल यकारस्य
(B) अकारसहितं यकारस्य
(C) यत् प्रातिपदिकेन निष्पन्नस्य षष्ठ्यन्तस्य
(D) उक्तेषु न कस्यापि

व्याख्या- यस्य हलः (6.4.49)-

सूत्रार्थ आर्धधातुक परे रहते हल् (व्यञ्जन) से उत्तर य का लोप होता है। यस्य अर्थात् सस्वर यकार अर्थात् अकार सहित यकार का ही लोप होता है। हलः अर्थात् हल् से उत्तर यकार का लोप होता है।

यस्य इति संघातग्रहणम्- सूत्र में पठित यस्य यकारोत्तरवर्ती अकार उच्चारणार्थ नहीं है, किन्तु यकार और अकार दोनों के लोप के लिए 'य' ऐसे समूह का निर्देश किया गया है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि 'यस्य हलः' सूत्र में यस्य पद से अकार सहित यकार का ग्रहण किया गया है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- अष्टाध्यायी (6.4.49) - ईश्वरचन्द्र, पेज-793

उत्तरमाला

1-(D)	2-(B)	3-(A)	4-(A)	5-(C)	6-(B)	7-(D)	8-(C)	9-(C)
10-(D)	11-(B)	12-(D)	13-(C)	14-(D)	15-(B)	16-(D)	17-(D)	18-(B)
19-(B)	20-(D)	21-(C)	22-(C)	23-(D)	24-(C)	25-(B)	26-(B)	27-(C)
28-(A)	29-(D)	30-(A)	31-(A)	32-(D)	33-(D)	34-(D)	35-(A)	36-(C)
37-(D)	38-(A)	39-(D)	40-(A)	41-(D)	42-(C)	43-(B)	44-(D)	45-(D)
46-(C)	47-(A)	48-(B)	49-(A)	50-(C)	51-(D)	52-(D)	53-(D)	54-(B)
55-(B)	56-(B)	57-(C)	58-(A)	59-(A)	60-(D)	61-(A)	62-(C)	63-(D)
64-(B)	65-(B)	66-(C)	67-(B)	68-(B)	69-(D)	70-(D)	71-(B)	72-(B)
73-(B)	74-(B)	75-(A)	76-(A)	77-(B)	78-(D)	79-(D)	80-(C)	81-(D)
82-(B)	83-(A)	84-(C)	85-(C)	86-(C)	87-(C)	88-(A)	89-(B)	90-(C)
91-(C)	92-(C)	93-(A)	94-(B)	95-(A)	96-(A)	97-(A)	98-(B)	99-(D)
100-(B)								

4	दिसम्बर 2018	NTA UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् II

1. माण्डूकायनी शाखा कस्य वेदस्य विद्यते–
(A) यजुर्वेदस्य (B) अथर्ववेदस्य
(C) ऋग्वेदस्य (D) सामवेदस्य

व्याख्या-1- ऋग्वेद की शाखाएँ- चरणव्यूह के अनुसार ऋग्वेद की प्रमुख पाँच शाखाएँ हैं-

(i) शाकल- सम्प्रति ऋग्वेद की यही शाखा प्रचलित है। यही शाखा उपलब्ध भी है।

(ii) बाष्कल- यह शाखा अनुपलब्ध है। इस शाखा में 1025 सूक्त थे।

(iii) आश्वलायन- यह संहिता और इसका ब्राह्मण सम्प्रति अनुपलब्ध है। इस शाखा के श्रौतसूत्र और गृह्यसूत्र ही उपलब्ध हैं।

(iv) शांखायन- यह शाखा अनुपलब्ध है। इसके ब्राह्मण, आरण्यक, श्रौतसूत्र और गृह्यसूत्र उपलब्ध हैं।

(v) माण्डूकायन- यह शाखा सम्प्रति अप्राप्य है।

2- यजुर्वेद की शाखाएँ- यजुर्वेद मुख्यतः दो भागों में विभक्त है- (i) शुक्ल यजुर्वेद, (ii) कृष्ण यजुर्वेद। शुक्ल यजुर्वेद की दो शाखाएँ हैं, उनकी एक-एक संहिता उपलब्ध है-

(क) माध्यन्दिन या वाजसनेयि संहिता

(ख) काण्व संहिता

कृष्ण यजुर्वेद की चार शाखाएँ उपलब्ध हैं-

(i) तैत्तिरीय (ii) मैत्रायणी

(iii) काठक (कठ) (iv) कपिष्ठल-कठ शाखा

3- सामवेद की शाखाएँ-

(क) कौथुमीय (कौथुम) (ख) राणायनीय (ग) जैमिनीय

4- अथर्ववेद की शाखाएँ- पतञ्जलि ने महाभाष्य में और सायण ने अथर्ववेद-भाष्यभूमिका में अथर्ववेद की 9 शाखाओं का उल्लेख किया है-

(i) पैप्पलाद (ii) तौद (iii) मौद
(iv) शौनकीय (v) जाजल (vi) जलद
(vii) ब्रह्मवद (viii) देवदर्श (ix) चारणवैद्य

इनमें से केवल दो शाखाएँ उपलब्ध हैं- शौनकीय, पैप्पलाद

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि माण्डूकायनी शाखा ऋग्वेद की है। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-46

2. साङ्ख्यरीत्या मोक्षप्राप्तिः कस्मादङ्गीक्रियते–
(A) ज्ञानात् (B) धर्मात्
(C) ऐश्वर्यात् (D) वैराग्यात्

व्याख्या- आचार्य ईश्वरकृष्णकृत साङ्ख्यकारिका की द्वितीय कारिका में मोक्ष-प्राप्ति का प्रशस्यतर उपाय व्यक्त, अव्यक्त और ज्ञ के विज्ञान को बताया है- **''तद्विपरीतः श्रेयान् व्यक्ताव्यक्तज्ञविज्ञानात्।''** (का.2) साङ्ख्यशास्त्र द्वारा निरूपित पचीस पदार्थों के तत्त्वज्ञान से सत्त्वपुरुषान्यता अर्थात् प्रकृति और पुरुष की भिन्नता का ज्ञान होता है, यही ज्ञान मोक्ष का कारण बनता है। 44वीं कारिका में बताया गया है कि किस कारण का कौन सा कार्य होता है-

धर्मेण गमनमूर्ध्वं, गमनमधस्ताद् भवत्यधर्मेण।

ज्ञानेन चापवर्गो विपर्ययादिष्यते बन्धः॥ (का.44)

अर्थात् धर्म से ऊपर की ओर स्वर्गादि लोकों में गमन होता है, और अधर्म से नीचे की ओर भूतल पर तिर्यक् योनियों में गमन होता है। विवेकख्यातिरूप तत्त्वज्ञान से अपवर्ग अर्थात् मोक्ष होता है तथा इसके विपरीत अज्ञान से बन्धन माना जाता है।

स्पष्टीकरण- स्पष्ट है कि साङ्ख्यमतानुसार ज्ञान से मोक्ष की प्राप्ति मानी गई है ज्ञानेन चापवर्गः। **अतः विकल्प A सही है।**

स्रोत- साङ्ख्यकारिका- (कारिका 2,44)

3. 'खलु कृत्वा'–निरुक्तानुसारं 'खलु' पदं विद्यते-
(A) प्रतिषेधार्थे (B) पदपूरणार्थे
(C) समुच्चयार्थे (D) निश्चयार्थे

व्याख्या- आचार्य यास्क निरुक्त के प्रथम अध्याय के द्वितीय पाद में निपातों के वर्णन में कुछ निषेधार्थक निपातों का उल्लेख करते हैं।

*** मा-** यह निपात प्रतिषेध अर्थात् निषेध अर्थ में आता है। जैसे-

मा कार्षीः- मत कर। **मा हार्षीः-** मत हरण कर।

* **खलु-** यह निपात भी निषेधार्थक ही है। **जैसे-खलु कृत्वा-न करके। खलु कृतम् -** नहीं किया। यह निपात पदपूर्ति के लिए भी प्रयुक्त होता है। जैसे- **एवं खलु। तद् बभूव-** वह बात इस प्रकार हुई थी।

* **न-** यह निपात लौकिक संस्कृत में निषेधार्थ में आता है और वेद में उपमा और निषेध अर्थ में भी आता है। प्रतिषेध अर्थ में जो न आता है उसकी पहचान यह है कि निषेध्य वस्तु के आगे उसको रखते हैं और उपमार्थक 'न' का प्रयोग जिससे उपमा दी जाती है उससे ठीक बाद आता है।

(i) नेन्द्रं देवममंसत- आदित्य की किरणों ने इन्द्र को अपना दीपयिता नहीं माना-प्रतिषेधार्थक।

(ii) दुर्मदासो न सुरायाम्- सुरा पी लेने पर दुर्मदों की भाँति लड़ने लगे- उपमार्थक।

* **पदपूरणार्थक अन्य निपात-** उ, सीम्, इत् इत्यादि।

* **समुच्चयार्थक निपात-** वा,त्व च, आ, इत्यादि।

* **निश्चयार्थक निपात-** किल

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'खलु कृत्वा' में 'खलु' निपात निषेधार्थक है। **अतः विकल्प A सही है।**

स्त्रोत- निरुक्त- छज्जूराम शास्त्री, पेज-20

4. तर्कसङ्ग्रहदीपिकानुसारं 'तज्जन्यत्वे सति तज्जन्यजनकः' कः -

(A) हेतुः (B) परामर्शः
(C) व्यापारः (D) उपनयः

व्याख्या- तर्कसङ्ग्रहकार अन्नम्भट्ट ने प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द प्रमाणों के निरूपण के प्रसङ्ग में प्रत्यक्षप्रमाण के पश्चात् अनुमान प्रमाण के द्विविध भेदों का उल्लेख किया है- 1. स्वार्थानुमान और 2. परार्थानुमान **(अनुमानं द्विविधं-स्वार्थं परार्थं च।)** परार्थानुमान के निरूपण में अन्नम्भट्ट ने पञ्चावयव वाक्य की चर्चा की है-

''यत्तु स्वयं धूमादग्निमनुमायं परं प्रति बोधयितुं पञ्चावयववाक्यं प्रयुज्यते तत्परार्थानुमानम्।'' अर्थात् जो स्वयं धूम से अग्नि का अनुमान करके दूसरे व्यक्ति को समझाने के लिए पाँच अवयवों वाले वाक्य का प्रयोग किया जाता है, वह परार्थानुमान होता है।

पञ्चावयव में कौन से पाँच अवयव होते हैं, इस पर कहते हैं- **'प्रतिज्ञा-हेतूदाहरणोपनयनिगमनानि पञ्चावयवाः।'** दीपिका टीका में स्वयं अन्नम्भट्ट इन पाँचों को परिभाषित करते हैं-

1. **साध्यवत्तया पक्षवचनं प्रतिज्ञा** अर्थात् साध्यविशिष्ट पक्षबोधक वचन प्रतिज्ञा है। **पर्वतो वह्निमान्** यह प्रतिज्ञा वाक्य है।

2. **पञ्चम्यन्तं लिङ्गप्रतिपादकं वचनं हेतुः** तृतीया अथवा पञ्चमी विभक्ति वाला लिङ्गप्रतिपादक वाक्य हेतु कहलाता है। **धूमवत्त्वात्** यह हेतुवाक्य है।

3. **व्याप्तिप्रतिपादकमुदाहरणम्** व्याप्तिप्रतिपादक दृष्टान्तवचन उदाहरण होता है। **यो यो धूमवान् स सोऽग्निमान्-** यह उदाहरणवाक्य है।

4- **पक्षधर्मताज्ञानार्थमुपनयः** व्याप्तिविशिष्टत्वरूप से हेतु की पक्षधर्मता का प्रतिपादक वाक्य उपनय कहलाता है। **तथा च अयम् -** यह उपनयवाक्य है।

5. **अबाधितत्वादिकं निगमनप्रयोजनम्-** साध्य का अबाधितत्वप्रतिपादक वचन निगमन कहलाता है। **तस्मात्तथा-** यह निगमनवाक्य है।

स्वार्थानुमिति और परार्थानुमिति- इन दोनों का लिङ्गपरामर्श ही कारण होता है, इस कारण से लिङ्गपरामर्श ही अनुमान है। **(स्वार्थानुमितिपरार्थानुमित्योर्लिङ्गपरामर्श एव करणम्। तस्माल्लिङ्गपरामर्शोऽनुमानम्)**

व्यापारवान् कारण ही 'करण' होता है- **'व्यापारवत्कारणं करणम्।'**

व्यापार क्या है- इसके उत्तर में दीपिका टीकाकार अन्नम्भट्ट कहते हैं- **'तज्जन्यत्वे सति तज्जन्यजनको व्यापारः'** अर्थात् जो कारण से जन्य हो एवं उसके दूसरे जन्य का जनक हो, वह व्यापार कहा जाता है। जैसे- चाक का घूमना चाक का जन्य अर्थात् कार्य होता हुआ, चाकजन्य घट का जनक है, क्योंकि उसके घूमे बिना घट बन ही नहीं सकता, अतः यह घूमना चाक का व्यापार हुआ।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि **'तज्जन्यत्वे सति तज्जन्यजनकः** यह व्यापार का लक्षण है। **अतः विकल्प C सही है।**

स्त्रोत- तर्कसङ्ग्रह- गोविन्दाचार्य, पेज-188-90

5. 'व्रीहीनवहन्ती' ति कस्य विधेरुदाहरणम् अर्थसङ्ग्रहदिशा–

(A) नियमविधेः (B) आर्थी-परिसङ्ख्याविधेः
(C) श्रौती-परिसङ्ख्याविधेः (D) अपूर्वविधेः

व्याख्या- लौगाक्षिभास्कर कृत अर्थसङ्ग्रह नामक प्रकरणग्रन्थ में नियमविधि का लक्षण इस प्रकार किया है- **'नाना साधनसाध्यक्रियायामेकसाधनप्राप्तौ अप्राप्तस्य अपरसाधनस्य प्रापको विधिर्नियमविधिः।**

अर्थात् विविध साधनों से सिद्ध होने वाली क्रिया के अनुष्ठान में एक साधन के प्राप्त रहने पर अप्राप्त दूसरे साधन की प्राप्ति कराने वाली विधि को 'नियमविधि' कहते हैं।

अत्यन्त अप्राप्त पदार्थ का विधान करने वाली विधि को 'अपूर्वविधि' कहते हैं।

पदार्थ की पाक्षिक अप्राप्ति होने पर तद्विधायक वाक्य को नियमविधि तथा जहाँ दोनों पदार्थों की एक काल में प्राप्ति हो, वहाँ दोनों में से एक पदार्थ को निवृत्ति कराने वाली विधि को 'परिसङ्ख्याविधि' कहते हैं।

जैसा कि लौगाक्षिभास्कर ने तन्त्रवार्तिककार कुमारिलभट्ट का वचन उद्धृत किया है-

विधिरत्यन्तमप्राप्तौ नियमः पाक्षिके सति।
तत्र चान्यत्र च प्राप्तौ परिसङ्ख्येति गीयते॥

उपर्युक्त श्लोक को अर्थसङ्ग्रहकार ने सरल शब्दों में इस प्रकार बताया है-

1. **'प्रमाणान्तरेणाप्राप्तस्य प्रापको विधिरपूर्वविधिः'** अर्थात् प्रमाणान्तर से अप्राप्त पदार्थ के प्रापक वाक्य को अपूर्वविधि कहते हैं। जैसे- 'यजेत स्वर्गकामः।' इत्यादि। प्रकृति में प्रमाणान्तर से स्वर्गप्राप्ति हेतु अप्राप्त याग का विधान किया गया है। अतः यह अपूर्व विधि है।

2. **'पक्षेऽप्राप्तस्य प्रापको विधिर्नियमविधिः।'** पक्ष में अप्राप्त के प्रापक विधि को नियमविधि कहते हैं; जैसे- **''व्रीहीनवहन्ति''।** प्रकृत उदाहरण दर्शपूर्णमास प्रकरण का है। पुरोडाश तैयार करने हेतु व्रीहि (चावल) का अवहनन 'नखविदलन' से भी हो सकता है, परन्तु 'नखविदलन' क्रिया का परित्याग करके 'अवहनन' के द्वारा किया जाना चाहिए, यह नियम 'व्रीहीनवहन्ति' विधि द्वारा किया जाता है। इसीलिए इसे 'नियमविधि' की सञ्ज्ञा दी गई है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'व्रीहीनवहन्ति' नियमविधि का उदाहरण है, **अतः विकल्प A सही है।**

स्रोत- अर्थसङ्ग्रह- राजेश्वरशास्त्रिमुसलगाँवकर, पेज-263

6. 'मानवश्रौतसूत्रम्' केन वेदेन सह सम्बद्धं विद्यते–

(A) ऋग्वेदेन (B) अथर्ववेदेन
(C) सामवेदेन (D) कृष्णयजुर्वेदेन

व्याख्या- वेदों के छः अङ्गों में 'कल्प' वेदाङ्ग को वेदपुरुष का 'हाथ' बताया गया है- **'हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते'** (पा.शि.) कल्पसूत्रों के चार भेद हैं-

(i) श्रौतसूत्र (ii) गृह्यसूत्र (iii) धर्मसूत्र (iv) शुल्बसूत्र

श्रौतसूत्रों में वेदों में वर्णित बड़े यज्ञ-याग-इष्टियों का विस्तृत विवेचन और वर्णन है।

श्रौतसूत्रों का वेदों के अनुसार वर्गीकरण-

1. **ऋग्वेद-** (i) आश्वलायन (ii) शांखायन श्रौतसूत्र

2- **(क) शुक्ल यजुर्वेद-** कात्यायन श्रौतसूत्र

(ख) कृष्ण यजुर्वेद- (i) बौधायन (ii) वाधूल (iii) मानव (मैत्रायणीय) (iv) भारद्वाज (v) आपस्तम्ब (vi) काठक (vii) सत्याषाढ (हिरण्यकेशी) (viii) वैखानस (ix) वाराह

3- **सामवेद-** (i) आर्षेय (मशक) कल्प (ii) क्षुद्रकल्प (iii) जैमिनीय श्रौतसूत्र (iv) लाट्यायन श्रौतसूत्र (v) द्राह्यायण श्रौतसूत्र

4- **अथर्ववेद-** वैतान श्रौतसूत्र।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि मानव श्रौतसूत्र कृष्णयजुर्वेद से सम्बन्धित है, **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-215-16

7. पुरुषस्यास्तित्वं साङ्ख्यरीत्या कस्माद् हेतोः–

(A) त्रैगुण्यात् (B) अधिष्ठानात्
(C) भेदानां परिमाणात् (D) विषयत्वात्

व्याख्या- आचार्य ईश्वरकृष्ण ने अपने साङ्ख्यशास्त्रीय ग्रन्थ साङ्ख्यकारिका में 17वीं कारिका में पाँच हेतुओं से पुरुष का अस्तित्व सिद्ध किया है-

सङ्घातपरार्थत्वात् त्रिगुणादिविपर्ययादधिष्ठानात्।
पुरुषोऽस्ति भोक्तृभावात् कैवल्यार्थं प्रवृत्तेश्च॥ (का.17)

अर्थात् पुरुष (आत्मा) का अस्तित्त्व है, क्योंकि-

1. **सङ्घातपरार्थत्वात्-** क्योंकि जड़ वस्तुओं के सङ्घात अपने से भिन्न दूसरे के लिए होते हैं।

2. **त्रिगुणादिविपर्ययात्-** जडवर्ग में रहने वाले त्रिगुणत्व का अभाव भी किसी में होता है।

3. **अधिष्ठानात्-** सुखदुःखमोहात्मक जडवर्ग को अधिष्ठित करने वाला कोई अधिष्ठाता होता है।

4. **भोक्तृभावात्-** सुखदुःखादि भोग्यपदार्थों का कोई भोक्ता होता है।

5. कैवल्यार्थं प्रवृत्तेश्च- जडवर्ग से भिन्न आत्मरूप कैवल्य को प्राप्त करने के लिए महर्षियों और शास्त्रों की प्रवृत्ति होती है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि पुरुष का अस्तित्व उपर्युक्त पाँच कारणों से सिद्ध होता है; **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- साङ्ख्यकारिका- (का. 17)

8. शब्दनित्यत्वे वार्त्तिककृतः किं प्रमाणम्–

(A) सर्वे सर्वपदादेशाः दाक्षीपुत्रस्य पाणिनेः

(B) तदशिष्यं सञ्ज्ञाप्रमाणत्वात्

(C) पृषोदरादीनि यथोपदिष्टम्

(D) सिद्धन्तु नित्यशब्दत्वात्

व्याख्या- 'सिद्धं तु नित्यशब्दत्वात्' प्रकृत वार्तिक को महाभाष्यकार पतञ्जलि ने तृतीय आह्निक में 'वृद्धिरादैच्' सूत्र के भाष्य में उद्धृत किया है। इस वार्तिक का अर्थ है कि शब्द नित्य होता है अतः 'वृद्धिरादैच्' सूत्र में सञ्ज्ञा सञ्ज्ञी में अन्योन्याश्रय दोष नहीं होगा। वार्तिककार कात्यायन ने शब्द के नित्यत्व की सिद्धि के लिए उपर्युक्त वार्त्तिक लिखा है।

'पृषोदरादीनि यथोपदिष्टम्'।।6.3.109।। पृषोदर-पृषद् उदरं यस्य तत् पृषोदरम्। पृषोदर आदि शब्द जिस रूप में उच्चारित किये गये हैं, वे उसी रूप में साधु हैं। पाणिनि ने पृषोदरादिगण में कुछ शब्द गिनाए हैं जिन्हें व्याकरण शास्त्र के अनुसार ठीक-ठीक सिद्ध नहीं किया जा सकता अतः उन्हें एक गण में रखकर यथावत् साधु मान लिया गया है। श्मशानं शवानां शयनम् इति, दक्षिणतारम्, दक्षिणतीरम्, वाग्वादः, वाड्वालिः आदि।

तदशिष्यं सञ्ज्ञा प्रमाणत्वात्।। 1.2.53।। जिसका शासन किया जा सके उसे शिष्य कहा जाता है। 'अशिष्य' अर्थात् जिसका शासन न किया जा सके। तत् पद के द्वारा प्रासङ्गिक युक्तवद्भाव का निर्देश किया गया है। 'सञ्ज्ञाप्रमाण' का अर्थ है 'लोकव्यवहार' पाणिनि जी का कहना है कि उपर्युक्त युक्तवद्भाव अर्थात् लिङ्ग और वचन का शासन नहीं किया जा सकता क्योंकि वह लोकव्यवहार के अधीन है। जैसे- 'दारा' शब्द स्त्रीवाची है परन्तु लोक में पुँल्लिङ्ग व बहुवचनान्त प्रयुक्त होता है- दाराः।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि **विकल्प D सही है।**

स्रोत- व्याकरण महाभाष्य-(तृतीय आह्निक) चारुदेव शास्त्री, पेज- 132

9. 'अखण्डेषु कारणेषु फलावचः' इत्यनेन कस्यालङ्कारस्य लक्षणं प्रोक्तमाचार्यमम्मटेन–

(A) सङ्करस्य (B) समासोक्तेः

(C) विभावनायाः (D) विशेषोक्तेः

व्याख्या- आचार्य मम्मट ने काव्यप्रकाश के दशम उल्लास में अर्थालङ्कारों का निरूपण किया है।

1. विशेषोक्ति- ''विशेषोक्तिरखण्डेषु कारणेषु फलावचः'' कारणों के मिलने पर भी जहाँ कार्य का कथन नहीं होता वहाँ विशेषोक्ति अलङ्कार होता है। जैसे-

निद्रानिवृत्तावुदिते द्युरत्ने
सखीजने द्वारपदं पराप्ते।
श्लथीकृताश्लेषरसे भुजङ्गे
चचाल नालिङ्गनतोऽङ्गना सा।। (का.475)

निद्रा की निवृत्ति हो जाने पर, सूर्य उदित होने पर, सखियों के द्वारस्थान पर आ जाने पर, प्रेमी के द्वारा आलिङ्गन के आनन्द को शिथिल कर देने पर भी वह अङ्गना आलिङ्गन से नहीं हटी। विशेषोक्ति **तीन** प्रकार की होती है- **अनुक्तनिमित्ता, उक्तनिमित्ता, अचिन्त्यनिमित्ता।**

2. सङ्कर-''अविश्रान्तिजुषामात्मन्यङ्गाङ्गित्वं तु सङ्करः'' अनेक अलङ्कारों की एक वाक्य में स्थिति होने पर संसृष्टि तथा सङ्कर दो अलङ्कार माने जाते हैं।

जहाँ अनेक अलङ्कार परस्पर निरपेक्ष रूप से स्थित होते हैं वहाँ संसृष्टि अलङ्कार होता है- **''सेष्टा संसृष्टिरेतेषां भेदेन यदिह स्थितिः।''**

जहाँ अनेक अलङ्कारों की सापेक्ष स्थिति होती है वहाँ सङ्करालङ्कार माना जाता है। यह तीन प्रकार का होता है- 1. अङ्गाङ्गिभाव सङ्कर 2. सन्देहसङ्कर 3. एकाश्रयानुप्रवेशसङ्कर

उदाहरण-

आत्ते सीमन्तरत्ने मरकतिनि हृते हेमताटङ्कपत्रे
लुप्तायां मेखलायां झटिति मणितुलाकोटियुग्मे गृहीते।
शोणं बिम्बोष्ठकान्त्या त्वदरिमृगदृशामित्वरीणामरण्ये
राजन्! गुञ्जाफलानां स्रज इति शबरा नैव हारं हरन्ति।।

हे राजन्! तुम्हारे डर से जङ्गलों में भागती हुई शत्रुओं की स्त्रियों के मरकतमणियों से युक्त शिरोभूषण छीन लेने पर, सोने के बने ताटङ्कपत्र निकाल लेने पर, करधनी तोड़ लेने पर और मणिजटित नूपुरों को ले लेने पर भी बिम्बासदृश ओष्ठ की कान्ति से लाल हो रहे शुभ्रमोतियों के हार को- ''यह घुँघुचियों की माला है''- ऐसा समझकर भील नहीं छीनते।

3. समासोक्ति-''परोक्तिर्भेदकैः श्लिष्टैः समासोक्तिः।'' श्लेषयुक्त भेदक विशेषणों द्वारा अप्रकृत के व्यवहार का कथन समासोक्ति कहलाता है। समासेन संक्षेपेण उक्तिः समासोक्तिः। उदाहरण-

लब्ध्वा तव बाहुस्पर्शं यस्याः स कोऽप्युल्लासः।
जयलक्ष्मीस्तव विरहे न खलूज्ज्वला दुर्बला ननु सा।।

यहाँ 'जयलक्ष्मी' शब्द केवल अप्रकृत कान्ता-रूपी अर्थ का वाचक नहीं है अपितु श्लेषयुक्त विशेषणों के द्वारा जयलक्ष्मी शब्द नायिका का बोधक भी होता है।

4. विभावना- ''क्रियायाः प्रतिषेधेऽपि फलव्यक्ति-र्विभावना।'' कारण का निषेध होने पर भी फल की उत्पत्ति का वर्णन होने पर विभावनालङ्कार होता है।

कुसुमितलताभिरहताऽप्यधत्त रुजमलिकुलैरदष्टापि।
परिवर्त्तते स्म नलिनीलहरीभिरलोलिताप्यघूर्णत सा॥

खिली हुई लताओं से ताडित न होने पर भी वह नायिका पीड़ा को प्राप्त हो रही थी, भ्रमर कुल से न काटे जाने पर भी तड़प रही थी और कमलिनियों से युक्त लहरों के चक्कर में पड़े बिना भी चक्कर खा रही थी। (का. 474)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि **विकल्प D सही है।**

स्रोत- काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज 498

10. 'अग्निष्टोमाख्यः' सोमयागः कदा अनुष्ठीयते–

(A) शरदि (B) वसन्ते
(C) ग्रीष्मे (D) प्रावृषि

व्याख्या- अग्निष्टोम सोमयाग का एक प्रकार है। सोमलता द्वारा जो यज्ञ किया जाता है उसे सोमयाग कहते हैं। यह वसन्त ऋतु में होता है। यद्यपि यह यज्ञ एक ही दिन में पूर्ण होता है, तथापि अपने अङ्ग के साथ पाँच दिनों में सुसम्पन्न होता है। इस यज्ञ में सोलह ऋत्विक् होते हैं (कात्यायन श्रौतसूत्र 7/1/7) जो कि चार गणों में विभक्त होते हैं- अध्वर्यु, ब्रह्मा, होता, उद्गाता। प्रत्येक गण में चार-चार ऋत्विक् होते हैं।

* **सोमयाग के 7 भेद होते हैं-** अग्निष्टोम (ज्योतिष्टोम), अत्यग्निष्टोम, उक्थ्य, षोडशी, वाजपेय, अतिरात्र, आप्तोर्याम।
* अग्निष्टोम साम में जिस यज्ञ की समाप्ति हो और उसके बाद अन्य साम न पढ़ा जाए उसे 'अग्निष्टोम कहते हैं।
* उक्थ्य साम, षोडशी साम, वाजपेय साम, अतिरात्र साम और आप्तोर्याम नामक साम पढ़कर जिन यज्ञों की समाप्ति होती है, वे यज्ञ क्रम में से उक्थ्य आदि नामों से कहे जाते हैं।
* अग्निष्टोम साम के अनन्तर षोडशी साम जिस यज्ञ में पढ़ा जाता है। वह 'अत्यग्निष्टोम' कहा जाता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'अग्निष्टोम' नामक सोमयाग वसन्त ऋतु में किया जाता है। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- यज्ञ माहात्म्य- वेणीराम शर्मा गौड, पेज-109

11. 'सच्चिदानन्दानन्ताद्वयं ब्रह्म' इत्यादिना वेदान्तसारे किं लक्षितम्–

(A) अवस्तु (B) वस्तु
(C) अज्ञानम् (D) अधिकारी

व्याख्या- सदानन्दयोगीन्द्र प्रणीत वेदान्तदर्शन के प्रकरणग्रन्थ वेदान्तसार में साधनचतुष्टय अर्थात् (i) अधिकारी (ii) विषय (iii) सम्बन्ध, और (iv) प्रयोजन, वस्तु, अवस्तु, अज्ञान आदि का निरूपण किया है।

1. वस्तु- ''वस्तु सच्चिदानन्दानन्ताद्वयं ब्रह्म'' अर्थात् सच्चिदानन्द, अनन्त और अद्वैत ब्रह्म वस्तु है तथा अज्ञान आदि से लेकर सम्पूर्ण जडप्रपञ्च अवस्तु है।

2. अवस्तु- ''अज्ञानादिसकलजडसमूहोऽवस्तु'' अर्थात् अज्ञान आदि से लेकर समस्त जडप्रपञ्च अवस्तु है।

3. अज्ञानम्- ''अज्ञानं तु सदसद्भ्यामनिर्वचनीयं त्रिगुणात्मकं ज्ञानविरोधि भावरूपं यत्किञ्चिदिति वदन्त्यहमज्ञ इत्याद्यनुभवात्...।'' अर्थात् अज्ञान तो सत् और असत् दोनों से विलक्षण होने से अनिर्वचनीय, त्रिगुणात्मक, ज्ञान का विरोधी तथा भावरूप होने से 'यत्किञ्चित्'- ऐसा कहते हैं। 'मैं अज्ञानी हूँ', इत्यादि अनुभव से।

4. अधिकारी-''अधिकारी तु विधिवदधीतवेदवे-दाङ्गत्वेना....'' अर्थात् अधिकारी तो वह जिज्ञासु प्रमाता है जिसने वेद-वेदाङ्गों का विधिपूर्वक अध्ययन करके, सम्पूर्ण वेदों के अभिप्राय को भलीभाँति जान लिया है। इस जन्म अथवा पूर्वजन्म में काम्य और निषिद्ध कर्मों का त्यागकर, नित्य, नैमित्तिक, प्रायश्चित्त और उपासना कर्मों के अनुष्ठान से, सम्पूर्ण पापों से मुक्त, अत्यन्त निर्मल अन्तःकरण वाला होकर, साधन चतुष्टय से सम्पन्न हो।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'सच्चिदानन्दानन्ताद्वयं ब्रह्म' इत्यादि से 'वस्तु' का लक्षण किया गया है।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- वेदान्तसार- राकेश शास्त्री, पेज-149

12. पाणिनीयशिक्षानुसारेण विसर्गस्य रूपपरिवर्तनं (गतिः) कतिविधं भवति–

(A) सप्तविधम् (B) नवविधम्
(C) अष्टविधम् (D) त्रिविधम्

व्याख्या- महर्षि पाणिनि प्रणीत 'पाणिनीय शिक्षा' में विसर्ग की आठ गतियाँ बताई गई हैं-

ओभावश्च विवृत्तिश्च षशसा रेफ एव च।
जिह्वामूलमुपध्मा च गतिरष्टविधोष्मणः॥ (पा.शि.14)

अर्थात् विसर्गात्मक ऊष्मा के आठ स्वरूप उपलब्ध होते हैं-
1. ओकार- शिवो वन्द्यः
2. विवृत्ति- विसर्ग के स्थान में अन्ततोगत्वा आदेश के रूप में आये यकारादि वर्णों का लोप हो जाने पर ('लोपः शाकल्यस्य' आदि नियमों से) तथा अन्य कारणों से भी स्वरों के बीच सन्धि का अभाव 'विवृत्ति' है।
3. षकार - रामष्षष्ठः 4. शकार - हरिश्शेते
5. सकार - कस्कः 6. रेफ - अहर्पतिः
7. जिह्वामूलीय - क≍ करोति 8. उपध्मानीय - प≍ पचति

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि विसर्ग की आठ गतियाँ होती हैं। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- पाणिनीय शिक्षा, श्लोक-14

13. फललक्षणा निम्नलिखितासु लक्षणासु कस्याः पर्याया विद्यते—
(A) गौणीलक्षणायाः (B) रूढिवतीलक्षणायाः
(C) प्रयोजनवतीलक्षणायाः (D) शुद्धालक्षणायाः

व्याख्या- आचार्य विश्वनाथ ने साहित्यदर्पण के द्वितीय परिच्छेद में शब्दशक्ति विवेचन के प्रसङ्ग में लक्षणा के रूढिवती, प्रयोजनवती आदि भेद, तत्पश्चात् प्रयोजनवती लक्षणा के उपादानवती, लक्षणलक्षणा आदि भेद प्रभेद बतलाए हैं। प्रयोजनवती लक्षणा को फललक्षणा भी कहा है- **''व्यङ्ग्यस्य गूढागूढत्वाद् द्विधा स्युः फललक्षणाः। (कारिका 10)**
अर्थात् व्यङ्ग्य के गूढ और अगूढ होने के कारण फललक्षणा वाली अर्थात् प्रयोजनवती लक्षणाएँ पुनः दो प्रकार की होती हैं।
आचार्य विश्वनाथ ने लक्षणा के 80 भेद बताएँ हैं (एवमशीतिप्रकारा लक्षणाः) जबकि आचार्य मम्मट ने 6 भेद बताएँ हैं (लक्षणा तेन षड्विधा- काव्यप्रकाश)

* लक्षणा को **त्रिस्थूणा** कहा गया है क्योंकि इसके तीन प्रमुख आधार स्तम्भ हैं-
(i) मुख्यार्थबाध
(ii) मुख्यार्थ के साथ लक्ष्यार्थ का योग होना
(iii) रूढ़ि अथवा प्रयोजन का लक्ष्यार्थ- हेतु बनना

* अलङ्कारशास्त्र में लक्षणा को 'गौणीवृत्ति' अथवा 'भक्ति' भी कहा गया है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि **विकल्प C सही है।**

स्रोत- साहित्यदर्पण- अभिराज राजेन्द्र मिश्र, पेज-175

14. ''कथाप्रसङ्गेषु मिथः सखीमुखात्तृणेऽपि तन्व्या नलनामनि श्रुते'' अत्र नलपदस्यार्थोऽस्ति-
(A) शत्रुः (B) नृपः
(C) अग्निः (D) तृणम्

व्याख्या- श्रीहर्ष विरचित नैषधीयचरितम् में 22 सर्ग हैं, यह शृङ्गाररस प्रधान महाकाव्य है। इसमें नल दमयन्ती के प्रणय और विवाह की कथा वर्णित है। प्रश्नोक्त पद्यांश प्रथम सर्ग से उद्धृत है। पद्य का अर्थ इस प्रकार है-

कथाप्रसङ्गेषु मिथः सखीमुखात्तृणेऽपि तन्व्या नलनामनि श्रुते।
द्रुतं विधूयान्यदभूयतानया मुदा तदाकर्णनसज्जकर्णया।। (1.35)

मिथः - परस्पर, आपस में **कथाप्रसङ्गेषु-** वार्तालाप के दौरान
सखीमुखात्- सखियों के मुख से **नलनामनि-** नल नामक
तृणे अपि - तृण के भी **श्रुते -** सुनने पर
अनया - यह **तन्व्या -** कृशाङ्गी
द्रुतम् - तुरन्त **अन्यद् -** अन्य कार्य
विधूय - छोड़कर **मुदा -** हर्ष से
तदाकर्णनसज्जकर्णया- उसके कीर्तन सुनने के लिए तत्पर कानों वाली
अभूयत - हो जाती थी।

नैषधीयचरितम् के कुछ अन्य शब्दार्थ-
1. **विनिद्ररोमा-** रोमाञ्चित, विनिद्राणि रोमाणि यस्याः, विनिद्ररोमा 'विनिद्ररोमाजनि शृण्वती नलम्'' (1.34)
2. **अनागसे-** निरपराध के लिए, 'अनागसे शंसति बालचापलम्'। (1.25)
3. **पार्विकशर्वरीश्वरः-** पूर्णिमा का चन्द्रमा, पर्वणि भवः पार्विकः, पार्विकश्चासौ शर्वरीश्वरः चन्द्रमाः, न शारदः पार्विकशर्वरीश्वरः। (1.20)
4. **वेधसा-** ब्रह्मा के द्वारा, 'पुरेदमूर्ध्वं भवतीति वेधसा।' (1.18)
5. **चिकुराः-** केश,'द्विफालबद्धाश्चिकुराः शिरःस्थितम्।' (1.16)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि प्रश्नोक्त पद्यांश में 'नल' शब्द का अर्थ 'तृण' है। **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत- नैषधीयचरितम् (1.35)

15. साहित्यदर्पणानुसारं रसस्य किं विशेषणं न साधु—
(A) लोकानुभूतिः (B) ब्रह्मास्वादसहोदरः
(C) अभिन्नः (D) स्वप्रकाशः

व्याख्या- आचार्य विश्वनाथ प्रणीत काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ में 10 परिच्छेद हैं, तृतीय परिच्छेद में रसनिरूपण करते हुए रस का

स्वरूप तथा आस्वादन का प्रकार बतलाया है-

सत्त्वोद्रेकादखण्डस्वप्रकाशानन्दचिन्मयः।

वेद्यान्तरस्पर्शशून्यो ब्रह्मास्वादसहोदरः॥2॥

लोकोत्तरचमत्कारप्राणः कैश्चित्प्रमातृभिः।

स्वाकारवदभिन्नत्वेनायमास्वाद्यते रसः॥3॥

उपर्युक्त श्लोकों में विश्वनाथ जी ने रस के विशेषण दिए हैं-

1. अखण्ड 2. अद्वितीय 3. स्वयम्प्रकाश
4. आनन्दस्वरूप 5. चिन्मय 6. वेद्यान्तर स्पर्शशून्य अर्थात् रससाक्षात्कार के समय अन्य विषयों के स्पर्श से शून्य
7. ब्रह्मास्वादसहोदर 8. अलौकिक चमत्कार रूपी प्राण (सार) वाला 9. स्वाकारवत् 10. अभिन्न

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि रस के विशेषणों में से 'लोकानुभूति' रस का विशेषण नहीं है। **अतः विकल्प A सही है।**

स्रोत- साहित्यदर्पण- शालिग्राम शास्त्री, पेज-48

16. तस्मादकृतकं शास्त्रं स्मृतिं च सनिबन्धनाम्।
आश्रित्यारभ्यते शिष्टैः शब्दानामनुशासनम्॥
वाक्यपदीयस्यास्यां कारिकायाम् 'अकृतकं शास्त्रम्' इति किम्?

(A) ब्रह्मसूत्रम् (B) व्याकरणशास्त्रम्
(C) मीमांसाशास्त्रम् (D) अपौरुषेयं शास्त्रम्

व्याख्या- महावैयाकरण भर्तृहरि ने वाक्यपदीय के ब्रह्मकाण्ड की 43वीं कारिका में वेदों को 'अकृतकं शास्त्रम्' कहा है।

अन्वयः - तस्मात् अकृतकम् शास्त्रम् सनिबन्धनाम् स्मृतिम् च आश्रित्य शिष्टैः शब्दानाम् अनुशासनम् आरभ्यते।।

तस्मात् - इस कारण
अकृतकम् - अकृत्रिम, अपौरुषेय
शास्त्रम् - ऋग्वेदादि शास्त्र
च - और
सनिबन्धनाम् - सनिमित्तक
स्मृतिम् - साङ्गोपाङ्गरूप स्मृति को
आश्रित्य - आश्रय करके
शिष्टैः - वेदादि शास्त्रज्ञ महर्षियों के द्वारा
शब्दानाम् अनुशासनम् - लौकिक और वैदिक साधु शब्दों का उपदेश
आरभ्यते - किया जाता रहा है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'अकृतकं शास्त्रम्' का अर्थ 'अपौरुषेयं शास्त्रम्' है। **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत- वाक्यपदीयम्- जयदत्त उप्रेती, पेज-31

17. 'तादात्म्यसम्बन्धावच्छिन्नप्रतियोगिताकः' तर्कसङ्ग्रहे कः प्रोक्तः–

(A) प्रागभावः (B) प्रध्वंसाभावः
(C) अन्योन्याभावः (D) अत्यन्ताभावः

व्याख्या- तर्कसङ्ग्रह नामक न्यायवैशेषिकशास्त्र से सम्बद्ध प्रकरणग्रन्थ में अन्नम्भट्ट ने वैशेषिक दर्शन में मान्य सप्तपदार्थों का निरूपण किया है- द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय और अभाव। इनमें से अभाव नामक पदार्थ चार प्रकार का होता है-

1. प्रागभाव- (अनादिः सान्तः प्रागभावः) जिसका आदि नहीं है और अन्त है। यह कार्योत्पत्ति के बाद होता है।

2. प्रध्वंसाभाव- (सादिरनन्तः प्रध्वंसः) जिसका आदि है किन्तु अन्त नहीं। यह कार्योत्पत्ति के बाद होता है।

3. अत्यन्ताभाव- (त्रैकालिकसंसर्गावच्छिन्नप्रतियोगिताकः) भूत, भविष्य, वर्तमान तीनों कालों में होने वाले और संसर्गयुक्त प्रतियोगिता जिसमें है। जैसे- भूतल में घट नहीं है।

4. अन्योन्याभाव- (तादात्म्यसम्बन्धावच्छिन्नप्रतियोगिताकः) तादात्म्य- सम्बन्ध से युक्त प्रतियोगिता वाले अभाव को अन्योन्याभाव कहा जाता है। जैसे- घट पट नहीं है और पट घट नहीं है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि प्रश्नोक्त लक्षण अन्योन्याभाव का है। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- तर्कसङ्ग्रह- गोविन्दाचार्य, पेज- 288

18. ''सहस्रगुणमुत्स्रष्टुमादत्ते हि रसं रविः'' उक्तिरियं कुत्र प्राप्यते–

(A) किरातार्जुनीये (B) रघुवंशे
(C) मेघदूते (D) मालविकाग्निमित्रे

व्याख्या- 1. रघुवंशम्- कालिदास रचित 19 सर्गों वाला, लघुत्रयी में परिगणित, 31 रघुवंशी राजाओं के वर्णन से युक्त, वीर रसप्रधान सुप्रसिद्ध महाकाव्य है।

प्रमुख सूक्तियाँ-

1. हेम्नः संलक्ष्यते ह्यग्नौ विशुद्धिः श्यामिकाऽपि वा।। (1.10)
2. सहस्रगुणमुत्स्रष्टुमादत्ते हि रसं रविः।।(1.18)
3. प्रतिबध्नाति हि श्रेयः पूज्यपूजाव्यतिक्रमः।। (1.79)
4. स्ववीर्यगुप्ता हि मनोः प्रसूतिः।।(2.4)

5. तेजसां हि न वयः समीक्ष्यते।। (11.1)

2. किरातार्जुनीयम्- भारवि रचित 18 सर्गों का वीररसप्रधान, बृहत्त्रयी में परिगणित महाकाव्य है। इसमें किरातरूपी शिव और अर्जुन के युद्ध व पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति का वर्णन मुख्यरूप से है।

प्रमुख सूक्तियाँ-

1. हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः। (1.4)
2. वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः। (1.8)
3. अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता। (1.23)
4. विचित्ररूपाः खलु चित्तवृत्तयः। (1.37)
5. सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः परमापदां पदम्। (2.30)

3. मेघदूतम्- कालिदासरचित विप्रलम्भशृङ्गार से परिपूर्ण, लघुत्रयी में परिगणित खण्डकाव्य है। इसप्रकार मल्लिनाथ की 'संजीवनी' टीका सुप्रसिद्ध है। सम्पूर्ण ग्रन्थ मन्दाक्रान्ता छन्द में रचित है। 50 से अधिक संस्कृत टीकाएँ प्राप्त होती है।

कुछ प्रमुख सूक्तियाँ निम्नलिखित हैं-

1. कामार्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु। (पूर्वमेघ-5 कामार्त स्वभाव से ही चेतन एवं अचेतन के विषय में अविवेकी हो जाते हैं)

2. याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा। (पूर्वमेघ-6) (उच्चगुण वाले व्यक्ति से निष्फल याचना भी श्रेष्ठ है किन्तु नीच से सफल याचना भी श्रेष्ठ नहीं)

3. रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय। (पूर्वमेघ-20) सभी रिक्त पदार्थ हल्के और पूर्ण पदार्थ गौरवयुक्त होते हैं।

4. कान्तोदन्तः सुहृदुपनतः सङ्गमात्किञ्चिदूनः। (उत्तरमेघ-40) (मित्र द्वारा लाया गया प्रियतम का सन्देश प्रिय मिलन से कुछ ही कम होता है।)

4. मालविकाग्निमित्रम्- कालिदास प्रणीत, शृङ्गार रसप्रधान, 5 अङ्कों का नाटक है। इसमें मालविका और अग्निमित्र के प्रणय और विवाह का वर्णन है। कुछ प्रमुख सूक्तियाँ-

1. पुराणमित्येव न साधु सर्वम्। (1.2)
(प्राचीन है- इतने मात्र से ही सब कुछ अच्छा नहीं होता।)

2. कार्यसिद्धिपथः सूक्ष्मः स्नेहेनाप्युपलभ्यते। (4.6)

3. नाट्यं भिन्नरुचेर्जनस्य बहुधाप्येकं समाराधकम्। (1.4)

स्पष्टीकरण - उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि प्रश्नोक्त सूक्ति रघुवंशम् की है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- रघुवंशम् (1/8)

19. कतिविधास्तुष्टयः साङ्ख्ये परिगणिताः–

(A) अष्टौ (B) सप्त
(C) नव (D) तिस्रः

व्याख्या- आचार्य ईश्वरकृष्ण ने अपने सांख्यशास्त्रीय ग्रन्थ सांख्यकारिका की 47वीं कारिका में विपर्यय (अविद्या), अशक्ति, तुष्टि तथा सिद्धि के भेदों को गिनाया है-

पञ्चविपर्ययभेदा भवन्त्यशक्तिश्च करणवैकल्यात्।
अष्टाविंशतिभेदा तुष्टिर्नवधाऽष्टधा सिद्धिः॥ (का.47)

अर्थात् **1-** विपर्यय अर्थात् अविद्या के पाँच भेद होते हैं- (i) अविद्या (ii) अस्मिता (iii) राग (iv) द्वेष (v) अभिनिवेश

2- इन्द्रिय विकलता से उत्पन्न अशक्ति के 11 भेद, नौ तुष्टियों की विपर्ययरूप नौ तुष्टियाँ, आठ सिद्धियों की विपर्ययरूप आठ असिद्धियाँ = 28 भेद

3- तुष्टि के 9 भेद होते हैं- (i) प्रकृति, (ii) उपादान, (iii) काल और (iv) भाग्य-चार आध्यात्मिक तुष्टियाँ शब्दादि विषयों से वैराग्य होने पर पाँच बाह्य तुष्टियाँ = (v) पार (vi) सुपार (vii) पारापार (viii) अनुत्तमाम्भस् (ix) उत्तमाम्भस् ।

4- सिद्धि के 8 भेद- अध्ययन, शब्द, ऊह, सुहृत्प्राप्ति और दान-ये पाँच सिद्धियाँ तथा दुःखत्रय की विघातरूप तीन और सिद्धियाँ।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि तुष्टियाँ नौ प्रकार की होती हैं। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- साङ्ख्यकारिका- सन्तनारायण श्रीवास्तव्य, पेज-271

20. 'शब्दज्ञानानुपाती वस्तुशून्यः' इति लक्षणलक्षिता चित्तवृत्तिः का योगदर्शनानुसारेण –

(A) विपर्ययः (B) निद्रा
(C) प्रमाणम् (D) विकल्पः

व्याख्या- महर्षि पतञ्जलि प्रणीत 'योगदर्शन' भारतीय आस्तिक षड्दर्शनों में अन्यतम है। इसमें चार पाद हैं- 1. समाधिपाद 2. साधनपाद 3. विभूतिपाद 4. कैवल्यपाद।

1. विपर्यय- विपर्ययो मिथ्याज्ञानमतद्रूपप्रतिष्ठम्॥ अर्थात् जो उस वस्तु के स्वरूप में प्रतिष्ठित नहीं है, ऐसा मिथ्याज्ञान विपर्यय कहलाता है।

2. निद्रा- अभावप्रत्ययालम्बना वृत्तिर्निद्रा- अभाव के ज्ञान का अवलम्बन करने वाली वृत्ति निद्रा है। (सूत्र 10)

3. प्रमाण- प्रमाणवृत्ति तीन प्रकार की होती है- **प्रत्यक्षानुमानागमाः प्रमाणानि॥** (सूत्र 7)

4. विकल्प- शब्दज्ञानानुपाती वस्तुशून्यो विकल्पः॥ (सूत्र 9) अर्थात् जो ज्ञान शब्दजनित ज्ञान के साथ-साथ होने वाला है और जिसका विषय वास्तव में नहीं है, वह विकल्प है

5. स्मृति- अनुभूतविषयासम्प्रमोषः स्मृतिः॥ (सूत्र 11) अर्थात् अनुभव किये हुए विषय का न छिपना अर्थात् प्रकट हो जाना स्मृति है। उपर्युक्त पाँचों चित्त की वृत्तियाँ हैं।
महर्षि पतञ्जलि के अनुसार चित्त की वृत्तियाँ असंख्य होती हैं। अतः उनको पाँच श्रेणियों में बाँटा गया है-

वृत्तयः पञ्चतय्यः क्लिष्टाऽक्लिष्टाः॥ (सूत्र 5)

प्रमाणविपर्ययविकल्पनिद्रास्मृतयः॥ (सूत्र 6)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि **विकल्प D सही है।**
स्रोत- पातञ्जलयोगदर्शन - सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव - पेज 38

21. 'ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति' उक्तिरियं कुत्र प्राप्यते –
(A) हर्षचरिते (B) मालविकाग्निमित्रे
(C) उत्तररामचरिते (D) नैषधीयचरिते

व्याख्या- 1. हर्षचरित- यह बाणभट्ट की प्रथम रचना मानी जाती है। इस आख्यायिका में आठ उच्छ्वास हैं। प्रथम दो उच्छ्वासों में हर्ष ने अपने वंश का वर्णन किया है और आगे के 6 उच्छ्वासों में हर्ष के पूर्वजों का वर्णन करते हुए हर्ष जन्म से लेकर राज्यश्री के मिलने तक का वर्णन है। यह ग्रन्थ अपूर्ण है। इसकी कुछ प्रसिद्ध सूक्तियाँ निम्नलिखित हैं-
* **मरणाच्च मे जीवितमेवास्मिन्समये साहसम्।** (पञ्चमोच्छ्वास) (मरने से बढ़कर साहस का काम मेरा जीवित रहना है।)
* **परिवर्तमानः एकः कालः शैलानिवानन्तः।** (5/2) (एकाकी कालचक्र जब परिवर्तित होता है तो अनेक महापुरुषों को समान समय में ही बिना किसी लगाव के समाप्त कर डालता है।)
* **नियतिर्विधाय पुंसां प्रथमं सुखमुपरि दारुणं दुःखम्।** (5/1)

(नियति प्रारम्भ में मनुष्यों को सुख प्रदान करके फिर वज्र के सदृश कठोर दुःख प्रदान करने लगती है।)

2. मालविकाग्निमित्रम्- कालिदास प्रणीत, शृङ्गाररसप्रधान 5 अङ्कों का नाटक है। इसमें कुल 96 श्लोक। इसमें मालविका और अग्निमित्र के प्रणय और विवाह का वर्णन है। अग्निमित्र धीरललित कोटि का नायक है। इसकी कुछ प्रसिद्ध उक्तियाँ निम्नलिखित हैं-
* **पुराणमित्येव न साधु सर्वं न चापि काव्यं नवमित्यवद्यम्।**
सन्तः परीक्ष्यान्यतरद् भजन्ते मूढः परप्रत्ययनेयबुद्धिः॥ (1-2)
* **कार्यसिद्धिपथः सूक्ष्मः स्नेहेनाप्युपलभ्यते। (4.6)**
* **श्लिष्टा क्रिया कस्यचिदात्मसंस्था**
संक्रान्तिरन्यस्य विशेषयुक्ता।
यस्योभयं साधु स शिक्षकाणां
धुरि प्रतिष्ठापयितव्य एव॥ (1.16)
* **नाट्यं भिन्नरुचेर्जनस्य बहुधाप्येकं समाराधकम्। (1.4)**

3. उत्तररामचरित- यह भवभूति विरचित 7 अङ्कों का करुणरसप्रधान नाटक है। इसके उपजीव्य वाल्मीकिरामायण का उत्तरकाण्ड (सर्ग 42-97) और पद्मपुराण, पातालखण्ड, अध्याय 1-68 तक माने जाते हैं। सप्तम अङ्क में गर्भाङ्क की योजना, विदूषक रहित नाटक, तृतीय अङ्क में छायाङ्क की योजना इसकी प्रमुख विशेषताएँ हैं। कुछ प्रमुख सूक्तियाँ निम्नलिखित हैं-
* **अपिग्रावा रोदित्यपि दलति वज्रस्य हृदयम्। (1/28)**
* **तीर्थोदकं च वह्निश्च नान्यतः शुद्धिमर्हतः। (1/13)**
* **ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति। (1/10)**
* **सतां केनापि कार्येण लोकस्याराधनं व्रतम्॥ (1/41)**
* **गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः। (4/11)**
* **नैषधीयचरितम्-** श्रीहर्ष विरचित 22 सर्गों का शृङ्गारप्रधान, वैदर्भी रीति- संवलित, बृहत्त्रयी में परिगणित सुप्रसिद्ध महाकाव्य है। इसमें नल-दमयन्ती की प्रणयकथा वर्णित है।

कुछ प्रमुख सूक्तियाँ-
* **क्व भोगमाप्नोति न भाग्यभाग्जनः। (1/102)**
* **आर्जवं हि कुटिलेषु न नीतिः। (5/103)**
* **कार्यं निदानाद्धि गुणानधीते। (3/17)**
* **झटिति पराशयवेदिनो हि विज्ञाः। (4/118)**
* **भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः। (17/70)**

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि **विकल्प C सही है।**
स्रोत- उत्तररामचरितम् (1.10)

22. 'राजन्तमध्वराणां गोपामृतस्य दीदिविम् '– अत्र 'दीदिविम् ' पदस्य कोऽर्थः?
(A) इन्द्रम् (B) प्रकाशमानम्
(C) द्युलोकम् (D) पुनर्जायमानम्

व्याख्या- उपर्युक्त मन्त्र ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के प्रथम सूक्त का आठवाँ मन्त्र है। अग्निसूक्त के ऋषि मधुच्छन्दा, देवता-अग्नि, छन्द-गायत्री है। गायत्री छन्द चौबीस वर्णों का होता है।
राजन्तमध्वराणां गोपामृतस्य दीदिविम्। वर्धमानं स्वे दमे॥
राजन्तम्- प्रकाशित होते हुए, अध्वराणां-हिंसारहित यज्ञों के गोपाम्-रक्षक, ऋतस्य-सत्य कर्मफलों के, दीदिविम्-पुनःपुनः प्रकाशमान,

वर्धमानम्-बढ़ने वाले, स्वे-अपने, दमे-यज्ञशाला में।
दीदिविम्- यङ्लुगन्त 'दिव्' धातु से 'कि' प्रत्यय
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'दीदिविम्' का अर्थ 'प्रकाशमानम्' है **अतः विकल्प B सही है।**
स्रोत- ऋक्सूक्तसङ्ग्रह - हरिदत्त शास्त्री, पेज-60

23. कस्माद् हेतोः प्रधानस्यानुपलब्धिः सांख्यरीत्या?
(A) समानाभिहारात् (B) सौक्ष्म्यात्
(C) अतिदूरात् (D) मनोऽनवस्थानात्

व्याख्या- आचार्य ईश्वरकृष्ण ने अपने साङ्ख्यशास्त्रीय ग्रन्थ साङ्ख्यकारिका की 7वीं कारिका में यह बताया है कि किन कारणों से विद्यमान होने पर भी वस्तुओं का प्रत्यक्षज्ञान नहीं होता है, वे कारण हैं-

1. अत्यधिक दूर होने से [अतिदूरात्]
2. अत्यधिक समीप होने से [सामीप्यात्]
3. इन्द्रिय के नाश होने से [इन्द्रियघातात्]
4. मन की अस्थिरता से [मनः अनवस्थानात्]
5. सूक्ष्म होने से [सौक्ष्म्यात्]
6. किसी व्यवधान के आ जाने से [व्यवधानात्]
7. किसी के द्वारा अभिभूत हो जाने से [अभिभवात्]
8. समानजातीय वस्तु में मिल जाने से [समानाभिहारात्]

इस प्रश्न पर कि उपर्युक्त कारणों में से कौन सा कारण है जिससे प्रधान-पुरुष आदि का प्रत्यक्ष नहीं हो पाता, 8वीं कारिका में बतलाया है-

सौक्ष्म्यात् तदनुपलब्धिर्नाभावात् कार्यतस्तदुपलब्धेः।
महदादि तच्च कार्यं प्रकृतिसरूपं विरूपं च ॥ (का. 8)

अर्थात् उन प्रधान पुरुषादि का अप्रत्यक्ष होना, सूक्ष्म (निरवयव) होने के कारण है, उनके अभाव के कारण नहीं है, क्योंकि अपने कार्यरूप लिङ्ग से उनकी उपलब्धि होती है अर्थात् अनुमान से उनकी उपलब्धि होती है, और वे कार्य हैं महत्तत्त्वादि, जिनका प्रकृति के साथ सारूप्य (साधर्म्य) भी है और वैरूप्य भी।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि प्रधान के अत्यन्त सूक्ष्म होने के कारण (सौक्ष्म्यात्) उसकी उपलब्धि प्रत्यक्ष प्रमाण द्वारा सम्भव नहीं हो पाती अपितु उसके कार्यरूप लिङ्ग से उसकी अनुमिति होती है। **अतः विकल्प B सही है।**
स्रोत- सांख्यकारिका - (का ० 8)

24. तर्कभाषारीत्या अभावात्मककार्यस्य कारणं कीदृशम्भवति?
(A) निमित्तकारणम् (B) असमवायिकारणम्
(C) समवाय्यसमवायिकारणम् (D) समवायिकारणम्

व्याख्या- * विश्व में दो प्रकार के कार्य माने गये हैं- 1. भावात्मक या भावकार्य; जैसे- घट-पट-आदि कार्य और 2. अभावात्मक कार्य
* न्याय वैशेषिक के अनुसार भावकार्य वे कहे जा सकते हैं, जिनमें सत्ता नामक सामान्य रहती है। द्रव्य, गुण तथा कर्म में ही सत्ता जाति रहती है। अतः भावकार्य का अर्थ है द्रव्य, गुण तथा कर्म के रूप में होने वाले कार्य।
* न्याय वैशेषिक मत में अभाव भी एक पदार्थ है जो कि अभावात्मक है। अभाव चार प्रकार का है- प्रागभाव, प्रध्वंसाभाव, अत्यन्ताभाव और अन्योन्याभाव। इनमें से केवल प्रध्वंसाभाव ही कार्यरूप है, अन्य नहीं।
* समवायि, असमवायि तथा निमित्त यह तीन प्रकार का कारण भावात्मक कार्यों का ही होता है।
* जो अभावात्मक कार्य अर्थात् प्रध्वंसाभाव है उसका तो केवल निमित्त कारण ही होता है।
* जैसा तर्कभाषाकार आचार्य केशवमिश्र ने कारण निरूपण के प्रसंग में इस प्रकार कहा है-
''तदेतद् भावानामेव त्रिविधं कारणम्। अभावस्य तु निमित्तमात्रं तस्य क्वचिदप्यसमवायात्। समवायस्य भावद्वयधर्मत्वात्।''
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि अभावात्मक कार्य का कारण निमित्त कारण होता है **अतः विकल्प A सही है।**
स्रोत- तर्कभाषा- श्रीनिवास शास्त्री, पेज-43-44

25. साहित्यदर्पणानुसारं रसास्वादने को हेतुः?
(A) काव्यपाठः (B) पात्राणि
(C) सहृदयता (D) सत्त्वोद्रेकः

व्याख्या- आचार्य विश्वनाथ ने अपने काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ साहित्यदर्पण के तृतीय परिच्छेद में रसनिरूपण करने के साथ ही रसास्वादन का हेतु भी बतलाया है-

सत्त्वोद्रेकादखण्डस्वप्रकाशानन्दचिन्मयः।
वेद्यान्तरस्पर्शशून्यो ब्रह्मास्वादसहोदरः॥
लोकोत्तरचमत्कारप्राणः कैश्चित्प्रमातृभिः।
स्वाकारवदभिन्नत्वेनायमास्वाद्यते रसः॥ (कारिका 3/2-3)

* अर्थात् सत्त्व का उद्रेक होने के कारण, कुछ प्रमाताओं (सहृदयों)

द्वारा अखण्ड (अद्वितीय) स्वयंप्रकाशस्वरूप, आनन्दमय, अनुभूयमान अन्य विषय के संस्पर्श से शून्य, ब्रह्मास्वादसहोदर अलौकिक चमत्कार से अनुप्राणित इस रस का, अपने आकार की ही भाँति अभिन्नरूप से आस्वादन किया जाता है।

* रजोगुण तथा तमोगुण से अस्पृष्ट मन को यहाँ सत्त्व कहा गया है।

* इस सत्त्व के उद्रेक का अर्थ है- रजोगुण एवं तमोगुण को अभिभूत कर उसका प्रकाशित होना।

* इस सत्त्वोद्रेक का कारण होता है- 'उसी प्रकार के अलौकिक काव्यार्थ का अनुशीलन।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'सत्त्वोद्रेक' ही रसास्वादन में हेतु है **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत- साहित्यदर्पण- अभिराज राजेन्द्र मिश्र, पृष्ठ-218

26. जहदजहल्लक्षणायाः वेदान्ते किमपरं नाम प्रयुक्तम्?

(A) भागलक्षणा (B) सारोपालक्षणा

(C) जहल्लक्षणा (D) अजहल्लक्षणा

व्याख्या- मुख्यार्थ का बाध होने पर उससे युक्त अर्थान्तर का ग्रहण जिस शक्ति से होता है, उसे लक्षणा कहते हैं, जो अर्थान्तर गृहीत होता है वह लक्ष्यार्थ तथा जिस पद में लक्षणा होती है, उसे लाक्षणिक पद कहते हैं।

यह लक्षणा तीन प्रकार की होती है- 1. जहल्लक्षणा, 2. अजहल्लक्षणा, 3. जहदजहल्लक्षणा।

➢ **जहल्लक्षणा-** वाच्यार्थ का पूर्णरूप से परित्याग हो जाने पर उससे संबद्ध दूसरे अर्थ का बोध कराने वाली शब्द की वृत्ति को जहल्लक्षणा कहते हैं। जैसे- **'गङ्गायां घोषः'** इसमें गङ्गा शब्द अपने प्रवाहरूप मुख्य अर्थ का बाध हो जाने पर उसका परित्याग कर उससे सम्बद्ध गङ्गातट रूप अर्थान्तर का बोध कराता है। घोष अर्थात् गाँव या बस्ती का आधार गङ्गा की धारा या प्रवाह तो हो नहीं सकता इसलिए उसका बाध या परित्याग हो जाता है। तदनन्तर गङ्गा से सम्बद्ध तट रूप अर्थ लिया जाता है।

➢ **अजहल्लक्षणा-** अजहल्लक्षणा वह लक्षणा है जिसमें वाच्यार्थ या मुख्यार्थ का परित्याग किये बिना उससे सम्बद्ध अर्थ का बोध या ग्रहण हो जाता है। इसको **उपादान लक्षणा** भी कहते हैं, क्योंकि वाच्यार्थ से अतिरिक्त अर्थ का उपादान या ग्रहण इस लक्षणा के द्वारा किया जाता है। जैसे- **'कुन्ताः प्रविशन्ति'।** कुन्त अर्थात् भालों का तो प्रविशन्ति क्रिया के साथ अन्वय बनता नहीं, क्योंकि प्रवेश क्रिया को जीवित पदार्थ ही कर सकता है। भाले तो जड़ पदार्थ हैं। अतः 'कुन्ताः' का 'कुन्तधारिणः' अर्थात् 'भाले वाले पुरुष' ऐसा अर्थ लक्षणा से ग्रहण किया गया।

➢ **जहदजहल्लक्षणा-** तीसरी लक्षणा जहदजहल्लक्षणा इसलिए कही जाती है, क्योंकि इसमें मुख्य अर्थ या वाच्यार्थ का अंशतः तो त्याग होता है, परन्तु अंशतः त्याग नहीं (अजहत्) होता है। दूसरे शब्दों में, इस लक्षणा में वाच्यार्थ का पूर्णतः त्याग न होकर एक ही अंश या भाग का त्याग होता है। इसी से इसका दूसरा नाम **'भागत्याग लक्षणा'** और संक्षिप्त नाम केवल **'भागलक्षणा' है,** जैसा कि वेदान्तसार में दिये गये **'तत्त्वमसि'** वाक्य के अर्थ बोध में अपेक्षित इस लक्षणा को इसी नाम से निर्दिष्ट करने से स्पष्ट है। पूर्ण अर्थ के एक भाग का ग्रहण करने से भी इसका भागलक्षणा नाम माना जा सकता है। जैसे- **सोऽयं देवदत्तः आदि।**

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि जहदजहल्लक्षणा को वेदान्त में 'भागलक्षणा' या 'भागत्यागलक्षणा' भी कहते हैं। **अतः विकल्प A सही है।**

स्रोत- वेदान्तसार - राकेश शास्त्री, पेज 235

27. अधोऽङ्कितेषु केन सह कस्य सम्बन्धः?

समुचितां तालिकां चिनुत -

(a)	अयोगात्मकभाषा	(i)	संस्कृत भाषा
(b)	श्लिष्टयोगात्मकभाषा	(ii)	तुर्की
(c)	प्रश्लिष्टयोगात्मकभाषा	(iii)	तिब्बती भाषा
(d)	अश्लिष्टयोगात्मकभाषा	(iv)	चेरोफी

Options

(A) (a) (iv), (b) (iii), (c) (ii), (d) (i)

(B) (a) (ii), (b) (i), (c) (iv), (d) (iii)

(C) (a) (i), (b) (ii), (c) (iii), (d) (iv)

(D) (a) (iii), (b) (i), (c) (iv), (d) (ii)

व्याख्या- विश्व की भाषाओं के दो प्रकार के वर्गीकरण हैं- आकृतिमूलक और पारिवारिक। आकृतिमूलक वर्गीकरण के दो भेद हैं- योगात्मक और अयोगात्मक। अयोगात्मक भेद एक ही प्रकार का है। योगात्मक के तीन भेद हैं- 1. श्लिष्ट, 2. अश्लिष्ट, 3. प्रश्लिष्ट। योगात्मक भाषाएँ प्रकृति और प्रत्यय के संयोग से बनी हुई होती हैं।

आकृतिकमूलक वर्गीकरण-

1. अयोगात्मक भाषाएँ- अयोगात्मक उन भाषाओं को कहते हैं, जिनमें प्रकृति और प्रत्यय या अर्थतत्त्व और सम्बन्धतत्त्व का

संयोग नहीं होता है। प्रत्येक शब्द स्वतंत्र होता है। इसमें प्रत्येक शब्द प्रकृति या मूल के तुल्य होता है, अतः इसे Root (धातु,मूल) Language कहते हैं। इन भाषाओं में प्रकृति और प्रत्यय जैसी चीज नहीं होती। इस वर्ग के अन्तर्गत आने वाली भाषाएँ हैं- चीनी, तिब्बती आदि।

2. योगात्मक भाषाएँ- योगात्मक भाषाएँ उनको कहते हैं, जिनमें प्रकृति और प्रत्यय का संयोग रहता है। प्रकृति (अर्थतत्त्व) और प्रत्यय (सम्बन्धतत्त्व) का संयोग विभिन्न प्रकार से हो सकता है, अतः योगात्मक भाषाओं को तीन वर्गों में विभक्त किया गया है- (1) अश्लिष्ट (2) श्लिष्ट (3) प्रश्लिष्ट

(क) अश्लिष्ट योगात्मक भाषाएँ- अश्लिष्ट योगात्मक भाषाओं में प्रकृति और प्रत्यय इस प्रकार जुड़ा हुआ होता है कि दोनों को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। इसके चार भाग किये गये हैं- (1) पूर्वयोगात्मक (2) मध्ययोगात्मक (3) अन्तयोगात्मक (4) पूर्वान्तयोगात्मक इस वर्ग की भाषाओं में- 'काफिर, सन्थाली, तुर्की, मफोर' आदि प्रमुख हैं।

(ख) श्लिष्ट योगात्मक भाषाएँ- श्लिष्ट योगात्मक भाषाओं में प्रकृति और प्रत्यय घनिष्ठता से मिले होते हैं। दोनों इस प्रकार मिले होते हैं कि प्रकृति और प्रत्यय को अलग-अलग बताना संभव नहीं होता है। इसके दो भाग किये गये हैं और दोनों के पुनः दो-दो भाग हैं-

(1) अन्तर्मुखी श्लिष्ट- अन्तर्मुखी श्लिष्ट के दो भेद- (क) संयोगात्मक अन्तर्मुखी (ख) वियोगात्मक अन्तर्मुखी

(2) बहिर्मुखी श्लिष्ट- बहिर्मुखी श्लिष्ट के दो भेद- (क) संयोगात्मक बहिर्मुखी (ख) वियोगात्मक बहिर्मुखी।

इस वर्ग की प्रमुख भाषाओं में हैं- अरबी, हिब्रू, संस्कृत तथा हिन्दी।

(ग) प्रश्लिष्ट योगात्मक भाषाएँ- प्रश्लिष्ट योगात्मक भाषाओं में प्रकृति और प्रत्यय इतने अधिक घनिष्ठ रूप से मिले होते हैं कि दोनों को न अलग पहचाना जा सकता है और न दोनों को एक-दूसरे से अलग किया जा सकता है। इसके दो भेद किये गये- (1) पूर्ण प्रश्लिष्ट योगात्मक (2) आंशिक प्रश्लिष्ट योगात्मक।

इस वर्ग की भाषाएँ हैं- चेरोकी, बास्क

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि तिब्बती भाषा अयोगात्मक भाषा है, संस्कृत, श्लिष्ट योगात्मक, चेरोकी प्रश्लिष्ट योगात्मक तथा तुर्की अश्लिष्ट योगात्मक है। **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत- भाषाविज्ञान - भोलानाथ तिवारी, पेज 96-99

28. अजहत्स्वार्था लक्षणा का भवति?

(A) लक्षणलक्षणा (B) फललक्षणा
(C) उपादानलक्षणा (D) साध्यवसानिका

व्याख्या- महाकवि विश्वनाथ अपने ग्रन्थ साहित्यदर्पण में अभिधा शक्ति का निरूपण करने के बाद लक्षणा का विवेचन करते हुए कहते हैं-

मुख्यार्थबाधे तद्युक्तो ययाऽन्योऽर्थः प्रतीयते।
रूढेः प्रयोजनाद्वाऽसौ लक्षणा शक्तिरर्पिता॥ (2/5)

अर्थ- मुख्यार्थ के बाधित होने पर रूढि अथवा प्रयोजन के बल पर जिस शब्दशक्ति के द्वारा उस (मुख्यार्थ) से संयुक्त अर्थ की प्रतीति होती है, वही लक्षणा है। यह अर्पित अर्थात् आरोपित शब्दशक्ति है (न कि अभिधा के समान स्वाभाविक शक्ति)।

उपादान लक्षणा- साहित्यदर्पणकार विश्वनाथ ग्रन्थ के द्वितीय परिच्छेद की कारिका संख्या 6 में उपादान लक्षणा की विवेचना करते हुए कहते हैं-

मुख्यार्थस्येतराक्षेपो वाक्यार्थेऽन्वयसिद्धये।
स्यादात्मनोऽप्युपादानादेषोपादानलक्षणा॥ (2/6)

अर्थ- जब वाक्यार्थ में अपने अन्वय की सिद्धि के लिए, मुख्यार्थ अन्य अर्थ का आक्षेप (ग्रहण) कर लेता है तब अपना भी अस्तित्व बने रहने के कारण इसे उपादान लक्षणा कहते हैं। इसी को वैयाकरण 'अजहत्स्वार्था लक्षणा' कहते हैं। जैसे- काकेभ्यो दधि रक्ष्यताम् । अजहल्लक्षणा का लक्षणा है जिसमें मुख्यार्थ का बिना परित्याग किए उससे सम्बद्ध अर्थ का बोध हो जाता है।

रूढि में उपादान लक्षणा का उदाहरण है- **श्वेतो धावति** (श्वेतवर्ण अश्व दौड़ रहा है)। प्रयोजन में इसका उदाहरण है- **कुन्ताः प्रविशन्ति** (अर्थात् कुन्तधारी) योद्धा प्रवेश कर रहे हैं। प्रथम उदाहरण में प्रयोजन के अभाववश रूढि (मात्र) है। दूसरे सन्दर्भ में कुन्तादि का अत्यन्त गहन होना प्रयोजन व्यक्त करता है और यहाँ मुख्यार्थ का अपना भी उपादान बना हुआ है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि अजहत्स्वार्थालक्षणा को ही 'उपादान लक्षणा' कहते हैं। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- साहित्यदर्पण - राजेन्द्र मिश्र, पेज 157

29. 'तपसा ब्रह्मचर्येण श्रद्धया विद्याया आत्मानम् अन्विष्यात्' इत्युक्तिः कस्याम् उपनिषदि प्राप्यते?

(A) केनोपनिषदि (B) श्वेताश्वतरोपनिषदि
(C) प्रश्नोपनिषदि (D) मुण्डकोपनिषदि

व्याख्या- प्रश्नोपनिषद्- प्रश्नोपनिषद् अथर्ववेद के पिप्पलाद शाखीय ब्राह्मण भाग के अन्तर्गत है। इस उपनिषद् में पिप्पलाद ऋषि ने सुकेशा आदि छः प्रश्नों का क्रम से उत्तर दिया है, इसलिए इसका नाम प्रश्नोपनिषद् हो गया।

'तपसा ब्रह्मचर्येण श्रद्धया विद्ययाऽऽत्मानमन्विष्यादित्यम-भिजयन्ते'। (1/10)

प्रस्तुत पंक्ति प्रश्नोपनिषद् के प्रश्न एक के दसवें खण्ड से उद्धृत है-

अर्थ- तपस्या के साथ ब्रह्मचर्यपूर्वक (और) श्रद्धा से युक्त होकर अध्यात्म विद्या के द्वारा परमात्मा की खोज करके (जीवन सार्थक) करते हैं।

'अहोरात्रो वै प्रजापतिस्तस्याहरेव प्राणो रात्रिरेव रयिः'।

(प्र.प.13)

अर्थ- दिन और रात का जोड़ा ही प्रजापति है उसका दिन ही प्राण है और रात्रि ही रवि है।

कठोपनिषद्- कठोपनिषद् कृष्ण यजुर्वेद की कठशाखा के अन्तर्गत है। इसमें नचिकेता और यम के संवादरूप में परमात्मा के रहस्यमय तत्त्व का बड़ा ही उपयोगी और विशद वर्णन है। इसमें दो अध्याय हैं और प्रत्येक अध्याय में तीन-तीन वल्लियां हैं।

कठोपनिषद् की प्रमुख सूक्तियाँ

'मनसैवेदमाप्तव्यं नेह नानास्ति किञ्चन' (2/1/11)

अर्थ- (शुद्ध) मन से ही यह परमात्मतत्त्व प्राप्त किये जाने योग्य है, इस जगत् में (एक परमात्मा के अतिरिक्त) नाना (भिन्न-भिन्न भाव) कुछ भी नहीं है।

'उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत'। (1/3/14)

अर्थ- (हे मनुष्यों) उठो, जागो (सावधान हो जाओ और) श्रेष्ठ महापुरुषों को पाकर उनके पास जाकर (उनके द्वारा) उस परब्रह्म परमेश्वर को जान लो।

'ज्ञानमात्मनि महति नियच्छेत्तद्यच्छेच्छान्त आत्मनि'

(1/3/13)

अर्थ- उस मान को ज्ञानस्वरूप बुद्धि में विलीन करें, ज्ञान रूप बुद्धि को महान् आत्मा में विलीन करें, और उसको शान्त स्वरूप परमपुरुष परमात्मा में विलीन करें।

केनोपनिषद्- यह उपनिषद् सामवेद के 'तलवकार ब्राह्मण' के अन्तर्गत है। तलवकार को 'जैमिनीय उपनिषद्' भी कहते हैं। इस उपनिषद् में सबसे पहले केन शब्द आया है, इसी से इसका नाम केनोपनिषद् पड़ गया।

केनोपनिषद् की सूक्तियाँ

*** 'आत्मना विन्दते वीर्यं विद्यया विन्दतेऽमृतम्'।**

(के.उ. खण्ड 2/4)

अर्थ- अन्तर्यामी परमात्मा से, परमात्मा को जानने की शक्ति (ज्ञान) प्राप्त करता है, (और उस) विद्या (ज्ञान से) अमृतरूप परब्रह्म पुरुषोत्तम को प्राप्त होता है।

*** 'यत् प्राणेन न प्राणिति येन प्राणः प्रणीयते'।**

(1.1.8)

अर्थ- जो प्राण के द्वारा चेष्टायुक्त नहीं होता, (बल्कि) जिससे प्राण चेष्टायुक्त होता है।

श्वेताश्वतरोपनिषद् की सूक्तियाँ

*** ''पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भव्यम्''।** (3/3/15)

अर्थ- जो अब से पहले हो चुका है, जो भविष्य में होने वाला है यह परम् पुरुष परमात्मा ही है।

*** ''नवद्वारे पुरे देही हंसो लेलायते बहिः''।** (3.3.18)

अर्थ- नौ द्वार वाले, शरीर रूपी नगर में अन्तर्यामी रूप से हृदय में स्थित वह प्रकाशमान परमेश्वर बाह्य जगत् में भी लीला कर रहा है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि प्रस्तुत यह उक्ति- तपसा ब्रह्मचर्येण...! प्रश्नोपनिषद् से उद्धृत है। **अतः विकल्प (C) सही है।**

स्रोत- ईशादि नौ उपनिषद् - पेज 180

30. साङ्ख्यदर्शनेऽन्तःकरणं किमात्मकम्?

(A) मनोबुद्धी एव (B) बुद्धिरेव
(C) बुद्ध्यहङ्कारमनांसि (D) बुद्ध्यहङ्कारावेव

व्याख्या

ईश्वरकृष्ण विरचित सांख्यदर्शन के प्रकरणग्रन्थ सांख्यकारिका में तेरह प्रकार के करण बताये हैं- पांच कर्मेन्द्रियाँ, पांच ज्ञानेन्द्रियाँ तथा तीन अन्तःकरण। सांख्यकारिका की 33वीं कारिका में अंतःकरण के स्वरूप की विवेचना करते हुए कहते हैं-

''अन्तःकरणं त्रिविधं दशधा बाह्यं त्रयस्य विषयाख्यम्।
साम्प्रतकालं बाह्यं त्रिकालमाभ्यन्तरं करणम्।'' (सा.-का.-33)

अर्थ- अन्तःकरण तीन प्रकार के हैं, और बाह्यकरण दस प्रकार के हैं जो विषयों को (ग्रहण करके) अन्तःकरणत्रय के समक्ष प्रस्तुत कर देते हैं। बाह्यकरण केवल वर्तमान काल के पदार्थों को अपना विषय बनाते हैं, जबकि आन्तरिक करण (भूत, वर्तमान और भविष्य इन) त्रैकालिक पदार्थों को अपना विषय बनाते हैं।

सांख्यकारिका की वाचस्पतिमिश्र कृत टीका सांख्यतत्त्वकौमुदी में अन्तःकरण की व्याख्या करते हुए कहा गया-

''अन्तःकरणं त्रिविधं बुद्धिरहङ्कारो मनः इति,
शरीराभ्यन्तरवर्तित्वादन्तःकरणम् ।''

अर्थ- अन्तःकरण के तीन भेद हैं- बुद्धि, अहङ्कार और मन (स्थूल) शरीर के भीतर निवास करने के कारण वह अन्तःकरण है। बाह्यकरण दस प्रकार के हैं, वे त्रिविध अन्तःकरण

के प्रति विषयों का आख्यान (कथन) करते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि अन्तःकरण के स्वरूप में मन, बुद्धि और अहङ्कार को शामिल किया जाता है।

स्रोत- (सांख्यकरिका-का.33) **अतः विकल्प (C) सही है।**

31. 'रीतिरात्मा काव्यस्य' मतमिदं कस्य विद्यते?

(A) वामनस्य (B) रुद्रटस्य

(C) भामहस्य (D) कुन्तकस्य

व्याख्या- काल विभाग के क्रम में काव्यशास्त्र में अनेक सम्प्रदायों का जन्म हुआ। इन सम्प्रदायों की स्थापना काव्यात्मभूत तत्त्व के विषय में मतभेद के कारण हुई है। जो लोग रस को काव्य की आत्मा मानते हैं वे रस सम्प्रदाय के अन्तर्गत आते हैं। जो अलङ्कारों को काव्य की आत्मा मानते हैं वे अलङ्कार सम्प्रदाय के अन्तर्गत आते हैं। इसी प्रकार रीति को काव्य की आत्मा मानने वाले, ध्वनि को काव्य की आत्मा मानने वाले, वक्रोक्ति को काव्य की आत्मा मानने वाले अलग-अलग सम्प्रदाय स्थापित हुए।

1. रस सम्प्रदाय- सबसे मुख्य तथा प्राचीन सम्प्रदाय रस सम्प्रदाय है। 'रस सम्प्रदाय के संस्थापक भरतमुनि हैं।' भरतमुनि का **'विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः'** यह प्रसिद्ध रससूत्र ही रससिद्धांत का प्राणभूत है। भरतमुनि ने नाट्यशास्त्र के छठे अध्याय में रसों का और सातवें अध्याय में भावों का बहुत विस्तार के साथ विवेचन किया है। यही रस सिद्धांत का आधार है। भरतमुनि के रस सिद्धांत के व्याख्याकार के रूप में भट्टनायक, भट्टलोल्लट, शङ्कुक, अभिनवगुप्त आदि आचार्य बहुत प्रसिद्ध हैं।

2. अलङ्कारसम्प्रदाय- आचार्य भामह इस अलङ्कार सम्प्रदाय के प्रवर्तक माने जाते हैं। उद्भट, दण्डी, रुद्रट, प्रतिहारेन्दुराज, जयदेव आदि अनेक आचार्य इस अलङ्कार सम्प्रदाय के अन्तर्गत आ जाते हैं। अलङ्कार सम्प्रदाय के अनुयायी भी रस की सत्ता मानते हैं, किन्तु उसे प्रधानता नहीं देते हैं। उनके मत में काव्य का प्राणभूत जीवनाधायक तत्त्व अलङ्कार ही है। अलङ्कारविहीन काव्य की कल्पना वैसी ही है जैसे उष्णताविहीन अग्नि की कल्पना।

अङ्गीकरोति यः काव्यं शब्दार्थावनलङ्कृती।
असौ न मन्यते कस्मादनुष्णमनलंकृती॥

अलङ्कारसम्प्रदायवादी, काव्य में अलङ्कारों को ही प्रधान मानते हैं और इसका अन्तर्भाव रसवदलङ्कारों में करते हैं। रसवत्, प्रेम, ऊर्जस्विन् और समाहित चार प्रकार के रसवदलङ्कार माने जाते हैं।

3. रीति सम्प्रदाय- वामन ने काव्य में अलङ्कार की प्रधानता के स्थान पर रीति की प्रधानता का प्रतिपादन किया। 'रीतिरात्मा काव्यस्य' यह उनका प्रमुख सिद्धांत है। इसलिए उन्हें रीतिसम्प्रदाय का प्रवर्तक माना जाता है। रीति की विवेचना करते हुए उन्होंने कहा- **''विशिष्टपदरचना रीतिः''** इस प्रकार इस सिद्धांत में 'गुण' और रीति का अत्यन्त घनिष्ठ सम्बन्ध है। इसलिए रीतिसम्प्रदाय को 'गुणसम्प्रदाय' के नाम से भी जाना जाता है।

4. वक्रोक्ति सम्प्रदाय- कुन्तक ने काव्य में रीति की प्रधानता को समाप्त कर वक्रोक्ति की प्रधानता की स्थापना की। वामन ने भी **'सा दृश्याल्लक्षणा वक्रोक्तिः'** लिखकर काव्य में वक्रोक्ति का स्थान माना है। कुन्तक ने वक्रोक्ति को जो गौरव प्रदान किया है वह उन आचार्यों ने नहीं किया है। इसलिए कुन्तक ही इस सम्प्रदाय के संस्थापक माने जाते हैं। उन्होंने इस वक्रोक्ति सिद्धान्त के ऊपर वक्रोक्तिजीवित नामक अपने विशाल एवं अत्यन्त महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ की रचना की। वामन की वैदर्भी रीति को कुन्तक **सुकुमार मार्ग** कहते हैं। इसी प्रकार गौड़ी रीति को **विचित्रमार्ग** तथा **पाञ्चाली रीति** को **मध्यममार्ग** के नाम से कहते हैं।

5. ध्वनि सम्प्रदाय- इस सम्प्रदाय के संस्थापक आनन्दवर्धनाचार्य माने जाते हैं। **'काव्यस्यात्मा ध्वनिः'** काव्य की आत्मा ध्वनि है। इन सभी सम्प्रदायों में ध्वनि सम्प्रदाय सबसे अधिक प्रबल एवं महत्त्वपूर्ण सम्प्रदाय रहा है।

ध्वनि सिद्धान्त के विरोध में वैयाकरण, साहित्यिक, वेदान्ती, मीमांसक, नैयायिक सभी ने आवाज उठाई, किन्तु अन्त में काव्यप्रकाशकार मम्मट ने बड़ी प्रबल युक्तियों द्वारा उन सबका खण्डन करके ध्वनि सिद्धांत की पुनः स्थापना की। इसलिए उनको **ध्वनिप्रतिष्ठापक परमाचार्य** कहा जाता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि **'रीतिरात्मा काव्यस्य'** इस मत के प्रवर्तक वामन हैं। **अतः विकल्प (A) सही है।**

स्रोत- काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, भू. पेज- 17

32. ग्रिमनियमानुसारेण प्रथमवर्णपरिवर्तने तवर्गीय-ध्वनीनां कः परिवर्तनक्रमोऽस्ति?

(A) त→थ, द→त, ध→द

(B) त→य, द→त, ध→द

(C) त→द, द→थ, थ→द

(D) त→थ, ध→त, द→थ

व्याख्या- ग्रिमनियम का संक्षिप्त इतिहास- यह ध्वनि नियम प्रो. याकोब ग्रिम के नाम से प्रसिद्ध है। इस नियम को ध्वनि परिवर्तन (जर्मन में लाउत ध्वनि, फेशींबुंग-परिवर्तन, अंग्रेजी में Sound Shifting, साउण्ड=ध्वनि, शिफ्टिंग=परिवर्तन नाम दिया गया। प्रो. मैक्समूलर ने इसे ग्रिम

नियम नाम दिया है। प्रो. ओटो येस्पर्सन का कहना है कि इस नियम को **रास्क-नियम** नाम दिया जाना चाहिये क्योंकि यह नियम डैनिश विद्वान् रास्क ने ही सर्वप्रथम प्रामाणिक रूप में अपनी पुस्तक **(Undersogelse)** में प्रकाशित किया था।

ध्वनि नियम- विभिन्न भाषाओं के अध्ययन से ज्ञात होता है कि उसमें समय-समय पर कुछ परिवर्तन होते रहते हैं। ये परिवर्तन भाषा की परिवर्तनशीलता के कारण होते हैं। इन व्यापक परिवर्तनों को नियम की सीमा में बांधने का प्रयत्न किया गया है।

ग्रिम नियम- ग्रिम नियम के अनुसार मूल भारोपीय भाषा की निम्नलिखित ध्वनियों को अंग्रेजी और जर्मन भाषा में ध्वनियाँ हो जाती हैं- (प्रथम को द्वितीय, 1 को 2) क्रमशः क् त् प् को ह् (ख्) थ्, फ् (चतुर्थ को तृतीय 4 को 3) क्रमशः घ्, ध्, भ् को ग् द् ब् । (तृतीय को प्रथम 3 को 1) क्रमशः ग् द् ब् को क् त् प् ।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि- त को थ, द को त तथा ध को द होगा। **अतः विकल्प (A) सही है।**

स्रोत- भाषाविज्ञान - भोलानाथ तिवारी, पेज 364-65

33. अधस्तनेषु किं मेलनं समुचितम्?

(A) आ मुक्तेः - आङ्मर्यादाभिविध्योः
(B) दम्पती - स्त्रियां संज्ञायाम्
(C) घृतगन्धि - वोपसर्जनात्
(D) मुहूर्तसुखम् - यस्य चायामः

व्याख्या-

➢ **आङ्मर्यादाऽभिविध्योः** (2/1/12)

अर्थ- मर्यादा और अभिविधि अर्थों में विद्यमान आङ् अव्यय का पञ्चम्यन्त समर्थ सुबन्त के साथ विकल्प से समास होता है और वह अव्ययीभाव कहलाता है। यथा- आ मुक्तेः संसारः।

मुक्ति होने तक संसार है। यहाँ मर्यादा अर्थगम्य है। **'आमुक्तेः'** लौकिक विग्रह और 'आमुक्ति+ङसि' अलौकिक विग्रह। **'आङ् मर्यादाभिविध्योः'** सूत्र से विकल्प से समास होने पर प्रातिपदिक संज्ञा, सुप् का लुक्, प्रथमानिर्दिष्ट आ की उपसर्जनसंज्ञा और उसका पूर्व प्रयोग करके **'आमुक्ति'** बना। **'एकदेशविकृतन्यायेन प्रातिपदिक'** मानकर सुप्रत्यय अव्यय होने के कारण उसका **'अव्ययादाप्सुपः'** से **'लुक्'** होने पर आमुक्ति सिद्ध हो जाता है। समास न होने के पक्ष में वाक्य ही रह जाता है- **'आ मुक्तेः'**। यहां पर **'आङ्मर्यादावचने'** सूत्र से **आङ्** की कर्मप्रवचनीय संज्ञा होने पर **'पञ्चम्यपाङ्परिभिः'** से पञ्चमी होकर **'आ मुक्तेः'** बना।

➢ **स्त्रियां संज्ञायाम्**

अर्थ- संज्ञा के विषय में बहुव्रीहि समास में यदि अन्य पदार्थ स्त्रीवाच्य हो तो दन्त शब्द को दतृ समासान्त आदेश होता है। यथा- अय इव दन्ताः यस्याः सा- **अयोदती**।

➢ **यस्य चायामः**

अर्थ- जिसकी दीर्घता 'अनु' शब्द से द्योतित होती हो, ऐसे लक्षणवाची शब्द के साथ अनु का विकल्प से अव्ययीभाव समास होता है। यथा- **अनुगङ्गम्। गङ्गायाः अनु।**

➢ **वोपसर्जनस्य**

अर्थ- जिसमें सब अवयव उपसर्जन हैं उस बहुव्रीहि समास के अवयवभूत सह शब्द को स आदेश विकल्प से होता है, उत्तरपद परे रहते। यथा- **'सपुत्रः' सहपुत्रः** बहुव्रीहि के सभी पद उपसर्जन होते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि **'आङ्मर्यादाऽभिविध्योः'** सूत्र से **'आ मुक्तेः'** में अव्ययीभाव समास हुआ। **अतः विकल्प (A) सही है।**

स्रोत- भैमीव्याख्या (भाग-चार), पेज 45

34. 'मौद' शाखा केन वेदेन सह सम्बद्धा वर्तते?

(A) सामवेदेन (B) ऋग्वेदेन
(C) अथर्ववेदेन (D) कृष्णयजुर्वेदेन

व्याख्या-

- हमारे वैदिक साहित्य में चार वेद हैं। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद।
- इन चारों वेदों की अलग-अलग शाखायें प्राप्त होती हैं जो इस प्रकार हैं-

वेद		शाखाएँ
ऋग्वेद-	–	शाकल, बाष्कल, आश्वलायन, शांखायन, माण्डूकायन।
शुक्ल यजुर्वेद	–	माध्यन्दिन (वाजसनेयीशाखा) काण्व शाखा
कृष्ण यजुर्वेद	–	तैत्तिरीय शाखा, मैत्रायणी शाखा कठ शाखा, कपिष्ठल शाखा
सामवेद-	–	तलवकार, सात्युग्र,कौथुमीय शाखा, राणायनीय दुर्वासस, भागुरि, गौलण्डि, शाखा, जैमिनीय शाखा, औप-गौर्गुलजि ममन्यव, कारडि, सावर्णि, गार्ग्य, वार्षगण्य और दैवन्त्य।
अथर्ववेद	–	पैप्पलाद, तौद, मौद, शौनकीय, जाजल, जलद, ब्रह्मवद, देवदर्श, चारणवैद्य। इनमें दो शाखा ही प्राप्त है-पैप्पलाद, शौनकीय।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि मौद शाखा अथर्ववेद से सम्बद्ध है। **अतः विकल्प (C) सही है।**

स्रोत- अथर्ववेद (भाग-1)- आचार्य वेदान्त तीर्थ, पेज-7

35. 'स्वच्छजलवत् सहसैव..... सर्वत्र विहितस्थितिः' इत्यादिना काव्यप्रकाशकृता को गुणो मतः?

(A) माधुर्यगुणः (B) समाधिगुणः
(C) ओजोगुणः (D) प्रसादगुणः

व्याख्या- आचार्य मम्मट कृत काव्यप्रकाश के अष्टम उल्लास में गुणों के विषय में बताते हुए कहते हैं-

काव्यगुण- 'ये रसस्याङ्गिनो धर्माः शौर्यादय इवात्मनः। उत्कर्षहेतवस्ते स्युरचलस्थितयो गुणाः॥'

(का.प्र. 8.66)

अनुवाद- जो आत्मा के शौर्यादि धर्म के समान काव्य में अंगीभूत प्रधान रस के उत्कर्षाधायक धर्म हैं और अचल स्थिति अर्थात् नियत रूप से रहने वाले हैं, वे गुण कहे जाते हैं।

गुण के प्रकार- 'आह्लादकत्वं माधुर्यं शृङ्गारे द्रुतिकारणम्॥' (का.प्र.- 8.68)

चित्त की द्रुति का कारण आह्लादकत्व आनन्द स्वरूपता ही माधुर्य गुण है और शृङ्गार रस में रहता है।

वह माधुर्यगुण, करुण, विप्रलम्भशृङ्गार और शान्तरस में उत्तरोत्तर चमत्कारजनक होता है।

''करुणे विप्रलम्भे तच्छान्ते चातिशयान्वितम्''

ओजगुण- 'दीप्त्यात्मविस्तृतेर्हेतुरोजो वीररसस्थितिः'॥ (का.प्र. 8.69)

चित्त के विस्तार का हेतुभूत दीप्ति ही ओजगुण है और उसकी स्थिति वीररस में होती है।

ओज सामान्यतः वीररस में रहता है किन्तु बीभत्स और रौद्र रसों में क्रमशः उसका आधिक्य उत्तरोत्तर चमत्कारजनक रहता है। **''बीभत्सरौद्ररसयोस्तस्याधिक्यं क्रमेण च''**

प्रसाद गुण- 'शुष्केन्धनाग्निवत् स्वच्छजलवत्सहसैव यः॥' (का.प्र. 8.70)

'व्याप्नोत्यन्यत् प्रसादोऽसौ सर्वत्र विहितस्थितिः॥'

सूखे ईंधन में अग्नि के समान तथा स्वच्छ वस्त्र में जल के समान जो गुण सहसा चित्त में व्याप्त हो जाता है उसे प्रसाद गुण कहते हैं।

इसकी स्थिति सर्वत्र है अर्थात् यह सभी रसों तथा सभी रचनाओं में रहता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'स्वच्छजलवत्सहसैव... सर्वत्र विहितस्थितिः' में प्रसाद गुण है। **अतः विकल्प (D) सही है।**

स्रोत- काव्यप्रकाश (अष्टम उल्लास)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज- 390

36. अधोऽङ्कितेषु समासप्रकरणानुसारं केन सह कस्य सम्बन्धः?

(क) हंसौ (i) जातेश्च
(ख) ब्राह्मणक्षत्रियविट्शूद्राः (ii) पुमान् स्त्रिया
(ग) शूद्राभार्यः (iii) न निर्धारणे
(ग) नृणां द्विजः श्रेष्ठः (iv) वर्णानामानुपूर्व्येण

	क	ख	ग	घ
(A)	(ii)	(iv)	(i)	(iii)
(B)	(iii)	(iv)	(ii)	(i)
(C)	(i)	(iv)	(ii)	(iii)
(D)	(iv)	(i)	(iii)	(ii)

व्याख्या- जातेश्च- जातिवाची शब्द से विहित स्त्रीप्रत्ययान्त भाषितपुंस्क तथा ऊङ्- प्रत्यय रहित जो शब्द, उसको भी पुंवद्भाव नहीं होता है। यथा- **'शूद्राभार्यः'। शूद्र जाति की स्त्री भार्या है जिसकी ऐसा पुरुष। 'शूद्राभार्या यस्य सः'** लौकिक विग्रह और **'शूद्रा+सु भार्या+सु'** अलौकिक विग्रह में अनेकमन्यपदार्थे सूत्र से बहुव्रीहि समास होने पर **'जातेश्च'** सूत्र के द्वारा **'शूद्राभार्यः'** सिद्ध हो जाता है।

पुमान् स्त्रिया- स्त्रीवाचक शब्द के साथ पुरुषवाचक शब्द का कथन होने पर पुरुषवाचक शब्द का शेष होता है, यदि उन शब्दों में स्त्रीत्वकृत और पुंस्त्वकृत विशेषता का ही भेद हो और अन्य मूल प्रकृति समान ही हो। यथा- **'हंसी च हंसश्च हंसौ'। हंसी और हंस। हंसी च हंसश्च लौकिक विग्रह** में **'पुमान् स्त्रिया'** सूत्र के द्वारा स्त्रीवाचक हंसी की निवृत्ति और पुंसवाचक हंस शब्द का शेष होता है। अर्थगत द्वित्व के कारण हंस शब्द से द्विवचन औ-प्रत्यय होने पर 'हंसौ' सिद्ध हो जाता है।

न निर्धारणे (2/2/10)- निर्धारण अर्थ में विहित जो षष्ठी, तदन्त सुबन्त का समर्थ सुबन्त के साथ तत्पुरुष समास नहीं होता है। यथा- **'नृणां द्विजः श्रेष्ठः'** है। **मनुष्यों में द्विज श्रेष्ठ है।** यहाँ पर जाति के आधार पर द्विज को श्रेष्ठ बताया जा रहा है। अतः **'यतश्चनिर्धारणम्'** सूत्र से निर्धारण अर्थ में षष्ठी होकर **'नृणाम्'** बना। निर्धारणार्थ में षष्ठी होने के कारण **'नृणां द्विजः'** में प्राप्त षष्ठी समास का 'न निर्धारणे' सूत्र से निषेध होने के कारण वाक्य ही रह जाता है- **'नृणां द्विजः श्रेष्ठः'**

वर्णानामानुपूर्व्येण- वर्णों का उसके क्रम से ही पूर्वनिपात

होता है। यहाँ पर वर्ण शब्द अकारादि का बोधक न होकर ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि का बोधक है। 'आनुपूर्व्य' शब्द का अर्थ है- क्रम। श्रुति और स्मृतियों के प्रमाण से एवं सृष्टि क्रम के अनुसार भी वर्ण क्रम है- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। अमरकोशकार ने भी यही क्रम लिखा है- ब्राह्मणक्षत्रियविट्शूद्राः। यथा-

'ब्राह्मणक्षत्रियविट्शूद्राः'। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। ब्राह्मणश्च क्षत्रियश्च विट् च शूद्रश्च लौकिक विग्रह और ब्राह्मण+सु क्षत्रिय+सु विश्+सु शूद्र+सु अलौकिक विग्रह में **'चार्थे द्वन्द्वः'** से द्वन्द्वसमास होने पर

'वर्णानामानुपूर्व्येण' वार्तिक से **ब्राह्मणक्षत्रियविट्शूद्राः** प्रयोग सिद्ध हुआ।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि **'जातेश्च'** सूत्र से **शूद्राभार्यः, पुमान् स्त्रिया सूत्र से हंसौ, न निर्धारणे** सूत्र से **नृणां द्विजः श्रेष्ठः** तथा **वर्णानामानुपूर्व्येण 'वार्तिक'** से ब्राह्मणक्षत्रियविट्छूद्राः प्रयोग सिद्ध होगा। **अतः विकल्प (A) सही है।**

स्रोत- भैमीव्याख्या (भाग-चार), पेज 240,238,83

37. 'सारङ्गी' इत्यत्र स्त्रियां ङीष्-प्रत्यय विधायकं सूत्रम् किमस्ति ?

(A) अन्यतो ङीष्

(B) वर्णादनुदात्तात्तोपधात्तो नः

(C) जातेरस्त्रीविषयादयोपधात्

(D) षिद्गौरादिभ्यश्च

व्याख्या-♦ अन्यतो ङीष् (4.1.40)- 'तोपधभिन्नाद् वर्णवाचिनोऽनुदात्तान्तात् प्रातिपदिकात् स्त्रियां ङीष्' अर्थात् तोपध से भिन्न किन्तु जिसके अन्त में अनुदात्त स्वर है ऐसा जो वर्णवाची शब्द, तदन्त अनुपसर्जन अदन्त प्रातिपदिक से ङीष् प्रत्यय होता है स्त्रीत्वविवक्षा में।

उदाहरण- **सारङ्गी (सारंग वर्णवाली), कल्माषी (कालुष्य वर्ण वाली)।**

♦ सारङ्गी वर्णवाली। वर्णवाची सारङ्ग शब्द अनुपसर्जन, तोपध भिन्न व अनुदात्तान्त है। अतः 'अन्यतो ङीष्' सूत्र से ङीष् होने पर 'यस्येति च' से गकारोत्तरवर्ती अकार का लोप होकर सारङ्गी बनने के बाद स्वादि कार्य होता है। इसके रूप नदी शब्द के समान ही हुआ करते हैं।

♦ **षिद्गौरादिभ्यश्च (4.1.41)- षिद्भ्यो गौरादिभ्यश्च ङीष् स्यात्** अर्थात् जिस शब्द में षकार की इत्सञ्ज्ञा हो गयी हो ऐसे शब्दों से और गौर आदि गणपठित शब्दों से स्त्रीत्व की विवक्षा होने पर ङीष् प्रत्यय होता है। उदाहरण- **नर्तकी, गौरी, गार्ग्यायणी आदि।**

♦ **वर्णादनुदात्तात्तोपधात्तो नः** (4.1.39)- जिसके अन्त में अनुदात्त स्वर है तथा जिसकी उपधा में तकार है ऐसा जो वर्णवाची शब्द, तदन्त अनुपसर्जन अदन्त प्रातिपदिक से ङीष् प्रत्यय तथा तकार को नकार आदेश ये दोनों कार्य विकल्प से होते हैं। स्त्रीत्व की विवक्षा में।

उदाहरण- एनी एता, रोहिणी-रोहिता, आदि।

♦ **जातेरस्त्रीविषयादयोपधात् (4.1.63)-** जो नित्य स्त्रीलिङ्ग न हो और जिसकी उपधा में यकार भी न हो ऐसे जातिवाचक प्रातिपदिक से स्त्रीत्व की विवक्षा में ङीष् प्रत्यय होता है। उदाहरण- तटी, वृषली आदि।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि सारङ्गी में अन्यतो ङीष् (4.1.40) सूत्र से ङीष् प्रत्यय होगा। **अतः विकल्प (A) सही है।**

स्रोत- भैमीव्याख्या (भाग-6), पेज 24,32,36,69

38. तेजो यत्ते रूपं कल्याणतमं तत्ते पश्यामि' इत्युद्धरणं वर्तते-

(A) कठोपनिषदि (B) ईशोपनिषदि

(C) बृहदारण्यकोपनिषदि (D) तैत्तिरीयोपनिषदि

व्याख्या- ईशावास्योपनिषद्- यह ईशावास्योपनिषद् शुक्ल यजुर्वेद काण्वशाखीय संहिता का चालीसवाँ अध्याय है। शुक्लयजुर्वेद के प्रथम उनतालीस अध्यायों में कर्मकाण्ड का निरूपण हुआ है और 40वें अध्याय में परमतत्त्व रूप ज्ञानकाण्ड का निरूपण किया गया है।

ईशोपनिषद् की सूक्तियाँ-

• **तेजो यत्ते रूपं कल्याणतमं तत्ते पश्यामि** (श्लोक-16)

अर्थ- इस तेज को (समेट लीजिए या अपने तेज में मिला लीजिये) जो आपका अतिशय कल्याणमय दिव्य स्वरूप है उस आपके दिव्य स्वरूप की मैं आपकी कृपा से ध्यान के द्वारा देख रहा हूँ।

• **मा गृधः कस्य स्विद्धनम् ।** (श्लोक-1)

अर्थ- इसमें आसक्त मत हो क्योंकि धन-भोग्य-पदार्थ, किसका है अर्थात् किसी का भी नहीं।

कठोपनिषद्- कठोपनिषद् उपनिषदों में बहुत प्रसिद्ध है यह कृष्णयजुर्वेद की कठशाखा के अन्तर्गत है। इसमें नचिकेता और यम के संवादरूप में परमात्मा के रहस्यमय तंत्र का बड़ा ही उपयोगी और विशद वर्णन है। इसमें दो अध्याय हैं और प्रत्येक अध्याय में तीन-तीन वल्लियाँ हैं।

प्रमुख सूक्तियाँ-

♦ **अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे॥**

अर्थ- अजन्मा नित्य सदा एकरस रहने वाला और पुरातन है अर्थात् क्षय और वृद्धि से रहित है, शरीर के नाश किये जाने पर भी इसका नाश नहीं किया जा सकता। (1/2/18)

♦ **उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत** (1/3/14)

अर्थ- हे मनुष्यों! उठो जागो सावधान हो जाओ और श्रेष्ठ महापुरुषों को पाकर उनके पास जाकर उनके द्वारा उस परब्रह्म परमेश्वर को जान लो।

♦ **तैत्तिरीयोपनिषद्-** यह उपनिषद् कृष्णयजुर्वेदीय तैत्तिरीय शाखा के अन्तर्गत तैत्तिरीय आरण्यक का अङ्ग है। तैत्तिरीय आरण्यक के दस अध्याय हैं। उनमें से सातवें, आठवें और नवें अध्यायों को ही तैत्तिरीय उपनिषद् कहा जाता है।

प्रमुख सूक्तियाँ-

♦ **तस्माद्वा एतस्मादात्मन आकाशः सम्भूतः।** (तै. 2-1)

अर्थ- निश्चय ही सर्वत्र प्रसिद्ध उस परमात्मा से पहले-पहल आकाश तत्त्व उत्पन्न हुआ।

♦ **''आचार्याय प्रियं धनमाहृत्य प्रजातन्तुं मा व्यवच्छेत्सीः।''**

अर्थ- आचार्य के लिए दक्षिणा के रूप में वाञ्छित धन लाकर दो फिर उसकी आज्ञा से गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करके सन्तान परम्परा को चालू रखो, उसका उच्छेद न करना।

♦ **बृहदारण्यकोपनिषद् की प्रमुख सूक्तियाँ- ''असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय मृत्योर्मामृतं गमय।''**

अर्थ- मुझे असत् से सत् की ओर ले जाओ। यहाँ मृत्यु ही असत् है और अमृत् सत् है।

♦ **''आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्यः।''**

अर्थ- यह आत्मा ही दर्शनीय, श्रवणीय, मननीय और ध्यान किये जाने योग्य है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि प्रश्नगत (तेजो यत्ते रूपं.....) यह उद्धरण ईशावास्योपनिषद् से लिया गया है। **अतः विकल्प (B) सही है।**

स्रोत- ईशादि नौ उपनिषद्- गीता प्रेस, पेज 42

39. 'सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च' अस्य मन्त्रस्य द्रष्टा ऋषिः कः?

(A) दीर्घतमा (B) मधुच्छन्दा
(C) वसिष्ठः (D) कुत्स आङ्गिरसः

व्याख्या- ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के 115वें सूक्त के पहले मन्त्र में ऋषि कुत्स आङ्गिरस त्रिष्टुप् छन्द में देवता सूर्य की स्तुति करते हुए कहते हैं-

'सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च' (ऋ. 1.115.1)

सूर्य जंगम और स्थावर दोनों की आत्मा है।

♦ ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के पहले सूक्त के पाँचवें मन्त्र में ऋषि- मधुच्छन्दा गायत्री छन्द में अग्नि देवता की स्तुति करते हुए कहते हैं- **'अग्निर्होता कविक्रतुः, सत्यश्चित्रश्रवस्तमः'।** (ऋ.1.1.5)

हे अग्नि ! तुम होता, अशेषबुद्धिसम्पन्न या सिद्ध कर्मा, सत्यपरायण, अतिशय कीर्ति से युक्त और दीप्तिमान् हो।

♦ ऋग्वेद के द्वितीय मण्डल के 12वें सूक्त के सातवें मंत्र में ऋषि गृत्समद त्रिष्टुप् छन्द में इन्द्र देवता की स्तुति करते हुए कहते हैं-

'यः सूर्यं य उषसं जजान यो अपां नेता'।

(ऋ. 2.12.7)

जो सूर्य और उषा को उत्पन्न करते हैं और जो जल प्रेरित करते हैं।

♦ अथर्ववेद के पहले मण्डल के उन्तीसवें सूक्त के पहले मन्त्र में ऋषि अनुष्टुप् छन्द में ब्रह्मणस्पति देवता की स्तुति करते हुए कहते हैं-

'तेनास्मान् ब्रह्मणस्पतेभि राष्ट्राय वर्धय।'

उसी मणि के द्वारा तु हमें देश के हित के निमित्त विस्तृत करे। (अथर्व. 1.29.1)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च' मन्त्र के द्रष्टा ऋषि कुत्स आङ्गिरस हैं। **अतः विकल्प (D) सही है।**

स्रोत- ऋक्सूक्तसंग्रह- हरिदत्त शास्त्री, पेज- 146

40. वेदे 'सूनरी' कस्याः विशेषणम्?

(A) उषसः (B) सरस्वत्याः
(C) अपालायाः (D) घोषायाः

व्याख्या- ऋग्वेद के पहले मण्डल के 48वें सूक्त में ऋषि प्रस्कण्व उषा देवता की स्तुति करते हुए कहते हैं-

♦ **'आ घा योषेव सूनर्युषा याति प्रभुञ्जती'।**

सबका पालन करती हुई उषा देवी सुन्दरी युवती स्त्री के समान प्रतिदिन आती है। (ऋ. 1.48.5)

♦ **विश्वमस्या नानाम चक्षसे जगज्ज्योतिष्कृणोति सूनरी।'** (ऋ. 1.48.8)

यह सुन्दरी उषा सबके लिए प्रकाश उत्पन्न करती है।

कुछ प्रमुख देवता के विशेषण :-

देवता		**विशेषण**
उषस्	–	मघोनी, हिरण्यवर्णा, ऋतावरी, पुराणी, सुभगा, सूनरी, सूनृतावती, अमर्त्या, अन्तिवामा इत्यादि।
अग्नि	–	ऋत्विक्, होता, पुरोहित, रत्नधातमम्, गृहपति, दमूनस्, घृतलोम, सहस्राक्ष, असुर इत्यादि।
विष्णु	–	उरुक्रम, उरुगाय, कुचर, वृष्णः, त्रिविक्रम, भीम इत्यादि।
इन्द्र	–	वृत्रहा, सुशिप्र, वज्रबाहु, हिरण्यबाहु, मरुत्वान्, अच्युतच्युत इत्यादि।
सोम	–	मौज्जवत, वृत्रहन्तम्, सहस्रधार, पवमान, महिष्ठ, इन्द्रपति इत्यादि।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'सूनरी' विशेषण उषस् देवता का है। **अतः विकल्प (A) सही है।**

स्रोत- ऋक्सूक्त संग्रह- हरिदत्त शास्त्री, पेज- 123

41. 'नित्यज्ञानाधिकरणत्वम्' इति तर्कसंग्रहदीपिकायां कस्य लक्षणं प्रोक्तम्?

(A) मनसः (B) ईश्वरस्य
(C) परमाणोः (D) जीवात्मनः

व्याख्या- आचार्य अन्नंभट्ट ने वैशेषिक दर्शन के सिद्धान्तों को आधार बनाकर सूत्ररूप में अत्यन्त सरल एवं लघुग्रन्थ तर्कसङ्ग्रह की रचना की। तर्कसङ्ग्रहकार ने अपने ग्रन्थ में सात पदार्थों का नाम उल्लेख किया। वे इसप्रकार हैं- द्रव्य-गुण-कर्म-सामान्य-विशेष-समवाय-अभावाः सप्तपदार्थाः। आचार्य अन्नंभट्ट ने सप्त पदार्थों की व्याख्या के क्रम में सर्वप्रथम द्रव्य पदार्थ का उल्लेख करते हुए- पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, काल, दिक्, आत्मा और मन कुल नौ द्रव्य को ही स्वीकार किया।

नौ द्रव्यों की विवेचना के क्रम में ग्रन्थकार ने दिशा का लक्षण करने के पश्चात् आत्मा का लक्षण बताते हुए कहते हैं-

''ज्ञानाधिकरणमात्मा। स द्विविधो- जीवात्मा परमात्मा चेति।''

अर्थ- ज्ञान का अधिकरण आत्मा है और जीवात्मा एवं परमात्मा इस रूप में वह दो प्रकार का होता है। जबकि उन दोनों में परमात्मा सभी का स्वामी (ईश्वर), सर्वज्ञ एवं एक है। जीवात्मा प्रत्येक शरीर में भिन्न है, किन्तु (वह भी) सर्वव्यापक एवं नित्य है।

*** तर्कसङ्ग्रहदीपिका के अनुसार ज्ञान का अधिकरण ईश्वर को बताया गया है-**

''नित्यज्ञानाधिकरणत्वमीश्वरत्वम्'' - (त.सं.दी.)

*** तर्कसङ्ग्रह के अनुसार मन का लक्षण-**

सुखदुःखाद्युपलब्धिसाधनमिन्द्रियं मनः। तच्च प्रत्यात्मनियतत्त्वादनन्तं परमाणुरूपं नित्यं च।

अर्थ- सुख आदि की उपलब्धि का साधन इन्द्रिय ही मन है और वह प्रत्येक आत्मा के साथ नियम से रहने के कारण अनन्त, परमाणु-रूप और नित्य बताया गया है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि प्रश्नगत **नित्यज्ञानाधिकरणत्त्वम्** लक्षण **'ईश्वर'** का है। **अतः विकल्प (B) सही है।**

स्रोत- तर्कसंग्रह - आद्याप्रसाद, पेज 28

42. निरुक्ते कति पदजातानि उपदिष्टानि?

(A) त्रीणि (B) षट्
(C) चत्वारि (D) पञ्च

व्याख्या- आचार्य यास्क ने अपने ग्रन्थ निरुक्त में लोक और वेद में चार प्रकार पदों का वर्णन किया है-

''चत्वारि पदजातानि, नामाख्याते चोपसर्ग निपाताश्च''

अर्थ- नाम, आख्यात, उपसर्ग और निपात ये चार पद जातियाँ शब्दों के भेद हैं।

नाम और आख्यात का लक्षण- निरुक्तकार ने 'नाम' और 'आख्यात' का लक्षण करते हुए कहा-

'भावप्रधानमाख्यातम्, सत्त्वप्रधानानि नामानि'।

अर्थ- भाव- क्रिया है मुख्य जिसमें वह आख्यात है। सत्त्व-द्रव्य है प्रधान जिसमें वे नाम कहलाते हैं। इसका तात्पर्य यह है कि जहाँ क्रिया प्रधान हो और कारकादि गौण हो, वह

आख्यात है एवं जहाँ सत्त्व अर्थात् लिङ्ग संख्या वचनादि जिसका अनुगमन करे ऐसा सत्त्व-द्रव्य प्रधान हो और क्रिया गौण हो, वह नाम कहलाता है।

उपसर्ग निरूपण- नाम, आख्यात से अलग हुए प्र, परा, अप, सम्, आदि उपसर्ग स्वतंत्र अर्थों को नहीं कहते हैं। ऐसा शाकटायन आचार्य का कहना है।

''न निर्बद्धा उपसर्गा अर्थान्निराहुरिति शाकटायनः।''

नाम और आख्यात के अर्थ के साथ मिलकर ही ये उपसर्ग द्योतक हैं- नामाख्यात के विशेषार्थ के प्रकाशक हैं। स्वतंत्रतया इनका कोई अर्थ नहीं-

''नामाख्यातयोस्तु कर्मोपसंयोगद्योतका भवन्ति।''

आचार्य गार्ग्य का कहना है कि- **''उच्चावचाः पदार्था भवन्तीति गार्ग्यः।''**

अर्थ- इन उपसर्गों के अर्थ अनेक प्रकार के हुआ करते हैं ऐसा मत गार्ग्य आचार्य का है अर्थात् स्वतंत्र रूप से भी उपसर्ग सार्थक ही हैं, निरर्थक नहीं।

निपात- आचार्य यास्क निपात का लक्षण निरूपित करते हुए कहते हैं- **''उच्चावचेष्वर्थेषु निपतन्ति।''**

अर्थ- अनेकविध अर्थों में ये गिरते हैं- इनके अनेक अर्थ हैं, इसलिए ये निपात नाम से कहे जाते हैं।

''अप्युपमार्थेऽपि कर्मोपसङ्ग्रहार्थेऽपि पदपूरणाः।''

अर्थ- इन निपातों में कुछ तो उपमार्थ में प्रयुक्त होते हैं- कुछ अर्थोपसंग्रह में और कुछ केवल पदपूर्ति के लिए ही प्रयुक्त होते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि निरुक्त में चार प्रकार के पद बताये गये हैं। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- निरुक्तम् - छज्जूराम शास्त्री, पेज- 3

43. 'गौतमधर्मसूत्रम्' केन वेदेन सह सम्बद्धं विद्यते?

(A) अथर्ववेदेन (B) कृष्णयजुर्वेदेन

(C) ऋग्वेदेन (D) सामवेदेन

व्याख्या-

- धर्मसूत्र आचार संहिता से सम्बद्ध ग्रन्थ है।
- धर्मसूत्र स्मृतियों के पूर्व रूप हैं।
- समाज को शान्ति और स्थिरता प्रदान करना धर्मसूत्रों का उद्देश्य है।
- कर निर्धारण, कर के प्रकार, कर का उपयोग, सम्पत्ति विभाजन तथा स्त्रीधन का स्वरूप धर्मसूत्रों में प्राप्त होता है।
- सामवेद का एक ही धर्मसूत्र प्राप्त होता है- गौतमधर्मसूत्र।

वेद	-	धर्मसूत्र
सामवेद	-	गौतम धर्मसूत्र
ऋग्वेद	-	वसिष्ठ धर्मसूत्र, विष्णु धर्मसूत्र
यजुर्वेद	-	बौधायन, वैखानस, आपस्तम्ब, विष्णु, हारीत, हिरण्यकेशी, शंख।
अथर्ववेद	-	कोई धर्मसूत्र प्राप्त नहीं है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से ज्ञात होता है कि गौतम धर्मसूत्र सामवेद का है। **अतः विकल्प (D) सही है।**

स्रोत- संस्कृतसाहित्य का इतिहास-उमाशङ्करशर्मा 'ऋषि', पेज- 91

44. महाभाष्ये व्याकरणस्य आनुषङ्गिकप्रयोजनेषु ''विभक्तिं कुर्वन्ति'' इत्यस्य क्रमोऽस्ति-

(A) सप्तमः (B) षष्ठः

(C) दशमः (D) पञ्चमः

व्याख्या- व्याकरण अध्ययन के पाँच मुख्य प्रयोजन- महर्षि पतञ्जलि महाभाष्य के प्रथम आह्निक पस्पशाह्निक में व्याकरणाध्ययन के पाँच प्रयोजन बताते हैं-

''रक्षोहागमलघ्वसन्देहाः प्रयोजनम्''

अर्थात् 1. रक्षा 2. ऊह, 3. आगम, 4. लघु और 5. असन्देह ये पाँच मुख्य प्रयोजन हैं।

व्याकरणाध्ययन के तेरह आनुषङ्गिक (गौण) प्रयोजन- व्याकरण के पाँच मुख्य प्रयोजन बताने के बाद महर्षि पतञ्जलि तेरह आनुषङ्गिक प्रयोजनों की चर्चा करते हैं- 1. तेऽसुराः 2. दुष्टःशब्दः 3. यदधीतम् 4. यस्तु प्रयुङ्क्ते 5. अविद्वांसः 6. विभक्तिं कुर्वन्ति 7. यो वा इमाम् 8. चत्वारि 9. उत त्वः 10. सक्तुमिव 11. सारस्वतीम् 12. दशम्यां पुत्रस्य 13. सुदेवो असि वरुण इति।

अर्थ- 1. वे असुर 2. दोषयुक्त शब्द 3. जिसे पढ़ा 4. जो प्रयुक्त करता है 5. अविद्वान् लोग 6. विभक्ति का प्रयोग करते हैं 7. जो इस वेद रूप वाणी को 8. चार 9. एक कोई 10. सत्तुओं के समान 11. सरस्वती देवी सम्बन्धी 12. दशवीं रात्रि के बाद 13. हे वरुण ! सुदेव हो।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि व्याकरण महाभाष्य में तेरह आनुषङ्गिक प्रयोजनों में विभक्तिं कुर्वन्ति, छठें (षष्ठः) क्रम पर है। **अतः विकल्प (B) सही है।**

45. 'मशककल्पसूत्रम्' कस्य वेदस्य वर्तते?

(A) अथर्ववेदस्य (B) ऋग्वेदस्य

(C) सामवेदस्य (D) कृष्णयजुर्वेदस्य

व्याख्या- ♦ कल्पसूत्र- कल्पसूत्र ग्रन्थ का तात्पर्य प्रयोगविधि के यथार्थ प्रतिपादक ग्रन्थों से है।

- जिनसे सिद्ध प्रयोग का ज्ञान हो, वह कल्प है।
- जिन ग्रन्थों में यज्ञ-सम्बन्धी विधियों का समर्थन या प्रतिपादन किया जाता है उन्हें 'कल्प' कहते हैं।
- जिन ग्रन्थों में वैदिक कर्मों का सांगोपांग विवेचन किया जाता है उन्हें 'कल्प' कहते हैं।
- कल्पसूत्र के चार भेद हैं- श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र, धर्मसूत्र, शुल्बसूत्र।
- मशककल्पसूत्र एवं द्राह्यायन श्रौतसूत्र सामवेद से सम्बन्धित हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'मशककल्पसूत्रम्' ये सामवेदीय श्रौतसूत्र है। **अतः विकल्प (C) सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज- 219

46. भरतमुनिना रसस्य संख्या कियती स्वीकृता?

(A) षट् (B) दश
(C) अष्टौ (D) नव

व्याख्या- भरतमुनि और धनञ्जय के अनुसार नाट्य में आठ रस स्वीकृत हैं- **अष्टौ नाट्ये रसाः स्मृताः**

नाट्यशास्त्र के छठवें अध्याय में भरतमुनि ने कहा है-

शृङ्गारहास्यकरुणा रौद्रवीरभयानकाः।
बीभत्साद्भुतसंज्ञौ चेत्यष्टौ नाट्ये रसाः स्मृताः। (6/15)

नाट्य में स्वीकृत रस आठ हैं-

1. शृङ्गार 2. हास्य 3. करुण 4. रौद्र 5. वीर 6. भयानक 7. बीभत्स रस 8. अद्भुत रस।

- मम्मट ने काव्यप्रकाश में आठ नाट्यरसों का विवेचन करने के पश्चात् शान्त को नवाँ रस माना है- **''शान्तोऽपि नवमो रसः''**
- रुद्रट ने काव्यालंकार में 'प्रेयान्' नामक दसवें रस की उद्भावना की है-
- रूपगोस्वामी ने मधुर नामक भक्तिरस को प्रधान रस माना है- **''मधुराख्यो भक्तिरसः''**
- आचार्य विश्वनाथ ने नव रस के अतिरिक्त वात्सल्य नामक एक अन्य रस को स्वीकार किया है- **'स्फुटं चमत्कारितया वत्सलं च रसं विदुः।' (सा.द. 3/251)**
- एक अन्य परवर्ती लेखक विश्वनाथ चक्रवर्ती ने मधुर को भक्तिरसराज कहा है।
- रस संख्या के विषय में भोज का अपना अलग मत है, उन्होंने अग्निपुराणोक्त नौ रसों के अतिरिक्त प्रेयान्, उदात्त और उद्धत्त तीन रस अधिक मानते हुए कुल 12 रस मानते हैं-

शृङ्गारवीरकरुणरौद्राद्भुत्भयानकाः।
बीभत्सहास्यप्रेयांसः शान्तोदात्तोद्धताः॥

(अग्निपुराण)

- रामचन्द्र गुणचन्द्र नव रसों के अतिरिक्त लौल्य, स्नेह, व्यसन, दुःख और सुख आदि अन्य रस मानते हैं।
- एक परवर्ती लेखक भानुदत्त ने रसतरंगिणी में 'मायारस' का उल्लेख किया है।
- एक जैन लेखक ने लज्जा स्थायिभाव वाला 'व्रीडनक रस' भी माना है।
- इस प्रकार गम्भीरतापूर्वक विचार विमर्श के पश्चात् रसवादी आचार्यों ने काव्य, नाटक और संगीत में आठ अथवा नव रस ही मानते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि भरतमुनि अपने नाट्यशास्त्र के छठवें अध्याय में रसों की संख्या आठ ही मानते हैं। **अतः विकल्प (C) सही है।**

स्रोत- नाट्यशास्त्र - ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज 157

47. उभयप्राप्तौ कर्मणि इति कारकसूत्रस्योदाहरणं किम्?

(A) आश्चर्यो गवां दोहोऽगोपेन
(B) अधिकरणवाचिनश्च
(C) कृत्यानां कर्तरि वा
(D) कर्तृकर्मणोः कृति

व्याख्या-1. उभयप्राप्तौ कर्मणि (2.3.66)- उभयोः प्राप्तिः यस्मिन् कृति तत्र कर्मण्येव षष्ठी स्यात्।

अर्थ- कृदन्त के योग में कर्ता और कर्म दोनों में षष्ठी विभक्ति होने पर केवल कर्म में ही षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे- **आश्चर्यो गवां दोहोऽगोपेन** (जो ग्वाला नहीं है, उसके द्वारा गाय का दोहन आश्चर्यजनक है)

इस वाक्य में कृदन्त अदोह (दुह् + घञ्) के योग में **'कर्तृकर्मणोः कृति'** सूत्र से कर्ता अगोप और कर्म 'गो' दोनों में षष्ठी विभक्ति प्राप्त है लेकिन **'उभयप्राप्तौ कर्मणि'** सूत्र से कर्म गो में ही षष्ठी विभक्ति का नियम होने से **'गो'** में ही षष्ठी विभक्ति होकर **'गवाम्'** बना।

2. अधिकरणवाचिनश्च- (2.3.68)

क्तस्ययोगे षष्ठी स्यात्। इदमेषामासितम्।

अर्थ- अधिकरणवाचक क्त प्रत्ययान्त शब्दों के योग में षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे- **'इदम् एषाम् आसितम्'** (यह इनका आसन है)।

आस् धातु से **'क्त'** प्रत्यय जोड़कर **'आसितम्'** बनता है। अधिकरण वाचक **'क्त'** प्रत्ययान्त **'आसितम्'** के योग में

अनुक्त कर्ता 'इदम्' **'अधिकरणवाचिनश्च'** सूत्र से षष्ठी विभक्ति होकर **'एषाम्'** बना।

3. कृत्यानां कर्तरि वा (2.3.71)- कृत् प्रत्ययों के योग में षष्ठी विभक्ति विकल्प से होती है। जैसे- **मया मम वा सेव्यो हरिः (मेरे द्वारा हरि की सेवा की जानी चाहिये)**

यहां सेव् धातु से ण्यत् प्रत्यय लगाकर सेव्यः बना। ण्यत् कृत्य प्रत्यय के अन्तर्गत आता है। हरि कर्म है और यह उक्त है, अतः उक्त कर्म से प्रथमा विभक्ति होती है। कर्ता **'अस्मद्'** शब्द अनुक्त है। उसमें **'कर्तृकर्मणोः कृति'** सूत्र से नित्य षष्ठी विभक्ति प्राप्त थी। लेकिन उसको बाध करके **'कृत्यानां कर्तरि वा'** सूत्र से विकल्प से षष्ठी विभक्ति करने पर मम बना। अनुक्त कर्ता से **'कर्तृकरणयोस्तृतीया'** सूत्र से तृतीया विभक्ति होकर **'मया'** भी बना।

4. कर्तृकर्मणोः कृति (2.3.65)- कृद्योगे कर्तरि कर्मणि च षष्ठी स्यात्।

अर्थ- कृत्प्रत्ययान्त के योग में अनुक्त (अनभिहित) कर्ता और कर्म में षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे- **'कृष्णस्य कृतिः'**

इस वाक्य में कृत् प्रत्ययान्त कृति (कृ + क्तिन्) के कर्ता कारक कृष्ण में **'कर्तृकर्मणोः कृति'** सूत्र से षष्ठी विभक्ति होकर **'कृष्णस्य'** बना।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि 'उभयप्राप्तौ कर्मणि' इस सूत्र का उदाहरण- आश्चर्यो गवां दोहोऽगोपेन है। **अतः विकल्प (A) सही है।**

स्रोत- अष्टाध्यायी - ईश्वरचन्द्र, पेज 216

48. ''वागर्थाविव'' इत्यत्र कतमः समासः?
(A) केवलसमासः (B) अव्ययीभावसमासः
(C) द्विगुसमासः (D) कर्मधारयसमासः

व्याख्या- आचार्य वरदराज लघुसिद्धान्तकौमुदी के समास प्रकरण के अन्तर्गत केवल समास के प्रसङ्ग में एक वार्तिक उद्धृत करते हैं-

''इवेन समासो विभक्त्यलोपश्च''

अर्थ- समर्थ शब्द का इव शब्द के साथ समास होता है तथा अन्तर्वर्तिनी विभक्ति का लोप भी नहीं होता।

रघुवंश महाकाव्य के मंगलाचरण में प्रकृत वार्तिक का उदाहरण वागर्थाविव के रूप में है। वागर्थाविव **(वाणी और अर्थ की तरह) 'वागर्थौ इव'** यह लौकिक विग्रह और **'वागर्थ औ इव'** यह अलौकिक विग्रह है। अलौकिक विग्रह में समास करने के लिए वार्तिक लगा- **'इवेन समासो विभक्त्यलोपश्च'।** इसके द्वारा समास होने के बाद **'वागर्थ औ इव'** की प्रातिपदिक संज्ञा हो गई और बीच में विद्यमान औ विभक्ति का **'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः'** से **'लुक्'** प्राप्त हुआ तो इसी वार्तिक के द्वारा उसके अलुक् का विधान होकर **'वागर्थौ इव'** बना। औकार के स्थान पर **'एचोऽयवायावः' से 'आव्'** आदेश होकर **'वागर्थाविव'** बन जाता है। जीमूतस्येव, भूतपूर्वम्, अधमर्णः आदि उदाहरण भी केवल समास के हैं।

अव्ययीभाव समास के उदाहरण-

यथाशक्ति - शक्तिमनतिक्रम्य
सुमद्रम् - मद्राणां समृद्धिः
निर्मक्षिकम् - मक्षिकाणाम् अभावः

द्विगु समास के उदाहरण-

1. अष्टाध्यायी 2. चतुरङ्गुलम्
3. चतुर्युगम् 4. त्रिभुवनम्
5. त्रिलोकी

कर्मधारय समास के उदाहरण-

1. जम्बूपादपः 2. परमराजः
3. कृष्णसर्पः 4. नीलोत्पलम्

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि वागर्थाविव में केवल समास है। **अतः विकल्प (A) सही है।**

स्रोत- भैमीव्याख्या - (भाग-4), पेज 14

49. 'लोकेऽधिको हरिः' इत्यत्र सप्तमीविभक्तौ को नियमः?
(A) यस्मादधिकं यस्य चेश्वरवचनं तत्र सप्तमी
(B) अधिरीश्वरे
(C) तदस्मिन्नधिकमिति दशान्ताड्डः इति सूत्रनिर्देशात्
(D) सप्तमीपञ्चम्यौ कारकमध्ये

व्याख्या-

तदस्मिन्नधिकमिति दशान्ताड्डः (5.2.45), यस्मादधिकं यस्य चेश्वरवचनं तत्र सप्तमी (2.3.9)

अधिकशब्देन योगे **'सप्तमीपञ्चम्याविष्येते', 'तदस्मिन्नधिकम्', 'यस्मादधिकम्' इति च सूत्रनिर्देशात्।** अर्थात् सूत्रकार ने **'तदस्मिन्नधिकमिति दशान्ताड्डः'** सूत्र में अधिक शब्द के योग में सप्तम्यन्त **'अस्मिन्'** शब्द का प्रयोग किया है और **'यस्माद् अधिकं यस्य चेश्वरवचनं तत्र सप्तमी'** सूत्र में अधिक शब्द के योग में पञ्चम्यन्त **'यस्मात्'** का प्रयोग किया है। इन सूत्रों के निर्देश से यह विदित होता है कि अधिक शब्द के योग में सप्तमी और पञ्चमी विभक्तियाँ भी होती हैं।

'लोके लोकाद्वा अधिको हरिः' (हरि लोक से बढ़कर हैं) उपर्युक्त ज्ञापन से अधिक शब्द के योग में सप्तमी और पञ्चमी दोनों का होना सिद्ध होने से सप्तमी होने पर **'लोके'** और पञ्चमी होने पर **'लोकाद्'** बन जाता है। इस तरह **'लोके अधिको हरिः'** और **'लोकाद् अधिको हरिः'** ये दोनों वाक्य सिद्ध हो जाते हैं।

अधिरीश्वरे- स्वस्वामिसम्बन्धेऽधिकर्मप्रवचनीयसञ्ज्ञः स्यात्।

अर्थ- स्वस्वामिभाव सम्बन्ध में अधि शब्द की कर्म प्रवचनीय सञ्ज्ञा होती है।

सप्तमीपञ्चम्यौ कारकमध्ये (2.3.7)- शक्तिद्वयमध्ये यौ कालाध्वानौ ताभ्यामेते स्तः।

अर्थ- दो कारकों (शक्तियों) के मध्य में जो कालवाचक और मार्गवाचक शब्द हैं उनसे 'सप्तमी' और 'पञ्चमी' विभक्ति होती है।

जैसे- अद्यभुक्त्वाऽयं द्व्यहे द्व्यहाद् वा भोक्ता (यह आज खाकर के दो दिन के बाद खायेगा)।

इस वाक्य में एक ही कर्ता की दो शक्तियों के मध्य कालवाचक शब्द '**द्व्यह**' है। '**सप्तमीपञ्चम्यौ कारकमध्ये**' सूत्र से द्व्यह में सप्तमी विभक्ति होकर '**द्व्यहे**' बनेगा और पञ्चमी विभक्ति होकर '**द्व्यहाद्**' बनेगा।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि लोकेऽधिकोहरिः इस वाक्य में सप्तमी विभक्ति '**तदस्मिन्नधिकमिति दशान्ताड्डः**' सूत्र से होगी। **अतः विकल्प (C) सही है।**

50. एध् धातोः लङ्लकारे उत्तमपुरुषबहुवचनस्य किं रूपं भवति?

(A) एधामहि (B) ऐधेमहि
(C) एधामहै (D) ऐधामहि

व्याख्या-

	एध् धातु लङ्लकार		
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	ऐधत	ऐधेताम्	ऐधन्त
मध्यम पुरुष	ऐधथाः	ऐधेथाम्	ऐधध्वम्
उत्तम पुरुष	ऐधे	ऐधावहि	ऐधामहि
	लोट् लकार		
प्रथम पुरुष	एधताम्	एधेताम्	एधन्ताम्
मध्यम पुरुष	एधस्व	एधेथाम्	एधध्वम्
उत्तम पुरुष	एधै	एधावहै	एधामहै
	विधिलिङ् लकार		
प्रथम पुरुष	एधेत	एधेयाताम्	एधेरन्
मध्यम पुरुष	एधेथाः	एधेयाथाम्	एधेध्वम्
उत्तम पुरुष	एधेय	एधेवहि	एधेमहि
	लुङ् लकार		
प्रथम पुरुष	एधिष्ट	ऐधिषाताम्	एधिषत
मध्यम पुरुष	ऐधिष्ठाः	ऐधिषाथाम्	ऐधिढ्वम्
उत्तम पुरुष	ऐधिषि	ऐधिष्वहि	ऐधिष्महि

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि एध् धातु लङ्लकार उत्तमपुरुष बहुवचन का रूप '**ऐधामहि**' होगा। **अतः विकल्प (D) सही है।**

स्रोत- धातुरूपनन्दिनी - जनार्दन हेगडे, पेज 2,3

51. 'सत्या विशुद्धिस्तत्रोक्ता विद्यैवैकपदागमा' वाक्यपदीयस्य अस्यां कारिकायां 'विद्यैवैकपदागमा' इत्यनेन पदेन किं स्वरूपा विद्या लक्ष्यते?

(A) अर्थरूपा (B) शब्दरूपा
(C) प्रणवरूपा (D) वर्णरूपा

व्याख्या- वाक्यपदीयम् के ब्रह्मकाण्ड में दर्शनों के वेदमूलक होने पर भी सबमें आग्रह के कारण एकता न होने से ब्रह्मप्राप्ति के सच्चा मार्ग का प्रतिपादन करते हुए आचार्य भर्तृहरि कहते हैं-

सत्या विशुद्धिस्तत्रोक्ता विद्यैवैकपदागमा।
युक्ता प्रणवरूपेण सर्ववादाविरोधिनी॥ (वाक्य 1.9)

अर्थ- जो रागद्वेष आदि से रहित विशिष्ट शुद्धिवाली है और एक प्रणव (ॐकार) ही जिसे व्यक्त कर सकता है वह ब्रह्मरूपा एकत्वबोधिका विद्या ही सत्य है। वही विद्या सत्य अर्थ प्रकाशित करने के कारण वेद में वर्णित है क्योंकि जितने परमाणुकारणवाद, प्रधानकारणवाद आदि वाद हैं इन सबसे कोई विरोध भी नहीं है अतः वही वेद का परम सिद्धान्त है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'सत्या विशुद्धिस्तत्रोक्ता विद्यैवैकपदागमा' पंक्ति से प्रणवरूपा के स्वरूप को स्पष्ट किया गया है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- वाक्यपदीयम् (1.9)

52. अज्ञानस्य समष्ट्योपहितं चैतन्यं वेदान्ते किमुच्यते?

(A) प्राज्ञः (B) वैश्वानरः
(C) ईश्वरः (D) विराट्

व्याख्या- योगीन्द्र सदानन्द वेदान्तसार नामक प्रकरणग्रन्थ में अज्ञान निरूपण के प्रसङ्ग में समष्टि एवं व्यष्टि अज्ञान के इन दो रूपों की चर्चा करते हैं।

'इदमज्ञानं समष्टिव्यष्ट्यभिप्रायेणैकमनेकमिति च व्यवह्रियते'।

- वेदान्तदर्शन विशुद्धसत्त्वप्रधान अज्ञान की इस समष्टि उत्कृष्ट उपाधियुक्त चैतन्य को 'ईश्वर' इस नाम से सम्बोधित करता है।

  'एतदुपहितं चैतन्यं..... ईश्वर इति च व्यपदिश्यते।'

- उत्कृष्ट उपाधियुक्त होने से यह समष्टि विशुद्धतत्त्वप्रधान गुणयुक्त है। इस उपाधि से युक्त चैतन्य सम्पूर्ण अज्ञान का प्रकाशक होने से सब कुछ जानने वाला, सबका ईश्वर, सबको नियन्त्रित करने वाला आदि गुणों से युक्त अव्यक्त, अन्तर्यामी, संसार का कारणरूप ईश्वर इत्यादि नामों से कहा जाता है।

- ईश्वर की यह समष्टि सम्पूर्ण विश्वप्रपञ्च का कारण होने से 'कारणशरीर' है। **'ईश्वरस्य इयं समष्टि अखिलकारणत्वात् कारणशरीरम्'।**
- ईश्वर को आनन्द की प्रचुरता एवं कोश के समान आच्छादक होने से 'आनन्दमयकोश' कहा जाता है।
  'आनन्दप्रचुरत्वात् कोशवदाच्छादकत्वात् च आनन्दमयकोशः'।
- सभी कुछ ईश्वर में विलीन होने से **'सुषुप्ति'।** इसी कारण स्थूल एवं सूक्ष्म शरीरप्रपञ्च का **'लयस्थान'** भी कहा जाता है-
  ''सर्वोपरमत्वात्सुषुप्ति अतएव स्थूल सूक्ष्मप्रपञ्च 'लयस्थानम्' इति च उच्यते''
- वेदान्त के सृष्टिक्रम में ब्रह्म के पश्चात् ईश्वर का ही स्थान है।
- अज्ञान की यह व्यष्टि निकृष्ट उपाधि से युक्त होने के कारण मलिनसत्त्वप्रधान होती है। इस उपाधि से युक्त चैतन्य अल्पज्ञता एवं अशक्तता आदि गुणों वाला होने से व्यष्टिगत एक ही अज्ञान का प्रकाशक होने के कारण 'प्राज्ञ' इस प्रकार कहा जाता है।
- वेदान्त में ईश्वर को सर्वज्ञ, सर्वेश्वर, सर्वनियन्ता, अन्तर्यामी, अव्यक्त एवं जगत् का कारण कहा गया है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से सुस्पष्ट है कि अज्ञान की समष्टि उपहित चैतन्य को 'ईश्वर' कहा जाता है।

अतः विकल्प (C) सही है।

स्रोत- वेदान्तसार - राकेश शास्त्री, पेज 154

53. 'केवलाघो भवति केवलादी'- अस्य मन्त्रस्य द्रष्टा कः?

(A) कण्वः (B) गविष्ठिरः
(C) भिक्षुराङ्गिरसः (D) ब्रह्मा

व्याख्या-

- **मोघमन्नं विन्दते अप्रचेताः सत्यं ब्रवीमि वध इत्स तस्य।**
  नार्यमणं पुष्यति नो सखायं केवलाघो भवति केवलादी॥ (ऋग्वेद- 10.117.6)
  उपर्युक्त मन्त्र ऋग्वेद के दशम मण्डल के 117वें सूक्त के रूप में उद्धृत है जिसके देवता अग्नि तथा द्रष्टा ऋषि भिक्षु आंगिरस हैं एवं त्रिष्टुप् छन्द का प्रयोग है।
  अर्थ- जिसका मन उदार नहीं है उसका भोजन वृथा है। उसका भोजन उसकी मृत्यु के समान है। जो न तो देवता को देता है और न मित्र को देता है और स्वयं भोजन करता है वह केवल पाप ही खाता है।
- **उप त्वाग्ने दिवेदिवे दोषावस्तर्धिया वयम्। नमो भरन्त एमसि॥ (ऋग्वेद 1.1.7)**
  उपर्युक्त मन्त्र ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के प्रथम सूक्त के रूप में उद्धृत है जिसके देवता अग्नि तथा ऋषि मधुच्छन्दा हैं इस मन्त्र में गायत्री छन्द का प्रयोग है।
  अर्थ- हे अग्निदेव! हम यज्ञ का अनुष्ठान करने वाले प्रतिदिन और दिन रात उत्तम बुद्धि से नमस्कार करते हुए तुम्हारे समीप आते हैं।
- **प्रावेपा मा बृहतो मादयन्ति प्रवातेजा इरिणे वर्वृतानाः। सोमस्येव मौजवतस्य भक्षो विभीदको जागृविर्मह्यमच्छान्॥** (ऋग्वेद 10.34.1)
  उपर्युक्त मन्त्र ऋग्वेद के दशम मण्डल के 34वें सूक्त के रूप में उद्धृत है, जिसे अक्षसूक्त के नाम से जाना जाता है जिसके ऋषि कवष ऐलूष एवं देवता अक्षकृषि प्रशंसा एवं मन्त्र त्रिष्टुप् छन्द का प्रयोग है।
- **एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्च पूरुषः। पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि॥**
  (ऋग्वेद 10.90.3)
  उपर्युक्त मन्त्र ऋग्वेद के दशम मण्डल के 90वें सूक्त के रूप में उद्धृत है जिसे पुरुषसूक्त के नाम से जाना जाता है। इस मन्त्र के ऋषि नारायण एवं देवता पुरुष तथा छन्द अनुष्टुप् है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि 'केवलाघो भवति केवलादी' ऋग्वेद के दशम मण्डल से उद्धृत है जिसके द्रष्टा ऋषि भिक्षु आङ्गिरस हैं।

अतः विकल्प (C) सही है।

स्रोत- ऋग्वेद (10.117.6)

54. साङ्ख्यदर्शने कैवल्यं कस्य मन्यते?

(A) अहङ्कारस्य (B) महतः
(C) पुरुषस्य (D) प्रधानस्य

व्याख्या-

- सांख्यकारिका में आचार्य ईश्वरकृष्ण कैवल्य के सन्दर्भ में एक कारिका उद्धृत करते हैं-
  प्राप्ते शरीरभेदे चरितार्थत्वात् प्रधानविनिवृत्तौ। ऐकान्तिकमात्यन्तिकमुभयं...कैवल्यमाप्नोति॥
  (का. 68)

शरीर प्राप्त होने पर, भोग एवं अपवर्ग- दोनों ही प्रयोजनों (पुरुषार्थों) के पूर्व से ही सिद्ध हुए रहने के कारण प्रकृति के निवृत्त हो जाने से पुरुष ऐकान्तिक और आत्यन्तिक मुक्ति प्राप्त कर लेता है।

- वाचस्पति मिश्र कृत 'तत्त्वकौमुदी' टीका में भी कहा गया है- 'ऐकान्तिकम् = अवश्यम्भावि, आत्यन्तिकम् = अविनाशि, इत्युभयं कैवल्यम् = दुःखत्रयविगमं प्राप्नोति पुरुषः'' प्रकृति के प्रवृत्तहीन होने पर वह पुरुष ऐकान्तिक एवं आत्यन्तिक कैवल्य प्राप्त कर लेता है।
- **''पुरुषोऽस्ति भोक्तृभावात् कैवल्यार्थं प्रवृत्तेश्च''** पुरुष की सत्ता सिद्धि के प्रसङ्ग में कैवल्य का मोक्ष के लिए प्रवृत्ति होने के कारण पुरुष की पृथक् सत्ता सिद्ध होती है। **(का. 17)**

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि सांख्यदर्शन में कैवल्य की प्राप्ति पुरुष को ही होती है।

अतः विकल्प (C) सही है।

55. 'रि च' इत्यनेन सूत्रेण किं कार्यं भवति?

(A) उपधायाः दीर्घः रेफस्य च लोपः

(B) पूर्वस्वरस्य दीर्घः रादौ प्रत्यये परे

(C) रेफस्य लोपः रादौ प्रत्यये परे

(D) तासस्त्योः सस्य लोपः रादौ प्रत्यये परे

व्याख्या- रि च (7.4.51)- तासि प्रत्यय और अस् धातु के सकार का लोप होता है रादि (रेफ आदि में हो, ऐसे) प्रत्यय के परे होने पर। जैसे- भवितासि- मध्यमपुरुष के एकवचन में सिप् आता है, अनुबन्ध लोप। तासि, अनुबन्धलोप, **इट् का आगम**, गुण, अवादेश, वर्णसम्मेलन के बाद- भवितास् सि में तास् के सकार का तासस्त्योर्लोपः से लोप होकर भवितासि सिद्ध हो जाता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'रि च' (7.4.51) सूत्र से सकार का लोप होता है। **अतः विकल्प (D) सही है।**

स्रोत- अष्टाध्यायी - ईश्वरचन्द्र - पेज 975

56. अधस्तनेषु उचितसम्बन्धयुतं विकल्पं चिनुत-

(A) वि मृळीकाय ते मनो रथीरश्वं न संदितम्- **इन्द्रसूक्तम्**

(B) ऋतस्य बुध्न उषसामिषण्यन्वृषा मही रोदसी आ विवेश - **वरुण सूक्त।**

(C) यो रध्रस्य चोदिता यः कृशस्य यो ब्रह्मणो नाधमानस्य कीरेः - **अग्निसूक्तम्**

(D) यस्य व्रते पृथिवी नन्नमीति यस्य व्रते शफवज्जर्भुरीति- **पर्जन्यसूक्तम्**

व्याख्या-

- **वि मृळीकाय ते मनो रथीरश्वं न संदितम् ।**
  गीर्भिर्वरुण सीमहि।। (ऋग्वेद 1.25.3)
  उपर्युक्त मन्त्र ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के 25वें सूक्त से उद्धृत है। इस मंत्र के द्रष्टा ऋषि शुनःशेप तथा देवता वरुण हैं एवं छन्द गायत्री है। इस सूक्त को वरुणसूक्त के नाम से जाना जाता है।
- **ऋतस्य बुध्न उषसामिषण्यन्**
  वृषा मही रोदसी आ विवेश।
  मही मित्रस्य वरुणस्य माया
  चन्द्रेव भानुं वि दधे पुरुत्रा।। (ऋग्वेद 3.61.7)
  उपर्युक्त मंत्र ऋग्वेद के तृतीय मण्डल के 61वें सूक्त के रूप में उद्धृत है जिसके देवता उषस् तथा ऋषि विश्वामित्र हैं एवं छन्द त्रिष्टुप् है यह मन्त्र उषस्सूक्त में है।
- **यो रध्रस्य चोदिता यः कृशस्य**
  यो ब्रह्मणो नाधमानस्य कीरेः।
  युक्तग्राव्णो योऽविता सुशिप्रः
  सुतसोमस्य स जनास इन्द्रः।। (ऋग्वेद 2.12.6)
  उपर्युक्त मंत्र ऋग्वेद के द्वितीय मण्डल के बारहवें सूक्त के रूप में उद्धृत है जिसके देवता इन्द्र तथा ऋषि गृत्समद हैं एवं त्रिष्टुप् छन्द का प्रयोग है इस सूक्त को इन्द्रसूक्त के रूप में जाना जाता है।
- **यस्य व्रते पृथिवी नन्नमीति**
  यस्य व्रते शफवज्जर्भुरीति।
  यस्य व्रत ओषधीर्विश्वरूपाः
  स नः पर्जन्यः महि शर्म यच्छ।। (ऋग्वेद 5.83.5)
  उपर्युक्त मंत्र ऋग्वेद के चतुर्थ मण्डल के 83वें सूक्त के रूप में उद्धृत है इस मंत्र के देवता पर्जन्य तथा ऋषि अत्रि हैं एवं छन्द त्रिष्टुप् है। इस सूक्त को पर्जन्यसूक्त के नाम से जाना जाता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'यस्य व्रते पृथिवी नन्नमीति यस्य व्रते शफवज्जर्भुरीति मंत्र' पर्जन्य सूक्त से है जिसका क्रम सुमेलित है शेष के क्रम सुमेलित नहीं है। **अतः विकल्प (D) सही है।**

स्रोत- वैदिकसूक्तसंग्रह - विजयशङ्कर पाण्डेय, पेज 160

57. काव्यस्यात्मा ध्वनिरिति सिद्धान्तः प्रधानतया केन प्रतिपादितः?

(A) अभिनवगुप्तेन (B) भरतमुनिना
(C) मम्मटेन (D) आनन्दवर्धनेन

व्याख्या-

- आचार्य आनन्दवर्धन प्रणीत ध्वन्यालोक में काव्य की आत्मा ध्वनि को मानते हुए कहते हैं-
  'काव्यस्यात्मा ध्वनिः' (ध्वन्यालोक 1.1) अर्थात् काव्य की आत्मा ध्वनि है।
- ध्वन्यालोक में चार उद्योत हैं।
- ध्वन्यालोक में ध्वनि के प्रथमतया दो भेद हैं- वाच्यार्थ तथा प्रतीयमानार्थ
- आचार्य भरतमुनि रससम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य हैं इनके द्वारा रचित नाट्यशास्त्र नामक ग्रन्थ है जिसमें 36 अध्याय हैं। नाट्यशास्त्र में अलङ्कार के चार प्रकारों का वर्णन है।
- आचार्य मम्मट को **समन्वयवादी** आचार्य कहा जाता है। इन्हें 'ध्वनि का प्रतिष्ठापक परमाचार्य' भी कहा जाता है। इनके द्वारा रचित काव्यप्रकाश नामक ग्रन्थ काव्यशास्त्रीयग्रन्थ है।
- आचार्य कुन्तक काव्य की आत्मा वक्रोक्ति को मानते हैं-
  वक्रोक्तिरेव वैदग्ध्यभङ्गीभणितिरुच्यते''
- आचार्य विश्वनाथ काव्य की आत्मा रस को मानते हैं-
  'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्'
- आचार्य वामन काव्य की आत्मा रीति को मानते हैं-
  'रीतिरात्मा काव्यस्य'

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि काव्य की आत्मा ध्वनि है यह सिद्धान्त आचार्य आनन्दवर्धन का है। **अतः विकल्प (D) सही है।**

स्रोत- काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, भू. पेज 18

58. 'अदूरवर्तिनीं सिद्धिं राजन्विगणयात्मनः' रघुवंशे इयमुक्तिः कस्य-

(A) कौत्सस्य (B) सिंहस्य
(C) वसिष्ठस्य (D) अरुन्धत्याः

व्याख्या-

- रघुवंश महाकाव्य महाकवि कालिदास द्वारा रचित है। इसमें **19 सर्ग** हैं इसकी गणना **लघुत्रयी** में की जाती है। पुत्रप्राप्ति के लिए कामधेनु की पुत्री नन्दिनी नामक गाय की सेवा करने विषयक वार्ता को बताते हुए महर्षि वसिष्ठ नन्दिनी गाय को देखकर राजा दिलीप से कहते हैं-
  अदूरवर्तिनीं सिद्धिं राजन्विगणयात्मनः।
  उपस्थितेयं कल्याणी नाम्नि कीर्तित एव यत्॥
  हे महाराज! आप अपने पुत्रप्राप्ति रूप कार्य की सिद्धि को निकट आई हुई समझें। क्योंकि यह 'सामने आयी हुयी' कल्याणमूर्ति नन्दिनी नाम लेते ही उपस्थित हुई है।
  (रघु. 1.87)
- रघुवंशम् के द्वितीय सर्ग में नन्दिनी गाय की सेवा करते हुए राजा दिलीप से कुम्भोदर नामक सिंह कहता है-
  स त्वं, निवर्त्तस्व
  विहाय लज्जां गुरोर्भवान्दर्शितशिष्यभक्तिः।
  शस्त्रेण रक्ष्यं यदशक्यरक्षं
  न तद्यशः शस्त्रभृतां क्षिणोति॥ (रघु. 2.40)
  तुम लज्जा को छोड़कर वापस जाओ तुमने गुरु के सम्बन्ध में शिष्यों के योग्य भक्ति दिखला दी और जो रक्षा करने योग्य वस्तु शस्त्र से रक्षा करने के योग्य नहीं होती वह नष्ट होती हुई भी शस्त्रधारी की कीर्ति को नष्ट नहीं कर सकती है।
- रघुवंशम् के पञ्चम सर्ग में दान के निमित्त राजा रघु के यहाँ पधारे वरतन्तु के शिष्य कौत्स राजा रघु से कहते हैं-
  सर्वत्र नो वार्तमवेहि राजन्नाथे
  कुतस्त्वय्यशुभं प्रजानाम्।
  सूर्ये तपत्यावरणाय दृष्टेः
  कल्पेत लोकस्य कथं तमिस्रा॥ (रघु. 5.13)
  हे राजन् ! सब विषयों में हम लोगों का कुशल है यह जानो, तुम्हारे ऐसे राजा के रहने पर प्रजाओं को दुःख कहाँ से है क्योंकि सूर्य के प्रकाशमान होने पर अन्धकार समूह लोगों की दृष्टि को ढँकने के लिए किसी प्रकार से भी समर्थ नहीं होता है।
- रघुवंशम् के द्वितीय सर्ग में नन्दिनी गाय राजा दिलीप से कहती है-
  भक्त्या गुरौ मय्यनुकम्पया च
  प्रीताऽस्मि ते पुत्र! वरं वृणीष्व।
  न केवलानां पयसां प्रसूतिम्
  अवेहि मां कामदुघां प्रसन्नाम्॥ (रघु. 2.63)
  हे पुत्र वसिष्ठ महर्षि के विषय में भक्ति से और मेरे विषय में दया रखने से मैं तुझ पर प्रसन्न हूँ। इसलिए तू वर माँगो और मुझे केवल दूध देने वाली गाय मत समझो प्रसन्न होने

पर अभिलाषाओं को पूरी करने वाली जानो।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि 'अदूरवर्तिनीं सिद्धिं राजन्विगणयात्मनः' यह वचन वसिष्ठ ने राजा दिलीप से कहा। **अतः विकल्प (C) सही है।**

स्रोत- रघुवंशमहाकाव्यम् - हरगोविन्द मिश्र, पेज 29

59. कस्याम् उपनिषदि 'भृगुवल्ली' उपदिष्टा?

(A) तैत्तिरीयोपनिषदि (B) केनोपनिषदि
(C) ऐतरेयोपनिषदि (D) बृहदारण्यकोपनिषदि

व्याख्या-

➢ **तैत्तिरीयोपनिषद्-** यह उपनिषद् कृष्णयजुर्वेदीय तैत्तिरीय शाखा के अन्तर्गत तैत्तिरीय आरण्यक का अङ्ग है। तैत्तिरीय आरण्यक में दस अध्याय हैं, उनमें से सातवें आठवें और नवें अध्यायों को ही तैत्तिरीय उपनिषद् कहा जाता है। इस उपनिषद् में तीन वल्लियाँ हैं- शिक्षावल्ली, ब्रह्मानन्दवल्ली, भृगुवल्ली।

➢ **केनोपनिषद्-** यह उपनिषद् सामवेद की जैमिनीय शाखा से सम्बद्ध है।

- इसे तवलकारोपनिषद् भी कहते हैं। इसमें चार खण्ड हैं- प्रथम दो खण्ड पद्यात्मक तथा शेष दो गद्यात्मक।
- प्रथम खण्ड में उपास्य ब्रह्म और निर्गुण ब्रह्म में अन्तर बताया गया है।
- द्वितीय खण्ड में ब्रह्म के रहस्यमय स्वरूप का विवेचन है।
- तृतीय और चतुर्थ खण्डों में 'उमा हैमवती आख्यान' द्वारा परब्रह्म की सर्वशक्तिमत्ता का विवेचन है।

➢ **ऐतरेयोपनिषद्-** ऐतरेय आरण्यक के द्वितीय अध्याय के चतुर्थ खण्ड से लेकर षष्ठ खण्ड तक का नाम 'ऐतरेय उपनिषद्' है। इसमें तीन अध्याय हैं। परमात्मा के ईक्षण से सृष्टि का उल्लेख, पुनर्जन्म के सिद्धान्त एवं 'प्रज्ञानं ब्रह्म' का वर्णन है।

➢ **बृहदारण्यकोपनिषद्-** यह शतपथ ब्राह्मण के 41वें काण्ड का अन्तिम भाग है। यह शुक्लयजुर्वेद से सम्बद्ध है। इसमें 6 अध्याय हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि 'भृगुवल्ली' तैत्तिरीय उपनिषद् के अन्तर्गत है। **अतः विकल्प (A) सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 179

60. अधस्तनेषु किं मेलनं सत्यमस्ति-

(A) त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति - सक्तुमिव
(B) म्लेच्छो ह वा एष यदपशब्दः - दुष्टः शब्दः
(C) प्रायश्चित्तीया मा भूमेत्यध्येयं व्याकरणम् - सारस्वतीम्
(D) न चान्तरेण व्याकरणं कृतस्तद्धिता वा शक्या विज्ञातुम् - सुदेवोऽसि

व्याख्या-

- महर्षि पतञ्जलि महाभाष्य के पस्पशाह्निक में व्याकरणशास्त्र के पाँच मुख्य प्रयोजन तथा तेरह गौण प्रयोजनों का उल्लेख करते हैं-

पाँच मुख्य प्रयोजन- 'रक्षोहागमलघ्वसन्देहाः' प्रयोजनम् अर्थात् रक्षा, ऊह, आगम, लघु, असन्देह ये पाँच व्याकरणशास्त्र के मुख्य प्रयोजन हैं।

तेरह गौण प्रयोजन- 1. तेऽसुराः, 2. दुष्टःशब्दः
3. यदधीतम्, 4. यस्तु प्रयुङ्क्ते, 5. अविद्वांसः,
6. विभक्तिं कुर्वन्ति, 7. यो वा इमाम्, 8. चत्वारि
9. उत त्वः, 10. सक्तुमिव, 11. सारस्वतीम्,
12. दशम्यां पुत्रस्य, 13. सुदेवो असि वरुण इति।

- **सक्तुमिव-** सक्तुमिव तितउना पुनन्तो... जैसे सत्तू को चलनी से छानते हैं ऐसे ही जब ज्ञानी लोग अपने प्रकृष्ट ज्ञान के बल से वाणी का व्याकरण (विश्लेषण, प्रकृतिप्रत्यय विभाग) करते हैं उस अवस्था में समान दर्शन वाले आपस में सायुज्य का अनुभव करते हैं कल्याणमयी लक्ष्मी इनकी वाणी में निहित होती है।

'सक्तुः - सचतेर्दुर्धावो भवति। कसतेर्वा विपरीताद् विकसितो भवति। तितउ-परिपवनं भवति' सक्तु सच् धातु से निष्पन्न होता है, इसका अर्थ धोना (साफ करना) या कठिन होता है। हो सकता है कि सक्तु कस् धातु के आद्यन्त विपर्यय करने से बना हो, खिला सा होता है। तितउ का अर्थ है चलनी।

- **दुष्टः शब्दः-** 'दुष्टः शब्दः स्वरतो वर्णतो.....' स्वर और वर्ण की दृष्टि से अशुद्ध उच्चारण किया हुआ दोषयुक्त शब्द अपने विवक्षित अर्थ को नहीं कहता है। वह वाणीरूप वज्र उस यजमान को मार देता है। जैसे 'इन्द्रशत्रु' में स्वरदोष के कारण वृत्रासुर मारा गया। हम दोषयुक्त शब्दों का प्रयोग न करें इसलिए हमें व्याकरण पढ़ना चाहिए।
- **सारस्वतीम्-** 'प्रायश्चित्तीया मा भूमेत्यध्येयं व्याकरणम्' सारस्वतीम्। प्रायश्चित्त के निमित्त सरस्वती देवता के लिए इष्टि याग करें। 'हम प्रायश्चित्त के योग्य न हों इसलिए हमें व्याकरण पढ़ना चाहिए।
- **सुदेवो असि-** सुदेवो असि वरुण यस्य ते सप्त सिन्धवः। अनुक्षरन्ति काकुदं सूर्म्यं सुषिरामिव।

हे वरुण! तुम सुदेव हो क्योंकि तुम्हारी सात नदियाँ लौहप्रतिमा के समान तालु में प्रकाशित होती हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'प्रायश्चित्तीया मा भूमेत्यध्येयं व्याकरणम्' यह व्याकरण के गौण प्रयोजन सारस्वतीम् के अन्तर्गत है। **अतः विकल्प (C) सही है।**

स्रोत- महाभाष्य - जयशंकरलाल त्रिपाठी, पेज 29

61. अधोऽङ्कितेषु समुचितं विकल्पं चिनुत-

(A) वैभाषिकाः - तत्र बोधात्मको जीवः। अबोधात्मकस्त्वजीवः

(B) योगाचाराः - हीनयानम्

(C) माध्यमिकाः - महायानम्

(D) सौत्रान्तिकाः - तज्ज्ञानं पञ्चविधं मतिश्रुतावधिमनःपर्याय-केवलभेदेन

व्याख्या-

♦ माधवाचार्य विरचित सर्वदर्शनसंग्रह नामक ग्रन्थ के 'आर्हतदर्शन' नामक प्रकरण में जैनतत्त्वमीमांसा के अन्तर्गत जीव और अजीव नामक दो तत्त्व बताये गये हैं-

जीव- 'तत्र बोधात्मको जीवः' उनमें ज्ञान के रूप में जीव है।

अजीव- 'अबोधात्मस्त्वजीवः' - अज्ञान के रूप में अजीव है।

♦ बौद्धदर्शन के सुप्रसिद्ध चार सम्प्रदाय हैं-

(i) माध्यमिक (शून्यवाद)- यह मत नागार्जुन से सम्बद्ध है। माध्यमिक और योगाचार महायान शाखा से सम्बद्ध है। पूर्ण असत् या पूर्ण सत् को अस्वीकार कर दोनों की सोपाधिक सत्ता मानने वाला, मध्यमार्ग का अवलम्बन करने वाला।

(ii) योगाचार- योग और आचार का समन्वय करने वाला। योग के द्वारा मानसिक सत्ता (आलय विज्ञान) को स्वीकार करके बाह्य पदार्थों से विश्वास हटा देना।

(iii) सौत्रान्तिक- सुत्तपिटक से सम्बद्ध, इसके बहुत से ग्रन्थ सुत्तान्त नाम से विख्यात हैं।

(iv) वैभाषिक- विभाषा (अभिधर्म महाविभाषा) नामक ग्रन्थ में इनके सिद्धान्त प्रतिपादित हैं, इसलिए इनका नाम वैभाषिक पड़ा।

* सर्वदर्शनसंग्रह के आर्हतदर्शन के अन्तर्गत सम्यक् ज्ञान और उसके पाँच आलयों का वर्णन किया गया है-

तज्ज्ञानं पञ्चविधं मतिश्रुतावधिमनःपर्यायकेवलभेदेन' वह सम्यक् ज्ञान 1. मति 2. श्रुत 3. अवधि 4. मनःपर्याय 5. केवल - इन भेदों के कारण पाँच प्रकार का है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि माध्यमिक बौद्धों का सम्बन्ध महायान शाखा से है। **अतः विकल्प (C) सही है।**

स्रोत- सर्वदर्शनसंग्रह - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज 32

62. आग्निवेश्यगृह्यसूत्रम् कस्य वेदस्य वर्तते-

(A) कृष्णयजुर्वेदस्य (B) सामवेदस्य

(C) ऋग्वेदस्य (D) अथर्ववेदस्य

व्याख्या-

♦ गृह्यसूत्रों का सम्बन्ध गृहस्थ जीवन से है। गृहस्थ जीवन से सम्बद्ध सभी संस्कार इसमें संगृहीत हैं। जीवन से सम्बद्ध सभी सोलह संस्कार गृह्यसूत्र के अन्तर्गत आते हैं। संस्कारों की सभी विधियों का उल्लेख इस सूत्र में प्राप्त होता है। चारों वेदों से सम्बद्ध गृह्यसूत्रों का वर्णन निम्नवत् है-

♦ **ऋग्वेद के गृह्यसूत्र-** ऋग्वेद के तीन गृह्यसूत्र हैं-

* आश्वलायन गृह्यसूत्र

* शांखायन गृह्यसूत्र

* कौषीतकि गृह्यसूत्र

♦ **शुक्लयजुर्वेद के गृह्यसूत्र-**

पारस्कर गृह्यसूत्र

♦ **कृष्णयजुर्वेद के गृह्यसूत्र-**

(i) बौधायन गृह्यसूत्र (ii) मानव गृह्यसूत्र

(iii) भारद्वाज गृह्यसूत्र (iv) आपस्तम्ब गृह्यसूत्र

(v) काठक गृह्यसूत्र (vi) आग्निवेश्य गृह्यसूत्र

(vii) हिरण्यकेशी गृह्यसूत्र (viii) वाराह गृह्यसूत्र

(ix) वैखानस गृह्यसूत्र (x) चारायणीय गृह्यसूत्र

(xi) बैजवाप गृह्यसूत्र

♦ **सामवेद के गृह्यसूत्र-**

(i) गोभिल गृह्यसूत्र (ii) कौथुम गृह्यसूत्र

(iii) खादिर गृह्यसूत्र (iv) द्राह्यायण गृह्यसूत्र

(v) जैमिनीय गृह्यसूत्र

♦ **अथर्ववेद का गृह्यसूत्र-**

(i) कौशिक गृह्यसूत्र

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि आग्निवेश्य गृह्यसूत्र कृष्णयजुर्वेद से सम्बन्धित हैं। **अतः विकल्प (A) सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 231

63. अर्थशास्त्रस्य चतुर्थमधिकरणं वर्तते-
(A) धर्मस्थीयम् (B) षाड्गुण्यम्
(C) योगवृत्तम् (D) कण्टकशोधनम्

व्याख्या- अर्थशास्त्र आचार्य कौटिल्य की रचना है, जिसमें 15 अधिकरण हैं। कौटिलीय अर्थशास्त्र में पुरुषार्थचतुष्टय, राजा एवं राजा के स्वरूप, दण्ड आदि के विषय वर्णित हैं-

प्रथम अधिकरण	-	विनयाधिकारिक प्रकरण
द्वितीय अधिकरण	-	अध्यक्षप्रचार
तृतीय अधिकरण	-	धर्मस्थीय
चतुर्थ अधिकरण	**-**	**कण्टकशोधन**
पंचम अधिकरण	-	योगवृत्त
षष्ठ अधिकरण	-	मण्डलयोनि
सप्तम अधिकरण	-	षाड्गुण्य
अष्टम अधिकरण	-	व्यसनाधिकारिक
नवम अधिकरण	-	अभियास्यत्कर्म
दशम अधिकरण	-	साङ्ग्रामिक
एकादश अधिकरण	-	वृत्तसंघ
द्वादश अधिकरण	-	आबलीयस
त्रयोदश अधिकरण	-	दुर्गलम्भोपाय
चतुर्दश अधिकरण	-	औपनिषदिक
पञ्चदश अधिकरण	-	तन्त्रयुक्ति

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि अर्थशास्त्र का चतुर्थ अधिकरण 'कण्टकशोधनम्'है, **अतः विकल्प (D) सही है।**

64. 'शोणो धावति' इति उदाहरणे वेदान्तरीत्या का लक्षणा?
(A) जहल्लक्षणा (B) साध्यवसानालक्षणा
(C) अजहल्लक्षणा (D) भागलक्षणा

व्याख्या- वेदान्त के अनुसार लक्षणा तीन प्रकार की होती है-

1. जहल्लक्षणा- 'वाच्यार्थमशेषतः परित्यज्य तत्सम्बन्धिन्यर्थान्तरे वृत्तिर्जहल्लक्षणा' अर्थात् वाच्यार्थ का पूर्णरूप से परित्याग करके वाच्यार्थ से सम्बद्ध किसी दूसरे अर्थ का बोध कराने वाली वृत्ति जहल्लक्षणा कहलाती है। इसे **'लक्षणलक्षणा'** भी कहते हैं। उदाहरण- **गङ्गायां घोषः** इस वाक्य में गङ्गाशब्द अपने वाच्यार्थ का पूर्णतया परित्याग करके अपने से सम्बद्ध गंगातटरूप अर्थान्तर का लक्षणा से बोध कराता है।

2. अजहल्लक्षणा- वाच्यार्थापरित्यागेन तत्सम्बन्धिनी वृत्तिरजहल्लक्षणा अर्थात् वाच्यार्थ का बिना परित्याग किए हुए वाच्यार्थ से सम्बद्ध अर्थ का बोध कराने वाली वृत्ति अजहल्लक्षणा कहलाती है। इस लक्षणा को **'उपादान लक्षणा'** भी कहते हैं। उदाहरण- **'शोणो धावति'** अर्थात् लाल दौड़ रहा है। इस उदाहरण में शोणवर्ण जड़ होने के कारण धावति क्रिया के कर्त्ता रूप से वाक्यार्थ में अन्वित नहीं हो सकता है इसलिए वाक्यार्थ में अपने अन्वय की सिद्धि के लिए 'शोण' शब्द अपने वाच्यार्थ का बिना परित्याग किए हुए अपने से सम्बद्ध शोणवर्ण वाला 'अश्व' इस अर्थान्तर का लक्षणा से बोध कराता है।

3. जहदजहल्लक्षणा- वाच्यार्थैकदेशपरित्यागेनैकदेशवृत्तिर्जहदजहल्लक्षणा अर्थात् वाच्यार्थ के एक अंश का परित्याग करके अवशिष्ट अंश का बोध कराने वाली जहदजहल्लक्षणा कहलाती है। इस वृत्ति के द्वारा वाच्यार्थ के एक भाग का परित्याग कर दिया जाता है और एक भाग को ग्रहण कर लिया जाता है। एक भाग का परित्याग करने के कारण भागत्याग तथा भागमात्र को ग्रहण करने से भागलक्षणा भी कहते हैं जैसे – सोऽयं देवदत्तः तत्त्वमसि।

स्पष्टीकरण- विवेचन से स्पष्ट है कि 'शोणो धावति' इस उदाहरण में अजहल्लक्षणा है। **अतः विकल्प (C) सही है।**

स्रोत- वेदान्तसार- सन्तनारायण श्रीवास्तव्य, पेज 127

65. नीतिमञ्जरीप्रतिपाद्यविषयाः केन सम्बद्धाः?
(A) अथर्ववेदेन (B) ऋग्वेदेन
(C) कृष्णयजुर्वेदेन (D) सामवेदेन

व्याख्या- अनुक्रमणी साहित्य से ही सम्बद्ध नीतिमञ्जरी नामक ग्रन्थ प्रख्यात है। इसमें ऋग्वेद के अष्टक क्रम से, उसके समस्त आख्यानों एवं उनसे संकेतित नीति और उपदेशों का अत्यन्त रोचक ढंग से प्रस्तुतीकरण है। **द्या द्विवेद** ने अत्यन्त सूक्ष्म दृष्टि से ऋग्वेद का अध्ययन करके यह ग्रन्थ लिखा। इस ग्रन्थ के भाष्य में षड्गुरुशिष्य की ऋग्वेदभाषा से पर्याप्त सहायता ली गई है। बृहद्देवता में भी ऋग्वैदिक आख्यान है पर नीतिमञ्जरी की विशेषता यह है कि इसमें उन आख्यानों से मिलती व्यावहारिक शिक्षा को भी आख्यान के साथ ही श्लोक में निबद्ध कर दिया है।

ऋग्वेद से सम्बन्धित अन्य ग्रन्थ-

शब्दावृत्त्यनुक्रमणी, छन्दोऽनुक्रमणी, देवतानुक्रमणी, मन्त्रार्थानुक्रमणी, नामानुक्रमणी, गूढार्थपदानुक्रमणी, विभक्त्यर्थनुक्रमणी, समयानुक्रमणी, इतिहासानुक्रमणी, गलित प्रदीप, ऋक्पदवर्णानुक्रमणी।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि नीतिमञ्जरी ऋग्वेद से सम्बन्धित है। **अतः विकल्प (B) सही है।**

66. तं राजा प्रणयन् सम्यक् त्रिवर्गेणाभिवर्धते अत्र त्रिवर्गस्याभिप्रायः कः?
(A) ब्राह्मणः क्षत्रियः वैश्यश्च (B) भूः भुवः स्वश्च
(C) साम दामं भेदश्च (D) धर्मः अर्थः कामश्च

व्याख्या-

- मनुस्मृति के सप्तम अध्याय में राजा द्वारा दिए गए दण्ड के विषय में निम्न वर्णन प्राप्त होता है-

तं राजा प्रणयन्सम्यक् त्रिवर्गेणाभिवर्धते।
कामात्मा विषमः क्षुद्रो दण्डेनैव निहन्यते॥

यदि राजा भलीभाँति विचार कर दण्ड देता है तो धर्म, अर्थ और काम की वृद्धि होती है और जो राजा, कामी और अनुचित दण्ड देने वाला होता है तो वह उसी दण्ड से मारा जाता है। (मनु. 7.27)

- मनुस्मृति के प्रथम अध्याय में ब्रह्मा के द्वारा चारों वर्णों की उत्पत्ति का वर्णन प्राप्त होता है-

लोकानां तु विवृद्ध्यर्थं मुखबाहूरुपादतः।
ब्राह्मणं क्षत्रियं वैश्यं शूद्रं च निरवर्त्तयत्॥

ब्रह्मा ने लोकों की वृद्धि के लिए मुख, बाहु, जंघा और चरण से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इनको क्रम से बनाया। (मनु. 1.31)

- वेदान्त में लोकों की संख्या 14 है जिनमें भूः भुवः स्वः से ऊपर के लोक हैं। 14 लोकों के नाम हैं- भूः, भुवः, स्वः, महः, जनः, तप, सत्यम्, अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल, महातल, पाताल।
- कौटिलीय अर्थशास्त्र में साम, दाम, दण्ड, भेद ये चार उपाय हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि तं राजा प्रणयन् सम्यक् त्रिवर्गेणाभिवर्धते में त्रिवर्ग से अभिप्राय धर्म, अर्थ, काम है। **अतः विकल्प (D) सही है।**

स्त्रोत- मनुस्मृति - गिरिधर गोपाल शर्मा, पेज 158

67. अर्थसंग्रहरीत्या शाब्दीभावनाया लक्षणं किम् ?
(A) भवितुर्भवनानुकूलो भावकव्यापारविशेषः
(B) भवितुर्भवनानुकूलो भावयितुर्व्यापारविशेषः
(C) प्रयोजनेच्छाजनित क्रियाविषयव्यापारः
(D) पुरुषप्रवृत्त्यनुकूलो भावयितुर्व्यापारविशेषः

व्याख्या-लौगाक्षिभास्कर कृत अर्थसंग्रह मीमांसादर्शन का एक प्रकरण ग्रन्थ है जिसमें धर्म का लक्षण, विधि का लक्षण आदि का वर्णन है। अर्थसंग्रह के अनुसार भावना का लक्षण है-

'भावना नाम भवितुर्भवनानुकूलो भावयितुर्व्यापारविशेषः' उत्पन्न होने वाले का भावानुकूल उत्पत्ति में कारणभूत जो प्रयोजक का व्यापार विशेष होता है वह भावना है।

भावना के दो भेद हैं- शाब्दीभावना व आर्थीभावना

- **शाब्दीभावना- 'तत्र पुरुषप्रवृत्त्यनुकूलो भावयितुर्व्यापारविशेषः'** शाब्दीभावना अर्थात् प्रयोज्य पुरुष की प्रवृत्ति के अनुकूल प्रयोजक के व्यापारविशेष को शाब्दीभावना कहते हैं। शाब्दी, लिङ् अंश के द्वारा कही जाती है। 'सा च लिङ्शेनोच्यते'। शाब्दीभावना के तीन अंश होते हैं- साध्य, साधन, इतिकर्तव्यता।
- **आर्थीभावना- प्रयोजनेच्छाजनितक्रिया-विषय व्यापारः** आर्थीभावना अर्थात् स्वर्ग आदि प्रयोजन को लक्ष्य करके याग आदि क्रिया को सम्पादित करने का पुरुष में जो मानसिक व्यापार उत्पन्न होता है उसे आर्थीभावना कहते हैं। आर्थीभावना आख्यात अंश के द्वारा कही जाती है 'सा चाख्यातत्वांशेनोच्यते।' आर्थीभावना के तीन अंश होते है- साध्य, साधन, इतिकर्तव्यता।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'पुरुष प्रवृत्त्यनुकूलो भावयितुर्व्यापारविशेषः' शाब्दी भावना का लक्षण है। **अतः विकल्प (D) सही है।**

स्त्रोत- अर्थसंग्रह - ग़जानन शास्त्री मुसलगाँवकर, पेज 30

68. रुद्रदाम्नः गिरनारलेखः कस्यां भाषायां विद्यते?
(A) संस्कृतभाषायाम् (B) पालिभाषायाम्
(C) अपभ्रंशभाषायाम् (D) प्राकृतभाषायाम्

व्याख्या- रुद्रदामन् का गिरनार लेख- गुजरात के जूनागढ़ से प्रायः 2 किलोमीटर की दूरी पर पूर्व गिरिनार नामक पहाड़ी की एक शिला के पश्चिमी मुख पर ऊपर की ओर कार्दमवंशीय प्रथम रुद्रदामा नामधारी शक राज का यह लेख अंकित है।

- इसी शिला पर सम्राट् अशोक के 14 शिला-प्रज्ञापन एवं गुप्त सम्राट् स्कन्दगुप्त के भी लेख-द्वय उत्कीर्ण हैं।
- गिरिनार जूनागढ़ का प्राचीन नाम है।
- लेख की भाषा संस्कृत है, यत्र-तत्र प्राकृत का प्रभाव भी परिलक्षित होता है।
- इसकी लिपि पश्चिमोत्तर प्रदेश की कुषाण-कालीन ब्राह्मी है।
- यह मौर्यौत्तरकाल में मथुरा, तक्षशिला और सुराष्ट्र में विकसित हुई।

प्राकृत भाषा- अशोक के अभिलेखों को सबसे पहले 1750 में टी. फैन्थैलर ने खोजा था।

- अशोक के अभिलेखों को सर्वप्रथम 1837 में एशियाटिक सोसायटी के सचिव जेम्स प्रिन्सेप ने पढ़ा था।
- अशोक पहला भारतीय शासक था जिसने अभिलेखों के सहारे सीधे अपनी प्रजा को सम्बोधित किया।
- अशोक के अभिलेखों की भाषा 'प्राकृत' थी।

♦ यह सामान्य जन की भाषा थी।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि रुद्रदामन् का गिरनार अभिलेख संस्कृत भाषा में है। **अतः विकल्प (A) सही है।**

स्त्रोत- भारतीय अभिलेखशास्त्र, पुरालिपिशास्त्र एवं कालक्रमपद्धति अमिता शर्मा, पेज 61

69. वाग्ग्मी इत्यत्र को मत्वर्थीयप्रत्ययः-

(A) ग्मिनि (B) विनि
(C) मिनि (D) इनिः

याख्या- ग्मिनि प्रत्ययः- वाचो ग्मिनिः (5.2.124)- वाच् इस प्रथमान्त वाच् प्रातिपदिक से मत्वर्थ में 'ग्मिनिँ' प्रत्यय होता है।

वाग्ग्मी, प्रशस्त वाणी वाला, बोलने में चतुर।

'प्रशस्ता वागस्त्यस्य' विग्रह करके 'वाच् + सुँ' इस स्थिति में 'वाचो ग्मिनिः' सूत्र से ग्मिनि प्रत्यय, अनुबन्धलोप, प्रातिपदिक संज्ञा सुप् का लुक् करके - 'वाच् + ग्मिन्'

चकार को 'चोः कुः' से कुत्व होकर ककार बना, 'झलां जशोऽन्ते' से जश्त्व होकर गकार हुआ - वाग्ग्मिन् बना।

सु आदि कार्य पुनः अनुबन्धलोप होकर - 'वाग्ग्मी' रूप सिद्ध होता है।

* **विनि प्रत्ययः -** अस्मायामेधास्रजोविनिः (5.2.121)- असन्त (अस् शब्द जिसके अन्त में है, यथा- यशस् आदि) माया, मेधा और स्रज् - इन प्रथमान्त प्रातिपदिकों से मत्वर्थ में तद्धित सञ्ज्ञक विनि प्रत्यय होता है।

उदाहरण- यशस् + विनि = यशस्वी, मया + विनि = मायावी, मेधा + विनि = मेधावी, स्रज् + विनि = स्रग्वी - ये प्रयोग सिद्ध होते हैं।

* **इनि प्रत्ययः-** अतइनिठनौ (5.2.115)- प्रथमान्त अदन्त प्रातिपदिक से मत्वर्थ में तद्धितसञ्ज्ञक इनि और ठन् प्रत्यय विकल्प से होता है।

उदाहरण- दण्ड + इनि = दण्डिन् 'दण्डी' (दण्ड वाला)
धन + इनि = धनिन् (धनी) धन वाला
छत्र + इनि = छत्रिम् (छत्री) छाता वाला

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्यान से स्पष्ट है कि 'वाग्ग्मी' पद में 'ग्मिनि' मत्वर्थीय प्रत्यय का प्रयोग हुआ है। **अतः विकल्प (A) सही है।**

स्त्रोत- भैमीव्याख्या, भाग पाँच - भीमसेन शास्त्री, पेज 318

70. कथाप्रसङ्गेन जनैरुदाहृतादनुस्मृताखण्डलसूनुविक्रमः। तवाभिधानाद् व्यथते नताननः स दुःसहान्मन्त्रपदादिवोरगः॥ अत्र कोऽलङ्कारः-

(A) लुप्तोपमा (B) मालोपमा
(C) श्लिष्टोपमा (D) उत्प्रेक्षा

व्याख्या- भारवि प्रणीत किरातार्जुनीयम् महाकाव्य में 18 सर्ग हैं जिसकी गणना संस्कृत बृहत्त्रयी में होती है। महाकाव्य के नायक अर्जुन तथा प्रधान रस वीर है।

किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग में दुर्योधन अर्जुन के पराक्रम का स्मरण करके नतमस्तक होकर दुःखी हो उठता है। इस प्रसंग को वनेचर युधिष्ठिर के समक्ष सर्प से उपमा देते हुए कहता है-

कथाप्रसङ्गेन जनैरुदाहृताद
नुस्मृताखण्डलसूनुविक्रमः।
तवाभिधानाद् व्यथते नताननः
स दुःसहान्मन्त्रपदादिवोरगः॥ (किराता.1.24)

वार्तालाप में प्रसंगवश आप लोगों के सम्बन्ध में चर्चा चलने पर अर्जुन के पराक्रम का स्मरण करके जैसे श्रेष्ठ विष वैद्यों द्वारा उच्चारण किए गये गरुड और वासुकि के नामों से युक्त अत्यन्त दुःसह मंत्र से गरुड के पादविक्षेप का स्मरण कर नीचा मुख किए सर्प व्यथित होता है, वैसे ही नीचा मुख किए हुए दुःखित होता है।

इस श्लोक के दो-दो अर्थ हैं एक दुर्योधन पक्ष में और दूसरा सर्पपक्ष में-

1. कथाप्रसङ्गेन जनैः-
   दुर्योधनपक्ष में- बातचीत के प्रसङ्ग में लोगों के द्वारा
   सर्प पक्ष में- विषवैद्यों में श्रेष्ठ लोगों के द्वारा।
2. तवाभिधानात्-
   दुर्योधनपक्ष में- आप (युधिष्ठिर) के नाम से।
   सर्पपक्ष में- वासुकि और गरुड़ के नाम से
3. अनुस्मृताखण्डलसूनुविक्रमः-
   दुर्योधन पक्ष में- इन्द्र के पुत्र अर्जुन के पराक्रम का स्मरण करके।

सर्पपक्ष में- स्मरण कर लिया गया है इन्द्र के सूनु (अनुज) अर्थात् विष्णु के पक्षी।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि इस श्लोक के श्लिष्ट दो-दो अर्थ उपमा के द्वारा निर्देशित हैं। अतः श्लेषानुप्राणित (श्लिष्टोपमा) अलङ्कार है। **अतः विकल्प (C) सही है।**

स्त्रोत- किरातार्जुनीयम् - रामसेवक दुबे, पेज 103

71. 'तस्मादृचः साम यजूंषि दीक्षा' पंक्तिरियं कुत्र प्राप्यते?

(A) ऋग्वेदे (B) ईशोपनिषदि
(C) शुक्लयजुर्वेदे (D) मुण्डकोपनिषदि

व्याख्या-

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे...।

अर्थ- उन परमेश्वर से ही ऋग्वेद की ऋचाएँ, सामवेद के **''तस्मादृचः साम यजूंषि दीक्षा''** मन्त्र और यजुर्वेद की श्रुतियाँ एवं यज्ञादि कर्मों की दीक्षा उत्पन्न हुए हैं। यह सूक्ति अथर्ववेद

की शौनकी शाखा के अन्तर्गत 'मुण्डकोपनिषद्' के द्वितीय मुण्डक के प्रथम खण्ड का छठवाँ मन्त्र है, मुण्डकोपनिषद् में कुल तीन मुण्डक एवं प्रत्येक मुण्डक में दो-दो मन्त्र हैं, प्रथम मुण्डक के प्रथम खण्ड में 9 मन्त्र हैं, द्वितीय खण्ड में 13 मन्त्र हैं, द्वितीय मुण्डक के प्रथम खण्ड में 10 एवं द्वितीय खण्ड में 11 मन्त्र हैं, तृतीय मुण्डक के प्रथम खण्ड में 10 एवं द्वितीय खण्ड में 11 मन्त्र हैं। अतः कुल मन्त्रों की संख्या 64 है।

जिस यज्ञ में सब कुछ अर्थात् सबका आत्मरूप पुरुष आहुत कर दिया जाता है।

ऋग्वेद- वैदिक साहित्य का सबसे प्राचीन व प्रथम ग्रन्थ का नाम ऋग्वेद है, ऋग्वेद में विभिन्न देवों की स्तुति वाले मन्त्र हैं। अतः इसे ऋग्वेद कहते हैं, ऋग्वेद में कुल सूक्तों की संख्या 1028 है, जिसमें 11 बालखिल्य सूक्त माने जाते हैं। इसमें मन्त्रों की संख्या 10580 - 1/4 है, कहीं कहीं मन्त्रों की संख्या 10552 भी मानी गयी है।

* **ईशावास्योपनिषद्-** यह उपनिषद् शुक्लयजुर्वेद काण्व शाखीय संहिता का चालीसवाँ अध्याय है, इसी को पहला उपनिषद् माना जाता है। शुक्ल यजुर्वेद के प्रथम (39) उनतालीस अध्यायों में कर्मकाण्ड का निरूपण हुआ है, इस अन्तिम 40वें अध्याय में भगवत्तत्त्वरूप ज्ञानकाण्ड का निरूपण किया गया है, इस उपनिषद् में कुल (18) अष्टादश मन्त्र हैं।

सूक्ति- हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम् ।

अर्थ- सत्य स्वरूप आप सर्वेश्वर का श्रीमुख, ज्योतिर्मय सूर्यमण्डल रूप पात्र से ढँका हुआ है।

* **शुक्लयजुर्वेद-** इस वेद की दो शाखाएँ हैं- माध्यन्दिन या वाजसनेयि संहिता तथा काण्वसंहिता, माध्यन्दिन शाखा में चालीस (40) अध्याय, 303 अनुवाक तथा 1975 मन्त्र हैं।

काण्व शाखा का विभाजन अध्याय और अनुवाक के रूप में हुआ है। काण्व शाखा में 40 अध्याय, 328 अनुवाक और 2086 मन्त्र प्राप्त होते हैं।

सूक्ति- ॐ इषे त्वोर्ज्जे त्वा वाय वस्थ देवो वः।

अर्थ- हे शमी वृक्ष की शाखा! वर्षा के लिए तुम्हें और अन्न या बल के लिए तुम्हें काटता हूँ।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'तस्मादृचः साम यजूंषि दीक्षा' यह पंक्ति मुण्डकोपनिषद् में प्राप्त होती है। **अतः विकल्प (D) सही है।**

72. मनुस्मृतौ 'सर्वतेजोमयो हि सः' अस्मिन् श्लोकांशे सः पदेन कः प्रोक्तः?

(A) सूर्यः (B) नृपः
(C) प्राज्ञः (D) गुरुः

व्याख्या- मनु प्रणीत मनुस्मृति धर्मशास्त्र विषयक ग्रन्थ है जिसमें बारह अध्याय तथा 2694 श्लोक हैं। मनुस्मृति में संस्कार, विवाह, राजधर्म, धर्म, दुर्ग आदि विषयक वर्णन प्राप्त होते हैं।

मनुस्मृति के सप्तम अध्याय में राजा के विषय में वर्णन प्राप्त होता है-

यस्य प्रसादे पद्मा श्रीर्विजयश्च पराक्रमे।
मृत्युश्च वसति क्रोधे सर्वतेजोमयो हि सः॥(मनु. 7.11)

जिसकी प्रसन्नता में बहुत सी लक्ष्मी बसती है अर्थात् प्रसन्न होने पर बहुत सी धन सम्पत्ति देता है, जिसके पराक्रम में विजय और जिसके कोप में मृत्यु होती है ऐसा वह राजा सब तेजों की मूर्ति है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त श्लोक के वर्णन से स्पष्ट है कि 'सर्वतेजोमयो हि सः' में सः पद राजा के लिए प्रयुक्त हुआ है। **अतः विकल्प (B) सही है।**

स्रोत- मनुस्मृति -शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पेज 303

73. ऋग्वेदप्रातिशाख्ये कियन्ति समानाक्षराणि उक्तानि?

(A) दश (B) पञ्चविंशतिः
(C) चत्वारि (D) अष्टौ

व्याख्या- ऋग्वेद प्रातिशाख्य महर्षि शौनक की रचना है जिसमें 18 पटल हैं। ऋग्वेद प्रातिशाख्य में सञ्ज्ञा, परिभाषा, स्वर, सन्धि, उच्चारणदोष, छन्द आदि का विवेचन है।

- **समानाक्षर सञ्ज्ञा-** अष्टौ समानाक्षराण्यादितः अर्थात् आदि (प्रारम्भ) के आठ अक्षर समानाक्षर सञ्ज्ञक होते हैं। आठ अक्षर हैं- **अ, आ, ऋ, ॠ, इ, ई, उ, ऊ** समानाक्षर सञ्ज्ञा का प्रयोजन समान स्थान वाले दो समानाक्षर एक दीर्घ-स्वर वर्ण को प्राप्त हो जाते हैं।
- **सन्ध्यक्षर सञ्ज्ञा-** ततश्चत्वारि संध्यक्षराण्युत्तराणि- सन्ध्यक्षर के आगे वाले चार अक्षर सन्ध्यक्षर सञ्ज्ञक होते हैं। चार अक्षर हैं- **ए, ओ, ऐ, औ।**
- **अघोष सञ्ज्ञा-** अन्त्याः सप्त तेषामघोषाः अर्थात् ऊष्म वर्णों में अन्तिम सात वर्ण अघोष सञ्ज्ञक होते हैं। अघोष सञ्ज्ञक वर्ण हैं- **श, ष, स, अः, ᳵक, ᳶप, अं।**
- **सोष्म सञ्ज्ञा-** युग्मौ सोष्माणौ अर्थात् प्रत्येक वर्ग में सम वर्ण सोष्म सञ्ज्ञक होते हैं। सोष्म सञ्ज्ञक हैं- **खघ, छझ, ठढ, थध, फभ।**

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि समानाक्षर सञ्ज्ञक वर्णों की संख्या आठ है। **अतः विकल्प (D) सही है।**

स्रोत- ऋग्वेदप्रातिशाख्यम्, पेज 42

74. 'महदरण्यम्' इत्यर्थे स्त्रीप्रत्यये किं भवति?
(A) अरण्या (B) अरण्यानी
(C) महारण्या (D) महारण्यानी

व्याख्या- इन्द्रवरुणभवशर्वरुद्रमृडहिमारण्ययवयवनमातुलाचार्याणामानुक् (4.1.49)

इन्द्र, वरुण, भव, शर्व, रुद्र, मृड, हिम, अरण्य, यव, यवन, मातुल और आचार्य इन बारह शब्दों से स्त्रीत्व की विवक्षा में ङीष् प्रत्यय एवं इनको ही आनुक् का आगम भी होता है।

महद् अरण्यम् अरण्यानी (बड़ा जंगल)

अरण्य शब्द से 'हिमारण्ययोर्महत्त्वे' के अनुसार महत्त्व अर्थ में 'इन्द्र-वरुण-भव-शर्व-रुद्र-मृड-हिमारण्य-यव-यवनमातुलाचार्याणामानुक्' से आनुक् आगम और ङीष् प्रत्यय।

सवर्ण दीर्घ करके - अरण्यानी

सु आदि कार्य फिर 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल्' से लोप होकर अरण्यानी रूप सिद्ध हुआ।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि महद् अरण्यम् इस पद में ङीष् प्रत्यय होकर अरण्यानी रूप बनेगा। **अतः विकल्प (B) सही है।**

स्रोत- भैमीव्याख्या (भाग 6) भीमसेन शास्त्री, पेज 52,53

75. तर्कसंग्रहरीत्या मनः कीदृक्?
(A) एकमनित्यं परमाणुरूपञ्च
(B) अनन्तं परमाणुरूपं नित्यञ्च
(C) एकं विभु नित्यञ्च
(D) अनन्तं विभु नित्यञ्च

व्याख्या-

आचार्य अन्नंभट्टकृत तर्कसंग्रह न्याय-वैशेषिक का एक प्रकरण ग्रन्थ है जिसमें सात पदार्थों का वर्णन है- द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय, अभाव।

द्रव्य नामक पदार्थ के नौ भेद हैं- पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, काल, दिक्, आत्मा और मन।

तर्कसंग्रह के अनुसार मन का लक्षण-

'सुखाद्युपलब्धि साधनमिन्द्रियं मनः। तच्च प्रत्यात्मनियतत्वादनन्तं परमाणुरूपं नित्यं च' अर्थात् सुख, दुःख आदि की प्राप्ति के साधन इन्द्रिय को मन कहते हैं। वह प्रत्येक आत्मा में निश्चित रूप से विद्यमान होने से अनन्त है। परमाणुरूप में है और नित्य भी है।

मन
↓ ↓ ↓
अनन्त परमाणुरूप नित्य

- वैशेषिक दर्शन की नौ द्रव्य परम्परा में मन की अन्तिम द्रव्य के रूप में गणना की गयी है। इसे अन्तरिन्द्रिय भी कहते हैं।
- विद्वानों ने मन का निर्वचन **'मन्यते ज्ञायते अनेन इति मनः'** किया है।
- दीपिका टीका में अन्नम्भट्ट ने कहा है- **सुखेति 'स्पर्शरहितत्वे सति क्रियात्वम्'** अर्थात् जो स्पर्शरहित रहते हुए भी क्रियावान् रहता है, उसे 'मन' कहते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि 'मन' नामक नौवाँ द्रव्य अनन्त, परमाणुरूप तथा नित्य है। **अतः विकल्प (B) सही है।**

स्रोत- तर्कसंग्रह - गोविन्दाचार्य, पेज 76

76. 'शिशुपालवधस्य' सर्गसंख्या काऽस्ति?
(A) विंशतिः (B) एकविंशतिः
(C) सप्तविंशतिः (D) पञ्चविंशतिः

व्याख्या- शिशुपालवध का सामान्य परिचय-

- महाकवि 'माघ' विरचित शिशुपालवधम् 20 सर्गों तथा 1650 श्लोकों वाला महाकाव्य है।
- इसकी गणना बृहत्त्रयी के अन्तर्गत होती है।
- यह वीर रस प्रधान महाकाव्य है। इसमें वंशस्थ, अनुष्टुप्, उपजाति (कुल प्रयुक्त छन्द 25) हैं।
- इसका अपरनाम श्र्यङ्कमहाकाव्य (श्रीपदाङ्कमहाकाव्य) है।
- उपजीव्य ग्रन्थ महाभारत का सभापर्व (सर्ग 33 से 45 तक) तथा श्रीमद्भागवत पुराण (10वाँ स्कन्ध, 74वाँ अध्याय) है।
- श्रीकृष्ण धीरोदात्त नायक हैं तथा सत्यभामा/रुक्मणी नायिका हैं।
- श्रियः पतिः श्रीमति शासितुं जगत् (वंशस्थ छन्द), वस्तुनिर्देशात्मक मङ्गलाचरण है।
- माघ के पितामह सुप्रभदेव, पिता-दत्तक (सर्वाश्रय) माता-ब्राह्मी, निवास- श्रीभिन्नमाल (भीनमाल), राजस्थान (आबूपर्वत तथा लूनानदी के बीच स्थित) है।
- उपाधि- घण्टामाघ, सर्वाश्रय है।
- 'माघे सन्ति त्रयो गुणाः', 'मेघे माघे गतं वयः', नवसर्गगते माघे नवशब्दो न विद्यते- ये प्रशस्तियाँ हैं।
- शिशुपालवध का प्रारम्भ नारद द्वारा भेजे गये इन्द्र के सन्देश से तथा अन्त शिशुपाल का कृष्ण द्वारा वध से होता है।

संस्कृत वाङ्मय के कुछ महत्त्वपूर्ण महाकाव्य-

महाकाव्य	रचनाकार	सर्ग एवं श्लोक
रघुवंशम्	कालिदास	19 सर्ग/ 1569 श्लोक लगभग
किरातार्जुनीयम्	भारवि	18 सर्ग/ 1030 श्लोक
शिशुपालवधम्	माघ,	20 सर्ग/ 1650 श्लोक
नैषधीयचरितम्	श्रीहर्ष,	22 सर्ग/ 2830 श्लोक लगभग
भट्टिकाव्य (रावणवधम्)	भट्टि	22 सर्ग/ 1624 श्लोक लगभग
हरविजयम्	रत्नाकर	50 सर्ग/ 4321 श्लोक (सबसे बड़ा महाकाव्य)
राघवपाण्डवीयम्	कविराज (माधवभट्ट)	13 सर्ग/ 6682 श्लोक

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि **विकल्प (A) सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशङ्कर शर्मा, पेज- 262

77. 'मा नो वधाय हत्नवे जिहीलानस्य रीरधः' अत्र स्तूयमानो देवः कः?

(A) रुद्रः (B) भिन्नः
(C) वरुणः (D) अग्निः

व्याख्या- ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के 25वें सूक्त के दूसरे मन्त्र में ऋषि शुनःशेप गायत्री छन्द में वरुण देवता की स्तुति करते हुए कहते हैं-

- **''मा नो वधाय हत्नवे जिहीलानस्य रीरधः''**
  हे वरुण देवता! अनादर कर और घातक बनकर तुम हमारा वध नहीं करना। (ऋ. 1.25.2)
- **अतो विश्वानि अद्भुता चिकित्वाँ अभि पश्यति**
  ज्ञानी मनुष्य वरुण की कृपा से वर्तमान और भविष्य सारी अद्भुत घटनाओं को देखते हैं। (1.25.11)
- ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के प्रथम सूक्त में ऋषि मधुच्छन्दा गायत्री छन्द में अग्नि देवता की स्तुति करते हुए कहते हैं-
  ''अग्निना रयिमश्नवत् पोषमेव दिवे दिवे''
  अग्नि के अनुग्रह से यजमान को धन मिलता है, और वह धन अनुदिन बढ़ता है। (ऋ. 1.1.3)
  स नः पितेव सूनवे अग्ने सूपायनो भव
  जिस तरह पुत्र पिता को आसानी से पा जाता है उसी तरह हम भी तुम्हें पा सकें। (ऋ. 1.1.9)
- ऋग्वेद के द्वितीय मण्डल के बारहवें सूक्त में ऋषि गृत्समद त्रिष्टुप् छन्द के द्वारा इन्द्र देवता की स्तुति करते हुए कहते हैं-
  यो जिगीवाँल्लक्षमाददर्यः पुष्टानि स जनास इन्द्रः
  जो लक्ष्य जीतकर व्याध की तरह शत्रु के सारे धन ग्रहण करते हैं वे ही इन्द्र हैं। (ऋ. 2.12.4)
  यः सूर्यं य उषसं जजान यो अपां नेता स जनास इन्द्रः।
  जो सूर्य और उषा को उत्पन्न करते हैं और जो जल प्रेरित करते हैं वही इन्द्र हैं। (ऋ. 2.12.7)
- ऋग्वेद के दसवें मण्डल के इकहत्तरवें सूक्त में ऋषि बृहस्पति ने त्रिष्टुप् छन्द के द्वारा परब्रह्म ज्ञान देवता की स्तुति करते हुए कहते हैं-
- **यस्तित्याज सचिविदं सखायं न तस्य वाच्यपि भागो अस्ति** (ऋ. 10.71.6)
  जो विद्वान् मित्र को छोड़ देता है, उसकी वाणी से कोई फल नहीं।
- **अत्राह त्वं विजहुर्वेद्याभिरोहब्राह्मणो विचरन्त्युत्वे।**
  कोई-कोई स्रोतज्ञ (ब्राह्मण) वेदार्थ ज्ञात होकर विचरण करते हैं। (ऋ. 10.71.8)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि मा नो वधाय..... इस मन्त्र में वरुण देवता की स्तुति की गयी है। **अतः विकल्प (C) सही है।**

स्रोत- ऋक्सूक्त संग्रह (1.25.2)

78. काव्यमीमांसानुसारं काव्यकविः कतिधा भवति?

(A) चतुर्धा (B) त्रिधा
(C) पञ्चधा (D) अष्टधा

व्याख्या- राजशेखर काव्यमीमांसा के प्रथम अधिकरण के काव्यपाककल्प नामक पंचम अध्याय में कवियों के विषय में बताते हैं-

कविः- ''प्रतिभाव्युत्पत्तिमांश्च कविः कविरित्युच्यते।''
प्रतिभा तथा व्युत्पत्ति से युक्त कवि ही कवि कहा जाता है।

कवि के प्रकार- 'स च त्रिधा' अर्थात् कवि तीन प्रकार के होते हैं- 1. शास्त्रकवि 2. काव्यकवि 3. उभयकवि

1. शास्त्रकवि- 'तत्र त्रिधा शास्त्रकविः' शास्त्रकवि तीन प्रकार के होते हैं-

(i) जो शास्त्र का निर्माण करता है- 'यः शास्त्रं विधत्ते'।

(ii) जो शास्त्र में काव्य को निविष्ट करता है- 'यश्च शास्त्रे काव्यं संविधत्ते'।

(iii) जो काव्य में शास्त्र का सन्निवेश करता है- 'योऽपि काव्ये शास्त्रार्थं निधत्ते'।

2. काव्यकवि- 'काव्यकविः पुनरष्टधा'- काव्यकवि भी आठ प्रकार के हैं- 1. रचनाकवि 2. शब्दकवि 3. अर्थकवि 4. अलङ्कारकवि 5. उक्तिकवि 6. रसकवि 7. मार्गकवि 8. शास्त्रार्थकवि।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि काव्य कवि आठ प्रकार के होते हैं। **अतः विकल्प (D) सही है।**

स्रोत- काव्यमीमांसा - गंगासागर राय, पेज 37

79. जातिवाच्ये सति हस्त शब्दस्य मत्वर्थीयः कः प्रयोगः?

(A) हस्तवान् (B) हस्ती
(C) हस्तालुः (D) हस्तिकः

व्याख्या- 'हस्ताज्जातौ' (5.2.133) 'हस्त' इस प्रातिपदिक से मत्वर्थ में इनि प्रत्यय होता है, जाति वाच्य होने पर।

- हस्ती = हाथी। संस्कृत में हाथी की सूँड को 'हस्त' भी कहते हैं।
- 'हस्तः अस्य अस्ति'- ऐसा विग्रह करके 'हस्त सु' इस स्थिति में ''हस्ताज्जातौ'' सूत्र से 'इनि' प्रत्यय होने पर अनुबन्ध लोप, प्रातिपदिक संज्ञा, सुप् का लुक्, भसंज्ञा और अकार लोप होकर 'हस्तिन्' शब्द बनता है। एकदेशविकृतन्यायेन प्रातिपदिकत्वात् स्वादिकार्य होकर 'हस्ती' सिद्ध हो जाता है। यहाँ पर हस्तित्व जाति का बोध हो रहा है।
- इस सूत्र में 'जातौ' पद का प्रयोग होने से जातिवाच्य होने पर ही यह प्रत्यय होता है, अन्यथा नहीं होता है। जैसे- पुरुष व्यक्तिवाची में 'इनि' प्रत्यय नहीं हुआ अपितु 'मतुप्' होकर 'हस्तवान्' हो जाता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि 'हस्त' इस प्रातिपदिक से जातिवाच्य होने पर मत्वर्थीय 'इनि' प्रत्यय से 'हस्ती' शब्द सिद्ध होगा। **अतः विकल्प (B) सही है।**

स्रोत- वैयाकरण सिद्धान्तकौमुदी-गोविन्दाचार्य पेज 901

80. ''बुध-युध-नश-जनेङ्-प्रु-द्रु-स्रुभ्यो णेः'' इति नियमेन शुद्धः प्रयोगः कः?

(A) बोधयति पद्मम् (B) बोध्यते काष्ठानि
(C) बोधयते पद्मम् (D) वेदम् अध्यापयते

व्याख्या- भट्टोजिदीक्षित सिद्धान्तकौमुदी में परस्मैपद प्रक्रिया प्रकरण में एक सूत्र उद्धृत करते हैं-

सूत्र- बुध-युध-नश-जनेङ्-प्रु-द्रु-स्रुभ्यो णेः (1.3.86)

सूत्रार्थ- णिजन्त बुध्, युध्, नश्, जन्, इङ्, प्रु, द्रु, स्रु धातुओं से परस्मैपद होता है।

उदाहरण-

i. बोधयति पद्मम् (सूर्य) कमल को खिलाता है।

यहाँ भ्वादि और दिवादि में पठित 'बुध अवगमने' धातु से णिच् होने के बाद 'बोधि' धातु बन जाती है। इससे 'णिचश्च' सूत्र से उभयपद प्राप्त होने पर 'बुधयुधनशजनेङ्प्रुद्रुस्रुभ्यो णेः' से केवल परस्मैपद का विधान होने पर लट्, तिप्, शप्, गुण अयादेश होकर 'बोधयति' सिद्ध हो जाता है।

ii. योधयति काष्ठानि (लकड़ियों से टकराता है)

iii. नाशयति दुःखम् (श्रीहरि दुःखों का नाश करते हैं)

iv. जनयति सुखम् (श्रीहरि सुख उत्पन्न करते हैं)

v. अध्यापयति वेदम् (वेद पढ़ाता है)

vi. प्रावयति, द्रावयति, स्रावयति आदि इसी सूत्र के उदाहरण हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि प्रस्तुत सूत्र परस्मैपद का विधान करता है, अतः 'बोधयति पद्मम्' यही प्रयोग परस्मैपद होने से सही है। **अतः विकल्प (A) सही है।**

स्रोत- वैयाकरण सिद्धान्तकौमुदी (पञ्चम भाग)-गोविन्दाचार्य, पेज-445

81. भाषाविज्ञानानुसारेण भारोपीयपरिवारस्य भाषा नास्ति-

(A) मय (B) तोखारी
(C) इटालिक (D) आर्मीनी

व्याख्या-

- भारोपीय शब्द भारत + यूरोपीय का संक्षिप्त रूप है।
- यह Indo European का अनुवाद है।
- भारोपीय में भारतवर्ष से लेकर यूरोप तक फैली हुई भाषाओं का संग्रह है।
- भारोपीय परिवार की भाषाओं को ध्वनि के आधार पर दो भागों में विभक्त किया जाता है- (क) केन्टुम् (ख) शतम्।
- इस विभाजन का श्रेय प्रो. अस्कोली (Ascoly) को है।
- भारोपीय परिवार को केन्टुम् और शतम् वर्ग के आधार पर इस प्रकार बाँटा जाता है-

शतम् वर्ग	केन्टुम् वर्ग
1. भारत-ईरानी (आर्य)	1. ग्रीक
2. बाल्टो-स्लाविक	2. केल्टिक
3. आर्मीनी	3. जर्मनिक (ट्यूटानिक)
4. अल्बानी (इलीरी)	4. इटैलिक
	5. हिटाइट
	6. तोखारी

♦ मय भाषा अमेरिकी परिवार की है जो मध्य अमेरिका में बोली जाती है।

♦ अमेरिकी परिवार में लगभग 1000 भाषाएँ मानी जाती हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि तोखारी, इटालिक, आर्मीनी ये भारोपीय भाषाएँ हैं जबकि 'मय' अमेरिकी परिवार की भाषा है। **अतः विकल्प (A) सही है।**

स्रोत- भाषा विज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 410

82. हर्षचरितम् कति उच्छ्वासेषु विभक्तम्?

(A) सप्तसु (B) अष्टसु

(C) चतुर्षु (D) दशसु

व्याख्या- हर्षचरितम् का सामान्य परिचय-
हर्षचरित महाकवि बाणभट्ट विरचित ऐतिहासिक कथानक पर आश्रित पहला गद्यकाव्य है।

♦ बाणभट्ट के दो प्रसिद्ध गद्यकाव्य हैं- 1. कादम्बरी (कथा) दो भाग। 2. हर्षचरितम् (आख्यायिका) आठ उच्छ्वासों में विभक्त एक आख्यायिका है।

♦ हर्षचरित में दो कथानक हैं- 1. बाणभट्ट की आत्मकथा (वंश वर्णन) 2. हर्ष का जीवन परिचय।

♦ प्रथम तीन उच्छ्वासों में बाणभट्ट के पूर्वजों का वर्णन, शेष पाँच उच्छ्वासों में हर्ष का सम्पूर्ण जीवन वृत्तान्त है।

♦ हर्षचरित का उपजीव्य ग्रन्थ इतिहास प्रसिद्ध है।
बाणभट्ट का वंश वर्णन-
वत्स कुबेर पाशुपत अर्थपति (इनके 11 पुत्र)
चित्रभानु बाणभट्ट (पुलिनभट्ट/पुलिन्दभट्ट/भूषणभट्ट)

संस्कृत वाङ्मय के कुछ गद्यकाव्य-

गद्यकाव्य	रचनाकार	विभाजन
दशकुमारचरितम्	दण्डी	दश उच्छ्वास
वासवदत्ता (कथा)	सुबन्धु	एकांकी
कादम्बरी (कथा)	बाणभट्ट	दो भागों में
हर्षचरितम् (आख्यायिका)	बाणभट्ट	आठ उच्छ्वास
शिवराजविजय	अम्बिकादत्त व्यास	3 विराम 12 निःश्वास
गद्यचिन्तामणि	वादीभसिंह	ग्यारह लम्भक

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि हर्षचरितम् में आठ उच्छ्वास हैं। **अतः विकल्प (B) सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज- 396

83. 'शमप्रधानेषु तपोधनेषु गूढं हि दाहात्मकमस्ति तेजः। स्पर्शानुकूला इव सूर्यकान्तास्तदन्यतेजोऽभिभवाद् वमन्ति॥ अत्र 'तत्' पदेन किं द्योतते?

(A) शमः (B) तपः

(C) धनम् (D) तेजः

व्याख्या- महाकवि कालिदास विरचित अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के द्वितीय अङ्क के सातवें श्लोक में राजा दुष्यन्त अपने सेनापति भद्रसेन से कहता है-

'शमप्रधानेषु तपोधनेषु गूढं हि दाहात्मकमस्ति तेजः।
स्पर्शानुकूला इव सूर्यकान्तास्तदन्यतेजोऽभिभवाद् वमन्ति।।'

शब्दार्थ- शमप्रधानेषु = शान्तिप्रधान, तपोधनेषु = तपस्वियों में, दाहात्मकं = जला देने वाला, गूढं = गुप्त, तेजः = तेज, हि = क्योंकि, स्पर्शानुकूलाः = स्पर्श के योग्य, सूर्यकान्ताः इव = सूर्यकान्तमणि के समान, तत् = उस (तेज)

अनुवाद- शान्तिप्रधान तपस्वियों में जला देने वाला गुप्त तेज रहता है। क्योंकि स्पर्श के योग्य सूर्यकान्त मणियों के तुल्य (वे) अन्य तेज से तिरस्कृत होने पर उस (तेज) को प्रकट करते हैं। (अभि. 2.7)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'तत्' शब्द से 'तेज' का अर्थ द्योतित हो रहा है। **अतः विकल्प (D) सही है।**

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-108

84. तर्कसंग्रहरीत्या 'आद्यस्यन्दना समवायिकारणं' किम्भवति?

(A) द्रव्यत्वम् (B) द्रवत्वम्

(C) गुरुत्वम् (D) स्नेहः

व्याख्या- न्यायवैशेषिक के प्रकरणग्रन्थ तर्कसंग्रह में आचार्य अन्नम्भट्ट द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय, अभाव इन सात पदार्थों की चर्चा करते हैं। जिनमें पृथिवी, अप, तेज, वायु, आकाश, काल, दिक्, आत्मा, मन इन नौ द्रव्यों को बताने के बाद रूप, रस, गन्ध इत्यादि 24 गुणों का वर्णन करते हैं।

द्रवत्वम्- आद्यस्यन्दनासमवायिकारणं द्रवत्वम्। अर्थात् प्रथम बहना का असमवायिकारण (ही) द्रवत्व है।

पृथकत्व- पृथग् व्यवहारासाधारणकारणं पृथक्त्वम्। पृथक् व्यवहार के असाधारण कारण को पृथकत्व कहा गया है।

गुरुत्व- आद्यपतनासमवायिकारणं गुरुत्वम्। प्रथम गिरने का असमवायिकारण ही गुरुत्व है।

स्नेह- चूर्णादिपिण्डीभावहेतुर्गुणः स्नेहः। चूर्ण आदि को

पिण्ड बना देने के कारण रूप गुण को स्नेह कहा जाता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि तर्कसंग्रहरीत्या आद्यस्यन्दनासमवायिकारणं द्रवत्वम् है। **अतः विकल्प (B) सही है।**

स्रोत- तर्कसंग्रह - राकेश शास्त्री, पेज.-168

85. ''मेदश्छेदकृशोदरं लघुभवत्युत्थानयोग्यं वपुः'' इत्येवं कस्य वैशिष्ट्यं प्रतिपादितम् ?

(A) मृगयायाः (B) पर्यटनस्य

(C) तपश्चर्यायाः (D) पादपसिञ्चनस्य

व्याख्या- प्रस्तुत पंक्ति महाकवि कालिदास द्वारा विरचित अभिज्ञानशाकुन्तलम् के द्वितीय अङ्क के पाँचवें श्लोक से उद्धृत है। द्वितीय अङ्क के प्रारम्भ में ''राजा दुष्यन्त और विदूषक मृगया (शिकार) खेलने राजा दुष्यन्त नहीं जायेंगे, क्योंकि माधव्य ने आज विश्राम करने की इच्छा व्यक्त की है।''– यह बात सुनकर सेनापति भद्रसेन महाराज दुष्यन्त के मृगया (शिकार) के लिए उत्साहित करते हुए शिकार करने का लाभ बताते हुए कहता है-

मेदश्छेदकृशोदरं लघुभवत्युत्थानयोग्यं वपुः
सत्त्वानामपि लक्ष्यते विकृतिमच्चित्तं भयक्रोधयोः।
उत्कर्षः स च धन्विनां यदिषवः सिध्यन्ति लक्ष्ये चले
मिथ्यैव व्यसनं वदन्ति मृगयामीदृग्विनोदः कुतः।।

अनुवाद- (मृगया से) शरीर, चर्बी कम होने से घटे हुए पेट वाला, चुस्त और उत्साह के योग्य हो जाता है। जीवों के भय और क्रोध की अवस्था में क्षुब्ध मन का भी ज्ञान होता है। यह धनुर्धारियों के लिए बड़े ही गौरव की बात है कि चंचल लक्ष्य पर (उनके) बाण सफल होते हैं। शिकार खेलने की व्यर्थ ही लोग व्यसन कहते हैं। इतना मनोरंजन और कहाँ?

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि 'मेदश्छेदकृशोदरं लघु भवत्युत्थानयोग्यं वपुः' में मृगया का वैशिष्ट्य प्रतिपादित है। **अतः विकल्प (A) सही है।**

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-104

86. पण्डितराजजगन्नाथानुसारं निम्नलिखितेषु को न रसदोषः?

(A) स्थायिव्यभिचारिणां शब्दवाच्यत्वम्

(B) रसस्य व्यङ्ग्यत्वम्

(C) विच्छिन्नरसस्य पुनर्दीपनम्

(D) समबलप्रबलप्रतिकूलरसाङ्गानां निबन्धनम्

व्याख्या- पण्डितराज जगन्नाथ रसगङ्गाधर के प्रथम आनन में रसदोषों की चर्चा करते हैं-

1. **वमन दोष-** ''व्यङ्ग्ययस्य वाच्यीकरणे सामान्यतो वमनाख्यदोषस्य वक्ष्यमाणत्वात्।'' व्यङ्ग्य को वाच्य बना देने पर 'वमन' नामक दोष होता है।

2. **निरर्थकत्व दोष-** 'आस्वाद्यताऽवच्छेदकरूपेण प्रत्ययाजनकतया, रसस्थले वाच्यवृत्तेः कापेयककल्पत्वेन विशेषदोषत्वाच्च' रस शृङ्गारादि पदों से रसों को वाच्य बना देने पर 'निरर्थकत्व' नामक विशेष दोष भी होता है।

3. **शब्दवाच्यत्व दोष-** 'स्थायिव्यभिचारिणामपि शब्दवाच्यत्वं दोषः' स्थायिभावों और व्यभिचारिभावों का भी नामोल्लेखपूर्वक वर्णन करना शब्दवाच्यत्व दोष होता है।

4. **''विभावानुभावयोरसम्यक् प्रत्यये, विलम्बेन प्रत्यये वा, न रसास्वाद इति तयोर्दोषित्वम्''** विभावों और अनुभावों की अच्छी तरह प्रतीति न होना, अथवा विलम्ब से प्रतीति होना दोष है।

5. **''समबल-प्रबल-प्रतिकूलरसाङ्गानां निबन्धनन्तु प्रकृतरसपोष-प्रातीपिकमिति दोषः''** जहाँ जिस रस का वर्णन करना कवि को इष्ट हो उस प्रस्तुत रस के विरोधी रसों के समबल अथवा प्रबल अङ्गों का वर्णन करना दोष है।

6. **''प्रबन्धे प्रकृतस्य रसस्य प्रसङ्गान्तरेण विच्छिन्नस्य पुनर्दीपने सामाजिकानां न सामग्र्येण रसास्वाद इति विच्छिन्नदीपनं दोषः।''** किसी भी प्रबन्ध में जिस रस का वर्णन चल रहा हो, उसका यदि एक बार किसी भी प्रसङ्गान्तर से विच्छेद हो जाय, तब पुनः आगे उसका दीपन करने से विच्छिन्न कथा को दुबारा उठाने से 'विच्छिन्नदीपन' नामक दोष होता है।

7. **''तथा तत्तद्रसप्रस्तावनानर्हेऽवसरे प्रस्तावः, विच्छेदानर्हे च विच्छेदः''** इसी तरह जहाँ जिस रस का प्रस्ताव नहीं करना चाहिए वहाँ उस रस का प्रस्ताव करना, और जहाँ जिस रस का विच्छेद नहीं करना चाहिए वहाँ उस रस का विच्छेद कर देना दोष है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि 'रसस्य व्यङ्ग्यत्वम्' यह रस दोष नहीं है। **अतः विकल्प (B) सही है।**

स्रोत- रसगङ्गाधर - मदनमोहन झा, पेज 206,208

87. साध्यशून्यः पक्षो मुक्तावल्यां क उदाहृतः?

(A) बाधः (B) व्याप्यत्वासिद्धः

(C) सत्प्रतिपक्षः (D) अनैकान्तिकः

व्याख्या- श्री विश्वनाथ पञ्चानन प्रणीत न्यायसिद्धान्तमुक्तावली के अनुमानखण्ड में 'बाध' को परिभाषित करते हैं-

➢ **बाध- ''साध्यशून्यो यत्र पक्षस्त्वसौ बाध उदाहृतः''** जहाँ पक्ष साध्य से शून्य होता है, वह बाध कहलाता है। पक्ष का अर्थ है- पक्षतावच्छेक से विशिष्ट। (का. 78)

➢ **असिद्धि- आश्रयासिद्धिराद्या स्यात् स्वरूपासिद्धिरप्यथ। व्याप्यत्वासिद्धिरपरा स्यादसिद्धिरतस्त्रिधा॥** पहली आश्रयासिद्धि, उसके बाद स्वरूपासिद्धि, तीसरी

व्याप्यत्वासिद्धि इस कारण असिद्धि तीन प्रकार की होती है।

➢ **अनैकान्तिक- 'साधारणाद्यन्यतमत्वमनैकान्तिकत्वम्'** साधारणत्व, असाधारणत्व, अनुपसंहारित्व में से किसी एक का होना अनैकान्तिकत्व है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'साध्यशून्यः पक्षः' मुक्तावली में 'बाध' की परिभाषा है।

अतः विकल्प (A) सही है।

स्रोत- न्यायसिद्धान्तमुक्तावली - महानन्द झा, पेज 160

88. याज्ञवल्क्यस्मृत्यनुसारं किं स्त्रीधनं नास्ति?

(A) अध्यग्नि (B) आधिवेदनिकम्
(C) अन्वाधेयकम् (D) सामान्यार्थः

व्याख्या- याज्ञवल्क्यस्मृति के रचयिता 'याज्ञवल्क्य' वैदिक ऋषि हैं, वे शुक्लयजुर्वेद के द्रष्टा थे।

- याज्ञवल्क्यस्मृति के सुप्रसिद्ध टीकाकार विश्वरूप, विज्ञानेश्वर और अपरार्क हैं।
- के.पी. जायसवाल ने इस स्मृति का समय 150 ई. से 200 ई. के मध्य निश्चित किया है।
- पी.वी. काणे ने इसका समय ईसापूर्व प्रथम शताब्दी तथा ईसा के पश्चात् तृतीय शताब्दी के बीच का निर्धारित किया है।
- याज्ञवल्क्यस्मृति अनुष्टुप् छन्द में निबद्ध है।
- इसमें लगभग एक हजार श्लोक हैं।
- याज्ञवल्क्यस्मृति तीन भागों में विभक्त है।
- प्रथम आचाराध्याय है, इसमें चौदह विद्याएँ, धर्मोपादान, आचार के दस सिद्धान्त आदि तेरह प्रकरण हैं।
- द्वितीय व्यवहाराध्याय- इसमें पच्चीस प्रकरण हैं।
- तृतीय प्रायश्चित्ताध्याय इसमें आपद्धर्म, यतिधर्म, प्रायश्चित्त आदि छह प्रकरण हैं।
- याज्ञवल्क्य के द्वितीय भाग व्यवहाराध्याय के 143वें श्लोक में स्त्रीधन की चर्चा की गयी है।

स्त्रीधन- 'पितृमातृपतिभ्रातृदत्तमध्यग्न्युपागतम् ।
आधिवेदनिकाद्यं च स्त्रीधनं परिकीर्तितम्॥

पिता, माता, पति और भाई द्वारा दिया गया धन, विवाह के समय अग्नि के समीप धन तथा दूसरा विवाह करते समय प्रथम पत्नी के परितोषार्थ उसे दिया गया धन इत्यादि स्त्रीधन कहे गये हैं। (याज्ञ.1.43)

- **'बन्धुदत्तं तथा शुल्कमन्वाधेयकमेव च।'**
स्त्री के माता-पिता के बन्धुओं द्वारा दिया गया धन, परिणय के शुल्क के रूप में दिया गया धन, विवाह के बाद पति तथा पितृकुल से प्राप्त धन भी स्त्री-धन होता है।

'अतीतायामप्रजसि बान्धवास्तदवाप्नुयुः॥' (याज्ञ.144)
ऐसी स्त्रीधन वाली स्त्री के बिना संतान के मर जाने पर उसके बन्धु पति आदि उस स्त्रीधन को प्राप्त करते हैं

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि अध्यग्नि, आधिवेदनिकम् तथा अन्वाधेयकम् ये तीनों स्त्रीधन हैं जबकि सामान्यार्थः स्त्रीधन नहीं है। **अतः विकल्प (D) सही है।**

स्रोत- याज्ञवल्क्यस्मृति- गंगासागर राय, पेज-284

89. 'अग्निष्टोमाख्ये' सोमयागे कति शस्त्राणि भवन्ति?

(A) द्वादश (B) पञ्चदश
(C) एकादश (D) अष्ट

व्याख्या- चारों वेदों में यज्ञ का बहुत अधिक महत्त्व बताया गया है। यह वह विधि है जिसके द्वारा प्राकृतिक संतुलन बना रहता है। प्रकृति में एक नैसर्गिक चक्र की व्यवस्था है, प्रत्येक पदार्थ पुनः अपने स्थान पर पहुँचता है। ऋग्वेद और यजुर्वेद के द्वारा वर्षचक्ररूपी यज्ञ में वसन्त ऋतु घी है, ग्रीष्म ऋतु समिधा और शरद् ऋतु हव्य है।

* यजुर्वेद में यज्ञ को सृष्टिचक्र का नाभि कहा है।
* अथर्वा ऋषि यज्ञ के प्रवर्तक माने गये हैं। ऐतरेय ब्राह्मण में समस्त श्रौतयज्ञों को पाँच भागों में विभक्त किया गया है- (i) अग्निहोत्र (ii) दर्शपौर्णमास (iii) चातुर्मास्य (iv) पशु (v) सोम।

श्रौत और स्मार्त 21 याग ये हैं-

(क) पाकयज्ञ- ये गृह्ययाग हैं, ये सात हैं- (1) औपासन होम (2) वैश्वदेव (3) पार्वण (4) अष्टका (5) मासिक श्राद्ध (6) श्रवणा (7) शूलगव।

(ख) हविर्याग- ये श्रौतयाग हैं, ये सात हैं- (1) अग्निहोत्र (2) दर्श-पौर्णमास (3) आग्रयण (4) चातुर्मास्य (5) पशुबन्ध (6) सौत्रामणि (7) पितृयज्ञ।

(ग) सोमयाग- ये श्रौतयाग हैं; ये सात हैं- (1) अग्निष्टोम (2) अत्यग्निष्टोम (3) उक्थ्य (4) षोडशी (5) वाजपेय (6) अतिरात्र (7) अप्तोर्माम।

सोमयाग के अन्तर्गत ही अग्निष्टोम को बताया गया है यह श्रौतयाग हैं- अग्निष्टोम यज्ञायज्ञा वो अग्नये (ऋ. 6.48.1 और साम. 35)। ऋचा पर सामगान 'अग्निष्टोम' कहलाता है।

"द्वादशाग्निष्टोमस्य शस्त्राणि" (ता.ब्रा. 6.3.3) अर्थात् अग्निष्टोम के बारह शस्त्र हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि सोमयाग के अन्तर्गत अग्निष्टोम के 12 शस्त्र हैं। **अतः विकल्प (A) सही है।**

स्रोत- श्रौतयज्ञ परिचय - श्रीवेणीराम शर्मा गौड़, पेज- 30

90. 'प्रतिहर्ता' ऋत्विक् कस्य गणस्य विद्यते?

(A) ब्रह्मगणस्य (B) उद्गातृगणस्य
(C) होतृगणस्य (D) अध्वर्युगणस्य

व्याख्या- मुख्यतः ऋत्विक् चार गणों में विभक्त हैं- (1) अध्वर्युगण (2) ब्रह्मगण (3) होतृगण (4) उद्गातृगण। प्रत्येक गण में चार-चार ऋत्विक् होते हैं। जो इस प्रकार से हैं-

अध्वर्युगण	**ब्रह्मगण**	**होतृगण**	**उद्गातृगण**
(i) अध्वर्यु	(i) ब्रह्मा	(i) होता	(i) उद्गाता
(ii) प्रतिप्रस्थाता	(ii) ब्राह्मणाच्छंसी	(ii) मैत्रावरुण	(ii) प्रस्तोता
(iii) नेष्टा	(iii) आग्नीध्र	(iii) अच्छावाक	(iii) प्रतिहर्ता
(iv) उन्नेता	(iv) पोता	(iv) ग्रावस्तुत	(iv) सुब्रह्मण्य

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'प्रतिहर्ता' उद्गातृगण से सम्बन्धित है। **अतः विकल्प (B) सही है।**

स्रोत- श्रौतयज्ञ परिचय - श्रीवेणीराम शर्मा गौड़, पेज- 28

91. 'जन्माद्यस्य यतः' इत्यस्मिन् सूत्रे 'यतः' पदेन किमभिधीयते?

(A) प्रकृतिः (B) जगत्
(C) ब्रह्मः (D) सृष्टिः

व्याख्या-

- बादरायण प्रणीत ब्रह्मसूत्र वेदान्त प्रस्थानत्रयी में अन्यतम ग्रन्थ है। प्रस्थानत्रयी में उपनिषद्, गीता, ब्रह्मसूत्र आते हैं। ब्रह्मसूत्र में चार अध्याय, प्रत्येक अध्याय में 4-4 पाद और कुल 555 सूत्र हैं।
- ब्रह्मसूत्र के प्रथम सूत्र 'अथातो ब्रह्मजिज्ञासा।' (1.1.1) में ब्रह्मविषयक जिज्ञासा का अधिकार बतलाकर द्वितीय सूत्र में ब्रह्म का लक्षण (स्वरूप) बतलाया गया है- जन्माद्यस्य यतः (1.1.2)
  अर्थात् (अस्य) इस जगत् की (जन्मादि) उत्पत्ति, स्थिति और लय (यतः) जिससे होते हैं, वह ब्रह्म है।
- शाङ्करभाष्य में कहा गया है कि 'यतः' पद से इस जगत् के उत्पत्ति, स्थिति और लय के कारण का निर्देश किया गया है- ''यतः इति कारण-निर्देशः। अस्य जगतः नामरूपाभ्यां..... मनसाप्यचिन्त्यरचनारूपस्य जन्मस्थितिभङ्गं यतः सर्वज्ञात्सर्वशक्तेः कारणाद्भवति तद्ब्रह्म इति वाक्यशेषः।'' अर्थात् 'यतः'- यह शब्द कारण का निर्देशक है। जो नाम – रूप से अभिव्यक्त हुआ है तथा अनेक कर्ता और भोक्ताओं से संयुक्त है, मन से भी अचिन्त्य रचना, रूप वाले इस जगत् की उत्पत्ति, स्थिति और लय जिस सर्वज्ञ, शक्तिमान् कारण से होते हैं 'वह ब्रह्म है' यह वाक्यशेष है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'जन्माद्यस्य यतः' सूत्र में 'यतः' पद 'ब्रह्म' के लिए आया है।

अतः विकल्प (C) सही है।

स्रोत- ब्रह्मसूत्र शाङ्करभाष्य-स्वामी सत्यानन्द सरस्वती, पेज-34-35

92. अधोऽङ्कितेषु केन सह कस्य सम्बन्धः? समुचितां तालिकां चिनुत-

(A) अचोऽन्त्यादि (i) प्रगृह्यः
(B) इ इन्द्रः (ii) उपधा
(C) कृत्तद्धितसमासाश्च (iii) टि
(D) अन्त्यादलः पूर्वो वर्णः (iv) प्रातिपदिकम्

(A) (a) (i) (b) (ii) (c) (iv) (d) (iii)
(B) (a) (iv) (b) (ii) (c) (iii) (d) (i)
(C) (a) (ii) (b) (i) (c) (iii) (d) (iv)
(D) (a) (iii) (b) (i) (c) (iv) (d) (ii)

व्याख्या- महर्षि पाणिनि द्वारा विरचित अष्टाध्यायी में 8 अध्याय तथा प्रत्येक अध्याय में चार-चार पाद हैं। इस प्रकार अष्टाध्यायी में कुल 32 पाद एवं लगभग 4000 सूत्र हैं।

अष्टाध्यायी के ही 1275 सूत्रों को सरल से सरल शब्दों में समझाने और पाठकों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए- भट्टोजिदीक्षित के शिष्य वरदराजाचार्यजी ने लघुसिद्धान्त कौमुदी की रचना की। इसके कुछ प्रमुख सूत्र इस प्रकार हैं-

(i) अचोऽन्त्यादि टि (1.1.64)- 'अचां मध्ये योऽन्त्यः स आदिर्यस्य तट्टिसंज्ञं स्यात्'।

अचों के मध्य जो अन्त्य अच्, वह जिसके आदि में हो, वह समुदाय 'टि' संज्ञक होता है। जैसे- 'ज्ञान' में 'अकार' की और 'मनस्' में 'अस्' की टि संज्ञा हो जाती है।

(ii) निपात् एकाजनाङ् (1.1.14)- 'एकोऽज् निपात् आङ्वर्जः प्रगृह्यः स्यात्।' आङ् को छोड़कर मात्र एक अच् वाला निपात प्रगृह्य संज्ञक होता है। जैसे- इ इन्द्रः, उ उमेशः।

(iii) कृत्तद्धितसमासाश्च (1.2.46)- 'कृत्तद्धितान्तौ समासाश्च तथा स्युः'। कृदन्त, तद्धितान्त और समास भी प्रातिपदिक संज्ञक होते हैं।

कृदन्त- जो धातु के बाद लगते हैं। जैसे- कारकः

तद्धितान्त- सुबन्त शब्दों से लगते हैं। जैसे- शालीयः

समासान्त- अनेक पदों का एकपद होना- जैसे रामः+हरिः+श्यामः- रामहरिश्यामाः।

(iv) अलोऽन्त्यात्पूर्व उपधा (1.1.65)- 'अन्त्यादलः पूर्वो वर्ण उपधासंज्ञः। वर्णों के समुदाय में से जो अन्तिम वर्ण हो, उससे पूर्व के वर्ण की यह उपधा संज्ञा होती है। जैसे- राम के 'मकार' की उपधा संज्ञा हुई है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि **विकल्प (D) सही है।**

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी-गोविन्द प्रसाद शर्मा, पेज- 61,76,131,175

93. 'सन्निहितसाधनादधिकस्यानुपादित्सा' इत्यनेन योगाङ्गनियमेषु कः?

(A) सन्तोषः (B) ईश्वरप्रणिधानम्
(C) शौचम् (D) तपः

व्याख्या- महर्षि पतञ्जलि पातञ्जलयोगदर्शन के द्वितीय साधनपाद में यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि इन अष्टाङ्गयोग की चर्चा करते हुए अहिंसा-सत्य-अस्तेय-ब्रह्मचर्य-अपरिग्रह पाँच यम बताते हैं।

पाँच यमों को बताने के बाद पाँच नियमों को बताते हैं-

नियम- शौचसन्तोषतपःस्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि नियमाः (2/32)

शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान- ये पाँच 'नियम' कहे जाते हैं।

योगसूत्र के व्यासभाष्य में भाष्यकार शौचादि सभी पाँचों नियमों को परिभाषित करते हैं।

(i) शौच- शौच मृज्जलादिजनितं मेध्याभ्यवहरणादि च बाह्यम्। आभ्यन्तरं चित्तमलानामाक्षालनम्।

मिट्टी और जल से होने वाला तथा पवित्र भोजनादि बाहरी 'शौच' है। चित्त के दोषों का धोना भीतरी 'शौच' है।

(ii) सन्तोष- सन्तोषः सन्निहितसाधनादधिकस्यानुपादित्सा

विद्यमान साधनों से अधिक साधनों का संग्रह करने की अनिच्छा संतोष है।

(iii) तपः- तपो द्वन्द्वसहनं व्रतानि चैषां यथायोगं कृच्छ्रचान्द्रायण सान्तपनादीनि।

द्वन्द्वों को सहना तप या तपस्या है। बुभुक्षा, पिपासा, सर्दी-गर्मी आदि द्वन्द्व हैं। शरीर की अनुकूलता के अनुसार कृच्छ्र, चान्द्रायण तथा सान्तपन इत्यादि व्रत भी तप हैं।

(iv) स्वाध्याय- 'स्वाध्यायो मोक्षशास्त्राणामध्ययनं प्रणवजपो वा' मोक्षशास्त्रों का अध्ययन अथवा ओङ्कार का जप 'स्वाध्याय है।

(v) ईश्वरप्रणिधान- ''ईश्वरप्रणिधानं तस्मिन् परमगुरौ सर्वकर्मार्पणम्''

परमगुरु ईश्वर के प्रति सभी कर्मों का अर्पण करना 'ईश्वरप्रणिधान' है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'सन्निहितसाधनादधिकस्यानुपादित्सा' यह व्यासभाष्य में सन्तोष नामक योगाङ्गनियम की परिभाषा है। **अतः विकल्प (A) सही है।**

स्रोत- पातञ्जल योगदर्शन-सतीश आर्य, पेज 385-386

94. ''वेः शब्दकर्मणः' इति सूत्रस्योदाहणम्भवति-

(A) चित्तं विकरोति कामः (B) स्वरान् विकुरुते
(C) शत्रुमधिकुरुते (D) छात्राः विकुर्वते

व्याख्या- भट्टोजिदीक्षित सिद्धान्तकौमुदी में आत्मनेपदप्रक्रिया प्रकरण के अन्तर्गत धातुओं की आत्मनेपद की प्रक्रिया को बताते हुए पाणिनीयसूत्र को उद्धृत करते हैं-

- वेः शब्दकर्मणः (1.3.34) वेः परस्मात् शब्द कर्मकात् कृ धातोरात्मनेपदं भवति।

  उदाहरण- स्वरान् विकुरुते।
- यहाँ 'वि' उपसर्ग पूर्वक 'कृ' धातु है और उच्चारण करना अर्थ है। अतः ''वेः शब्दकर्मणः'' सूत्र से आत्मने पद होकर विकुरुते बन गया है।
- अकर्मकाच्च (1.3.35) वेः परस्मात् अकर्मकात् 'कृ' धातोरात्मनेपदं भवति।

  सूत्रार्थ- 'वि' से परे अकर्मक 'कृ' धातु से आत्मनेपद होता है।

  उदाहरण- छात्राः विकुर्वते। (छात्रगण विकार को प्राप्त होते हैं)

  यहाँ पर 'वि' उपसर्ग भी है और अकर्मकता भी। अतः वि+कृ धातु से ''अकर्मकाच्च'' सूत्र से आत्मनेपद होकर प्रथमपुरुष बहुवचन में 'विकुर्वते' सिद्ध हुआ।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि ''वेः शब्दकर्मणः' सूत्र का उदाहरण 'स्वरान् विकुरुते' होगा। **अतः विकल्प (B) सही है।**

स्रोत- वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (भाग-5), गोविन्दाचार्य, पेज 397

95. 'दण्डिकः' इत्यस्मिन् पदे कः तद्धितप्रत्ययः?

(A) इक् (B) ठन्
(C) छत्र् (D) ठक्

व्याख्या- आचार्य भट्टोजिदीक्षित सिद्धान्तकौमुदी के मत्वर्थीय तद्धितप्रकरण के अन्तर्गत पाणिनीय सूत्र उद्धृत करते हैं-

सूत्र- अत इनिँठनौ (5.2.115)

सूत्रार्थ- प्रथमान्त अदन्त प्रातिपदिक से मत्वर्थ में तद्धितसंज्ञक इनिँ और ठन् प्रत्यय विकल्प से हों।

- दण्ड अस्य अस्ति इति दण्डिकः दण्डी वा (दण्ड वाला)
- 'दण्ड' शब्द अदन्त प्रातिपदिक है अतः 'दण्ड सु' इस प्रथमान्त प्रातिपदिक से मत्वर्थ में ''अत इनिँठनौ'' सूत्र से 'इनि' और 'ठन्' प्रत्यय हो जाते हैं।
- दण्ड + ठन् = दण्डिकः
- 'ठन्' प्रत्यय के पक्ष में नकार और अकार अनुबन्धों का लोप, सुब्लुक्, 'ठस्येकः' से ठकार को इक् आदेश एवं 'यस्येति च' सूत्र से लोप कर विभक्ति लाने से 'दण्डिकः' प्रयोग सिद्ध हो जाता है।
- दण्ड + इनिँ = दण्डिन् (दण्डी)
- इनिँ पक्ष में अनुबन्ध इकार का लोप एवं सुब्लुक् करने से - दण्ड + इन्

- ♦ 'यस्येति च' सूत्र से लोप होकर 'दण्डिन्' शब्द निष्पन्न होता है। प्रथमा के एकवचन में सुँ विभक्ति लाने पर ''सौ च'' से उपधा दीर्घ, हल्ङ्यादिलोप तथा पदान्त नकार का भी 'न लोपः प्रातिपदिकान्तस्य'। से लोप करने पर 'दण्डी' प्रयोग सिद्ध हो जाता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि दण्ड + ठन् प्रत्यय होने पर ''दण्डिकः'' प्रयोग सिद्ध होगा।

अतः विकल्प (B) सही है।

स्रोत- वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (भाग-3), गोविन्दाचार्य, पेज 881

96. 'मनसा हरिं व्रजति' इत्यत्र 'गत्यर्थकर्मणी...' इत्यादि सूत्रेण कर्मणि चतुर्थी कथन्न भवति-

(A) व्रजधातोः गत्यर्थाभावात्
(B) गत्यर्थकर्मणोऽभावात्
(C) अध्ववाचिकर्मत्वात्
(D) चेष्टायाः प्रतीत्यभावात्

व्याख्या- आचार्य भट्टोजिदीक्षित वैयाकरणसिद्धान्त कौमुदी कारक प्रकरण चतुर्थी विभक्ति के अन्तर्गत एक सूत्र उद्धृत करते हैं-

''गत्यर्थकर्मणि द्वितीयाचतुर्थ्यौ चेष्टायामनध्वनि''

यदि गति शारीरिक व्यापार मुक्त हो और कर्म मार्गवाची न हो तो गत्यर्थक धातुओं के कर्म में द्वितीया और चतुर्थी होती है।
जैसे- ग्रामं ग्रामाय वा गच्छति। (गाँव को जाता है)
वहाँ पर गत्यर्थक 'गम्' धातु का प्रयोग है और यह गमन चेष्टायुक्त है। ग्राम मार्गवाची नहीं है और यह गच्छति का कर्म भी है। अतः 'ग्राम' शब्द से ''गत्यर्थकर्मणि द्वितीयाचतुर्थ्यौ चेष्टायामनध्वनि'' सूत्र के द्वारा चतुर्थी होने पर 'ग्रामाय गच्छति' वाक्य बनता है और द्वितीया होने पर 'ग्रामं गच्छति'। इस प्रकार 'ग्राम' में चतुर्थी एवं द्वितीया दोनों विभक्तियाँ पर्यायेण होती हैं।

- ♦ मनसा हरिं व्रजति (मन से हरि की शरण में जाता है) इस वाक्य में मन से शरण ग्रहण होने के कारण शारीरिक व्यापार नहीं है, अतः उपर्युक्त सूत्र की प्राप्ति हुयी, अपितु 'कर्मणि द्वितीया' से द्वितीया विभक्ति कर्म होकर 'मनसा हरिं व्रजति' वाक्य सिद्ध हो जाता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'चेष्टायाः प्रतीत्यभावात्' 'मनसा हरिं व्रजति' इस प्रयोग में चतुर्थी नहीं हुई। **अतः विकल्प (D) सही है।**

स्रोत- वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (भाग-2)– गोविन्दाचार्य, पेज 276

97. ''त्रयो धर्मस्कन्धाः यज्ञो अध्ययनं दानम् इति''- इत्युक्तिः कस्याम् उपनिषदि लभ्यते?

(A) तैत्तिरीयोपनिषदि (B) छान्दोग्योपनिषदि
(C) बृहदारण्यकोपनिषदि (D) ऐतरेयोपनिषदि

व्याख्या- छान्दोग्योपनिषद्- यह सामवेदीय उपनिषद् है, इसमें आठ अध्याय हैं। प्रत्येक अध्याय में अनेक खण्ड हैं।

रैक्व द्वारा अध्यात्म शिक्षा, सत्यकाम जाबाल की कथा, महर्षि आरुणि द्वारा अपने पुत्र श्वेतकेतु को अद्वैतवाद का उपदेश, ऋषि सनत्कुमार द्वारा नारद को उपदेश आदि विषय प्रतिपादित हैं।

छान्दोग्य की प्रमुख सूक्तियाँ-

- ♦ ''त्रयो धर्मस्कन्धाः यज्ञोऽध्ययनं दानमिति''
  धर्म के तीन स्कन्ध (आधारस्तम्भ) हैं- यज्ञ, अध्ययन और दान। (छान्दोग्य 2.23.1)
- ♦ ''सर्वं खल्विदं ब्रह्म'' (3.14.1)
  यह सारा जगत् निश्चय ब्रह्म ही है।
- ♦ ''तत्त्वमसि (6.16.3)
  वही (ब्रह्म) तू है।
- ♦ ''ओङ्कार एवेदं सर्वम् (3.14.1)
  ओङ्कार ही यह सब कुछ है।

➢ **तैत्तिरीयोपनिषद्-** कृष्णयजुर्वेद तैत्तिरीयशाखा से सम्बद्ध है। इस उपनिषद् में तीन वल्लियाँ हैं- 1. शीक्षावल्ली 2. ब्रह्मानन्दवल्ली 3. भृगुवल्ली।
सूक्तियाँ- सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म (2.1.1)
ब्रह्म सत्य ज्ञान और अनन्त है।

- ♦ अन्नं न निन्द्यात् (3.7.1) अन्न की निन्दा न करें।
- ♦ रसो वै सः (2.7.1) वह रस ही है।

➢ **बृहदारण्यकोपनिषद्-** यह शुक्लयजुर्वेद से सम्बद्ध है। इसमें 6 अध्याय हैं।
सूक्तियाँ- असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मुझे असत्य से सत् की ओर ले जाओ। मुझे अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाओ। (1.3.28)

- ♦ अहं ब्रह्मास्मि
  मैं ब्रह्म हूँ। (1.4.10)
- ♦ नेह नानास्ति किञ्चन (4.4.19)
  ब्रह्म को मन से ही देखना चाहिए, इसमें नाना कुछ भी नहीं है।
- ♦ नेति नेति (4.5.3)

➢ **ऐतरेयोपनिषद्-** यह ऋग्वेद से सम्बद्ध उपनिषद् है। इसमें तीन अध्याय हैं।
सूक्तियाँ- परोक्षप्रिया इव हि देवाः (ऐतरेय 1.3.14)
देवगण परोक्षप्रिय ही होते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि "त्रयो धर्मस्कन्धाः..." यह सूक्ति छान्दोग्योपनिषद् में है। **अतः विकल्प (B) सही है।**
स्रोत- छान्दोग्योपनिषद् (2.23.1)

98. अथर्ववेदीयकृषिसूक्तस्य द्रष्टा ऋषिः कः?
(A) मधुच्छन्दा (B) भिक्षुः
(C) विश्वामित्रः (D) बुधः

व्याख्या-
- **अथर्ववेद का अर्थ-** 'अथर्वों का वेद' अर्थात् अभिचार मन्त्रों से सम्बन्धित ज्ञान।
- अथर्ववेद योग-साधना, चित्तवृत्तिनिरोध, ब्रह्म की प्राप्ति आदि विषयों से सम्बद्ध वेद माना जाता है।
- अथर्ववेद को 'साहित्य समाज का दर्पण' कहा जाता है।
- अथर्ववेद में समाज से सम्बन्धित रीति-रिवाज, जादू-टोना, कर्मकाण्ड आदि का भी वर्णन प्राप्त होता है।
- अथर्ववेद को 'आंगिरस वेद' तथा 'अथर्वाङ्गिरस वेद' भी कहते हैं। इसमें मंत्रों की संख्या 1772 है। अथर्ववेद की 9 शाखाओं का उल्लेख मिलता है।

अथर्ववेदीय कुछ प्रमुख सूक्त

सूक्त	ऋषि	देवता	मन्त्र
कृषिसूक्त	विश्वामित्र	सीता	09
पृथ्वीसूक्त	अथर्वा	भूमि	63
कालसूक्त	भृगु	काल	10
राष्ट्राभिवर्धनसूक्त	वशिष्ठ	ब्रह्मणस्पति	06
विवाहसूक्त	सावित्री	सूर्य, आत्मा, सोम, विवाह	64
रोहितसूक्त	ब्रह्मा	अध्यात्म, रोहित, अग्नि, मरुत, आदित्य	60

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि अथर्ववेदीय कृषिसूक्त के द्रष्टा ऋषि विश्वामित्र हैं। **अतः विकल्प (C) सही है।**
स्रोत- अथर्ववेद- (भाग-1), पेज-126

99. अधोङ्कितेषु समुचितं विकल्पं चिनुत-
(A) जीवाजीवास्रवबन्धसम्वरनिर्जरमोक्षास्तत्त्वानि- सौत्रान्तिकाः
(B) भावनाभिर्भावितानि पञ्चभिः पञ्चधाक्रमात्, महाव्रतानि- व्यासभाष्यम्
(C) तत्र जीवा द्विविधाः संसारिणो मुक्ताश्च- आर्हताः
(D) स्यान्नास्ति चावक्तव्यः- वैभाषिकाः

व्याख्या-
- माधवाचार्य कृत सर्वदर्शनसंग्रह के आर्हत दर्शन के प्रकरण में जैनदार्शनिकों के सात तत्त्वों का उल्लेख किया गया है- 'जीवाजीवास्रवबन्धसम्वरनिर्जरमोक्षास्तत्त्वानि'
जैन दार्शनिक सात तत्त्वों का वर्णन करते हैं- 1. जीव 2. अजीव 3. आस्रव 4. बन्ध 5. संवर 6. निर्जरा और 7. मोक्ष- ये सात तत्त्व हैं।
- जैन दर्शन के सप्तभङ्गीनय को सर्वदर्शनसंग्रह में इस प्रकार वर्णन किया गया है-
  1. स्यादस्ति- किसी प्रकार है।
  2. स्यान्नास्ति- किसी प्रकार नहीं है।
  3. स्यादस्ति च नास्ति च- किसी प्रकार है और नहीं है।
  4. स्यादवक्तव्यः- किसी प्रकार अवर्णनीय है।
  5. स्यादस्ति चावक्तव्यः- किसी प्रकार है और अवर्णनीय है।
  6. स्यान्नास्ति चावक्तव्यः- किसी प्रकार नहीं है, और अवर्णनीय है।
  7. स्यादस्ति च नास्ति चावक्तव्यः- किसी प्रकार है, नहीं हैं और अवर्णनीय है।
- आर्हतदर्शन में जैनों के पञ्चमहाव्रतों की चर्चा की गयी है-
भावनाभिर्भावितानि पञ्चभिः पञ्चधा क्रमात् ।
महाव्रतानि लोकस्य साधयन्त्यव्ययं पदम् ॥
पाँच भावनाओं के द्वारा पाँच प्रकार से क्रमशः भावित ये अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह- पञ्च महाव्रत संसार के अक्षय (स्थायी) पद की सिद्धि करते हैं।
- आर्हतदर्शन में जीव दो प्रकार के बताये गये हैं-
"तत्र जीवा द्विविधाः संसारिणो मुक्ताश्च"
जीव दो प्रकार के हैं- संसारी और मुक्त।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'तत्र 'जीवा द्विविधाः संसारिणो मुक्ताश्च' यह कथन आर्हतदर्शन का है। **अतः विकल्प (C) सही है।**
स्रोत- सर्वदर्शनसंग्रह-उमाशंकर शर्मा ऋषि, पेज 146,135,130

100. योगदर्शने सर्वा चित्तभूमयः काः?
(A) निद्रा, तन्द्रा, प्रमादः, मोदः, दुःखम्
(B) क्षिप्तम्, मूढम्, विक्षिप्तम्, एकाग्रम्, निरुद्धम्
(C) क्षिप्तम्, प्रक्षिप्तम्, मूढम्, विमूढम्, सम्मूढम्
(D) स्मृतिः, विस्मृतिः, निरुद्धम्, एकाग्रम्, मोहः

व्याख्या- महर्षि पतञ्जलि योगसूत्र में "अथ योगानुशासनम्" इस प्रथम सूत्र के द्वारा ग्रन्थ का प्रारम्भ करते हैं। यहाँ 'अथ' शब्द अधिकार वाचक है- 'अर्थत्ययमधिकारार्थः....' इसी सूत्र के व्यासभाष्य में भाष्यकार चित्त की पाँच भूमियों (अवस्थाओं) की चर्चा करते हैं-

पाँच चित्तभूमियाँ- 'क्षिप्तं मूढं विक्षिप्तमेकाग्रं, निरुद्धमिति चित्तभूमयः' क्षिप्त, मूढ, विक्षिप्त, एकाग्र और निरुद्ध-चित्त की ये पाँच भूमियाँ होती हैं।

पाँच चित्तवृत्तियाँ- 'प्रमाणविपर्ययविकल्पनिद्रास्मृतयः'

1. प्रमाण 2. विपर्यय 3. विकल्प 4. निद्रा 5. स्मृति। ये पाँच प्रकार की चित्तवृत्तियाँ होती हैं। (1/6)

पञ्चक्लेश- 'अविद्याऽस्मितारागद्वेषाभिनिवेशाः पञ्च क्लेशाः।'

1. अविद्या 2. अस्मिता 3. राग 4. द्वेष 5. अभिनिवेश। ये पाँच प्रकार के क्लेश होते हैं।

अष्टाङ्गयोग- 'यमनियमाऽऽसनप्राणायामप्रत्याहारधारणाध्यान-समाधयोऽष्टावङ्गानि'। (2/29)

यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि। ये आठ प्रकार के योग के अङ्ग बताये गये हैं।

पाँच यम- 'अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहाः यमाः'

अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह। ये पाँच प्रकार के यम बताये गये हैं। (2/30)

पाँच नियम- 'शौचसन्तोषतपःस्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि नियमाः'। (2/32) शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वरप्रणिधान। ये पाँच नियम कहे जाते हैं।

संयम- 'त्रयमेकत्र संयमः।' (3/4)

धारणा, ध्यान, समाधि ये तीन प्रकार संयम के बताये गये हैं।

क्रियायोग- 'तपः स्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि क्रियायोगः।'(2/1)

तप, स्वाध्याय, ईश्वरप्रणिधान ये तीन प्रकार क्रियायोग के बताये गये हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि क्षिप्त, मूढ, विक्षिप्त, एकाग्र और निरुद्ध- ये पाँच चित्तभूमियाँ हैं। **अतः विकल्प (B) सही है।**

स्रोत- पातञ्जलयोगदर्शन - सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पेज- 01, 06

उत्तरमाला

1.C	2.A	3.A	4.C	5.A	6.D	7.B	8.D	9.D
10.B	11.B	12.C	13.C	14.D	15.A	16.D	17.C	18.B
19.C	20.D	21.C	22.B	23.B	24.A	25.D	26.A	27.D
28.C	29.C	30.C	31.A	32.A	33.A	34.C	35.D	36.A
37.A	38.B	39.D	40.A	41.B	42.C	43.D	44.B	45.C
46.C	47.A	48.A	49.C	50.D	51.C	52.C	53.C	54.C
55.D	56.D	57.D	58.C	59.A	60.C	61.C	62.A	63.D
64.C	65.B	66.D	67.D	68.A	69.A	70.C	71.D	72.B
73.D	74.B	75.B	76.A	77.C	78.D	79.B	80.A	81.A
82.B	83.D	84.B	85.A	86.B	87.A	88.D	89.A	90.B
91.C	92.D	93.A	94.B	95.B	96.D	97.B	98.C	99.C
100.B								

5	जुलाई 2018	NTA UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् II

1. शांखायन-शाखायाः सम्बन्धः वर्तते?
(A) अथर्ववेदेन (B) ऋग्वेदेन
(C) सामवेदेन (D) कृष्णयजुर्वेदेन

व्याख्या-

वेद -	शाखायें
ऋग्वेद-	(1) शाकल (2) बाष्कल (3) आश्वलायन (4) शांखायन (5) माण्डूकायन
शुक्लयजुर्वेद-	(1) माध्यन्दिन या वाजसनेयि शाखा (2) काण्व शाखा
कृष्णयजुर्वेद-	(1) तैत्तिरीय शाखा (2) मैत्रायणी शाखा (3) कठ शाखा (4) कपिष्ठल शाखा
सामवेद-	(1) कौथुमीय (2) राणायनीय (3) जैमिनीय शाखा
अथर्ववेद-	(1) पैप्पलाद (2) तौद (3) मौद (4) शौनकीय (5) जाजल (6) जलद (7) ब्रह्मवद (8) देवदर्श (9) चारणवैद्य

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि शांखायन शाखा का सम्बन्ध ऋग्वेद से है। **अतः विकल्प B सही है।**
स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 09

2. 'द्राह्यायणश्रौतसूत्रम्' कस्य वेदस्य विद्यते?
(A) अथर्ववेदस्य (B) कृष्णयजुर्वेदस्य
(C) ऋग्वेदस्य (D) सामवेदस्य

व्याख्या-

वेद — श्रौतसूत्र — वर्ण्य विषय

ऋग्वेद- (1) आश्वलायन श्रौतसूत्र,लेखक- आश्वलायन,अध्याय-12
(2) शांखायन श्रौतसूत्र, लेखक-सुयज्ञशांखायन, अध्याय-18
शुक्लयजुर्वेद (1) कात्यायन श्रौतसूत्र, लेखक-कात्यायन, अध्याय-30
कृष्णयजुर्वेद (1) बौधायन श्रौतसूत्र, लेखक-बौधायन, अध्याय-30
(2) आपस्तम्ब श्रौतसूत्र, लेखक-आपस्तम्ब, अध्याय-30
(3) सत्याषाढ या हिरण्यकेशी प्रश्न (अध्याय)-24
(4) वैखानस श्रौतसूत्र, लेखक- विखनस, अध्याय-32
(5) भारद्वाज श्रौतसूत्र, लेखक-भारद्वाज, प्रश्न (अध्याय)-15
(6) वाधूल श्रौतसूत्र, लेखक- वाधूल, प्रपाठक (अध्याय)-15
(7) वाराह श्रौतसूत्र, लेखक- वाराह, अध्याय-3 (संबद्ध मैत्रायणी शाखा)
(8) मानव श्रौतसूत्र (मैत्रायणी शाखा), 5 भाग 11 अध्याय
सामवेद (1) आर्षेय कल्प या मशक कल्पसूत्र, रचयिता- मशक ऋषि भाग-दो (1-आर्षेयकल्प, 2-क्षुद्रकल्प), अध्याय-11
(2) लाट्यायन श्रौतसूत्र, प्रपाठक (अध्याय)-10, सूत्र-2641
(3) द्राह्यायण श्रौतसूत्र (अन्यनाम-छान्दोग्य सूत्र, प्रधान सूत्र और वशिष्ठ सूत्र), पटल (अध्याय)-31
(4) जैमिनीय श्रौतसूत्र, रचयिता- जैमिनि मुनि, खण्ड-3,अध्याय-18
अथर्ववेद (1) वैतान श्रौतसूत्र, अध्याय-8, कंडिकाएँ-43

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि द्राह्यायण श्रौतसूत्र का संबन्ध सामवेद से है। **अतः विकल्प D सही है।**
स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 10

3. एतद्वचो जरितर्मापिमृष्ठा आ यत्ते घोषानुत्तरा युगानि- इति मन्त्रांशो वर्तते?
(A) पुरूरवा-उर्वशीसूक्ते (B) सरमा-पणिसूक्ते
(C) विश्वामित्र-नदीसूक्ते (D) यम-यमीसूक्ते

व्याख्या- पुरूरवा-उर्वशी संवाद- ऋषि-पुरूरवा और उर्वशी, छन्द-त्रिष्टुप् देवता-पुरूरवा ऐल, उर्वशी, स्वर-धैवत।

इषुर्न श्रिय इषुधेरसना गोषाः शतसा न रंहिः।
अवीरे क्रतौ वि दविद्युतन्नोरा न मायुं चिन्तयन्त धुनयः।। (3)

*** विश्वामित्र-नदीसूक्ते-** एतद्वचो जरितर्मापि मृष्ठा आ यत्ते घोषानुत्तरा युगानि। उक्थेषु कारो प्रति नो जुषस्व मा नो नि कः पुरुषत्रा नमस्ते।।

नोट- वेद- ऋग्वेद, सूक्त त्रयस्त्रिंशत्, मण्डलम्- तृतीय, छन्द- त्रिष्टुप्- अनुष्टुप्, ऋषि-विश्वामित्र गाथिन्, देवता-नदी।

*** यम-यमी संवाद सूक्तः-** उशन्ति घाते अमृतास एतदेकस्य चित् त्यजसं मर्त्यस्य। नि ते मनो मनसि धाय्यस्मे जन्युः पतिस्तन्वमा विविश्याः।। (3)

नोट- देवता-यम, वैवस्वती यमी, ऋषि-वैवस्वती, यमः वैवस्वतः, स्वर-धैवत।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि दिया गया मन्त्र विश्वामित्र-नदी संवाद सूक्त से लिया गया है।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- ऋग्वेद (3.33.8) - सत्यवीर शास्त्री, पेज 413

4. अधस्तनेषु उचितं सम्बन्धयुतं विकल्पं चिनुत?

(A) यो रध्रस्य चोदिता यः कृशस्य- इन्द्रदेवता
(B) राजन्तमध्वराणां गोपामृतस्य दीदिविम्- विष्णुसूक्तम्
(C) विश्वं प्रतीची सप्रथः उदस्थात्- सवितृसूक्तम्
(D) अहं सुवे पितरमस्य मूर्धन् - रुद्रदेवता

व्याख्या- यो रध्रस्य चोदिता यः कृशस्य यो ब्रह्मणो नाधमानस्य कीरेः। युक्तग्राव्णो योऽविता सुशिप्रः सुतसोमस्य स जनास इन्द्रः (मन्त्र.6)

अनुवाद- जो समृद्धशाली व्यक्ति को प्रेरणा देने वाला है, जो निर्धन को प्रेरणा देने वाला है, जो याचना करने वाले और स्तुति करने वाले ब्राह्मण को प्रेरणा देने वाला है और सुन्दर ठोड़ी वाला, जो व्याभिषव करने के लिए पत्थरों को उद्यत किये हुए सोमरस को निचोड़ने वाले यजमान की रक्षा करता है, हे असुरों! वही इन्द्र है।

(2) राजन्तमध्वराणां गोपामृतस्य दीदिविम्।
वर्धमानं स्वे दमे॥ (अग्नि सू.-8)

अनुवाद- प्रकाशमान होते हुए, हिंसारहित यज्ञों के रक्षक, सत्यकर्मफलों को पुनः-पुनः प्रकाशित करने वाले और अपने गृह यज्ञशाला में बढ़ने वाले (अग्नि के समीप हम जाते हैं)।

(3) अहं सुवे पितरमस्य मूर्धन्मम योनिरप्स्वान्तः समुद्रे॥
ततो वि तिष्ठे भुवनानु विश्वोतामूं द्यां वर्ष्मणोपस्पृशामि॥
(वाक् सू.-7)

अनुवाद- इस ब्रह्म के शिरःस्थानीय द्युलोक को अथवा इस ब्रह्म के सिर पर आकाश को मैं उत्पन्न करती हूँ समुद्र अर्थात् परमात्मा में जो अणु अर्थात् व्यापनशील बुद्धियाँ हैं, उनमें मेरा ही कारण है अथवा समुद्रों में, जलों में मैं ही कारणरूप से विद्यमान हूँ अथवा समुद्र या अन्तरिक्ष और जलशरीर देवों में कारण हूँ इसलिए सम्पूर्ण भुवनों अर्थात् पञ्चमहाभूतों में प्रविष्ट होकर मैं ही उनको विविध रूपसे व्याप्त किये हुए हूँ और इस द्युलोक को मैं सर्वत्र व्यापक होते हुए अपने कारणभूत शरीर से स्पर्श कर रही हूँ।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि दिये गये विकल्पों में विकल्प A में सूक्त एवं देवता उचित रूप से संबद्ध है।

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- ऋग्वेद (2.12.6)-सत्यवीर शास्त्री, पेज 323

5. यो वाघते ददाति सूनरं वसु-अत्र 'वाघते' पदस्य कोऽर्थः?

(A) यज्ञकर्त्रे (B) राज्ञे
(C) बाधकाय (D) सूर्याय

व्याख्या-

ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के चालीसवें सूक्त में कण्व ऋषि बृहस्पति देवता की स्तुति करते हुये इस मन्त्र को उद्धृत करते हैं-

यो वाघते ददाति सूनरं वसु स धत्ते अक्षिति श्रवः।
तस्मा इलां सुवीरामा यजामहे सुप्रतूर्तिमनेहसम्॥ (1.40.4)

अनुवाद- जो मनुष्य ऋत्विक् के ग्रहण योग्य धन दान करता है, वह अक्षय अन्न प्राप्त करता है। उसके लिए हम लोग इला के पास याचना करते हैं। इडा सुवीरा है, वह शत्रु का हनन करती है। उन्हें कोई नहीं मार सकता।

सायणभाष्य में 'वाघते' पद के विषय में बताया गया है-

यः यजमानः वाघते ऋत्विजे सूनरं सुष्ठु नेतव्यं वसु धनं ददाति।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से यह स्पष्ट होता है कि वाघते पद का अर्थ यज्ञकर्त्रे है। **अतः विकल्प A सही है।**

स्रोत- ऋग्वेद (1.40.4)

6. नामाख्याताभ्यां वियुक्ताः अपि उपसर्गाः वाचकाः भवन्तीति कः मन्यते?

(A) वार्ष्यायणिः (B) शाकटायनः
(C) गार्ग्यः (D) कौत्सः

व्याख्या-

यास्क विरचित निरुक्त में पदों का चार प्रकार से विभाजन किया गया है- नाम, आख्यात, उपसर्ग एवं निपात।

➢ **आख्यात-** 'भावप्रधानमाख्यातम्' भवतीति भावः अर्थात् भाव या क्रिया की जिसमें प्रधानता होती है उसे 'आख्यात' पद कहते हैं। जैसे- आस्ते, शेते, व्रजति, तिष्ठतीति।

➢ **नाम-** 'सत्त्वप्रधानानि नामानि' सत्त्व अर्थात् द्रव्य की प्रधानता जिसमें होती है उसे नाम पद कहते हैं। जैसे गौरश्वः पुरुषो हस्तीति।

➢ **उपसर्ग-** उपसर्गों की संख्या 22 है इन उपसर्गों का अपना अर्थ होता है या नहीं इस विषय में दो मत पाए जाते हैं प्रथम पक्ष उपसर्गों को द्योतक मानता है।

➢ द्योतक पक्ष में **'न निर्बद्धा उपसर्गा अर्थान्निराहुरिति शाकटायनः नामाख्यातयोस्तु कर्मोपसंयोगद्योतका भवन्ति'** अर्थात् नाम और आख्यात से अलग करके वाक्य में प्रयुक्त किए हुए उपसर्ग अर्थों को निश्चित रूप से नहीं कहते हैं। नाम और

आख्यात के अर्थ को उनके साथ मिलकर द्योतन करने वाले होते हैं, यह शाकटायन का मत है। द्योतक पक्ष में उपसर्गों का अपना अर्थ नहीं होता है वे जिसके साथ मिलते हैं उसके अर्थ में विशेषता का बोध कराते हैं।

➢ द्योतक पक्ष का खण्डन करते हुए आचार्य गार्ग्य उपसर्गों को वाचक मानते हैं **'उच्चावचाः पदार्था भवन्तीति गार्ग्यः'** अर्थात् इन उपसर्गों के भी उच्चावच अर्थात् नाना प्रकार के शब्द नाना प्रकार के इस अर्थ में प्रयुक्त होते हैं इसलिए इनका जो अर्थ होता है वह नाम तथा आख्यात से अलग प्रयुक्त होने पर भी नाम तथा आख्यात के अर्थ में परिवर्तन करने वाले उस अर्थ को उपसर्ग कहते ही हैं – यह गार्ग्य का मत है। इस पक्ष में उपसर्गों का अपना अर्थ होता है और वे उस अर्थ के वाचक होते हैं।

उपर्युक्त विवरण से यह स्पष्ट है कि नाम और आख्यात से अलग होने पर भी उपसर्ग वाचक (अपने अर्थ को कहने वाले) होते हैं यह मत गार्ग्य का है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि नामाख्याताभ्यां वियुक्तः गार्ग्यः मन्यन्ते। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- निरुक्त - छज्जूराम शास्त्री, पेज 11

7. वेदेष्वेव प्रयुज्यते प्रत्ययः?

(A) अध्यै (B) तुमुन्

(C) क्त्वा (D) क्त

व्याख्या-

तुमुन् प्रत्यय के अर्थ में इस प्रत्यय के अतिरिक्त से, सेन्, असेन्, क्से, क्सेन्, अध्यै, अध्यैन्, कध्यै, कध्यैन्, शध्यै, शध्यैन्, तवै, तवेङ्, तवेन् ये 15 प्रत्यय किये जाते हैं। से, सेन् असेन् (आने के लिए) असे, असेन्, जीवसे (जीने के लिए) क्से क्सेन् श्रियसे (आश्रय पाने के लिए) अध्यै, अध्यैन्, उपाचरध्यै (आचरण करने के लिए। कध्यै, कध्यैन्- आहुवध्यै (आवाहन के लिए) शध्यै, शध्यैन्- पिबध्यै (पीने के लिए)। तवै-पातवै (पिलाने के लिए)। तवेङ् -सूतवे (उत्पन्न करने के लिए) गन्तवे (जाने के लिए)।

तुमुन् प्रत्यय- पठ्+तुमुन्- पठितुम्, गम्+तुमुन् गन्तुम्, भव्+तुमुन- भवितुम् आदि।

क्त्वा प्रत्यय- गम्+क्त्वा-गत्वा, पठ्+क्त्वा- पठित्वा, भू+क्त्वा- भूत्वा, पा+क्त्वा-पीत्वा आदि।

क्त प्रत्यय- पठ्+क्त- पठितः, लिख्+क्त- लिखितः, गम्+क्त- गतः आदि।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'अध्यै' प्रत्यय केवल वेद में प्रयुक्त होता है और तुमुन्, क्त्वा और क्त प्रत्यय लौकिक संस्कृत में प्रयुक्त होते हैं। **अतः विकल्प A सही है।**

स्रोत- ऋक्सूक्तसंग्रह- हरिदत्त शास्त्री, भू. पेज 32

8. 'यस्मान्न ऋते विजयन्ते' इत्यत्र 'यस्मात्' पदेन कः ग्रह्यते?

(A) विष्णुः (B) रुद्रः

(C) इन्द्रः (D) वरुणः

व्याख्या-

ऋग्वेद के द्वितीय मण्डल के बारहवें सूक्त में ऋषि गृत्समद इन्द्र देवता की स्तुति करते हुये यह मन्त्र उद्धृत करते हैं-

यस्मान्न ऋते विजयन्ते जनासो यं युध्यमाना अवसे हवन्ते।
यो विश्वस्य प्रतिमानं बभूव यो अच्युतच्युत्स जनास इन्द्रः॥
(2.12.9)

अर्थ- जिस इन्द्र के बिना मनुष्य विजय को प्राप्त नहीं करते, युद्ध करते हुये सैनिक अपनी रक्षा के लिए जिसका आह्वान करते हैंः जो सम्पूर्ण जगत् का प्रतिनिधि या रक्षक है, जो क्षयरहित पर्वतों का भी विनाश करने वाला है अथवा अचल को भी बनाने वाला है, हे असुरों! वही इन्द्र है।

सायणभाष्य- यस्मादृते जनासो जनाः न विजयन्ते विजयं न प्राप्नुवन्ति। अतः युध्यमानाः युद्धं कुर्वाणा जना अवसे स्वरक्षणाय यमिन्द्रं हवन्ते आह्वयन्ति।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'यस्मान्न ऋते...' मन्त्र में 'यस्मात्' पद का अर्थ 'इन्द्र' है। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- ऋक्सूक्तसंग्रह (2.12.9)- हरिदत्त शास्त्री, पेज 186

9. 'ऋग्वेदस्य' कस्मिन् मण्डले 'विश्वामित्रनदीसंवादसूक्तम्' विद्यते?

(A) द्वितीये (B) दशमे

(C) तृतीये (D) अष्टमे

व्याख्या-

मण्डल	सूक्त	संवाद
1. ऋग्॰10	95	पुरूरवा-उर्वशी संवाद
2. ऋग्॰ 10	10	यम-यमी संवाद
3. ऋग्॰ 10	108	सरमा-पणि संवाद
4. ऋग्॰ 3	33	विश्वामित्र- नदी संवाद
5. ऋग्॰ 1	165	इन्द्र-मरुत् संवाद
6. ऋग्॰ 1	179	अगस्त्य-लोपामुद्रा संवाद
7. ऋग्॰ 7	83	वशिष्ठ-सुदास संवाद
8. ऋग्॰ 10	86	इन्द्र-इन्द्राणी वृषाकपि संवाद

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि ऋग्वेद के तृतीय मण्डल में विश्वामित्रनदी संवाद सूक्त है। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 57

10. परिशिष्टभागमतिरिच्य निरुक्ते कति अध्यायाः सन्ति?

(A) सप्त (B) द्वादश

(C) पञ्च (D) चतुर्दश

व्याख्या-

यास्क के निरुक्त में कुल 12 अध्याय हैं। अन्त में परिशिष्ट के रूप में 2 अध्याय हैं। इस प्रकार यह 14 अध्यायों में विभक्त है। किन्तु प्रश्न में परिशिष्ट को छोड़कर अध्यायों की संख्या पूछी गई है। अतः प्रश्नानुसार उत्तर 2 (द्वादश अध्यायः) सही है।

निरुक्त का वर्ण्य विषय अध्यायवार

अध्याय 1- निघण्टु नाम, आख्यात आदि चार पदविभाग, शब्दनित्यता का विवेचन, षड्भाव-विकार, उपसर्गों का अर्थ विवेचन, सभी नाम धातुज हैं – इसका प्रतिपादन, मन्त्रों की सार्थकता का प्रतिपादन, अर्थज्ञान का महत्त्व।

अध्याय 2 और 3- नैघण्टुककाण्ड। अध्याय 2 के प्रारंभ में निर्वचन और वर्ण परिवर्तन आदि से संबद्ध भाषाशास्त्रीय विवेचन।

अध्याय 4 से 6- नैगम काण्ड या ऐकपदिक काण्ड। इन तीन काण्डों में वेदों के निघंटु में पठित कठिन शब्दों की सोदाहरण व्याख्या।

अध्याय 7 से 12- दैवतकाण्ड। इन अध्यायों में देवतावाचक शब्दों की विस्तृत व्याख्या। द्युलोक, अन्तरिक्ष और पृथिवी- स्थानीय देवों का विवेचन।

अध्याय 13 और 14- इनमें निर्वचन-प्रक्रिया, सृष्टि-उत्पत्ति तथा दार्शनिक महत्त्व के अनेक विषयों का विवेचन है।

➢ **निघण्टु और निरुक्त-** यास्क का निरुक्त वस्तुतः निघंटु ग्रन्थ की व्याख्या या भाष्य है। निघण्टु वैदिक शब्दों का संकलन है। इसमें 5 अध्याय हैं तथा कुल संग्रहीत शब्दों की संख्या 1768 है। निघण्टु में अध्यायवार शब्दों की संख्या- प्रथम अध्याय- 414 शब्द, द्वितीय अध्याय- 514 शब्द, तृतीय अध्याय-410 शब्द, चतुर्थ अध्याय- 279 शब्द तथा पञ्चम अध्याय-151 शब्द। निघंटु के रचयिता प्रजापति कश्यप हैं।

➢ **निरुक्त के टीकाकार-** निरुक्त की सम्प्रति 3 टीकाएँ उपलब्ध हैं- 1- दुर्गाचार्य की टीका- ऋज्वर्थ-वृत्ति

2- स्कन्द माहेश्वर की टीका लाहौर से प्रकाशित हुई

3- वररुचि की टीका- निरुक्त-निचय।

निरुक्त के प्रतिपाद्य विषयः-

वर्णागमो वर्णविपर्ययश्च, द्वौ चापरौ वर्णविकारनाशौ।
धातोस्तदर्थातिशयेन योगस्तदुच्यते पञ्चविधं निरुक्तम्॥

संक्षेप में निरुक्त के प्रतिपाद्य विषय 5 बताए गये हैं- (1) वर्णागम-विचार (2) वर्ण विपर्यय-विचार, (3) वर्ण विकार-विचार, (4) वर्णनाश- विचार, (5) धातुओं का अनेक अर्थों में प्रयोग।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि परिशिष्ट भाग को छोड़कर निरुक्त में बारह अध्याय हैं। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 204

11. 'प्रचोदयात्' इति कस्मिन् लकारे रूपमस्ति?

(A) लिङ् (B) लोट्

(C) लट् (D) लेट्

व्याख्या-

ऋग्वेद के तीसरे मण्डल के बासठवें सूक्त के दसवें मन्त्र में विश्वामित्र ऋषि सवितृ देवता की स्तुति के सन्दर्भ में इस मन्त्र का उल्लेख करते हैं-

तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्। (ऋ. 3.62.10)

जो सविता हम लोगों की बुद्धि को प्रेरित करता है, सम्पूर्ण श्रुतियों में प्रसिद्ध उस द्योतमान जगत्स्रष्टा परमेश्वर के संभजनीय पर ब्रह्मात्मक तेज का हम लोग ध्यान करते हैं।

सायणभाष्य में भी प्रचोदयात् के विषय में कहा गया है कि

प्रचोदयात् चोदयतेर्लेटि आडागमः यद्वृत्तयोगादनिघातः आगमस्यानुदात्तत्वे णिचः स्वरः।

उपर्युक्त पंक्ति से यह सिद्ध होता है कि 'प्रचोदयात्' में लेट्लकार का प्रयोग हुआ है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'प्रचोदयात्' शब्द में लेट्लकार का प्रयोग किया गया। **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत- ऋग्वेद (3.62.10)- राम गोविन्द त्रिवेदी, पेज 346

12. 'स जातो अत्यरिच्यत'-इत्यत्र 'स' पदेन कः गृह्यते?

(A) इन्द्रः (B) पुरुषः

(C) प्रजापतिः (D) विष्णुः

व्याख्या-

इन्द्रः - ऋग्वेद के द्वितीय मण्डल के 12वें सूक्त इन्द्रसूक्त के प्रथम मंत्र– 'नृम्णस्य मह्ना स जनास इन्द्रः.....।।' (महती सेना के महत्त्व से युक्त वह ही इन्द्र है।) इसी प्रकार सायणभाष्य में भी लिखा है- ''नृम्णस्य सेनालक्षणस्य बलस्य मह्न महत्त्वेन युक्तः स इन्द्रो, नाहमिति।'' इस प्रकार स्पष्ट है कि इस मन्त्रांश में सः पद का अर्थ 'इन्द्र' है।

पुरुषः ऋग्वेद के 10/90 सूक्त 5वें मन्त्र – 'स जातो अत्यरिच्यत.....।।' (अर्थात् उस आदि पुरुष से विराट् (ब्राह्मण देह, व्यक्त जगत्) उत्पन्न हुआ। ब्राह्मण देह का आश्रय लेकर उससे पुरुष (जीवात्मा) उत्पन्न हुआ। वह उत्पन्न होते ही सबसे आगे बढ़ गया अर्थात् पशु, पक्षी, मनुष्य आदि के रूप में चेतनता को प्राप्त करके अन्य जगत् से बढ़कर था। पश्चात् उस पुरुष ने भूमि और शरीरों को बनाया।

इसी प्रकार सायण भाष्य में लिखा है-''स जातो विराट्पुरुषोऽत्यरिच्यत अतिरिक्तोऽभूत्।'' इस प्रकार स्पष्ट है कि यहाँ सः पद आदि पुरुष का सूचक है।

हिरण्यगर्भ (प्रजापतिः- ऋग्वेद के 10वें मण्डल 121वें सूक्त के मंत्र संख्या 1 के मंत्रांश ''स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां......।।'' (वह (प्रजापति) पृथ्वी और द्युलोक को धारण किये हुए हैं।) सायणभाष्य में लिखा है- ''स हिरण्यगर्भः पृथिवीं विस्तीर्णां द्यां दिवमुत......।'' इस प्रकार स्पष्ट है कि प्रस्तुत मन्त्रांश में 'सः' पद हिरण्यगर्भ (प्रजापति) का द्योतक है।

विष्णुः ऋग्वेद के 9वें मण्डल 154वें सूक्त के 5वें मन्त्र के मंत्रांश- 'उरुक्रमस्य स हि बन्धुरित्था' (परम पराक्रम वाले अथवा महान् दुर्गों वाले सर्वव्यापक विष्णु के परम स्थान में मधुर अमृत का स्रोत है। इस प्रकार से वह विष्णु निश्चय ही सबका बन्धु है। अतः स्पष्ट है कि प्रस्तुत मंत्रांश में सः पद विष्णु का द्योतक है।

अग्निः - ऋग्वेद के मण्डल 1, सूक्त संख्या 1 के मन्त्र संख्या 2, के ''मंत्रांश स देवाँ एह वक्षति।।'' (वह (अग्नि) इस यज्ञ में (हविष) देवताओं को प्राप्त करावे। इस मंत्रांश में 'सः' पद अग्नि का द्योतक है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि- 'स जातो अत्यरिच्यत' इस मंत्राश में 'सः' पद पुरुष का वाचक है। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 10.90.5)-हरिदत्त शास्त्री, पेज 396

13. Vedic Grammar- **इत्याख्यस्य ग्रन्थस्य प्रणेता वैदेशिको विद्वान् कः?**

(A) एच.टी. कोलब्रुक (B) एफ॰मैक्समूलरः
(C) ए. मैकडानलः (D) एच. विल्सनः

व्याख्या- (1) एच.टी. कोलब्रुक- एच.टी. कोलब्रुक ने 1805ई. में एशियाटिक रिसर्चेज में On the vedas वेद विषयक लेख लिखकर पाश्चात्य जगत् का ध्यान वेदों की ओर आकृष्ट किया।

(2) एफ. मैक्समूलरः- मैक्समूलर ने सर्वप्रथम सायण भाष्य सहित ऋग्वेद का संपादन 1849 से 1875 के मध्य लगभग 27 वर्षों में किया। इन्होंने ऋग्वेद के प्रसिद्ध सूक्तों के अनुवाद एवं व्याख्या पर एक संकलन Vedic Hymns निकाला। इसके अलावा History of the Ancient Sanskrit Literature नामक वैदिक साहित्य का इतिहास पर एक पुस्तक का प्रकाशन 1859 ई. में किया।

(3) ए. मैकडॉनल- मैकडॉनल ने वैदिक व्याकरण पर दो ग्रन्थ लिखे- (क) Vedic Grammar (ख) Vedic Grammar for Students तथा लौकिक संस्कृत व्याकरण पर एक ग्रन्थ- Sanskrit Grammar for Students दिया। मैकडानल वस्तुतः वैदिक संस्कृत के पाणिनि हैं। मैकडॉनल ने Vedic Mythology (वैदिक देवशास्त्र) ग्रन्थ 1897 में प्रकाशित किया। वैदिक साहित्य का इतिहास पर एक ग्रन्थ History of Sanskrit Literature सन् 1900 में प्रकाशित हुआ।

(4) एच. विल्सन- एच. विल्सन ने सबसे पहले पूरे ऋग्वेद का अंग्रेज़ी में अनुवाद 1850 हमें प्रकाशित किया। यह सायण भाष्य पर आधारित है।

स्पष्टीकरण- उपरोक्त व्याख्या के आधार पर मैकडॉनल के Vedic Grammar प्रणेता हैं। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 36

14. सामवेदीयाः षड्ज-मध्यम-पञ्चमस्वराः कतमे त्रैस्वर्यस्वरे अन्तर्भवन्ति?

(A) अनुदात्ते (B) स्वरिते
(C) प्रचये (D) उदात्ते

व्याख्या-

मूल स्वर तीन हैं- उदात्त, अनुदात्त और स्वरित। इनमें से उदात्त स्वर उच्च ध्वनि या तीव्र स्वर के लिए था, अनुदात्त निम्न या हल्के स्वर के लिए और स्वरित इन दोनों के मध्यगत स्वर के लिए था। इन तीन मूल स्वरों के आधार पर ही षड्ज आदि लौकिक स्वरों का विकास हुआ। नारदीय शिक्षा और पाणिनीय शिक्षा के अनुसार उदात्त आदि से इन लौकिक स्वरों का विकास हुआ।

उदात्ते निषादगान्धारौ अनुदात्ते ऋषभधैवतौ।
स्वरितप्रभवा ह्येते षड्जमध्यम-पंचमाः।। (पा.शि. 12)

मूलस्वर	लौकिक स्वर
(1) उदात्त	निषाद, गान्धार
(2) अनुदात्त	ऋषभ, धैवत
(3) स्वरित	षड्ज, मध्यम, पञ्चम

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि सामवेदीय षड्ज-मध्यम- पञ्चमस्वराः स्वरिते अन्तर्भवन्ति। **अतः विकल्प B सही**

है।

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 93

15. बृहती-छन्दसि अक्षराणां संख्या विद्यते?

(A) 48 (B) 28

(C) 36 (D) 32

व्याख्या-

छन्दस् (छन्द) शब्द छद् (ढँकना) धातु से बना है। यास्क ने निरुक्त (7.12) में छन्दस् का निर्वचन दिया है। 'छन्दांसि छादनात्' अर्थात् छन्द भावों को आच्छादित करके उसे समष्टि रूप प्रदान करता है। कात्यायन ने सर्वानुक्रमणी (12.6) में छन्द का लक्षण दिया है- ''यदक्षरपरिमाणं तच्छन्दः'' जिसमें वर्णों या अक्षरों की संख्या निर्धारित होती है उसे छन्द कहते हैं। ऋग्वेद में 20 छन्दों का प्रयोग हुआ है। इनमें से केवल 7 छन्द ही मुख्य रूप से प्रयुक्त हैं –

प्रमुख छन्द एवं उनके अक्षरों की संख्याः-

क्रम स०	छन्द		अक्षर
1.	गायत्री	24	छन्द में अक्षरों का कम या अधिक होना- इसके लिए ये पारिभाषिक शब्द हैं
2.	उष्णिक्	28	एक अक्षर कम-निचृत्।
3.	अनुष्टुप्	32	एक अक्षर अधिक-भुरिक्।
4.	बृहती	36	दो अक्षर अधिक-स्वराट् जैसे- दो अक्षर कम-विराट् गायत्री के 3 पाद में 24 अक्षर होते हैं। 23 अक्षर होने पर- निचृत्
5.	पंक्ति	40	गायत्री। 25 अक्षर होने पर- भुरिक् गायत्री। 22 अक्षर होने पर- विराट्
6.	त्रिष्टुप्	44	गायत्री। 26 अक्षर होने पर- स्वराट् गायत्री।
7.	जगती	48	

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'बृहती' छन्द में अक्षरों की संख्या 36 होती है। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 203

16. दर्शपौर्णमासेष्टियागे अनुयाजानां संख्या विद्यते?

(A) पञ्च (B) त्रयः

(C) एकादश (D) अष्ट

व्याख्या-

दर्शपौर्णमास यागः- दर्शपौर्णमास नाम के याग अमावस्या और पूर्णिमा को क्रमानुसार करना चाहिये। अमावस्या और पूर्णिमा में अनुष्ठान होने से ही इन कर्मों का दर्शपौर्णमास यह नाम पड़ा। यद्यपि 'दर्शपौर्णमासौ' यहाँ पर द्विवचन ही सर्वत्र पाया जाता है। पूर्णमासी के दिन अग्नि के लिए आठ कपालों में संस्कृत पुरोडाश का याग, अग्नीषोम के लिये घृत का उपांशुयाग और अग्नीषोम के लिए एकादश कपाल पुरोडाशयाग– ये तीन याग होते हैं। अमावस्या के दिन अग्नि के लिए पुरोडाशयाग एक, इन्द्र के लिए दधियाग दूसरा और इन्द्र के लिए दुग्ध का याग तीसरा– यों तीन याग होते हैं। दोनों में मिलाकर कुल छः याग होते हैं-

दर्शपौर्णमास याग के पदार्थः- पाँच प्रयाज, दो आज्यभाग, अन्वाहार्य, दक्षिणा, तीन अनुयाज, प्रधान याग, शंयुवाक, व्यूहन, सूक्त-वाक्, पत्नीसंयाज, दक्षिणाग्निहोम, बहिर्होम, प्रणीताविमोक आदि विष्णुक्रमादि, यजमान कर्म, व्रतविसर्ग, ब्राह्मणभोजन आदि। ये दर्शपौर्णमास जीवनभर करने चाहिये। यदि जीवनभर करने की शक्ति ना हो तो तीस वर्ष तक करके बन्द कर दें।

प्रयाज- जिनसे देवताओं का प्रकृष्ट रूप से यजन होता है वे प्रयाज कहलाते हैं।

अन्वाहार्य- यज्ञ में हुए दोषों को जो दूर करता है वह अन्वाहार्य है- ऋत्विक् के भोजन योग्य भात।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि दर्शपौर्णमास याग में तीन अनुयाजों की संख्या प्राप्त होती है। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- श्रौतयज्ञ परिचय- वेणीराम शर्मा गौड़, पेज 8-14

17. वृक्षस्य नु ते पुरुहूत वयाः- इत्यत्र 'नु' विद्यते?

(A) उपमार्थीयः (B) हेत्वपदेशार्थीयः

(C) अनुप्रश्नार्थीयः (D) अवकुत्सार्थीयः

व्याख्या-

निरुक्तकार आचार्य यास्क ने चतुर्विध पदों का उल्लेख किया है- ''चत्वारि पदजातानि नामाख्याते चोपसर्गनिपाताश्च'' [निरुक्त1.1] अर्थात् चार प्रकार के पद होते हैं– नाम अर्थात् सञ्ज्ञा, आख्यात अर्थात् क्रियापद, उपसर्ग और निपात अर्थात् अव्यय। इनमें से निपात विविध अर्थों में प्रयुक्त हुआ करते हैं [उच्चावचेष्वर्थेषु निपतन्ति। निरुक्त 1.2] इसीलिए इन्हें निपात कहा गया। इनमें से कुछ निपात उपमार्थक होते हैं, जैसे- इव, न, चित्, नु। कुछ अर्थोपसंग्रह में प्रयुक्त होते हैं,जैसे- च, आ, वा, उ, हि इत्यादि। कुछ निपात पादपूर्ति के लिए प्रयोग में आते हैं, जैसे- सीम्, इत्, उ इत्यादि। किन्तु ये सभी निपात अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग अर्थों में प्रयुक्त होते हैं। जैसे कि 'नु' अनेकार्थक है [नु

इत्येषोऽनेककर्मा।।1.2।।]। यह निम्नलिखित अर्थों में प्रयुक्त होता है-

1. हेत्वपदेश अर्थात् हेतुकथन- इदं नु करिष्यिति (इस कारण इस कार्य को करेगा।)

2. अनुप्रश्न अर्थात् किसी बात पर सन्देह व्यक्त करते हुए प्रश्न करना, जैसे- कथं नु करिष्यति? अरे! तू कहता तो है कि वह इस कार्य को करेगा, पर करेगा कैसे?- यही अनुप्रश्न है। इसी अर्थ में 'ननु' भी आता है।

3. उपमा अर्थ में- ''वृक्षस्य नु ते पुरुहूत वयाः'' हे इन्द्र! वृक्ष की शाखाओं की भाँति तेरी रक्षाएँ चारों ओर फैली हैं। यहाँ नु उपमार्थक है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि प्रश्नगत 'नु' निपात उपमार्थक है। **अतः विकल्प A सही है।**

स्रोत- निरुक्तम् - आचार्य विश्वेश्वर, पेज 47

18. 'नियतवाचोयुक्तयो नियतानुपूर्व्या भवन्ति'- इति कथनं वर्तते?

(A) शाकटायनस्य (B) औदुम्बरायणस्य
(C) गार्ग्यस्य (D) कौत्सस्य

व्याख्या-

आचार्य यास्क ने निरुक्त के प्रथम अध्याय के पञ्चम पाद में निरुक्तशास्त्र के प्रयोजन के विषय में चर्चा की है। उन्होंने बताया कि इस निरुक्त के बिना मन्त्रों का अर्थज्ञान नहीं होता। अर्थ को जाने बिना मनुष्य को स्वर और व्याकरण प्रक्रिया का यथावत् ज्ञान नहीं हो सकता, इसलिए यह निरुक्त व्याकरण का ज्ञान कराने वाला और वेदार्थ ज्ञान में सहायक है। [अथापीदमन्तरेण मन्त्रेष्वर्थप्रत्ययो न विद्यते। अर्थमप्रतियतो नात्यन्तं स्वरसंस्कारोद्देशः। तदिदं विद्यास्थानं व्याकरणस्य कार्त्स्न्यं स्वार्थसाधकं च ।। 1.5] इस पर प्रतिपक्षी आचार्य कौत्स ने कहा कि यदि यह निरुक्त मन्त्रों के अर्थज्ञान के लिए है तो यह व्यर्थ ही है क्योंकि मन्त्र तो निरर्थक होते हैं। [यदि मन्त्रार्थप्रत्ययाय, अनर्थकं भवति इति कौत्सः। अनर्थका हि मन्त्राः।। 1.5] तब कौत्स ने यह सिद्ध करने के लिए कि मन्त्र निरर्थक होते हैं, विविध तर्क दिए। जिनमें से पहला तर्क दिया कि मन्त्र निश्चित शब्दों की रचना वाले और निश्चित क्रम वाले होते हैं [नियतवाचोयुक्तयो नियतानुपूर्व्या भवन्ति। 1.5] अर्थात् लौकिक भाषा की तरह इन मन्त्रों में हम जरा भी उलटफेर नहीं कर सकते और न इनके शब्दों की जगह इनके पर्याय रख सकते हैं। ''अग्न आयाहि वीतये'' में ''आगच्छ विभावसो!'' पर्याय और क्रम नहीं बदल सकते।

2. औदुम्बरायणः शब्द के नित्यत्व और अनित्यत्व के सम्बन्ध में यास्क ने इनका मत उद्धृत किया है। ये शब्द को अनित्य मानते हैं और कहते हैं कि शब्द उच्चारण के पश्चात् नष्ट हो जाता है- ''इन्द्रियनित्यं वचनमौदुम्बरायणः।''

3. शाकटायनः ''न निर्बद्धा उपसर्गा अर्थान्निराहुरिति शाकटायनः'' अर्थात् नाम और आख्यात से अलग हुए उपसर्ग स्वतन्त्र अर्थों को नहीं कहते- ऐसा शाकटायन आचार्य का मत है।

4. गार्ग्यः ''उच्चावचाः पदार्था भवन्ति इति गार्ग्यः।'' उपसर्गों के अनेक प्रकार के अर्थ हुआ करते हैं अर्थात् स्वतन्त्ररूप से भी उपसर्ग सार्थक हैं- यह गार्ग्य का मत है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि प्रश्नगत उद्धरण कौत्स का वचन है। **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत- निरुक्तम् - आचार्य विश्वेश्वर, पेज 98

19. ऋक्संहितायाः समुपलब्धभाष्येषु प्रथमो भाष्यकारः विद्यते?

(A) सायणः (B) आनन्दतीर्थः
(C) स्कन्दस्वामी (D) वेङ्कटमाधवः

व्याख्या-

(1) **सायणः-** सायण के पिता- मायण

माता	-	श्रीमती
बड़े भाई-	-	माधव
छोटे भाई-	-	भोगनाथ
गुरु-	-	श्रीकण्ठ
मृत्यु-	-	1387ई.

इन्होंने सर्वप्रथम कृष्णयजुर्वेद की तैत्तिरीयसंहिता पर भाष्य लिखा। तदनंतर ऋग्वेद की शाकल संहिता, शुक्लयजुर्वेद की काण्व संहिता, सामवेद की कौथुम-संहिता ओर अथर्ववेद की शौनक संहिता पर भाष्यों की रचना की।

(2) आनन्दतीर्थः- काल-1255 से 1335, अपर नाम- मध्व। इन्होंने ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के 40 सूक्तों पर भाष्य लिखा। इन्होंने वेद का प्रतिपाद्य नारायण को माना।

(3) स्कन्दस्वामी- निवासी- गुजरात की राजधानी वलभी पिता-भर्तृध्रुव। ऋग्वेद के भाष्यकारों में स्कन्दस्वामी सबसे प्राचीन हैं। स्कन्दस्वामी ने 600 से 625 के मध्य ऋग्वेद पर भाष्य लिखा। स्कन्दस्वामी का यह भाष्य केवल चतुर्थ अष्टक तक ही प्राप्त है। इसके अतिरिक्त इन्होंने यास्क के निरुक्त पर टीका भी लिखी।

(4) वेङ्कटमाधवः- पितामह- माधव, पिता- वेङ्कट, नाना-

भवगोल, माता- सुन्दरी, भाई- संकर्षण, पुत्र- वेङ्कट तथा गोविन्द। साम्बशिव शास्त्री ने इनका समय 1050-1150ई. के मध्य माना। इनका भाष्य अत्यन्त संक्षिप्त है। इसमें मन्त्रों के पदों की ही व्याख्या है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि ऋक्संहिता के उपलब्ध भाष्यों में प्रथम भाष्यकार स्कन्दस्वामी जी हैं। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 22

20. ऋक्प्रातिशाख्यस्य पटलसंख्या कियती?

(A) 16 (B) 14

(C) 12 (D) 18

व्याख्या-

वर्तमान में उपलब्ध प्रातिशाख्य ग्रन्थों की संख्या 5 है-

(1) ऋक्प्रातिशाख्य (2) अथर्ववेदप्रातिशाख्य

(3) तैत्तिरीयप्रातिशाख्य (3) सामप्रातिशाख्य

(5) वाजसनेयिप्रातिशाख्य

(1) ऋक्प्रातिशाख्य- रचियता- महर्षि शौनक, काल- 800ई.पू.-600ई.पू. के मध्य ऋक्प्रातिशाख्य में कुल तीन अध्याय हैं और प्रत्येक अध्याय में 6 पटल हैं। इस प्रकार कुल 18 पटल हैं। प्रत्येक पटल वर्गों में विभाजित है। प्रत्येक वर्ग में सामान्यतः 5 श्लोक हैं।

(2) तैत्तिरीयप्रातिशाख्य- कृष्णयजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा से सम्बद्ध यह प्रातिशाख्य 2 खण्डों में विभक्त है। प्रत्येक खण्ड में 12 अध्याय और कुल 24 अध्याय हैं।

(3) वाजसनेयिप्रातिशाख्य- शुक्लयजुर्वेद की वाजसनेयि संहिता से संबद्ध वाजसनेयि प्रातिशाख्य है। इस प्रातिशाख्य की रचना महर्षि शौनक के शिष्य कात्यायन ने की है। वाजसनेयि प्रातिशाख्य में कुल 18 अध्याय तथा प्रत्येक अध्याय में 169 सूत्र हैं।

(4) अथर्ववेदप्रातिशाख्य- अथर्ववेद से संबद्ध दो प्रातिशाख्य ग्रन्थ प्रकाशित हैं- एक विश्वबन्धुशास्त्री द्वारा पंजाब विश्वविद्यालय ग्रन्थमाला से 1923 ई. में प्रकाशित हुआ, दूसरा ग्रन्थ डॉ. ह्विटनी द्वारा 1862 ई. में शौनकीया चतुरध्यायिका के नाम से प्रकाशित है। इसमें कुल 4 अध्याय हैं।

(5) सामप्रातिशाख्य- सामवेद से सम्बद्ध तीन प्रातिशाख्य प्रकाशित हैं।

(क) सामतन्त्र, इसके रचयिता औद्व्रजि हैं।

(ख) पुष्पसूत्र, इसकी रचना पुष्प ऋषि द्वारा की गई। सामवेदीय सर्वानुक्रमणी के अनुसार पुष्पसूत्र की रचना वररुचि ने की। इसमें कुल 10 प्रपाठक या अध्याय हैं।

(ग) ऋक्तन्त्र, इसके रचयिता आचार्य शाकटायन हैं। इसमें कुल 5 प्रपाठक और 200 सूत्र हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि ऋक्प्रातिशाख्य में पटलों की संख्या 18 है। **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत- संस्कृत वाङ्मय का बृहद इतिहास (खण्ड 2), पेज 13

21. अथर्ववेदेन सम्बद्धा शिक्षा का वर्तते?

(A) लोमशी शिक्षा (B) माण्डूकी शिक्षा

(C) गौतमी शिक्षा (D) केशवी शिक्षा

व्याख्या-

वेदों से सम्बद्ध शिक्षाग्रन्थ

वेद	**शिक्षाग्रन्थ**
ऋग्वेद	पाणिनीय शिक्षा, स्वराङ्कुशा, षोडशश्लोकी, शैशिरीय, आपिशलि शिक्षा
यजुर्वेद (शुक्लयजु.)	याज्ञवल्क्य शिक्षा, वासिष्ठी शिक्षा, कात्यायनी, पाराशरी, माध्यन्दिनी शिक्षा आदि।
कृष्णयजुर्वेद	भारद्वाज शिक्षा, व्यास शिक्षा, शम्भु शिक्षा, कौहलीय, सर्वसम्मत, आरण्य, सिद्धान्त शिक्षा आदि।
सामवेद	गौतमी शिक्षा, लोमशी शिक्षा, नारदीय शिक्षा
अथर्ववेद	माण्डूकी शिक्षा

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि अथर्ववेद की माण्डूकी शिक्षा है। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (द्वितीय खण्ड), भू. पेज 55

22. 'शिवसंकल्पसूक्तम्' माध्यन्दिनसंहितायां कस्मिन् अध्याये समुपलभ्यते?

(A) षोडशे (B) चतुस्त्रिंशे

(C) एकत्रिंशे (D) चत्वारिंशे

व्याख्या-

यजुर्वेदीय माध्यन्दिनसंहिता का अध्यायवार वर्ण्यविषय

अध्याय	**वर्ण्य विषय**
1 और 2	इसमें दर्श और पौर्णमास से संबद्ध यज्ञों का वर्णन है।
3	अग्निहोत्र और चातुर्मास्य इष्टियों का वर्णन

4-8	अग्निष्टोम और सोमयाग का वर्णन
9-10	इसमें वाजपेय और राजसूय यज्ञों का वर्णन है।
11-18	इसमें अग्निचयन और विविध प्रकार की वेदियों के निर्माण से संबद्ध मन्त्र हैं।
19-21	सौत्रामणी याग का विधान
22-25	अश्वमेध यज्ञ का विस्तृत वर्णन (अध्याय 24 जन्तु विज्ञान की दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण है, इसमें सैकड़ों पशु-पक्षियों का उल्लेख है।)
26-29	इन अध्यायों को खिल अध्याय कहते हैं। इनमें पूर्वोक्त यागों से संबद्ध नवीन मंत्र हैं।
30	इसमें पुरुषमेध का वर्णन।
31	इसे पुरुषसूक्त और विष्णुसूक्त भी कहते हैं। इसमें विराट् पुरुष के स्वरूप का वर्णन है।
32	इसमें विराट् पुरुष के दार्शनिक और आध्यात्मिक स्वरूप का वर्णन है।
33	सर्वमेध सूक्त
34	इसमें प्रारंभ के 6मन्त्र 'शिवसंकल्प उपनिषद्' कहे जाते हैं।
35	इसमें पितृमेध का वर्णन है।
36-38	इनमें प्रवर्ग्यनामक यज्ञ से संबद्ध मंत्र हैं।
39	इसमें अन्त्येष्टि से संबद्ध मन्त्र हैं, इसे प्रायश्चित्ताध्याय भी कहते हैं।
40	इसे ईशोपनिषद् और ईशावास्योपनिषद् कहते हैं। यह अध्याय यजुर्वेद का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अध्याय है। इसे उपनिषदों में प्रथम स्थान प्राप्त है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि शिवसंकल्पसूक्त माध्यन्दिन संहिता के 34वें अध्याय (चतुस्त्रिंशे) में है। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 75

23. भर्तृहरिदिशा को ब्रह्मामृतमश्नुते?

(A) शब्द प्रवृत्तितत्त्वज्ञः
(B) पञ्चविंशतितत्त्वज्ञः
(C) प्रमाणादिषोडशपदार्थ निष्णातः
(D) याज्ञिकः

व्याख्या- आचार्य भर्तृहरि ने वाक्यपदीयम् के ब्रह्मकाण्ड में बतलाया है कि शब्द का सम्यक् ज्ञान ही ब्रह्म की प्राप्ति का उपाय है और शब्द के तत्त्व का ज्ञान ही मोक्ष प्राप्ति का साधन है।

तस्माद्यः शब्दसंस्कारः सा सिद्धिः परमात्मनः।
तस्य प्रवृत्तितत्त्वज्ञः तद्ब्रह्मामृतमश्नुते।। (कारिका 133)

अर्थात् शब्द की प्रवृत्ति (षड्भावविकार रूपी) को जो भलीभाँति जानता है वही उपनिषद् में वर्णित अमृत ब्रह्म को प्राप्त कर सकता है।

2. पञ्चविंशतितत्त्वज्ञः- साङ्ख्यशास्त्र में 25 तत्त्वों का वर्णन मिलता है। इन 25 तत्त्वों के सम्यक् ज्ञान से पुरुष को कैवल्य प्राप्त होता है- यह साङ्ख्यमत है।

3. प्रमाणादिषोडशपदार्थ निष्णातः- न्यायशास्त्र के अनुसार प्रमाणादि 16 पदार्थों के सम्यक् ज्ञान से निःश्रेयस् की प्राप्ति होती है- यह गौतम ऋषि प्रणीत न्यायसूत्र के प्रथम सूत्र में कहा गया है (प्रमाणप्रमेयसंशयप्रयोजनदृष्टान्त-सिद्धान्तावयवतर्क-निर्णयवादजल्पवितण्डाहेत्वाभासच्छलजातिनिग्रहस्थानानां तत्त्वज्ञानान्निःश्रेयसाधिगमः।।)। अतः यह न्यायशास्त्र का मत है।

4. याज्ञिकः- पूर्वमीमांसक यज्ञ को ही धर्म मानते हैं और उसी से कल्याण की प्राप्ति बतलाते हैं।
'यागादिरेव धर्मः' (अर्थसङ्ग्रह, लौगाक्षिभास्कर)।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि भर्तृहरि के मत में शब्दप्रवृत्तितत्त्वज्ञ ब्रह्मामृत को प्राप्त करता है। **अतः विकल्प A सही है।**

स्रोत- वाक्यपदीयम् (1.133)-जयदत्त उप्रेती, पेज 89

24. परेषामसमाख्येयं मणिरूप्यादिविज्ञानं भर्तृहरिदिशा कस्माज्जायते?

(A) शाब्दात्
(B) अनुमानाद्
(C) अभ्यासाद्
(D) उपमानात्

व्याख्या-

वाक्यपदीयकार महावैयाकरण भर्तृहरि पाँच प्रमाण मानते हैं- प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, अभ्यास और अदृष्ट। इनमें से अभ्यास नामक प्रमाण को भर्तृहरि पृथक् प्रमाण इसलिए मानते हैं क्योंकि मणि आदि के मूल्यों के तारतम्य का जो ज्ञान है वह दूसरों को बताया नहीं जा सकता किन्तु अभ्यास से ही होता है-

परेषामसमाख्येयमभ्यासादेव जायते।
मणिरूप्यादिविज्ञानं तद्विदां नानुमानिकम्।। (कारिका35)

अर्थात् लौकिक मणि और गिन्नी आदि के मूल्य के तारतम्य का ज्ञान

जानकार स्वर्णकारों को ही होता है। वे इसे चाहने पर भी नहीं बता सकते। क्योंकि किसी वस्तु की विशेषता का ज्ञान तो अभ्यास से ही होता है। इस अभ्यास से होने वाले ज्ञान को अनुमान नहीं कहा जा सकता।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि मणिरूप्यादि का मूल्यज्ञान इत्यादि भर्तृहरि के मत में 'अभ्यास' नामक प्रमाण से होता है। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- वाक्यपदीयम् (कारिका 35)-जयदत्त उप्रेती, पेज 25

25. 'एध्' धातोः लुङ्लकारे प्रथमपुरुषबहुवचने कः प्रयोगः?

(A) ऐधन्त (B) ऐधिष्ट
(C) ऐधिषत (D) ऐधत

व्याख्या-

एध् लङ्लकार		
एकव०	**द्विव०**	**बहुव०**
प्र०पु०- ऐधत	ऐधेताम्	ऐधन्त
म०पु०- ऐधथाः	ऐधेथाम्	ऐधध्वम्
उ०पु०- ऐधे	ऐधावहि	ऐधामहि
लुङ्लकार		
ऐधिष्ट	ऐधिषाताम्	ऐधिषत
ऐधिष्ठाः	ऐधियाथाम्	ऐधिढ्वम्
ऐधिषि	ऐधिष्वहि	ऐधिष्महि
लट्लकार		
एधते	एधेते	एधन्ते
एधसे	एधेथे	एधध्वे
एधे	एधावहे	एधामहे
लृट्लकार		
एधिष्यते	एधिष्येते	एधिष्यन्ते
एधिष्यसे	एधिष्येथे	एधिष्यध्वे
एधिष्ये	एधिष्यावहे	एधिष्यामहे

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त धातु रूपों को देखने से स्पष्ट होता है कि 'एध्' धातोः लुङ्लकारे प्र०पु०बहुवचनरूपम् 'ऐधिषत' भवति। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज 495

26. 'लोटो लङ्वत्' इति सूत्रप्रवृत्तिः कस्मिन् प्रयोगे जाता?

(A) अभवः (B) भवाम
(C) भवेताम् (D) अभविष्यत्

व्याख्या- लोटो लङ्वत्॥3।4।85॥ प्रकृत सूत्र कहता है कि लोट् लकार लङ् के समान होता है। लङ्लकार में ङकार की इत्सञ्ज्ञा होने से यह ङित् है, इसी प्रकार लोट्लकार टित् है। अतः जो कार्य लङ् में ङित् होने से स्वतः प्रवृत्त नहीं हो रहे थे अतः पाणिनि ने यह सूत्र बनाया। लोट्लकार को भी लङ् की भाँति ङित् माना जाए जिससे ङित् मानकर होने वाले सभी कार्य प्रवृत्त हो जाएँ।

1. अभवः- भू धातु से 'अनद्यतने लङ्' से लङ्लकार, अडागम, अनुबन्धलोप, उसके स्थान पर मध्यमपुरुष का एकवचन सिप् आदेश, अनुबन्धलोप, सार्वधातुक सञ्ज्ञा, शप्, अनुबन्धलोप, गुण, अवादेश होकर 'अभव+सि' बना। इकार का 'इतश्च' से लोप होकर 'अभवस्' बना। सकार का रुत्वविसर्ग होकर 'अभवः' सिद्ध हुआ।

2. भवाम- भू धातु से लोट्लकार, उसके स्थान पर उत्तमपुरुष बहुवचन मस् आया 'आडुत्तमस्य पिच्च' से आट् का आगम हुआ- 'भू+आ मस्' बना। सार्वधातुक संज्ञा, शप्, गुण, अवादेश होकर 'भव आमस्' बना। 'भव+आमस्' में 'अकः सवर्णे दीर्घः' से दीर्घादेश होकर 'भवामस्' बना, सकार का 'नित्यं ङितः' से लोप हुआ, 'भवाम' सिद्ध हुआ। लोट्लकार का रूप होने से ये सभी कार्य ''लोटो लङ्वत्'' सूत्र के बल से होते हैं।

3. भवेताम्- भू धातु, विधिलिङ्लकार, प्रथमपुरुष द्विवचन में भू+तस्। 'तस्थस्थमिपां तान्तन्तामः' से 'भू+ताम्', सार्वधातुकसंज्ञा, शप्, अनुबन्धलोप, धातु को गुण, अवादेश-'भव+ताम्', यासुट् का आगम- 'भव+यास्+ताम्'- ''अतो येयः'' से यास् = इम्, 'भव+इय्+ताम्', गुण='भवेय ताम्' 'लोपो वयोर्वलि' से यलोप=भवेताम्।

4. अभविष्यत्- भू धातु लृङ्लकार, प्रथमपुरुष एकवचन का रूप है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि 'लोटो लङ्वत्' सूत्र 'भवाम' प्रयोग में प्रयुक्त होता है। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी (3.4.85) - गोविन्दाचार्य, पेज 401

27. 'महद् यशो यस्य सः' इति विग्रहे बहुव्रीहिसमासे कः प्रयोगः?

(A) महायशः (B) महायशसः
(C) महायशाः (D) महायशष्कः

व्याख्या-

लौकिक विग्रह- महद् यशः यस्य सः = महायशस्को महायशाः (बड़े यश वाला) अलौकिक विग्रह- महत् सुँ यशस् सुँ।

यहाँ दोनों पद अन्य पदार्थ को विशिष्ट कर रहे हैं अतः 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से इन का बहुव्रीहि समास हो जाता है।

समास में विशेषण का पूर्वनिपात, समास की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा तथा 'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' से प्रातिपदिक के अवयव सुँपों का लुक करने पर- महत्+यशस्।

पुनः ''आन्महतः समानाधिकरणजातीययोः'' सूत्र द्वारा महत् के तकार को आकार आदेश होकर सवर्णदीर्घ हो जाता है- महा-यशस्। इस बहुव्रीहिसमास से किसी सूत्र द्वारा किसी समासान्त का विधान नहीं किया गया अतः यह शेषबहुव्रीहि है।

* इस शेषबहुव्रीहि से प्रकृत 'शेषाद्विभाषा' सूत्र द्वारा विकल्प से समासान्त कप् प्रत्यय हो जाता है।

कप् पक्ष में 'महायशस्+क' इस स्थिति में 'स्वादिष्वसर्वनामस्थाने' सूत्र द्वारा पदसञ्ज्ञा के कारण 'ससजुषो रुः' से पदान्त सकार को रुँ आदेश तथा 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' से रेफ् को विसर्ग आदेश हो जाता है- महायशः+क।

'सोऽपदादौ' से विसर्ग को सकार आदेश करने पर-'महायशस्क'। अब विशेष्यानुसार विभक्ति लाकर 'महायशस्कः' प्रयोग सिद्ध हो जाता है।

* जिस पक्ष में समासान्त कप् प्रत्यय नहीं होता वहाँ विभक्ति लाकर पुंलिङ्ग में 'वेधस्' शब्द की तरह प्रक्रिया होती है।

महायस्+सुँ- 'यहाँ अत्वसन्तस्य चाऽधातोः' से उपधादीर्घ, हल्ङ्याब्भ्यो॰ से अपृक्त सकार का लोप तथा प्रकृति के सकार को रुत्वविसर्ग करने पर 'महायशाः' प्रयोग सिद्ध हो जाता है।

इस प्रकार 'महायशस्कः' तथा महायशाः ये दो प्रयोग निष्पन्न होते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'महद् यशो यस्य सः महायशाः' तथा 'महायशस्कः' का विग्रह हुआ।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज 967

28. 'कुगतिप्रादयः' इति समासविधायकसूत्रस्य किमुदाहरणं नास्ति?

(A) पटपटाकृत्य (B) कुम्भकारः
(C) सुपुरुषः (D) हस्तेकृत्य

व्याख्या-'कुगतिप्रादयः' (2.2.18)- समर्थ सुबन्त शब्दों के साथ कुशब्द, गतिसञ्ज्ञक शब्द और प्र आदि का समास होता है।

पटपटाकृत्य- पटत् कृत्वा इस शब्द में पटत् से 'अव्यक्तानु-करणाद् द्व्यजवरार्धादनितौ डाच्' सूत्र से डाच् प्रत्यय की विवक्षा में डाचि बहुलं द्वे भवतः से द्वित्व फिर टिलोप पररूप आदि कार्य तब 'पटपटा कृत्वा' – बना कृत्वा के योग में पटपटा की 'ऊर्यादिच्विडाचश्च' से गतिसञ्ज्ञा करने के बाद 'कुगति प्रादयः' इस सूत्र से समास होता है।

सुपुरुषः- 'शोभनः पुरुषः' लौकिक विग्रह तथा सु पुरुष सु अलौकिक विग्रह इस स्थिति में 'कुगति प्रादयः' से प्रादि सु के साथ समर्थ सुबन्त 'पुरुष सु' का समास हुआ।

हस्तेकृत्य- हस्ते कृत्वा में एकारान्त अव्यय हस्ते की **नित्यं हस्ते पाणावुपयमने (1.4.77)** इस सूत्र से गतिसञ्ज्ञा होने के बाद कुगतिप्रादयः इस सूत्र से समास होता है।

कुम्भकारः- 'कुम्भं करोति' लौकिक विग्रह तथ 'कुम्भ अम् कृ' इस अलौकिक विग्रह में कुम्भ शब्द से 'उपपदमतिङ्' (2.2.19) सूत्र से उपपद समास होता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि पटापटाकृत्य, सुपुरुषः तथा हस्ते कृत्य में कुगतिप्रादयः (2.2.18) से नित्य समास जबकि कुम्भकारः इस उदाहरण में 'उपपदमतिङ्' (2.2.19) से उपपद समास होता है। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज 935

29. 'प्रगृह्यम्' इत्यत्र कः कृत्यप्रत्ययः?

(A) ण्यत् (B) यत्
(C) क्यप् (D) तव्यत्

व्याख्या-प्रगृह्यम् (प्रगृह्यते इति) प्र उपसर्गपूर्वक ग्रह धातु से **पदास्वैरिबाह्यापक्ष्येषु च**।। 3।1।119।। सूत्र से क्यप् प्रत्यय हुआ। तत्पश्चात् **ग्रहिज्यावयिव्यधिवष्टिविचतिवृश्चतिपृच्छ-तिभृज्जतीनां ङिति च**।।6.1.16।। सूत्र से ग्रह् के र् को सम्प्रसारण होकर ऋ हुआ = प्रगृह् + क्यप्। क्यप् के ककार की 'लशक्वतद्धिते' से और पकार की हलन्त्यम् से इत्सञ्ज्ञा होकर 'तस्य लोपः' से लोप हुआ- 'प्रगृह्य' बना, 'सामान्ये नपुंसकम्' से नपुंसकलिङ्ग की विवक्षा में प्रगृह्यम् रूप सिद्ध होता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट हुआ कि 'प्रगृह्यम्' में क्यप् नामक कृत्य प्रत्यय है। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- अष्टाध्यायी (3.1.119)- ईश्वरचन्द्र, पेज 297

30. 'विद्वांसः सन्ति अस्मिन्' इति विग्रहे को मत्वर्थीयः प्रयोगः?

(A) विद्वद्वान (B) विदुष्मान्
(C) विद्वत्वान् (D) विद्वन्मान्

व्याख्या-तसौ मत्वर्थे (1.4.19)

तान्त-सान्तौ भसञ्ज्ञौ स्तो मत्वर्थे प्रत्यये परे। गरुत्मान्।

वसोः सम्प्रसारणम्- विदुष्मान्।

मतुँप् के अर्थ वाला कोई प्रत्यय परे हो तो तकारान्त और सकारान्त प्रातिपदिक भसंज्ञक हो जाते हैं।

जैसे- विद्वांसः सन्त्यस्य अस्मिन् वा विदुष्मान् (जिसके विद्वान् लोग हैं ऐसा वंश आदि अथवा जिसमें विद्वान् हैं ऐसा देश, प्रदेश आदि। विद्वस् + जस् - से सन्त्यस्य या सन्त्यस्मिन् अर्थों में 'तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुँप्' सूत्र से मतुँप् प्रत्यय होकर सुँब्लुक् करने से- विद्वस् + मत् 'तसौ मत्वर्थे' से पदसंज्ञा की अपवादभसंज्ञा के हो जाने से 'वसु-स्रंसु-ध्वंस्वनडुहां दः' द्वारा सकार को पदमूलक दत्व नहीं होता। पुनः 'वसोः सम्प्रसारणम्' से वसु के वकार की सम्प्रसारणम् उकार तथा 'सम्प्रसारणाच्च' से पूर्वरूप एकादेश करने पर
'विदुस् मत्' अन्त में 'आदेशप्रत्यययोः' से सकार को मूर्धन्य षकार का आदेशकर पूर्ववत् विभक्तिकार्य करने से 'विदुष्मान्' प्रयोग सिद्ध होता है।
इसी प्रकार- वपुष्मान्, आयुष्मान्, चक्षुष्मान्, ज्योतिष्मान्, धनुष्मान् आदि में भसंज्ञा के कारण रुँत्व नहीं होता।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि विदुष्मान् 'विद्वांसः सन्ति अस्मिन् मत्वर्थीय तद्धित प्रत्यय है। **अतः विकल्प B सही है।**
स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज 112

31. या स्वयमेवाध्यापिका सा किमुच्यते?
(A) उपाध्यायानी (B) उपाध्याया
(C) आचार्यानी (D) आचार्याणी

व्याख्या-
महर्षि पाणिनि अष्टाध्यायी के चतुर्थ अध्याय में स्त्रीत्व की विवक्षा में 'ङीष्' प्रत्यय का विधान करने के लिए एक सूत्र लिखते हैं- ''इन्द्र-वरुण-भव-शर्व-रुद्र-मृड-हिमाऽरण्य-यव-यवन-मातुलाऽऽचार्याणाम् आनुँक्'' (4.1.49)
इन्द्र, वरुण, भव, शर्व, रुद्र, मृड, हिम, अरण्य, यव, यवन, मातुल और आचार्य- इन सभी बारह प्रातिपदिकों से स्त्रीत्व की विवक्षा में ङीष् प्रत्यय तथा इन प्रातिपदिकों को 'आनुँक्' का आगम भी हो जाता है। जैसे- इन्द्राणी, वरुणानी, भवानी आदि।
इसी सूत्र में कात्यायन ने एक वार्तिक लिखा-
''मातुलोपाध्याययोरानुँग्वा''
मातुल और उपाध्याय इन दो प्रातिपदिकों से पुंयोग में स्त्रीत्व की विवक्षा में ङीष् प्रत्यय तो नित्य होता है परन्तु आनुँक् का आगम विकल्प से।
जैसे- (i) मातुलस्य स्त्री (पत्नी) मातुलानी (यहाँ ङीष् प्रत्यय के साथ आनुँक् का आगम हुआ है)
(ii) मातुलस्य स्त्री मातुली (यहाँ ङीष् प्रत्यय हुआ परन्तु आनुँक् का आगम नहीं हुआ)
इसी प्रकार- उपाध्यायस्य स्त्री =
(i) उपाध्याय+आनुँक्+ङीष्=उपाध्यायानी (उपाध्याय की पत्नी)
(ii) उपाध्याय+ङीष्= उपाध्यायी (उपाध्याय की पत्नी)
यहाँ प्रथम उदाहरण में आनुँक् का आगम हुआ है, दूसरे में नहीं।
विशेष नियम- यदि 'उपाध्यायस्य स्त्री' इसप्रकार पुंयोग विवक्षित न होगा अर्थात् कोई स्त्री स्वयं अध्यापिका होगी तो वहाँ ङीष् का विकल्प होगा अर्थात् टाप् प्रत्यय भी हो सकता है किन्तु आनुँक् की प्रवृत्ति नहीं होगी।
या तु स्वयमेव अध्यापिका तत्र वा ङीष् वाच्यः (सि.कौ.)
उपाध्याय + ङीष् = उपाध्यायी (स्वयं अध्यापिका)
उपाध्याय + टाप् = उपाध्याया (स्वयं अध्यापिका)
''आचार्यादणत्वं च'' आचार्य प्रातिपदिक से परे आनुँक् (आन्) के नकार को णकार नहीं होता।
जैसे- आचार्यस्य स्त्री = आचार्यानी (आचार्य की पत्नी)
यदि कोई स्त्री स्वयं व्याख्यायी' पण्डिता अध्यापिका होगी तो पुंयोग के अभाव में ''इन्द्र-वरुण-भव..'' सूत्र से ङीष् प्रत्यय और आनुक् न होकर ''अजाद्यतष्टाप्'' से टाप् प्रत्यय ही होगा। आचार्य + टाप् = आचार्या (स्वयं आचार्या)
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'या स्वयमेव अध्यापिका सा उपाध्याया अथवा आचार्या।
अतः विकल्प B सही है।
स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी - (भैमी व्याख्या, खण्ड 6), पेज 55

32. 'वृत्तिसर्गतायनेषु क्रमः' इत्यात्मनेपदविधायकसूत्रस्य सर्गार्थक-'क्रमधातोरुदाहरणं' चिनुत।
(A) अध्ययनाय क्रमते (B) ऋचि क्रमते बुद्धिः
(C) क्रमन्तेऽस्मिन् शास्त्राणि (D) आक्रमते सूर्यः

व्याख्या-
वृत्तिसर्गतायनेषु क्रमः (1.3.38):- वृत्ति का अर्थ है- बिना व्यवधान के चलना। सर्ग का अर्थ है- उत्साह। तायन का अर्थ है- विस्तार। वृत्ति, सर्ग और तायन अर्थ गम्यमान होने पर क्रम धातु से आत्मनेपद होता है।
उदाहरण- (1) ऋचि क्रमते बुद्धिः-......वृत्ति अर्थ गम्यमान होने के कारण क्रम धातु से 'वृत्तिसर्गतायनेषु क्रमः' से आत्मनेपद होकर 'क्रमते' सिद्ध होता है। ऋग्वेद में इसकी बुद्धि का प्रतिबन्ध नहीं होता अर्थात् ऋग्वेद के अध्ययन में यह आगे चलता ही रहता है यहाँ अप्रतिबन्ध होने के कारण वृत्ति अर्थ है।
(2) अध्ययनाय क्रमते, उत्सहते- पढ़ने के लिए सदा उत्साहित रहता है। उत्साह को सर्ग कहते हैं। सर्ग अर्थ गम्यमान होने के

कारण क्रम् धातु से 'वृत्तिसर्गतायनेषु क्रमः' सूत्र से आत्मनेपद होकर क्रमते सिद्ध होता है।

(3) क्रमन्तेऽस्मिन् शास्त्राणि- इस व्यक्ति में शास्त्र निरन्तर बढ़ते रहते हैं वृद्धि को तायन कहते हैं। 'तायृ सन्तानपालनयोः' धातु से तायन बना है सन्तान का अर्थ निरन्तर बढ़ते रहना है। तायन अर्थ गम्यमान होने के कारण क्रम् धातु से 'वृत्तिसर्गतायनेषु क्रमः' सूत्र से आत्मनेपद होकर क्रमते सिद्ध होता है।

आङ् उद्गमने (1.3.40)- ऊपर उठना अर्थ गम्यमान होने पर आङ् उपसर्ग से परे क्रम् धातु से आत्मनेपद होता है।

उदाहरण- आक्रमते सूर्यः- सूर्य ऊपर उठता है उदित होता है। यहाँ पर आङ्पूर्वक क्रम धातु है और ऊपर उठना अर्थ भी अतः आङ् उद्गमने सूत्र से आत्मनेपद का विधान हुआ।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि 'अध्ययनाय क्रमते' इस उदाहरण में 'वृत्तिसर्गतायनेषु क्रमः' सूत्र से सर्ग अर्थ में आत्मनेपद का विधान है। **अतः विकल्प A सही है।**

स्रोत- अष्टाध्यायी (1.3.38) - ईश्वरचन्द्र, पेज 92

33. 'बोधयति पदम्' इत्यत्र परस्मैपदविधायकं किमस्ति पाणिनिसूत्रम्?

(A) विभाषाऽकर्मकात्
(B) निगरणचलनार्थेभ्यश्च
(C) बुध-युध-नश-जनेङ्-प्रु-द्रु-स्रुभ्यो-णेः
(D) अणावकर्मकाच्चित्तवत्कर्तृकात्

व्याख्या-

अकर्मक उप उपसर्गपूर्वक 'रम्' धातु से परस्मैपद विकल्प से होता है। उदा॰- यावद् भुक्तम् उपरमति अपरमते वा (प्रत्येक भोजन से निवृत्त होता है)। अध्ययनाद् उपरमति उपरमते वा (अध्ययन से बचता है)।

निगरणचलनार्थेभ्यश्च- निगरण (निगलना) तथा चलन (चलना) अर्थ वाली ण्यन्त धातुओं से परस्मैपद होता है।
उदा॰- निगारयति, आशयति, भोजयति (भोजन कराता है)। चलयति, चोपयति (धीरे-धीरे चलता है), कम्पयति (कँपाता है)। 'चलयति' में 'घटादयो मितः' से मित् सञ्ज्ञा और 'मितां ह्रस्वः' से ह्रस्व होता है। ण्यन्त 'अद' (भक्षणार्थक) धातु से परस्मैपद नहीं होता है- जैसे- देवदत्तः अत्ति, देवदत्तेन अदायते।

बुधयुधनशजनेङ्प्रद्रुस्रुभ्यो णेः- बुध, युध, नश्, जन्, इङ्, प्रु, द्रु तथा स्रु इन ण्यन्त धातुओं से परस्मैपद होता है। उदा॰- पद्मं बोधयति (कमल को खिलाता है)। काष्ठानि योधयति। दुखं नाशयति (दुख का नाश करता है) सुखं जनयति (सुख को उत्पन्न करता है)।

अणावकर्मकाच्चित्तवत्कर्तृकात्- अणौ= अण्यन्त अवस्था में चिन्तवत् =चेतन कर्तृकात् = कर्त्ता वाला। जो धातु अण्यन्त अवस्था में अकर्मक हो तथा साथ ही चेतन कर्त्ता वाला हो तो उससे ण्यन्त अवस्था में परस्मैपद होता है।

जैसे- (अण्यन्ते) आस्ते देवदत्तः (ण्यन्ते) आसयति देवतत्तः यहाँ देवदत्त (कर्त्ता) चेतन है तथा 'आस्' धातु अण्यन्त अवस्था में अकर्मक है। अतः णिजन्त दशा में परस्मैपद हो गया। इसी प्रकार 'शाययति' बनता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'बोधयति पद्मम्' यहाँ परस्मैपद विधायक सूत्र 'बुध-युधनशजनेङ्प्रद्रुस्रुभ्यो णेः' है। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- अष्टाध्यायी (1.3.86) - ईश्वरचन्द्र, पेज 104

34. अधोलिखितानां केन सह कस्य सम्बन्धः इति समीचीनां तालिकां चिनुत।

(क)	अपवर्गे तृतीया	(i)	ओदनं भुञ्जानो विषं भुङ्क्ते।
(ख)	तथायुक्तं चाऽनीप्सितम्	(ii)	प्रद्युम्नः कृष्णात् प्रति।
(ग)	धारेरुत्तमर्णः	(iii)	क्रोशेन अनुवाकोऽधीतः।
(घ)	प्रतिनिधि-प्रतिदाने च यस्मात्	(iv)	भक्ताय धारयति मोक्षं हरिः

Options

	(क)	**(ख)**	**(ग)**	**(घ)**
(A)	(iii)	(i)	(iv)	(ii)
(B)	(iii)	(ii)	(iv)	(i)
(C)	(ii)	(iii)	(i)	(iv)
(D)	(iv)	(ii)	(iii)	(i)

व्याख्या-

1- तथायुक्तं चानीप्सितम्:- ईप्सिततम के समान क्रिया से युक्त 'अनीप्सित' की भी कर्मसञ्ज्ञा होती है। कुछ पदार्थ कर्त्ता द्वारा अनीप्सित होते हुए भी क्रिया से ईप्सित के समान संयुक्त होते हैं। क्रिया से सटे हुए ऐसे अनीप्सित पदार्थों की भी ''तथायुक्तं चानीप्सितम्'' सूत्र से कर्म संज्ञा होती है। यथा- 'ओदनं भुञ्जानो विषं भुङ्क्ते' (भात खाता हुआ विष खाता है।) इस वाक्य में कर्त्ता को खाने में ओदन (भात) ईप्सिततम है। विष कर्त्ता के लिए अनीप्सित अर्थात् द्वेष्य है लेकिन ओदन के साथ अनीप्सित विष की भी 'तथायुक्तं चानीप्सितम्' सूत्र से कर्मसंज्ञा तथा ''कर्मणि द्वितीया'' से द्वितीया विभक्ति हुई। इसी प्रकार 'ग्रामं गच्छन् तृणं स्पृशति' में भी तृण की कर्म संज्ञा हुई।

2- अपवर्गे तृतीया- अपवर्ग का अर्थ है क्रिया की समाप्ति होने पर फल की भी प्राप्ति। फल की प्राप्ति अर्थ के द्योतित होने पर काल और मार्गवाची शब्दों से अत्यन्त संयोग में तृतीया विभक्ति होती है। यथा- 'अह्ना क्रोशेन वा अनुवाकोऽधीतः' (दिन भर या कोश भर में अनुवाक पढ़ लिया।) इस वाक्य में दिन भर या कोश भर में अनुवाक पढ़ लिया गया और उसे याद भी कर लिया गया। अतः 'अपवर्गे तृतीया' सूत्र से कालवाचक 'अह्ना' (दिन) और मार्गवाचक 'क्रोशेन' में (कोश में) तृतीया विभक्ति हुई।

3- धारेरुत्तमर्णः- 'णिजन्त' 'धृ' धातु के योग में 'उत्तमर्ण' (महाजन) की सम्प्रदान संज्ञा होती है। यथा- भक्ताय धारयति मोक्षं हरिः। (भक्त के लिए हरि मोक्ष के ऋणी हैं) इस वाक्य में णिजन्त 'धृ' धातु के योग में उत्तमर्ण भक्त की ''धारेरुत्तमर्णः'' सूत्र से सम्प्रदान संज्ञा तथा ''चतुर्थी सम्प्रदाने'' सूत्र से चतुर्थी विभक्ति होकर 'भक्ताय' बना।

4- प्रतिनिधिप्रतिदाने च यस्मात्- प्रतिनिधि और प्रतिदान के अर्थ में कर्मप्रवचनीय संज्ञक प्रति के योग में जिसका प्रतिनिधित्व हो तथा जिससे प्रतिदान अर्थात् कोई चीज बदली जाय उससे पञ्चमी विभक्ति होती है।

यथा- ''प्रद्युम्नः कृष्णात् प्रति'' (प्रद्युम्न कृष्ण के प्रतिनिधि हैं) यहाँ 'प्रतिनिधि' अर्थ में 'प्रति' की 'प्रतिः प्रतिनिधिप्रतिदानयोः' सूत्र से कर्मप्रवचनीय संज्ञा हुई और 'प्रतिनिधिप्रतिदाने च यस्मात्' सूत्र से प्रतिनिधि के अर्थ में प्रयुक्त प्रति के योग में कृष्णात् में पंचमी विभक्ति हुई। इसी प्रकार 'तिलेभ्यः प्रतियच्छति माषान्' में भी तिलेभ्यः में पञ्चमी विभक्ति हुई।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि दिये गये विकल्पों में **विकल्प A सही है।**

स्रोत- कारकप्रकरण - राममुनि पाण्डेय, पेज 60,30, 68, 90

35. ''पराजेरसोढः'' इत्यनेन सूत्रेण कतमं कारकं भवति?

(A) अधिकरणम् (B) सम्प्रदानम्
(C) अपादानम् (D) करणम्

व्याख्या-1- अधिकरणम्- ''आधारोऽधिकरणम्'' आधार की अधिकरण संज्ञा होती है अर्थात् कर्त्ता और कर्म के द्वारा उसमें रहने वाले क्रिया के आधारभूत कारक की अधिकरण संज्ञा होती है। अर्थात् जो क्रिया का आधार हो उस कारक की अधिकरण संज्ञा हो।

2- सम्प्रदानम्- ''कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्''
दान के कर्म से जिसको चाहता है, उस की सम्प्रदान संज्ञा होती है। 'सम्यक् प्रदीयते अस्मै इति सम्प्रदानम्' इस व्युत्पत्ति में 'दा' धातु से दो उपसर्ग लगे हैं सम् और प्र। जिसे कोई वस्तु दी जाए और पुनः वापस न लिया जाए वह सम्प्रदान है।

3- अपादानम्- ''ध्रुवमपायेऽपादानम्''- अपाय (अलग होने) के अर्थ में ध्रुव (स्थिर) की अपादान संज्ञा होती है।

4- पराजेरसोढः- 'परा' (उपसर्ग) पूर्वक 'जि' धातु के योग में असह्य वस्तु की 'अपादान' संज्ञा होती है।

जैसे- 'अध्ययनात्पराजयते।' (अध्ययन से हार मान रहा है।)- जब किसी के लिए अध्ययन असह्य या कष्टकर हो गया है तो उपर्युक्त नियम से पराजयते के योग में अध्ययन की अपादान संज्ञा होती है और उसमें पञ्चमी विभक्ति होती है। इस उदाहरण का भाव है- अध्ययन से थक गया है।

5- करणम् ''साधकतमं करणम्''- क्रिया की सिद्धि में जो कारक सबसे अधिक सहायक होता है उसकी करण संज्ञा होती है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'पराजेरसोढः' सूत्र से 'अपादान' कारक होता है। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- कारकप्रकरण - राममुनि पाण्डेय, पेज 82

36. ''प्रातिपदिकम्'' इति संज्ञा केन सूत्रेण विधीयते?

(A) प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा
(B) प्रातिपदिकान्तनुम्विभक्तिषु
(C) ङ्याप्प्रातिपदिकात्
(D) अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्

व्याख्या- महर्षि पाणिनि ने अष्टाध्यायी में प्रातिपदिकसञ्ज्ञा-विधायक दो सूत्रों का उल्लेख किया है-
1- अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्।। 1.।2।45।।
2- कृत्तद्धितसमासाश्च।। 1।2।46।।

1-अर्थवद ...अर्थवान्, धातुभिन्न, प्रत्ययभिन्न शब्द की प्रातिपदिकसञ्ज्ञा होती है। जैसे- 'पुरुष' शब्द अर्थवान् है, धातुभिन्न है, प्रत्ययभिन्न है अतः इसकी प्रातिपदिक संज्ञा है।

2- कृत्तद्धितसमासाश्च- कृदन्त, तद्धितान्त और समासयुक्त शब्दों की भी प्रातिपदिकसञ्ज्ञा होती है। जैसे- 'कृ+ण्वुल्' इस दशा में 'कारक' शब्द निष्पन्न होता है। ण्वुल् एक कृत् प्रत्यय है अतः 'कारक' शब्द कृदन्त होने से प्रातिपदिकसञ्ज्ञक हुआ।

'शाला+छ'- 'शालीय' तद्धित प्रत्ययान्त होने से प्रातिपदिक संज्ञा हुई। इसी प्रकार औपगवः, वाचस्पत्यम् इत्यादि तद्धितान्त होने से प्रातिपदिकसञ्ज्ञक होते हैं।

राज्ञः पुरुषः- राजपुरुषः यहाँ समास होकर 'राजपुरुष' समस्तपद बना। इसकी प्रातिपदिक संज्ञा 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से हुई।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्' प्रातिपदिक संज्ञा का विधान करता है।

अतः विकल्प 'D' सही है।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज 129

37. निम्नाङ्कितेषु 'प्रगृह्यम्' इति संज्ञाविधायकं सूत्रं किमस्ति?

(A) ओत्　　(B) तरप्तमपौ घः

(C) तृतीयासमासे　　(D) आद्यन्तवदेकस्मिन्

व्याख्या-

➤ **ओत्** (1.1.15)

अनुवृत्ति- निपातः, प्रगृह्यम्। अर्थ- 'येन विधिस्तदन्तस्य' के द्वारा तदन्तविधि होने से ओत् का अर्थ ओकारान्त (निपात) है। ओकारान्त निपात छः ही हैं। ओ, आहो, उताहो, हो, अहो व अथो। इनमें 'ओ' की प्रगृह्यसंज्ञा 'निपात एकाजनाङ्' से हो जाती है। शेष पाँच की प्रगृह्यसंज्ञा में प्रस्तुत सूत्र की उपयोगिता है।

सूत्रार्थ- ओकारान्त निपात की प्रगृह्यसंज्ञा होती है।

उदाहरण- उताहो अनिष्टम्। उताहो असत्यम्। अहो अद्या शीतम् नो इदानीम्। अथो इति। अहो आश्चर्यम्। अहो ईशा।

➤ **आद्यन्तवदेकस्मिन्-** (1.120)

पद - आद्यन्तवत् अव्यय, एकस्मिन् (7.1) **सूत्रार्थ-** एक में भी आदिवत् तथा अन्तवत् कार्य होते हैं। उदाहरण- औपगवः, आभ्याम्।

➤ **तरप्तमपौ घः (1.121)**

पद- तरप्तमपौ (1.2) घः (1.1)

सूत्रार्थ- तरप् तथा तमप् - ये दो प्रत्यय घसंज्ञक होते हैं।

उदाहरण- कुमारितरा, कुमारितमाः, ब्राह्मणितरा, ब्राह्मणितमा।

➤ **तृतीया समासे (1.1.29)**

पद- तृतीया समासे (1.1)

अनुवृत्ति- सर्वादीनि-सर्वनामानि

अर्थ- तृतीया समासे का अर्थ है- तृतीया तत्पुरुष समास। इस सूत्र की प्रवृत्ति प्रतिपदोक्त तृतीया समास में ही होती है। 'कर्तृकरणे कृता बहुलम् आदि की दशा में यह निषेध नहीं होता है।

सूत्रार्थ- तृतीया तत्पुरुष समास में सर्वादिगण पठित शब्दों की सर्वनाम संज्ञा नहीं होती है।

उदाहरण- मासपूर्वाय, द्व्यहपूर्वाय।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि प्रगृह्य संज्ञा विधायक सूत्र 'ओत्' है। **अतः विकल्प A सही है।**

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज 77

38. 'ब्राह्मणेनावश्यं शब्दा ज्ञेयाः' कथनमिदं पतञ्जलिना कस्य व्याकरणप्रयोजनस्य विषये कृतम्?

(A) रक्षाविषये　　(B) ऊहविषये

(C) आगमविषये　　(D) लघुविषये

व्याख्या- महर्षि पतञ्जलि महाभाष्य पस्पशाह्निक में **'कानि पुनः शब्दानुशासनस्य प्रयोजनानि'** के द्वारा शब्दानुशासन (व्याकरण शास्त्र) के अध्ययन के प्रयोजन कौन-कौन से हैं? इसकी चर्चा करते हैं।

व्याकरण के पाँच प्रयोजन-''रक्षोहागमलघ्वसन्देहाः प्रयोजनम्''

1. रक्षा 2. ऊह 3. आगम 4. लघु और 5. असन्देह ये व्याकरण के पाँच मुख्य प्रयोजन हैं।

1. रक्षा 'रक्षार्थं वेदानामध्येयं व्याकरणम्। लोपागमवर्णविकारज्ञो हि सम्यक् वेदान् परिपालयिष्यति इति।

वेदों की रक्षा के लिए व्याकरण का अध्ययन करना चाहिए। क्योंकि वर्णादि के लोप, आगम और वर्णविकार इनको जानने वाला वैयाकरण ही वेदों की रक्षा सम्यक् रूप से कर सकता है।

2. ऊहः खल्वपीति- न सर्वैर्लिङ्गैर्न च सर्वाभिर्विभक्तिभिर्वेदे मन्त्रा निगदिताः। ते चावश्यं यज्ञगतेन पुरुषेण यथायथं विपरिणमयितव्याः तन्नावैयाकरणः शक्नोति यथायथं विपरिणमयितुम्। तस्माद् अध्येयं व्याकरणम्।

अपेक्षित परिवर्तन- ऊह भी व्याकरणाध्ययन का प्रयोजन है। वेद में मन्त्र सभी लिङ्गों और सभी विभक्तियों के साथ नहीं पढ़े गये है। यज्ञकार्य में प्रवृत्त पुरुष के उन मन्त्रों के अर्थानुसार उचित रीति से अवश्य बदल लेना चाहिए। परन्तु अवैयाकरण उन मन्त्रों के अपेक्षित लिङ्ग और विभक्ति के साथ नहीं बदल सकता इसलिए विपरिणाम की सामर्थ्य प्राप्ति के लिए व्याकरणशास्त्र का अध्ययन करना चाहिए।

3. आगमः 'ब्राह्मणेन निष्कारणो धर्मः षडङ्गो वेदोऽध्येयो ज्ञेयश्च'। प्रधानं च षट्स्वङ्गेषु व्याकरणम्। प्रधाने च कृत्तो यत्नः फलवान् भवति।' वेदवचन भी व्याकरणाध्ययन का प्रयोजन है। मन्त्र कहता है- 'ब्राह्मणों को निष्कारण छः अङ्गों वाले वेद का अध्ययन करना चाहिए। छह वेदाङ्गों में व्याकरण ही प्रमुख अङ्ग है और प्रधान के विषयों में किया गया प्रयत्न सफल होता है।

4. लघु- ''लघ्वर्थं चाध्येयं व्याकरणम्। ब्राह्मणेन अवश्यं शब्दा ज्ञेयाः। न चान्तरेण व्याकरणं लघुनोपायेन शब्दाः शक्या विज्ञातुम्।'' लाघव के लिए भी व्याकरण का अध्ययन करना चाहिए। ''ब्राह्मण को शब्दों का ज्ञान अवश्य करना चाहिए।'' व्याकरण के अतिरिक्त

किसी अन्य उपाय द्वारा लाघव से शब्दों का ज्ञान करना सम्भव नहीं है।

5. असन्देह- असन्देहार्थं चाध्येयं व्याकरणम्। याज्ञिकाः पठन्ति- ''स्थूलपृषतीमाग्निवारुणीमनड्वाहीमालभेत इति।'' असन्देह= (सन्देह के प्रागभाव) के लिए भी व्याकरण का अध्ययन करना चाहिए। याज्ञिक यह पढ़ते हैं कि- 'अग्नि और वरुण देवताओं वाली अर्थात् उनके उद्देश्यवाली, स्थूलपृषती अनड्वाही (गाय) का आलम्भन समर्पण करें। यहाँ 'स्थूलपृषती' पदार्थ में बहुव्रीहि और तत्पुरुष समास को लेकर सन्देह होता है; जो अवैयाकरण निश्चित नहीं कर सकता।

स्पष्टीकरण- ''ब्राह्मणेन अवश्यं शब्दाः ....ज्ञेयाः'' यह वचन 'लघु' व्याकरण प्रयोजन के सन्दर्भ में कहा गया है। **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत- व्याकरणमहाभाष्यम् (पस्पशाह्निक)-मधुसूदन मिश्र, पेज 10

39. पतञ्जलिमतानुसारं शब्दः कः?

(A) अर्थरूपम्

(B) यद् इङ्गितं चेष्टितम्

(C) यद्भिन्नेष्वभिन्नं,छिन्नेष्वच्छिन्नम्

(D) प्रतीतपदार्थको लोके ध्वनिः

व्याख्या- महर्षि पतञ्जलि महाभाष्य पस्पशाह्निक में सर्वप्रथम 'अथ शब्दानुशासनम्' अब शब्दानुशासन प्रारम्भ किया जाता है। अब प्रश्न होता है कि 'केषां शब्दानाम्' किन शब्दों का अनुशासन प्रारम्भ किया जा रहा है। तो उत्तर मिलता है ''लौकिकानां वैदिकानां च'' लौकिक और वैदिक शब्दों का अनुशासन प्रारम्भ किया जा रहा है। इसी सन्दर्भ में सहज जिज्ञासा होती है कि-गौः इत्यत्र कः शब्दः? यह गाय है, इस ज्ञान में 'शब्द' क्या है? इसके उत्तर में महर्षि पतञ्जलि का उत्तर है कि- स्फोटरूप शब्द- ''येनोच्चारितेन सास्नालाङ्गूलककुदखुरविषाणिनां सम्प्रत्ययो भवति, सः शब्दः'' ध्वनियों से अभिव्यक्त होने वाले जिसके द्वारा सास्ना (गले में लटकने वाली खाल) पूँछ, ककुद् (कन्धे के ऊपर निकला हुआ मांसपिण्ड) खुर और विषाण (सींग) से युक्त गोरूप पशु का सम्यक् ज्ञान होता है, वह स्फोटरूप शब्द है।

ध्वनिरूप शब्द- ''प्रतीतपदार्थको लोके ध्वनिः शब्दः'' लोकव्यवहार में पदार्थबोधक के रूप में प्रसिद्ध अर्थात् पदार्थ की प्रतीति कराने वाली ध्वनि को शब्द कहा जाता है।

स्पष्टीकरण- इस प्रकार स्पष्ट है कि महर्षि पतञ्जलि के अनुसार 'प्रतीतपदार्थको लोके ध्वनिः' यह ध्वनिरूप शब्द का लक्षण है। **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत- महाभाष्य (पस्पशाह्निक)-जयशंकर लाल त्रिपाठी, पेज 19

40. पाणिनीयशिक्षानुसारं स्वराणां संख्या का?

(A) विंशतिः (B) एकविंशतिः

(C) अष्टादश (D) पञ्चविंशतिः

व्याख्या- ऋग्वेद से सम्बद्ध शिक्षाग्रन्थ संख्या में अधिक नहीं हैं, केवल चार पाँच ही हैं वे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। उनमें पाणिनीय शिक्षा सर्वाधिक लोकप्रिय है। पाणिनि के मत के अनुकूल शिक्षा को बताने के बाद वाणी के अर्थात् वैदिक और लौकिक संस्कृत के वर्णों के उच्चारण के प्रकारों को स्पष्ट करते हैं। इसके बाद वर्णों की चर्चा करते हुए कहते हैं-

त्रिषष्टिश्चतुःषष्टिर्वा वर्णाः शम्भुमते मताः।
प्राकृते संस्कृते चापि स्वयं प्रोक्ताः स्वयम्भुवा॥3॥

प्राकृत और संस्कृत भाषा में ब्रह्मा जी के द्वारा स्वयं बताये गए वर्ण सम्भावित रूप में तिरसठ या चौसठ माने गये हैं।

स्वरा विंशतिरेकश्च स्पर्शानां पञ्चविंशतिः।
यादयश्च स्मृता ह्यष्टौ चत्वारश्च यमाः स्मृताः॥4॥
अनुस्वारो विसर्गश्च-ᳵ कᳵ पौ चाऽपि पराश्रितौ।
दुस्स्पृष्टश्चेति विज्ञेयो ऌकारः प्लुत एव च ॥5॥

स्वर बीस और एक (इक्कीस), स्पर्श पच्चीस, यकारादि (अन्तःस्थ और ऊष्म) वर्ण आठ, यम वर्ण चार, अनुस्वार (एक) विसर्ग (एक) क ख परक तथा प फ परक जिह्वामूलीय तथा उपध्मानीय वर्ण दो, दुस्स्पृष्टता को प्राप्त लुप्त ऌकार (एक) जानना चाहिए। इस प्रकार तिरसठ वर्ण होते हैं। अनुस्वार के मतभेद से ह्रस्व और दीर्घ का अनुस्वार- रङ्ग रूप में दो संख्या लेने पर। चौसठ वर्ण होते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि पाणिनीय शिक्षा के अनुसार स्वर वर्ण इक्कीस बताये गये हैं। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- पाणिनीय शिक्षा-(श्लोक 4)-शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पेज 07

41. 'समीकरणम्' कस्य दिशा वर्तते?

(A) ध्वनिपरिवर्तनस्य (B) रूपपरिवर्तनस्य

(C) अर्थपरिवर्तनस्य (D) वाक्यपरिवर्तनस्य

व्याख्या- ध्वनिपरिवर्तन- परिवर्तन सृष्टि का नियम है। विश्व की प्रत्येक वस्तु में निरंतर परिवर्तन होता रहा है, हो रहा है और होता रहेगा। भाषा का प्रमुख तत्त्व ध्वनि है। वक्ता की ध्वनि पर दो प्रकार का प्रभाव पड़ता है- 1. आभ्यंतर 2. बाह्य। वक्ता और श्रोता से सम्बद्ध कारणों को आभ्यंतर कारण कहते हैं- जैसे- प्रयत्नलाघव, मुख-सुख, अज्ञान, शीघ्रभाषण आदि। इसके अतिरिक्त अन्य कारणों को बाह्यकारण कहते हैं। ये कारण बाहर से ध्वनि को

प्रभावित करते हैं। जैसे - सामाजिक, राजनीतिक, भौगोलिक आदि कारण।

ध्वनिपरिवर्तन की दिशाएँ- ध्वनि परिवर्तनों का मुख्य कारण प्रयत्नलाघव या मुख सुख है।

1. समीकरण- जब दो विषम ध्वनियाँ एकत्र होती हैं तो एक ध्वनि दूसरी को प्रभावित करके अपने सदृश बना लेती है। यह समीकरण दो प्रकार का होता है- (क) पुरोगामी समीकरण (ख) पश्चगामी समीकरण।

3. आगम- उच्चारण की सुविधा के लिए शब्दों के आदि, मध्य या अन्त में कुछ ध्वनियाँ जोड़ दी जाती हैं, इन्हें आगम कहते हैं।

2. विषमीकरण- यह समीकरण का उल्टा है। इसमें दो समध्वनियों में से एक ध्वनि विषम रूप से धारण करती है।

4. लोप- कभी-कभी मुखसुख, प्रयत्नलाघव या उच्चारण में शीघ्रता स्वराघात आदि के कारण कुछ ध्वनियों का लोप हो जाता है।

5. समाक्षरलोप- जहाँ पर दो समान ध्वनियाँ एक के बाद दूसरी आती है वहाँ एक का लोप कर दिया जाता है।

6. वर्णविपर्यय 7. महाप्राणीकरण 8. अल्पप्राणीकरण 9. घोषीकरण 10. अघोषीकरण 11. अनुनासिकीकरण 12. ऊष्मीकरण 13. सन्धिकार्य 14. मात्राभेद।

2. रूपपरिवर्तन की दिशाएँ- रूपपरिवर्तन सामान्यतः दो दिशाओं में होता है- (i) सरलीकरण हेतु समरूपता (ii) संदेह निवारणार्थ नए रूपों की उत्पत्ति। संक्षेप में रूपपरिवर्तन के निम्नलिखित कारण हैं- (क) सरलीकरण (ख) नवीनता की अभिरुचि (ग) सादृश्य (घ) अज्ञता (च) बल।

3. अर्थपरिवर्तन- जिस प्रकार ध्वनियों में परिवर्तन होता है, उसी प्रकार प्रत्येक भाषा के शब्दों के अर्थों में भी परिवर्तन होता रहता है। यह अर्थ परिवर्तन तीन प्रकार का होता है- (i) कहीं पर अर्थ का विस्तार होता है। (ii) कहीं पर अर्थ में संकोच होता है। (iii) कहीं पर पुराने अर्थ के स्थान पर नया अर्थ आ जाता है। इन्हें ये नाम दिये गये हैं- (क) अर्थविस्तार (ख) अर्थसंकोच (ग) अर्थादेश।

4. वाक्यपरिवर्तन- विकास क्रम के अनुसार विश्व की प्रत्येक भाषा में परिवर्तन होते हैं। भाषा में परिवर्तन के कारण वाक्यों के पठन और प्रयोग में भी परिवर्तन होता है। वाक्यपरिवर्तन की प्रमुख दिशाएँ ये हैं- (क) पदक्रम में परिवर्तन (ख) अन्वय में परिवर्तन (ग) अधिक पद प्रयोग (घ) पद या प्रत्यय का लोप (च) कोष्ठ और डैश का प्रयोग (छ) आदरार्थक बहुवचन (ज) प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष कथन (झ) कारक के लिए अर्धविराम।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि समीकरण ध्वनिपरिवर्तन की दिशा में होता है। **अतः विकल्प A सही है।**

स्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 233

42. हिब्रूभाषा कस्य भाषापरिवारस्य भाषाऽस्ति?

(A) चीनीपरिवारस्य (B) भारोपीयपरिवारस्य
(C) सूडानीपरिवारस्य (D) सामी-हामीपरिवारस्य

व्याख्या-

विश्व की भाषाओं के परिवारों की संख्या के विषय में पर्याप्त मतभेद है। जर्मन विद्वान् 'विल्हेल्म फॉन हुम्बोल्ट' ने इनकी संख्या 13 मानी हैं। फ्रीडरिश म्यूलर आदि विद्वान् इनकी संख्या 100 के लगभग मानते हैं। निर्विवाद रूप से स्वीकृत प्रमुख 18 भाषापरिवारों का उल्लेख यहाँ किया जा रहा है-

(क) यूरेशिया (यूरोप- एशिया) भूखण्डः- (1) भारोपीय परिवार, (2) द्रविड़ परिवार, (3) बुरुशस्की परिवार, (4) काकेशी परिवार (5) यूराल अल्ताई परिवार, (6) चीनी परिवार (7) जापानी कोरियाई परिवार (8) अत्युत्तरी (हाइपरबोरी) परिवार, (9) बास्क परिवार (10) सामी-हामी परिवार

(ख) अफ्रीकी भूखण्डः- (1) सूडानी परिवार, (2) बान्तू परिवार, (3) होतेन्तोत-बुशमैनी परिवार।

(ग) प्रशान्त महासागरी भूखण्डः- (1) मलय पोलिनेशियाई परिवार (2) पापुई परिवार, (3) आस्ट्रेलियन परिवार, (4) दक्षिण पूर्व एशियाई परिवार।

(घ) अमेरिकी भूखण्डः- (1) अमेरिकी परिवार।

(1) चीनी परिवारः- क्षेत्र- सम्पूर्ण चीन, बर्मा, स्याम, तिब्बत। प्रमुख भाषाएँः- (1) चीनी (2) थाई या स्यामी (3) ब्राह्मी या बर्मी (4) तिब्बती (5) अनामी

(2) भारोपीय परिवार- भारोपीय परिवार में भारतवर्ष से लेकर यूरोप तक फैली हुई भाषाओं का संग्रह है। इस परिवार की दस शाखाएँ हैं- (1) भारत-ईरानी (आर्य) (क) भारतीय (ख) ईरानी (2) बाल्टो-स्लाविक- (क) बाल्टिक (ख) स्लाविक
(3)- आर्मीनी, (4) अल्बानी (इलीरी), (5) ग्रीक (हेलेनिक), (6) केल्टिक, (7) जर्मानिक, (8) इटालिक, (9) हिटाइट (हित्ती), (10) तोखारी। भारोपीय परिवार की भाषाओं को ध्वनि के आधार पर दो भागों में विभक्त किया जाता है- (क) केन्टुम् (ख) शतम् उपरिलिखित भारोपीय परिवार की दस शाखाओं में प्रथम चार परिवार शतम् वर्ग में तथा शेष छह केन्टुम् वर्ग में आते हैं।

ईरानी-भारती चैव, बाल्टी- सुस्लाविकी तथा।
आर्मीनी अल्बनी चैताः, शतम्- वर्गे समाश्रिताः॥
इटालिकी च ग्रीकी च, जर्मानिक् केल्टिकी तथा।
हित्ती तोखारिकी चैताः, केन्टुम् वर्गे प्रकीर्तिताः॥

(3) सूडानी परिवार- क्षेत्र - अफ्रीका में भूमध्य रेखा के उत्तर में पश्चिम से पूर्व तक। इसके उत्तर में हामी परिवार है और दक्षिण में बान्तू परिवार।

प्रमुख भाषाएँ- (क) वुले (ख) मन-फू (ग) कनूरी (घ) नीलोटिक (ङ) बन्तूइड (च) हौसा, कुलभाषाएँ- 435

(4) सामी-हामी परिवार- क्षेत्र-(क) सामी- (एशिया में) अरब, ईराक, फिलिस्तीन, सीरिया (अफ्रीका में) मिस्र, इथियोपिया, तुनिसिया, अल्जीरिया, मोरक्को। (ख) हामी- (अफ्रीका में) लीबिया, सोमाली लैण्ड, इथियोपिया।

प्रमुख भाषाएँ- सामी- अक्कदियन, कनानित, अरमाइक, अरबी, एबीसीनियन, हिब्रू।

हामी - लीबियन, मेरोइटिक, एथियोपिक (कुशीत) मिश्री सामी, हामी परिवार की भाषाएँ श्लिष्ट योगात्मक और अन्तर्मुखी हैं। इसमें सम्बन्धतत्त्व अधिकतर धातु के अन्दर ही स्वरों के परिवर्तन से सूचित किए जाते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि हिब्रू भाषा सामी-हामी परिवार के अन्तर्गत आती है। **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 402

43. संस्कृत भाषायाः यूरोपीयभाषाभिः सम्बन्धः सर्वप्रथमं केनोद्घाटितः?

(A) मैक्समूलर महोदयेन,
(B) विन्टरनित्जमहोदयेन
(C) सर विलियमजोन्स महोदयेन
(D) वेबर महोदयेन

व्याख्या- सर विलियम जोन्स ने 1786 ई॰ में संस्कृत भाषा का अध्ययन करते समय संस्कृत की लैटिन और ग्रीक से अनेक अंशों में समानता प्राप्त की और इनके तुलनात्मक अध्ययन पर बल दिया। इस प्रकार संस्कृत भाषा तुलनात्मक भाषा-विज्ञान की मूल बनी। सर विलियम जोन्स द्वारा डाली हुई नींव ही आज विकसित, पुष्पित और पल्लवित होकर भाषाविज्ञान के रूप में प्रसिद्ध है। इस प्रकार सर विलियम जोन्स ने ही सर्वप्रथम संस्कृत और यूरोपीय भाषाओं के परस्पर सम्बन्ध के रहस्य का उद्घाटन किया। सर विलियम जोन्स हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस थे। इन्होंने 1786 ई॰ में 'रॉयल एशियाटिक सोसाइटी' की स्थापना की थी। इसके उद्घाटन भाषण में इन्होंने संस्कृतभाषा का महत्त्व बताते हुए कहा था कि ''यह ग्रीक से अधिक पूर्ण, लैटिन से अधिक विस्तृत एवं दोनों से अधिक परिष्कृत है। ग्रीक और इसकी आश्चर्यजनक समानता है।'' (Otto Jesperson: Language, p. 33.) जोन्स की इस घोषणा के फलस्वरूप पाश्चात्त्य विद्वानों का तुलनात्मक भाषाविज्ञान की ओर ध्यान आकृष्ट हुआ। सर जोन्स तुलनात्मक भाषाविज्ञान के जन्मदाता के रूप में विख्यात हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है, कि **विकल्प C सही है।**

स्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 4

44. बान्तू परिवारः कस्य खण्डस्य भाषापरिवारोऽस्ति?

(A) यूरेशियाखण्डस्य
(B) अफ्रीकाखण्डस्य
(C) प्रशान्तमहासागरीयखण्डस्य
(D) अमेरिकाखण्डस्य

व्याख्या-

विश्व भाषाओं के पारिवारिक वर्गीकरण के अनुसार 18 भेद बताये गये हैं। इन 18 भाषापरिवारों को चार भूखण्डों के अन्तर्गत रखा गया है-

1- यूरेशिया (यूरोप-एशिया) भूखण्डः- यूरेशिया भूखण्ड के अन्तर्गत 10 (दस) भाषा परिवारों को रखा है।
1. भारोपीय (भारत-यूरोपीय परिवार 2. द्रविड़ परिवार 3. बुरुशस्की परिवार 4. काकेशी परिवार 5. यूराल-अल्ताई परिवार 6. चीनी परिवार 7. जापानी-कोरियाई परिवार 8. अत्युत्तरी (हाइपरबोरी) परिवार 9. बास्क परिवार 10. सामी-हामी परिवार

2- अफ्रीका भूखण्ड- अफ्रीका भूखण्ड के अन्तर्गत निम्नलिखित तीन (3) परिवार आते हैं। 1. सूडानी परिवार 2. बान्तू परिवार 3. होतेन्तोत- बुशमैनी परिवार।

3- प्रशान्त महासागरीय भूखण्ड- प्रशान्त महासागरीय भूखण्ड के अन्तर्गत चार (4) भाषा परिवारों की गणना की जाती है-
(i) मलय-पोलिनेशियाई परिवार। (ii) पापुई परिवार।
(iii) आस्ट्रेलियन परिवार। (iv) दक्षिण-पूर्व एशियाई परिवार।

4- अमेरिका भूखण्डः- अमेरिका भूखण्ड के अन्तर्गत केवल एक भाषा परिवार की गणना की जाती है- (1) अमेरिकी परिवार।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि 'बान्तू परिवार' अफ्रीका भूखण्ड का भाषापरिवार है। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 372

45. अर्थसङ्ग्रहे प्रत्ययस्य लिङंशेन कीदृशी भावना प्रोक्ता?

(A) शाब्दी (B) आर्थी
(C) शाब्दी आर्थी च (D) स्वर्गभावना

व्याख्या-''भावना नाम भवितुर्भवनानुकूलो भावयितुर्व्यापार विशेषः।'' सा द्विधा। शाब्दी भावना आर्थी भावना चेति। अर्थ- उत्पत्तिशील की उत्पत्ति में कारणभूत जो उत्पादयिता का मानसिक व्यापारविशेष होता है उसे भावना कहा जाता है। भावना दो प्रकार की होती है- शाब्दीभावना
(2) आर्थीभावना

➢ **शाब्दीभावनाः- तत्र पुरुषप्रवृत्त्यनुकूलो भावयितुर्व्यापार-विशेषः शाब्दीभावना। सा च लिङशेनोच्यते।**

अर्थ- प्रयोजक के उस व्यापार विशेष को, जो प्रयोज्य पुरुष की प्रवृत्ति को उत्पन्न करने वाला होता है, शाब्दी भावना कहा जाता है। शाब्दी भावना का बोध 'लिङ्' अंश से होता है। प्रयोजक पुरुष जब 'लिङ्' अंश को सुनता है तब वह यह समझता है कि यह प्रयोजक पुरुष मुझे कर्म में प्रवृत्त करना चाहता है अतः इस प्रयोजकवृद्ध में मेरी प्रवृत्ति को उत्पन्न करने वाला व्यापार है। यही व्यापार लिङ्-वाच्य शाब्दी भावना है, क्योंकि नियमतः जिस शब्द से जिस अर्थ का बोध होता है वह अर्थ उसी शब्द का वाच्य होता है, जैसे- 'गामानय' यहाँ 'गो' शब्द का अर्थ 'गोत्व' इसीलिए होता है।

➢ **आर्थीभावना- ''प्रयोजनेच्छाजनितक्रियाविषयव्यापार आर्थीभावना''। सा च आख्यातत्वांशेनोच्यते।**

अर्थ- स्वर्ग आदि प्रयोजन को लक्ष्य करके याग आदि क्रिया को अनुष्ठित करने का पुरुष में जो मानसिक व्यापार (कर्म) उत्पन्न होता है उसे आर्थीभावना कहते हैं। आर्थीभावना आख्यातत्व अंश का वाच्य होती है, क्योंकि आख्यातसामान्य व्यापार अर्थात् क्रिया का वाचक होता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि लिङ् अंश के द्वारा शाब्दीभावना कही जाती है, जबकि आख्यात अंश के द्वारा आर्थीभावना। **अतः विकल्प A सही है।**

स्रोत- अर्थसंग्रह - राजेश्वरशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज 30

46. अर्थसंग्रहानुसारं 'शब्दसामर्थ्यम्' इत्यनेन कतमं प्रमाणं लक्षितम्?

(A) श्रुतिः (B) प्रकरणम्
(C) लिङ्गम् (D) वाक्यम्

व्याख्या- जैमिनिकृत मीमांसादर्शन का प्रकरण ग्रन्थ अर्थसंग्रह है जिसके प्रणेता लौगाक्षिभास्कर हैं। 'अथातो धर्मजिज्ञासा' से प्रारम्भ होता हुआ भावना आदि को बताते हैं तत्पश्चात् चार विधियाँ उत्पत्ति विधि, विनियोगविधि, प्रयोगविधि और अधिकारविधि, को बताते हैं। विनियोगविधि के अन्तर्गत छह प्रमाण हैं- श्रुति, लिङ्ग, वाक्य, प्रकरण, स्थान और सामाख्या श्रुति की चर्चा करते हुए कहते हैं कि-

➢ **श्रुतिः- तत्र निरपेक्षो रवः श्रुतिः। सा च त्रिविधा- विधात्री, अभिधात्री विनियोक्त्री च।**

प्रमाणान्तर की अपेक्षा किये बिना जो शब्द पदार्थ के विनियोग में समर्थ होता है उस शब्द को 'श्रुति' कहते हैं।

श्रुति के तीन भेद हैं-

विधान करने वाली - विधात्री
अभिधान करने वाली - अभिधात्री
विनियोग करने वाली - विनियोक्त्री

➢ **लिङ्ग-** शब्दसामर्थ्यं लिङ्गम् - शब्दसामर्थ्य को ही लिङ्ग कहते हैं।
➢ **वाक्य-** समभिव्याहारो वाक्यम्- समभिव्याहार अर्थात् सहोच्चारण को वाक्य कहते हैं।
➢ **प्रकरण-** उभयाकाङ्क्षा प्रकरणम्। दो वाक्यों की परस्पर आकाङ्क्षा को प्रकरण कहते हैं।
➢ **स्थान-** देशसामान्यं स्थानम्। देश की समानता को स्थान कहते हैं।
➢ **समाख्या-** समाख्या यौगिकः शब्दः। यौगिक शब्दों को समाख्या कहते हैं। समाख्या के दो भेद- वैदिकी समाख्या, लौकिकी समाख्या

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'शब्दसामर्थ्यं लिङ्गम्'। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- अर्थसंग्रह - राजेश्वरशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज 121

47. तर्कसङ्ग्रहदीपिकानुसारं स्पर्शानुमेयः कः पदार्थ?

(A) आकाशम् (B) मनः
(C) आत्मा (D) वायुः

व्याख्या- अन्नंभट्ट विरचित तर्कसंग्रह अत्यन्त लोकप्रिय रचना है जो प्रारंभिक स्तर पर न्याय-वैशेषिक दर्शन की मूल अवधारणाओं से परिचित कराती है। इनके द्वारा रचित तर्कसंग्रह की स्वोपज्ञ टीका तर्कसंग्रहदीपिका है जिसे न्याय-वैशेषिक दर्शन का अग्रिम सोपान माना जा सकता है।

* द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय तथा अभाव ये सात पदार्थ तर्कसंग्रह के प्रतिपाद्य विषय हैं। तर्कसंग्रहदीपिका में तर्कसंग्रह के प्रतिपाद्य विषय का विश्लेषण करते हुए न्याय तथा वैशेषिक दर्शनों के अन्य उपयोगी विषयों का भी प्रतिपादन किया गया है। तर्कसंग्रहदीपिका में अन्नंभट्ट ने पृथ्वी, जल, वायु,

आकाश, आदि नौ द्रव्यों का लक्षण बताया है। वायु का लक्षण बताते हुए कहते हैं-

वायुः- वायुं लक्षयति रूपरहितेति। आकाशादावतिव्याप्ति-वारणाय स्पर्शवानिति। पृथिव्यादावतिव्यप्तिवारणाय रूपरहितेति। स्पर्शानुमेयो वायुः। रूपरहित आदि से वायु का लक्षण करते हैं। आकाशादि में अतिव्याप्ति को रोकने के लिए 'स्पर्शवान्' कहा। पृथिवी आदि में अतिव्याप्ति को रोकने के लिए 'रूपरहित' कहा है। वायु का स्पर्श से अनुमान होता है। (स्पर्शानुमेयो वायुः)।

आकाशः- शब्दगुणकमिति। नन्वाकाशमपि किं पृथिव्यादिवन्नाना नेत्याह- तच्चैकमिति।

अर्थ- आकाश का लक्षण करते हुए कहते हैं- शब्द गुण वाला द्रव्य आकाश है। पृथिवी आदि के समान क्या आकाश भी अनेक (भेद वाला) है? नहीं वह एक ही है, क्योंकि भेद में प्रमाण का अभाव है।

मनः- मन का लक्षण करते हुए तर्कसंग्रहदीपिका में कहा गया है- ''स्पर्शरहित होते हुए क्रिया वाला होना मन का लक्षण है। (स्पर्शरहितत्वे सति क्रियावत्त्वं मनसोर्लक्षणम्)। मन का विभाजन करते हुए कहते हैं- एक-एक आत्मा का एक-एक मन होने से आत्मा के अनेक होने के कारण मन भी अनेक हैं। (एकैकस्यात्मन एकैकं मन आवश्यकम् इत्यात्मनोऽनैकत्वान्मनसोऽप्यनेकत्वमित्यर्थः)

आत्मा- ज्ञानाधिकरणमात्मा। स द्विविधः जीवात्मा परमात्मा चेति। अर्थः- जो द्रव्य ज्ञान का अधिकरण है वह आत्मा है। वह दो प्रकार का है-(1) जीवात्मा तथा (2) परमात्मा। उनमें परमात्मा ईश्वर है, सर्वज्ञ है तथा एक ही है। जीवात्मा प्रतिशरीर भिन्न, सर्वव्यापक तथा नित्य है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि तर्कसंग्रहदीपिका के अनुसार स्पर्शानुमेय पदार्थ वायु है। **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत- तर्कसंग्रह - गोविन्दाचार्य, पेज 89

48. तर्कसङ्ग्रहानुसारम् आत्मनो विशेषगुणः कः?

(A) वेगसंस्कारः (B) स्थितिस्थापकः संस्कारः

(C) प्रत्यत्नः (D) शब्दः

व्याख्या- तर्कसंग्रह अन्नंभट्ट विरचित लोकप्रिय ग्रन्थ है। जो प्रारंभिक स्तर पर न्यायवैशेषिक दर्शन की मूल अवधारणाओं से परिचय कराती है। द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय तथा अभाव ये सात पदार्थ तर्कसंग्रह के प्रतिपाद्य विषय हैं। तर्कसंग्रह में इनका संक्षिप्त विवेचन किया गया है।

तर्कसंग्रह में आत्मा के गुणों का विवेचन करते हुए कहते हैं- **''बुद्ध्यादयोऽष्टावात्ममात्रविशेषगुणाः। बुद्धीच्छाप्रयत्ना द्विविधाः नित्या अनित्याश्च। नित्या ईश्वरस्य अनित्या जीवस्य।''**

अर्थः- बुद्धि आदि आठ गुण केवल आत्मा में रहने वाले विशेष गुण हैं। बुद्धि, इच्छा तथा प्रयत्न दो प्रकार के होते हैं- (1) नित्य तथा (2) अनित्य। नित्य ईश्वर के तथा अनित्य जीव के होते हैं। तर्कसंग्रह में गुणों को दो वर्गों में विभाजित किया गया है-

(i) सामान्य गुण (ii) विशेष गुण।

सामान्य गुणः- संख्या, परिमाण, पृथक्त्व, संयोग, विभाग, परत्व, अपरत्व, (नैमित्तिक) असांसिद्धिक द्रवत्व, गुरुत्व, स्थितिस्थापक तथा वेग ये सामान्य गुण हैं।

विशेष गुणः- बुद्धि, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, यत्न, रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, स्नेह, सांसिद्धिक द्रवत्व, धर्म तथा अधर्म (अदृष्ट), भावना नामक संस्कार तथा शब्द ये विशेष गुण हैं। इन विशेष गुणों में से बुद्धि, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, धर्म तथा अधर्म ये आठ गुण दूसरे वर्ग में आते हैं और केवल आत्मा में रहते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि दिये गये विकल्पों में 'शब्द' आत्मा का विशेष गुण है। **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत- तर्कसंग्रह - गोविन्दाचार्य, पेज 266

49. तर्कभाषानुसारम् आत्मा कीदृशः?

(A) सर्वस्मिन् एकोऽणुश्च

(B) विभुरनित्यश्च

(C) देहेन्द्रियाद्यनतिरिक्तः

(D) प्रतिशरीरं भिन्नो विभुर्नित्यश्च

व्याख्या- न्यायदर्शन के प्रकरण ग्रन्थ तर्कभाषा में आचार्य केशव मिश्र ने प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द इन चार प्रमाणों का विवेचन करने के बाद द्वादश प्रमेयों का वर्णन करते हैं- 'आत्मशरीरेन्द्रियार्थबुद्धिमनःप्रवृत्तिदोषप्रेत्यभावफलदुःखापवर्गास्तु प्रमेयम्' इति सूत्रम्।

1- आत्मा, 2- शरीर, 3- इन्द्रिय, 4- अर्थ, 5- बुद्धि, 6- मन, 7- प्रवृत्ति, 8- दोष, 9- प्रेत्यभाव, 10- फल, 11- दुःख और 12- अपवर्ग ये 12 प्रमेय हैं। इन 12 प्रमेयों में प्रथम प्रमेय आत्मा की परिभाषा करते हुए केशव मिश्र कहते हैं-

आत्मा- ''आत्मत्वसामान्यवानात्मा। स च देहेन्द्रियादिव्यतिरिक्तः प्रतिशरीरं भिन्नो विभुर्नित्यश्च। स च मानसप्रत्यक्षः।''

अर्थः- 'आत्मत्व' सामान्य (जाति) जिसमें रहता है वह आत्मा (कहलाता) है। वह देह, इन्द्रिय आदि से पृथक् है। प्रत्येक शरीर में अलग-अलग, नित्य और विभु (व्यापक) है। और यह मानस प्रत्यक्ष का विषय है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि आत्मा 'प्रतिशरीरं भिन्नो विभुर्नित्यश्च'। **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत- तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज 175

50. साध्यशून्यो यत्र पक्षः सः कीदृशो हेत्वाभासः?

(A) बाधः (B) आश्रयासिद्धः
(C) असाधारणोऽनैकान्तिकः (D) विरुद्धः

व्याख्या- श्रीविश्वनाथपञ्चाननभट्टाचार्य प्रणीत न्यायसिद्धान्तमुक्तावली में हेत्वाभास की चर्चा की गई है-

अनैकान्तो विरुद्धश्चाप्यसिद्धः प्रतिपक्षितः।
कालात्ययापदिष्टश्च हेत्वाभासास्तु पञ्चधा।।

अनैकान्त, विरुद्ध, असिद्ध, प्रतिपक्षित एवं कालात्ययापदिष्ट- इस प्रकार हेत्वाभास पाँच प्रकार के होते हैं।

आद्यः साधारणस्तु स्यादसाधारणकोऽपरः।
तथैवानुपसंहारी त्रिधाऽनैकान्तिको भवेत्।।

पहला साधारण, दूसरा असाधारण, तीसरा अनुपसंहारी भेद से अनैकान्तिक हेत्वाभास तीन प्रकार का होता है।

असाधारण अनैकान्तिक- यस्तूभयस्माद् व्यावृत्तः स चासाधारणो मतः। जो दोनों (सपक्ष एवं विपक्ष) से अलग रहे, वह हेतु 'असाधारण' माना जाता है।

विरुद्ध हेत्वाभास- यः साध्यवति नैवाऽस्ति स विरुद्ध उदाहृतः। जो साध्य के अधिकरण में नहीं है, वैसा हेतु विरुद्ध कहलाता है।

आश्रयासिद्ध- पक्षासिद्धिर्यत्र पक्षो भवेन्मणिमयो गिरिः। पक्षासिद्धि वहाँ होती है जहाँ मणिमय गिरि पक्ष होता है। ह्रदो द्रव्यं धूमवत्वात् में दूसरी असिद्धि होती है।

बाध- साध्यशून्यो यत्र पक्षस्त्वसौ बाध उदाहृतः।
उत्पत्तिकालीनघटे गन्धादिर्यत्र साध्यते।।

जहाँ पक्ष साध्य से शून्य होता है, वह बाध कहलाता है, जहाँ उत्पत्तिकालीन घट में गन्ध आदि साधित किया जाता है।

नोट- बाध को ही कालात्ययापदिष्ट हेत्वाभास भी कहते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'साध्यशून्यो यत्र पक्षः' यह बाध हेत्वाभास का लक्षण है। **अतः विकल्प A सही है।**

स्रोत- न्यायसिद्धान्तमुक्तावली (का. 78) (अनुमानोपमानखण्ड)-गजानन शास्त्री मुसलगाँवकर, पेज 71

51. तर्कभाषारीत्या समवायस्य प्रत्यक्षग्राह्यत्वे इन्द्रियार्थसन्निकर्षः कः?

(A) संयोगः
(B) संयुक्तसमवायः
(C) विशेषण- विशेष्यभावः
(D) संयुक्तसमवेतसमवायः

व्याख्या- आचार्य केशव मिश्र प्रणीत तर्कभाषा में प्रत्यक्ष प्रमाण को परिभाषित करते हैं इसी क्रम में षोढा सन्निकर्ष का लक्षण करते हैं। षोढा सन्निकर्ष की संख्या छः है-

(1) संयोग सन्निकर्ष- तत्र यदा चक्षुषा घटविषयं ज्ञानं जन्यते तदा चक्षुरिन्द्रियं घटोऽर्थः। अनयोः सन्निकर्षः संयोग एव। जब चक्षु द्वारा घट आदि विषय का ज्ञान होता है। तब चक्षु इन्द्रिय घट विषय है। इन दोनों का सन्निकर्ष संयोग ही है।

उदा॰ (1) चक्षुषा घटविषयं ज्ञानं जन्यते – चक्षु से घट का ज्ञान।
(2) मनसाऽन्तरिन्द्रियेण यदात्यविषयकज्ञानं जन्यते। मन से आत्मा का ज्ञान।

(2) सयुक्तसमवायसन्निकर्ष- यदा चक्षुरादिना घटगतरूपादिकं गृह्यते, घटे श्यामं रूपमस्तीति, तदा चक्षुरिन्द्रियं, घटरूपमर्थः अनयोः सन्निकर्षः सयुक्तसमवाय एव।

जब चक्षु आदि से घट में रहने वाले रूप आदि का ग्रहण होता है कि 'घट' श्याम रूप है, तब चक्षु इन्द्रिय है, घट का रूप विषय है इन दोनों का सन्निकर्ष संयुक्त समवाय ही है।

उदा॰- (1) चक्षु से घट रूप का ज्ञान, (2) मन से आत्मा में समेवत सुखादि का ज्ञान।

(3) संयुक्त समवेतसमवाय सन्निकर्ष- 'यदा पुनश्चक्षुषा घटरूपसमवेतं रूपत्वादिसामान्यं गृह्यते, तदा चक्षुरिन्द्रिय रूपत्वादिसामान्यमर्थः अनयोः सन्निकर्षः सयुक्तं समवेतसमवाय एव'।

जब चक्षु के द्वारा घट के रूप में समवेत रूपत्व आदि सामान्य का ग्रहण होता है तब चक्षु इन्द्रिय है इन दोनों का सन्निकर्ष संयुक्त समवेतसमवाय ही है।

उदा॰- चक्षु से घटरूप में समवेत रूपत्व का ज्ञान

(4) समवायः सन्निकर्ष- ''यदा श्रोत्रेन्द्रियेण शब्दो गृह्यते तदा श्रोत्रमिन्द्रियं शब्दोऽर्थः अनयोः सन्निकर्षः समवाय एव''।

जब श्रोत्रेन्द्रिय शब्द से ग्रहण होता है तब श्रोत्र इन्द्रिय है, शब्द अर्थ है इन दोनों का सन्निकर्ष समवाय ही है।

उदा॰- श्रोत्रेन्द्रिय से शब्द का ग्रहण

(5) समवेतसमवायसन्निकर्षः- 'यदा पुनः शब्दसमवेतं शब्दत्वादिकं सामान्यं श्रोत्रेन्द्रियेण गृह्यते तदा श्रोत्रेन्द्रियं, शब्दत्वादि सामान्यमर्थः। अनयोः, सन्निकर्षः समवेत समवाय एव'।

जब शब्द में समवेत शब्दत्व आदि जाति का श्रोत्र इन्द्रिय से ग्रहण किया जाता है तब श्रोत्र इन्द्रिय है, शब्दत्व जाति विषय है, इन दोनों का सन्निकर्ष समवेत समवाय है।

उदा॰- श्रोत्र इन्द्रिय से शब्द में समवेत शब्दत्व का ज्ञान।

(6) विशेषण विशेष्यभाव सन्निकर्षः- ''यदा चक्षुषा संयुक्ते भूतले घटाभावो गृह्यते'' इह भूतले घटो नास्ति इति तदा विशेष्य विशेषणभावः सम्बन्धः।
जब चक्षु से संयुक्त भूमि पर 'यहाँ भूतल पर घट नहीं है' इस प्रकार भूतल पर घट का अभाव का ग्रहण होता है तब विशेष्य विशेषण भाव सन्निकर्ष हुआ करता है।
उदा॰- चक्षु से संयुक्त भूतल में घटाभाव का ग्रहण
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि समवाय का प्रत्यक्ष ग्रहण संयुक्तसमवायसन्निकर्ष द्वारा होता है। **अतः विकल्प B सही है।**
स्रोत- तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज 64

52. वेदान्तसारानुसारं 'सगुणब्रह्मविषयमानसव्यापाररूपाणि' कर्माणि निम्नलिखितेषु कानि भवन्ति?
(A) काम्यकर्माणि (B) नित्यकर्माणि
(C) उपासनाकर्माणि (D) साध्यकर्माणि

व्याख्या- आचार्य सदानन्द योगीन्द्र द्वारा प्रणीत वेदान्तदर्शन का प्रकरण ग्रन्थ वेदान्तसार है। वेदान्तसार के प्रारम्भ में मङ्गलाचरण, अनुबन्ध चतुष्टय के अन्तर्गत कर्मों को बताया गया है, उसी का विस्तारपूर्वक उल्लेख किया है-
1- काम्य कर्म- काम्यानि स्वर्गादीष्टसाधनानि ज्योतिष्टोमादीनि। स्वर्ग आदि कामनाओं के साधनस्वरूप ज्योतिष्टोमयाग आदि काम्यकर्म हैं।
2- निषिद्ध कर्म- निषिद्धानि नरकाद्यनिष्टसाधनानि ब्राह्मणहननादीनि।
नरक आदि अनिष्ट के साधनरूप ब्राह्मणहनन आदि निषिद्ध कर्म हैं।
3- नित्यकर्म- नित्यान्यकरणे प्रत्यवायसाधनानि सन्ध्यावन्दनादीनि। जिनके न करने पर पाप होता हो वे सन्ध्यावन्दन आदि नित्यकर्म हैं।
4- नैमित्तिक कर्म- नैमित्तिकानि पुत्रजन्माद्यनुबन्धीनि जातेष्ट्यादीनि। पुत्रजन्म के अवसर पर किए जाने वाले जातेष्टियज्ञ आदि नैमित्तिककर्म हैं।
5- प्रायश्चित्त कर्म- प्रायश्चित्तानि पापक्षयसाधनानि चान्द्रायणादीनि। पाप के प्रक्षालन हेतु किये जाने वाले चान्द्रायणव्रत आदि प्रायश्चित्त कर्म हैं।
6- उपासना कर्म- उपासनानि सगुणब्रह्मविषयमानसव्यापाररूपाणि शाण्डिल्यविद्यादीनि।
मन की वृत्ति को स्थिर करने के लिए सगुण ब्रह्मविषयक मानसिकव्यापाररूप शाण्डिल्यविद्या आदि उपासना कर्म हैं।
*** एतेषां नित्यादीनां बुद्धिशुद्धिः परं प्रयोजनमुपासनानां तु चित्तैकाग्र्यम्।**
इन कर्मों में नित्य आदि कर्मों के अनुष्ठान का मुख्यप्रयोजन बुद्धि की शुद्धि करना है जबकि उपासनाकर्मों का परमप्रयोजन चित्त को एकाग्र करना है।
नित्यनैमित्तिकप्रायश्चित्तोपासनानां त्ववान्तरफलं पितृलोकसत्यलोकप्राप्तिः ''कर्मणा पितृलोको विद्यया देवलोक'' इत्यादि-श्रुतेः।
नित्य, नैमित्तिक, प्रायश्चित्त एवं उपासना कर्मों का गौणफल तो पितृलोक एवं सत्यलोक की प्राप्ति ही है। ''कर्म द्वारा पितृलोक एवं विद्या द्वारा सत्यलोक की प्राप्ति होती है'' इत्यादि श्रुतिवचन भी है।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'सगुणब्रह्मविषयमानसव्यापार-' उपासना कर्म का लक्षण है।
अतः विकल्प C सही है।
स्रोत- वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव्य, पेज 14

53. 'जीवब्रह्मैक्यं शुद्धचैतन्यं प्रमेयम् इत्ययम् अनुबन्धः कतमः?
(A) अधिकारी (B) विषयः
(C) सम्बन्धः (D) प्रयोजनम्

व्याख्या- सदानन्द प्रणीत वेदान्तसार में अनुबन्धों की संख्या चार है- **अधिकारी- अधिकारी तु विधिवदधीतवेदवेदाङ्गत्वेनापात- तोऽधिगत ..... साधनचतुष्टयसम्पन्नः प्रमाता'** अर्थात् जिसने इस जन्म में अथवा अन्य जन्म में वेद और वेदाङ्गों का विधिपूर्वक अध्ययन करके... साधनचतुष्टय से सम्पन्न प्रमाता पुरुष अधिकारी है।
विषय- 'विषयो जीवब्रह्मैक्यं शुद्धचैतन्यं प्रमेयं तत्रैव वेदान्तानां तात्पर्यात्'। जीव और ब्रह्म की एकता अर्थात् अभेद जो शुद्धचैतन्यरूप है और इस शास्त्र का प्रमेय है, समस्त वेदान्तवाक्यों का तात्पर्य जीव और ब्रह्म की आत्यन्तिक एकता ही है।
सम्बन्ध- 'सम्बन्धस्तु तदैक्यप्रमेयस्य तत्प्रतिपादकोपनिषत्प्रमाणस्य च बोध्यबोधकभावलक्षणः'। अर्थात् जीव और ब्रह्म की एकता रूप प्रमेय का और उसका प्रतिपादन करने वाले उपनिषद् रूपी प्रमाण का परस्पर बोध्य बोधक भाव ही इस शास्त्र का सम्बन्ध है।
प्रयोजन- 'प्रयोजनं तु तदैक्यप्रमेयगताज्ञाननिवृत्तिः स्वस्वरूपानन्दा-वाप्तिश्च'। जीव और ब्रह्म की एकता रूप प्रमेय के सम्बन्ध में जो अज्ञान है उसकी निवृत्ति होना और अपने वास्तविक स्वरूप आनन्द की प्राप्ति होना वेदान्त का प्रयोजन है।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि 'जीवब्रह्मैक्यं शुद्धचैतन्यं प्रमेयम्' विषयानुबन्ध का लक्षण है।
अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव्य, पेज 30

54. समष्ट्यज्ञानोपहितं चैतन्यं किं भवति?

(A) जीवः (B) ईश्वरः
(C) ब्रह्म (D) प्राज्ञः

व्याख्या- सदानन्द योगीन्द्र ने वेदान्तसार में अज्ञान का निरूपण करते हुए यह बतलाया है कि अज्ञान एक होने पर भी श्रुति आदि में समष्टि के अभिप्राय से एक और व्यष्टि के अभिप्राय से अनेक कहा जाता है। **(इदमज्ञानं समष्टिव्यष्टियभिप्रायेणैकमने- कमिति च व्यवह्रियते।)**

इनमें से जो समष्टिरूप अज्ञान है वह विशुद्धसत्त्वप्रधान है। अज्ञान की इस समष्टिरूप उपाधि से उपहित चैतन्य को सर्वज्ञता, सर्वेश्वरता, सर्वनियन्तृता आदि से सम्पन्न अव्यक्त, अन्तर्यामी, जगत् का कारण तथा ईश्वर भी कहा जाता है। समस्त अज्ञानों का वह अवभासक है क्योंकि 'यः सर्वज्ञः सर्ववित्' ऐसी श्रुति प्राप्त होती है। **(इयं समष्टिरुत्कृष्टोपाधितया विशुद्धसत्त्वप्रधाना। एतदुपहितं चैतन्यं सर्वज्ञत्वसर्वेश्वरत्वसर्वनियन्तृत्वादिगुणकम- व्यक्तमन्तर्यामी जगत्कारणमीश्वर इति च व्यपदिश्यते, सकलाज्ञानावभासकत्वात्।)**

अद्वैत के अनुसार एकमात्र ब्रह्म ही सत्य है, जीव तथा ईश्वर दोनों ही कल्पित हैं। कल्पित का तात्पर्य उपाधि के भेद से अज्ञान द्वारा कल्पित से है। जैसे स्वच्छ स्फटिक गुलाब के फूल के अत्यन्त पास रखा रहने पर लाल दिखाई देता है, ठीक उसी प्रकार शुद्ध ब्रह्म ही विविध उपाधिवश ईश्वर के रूप में तथा जीव के रूप में जाना जाता है।

जो व्यष्टिरूप अज्ञान है वह निकृष्टोपाधि होने के कारण मलिनसत्त्वप्रधान है। इस अज्ञानव्यष्टि से उपहित (ढँका हुआ) चैतन्य (जो कि जीव है) अल्पज्ञत्व, अनीश्वरत्वादि गुणों से युक्त होने से 'प्राज्ञ' कहलाता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि समष्ट्यज्ञान से उपहित चैतन्य 'ईश्वर' कहलाता है। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव्य, पेज 42

55. 'अतत्त्वतोऽन्यथाप्रथा' किमुच्यते?

(A) विकारः (B) विवर्तः
(C) शब्दः (D) अनुपहितचैतन्यम्

व्याख्या- महर्षि बादरायण द्वारा प्रणीत वेदान्तदर्शन का प्रकरणग्रन्थ सदानन्द योगीन्द्र द्वारा रचित वेदान्तसार है। इसमें अध्यारोप विषयक सिद्धान्त का विस्तृत विवेचन एवं अद्वैत का प्रतिपादन करने के पश्चात् ग्रन्थकार इसी के द्वितीय पक्ष 'अपवाद' को स्पष्ट करते हैं।

''सतत्त्वतोऽन्यथाप्रथा विकार इत्युदीरितः।
अतत्त्वतोऽन्यथाप्रथा विवर्त्त इत्युदाहृतः''।।49।।

'अपने मूलरूप का परित्याग करके अन्यरूप को ग्रहण करना ही 'विकार' इसप्रकार कहा गया है।

जैसे- दूध का दही रूप में परिवर्तित हो जाना।

* अपने रूप को बिना छोड़े अन्य वस्तु की मिथ्या प्रतीति 'विवर्त' कहलाता है। जैसे- रज्जु का सर्प रूप में प्रतीत होना।

शब्द- शब्द का तत्त्व आकाश है तमोगुण की प्रधानता से युक्त और विक्षेपशक्ति सम्पन्न अज्ञान से उपहित चैतन्य से आकाश उत्पन्न होता है।

अनुपहित चैतन्य- अज्ञान से उपहित चैतन्य ईश्वर और प्राज्ञ का आधारभूत जो अनुपहित चैतन्य होता है इसको तुरीय (चतुर्थ) कहा जाता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'अतत्त्वतोऽन्यथाप्रथा विवर्त इत्युदाहृतः।' यह विवर्त का लक्षण है।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव्य, पेज 115

56. 'ब्रह्मसूत्रम्' इत्यस्य ग्रन्थस्य रचयिता कोऽस्ति?

(A) बादरायणः (B) पाराशरः
(C) शङ्कराचार्यः (D) जैमिनिः

व्याख्या-

बादरायणः- आचार्य बादरायण का समय 400 ई.पू. के लगभग निर्धारित किया जाता है। इन्होंने अपने ग्रन्थ 'ब्रह्मसूत्र' में वेदान्त दर्शन के सिद्धान्तों को व्यवस्थित रूप प्रदान किया। इस दृष्टि से इन्हें वेदान्तदर्शन का संस्थापक अथवा प्रणेता आचार्य भी कहा जाता है। भारतीय परम्परा महर्षि बादरायण तथा महर्षि पराशर के पुत्र कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास को एक ही स्वीकार करती है। ब्रह्मसूत्र में चार अध्याय, सोलह पाद, एक सौ बानवे अधिकरणों में पाँच सौ पचपन सूत्र हैं। ब्रह्मसूत्र को ही उत्तरमीमांसा, बादरायणसूत्र, ब्रह्ममीमांसा, वेदान्तसूत्र, व्याससूत्र तथा शारीरक सूत्र के नाम से भी जाना जाता है।

आचार्य जैमिनि- आचार्य जैमिनि कृष्णद्वैपायन व्यास के सामवेदीय शिष्य थे। इन्होंने 'पूर्वमीमांसादर्शन' के प्रसिद्ध ग्रन्थ 'जैमिनिसूत्र' की संरचना की। इन्होंने सामवेद की राणायनीय नामक शाखा के जैमिनीय नामक नवम भेद की संरचना की। इसी प्रकार जैमिनीय ब्राह्मण तथा जैमिनीयोपनिषद् ब्राह्मण नामक सामवेदीय ब्राह्मण ग्रन्थों का भी इन्होंने प्रणयन किया।

इसके अलावा इन्होंने जैमिनिसूत्र, जैमिनिनिघण्टु, 'जैमिनिपुराण','ज्येष्ठमाहात्म्य' 'जैमिनिभागवत', 'जैमिनिभारत', 'जैमिनिगृह्यसूत्र' तथा 'जैमिनिस्मृति' इत्यादि ग्रन्थों की भी संरचना की। आचार्य जैमिनि द्वारा विरचित 'जैमिनिसूत्र' पूर्वमीमांसा' अथवा 'कर्ममीमांसा' नाम से भी प्रसिद्ध है।

शङ्कराचार्यः- शङ्कराचार्य को अद्वैतवाद का प्रवर्तक आचार्य माना जाता है। अद्वैतमत को शाङ्करमत या शाङ्करदर्शन भी कहते हैं। ब्रह्मसूत्र पर उपलब्ध भाष्यों में सर्वाधिक प्राचीन शाङ्करभाष्य माना जाता है। शङ्कराचार्य का जन्म केरल प्रदेश की पूर्णा नदी के तटवर्ती ग्राम कालडी में वैशाख शुक्ल 5 को 788 ई॰ में हुआ। इनके पिता का नाम शिवगुरु तथा माता का नाम सुभद्रा था। शङ्कराचार्य ने वेदान्तसूत्र पर भाष्य लिखा। इसके अलावा इन्होंने उपनिषद्भाष्य, गीताभाष्य, विष्णुसहस्रनामभाष्य, सनत्सुजातीयभाष्य, हस्तामलकभाष्य, ललितात्रिशतीभाष्य, विवेकचूडामणि, प्रबोधसुधाकर, उपदेशसाहस्री, अपरोक्षानुभूति, शतश्लोकी, दशश्लोकी, मनीषापञ्चक आदि की रचना की।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण के आधार पर स्पष्ट है कि ब्रह्मसूत्र के रचनाकार बादरायण हैं। **अतः विकल्प A सही है।**

स्रोत- वेदान्तसार - राकेश शास्त्री, भू. पेज 04

57. 'शारीरक' इति नाम्ना किं भाष्यं प्रसिद्धमस्ति?

(A) सांख्यकारिकाभाष्यम् (B) मीमांसाभाष्यम्
(C) ब्रह्मसूत्रभाष्यम् (D) उपनिषद्भाष्यम्

व्याख्या- ब्रह्मसूत्रभाष्यम्- बादरायण रचित ब्रह्मसूत्र वेदान्तदर्शन का आधार ग्रन्थ है। यह प्रस्थानत्रयी में अन्यतम है- 1. उपनिषद् 2. ब्रह्मसूत्र 3. गीता। ब्रह्मसूत्र की महत्ता के कारण अनेक आचार्यों ने अपने-अपने मतानुसार इस पर भाष्य किये जिनमें से प्रमुख भाष्यों का विवरण निम्नलिखित है-

भाष्यकार	भाष्य का नाम	मत
1. शङ्कराचार्य	शारीरकभाष्य	केवलाद्वैत
2. भास्कर	भास्करभाष्य	भेदाभेद
3. रामानुज	श्रीभाष्य	विशिष्टाद्वैत
4. मध्व	पूर्णप्रज्ञभाष्य	द्वैत
5. निम्बार्क	वेदान्तपारिजात	द्वैताद्वैत
6. श्रीकण्ठ	शैवभाष्य	शैवविशिष्टाद्वैत
7. श्रीपति	श्रीधरभाष्य	वीरशैवविशिष्टाद्वैत
8. वल्लभाचार्य	अणुभाष्य	शुद्धाद्वैत
9. विज्ञानभिक्षु	विज्ञानामृत	अविभागाद्वैत
10. बलदेव	गोविन्दभाष्य	अचिन्त्य भेदाभेद

इन सभी भाष्यों में शंकराचार्य विरचित शारीरकभाष्य की कोई तुलना नहीं है। 'शारीरक' यानी इस शीर्यमाण कुत्सित शरीर में जो विशुद्ध चेतन आत्मा है। जो कि वस्तुतः परमात्मा से अभिन्न है- उसका विशदरूप से वर्णन करने वाला व्याख्या ग्रन्थ
शीर्यते रोगादिना इति शरीरम् (शृ +ईरन्), तस्मिन् शरीरे भवः शारीरम् (शरीर+अण्, शारीरम् एव शारीरकम्
शङ्कराचार्य जी ने प्रमुख उपनिषदों पर भी महत्त्वपूर्ण भाष्य किये।
* आचार्य वाचस्पति मिश्र ने साङ्ख्यकारिका पर साङ्ख्यतत्त्वकौमुदी नामक टीका लिखी। गौडपादाचार्य द्वारा विरचित साङ्ख्यकारिका का भाष्य गौडपादभाष्य नाम से प्रसिद्ध है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि शारीरकभाष्य ब्रह्मसूत्र पर है। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- वेदान्तसार - राकेश शास्त्री, भू. पेज 04

58. 'दृष्टवदानुश्रविकः' इत्यस्मिन् सांख्यकारिकाप्रयोगे 'आनुश्रविकः' इत्यस्य पदस्य कोऽर्थः?

(A) श्रुतिः (B) स्मृतिः
(C) वेदाङ्गम् (D) पुराणम्

व्याख्या- आचार्य ईश्वरकृष्ण कृत साङ्ख्यकारिका की प्रथम कारिका में त्रिविध दुःखों की ऐकान्तिक और आत्यन्तिक निवृत्ति में दृष्ट उपायों को अनुपयोगी बताया। तत्पश्चात् द्वितीय कारिका में 'आनुश्रविक' अर्थात् वैदिक उपायों को भी दृष्ट उपायों के तुल्य बताकर उन्हें भी दुःखत्रय की ऐकान्तिक और आत्यन्तिक निवृत्ति में असमर्थ बताया-

दृष्टवदानुश्रविकः स ह्यविशुद्धिक्षयातिशययुक्तः।
तद्विपरीतः श्रेयान् व्यक्ताव्यक्तज्ञविज्ञानात्॥2॥

उपर्युक्त कारिका में आनुश्रविक पद वेद अर्थात् श्रुति के लिए आया है। 'आनुश्रविक' शब्द का निर्वचन साङ्ख्यतत्त्वकौमुदीकार आचार्य वाचस्पति मिश्र जी ने इस प्रकार किया है-

''गुरुपाठादनुश्रूयते इत्यनुश्रवो वेदः। एतदुक्तं भवति- श्रूयते एव परं न केनापि क्रियते। तत्र भव आनुश्रविकः, तत्र प्राप्तो ज्ञात इति यावत्।''

अर्थात् गुरु के द्वारा किए जाने वाले उच्चारण के अनन्तर जो सुना जाता है अर्थात् श्रवणेन्द्रिय का विषय बनता है, वह अनुश्रव अर्थात् वेद है। इसी कारण वेद को श्रुति भी कहा जाता है। इसका अभिप्राय यह है कि जो गुरुपरम्परा से केवल सुना जाता है, रामायणादि के समान किसी व्यक्ति-विशेष के द्वारा निर्मित नहीं किया गया। उसमें होने वाला, अर्थात् अनुश्रव (वेद) में प्राप्त होने वाला, अर्थात् ज्ञात होने वाला 'आनुश्रविक' है।

वेद के अन्य पर्यायवाची- श्रुति, आम्नाय, छन्द, ब्रह्म, निगम आदि

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'आनुश्रविक' पद 'श्रुति' के लिए आया है। **अतः विकल्प A सही है।**

स्रोत- सांख्यकारिका (कारिका 2)- राकेश शास्त्री, पेज 05

59. अव्यक्तं कीदृशं भवति?

(A) सक्रियम् (B) निष्क्रियम्
(C) आश्रितम् (D) सावयवम्

व्याख्या- महर्षि कपिलमुनि प्रणीत 'सांख्यदर्शन' के प्रकरणग्रन्थ महर्षि ईश्वरकृष्ण द्वारा रचित सांख्यकारिका ग्रन्थ है जिसमें व्यक्त तथा अव्यक्त के विषय में बताया गया है। प्रस्तुत विकल्प में सक्रियम्, आश्रितम्, तथा सावयवम् व्यक्त का लक्षण है अतः निष्क्रियम् अव्यक्त का लक्षण है।

हेतुमदनित्यमव्यापि सक्रियमनेकमाश्रितं लिङ्गम्।
सावयवं परतन्त्रं व्यक्तं विपरीतमव्यक्तम्॥10॥

व्यक्त	अव्यक्त
हेतुमत्	कारणरहित
अनित्यम्	नित्य
अव्यापी	व्यापक
सक्रियम्	निष्क्रियम्
अनेकम्	एकम्
आश्रितम्	अनाश्रितम्
लिङ्गम्	लिङ्गरहित
सावयवम्	निरवयव
परतन्तत्रम्	स्वतन्त्रम्

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि निष्क्रियम् अव्यक्त का धर्म है। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- सांख्यकारिका (कारिका 10)- राकेश शास्त्री, पेज 37

60. व्यक्तस्य च प्रधानस्य च कः समानधर्मः?

(A) त्रिगुणत्वम् (B) सक्रियत्वम्
(C) हेतुमत्वम् (D) लिङ्गत्वम्

व्याख्या- कपिलमुनि प्रणीत 'सांख्यदर्शन' का प्रकरण ग्रन्थ ईश्वरकृष्ण द्वारा रचित 'सांख्यकारिका' है। जिसमें व्यक्त तथा प्रधान अर्थात् अव्यक्त के समान धर्म और दोनों के विपरीत धर्म बताये गये हैं।

'त्रिगुणमविवेकि विषयः सामान्यमचेतनं प्रसवधर्मि।
व्यक्तं तथा प्रधानं, तद्विपरीतस्तथा च पुमान्'॥ 11॥
(सा॰का॰ 11)

व्यक्त तथा प्रधान के समान धर्म		पुरुष (विपरीत)
त्रिगुणम्	–	गुणरहितता
अविवेकि	–	विवेकित्व
विषयः	–	अविषयत्व
सामान्यम्	–	असामान्यत्व
अचेतनम्	–	चेतनत्व
प्रसवधर्मि	–	अप्रसवधर्मित्व

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि विकल्प A 'त्रिगुणत्वम्' व्यक्त तथा प्रधान दोनों का समान धर्म है इसके विपरीत सक्रियत्व, हेतुत्वम् तथा लिङ्गम् धर्म है।

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- सांख्यकारिका (कारिका 11)- राकेश शास्त्री, पेज 38

61. सांख्यदर्शनानुसारं ''त्रैगुण्यविपर्ययात्'' किं सिध्यति?

(A) अव्यक्तस्यनित्यत्वम् (B) पुरुषबहुत्वम्
(C) व्यक्तस्यत्रिगुणात्मकत्वम् (D) अव्यक्तस्यकारणत्वम्

व्याख्या- ईश्वरकृष्ण अपनी कृति सांख्यकारिका में पुरुष की सत्ता सिद्ध करने के बाद सांख्य के महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त 'पुरुष-बहुत्व' के सिद्धान्त प्रतिपादित करने के लिए निम्न कारिका प्रस्तुत करते हैं-

''जननमरणकरणानां प्रतिनियमादयुगपत्प्रवृत्तेश्च
पुरुषबहुत्वं सिद्धं त्रैगुण्यविपर्ययाच्चैव''।।का.18।।

उपर्युक्त कारिका द्वारा पुरुषबहुत्व की सत्ता सिद्ध करने के लिए ग्रन्थकार ने तीन हेतु बताये हैं-

अर्थ- जन्म, मरण और इन्द्रियों की व्याख्या होने के कारण और एक साथ प्रवृत्ति का अभाव होने से तथा तीनों गुणों के भेद के कारण ही पुरुषों की अनेकता सिद्ध होती है।

जन्ममरणकरणानां- पुरुष अर्थात् आत्मा अनेक हैं, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति का जन्म और मरण अलग-अलग समय में होता है। यदि पुरुष एक होता तो सभी का एक साथ जन्म और एक साथ मरण होता किन्तु व्यवहार में ऐसा नहीं होता। इसलिए जन्म- मरण की अलग-अलग व्यवस्थाओं के कारण पुरुष की अनेकता सिद्ध होती है।

अयुगपत्प्रवृत्तेः- यदि एक ही पुरुष की सत्ता सभी शरीरों में स्वीकार की जाए तो उनकी सभी क्रियाएँ एक साथ होनी चाहिए। जैसे- एक के बैठने पर सभी बैठे, एक के चलने पर सभी शरीर चले, किन्तु व्यवहार में इस प्रकार की, एक साथ आचरण करने की प्रवृत्ति नहीं देखी जाती है। प्रत्येक शरीर की एक ही समय में अलग-अलग क्रियाएँ होती हैं। अतः पुरुष (आत्मा) एक नहीं अनेक हैं।

त्रैगुण्यविपर्ययात्- पुरुषबहुत्व को सिद्ध करने के लिए कारिका के अन्त में तृतीय तर्क का उल्लेख करते हुए ग्रन्थकार कहते हैं कि इस संसार में भिन्न-भिन्न स्वभाव वाले लोग हैं और यह स्वभाव परिवर्तन उनमें स्थित सत्व, रजस् और तमोगुण की भिन्नता अर्थात् न्यूनाधिक्य के कारण होता है। जैसे ऊर्ध्वतेजस् योगी में सत्त्वगुण की अधिकता होती है। सामान्य व्यक्ति में रजोगुण प्रभावी रहता है, किन्तु पशु-पक्षी एवं आलसी व्यक्ति में तमोगुण का बाहुल्य होता है। यदि प्रत्येक शरीर में एक पुरुष की सत्ता होती तो प्राणियों में इस प्रकार इन तीन गुणों का वैषम्य नहीं होता और वे सब एक स्वभाव वाले होंगे, किन्तु व्यवहार में ऐसा नहीं है। इसलिए प्रत्येक शरीर में भिन्न-भिन्न पुरुषों की सत्ता स्वीकार करना उचित है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि सांख्य दर्शन के अनुसार 'त्रैगुण्यविपर्ययात्' पुरुष की बहुलता सिद्ध करता है। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- सांख्यकारिका (कारिका 18)- राकेश शास्त्री, पेज 59

62. अधस्तनानां केन सह कस्य सम्बन्धः? समीचीनां तालिकां चिनुत-

(क)	मिथ्याज्ञानमतद्रूपप्रतिष्ठम्	(i)	स्वाध्यायात्
(ख)	इष्टदेवतासम्प्रयोगः	(ii)	यमाः
(ग)	अनुभूतविषयासम्प्रमोषः	(iii)	विपर्ययः
(घ)	सार्वभौमा महाव्रतम्	(iv)	स्मृतिः

Options

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(A)	(iii)	(i)	(iv)	(ii)
(B)	(i)	(iii)	(ii)	(iv)
(C)	(ii)	(i)	(iii)	(iv)
(D)	(iv)	(ii)	(i)	(iii)

व्याख्या- महर्षि पतञ्जलि योगसूत्र के प्रथमपाद समाधिपाद में प्रमाण, विपर्यय, विकल्प, निद्रा, स्मृति इन पाँच प्रकार की वृत्तियों की चर्चा करते हैं जिसमें विपर्यय और स्मृति वृत्तियों का लक्षण इस प्रकार है-

1. **विपर्यय-** विपर्ययो मिथ्याज्ञानमतद्रूपप्रतिष्ठम् (1.8)
   शेष वस्तु से भिन्न रूप में प्रतिष्ठित मिथ्याज्ञान 'विपर्यय' कहा जाता है।
2. **स्मृति-** अनुभूतविषयासम्प्रमोषः स्मृतिः (1.11)
   अनुभूतविषय की चित्त में उपस्थिति (अस्तेय) 'स्मृति' नामक वृत्ति कहलाती है।
3. **सार्वभौम महाव्रत-** जातिदेशकालसमयानवच्छिन्ना सार्वभौमा-महाव्रतम् (2.31)
   जाति, देश, काल और आचार परम्परा से सीमित न होते हुए ये सार्वभौम (यम) महाव्रत कहे जाते हैं।
4. **स्वाध्यायात्-** स्वाध्यायादिष्टदेवतासम्प्रयोगः (2.44)
   स्वाध्याय के स्थिर होने से इष्ट देवताओं का सम्पर्क होता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि **विकल्प A सही है।**

स्रोत- पातञ्जलयोगदर्शनम् - सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पेज 36-45

63. ''यथा मधुकरराजं मक्षिका उत्पतन्तमनूत्पतन्ति, निविशमानमनुनिविशन्ते तथेन्द्रियाणि चित्तनिरोधे निरुद्धानीत्येषः...।''
एषा व्याख्या कस्य योगाङ्गस्य, व्यासभाष्यानुसारेण?

(A) प्रत्याहारस्य (B) धारणायाः
(C) ध्यानस्य (D) ब्रह्मचर्यस्य

व्याख्या- महर्षि पतञ्जलि योगसूत्र के द्वितीयपाद साधनपाद में योग के आठ अङ्गों की चर्चा करते हैं-

*** अष्टाङ्गयोग- ''यमनियमाऽऽसन प्राणायाम प्रत्याहार-धारणा ध्यान समाधयोऽष्टावङ्गानि'' (2.29)**

यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि- ये आठ योग के अङ्ग हैं।

यम नियमादि की व्यवस्था के बाद यथावसर 'प्रत्याहार योगाङ्ग की चर्चा करते हैं-

*** प्रत्याहार- स्वविषयासम्प्रयोगे चित्तस्वरूपानुकार इवेन्द्रियाणां प्रत्याहारः** (2।54)

अपने विषयों के साथ सन्निकर्ष न होने पर इन्द्रियों का चित्त के स्वरूप का अनुसरण सा कर लेना 'प्रत्याहार' है। इस सूत्र की व्याख्या में व्यासभाष्य में भाष्यकार लिखते हैं-

''यथा मधुकरराजं मक्षिका उत्पतन्तम् अनूत्पतन्ति, निविशमानमनुनिविशन्ते तथेन्द्रियाणि चित्तनिरोधे निरुद्धानीत्येषः प्रत्याहारः''

जैसे- मधुमक्खियाँ उड़ते हुए मधुमक्ख्यिों के राजा के पीछे उड़ जाती हैं और बैठते हुए उस मधुमक्ख्यिों के राजा के पीछे बैठ जाती हैं, वैसे ही इन्द्रियाँ भी चित्त का निरोध होने पर निरुद्ध हो जाती है। यही 'प्रत्याहार' है।

*** धारणा- देशबन्धचित्तस्य धारणा (3/1)**

चित्त का सात्विक वृत्ति को किसी बाहरी या भीतरी प्रदेश में लगाना 'धारणा' है।

* ध्यान- तत्र प्रत्यैकतानता ध्यानम् (3/2)
एक विषय में ज्ञान की एकतानता ही ध्यान है।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि प्रश्नोक्त व्यासभाष्य की पंक्तियाँ प्रत्याहार योगाङ्ग के विषय में कही गयी हैं। **अतः विकल्प A सही है।**
स्त्रोत- पातञ्जलयोगदर्शनम् (2/54)-सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पेज 314

64. योगदर्शनस्य व्यासभाष्यानुसारेण चित्तभूमीनां समुचितः क्रमोऽस्ति-
(A) क्षिप्तम्, विक्षिप्तम्, मूढम्, एकाग्रम्, निरुद्धम्।
(B) क्षिप्तम्, मूढम्, विक्षिप्तम्, एकाग्रम्, निरुद्धम्।
(C) विक्षिप्तम्, मूढम्, एकाग्रम्, क्षिप्तम्, निरुद्धम्।
(D) निरुद्धम्, मूढम्, विक्षिप्तम्, क्षिप्तम्, एकाग्रम्।

व्याख्या- महर्षि पतञ्जलि पातञ्जलयोगदर्शन के समाधिपाद में ''अथ योगानुशासनम्'' अब योगशास्त्र आरम्भ हुआ। इस सूत्र के व्यासभाष्य में भाष्यकार कहते हैं- अथेत्ययमधिकारार्थः.... योगः समाधिः......क्षिप्तं, मूढं, विक्षिप्तमेकाग्रं, निरुद्धमिति चित्तभूमयः।
चित्त की पाँच भूमियाँ- चित्त की पाँच भूमियाँ बतायी गयी हैं- 1. क्षिप्त 2. मूढ 3. विक्षिप्त 4. एकाग्र और 5. निरुद्ध-ये पाँच चित्त की भूमियाँ या अवस्थायें हैं।
(1) **क्षिप्तम्- रजसा विषयेष्वेव वृत्तिमत्-** रजोगुण के उद्रेक के कारण विषयों में ही व्यापित रहने वाली चित्तकी अवस्था क्षिप्त भूमि है।
(2) **मूढम्- तमसा निद्रादिवृत्तिमत् -** तमोगुण के उद्रेक के कारण मूर्च्छादि व्यापारवान् चित्त की स्थिति मूढ भूमि कही जाती है।
(3) **विक्षिप्तम्- क्षिप्ताद्विशिष्टं विक्षिप्तं सत्त्वाधिक्येन समादधदपि चित्तं रजोमात्रयाऽन्तराऽन्तरा विषयान्तरवृत्तिमद्-** क्षिप्तादि भूमि से कुछ बेहतर या अच्छी भूमि इसमे सत्त्वगुणाधिक्य रहता है इसमें किञ्चित्कालपर्यन्त समाधि लगने पर रजोगुण के जोर मारते रहने के कारण बीच-बीच में अन्य विषयों की ओर चित्त दौड़ जाता है। चित्त की यह अवस्था इसकी 'विक्षिप्त' नामक भूमि कही जाती है।
4. एकाग्रम्- ''एकस्मिन्नेव विषयेऽग्रं शिखा यस्य चित्त दीपस्येत्येकाग्रं....''
इस अवस्था में चित्त की सात्त्विक वृत्ति किसी एक विषय की ओर लगी रहती है, रजोगुण और तमोगुण दबे रहते हैं, अतः उस एक विषय की ओर अग्र या उन्मुख वृत्ति वाली अवस्था को 'एकाग्रभूमि' कहते हैं।
5. निरुद्धम्- ''निरुद्धं च निरुद्धसकलवृत्तिकं संस्कारमात्रशेषम् इत्यर्थः'' जिस अवस्था में चित्त की तामस और राजसी वृत्तियों के साथ-साथ सात्त्विक वृत्तियों का भी निरोध हो जाता है। केवल संस्कारमात्र चित्त में रहते हैं, उसे 'निरुद्धभूमि' कहते हैं।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि चित्त की पाँच भूमियों का सही क्रम विकल्प B में उल्लिखित है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**
स्त्रोत- पातञ्जलयोगदर्शनम् - सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पेज 01

65. जैनदर्शनानुसारेण निम्नाङ्कितस्य सप्तभङ्गिन्यायस्य समुचितः क्रमः कोऽस्ति?
(A) स्यादस्ति च नास्ति च, स्यादवक्तव्यः, स्यादस्ति, स्यान्नास्ति, स्यादस्ति च वक्तव्यः, स्यान्नास्ति चावक्तव्यः, स्यादस्ति च नास्ति चावक्तव्यः।
(B) स्यादस्ति, स्यान्नास्ति, स्यादस्ति च नास्ति च, स्यादवक्तव्यः, स्यादस्ति चावक्तव्यः, स्यान्नास्ति चावक्तव्यः, स्यादस्ति च नास्ति चावक्तव्यम् ।
(C) स्यादस्ति च नास्ति चावक्तयः, स्यान्नास्ति चावक्तव्यः, स्यात् अस्ति, स्यादस्ति चावक्तव्यः, स्याद्वक्तव्यः, स्यादस्ति च नास्ति च, स्यान्नास्ति, स्यादस्ति।
(D) स्यादस्ति, स्याद्वक्तव्यः, स्यादस्ति चावक्तव्यः, स्यादास्ति च नास्ति च, स्यान्नास्ति चावक्तव्यः, स्यादस्ति च नास्ति चावक्तव्यः।

व्याख्या- जैनदर्शन के स्याद्वाद को 'सप्तभङ्गीनय' भी कहते हैं। ये सात भङ्ग इस प्रकार हैं-
1. स्याद् अस्ति- सापेक्षतया वस्तु है।
2. स्यात् नास्ति- सापेक्षतया वस्तु नहीं है।
3. स्याद् अस्ति च नास्ति च - सापेक्षतया वस्तु है और नहीं है।
4. स्याद् अवक्तव्यम्- सापेक्षतया वस्तु अवक्तव्य है।
5. स्याद् अस्ति च अवक्तव्यम्- सापेक्षतया वस्तु है और अवक्तव्य है।
6. स्याद् नास्ति च अवक्तव्यम्- सापेक्षतया वस्तु नहीं है और अवक्तव्य है।
7. स्याद् अस्ति च नास्ति च अवक्तव्यम्- सापेक्षतया वस्तु है, नहीं है और अवक्तव्य भी है।
* जैन दर्शन के अनुसार किसी वस्तु का ज्ञान उसके द्रव्य, रूप, देश और काल की दृष्टि से किया जाता है। वस्तु की अपने द्रव्य, रूप, देश और काल की दृष्टि से सत्ता है किन्तु अन्य द्रव्य, रूप, देश और काल की दृष्टि से सत्ता नहीं है।
ज्ञान की इस सापेक्षता के प्रकाशन के लिए प्रत्येक न्यायवाक्य के पूर्व 'स्यात्' पद का प्रयोग किया जाता है।

* प्रथम भङ्ग 'स्यात् अस्ति' को यदि घड़े के विषय में प्रयुक्त करें तो इसका अर्थ है- सापेक्षतया घड़ा है अर्थात् मिट्टी का बना हुआ, गोल आकार का घड़ा, इस कमरे में, इस समय विद्यमान है किन्तु द्वितीय भङ्ग 'स्यात् नास्ति' के अनुसार सापेक्षतया घड़ा नहीं है- अर्थात् घड़ा पीतल का नहीं है, चौकोर नहीं है, उस कमरे में नहीं है और अन्य समय में नहीं है। इस वाक्य में घड़े के अस्तित्व का निषेध है। तृतीय भङ्ग 'स्यात् अस्ति नास्ति' का अर्थ है, सापेक्षतया घड़ा है भी और नहीं भी है, अर्थात् घड़ा मिट्टी का है पीतल का नहीं है, गोल है चौकोर नहीं, इस कमरे में है उस कमरे में नहीं, इस समय है अन्य समय में नहीं। इस वाक्य में घड़े के अस्तित्व का विधान और निषेध दोनों हैं।

* चतुर्थ भङ्ग 'स्यात् अवक्तव्यम्' का अर्थ है कि वस्तु में यद्यपि अस्तित्व और नास्तित्व दोनों एक साथ विद्यमान रहते हैं तथापि भाषा की सीमा के कारण हम इन दोनों का विधान एक साथ नहीं कर सकते। यहाँ अवक्तव्यम् का अर्थ है कि युगपत् निर्वचन की अशक्यता।

* शेष तीन भङ्ग चतुर्थ भङ्ग को क्रमशः प्रथम, द्वितीय और तृतीय भङ्ग के साथ मिला देने से बनते हैं। जैन न्याय के अनुसार नय के ये सात भङ्ग या प्रकार होते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि **विकल्प B सही है।**

स्रोत- सर्वदर्शनसंग्रह - उमाशङ्कर शर्मा ऋषि, पेज 146

66. अधोलिखितानां केन सह कस्य सम्बन्धः? समीचीनां तालिकां चिनुत।

(क)	माध्यमिकाः	(i)	बाह्यार्थानुमेयत्वम्
(ख)	योगाचाराः	(ii)	सर्वशून्यत्वम्
(ग)	सौत्रान्तिकाः	(iii)	बाह्यार्थप्रत्यक्षत्वम्
(घ)	वैभाषिकाः	(iv)	बाह्यार्थशून्यत्वम्

Options

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(A)	(iii)	(i)	(ii)	(iv)
(B)	(iv)	(i)	(iii)	(ii)
(C)	(ii)	(iv)	(i)	(iii)
(D)	(i)	(iii)	(iv)	(ii)

व्याख्या- बौद्ध लोग चार प्रकार की भावना (दृष्टिकोण) से परम पुरुषार्थ का वर्णन करते हैं- 1. माध्यमिक, 2. योगाचार, 3. सौत्रान्तिक और 4. वैभाषिक

4- **माध्यमिक या शून्यवाद-** यह मत नागार्जुन (दूसरी शती ई.) से सम्बद्ध है जिनके माध्यमिक शास्त्र के अनुसार संसार असत् या शून्य है (सर्वशून्यत्वम्)। द्रष्टा, दृश्य, दर्शन सभी स्वप्न के समान भ्रम हैं। फिर भी शून्य का अभिप्राय ऐसा सत् है जो चतुष्कोटि (सत्, असत्, सदसत्, असन्नासत्) से विलक्षण, अनिर्वचनीय है। व्यावहारिक वस्तुएँ सभी शून्य या असत् हैं किन्तु उनकी पृष्ठभूमि में ऐसी सत्ता है जो अनौपाधिक और अविकृत है। माध्यमिक-कारिका में कहा गया है-

न सन्नासन्न सदसन्न चाप्यनुभयात्मकम्।
चतुष्कोटिविनिर्मुक्तं तत्त्वं माध्यमिका विदुः॥

* स्मरणीय है कि शंकराचार्य ने अनुभयात्मक के अलावा सभी को स्वीकार कर ब्रह्म की शक्ति माया को कोटित्रयशून्य कहा है जिसके फलस्वरूप उन्हें प्रच्छन्न बौद्ध की सञ्ज्ञा कुछ लोग दिया करते हैं।

योगाचार- दिङ्नाग, धर्मकीर्ति, असंग आदि आचार्य इस मत के पोषक रहे हैं। इसके अनुसार बाह्य अर्थ तो शून्य है किन्तु चित्त जो सभी वस्तुओं का ज्ञाता है, कभी भी असत् नहीं हो सकता अन्यथा हमारे ज्ञान भी असत् हो जाएँगे। इसी कारण सर्वदर्शनसङ्ग्रहकार माधवाचार्य ने इनका सिद्धान्त 'बाह्यार्थशून्यत्वं' बताया है।

सौत्रान्तिक- माध्यमिक और योगाचार सम्प्रदाय जहाँ महायान के हैं, सौत्रान्तिक और वैभाषिक हीनयान के भेद हैं। सौत्रान्तिक मतानुसार मानसिक और बाह्य दोनों पदार्थ सत् हैं यद्यपि बाह्य पदार्थों के प्रत्यक्ष के लिए विषय, चित्त, इन्द्रियाँ तथा सहायक तत्त्वों जैसे प्रकाश आकार- इन चार वस्तुओं की आवश्यकता होती है।

वैभाषिक- बाह्य वस्तुओं को अनुमेय न मानकर ये पूर्णतया प्रत्यक्षगम्य मानते हैं क्योंकि जब तक उनका प्रत्यक्ष न हो, उनकी सत्ता किसी दूसरे साधन से सिद्ध नहीं हो सकती; इसीलिए इनका सिद्धान्त 'बाह्यार्थप्रत्यक्षत्वम्' कहा जाता है। विभाषा या अभिधर्ममहाविभाषा नामक ग्रन्थ में इनके सिद्धान्त प्रतिपादित हैं इसलिए इनका 'वैभाषिक' नाम पड़ा।

माध्यमिक और योगाचार, बौद्धों के महायान सम्प्रदाय से सम्बन्धित हैं और सौत्रान्तिक तथा वैभाषिक हीनयान के भेद हैं।

स्पष्टीकरण- इस प्रकार स्पष्ट है कि-

(i) माध्यमिक- सर्वशून्यत्वम्
(ii) योगाचार - बाह्यार्थशून्यत्वम्
(iii) सौत्रान्तिक - बाह्यार्थनुमेयत्वम्
(iv) वैभाषिक - बाह्यार्थप्रत्यक्षत्वम्

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- सर्वदर्शनसंग्रह - उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज 31

67. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत-

(क)	हर्षचरितम्	(i)	शूद्रकः
(ख)	मुद्राराक्षसम्	(ii)	दण्डी
(ग)	दशकुमारचरितम्	(iii)	विशाखदत्तः
(घ)	मृच्छकटिकम्	(iv)	बाणभट्टः

Options

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(A)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)
(B)	(iii)	(ii)	(i)	(iv)
(C)	(ii)	(iv)	(iii)	(i)
(D)	(i)	(ii)	(iv)	(iii)

व्याख्या- शूद्रक- मृच्छकटिक नाटक के लेखक के विषय में बहुत विवाद है। भारतीय और पाश्चात्य विद्वानों ने इस विषय में पर्याप्त विवेचन किया है, परन्तु अभी तक कोई निश्चित मत निर्धारित नहीं हो सका है। शूद्रक के समय के विषय में भी पर्याप्त मतभेद है- भास ने चार अंकों में 'चारुदत्त' नामक नाटक लिखा जो कि अपूर्ण माना गया। इसी में शूद्रक ने 6 अंक जोड़कर 10 अंकों का मृच्छकटिक नाटक लिखा। अतः शूद्रक भास के परवर्ती हुए। भास का समय 5वीं शताब्दी ई.पू. है अतः शूद्रक 5वीं ई.पू. के बाद हुए। इसी प्रकार वामन (775ई. के लगभग) ने शूद्रक के प्रबन्ध (नाटक) का उल्लेख किया है-

''शूद्रकादिरचितेषु प्रबन्धेष्वस्य भूयान् प्रपञ्चो दृश्यते।''

अतः स्पष्ट है कि शूद्रक का समय 750 ई. के बाद का नहीं हो सकता।

1- मृच्छकटिकम्- मृच्छकटिकम् नाटक शूद्रककृत 10 अंकों का एक प्रकरण ग्रन्थ है। इसका नायक चारुदत्त नाम का एक निर्धन ब्राह्मण तथा नायिका वसन्तसेना नाम की एक गणिका है। इसमें 'पालक' नामक राजा को मारकर आर्यक के राजा होने का वर्णन है। इसमें नाटकीयता के साथ काव्य का भी समन्वय है। इसमें शृंगार (सम्भोग शृंगार) अङ्गी रस है और हास्य, करुण, भय, अद्भुत आदि अंग रस हैं।

इसमें दो प्रणय कथाएँ और एक राजनीतिक कथा परस्पर संश्लिष्ट एवं अविभाज्य रूप से प्रस्तुत की गई है- (i) चारुदत्त और वसन्तसेना। (ii) शर्विलक और मदनिका की प्रणय कथा।

(2) दशकुमारचरितम्- दशकुमारचरितम् दण्डी द्वारा विरचित एक गद्यकाव्य है। इसका वर्तमान स्वरूप तीन भागों में विभाजित है- 1. पञ्च उच्छ्वासात्मक पूर्वपीठिका 2. अष्ट उच्छ्वासात्मक दशकुमारचरित और 3. उत्तरपीठिका। 10 राजकुमारों द्वारा अपने-अपने पर्यटनों, विचित्र अनुभवों तथा पराक्रमों का मनोरञ्जनात्मक वर्णन है।

(3) मुद्राराक्षसम्- विशाखदत्तरचित मुद्राराक्षस 7 अंको का राजनीति विषयक नाटक है। इसमें मुद्रा (अंगूठी) द्वारा नन्द वंश के मुख्य मंत्री राक्षस को वश में करने का वर्णन है। अतः इसका नाम मुद्राराक्षस पड़ा। विशाखदत्त ने परंपरागत राजा (चन्द्रगुप्त) को नायक न मानकर प्रधानामात्य (चाणक्य) को नायक बनाया है। मुद्राराक्षस में नायिका और विदूषक का अभाव, रक्तपात के बिना वीर रस का वर्णन, शृंगार और हास्य रस का अभाव है।

मुद्राराक्षस के अलावा विशाखदत्त के नाम से दो अन्य रचनाओं का भी उल्लेख मिलता है। 1. देवीचन्द्रगुप्तम्, 2. अभिसारिकवंचितक या अभिसारिकाबन्धितक।

(4) हर्षचरितम्- हर्षचरितम् महाकवि बाणभट्ट की प्रथम रचना है। यह ऐतिहासिक वृत्त पर आधारित होने से गद्यकाव्य का भेद आख्यायिका है। इसमें 8 उच्छ्वास हैं। प्रथम दो उच्छ्वासों में हर्ष ने अपने वंश का वर्णन किया है और आगे के 6 उच्छ्वासों में हर्ष के पूर्वजों का वर्णन करते हुए हर्ष के जन्म से लेकर राज्यश्री के मिलने तक का वर्णन है।

हर्षचरित के अतिरिक्त बाणभट्ट की दो अन्य रचनाएँ कादम्बरी (कथा) तथा चण्डीशतक (दुर्गा की स्तुति का काव्य) भी प्राप्त होती हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि दिये गये विकल्पों में **विकल्प A सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज 396, 504, 318, 491

68. अभिज्ञानशाकुन्तले शकुन्तलायाः प्रतिकूलदैवशमनार्थं कण्वः कुत्र गतः?

(A) काशीतीर्थम् (B) प्रयागतीर्थम्

(C) काञ्चीतीर्थम् (D) सोमतीर्थम्

व्याख्या- ''इदानीमेव दुहितरं शकुन्तलामतिथिसत्काराय नियुज्य दैवमस्याः प्रतिकूलं शमयितुं सोमतीर्थं गतः।''

जब राजा दुष्यंत हिरण का पीछा करते हुए जंगल में महर्षि कण्व के आश्रम के समीप पहुँचते हैं तो कण्व के शिष्य वैखानस से पूछते हैं कि क्या महर्षि कण्व आश्रम में हैं तो वैखानस जवाब देता है कि- अभी ही अपनी पुत्री शकुन्तला को अतिथि सत्कार के लिए नियुक्त करके उसके प्रतिकूल भाग्य को शान्त करने के लिए सोमतीर्थ को गये हुए हैं।

अभिज्ञानशाकुन्तलम् नामक नाटक में कुल सात (7) अंक हैं। इसके प्रथम अंक में यह जानकारी दी गई है कि कण्व शकुन्तला के प्रतिकूल भाग्य को शान्त करने के लिए सोमतीर्थ गये हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि प्रश्न में दिये गये चार विकल्पों में **विकल्प D सही है।**

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (प्रथमोऽङ्क)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 31

69. ''उपपन्ना हि दारेषु प्रभुता सर्वतोमुखी'' अभिज्ञानशाकुन्तले इयमुक्तिर्भवति-

(A) मारीचस्य (B) शारद्वतस्य

(C) कण्वस्य (D) शार्ङ्गरवस्य

व्याख्या-

* कालिदासकृत अभिज्ञानशाकुन्तलम् न केवल भारतवर्ष अपितु विश्व का सर्वोत्तम नाटक रत्न है। इसमें कुल सात अङ्क हैं।
* कालिदास को भारत का शेक्सपियर भी कहा जाता है।
* अभिज्ञानशाकुन्तलम् शृंगार रस प्रधान नाटक है।
* इसका नायक दुष्यन्त धीरोदात्त प्रकृति का है।
* नायिका शकुन्तला राजर्षि विश्वामित्र और मेनका अप्सरा की पुत्री है। जन्म से परित्यक्त शकुन्तला का पालन-पोषण कण्व ऋषि ने किया है।
* अभिज्ञानशाकुन्तलम् के अन्य प्रमुख पात्रों में कण्व अथवा कश्यप ऋषि, विदूषक, अनसूया और प्रियंवदा (शकुन्तला की सहेलियाँ), शार्ङ्गरव और शारद्वत, महर्षि मारीच आदि हैं।

प्रमुख उक्तियाँ (कण्व का कथन)

(1) पीड्यन्ते गृहिणः कथं नु तनयाविश्लेषदुःखैर्नवैः-

अर्थ- गृहस्थ लोग नवीन (पहली बार) पुत्री वियोग से कितना अधिक दुःखित होते होंगे।

(2) 'सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम्-

अर्थ- वह यह शकुन्तला (सम्प्रति) अपने पतिगृह को जा रही है, तुम सब अपनी स्वीकृति दो।

(3) 'वाष्पं कुरु स्थिरतया विरतानुबन्धम्' (काश्यप)

अर्थ- नेत्रों की दर्शनशक्ति को रोकने वाले अश्रु (प्रवाह) को धैर्यपूर्वक रोको।

(4) 'मार्गे पदानि खलु ते विषमी भवन्ति'

अर्थ- इस मार्ग में तुम्हारे पैर वस्तुतः लड़खड़ा रहे हैं।

(5) 'सोऽयं न पुत्रकृतकः पदवीं मृगस्ते'-

अर्थ- पुत्र के समान पाला गया यह हरिण तुम्हारे मार्ग को नहीं छोड़ रहा है।

शार्ङ्गरव का कथन -

(1)- 'जनाकीर्णं मन्ये हुतवहपरीतं गृहमिव'-

अर्थ- लोगों (भीड़) से संकुल (युक्त) इस राजगृह को अग्नि से घिरे हुए घर के समान समझ रहा हूँ।

(2)- ''चिरस्य वाच्यं न गतः प्रजापतिः''-

अर्थ- प्रजापति चिरकाल के पश्चात् निन्दा के पात्र नहीं हुए।

(3)- ''शकुन्तला मूर्तिमती च सत्क्रिया।''-

अर्थ- और शकुन्तला शरीरधारिणी सत्क्रिया (पूजा) है।

(4)- ''किं कृतकार्यद्वेषो धर्मं प्रति विमुखता कृतावज्ञा''? (5.18)

अर्थ- क्या आप अपने किये हुए कार्य से घृणा करते हैं? या धर्म के प्रति विमुख हो रहे हैं अथवा किये हुए (कार्य) का निरादर कर रहे हैं।

शारद्वत का कथन- (1) 'स्थाने भवान् पुरप्रवेशादित्थंभूतः संवृत्तः'।-

अर्थ- यह उचित ही है कि आप नगर में प्रवेश करने से इस प्रकार के हो गये हैं।

(2)- ''अभ्यक्तमिव स्नातः शुचिरशुचिमिव प्रबुद्ध इव सुप्तम्''।

अर्थ- नहाया हुआ (व्यक्ति) तेल लगाये हुए को, पवित्र (व्यक्ति) अपवित्र को, जागा हुआ (व्यक्ति) सोये हुए को (समझता है)।

(3) ''उपपन्ना हि दारेषु प्रभुता सर्वतोन्मुखी''।

अर्थ- क्योंकि पत्नी पर (पति की) सब प्रकार की प्रभुता (अधिकार) स्वीकार की गई है।

मारीच का कथन- (1)- ''तत्कोटिमत्कुलिशमाभरणं मघोनः''-

अर्थ- वह वज्र इन्द्र का आभूषण हो गया है।

(2)- ''दुष्यन्त इत्यभिहितो भुवनस्य भर्ता''।-

अर्थ- यह दुष्यन्त इस नाम से प्रसिद्ध पृथ्वी का स्वामी है।

(2) ''आशीरन्या न ते योग्या पौलोमी सदृशी भव।''-

अर्थ- तुम इन्द्राणी के समान होओ, अन्य कोई आशीर्वाद तुम्हारे योग्य नहीं है।

(3)- ''श्रद्धा वित्तं विधिश्चेति त्रितयं तत् समागतम्''- अर्थ- (सौभाग्य से) श्रद्धा, धन और विधि ये तीनों यहाँ एकत्र हो गए हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'उपपन्ना हि दारेषु....।' उक्ति शारद्वत ने कही है। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (5/26)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 294

70. मेघदूते अस्याः नद्याः उल्लेखो नास्ति?

(A) तुङ्गभद्रा (B) रेवा

(C) गन्धवती (D) गम्भीरा

व्याख्या- मेघदूतम् कालिदास प्रणीत प्रसिद्ध खण्डकाव्य या गीतिकाव्य है।
मेघदूतम् दो भागों -(1) पूर्वमेघ (2) उत्तरमेघ में विभक्त है।
* इसका प्रधानरस विप्रलम्भशृंगार है तथा छन्द मन्दाक्रान्ता है।
* मेघदूत की रीति वैदर्भी रीति मेघदूतम् का उपजीव्य- ब्रह्मवैवर्तपुराण तथा वाल्मीकि रामायण
* नायक- यक्ष (हेममाली), नायिका- यक्षिणी (विशालाक्षी)
* मैक्समूलर ने मेघदूतम् का जर्मन भाषा में पद्यानुवाद और श्वेट्ज ने जर्मनभाषा में गद्यानुवाद किया।
* डॉ॰ कीथ ने मेघदूत को शोकगीत (Elegy) कहा है।
मेघदूतम् में कुल 115 पद्य हैं। पूर्वमेघ में 63 पद्य और उत्तरमेघ में 52 पद्य
* मेघदूतम् का नायक 'यक्ष' धीरललित नायक है तथा नायिका यक्षिणी स्वकीया एवं पद्मिनी है।
* मेघदूतम् में वर्णित प्रमुख नदियाँ- रेवा, वेत्रवती, निर्विन्ध्या, सिन्धु, शिप्रा, गन्धवती, गम्भीरा, चर्मण्वती, सरस्वती, (गङ्गा) जाह्नवी, यमुना तथा मानसरोवर

(1) ''रेवां द्रक्ष्यस्युपलविषमे विन्ध्यपादे विशीर्णाम्।''
अर्थ- तुम आगे बढ़ोगे तो तुम्हें चट्टानों के कारण ऊबड़-खाबड़ विन्ध्याचल की तलहटी में बिखरी हुई अर्थात् सभी ओर बह रही नर्मदा (रेवा) नदी दिखाई देगी।

(2) ''धूतोद्यानं कुवलयरजोगन्धिभिर्गन्धवत्याः''।
अर्थ- वही समीप ही एक छोटी नदी बहती है। जिसका नाम गन्धवती है। यहाँ जब युवतियाँ स्नान करती हैं तो उनके शरीर में लगे हुए सुगंधित द्रव्य जल में घुल जाते हैं। वहाँ जल विहार करती हुई युवतियों के स्नान करने से महकता हुआ और कमल की गंध से बसी हुई इस नदी की ओर से आने वाला पवन महाकाल के मन्दिर के उपवन को बारंबार झुला रहा होगा।

(3) ''गम्भीरायाः पयसि सरितश्चेतसीव प्रसन्ने।''
अर्थ- वहाँ से आगे चलने पर तुम्हें गम्भीरा नदी मिलेगी। उस नदी के निर्मल जल पर तुम्हारे सहज सलोने शरीर की परछाई स्पष्ट दिखाई देगी।

मेघदूतम् में वर्णित पर्वतः- रामगिरि, आम्रकूट, विन्ध्य, नीचगिरि, देवगिरि, हिमालय, क्रौञ्चपर्वत, कैलाश।

मेघदूतम् में वर्णित प्रमुख नगरः- मालदेश, दशार्ण, विदिशा, उज्जयिनी, विशाला, अवन्ति, दशपुर, ब्रह्मावर्त, कुरुक्षेत्र, कनखल, अलका।

मेघदूतम् में वर्णित मेघमार्गः- रामगिरि-मालदेश-आम्रकूट-विन्ध्य-नर्मदा-दशार्ण- विदिशा-वेत्रवती-नीचैर्गिरि-उज्जयिनी- निर्विन्ध्या-अवन्ति-सिन्धु-शिप्रा-गन्धवती-गम्भीरा-देवगिरि-चर्मण्वती-दशपुर-कुरुक्षेत्र- सरस्वती- कनखल-हिमालय-गङ्गा- क्रौञ्च-कैलाश-मानसरोवर-अलकापुरी।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि तुङ्गभद्रा नदी का उल्लेख मेघदूतम् में नहीं हुआ है। **अतः विकल्प A सही है।**

स्रोत- मेघदूतम् , दयाशंकर शास्त्री, पूर्वमेघ, श्लोक 20,37,45-पेज 89,123,139

71. ''सुलभेष्वर्थलाभेषु परसंवेदने जनः।
क इदं दुष्करं कुर्यादिदानीं शिविना विना॥
एषा उक्तिः कं लक्षयति?

(A) चाणक्यम् (B) राक्षसम्
(C) चन्दनदासम् (D) भागुरायणम्

व्याख्या- प्रश्नगत श्लोक विशाखदत्त विरचित मुद्राराक्षस नाटक के प्रथम अङ्क से उद्धृत है। चाणक्य द्वारा बार-बार राक्षस का परिवार माँगे जाने पर भी चन्दनदास जब अपने जीवन, परिवार व धन की परवाह किये बिना उसे नहीं सौंपता तब चाणक्य मन ही मन उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा करता है-

सुलभेष्वर्थलाभेषु परसंवेदने जनः।
क इदं दुष्करं कुर्यादिदानीं शिविना विना॥1.24

अर्थात् दूसरे की वस्तु दे देने पर धन की प्राप्ति आसान होने पर अब अर्थात् इस कलियुग में महाराज शिवि के अतिरिक्त कौन-सा मनुष्य इस कठिन कार्य को कर सकता है?

राक्षस का परिवार चन्द्रगुप्त को सौंप देने मात्र से ही विविध प्रकार की राजकीय कृपा प्राप्त हो सकती है- इस बात को जानते हुए भी चन्दनदास शरणागत आये हुए राक्षस के परिवार की रक्षा करने के लिए अपना सर्वस्व देने के लिए तत्पर है। राजा शिवि ने तो ऐसा श्रेष्ठ कार्य सतयुग में किया था परन्तु चन्दनदास ने तो यह कार्य कलियुग में करके उनके यश को लघु कर दिया है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि चाणक्य का उपर्युक्त कथन चन्दनदास को लक्ष्य करके है। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- मुद्राराक्षसम् (1/24) - पुष्पा गुप्ता, पेज 61

72. मृच्छकटिके विदूषकस्य नाम भवति-

(A) आर्यकः (B) मैत्रेयः
(C) शर्विलकः (D) संस्थानकः

व्याख्या- शूद्रककृत मृच्छकटिकम् नाटक 10 अङ्कों का एक प्रकरण ग्रन्थ है। इसका नायक चारुदत्त नाम का एक निर्धन ब्राह्मण है तथा नायिका वसन्तसेना नाम की एक गणिका है। इसमें

चारुदत्त और वसन्तसेना के प्रेम का वर्णन है। साथ ही इसमें 'पालक' नामक राजा को मारकर आर्यक के राजा होने का वर्णन है।

मृच्छकटिकम् नाटक के प्रमुख पात्र- चारुदत्त (नायक), मैत्रेय (चारुदत्त का मित्र), शकार (प्रतिनायक), संवाहक (चारुदत्त का भूतपूर्व सेवक), शर्विलक (एक साहसी ब्राह्मण), वसन्तसेना (नायिका), रदनिका (चारुदत्त की परिचारिका), चेटी (वसन्तसेना की दासी), धूता (चारुदत्त की पत्नी)।

संस्कृत नाटकों में विदूषक

नाटक	लेखक	विदूषक
1. अभिज्ञानशाकुन्तलम्	कालिदास	माढव्य/माधव्य
2. विक्रमोर्वशीयम्	कालिदास	माणवक
3. मालविकाग्निमित्रम्	कालिदास	गौतम
4. मृच्छकटिकम्	शूद्रक	मैत्रेय
5. रत्नावली	श्रीहर्ष	वसन्तक
6. स्वप्नवासवदत्तम्	भास	वसन्तक
7. मालतीमाधवम्	भवभूति	विदूषक का अभाव
8. महावीरचरितम्	भवभूति	विदूषक का अभाव
9. उत्तररामचरितम्	भवभूति	विदूषक का अभाव
10.मुद्राराक्षसम्	विशाखदत्त	विदूषक का अभाव

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि मृच्छकटिक के विदूषक का नाम 'मैत्रेय' है। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- मृच्छकटिकम् - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज 13

73. ''निपीय यस्य क्षितिरक्षिणः कथाः तथाद्रियन्ते न बुधाः सुधामपि।'' इति कस्य कथा अत्र उल्लिखिता?

(A) दुष्यन्तस्य (B) रघोः

(C) रामचन्द्रस्य (D) नलस्य

व्याख्या- महाकवि श्रीहर्ष द्वारा विरचित बृहत्त्रयी के अन्तर्गत परिगणित 'नैषधीयचरितम्' महाकाव्य के प्रथम सर्ग के प्रथम श्लोक में महाराज नल की कथा का वर्णन किया गया है-

निपीय यस्य क्षितिरक्षिणः कथाः तथाद्रियन्ते न बुधाः सुधामपि।

नलः सितच्छत्रितकीर्तिमण्डलः स राशिरासीन्महसां महोज्ज्वलः॥ (नैषध.1.1)

जिस पृथ्वीपालक की कथाओं का भलीभाँति आस्वादन कर विद्वान् लोग अमृत का भी वैसा (राजा नल के कथा के समान) आदर नहीं करते। अपने यश-समूह को शुभ्र छत्र बनाने वाले तथा बड़े उत्सव वाले वे नल तेजों की राशि हुए।

अन्य सूक्तियाँ (1) आर्जवं हि कुटिलेषु न नीतिः।(नैषध॰ 05/103)

अर्थ- कुटिल जनों के प्रति सरलता नीति नहीं होती

(2) क्व भोगमाप्नोति न भाग्यभाग्जनः? (नैषध॰1/102)

अर्थ- भाग्यशाली जन कहाँ सुख प्राप्त नहीं करता है?

(3) न्याय्यमुपेक्षते हि कः (नैषध॰9/46)

अर्थ-दमयन्ती के कहने पर कि नल ने उसका पाणिग्रहण न किया तो वह फाँसी लगाकर मर जायेगी ये सुनकर नल कहता है कि मृत्यु के बाद भी इन्द्र उसका ग्रहण कर लेगें- न्याय से प्राप्त वस्तु की कौन उपेक्षा करता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि प्रस्तुत सूक्ति में राजा नल के कथा का वर्णन है। **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत- नैषधीयचरितम् (1/1) - सुरेन्द्रदेव शास्त्री, पेज 01

74. किरातार्जुनीयस्य प्रधानो रसोऽस्ति-

(A) शृङ्गारः (B) वीरः

(C) शान्तः (D) अद्भुतः

व्याख्या- महाकवि भारवि प्रणीत 'किरातार्जुनीयम्' 18 सर्गों का वीर रस प्रधान महाकाव्य है। इसका उपजीव्य महाभारत का वनपर्व है। इस महाकाव्य में अर्जुन द्वारा भगवान् शिव की तपस्या से पाशुपतास्त्र की प्राप्ति का वर्णन है।

भारवि के काव्य में (किरातार्जुनीयम् में) प्रधान रस के रूप में 'वीर' रस का प्रयोग किया गया है। वीर रस की अभिव्यक्ति काव्य के प्रथम सर्ग से ही प्रारंभ हो जाती है। जब द्रौपदी युधिष्ठिर के उत्साह को प्रबोधित करने और शत्रुओं से प्रतिशोध लेने के लिए ओज से भरे शब्दों को कहती है-

अबन्ध्यकोपस्य विहन्तुरापदां भवन्ति वश्याः स्वयमेव देहिनः।

अमर्षशून्येन जनस्य जन्तुना न जातहार्देन न विद्विषादरः॥

अर्थ- अनिष्फल क्रोध करने वाले और शत्रुओं का विनाश करने वाले व्यक्ति के वश में प्राणी स्वयं ही हो जाते हैं। व्यक्ति के क्रोध से हीन होने पर उसका न तो मित्रगण ही आदर करते हैं और न ही उससे शत्रु भय करते हैं।

संस्कृत ग्रन्थों के अंगी रस

अभिज्ञानशाकुन्तलम्	शृङ्गाररस	जानकीहरणम्	शृङ्गाररस
मेघदूतम्	विप्रलम्भशृङ्गार	शिवराजविजय	वीररस
उत्तररामचरितम्	करुणरस	नागानन्द	शान्तरस/वीररस
शिशुपालवधम्	वीररस	प्रबोधचन्द्रोदय	करुण/वीर
रघुवंशम्	वीररस	महाभारतम्	शान्तरस
बुद्धचरितम्	शान्तरस	गीतगोविन्दम्	शृङ्गाररस
रावणवध (भट्टिकाव्य)	वीररस	रत्नावली	शृङ्गाररस

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि किरातार्जुनीयम् का प्रधान रस वीर है। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि'- पेज 244

75. वेणीसंहारे दुर्योधनस्य कञ्चुकी भवति-

(A) विनयन्धरः (B) जयन्धरः

(C) रुधिरप्रियः (D) सुन्दरकः

व्याख्या- भट्टनारायण प्रणीत वेणीसंहारम् महाभारत पर आधारित वीर रस प्रधान नाटक है। इस नाटक में कुल 6 अंक हैं। वेणीसंहारम् नाटक के नायक भीम धीरोद्धत नायक हैं, नायिका द्रौपदी तथा प्रतिनायक दुर्योधन है। वेणीसंहारम् की प्रस्तावना में भट्टनारायण ने अपने को 'मृगराजलक्ष्मा' (मृगराज या सिंह की उपाधिवाला) कहा है। भट्टनारायण गौडी रीति और ओजगुण के कवि हैं-

ओजः संसूचकैः शब्दैर्युद्धोत्साहप्रकाशकैः।

वेण्यामुज्जृम्भयन् गौडी भट्टनारायणो वभूः।।

वेणीसंहारम् के प्रमुख पात्र- भीम, युधिष्ठिर, अर्जुन, नकुल सहदेव, कृष्ण (अर्जुन के सारथि), धृतराष्ट्र, दुर्योधन, कर्ण, संजय (धृतराष्ट्र के सारथि), जयन्धर, विनयन्धर, द्रौपदी, बुद्धिमती, भानुमती (दुर्योधन की पत्नी)।

संस्कृत नाटकों में कञ्चुकी -

नाटक	कञ्चुकी	नाटक	कञ्चुकी
प्रतिज्ञायौगन्धरायण	बादरायण	उत्तररामचरितम्	गृष्टि
दूतवाक्यम्	बादरायण	रत्नावली	बाभ्रव्य
स्वप्नवासवदत्तम्	बादरायण	वेणीसंहारम्	जयन्धर (युधिष्ठिर का)
अभिज्ञानशाकुन्तलम्	वातायन		विनयन्धर (दुर्योधन का)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि वेणीसंहार में दुर्योधन का कञ्चुकी 'विनयन्धर' है। **अतः विकल्प A सही है।**

स्रोत- वेणीसंहारम् - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज 27

76. ''अर्पणं स्वस्यवाक्यार्थे परस्यान्वयसिद्धये।
उपलक्षणहेतुत्वादेषा.....।। साहित्यदर्पणानुसारतः रिक्त स्थानं पूरयत।

(A) लक्षण-लक्षणा (B) उपादान लक्षणा

(C) सारोपा लक्षणा (D) साध्यवसाना लक्षणा

व्याख्या- श्री विश्वनाथ कविराज ने अपने ग्रन्थ साहित्यदर्पण में लक्षणा के बारे में बताते हुए लिखा है-

''मुख्यार्थबाधे तद् युक्तो ययाऽन्योऽर्थः प्रतीयते।
रुढेः प्रयोजनाद्वाऽसौ लक्षणा शक्तिरर्पिता।।''

अभिधा शक्ति के द्वारा जिसका बोधन किया जाए वह मुख्यार्थ कहलाता है, इसका (मुख्यार्थ) का अन्वय अनुपपन्न होने पर, रूढ़ि (प्रसिद्धि) के कारण अथवा किसी विशेष प्रयोजन का सूचन करने के लिए मुख्यार्थ से संबद्ध अन्य अर्थ का ज्ञान जिस शक्ति के द्वारा होता है, उसे लक्षणा कहते हैं। यह शक्ति 'अर्पित' अर्थात् कल्पित है।

उपादान लक्षणाः-

''मुख्यार्थस्येतराक्षेपो वाक्यार्थेऽन्वयसिद्धये।
स्यादात्मनोऽप्युपादानादेषोपादानलक्षणा''।।

वाक्यार्थ में, अङ्गरूप से अपने अन्वय की सिद्धि के लिए, जहाँ मुख्य अर्थ अन्य अर्थ का आक्षेप कराता है वहाँ 'आत्मा' अर्थात् मुख्यार्थ के भी बने रहने से, उस लक्षणा को ''उपादान लक्षणा' कहते हैं। यथा- 'श्वेतो धावति' इस उदाहरण में श्वेत (वर्ण) जड़ होने के कारण दौड़ने में कर्ता होकर अन्वित नहीं हो सकता, अतः वाक्यार्थ में अपने अन्वय की सिद्धि के लिए 'श्वेत' शब्द श्वेत रंग वाले अश्वादि का आक्षेप कराता है। यह 'रूढ़ि' में उपादान है- 'कुन्ताः प्रविशन्ति' (भाले प्रवेश कर रहे हैं) यहाँ पर कुन्त शब्द कुन्त (भाला) धारण करने वाले 'पुरुषों' का आक्षेप कराता है।

लक्षण-लक्षणा —

''अर्पणं स्वस्य वाक्यार्थे परस्यान्वयसिद्धये।
उपलक्षणहेतुत्वादेषा लक्षणलक्षणा।।''

वाक्यार्थ में मुख्यार्थ से भिन्न अर्थ के अन्वय बोध के लिए जहाँ कोई शब्द अपने स्वरूप का समर्पण कर दे अर्थात् मुख्यार्थ का परित्यागकर लक्ष्य अर्थ का उपलक्षण मात्र बन जाय उस लक्षणा को लक्षण-लक्षणा कहते हैं, क्योंकि यह उपलक्षण का ही हेतु होती है, इसमें मुख्यार्थ का वाक्य में अन्वय नहीं होता। इसका रूढ़ि और प्रयोजन में क्रम से उदाहरण है- 'कलिङ्गः साहसिकः' और 'गङ्गायां घोषः'। इन उदाहरणों में क्रम से पुरुष और तट के अन्वय को सिद्ध करने के लिए कलिङ्ग और गङ्गाशब्द अपने स्वरूप का समर्पण करते हैं। (इसी लक्षण-लक्षणा को जहत्स्वार्थवृत्ति भी कहते हैं)

सारोपा और साध्यवसाना-लक्षणा -

''विषयस्यानिगीर्णस्यान्यतादात्म्यप्रतीतिकृत्।
सारोपा स्यान्निगीर्णस्य मता साध्यवसानिका।।''

अनाच्छादित स्वरूप विषय (उपमेय) का अन्य (उपमान) के साथ अभेदज्ञान कराने वाली लक्षणा को 'सारोपा' कहते हैं और निगीर्ण स्वरूप (आच्छादित) विषय का विषयी के साथ अभेद ज्ञान कराने वाली लक्षणा को 'साध्यवसाना' कहते हैं।

रूढि में सारोपा उपादान लक्षणा का उदाहरण-'अश्वः श्वेतो धावति'। प्रयोजन में सारोपा लक्षणा का उदाहरण- 'एते कुन्ताः प्रविशन्तिः'

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि दिये गये श्लोक में रिक्तस्थान लक्षण-लक्षणा द्वारा पूरित होगा। **अतः विकल्प A सही है।**

स्रोत- साहित्यदर्पण (1/7) - शालिग्राम शास्त्री, पेज 32

77. अधस्तनयुग्मानां समीचीनतालिकां चिनुत-

(क) आशङ्कसे यदग्निं तदिदं स्पर्शक्षमं रत्नम्। (i) रत्नावली
(ख) अल्पक्लेशं मरणं दारिद्रयमनन्तकं दुःखम्। (ii) मुद्राराक्षसम्
(ग) गजेन्द्राश्च नरेन्द्राश्चप्रायः सीदन्ति दुःखिताः। (iii) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(घ) आनीय झटिति घटयति विधिरभिमतमभिमुखीभूतः। (iv) मृच्छकटिकम्

Options

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(A)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)
(B)	(iii)	(iv)	(ii)	(i)
(C)	(iv)	(ii)	(i)	(iii)
(D)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)

व्याख्या- (1) ''आशङ्कसे यद्ग्निं तदिदं स्पर्शक्षमं रत्नम्।'' प्रस्तुत श्लोकांश अभिज्ञानशाकुन्तलम् के प्रथम अंक से उद्धृत है। जब राजा दुष्यंत प्रियंवदा से शकुन्तला के बारे में बात करता है तो प्रियंवदा कहती है- हे आर्य धर्म के आचरण में भी यह परवश है। पिता का तो इसे अनुरूप वर को देने का संकल्प है। तब दुष्यंत स्वयं से यह बात कहता है- आशङ्कसे यदग्निं....। (तू जिसके अग्नि होने की आशंका कर रहा है वह तो स्पर्शयोग्य रत्न है)।

1. अभिज्ञानशाकुन्तलम् की कुछ महत्त्वपूर्ण सूक्तियाँ-

(i) 'अकृतार्थेऽपि मनसिजे रतिमुभयप्रार्थना कुरुते'- दुष्यन्त (द्वितीय अङ्क) (कामभाव के कृतार्थ न होने पर भी एक-दूसरे की अभिलाषा प्रीति को बढ़ाती ही है)।

(ii) अचेतनं नाम गुणं न लक्षयेत्-दुष्यन्त (षष्ठ अंक) (अचेतन पदार्थ तो सचमुच ही गुण को नहीं पहचान सकता)।

(iii) अज्ञातहृदयेष्वेवं वैरीभवति सौहृदम्- शाङ्र्गरव (पञ्चम अंक)। (जिसके हृदय के विषय में ज्ञान नहीं है उनसे प्रेम करना अपना ही शत्रु बन जाना है)।

(iv) गुणवते कन्यका प्रतिपादनीया- अनुसूया (चतुर्थ अंक) (गुणवान् वर को कन्या देनी चाहिए)।

मृच्छकटिकम् की सूक्तियाँ-

(i) ''अल्पक्लेशं मरणं, दारिद्रयमनन्तकं दुःखम्''। (चारुदत्त) प्रस्तुत श्लोकांश शूद्रककृत मृच्छकटिकम् के प्रथम अङ्क से लिया गया है। जब विदूषक चारुदत्त से पूछता है- हे मित्र, मृत्यु और निर्धनता में से तुम्हें कौन-सी वस्तु अच्छी लगती है। इसी का जवाब देते हुए चारुदत्त कहता है- मृत्यु में थोड़ा कष्ट है, किन्तु निर्धनता कभी न समाप्त होने वाला दुःख है)।

(ii) ''कालात्यये मधुकराः करिणः कपोलम्'' (चारुदत्त) (जिस प्रकार (मद का) समय व्यतीत हो जाने पर भ्रमण करते हुए और जिसकी घनी मदराशि सूख गई, ऐसे हाथी के कपोल को त्याग देते हैं)।

(iii) 'धृतः शरीरेण मृतः स जीवति' (चारुदत्त) (वह तो शरीर धारण किये हुए भी मृतक के समान जीवन व्यतीत करता है)।

मुद्राराक्षस की प्रमुख सूक्तियाँ-

(i) ''गजेन्द्राश्च नरेन्द्राश्च प्रायः सीदन्ति दुःखिताः'' प्रस्तुत श्लोकांश विशाखदत्त प्रणीत मुद्राराक्षस नामक नाटक से लिया गया है। (स्वयं राज्यतन्त्रादि भार से घिर कर राजसुख का भोग कर रहे राजा लोग तथा मत्त हस्ती स्वभाव से बलशाली होकर भी प्रायः दुखित एवं खिन्न रहा करते हैं।

रत्नावली की सूक्तियाँ-

1. ''आनीय झटिति घटयति विधिरभिमतमभिमुखीभूतः'' प्रस्तुत श्लोकांश महाकवि हर्ष विरचित नाटक रत्नावली के प्रथम अङ्क से लिया गया है। प्रस्तुत श्लोक में सूत्रधार नदी से (नदी द्वारा पुत्री के विवाह की चिन्ता के विषय में) कहता है-''अनुकूल भाग्य दूसरे द्वीप से की जा रही जलनिधि के बीच से तथा दिशाओं के अन्तिम छोर से भी इष्टवस्तु को शीघ्र लाकर मिला देता है।''

अन्य सूक्तिः- (i) ''आभाति मकरकेतोः पार्श्वस्था चापयष्टिरिव'' (राजा) कामदेव के समीप में अवस्थित (वासवदत्ता), पुष्पमय होने के कारण सुकुमार, मध्यभाग में क्षीण, कामदेव के समीप धनुर्लतासी प्रतीत हो रही है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि दिये गये विकल्पों में **विकल्प B सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज 244

78. ''लोके हि लोहेभ्यः कठिनतराः खलु स्नेहमयाः बन्धनपाशाः'' इति हर्षचरिते कस्य मनसि समजायत?

(A) राज्यवर्धनस्य (B) प्रभाकरवर्धनस्य
(C) कुरङ्गकस्य (D) हर्षवर्धनस्य

व्याख्या- महाकवि बाणभट्ट द्वारा रचित 'हर्षचरितम्' आख्यायिका ग्रन्थ के पञ्चम उच्छ्वास में हर्षवर्धन की कथा का वर्णन है।

''लोके हि लोहेभ्यः कठिनतराः खलु स्नेहमयाः बन्धनपाशाः''
एक समय रात के चौथे प्रहर में जब पौ फटने को हुई तो हर्ष ने स्वप्न में देखा कि सभी दिशाओं को अपने ज्वालापुञ्ज से पिञ्जरित करती हुई दुर्निवार वनाग्नि से एक शेर जल रहा है और अपने बच्चों को छोड़कर उसी वन की अग्नि में शेरनी छलांग मार कूद रही है। उनके मन में यह विचार आया- 'सचमुच संसार में स्नेह के बन्धनपाश लोहे से भी बढ़कर कठोर होते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णनों से स्पष्ट है कि हर्षवर्धन के मन में यह विचार आया कि सचमुच संसार में स्नेह के बन्धनपाश लोहे से भी बढ़कर कठोर होते हैं। **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत- हर्षचरितम् - शिवनाथ पाण्डेय, पेज 06

79. ''श्रीहीरः सुषुवे जितेन्द्रियचयं मामल्लदेवी च यम्''- इति वार्ता केन सम्बद्धा?
(A) माघेन (B) भारविणा
(C) श्रीहर्षेण (D) कालिदासेन

व्याख्या- श्रीहीरः सुषुवे जितेन्द्रियचयं.....। प्रस्तुत पंक्ति महाकवि श्रीहर्ष प्रणीत महाकाव्य नैषधीयचरितम् के प्रथम सर्ग के अंतिम श्लोक की है। जिसमें श्रीहर्ष अपने माता-पिता (मामल्लदेवी और श्रीहीर) तथा अपने जन्म के वृत्तान्त के साथ नैषधीयचरितम् के प्रथम सर्ग का समापन करते हैं।

श्रीहर्षः- श्रीहर्षं कविराजराजिमुकुटालङ्कारहीरःसुतं
श्रीहीरः सुषुवे जितेन्द्रियचयं मामल्लदेवी च यम् ।
तच्चिन्तामणिमन्त्रचिन्तन्फले शृङ्गारभंग्या महा-
काव्येचारुणि नैषधीयचरिते सर्गोऽयमादिर्गतः।।

अर्थः- कविराज समूह के मुकुट के आभूषण रूप हीरे श्रीहीर तथा मामल्लदेवी ने इन्द्रियों के समूह को जीतने वाले जिस श्रीहर्ष नाम के पुत्र को उत्पन्न किया। उसके चिन्तामणि मन्त्र की उपासना के फलस्वरूप शृङ्गाररस की रचना से मनोहर नैषधीयचरित नामक महाकाव्य में प्रथम सर्ग समाप्त हुआ।

➢ **भारविः-** महाकवि भारवि प्रणीत किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग के अंतिम श्लोक की अंतिम पंक्ति में भारवि कहते हैं-
'दिनकृतमिव लक्ष्मीस्त्वां समभ्येतु भूयः।'
अर्थः- सूर्य की भाँति राज्यलक्ष्मी (कान्ति) फिर से प्राप्त हो। इसमें 'लक्ष्मी' शब्द का प्रयोग हुआ है।

➢ **माघः-** महाकवि माघ प्रणीत शिशुपालवधम् प्रथम सर्ग के अंतिम श्लोक की पंक्ति में माघ कहते हैं-
'तस्मिन्नुत्पतिते पुरः सुरमुनाविन्दोः श्रियं बिभ्रति।'
अर्थः- नारद महामुनि इस प्रकार कहकर आकाश में जाकर चन्द्रमा की शोभा धारण करने लगे।
प्रस्तुत श्लोक में श्री शब्द का प्रयोग हुआ है।

➢ **कालिदासः-** महाकवि कालिदास रघुवंशम् महाकाव्य के प्रथम सर्ग के अंतिम श्लोक में कहते हैं-
निर्दिष्टां कुलपतिना स पर्णशाला मध्यास्य प्रयतपरिग्रहद्वितीयः।
तच्छिष्याध्ययननिवेदितावसानां संविष्टः कुशशयने निशां निनाय।।
अर्थः- अपनी धर्मपत्नी सुदक्षिणा के साथ उस राजा दिलीप ने कुलपति महर्षि वसिष्ठ से बताई गई पर्णशाला में जाकर कुश आसन पर सोते हुए वसिष्ठ के शिष्यों के अध्ययन से सूचित अन्त वाली रात्रि को बिताया।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि श्रीहीरः सुषुवे...। का सम्बन्ध 'श्रीहर्ष' से है। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- नैषधीयचरितम् (1/145)-सुरेन्द्रदेव शास्त्री, पेज 287

80. ''स बाल आसीद् वपुषा चतुर्भुजो मुखेन पूर्णेन्दुनिभस्त्रिलोचनः।'' इति शिशुपालवधस्य पद्यांशः केन सम्बद्धः?
(A) शिशुपालेन (B) श्रीकृष्णेन
(C) नारदेन (D) रावणेन

व्याख्या- प्रस्तुत पद्यांश में नारदमुनि श्रीकृष्ण को शिशुपाल के विषय में बताते हुए कहते हैं कि-

**''स बाल आसीद्वपुषा चतुर्भुजो मुखेन पूर्णेन्दुनिभस्त्रिलोचनः।
युवा कराक्रान्तमहीभृदुच्चकैरसंशयं सम्प्रति तेजसा रविः।।''**
(शिशु.1/70)

अर्थः- यह शिशुपाल बाल्यावस्था में ही चार भुजा वाला अर्थात् विष्णु के सदृश था और मुख से पूर्ण चन्द्रमा के समान था अतएव तीन नेत्र वाले शंकर जी की तरह था। अब इस समय तारुण्यावस्था में और राजाओं से कर लेने वाला हुआ है। सूर्य पक्ष में (कर किरणों से आक्रांत व्याप्त है महीभुज पर्वत जिसके) ऐसा यह निःसंशय सूर्य है।

* प्रस्तुत श्लोक में कवि श्रीकृष्ण का निरूपण करते हुए कहते हैं-
''स तप्तकार्तस्वरभास्वराम्बरः कठोरताराधिपदलाञ्छनच्छविः।
विदिद्युते वाडवजातवेदसःशिखाभिराश्लिष्ट इवाम्भसां निधिः''
।।20।।

अर्थः- पीताम्बर धारण किये श्यामवर्ण श्रीकृष्ण वडवाग्नि की ज्वाला से युक्त समुद्र की सी शोभा को प्राप्त हुए।

* प्रस्तुत पद्य में कवि नारद की तुलना शरद्कालीन मेघ से करते हुए कहते हैं-

''विहङ्गराजाङ्गरुहैरिवायतैर्हिरण्मयोर्वीरुहवल्लितन्तुभिः।
कृतोपवीतं हिमशुभ्रमुच्चकैर्घनं घनान्ते तडितां गणैरिव।।7।।''

अर्थः- सुवर्ण के यज्ञोपवीत को धारण करने वाले नारद बिजली की रेखा से युक्त शरत् कालीन मेघ की शोभा को प्राप्त हुए।

* प्रस्तुत श्लोक में नारद रावण द्वारा स्वर्ग की, की गई दुर्दशा का वर्णन करते हुए कहते हैं-

''पुरीमवस्कन्द लुनीहि नन्दनं मुषाण रत्नानि हरामराङ्गनाः।
विगृह्य चक्रे नमुचिद्विषा बली य इत्थमस्वास्थ्यमहर्दिवं दिवः।।51।।''

अर्थः- रावण ने इन्द्र के साथ विरोध कर अमरावती पर बार-बार चढ़ाई की नन्दनवन को तहस-नहस कर डाला। रत्नों को चुराया। अप्सराओं का हरण किया। इस प्रकार प्रतिदिन स्वर्ग में भी अशान्ति मचाए रहा करता था।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि प्रश्न में दिये गये पद्यांश 'स बाल आसीद्वपुषा...।'- का सम्बन्ध शिशुपाल से है। **अतः विकल्प A सही है।**

स्रोत- शिशुपालवधम् (1/70) - तारिणीश झा, पेज 146

81. ''वैदेहिबन्धोर्हृदयं विदद्रे'' रघुवंशस्य अस्मिन् पद्यांशे 'वैदेहिबन्धुः' भवति-

(A) लक्ष्मणः (B) भरतः
(C) रामः (D) रघुः

व्याख्या- रघुवंशम् जो कि कविकुलगुरु कालिदासकृत सुप्रसिद्ध 19 सर्गों का महाकाव्य है, इसके चौदहवें सर्ग में श्रीराम अपने भद्रमुख नामक गुप्तचर से यह पूँछते हैं कि प्रजा मेरे विषय में क्या कहती है? तो पहले तो वह चुप रहा किन्तु राम के आग्रहपूर्वक पूँछे जाने पर उसने सीता सम्बन्धित लोकापवाद की बात बताई जिससे श्रीराम का हृदय उसी तरह फट गया जैसे घन की चोट से तपाया हुआ लोहा फट जाता है-

कलत्रनिन्दागुरुणा किलैवमभ्याहतं कीर्तिविपर्ययेण।
अयोघनेनाय इवाभितप्तं वैदेहिबन्धोर्हृदयं विदद्रे।। 14.33।।

टीकाकार मल्लिनाथ ने वैदिहिबन्धोः का अर्थ 'वैदेहिबल्लभस्य' अर्थ किया है। वैदेही अर्थात् सीता का जो बन्धु अर्थात् सुहृत् है वह राम।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'वैदेहिबन्धु' का अर्थ 'राम' है। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- रघुवंशम् (14/33) - हरगोविन्द मिश्र, पेज 354

82. काव्यमीमांसोक्तकथानुसारं पुरा पुत्रीयन्ती सरस्वती कुत्र तपस्यामास?

(A) विन्ध्यगिरौ (B) तुषारगिरौ
(C) सह्यगिरौ (D) मेरुगिरौ

व्याख्या- श्री राजशेखर ने अपने ग्रन्थ काव्यमीमांसा के तृतीय अध्याय- 'काव्यपुरुषोत्पत्तिः' में सरस्वती-पुत्र, काव्य-पुरुष की उत्पत्ति का वर्णन करते हुए कहा है- एक बार शिष्यों ने बृहस्पति से कथाप्रसंग में पूछा कि आपके गुरु सरस्वती-पुत्र, काव्यपुरुष कैसे हैं। तब बृहस्पति ने उनसे कहा- (''पुरा पुत्रीयन्ती सरस्वती तुषारगिरौ तपस्यामास। प्रीतेन मनसा तां विरिञ्चिः प्रोवाच-पुत्रं ते सृजामि।'') प्राचीन काल में सरस्वती ने पुत्र की इच्छा से हिमालय (तुषारगिरौ) पर तपस्या की। प्रसन्नमना ब्रह्मा ने उनसे कहा- तेरे लिए मैं पुत्र की रचना करता हूँ। तदनन्तर देवी ने काव्य-पुरुष को उत्पन्न किया।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि देवी सरस्वती ने पुत्रप्राप्ति की इच्छा से 'तुषारगिरि' (हिमालय) पर तपस्या की। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- हिन्दी काव्यमीमांसा (काव्यपुरुषोत्पत्ति)-गंगासागर राय, पेज 12

83. जगन्नाथमते काव्यं कतिविधं भवति-

(A) द्विविधम् (B) त्रिविधम्
(C) चतुर्विधम् (D) पञ्चविधम्

व्याख्या- पण्डितराज जगन्नाथ अपने काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ रसगङ्गाधर के प्रथम आनन में काव्य के चार भेदों को बताते हुए कहते हैं- ''तच्चोत्तमोत्तमोत्तममध्यमाधमभेदाच्चतुर्धा''।

1-उत्तमोत्तम, 2-उत्तम, 3- मध्यम और 4- अधम

1- **उत्तमोत्तम-** जिसमें शब्द और अर्थ (वाच्य, लक्ष्य, व्यङ्ग्य) दोनों अपने को गौण (अप्रधान) बनाकर किसी चमत्कारजनक अर्थ को अभिव्यक्त करें, व्यञ्जनावृत्ति द्वारा समझावें उसे उत्तमोत्तम काव्य कहते हैं। ''शब्दार्थौ यत्र गुणीभावितात्मानौ कमप्यर्थमभिव्यङ्क्तस्तदाद्यम्।।''

2- **उत्तम-** जिस काव्य में व्यंग्य अप्रधान होकर ही चमत्कार का कारण हो, वह द्वितीय 'उत्तम' नामक काव्य कहलाता है।
''यत्र व्यङ्ग्यमप्रधानमेव सच्चमत्कारकारणं तद् द्वितीयम्।''

3- **मध्यम-** जहाँ वाच्य अर्थ का चमत्कार व्यंग्य अर्थ के चमत्कार के अधिकरण में न रहे अर्थात् जिस काव्य में व्यंग्य अर्थ का चमत्कार लघु अंश में रहकर भी व्यापक वाच्य अर्थ के चमत्कार में अन्तर्युक्त हो जाने से स्पष्टतया अनुभूत न हो, वह मध्यम नामक काव्य कहलाता है।

''यत्र व्यङ्ग्यचमत्कारासमानाधिकरणो वाच्य चमत्कारस्ततृतीयम्।''

4- अधम- जिस काव्य में वाच्य अर्थ के चमत्कार से परिपोषित होकर शब्द का चमत्कार प्रधान हो उसको अधम काव्य कहते हैं। इस काव्य में भी कुछ न कुछ व्यंग्य अवश्य रहता है, परन्तु वह रहकर भी चमत्कार जनक न होने से अविवक्षित रहता है अतः उसकी प्रधानता नहीं रहती ऐसा समझना चाहिए।

''यत्रार्थ चमत्कृत्युपस्कृता शब्दचमत्कृतिः प्रधानं, तदधमं चतुर्थम्''।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि पण्डितराज जगन्नाथ ने काव्य के चार प्रकारों का उल्लेख किया। (उत्तमोत्तम, उत्तम, मध्यम और अधम) अतः दिये गये विकल्पों में **विकल्प C सही है।**

स्रोत- रसगङ्गाधर - मदनमोहन झा, पेज 37

84. ''त्रयः समुदिताः, न तु व्यस्ताः''- इति काव्यप्रकाशे प्रथमे उल्लासे किम् अधिकृत्य उल्लिखितम्?

(A) काव्यलक्षणम् (B) काव्यभेदम्
(C) काव्य-हेतुम् (D) काव्यफलम्

व्याख्या- आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश के प्रथम उल्लास में काव्यहेतु को परिभाषित करते हुए कहते हैं कि शक्ति, लोकव्यवहार तथा काव्यनिर्माण का अभ्यास ये तीनों मिलकर काव्य उद्भव के कारण हैं न कि अलग-अलग। उसी प्रंसग में काव्यहेतु को परिभाषित करते हैं-

➢ **काव्यहेतु-** शक्तिर्निपुणता लोकशास्त्रकाव्याद्यवेक्षणात्।
काव्यज्ञशिक्षयाभ्यास इतिहेतुस्तदुद्भवे।।

कवि में रहने वाली उसकी स्वाभाविक प्रतिभारूप (1) शक्ति, (2)-लोक (व्यवहार) शास्त्र तथा काव्य आदि के पर्यालोचनसे उत्पन्न निपुणता और (3)- काव्य (की रचनाशैली तथा आलोचनापद्धति) को जानने वाले (गुरु) की शिक्षा के अनुसार (काव्यनिर्माण का) अभ्यास ये (तीनों मिलकर समष्टि रूप से उस (काव्य) के विकास (उद्भव) के कारण हैं। **(त्रयः समुदिताः, न तु व्यस्ताः, तस्य काव्यस्योद्भवे निर्माणे समुल्लासे च हेतुर्न तु हेतवः)॥**

यहाँ ग्रन्थकार ने शक्ति, लोकव्यवहार, शास्त्र एवं काव्य आदि के पर्यालोचन से उत्पन्न व्युत्पत्ति तथा काव्य की रचनाशैली और गुण-दोषों के जानने वाले विद्वानों की शिक्षा के अनुसार अभ्यास इन तीनों की समष्टि को काव्य-निर्माण की योग्यता प्राप्त करने का कारण माना है।

काव्यलक्षण- दोषों से रहित, गुण-युक्त और (साधारणतः अंलकार सहित) परन्तु कहीं-कहीं अलङ्कारः रहित शब्द और अर्थ (दोनों की समष्टि) काव्य कहलाती है। **(तद्दोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि)।** 'क्वापि' इस पद से (ग्रन्थकार) यह कहते हैं कि (साधारणतः) सब जगह अलङ्कार सहित (शब्द तथा अर्थ होने चाहिए) परन्तु कहीं (जहाँ व्यङ्ग्य या रसादि की स्थिति विद्यमान हो वहाँ) स्पष्ट रूप अलङ्कार की सत्ता न होने पर भी काव्यत्व की हानि नहीं होती है। **(सर्वत्रसालङ्कारौ क्वाचित् स्फुटालंकारविरहेऽपि काव्यत्वहानिः)**

काव्यभेदम्:- काव्यप्रकाशकार काव्य के तीन मुख्य भेदों - (1) ध्वनि काव्य (2) गुणीभूतव्यङ्ग्य-काव्य और (3) चित्रकाव्य का उल्लेख करते हैं-

1- ध्वनि काव्य- ''इदमुत्तममतिशयिनि व्यङ्गये वाच्याद् ध्वनिर्बुधैः कथितः।।''

वाच्य (अर्थ) की अपेक्षा व्यङ्ग्य (अर्थ) के अधिक चमत्कार युक्त होने पर (इदं) काव्य उत्तम होता है, और विद्वानों ने उसको 'ध्वनि' (काव्य नाम से) कहा है।

2- गुणीभूतव्यङ्ग्य काव्य- ''अतादृशि गुणीभूतव्यङ्ग्यं व्यङ्गये तु मध्यमम्।।''

उस प्रकार के (अर्थात् वाच्य से अधिक चमत्कारी) व्यङ्ग्य (अर्थ) न होने पर गुणीभूत व्यङ्ग्य (नामक दूसरे प्रकार का काव्य) होता है जो मध्यम काव्य कहा जाता है।

3- चित्र-काव्य- ''शब्दचित्रं वाच्यचित्रमव्यङ्ग्यं त्ववरं स्मृतम्।।''

व्यङ्ग्य (अर्थ) से रहित 'शब्दचित्र' तथा अर्थचित्र (दो प्रकार) अधम (काव्य) कहा गया है।

चित्रमिति गुणालङ्कारयुक्तम्। अव्यङ्गमितिस्फुटप्रतीयमानार्थरहितम्। अवरम् अधमम्।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'त्रयः समुदिताः न तु व्यस्ताः' यह काव्यप्रकाश के प्रथम उल्लास में काव्यहेतु के सन्दर्भ में आया है। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- काव्यप्रकाश (1.3)-सीताराम दोतोलिया, पेज 41-43

85. काव्यप्रकाशे उपमानोपमेययोः अभेदे अयमलङ्कारः भवति-

(A) रूपकम् (B) उपमा
(C) उत्प्रेक्षा (D) श्लेषः

व्याख्या- आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश के नवमोल्लास में शब्दालङ्कार रूप दसवें में अर्थालङ्कारों की चर्चा करते हैं, जिसमें 5 शब्दालंकार, 61 अर्थालङ्कार और 1 उभयालङ्कार कुल मिलाकर 67 प्रकार के अलङ्कारों का निरूपण किया गया है।

1- उपमा अलङ्कार- ''साधर्म्यमुपमा भेदे।''

(उपमान तथा उपमेय का) भेद होने पर (उनके) साधर्म्य (का वर्णन) उपमा (कहलाता) है। यह उपमा दो प्रकार की होती है- 1-

पूर्णोपमा और 2- लुप्तोपमा (पूर्णा लुप्ता च)। उपमान, उपमेय, साधारणधर्म और उपमावाचक (इव आदि पद इन चारों) का ग्रहण होने पर पूर्णा (उपमा) तथा (उन चारों में से) एक या दो या तीन का लोप होने पर लुप्ता (उपमा) होती है।

2- रूपक अलङ्कार- ''तद्रूपकमभेदो य उपमानोपमेययोः।'' उपमान और उपमेय का (जिनका भेद प्रसिद्ध है उनका सादृश्यातिशयवश) जो अभेद (वर्णन) है वह रूपक (अलङ्कार) है। **यथा- ज्योत्स्नाभस्मच्छुरणधवला बिभ्रती तारकास्थी-न्यन्तर्द्धानव्यसनरसिका रात्रिकापालिकीयम्।**

द्वीपाद् द्वीपं भ्रमति दधती चन्द्रमुद्राकपाले
न्यस्तं सिद्धाञ्जनपरिमलं लाञ्छनस्यच्छलेन॥

इस उदाहरण में रात्रि के ऊपर कापालिकी का आरोप किया गया है। यही प्रधान रूपक है।

3- उत्प्रेक्षा अलङ्कार- ''सम्भावनमथोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य समेन यत्।''

प्रकृत (अर्थात् वर्ण्य उपमेय) की सम (अर्थात् उपमान) के साथ सम्भावना (अर्थात् उत्कटकोटिक सन्देह) उत्प्रेक्षा कहलाती है। **यथा- लिम्पतीव तमोऽङ्गानि वर्षतीवाञ्जनं नभः।**

असत्पुरुषसेवेव दृष्टिर्विफलतां गता॥

(वर्षाकाल की रात्रि के समय) अन्धकार अङ्गों को लीप-सा रहा है, आकाश काजल की वृष्टि-सी कर रहा है और दुष्ट पुरुष की सेवा के समान दृष्टि विफल-सी हो गई है।

4. श्लेष अलङ्कार- ''वाच्यभेदेन भिन्ना यद् युगपद्भाषणस्पृशः।

श्लिष्यन्ति शब्दाः, श्लेषोऽसावक्षरादिभिरष्टधा॥''

अर्थभेद से भिन्न-भिन्न शब्द जब एक साथ उच्चारण के विषय होने से एक रूप (श्लिष्ट) प्रतीत होते हैं वह श्लेष अलङ्कार है तथा वह अक्षर आदि भेदों से आठ प्रकार का होता है।

1-वर्णश्लेष, 2- पदश्लेष, 3- लिङ्गश्लेष, 4-वचनश्लेष, 5-भाषाश्लेष, 6- प्रकृतिश्लेष, 7- प्रत्ययश्लेष, 8- विभक्तिश्लेष।

उदाहरण- पृथुकार्त्तस्वरपात्रं भूषितनिःशेषपरिजनं देव।

विलसत्करेणुगहनं सम्प्रति सममावयोः सदनम्॥

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि उपमान और उपमेय का सादृश्यातिशयवश जो अभेद वर्णन होता है वहाँ रूपक अलङ्कार होता है। **अतः विकल्प A सही है।**

स्रोत- काव्यप्रकाश (सू. 139)-सीताराम दोतोलिया, पेज 445

86. आसु का नाट्यवृत्तिर्नभवति-

(A) अभिधा (B) आरभटी
(C) सात्त्वती (D) भारती

व्याख्या- शब्द अपने अर्थ को प्रकट कैसे करता है? इस सन्दर्भ में 'शब्दब्रह्म' की स्थापना करने वाले वाक्यपदीयकार आचार्य भर्तृहरि ने अत्यन्त वैज्ञानिक विवेचन करते हुए बताया कि शब्द के भीतर अर्थ प्रकाशन की एक विलक्षण शक्ति निहित होती है। उसी शक्ति से वह अपने अर्थ का प्रकाशन करता है। ये शक्तियाँ तीन प्रकार की हैं- अभिधा, लक्षणा, व्यञ्जना।

अभिधा- अभिधा से वाच्य अथवा मुख्यार्थ का प्रकाशन करने वाला शब्द 'वाचक' कहा जाता है। जैसे- गौः शब्द। इसका एक निश्चित अर्थ है- सास्नादिमान् पशुविशेष।

लक्षणा- लक्षणा शक्ति से लक्ष्य अर्थ को बताने वाला शब्द 'लाक्षणिक' कहा जाता है। जैसे- संसद ने सर्वसम्मति से यह प्रस्ताव पास कर दिया। यहाँ पर संसद अपने मुख्यार्थ (संसद-भवन) को छोड़कर सांसदभूत सदस्यों का बोध करायेगी। मुख्यार्थ से जुड़े इसी अर्थ को लक्ष्यार्थ कहते हैं।

व्यञ्जना- व्यङ्ग्य अर्थ को प्रकाशित करने वाला शब्द 'व्यञ्जक' कहा जाता है। जैसे- गतोऽस्तमर्कः (सूर्यास्त हो गया) कहने पर सुनने वाले विविधश्रोता विविध अर्थों की प्रतीति करते हैं। जैसे- चोर को चोरी करने का, प्रणयीयुगल को संकेत स्थान पर पहुँचने का, बच्चे को दादी से कहानी सुनने का अभिप्राय अपने-अपने वैशिष्ट्य के कारण प्रतीत होता है। इन अतिरिक्त अभिप्रायों को ही व्यङ्ग्यार्थ कहते हैं।

वृत्ति

साहित्यदर्पणकार श्री विश्वनाथ कविराज ने नाटक की चार वृत्तियों का वर्णन अपने ग्रन्थ साहित्यदर्पण में किया है।

''शृंगारे कैशिकी, वीरे सात्वत्यारभटी पुनः।
रसे रौद्रे च बीभत्से, वृत्तिः सर्वत्र भारती।।

शृंगार रस में विशेषतः कैशिकी वृत्ति और वीर, रौद्र तथा वीभत्स रस में सात्वती तथा आरभटी वृत्ति उपयुक्त है। किन्तु भारती वृत्ति सर्वत्र उपयुक्त हो सकती है। ये चार वृत्तियाँ सम्पूर्ण नाटक की उपजीव्य हैं। इस प्रकार ये चार नाट्य वृत्तियाँ- (कैशिकी, सात्वती, आरभटी और भारती) आचार्य विश्वनाथ ने बताईं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि दिये गये विकल्पों में तीन-आरभटी, सात्वती और भारती ये नाट्य वृत्तियाँ हैं और अभिधा शब्दशक्ति के अन्तर्गत आती हैं। **अतः विकल्प A सही है।**

स्रोत- साहित्यदर्पण (6/122) - शालिग्रामशास्त्री, पेज 199

87. ''भम धम्मिअ-'' इत्यादिश्लोकः ध्वन्यालोके प्रथमे उद्द्योते अस्य उदाहरणं भवति-

(A) वाच्ये प्रतिषेधे विधिरूपस्य

(B) वाच्ये विधिरूपे प्रतिषेधरूपस्य

(C) वाच्ये विधिरूपेऽनुभयरूपस्य

(D) वाच्ये प्रतिषेधेऽनुभयरूपस्य

व्याख्या- आचार्य आनन्दवर्धन ने ध्वन्यालोक के प्रथम उद्द्योत में प्रतीयमान अर्थ के वर्णन में मुख्यतः 5 प्रकार के प्रतीयमान अर्थ के भेद बताये हैं-

1- वाच्य के विधिरूप होने पर प्रतीयमान का निषेधरूप होना। जैसे- भम धम्मिअ वीसत्थो सो सुणओ अज्ज मारिओ देण।

गोलाणइकच्छकुडंगवासिणा दरिअसीहेण।।

(भ्रम धार्मिक विस्रब्धः स शुनकोऽद्य मारितस्तेन।

गोदानदीकच्छकुञ्जवासिना दृप्तसिंहेन।।)

पण्डित जी महाराज! गोदावरी के किनारे कुञ्ज में रहने वाले मदमत्त सिंह ने आज उस कुत्ते को मार डाला है, अब आप निश्चिन्त होकर घूमिये।

यहाँ इस श्लोक का वाच्यार्थ तो विधिरूप है कि 'निश्चिन्त होकर घूमो।'' किन्तु प्रतीयमान अर्थ वस्तुतः निषेधरूप है कि इस स्थान पर कभी मत आइयेगा, नहीं तो कुत्ते की जगह सिंह से भेंट होगी।

2- प्रतिषेधरूप वाच्यार्थ होने पर प्रतीयमान का विधिरूप होना। जैसे- श्वश्रूरत्र निमज्जति अत्राहं दिवसकं प्रलोकय।

मा पथिक रात्र्यन्धक शय्यायां मम निमंक्ष्यसि।।

हे पथिक! दिन में अच्छी तरह देख लो, यहाँ सासजी सोती हैं और यहाँ मैं सोती हूँ रात में रतौंधीग्रस्त होकर कहीं मेरी खाट पर न गिर पड़ना।

3- वाच्य विधिरूप होने पर प्रतीयमानार्थ का अनुभयरूप होना, अर्थात् विधि और निषेध दोनों से भिन्न होना। जैसे-

व्रज ममैवैकस्या भवतु निःश्वास रोदितव्यानि।

मा तवापि तया विना दाक्षिण्यहतस्य जनिषत।।

तुम जाओ, मैं अकेली ही इन निःश्वास और रोने को भोगूँ (सो अच्छा है) कहीं दाक्षिण्य के चक्कर में पड़कर, उसके बिना तुम्हें भी यह सब न भोगना पड़े।

4- प्रतिषेधरूप वाच्य के होने पर प्रतीयमान का अनुभयरूप होना। जैसे- प्रार्थये तावत्प्रसीद निवर्तस्व मुखशशिज्योत्स्ना। विलुप्ततमोनिवहे। अभिसारिकाणां विघ्नं करोएयन्यासामपि हताशे।

5.वाच्य और प्रतीयमान का विषय भेद होने से व्यङ्ग्यार्थ का वाच्यार्थ से अत्यन्त भिन्न होना। जैसे-

कस्य वा न भवति रोषो दृष्ट्वा प्रियायाः सव्रणमधरम्।

सभ्रमरपद्माघ्रायिणि वारितवामे सहस्वेदानीम्।।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है 'भम धम्मिअ..' इत्यादि श्लोक वाच्य के विधिरूप होने पर प्रतीयमानार्थ के निषेधरूप होने के उदाहरण रूप में ध्वन्यालोककार के द्वारा उद्धृत किया गया है। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- ध्वन्यालोक (1/4)- आचार्य विश्वेश्वर, पेज 13

88. दशरूपकतः रिक्तस्थानं पूरयत-''आनन्दनिस्यन्दिषु रूपकेषु व्युत्पत्तिमात्रं फलमल्पबुद्धिः। योऽपीतिहासादिवदाह साधुस्तस्मै नमः...॥

(A) काव्यपराङ्मुखाय (B) नाट्यपराङ्मुखाय

(C) शास्त्रपराङ्मुखाय (D) स्वादुपराङ्मुखाय

व्याख्या- प्राचीन भारतीय परंपरा के अनुसार विघ्नों के विनाश तथा उससे होने वाली ग्रन्थ की समाप्ति के लिए दशरूपककार आचार्य धनञ्जय ने श्लोकों - (1) नमस्तस्यै गणेशाय यत्कण्ठः...।। तथा (2) दशरूपानुकारेण यस्य माद्यन्ति.....। से अपने इष्टदेव गणेश एवं विष्णु को नमस्कार करते हुए मङ्गलाचरण किया। दशरूपक के इस प्रथम प्रकाश में मङ्गल से आरंभ करके ग्रन्थ का प्रयोजन (फल) बताते हुए कहते हैं-

आनन्दनिस्यन्दिषु रूपकेषु व्युत्पत्तिमात्रं फलमल्पबुद्धिः।
योऽपीतिहासादिवदाह साधुस्तस्मै नमः स्वादुपराङ्मुखाय॥6॥

जो अल्पबुद्धि वाले सज्जन (व्यक्ति) आनन्द को प्रवाहित करने वाले रूपकों के (अध्ययन या उनके अभिनय के दर्शन) का फल भी, इतिहास आदि (ग्रन्थों के अध्ययन) के समान, एकमात्र (धर्म आदि का) ज्ञान ही बतलाते हैं, रसास्वाद से विमुख उन जन को नमस्कार है (अर्थात् ऐसे लोग प्रणाम करने लायक हैं)।।

उपर्युक्त श्लोक के द्वारा धनञ्जय ने यह दिखलाया है कि-(सहृदय व्यक्तियों के द्वारा) स्वयं अनुभव किया जाने वाला, परमानन्द स्वरूप, रसास्वादन दशरूपकों का फल है न कि इतिहास आदि की तरह केवल त्रिवर्ग (धर्म, अर्थ तथा काम) आदि का ज्ञान। (रसास्वाद से विमुख जन को नमस्कार है''- इस कथन में) 'नमः' यह कथन उपहासपूर्वक कहा गया हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण को देखने से स्पष्ट हो जाता है कि दिये गये रिक्त स्थान पर स्वादुपराङ्मुखाय होगा।

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- दशरूपक (1/5) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज 05

89. ''कटुकौषधवच्छास्त्रमविद्याव्याधिनाशनम्।'' इत्युक्तिः एषु कस्मिन् अलङ्कारग्रन्थेऽस्ति-
(A) साहित्यदर्पणे (B) वक्रोक्तिजीविते
(C) रसगङ्गाधरे (D) काव्यप्रकाशे

व्याख्या- काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ वक्रोक्तिजीवितम् राजानक कुन्तक की एकमात्र रचना है। इसमें चार उन्मेष हैं।
चतुर्वर्गफलास्वादमप्यतिक्रम्य तद्विदाम्' इस प्रथमोन्मेष की पाँचवीं कारिका के व्याख्यान में यह उक्ति आचार्य कुन्तक द्वारा कही गयी है-

'कटुकौषधवच्छास्त्रमविद्याव्याधिनाशनम्।' (17)
अर्थात् शास्त्र कड़वी ओषधी के समान अविद्यारूपी व्याधि का नाश करने वाला होता है।

'आह्लाद्यमृतवत्काव्यमविवेकगदापहम्' (1.7)
काव्य आह्लादि अमृतरस के समान अविवेक रूपी रोग का विनाश करता है।

➢ आचार्य कुन्तक वक्रोक्तिजीवितम् के प्रथम उन्मेष की सातवीं कारिका में काव्य का लक्षण करते हुए कहते हैं-
शब्दार्थौ सहितौ वक्रकविव्यापारशालिनि। बन्धे व्यवस्थितौ काव्यं तद्विदाह्लादकारिणि॥7॥
अर्थात् शास्त्रादि प्रसिद्ध शब्द तथा अर्थ के उपनिबन्धन से भिन्न कविव्यापार से शोभित काव्यतत्त्वज्ञों को आनन्दित करने वाले काव्य में विशेष रूप से स्थित सहभाव से युक्त शब्द तथा अर्थ दोनों मिलकर काव्य होता है।

➢ काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ साहित्यदर्पण आचार्य विश्वनाथ की रचना है जिसमें दस परिच्छेद हैं। काव्यप्रयोजन (पुरुषार्थचतुष्टय) के सन्दर्भ में कहते हैं- कटुकौषधोपशमनीयस्य रोगस्य सितशर्करारोगशमनीयत्वे कस्य वा रोगिणः सितशर्कराप्रवृत्तिः साधीयसी न स्यात्?'
अर्थात् जब कड़वी कसैली औषध से होने वाली रोगशान्ति मीठी खांड (शर्करा) से ही हो सकती हो, तब भला कौन ऐसा होगा जो अपने ताप शमन के लिए मीठी खांड (काव्य) के प्रति लालायित न हो उठे?

➢ **आचार्य विश्वनाथ का काव्य प्रयोजन है-**
चतुर्वर्गफलप्राप्तिः सुखादल्पधियामपि।
काव्यादेव यतस्तेन तत्स्वरूपं निरूप्यते।। (सा.द.1.2)
अर्थात् काव्य एक ऐसी वस्तु है जिससे अल्पबुद्धि मानव को, बिना किसी कष्टसाधना के, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष रूप पुरुषार्थचतुष्टय की प्राप्ति हुआ करती है।

➢ आचार्य मम्मट द्वारा विरचित काव्यप्रकाश भी काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ है। जिसमें दस उल्लास हैं। आचार्य मम्मट द्वारा प्रतिपादित काव्यप्रयोजन है-

शक्तिर्निपुणता लोकशास्त्रकाव्याद्यवेक्षणात्।
काव्यज्ञशिक्षयाभ्यास इति हेतुस्तदुद्भवे॥
(काव्यप्रकाश 1.3)
कवि में रहने वाली उसकी स्वाभाविक प्रतिभारूप शक्ति, लोकव्यवहार, शास्त्र तथा काव्य आदि के पर्यालोचन से उत्पन्न निपुणता और काव्य को शिक्षा को जानने वाले अभ्यास ये तीनों मिलकर उस काव्य के उद्भव के कारण हैं।
पण्डितराज जगन्नाथ द्वारा रचित रसगंगाधर में चार आनन हैं। पण्डितराज जगन्नाथ के अनुसार काव्य का लक्षण है -

रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्। (का॰1)
रमणीय अर्थ का प्रतिपादन करने वाला शब्द 'काव्य' है।
स्पष्टीकरण- 'कटुकौषधवच्छास्त्रमविद्याव्याधिनाशनम्' यह पंक्ति आचार्य कुन्तक द्वारा रचित वक्रोक्तिजीवितम् नामक ग्रन्थ से है। **अतः विकल्प B सही है।**
स्रोत- वक्रोक्तिजीवितम् (1/7) - राधेश्याम मिश्र, पेज 15

90. एषु किं काण्डं रामायणे नास्ति?
(A) किष्किन्धाकाण्डम् (B) सीताकाण्डम्
(C) बालकाण्डम् (D) युद्धकाण्डम्

व्याख्या- रामायण महर्षि वाल्मीकि की कृति है, इसमें 24000 श्लोक हैं अतः इसे 'चतुर्विंशतिसाहस्री संहिता' भी कहते हैं। रामायण में मुख्यतः अनुष्टुप् छन्द का प्रयोग हुआ है। वाल्मीकिरामायण को आदिकाव्य की संज्ञा दी जाती है, इसे 'आर्षकाव्य' भी कहा जाता है। वाल्मीकिरामायण में कुल सात काण्ड तथा 645 सर्ग हैं जिनका विवरण निम्न है-

काण्ड का नाम तथा सर्ग संख्या-

काण्ड का नाम	सर्ग संख्या
1- बालकाण्ड	77
2- अयोध्याकाण्ड	119
3- अरण्यकाण्ड	75
4- किष्किन्धाकाण्ड	67
5- सुन्दरकाण्ड	68
6- युद्धकाण्ड	128
7- उत्तरकाण्ड	111
कुल सर्ग	645

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि दिये गये विकल्पों में सीताकाण्ड रामायण में नहीं है। **अतः विकल्प B सही है।**
स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज 122

91. अस्य महापुराणेषु गणना नास्ति?

(A) पद्मपुराणस्य (B) ब्रह्मपुराणस्य
(C) विष्णुपुराणस्य (D) आदित्यपुराणस्य

व्याख्या- पुराणों का विकास दो रूपों में हुआ है महापुराण तथा उपपुराण। महापुराण प्राचीनतर हैं, जिनकी संख्या अठारह है। इस विषय में एक संग्रहश्लोक मिलता है-

मद्वयं भद्वयं चैव ब्रत्रयं वचतुष्टयम्।
अनापलिंगकूस्कानि पुराणानि पृथक् पृथक्।।

अर्थात् ''म'' से दो पुराण मत्स्य तथा मार्कण्डेय, भ से दो पुराण- भविष्य तथा भागवत, ब्र-से तीन पुराण- ब्रह्म, ब्रह्माण्ड, तथा ब्रह्मवैवर्त, व से चार पुराण- विष्णु, वामन, वराह तथा वायु। पुनः अ से अग्नि, ना से नारद, प से पद्म, लिं से लिङ्ग, ग से गरुड, क से कूर्म और स्क स्कन्द ये 18 पुराण पृथक् - पृथक् हैं।

*** उपपुराण-** उपपुराणों की संख्या 18 है- सनत्कुमार, नारसिंह, स्कान्द (या शिव), शिव-धर्म, आश्चर्य, नारदीय, कपिल, औशनस, वारुण, कल्कि, कालिका, माहेश्वर, साम्ब, सौर (सूर्य), पाराशर, मारीच, भार्गव तथा नन्द।

महापुराण	उपपुराण
1. ब्रह्मपुराण	1. सनत्कुमार
2. पद्मपुराण	2. नारसिंह
3. विष्णुपुराण	3. स्कान्द या शिव
4. वायुपुराण	4. शिवधर्म
5. भागवतपुराण	5. आश्चर्य
6. नारदपुराण	6. नारदीय
7. मार्कण्डेयपुराण	7. कपिल/कापिल
8. अग्निपुराण	8. औशनस
9. भविष्यपुराण	9. वारुण
10. ब्रह्मवैवर्तपुराण	10. कल्कि
11. लिङ्गपुराण	11. कालिका
12. वराहपुराण	12. माहेश्वर
13. स्कन्दपुराण	13. साम्ब
14. वामनपुराण	14. सौर (सूर्य)
15. कूर्मपुराण	15. पाराशर
16. मत्स्यपुराण	16. मारीच
17. गरुडपुराण	17. भार्गव
18. ब्रह्माण्डपुराण	18. नन्द

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि पुराणों में आदित्य पुराण की गणना नहीं होती है। **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा, पेज 176

92. एषु किम् उपपुराणं न भवति?

(A) कूर्मपुराणम् (B) साम्बपुराणम्
(C) नृसिंहपुराणम् (D) एकाम्रपुराणम्

व्याख्या- पुराण- इतिहास तथा पुराण को प्राचीन साहित्य में समान स्तर पर रखा गया है। वैदिक साहित्य के अतिरिक्त महाभारत में भी कहा गया है- 'इतिहासपुराणाभ्यां वेदं समुपबृंहयेत्।' अर्थात् वेद के अर्थ का पल्लवन इतिहास और पुराण के द्वारा करना चाहिये।

➢ **पुराण का लक्षणः-**

सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च।
वंशानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम्।।

सर्ग– विश्व की सृष्टि की प्रक्रिया
प्रतिसर्ग– प्रलय तथा पुनः सृष्टि का वर्णन
वंश– देवताओं और ऋषियों के वंशों का वर्णन
मन्वन्तर– प्रत्येक मनु का काल और उस काल की प्रमुख घटनाओं का निरूपण
वंशानुचरित– सूर्यवंश और चन्द्रवंश में उत्पन्न राजाओं का जीवन चरित

पुराणों की संख्या– पुराणों का विभाजन दो रूप से हुआ है- पुराण और महापुराण। महापुराण और उपपुराणों की संख्या अठारह है।

महापुराण- 1- ब्रह्मपुराण (आदिपुराण), 2- पद्मपुराण, 3- विष्णुपुराण, 4- वायुपुराण, 5- भागवतपुराण, 6- नारद (बृहन्नारदीय) पुराण, 7- मार्कण्डेयपुराण, 8- अग्निपुराण, 9- भविष्यपुराण, 10- ब्रह्मवैवर्तपुराण, 11- लिङ्गपुराण, 12- वराहपुराण, 13- स्कन्दपुराण, 14- वामनपुराण, 15-कूर्मपुराण 16- मत्स्यपुराण, 17- गरुडपुराण, 18- ब्रह्माण्डपुराण।

उपपुराण- 1- सनत्कुमार, 2- नृसिंह (नारसिंह), 3- स्कान्द (या शिव), 4- शिवधर्म, 5- आश्चर्य, 6- नारदीय, 7- कपिल, 8- औशनस, 9- वरुण, 10- कल्कि, 11- कालिका, 12-माहेश्वर, 13- साम्ब, 14- सौर (सूर्य), 15- पाराशर, 16- मारीच, 17- भार्गव, 18- नन्द।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि महापुराण में 'कूर्मपुराण' की गणना होती है जबकि उपपुराण में नृसिंह, साम्ब पुराण, एकाम्रपुराण आता है। **अतः विकल्प A सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा , पेज 177

93. एषु किं पर्व महाभारते नास्ति-

(A) मौसलपर्व (B) कुन्तीपर्व
(C) शान्तिपर्व (D) उद्योगपर्व

व्याख्या- महाभारत के रचयिता कृष्णद्वैपायन वेदव्यास हैं। इनके पिता का नाम पराशर ऋषि तथा माता का नाम सत्यवती था। विश्व वाङ्मय का सर्वाधिक विशाल ग्रन्थ महाभारत है। इसमें एक लाख से अधिक श्लोक हैं। इसे 'शतसाहस्री संहिता' भी कहते हैं। यह अट्ठारह पर्वों में विभक्त है। इसका सबसे बड़ा पर्व शांतिपर्व (14 हज़ार श्लोक) है तथा सबसे छोटा पर्व महाप्रस्थानिक (115 श्लोक) है। अट्ठारह पर्वों के अलावा अन्त में इसके परिशिष्ट के रूप में 'हरिवंश पर्व' में कृष्ण जीवनचरित वर्णित है, इसे मिलाकर श्लोकों की संख्या एक लाख होती है।

महाभारत के 18 पर्व उनके अध्याय तथा श्लोक संख्याः-

क्रम पर्व	अध्याय	श्लोक
1. आदिपर्व	233	9000
2. सभापर्व	81	
3. वनपर्व	315	
4. विराटपर्व	72	2700
5. उद्योगपर्व	196	7100
6. भीष्मपर्व	122	6100
7. द्रोणपर्व	202	10,000
8. कर्णपर्व		
9. शल्यपर्व	65	3700
10. सौप्तिकपर्व	18	810
11. स्त्रीपर्व	27	820
12. शान्तिपर्व	365	14723
13. अनुशासनपर्व	168	10000
14. आश्वमेधिकपर्व	92	4250
15 आश्रमवासिकपर्व	39	110
16 मौसलपर्व	304	
17 महाप्रस्थानिकपर्व	3115	
18 स्वर्गारोहणपर्व	5	220

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि महाभारत के अठारह पर्वों के अन्तर्गत कुन्तीपर्व सम्मिलित नहीं है। **अतः विकल्प B सही है।**

स्त्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज 145

94. कौटिलीयार्थशास्त्रे सर्वविद्यानां प्रदीपः सर्वकर्मणाम् उपायः, सर्वधर्माणामाश्रयः भवति-

(A) आन्वीक्षिकी (B) त्रयी
(C) वार्ता (D) दण्डनीतिः

व्याख्या- आचार्य कौटिल्य कृत अर्थशास्त्र में पन्द्रह अधिकरण, एक सौ पचास अध्याय, एक सौ अस्सी प्रकरण और छह हजार श्लोक हैं।

➢ आचार्य कौटिल्य चार विद्याओं को मानते हैं- आन्वीक्षिकी त्रयी वार्ता दण्डनीतिश्चेति विद्याः। (1) आन्वीक्षिकी (2) त्रयी (3) वार्ता (4) दण्डनीति।

1- चार विद्याओं में सर्वप्रथम आन्वीक्षिकी का लक्षण प्रस्तुत करते हैं- **प्रदीपः सर्वविद्यानामुपायः सर्वकर्मणाम्।**
आश्रयः सर्वधर्माणां शश्वदान्वीक्षिकी मता॥

यह आन्वीक्षिकी विद्या सर्वदा ही सब विद्याओं का प्रदीप, सभी कार्यों का साधन और धर्मों का आश्रय मानी गई है।

2- त्रयी स्थापना- सामऋग्यजुर्वेदास्त्रयस्त्रयी। साम, ऋक् ,यजुः इन तीनों वेदों का समन्वित नाम ही त्रयी है।

3- वार्ता- कृषिपाशुपाल्ये वाणिज्या च वार्ता।
कृषि, पशुपालन और व्यापार, ये वार्ता विद्या के विषय हैं।

4- दण्डनीति- आन्वीक्षिकीत्रयीवार्तानां योगक्षेमसाधनो दण्डः।
आन्वीक्षिकी, त्रयी और वार्ता इन सभी विद्याओं की सुख समृद्धि दण्ड पर निर्भर है। दण्ड को प्रतिपादित करने वाली नीति ही दण्डनीति कहलाती है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि आन्वीक्षिकी का लक्षण 'प्रदीपः सर्वविद्यानामुपायः सर्वकर्मणाम् ......' है। **अतः विकल्प A सही है।**

स्त्रोत- कौटिलीय अर्थशास्त्र - श्री वाचस्पति गैरोला, पेज 9

95. मनुसंहितानुसारं राज्ञः सचिवानां संख्या भवति-

(A) 10-12 (B) 7-8
(C) 3-4 (D) 5-6

व्याख्या- मनु के अनुसार सात या आठ मन्त्रियों की मन्त्रिपरिषद् होती है, अतएव राजा सात या आठ मन्त्रियों की नियुक्ति करता है। मनु के अनुसार ये मन्त्री वंशक्रमानुगत, शास्त्रज्ञाता, शूरवीर, शास्त्र विद्या में प्रवीण, उत्तम वंश में उत्पन्न और भलीभाँति परीक्षा करके नियुक्त किए गए हों।

मौलाञ्छास्त्रविदः शूराँल्लँब्धलक्षान् कुलोद्भवान्।
सचिवान्सप्त चाष्टौ वा प्रकुर्वीत परीक्षितान्॥
(मनु. 7.54)

मनु ने राजा के लिए चिन्तनीय 6 गुणों को बताया है- सन्धि, विग्रह, यान, आसन, द्वैधीभाव और संश्रय।

सन्धिं च विग्रहं चैव यानमासनमेव च।
द्वैधीभावं संश्रयं च षड्गुणांश्चिन्तयेत्सदा।। (7.160)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि मनु ने 7 या 8 सचिवों की परिषद् मानी है। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- मनुस्मृति (7/54)-गिरिधर गोपाल शर्मा, पेज 170-171

**96. ''तमसा बहुरूपेण वेष्टिताः कर्महेतुना।
अन्तःसञ्ज्ञा भवन्त्येते सुख-दुःखसमन्विताः।।
इति मनुवचनं केन सम्बद्धम्?**

(A) उद्भिदेन (B) अण्डजेन
(C) जरायुजेन (D) स्वेदजेन

व्याख्या- आचार्य मनु ने मनुस्मृति के प्रथम अध्याय में सृष्ट्युत्पत्ति के अन्तर्गत उद्भिज्ज, अण्डज, जरायुज और स्वेदज प्राणियों के विषय में चर्चा की है।

1- उद्भिज्ज- बीज से पृथ्वी को फाड़कर अथवा टहनी लगाने से जो सब वृक्ष उगते हैं उनको उद्भिज्ज कहते हैं। फल पक जाने पर जो सूख जाते हैं और जिनमें बहुत से फल और फूल लगते हैं उन्हें 'ओषधि' कहते हैं। जिनमें फूल न लगें किन्तु फल लगें उन्हें वनस्पति कहते हैं। जिनमें फूल और फल दोनों लगे उन्हें वृक्ष कहते हैं। अनके प्रकार के गुच्छ, गुल्म, तृण लता और प्रतान, बीज बोने या टहनी लगाने से उग आते हैं। ये सभी पूर्वजन्म के कर्म के कारण बहुत से तमोगुण से घिरे हुए हैं, सुख-दुःख से युक्त हैं और इनके भीतर चेतना है-

**तमसा बहुरूपेण वेष्टिताः कर्महेतुना।
अन्तःसञ्ज्ञा भवन्त्येते सुखदुःखसमन्विताः।।**
मनु.1.49।।

2- अण्डज- पक्षी, साँप, मगरमच्छ, मछली और कछुए अण्डज हैं और जितने ऐसे जीव, जल और स्थल में पैदा होते हैं वे सब भी अण्डज हैं।

**अण्डजाः पक्षिणः सर्पाः नक्राः मत्स्याश्च कच्छपाः।
यानि चैव प्रकाराणि स्थलजान्यौदकानि च।।** मनु.1.44।।

3- जरायुज- पशु, मृग, ऊपर नीचे दोनों ओर दाँत वाले, राक्षस, पिशाच और मनुष्य ये सब जरायुज हैं। जरायु गर्भावरण की त्वचा को कहते हैं, उसी से सब उत्पन्न होते हैं-

**पशवश्च मृगाश्चैव व्यालाश्चोभयतोदतः।
रक्षांसि च पिशाचाश्च मनुष्याश्च जरायुजाः।।** (मनु. 1.43)

4- स्वेदज- डाँस, मच्छर, जूँ, मक्खी, खटमल और अन्य ऐसे ही जीव जो गरमी से उत्पन्न होते हैं वे स्वेदज हैं। ये प्राणियों के पसीने आदि मलिन द्रव्यों से उत्पन्न होते हैं-

स्वेदजं दंशमशकं यूकामक्षिकमत्कुणम्।
ऊष्मणश्चोपजायन्ते यच्चान्यत्किञ्चिदीदृशम्।।1.45।।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि प्रश्नगत मनु का कथन उद्भिदों से सम्बद्ध है। **अतः विकल्प A सही है।**

स्रोत- मनुस्मृति (1/49)- गिरिधर गोपाल शर्मा, पेज 29

97. श्रीमद्भगवद्गीतायां कर्मयोगः कतमोऽध्यायः?

(A) द्वितीयोऽध्यायः (B) तृतीयोऽध्यायः
(C) चतुर्थोऽध्यायः (D) पञ्चमोऽध्यायः

व्याख्या- महर्षि वेदव्यास द्वारा विरचित महाभारत के भीष्मपर्व में वर्णित श्रीमद्भगवद्गीता सर्वाधिक लोकप्रिय भारतीय सनातनधर्म का ग्रन्थरत्न है। गीता में उन सभी विषयों का समावेश है जो हमें पृथक्-पृथक् शास्त्रों में प्राप्त होते हैं। अतएव महर्षि वेदव्यास ने कहा है- **गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः।
या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्माद्विनिःसृता।।**

अर्थः- गीता सुगीता करने योग्य है अर्थात् श्रीगीताजी को भली-भाँति पढ़कर अर्थ और भाव सहित अन्तःकरण में धारण कर लेना मुख्य कर्तव्य है, जो कि स्वयं पद्मनाभ भगवान् श्रीविष्णु के मुखारविन्द से निकली हुई है, फिर अन्य शास्त्रों के विस्तार से क्या प्रयोजन? श्रीमद्भगवद्गीता में कुल 18 अध्याय और 700 श्लोक हैं। इसका सबसे बड़ा अध्याय 18वाँ अध्याय (मोक्षसंन्यासयोग 78 श्लोक) तथा सबसे छोटा अध्याय 12वाँ और 15वाँ (भक्तियोग तथा पुरुषोत्तमयोग 20 श्लोक) हैं।

श्रीमद्भगवद्गीता के अध्याय एवं उनके नामः-

अध्याय अध्यायनाम

1. अर्जुनविषादयोग 8. अक्षरब्रह्मयोग 15. पुरुषोत्तमयोग
2. सांख्ययोग 9. राजविद्याराजगुह्ययोग 16. दैवासुरसम्पद्विभागयोग
3. कर्मयोग 10. विभूतियोग 17. श्रद्धात्रयविभागयोग
4. ज्ञानकर्मसंन्यासयोग 11. विश्वरूपदर्शनयोग 18. मोक्षसंन्यास योग
5. कर्मसंन्यासयोग 12. भक्तियोग
6. आत्मसंयमयोग 13. क्षेत्रक्षेत्रज्ञविभागयोग
7. ज्ञानविज्ञानयोग 14. गुणत्रयविभागयोग

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि श्रीमद्भगवद्गीता में 'कर्मयोग' तृतीय अध्याय को कहा जाता है।
अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- श्रीमद्भगवद्गीता - अध्याय तीन

98. ''एपिग्राफिया इण्डिका' इति पत्रिकायाः प्रकाशनम् केन प्रारब्धम्?
(A) जेम्स प्रिंसेपमहोदयेन
(B) सर विलियमजोंसमहोदयेन
(C) जे॰बर्जेसमहोदयेन
(D) कीलहार्न महोदयेन

व्याख्या- एपिग्राफिया इण्डिका नामक पत्रिका आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया की ओर से 1882 से 1977 तक प्रकाशित होती थी। इसका पहला संस्करण जेम्स बर्जेस महोदय द्वारा सम्पादित किया गया था (1882 ई. में)। 1892 से 1920 के मध्य तक यह पत्रिका तीन महीने में एक बार 'द इण्डियन एंटीक्वरी' के परिशिष्टरूप में प्रकाशित होती रही। इस पत्रिका के लगभग 43 संस्करण प्रकाशित हुए। ये सभी संस्करण पुरालेखशास्त्र की शाखा के ASI अधिकारियों द्वारा सम्पादित किये जाते थे। अतः इस पत्रिका के प्रकाशन में जेम्स बर्जेस की मुख्य भूमिका रही।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है।
कि विकल्प C सही है। स्रोत- गूगल विकीपीडिया

99. 'धम्मलिपि' नाम कस्य लेखेषु प्राप्यते?
(A) अशोकस्य (B) समुद्रगुप्तस्य
(C) खारवेलस्य (D) कनिष्कस्य

व्याख्या- मौर्य सम्राट् अशोक के ब्राह्मी, खरोष्ठी, आरामेयिक और यूनानी- लिपियों में अंकित अभिलेख देश के विभिन्न भागों से प्राप्त हुए अशोक के 14 अभिलेख प्राप्त हुए हैं।
अशोक के अभिलेखों को धम्मलिपि या धम्मानुशासन धर्मलिपि, धर्मानुशासन, धर्मशास्त्र कहा है। अशोक ने भी इन्हें धम्मलिपि नाम दिया है- 'इयं धम्मलिपि'। प्रथम शिलालेख ही प्रारम्भ होता है- 'इयं धम्मलिपि देवानां पियेना पियदसिला लेखिता' से। इसलिए इन्हें 'धम्मलिपि' नाम से सम्बोधित किया जाता है।
* समुद्रगुप्त का प्रयागस्तम्भ अभिलेख –
स्थान - प्रयागराज, उत्तर प्रदेश
भाषा - संस्कृत
लिपि - ब्राह्मी
काल - समुद्रगुप्त, (लगभग 335-76ई.)
विषय - समुद्रगुप्त का जीवनचरित तथा उपलब्धियों का वर्णन।
*** खारवेल का हाथीगुम्फा अभिलेख –**
स्थान- हाथीगुम्फा- भुवनेश्वर के निकट उदयगिरि पहाड़ी जिला पुरी, उड़ीसा। लिपि - ब्राह्मी
काल - लगभग प्रथमशती ई.पू. का उत्तरार्ध
विषय - चेदिवंशी राजा कलिंगाधिपति खारवेल के जीवन की घटनाओं का क्रमिक विवरण एवं उसकी राजनैतिक उपलब्धियों तथा लोकमंगल के कार्यों का उल्लेख।
*** कनिष्क का सारनाथ बौद्धप्रतिमाभिलेख**
स्थान - सारनाथ, जिला – वाराणसी, उत्तर-प्रदेश
भाषा - प्राकृत संस्कृत से प्रभावित
लिपि - ब्राह्मी
काल - प्रथम शताब्दी ई॰ उत्तरार्द्ध
विषय - भिक्षु बल द्वारा विभिन्न लोगों के साथ, छत्र और यष्टि की स्थापना, हित और सुख के लिए।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरणों से स्पष्ट है कि धम्मलिपि अशोक के लेखों में प्राप्त है। **अतः विकल्प A सही है।**
स्रोत- भारतीय पुरालेख - शिवस्वरूप सहाय, पेज 90

100. भारतवर्षे दानलेखानाम् उत्कीर्णनं बाहुल्येन कस्मिन् धातौ कृतम्?
(A) लौहधातौ (B) ताम्रधातौ
(C) रजतधातौ (D) स्वर्णधातौ

व्याख्या- प्राचीनकाल में भारतवर्ष में दान की परम्परा का प्रचलन था इस काल में जो भी दान राजा या जिसके द्वारा दिया जाता था उसका लेख ताम्रधातु पर लिखा जाता था जिनमें से कुछ दान लेखों के ताम्रपत्र का विवरण है-
(1) स्कन्दगुप्त का इन्दौर ताम्रपत्र अभिलेख
स्थान- ग्राम- इन्दौर, तहसील- अनूपशहर, जिला-बुलन्दशहर, उ.प्र.
भाषा - संस्कृत
विषय - देवविष्णु ब्राह्मण द्वारा इन्द्रपुर में सूर्यमन्दिर को अक्षयनीवी दान दिए जाने का उल्लेख।
(2) प्रभावती गुप्त का पूना ताम्रपत्र अभिलेख
स्थान - पूना, जिला महाराष्ट्र
भाषा - संस्कृत लिपि-दक्षिण भारतीय नेकदार सिरवाली ब्राह्मी
विषय- गुप्त वंशावली, वैष्णव सन्त चनाल स्वामी को दङ्गुण नामक ग्राम दान तथा प्रशासनिक आदेश।
(3) हर्ष का बाँसखेड़ा का ताम्रपत्र लेख-
यह ताम्रपत्र महाराजाधिराज श्री हर्षवर्धन द्वारा लिखवाया गया है यह उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जिले के बाँसखेड़ा नामक स्थान से प्राप्त हुआ। इस ताम्रपत्र में उन गाँवों का विवरण है जो अग्रहारु दाना के लिए इस प्रतापी राजा ने ब्राह्मणों को दिया।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि भारतवर्ष में दान लेखों के प्रचलन में ताम्रधातु का अधिक प्रयोग होता था।
अतः विकल्प B सही है।

उत्तरमाला

1- B	2- D	3- C	4- A	5- A	6- C	7- A	8- C	9- C	10- B
11- D	12- B	13- C	14- B	15- C	16- B	17- A	18- D	19- C	20- D
21- B	22- B	23- A	24- C	25- C	26- B	27- C	28- B	29- C	30- B
31- B	32- A	33- C	34- A	35- C	36- D	37- A	38- D	39- D	40- B
41- A	42- D	43- C	44- B	45- A	46- C	47- D	48- D	49- D	50- A
51- B	52- C	53- B	54- B	55- B	56- A	57- C	58- A	59- B	60- A
61- B	62- A	63- A	64- B	65- B	66- C	67- A	68- D	69- B	70- A
71- C	72- B	73- D	74- B	75- A	76- A	77- B	78- D	79- C	80- A
81- C	82- B	83- C	84- C	85- A	86- A	87- B	88- D	89- B	90- B
91- D	92- A	93- B	94- A	95- B	96- A	97- B	98- C	99- A	100- B

6	जनवरी 2017	NTA UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् II

1. अधस्तनेषु उचितसम्बन्धयुतं विकल्पं चिनुत

(A) द्यावाचिदस्मै पृथिवी नमेते ...। अग्निसूक्तम्

(B) यस्य ब्रह्मवर्धनं यस्य सोमः ...। सोमसूक्तम्

(C) राजन्तमध्वराणां गोपामृतस्य दीदिविम्..रुद्रसूक्तम्

(D) ता वां वास्तून्युश्मसि गमध्यै यत्र गावो भूरिशृङ्गा अयासः। विष्णुसूक्तम्

व्याख्या-

(A) द्यावा चिदस्मै पृथिवी नमेते- (इन्द्र सूक्त 2.12.13)

प्रस्तुत मन्त्र ऋग्वेद के द्वितीय मण्डल के 12वें सूक्त (इन्द्र सूक्त) से उद्धृत है जिसमें इन्द्र की स्तुति की गई है- ''इस इन्द्र के लिए द्युलोक और पृथिवी लोक भी प्रणाम करने के लिये स्वयं झुक जाते हैं।''

(B) यस्य ब्रह्मवर्धनं यस्य सोमः (इन्द्रसूक्त 2.12.14)

प्रस्तुत मन्त्र ऋग्वेद के द्वितीय मण्डल के 12वें सूक्त (इन्द्र सूक्त) से उद्धृत है जिसमें इन्द्र की स्तुति की गई है- वृद्धि करने वाले ब्रह्म नामक स्तोत्र जिसको बढ़ाते हैं, सोम रस जिसको बढ़ाने वाला है, हे असुरों! वही इन्द्र है।

(C) राजन्तमध्वराणां गोपामृतस्य दीदिविम्- (अग्नि सूक्त 1.1.8)

प्रस्तुत मन्त्र ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के प्रथम सूक्त (अग्निसूक्त) से उद्धृत है जिसमें अग्नि की स्तुति करते हुए कहा गया है कि 'प्रकाशमान होते हुये, हिंसारहित यज्ञों के रक्षक, सत्य कर्मफलों को पुनः पुनः प्रकाशित करने वाले हैं।

(D) ता वां वास्तून्युश्मसि गमध्यै यत्र गावो भूरिशृङ्गा अयासः (विष्णुसूक्त 1.154.6)

प्रस्तुत मन्त्र ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के 154वें सूक्त (विष्णुसूक्त) से उद्धृत है जिसमें विष्णु की स्तुति की गई है- हे यजमान और हे उसकी पत्नी! जहाँ बड़े-बड़े ऊँचे सींगों वाली गायें अथवा अनेक प्रकार से फैलने वाली किरणें निवास करती हैं या अत्यधिक प्रकाश से युक्त हैं। इस विष्णु के प्रिय उस लोक को प्राप्त करूँ, जहाँ उस विष्णु के भक्तजन आनन्द का अनुभव करते हैं।

स्पष्टीकरण- विकल्प D में विष्णु की स्तुति की गई है जो कि सुमेलित है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- ऋक्सूक्त संग्रह (1.154.6)- हरिदत्त शास्त्री, पेज 170

2. अधस्तनयुग्मानां समुचितां तालिकां चिनुत-

(क) पुराणी देवि युवतिः पुरन्धिरनुव्रतं चरसि विश्ववारे	(i) इन्द्रसूक्तम्
(ख) स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव	(ii) विष्णुसूक्तम्
(ग) यः पृथिवीं व्यथमानामदृंहद्यः पर्वतान्प्रकुपिताँ अरम्णात्	(iii) उषस्सूक्तम्
(घ) तदस्य प्रियमभिपाथो अश्यां नरो यत्र देवयवो मदन्ति	(iv) अग्निसूक्तम्

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(A)	(iii)	(iv)	(i)	(ii)
(B)	(iv)	(i)	(iii)	(ii)
(C)	(i)	(iii)	(ii)	(iv)
(D)	(ii)	(iv)	(i)	(iii)

व्याख्या-

(ख) स नः पितेव सूनवे, अग्ने सूपायनो भव- (अग्निसूक्त 1.1.9)

ऋषि-मधुच्छन्दा, देवता-अग्नि, छन्द-गायत्री।

अग्नि की स्तुति करते हुए कहा गया है कि- हे अग्निदेव! जिस प्रकार पिता पुत्र के लिए सुप्राप्य और कल्याण करने वाला होता है,उसी प्रकार तुम भी हमारे लिए सुप्राप्य बनो और हमारे कल्याण के लिए हमारे संग रहो।

(क) पुराणी देवि युवतिः पुरन्धिरनुव्रतं चरसि विश्ववारे- (उषस् सूक्त 3.61.1)

ऋषि-विश्वामित्र, देवता-उषस्, छन्द-त्रिष्टुप्।

हे उषा देवी! तुम पुरातनी युवती के समान हो अथवा सनातन काल से युवती ही बनी हुई हो, बहुत अधिक बुद्धिमती हो और तुम हमारे यज्ञ आदि नियमों, व्रतों को लक्ष्य करके विचरण करती हो।

(ग) यः पृथिवीं व्यथमानामदृंहद् यः पर्वतान्प्रकुपिताँ अरम्णात्- (इन्द्र सूक्त 2.12.2)

ऋषि-गृत्समद, देवता-इन्द्र, छन्द- त्रिष्टुप्।

इन्द्र की स्तुति में, हे असुरों! जिसने हिलती हुई पृथिवी को स्थिर कर दिया था जिसने पृथिवी को और उस पर रहने वाले प्राणियों को स्थिरता प्रदान की थी जिसने कुपित हुए अर्थात्

इच्छानुसार इधर उधर स्वच्छन्द विचरण करते हुए पंखों से युक्त पर्वतों को अपने-अपने स्थान पर नियमित कर दिया।

(घ) तदस्य प्रियमभिपाथो अश्यां नरो यत्र देवयवो मदन्ति- (विष्णु सूक्त 1.154.5)

ऋषि-दीर्घतमा, देवता-विष्णु, छन्द-त्रिष्टुप्।

इस विष्णु के उस प्रिय लोक द्युलोक को प्राप्त करूँ जहाँ पर देवताओं को प्राप्त करने की इच्छा वाले देवताओं की पूजा करने वाले लोग आनन्द को प्राप्त करते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि **विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्त शास्त्री, पेज 233

3. ''नाहं वेद भ्रातृत्वं नो स्वसृत्वमिन्द्रो विदुरङ्गिरसश्च घोराः'' इति मन्त्रांशो वर्तते।

(A) विश्वामित्र-नदीसूक्ते (B) सरमा-पणि सूक्ते
(C) यम-यमी सूक्ते (D) पुरूरवा-उर्वशी सूक्ते

व्याख्या-

➢ **सरमा पणि सूक्त**

नाहं वेद भ्रातृत्वं नो स्वसृत्वमिन्द्रो विदुरङ्गिरसश्च घोराः।
गोकामा मे अच्छदयन्यदायमपात इत पणयो वरीयः॥

(ऋ.10.108.10)

प्रस्तुत मन्त्र ऋग्वेद के दशम मण्डल के 108वें सूक्त का दसवाँ मन्त्र है इस मन्त्र के देवता सरमा, पणि एवं ऋषि पणि, सरमा हैं। प्रस्तुत मन्त्र में त्रिष्टुप् एवं स्वर धैवत है।

सरमा ने पणि से कहा कि- मैं न तो भ्रातृत्व को जानती हूँ न स्वसृत्व को, इन्द्र तथा भयानक अंगिरस इसको जानते हैं जब मैं आई वे गायों की इच्छा करने वाले मालूम पड़े। अतः हे पणियों किसी विस्तृत स्थान पर चले जाओ।

➢ **विश्वामित्र-नदी सूक्त** ऋग्वेद के तृतीय मण्डल के 33वें सूक्त के रूप में यह सूक्त वर्णित है जिसके ऋषि विश्वामित्र एवं देवता विपाट्, शुतुद्री (नदियाँ) हैं इस सूक्त के मन्त्रों में पंक्ति त्रिष्टुप् एवं उष्णिक् छन्द हैं। इस सूक्त में 13मन्त्र हैं।

इन्द्रो अस्माँ अरदद्वज्रबाहुरपाहन्वृत्रं परिधिं नदीनाम्।
देवोऽनयत्सविता सुपाणिस्तस्य वयं प्रसवे याम उर्वीः॥
(ऋ.3.33.6)

वज्रधारी इन्द्र ने हमें खोदकर बाहर किया। उसने नदियों को घेरने वाले वृत्र को मारा। सुन्दर हाथों वाले सवितृ देव ने हम लोगों को लाया। हम जितनी चौड़ी हैं, उसकी आज्ञा में निरन्तर बहती हैं।

➢ **यम-यमी सूक्त-**

यम-यमी सूक्त ऋग्वेद के दशम मण्डल के दसवें सूक्त के रूप में वर्णित है। जिसके ऋषि यमी वैवस्वती, यम वैवस्वत एवं देवता यम वैवस्वत, यमी वैवस्वती हैं। छन्द त्रिष्टुप् तथा स्वर धैवत है, मन्त्रों की संख्या 14 है।

किं भ्रातासद्यदनाथं भवाति किमु स्वसा यन्निर्ऋतिर्निगच्छात्।
काममूता बह्वे तद्रपामि तन्वा मे तन्वं सं पिपृग्धि॥

(ऋ.10.10.11)

यमी ने यम से कहा- वह कैसा भ्राता है, जिसके रहते भगिनी अनाथ हो जाय और भगिनी ही क्या है, जिसके रहते भ्राता का दुःख दूर न हो? मैं काममूर्च्छित होकर नाना प्रकार से बोल रही हूँ, यह विचार करके भली भाँति मेरा सम्भोग करो।

➢ **पुरूरवा उर्वशी सूक्त-**

पुरूरवा उर्वशी सूक्त ऋग्वेद के दशम मण्डल के 95वें सूक्त के रूप में वर्णित है। इसके ऋषि पुरूरवा ऐल और उर्वशी तथा देवता उर्वशी और पुरूरवा ऐल है। इस मन्त्र में त्रिष्टुप् छन्द तथा स्वर धैवत एवं मन्त्रों की संख्या 14 है।

सा वसु दधती श्वसुराय वय उषो यदि वष्ट्यन्तिगृहात्।
अस्तं ननक्षे यस्मिञ्चाकन्दिवा नक्तं श्नथिता वैतसेन॥

(ऋ.10.95.4)

हे उषा! उर्वशी यदि श्वसुर को भोजन कराना चाहती तो निकटस्थ घर से पति के पास जाती और दिन-रात स्वामी के पास रमणसुख भोगती।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि प्रस्तुत मन्त्र सरमा–पणि संवाद सूक्त से गृहीत है। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- ऋग्वेद (10-108-10)- वेदान्ततीर्थ, पेज 465

4. ''को दम्पती समनसा वि यूयोदध यदग्निः श्वशुरेषु दीदयत्'' इति मन्त्रांशो वर्तते-

(A) सरमा-पणि सूक्ते (B) विश्वामित्र नदी सूक्ते
(C) पुरूरवा-उर्वशी सूक्ते (D) यम-यमी सूक्ते

व्याख्या-

➢ **पुरूरवा उर्वशी सूक्त-** ऋग्वेद के दशम मण्डल के 95वें सूक्त के रूप में वर्णित है, इस सूक्त के ऋषि पुरूरवा ऐल और उर्वशी तथा देवता उर्वशी और पुरूरवा ऐल हैं। इस मन्त्र में त्रिष्टुप् छन्द तथा स्वर धैवत एवं मन्त्रों की संख्या 18 है।

कदा सूनुः पितरं जात इच्छाच्चक्रन्नाश्रु वर्तयद्विजानन्।
को दम्पती समनसा वि यूयोदध यदग्निः श्वशुरेषु दीदयत्॥

(ऋ.10.95.12)

पुरूरवा ने उर्वशी से कहा- तुम्हारा पुत्र मेरे पास किस प्रकार रहेगा? वह मेरे पास आकर रोवेगा। पारस्परिक प्रेम के बन्धन को कौन सद्गृहस्थ तोड़ना स्वीकार करेगा? तुम्हारे श्वसुर के घर में श्रेष्ठ आलोक जगमगा उठा है।

➢ **विश्वामित्र नदी सूक्त-**

प्र पर्वतानामुशती उपस्थादश्वे इव विषिते हासमाने।
गावेव शुभ्रे मातरा रिहाणे विपाट्छुतुद्री पयसा जवेते॥
(ऋ.3.33.1)

पर्वतों की गोद से निकलकर समुद्र की ओर जाने की इच्छा करती हुई परस्पर स्पर्धा से दौड़ती हुई, खुले बाग वाली दो घोड़ियों की तरह बछड़े को चाटती हुई दो सफेद माता गायों की तरह विपाट् और शुतुद्री प्रवाह से तेजी से बह रही हैं।

➢ **सरमा पणि सूक्त-**

किमिच्छन्ती सरमा प्रेदमानड् दूरे ह्यध्वा जगुरिः पराचैः।
कास्मेहितिः का परितक्म्यासीत्कथं रसाया अतरः पयांसि॥ (ऋ.10.108.1)

सरमा क्या इच्छा करती हुई इस स्थान पर पहुँची है, क्योंकि मार्ग बहुत दूर उभरा हुआ तथा गमनागमन से रहित है। हममें तुम्हारा कौन सा अभिप्रेत अर्थ निहित है? तुम्हारी यात्रा कैसी थी? रसा नदी के जल को तुमने कैसे पार किया?

➢ **यम-यमी सूक्त-**

ओ चित् सखायं सख्या ववृत्यां तिरः पुरू चिदर्णवं जगन्वान्।
पितुर्नपातमा दधीत वेधा अधि क्षमि प्रतरं दीध्यानः॥
(ऋ.10.10.1)

यमी अपने भाई यम से कहती है- विस्तृत समुद्र के मध्य द्वीप में आकर इस निर्जन प्रदेश में मैं तुम्हारा सहवास चाहती हूँ, क्योंकि माता की गर्भावस्था से ही तुम मेरे साथी हो। विधाता ने मन ही मन समझा है कि तुम्हारे द्वारा मेरे गर्भ से जो पुत्र उत्पन्न होगा वह हमारे पिता का एक श्रेष्ठ नाती होगा। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- (i) ऋग्वेद (10-95-12)- वेदान्ततीर्थ, पेज 430
(ii) वैदिकवाङ्मयसार - सर्वज्ञभूषण, पेज 13

5. अधस्तनेषु सामवेदस्य ब्राह्मणमस्ति-
(A) शांखायनब्राह्मण (B) कौषीतकिब्राह्मण
(C) षड्विंशब्राह्मण (D) तैत्तिरीयब्राह्मण

व्याख्या-

ऋग्वेद के ब्राह्मण-
* ऐतरेय ब्राह्मण
* शांखायन (कौषीतकि) ब्राह्मण

शुक्लयजुर्वेद के ब्राह्मण-
* शतपथ ब्राह्मण

कृष्णयजुर्वेद के ब्राह्मण-
* तैत्तिरीय ब्राह्मण

सामवेद के ब्राह्मण
* तांड्य ब्राह्मण * मन्त्र ब्राह्मण (उपनिषद् ब्राह्मण)
* षड्विंश ब्राह्मण * देवताध्याय ब्राह्मण
* सामविधान ब्राह्मण * वंश ब्राह्मण
* आर्षेय ब्राह्मण * संहितोपनिषद् ब्राह्मण

अथर्ववेद के ब्राह्मण-
* गोपथ ब्राह्मण

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि सामवेद का ब्राह्मण 'षड्विंश ब्राह्मण' है। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-10

6. ''अन्धं तमः प्रविशन्ति येऽविद्यामुपासते। ततो भूय इव ते तमो य उ विद्यायां रताः'' सन्दर्भोऽयं वर्तते-
(A) कठोपनिषदि (B) ईशोपनिषदि
(C) श्वेताश्वतरोपनिषदि (D) बृहदारण्यकोपनिषदि

व्याख्या-

कठोपनिषद् कृष्णयजुर्वेद की कठशाखा से सम्बन्धित उपनिषद् है जिसमें दो अध्याय एवं प्रत्येक अध्याय में तीन-तीन वल्ली हैं-

कठोपनिषद् की कुछ प्रमुख सूक्तियाँ-

* **न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यः** (1.1.27) मनुष्य धन से कभी भी तृप्त नहीं होता।
* **श्रेयश्च प्रेयश्च मनुष्यमेत** (1.2.2)- मनुष्य में श्रेय और प्रेय ये दोनों गुण समान रूप से आते हैं।
* **आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु।**
बुद्धिं तु सारथिं विद्धि मनः प्रग्रहमेव च॥ (1.3.3)

तुम आत्मा को रथी जान, शरीर को रथ समझ, बुद्धि को सारथि जान और मन को लगाम समझ।

➢ **ईशोपनिषद्-** ईशावास्योपनिषद् शुक्लयजुर्वेद की काण्वशाखा का चालीसवाँ अध्याय है। ईशावास्योपनिषद् में कुल 18 मन्त्र हैं।

ईशावास्योपनिषद् के प्रमुख मन्त्र-

अन्धं तमः प्रविशन्ति येऽविद्यामुपासते।
ततो भूय इव ते तमो य उ विद्यायां रताः।।(मन्त्र-9)

जो मनुष्य अविद्या की उपासना करते हैं वे अज्ञान स्वरूप घोर अन्धकार में प्रवेश करते हैं जो मनुष्य विद्या में रत हैं अर्थात् ज्ञान के मिथ्याभिमान में मत्त हैं वे उससे भी मानों अधिकतर अन्धकार

में प्रवेश करते हैं।

विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नुते।। (मन्त्र-11)
अन्धं तमः प्रविशन्ति येऽसम्भूतिमुपासते।
ततो भूय इव ते तमो य उ सम्भूत्यां रताः।। (मन्त्र-12)

➢ **श्वेताश्वतरोपनिषद्-** श्वेताश्वतरोपनिषद् शुक्लयजुर्वेद से सम्बन्धित उपनिषद् है इस उपनिषद् में शिव (रुद्र) का परम पुरुष के रूप में वर्णन है।

श्वेताश्वतरोपनिषद् की प्रमुख सूक्तियाँ-

एको हि रुद्रो न द्वितीयाय तस्थुः।। (3.2)
मायां तु प्रकृतिं विद्यान्मायिनं तु महेश्वरम्। (4.10)
अजामेकां लोहितशुक्लकृष्णां बह्वीः प्रजाः सृजमानां सरूपाः (4.5)

➢ **बृहदारण्यकोपनिषद्-**

बृहदारण्यकोपनिषद् शतपथ ब्राह्मण के 14वें काण्ड का अन्तिम भाग है। यह उपनिषद् शुक्लयजुर्वेद से सम्बद्ध है। आकार की दृष्टि से यह उपनिषद् सबसे विशालकाय है। इस उपनिषद् में छः अध्याय हैं और अध्याय उपखण्डों में विभक्त हैं। याज्ञवल्क्य-मैत्रेयी संवाद इसी उपनिषद् में प्राप्त होता है।

बृहदारण्यकोपनिषद् के प्रमुख मन्त्र-

* आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्यो (4.5.6)
* अमृतत्वस्य तु नाशास्ति वित्तेनेति। (4.5.3)
* आत्मनस्तु कामाय जाया प्रियाभवति (4.5.6)
* असतो मा सद् गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्माऽमृतं गमय।।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि अन्धन्तमः प्रविशन्ति येऽविद्यामुपासते......मन्त्र ईशोपनिषद् से उद्धृत है। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- ईशादि नौ उपनिषद् (ईश. -9) - गीताप्रेस, पेज 34

7. ''सृष्ट्युत्पत्तिकाल एव वेदानामुत्पत्तिकालः'' इति कः स्वीकरोति?

(A) मैक्डानलः (B) मैक्समूलरः
(C) एम. विन्टरनिट्जः (D) महर्षिदयानन्दः

व्याख्या-

➢ **मैक्समूलर-** मैक्समूलर ने गौतमबुद्ध के आविर्भाव को अपना आधार माना है। बुद्ध ने वैदिकी हिंसा का खण्डन किया है अतः वैदिक काल बुद्ध के जन्म से पूर्व होना चाहिए। मैक्समूलर ने वैदिक काल को चार भागों में विभक्त किया है-

छन्दकाल - 1200 ई.पू.-1000 ई.पू.
मन्त्रकाल - 1000 ई.पू.-800 ई.पू.
ब्राह्मणकाल - 800 ई.पू. - 600 ई.पू.
सूत्रकाल - 600 ई.पू. - 400 ई.पू.

बोग़ाजकोई के शिलालेख की प्राप्ति के बाद यह मत सर्वथा निरस्त हो गया।

➢ **एम. विन्टरनित्स-** एम. विन्टरनित्स ने सभी मतों की विस्तृत आलोचना के बाद अपना समन्वयात्मक मत दिया। इन्होंने वैदिक काल को 2500 ई.पू. से 500 ई.पू. तक माना है।

➢ **महर्षिदयानन्द-**

आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेदों के सन्दर्भों के द्वारा प्रतिपादित किया है कि वेदों का उद्भव परमात्मा से सृष्टि उत्पत्ति काल से ही प्रारम्भ हुआ। उसने ही अग्नि से ऋग्वेद, वायु से यजुर्वेद, और सूर्य से सामवेद को प्रकट किया। **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-39

8. अधस्तनयुग्मानां समुचितां तालिकां चिनुत-

(क) कात्यायनशुल्बसूत्रम् (i) व्याकरणम्
(ख) त्रिमुनि (ii) कृष्णयजुर्वेदः
(ग) ऋक्तन्त्रप्रातिशाख्यम् (iii) शुक्लयजुर्वेदः
(घ) आपस्तम्बगृह्यसूत्रम् (iv) सामवेदः

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(A)	(ii)	(i)	(iii)	(iv)
(B)	(iii)	(i)	(iv)	(ii)
(C)	(ii)	(iii)	(i)	(iv)
(D)	(ii)	(i)	(iv)	(iii)

व्याख्या-

➢ **कात्यायन शुल्बसूत्र-** कात्यायन शुल्बसूत्र का सम्बन्ध शुक्ल यजुर्वेद से है। कात्यायन शुल्बसूत्र को 'कात्यायन शुल्ब परिशिष्ट या कातीय शुल्ब परिशिष्ट' भी कहते हैं। इस शुल्बसूत्र के दो भाग हैं। प्रथम भाग सूत्रों में है तथा द्वितीय भाग श्लोकात्मक है। प्रथमभाग में 102 सूत्र तथा द्वितीय भाग में 40 श्लोक हैं।

यजुर्वेद के अन्य शुल्बसूत्र- बौधायन शुल्बसूत्र, मानव शुल्बसूत्र, आपस्तम्ब शुल्बसूत्र, मैत्रायणीय शुल्बसूत्र, हिरण्यकेशि शुल्बसूत्र, वाराह शुल्बसूत्र।

➢ **त्रिमुनि-** त्रिमुनि के अन्तर्गत पाणिनि, कात्यायन तथा पतञ्जलि आते हैं। पाणिनि ने अष्टाध्यायी, कात्यायन ने अष्टाध्यायी पर वार्तिक एवं पतञ्जलि ने इन दोनों पर महाभाष्य की रचना की। इन सबका सम्बन्ध व्याकरण से है।

➤ **ऋक्तन्त्रप्रातिशाख्य-** ऋक्तन्त्रप्रातिशाख्य का सम्बन्ध सामवेद की कौथुमशाखा से है। इसे 'ऋक्तन्त्र व्याकरण' भी कहते हैं। इसमें पाँच प्रपाठक और 280 सूत्र हैं। इसके रचयिता आचार्य शाकटायन हैं।

➤ **आपस्तम्ब गृह्यसूत्र-** आपस्तम्ब गृह्यसूत्र का सम्बन्ध कृष्णयजुर्वेद से है। यह आपस्तम्ब कल्पसूत्र का एक अंश है। इस कल्प में 30 प्रश्न (अध्याय) हैं। इनमें से 25,26 और 27 अध्याय गृह्यसूत्र हैं।

कृष्णयजुर्वेद के अन्य गृह्यसूत्र- बौधायन, मानव, भारद्वाज काठक, आग्निवेश्य, हिरण्यकेशि, वाराह, वैखानस, चारायणीय, वैजवाप।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि कात्यायन शुल्बसूत्र का सम्बन्ध शुक्ल यजुर्वेद से, त्रिमुनि का सम्बन्ध व्याकरण से, ऋक्तन्त्रप्रातिशाख्य का सम्बन्ध सामवेद से, आपस्तम्ब गृह्यसूत्र का सम्बन्ध कृष्णयजुर्वेद से है। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव, पेज-9,116,198

9. वेदानां विकृतिपाठः कतिविधः?

(A) त्रिविधः (B) पञ्चविधः

(C) अष्टविधः (D) नवविधः

व्याख्या-

वेदों के संरक्षण के उपाय- वेदों के संरक्षण के उपाय की अष्ट विकृतियाँ हैं। वेद के मन्त्रों के उच्चारण में तथा उनकी सुरक्षा में कोई अन्तर न आने पाए इसके लिए अनेक उपाय किए गए हैं इन उपायों को ही विकृतियाँ कहते हैं इनमें मन्त्रों को घुमा फिरा कर अनेक प्रकार से उच्चारण किया जाता है। ये विकृतियाँ 8 हैं-

''जटा, माला, शिखा, रेखा, ध्वजो, दण्डो, रथो, घनः।
अष्टौ विकृतयः प्रोक्ताः क्रमपूर्वा महर्षिभिः॥''

जटापाठ, मालापाठ, शिखापाठ, रेखापाठ, ध्वजपाठ, दण्डपाठ, रथपाठ, घनपाठ ये वेदों की अष्ट विकृतियाँ हैं। उपर्युक्त आठ विकृतियों के अतिरिक्त तीन पाठ और भी हैं- **संहितापाठ, पदपाठ, क्रमपाठ।**

* वेदों में स्वर सम्बन्धी तीन नियम हैं-

उदात्त स्वर- उदात्त वर्ण पर कोई चिह्न नहीं होता।

अनुदात्त स्वर- अनुदात्त वर्ण पर नीचे पड़ी लकीर खींची जाती है।

स्वरित स्वर- स्वरित वर्ण पर ऊपर, खड़ी लकीर खींची जाती है।

➤ महर्षि पतञ्जलि ने महाभाष्य में व्याकरण अध्ययन के पाँच प्रयोजन बताए हैं- **'रक्षोहागमलघ्वसन्देहाः प्रयोजनम्'**

(1) **रक्षा-** वेदों की रक्षा के लिए।

(2) **ऊह** (तर्क)- यथा विभक्ति परिवर्तन, वाच्यपरिवर्तन आदि के लिए।

(3) **आगम-** ब्राह्मण को निष्काम भाव से वेद पढ़ना चाहिए इस आदेश की पूर्ति के लिए।

(4) **लघु-** सरल ढंग से शब्द ज्ञान के लिए।

(5) **असन्देह-** शब्द और अर्थ विषयक सन्देह के निराकरण के लिए।

➤ महर्षि पतञ्जलि ने महाभाष्य में अथर्ववेद की नौ शाखाओं का उल्लेख किया- पैप्पलाद, तौद, मौद, शौनकीय, जाजल, जलद, ब्रह्मवद, देवदर्श, चारणवैद्य। परन्तु इनमें से दो ही शाखाएँ प्राप्त होती हैं- शौनकीय शाखा, पैप्पलाद शाखा।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि वेदों की विकृति पाठ की आठ विधियाँ हैं। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी,पेज-8

10. द्विविधो विभाजनक्रमो वर्तते-

(A) अथर्ववेदस्य (B) ऋग्वेदस्य

(C) ईशोपनिषदः (D) कठोपनिषदः

व्याख्या-

ऋग्वेद का विभाजन- ऋग्वेद संहिता का विभाजन दो प्रकार से किया गया है- (1) अष्टक, अध्याय, वर्ग और मन्त्र (2) मण्डल, अनुवाक, सूक्त और मन्त्र।

(A) **अष्टक क्रम-** इसमें पूरे ऋग्वेद को 8 समान भागों में बाँटा गया है। इसलिए इसे अष्टक कहते हैं। प्रत्येक अष्टक को आठ अध्यायों में बाँटा गया है। इस प्रकार पूरे ऋग्वेद में 64 अध्याय हैं। बालखिल्य सूक्तों को सम्मिलित करते हुए ऋग्वेद में 8 अष्टक, 64 अध्याय, 2024 वर्ग और 10,552 मन्त्र हैं।

(B) **मण्डल क्रम-** ऋग्वेद को ऋषि और देवता के अनुसार 10 मण्डलों में विभक्त किया गया है। बालखिल्य के 11 सूक्तों के 80 मन्त्रों को सम्मिलित करते हुए 85 अनुवाक 1028 सूक्त और 10552 मन्त्र हैं।

➤ **यजुर्वेद का विभाजन-** यजुर्वेद दो भागों में विभक्त है- शुक्लयजुर्वेद तथा कृष्णयजुर्वेद। शुक्लयजुर्वेद की दो शाखाएँ हैं- माध्यन्दिन या वाजसनेयि संहिता तथा काण्व संहिता। दोनों ही संहिताओं में 40-40 अध्याय हैं। इसप्रकार शुक्लयजुर्वेद का विभाजन अध्यायों में हुआ है।

➤ **कृष्णयजुर्वेद का विभाजन-** कृष्णयजुर्वेद की शाखाओं का विभाजन विभिन्न प्रकार से किया गया है।

* **तैत्तिरीय संहिता-** काण्डों में विभक्त (7 काण्ड, 44 प्रपाठक, 631 अनुवाक)
* **मैत्रायणी संहिता-** काण्डों में विभक्त (4 काण्ड, 54 प्रपाठक, 3144 मन्त्र)
* **काठक संहिता-** खण्डों में विभक्त (5 खण्ड, 53 उपखण्ड, 843 अनुवाक, 3028 मन्त्र)
* **कठ-कपिष्ठल संहिता-** यह शाखा ''चरणव्यूह'' के अनुसार चरकों की 12 शाखाओं में से एक है। डा. रघुवीर ने इसका एक सुन्दर संस्करण 1932 में लाहौर से प्रकाशित किया था। यह ऋग्वेद के तुल्य अष्टकों और अध्यायों में विभक्त हैं। इसके केवल छः अष्टक उपलब्ध हैं।

➤ **सामवेद का विभाजन-** सामवेद की विभिन्न शाखाओं का विभाजन निम्नवत् है-

* **कौथुम शाखा-** कौथुम शाखा का विभाजन अध्याय, खण्ड और मन्त्र के रूप में है।
* **राणायनीय शाखा-** प्रपाठक, अर्धप्रपाठक, दशति और मन्त्र के रूप में है।
* **जैमिनीय शाखा-** इसमें 1687 मन्त्र हैं।

➤ **अथर्ववेद का विभाजन-** अथर्ववेद की नौ शाखाओं में दो ही शाखाएँ प्राप्त होती हैं (1) शौनकीयशाखा (2) पैप्पलाद शाखा।
(1) शौनकीय शाखा- 20 काण्ड 730 सूक्त एवं 5987 मन्त्र
(2) पैप्पलाद शाखा- काण्डों में विभक्त।

➤ **ईशोपनिषद्-** ईशावास्योपनिषद् शुक्लयजुर्वेद का 40वाँ अध्याय है। इसमें मन्त्रों की संख्या 18 है। इस उपनिषद् में सम्भूति-असम्भूति, विद्या-अविद्या का वर्णन है।

➤ **कठोपनिषद्-** कृष्णयजुर्वेद की कठशाखा से सम्बन्धित है इसमें दो अध्याय हैं और प्रत्येक अध्याय में तीन-तीन वल्ली हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि ऋग्वेद का विभाजन दो प्रकार से (अष्टक एवं मण्डल क्रम में) हुआ है। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-46

11. शुक्लयजुर्वेदस्य कति शाखाः समुपलभ्यन्ते?

(A) 4 (B) 3
(C) 5 (D) 2

व्याख्या-

➤ **ऋग्वेद की शाखाएँ-**

महर्षि पतञ्जलि ने महाभाष्य में ऋग्वेद की 21 शाखाओं का उल्लेख किया है 'एकविंशतिधा बाह्वृच्यम्' इनमें से केवल पाँच शाखाओं का ही मुख्य रूप से उल्लेख प्राप्त होता है। चरणव्यूह के अनुसार ऋग्वेद की पाँच शाखाएँ हैं-
(1) शाकल शाखा (2) बाष्कल शाखा (3) आश्वलायन शाखा (4) शांखायन शाखा (5) माण्डूकायन शाखा।

➤ यजुर्वेद मुख्य रूप से दो भागों में विभक्त है-
(1) शुक्लयजुर्वेद (2) कृष्णयजुर्वेद

शुक्लयजुर्वेद की शाखा- शुक्ल यजुर्वेद की दो शाखाएँ हैं-

(1) माध्यन्दिन या वाजसनेयि शाखा- इस शाखा में 40 अध्याय एवं 1975 मन्त्र हैं।

(2) काण्व शाखा- काण्व शाखा का विभाजन अध्याय, अनुवाक मन्त्र के रूप में है। इस प्रकार इस शाखा में चालीस अध्याय, 328 अनुवाक और 2086 मन्त्र हैं।

➤ **सामवेद की शाखाएँ-**

महर्षि पतञ्जलि ने महाभाष्य में 'सहस्रवर्त्मा सामवेदः' कह कर सामवेद की एक हजार शाखाएँ मानी हैं।

सामतर्पण में सामवेद की 13 शाखाओं का उल्लेख प्राप्त होता है- (1) राणायन (2) शाट्यमुग्र्य (सात्यमुग्रि) (3) व्यास (4) भागुरि (5) औलुण्डी (6) गौल्गुलवि (7) भानुमान् औपमन्यव (8) काराटि (द्वाराल) (9) मशक गार्ग्य (10) वार्षगण्य (वार्षगव्य) (11) कुथुम (कौथुमि, कुथुमि) (12) शालिहोत्र (13) जैमिनि। परन्तु इन 13 शाखाओं में से केवल तीन शाखाएँ ही प्राप्त होती हैं- 1. कौथुमीय शाखा (2) राणायनीयशाखा (3) जैमिनीयशाखा

➤ **अथर्ववेद की शाखाएँ-** 'नवधाऽऽथर्वणो वेदः' कहकर पतञ्जलि ने अथर्ववेद की नौ शाखाओं का उल्लेख किया-
(1) पैप्पलाद (2) तौद (3) मौद (40 शौनकीय (50 जाजल (6) जलद (7) ब्रह्मवद (8) देवदर्श (9) चारणवैद्य।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि शुक्ल यजुर्वेद की दो शाखायें उपलब्ध हैं। **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-9

12. अधस्तनयुग्मानां समुचितां तालिकां चिनुत-

(क) पिङ्गलः (i) ज्योतिषम्
(ख) शुल्बसूत्राणि (ii) निरुक्तम्
(ग) लगधः (iii) छन्दःशास्त्रम्
(घ) तदिदं विद्यास्थानं व्याकरणस्य कात्स्न्र्यं स्वार्थसाधकञ्च (iv) कल्पः

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(A)	(i)	(iii)	(iv)	(ii)
(B)	(iii)	(i)	(ii)	(iv)
(C)	(ii)	(iv)	(iii)	(i)
(D)	(iii)	(iv)	(i)	(ii)

व्याख्या-

वेदाङ्गों की संख्या छः है- शिक्षा, व्याकरण, छन्द, निरुक्त, ज्योतिष, कल्प।

* **ज्योतिष-** पाणिनीय शिक्षा में **'ज्योतिषामयनं चक्षुः'** ज्योतिष को चक्षु कहा गया है। ज्योतिष का अर्थ है ज्योतिर्विज्ञान। ज्योतिष विषयक केवल एक ही प्राचीन ग्रन्थ उपलब्ध होता है जो महर्षि लगध का 'वेदाङ्ग ज्योतिष' तथा दूसरे का नाम 'याजुष ज्योतिष' है।

* **निरुक्त-** पाणिनीय शिक्षा में **'निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते'** निरुक्त को श्रोत्र (कान) कहा गया है। निरुक्त महर्षि यास्क की रचना है जिसमें परिशिष्ट सहित चौदह अध्याय हैं। निरुक्त का अर्थ है -निर्वचन या व्युत्पत्ति।

'तदिदं विद्यास्थानं व्याकरणस्य कात्स्न्र्यं स्वार्थसाधकं च' यह निरुक्तशास्त्र व्याकरण का पूरक भी है क्योंकि शब्दार्थ के परिज्ञान द्वारा स्वर-संस्कार के विधान में व्याकरण की सहायता करता है और अपने अर्थ का साधक भी है।

'षड्भावविकारा भवन्तीति वार्ष्यायणिः' मुख्य रूप से क्रियाओं के छः भेद हैं ऐसा वार्ष्यायणि मानते हैं। छः प्रकार की क्रियाएँ हैं- जायते, अस्ति, विपरिणमते, वर्धते, अपक्षीयते, विनश्यति।

'नामानि आख्यातजानि इति शाकटायनो नैरुक्तसमयश्च' सारे ही नाम आख्यातज हैं, यह शाकटायन और नैरुक्तों का सिद्धान्त है।

* **छन्दशास्त्र-** पाणिनीय शिक्षा में **'छन्दः पादौ तु वेदस्य'** छन्द को वेदपुरुष का पैर कहा गया है।

पिंगल के छन्दसूत्र के पूर्वभाग में वैदिक छन्दों का विवेचन है तथा उत्तरभाग में लौकिक छन्दों का विश्लेषण है।

* **कल्प-** पाणिनीय शिक्षा में **'हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते'** कल्प को वेदपुरुष का हाथ कहा गया है। कल्प को चार भागों में बाँटा गया है। जिन ग्रन्थों में यज्ञ सम्बन्धी विधियों का प्रतिपादन हो उसे कल्प कहते हैं।

* **श्रौतसूत्र-** श्रौत का अर्थ है- **श्रुति प्रतिपादित या वेदों में वर्णित।** श्रौतसूत्रों में वेदों में वर्णित बड़े यज्ञ-याग इष्टियों का विस्तार से विवेचन है।

* **गृह्यसूत्र-** गृह्यसूत्रों में गृहस्थ से सम्बद्ध सोलह संस्कार, पञ्च महायज्ञ, सात पाकयज्ञ, गृह निर्माण, गृह प्रवेश, पशुपालन आदि का विस्तृत वर्णन है।

* **धर्मसूत्र-** इनमें वर्णाश्रम के कर्तव्यों, आचार-विचार, मान्यताओं और सामाजिक जीवन के कर्तव्य- अकर्तव्यों का वर्णन है।

* **शुल्बसूत्र-** ये शुद्ध रूप से गणितशास्त्रीय वैज्ञानिक ग्रन्थ है। इनमें गणितशास्त्र के अंग ज्यामितिशास्त्र से सम्बद्ध अनेक प्रमेय दिए गये हैं। शुल्बसूत्र में सभी प्रकार की वेदियों के निर्माण की पूरी विधि दी गई है। **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-190,199,214,208, निरुक्तम्-आचार्य विश्वेश्वर,पेज 96

13. महत् किमस्ति?

(A) प्रकृतिः (B) विकृतिः
(C) प्रकृतिविकृती (D) न प्रकृतिः न विकृतिः

व्याख्या-

सांख्यकारिकाकार ईश्वरकृष्ण ने पदार्थों का वर्णन इस प्रकार किया है-

मूलप्रकृतिरविकृतिर्महदाद्याः प्रकृतिविकृतयः सप्त।
षोडशकस्तु विकारो न प्रकृतिर्न विकृतिः पुरुषः॥ (सां.का.3)

मूलप्रकृति किसी का विकार नहीं है - महत् आदि सात पदार्थ (तत्त्व) प्रकृति विकृति अर्थात् कार्य और कारण दोनों हैं सोलह पदार्थ केवल विकार अर्थात् कार्य हैं, पुरुष न प्रकृति है न विकृति।

* प्रकृतिः- मूल प्रकृति (अविकृति) =1
* विकृतिः (विकार)-ः पाँच ज्ञानेन्द्रिय, पाँच कर्मेन्द्रिय- पाँच महाभूत, मन =16
* प्रकृति विकृति- महत्, अहंकार, पाँच तन्मात्रा =7
* न प्रकृतिः न विकृतिः = पुरुषः =1
* पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ- श्रोत्र, नेत्र, घ्राण, त्वक्, रसना
* पाँच कर्मेन्द्रियाँ- वाक्, पाणि, पाद, पायु, उपस्थ
* पाँच महाभूत- आकाश, वायु, तेज, जल, पृथिवी
* पाँच तन्मात्रा- शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- सांख्यकारिका- (का. - 3) राकेश शास्त्री,पेज-8

14. 'तल्लिङ्गलिङ्गिपूर्वकम्' लक्षणमिदं कस्य विद्यते?

(A) शब्दप्रमाणस्य (B) अनुमानप्रमाणस्य
(C) प्रत्यक्षप्रमाणस्य (D) उपमानप्रमाणस्य

व्याख्या-

ईश्वरकृष्ण ने सांख्यकारिका में प्रमाण का वर्णन इसप्रकार किया है-

प्रतिविषयाध्यवसायो दृष्टं त्रिविधमनुमानमाख्यातम्।
तल्लिङ्गलिङ्गिपूर्वकमाप्तश्रुतिराप्तवचनन्तु ॥5॥

(A) **शब्द प्रमाण-** सांख्यकारिका में शब्दप्रमाण का लक्षण निम्नवत् है- **''आप्तश्रुतिराप्तवचनं तु''** आप्तवचन अर्थात्

आगम प्रमाण युक्त श्रुति अर्थात् युक्त वाक्य से उत्पन्न उसके अर्थ ज्ञान को कहते हैं। जो वस्तु जैसी है उसे वैसा ही बताने वाला व्यक्ति 'आप्त' कहलाता है तथा श्रुति का अर्थ है- वाक्य से उत्पन्न होने वाला अर्थात् आप्तव्यक्ति द्वारा कहे गये वाक्य से उत्पन्न होने वाला ज्ञान ही आप्त श्रुति है।

(B) **अनुमान प्रमाण- ''तल्लिङ्गलिङ्गिपूर्वकम्''** अनुमान प्रमाण लिङ्ग तथा लिङ्गी के ज्ञान से उत्पन्न होता है। लिङ्ग को दार्शनिक भाषा में व्याप्त या साधन कहते हैं क्योंकि यह लिङ्गी व्यापक की अपेक्षा कम स्थानों पर रहता है। लिङ्गी का अर्थ है-ः व्यापक अर्थात् अपेक्षाकृत अधिक स्थानों पर रहना।
अनुमान प्रमाण के तीन भेद हैं- पूर्ववत्, सामान्यतोदृष्ट, शेषवत्।

(C) **प्रत्यक्ष प्रमाण-''प्रतिविषयाध्यवसायो दृष्टम्''** विषय से सन्निकृष्ट इन्द्रिय पर आश्रित बुद्धि-व्यापार या ज्ञान को प्रत्यक्ष प्रमाण कहते हैं।

(D) सांख्यशास्त्र में उपमान प्रमाण की चर्चा नहीं की गयी है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि तल्लिङ्गलिङ्गिपूर्वकम् यह लक्षण अनुमान प्रमाण का है। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- सांख्यकारिका- (का. - 5) राकेश शास्त्री, पेज-16

15. व्यक्तं कीदृक् न भवति?

(A) हेतुमत् (B) अव्यापि
(C) अनाश्रितम् (D) सावयवम्

व्याख्या-

सांख्यकारिकाकार ईश्वरकृष्ण के अनुसार व्यक्त और अव्यक्त का लक्षण निम्नवत् है- **'हेतुमदनित्यमव्यापि सक्रियमनेकमाश्रितं लिङ्गम्। सावयवं परतन्त्रं व्यक्तं विपरीतमव्यक्तम्॥'** (सां.का.10)

व्यक्त पदार्थ - हेतुमद्, अनित्य, अव्यापि,सक्रिय अनेक, आश्रित, लिङ्गी, सावयव तथा परतन्त्र होते हैं।
अव्यक्त पदार्थ इसके विपरीत होते हैं अर्थात् अहेतुमत्, नित्य, व्यापि, असक्रिय, एक, अनाश्रित, अलिङ्गी, निरवयव, स्वतन्त्र।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि व्यक्त पदार्थ हेतुमत्, अव्यापी, सावयव होता है वह अनाश्रित न होकर आश्रित होता है। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- सांख्यकारिका-(कारिका 10) राकेश शास्त्री, पेज-32-33

16. ''तदैक्यप्रमेयस्य तत्प्रतिपादकोपनिषत्प्रमाणस्य च बोध्यबोधकभावः'' वेदान्तसारानुसारं लक्षणमिदं कस्यास्ति?

(A) अधिकारिणः (B) विषयस्य
(C) सम्बन्धस्य (D) प्रयोजनस्य

व्याख्या-

सदानन्द प्रणीत वेदान्तसार में अनुबन्धों की संख्या चार है- अधिकारी, विषय, सम्बन्ध, प्रयोजन।

(A) **अधिकारी- 'अधिकारी तु विधिवदधीत..... नितान्तनिर्मलस्वान्तः साधनचतुष्टयसम्पन्नः प्रमाता।'**

जिसने इस जन्म में अथवा अन्य जन्मों में वेदों और वेदाङ्गों का विधिपूर्वक अध्ययन करने के द्वारा समस्त वेदान्त के अर्थ को सामान्य रूप से समझ लिया है, काम्य एवं निषिद्ध कर्मों का परित्याग करके नित्य, नैमित्तिक, प्रायश्चित्त, उपासना कर्मों का अनुष्ठान करने से, समस्त कल्मषों के दूर हो जाने के कारण जिसका अन्तःकरण अत्यन्त निर्मल हो गया है, प्रमाणों के द्वारा व्यवहार करने में समर्थ साधनचतुष्टय से सम्पन्न प्रमाता इस ग्रन्थ का अधिकारी है।

(B) **विषय- 'विषयो जीवब्रह्मैक्यं शुद्धचैतन्यं प्रमेयं तत्रैव वेदान्तानां तात्पर्यात्।'**
जीव और ब्रह्म की एकता अर्थात् अभेद ही वेदान्त का विषय है।

(C) **सम्बन्ध-**
'सम्बन्धस्तु तदैक्यप्रमेयस्य तत्प्रतिपादकोपनिषत्प्रमाणस्य च बोध्यबोधकभावलक्षणः।'
जीव और ब्रह्म की एकतारूप प्रमेय का और उसका प्रतिपादन करने वाले उपनिषद् रूप प्रमाण का परस्पर बोध्य-बोधकभाव ही इस शास्त्र का सम्बन्ध है।

(D) **प्रयोजन- 'प्रयोजनं तु तदैक्यप्रमेयगताज्ञाननिवृत्तिः स्वस्वरूपानन्दावाप्तिश्च।'**
जीव और ब्रह्म की एकतारूप प्रमेय के सम्बन्ध में जो अज्ञान है उसकी निवृत्ति होना और अपने वास्तविक स्वरूप आनन्द की प्राप्ति होना इस ग्रन्थ का प्रयोजन है।

स्पष्टीकरण- 'तदैक्यप्रमेयस्य तत्प्रतिपादकोपनिषत्प्रमाणस्य च बोध्यबोधकभावः' यह लक्षण सम्बन्ध का है।
अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- वेदान्तसार- आद्याप्रसाद मिश्र, पेज 36

17. 'समष्टिव्यष्ट्यभिप्रायेणैकमनेकमिति' उक्तिरियं वेदान्तसारे कस्य सन्दर्भेऽस्ति?

(A) विद्यायाः (B) अज्ञानस्य
(C) अध्यारोपस्य (D) समाधेः

व्याख्या-

(A) **शुक्लयजुर्वेद** का चालीसवाँ अध्याय ईशावास्योपनिषद् है, इसके मन्त्र संख्या ग्यारह में विद्या और अविद्या की चर्चा की

गयी है जो इस प्रकार है-

विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नुते।। (ईश.मन्त्र.11)

जो साधक पुरुष विद्या अर्थात् ज्ञान को अथवा ज्ञानरूप साधन को अर्थात् ज्ञानमार्ग को और कर्म रूप साधन को दोनों को एक साथ जान लिया करता है वह कर्मों के यथावत् अनुष्ठान के द्वारा मृत्यु को अर्थात् जन्म-मृत्यु के बन्धन को पार करके तत्त्वज्ञान अथवा ब्रह्मज्ञान के द्वारा अमृत अर्थात् मोक्ष को प्राप्त कर लिया करता है।

(B) **अज्ञान- अज्ञानं तु सदसद्भ्यामनिर्वचनीयं त्रिगुणात्मकं ज्ञानविरोधि भावरूपम्।**

अज्ञान सत् या असत् रूप से अनिर्वचनीय, त्रिगुणात्मक, ज्ञान का विरोधी, भावरूप है।

* इस अज्ञान के दो भेद हैं- **'इदमज्ञानं समष्टिव्यष्ट्यभिप्रायेणै-कमनेकमिति च व्यवह्रियते'** यह अज्ञान समष्टि के अभिप्राय से एक और व्यष्टि के अभिप्राय से अनेक कहा जाता है।
* इस अज्ञान की दो शक्तियाँ भी हैं-

'अस्याज्ञानस्यावरणविक्षेपनामकमस्ति शक्तिद्वयम्'

अज्ञान की आवरण और विक्षेप नामक दो शक्तियाँ हैं।

(C) **अध्यारोप-**

'असर्पभूतायां रज्जौ सर्पारोपवद् वस्तुन्यवस्त्वारोपोऽध्या-रोपः' कभी भी सर्पभाव को न प्राप्त होने वाली रस्सी पर सर्प के आरोप के समान, वस्तु पर अवस्तु का आरोप करना ही अध्यारोप है।

(D) **समाधि-** वेदान्तसार में समाधि के दो भेद हैं-

(1) सविकल्पक समाधि (2) निर्विकल्पक समाधि

* निर्विकल्पक समाधि के आठ अंग हैं- यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि।
* निर्विकल्पक समाधि के चार विघ्न हैं- लय, विक्षेप, कषाय और रसास्वाद।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि **''समष्टिव्यष्ट्यभिप्राये-णैकमनेकमिति''** यह लाइन अज्ञान के सन्दर्भ में कही गई है। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- वेदान्तसार- आद्याप्रसाद मिश्र, पेज 42

18. अज्ञानोपहितं चैतन्यं कीदृशं कारणं भवति ?

(A) निमित्तकारणम्
(B) उपादानकारणम्
(C) निमित्तकारणम् उपादानकारणम् च
(D) कीदृशमपि कारणम् न

व्याख्या-

सदानन्दप्रणीत वेदान्तसार में अज्ञान की दोनों शक्तियों आवरण और विक्षेप के स्वरूप के विषय में वर्णन प्राप्त होता है-

'शक्तिद्वयवदज्ञानोपहितं चैतन्यं स्वप्रधानतया निमित्तं स्वोपाधिप्रधानतयोपादानं च भवति'

अपनी आवरण और विक्षेप नाम वाली दो शक्तियों से सम्पन्न अज्ञान से उपहित चैतन्य अपनी प्रधानता से जगत् का निमित्त कारण तथा अपनी उपाधि की प्रधानता से उपादान कारण होता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त प्रश्न में अज्ञान से उपहित चैतन्य कैसा कारण होता है यह पूछा गया है इसलिए अज्ञान से उपहित चैतन्य निमित्त और उपादान दोनों कारण होता है। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- वेदान्तसार-सन्तनारायण श्रीवास्तव्य, पेज-59

19. वेदान्तसारानुसारं सूक्ष्मशरीरे कति अवयवानि भवन्ति?

(A) षोडशावयवानि (B) पञ्चदशावयवानि
(C) सप्तदशावयवानि (D) त्रयोदशावयवानि

व्याख्या-

* सदानन्दप्रणीत वेदान्तसार के अनुसार सूक्ष्मशरीर का निर्माण सत्रह अवयवों से होता है-

'सूक्ष्मशरीराणि सप्तदशावयवानि लिङ्गशरीराणि'

सूक्ष्मशरीर को लिङ्गशरीर भी कहते हैं।

सत्रह अवयवों के नाम-

* पञ्च ज्ञानेन्द्रियाँ- श्रोत्र, त्वक्, चक्षु, जिह्वा, घ्राण
* पञ्च कर्मेन्द्रियाँ- वाक्, पाणि, पाद, पायु, उपस्थ
* पञ्च वायु- प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान, बुद्धि और मन

⇒ तर्कभाषा के अनुसार पदार्थों की संख्या सोलह है-

प्रमाण, प्रमेय, संशय, प्रयोजन, दृष्टान्त, सिद्धान्त, अवयव, तर्क, निर्णय, वाद, जल्प, वितण्डा, हेत्वाभास, छल, जाति, निग्रहस्थान।

⇒ सांख्य के अनुसार सूक्ष्मशरीर / लिङ्गशरीर में 18 अवयव होते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि वेदान्तसार के अनुसार सूक्ष्मशरीर का निर्माण सत्रह अवयवों से होता है। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- वेदान्तसार- सन्तनारायण श्रीवास्तव्य, पेज-65

20. तर्कसङ्ग्रहानुसारं रूपं कतिविधम् ?

(A) पञ्चविधम् (B) सप्तविधम्
(C) षड्विधम् (D) नवविधम्

व्याख्या-

अन्नम्भट्ट प्रणीत 'तर्कसंग्रह' न्यायवैशेषिक का प्रकरणग्रन्थ है।

* तर्कसंग्रह में कर्म के पाँच भेद बताए गये हैं-

'उत्क्षेपणापक्षेपणाऽकुञ्चनप्रसारणगमनानि पञ्चकर्माणि'

(1) उत्क्षेपण (2) अपक्षेपण (3) आकुञ्चन (4) प्रसारण (5) गमन

* चौबीस गुणों के अन्तर्गत रूप नामक गुण प्रथम गुण है जिसका लक्षण है-

'चक्षुर्मात्रगाह्यो गुणो रूपम्' अर्थात् जिस गुण का ग्रहण मात्र चक्षु इन्द्रिय के द्वारा ही किया जाता है उसे रूप कहते हैं।

वह रूप नामक गुण सात प्रकार का होता है-

'तच्च शुक्ल-नील-पीत-रक्त-हरित-कपिश-चित्र-भेदात्सप्तविधम्' अर्थात् वह रूप शुक्ल (सफेद), नील, पीत, रक्त, हरित, कपिश, चित्र के भेद से सात प्रकार का होता है।

* चौबीस गुणों के अन्तर्गत परिगणित रस नामक गुण द्वितीय गुण है जिसका लक्षण है-

'रसनाग्राह्यो गुणो रसः' जिस गुण का रसना इन्द्रिय से ग्रहण किया जाता है उसे रस कहते हैं उस रस के छः भेद हैं- **'स च मधुर-अम्ल-लवण-कटु-कषाय-तिक्तभेदात् षड्विधः'** अर्थात् मधुर (मीठा), अम्ल (खट्टा), लवण (नमकीन), कटु (कड़वा), कषाय (कसैला) और तिक्त (तीता) के भेद से रस के छः भेद हैं।

* तर्कसंग्रह के अनुसार द्रव्य के नव भेद हैं **'तत्र द्रव्याणि पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशकालदिगात्ममनांसि नवैव'** अर्थात् पृथ्वी,जल, तेज, वायु, आकाश, काल, दिक्, आत्मा, मन के भेद से द्रव्य के नव भेद हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि रूप के सात भेद हैं। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- तर्कसंग्रह- गोविन्दाचार्य, पेज 80

21. 'गौरश्वः पुरुषो हस्ती' इति पदसमुदायः प्रमाणं कथं न भवति?

(A) योग्यताविरहात् (B) आकाङ्क्षाविरहात्
(C) सान्निध्याभावात् (D) पदसमूहाभावात्

व्याख्या-

➢ तर्कभाषाकार केशवमिश्र प्रमाणविवेचन के क्रम में शब्द प्रमाण का लक्षण करते हैं- **'आप्तवाक्यं शब्दः'** अर्थात् आप्त के वाक्य को शब्द कहते हैं। जो पदार्थ जैसा है उसका उसी रूप में उपदेश करने वाला आप्त पुरुष कहलाता है।

* इसी क्रम में वाक्य का लक्षण करते हैंः **'वाक्यं त्वाकाङ्क्षायोग्यता-सन्निधिमतां पदानां समूहः।'** आकाङ्क्षा, योग्यता और सन्निधि वाले पदों का समूह वाक्य होता है।

गौ, अश्व, पुरुष, हस्ती ये पदसमूह वाक्य नहीं है, क्योंकि इनमें परस्पर आकाङ्क्षा का अभाव है।

* इसीप्रकार 'अग्निना सिञ्चति' यह भी वाक्य नहीं है क्योंकि अग्नि द्वारा सेचन रूपी कार्य नहीं हो सकता अतः इसमें योग्यता का अभाव है यह भी वाक्य नहीं हो सकता।

* इसी प्रकार प्रहर-प्रहर में एक साथ उच्चरित न किए गए 'गाय को लाओ' इत्यादि पदसमूह वाक्य नहीं होते, क्योंकि वहाँ परस्पर सन्निधि का अभाव होता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि 'गौरश्वः पुरुषो हस्ती' इस समुदाय में परस्पर आकाङ्क्षा न होने से वाक्य नहीं है। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- तर्कभाषा- श्रीनिवास शास्त्री,पेज-122

22. असाधारणधर्मः कस्य लक्षणम्?

(A) लक्षणस्य (B) उद्देशः
(C) परीक्षायाः (D) आत्मनः

व्याख्या-

तर्कभाषाकार आचार्य केशवमिश्र के अनुसार न्यायशास्त्र की तीन प्रकार की प्रवृत्ति होती है-

उद्देश- 'उद्देशस्तु नाममात्रेण वस्तुसंकीर्तनम्' अर्थात् नाम मात्र से पदार्थ का कथन उद्देश है।

लक्षण- 'लक्षणन्त्वसाधारणधर्मवचनम्' असाधारण धर्म का कथन लक्षण है, जैसे- 'गोः सास्नादिमत्त्वम्' अर्थात् गलकम्बल आदि वाली होना गौ का लक्षण है।

परीक्षा- 'लक्षितस्य लक्षणमुपपद्यते न वेति विचारः परीक्षा' अर्थात् जिसका लक्षण किया गया है उसका यह लक्षण ठीक है या नहीं इस प्रकार का विचार करना परीक्षा है।

* बारह प्रमेयों के अन्तर्गत परिगणित आत्मा प्रथम प्रमेय है जिसका लक्षण है- **'तत्रात्मत्वसामान्यवानात्मा'** अर्थात् आत्मत्व जाति जिसमें रहती है वह आत्मा है। वह आत्मा देह, इन्द्रिय से भिन्न है, प्रत्येक शरीर में पृथक्-पृथक् है विभु एवं नित्य है।

* आत्मा, शरीर, इन्द्रिय, अर्थ, बुद्धि, मन, प्रवृत्ति, दोष, प्रेत्यभाव, फल, दुःख तथा अपवर्ग ये बारह प्रमेय हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि 'असाधारणधर्मः' लक्षण का लक्षण है। **अतः विकल्प A सही है।**

स्रोत- तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज - 7

23. तर्कभाषायां 'प्रकरणसम'हेत्वाभासस्य काऽपरा सञ्ज्ञा?

(A) बाधितविषयः (B) सत्प्रतिपक्षः
(C) सव्यभिचारः (D) अनुपसंहारी

व्याख्या-

तर्कभाषाकार केशवमिश्र अनुमान प्रमाण के सन्दर्भ में हेतु से भिन्न हेत्वाभास को परिभाषित करते हैं-

'असिद्ध-विरुद्ध अनैकान्तिक-प्रकरणसम-कालात्ययापदिष्टभेदात् पञ्चैव' अर्थात् (1) असिद्ध (2) विरुद्ध (3) अनैकान्तिक (4) प्रकरणसम (5) कालात्ययापदिष्ट ये पाँच हेत्वाभास हैं।

असिद्ध हेत्वाभास-'तत्र लिङ्गत्वेनानिश्चितो हेतुरसिद्धः' उनमें लिङ्ग के रूप में निश्चित न होने वाला हेतु असिद्ध हेत्वाभास कहलाता है। वह असिद्ध हेत्वाभास तीन प्रकार का होता है- (1) आश्रयासिद्ध (2) स्वरूपासिद्ध (3) व्याप्यत्वासिद्ध।

* **विरुद्ध हेत्वाभास-'साध्यविपर्ययव्याप्तो हेतुर्विरुद्धः'** साध्य के अभाव से व्याप्त हेतु विरुद्ध हेत्वाभास कहलाता है।

* **अनैकान्तिक हेत्वाभास- 'सव्यभिचारोऽनैकान्तिकः'** सव्यभिचार हेतु अनैकान्तिक हेत्वाभास कहलाता है। अनैकान्तिक हेत्वाभास दो प्रकार का होता है- (1) साधारण अनैकान्तिक हेत्वाभास (2) असाधारण अनैकान्तिक हेत्वाभास।

* **प्रकरणसम हेत्वाभास - 'प्रकरणसमस्तु स एव यस्य हेतोः साध्य-विपरीतसाधकं हेत्वन्तरं विद्यते'** जिस हेतु के साध्य के विपरीत अर्थ का साधक दूसरा हेतु विद्यमान होता है वह प्रकरणसम हेत्वाभास कहलाता है। इस प्रकरणसम हेत्वाभास को ही सत्प्रतिपक्ष भी कहते हैं। 'अयमेव हि सत्प्रतिपक्ष इति चोच्यते'।

* **कालात्ययापदिष्ट या बाधितविषय हेत्वाभास-**

'पक्षे प्रमाणान्तरावधृतसाध्याभावो हेतुर्बाधितविषयः कालात्ययापदिष्ट इति चोच्यते' जिसके साध्य का अभाव अन्य प्रमाण से निश्चित कर दिया जाता है वह हेतु बाधितविषय तथा कालात्ययापदिष्ट कहलाता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि प्रकरणसम हेत्वाभास की अपरा सञ्ज्ञा सत्प्रतिपक्ष है। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- तर्कभाषा- बदरीनाथ शुक्ल, पेज-122

24. तर्कभाषानुसारं समवायिकारणं किम्भवति?

(A) गुणः (B) द्रव्यम्
(C) कर्मः (D) सामान्यम्

व्याख्या-

* आचार्य केशवमिश्र तर्कभाषा में तीन प्रकार के कारण बताए हैं- (1) समवायिकारण (2) असमवायिकारण (3) निमित्तकारण।

* **समवायिकारण-** 'यत्समवेतं कार्यमुत्पद्यते तत्समवायिकारणम्' अर्थात् जिसमें समवेत होकर कार्य उत्पन्न होता है वह समवायिकारण है। उदाहरण - तन्तु पट के समवायिकारण हैं, मिट्टी का पिण्ड भी घट का समवायिकारण है।

इसी क्रम में पूर्वपक्ष का खण्डन करते हुए केशवमिश्र कहते हैं कि गुणों का आश्रय न होने के कारण घट आदि में द्रव्यत्व का अभाव होने लगेगा क्योंकि **'समवायिकारणं द्रव्यमिति द्रव्यलक्षणयोगात्'** अर्थात् समवायी कारण द्रव्य होता है, यह द्रव्य का लक्षण घटित हो जाता है, तथा द्रव्य निरूपण के प्रसंग में द्रव्य का लक्षण करते हैं- जो समवायी कारण होता है वह द्रव्य का लक्षण है।

* **असमवायिकारण- 'यत्समवायिकारणप्रत्यासन्नम-वधृतसामर्थ्यं तदसमवायिकारणम्'** अर्थात् जो समवायि कारण में निकटतः सम्बद्ध होता है और जिसकी कार्य के प्रति सामर्थ्य निश्चित होती है वह असमवायी कारण होता है। उदाहरण-तन्तुसंयोग पट का असमवायी कारण है।

* **निमित्त कारण- 'यन्न समवायिकारणम्, नाप्यसमवायिकारणम् अथ च कारणम्'** अर्थात् जो न समवायी कारण है, न ही असमवायी कारण है किन्तु कारण है वह निमित्त कारण कहलाता है जैसे वेमा आदि पट का निमित्त कारण है।

* **गुण-** 'सामान्यमान् असमवायिकारणम् अस्पन्दात्मा गुणः' अर्थात् सामान्य से युक्त, असमवायी कारण होने वाला, कर्मस्वरूप न होने वाला गुण कहलाता है। वह द्रव्य के आश्रित ही रहा करता है। गुणों के 24 प्रकार हैं-

(1) रूप (2) रस (3) गन्ध (4) स्पर्श (5) संख्या (6) परिमाण (7) पृथक्त्व (8) संयोग (9) विभाग (10) परत्व (11) अपरत्व (12) गुरुत्व (13) द्रवत्व (14) स्नेह (15) शब्द (16) बुद्धि (17) सुख (18) दुःख (19) इच्छा (20) द्वेष (21) प्रयत्न (22) धर्म (23) अधर्म (24) संस्कार

* **कर्म-** 'चलनात्मकं कर्म' अर्थात् कर्म का स्वरूप है क्रिया (चलना, हिलना, गति)। कर्म के पाँच प्रकार हैं- उत्क्षेपण, अपक्षेपण, आकुञ्चन, प्रसारण, गमन।

* **सामान्य-** 'अनुवृत्तिप्रत्ययहेतुः सामान्यम्' अर्थात् समानाकारक प्रतीति का हेतु सामान्य जाति है। वह द्रव्य आदि तीन (द्रव्य, गुण, कर्म) में रहती है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि 'समवायिकारणं द्रव्यम्' द्रव्य का लक्षण है। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- तर्कभाषा- बदरीनाथ,पेज-47

25. 'पठति' इति क्रियापदं कीदृश्याः भाषायाः उदाहरणमस्ति-
(A) अयोगात्मिकायाः
(B) प्रश्लिष्टयोगात्मिकायाः
(C) श्लिष्टयोगात्मिकायाः
(D) अश्लिष्टयोगात्मिकायाः

व्याख्या-

भाषा का वर्गीकरण दो प्रकार से किया जाता है (1) अयोगात्मक (2) योगात्मक। योगात्मक वर्गीकरण के तीन भेद हैं- (1) अश्लिष्ट योगात्मक (2) श्लिष्ट योगात्मक (3) प्रश्लिष्ट योगात्मक।

श्लिष्ट योगात्मक- श्लिष्ट योगात्मक भाषाओं में अर्थतत्त्व और सम्बन्धतत्त्व अर्थात् प्रकृति और प्रत्यय घनिष्ठता से मिले होते हैं। यह संयोग 'नीर-क्षीरन्याय' कहा जा सकता है। इस वर्ग की भाषाओं के दो भेद किए हैं (क) अन्तर्मुखी (ख) बहिर्मुखी। इन दोनों के भी दो भेद किए जाते हैं संयोगात्मक तथा वियोगात्मक। अन्तर्मुखी में अरबी और बहिर्मुखी में संस्कृत प्रतिनिधि भाषा है। संस्कृत में भी शब्दों के अन्दर परिवर्तन होता है, जैसे-दैविक, नैतिक, पपाठ, जगाम, ममार आदि।

गम् से गच्छति, पठ् से पठति, हस् से हसति इन सारे उदाहरणों में अ + ति प्रत्यय का प्रयोग हुआ है। ये **बहिर्मुखी श्लिष्ट योगात्मक** के उदाहरण हैं।

प्रश्लिष्टयोगात्मक - प्रश्लिष्ट योगात्मक भाषाएँ उन्हें कहते हैं जिनमें प्रकृति और प्रत्यय इस प्रकार से जुड़े हुए होते हैं कि उनको अलग-अलग करना सम्भव नहीं होता है। इस संयोग को दधिघृतन्याय कहा जा सकता है। इसके उदाहरण हैं- आर्जव-ऋजु + अ, सौवर-स्वर + अ, दित्सति-दा + स +ति।

अश्लिष्ट योगात्मक- अश्लिष्ट योगात्मक भाषाओं में अर्थ-तत्त्व और सम्बन्धतत्त्व अर्थात् प्रकृति और प्रत्यय इस प्रकार से जुड़े रहते हैं कि इनको स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। इस प्रकार के जोड़ को पूर्णतया न जुड़े होने से अश्लिष्ट और जुड़े होने के कारण योगात्मक कहा जाता है। इस संयोग को तिल तण्डुल-न्याय कहा जा सकता है।

अयोगात्मक भाषा- अयोगात्मक उन भाषाओं को कहते हैं, जिनमें प्रकृति और प्रत्यय का संयोग नहीं होता है। प्रत्येक शब्द स्वतन्त्र होता है। इसे Root language कहते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है 'पठति' श्लिष्ट योगात्मक भाषा है। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- भाषा-विज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-365

26. ग्रीकभाषा कस्य परिवारस्य भाषा अस्ति?
(A) भारोपीय-परिवारस्य (B) सेमेटिक-परिवारस्य
(C) सूडानी-परिवारस्य (D) काकेशी-परिवारस्य

व्याख्या-

विश्व भाषाओं के पारिवारिक वर्गीकरण के अनुसार 18 भेद माने गए हैं। **यूरेशिया (यूरोप एशिया) खण्ड में-** 1 द्राविड 2- भारोपीय 3- काकेशी 4- बुरुशस्की 5- यूराल अल्ताई 6- बास्क 7- चीनी 8- अत्युत्तरी (हाइपरबोरी) 9- जापानी- कोरियाई 10- सामी हामी (सेमेटिक, हैमेटिक)

अफ्रीका खण्ड में- 11 सूडानी 12- होतेन्तोत बुशमैनी 13- बान्तू (सामी-हामी)

प्रशान्त महासागरीय खण्ड में- 14 मलय बहुद्वीपीय 15- पापुई 16- आस्ट्रेलियन 17- दक्षिणपूर्व एशियन

अमेरिका खण्ड में- 18 अमेरिकी परिवार हैं।

भारोपीय परिवार की शाखाएँ- भारोपीय शब्द भारत+यूरोपीय का संक्षिप्त रूप है। यह Indo-European का अनुवाद है। भारोपीय में भारतवर्ष से लेकर यूरोप तक फैली हुई भाषाओं का संग्रह है। इसकी दस शाखाएँ हैं-

1- भारत ईरानी (आर्य) - (क) भारतीय (ख) ईरानी
2- बाल्टो स्लाविक (क) बाल्टिक (ख) स्लाविक
3- आर्मीनी
4- अल्बानी (इलीरी)
5- ग्रीक (हेलेनिक)
6- केल्टिक
7- जर्मानिक (ट्यूटानिक)
8- इटालिक
9- हिटाइट (हित्ती)
10- तोखारी

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि ग्रीकभाषा भारोपीय परिवार की भाषा के अन्तर्गत आती है। **अतः विकल्प A सही है।**

स्रोत- भाषा-विज्ञान एवं भाषा शास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-369

27. निम्नलिखितासु भाषासु का भाषा 'सतम्' वर्गस्य नास्ति?
(A) संस्कृत भाषा (B) ईरानी भाषा
(C) ग्रीक भाषा (D) फारसी भाषा

व्याख्या-

भारोपीय परिवार की भाषाओं को ध्वनि के आधार पर दो

भागों में विभक्त किया गया है- (1) केन्टुम् वर्ग (2) शतम् वर्ग। इस विभाजन का श्रेय प्रो. अस्कोली को दिया जाता है। यह मत उन्होंने 1870. ई. में प्रस्तुत किया। सभी भारोपीय भाषाओं को इन दो भागों में विभक्त किया गया है-
भारोपीय परिवार को **केन्टुम् और शतम् वर्ग** के आधार पर निम्न प्रकार से बाँटा जा सकता है-

भारोपीय भाषा

शतम् वर्ग	**केन्टुम् वर्ग**
संस्कृत- शतम्	लैटिन - केन्टुम्
अवेस्ता (ईरानी)- सतम्	ग्रीक - हेकटोन
फारसी- सद्	केल्टिक - केत्
हिन्दी- सौ	तोखारी - कन्ध
रूसी - स्तो	गाथिक - हुन्ड
लिथुआनियन- स्जिम्तास	जर्मन - हुन्डर्ट
	फ्रेञ्च - सं./सेन्ट
	इटालियन - केन्तो

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि शतम् वर्ग की भाषा संस्कृत, ईरानी (अवेस्ता), फारसी है जबकि ग्रीक भाषा केन्टुम् वर्ग की है। **अतः विकल्प C सही है।**
स्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-385

28. अंग्रेजी-भाषायाः सम्बन्धः कया भाषाशाखया अस्ति?
(A) कैल्टिकशाखया (B) जर्मनिकशाखया
(C) इटैलिकशाखया (D) ग्रीकशाखया

व्याख्या-
जर्मनिक या ट्यूटानिक- जर्मनिक या ट्यूटानिक का क्षेत्रीय विभाजन इस प्रकार है-
पूर्वी क्षेत्र- गाथिक
उत्तरी क्षेत्र- आइसलैण्डिक (आइसलैण्ड में), नार्वेजियन (नार्वे में), डेनिश (डेनमार्क में), स्वीडिश (स्वीडन में)
पश्चिमी क्षेत्र- अंग्रेज़ी (इग्लैण्ड), उच्चजर्मन (दक्षिणी जर्मनी में), निम्न जर्मन (उत्तरी जर्मनी में), डच (हालैण्ड में), फ्लेमिश (बेल्जियम में) यह भारोपीय परिवार की सबसे अधिक विस्तृत भू भाग में बोली जाने वाली भाषा है। इसकी एक शाखा अंग्रेजी विश्व में सबसे अधिक फैली हुई है। जर्मन और डच भाषा का साहित्य भी उच्चकोटि का है।
केल्टिक- यह भाषा यूरोप के बहुत बड़े भूभाग में बोली जाती थी। यह पूर्व में एशिया माइनर तक फैली हुई थी। अब यह यूरोप के पश्चिमी भाग में ही सीमित रह गई है। फ्रांस के पश्चिमोत्तर भाग तथा ग्रेट ब्रिटेन में बोली जाती है।
इटैलिक- इटालिक या रोमान्स वर्ग का क्षेत्रीय विभाजन इस प्रकार है- (1) इटालियन- इटली, सिसिली, कोर्सिका।
(2) फ्रेञ्च- फ्रांस में (3) स्पेनिश- स्पेन में, (4) रूमानियन रूमानिया में (5) पुर्तगाली- पुर्तगाल में।
रोमान्स वर्ग की भाषाओं का विकास लैटिन से हुआ है। लैटिन मूलतः रोम और उसके समीपवर्ती जिले की भाषा थी।
ग्रीक- ग्रीक भाषा का क्षेत्र दक्षिणी, अल्बानिया और यूगोस्लाविया,बल्गोरिया-टर्की- साइप्रस का कुछ भाग है।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि अंग्रेजी भाषा का सम्बन्ध जर्मनिक शाखा से है। **अतः विकल्प B सही है।**
स्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-391-392

29. संस्कृतभाषायां निम्नलिखितेषु स्वरेषु कस्य स्वरस्य दीर्घो नास्ति?
(A) ऋकारस्य (B) अकारस्य
(C) इकारस्य (D) ऌकारस्य

व्याख्या-
श्रीवरदराजाचार्य कृत लघुसिद्धान्तकौमुदी के संज्ञाप्रकरण में स्वरों की चर्चा की गयी है-
अ- इ- उ- ऋ- एषां वर्णानां प्रत्येकमष्टादशभेदाः।
अ, इ, उ, ऋ इन चार वर्णों के अठारह-अठारह भेद होते हैं। इनका ह्रस्व और दीर्घ दोनों होता है।
ऌवर्णस्य द्वादश तस्य दीर्घाभावात्।
ऌ वर्ण का दीर्घ नहीं होता इसलिए 12 ही भेद माने जाते हैं।
एचामपि द्वादश, तेषां ह्रस्वाभावात्। ए, ओ, ऐ, औ का ह्रस्व (छोटा) नहीं होता इसलिए बारह ही भेद माने जाते हैं।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि संस्कृत भाषा के स्वरों में ऌ का दीर्घ नहीं होता है। **अतः विकल्प D सही है।**
स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी-धरानन्दशास्त्री, पेज 16

30. अन्त्यादलः पूर्ववर्णस्य का सञ्ज्ञा भवति?
(A) अपृक्तसञ्ज्ञा (B) उपधासञ्ज्ञा
(C) टि-सञ्ज्ञा (D) सर्वनामस्थान सञ्ज्ञा

व्याख्या- *अपृक्तसञ्ज्ञा- अपृक्तसञ्ज्ञा का विधान करने वाला सञ्ज्ञा सूत्र है- **अपृक्त एकाल्प्रत्ययः** (1.2.41) अर्थात् जो प्रत्यय एक वर्णरूप हो गया हो उसकी अपृक्त सञ्ज्ञा होती है। उदा.- 'वाच् स्' यहाँ 'स्' एक वर्णरूप प्रत्यय है अतः स् अपृक्त सञ्ज्ञक है।

* **उपधा सञ्ज्ञा-** उपधा सञ्ज्ञा का विधान करने वाला सञ्ज्ञा सूत्र है- **'अलोऽन्त्यात्पूर्व उपधा** (1.1.64)' अन्तिम अल् (स्वर या व्यञ्जन) से पूर्व वर्ण की उपधा सञ्ज्ञा होती है।

उदाहरण- गम् में मकार से पूर्व वर्ण गकारोत्तरवर्ती अकार की, मुच् में चकार से पूर्व वर्ण मकारोत्तरवर्त्ती उकार की उपधा सञ्ज्ञा होगी।

* **टि सञ्ज्ञा-** टि सञ्ज्ञा का विधान करने वाला सञ्ज्ञा सूत्र है- **अचोऽन्त्यादि टि** (1.1.63) अर्थात् अचों (स्वरों) के मध्य में जो अन्तिम अच् (स्वर), वह है आदि में जिसके, उस समुदाय की टि सञ्ज्ञा होती है।

उदाहरण- मनस् में नकारोत्तरवर्ती अकार अन्तिम स्वर है अतः पूर्ण समुदाय अस् की टि सञ्ज्ञा होगी। राजन् में अन् की टि सञ्ज्ञा होगी।

* **सर्वनामस्थान सञ्ज्ञा-** सर्वनामस्थान सञ्ज्ञा विधायक सञ्ज्ञासूत्र है- **शि सर्वनामस्थानम्** (1.141)- शि की सर्वनामस्थान सञ्ज्ञा होती है।

उदाहरण- वनानि, दधीनि, मधूनि।

(2) **सुडनपुंसकस्य** (1.1.42)- नपुंसकलिङ्ग से भिन्न सुट् (सु, औ, जस्, अम्, औट् इन पाँच) प्रत्ययों की सर्वनामस्थान सञ्ज्ञा होती है। उदाहरण- राजा, राजानौ, राजानः, राजानम्, राजानौ में क्रमशः सु, औ, जस्, अम्, औट् इन पाँच प्रत्ययों की सर्वनामस्थान सञ्ज्ञा है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि अन्तिम अल् से पूर्व वर्ण की उपधा सञ्ज्ञा होगी। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी- गोविन्दाचार्य, पेज-175

31. निषेध-विकल्पयोः सञ्ज्ञा का ?

(A) अपृक्त सञ्ज्ञा (B) विभाषा सञ्ज्ञा
(C) उपधा सञ्ज्ञा (D) प्रगृह्य सञ्ज्ञा

व्याख्या-

* **विभाषा सञ्ज्ञा-** विभाषा सञ्ज्ञा विधायक सञ्ज्ञासूत्र है- **न वेति विभाषा** (1.1.43) न का अर्थ है निषेध तथा वा का अर्थ है निषेध तथा विकल्प - इन दो अर्थों की विभाषा सञ्ज्ञा होती है।

* **प्रगृह्यसञ्ज्ञा-** प्रगृह्यसञ्ज्ञा विधायक सञ्ज्ञासूत्रों की संख्या आठ है- **(1) ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम् (1.1.11)-** दीर्घ ईकारान्त, दीर्घ ऊकारान्त, तथा दीर्घ एकारान्त द्विवचनान्त की प्रगृह्य सञ्ज्ञा होती है। उदाहरण- हरी एतौ, विष्णू इमौ, गंगे अमू, आदि।

(2) अदसो मात् (1.1.12)- अदस् शब्द के मकार से परे ईत् तथा ऊत् प्रगृह्यसञ्ज्क होते हैं। उदाहरण- अमी ईशाः अमू आसाते।

(3) शे (1.1.13)- शे इस सुबादेश की प्रगृह्य सञ्ज्ञा होती है (प्रायः वेदों में) उदाहरण- युष्मे इति, त्वे इति, मे इति।

(4) निपात एकाजनाङ् (1.1.14)- आङ् को छोड़कर एक अच् स्वरूप निपात की प्रगृह्य सञ्ज्ञा होती है। उदाहरण- अ अपेहि, इ इन्द्रम् आदि।

(5) ओत् (1.1.15) ओकारान्त निपात की प्रगृह्य सञ्ज्ञा होती है। उदाहरण- उताहो अनिष्टम्, अहो अद्य शीतम्।

(6) सम्बुद्धौ शाकल्यस्येतावनार्षे (1.1.16)- सम्बुद्धिनिमित्तक ओकार की अवैदिक 'इति' शब्द के परे रहते विकल्प से प्रगृह्य सञ्ज्ञा होती है। यह सूत्र विकल्प से प्रगृह्य सञ्ज्ञा का विधान करता है। उदाहरण- विष्णो इति।

(7) ईदूतौ च सप्तम्यर्थे इति प्रगृह्यम् (1.1.19)- सप्तमी के अर्थ में ईकारान्त व ऊकारान्त की प्रगृह्य सञ्ज्ञा होती है। **उदाहरण-** तनू इति, गौरी अधिश्रितः आदि।

(8) उञः ऊँ (1.1.17)- यह सूत्र उञ् अव्यय की प्रगृह्य सञ्ज्ञा का विधान करता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि निषेध विकल्प का विधान करने वाला सूत्र **'न वेति विभाषा'** है।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- अष्टाध्यायी (1.1.43)- ईश्वरचन्द्र, पेज 25

32. 'सुडनपुंसकस्य' इति सूत्रेण का सञ्ज्ञा क्रियते?

(A) सर्वनामस्थान सञ्ज्ञा (B) निष्ठा सञ्ज्ञा
(C) प्रातिपदिक सञ्ज्ञा (D) पद सञ्ज्ञा

व्याख्या-

➢ सर्वनामस्थान सञ्ज्ञा का विधान करने वाला सञ्ज्ञासूत्र है-

(1) शि सर्वनामस्थानम् (1.1.41)- शि की सर्वनाम स्थान सञ्ज्ञा होती है। उदाहरण- वनानि, दधीनि, मधूनि।

(2) सुडनपुंसकस्य (1.1.42)- नपुंसकलिङ्ग से भिन्न सुट् (सु, औ, जस्, अम्, औट्) इन पाँच प्रत्ययों की सर्वनामस्थान सञ्ज्ञा होती है। उदाहरण- राजा में सु, राजानौ में औ, राजानः में जस्, राजानम् में अम्, राजानौ में औट् की सर्वनामस्थान सञ्ज्ञा होती है।

➢ प्रातिपदिकसञ्ज्ञा का विधान करने वाले सञ्ज्ञासूत्र हैं-

(1) अर्थवदधातुरप्रत्ययः (1.2.45)- धातुरहित, प्रत्यय व प्रत्ययान्त रहित सार्थक शब्दस्वरूप की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा होती है। उदाहरण- राम, कृष्ण, लता आदि।

(2) कृत्तद्धितसमासाश्च (1.2.46)- कृत् प्रत्ययान्त,

तद्धित प्रत्ययान्त तथा समास भी प्रातिपदिकसञ्ज्ञक होते हैं। उदाहरण- कारकः (कृत्), शालीयः (तद्धित), राजपुरुषः (समास)

➤ निष्ठा सञ्ज्ञा का विधान करने वाला सञ्ज्ञासूत्र है-

क्तक्तवतू निष्ठा (1.1.26)- क्त तथा क्तवतु प्रत्यय की निष्ठा सञ्ज्ञा होती है। उदाहरण- मुक्तः में क्त प्रत्यय, भुक्तवान् में क्तवतु प्रत्यय।

➤ **पदसञ्ज्ञा-** पदसञ्ज्ञा का विधान करने वाला सञ्ज्ञासूत्र है-

(1) सुप्तिङन्तं पदम् (1.4.14)- सुबन्त तथा तिङन्त शब्दों की पद सञ्ज्ञा होती है। उदाहरण- देवः सुबन्त तथा पठति तिङन्त की पद सञ्ज्ञा हुई है।

(2) नः क्ये (1.4.15)- नकारान्त शब्द की क्यच्, क्यङ् व क्यष् प्रत्यय परे रहते पदसञ्ज्ञा होती है। उदाहरण- राजीयति, राजायते।

(3) सिति च (1.4.16)- सित् प्रत्यय परे रहते पूर्व की पद सञ्ज्ञा होती है। उदाहरण- भवत् + छस् = भवदीयः।

(4) स्वादिष्वसर्वनामस्थाने (1.4.17)- सर्वनामस्थान भिन्न सु आदि प्रत्ययों के परे रहते पूर्व शब्दसमुदाय की पद सञ्ज्ञा होती है। उदाहरण- राजाभ्याम् = राजन् + भ्याम् में राजन् की पदसञ्ज्ञा होगी।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'सुडनपुंसकस्य' सूत्र से सर्वनामस्थान सञ्ज्ञा होती है। **अतः विकल्प A सही है।**

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी-(1.1.93) गोविन्दाचार्य, पेज 166

33. 'अनुविष्णु' इत्यत्र 'अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि' इत्यादिसूत्रेण कस्मिन् अर्थेऽव्ययीभावसमासः?

(A) समीपार्थे (B) असम्प्रत्यर्थे
(C) पश्चादर्थे (D) आनुपूर्व्यार्थे

व्याख्या-

अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि- व्यृद्ध्यर्थाभावाऽत्ययाऽसम्प्रति-शब्दप्रादुर्भावपश्चाद्-यथाऽऽनुपूर्व्य- यौगपद्य-सादृश्यसम्पत्ति-साकल्याऽन्तवचनेषु। (2.1.6)

1- विभक्ति 2- समीप 3- समृद्धि 4- व्यृद्धि 5- अर्थाभाव 6- अत्यय 7- असम्प्रति 8- शब्दप्रादुर्भाव 9- पश्चाद् 10- यथा-(योग्यता,वीप्सा,पदार्थानतिवृत्ति और सादृश्य) 11- आनुपूर्व्य 12- यौगपद्य 13- सादृश्य 14- सम्पत्ति 15- साकल्य 16- अन्त- इन सोलह अर्थों में से किसी भी अर्थ में वर्तमान जो अव्यय, वह समर्थ सुबन्त के साथ नित्य समास होता है। और वह समास अव्ययीभाव संज्ञक होता है।

सामासिक पद	**अर्थ**	
अधिहरि	विभक्ति अर्थ	(हरि में)
अधिगोपम्	विभक्ति अर्थ	(गोप में)
उपकृष्णम्	समीप अर्थ	(कृष्ण के समीप)
सुमद्रम्	समृद्धि अर्थ में	(मद्रदेशवासियों की समृद्धि)
दुर्यवनम्	अभाव अर्थ	(यवनों का अभाव)
निर्मक्षिकम्	अभाव अर्थ	(मक्खियों का अभाव)
अतिहिमम्	नाश अर्थ	(हिम का अत्यय)
अतिनिद्रम्	समय उचित नहीं है	(निद्रा का समय उचित नहीं है)
इतिहरि	नाम की प्रसिद्धि	(शब्द प्रादुर्भाव)
अनुविष्णु	**पश्चात् अर्थ**	**(विष्णु के पीछे)**
अनुरूपम्	योग्यता अर्थ	(रूप के योग्य)
प्रत्यर्थम्	वीप्सा अर्थ में	(प्रत्येक अर्थ के प्रति)
यथाशक्ति	उल्लंघन न करना	(शक्ति के उल्लंघन के बिना)
सहरि	सदृश अर्थ	हरि के सदृश
अनुज्येष्ठम्	आनुपूर्व्य अर्थ में	ज्येष्ठ के क्रम से
सचक्रम्	यौगपद्य अर्थ	(चक्र के साथ एक ही काल में)
ससखि	सादृश्य अर्थ	(सखा के समान)
सक्षत्रम्	सम्पत्ति अर्थ	(क्षत्रियों के अनुरूप)
सतृणम् (अत्ति)	सम्पूर्ण अर्थ	(तिनकों को छोड़े बिना)
साग्नि	अन्त अर्थ	(अग्निग्रन्थ पर्यन्तम्)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि अनुविष्णु 'पश्चात्' अर्थ में प्रयोग हुआ है। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी-गोविन्दाचार्य, पेज 900

34. 'व्यूढोरस्कः' इत्यत्र कीदृशः समासः?

(A) अव्ययीभावः (B) तत्पुरुषः
(C) द्वन्द्वः (D) बहुव्रीहिः

व्याख्या-

व्यूढोरस्कः- (चौड़ी छाती वाला पुरुष)

लौकिक-विग्रह व्यूढं उरो यस्य सः

अलौकिक-विग्रह व्यूढ सु+उरस् सु

अनेकमन्यपदार्थे- सूत्र से बहुव्रीहि समास होकर विशेषण का पूर्वनिपात समास की प्रातिपदिक संज्ञा एवं प्रातिपदिक के अवयवों सुपों का लुक् करने पर व्यूढ+उरस्

'आद्‌गुणः' सूत्र से गुण करने पर व्यूढोरस् बना।

अब यहाँ बहुव्रीहि समास के अन्त में उरस् शब्द आया है जो

उरःप्रभृतिगण का पहला शब्द है अतः 'उरः प्रभृतिभ्यः कप्' सूत्र द्वारा समासान्त कप् प्रत्यय होकर पकार अनुबन्ध का लोप करने से हुआ।

व्यूढोरस् + क

ससजुषो रुः से पदान्त सकार को रुँ आदेश उकारलोप

खरवसानयोर्विसर्जनीयः से रेफ को विसर्ग आदेश करने पर व्यूढोरः+क

सोऽपदादौ- सूत्र से विसर्ग को सकार आदेश कर विभक्ति कार्य करके **'व्यूढोरस्कः'** प्रयोग सिद्ध हो जाता है।

अन्य उदाहरण- प्रियसर्पिष्कः

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'व्यूढोरस्कः' में बहुव्रीहि समास है। **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी-गोविन्दाचार्य, पेज 966

35. 'सर्पिषोऽपि स्याद्' इत्यत्र 'अपि' शब्दस्य कर्मप्रवचनीयसञ्ज्ञा कस्मिन् अर्थे भवति?

(A) सम्भावनाद्योतकतायाम्
(B) अन्ववसर्गद्योतकतायाम्
(C) समुच्चयद्योतकतायाम्
(D) पदार्थद्योतकतायाम्

व्याख्या-

अपिः पदार्थसम्भावनाऽन्ववसर्गगर्हासमुच्चयेषु (1.4.96)

पदार्थ, सम्भावना, अन्ववसर्ग (कामाचारानुज्ञा), गर्हा (निन्दा), और समुच्चय अर्थों के द्योतित होने पर 'अपि' की कर्मप्रवचनीय संज्ञा होती है।

जैसे- **सर्पिषोऽपि स्यात्**। घी का बिन्दु हो सकता है) यहाँ 'अपि की अपिः पदार्थसम्भावनान्ववसर्गगर्हासमुच्चयेषु' सूत्र से कर्मप्रवचनीय संज्ञा और अपि शब्द के पदार्थ की द्योतकता है। **'इयमेव ह्यपिशब्दस्य पदार्थद्योतकता नाम'** यही व्याकरण में पाणिनि के द्वारा कहा गया है।

* **अपि स्तुयाद् विष्णुम्** (वह विष्णु की स्तुति कर सकता है।) यहाँ अपि शब्द सम्भावना अर्थ को द्योतित करता है।

* **अपि स्तुहि-** (चाहे स्तुति करो या न करो) अन्ववसर्ग के अर्थ में अपि की कर्मप्रवचनीय संज्ञा हुई है।

* **धिग् देवदत्तम् अपि स्तुयाद् वृषलम्-** (निन्दा या तिरस्कार) गर्हा के अर्थ में अपि की 'अपिः पदार्थ- सम्भावनान्ववसर्गगर्हासमुच्चयेषु' सूत्र से कर्मप्रवचनीय संज्ञा हुई।

* **अपि सिञ्च अपि स्तुहि-** (सींचो भी और स्तुति भी करो) यहाँ अपि समुच्चय अर्थ को प्रकट करता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'सर्पिषोऽपि स्याद्' में अपि शब्द 'पदार्थ' अर्थ में प्रयोग हुआ है। **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत- सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज 53

36. 'अधिकरणवाचिनश्च' इति सूत्रस्योदाहरणं किं भवति?

(A) राज्ञां मतः
(B) द्विरह्नो भोजनम्
(C) शब्दानामनुशासनमाचार्यस्य
(D) इदम् एषाम् आसितम्

व्याख्या-

अधिकरणवाचिनश्च (2.3.68)-

क्तस्य योगे षष्ठी स्यात्। इदमेषामासितं शयितं गतं भुक्तम् वा। अधिकरणवाचक क्तप्रत्ययान्त शब्दों के योग में षष्ठी विभक्ति होती है।

जैसे- **1. इदम् एषाम् आसितम्** (यह इनका आसन है)- 'आस्ते अस्मिन् इति आसितम्' यहाँ पर आस् धातु से क्त प्रत्यय जोड़कर आसितम् बनता है। अधिकरणवाचक क्तप्रत्ययान्त आसितम् के योग में अनुक्त कर्ता इदम् 'अधिकरणवाचिनश्च' सूत्र से षष्ठी विभक्ति होकर एषाम् बना।

(2) इदमेषां शयितम् (यह इनकी शय्या है)-

'शेते अस्मिन् इति शयितम्' में शी अकर्मक धातु से अधिकरण के अर्थ में क्त प्रत्यय हुआ है अतः 'अधिकरणवाचिनश्च' सूत्र से अधिकरणवाची शयितम् के योग में एषाम् में षष्ठी विभक्ति हुई है।

(3) इदमेषां गतम् (यह इनका गमन मार्ग है)-

'गच्छति अस्मिन् इति गतम्' इस अधिकरण अर्थ में गम् धातु से क्त प्रत्यय होता है अतः कर्ताकारक एतत् में अधिकरणवाचिनश्च सूत्र से षष्ठी विभक्ति होकर एषाम् बना।

(4) इदमेषां भुक्तम् - (यह इनका भोजनपात्र है)

'भुङ्क्ते अस्मिन् इति भुक्तम्' इस अधिकरण अर्थ में भुज् धातु से क्त प्रत्यय होकर भुक्तम् बना। अतएव अधिकरण वाचक भुक्तम् के योग में कर्ताकारक एतत् में अधिकरणवाचिनश्च सूत्र से षष्ठी विभक्ति होकर एषाम् बना।।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि इदम् एषाम् आसितम् उदाहरण में 'अधिकरणवाचिनश्च' सूत्र से षष्ठी विभक्ति का विधान हुआ है। **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत- सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज 185

37. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत-

(क) भासः — (i) मालतीमाधवम्
(ख) कालिदासः — (ii) मृच्छकटिकम्
(ग) भवभूतिः — (iii) मालविकाग्निमित्रम्
(घ) शूद्रकः — (iv) पञ्चरात्रम्

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(A)	(iv)	(iii)	(i)	(ii)
(B)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)
(C)	(iii)	(iv)	(ii)	(i)
(D)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)

व्याख्या-

➢ महाकवि भास द्वारा रचित नाटकों को ट्रावनकोर राज्य से टी॰ गणपति शास्त्री ने सन् 1909 ई. में प्राप्त कर उसे प्रकाशित कराया- जिनकी संख्या 13 है-

(क) उदयनकथामूलक- (1) प्रतिज्ञायौगन्धरायण (2) स्वप्नवासवदत्तम्

(ख) महाभारतमूलक- (1) ऊरुभंगम्, (2) दूतवाक्यम् (3) पञ्चरात्रम् (4) बालचरितम् (5) दूतघटोत्कचम् (6) कर्णभारम् (7) मध्यमव्यायोगम्

(ग) रामायणमूलक- (1) प्रतिमानाटकम् (2) अभिषेकनाटकम्

(घ) कल्पनामूलक- (1) अविमारकम् (2) चारुदत्तम्

➢ **कालिदास-** कालिदास द्वारा रचित ग्रन्थों की संख्या सात है जिसमें दो महाकाव्य, दो गीतिकाव्य या खण्डकाव्य तथा तीन नाटक।

महाकाव्य- रघुवंशम्, कुमारसम्भवम्

गीतिकाव्य (खण्डकाव्य)- ऋतुसंहारम्, मेघदूतम्

नाटक- मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोर्वशीयम्,अभिज्ञानशाकुन्तलम्।

➢ **भवभूति-** भवभूति द्वारा रचित तीन ग्रन्थ प्राप्त होते हैं- (1) मालतीमाधवम् (2) महावीरचरितम् (3) उत्तररामचरितम्

शूद्रक- शूद्रक द्वारा रचित केवल एक ही ग्रन्थ प्राप्त होता है। जो कि प्रकरण है जिसका नाम मृच्छकटिकम् है इसमें दस अङ्क हैं। नायक चारुदत्त तथा नायिका वसन्तसेना एवं सहनायिका धूता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि भास की रचना पञ्चरात्रम्, कालिदास की रचना मालविकाग्निमित्रम्, भवभूति की रचना मालतीमाधवम् एवं शूद्रक की रचना मृच्छकटिकम् है।

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज क-275, ख-137, ग-395, घ-301

38. शिशुपालवधमहाकाव्यस्य प्रथमसर्गस्य नाम भवति-

(A) श्रीकृष्णगुणकीर्तनम् (B) नारदगुणकीर्तनम्
(C) कृष्णनारदसम्भाषणम् (D) नारदावतरणम्

व्याख्या-

महाकवि माघ द्वारा रचित शिशुपालवध महाकाव्य में बीस सर्ग हैं। जिसकी गणना बृहत्त्रयी के अन्तर्गत होती है। इस महाकाव्य के नायक श्रीकृष्ण एवं प्रतिनायक शिशुपाल हैं।

शिशुपालवध महाकाव्य के 20 सर्गों के नाम इस प्रकार हैं-

प्रथम सर्ग - श्रीकृष्ण नारद का सम्भाषण
द्वितीय सर्ग - उद्धव तथा बलराम के साथ मन्त्रणा
तृतीय सर्ग - द्वारिकापुरी से कृष्ण का प्रस्थान
चतुर्थ सर्ग - रैवतक वर्णन
पञ्चम सर्ग - रैवतक पर सेना का प्रस्थान तथा शिविर का वर्णन
षष्ठ सर्ग - छह ऋतुओं का वर्णन
सप्तम सर्ग - वनविहार वर्णन
अष्टम सर्ग - जलविहार वर्णन
नवम सर्ग - सूर्यास्त वर्णन
दशम सर्ग - मद्यपान वर्णन
एकादश सर्ग - प्रभात वर्णन
द्वादश सर्ग - श्रीकृष्ण का सेनासहित प्रस्थान
त्रयोदश सर्ग - श्रीकृष्ण का यज्ञसभा में प्रवेश
चतुर्दश सर्ग - महाराजयुधिष्ठिर का भगवान् श्रीकृष्ण का प्रथमार्घ्य
पञ्चदश सर्ग - श्रीकृष्ण की पूजा से शिशुपाल का कोपाग्नि से भड़कना
षोडश सर्ग - शिशुपाल द्वारा प्रेषित दूत का कृष्ण से संवाद
सप्तदश सर्ग - यदुवंश क्षोभवर्णन
अष्टादश सर्ग - संकुल युद्ध वर्णन
एकोनविंशति सर्ग - द्वन्द्वयुद्ध वर्णन
विंशति सर्ग - शिशुपालवध वर्णन

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि शिशुपालवध के प्रथम सर्ग का नाम 'श्रीकृष्ण नारद सम्भाषण' है।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- शिशुपालवधम् -हरगोविन्द शास्त्री, पेज 54

39. सानुमत्याः उपाख्यानम् अभिज्ञानशाकुन्तले कस्मिन् अङ्के अस्ति?

(A) सप्तमे (B) षष्ठे
(C) पञ्चमे (D) चतुर्थे

व्याख्या-

सप्त अङ्कात्मक, शृङ्गाररसप्रधान, महाभारत आदिपर्व के शकुन्तलोपाख्यान पर आधारित, महाकवि कालिदास द्वारा विरचित, दुष्यन्त शकुन्तला की प्रणय कथा से समन्वित, विश्वविख्यात नाटक का नाम है- **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**। जिस नाटक की अङ्कवार प्रमुख घटनाएँ निम्नवत् हैं-

* **प्रथम अङ्क-** मृग का अनुसरण करते हुए दुष्यन्त कण्व ऋषि के आश्रम पहुँचता है और शकुन्तला को देखकर मोहित हो जाता है, शकुन्तला भी उस पर आसक्त होती है। ग्रीष्म ऋतु का वर्णन।
* **द्वितीय अङ्क-** शकुन्तला पर आसक्त राजा का कामी अवस्था में प्रवेश। भाग्यवश ऋषि कुमारों का प्रवेश और राजा द्वारा राक्षसों से यज्ञ की सुरक्षा के लिये राजा को आश्रम में रुकने की स्वीकृति। माता द्वारा दुष्यन्त को बुलाया जाना।
* **तृतीय अङ्क-** राजा के द्वारा गान्धर्व विवाह का प्रस्ताव। शान्ति -जल लेकर आश्रम की स्वामिनी गौतमी का प्रवेश, यज्ञ में राक्षसों के विघ्न को दूर करने के लिए राजा का प्रस्थान। शकुन्तला का गर्भिणी होना।
* **चतुर्थ अङ्क-** शकुन्तला का पतिगृह हस्तिनापुर के लिए गमन अर्थात् - विदाई, दुर्वासा के द्वारा शकुन्तला को शाप मिलना, कण्व का सोमतीर्थ से आगमन।
* **पञ्चम अङ्क-** शार्ङ्गरव, शारद्वत और गौतमी का शकुन्तला को लेकर राजद्वार पर आगमन। दुर्वासा के शाप के प्रभाव के कारण शकुन्तला का तिरस्कार, राजा द्वारा शकुन्तला को पहचानने से इनकार करना। अँगूठी का न मिलना, शचीतीर्थ में अँगूठी के गिर जाने का पता चलना।
* **षष्ठ अङ्क-** धीवर वृत्तान्त, **सानुमती उपाख्यान**, अँगूठी के मिलने से राजा को शकुन्तला सम्बन्धी वृत्तान्त याद आना और राजा का पश्चात्ताप करना, मातलि का आगमन और इन्द्र का सन्देश प्राप्त होना।
* **सप्तम अङ्क-** राजा की दानवों पर विजय। इन्द्र के द्वारा राजा को स्वर्ग से विदा करना। लौटते समय राजा का हेमकूट पर्वत पर मारीच ऋषि का आश्रम देखना। मारीच ऋषि से मिलना। शकुन्तला और पुत्र सर्वदमन (भरत) से मिलन होना।

*** षष्ठ अङ्क में वर्णित सानुमती के प्रमुख कथन-**

* **सानुमती- निर्वर्तितं मया पर्यायनिर्वर्तनीयमप्सरस्तीर्थ-सांनिध्यं यावत् साधुजनस्याभिषेककाल इति।**

सानुमती- जब तक सज्जनों के स्नान का समय है, तब तक अप्सरातीर्थ पर बारी-बारी से वहाँ उपस्थित रहने का जो नियम है, वह मैंने पूरा कर लिया है।

* **सानुमती- उत्सवप्रियाः खलु मनुष्याः। गुरुणा कारणेन भवितव्यम्।** मनुष्य उत्सवप्रिय होते हैं। यह कोई बड़ा कारण होगा।

सानुमती- लतासंश्रिता द्रक्ष्यामि तावत् सख्याः प्रतिकृतिम्। ततोऽस्या भर्तुर्बहुमुखमनुरागं निवेदयिष्यामि।

मैं लता का सहारा लेकर अपनी सखी का चित्र देखती हूँ, तत्पश्चात् उसके पति के विविध प्रकार से प्रकट हुए प्रेम को उसे बताऊँगी।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि अभिज्ञानशाकुन्तल का सानुमती उपाख्यान षष्ठ अङ्क में वर्णित है।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (अङ्क 6)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 375

40. आसु कस्याः उल्लेखो मेघदूते नास्ति-

(A) रेवायाः (B) शिप्रायाः
(C) तुङ्गभद्रायाः (D) गन्धवत्याः

व्याख्या-

कालिदासकृत मेघदूत एक खण्डकाव्य है, जो दो खण्डों में विभक्त है- पूर्वमेघ और उत्तरमेघ।

मेघदूत में प्रमुख नदियों का वर्णनः-

गन्धवती, गम्भीरा, चर्मण्वती, जाह्नवी, निर्विन्ध्या, यमुना, रेवा, वेत्रवती, शिप्रा, सरस्वती।

मेघदूतम् में प्रमुख पर्वतों का वर्णनः-

आम्रकूट, कैलास, नीचैर्गिरि, विन्ध्य, हिमालय, रामगिरि।

मेघदूतम् में प्रमुख राजधानियों (नगरों) का वर्णनः-

अलकापुरी, अवन्ति, उज्जयिनी, कुरुक्षेत्र, दशपुर, दशार्ण, देवगिरि, ब्रह्मावर्त, माल, विदिशा, विशाला आदि।

मेघदूतम् में गन्धवती नदी का वर्णनः-

* भर्तुः कण्ठच्छविरिति गणैः--- स्नानतिक्तैर्मरुद्भिः। (पूर्वमेघ-37)

चन्दन आदि से सुगन्धित गन्धवती (नामक नदी) की वायु से कम्पित उपवन वाले त्रैलोक्यस्वामी पार्वतीपति (महादेव) के पवित्र स्थान (महाकाल) में जाना।

* **शिप्रावातः प्रियतम इव प्रार्थनाचाटुकारः॥ (पूर्वमेघ-32)**

शिप्रा नदी का वायु याचना करने में चापलूस प्रियतम के समान स्त्रियों की संभोग से होने वाली थकान को दूर करता है।

***रेवां द्रक्ष्यस्युपलविषमे विन्ध्यपादे विशीर्णां- भक्तिच्छेदैरिव विरचितां भूतिमङ्गे गजस्य॥ (पूर्वमेघ-19)**

ऊँची-नीची विन्ध्य पर्वत की तलहटी पर बिखरी हुई नर्मदा (नामक नदी) को हाथी के शरीर पर रेखाचित्र द्वारा किये गये शृङ्गार के समान देखोगे।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि मेघदूतम् में रेवा, शिप्रा, गन्धवती आदि नदियों का वर्णन प्राप्त होता है, किन्तु 'तुङ्गभद्रा' नदी का वर्णन नहीं है। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- मेघदूतम् - शेषराज शर्मा रेग्मी, भू. पेज 35

41. मृच्छकटिकम् इति कस्य रूपकस्य उदाहरणं भवति?

(A) नाटकस्य (B) प्रकरणस्य

(C) व्यायोगस्य (D) समवकारस्य

व्याख्या- प्रकरण-

शूद्रक प्रणीत मृच्छकटिकम् रूपक का एक भेद प्रकरण ग्रन्थ है जिसमें दस अंक हैं। मृच्छकटिकम् का नायक चारुदत्त धीरप्रशान्त कोटि का तथा गणिका नायिका वसन्तसेना एवं कुल स्त्री नायिका धूता है तथा मुख्य रस शृङ्गार है। प्रकरण का लक्षण-

भवेत् प्रकरणे वृत्तं लौकिकं कविकल्पितम्।
शृङ्गारोऽङ्गी नायकस्तु विप्रोऽमात्योऽथवा वणिक्।।
सापायधर्मकामार्थपरो धीरप्रशान्तकः
नायिका कुलजा क्वापि वेश्या क्वापि द्वयं क्वचित्।
तेन भेदास्त्रयः तस्य तत्र भेदस्तृतीयकः।।(सा.द. 6/224-227)

प्रकरण रूपक का भेद है, इसमें वृत्त लौकिक तथा कविकल्पित होता है।

शृङ्गार मुख्य रस होता है, ब्राह्मण, अमात्य या वणिक् में से कोई एक नायक होता है।

नायक धीरप्रशान्त कोटि का होता है, तथा विपरीत परिस्थितियों में भी धर्म, अर्थ, काम में परायण होता है।

प्रकरण की नायिका कुलस्त्री या वेश्या होती है। किसी प्रकरण में कुलस्त्री तथा वेश्या दोनों ही नायिका रूप में दिखलायी जाती है। इन नायिकाओं की विविधता से प्रकरण के तीन भेद हो जाते हैं।

➢ **नाटक-** नाटक की कथावस्तु इतिहास प्रसिद्ध होती है, नाटक के इतिवृत्त में पाँच सन्धियाँ होती हैं। नाटक का नायक धीरोदात्त कोटि का होता है। इसका नायक किसी प्रसिद्ध राजवंश का कोई राजर्षि हो सकता है। इसमें न्यूनतम अंकों की संख्या पाँच तथा अधिकतम अङ्कों की संख्या दस होती है। नाटक का मुख्य रस शृङ्गार या वीर होता है। जैसे- अभिज्ञानशाकुन्तलम्, स्वप्नवासवदत्तम् आदि।

➢ **व्यायोग-** व्यायोग का कथानक प्रख्यात हुआ करता है, जिसमें स्त्रीपात्रों की संख्या बहुत कम और पुरुषपात्रों की संख्या अधिक हुआ करती है। जिसके लिए गर्भ और विमर्श सन्धियों की योजना अपेक्षित नहीं रहा करती है और जिसकी कथावस्तु एक अङ्क में समाप्त होती है। इसका नायक कोई प्रसिद्ध पुरुष हुआ करता है। जिसमें धीरोदात्त प्रकृति के ही नायक का चित्रण अपेक्षित है। जैसे- सौगन्धिकाहरण।

➢ **समवकार-** समवकार का कथानक प्रख्यात हुआ करता है, जिसमें स्त्री पात्रों की संख्या कम और पुरुष पात्रों की संख्या अधिक हुआ करती है। इसका कथानक एक ही अङ्क में समाप्त हो जाता है। इसमें कैशिकी वृत्ति का वर्णन नहीं होता है। इसका नायक देव विशेष का होना आवश्यक है जो धीरोदात्त प्रकृति का होता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त प्रकरण का लक्षण मृच्छकटिकम् पर घटित होता है अतः मृच्छकटिकम् एक प्रकरण ग्रन्थ है।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 307

42. कृतककोपवृत्तान्तः मुद्राराक्षसे कस्मिन्नङ्केऽस्ति?

(A) प्रथमे (B) द्वितीये

(C) तृतीये (D) चतुर्थे

व्याख्या-

विशाखदत्त प्रणीत मुद्राराक्षस नाटक में सात अंक है। इस नाटक का कथानक ऐतिहासिक है। इस नाटक में विदूषक एवं नायिका का सर्वथा अभाव है। नाटक का नायक चाणक्य, जो धीरोदात्त कोटि का है कुछ लोग चाणक्य के स्थान पर चन्द्रगुप्त को नायक मानते हैं। इस नाटक में मुद्रा के द्वारा राक्षस को पराजित करने का उल्लेख कवि ने किया है।

नाटक के सात अङ्कों के नाम-

प्रथम अङ्क	-	मुद्रालाभ	- 27 श्लोक
द्वितीय अङ्क	-	राक्षस विचार	- 23 श्लोक
तृतीय अङ्क	-	कृतककलह	- 33 श्लोक
चतुर्थ अङ्क	-	राक्षस उद्योग	- 22 श्लोक
पञ्चम अङ्क	-	राक्षस निकार	- 24 श्लोक
षष्ठ अङ्क	-	राक्षस निर्वेद	- 21 श्लोक
सप्तम अङ्क	-	राक्षस निग्रह	- 19 श्लोक

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि कृतककोपवृत्तान्त का वर्णन मुद्राराक्षस के तृतीय अङ्क में प्राप्त होता है। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- मुद्राराक्षसम् -पुष्पा गुप्ता, पेज 192

43. कालक्रमानुसारेण तालिकां चिनुत-

(a) भारविः (b) भासः

(c) कालिदासः (d) विश्वनाथः

व्याख्या-

(A)	(a)	(b)	(c)	(d)
(B)	(b)	(a)	(c)	(d)
(C)	(c)	(a)	(b)	(d)
(D)	(b)	(c)	(a)	(d)

ग्रन्थकार	**अनुमानित समय**
(1) भास	100ई.पू.से 200ई.के मध्य
(2) कालिदास	ई.पू. प्रथमशताब्दी
(3) भारवि	छठी शताब्दी
(4) विश्वनाथ	14वीं शताब्दी

रचनाएँ- कालिदास (रघुवंशम्, कुमारसम्भवम्, ऋतुसंहारम्, मेघदूतम्, मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोर्वशीयम्, अभिज्ञानशाकुन्तलम्) भारवि किरातार्जुनीयम् नामक महाकाव्य एक मात्र रचना। विश्वनाथ-साहित्यदर्पण, राघवविलास, कुवलयाचरित आदि।

भास- प्रतिज्ञायौगन्धरायण, स्वप्नवासवदत्तम्, ऊरुभंग, दूतवाक्य, पञ्चरात्र, बालचरित, दूतघटोत्कच, कर्णभार, मध्यमव्यायोग, प्रतिमानाटक, अभिषेकनाटक, अविमारक, चारुदत्त।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि कालक्रम के अनुसार भास, कालिदास, भारवि, विश्वनाथ का क्रम सही है। **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा ऋषि, पेज अ-242, ब-465, स-201, द-587

44. विश्वनाथमते हास्यं कतिविधं भवति?

(A) चतुर्विधम् (B) पञ्चविधम्
(C) षड्विधम् (D) द्विविधम्

व्याख्या-

आचार्य विश्वनाथ साहित्यदर्पण के तृतीय परिच्छेद में रसों के भेदों का वर्णन किया है-

शृङ्गारहास्यकरुणरौद्रवीरभयानकाः।
बीभत्सोऽद्भुत इत्यष्टौ रसाः शान्तस्तथा मतः॥

(सा.द.3.182)

(1) शृङ्गार (2) हास्य (3) करुण (4) रौद्र (5)वीर (6) भयानक (7) बीभत्स (8) अद्भुत (9) शान्त।

हास्य रस-

विकृताकारवाग्वेषचेष्टादेः कुहकाद्भवेत्।
हास्यो हासस्थायिभावः श्वेतः प्रमथदैवतः॥

(सा.द.3.214)

हास्य वह रस है जिसे हास स्थायिभाव का अभिव्यञ्जक कहा जाया करता है। इसका वर्ण श्वेत है और इसके अधिष्ठातृदेव प्रमथगण हैं।

हास्य रस के छः भेद हैं-

ज्येष्ठानां स्मितहसिते मध्यानां विहसितावहसिते च।
नीचानामपहसितं तथातिहसितं तदेष षड्भेदः॥

(सा.द.3.217)

(1) उत्तम प्रकृतिगत 'स्मित' हास्य
(2) उत्तम प्रकृतिगत 'हसित' हास्य
(3) मध्यम प्रकृतिगत 'विहसित' हास्य
(4) मध्यम प्रकृतिगत 'अवहसित' हास्य
(5) अधम प्रकृतिगत 'अपहसित' हास्य
(6) अधम प्रकृतिगत 'अतिहसित' हास्य

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि हास्य के छः भेद हैं जबकि वीररस के चार भेद दानवीर, धर्मवीर, युद्धवीर, दयावीर, एवं शृङ्गार रस के दो भेद सम्भोग शृङ्गार एवं विप्रलम्भ शृङ्गार है। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- साहित्यदर्पण (3/217)-शालिग्राम शास्त्री, पेज 115

45. काव्यलक्षणविचारे ''स्ववचनविरोधाद् अपास्तम्'' इति कथनेन कस्य मतं विश्वनाथेन निराकृतम्?

(A) आनन्दवर्धनस्य (B) वामनस्य
(C) मम्मटस्य (D) व्यक्तिविवेकस्य

व्याख्या-

'काव्यस्यात्मा ध्वनिः' अर्थात् काव्य की आत्मा ध्वनि है। इसी प्रसंग में आनन्दवर्धन काव्य के दो भेद करते हैं वाच्यार्थ और प्रतीयमानार्थ-

योऽर्थः सहृदयश्लाघ्यः काव्यात्मेति व्यवस्थितः।
वाच्यप्रतीयमानाख्यौ तस्य भेदावुभौ स्मृतौ॥

(ध्वन्या.1.2)

सहृदयों द्वारा प्रशंसित जो अर्थ काव्य के आत्मा रूप में प्रतिष्ठित है उसके वाच्य और प्रतीयमान दो भेद कहे गये हैं। जिसका खण्डन करते हुए साहित्यदर्पणकार विश्वनाथ कहते हैं, जिसमें वाच्यरूप अर्थ काव्य का आत्मतत्त्व बना दिखाई दे रहा है और अन्यत्र यह कहा है कि काव्य का जो आत्मभूत तत्त्व है वह ध्वनि ही है, ये दोनों परस्पर विरुद्ध कथन क्यों काव्य स्वरूप के निरूपण में प्रमाण होने लगे। ध्वनिकार ने जो ध्वनि के दो भेद वाच्य और प्रतीयमान किए हैं वह उनका वदतो व्याघात स्ववचन विरोध है। **अतः विकल्प A सही है।**

स्रोत- साहित्यदर्पण- शालिग्राम शास्त्री, पेज 18

46. साहित्यदर्पणमते नीलवर्णः महाकालदैवतः रसः कः भवति?
(A) रौद्रः (B) वीरः
(C) भयानकः (D) बीभत्सः

व्याख्या-

आचार्य विश्वनाथ साहित्यदर्पण के तृतीय परिच्छेद में रसों का वर्णन एवं उनके भेदों आदि का वर्णन किया है-

➢ **शृङ्गार रस-** 'स्थायिभावो रतिः श्यामोवर्णोऽयं विष्णुदैवतः'
अर्थात् रति जिसका स्थायीभाव है वह शृङ्गार रस है। यह श्याम वर्ण का एवं इसके देवता विष्णु हैं।

➢ **हास्य रस-** 'हास्यो हासस्थायिभावः श्वेतः प्रमथदैवतः' (सा.द.3.214)
हास स्थायीभाव है जिसका ऐसा हास्य रस है इसका वर्ण श्वेत है और इसके देवता प्रमथगण हैं।

➢ **करुण रस-** 'धीरैः कपोतवर्णोऽयं कथितो यमदैवतः' (सा.द.3.222)
शोक स्थायीभाव है जिसका वह करुण रस है। इसका वर्ण कपोत एवं देवता यम हैं।

➢ **रौद्र रस-** 'रौद्रः क्रोधस्थायिभावो रक्तो रुद्राधिदैवतः' (सा.द.3.227)
क्रोध स्थायीभाव है जिसका वह रौद्र रस है। इसका वर्ण रक्त एवं देवता रुद्र हैं।

➢ **वीर रस-** महेन्द्रदैवतो हेमवर्णोऽयं समुदाहृतः (सा.द.3.232)
उत्साह स्थायीभाव है जिसका वह वीर रस है। इसका वर्ण स्वर्ण एवं देवता महेन्द्र हैं।

➢ **भयानक रस-** 'भयानको भयस्थायिभावः भूताधिदैवतः' (सा.द.3.235)
भय स्थायीभाव है जिसका वह भयानक रस है इसका वर्ण कृष्ण एवं देवता काल हैं।

➢ **बीभत्स रस-** नीलवर्णो महाकालदैवतोऽयमुदाहृतः (सा.द.3.239)
जुगुप्सा स्थायीभाव है जिसका वह बीभत्स रस है इसका वर्ण नीला एवं देवता महाकाल हैं।

➢ **अद्भुत रस-** अद्भुतो विस्मयस्थायिभावो गन्धर्वदैवतः (सा.द.3.242)
विस्मय स्थायीभाव है जिसका वह अद्भुत रस है। इसका वर्ण पीत एवं देवता गन्धर्व हैं।

➢ **शान्त रस-** 'शान्तः शमस्थायिभाव उत्तमप्रकृतिर्मतः' (सा.द.3.245)
शम स्थायीभाव है जिसका वह शान्त रस है इसका वर्ण कुन्दपुष्पवत् एवं देवता श्रीनारायण हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि नील वर्ण और महाकाल देवता बीभत्स रस के हैं। **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत- साहित्यदर्पण (3/239)-शालिग्राम शास्त्री, पेज 120

47. जतुकर्णीपुत्रः भवति-
(A) भवभूतिः (B) कालिदासः
(C) माघः (D) श्रीहर्षः

व्याख्या-

➢ भवभूति प्रणीत उत्तररामचरितम् नाटक में नान्दी पाठ के पश्चात् सूत्रधार भवभूति के विषय में सूचना देते हुए कहता है-

'अस्ति खलु तत्रभवान् काश्यपः श्रीकण्ठपदलाञ्छनः पदवाक्य-प्रमाणज्ञो भवभूतिर्नाम जतुकर्णीपुत्रः' कश्यपगोत्र में उत्पन्न श्रीकण्ठ उपाधिधारी, व्याकरण, मीमांसा और न्यायशास्त्र के ज्ञाता जतुकर्णी के पुत्र माननीय भवभूति नाम के एक महान् विद्वान् हैं।

➢ **श्रीहर्ष-** नैषधीयचरितम् के लेखक श्रीहर्ष ने सर्गान्त में अपने विषय में वर्णन करते हुए कहते हैं-

श्रीहर्षं कविराजराजिमुकुटालङ्कारहीरः सुतं
श्रीहीरः सुषुवे जितेन्द्रियचयं मामल्लदेवी च यम्
(1.145)

कविराजसमूह के मुकुट के आभूषणरूप हीरे श्रीहीर तथा मामल्लदेवी ने इन्द्रियों के समूह को जीतने वाले जिस श्रीहर्ष नाम के पुत्र को उत्पन्न किया।

➢ **कालिदास** के जीवन वृत्तान्त के विषय में सामग्री का सर्वथा अभाव है। कालिदास के द्वारा रचित सात रचनाएँ हैं-

महाकाव्य- रघुवंशम्, कुमारसम्भवम्।
गीतिकाव्य (खण्डकाव्य)- ऋतुसंहारम्, मेघदूतम्।
नाटक- विक्रमोर्वशीयम्, मालविकाग्निमित्रम्, अभिज्ञानशाकुन्तलम्।

➢ **माघ-** माघ द्वारा रचित केवल एक ही ग्रन्थ शिशुपालवध महाकाव्य है जिसमें बीस सर्ग हैं इस ग्रन्थ के नायक श्रीकृष्ण एवं प्रतिनायक शिशुपाल है।

* **माघ के विषय में प्रशस्तियाँ-** (i) नवसर्गगते माघे नवशब्दो न विद्यते। (ii) माघे सन्ति त्रयो गुणाः।

माघ के पिता का नाम दत्तक था जो महान् वैयाकरण थे।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि 'जातुकर्णीपुत्र भवभूति' हैं। **अतः विकल्प A सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 395

48. शाकुन्तले दुष्यन्तपुत्रस्य प्रथमं नाम किम् आसीत्?

(A) भरतः (B) सर्वदमनः
(C) गौतमः (D) वातायनः

व्याख्या-

अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के सप्तम अङ्क में दुष्यन्तपुत्र के द्वारा शेर के दाँत गिने जाने के अवसर पर पहली तापसी कहती है कि- **'किं नोऽपत्यनिर्विशेषाणि सत्त्वानि विप्रकरोषि? हन्त, वर्धते ते संरम्भः। स्थाने खलु ऋषिजनेन सर्वदमन इति कृतनामधेयोऽसि'** अर्थात् पितृतुल्य प्रिय इन प्राणियों को तू क्यों तंग (परेशान) कर रहा है? हाय तेरा क्रोध बढ़ता ही जा रहा है ऋषियों ने ठीक ही तेरा नाम सर्वदमन रखा है। इसी क्रम में दुष्यन्त पुत्र के विषय में ऋषि मारीच दुष्यन्त से कहते हैं-

इहायं सत्त्वानां प्रसभदमनात् सर्वदमनः।
पुनर्यास्यत्याख्यां भरत इति लोकस्य भरणात्॥
(अभि.7.33)

आप इसको वंशप्रतिष्ठा स्वरूप चक्रवर्ती सम्राट् समझें। अद्वितीय महारथी यह अस्खलित और शान्त गति वाले रथ से समुद्रों को पार करके भविष्य में सातद्वीपों से युक्त सारी पृथ्वी पर विजय करेगा। यहाँ पर जीवों को बलात् वश में करने के कारण इसका नाम सर्वदमन था। भविष्य में यह संसार का पालन करेगा अतः इसका नाम 'भरत' पड़ेगा।

इसप्रकार दुष्यन्त के पुत्र का प्रथम नाम सर्वदमन एवं द्वितीय नाम भरत है। **अतः विकल्प B सही है।**

अभिज्ञानशाकुन्तलम् के कुछ प्रमुख पात्रों का नाम-

सेनापति	-	भद्रसेन
विदूषक	-	माधव्य (माढव्य)
कञ्चुकी	-	वातायन
ऋषिकुमार	-	गौतम एवं नारद
कण्व शिष्य	-	शार्ङ्गरव, शारद्वत
राजा का भृत्य	-	रैवतक, करभक, कञ्चुकी,
दो पुलिस वाले	-	सूचक, जानुक।
मारीच का शिष्य	-	गालव

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् -कपिलदेव द्विवेदी, पेज 448

49. साहित्यदर्पणानुसारेण एषु कस्य रूपकमध्ये गणनं न भवति-

(A) समवकारस्य (B) नाटिकायाः
(C) प्रकरणस्य (D) प्रहसनस्य

व्याख्या-

आचार्य विश्वनाथ ने साहित्यदर्पण के षष्ठ परिच्छेद में रूपकों की गणना की है। दस रूपक निम्नवत् हैं -

नाटकमथ प्रकरणं भाणव्यायोगसमवकारडिमाः।
ईहामृगाङ्कवीथ्यः प्रहसनमिति रूपकाणि दश।।(सा.द.6.3)

अर्थात् (1) नाटक (2) प्रकरण (3) भाण (4) व्यायोग (5) समवकार (6) डिम (7) ईहामृग (8) अङ्क (9) वीथी (10) प्रहसन ये रूपक के दस भेद हैं।

इसी क्रम में उपरूपक के भी 18 भेदों का वर्णन करते हैं, जिनके नाम हैं- (1) नाटिका (2) त्रोटक (3) गोष्ठी (4) सट्टक (5) नाट्यरासक (6) प्रस्थानक (7) उल्लाप्य (8) काव्य (9) प्रेङ्खण (10) रासक (11) संलापक (12) श्रीगदित (13) शिल्पक (14) विलासिका (15) दुर्मल्लिका (16) प्रकरणिका (17) हल्लीश (18) भाणिका ये उपरूपक के 18 भेद हैं।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- साहित्यदर्पण (6/3) - शालिग्राम शास्त्री, पेज 170

50. एषु गतिसञ्ज्ञाविधायकं सूत्रं किमस्ति?

(A) ऊर्यादिच्विँडाचश्च
(B) कुगतिप्रादयः
(C) तत्रोपपदं सप्तमीस्थम्
(D) एक विभक्ति-चापूर्वनिपाते

व्याख्या-

➢ **ऊर्यादिच्विँडाचश्च** (1.4.60)- ऊरी-आदिगण में पढ़े गये शब्द, च्विँ प्रत्ययान्त शब्द तथा डाच् प्रत्ययान्त शब्द क्रिया के योग में गतिसंज्ञक हों।

जैसे- ऊरीकृत्य, शुक्लीकृत्य,पटपटाकृत्य,सुपुरुषः।

यह सूत्र गति सञ्ज्ञाविधायक सञ्ज्ञासूत्र है।

➢ **कुगतिप्रादयः-** (2.2.18)- कुत्सितवाचक अव्यय, गतिसञ्ज्ञक और प्र आदि शब्द इनका समर्थ सुबन्त के साथ नित्य समास होता है। यह सूत्र गति समास विधायक विधिसूत्र है।

उदाहरण- कुपुरुषः, सुपुत्रः, आदि।

तत्रोपपदं सप्तमीस्थम् (3.1.92)- धातोः सूत्र के अधिकार के अन्तर्गत कर्मण्यण् आदि सूत्रों में सप्तमी विभक्ति द्वारा निर्दिष्ट कुम्भ आदि तद्वाचक पद की उपपद सञ्ज्ञा होती है।

यह सूत्र उपपद सञ्ज्ञाविधायक सञ्ज्ञा सूत्र है।

➢ **एकविभक्ति चापूर्वनिपाते (1.2.44)-** विग्रह में जो नियत विभक्ति वाला है उसकी उपसर्जन सञ्ज्ञा होती है किन्तु उसका पूर्वनिपात नहीं होता है।

यह सूत्र उपसर्जनसञ्ज्ञा विधायक सञ्ज्ञासूत्र है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि गतिसञ्ज्ञा विधायक सञ्ज्ञासूत्र 'ऊर्यादिच्विँडाचश्च' है। **अतः विकल्प A सही है।**

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी (1.4.61)-गोविन्दाचार्य, पेज 935

उत्तरमाला

1- D 2- A 3- B 4- C 5- C 6- B 7- D 8- B 9- C 10- B 11- D 12- D 13- C
14- B 15- C 16- C 17- B 18- C 19- C 20- B 21- B 22- A 23- B 24- B 25- C
26- A 27- C 28- B 29- D 30- B 31- B 32- A 33- C 34- D 35- D 36- D 37- A
38- C 39- B 40- C 41- B 42- C 43- D 44- C 45- A 46- D 47- A 48- B 49- B
50- A

7	जुलाई 2016	NTA UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् II

1. वाजसनेयिमाध्यन्दिनसंहिता सम्बन्धिता अस्ति -
(A) कृष्णयजुर्वेदेन (B) शुक्लयजुर्वेदेन
(C) सामवेदेन (D) अथर्ववेदेन

व्याख्या-

वेद		संहिता
* ऋग्वेद	-	(1) शाकल संहिता
		(2) बाष्कल संहिता
* शुक्लयजुर्वेद	-	(1) वाजसनेयिमाध्यन्दिनसंहिता
		(2) काण्वसंहिता
* कृष्णयजुर्वेद	-	(1) तैत्तिरीय संहिता
		(2) कठ संहिता
* सामवेद	-	जैमिनीय संहिता
* अथर्ववेद	-	शौनक संहिता

स्पष्टीकरण-उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि वाजसनेयिमाध्यन्दिन संहिता शुक्लयजुर्वेद से सम्बन्धित है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- वैदिकसाहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-9,10

2. वेदा अपौरुषेयाः सन्तीति मतमस्ति-
(A) महर्षिदयानन्दस्य (B) ए. वेबरस्य
(C) मैक्समूलरस्य (D) विन्टरनिट्जस्य

व्याख्या-

वेद के भाष्यकारों ने वेद को अपौरुषेय माना है । इसके लिए किसी ने मीमांसा के तर्कों को उद्धृत किया, किसी ने न्याय-वैशेषिक के, किसी ने अन्य पुराणों के साक्ष्य उद्धृत किये हैं-

* **स्वामी दयानन्द सरस्वती-** आधुनिक युग के विद्वानों में इनका नाम आता है। इन्होंने वेद की नित्यता एवं अपौरुषेयता का समर्थन किया है तथा इसके लिए शास्त्रीय तथा लौकिक युक्तियाँ दी हैं। स्वामी विद्यानन्द विदेह ने भी महर्षि दयानन्द का समर्थन किया है।

* **मैक्समूलर-** पाश्चात्य विद्वान् भारतीय परम्परागत वेद के अपौरुषेयत्व सिद्धान्त को स्वीकार नहीं करते। मैक्समूलर, रास आदि पाश्चात्य विद्वान् वेद को मनुष्यकृत मानकर ही उसके अध्ययन में प्रवृत्त हुए और उसके कालनिर्धारण की दिशा में प्रयास किये।

जे म्यूर ने अपने 'ओरिजनल संस्कृत टेक्स्ट्स' के तृतीय भाग के द्वितीय अध्याय में वैदिक संहिताओं के उन स्थलों को उद्धृत किया है जिनमें वैदिक सूक्तों की उत्पत्ति के विषय में उल्लेख है।

* **आचार्य सायण-** वेदों की व्याख्या करने वाले आचार्यों में आचार्य सायण का स्थान अग्रगण्य है। इन्होंने भी वेदों को अपौरुषेय और नित्य माना हैं।

* **आनन्द कुमार स्वामी-** इन्होंने वेदों को सिद्धों की वाणी कहा है।

⟹ **स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि महर्षि दयानन्द ने वेद को अपौरुषेय कहा है। पाश्चात्य विद्वानों ने वेदों को पौरुषेय माना है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-18

3. वैतानश्रौतसूत्रं केन वेदेन सह सम्बद्धमस्ति -
(A) सामवेदेन (B) ऋग्वेदेन
(C) अथर्ववेदेन (D) कृष्णयजुर्वेदेन

व्याख्या-वेदों से सम्बन्धित श्रौतसूत्र निम्नलिखित हैं-

वेद		श्रौतसूत्र
ऋग्वेद	-	(1) आश्वलायन (2) शांखायन
शुक्लयजुर्वेद	-	(1) कात्यायन श्रौतसूत्र
कृष्णयजुर्वेद	-	(1) बौधायन (2) वाधूल (3) मानव (4) भारद्वाज (5) आपस्तम्ब (6) काठक (7) सत्याषाढ़ (8) वाराह (9) वैखानस श्रौतसूत्र
सामवेद	-	(1) जैमिनीय (2) लाट्यायन (3) द्राह्यायण (4) निदान (5) उपनिदान
अथर्ववेद	-	वैतान श्रौतसूत्र

⟹ **स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि 'वैतान-श्रौतसूत्र' अथर्ववेद से सम्बन्धित है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-225

**4. 'स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव।
सचस्वा नः स्वस्तये॥' अस्य मन्त्रस्य का देवता अस्ति?**
(A) रुद्रः (B) अग्निः
(C) सोमः (D) सविता

व्याख्या-

मन्त्र	देवता	ऋषि
* स नः पितेव सूनवे-(1.1.9)	अग्नि	मधुच्छन्दा
* अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्-(1.1.1)	अग्नि	मधुच्छन्दा
* राजन्तमध्वराणां गोपामृतस्य दीदिविम्। (1.1.8)	अग्नि	मधुच्छन्दा
* आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो-(1.35.2)	सविता	हिरण्यस्तूप
* विचक्रमाणस्त्रेधोरुगायः-(1.154.1)	विष्णु	दीर्घतमा
* मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः (1.154.2)	विष्णु	दीर्घतमा
* यस्य त्री पूर्णा मधुना-(1.154.4)	विष्णु	दीर्घतमा
* यो जात एव प्रथमो मनस्वान्-(2.12.1)	इन्द्र	गृत्समद
* यो रध्रस्य चोदिता यः-(2.12.6)	इन्द्र	गृत्समद
* यः सूर्यं य उषसं जजान (2.12.7)	इन्द्र	गृत्समद
* बोधि बृहद्वदेम विदथे सुवीराः।। (2.33.15)	रुद्र	गृत्समद
* ता आ चरन्ति समना पुरस्तात्- (4.51.8)	उषा	वामदेव
* पीतोऽमर्त्यो मर्त्याँ आविवेश (8.48.12)	सोम	कण्वपुत्र प्रगाथ
* सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः- (10.90.1)	पुरुष	नारायण
* छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद्- (10.90.9)	पुरुष	नारायण
* चन्द्रमा मनसो जातः- (10.90.13)	पुरुष	नारायण

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि 'स नः पितेव..'- मन्त्र के देवता 'अग्नि' हैं। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- ऋक्सूक्तसंग्रह-हरिदत्त शास्त्री, कृष्णकुमार, पेज-60

5. मुण्डकोपनिषद् केन वेदेन सह सम्बद्धा अस्ति-

(A) यजुर्वेदेन (B) अथर्ववेदेन
(C) ऋग्वेदेन (D) सामवेदेन

व्याख्या-

वेदों से सम्बन्धित उपनिषद्

वेद		उपनिषद्
* ऋग्वेद	-	(1) ऐतरेय (2) कौषीतकि
* शुक्लयजुर्वेद	-	(1) ईशोपनिषद् (2) बृहदारण्यक उपनिषद्
* कृष्णयजुर्वेद	-	(1) तैत्तिरीय (2) कठ (3) श्वेताश्वतर (4) मैत्रायणी (5) महानारायण उपनिषद्
* सामवेद	-	(1) छान्दोग्य (2) केन उपनिषद्
* अथर्ववेद	-	(1) प्रश्नोपनिषद् (2) मुण्डकोपनिषद् (3) माण्डूक्योपनिषद्

⇒ **स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'मुण्डकोपनिषद्' अथर्ववेद से सम्बन्धित है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-177

6. 'षड्विंशब्राह्मणम्' इति ग्रन्थः केन वेदेन सह सम्बद्धोऽस्ति-

(A) यजुर्वेदेन (B) ऋग्वेदेन
(C) अथर्ववेदेन (D) सामवेदेन

व्याख्या-

वेद से सम्बन्धित ब्राह्मण-

वेद		ब्राह्मण
*ऋग्वेद	-	(1) ऐतरेय (2) कौषीतकि (शांखायन) ब्राह्मण
*शुक्लयजुर्वेदेन	-	शतपथ ब्राह्मण
*कृष्णयजुर्वेद	-	तैत्तिरीय ब्राह्मण
*सामवेद-		(1) ताण्ड्य महाब्राह्मण (पञ्चविंश या प्रौढ) (2) **षड्विंश ब्राह्मण** एवं अद्भुत ब्राह्मण (3) सामविधान (4) आर्षेय (5) मन्त्र (उपनिषद्) (6) देवताध्याय (7) वंश (8) संहितोपनिषद् ब्राह्मण
*अथर्ववेद		गोपथ ब्राह्मण

⇒ **स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि 'षड्विंशब्राह्मणम्' सामवेद से सम्बन्धित है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-143

7. 'तलवकार- आरण्यकम्' केन वेदेन सह सम्बद्धमस्ति?

(A) ऋग्वेदेन (B) यजुर्वेदेन
(C) अथर्ववेदेन (D) सामवेदेन

व्याख्या-

वेद और उनसे सम्बन्धित आरण्यक :-

वेद		आरण्यक
* ऋग्वेद	-	(1) ऐतरेय (2) शांखायन आरण्यक
* शुक्लयजुर्वेद	-	बृहदारण्यक
* कृष्णयजुर्वेद	-	तैत्तिरीय आरण्यक, मैत्रायणी आरण्यक
* सामवेद	-	(i) तलवकार आरण्यक (जैमिनीय आरण्यक) (ii) छान्दोग्यारण्यक (ताण्ड्यब्राह्मण)
* अथर्ववेद	-	कोई आरण्यक नहीं।

⇒ **स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि 'तलवकार आरण्यक' सामवेद से सम्बन्धित है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-166

8. 'विश्वामित्र-नदी' सूक्तस्य कः ऋषिरस्ति?

(A) वसिष्ठः (B) विश्वामित्रः
(C) मधुच्छन्दाः (D) दीर्घतमाः

व्याख्या-

सूक्त	देवता	ऋषि	मन्त्र
* विश्वामित्र नदी संवाद सूक्त (3.33)	नदी	विश्वामित्र	13
* पुरूरवा-उर्वशी (10/95)	पुरूरवा उर्वशी	पुरूरवा ऐल उर्वशी ऋषिका	18
* यम/यमी (10/10)	यमी वैवस्वती यमो वैवस्वत	यमी वैवस्वती यमो वैवस्वत	14
* सरमा/पणि (10/108)	सरमा, एवं पणि	पणि एवं सरमा	11
* पुरुषसूक्त (10/90)	पुरुष	नारायण	16
* नासदीय सूक्त (10/129)	परमात्मा	परमेष्ठी प्रजापति	7
* हिरण्यगर्भ सूक्त (10/121)	क संज्ञक प्रजापति	हिरण्यगर्भ	10
* वाक्सूक्त (10/125)	परमात्मा	वाक्	8
* अग्निसूक्त (1.1)	अग्नि	मधुच्छन्दा	9
* विष्णुसूक्त (1.154)	विष्णु	दीर्घतमा	6

⇒ **स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि विश्वामित्र नदी संवादसूक्त के ऋषि विश्वामित्र हैं। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- ऋक्सूक्त संग्रह- हरिदत्त शास्त्री, पेज-207

9. 'पुरूरवा-उर्वशी' सूक्ते कति मन्त्राः सन्ति?

(A) 17 **(B)** 18

(C) 19 **(D)** 20

व्याख्या-

सूक्त	मन्त्र
* पुरूरवा उर्वशी संवाद सूक्त (10/95)	18
* विश्वामित्र-नदी संवाद (3.33)	13
* सरमा-पणि संवाद (10/108)	11
* यम-यमी संवाद (10/10)	14
* इन्द्र सूक्त (2/12)	15
* उषस् सूक्त (3/61)	07
* रुद्र सूक्त (2/33)	15
* पर्जन्य सूक्त (5.83)	10
* सवितृ सूक्त (1.35)	11

⇒ **स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि पुरूरवा-उर्वशी सूक्त में 18 मन्त्र हैं। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- वैदिकवाङ्मय- परीक्षादृष्टि- सर्वज्ञभूषण,पेज-10

10. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत-

(क) यम-यमी संवादसूक्तम् (i) यजुर्वेदः

(ख) कठोपनिषद् (ii) सामवेदः

(ग) लाट्यायनश्रौतसूत्रम् (iii) ऋग्वेदः

(घ) माण्डूक्योपनिषद् (iv) अथर्ववेदः

	क	ख	ग	घ
(A)	III	I	II	IV
(B)	I	III	II	IV
(C)	IV	I	III	II
(D)	III	II	IV	I

व्याख्या- ऋग्वेद के संवाद सूक्त-

ऋग्वेद (1) पुरूरवा-उर्वशी संवाद (10.95)

(2) यम-यमी संवाद (10.10)

(3) सरमा-पणि संवाद (10.108)

(4) विश्वामित्र-नदी संवाद (3.33)

कृष्णयजुर्वेद उपनिषद् (1) मैत्रायणी उपनिषद्

(2) कठोपनिषद्

(3) तैत्तिरीय उपनिषद्

(4) श्वेताश्वतर उपनिषद्

(5) महानारायण उपनिषद्

सामवेद के श्रौतसूत्र (1) जैमिनीय **(2) लाट्यायन**

(3) द्राह्यायण

अथर्ववेद के उपनिषद् (1) प्रश्नोपनिषद् **(2) माण्डूक्योपनिषद्**

(3) मुण्डकोपनिषद्

⇒ **स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि यम यमी संवाद सूक्त ऋग्वेद से, कठोपनिषद् यजुर्वेद से, लाट्यायन श्रौतसूत्र सामवेद से तथा माण्डूक्योपनिषद् अथर्ववेद से सम्बन्धित है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-57,175,219,10

11. अधस्तनेषु को ग्रन्थः कल्पवेदाङ्गान्तर्गतोऽस्ति?

(A) पारस्करगृह्यसूत्रम्

(B) काशकृत्स्नव्याकरणम्

(C) ऋग्वेदप्रातिशाख्यम्

(D) पाणिनीयशिक्षा

व्याख्या-वेदाङ्गों की संख्या छः है-

शिक्षाव्याकरणं छन्दो निरुक्तं ज्योतिषं तथा।
कल्पश्चेति षडङ्गानि वेदस्याहुर्मनीषिणः।।

(1) शिक्षा (2) व्याकरण (3) छन्द (4) निरुक्त
(5) ज्योतिष (6) कल्प ये छः वेदाङ्ग हैं।

* कल्पसूत्र के चार भेद हैं-
(1) श्रौतसूत्र (2) गृह्यसूत्र (3) धर्मसूत्र (4) शुल्बसूत्र

वेद	गृह्यसूत्र
ऋग्वेद	- (1) आश्वलायन (2) शांखायन (3) कौषीतकि
शुक्लयजुर्वेद	- **पारस्करगृह्यसूत्र**
कृष्णयजुर्वेद	- (1) बौधायन (2) मानव (3) भारद्वाज (4) आपस्तम्ब (5) काठक (6) आग्निवेश्य (7) हिरण्यकेशि (8) वाराह (9) वैखानस
सामवेद-	(1) गोभिल (2) कौथुम (3) खादिर (4) द्राह्यायण (5) जैमिनीय गृह्यसूत्र
अथर्ववेद-	कौशिक गृह्यसूत्र

⇒ **स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि कल्पवेदाङ्ग के अन्तर्गत 'पारस्करगृह्यसूत्र' आता है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-228

12. अधोऽङ्कितेषु वेदाङ्गमस्ति-
(A) ईशोपनिषद् (B) ऐतरेयारण्यकम्
(C) मानवशुल्बसूत्रम् (D) शतपथब्राह्मणम्

व्याख्या-वेदाङ्ग का अर्थ है- वेद के अङ्ग। वेदाङ्ग छः हैं- (1)शिक्षा(2)व्याकरण (3) छन्द (4) निरुक्त(5)ज्योतिष(6) कल्प।

कल्प के अन्तर्गत- (1) श्रौतसूत्र (2) गृह्यसूत्र (3) धर्मसूत्र (4) शुल्बसूत्र आते हैं।

वेद	शुल्बसूत्र
ऋग्वेद -	कोई शुल्बसूत्र प्राप्त नहीं होता
शुक्लयजुर्वेद-	कात्यायन शुल्बसूत्र
कृष्णयजुर्वेद -	(1) बौधायन (2) मानव शुल्बसूत्र (3) आपस्तम्ब (4) कात्यायन (5) मैत्रायणीय (6) वाराह शुल्बसूत्र
सामवेद-	कोई शुल्बसूत्र प्राप्त नहीं होता।
अथर्ववेद-	कोई शुल्बसूत्र प्राप्त नहीं होता।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि वेदाङ्ग के अन्तर्गत 'कल्प' और कल्प के अन्तर्गत 'शुल्बसूत्र' आता है। यजुर्वेद से सम्बन्धित मानव शुल्बसूत्र है। ईशोपनिषद् उपनिषद् ग्रन्थ है, ऐतरेयारण्यक आरण्यक ग्रन्थ है, शतपथ ब्राह्मणम् ब्राह्मणग्रन्थ है, मानवशुल्बसूत्रम् कल्पवेदाङ्ग है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-241

13. 'अधिवसति वैकुण्ठं हरिः' इत्यत्र कर्मसंज्ञाविधायकं सूत्रं किमस्ति?
(A) उपान्वध्याङ्वसः (B) अधि-शीङ्स्थासां कर्म
(C) अधिरीश्वरे (D) अधिपरी अनर्थकौ

व्याख्या-

अधिशीङ्स्थासां कर्म (1.4.46) अधि पूर्वक शीङ् धातु, अधिपूर्वक स्था धातु तथा अधिपूर्वक आस् धातु के आधार की कर्म संज्ञा होती है।

उदाहरण- हरिः वैकुण्ठम् अधिशेते। (हरि वैकुण्ठ में रहता है।) यहाँ पर हरि का आधार वैकुण्ठ है और अधि उपसर्ग पूर्वक शीङ् धातु का प्रयोग होने पर हरि के आधार वैकुण्ठ की 'अधिशीङ्स्थासां' कर्म से कर्मसंज्ञा और 'कर्मणि द्वितीया' से द्वितीया विभक्ति हुई है।

अभिनिविशश्च (1.4.47) अभि तथा नि उपसर्ग पूर्वक 'विश्' धातु के आधार की कर्मसंज्ञा होती है।

उदाहरण- सन्मार्गम् अभिनिविशते। (सन्मार्ग पर चलता है।) यहाँ 'सन्मार्ग' अभिनिविश् धातु का आधार है। 'अभिनिविशश्च' सूत्र के द्वारा सन्मार्गम् की कर्मसंज्ञा और कर्मणि द्वितीया से द्वितीया विभक्ति हुई है।

उपान्वध्याङ्वसः (1.4.48)-उप, अनु, अधि तथा आङ् पूर्वक वस् धातु के आधार की कर्मसंज्ञा होती है। उप आदि उपसर्गों में प्रत्येक के साथ 'वस्' धातु का सम्बन्ध है।

उदाहरण- अधिवसति वैकुण्ठं हरिः - (हरि वैकुण्ठ में निवास करते हैं) यहाँ पर अधि उपसर्ग से युक्त वस् धातु होने के कारण आधार 'वैकुण्ठ' की कर्मसंज्ञा हुई और 'कर्मणि द्वितीया' से द्वितीया विभक्ति हुई है।

⇒ **स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि 'अधिवसति वैकुण्ठं हरिः' इसका कर्मसंज्ञाविधायक सूत्र 'उपान्वध्याङ्वसः' है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- कारकप्रकरण- राममुनि पाण्डेय, पेज-44

14. 'इत्थम्भूतलक्षणे' इति सूत्रस्योदाहरणं किम्भवति?
(A) जटाभिस्तापसः
(B) जपमनु प्रावर्षत्
(C) मासं कल्याणी
(D) लक्षणेत्थम्भूताख्यानभागवीप्सासु प्रतिपर्यनवः

व्याख्या-

➢ **इत्थम्भूतलक्षणे (2.3.21)**

'वह इस प्रकार है'- इसप्रकार कथन में लक्षणवाची शब्द से तृतीया होती है।

* **जटाभिस्तापसः** - जटाओं से तपस्वी जान पड़ता है।
* **चन्दनेन पण्डितः** - चन्दन से पण्डित
* **पुस्तकैः छात्रः** - पुस्तकों से छात्र
* **वर्णेन गौरः** - रंग से गोरा।
* **कमण्डलुना छात्रः** - कमण्डल से छात्र
* **वेषेण यतिः** - वेश से संन्यासी

➢ **अनुर्लक्षणे (1.4.84)**

लक्षण अर्थात् हेतु के अर्थ में अनु की कर्मप्रवचनीय संज्ञा होती है।

उदा॰- **जपमनु प्रावर्षत्।**

इस वाक्य में लक्षण के अर्थ में अनु की **'अनुर्लक्षणे'** सूत्र से कर्मप्रवचनीय संज्ञा हुई और 'कर्मप्रवचनीययुक्ते द्वितीया' सूत्र से जपम् में द्वितीया विभक्ति हुई।

➢ **कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे (2.3.5)**

अनुवृत्ति- द्वितीया

अर्थ- अत्यन्त संयोग के अर्थ में अर्थात् निरन्तरता के द्योतित होने पर काल एवं मार्गवाचक शब्दों में द्वितीया विभक्ति होती है।

उदाहरण- मासं कल्याणी (मास पर्यन्त शुभ है।)

मासम् अधीते (महीने भर लगातार पढ़ता है।)

मासं गुडधानाः (महीने भर लगातार गुड़ और लावा है।)

➢ **लक्षणेत्थम्भूताख्यानभागवीप्सासु प्रतिपर्यनवः (1.4.89)**

अर्थ- इत्थम्भूताख्यान का अर्थ है- 'वह इस प्रकार का है'- ऐसा कथन। वीप्सा व्याप्ति को कहते हैं।

लक्षण, इत्थम्भूताख्यान, भाग और वीप्सा अर्थों में प्रति, परि तथा अनु की कर्मप्रवचनीय तथा निपातसंज्ञा होती है।

उदा॰- **लक्षण-** वृक्षं प्रति विद्योतते विद्युत् (वृक्ष पर बिजली चमकती है)

इत्थम्भूताख्यान- साधुर्देवो मातरं प्रति (परि, अनु)
(देव माता के प्रति अच्छा व्यवहार करता है।)

भाग का उदाहरण- लक्ष्मीः हरिं प्रति परि अनु वा
(लक्ष्मी हरि का भाग है)

वीप्सा का उदाहरण- वृक्षं वृक्षं प्रति परि अनु वा सिञ्चति (प्रत्येक वृक्ष को सींचता है।)

⇒ **स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'इत्थम्भूतलक्षणे' का उदाहरण 'जटाभिस्तापसः'है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- कारकप्रकरण- राममुनि पाण्डेय, पेज-62

15. 'अधिगोपम्' इत्यत्राव्ययीभावसमासः कस्मिन्नर्थे भवति-

(A) समीपार्थे (B) अत्ययार्थे
(C) विभक्त्यर्थे (D) साकल्यार्थे

व्याख्या-

अव्ययं विभक्ति- समीप- समृद्धि-व्यृद्ध्यर्थाभावात्ययाऽसम्प्रति- शब्दप्रादुर्भाव- पश्चाद्- यथाऽऽनुपूर्व्य-यौगपद्य- सादृश्य- सम्पत्ति- साकल्याऽन्तवचनेषु। (2.1.6)

(1) विभक्ति (2) समीप (3) समृद्धि (4) व्यृद्धि (5) अर्थाभाव (6) अत्यय (7) असम्प्रति (8) शब्दप्रादुर्भाव (9) पश्चाद् (10) यथा, (योग्यता, वीप्सा,पदार्थानतिवृत्ति और सादृश्य) (11) आनुपूर्व्य (12) यौगपद्य (13) सादृश्य (14) सम्पत्ति (15) साकल्य और (16) अन्त (समाप्ति)। इन सोलह अर्थों में से किसी भी अर्थ में वर्तमान जो अव्यय है उसका समर्थ सुबन्त के साथ नित्यसमास होता है, और वह समास अव्ययीभावसञ्ज्ञक होता है।

सामासिकपद		अर्थ
अधिहरि	-	विभक्ति अर्थ में
अधिगोपम्	-	विभक्ति अर्थ में
उपकृष्णम्	-	समीप अर्थ में
सुमद्रम्	-	समृद्धि अर्थ में
दुर्यवनम्	-	व्यृद्धि अर्थ में
निर्मक्षिकम्	-	अभाव अर्थ में
अतिहिमम्	-	नाश(अत्यय) अर्थ में
अतिनिद्रम्	-	असम्प्रति अर्थ में
इतिहरि	-	नाम की प्रसिद्धि अर्थ में
अनुविष्णु	-	पश्चात् अर्थ में
अनुरूपम्	-	योग्यता अर्थ में
प्रत्यर्थम्	-	(वीप्सा अर्थ में) प्रत्येक अर्थ के प्रति
यथाशक्ति	-	पदार्थानतिवृत्ति अर्थ में शक्ति के
	-	उल्लंघन के बिना
सहरि	-	(हरि के सदृश) यथा के सदृश अर्थ में
अनुज्येष्ठम्	-	(ज्येष्ठ के क्रम से) आनुपूर्व्य अर्थ में
सचक्रम्	-	यौगपद्य अर्थ में एक साथ एक ही काल में
ससखि	-	सादृश्य (अर्थात् समान अर्थ में समास)
सक्षत्रम्	-	सम्पत्ति अर्थ में

सतृणम् (अत्ति) - सम्पूर्ण अर्थ में
साग्नि (अधीते) - अन्त अर्थात् 'यहाँ तक' इस अर्थ में समास
⇒ **स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि 'अधिगोपम्' विभक्ति अर्थ में है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**
स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी- गोविन्दाचार्य, पेज- 896

16. व्यधिकरणबहुव्रीहिसमासे किं ज्ञापकम्?
(A) 'अनेकमन्यपदार्थे इत्यत्र 'अनेक'- ग्रहणम्
(B) 'हलदन्तात् सप्तम्याः संज्ञायाम्' इत्यत्र 'संज्ञायाम्' इत्यस्य ग्रहणम्
(C) 'सप्तमीविशेषणे बहुव्रीहौ' इत्यत्र 'सप्तमी' इत्यस्य ग्रहणम्
(D) 'शेषो बहुव्रीहिः' इत्यत्र 'शेष' ग्रहणम्

व्याख्या-
बहुव्रीहि समास में पूर्वनिपात का विशेष विधान करते हुए भट्टोजिदीक्षित सिद्धान्तकौमुदी में पाणिनीय सूत्र की वृत्ति में लिखते हैं-
सूत्र- सप्तमी विशेषणे बहुव्रीहौ (2.2.35)
वृत्ति- सप्तम्यन्तं विशेषणं च बहुव्रीहौ पूर्वं प्रयोज्यम्। कण्ठेकालः। अतएव ज्ञापकात् व्यधिकरणपक्षे बहुव्रीहिः।
सूत्रार्थ- बहुव्रीहि समास में सप्तम्यन्त शब्द तथा विशेषण शब्द का पूर्व में प्रयोग होता है।
उदाहरण- कण्ठेकालः (कण्ठ में काला या नीलवर्ण है जिसका वह नीलकण्ठ शृङ्गार)।
कण्ठे कालो यस्य- लौकिक विग्रह
कण्ठ ङि काल सु - अलौकिक विग्रह
इस भिन्न विभक्ति अर्थात् व्यधिकरण में उक्त ज्ञापक के द्वारा समास हुआ।
सप्तम्यन्त पद कण्ठ ङि का 'सप्तमीविशेषणे बहुव्रीहौ' से पूर्वप्रयोग होकर 'कण्ठेकालः' बना।
⇒ यहाँ यह शंका उपस्थित होती है कि 'कण्ठेकालः' में समानाधिकरण न होने से जब बहुव्रीहि समास की प्राप्ति ही नहीं थी तब सप्तम्यन्त पद के पूर्वनियत की सम्भावना ही कैसे हो गयी?
* 'अतएव ज्ञापकात् व्यधिकरणपक्षे बहुव्रीहिः' व्यधिकरण (भिन्न-भिन्न विभक्ति) शब्दों में सप्तम्यन्त शब्द का पूर्वप्रयोग का विधान **''सप्तमीविशेषणे बहुव्रीहौ''** इस सूत्र से किये जाने के कारण ही यह ज्ञापन मिलता है। कभी-कभी बहुव्रीहि समास में भिन्न-भिन्न विभक्ति वाले पदों का भी समास होता है। केवल समानाधिकरण अर्थात् समान विभक्ति की ही बहुव्रीहि समास में समास नहीं होता अपितु व्यधिकरण अर्थात् भिन्न-भिन्न विभक्ति वाले पदों का भी बहुव्रीहि समास होता है।
⇒ **स्पष्टीकरण- 'अतएव ज्ञापकाद् व्यधिकरण पक्षे बहुव्रीहिः'** अर्थात् जब बहुव्रीहि समास में सब पद प्रथमान्त होने से समानाधिकरण ही होते हैं, कोई पद व्यधिकरण नहीं होता तो पाणिनि का 'सप्तमीविशेषणे बहुव्रीहौ' सूत्र से सप्तम्यन्त पद का पूर्वनिपात करना यह ज्ञापित करता है कि क्वचित् व्यधिकरणपदों में भी बहुव्रीहि समास हो जाता है। यदि ऐसा न होता तो सूत्रकार पाणिनि सप्तम्यन्त पद का बहुव्रीहि में पूर्वनिपात क्यों कहते? उनका ऐसा कहना व्यधिकरणपद बहुव्रीहिसमास के होने का ज्ञापक है। **अतः विकल्प C सही है।**
स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी- गोविन्दाचार्य, पेज-952

17. 'वर्णानामतिशयितः सन्निधिः' को भवति?

(A) घिसञ्ज्ञः	**(B) उपधासञ्ज्ञः**
(C) निष्ठासञ्ज्ञः	**(D) संहितासञ्ज्ञः**

व्याख्या- घि संज्ञा-शेषो घ्यसखि (1.4.7) असखि का अर्थ है- सखि शब्द को छोड़कर। शेष का अर्थ है- जिन शब्दों की नदी संज्ञा नहीं है।
सूत्रार्थ- जिनकी नदी संज्ञा नहीं है ऐसे ह्रस्व इकार और ह्रस्व उकार है अन्त में जिनके, उन शब्दों की घि संज्ञा होती है, सखि शब्द को छोड़कर।
उदा॰- पुँल्लिङ्ग व नपुंसकलिङ्ग में ह्रस्व इकारान्त व ह्रस्व उकारान्त की घिसंज्ञा शब्द- हरिः, भानुः, वारि, मधु आदि।
घि संज्ञा- पतिः समास एव (1.4.8)
अर्थ- पति शब्द समास में ही घि संज्ञक होता है। समस्तपद में आये 'पति' शब्द की ही घि संज्ञा होती है, केवल 'पति' शब्द की नहीं।
उदाहरण- भूपतिः, प्रजापतिः रमापतिः, सीतापतिः, उमापतिः आदि
विशेष- सूत्रस्थ 'एव' शब्द अवधारणार्थक है। 'समासे एव' का अभिप्राय है कि पति शब्द की समास होने पर ही घि संज्ञा होती है।
अलोऽन्त्यात्-पूर्व उपधा (1.1.64)
सूत्रार्थ- अन्त्य अल् से पूर्व वर्ण की उपधा संज्ञा होती है।
उदा॰- गम्, मुच्, भिद्, वृध्।
गम् में अन्त्य अल् मकार है इससे पूर्व अकार है जिसकी

उपधा संज्ञा हुई है। मुच् में 'उ' की, भिद् में 'इ' की, वृध् में 'ऋ' की उपधा संज्ञा।

क्तक्तवतू निष्ठा (1.1.25)

सूत्रार्थ- क्त तथा क्तवतु प्रत्यय की निष्ठा संज्ञा होती है।

उदा॰- भुक्तः (क्त), भुक्तवान् (क्तवतु)

भुज् की 'भूवादयो धातवः (1.3.1)' से धातुसंज्ञा होकर धातोः,प्रत्ययः, परश्च के अधिकार में निष्ठा तथा क्तक्तवतू निष्ठा से क्त प्रत्यय होता है।

संहिता संज्ञा- परः सन्निकर्षः संहिता (1.4.108)

वृत्ति - 'वर्णानामतिशयितः सन्निधिः संहितासंज्ञः स्यात्।' वर्णों के अत्यधिक सामीप्य की 'संहितासंज्ञा' होती है।

उदाहरण- मधु अपि = मध्वपि

यहाँ उकार तथा अकार की अत्यधिक समीपता है, इनकी संहिता संज्ञा होकर संहितायाम् के अधिकार में 'इको यणचि' से यण् आदेश होता है।

* अत्यधिक समीपता का अर्थ है- दो वर्णों के मध्य आधी मात्रा या इससे भी कम काल का व्यवधान होना।

⇒ **स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'वर्णानामतिशयितः सन्निधिः' को संहितासंज्ञा कहेंगे। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी- गोविन्दाचार्य, पेज-22

18. अधोलिखितेषु कस्य सर्वनामस्थानसंज्ञा भवति?
(A) 'टा' इत्यस्य (B) 'ङे' इत्यस्य
(C) 'शि' इत्यस्य (D) 'ङि' इत्यस्य

व्याख्या-

शि सर्वनामस्थानम् (1.1.41)

अर्थ- शि पद के द्वारा 'जश्शसोः शिः' से जस् व शस् के स्थान पर होने वाले शि आदेश का ही ग्रहण होता है।

सूत्रार्थ- शि की सर्वनामस्थानसंज्ञा होती है।

उदा॰- वनानि, दधीनि, मधूनि।

वन+जस्- इस दशा में शि आदेश और सर्वनामस्थान संज्ञा, अनुबन्ध लोप, ''नपुंसकस्य झलचः'' के द्वारा नुम् आगम वन शि- वन इ- वन नुम् इ- वन न् इ-

'सर्वनामस्थाने चाऽसम्बुद्धौ'- सूत्र से दीर्घ होकर वनानि बना।

सुप् प्रत्यय-	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	सु	औ	जस्
द्वितीया	अम्	औट्	शस्
तृतीया	टा	भ्याम्	भिस्
चतुर्थी	ङे	भ्याम्	भ्यस्
पञ्चमी	ङसि	भ्याम्	भ्यस्
षष्ठी	ङस्	ओस्	आम्
सप्तमी	ङि	ओस्	सुप्

⇒ **स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि सर्वनामस्थान संज्ञा 'शि' है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी- गोविन्दाचार्य, पेज-240

19. निमित्तात् कर्मयोगे, इत्यत्र 'योग' शब्दस्य भट्टोजिदीक्षितमते कोऽर्थः?
(A) चित्तवृत्तिनिरोधः
(B) संयोगसम्बन्धः केवलम्
(C) संयोग-समवायसम्बन्धौ
(D) स्वरूपसम्बन्धः

व्याख्या-

* आचार्य भट्टोजिदीक्षित ने सिद्धान्तकौमुदी के कारक प्रकरण के 'सप्तम्यधिकरणे च' (2.6.36) सूत्र पर 'निमित्तात्कर्मयोगे' वार्तिक उद्धृत किया है जिसका अर्थ है- कर्मयोग में निमित्तवाची शब्द से सप्तमी विभक्ति होती है यदि वह निमित (फल) उस क्रिया के कर्म से संयुक्त हो।

* इस वार्तिक में 'निमित्त' शब्द का अर्थ है- फल। (निमित्तमिह फलम्) 'योग' का अर्थ है- संयोगसमवायात्मक अर्थात् संयोग या समवाय सम्बन्ध **(योगः संयोगसमवायात्मकः)**

उदाहरण - चर्मणि द्वीपिनं हन्ति। (चमड़े के लिए गैंड़े को मारता है) इस उदाहरण में हनन क्रिया का फल चर्म है और वह हनन क्रिया का कर्म द्वीपी से संयुक्त है। अतः 'निमित्तात् कर्मयोगे' वार्तिक से निमित्तवाचक चर्मन् में सप्तमी विभक्ति होकर 'चर्मणि' बना।

इसीप्रकार- दन्तयोः कुञ्जरं हन्ति। (दाँतों के लिए हाथी को मारता है।) केशेषु चमरीं हन्ति। (केशों के लिए चमरी को मारता है।)

➤ चित्तवृत्तिनिरोध-पतञ्जलिकृत योगसूत्र में यह योग का लक्षण दिया गया है कि चित्तवृत्ति के निरोध को योग कहते हैं। **'योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः'**

⇒ **स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि **विकल्प C सही है।**

स्रोत- सिद्धान्तकौमुदी कारक प्रकरण- राममुनि पाण्डेय, पेज-97

20. 'अधि रामे भूः' इत्यत्र 'अधि' शब्दस्य कर्मप्रवचनीय संज्ञा- विधायकं सूत्रं किमस्ति?
(A) अधिरीश्वरे (B) उपोऽधिके च
(C) अधि-परी अनर्थकौ (D) हीने

व्याख्या-

अधिरीश्वरे (1.4.97) स्व-स्वामिभाव रूप सम्बन्ध अर्थ में अधि शब्द की कर्मप्रवचनीय और निपात संज्ञा होती है।

यस्मादधिकं यस्य चेश्वरवचनं तत्र सप्तमी-(2.3.9) जिससे अधिक हो और जिसका ईश्वरत्व या स्वामित्व कहा जाय उन शब्दों में कर्मप्रवचनीय के योग में सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे- अधिरामे भूः (पृथिवी राम की स्व है।) यहाँ अधि की **'अधिरीश्वरे'** से कर्मप्रवचनीय संज्ञा हुई तथा यहाँ स्वामी वाचक राम शब्द में 'यस्मादधिकं यस्य चेश्वरवचनं तत्र सप्तमी' सूत्र से सप्तमी विभक्ति करने पर रामे बना।

अधि भुवि रामः (राम पृथ्वी के स्वामी हैं।)

उपोऽधिके च (1.4.87) अधिक और हीन अर्थ द्योतित होने पर 'उप' अव्यय की कर्मप्रवचनीय संज्ञा होती है। अधिक अर्थ द्योतित होने पर सप्तमी विभक्ति होती है और हीन अर्थ में द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे- उप हरिं सुराः (सभी देवता हरि से हीन हैं।)

अधिपरी अनर्थकौ- (1.4.92) अर्थरहित अधि एवं परि कर्मप्रवचनीय संज्ञक हैं। जैसे-कुतः अध्यागच्छति, कुतः पर्यागच्छति। (कहाँ से आता है)

हीने- (1.4.86) अनु शब्द से हीन अर्थात् न्यूनता अर्थ द्योतित होने पर अनु की कर्मप्रवचनीय संज्ञा होती है।

जैसे- अनु हरिं सुराः (देवता हरि से पीछे या न्यून हैं।) यहाँ 'हीने' सूत्र से अनु की कर्मप्रवचनीय संज्ञा हुई और 'कर्मप्रवचनीययुक्ते द्वितीया' सूत्र से द्वितीया विभक्ति होकर 'हरिम्' बना।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'अधि रामे भूः' में अधि शब्द की 'अधिरीश्वरे' सूत्र से कर्मप्रवचनीय संज्ञा हुई है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- अष्टाध्यायी- ईश्वरचन्द्र, पेज-143

21. को ध्वनिः अघोषमहाप्राणः अस्ति?

(A) घ् **(B) छ्**

(C) ज् **(D) ढ्**

व्याख्या-

भाषाविज्ञान के अनुसार अघोष वे ध्वनियाँ हैं जिनके उच्चारण में स्वरतन्त्रियाँ खुली रहती हैं और वायु बिना अवरोध के बाहर आती है। स्वरतन्त्रियों में कम्पन न होने कारण इन्हें अघोष कहते हैं। वर्गों के प्रथम और द्वितीय वर्ण-क-ख, च-छ, ट-ठ, त-थ, प-फ, अघोष व्यञ्जन हैं।

चूँकि जब वायुप्रवाह अधिक होता है तब उन वर्णों को महाप्राण कहते हैं। वर्गों के द्वितीय चतुर्थ वर्ण महाप्राण होते हैं अतः चवर्ग में छ् और झ् वर्ण महाप्राण हैं।

घोष अघोष की चर्चा व्याकरणशास्त्र में भी की गयी है जो इस प्रकार है- लघुसिद्धान्तकौमुदीकार वरदराजाचार्य ने सञ्ज्ञाप्रकरण में दो प्रकार के प्रयत्न बताए हैं- बाह्य प्रयत्न और आभ्यन्तर प्रयत्न। आभ्यन्तर प्रयत्न 5 होते हैं- स्पृष्ट, ईषत्स्पृष्ट, ईषद्विवृत, विवृत और संवृत। (यत्नो द्विधा आभ्यन्तरो बाह्यश्च। आद्यः पञ्चधा।)

बाह्यप्रयत्न 11 प्रकार का होता है- विवार, संवार, श्वास, नाद, घोष, अघोष, अल्पप्राण, महाप्राण, उदात्त, अनुदात्त, स्वरित। (बाह्यप्रयत्नस्त्वेकादशधा।)

व्यञ्जनों के बाह्यप्रयत्न का वर्गीकरण इस प्रकार किया गया है-

1. खर् वर्णों अर्थात् खफछठथचटतकपशषस का बाह्यप्रयत्न विवार, श्वास और अघोष होता है। (खरो विवाराः श्वासा अघोषाश्च।
2. हश् वर्णों अर्थात् ह य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द का बाह्य प्रयत्न संवार, नाद और घोष होता है। (हशः संवारा नादा घोषाश्च।)
3. वर्गों के प्रथम, तृतीय, पञ्चम और यण् (य् व् र् ल्) अल्पप्राण यत्न वाले होते हैं। (वर्गाणां प्रथमतृतीयपञ्चमा यणश्चाल्पप्राणाः।)
4. वर्गों के द्वितीय, चतुर्थ और (शल् श् ष् स् ह्) महाप्राण यत्न वाले होते हैं। (वर्गाणां द्वितीयचतुर्थौ शलश्च महाप्राणाः।)

* ज्- हश् वर्णों में आने से तथा चवर्ग का तृतीय वर्ण होने से संवार, नाद, घोष और अल्पप्राण यत्न वाली ध्वनि है।

* ढ्- हश् वर्णों में आने से और टवर्ग का चतुर्थ वर्ण होने से संवार नाद घोष और महाप्राण ध्वनि है।

⇒ **स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि छ् वर्ण अघोष तथा महाप्राण ध्वनि है। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी, (प्रथम भाग) भैमी व्याख्या, पेज-28

22. ग्रिमनियमानुसारं संस्कृतस्य क्, त्, प् इति ध्वनयः जर्मनभाषायां केषु ध्वनिषु परिवर्तिताः?

(A) च्, छ्, ज् **(B) ख्, थ्, फ्**

(C) ग्, द्, ब् **(D) ऊष्मसु**

व्याख्या-

क, त, प

ग द ब ख (ह) थ फ

वर्ण परिवर्तन का क्रम क्, त्, प् (अघोष अल्पप्राण)

(घोष अल्पप्राण) (महाप्राण)

ग्, द्, ब् ख्,(ह) थ्, फ्

ग्रिम नियम- यह ध्वनि नियम प्रो॰ याकोब ग्रिम (Jacob Grimm 1785-1863) के नाम से प्रसिद्ध है। इस नियम को ध्वनिपरिवर्तन (जर्मन में लाउत ध्वनि (Laut verschiebung) फेशीबुंग परिवर्तन, sound shifting नाम दिया गया। प्रो॰ मैक्समूलर ने इसे (ग्रिम नियम) Grimm's Law नाम दिया है। प्रो॰ ऑटो येस्पर्सन (Otto-Jespersen) का कथन है कि इस नियम को Rask's Law (रास्क-नियम) नाम दिया जाना चाहिये।

प्रथम वर्ण परिवर्तन- यह वर्ण परिवर्तन ईसा के जन्म से पूर्व हो चुका था, इसका प्रभाव समान रूप से गाथिक, निम्न जर्मन और अंग्रेजी, डच आदि भाषाओं पर पड़ा है। भारोपीय मूलभाषा की व्यंजन ध्वनियाँ संस्कृत, लैटिन, ग्रीक आदि में सुरक्षित हैं। अंग्रेजी का उद्भव निम्न जर्मन से है अतः इसके द्वारा संस्कृत और अंग्रेजी की तुलना से यह परिवर्तन स्पष्ट हो जाता है।

⇒ **स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि क्, त्, प् ध्वनियों का, ख्, थ् फ् ध्वनियों में परिवर्तन होता है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- भाषाविज्ञान- कपिलदेव द्विवेदी, पेज 242

23. संस्कृतभाषा कीदृशी अस्ति?
(A) श्लिष्टयोगात्मिका (B) प्रश्लिष्टयोगात्मिका
(C) अयोगात्मिका (D) अश्लिष्टयोगात्मिका

व्याख्या-

विश्व की भाषाओं के वर्गीकरण के दो भेद हैं- आकृतिमूलक और पारिवारिक। आकृतिमूलक वर्गीकरण के भी दो भेद हैं- योगात्मक और अयोगात्मक।

अयोगात्मक भेद एक ही प्रकार का है। योगात्मक के तीन भेद हैं- श्लिष्ट (Inflecting), अश्लिष्ट (Agglutinating), प्रश्लिष्ट (Incorporating)। योगात्मक भाषायें प्रकृति और प्रत्यय के संयोग से बनी हुई होती हैं।

आकृतिमूलक वर्गीकरण को वंशवृक्ष के रूप में दर्शाया गया है-

भाषा

अयोगात्मक (चीनी, तिब्बती) - योगात्मक

अश्लिष्ट

पूर्वयोगात्मक (काफिर) मध्ययोगात्मक (सन्थाली) अन्तयोगात्मक (तुर्की) पूर्वान्तयोगात्मक (मफोर)

श्लिष्ट

अन्तर्मुखी - बहिर्मुखी

अन्तर्मुखी संयोगात्मक (अरबी) वियोगात्मक (हिब्रू)

बहिर्मुखी संयोगात्मक (संस्कृत) वियोगात्मक (हिन्दी)

प्रश्लिष्ट

पूर्णप्रश्लिष्ट (चेरोकी) आंशिकप्रश्लिष्ट (बास्क)

⇒ **स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त विवेचन के द्वारा स्पष्ट होता है कि संस्कृत भाषा श्लिष्ट योगात्मक (बहिर्मुखी-संयोगात्मक) के अन्तर्गत आती है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र–कपिलदेव द्विवेदी, पेज- 385-386

24. ग्रीकभाषा कस्य भाषापरिवारस्य भाषा अस्ति?
(A) सेमिटिक-परिवारस्य (B) बान्टू-परिवारस्य
(C) भारोपीय-परिवारस्य (D) काकेशी-परिवारस्य

व्याख्या-

विश्व भाषाओं के पारिवारिक वर्गीकरण के अनुसार 18 भेद माने गये हैं। **भारोपीय परिवार-**

यूरेशिया भूखण्ड के अन्तर्गत भारोपीय परिवार आता है जिनकी भाषायें निम्नलिखित हैं-

भाषायें- संस्कृत, अवेस्ता, ग्रीक, लैटिन आदि भाषायें हैं।

सेमिटिक या सामी- हामी परिवार- यह भी यूरेशिया भूखण्ड के अन्तर्गत है-

प्रमुख भाषायें- सामी- अक्कदियन, कनानित, अरमाइक, अरबी, एबीसीनियन।

हामी- लीबियन, मेरोइटिक, एथियोपिक (कुशीत), मिश्री।

काकेशी परिवार-

यह यूरेशिया भूखण्ड के अन्तर्गत ही सम्मिलित है। इस परिवार की प्रमुख भाषायें हैं-

प्रमुख भाषायें- उत्तरी वर्ग- कबर्डिन, सर्कासियन, चेचेनिश, लेगियन।

दक्षिणी वर्ग- जार्जियन, मिग्रेलियन, लासिश, स्वानियन।

बान्टू परिवार- यह भाषा अफ्रीका भूखण्ड के अन्तर्गत आता है। इन क्षेत्रों में बोली जाने वाली प्रमुख भाषायें हैं-

इनमें 150 भाषायें हैं।

पूर्वी वर्ग- जुलू, काफिर, स्वाहिली

मध्य वर्ग- सेसुतो

पश्चिमी वर्ग- हेरेरो, कांगो

⇒ **स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'ग्रीकभाषा' भारोपीय परिवार के अन्तर्गत आती है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र–कपिलदेव द्विवेदी, पेज- 357,385,386,397,402

25. संस्कृतस्य 'शतम्' इत्यस्य कृते 'केन्टुम्' इत्ययं शब्दः कस्यां भाषायां विद्यते?
(A) लैटिनभाषायाम् **(B) ग्रीकभाषायाम्**
(C) जर्मनभाषायाम् **(D) ईरानीभाषायाम्**

व्याख्या-
* 'सौ' के लिए मूल भारोपीय भाषा का Kmtom (क्मतोम्) माना जाता है। इसका विभिन्न भाषाओं में विकास इस प्रकार माना जाता है।

मूल भारोपीय शब्द Kmtom (क्मतोम् = शतम्)

शतम् वर्ग	केन्टुम् वर्ग
संस्कृत-शतम्	लैटिन-केन्टुम् (Centum)
अवेस्ता-सतम्	ग्रीक-हेकटोन (Hekaton)
फारसी-सद	केल्टिक-आयरिश-केत् (cet)
हिन्दी-सौ	तोखारी-कन्ध (Kandh)
रूसी-स्तो (Sto)	गाथिक-हुन्ट (Hund)
लिथुआनियन-स्जिम्तास (Szimatas)	जर्मन-हुन्डर्ट (Hundert)
	फ्रेंच-सं (सेन्ट, Cent)
	इटालियन-केन्तो

⇒ **स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त विवरण से ज्ञात होता है कि संस्कृत के शतम् शब्द को लैटिन भाषा में केन्टुम् कहा जाता है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- भाषा-विज्ञान एवं भाषाशास्त्र- कपिलदेव द्विवेदी, पेज 385

26. सिन्धीभाषायाः विकासः प्राकृतभाषायाः अभवत् ?
(A) शौरसेनी-प्राकृतात् **(B) पैशाची-प्राकृतात्**
(C) मागधी-प्राकृतात् **(D)अर्धमागधी-प्राकृतात्**

व्याख्या-भारतीय आर्यभाषाएँ-

भारतीय आर्यभाषाओं को काल की दृष्टि से तीन भागों में बाँटा जाता है-

क- प्राचीन भारतीय आर्यभाषाएँ- (2500 ई0पू0 से 500 ई0पू0)

ख- मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाएँ- (500 ई0पू0 से 1000 ई0 तक)

ग- आधुनिक भारतीय आर्यभाषाएँ- (1000 ई0 से वर्तमान समय तक)

आधुनिक भारतीय आर्यभाषाएँ- आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं का विकास मध्यकालीन अपभ्रंश भाषाओं से हुआ है। प्राचीन पाँच प्राकृतों से पाँच अपभ्रंश भाषाओं का विकास हुआ है। इन पाँच अपभ्रंशों के साथ ही ब्राचड़ एवं खास दो अपभ्रंशों को और लिया जाता है। इसप्रकार अपभ्रंशों से आधुनिक भारतीय भाषाओं का विकास माना जाता है।

अपभ्रंश		विकसित आधुनिक भाषाएँ
1. शौरसेनी	-	(क) पश्चिमी हिन्दी
	-	(ख) राजस्थानी
	-	(ग) गुजराती
2. महाराष्ट्री	-	मराठी
3. मागधी	-	(क) बिहारी (ख) बंगाली
	-	(ग) उड़िया (घ) असमी
4. अर्धमागधी	-	पूर्वी हिन्दी
5. पैशाची	-	लहँदा
6. ब्राचड़	-	(क) सिन्धी (ख) पंजाबी
7. खस	-	पहाड़ी

⇒ **स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि ब्राचड़ पैशाची प्राकृत के अन्तर्गत ही परिगणित है। अतः सिद्ध है कि सिन्धी भाषा का विकास पैशाची प्राकृत से हुआ है। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- भाषाविज्ञान- एवं भाषाशास्त्र- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-442

27. सत्कार्यवादस्य सिद्धिः कस्माद् हेतोः न भवति?
(A) असदकरणात्
(B) सर्वस्मात् सर्वसम्भवात्
(C) शक्तस्य शक्यकरणात्
(D) कारणभावात्

व्याख्या-

असदकरणादुपादानग्रहणात् सर्वसम्भवाभावात्।
शक्तस्य शक्यकरणात् कारणभावाच्च सत्कार्यम्।।
(सां.का.-09)

सत्कार्यवाद को सिद्ध करने के लिए पाँच हेतु बताये गये हैं-
(1) असदकरणात् (2) उपादानग्रहणात् (3) सर्वसम्भव-अभावात् (4) शक्तस्य शक्यकरणात् (5) कारणभावात्।

असदकरणात्- उत्पत्ति से पहले भी कार्य-कारण में विद्यमान रहता है। यदि ऐसा नहीं होता तो कारण में असत् वस्तुरूप कार्य को भी प्रकट करने की सामर्थ्य होती, किन्तु कारण में विद्यमान कार्य की ही अभिव्यक्ति होती है। जैसे तेल निकालने के लिए तिलों

को ही व्यक्ति लेता है, चावलों को नहीं। वह जानता है कि चावलों से असत् वस्तु तेल की प्राप्ति नहीं हो सकती। अतः सत्कार्यवाद का सिद्धान्त मान्य है।

उपादान-ग्रहणात्- मिट्टी घड़े का उपादान कारण है। मिट्टी के बिना घड़ा नहीं बन सकता। वस्तु के निर्माण के लिए मूलकारण उपादान या समवायिकारण आवश्यक होता है।

सर्वसम्भवाभावात्- यदि हम सत्कार्यवाद के सिद्धान्त को मान्यता प्रदान नहीं करते हैं, तो उस स्थिति में प्रत्येक वस्तु से प्रत्येक वस्तु की उत्पत्ति माननी होगी। जैसे- तेल को रेत, चावल गेहूँ आदि सभी पदार्थों से प्राप्त होना चाहिए, किन्तु ऐसा नहीं होता। क्योंकि कारण में पहले से ही कार्य विद्यमान रहता है।

शक्तस्य शक्यकरणात्- शक्य अर्थात् कार्य विशेष को उत्पन्न करने की शक्ति रखने वाला कारण ही, शक्य (उस कार्य को) उत्पन्न करता है। इसलिए सत्कार्यवाद का सिद्धान्त मान्य है। जिस प्रकार तिलों में ही तेल को उत्पन्न करने की शक्ति है, बालू में नहीं।

कारणभावात्- कार्य-कारण से अलग न होकर कारण का एक रूप होता है। वस्तुतः कारण और कार्य परस्पर सापेक्ष हैं। क्योंकि किसी को कार्य तभी कहा जाता है जब उसका कोई कारण होता है तथा कारण की अपेक्षा से ही उसे कार्य माना जाता है।

सत्कार्यवाद

1. असत्-अकरणात् (बालू से तेल नहीं)
2. उपादानग्रहणात् (घड़े के निर्माण हेतु मिट्टी लेनी होगी)
3. सर्वसम्भव-अभावात् (सभी वस्तुओं से सभी की उत्पत्ति सम्भव नहीं, तिल से तेल प्राप्त, दूध से जल नहीं)
4. कारणभावात्- (कारण कार्य अभिन्न है) दूध का विकसित रूप ही दही है।

⇒ **स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि सत्कार्यवाद की सिद्धि में सर्वस्मात् -सर्वसम्भवात् हेतु नहीं है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- सांख्यकारिका (का.-9) राकेश शास्त्री, पेज 29

28. प्रधानपुरुषयोः को धर्मः समानः?

(A) त्रिगुणत्वम् **(B) अहेतुत्वम्**
(C) सामान्यत्वम् **(D) अचेतनत्वम्**

व्याख्या-

अव्यक्त और व्यक्त का साम्य, पुरुष का दोनों से वैषम्य

त्रिगुणमविवेकि विषयः सामान्यमचेतनं प्रसवधर्मि।
व्यक्तं तथा प्रधानं तद्विपरीतस्तथा च पुमान्॥ (सां.का.-11)

पुरुष		**प्रधान अव्यक्त प्रकृति**	**व्यक्त** महत् आदि 23 पदार्थ
1- गुणरहितता			1- त्रिगुणम्
2- विवेकत्व			2- अविवेकि
3- अविषयत्व	वैषम्य		3- विषय
4- असामान्यत्व			4- सामान्यम्
5- चेतनत्व			5- अचेतनम्
6- अप्रसवधर्मित्व			6- प्रसवधर्मि

पुमान् - विपरीतः व्यक्तम् + अव्यक्तम्

हेतुमदनित्यमव्यापि सक्रियमनेकमाश्रितं लिङ्गम्।
सावयवं परतन्त्रं व्यक्तं विपरीतमव्यक्तम्॥ (सां.का.10)

व्यक्त	**अव्यक्त (मूलप्रकृति)**	**व्यक्त**	**अव्यक्त**
हेतुमत् -	1-(कारणरहित) अहेतुमत्	आश्रित-	6-अनाश्रित
अनित्य -	2- नित्य	लिङ्गसहित-	7-लिङ्गरहित
अव्यापी -	3- व्यापक	सावयव -	8- निरवयव
सक्रिय -	4- निष्क्रिय	परतन्त्र -	9- स्वतन्त्र
अनेक -	5- एक		

⇒ **स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि प्रधान और पुरुष में 'अहेतुत्वम्' धर्म समान है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- सांख्यकारिका (का.-10-11)- राकेश शास्त्री, पेज 37-38

29. अव्यक्तं कस्माद् हेतोः कारणं भवति?

(A) नित्यत्वात् **(B) परिणामवत्त्वात्**
(C) चैतन्यात् **(D) निष्क्रियत्वात्**

व्याख्या-

हेतुमदनित्यमव्यापि सक्रियमनेकमाश्रितं लिङ्गम्।
सावयवं परतन्त्रं व्यक्तं विपरीतमव्यक्तम्॥ (सां.का.-10)

सांख्य की सृष्टिप्रक्रिया में अव्यक्त प्रकृति से व्यक्त पदार्थ महत् आदि की उत्पत्ति होती है अर्थात् अव्यक्त मूलप्रकृति का प्रथम परिणाम व्यक्त पदार्थ है अतः परिणामत्त्वात् अव्यक्त (प्रकृति) सभी 23 व्यक्त पदार्थों का कारण है। सत्त्व, रजस् और तमोगुण की साम्यावस्था का नाम ही मूलप्रकृति है। कारिका के प्रथम तीन चरण में ग्रन्थकार ने व्यक्त पदार्थों के नौ गुण-हेतुमत्, अनित्य, अव्यापी, सक्रिय, अनेक, आश्रित, लिङ्ग, सावयव, और परतन्त्र का उल्लेख करके चतुर्थ चरण में मात्र इतना कहा है कि अव्यक्त इन गुणों के

विपरीत गुणों वाला होता है। अर्थात् अहेतुमत्, नित्य, व्यापी, निष्क्रिय, एक, अनाश्रित, अलिङ्गी, निरवयव और स्वतन्त्र रूप वाली प्रकृति अव्यक्त तत्त्व है। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- सांख्यकारिका (का.15-16) राकेश शास्त्री, पेज 51-52

30. प्रकृतिपुरुषयोः सम्बन्धः कीदृशो भवति?
(A) जलाग्निवत् **(B) कार्यकारणवत्**
(C) मातृपुत्रवत् **(D) पङ्ग्वन्धवत्**

व्याख्या-

पुरुषस्य दर्शनार्थं कैवल्यार्थं तथा प्रधानस्य।
पङ्ग्वन्धवदुभयोरपि संयोगस्तत्कृतः सर्गः॥ (सां.का.21)

प्रकृति के दर्शन के लिए एवं पुरुष के कैवल्य के लिए दोनों पुरुष एवं प्रकृति का संयोग अन्धे और लँगड़े के समान (होता है) पूरी सृष्टि उस संयोग के द्वारा ही बनी हुई है।

पुरुष एवं प्रकृति के संयोग

प्रदर्शन कैवल्य
प्रकृति के लिए पुरुष के लिए

संयोग
पङ्गु - अन्धवत्
पुरुष - प्रकृति

⇒ **स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि प्रकृति और पुरुष में पङ्गु-अन्धवत् (लँगड़े-अन्धे के समान) सम्बन्ध है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- सांख्यकारिका (का.21) राकेश शास्त्री, पेज 68

31. अध्यारोपः किं भवति-
(A) मिथ्याज्ञानम् **(B) अस्पष्टं ज्ञानम्**
(C) यथार्थज्ञानम् **(D)वस्तुनि अवस्त्वारोपः**

व्याख्या-

अध्यारोप- 'असर्पभूतायां रज्जौ सर्पारोपवद्वस्तुन्य-वस्त्वारोपोऽध्यारोपः।।'

सर्प की सत्ता से रहित रस्सी में सर्प के आरोप के समान वस्तु में अवस्तु का आरोप ही अध्यारोप है।

अज्ञान- 'अज्ञानं तु सदसद्भ्यामनिर्वचनीयं त्रिगुणात्मकं ज्ञानविरोधि भावरूपं यत्किञ्चिदिति।'

अज्ञान को तो सत् और असत् दोनों से विलक्षण होने से अनिर्वचनीय, त्रिगुणात्मक, ज्ञान का विरोधी तथा भावरूप होने से यत्किञ्चित् ऐसा कहते हैं।

अज्ञान के भेद- 'अस्याज्ञानस्यावरणविक्षेपनामकमस्ति शक्तिद्वयम्'

आवरण और विक्षेप नामक अज्ञान की दो शक्तियाँ हैं।

⇒ **स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त विवेचन से ज्ञात होता है कि अध्यारोप का लक्षण 'वस्तुनि अवस्त्वारोपः' है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- वेदान्तसार- राकेश शास्त्री, पेज 149

32. आवरणम् कस्य शक्तिरस्ति-
(A) रजोगुणस्य **(B) अज्ञानस्य**
(C) जीवस्य **(D) चैतन्यस्य**

व्याख्या-सदानन्द योगीन्द्र प्रणीत वेदान्तसार में अज्ञान की दो शक्तियाँ बतायी गयी हैं- **आवरणविक्षेपशक्ति- अस्याज्ञानस्यावरणविक्षेपनामकमस्ति शक्तिद्वयम्।** इस अज्ञान की आवरण और विक्षेप नामक दो शक्तियाँ हैं।

जीवन्मुक्त का लक्षण- भिद्यते हृदयग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्वसंशयाः।
क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन्दृष्टे परावरे।।

अपने स्वरूपभूत अखण्ड ब्रह्म के ज्ञान से, ब्रह्मविषयक अज्ञान का बाध होने के द्वारा, स्वरूपभूत अखण्ड ब्रह्म का साक्षात्कार हो जाने पर, अज्ञान, उसके कार्य, सञ्चित कर्म, संशय और विपर्यय आदि का नाश हो जाने से समस्त बन्धनों से रहित हुआ ब्रह्मनिष्ठ पुरुष जीवन्मुक्त होता है।

अपवाद- अपवादो नाम रज्जुविवर्तस्य सर्पस्य रज्जुमात्रत्ववद् वस्तु विवर्तस्यावस्तुनोऽज्ञानादेः प्रपञ्चस्य वस्तुमात्रत्वम् तदुक्तम्

''सतत्त्वतोऽन्यथाप्रथा विकार इत्युदीरितः।
अतत्त्वतोऽन्यथाप्रथा विवर्त इत्युदीरितः''॥

जिस प्रकार रज्जु का विवर्त्त सर्प रज्जुमात्र ही होता है। उसी प्रकार (ब्रह्म रूप) वस्तु का विवर्त अर्थात् ब्रह्मरूप वस्तु में अज्ञान के कारण भाषित होने वाला जो अवस्तुभूत अज्ञानादि प्रपञ्च है, उसका वस्तुमात्र ही रह जाना अपवाद है।

ऐसा कहा गया है- किसी वस्तु का वस्तुतः अन्यरूप से प्रसिद्ध होना विकार कहा गया है, और मिथ्यारूप से अन्यवस्तु के रूप में भासित होना विवर्त कहा गया है।

⇒ **स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त विवरण से ज्ञात होता है कि आवरण अज्ञान की प्रथम शक्ति है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- वेदान्तसार- राकेश शास्त्री- पेज-173

33. वेदान्तसारानुसारं लिङ्गशरीरे कस्य गणना न भवति-
(A) बुद्धेः **(B) मनसः**
(C) प्राणस्य **(D) आकाशस्य**

व्याख्या-

सूक्ष्मशरीराणि सप्तदशावयवानि लिङ्गशरीराणि। अवयवास्तु ज्ञानेन्द्रियपञ्चकं बुद्धिमनसी कर्मेन्द्रियपञ्चकं वायुपञ्चकं चेति।

सत्रह अवयवों से युक्त सूक्ष्मशरीर ही लिङ्ग शरीर है। पञ्चज्ञानेन्द्रियाँ, बुद्धि एवं मन, पञ्चकर्मेन्द्रियाँ तथा पञ्चवायु ही इसके अवयव हैं।
श्रोत्र, त्वक्, चक्षु, जिह्वा और घ्राण नामक पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ हैं।
वाक्, पाणि, पाद, पायु, उपस्थ- पाँच कर्मेन्द्रियाँ हैं।
प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान- पाँच वायु हैं।

बुद्धिर्नाम निश्चयात्मिकान्तःकरणवृत्तिः- निश्चय करने वाली अन्तःकरण की वृत्ति ही बुद्धि है।

मनो नाम सङ्कल्पविकल्पात्मिकान्तःकरणवृत्तिः- सङ्कल्प विकल्प करने वाली अन्तःकरण की वृत्ति वस्तुतः मन है।
इन दोनों में ही चित्त और अहङ्कार दोनों का अन्तर्भाव हो जाता है।

सूक्ष्मशरीर (17 अवयव)

पञ्चज्ञानेन्द्रियाँ+बुद्धि+मन+पञ्चकर्मेन्द्रियाँ+पञ्चवायु =17

⇒ **स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त वर्णन से ज्ञात होता है कि वेदान्तसार के अनुसार लिङ्गशरीर में सत्रह अवयवों की गणना होती है। और आकाश उनमें सम्मिलित नहीं है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्त्रोत- वेदान्तसार- राकेश शास्त्री, पेज-185

34. गौतमसूत्रोक्तषोडशपदार्थेषु कस्य पदार्थस्य निम्नाङ्कितेषु ग्रहणं नास्ति-

(A) 'संशय' पदार्थस्य (B) 'विशेष' पदार्थस्य
(C) 'अवयव' पदार्थस्य (D) 'निर्णय' पदार्थस्य

व्याख्या-

गौतम प्रणीत न्यायसूत्र में षोडश पदार्थों की चर्चा की गयी है-
प्रमाण-प्रमेय-संशय-प्रयोजन-दृष्टान्त-सिद्धान्त-अवयव-तर्क-निर्णय-वाद-जल्प-वितण्डा-हेत्वाभास-च्छल-जाति-निग्रहस्थानानां तत्त्वज्ञानान्निःश्रेयसाधिगमः। (न्या.सू.-1.1.1)
इन षोडश पदार्थों के तत्त्वज्ञान से निःश्रेयस की प्राप्ति कराना प्रयोजन है।

संशय-'एकस्मिन् धर्मिणि विरुद्धनानार्थावमर्शः संशयः।' स च त्रिविधः। एक धर्मी में अनेक विरुद्ध धर्मों का ज्ञान संशय है। वह तीन प्रकार का है-

अवयव- 'अनुमानवाक्यस्यैकदेशा अवयवाः।'
अनुमान के वाक्य के अंश (एकदेश) अवयव (कहे जाते) हैं।

निर्णय- निर्णयोऽवधारणज्ञानम्। तच्च प्रमाणानां फलम्। निश्चित ज्ञान ही निर्णय है और वह प्रमाणों का फल होता है।

⇒ अन्नम्भट्ट कृत तर्कसंग्रह में सप्त पदार्थों की चर्चा की गयी है- **द्रव्य-गुण-कर्म-सामान्य-विशेष-समवायाऽभावाः सप्तपदार्थाः** के अन्तर्गत पाँचवाँ पदार्थ विशेष है इसका लक्षण है-

विशेष- नित्यद्रव्यवृत्तयो विशेषास्त्वनन्ता एव। नित्य द्रव्यवृत्ति वाले विशेष नामक पदार्थ तो अनन्त ही हैं।

⇒ **स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि गौतमसूत्र के षोडश पदार्थों में विशेष नामक पदार्थ सम्मिलित नहीं है। वैशेषिक दर्शन के सात पदार्थों में 'विशेष' नामक पदार्थ परिगणित है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्त्रोत-तर्कभाषा- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-8

35. मृत्पिण्डः घटस्य कीदृशं कारणमुच्यते?

(A) निमित्तकारणम्
(B) समवायिकारणम्
(C) असमवायिकारणम्
(D) समवाय्यसमवायिकारणम्

व्याख्या-

केशवमिश्र प्रणीत तर्कभाषा में तीन कारणों की चर्चा की गयी है-
कारणं त्रिविधम् -समवायि-असमवायि-निमित्तभेदात्
वह कारण समवायि, असमवायि तथा निमित्तकारण के भेद से तीन प्रकार का है।

समवायिकारण- यत्समवेतं कार्यमुत्पद्यते तत्समवायिकारणम्। यथा तन्तवः पटस्य समवायिकारणम्।
उनमें से समवायिकारण वह, जिसमें कार्य समवाय सम्बन्ध से उत्पन्न होता है। जैसे तन्तु पट के समवायिकारण है। क्योंकि तन्तुओं में ही पट समवाय सम्बन्ध से उत्पन्न होता है, तुरी आदि में नहीं। **पटश्च स्वगतरूपादेः समवायिकारणम्। एवं मृत्पिण्डोऽपि घटस्य समवायिकारणं, घटश्च स्वगतरूपादेः समवायिकारणम्।** पट अपने रूप आदि का समवायिकारण होता है। इसी प्रकार मिट्टी का पिण्ड भी घट का समवायिकारण है तथा घट अपने में स्थित रूप आदि का समवायिकारण है।

असमवायिकारण- यत्समवायिकारणप्रत्यासन्नमवधृतसामर्थ्यं तदसमवायिकारणम्। यथा तन्तुसंयोगः पटस्यासमवायिकारणम्।
जो समवायि कारण में प्रत्यासन्न होता है और जिसकी कार्य के प्रति सामर्थ्य निश्चित होती है वह असमवायि कारण है। जैसे- तन्तुसंयोग पट का असमवायिकारण है।

निमित्तकारण- यन्न समवायिकारणम्, नाप्यसमवायिकारणम्। अथ च कारणम्। यथा वेमादिकं पटस्य निमित्तकारणम्। जो न समवायिकारण है न ही असमवायिकारण है किन्तु कारण है वह निमित्तकारण कहलाता है।

उदाहरण- वेमा आदि पट का निमित्तकारण है।

➢ **स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि मृत्पिण्डः घटस्य समवायिकारणमुच्यते। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- तर्कभाषा- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-25, 32

36. यदा चक्षुरादिना घटगतरूपादिकं गृह्यते तदाऽनयोरिन्द्रियार्थसन्निकर्षः कः?

(A) संयोगः (B) समवायः
(C) संयुक्तसमवायः (D) समवेतसमवायः

व्याख्या- आचार्य केशवमिश्र द्वारा रचित तर्कभाषा न्यायदर्शन का प्रकरण ग्रन्थ है। इन्होंने तर्कभाषा में प्रत्यक्ष ज्ञान का कारण इन्द्रियार्थसन्निकर्ष को माना है। सन्निकर्ष सर्वप्रथम दो प्रकार का होता है वैदिक एवं लौकिक। लौकिक सन्निकर्ष छः प्रकार के होते हैं।-

सन्निकर्ष		इन्द्रिय		ज्ञान
1- संयोग	-	चक्षु	-	घट
2- संयुक्तसमवाय	-	चक्षु	-	घटरूप
3- संयुक्तसमवेतसमवाय	-	चक्षु	-	घटरूपत्व
4- समवाय	-	श्रोत्र	-	शब्द
5- समवेत समवाय	-	श्रोत्र	-	शब्दत्व
6- विशेषण विशेष्यभाव-		चक्षु	-	भूतले घटाभाव

➢ **स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि घटगत रूपादि में 'संयुक्तसमवाय सन्निकर्ष' है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- तर्कभाषा- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-53

37. 'जीवच्छरीरं सात्मकं प्राणादिमत्त्वात्' इत्यत्र 'प्राणादिमत्त्वम्' कीदृशो हेतुः?

(A) केवलान्वयी (B) केवलव्यतिरेकी
(C) अन्वय-व्यतिरेकी (D) असद्धेतुः

व्याख्या-

तर्कभाषाकार आचार्य केशवमिश्र ने अनुमान प्रमाण के निरूपण में अनुमान के दो भेद स्वार्थानुमान और परार्थानुमान किये हैं **(तच्चानुमानं द्विविधम्, स्वार्थं परार्थं चेति।)** परार्थानुमान में पञ्चावयववाक्य का प्रयोग किया जाता है जिसमें- 1. प्रतिज्ञा 2. हेतु 3. उदाहरण 4. उपनय 5. निगमन होते हैं। इन पञ्चावयवों में हेतु तीन प्रकार के होते हैं- अन्वयव्यतिरेकी, केवलव्यतिरेकी और केवलान्वयी।

⇒**अन्वयव्यतिरेकी-** 'यत्राग्निर्नास्ति तत्र धूमोऽपि नास्ति, यथा महाह्रद' जहाँ अग्नि नहीं होती, वहाँ धूम भी नहीं होता, जैसे- महाह्रद यानी जलाशय में व्यतिरेकव्याप्ति है। क्योंकि महाह्रद में धूम और अग्नि का अभाव (व्यतिरेक) रहता है। 'महानस' के उदाहरण में अन्वयव्याप्ति बतायी गयी है और महाह्रद के उदाहरण में व्यतिरेकव्याप्ति बतायी गई है। इसीलिए 'धूमवत्त्वहेतु' को अन्वयव्यतिरेकी कहा गया है।

केवलव्यतिरेकी- केवलव्यतिरेकी हेतु वह होता है जिसके साथ केवल व्यतिरेकव्याप्ति बनती है, अन्वयव्याप्ति नहीं बन पाती, इसका उदाहरण है- ''जीवच्छरीरं सात्मकं प्राणादिमत्त्वात्''- जीवित शरीर सात्मक (आत्मायुक्त) है, प्राणादिमान् होने से।

केवलान्वयी- अन्वयव्यतिरेकी और केवलव्यतिरेकी के अतिरिक्त कोई हेतु केवलान्वयी भी होता हैः शब्दोऽभिधेयः प्रमेयत्वात्- शब्द अभिधेय है, प्रमेय होने से, यत्प्रमेयं तदभिधेयं यथा घटः- जो प्रमेय होता है वह अभिधेय होता है। जैसे- घट। केवलान्वयी का लक्षण इस प्रकार बताया गया है-

सर्वेषु केषुचिद्वापि सपक्षेषु समन्वयि।
विपक्षशून्यं पक्षस्य व्यापकं केवलान्वयि।।

उस हेतु को केवलान्वयी हेतु कहते हैं जिसमें केवल अन्वयव्याप्ति ही उपलब्ध होती है, व्यतिरेकव्याप्ति कभी भी उसमें उपलब्ध नहीं होती, क्योंकि उसके लिए दृष्टान्त ही नहीं दिखाया जा सकता।

⇒**स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'जीवच्छरीरं सात्मकं प्राणादिमत्त्वात्' में 'प्राणादिमत्त्वम्' में 'केवलव्यतिरेकी' हेतु है **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- तर्कभाषा- गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज-137,139,145

38. 'साध्याभावसाधकं हेत्वन्तरं यस्य विद्यते सः'- हेत्वाभासेऽन्नम्भट्टेन केन नाम्ना प्रोक्तः?

(A) 'सत्प्रतिपक्ष' नाम्ना (B) 'असिद्ध' नाम्ना
(C) 'सव्यभिचार' नाम्ना (D) 'विरुद्ध' नाम्ना

व्याख्या-

अन्नम्भट्टानुसार प्रणीत तर्कसंग्रह में पाँच हेत्वाभासों की चर्चा की गयी है-

हेत्वाभास- सव्यभिचारविरुद्धसत्प्रतिपक्षऽसिद्धबाधिताः पञ्च हेत्वाभासाः। हेत्वाभास पाँच होते हैं- सव्यभिचार, विरुद्ध, सत्प्रतिपक्ष, असिद्ध और बाधित।

1. सव्यभिचारोऽनैकान्तिकः। स त्रिविधः साधारणासाधारणानुपसंहारिभेदात् - इनमें जो सव्यभिचारी अनैकान्तिक हेत्वाभास है वह- साधारण, असाधारण और अनुपसंहारी भेद से तीन प्रकार का होता है।

(i) साधारण अनैकान्तिक- तत्र साध्याभाववद्वृत्तिः साधारणोऽनैकान्तिकः। यथा पर्वतो वह्निमान् प्रमेयत्वादिति।

उनमें भी साध्य के अभाव में भी विद्यमान रहने वाला हेतु साधारण अनैकान्तिक हेत्वाभास है। जैसे-पर्वत अग्निवाला है, क्योंकि यह प्रमेय है।

(ii) असाधारण अनैकान्तिक- सर्वसपक्षविपक्षव्यावृत्तः पक्षमात्रवृत्तिरसाधारणः। यथा-शब्दो नित्यः शब्दत्वादिति।

सभी सपक्ष एवं विपक्ष को छोड़कर केवल पक्ष में विद्यमान रहता है। वह असाधारण अनैकान्तिक हेत्वाभास होता है। जैसे- शब्द- नित्य है, शब्दत्व के कारण।

(iii) अनुपसंहारी- अन्वयव्यतिरेकदृष्टान्तरहितोऽनुपसंहारी। यथा- सर्वमनित्यं प्रमेयत्वादिति।

अन्वय व्यतिरेक-व्याप्ति युक्त दृष्टान्त से रहित अनुपसंहारी अनैकान्तिक हेत्वाभास होता है। जैसे- सभी कुछ अनित्य है प्रमेयत्व के कारण। यहाँ सभी का पक्ष होने के कारण कोई दृष्टान्त ही नहीं है।

2. विरुद्ध हेत्वाभास- साध्याभावव्याप्तो हेतुर्विरुद्धः। यथा- शब्दो नित्यः कृतकत्वादिति। साध्य के अभाव से व्याप्त हेतु विरुद्ध हेत्वाभास है। जैसे-शब्द नित्य है, कार्य होने से। यहाँ कृतकत्व, नित्यत्व के अभावरूप अनित्यत्व से व्याप्त है।

3. सत्प्रतिपक्ष हेत्वाभास- यस्य साध्याभावसाधकं हेत्वन्तरं विद्यते स सत्प्रतिपक्षः। यथा शब्दो नित्यः श्रावणत्वाच्छब्दवत्। शब्दोऽनित्यः कार्यत्वाद् घटवदिति।

जिस हेतु के साध्य के अभाव को सिद्ध करने वाला दूसरा हेतु होता है, वह सत्प्रतिपक्ष हेत्वाभास होता है। इसी को प्रकरणसम भी कहते हैं। जैसे-शब्द नित्य है। श्रावणत्व के कारण, शब्द के समान। शब्द अनित्य है कार्य होने से, घट के समान।

4. असिद्ध हेत्वाभास- असिद्धस्त्रिविधः - आश्रयासिद्धः, स्वरूपासिद्धः व्याप्यत्वासिद्धश्चेति।

आश्रयासिद्धो यथा- गगनारविन्दं सुरभि अरविन्दत्वात् सरोजारविन्दवत्। अत्र गगनारविन्दमाश्रयः, स च नास्त्येव। असिद्ध नामक हेत्वाभास तीन प्रकार का होता है।

(i) आश्रयासिद्ध (ii) स्वरूपासिद्ध (iii) व्याप्यत्वासिद्ध

(i) आश्रय असिद्ध जैसे- आकाश कमल से सुगन्धित होता है, कमल होने के कारण, सरोवर में उत्पन्न कमल के समान। यहाँ आकाश कमल का जो आश्रय है, वह वस्तुतः होता ही नहीं है।

(ii) स्वरूपासिद्ध हेत्वाभास- स्वरूपासिद्धो यथा-शब्दो गुणश्चाक्षुषत्त्वात् रूपवत्। अत्र चाक्षुषत्वं शब्दे नास्ति शब्दस्य श्रावणत्वात्।

स्वरूप असिद्ध- यहाँ चाक्षुषत्व शब्द में नहीं है, क्योंकि शब्द का तो श्रवणेन्द्रिय द्वारा ग्रहण होता है।

(iii) व्याप्यत्वासिद्ध हेत्वाभास- सोपाधिको हेतुर्व्याप्यत्वासिद्धः। साध्यव्यापकत्वे सति साधनाव्यापकत्वमुपाधिः।

पर्वतो धूमवान् वह्निमत्त्वात् इत्यत्रार्द्रेन्धनसंयोग उपाधिः।

उपाधि से युक्त हेतु व्याप्यत्वासिद्ध नामक हेत्वाभास होता है। साध्य के व्यापक होने पर साधन का अव्यापक पदार्थ उपाधि होता है। यथा- पर्वत धूमवान् है। वह्निमत्त्वात् होने के कारण। यहाँ गीले ईंधन का संयोग उपाधि है।

5. बाधित हेत्वाभास- यस्य साध्याभावः प्रमाणान्तरेण पक्षे निश्चितः सः बाधितः। यथा वह्निरनुष्णो द्रव्यत्वादिति।

जिस हेतु के साध्य का अभाव अन्य प्रमाण द्वारा निश्चित होता है, वह बाधित हेत्वाभास है। जैसे- अग्नि शीतल होती है, द्रव्य होने के कारण।

⟹ **स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'साध्याभावसाधकं हेत्वन्तरं यस्य विद्यते सः' यह लक्षण सत्प्रतिपक्ष हेत्वाभास का है।

अतः विकल्प 'A' सही है।

स्रोत- तर्कसंग्रह- आद्याप्रसाद मिश्र, पेज-57

39. तर्कसंग्रहे तर्कलक्षणं किं युक्तम्?

(A) मिथ्याज्ञानम्

(B) व्याप्यारोपेण व्यापकारोपः

(C) सन्निकृष्टसंयोगहेतुः

(D) एकस्मिन् धर्मिणि विरुद्धनानाधर्मवैशिष्ट्यावगाहि ज्ञानम्

व्याख्या-अन्नम्भट्ट कृत तर्कसंग्रह के अन्तर्गत गुण लक्षण प्रकरण में ग्रन्थकार ने सभी प्रकार के व्यवहार के हेतु रूप गुण को बुद्धि माना था तथा उसके स्मृति और अनुभव दो भेदों का उल्लेख किया था। तत्पश्चात् अनुभव को भी यथार्थ अनुभव और अयथार्थ अनुभव रूप में दो भागों में विभाजित किया। इसी क्रम में अयथार्थ अनुभव के संशय, विपर्यय और तर्क नामक तीन भेदों को बताया गया है। अयथार्थानुभवस्त्रिविधः- संशयविपर्ययतर्कभेदात्।

संशय- एकस्मिन् धर्मिणि विरुद्धनानाधर्मवैशिष्ट्यावगाहिज्ञानं संशयः यथा- स्थाणुर्वा पुरुषो वेति।

एक धर्मी में परस्पर विरुद्ध अनेक प्रकार के धर्मों की विशिष्टता से युक्त ज्ञान 'संशय' है। जैसे- यह स्थाणु है या पुरुष।

विपर्यय- मिथ्याज्ञानं विपर्ययः। यथा शुक्ताविदं रजतमिति। मिथ्याज्ञान ही विपर्यय है। जैसे- सीपी में 'यह चाँदी है' ऐसा ज्ञान होना।

तर्क- व्याप्याऽऽरोपेण व्यापकारोपस्तर्कः। यथा-यदा वह्निर्न स्यात्तर्हि धूमोऽपि न स्यादिति।

व्याप्य के आरोप के साथ व्यापक का आरोप करना (ही) तर्क है। जैसे- जब अग्नि नहीं होती तो धूम भी नहीं होता।

संयोग- संयुक्तव्यवहारहेतुः संयोगः। सर्वद्रव्यवृत्तिः। संयुक्त व्यवहार का कारण संयोग नामक गुण है। यह भी सभी द्रव्यों में विद्यमान रहता है।

⇒ **स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त वर्णन से ज्ञात होता है कि तर्क का लक्षण 'व्याप्यारोपेण व्यापकारोपस्तर्कः' है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- तर्कसंग्रह- आद्याप्रसाद मिश्र, पेज-63

40. अभावप्रत्यक्षे अन्नम्भट्टानुसारं कः सन्निकर्षोऽङ्गीकृतः?
(A) विशेषण-विशेष्यभावः (B) समवायः
(C) संयुक्तसमवेत-समवायः (D) संयोगः

व्याख्या-

प्रत्यक्षज्ञानहेतुरिन्द्रियार्थसन्निकर्षः षड्विधः-संयोगः, संयुक्तसमवायः, संयुक्तसमवेतसमवायः। समवायः, समवेतसमवायः, विशेषणविशेष्यभावश्चेति।

प्रत्यक्ष ज्ञान का हेतु इन्द्रिय और पदार्थ का सन्निकर्ष- (1) संयोग (2) संयुक्तसमवाय (3) संयुक्त समवेत समवाय (4) समवाय (5) समवेत समवाय (6) विशेषण-विशेष्यभाव रूप से छः प्रकार का होता है।

(1) चक्षुषा घटप्रत्यक्षजनने संयोगः सन्निकर्षः।

नेत्र से घट का प्रत्यक्ष होने में 'संयोग' नामक सन्निकर्ष होता है।

(2) घटरूपप्रत्यक्षजनने संयुक्तसमवायः सन्निकर्षः, चक्षुःसंयुक्ते घटे रूपस्य समवायात्।

घट के रूप का प्रत्यक्ष करने में 'संयुक्तसमवाय' नामक सन्निकर्ष है। क्योंकि नेत्र से संयुक्त घट में रूप समवायसम्बन्ध से स्थित रहता है।

(3) रूपत्वसामान्यप्रत्यक्षे संयुक्तसमवेतसमवायः सन्निकर्षः, चक्षुःसंयुक्ते घटे रूपं समवेतं तत्र रूपत्वस्य समवायात्।

रूपत्व जाति के प्रत्यक्ष में 'संयुक्तसमवेतसमवाय' नामक सन्निकर्ष होता है, क्योंकि चक्षु से संयुक्त घटरूप समवेत है तथा उसमें रूपत्व समवाय सम्बन्ध से स्थित है।

(4) श्रोत्रेण शब्दसाक्षात्कारे समवायः सन्निकर्षः, कर्णविवर-वर्त्याकाशस्य श्रोत्रत्वाच्छब्दस्याकाशगुणत्वाद् गुणगुणिनोश्च समवायात्। कर्णविवर में स्थित आकाश ही श्रोत्र होने से तथा आकाश का गुण शब्द होने के कारण एवं गुण-गुणी का समवाय सम्बन्ध होने से श्रोत्र द्वारा शब्द का साक्षात्कार करने में समवाय सन्निकर्ष है।

(5) शब्दत्वसाक्षात्कारे समवेतसमवायः सन्निकर्षः। श्रोत्रसमवेते शब्दे शब्दत्वस्य समवायात्।

इसी प्रकार श्रोत्र में समवेत रूप से विद्यमान शब्द में शब्दत्व जाति के समवाय सम्बन्ध से स्थित रहने के कारण, शब्दत्व के साक्षात्कार में 'समवेत समवाय' नामक सन्निकर्ष होता है।

(6) अभावप्रत्यक्षे विशेषणविशेष्यभावः सन्निकर्षः। घटाभाववद्भूत-लमित्यत्र चक्षुःसंयुक्ते भूतले घटाभावस्य विशेषणत्वात्।

'भूतल घट के अभाव वाला है', यहाँ नेत्र से संयुक्त भूतल में घट का अभाव विशेषण है। अतः अभाव का प्रत्यक्ष करने में विशेषण-विशेष्यभाव सन्निकर्ष होता है।

⇒ **स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त विवेचन से ज्ञात होता है कि अभाव प्रत्यक्ष में 'विशेषण-विशेष्यभाव सन्निकर्ष' है।

अतः विकल्प 'A' सही है।

स्रोत- तर्कसंग्रह- आद्याप्रसाद मिश्र, पेज-48

41. गन्धवत्त्वं कस्य लक्षणम्?
(A) अपः (B) पृथिव्याः
(C) वायोः (D) अग्नेः

व्याख्या-

अन्नम्भट्ट प्रणीत तर्कसंग्रह में सर्वप्रथम सप्त पदार्थों की चर्चा के उपरान्त नव द्रव्यों की चर्चा करते हुए उन नौ द्रव्यों में सर्वप्रथम पृथिवी का लक्षण करते हैं- **तत्र गन्धवती पृथिवी।** गन्ध से युक्त पृथिवी कहलाती है।

पृथिवी

नित्य (परमाणुरूपा) — अनित्य (कार्यरूपा) पुनः सा त्रिविधा

- शरीरं (अस्मदादीनाम्)
- इन्द्रिय (गन्धग्राहकं घ्राणनासाग्रवर्ती)
- विषय (मृत्पाषाणादि)

आपः- शीतस्पर्शवत्यः आपः। शीतस्पर्श वाला जल है।

अग्नि (तेजः)- उष्णस्पर्शवत्तेजः। उष्ण स्पर्श वाला तेज है।
वायुः- रूपरहितस्पर्शवान् वायुः। रूप से रहित और स्पर्श युक्त वायु है।
⇒**स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'गन्धवत्त्वं पृथिवी' का लक्षण है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**
स्रोत- तर्कसंग्रह- आद्याप्रसाद मिश्र, पेज-23

42. कविराजराजिमुकुटालङ्कारहीरः मामल्लदेवी च कस्य पितरौ?
(A) भासस्य **(B) श्रीहर्षस्य**
(C) दण्डिनः **(D) भारवेः**

व्याख्या-

	कवि	माता	पिता
*	श्रीहर्ष	मामल्लदेवी	श्रीहीर
*	अश्वघोष	सुवर्णाक्षी	पृथु (भास्करदत्त)
*	भारवि	सुशीला	श्रीधर (नारायणस्वामी)
*	माघ	ब्राह्मी	दत्तक (सर्वाश्रय)
*	हर्षवर्धन	यशोमती	प्रभाकरवर्धन
*	बाणभट्ट	राजदेवी	चित्रभानु
*	दण्डी	गौरी	वीरदत्त
*	भवभूति	जतुकर्णी	नीलकण्ठ
*	बिल्हण	नागदेवी	ज्येष्ठकलश
*	अम्बिकादत्तव्यास		दुर्गादत्त
*	पण्डिता क्षमाराव		पं. शङ्करपाण्डुरङ्ग

⇒**स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि श्रीहीर और मामल्लदेवी श्रीहर्ष के पिता-माता हैं। **अतः विकल्प 'B' सही है।**
स्रोत- संस्कृतसाहित्य का इतिहास- उमाशङ्कर शर्मा, पेज-284

43. अधस्तनयुग्मानां समीचीनतालिकां चिनुत-
(क) श्रीहर्षः **(i) हर्षचरितम्**
(ख) दण्डी **(ii) मुद्राराक्षसम्**
(ग) बाणभट्टः **(iii) नैषधीयचरितम्**
(घ) विशाखदत्तः **(iv) दशकुमारचरितम्**

	क	ख	ग	घ
A	(i)	(iii)	(iv)	(ii)
B	(iii)	(iv)	(i)	(ii)
C	(ii)	(iii)	(iv)	(i)
D	(iv)	(iii)	(ii)	(i)

व्याख्या-

	ग्रन्थ	ग्रन्थकार	विभाजन
*	हर्षचरितम्	बाणभट्ट	आठ उच्छ्वास
*	मुद्राराक्षसम्	विशाखदत्त	सात अङ्क
*	नैषधीयचरितम्	श्रीहर्ष	बाइस सर्ग
*	दशकुमारचरितम्	दण्डी	आठ उच्छ्वास
*	अभिज्ञानशाकुन्तलम्	कालिदास	सात अङ्क
*	किरातार्जुनीयम्	भारवि	अठारह सर्ग
*	शिशुपालवधम्	माघ	बीस सर्ग
*	बुद्धचरितम्	अश्वघोष	अट्ठाइस सर्ग

⇒**स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि कौन किस ग्रन्थ के कवि हैं। **अतः विकल्प 'B' सही है।**
स्रोत- संस्कृत सा. का इति.- उमाशङ्करशर्मा, पेज-285,381,395,501

44. दशकुमारचरितस्य नायकः कः?
(A) राजहंसः **(B) उपहारवर्मा**
(C) राजवाहनः **(D) अपहारवर्मा**

व्याख्या-

	ग्रन्थकार	ग्रन्थ	नायक	नायिका
*	दण्डी	दशकुमारचरितम्	राजवाहन	अवन्तिसुन्दरी
*	भास	स्वप्नवासवदत्तम्	उदयन	वासवदत्ता/पद्मावती
*	शूद्रक	मृच्छकटिकम्	चारुदत्त	वसन्तसेना/धूता
*	कालिदास	अभिज्ञानशाकुन्तलम्	दुष्यन्त	शकुन्तला
*	भारवि	किरातार्जुनीयम्	अर्जुन	द्रौपदी
*	श्रीहर्ष	नैषधीयचरितम्	नल	दमयन्ती
*	माघ	शिशुपालवधम्	श्रीकृष्ण	सत्यभामा/रुक्मिणी
*	कालिदास	रघुवंशम्	राम	सीता
*	विशाखदत्त	मुद्राराक्षस	चाणक्य/चन्द्रगुप्त	नायिका का अभाव

⇒**स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि दशकुमारचरितम् के नायक राजवाहन हैं। **अतः विकल्प 'C' सही है।**
स्रोत- संस्कृतसाहित्य का इति.- उमाशङ्करशर्मा ऋषि, पेज-383

45. विश्वनाथमतानुसारं वीररसः कतिविधः?
(A) द्विविधः **(B) त्रिविधः**
(C) पञ्चविधः **(D) चतुर्विधः**

व्याख्या-
आचार्य विश्वनाथकृत साहित्यदर्पणानुसार वीररस का लक्षण एवं उनके भेद इसप्रकार हैं-

➢ **वीररस लक्षण-** उत्तमप्रकृतिर्वीर उत्साहस्थायिभावकः। महेन्द्रदैवतो हेमवर्णोऽयं समुदाहृतः।। (सा.द.3/232-233)
उत्तम पात्र (रामादि) में आश्रित वीररस होता है। इसका स्थायीभाव उत्साह, देवता महेन्द्र, रंग सुवर्ण के सदृश होता है।
स च वीरो दानवीरो धर्मवीरो युद्धवीरो दयावीरश्चेति चतुर्विधः।
वीररस चार प्रकार के हैं- (1) दानवीर (2) धर्मवीर (3) दयावीर (4) युद्धवीर।

➢ **शृङ्गार रस-** विप्रलम्भ और सम्भोग ये दो शृङ्गाररस के भेद हैं। 'विप्रलम्भोऽथ संभोग इत्येष द्विविधो मतः। (सा.द. 3/186)
विप्रलम्भ के चार भेद-(1) पूर्वराग (2) मान (3) प्रवास (40) करुण

शृङ्गार रस
(1) सम्भोग (2) विप्रलम्भ
पूर्वराग - मान - प्रवास - करुण

हास रस- ज्येष्ठानां स्मितहसिते मध्यानां विहसितावहसिते च। नीचानामपहसितं तथातिहसितं तदेष षड्भेदः।। (सा.द. 3/217)
हास्य के छः भेद- उत्तम श्रेणी के लोगों में स्मित और हसित होते हैं। मध्यमश्रेणी के लोगों में 'विहसित और अवहसित' होते हैं। नीच पुरुषों में अपहसित और अतिहसित होते हैं।
हास्यरस के भेद
(1) स्मित (2) हसित (3) विहसित (4) अवहसित (5) अपहसित (6) अतिहसित

⇒ **स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि वीररस के चार भेद होते हैं। **अतः विकल्प 'D' सही है।**
स्रोत- साहित्यदर्पण- शालिग्राम शास्त्री, पेज-118

46. बृहत्त्रय्यां न गण्यते-
(A) नैषधीयचरितम् **(B) रघुवंशम्**
(C) किरातार्जुनीयम् **(D) शिशुपालवधम्**

व्याख्या-

बृहत्त्रयी

किरातार्जुनीयम्	शिशुपालवधम्	नैषधीयचरितम्
भारवि	माघ	श्रीहर्ष
18सर्ग	20सर्ग	22सर्ग

लघुत्रयी

रघुवंशम्	कुमारसम्भवम्	मेघदूतम्
कालिदास	कालिदास	कालिदास
19सर्ग	17सर्ग	2 भाग

गद्यत्रयी

वासवदत्ता	कादम्बरी	दशकुमारचरितम्
सुबन्धु	बाणभट्ट	दण्डी

⇒ **स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि बृहत्त्रयी के अन्तर्गत रघुवंशम् नहीं आता **अतः विकल्प 'B' सही है।**
स्रोत- संस्कृतसाहित्य का इति.- उमाशङ्करशर्मा 'ऋषि', पेज 208

47. गद्यकाव्यं नास्ति-
(A) कादम्बरी (B) दशकुमारचरितम्
(C) बुद्धचरितम् (D) हर्षचरितम्

व्याख्या-

	ग्रन्थ		**विधा**
*	वासवदत्ता	-	गद्यकाव्य (कथा)
*	कादम्बरी	-	गद्यकाव्य (कथा)
*	दशकुमारचरितम्	-	आख्यायिका
*	हर्षचरितम्	-	आख्यायिका
*	बुद्धचरितम्	-	महाकाव्य
*	रघुवंशम्	-	महाकाव्य
*	किरातार्जुनीयम्	-	महाकाव्य
*	शिशुपालवधम्	-	महाकाव्य
*	नैषधीयचरितम्	-	महाकाव्य
*	कुमारसम्भवम्	-	महाकाव्य
*	अभिज्ञानशाकुन्तलम्	-	नाटक
*	स्वप्नवासवदत्तम्	-	नाटक
*	उत्तररामचरितम्	-	नाटक
*	मुद्राराक्षसम्	-	नाटक
*	वेणीसंहारम्	-	नाटक
*	मृच्छकटिकम्	-	प्रकरण
*	रत्नावली	-	नाटिका
*	नलचम्पू	-	चम्पूकाव्य

⇒ **स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि गद्यकाव्य 'बुद्धचरितम्' नहीं है। यह एक महाकाव्य है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**
स्रोत- संस्कृतसाहित्य का इतिहास- उमाशङ्करशर्मा ऋषि, पेज-229

48. केन कविना बौद्धधर्मस्य प्रचारार्थं काव्यानि लिखितानि?
(A) कालिदासेन **(B) माघेन**
(C) अश्वघोषेण **(D) भवभूतिना**

व्याख्या-

➢ **अश्वघोष-** बौद्ध महाकवि अश्वघोष महान् धर्मप्रचारक, दार्शनिक तथा उच्चकोटि के विद्वान् थे। इनकी रचनाओं के अन्त में यह वाक्य मिलता है- आर्यसुवर्णाक्षीपुत्रस्य साकेतस्य भिक्षोराचार्यस्य भदन्ताश्वघोषस्य महाकवेर्महावादिनः कृतिरियम्। इससे यह स्पष्ट होता है कि इनकी माता का नाम सुवर्णाक्षी था। ये साकेत के निवासी थे। ये बौद्ध भिक्षु तथा आचार्य थे जिसे भदन्त, महाकवि और महावादी भी कहा जाता था। बौद्धधर्म के प्रचारार्थ इन्होंने बुद्धचरितम् आदि काव्य लिखें।

रचनायें- अश्वघोष की प्रमाणसिद्ध काव्यकृतियाँ चार हैं-
(1) बुद्धचरित (2) सौन्दरनन्द (3) शारिपुत्रप्रकरण (4) राष्ट्रपाल नाटक।

➢ **कालिदास-** कालिदास के ग्रन्थों के अनुशीलन से यह ज्ञात होता है कि कालिदास जन्म से ब्राह्मण तथा शिवभक्त थे। कुछ विद्वान् इन्हें शैव सम्प्रदाय का मानते हैं।

रचनायें- इनकी सात रचनायें हैं-
महाकाव्य- कुमारसम्भवम्, रघुवंशम्
नाटक- मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोर्वशीयम्, अभिज्ञानशाकुन्तलम्
गीतिकाव्य- ऋतुसंहारम्, मेघदूतम् (खण्डकाव्य)

➢ **माघ-** शिशुपालवध नामक महाकाव्य के रचयिता महाकवि माघ का स्थान संस्कृत महाकवियों में विशेष महत्त्व रखता है। इनके पितामह 'सुप्रभदेव' थे। पिता 'दत्तक' जो अत्यन्त उदार, क्षमाशील कोमल एवं धर्मपरायण थे। इन्हें लोग 'सर्वाश्रय' भी कहते थे क्योंकि यह सबकी सहायता के लिए तत्पर रहते थे।

'माघे सन्ति त्रयो गुणाः' माघ विषयक प्रशस्तियों में यह सर्वाधिक प्रसिद्ध है।

कालिदास, भारवि, दण्डी के साथ माघ की महत्ता का वर्णन किया गया है- **उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्।**
दण्डिनः पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयो गुणाः।

महाकवि कालिदास की विशिष्टता उपमा के कारण है, भारवि का प्रधानगुण अर्थगौरव है, दण्डी की विशिष्टता पदलालित्य के कारण है तो माघ में तीनों गुणों का समन्वय है।

➢ **भवभूति-** भवभूति ने शास्त्रीय ज्ञान व्यापक रूप से प्राप्त किया था। वेदों, दर्शनों और कर्मकाण्ड के ये प्रमुख विद्वान् थे। इनके रूपकों में मालतीमाधवम् की प्रस्तावना से ज्ञात होता है कि ये विदर्भ प्रदेश के पद्मपुर के निवासी थे। इन्होंने अपने पितामह (भट्टगोपाल), पिता-नीलकण्ठ एवं माता जतुकर्णी के नाम लिये हैं। इन्होंने तीनों रूपकों में स्वयं को 'पदवाक्यप्रमाणज्ञ' अर्थात् व्याकरण, मीमांसा, न्यायशास्त्र का विद्वान् कहा है।

रचनायें- भवभूति ने तीन रूपकों की रचना की-
(i) मालतीमाधवम्- (शृङ्गाररस का प्रकरण)
(ii) महावीरचरितम्- (वीररस का रामायणाश्रित नाटक)
(iii) उत्तररामचरितम्- (करुण रस का रामायणाश्रित नाटक)

⇒ **स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि जो कवि बौद्धधर्म का प्रचार करते हुए काव्यग्रन्थों को लिखा वह कवि 'अश्वघोष' हैं। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- संस्कृतसाहित्य का इतिहास-उमाशङ्करशर्मा ऋषि, पेज-229

49. नैषधीयचरिते कति सर्गाः सन्ति?
(A) एकोनविंशतिः **(B) द्वाविंशतिः**
(C) अष्टाविंशतिः **(D) चतुर्विंशतिः**

व्याख्या-

	ग्रन्थकार		ग्रन्थ		विभाजन
*	श्रीहर्ष	-	नैषधीयचरितम्	-	22सर्ग
*	कालिदास	-	रघुवंशम्	-	19सर्ग
*	कालिदास	-	कुमारसम्भवम्	-	17सर्ग
*	अश्वघोष	-	सौन्दरनन्द	-	18सर्ग
*	अश्वघोष	-	बुद्धचरितम्	-	28सर्ग
*	भट्टि	-	भट्टिकाव्य	-	22सर्ग
*	रत्नाकर	-	हरविजयम्	-	50सर्ग

⇒ **स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि 'नैषधीयचरितम्' में द्वाविंशतिः (22) सर्ग हैं। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- संस्कृतसाहित्य का इतिहास-उमाशङ्करशर्मा ऋषि, पेज-287

50. किरातार्जुनीयमहाकाव्यस्य कथावस्तु कुतः गृहीतम्?
(A) महाभारतस्य आदिपर्वतः
(B) महाभारतस्य भीष्मपर्वतः
(C) महाभारतस्य वनपर्वतः
(D) रामायणमहाकाव्यात्

व्याख्या-

ग्रन्थकार	ग्रन्थ	उपजीव्य ग्रन्थ
भारवि	किरातार्जुनीयम्	महाभारत का वनपर्व
माघ	शिशुपालवधम्	महाभारत का सभापर्व
श्रीहर्ष	नैषधीयचरितम्	महाभारत का वनपर्व
कालिदास	रघुवंशम्	वाल्मीकीय रामायण/पद्मपुराण
कालिदास	अभिज्ञानशाकुन्तलम्	महाभारत का आदिपर्व एवं पद्मपुराण
भट्टनारायण	वेणीसंहारम्	महाभारत का सभापर्व
शूद्रक	मृच्छकटिकम्	भासकृत चारुदत्तम् नाटक
बाणभट्ट	कादम्बरी	गुणाढ्य की बृहत्कथा सुमनस् वृत्तान्त
अश्वघोष	बुद्धचरितम्	'ललितविस्तर' बौद्धग्रन्थ
भास	स्वप्नवासवदत्तम्	इतिहासप्रसिद्ध उदयन-विषयक लोककथायें
भवभूति	उत्तररामचरितम्	उत्तरकाण्ड (42 से97 सर्ग तक)

स्पष्टीकरण-उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि किरातार्जुनीयम् की कथावस्तु महाभारत के वनपर्व से ली गयी है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्करशर्मा ऋषि, पेज-243

उत्तरमाला

1. (B)	**2.** (A)	**3.** (C)	**4.** (B)	**5.** (B)	**6.** (D)	**7.** (D)	**8.** (B)	**9.** (B)	**10.** (A)
11. (A)	**12.** (C)	**13.** (A)	**14.** (A)	**15.** (C)	**16.** (C)	**17.** (D)	**18.** (C)	**19.** (C)	**20.** (A)
21. (B)	**22.** (B)	**23.** (A)	**24.** (C)	**25.** (A)	**26.** (B)	**27.** (B)	**28.** (B)	**29.** (B)	**30.** (D)
31. (D)	**32.** (B)	**33.** (D)	**34.** (B)	**35.** (B)	**36.** (C)	**37.** (B)	**38.** (A)	**39.** (B)	**40.** (A)
41. (B)	**42.** (B)	**43.** (B)	**44.** (C)	**45.** (D)	**46.** (B)	**47.** (C)	**48.** (C)	**49.** (B)	**50.** (C)

8	जुलाई 2016	NTA UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् III

1. ऋग्वेदीय-नासदीयसूक्तस्य (10.129) ऋषिरस्ति-
(A) प्रजापतिः परमेष्ठी (B) सुकीर्तिः काक्षीवतः
(C) यज्ञः प्राजापत्यः (D) कुल्मल बर्हिषः

व्याख्या-

सूक्त	ऋषि	देवता	छन्द
1. अग्निसूक्त (1.1)	विश्वामित्र	अग्नि	गायत्री
2. वरुणसूक्त (1.25)	शुनःशेप	वरुण	गायत्री
3. सवितृसूक्त (1.35)	हिरण्यस्तूप	सविता	1 और 9 में जगती शेष में त्रिष्टुप्
4. सूर्यसूक्त (1.115)	कुत्स	सूर्य	त्रिष्टुप्
5. विष्णुसूक्त (1.154)	दीर्घतमा	विष्णु	त्रिष्टुप्
6. इन्द्रसूक्त (2.12)	गृत्समद	इन्द्र	त्रिष्टुप्
7. उषस् सूक्त (3.61)	विश्वामित्र	उषस्	त्रिष्टुप्
8. अक्ष सूक्त (10.34)	कवषऐलूष	अक्षकृषि प्रशंसा	7वें मन्त्र में जगती शेष में त्रिष्टुप्
9. पुरुष सूक्त (10.90)	नारायण	पुरुष	अन्तिम में त्रिष्टुप् शेष में अनुष्टुप्
10. हिरण्यगर्भ सूक्त (10.121)	हिरण्यगर्भ	क संज्ञक प्रजापति	त्रिष्टुप्
11. नासदीय सूक्त (10.129)	परमेष्ठी प्रजापति	परमात्मा	त्रिष्टुप्
12. वाक् सूक्त (10.125)	वाक्	परमात्मा	दूसरें मन्त्र में जगती शेष त्रिष्टुप्

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि ऋग्वेदीय नासदीय सूक्त के ऋषि परमेष्ठी प्रजापति हैं। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्त शास्त्री, पेज 430

2. अथर्ववेदस्य पृथिवीसूक्ते (12.1) कति मन्त्राः सन्ति ?
(A) 23 (B) 33
(C) 53 (D) 63

व्याख्या-

वेद	सूक्त	ऋषि	देवता	मन्त्रसंख्या
अथर्ववेद	पृथिवी सूक्त (12.1)	अथर्वा	भूमि	63
यजुर्वेद	शिवसंकल्प सूक्त	याज्ञवल्क्य	मनस्	06
यजुर्वेद	प्रजापति सूक्त	प्रजापति	परमेश्वर	05
अथर्ववेद	राष्ट्राभिवर्धन (1.29)	वशिष्ठ	ब्रह्मणस्पति/ अभीवर्तमणि	06
अथर्ववेद	कालसूक्त (10.53)	भृगु	काल	10
ऋग्वेद	अग्निसूक्त (1.1)	मधुच्छन्दा	अग्नि	09
	इन्द्रसूक्त (2.12)	गृत्समद	इन्द्र	15
	उषस् सूक्त (3.61)	विश्वामित्र	उषस्	7
	अक्षसूक्त (10.34)	कवषऐलूष	अक्ष	14

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि पृथिवीसूक्त में कुल 63 मन्त्र हैं। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- अथर्ववेद (12.1) - वेदान्ततीर्थ, पेज 101

3. सृष्ट्युत्पत्तिविषयकं सूक्तमस्ति ऋग्वेदे-
(A) पुरुषसूक्तम् (10.90) (B) अग्निसूक्तम् (1.1)
(C) इन्द्रसूक्तम् (2.12) (D) वाक्सूक्तम् (10.125)

व्याख्या-

सृष्टि उत्पत्ति विषयक दार्शनिक सूक्त-

पुरुषसूक्त (ऋ. 10.90)- यह सूक्त चारों वेदों में आया है। इसमें पुरुष (परमात्मा) के विराट् रूप का वर्णन किया गया है और उसी से समस्त विश्व की सृष्टि का वर्णन है। पुरुष को ही सृष्टि का सर्वस्व, वर्तमान, भूत और भविष्य बताया गया है।

नासदीयसूक्त (ऋ. 10.129)- यह सूक्त वैदिक ऋषियों की प्रतिभा, ज्ञान और अलौकिक दार्शनिक चिन्तन का परिचायक है। इस सूक्त में सृष्टि की उत्पत्ति से पूर्व की स्थिति का वर्णन करते हुए कहा गया है कि उस समय न असत् था और न सत्, न रात्रि थी और न दिन। सृष्टि का सूचक कोई चिह्न नहीं था।

इस सूक्त में प्रतिभा की शक्ति से अद्वैत तत्त्व की शाश्वत स्थिति की अनुभूति की गई है।

हिरण्यगर्भसूक्त (ऋ. 10.121)- इस सूक्त में उदात्त दार्शनिक भावों की अभिव्यक्ति करते हुए क अर्थात् प्रजापति का महत्त्व वर्णित है। 9 मन्त्रों में 'कस्मै देवाय हविषा विधेम' अर्थात् ऐसे प्रजापति देव को हम अपनी स्तुति अर्पित करते हैं, यह कहा गया है। वह प्रजापति सृष्टि के प्रारम्भ में हिरण्यगर्भ के रूप में प्रकट हुआ। वही सृष्टि का नियामक है।

अन्य सूक्त -

अस्यवामीय सूक्त (ऋ. 1.164)- यह ऋग्वेद के प्रथम मण्डल का दीर्घतमा ऋषि द्वारा दृष्ट अतिमहत्त्वपूर्ण सूक्त है इसमें 52 मन्त्रों में दर्शन, अध्यात्म, मनोविज्ञान, भाषाविज्ञान ज्योतिष और भौतिक विज्ञान से सम्बद्ध अनेक तथ्यों का वर्णन है। इस सूक्त में ही एकेश्वरवाद का प्रतिपादक मन्त्र 'एकं सद् विप्रा॰' आया है।

श्रद्धासूक्त (ऋ. 10.151)- इस सूक्त में पाँच ही मन्त्र हैं। यह श्रद्धा ही जीवन को पवित्र बनाती है और महान् लक्ष्यों को प्राप्त कराती है। श्रद्धा से ही ब्रह्मप्राप्ति सम्भव है।

वाक्सूक्त (ऋ. 10.125)- ऋग्वेद के अतिमहत्त्वपूर्ण सूक्तों में वाक्सूक्त है। इस सूक्त के आठ मन्त्रों में वाक्तत्त्व, शब्दब्रह्म या वाग्देवी का ब्रह्म के रूप में वर्णन किया गया है।

संज्ञानसूक्त (ऋ. 10.191)- इस सूक्त के चार मन्त्रों में सामाजिक, सौहार्द, सामञ्जस्य, सह-अस्तित्व, ऐकमत्य और संगठन का उपदेश दिया गया है।

दानस्तुतिसूक्त (ऋ. 10.107 व 117)- ऋग्वेद के इन सूक्तों में दान की महिमा का गुणगान है। वैदिक संस्कृति में त्याग और दान इन दो गुणों को सर्वोच्च स्थान दिया गया है। वह मित्र नहीं जो मित्र को धन-दान न दे। ''केवलाघो भवति केवलादी'' अकेला खाने वाला अकेला ही पापी होता है।

अक्षसूक्त (ऋ. 10.34)- इस सूक्त के चौदह मन्त्रों में अक्ष (द्यूत,जुआ) की कड़े शब्दों में निन्दा की गई है। यह सामाजिक कुरीति है। शिक्षा दी गयी है कि जुआ न खेलो, कृषि करो, कृषि की आय से ही सन्तुष्ट रहो।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि सृष्टि उत्पत्ति सम्बन्धित सूक्त पुरुषसूक्त है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्त शास्त्री, पेज 392-404

4. 'शुनःशेपम्' इत्याख्यानं कस्मिन् ग्रन्थे प्राप्यते ?

(A) कौषीतकिब्राह्मणग्रन्थे (B) ऐतरेयब्राह्मणग्रन्थे
(C) सामविधानब्राह्मणग्रन्थे (D) ऐतरेयारण्यकग्रन्थे

व्याख्या- वेदों के अनुसार ब्राह्मणग्रन्थों के नाम-

ऋग्वेदीय ब्राह्मण – 1. ऐतरेय ब्राह्मण 2. शांखायन ब्राह्मण (कौषीतकि ब्राह्मण)

ऐतरेय ब्राह्मण- ऐतरेय ब्राह्मण का आख्यान शुनःशेप आख्यान है जिसे 'हरिश्चन्द्र-उपाख्यान' भी कहते हैं। इसका चरैवेति गान विश्व-विश्रुत है। शुनःशेप ऋषि ऋग्वेद प्रथम मण्डल के सात सूक्तों के द्रष्टा हैं।

कौषीतकि ब्राह्मण- यह ऋग्वेद का द्वितीय ब्राह्मण है। इसके रचयिता शांखायन ऋषि माने जाते हैं। शांखायन आरण्यक में इनकी वंशपरम्परा का उल्लेख मिलता है। तदनुसार उद्दालक आरुणि से कहोल कौषीतकि को उनसे गुण शांखायन को और उनसे शांखायन आरण्यक के लेखक को यह विद्या परम्परा से प्राप्त हुई शांखायन ने अपने गुरु के नाम को भी अमर करने हेतु इसका नाम 'कौषीतकि ब्राह्मण' रखा।

शतपथ ब्राह्मण- यह शुक्लयजुर्वेदीय ब्राह्मण है। इसके रचयिता वाजसनि के पुत्र याज्ञवल्क्य माने जाते हैं। वाजसनि के पुत्र होने से इन्हें 'वाजसनेय' कहा जाता है। सूर्य की कृपा से प्राप्त शुक्लयजुर्वेद की व्याख्या वाजसनेय याज्ञवल्क्य ने की। माध्यन्दिन (शुक्लयजुर्वेदीय) शतपथ ब्राह्मण में 14 काण्ड, 100 अध्याय, 438 ब्राह्मण और 7624 कण्डिकाएँ हैं। सम्पूर्ण ग्रन्थ 14 भागों में विभक्त है।

सामविधान ब्राह्मण- यह सामवेदीय ब्राह्मण है। इसमें जादू-टोने से सम्बद्ध सामग्री बहुत है। सामविधान ब्राह्मण में तीन प्रपाठक और पच्चीस अनुवाक हैं।

गोपथ ब्राह्मण- यह अथर्ववेदीय एकमात्र ब्राह्मण है। पहले इसे शौनकीय शाखा से समझा जाता था, क्योंकि इसमें उस शाखा के कुछ मन्त्रों के प्रतीक हैं। पैप्पलाद शाखा के अथर्ववेद का प्रथम मन्त्र 'शं नो देवीरभिष्टय' है। इसके रचयिता गोपथ ऋषि हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'शुनःशेप' आख्यान ऐतरेय ब्राह्मण में प्राप्त है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 120-121

5. महर्षिणा दयानन्देन कस्य वेदस्य भाष्यं कृतमस्ति ?

(A) पैप्पलादसंहितायाः (B) शौनकसंहितायाः
(C) काण्वसंहितायाः (D) वाजसनेयिमाध्यन्दिनसंहितायाः

व्याख्या-

स्वामी दयानन्द सरस्वती- आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती आधुनिक युग में वेदों के पुनरुद्धारक माने जाते हैं। उन्होंने शुक्लयजुर्वेद सम्पूर्ण की संस्कृत, हिन्दी में व्याख्या की है।

श्री सातवलेकर- वेदमूर्ति पं. श्रीपाद दामोदर सातवलेकर आधुनिक युग के सायण हैं। उन्होंने चारों वेदों, तैत्तिरीय, मैत्रायणी, काठक, दैवत आदि के विशुद्ध संस्करण निकाले हैं। चारों वेदों का हिन्दी में 'सुबोध-भाष्य' प्रकाशित किया है। ये स्वामी दयानन्द के समर्थक हैं।

ऋग्वेदीय भाष्यकार-

स्कन्दस्वामी- ऋग्वेद का सबसे प्राचीन भाष्य स्कन्दस्वामी का उपलब्ध है। ऋग्वेद के भाष्य में वेंकटमाधव ने लिखा है कि स्कन्दस्वामी, नारायण, उद्गीथ आचार्यों ने मिलकर ऋग्वेद का भाष्य किया था।

यजुर्वेदीय भाष्यकार-

उव्वट या उवट- यजुर्वेद भाष्य के अन्त में इन्होंने अपना परिचय दिया है। ये आनन्दपुर निवासी वज्रट के पुत्र थे। राजा भोज के समय में इन्होंने वेदभाष्य किया। अतः इनका समय 11वीं शती ई. है। यजुर्वेदभाष्य के अतिरिक्त ये ग्रन्थ लिखे हैं-

1. ऋक्प्रातिशाख्य की टीका
2. यजुःप्रातिशाख्य की टीका
3. ऋक्सर्वानुक्रमणी पर भाष्य
4. ईशोपनिषद् पर भाष्य

हलायुध- सायण से पूर्ववर्ती हलायुध ने काण्वसंहिता पर अपना भाष्य लिखा है। इस भाष्य का नाम 'ब्राह्मणसर्वस्व' है। उन्होंने कुछ अन्य ग्रन्थ भी लिखे हैं- मीमांसासर्वस्व, वैष्णवसर्वस्व, शैवसर्वस्व, पण्डितसर्वस्व आदि।

सायण- सायण ने माध्यन्दिन संहिता पर भाष्य न लिखकर काण्व संहिता पर अपना भाष्य लिखा है।

सामवेदीय भाष्यकार-

माधव- (600 ई. के लगभग) ये सामवेद के प्रथम भाष्यकार हैं। इन्होंने सम्पूर्ण सामवेद का भाष्य लिखा है। जिसका नाम 'विवरण' है।

गुणविष्णु- सामवेद की कौथुम शाखा पर छान्दोग्य मन्त्र भाष्य लिखा है।

अथर्ववेदीय भाष्यकार-

सायण- अथर्ववेद पर केवल सायण का ही भाष्य प्राप्त होता है। सायण ने पूरे अथर्ववेद पर भाष्य लिखा था, परन्तु प्रकाशित ग्रन्थों में केवल 12 काण्डों (1 से 4, 6 से 8, 11, 17 से 20 काण्ड) का ही भाष्य मिलता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि महर्षि दयानन्द ने वाजसनेयि माध्यन्दिनसंहिता पर भाष्य किया था। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 18

6. 'शतायुषः पुत्रपौत्रान् वृणीष्व बहून् पशून् हस्ति-हिरण्यमश्वान्' इति कथनमस्ति-

(A) वाजश्रवसः (B) नचिकेतसः
(C) यमराजस्य (D) याज्ञवल्क्यस्य

व्याख्या- कठोपनिषद् उपनिषदों में बहुत प्रसिद्ध है। यह कृष्णयुजर्वेद की कठशाखा के अन्तर्गत है। इसमें नचिकेता और यम के संवाद रूप में परमात्मा के रहस्यमय तत्त्व का बड़ा ही उपयोगी और विशद वर्णन है। इसमें दो अध्याय हैं और प्रत्येक अध्याय में तीन-तीन वल्लियाँ हैं।

शतायुषः पुत्रपौत्रान् वृणीष्व
बहून् पशून् हस्तिहिरण्यमश्वान्।
भूमेर्महदायतनं वृणीष्व
स्वयं च जीव शरदो यावदिच्छसि॥ (1. 1.23)

यम नचिकेता से कहते हैं- नचिकेता! तुम बड़े भोले हो, क्या करोगे इस वर को लेकर? तुम ग्रहण करो इन सुख की विशाल सामग्रियों को। सौ-सौ वर्ष जीने वाले पुत्र पौत्रादि बड़े परिवार को माँग लो। गौ आदि बहुत से उपयोगी पशु, हाथी, सुवर्ण, घोड़े और विशाल भूमण्डल के महान् साम्राज्य को माँग लो और इन सबको भोगने के लिये जितने वर्षों तक जीने की इच्छा हो, उतने ही वर्षों तक जीते रहो।

नचिकेता का कथन- तीसरा वर इस मन्त्र में माँगते हैं-

येयं प्रेते विचिकित्सा मनुष्येऽस्तीत्येके नायमस्तीति चैके।
एतद्विद्यामनुशिष्टस्त्वयाहं वराणामेष वरस्तृतीयः। (1. 1.20)

मृत मनुष्य के विषय में जो यह सन्देह है, कुछ लोग कहते हैं कि मृत्यु के बाद भी आत्मा का अस्तित्त्व रहता है। अन्य लोग कहते हैं कि 'नहीं रहता' (तो) आप से शिक्षित हुआ मैं इसको जानूँ, वरों में यह तीसरा वर है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'शतायुषः पुत्रपौत्रान् .....' इस पंक्ति को यम ने कहा है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- ईशादि नौ उपनिषद् (कठोप. 1.1.23) शाङ्करभाष्य-गीताप्रेस, पेज 220

7. अधोऽङ्कितेषु एकमसत्यमस्ति-

(A) विद्यां च अविद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह इति ईशोपनिषदि वर्तते
(B) ईशोपनिषद् तैत्तिरीयशाखायां वर्तते
(C) याज्ञवल्क्यमैत्रेयी-संवादो बृहदारण्यकोपनिषदि वर्तते
(D) नचिकेतसः वर्णनं कठोपनिषदि वर्तते

व्याख्या-ईशावास्योपनिषद्- यह शुक्लयजुर्वेदीय

काण्वशाखीय संहिता का चालीसवाँ अध्याय है। मन्त्र-भाग का अंश होने से इसका विशेष महत्त्व है। इसी को सबसे पहला उपनिषद् माना जाता है। शुक्लयजुर्वेद के प्रथम उन्तालीस अध्यायों में कर्मकाण्ड का निरूपण हुआ है। यह उस काण्ड का अन्तिम अध्याय है और इसमें भगवत्तत्त्वरूप ज्ञानकाण्ड का निरूपण किया गया है। इसके पहले मन्त्र में 'ईशावास्यम्' वाक्य आने से इसका नाम 'ईशावास्य' माना गया है।

प्रमुख मन्त्र-

तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम्। (ईशा. मन्त्र-01)

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः। (ईशा. मन्त्र-02)

विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह ।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नुते।। (ईशा. मन्त्र-11)

योऽसावसौ पुरुषः सोऽहमस्मि। (ईशा. मन्त्र-16)

बृहदारण्यकोपनिषद्- शुक्लयजुर्वेद से सम्बद्ध शतपथ ब्राह्मण के अन्तिम छः अध्यायों को बृहदारण्यक कहते हैं। इसमें आरण्यक और उपनिषद् दोनों ही मिश्रित हैं। इसलिए इसका नाम 'बृहदारण्यकोपनिषद्' पड़ा। यह विशालकाय एवं प्राचीनतम उपनिषद् है। इस उपनिषद् में तीन भाग हैं और प्रत्येक भाग में दो-दो अध्याय हैं। इस प्रकार कुल छः अध्याय हैं। इनमें प्रथम भाग को मधुकाण्ड, द्वितीय भाग को याज्ञवल्क्यकाण्ड और तृतीय भाग को खिलकाण्ड कहते हैं।

* इसमें याज्ञवल्क्य और मैत्रेयी संवाद का प्रमुख वर्णन है।

कठोपनिषद्-

कृष्णयजुर्वेद की कठ शाखा के अन्तर्गत आता है। कठोपनिषद् उपनिषदों में बहुत प्रसिद्ध है। इसमें नचिकेता और यम के संवाद रूप परमात्मा के रहस्यमय तत्त्व का बड़ा ही उपयोगी और विशद वर्णन है। इसमें दो अध्याय हैं और प्रत्येक अध्याय में तीन-तीन वल्लियाँ हैं।

प्रमुख मन्त्र-

* अनन्दा नाम ते लोकास्तान् स गच्छति ता ददत्। (कठ. 1.1.3)
* सस्यमिव मर्त्यः पच्यते सस्यमिवाजायते पुनः।। (कठ. 1.1.6)
* नमस्तेऽस्तु ब्रह्मन् स्वस्ति मेऽस्तु। (कठ 1.1.9)
* शान्तसंकल्पः सुमना यथा स्याद्वीतमन्युर्गौतमो माभि मृत्यो (कठ 1.1.10)
* स्वर्गे लोके न भयं किंचनास्ति (कठ 1.1.12)
* येयं प्रेते विचिकित्सा मनुष्येऽस्तीत्येके नायमस्तीति चैके। (कठ. 1.1.20)
* शतायुषः पुत्रपौत्रान् वृणीष्व बहून् पशून् हस्तिहिरण्यमश्वान्। (1.1.23)
* न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यः। (कठ. 1.1.27)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'ईशावास्योपनिषद्' तैत्तिरीय शाखा का नहीं है अपितु शुक्लयजुर्वेद की काण्वशाखा से सम्बन्धित है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- (A) ईशादि नौ उपनिषद् (ईशोपनिषद्-11)
(C) वैदिक साहित्य का इति.-पारसनाथ द्विवेदी, पेज 154,156

8. अनयोः कथनयोर्विषये उचितं युग्मं चिनुत।
क. 'शीक्षावल्ली' कठोपनिषदि वर्तते
ख. शीक्षावल्याम् गुरु सम्बन्धितो व्यवहारो निरूपितः
(A) (क) असत्यम् (ख) सत्यम्
(B) (क) सत्यम् (ख) असत्यम्
(C) उभे सत्ये स्तः
(D) उभे असत्ये स्तः

व्याख्या- तैत्तिरीयोपनिषद्- यह उपनिषद् कृष्णयजुर्वेदीय तैत्तिरीय शाखा के अन्तर्गत तैत्तिरीय आरण्यक का अङ्ग है। तैत्तिरीय आरण्यक में दस अध्याय हैं। उनमें से सातवें, आठवें और नवें अध्यायों को ही तैत्तिरीय उपनिषद् कहा जाता है।

यह शीक्षावल्ली, ब्रह्मानन्दवल्ली, भृगुवल्ली में विभाजित है। शीक्षावल्ली के अनुवाक 11 में गुरु शिष्य को उपदेश देते हुए कहते हैं कि- **स्वाध्यायान्मा प्रमदः।**

गृहस्थ को अपना जीवन कैसा बनाना चाहिये, यह बात समझाने के लिए इस अनुवाक का आरम्भ किया गया है। आचार्य शिष्य को भलीभाँति अध्ययन कराकर समावर्तन संस्कार के समय गृहस्थाश्रम में प्रवेश हेतु उपदेश देते हैं। पुत्र! तुम सदा सत्य भाषण करना, आपत्ति पड़ने पर भी झूठ का कदापि आश्रय न लेना।

कठोपनिषद्- कठोपनिषद् कृष्णयजुर्वेद की कठ शाखा से सम्बद्ध है। इसमें दो अध्याय हैं और दोनों अध्याय तीन-तीन वल्लियों में विभाजित है। इसमें यम और नचिकेता का संवाद है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि शिक्षावल्ली तैत्तिरीयोपनिषद् से सम्बन्धित है न कि कठोपनिषद् से। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज 15

9. 'उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत' इत्युद्धरणं कुत्र वर्तते ?
(A) केनोपनिषदि (B) कठोपनिषदि
(C) तैत्तिरीयोपनिषदि (D) बृहदारण्यकोपनिषदि

व्याख्या- कठोपनिषद्- * यह कृष्णयजुर्वेदीय कठ शाखा के अन्तर्गत है।

* यह मन्त्र कठोपनिषद् के प्रथम अध्याय की तृतीय वल्ली में

परमात्मा के स्वरूप का वर्णन करके तथा उसकी प्राप्ति का महत्त्व और साधन बतलाकर मनुष्यों को सावधान करता हुआ कहता है-

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत ।

क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया दुर्गं पथस्तत्कवयो वदन्ति॥ (कठ. 1.3.14)

हे मनुष्यों ! तुम जन्म जन्मान्तर से अज्ञाननिद्रा में सो रहे हो अब तुम्हें परमात्मा की दया से यह दुर्लभ मनुष्य शरीर मिला है। इसे पाकर अब एक क्षण भी प्रमाद में मत खोओ। शीघ्र सावधान हो जाओ। श्रेष्ठ महापुरुषों के पास जाकर उनके उपदेश द्वारा अपने कल्याण का मार्ग और परमात्मा का रहस्य समझ लो।

अन्य प्रमुख मन्त्र-

* **ये ये कामा दुर्लभा मर्त्यलोके**
सर्वान् कामांश्छन्दतः प्रार्थयस्व। (कठ 1.1.25)

यम नचिकेता से कहते हैं- जो जो भोग मृत्युलोक में दुर्लभ हैं, उन सबको तुम अपने इच्छानुसार माँग लो।

* **श्रेयश्च प्रेयश्च मनुष्यमेतस्तौ सम्परीत्य विविनक्ति धीरः। श्रेयो हि धीरोऽभि प्रेयसो वृणीते प्रेयो मन्दो योगक्षेमाद् वृणीते॥** (कठ 1.2.2)

यम का नचिकेता से कथन- अधिकांश मनुष्य तो पुनर्जन्म में विश्वास न होने के कारण इस विषय में विचार ही नहीं करते, वे भोगों में आसक्त होकर अपने देवदुर्लभ मनुष्य जीवन को पशुवत् भोगों के भोगने में ही समाप्त कर देते हैं। किन्तु जिनका पुनर्जन्म में और परलोक में विश्वास है, उन विचारशील मनुष्यों के सामने जब ये श्रेय और प्रेय दोनों आते हैं, तब वे इन दोनों के गुण-दोषों पर विचार कर दोनों को पृथक्-पृथक् समझते हैं।

केनोपनिषद्-

* यह उपनिषद् सामवेद के 'तलवकार ब्राह्मण' के अन्तर्गत आता है।
* तलवकार को 'जैमिनीय-उपनिषद्' भी कहते हैं।
* केनोपनिषद् को तलवकार 'उपनिषद्' और ब्राह्मणोपनिषद् भी कहते हैं।

प्रमुख मन्त्र-

* **तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि नेदं यदिदमुपासते।** (केनो. 1.1.4)

उसको ही तू ब्रह्म जान, वाणी के द्वारा बताने में आने वाले जिस तत्त्व की लोग उपासना करते हैं, यह ब्रह्म नहीं है।

* **आत्मना विन्दते वीर्यं विद्यया विन्दतेऽमृतम्।** (केनो. 2.2.4)

मन्त्रविद्या से अमृतरूप परब्रह्म की प्राप्ति होती है, यह इसीलिये कहा गया है कि जिससे मनुष्य में परब्रह्म पुरुषोत्तम के यथार्थ स्वरूप को जानने के लिये रुचि और उत्साह की वृद्धि हो।

* **भूतेषु भूतेषु विचिन्त्य धीराः प्रेत्यास्माल्लोकादमृता भवन्ति।** (2.2.5)

बुद्धिमान् पुरुष प्राणी-प्राणी में परब्रह्म परमेश्वर को समझकर इस लोक से प्रयाण करके अमर हो जाते हैं।

तैत्तिरीयोपनिषद्-

यह उपनिषद् कृष्णयजुर्वेदीय तैत्तिरीय शाखा के अन्तर्गत तैत्तिरीय-आरण्यक का अङ्ग है।

प्रमुख मन्त्र-

* **स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम् ।** (तैत्तिरीयोपनिषद् 11 अनुवाक)

वेदों को पढ़ने और पढ़ाने में कभी प्रमाद नहीं करना चाहिये।

* **मातृदेवो भव। पितृदेवो भव। आचार्यदेवो भव। अतिथि देवो भव।**

तुम माता में देवबुद्धि करने वाले बनो, पिता को देवरूप समझने वाले होओ, आचार्य को देवरूप समझने वाले बनो। अतिथि को देवतुल्य समझने वाले होओ।

* **सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म।**

ब्रह्म सत्य, ज्ञानस्वरूप और अनन्त है।

* **अन्नाद्भूतानि जायन्ते जातान्यन्नेन वर्धन्ते।**

अन्न से ही सब प्राणी उत्पन्न होते हैं, उत्पन्न होकर अन्न से ही बढ़ते हैं।

बृहदारण्यकोपनिषद् के प्रमुख मन्त्र-

* **असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय मृत्योर्मामृतं गमयेति।** (बृहदा. 1.3.28)

मुझे असत् से सत् की ओर ले जाओ मुझे अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाओ और मृत्यु से अमृत की ओर ले जाओ।

* **आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्यः।** (बृहदा. 2.4.5)

हे मैत्रेयि ! इस आत्मा के ही दर्शन, श्रवण, मनन एवं विज्ञान से सबका ज्ञान हो जाता है।

* **न वा अरे जायायै कामाय जाया प्रिया भवत्यात्मनस्तु।** (बृहदा. 2.4.5)

याज्ञवल्क्य मैत्री से कहते हैं- स्त्री के प्रयोजन के लिए स्त्री प्रिया नहीं होती, अपने ही प्रयोजन के लिये स्त्री प्रिया होती है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट होता है कि '**उत्तिष्ठत जाग्रत-**' यह मन्त्र कठोपनिषद् से उद्धृत है।

अतः विकल्प 'B' सही है।

स्रोत- कठोपनिषद् - (1.3.14)

10. अधोलिखितानां केन सह कस्य सम्बन्धः? इति समीचीनां तालिकां चिनुत।

(क) मा गृधः कस्यस्विद्धनम् (i) केनोपनिषद्

(ख) उमाया उपदेशः (ii) बृहदारण्यकोपनिषद्

(ग) अथ शीक्षां व्याख्यास्यामः (iii) ईशोपनिषद्

(घ) आत्मा वा अरे द्रष्टव्यो मन्तव्यः (iv) तैत्तिरीयोपनिषद्

	क	ख	ग	घ
(A)	ii	iv	iii	i
(B)	i	iii	iv	ii
(C)	iv	ii	iii	i
(D)	iii	i	iv	ii

व्याख्या-

*** मा गृधः कस्यस्विद्धनम् । (ईशावास्य-मन्त्र 01)**

आसक्त मत होओ धन, भोग्य-पदार्थ किसका है अर्थात् किसी का भी नहीं है।

*** बहुशोभमानामुमां हैमवतीं तां होवाच किमेतद् यक्षमिति।**
यह मन्त्र केनोपनिषद् के खण्ड तीन से उद्धृत है।
इसमें अत्यन्त शोभामयी हिमाचलकुमारी उमादेवी प्रकट हो गयी हैं। इन्द्र पर कृपा करके करुणामय परब्रह्म पुरुषोत्तम ने ही उमारूपा साक्षात् ब्रह्मविद्या को प्रकट किया था।

*** अथ शीक्षां व्याख्यास्यामः। (तैत्तिरीयो. 1.2)**

तैत्तिरीयोपनिषद् के अनुवाक दो में शिक्षा का वर्णन किया गया है।
'अब हम शिक्षा का वर्णन करेंगे।'
वर्ण, स्वर, मात्रा, बल, साम, संतान यह शिक्षा के भेद हैं।

*** आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः मन्तव्यः। (बृहदा. 2.4.5)**

याज्ञवल्क्य मैत्रयी से कहते हैं- हे मैत्रेयि! इस आत्मा के ही दर्शन, श्रवण, मनन एवं विज्ञान से इस सबका ज्ञान हो जाता है।

मन्त्र	उपनिषद्
मा गृधः कस्यस्विद्धनम्	ईशावास्योपनिषद्
उमायाः उपदेशः	केनोपनिषद्
अथ शीक्षां व्याख्यास्यामः	तैत्तिरीयोपनिषद्
आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः	बृहदारण्यकोपनिषद्

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि मिलान करने पर **विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज A-174, B-175, C-179, D-171

11. षड्वेदाङ्गेषु किं न गण्यते ?

(A) निरुक्तम् (B) छन्दस्
(C) मीमांसा (D) कल्पः

व्याख्या- वेदाङ्ग-

शिक्षा व्याकरणं छन्दो निरुक्तं ज्योतिषं तथा।
कल्पश्चेति षडङ्गानि वेदस्याहुर्मनीषिणः॥

षड्वेदाङ्ग

1. शिक्षा 2. व्याकरण 3. छन्द 4. निरुक्त
5. ज्योतिष 6. कल्प

वेद

1. ऋग्वेद 2. यजुर्वेद 3. सामवेद 4. अथर्ववेद

षड्दर्शन-

1. सांख्य 2. योग 3. न्याय 4. वैशेषिक
5. पूर्वमीमांसा 6. उत्तरमीमांसा

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि षड्वेदाङ्गों में मीमांसा की गणना नहीं होती। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–172

12. यास्कमते पदानां प्रकाराः कति भवन्ति ?

(A) चत्वारः (B) पञ्च
(C) द्वौ (D) षड्

व्याख्या- यास्क द्वारा रचित निरुक्त में पदों की संख्या चार बतायी गयी है-

*** चत्वारि पदजातानि नामाख्याते चोपसर्गनिपाताश्च तानीमानि भवन्ति ।**

1. नाम 2. आख्यात 3. उपसर्ग 4. निपात।

षड्भावविकार- षड्भावविकारा भवन्तीति वार्ष्यायणिः-
जायते, अस्ति, विपरिणमते, वर्धते, अपक्षीयते, विनश्यति

तास्त्रिविधाः ऋचः-

1. परोक्षकृताः 2. प्रत्यक्षकृताः 3. आध्यात्मिक्य

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि यास्कमत में पदों की संख्या चार है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज 08

13. षड्भावविकारेषु कतमो नास्ति ?

(A) जायते (B) नश्यति
(C) वर्धते (D) स्मरति

व्याख्या- यास्क कृत निरुक्त में सम्पूर्ण चौदह अध्यायों

का संकलन है। जिसके प्रथम अध्याय में षड्भावविकारों की चर्चा की गई है-

षड्भावविकार- वार्ष्यायणि का मत है कि- छः प्रकार के भावविकार होते हैं। 1.जायते (उत्पन्न) 2.अस्ति (होना) 3.विपरिणमते (परिवर्तित होना) 4.वर्धते (बढ़ना) 5.अपक्षीयते (घटना) 6.विनश्यति (नष्ट होना)।

*** प्रथम भावविकार है-** 'जायते' अर्थात् उत्पन्न होना। बीज से अङ्कुर निकलता है तब यह कहा जाता है कि अंकुर पैदा हुआ यद्यपि पैदा होना के साथ-साथ होना रूप क्रिया या भावविकार भी है।

*** दूसरा भाव विकार है-** 'अस्ति' जिसका अर्थ है 'होना' अपनी सत्ता धारण करना। वैयाकरणों ने अस्ति का अर्थ किया है भावानुकूलो व्यापारः । अस्ति, भवति, विद्यते, वर्तते ये सभी धातुएँ सामान्य सत्ता अथवा 'भाव' को ही कहती हैं।

*** तीसरा भावविकार-** 'विपरिणमते' जिसका अभिप्राय है 'परिवर्तन'

*** चौथा भावविकार-** 'वर्धते' (वृद्धि) यह वृद्धि दो प्रकार की हो सकती है। पहली अपनी शरीर की वृद्धि तथा दूसरी अपने से सम्बद्ध या संयुक्त पदार्थों की वृद्धि।

*** पाँचवाँ भावविकार-** 'अपक्षीयते' (ह्रास) अथवा अपक्षय। यह भी दो प्रकार का बताया गया है- पहला शरीर का ह्रास तथा दूसरा अपने से युक्त पदार्थों का ह्रास।

*** छठा भाव विकार-** 'विनश्यति' (नष्ट होना) विनाश। जब ह्रास अपनी सीमा पर आ जाता है तब विनाश का प्रारम्भ हो जाता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट होता है कि षड्भावों में 'स्मरति' की गणना नहीं होती। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज 23

14. याज्ञवल्क्यशिक्षा केन वेदेन सम्बद्धा अस्ति ?

(A) ऋग्वेदेन (B) यजुर्वेदेन
(C) सामवेदेन (D) अथर्ववेदेन

व्याख्या- ऋग्वेदीय शिक्षा

1. पाणिनीय शिक्षा 2. स्वराङ्कुशा शिक्षा
3. षोडशश्लोकी शिक्षा 4. शैशिरीय शिक्षा
5. आपिशलि शिक्षा

सामवेदीय शिक्षा

1. गौतमी शिक्षा 2. लोमशी शिक्षा 3. नारदीय शिक्षा

यजुर्वेद-(शुक्लयजुर्वेदीय शिक्षा)

1. याज्ञवल्क्य शिक्षा 2. वाशिष्ठी शिक्षा
3. पाराशरी शिक्षा 4. कात्यायनी शिक्षा
5. माण्डव्य शिक्षा 6. अमोघानन्दिनी शिक्षा
7. लघु अमोघानन्दिनी शिक्षा 8. माध्यन्दिनी शिक्षा
9. वर्णरत्नप्रदीपिका शिक्षा 10. केशवी शिक्षा
11. हस्तस्वर प्रक्रिया 12. अवसाननिर्णय शिक्षा (मल्लशर्मशिक्षा)
13. स्वरभक्ति लक्षणपरिशिष्ट शिक्षा 14. क्रमसन्धान शिक्षा
15. मनःस्वार शिक्षा 16. यजुर्विधान शिक्षा
17. स्वराष्टक शिक्षा 18. क्रमकारिका शिक्षा

कृष्णयजुर्वेदीय शिक्षा-

1. भारद्वाज शिक्षा 2. व्यास शिक्षा (तैत्तिरीय संहिता)
3. शम्भु शिक्षा 4. कौहलीय शिक्षा
5. सर्वसम्मत शिक्षा 6. आरण्य शिक्षा
7. सिद्धान्त शिक्षा

अथर्ववेदीय शिक्षा-

1. माण्डूकी शिक्षा

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि याज्ञवल्क्य शिक्षा यजुर्वेद से सम्बन्धित है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य का इति. - गजानन शास्त्री मुसलगाँवकर, पेज 253

15. 'नैगमकाण्डम्' कस्मिन् ग्रन्थे वर्तते-

(A) आपस्तम्बगृह्यसूत्रे (B) निरुक्ते
(C) गौतमधर्मसूत्रे (D) बौधायनधर्मसूत्रे

व्याख्या-

* यास्ककृत निरुक्त 'निघण्टु' ग्रन्थ की व्याख्या है।
* निघण्टु ग्रन्थ पाँच अध्यायों और तीन काण्डों में विभक्त है।
* प्रथम तीन अध्याय 'नैघण्टुक काण्ड' कहलाते हैं।
* चौथा अध्याय 'ऐकपदिक' या 'नैगम काण्ड' कहलाता है।
* पाँचवा अध्याय 'दैवत काण्ड' है।

दैवतकाण्ड- निघण्टु के शब्दों को तीन भागों में विभक्त किया गया है। एक तो वे शब्द जो वेद में प्रधान रूप से स्तुत देवताओं के नाम हैं। इन शब्दों को 'दैवत' कहते हैं। निघण्टु का पाँचवाँ अध्याय देवतानामों का संग्रह है, इसीलिए उसे 'दैवतकाण्ड' कहते हैं। इसमें अग्नि से लेकर देवपत्नी शब्द पर्यन्त 151 शब्द हैं।

ऐकपदिक या नैगमकाण्ड- दूसरे वे शब्द हैं जो अनेकार्थक हैं अथवा अनवगत संस्कार हैं अर्थात् जिनमें यह स्पष्ट नहीं है कि यह शब्द किस धातु से किस प्रत्यय से बना है- उसका नाम 'ऐकपदिक या नैगम' है। अर्थ- निश्चयात्मक होने के कारण इन्हें नैगम-निगमों का समूह भी कहते हैं। इसीलिये चौथे अध्याय का नाम ऐकपदिक या नैगमकाण्ड है।

निघण्टु- तीसरे प्रकार के शब्द हैं- पर्यायशब्द अथवा एकार्थक अनेक शब्द और एकार्थक अनेक धातु, इनका नाम निघण्टु ही रहने दिया। यद्यपि निघण्टु नैगम और दैवतकाण्ड के शब्दों में उपयुक्त रीति से भेद दिखाकर उन्हें भिन्न कर दिया और उनकी संज्ञा भी पृथक् कर दी। प्राचीनकाल में शब्दसंग्रह रूप कोशग्रन्थों को 'निघण्टु' कहा करते थे।

'अर्थावबोधे निरपेक्षतया पदजातं यत्रोक्तं तन्निरुक्तम्'।

इस लक्षण से निघण्टु को भी निरुक्त मान लिया गया।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'नैगम काण्ड' निरुक्त के अन्तर्गत आता है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, भू. पेज 11

16. 'सिद्धे शब्दार्थसम्बन्धे' इति भाष्यवार्तिके नित्यपर्यायवाची 'सिद्ध' शब्द एवोपात्तो, न त्वसन्दिग्धो 'नित्य' शब्दस्तत्र को हेतुः ?

(A) अवधारणार्थे 'सिद्ध' शब्दप्रयोगात्।

(B) पूर्वपदलोप-परकस्य 'सिद्ध' शब्दस्य प्रयोगात्।

(C) व्याख्यानतो विशेषप्रतिपत्तेः 'सिद्ध' शब्दस्य नित्यार्थकत्वात्

(D) नित्यपर्यायवाचिनं सिद्धशब्दस्य मङ्गलार्थत्वादपि।

व्याख्या- वैयाकरण और मीमांसक शब्द की नित्यता का और नैयायिक अनित्यता का समर्थन करते हैं। आचार्य पाणिनि के अनुसार तो केवल शब्द ही नहीं अपितु, शब्द अर्थ और सम्बन्ध- ये तीनों ही नित्य हैं। 'स्फोट' रूप शब्द तो नित्य हैं ही। जब शब्द और अर्थ- ये दोनों नित्य हैं तो इनका सम्बन्ध स्वतः नित्य है। इसी तथ्य को कात्यायन ने अपने सबसे पहले वार्तिक में लिखा है- सिद्धे शब्दार्थसम्बन्धे

शब्द भी सिद्ध है, अर्थ भी सिद्ध है और इन दोनों का सम्बन्ध भी सिद्ध=नित्य है।

* इस वार्तिक में 'सिद्ध' शब्द के ग्रहण से क्या लाभ है, क्यों नहीं 'सिद्ध' शब्द के स्थान पर 'नित्य' शब्द का ही ग्रहण कर लिया जाय- **'किं न महता कण्ठेन नित्यशब्द एवोपात्तः .....'** इसके उत्तर में भाष्यकार कहते हैं ''मङ्गलार्थम्'' मङ्गल के लिए 'सिद्ध' शब्द का प्रयोग है।

* **''माङ्गलिक आचार्यो महतः शास्त्रौघस्य मङ्गलार्थं सिद्धशब्दमादितः प्रयुङ्क्ते ....''**

माङ्गलिक आचार्य कात्यायन विशाल वार्तिकसमुदाय के मङ्गल (साफल्य) के लिए आदि में 'सिद्ध' शब्द का प्रयोग करते हैं। क्योंकि जिनके आदि में मङ्गल है ऐसे शास्त्रों का विस्तार एवं प्रचार प्रसार होता है, ऐसे शास्त्र के अध्येता वीर पुरुष और दीर्घायु पुरुष होते हैं, अध्येता सिद्धार्थ होते हैं । इसीकारण कात्यायन ने प्रथम वार्तिक सिद्धे शब्दार्थसम्बन्धे में 'सिद्धे' शब्द का प्रयोग किया है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'सिद्धे शब्दार्थसम्बन्धे' कात्यायन के इस प्रथम वार्तिक में 'सिद्धे' शब्द नित्य अर्थ का पर्यायवाची होता हुआ मङ्गलार्थक भी है।

अतः विकल्प 'D' सही है।

स्रोत- व्याकरण महाभाष्य (प्रथम आह्निक)-चारुदेव शास्त्री, पेज 25

17. वृत्तिसमवायार्थो वर्णानामुपदेशः इत्यत्र 'समवाय' शब्दस्य कोऽर्थः ?

(A) नित्यसम्बन्धः

(B) समूहः

(C) वर्णानामानुपूर्व्येण सन्निवेशः

(D) वृत्तिनियामकसम्बन्धः

व्याख्या- महर्षि पाणिनि द्वारा 'अइउण्' आदि चतुर्दश सूत्रों में किये गए वर्णोपदेश का क्या प्रयोजन है- ''अत्र किमर्थो वर्णानामुपदेशः ? '' ऐसा महाभाष्य पस्पशाह्निक में प्रश्न किया गया। इस प्रश्न के उत्तर में महर्षि पतञ्जलि महाभाष्य में समाधानवार्तिक को उद्धृत करते हैं कि- ''वृत्तिसमवायार्थ उपदेशः''

'वृत्तिसमवायार्थो वर्णानामुपदेशः कर्तव्यः'- (भाष्यम्)

अर्थात् वृत्तिसमवायार्थ वर्णों का उपदेश मानना चाहिए।

* **'वृत्तिसमवायार्थ'- इसका क्या आशय है?**

(क) वृत्तये समवायः = वृत्तिसमवायः (वृत्ति के लिए समवाय)

(ख) वृत्त्यर्थो वा समवायः = वृत्तिसमवायः (जिसका फल वृत्ति है वह समवाय)

(ग) वृत्तिप्रयोजनो वा समवायः = वृत्तिसमवायः (जिसका प्रयोजन वृत्ति है, वह समवाय 'वृत्तिसमवाय' है)

* **वृत्ति- 'वृत्ति' शब्द का क्या अर्थ है-**

''शास्त्रप्रवृत्तिः'' अर्थात् शास्त्र (सूत्रों) की प्रवृत्ति = लागू होना वृत्ति है।

* **समवाय- 'समवाय' का अर्थ क्या है?**

'वर्णानामानुपूर्व्येण संनिवेशः'

अर्थात् वर्णों का आनुपूर्वी क्रम से सन्निवेश = उपस्थापन समवाय है।

* **उपदेश- 'उपदेश' का अर्थ क्या है?**

'उच्चारणम्' उपदेश का अर्थ है- उच्चारण।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि 'वृत्तिसमवायार्थो वर्णानामुपदेशः' इस वाक्य में 'समवाय' शब्द का अर्थ 'वर्णानामानुपूर्व्येण सन्निवेशः है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- व्याकरण-महाभाष्यम् (पस्पशाह्निक)- मधुसूदन मिश्र, पेज 69

18. अधोलिखितप्रयोगेषु 'इणः षीध्वंलुँङ्-लिटां धोऽङ्गात्' इति भ्वादिगणीय सूत्रस्योदाहरणं किमस्ति?

(A) एधध्वे (B) एधाञ्चकृढ्वे
(C) एधिष्यध्वे (D) एधध्वम्

व्याख्या- लघुसिद्धान्तकौमुदी के भ्वादिगण में धातुरूप सिद्धि- प्रक्रिया के अन्तर्गत 'एध्' धातु लिट् लकार, मध्यमपुरुष, बहुवचन के रूप 'एधाञ्चकृढ्वे' की सिद्धिप्रसंग में, आचार्य वरदराज इस सूत्र को उद्धृत करते हैं-

इणः षीध्वंलुँङ्लिँटां धोऽङ्गात् (8.3.78)

अर्थ- इणन्त अङ्ग से परे षीध्वम् (आशीर्लिङ्) शब्द के तथा लुँङ् और लिँट् के धकार को मूर्धन्य (ढकार) आदेश हो।

वृत्ति- इणन्ताद् अङ्गात् परेषां षीध्वंलुँङ्लिँटां धस्य ढः स्यात्। एधाञ्चकृढ्वे।

'एधाम् + चकृ + ध्वे' में इणन्त अङ्ग है चकृ इससे परे 'ध्वे' यह लिँट् विद्यमान है अतः इस सूत्र में इसके धकार के स्थान पर मूर्धन्य ढकार होकर अनुस्वार और परसवर्ण करने से 'एधाञ्चकृढ्वे' प्रयोग सिद्ध होता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि भ्वादिगणीय 'एध्' धातु इणः षीध्वं-सूत्र से षकार को ढकार आदेश करने पर 'एधाञ्चकृढ्वे' बना। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी- भैमीव्याख्या (खण्ड 2), पेज 214-15

19. एषु शुद्धो मत्वर्थीयप्रयोगः कः ?

(A) विद्युद्वान् (B) विद्युद्मान्
(C) विद्युत्वान् (D) विद्युत्मान्

व्याख्या- विद्युत् शब्द के तकारान्त होने के कारण **तसौ मत्वर्थे-** सूत्र से भसंज्ञा हो जाती है, फलतः पदसंज्ञा का बाध हो जाता है।

अतः पदत्वाभावात् झलां जशोऽन्ते सूत्र से तकार को जश्त्व नहीं होता।

विद्युत्वान्- (बिजली वाला) विद्युत् अस्य अस्ति विग्रह करके विद्युत्+सु- इस स्थिति में

तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप्- से मतुप् होने पर अनुबन्ध लोप, प्रातिपदिकसंज्ञा, सुप् का लुक् करके विद्युत्+मत्-पद बना। यहाँ पर झय् है तकार। अतः **झयः** (8.2.10)- सूत्र से मतुप् के मकार को वकार आदेश होकर विद्युत्वत् शब्द बना है। स्वादिकार्य में विद्युत्वान् सिद्ध हो जाता है।

इसी प्रकार- गरुत्मान्, मरुत्वान् भी बनते हैं।

इसका रूप- विद्युत्वान् विद्युत्वन्तौ विद्युत्वन्तः धीमान् की तरह चलता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि विद्युत्वान् मत्वर्थीय प्रयोग है। जबकि विद्युद्वान् विद्युद्मान्, विद्युत्मान् यह अशुद्ध प्रयोग हैं। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (भाग-3)- गोविन्दाचार्य, पेज-856

20. 'वास्तव्यः' इत्यत्र 'वस्' धातोः 'तव्यत्' प्रत्ययो भवति कस्मिन्नर्थे?

(A) कर्तरि (B) कर्मणि
(C) भावे (D) स्वार्थे

व्याख्या- वसतीति वास्तव्यः- निवास करता है, इस अर्थ में वस् निवासे धातु के कर्ता अर्थ में 'वसेस्तव्यत्कर्तरि णिच्च' वार्तिक से तव्यत् प्रत्यय होकर 'वस्+तव्य' बना। प्रत्यय को णिद्भाव होने के कारण उसके परे रहते 'अत उपधायाः' से उपधाभूत अकार की वृद्धि आकार होकर वास्तव्य बना। इसके बाद प्रातिपदिकसंज्ञा होने से स्वादि कार्य होकर प्रथमा एकवचन में 'वास्तव्यः' सिद्ध हो जाता है।

वास्तव्यः वास्तव्यौ वास्तव्याः इस प्रकार से रूप बनते हैं।

'कर्तरि कृत्' (3.4.67)- कृत् प्रत्यय कर्ता अर्थ में होता है।

तयोरेव कृत्यक्तखलर्थाः (3.4.70)- कृत्य, क्त और खलर्थ प्रत्यय भाव और कर्म अर्थ में ही होते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'वास्तव्यः' में प्रत्यय 'कर्तरि' अर्थ में है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (भाग-6)-गोविन्दाचार्य, पेज-8

21. निम्नलिखितेषु शब्देषु अर्थसंकोचस्य उदाहरणं किमस्ति?

(A) सिंहः (B) वृकः
(C) कुशलः (D) मृगः

व्याख्या- संसार की सभी वस्तुएँ परिवर्तनशील हैं। भाषा भी परिवर्तनशील है। जिस प्रकार ध्वनियों में परिवर्तन होता है, उसी प्रकार प्रत्येक भाषा के शब्दों के अर्थों में भी परिवर्तन होता रहता है। यह अर्थ परिवर्तन तीन प्रकार का होता है-

1. अर्थविस्तार (Expansion of meaning)
2. अर्थसंकोच (Contraction of meaning)
3. अर्थादेश (Transforence of meaning)

अर्थविस्तार- किसी अर्थविशेष के क्षेत्र का पूर्व की अपेक्षा बाद में बढ़ जाना ही अर्थविस्तार है। जब पहले शब्द के अर्थ का क्षेत्र सीमित हो और बाद में उसकी सीमा का विस्तार हो जाय तो उसे अर्थविस्तार कहते हैं।

जैसे- 'प्रवीण' प्रवीण शब्द का अर्थ पहले 'प्रकृष्टो-वीणायाम्' अर्थात् वीणावादन में निपुण था, बाद में किसी भी कार्य में आगे रहने वाले को प्रवीण कहा जाने लगा।

अन्य उदाहरण- कुशल, गोष्ठ, गवेषणा, तैल आदि।

अर्थसंकोच- अर्थविस्तार का विपरीत ही अर्थसंकोच है। उनका विस्तृत अर्थ संकुचित या सीमित हो गया है। जैसे *गच्छतीति गौः चलने वाले को 'गो' (गाय) कहते हैं। मनुष्य भी चलता है, उसे गो (गाय) नहीं कह सकते।

* 'अश्नुते अध्वानम् इति अश्वः' सड़क पर चलने वाले को 'अश्व' (घोड़ा) कहते हैं। सभी सड़क पर चलने वाले को अश्व (घोड़ा) नहीं कह सकते।

मृग- पशु-मात्र के लिए था। अब केवल हिरन अर्थ रह गया है। अंग्रेजी का Deer भी पशुमात्र का वाचक था, अब 'हिरन' अर्थ रह गया है।

अर्थसंकोच के अन्य उदाहरण- जगत्, पंकज, अम्बुद (बादल), नीरधि (समुद्र), सर्प, पर्वत, तटस्थ, मन्दिर, सभ्य, श्राद्ध, तर्पण, अनुकूल, वेदना, घृणा आदि।

अर्थादेश- अर्थादेश का अर्थ है – एक अर्थ के स्थान पर दूसरे अर्थ का आ जाना। आदेश का अर्थ है- एक को हटाकर दूसरे का आना।

उदाहरण- असुर- मूल अर्थ असु+र देवता था। बाद में सुर (देवता) का उल्टा अ+सुर (राक्षस) अर्थ हो गया।

अन्य उदाहरण- वर (दूल्हा), सह्, मौन, देवानां प्रियः, पाषण्ड, आकाशवाणी, साहस, भद्र-भद्दा, मुग्ध, वाटिका-बाड़ी, कर्पट-कपड़ा आदि।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि अर्थसंकोच का उदाहरण मृग है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 338

22. निम्नलिखितेषु को ध्वनिः महाप्राणो नास्ति ?

(A) ध् (B) भ्

(C) ह् (D) ड्

व्याख्या- प्राण का अर्थ है- 'हवा' 'श्वास' या 'हवा की शक्ति' इस आधार पर कुछ व्यञ्जन अल्पप्राण कहे जाते हैं और कुछ महाप्राण

महाप्राण- जिन व्यञ्जनों के उच्चारण में हवा का आधिक्य हो या श्वास-बल अधिक हो, उन्हें महाप्राण (Aspirated) कहते हैं। 'ह' ध्वनि शुद्ध 'प्राण' से बहुत मिलती जुलती है, इसी कारण महाप्राण ध्वनियों को ह युक्त लिखा जाता है।

महाप्राण ध्वनियाँ- ख, घ, छ, झ, ठ, ढ, थ, ध, फ, भ, न्ह, म्ह, ल्ह, रह, ।

अल्पप्राण- जिन व्यञ्जनों के उच्चारण में हवा का आधिक्य न हो या श्वास बल कम हो, उन्हें 'अल्पप्राण' (Unaspirated) कहते हैं।

अल्पप्राण ध्वनियाँ- क, ग, ङ, च, ज, ञ, ट, ड, ण, त, द, न, प, ब, म, य, ल, र, ड़ ।

प्रयत्न के आधार पर व्यञ्जनों के मुख्यतः निम्नाङ्कित भेद होते हैं-

स्पर्श- (Stop) स्पर्श का अर्थ है 'छूना'। इसके उच्चारण में एक उच्चारण अवयव दूसरे का स्पर्श करता है।

उदाहरण- क से म तक के वर्ण ।

संघर्षी- (Fricative) इनके उच्चारण में दो उच्चारण अवयव एक दूसरे के इतने निकट चले जाते हैं कि दोनों के बीच से निकलने वाली हवा घर्षण या संघर्ष करती हुई बाहर निकालती है।

उदाहरण- स, ष, श, ह संघर्षी व्यञ्जन हैं।

स्पर्श संघर्षी- (Affricate) इन ध्वनियों के उच्चारण में प्रारम्भिक चरण स्पर्श का होता है, अन्तिम चरण संघर्ष का।

उदाहरण- चना, नाच।

नासिक्य- इनके उच्चारण में हवा नाक से निकलती है। ङ, ञ, ण, न, म नासिक्य व्यञ्जन हैं।

पार्श्विक- इनके उच्चारण में मुँह के मध्य भाग में दो अवयव एक दूसरे से मिलकर वायु को अवरुद्ध कर देते हैं, किन्तु हवा एक या दोनों पार्श्वों से निकलती रहती है।

उदाहरण- ल।

उक्षिप्त- इसके उच्चारण में जीभ ऊपर उठकर झटके से नीचे आती है।

जैसे- ड़, ढ़।

कम्पनजात- इसके उच्चारण में किसी अवयव की नोक में से वायु के प्रवाह से कम्पन्न होता है।

जैसे- र।

नोट- धीरेन्द्र वर्मा तथा बाबूराम सक्सेना ने हिन्दी 'र' को लुण्ठित कहा है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि महाप्राणध्वनियों में ड् की परिगणना नहीं है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- भाषाविज्ञान- भोलानाथ तिवारी, पेज-318-320

23. ऐश्वर्यं कस्य लक्षणं भवति-

(A) रजोगुणस्य (B) सत्त्वगुणस्य

(C) तमोगुणस्य (D) पुरुषस्य

व्याख्या- ईश्वरकृष्ण सांख्यकारिका में बुद्धि का लक्षण करते हुए उसके सात्त्विक एवं तामस धर्मों को बताते हैं-

बुद्धि (महत्)- 'अध्यवसायो बुद्धिः' निश्चय बुद्धि है। बुद्धि का स्वरूप अध्यवसाय है, यहाँ 'अध्यवसाय' से अर्थ प्रायः 'निश्चय' से है। अतः निश्चय ही बुद्धि है।

बुद्धि के आठ धर्म- धर्म, ज्ञान, विराग एवं ऐश्वर्य सत्त्वगुण की प्रधानता के कारण सात्त्विक तथा इनके ठीक विपरीत अधर्म, अज्ञान, राग तथा अनैश्वर्य तमोगुण की प्रधानता के कारण तामसिक माने गए हैं।

अध्यवसायो बुद्धिर्धर्मो ज्ञानं विराग ऐश्वर्यम्।
सात्त्विकमेतद्रूपं तामसमस्माद्विपर्यस्तम्॥ (का- 23)

ऐश्वर्यम्- अणिमा, लघिमा, गरिमा, महिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, वशित्व एवं ईशित्व- इन आठ सिद्धियों की प्राप्ति ही 'ऐश्वर्य' कहलाता है। सिद्धियों का प्रादुर्भाव भी बुद्धि का ही धर्म है, जो सत्त्वगुण के प्रभावी होने से प्राप्त होता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'ऐश्वर्यम्' यह सत्त्वगुण की प्रधानता के कारण बुद्धि का सात्त्विक धर्म माना जाता है, **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- सांख्यकारिका (का.-23)- राकेश शास्त्री, पेज 76

24. वेदान्तसारानुसारं तितिक्षायाः किं लक्षणम् अस्ति ?
(A) विहितानां कर्मणां विधिना परित्यागः
(B) मोक्षेच्छा
(C) शीतोष्णादिद्वन्द्वसहिष्णुता
(D) जन्ममरणबन्धनात् मुक्तिः

व्याख्या- 'साधनचतुष्टयसम्पन्न प्रमाता वेदान्त का अधिकारी होता है, ऐसा कहने से यह आकाङ्क्षा उत्पन्न होती है कि चार साधन कौन-कौन से हैं, अतः इनका वर्णन करते हुए कहते हैं-

साधनानि नित्यानित्यवस्तुविवेकेहामुत्रार्थफलभोगविराग-शमादिषट्कसम्पत्तिमुमुक्षुत्वानि।

साधन हैं- 1. नित्यानित्यवस्तुविवेक 2. इहामुत्रार्थफलभोगविराग 3.शमादिषट्कसम्पत्ति 4. मुमुक्षुत्व

नित्यानित्यवस्तुविवेक- केवल ब्रह्म ही नित्य वस्तु है और इससे भिन्न (प्रतीत होने वाला) सब कुछ अनित्य है, ऐसा प्रमाणों के द्वारा विवेचन करना नित्यानित्यवस्तुविवेक है।

नित्यानित्यवस्तुविवेकस्तावद् ब्रह्मैव नित्यं वस्तु ततोऽन्यद-खिलमनित्यमिति विवेचनम्।

इहामुत्रार्थफलभोगविराग- इस लोक में प्राप्त होने वाले माला चन्दन-कामिनी आदि विषयभोग जिस प्रकार कर्मजन्य होकर अनित्य हैं उसी प्रकार परलोक में प्राप्त होने वाले अमृतादि विषयभोग भी अनित्य हैं, इसलिए उन भोगों से अत्यन्त विरति का होना इहामुत्रार्थफलभोगविराग है ।

ऐहिकानां स्रक्चन्दनवनितादिविषयभोगानां कर्मजन्यतयानित्य-त्ववदामुष्मिकाणामप्यमृतादिविषयभोगानामनित्यतया तेभ्यो नितरां विरतिरिहामुत्रार्थफलभोगविरागः।

शमादयस्तु शमदमोपरतितितिक्षासमाधानश्रद्धाख्याः ।
शमादि हैं- शम, दम, उपरति, तितिक्षा, समाधान, श्रद्धा ।

शम- शमस्तावच्छ्रवणादिव्यतिरिक्तविषयेभ्यो मनसो निग्रहः।
श्रवण, मनन और निदिध्यासन से भिन्न विषयों से मन को हटा लेना ही शम है।

दम- दमो बाह्येन्द्रियाणां तद्व्यतिरिक्तविषयेभ्यो निवर्त्तनम्।
बाह्य इन्द्रियों को श्रवणादि के अतिरिक्त विषयों से हटाने को दम कहते हैं।

उपरति- निवर्तितानामेतेषां तद्व्यतिरिक्तविषयेभ्य उपरमणमुपरतिः, अथवा विहितानां कर्मणां विधिना परित्यागः।
फिर से विषयों की ओर प्रवृत्त होने का उत्साह न रह जाने से स्थिर हो जाना उपरति है।

तितिक्षा- तितिक्षा शीतोष्णादिद्वन्द्वसहिष्णुता ।
शीत-उष्ण (मान-अपमान, लाभ-हानि, जय-पराजय, निन्दा-स्तुति, हर्ष-शोक) आदि द्वन्द्वों को सहन करना तितिक्षा है।

समाधान- निगृहीतस्य मनसः श्रवणादौ तदनुगुणविषये च समाधिः समाधानम्।
निगृहीत चित्त का श्रवणादि में तथा श्रवणादि के अनुकूल विषयों में स्थिर हो जाना समाधान है।

श्रद्धा- गुरूपदिष्टवेदान्तवाक्येषु विश्वासः श्रद्धा।
गुरु और वेदान्त वाक्यों में विश्वास होना ही श्रद्धा है।

मुमुक्षुत्व- मुमुक्षुत्वं मोक्षेच्छा।
मोक्ष की इच्छा से युक्त होना मुमुक्षुत्व है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'शीतोष्णादिद्वन्द्वसहिष्णुता' ही तितिक्षा है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज 20

25. 'अथातो धर्मजिज्ञासा' इति जैमिनीयसूत्रे वेदाध्ययनस्य दृष्टार्थत्वं को ब्रूते ?
(A) 'अथ' शब्दः (B) 'अतः' शब्द
(C) 'धर्म' शब्दः (D) 'जिज्ञासा' शब्दः

व्याख्या- महर्षि जैमिनिकृत बारह अध्यायों वाले मीमांसादर्शन का प्रकरणग्रन्थ है अर्थसंग्रह, जिसके रचनाकार लौगाक्षिभास्कर हैं।

* जैमिनि के मीमांसासूत्रों में 'अथातो धर्मजिज्ञासा' प्रथम सूत्र है।
* 'अथ' शब्द वेदाध्ययन की अनन्तरता का वाचक है । तथा 'अतः' शब्द वेदाध्ययन की दृष्टार्थता का बोधक है।
* शङ्कराचार्य ने 'अथ' शब्द का अर्थ आनन्तर्यवाचक और 'अतः' पद का अर्थ हेतुवाचक माना है।

'अर्थात् ब्रह्मजिज्ञासा' यह ब्रह्मसूत्र का प्रथमसूत्र है।
* महाभाष्यकार पतञ्जलि ने व्याकरण के महाभाष्य के प्रथम सूत्र 'अथ शब्दानुशासनम्' में 'अथ' शब्द का अर्थ अधिकार वाचक माना है।
* पातञ्जलयोगदर्शन के प्रथमसूत्र 'अथ योगानुशासनम्' के पहला शब्द 'अथ' अधिकार वाचक है। योगानुशासनम् अर्थात् योगशास्त्र (आरम्भ हुआ) जानना चाहिये।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि अतः शब्द 'वेदाध्ययन की दृष्टार्थता' का वाचक है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**
स्रोत- अर्थसंग्रह- राजेश्वरशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज-6-7

26. 'आदित्यो यूपः' इत्यत्र किंविधोऽर्थवादः ?
(A) भूतार्थवादः (B) अनुवादः
(C) निषेधशेषः (D) गुणवादः

व्याख्या- लौगाक्षिभास्कर कृत अर्थसंग्रह में अर्थवाद का लक्षण करते हुए बताते हैं-
'प्राशस्त्यनिन्दान्यतरपरं वाक्यम् अर्थवादः।'
प्रशंसापरक अथवा निन्दापरक वाक्य को अर्थवाद कहते हैं।
सः द्विविधः- विधिशेषो निषेधशेषश्चेति।
तत्र वायव्यं श्वेतमालभेत भूतिकाम इत्यादि विधिशेषस्य
अर्थवाद के दो प्रभेद हैं- (1) विधिशेष (2) निषेधशेष उनमें वायव्यं श्वेतमालभेत भूतिकामः (ऐश्वर्यप्राप्ति का इच्छुक व्यक्ति वायु देवता के लिए श्वेत पशु का आलम्भन करें।
स पुनस्त्रिधा- 'विरोधे गुणवादः स्यादनुवादोऽवधारिते। भूतार्थवादस्तद्धानादर्थवादस्त्रिधा मत' इति।
वह अर्थवाद पुनः तीन प्रकार का होता है-
1. गुणवाद 2. अनुवाद 3. भूतार्थवाद
गुणवाद- प्रमाणान्तरविरोधे सत्यर्थवादो गुणवादः। यथा 'आदित्यो यूप' इत्यादि।
जिस अर्थवाद का प्रमाणान्तर से विरोध हो वह गुणवाद कहा जाता है। यथा- आदित्यो यूपः। यूप आदित्य है इत्यादि।
अनुवाद- प्रमाणान्तरावगतार्थबोधकोऽर्थवादोऽनुवादः।
यथा- अग्निर्हिमस्य भेषजमित्यत्र हिमविरोधित्वऽस्याग्नौ प्रत्यक्षावगतत्वात्।
प्रमाणान्तर से अवगत अर्थ के बोधक अर्थवाद को अनुवाद कहा जाता है। जैसे- अग्निर्हिमस्य भेषजम् अग्नि शैत्य की ओषधि है। प्रकृत में प्रत्यक्ष प्रमाण से पूर्व से ही ज्ञात है कि अग्नि हिम का विरोधी है। अतः अनुवाद है।
भूतार्थवाद- प्रमाणान्तरविरोधतत्प्राप्तिरहितार्थ-बोधकोऽर्थवादो भूतार्थवादः। यथेन्द्रो वृत्राय वज्रमुदयच्छदित्यादि।
जिसका दूसरे किसी प्रमाण से विरोध न हो रहा हो एवं जिसके द्वारा अवबोधित अर्थ प्रमाणान्तर से सम्भव नहीं हो उसे भूतार्थवाद कहा जाता है।
जैसे- 'इन्द्रो वृत्राय वज्रमुदयच्छत्' इन्द्र ने वृत्र का हनन करने के लिए वज्र उठा लिया।

अर्थवाद
(1) गुणवाद (2) अनुवाद (3) भूतार्थवाद

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त से स्पष्ट है कि 'आदित्यो यूपः' गुणवाद का उदाहरण है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**
स्रोत- अर्थसंग्रह- राजेश्वरशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज- 350

27. यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत् क्वचित् इति उक्तिः कस्य विषये ?
(A) योगवाशिष्ठस्य (B) श्रीमद्भागवतस्य
(C) महाभारतस्य (D) मृच्छकटिकस्य

व्याख्या- विश्व-साहित्य में सबसे बड़ा ग्रन्थ महाभारत ही है जिसमें एक लाख से कुछ अधिक श्लोक हैं। यह भारत के सांस्कृतिक विषयों का विराट् कोश तथा आचार की संहिता है। महाभारत के सन्दर्भ में लोकोक्ति है-
* **धर्मे चार्थे च कामे च मोक्षे च भरतर्षभ।
यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत् क्वचित्॥ (1/62/53)**
* **'यन्न भारते तन्न भारते ।'** जो बातें महाभारत में नहीं हैं वे भारतवर्ष में नहीं होती हैं।
रामायण- महर्षि वाल्मीकिकृत रामायण में चौबीस सहस्र पद्य या श्लोक हैं। इसीलिए इसे 'चतुर्विंशतिसाहस्री संहिता' कहते हैं। रामायण सात काण्डों में विभक्त है। रामायण के प्रसङ्ग में लोकोक्ति कही गयी है-
**रम्या रामायणी कथा।
यावत्स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महीतले।
तावद् रामायणकथा लोकेषु प्रचरिष्यति॥ (1.2.37)**
श्रीमद्भागवत- यह 18 महापुराणों के अन्तर्गत सर्वाधिक प्रसिद्ध महापुराण है। इसमें 18 हजार श्लोक हैं। द्वादश स्कन्धात्मक व्यासरचित इस महापुराण में उच्चकोटि के दर्शन, औपनिषदिक अध्यात्म की व्याख्या मिलती है- **'विद्यावतां भागवते परीक्षा ।'**
मृच्छकटिकम्- मृत्+शकटिकम् अर्थात् 'मिट्टी की गाड़ी' का वर्णन प्रमुख है। जिसके कारण मृच्छकटिकम् नाम पड़ा। यह शूद्रक प्रणीत एक प्रकरणग्रन्थ है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि यदिहास्ति तदन्यत्र--- यह उक्ति महाभारत के लिए प्रसिद्ध है।

अतः विकल्प 'C' सही है।

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज 117

28. श्रीमद्भगवद्गीता महाभारतस्य कस्मिन् पर्वणि वर्तते?

(A) कर्ण-पर्वणि (B) भीष्म-पर्वणि
(C) अनुशासन-पर्वणि (D) शान्ति-पर्वणि

व्याख्या-

* श्रीमद्भगवद्गीता महाभारत के भीष्मपर्व से उद्धृत है।
* महाभारत के आदिपर्व से अभिज्ञानशाकुन्तलम् उद्धृत है।
* महाभारत के सभापर्व से शिशुपालवधम् का अवतरण हुआ है।
* महाभारत के वनपर्व से नैषधीयचरितम् और किरातार्जुनीयम् यह दोनों महाकाव्य अवतरित हैं।

पर्व	विषय वर्णन
आदिपर्व	चन्द्रवंश का इतिहास
सभापर्व	कौरव पाण्डवों की उत्पत्ति
वनपर्व	पाण्डवों का वनवास
विराटपर्व	पाण्डवों का अज्ञातवास
उद्योगपर्व	श्रीकृष्ण का दौत्यकर्म
भीष्मपर्व	अर्जुन को गीता का उपदेश, युद्ध का प्रारम्भ, भीष्म का आहत होना
द्रोणपर्व	अभिमन्यु एवं द्रोणवध
कर्णपर्व	कर्ण का युद्ध और वध
शल्यपर्व	शल्य का युद्ध और वध
सौप्तिकपर्व	सोते हुए पाण्डवों के पुत्रों का अश्वत्थामा द्वारा वध
स्त्रीपर्व	शोकाकुल स्त्रियों का विलाप
शान्तिपर्व	युधिष्ठिर को भीष्म द्वारा ज्ञान दिया जाना
अनुशासनपर्व	धर्म एवं नीति की कथाएँ, भीष्म का स्वर्गारोहण
आश्वमेधिकपर्व	युधिष्ठिर द्वारा अश्वमेध का अनुष्ठान
आश्रमवासिकपर्व	धृतराष्ट्र आदि का वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश
मौसलपर्व	यादवों का पारस्परिक संघर्ष और नाश
महाप्रस्थानिकपर्व	पाण्डवों की हिमालय यात्रा
स्वर्गारोहणपर्व	पाण्डवों का स्वर्गारोहण

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि श्रीमद्भगवद्गीता 'भीष्मपर्व' से ली गयी है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा, पेज 158

29. वाल्मीकिरामायणानुसारं दशरथस्य पुत्रेष्टियज्ञे पुरोहित आसीत् ।

(A) वसिष्ठः (B) ऋष्यश्रृङ्गः
(C) भरद्वाजः (D) विश्वामित्रः

व्याख्या- वाल्मीकिकृत आदिकाव्य रामायण में सात काण्ड हैं। पहले काण्ड अर्थात् बालकाण्ड में दशरथ के पुत्रेष्टि यज्ञ के पुरोहित ऋष्यश्रृङ्ग थे।

ऋष्यश्रृङ्गस्तु जामाता पुत्रांस्तव विधास्यति। (रामा. 01.9.19)

वशिष्ठ- राजा दशरथ के कुलगुरु थे। रामायण में दशरथ वशिष्ठ से कहते हैं कि-

*** अभिवाद्य वसिष्ठं च न्यायतः प्रतिपूज्य च।** (1.13.2)

वसिष्ठ जी को प्रमाण करके राजा ने न्यायतः उनका पूजन किया।

***भवान् स्निग्धः सुहृन्मह्यं गुरुश्च परमो महान्। (1.13.4)**

आप मेरे सुहृद्-अकारण हितैषी, गुरु और परम महान् हैं।

भरद्वाज- भरद्वाज महर्षि वाल्मीकि के शिष्य थे।

एवमुक्तो भरद्वाजो वाल्मीकेन महात्मना। (1.2.7)

महात्मा वाल्मीकि के ऐसा कहने पर नियमपरायण शिष्य भरद्वाज ने अपने गुरु मुनिवर वाल्मीकि को वल्कल वस्त्र दिया।

स शिष्यहस्तादादाय वल्कलं नियतेन्द्रियः। (1.2.8)

शिष्य के हाथ से वल्कल वस्त्र लेकर वे जितेन्द्रिय मुनि वहाँ की विशाल शोभा देखते हुए सब ओर विचरने लगे।

विश्वामित्र- कुशिकवंशी गाधिपुत्र विश्वामित्र राजा दशरथ से राम-लक्ष्मण को लेने आये थे-

शीघ्रमाख्यात मां प्राप्तं कौशिकं गाधिनः सुतम्। (1.18.39)

अभ्यागच्छन्महातेजा विश्वामित्रो महामुनिः। (1.18.38)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि दशरथ के पुत्रेष्टियज्ञ के पुरोहित ऋष्यश्रृङ्ग हैं। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- वाल्मीकि रामायण (बालकाण्ड सर्ग-15) गीता प्रेस, पेज 62

30. वाल्मीकिरामायणानुसारं शम्बूकः केन हतः?

(A) दशरथेन (B) रामेण
(C) परशुरामेण (D) भरतेन

व्याख्या- वाल्मीकि कृत आर्षकाव्य रामायण के उत्तरकाण्ड में श्रीराम के द्वारा शम्बूकवध का वर्णन प्राप्त होता है-

शूद्रं मां विद्धि काकुत्स्थ शम्बूको नाम नामतः। (उत्तरकाण्ड 76.3)

देवलोक पर विजय पाने की इच्छा से ही तपस्या में लगा हूँ। आप मुझे शूद्र समझिये। मेरा नाम शम्बूक है।

भाषतस्तस्य शूद्रस्य खड्गं सुरुचिरप्रभम्।
निष्कृष्य कोशाद् विमलं शिरश्चिच्छेद राघवः॥ (उत्तरकाण्ड. 76.4)
श्रीरामचन्द्र जी ने म्यान से चमचमाती हुई तलवार खींच ली और उसी से उसका सिर काट लिया।
श्रीराम द्वारा विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा के समय राक्षसों का संहार और ताटका वध।
शरेणोरसि विव्याध सा पपात ममार च। (1.26.25)
श्रीराम ने एक बाण मारकर उसकी (ताटका) छाती चीर डाली तब ताटका पृथ्वी पर गिरी और मर गयी।
राम के द्वारा त्रिशिरा का वध-
रामश्चिच्छेद बाणेन ध्वजं चास्य समुच्छ्रितम्।
ततो हतरथात् तस्मादुत्पतन्तं निशाचरम्॥
चिच्छेद रामस्तं बाणैर्हृदये सोऽभवज्जडः। (3.27.16)
श्रीराम ने एक बाण से उसकी ध्वजा भी काट डाली ।
तदन्तर जब वह उस नष्ट हुए रथ से कूदने लगा, उसी समय श्रीराघवेन्द्र ने अनेक बाणों द्वारा उस निशाचर की छाती छेद डाली। फिर तो वह जडवत् हो गया।

खर का वध-

स पपात खरो भूमौ दह्यमानः शराग्निना।
रुद्रेणेव विनिर्दग्धः श्वेतारण्ये यथान्धकः॥ (3.30.27)
दण्डकवन में श्रीराम के उस बाण की आग में जलता हुआ निशाचर खर पृथ्वी पर गिर पड़ा।
वालिवध- राम ने किष्किन्धाकाण्ड में वालिवध किया-
राघवेण महाबाणो वालिवक्षसि पातितः। (4.16.35)
श्रीरघुनाथ जी ने वज्र की भाँति गड़गड़ाहट और प्रज्वलित अशनि की भाँति प्रकाश पैदा करने वाला वह महान् बाण छोड़ दिया तथा उसके द्वारा वाली के वक्षस्थल पर चोट पहुँचायी।

कुम्भकर्ण का वध-

चकर्त रक्षोऽधिपतेः शिरस्तदा
यथैव वृत्रस्य पुरा पुरंदरः। (6.67.167)
राम ने उस बाण से राक्षसराज कुम्भकर्ण के महान् पर्वत शिखर के समान ऊँचे, सुन्दर गोलाकार दाढों से युक्त तथा हिलते हुए मनोहर कुण्डलों से अलङ्कृत मस्तक को धड़ से अलग कर दिया।

रावणवध-

बिभेद हृदयं तस्य रावणस्य दुरात्मनः। (6.108.18)
महान् वेगशाली श्रेष्ठ बाण ने छूटते ही दुरात्मा रावण के हृदय को विदीर्ण कर डाला।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि वाल्मीकिरामायणानुसार शम्बूक को राम ने मारा था। **अतः विकल्प 'B' सही है।**
स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा ऋषि, पेज 127

31. महापुराणेषु न गण्यते-
(A) एकाम्रपुराणम् (B) ब्रह्मपुराणम्
(C) लिङ्गपुराणम् (D) पद्मपुराणम्

व्याख्या- * पुराण का विकास दो रूप में हुआ है- महापुराण और उपपुराण।
* महापुराण प्राचीनतर हैं जिनकी संख्या अठारह है।
मद्वयं भद्वयं चैव ब्रत्रयं वचतुष्टयम्।
अनापलिंगकूस्कानि पुराणानि पृथक्-पृथक्॥

म से = मत्स्य और मार्कण्डेय पुराण
भ से = भविष्य और भागवत पुराण
ब्र से = ब्रह्म, ब्रह्माण्ड, ब्रह्मवैवर्त पुराण
व से = विष्णु, वामन, वराह तथा वायु पुराण
अ से = अग्नि पुराण
ना से = नारद पुराण
प से = पद्म पुराण
लिं से = लिङ्ग पुराण
ग से = गरुड़ पुराण
कू से = कूर्म पुराण
स्क से= स्कन्द पुराण

उपपुराण- इनकी भी संख्या अठारह है।
1. सनत्कुमार 2. नारसिंह 3. स्कान्द (शिव) 4. शिवधर्म 5. आश्चर्य 6. नारदीय 7. कापिल 8. औशनस 9. वारुण 10. कल्कि 11. कालिका 12. माहेश्वर 13. साम्ब 14. सौर 15. पाराशर 16. मारीच 17. भार्गव 18. नन्द।

पुराणों का अन्य विभाजन-

* सात्त्विक, तामस और राजस के रूप में हुआ है जो क्रमशः विष्णु, शिव और ब्रह्मा या अन्य देवताओं को महत्त्व देने के आधार पर है।
सात्त्विक (वैष्णव) पुराण- विष्णु, नारद, भागवत, गरुड़, पद्म तथा वराह
तामस (शैव) पुराण- मत्स्य, कूर्म, लिङ्ग, शिव, अग्नि, स्कन्द
राजस (ब्राह्म) पुराण- ब्रह्माण्ड, ब्रह्मवैवर्त, मार्कण्डेय, ब्रह्म, वामन तथा भविष्य
1. ब्रह्म 2. पद्म 3. विष्णु 4. वायु 5. भागवत 6. नारद 7. मार्कण्डेय 8. अग्नि 9. भविष्य 10. ब्रह्मवैवर्त 11. लिङ्ग 12. वराह 13. स्कन्द 14. वामन 15. कूर्म 16. मत्स्य 17. गरुड़ 18. ब्रह्माण्ड

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि महापुराणों में 'एकाम्रपुराण' की गणना नहीं होती है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा ऋषि, पेज – 176

32. कौटिल्यानुसारं मानवाः कां विद्यां पृथक् न मन्यन्ते-

(A) आन्वीक्षकीम् (B) त्रयीम्
(C) वार्ताम् (D) दण्डनीतिम्

व्याख्या- कौटिल्यकृत अर्थशास्त्र में पन्द्रह अधिकरण हैं। विनयाधिकारिक नामक प्रथम अधिकरण में चार विद्याओं की चर्चा की गयी है-

आन्वीक्षकी, त्रयी, वार्ता और दण्डनीति- ये चार विद्याएँ हैं-

आन्वीक्षकी त्रयी वार्ता दण्डनीतिश्चेति विद्याः।

मनु के अनुसार- 'त्रयीवार्ता दण्डनीतिश्चेति मानवाः। त्रयीविशेषो आन्वीक्षकीति।' मनु सम्प्रदाय के अनुयायी आचार्य त्रयी, वार्ता और दण्डनीति इन तीन विद्याओं को मानते हैं। उनका मत है कि आन्वीक्षकी का समावेश त्रयी के अन्तर्गत हो जाता है।

आचार्य बृहस्पति के अनुसार- 'वार्ता दण्डनीतिश्चेति बार्हस्पत्याः संवरणमात्रं हि त्रयी लोकयात्राविद इति।' आचार्य बृहस्पति के अनुयायी विद्वान् केवल दो ही विद्याएँ मानते हैं- वार्ता और दण्डनीति। उनके मतानुसार त्रयी तो दुनियादार लोगों की आजीविका का साधनमात्र है।

शुक्राचार्य के अनुसार- 'दण्डनीतिरेका विद्येत्यौशनसाः तस्यां हि सर्वविद्यारम्भाः प्रतिबद्धा इति'।

शुक्राचार्य के अनुयायी विद्वानों ने तो केवल दण्डनीति को ही विद्या माना है, उसी को सम्पूर्ण विद्याओं का स्थान एवं कारण स्वीकार किया है।

आचार्य कौटिल्य के अनुसार- 'चतस्र एव विद्या इति कौटिल्यः। ताभिर्धर्मार्थौ यद्विद्यात्तद्विद्यानां विद्यात्वम्।'

आचार्य कौटिल्य उक्त चारों विद्याओं को मानते हैं और उनकी यथार्थता धर्म तथा अधर्म के ज्ञान को बताते हैं।

सांख्यं योगो लोकायतं चेत्यान्वीक्षकी ।

सांख्य, योग, लोकायत ये आन्वीक्षकी विद्या के अन्तर्गत हैं।

आचार्य	**विद्या**
मनु	त्रयी, वार्ता, दण्डनीति
बृहस्पति	वार्ता, दण्डनीति
शुक्राचार्य	दण्डनीति
कौटिल्य	आन्वीक्षकी, त्रयी, वार्ता, दण्डनीति

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि मनु के अनुसार विद्या तीन हैं- त्रयी, वार्ता, दण्डनीति । **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- कौटिलीय अर्थशास्त्र - वाचस्पति गैरोला, पेज 08

33. कौटिल्यानुसारं त्रयीं के संवरणमात्रं मन्यन्ते ?

(A) मानसाः (B) मानवाः
(C) बार्हस्पत्याः (D) औशनसाः

व्याख्या- कौटिलीय अर्थशास्त्र में 180 प्रकरण, 150 अध्याय और 15 अधिकरण, 6000 श्लोक हैं।

* इसके मङ्गलाचरण में शुक्र और बृहस्पति को नमस्कार किया गया है।
* प्रथम प्रकरण के प्रथम अध्याय में विद्यासमुद्देशः आन्वीक्षकी स्थापना का वर्णन है।
* प्रथम प्रकरण के द्वितीय अध्याय में त्रयीस्थापना का वर्ण्य विषय है।
* प्रथम प्रकरण के अध्याय तीन में वार्तादण्डनीतिस्थापना विषय की चर्चा की गयी है।
* आन्वीक्षकी विद्या सर्वदा ही सब विद्याओं का प्रदीप, सभी कार्यों का साधन और सब धर्मों का आश्रय मानी गई है।

प्रदीपः सर्वविद्यानामुपायः सर्वकर्मणाम्।
आश्रयः सर्वधर्माणां शश्वदान्वीक्षकी मता॥

बृहस्पति ने विद्या के विषय में कहा है-

संवरणमात्रं हि त्रयी लोकयात्राविद इति।

आचार्य बृहस्पति के अनुयायी विद्वान् केवल दो ही विद्याओं को मानते हैं। वार्ता और दण्डनीति।

उनके मतानुसार त्रयी तो दुनियादार लोगों की आजीविका का साधनमात्र है।

त्रयी- सामर्ग्यजुर्वेदास्त्रयस्त्रयी। साम,ऋक्, यजुः इन तीनों वेदों का समन्वित नाम ही त्रयी है।

वार्ता- कृषिपाशुपाल्ये वाणिज्या च वार्ता।

कृषि पशुपालन और व्यापार ये वार्ताविद्या के विषय हैं।

दण्डनीति- आन्वीक्षकीत्रयीवार्तानां योगक्षेमसाधनो दण्डः तस्य नीतिः दण्डनीतिः।

आन्वीक्षकी, त्रयी, वार्ता इन सभी विद्याओं की सुख- समृद्धि दण्ड पर निर्भर है। दण्ड को प्रतिपादित करने वाली नीति ही दण्डनीति कहलाती है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'कौटिल्यानुसार त्रयी को संवरणमात्र बृहस्पति मानते हैं।' **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- कौटिलीय अर्थशास्त्र- वाचस्पति गैरोला, पेज 08

34. मनुसंहितानुसारम् एषु किं ब्राह्मणस्य कर्म न भवति-

(A) अध्यापनम् (B) प्रजारक्षणम्
(C) यजनम् (D) याजनम्

व्याख्या- आचार्य मनु प्रणीत मनुस्मृति में 12 अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में ब्राह्मणादि चारों वर्णों के कर्मों की चर्चा की गयी है-

ब्राह्मण-

अध्यापनमध्ययनं यजनं याजनं तथा।
दानं प्रतिग्रहं चैव ब्राह्मणानामकल्पयत्।। (1.88)

पढ़ना, पढ़ाना, यज्ञ करना, यज्ञ कराना, दान देना, दान लेना ये छः कर्म ब्राह्मणों के रचे गये हैं।

क्षत्रिय-

प्रजानां रक्षणं दानमिज्याध्ययनमेव च।
विषयेष्वप्रसक्तिश्च क्षत्रियस्य समासतः।। (1.89)

प्रजा की रक्षा, दान देना, यज्ञ करना, पढ़ना और विषयों में न लगना ये क्षत्रिय के कर्म संक्षेप से बनाए।

वैश्य-

पशूनां रक्षणं दानमिज्याध्ययनमेव च।
वाणिक्पथं च कुसीदं च वैश्यस्य कृषिमेव च।। (1.90)

पशुओं की रक्षा, दान देना, यज्ञ करना, पढ़ना, व्यापार, ब्याज और खेती ये कर्म वैश्य के बनाए।

शूद्र-

एकमेव तु शूद्रस्य प्रभुः कर्म समादिशत्।
एतेषामेव वर्णानां शुश्रूषामनसूयया।। (1.91)

प्रभु ने शूद्र का एक ही कर्म बनाया है कि वह इन चारों वर्णों की निष्कपट होकर सेवा करें।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि ब्राह्मण का कर्म प्रजारक्षण करना नहीं है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- मनुस्मृति - गिरिधर गोपाल शर्मा, पेज 45

35. मनुसंहितानुसारं सचिवानां संख्या भवेत् ?

(A) 3-4 (B) 5-6
(C) 7-8 (D) 9-10

व्याख्या-

*** सचिवों की संख्या-**

मनुकृत मनुस्मृति द्वादश अध्यायों में विभक्त है। जिसके सातवें अध्याय में राजादि का वर्णन किया गया है-

मौलाञ्छास्त्रविदः शूराँल्लब्धलक्षान्कुलोद्भवान्।
सचिवान्सप्त चाष्टौ वा प्रकुर्वीत परीक्षितान्।। (7/54)

वंशपरम्परागत, शास्त्रों के जानने वाले, शूर, शस्त्रविद्या में निपुण, कुलीन और परीक्षित ऐसे सात या आठ मन्त्रियों को राजा नियुक्त करें।

*** व्यसनों की संख्या-**

दश कामसमुत्थानि तथाष्टौ क्रोधजानि च।
व्यसनानि दुरन्तानि प्रयत्नेन विवर्जयेत्।। (7/45)

काम से उत्पन्न हुए दस व्यसन और क्रोध से उत्पन्न हुए आठ व्यसन हैं, इन व्यसनों को राजा यत्नपूर्वक छोड़ दे क्योंकि ये अन्त में दुस्सह कष्टदायक हैं।

*** कामज दोषों की संख्या-**

मृगयाऽक्षो दिवास्वप्नः परिवादः स्त्रियो मदः।
तौर्यत्रिकं वृथाट्या च कामजो दशको गणः।। (7/47)

मृगया, जुआ खेलना, दिन में सोना, पराया दोष कहना, स्त्रियों में आसक्ति, मद्यपान, बजाना, नाचना, गाना और वृथा घूमना ये दस (दोष) काम से उत्पन्न होते हैं।

*** क्रोधज दोषों की संख्या-**

पैशुन्यं साहसं ईर्ष्यासूयार्थदूषणम्।
वाग्दण्डजं च पारुष्यं क्रोधजोऽपि गणोऽष्टकः।। (7/48)

चुगली, दुःसाहस, द्रोह, ईर्ष्या, असूया (गुणों में दोष निकालना) दूसरे की वस्तु हरना, कठोर वचन बोलना और अनुचित दण्ड देना ये आठ दोष क्रोध से उत्पन्न हैं।

सर्वेषां तु विशिष्टेन ब्राह्मणेन विपश्चिता।
मन्त्रयेत्परमं मन्त्रं राजा षाड्गुण्यसंयुतम्।। (7/58)

राजा को चाहिये कि सन्धि, विग्रह, यान, आसन, द्वैध और आश्रय इन छः विषयों की सलाह मन्त्रियों में से धार्मिक पण्डित और ब्राह्मण के साथ करें।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि मनु के अनुसार सचिवों की संख्या 7-8 होनी चाहिये। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- मुनुस्मृति - गिरिधर गोपाल शर्मा (7/45)

36. 'याज्ञवल्क्यस्मृत्यनुसारं रिक्ते स्थाने कः शब्दः उपयुक्तः 'दर्शने प्रत्यये दाने .... विधीयते।'

(A) व्यवहारम् (B) प्रातिभाव्यम्
(C) ऋणादानम् (D) वाक्पारुष्यम्

व्याख्या-

* याज्ञवल्क्यस्मृति के रचयिता याज्ञवल्क्य वैदिक ऋषि हैं, वे शुक्लयजुर्वेद के द्रष्टा थे।
* याज्ञवल्क्यस्मृति में लगभग एक हजार श्लोक और वह अनुष्टुप् छन्द में हैं।
* याज्ञवल्क्यस्मृति तीन भागों में विभक्त है-
(1) आचाराध्याय (2) व्यवहाराध्याय (3) प्रायश्चित्ताध्याय
* याज्ञवल्क्यस्मृति के सुप्रसिद्ध टीकाकार विश्वरूप, विज्ञानेश्वर

और अपरार्क ने वृद्ध याज्ञवल्क्य को अनेक बार उद्धृत किया है।

* **दर्शने प्रत्यये दाने प्रातिभाव्यं विधीयते।**
आद्यौ तु वितथे दाप्याावितरस्य सुता अपि॥ (2.53)

दर्शन (दिखा देना), प्रत्यय (विश्वास दिलाना) और दान (स्वयं देने की प्रतिज्ञा) को प्रातिभाव्य (प्रतिभू या जामिन होना) कहते हैं। प्रथम दो प्रकार का प्रातिभाव्य करने वाले झूठा पड़े तो राजा उनसे धनी व्यक्ति को दिलावे, तीसरे प्रकार का प्रातिभाव्य करने वाले के झूठा पड़ने पर उसके पुत्रों से भी वह धन वसूल करें।

* **स्मृत्योर्विरोधे न्यायस्तु बलवान् व्यवहारतः।**
अर्थशास्त्रात्तु बलवद्धर्मशास्त्रमिति स्थितिः॥ (2.21)

जब दो स्मृतियों (धर्मशास्त्र के वचनों) में परस्पर विरोध हो तो व्यवहार से दिया गया न्याय बलवान् होता है।
अर्थशास्त्र की अपेक्षा धर्मशास्त्र का प्रमाण अधिक सबल होता है।

* **स्मृत्याचारव्यपेतेन मार्गेणाऽऽधर्षितः परैः।**
आवेदयति चेद्राज्ञे व्यवहारपदं हि तत्॥ (2.5)

यदि धर्मशास्त्र और समय के आचार के विरुद्ध ढंग से दूसरों द्वारा पीड़ित होकर राजा निवेदन करें तो वह व्यवहार का विषय होता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'दर्शने प्रत्यये दाने प्रतिभाव्यम् विधीयते'। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- याज्ञवल्क्यस्मृति - उमेश चन्द्र पाण्डेय, पेज 211

37. रघुवंशस्य चतुर्दशसर्गस्य नाम किम् ?
(A) सीतापवादः (B) सीतापरित्यागः
(C) श्रीराममनस्तापः (D) सीतावनवासः

व्याख्या-

	सर्ग संख्या	सर्गों का नाम	श्लोक
1.	प्रथम	वशिष्ठाश्रमाभिगमन	95
2.	द्वितीय	नन्दिनीवरदान	75
3.	तृतीय	रघुराज्याभिषेक	70
4.	चतुर्थ	रघुदिग्विजय	88
5.	पञ्चम	स्वयंवर अभिगमन	75
6.	षष्ठ	स्वयंवर वर्णन	86
7.	सप्तम	अजपाणिग्रहण	71
8.	अष्टम	अजविलाप	95
9.	नव	मृगयावर्णन	82
10.	दश	रामावतार	86
11.	एकादश	सीताविवाहवर्णन	93
12.	द्वादश	रावणवध	104
13.	त्रयोदश	दण्डकाप्रत्यागमन	79
14.	चतुर्दश	सीतापरित्याग	87
15.	पञ्चदश	श्रीरामस्वर्गारोहण	103
16.	षोडश	कुमुद्वती परिणय	88
17.	सप्तदश	अतिथि वर्णन	81
18.	अष्टादश	वंशानुक्रम	53
19.	नवदश (एकोनविंशति)	अग्निवर्णशृङ्गार	57

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि रघुवंश के चौदहवें सर्ग का नाम 'सीतापरित्याग' है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- रघुवंशम् - हरगोविन्द मिश्र, पेज 369

38. 'अतिदुर्धरो बान्धवस्नेहः सर्वप्रमाथी'-हर्षचरिते इयमुक्तिर्भवति-
(A) प्रभाकरवर्धनस्य (B) हर्षवर्धनस्य
(C) भाण्डिनः (D) यशोमत्याः

व्याख्या- हर्षचरितम् के पाँचवें उच्छ्वास में प्रभाकरवर्धन अपने छोटे पुत्र हर्षवर्धन से कहते हैं कि-
अतिदुर्धरो बान्धवस्नेहः सर्वप्रमाथी।
बान्धव का स्नेह अत्यन्त दुःखदायी और दुःसह होता है।

हर्षवर्धन- लोके हि लोहेभ्यः कठिनतराः खलु स्नेहमया बन्धनपाशाः।
सचमुच संसार में स्नेह के बन्धन पाश लोहे से भी बढ़कर कठोर होते हैं।

भाण्डि- 'देव! तृतीयमहः कृताहारस्यास्याद्य इति।' भाण्डि ने कहा राजा से- देव! आज तीन दिन बीत गए, इन्होंने अपना आहार नहीं किया।

यशोमती- 'नास्ति मत्समा सीमन्तिनी दुःखभागिनी'
मेरे समान दुखिया नारी कोई नहीं।

अन्य सूक्तियाँ- यशोमती का कथन
विधवानां यशसा ख्यातुमिच्छामि लोके न वपुषा। (पञ्चमोच्छ्वास)
हे वत्स! इस लोक में मैं, शरीर से नहीं, प्रत्युत विधवाओं के यश से रहना चाहती हूँ।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'अतिदुर्धरो बान्धवस्नेहः-' यह पंक्ति प्रभाकरवर्धन की है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- हर्षचरितम् (पञ्चम उच्छ्वास) - शिवनाथ पाण्डेय, पेज 60

39. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां मेलनतालिकां चिनुत-
क. अनङ्गोऽयमनङ्गत्वमद्य निन्दिष्यति ध्रुवम् - उत्तररामचरितम्
ख. उदेति पूर्वं कुसुमं ततः फलम् - कादम्बरी
ग. प्रभवति शुचिर्बिम्बग्राहे मणिर्न मृदादयः - रत्नावली
घ. न हि क्षुद्रनिर्घातपाताभिहता चलति वसुधा - अभिज्ञानशाकुन्तलम्

	क	ख	ग	घ
(A)	1	2	3	4
(B)	3	4	1	2
(C)	2	3	4	1
(D)	4	1	2	3

व्याख्या- हर्षकृत नाटिका रत्नावली के प्रथम अङ्क में राजा उदयन नायिका वासवदत्ता से कहते हैं कि-

अनङ्गोऽयमनङ्गत्वमद्य निन्दिष्यति ध्रुवम्।
यदनेन न सम्प्राप्तः पाणिस्पर्शोत्सवस्तव॥ (1/22)

यह अनङ्ग (कामदेव) आज निश्चय ही अपनी शरीरहीनता को धिक्कारेगा, क्योंकि इसने (शरीर न होने के कारण) तुम्हारे हस्तस्पर्श के आनन्द को नहीं प्राप्त किया।

* कालिदासकृत अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के सातवें अङ्क में राजा दुष्यन्त ऋषि मारीच से कहते हैं-

उदेति पूर्वं कुसुमं ततः फलं
घनोदयः प्राक् तदनन्तरं पयः।
निमित्तनैमित्तिकयोरयं क्रम-
स्तव प्रसादस्य पुरस्तु सम्पदः॥ (7/30)

भगवन् ! फूल आते हैं, फिर फल होते हैं। पहले बादल आते हैं, तत्पश्चात् वर्षा होती है। कारण और कार्य का यह क्रम है, किन्तु आपकी कृपा के आगे सम्पत्ति चलती है।

* महाकवि भवभूति प्रणीत उत्तररामचरितम् नाटक के द्वितीय अङ्क में आत्रेयी वनदेवता से कहती है-

वितरति गुरुः प्राज्ञे विद्यां यथैव तथा जडे
न तु खलु तयोर्ज्ञाने शक्तिं करोत्यपहन्ति वा।
भवति हि पुनर्भूयान्भेदः फलं प्रति तद्यथा
प्रभवति शुचिर्बिम्बग्राहे मणिर्न मृदादयः॥ (2/4)

गुरु जिस प्रकार व्युत्पन्न शिष्य को उसी प्रकार मन्द-बुद्धि शिष्य को भी विद्या देता है। वह उन दोनों शिष्यों के ज्ञान में न तो सामर्थ्य की वृद्धि करता है और न ही सामर्थ्य को नष्ट करता है। परन्तु (विद्या के) फल में बहुत अधिक अन्तर होता है, जैसे स्वच्छ मणि प्रतिबिम्ब को ग्रहण करने में समर्थ होते हैं, मिट्टी आदि पदार्थ नहीं।

बाणभट्ट प्रणीत कादम्बरी महाश्वेतावृत्तान्त में चन्द्रापीड-महाश्वेता के विषय में चिन्तन करता हुआ कहता है कि-

'नहि क्षुद्रनिर्घातपाताभिहता चलति वसुधेति।

इसकी (महाश्वेता) की ऐसी विकलता के पीछे अवश्य ही कोई महान् कारण है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'अनङ्गोऽयमनङ्गत्वमद्य'- यह सूक्ति रत्नावली से, 'उदेति पूर्वं कुसुमं ततः फलम्' यह अभिज्ञानशाकुन्तलम् से, प्रभवति शुचिर्बिम्बेग्राहे ...... यह उत्तररामचरितम् से न हि क्षुद्रनिर्घातपाताभिहता- यह कादम्बरी से सम्बन्धित है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- (A) रत्नावली (1.22), (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (7-30), (C) उत्तररामचरितम् (2-4), (D) कादम्बरी (महाश्वेतावृत्तान्त) - राजदेव मिश्र, पेज 31

40. 'अखण्डेषु कारणेषु फलावचः'- कस्य अलङ्कारस्य लक्षणम्

(A) विशेषोक्तेः (B) विभावनायाः
(C) समासोक्तेः (D) वक्रोक्तेः

व्याख्या- आचार्य मम्मटकृत काव्यप्रकाश के नवें उल्लास में शब्दालङ्कार और दसवें उल्लास में अर्थालङ्कारों का निरूपण किया गया है।

वक्रोक्ति- मम्मट ने वक्रोक्ति को शब्दालङ्कार के अन्तर्गत माना है जिसका लक्षण इस प्रकार है-

यदुक्तमन्यथावाक्यमन्यथाऽन्येन योज्यते।
श्लेषेण काक्वा वा ज्ञेया सा वक्रोक्तिस्तथा द्विधा॥

जो वक्ता द्वारा अन्य प्रकार से अन्य अर्थ में कहा हुआ वाक्य दूसरे के द्वारा श्लेष अर्थात् शब्द के दो अर्थ वाला होने से काकु अर्थात् बोलने के लहजे से, अन्य प्रकार से अर्थात् वक्ता के अभिप्राय से भिन्न अर्थ में लगा लिया जाता है, वह वक्रोक्ति नामक शब्दालङ्कार होता है। और वह उस प्रकार से श्लेष वक्रोक्ति और काकुवक्रोक्ति दो तरह का होता है।

उदाहरण-

गुरुजनपरतन्त्रतया दूरतरं देशमुद्यतो गन्तुम्।
अलिकुलकोकिलललिते नैष्यति सखि! सुरभि समयेऽसौ।

गुरुजनों (माता-पिता) के अधीन होने से (उनकी आज्ञा से) वे विदेश जाने को उद्यत हुए थे, उनकी इच्छा से नहीं इसलिए हे सखि, भ्रमरसमूह एवं कोकिलों की मधुर ध्वनि से मधुर वसन्त समय में नहीं लौटेंगे।

स्पष्टीकरण- यह नायिका और उसकी सखी के बीच की बातचीत है। नायिका ने निराशापूर्ण भाव से कहा है कि वे गुरुजनों के आज्ञाकारी हैं, उन्हें मेरी चिन्ता नहीं है, इसलिए वे वसन्त में लौटकर आयेंगे, यह आशा नहीं है। उसकी सखी इसी वाक्य को फिर भिन्नकण्ठध्वनि से बोलती है। तब नहीं आयेंगे का अर्थ अवश्य आवेंगे, यह हो जाता है। इसलिए यह काकुवक्रोक्ति का उदाहरण दिया है।

विशेषोक्ति- आचार्य मम्मट ने दसवें उल्लास में अर्थालङ्कारों के अन्तर्गत विशेषोक्ति, विभावना और समासोक्ति अलङ्कारों को रखा है।

विशेषोक्तिरखण्डेषु कारणेषु फलावचः।
सम्पूर्ण कारणों के होने पर फल का न कहना ही विशेषोक्ति है।
उदाहरण-
कर्पूर इव दग्धोऽपि शक्तिमान् यो जने जने।
नमोऽस्तु वार्यवीर्याय तस्मै मकरकेतवे॥
जो कामदेव कपूर के समान भस्म हो जाने पर भी जन-जन में शक्तिमान् हो गया है, उस अप्रत्याहत पराक्रमवाले कामदेव को नमस्कार है।
स्पष्टीकरण- यहाँ भस्म हो जाना शक्तिक्षय का कारण है। उसके विद्यमान होने पर भी कामदेव की शक्ति का क्षय नहीं हुआ है। यह कारण के होने पर भी कार्य के न होने से विशेषोक्ति अलङ्कार है।
विभावना-
क्रियायाः प्रतिषेधेऽपि फलव्यक्तिर्विभावना।
सम्पूर्ण कारणों के निषेध होने पर भी फल की उत्पत्ति (कहना) विभावना है।
उदाहरण-
कुसुमितलताभिरहताऽप्यधत्त रुजमलिकुलैरदष्टापि।
परिवर्त्तते स्म नलिनीलहरीभिरलोलिताप्यघूर्णत सा॥
स्पष्टीकरण- खिली हुई लताओं से ताडित न होने पर भी वह नायिका पीड़ा को प्राप्त हो रही थी, भ्रमर कुल से न काटे जाने पर भी तड़प रही थी और कमलिनियों से युक्त लहरों के चक्कर में पड़े बिना भी चक्कर खा रही थी।
यहाँ लताओं की चोट पीड़ा का हेतु हो सकती थी, भ्रमर का काटना तड़पने का और कमलिनियों की लहरों के चक्कर में फँस जाना चक्कर आने का कारण हो सकता था। परन्तु उन कारणों से निषेध होने पर भी कार्य को बताया गया। इसलिए विभावना अलङ्कार है।
समासोक्ति- परोक्तिर्भेदकैः श्लिष्टैः समासोक्तिः।
श्लेषयुक्त विशेषणों द्वारा अप्रकृत (के व्यवहार) का कथन 'समासेन संक्षेपेण उक्तिः' (दो अर्थों का संक्षेप से कथन होने के कारण) समासोक्ति अलङ्कार होता है।
उदाहरण-
लब्ध्वा तव बाहुस्पर्शं यस्याः स कोऽप्युल्लासः।
जयलक्ष्मीस्तव विरहे न खलूज्ज्वला दुर्बला ननु सा॥
तुम्हारे बाहु स्पर्श को पाकर जिसको वह कुछ अनिर्वचनीय प्रसन्नता होती है वह जयलक्ष्मी तुम्हारे वियोग में प्रसन्न नहीं है, निश्चय ही दुर्बल हो गयी है। यहाँ केवल विशेष्यवाचक जयलक्ष्मी शब्द कान्ता रूप अर्थ का वाचक नहीं है अपितु श्लेषयुक्त विशेषणों के द्वारा जयलक्ष्मी शब्द नायिका का बोधक भी है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'अखण्डेषु कारणेषु फलावचः' यह विशेषोक्ति का लक्षण है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**
स्रोत- काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज 498

41. 'शिखरिणि क्व नु नाम कियच्चिरं, किमभिधानमसावकरोत्तपः।' इत्यादि-श्लोकः ध्वन्यालोके उदाहरणरूपेण उल्लिखितः-
(A) अविवक्षितवाच्य-प्रसङ्गे
(B) अप्रस्तुतप्रशंसालङ्कारप्रसङ्गे
(C) विवक्षितान्यपरवाच्य-प्रसङ्गे
(D) दीपकालङ्कारप्रसङ्गे

व्याख्या- आचार्य आनन्दवर्धनकृत ध्वन्यालोक में चार उद्योत हैं। प्रथम उद्योत में ध्वनिकाव्य के भेद की चर्चा करते हैं-
स चाविवक्षितवाच्यो विवक्षितान्यपरवाच्यश्चेति द्विविधः सामान्येन।
वह (ध्वनि) सामान्यतः अविवक्षितवाच्य (लक्षणामूल) और विवक्षितान्यपरवाच्य (अभिधामूल) भेद से दो प्रकार का होता है। उनमें से प्रथम (अविवक्षितवाच्य, लक्षणामूल ध्वनि) का उदाहरण है-
उदाहरण-
सुवर्णपुष्पां पृथिवीं चिन्वन्ति पुरुषास्त्रयः।
शूरश्च कृतविद्यश्च यश्च जानाति सेवितुम्॥
सुवर्ण जिसका पुष्प है ऐसी पृथिवी का चयन अर्थात् पृथिवीरूप लता के सुवर्णरूप पुष्पों का चयन तीन ही पुरुष करते हैं- शूर, विद्वान् और जो सेवा करना जानता है।
दूसरे (विवक्षितान्यपरवाच्य, अभिधामूलध्वनि) का भी उदाहरण देते हैं-
शिखरिणि क्व नु नाम कियच्चिरं किमभिधानमसावकरोत्तपः।
सुमुखि येन तवाधरपाटलं दशति बिम्बफलं शुकशावकः॥
हे सुमुखि! इस शुकशावक ने किस पर्वत पर, कितने दिनों तक कौन सा तप किया है, जिसके कारण तुम्हारे अधर के समान रक्तवर्ण बिम्बफल को काट रहा है।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि शिखरिणि क्व नु-यह विवक्षितपरवाच्य, अभिधामूलध्वनि का उदाहरण है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**
स्रोत- ध्वन्यालोक – आचार्य विश्वेश्वर, पेज-56

42. कालक्रमानुसारं तालिकां चिनुत-
(i) अप्पयदीक्षितः (ii) भरतः (iii) विश्वनाथकविराजः (iv) वामनः

	क	ख	ग	घ
(a)	ii	iv	iii	i
(b)	ii	iv	i	iii
(c)	ii	i	iii	iv
(d)	i	ii	iv	iii

व्याख्या-

ग्रन्थकार	ग्रन्थ	काल
भरतमुनि	नाट्यशास्त्र	ई.पू. द्वितीय शताब्दी
भामह	काव्यालङ्कार	500 ई.
दण्डी	काव्यादर्श	सातवीं शताब्दी
उद्भट	काव्यालङ्कारसारसंग्रह	अष्टमशताब्दी का उत्तरार्ध
वामन	काव्यालङ्कारसूत्र	800-850 ई. लगभग
रुद्रट	काव्यालङ्कार	नवम शताब्दी का पूर्वार्द्ध
आनन्दवर्धन	ध्वन्यालोक	नवीं शताब्दी उत्तरार्ध
राजशेखर	काव्यमीमांसा	दशम शताब्दी
धनञ्जय/धनिक	दशरूपक	दशम शताब्दी का उत्तरार्ध
कुन्तक	वक्रोक्तिजीवितम्	एकादश शताब्दी का पूर्वार्द्ध
मम्मट	काव्यप्रकाश	1050 ई. (एकादश उत्तरार्ध)
आचार्य विश्वनाथ	साहित्यदर्पण	14वीं शताब्दी
अप्पयदीक्षित	कुवलयानन्द, चित्रमीमांसा	षोडश शताब्दी
पण्डितराज जगन्नाथ	रसगङ्गाधर	17वींशताब्दी का मध्यमान

कालक्रम- भरत-वामन-विश्वनाथ-अप्पयदीक्षित

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि भरतमुनि का काल ई.पू. द्वितीय शताब्दी, वामन का काल नवम शताब्दी, विश्वनाथ का काल 14वीं शताब्दी एवं अप्पयदीक्षित का काल 16वीं शताब्दी है। **अत: विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- काव्यप्रकाश-आचार्य विश्वेश्वर, पेज भू. 18,44,87,91

43.'प्रारभ्यते न खुल विघ्नभयेन नीचै:, प्रारम्भ विघ्नविहता: विरमन्ति मध्या:।' मुद्राराक्षसे कस्येयमुक्ति:?

(A) विराधगुप्तस्य (B) चाणक्यस्य
(C) राक्षसस्य (D) चन्द्रगुप्तस्य

व्याख्या- विशाखदत्त द्वारा प्रणीत मुद्राराक्षस सात अङ्कों का नाटक है। जिसके द्वितीय अङ्क में विराधगुप्त राक्षस को समझाते हुए कहता है-

प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः
प्रारम्भविघ्नविहता विरमन्ति मध्या:।
विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः
प्रारब्धमुत्तम गुणास्त्वमिवोद्वहन्ति॥ (2/17)

राक्षस के द्वारा चन्द्रगुप्त को मारने के लिए बनाई गई अपनी योजनाओं के पूर्णरूप से असफल हो जाने पर उसका गुप्तचर विराधगुप्त उसे समझाते हुए कहता है कि- निस्सन्देह विघ्नों के भय से नीच मनुष्यों के द्वारा कार्य प्रारम्भ नहीं किया जाता। मध्यम श्रेणी के मनुष्य प्रारम्भ करके विघ्नों से प्रताड़ित किए जाने पर छोड़ देते हैं। परन्तु विघ्नों के द्वारा बार-बार प्रताड़ित किए जाने पर भी उत्तम पुरुष प्रारम्भ किये हुए कार्य को नहीं छोड़ते।
यह श्लोक नीतिशतकम् में भी प्राप्त होता है। इस श्लोक में तीन श्रेणी के लोगों का वर्णन किया गया है- अधम, मध्यम और उत्तम। प्रथम अङ्क में सभा की प्रशंसा करते हुए सूत्रधार कहता है कि

* **चीयते बालिशस्यापि सत्क्षेत्रपतिता कृषि:।**
न शालेः स्तम्बकरिता वप्तुर्गुणमपेक्षते॥ (1/3)

एक मूर्ख की भी उपजाऊ भूमि पर बोई गई खेती वृद्धि को प्राप्त होती है। धान की सघनता बोने वाले के गुणों को नहीं देखती।

* **अत्यादरः शङ्कनीय:। (प्रथम अङ्क)**

चन्दनक का कथन- अत्यधिक आदर शंका उत्पन्न करता है।

* **पुरन्ध्रीणां प्रज्ञा पुरुषगुणविज्ञानविमुखी॥ (2/7)**

राक्षस का कथन- स्त्रियों की चञ्चल बुद्धि स्वभाव से मनुष्य के गुणों को पहचानने में विमुख होती है।

* **भव्यं रक्षति भवितव्यता। (द्वितीय अङ्क)**

विराधगुप्त राक्षस से कहता है- भाग्य भावी की रक्षा करता है।

* **'दैवमविद्वान्सः प्रमाणयन्ति'। (तृतीय अङ्क)**

चाणक्य का कथन- भाग्य को मूर्ख लोग मानते हैं।

* **श्रीर्लब्धप्रसरेव वेशवनिता दुःखोपचर्या भृशम् (3/5)**

चन्द्रगुप्त मन ही मन सोचता है- आश्चर्य है कि राजलक्ष्मी अतिप्रसिद्ध वाराङ्गना की भाँति अत्यन्त कष्ट से आराध्य होती है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से ज्ञात होता है कि प्रारभ्यते न खलु .... यह सूक्ति मुद्राराक्षस ग्रन्थ में विराधगुप्त का कथन है। **अत: विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- मुद्राराक्षसम् - परमेश्वरदीन पाण्डेय, पेज 118

44.'सिद्धिर्भ्रान्तिर्नास्ति सत्यं तथापि, स्वेच्छाचारी भीत एवास्मि भर्तुः' इत्युक्तिः रत्नावल्यां केन सम्बद्धा ?

(A) उदयनेन (B) वसन्तकेन
(C) बाभ्रव्येण (D) यौगन्धरायणेन

व्याख्या- महाकवि हर्ष द्वारा प्रणीत चार अङ्कों वाली रत्नावली नाटिका के प्रथम अङ्क में उदयन का प्रधानमन्त्री यौगन्धरायण कहता है कि-

* **प्रारम्भेऽस्मिन्स्वामिनो वृद्धिहेतौ दैवेनेत्थं दत्तहस्तावलम्बे। सिद्धेर्भ्रान्तिर्नास्ति सत्यं तथापि, स्वेच्छाचारी भीत एवास्मि भर्तुः॥ (1/7)**

स्वामी के चक्रवर्ती पद रूप अभ्युदय के कारणभूत इस कार्य में भाग्य के द्वारा इस तरह का हाथ का सहारा देने पर सफलता के

विषय में सन्देह नहीं करने वाला मैं स्वामी से डर रहा हूँ।

उदयन का कथन-

* **अचिन्त्यो हि मणिमन्त्रौषधीनां प्रभावः।**

रत्नावली के द्वितीय अङ्क में राजा उदयन कहते हैं कि मणि, मन्त्र और ओषधियों का प्रभाव अचिन्तनीय हुआ करता है। विदूषक राजा उदयन से द्वितीय अङ्क में कहता है कि-

* **सखि अतोऽपि मेऽधिकतरं सन्तापो वर्धते।**

सखि इससे भी मेरा सन्ताप अधिक बढ़ रहा है।

* **दुर्लभजनानुरागो लज्जा गुर्वी परवश आत्मा।**
प्रियसखि विषमं प्रेम मरणं शरणं न वरमेकम्॥ (2/7)

विदूषक वसन्तक अपने मित्र राजा उदयन से कहता है कि- इसने (सारिका ने) यह कहा है। दुर्लभ व्यक्ति के प्रति प्रेम है। भारी लज्जा है। अपना शरीर दूसरे के अधीन है। प्रिय सखि, इस तरह प्रेम सङ्कटों से भरा हुआ है। अतः मेरे लिये अब केवल मृत्यु ही सबसे अच्छा उपाय है।

बाभ्रव्य-

* **हा दैव, किमिदमकारणमेव भरतकुलं संशयतुलामारोपितम्।** (चतुर्थ अङ्क)

राजा उदयन का कञ्चुकी बाभ्रव्य है यह चतुर्थ अङ्क में कहता है कि- हे विधाता! क्यों अकारण ही भरतवंश को संशयतुला (सन्देहरूपी तराजू) पर चढ़ा दिया ?

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'सिद्धेर्भ्रान्तिर्नास्ति सत्यं तथापि-' यह सूक्ति यौगन्धरायण के द्वारा कही गयी है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- रत्नावली (1.7) - श्रीकृष्ण त्रिपाठी, पेज 12

45. दशरूपकानुसारं- बीजवन्तो मुखाद्यर्था विप्रकीर्णा यथायथम्। ऐकार्थ्यमुपनीयन्ते इत्यादि लक्षणं भवति-

(A) मुखसन्धेः (B) गर्भसन्धेः
(C) निर्वहणसन्धेः (D) प्रतिमुखसन्धेः

व्याख्या- धनञ्जय और धनिक द्वारा प्रणीत दशरूपक के प्रथम प्रकाश में पञ्चसन्धियों की चर्चा की गयी है-

मुखप्रतिमुखे गर्भः सावमर्शोपसंहृतिः।

मुख, प्रतिमुख, गर्भ, सावमर्श और उपसंहृति।

मुखसन्धि-

मुखं बीजसमुत्पत्तिर्नानार्थरससम्भवा।
अङ्गानि द्वादशैतस्य बीजारम्भसमन्वयात्॥ (1/24)

जहाँ अनेक प्रकार के प्रयोजन और रस को निष्पन्न करने वाली बीजोत्पत्ति होती है, वह मुखसन्धि है। बीज और आरम्भ से मिलकर इसके 12 अङ्ग होते हैं।

बारह अङ्गों के नाम- 1. उपक्षेप 2. परिकर 3.परिन्यास 4. विलोभन 5. युक्ति 6. प्राप्ति 7. समाधान 8. विधान 9. परिभावना 10. उद्भेद 11. भेद 12. करण।

(2) प्रतिमुखसन्धि-

लक्ष्यालक्ष्यतयोद्भेदस्तस्य प्रतिमुखं भवेत्।
बिन्दुप्रयत्नानुगमादङ्गान्यस्य त्रयोदश॥ (1/30)

जहाँ उस बीज का कुछ लक्ष्य रूप में और कुछ अलक्ष्य रूप में उद्भेद होता है वह प्रतिमुख सन्धि कहलाती है। बिन्दु + प्रयत्न से मिलकर इसके तेरह अंग होते हैं।

तेरह अङ्ग- 1. विलास 2. परिसर्प 3. विधूत 4. शम 5. नर्म 6. नर्मद्युति 7. प्रगमन 8. निरोध 9. पर्युपासन 10. वज्र 11. पुष्प 12. उपन्यास 13. वर्णसंहार।

(3) गर्भसन्धि-

गर्भस्तु दृष्टनष्टस्य बीजस्यान्वेषणं मुहुः।
द्वादशाङ्गः पताका स्यान्न वा स्यात्प्राप्तिसम्भवः॥ (1/36)

जहाँ दिखलाई देकर खोये हुए बीज का बार-बार अन्वेषण किया जाता है वह गर्भसन्धि है। इसमें पताका कहीं होती है कहीं नहीं भी होती, किन्तु प्राप्त्याशा नाम की कार्यावस्था होती ही है। इसके बारह अङ्ग हैं।

बारह अङ्ग- 1. अभूताहरण 2. मार्ग 3. रूप 4. उदाहरण 5. क्रम 6. संग्रह 7. अनुमान 8. तोटक 9. अधिबल 10. उद्वेग 11. संभ्रम 12. आक्षेप।

(4) अवमर्शसन्धि-

क्रोधेनावमृशेद्यत्र व्यसनाद्वा विलोभनात्।
गर्भनिर्भिन्नबीजार्थः सोऽवमर्श इति स्मृतः॥ (1/43)

जहाँ क्रोध से, व्यसन से अथवा प्रलोभन से विमर्श किया जाता है तथा जिसमें गर्भसन्धि द्वारा निर्भिन्नबीजार्थ का सम्बन्ध दिखलाया जाता है वह अवमर्श सन्धि है।

तेरह अङ्ग- 1. अपवाद 2. संफेट 3. विद्रव 4. द्रव 5. शक्ति 6. द्युति 7. प्रसङ्ग 8. छलन 9. व्यवसाय 10. विरोधन 11. प्ररोचना 12. विचलन 13. आदान।

निर्वहणसन्धि-

बीजवन्तो मुखाद्यर्था विप्रकीर्णा यथायथम्।
ऐकार्थ्यमुपनीयन्ते यत्र निर्वहणं हि तत्॥ (1/48)

जहाँ बीज से सम्बन्ध रखने वाले मुख सन्धि आदि में अपने-अपने स्थान पर बिखरे हुए अर्थों को एक मुख्य प्रयोजन के साथ दिखलाया जाता है वह निर्वहण सन्धि कहलाती है।

चौदह अङ्ग- 1. सन्धि 2. विबोध 3. ग्रथन 4. निर्णय 5. परिभाषण 6. प्रसाद 7. आनन्द 8. समय 9. कृति 10. भाषा

11. उपगूहन 12. पूर्वभाव 13. उपसंहार 14. प्रशस्ति।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि दशरूपक में सन्धियाँ पाँच होती हैं। बीजवन्तो मुखाद्यर्था....यह निर्वहण सन्धि का लक्षण है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- दशरूपक - श्रीनिवास शास्त्री, पेज 81

46. प्रशंसात उन्मुखीकरणं दशरूपके कस्य लक्षणं भवति?
(A) भारत्याः (B) वीथ्याः
(C) प्ररोचनायाः (D) प्रहसनस्य

व्याख्या- आचार्य विश्वनाथ कृत साहित्यदर्पण के षष्ठ परिच्छेद में जिसमें दृश्य, श्रव्य काव्यों का निरूपण किया है-

भारती –

भारती संस्कृतप्रायो वाग्व्यापारो नराश्रयः। (6/29)
तस्याः प्ररोचना वीथी तथा प्रहसनामुखे।

संस्कृत बहुल वाग्व्यापार, जो नर के ही आश्रय हो, नारी के नहीं, उसे भारती कहते हैं। भारती के चार अङ्ग होते हैं-
1. प्ररोचना 2. वीथी 3. प्रहसन 4. आमुख।

प्ररोचना- अंगान्यत्रोन्मुखीकारः प्रशंसातः प्ररोचना। (6/30)

प्रशंसा के द्वारा श्रोताओं को प्रकृत वस्तु की ओर आकर्षित करना प्ररोचना कहलाता है।

उदाहरण- रत्नावली में श्रीहर्ष इत्यादि।

वीथी-

वीथ्यामेको भवेदङ्कः कश्चिदेकोऽत्र कल्प्यते।
आकाशभाषितै रूक्तैश्चित्रां प्रत्युक्तिमाश्रितः॥
सूचयेद् भूरिशृङ्गारं किंचिदन्यान् रसान्प्रति।
मुखनिर्वहणे संधी अर्थप्रकृतयोऽखिलाः॥ (6/254)

वीथी में एक ही अङ्क होता है और कोई एक पुरुष उत्तम-मध्यम या अधम नायक कल्पित कर लिया जाता है। आकाशभाषित के द्वारा विचित्र युक्ति प्रत्युक्ति होती है। शृङ्गार की बहुलता रहती है। इसमें मुख और निर्वहण सन्धियाँ होती हैं। अर्थप्रकृतियाँ सब रहती हैं। शृङ्गार की अधिकता के कारण कैशिकी वृत्ति प्रधान रहती है।

प्रहसन-

भाणवत्संधिसन्ध्यंगलास्यांगाङ्कैर्विनिर्मितम्।
भवेत्प्रहसनं वृत्तं निन्द्यानां कविकल्पितम्॥ (सा.द. 6/264)

भाण के समान सन्धि, सन्ध्यङ्ग, लास्याङ्ग और अङ्कों के द्वारा सम्पादित, निन्दनीय पुरुषों का कवि-कल्पित वृत्तान्त प्रहसन कहलाता है। इसमें न आरभटी होती है, न विष्कम्भक और न प्रवेशक। इसमें हास्यरस प्रधान रहता है। वीथ्यङ्ग कहीं होते हैं कहीं नहीं भी होते।

आमुख (प्रस्तावना)-

नटी विदूषको वापि पारिपार्श्विक एव वा सूत्रधारेण सहिताः संलापं यत्र कुर्वते।
चित्रैर्वाक्यैः स्वकार्योत्थैः प्रस्तुताक्षेपिभिर्मिथः।
आमुखं तत्तु विज्ञेयं नाम्ना प्रस्तावनाऽपि सा॥ (6/31)

जहाँ नटी, विदूषक अथवा पारिपार्श्विक सूत्रधार के साथ अपने कार्य के विषय में विचित्र वाक्यों से इस प्रकार बातचीत करें, जिससे प्रस्तुत कथा का सूचन हो जाय उसे आमुख कहते हैं और उसी का नाम प्रस्तावना भी है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'प्रशंसात उन्मुखीकरणं' यह 'प्ररोचना' का लक्षण है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- साहित्यदर्पण - शालिग्राम शास्त्री, पेज 175

47. तर्कसंग्रहदीपिकानुसारं 'परमाणुष्वेव पाको, न द्व्यणुकादावपीति केषाम्मते ?
(A) नैयायिकानाम् (B) वैशेषिकानाम्
(C) साङ्ख्यानाम् (D) वेदान्तिनाम्

व्याख्या- न्यायवैशेषिक के प्रकरणग्रन्थ तर्कसंग्रह की अन्नम्भट्टकृत तर्कसंग्रहदीपिका टीका में 24 गुणों में 'रूप' गुण की व्याख्या में 'पाक' की चर्चा आती है-

* वैशेषिकों के मत में-**'परमाणुष्वेव पाकः न द्व्यणुकादौ' इति पीलुपाकवादिनो वैशेषिकाः**

पृथ्वी में रूप, रस, गन्ध और स्पर्श ये चारों गुण पाक द्वारा उत्पन्न होते हैं, अतः अनित्य हैं। अन्यत्र ये अपाकज हैं और नित्य तथा अनित्य दोनों प्रकार के होते हैं। ये नित्य पदार्थों में नित्य तथा अनित्य में अनित्य हैं।

* 'पिठरपाकवादिनो नैयायिकाः'- नैयायिकों को पिठरपाकवादी माना जाता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि परमाणुष्वेव पाको, न द्व्यणुकादावपि यह वैशेषिकों का मत है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- तर्कसंग्रह - गोविन्दाचार्य, पेज 92

48. तर्कसंग्रहानुसारम् आत्ममात्रविशेषगुणेषु कस्य परिगणनं नास्ति ?
(A) बुद्धेः
(B) इच्छायाः
(C) स्थिति-स्थापकसंस्कारस्य
(D) धर्मस्य

व्याख्या- अन्नम्भट्टकृत तर्कसंग्रह में 24 गुणों की चर्चा की

गयी है, जिसमें 'बुद्धि' नामक गुण का लक्षण करते हुए कहते हैं- सर्वव्यवहारहेतुर्ज्ञानं बुद्धिः (सम्पूर्ण व्यवहारों का जो कारण गुण है उसे ज्ञान अर्थात् बुद्धि कहते हैं-

बुद्ध्यादयोऽष्टावात्ममात्रविशेषगुणाः। बुद्धीच्छाप्रयत्ना द्विविधाः नित्या अनित्याश्च। नित्या ईश्वरस्य अनित्या जीवस्य।

बुद्धि, सुख, दुःख, इच्छा,द्वेष, प्रयत्न, धर्म और अधर्म ये आठ केवल आत्मा में रहने वाले विशेष गुण हैं। उनमें बुद्धि, इच्छा और प्रयत्न ये तीन नित्य और अनित्य होते हैं। ये ईश्वर में नित्य होते हैं और जीव में अनित्य हैं।

संस्कारस्त्रिविधः वेगो भावना स्थितिस्थापकश्चेति।

वेगः पृथिव्यादिचतुष्टयमनोवृत्तिः।

वेग, भावना और स्थितिस्थापक के भेद से संस्कार तीन प्रकार का होता है और यह वेग, पृथिवी, जल, तेज, वायु और मन में रहता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि **विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- तर्कसंग्रह - गोविन्दाचार्य, पेज 267, 303

49. तर्कभाषानुसारं प्रमायाः करणं किम्भवति ?

(A) प्रमाता (B) प्रमेयम्

(C) तर्कः (D) इन्द्रियसंयोगादिः

व्याख्या- न्यायदर्शन के प्रकरणग्रन्थ तर्कभाषा में आचार्य केशवमिश्र षोडश पदार्थों में प्रथम परिगणित 'प्रमाण' पदार्थ का लक्षण करते हैं- 'प्रमाकरणं प्रमाणम्' अर्थात् प्रमा का करण प्रमाण है।

* यहाँ प्रमा की परिभाषा है- 'यथार्थानुभवः प्रमा' यथार्थ अनुभव का नाम प्रमा है।
* 'करण' का लक्षण करते हैं- 'साधकतमं करणम्' साधकतम को 'करण' कहते हैं।
* प्रमा के करण तो प्रमाता, प्रमेय आदि बहुत से होते हैं, तो क्या वे सभी प्रमा के करण होते हैं अथवा नहीं-?

इसके उत्तर में केशवमिश्र कहते हैं—प्रमाता और प्रमेय के होने पर भी इन्द्रियसन्निकर्ष सम्बन्ध के बिना प्रमा की उत्पत्ति नहीं होती, किन्तु इन्द्रियसंयोगादि के होने पर शीघ्र ही 'प्रमा' की उत्पत्ति होती है। इसलिए इन्द्रियसंयोगादि ही 'प्रमा' का कारण है—

''सत्यपि प्रमातरि प्रमेये च प्रमानुत्पत्तेरिन्द्रियसंयोगादौ सति अविलम्बेन प्रमोत्पत्तेरत इन्द्रियसंयोगादिरेव करणम्''

अतः इन्द्रियसंयोगादि ही प्रमा का करण होने से उसी को प्रमाण कहा जाता है—

''अत इन्द्रियसंयोगादिरेव प्रमाकरणत्वात् प्रमाणं न प्रमात्रादि-''

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि इन्द्रियसंयोगादि ही प्रमा का करण है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज 68, 69, 70

50. व्याप्यस्य पक्षवृत्तित्वधीः किमुच्यते ?

(A) पक्षता (B) सपक्षः

(C) परामर्शः (D) व्याप्तिः

व्याख्या- परामर्श- ''व्याप्यस्य पक्षवृत्तित्वधीः परामर्श उच्यते'' साध्य के व्याप्य का पक्ष में रहने का जो ज्ञान है उसी को परामर्श कहते हैं।

व्याप्ति- व्याप्तिः साध्यवदन्यस्मिन्नसम्बन्ध उदाहृतः।।

साध्य (जो हेतु के द्वारा अनुमेय है, जैसे वह्नि आदि) से युक्त भिन्न वस्तु में हेतु (धूम आदि) का सम्बन्ध न होना व्याप्ति कहा जाता है।

पक्ष- सिषाधयिषया शून्या सिद्धिर्यत्र न विद्यते।

स पक्षस्तत्र वृत्तित्वज्ञानादनुमितिर्भवेत्।।

साधन (अनुमान) करने की इच्छा से शून्य सिद्धि जहाँ नहीं है, वह पक्ष कहलाता है। उसमें वृत्तित्व के ज्ञान से अनुमिति होती है।

अन्नम्भट्ट के अनुसार- पक्ष, सपक्ष और विपक्ष की परिभाषा इस प्रकार है—

पक्ष- 'सन्दिग्धसाध्यवान् पक्षः' सन्दिग्ध साध्य वाला 'पक्ष' कहलाता है।

जैसे- धूमकत्व हेतु में पर्वत। क्योंकि पर्वत में धुएँ को उठते हुए देखकर व्यक्ति को उसमें अग्नि होने का सन्देह हुआ। अतः इस स्थिति में पर्वत यहाँ 'पक्ष' संज्ञा वाला होगा।

सपक्ष- 'निश्चितसाध्यवान् सपक्षः'- निश्चितरूप से साध्य वाला सपक्ष होता है।

जैसे- रसोई घर क्योंकि अग्नि और धूम के साहचर्य को सिद्ध करने के लिए अग्नि साध्य होगा, जिसकी रसोई घर में स्थिति अनिवार्यतः देखने को मिलती है। अतः महानस अर्थात् रसोईघर इस उदाहरण में सपक्ष संज्ञा वाला कहा जायेगा।

विपक्ष- 'निश्चितसाध्याऽभाववान् विपक्षः' साध्यरूप अग्नि के निश्चितरूप से अभाव वाला ही विपक्ष होता है।

जैसे- जलाशय को अग्नि के अभाव के उदाहरण रूप में निश्चयपूर्वक प्रस्तुत किया जा सकता है, क्योंकि जलाशय में अग्नि का पूर्णतया अभाव होता है। अतः वह धूमाग्नि सिद्धि उदाहरण में विपक्ष कहा जायेगा।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'व्याप्यस्य पक्षवृत्तित्वधीः परामर्श उच्यते'। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- न्यायसिद्धान्तमुक्तावली (अनुमानखण्ड), गणेशदत्त शास्त्रिशुक्लः, पेज 03

51.'मही मित्रस्य वरुणस्य माया चन्द्रेव भानुं विदधे पुरुत्रा' इति मन्त्रांशों वर्तते-

(A) उषस्सूक्ते (B) कालसूक्ते
(C) वरुणसूक्ते (D) पर्जन्यसूक्ते

व्याख्या- उषस् सूक्त ऋग्वेद के मण्डल 3, सूक्त 61 है। इसके ऋषि विश्वामित्र, देवता उषस् हैं। छन्द त्रिष्टुप् है।

उषस् सूक्त-

* **ऋतस्य बुध्न उषसामिषण्यन्वृषा मही रोदसी आ विवेश।
मही मित्रस्य वरुणस्य माया चन्द्रेव भानुं विदधे पुरुत्रा॥
(उषस् सूक्त मं.-**7)

वर्षा करने वाले सूर्य प्राकृतिक नियमों के अथवा अग्निहोत्र आदि नियमों के ज्ञापक सत्यभूत दिन के मूल में उषा को प्रेरित करता हुआ महान् द्युलोक और पृथ्वीलोक में सब ओर प्रविष्ट हो गया। मित्र देवता और वरुण देवता की महती माया अर्थात् विचित्र शक्ति-रूपा उषा देवी सुनहरी कान्ति के समान स्वर्णिम सूर्य को बहुत स्थानों में प्रसारित करती है।

* **अव स्यूमेव चिन्वती मघोन्युषा याति स्वसरस्य पत्नी
(उषस् सू. मं.** 4)

धन सम्पत्तिशालिनी सूर्य की या दिन की पत्नी होती हुई यह उषा देवी वस्त्र के समान आच्छादित करने वाले अन्धकार का विनाश करती हुई अथवा अपने वस्त्र से अन्धकार को फेंकती हुई चली जाती है।

* **ऋतावरी दिवो अर्कैरबोध्या रेवती रोदसी चित्रमस्थात्।
(उषस् सूक्त मं.-6)**

सत्य से युक्त अथवा सत्य नियमों का पालन कराने वाली उषा देवी द्युलोक से आने वाले अपने तेज पुञ्ज से जानी जाती है।

वरुणसूक्त-

वेद मासो धृतव्रतो द्वादश प्रजावतः। वेदा य उपजायते॥

कर्मविशेष को स्वीकार करने वाला अर्थात् अपने अधिकृत कर्तव्य का पालन करने वाला वह वरुण देवता उत्पन्न होने वाली प्रजा से युक्त अथवा दिनों समेत चैत्र से लेकर फाल्गुन तक बारहों महीनों को जानता है और जो तेरहवाँ मास उत्पन्न हो जाता है, उसको भी वह जानता है।

**निषसाद धृतव्रतो वरुणः पस्त्याश्३स्वा। साम्राज्याय सुक्रतुः॥
(मन्त्र -10)**

अपने स्वीकृत नियमों का पालन करने वाले और श्रेष्ठ कर्मों को करने वाले वरुण देवता प्रजा के साम्राज्य की सिद्धि के लिए दिव्य प्रजाओं में आकर अधिष्ठित हुए हैं।

पर्जन्यसूक्त-

**यत्पर्जन्य कनिक्रदत् स्तनयन् हंसि दुष्कृतः।
प्रतीदं विश्वं मोदते यत्किं च पृथिव्यामधि॥ (म. 09)**

हे पर्जन्य! जब तुम अत्यधिक शब्द करते हुये और गरजते हुए दुष्टों को मारते हो, यह सारा संसार और जो कुछ भी इस पृथिवी पर है,प्रसन्न हो जाता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि ''मही मित्रस्य वरुणस्य माया चन्द्रेव भानुं विदधे पुरुत्रा'' यह मन्त्रांश उषस् सूक्त से सम्बद्ध है। **अतः विकल्प A सही है।**

स्रोत- ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्त शास्त्री, पेज 241

52. ऋग्वेदीय- पर्जन्यसूक्तस्य कः ऋषिरस्ति ?

(A) विश्वामित्रः (B) गौतमः
(C) अत्रिः (D) कण्वः

व्याख्या-

सूक्त	मण्डल/सूक्त	ऋषि	देवता	मंत्रसंख्या
अक्षसूक्त	10-34	कवष ऐलूष	अक्षकृषि प्रशंसा	14
पुरुषसूक्त	10-90	नारायण	पुरुष	16
हिरण्यगर्भसूक्त	10-121	हिरण्यगर्भ	क संज्ञक प्रजापति	10
वाक्सूक्त	10-125	वाक्	परमात्मा	08
नासदीयसूक्त	10-129	परमेष्ठी	सृष्टि-स्थिति-प्रलय कर्ता परमात्मा	07
अग्निसूक्त	1-1	मधुच्छन्दा	अग्नि	09
वरुणसूक्त	1-25	शुनःशेप	वरुण	21
सूर्यसूक्त	1-115	कुत्स	सूर्य	06
इन्द्रसूक्त	2-12	गृत्समद	इन्द्र	15
उषस् सूक्त	3-61	विश्वामित्र	उषस्	07
पर्जन्यसूक्त	5-83	अत्रि	पर्जन्य	10
यम-यमी संवाद	10-10	यमी वैवस्वती यम वैवस्वत	यमी वैवस्वती यम वैवस्वत	14
पुरूरवा उर्वशी संवाद	10-95	पुरूरवा ऐल उर्वशी	उर्वशी पुरूरवा	14
सरमा पणिसंवाद	10-108	पणि, सरमा	सरमा, पणि	11
विश्वामित्र नदी संवाद	3.33	विश्वामित्र	नदियाँ विपाट्/शुतुद्री	13

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि पर्जन्यसूक्त के ऋषि 'अत्रि' हैं। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- ऋक्सूक्त संग्रह - हरिदत्त शास्त्री, पेज 283

53. यजुर्वेदीय शिवसंकल्पमन्त्राणां का देवता ?
(A) मनस् (B) शिवः
(C) संकल्पः (D) विष्णुः

व्याख्या-

सूक्त ऋषि देवता	छन्द	मन्त्र
शिवसंकल्पसूक्त (यजुर्वेद) त्रिष्टुप् 06	याज्ञवल्क्य	मनस्
पृथिवीसूक्त (12.1) (अथर्ववेद) जगती, पंक्ति	अथर्वा भूमि 63	त्रिष्टुप्,
कालसूक्त (अथर्ववेद) 10	भृगु काल	त्रिष्टुप्
राष्ट्राभिवर्धनसूक्त वशिष्ठ (अथर्ववेद) अभीवर्तमणि	वशिष्ठ ब्रह्मणस्पति अनुष्टुप् 6	
ज्ञानसूक्त (10/7) परब्रह्मज्ञान	बृहस्पति	9वें में जगती शेष में त्रिष्टुप् 11

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि यजुर्वेदीय शिवसंकल्पमन्त्र के देवता 'मनस्' है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**
स्रोत- वैदिक सूक्तसंग्रह - विजयशङ्कर पाण्डेय, पेज 51

54. ऋग्वेदप्रातिशाख्यानुसारं रक्त-संज्ञका के सन्ति ?
(A) कण्ठ्यवर्णाः (B) अयोगवाहाः
(C) निरनुनासिकवर्णाः (D) अनुनासिकवर्णाः

व्याख्या- रक्तसंज्ञा
* **रक्तसंज्ञोऽनुनासिकः-** अनुनासिक वर्ण रक्तसंज्ञक हैं।
जैसे- ङ, ञ, ण, न, म।
* **समानाक्षरसंज्ञा-** अष्टौ समानाक्षराण्यादितः।
आदि अर्थात् प्रारम्भ के आठ अक्षरों की समानाक्षर संज्ञा है।
उदाहरण- अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ।
* **सन्ध्यक्षरसंज्ञा-** 'ततश्चत्वारि सन्ध्यक्षराण्युत्तराणि।'
तत्पश्चात् आगे वाले चार अक्षर सन्ध्यक्षर हैं।
उदाहरण- ए, ओ, ऐ, औ।
* **संयोगसंज्ञा-** संयोगस्तु व्यञ्जनसंनिपातः।
व्यञ्जन वर्णों का मेल (सन्निपात) संयोग संज्ञा है। यथा- प्रप्रवस्त्रिष्टुभमिषम्।
* **प्रगृह्यसंज्ञा-** ओकार आमन्त्रितजः प्रगृह्यः।
सम्बोधन (आमन्त्रित) से उत्पन्न अर्थात् सम्बोधन पद के अन्त में विद्यमान ओकार प्रगृह्य संज्ञक होता है।
यथा- (i) इन्दो इति (i) विष्णो इति

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि रक्तसंज्ञक अनुनासिक वर्ण होते हैं। **अतः विकल्प 'D' सही है।**
स्रोत- ऋग्वेद प्रातिशाख्यम् - वीरेन्द्र कुमार वर्मा, पेज 69

55. 'तिस्र एव देवताः' इति कथनमस्ति ?
(A) निरुक्ते दैवतकाण्डे
(B) ऋक्प्रातिशाख्ये
(C) निरुक्ते द्वितीयेऽध्याये
(D) अथर्ववेदे राष्ट्राभिवर्धनसूक्ते

व्याख्या- यास्क प्रणीत निरुक्त निघण्टु ग्रन्थ की व्याख्या है। यह निघण्टु ग्रन्थ पाँच अध्याय और तीन काण्डों में विभाजित है। प्रथम तीन अध्याय 'नैघण्टुक काण्ड' कहलाते हैं। चौथा अध्याय ऐकपदिक या 'नैगमकाण्ड' कहा जाता है और पाँचवा अध्याय दैवतकाण्ड है।
दैवतकाण्ड- निघण्टु के शब्दों को तीन भागों में बाँटा गया है। एक तो वे शब्द जो वेदों में प्रधानरूप से स्तुत देवताओं के नाम है। इन शब्दों को दैवत कहते हैं।
नैगमकाण्ड- दूसरे वे शब्द जो अनेकार्थक हैं। अर्थात् जिनमें यह स्पष्ट नहीं है कि यह शब्द किस धातु से, किस प्रत्यय से मिलकर बना है उनका नाम ऐकपदिक या नैगम है।
नैघण्टुक काण्ड- पर्याय शब्द अथवा एकार्थक अनेक शब्द और एकार्थक अनेक धातु, इनका नाम निघण्टु ही रहने दिया। प्राचीन काल में शब्दसंग्रहरूप कोशग्रन्थों को निघण्टु कहा करते थे। यह पञ्चाध्यायात्मक उपर्युक्त निघण्टु ग्रन्थ भी वैदिक शब्दों का छोटा सा संग्रह कोष है।
* यास्क निरुक्त के सप्तम अध्याय के द्वितीयपाद के दैवतकाण्ड में देवता की चर्चा करते हुए कहते हैं-
* **तिस्र एव देवता इति नैरुक्ताः। 'अग्निः पृथिवीस्थानः वायुर्वेन्द्रो वान्तरिक्षस्थानः। सूर्यो द्युस्थानः।'**
तीन ही देवता हैं- पहला अग्नि जो कि पृथिवीस्थानीय है दूसरा वायु अथवा विद्युदाख्य इन्द्र और तीसरा द्युस्थानीय सूर्य है।
* ऋग्वेद में इनकी संख्या तीन ही बताई गई है। वास्तव में उक्त देवता तत्तत् स्थानों के प्रतिनिधि देवता हैं, यही नैरुक्तों की मान्यता है।
* देवता की संख्या विभिन्न दृष्टियों से भिन्न-भिन्न हो सकती है। यहाँ स्थान को आधार बनाकर उनकी संख्या को निश्चित करने का प्रयास किया गया है।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से ज्ञात होता है कि निरुक्त के अनुसार देवताओं की संख्या तीन है। 'तिस्र एव देवता' यह निरुक्त के दैवतकाण्ड में है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**
स्रोत- हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज 280

56. जन्मादयो विकाराः ब्रह्मणः कां शक्तिमुपाश्रिताः भवन्ति
(A) आवरणशक्तिम्
(B) आध्यात्मिकीं शक्तिम्
(C) कालशक्तिम्
(D) भिन्नात्मिकां शक्तिम्

व्याख्या- भर्तृहरिकृत वाक्यपदीय के आदिम ब्रह्मकाण्ड में सर्वप्रथम शब्दतत्त्व की नित्यता को दर्शाते हुए उससे ही नामरूपात्मक जगत् की उत्पत्ति मानी गई है। प्रथम श्लोक में कहा गया है-

अनादिनिधनं ब्रह्म शब्दतत्त्वं यदक्षरम्।
विवर्ततेऽर्थभावेन प्रक्रिया जगतो यतः॥1॥

जो उत्पत्ति और विनाश से रहित कभी क्षीण न होने वाला अविनाशी ब्रह्म परमेश्वर अथवा वेद है, वही शब्दतत्त्व और अर्थ का मूल शब्दब्रह्म कहलाता है।
ब्रह्म की किन शक्तियों से जन्मादि षड्विकार उत्पन्न होते हैं, उसको बताते हैं-

अध्याहित कला यस्य कालशक्तिमुपाश्रिताः।
जन्मादयो विकाराः षड्भावभेदस्य योनयः॥3॥

जिस ब्रह्म की अविनाशी शक्तियाँ समय की शक्ति को प्राप्त हुई, उसी से पैदा होना, अस्तित्व में आना, बढ़ना परिवर्तन होना, अपक्षय होना ये षड्विकार उत्पन्न होने वाली वस्तुओं के रूपान्तर पदार्थों के भेद-प्रभेदों के कारण हुआ करते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि 'जन्मादयो विकाराः ब्रह्मणः कालशक्तिमुपाश्रिताः' है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- वाक्यपदीयम् (1/3) - शिवशङ्कर अवस्थी, पेज 58

57. अत्रातीतविपर्यासः केवलामनुपश्यति।
छन्दस्यश्छन्दसां योनिमात्मा छन्दोमयीं तनुम्॥
अस्यां कारिकायाम् 'छन्दस्यः' इत्यस्य शब्दस्य कोऽर्थः?
(A) वेदार्थग्रहणसमर्थः
(B) स्वतन्त्रः
(C) वैदिकछन्दसां निर्माता
(D) वैदिकछन्दसां प्रयोगे निष्णातः

व्याख्या- भर्तृहरिकृत वाक्यपदीयम् के ब्रह्मकाण्ड में कहा गया है-

अत्रातीतविपर्यासः केवलामनुपश्यति।
छन्दस्यः छन्दसां योनिमात्मा छन्दोमयीं तनुम्॥1/17॥

(अत्र) इस व्याकरण में (अतीतविपर्यासः) शब्दों के अपभ्रंश प्रयोग की आशंका या भय नहीं रहता। (छन्दस्यः) वेदों के और (छन्दसां) संस्कृत भाषा के शब्दों के ज्ञान से शुद्ध हुआ अन्तःकरण वेदमन्त्रों के (योनिम्) कारणरूप (छन्दोमयीम्) छन्दोवाक् अथवा आद्यऋषियों की अन्तरात्मा में सूक्ष्म रूप से ईश्वर प्रेरणा से प्राप्त वेदवाणी रूप शरीर को जो एकमात्र मूल-यथार्थ ज्ञान-विज्ञान से परिपूर्ण वाणी है, उसको ही एक वैयाकरण, विद्वान् भाषा शब्दों के संस्कार के लिए (अनुपश्यति) आश्रय रूप में जानता है।
भर्तृहरि ने छन्दस्य शब्द का अर्थ किया है-

छन्दस्यः छन्दसि साधुः रक्षकत्वात्।
छन्दस्य आत्मा व्याकरणादपगतशब्दार्थविपर्यासः
छन्दोमयीं तनुं परमं वेदरूपं पश्यतीति व्याचख्यौ।
द्वावुपादानशब्देषु शब्दौ शब्दविदो विदुः।
एको निमित्तं शब्दानामपरोऽर्थे प्रयुज्यते। (1/43)

शब्दशास्त्र और शब्दतत्त्व को जानने वाले उपादान अर्थात् अर्थरूप प्रयोजन को दर्शाने के लिए जो शब्द वक्ता द्वारा बोले जाते हैं, उनमें शब्द दो प्रकार का है। उपादान शब्दों के मध्य में जो उनका बाह्यरूप है अर्थात् वर्णसमुदाय रूप वाचक अंश है, वह एक वैखरी रूप, ध्वन्यात्मक अंश कारण रूप अंश है, वह शब्द के अर्थ में प्रयुक्त होता है। वैयाकरणों ने इस शब्द के वाच्य अर्थ रूप अंश को मध्यमावाक् और स्फोट नाम से अभिहित किया है।
'स्फुटत्यर्थोऽस्मादिति स्फोटः'- इस व्युत्पत्ति के अनुसार स्फोट, शब्द का वह वास्तविक और नित्य स्वरूप है, जो उस शब्द के अर्थ को प्रकाशित करता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि छन्दस्य शब्द का अर्थ 'वेदार्थग्रहणसमर्थ' है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- वाक्यपदीयम् (1.17) - शिवशङ्कर अवस्थी, पेज 126

58. स्फोटः भेदवान् कथं प्रतीयते ?
(A) भिन्नद्रव्यानाम् अभिव्यक्तिसाधनात्
(B) भिन्नोच्चारणात्
(C) भिन्नार्थेषु प्रयोगात्
(D) नादस्य क्रमजन्मत्वात्

व्याख्या- भर्तृहरिकृत वाक्यपदीयम् के (प्रथमकाण्ड) ब्रह्मकाण्ड में स्फोट की चर्चा की गयी है-

नादस्य क्रमजन्मत्वान्न पूर्वो न परश्च सः।
अक्रमः क्रमरूपेण भेदवानिव जायते॥ (1/48)

(नादस्य) अकेले ध्वनि के ही (क्रमजन्मत्वात्) क्रमशः एक-एक वर्ण के पश्चात् दूसरे-दूसरे वर्ण के पैदा होने से (सः) वह स्फोट नाद ध्वनि के समान न तो पहले वाला और न बाद वाला इस प्रकार के व्यपदेश को प्राप्त हुआ करता है। वस्तुतः पौर्वापर्य के व्यवहार से रहित होने के कारण स्फोट सर्वथा क्रमशून्य एक रूप रहा करता है, किन्तु व्यञ्जक नाद या ध्वनि के वाला जैसा हो जाया करता है। वस्तुतः स्फोट एकरूप ही है और इस प्रकार स्फोट

और नाद भिन्न-भिन्न हुआ करते हैं, यह कारिका का आशय है।

शब्दस्योर्ध्वमभिव्यक्तेर्वृत्तिभेदं तु वैकृताः।
ध्वनयः समुपोहन्ते स्फोटात्मा तैर्न भिद्यते॥ (1/76)

शब्द की अभिव्यक्ति अर्थात् उच्चारण के पश्चात् ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत नामक वृत्तियों को एक, दो, तीन मात्राओं वाली विकार को प्राप्त ध्वनियाँ निष्पन्न करती हैं, किन्तु इस उच्चारण प्रक्रिया से उनके द्वारा स्फोटरूप शब्दात्मा में ह्रस्वादि भेद नहीं होता। वह स्फोट सदा एक ही रूप में बना रहता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट होता है कि स्फोटः भेदवान् नादस्य क्रमजन्मत्वात् प्रतीयते। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- वाक्यपदीयम् (1/47) - शिवशङ्कर अवस्थी, पेज 218

59. एषूदाहरणेषु वैषयिकाधारस्योदाहरणं किमस्ति ?

(A) मोक्षे इच्छाऽस्ति (B) कटे आस्ते
(C) स्थाल्यां पचति (D) सर्वस्मिन्नात्मास्ति

व्याख्या- आधारोऽधिकरणम् (1.4.45)

क्रिया के साक्षात् आधार कर्ता और कर्म होते हैं लेकिन उनके कर्ता और कर्म के आधार को भी परम्परा से क्रिया का आधार माना जाता है। अधिकरण उसे कहते हैं जो कर्ता या कर्म का आधार होता है।

सप्तम्यधिकरणे च (2.3.36)

अधिकरण कारक में सप्तमी विभक्ति होती है। सूत्र में आये हुए 'च' के कारण दूरवाची और समीपवाची शब्दों में भी सप्तमी विभक्ति होती है।

सूत्र में चकार की अनुवृत्ति इस सूत्र के पूर्ववर्ती 'दूरान्तिकार्थेभ्यो द्वितीया च' से दूरान्तिकार्थेभ्यः की अनुवृत्ति आती है अतः दूर और अन्तिक के अर्थ वाले शब्दों से भी सप्तमी होती है।

आधार- आधार तीन प्रकार के होते हैं-
(1) औपश्लेषिक (2) वैषयिक (3) अभिव्यापक

औपश्लेषिक- संयोग सम्बन्धी आधार। जहाँ आधार और आधेय का संयोग भौतिक हो उसे औपश्लेषिक आधार कहते हैं।

(i) कटे आस्ते- (चटाई पर बैठता है।)

बैठना क्रिया का साक्षात् आश्रय है। उस कर्ता का आधार है कट। बैठने वाले का कट के साथ स्पर्शमात्र का संयोग है। अतः यहाँ औपश्लेषिक आधार है और सप्तम्यधिकरणेन सूत्र से औपश्लेषिक आधार कट में सप्तमी विभक्ति होकर कटे बना।

(ii) स्थाल्यां पचति। (पतीली में पकाता है।)

2. वैषयिक आधार- जिस आधार के साथ आधेय का बौद्धिक संश्लेषण हो उसे वैषयिक आधार कहते हैं।

उदाहरण- मोक्षे इच्छास्ति (मोक्ष सम्बन्धी इच्छा है।)

यहाँ मोक्ष का विषय है। अतः इच्छारूपी कर्ता के वैषयिक आधार मोक्ष की 'आधारोऽधिकरणम्' सूत्र से अधिकरणसंज्ञा हुई और 'सप्तम्यधिकरणे च' से सप्तमी विभक्ति होकर 'मोक्षे' बना।

3. अभिव्यापक आधार- जिस आधार के सम्पूर्ण अवयवों में आधेय व्याप्त रहता है। उसे अभिव्यापक आधार कहते हैं।

उदाहरण- सर्वस्मिन् आत्मा अस्ति- (सबमें आत्मा व्याप्त है।)

आधेय आत्मा है और सर्व अभिव्यापक है। अतः आधारोऽधिकरणम् सूत्र से सर्व की अभिव्यापक आधार संज्ञा हुई और 'सप्तम्यधिकरणे च' सूत्र से सप्तमी विभक्ति होकर सर्वस्मिन् बना।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि वैषयिक आधार का उदाहरण 'मोक्षे इच्छास्ति' है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज 93

60. पाणिनीयशिक्षानुसारम् उदात्तस्वरोच्चारणकाले हस्तः कुत्र निधेयः?

(A) हृदि (B) कर्णमूले
(C) सर्वास्ये (D) मूर्ध्नि

व्याख्या- * षड्वेदाङ्गों में शिक्षा का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

* शिक्षा का प्रथम सोपान वर्णशिक्षा है।
* शिक्षा का अर्थ सायण ने ऋग्वेदभाष्यभूमिका में किया है- ''वर्णस्वराद्युच्चारणप्रकारो यत्रोपदिश्यते सा शिक्षा।''

जिसमें वर्ण, स्वर आदि उच्चारण प्रकारों का उपदेश हो, उसे शिक्षा कहते हैं।

* पाणिनीयशिक्षा ऋग्वेदीय शिक्षा के अन्तर्गत आती है।
* इस शिक्षा में साठ (60) श्लोक हैं।

पहले श्लोक में पाणिनि ने लौकिक और वैदिक शिक्षा को बताया गया है-

* **अथ शिक्षां प्रवक्ष्यामि पाणिनीयं मतं यथा।**
शास्त्रानुपूर्वं तद् विद्याद् यथोक्तं लोकवेदयोः॥1॥

अब मैं पाणिनि के मत के अनुकूल शिक्षा को कहूँगा। शिष्यजन पाणिनि के उस मत को वैदिक, लौकिक विषयों में पूर्वाचार्यों से प्रोक्त लौकिक वैदिक शिक्षाशास्त्रों में जो कहा गया है उसी के अनुगत जाने।

* **त्रिषष्टिश्चतुःषष्टिर्वा वर्णाः शम्भुमते मताः।**
प्राकृते संस्कृते चापि स्वयं प्रोक्ताः स्वयम्भुवा॥3॥

प्राकृत और संस्कृत भाषा में शम्भु के मत में तिरसठ या चौंसठ वर्ण कहे गये हैं। स्वयं ब्रह्मा के द्वारा भी यह कहा गया है।

* **स्वरा विंशतिरेकश्च स्पर्शानां पञ्चविंशतिः।**
यादयश्च स्मृता ह्यष्टौ चत्वारश्च यमाः स्मृताः॥4॥

* **अनुस्वारो विसर्गश्च क पौ चापि पराश्रितौ**
दुःस्पृष्टश्चेति विज्ञेयो ऌकारः प्लुत एव च॥5॥

इक्कीस स्वर, पच्चीस व्यञ्जन, यादि आठ और यम चार जानने चाहिए। अनुस्वार एक, विसर्ग एक, क प दो (जिह्वामूलीय, उपध्मानीय) पराश्रित, दुःस्पृष्ट एक और प्लुत ऌकार एक जानना चाहिये।

* **अनुदात्तो हृदि ज्ञेयो मूर्ध्न्युदात्त उदाहृतः।**
स्वरितः कर्णमूलीयः सर्वास्ये प्रचयः स्मृतः॥48॥

अनुदात्त स्वर का स्थान हृदय को, उदात्त का मूर्धा को, स्वरित का कर्णमूल को और प्रचय का समस्त मुख (नासाग्रभाग से तात्पर्य है) को समझना चाहिए।

* **मन्त्रो हीनः स्वरतो वर्णतो वा मिथ्याप्रयुक्तो न तमर्थमाह। स वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति यथेन्द्रशत्रुः स्वरतोऽपराधात्॥52॥**

स्वर से अथवा वर्ण से हीन मन्त्र मिथ्याप्रयुक्त होने के कारण उस अर्थ को नहीं कहता है। वह मन्त्र वाणीरूपी वज्र होकर यजमान का नाश करता है, जिस प्रकार स्वरदोष से युक्त इन्द्रशत्रुः (शब्द)।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि उदात्त स्वर के उच्चारण काल में मूर्द्धा का प्रयोग होता है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- पाणिनीयशिक्षा - (श्लोक 48)

61. व्यासभाष्यानुसारेण का उक्तिः सत्या ?
(A) चित्तं हि प्रख्याप्रवृत्तिस्थितिशीलत्वात् त्रिगुणम्।
(B) चित्तवृत्तीनां निरोधः असाध्यः।
(C) सर्ववृत्तिनिरोधे सम्प्रज्ञातः समाधिः।
(D) चित्तवृत्तिबोधे पुरुषस्य अनादिः सम्बन्धः न हेतुः।

व्याख्या- पातञ्जल कृत योगदर्शन के (प्रथमपाद) समाधिपाद में योग का लक्षण -

* **योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः**।।1/2।।

योग चित्तवृत्तियों का निरोध है।

व्यासभाष्य में सूत्रस्थ 'योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः' में चित्त को परिभाषित करते हुये कहते हैं-

***चित्तं हि प्रख्याप्रवृत्तिस्थितिशीलत्वात् त्रिगुणम्।**

चित्त प्रकाशशील, चेष्टाशील एवं स्थैर्यशील होने से त्रिगुणात्मक है।

* इसी प्रकार व्यासभाष्य में योग को बताते हैं-

सर्वशब्दाग्रहणात्सम्प्रज्ञातोऽपि योग इत्याख्यायते।

सर्व शब्द का प्रयोग न किये जाने के कारण सम्प्रज्ञात समाधि भी योग कही जाती है।

व्यासभाष्य के अन्य- महत्त्वपूर्ण वचन-

अथ योगानुशासनम् (1/1)। अब योगशास्त्र आरम्भ होता है।

* 'अथ' शब्द का अर्थ व्यासभाष्य में 'अथेत्ययमधिकारार्थः' अर्थात् यह 'अथ' शब्द अधिकारवाचक है।

* क्षिप्तं, मूढं, विक्षिप्तमेकाग्रं, निरुद्धमिति चित्तभूमयः। क्षिप्त, मूढ़, विक्षिप्त, एकाग्र और निरुद्ध चित्त की ये पाँच भूमियाँ हैं।

* स च वितर्कानुगतो, विचारानुगत, आनन्दानुगतोऽस्मितानुगत इत्युपरिष्टात्प्रवेदयिष्यामः।

वह सम्प्रज्ञात योग वितर्कानुगत, विचारानुगत, आनन्दानुगत तथा अस्मितानुगत इन चार अवस्थाओं वाला होता है।

* **सर्ववृत्तिनिरोधस्त्वसम्प्रज्ञातसमाधिः॥ (1/1)**

सभी वृत्तियों का निरोध होने पर तो असम्प्रज्ञात समाधि होती है। (वही असम्प्रज्ञात योग है।)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि व्यासभाष्य के अनुसार चित्त के विषय में 'चित्तं हि प्रख्याप्रवृत्तिस्थितिशीलत्वात् त्रिगुणत्वम्।' यह पंक्ति सत्य है अन्य तीन विकल्प असंगत हैं। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- पातञ्जलयोगदर्शन - सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पेज 09

62. ब्रह्मसूत्रस्य रचयिता कोऽस्ति ?
(A) शङ्कराचार्यः (B) बादरायणः
(C) कपिलः (D) सदानन्दः

व्याख्या-

ग्रन्थ	आचार्य
ब्रह्मसूत्र	बादरायण
शारीरकभाष्य	शङ्कराचार्य
सांख्यदर्शन	कपिल
वेदान्तसार	सदानन्द
न्यायदर्शन	गौतम
वैशेषिकदर्शन	कणाद
पूर्वमीमांसादर्शन	जैमिनि
उत्तरमीमांसा/वेदान्तदर्शन	बादरायण
योगदर्शन	पतञ्जलि

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि ब्रह्मसूत्र के रचनाकार बादरायण हैं। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- वेदान्तसार - राकेश शास्त्री, पेज भू. 04

63. शब्दप्रमाणस्य फलं किम्भवति ?
(A) पदज्ञानम् (B) वाक्यार्थज्ञानम्
(C) शक्तिज्ञानम् (D) पदजन्यपदार्थस्मरणम्

व्याख्या- अन्नम्भट्टप्रणीत तर्कसंग्रह में चार प्रमाण बताये

गये हैं- प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द। ये शब्दप्रमाण की चर्चा करते हुए कहते हैं कि-

आप्तवाक्यं शब्दः- आप्त (व्यक्ति) का वाक्य शब्दप्रमाण होता है। आप्तपुरुष से अभिप्राय यथार्थ वक्ता से है।

शक्तं पदम्- शक्ति से युक्त पद होता है। इस पद से यह अर्थ समझना चाहिए, इस प्रकार का ईश्वरसङ्केत ही शक्ति है।

वाक्यार्थज्ञानम्- आकांक्षा-योग्यता-सन्निधिश्च वाक्यार्थज्ञाने हेतुः। आकांक्षा, योग्यता, सन्निधि वाक्य के अर्थज्ञान के प्रति कुल तीन हेतु हैं।

एक पद का अन्य अर्थ के अभाव में शब्द का बोध करवाने की असमर्थता ही आकांक्षा होती है तथा पदों का बिना किसी विलम्ब के उच्चारण करना ही सन्निधि होती है।

शब्दप्रमाण के फल- **वाक्यार्थज्ञानं शाब्दज्ञानम्। तत्करणं तु शब्दः।** वाक्य के अर्थ का ज्ञान ही शाब्द-ज्ञान होता है और उसका 'करण' शब्द ही है।

वाक्यार्थ ज्ञान के हेतु	आकाङ्क्षा योग्यता सन्निधि(आसत्ति)
शाब्दबोध हेतु एक शब्द के साथ अन्य शब्द का प्रयोग	अर्थ का बाधारहित होना / पदों का अविलम्ब उच्चारण
गौरश्वः पुरुषो हस्ती	अग्निना सिञ्चति गाम् आनय
आकांक्षायाः योग्यतायाः	सन्निध्याः अभावः एषु वाक्येषु

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि शब्द प्रमाण का फल वाक्यार्थज्ञान है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- तर्कसंग्रह - अनितासेन गुप्ता, पेज 111

64. न्यायसिद्धान्तमुक्तावल्यां साध्यशून्यो यत्र पक्षस्त्वसौ क उदाहृतः ?

(A) विरुद्धः (B) बाधः

(C) अनैकान्तिकः (D) सत्प्रतिपक्षः

व्याख्या- श्रीविश्वनाथपञ्चाननभट्टाचार्य प्रणीत न्यायसिद्धान्तमुक्तावली के अनुमानखण्ड में हेत्वाभास की चर्चा करते हैं-

अनैकान्तो विरुद्धश्चाप्यसिद्धः प्रतिपक्षितः।
कालात्ययापदिष्टश्च हेत्वाभासास्तु पञ्चधा॥

अनैकान्त, विरुद्ध, असिद्ध, प्रतिपक्षित एवं कालात्ययापदिष्ट- इस प्रकार हेत्वाभास पाँच प्रकार के होते हैं।

आद्यः साधारणस्तु स्यादसाधारणकोऽपरः।
तथैवानुपसंहारी त्रिधाऽनैकान्तिको भवेत्॥

पहला साधारण, दूसरा असाधारण एवं तीसरा अनुपसंहारी भेद से अनैकान्तिक हेत्वाभास तीन प्रकार का होता है।

यः सपक्षे विपक्षे च भवेत् साधारणस्तु सः॥

जो हेतु सपक्ष एवं विपक्ष में भी होता है, वह साधारण कहलाता है।

यस्तूभयस्माद् व्यावृत्तः स चासाधारणो मतः॥

जो दोनों (सपक्ष एवं विपक्ष) से अलग रहे, वह हेतु असाधारण माना जाता है।

तथैवानुपसंहारी केवलान्वयिपक्षकः।

उसी तरह केवलान्वयी पक्ष वाला अनुपसंहारी होता है।

विरुद्ध- यः साध्यवति नैवाऽस्ति स विरुद्ध उदाहृतः।

जो साध्य के अधिकरण में नहीं है, वैसा हेतु विरुद्ध कहलाता है।

आश्रयासिद्धिराद्या स्यात्स्वरूपासिद्धिरप्यथ।
व्याप्यत्वासिद्धिरपरा स्याद् सिद्धिरतस्त्रिधा॥

पहली आश्रयासिद्धि, उसके बाद स्वरूपासिद्धि, तीसरी व्याप्यत्वासिद्धि, इस कारण असिद्धि तीन प्रकार की होती है।

पक्षासिद्धिर्यत्र पक्षो भवेन्मणिमयो गिरिः।

पक्षासिद्धि वहाँ होती है जहाँ मणिमय गिरि पक्ष होता है।

ह्रदो द्रव्यं धूमत्त्वादत्रासिद्धिरथापरा॥

ह्रदो द्रव्यं धूमवत्वात् में दूसरी असिद्धि होती है।

व्याप्यत्वासिद्धिरपरा नीलधूमादिके भवेत्॥

नीलधूम आदि में व्याप्यत्वासिद्धि होती है।

सत्प्रतिपक्ष- विरुद्धयोः परामर्शे हेत्वोः सत्प्रतिपक्षता॥

परस्पर असमान अधिकरणवाले साध्यों के जो हेतु हैं उनके साध्य व्याप्यवान् पक्ष तथा साध्याभाव व्याप्यवान् पक्ष ऐसे दोनों परामर्शों में सत्प्रतिपक्षता होती है और उससे युक्त सत्प्रतिपक्ष होता है।

बाध- साध्यशून्यो यत्र पक्षस्त्वसौ बाध उदाहृतः।
उत्पत्तिकालीनघटे गन्धादिर्यत्र साध्यते॥

जहाँ पक्ष साध्य से शून्य होता है वह बाध कहलाता है, जहाँ उत्पत्तिकालीन घट में गन्ध आदि साधित किया जाता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'साध्यशून्यो यत्र पक्षस्त्वसौ बाध उदाहृतः'। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- न्यायसिद्धान्तमुक्तावली - महानन्द झा, पेज 127

65. बौद्धदर्शनस्य भावनाचतुष्टये किं नोपदिष्टम् ?

(A) सर्वं क्षणिकं क्षणिकम् (B) स्वलक्षणं स्वलक्षणम्

(C) सामान्यं सामान्यम् (D) शून्यं शून्यम्

व्याख्या- भारतीयदर्शन को मुख्यरूप से दो भागों में विभाजित किया गया है- (1) आस्तिक (2) नास्तिक

आस्तिक दर्शन

सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, पूर्वमीमांसा, उत्तरमीमांसा।

नास्तिक दर्शन

(1) चार्वाक (2) जैन (3) बौद्ध

* **बौद्धदर्शन के चार भेद-** ये बौद्ध लोग चार प्रकार की भावना (दृष्टिकोण) से परम पुरुषार्थ का वर्णन करते हैं। ये बौद्ध माध्यमिक, योगाचार, सौत्रान्तिक और वैभाषिक के नाम से प्रसिद्ध है।

1. सब कुछ शून्य होना -सर्वं शून्यम् (माध्यमिक)
2. बाह्यपदार्थों का शून्य होना -बाह्यार्थशून्यत्व (योगाचार)
3. बाह्यपदार्थों का अनुमान से ज्ञान होना - बाह्यार्थानुमेयत्वम् (सौत्रान्तिक)
4. बाह्यपदार्थों का प्रत्यक्ष से ज्ञान होना- बाह्यार्थप्रत्यक्षत्व (वैभाषिक)

* **भावनाचतुष्टय**

1. सब कुछ क्षणिक है क्षणिक -सर्वं क्षणिकं क्षणिकं
2. सब कुछ दुःख है दुःख -दुखं दुखं
3. सबों का लक्षण अपने आप में है -स्वलक्षणं स्वलक्षणं
4. सब कुछ शून्य है शून्य -शून्यं शून्यम्

* **चार आर्यसत्य**- 1. दुःख 2. समुदाय 3. निरोध 4. मार्ग दुःखसमुदायनिरोधमार्गाश्चत्वार आर्यबुद्धस्याभिमतानि तत्त्वानि।

* बौद्ध के अनुसार पाँच स्कन्ध हैं-

1. रूपस्कन्ध 2. विज्ञानस्कन्ध 3. वेदनास्कन्ध 4. संज्ञास्कन्ध 5. संस्कारस्कन्ध

सोऽयं चित्तचैत्तात्मकः स्कन्धः पञ्चविधो रूप-विज्ञान-वेदना संज्ञासंस्कारसंज्ञकः।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि भावनाचतुष्टय के अन्तर्गत 'सामान्यं सामान्यम्' नहीं आता है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- सर्वदर्शन संग्रह - उमाशङ्कर शर्मा ऋषि, पेज 31

66. शयिता सविधेऽप्यनीश्वरा सफलीकर्तुमहो मनोरथान् पण्डितराजजगन्नाथेन कस्य काव्यस्य उदाहरणरूपे उद्धृतोऽयं श्लोकः ?

(A) अधमस्य (B) उत्तमोत्तमस्य
(C) उत्तमस्य (D) मध्यमस्य

व्याख्या- पं. राज जगन्नाथ कृत रसगङ्गाधर के अन्तर्गत चार आनन हैं। प्रथम आनन में काव्य के चार भेदों की चर्चा करते हैं-

तच्चोत्तमोत्तमोत्तममध्यमाधमभेदाश्चतुर्धा।

1. उत्तमोत्तम 2.उत्तम 3. मध्यम 4. अधम

उत्तमोत्तम काव्य- शब्दार्थौ यत्र गुणीभावितात्मानौ कमप्यर्थमभि- व्यङ्क्तस्तदाद्यम् ।

जिसमें शब्द और अर्थ (वाच्य, लक्ष्य, व्यङ्ग्य) दोनों अपने को गौण बनाकर किसी (चत्मकारजनक प्रधान) अर्थ को व्यक्त करते हैं, उसे उत्तमोत्तम काव्य कहते हैं।

उदाहरण- शयिता सविधेऽप्यनीश्वरा सफलीकर्तुमहो मनोरथान् दयिता दयिताननाम्बुजं दरमीलन्नयना निरीक्षते।।

नववधू अपने प्रियतम के समीप सोई है, परन्तु आश्चर्य है कि वह अपने मनोगत मनोरथों को सफल बनाने में असमर्थ है- उसे लज्जा और भय ने दबा रखा है, जिससे वह कुछ कर नहीं पाती इस स्थिति में प्रियतम की अभिलाषायें भी पूर्ण नहीं हो पातीं यह स्वतः सिद्ध है, फिर भी वह प्रियतम की दयिता है, प्रेयसी है, केलि विमुख भी नवोढा पत्नी सहृदय प्रेमियों के लिए अप्रीतिकर नहीं अपितु प्रीतिवर्धक होती है।

अब यहाँ ग्रन्थकार इस पद्य से होने वाले उस व्यङ्ग्य को दर्शाते हैं जिसके बल पर यह श्लोक उत्तमोत्तम काव्य का उदाहरण है।

यत्र व्यङ्ग्यप्रधानमेव सच्चमत्कारकारणं तद् द्वितीयम्।।

जिस काव्य में व्यङ्ग्य अप्रधान होकर ही चमत्कार का कारण हो, वह द्वितीय उत्तम नामक काव्य कहलाता है।

उदाहरण – राघवविरहज्वाला-सन्तापितसह्यशैलशिखरेषु। शिशिरे सुखं शयानाः कपयः कुप्यन्ति पवनतनयाय।।

* **यत्र व्यङ्ग्यचमत्कारासमानाधिकरणो वाच्यचमत्कारस्तत्तृतीयम्।** जिस काव्य में व्यङ्ग्य अर्थ का चमत्कार लघु अंश में रहकर भी व्यापक वाच्य अर्थ के चमत्कार में अन्तर्मुख हो जाने से स्पष्टतया अनुभूत न हो वह मध्यम नामक काव्य कहलाता है।

उदाहरण- तनयमैनाकगवेषणलम्बीकृत-जलधिजठर प्रविष्ट हिमगिरिभुजायमानाया भगवत्या भागीरथ्याः सखी इति।

* **यत्रार्थचमत्कृत्युपस्कृता शब्दचमत्कृतिः प्रधानं तदधमं चतुर्थम्।** जिस काव्य में वाच्य अर्थ चमत्कार से परिपोषित होकर शब्द का चमत्कार प्रधान हो, उसको 'अधमकाव्य' कहते हैं। इस काव्य में भी कुछ न कुछ व्यङ्ग्य अवश्य रहता है, परन्तु वह रहकर भी चमत्कारजनक न होने से अविवक्षित रहता है अतः उसकी प्रधानता नहीं रहती।

मित्रात्रिपुत्रनेत्राय त्रयीशात्रवशत्रवे।
गोत्रारिगोत्रजत्राय गोत्रात्रे ते नमो नमः।।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'शयिता सविधेऽप्यनीश्वरा ....' यह उत्तमोत्तम काव्य का उदाहरण है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- रसगङ्गाधर - मदनमोहन झा, पेज 38

67. उपकारकत्वादलङ्कारः सप्तममङ्गम् इति यायावरीयः। उक्तिरियं कुत्रास्ति ?
(A) नाट्यशास्त्रे (B) काव्यप्रकाशे
(C) काव्यमीमांसायाम् (D) वक्रोक्तिजीविते

व्याख्या-
* राजशेखरकृत काव्यमीमांसा में अठारह अध्याय थे जिसमें केवल प्रथम अधिकरण ही प्राप्त हैं। जो अठारह अध्यायों में विभाजित हैं।
* प्रथम अधिकरण का नाम 'कविरहस्य' है जिसमें कवियों की चर्चा की गयी है।
* द्वितीय अधिकरण का नाम 'शास्त्रनिर्देशः' है। जिसमें शास्त्र, काव्य का विशद् वर्णन है।
* **'उपकारकत्वादलङ्कारः सप्तममङ्गम् इति यायावरीयः।'** यायावर कुल में उत्पन्न आचार्य राजशेखर का कथन है कि उपयोगी होने से अलङ्कार सातवाँ अङ्ग है।
* मम्मटकृत काव्यप्रकाश में अलङ्कार का लक्षण-
उपकुर्वन्ति तं सन्तं येऽङ्गद्वारेण जातुचित्।
हारादिवदलङ्कारास्तेऽनुप्रासोपमादयः॥
अर्थ- जो काव्य में विद्यमान उस अङ्गी रस को शब्द तथा अर्थरूप अङ्गों के द्वारा कभी-कभी उत्कर्षयुक्त करते हैं, वे अनुप्रास और उपमा आदि हार आदि के समान (काव्य के) अलङ्कार होते हैं।
आचार्यभरतमुनि कृत नाट्यशास्त्र में नाट्य की महत्ता-
न तज्ज्ञानं न तच्छिल्पं न सा विद्या न सा कला।
नासौ योगो न तत्कर्म नाट्येऽस्मिन् यन्न दृश्यते। (1/16)
विश्व में ऐसा कोई भी ज्ञान, शिल्प, विद्या, कला, योग एवं कर्म नहीं है जिसका उपयोग नाट्य में न होता हो।
* काव्यमीमांसा में काव्यपुरुष के शिष्यों ने विशेष विषय पर अपने ग्रन्थ लिखे-

कवि	**रचना**
सहस्राक्ष	कविरहस्य
उक्तिगर्भ	उक्तिविषयक (औक्तिक)
सुवर्णनाभ	रीति का निर्णय
प्रचेता	अनुप्रास के विवेचक अंश
यम	यमक
चित्राङ्गद	चित्रकाव्य
आचार्यश्लेष	शब्दश्लेष
पुलस्त्यवास्तविकता अर्थात्	स्वभावोक्ति
औपकायन	उपमालङ्कार
पराशर	अतिशयोक्ति
उतथ्य	अर्थश्लेष
कुबेर	उभयालङ्कार
कामदेवविनोद	(हास्य)
नन्दिकेश्वर	रस विषयक ग्रन्थ
धिषण (बृहस्पति)	दोष विषयक ग्रन्थ
उपमन्युगुणों और दोष	
कुचमार	औपनिषदिक

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण में स्पष्ट है कि 'उपकारकत्वादलङ्कारः सप्तममङ्गम्' यह राजशेखरकृत काव्यमीमांसा में उद्धृत है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**
स्रोत- काव्यमीमांसा - गंगासागर राय, पेज 03

68. वक्रोक्तिजीवितानुसारं कविव्यापारवक्रत्वप्रकाराः कति सम्भवन्ति ?
(A) त्रयः (B) चत्वारः
(C) पञ्च (D) षट्

व्याख्या- * आचार्य कुन्तककृत वक्रोक्तिजीवितम् में चार उन्मेष हैं।
* कवि ग्रन्थ की निर्विघ्न परिसमाप्ति हेतु शक्ति के परिस्पन्द मात्र उपकरण वाले त्रिभुवन में विचित्र कर्म करने वाले परमतत्त्व शिव की वन्दना करता है।
* आचार्य कुन्तक कवियों के व्यापार (काव्य) की वक्रता का व्याख्यान करते हैं। सर्वप्रथम वक्रता के छः भेद आचार्य ने माने हैं-
कविव्यापारवक्रत्वप्रकाराः सम्भवन्ति षट्।
प्रत्येकं बहवो भेदास्तेषां विच्छित्तिशोभिनः॥ (1/18)
वर्णविन्यासवक्रत्वं पदपूर्वार्द्धवक्रता।
वक्रतायाः परोऽप्यस्ति प्रकारः प्रत्ययाश्रयः॥ (1/19)
(1) वर्णविन्यास वक्रता (2) पदपूर्वार्द्धवक्रता (3) प्रत्ययाश्रितवक्रता (4) वाक्यवक्रता (5) प्रकरणवक्रता (6) प्रबन्धवक्रता
* **धर्मादिसाधनोपायः सुकुमारक्रमोदितः।**
काव्यबन्धोऽभिजातानां हृदयाह्लादकारकः॥ (1/3)
कोमल परिपाटी से कहा गया महाकाव्य धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के साधन का उपाय है तथा अभिजात राजपुत्रों आदि के हृदय को आह्लादित करने वाला होता है।
वक्रोक्तिकार का काव्यलक्षण-
शब्दार्थौ सहितौ वक्रकविव्यापारशालिनि।
बन्धे व्यवस्थितौ काव्यं तद्विदाह्लादकारिणि॥ (1/7)
शास्त्रादि प्रसिद्ध शब्द तथा अर्थ के उपनिबन्धन से भिन्न कविव्यापार से शोभित काव्यतत्त्वज्ञों को आनन्दित करने वाले काव्य में

विशेष रूप से स्थित सहभाव से युक्त शब्द तथा अर्थ दोनों मिलकर काव्य होता है।

वक्रोक्ति का लक्षण-

उभावेतावलङ्कार्यौ तयोः पुनरलङ्कृतिः।
वक्रोक्तिरेव वैदग्ध्यभङ्गीभणितिरुच्यते॥ (1/10)

यह शब्द तथा अर्थ दोनों ही अलङ्कार्य हैं फिर शब्द तथा अर्थ दोनों की अलङ्कृति चातुर्यपूर्ण कथन वक्रोक्ति कहलाती है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि वक्रोक्तिजीवितानुसार कविव्यापारवक्रता षट् प्रकाराः सन्ति। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- वक्रोक्तिजीवितम् - राधेश्याम मिश्र भू., पेज 24

69. काव्यप्रकाशानुसारं शृङ्गारे द्रुतिकारणम् आह्लादकत्वं कस्य ?

(A) माधुर्यम् (B) ओजसः
(C) प्रसादस्य (D) समतायाः

व्याख्या- आचार्य मम्मट कृत काव्यप्रकाश के गुणालङ्कारनियतगुणनिर्णय नामक अष्टमोल्लास में गुणों की चर्चा करते हुए कहते हैं कि

'माधुर्यौजः प्रसादाख्यास्त्रयस्ते न पुनर्दश'

(वे गुण) माधुर्य, ओज, प्रसाद नामक तीन गुण होते हैं। वामन के अभिप्रेत दस गुण नहीं।

माधुर्यगुण-

आह्लादकत्वं माधुर्यं शृङ्गारे द्रुतिकारणम्।

चित्त के द्रवीभाव का कारण और शृङ्गार में रहने वाला जो आह्लादस्वरूपरूपत्व है वह माधुर्य नामक गुण कहलाता है।

करुणे विप्रलम्भे तच्छान्ते चातिशयान्वितम्।

यह माधुर्य गुण सामान्यतः सम्भोगशृङ्गार में रहता है। परन्तु करुण, विप्रलम्भ, शृङ्गार तथा शान्त रस में वह उत्तरोत्तर अधिक चमत्कारजनक होता है।

ओजगुण- दीप्त्यात्मविस्तृतेर्हेतुरोजो वीररसस्थितिः।

चित्त के द्रवीभाव का कारणभूत आह्लादकत्व जिस प्रकार माधुर्यगुण कहलाता है, वीररस में रहने वाली आत्मा चित्त के विस्तार रूप दीप्तत्व का जनक ओजगुण कहलाता है।

बीभत्सरौद्ररसयोस्तस्याधिक्यं क्रमेण च॥

यह ओज सामान्यतः वीर रस में रहता है परन्तु बीभत्स और रौद्र रसों में क्रमशः इसका आधिक्य रहता है।

प्रसाद गुण-

शुष्केन्धनाग्निवत् स्वच्छजलवत्सहसैव यः।
व्याप्नोत्यन्यत् प्रसादोऽसौ सर्वत्र विहितस्थितिः॥

सूखे ईंधन में अग्नि के समान अथवा स्वच्छ जल के समान जो चित्त में सहसा व्याप्त हो जाता है, वह सर्वत्र सब रसों में रहने वाला प्रसाद गुण कहलाता है।

प्रमुख आचार्यों के अनुसार गुणों की संख्या-

वामन- वामन ने गुणों की संख्या दश मानी है।

भामह- भामह ने तीन गुण माने हैं।

विश्वनाथ- विश्वनाथ ने तीन गुण स्वीकार किये हैं।

माधुर्यमोजोऽथ प्रसाद इति ते त्रिधा। (सा. द. 8/1)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि 'आह्लादकत्वं माधुर्यं शृङ्गारे द्रुतिकारणम्' यह माधुर्य का लक्षण है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज 388

70. पण्डितराजजगन्नाथमते काव्यस्य कति भेदाः स्वीकृताः?

(A) त्रयः (B) द्वौ
(C) चत्वारः (D) पञ्च

व्याख्या- पण्डितराज जगन्नाथ कृत रसगङ्गाधर में चार आनन हैं। प्रथम आनन के अन्तर्गत काव्यभेदों की चर्चा की गयी है-

काव्यभेद-

* **तच्चोत्तमोत्तमोत्तममध्यमाधमभेदाश्चतुर्धा।**

काव्य के चार भेद हैं- 1. उत्तमोत्तम 2. उत्तम 3. मध्यम 4. अधम।

* आचार्य मम्मट के अनुसार काव्य के भेद तीन हैं-
(1) उत्तम (2) मध्यम (3) अधम

काव्यहेतु-

* पण्डितराजजगन्नाथ ने काव्य के एक हेतु प्रतिभा को मानते हैं। 'तस्य च कारणं कविगता केवला प्रतिभा'। इसी प्रकार वामन, रुद्रट भी प्रतिभा को ही काव्य का कारण मानते हैं।
* दण्डी, वाग्भट और पीयूषवर्ष, प्रतिभा, व्युत्पत्ति, और अभ्यास को काव्य का हेतु मानते हैं।
* आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश में तीन हेतु की स्वीकार करते हैं-

शक्तिर्निपुणता लोकशास्त्रकाव्याद्यवेक्षणात्।
काव्यज्ञशिक्षयाभ्यास इति हेतुस्तदुद्भवे॥

शक्ति, निपुणता और अभ्यास ये तीन हेतु हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि पं. राज जगन्नाथ के मत में चार काव्य माने गये हैं। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- रसगङ्गाधर - मदनमोहन झा, पेज 37

71. ब्राह्मीलिपेः उद्वाचने प्रथमां सफलतां कः प्राप्तवान्?

(A) मैक्समूलरः (B) विलियम जोन्सः
(C) जेम्स प्रिंसेपः (D) ह्विटनी

व्याख्या- ब्राह्मी लिपि भारतवर्ष की प्राचीन लिपि है,

पहले इस लिपि के लेख अशोक के समय अर्थात् ईसा पूर्व की तीसरी शताब्दी तक के ही मिले परन्तु कुछ वर्ष पूर्व इस लिपि के दो छोटे-छोटे लेख प्राप्त हुए जिनमें से एक पिप्रावा के स्तूप से और दूसरा बर्ली गाँव से।
अशोक के अभिलेखों को सबसे पहले 1750 में टी. फैन्थैलर ने खोजा था।
अशोक के अभिलेखों को सर्वप्रथम 1837 में कलकत्ता टकसाल के अधिकारी एवं एशियाटिक सोसायटी के सचिव जेम्स प्रिन्सेप ने पढ़ा था। इन्होंने दिल्ली-टोपरा अभिलेख को पढ़ा था। इस समय अलेक्जेण्डर कनिंघम इनके सहायक थे। अतः जेम्स प्रिंसेप ने ही सबसे पहली बार ब्राह्मी लिपि का सफलतापूर्वक उद्वाचन किया। लेकिन इन्होंने एक गलती कर दी कि देवानांप्रिय का समीकरण लंका के राजा तिस्स से स्थापित कर दिया।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त से स्पष्ट है कि ब्राह्मी लिपि का प्रथम वाचन 'जेम्स प्रिंसेप' ने किया **अतः विकल्प 'C' सही है।**
स्रोत- प्राचीन भारत-सौरभ चौबे, पेज 266

72. अशोकस्य शिलालेखानां भाषा का अस्ति ?
(A) प्राकृतम् (B) संस्कृतम्
(C) अपभ्रंशः (D) अवेस्ता

व्याख्या- अशोक के अभिलेख-

प्रथम शिलालेख-	(गिरनार)
स्थान -	गिरनार जिला-जूनागढ़ महाराष्ट्र
भाषा -	प्राकृत (पालि)
लिपि -	ब्राह्मी
काल -	अशोककालीन लगभग (272-32 ई.पू.)
विषय -	हिंसा और साम्राज्यवाद का विरोध, व्यक्तिगत जीवन

* अशोक के चौदह शिलालेखों का वर्णन प्राप्त होता है।
* यह धम्म लिपि देवानांप्रिय (देवताओं में प्रिय) प्रियदर्शी राजा (अशोक) द्वारा लिखवाई गयी।
* कोई भी जीव बलि के लिए नहीं मारा जायेगा।
* पहले देवानांप्रिय प्रियदर्शी राजा के रन्धनागार रसोई में प्रतिदिन बहुत लाख प्राणी सूप के लिए मारे जाते थे। परन्तु जब से यह धम्मलिपि लिखवाई तीन प्राणी ही मारे जाते हैं। दो मोर और एक हिरन।
* वह हिरन भी सदैव नहीं। ये तीन प्राणी भी बाद में नहीं मारे जाएँगे।
* गुजरात की गिरनार पहाड़ियों में प्राप्त अशोक के चौदह शिलालेखों में से प्रथम शिलालेख पर राजा जीवों पर दया की भावना से पशुयज्ञ और पशु-मांस भक्षण की निषेधाज्ञा जारी की गई है।
* ये अभिलेख प्राकृत भाषा में हैं और ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण किये गये हैं।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि अशोक के शिलालेख की भाषा प्राकृत थी। **अतः विकल्प 'A' सही है।**
स्रोत- भारतीय पुरालेखों का अध्ययन- शिवस्वरूप सहाय, पेज– 90

73. कुत्र अशोकस्य नाम प्रदत्तम् ?
(A) मास्कि-शिलालेखे
(B) प्रयागस्तम्भलेखे
(C) गिरनार-शिलालेखे
(D) कान्धार-द्विभाषी शिलालेखे

व्याख्या- अशोक के अभिलेख- मौर्य सम्राट् अशोक के ब्राह्मी, खरोष्ठी, आरामेयिक और यूनानी लिपियों में अंकित अभिलेख देश के विभिन्न भागों से प्राप्त हुए हैं। इनमें से सबसे अधिक संख्या ब्राह्मी लिपि में लिखे गये अभिलेखों की है, जो देश के प्रायः सभी भागों से मिले हैं।
* इन अभिलेखों में से अधिकांश में अशोक का उल्लेख देवानांप्रिय और प्रियदर्शी राजा उपाधियों से हुआ है।
कुछ विद्वान् इन अभिलेखों के अशोक के होने से सन्देह प्रकट करते रहे। किन्तु मास्कि अभिलेख में देवानांपियस असोकस और गुर्जरा अभिलेख में देवानांपियस पियदसिनो असोकराजस के स्पष्ट उल्लेख प्राप्त होने से यह भ्रम निर्मूल सिद्ध हो गया।
कौशाम्बी वाले स्तम्भलेख में अशोक की द्वितीय महिषी कारुवाकी (चारुवाकी) के पुत्र तीवर का नाम है और पाङ्गुररिया लेख में कुमार सम्ब का उल्लेख है।
अशोक के जीवनकाल में कुछ प्रमुख कार्यों का परिचय-
1. आठवें वर्ष कलिंग विजय (13 वाँ शिलाभिलेख)
2. दसवें वर्ष- सम्बोधि (बोधगया) की यात्रा (8वाँ शिलालेख)
3. बारहवें वर्ष- युक्तों, राजुकों और प्रादेशिकों को दौर पर जाने का आदेश (तीसरा शिलाभिलेख)
धम्मलिपि का आलेखन (चौथा तथा छठाशिलाभिलेख)
अभिलेखों का मुख्य उद्देश्य अशोक द्वारा धर्म प्रतिपादन था। उनसे स्पष्ट रूप से प्रकट होता है कि वह स्वयं बौद्ध धर्म का अनुयायी था और संघ के प्रति कर्त्तव्यनिर्वाह के प्रति सजग था।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि अशोक का नाम मास्कि अभिलेख में उल्लेख प्राप्त होता है। **अतः विकल्प 'A'**

सही है।

स्रोत- प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख - परमेश्वरी लाल गुप्त, पेज 09, 10

74. गिरनारस्य तडागेन सम्बद्धो नासीत्-

(A) चन्द्रगुप्तः मौर्यः (B) अशोकः मौर्यः
(C) कनिष्कः कुषाणः (D) रुद्रदामा शकः

व्याख्या- सौराष्ट्र प्रान्त के गिरनार (जूनागढ़) में स्थित गिरनार पर्वत पर गुप्तवंशीय नरेश का नाम अंकित है।
रैवतक एवं उर्जयत पर्वतों के जल स्रोतों के ऊपर कृत्रिम बाँध बनाकर पलासिनी नदी एवं सुवर्णसिकता नदी को आपस में जोड़कर सुदर्शन झील का निर्माण किया गया था।
यह बाँध दो बार टूटा। सबसे पहली बार शक रुद्रदामन् के समय टूटा। इसने सुविशाख पह्लव के माध्यम से बिना जनता के ऊपर कर वेगार डाले अपने कोष से झील का पुनर्निर्माण कराया। स्कन्दगुप्त के समय यह बाँध पुनः टूट गया। इस समय सौराष्ट्र का राज्यपाल पर्णदत्त था। इसके पुत्र चक्रपालित ने बाँध का पुनः पुनर्निर्माण करवाया इस झील का इतिहास जूनागढ़ अभिलेख से विदित होता है। इसी अभिलेख में चार शासकों एवं उनके चार राज्यपालों का उल्लेख क्रमशः मिलता है-

चार शासक	सौराष्ट्र के चार गवर्नर
चन्द्रगुप्त	पुष्यगुप्त वैश्य
अशोकयवन	तुषास्प
रुद्रदामन्	सुविशाख पहलव
स्कन्दगुप्त	पर्णदत्त

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि गिरनार तडाग का सम्बन्ध चन्द्रगुप्त, अशोक, रुद्रदामन् से है जबकि कनिष्क कुषाण का सम्बन्ध गिरनार तडाग से नहीं है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- प्राचीन भारत का इतिहास - सौरभ चौबे, पेज 263

75. अत्र वर्तते कालिदासस्य नामोल्लेखः-

(A) तन्तुवाय-श्रेण्याः मन्दसौर शिलालेखे
(B) प्रभावतगुप्तायाः पूना-ताम्रपट्टलेखे
(C) पुलकेशिद्वितीयस्य एहोल-शिलालेखे
(D) मिहिरभोजस्य ग्वालियर-शिलालेखे

व्याख्या- पुलकेशिन् द्वितीय के आश्रित कवि रविकीर्ति के दक्षिण भारत के ऐहोल नामक ग्राम में प्राप्त शिलालेख में कालिदास का उल्लेख है। यह शिलालेख शक संवत् 556 अर्थात् 634 ई. का है। इसमें रविकीर्ति अपने आपको कालिदास और भारवि जैसा महाकवि बताता है-

येनायोजि नवेऽश्मस्थिरमर्थविधौ विवेकिना जिनवेश्म।
स विजयतां रविकीर्तिः कविताश्रितकालिदासभारविकीर्तिः॥

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि कालिदास का नामोल्लेख पुलकेशिन् द्वितीय के ऐहोल शिलालेख में प्राप्त होता है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज भू. 13

उत्तरमाला

1.A 2.D 3.A 4.B 5.D 6.C 7.B 8.A 9.B 10.D 11.C 12.A 13.D 14.B 15.B 16.D 17.C 18.B 19.C 20.A 21.D 22.D 23.B 24.C 25.B 26.D 27.C 28.B 29.B 30.B 31.A 32.A 33.C 34.B 35.C 36.B 37.B 38.A 39.B 40.A 41.C 42.A 43.A 44.D 45.C 46.C 47.B 48.C 49.D 50.C 51.A 52.C 53.A 54.D 55.A 56.C 57.A 58.D 59.A 60.D 61.A 62.B 63.B 64.B 65.C 66.B 67.C 68.D 69.A 70.C 71.C 72.A 73.A 74.C 75.C

9	दिसम्बर 2015	NTA UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् III

1. दानस्तुतिसूक्तानि संहितायां सन्ति -
(A) काण्वसंहितायाम् (B) तैत्तिरीयसंहितायाम्
(C) ऋग्वेदसंहितायाम् (D) माध्यन्दिनसंहितायाम्

व्याख्या- ऋग्वेद में आर्य-संस्कृति का विशद निरूपण हुआ है। इसमें सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, शैक्षिक, नैतिक, आध्यात्मिक, दार्शनिक, कलात्मक एवं वैज्ञानिक तथ्यों का भी यथास्थान निरूपण हुआ है।

* ऋग्वेद में मुख्य रूप से विभिन्न देवों की स्तुति है और उनसे यश, विद्या, श्रीवृद्धि आदि की प्रार्थनाएँ की गई हैं।
* अनेक स्थलों पर मनोविज्ञान, सृष्टि-उत्पत्ति, आयुर्वेद, भाषाविज्ञान, ज्योतिष आदि से संबद्ध सामग्री भी प्रचुर मात्रा में मिलती है।
* आध्यात्मिक और दार्शनिक भाव तो पद-पद पर प्राप्य हैं।
* हिरण्यगर्भ, नासदीय एवं पुरुष आदि सूक्त सृष्टि-प्रक्रिया का विवेचन प्रस्तुत करते हैं। साथ ही आचारशिक्षा, नीतिशिक्षा, धर्मशिक्षा तथा कर्तव्योपदेश आदि का वर्णन पग-पग पर प्राप्य है।

ऋग्वेद के कुछ महत्त्वपूर्ण सूक्त -

1. पुरुषसूक्त (ऋग्० 10.90)- यह सूक्त चारों वेदों में आया है।
* इसमें पुरुष के विराट् रूप का वर्णन किया गया है और उसी से समस्त विश्व की सृष्टि का वर्णन है।
* इसमें पुरुष को सहस्रों सिर, पैर आदि से युक्त बताया गया है।
* उससे चराचर जगत् की सृष्टि तथा चारों वेदों की उत्पत्ति कही गयी है।
* सर्वप्रथम चातुर्वर्ण्य-व्यवस्था का इसमें उल्लेख है।
* चारों वर्णों को विराट् पुरुष का मुख आदि अंग बताया गया है।
* यज्ञप्रक्रिया को सृष्टि का प्रथम धर्म कहा गया है।
* पुरुष को ही सृष्टि का सर्वस्व, वर्तमान, भूत और भविष्य बताया गया है।

2. नासदीयसूक्त (ऋग् ० 10.129)- यह सूक्त वैदिक ऋषियों के ज्ञान और अलौकिक दार्शनिक चिन्तन का परिचायक है।
* इसमें सृष्टि की उत्पत्ति से पूर्व की स्थिति का वर्णन करते हुए कहा गया है कि उस समय न असत् था और सत्, न रात्रि थी और न दिन। सृष्टि का कोई चिह्न नहीं था।

3. हिरण्यगर्भसूक्त (ऋग् ० 10.121)- इस सूक्त में उदात्त दार्शनिक भावों की अभिव्यक्ति करते हुए 'क' अर्थात् प्रजापति का महत्त्व वर्णित है।
* 9 मंत्रों में 'कस्मै देवाय हविषा विधेम' अर्थात् ऐसे प्रजापति देवता को हम अपनी स्तुति अर्पित करते हैं, यह कहा गया है।
* वह प्रजापति सृष्टि के प्रारम्भ में हिरण्यगर्भ (सुवर्णपिण्ड) के रूप में प्रकट हुआ। वही सृष्टि का नियामक हुआ।

4. श्रद्धासूक्त (ऋग् ० 10.151)- इस सूक्त में यद्यपि 5 ही मंत्र हैं, परन्तु भावगाम्भीर्य और विचारों की उदात्तता के कारण यह सूक्त अत्यन्त आदरणीय माना जाता है।
* मंत्र में श्रद्धा की परिभाषा दी गयी है- किसी कार्य में अतिशय हार्दिक संकल्प से अभिनिवेश या प्रवृत्ति श्रद्धा है।
* यह श्रद्धा ही जीवन को पवित्र बनाती है और महान् लक्ष्यों को प्राप्त कराती है।
* वेदों में उच्च लक्ष्य की प्राप्ति के लिए ऋत और सत्य के साथ श्रद्धा को आवश्यक बताया गया है।

5. वाक्सूक्त (ऋग्० 10.125)- ऋग्वेद के महत्त्वपूर्ण सूक्तों में वाक्सूक्त है।
* इस सूक्त के 8 मंत्रों में वाक्तत्त्व, शब्दब्रह्म, शब्दतत्त्व या वाग्देवी का ब्रह्म के रूप में वर्णन किया गया है। वाक्तत्त्व सर्वत्र व्याप्त है।
* यह इन्द्र, अग्नि, सोम, मित्र, वरुण आदि की ऊर्जा का स्रोत है।
* यह राष्ट्रनिर्मात्री शक्ति है। वाक्तत्त्व ही प्रतिभा है।
* पूरा सूक्त उत्तमपुरुष में 'वाक् आम्भृणी' ऋषिका द्वारा आत्मविवेचन के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

6. दानस्तुतिसूक्ति (ऋग् ० 10.107 और 117)- ऋग्वेद के इन सूक्तों में दान की महिमा का गुणगान है।
* वैदिक संस्कृति में त्याग और दान- इन दो गुणों को सर्वोच्च स्थान दिया गया है।
* इन सूक्तों में कहा गया है कि दानी अमर हो जाता है।
* उसके यहाँ अर्थसंकट कभी नहीं होता, वह समाज और राष्ट्र में सर्वत्र पूजा जाता है।
* उसे सूर्यलोक और स्वर्ग में भी उच्चस्थान प्राप्त होता है। दानी को ही सन्त, महात्मा, ऋषि और ब्रह्मा कहा जाता है।

8. संज्ञानसूक्त (ऋग् ० 10.191)- इस सूक्त के 4 मंत्रों में सामाजिक सौहार्द, सौमनस्य, सह-अस्तित्व, ऐकमत्य और संगठन का उपदेश दिया गया है।

* यह सूक्त सामाजिक, राष्ट्रीय और आर्थिक चिन्तन में समवेत-स्वर या समन्वय की भावना का प्रतिपादक है।

9. **अक्षसूक्त (ऋग् 10.34)-** इस सूक्त के 14 मंत्रों में अक्ष (द्यूतक्रीडा) की कड़े शब्दों में निन्दा की गयी है।

* यह सामाजिक कुरीति है। जुआँ खेलना स्वयं को और अपने परिवार को नष्ट करना है।

10. **विवाहसूक्त (ऋग् 10.85)-** अथर्ववेद में भी विवाह से संबद्ध दो सूक्त (कांड 14 सूक्त 1 और 2) आये हैं।

* अधिकांश मंत्र वे ही हैं।

* इसमें सूर्या (सूर्य की पुत्री) का सोम (चन्द्रमा) से विवाह का वर्णन है।

स्पष्टीकरण - उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'दानस्तुतिसूक्ति' ऋग्वेदसंहिता में वर्णित है। **अतः विकल्प (C) सही है।**

स्त्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज 55

2. ऋग्वेदीयषष्ठमण्डलस्य ऋषिः वर्त्तते -

(A) भरद्वाजः **(B)** वामदेवः
(C) वसिष्ठः **(D)** विश्वामित्रः

व्याख्या- ऋग्वेद-संहिता का विभाजन दो प्रकार से किया गया है- (1) अष्टकक्रम (2) मण्डलक्रम

अष्टकक्रम- पूरे ऋग्वेद को 8 समान भागों में बाँटा गया है, इन्हें 'अष्टक' कहते हैं। प्रत्येक अष्टक को 8 अध्यायों में बाँटा गया है। अतः पूरे ऋग्वेद में 64 अध्याय हैं। अध्याय वर्गों में विभाजित हैं, प्रत्येक अध्याय में वर्गों की संख्या भिन्न-भिन्न है। इस प्रकार ऋग्वेद में बालखिल्य सूक्तों को भी सम्मिलित करते हुए 8 अष्टक, 64 अध्याय, 2024 वर्ग और 10552 मंत्र हैं। इसमें बालखिल्य सूक्तों सहित 1028 सूक्त हैं और 3,97,256 अक्षर हैं।

मण्डलक्रम- यह विभाजन अधिक सुसंगत और उपयुक्त है। इसमें पूरे ऋग्वेद को ऋषि और देवता के अनुसार 10 मण्डलों में विभक्त किया गया है। इसमें बालखिल्य के 11 सूक्तों के 80 मंत्रों को सम्मिलित करते हुए 85 अनुवाक, 1028 सूक्त और 10,552 मंत्र हैं।

*** मंत्रद्रष्टा ऋषि -** सुविधा की दृष्टि से ऋग्वेद के मण्डल, सूक्त, मंत्र-संख्या और संबद्ध ऋषियों की सारणी दी जा रही है।

मण्डल	सूक्तसंख्या	मंत्रसंख्या	ऋषि नाम
1.	191	2006	मधुच्छन्दा, मेधातिथि, दीर्घतमा, अगस्त्य, गौतम, पराशर आदि।
2.	43	429	गृत्समद एवं उनके वंशज
3.	62	617	विश्वामित्र एवं उनके वंशज
4.	58	589	वामदेव एवं उनके वंशज
5.	87	727	अत्रि एवं उनके वंशज
6.	75	765	भरद्वाज एवं उनके वंशज
7.	104	841	वसिष्ठ एवं उनके वंशज
8.	103	1716	कण्व, भृगु, अंगिरस् एवं उनके वंशज
9.	114	1108	ऋषिगण, विषय-पवमान-सोम
10.	191	1754	वित, विमद, इन्द्र, श्रद्धा-कामायनी, इन्द्राणी, शची, उर्वशी, नारायण आदि।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरणों से स्पष्ट है कि ऋग्वेद के षष्ठ मण्डल में भरद्वाज ऋषि का वर्णन प्राप्त है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्त्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज 47

3. 'बृहदारण्यकम्' कस्य वेदस्य वर्तते?

(A) सामवेदस्य **(B)** यजुर्वेदस्य
(C) ऋग्वेदस्य **(D)** अथर्ववेदस्य

व्याख्या- आरण्यकग्रन्थों का उद्भव नैसर्गिक प्रक्रिया के अनुरूप ब्राह्मणग्रन्थों के पश्चात् हुआ है।

* स्थूल से सूक्ष्म की ओर जाना मानवीय प्रवृत्ति है।

* वेदों और ब्राह्मणों में वर्णित यज्ञप्रक्रिया कष्टसाध्य, दुर्बोध और नीरस होने के कारण अरुचिकर होती जा रही थी, अतः आत्मिक शान्ति के लिए अध्यात्म की आवश्यकता अनुभव की गई।

* आवश्यकता आविष्कार की जननी है, अतः आरण्यकों की सृष्टि हुई।

* आरण्यकग्रन्थ ब्राह्मणग्रन्थों और उपनिषदों को जोड़ने वाली कड़ी है।

* ब्राह्मणग्रन्थों में यज्ञों के दार्शनिक और आध्यात्मिक पक्ष का जो अंकुरण हुआ है, उसका पल्लवित रूप आरण्यकग्रन्थ हैं।

* आरण्यकों में पवित्र ब्रह्मविद्या का वर्णन है। आरण्यकग्रन्थ उपनिषदों का पूर्वरूप हैं।

* उपनिषदों में आत्मा, परमात्मा, सृष्ट्युत्पत्ति, ज्ञान- कर्म, उपासना और तत्त्वज्ञान का प्रतिपादन है। उसी तत्त्वज्ञान का प्रारम्भिक रूप हम आरण्यकों में पाते हैं।

उपलब्ध आरण्यकग्रन्थ-

सम्प्रति केवल 6 आरण्यकग्रन्थ प्राप्य हैं। वेदों के अनुसार इन्हें इस प्रकार रख सकते हैं।

1. ऋग्वेदीय - ऋग्वेद से सम्बद्ध दो आरण्यकग्रन्थ हैं-

(i) ऐतरेय और (ii) शांखायन आरण्यक।

(i) ऐतरेय आरण्यक- यह ऐतरेयब्राह्मण का ही परिशिष्ट भाग है। इसमें पाँच भाग हैं। इसमें प्राणविद्या, आत्मविद्या आदि का वर्णन है।

(ii) शांखायन आरण्यक- यह ऋग्वेदीय आरण्यक है। इसमें 15 अध्याय हैं। अध्याय 3 से 6 तक को 'कौषीतकि उपनिषद्' कहते हैं। अध्याय 7 से 8 को संहितोपनिषद् कहते हैं। इसी को कौषीतकि आरण्यक भी कहा जाता है।

2. शुक्लयजुर्वेदीय- इसमें बृहदारण्यक प्राप्त है। यह माध्यन्दिन और काण्व दोनों शाखाओं में प्राप्य है।

बृहदारण्यक - यह शुक्लयजुर्वेदीय आरण्यक है। यह शतपथ ब्राह्मण आरण्यक की अपेक्षा उपनिषद् के रूप में अधिक मान्यता प्राप्त है। इसमें आत्मतत्त्व की विशद व्याख्या है।

3. कृष्णयजुर्वेदीय- कृष्णयजुर्वेद की तैत्तिरीय और काठक शाखाओं का एक आरण्यक है- तैत्तिरीय आरण्यक।

मैत्रायणी शाखा का एक आरण्यक 'मैत्रायणीय आरण्यक' है इसको 'मैत्रायणीय उपनिषद्' भी कहते हैं।

4. सामवेदीय- सामवेद की जैमिनिशाखा का 'तवलकार आरण्यक' है। इसको 'जैमिनीय उपनिषद् ब्राह्मण' भी कहते हैं। सामवेद की कौथुम शाखा का आरण्यक नहीं है। छान्दोग्य उपनिषद् कौथुम शाखा से सम्बद्ध है।

5. अथर्ववेदीय- अथर्ववेद का कोई पृथक् आरण्यक नहीं है। गोपथब्राह्मण के ही ब्रह्मविद्यापरक कुछ अंशों को आरण्यक कह सकते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'बृहदारण्यक' यजुर्वेद से सम्बद्ध है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज 163

4. 'आग्नीध्र'- नामा ऋत्विक् कस्य गणस्य वर्तते?

(A) ब्रह्मगणस्य **(B)** अध्वर्युगणस्य

(C) होतृगणस्य **(D)** उद्गातृगणस्य

व्याख्या- समस्त वेदों के अलग-अलग ऋत्विक् बताये गये हैं-

जैसे -ऋग्वेद के ऋत्विक् - होता

यजुर्वेद के ऋत्विक् - अध्वर्यु

सामवेद के ऋत्विक् - उद्गाता

अथर्ववेद के ऋत्विक् - ब्रह्मा

इस प्रकार समस्त वेदों के अलग-अलग ऋत्विक् बताये गये हैं, जिसमें सोलह ऋत्विक् होते हैं, जो चार गणों में विभक्त रहते हैं। वे हैं- अध्वर्युगण, ब्रह्मगण, होतृगण और उद्गातृगण। प्रत्येक गण में चार-चार ऋत्विक् होते हैं, सब मिलाकर सोलह ऋत्विक् होते हैं। वे इस प्रकार हैं -

अध्वर्युगण	**ब्रह्मगण**	**होतृगण**	**उद्गातृगण**
अध्वर्यु	ब्रह्मा	होता	उद्गाता
प्रतिप्रस्थाता	ब्राह्मणाच्छंसी	मैत्रावरुण	प्रस्तोता
नेष्टा	आग्नीध्र	अच्छावाक	प्रतिहर्ता
उन्नेता	पोता	ग्रावस्तुत्	सुब्रह्मण्य

लिखने के क्रम के अनुसार ही संख्या भी होती है- पहला, दूसरा, तीसरा, चौथा। जैसे- अध्वर्युगण में अध्वर्यु पहला है, प्रतिप्रस्थाता दूसरा है, नेष्टा तीसरा है, उन्नेता चौथा है; इत्यादि। उसी के अनुसार दक्षिणा में भी क्रम हैं जितनी गायें दक्षिणा में देने को कही गयी हैं, उन्हें बराबर-बराबर चार भागों में विभक्त कर एक-एक गण के लिए एक-एक भाग दे। एक-एक भाग के लिए दी जाने वाली दक्षिणा भी समविभाग न करके विषम विभाग करके ही देना चाहिए।

जैसे-अध्वर्यु जितनी गायें पाये उससे आधी प्रतिस्थाता अध्वर्यु के भाग की, तृतीय भाग नेष्टा और उसका चतुर्थ भाग उन्नेता पाये।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरणों से स्पष्ट है कि 'आग्नीध्र' नाम ऋत्विक् का वर्णन ब्रह्मगण में है । **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- श्रौतयज्ञ परिचय- वेणीराम शर्मा गौड़, पेज 28

5. 'सुमन्तु'- ऋषये व्यासः कं वेदं प्रोक्तवान् ?

(A) यजुर्वेदम् **(B)** ऋग्वेदम्

(C) अथर्ववेदम् **(D)** सामवेदम्

व्याख्या- वस्तुतः वेद चार हैं - ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद।

* अथर्ववेद में मारण-मोहन-उच्चाटन सम्बन्धी मन्त्रों का सङ्कलन किया गया है।

* सम्भवतः ये विषय उस समय समाज द्वारा अनादृत रहे हों अतः इसकी गणना वेद के अन्तर्गत न की गई हो।

* यजुर्वेद के भाष्यकार महीधर का कथन है कि ब्रह्मा से चली आ रही वेद-परम्परा को ग्रहण करके वेदव्यास ने मन्दमति मनुष्यों के लिए वेद को ऋक्, यजुः, साम और अथर्व के रूप में विभक्त कर क्रमशः पैल, वैशम्पायन, जैमिनि और सुमन्तु को उपदेश दिया-

तत्रादौ ब्रह्म-परम्परया प्राप्तं वेदं वेदव्यासो मन्दमतीन् मनुष्यान् विचिन्त्य तत्कृपया चतुर्धा व्यस्य ऋग्यजुःसामाथर्वाख्याश्चतुरो वेदान् पैल-वैशम्पायन-जैमिनि सुमन्तुभ्यः क्रमादुपदिदेश। (यजुर्वेदभाष्य)

इस प्रकार स्पष्ट है कि महर्षि वेदव्यास ने ऋग्वेद का उपदेश पैल को, यजुर्वेद का उपदेश वैशम्पायन को, सामवेद का उपदेश जैमिनि को और अथर्ववेद का उपदेश सुमन्तु को दिया।

इस प्रकार वेद का चतुर्धा विभाजन किया जाता है। प्राचीन काल में वेद को 'त्रयी' कहा जाता था, बाद में जब अथर्ववेद को वेद की संज्ञा प्राप्त हो गयी तो वेद चार हो गये और 'वेदचतुष्टय' की प्रसिद्धि हो गई। वेदों के इस प्रकार का पृथक्करण करने के कारण व्यास को 'वेदव्यास' कहा जाता है-

'विव्यास वेदान् यस्मात्स वेदव्यास इति स्मृतः।'

वेदव्यास द्वारा ऋषियों को दिये गये वेदों का उपदेश-

पैल - ऋग्वेद
वैशम्पायन - यजुर्वेद
जैमिनि - सामवेद
सुमन्तु - अथर्ववेद

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'महर्षि वेदव्यास' ने 'सुमन्तु' को अथर्ववेद का उपदेश दिया। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज 4

6. दर्शपौर्णमासेष्टियागे प्रयाजानां संख्या विद्यते -

(A) एकादश **(B)** पञ्च
(C) त्रयः **(D)** नव

व्याख्या- यज्ञादि का स्वरूप- श्रुति में वैदिक यज्ञ पाँच प्रकार के बताये गये हैं -

1. अग्निहोत्र 2. दर्शपूर्णमास 3. चातुर्मास्य
4. पशुयाग 5. सोमयाग

* स्मृति में सात पाकयज्ञ, सात हविर्यज्ञ, सात सोमसंस्थाएँ हैं। इन सब श्रौत और स्मार्तों को मिलाकर इक्कीस यज्ञ कहे गये हैं।

सात पाकयज्ञ	**सात हविर्यज्ञ**
1. औपासन होम	1. अग्निहोत्र
2. वैश्वदेव	2. दर्शपूर्णमास
3. पार्वण	3. आग्रयण
4. अष्टका	4. चातुर्मास्य
5. मासिश्राद्ध	5. निरूढपशुबन्ध
6. श्रवणा	6. सौत्रामणी
7. शूलगव।	7. पिण्ड पितृयज्ञ।

सात सोम संस्थाएँ -

1. अग्निष्टोम	4. षोडशी
2. अत्यग्निष्टोम	5. वाजपेय
3. उक्थ्य	6. अतिरात्र
7. अप्तोर्याम।	

इनमें सात पाकयज्ञ स्मार्त्त हैं और सात हविर्यज्ञ, सात सोमयज्ञ श्रौत हैं।

दर्शपूर्णमास याग- दर्शपूर्णमास नामक याग अमावस्या और पूर्णिमा में अनुष्ठान होने से ही इन यागों का 'दर्शपूर्णमास' यह नाम पड़ा है। दर्श अर्थात् अमावस्या, पूर्णमास अर्थात् पौर्णमासी।

दर्शपूर्णमासयाग में पाँच प्रयाज और तीन अनुयाज बताये गये हैं। जिनसे देवताओं का प्रकृष्ट रूप से यजन होता है वे प्रयाज हैं तथा 'अनु' अर्थात् 'प्रधान याग के अनन्तर जिनसे यजन किया जाता है'- इस व्युत्पत्ति से होता द्वारा पढ़े जाने वाले याज्या मन्त्र अनुयाज है।

पञ्च प्रयाज	**तीन अनुयाज**
1. दो आज्यभाग	1. भागप्राशन
2. प्रधानयाग	2. अन्वाहार्य
3. स्विष्टकृत्	3. दक्षिणा
4. प्राशित्रावदान	
5. इडावदान।	

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरणों से स्पष्ट है कि दर्शपौर्णमासयाग में पञ्चप्रयाज बताये हैं। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- श्रौतयाग परिचय- वेणीराम शर्मा गौड़, पेज 13

7. याज्ञवल्क्यशिक्षानुसारं कति विवृत्तयः?
(A) चतस्रः (B) तिस्रः
(C) पञ्च (D) षट्

व्याख्या- विवृत्ति क्या है? -

जहाँ दो स्वरों के बीच में सन्धि न दिखाई दे वहाँ विवृत्ति जानना चाहिए। जैसा कि **शुक्लयजुर्वेद संहिता** के **'यऽईशे'** इस मन्त्र में हुआ है।

विवृत्ति का उच्चारण- जिस प्रकार आकाश में स्थित (चमकने वाली) बिजली मणियों में गुँथे हुए सूत्र के समान स्फुटित होने पर जितना समय लगता है, उतने ही समय में विवृत्ति का उच्चारण होता है।

जिस प्रकार केश (बाल) काटते समय छुरा से 'कुट' शब्द निकलता है उसी तीव्रता से विवृत्ति का उच्चारण करें।

विवृत्ति के भेद -

1. पिपीलिका 2. पाकवती 3. वत्सानुसारिणी
4. वत्सानुसृजिता

पिपीलिका पाकवती तथा वत्सानुसारिणी।
वत्सानुसृजिता चैव चतस्रस्ता विवृत्तयः॥10॥

1. पिपीलिका- विवृत्ति के आदि और अन्त में जहाँ पर दोनों ओर दीर्घ वर्ण हों, वहाँ पिपीलिका (जन्तुवत्) नाम की विवृत्ति होती है। **जैसे- संहितोक्त 'नाभ्याऽआसीत्'।**

2. पाकवती- विवृत्ति के आदि और अन्त में जहाँ पर दोनों ओर ह्रस्व वर्ण हो और उसी प्रकार सन्धि-विच्छेद हुआ हो तो पाकवती नाम की विवृत्ति होती है। **यथा- व्विनऽइन्द्र**

3. वत्सानुसारिणी- संधि-विश्लेष के साथ प्रारम्भिक वर्ण दीर्घ होता है और पीछे का वर्ण ह्रस्व। **यथा- 'ताऽअस्य'**

4. वत्सानुसृजिता- जहाँ आद्यक्षर ह्रस्व और परवर्ण दीर्घ होता है। **यथा- 'तानऽआवोढमश्विना'**

स्पष्टीकरण- इस प्रकार उपर्युक्त विवरणों से स्पष्ट है कि याज्ञवल्क्य शिक्षानुसार 4 विवृत्तियाँ हैं। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- याज्ञवल्क्यशिक्षा- डॉ. नरेश झा, पेज 89

8. ऋक्संहितायाः समुपलब्धेषु भाष्येषु प्रथमो भाष्यकारः वर्तते -
(A) आनन्दतीर्थः (B) सायणः
(C) स्कन्दस्वामी (D) वेङ्कटमाधवः

व्याख्या- ऋग्वेद की उपलब्ध ऋक्संहिता पर अनेक भाष्यकारों ने अपने-अपने भाष्य लिखें हैं, जिनमें कुछ प्रमुख इस प्रकार हैं-

ऋग्वेदसंहिता भाष्यकार :

स्कन्दस्वामी - (625 ई. के लगभग)। ऋग्वेद का सबसे प्राचीन भाष्य स्कन्दस्वामी का ही उपलब्ध होता है। ऋग्वेद के भाष्य में वेंकटमाधव ने लिखा है कि स्कन्दस्वामी, नारायण और उद्गीथ आचार्यों ने मिलकर ऋग्वेद का भाष्य किया था।

स्कन्दस्वामी नारायण उद्गीथ इति ते क्रमात् ।
चक्रुः सहैकम् ऋग्भाष्यं, पदवाक्यार्थगोचरम् ॥

स्कन्दस्वामी का भाष्य ऋग्वेद के चतुर्थ अष्टक तक मिलता है। शेष भाग नारायण और उद्गीथ ने किया है।

नारायण - नारायण ने स्कन्दस्वामी के भाष्य में सहायता की थी। 'क्रमात्' से ज्ञात होता है कि चतुर्थ अष्टक के बाद के अंश पर इन्होंने ऋग्वेद का भाष्य लिखा है।

उद्गीथ - आचार्य उद्गीथ ने भी स्कन्दस्वामी के भाष्य में सहायता की थी। इन्होंने ऋग्वेद के अन्तिम भाग पर भाष्य लिखा है।

माधवभट्ट - (षष्ठ शती ई.) ये स्कन्दस्वामी (7वीं शती), वेंकटमाधव (10वीं शती) और सायण (14वीं शती) से पूर्ववर्ती हैं। स्कन्दस्वामी, वेंकटमाधव और सायण ने इनके भाष्य का अनुसरण किया है।

वेंकटमाधव- (1050 से 1150 ई. के मध्य) इन्होंने पूरे ऋग्वेद का भाष्य लिखा है। इन्होंने प्रथम अध्याय के अन्त में अपना परिचय दिया है। इनके पितामह-माधव, पिता-वेंकटाचार्य, माता-सुन्दरी, गोत्र- कौशिक, निवासस्थान- चोल देश।

आनन्दतीर्थ - (1255 से 1335 विक्रमी संवत्, 13वीं शती ई.)। इनका दूसरा नाम 'मध्व' है। इन्होंने माध्व वैष्णव सम्प्रदाय चलाया है। इन्होंने ऋग्वेद के 40 सूक्तों का पद्यात्मक भाष्य किया है।

सायण - (14वीं शती ई.) ये विजयनगर के संस्थापक महाराज बुक्क और महाराज हरिहर के अमात्य एवं सेनानी थे। इन्होंने अपने बड़े भाई माधव के आदेशानुसार वेदभाष्य किया।

स्कन्दस्वामी 625 ई. लगभग	नारायण सातवीं शती उत्तरार्द्ध	उद्गीथ सातवीं शती उत्तरार्द्ध	माधवभट्ट छठी शती ई.
वेंकटमाधव 1050 से 1150 ई. के मध्य	आनन्दतीर्थ 1255 से 1335 ई.	सायण 14वीं शती ई.	

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरणों से स्पष्ट है कि ऋग्वेदसंहिता के

उपलब्ध भाष्यों में प्रथमभाष्यकार स्कन्दस्वामी हैं।

अतः विकल्प 'C' सही है।

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 22

9. वैदिकस्वरप्रक्रियायाः वृत्तिकारः कः?

(A) भट्टोजिदीक्षितः (B) पाणिनिः
(C) पतञ्जलिः (D) कात्यायनः

व्याख्या- संस्कृत व्याकरण का प्रमुख ग्रन्थ 'अष्टाध्यायी' महर्षि पाणिनि प्रणीत है जिसे उन्होंने सूत्रों में वर्णित किया है, जिस पर कात्यायन ने वार्तिक एवं पतञ्जलि ने महाभाष्य एवं भट्टोजिदीक्षित ने उनकी वृत्ति लिखी।

भट्टोजिदीक्षित - प्रक्रियानुसारी ग्रन्थों में भट्टोजिदीक्षित प्रणीत सिद्धान्तकौमुदी में समग्र पाणिनि अष्टक को संकलित किया गया है। जिसमें उन्होंने सम्पूर्ण अष्टाध्यायी की वृत्ति लिखी है। संज्ञा, समास, परिभाषा, सन्धि, सुबन्त, अव्यय, स्त्रीप्रत्यय, कारक तथा तद्धित प्रकरणों को निबद्ध किया है। यहाँ तक लौकिक शब्दों के निर्वचन की प्रक्रिया है। इसके अतिरिक्त वैदिक शब्दों के अन्वाख्यान की प्रक्रिया को दर्शाने के लिए अन्तिम दो प्रकरणों में 'वैदिक प्रकरण' और 'स्वर प्रकरण' में वैदिक प्रयोग तथा वेदों में प्रयुक्त स्वर सम्बन्धी विशेषताओं का निदर्शन किया है।

उन्होंने स्वर-वैदिकी को सर्वान्त में जोड़ दिया। वैदिक-प्रक्रिया में 263 तथा स्वरप्रक्रिया में 329 सूत्रों की व्याख्या की गयी है।

सिद्धान्तकौमुदी का प्रक्रिया विवरण-

1. संज्ञा-प्रकरण	8. समास
2. परिभाषा-प्रकरण	9. तद्धित
3. सन्धि-प्रकरण	10. तिङन्तप्रक्रिया
4. सुबन्त-प्रकरण	11. भ्वादि
5. अव्यय	12. कृदन्त
6. स्त्रीप्रत्यय	13. वैदिकीप्रक्रिया
7. कारक	14. स्वरप्रक्रिया

पाणिनि- महर्षि पाणिनि की अमरकृति 'अष्टाध्यायी' के नाम से सुविदित है। इसका दूसरा नाम 'पाणिनीयाष्टक' भी प्रसिद्ध है। जिसे उन्होंने आठ अध्यायों में, सूत्रों में वर्णित किया है जिससे ये व्याकरण सूत्रकार भी कहे जाते हैं।

प्रत्येक अध्याय चार-चार पादों में विभक्त है। इस प्रकार इसमें 32 पाद हैं।

कात्यायन- पाणिनि अष्टाध्यायी सूत्रों पर कात्यायन ने वार्तिक लिखे। जहाँ भी सूत्रों में उनको कमियाँ दिखीं, उनके सुधार में उन्होंने वार्तिकों की रचना की, इसीलिए इन्हें वार्तिककार भी कहते हैं।

पतञ्जलि- महर्षि पतञ्जलि ने अष्टाध्यायी की व्याख्या के रूप में महाभाष्य की रचना की जिससे इन्हें भाष्यकार भी कहा गया।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि वैदिक स्वरप्रक्रिया के वृत्तिकार भट्टोजिदीक्षित हैं। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड 15)

10. 'ब्राह्मणसर्वस्व'- नामकं वेदभाष्यं केन विरचितम् ?

(A) हरिस्वामिना (B) हलायुधेन
(C) गुणविष्णुना (D) उव्वटेन

व्याख्या- ऋग्वेद -

वेदभाष्यकार		**प्रमुख भाष्य**
माधवभट्ट		नामानुक्रमणी, आख्यातानुक्रमणी, निर्वचनानुक्रमणी, छन्दोऽनुक्रमणी, स्वरानुक्रमणी आदि।
सायण	–	'माधवीयवेदार्थप्रकाश'

शुक्लयजुर्वेद - माध्यन्दिनशाखा

वेदभाष्यकार	–	**प्रमुख भाष्य**
उव्वट		ऋक्प्रातिशाख्य की टीका, यजुःप्रातिशाख्य की टीका, ऋक्सर्वानुक्रमणी पर भाष्य, ईशोपनिषद् पर भाष्य
महीधर	–	'वेददीप', मन्त्रमहोदधि

काण्वशाखा-

हलायुध	–	ब्राह्मणसर्वस्व, मीमांसासर्वस्व, वैष्णव सर्वस्व, शैवसर्वस्व, पण्डित-सर्वस्व

कृष्णयजुर्वेद-

भट्टभास्कर	–	'ज्ञानयज्ञ'

सामवेद-

वेदभाष्यकार	–	**प्रमुखभाष्य**
माधव	–	विवरण
गुणविष्णु	–	छान्दोग्य-मन्त्रभाष्य, मंत्रब्राह्मण-भाष्य, पारस्करगृह्यसूत्र-भाष्य

अथर्ववेद- सायण ने पूरे अथर्ववेद पर भाष्य लिखा।

प्रमुख ब्राह्मण ग्रन्थों के भाष्यकार

वेदभाष्यकार	ब्राह्मण
नीलकण्ठ	काण्वशतपथब्राह्मण
हरिस्वामी	माध्यन्दिन शतपथब्राह्मण
गोविन्दस्वामी	ऐतरेयब्राह्मण 'बौधायनीय-धर्मविवरण'
षड्गुरुशिष्य	ऐतरेयब्राह्मण, ऐतरेय आरण्यक, सर्वानुक्रमणी वेदार्थदीपिका
सायण	ऐतरेय ब्राह्मण
भवस्वामी	तैत्तिरीय ब्राह्मण
जयस्वामी	ताण्ड्य ब्राह्मण
भास्कर मिश्र	आर्षेय ब्राह्मण

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'ब्राह्मणसर्वस्व' वेदभाष्य हलायुध द्वारा लिखा गया है।

अतः विकल्प 'B' सही है।

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज 24

11. 'वाक्सूक्तम्' ऋग्वेदस्य कस्मिन् मण्डले विद्यते?

(A) दशमे **(B)** पञ्चमे

(C) अष्टमे **(D)** सप्तमे

व्याख्या-

ऋग्वेद के प्रमुख सूक्त-

पुरुषसूक्त - (ऋग् 10.90) यह सूक्त चारों वेदों में आया है इसमें पुरुष परमात्मा के विराट् रूप का वर्णन किया गया है। उसी से समस्त विश्व की सृष्टि का वर्णन है।

यथा-

पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भव्यम् (10.90.2)

'ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत् बाहू राजन्यः कृतः।

ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत॥

(10.90.12)

नासदीयसूक्त - (ऋग् ० 10.129) यह सूक्त वैदिक ऋषियों के प्रतिभा ज्ञान के लिए विख्यात अलौकिक चिन्तन का परिचायक है। इसमें भी सृष्टि- उत्पत्ति का वर्णन किया गया है।

हिरण्यगर्भसूक्त - (ऋग् ० 10.121) इस सूक्त में उदात्त दार्शनिक भावों की अभिव्यक्ति करते हुए 'क' अर्थात् प्रजापति का महत्त्व वर्णित है। 9 मंत्रों में 'कस्मै देवाय हविषा विधेम' अर्थात् ऐसे प्रजापति देव को हम अपनी स्तुति अर्पित करते हैं- ऐसा कहा गया है।

श्रद्धासूक्त - (ऋग् ०10.151) इस सूक्त में यद्यपि 5 ही मंत्र हैं, परन्तु भावगाम्भीर्य और विचारों की उदात्तता के कारण यह सूक्त अत्यन्त आदरणीय माना जाता है। मंत्र में श्रद्धा की परिभाषा दी गयी है।

संज्ञानसूक्त- (ऋग् ० 10.191) इस सूक्त के 4 मंत्रों में सामाजिक-सौहार्द, सामञ्जस्य, सह-अस्तित्व, ऐकमत्य और संगठन का उपदेश दिया गया है। यह सूक्त सामाजिक, राष्ट्रीय और आर्थिक चिन्तन में समवेत-स्वर या समन्वय की भावना का प्रतिपादक है।

यथा- 'सं गच्छध्वं सं वदध्वं, सं वो मनांसि जानताम्।'

वाक्सूक्त- (**ऋग् ०** 10.125) ऋग्वेद के अतिमहत्त्वपूर्ण सूक्तों में वाक्सूक्त है। यह 8 मंत्रों में वाक्तत्त्व, शब्दब्रह्म, वादतत्त्व या वाग्देवी का ब्रह्म के रूप में वर्णन किया गया है। वाक्तत्त्व सर्वत्र व्याप्त है। यह इन्द्र, अग्नि, सोम, मित्र, वरुण आदि की ऊर्जा का स्रोत है।

दानस्तुतिसूक्त- (ऋग् 10.107-117) ऋग्वेद के इस सूक्त में दान की महिमा का गुणगान है। वैदिक संस्कृति में त्याग और दान इन दो गुणों को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। वह समाज एवं राष्ट्र में सर्वत्र पूजा जाता है जो दानी होता है।

- अस्यवामीयसूक्त ऋक्. 1.164
- अक्षसूक्त ऋक्. 10.34
- विवाहसूक्त ऋक्. 10.85

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'वाक्सूक्त' ऋग्वेद के दशम मण्डल में वर्णित है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 54

12. ऋग्वेदसंहितायाः आंग्लपद्यानुवादकः वैदेशिकः विद्वान् वर्तते?

(A) एच. विल्सनः **(B)** ए.ए. मैक्डानलः

(C) आर.टी.एच. ग्रीफिथः **(D)** विलियम कैलेण्डः

व्याख्या- प्रमुख वैदेशिक विद्वान् :-

➢ **चार्ल्स विल्किन्स-** चार्ल्स विल्किन्स पहला अंग्रेज था जिसने वारेन् हेस्टिंग्ज की प्रेरणा से बनारस में रहकर संस्कृत भाषा का अध्ययन किया था। उसने 1785 ई. में भगवद्गीता का अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित किया। 1787 ई. में हितोपदेश का तथा 1795 ई. में महाभारत के शकुन्तलोपाख्यान का अंग्रेजी अनुवाद किया।

➢ **सर विलियम जोन्स-** (1746-1794) विलियम जोन्स ने संस्कृत का ज्ञान प्राप्तकर 1789 में संस्कृत के महाकवि कालिदास के प्रमुख नाटक अभिज्ञानशाकुन्तल का अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित किया।

➢ **एच. एच. विल्सन-** डॉ. विल्सन ने 1850 में सायण भाष्य का उपयोग करते हुए सम्पूर्ण ऋग्वेद का अंग्रेजी में अनुवाद प्रकाशित किया है।

➢ **आर. टी. एच. ग्रिफिथ-** ग्रिफिथ महोदय ने 1889-1892 के मध्य सायणभाष्य का उपयोग करते हुए ऋग्वेद का अंग्रेजी में पद्यानुवाद किया है। इसके अतिरिक्त यजुर्वेद की माध्यन्दिन संहिता तथा सामवेद का अंग्रेजी में पद्यानुवाद किया।

➢ **डा. कीलहार्न-** डॉ. कीलहार्न जर्मन निवासी थे। वे पूना में डेक्कन कॉलेज में अध्यापक रहे। इन्होंने अथक परिश्रम कर 'पातञ्जल महाभाष्य' का सम्पादन किया। 'परिभाषेन्दुशेखर' का कई खण्डों में अंग्रेजी में अनुवाद किया।

ग्रासमन- ग्रासमन जर्मनी के संस्कृत एवं भाषाविज्ञान के विद्वान् थे। इन्होंने 1867-1877 ई. में सायणभाष्य की उपेक्षा कर स्वतन्त्र रीति से ऋग्वेद का दो भागों में जर्मन पद्यानुवाद किया। इसके अतिरिक्त उन्होंने 1873-1875 में 'वैदिक कोश' लिखा है।

लुडविग- लुडविग जर्मन विद्वान् थे। इन्होंने 1873-88 ई. में ऋग्वेद का छः खण्डों में जर्मन भाषा में गद्यानुवाद किया है।

मैक्डोनल- मैक्डोनल ने 'वैदिक व्याकरण', वैदिक 'माइथोलॉजी' और 'संस्कृत साहित्य का इतिहास' आदि ग्रन्थों का प्रणयन किया।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि ऋग्वेदसंहिता के आंग्ल पद्यानुवादक वैदेशिक विद्वान् आर.टी.एच. ग्रिफिथ हैं। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज 20

13. सामविकाराः परिगणिताः सन्ति?

(A) सप्तः **(B)** चत्वारः
(C) त्रयः **(D)** षट्

व्याख्या- * सामविकार- किसी भी ऋचा को गान का रूप देने के लिए कुछ परिवर्तन किए जाते हैं, इन्हें सामवेद की पारिभाषिक शब्दावली में 'विकार' कहा जाता है। इस प्रकार सामवेद में 6 प्रकार के विकार बताए गये हैं। जिनमें स्तोभ प्रमुख है-

(क) स्तोभ **(घ)** विश्लेषण
(ख) विकार **(ङ)** अभ्यास
(ग) विकर्षण **(च)** विराम

(क) स्तोभ- ऋचा को गान का रूप देने के लिए कुछ अतिरिक्त पद मंत्र के साथ जोड़ दिए जाते हैं। ये पद आलाप के लिए होते हैं। जैसे- औहोवा-हाउ आदि। स्तोभ अक्षरों को दो वर्गों में विभक्त किया गया है-

1. अन्वयी - अन्वयी ऋचा के प्रारम्भ में जुड़ते हैं।
2. अनुषंगी - ये दो शब्दों के मध्य में या मंत्र के अन्त में जुड़ते हैं।

(ख) विकार- मंत्र के शब्दों में ज्ञान की दृष्टि से कुछ परिवर्तन किया जाता है। जैसे- 'अग्ने' को 'ओग्नायि' बोलना।

(ग) विश्लेषण- एक पद का पृथक्करण अर्थात् एक पद को दो या दो से अधिक खंडों में विभक्त करना।

(घ) विकर्षण- एक स्वर को लम्बा खींचकर देर तक उच्चारण करना। जैसे- 'ये' को 'या' 2, 3 'यि' अर्थात् दीर्घ और प्लुत तक लम्बा खींचना।

(ङ) अभ्यास- किसी पद का दो या अधिक बार उच्चारण करना। जैसे- या 2 'यि', तो या 2 यि। दो बार उच्चारण करना।

(घ) विराम- गान की सुविधा के लिए किसी पद के बीच में रुक जाना। जैसे- गृणानो हव्य दातये का 'गृणानो' है।

➢ **साम गान-** सामयोनि मंत्रों का आश्रय लेकर ऋषियों ने विभिन्न गानों की रचना की है। सामगान चार प्रकार का है-

1. ग्रामगेय गान - इसे प्रकृतिगान अथवा वेयगान भी कहते हैं।
2. आरण्यगान - इसे आरण्यक गेयगान भी कहते हैं, यह वनों या पवित्र स्थानों पर होता है।
3. ऊहगान - ऊह का अर्थ है- विचारपूर्वक विन्यास। पूर्वार्चिक से सम्बद्ध उत्तरार्चिक का गान इस विधि से होता है।
4. ऊह्यगान - ऊह्यगान रहस्यगान है।

सामगान की 5 भक्तियाँ है -

1. प्रस्ताव 2. उद्गीथ
3. प्रतिहार 4. उपद्रव
5. निधन

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि सामविकार छः बताये गये हैं। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज 88

14. 'पदक्रमसदन' नामकं भाष्यं कस्य प्रातिशाख्यस्य विद्यते?

(A) वाजसनेयिप्रातिशाख्यस्य **(B)** ऋक्प्रातिशाख्यस्य
(C) अथर्वप्रातिशाख्यस्य **(D)** तैत्तिरीयप्रातिशाख्यस्य

व्याख्या- प्रातिशाख्य- प्रत्येक शाखा से सम्बद्ध व्याकरण आदि का बोध कराने वाले ग्रन्थ प्रातिशाख्य कहलाते हैं। चारों वेदों की अनेक शाखाओं के अनुसार प्रातिशाख्य ग्रन्थों की संख्या भी है।

प्रातिशाख्य ग्रन्थों का शिक्षा, व्याकरण और छन्द तीनों से साक्षात् सम्बन्ध है।

1. ऋक्प्रातिशाख्य- ऋग्वेदप्रातिशाख्य ऋग्वेद की शाकल शाखा की शैशिरीय उपशाखा से लिया गया है। इसको पार्षद या पारिषदसूत्र भी कहते हैं। इसके रचयिता शौनक हैं। इसमें 18 पटल (अध्याय) है।
भाष्य - उव्वटभाष्य (11वीं शती ई.), विष्णुमित्र कृत वृत्ति

2. शुक्लयजुःप्रातिशाख्य (वाजसनेयिप्रातिशाख्य)- इसके रचयिता कात्यायन हैं। इसमें 8 अध्याय हैं। इसमें मुख्यरूप से इन विषयों का वर्णन है :- (i) वर्णविचार, (ii) स्वर-विचार, (iii) सन्धि-विचार, (iv) पदपाठविचार, (v) क्रमपाठ-विचार आदि।
भाष्य - उव्वटकृत मातृवेदनात्मकभाष्य
अनन्तभट्टकृत पदार्थप्रकाशकभाष्य

3. तैत्तिरीयप्रातिशाख्य- यह कृष्णयजुर्वेदीय तैत्तिरीयसंहिता से सम्बद्ध है। इसमें दो प्रश्नों (खंडों) में 12-12 अध्याय हैं। इस प्रकार पूरे ग्रन्थ में 24 अध्याय हैं।

इसमें मुख्यरूप से वर्ण-समाम्नाय, स्वर एवं व्यंजन सन्धियाँ, स्वरों के भेद और संहिता का स्वरूप आदि विषयों का वर्णन है।

*** वेदों के पाठ के दो प्रकार-**
(i) प्रकृतिपाठ (ii) विकृतिपाठ

भाष्य-
* महिषेय-कृत, - 'पदक्रमसदन' भाष्य
* सोमयार्य-कृत - 'त्रिभाष्यरत्न' भाष्य
* गोपालयज्वा कृत - 'वैदिकाभरण' भाष्य

4. अथर्ववेदीय प्रातिशाख्य- इसके दो प्रातिशाख्य उपलब्ध होते हैं - (i) शौनकीय चतुरध्यायिका (ii) अथर्ववेदप्रातिशाख्य
अथर्ववेदप्रातिशाख्य- इसमें सन्धि, स्वर और पदपाठ के नियम विशेष रूप से बताये गये हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'पदक्रमसदन' नामक भाष्य 'तैत्तिरीयप्रातिशाख्य' का भाष्य है।
अतः विकल्प 'D' सही है।
स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 198

15. पाणिनीयशिक्षायां कति श्लोकाः सन्ति?
(A) चतुःषष्टिः **(B)** त्रिषष्टिः
(C) षष्टिः **(D)** सप्ततिः

व्याख्या- शिक्षा का प्रथम सोपान वर्णशिक्षा है। ऋक्प्रातिशाख्य को भी वर्णशिक्षा नाम से जाना जाता है।

''निन्दन्त्यकृत्स्नेति च वर्णशिक्षाम् ।''

सायण- शिक्षा का अर्थ आचार्य सायण ने ऋग्वेदभाष्यभूमिका में किया है -

''वर्णस्वराद्युच्चारणप्रकारो यत्रोपदिश्यते सा शिक्षा।''

शिक्षाशास्त्रों में 'पाणिनीयशिक्षा' ही प्रामाणिक एवं प्राचीनतम है।

1. पाणिनीयशिक्षा- महर्षि पाणिनि द्वारा रचित 'पाणिनीय शिक्षा' ऋग्वेद से सम्बन्धित शिक्षाग्रन्थ है। ऋग्वेद से सम्बन्धित शिक्षा ऋक्प्रातिशाख्य भी प्राप्त होती है जिसके रचनाकार आचार्य शौनक हैं।

पाणिनीयशिक्षा में श्लोकों की संख्या 60 है। पाणिनीयशिक्षा में शिक्षा को वेदपुरुष का घ्राण कहा गया है-

छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते।
ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते ॥41॥
शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम् ।
तस्मात् साङ्गमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते ॥42॥

2. भरद्वाजशिक्षा- इनमें पदों की शुद्धता तथा ध्वनि भेद से उदात्त आदि स्वरों में भेद का वर्णन है।

3. याज्ञवल्क्यशिक्षा- इसमें 232 श्लोक हैं। इसमें वैदिक स्वरों का विवेचन है। वर्णों के भेद, स्वरूप, लोप, आगम, विकार, प्रकृतिभाव आदि का वर्णन है।

4. प्रातिशाख्य प्रदीप शिक्षा- इसमें स्वर-वर्ण आदि की शिक्षा का विस्तृत विवेचन है। प्राचीन वैयाकरणों के मतों का भी उल्लेख है।

अन्य कुछ मुख्य शिक्षा-ग्रन्थ ये हैं -
(i) व्यास शिक्षा (ii) वासिष्ठी शिक्षा (iii) कात्यायनी शिक्षा (iv) पाराशरी शिक्षा (v) माण्डव्य शिक्षा आदि।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'पाणिनीय शिक्षा' में **60 श्लोक** हैं। **अतः विकल्प 'C' सही है।**
स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज 192

16. 'मघवा' देवः कः?
(A) इन्द्रः **(B)** विष्णुः
(C) वरुणः **(D)** हिरण्यगर्भः

व्याख्या- **इन्द्र -**
- ऋग्वेद का सबसे महान् देवता है।
- स्तुति 250 सूक्तों में की गयी है।
- **तीन विशेष गुण -**
  1 महान् कार्यों को करने की शक्ति
  2 अतुल पराक्रम
  3 असुरों को युद्ध में जीतना
- प्रमुख शस्त्र वज्र था।
- इनको शचीपति, शतक्रतु, मरुत्वान्, मघवा, शक्र, शचीवान् इत्यादि नामों से जाना जाता है।

विष्णु –
- स्तुति ऋग्वेद के पहले मण्डल के 154 सूक्त में की गई है।
- विष्णु शब्द 'विष्ऌ व्याप्तौ' धातु से बनता है, जिसका अर्थ है- व्यापनशील होना। इसी कारण ये सूर्य के वाचक हुये, जिसका अर्थ है-तीनों लोकों को प्रकाशित करने वाला।
- इनको परम-पद का 'अधिष्ठाता' कहा गया है। परमपद उच्चलोक है।
- यह त्रिविक्रम, उरुक्रम, उरुगाय इत्यादि नामों से जाने जाते हैं।

वरुण-
- वरुण की स्तुति 12 सूक्तों में की गई है।
- वरुण का मुख्य रूप शासक का है, जो प्रशासन तथा नियमों का संचालन करता है।
- इनको धृतव्रत और असुर (असु-प्राण को, र-देने वाला) नाम से जाना जाता है।

हिरण्यगर्भ-
- पुरुष में जो 'विराट्' उत्पन्न होता है वही हिरण्यगर्भ है।
- पुराणों में इनको ब्रह्मा कहा गया है।
- इनको प्रजापति नाम से भी जाना जाता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'मघवा' इन्द्र देवता हैं। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- ऋक्सूक्तसंग्रह- हरिदत्त शास्त्री, भूमिका पेज 12

17. 'यः पृथिवीं व्यथमानामदृंहद्यः पर्वतान्प्रकुपिताँ अरम्णात्' अस्य मन्त्रस्य द्रष्टा ऋषिः कः?

(A) विश्वामित्रः (B) मधुच्छन्दा
(C) गृत्समदः (D) इन्द्रः

व्याख्या- इन्द्रसूक्त -
- ऋग्वेद के दूसरे मण्डल के 12वें सूक्त में वर्णित है।
- देवता- इन्द्र, ऋषि- गृत्समद, छन्द- त्रिष्टुप्, कुल मन्त्र- 15

प्रमुख मन्त्र -
- यः पृथिवीं व्यथमानामदृंहद् यः पर्वतान्प्रकुपिताँ अरम्णात्।
- यो अन्तरिक्षं विममे वरीयो।
- यो जात एव प्रथमो मनस्वान्, देवो देवान्क्रतुना पर्यभूषत्। यस्य शुष्माद्रोदसी अभ्यसेतां, नृम्णस्य मह्ना स जनास इन्द्रः।।
- यो रध्रस्य चोदिता यः कृशस्य यो ब्रह्मणो नाधमानस्य कीरेः।
- द्यावा चिदस्मै पृथिवी नमेते शुष्माच्चिदस्य पर्वता भयन्ते।

➢ **अग्निसूक्त -**
- ऋग्वेद के पहले मण्डल के पहले सूक्त में वर्णित है।
- ऋषि - मधुच्छन्दा
- देवता - अग्नि
- छन्द - गायत्री
- कुल मन्त्र - 9

प्रमुख मन्त्र -
- यदङ्ग दाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि।
  तवेत्तत्सत्यमङ्गिरः।।
- राजन्तमध्वराणां गोपामृतस्य दीदिविम्।
  वर्धमानं स्वे दमे।।
- स नः पितेव सूनवे, अग्ने सूपायनो भव सचस्वा नः स्वस्तये।।

➢ **सूर्यसूक्त -**
- ऋग्वेद के पहले मण्डल के 115वें सूक्त से लिया गया है।
- ऋषि - कुत्स
- देवता - सूर्य
- छन्द - त्रिष्टुप्
- कुल मन्त्र - 6

प्रमुख मन्त्र -
- चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः।
  आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च।।
- यत्रा नरो देवयन्तो युगानि वितन्वते प्रति भद्राय भद्रम्।
- तन्मित्रस्य वरुणस्याभिचक्षे सूर्यो रूपं कृणुते द्योरुपस्थे।
  अनन्तमन्यद्रुशदस्य पाजः कृष्णमन्यद्धरितः सं भरन्ति।।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि प्रस्तुत मन्त्र इन्द्र सूक्त से लिया गया है इसके द्रष्टा 'गृत्समद' ऋषि हैं।
अतः विकल्प 'C' सही है।

स्रोत- ऋक्सूक्तसंग्रह (2.12.2) - हरिदत्त शास्त्री, पेज 178

18. ऋग्वेदस्य शाकलसंहितायां कति सन्ध्यक्षराणि स्वीकृतानि?

(A) एकम् (B) द्वे
(C) चत्वारि (D) त्रीणि

व्याख्या- ऋग्वेद शाकलसंहिता - ऋग्वेद शाकलसंहिता में समानाक्षर, संध्यक्षर, ऊष्मवर्ण, यम, रिफित आदि अनेक विषयों का वर्णन हुआ है।

➢ **समानाक्षर संज्ञा -**

'अष्टौ समानाक्षराण्यादितः'

समानाक्षर आठ होते हैं -
यथा - अ, आ, ऋ, ॠ, इ, ई, उ, ऊ।
समानाक्षरसंज्ञायाः प्रयोजनम् - समान स्थान वाले दो समानाक्षर (एक दीर्घ 'स्वर' - वर्ण को प्राप्त हो जाते हैं।

➢ **संध्यक्षर संज्ञा -**

'ततश्चत्वारि संध्यक्षराण्युत्तराणि'

तत्पश्चात् आगे वाले चार (अक्षर) संध्यक्षर हैं।

तत्पश्चात् अर्थात् तेभ्यः समानाक्षरेभ्यः, उत्तराणि चत्वारि, (संध्यक्षराणि) संध्यक्षरसंज्ञकानि, भवन्ति।

यथा- ए, ओ, ऐ, औ।

संध्यक्षरसंज्ञायाः प्रयोजनम् - 'संध्यानि संध्यक्षराण्याहुरेके'

समानाक्षर के बाद चार संध्यक्षर होते हैं।

अकार की इकार, उकार, एकार और ओकार के साथ सन्धि होने पर, जो 'अक्षर' निष्पन्न होते हैं वे वैसे अर्थात् 'संध्यक्षर' कहे जाते हैं।

जैसे- ए, ओ, ऐ, औ।

संध्यक्षरसंज्ञा का प्रयोजन - 'कुछ (लोग) संधि से उत्पन्न अक्षरों को संध्यक्षर कहते हैं।

समानाक्षरों के अनन्तर 'संध्यक्षर' हैं तथापि सूत्रकार ने 'उत्तराणि' पद का प्रयोग इसलिए किया है जिससे कोई यह न समझ बैठे कि संध्यक्षरों में ल और ऌ ये दो स्वर वर्ण आते हैं। संध्यक्षरों में इन दो 'स्वर' वर्णों का प्रतिबोध करने के लिए ही सूत्रकार ने 'उत्तराणि' पद का प्रयोग किया है।

ज्ञातव्य है कि इस प्रातिशाख्य में 'स्वर' वर्णों का क्रम इस प्रकार है- अ, आ, ऋ, ॠ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ओ, ऐ, औ, ल, (ऌ) ई।

जो ये 'समानाक्षर' और 'संध्यक्षर' संज्ञा वाले वर्ण हैं, बारह वर्णों को, स्वरसंज्ञक वर्ण जानना चाहिए।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णनों से स्पष्ट है कि संध्यक्षर चार हैं। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- ऋग्वेदप्रातिशाख्यम् - वीरेन्द्रकुमार वर्मा, पेज 43

19. 'इष्टप्राप्त्यनिष्टपरिहारयोरलौकिकमुपायं यो ग्रन्थो वेदयति, स वेदः' इति लक्षणं कस्य?

(A) महीधरस्य **(B)** लौगाक्षिभास्करस्य
(C) सायणस्य **(D)** पारस्करस्य

व्याख्या- वेद का अर्थ - विद् (ज्ञाने) + घञ् = वेद इसका आशय है - ज्ञान। अतः वेद शब्द का अर्थ होता है- ज्ञान की राशि या ज्ञान का संग्रह-ग्रन्थ।

वेद शब्द चार धातुओं से विभिन्न अर्थों में बनता है-

1. विद सत्तायाम् (होना, दिवादि)
2. विद ज्ञाने (जानना, अदादि)
3. विद विचारणे (विचारना, रुधादि)
4. विदॢ लाभे (प्राप्त करना, तुदादि)

'सत्तायां विद्यते ज्ञाने, वेत्ति विन्ते विचारणे।
विन्दति विन्दते प्राप्तौ, श्यन्लुक्श्नम्शेष्विदं क्रमात्॥

➢ ऋक्प्रातिशाख्य के व्याख्याकार विष्णुमित्र ने वेद का अर्थ बताया है-

'विद्यन्ते ज्ञायन्ते लभ्यन्ते एभिर्धर्मादि-पुरुषार्था इति वेदाः।

अर्थात् 1. जिन ग्रन्थों के द्वारा धर्म, अर्थ, काम और मोक्षरूपी पुरुषार्थचतुष्टय के अस्तित्व का बोध हो।
2. पुरुषार्थचतुष्टय का ज्ञान हो एवं
3. पुरुषार्थचतुष्टय की प्राप्ति वही हो वेद है।

➢ आचार्य सायण के अनुसार वेद शब्द का अर्थ-

'इष्टप्राप्त्यनिष्ट-परिहारयोरलौकिकम् उपायं यो ग्रन्थो वेदयति, स वेदः।' (तैत्तिरीय संहिता-भाष्य की भूमिका)

अर्थात् जो ग्रन्थ इष्ट-प्राप्ति और अनिष्ट-निवारण का अलौकिक उपाय बताता है, उसे वेद कहते हैं।

मन्त्र और ब्राह्मण दोनों का सामूहिक नाम 'वेद' है। वेद शब्द के पर्याय के रूप में अनेक शब्दों का प्रयोग किया जाता है। जैसे-

1. श्रुति 2. निगम
3. आगम 4. त्रयी
5. छन्दस् 6. आम्नाय
7. स्वाध्याय आदि।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि प्रस्तुत पंक्ति में वेद का लक्षण आचार्य सायण द्वारा किया गया है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज 01

20. 'वाधूलशुल्बसूत्रम्' केन वेदेन सम्बद्धमस्ति?

(A) अथर्ववेदेन **(B)** सामवेदेन
(C) ऋग्वेदेन **(D)** यजुर्वेदेन

व्याख्या- 1. ऋग्वेद - ऋग्वेद का ऋत्विक् 'होता' है। मन्त्र 10580-1/4 हैं। सूक्त 1028, अनुवाक 85, मण्डल 10 मुख्य देवता अग्नि, आचार्य पैल हैं।

कल्पसूत्र

श्रौतसूत्र	**गृह्यसूत्र**	**धर्मसूत्र**	**शुल्बसूत्र**
1. आश्वलायन	1. आश्वलायन	1. वशिष्ठ	कोई नहीं
2. कौषीतकि या शांखायन	2. शांखायन	(एकमात्र)	
	3. शाम्बव्य		

2. यजुर्वेद -

ऋत्विक् - अध्वर्यु
शाखाएँ - 85
मुख्यदेवता - वायु
मुख्य आचार्य - वैशम्पायन
विषय - विविधयागादि

कल्पसूत्र

श्रौतसूत्र	गृह्यसूत्र	धर्मसूत्र	शुल्बसूत्र
1 शुक्ल यजुर्वेद			
1 कात्यायन या पारस्कर	1कात्यायन या पारस्कर	1 हारीत 2 शंख	1 कात्यायन
2 कृष्णयजुर्वेद			
1 कठ	1 कठ	1 विष्णु	1 मानव
2 आपस्तम्ब	2 आपस्तम्ब	2 वशिष्ठ	2 बौधायन
3 बौधायन	3 बौधायन	3 आपस्तम्ब	3 आपस्तम्ब
4 सत्याषाढ	4 सत्याषाढ	4 बौधायन	4 मैत्रायणी
5 वैखानस	5 वैखानस	5 हिरण्यकेशी	5 वाराह
6 भारद्वाज	6 भारद्वाज	6 वैखानस	6 वाधूल
7 वाधूल	7 वाधूल		

3. सामवेद -

ऋत्विक् - उद्गाता
शाखाएँ - 1000 (सहस्रवर्त्मा सामवेदः)
उत्तरार्चिक - 1225 मन्त्र
पूर्वार्चिक - 650 मन्त्र
कुल मन्त्र - 1875 मन्त्र
सामविकार - 6
सामगान - 5
मुख्यदेव एवं आचार्य - सूर्य एवं जैमिनि
विषय - स्तुतिस्तोम

कल्पसूत्र

श्रौतसूत्र	गृह्यसूत्र	धर्मसूत्र	शुल्बसूत्र
1 लाट्यायन	1 खादिर	गौतम	कोई नहीं
2 द्राह्यायण	2 गोभिल	(एकमात्र)	
3 मशक/आर्षेय	3 गौतम		
4 खादिर	4 जैमिनीय		
5 जैमिनीय			

4. अथर्ववेद - ऋत्विक् - ब्रह्मा, सूक्त - 731
देवता/आचार्य - सोम/सुमन्तु, मन्त्र - 6000,
काण्ड - 20

कल्पसूत्र

श्रौतसूत्र	गृह्यसूत्र	धर्मसूत्र	शुल्बसूत्र
वैतान (एकमात्र)	1 कौशिक (एकमात्र)	कोई नहीं	कोई नहीं

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि वाधूल शुल्बसूत्र यजुर्वेद से लिया गया है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज 09

21. 'विलोहितः' इति कस्याः देवतायाः विशेषणम् अस्ति?
(A) विष्णोः **(B)** वायोः
(C) रुद्रस्य **(D)** इन्द्रस्य

व्याख्या- 1. रुद्र अन्तरिक्षस्थानीय देवता हैं। सम्पूर्ण ऋग्वेद में 'रुद्र' से सम्बन्ध तीन ही सूक्त हैं। (1/114, 2/33, 7/46)।

रुद्र शब्द की व्युत्पत्ति -

'रौतीति सतो रोरूयमाणो द्रवतीति वा रोदयतेर्वा, यदरुदत्तद्रुद्रस्य रुद्रत्वम्, यदरोदीत तदद्रुस्य रुद्रत्वम्।

निवास स्थान- अन्तरिक्ष

ऋषि - गृत्समद

विशेषण - पशुपति, त्र्यम्बक, शर्व, भव, नीललोहित, मरुत्पिता, मरुत्वान्, असुर, कृत्तिवास, रक्तवर्णी, मृण्याकु, बभ्रु, वङ्कु, जलाषभेषज, नीलकण्ठ, अधृष्म, द्रुतगामी, प्रचेतस्, नीलोदर, लोहित-पृष्ठ, विलोहित इत्यादि।

2. विष्णु - विष्णु द्यु-स्थानीय देवता हैं। सम्पूर्ण ऋग्वेद में विष्णु से सम्बन्धित 5 ही सूक्त प्राप्त होते हैं।

विष्णु शब्द की व्युत्पत्ति -

'विष्णातेर्विशतेर्वा स्याद् वेवेष्टेर्व्याप्तिकर्मणः।

ऋषि - दीर्घतमा

निवासस्थान - द्युलोक

विशेषण - उरुक्रम, उरुगाय, त्रिविक्रम, भीम, कुचर, गिरिष्ठा, गिरिक्षित, गिरिजा, वृष्ण, मातरिश्वा आदि।

3. इन्द्र - इन्द्र अन्तरिक्षस्थानीय देवता हैं। स्तुति ऋग्वेद में लगभग 250 सूक्तों में की गयी है। जो ऋग्वेद का चतुर्थांश है। इसके अतिरिक्त 50 सूक्तों में अन्य देवताओं के साथ की गयी है।

इन्द्र शब्द की व्युत्पत्ति -

इरां दृणाति, इरां ददाति, इरां दधाति, इरां धारयते, इन्दवे द्रवति, इन्दौ रमते, इन्दञ्छत्रूणां दारयिता।

स्थान - अन्तरिक्ष

ऋषि - गृत्समद

विशेषण - वृत्रहा, सुशिप्र, सोमपा, वज्री, शक्र, पुरन्दर, वज्रहस्त, मरुत्वान्, मरुत्सखा, वज्रबाहु, हरिकेश, हिरण्यबाहु, चित्रबाहु, शचीपति, वसुपति, वज्रिन्, शतक्रतु, मनस्वान् आदि।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि विलोहित 'रुद्र' देवता का विशेषण है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- वैदिकसूक्तसंग्रह - गीताप्रेस, पेज 19

22. 'छन्दःसूत्रम्' इति वेदाङ्गग्रन्थस्य प्रणेता विद्यते -

(A) हलायुधः **(B)** पिङ्गलः
(C) लगधः **(D)** भरतः

व्याख्या- ➢ पिङ्गलः - 'छन्द' वेदाङ्ग को वेद-पुरुष के पादों (पैर) के रूप में माना जाता है - 'छन्दः पादौ तु वेदस्य'। वेद छन्दोमयी वाणी है।

कात्यायन ने अपनी सर्वानुक्रमणी में अक्षर परिमाण को ही छन्द का लक्षण बतलाया है-

''यदक्षरपरिमाणं तच्छन्दः''।

अर्थात् जहाँ अक्षरों की संख्या निश्चित होती है, उसे छन्द कहते हैं।

वेदमन्त्रों के साथ छन्दों का घनिष्ठ सम्बन्ध है। 'छन्दयति पृणाति रोचते इति छन्दः', अर्थात् जिस वाणी को सुनते ही मन आह्लादित हो जाता है, वह छन्दोमयी वाणी ही वेद है।

यास्काचार्य ने छन्द शब्द की व्युत्पत्ति **छद् (ढँकना) आच्छादने, आवरणे** से बताई है जो वेद को आसुरी हस्तक्षेप से सुरक्षित रखता है, वह छन्द है।

आचार्य पिङ्गल द्वारा रचित 'छन्दःसूत्रम्' प्रमुख ग्रन्थ है। आचार्य पिङ्गल छन्दःशास्त्र के प्रणेता माने जाते हैं।

➢ **हलायुध-** शुक्लयजुर्वेद काण्वसंहिता के हलायुध प्रमुख वेद भाष्यकार माने जाते हैं। इनके भाष्य का नाम 'ब्राह्मणसर्वस्व' है।

इनका समय 12 वीं शती ई. है। इनके कुछ अन्य प्रमुख ग्रन्थ - मीमांसासर्वस्व, वैष्णवसर्वस्व, शैवसर्वस्व, पण्डित-सर्वस्व आदि।

➢ **लगध-** ज्योतिषशास्त्र के प्रणेता आचार्य लगध हैं। वेदाङ्गज्योतिष के दो प्रतिनिधि ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं -

1 आर्च ज्योतिष (ऋग्वेद) - 36 पद्य
2 याजुष ज्योतिष (यजुर्वेद) - 43 पद्य

इस ग्रन्थ के प्राचीनतम टीकाकार **सोमाकार** है।

➢ **भरत-** नाट्यशास्त्र के प्रणेता आचार्य भरतमुनि हैं। इसमें 36 अध्याय हैं। भरतमतानुसार नाट्यशास्त्र पञ्चमवेद है। **'नाट्यस्तु पञ्चमो वेदः'**

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'छन्दःसूत्रम्' के प्रणेता आचार्य पिङ्गल हैं। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज 199

23. यास्कीयनिरुक्तग्रन्थे काण्डानि विद्यन्ते?

(A) पञ्च **(B)** त्रीणि
(C) सप्त **(D)** नव

व्याख्या- मुनि यास्क द्वारा रचित 'निरुक्त' उनका प्रमुख ग्रन्थ है। जो तीन काण्डों एवं बारह अध्यायों में विभक्त है। वेदों में निरुक्त को श्रोत्र (कर्ण) के समान बताया गया है। तीन काण्ड इस प्रकार हैं -

1. नैघण्टुक काण्ड
2. नैगम काण्ड
3. दैवत काण्ड

नैघण्टुक काण्ड - नैघण्टुक काण्ड तीन अध्यायों में विभक्त है। जिसमें प्रथम अध्याय में नाम, आख्यात आदि चार पदविभाग, शब्द नित्यता का विवेचन, षड्भाव-विकार, उपसर्गों का अर्थ विवेचन, सभी नाम धातुज हैं- इसका प्रतिपादन, मंत्रों की सार्थकता, अर्थज्ञान का प्रतिपादन। द्वितीय और तृतीय अध्याय में निर्वचन, वर्णपरिवर्तन आदि से सम्बन्धित भाषाशास्त्रीय विवेचन का वर्णन है।

नैगम काण्ड- नैगम काण्ड या ऐकपदिक काण्ड भी तीन अध्यायों 4 से 6 अध्यायों में विभाजित है। इन तीनों काण्डों में वेदों के निघण्टु में पठित कठिन शब्दों की सोदाहरण व्याख्या की गयी है।

दैवत काण्ड - दैवत काण्ड 6 अध्यायों, 7 से 12 अध्याय तक वर्णित है। इन अध्यायों में देवतावाचक शब्दों की विस्तृत व्याख्या तथा द्युलोक, अन्तरिक्ष और पृथिवीस्थानीय देवों का विवेचन है।

* इसके अतिरिक्त दो अध्याय परिशिष्टरूप में जोड़े गये हैं। अध्याय 13 और 14 जिसमें निर्वचन-प्रक्रिया, सृष्टि-उत्पत्ति तथा दार्शनिक महत्त्व के अनेक विषयों का विवेचन है।

* यास्क का निरुक्त वस्तुतः निघण्टु की व्याख्या या भाष्य है। निघण्टु वैदिक शब्दकोश या वैदिक शब्दों का संकलन है। इसमें 5 अध्याय हैं तथा संगृहीत शब्दों की संख्या 1738 है।

निरुक्त के प्रतिपाद्य विषय- संक्षेप में निरुक्त के प्रतिपाद्य विषय 5 बताए गये हैं।

वर्णागमो वर्णविपर्ययश्च द्वौ चापरौ वर्णविकारनाशौ।
धातोस्तदर्थातिशयेन योगस्तदुच्यते पञ्चविधं निरुक्तम्॥

1 वर्णागम-विचार
2 वर्णविपर्यय-विचार
3 वर्णविकार-विचार
4 वर्णनाश-विचार

5 धातुओं का अनेक अर्थों में प्रयोग सम्बन्धी विचार

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि निरुक्त में 3 काण्ड हैं। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज 204

24. 'भद्रैषां लक्ष्मीर्निहिताधिवाचि' इति पंक्तिः कस्मिन् प्रसङ्गे महाभाष्ये उद्धृता?

(A) शब्दपरिभाषाप्रसङ्गे

(B) व्याकरणाध्ययनप्रयोजनप्रसङ्गे

(C) शब्दार्थसम्बन्धप्रसङ्गे

(D) व्याकरणलक्षणप्रसङ्गे

व्याख्या- महाभाष्य- पाणिनि की अष्टाध्यायी का विशद व्याख्यान पतञ्जलि ने अपने महाभाष्य में किया है। भाष्य का लक्षण-

'सूत्रार्थो वर्ण्यते यत्र वाक्यैः सूत्रानुसारिभिः।
स्वपदानि च वर्ण्यन्ते भाष्यं भाष्यविदो विदुः॥

इसका विभाजन आह्निकों में है - 'अह्ना निर्वृत्तम्' -आह्निकम्' अर्थात् एक-एक दिन के अध्ययनीय या अध्यापित विषय का संग्रह एक-एक आह्निक में किया गया है।

- इसमें 84 आह्निक हैं।
- प्रथम आह्निक - पस्पशाह्निकम् है।

➢ **पस्पशाह्निक का प्रतिपाद्य विषय -**

- शब्द स्वरूप
- व्याकरणाध्ययन का प्रयोजन
- शब्दानुशासन की पद्धति
- शब्द-अर्थ-सम्बन्ध की नित्यता
- व्याकरणशास्त्र द्वारा नियम का बोधन आदि।

➢ **शब्दानुशासन (व्याकरणाध्ययन) का प्रयोजन-**

*** मुख्य प्रयोजन-** मुख्य प्रयोजन पाँच हैं -
रक्षा, ऊह, आगम, लघु और असन्देह।

*** गौण प्रयोजन -** तेऽसुराः, दुष्टः शब्दः, यदधीतम्, यस्तु प्रयुङ्क्ते, अविद्वांसः, विभक्तिं कुर्वन्ति, यो वा इमाम्, चत्वारि, उत त्वः, सक्तुमिव, सारस्वतीम्, दशम्यां पुत्रस्य, सुदेवो असि वरुण।

➢ **सक्तुमिव -**

''सक्तुमिव तितउना पुनन्तो यत्र धीरा मनसा वाचमक्रत।
अत्रा सखायः सख्यानि जानते भद्रैषां लक्ष्मीर्निहिताधिवाचि।।

जिस (व्याकरण) में ध्यान लगाने से वैयाकरणों ने चलनी के द्वारा सतुओं के समान (ध्यानयुक्त) मन (प्रकृष्ट ज्ञान) द्वारा वाणी को किया। इस (ब्रह्मप्रतिपादक शब्द) के विषय में समानज्ञान वाले (यथार्थ ज्ञान वाले होते हुए) सायुज्य-ऐक्य प्राप्त करते हैं। (इनकी वाणी में कल्याणमयी लक्ष्मी (स्वप्रकाशरूपा शक्ति) अधिक रहती है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि प्रस्तुत पंक्ति व्याकरणाध्ययन प्रयोजन के प्रसंग में उद्धृत है।

अतः विकल्प 'B' सही है।

स्रोत- व्याकरण-महाभाष्यम्, पस्पशाह्निकम् - जयशङ्कर लाल त्रिपाठी, पेज 56

25. 'लोटो लङ्वत्' इति सूत्रेण अधोलिखितविकल्प मात्रेषु किमभिप्रेतः?

(A) अडागमः **(B)** आडागमः

(C) आदेशः **(D)** सलोपः

व्याख्या- ➢ **लोटो लङ्वत् (3/4/85) -**

लोटस्तामादयः सलोपश्च।

लोट्लकार लङ् के समान होता है।

लङ्लकार में ङकार की इत्संज्ञा होने से वह ङित् है। इसी प्रकार लोट्लकार स्वतः ङित् नहीं, टित् है। अतः ङित् को मानकर होने वाले कार्य नहीं हो पा रहे थे। इसलिए पाणिनि ने इस सूत्र को बनाया।

लोट्लकार को भी लङ् के समान ङित् लकार माना जाय, जिससे ङित् को मानकर होने वाले कार्य हो जायें।

यह सूत्र **ताम्** आदि आदेश करना हो अथवा **नित्यं ङितः** से **सलोप** करना हो तब प्रवृत्त होगा, अन्यत्र नहीं।

➢ **सेर्ह्यपिच्च (3/4/87॥)**

लोटः सेर्हिः सोऽपिच्च।

लोट्लकार के 'सि' के स्थान पर 'हि' आदेश होता है और वह अपित् होता है।

सिप् के पकार की इत्संज्ञा होती है, अतः वह स्वतः पित् है। अतः यह सूत्र पित् को अपित् होने का अतिदेश कर रहा है।

'लोटो लङ्वत्' से अङित् लकार को ङित् लकार का अतिदेश किया था। अब यहाँ पित् प्रत्यय को अपित् कर रहे हैं। इसी को अतिदेश कहते हैं। जो जैसा नहीं है, उसको वैसा मान लिया जाए। यही अतिदेश है।

➢ **आडुत्तमस्य पिच्च (3/4/92)**

लोडुत्तमस्याट् स्यात् पिच्च।

लोट्लकार के उत्तमपुरुष को आट् का आगम होता है और वह आट्सहित उत्तमपुरुष पित् के समान होता है।

➢ **लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः (6/4/71)**

एष्वङ्गस्याट् ।

लुङ्, लङ्, लृङ् के परे रहने पर धातुरूप अङ्ग को अट् का आगम होता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि "लोटो लङ्वत्" सूत्र सलोप का विधान करता है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्त्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज 401

26. 'इजादेश्च गुरुमतोऽनृच्छः' इति सूत्रेण किं विधीयते?

(A) आम्प्रत्ययः **(B)** लुक्
(C) क्राद्यनुप्रयोगः **(D)** सलोपः

व्याख्या- ➢**'इजादेश्च गुरुमतोऽनृच्छः' (3/1/36)**

इजादिर्यो धातुर्गुरुमानृच्छत्यन्यस्तत आम् स्याल्लिटि।

ऋच्छ् धातु से भिन्न इजादि जो गुरु-वर्ण से युक्त धातु, उससे परे आम् प्रत्यय होता है, लिट् के परे होने पर।

- इच् एक प्रत्याहार है, वह आदि में है जिस धातु के वह धातु इजादि हुआ।
- जिस धातु में दीर्घ वर्ण या संयोग हो वह धातु गुरुमान् अर्थात् गुरुसंज्ञक वर्ण वाला होता है।
- ऋच्छ् धातु में च्, छ् का संयोग है, अतः यह भी गुरुमान् हुआ।
- ऋच्छ् धातु से आम् प्रत्यय अभीष्ट नहीं था, इसलिए निषेध करने के लिए सूत्र में 'अनृच्छः' पढ़ा गया।
- आम् के मकार की इत्संज्ञा नहीं होती है। अतः पूरा आम् धातु से परे होता है। लिट् परे रहते विहित होने से धातु और लिट् के बीच में बैठ जाता है।

➢ **आम्प्रत्ययवत्कृञोऽनुप्रयोगस्य (1/3/63)**

आम्प्रत्ययो यस्मादित्यतद्गुणसंविज्ञानो बहुव्रीहिः।

आम्प्रकृत्या तुल्यमनुप्रयुज्यमानात् कृञोऽप्यात्मनेपदम् ।

आम् प्रकृति वाली धातु अर्थात् आम् प्रत्यय जिस धातु से होता है, ऐसी धातु के समान अनुप्रयोग की जाने वाली कृ धातु से भी आत्मनेपद ही होता है।

➢ **धि च (8/2/25 ॥)**

धादौ प्रत्यये परे सस्य लोपः। एधिताध्वे।

धकारादि प्रत्यय के परे होने पर सकार का लोप होता है।

एधिताध्वे -

एध् + लुट्
एध् + ध्वम्
एध् तास् + ध्वम्
एध् इतास् + ध्वम्
एधिताधि च सलोप + ध्वम्
एधिता + ध्वम्
एधिता + ध्वे (टित आत्मनेपदानां टेरे)
एधिताध्वे

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'इजादेश्च गुरुमतोऽनृच्छः' सूत्र से **आम् प्रत्यय** का विधान हुआ है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्त्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज 482

27. अधोऽङ्कितयुग्मेभ्यः समीचीना तालिका चेतव्या?

(क) कृत्यानां कर्तरि वा (2.3.71) — **(i) दण्डिकः**
(ख) उगितश्च (4.1.6) — **(ii) मम मया वा सेव्यो हरिः**
(ग) ई च खनः (3.1.111) — **(iii) भवती**
(घ) अत इनि-ठनौ (5.2.115) — **(iv) खेयम्**

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(A)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)
(B)	(ii)	(iv)	(iii)	(i)
(C)	(i)	(iii)	(iv)	(ii)
(D)	(ii)	(i)	(iii)	(iv)

व्याख्या- भट्टोजिदीक्षित द्वारा रचित सिद्धान्तकौमुदी व्याकरण का प्रमुख ग्रन्थ है जिसमें सन्धि, समास, कारक, प्रत्यय आदि अनेक विषयों का वर्णन हुआ है।

➢ **कृत्यानां कर्तरि वा-** यह कारकविधायक सूत्र है जो षष्ठी का विधान करता है। 'कृत्य' प्रत्ययान्त शब्दों के योग में अनुक्त कर्ता में तृतीया के स्थान पर विकल्प से षष्ठी विभक्ति हो।

जैसे - मया मम वा सेव्यो हरिः।

इस प्रकार पक्ष में तृतीया तथा विकल्प से षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होता है।

➢ **उगिश्च -** उगिदन्तात्प्रातिपदिकात् स्त्रियां ङीप् स्यात्। जिसमें उक् अर्थात् उ, ऋ, ऌ की इत्संज्ञा हो गयी हो ऐसे प्रातिपदिकों से स्त्रीत्वविवक्षा में ङीप् प्रत्यय होता है।

जैसे - भवती, भवन्ती, पचन्ती, दीव्यन्ती।

जैसे - 'भवत्' प्रातिपदिक में।

'उगितश्च' से ङीप् लगाकर, अनुबन्धलोप,

भवत् + ई = भवती
भवत + ई = भवन्ती
पच् = पचन्ती

➢ **अत इनिठनौ -** ह्रस्व अकारान्त प्रथमान्त प्रातिपदिक से इनि

और ठन् प्रत्यय होते हैं। ये प्रत्यय मत्वर्थीय के अन्तर्गत आते हैं। जैसे - दण्ड + इनि = 'अत इनिठनौ'
दण्डिन् = नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य तथा उपधादीर्घ होकर = दण्डी
दण्ड + ठन = अत इनिठनौ
'ठस्येकः' से इक आदेश
दण्डिकः
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरणों से स्पष्ट है कि 'कृत्यानां कर्तरि वा' से 'मया मम वा सेव्यो हरिः' 'उगितश्च' से ङीप् तथा ह्रस्व अवर्णान्त से मत्वर्थीय इनि प्रत्यय तथा भवत् में ङीप् जोड़कर भवती, पचन्ती आदि सिद्ध हैं। **अतः विकल्प 'A' सही है।**
स्रोत- अष्टाध्यायी -ईश्वरचन्द्र, पेज 219, 423, 295, 600

28. 'दन्तुरः' इत्यत्र कः प्रत्ययः?
(A) र **(B)** अच्
(C) इरच् **(D)** उरच्

व्याख्या- ➢ उरच् प्रत्यय - 'दन्त उन्नत उरच्' (5/2/106)
उन्नता दन्ताः सन्त्यस्य दन्तुरः।
* दाँतों का उन्नत होना अर्थ गम्यमान हो तो प्रथमान्त 'दन्त' शब्द से मत्वर्थ में 'उरच्' प्रत्यय होता है।
* चकार इत्संज्ञक है, 'उर' बचता है। जहाँ 'उन्नत दाँत वाला' अर्थ न होकर केवल सामान्य दाँत वाला अर्थ होगा, वहाँ उरच् न होकर मतुप् के योग में 'दन्तवान्' बनता है।
दन्तुरः - ऊँचे दाँत वाला व्यक्ति। उन्नता दन्ता सन्त्यस्य।
दन्त + उरच् = 'दन्त उन्नत उरच्' सूत्र से
दन्त + उरच् = 'हलन्त्यम्' से च् की इत्संज्ञा 'तस्य लोपः' से उसका लोप
दन्त + उर = 'यचि भम्' से दन्त की 'भ' संज्ञा
दन्त् + उर = 'यस्येति च' से त के (अ) का लोप
दन्तुर + सुप् = 'ङ्याप्प्रातिपदिकात्' से सुप्
दन्तुर + सुप् = (प) की 'हलन्त्यम्' एवं (उ) की 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' से इत्संज्ञा 'तस्यलोपः' से लोप
दन्तुर + स = 'ससजुषो रुः' से रुत्व
दन्तुर + रु = रु के उ की 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' से इत्संज्ञा 'तस्य लोपः' से लोप
दन्तुर + र् = 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' से विसर्ग
दन्तुर + ः = दन्तुरः

➢ **अच् प्रत्यय- 'नन्दिग्रहिपचादिभ्यो ल्युणिन्यचः'** (3/1/134)
नन्दि आदि, ग्रहि आदि और पच् आदि धातुओं से क्रमशः ल्यु, णिनि और अच् प्रत्यय होते हैं।
'यथासंख्यमनुदेशः समानाम्' के नियम से क्रमशः विधान होने पर नन्दि आदि धातुओं से ल्यु, ग्रहि आदि धातुओं से णिनि और पच् आदि धातुओं से अच् प्रत्यय हो जाते हैं।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'दन्तुर' में (उरच्) प्रत्यय है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**
स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज 1115

29. 'सुमुखा शाला' इत्यत्र स्वाङ्गलक्षणङीष् कथं न?
(A) अप्राणिस्थत्वात् **(B)** अमूर्तत्वात्
(C) विकारजत्वात् **(D)** द्रवत्वात्

व्याख्या- ङीष् विधायक सूत्र -
सूत्र - 'स्वाङ्गाच्चोपसर्जनादसंयोगोपधात्' (4.1.54) - जिसकी उपधा में संयोग न हो ऐसा जो उपसर्जनसञ्ज्ञक स्वाङ्गवाची शब्द तदन्त अदन्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व की विवक्षा में विकल्प से ङीष् प्रत्यय हो।
यथा - अतिकेशी / अतिकेशा = केशान्, अतिक्रान्ता पक्ष में ङीप् होकर
अतिकेश + ङीष् (ई) = अतिकेशी
अभाव पक्ष में टाप् (अजाद्यतष्टाप्) करके-
अतिकेश + टाप्
अतिकेश + आ = सवर्ण दीर्घ होकर = अतिकेशा
इसी प्रकार - चन्द्रमुखी / चन्द्रमुखा- चन्द्र इव मुखं यस्याः सा
चन्द्रमुख + ङीष् (ई) = चन्द्रमुखी
चन्द्रमुख + टाप् = चन्द्रमुखा
* **असंयोगोपधात् किम् ?** असंयोग होने पर ही 'ङीष्' होगा अन्यथा संयोग होने पर टाप् हो जायेगा।
यथा- सुगुल्फ + टाप् = सुगुल्फा
* **उपसर्जनात् किम् ?** क्योंकि उपसर्जन न होने पर ङीष् न हो तब केवल टाप् प्रत्यय होगा।
यथा - शिखा + टाप् (आ) = शिखा
* **स्वाङ्ग -** स्वाङ्ग से यहाँ अपना अङ्ग नहीं समझना चाहिए व्याकरण में यह परिभाषिक शब्द माना गया है। वैयाकरणों ने स्वाङ्ग को त्रिविध बताया है।
1. अद्रवं मूर्तिमत्स्वाङ्गं प्राणिस्थमविकारजम् ।
2. अतस्थं तत्र दृष्टं च।

3. तेन चेत्तत्तथायुतम् ।।

अद्रव मूर्तिमत् स्वाङ्ग प्राणिस्थमविकारणम् - जो पदार्थ द्रव न हो, मूर्तिमान् हो, विकार से उत्पन्न न हुआ हो एवं प्राणियों में स्थित रहता हो वह 'स्वाङ्ग' कहलाता है।

जैसे - प्राणिस्थ केश, मुख, स्तन आदि स्वाङ्ग हैं, तदन्तों से प्रकृतसूत्र द्वारा ङीष् तथा पक्ष में टाप् होता है।

जैसे - सुकेशी-सुकेशा

चन्द्रमुखी - चन्द्रमुखा

- इनसे भिन्न स्थलों में ङीष् नहीं होता तब टाप् होता है।

जैसे - सुमुखा शाला सुन्दरं मुखं यस्याः सा सुमुखा (सुन्दर द्वारा वाला घर)

- यहाँ मुख शब्द प्राणिस्थ न होने से स्वाङ्ग नहीं है अतः ङीष् नहीं हुआ।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरणों से स्पष्ट है कि 'सुमुखा शाला' में अप्राणिस्थत्वात् के कारण स्वाङ्गलक्षण ङीष् नहीं हुआ। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग 6), पेज 63

30. 'शत्रुमधिकुरुते' इत्यत्र क्रियापदे आत्मनेपदविधायकं सूत्रं किम् ?

(A) वेः शब्दकर्मणः **(B)** अकर्मकाच्च

(C) अधेः प्रसहने **(D)** उपपराभ्याम्

व्याख्या- 'वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी' भट्टोजिदीक्षित प्रणीत उनका प्रमुख व्याकरण ग्रन्थ है।

आत्मनेपद विधायक कुछ प्रमुख सूत्र -

* **भावकर्मणोः (1/3/13)-** भाव और कर्म अर्थ में हुए लकार के स्थान पर आत्मनेपद प्रत्यय होते हैं।

यथा - बभूवे, अनुबभूवे।

* **कर्तरि कर्मव्यतिहारे (1/3/14) -** क्रिया का विनिमय अर्थात् अदला-बदली अर्थ द्योत्य होने पर धातु से कर्तृवाच्य में आत्मनेपद होता है।

यथा - व्यतिराते, व्यतिराते, व्यतिराते।

व्यतिभाते, व्यतिभाते, व्यतिभाते, व्यतिबभे।

व्यतिलुनीते।

* **नेर्विशः (1/3/17) -** नि उपसर्ग से परे विश् धातु से आत्मनेपद होता है।

निविशते । निविविशे । निवेक्ष्यते ।

* **विपराभ्यां जेः (1/3/19) -** वि तथा परा उपसर्ग से परे जि धातु से आत्मनेपद होता है।

यथा - विजयते। पराजयते।

* **अकर्मकाच्च (1/3/26) -** उद् उपसर्गपूर्वक स्था धातु यदि अकर्मक हो तो उससे आत्मनेपद होता है।

यथा - भोजनकाले उपतिष्ठते।

* **अधेः प्रसहने (1/3/33) -** अधि उपसर्ग से युक्त कृ धातु से अभिभव अर्थ में आत्मनेपद हो जाता है।

यथा - शत्रुमधिकुरुते

* **उपपराभ्याम् (1/3/39) -** वृत्ति, सर्ग, तायन अर्थ गम्यमान होने पर उप और परा उपसर्गों से भी परे क्रम् धातु से आत्मनेपद होता है।

यथा - उपक्रमते। पराक्रमते।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरणों से स्पष्ट है कि 'शत्रुमधिकुरुते' - इस उदाहरण में आत्मनेपदविधायक 'अधेः प्रसहने' सूत्र है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- वैयाकरण सिद्धान्तकौमुदी (भाग 5)-गोविन्दाचार्य, पेज 397

31. 'अध्यापयति वेदम्' इत्यत्र क्रियापदे परस्मैपदविधायकं सूत्रं किम्?

(A) विभाषाऽकर्मकात्

(B) निगरणचलनार्थेभ्यश्च

(C) परेर्मृषः

(D) बुधयुधनशजनेङ्प्रुद्रुस्रुभ्यो णेः

व्याख्या- 'वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी' भट्टोजिदीक्षित द्वारा प्रणीत है।

परस्मैपदविधायक प्रमुख सूत्र -

* **अनुपराभ्यां कृञः (1/3/79) -** क्रियाफल के कर्तृगामी होने पर और गन्धन आदि अर्थ होने पर अनु अथवा परा उपसर्ग पूर्वक कृ धातु से परस्मैपद ही होता है।

यथा - अनुकरोति। पराकरोति।

* **अभिप्रत्यतिभ्यः क्षिपः (1/3/80) -** अभि, प्रति और अति उपसर्गों से परे क्षिप् धातु से कर्ता अर्थ में परस्मैपद होता है।

यथा - अभिक्षिपति। अभिभूत करता है।

प्रतिक्षिपति। अतिक्षिपति।

* **प्राद्वहः (1/3/81) -** प्र उपसर्ग से परे वह् धातु से परस्मैपद होता है।

यथा - प्रवहति।

* **परेर्मृषः (1/3/82) -** परि उपसर्ग से परे मृष् धातु से परस्मैपद होता है।

यथा - परिमृष्यति।

* **व्याङ्परिभ्यो रमः (1/3/83) -** वि, आङ् और परि उपसर्ग से परे रम् धातु से परस्मैपद होता है।

यथा - विरमति, परिरमति, आरमति।

* **उपाच्च (1/3/84) -** उप उपसर्ग से परे रम् धातु से भी परस्मैपद होता है।

यथा - उपरमति (प्रेरणा में उपरमयति।)

* **विभाषाऽकर्मकात् (1/3/85) -** उप उपसर्ग से परे रम् धातु अकर्मक अवस्था में हो तो उससे आत्मनेपद विकल्प से होता है।

यथा- उपरमति, उपरमते।

* **बुधयुधनशजनेङ्प्रुद्रुस्रुभ्यो णेः (1/3/86)-** णिजन्त, बुध्, युध्, नश्, जन्, इङ्, प्रु, द्रु और स्रु धातुओं से परस्मैपद होता है।

यथा - अध्यापयति वेदम् ।
बोधयति पद्मम् ।
योधयति, नाशयति, प्रावयति
द्रावयति, स्रावयति आदि।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'अध्यापयति देवान्' में परस्मैपदविधायक सूत्र 'बुधयुधनशजनेङ्प्रुद्रुस्रुभ्यो णेः' है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (भाग 5)-गोविन्दाचार्य, पेज 445

32. 'एकोनिमित्तं शब्दानामपरोऽर्थे प्रयुज्यते' इति पंक्तिः कुत्र उपलभ्यते?

(A) महाभाष्ये **(B)** वाक्यपदीये
(C) पाणिनीयशिक्षायाम् **(D)** अष्टाध्याय्याम्

व्याख्या- महाकवि भर्तृहरि द्वारा रचित **'वाक्यपदीयम्'** व्याकरण ग्रन्थ है। वाक्यपदीयम् में तीन काण्ड हैं, इसीलिए इसे त्रिकाण्डी भी कहा जाता है।

1. ब्रह्मकाण्ड (कारिकाएँ) 156
2. वाक्यकाण्ड (कारिकाएँ) 486
3. पदकाण्ड (कारिकाएँ) 1218

वाक्यपदीयम् में कुल (कारिकाएँ) 1860 हैं।

*** ब्रह्मकाण्ड को मुख्यतः 'आगमकाण्ड' कहा जाता है।**

व्याकरणसम्मत शब्द का स्वरूप -

'द्वावुपादानशब्देषु शब्दौ शब्दविदो विदुः।
एको निमित्तं शब्दानामपरोऽर्थे प्रयुज्यते ॥1/43॥

शब्दविद् वैयाकरण उपादान या वाचक शब्दों में दो अन्य शब्द निहित हैं, ऐसा मानते हैं। एक शब्दों का निमित्त है, जिसे 'स्फोट' कहते हैं और दूसरा स्वरूपार्थ के रूप में प्रयुक्त होता है।

इसप्रकार प्रत्येक वाचक शब्द तीन शब्दों का समुदाय होता है-
(i) वाचक या अभिधान शब्द
(ii) स्वरूपार्थ या अभिधेय शब्द
(iii) निमित्त शब्द

*** उपादान शब्द-** उपादान शब्द को वाचक शब्द भी कहते हैं। जिनके उच्चारण करते ही दो शब्द लक्षित होते हैं-
(क) शब्द की अवधारणा
(ख) स्वरूपार्थ की अवधारणा

इनमें एक शब्द प्रतिपादक का निमित्त है और दूसरा अर्थप्रतिपत्ति का निमित्त है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि प्रस्तुत पंक्ति **'वाक्यपदीयम्'** से ली गयी है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- वाक्यपदीयम् (1/43)- शिवशंकर अवस्थी, पेज 60

33. 'शास्त्रानुपूर्व्यं तद्विद्यात् यथोक्तं लोकवेदयोः' इति पंक्तिः कस्मिन् ग्रन्थे उपलभ्यते?

(A) पाणिनीयशिक्षायाम् **(B)** अष्टाध्याय्याम्
(C) वाक्यपदीये **(D)** महाभाष्ये

व्याख्या- 1. पाणिनीय शिक्षा- शिक्षा का प्रथम सोपान वर्ण- शिक्षा है। शिक्षा का अर्थ सायण ने ऋग्वेदभाष्यभूमिका में किया है-

''वर्णस्वराद्युच्चारणप्रकारो यत्रोपदिश्यते सा शिक्षा।''

अर्थात् जिसमें वर्ण, स्वर आदि उच्चारण प्रकारों का उपदेश हो, उसे 'शिक्षा' कहते हैं।

शिक्षाशास्त्रों में **'पाणिनीय शिक्षा'** ही प्रामाणिक तथा प्राचीनतम है।

अथ शिक्षां प्रवक्ष्यामि पाणिनीयं मतं यथा।
शास्त्रानुपूर्व्यं तद्विद्याद्यथोक्तं लोकवेदयोः॥1॥

अर्थात् अब मैं पाणिनिप्रोक्त 'शिक्षा' (नामक वेदांग) को प्रकृष्ट रूप से कहूँगा। उस (पाणिनीय मत) को शास्त्रोपदेष्टृपरम्परा से प्राप्त लोक और वेद में जैसा कहा गया है, वैसा जानें।

2. महाभाष्य- पाणिनि की अष्टाध्यायी का विशद व्याख्यान पतञ्जलि ने अपने महाभाष्य में किया है।

''सूत्रार्थो वर्ण्यते यत्र वाक्यैः सूत्रानुसारिभिः।
स्वपदानि च वर्ण्यन्ते भाष्यं भाष्यविदो विदुः॥

इसका विभाजन आह्निकों में है- 'अह्ना निर्वृत्तम् - आह्निकम् अर्थात् एक दिन में अध्यापनीय विषय का संग्रह एक-एक आह्निक में किया गया है। प्रथम आह्निक का नाम 'पस्पशाह्निक' है।

अथेत्ययं शब्दोऽधिकारार्थः प्रयुज्यते। शब्दानुशासनं नाम शास्त्रमधिकृतं वेदितव्यम् ।

यहाँ 'अथ' शब्द अधिकार के अर्थ में प्रयुक्त किया गया है। 'शब्दानुशासन' नामक शास्त्र का अधिकार (अर्थात् प्रारम्भ) किया जा रहा है, ऐसा समझना चाहिए।

3. वाक्यपदीय- वाक्यपदीय के रचनाकार भर्तृहरि हैं। वाक्यपदीय व्याकरण का दार्शनिक ग्रन्थ है। इसे त्रिकाण्डी भी कहते हैं। इसकी अनादिनिधन आदि चार कारिकाओं, वृत्ति और श्रीवृषभाचार्य की पद्धति में शब्दब्रह्म का निरूपण किया गया है।

''अनादिनिधनं ब्रह्म शब्दतत्त्वं यदक्षरम् ।
विवर्ततेऽर्थभावेन प्रक्रिया जगतो यतः॥1॥

उत्पत्ति और नाश से रहित शब्दतत्त्वात्मक ब्रह्म जो अक्षर या ओङ्कार के नाम से जाना जाता है, जिससे जगत् की प्रक्रिया या विकार अर्थ के रूप में परिणत होते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि प्रस्तुत पंक्ति **पाणिनीय-शिक्षा** से ली गयी है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- पाणिनीय-शिक्षा - रमाशङ्कर मिश्र, पेज 03

34. संस्कृतभाषाध्वनिसन्दर्भेऽधोलिखितेषु 'अर्धस्वरः' कः?

(A) क **(B)** ष
(C) म **(D)** व

व्याख्या- संस्कृत भाषा ध्वनि सन्दर्भ में स्वर, अर्धस्वर, स्पर्श, संघर्षी, स्पर्शसंघर्षी, अनुनासिक, पार्श्विक, लुण्ठित, उत्क्षिप्त, अन्तःस्थ आदि विभिन्न विषयों का वर्णन किया गया है।

स्वर - अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ओ, ऐ, औ स्वरों के 4 भेद हैं।

स्वर	अर्धसंवृत	अर्धविवृत	विवृत
इ	ए	अ	आ
ई	ओ		आ
उ			
इ			

स्पर्श - क् ख् ग् घ्
ट् ठ् ड् ढ्
त् थ् द् ध्
प् फ् ब् भ्

संघर्षी - ह, .ख्, .ग्, स्, श्, .ज्, .फ्, .व्

स्पर्श संघर्षी - च्, छ्, ज्, झ्

अनुनासिक - ङ्, ञ्, ण्, न्, म्, न्ह्, म्ह्

पार्श्विक - ल्

लुंठित - र् (र्‍ह्)।

उत्क्षिप्त - ड़, ढ़ ।

अर्धस्वर - य्, व्, र्, ल् ।

अन्तःस्थ - य्, व्, र्, ल् ।

अघोष संघर्षी - श्, ष्, स् ।

घोष ऊष्म - ह

अघोष ऊष्म - ः (विसर्ग)

शुद्ध अनुनासिक - ं (अनुस्वार)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'व' अर्धस्वर है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज 148-149

35. अर्थविस्तारोदाहरणेष्वन्यतमो नास्ति?

(A) तैलम् **(B)** मुग्धः
(C) गौः **(D)** सभ्यः

व्याख्या- अर्थपरिवर्तन (अर्थविकास) की दिशाएँ-

अर्थ-परिवर्तन को विकास सिद्धान्त की दृष्टि से 'अर्थविकास' भी कहा जाता है।

अर्थ-परिवर्तन तीन प्रकार का होता है -

1. अर्थविस्तार 2. अर्थसंकोच 3. अर्थादेश

अन्य दो भेद- (1) अर्थोत्कर्ष (2) अर्थापकर्ष

1. अर्थविस्तार- कुछ शब्द मूलरूप से संकुचित अर्थ में प्रयुक्त होते थे। बाद में उनके अर्थ में विस्तार हो गया। यथा-

(i) कुशल- कुशल शब्द का अर्थ था- कुशान् लाति (कुशों को लाने वाला) बाद में इसका अर्थविस्तार होकर चतुरता एवं निपुणता हो गया।

(ii) प्रवीण- प्रवीण का अर्थ था- प्रकृष्टो वीणायाम् (वीणावादन में श्रेष्ठ या निपुण) इसमें अर्थ विस्तार होकर निपुण या दक्ष अर्थ निकला।

(iii) तैल- सबसे पहले 'तिल' का तेल (द्रव) निकला था। अब अर्थ-विस्तार होकर तेल या द्रवमात्र के लिए प्रयुक्त होने लगा।

2. अर्थसंकोच - अर्थविस्तार के विपरीत कुछ शब्दों के अर्थों का संकोच हुआ। यथा-

(i) जगत्- इसका व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ है-गतिशील, संसरणशील। परन्तु यह शब्द संसार अर्थ में रूढ़ हो गया।

(ii) गौः- इसका व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ- 'गच्छतीति गौः' चलने वाले को 'गो' (गाय) कहते हैं। परन्तु अब यह पशु विशेष 'गाय' अर्थ में रूढ़ हो गया है।

(iii) सभ्य- पहले इस शब्द का अर्थ- 'सभा में बैठने वाला' था परन्तु अब सुसंस्कृत, शिष्ट के लिए हो गया।

3. अर्थादेश - अर्थादेश का अर्थ है, एक अर्थ के स्थान पर दूसरे अर्थ का आ जाना। आदेश का अर्थ है- एक को हटाकर दूसरे का आना। यथा-

(i) असुर- मूल अर्थ असु + र (प्राणशक्ति संपन्न) 'देवता' था। बाद में सुर का उल्टा अ + सुर (राक्षस) अर्थ हो गया।

(ii) मौन- मूल अर्थ 'मुनि-कर्म' था। अब 'चुप रहना' अर्थ रह गया।

(iii) देवानां प्रियः- देवों का प्रिय। अशोक की उपाधि थी। बौद्धों के द्वेष के कारण ब्राह्मणों ने 'देवानां प्रियः' का अर्थ 'मूर्ख' कर दिया।

(iv) मुग्ध- मूल अर्थ था 'मूर्ख'। इसका अर्थ हो गया है- 'मोहित होना' सौन्दर्य पर मुग्ध होना।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरणों से स्पष्ट है कि 'गौः' शब्द अर्थविस्तार का उदाहरण नहीं है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र- कपिलदेव द्विवेदी, पेज 337

36. अर्थसङ्कोचोदाहरणेष्वन्यतमो नास्ति?

(A) जलदः **(B)** सभ्यः

(C) मनुष्यः **(D)** पङ्कजम्

व्याख्या- अर्थपरिवर्तन की दिशाएँ- संसार की सभी वस्तुएँ परिवर्तनशील हैं और भाषा भी विकास की दृष्टि से परिवर्तनशील है। जिस प्रकार ध्वनियों में परिवर्तन होता है उसी प्रकार भाषा के शब्दों के अर्थों में भी परिवर्तन होता है। भाषाविज्ञान में परिवर्तन की तीन दिशाएँ बतायी गयी हैं -

1. अर्थविस्तार
2. अर्थसंकोच
3. अर्थादेश

अर्थादेश के फिर दो भेद हो जाते हैं-

(क) अर्थोत्कर्ष (ख) अर्थापकर्ष

1. अर्थ विस्तार- कुछ शब्द मूलरूप में किसी विशेष या संकुचित अर्थ में प्रयुक्त होते थे। बाद में उनके अर्थ में विस्तार हो गया। जैसे - कुशल, प्रवीण, तैल, गोशाला, गोष्ठ, महाराज, गवेषणा

2. अर्थ संकोच- अर्थविस्तार के विपरीत कुछ अर्थ संकुचित अर्थात् सीमित हो गया है या जिनका व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ बहुत विस्तृत है, परन्तु ये किसी विशेष अर्थ में रूढ़ हो गये हैं। जैसे - गो, अश्व, पृथ्वी, जगत्, संसार, अम्बुज, पंकज, वारिधि, सरसिज, जलद, तोयद, सर्प, पर्वत, तटस्थ, मध्यस्थ, उदासीन, मन्दिर, मृदा, सभ्य, श्राद्ध, तर्पण, अनुकूल, प्रतिकूल, वेदना, घृणा इनके अलावा समास, उपसर्ग, प्रत्यय, विश्लेषण, नामकरण आदि शब्द अर्थसंकोच के उदाहरण हैं।

3. अर्थादेश- अर्थादेश का अर्थ है- एक को हटाकर उसके स्थान पर दूसरा अर्थ आना। अर्थादेश में शब्द का प्राचीन अर्थ लुप्त हो जाता है और नया अर्थ आ जाता है।

जैसे - असुर, वर, सह, मौन, देवानां प्रियः, बौद्ध-बुद्ध, पाखण्ड, आकाशवाणी, साहस, खाद-खाला, भद्र-भद्दा, मुग्धा, वाटिका आदि।

(i) अर्थोत्कर्ष - उनमें कुछ शब्दों में परिवर्तन से अर्थ में उत्कर्ष आ जाता है।

जैसे - मुग्ध, साहस-साहसी, कर्पट-कपड़ा, गोष्ठ- गोष्ठी, गवेषणा, सभ्य।

(ii) अर्थापकर्ष - कुछ शब्दों में परिवर्तन से अर्थ में अपकर्ष आ जाता है।

जैसे - असुर, जुगुप्सा, शौच, देवानां प्रियः, भद्र-भद्दा, घृणा, महाराज, लिङ्ग, चतुर्वेदी।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'सभ्यः' अर्थसंकोच के अन्तर्गत आता है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 337

37. ध्वनिवैज्ञानिकैः करणत्वेन किं स्वीक्रियते?

(A) मृदुतालु **(B)** वर्त्सः

(C) ऊर्ध्वौष्ठिः **(D)** नासिकाविवरः

व्याख्या- वाग्यंत्र के समस्त अवयवों को कार्य और उपयोगिता की दृष्टि से दो भागों में विभक्त किया जाता है- 1. करण 2. स्थान

1. करण- वाग्यन्त्र के उन अवयवों को कहते हैं जो सामान्यतया इधर-उधर गतिशील हो सकते हैं और इस आधार पर वे अपनी विभिन्न स्थितियाँ धारण कर सकते हैं। इसी आधार पर जिह्वा के अग्र, मध्य और पश्च भेद किये जाते हैं। इसको ऊँचाई और निचाई के आधार पर संवृत, अर्ध-संवृत, अर्ध-विवृत और विवृत भेद किये जाते हैं।

इसी प्रकार ओष्ठ के वृत्ताकार, अवृत्ताकार भेद किये जाते हैं।

2. स्थान या उच्चारण-स्थान- वाग्यंत्र के उन अवयवों को कहते हैं, जो अपने स्थान पर स्थिर रहते हैं और जिह्वा जिन स्थानों के पास जाती है या उनका स्पर्श करती है। दन्त, तालु, मूर्धा आदि इस प्रकार के अवयव हैं।

* **मृदुतालु (Soft Palate, कोमल तालु)-** गलबिल (कण्ठमार्ग) की ओर से आगे आने पर कोमल तालु मिलता है। यह कठोर तालु की समाप्ति से लेकर गलबिल तक फैला हुआ है।

यह कोमल मांस-खण्ड के तुल्य है।

ध्वनि-विज्ञान में यह एक महत्त्वपूर्ण अवयव है। यह मुख-विवर और नासिकाविवर के मध्य कपाट या ढक्कन के तुल्य कार्य करता है। स्वरों (अ, इ आदि) और स्पर्श व्यंजनों (क, ख, ग आदि) के उच्चारण में कोमल तालु ऊपर उठकर नासारन्ध्र को बन्द कर देता है, अतः पूरी वायु मुख-मार्ग से निकलती है नासिक्य ध्वनियों के उच्चारण में कोमल तालु नीचे आ जाता है और मुख-द्वार को बन्द कर देता है, अतः पूरी वायु नासाविवर से ही निकलती हैं ध्वनिवैज्ञानिक ने इसे ही करण के रूप में स्वीकार करते हैं।

* **वर्त्स (Alveolus)-** यह दाँतों के मूल से लेकर कठोर तालु के प्रारम्भ तक का भाग है। दाँतों की जड़ में यह उभरा हुआ खुरदुरा भाग 'वर्त्स' कहलाता है।

* **नासाविवर (Nasal Cavity, नेज़ल केविटी)-** यह गलबिल से प्रारम्भ होकर नासिका के अग्रभाग तक फैला हुआ है। इसके अन्दर एक विवर है। इस विवर से वायु के निर्गत होने पर अनुनासिक या नासिक्य ध्वनियाँ उत्पन्न होती हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि ध्वनिवैज्ञानिक करण के रूप में मृदुतालु (कोमल तालु) को स्वीकार करते हैं। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र- कपिलदेव द्विवेदी, पेज 136

38. ''सा च त्रिविधा विधात्री, अभिधात्री, विनियोक्त्री च'' इत्यत्र सा का?

(A) वैदिकीसमाख्या **(B)** श्रुतिः
(C) लौकिकीसमाख्या **(D)** शब्दशक्तिः

व्याख्या- अर्थसंग्रह लौगाक्षिभास्कर द्वारा रचित है। इसमें चार विधियाँ हैं-

1. उत्पत्तिविधि 2. विनियोगविधि
3. प्रयोगविधि 4. अधिकारविधि

1. उत्पत्ति विधि-

'कर्मस्वरूपमात्रबोधको विधिरुत्पत्तिविधिः
यथा - अग्निहोत्रं जुहोति।

अर्थात् (याग आदि) कर्म के केवल स्वरूप के बोधक विधि को उत्पत्तिविधि कहते हैं। जैसे- अग्निहोत्रं जुहोति।

2. विनियोगविधि-

'अङ्गप्रधानसम्बन्धबोधको विधिर्विनियोगविधिः। यथा- दध्ना जुहोतीति।

अर्थात् (द्रव्य, देवता आदि) अङ्ग तथा प्रधान (होम आदि) के सम्बन्ध के ज्ञापक विधि को विनियोग विधि कहते हैं। जैसे - दध्ना जुहोति।

'एतस्य विधेः सहकारिभूतानि षट्प्रमाणानि- श्रुति-लिङ्ग-वाक्य-प्रकरण-स्थान-समाख्यारूपाणि।

अर्थात् इस विनियोगविधि के सहायक छः प्रमाण -
(i) श्रुति (ii) लिङ्ग (iii) वाक्य (iv) प्रकरण
(v) स्थान (vi) समाख्या रूप में है।

तत्र निरपेक्षो रवः श्रुतिः। सा च त्रिविधा - विधात्री, अभिधात्री, विनियोक्त्री च।

अर्थात् उन (छः प्रकार के प्रमाणों) में (शेषत्व या अङ्गत्व का बोध कराने के लिए दूसरे प्रमाण की) आवश्यकता से रहित शब्द श्रुति (नामक प्रमाण) है। वह तीन प्रकार की होती है -
(i) विधात्री (ii) अभिधात्री और (iii) विनियोक्त्री।

विनियोग विधि के सहकारी प्रमाण

1 श्रुति 2 लिङ्ग 3 वाक्य 4 प्रकरण 5 स्थान 6 समाख्या

1 विधात्री 2 अभिधात्री 3 विनियोक्त्री

1 विभक्तिरूपा 2 एकाभिधानरूपा 3 एकपदरूपा

1 तृतीयाश्रुति 2 द्वितीयाश्रुति 3 सप्तमी श्रुति

1 द्रव्यात्मिका 2 गुणात्मिका 1 क्रियात्मिका 2 मन्त्रात्मिका
(व्रीहिभिर्यजेत) (अरुणया..क्रीणाति) (व्रीहीन् प्रोक्षति) (इमाम् ..आदत्ते)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरणों से स्पष्ट है कि तीनों भेद 'श्रुति' नामक प्रमाण के हैं। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- अर्थसंग्रह - वाचस्पति उपाध्याय, पेज 57

39. अर्थसंग्रहानुसारं 'शाब्दीभावना' इत्यनेन कः अभिप्रायः?

(A) अपौरुषेयवाक्यम्
(B) समभिव्यवहारः
(C) पुरुषप्रवृत्त्यनुकूलो भावयितुर्व्यापारविशेषः
(D) प्रयोजनेच्छाजनितक्रियाविषयव्यापारः

व्याख्या- लौगाक्षिभास्कररचित 'अर्थसंग्रह' पूर्वमीमांसा दर्शन का प्रमुख प्रकरण ग्रन्थ है।

भावना - अर्थसंग्रह में दो प्रकार की भावना बतायी गयी है-
1. शाब्दी भावना 2. आर्थी भावना

1. शाब्दी भावना-

'पुरुषप्रवृत्त्यनुकूलो भावयितुर्व्यापारविशेषः शाब्दीभावना। सा च लिङंशेनोच्यते।

उनमें अर्थात् शाब्दी तथा आर्थी भावनाओं में व्यक्ति की प्रवृत्ति की जनक अथवा सहायक प्रयोजन का व्यापारविशेष शाब्दी भावना है। वह लिङ् अंश से व्यक्त होती है, क्योंकि लिङ् का श्रवण होने पर निश्चित रूप से प्रतीत होता है कि यह मुझे प्रवृत्त कर रहा है अर्थात् यह मेरी प्रवृत्ति के अनुकूल व्यापार करने वाला है।

शाब्दी भावना में तीन अंश बताए गये हैं -

(क) साध्य - किं भावयेत् **(ख)** साधन - केन भावयेत्
(ग) इतिकर्तव्यता - कथं भावयेत्

इन तीनों अंशों का अभिप्राय क्रमशः यह है कि शाब्दी भावना से किस फल को सिद्ध किया जाए, किस साधन से सिद्ध किया जाये तथा किस प्रकार सिद्ध किया जाये।

2. आर्थी भावना-

'प्रयोजनेच्छाजनितक्रियाविषयव्यापार आर्थीभावना। सा चाख्यातत्वांशेनोच्यते, आख्यातसामान्यस्य व्यापार-वाचित्वात्।

स्वर्ग आदि उद्देश्य की इच्छा से होने वाली याग आदि क्रिया से सम्बद्ध व्यापार आर्थीभावना है। वह आख्यातत्व अंश से व्यक्त होती है। क्योंकि आख्यात व्यापार को ही प्रकट करते हैं। इसमें भी साध्य, साधन, इतिकर्तव्यता तीन अंशों की अपेक्षा होती है।

यजेत

धातु (यज्) **भावना (त प्रत्यय)**

आर्थी (आख्यात करना) | शाब्दी (लिङ् चाहिए)

साध्य	साधन	इतिकर्तव्यता
किं भावयेत्	केन भावयेत्	कथं भावयेत्
स्वर्गादिफल	याग आदि धात्वर्थ	प्रयाजादि अङ्गघात

लौकिकी पुरुषनिष्ठ | वैदिकी लिङ्गादिनिष्ठ

साध्य	साधन	इतिकर्तव्यता
किं भावयेत्	केन भावयेत्	कथं भावयेत्
अङ्गत्रयोपेत आर्थीभावना	लिङ्गादि का ज्ञान	अर्थवाद से ज्ञेय प्राशस्त्य आदि।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि शाब्दीभावना का अभिप्राय 'पुरुषप्रवृत्त्यानुकूलोभावयितुर्व्यापारविशेषः' है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- अर्थसंग्रह - कामेश्वरनाथ मिश्र, पेज 27

40. अर्थसंग्रहानुसारं विधिश्चतुर्विधः उत्पत्तिविधिः, विनियोगविधिः, अधिकारविधि .... च।

(A) नियमविधिः **(B)** प्रयोगविधिः
(C) यज्ञविधिः **(D)** परिसंख्याविधिः

व्याख्या- अर्थसंग्रह नामक मीमांसाग्रन्थ लौगाक्षिभास्कर द्वारा प्रणीत है। लौगाक्षिभास्कर के दो ही ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं -

1 मीमांसा दर्शन का 'अर्थसंग्रह'
2 वैशेषिकदर्शन का 'तर्ककौमुदी'

अर्थसंग्रह में चार प्रकार की विधियों का वर्णन है -

1. उत्पत्तिविधि 2. विनियोगविधि
3. अधिकारविधि 4. प्रयोगविधि

'अर्थसंग्रहानुसारं विधिश्चतुर्विधः - उत्पत्तिविधिः, विनियोगविधिः, अधिकारविधिः, प्रयोगविधिश्चेति।

1. उत्पत्ति विधि -

तत्र कर्मस्वरूपमात्रबोधको विधिरुत्पत्तिविधिः, यथा 'अग्निहोत्रं जुहोति'।

उन (चारों प्रकार की विधियों में (याग आदि) कर्म के केवल स्वरूप के बोधक विधि को उत्पत्तिविधि कहते हैं।
जैसे - 'अग्निहोत्रं जुहोति'।

2. विनियोग विधि -

'अङ्गप्रधानसम्बन्धबोधको विधिर्विनियोगविधिः।' यथा- 'दध्ना जुहोति'।

अर्थात् (द्रव्य, देवता आदि) अङ्ग तथा प्रधान (होम आदि) के सम्बन्ध के ज्ञापक विधि को विनियोग विधि कहते हैं।
जैसे- 'दध्ना जुहोति'।

3. अधिकार विधि -

'कर्मजन्यफलस्वाम्यबोधको विधिरधिकारविधिः। कर्मजन्यफलस्वाम्यं कर्मजन्यफलभोक्तृत्वम् । स च 'यजेत स्वर्गकामः' इत्यादिरूपः।

अर्थात् (यागादि) कर्म से उत्पन्न होने वाले (स्वर्गादि) फल के स्वामित्व का ज्ञान कराने वाली विधि अधिकारविधि है। कर्म से उत्पाद्य फल के स्वामित्व का अर्थ है- कर्म से उत्पाद्य फल का भोक्ता होना और उस अधिकारविधि का रूप है- 'स्वर्गकामो यजेत'।

4. प्रयोग विधि -

'प्रयोगप्राशुभावबोधकोविधिः प्रयोगविधिः। स चाङ्गवाक्यैकवाक्यतापन्नः प्रधानविधिरेव।

अर्थात् प्रयोग कर्मसम्पादन में शीघ्रता के भाव की ज्ञापक विधि प्रयोगविधि है। वह अङ्गवाक्यों के साथ एकवाक्यता को प्राप्त प्रधानविधि ही है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरणों से स्पष्ट है कि प्रस्तुत पंक्ति में रिक्तस्थान की जगह प्रयोगविधि होगा। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- अर्थसंग्रह -कामेश्वरनाथ मिश्र, पेज 46, 61, 115, 138

41. योगदर्शनानुसारं कः 'योगाङ्गैः' सह सम्बद्धः न अस्ति?

(A) विकल्पः **(B)** नियमः

(C) प्रत्याहारः **(D)** प्राणायामः

व्याख्या- 'योगसूत्र' महर्षि पतञ्जलि द्वारा प्रणीत है। यह 'योगदर्शन' का आधार है-

योगदर्शन को 'सेश्वर सांख्य' भी कहा जाता है। योगसूत्र पर व्यास ने 'योगभाष्य' लिखा है।

योगसूत्र में चार पाद हैं -

1 समाधिपाद 2 साधनपाद

3 विभूतिपाद 4 कैवल्यपाद

इसमें कुल 195 सूत्र हैं।

1 समाधिपाद - योग तथा समाधि के स्वरूप एवं भेदों का वर्णन है।

योग - 'योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः'

समाधि - समाधि दो प्रकार की है - सम्प्रज्ञात तथा असम्प्रज्ञात

2 साधनपाद - योग प्राप्ति के साधन तथा अष्टयोगाङ्गों का वर्णन।

अष्टाङ्गयोग - यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि- ये आठ योग के अङ्ग हैं।

'यमनियमाऽऽसनप्राणायामप्रत्याहारधारणाध्यानसमाधयोऽष्टावङ्गानि। (2/29)

(क) यमाः - अहिंसादयः पञ्च, अहिंसा इत्यादि पाँच यम हैं।

'अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमाः। (2/30)

(ख) नियम - शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वरप्रणिधान नियम कहे जाते हैं।

'शौचसन्तोषतपःस्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि नियमाः। (2/32)

(ग) आसन - जो शारीरिक स्थिति स्थायी और सुखद हो, वह आसन है।

'स्थिरसुखमासनम्' (2/46)

(घ) प्राणायाम - उस आसनजय के होने पर श्वास और प्रश्वास की गति को रोकना प्राणायाम है।

'तस्मिन् सति श्वासप्रश्वासयोर्गतिविच्छेदः प्राणायामः।' (2/49)

(ङ) प्रत्याहार - इन्द्रियों को अपने-अपने विषयों से हटा लेना प्रत्याहार है।

स्वविषयासम्प्रयोगे चित्तस्वरूपानुकार इवेन्द्रियाणां प्रत्याहारः ॥ (2/54)

(च) धारणा - चित्त को किसी बाहरी या भीतरी प्रदेश में लगाना धारणा है।

'देशबन्धश्चित्तस्य धारणा।' (3/1)

(छ) ध्यान - उस विषय में ज्ञान की एकतानता ही ध्यान है।

'तत्र प्रत्ययैकतानता ध्यानम्।' (3/2)

(ज) समाधि - समाधि दो प्रकार की होती है -

(1) सविकल्पक (2) निर्विकल्पक

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरणों से स्पष्ट है कि 'विकल्पः' योग का अङ्ग नहीं है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- योगसूत्र - (2/29)

42. 'अथातो ब्रह्मजिज्ञासा' इत्यत्र 'अथ' शब्दः कस्मिन् अर्थे अस्ति?

(A) हेत्वर्थे **(B)** अधिकारार्थे

(C) अन्तयार्थे **(D)** आनन्तर्यार्थे

व्याख्या- वेदान्तदर्शन का प्रमुख ग्रन्थ 'ब्रह्मसूत्र' है जो महर्षि बादरायण प्रणीत है। जिस पर आदि शंकराचार्य ने शांकरभाष्य लिखा है।

वेदान्तमीमांसा शास्त्र का यह आदि ग्रन्थ है-

'अथातो ब्रह्मजिज्ञासा' ॥1॥

अथ अतः ब्रह्मजिज्ञासा।

सूत्रार्थ - विवेक आदि साधनचतुष्टयरूप सम्पत्तिसिद्धि के अनन्तर कर्मफल के अनित्य और ज्ञानफल मोक्ष के नित्य होने से मुमुक्षु को ब्रह्मजिज्ञासा करनी चाहिए।

यद्यपि अध्याय की सिद्धि के अनन्तर विषय और प्रयोजन की सिद्धि होने पर प्रस्तुत ग्रन्थ अर्थात् ब्रह्मसूत्र का आरम्भ करना युक्त है। तत्र अथ शब्द आनन्तर्यार्थः परिगृह्यते। 'अथ' शब्द आनन्तर्यार्थ का बोधक है।

➤ **अथ योगानुशासनम् -** भाष्यम् । अथेत्ययमधिकारार्थः। योगानुशासनं शास्त्रमधिकृतं वेदितव्यं। योगः समाधिः।

- 'अथ' शब्द अधिकारार्थक है। योगानुशासन रूप शास्त्र आरम्भ हुआ है, यह जानना चाहिए।
- योग का अर्थ है समाधि।
- वह चित्त का सार्वभूमि धर्म है।
- क्षिप्त, मूढ, विक्षिप्त, एकाग्र और निरुद्ध- ये चित्त की पाँच भूमियाँ हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'अथातो ब्रह्मजिज्ञासा' प्रस्तुत सूत्र में अथ शब्द 'आनन्तर्य' अर्थ में है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्त्रोत- ब्रह्मसूत्र (शाङ्करभाष्य)- स्वामी सत्यानन्द सरस्वती, पेज 19

43. व्याप्यस्य 'पक्षधर्मत्वधीः' इति किम्?

(A) परामर्शः **(B)** अनुमितिः

(C) पक्षता **(D)** प्रतिज्ञा

व्याख्या- विश्वनाथपञ्चानन भट्टाचार्य प्रणीत न्यायसिद्धान्तमुक्तावली नामक टीका 'कारिकावली' ग्रन्थ की है। 'कारिकावली' में कुल 168 कारिकाएँ हैं।

*** अनुमिति -** अनुमिति में परामर्श ही व्यापार है और व्याप्ति का ज्ञान करण होता है।

'व्यापारस्तु परामर्शः करणं व्याप्तिधीर्भवेत्।'

*** परामर्श -** व्याप्य अर्थात् व्याप्ति से विशिष्ट जो धूम आदि हेतु हैं, उनका पक्ष अर्थात् सन्दिग्ध साध्य वाला विषय पर्वत आदि में वृत्तित्व अर्थात् रहने का ज्ञान परामर्श कहलाता है।

'व्याप्यस्य पक्षवृत्तित्वधीः परामर्श उच्यते।'

*** व्याप्ति -** साध्य (जो हेतु के द्वारा अनुमेय है, जैसे वह्नि आदि) से युक्त भिन्न वस्तु में हेतु (धूम आदि) का सम्बन्ध न होना व्याप्ति कहा जाता है।

'व्याप्तिः साध्यवदन्यस्मिन्नसम्बन्ध उदाहृतः'। (68)

अथवा हेतु के अधिकरण में रहने वाले अभाव के अप्रतियोगी (अविरोधी) साध्य के साथ हेतु का एक ही अधिकरण में रहना व्याप्ति है।

'अथवा हेतुमन्निष्ठविरहाऽप्रतियोगिना।
साध्येन हेतोरैकाधिकरण्यं व्याप्तिरुच्यते।।' (69)

*** पक्ष-** साधन (अनुमान) करने की इच्छा से शून्य सिद्धि जहाँ नहीं है, वह पक्ष कहलाता है। उसमें वृत्तित्व के ज्ञान से अनुमिति होती है।

'सिषाधयिषया शून्या सिद्धिर्यत्र न विद्यते।
स पक्षस्तत्र वृत्तित्वज्ञानादनुमितिर्भवेत्।।' (70)

*** हेत्वाभास -** अनैकान्त, विरुद्ध, असिद्ध, प्रतिपक्षित एवं कालात्ययापदिष्ट- इस प्रकार हेत्वाभास पाँच प्रकार के होते हैं। (जो केवल हेतु जैसे लगते हैं लेकिन हेतु नहीं होते वे हेत्वाभास कहलाते हैं।

'अनैकान्तो विरुद्धश्चाप्यसिद्धः प्रतिपक्षितः।
कालात्ययापदिष्टश्च हेत्वाभासास्तु पञ्चधा।।' (71)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि प्रश्नोक्त पंक्ति 'परामर्श' का लक्षण है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्त्रोत- न्यायसिद्धान्तमुक्तावली (अनुमानोपमान खण्ड) महानन्द झा, पेज 21

44. जैनदर्शनानुसारं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि ....।

(A) जीवः **(B)** मोक्षमार्गः

(C) मनःपर्यायः **(D)** मोक्षः

व्याख्या- ➢ **जैनदर्शन -** जैन शब्द 'जिन' से बना है।

* 'जिन'-'जि' + नक्, आदि वृद्धि होकर जैन शब्द बना है। 'जिन' शब्द का अर्थ है - **विजेता**

* अर्थात् रागद्वेषादि मनोविकारों का दमन कर विजय प्राप्त करने वाला 'जिन' कहलाता है -
'रागद्वेषादिमनोविकाराञ्जयतीति जिनः।'

* 'जिन' के उपासक 'जैन' कहलाये **'जिन उपास्यदेवतास्येति जैनः।'**

* 'जैन दर्शन' के आदिप्रवर्तक **'ऋषभदेव'** हैं। जैनों के कुल 24 तीर्थंकर हैं। इनके अन्तिम तीर्थंकर **'महावीर स्वामी'** हैं।

➢ **त्रिरत्न -** सम्यक् ज्ञान, सम्यक् श्रद्धा (दर्शन) और सम्यक् चरित्र (आचरण) त्रिरत्न कहलाते हैं। ये ही **'मोक्षप्राप्ति'** के **'निश्चित मार्ग'** हैं।

1. सम्यक् ज्ञान - जैनाचार्य **'उमास्वाति'** ने ज्ञान के दो भेद किये हैं - (क) निर्विकल्पक (ख) सविकल्पक

(क) निर्विकल्पक ज्ञान- चक्षु, अचक्षु, अवधि तथा केवल चार प्रकार का होता है।

(ख) सविकल्पक ज्ञान - सविकल्पक ज्ञान प्रत्यक्ष और परोक्ष के भेद से दो प्रकार का होता है।

अप्रत्यक्ष एवं प्रत्यक्ष सविकल्पक ज्ञान- मति, श्रुति, अवधि, मनःपर्याय और केवल के भेद से पाँच प्रकार का होता है।

2. सम्यक् दर्शन- जिनदेव द्वारा कहे गये तत्त्वों में रुचि होना ही सम्यक्दर्शन कहलाता है। सम्यक्दर्शन के आठ अङ्ग हैं -
(क) जीव **(ख)** अजीव **(ग)** आस्रव **(घ)** बन्ध **(ङ)** संवर **(च)** निर्जरा **(छ)** मोक्ष

* इन्हीं जीव आदि सातों तत्त्वों में विश्वास रखना ही सम्यक् दर्शन है।

3. सम्यक् चरित्र - रागद्वेषादि सांसारिक वासनाओं के परित्याग के लिए किया जाने वाला आचरण ही सम्यक् चरित्र है। सम्यक् आचरण के लिए **'पाँच महाव्रतों'** का पालन करना आवश्यक है। वे निम्नलिखित हैं -

(क) अहिंसा **(ख)** सत्य **(ग)** अस्तेय **(घ)** ब्रह्मचर्य **(ङ)** अपरिग्रह

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि ये त्रिरत्न मोक्ष के मार्ग हैं। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- भारतीय दर्शन एवं संस्कृति- महराजदीन पाण्डेय, पेज 233

45. 'सर्वं शून्यम्' इति केन बौद्धसम्प्रदायेन स्वीकृतम् ?

(A) माध्यमिकेन **(B)** सौत्रान्तिकेन
(C) योगाचारेण **(D)** वैभाषिकेन

व्याख्या- बौद्ध दर्शन के संस्थापक 'गौतम बुद्ध' हैं। इनका नाम सिद्धार्थ था। इनके माता-पिता मायादेवी और शुद्धोधन थे। 19 वर्ष की अवस्था में इन्होंने 'महाभिनिष्क्रमण' (गृहत्याग) किया था। बौद्ध दर्शन के चार सम्प्रदाय हैं -

1 माध्यमिक (शून्यवाद)
2 योगाचार (विज्ञानवाद)
3 सौत्रान्तिक (बाह्यार्थानुमेयवाद)
4 वैभाषिक (बाह्यार्थ प्रत्यक्षवाद)

सर्वं शून्यम् - माध्यमिक (शून्यवादी)
बाह्यपदार्थस्य शून्यम् - योगाचार (विज्ञानवादी)
बाह्यपदार्थस्य अनुमानात् ज्ञायते - सौत्रान्तिक
बाह्यपदार्थस्य प्रत्यक्षात् ज्ञायते - वैभाषिक

➢ **चार आर्य सत्य -** महात्मा बुद्ध ने चार आर्यसत्यों का प्रतिपादन किया -

1 दुःख **2** दुःखसमुदय **3** दुःखनिरोध **4** दुःखनिरोधगामिनी

➢ **अष्टाङ्गिक मार्ग -** यह अष्टाङ्ग मार्ग बौद्ध धर्म का **'आचार मार्ग'** है। इसे श्रेष्ठ मार्ग भी कहा गया है। ये आठ मार्ग हैं-

1 सम्यक् दृष्टि **5** सम्यक् आजीव
2 सम्यक् संकल्प **6** सम्यक् व्यायाम
3 सम्यक् वाक् **7** सम्यक् स्मृति
4 सम्यक् कर्मान्त **8** सम्यक् समाधि

➢ **त्रिरत्न -** बौद्ध धर्म के त्रिरत्न निम्न हैं-

1 बुद्ध **2** धम्म **3** संघ

➢ **प्रमाण-** प्रमाण दो हैं - **1** प्रत्यक्ष **2** अनुमान

➢ **द्वादश निदान -** प्रतीत्यसमुत्पाद का ज्ञान द्वादश निदानों से होता है।

1. अविद्या **7.** वेदना
2. संस्कार **8.** तृष्णा
3. विज्ञान **9.** उपादान
4. नामरूप **10.** भव
5. षडायतन **11.** जाति
6. स्पर्श **12.** जरामरण

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरणों से स्पष्ट है कि 'सर्वं शून्यम्' माध्यमिक सम्प्रदाय से लिया गया है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- भारतीय दर्शन एवं संस्कृति -महराजदीन पाण्डेय, पेज 305

46. तर्कसंग्रहानुसारं 'संस्कारमात्रजनकं ज्ञानम्' अस्ति?

(A) अनुभवः **(B)** यथार्थः
(C) स्मृतिः **(D)** प्रमाणम्

व्याख्या- वैशेषिक दर्शन के आदिप्रवर्तक महर्षि कणाद माने जाते हैं। वैशेषिकदर्शन का प्रकरणग्रन्थ तर्कसंग्रह अन्नम्भट्ट' द्वारा रचित है। जो एक प्रमेयप्रधान ग्रन्थ है।

इसमें सात पदार्थ बताये गये हैं -

1 द्रव्य 5 विशेष
2 गुण 6 समवाय
3 कर्म 7 अभाव
4 सामान्य

1. द्रव्य - नौ प्रकार के बताये गये हैं।

'तत्र द्रव्याणि पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशकाल-दिगात्मनांसि नवैव।

(i) पृथ्वी (ii) जल (iii) तेज (iv) वायु (v) आकाश (vi) काल (vii) दिक् (viii) आत्मा (ix) मन।

2. गुण - चौबीस प्रकार के बताए गये हैं -

(1) रूप (2) रस (3) गन्ध (4) स्पर्श (5) संख्या (6) परिमाण (7) पृथक्त्व (8) संयोग (9) विभाग (10) परत्व (11) अपरत्व (12) गुरुत्व (13) द्रव्यत्व (14) स्नेह (15) शब्द (16) बुद्धि (17) सुख (18) दुःख (19) इच्छा (20) द्वेष (21) प्रयत्न (22) धर्म (23) अधर्म (24) संस्कार।

3. कर्म - पाँच प्रकार के बताये गये हैं -

(i) उत्क्षेपण (ii) अपक्षेपण (iii) आकुञ्चन (iv) प्रसारण (v) गमन। उत्क्षेपणापक्षेपणाकुञ्चनप्रसारणगमनानि पञ्च कर्माणि।

4. सामान्य - सामान्य दो प्रकार के बताये गयें हैं-

(i) पर (ii) अपर

5. विशेष - विशेष अनन्त बताये गये हैं। (नित्यद्रव्यवृत्तयो विशेषास्तवन्ता एव)

6. समवाय - समवाय एक बताया गया है।

7. अभाव - अभाव चार प्रकार के बताये गये हैं-

(i) प्रागभाव (ii) प्रध्वंसाभाव (iii) अन्योन्याभाव (iv) अत्यन्ताभाव

चौबीस प्रकार के गुणों में सोलहवाँ गुण बुद्धि है, जो इस प्रकार बताया गया-

*** बुद्धि - 'सर्वव्यवहारहेतुर्गुणो बुद्धिर्ज्ञानम्' सा द्विविधा— स्मृतिरनुभवश्च।**

समस्त व्यवहारों के कारण भूत गुण को 'बुद्धि' अर्थात् ज्ञान कहते हैं वह दो प्रकार की होती है -

(i) स्मृति (ii) अनुभव

*** स्मृति - संस्कारमात्रजन्यं ज्ञानं स्मृतिः।**

संस्कार-मात्र से उत्पन्न ज्ञान को 'स्मृति' कहते हैं।

*** अनुभव- तद्भिन्नं ज्ञानमनुभवः। स द्विविधः यथार्थोऽयथार्थश्च।**

स्मृति से भिन्न ज्ञान को 'अनुभव' कहते हैं। वह दो प्रकार का होता है। यथार्थ, अयथार्थ।

*** यथार्थ - तद्वति तत्प्रकारकोऽनुभवो यथार्थः।**

यथा- रजते इदं रजतम् इति ज्ञानम्। सैव प्रमेत्युच्यते।

*** अयथार्थ - तदभाववति तत्प्रकारकोऽनुभवोऽयथार्थः।**

यथा- शुक्तौ इदं रजतम् इति ज्ञानम्। सैवाप्रमत्युच्यते।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरणों से स्पष्ट है कि 'संस्कारमात्रजन्यं ज्ञानम्' यह लक्षण स्मृति का है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- तर्कसंग्रह - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज 38

47. तर्कसंग्रहानुसारं शब्दसाक्षात्कारे कः सन्निकर्षः?

(A) समवायः **(B)** संयोगः

(C) समवेतसमवायः **(D)** विशेषण-विशेष्यभावः

व्याख्या- * न्याय, वैशेषिक दर्शन का प्रधान प्रकरण ग्रन्थ 'तर्कसंग्रह' अन्नम्भट्ट प्रणीत है।

* तर्कसंग्रह प्रमेयप्रधान ग्रन्थ है चूँकि प्रमेयों का ज्ञान प्रमाण द्वारा होता है, अतः यहाँ चार प्रकार के प्रमाण बताए गये हैं -

(1) प्रत्यक्ष (2) अनुमान

(3) उपमान (4) शब्द

*** प्रत्यक्ष - तत्र प्रत्यक्षज्ञानकरणं प्रत्यक्षम् । इन्द्रियार्थसन्निकर्ष- जन्यं ज्ञानं प्रत्यक्षम्।**

अर्थात् प्रत्यक्षज्ञान का करण प्रत्यक्ष कहलाता है तथा इन्द्रियार्थ-सन्निकर्षजन्य ज्ञान को प्रत्यक्ष कहते हैं।

प्रत्यक्षज्ञानहेतुः इद्रियार्थसन्निकर्षः षड्विधः -

(1) संयोग (4) समवाय

(2) संयुक्त समवाय (5) समवेत समवाय

(3) संयुक्त समवेत समवाय (6) विशेषण-विशेष्य-भाव

(1) संयोग - चक्षुषा घटप्रत्यक्षजनने संयोगः सन्निकर्षः।

अर्थात् चक्षु से घट का प्रत्यक्ष ज्ञान होना संयोग सन्निकर्ष है।

(2) संयुक्तसमवाय - घटरूपप्रत्यक्षज्ञानजनने संयुक्तसमवायः सन्निकर्षः, चक्षुः संयुक्ते घटे रूपस्य समवायात्।

अर्थात् चक्षु से घटरूप का प्रत्यक्ष ज्ञान होना संयुक्त समवाय सन्निकर्ष कहलाता है। चक्षु से संयुक्त घट में रूप का समवाय होने से।

(3) संयुक्तसमवेतसमवाय - रूपत्वसामान्यप्रत्यक्षे संयुक्त-समवेतसमवायसन्निकर्षः। चक्षुः संयुक्ते घटे रूपं समवेतं, तत्र रूपत्वस्य समवायात्।

अर्थात् चक्षुसंयुक्त घटरूप में समवेतरूपत्व सामान्य का ज्ञान होना संयुक्तसमेवतसमवाय कहलाता है।

(4) समवाय- श्रोत्रेण शब्दसाक्षात्कारे समवायः सम्बन्धः। कर्णविवरवर्त्याकाशस्य श्रोत्रत्वाच्छब्दस्याकाशगुणत्वाद् गुणगुणिनोश्च समवायात् ।

अर्थात् श्रोत्र द्वारा शब्द का साक्षात्कार समवायसन्निकर्ष कहलाता है।

(5) समवेतसमवाय - शब्दत्वसाक्षात्कारे समवेतसमवायः सन्निकर्षः। श्रोत्रसमवेते शब्दे शब्दत्वस्य समवायात्।

अर्थात् श्रोत्र द्वारा शब्द में समवेत शब्दत्व का साक्षात्कार होना समवेत समवाय कहलाता है।

(6) विशेषणविशेष्यभाव- जब भूतल पर घट के अभाव का प्रत्यक्ष होता है तो भूतल पर घट के अभाव को कहने के लिए 'भूतल का घटाभाव' विशेषण होता है और 'भूतल' विशेष्य होता है। अतः किसी वस्तु के अभाव का प्रत्यक्ष कराने के लिए न्यायवैशेषिक शास्त्र में 'विशेष-विशेषण भाव-सन्निकर्ष' को मान्यता दी गई।

*** अभावप्रत्यक्षे विशेषणविशेष्यभावः सन्निकर्षः। घटाभाववद्भूतलम् इत्यत्र चक्षुःसंयुक्ते भूतले घटाभावस्य विशेषणत्वात्।**

अर्थात् अभाव का प्रत्यक्ष ज्ञान होना विशेषणविशेष्यभाव सन्निकर्ष कहलाता है। जैसे - चक्षु से संयुक्त भूतल में घटाभाव का ज्ञान होना।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरणों से स्पष्ट है कि शब्द साक्षात्कार समवाय सन्निकर्ष है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- तर्कसंग्रह - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज 48

48. ''श्रीहीरः सुषुवे जितेन्द्रियचयं मामल्लदेवी च यम्'' इति वार्ता केन सम्बद्धा?

(A) माघेन **(B)** भारविणा

(C) श्रीहर्षेण **(D)** भासेन

व्याख्या- ➢ **माघ-** शिशुपालवधम् नामक महाकाव्य के प्रणेता महाकवि माघ हैं जो इनकी एकमात्र रचना है। इन्हें विद्वानों ने श्रेष्ठ महाकाव्य प्रणेता माना है। **(काव्येषु माघः)**

सर्वाधिकारी सुकृताधिकारी श्री वर्मलाख्यस्य बभूव राज्ञः।
असक्तदृष्टिर्विरजाः सदैव देवोऽपरः सुप्रभदेवनामा ॥

पितामह - सुप्रभदेव, जो राजा वर्मलात या श्रीवर्मल के सर्वाधिकारी अर्थात् दीवान थे।

पिता - दत्तक

माता - ब्राह्मी

स्थान - गुजरात (भीनमाल)

समय - सातवीं शती उत्तरार्द्ध (675 ई. लगभग)

➢ **भवभूति -** महाकवि भवभूति ने तीन नाटकों की रचना की है- (1) मालतीमाधवम् (2) महावीरचरितम् (3) उत्तररामचरितम्

पिता - नीलकण्ठ

माता - जतुकर्णी

मूलनाम - श्रीकण्ठ

समय - आठवीं शताब्दी पूर्वार्द्ध

आश्रयदाता - यशोवर्मन्

पितामह - भट्टगोपाल

* कल्हण ने राजतरंगिणी में राजा यशोवर्मा को भवभूति तथा वाक्पतिराज का आश्रयदाता बताया है।

कविर्वाक्पतिराजश्रीभवभूत्यादिसेवितः।
जितो ययौ यशोवर्मा तद्गुणस्तुतिवन्दिताम्॥

➢ **श्रीहर्ष -** श्रीहर्ष द्वारा रचित 'नैषधीयचरितम्' महाकाव्य उनका प्रमुख ग्रन्थ है जिसमें उन्होंने अपना जीवन परिचय दिया है। इसके अतिरिक्त भी अनेक ग्रन्थों की रचना की।

'श्रीहर्षं कविराजराजिमुकुटालङ्कारहीरः सुतम्।
श्रीहीरः सुषुवे जितेन्द्रियचयं मामल्लदेवी च यम्॥
(1/145)

यह नैषधीयचरित के प्रथम सर्ग का अन्तिम (145) श्लोक है जिसमें उन्होंने अपना परिचय दिया है।

पिता - श्रीहीर

माता - मामल्लदेवी

समय - 12वीं शती

आश्रयदाता - जयचन्द्र

उपाधि - नवभारती, कविपण्डित

➢ **भास -** महाकवि भास के तेरह नाटक प्राप्त होते हैं। इनके जीवन चरित के विषय में कोई भी विवरण प्राप्त नहीं होता।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरणों से स्पष्ट है कि 'श्रीहीरः सुषुवे जितेन्द्रियचयं मामल्लदेवी च यम्' श्रीहर्ष के विषय में कहा गया है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज 216, 395, 221, 274

49. ''नन्दोन्मूलनदृष्टवीर्यमहिमाबुद्धिस्तु मा गान्मम'' मुद्राराक्षसे कस्येयमुक्तिः?

(A) चन्द्रगुप्तस्य **(B)** चाणक्यस्य
(C) राक्षसस्य **(D)** चन्दनदासस्य

व्याख्या- 'नाटककार विशाखदत्त' की सर्वाधिक प्रसिद्ध एवं अमर कृति एकमात्र 'मुद्राराक्षसम्' नाटक है।

* मुद्रा के द्वारा राक्षस के निग्रह की घटना अंकित की गई है। इसलिए इसका नाम मुद्राराक्षस रखा-

'मुद्रया गृहीतं राक्षसमधिकृत्य कृतो ग्रन्थः मुद्राराक्षसम्।'

* कथावस्तु का मूल स्रोत - **श्रीमद्भागवत तथा विष्णुपुराण।**

* 'चाणक्य' के ही गुप्तचरों के पलायन की सूचना शिष्य द्वारा उनको दिये जाने पर शिष्य से कहते हैं -

(स्वगतम्)

'सर्वेषामेव शिवाः पन्थानः सन्तु। (प्रकाशम्) वत्स। अलं विषादेन। पश्य -

(मन ही मन) सभी का कल्याण हो। (प्रकट रूप में) वत्स। विषाद मत करो। देखो -

ये याताः किमपि प्रधार्य्य हृदये, पूर्वं गता एव ते
ये तिष्ठन्ति, भवन्तु तेऽपि गमने कामं प्रकामोद्यमाः।
एका केवलमर्थसाधनविधौ सेनाशतेभ्योऽधिका
नन्दोन्मूलनदृष्टवीर्यमहिमा बुद्धिस्तु मा गान्मम ॥1.26॥

जिन्होंने पहले ही भागने का विचार हृदय में कर लिया था, वे लोग तो चले ही गये। अब जो रह गये हैं, यदि वे भागने के इच्छुक हों तो इच्छानुसार चले जायें, किन्तु कार्य पूर्ण करने में सैकड़ों सेनाओं से बढ़कर, नन्दवंश का विनाश करने में लगी शक्तिमहिमा वाली मेरी बुद्धि मुझसे अलग न होवे।

सूक्तियाँ -

1. 'लब्धायां पुरि यावदिच्छमुषितं कृत्वा पदं नो गले'- **चन्द्रगुप्त**
2. 'अत्यादरः शङ्कनीयः।' – **चन्दनदास**
3. 'अनुचित उपचारो हृदयस्य परिभवादपि दुःखमुत्पादयति'- **चन्दनदास**
4. 'न युक्तं प्राकृतमपि रिपुमवज्ञातुम्।'- **चाणक्य**
5. 'चीयते बालिशस्यापि सत्क्षेत्रपतिता कृषिः।'- **सूत्रधार**

6. 'न शालेः स्तम्बकरिता वप्तुर्गुणमपेक्षते।' - **सूत्रधार**
7. 'भव्यं रक्षति भवितव्यता।'- **विराधगुप्त**
8. 'दैवमविद्वांसः प्रमाणयन्ति।' - **चाणक्य**
9. 'अयमपरो गण्डस्योपरि स्फोटः।' - **राक्षस**
10. 'प्रायो भृत्यास्त्यजन्ति प्रचलितविभवं स्वामिनं सेवमानाः।' **कञ्चुकी**

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि प्रश्नोक्त उक्ति चाणक्य की है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- मुद्राराक्षसम् - (1/26)

50. समीचीनां तालिकां चिनुत -

(क) अभिज्ञानशाकुन्तलम्	(i) उत्तररामचरितम्
(ख) तीर्थोदकञ्च वह्निश्च नान्यतः शुद्धिमर्हतः	(ii) श्रीहर्षो निपुणः कविः
(ग) रत्नावली	(iii) हर्षचरितम्
(घ) परिवर्तमान एकः कालः शैलानिवानन्तः	(iv) श्रद्धा वित्तं विधिश्चेति त्रितयं तत् समागतम्

	क	ख	ग	घ
(A)	(iv)	(i)	(ii)	(iii)
(B)	(iii)	(i)	(ii)	(iv)
(C)	(iv)	(ii)	(i)	(iii)
(D)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)

व्याख्या- ➢ अभिज्ञानशाकुन्तलम् - महाकवि कालिदास द्वारा रचित 'अभिज्ञानशाकुन्तल' विश्व प्रसिद्ध नाटक ग्रन्थ है। जैसा कि कहा गया है -

काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला।
तत्रापि च चतुर्थोऽङ्कः तत्र श्लोकचतुष्टयम् ॥

प्रमुख श्लोक -

(1) श्रद्धा वित्तं विधिश्चेति त्रितयं तत् समागतम् । (7/29)
(2) अवेहि तनयां ब्रह्मन् अग्निगर्भां शमीमिव। (4/4)
(3) शुश्रूषस्व गुरून् कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीजने। (4/18)
(4) अस्मान् साधु विचिन्त्य संयमधनान् ....। (4/17)
(5) अतः परीक्ष्य कर्तव्यं विशेषात् सङ्गतं रहः। (5/24)
(6) तदेषां भवतः कान्ता, त्यज वैनां गृहाण वा। (5/26)
(7) उदेति पूर्वं कुसुमं ततः फलं घनोदयः प्राक् तदनन्तरं पयः। (7/30)
(8) छाया न मूर्च्छति मलोपहतप्रसादे शुद्धे तु दर्पणतले सुलभावकाशा। (7/32)

➢ उत्तररामचरितम् - 'उत्तररामचरितम्' महाकवि भवभूति द्वारा प्रणीत है।

प्रमुख सूक्तियाँ -

(1) अपि ग्रावा रोदित्यपि दलति वज्रस्य हृदयम्। (1/28)
(2) एते हि हृदयमर्मच्छिदः संसारभावाः।
(3) इयं गेहे लक्ष्मीरियममृतवर्तिर्नयनयोः। (1/38)
(4) दुर्जनोऽसुखमुत्पादयति।
(5) तीर्थोदकं च वह्निश्च नान्यतः शुद्धिमर्हतः। (1/13)

➢ रत्नावली - श्रीहर्षवर्धन द्वारा रचित रत्नावली नाटिका ग्रन्थ है जो चार अंकों में विभाजित है।

प्रमुख सूक्तियाँ -

(1) श्रीहर्षो निपुणः कविः परिषदप्येषा गुणग्राहिणी। (1/4)
(2) द्वीपादन्यस्मादपि मध्यादपि जलनिधेर्दिशोऽप्यन्तात्। (1/6)
(3) परिपाण्डुना मुखेन प्रियमिव हृदयस्थितं रमणी। (1/24)
(4) यातोऽस्मि पद्मनयने समयो ममैव ....।
(5) हरिहरब्रह्ममुखान्देवान्दर्शयामि देवराजं च। (4/10)

➢ हर्षचरितम् - हर्षचरितम् महाकवि बाणभट्ट द्वारा प्रणीत ग्रन्थ है।

प्रमुख सूक्तियाँ -

(1) अतिदुर्धरो बान्धवस्नेहः सर्वप्रमाथी। (5 उच्छ्वास)
(2) परिवर्तमान एकः कालः शैलानिवानन्तः। (5/12)
(3) लोके हि लोहेभ्यः कठिनतराः खलु स्नेहमया बन्धनपाशाः।
(4) मरणाच्च मे जीवितमेवास्मिन्समये साहसम्। (5 उच्छ्वास)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि प्रस्तुत तालिका में **विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् - 7/29, रत्नावली - बैद्यनाथ पाण्डेय, पेज 7, उत्तररामचरितम् - 1/13, हर्षचरितम् - 5/12, पेज-258, 273, 292

51. अभिज्ञानशाकुन्तलं षष्ठाङ्कगतः धीवरवृत्तान्तः कस्य उदाहरणं भवति?

(A) प्रवेशकस्य **(B)** विष्कम्भकस्य
(C) अङ्कावतारस्य **(D)** प्रस्तावनायाः

व्याख्या- * अर्थोपक्षेपक - ये पाँच होते हैं -
(1) विष्कम्भक (2) चूलिका (3) अङ्कास्य (4) अङ्कावतार (5) प्रवेशक।

➢ विष्कम्भक - बीते हुए और आगे होने वाले कथा भागों का सूचक, संक्षिप्त अर्थ वाला तथा मध्यम पात्रों द्वारा प्रयुक्त जो अर्थोपक्षेपक है, वह विष्कम्भक कहलाता है।

''वृत्तवर्तिष्यमाणानां कथांशानां निदर्शकः।
संक्षेपार्थस्तु विष्कम्भो मध्यपात्रप्रयोजितः॥''

अभिज्ञानशाकुन्तल के 4 अंक में '**गान्धर्वेण विधिना निवृत्तकल्याणा शकुन्तला**' से सम्पन्न हो चुके हुए दुष्यन्त और शकुन्तला के गान्धर्व विवाह की सूचना दी है तथा '**अभिज्ञानाभरण-दर्शनेन शापो निवर्तिष्यते**' से भविष्य में घटित होने वाले शाप निवृत्ति की ओर संकेत किया गया है। अतः यह '**शुद्ध विष्कम्भक**' है।

➢ **अङ्कावतार -** प्रथम अङ्क की कथा का विच्छेद किये बिना द्वितीय अङ्क अवतरित होता है। वह अङ्कावतार कहलाता है।

'अङ्कावतारस्त्वङ्कान्ते पातोऽङ्कस्याविभागतः।'

अभिज्ञानशाकुन्तल के **द्वितीय अंक** में प्रथम अंक के राजा के कथन -

'**मन्दौत्सुक्योऽस्मि नगरगमनं प्रति। न खलु शक्नोमि शकुन्तलाव्यापारादात्मनं निवर्तयितुम् ।**' से राजा द्वारा नगर जाने की उत्सुकता मन्द पड़ जाने की कथा आगे द्वितीय अङ्क में विदूषक के कथन -

'**ह्यः किलास्मास्ववहीनेषु तत्रभवतो मृगानुसारेणाश्रमपदं प्रविष्टस्य तापसकन्यका शकुन्तला ममाधन्यताया दर्शिता। साम्प्रतं नगरगमनाय मनः कथमपि न करोति।**' से प्रथम अङ्क की कथा का विच्छेद हुए बिना द्वितीय अङ्क अवतरित हुआ है। अतः यह '**अङ्कावतार**' का उदाहरण है।

➢ **प्रवेशक -** भूत और भविष्य के कथांशों का सूचक, नीचपात्रों द्वारा अनुदात्त उक्तियों से प्रयुक्त, दो अंकों के बीच में स्थित शेष (अप्रदर्शनीय) अर्थ का सूचक प्रवेशक कहलाता है।

''तद्वदेवानुदात्तोक्त्या नीचपात्रप्रयोजितः।''
प्रवेशोऽङ्कद्वयस्यान्तः शेषार्थस्योपसूचकः॥

अभिज्ञानशाकुन्तल के **पञ्चम अङ्क** में भूतकाल की घटना शक्रावतार में गिरकर अंगूठी खोने - '**नूनं ते शक्रावताराभ्यन्तरे शचीतीर्थसलिलं वन्दमानायाः प्रभ्रष्टमङ्गुलीयकम्**' यह गौतमी का कथन एवं **षष्ठ अङ्क** में उसके मिल जाने पर दुष्यन्त के भावी वियोग की सूचना- '**तस्य दर्शनेन भर्तुरभिमता जनः स्मारितः। मुहूर्तं प्रकृतिगम्भीरोऽपि पर्यश्रुनयन आसीत् ।**' श्याल का कथन है। अतः यहाँ प्रवेशक है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि अभिज्ञानशाकुन्तलम् के षष्ठ अङ्क में प्रवेशक है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्त्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज 317

52. ''तीव्राघातप्रतिहततरुः स्कन्धलग्नैकदन्तः''- केन छन्दसा विनिर्मितोऽयं श्लोकपादः?

(A) हरिणी **(B)** शिखरिणी
(C) मन्दाक्रान्ता **(D)** मालिनी

व्याख्या- 'महाकवि कालिदास' द्वारा विरचित '**अभिज्ञानशाकुन्तलम्' 7 अङ्कों** का विश्वविख्यात नाटक है।

इस नाटक का उपजीव्य- महाभारत के आदिपर्व का शकुन्तलोपाख्यानम् (68-74 अध्याय) है।

सातों अङ्कों के नाम -

(1) आश्रमप्रवेश (5) प्रत्याख्यान
(2) आश्रमनिवेश (6) पश्चात्ताप
(3) मिलन (7) पुनर्मिलन
(4) विदाई

➢ **हरिणी छन्द -** जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः नगण, सगण, मगण, रगण, सगण, लघु तथा गुरु वर्ण होते हैं और 6, 4, 7 पर यति होती है। उसे **हरिणी** छन्द कहते हैं -

'नसमरसलागः षड्वेदैर्हयैर्हरिणी मता'

यथा-

'इदमशिशिरैरन्तस्तापाद् विवर्णमणीकृतं
निशि निशि भुजन्यस्तापाङ्गप्रसारिभिरश्रुभिः।
अनभिलुलितज्याघाताङ्कं मुहुर्मणिबन्धनात्
कनकवलयं स्त्रस्तं स्त्रस्तं मया प्रतिसार्यते॥ (3/10॥)

➢ **शिखरिणी छन्द -** शिखरिणी छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः दो यगण, एक मगण, नगण, सगण तथा भगण, लघु तथा गुरु वर्ण होता है और 6 एवं 11 पर यति होती है।

'रसै रुद्रैश्छिन्ना यमनसभलागः शिखरिणी'।

यथा- यदालोके सूक्ष्मं व्रजति सहसा तद् विपुलतां ....
...... न मे दूरे किञ्चित् क्षणमपि न पार्श्वे रथजवात् ।
(अभि. 1-9)

➢ **मन्दाक्रान्ता छन्द -** इस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः मगण, भगण, नगण, दो तगण, दो गुरु वर्ण होते हैं एवं 4, 6, 7 पर यति होती है।

''मन्दाक्रान्ता जलधिषडगैः म्भौ नतौ ताद्गुरू चेत्॥''

यथा -

'तीव्राघातप्रतिहततरुस्कन्धलग्नैकदन्तः
पादाकृष्टव्रततिवलयासङ्गसञ्जातपाशः।
मूर्तो विघ्नस्तपस इव नो भिन्नसारङ्गयूथो
धर्मारण्यं प्रविशति गजः स्यन्दनालोकभीतः॥'
(अभि. 1-33)

मालिनी छन्द - इस छन्द के प्रत्येक चरण में दो नगण, मगण, दो गुरु वर्ण एवं 7, 8 पर यति होती है।

'ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः।'

यथा - सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यं ....

.... किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम् ॥

(अभि. 1-20)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरणों से स्पष्ट है कि प्रस्तुत श्लोक में मन्दाक्रान्ता छन्द है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् - (1/33)

53. ''शरीरभाजां भवदीयदर्शनं व्यनक्ति कालत्रितयेऽपि योग्यताम्'' शिशुपालवधे कस्य प्रशंसेयम् ?

(A) नारदस्य **(B)** श्रीकृष्णस्य

(C) वसुदेवस्य **(D)** बलरामस्य

व्याख्या- महाकवि 'माघ' द्वारा विरचित 'शिशुपालवधम्' महाकाव्य बृहत्त्रयी के अन्तर्गत आता है। इसमें कुल 20 सर्ग हैं।

टीका - सर्वङ्कषा (मल्लिनाथ)

1. **''हरत्यघं सम्प्रति हेतुरेष्यतः शुभस्य पूर्वाचरितैः कृतं शुभैः। शरीरभाजां भवदीयदर्शनं व्यनक्ति कालत्रितयेऽपि योग्यताम्॥'' (1/26)**

प्रस्तुत श्लोक में भगवान् श्रीकृष्ण द्वारा **'नारद ऋषि'** की प्रशंसा की गयी है।

2. **''विलोकनेनैव तवामुना मुने**
कृतः कृतार्थोऽस्मि निबर्हितांहसा।
तथापि शुश्रूषुरहं गरीयसी
गिरोऽथवा श्रेयसि केन तृप्यते॥'' (1/29)

इस श्लोक में भगवान् श्रीकृष्ण द्वारा **'महर्षि नारद'** की प्रशंसा की गयी है।

3. **कृतः प्रजाक्षेमकृता प्रजासृजा**
सुपात्रनिक्षेपनिराकुलात्मना।
सदोपयोगेऽपि गुरुस्त्वमक्षयो
निधिः श्रुतीनां धनसम्पदामिव॥ (1/28)

प्रस्तुत श्लोक में भगवान् श्रीकृष्ण द्वारा **'नारद मुनि'** की प्रशंसा की गयी है।

4. **'इति ब्रुवन्तं तमुवाच स व्रती**
न वाच्यमित्थं पुरुषोत्तम त्वया।
त्वमेव साक्षात्करणीय इत्यतः
किमस्ति कार्यं गुरुयोगिनामपि॥' (1/31)

प्रस्तुत श्लोक में महर्षि नारद द्वारा **'भगवान् श्रीकृष्ण'** की प्रशंसा की गयी है।

5. **'उदासितारं निगृहीतमानसैः**
गृहीतमध्यात्मदृशा कथञ्चन।
बहिर्विकारं प्रकृतेः पृथग्विदुः
पुरातनं त्वां पुरुषं पुराविदः॥' (1/33)

प्रस्तुत श्लोक में मुनि नारद द्वारा **'भगवान् श्रीकृष्ण'** की प्रशंसा की गई है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि प्रस्तुत पंक्ति में **'महर्षि नारद'** की प्रशंसा की गई है।

अतः विकल्प 'A' सही है।

स्रोत- शिशुपालवधम् (1/26)

54. ''ज्ञाने मौनं क्षमा शक्तौ त्यागे श्लाघाविपर्ययः। गुणा गुणानुबन्धित्वात् तस्य सप्रसवा इव॥'' कस्य गुणाः श्लोकेऽस्मिन् उल्लिखिताः?

(A) रघोः **(B)** रामस्य

(C) अजस्य **(D)** दिलीपस्य

व्याख्या- 'महाकवि कालिदास' द्वारा विरचित **'रघुवंशम् महाकाव्य'** लघुत्रयी के अन्तर्गत वर्णित है।

सर्ग - 19

टीका - संजीवनी (मल्लिनाथ)

➢ **रघुवंशम् महाकाव्य में राजा दिलीप के गुणों का कथन-**

1. ''तदन्वये शुद्धिमति प्रसूतः शुद्धिमत्तरः।
दिलीप इति राजेन्दुरिन्दुः क्षीरनिधाविव।।'' (1/12)

2. ''प्रजानामेव भूत्यर्थं स ताभ्यो बलिमग्रहीत् ।
सहस्रगुणमुत्स्रष्टुमादत्ते हि रसं रविः।।'' (1/18)

3. ''सेना परिच्छदस्तस्य द्वयमेवार्थसाधनम् ।
शास्त्रेष्वकुण्ठिता बुद्धिर्मौर्वी धनुषि चातता।।'' (1/19)

4. ''ज्ञाने मौनं क्षमा शक्तौ त्यागे श्लाघाविपर्ययः।
गुणा गुणानुबन्धित्वात् तस्य सप्रसवा इव।।'' (1/22)

5. ''द्वेष्योऽपि संमतः शिष्टस्तस्यार्त्तस्य यथौषधम् ।
त्याज्यो दुष्टः प्रियोऽप्यासीदङ्गुलीवोरगक्षता।।'' (1/28)

➢ **महारानी सुदक्षिणा के गुणों का वर्णन -**

6. ''तस्य दाक्षिण्यरूढेन नाम्ना मगधवंशजा।
पत्नी सुदक्षिणेत्यासीदध्वरस्येव दक्षिणा।।'' (1/31)

➢ **अरुन्धती सहित महर्षि वशिष्ठ का वर्णन -**

7. ''विधेः सायन्तनस्यान्ते स ददर्श तपोनिधिम् ।
अन्वासितमरुन्धत्या स्वाहयेव हविर्भुजम् ।।'' (1/56)

➢ **कामधेनु पुत्री नन्दिनी के गुणों का वर्णन -**

8. "रजः कणैः खुरोद्धूतैः स्पृशद्भिर्गात्रमन्तिकात् ।
तीर्थाभिषेकजां शुद्धिमादधाना महीक्षितः।।" (1/85)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि प्रस्तुत श्लोक में '**राजा दिलीप**' के गुणों का वर्णन है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- रघुवंशम् (1/22)

55. 'पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः' - उत्तररामचरिते उक्तिरियं भवति -
(A) सीतायाः **(B)** मुरलायाः
(C) तमसायाः **(D)** वासन्त्याः

व्याख्या- 'महाकवि भवभूति' द्वारा विरचित '**उत्तररामचरितम्**' नाटक 7 अङ्कों का है।

रीति - गौणी एवं वैदर्भी का समन्वय

प्रधानरस - करुण

उपजीव्य - वाल्मीकिरामायण उत्तरकाण्ड (सर्ग 42-97) पद्मपुराण (पातालखण्ड 1-68 तक)

विशेषताएँ - विदूषकरहित नाटक
सप्तम अङ्क में गर्भनाटक की योजना।

उक्तियाँ -

(1) "दुर्जनोऽसुखमुत्पादयति।" **सीता का कथन**

(2) "यैवं प्रलपन्तं प्रलापयसि।" **सीता का कथन**

(3) "किमिति किलैषा मंस्यत एष परित्याग एषोऽभिषङ्ग इति।" **सीता का कथन**

(4) "सन्तापकारिणो बन्धुजन विप्रयोगा भवन्ति।" **सीता का कथन**

(5) "अपि ग्रावा रोदित्यपि दलति वज्रस्य हृदयम् ।।" (1/28) **लक्ष्मण का कथन**

(6) "अनिर्भिन्नो गभीरत्वादन्तर्गूढघनव्यथः।
पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः।।" (3/1)
मुरला का कथन

(7) "करुणस्य मूर्तिरथवा शरीरिणी विरहव्यथेव वनमेति जानकी।" (3/4)
तमसा का कथन

(8) "प्रियाशोको जीवं कुसुममिव घर्मो ग्लपयति।" (3/30)
तमसा का कथन

(9) "एको रसः करुण एव निमित्तभेदाद्।" (3/47)
तमसा का कथन

(10) "वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि।
लोकोत्तराणां चेतांसि को हि विज्ञातुमर्हति।" (2/7)
वासन्ती का कथन

(11) "अयि कठोर! यशः किल ते प्रियम् ....मन्यसे।" (3/27)
वासन्ती का कथन

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरणों से स्पष्ट है कि प्रस्तुत पंक्ति या उक्ति 'मुरला' की है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- उत्तररामचरितम् (3/1)

56. रत्नावल्याः मङ्गलाचरणस्य प्रथमे श्लोके कस्य स्तुतिः प्राप्यते?
(A) विष्णोः **(B)** ब्रह्मणः
(C) शिवस्य **(D)** गणेशस्य

व्याख्या- 'महाकवि श्रीहर्ष' द्वारा विरचित '**रत्नावली**' नामक नाटिका 4 अङ्कों में रचित है। जिसका मङ्गलाचरण है-

**1. पादाग्रस्थितया मुहुः स्तनभरेणानीतया नम्रतां
शम्भोः सस्पृहलोचनत्रयपथं यान्त्या तदाराधने।
ह्रीमत्या शिरसीहितः सपुलकस्वेदोद्गमोत्कम्पया
विश्लिष्यन्कुसुमाञ्जलिर्गिरिजया क्षिप्तोऽन्तरे पातु वः
।।1/1।।**

भगवान् शिव की आराधना में, बार-बार चरणों के अग्रभाग पर (अर्थात् चरणों की उँगलियों के सहारे) खड़ी होने वाली, स्तनों के भार से (बार-बार) झुकती हुयी (कल्याण करने वाले) शम्भु के अनुरागयुक्त तीनों नेत्रों का विषय बनने वाली (अतएव) रोमाञ्च, स्वेद और कम्पन से युक्त होने के कारण लज्जित होने वाली पार्वती के द्वारा (शिव) के सिर पर (समर्पित करने के लिए) (अतएव शिव के शिर पर न पहुँच सकने के कारण उमा और शिव के) बीच में ही बिखरती हुयी पुष्पाञ्जलि आप लोगों की रक्षा करे।

टिप्पणी - भगवान् शिव की स्तुति की गयी है। वस्तुनिर्देशात्मक मंगलाचरण है। शार्दूलविक्रीडित छन्द है।

**2. औत्सुक्येन कृतत्वरा सहभुवा व्यावर्तमाना ह्रिया
तैस्तैर्बन्धुवधूजनस्य वचनैर्नीताभिमुख्यं पुनः।
दृष्ट्वाग्रे वरमात्तसाध्वसरसा गौरी नवे सङ्गमे
संरोहत्पुलका हरेण हसता श्लिष्टा शिवायाऽस्तु वः।।
(1/2)**

टिप्पणी - भगवान् शिव की स्तुति, वस्तुनिर्देशात्मक मंगलाचरण शार्दूलविक्रीडित छन्द।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि रत्नावली नामक नाटिका के मंगलाचरण के प्रथम श्लोक में 'भगवान् शिव' की

स्तुति की गयी है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- रत्नावली नाटिका (1/1)

57. पुण्यवर्मा कस्य देशस्य राजा आसीत् दशकुमारचरिते?

(A) विदर्भस्य	**(B)** वाराणस्याः
(C) गौणस्य	**(D)** मगधस्य

व्याख्या- 'महाकवि दण्डी' विरचित **'दशकुमारचरितम्'** उच्छ्वासों में विभक्त है। इसके तीन भाग हैं -

1. पूर्वपीठिका - 5 उच्छ्वास
2. मूलभाग - 8 उच्छ्वास
3. उत्तरपीठिका - 1 उच्छ्वास

रीति - वैदर्भी

गुण - प्रसाद

* दशकुमारचरितम् में 10 राजकुमारों का वर्णन है। **पुष्पपुरी (पटना)** के राजा **राजहंस** नायक एवं **मालवा** का राजा **मानसार** प्रतिनायक है।

* राजा राजहंस के पुत्रों सहित 10 राजकुमारों के नाम इस प्रकार हैं -

1. राजवाहन (राजकुमार)	6. अर्थपाल
2. सोमदत्त	7. मित्रगुप्त
3. पुष्पोद्भव	8. मन्त्रगुप्त
4. अपहारवर्मा	9. प्रगति
5. उपहारवर्मा	10. सुश्रुत (विश्रुत)

* राजकुमार सुश्रुत (विश्रुत) द्वारा विन्ध्याटवी भ्रमण करते हुए भूख एवं प्यास से पीड़ित 8 वर्ष का बालक कुएँ के पास देखा।

* उसकी याचना पर कुएँ में गिरे हुए वृद्ध को बाहर निकाला फिर वृद्ध से उसकी दशा पूछी तो वृद्ध ने कुछ इस प्रकार कहना प्रारम्भ किया-

''श्रूयतां महाभाग, विदर्भो नाम जनपदः तस्मिन्भोजवंशभूषणम् अंशावतार इव धर्मस्य, अतिसत्त्वः, सत्यवादी, वदान्यः, विनीतः, विनेता प्रजानाम्, रञ्जितभृत्यः, कीर्तिमान् .... पुण्यश्लोकः, पुण्यवर्मा नामासीत् । सः पुण्यैः कर्मभिः प्राप्य पुरुषायुषं, पुनरपुण्येन प्रजानामगण्यतामरेषु। तदनन्तरमनन्तवर्मा नाम तदायतिरवनिमध्यतिष्ठत् ।''

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि पुण्यवर्मा विदर्भ देश का राजा था। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- दशकुमारचरितम् - विश्वनाथ झा, पेज 238

58. मम्मटमते कति काव्यगुणाः?

(A) दश	**(B)** पञ्च
(C) त्रयः	**(D)** अष्टौ

व्याख्या- 'आचार्य मम्मट' द्वारा विरचित **'काव्यप्रकाश'** काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ है।

➢ **गुण का लक्षण -**

'ये रसस्याङ्गिनो धर्माः शौर्यादय इवात्मनः।
उत्कर्षहेतवस्ते स्युरचलस्थितयो गुणाः॥

'आत्मा के शौर्यादि धर्मों के समान (काव्य के आत्मभूत) प्रधान रस के जो अपरिहार्य और उत्कर्षाधायक धर्म हैं वे गुण कहलाते हैं।

➢ **गुण के भेद -**

''माधुर्यौजःप्रसादाख्यास्त्रयस्ते न पुनर्दश।''

आचार्य मम्मट 'वामन' के 10 गुणों का खण्डन करते हुए बताते हैं कि गुण तीन प्रकार का होता है-

1. माधुर्य 2. ओज 3. प्रसाद

➢ **माधुर्य गुण का लक्षण -**

'आह्लादकत्वं माधुर्यं शृंगारे द्रुतिकारणम्।
करुणे विप्रलम्भे तच्छान्ते चातिशयान्वितम्।।'

➢ **ओज गुण का लक्षण -**

'दीप्त्यात्मविस्तृतेर्हेतुरोजो वीररसस्थिति।
बीभत्सरौद्ररसयोस्तस्याधिक्यं क्रमेण च।।'

➢ **प्रसाद गुण का लक्षण -**

'शुष्केन्धनाग्निवत् स्वच्छजलवत्सहसैव यः
व्याप्नोत्यन्यत् प्रसादोऽसौ सर्वत्र विहितस्थितिः।।'

➢ **वामनोक्त दस गुणों का खण्डन -**

'केचिदन्तर्भवन्त्येषु दोषत्यागात्परे श्रिताः।
अन्ये भजन्ति दोषत्वं कुत्रचिन्न ततो दश।।'

वामनोक्त दस गुणों में से कुछ इन तीनों गुणों के अन्तर्भूत हो जाते हैं, कुछ दोषाभाव रूप होते हैं और कुछ गुण न होकर दोषरूप हो जाते हैं। इसलिए दस गुण नहीं माने जाते हैं।

* **अन्तर्भाव -** श्लेष, समाधि, उदारता, प्रसाद - ओज
माधुर्य - माधुर्य, अर्थव्यक्ति - प्रसाद

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि मम्मटोक्त गुण 3 हैं। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- काव्यप्रकाश (8/38) -आचार्य विश्वेश्वर, पेज 388

59. ध्वन्यालोकतः रिक्तस्थानं पूरयत - ''यत्नतः .... तौ शब्दार्थौ महाकवेः।''

(A) अवगन्तव्यौ (B) प्रत्यभिज्ञेयौ
(C) परिहन्तव्यौ (D) संस्मरणीयौ

व्याख्या- आचार्य आनन्दवर्धन द्वारा विरचित 'ध्वन्यालोक' काव्य शास्त्रीय ग्रन्थ है।

ध्वन्यालोक में ध्वनि की सत्ता सिद्ध करते हुए बताते हैं -

सरस्वती स्वादु तदर्थवस्तु निःष्यन्दमाना महतां कवीनाम्।
अलोकसामान्यमभिव्यनक्ति परिस्फुरन्तं प्रतिभाविशेषम्॥
(1/6)

आस्वादमय रसभावरूप उस अर्थतत्त्व को प्रवाहित करने वाली महाकवियों की वाणी अलौकिक और परिस्फुरित होती हुई प्रतिभा के विशेष को अभिव्यक्त करती है।

चूँकि वह प्रतीयमान अर्थ ही ध्वनि है अतः प्रतीयमान अर्थ की सत्ता सिद्ध करते हैं।

शब्दार्थशासनज्ञानमात्रेणैव न वेद्यते।
वेद्यते स तु काव्यार्थतत्त्वज्ञैरेव केवलम्। (1/7)

प्रतीयमान अर्थ की सत्ता सिद्ध करते हुए बताते हैं कि वह प्रतीयमान अर्थ केवल शब्दमात्र शब्दशास्त्र (व्याकरण) आदि के और अर्थशास्त्र आदि के जानने से विदित नहीं होता, अपितु केवल काव्य के अर्थ के तत्त्व को जानने वालों को ही विदित होता है।

इस प्रकार वाच्य से अतिरिक्त व्यङ्ग्य अर्थ के अस्तित्व का प्रतिपादन करके यह प्रदर्शित करते हैं कि काव्य में प्रधानता भी इस व्यङ्ग्य अर्थ की ही है।

सोऽर्थस्तद्व्यक्तिसामर्थ्ययोगी शब्दश्च कश्चन।
यत्नतः प्रत्यभिज्ञेयौ तौ शब्दार्थौ महाकवेः। (1/8)

वह प्रतीयमान अर्थ और उस प्रतीयमान अर्थ को अभिव्यक्त करने की सामर्थ्य से युक्त जो कोई विशेष शब्द हैं। इन दोनों शब्द और अर्थ को पहचानना चाहिए।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि रिक्तस्थान में 'प्रत्यभिज्ञेयौ' शब्द आयेगा। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- ध्वन्यालोक (कारिका 1/8)

60. दशरूपकानुसारं फलस्याप्राप्तावुपाययोजनादिरूपः चेष्टा-विशेषः भवति -

(A) आरम्भः (B) प्रयत्नः
(C) प्राप्त्याशा (D) नियताप्तिः

व्याख्या- दशरूपक नामक लक्षणपरक ग्रन्थ आचार्य धनञ्जय द्वारा रचित है जो चार प्रकाशों में विभाजित है।

दशरूपक में पाँच प्रकार की कार्यावस्थाओं का वर्णन है -
(1) आरम्भ (2) प्रयत्न (3) प्राप्त्याशा (4) नियताप्ति (5) फलागमः

(1) आरम्भ - 'औत्सुक्यमात्रमारम्भः फललाभाय भूयसे।'

प्रचुर फल प्राप्ति के लिए उत्सुकतामात्र होना ही आरम्भ कहलाता है।

(2) प्रयत्न -'प्रयत्नस्तु तदप्राप्तौ व्यापारोऽतित्वरान्वितः'। (1/20)

फल के प्राप्त न होने पर उसके लिए अत्यन्तवेगपूर्वक उद्योग करना ही प्रयत्न कहलाता है।

यथा- रत्नावली में -
आलेख्याभिलेखनादिर्वत्सराजसमागमोपायः।

(3) प्राप्त्याशा -'उपायापायशङ्काभ्यां प्राप्त्याशा प्राप्तिसम्भवः।'

उपाय के होने तथा विघ्न की शङ्का होने से जो फलप्राप्ति की सम्भावना मात्र होती है, वह प्राप्त्याशा कहलाती है।

यथा - रत्नावल्याम् तृतीयेऽङ्के 'वेषपरिवर्ताभिसरणादौ समागमोपाये सति वासवदत्तालक्षणापायशङ्कायाः।

(4) नियताप्ति -'अपायाभावतः प्राप्तिर्नियताप्तिः सुनिश्चिता'। (1/21)

विघ्नों के अभाव से फल की निश्चित रूप से प्राप्ति ही नियताप्ति कहलाती है।

यथा- रत्नावली में अन्त में राजा को रत्नावली की प्राप्ति।

(5) फलागम -'समग्रफलसंपत्तिः फलयोगो यथोदितः।'

पूर्णरूप से फल की प्राप्ति ही फलागम है जैसा कि पहले कहा गया है।

यथा - रत्नावली नाटिका में राजा को रत्नावली की प्राप्ति तथा चक्रवर्ती पद की प्राप्ति।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरणों से स्पष्ट है कि प्रस्तुत लक्षण 'प्रयत्न' का है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- दशरूपक - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज 23

61. शक्तिर्निपुणता लोकशास्त्रकाव्याद्यवेक्षणात् .... इति हेतुस्तदुद्भवे। काव्यप्रकाशतः रिक्तस्थानं पूरयत।

(A) काव्यज्ञशिक्षयाभ्यासः **(B)** लोकतत्त्वानुशीलनम्
(C) रसभावयोश्चिन्तनम् **(D)** भावाभासस्य चिन्तनम्

व्याख्या- 'ध्वनिप्रस्थापनपरमाचार्य मम्मट' द्वारा रचित **काव्यप्रकाश 10 उल्लासों** में विभक्त है।

इन्होंने काव्य के तीन हेतु बताये हैं-

'शक्तिर्निपुणता लोकशास्त्रकाव्याद्यवेक्षणात् ।
काव्यज्ञशिक्षयाभ्यास इति हेतुस्तदुद्भवे॥

(1) शक्ति (2) लोक (व्यवहार), शास्त्र तथा काव्य आदि के पर्यालोचन से उत्पन्न निपुणता और (3) काव्य को जानने वाले (गुरु) की शिक्षा के अनुसार (काव्य-निर्माण का) अभ्यास, ये (तीनों मिलकर समष्टि-रूप से) उस (काव्य) के विकास (उद्भव) के कारण हैं।

➢ **काव्य के छः प्रयोजन -**

'काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये।
सद्यः परनिर्वृतये कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे॥

काव्य यशजनक अर्थ का उत्पादक, (लोक) व्यवहार का बोधक, (शिव अर्थात् कल्याण, शिवेतर अर्थात् उससे भिन्न) अनिष्ट का नाशक, पढ़ने (या सुनने, देखने आदि) के साथ ही (सद्यः) परम आनन्द देने वाला और स्त्री के समान (सरसरूप से कर्तव्याकर्तव्य का) उपदेश प्रदान करने वाला होता है।

➢ **काव्य का लक्षण -**

'तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि।

दोषों से रहित, गुण-युक्त और (साधारणतः अलङ्कार सहित परन्तु) कहीं-कहीं अलङ्कार-रहित शब्द और अर्थ (दोनों की समष्टि) काव्य (कहलाती) है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि रिक्तस्थान में **'काव्यज्ञशिक्षयाभ्यास'** शब्द आयेगा। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- काव्यप्रकाश (कारिका 1/3) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज 16

62. काव्यप्रकाशे उपमानोपमेययोः विपर्यासे कोऽलङ्कारः?

(A) अनन्वयः **(B)** विभावना
(C) विशेषोक्तिः **(D)** उपमेयोपमा

व्याख्या- 'आचार्य मम्मट' द्वारा रचित **'काव्यप्रकाश'** 10 उल्लासों में विभक्त है। जिसके नौवें एवं दशवें उल्लास में अलंकारों का वर्णन है। नौवें में शब्दालंकार एवं दशवें में अर्थालंकारों का वर्णन है।

1. अनन्वय अलंकार -

'उपमानोपमेयत्वे एकस्यैवैकवाक्यगे अनन्वयः'

एक वाक्य में एक ही के उपमान तथा उपमेय (दोनों) होने पर अनन्वय (अलंकार) होता है।

उदाहरण-

'न केवलं भाति नितान्तकान्तिर्नितम्बिनी सैव नितम्बिनीव।
यावद्विलासायुधलास्यवासास्ते तद्विलासा इव तद्विलासाः॥

2. विभावना अलंकार -

'क्रियायाः प्रतिषेधेऽपि फलव्यक्तिर्विभावना।'

कारण का निषेध होने पर भी फल की उत्पत्ति (का वर्णन) होने पर विभावना (अलङ्कार) होता है।

उदाहरण -

'कुसुमितलताभिरहताऽप्यधत्त रुजमलिकुलैरदष्टापि।
परिवर्त्तते स्म नलिनीलहरीभिरलोलिताप्यघूर्णत सा॥

3. विशेषोक्ति अलङ्कार -

'विशेषोक्तिरखण्डेषु कारणेषु फलावचः।'

कारणों के एकत्र होने पर भी कार्य का कथन न करना विशेषोक्ति (अलङ्कार) होता है।

उदाहरण -

'कर्पूर इव दग्धोऽपि शक्तिमान् यो जने जने।
नमोऽस्त्ववार्यवीर्याय तस्मै मकरकेतवे॥

4. उपमेयोपमा अलङ्कार -

'विपर्यास उपमेयोपमा तयोः।

उन दोनों (उपमान और उपमेय) का परिवर्तन हो जाना ही उपमेयोपमा अलङ्कार होता है।

उदाहरण -

'कमलेव मतिर्मतिरिव कमला तनुरिव विभा विभेव तनुः।
धरणीव धृतिर्धृतिरिव धरणी सततं विभाति बत यस्य॥

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि प्रस्तुत पंक्ति में **उपमेयोपमा अलङ्कार** है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- काव्यप्रकाश (सूत्र-135) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज 460

63. कालक्रमानुसारेण तालिकां चिनुत -

(a) अप्पयदीक्षितः **(b)** भरतः
(c) आनन्दवर्धनः **(d)** दण्डी

(A) (a) (b) (c) (d)
(B) (b) (c) (a) (d)
(C) (c) (a) (b) (d)
(D) (b) (d) (c) (a)

व्याख्या- * भरत - साहित्यशास्त्र के सबसे प्राचीन आचार्य भरतमुनि नाट्यशास्त्र के प्रणेता हैं। इनका समय ई.पू. द्वितीय शताब्दी है। इनका एकमात्र ग्रन्थ नाट्यशास्त्र है जो समस्त कलाओं का विश्वकोष है।

* इसमें 36 अध्याय हैं एवं 6000 श्लोक हैं। इसको 'षट्साहस्री संहिता' भी कहा जाता है।

*** दण्डी -** दण्डी का समय छठवीं शताब्दी है। दण्डी ने अपने 'अवन्तिसुन्दरीकथा' में अपने को महाकवि भारवि का प्रपौत्र बतलाया है और बाण तथा मयूर कवि की प्रशंसा की है।

रचनाएं -

(i) दशकुमारचरितम् (ii) काव्यादर्श (iii) अवन्तिसुन्दरी कथा

*** आनन्दवर्धन -** ध्वनिप्रस्थापनाचार्य आनन्दवर्धन कश्मीर के निवासी हैं। इनका समय नवम शताब्दी पूर्वार्द्ध है।

इनकी रचनाएँ -

1. विषमबाणलीला 2. अर्जुनचरित 3. देवीशतक 4. तत्त्वालोक 5. ध्वन्यालोक

➢ **अप्पयदीक्षित -** अप्पयदीक्षित दक्षिण भारत की विभूति हैं। इन्हें 104 ग्रन्थों का कर्ता कहा जाता है।

इनकी रचनाएँ -

1. वृत्तिवार्तिकग्रन्थ 2. चित्रमीमांसा 3. कुवलयानन्द

कवि		समय
भरतमुनि	–	ई.पू. द्वितीय शताब्दी
दण्डी	–	छठवीं शताब्दी
आनन्दवर्धन	–	नवमशताब्दी पूर्वार्द्ध
अप्पयदीक्षित	–	17वीं शताब्दी

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि कालक्रमानुसार **विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज 18, 29, 91

64. 'दोषा गुणा-गुणा दोषा यत्र स्युर्मृदवं हि तत्' - दशरूपके कस्मिन् प्रसङ्गे इयमुक्तिः?

(A) वीथ्यङ्गप्रसङ्गे **(B)** नृत्यलक्षणप्रसङ्गे

(C) सन्धिभेदप्रसङ्गे **(D)** प्रहसनलक्षणप्रसङ्गे

व्याख्या- श्री धनञ्जय द्वारा विरचित 'दशरूपक' नाट्यशास्त्रीय ग्रन्थ है यह चार प्रकाशों में विभक्त है -

प्रथम प्रकाश - वस्तु का वर्णन।

द्वितीय प्रकाश - नायक का वर्णन।

तृतीय प्रकाश - रूपक का वर्णन।

चतुर्थ प्रकाश - रस का वर्णन।

➢ **वीथी के 13 अंग -**

उद्घात्यकावलगिते प्रपञ्चत्रिगते छलम्।
वाक्केल्यधिबले गण्डमवस्यन्दितनालिके।
असत्प्रलापव्याहारमृदवानि त्रयोदश। (3/12)

उद्घात्यक - 'गूढार्थपदपर्यायमाला प्रश्नोत्तरस्य वा। (3/13)
यत्रान्योन्यं समालापो द्वेधोद्घात्यं तदुच्यते।।'

अवलगितम् - 'यत्रैकत्र समावेशात्कार्यमन्यत्प्रसाध्यते। (3/14)
प्रस्तुतेऽन्यत्र वाऽन्यत्स्यात्तच्चावगलितं द्विधा।'

प्रपञ्च - असद्भूतं मिथः स्तोत्रं प्रपञ्चो हास्यकृन्मतः। (3/15)

त्रिगतम् - श्रुतिसाम्यादनेकार्थयोजनं त्रिगतं त्विह।
नटादित्रितयालापः पूर्वरङ्गे तदिष्यते। (3/16)

छलनम् - प्रियाभैरप्रियैर्वाक्यैर्विलोभ्य छलनाच्छलम्।

वाक्केलि - विनिवृत्त्यास्य वाक्केली द्विस्त्रिः प्रत्युक्तितोऽपि वा। (3/17)

अथाधिबलम् - अन्योन्यवाक्याधिक्योक्तिः स्पर्धयाऽधिबलं भवेत्।

गण्ड - गण्डः प्रस्तुतसम्बन्धि भिन्नार्थं सहसोदितम्। (3/18)

अवस्पन्दित - रसोक्तस्यान्यथा व्याख्या यत्रावस्यन्दितं हि तत्।

नालिका - सोपहासा निगूढार्था नालिकैव प्रहेलिका। (3/19)

असत्प्रलाप - असम्बद्धकथाप्रायोऽसत्प्रलापो यथोत्तरः। (3/20)

व्याहार - अन्यार्थमेव व्याहारो हास्यलोभकरं वचः।

मृदव - दोषा गुणा गुणा दोषा यत्र स्युर्मृदवं हि तत्।

नृत्यलक्षण - अन्यद्भावाश्रयं नृत्यम् ।
भाव पर आश्रित नृत्य नाट्य से भिन्न होता है।

सन्धिभेद - मुखप्रतिमुखे गर्भः सावमर्शोपसंहृतिः।

प्रहसनलक्षण - तद्वत्प्रहसनं त्रेधा शुद्धवैकृतसंकरैः।
पाखण्डिविप्रप्रभृतिचेटचेटीविटाकुलम्
चेष्टितं वेषभाषाभिः शुद्धं हास्यवचोन्वितम्। (3/54)
कामुकादिवचोवेषैः षण्ढकञ्चुकितापसैः विकृतं। (3/55)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरणों से स्पष्ट है कि प्रस्तुत लक्षण वीथ्यङ्ग (मृदव) का है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- दशरूपक - रमाशङ्कर त्रिपाठी, पेज 218

65. ''न तज्ज्ञानं न तच्छिल्पं न सा विद्या न सा कला।'' इत्यादि श्लोकः भवति।

(A) काव्यप्रशंसा (B) गुणप्रशंसा
(C) नाट्यप्रशंसा (D) अलङ्कारप्रशंसा

व्याख्या- नाट्यशास्त्र के प्रथम प्रणेता आचार्य भरतमुनि हैं। इनकी एकमात्र रचना नाट्यशास्त्र है जो समस्त कलाओं का विश्वकोष है। **अध्याय - 36, श्लोक -** 6000

इसे 'षट्साहस्री संहिता' भी कहा जाता है। छन्द प्रायः **अनुष्टुप्** हैं। स्वयं भरतमुनि ने 'नाट्यशास्त्र' का परिचय देते हुए लिखा है-

'न तज्ज्ञानं न तच्छिल्पं न सा विद्या न सा कला।
नासौ योगो न तत्कर्म नाट्येऽस्मिन् यन्न दृश्यते॥
(1/117)

अर्थात् - जो बात उन्होंने नाट्य के विषय में कही है वही बात उनके 'नाट्यशास्त्र' पर भी चरितार्थ होती है। उनका 'नाट्यशास्त्र' न केवल नाट्य का ही अपितु समस्त ललित एवं उपयोगी कलाओं का आकर ग्रन्थ है। (जो नाट्य में न मिले ऐसा न तो कोई ज्ञान, शिल्प, विद्या, कला, योग और न ही कोई कार्य हो सकता है।)

*** नाट्यशास्त्र के टीकाकार -**

1. उद्भट
2. भट्टलोल्लट
3. श्री शंकुक
4. भट्टनायक
5. अभिनवगुप्त

*** नाट्यशास्त्र पर उपलब्ध अन्य ग्रन्थ एवं ग्रन्थकर्ताओं की सूची -**

	ग्रन्थ	ग्रन्थकार
1.	नाट्यशास्त्र	भरतमुनि एवं इनके टीकाकार
2.	अभिनयदर्पण	नन्दिकेश्वर
3.	दशरूपक	धनञ्जय, इनके टीकाकार
4.	भाव-प्रकाशन	शारदातनय
5.	शृंगारप्रकाश	भोज
6.	नाट्यदर्पण	रामचन्द्र - गुणचन्द्र
7.	साहित्यदर्पण	विश्वनाथ कविराज

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि प्रस्तुत पंक्ति में नाट्यशास्त्र की प्रशंसा की गयी है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- नाट्यशास्त्रम् (श्लोक 1/117) -ब्रजमोहन शास्त्री, पेज 113

66. ''तमसा बहुरूपेण वेष्टिताः कर्महेतुना।
अन्तःसंज्ञा भवन्त्येते सुखदुःखसमन्विताः॥
इति मनुवचनं केन सम्बद्धम् ?

(A) अण्डजेन प्राणिना (B) उद्भिदा
(C) स्वेदजेन प्राणिना (D) जरायुजेन प्राणिना

व्याख्या- * आचार्य मनु विरचित 'मनुस्मृति' प्रथम स्मृतिग्रन्थ है। यह बारह अध्यायों में विभक्त है।

* मनुस्मृति में आचार्य मनु ने चार प्रकार के प्राणियों की उत्पत्ति बतायी है।

*** जरायुज प्राणी -**

पशवश्च मृगाश्चैव व्यालाश्चोभयतोदतः।
रक्षांसि च पिशाचाश्च मनुष्याश्च जरायुजाः॥ (1/43)

पशु, मृग, सर्प, दोनों ओर दाँतो वाले, राक्षस, पिशाच और मनुष्य ये सब जरायुज हैं अर्थात् झिल्ली से उत्पन्न होते हैं।

*** अण्डज प्राणी -**

अण्डजाः पक्षिणः सर्पा नक्रा मत्स्याश्च कच्छपाः।
यानि चैवं प्रकाराणि स्थलजान्यौदकानि च॥ (1/44)

पक्षी, सर्प, मगर, मछली और कछुए अण्डज हैं और जितने ऐसे जीव जल और स्थल में पैदा होते हैं वे सब भी अण्डज हैं।

*** स्वेदज -**

स्वेदजं दंशमशकं यूकामक्षिकमत्कुणम्।
ऊष्मणश्चोपजायन्ते यच्चाऽन्यत्किंचिदीदृशम्॥ (1/45)

दंश, मच्छर, जूँ, मक्खी, खटमल और अन्य ऐसे ही जो गर्मी से उत्पन्न होते हैं वे स्वेदज हैं।

*** उद्भिज्जप्राणी -**

उद्भिज्जाः स्थावराः सर्वे बीजकाण्डप्ररोहिणः।
ओषध्यः फलपाकान्ता बहुपुष्पफलोपगाः। (1/46)
तमसा बहुरूपेण वेष्टिताः कर्महेतुना।
अन्तःसंज्ञा भवन्त्येते सुखदुःखसमन्विताः। (1/49)

बीज से पृथ्वी फोड़कर जो वृक्ष उगते हैं उनको उद्भिज्ज कहते हैं और फल पकने पर जो सूख जाते हैं जिनमें बहुत से फल और फूल लगते हैं। ये पूर्वजन्म के कर्म के कारण बहुत से तमोगुण से घिरे हुए हैं, सुख-दुःख से युक्त हैं और इनके भीतर चेतना है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि प्रस्तुत लक्षण उद्भिद् प्राणियों का है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- मनुस्मृति (1/49)

67. मनुसंहितातः रिक्तं स्थानं पूरयत -

''नृपतौ कोशराष्ट्रे च .... सन्धिविपर्ययौ''।

(A) अमात्ये **(B)** दूते
(C) सेनापतौ **(D)** मन्त्रिणि

व्याख्या- 'मनुस्मृति' आचार्य मनु द्वारा विरचित आद्यस्मृति ग्रन्थ है जो बारह अध्यायों में विभाजित है।

अमात्ये दण्ड आयत्तो दण्डे वैनयिकी क्रिया।
नृपतौ कोशराष्ट्रे च दूते संधिविपर्ययौ॥ (7/65)

मनुस्मृति में कौन किसके अधीन है इसको प्रस्तुत श्लोक के माध्यम से बताते हैं - दण्ड सेनापति के अधीन, विनय दण्ड के अधीन, कोश और देश राजा के अधीन, सन्धिविग्रह दूत के अधीन होते हैं।

दूतं चैव प्रकुर्वीत सर्वशास्त्रविशारदम्।
इङ्गिताऽऽकारचेष्टज्ञं शुचिं दक्षं कुलोद्गतम्। (7/63)

जो इंगित आकार और चेष्टा का ज्ञाता, कुलीन, सब शास्त्रों का ज्ञाता, चतुर, पवित्र उसे दूत नियुक्त करें।

दूत प्रशंसा -

अनुरक्तः शुचिर्दक्षः स्मृतिमान्देशकालवित्।
वपुष्मान्वीतभीर्वाग्मी दूतो राज्ञः प्रशस्यते। (7/64)

जो प्रीतियुक्त, धन से पवित्र, चतुर, स्मरणशक्ति वाला, देशकाल का ज्ञाता, सुन्दर, निर्भय और बातचीत करने में निपुण हो ऐसे राजदूत की प्रशंसा होती है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है प्रस्तुत रिक्तस्थान में 'दूते' शब्द सही होगा। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- मनुस्मृति (श्लोक 7/65)

68. कस्मिन् पुराणे 'काशी-खण्डः' समुपलभ्यते?

(A) लिङ्गपुराणे **(B)** शिवपुराणे
(C) ब्रह्माण्डपुराणे **(D)** स्कन्दपुराणे

व्याख्या- पुराण महर्षि वेदव्यास की रचना है। पुराणों की संख्या 18 बताई गई है।

➢ **पुराण का लक्षण -** विष्णुपुराण आदि में प्रतिपाद्य विषयों के आधार पर पुराण का लक्षण किया है-

''सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च।
वंशानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम्॥

लिङ्गपुराण - इसमें 11 सहस्र श्लोक हैं। इसमें शिव के 28 अवतारों का वर्णन है। इसमें शिवलिंग की पूजा का माहात्म्य वर्णित है।

शिवपुराण - इसे वायुपुराण भी कहा जाता है। इसमें 112 अध्याय और 10 सहस्र श्लोक हैं।

ब्रह्माण्डपुराण - इसमें तीर्थ माहात्म्य और उपाख्यानों का संग्रह है। इसके सात खण्डों में अध्यात्म-रामायण दी गयी है।

स्कन्दपुराण - इसमें 5 संहिताएँ हैं -

(1) सनत्कुमारीय (2) ब्राह्म
(3) वैष्णव (4) शंकर / अगस्त्य
(5) सौर

इसके अतिरिक्त काशीखंड नामक 50 छोटे अध्याय हैं। इसमें 81 सहस्र श्लोक हैं। यह सबसे विशालकाय पुराण है। इसमें मुख्यतः शिवभक्ति का वर्णन है। इसमें प्राप्त सूतसंहिता बहुत प्रसिद्ध है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि काशीखंड स्कन्दपुराण में प्राप्त होता है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज 97

69. याज्ञवल्क्यस्मृत्यनुसारं रिक्तस्थानं पूरयत -

''स्मृत्योर्विरोधे न्यायस्तु बलवान् व्यवहारतः।
अर्थशास्त्रात्तु बलवद् .... इति स्थितिः''॥

(A) धर्मशास्त्रम् **(B)** राजादेशः
(C) नृपस्येच्छा **(D)** नीतिशास्त्रम्

व्याख्या- याज्ञवल्क्य द्वारा रचित याज्ञवल्क्यस्मृति अनुष्टुप् छन्द में वर्णित है। इसमें लगभग 1000 श्लोक हैं। यह तीन भागों में विभाजित है -

(1) आचाराध्याय (2) व्यवहाराध्याय
(3) प्रायश्चित्ताध्याय

व्यवहाराध्याय- इसके विषय में याज्ञवल्क्य कहते हैं -

'स्मृत्याचारव्यपेतेन मार्गेणाऽधर्षितः परैः।
आवेदयति चेद्राज्ञे व्यवहारपदं हि तत् ॥ (2/5)

यदि कोई व्यक्ति जो दूसरों के द्वारा स्मृतिनियमों और आचार अथवा रुढ़ियों के विरोध में पीड़ित किया जाता है, वह राजा या न्यायाधिकारी को सूचित करता है तो इसको 'व्यवहारपद' कहते हैं।

याज्ञवल्क्य ने बीस व्यवहारपदों की गणना की है-

(1) ऋणादान (11) सीमाविवाद
(2) उपनिधि (12) वाक्पारुष्य
(3) स्वामिविक्रय (13) दण्डपारुष्य
(4) सम्भूय-समुत्थान (14) स्तेय
(5) दत्ताप्रदानिक (15) साहस

(6) वेतनादान (16) स्त्रीसंग्रहण
(7) संविद्-व्यतिक्रम (17) दायविभाग
(8) क्रीतानुशय (18) द्यूतसमाह्वय
(9) विक्रीयासंप्रदान (19) अभ्युपेत्याशुश्रूषा
(10) स्वामिपालविवाद (20) प्रकीर्ण

'स्मृत्योर्विरोधे न्यायस्तु बलवान् व्यवहारतः।
अर्थशास्त्रात्तु बलवद्धर्मशास्त्रमिति स्थितिः॥ (2/21)

दो स्मृतियों में विरोध होने पर व्यवहार (प्राचीन व्यवहार) से किया निर्णय बलवान् होता है। (किन्तु सार्वकालिक) व्यवस्था यह है कि अर्थशास्त्र की अपेक्षा धर्मशास्त्र बलवान् होता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरणों से स्पष्ट है कि प्रस्तुत पंक्ति में रिक्त स्थान में 'धर्मशास्त्रम्' होगा। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- याज्ञवल्क्यस्मृति (श्लोक 2/21)

70. याज्ञवल्क्यस्मृत्यनुसारेण सबन्धके ऋणे मासि-मासि वृद्धिः भवति -

(A) पञ्चाशद् भागः **(B)** अशीतिभागः
(C) त्रिंशद् भागः **(D)** विंशो भागः

व्याख्या- महर्षि याज्ञवल्क्य द्वारा विरचित 'याज्ञवल्क्यस्मृति' स्मृति ग्रन्थ है जो तीन भागों में विभाजित है।

(1) आचाराध्याय (2) व्यवहाराध्याय (3) प्रायश्चित्ताध्याय

जिसके व्यवहार नामक भाग में ऋण एवं ऋणवृद्धि के विषय में बताया गया है।

अशीतिभागो वृद्धिः स्यान्मासि मासि सबन्धके।
वर्णक्रमाच्छतं द्वित्रिचतुष्पञ्चकमन्यथा॥ (2/37)

बन्धक रखे जाने पर प्रत्येक मास में उसका अस्सीवाँ भाग ब्याज होता है। अन्य स्थिति में बन्धक न होने पर वर्णक्रम (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र क्रम) से दो, तीन, चार और पाँच प्रतिशत वृद्धि होती है।

कान्तारगास्तु दशकं सामुद्रा विंशकं शतम् ।

जो (सूद पर धन लेकर अधिक कमाने के लिए) जंगल में चले जायें उनसे दश प्रतिशत जो समुद्र में चले जायें उनसे बीस प्रतिशत ब्याज लें।

रसस्याष्टगुणा परा।
वस्त्रधान्यहिरण्यानां चतुस्त्रिद्विगुणा परा॥ (2/39)

रस (तेल घृत) आदि की वृद्धि स्वीकृत वृद्धि से अधिकतम आठगुनी हो सकती है। वस्त्र, धान्य और स्वर्ण की अधिकतम वृद्धि क्रमशः चौगुनी, तिगुनी या दुगुनी हो सकती है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'वृद्धि मासे मासे अशीतिभागः' भवति। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- याज्ञवल्क्यस्मृति (श्लोक 2/37)

71. श्रीमद्भगवद्गीतायाः विश्वरूपदर्शनयोगः अस्ति -

(A) दशमेऽध्याये **(B)** एकादशेऽध्याये
(C) प्रथमाध्याये **(D)** त्रयोदशाध्याये

व्याख्या- श्रीमद्भगवद्गीता महर्षि वेदव्यास द्वारा विरचित है जो महाभारत के भीष्मपर्व से ली गयी है। यह अठारह अध्यायों में विभाजित है।

जिनमें सभी अध्यायों का नामकरण विषय वस्तु के आधार पर किया गया है। जो निम्नवत् हैं -

प्रथम अध्याय - अर्जुनविषादयोग
द्वितीय अध्याय - सांख्ययोग
तृतीय अध्याय - कर्मयोग
चतुर्थ अध्याय - ज्ञानकर्मयोग
पञ्चम अध्याय - कर्मसंन्यासयोग
षष्ठ अध्याय - दिव्ययोग
सप्तम अध्याय - ज्ञानविज्ञानयोग
अष्टम अध्याय - अक्षरब्रह्मयोग
नवम अध्याय - राजगुह्यराजविद्यायोग
दशम अध्याय - विभूतियोग
एकादश अध्याय - विश्वरूपदर्शनयोग
द्वादश अध्याय - भक्तियोग
त्रयोदश अध्याय - क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोग
चतुर्दश अध्याय - गुणत्रयविभागयोग
पञ्चदश अध्याय - पुरुषोत्तमयोग
षोडश अध्याय - दैवासुरसंग्रामयोग
सप्तदश अध्याय - श्रद्धात्रयविभागयोग
अष्टादश अध्याय - मोक्षसंन्यासयोग

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'विश्वरूपदर्शनयोग' एकादश अध्याय का नाम है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- श्रीमद्भगवद्गीता (अध्याय 11)

72. 'शतसाहस्री संहिता' इति कस्य अपरं नाम?

(A) रामायणस्य **(B)** भविष्यपुराणस्य
(C) स्कन्दपुराणस्य **(D)** महाभारतस्य

व्याख्या- ➢ रामायण- रामायण महर्षि वाल्मीकि की कृति है। इसमें रामकथा आद्योपान्त वर्णित है। इसमें सात काण्ड हैं -

बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, युद्धकाण्ड और उत्तरकाण्ड।

इसमें लगभग 24 सहस्र श्लोक हैं अतः इसे 'चतुर्विंशति-साहस्री संहिता' भी कहते हैं। यह मुख्यतः अनुष्टुप् छन्दों में है। भाव, भाषा, शैली, परिष्कार और काव्यत्व के कारण रामायण का स्थान भारतीय काव्यों में सर्वोच्च माना जाता है।

यावत् स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महीतले।
तावद् रामायणकथा लोकेषु प्रचरिष्यति॥ (1/2/37)

➤ **महाभारत -** भारतीय लौकिक साहित्य में रामायण के पश्चात् महाभारत का ही स्थान है। इसमें चतुर्वर्ग के सभी विषय, धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष प्रतिपादित हैं। महाभारत में स्वयं इस तथ्य का उल्लेख है।

धर्मे चार्थे च कामे च मोक्षे च भरतर्षभ।
यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत् क्वचित् ॥
(1/62/53)

यह 18 पर्वों में विभाजित है।

(1) आदिपर्व (10) सौप्तिकपर्व
(2) सभापर्व (11) स्त्रीपर्व
(3) वनपर्व (12) शान्तिपर्व
(4) विराटपर्व (13) अनुशासनपर्व
(5) उद्योगपर्व (14) आश्वमेधिकपर्व
(6) भीष्मपर्व (15) आश्रमवासिकपर्व
(7) द्रोणपर्व (16) मौसलपर्व
(8) कर्णपर्व (17) महाप्रस्थानिकपर्व
(9) शल्यपर्व (18) स्वर्गारोहणपर्व

महाभारत की प्रगति के तीन चरण -

जय - 8800 श्लोक
भारत - 24000 श्लोक (चतुर्विंशति साहस्री)
महाभारत - 1 लाख (शतसाहस्री)

➤ **भविष्यपुराण -** इसमें तीर्थ-माहात्म्य और भविष्यवाणियाँ हैं। इसमें चारों वर्णों के कर्तव्य, सूर्य, नागदेव एवं अग्नि की पूजा का वर्णन है। इसका परिशिष्ट भविष्योत्तरपुराण है। भविष्यपुराण में 50,000 श्लोक हैं।

➤ **स्कन्दपुराण -** इसमें 5 संहिताएँ हैं - सनत्कुमारीय, ब्राह्मी, वैष्णवी, शंकर या अगस्त्य और सौर। इनके अतिरिक्त 'काशीखण्ड' नामक 50 छोटे अध्याय हैं। इसमें वाराणसी एवं उसके समीपवर्ती मन्दिरों का वर्णन है। इसमें 81,000 श्लोक हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'शतसाहस्री संहिता' महाभारत को कहा गया है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज 123

73. रामायणस्य श्लोकसंख्या भवति -

(A) 31000-40000 **(B)** 22000-25000
(C) 11000-15000 **(D)** 5000-10000

व्याख्या- आदिकवि महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित 'रामायण' आदिकाव्य है। यह सात काण्डों में विभाजित है -

(1) बालकाण्ड (2) अयोध्याकाण्ड (3) अरण्यकाण्ड
(4) किष्किन्धाकाण्ड (5) सुन्दरकाण्ड (6) युद्धकाण्ड
(7) उत्तरकाण्ड

इसमें लगभग 24000 श्लोक हैं अतः इसे 'चतुर्विंशति साहस्री संहिता' भी कहते हैं। यह मुख्यतः अनुष्टुप् छन्दों में है। गायत्री मंत्र में 24 वर्ण होते हैं, अतः यह मान्यता है कि उसको आधार मानकर 24 हजार श्लोक हैं और प्रत्येक एक सहस्र श्लोक के बाद गायत्री के नए वर्ण से नया श्लोक प्रारम्भ होता है। रामचरित का सर्वांगपूर्ण वर्णन होने के कारण यह धार्मिक ग्रन्थ एवं आचार-संहिता माना जाता है।

यावत् स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महीतले।
तावद् रामायणकथा लोकेषु प्रचरिष्यति॥

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि रामायण में 24000 श्लोक हैं। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज 103

74. हरिषेण विरचिते इलाहाबादशिलालेखे 'कविराज' इत्युपाधिः भवति?

(A) चन्द्रगुप्तस्य **(B)** अशोकस्य
(C) समुद्रगुप्तस्य **(D)** स्कन्दगुप्तस्य

व्याख्या- हरिषेण विरचित समुद्रगुप्त का इलाहाबाद शिलालेख अथवा प्रयाग स्तम्भ अभिलेख है।

स्थान - इलाहाबाद, उत्तरप्रदेश (यह मूलतः कौशाम्बी में था जहाँ से इलाहाबाद किले में लाया गया।

भाषा - संस्कृत
लिपि - ब्राह्मी
काल - समुद्रगुप्त (लगभग 335-76 ई.)
विषय - समुद्रगुप्त का जीवनचरित

इलाहाबाद किले में अब स्थापित मूलरूप से कौशाम्बी में

स्थापित कौशाम्बी के अशोक स्तम्भ पर अशोक के लेख के नीचे ब्राह्मी लिपि में समुद्रगुप्त का यह लेख उत्कीर्ण है।

इसे महादण्डनायक ध्रुवभूति के पुत्र समुद्रगुप्त के कुमारामात्य एवं सन्धिविग्रहिक हरिषेण नामक कवि ने उत्कीर्ण कराया था।

लेख का नाम - इस स्तम्भ में समुद्रगुप्त की प्रशस्ति का उल्लेख है तथा यह प्रयाग मे है। इससे इसको **'प्रयागप्रशस्ति'** कहा जाता है। चूँकि इसका लेखक 'हरिषेण' हैं इससे इसको **'हरिषेण की प्रयाग प्रशस्ति'** नाम से भी जाना जाता है।

* अंग्रेजी में इसको **'Allahabad Pillar Inscription'** कहते हैं।

* यह तिथिविहीन अभिलेख है इसमें समुद्रगुप्त की विजयों का आद्योपान्त उल्लेख है।

'निशितविदग्धमति- गान्धर्व्वललितैर्व्रीडित-त्रिदशपतिगुरु- तुम्बुरुनारदादेर्व्विद्वज्जनोपजीव्यानेक-काव्य-विक्रियाभिः प्रतिष्ठित-कविराज-शब्दस्य सुचिर-स्तोतव्यानेकाद्भुतोदारचरितस्य।

तीक्ष्ण एवं विदग्धमति, वाद्य एवं कण्ठ संगीत द्वारा इन्द्र, गुरु बृहस्पति, तुम्बरु तथा नारदादि को लज्जित करने वाला था, विद्वानों की जीविकार्जनोपयोगी अनेक काव्यों की रचना द्वारा 'कविराज' उपाधि को प्रतिष्ठित करने वाला था, चिरकाल तक स्तुत्य जिसके अनेक विलक्षण एवं उदार कार्य थे।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि इलाहाबाद शिलालेख में समुद्रगुप्त को 'कविराज' की उपाधि दी गयी है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- भारतीय पुरालेखों का अध्ययन-शिवस्वरूप सहाय, पेज 246-251

75. अर्थशास्त्रे आन्वीक्षकीत्रयीवार्तानां योगक्षेमसाधनो भवति -

(A) साम **(B)** दाम

(C) भेदः **(D)** दण्डः

व्याख्या- 'अर्थशास्त्र' आचार्य कौटिल्य द्वारा रचित है। यह पन्द्रह अधिकरणों में विभक्त है जो निम्नलिखित है -

(1) विनयाधिकारिक निरूपण (2) अध्यक्षों का निरूपण
(3) न्याय का निरूपण (4) कण्टकशोधन
(5) योगवृत्त निरूपण (6) प्रकृतियों का निरूपण
(7) छह गुणों का निरूपण (8) व्यसनों का निरूपण
(9) आक्रमण का निरूपण (10) संग्राम का निरूपण
(11) संघवृत्त निरूपण (12) आबलीयस का निरूपण
(13) दुर्ग प्राप्ति का निरूपण (14) औपनिषदिक निरूपण
(15) तंत्रयुक्ति का निरूपण

1. विनयाधिकरण - यह अधिकरण 17 प्रकरणों में विभाजित है जिसमें आन्वीक्षकी, त्रयी, वार्ता, दण्डनीति का वर्णन है एवं उसके अन्तर्गत साम, दाम, दण्ड, भेद चार प्रकार के दण्ड बताये गये हैं।

*** आन्वीक्षकी-**

सांख्यं योगो लोकायतं चेत्यान्वीक्षकी।

धर्माधर्मौ त्रय्यामर्थानर्थौ वार्तायां नयापनयौ दण्डनीत्याम्। बलाबले चैतासां हेतुभिरन्वीक्षमाणान्वीक्षकी लोकस्योपकरोति।

प्रदीपः सर्वविद्यानामुपायः सर्वकर्मणाम् ।
आश्रयः सर्वधर्माणां शश्वदान्वीक्षकी मता।

*** त्रयी -** एष त्रयीधर्मश्चतुर्णां वर्णानामाश्रमाणां च स्वधर्मस्थापना-दौपकारिकः।

साम, ऋक् तथा यजुः इन तीनों वेदों का समन्वित नाम ही त्रयी है।

*** वार्ता -** कृषिपाशुपाल्ये वाणिज्या च वार्ता। धान्यपशुहिरण्य-कुप्यविष्टिप्रदानादौपकारिकी।

कृषि, पशुपालन और व्यापार ये वार्ताविद्या के विषय हैं। यह विद्या, धान्य, पशु, हिरण्य, ताम्र आदि खनिज पदार्थ प्रदान करने से परम उपकारिणी है।

*** दण्ड -** आन्वीक्षकीत्रयीवार्तानां योगक्षेमसाधनो दण्डः। तस्य नीतिर्दण्डनीतिः।

आन्वीक्षकी, त्रयी और वार्ता इन सभी की सुख-समृद्धि दण्ड पर निर्भर है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि प्रस्तुत उक्ति दण्ड के विषय में कही गयी है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- कौटिल्य अर्थशास्त्र - वाचस्पति गैरोला, पेज 12

उत्तरमाला

1-(C) 2-(A) 3-(B) 4-(A) 5-(C) 6-(B) 7-(A) 8-(C) 9-(A) 10-(B) 11-(A)
12-(C) 13-(D) 14-(D) 15-(C) 16-(A) 17-(C) 18-(C) 19-(C) 20-(D) 21-(C) 22-(B)
23-(B) 24-(B) 25-(D) 26-(A) 27-(A) 28-(D) 29-(A) 30-(C) 31-(D) 32-(B) 33-(A)
34-(D) 35-(C) 36-(B) 37-(A) 38-(B) 39-(C) 40-(B) 41-(A) 42-(D) 43-(A) 44-(B)
45-(A) 46-(C) 47-(A) 48-(C) 49-(B) 50-(A) 51-(A) 52-(C) 53-(A) 54-(D) 55-(B)
56-(C) 57-(A) 58-(C) 59-(B) 60-(B) 61-(A) 62-(D) 63-(D) 64-(A) 65-(C) 66-(B)
67-(B) 68-(D) 69-(A) 70-(B) 71-(B) 72-(D) 73-(B) 74-(C) 75-(D)

सर्वज्ञभूषण द्वारा सम्पादित एवं संस्कृतगंगा प्रकाशन से प्रकाशित पुस्तकों का विवरण		
क्र. पुस्तक का नाम	पेज	मूल्य
1. **वस्तुनिष्ठ संस्कृत–साहित्यम्** (TGT, PGT, UGC, NET हेतु उपयोगी)	316	240
2. **वस्तुनिष्ठ संस्कृत–व्याकरणम्** (TGT, PGT, UGC-NET में उपयोगी)	312	240
3. **प्रतियोगितागंगा भाग-1** (TGT, PGT, UGC-NET में अत्यन्त उपयोगी)	448	350
4. **प्रतियोगितागंगा भाग-2** (TGT, PGT, UGC-NET में अत्यन्त उपयोगी)	576	425
5. **आख्यातास्मि** (UGC-NET संस्कृत कोड-25 हेतु उपयोगी)	272	180
6. **प्राख्याता** (UGC–NET संस्कृत कोड-25 हेतु उपयोगी)	320	240
7. **वैदिकवाङ्मय परीक्षा दृष्टि** UGC-NET एवं हायर Exam में उपयोगी)	232	145
8. **भारतीयदर्शनसार** (PGT/UGC-NET में उपयोगी)	160	135
9. **आचार्योऽहम्** (UGC-NET संस्कृत कोड- 73 हेतु उपयोगी)	164	125
10. **असिस्टेण्ट प्रोफेसर संस्कृत** (Higher Education GDC/GIC हेतु उपयोगी)	124	105
11. **SUPER-30 GK/GS** (असिस्टेण्ट प्रोफेसर एवं हायर एजुकेशन हेतु)	176	130
12. **प्रवक्तास्मि** (PGT प्रवक्ता संस्कृत हेतु उपयोगी)	200	125
13. **व्याख्यास्मि** (PGT प्रवक्ता संस्कृत हेतु उपयोगी)	316	240
14. **TGT प्रश्न!अस्मि** (TGT/ L. T. संस्कृत हेतु उपयोगी)	232	145
15. **प्रश्नमीमांसा संस्कृत** (TGT/LT हेतु उपयोगी)	296	140
16. **TGT व्याख्यात्मिका संस्कृत** (TGT/ L. T. में उपयोगी)	276	190
17. **मिशन L. T. संस्कृत** (L. T. एवं TGT हेतु उपयोगी)	400	325
18. **L. T. प्रश्नोत्तरी संस्कृत** (L. T. एवं TGT हेतु उपयोगी)	328	250
19. **गुरुमन्त्र** (UP-TET/Super TET संस्कृत हेतु उपयोगी)	120	120
20. **विजयीभव** (UP-TET संस्कृत हेतु उपयोगी)	196	145
21. **विजयपथ प्रैक्टिस सेट** (UP-TET संस्कृत हेतु उपयोगी)	196	130
22. **C-TET, शिक्षकोऽहम्** (C-TET हेतु उपयोगी)	216	140
23. **मिशन हरियाणा** (H-TET लेवल-2 TGT एवं लेवल-3 PGT हेतु उपयोगी)	300	240
24. **जय हो** (MP वर्ग- 1,2 हेतु उपयोगी)	324	260
25. **लक्ष्य झारखण्ड** (PGT संस्कृत झारखण्ड के लिए उपयोगी)	284	250
26. **TGT झारखण्ड संस्कृत**	252	250
27. **सम्भाषण शब्दकोश** (संस्कृत सम्भाषण हेतु उपयोगी)	208	110
28. **सप्तगङ्गम्** (TGT मूलपाठ)	152	151
29. **शिवराजविजय** (प्रथम निःश्वास, प्रथम विराम)	192	151
30. **जय जूनियर** (जूनियर एडेड भर्ती परीक्षा)	184	125

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) द्वारा प्रायोजित एवं वर्तमान में
राष्ट्रीय परीक्षा एजेन्सी (NTA) द्वारा आयोजित –

- राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (NET) एवं कनिष्ठ अनुसन्धान अध्येतावृत्ति (JRF) एवं महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों में लेक्चररशिप हेतु

प्राख्याता

NTA, UGC-NET/JRF

संस्कृतम् (कोड-25)

प्रश्नपत्रम्-II, III

सम्पादक

सर्वज्ञभूषण

व्याख्यात्री

अर्पिता त्रिपाठी

सुमन सिंह

- **प्रकाशनाधिकारी संस्था**

संस्कृतगङ्गा (पञ्जीकृत)

59, मोरी, दारागञ्ज, प्रयागराज

(कोतवाली दारागञ्ज के आगे, गङ्गाकिनारे संकटमोचन छोटे हनुमान् मन्दिर के पास), Mb. : 9839852033

email-Sanskritganga@gmail.com

- **प्रकाशन सहयोग**

यूनिवर्सल बुक्स

अल्लापुर, प्रयागराज

- मुख्यवितरक

राजू पुस्तक केन्द्र

अल्लापुर, प्रयागराज (उत्तर प्रदेश)

मो० 9453460552, www.bookpaper.in

- पुस्तकें डाक द्वारा भी आर्डर कर सकते हैं–

Mob. : 8004545095
8004545096

- **अक्षर संयोजक- नितिन कुमार, संदीप कुमार**

- **पृष्ठ विन्यास- ब्रह्मानन्द मिश्र**

- प्रथमसंस्करण – 'शिक्षक दिवस'

05 सितम्बर - 2020

- **मूल्य – ₹240/-** (दो सौ चालीस रुपये मात्र)

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

संस्कृतगङ्गा उवाच

प्रियसंस्कृतमित्राणि!

नमः संस्कृताय।

- संस्कृतगङ्गा दारागञ्ज प्रयागराज की प्रस्तुति के रूप में **NTA** (राष्ट्रीय परीक्षा एजेन्सी) द्वारा आयोजित **UGC-NET/JRF** (संस्कृत- 25 कोड) परीक्षा हेतु **'प्राख्याता'** नाम से यह व्याख्यात्मक हल संस्कृतमित्रों की सेवा में प्रस्तुत है। पुस्तक का यह नाम **'आख्यातोपयोगे'** सूत्र से प्रेरित है।
- इस पुस्तक में जून 2015 से लेकर दिसम्बर 2019 तक के कुल **आठ प्रश्नपत्रों से लगभग 700 प्रश्नों** की व्याख्या की गयी है। सभी प्रश्नों के सही उत्तर के साथ-साथ प्रामाणिक पुस्तकों से स्रोत भी लिखा गया है।
- सभी प्रश्नों के चारों विकल्पों की व्याख्या की गयी है, जिससे किसी भी प्रश्न का पूरा कॉन्सेप्ट आपको समझ में आयेगा।
- उन सभी संस्कृतमित्रों को हार्दिक धन्यवाद जिन्होंने इन पुस्तक में व्याख्याकार्य को पूर्ण किया। कुछ लोगों ने प्रूफ संशोधन, स्रोतान्वेषण, टाइपिंग, प्रकाशन आदि कार्यों में संस्कृतगङ्गा का मनसा वाचा कर्मणा सहयोग किया, जिनमें सत्यप्रकाश साहू, शंकरदत्त त्रिपाठी, श्यामकिशोर मिश्र, राजेश तिवारी, अभिनेष पाल, कमलेश तिवारी, आशुतोष शुक्ल, अरुण कुमार पाण्डेय (शोधच्छात्र, गङ्गानाथ झा), अरुण कुमार पाण्डेय 'निर्मोही' संगीता राय, स्वागतम् मौर्य, पूनम दुबे, ज्योतिमा सिंह, प्रतिमा त्रिपाठी, शफीना, बेगम, गायत्री पाण्डेय, रिंकी, राधा आदि मुख्य हैं।
- पुस्तक के व्याख्याकार्य में अर्पिता त्रिपाठी एवं सुमन सिंह का कार्य अत्यन्त सराहनीय रहा, जिन्होंने इस कार्य को सन् 2015 से ही प्रारम्भ किया था........शनैः शनैः यह कार्य पाँच वर्ष बाद **05 सितम्बर 2020 ''शिक्षक दिवस''** के दिन संस्कृत जगत् को पुस्तक रूपी सुमन अर्पित करने का मुझे अवसर प्राप्त हुआ।
- इस पुस्तकीय सामग्री को अपनी टाइपिंग कला द्वारा पुस्तकीय आकार प्रदान करने वाले सन्दीप जी, नितिन जी एवं पुस्तक को बाह्यावरण (कवर पेज) से सुसज्जित करने वाले ब्रह्मानन्द मिश्र एवं हमारे प्रकाशकीय कार्यों के सहयोगी एवं मुख्य वितरक राजू पुस्तक केन्द्र, अल्लापुर प्रयागराज के स्वामी श्री राजकुमार गुप्ता (राजू) जी विशेष धन्यवाद के पात्र हैं।
- यह प्रयास किया गया है कि पुस्तक पूर्णरूपेण शुद्ध हो, फिर भी प्रमाद या अज्ञानवशात् कुत्रचित् मुद्रणदोष या गलत उत्तर या व्याख्या में तथ्यात्मक त्रुटि हो गयी हो तो कृपया हमें इन नम्बरों पर सूचित करें – **9839852033, 8004545095**

संस्कृतगङ्गा, दारागञ्ज, प्रयागराज — **सम्पादकः**

05 सितम्बर–2020 — **सर्वज्ञभूषणः**

शिक्षक दिवस

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग

पाठ्यक्रम

संस्कृत (विषयकोड-25)

इकाई 1

वैदिक साहित्य

वैदिक साहित्य का सामान्य परिचय-

- **वेदों का काल -** मैक्समूलर, ए.वेबर, जैकोबी, बालगंगाधर तिलक, एम.विन्टरनिट्ज, भारतीय परम्परागत विचार,
- **संहिता साहित्य**
- **संवाद सूक्त-** पुरूरवा-उर्वशी (10-95), यम-यमी (10.10), सरमा-पणि (10.108), विश्वामित्र-नदी (3.33)
- **ब्राह्मण साहित्य**
- **आरण्यक साहित्य**
- **वेदांग-** शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष

इकाई 2

वैदिक साहित्य का विशिष्ट अध्ययन

- **निम्नलिखित सूक्तों का अध्ययन -**
- **ऋग्वेद -** अग्नि (1.1), वरुण (1.25), सूर्य (1.115), इन्द्र (2.12), उषस् (3.61), पर्जन्य (5. 83), अक्ष (10.34), ज्ञान (10.71), पुरुष (10.90), हिरण्यगर्भ (10.121), वाक् (10.125), नासदीय (10.129),
- **शुक्लयजुर्वेद -** शिवसंकल्प,अध्याय- 34 (1-6) प्रजापति, अध्याय- 23(1-5) 32वाँ अध्याय भी पढें।
- **अथर्ववेद -** राष्ट्राभिवर्धनम् (1.29), काल (10.53), पृथिवी (12.1)
- **ब्राह्मण साहित्य-** प्रतिपाद्य विषय, विधि एवं उसके प्रकार, अग्निहोत्र, अग्निष्टोम, दर्शपूर्णमास यज्ञ, पञ्चमहायज्ञ, आख्यान (शुनःशेप, वाङ्मनस्)।
- **उपनिषद् साहित्य-** निम्नलिखित उपनिषदों की विषयवस्तु तथा प्रमुख अवधारणाओं का अध्ययन - ईश, कठ, केन, बृहदारण्यक, तैत्तिरीय, श्वेताश्वतर।
- **वैदिक व्याकरण निरुक्त एवं वैदिक व्याख्या पद्धति-**
- **ऋक्प्रातिशाख्य-** निम्नलिखित परिभाषाएँ - समानाक्षर, सन्ध्यक्षर, अघोष,सोष्म, स्वरभक्ति, यम, रक्त, संयोग, प्रगृह्य, रिफित।

- **निरुक्त-** (अध्याय 1 तथा 2) चार पद- नाम विचार, आख्यात विचार, उपसर्गों का अर्थ, निपात की कोटियाँ,
- **निरुक्त अध्ययन के प्रयोजन**
- **निर्वचन के सिद्धान्त**
- **निम्नलिखित शब्दों की व्युत्पत्ति** आचार्य, वीर, ह्रद, गो, समुद्र, वृत्र, आदित्य, मेघ, वाक्, उदक, नदी, अश्व, अग्नि, जातवेदस्, वैश्वानर, निघण्टु

निरुक्त- (अध्याय 7 दैवत काण्ड)

वैदिक स्वर- उदात्त, अनुदात्त तथा स्वरित ।

वैदिक व्याख्या पद्धति- प्राचीन एवं अर्वाचीन ।

इकाई 3

दर्शन साहित्य

(क) प्रमुख भारतीय दर्शनों का सामान्य परिचय

प्रमाणमीमांसा, तत्त्वमीमांसा, आचारमीमांसा (चार्वाक, जैन, बौद्ध, सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा एवं उत्तरमीमांसा के सन्दर्भ में)

इकाई 4

(ख) दर्शन साहित्य का विशिष्ट अध्ययन

- **ईश्वरकृष्ण- सांख्यकारिका-** सत्कार्यवाद, पुरुषस्वरूप, प्रकृतिस्वरूप, सृष्टिक्रम, प्रत्ययसर्ग, कैवल्य
- **सदानन्द, वेदान्तसार-** अनुबन्ध-चतुष्टय, अज्ञान, अध्यारोप-अपवाद, लिंगशरीरोत्पत्ति, पञ्चीकरण, विवर्त महावाक्य, जीवन्मुक्ति ।

♦ **अन्नंभट्ट, तर्कसंग्रह/ केशव मिश्र, तर्कभाषा-** पदार्थ, कारण, प्रमाण (प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द,) प्रामाण्यवाद, प्रमेय ।

♦ **लौगाक्षिभास्कर-अर्थसंग्रह-**

♦ **पतंजलि-योगसूत्र-** (व्यासभाष्य) - चित्तभूमि, चित्तवृत्तियाँ, ईश्वर का स्वरूप, योगाङ्ग, समाधि, कैवल्य ।

♦ **बादरायण-ब्रह्मसूत्र 1.1 (शाङ्करभाष्य)**

♦ **विश्वनाथपञ्चानन-न्यायसिद्धान्तमुक्तावली (अनुमानखण्ड)**

♦ **सर्वदर्शनसंग्रह- जैनमत, बौद्धमत**

इकाई 5

व्याकरण एवं भाषाविज्ञान

♦ **सामान्य परिचय- निम्नलिखित आचार्यों का परिचय-** पाणिनि, कात्यायन, पतञ्जलि, भर्तृहरि, वामनजयादित्य, भट्टोजिदीक्षित, नागेशभट्ट, जैनेन्द्र, कैय्यट,शाकटायन, हेमचन्द्रसूरि, सारस्वतव्याकरणकार।

♦ **पाणिनीय शिक्षा**

♦ **भाषाविज्ञान -** भाषा की परिभाषा, भाषा का वर्गीकरण, (आकृतिमूलक एवं पारिवारिक), ध्वनियों का वर्गीकरण, स्पर्श, संघर्षी, अर्धस्वर, स्वर, (संस्कृत ध्वनियों के विशेष सन्दर्भ में), मानवीय ध्वनियन्त्र, ध्वनि परिवर्तन के कारण, ध्वनि नियम (ग्रिम,ग्रासमान,वर्नर), अर्थ परिवर्तन की दिशाएँ एवं कारण, वाक्य का लक्षण व भेद, भारोपीय परिवार का सामान्य परिचय, वैदिक संस्कृत एवं लौकिक संस्कृत में अन्तर, भाषा तथा वाक् में अन्तर, भाषा तथा बोली में अन्तर

इकाई 6

(ख) व्याकरण का विशिष्ट अध्ययन

♦ **परिभाषाएँ-** संहिता, संयोग,गुण, वृद्धि, प्रातिपदिक, नदी,घि, उपधा,अपृक्त, गति, पद, विभाषा, सवर्ण, टि, प्रगृह्य, सर्वनामस्थान, भ, सर्वनाम, निष्ठा।

♦ **सन्धि-** अच् सन्धि, हल् सन्धि, विसर्ग सन्धि, (लघुसिद्धान्तकौमुदी के अनुसार)

♦ **सुबन्त-अजन्त-** राम, सर्व, (तीनों लिंगों में), विश्वपा, हरि, त्रि, (तीनों लिंगों में), सखि, सुधी, गुरु, पितृ, गौ, रमा, मति, नदी, धेनु, मातृ, ज्ञान, वारि, मधु ।

♦ **हलन्त-** लिह, विश्ववाह, चतुर् (तीनों लिंगों में), इदम् (तीनों लिंगों में), किम् (तीनों लिंगों में), तत् (तीनों लिंगों में), राजन्, मघवन्, पथिन्, विद्वस्, अस्मद्, युष्मद् ।

♦ **समास-** अव्ययीभाव, तत्पुरुष, बहुव्रीहि, द्वन्द्व, (लघुसिद्धान्तकौमुदी के अनुसार)

♦ **तद्धित-** अपत्यार्थक एवं मत्वर्थीय (सिद्धान्तकौमुदी के अनुसार)

♦ **तिङन्त-** भू,एध् ,अद् ,अस् ,हु, दिव् ,षुञ् ,तुद् ,तन् ,कृ, रुध् ,क्रीञ् ,चुर्

♦ **प्रत्ययान्त-** णिजन्त, सन्नन्त, यङन्त, यङ्लुगन्त, नामधातु।

♦ **कृदन्त-** तव्य/तव्यत्, अनीयर्, यत्, ण्यत्, क्यप्, शतृ, शानच्, क्त्वा, क्तवतु, तुमुन्, णमुल् ।

♦ **स्त्रीप्रत्यय-** लघुसिद्धान्तकौमुदी के अनुसार

♦ **कारकप्रकरण-** सिद्धान्तकौमुदी के अनुसार

♦ **परस्मैपद एवं आत्मनेपद विधान-** सिद्धान्तकौमुदी के अनुसार

♦ **महाभाष्य (पस्पशाह्निक)-** शब्दपरिभाषा, शब्द एवं अर्थ सम्बन्ध, व्याकरण अध्ययन के उद्देश्य, व्याकरण की परिभाषा, साधु शब्द के प्रयोग का परिणाम, व्याकरण पद्धति।

♦ **वाक्यपदीयम् (ब्रह्मकाण्ड)-** स्फोट का स्वरूप, शब्द-ब्रह्म का स्वरूप, शब्द-ब्रह्म की शक्तियाँ, स्फोट एवं ध्वनि का सम्बन्ध, शब्द-अर्थ का सम्बन्ध,ध्वनि के प्रकार, भाषा के स्तर।

इकाई 7

संस्कृत साहित्य, काव्यशास्त्र एवं छन्दपरिचय

♦ **निम्नलिखित का सामान्य परिचय -** भास, अश्वघोष, कालिदास, शूद्रक, विशाखदत्त, भारवि, माघ, हर्षवर्धन, बाणभट्ट, दण्डी,भवभूति, भट्टनारायण, बिल्हण, श्रीहर्ष, अम्बिकादत्तव्यास, पण्डिता क्षमाराव, वी. राघवन्, श्रीधरभास्कर वर्णेकर

◆ **काव्यशास्त्र-** रससम्प्रदाय, अलंकारसम्प्रदाय, रीतिसम्प्रदाय, ध्वनिसम्प्रदाय, वक्रोक्तिसम्प्रदाय, औचित्यसम्प्रदाय ।

◆ **पाश्चात्त्य काव्यशास्त्र-** अरस्तू, लॉन्जाइनस, क्रोचे

इकाई 8

निम्नलिखित ग्रन्थों का विशिष्ट अध्ययन

◆ **पद्य-** बुद्धचरितम् (प्रथम सर्ग), रघुवंशम् (प्रथमसर्ग), किरातार्जुनीयम् (प्रथमसर्ग), शिशुपालवधम् (प्रथमसर्ग), नैषधीयचरितम् (प्रथमसर्ग)

◆ **नाट्य-** स्वप्नवासवदत्तम्, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, वेणीसंहारम्, मुद्राराक्षसम्, उत्तररामचरितम्, रत्नावली, मृच्छकटिकम्,

◆ **गद्य-** दशकुमारचरितम् (अष्टम उच्छ्वास), हर्षचरितम् (पञ्चम उच्छ्वास) कादम्बरी (शुकनासोपदेश)

◆ **चम्पूकाव्य-** नलचम्पू (प्रथम उच्छ्वास)

◆ **साहित्यदर्पण-**

काव्यपरिभाषा, काव्य की अन्य परिभाषाओं का खण्डन, शब्दशक्ति (संकेतग्रह, अभिधा, लक्षणा, व्यंजना), काव्यभेद (चतुर्थ परिच्छेद), श्रव्यकाव्य (गद्य,पद्य, मिश्र काव्य-लक्षण)

◆ **काव्यप्रकाश-**

काव्यलक्षण, काव्यप्रयोजन, काव्यहेतु, काव्यभेद, शब्दशक्ति, अभिहितान्वयवाद, अन्विताभिधानवाद, रसस्वरूप एवं रससूत्र विमर्श, रसदोष, काव्यगुण, व्यञ्जनावृत्ति की स्थापना (पञ्चम उल्लास)

◆ **अलंकार-**

वक्रोक्ति, अनुप्रास, यमक, श्लेष, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, समासोक्ति, अपह्नुति, निदर्शना, अर्थान्तरन्यास, दृष्टान्त, विभावना, विशेषोक्ति, स्वभावोक्ति, विरोधाभास, संकर, संसृष्टि।

◆ **ध्वन्यालोक (प्रथम उद्योत)**

◆ **वक्रोक्तिजीवितम् (प्रथम उन्मेष)**

◆ **भारत-नाट्यशास्त्र (द्वितीय एवं षष्ठ अध्याय)**

दशरूपकम् (प्रथम एवं तृतीय प्रकाश)

छन्दपरिचय-

आर्या, अनुष्टुप् , इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा,वसन्ततिलका, उपजाति, वंशस्थ, द्रुतविलम्बित, शालिनी, मालिनी, शिखरिणी, मन्दाक्रान्ता, शार्दूलविक्रीडित, स्रग्धरा।

इकाई 9

पुराणेतिहास, धर्मशास्त्र एवं अभिलेखशास्त्र

निम्नलिखित का सामान्य परिचय -

◆ **रामायण-** विषयवस्तु, काल, रामायणकालीन समाज, परवर्ती ग्रन्थों के लिए प्रेरणास्रोत, साहित्यिक महत्त्व, रामायण में आख्यान।

◆ **महाभारत-** विषयवस्तु, काल, महाभारतकालीन समाज, परवर्ती ग्रन्थों के लिए प्रेरणास्रोत, साहित्यिक महत्त्व, महाभारत में आख्यान।

◆ **पुराण-** पुराण की परिभाषा, महापुराण-उपपुराण, पौराणिक सृष्टि-विज्ञान पौराणिक आख्यान ।

◆ **प्रमुख स्मृतियों का सामान्य परिचय**

◆ **अर्थशास्त्र का सामान्य परिचय**

◆ **लिपि-** ब्राह्मी लिपि का इतिहास एवं उत्पत्ति के सिद्धान्त

◆ **अभिलेख का सामान्य परिचय**

इकाई 10

निम्नलिखित ग्रन्थों का विशिष्ट अध्ययन

कौटिलीय-अर्थशास्त्र (प्रथम-विनयाधिकारिक)

मनुस्मृति- (प्रथम,द्वितीय एवं सप्तम अध्याय)

याज्ञवल्क्यस्मृति- (व्यवहाराध्याय)

लिपि तथा अभिलेख- गुप्तकालीन तथा अशोक कालीन ब्राह्मी लिपि

अशोक के अभिलेख- प्रमुख शिलालेख, प्रमुख स्तम्भलेख।

मौर्योत्तरकालीन अभिलेख- कनिष्क के शासन वर्ष 3 का सारनाथ बौद्ध प्रतिमा लेख, रुद्रदामन् का गिरनार शिलालेख, खारवेल का हाथीगुम्फा अभिलेख ।

गुप्तकालीन एवं गुप्तोत्तर कालीन अभिलेख- समुद्रगुप्त का इलाहाबाद स्तम्भलेख, यशोधर्मन् का मन्दसौर शिलालेख, हर्ष का बांसखेड़ा ताम्रपट्ट अभिलेख, पुलकेशिन् द्वितीय का ऐहोल शिलालेख

अनुक्रमणिका

NTA UGC-NET/JRF संस्कृत व्याख्यात्मक हल

॥ नमः संस्कृताय ॥

1	दिसम्बर 2019	NTA UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् II

1. अनुकरणसिद्धान्तस्य समर्थकः मुख्यतया अस्ति?
(A) अरस्तू (B) लॉन्जाइनस
(C) क्रोचे (D) प्लेटो

व्याख्या- अरस्तू का अनुकरण सिद्धान्त-

अनुकरण का अर्थ-

* प्लेटो की तरह अरस्तू ने भी काव्य को अनुकरण सिद्धान्त पर आधारित स्वीकार किया है, इसीलिए वह भी कलाकारों की तरह कवि को भी अनुकर्त्ता कहता है।
* अरस्तू ने अपने गुरु प्लेटो से अनुकरण (मिमैसिस) शब्द को ग्रहण किया और उनकी मान्यता कला अनुकरण है, को ही स्वीकार किया, लेकिन उनकी व्याख्या उसने अपने ढंग से की और कहा कि कलाकार प्रकृति की गोचर वस्तुओं का नहीं वरन् प्रकृति की सर्जन प्रक्रिया का भी अनुकरण करता है।
* प्लेटो एवं अरस्तू की अनुकरण विषयक मान्यताओं में मूलभूत अन्तर यह है कि प्लेटो ने अनुकरण का विषय बाह्यप्रकृति की वस्तुओं को माना है और अरस्तू ने गोचर वस्तुओं के अस्तित्व में आधारभूत रूप में निहित प्राकृतिक नियमों को अनुकरण का विषय माना।
* अरस्तू अपने ग्रन्थ 'पोएटिक्स' में कहता है कि कविता केवल अनुभवजन्य घटनाओं का अनुकरण नहीं, कविता की दुनिया अनुभव की दुनिया की अपेक्षा अधिक बोधगम्य है और जहाँ प्रकृति सफलता प्राप्त नहीं करती, वहाँ कवि सफल हो जाता है।
* अरस्तू ने अनुकरण के लिए एकमात्र आधार मानव जीवन को स्वीकार किया है। उसके अनुसार मानव जीवन ही वह प्रकृति है जिसका अनुकरण कला करती है।
* अरस्तू का मत है कि कलाकार को वस्तुओं की तीन स्थितियों में से किसी एक का अनुकरण करना चाहिये।

(1) जैसी वह थी या है। (2) जैसी वह कही या समझी जाती है। (3) जैसी वह होनी चाहिए।

* अरस्तू के काव्य एवं इतिहास के विवेचन से भी अनुकरण के इसी तथ्य का बोध होता है कि अनुकरण का अभिप्राय भावपरक अनुकरण से है न कि यथार्थ वस्तुपरक प्रत्यंकन से।
* अरस्तू ने विषय, माध्यम और शैली के अन्तर के आधार पर एक ओर काव्य और अन्य कलाओं में भेद किया। इस तरह पहली बार उसने एक कलाकृति के रूप में काव्य को महत्त्व दिया।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि अनुकरण-सिद्धान्त के समर्थक अरस्तू हैं। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र तथा आलोचना-योगेन्द्र प्रताप सिंह, पेज 197

2. अमृतसहोदरापि कटुविपाका .... शुकनासोपदेशे वर्णनमिदं वर्तते?
(A) सरस्वत्याः (B) कादम्बर्याः
(C) लक्ष्म्याः (D) महाश्वेतायाः

व्याख्या- ➢ बाणभट्ट की सर्वोत्कृष्ट कृति कादम्बरी है, जो एक गद्यकाव्य है। यह ग्रन्थ पूर्वार्ध और उत्तरार्ध दो भागों में लिखा गया है। पूर्वभाग महाकवि बाणभट्ट की रचना है और उत्तरभाग उनके पुत्र पुलिनभट्ट या भूषणभट्ट द्वारा लिखा गया है।

➢ कादम्बरी के प्रारम्भ में प्रस्तावना के रूप में 20 श्लोक हैं जिसमें मङ्गलाचरण, सज्जनप्रशंसा आदि विषय निहित हैं।

➢ सम्पूर्ण कृति में चन्द्रापीड और पुण्डरीक के तीन जन्मों की कथा वर्णित है।

➢ राजा तारापीड का पुत्र चन्द्रापीड था और प्रधानमन्त्री शुकनास का पुत्र वैशम्पायन था।

➢ यथासमय राजकुमार चन्द्रापीड के यौवराज्याभिषेक की तैयारियाँ आरम्भ हुईं। इसी समय शुकनास ने राजकुमार चन्द्रापीड को जो उपदेश दिया था, वही शुकनासोपदेश है।

➢ मन्त्री शुकनास ने राजकुमार चन्द्रापीड को लक्ष्मी के अवगुणों के विषय में बताया है-

परस्परविरुद्धञ्चेन्द्रजालमिव दर्शयन्ती प्रकटयति जगति निजं चरितम्।

(इस प्रकार यह लक्ष्मी) इन्द्रजाल (जादू) के समान परस्पर विरोधी बातें दिखाती हुयी जगत् में अपना चरित्र प्रकट करती है।

तथाहि, सततमूष्माणमुपजनयन्त्यपि जाड्यमुपजनयति।

(उदाहरण के लिये) निरन्तर ऊष्मा उत्पन्न करती हुई भी जड़ता उत्पन्न करती है।

* **उन्नतिमादधानापि नीचस्वभावतामाविष्करोति।**
उन्नति को धारण करती हुई भी नीच स्वभावता को प्रकट करती है।
* **तोयराशिसंभवापि तृष्णां संवर्धयति।**
समुद्र से उत्पन्न हुई भी तृष्णा को बढ़ाती है।
* **ईश्वरतां दधानाप्यशिवप्रकृतित्वमातनोति।**
प्रभुता को धारण करती हुई भी अशिव स्वभाव (अमङ्गल) का विस्तार करती है।
* **बलोपचयमाहरन्त्यपि लघिमानमापादयति।**
बल समूह को लाती हुयी भी लघुता को प्राप्त कराती है अर्थात् लाती है।
* **अमृतसहोदरापि कटुविपाका। विग्रहवत्यप्यप्रत्यक्षदर्शना।**
अमृत की सगी बहन होकर भी कड़वे फल वाली है। विग्रह वाली होकर भी प्रत्यक्ष न दिखाई देने वाली है।
* **पुरुषोत्तमरतापि खलजनप्रिया। रेणुमयीव स्वच्छमपि कलुषीकरोति।**

पुरुषोत्तम में आसक्त होते हुए भी दुष्टजनों से प्रेम करने वाली है। रेणुमयी यह लक्ष्मी स्वच्छ को भी कलुषित बना देती है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'अमृतसहोदरापि कटुविपाका ......' यह पंक्ति शुकनासोपदेश में मन्त्री शुकनास चन्द्रापीड को उपदेश देते हुए लक्ष्मी के सम्बन्ध में कहते हैं।

अतः विकल्प 'C' सही है।

स्रोत- शुकनासोपदेश- राजेश्वरप्रसाद मिश्र, पेज 72

3. अलोऽन्त्यात् पूर्ववर्णस्य का सञ्ज्ञा भवति?
(A) निष्ठा **(B)** उपधा
(C) गति **(D)** संहिता

व्याख्या- * अलोऽन्त्यात्पूर्व उपधा (1.1.65) उपधासंज्ञा करने वाला सूत्र है-

अन्त्यादलः पूर्वो वर्ण उपधासंज्ञः।

वर्णों के समुदाय में से जो अन्तिम वर्ण हो, उससे पूर्व के वर्ण की यह उपधासंज्ञा होती है।

जैसे- राम = र् आ म् अ

राम में अन्त्य वर्ण 'अ' है और उससे पूर्व का वर्ण है 'म्' अतः 'म्' की उपधा संज्ञा हो जायेगी।

* **क्तक्तवतू निष्ठा (1.1.26)** निष्ठासंज्ञा करने वाला सूत्र है- **एतौ निष्ठासञ्ज्ञौ स्तः।**

➢ क्त और क्तवतु प्रत्यय निष्ठासंज्ञक होते हैं।

➢ निष्ठासंज्ञक क्त और क्तवतु प्रत्यय भूतकाल अर्थ में सभी धातुओं से होते हैं।

* **गतिश्च (1.4.60)**
प्रादयः क्रियायोगे गतिसञ्ज्ञाः स्युः।
प्र, परा आदि क्रिया के योग में गतिसंज्ञक होते हैं।
* **संहितासञ्ज्ञा- हलोऽनन्तराः संयोगः (1.1.7)**
अज्भिरव्यवहिता हलः संयोगसञ्ज्ञाः स्युः।
अचों (स्वरों) से अव्यवहित हल् संयोगसञ्ज्ञक होते हैं।

जैसे- पत्नी में त् और न् के बीच में कोई भी अच् नहीं है, अतः त् - न् इस हल् समुदाय की संयोग सञ्ज्ञा हो जाती है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'उपधासंज्ञा' वर्णों के समूह के अन्तिम वर्ण से पूर्व वर्ण की होती है।

अतः विकल्प 'B' सही है।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज 175

4. महाकविकालिदासस्य प्रसिद्धौ कस्यालङ्कारस्योदाहरण-रूपेण उपयोगः क्रियते?
(A) उपमालङ्कारस्य
(B) उत्प्रेक्षालङ्कारस्य
(C) समासोक्त्यलङ्कारस्य
(D) अतिशयोक्त्यलङ्कारस्य

व्याख्या- महाकवि कालिदास की विशिष्टता उपमा के कारण है, भारवि का प्रधान गुण अर्थगौरव है, दण्डी (या नैषधचरित) की विशिष्टता पदलालित्य के कारण है तो माघ में तीनों गुणों का समन्वित प्रयोग प्रमुख वैशिष्ट्य है। इसलिए कहा गया है-

उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्।
दण्डिनः (नैषधे) पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयो गुणाः॥

कवियों के प्रिय अलङ्कार

कवि		अलङ्कार
कालिदास	-	उपमा
भारवि	-	चित्रालङ्कार, अर्थालङ्कार
माघ	-	उपमा, उत्प्रेक्षा, अर्थान्तरन्यास, चित्रालङ्कार
श्रीहर्ष	-	उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति,

श्लेष, अनुप्रास, यमक		
भवभूति	-	उपमा, उत्प्रेक्षा, काव्यलिङ्ग, रूपक
बाणभट्ट	-	विरोधाभास, श्लेष,
परिसंख्या, उत्प्रेक्षा, उपमा,		
रूपक		
अश्वघोष	-	उपमा, रूपक, अनुप्रास
रत्नाकर	-	उत्प्रेक्षा अलङ्कार
विशाखदत्त	-	उपमा, रूपक, श्लेष
हर्षवर्धन	-	उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक
भट्टनारायण	-	उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा
सुबन्धु	-	श्लेष, विरोधाभास,
परिसंख्या, उत्प्रेक्षा		
अम्बिकादत्तव्यास	-	विरोधाभास

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'उपमा कालिदासस्य' उपमा अलङ्कार कालिदास के लिए प्रसिद्ध है।

अतः विकल्प 'A' सही है।

स्रोत- संस्कृतसाहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज 269
संस्कृतगङ्गा साहित्यम् - सर्वज्ञभूषण, पेज 288

5. याज्ञवल्क्यमते उत्तरा क्रिया कुत्र बलवती भवति?
(A) सर्वेष्वर्थविवादेषु
(B) आधौ प्रतिग्रहे
(C) सर्वेषु भूमिविवादेषु
(D) दायविभागविवादेषु

व्याख्या- याज्ञवल्क्यस्मृति के रचयिता याज्ञवल्क्य वैदिक ऋषि हैं, वे शुक्लयजुर्वेद के द्रष्टा थे।

याज्ञवल्क्यस्मृति के अतिरिक्त याज्ञवल्क्य के नाम से सम्बद्ध तीन अन्य स्मृतियाँ भी हैं-

(i) वृद्धयाज्ञवल्क्य (ii) योगयाज्ञवल्क्य (iii) बृहद्-याज्ञवल्क्य

* याज्ञवल्क्यस्मृति के सुप्रसिद्ध टीकाकार विश्वरूप, विज्ञानेश्वर और अपरार्क ने वृद्धयाज्ञवल्क्य को अनेक बार उद्धृत किया है।
* याज्ञवल्क्यस्मृति सुस्पष्ट व सुसंश्लिष्ट शैली में निबद्ध है। यह अनुष्टुप् छन्द में बद्ध है।
* इसमें लगभग 1000 श्लोक हैं।
* याज्ञवल्क्यस्मृति तीन भागों में विभक्त है-

प्रथम आचाराध्याय है जिसमें 14 विद्याएँ, धर्मोपादान, आचार के दस सिद्धान्त आदि तेरह प्रकरण हैं।

* द्वितीय व्यवहाराध्याय, इसमें पञ्चीस प्रकरण हैं।
* तृतीय प्रायश्चित्ताध्याय, इसमें आपद्धर्म, यतिधर्म, प्रायश्चित्त आदि छः प्रकरण हैं।
* 'व्यवहाराध्याय' याज्ञवल्क्यस्मृति का हृदय है। इसमें सर्वाधिक प्रकरण समाया हुआ है।

व्यवहाराध्याय के अन्तर्गत ही यह कारिका कही गयी है-

सर्वेष्वर्थविवादेषु बलवत्युत्तरा क्रिया (2/23)

सभी प्रकार के अर्थ (धन) के विवादों में उत्तरक्रिया (बाद के कार्य) प्रबल होते हैं।

* **आधौ प्रतिग्रहे क्रीते पूर्वा तु बलवत्तरा (॥2/23॥)**

किन्तु आधि (बन्धन) दान और क्रय में पूर्वकार्य (पहले का अधिकार-पत्र) प्रबल होता है।

* **दर्शने प्रत्यये दाने प्रातिभाव्यं विधीयते।**
आद्यौ तु वितथे दाप्यावितरस्य सुता अपि (॥2/53॥)

प्रातिभाव्य (जमानतदार- वह अन्य व्यक्ति जो शर्त या विश्वास दिलाता है), दर्शन (आवश्यकता पड़ने पर उपस्थित करने या दिखाने), प्रत्यय (विश्वास कि यह देने लायक है) और दान (न देने पर स्वयं देना) के कार्य में प्रातिभाव्य (जामिन) होता है। प्रथम दो दर्शन और प्रत्यय के असत्य होने पर राजा उससे धन दिलावे और तीसरे के असत्य होने पर उसके पुत्रों से भी धन दिलावे।

* **संततिः स्त्रीपशुष्वेव धान्यं त्रिगुणमेव च।**
वस्त्रं चतुर्गुणं प्रोक्तं रसश्चाष्टगुणस्तथा (॥2/57॥)

प्रतिभू के स्त्री और पशु दिलाने की स्थिति में तो बच्चे सहित स्त्री और पशु दे। धान्य होने पर तीन गुना, वस्त्र होने पर चौगुना और रस (तेल घृतादि) होने पर आठ गुना दिलावे।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि याज्ञवल्क्यमते 'उत्तरा क्रिया सर्वेष्वर्थविवादेषु बलवती भवति।'

अतः विकल्प 'A' सही है।

स्रोत- याज्ञवल्क्यस्मृति (2/23)- गङ्गासागर राय, पेज 182

6. अधोलिखितेषु केन सह कस्य सम्बन्धः?

(क)	द्यूतक्रीडा	(i)	भीष्मपर्व
(ख)	गीता-उपदेशः	(ii)	महाप्रस्थानिकपर्व
(ग)	अभिमन्यु-वधः	(iii)	सभापर्व
(घ)	पाण्डवानां हिमालययात्रा	(iv)	द्रोणपर्व

	क	ख	ग	घ
(A)	(i)	(iv)	(iii)	(ii)
(B)	(iii)	(i)	(ii)	(iv)
(C)	(iv)	(ii)	(iii)	(i)
(D)	(iii)	(i)	(iv)	(ii)

व्याख्या- महर्षि वेदव्यास द्वारा विरचित ऐतिहासिक महाकाव्य महाभारत अठारह पर्वों में विभक्त है जिनमें अनेक उपपर्व मुख्य घटनाओं के शीर्षक के रूप में हैं। यहाँ पर्वों की मुख्य विषय-वस्तु का संक्षिप्त परिचय बताया गया है-

(1) आदिपर्व - इस पर्व में 11 उपपर्व तथा 233 अध्याय हैं। प्रथम दो उपपर्व अनुक्रमणिका तथा पर्वसंग्रह के रूप में एक-एक अध्याय वाले हैं।

➢ शकुन्तला का आख्यान एवं पुरुवंश के राजाओं का वर्णन है।

➢ धृतराष्ट्र का अपनी पत्नी गान्धारी से 100 पुत्रों की प्राप्ति तथा पाण्डु की पत्नियों (कुन्ती एवं माद्री) से नियोग द्वारा पाँच पुत्रों के जन्म की घटनाएँ वर्णित हैं।

➢ कौरवों एवं पाण्डवों की शिक्षा-दीक्षा तथा विवाहादि वर्णन भी इसी पर्व में है।

➢ इस विशाल पर्व में प्रायः नौ सहस्र श्लोक हैं।

(2) सभापर्व - इस पर्व में 81 अध्याय और दस उपपर्व हैं।

➢ मुख्यरूप से पाण्डवों की दिग्विजय यात्रा, जरासन्धवध युधिष्ठिर द्वारा राजसूय यज्ञ का अनुष्ठान और शिशुपालवध वर्णित है।

(3) वनपर्व - इस पर्व में 315 अध्याय एवं 22 उपपर्व हैं। पाण्डवों के वनवास की घटना से सम्बद्ध आख्यान है। नल और राम के आख्यान प्रधान हैं। सावित्री तथा सत्यवान् की कथा यहाँ पर आयी है। मुख्य दो घटनायें- जयद्रथ द्वारा द्रौपदी का हरण और इन्द्र द्वारा कर्ण के कवच-कुण्डल माँग ले जाना।

(4) विराट पर्व - इस पर्व में पाँच उपपर्व तथा 72 अध्याय हैं। प्रायः 2700 श्लोक इसमें हैं।

➢ पाण्डवों के अज्ञातवास की घटना का वर्णन, पाण्डवों का वेश बदलकर मत्स्यराज विराट के राजप्रसाद में अज्ञात रूप से रहना।

➢ यहीं द्रौपदी के प्रति आसक्त कीचक का भीमद्वारा वध

➢ अन्तिम उपपर्व में विराट की पुत्री उत्तरा का विवाह अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु से होता है।

(5) उद्योग पर्व - इसमें दस उपपर्व तथा 196 अध्याय हैं। श्लोकों की संख्या प्रायः 7100 है।

➢ इसमें मुख्य वृत्त शान्ति के लिये वार्तालाप एवं युद्ध की पूर्वपीठिका की प्रस्तुति है।

➢ इसमें अम्बोपाख्यान के रूप में पूर्वकथा सुनायी गयी है।

➢ शान्ति प्रस्ताव में पाण्डव केवल पाँच गाँव लेकर भी सन्तुष्ट होने की बात कहते हैं।

(6) भीष्मपर्व - इसमें पाँच उपपर्व तथा प्रायः 6100 श्लोक हैं। इसका विभाजन 122 अध्यायों में हुआ है।

➢ भीष्म के सेनापतित्व में दस दिनों के भारत युद्ध का वर्णन है।

➢ सञ्जय धृतराष्ट्र को युद्ध का समस्त वृत्तान्त दिव्यदृष्टि से देखकर बतलाता है।

➢ युद्ध के आरम्भ में कृष्णार्जुन संवाद के रूप में 18 अध्यायों का अंश है जिसे 'भगवद्गीता' कहते हैं।

(7) द्रोणपर्व - इस पर्व में आठ उपपर्व, 202 अध्याय तथा प्रायः दस सहस्र श्लोक हैं।

➢ युद्ध में क्रमशः संशप्तकों, अभिमन्यु, जयद्रथ, घटोत्कच तथा द्रोणाचार्य का वध होता है।

* द्रोण का वध छलपूर्वक होने पर उनका पुत्र अश्वत्थामा कुपित होकर नारायणास्त्र का प्रयोग करता है।

(8) कर्णपर्व - इस पर्व में 96 अध्याय तथा प्रायः साढ़े पाँच सहस्र श्लोक हैं। इसका विभाजन उपपर्वों में नहीं हुआ है।

➢ कर्ण और शल्य का परस्पर वाग्युद्ध बड़ा रोचक है।

➢ कौरव-सेना का अध्यक्ष कर्ण बनता है।

(9) शल्यपर्व - इसमें दो उपपर्व (ह्रद प्रवेश तथा गदापर्व), 65 अध्याय तथा प्रायः 3700 श्लोक हैं।

➢ इसमें भारत युद्ध के अन्तिम (18) दिन के युद्ध का वर्णन है।

➢ शल्य का वध, दुर्योधन का गदायुद्ध और ऊरुभङ्ग इस पर्व की मुख्य घटनाएँ हैं।

➤ शल्यपर्व में कुछ प्राचीन आख्यान भी हैं जिनमें तीर्थों का माहात्म्य वर्णित है।

(10) सौप्तिक पर्व - इसमें एक उपपर्व, 18 अध्याय तथा 810 श्लोक हैं।

➤ मुख्य कथा पाण्डवों की सोयी हुयी सेना पर आक्रमण करके द्रौपदी के पाँचों पुत्रों के मारे जाने की है।

➤ पाण्डव अश्वत्थामा को पकड़कर उसके सिर की मणि निकाल लेते हैं।

(11) स्त्रीपर्व - इसमें तीन उपपर्व, 27 अध्याय तथा 820 श्लोक हैं।

➤ कुन्ती युधिष्ठिर को कर्ण के जन्म का वृत्तान्त सुनाकर उसका भी श्राद्ध करने का अनुरोध करती है।

➤ युधिष्ठिर स्त्रीजाति को शाप देते हैं कि अब से स्त्रियों के मन में रहस्य की कोई बात छिपी नहीं रहेगी।

(12) शान्तिपर्व - इसमें तीन उपपर्व हैं- राजधर्मानुशासन, आपद्धर्म तथा मोक्षधर्म।

➤ इसमें वर्तमान में 365 अध्याय तथा 14,725 श्लोक हैं। इस दृष्टि से यह महाभारत का सबसे बड़ा पर्व है।

➤ इस पर्व में पराशर-गीता, हंस-गीता इत्यादि ग्रन्थ महत्त्वपूर्ण हैं।

➤ शरशय्या पर लेटे हुये भीष्म के द्वारा युधिष्ठिर आदि को दिये गये उपदेश के रूप में इस पर्व का विन्यास हुआ है।

(13) अनुशासन पर्व - इस पर्व में मुख्यरूप से धर्मशास्त्रीय उपदेश हैं जो भीष्म द्वारा अपने समक्ष उपस्थित युधिष्ठिर आदि को दिये गये हैं।

➤ इसमें दो उपपर्व, 168 अध्याय तथा दस सहस्र से कुछ कम श्लोक हैं।

➤ भीष्म का स्वर्गारोहण (उपपर्व) में केवल दो ही अध्याय हैं।

➤ इसी पर्व के 17वें अध्याय में शिवसहस्रनामस्तोत्र है।

(14) आश्वमेधिक पर्व - इस पर्व में 92 अध्याय तथा प्रायः सवा चार सहस्र श्लोक हैं।

➤ अनुगीता नामक उपपर्व में दर्शनशास्त्र की सामग्री है।

➤ व्यास के आदेश से युधिष्ठिर अश्वमेध-यज्ञ करते हैं और अर्जुन एक वर्ष तक यज्ञाश्व की रक्षा करते हैं।

(15) आश्रमवासिकपर्व - इसमें तीन उपपर्व, 39 अध्याय तथा 1100 श्लोक हैं।

इसका मुख्य इतिवृत्त धृतराष्ट्र के साथ गान्धारी, कुन्ती और विदुर का वन में आश्रम बनाकर निवास करना है।

(16) मौसल पर्व - यह केवल आठ अध्यायों और 304 श्लोकों का लघुकाय पर्व है।

➤ युधिष्ठिर के सिंहासनारोहण के 26 वर्षों के बाद गान्धारी का शाप सत्य होता है और यादव वंश के लोग परस्पर युद्ध करके समाप्त हो जाते हैं।

(17) महाप्रस्थानिक पर्व - यह तीन अध्यायों का महाभारत का सबसे छोटा पर्व है।

➤ जिसमें केवल 115 श्लोक हैं।

➤ इसमें पाण्डवों की हिमालय यात्रा का वर्णन है।

➤ हिमालय में क्रमशः द्रौपदी सहदेव आदि गिरते जाते हैं और युधिष्ठिर उनके पतन का कारण बतलाते हैं।

(18) स्वर्गारोहणपर्व - यह केवल पाँच अध्यायों और 220 श्लोकों का छोटा सा पर्व है इसमें युधिष्ठिर के स्वर्ग पहुँचने तथा देवदूत के साथ नरक में जाकर अपने अनुजों के करुण क्रन्दन सुनने का वृत्तान्त है।

➤ अन्तिम अध्याय में महाभारत का माहात्म्य तथा इसके उपदेश प्रतिपादित हैं। इसे भारत सावित्री भी कहते हैं।

स्पष्टीकरण - उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि **विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा ऋषि, पेज 149, 150, 152

7. छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते ।
ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते॥
अत्र श्लोके केषां वर्णनं प्राप्यते-

(A) आरण्यकानाम् **(B)** उपनिषदाम्
(C) वेदाङ्गानाम् **(D)** वेदानाम्

व्याख्या- पाणिनीय शिक्षा में इन छह वेदाङ्गों का वेदपुरुष के छः अङ्गों के रूप में वर्णन है।

जैसे- छन्द वेदपुरुष के पैर हैं, कल्प हाथ हैं, ज्योतिष नेत्र हैं, निरुक्त कान हैं, शिक्षा नाक है और व्याकरण मुख है।

छन्दः पादौ तु वेदस्य, हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते ।
ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते ॥
शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य, मुखं व्याकरणं स्मृतम् ।

तस्मात् साङ्गमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते ॥

(पा.शि.-41-42)

वेदाङ्ग	नाम
1. छन्द	पैर
2. कल्प	हाथ
3. ज्योतिष	नेत्र
4. निरुक्त	कान
5. शिक्षा	नाक
6. व्याकरण	मुख

➢ **शिक्षा व्याकरणं छन्दो निरुक्तं ज्योतिषं तथा ।**
कल्पश्चेति षडङ्गानि वेदस्याहुर्मनीषिणः ॥

वेदाङ्गों की संख्या और उनके नाम हैं- शिक्षा, व्याकरण, छन्द, निरुक्त, ज्योतिष, कल्प।

➢ **आरण्यक ग्रन्थ -** ब्राह्मणग्रन्थों और उपनिषदों को जोड़ने वाली कड़ी है। ब्राह्मणग्रन्थों में यज्ञों के दार्शनिक और आध्यात्मिक पक्ष का जो अङ्कुरण हुआ है, उसका पल्लवित रूप आरण्यक ग्रन्थ हैं।

महाभारत में कहा गया है-

नवनीतं यथा दध्नो मलयाच्चन्दनं यथा ।
आरण्यकं च वेदेभ्य ओषधिभ्योऽमृतं यथा॥

(महा. 1.331.3)

महाभारत में कथन है कि आरण्यक ग्रन्थ वेदों के सारभाग हैं। जैसे दही से मक्खन, मलय से चन्दन और ओषधियों से अमृत प्राप्त होता है, वैसे ही वेदों से आरण्यक प्राप्त हुए हैं।

➢ **उपनिषद् ग्रन्थ -** उपनिषद् शब्द उप + नि + सद् + क्विप् अर्थात् उप और नि उपसर्गपूर्वक सद् धातु से क्विप् प्रत्यय करने पर बनता है। इसका अर्थ है- 'तत्त्वज्ञान के लिये गुरु के पास निष्ठापूर्वक बैठना।'

मुख्य उपनिषदों की संख्या दश मानी है -

ईश-केन-कठ-प्रश्न-मुण्ड-माण्डूक्य-तित्तिरः।
ऐतरेयं च छान्दोग्यं बृहदारण्यकं तथा॥(मुक्तिक. 1.30)

➢ **वेद -** वेदों की संख्या चार है- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'छन्दः पादौ तु वेदस्य' यह पंक्ति वेदाङ्ग से सम्बन्धित है।

अतः विकल्प 'C' सही है।

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज 190

8. इन्द्रियार्थयोस्तु यः सन्निकर्षः साक्षात्कारिप्रमाहेतुः? स कतिविधः?

(A) सप्तविधः **(B)** चतुर्विधः
(C) षड्विधः **(D)** पञ्चविधः

व्याख्या- आचार्य गौतमप्रणीत न्यायदर्शन का प्रकरणग्रन्थ तर्कभाषा है जिसके प्रणेता केशवमिश्र हैं। तर्कभाषा के प्रारम्भ में मङ्गलाचरण, षोडश पदार्थ आदि का निरूपण करने के पश्चात् षोडश पदार्थों में सर्वप्रथम परिगणित 'प्रमाण' को बताते हुये उसके अन्तर्गत आने वाले षोढा सन्निकर्ष को परिभाषित करते हैं-

इन्द्रियार्थयोस्तु यः सन्निकर्षः साक्षात्कारिप्रमाहेतुः स षड्विध एव। तद्यथा, संयोगः, संयुक्तसमवायः, संयुक्तसमवेतसमवायः, समवायः, समवेतसमवायः, विशेष्यविशेषण- भावश्चेति।

इन्द्रिय तथा अर्थ का जो सन्निकर्ष प्रत्यक्षज्ञान साक्षात्कारिणी प्रमा का निमित्त होता है, वह छः प्रकार का ही है, जैसे- (1) संयोग (2) संयुक्तसमवाय (3) संयुक्तसमवेत समवाय (4) समवाय (5) समवेत समवाय (6) विशेष्यविशेषणभाव।

(1) संयोग सन्निकर्ष - चक्षुषा घटविषयं ज्ञानं जन्यते तदा चक्षुरिन्द्रियं घटोऽर्थः। अनयोः सन्निकर्षः संयोग एव, अयुतसिद्ध्यभावात्।

उनमें से जब चक्षु द्वारा घट आदि विषय का ज्ञान होता है, तब चक्षु इन्द्रिय है, घट विषय है। इन दोनों का सन्निकर्ष संयोग ही है, क्योंकि ये दोनों अयुतसिद्ध नहीं हैं।

(2) संयुक्तसमवाय - यदा चक्षुरादिना घटगतरूपादिकं गृह्यते, घटे श्यामं रूपमस्तीति, तदा चक्षुरिन्द्रियं, घटरूपमर्थः, अनयोः सन्निकर्षः संयुक्तसमवाय एव।

जब चक्षु आदि से घट में रहने वाले रूप आदि का ग्रहण होता है कि घट में श्याम रूप है तब चक्षु इन्द्रिय है, घट का रूप विषय है। इन दोनों का संयुक्तसमवाय सन्निकर्ष है।

(3) संयुक्तसमवेत समवाय - चक्षुषा घटरूपसमवेतं रूपत्वादि-सामान्यं गृह्यते, तदा चक्षुरिन्द्रियं, रूपत्वादिसामान्यमथ, अनयो सन्निकर्षः संयुक्तसमवेतसमवाय एव।

जब चक्षु के द्वारा घट के रूप में समवेत रूपत्व आदि सामान्य जाति का ग्रहण होता है। तब चक्षु इन्द्रिय है। रूपत्व आदि सामान्य

ही अर्थ (विषय) है। इन दोनों का सन्निकर्ष संयुक्त समवेतसमवाय है।

(4) समवाय सन्निकर्ष - यदा श्रोत्रेन्द्रियेण शब्दो गृह्यते तदा श्रोत्रमिन्द्रियं, शब्दोऽर्थः, अनयोः सन्निकर्षः समवाय एव। कर्णशष्कुल्यवच्छिन्नं नभः श्रोत्रम्।

जब श्रोत्रेन्द्रिय से शब्द का ग्रहण होता है तब श्रोत्र इन्द्रिय है, शब्द अर्थ है इन दोनों का सन्निकर्ष समवाय ही है, क्योंकि कर्णविवर से अवच्छिन्न आकाश ही श्रोत्र है।

(5) समवेतसमवाय सन्निकर्ष - यदा पुनः शब्दसमवेतं शब्दत्वादिकं सामान्यं श्रोत्रेन्द्रियेण गृह्यते, तदा श्रोत्रमिन्द्रियं, शब्दत्वादिसामान्यमर्थः। अनयोः सन्निकर्षः समवेतसमवाय एव। श्रोत्रसमवेते शब्दे शब्दत्वस्य समवायात् ।

जब शब्द में समवेत शब्दत्व आदि जाति का श्रोत्र इन्द्रिय से ग्रहण किया जाता है तब श्रोत्र इन्द्रिय है, शब्दत्व आदि जाति अर्थ विषय है। इन दोनों का सन्निकर्ष समवेतसमवाय ही है। क्योंकि श्रोत्र में समवेत शब्द में समवाय सम्बन्ध होता है।

(6) विशेष्यविशेषण भाव - यदा चक्षुषा संयुक्ते भूतले घटाभावो गृह्यते इह भूतले घटो नास्ति इति तदा विशेष्यविशेषणभावः सम्बन्धः।

जब चक्षु से संयुक्त भूमि पर 'यहाँ भूतल पर घट नहीं है'- इस प्रकार घट के अभाव का ग्रहण होता है तब विशेष्य विशेषण भाव सन्निकर्ष हुआ करता है।

षोढा सन्निकर्ष -

सन्निकर्ष	इन्द्रिय	विषय
संयोग सन्निकर्ष	चक्षु	घट
संयुक्तसमवाय सन्निकर्ष	चक्षु	घटरूप
संयुक्तसमवेत समवाय	चक्षु	घटरूपत्व जाति
समवाय सन्निकर्ष	श्रोत्र	शब्द
समवेतसमवाय सन्निकर्ष	श्रोत्र	शब्दत्व
विशेषण-विशेष्यभाव सन्निकर्ष	चक्षु	भूतले घटाभाव

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'इन्द्रियार्थयोस्तु यः सन्निकर्षः साक्षात्कारिप्रमा हेतुः सः षड्विधः'

अतः विकल्प 'C' सही है।

स्रोत- तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज 61

9. न तेन सज्यं क्वचिदुद्यतं धनुः
कृतं न वा तेन विजिह्ममाननम्।
गुणानुरागेण शिरोभिरुह्यते
नराधिपैर्माल्यमिवास्य शासनम् ॥
अस्मिन् श्लोके प्रशंसा वर्तते?

(A) युधिष्ठिरस्य **(B)** वनेचरस्य
(C) दुर्योधनस्य **(D)** अर्जुनस्य

व्याख्या- महाकवि भारवि द्वारा प्रणीत बृहत्त्रयी के अन्तर्गत परिगणित अष्टादशसर्गात्मक महाकाव्य किरातार्जुनीयम् है।

इस ग्रन्थ के प्रथम सर्ग में वनेचर हस्तिनापुर से दुर्योधन के राज्य वृत्तान्त को जानकर द्वैतवन में युधिष्ठिर के पास आकर उस वृत्तान्त को कहता है -

न तेन सज्यं क्वचिदुद्यतं धनुः
कृतं न वा कोपविजिह्ममाननम् ।
गुणानुरागेण शिरोभिरुह्यते
नराधिपैर्माल्यमिवास्य शासनम् ॥1/21॥

दुर्योधन के मित्र राजाओं की स्थिति के विषय में वनेचर दुर्योधन की प्रशंसा का वर्णन कर रहा है -

उस दुर्योधन के द्वारा कहीं पर भी चढ़ी हुयी प्रत्यञ्चा वाला धनुष नहीं उठाया गया अथवा क्रोध के कारण मुख टेढ़ा नहीं किया गया। राजाओं के द्वारा गुणों के प्रति प्रेम के कारण उसकी आज्ञा को माला के समान शिरोधार्य किया जाता है।

किरातार्जुनीयम् की महत्त्वपूर्ण सूक्तियाँ-

* **अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता (1/23)**

वनेचर का कथन है- अहो (आश्चर्य है कि) बलवानों से विरोध बड़ा ही दुःखान्त होता है।

* **प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः ॥1/25॥**

वनेचर युधिष्ठिर से कहता है- दूसरे लोगों के द्वारा कहे गये वचनों का सङ्ग्रह करने वाले मुझ जैसों की बातें तो वृत्तान्तमात्र पर्यवसायिनी होती हैं।

* **प्रविश्य हि घ्नन्ति शठास्तथाविधान्**
असंवृताङ्गान्निशिता इवेषवः ॥1/30॥

द्रौपदी का कथन युधिष्ठिर से- धूर्त लोग बिना ढके हुए अङ्गों वाले उन जैसे लोगों को तीक्ष्ण बाणों के समान भीतर प्रविष्ट होकर मार डालते हैं।

* **शमीतरुं शुष्कमिवाग्निरुच्छिखः ॥1/32॥**

द्रौपदी का कथन है- आपको सूखे हुए शमी के वृक्ष को जला देने वाली प्रज्वलित अग्नि के समान उद्दीप्त क्रोध क्यों नहीं क्रोधित करता?

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'न तेन सज्यं क्वचिदुद्यतं धनुः ....' यह वनेचर का कथन है जिसमें दुर्योधन की प्रशंसा हो रही है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- किरातार्जुनीयम् (1/21)

10. कथनद्वयम् अधोलिखितं तत्र एकम् अभिकथनम् (A) अपरश्च तस्य कारणम् (R) इति।

अभिकथनम् (A) - एकनवतिवर्षीयस्य प्रणवस्य प्रपौत्रः ओङ्कारः ओङ्कारस्य युवापत्यसञ्ज्ञा भवति।

कारणम् (R) - जीवति तु वंश्ये युवा इति विधानात्।

उपर्युक्तम् अभिकथन- कारणमाश्रित्य समुचितं विकल्पं चिनुत-

(A) (A) तथा (R) उभयं सत्यमस्ति। (A) इत्यस्य (R) उचितं कारणमस्ति।

(B) (A) तथा (R) उभावपि असमीचीनौ

(C) (A) तथा (R) उभावपि समीचीनौ, परं (A) इत्यस्य (R) इति समुचितं कारणं नास्ति।

(D) (A) इति असमीचीनं परं (R) इति समीचीनम्

व्याख्या- जीवति तु वंश्ये युवा (4.1.163)

वंश्ये पित्रादौ जीवति (सति) पौत्रादेर्यदपत्यं चतुर्थादि तद् युवसंज्ञमेव स्यात् ।

वंश में होने वाले पिता, पितामह आदि के जीवित रहते जो पौत्र आदि का अपत्य चतुर्थ आदि पीढ़ी से स्थित हो वह युवन् संज्ञक ही हो। (गोत्रसंज्ञक नहीं)

अपत्य शब्द लोक में पुत्र अर्थ में प्रसिद्ध है परन्तु यहाँ शास्त्र में पुत्र, पौत्र आदि पीढ़ी के अर्थ में आता है। इस शास्त्र में अपत्य तीन प्रकार से प्रयुक्त होता है-

(1) अनन्तरापत्य - अनन्तरापत्य केवल पुत्र अर्थात् दूसरी पीढ़ी को कहते हैं। इसका विग्रह केवल 'अपत्यम्' लगाकर ही किया जाता है।

जैसे- गर्गस्यापत्यं गार्गिः

दक्षस्यापत्यं दाक्षिः

उपगोरपत्यम् औपगवः

(2) गोत्रापत्य - गोत्रापत्य पुत्र के पुत्र अर्थात् तीसरी पीढ़ी से आरम्भ होता है और आगे की सब पीढ़ियों में चला जाता है। इसका विग्रह गोत्रापत्यम् शब्द लगाकर ही किया जाता है।

जैसे- गर्गस्य गोत्रापत्यं गार्ग्यः

दक्षस्य गोत्रापत्यं दाक्षिः

(3) युवापत्य - यदि बाप दादा आदि जीवित हों तो प्रपौत्र अर्थात् चतुर्थ पीढ़ी से लेकर आगे युवन् सञ्ज्ञा हो जाती है, तब गोत्रसंज्ञा नहीं रहती। इसका विग्रह 'गर्गस्य गोत्रापत्यं युवा' या 'गर्गस्य युवापत्यम्' इस प्रकार से किया जाता है गार्ग्यायणः, दाक्षायणः इत्यादि उदाहरण हैं।

विशेष - कथन (A) 'एकनवतिवर्षीयस्य प्रणवस्य प्रपौत्रः ओङ्कारः। ओङ्कारस्य युवापत्य संज्ञा भवति।' यह सत्य है।

कारण (R) में 'जीवति तु वंश्ये युवा' इस सूत्र से इसका विधान हुआ है।

स्पष्टीकरण - उपर्युक्त कथन से स्पष्ट है कि (A) तथा (R) दोनों सत्य कथन है और (R) कथन (A) कथन का उचित कारण है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमीव्याख्या, भाग-5), पेज 25

11. अधस्तनेषु चित्तभूमिषु न गण्यते-

a चलम् **b मूढम्**

c विक्षिप्तम् **d अचलम्**

समुचितं विकल्पं चिनुत -

(A) a एवं c **(B)** a एवं d

(C) a एवं b **(D)** b एवं c

व्याख्या- महर्षि पतञ्जलि प्रणीत योगदर्शन है। जिसमें चार पाद- (1) समाधिपाद (2) साधनपाद (3) विभूतिपाद (4) कैवल्यपाद हैं।

➤ प्रथमपाद में 51 सूत्र, द्वितीय पाद में 55, तृतीय पाद में 55 सूत्र और चतुर्थपाद में 34 सूत्र हैं।

➤ महर्षि पतञ्जलि प्रथम पाद में पञ्चचित्तभूमियों को बताते हैं- (1) क्षिप्त (2) मूढ (3) विक्षिप्त (4) एकाग्र (5) निरुद्ध

1. क्षिप्तम् - रजसा विषयेष्वेव वृत्तिमत्

रजोगुण के उद्रेक के कारण विषयों में ही व्यापृत रहने वाली चित्त की अवस्था क्षिप्त भूमि है।

2. मूढम् - तमसा निद्रादिवृत्तिमत्

तमोगुण के उद्रेक के कारण मूर्च्छादि व्यापारवान् चित्त की स्थिति मूढ भूमि कहीं जाती है।

3. विक्षिप्तम् - क्षिप्ताद्विशिष्टं विक्षिप्तं, सत्त्वाधिक्येन समादधदपि चित्तं रजोमात्रयाऽन्तरा विषयान्तरवृत्तिमद्

क्षिप्तादि भूमि से कुछ बेहतर या अच्छी भूमि। इसमें सत्त्वगुणाधिक्य रहता है। इसमें किञ्चित् कालपर्यन्त समाधि लगने पर भी रजोगुण के जोर मारते रहने के कारण बीच में अन्य विषयों की ओर चित्त दौड़ जाता है चित्त की यह अवस्था उसकी विक्षिप्त नामक भूमि कही जाती है।

4. एकाग्रम् - एकस्मिन्नेव विषयेऽग्रं शिखा यस्य चित्तदीपस्येत्येकाग्रं, विशुद्ध-सत्त्वतयैकस्मिन्नेव विषये वक्ष्यमाणावधीकृतकालपर्यन्तमचञ्चलं निवातस्थदीपवत्। तथा च क्षिप्तादित्रयेऽपि किञ्चिदैकाग्र्यसत्त्वेऽपि तत्र नातिप्रसङ्गः।

इस अवस्था में चित्त की सात्त्विकवृत्ति किसी एक विषय की ओर लगी रहती है। रजोगुण और तमोगुण दबे रहते हैं। अतः उस एक विषय की ओर अग्र या उन्मुख वृत्ति वाली अवस्था को एकाग्रभूमि कहते हैं।

5. निरुद्धम् - 'निरुद्धं च निरुद्धसकलवृत्तिकं संस्कारमात्र-शेषमित्यर्थः।'

जिस अवस्था में चित्त की तामस और राजस वृत्तियों के साथ-साथ सात्त्विक वृत्ति का भी निरोध हो जाता है, केवल संस्कारमात्र चित्त में रहते हैं, उसे निरुद्ध भूमि कहते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण स्पष्ट है कि चित्तभूमियों में चल और अचलत्व की गणना नहीं होती है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- पातञ्जलयोगदर्शन (1/1)-सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पेज 6

12. निरुक्तकारेण केन क्रमेण पदजातानि वर्णितानि?

1 आख्यातम् **2 उपसर्गाः**

3 निपाताः **4 नाम**

अत्र कः क्रमः? स्पष्टयत-

(A) 4 1 2 3
(B) 1 3 2 4
(C) 2 1 3 4
(D) 3 2 4 1

व्याख्या- आचार्य यास्क प्रणीत निरुक्त है। यह निरुक्त निघण्टु का व्याख्या ग्रन्थ है। मूलग्रन्थ निघण्टु कहलाता है।

➤ निरुक्त के प्रारम्भिक तीन अध्याय नैघण्टुक काण्ड 4-6 तक, अगले तीन अध्याय नैगमकाण्ड और अन्तिम छः अध्याय दैवतकाण्ड नाम से कहे जाते हैं।

➤ **चत्वारि पदजातानि नामाख्याते च, उपसर्ग-निपाताश्च, तानीमानि भवन्ति।**

ये नाम और आख्यात तथा उपसर्ग एवं निपात रूप चार प्रकार के पद प्रसिद्ध हैं।

➤ **'भावप्रधानमाख्यातम् सत्त्वप्रधानानि नामानि'**

क्रिया की जिसमें प्रधानता होती है, वह आख्यात है और जिसमें सत्त्व अर्थात् द्रव्य की प्रधानता हो वह नाम पद कहलाता है।

➤ **षड् भावविकारा भवन्तीति वार्ष्यायणिः। जायते, अस्ति, विपरिणमते, वर्धते, अपक्षीयते, विनश्यति इति।**

छः प्रकार के क्रियाओं के भेद होते हैं-

यह वार्ष्यायणि आचार्य का मत है - जायते (उत्पन्न होना) अस्ति (रहता है।), विपरिणमते (परिवर्तित होता है।), वर्धते (बढ़ता है।), अपक्षीयते (क्षीण होता है), विनश्यति (नष्ट होता है।)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि निरुक्त के अनुसार चत्वारि पदजातानि का क्रम- नाम, आख्यात, उपसर्ग, निपात है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- निरुक्त - आचार्य विश्वेश्वर, पेज 18

13. महाभारताश्रितं भासविरचितं ग्रन्थद्वयं किमस्ति?

a अभिज्ञानशाकुन्तलम् **b ऊरुभङ्गम्**

c स्वप्नवासवदत्तम् **d दूतघटोत्कचम्**

अधस्तनेषु समीचीनं विकल्पं चिनुत-

(A) a एवं d **(B)** b एवं c
(C) c एवं d **(D)** b एवं d

व्याख्या-

कवि	ग्रन्थ	उपजीव्य
भास	ऊरुभङ्गम्	महाभारत
भास	दूतवाक्यम्	महाभारत
भास	पञ्चरात्रम्	महाभारत
भास	दूतघटोत्कचम्	महाभारत

भास	कर्णभार	महाभारत
भास	मध्यमव्यायोग	महाभारत
भास	बालचरितम्	महाभारत
भास	प्रतिमानाटकम्	रामायण
भास	अभिषेकनाटकम्	रामायण
भास	प्रतिज्ञायौगन्धरायण	उदयनकथामूलक
भास	स्वप्नवासवदत्तम्	उदयनकथामूलक
कालिदास	अभिज्ञानशाकुन्तलम्	महाभारत
कालिदास	रघुवंशम्	रामायण
भारवि	किरातार्जुनीयम्	महाभारत
श्रीहर्ष	नैषधीयचरितम्	महाभारत
माघ	शिशुपालवधम्	महाभारत
भट्टनारायण	वेणीसंहार	महाभारत
भवभूति	उत्तररामचरितम्	रामायण
त्रिविक्रमभट्ट	नलचम्पू	महाभारत

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि महाभारत आश्रित और भास विरचित ग्रन्थ - ऊरुभङ्ग और दूतघटोत्कच हैं। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशङ्कर शर्मा ऋषि, पेज 465-466

14. पुरूरवा-उर्वशीसंवादसूक्ते कियन्तो मन्त्राः सन्ति?
(A) एकादश **(B)** पञ्चदश
(C) सप्तदश **(D)** अष्टादश

व्याख्या- * ऋग्वेद के संवाद सूक्त *

➢पुरूरवा - उर्वशी संवाद सूक्त

मण्डल - 10
सूक्त - 95
कुल मन्त्र - 18
ऋषि - पुरूरवा ऐळ और उर्वशी
देवता - उर्वशी और पुरूरवा ऐळ
छन्द - त्रिष्टुप्
स्वर - धैवत

➢यम - यमी संवाद सूक्त

मण्डल - 10
सूक्त - 10
कुल मन्त्र - 14
ऋषि - यम वैवस्वत, यमी
देवता - यम वैवस्वत, यमी वैवस्वती
छन्द - त्रिष्टुप्

➢सरमा - पणि संवाद सूक्त

मण्डल - 10
सूक्त - 108
कुल मन्त्र - 11
ऋषि - पणि एवं सरमा
देवता - सरमा एवं पणि
छन्द - त्रिष्टुप्
स्वर - धैवत

➢विश्वामित्र नदी संवाद-

मण्डल - 3
सूक्त - 33
कुल मन्त्र - 13
ऋषि - विश्वामित्र
देवता - नदियाँ विपाट्, शुतुद्री
छन्द - पंक्ति, त्रिष्टुप्

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि पुरूरवा-उर्वशी संवाद सूक्त में कुल 18 मन्त्र हैं। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- वैदिकवाङ्मय दृष्टि - सर्वज्ञभूषण, पेज 10

15. दर्शं नु विश्वदर्शतं दर्शं रथमधि क्षमि।
एता जुषत मे गिरः॥
उपर्युक्तमन्त्रे 'गिरः' पदस्य अर्थौ स्तः -
a पर्वतः **b गिरिः**
c वाणी **d स्तुतिः**
अत्र समीचीनमुत्तरं चिनुत-
(A) b एवं c **(B)** a एवं b
(C) c एवं d **(D)** b एवं d

व्याख्या- वरुण सूक्त संक्षिप्त परिचय-

मण्डल - 1
सूक्त - 25
कुल मन्त्र - 21
ऋषि - अजीगर्त शुनःशेप

देवता - वरुण
छन्द - गायत्री
स्वर - षड्ज

दर्शं नु विश्वदर्शतं दर्शं रथमधि क्षमि।
एता जुषत मे गिरः ॥ (1.25.18)

सम्पूर्ण विश्व के द्वारा देख सकने योग्य उस वरुण को निश्चित रूप से मैंने देख लिया है। भूमि पर उस वरुण के रथ को मैंने देख लिया है। उस वरुण देवता ने इन मेरी स्तुतियों को ग्रहण कर लिया है।

शब्दार्थ -

दर्शम् - देख लिया है।
जुषत - ग्रहण कर लिया है।
गिरः - स्तुतियों को
अधिक्षमि - भूमि पर

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'गिरः' शब्द का अर्थ वाणी और स्तुति दोनों होगा। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- वरुण सूक्त - (1.25.18)

16. नाट्यशास्त्रे विश्वकर्मणा प्रेक्षागृहस्य त्रैविध्ये वर्णितम्?

a विकृष्टम् **b त्र्यस्त्रम्**
c चतुरस्त्रम् **d अष्टास्त्रम्**

उपर्युक्तेषु समीचीनमुत्तरं चिनुत -

(A) a एवं b **(B)** a एवं d
(C) b एवं d **(D)** c एवं d

व्याख्या- आचार्य भरतमुनि प्रणीत नाट्यशास्त्र में कुल 36 अध्याय हैं। इसमें श्लोकों की संख्या 6000 है। इसलिये इसे 'षट्साहस्रीसंहिता' के नाम से भी जाना जाता है।

- नाट्यशास्त्र के प्रथम अध्याय में नाट्यशास्त्र की दिव्य उत्पत्ति का मनोरंजक एवं विशद वर्णन हुआ है।
- द्वितीय अध्याय में नाट्यमण्डप के भेदोपभेदों का निरूपण हुआ है।
- नाट्यशास्त्र में नाट्यमण्डप के दो प्रकार से भेद किये गये हैं। पहला आकार की दृष्टि से, दूसरा प्रमाण की दृष्टि से।
- आकार की दृष्टि से नाट्य-मण्डप के तीन प्रकार होते हैं - विकृष्ट, चतुरस्त्र और त्र्यस्त्र।

प्रेक्षागृहाणां सर्वेषां त्रिप्रकारो विधिः स्मृतः।
विकृष्टश्चतुरस्त्रश्च त्र्यस्त्रश्चैव प्रयोक्तृभिः॥
त्रिविधः सन्निवेशश्च शास्त्रतः परिकल्पितः।
विकृष्टश्चतुरस्त्रश्च त्र्यस्त्रश्चैव तु मण्डपः॥

इसी प्रकार शास्त्रीय रीति से प्रेक्षागृह के तीन भेद - विकृष्ट, चतुरस्त्र और त्र्यस्त्र होते हैं।

1. विकृष्ट - वह मण्डप है जो आयत अर्थात् ऐसे चतुर्भुज के आकार के समान होता है जिसकी आमने-सामने की भुजाएँ समानान्तर एवं तुल्य होती है तथा प्रत्येक कोण समकोण होता है।

2. चतुरस्त्र - यह मण्डप वर्गाकार अर्थात् उस चतुर्भुज के आकार का होता है जिसकी चारों भुजाएँ और कोण तुल्य होते हैं।

3. त्र्यस्त्र - त्रिभुजाकार नाट्यमण्डप जिसकी तीनों भुजाएँ और कोण तुल्य होते हैं। त्र्यस्त्र कहलाता है।

त्र्यस्त्रं त्रिकोणं कर्तव्यं नाट्यवेश्म प्रयोक्तृभिः॥

प्रमाण की दृष्टि से भी नाट्यमण्डप तीन प्रकार के होते हैं - (1) ज्येष्ठ (2) मध्य और (3) कनीय

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि नाट्यशास्त्र में प्रेक्षागृह या नाट्यमण्डप को विश्वकर्मा को बनाने की आज्ञा दी गई थी। वह नाट्यमण्डप तीन प्रकार- विकृष्ट, चतुरस्त्र और त्र्यस्त्र है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- नाट्यशास्त्र - ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज 126

17. ध्वन्यालोके प्रतीयमानस्य तृतीयः प्रभेदः कः?

(A) अलङ्कारादिः **(B)** गुणादिः
(C) रसादिः **(D)** वृत्यादिः

व्याख्या- ध्वनि सम्प्रदाय के प्रतिष्ठापक आचार्य आनन्दवर्धन प्रणीत ध्वन्यालोक में चार उद्योत हैं। इसके प्रथम उद्योत में काव्यलक्षण 'काव्यस्यात्मा ध्वनिः' काव्य की आत्मा ध्वनि है, का प्रतिपादन किया गया है। इसके बाद वाच्यादि को बताते हुए प्रतीयमान को बताते हैं-

प्रतीयमानं पुनरन्यदेव वस्त्वस्ति वाणीषु महाकवीनाम्।
यत् तत् प्रसिद्धावयवातिरिक्तं विभाति लावण्यमिवाङ्ग-नासु ॥ (1/4)

प्रतीयमान कुछ और ही चीज है जो रमणियों के प्रसिद्ध (मुख, नेत्र, श्रोत्र, नासिकादि) अवयवों से भिन्न उनके लावण्य के समान, महाकवियों की सूक्तियों में वाच्य अर्थ से अलग ही भासित होता है।

1. वस्तुध्वनि का वाच्यार्थ से स्वरूपकृत भेद-

वह प्रतीयमान अर्थ वाच्य सामर्थ्य से आक्षिप्त वस्तुमात्र, अलङ्कार और रसादि भेद से अनेक प्रकार का दिखाया जायेगा।

➢ उन सभी भेदों में वह वाच्य से अलग ही है। जैसे पहला वस्तुध्वनि भेद वाच्य से अत्यन्त भिन्न है।

➢ क्योंकि कहीं वाच्य के विधिरूप होने पर भी वह प्रतीयमान निषेध रूप होता है।

उदाहरण- स हि कदाचित् वाच्ये विधिरूपे प्रतिषेधरूपः-

भ्रम धार्मिक विस्त्रब्धः स शुनकोऽद्य मारितस्तेन।
गोदावरीकच्छकुञ्जवासिना दृप्तसिंहेन ॥

पण्डित जी महाराज! गोदावरी के किनारे कुञ्ज में रहने वाले मदमत्त सिंह ने आज उस कुत्ते को मार डाला है। आप निश्चिन्त होकर घूमिये।

विशेष - इस श्लोक का वाच्यार्थ तो विधिरूप है परन्तु जो उससे प्रतीयमान अर्थ (वस्तुध्वनि) है, वह निषेधरूप है इसलिए वाच्यार्थ से प्रतीयमान अर्थ अत्यन्त भिन्न है।

क्वचिद् वाच्ये प्रतिषेधरूपे विधिरूपो यथा-

श्वश्रूरत्र निमज्जति अत्राहं दिवसकं प्रलोकय।
मा पथिक रात्र्यन्धक शय्यायां मम निमंक्ष्यसि॥

कही वाच्यार्थ प्रतिषेधरूप होने पर प्रतीयमानार्थ विधिरूप होता है- जैसे- हे पथिक! दिन में अच्छी तरह देख लो, यहाँ सास जी सोती हैं, और यहाँ मैं सोती हूँ। रात को रतौंधीग्रस्त होकर कहीं हमारी खाट पर न गिर पड़ना।

यहाँ वाच्यार्थ निषेधरूप है, परन्तु व्यङ्ग्यार्थ (प्रतीयमानार्थ) विधिरूप है।

2. अलङ्कारध्वनि का वाच्यार्थ से भेद-

इस प्रकार वाच्यार्थ से भिन्न प्रतीयमान (वस्तुध्वनि) के और भी भेद हो सकते हैं। यह तो इनका केवल दिग्दर्शनमात्र है। दूसरा अलङ्कारध्वनिरूप प्रकार भी वाच्यार्थ से भिन्न है।

3. रसध्वनि का वाच्यार्थ से भेद-

'तृतीयस्तु रसादिलक्षणः प्रभेदो वाच्यसामर्थ्याक्षिप्तः प्रकाशते ....' तीसरा रसध्वनि रसादिरूप भेद वाच्य के सामर्थ्य से आक्षिप्त होकर ही प्रकाशित होता है, साक्षात् शब्दव्यापार अभिधा, लक्षणा, तात्पर्या, शक्तिव्यापार का विषय नहीं होता, इसलिए वाच्यार्थ से भिन्न ही है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि ध्वन्यालोक में प्रतीयमान के तीन भेद हैं- वाच्य, अलङ्कार, रसध्वनि। इसलिये तृतीय प्रभेद रसध्वनि है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- ध्वन्यालोक (1.4) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज 13-18

18. राम शब्दस्य पञ्चम्येकवचनस्य विषये समुचितं कथनं नास्ति?

(A) रामात् इति रूपं सम्भवति
(B) रामाद् इति रूपम्भवति
(C) अवसाने खरः स्थाने चरो भवति
(D) अवसाने झलां चरो वा स्युः

व्याख्या- राम शब्द की सिद्धिप्रक्रिया के अन्तर्गत राम शब्द का पञ्चमी एकवचन रामात् और रामाद् रूप बनता है।

वाऽवसाने (8.4.55)- अवसाने झलां चरो वा। रामात्, रामाद्, रामाभ्याम्। रामेभ्यः।

यदि झल् प्रत्याहार में स्थित वर्ण के बाद वर्णों का अभाव (अवसान) हो तो उसके (झल् के) स्थान पर विकल्प से चर् हो जाता है। इसके फलस्वरूप दो रूप प्राप्त होते हैं, रामात् और रामाद्।

इससे स्पष्ट है कि अकारान्त राम आदि शब्दों के पञ्चमी विभक्ति के एकवचन में अन्त में आने वाले प्रत्यय 'ङसि' के स्थान में 'टाङसिँङसामिनात्स्याः' सूत्र से जो 'आत्' आता है उसके तकार के स्थान पर जब 'झलां जशोऽन्ते' से 'द्' हो जाता है तब 'वाऽवसाने' नियम के अनुसार पुनः द् को विकल्प से 'त्' होकर दोनों रूप प्राप्त होते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट होता है कि राम शब्द के पञ्चमी विभक्ति एकवचन के विषय में 'अवसाने खरः स्थाने चरो भवति' यह अशुद्ध कथन है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी, भैमी व्याख्या (भाग-1), पेज 183-187

19. वैदिकसाहित्ये अधोलिखितानां सुनिश्चितक्रमो लेख्यः-

(1) ब्राह्मणम् **(2) उपनिषद्**
(3) शुक्लयजुर्वेदः **(4) सूत्रसाहित्यम्**

अधोलिखितेषु उचितक्रमं चिनुत-

(A) 2 1 4 3
(B) 3 1 2 4
(C) 1 2 3 4
(D) 4 1 2 3

व्याख्या- ➢ वेद शब्द ज्ञानार्थक विद् धातु (विद ज्ञाने) से घञ् (अ) प्रत्यय करने पर बनता है।

➢ इसका आशय है- 'ज्ञान' अतः वेद शब्द का अर्थ होता है- ज्ञान की राशि या ज्ञान का संग्रह-ग्रन्थ।

➢ प्राचीन ऋषियों ने जो ज्ञान अपनी आर्ष दृष्टि से प्राप्त किया था, उसका संग्रह वेदों में है।

➢ संस्कृत व्याकरण के अनुसार वेद शब्द चार धातुओं से विभिन्न अर्थों में बनता है।

1. विद सत्तायाम् (होना दिवादिगण)
2. विद ज्ञाने (जानना, अदादिगण)
3. विद विचारणे (विचारना, रुधादिगण)
4. विद्ऌ लाभे (प्राप्त करना, तुदादिगण)

सत्तायां विद्यते ज्ञाने, वेत्ति विन्ते विचारणे।
विन्दति विन्दते प्राप्तौ, श्यन्लुक्श्नम्शेष्विदं क्रमात्।।

इन अर्थों का समन्वय करते हुए ऋक्प्रातिशाख्य की व्याख्या में विष्णुमित्र ने वेद का अर्थ किया है -

विद्यन्ते ज्ञायन्ते लभ्यन्ते एभिर्धर्मादिपुरुषार्था इति वेदाः।

अर्थात् वेद शब्द का भावार्थ होता है -

(1) जिन ग्रन्थों के द्वारा धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष रूपी पुरुषार्थ चतुष्टय के अस्तित्व का बोध होता है।
(2) इनसे पुरुषार्थ चतुष्टय का ज्ञान प्राप्त होता है।
(3) इनसे पुरुषार्थ चतुष्टय की प्राप्ति होती है।
(4) इनसे पुरुषार्थ चतुष्टय का विवेचन किया गया है इस प्रकार वेद पुरुषार्थ चतुष्टय के सर्वांगीण विवेचन करने वाले ग्रन्थ हैं।

आचार्य सायण ने वेद शब्द की एक अन्य व्याख्या की है-

इष्टप्राप्त्यनिष्ट-परिहारयोरलौकिकम् उपायं यो ग्रन्थो वेदयति, स वेदः।

अर्थात् जो ग्रन्थ इष्टप्राप्ति और अनिष्ट निवारण का अलौकिक उपाय बताता है उसे वेद कहते हैं।

*** वैदिक साहित्य का विभाजन-** वैदिक साहित्य को सुविधा की दृष्टि से चार भागों में बाँटा गया है-

(1) वेदों की संहिताएँ (2) ब्राह्मणग्रन्थ (3) आरण्यकग्रन्थ (4) उपनिषद्

➢ वेदों की चार संहिताएँ हैं- (1) ऋग्वेदसंहिता (2) यजुर्वेदसंहिता (3) सामवेदसंहिता (4) अथर्ववेदसंहिता

➢ यजुर्वेद संहिता में दो भाग हैं- कृष्णयजुर्वेदसंहिता तथा शुक्लयजुर्वेदसंहिता

➢ **ब्राह्मण ग्रन्थ-** ब्राह्मणग्रन्थों में मुख्यतः ऐतरेयब्राह्मण, शतपथब्राह्मण, तैत्तिरीयब्राह्मण, पंचविंशब्राह्मण, षड्विंशब्राह्मण, जैमिनीयब्राह्मण और गोपथब्राह्मण आदि प्रमुख हैं।

➢ **आरण्यकग्रन्थ-** अरण्य (जंगल) में होने वाले अध्ययन, अध्यापन, मनन, चिन्तन, शास्त्रीय चर्चा आदि आरण्यक के अन्तर्गत आते हैं। ऐतरेय, शांखायन, बृहदारण्यक, तैत्तिरीयारण्यक, तलवकार आरण्यक आदि प्रमुख हैं।

➢ **उपनिषद् ग्रन्थ-** ऐतरेयोपनिषद् , तैत्तिरीयोपनिषद्, ईशोपनिषद्, बृहदारण्यकोपनिषद्, कठोपनिषद्, केनोपनिषद्, छान्दोग्योपनिषद्, प्रश्नोपनिषद् आदि प्रमुख उपनिषद् हैं।

➢ **वेदाङ्ग-** वेदाङ्ग छः हैं- शिक्षा, व्याकरण, छन्द, निरुक्त, ज्योतिष और कल्प

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि वैदिकसाहित्य का सुनिश्चित क्रम इस प्रकार है- सर्वप्रथम शुक्लयजुर्वेदसंहिता, ब्राह्मणग्रन्थ, उपनिषद् और अन्तिम में कल्पसूत्र है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज 01

20. पैलः इति पदं विद्यते -

a गणविशेषस्यादिमः शब्दः **b पीलाया गोत्रापत्यम्**
c पैले भवा **d पैलस्य इयम्**

अधोलिखितेषु समुचितं विकल्पं चिनुत -

(A) a एवं b **(B)** c एवं d
(C) a एवं c **(D)** b एवं d

व्याख्या- (a) ''पैलादिभ्यश्च'' (2.4.59) सूत्र के अनुसार पैल आदि गण का प्रथम शब्द ''पैल'' है। पैलादि गण आकृति गण है इसमें आने वाले शब्दों की संख्या निश्चित नहीं है। इसमें से कुछ प्रसिद्ध शब्द -पैल। शालङ्कि, सात्यकि, सात्यकामि, दैवि, औदमज्जि, औदव्रजि। औदमेधि, औदबुद्धि, दैवस्थानि, पैङ्गलायनि, राणायनि, शैहक्षिति, भौलिङ्गि, औङ्गाहमानि, औज्जिहानि।

(b) ''पीलाया वा'' (4.1.118) - सूत्र के अनुसार पीला शब्द से गोत्रापत्य अर्थ में अण् प्रत्यय होता है। अण् प्रत्यय होने के कारण ''पीलायाः गोत्रापत्यम्'' इस अर्थ में ''पैलः'' शब्द बनता है।

(c), (d) ''पैले भवा'' इस अर्थ में ''तत्र भवः'' से अण् प्रत्यय होगा तथा ''पैलस्य इयम्'' में ''तस्येदम्'' सूत्र से अण् प्रत्यय होगा परन्तु उक्त दोनों विग्रहवाक्यों में ''भवा'' और ''इयम्'' शब्द दिया है फलस्वरूप स्त्रीलिङ्ग हो जाने के कारण ''पैली'' शब्द बनेगा।

स्पष्टीकरण- उक्त विवरण से स्पष्ट है कि **विकल्प 'C' सही हैं।**

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी भैमी व्याख्या (भाग-5), पेज 23

21. हरी + एतौ इत्यत्र भवतः-

a **यण् सन्धि** b **पररूपम्**

c **प्रगृह्यसंज्ञा** d **प्रकृतिभावः**

अधोलिखितेषु समुचितं विकल्पं चिनुत -

(A) a एवं b **(B)** b एवं c

(C) c एवं d **(D)** a एवं d

व्याख्या- ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम् (1.1.11)

ईदूदेदन्तं द्विवचनं प्रगृह्यं स्यात्। हरी एतौ। विष्णू इमौ। गङ्गे अमू। ईदन्त, ऊदन्त तथा एदन्त द्विवचन प्रगृह्य सञ्ज्ञक हो।

उदाहरण- हरी एतौ- (ये दो हरि अर्थात् घोड़े व बन्दर हैं।)

यहाँ रेफोत्तर ईकार ईदन्त द्विवचन हैं। इसकी इस सूत्र से प्रगृह्य संज्ञा होती है।

प्रगृह्यसंज्ञा होने से 'प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम्' सूत्र द्वारा प्रकृतिभाव हो जाता है। अतः एकार = अच् परे होने पर भी 'इको यणचि' से ईकार को यण् नहीं होता।

* **विष्णू इमौ -** (ये दो विष्णू हैं।)
* **गङ्गे अमू -** (ये दो गङ्गाएँ हैं।)

प्रकृतिभाव करने वाला सूत्र -

➢ **प्लुत-प्रगृह्या अचि नित्यम् (6.1.121)**

प्लुत और प्रगृह्यसंज्ञक अच् परे होने पर प्रकृति से रहते हैं।

उदाहरण- आगच्छ कृष्ण 3! अत्र गौश्चरति

➢ **अदसो मात् (1.1.12)-**

अदस् शब्द के मकार से परे ईत् और ऊत् प्रगृह्यसंज्ञक हों।

जैसे- अमी ईशाः

रामकृष्णावमू आसाते

➢ **ओत् (1.1.15)**

ओकार अन्त वाला निपात प्रगृह्य सञ्ज्ञक हो।

जैसे- अहो ईशाः।

➢ **सम्बुद्धौ शाकल्यस्येतावनार्षे (1.1.16)**

सम्बुद्धि निमित्तक ओकार - अवैदिक अर्थात् वेद में न पाये जाने वाले 'इति' शब्द के परे होने पर विकल्प करके प्रगृह्य संज्ञक होता है।

जैसे- विष्णो इति

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'हरी + एतौ' में प्रगृह्य संज्ञा और प्रकृतिभाव हुआ है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-1), पेज 83

22. पाणिनीयशिक्षानुसारं ऌकारस्य भेदाः सम्भवन्ति-

(A) ह्रस्वदीर्घौ **(B)** दीर्घप्लुतौ

(C) ह्रस्वप्लुतौ **(D)** ह्रस्वदीर्घप्लुताः

व्याख्या- स्वरा विंशतिरेकश्च स्पर्शानां पञ्चविंशतिः।
यादयश्च स्मृता ह्यष्टौ चत्वारश्च यमाः स्मृताः ॥4॥
अनुस्वारो विसर्गश्च ᳵक ᳶपौ चाऽपि पराश्रितौ।
दुस्स्पृष्टश्चेति विज्ञेय ऌकारः प्लुत एव च ॥5॥

स्वर बीस और (इक्कीस), स्पर्श पच्चीस, यकारादि अन्तःस्थ और ऊष्म वर्ण आठ और यम वर्ण चार, अनुस्वार (एक) विसर्ग क ख परक तथा प फ परक जिह्वामूलीय तथा उपध्मानीय वर्ण दो, दुस्स्पृष्टता को प्राप्त ऌकार (एक) जानना चाहिये।

विंशतिरेकः - 21 स्वर कौन-कौन से हैं -

ह्रस्व - अ ह्रस्व - इ ह्रस्व - उ ह्रस्व- ऋ
दीर्घ - आ दीर्घ - ई दीर्घ - ऊ दीर्घ - ॠ
प्लुत - अ३ प्लुत - इ३ प्लुत - उ३ प्लुत - ऋ३
3+ 3+ 3+ 3+
ह्रस्व ऌ - 01 = 12 + 01 = 13
दीर्घ - ए दीर्घ - ओ दीर्घ - ऐ दीर्घ - औ
प्लुत - ए३ प्लुत - ओ३ प्लुत - ऐ३ प्लुत - औ३
+2 +2 +2 +2

इस तरह कुल 13 + 08 = 21 स्वर हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि पाणिनीयशिक्षानुसार ऌकार ह्रस्व और प्लुत होगा क्योंकि ऌ का दीर्घ नहीं होता। 'ऌकारस्य दीर्घाभावात्'। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- पाणिनीय शिक्षा (4-5 श्लोक) - दामोदर महतो, पेज 6

23. जैनमतानुसारं सप्ततत्त्वानां समुचितः क्रमोऽस्ति-

(A) आस्रवः, संवरः, बन्धः, निर्जरा, जीवः, अजीवः, मोक्षः
(B) बन्धः, आस्रवः, संवरः, निर्जरा, जीवः, अजीवः, मोक्षः
(C) जीवः, अजीवः, आस्रवः, बन्धः, संवरः, निर्जरा, मोक्षः
(D) बन्धः, जीवः, अजीवः, आस्रवः, संवरः, निर्जरा, मोक्षः

व्याख्या- जैनदर्शन का अपर नाम आर्हत दर्शन है।

जैन दर्शन के तीन रत्न - (1) सम्यक् दर्शन (2) सम्यक् ज्ञान (3) सम्यक् चरित्र

'सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्ग'

तज्ज्ञानं पञ्चविधं मतिश्रुतावधिमनः पर्यायकेवलभेदेन।

वह ज्ञान- (1) मति (2) श्रुत (3) अवधि (4) मनः पर्याय (5) केवल, इन भेदों के कारण पाँच प्रकार का है।

जैन तत्त्व-मीमांसा -

तावज्जीवाजीवाख्ये द्वे तत्त्वे स्तः। तत्र बोधात्मको जीवः। अबोधात्मस्त्वजीवः।

जीव और अजीव नामक दो तत्त्व हैं। उनमें ज्ञान के रूप में जीव है और अज्ञान के रूप में अजीव है।

सात तत्त्व -

जीवाजीवास्त्रवबन्धसम्वरनिर्जरमोक्षास्तत्त्वानि इति।

जीव, अजीव, आस्रव, बन्ध, संवर, निर्जरा और मोक्ष ये तत्त्व हैं।

सप्तभङ्गीनय -

सप्तभङ्गिनयाख्यं न्यायमवतारयन्ति जैनाः।

स्यादस्ति, स्यान्नास्ति, स्यादस्ति च नास्ति च, स्यादवक्तव्यः, स्यादस्ति चावक्तव्यः, स्यान्नास्ति चावक्तव्यः, स्यादस्ति च नास्ति चावक्तव्यः इति।

जैन लोग सर्वत्र सप्तभङ्गी-नय उपस्थित करते हैं।

1. स्यादस्ति - किसी प्रकार है।
2. स्यान्नास्ति - किसी प्रकार नहीं है।
3. स्यादस्ति च नास्ति च - किसी प्रकार है और नहीं है।
4. स्यादवक्तव्यः - किसी प्रकार अवर्णनीय है।
5. स्यादस्ति चावक्तव्यः - किसी प्रकार है और अवर्णनीय है।
6. स्यान्नास्ति चावक्तव्यः - किसी प्रकार नहीं है और अवर्णनीय है।
7. स्यादस्ति च नास्ति चावक्तव्यः - किसी प्रकार है, नहीं है और अवर्णनीय है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि जैनमतानुसार सप्त तत्त्व हैं क्रमशः जीव, अजीव, आस्रवः, बन्धः, संवरः, निर्जरा, मोक्ष है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- सर्वदर्शनसंग्रह - उमाशंकर शर्मा, ऋषि, पेज 135

24. पूर्ववर्ती आचार्यस्य प्राथम्येन कालक्रमानुसारमुचितमुत्तरं निर्दिशत-

(a) क्षेमेन्द्रः **(b) अभिनवगुप्तः**

(c) भरतः **(d) रुय्यकः**

एषु क्रमं चिनुत-

(A) d c b a

(B) c b a d

(C) a d b c

(D) b d c a

व्याख्या-

आचार्य	कालक्रम	ग्रन्थ
भरतमुनि	300 ई.	नाट्यशास्त्र
अभिनवगुप्त	980-1010ई.	तन्त्रालोक
क्षेमेन्द्र	1000-1070ई.	औचित्यविचारचर्चा
रुय्यक	1100-50ई.	अलङ्कारसर्वस्व
भामह	500 ई. लगभग	काव्यालङ्कार
आनन्दवर्धन	9वीं शताब्दी उत्तरार्ध	ध्वन्यालोक
रुद्रट	9वीं शताब्दी पूर्वार्द्ध	काव्यालङ्कार
दण्डी	7वीं शताब्दी	काव्यादर्श
वामन	800-850 ई. लगभग	काव्यालङ्कारसूत्र
उद्भट	8वीं शताब्दी उत्तरार्द्ध	काव्यालङ्कारसारसंग्रह
धनञ्जय	10वीं शताब्दी उत्तरार्द्ध	दशरूपक
कुन्तक	11वीं शताब्दी पूर्वार्द्ध	वक्रोक्तिजीवितम्
मम्मट	1050ई. लगभग	काव्यप्रकाश
भोजराज	11वीं शताब्दी लगभग	सरस्वतीकण्ठाभरण
विश्वनाथ	14वीं शताब्दी	साहित्यदर्पण
पण्डितराज जगन्नाथ	17वीं शताब्दी	रसगङ्गाधर

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि आचार्यों का सही क्रम-भरत, अभिनवगुप्त, क्षेमेन्द्र, रुय्यक है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा ऋषि, पेज 577,581,583,584

25. भर्तृहरेः कृती इमे -

a दीपिका **b प्रदीपः**

c द्योतनम् **d वाक्यपदीयम्**

अधोलिखितेषु समुचितं विकल्पं चिनुत -

(A) a एवं b **(B)** b एवं c

(C) a एवं d **(D)** b एवं d

व्याख्या- पाणिनि की अष्टाध्यायी के सूत्रों पर कात्यायनादि द्वारा प्रणीत वार्त्तिकों के आधार पर विशिष्ट शैली में लिखा गया व्याख्यान ग्रन्थ महाभाष्य नाम से प्रसिद्ध है।

सूत्रार्थो वर्ण्यते यत्र वाक्यैः सूत्रानुसारिभिः।

स्वपदानि च वर्ण्यन्ते भाष्यं भाष्यविदो विदुः॥

➢ इसका विभाजन आह्निकों में है - 'अह्ना निवृत्तम् आह्निकम्'-

इस व्युत्पत्ति से यह प्रतीत होता है कि एक-एक दिन के अध्यापनीय या अध्यापित विषय का संग्रह एक-एक आह्निक में किया गया है।

➢ प्रथम आह्निक भूमिकात्मक है और इसे 'पस्पशा' नाम से कहा जाता है।

➢ प्रथम आह्निक में मुख्य रूप से शब्द का स्वरूप, व्याकरणाध्ययन के प्रयोजन, शब्दानुशासन की पद्धति, शब्द-अर्थ-सम्बन्ध की नित्यता, व्याकरणशास्त्र द्वारा नियम का बोधन, अप्रयुक्त शब्दों के भी अन्वाख्यान की आवश्यकता, शुद्ध शब्दों के ज्ञान में धर्म की उत्पत्ति, व्याकरण पद का अर्थ और अइउण् आदि वर्णसमाम्नाय के उपदेश के प्रयोजन प्रतिपादित हैं।

महाभाष्य की व्याख्याएँ -

दीपिका -

➢ भर्तृहरि की 'महाभाष्यदीपिका' ही सबसे प्राचीन मानी जाती है।
➢ भर्तृहरि की 'दीपिका' प्रारम्भिक तीन आह्निकों पर ही प्रकाशित है।
➢ वाक्यपदीय भी भर्तृहरि की अमर कृति है।
➢ वाक्यपदीयम् में ब्रह्मकाण्ड, वाक्यकाण्ड और पदकाण्ड तीन काण्ड हैं।
➢ भर्तृहरि का समय चतुर्थ और पञ्चम शती के मध्य माना जाता है।
➢ जैय्यट पुत्र कैयट का 'प्रदीप' व्याख्यान सर्वातिशयी है। यह पूरे महाभाष्य पर लिखा गया है।

➢ कैयटकृत 'प्रदीप' टीका पर विद्वानों ने अनेक व्याख्याएँ लिखीं। जिनकी संख्या 15 है। इनमें नागेशभट्ट कृत उद्द्योत सर्वश्रेष्ठ और अत्यन्त गम्भीर है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि भर्तृहरि की दो कृतियाँ-दीपिका और वाक्यपदीयम् हैं। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्त्रोत- महाभाष्यम् - जयशङ्करलाल त्रिपाठी, पेज भू. 06

26. अधोऽङ्कितानां केन सह कस्य सम्बन्धः?

(a) प्रत्यक्षमेव प्रमाणम्	**(i) जैनाः**		
(b) सप्तभङ्गिनयः	**(ii) सांख्यदर्शनम्**		
(c) हेत्वाभासाः	**(iii) चार्वाकाः**		
(d) सत्कार्यवादः	**(iv) नैयायिकाः**		

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत -

(A)	4	1	3	2
(B)	3	1	4	2
(C)	2	4	3	1
(D)	1	3	2	4

व्याख्या- * दर्शन शब्द दृश् धातु से ल्युट् प्रत्यय करने से निष्पन्न होता है। दर्शन शब्द का अर्थ है- जिसके द्वारा किसी वस्तु को देखा या समझा जाय।

* भारतीयदर्शन की दो शाखाएँ हैं- आस्तिक तथा नास्तिक
* जो दर्शन वेदों को प्रमाण रूप में स्वीकार करते हैं, उन्हें आस्तिक दर्शन कहते हैं जिनमें सांख्य, योग, न्याय-वैशेषिक पूर्वमीमांसा एवं उत्तरमीमांसा (वेदान्त) की गणना करते हैं।
* जो दर्शन वेदों को प्रमाण रूप में स्वीकार नहीं करते हैं उन्हें नास्तिक दर्शन कहते हैं। जिनमें चार्वाक, बौद्ध, जैन प्रमुख रूप से हैं।
* सांख्य-योग, न्याय-वैशेषिक, पूर्व मीमांसा-उत्तरमीमांसा इन्हें षड्दर्शन भी कहते हैं।

➢ **चार्वाकदर्शन -** चार्वाकदर्शन को 'लोकायत' के नाम से भी जाना जाता है।

* चार्वाकदर्शन में चार महाभूत तत्त्व हैं - पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु।
* यह दर्शन प्रत्यक्षमात्र को ही प्रमाण मानता है। 'प्रत्यक्षमेव प्रमाणम्'

➢ **जैन दर्शन -**

* जैन दर्शन को आर्हत दर्शन के नाम से भी जाना जाता है।
* जैन दर्शन दो तत्त्व मानता है - जीव और अजीव
* जैन दर्शन में त्रिरत्न हैं - सम्यग्दर्शन, सम्यक् ज्ञान, सम्यक् चरित्र। 'सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्ग।'
* सप्त भङ्गीनय है - स्यादस्ति, स्यान्नास्ति, स्यादस्ति च नास्ति च, स्यादवक्तव्यः, स्यादस्ति चावक्तव्यः, स्यान्नास्ति चावक्तव्यः, स्यादस्ति च नास्ति चावक्तव्यः। 'सप्तभङ्गिनयाख्यं न्यायमवतारयन्ति जैनाः।'

➢ **न्यायदर्शन -** न्यायदर्शन का प्रथम ग्रन्थ न्यायसूत्र है, जिसमें पाँच अध्याय हैं। इसके प्रणेता गौतम हैं।

* न्यायदर्शन में सोलह पदार्थों के ज्ञान से मोक्षप्राप्ति बताई गई है।
* न्यायदर्शन चार प्रमाण मानता है- प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द। 'तच्चतुर्विधं प्रत्यक्षानुमानोपमानशब्दभेदात्।'
* न्यायदर्शन में पाँच प्रकार के हेत्वाभास माने गये हैं- सव्यभिचार, विरुद्ध, प्रकरणसम, असिद्ध और बाधित

हेत्वाभासः पञ्चविधः - सव्यभिचार-विरुद्ध-प्रकरणसम-असिद्धबाधितभेदात्।

➤ **सांख्यदर्शन-** सांख्यदर्शन के प्रणेता कपिलमुनि हैं। सांख्यदर्शन का प्रकरणग्रन्थ सांख्यकारिका है, जिसके प्रणेता आचार्य ईश्वरकृष्ण हैं।

* सांख्यदर्शन तीन प्रमाण मानता है- प्रत्यक्ष, अनुमान, आगम
दृष्टमनुमानमाप्तवचनं च सर्वप्रमाणसिद्धत्वात् ।
त्रिविधं प्रमाणमिष्टं प्रमेयसिद्धिः प्रमाणाद्धि॥ (सा. का. 04)

* सांख्यदर्शन सत्कार्यवाद मानता है-
असदकरणादुपादानग्रहणात्सर्वसम्भवाभावात् ।
शक्तस्य शक्यकरणात्कारणभावाच्च सत्कार्यम् ॥
(सा. का. 09)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि **विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- सर्वदर्शनसंग्रह- उमाशङ्कर शर्मा ऋषि, पेज 04,146,545, 403

27. संस्कृत-आलोचनापरम्परायां वाल्मीकिरामायणं कीदृशं काव्यं मन्यन्ते?

(A) अरससिद्धकाव्यम् **(B)** सिद्धरसकाव्यम्
(C) असिद्धरसकाव्यम् **(D)** सिद्धासिद्धरसकाव्यम्

व्याख्या- आचार्य आनन्दवर्धन प्रणीत ध्वन्यालोक के प्रथम उद्योत में (कहे गये प्रकार से) ध्वनि के दो भेद बताये हैं - इनके निरूपण के अनन्तर द्वितीयोद्योत में व्यङ्ग्य की दृष्टि से ही भेदपूर्वक ध्वनि के निरूपण के बाद ध्वनिकार पुनः तीसरे उद्योत में व्यञ्जक की दृष्टि से ध्वनि के स्वरूप का निरूपण करते हैं।

प्रबन्ध के रसाभिव्यञ्जकत्व का प्रथम हेतु -

सन्ति सिद्धरसप्रख्या ये च रामायणादयः।
कथाश्रया न तैर्योज्या स्वेच्छा रसविरोधिनी॥

सिद्धरस के समान रामायण आदि जो कथा के आश्रय हैं, उनमें स्वेच्छा का प्रयोग नहीं करना चाहिये, क्योंकि स्वेच्छा रस की विरोधिनी होती है।

'सिद्धरसप्रख्या' पद के सिद्ध शब्द का अर्थ है कि वे केवल आस्वादन के ही योग्य हैं। उनमें रस भावनीय नहीं है। कथाओं के आश्रय इतिहास हैं। उन इतिहासों के अर्थों के साथ स्वेच्छा को नहीं जोड़ना चाहिए।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि संस्कृत आलोचना परम्परा में वाल्मीकिरामायण को 'सिद्धरस काव्य' माना जाता है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- ध्वन्यालोक (तृतीय उद्योत) - शिवप्रसाद द्विवेदी, पेज 401

28. रथाङ्गपाणेः पटलेन रोचिषामृषित्विषः संवलिता विरेजिरे।
चलत्पलाशान्तरगोचरास्तरोस्तुषारमूर्तेरिव नक्तमंशवः॥
अस्मिन् श्लोके 'तुषारमूर्तिः' इति शब्दः कस्य वाचकः?

(A) सूर्यस्य **(B)** चन्द्रस्य
(C) श्रीकृष्णस्य **(D)** रथस्य

व्याख्या- महाकवि माघ द्वारा प्रणीत एकमात्र महाकाव्य शिशुपालवधम् बृहत्त्रयी के अन्तर्गत आता है। शिशुपालवध महाकाव्य बीस सर्गात्मक है। जिसके प्रथम सर्ग में नारद जी की कान्ति की हरि के श्यामल किरणों से मिश्रित होने का वर्णन किया गया है -

रथाङ्गपाणेः पटलेन रोचिषामृषित्विषः संवलिता विरेजिरे।
चलत्पलाशान्तरगोचरास्तरोः तुषारमूर्तेरिव नक्तमंशवः॥ (1/21)

चक्रपाणि (श्रीकृष्ण) के कान्तिपुञ्ज से मिली हुई मुनि की किरणें रात्रि में हिलते-डुलते पत्तों के बीच में पड़ने वाली चन्द्र किरणों की तरह सुशोभित हुई।

टिप्पणी -

रथाङ्गपाणेः - हाथ में चक्र धारण करने वाले (श्रीकृष्ण)
ऋषित्विषः - नारद जी की आभायें
नक्तम् - रात में
तुषारमूर्तेः - हिम शरीर वाले चन्द्रमा की
अंशवः - किरणें
विरेजिरे - सुशोभित हुई

अन्य विशेषण -

वसुदेवसद्मनि - वसुदेव के घर में
हिरण्यगर्भाङ्गभुवम् - ब्रह्मा के पुत्र
मुनिम् - नारद को
अनूरुसारथेः - सूर्य
व्रततीततीः - लताओं के समूहों
धराधरेन्द्रम् - हिमालय
शितिवाससः - बलभद्र जी (बलराम)
हिमशुभ्रम् - तुषार के समान गौर
घनान्ते - शरद् ऋतु में
नागेन्द्रम् - गजराज
महती - नारद की वीणा का नाम
तपोनिधिः - नारद
अच्युतः - कृष्ण

देवकीसुतं - श्रीकृष्ण
धातुश्चरणौ - नारद जी के चरणों में
आदिपूरुषः - श्रीकृष्ण
तप्तकार्तस्वर - तपे सोने के समान
पुण्डरीकाक्षः - श्रीकृष्ण
कैटभद्विषः - कैटभ नामक असुर के शत्रु
भानुना - सूर्य
विष्टरे - आसन पर
व्रती - नियमी, तपस्वी (नारद)
पुराविदः - प्राचीन तत्त्व को जानने वाले (कपिल आदि मुनि)
ओकसः - गृह का
हेलया - अनायास, खेल-खेल में
धरित्री - पृथ्वी
त्रिदिवात् - स्वर्ग से
विश्वम्भर - श्रीकृष्ण से
रवेः ऋते - सूर्य के बिना
उपेन्द्र - श्रीकृष्ण
अहिद्विषः - इन्द्र का
तपनद्युति - सूर्य सदृश तेजस्वी
द्युसदाम् - स्वर्ग में रहने वाले देवताओं के
पिनाकिनः - शङ्करः
नमुचिद्विषा - इन्द्र से
कौशिकः - इन्द्र अथवा उल्लू
स्पष्टीकरण - उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'तुषारमूर्तेः' शब्द का अर्थ 'चन्द्रमा' है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**
स्रोत- शिशुपालवधम् (1/21)

29. (A) स किंसखा साधु न शास्ति यो नृपम्। इयं पंक्तिः भारवेः किरातार्जुनीयादुद्धृतोऽस्ति।
(R) वनेचरः युधिष्ठिरं प्रति दुर्योधनस्य सत्यं वृत्तान्तमवबोध-यितुं वदति अधोलिखितेषु उचितं कारणं लिखत-
(A) (A) कथनं मित्रस्य साधुशीलतां प्रमाणी करोति
(R) कथनं वनेचरस्य स्वामिनः वञ्चनां निषेधयति
(B) (A) कथने नृपस्य स्वरूपं वर्णितमस्ति
(R) कथने दुर्योधनं प्रति वनेचरस्य सहृदयता ज्ञायते
(C) (A) कथने सः पदेन वनेचरः नृपम् पदेन सुयोधनं कथितमस्ति।
(R) कथनेन सुयोधनं प्रति सेवाभावोऽस्ति।
(D) (A) कथने सखा वनेचर अस्ति
(R) वनेचरः युधिष्ठिरं सत्यं वृत्तान्तं न कथयति

व्याख्या- महाकवि भारविप्रणीत किरातार्जुनीयम् महाकाव्य बृहत्त्रयी के अन्तर्गत परिगणित अठारह सर्गों वाला महाकाव्य है। जिसके नायक अर्जुन और नायिका द्रौपदी है।

राजा युधिष्ठिर के द्वारा नियुक्त ब्रह्मचारी वेश वाला वनेचर दुर्योधन के राज्यकार्यों को जानकर आया है और कहता है-

स किंसखा साधु न शास्ति योऽधिपं
हितान्न यः संशृणुते स किम्प्रभुः।
सदाऽनुकूलेषु हि कुर्वते रतिं
नृपेष्वमात्येषु च सर्वसम्पदः (॥1/5॥)

जो राजा को समुचित उपदेश नहीं देता है क्या वह मित्र है? (कभी नहीं) अथवा वह कुत्सित मित्र है। इसी प्रकार जो शुभाकांक्षी व्यक्ति से सदुपदेश नहीं सुनता है क्या वह प्रभु है? (कभी नहीं) अथवा वह निन्दनीय नरेश है। क्योंकि राजाओं तथा सचिवों के परस्पर अनुकूल रहने पर ही समग्र सम्पत्तियाँ सदैव अनुराग करती हैं। (अन्यथा नहीं)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त पंक्ति से स्पष्ट होता है कि वनेचर कथन (A) में मित्र की साधुशीलता को प्रमाणित कर रहा है। और कथन (R) में स्वामी को धोखा नहीं देना चाहिये या झूठ नहीं बोलना चाहिये। धोखा देने का निषेध कर रहा है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**
स्रोत- किरातार्जुनीयम् (1/5)

30. वेदान्तसारानुसारं तत्त्वमसि इत्यत्र अखण्डार्थबोधक-सम्बन्धः कतिविधः?
(A) चतुर्विधः **(B)** त्रिविधः
(C) द्विविधः **(D)** पञ्चविधः

व्याख्या- आचार्य बादरायणकृत ब्रह्मसूत्र वेदान्त या उत्तरमीमांसा का आधारग्रन्थ है। इसी का दूसरा नाम वेदान्तसूत्र भी है।
* ब्रह्मसूत्र पर लिखा गया आचार्य शङ्कर का 'शारीरकभाष्य' इस दर्शन का अद्भुत ग्रन्थ माना गया है।
* प्रस्थानत्रयी के नाम से प्रसिद्ध उपनिषद्, गीता एवं ब्रह्मसूत्र सभी वेदान्त सम्प्रदायों के प्रमुख आधार ग्रन्थ हैं।
* ब्रह्म और जीव का ऐक्य प्रतिपादन करना ही इस दर्शन का मुख्य उद्देश्य रहा है।

➢ महावाक्य के अर्थ का वर्णन किया जा रहा है-

यह 'तत्त्वमसि' (वह तू है) इत्यादि वाक्य तीन सम्बन्धों से अखण्ड अर्थ का बोध कराने वाला होता है। वे तीन सम्बन्ध

वस्तुतः दो पदों का समानाधिकरण्य सम्बन्ध, दो पदों के अर्थों का विशेषणविशेष्यभाव सम्बन्ध एवं आन्तरिक आत्मा तथा उसको बताने वाले लक्षण दोनों में लक्ष्यलक्षणभाव सम्बन्ध है।

अथ महावाक्यार्थो वर्ण्यते। इदं तत्त्वमसीतिवाक्यं सम्बन्धत्रयेणाखण्डार्थबोधकं भवति। सम्बन्धत्रयं नाम पदयोः समानाधिकरण्यं पदार्थयोर्विशेषणविशेष्यभावः प्रत्यगात्मलक्षणयोर्लक्ष्यलक्षणभावश्चेति। तदुक्तम् -

समानाधिकरण्यं च विशेषणविशेष्यता
लक्ष्यलक्षणसम्बन्धः पदार्थप्रत्यगात्मनाम् ॥ इति

* वेदान्त में चार महावाक्यों की चर्चा की गयी है-

(i) प्रज्ञानं ब्रह्म (एतरेयोपनिषद् -5)
(ii) तत्त्वमसि (छान्दोग्योपनिषद् -6.8.7)
(iii) अहं ब्रह्मास्मि (बृहदारण्यकोपनिषद् 1.4.10)
(iv) अयमात्मा ब्रह्म (माण्डूक्य 02)

➤ यहाँ लक्ष्यलक्षणसम्बन्ध को 'भागलक्षणा' भी कहा जाता है।
➤ लक्षणा तीन प्रकार से होती है-

(i) जहत् लक्षणा (ii) अजहत् लक्षणा (iii) जहत् अजहत् लक्षणा। इसी को भागलक्षणा भी कहा गया है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि तत्त्वमसि अखण्डार्थबोधक सम्बन्ध तीन प्रकार से सम्बद्ध है।

अतः विकल्प 'B' सही है।

स्रोत- वेदान्तसार - राकेश शास्त्री, पेज 232-233

31. रामायणस्य बालकाण्डस्य सर्गानुसारम् उपाख्यानानां समुचितः क्रमोऽस्ति -

(A) शुनःशेपाख्यानम्-ऋष्यशृङ्गाख्यानम्-क्रौञ्चवधाख्यानम्-अहिल्योद्धाराख्यानम्
(B) क्रौञ्चवधाख्यानम्-ऋष्यशृङ्गाख्यानम्-अहिल्योद्धाराख्यानम्-शुनःशेपाख्यानम्
(C) क्रौञ्चवधाख्यानम्-शुनःशेपाख्यानम्-अहिल्योद्धाराख्यानम्-ऋष्यशृङ्गाख्यानम्
(D) ऋष्यशृङ्गाख्यानम्-शुनःशेपाख्यानम्-अहिल्योद्धाराख्यानम्-क्रौञ्चवधाख्यानम्

व्याख्या- * यह काव्य का आदिरूप है जिसकी रचना महर्षि वाल्मीकि ने की थी। वाल्मीकि को आदिकवि कहा गया है।

* रामायण सात काण्डों में विभक्त है -

बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, युद्धकाण्ड और उत्तरकाण्ड।

* प्रत्येक काण्ड सर्गों में विभक्त है। इस काव्य में सर्वाधिक संख्या अनुष्टुप् छन्द की है, जिसे श्लोक भी कहा जाता है।
* सम्पूर्ण ग्रन्थ में 24 सहस्र पद्य या श्लोक हैं। इसीलिए इसे 'चतुर्विंशतिसाहस्री संहिता' कहते हैं।

➤ **बालकाण्ड -**

* नारद जी का वाल्मीकि मुनि को संक्षेप से श्रीरामचरित्र सुनाना
* रामायण काव्य का उपक्रम तमसा के तट पर क्रौञ्चवध से सन्तप्त हुए महर्षि वाल्मीकि के शोक का श्लोकरूप में प्रकट होना तथा ब्रह्मा जी का उन्हें रामचरित्रमय काव्य के निर्माण का आदेश देना।
* सुमन्त्र का राजा को ऋष्यशृङ्ग मुनि को बुलाने की सलाह देते हुए उनके अङ्ग देश में जाने और शान्ता से विवाह करने का प्रसङ्ग सुनाना।
* गङ्गावतरण के उपाख्यान की महिमा
* श्रीराम के द्वारा अहल्या का उद्धार
* विश्वामित्र द्वारा शुनःशेप की रक्षा का सफल प्रयत्न
* विश्वामित्र ऋषि एवं महर्षि पद की प्राप्ति मेनका द्वारा उनका तपोभङ्ग तथा बह्मर्षि पद की प्राप्ति के लिए उनकी घोर तपस्या
* श्रीराम द्वारा धनुर्भङ्ग चारों भाइयों का विवाह
* श्रीराम का वैष्णव धनुष को चढ़ाकर अमोघ बाण के द्वारा परशुराम के तपःप्राप्त पुण्यलोकों का नाश करना तथा परशुराम का महेन्द्र पर्वत को लौट जाना
* राजा दशरथ का पुत्रों और वधुओं के साथ अयोध्या में प्रवेश।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि रामायण के बालकाण्ड में सर्गानुसार उपाख्यान क्रमशः हैं- क्रौञ्चवध उपाख्यान, ऋष्यशृङ्ग उपाख्यान, अहल्या उपाख्यान तत्पश्चात् शुनःशेप आख्यान है।

अतः विकल्प 'B' सही है।

स्रोत - रामायण (प्रथम खण्ड), पेज 10, 12, 13

32. 'क्लेशकर्मविपाकाशयैरपरामृष्टः पुरुषविशेष ईश्वरः' इति कथनमस्ति-

(A) साङ्ख्यदर्शने **(B)** योगदर्शने
(C) मीमांसादर्शने **(D)** वैशेषिकदर्शने

व्याख्या- * योगदर्शन के प्रणेता महर्षि पतञ्जलि हैं।

* योग शब्द 'युज् + घञ्' से बना है, जिसका अर्थ है- समाधि।

* योगसूत्र के लेखक महर्षि पतञ्जलि हैं।
* योग को 'सेश्वरसांख्य' कहा जाता है क्योंकि यह ईश्वर तत्त्व को मानता है।
* योगसूत्र में चार पाद हैं- समाधिपाद - 51 सूत्र, साधनपाद- 55 सूत्र, विभूतिपाद - 55 और कैवल्यपाद - 34 सूत्र कुल 195 सूत्र हैं।
* योगदर्शन में पदार्थों (तत्त्वों) की संख्या 26 है।
* योगदर्शन में 26वाँ पदार्थ है 'ईश्वर', जिसको बताया जा रहा है-

'क्लेशकर्मविपाकाशयैरपरामृष्टः पुरुषविशेष ईश्वरः।' (1/24)

* ईश्वर, क्लेश, कर्म, विपाक और आशय (वासनाओं) के परामर्श से रहित एक विशेष प्रकार का पुरुष है। अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश 'क्लेश' हैं। धर्म और अधर्म 'कर्म' है। कर्म का फल 'विपाक' है। उस विपाक से बनने वाले संस्कार 'वासना' कहलाते हैं, वही 'आशय' है। ये चारों बुद्धि में रहते हुए पुरुष में वर्तमान कहे जाते हैं और पुरुष बुद्धिगत फल का भोक्ता कहा जाता है जो पुरुष विशेष इस भोग से भी अपरामृष्ट है, वही ईश्वर है।
* योगदर्शन में तीन प्रमाण माने गये हैं -
  प्रत्यक्ष, अनुमान और आगम ये तीन प्रमाण हैं।
  'प्रत्यक्षानुमानागमाः प्रमाणानि' (1/7)
* योगदर्शन में पाँच वृत्तियों की चर्चा की गयी है -
  प्रमाण, विपर्यय, विकल्प, निद्रा और स्मृति ये पाँच वृत्तियाँ हैं।
  'प्रमाणविपर्ययविकल्पनिद्रास्मृतयः' (1/6)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'क्लेशकर्मविपाकाशयैरपरामृष्टः पुरुषविशेष ईश्वरः' यह योगदर्शन का कथन है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- पातञ्जलयोगदर्शन (1/24)-सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पेज 80

33. ननु तन्तुसम्बन्ध इव तुर्यादिसम्बन्धोऽपि पटस्य विद्यते, तत्कथं तन्तुष्वेव पटः समवेतो जायते, न तुर्यादिषु? सत्यम् द्विविधः सम्बन्धः संयोगः समवायश्चेति। तत्रायुतसिद्धयोः सम्बन्धः समवायः, अन्ययोस्तु संयोग एव।

अत्र उचितमुत्तरं चिनुत -

(A) तन्तुः पटस्य समवायिकारण, अयुतसिद्धत्वात्
(B) न तन्तुः पटस्य समवायिकारणम्, अयुतसिद्धत्वात्
(C) तन्तुः पटस्य असमवायिकारणम्, अयुतसिद्धत्वात्
(D) तुर्यादि पटस्य समवायिकारणम्, अयुतसिद्धत्वात्

व्याख्या- उक्त वाक्य तर्कभाषा ग्रन्थ में 'कारण' का विशद वर्णन देते हुए कहा गया है। इस वाक्य में 'समवाय' और 'संयोग' सम्बन्ध में भेद बताया गया है। सामान्यतः हम जिन दो पदार्थों को एक दूसरे से कभी अलग नहीं कर सकते, उनमें समवाय सम्बन्ध होता है। जैसे 'घड़ा और मिट्टी' 'कपड़ा और धागा' इनके सम्बन्ध को अलग नहीं किया जा सकता तथा जिन दो पदार्थों में सम्बन्ध को इच्छानुसार दूर किया जा सकता है उनमें संयोग सम्बन्ध होता है। जैसे- 'मेज और पुस्तक' इत्यादि।

न्यायदर्शन के अनुसार कारण तीन प्रकार के होते हैं। (1) समवायिकारण (2) असमवायिकारण (3) निमित्तकारण।

(1) समवायिकारण वह कारण होता है जो कार्य में नित्य रूप से सम्बद्ध होकर रहता है। जैसे घट का समवायिकारण मिट्टी, कपाल इत्यादि, पट (कपड़ा) का कारण तन्तु (धागे)। समवायिकारण हमेशा कोई न कोई द्रव्य ही होता है।

(2) यदि गुण या क्रिया को कारण के रूप में बताया जाता है तो वह असमवायिकारण ही होता है। जैसे घट के प्रति 'कपाल-संयोग' तथा पट के प्रति 'तन्तुसंयोग' इत्यादि।

(3) कार्य के निर्माण होने में जो साधनरूप सहायक होते हैं वे निमित्त कारण कहलाते हैं जैसे घट रूपी कार्य के निर्माण में 'चाक, दण्ड, चीवर' इत्यादि तथा पट रूपी कार्य के निर्माण में 'तुरी, वेमा' इत्यादि।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि 'तन्तु पट का समवायि कारण है'। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- तर्कभाषा-गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज 30

34. ऋग्वेदसंहिताया वैशिष्ट्यमस्ति -

(A) यज्ञवर्णनम् **(B)** देवस्तुतिः
(C) स्मार्तकार्यम् **(D)** वास्तुनिर्देशः

व्याख्या- **ऋग्वेद-संहिता**

ऋक् का अर्थ -

* ऋक् का अर्थ है- स्तुतिपरक मन्त्र **ऋच्यते स्तूयतेऽनया इति ऋक्।**
* जिन मन्त्रों के द्वारा देवों की स्तुति की जाती है, उन्हें ऋक् कहते हैं।
* ऋग्वेद में विभिन्न देवों की स्तुति वाले मन्त्र हैं, अतः इसे ऋग्वेद कहते हैं।
* इन मन्त्रों के द्वारा देवों का आह्वान किया जाता है।

* ऐसी ऋचाओं के संग्रह के कारण इसे ऋग्वेदसंहिता कहते हैं।

* संहिता शब्द संकलन या संग्रह का बोधक है।

* ब्राह्मणग्रन्थों में ऋक्, यजुः और साम शब्दों की आध्यात्मिक और दार्शनिक व्याख्या प्रस्तुत की गयी है।

* ऋक् भूलोक है (अग्नि देवता प्रधान)

* यजुः अन्तरिक्षलोक है। (वायु देवता प्रधान)

* साम द्युलोक है (सूर्य देवता प्रधान)

* अग्नि से ऋग्वेद, वायु से यजुर्वेद और सूर्य से सामवेद की उत्पत्ति बतायी गयी है।

* ऋग्वेद वाक्तत्त्व (ज्ञानतत्त्व या विचारतत्त्व) का संकलन है।

* यजुर्वेद मनस्तत्त्व (चिन्तन, कर्मपक्ष, कर्मकाण्ड, संकल्प) का संग्रह है तथा सामवेद प्राणतत्त्व का संग्रह है।

* इन तीनों तत्त्वों के समन्वय से ब्रह्म की प्राप्ति होती है।

* वैदिक यज्ञ में चारों वेदों के प्रतिनिधि के रूप में चार ऋत्विज् होते हैं। ऋग्वेद में इन चारों ऋत्विजों के कर्तव्यों का निर्देश है।

* यज्ञ में चार ऋत्विज् होते हैं- (1) होता (2) उद्गाता (3) अध्वर्यु (4) ब्रह्मा

* **होता -** यह ऋग्वेद का प्रतिनिधित्व करता है। यज्ञ में ऋग्वेद के मन्त्रों का पाठ करता है।

* ऐसी देवस्तुति वाली ऋचाओं का पारिभाषिक नाम शस्त्र है।

* **उद्गाता -** यह सामवेद का प्रतिनिधित्व करता है। यह यज्ञ में देवस्तुति में सामवेद के मन्त्रों का गान करता है।

* **अध्वर्यु -** इसका सम्बन्ध यजुर्वेद से है। यह यज्ञ के विविध कर्मों का निष्पादक है। यह प्रमुख ऋत्विज् है।

* यज्ञ में घृत की आहुति देना आदि इसका ही कार्य है।

* **ब्रह्मा -** यह अथर्ववेद का प्रतिनिधित्व करता है। यह यज्ञ का अधिष्ठाता और संचालक होता है।

ऋग्वेद का महत्त्व -

* चारों वेदों में ऋग्वेद सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण और आदरणीय माना जाता है। ऋग्वेद सबसे प्राचीन है।

* इसमें अधिकांश देव, इन्द्र, विष्णु, मरुत् आदि प्राकृतिक तत्त्वों के प्रतिनिधि हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि ऋग्वेदसंहिता का वैशिष्ट्य 'देवों की स्तुति' करना है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 44

35. अधस्तनेषु केन सह कस्य सम्बन्धः?

(क) शिक्षा (i) पादव्यवस्था

(ख) कल्प (ii) शब्दानुशासनम्

(ग) व्याकरणम् (iii) यज्ञविधानविमर्शः

(घ) छन्द (iv) वर्णस्वरमात्रादिविमर्शः

समुचितां तालिकां चिनुत -

	क	ख	ग	घ
(A)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(B)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)
(C)	(ii)	(i)	(iv)	(iii)
(D)	(iii)	(i)	(iv)	(ii)

व्याख्या- * वेदाङ्ग शब्द का अर्थ- वेद के अङ्ग का अर्थ है- वे उपकारक तत्त्व जिनसे वस्तु के स्वरूप का बोध होता है।

* वेदों के गूढ़ एवं वास्तविक अर्थों को जानने के लिए जिन सहायक तत्त्वों की आवश्यकता होती है, उन्हें वेदाङ्ग कहते हैं।

वेदाङ्गों की संख्या और उनके नाम-

वेदाङ्ग छः हैं - शिक्षा, व्याकरण, छन्द, निरुक्त, ज्योतिष और कल्प।

शिक्षा व्याकरणं छन्दो निरुक्तं ज्योतिषं तथा।
कल्पश्चेति षडङ्गानि वेदस्याहुर्मनीषिणः॥

1. शिक्षा - शिक्षा का अर्थ वर्णोच्चारण की शिक्षा देना है। सायण ने ऋग्वेदभाष्यभूमिका में शिक्षा का अर्थ दिया है- जिसमें स्वर, वर्ण आदि के उच्चारण की शिक्षा दी जाती है, उसे शिक्षा कहते हैं।

'स्वरवर्णाद्युच्चारणप्रकारो यत्र शिक्ष्यते उपदिश्यते सा शिक्षा' तैत्तिरीय उपनिषद् में शिक्षा के छः अङ्गों का उल्लेख है। वर्ण, स्वर, मात्रा, बल, साम और संतान। (तै.उ. 1.2)

2. व्याकरण - व्याकरण का अर्थ - 'व्याक्रियन्ते विविच्यन्ते शब्दा अनेनेति व्याकरणम्' अर्थात् जिस शास्त्र के द्वारा शब्दों के प्रकृति-प्रत्यय का विवेचन किया जाता है, उसे व्याकरण कहते हैं। इसमें शब्द कैसे बनता है? इसमें क्या प्रकृति और प्रत्यय लगा है तदनुसार शब्द का अर्थ निश्चित किया जाता है।

3. छन्द - छन्दस् (छन्द) शब्द 'छद्' ढँकना धातु से बना है। यास्क ने निरुक्त में छन्दस् का निर्वचन दिया है 'छन्दांसि छादनात्' अर्थात् छन्द भावों को आच्छादित करके उसे समष्टि रूप प्रदान करता है।

'यदक्षरपरिमाणं तच्छन्दः' जिसमें वर्णों या अक्षरों की संख्या निर्धारित होती है, उसे छन्द कहते हैं।

* वैदिक छन्दों में प्रत्येक पाद में वर्णों की संख्या गिनी जाती है इसी के आधार पर छन्दों में भेद किया जाता है।

* एक चरण को पाद कहते हैं। एक पाद में कम से कम 5 वर्ण होते हैं, प्रचलित गायत्री आदि छन्दों में प्रत्येक पाद में 8, 11 या 12 वर्ण होते हैं।

4. निरुक्त - निरुक्त का अर्थ है - निर्वचन या व्युत्पत्ति। शब्द के मूलरूप का ज्ञान कराना, शब्द में प्रकृति-प्रत्यय का स्पष्टीकरण, धात्वर्थ और प्रत्ययार्थ का विशदीकरण, समानार्थक और नानार्थक शब्दों का विवेचन आदि कार्य निरुक्त का है।

5. ज्योतिष - ज्योतिष का अर्थ है - ज्योतिर्विज्ञान।

सूर्य, चन्द्र, ग्रह, नक्षत्र आदि आकाशीय पिण्डों की गणना ज्योतिर्मय पदार्थों में है।

लगध ने इसको 'ज्योतिषाम् अयनम्' अर्थात् नक्षत्रों आदि की गति का विवेचन करने वाला शास्त्र कहा जाता है।

6. कल्प - आचार्य सायण ने कल्प का अर्थ दिया है - जिन ग्रन्थों में यज्ञ-सम्बन्धी विधियों का समर्थन किया जाता है, उन्हें कल्प कहते हैं।

कल्प्यते समर्थ्यते यागप्रयोगेऽत्र इति व्युत्पत्तेः।
वेदविहितानां कर्मणाम् आनुपूर्व्येण कल्पनाशास्त्रम्॥
(विष्णु ऋक् -13)

कल्पसूत्रों के भेद - कल्पसूत्रों के प्रमुख चार भेद हैं -

(i) श्रौतसूत्र (ii) गृह्यसूत्र (iii) धर्मसूत्र (iv) शुल्बसूत्र

स्पष्टीकरण - उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि शिक्षा-वर्णस्वरमात्रा-दिविमर्शः से, कल्प-यज्ञविधानविमर्शः से, व्याकरण-शब्दानुशासन से, छन्द-पादव्यवस्था से सम्बन्धित है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 190

36. यदङ्ग दाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि।
तवेतत्सत्यमङ्गिरः।
अत्र अङ्ग इति कस्मिन्नर्थे प्रयुक्तोऽयं शब्दः? सायणदिशा निर्दिश्यताम् -

(A) अभिमुखीकरणार्थे **(B)** शरीरार्थे
(C) अवयवार्थे **(D)** विषयार्थे

व्याख्या- ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के प्रथम सूक्त का छठवाँ मन्त्र है-

यदङ्ग दाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि।
तवेतत्सत्यमङ्गिरः॥ (1.1.6)

हे अग्ने! जो तुम हवि का दान करने वाले यजमान के लिए धन, गृह, प्रजा, पशु आदि कल्याण करने वाले पदार्थ प्रदान करोगे, वे सब पदार्थ तुम्हारे ही हैं। हे अग्नि देवता यह बात सच ही है। इसमें कोई संशय नहीं है।

सायणभाष्य - अङ्ग इत्यभिमुखीकरणार्थो निपातः। अङ्ग अग्ने! हे अग्ने त्वं दाशुषे हविर्दत्तवते यजमानाय तत्प्रीत्यर्थं यत् भद्रं वित्तगृहप्रजापशुरूपं कल्याणं करिष्यति तत् भद्रं तव इत् तवैव। सुखहेतुरिति शेषः। हे अङ्गिरः! अग्ने एतच्च सत्यं न त्वत्र विसंवादोऽस्ति। यजमानस्य वित्तादिसंपत्तौ सत्यामुत्तर- क्रत्वनुष्ठानेनाग्नेरेव सुखं भवति।

स्पष्टीकरण - इस सायणभाष्य से स्पष्ट है कि अङ्ग शब्द का प्रयोग- 'अभिमुखीकरणार्थ' है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- वैदिकसूक्तसंग्रह- विजयशङ्कर पाण्डेय, पेज 35

37. ऐतरेयब्राह्मणग्रन्थानुसारेण शुनःशेपस्य पितुर्नाम किमासीत् ?

(A) कुक्षीवान् **(B)** ऐतरेयः
(C) अजीगर्तः **(D)** महीदासः

व्याख्या- * ऋग्वेद का ब्राह्मणग्रन्थ है- ऐतरेय ब्राह्मण। ऐतरेय ब्राह्मण में 40 अध्याय हैं। प्रत्येक पाँच अध्यायों की एक पंचिका होती है। कुल 8 पंचिकाएँ हैं।

* पूरे ऐतरेय ब्राह्मण में 40 अध्याय, 8 पंचिकाएँ और 285 खण्ड हैं।

* ऐतरेय ब्राह्मण के रचयिता महिदास ऐतरेय ऋषि माने जाते हैं।

* ऐतरेय ब्राह्मण के पंचिका सात में राजसूय यज्ञ है। इसके तृतीय अध्याय में सुप्रसिद्ध शुनःशेप उपाख्यान है जो 'चरैवेति चरैवेति' गाथाओं के कारण विख्यात है।

* 'चरैवेति चरैवेति' ऐतरेय ब्राह्मण की प्रमुख शिक्षा है- चर-एव-इति अर्थात् चलते रहो, चलते रहो। सदा कर्म करते रहो, सदा उद्योगशील रहो। निरन्तर कर्मठ बने रहो। कर्मनिष्ठ जीवन ही जीवन है।

शुनःशेप आख्यान - इस आख्यान को हरिश्चन्द्र उपाख्यान भी कहते हैं। इसका 'चरैवेति' गान विश्वविश्रुत है।

शुनःशेप ऋषि ऋग्वेद प्रथम मण्डल के सात सूक्तों के द्रष्टा हैं। इनके दृष्ट मन्त्रों की संख्या 17 है।

संक्षिप्त कथा - राजा हरिश्चन्द्र को कोई पुत्र नहीं था वरुण की

उपासना से पुत्र की प्राप्ति हुई। पुत्र का नाम रोहित था। निर्धन, लोभी ब्राह्मण अजीगर्त का पुत्र शुनःशेप था। अजीगर्त वरुण के यज्ञ में स्वयं अपने पुत्र शुनःशेप की बलि देने के लिये तैयार हो जाता है।

* शुनःशेप मृत्यु से बचने के लिए वरुण, अग्नि आदि देवों की स्तुति की। अन्त में मृत्यु से बच जाता है।

* शुनःशेप अपने लोभी पिता का परित्याग करके विश्वामित्र की गोद में बैठ जाता है।

* विश्वामित्र ने उसे अपना दत्तक पुत्र बना लिया और उसका नाम देवरात रखा।

* विश्वामित्र के 101 पुत्र थे। 50 मधुच्छन्दस् से बड़े थे और 50 छोटे।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि शुनःशेप का पिता अजीगर्त था। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 125

38. पदे न वर्णा विद्यन्ते वर्णेष्ववयवा न च।
वाक्यात् पदानामत्यन्तं प्रविवेको न कश्चन॥
अस्याः कारिकायाः सम्बन्धः केन सिद्धान्तेन सह भवितुमर्हति?

(A) ध्वनिवादः **(B)** स्फोटवादः
(C) व्यञ्जनावादः **(D)** लक्षणावादः

व्याख्या- * पाणिनीय व्याकरण तन्त्र में वैयाकरण दार्शनिक भर्तृहरि का अनुपम स्थान है। इन्होंने वाक्यपदीय के रूप में व्याकरण दर्शन की एक अद्भुत कृति के द्वारा अपनी प्रतिभा का परिचय दिया।

* महाभाष्य में निरूपित दार्शनिक सिद्धान्तों तथा अर्थविज्ञान के नियमों का पद्यात्मक कारिकाओं के रूप में विवेचन वाक्यपदीय में है।

* इसके अतिरिक्त महाभाष्य की दीपिका नामक व्याख्या भी भर्तृहरि ने लिखी थी जिसके प्रथम सात आह्निक प्रकाशित हैं। सम्भवतः उन्होंने केवल तीन पादों की व्याख्या लिखी थी।

* वाक्यपदीय तीन काण्डों में विभक्त है - ब्रह्मकाण्ड -156 कारिकाएँ, वाक्यकाण्ड-486 कारिकाएँ तथा प्रकीर्णकाण्ड या पदकाण्ड 14 समुद्देशों में विभक्त, 1323 कारिकाएँ हैं।

* ब्रह्मकाण्ड, शब्दरूप तथा स्फोट का विवेचन करता है, इसमें वाणी के तीन स्तरों (पश्यन्ती, मध्यमा तथा वैखरी) का निर्देश है।

वाक्यपदीयम् के ब्रह्मकाण्ड में कहा गया है-

पदे न वर्णा विद्यन्ते वर्णेष्ववयवा न च।
वाक्यात् पदानामत्यन्तं प्रविवेको न कश्चन॥1/73॥

वर्णों में अवयवों के समान पद में वर्णों की सत्ता नहीं होती और वाक्य से पदों का कोई अत्यन्त पार्थक्य नहीं है। इस प्रकार वर्ण और पद के भेद से रहित एक अनवयव वाक्य रूप शब्दात्मा है, ऐसा अखण्डवाक्यस्फोटवादी मानते हैं।

अर्थ, सम्बन्ध और फल शब्दमूलक है, अतः व्याकरण-सम्मत शब्द का क्या स्वरूप है, इसका निरूपण करते हैं-

द्वावुपादानशब्देषु शब्दौ शब्दविदो विदुः।
एको निमित्तं शब्दानामपरोऽर्थे प्रयुज्यते॥1/44॥

शब्दविद् वैयाकरण उपादान या वाचक शब्दों में दो अन्य शब्द निहित हैं, ऐसा मानते हैं। एक शब्दों का निमित्त है, जिसे स्फोट कहते हैं और दूसरा स्वरूपार्थ के रूप में प्रयुक्त होता है।

अनादिनिधनं ब्रह्म शब्दतत्त्वं यदक्षरम् ।
विवर्ततेऽर्थभावेन प्रक्रिया जगतो यतः ॥1/1॥

आदि और अन्त से रहित अर्थात् कालकृत परिच्छेद से शून्य अथवा पूर्वापर विभाग से हीन अर्थात् देशकृत परिच्छेद से मुक्त, अकारादि अक्षरों का निमित्त होने के कारण अक्षर अर्थात् परप्रणवात्मक, शब्दतत्त्व पराप्रकृति परापश्यन्ती या संविद्रूप ब्रह्म, अर्थ रूप में स्वरूपात्मक एवं गो-घटादि बाह्यार्थ रूप में सन्निवेश विशेष द्वारा अनेकधा प्रतिभासित होता है, जिससे समस्त वाङ्मय जगत् तथा सरित्सागर, वन पर्वतात्मक चराचर जगत् उत्पन्न होता है।

अव्याहताः कला यस्य कालशक्तिमुपाश्रिताः।
जन्मादयो विकाराः षड् भावभेदस्य योनयः ॥1/3॥

जिस शब्दब्रह्म की आरोपित कलाओं या भेदों वाली कालशक्ति का आश्रय लेकर जन्म, सत्ता, विपरिणाम, वृद्धि, अपक्षय और नाश ये 6 विकारभाव अर्थात् मूर्ति और क्रिया भेद के कारण बनते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'पदे न वर्णा विद्यन्ते वर्णेष्ववयवा न च ....' यह सिद्धान्त स्फोटवाद से सम्बन्धित है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- वाक्यपदीयम् (1/73)

39. सर्वप्राचीनरचनायाः प्राथम्येन कालक्रमानुसारमुचितमुत्तरं चिनुत-

(1) बुद्धचरितम् **(2) नैषधीयचरितम्**
(3) स्वप्नवासवदत्तम् **(4) मुद्राराक्षसम्**

एषु क्रमं चिनुत -

(A) 1 4 2 3
(B) 4 3 1 2
(C) 3 2 1 4
(D) 3 1 4 2

व्याख्या- संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख लेखकों का अनुमानित कालक्रम -

लेखक	प्रमुख ग्रन्थ	अनुमानित काल
भास	स्वप्नवासवदत्तम्	100ई.पू.-200ई. के मध्य
मनु	मनुस्मृति	200ई.पू. से 200 ई. के बीच
कालिदास	रघुवंशम्, अभिज्ञान-शाकुन्तलम् आदि	ई.पू. प्रथम शताब्दी
अश्वघोष	बुद्धचरितम्, सौन्दरानन्द	प्रथम शताब्दी ई.
शूद्रक	मृच्छकटिकम्	तीसरी-चौथी शताब्दी ई.
विशाखदत्त	मुद्राराक्षसम्	पाँचवी छठी शताब्दी ई.
भारवि	किरातार्जुनीयम्	6 शता. ई. (560-615)
दण्डी	दशकुमारचरितम्	6 शताब्दी ई.
भर्तृहरि	वाक्यपदीयम्	6 शता. ई.
माघ	शिशुपालवधम्	7 शता. का पूर्वार्द्ध
भवभूति	उत्तररामचरितम्	7 शता. के आस-पास
श्रीहर्ष	नैषधीयचरितम्	12वीं शता. का उत्तरार्द्ध

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि कालक्रमानुसार सर्वप्रथम भास की रचना स्वप्नवासवदत्तम्, अश्वघोष की रचना बुद्धचरितम्, विशाखदत्त की रचना मुद्राराक्षस और श्रीहर्ष की रचना नैषधीयचरितम् है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशङ्कर शर्मा ऋषि, पेज 465,226,501,284

40. चत्वारो वेदाः जगति प्रसिद्धा सन्ति। एते ऋग्वेदः यजुर्वेदः, सामवेदः, अथर्ववेदश्च। एतेषां मन्त्राणामर्थख्यापनाय बहवः आचार्यः प्रयत्नं कृतवन्तः। तत्रर्ग्वेदस्य प्रथमो भाष्यकारः स्कन्दस्वामी आसीत् । विस्तारपूर्वकयज्ञपद्धतेः प्रथमं भाष्यं आचार्यसायणेन कृतम् । स एव कृष्णयजुर्वेदस्य भाष्यं प्रथमतया विरचितवान् । आनन्दतीर्थः दयानन्दश्च वेदभाष्यं रचितवन्तौ। उपर्युक्तेषु ऋग्वेदस्य प्रथमभाष्यकारः कः आसीत् -

(A) सायणः **(B)** स्कन्दस्वामी
(C) आनन्दतीर्थः **(D)** दयानन्दः

व्याख्या- उपर्युक्त पूछे गये प्रश्न का हिन्दी अर्थ है - चार वेद जगत् में प्रसिद्ध हैं। वे ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद हैं। इन मन्त्रों के अर्थ को जानने के लिए अनेक आचार्यों ने प्रयत्न किया। ऋग्वेद के प्रथम भाष्यकार स्कन्दस्वामी थे। विस्तारपूर्वक यज्ञपद्धति प्रथम भाष्य आचार्य सायण ने किया। वह ही कृष्णयजुर्वेद के भाष्य को सर्वप्रथम किया। आनन्दतीर्थ और दयानन्द सरस्वती ने वेदभाष्य की रचना की।

प्राचीन वेदभाष्यकार

आचार्य स्कन्दस्वामी -

* ऋग्वेद का सबसे प्राचीन भाष्य स्कन्दस्वामी का ही उपलब्ध है।
* स्कन्दस्वामी का भाष्य ऋग्वेद के चतुर्थ अष्टक तक प्राप्त होता है। शेषभाग नारायण और उद्गीथ ने किया है।
* स्कन्दस्वामी ने यास्क के निरुक्त पर टीका भी लिखी है।

आचार्य सायण -

* वेदों की व्याख्या करने वाले आचार्यों में सायण का स्थान अग्रगण्य है। वे केवल ऐसे आचार्य हैं, जिन्होंने सभी वेदों तथा ब्राह्मणग्रन्थों आदि की भी व्याख्या की है।
* ये वेदों को अपौरुषेय और नित्य मानते हैं।
* सायण ने ऋग्वेद सहित पाँच वैदिक संहिताओं, 11 ब्राह्मण ग्रन्थों और दो आरण्यकों पर पाण्डित्यपूर्ण भाष्य लिखा है। इन ग्रन्थों का क्रम यह रहा है - **संहिताएँ -**

(1) तैत्तिरीय संहिता (2) ऋग्वेदसंहिता (3) सामवेदसंहिता (4) काण्वसंहिता (5) अथर्ववेद संहिता

ब्राह्मण ग्रन्थ - तैत्तिरीय ब्राह्मण ऐतरेय ब्राह्मण, ताण्ड्य महाब्राह्मण, षड्विंश, सामविधान, आर्षेय, देवताध्याय उपनिषद्, संहितोपनिषद् वंश ब्राह्मण, शतपथ ब्राह्मण

आरण्यक - तैत्तिरीय आरण्यक, ऐतरेय आरण्यक

आनन्दतीर्थ - इनका दूसरा नाम मध्व है। इन्होंने ऋग्वेद के कुछ चुने हुये 40 सूक्तों का पद्यात्मक भाष्य किया है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती -

* आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती आधुनिक युग में वेदों के पुनरुद्धारक माने जाते हैं।
  ऋग्वेद की व्याख्या मण्डल 7 के 80 सूक्त तक ही कर सके। असामयिक निधन से ऋग्वेद भाष्य पूरा नहीं हो सका।
* उन्होंने शुक्लयजुर्वेद सम्पूर्ण की संस्कृत और हिन्दी में व्याख्या की है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त पूछे गये गद्यांश से ही स्पष्ट हो जाता है कि ऋग्वेद के प्रथम भाष्यकार स्कन्दस्वामी जी हैं। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज 22

41. यजुर्वेदसंहितायां प्राधान्येन निरूपणं प्राप्यते -
(A) संवादस्य (B) यज्ञानाम्
(C) गानानाम् (D) दार्शनिकविचाराणाम्

व्याख्या- यजुष् (यजुस्, यजुः) का अर्थ

* यजुर्वेद के यजुष् शब्द की कई व्याख्याएँ प्रस्तुत की गई हैं, जो विभिन्न दृष्टिकोणों की सूचक हैं।
* यजुष् के मुख्य अर्थ हैं - 'यजुर्यजतेः' अर्थात् यज्ञ से सम्बद्ध मन्त्रों को यजुष् कहते हैं।
* 'इज्यतेऽनेनेति यजुः' अर्थात् जिन मन्त्रों से यज्ञ किया जाता है, उन्हें यजुष् कहते हैं।
* यजुर्वेद का यज्ञ के कर्मकाण्ड से साक्षात् सम्बन्ध है अतः इसे अध्वर्युवेद भी कहा जाता है।
* यज्ञ में अध्वर्यु नामक ऋत्विज् यजुर्वेद का प्रतिनिधित्व करता है और वही यज्ञ का नेतृत्व करता है। इसलिए सायण ने कहा है कि वह यज्ञ के स्वरूप का निष्पादक है-

''अध्वर्युनामक एक ऋत्विग् यज्ञस्य स्वरूपं निष्पादयति अध्वरं युनक्ति, अध्वरस्य नेता।''

* 'अनियताक्षरावसानो यजुः' अर्थात् जिन मन्त्रों में पद्यों के तुल्य अक्षरसंख्या निर्धारित नहीं होती है, वे यजुष् हैं।
* 'शेषे यजुः शब्दः' अर्थात् पद्यबन्ध और गीति से रहित मन्त्रात्मक रचना को यजुष् कहते हैं।
* तैत्तिरीयसंहिता के भाष्य की भूमिका में सायण ने यजुर्वेद का महत्त्व बताते हुए कहा है कि यजुर्वेद भित्ति (दीवार) है और अन्य ऋग्वेद एवं सामवेद चित्र हैं। इसलिए यजुर्वेद सबसे मुख्य है।
* यज्ञ को आधार बनाकर ही ऋचाओं का पाठ सामगान होता है।

➢ **ऋग्वेद-संहिता - ऋक् का अर्थ -**

* ऋच् या ऋक् का अर्थ है - स्तुतिपरक मन्त्र
  'ऋच्यते स्तूयतेऽनया इति ऋक्'
* जिन मन्त्रों के द्वारा देवों की स्तुति की जाती है, उन्हें ऋक् कहते हैं।
* ऋग्वेद में विभिन्न देवों की स्तुति वाले मन्त्र हैं, अतः इसे ऋग्वेद कहते हैं।

➢ **सामवेद-संहिता - सामन् (साम) का अर्थ-**

* सामन् या साम का अर्थ- 'गीतियुक्त मन्त्र' है। साम के लिये गीतियुक्त होना अनिवार्य है।
* पूर्वमीमांसा में गीति या गान को साम कहा गया है 'गीतिषु सामाख्या'

➢ **अथर्ववेद-संहिता - 'अथर्वन्' का अर्थ**

* निरुक्त और गोपथब्राह्मण में 'अथर्वन्' शब्द की इस प्रकार से व्याख्या की गई है -
* अथर्वन् - गतिहीन या स्थिरता से युक्त योग
* निरुक्त के अनुसार 'थर्व्' धातु का अर्थ है गति या चेष्टा, अतः अथर्वन् का अर्थ है - गतिहीन या स्थिर।
* इसका अभिप्राय है कि जिस वेद में स्थिरता या चित्तवृत्तियों के निरोधरूपी योग का उपदेश है, वह अथर्वन् वेद है। **'अथर्वाणोऽथर्वणवन्तः'**

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि यजुर्वेदसंहिता की प्रधानता यज्ञ करना है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज

42. भाषाणां सतम् वर्गे स्वीक्रियते-
(A) लैटिन (B) ग्रीक
(C) संस्कृतम् (D) फ्रेन्च

व्याख्या- * 'भारोपीय' शब्द 'भारत+यूरोपीय' का संक्षिप्त रूप है।

* यह Indo-European का अनुवाद है।
* भारोपीय में भारतवर्ष से लेकर यूरोप तक फैली हुई भाषाओं का संग्रह है। इस परिवार में दस शाखाएँ हैं-

1. भारत-ईरानी (आर्य)
क - भारतीय
ख - ईरानी
2. बाल्टो स्लाविक
क - बाल्टिक
ख - स्लाविक
3. आर्मीनी
4. अल्बानी (इलीरी)
5. ग्रीक (हेलेनिक)
6. केल्टिक
7. जर्मानिक (ट्यूटानिक)
8. इटालिक
9. हिटाइट (हित्ती)
10. तोखारी

➢ **केन्टुम् और शतम् वर्ग -**

* भारोपीय परिवार की भाषाओं को ध्वनि के आधार पर दो भागों में विभक्त किया जाता है। (क) केन्टुम् (ख) शतम्
* इस विभाजन का श्रेय प्रो. अस्कोली को है।
* इन्होंने 1870 ई. में यह प्रस्तुत किया कि मूल भारोपीय

भाषा की कण्ठ्य ध्वनियाँ कुछ भाषाओं में कण्ठ्य रह गई हैं और कुछ भाषाओं में वे संघर्षी हो गई हैं।

* इसको स्पष्ट करने के लिए दो प्रतिनिधि भाषाएँ लैटिन और अवेस्ता ली गईं।
* सौ के लिए मूल भारोपीय भाषा का शब्द Kmtom (क्मतोम्) माना जाता है। इसका विभिन्न भाषाओं में विकास इस प्रकार माना जाता है-

➢ **मूल भारोपीय शब्द - Kmtom (क्मतोम् = शतम्)**

शतम् (सतम्) वर्ग	केन्टुम् वर्ग
संस्कृत - शतम्	लैटिन - केन्टुम्
अवेस्ता - सतम्	ग्रीक - हेकटोन
फारसी - सद	केल्टिक - (आयरिश) केत्
हिन्दी - सौ	तोखारी - कन्ध
रूसी - स्तो	गाथिक - हुन्ड
लिथुआनियन - स्जिम्तास	जर्मन - हुन्डर्ट
	फ्रेंच - सं (सेंट cent)
	इटालियन - केन्तो

* प्रारम्भ में यह विचार प्रस्तुत किया गया था कि केन्टुम् वर्ग की भाषाएँ पश्चिम में प्रचलित हैं और शतम् वर्ग की भाषाएँ पूर्व में।
* प्रो. हर्ट ने विश्चुला नदी के पश्चिम में केन्टुम् वर्ग और शतम् वर्ग माना था। बाद में तोखारी और हिटाइट भाषाओं के मिलने पर यह सिद्धान्त निरस्त हो गया, क्योंकि तोखारी और हिटाइट भाषाएँ पूर्वी क्षेत्र में और इनमें केन्टुम् के तुल्य क् ध्वनि मिलती है, स् ध्वनि नहीं।

➢ **केन्टुम् और शतम् वर्ग (भारोपीय परिवार-विभाजन)** भारोपीय परिवार को केन्टुम् और शतम् वर्ग के आधार पर इस प्रकार बाँटा जाता है-

शतम् वर्ग	केन्टुम् वर्ग
1. भारत-ईरानी (आर्य)	5. ग्रीक
2. बाल्टो-स्लाविक	6. केल्टिक
3. आर्मीनी	7. जर्मानिक (ट्यूटानिक)
4. अल्बानी (इलीरी)	8. इटालिक
	9. हिटाइट
	10. तोखारी

ईरानी-भारती चैव, बाल्टी-सुस्लाविकी तथा
आर्मीनी अल्बनी चैताः शतम् वर्गे समाश्रिताः ॥1॥
इटालिकी च ग्रीकी च, जर्मानिक् केल्टिकी तथा
हित्ती तोखारिकी चैताः, केन्टुम् वर्गे प्रकीर्तिताः ॥2॥

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि भाषाओं में सतम् वर्ग में 'संस्कृतम्' है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 385

43. आर्हतदर्शनानुसारं सप्तभङ्गीनयः कुत्र न स्वीकृतोऽस्ति

(A) स्यादस्ति च नास्ति च
(B) स्यादस्ति च नास्ति चावक्तव्यः
(C) स्यादस्ति च वक्तव्यः
(D) स्यान्नास्ति चावक्तव्यः

व्याख्या- * जैनदर्शन को ही आर्हत दर्शन के नाम से जाना जाता है।

* जैनदर्शन में परामर्श के पूर्व 'स्यात्' लगाते हैं।
* इसी सिद्धान्त को 'स्याद्वाद' कहते हैं। इसका दूसरा नाम 'अनेकान्तवाद' है, क्योंकि किसी ज्ञान का निश्चय या एकान्त इसमें नहीं हो सकता।
* जैन लोग सर्वत्र सप्तभङ्गीनय नामक Logic उपस्थित करते हैं। इसके सात निम्नाङ्कित रूप हैं-

स्यादस्ति - किसी प्रकार है
स्यान्नास्ति - किसी प्रकार नहीं है।
स्यादस्ति च नास्ति च - किसी प्रकार है और नहीं है
स्यादवक्तव्यः - किसी प्रकार अवर्णनीय है
स्यादस्ति चावक्तव्यः - किसी प्रकार है और अवर्णनीय है
स्यान्नास्ति चावक्तव्यः - किसी प्रकार नहीं है और अवर्णनीय है।
स्यादस्ति च नास्ति चावक्तव्यः - किसी प्रकार है, नहीं है और अवर्णनीय है।

* **स्याद्वाद (जैन दर्शन) के दो प्रमाण हैं-** प्रत्यक्ष और अनुमान
* **त्रिरत्न -** 'सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्ग' (1) सम्यक् दर्शन (2) सम्यक् ज्ञान (3) सम्यक् चारित्र
* **जैन तत्त्व मीमांसा -** दो तत्त्व हैं- जीव और अजीव ज्ञान के रूप में जीव है और अज्ञान के रूप में अजीव है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि आर्हत दर्शनानुसार सप्तभङ्गीनय में 'स्यादस्ति च वक्तव्यः' स्वीकृत नहीं है। **अतः विकल्प 'C' सही है**

स्रोत- सर्वदर्शनसंग्रह - उमाशङ्कर शर्मा ऋषि, पेज 146

44. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत-

(a) हर्षः **(i) मुद्राराक्षसम्**

(b) भवभूतिः **(ii) कर्णभारम्**

(c) विशाखदत्तः **(iii) उत्तररामचरितम्**

(d) भासः **(iv) रत्नावली**

एषु समीचीनमुत्तरं चिनुत-

(A) 3 2 4 1

(B) 4 3 1 2

(C) 2 1 3 4

(D) 1 4 2 3

व्याख्या-

संस्कृत वाङ्मय के प्रमुख नाट्यग्रन्थ

ग्रन्थ	अङ्क	लेखक
प्रतिज्ञायौगन्धरायण	4	भास
स्वप्नवासवदत्तम्	6	भास
ऊरुभङ्गम्	1	भास
दूतवाक्यम्	1	भास
पञ्चरात्रम्	3	भास
बालचरितम्	5	भास
दूतघटोत्कचम्	1	भास
मुद्राराक्षसम्	7	विशाखदत्त
कर्णभारम्	1	भास
रत्नावली	4	हर्ष (हर्षवर्धन)
उत्तररामचरितम्	7	भवभूति
मृच्छकटिकम्	10	शूद्रक (शिमुक)
अभिज्ञानशाकुन्तलम्	7	कालिदास
वेणीसंहारम्	6	भट्टनारायण
महावीरचरितम्	7	भवभूति
मालतीमाधवम्	10	भवभूति
बालरामायणम्	10	राजशेखर

संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख गद्यकाव्य

गद्यरचना	लेखक
दशकुमारचरितम्	दण्डी
वासवदत्ता	सुबन्धु
कादम्बरी	बाणभट्ट
हर्षचरितम्	बाणभट्ट
शिवराजविजय	अम्बिकादत्त व्यास
मुकुटताडितक	बाणभट्ट
तिलकमञ्जरी	धनपाल
मन्दारमञ्जरी	विश्वेश्वर पाण्डेय

संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख गीतिकाव्य

गीतिकाव्य	लेखक
ऋतुसंहारम्	कालिदास
मेघदूतम्	कालिदास
नीतिशतकम्	भर्तृहरि
शृङ्गारशतकम्	भर्तृहरि
वैराग्यशतकम्	भर्तृहरि
अमरुशतकम्	अमरुक

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त तालिकाओं से स्पष्ट है कि हर्ष की रचना रत्नावली, भवभूति की रचना उत्तररामचरितम्, विशाखदत्त की मुद्राराक्षस और भास की रचना कर्णभार है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा, पेज 513,522,502,465

45. वैशेषिकदर्शनानुसारं सप्तपदार्थेषु न गण्येते-

a पुरुषः **b विशेषः**

c गुणः **d अहङ्कारः**

समुचितं विकल्पमत्र चिनुत -

(A) a एवं c **(B)** b एवं c

(C) c एवं d **(D)** a एवं d

व्याख्या- अन्नम्भट्टप्रणीत तर्कसंग्रह में सप्तपदार्थों की चर्चा करते हैं-

* **पदार्थनिरूपण-**

'द्रव्यगुणकर्मसामान्यविशेषसमवायाभावाः सप्तपदार्थाः।'

द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय और अभाव ये सात ही पदार्थ हैं।

* **द्रव्यनिरूपण-**

'पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशकालदिगात्ममनांसि नवैव'

उन पदार्थों में द्रव्यों की संख्या नौ है- पृथिवी, जल, तेज,

वायु, आकाश, काल, दिक्, आत्मा और मन।

*** गुणनिरूपण-**

रूप-रस-गन्ध-स्पर्श-संख्या-परिमाण-पृथक्त्व-संयोग-विभाग-परत्वापरत्व-गुरुत्व-द्रवत्व-स्नेह-शब्द-बुद्धि-सुख-दुःखेच्छा-द्वेष, प्रयत्न, धर्माधर्म-संस्काराश्चतुर्विंशतिर्गुणाः।

रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, संख्या, परिमाण, पृथक्त्व, संयोग, विभाग, परत्व, अपरत्व, गुरुत्व, द्रवत्व, स्नेह, शब्द, बुद्धि, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, धर्म, अधर्म और संस्कार ये चौबीस गुण हैं।

*** कर्मनिरूपण-** उत्क्षेपणापक्षेणाकुञ्चनप्रसारणगमनानि पञ्चकर्माणि।

उत्क्षेपण, अपक्षेपण, आकुञ्चन, प्रसारण और गमन- ये पाँच कर्म हैं।

*** सामान्यनिरूपण-** परमपरं चेति द्विविधं सामान्यम्।

पर (सामान्य) और अपर (सामान्य) यह दो प्रकार का सामान्य (जाति) है।

*** विशेष पदार्थ-** 'नित्यद्रव्यवृत्तयो विशेषास्त्वनन्ता एव'

नित्यद्रव्यों में रहने वाले विशेष पदार्थ हैं और वे अनन्त हैं।

*** अभाव निरूपण-** अभावश्चतुर्विधः प्रागभावः, प्रध्वंसाभावोऽत्यन्ता-भावोऽन्योन्याभावश्चेति।

अभाव पदार्थ चार प्रकार का होता है- प्रागभाव, प्रध्वंसाभाव, अत्यन्ताभाव और अन्योन्याभाव।

*** कारण निरूपण-** कारणं त्रिविधम् -समवाय्यसमवायिनिमित्तभेदात्। कारण तीन प्रकार के होते हैं- समवायि, असमवायि और निमित्त।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि वैशेषिक दर्शनानुसार सप्त पदार्थों में पुरुष और अहङ्कार परिगणित नहीं हैं। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- तर्कसंग्रह - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज 18

46. ऋग्वेदस्य वरुणसूक्ते (1.25) कियन्तो मन्त्राः सन्ति?

(A) दश **(B)** द्वादश
(C) एकविंशतिः **(D)** द्वाविंशतिः

व्याख्या-

सूक्त	मण्डल/सूक्त	ऋषि	देवता	मन्त्रों की संख्या
अग्निसूक्त	1/1	मधुच्छन्दा	अग्नि	9
वरुणसूक्त	1/25	अजीगर्त शुनःशेप	वरुण	21
सूर्यसूक्त	1/115	अङ्गिरस्, कुत्स	सूर्य	06
इन्द्रसूक्त	2/12	गृत्समद	इन्द्र	15
उषस्सूक्त	3/61	विश्वामित्र	उषस्	07
पर्जन्यसूक्त	5/83	अत्रि	पर्जन्य	10
अक्षसूक्त	10/34	कवष ऐलूष	अक्षकृषि प्रशंसा	14
ज्ञानसूक्त	10/71	बृहस्पति	परब्रह्म ज्ञान	11
पुरुषसूक्त	10/90	नारायण	पुरुष	16
हिरण्यगर्भसूक्त	10/121	हिरण्यगर्भ	क संज्ञक प्रजापति	10
वाक्सूक्त	10/125	वागाम्भृणी	परमात्मा वाक्	08
नासदीयसूक्त	10/129	परमेष्ठी प्रजापति	सृष्टि-स्थिति प्रलयकर्ता परमात्मा	07

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि ऋग्वेद के वरुणसूक्त में कुल 21 मन्त्र हैं। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री, पेज 83

47. कल्पसाहित्ये गण्येते -

a गौतमधर्मसूत्रम् **b वाजसनेयिप्रातिशाख्यम्**
c मानवशुल्बसूत्रम् **d निघण्टुः**

अधोलिखितेषु समुचितमुत्तरं चिनुत -

(A) a एवं b **(B)** c एवं d
(C) a एवं c **(D)** b एवं d

व्याख्या- वेदाङ्ग में अङ्ग शब्द का अर्थ है वे उपकारक तत्त्व जिनसे वस्तु के स्वरूप का बोध होता है।

'अङ्ग्यन्ते ज्ञायन्ते एभिरिति अङ्गानि'

वेदाङ्गों की संख्या छह है -

शिक्षा व्याकरणं छन्दो निरुक्तं ज्योतिषं तथा।
कल्पश्चेति षडङ्गानि वेदस्याहुर्मनीषिणः॥

शिक्षा, व्याकरण, छन्द, निरुक्त, ज्योतिष, कल्प, वेदाङ्ग हैं।

कल्प वेदाङ्ग - कल्पसूत्र ग्रन्थ का तात्पर्य प्रयोगविधि के यथार्थ प्रतिपादक ग्रन्थों से है।

* जिन ग्रन्थों में यज्ञ-सम्बन्धी विधियों का समर्थन या प्रतिपादन किया जाता है, उन्हें कल्प कहते हैं।

* **कल्पसूत्र के भेद-** कल्पसूत्र के चार भेद हैं-
श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र, धर्मसूत्र, शुल्बसूत्र

ऋग्वेद के श्रौतसूत्र - शांखायन, आश्वलायन श्रौतसूत्र
ऋग्वेद का धर्मसूत्र - वासिष्ठ धर्मसूत्र
ऋग्वेद के गृह्यसूत्र - आश्वलायन, शांखायन, कौषीतकि
ऋग्वेद का शुल्बसूत्र - कोई शुल्बसूत्र प्राप्त नहीं होता
यजुर्वेद के श्रौतसूत्र - (i) शुक्लयजुर्वेद का कात्यायन श्रौतसूत्र
(ii) कृष्णयजुर्वेद का बौधायन, वाधूल, मानव, भारद्वाज, आपस्तम्ब, काठक, सत्याषाढ, वैखानस, वाराह श्रौतसूत्र
यजुर्वेद के गृह्यसूत्र - शुक्लयजुर्वेद पारस्कर गृह्यसूत्र, बौधायन, मानव, भारद्वाज, आपस्तम्ब काठक, अग्निवेश्य, हिरण्यकेशि, वाराह, वैखानस
यजुर्वेद के धर्मसूत्र - बौधायन, वैखानस, आपस्तम्ब, विष्णु, हारीत, हिरण्यकेशी, शंख
यजुर्वेद के शुल्बसूत्र - शुक्लयजुर्वेद- कात्यायन शुल्बसूत्र
कृष्णयजुर्वेद- बौधायन, आपस्तम्ब, मानव शुल्बसूत्र
सामवेद के श्रौतसूत्र - आर्षेय, कल्प या मशक, लाट्यायन, द्राह्यायण, जैमिनीय
सामवेद के गृह्यसूत्र - गोभिल, खादिर, दाह्यायण, जैमिनीय, कौथुम
सामवेद का धर्मसूत्र - गौतम धर्मसूत्र
सामवेद का शुल्बसूत्र - कोई शुल्बसूत्र प्राप्त नहीं होता
अथर्ववेद का श्रौतसूत्र - वैतान श्रौतसूत्र
अथर्ववेद का गृह्यसूत्र - कौशिक गृह्यसूत्र
अथर्ववेद का धर्मसूत्र - कोई धर्मसूत्र प्राप्त नहीं है।
अथर्ववेद का शुल्बसूत्र - कोई शुल्बसूत्र प्राप्त नहीं है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि कल्पसाहित्य के अन्तर्गत सामवेद का गौतमधर्मसूत्र और कृष्णयजुर्वेद का मानव शुल्बसूत्र समाहित है। **अतः विकल्प 'C' सही हैं**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज 236,241

48. भवभूतिकृतं रचनाद्वयं किमस्ति?
(A) महावीरचरितम्, प्रतिज्ञायौगन्धरायणम्
(B) उत्तररामचरितम्, महावीरचरितम्
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम्, मुद्राराक्षसम्
(D) मृच्छकटिकम्, महावीरचरितम्

व्याख्या-

लेखक	ग्रन्थ (नाटक)	अङ्क
भवभूति	उत्तररामचरितम्	07
भवभूति	महावीरचरितम्	07
भवभूति	मालतीमाधवम्	10
कालिदास	अभिज्ञानशाकुन्तलम्	07
कालिदास	मालविकाग्निमित्रम्	05
कालिदास	विक्रमोर्वशीयम्	05
शूद्रक	मृच्छकटिकम्	10
विशाखदत्त	मुद्राराक्षसम्	07
भास	प्रतिज्ञायौगन्धरायण	04
भास	स्वप्नवासवदत्तम्	06
भास	बालचरितम्	05
भास	पञ्चरात्रम्	03
भास	प्रतिमानाटकम्	07
भास	अभिषेकनाटकम्	06
भास	अविमारकम्	06
भास	चारुदत्तम्	04
भास	ऊरुभङ्गम्	01
भास	दूतवाक्यम्	01
भास	दूतघटोत्कचम्	01
भास	कर्णभारम्	01
भास	मध्यमव्यायोगः	01

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि भवभूति की रचना है- उत्तररामचरितम्, महावीरचरितम्, मालतीमाधवम्। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशङ्कर शर्मा, पेज 526,528

49. तैत्तिरीयब्राह्मणस्य प्रथमे काण्डे के द्वे वर्णिते?
a उपहोमः **b अग्निहोत्रम्**
c अग्न्याधानम् **d गवामयनम्**

अधोलिखितेषु समुचितमुत्तरं चिनुत -
(A) b एवं c **(B)** a एवं d
(C) c एवं d **(D)** a एवं b

व्याख्या- ब्राह्मण शब्द की व्युत्पत्ति -

* ब्राह्मणग्रन्थों के अर्थ में 'ब्राह्मण' शब्द विभिन्न तीन अर्थों को लेकर ब्रह्मन् शब्द से अण् (अ) प्रत्यय करके बना है।
* ये तीन अर्थ हैं - शतपथ ब्राह्मण के अनुसार ब्रह्मन् शब्द का अर्थ है 'मन्त्र'। अतः वेदमन्त्रों की व्याख्या और विनियोग प्रस्तुत करने वाले ग्रन्थ को 'ब्राह्मण' कहते हैं।
* शतपथ के अनुसार ही ब्रह्मन् शब्द का दूसरा अर्थ है- 'यज्ञ'। अतः यज्ञों की व्याख्या और विवरण प्रस्तुत करने वाले ग्रन्थों को 'ब्राह्मण' कहते हैं।
* ब्रह्मन् शब्द का एक अन्य अर्थ है- 'पवित्र ज्ञान या रहस्यात्मक विद्या।' अतः जिन ग्रन्थों में वैदिक रहस्यों का उद्घाटन किया गया है, उसे 'ब्राह्मण' कहते हैं।

➢ **वाचस्पति मिश्र के अनुसार ब्राह्मण हैं-**

नैरुक्त्यं यत्र मन्त्रस्य विनियोगः प्रयोजनम् ।
प्रतिष्ठानं विधिश्चैव ब्राह्मणं तदिहोच्यते॥
(वाचस्पति मिश्र)

* ब्राह्मण ग्रन्थों के चार प्रयोजन बताए हैं - निर्वचन, विनियोग, प्रतिष्ठान और विधि।
* मीमांसादर्शन के भाष्य में शबरस्वामी ने इन्हीं विषयों को कुछ और विस्तृत करते हुए ब्राह्मणग्रन्थों के प्रतिपाद्य विषयों की संख्या दस बताई है।

हेतुर्निर्वचनं निन्दा प्रशंसा संशयो विधिः।
परक्रिया पुराकल्पो व्यवधारण-कल्पना।
उपमानं दशैते तु विधयो ब्राह्मणस्य वै॥
(मीमांसासूत्र शाबरभाष्य 2.18)

हेतु, निर्वचन, निन्दा, प्रशंसा, संशय, विधि, परक्रिया, पुराकल्प, व्यवधारण, कल्पना और उपमान।

➢ **कृष्णयजुर्वेद में परिगणित एकमात्र ब्राह्मण तैत्तिरीयब्राह्मण है-**

* तैत्तिरीयब्राह्मण के रचयिता वैशम्पायन के शिष्य आचार्य तित्तिर हैं। तित्तिर ने तैत्तिरीय संहिता और तैत्तिरीय ब्राह्मण की रचना की।
* दूसरी ओर याज्ञवल्क्य ने यजुर्वेद की माध्यन्दिन शाखा और शतपथ ब्राह्मण का संकलन किया।
* शतपथब्राह्मण के समान इसमें भी स्वरचिन्ह हैं। इसकी प्राचीनता का द्योतक है।
* यह तीन काण्डों या अष्टकों में विभाजित है।
* प्रथम और द्वितीय काण्ड में 8-8 अध्याय या प्रपाठक हैं। तृतीय काण्ड में 12 अध्याय हैं।
* इनके उपखण्डों को 'अनुवाक' कहते हैं। इनकी संख्या 353 हैं।

➢ **काण्डों के अनुसार प्रतिपाद्य विषय**

काण्ड-1 - अग्न्याधान, गवामयन, वाजपेय, सोम, नक्षत्रेष्टि और राजसूय याग।

काण्ड-2 - अग्निहोत्र, उपहोम, सौत्रामणी बृहस्पति सव, वैश्य सव आदि।

काण्ड-3 - नक्षत्रेष्टियाँ और पुरुषमेध।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि तैत्तिरीयब्राह्मण के प्रथम काण्ड में अग्न्याधान और गवामयन का वर्णन है।

अतः विकल्प 'C' सही है।

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज 136

50. 'सोऽर्थस्तद्व्यक्तिसामर्थ्ययोगी'- अत्र सः पदस्य क आशयः -

(A) शब्दः **(B)** व्यंग्यः
(C) लक्ष्यः **(D)** वाच्यः

व्याख्या- आचार्य आनन्दवर्धन ध्वनि सम्प्रदाय के प्रवर्तक माने जाते हैं। इनकी रचना ध्वन्यालोक में चार उद्योत हैं। प्रथम उद्योत में मङ्गलाचरण, अभाववादी आदि पक्ष के तीनों भेदों का निरूपण, ध्वनि निरूपण का प्रयोजन आदि की व्याख्या के पश्चात् वाच्यार्थ से भिन्न व्यङ्ग्य की सत्ता को सिद्ध करते हुए कहते हैं-

सोऽर्थस्तद्व्यक्तिसामर्थ्ययोगी शब्दश्च कश्चन।
यत्नतः प्रत्यभिज्ञेयौ तौ शब्दार्थौ महाकवेः॥1/8॥

इस प्रकार वाच्यार्थ से भिन्न व्यङ्ग्य की सत्ता को सिद्ध करके प्राधान्य भी उसी का है यह दिखाते हैं- वह प्रतीयमान अर्थ और उसकी अभिव्यक्ति में समर्थ विशेष शब्द। इन दोनों को भली प्रकार पहचानने का प्रयत्न महाकवि को करना चाहिये।

'स व्यङ्ग्योऽर्थस्तद्व्यक्तिसामर्थ्ययोगी शब्दश्च कश्चन न शब्दमात्रम्'

➢ वह व्यङ्ग्य अर्थ और उसको अभिव्यक्त करने की शक्ति से युक्त कोई विशेष शब्द ही है। शब्दमात्र नहीं।
➢ महाकवि को वही शब्द और अर्थ भली प्रकार पहचानने चाहिये।
➢ व्यङ्ग्य और व्यञ्जक के सुन्दर प्रयोग से ही महाकवियों को महाकविपद की प्राप्ति होती है, वाच्य वाचक रचनामात्र से नहीं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'सोऽर्थस्तद्व्यक्तिसामर्थ्ययोगी ....' यहाँ 'स' पद का अर्थ- 'व्यङ्ग्य' है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- ध्वन्यालोक - (1/8)

51. मनुस्मृतेः टीकाकाराणां केन सह कस्य सम्बन्धः

क.	**गोविन्दराजः**	**(i)**	**मनुष्यभाष्यम्**
ख.	**कुल्लूकभट्टः**	**(ii)**	**मन्वाशयानुसारिणीमनुटीका**
ग.	**सर्वज्ञनारायणः**	**(iii)**	**मन्वर्थमुक्तावली**
घ.	**मेधातिथिः**	**(iv)**	**मन्वर्थविवृत्ति**

अधस्तनेषु समीचीनं विकल्पं चिनुत-

(A) 3 1 2 4
(B) 2 3 4 1
(C) 4 2 1 3
(D) 1 4 3 2

व्याख्या- **मनुस्मृति की टीकायें**

टीका	टीकाकार	समय
मनुभाष्य	मेधातिथि	824-900ई.
मनुटीका	गोविन्दराज	1050-1140ई.
मन्वर्थमुक्तावली	कुल्लूकभट्ट	1150-1300ई.
मन्वर्थवृत्ति	सर्वज्ञनारायण	1400-ई. से पूर्व
मन्वर्थचन्द्रिका	राघवानन्द	1300ई. के पश्चात्
मन्वर्थबोधिनी	मणिराम	1630-1660ई.
चन्द्रिका	रामचन्द्र	समय अनिश्चित
नन्दिनी	नन्दन	समय अनिश्चित
मनुशास्त्रविवरण	भारुचि	छठी शताब्दी अथवा 1050ई से पूर्व

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि मनुस्मृति के टीकाकार क्रमशः सम्बन्धित हैं- गोविन्दराज-मनुटीका, कुल्लूकभट्ट-मन्वर्थ-मुक्तावली, सर्वज्ञनारायण-मन्वर्थवृत्ति, मेधातिथि-मनुभाष्य से सम्बन्धित है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- मनुस्मृति - राकेश शास्त्री, पेज भू. xxviii

52. काव्यप्रकाशे ''विशेषवपुरपदार्थोऽपि वाक्यार्थः'' अत्र क उच्यते -

(A) अननन्वितार्थः **(B)** लक्ष्यार्थः
(C) व्यंग्यार्थः **(D)** तात्पर्यार्थः

व्याख्या- आचार्य मम्मटकृत काव्यप्रकाश जिसमें दस उल्लास हैं। उपाधि के भेद से एक ही शब्द कभी वाचक, कभी लक्षक और कभी व्यञ्जक कहा जा सकता है, उसी प्रकार अर्थ भी तीन प्रकार के होते हैं-

वाच्यादयस्तदर्थाः स्युः वाच्य-लक्ष्य-व्यङ्ग्याः।
वाच्य, लक्ष्य तथा व्यङ्ग्य आदि उन वाचक, लक्षक तथा व्यञ्जक शब्दों के अर्थ भी तीन प्रकार के हैं।

तात्पर्यार्थोऽपि केषुचित्।
अर्थ का चतुर्थ भेद - तात्पर्यार्थ

कुमारिलभट्ट के अनुयायी पार्थसारथिमिश्र आदि (अभिहितान्वयवादी मीमांसकों) के मत में (तीन प्रकार के वाच्यादि अर्थों के अतिरिक्त चौथे प्रकार का) तात्पर्यार्थ को भी मानते हैं, परन्तु मीमांसक व्यञ्जना शक्ति को नहीं मानते इसलिये यह 3 शक्तियाँ ही हैं। अभिहितान्वयवाद का अभिप्राय यह है कि पहले पदों से पदार्थों की प्रतीति होती है।

अर्थात् वाक्यार्थ बोध के लिये अभिहित पदार्थों का अन्वय मानने के कारण कुमारिलभट्ट आदि का यह सिद्धान्त अभिहितान्वयवाद कहा जाता है।

आकांक्षा-योग्यता-सन्निधिवशात् वक्ष्यमाणस्वरूपाणां पदार्थानां समन्वये तात्पर्यार्थो विशेषवपुरपदार्थोऽपि वाक्यार्थः समुल्लसतीति 'अभिहितान्वयवादिनां' मतम् ।

पदार्थों का आकांक्षा, योग्यता, सन्निधि के बल से परस्पर सम्बन्ध होने से पदों से प्रतीत होने वाला अर्थ न होने पर भी विशेष प्रकार का तात्पर्य रूप वाक्यार्थ प्रतीत होता है यह अभिहितान्वयवादियों का मत है।

वाच्य एव वाक्यार्थ इति 'अन्विताभिधानवादिनः'।

पदों के द्वारा अन्वित पदार्थों की ही उपस्थिति होती है इसलिए पदार्थों का परस्पर सम्बन्ध रूप वाक्यार्थ वाच्य ही होता है। यह अन्विताभिधानवादियों का मत है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि काव्यप्रकाश में 'विशेष- वपुरपदार्थोऽपि वाक्यार्थः' यहाँ तात्पर्यार्थ शक्ति को बताया जा रहा है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज 36,37

53. नाट्यशास्त्रानुसारं रसानां वर्णाः सन्ति-

(A) शृङ्गारः श्यामः हास्यः कपोतः
(B) हास्यः सितः शृङ्गारः श्यामः
(C) हास्यः सितः शृङ्गारः कपोतः
(D) करुणः कपोतः शृङ्गारः श्यामः

समीचीनमुत्तरं चिनुत-

(A) a एवं b **(B)** b एवं d
(C) c एवं d **(D)** a एवं d

व्याख्या- रससूत्र के प्रथम आचार्य भरतमुनि प्रणीत ग्रन्थ नाट्यशास्त्र है जिसके छठवें अध्याय में रसों की चर्चा की गयी है-

श्यामो भवति शृङ्गारः सितो हास्यः प्रकीर्त्तितः।
कपोतः करुणश्चैव रक्तो रौद्रः प्रकीर्त्तितः॥ 42॥
गौरो वीरस्तु विज्ञेयः कृष्णश्चैव भयानकः।
नीलवर्णस्तु बीभत्सः पीतश्चैवाद्भुतः स्मृतः ॥43॥

* भारतीय वाङ्मय में व्यक्ताव्यक्त सभी विषयों के रूप-रङ्ग एवं आकार-प्रकार का वर्णन उपलब्ध होता है।
* भरतमुनि भी यहाँ शृङ्गारादि रसों के रूप-रङ्ग एवं देवताओं का निरूपण कर रहे हैं।
* शृङ्गारादि रस भी भावरूप होने से मूर्त्त ही होते हैं तथापि उनका व्यक्तीकरण करके यह निरूपण किया गया है।
* शृङ्गार का रङ्ग साँवला होता है तथा हास्य सित अर्थात् शुभ्र वर्ण का कहा गया है।
* करुण का वर्ण कपोत अर्थात् चितकबरा तो रौद्र रस का वर्ण रक्त होता है।
* वीर रस को गौर समझना चाहिए तथा भयानक को काले रङ्ग का।
* बीभत्स रस का वर्ण नीला है तो अद्भुत रस पीले रङ्ग का माना गया है।

शृङ्गारो विष्णुदैवत्यो हास्यः प्रमथदैवतः।
रौद्रो रुद्राधिदैवत्यः करुणो यमदैवतः ॥44॥
बीभत्सस्य महाकालः कालदेवो भयानकः।
वीरो महेन्द्रदेवः स्यादद्भुतो ब्रह्मदैवतः ॥45॥

अब रसों के तत्तत् अधिष्ठातृ देवताओं का निरूपण करते हैं।

* शृङ्गार रस के देवता विष्णु हैं तथा हास्य के देवता प्रमथ हैं जो भगवान् शिव के गण माने गये हैं।
* रौद्र रस के अधिष्ठाता साक्षात् रुद्र ही हैं तथा करुणरस के देवता यम हैं।
* बीभत्स रस के देवता महाकाल हैं।
* भयानक रस के अधिष्ठाता के रूप में कालदेव को माना गया है।
* महेन्द्र वीररस के देवता हैं तो अद्भुत रस के देवता ब्रह्मा माने गए हैं।

साहित्यशास्त्र में रसों की संख्या

रस	स्थायीभाव	वर्ण	देवता
1. शृङ्गार	रति	श्याम	विष्णु
2. वीर	उत्साह	सुवर्णवत्	महेन्द्र
3. बीभत्स	जुगुप्सा	नील	महाकाल
4. रौद्र	क्रोध	रक्त	रुद्र
5. हास्य	हास	शुक्ल	प्रमथ
6. अद्भुत	विस्मय	पीत	ब्रह्मा
7. भयानक	भय	कृष्ण	महाकाल
8. करुण	शोक	कपोत	यम

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि नाट्यशास्त्र के अनुसार रसों का वर्ण है- हास्य का सित अर्थात् श्वेतवर्ण और शृङ्गाररस का श्याम (साँवला) वर्ण होता है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- नाट्यशास्त्र (6/42-43)

54. अशोकस्य गिरनार- अभिलेखानां सन्दर्भे समुचितं कथनमस्ति-

(a) अभिलेखानां भाषा संस्कृतमस्ति
(b) अभिलेखानां भाषा प्राकृतम् (पालिः) अस्ति
(c) अभिलेखानां लिपिः देवनागरी अस्ति
(d) अभिलेखानां लिपि ब्राह्मी अस्ति

अधस्तनेषु समीचीनं विकल्पं चिनुत -

(A) a एवं b **(B)** b एवं c
(C) c एवं d **(D)** b एवं d

व्याख्या- अशोक का गिरनार अभिलेख

स्थान - गिरनार **जिला -** जूनागढ़ (महाराष्ट्र)
भाषा - प्राकृत (पालि) **लिपि -** ब्राह्मी
काल - अशोक कालीन (लगभग 272-32ई.पू.)
विषय - हिंसा और समाज का विरोध, व्यक्तिगत जीवन

1. इयं धंम-लिपी देवानं प्रियेन
2. प्रि यदसिना राञा लेखा पिता (।) इध न किं -
3. चि जीवं आरभित्पा प्रजूहितव्यं (।)

1. यह धम्मलिपि देवानंप्रिय (देवताओं में प्रिय)
2. प्रियदर्शी राजा (अशोक) द्वारा लिखवाई गयी
3. कोई भी जीव बलि के लिए नहीं मारा जायेगा

➢ **खारवेल का हाथीगुम्फा अभिलेख**

स्थान - हाथीगुम्फा-भुवनेश्वर के निकट उदयगिरि पहाड़ी

जिला - पुरी उड़ीसा

लिपि - ब्राह्मी

काल - लगभग प्रथम शती ई.पू. का उत्तरार्ध

विषय - चेदिवंशी राजा कलिंगाधिपति खारवेल के जीवन की घटनाओं का क्रमिक विवरण एवं उसकी राजनैतिक उपलब्धियों तथा लोकमंगल के कार्यों का उल्लेख

मूलपाठ - नमो अरहंतानं। नमो सव-सिधानं।। ऐरेण महाराजेन महावेघवाहनेन चेति राज व स-वधनेन पसथ-सुभ-लखनेन चतुरंत लुठण गुण उपितेन कलिंगाधिपतिना सिरि-खारवेलेन

अर्हतों को नमस्कार। सब सिद्धों को नमस्कार। आर्य, महाराज, महामेधवाहन चेदिराज वंशवर्धन करने वाले, प्रशस्त एवं शुभ लक्षण युक्त चतुर्दिक् प्रशस्त गुणों में पूर्ण कलिंगाधिपति श्रीखारवेल ने।

➢ **समुद्रगुप्त का प्रयाग स्तम्भ-अभिलेख**

स्थान - इलाहाबाद उत्तर प्रदेश (यह मूलतः कौशाम्बी में था जहाँ से इलाहाबाद किले में लाया गया)

भाषा - संस्कृत

लिपि - ब्राह्मी

काल - समुद्रगुप्त (लगभग 335-76)

विषय - समुद्रगुप्त का जीवन चरित्र तथा उपलब्धियों का विवरण

लेख का नाम - इस स्तम्भ में समुद्रगुप्त की प्रशस्ति का उल्लेख है तथा यह प्रयाग में है। इससे इसको प्रयाग-प्रशस्ति कहा जाता है। चूँकि इसका लेखक हरिषेण है इससे इसको हरिषेण की प्रयाग प्रशस्ति नाम से भी जाना जाता है।

➢ अग्रेंजी मे इसे Allahabad Pillar Insription कहते हैं।

➢ **रुद्रदामन का जूनागढ शिलालेख**

स्थान - जूनागढ़ गुजरात

भाषा - संस्कृत

लिपि - ब्राह्मी

काल - रुद्रदामन के राजत्वकालान्तर्गत 72वाँ वर्ष

विषय - रुद्रदामन के प्रान्तीय शासक सुविशाख द्वारा सुदर्शन बाँध का पुनर्निर्माण, बाँध का पूर्व इतिहास एवं रुद्रदामन की राजनैतिक उपलब्धियों का विवरण

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि अशोक का गिरनार अभिलेख के सन्दर्भ में अभिलेख की लिपि ब्राह्मी लिपि और भाषा प्राकृत भाषा में है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- भारतीय पुरालेखों का अध्ययन-शिवस्वरूप सहाय, पेज 90-91

55. आधिदैविकदुःखेषु गण्येते -

a	**झञ्झावातः**	**b**	**अश्वाघातः**
c	**पश्वाघातः**	**d**	**भूकम्पः**

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत -

(A) a एवं c **(B)** a एवं d

(C) c एवं d **(D)** b एवं c

व्याख्या- सांख्यदर्शन का प्रकरणग्रन्थ सांख्यकारिका है जो ईश्वरकृष्ण द्वारा प्रणीत है।

दुःखत्रयाभिघाताज् जिज्ञासा तदपघातके हेतौ।
दृष्टे साऽपार्था चेन्नैकान्तात्यन्ततोऽभावात् ॥1॥

तीन प्रकार के दुःखों आध्यात्मिक, आधिभौतिक एवं आधिदैविक द्वारा किए गए प्रहार के कारण उनके विनाश करने वाले कारण के सम्बन्ध में जिज्ञासा अत्यन्त स्वाभाविक होती है।

प्रत्यक्ष दिखाई देने वाले उपायों के होने से वह शास्त्र विषयक व्यर्थ है तो दुःखों के अनिवार्य रूप से, हमेशा के लिए समाप्त न होने से (उचित) नहीं है।

दुःख तीन प्रकार का होता है-

(1) आध्यात्मिक (2) आधिभौतिक (3) आधिदैविक

(1) आध्यात्मिक- दुःख जिसका आन्तरिक तत्त्वों से सम्बन्ध है जो दो प्रकार का होता है-

(क) शारीरिक (ख) मानसिक

जो शरीर के प्रमुख तत्त्व वात, पित्त और कफ की विषमता के कारण उत्पन्न होता है, शारीरिक दुःख कहलाता है। जैसे-ज्वरादि।

यह भी दो प्रकार का होता है - नैसर्गिक (भूखादि), त्रिदोषजन्य (ज्वरादि)।

(ख) काम, क्रोध, लोभ, मोह, भय और ईर्ष्या आदि भावों के कारण उत्पन्न होने वाला दुःख मानसिक कहलाता है।

(2) आधिभौतिक - बाह्यकारणों अथवा पदार्थों जिन्हें हम देख सकते हैं, से उत्पन्न होने वाला दुःख आधिभौतिक कहलाता है।

जैसे- पशु, पक्षी, सर्प, मनुष्यादि पदार्थों से उत्पन्न दुःख अथवा कष्ट।

(3) आधिदैविक - प्रत्यक्ष न दिखाई देने वाली देवयोनियों जैसे- यक्ष, राक्षस, विकार, ग्रहादि के दुष्प्रभाव से होने वाला कष्ट आधिदैविक कहलाता है।

दुःखत्रय

- आध्यात्मिक
  - शारीरिक
    - नैसर्गिक (भूखादि)
    - त्रिदोषजन्य (ज्वरादि)
  - मानसिक — काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या भयादि से उत्पन्न
- आधिभौतिक — मनुष्य, पशु, सर्प, मृगादि से होने वाला कष्ट
- आधिदैविक — यक्ष, राक्षस, किन्नर, भूत, प्रेत, आँधी, तूफान आदि से होने वाला कष्ट

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि आधिदैविक दुःख में देव आदि से अर्थात् यक्ष, राक्षस आदि से उत्पन्न कष्ट झंझावात, भूकम्प आदि भी हैं। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- सांख्यकारिका (कारिका 01)

56. 'अग्निना रयिमश्नवत्पोषमेव दिवे दिवे' इत्यस्मिन् मन्त्रांशे (रयिः) पदस्य अर्थं निर्दिशतु -

a रात्रिः b रत्नम्

c धनम् d वसु

अत्र उचितमुत्तरं चिनुत -

(A) a एवं b **(B)** c एवं d

(C) b एवं c **(D)** a एवं d

व्याख्या- ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के प्रथम सूक्त में अग्नि देवता की स्तुति की गयी है।

अग्निना रयिमश्नवत् पोषमेव दिवे दिवे।
यशसं वीरवत्तमम् ॥ (1.1.3)

स्तुति किये जाते हुए अग्नि से यह यजमान प्रतिदिन ही निरन्तर पोषण को प्राप्त होने वाले, पान आदि के द्वारा यश को प्राप्त होने वाले और पुत्र भृत्य आदि वीरों से अत्यधिक युक्त धन को प्राप्त करता है।

शब्दार्थ -

रयिम् - धन को

अश्नवत् - प्राप्त करता है

पोषम् - पोषण को प्राप्त होने पर

दिवे दिवे - प्रतिदिन

यशसम् - यश को प्राप्त होने वाले

वीरवत्तमम् - पुत्र, भृत्य आदि वीरों से युक्त

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'रयिः' पद का अर्थ धन होता है। वसु शब्द का भी अर्थ धन ही होता है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- ऋग्वेद (1.1.1)- किरातार्जुनीयम् (1/3)

57. 'काव्यं ग्राह्यमलङ्कारात्' इत्युक्ति अस्ति-

(A) दण्डिनः **(B)** वामनस्य

(C) अभिनवगुप्तस्य **(D)** भोजस्य

व्याख्या- आचार्य वामन कृत काव्यालङ्कारसूत्र प्रथम अधिकरण के 'प्रयोजनस्थापना' नामक प्रथम अध्याय में काव्य को बताते हैं-

➢ **काव्यं ग्राह्यम् अलङ्कारात् ॥1.1॥**

काव्य अलङ्कार से युक्त होने के कारण ग्रहण करने योग्य होता है।

काव्यं खलु ग्राह्यमुपादेयं भवति, अलङ्कारात्। काव्यशब्दोऽयं गुणाऽलङ्कारसंस्कृतयोः शब्दार्थयोर्वर्तते। भक्त्या तु शब्दार्थमात्रवचनोऽत्र गृह्यते।

काव्य अलङ्कार से युक्त होने से उपादेय है। यह काव्य शब्द गुण ओज, प्रसाद आदि और अलङ्कार उपमा, यमक आदि से संस्कारसम्पन्न शब्द और अर्थ का बोध कराता है, परन्तु उपचार से केवल शब्दार्थ का बोधक 'काव्य' शब्द का ग्रहण होता है।

➢ **सौन्दर्यमलङ्कारः ॥1.1.2॥**

यह अलङ्कार क्या वस्तु है? इस शब्द का उत्तर द्वितीय सूत्र में देते हैं-

सुन्दरता की स्थापना पद्य में करना अलङ्कार है।

अलङ्कृतिरलङ्कारः। करणव्युत्पत्त्या पुनरलङ्कार-शब्दोऽयम् उपमादिषु वर्तते-

भाव में विग्रह करने पर अलङ्कृति ही अलङ्कार है। ('अलङ्क्रियतेऽनेन' ऐसी) करण में व्युत्पत्ति करने पर तो वह अलङ्कार शब्द उपमा, यमक आदि में प्रयुक्त होता है।

स दोषगुणालङ्कारहानादानाभ्याम् ॥1.1.3॥

वह (सौन्दर्यस्वरूप अलङ्कार दोषों) दुष्ट पदों (दुष्ट पद,

असाधु पद आदि) के त्याग और गुणों (ओज, प्रसाद आदि) के ग्रहण से होता है।

शास्त्रतस्ते ॥1.1.4॥

वे दोनों (दोषों का त्याग तथा गुणों का ग्रहण) शास्त्र से होते हैं।

काव्यं सद्दृष्टाऽदृष्टार्थं प्रीतिकीर्तिहेतुत्वात् (1.1.5)

अलङ्कारयुक्त काव्य से क्या फल है, जिससे इस (अलङ्कार) के लिए प्रयत्न है?

उत्तम काव्य का फल प्रीतिजनक होने से दृष्ट (इस लोक में-ऐहलौकिक) और कीर्तिजनक होने से अदृष्ट (पारलौकिक) दोनों प्रकार से प्राप्त होता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'काव्यं ग्राह्यमलङ्कारात्' यह उक्ति वामन की है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- काव्यालङ्कारसूत्रवृत्ति (1.1.1)

58. कथनद्वयमधोलिखितम् एकम् अभिकथनम् (A) अपरञ्च कारणम् (R)

अभिकथनम् (A) - सांख्यकारिकायां पुरुषस्य सत्ता स्वीक्रियते।

कारणम् (R) - सङ्घातपरार्थत्वात्

अत्र समुचितमुत्तरं चिनुत -

(A) (A) असत्यम् (R) सत्यम्
(B) (A) तथा (R) उभे सत्ये स्तः
(C) (A) तथा (R) उभे असत्ये स्तः
(D) (A) सत्यम् (R) असत्यम्

व्याख्या- कपिलमुनि द्वारा रचित सांख्यदर्शन का ही प्रकरणग्रन्थ ईश्वरकृष्णद्वारा प्रणीत सांख्यकारिका है। सांख्यकारिका में विशेषतः प्रकृति और पुरुष की सत्ता का वर्णन किया गया है, पुरुष की सत्ता को इस कारिका के द्वारा बताया गया है-

संघातपरार्थत्वात् त्रिगुणादिविपर्ययादधिष्ठानात् ।
पुरुषोऽस्ति भोक्तृभावात् कैवल्यार्थं प्रवृत्तेश्च ॥17॥

संघटनात्मक समूहरूप वस्तुओं के दूसरों के लिए होने के कारण, गुणत्रययुक्त धर्मों से विपरीत धर्म वाले की अपेक्षा होने के कारण (व्यक्तरूप संघात का) अधिष्ठाता होने की अपेक्षा से भोक्ता होने की अपेक्षा से मोक्ष के लिए प्रवृत्ति होने से पुरुष (की सत्ता) है।

पुरुष की सिद्धि के लिए पाँच युक्तियों को प्रस्तुत करते हैं- (1) संघातपरार्थत्वात् (2) त्रिगुणादिविपर्ययात् (3) अधिष्ठानात् (4) भोक्तृभावात् (5) कैवल्यार्थं प्रवृत्तेः

➢ प्रकृति (अव्यक्त) की सिद्धि के लिए भी पाँच युक्तियों को बताया गया है-

भेदानां परिमाणात् समन्वयत्वात् शक्तितः प्रवृत्तेश्च ।
कारणकार्यविभागादविभागाद् वैश्वरूप्यस्य ॥15॥

महत् आदि कार्यों के परिमित होने से, कारण के समान होने से, (कारण की) शक्ति से उत्पन्न होने से और कारण से ही कार्य के आविर्भूत होने से, उसी कारण में लीन हो जाने से विविध रूपों वाले सभी कार्यों का एक कारण (प्रधान) अव्यक्त अवश्य है।

(1) भेदानां परिमाणात् (2) भेदानां समन्वयात् (3) शक्तितः प्रवृत्तेः (4) कारणकार्यविभागात् (5) वैश्वरूप्यस्य अविभागात्

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि कथन (A) सांख्यकारिका में पुरुष की सत्ता स्वीकार की जाती है। कथन (R) में जो कारण है- 'संघातपरार्थत्वात्' यह उचित कारण है।

अतः विकल्प 'B' सही है।

स्रोत- सांख्यकारिका (कारिका - 17)

59. महाभारताश्रितं भासविरचितं नाटकमस्ति-

a दूतवाक्यम् **b प्रतिमानाटकम्**
c मध्यमव्यायोगम् **d बालभारतम्**

अधस्तनेषु समीचीनं विकल्पं चिनुत -

(A) a एवं b **(B)** a एवं d
(C) a एवं c **(D)** b एवं c

व्याख्या- संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख नाट्यग्रन्थ एवं उनके उपजीव्यग्रन्थ

नाट्यग्रन्थ	लेखक	विधा	उपजीव्य
दूतवाक्यम्	भास	एकांकी	महाभारत
मध्यमव्यायोग	भास	एकांकी	महाभारत
प्रतिमानाटकम्	भास	सात अङ्क	रामायण
प्रतिज्ञायौगन्धरायण	भास	4 अङ्क	उदयनकथाश्रित
स्वप्नवासवदत्तम्	भास	6 अङ्क	उदयन लोककथा
ऊरुभङ्गम्	भास	एकांकी	महाभारत
दूतघटोत्कचम्	भास	एकांकी	महाभारत
कर्णभारम्	भास	एकांकी	महाभारत
बालचरितम्	भास	तीन अङ्क	महाभारत
अभिषेकनाटकम्	भास	6 अङ्क	रामायण

पञ्चरात्रम् भास 3 अङ्क महाभारत

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि महाभारत पर आश्रित और भास द्वारा रचित ग्रन्थ 'दूतवाक्यम्' और 'मध्यमव्यायोग' हैं। 'प्रतिमानाटक' रामायण पर आश्रित है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- मिशन L.T. - सर्वज्ञभूषण, पेज 371,388

60. याज्ञवल्क्यस्मृतौ व्यवहाराध्यायस्य विषयोऽस्ति-

a ऋणादानप्रकरणम् **b दानप्रकरणम्**

c गृहस्थधर्मप्रकरणम् **d साक्षिप्रकरणम्**

अधस्तनेषु समुचितमुत्तरं चिनुत -

(A) a एवं b **(B)** a एवं d

(C) b एवं d **(D)** c एवं d

व्याख्या- * महर्षि याज्ञवल्क्य प्रणीत याज्ञवल्क्यस्मृति में तीन अध्याय हैं- (1) आचाराध्याय (2) व्यवहाराध्याय (3) प्रायश्चित्ताध्याय

* इसमें एक हजार श्लोक हैं जो अनुष्टुप् छन्द में है।
* प्रथम आचाराध्याय है- इसमें चौदह विद्याएँ, धर्मोपादान, आचार के दस सिद्धान्त आदि तेरह प्रकरण हैं।
* द्वितीय व्यवहाराध्याय है, इसमें पच्चीस प्रकरण हैं। व्यवहाराध्याय विशेष ध्यातव्य है।
* व्यवहाराध्याय याज्ञवल्क्यस्मृति का हृदय है।
* इसमें ही सर्वाधिक प्रकरण समाहित हैं। जो क्रमशः इस प्रकार हैं -

1. साधारणव्यवहारमातृकप्रकरणम्
2. असाधारणव्यवहारमातृकप्रकरणम्
3. ऋणादानप्रकरणम्
4. उपनिधिप्रकरणम्
5. साक्षिप्रकरणम्
6. लेख्यप्रकरणम्
7. दिव्यप्रकरणम्
8. दायविभागप्रकरणम्
9. सीमाविवादप्रकरणम्
10. स्वामिपालविवादप्रकरणम्
11. स्वामिविक्रयप्रकरणम्
12. दत्ताप्रदानिकप्रकरणम्
13. क्रीतानुशयप्रकरणम्
14. अभ्युपेत्याशुश्रूषाप्रकरणम्
15. संविद्व्यतिक्रमप्रकरणम्
16. वेतनादानप्रकरणम्
17. द्यूतसमाह्वयप्रकरणम्
18. वाक्पारुष्यप्रकरणम्
19. दण्डपारुष्यप्रकरणम्
20. साहसप्रकरणम्
21. विक्रीयासंप्रदानप्रकरणम्
22. संभूयसमुत्थानप्रकरणम्
23. स्तेयप्रकरणम्
24. स्त्रीसंग्रहणप्रकरणम्
25. प्रकीर्णप्रकरणम्

तृतीय प्रायश्चित्ताध्याय है, इसमें आपद्धर्म, यतिधर्म, प्रायश्चित्त आदि छह प्रकरण हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि याज्ञवल्क्यस्मृति के व्यवहाराध्याय में ऋणादानप्रकरण और साक्षिप्रकरण हैं। जबकि दानप्रकरण और गृहस्थधर्मप्रकरण इसमें नहीं हैं।

अतः विकल्प 'B' सही है।

स्रोत- याज्ञवल्क्यस्मृति - गङ्गासागर राय, भू. पेज 1-14

61. 'यस्य शुष्माद्रोदसी अभ्यसेताम्' अस्मिन् मन्त्रांशे 'शुष्मात्' पदस्य अर्थो निर्धार्यताम् -

a बलात् **b पूजनात्**

c पराक्रमात् **d शस्त्रात्**

अधोचितमुत्तरं चिनुत -

(A) a एवं b **(B)** c एवं d

(C) a एवं d **(D)** a एवं c

व्याख्या- * इन्द्रसूक्त ऋग्वेद के दूसरे मण्डल का बारहवाँ सूक्त है।

* इस सूक्त के ऋषि गृत्समद और देवता इन्द्र हैं और छन्द अनुष्टुप् है।
* इन्द्रसूक्त का पहला मन्त्र है-

यो जात एव प्रथमो मनस्वान् देवो देवान्क्रतुना पर्यभूषत्।
यस्य शुष्माद्रोदसी अभ्यसेतां, नृम्णस्य मह्ना स जनास इन्द्रः॥

(2.12.1)

जिस प्रमुख मनस्वी देव ने उत्पन्न होते ही अपने पराक्रम से देवों को अभिभूत कर लिया, जिसकी शक्ति से द्युलोक और पृथिवी लोक काँप गये, हे मनुष्यों! महान् बल की महिमा से युक्त वह इन्द्र है।

शब्दार्थ - प्रथमः - प्रधान, प्रमुख, **मनस्वान् -** मनस्वी, बुद्धिमान्, **देवः** - देव ने, **जातः एव** उत्पन्न होते हैं।

क्रतुना - पराक्रम से, शक्ति से, कर्म से

शुष्मात् - बल से, शक्ति से, पराक्रम से

रोदसी - द्युलोक - पृथिवीलोक

अभ्यसेताम् - डर गये, काँप गये।

नृम्णस्य - महान् बल की

मह्ना - महिमा से, महत्त्व से

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'यस्य शुष्माद्रोदसी अभ्यसेताम्' इस मन्त्र के शुष्मात् पद का अर्थ है- बलात्, पराक्रमात्।

(बल से, शक्ति से, पराक्रम से) **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- ऋग्वेद (2.12.1)

62. आत्मा बुद्ध्या समर्त्यार्थान् मनो युङ्क्ते विवक्षया।
मनः कायाग्निमाहन्ति स प्रेरयति मारुतम् ॥
उपर्युक्तेन श्लोकेन उपदिश्यते-

(A) वर्णोत्पत्तिप्रक्रिया
(B) वर्णानां स्थानम्
(C) वर्णानां प्रयत्नः
(D) वर्णानाम् उच्चारणकालः

व्याख्या- पाणिनि प्रणीत पाणिनीय शिक्षा है जिसमें 60 श्लोक हैं। इसमें वर्णोत्पत्तिप्रक्रिया का इस श्लोक के द्वारा वर्णन किया गया है-

त्रिषष्टिः चतुःषष्टिर्वा वर्णाः शम्भुमते मताः।
प्राकृते-संस्कृते चापि स्वयं प्रोक्ताः स्वयम्भुवा॥3॥

प्राकृत और संस्कृत भाषा में शम्भु के मत में तिरसठ या चौसठ वर्ण कहे गये हैं। स्वयं ब्रह्मा के द्वारा भी यही कहा गया है।

आत्मा बुद्ध्या समर्थ्यार्थान् मनो युङ्क्ते विवक्षया।
मनः कायाग्निमाहन्ति स प्रेरयति मारुतम् ॥6॥

आत्मा बुद्धि के द्वारा पदार्थों को संकलित कर बोलने की इच्छा से (उच्चारण करने की इच्छा से) मन को प्रेरित करता है। (वही) मन कायाग्नि मारुत अर्थात् प्राणवायु को प्रेरित करता है।

स्वरा विंशतिरेकश्च स्पर्शानां पञ्चविंशतिः ।
यादयश्च स्मृता ह्यष्टौ चत्वारश्च यमाः स्मृताः ॥4॥
अनुस्वारो विसर्गश्च ᳵ क ᳵ पौ चाऽपि पराश्रितौ।
दुःस्पृष्टश्चेति विज्ञेयो ऌकारः प्लुत एव च ॥5॥

स्वर - 21, स्पर्श वर्ण = 25, यादय - 08, यम = 4 अनुस्वार - ः, विसर्ग - ।, जिह्वामूलीय और उपध्मानीय - 2 हैं। ᳵ क ᳵ फ ये दोनों पराश्रित हैं। दुःस्पृष्ट - 1, प्लुत ऌकार - 1 है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'आत्मा बुद्धया समेर्त्यार्थान् ....' यह श्लोक वर्णोत्पत्तिप्रक्रिया को उपदेशित करता है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- पाणिनीयशिक्षा - (श्लोक 6)

63. 'इह पुष्यमित्रं याजयामः इत्ययं वाक्यांशः' कस्य आचार्यस्य कालनिर्धारणाय विद्वद्भिः उपयुज्यते-

(A) पतञ्जलेः **(B)** कात्यायनस्य
(C) पाणिनेः **(D)** भर्तृहरेः

व्याख्या- महर्षि पतञ्जलि का भाष्य अपने अनुपम वैशिष्ट्य के कारण महाभाष्य कहा जाता है।

पतञ्जलि का जन्मकाल भी विवादग्रस्त है। पाश्चात्त्य विद्वान् और उनके अनुयायी इनका काल ई. पू. 150 वर्ष मानते हैं जो कि पुष्यमित्र का शासन काल माना जाता है।

प्रवृत्तस्याविरामे शासितव्या भवन्ती (लटः पूर्वाचार्यसंज्ञाः)। .... इह पुष्यमित्रं याजयामः।

(म.भा. 3.2.126)

* पतञ्जलि पाणिनि के सैकड़ों वर्षों बाद ही उत्पन्न हुए थे। इनके समय तक पाणिनीय नियमों का प्रचलन हो चुका था।
* शब्दों का साधुत्व दर्शाने के लिए पतञ्जलि ने इष्टियों का आश्रयण लिया है और शास्त्रीय नियमों की अपेक्षा लोकव्यवहार की प्रधानता स्वीकार की है।
* पतञ्जलि शब्द की व्युत्पत्ति के आधार पर इनका जन्म माना जाता है- पतन्ति अञ्जलयो नमस्कार्यतया तस्मिन् सः पतत् + अञ्जलि में अत् = टि का पररूप करने पर यह रूप बनता है।
* अञ्जलेः पतितः - इस विग्रह में भी मयूरव्यंसकादि मानकर निपातन से इत का लोप करके पत् अञ्जलि = पतञ्जलि बनता है।
* इनके महाभाष्य में एक साथ अनेक प्रश्नों और उत्तरों को देखकर विद्वानों ने इन्हें सहस्र जिह्वाओं वाले शेषनाग का अवतार माना है।
* इसीलिये इन्हें फणी, फणिभृत्, शेषाहि, नागनाथ आदि कहा जाता है।
* इन्हें गोणिकापुत्र भी कहा जाता है। यह सम्भवतः माता के नाम के अनुसार है।
* पाणिनि की अष्टाध्यायी के सूत्रों पर कात्यायनादि द्वारा प्रणीत वार्त्तिकों के आधार पर विशिष्ट शैली में लिखा गया व्याख्यान ग्रन्थ महाभाष्य नाम से प्रसिद्ध है।

सूत्रार्थो वर्ण्यते यत्र वाक्यैः सूत्रानुसारिभिः।
स्वपदानि च वर्ण्यन्ते भाष्यं भाष्यविदो विदुः॥

* महाभाष्य का विभाजन आह्निकों में है-
'अह्ना निर्वृत्तम् आह्निकम्' - इस व्युत्पत्ति से यह प्रतीत होता है कि एक-एक दिन के अध्यापनीय विषय का संग्रह एक-एक आह्निक में हुआ है।

➢ **आचार्य कात्यायन-**

आचार्य पाणिनि ने अपने समय में विद्यमान भाषा का सम्यक्

परिशीलन करके नियमों (सूत्रों) का प्रणयन किया था। उनके समय में भाषा के रूप में संस्कृत प्रयुक्त होती थी।

* अतः पाणिनि के बाद सैकड़ों वर्षों के अन्तराल में जो नवीन शब्द प्रयुक्त होने लगे उनके लिए उन्होंने नियम नहीं बनाये थे। इस कार्य को आचार्य कात्यायन ने किया।
* पाणिनि सुदूर पश्चिम भारत में उत्पन्न हुए थे और महाभाष्यानुसार कात्यायन दक्षिण भारत में।
* पाणिनि के सूत्रों पर समीक्षात्मक और परिशिष्टात्मक रूप में नियम बनाने का सफल प्रयास कात्यायन ने वार्तिक प्रणयन के माध्यम से किया।
* इनका काल पाणिनि से कम से कम 200 वर्षों के बाद ही होना चाहिए। अतः इन्हें भी ईसा पूर्व 2600 से लेकर ई.पू. 3000 वर्षों के मध्य का माना जाता है।
* बड़े खेद की बात है कि आज तक कात्यायन के वार्त्तिकों का स्वतन्त्र तथा प्रामाणिक ग्रन्थ नहीं मिल सका।
* महाभाष्य के माध्यम से ही वार्तिकों का अध्ययन किया जाता है।
* उसमें कात्यायन के अतिरिक्त सुनाग आदि अन्य आचार्यों के भी वार्तिक उपलब्ध होते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'इह पुष्यमित्रं याजयामः' यह वाक्य पतञ्जलि से सम्बन्धित है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- महाभाष्य - जयशंकर लाल त्रिपाठी, भू. पेज 04

64. सांख्यदर्शनानुसारं पञ्चविंशतितत्त्वेषु गणना नास्ति-

(A) रसस्य **(B)** पुद्गलस्य
(C) श्रोत्रस्य **(D)** जलस्य

व्याख्या- सांख्यदर्शन के प्रणेता कपिलमुनि हैं। सांख्यदर्शन का ही प्रकरणग्रन्थ ईश्वरकृष्ण द्वारा प्रणीत सांख्यकारिका है जिसमें 25 तत्त्वों को बताया गया है-

मूलप्रकृतिरविकृतिर्महदाद्याः प्रकृतिविकृतयः सप्त।
षोडशकस्तु विकारो न प्रकृतिर्न विकृतिः पुरुषः।।3।

सांख्याभिमत मूल कारणरूप प्रकृति का विकार नहीं, महत् आदि सात तत्त्व (महत्, अहङ्कार एवं पञ्चतन्मात्राएँ) कारण और विकार दोनों हैं।

सोलह पदार्थों का समुदाय तो केवल विकार ही है। पुरुष न किसी का कारण होता है न विकार होता है।

सांख्यशास्त्र में उल्लिखित प्रमुख 25 तत्त्वों को चार भागों में विभाजित किया गया है-

प्रकृति (अविकृति) = मूलप्रकृति (प्रधान या अव्यक्त)
प्रकृति एवं विकृति = महत् (बुद्धि), अहङ्कार, पञ्चतन्मात्राएँ
केवल विकृति = पञ्चज्ञानेन्द्रियाँ, पञ्चकर्मेन्द्रियाँ, मन, पञ्चमहाभूत
न प्रकृति न विकृति = पुरुष

प्रकृति - 1
↓
महत् - 1
↓
अहङ्कार - 1
↓ ↓ ↓ ↓
(5) पञ्चज्ञानेन्द्रियाँ (5) पञ्चकर्मेन्द्रियाँ (1) मन (5) पञ्चतन्मात्राएँ
↓ ↓ ↓
(श्रोत्र, नेत्र, घ्राण, त्वक्, रसना) (वाक्, पाणि, पाद, पायु, उपस्थ) (शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध)
न प्रकृति न विकृति = पुरुष (1) (5) पञ्चमहाभूत
↓
(आकाश, वायु, तेज, जल, पृथिवी)

प्रकृति - 1	महत् - 1
अहङ्कार - 1	ज्ञानेन्द्रिय - 5
कर्मेन्द्रिय - 5	मन - 1
पञ्चतन्मात्रा - 5	पुरुष - 1

= 25 तत्त्व

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि सांख्यकारिका में पच्चीस तत्त्वों की गणना में 'पुद्गल' सम्मिलित नहीं है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- सांख्यकारिका - (कारिका 03)

65. कौटिलीयमते प्रव्रज्याप्रत्यवसितः प्रज्ञाशौचयुक्तः गूढपुरुषोऽस्ति-

(A) कापटिकः **(B)** गृहपतिकः
(C) वैदेहकः **(D)** उदास्थितः

व्याख्या- कौटिल्य कृत अर्थशास्त्र में पन्द्रह अधिकरण हैं। विनयाधिकारिक प्रथम अधिकरण में गूढपुरुष की चर्चा करते हैं-

- **उपधाभिः शुद्धामात्यवर्गो गूढपुरुषानुत्पादयेत् । कापटिकोदास्थितगृहपतिवैदेहकतापसव्यञ्जनान्**

सत्रितीक्ष्णरसदभिक्षुकीश्च।

धर्मोपधा आदि उपायों के द्वारा अमात्यवर्ग की परीक्षा कर लेने के अनन्तर राजा गुप्तचरों की नियुक्ति करें।

कापटिक, उदास्थित, गृहपतिक, वैदेहक, तापस, सत्री, तीक्ष्ण, रसद और भिक्षुकी आदि अनेक प्रकार के गुप्तचर होते हैं।

- **परमर्मज्ञः प्रगल्भश्छात्रः कापटिकः।**
  दूसरों के रहस्य को जानने वाला, बड़ा प्रगल्भ और विद्यार्थी की वेष-भूषा में रहने वाला गुप्तचर कापटिक कहलाता है।
- **प्रव्रज्याप्रत्यवसितः प्रज्ञाशौचयुक्त उदास्थितः।**
  बुद्धिमान्, सदाचारी, संन्यासी के वेष में रहने वाले गुप्तचर का नाम उदास्थित है।
- **कर्षको वृत्तिक्षीणः प्रज्ञाशौचयुक्तो गृहपतिकव्यञ्जनः।**
  बुद्धिमान्, पवित्र हृदय, और गरीब किसान के वेष में रहने वाले गुप्तचर को गृहपतिक कहते हैं।
- **वाणिजको वृत्तिक्षीणः प्रज्ञाशौचयुक्तो वैदेहक-व्यञ्जनः।**
  बुद्धिमान्, पवित्र हृदय और गरीब व्यापारी के वेष में रहने वाला गुप्तचर वैदेहक है।
- **मुण्डो जटिलो वा वृत्तिकामस्तापसव्यञ्जनः।**
  जीविका के लिए सिर मुड़ाये या जटाधारण किये हुए राजा का कार्य करने वाला तापस गुप्तचर ही तापस है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि गुप्तचरों में प्रव्रज्या प्रत्यवसितः प्रज्ञाशौचयुक्त 'उदास्थितः' है।

अतः विकल्प 'D' सही है।

स्रोत- कौटिलीय अर्थशास्त्र - वाचस्पति गैरोला, पेज 30-31

66. याज्ञवल्क्यस्मृतेः व्यवहाराध्याये प्रकरणानां क्रमोऽस्ति-

(A) ऋणादान-उपनिधि-साक्षि-लेख्य-दिव्य-सीमाविवाद-दायविभागप्रकरणम्

(B) दिव्य-लेख्य-साक्षि-उपनिधि-ऋणादान-सीमाविवाद-दायविभागप्रकरणम्

(C) ऋणादान-उपनिधि-साक्षि-लेख्य-दिव्य-दायविभाग-सीमाविवादप्रकरणम्

(D) साक्षि-लेख्य-दिव्य-उपनिधि-ऋणादान-सीमाविवाद-दायविभागप्रकरणम्

व्याख्या- * महर्षि याज्ञवल्क्यप्रणीत याज्ञवल्क्यस्मृति है।

* यह शुक्लयजुर्वेद के द्रष्टा थे।

* इसमें वेदाङ्ग और चौदह विद्याओं = चार वेद, छः वेदाङ्ग, पुराण, न्याय-मीमांसा और धर्मशास्त्र की चर्चा हुई है।

* याज्ञवल्क्यस्मृति के सुप्रसिद्ध टीकाकार विश्वरूप, विज्ञानेश्वर, अपरार्क ने वृद्ध याज्ञवल्क्य को अनेक बार उद्धृत किया है।

* याज्ञवल्क्य स्मृति में एक हजार श्लोक हैं, जो अनुष्टुप् छन्द में हैं।

* याज्ञवल्क्यस्मृति तीन अध्यायों में विभक्त है- आचाराध्याय, व्यवहाराध्याय, प्रायश्चित्ताध्याय। व्यवहाराध्याय में क्रमशः प्रकरण हैं-

1. साधारणव्यवहारमातृकप्रकरणम्
2. असाधारणव्यवहारमातृकप्रकरणम्
3. ऋणादानप्रकरणम्
4. उपनिधिप्रकरणम्
5. साक्षिप्रकरणम्
6. लेख्यप्रकरणम्
7. दिव्यप्रकरणम्
8. दायविभागप्रकरणम्
9. सीमाविवादप्रकरणम्
10. स्वामिपालविवादप्रकरणम्
11. स्वामिविक्रयप्रकरणम्
12. दत्ताप्रदानिकप्रकरणम्
13. क्रीतानुशयप्रकरणम्
14. अभ्युपेत्याशुश्रूषाप्रकरणम्
15. संविद्व्यतिक्रमप्रकरणम्
16. वेतनादानप्रकरणम्
17. द्यूतसमाह्वयप्रकरणम्
18. वाक्पारुष्यप्रकरणम्
19. दण्डपारुष्यप्रकरणम्
20. साहसप्रकरणम्
21. विक्रीयासंप्रदानप्रकरणम्
22. संभूयसमुत्थानप्रकरणम्
23. स्तेयप्रकरणम्
24. स्त्रीसंग्रहणप्रकरणम्
25. प्रकीर्णप्रकरणम्

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि याज्ञवल्क्यस्मृति के व्यवहाराध्याय में क्रमशः प्रकरण हैं- ऋणादान-उपनिधि-साक्षि-लेख्य-दिव्य-दायविभाग-सीमाविवाद प्रकरण। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- याज्ञवल्क्यस्मृति- गङ्गासागर राय, भू. पेज 1-14

67. यत्समवायिकारणप्रत्यासन्नमवधृतसामर्थ्यं तदसमवायिकारणम् यथा- तन्तुसंयोगः पटस्यासमवायिकारणम्। तन्तुसंयोगस्य गुणस्य, पटसमवायिकारणेषु तन्तुषु गुणिषु समवेतत्वेन प्रत्यासन्नत्वात्। अनन्यथासिद्ध नियतपूर्वभावित्वेन पटं प्रति कारणत्वाच्च। इति सिद्धान्तानुसारेण तन्तुसंयोगः पटस्य कीदृशं कारणम् भवति?

(A) असमवायिकारणम् **(B)** समवायिकारणम्

(C) संयोगकारणम् **(D)** निमित्तकारणम्

व्याख्या- आचार्य गौतम प्रणीत न्यायदर्शन का प्रकरण ग्रन्थ

तर्कभाषा है जो केशव मिश्र द्वारा रचित है। इसमें तीन कारणों की चर्चा हुई है- समवायि कारण, असमवायि कारण और निमित्त कारण।

1. समवायिकारण- यत्समवेतं कार्यमुत्पद्यते तत्समवायिकारणम्। अतस्तन्तुरेव समवायिकारणं पटस्य न तु तुर्यादि।

जिसमें समवेत होकर कार्य उत्पन्न होता है वह समवायि कारण है। इसलिये तन्तु ही पट के समवायि कारण हैं, तुरी आदि नहीं।

2. असमवायिकारणम्-

यत्समवायिकारणप्रत्यासन्नमवधृतसामर्थ्यं तदसमवायिकारणम्। यथा तन्तुसंयोगः पटस्यासमवायिकारणम् तन्तुसंयोगस्य गुणस्य, पटसमवायिकारणेषु तन्तुषु गुणिषु समवेतत्वेन समवायिकारणे प्रत्यासन्नत्वात् अनन्यथासिद्धनियतपूर्वभावित्वेन पटं प्रति कारणत्वाच्च। एवं तन्तुरूपं पटरूपस्य असमवायिकारणम्।

तन्तुसंयोग पट का असमवायि कारण है, क्योंकि तन्तुसंयोग गुण है, वह पट के समवायि कारण तन्तु नामक गुणों में समवाय सम्बन्ध से रहता है। अतः पट के समवायि कारण में प्रत्यासन्न है और वह अनन्यथासिद्ध पूर्वभावी होने से पट के प्रति कारण भी है।

इसी प्रकार तन्तु का रूप पट के रूप का असमवायि कारण है।

3. निमित्तकारण-

निमित्तकारणं तदुच्यते यन्न समवायिकारणम् नाप्य समवायिकारणम् अथ च कारणम्। यथा वेमादिकं पटस्य निमित्तकारणम्।

जो न समवायि कारण है, न ही असमवायि कारण है, किन्तु कारण है वह निमित्त कारण कहलाता है, जैसे वेमा आदि पट का निमित्त कारण है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'यत्समवायिकारण-प्रत्यासन्नमवधृतसामर्थ्यं तदसमवायिकारणम्।' यह असमवायि कारण है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- तर्कभाषा - श्रीनिवासशास्त्री - 33-39

68. 'गो अग्रम्' इत्यत्र न सम्भवति-

(A) प्रकृतिभावः **(B)** पूर्वरूपम्
(C) अवङादेशः **(D)** संहिताया अभावः

व्याख्या-

सूत्र- प्रकृतिभावविधायक विधिसूत्र

पदपरिचय - सर्वत्र (अव्ययपद), पदान्तस्य (6.1) एङः (6.1), गोः (6.1), अति (7.1), विभाषा (1.1), प्रकृत्या (3.1)

अनुवृत्ति/ अधिकार- 'एङः पदान्तादति' से 'पदान्तात्' की 'एङः' की तथा 'अति' की अनुवृत्ति एवं 'प्रकृत्यान्तः पादमव्ययपरे' से 'प्रकृत्या' की अनुवृत्ति।

सूत्रार्थ- लौकिक एवं वैदिक संस्कृत के प्रयोगों में एङन्त 'गो' शब्द को पदान्त में विकल्प से प्रकृतिभाव होता है।

जैसे- गो + अग्रम् = गोअग्रम् / गोऽग्रम् (गाय का अग्रभाग)

➢ प्रकृतिभाव न होने के पक्ष में अवङ् आदेश होकर गवाग्रम् भी बनता है जो आगे 'अवङ् स्फोटायनस्य' सूत्र में बताया गया है।

➢ एङन्त गो के बाद अग्रम् के अ स्वर आने पर पूर्वरूप सन्धि होकर 'गोऽग्रम्' 'एङः पदान्तादति' से, प्रकृतिभाव के अभाव में बना।

➢ सन्धि के लिये संहिता का होना अनिवार्य है यदि संहिता नहीं होगी पदों में तो सन्धि सम्भव नहीं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि गो अग्रम् प्रकृतिभाव, पूर्वरूप और अवङ् आदेश होता है परन्तु संहिता का अभाव होने से सन्धि होना सम्भव नहीं है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- L.T. मिशन - सर्वज्ञभूषण, पेज 101

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज 55-57

69. कथनद्वयमधोलिखितम् एकम् (A) इति अभिकथनम् अपरञ्च (R) इति कारणम् ।

अभिकथनम् (A) - वाल्मीके रामः सीता-वियोगे कारुण्य-आनृशंस्य-शोके-मदनरूप-चतुर्मुखी-सन्तापेन सन्तप्तो भवति।

कारणम् (R) - सर्वेऽपि पुरुषा भार्या-वियोगे सन्तप्ताः भवन्ति।

उपर्युक्तानुसारं समीचीनं विकल्पं चिनुत-

(A) (A) तथा (R) उभौ अपि सत्यम् (R) इति समुचितं कारणमस्ति (A) इत्यस्य।
(B) (A) तथा (R) उभौ अपि सत्यं किन्तु (R) इति उचितं नास्ति (A) इत्यस्य
(C) (A) इति सत्यम् (R) इति असत्यम्
(D) (A) तथा (R) उभौ अपि सत्यम्

व्याख्या- उपर्युक्त कथन (A) में कहा गया है कि वाल्मीकि

के राम सीता वियोग में करुणा से भरे हुये शोक में मदनरूपी चतुर्मुखी सन्ताप से सन्तप्त होते हैं। अर्थात् वाल्मीके रामः सीतावियोगे कारुण्य .... सन्तप्तो भवति।

कथन (R) में कहा गया है कि 'सर्वेऽपि पुरुषा भार्या वियोगे सन्तप्ताः भवन्ति।' अर्थात् सभी पुरुष भार्या अर्थात् पत्नी के वियोग में सन्तप्त होते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट होता है कि कथन (A) और (R) दोनों सही है। किन्तु कथन (A) का कथन (R) उचित कारण नहीं है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

70. दीप्त्या च धैर्येण च यो रराज बालो रविर्भूमिमिवावतीर्णः।
तथातिदीप्तोऽपि निरीक्ष्यमाणो जहार चक्षूंषि यथा शशाङ्कः॥
श्लोकेऽस्मिन् किं छन्दः कश्चात्र अलङ्कारः?
(A) मालिनी वृत्तम्, परिकरालङ्कारः
(B) आर्यावृत्तम् , उत्प्रेक्षालङ्कारः
(C) उपजातिवृत्तम्, उपमालङ्कारः
(D) वंशस्थवृत्तम्, रूपकालङ्कारः

व्याख्या- अश्वघोष कृत बुद्धचरितम् 28 सर्गों का एक महाकाव्य है। भगवत्प्रसूति नामक प्रथम सर्ग में बुद्ध के विषय में कहा गया है-

दीप्त्या च धैर्येण च यो रराज बालो रविर्भूमिमिवावतीर्णः।
तथातिदीप्तोऽपि निरीक्ष्यमाणो जहार चक्षूंषि यथा शशाङ्कः
॥ 1/12॥

तेज एवं धैर्य से वह, भूमि पर आये हुए बाल सूर्य की भाँति, शोभित हुआ और अत्यन्त तेजस्वी होने पर भी, देखे जाने पर, नेत्र चन्द्रमा के समान हर लेता था।

आचार्य मम्मट के अनुसार

उपमा का लक्षण - साधर्म्यमुपमा भेदे।

उपमान और उपमेय का भेद होने पर उनके साधर्म्य का वर्णन उपमा कहलाता है।

उपमा के प्रमुख अंग हैं- उपमेय, उपमान, साधारण धर्म और वाचक शब्द।

जैसे- दीप्त्या च धैर्येण च यो रराज बालो, रविर्भूमिमिवावतीर्णः।

उपर्युक्त उदाहरण में बुद्ध उपमेय है, बालसूर्य उपमान है, तेज साधारणधर्म तथा 'इव' उपमावाचक शब्द है। इस प्रकार इसमें उपमा अलंकार है।

उपजाति छन्द - उपजाति छन्द के भी प्रत्येक चरण में 11 वर्ण होते हैं। इस प्रकार चारों चरणों में कुल 11 x 4 = 44 वर्ण होते हैं।

छन्द लक्षण-

अनन्तरोदीरितलक्ष्मभाजौ, पादौ यदीयावुपजातयस्ताः।
(वृत्तरत्नाकर 3/30)

जिस छन्द के दो चरण इन्द्रवज्रा तथा उपेन्द्रवज्रा के लक्षण से युक्त हों, उसे उपजाति छन्द कहते हैं।

उदाहरण-

तगण तगण जगण गुरु गुरु
ऽ ऽ। ऽ ऽ। ।ऽ। ऽ ।
दीप्त्या च धैर्येण च यो रराज (इन्द्रवज्रा)
ऽ ऽ । ऽ ऽ ।। ऽ । ऽ ऽ
बालो रविर्भूमिमिवावतीर्णः।
जगण तगण जगण गुरु गुरु
। ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ । ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ
तथापिदीप्तोऽपि निरीक्ष्यमाणो जहार चक्षूंषि यथा शशाङ्कः।
(उपेन्द्रवज्रा)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'दीप्त्या च धैर्येण च यो रराज ....' इसमें उपमा अलङ्कार और उपजाति छन्द है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- (बुद्धचरितम् 1/12)

71. अधोऽङ्कितेषु केन सह कस्य सम्बन्धः -

(a)	**माध्यमिकाः**	**(i)**	**बाह्यार्थशून्यम्**
(b)	**योगाचाराः**	**(ii)**	**बाह्यार्थप्रत्यक्षम्**
(c)	**सौत्रान्तिकाः**	**(iii)**	**सर्वं शून्यम्**
(d)	**वैभाषिकाः**	**(iv)**	**बाह्यार्थानुमेयम्**

समुचितं विकल्पं चिनुत -

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	(iii)	(i)	(iv)	(ii)
(B)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(C)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)
(D)	(iii)	(ii)	(iv)	(i)

व्याख्या- बौद्ध दर्शन के सुप्रसिद्ध चार सम्प्रदाय हैं- (1) माध्यमिक (2) योगाचार (3) सौत्रान्तिक (4) वैभाषिक

ते च बौद्धाश्चतुर्विधया भावनया परमपुरुषार्थं कथयन्ति। ते च माध्यमिक-योगाचार-सौत्रान्तिक वैभाषिकसंज्ञाभिः प्रसिद्धा बौद्धा यथाक्रमं सर्वशून्यत्व-बाह्यार्थशून्यत्व-बाह्यार्थानुमेयत्वबाह्यार्थ-प्रत्यक्षत्ववादानातिष्ठन्ते।

* वे बौद्ध लोग चार प्रकार की भावना (दृष्टिकोण) से परम पुरुषार्थ का वर्णन करते हैं।

* ये बौद्ध माध्यमिक, योगाचार, सौत्रान्तिक और वैभाषिक नाम से प्रसिद्ध हैं।

1. माध्यमिक - सर्वं शून्यत्वं सब कुछ शून्य होना
2. योगाचार - बाह्यार्थशून्यं (बाह्य पदार्थों का शून्य होना)
3. सौत्रान्तिक - बाह्यार्थानुमेयत्वम् (बाह्य पदार्थों का अनुमान से ज्ञात होना)
4. वैभाषिक - बाह्यार्थप्रत्यक्षत्वम् (बाह्य पदार्थों का प्रत्यक्ष से ज्ञान होना।)

भावना चतुष्टय -

सर्वं क्षणिकं क्षणिकं, दुखं दुःखं, स्वलक्षणं स्वलक्षणं, शून्यं-शून्यमिति भावनाचतुष्टयमुपदिष्टं द्रष्टव्यम् ।

चारों भावनाएँ इस प्रकार उपदिष्ट हुई हैं-

1. सब कुछ क्षणिक है क्षणिक
2. सब कुछ दुःख है दुःख
3. सभी का लक्षण अपने आपमें है
4. सब कुछ शून्य है शून्य

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि माध्यमिकाः - सर्वं शून्यम्, योगाचाराः - बाह्यार्थशून्यम्, सौत्रान्तिकाः - बाह्यार्थानुमेयम् वैभाषिकाः - बाह्यार्थप्रत्यक्षम् यह सुमेलित है।

अतः विकल्प 'A' सही है।

स्रोत- सर्वदर्शनसंग्रह - उमाशङ्कर शर्मा ऋषि, पेज 31

72. ससायणभाष्यर्ग्वेदसंहितां सम्पाद्य तस्याः प्रकाशनकार्यं प्रथमं केन वैदेशिकेन कृतमस्ति?

(A) मैक्समूलरेण **(B)** वेबरेण
(C) जैकोबी महोदयेन **(D)** विण्टरनित्समहोदयेन

व्याख्या- * भारतीय वाङ्मय की ओर पाश्चात्य विद्वानों का ध्यान आकृष्ट करने का श्रेय सर विलियम जोन्स को है।

* यह संस्कृत, अरबी, फारसी के विद्वान् थे। इन्होंने रॉयल एशियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल की स्थापना की।

* फ्रांस के प्रो. बर्नफ ने कई योग्य संस्कृत प्रेमी विद्वान् तैयार किए, इनमें मैक्समूलर, रोठ और ह्विटनी मुख्य हैं।

* **मैक्समूलर -** मैक्समूलर का जन्म जर्मनी के डेशों नामक स्थान में 6 दिसम्बर 1823 को हुआ था। 19 वर्ष में डाक्टर ऑफ फिलासफी की उपाधि प्राप्त की।
इन्होंने सर्वप्रथम सायणभाष्य के साथ ऋग्वेद के प्रकाशन की एक योजना बनाई।
सन् 1849-1875 ई. तक इनका प्रकाशन का कार्य पूरा हुआ।
यह कार्य 27 वर्षों के घोर परिश्रम के बाद पूर्ण हुआ।

* **वेबर -** डा. वेबर ने यजुर्वेदसंहिता एवं तैत्तिरीयसंहिता का सम्पादन किया है।

* **विन्टरनित्स -** इन्होंने तीन भागों में History of Indian Literature (भारतीय साहित्य का इतिहास) निकाला था। मूल ग्रन्थ जर्मन भाषा में है। इसका अंग्रेजी अनुवाद है जिसके भाग-1 का हिन्दी अनुवाद भी निकला है।

* **विल्सन -** डा. विल्सन ने 1850 ई. में सायणभाष्य के साथ सम्पूर्ण ऋग्वेद का अंग्रेजी में अनुवाद प्रकाशित किया है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि ससायणभाष्य ऋग्वेद संहिता का प्रथम बार प्रकाशन मैक्समूलर ने करवाया था।

अतः विकल्प 'A' सही है।

स्रोत- वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज 19

73. भोजप्रबन्धानुसारं शिलालेख-लिपिवाचनं कथ्यते-

(A) लिपिपरीक्षा **(B)** शिलापरीक्षा
(C) जतुपरीक्षा **(D)** पाण्डुपरीक्षा

व्याख्या- भोजप्रबन्ध बल्लाल कवि विरचित राजा भोज पर आश्रित दन्तकथाओं का एक संग्रह ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ में कालिदास आदि अनेक कवियों को किम्वदन्तियों और कल्पनाओं के आधार पर राजा भोज के समकालीन दर्शाया है।

भोजप्रबन्ध की एक कथा में नर्मदा की एक बड़ी झील में धीवरों ने कुछ मिटे हुए अक्षरों वाला एक पत्थर देखा। उस पर लिखे लेख का जतु (लाख) द्वारा परीक्षण कर के शुद्धपाठ ज्ञात किया, इसी प्रक्रिया को भोज प्रबन्ध में जतुपरीक्षा कहा गया है। जैसे-

ततः किमिदं लिखितमित्यवश्यं विचार्यमिति लिपिज्ञानं कार्यम्। जतुपरीक्षयाऽक्षराणि परिज्ञाय पठति।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि भोजप्रबन्धानुसार

शिलालेख लिपिवाचन को 'जतुपरीक्षा' कहा जाता है।

अतः विकल्प 'C' सही है।

स्रोत- भोजप्रबन्ध - केदारनाथ, पेज 146

74. अधोलिखितानां ग्रन्थानां रचनाकालदृष्ट्या समुचितं क्रमं चिनुत-

(A) काशिका, वाक्यपदीयम्, सारस्वतव्याकरणम्, प्रदीपः
(B) वाक्यपदीयम्, काशिका, सारस्वतव्याकरणम्, प्रदीपः
(C) वाक्यपदीयम्, काशिका, प्रदीपः, सारस्वतव्याकरणम्
(D) वाक्यपदीयम्, प्रदीपः, काशिका, सारस्वतव्याकरणम्

व्याख्या- (1) जयादित्य और वामन - (सं. 650-700 वि.)

* जयादित्य और वामन दोनों की सम्मिलित रूप से रचित वृत्ति 'काशिका' नाम से प्रसिद्ध है।
* महाभाष्य और भर्तृहरि विरचित ग्रन्थों के बाद काशिकावृत्ति सर्वाधिक समादृत और महत्त्वपूर्ण मानी जाती है।
* काशिका की प्राचीनतम व्याख्या जिनेन्द्रबुद्धि विरचित 'काशिकाविवरणपञ्जिका' अपर नाम 'न्यास' है।
* जयादित्य और वामन का काल लगभग सं. 650-700 वि. माना जाता है।

(2) वाक्यपदीयम् - महावैयाकरण भर्तृहरि महाभाष्य के टीकाकार, वाक्यपदीय के कर्ता और भागवृत्ति के वृत्तिकार के साथ कतिपय अन्य कृतियों के भी लेखक माने जाते हैं।

भर्तृहरि नाम का एक व्यक्ति था या अनेक इस विषय पर विचार करने के लिए भर्तृहरि के नाम से प्रसिद्ध ग्रन्थों पर पहले विचार करना आवश्यक है।

संस्कृत वाङ्मय में भर्तृहरिविरचित निम्न ग्रन्थ प्रसिद्ध हैं-

महाभाष्य-दीपिका

वाक्यपदीय - तीनों काण्ड

वाक्यपदीय की स्वोपज्ञवृत्ति प्रथम और द्वितीय काण्ड, नीतिशतक, शृङ्गारशतक और वैराग्यशतक, जैमिनीय मीमांसावृत्ति, वेदान्तसूत्रवृत्ति, शब्दधातु समीक्षा, भट्टिकाव्य, भागवृत्ति।

इनमें से प्रथम तीन ग्रन्थों की परस्पर तुलना करने से विदित हो जाता है कि इन तीनों का कर्ता एक ही व्यक्ति है, वह है महावैयाकरण भर्तृहरि। वाक्यपदीय की रचना वि. सं. 400 से अर्वाचीन नहीं है। वह सप्रमाण सिद्ध किया जा चुका है, अतः वही काल महाभाष्यदीपिका की रचना का भी है।

(3) कैयट कृत महाभाष्य की प्रदीप टीका-

* कैयट कृत महाभाष्य की टीका प्रदीप, प्रदीपभाष्य और महाभाष्यप्रदीप इन विभिन्न तीन नामों से व्यवहृत होती है।
* कैयट ने अपनी टीका के प्रारम्भ में लिखा है कि मैंने यह व्याख्या भर्तृहरि निबद्ध साररूप ग्रन्थसेतु के आश्रय से रची है। यहाँ * सार शब्द के निर्देश से स्पष्ट है कि कैयट का अभिप्राय भर्तृहरि विरचित वाक्यपदीय और प्रकीर्ण काण्ड से है।
* कैयट का काल अधिक से अधिक विक्रम की ग्यारहवीं शती का उत्तरार्द्ध माना जा सकता है।

(4) सारस्वत-व्याकरणकार (सं. 1150 वि. के लगभग)

* सारस्वतसूत्रों का मूल रचयिता नरेन्द्राचार्य नामक वैयाकरण है।
* विट्ठल ने प्रक्रियाकौमुदी की टीका में नरेन्द्राचार्य को अनेकत्र उद्धृत किया है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि कालदृष्टि के अनुसार क्रमशः भर्तृहरि- वाक्यपदीयम् सं.- 400, वामन कृत काशिका सं. 650-700 वि., कैयट कृत प्रदीप टीका- 11वीं शती उत्तरार्द्ध, सारस्वतव्याकरण- नरेन्द्रकृत जिसका समय 1150 वि. के लगभग है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- व्याकरणशास्त्र का इतिहास युधिष्ठिर मीमांसा, भू. पेज 237,171,169,147

75. 'ब्रह्मचर्यं भूमौ शय्या जटाऽजिनधारणमग्निहोत्राभिषेकौ देवतापित्रतिथिपूजा वन्यश्चाहारः' इति कौटिलीयमते कस्य धर्मोऽस्ति?

(A) ब्रह्मचारिणः **(B)** गृहस्थस्य
(C) वानप्रस्थस्य **(D)** परिव्राजकस्य

व्याख्या- कौटिल्य कृत अर्थशास्त्र जिसमें पन्द्रह अधिकरण, 180 प्रकरण तथा 150 अध्याय हैं।

* प्रथम अधिकरण का नाम है- विनयाधिकारिक। इसमें कुल 21 अध्याय हैं।
* प्रथम अधिकरण में राजा के अनुशासन, शास्त्र शिक्षा, मन्त्रियों तथा पुरोहित के गुण, उनके प्रलोभन, गुप्तचर, सभा, राजदूत आदि का वर्णन है।
* त्रयी स्थापना के अन्तर्गत त्रयी की चर्चा हुई है-

सामर्ग्यजुर्वेदास्त्रयस्त्रयी।

साम, ऋक् तथा यजुः इन तीनों वेदों का समन्वित नाम ही त्रयी है।

* **स्वधर्मो ब्राह्मणस्याध्ययनमध्यापनं यजनं याजनं दानं**

प्रतिग्रहश्चेति।

ब्राह्मण का धर्म अध्ययन अध्यापन, यजन याजन और दान देना तथा दान लेना है।

* **क्षत्रियस्याध्ययनं यजनं दानं शस्त्राजीवो भूतरक्षणं च।** क्षत्रिय का धर्म पढ़ना, यज्ञ करना, दान देना, शस्त्र बल से जीविकोपार्जन करना और प्राणियों की रक्षा करना।

* **वैश्यस्याध्ययनं यजनं दानं कृषिपाशुपाल्ये वाणिज्या च।** वैश्य का धर्म पढ़ना, यज्ञ करना, दान देना, कृषिकार्य एवं पशुपालन और व्यापार करना है।

* **शूद्रस्य द्विजातिशुश्रूषा वार्ता कारुकुशीलवकर्म च।** शूद्र का अपना धर्म है कि वह ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य की सेवा करे और शिल्प तथा रंगमञ्चीय कार्य करें।

* **गृहस्थस्य स्वकर्माजीवस्तुल्यैरसमानर्षिभिर्वैवाह्यमृतुगामित्वं देवपित्रतिथिभृत्येषु त्यागः शेषभोजनं च।** गृहस्थ अपनी परम्परा के अनुकूल कार्यों द्वारा जीविकोपार्जन करें, अनुरूप श्रेणी के व्यक्तियों तथा असगोत्र समाज में विवाह, ऋतुगामी हो, देव, पितर, अतिथि और भृत्यजनों को देकर सबसे अन्त में भोजन करें।

* **ब्रह्मचारिणः स्वाध्यायोऽग्निकार्याभिषेकौ भैक्षव्रतत्त्वमाचार्ये प्राणान्तिकी वृत्तिस्तदभावे गुरुपुत्रे सब्रह्मचारिणि वा।**

ब्रह्मचारी का धर्म है कि वह नियमित स्वाध्याय करे, अग्निहोत्र करे, नित्य स्नान करे, गुरु के लिए प्राण तक त्यागने को उद्यत रहे, भिक्षाटन करे, गुरु की अनुपस्थिति में गुरुपुत्र अथवा अपने किसी समान शाखाध्यायी के निकट रहे।

* **वानप्रस्थस्य ब्रह्मचर्यं भूमौ शय्या जटाऽजिनधारणमग्निहोत्राभिषेकौ देवतापित्रतिथिपूजा वन्यश्चाहारः -**

वानप्रस्थी का धर्म है- ब्रह्मचर्यपूर्वक रहना, भूमि पर शयन करना, जटा मृगचर्म को धारण किये रहना, अग्निहोत्र तथा प्रतिदिन स्नान करना, देव, पितर एवं अभ्यागतों की सेवा-पूजा करना और वन के कन्द मूल फल पर निर्वाह करना।

* **परिव्राजकस्य संयतेन्द्रियत्वमनारम्भो निष्किञ्चनत्वं सङ्गत्यागो भैक्षमनेकत्रारण्यवासो बाह्याभ्यन्तरं च शौचम् ।**

संन्यासी का धर्म है- जितेन्द्रिय होना, वह किसी भी सांसारिक कार्य को न करे, निष्किंचन बना रहे, एकाकी रहे, प्राणरक्षा मात्र के लिए स्वल्प आहार, समाज में न रहे, जंगल में भी एक स्थान पर न रहता रहे, मन, वचन, कर्म से अपना बाह्याभ्यन्तर पवित्र रखे।

* **सर्वेषामहिंसा सत्यं शौचमनसूयाऽऽनृशंस्यं क्षमा च**

प्रत्येक वर्ण और प्रत्येक आश्रम का धर्म है कि वह किसी भी प्रकार की हिंसा न करे, सत्य बोले, पवित्र बना रहे, किसी से ईर्ष्या न करे, दयावान् और क्षमाशील बना रहे।

* **स्वधर्मः स्वर्गायानन्त्याय च। तस्यातिक्रमे लोकः सङ्करादुच्छिद्येत।**

अपने धर्म का पालन करने से स्वर्ग और मोक्ष की प्राप्ति होती है। उसका पालन न करने से वर्ण और कर्म में संकरता आ जाती है, जिससे लोक का नाश हो जाता है।

* **तस्मात्स्वधर्मं भूतानां राजा न व्यभिचारयेत् ।**
स्वधर्मं संदधानो हि प्रेत्य चेह च नन्दति॥ (1.3.16)
व्यवस्थितार्यमर्यादः कृतवर्णाश्रमस्थितिः।
त्रय्या हि रक्षितो लोकः प्रसीदति न सीदति॥ (1.3.17)

इसलिए राजा का कर्तव्य है कि वह ब्रह्म प्रजा को धर्म और कर्म मार्ग से भ्रष्ट न होने दे। अपनी प्रजा को धर्म और कर्म में प्रवृत्त रखने वाला राजा लोक और परलोक में सुखी रहता है। पवित्र आर्यमर्यादा में अवस्थित, वर्णाश्रम धर्म में नियमित और त्रयी धर्म से रक्षित प्रजा दुःखी नहीं होती, सदा सुखी रहती है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'ब्रह्मचर्यं भूमौ शय्या जटाऽजिनधारणमग्निहोत्राभिषेकौ ....' यह पंक्ति कौटिलीयमते वानप्रस्थधर्म से सम्बन्धित है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- कौटिलीय अर्थशास्त्र - वाचस्पति गैरोला, पेज 11

76. शुक्लयजुर्वेदसंहितायाः कतमोऽध्याय ईशोपनिषद् -
(A) विंशतितम् **(B)** षोडशतमः
(C) चत्वारिंशत्तमः **(D)** एकोनविंशतितमः

व्याख्या- ➤ ईशावास्योपनिषद् शुक्लयजुर्वेद काण्वशाखीय संहिता का चालीसवाँ अध्याय है।

➤ मन्त्रभाग का अंश होने से इसका विशेष महत्त्व है। इसी को सबसे पहला उपनिषद् माना जाता है।

➤ शुक्लयजुर्वेद के प्रथम उनतालीस अध्यायों में कर्मकाण्ड का निरूपण हुआ है। यह उस काण्ड का अन्तिम अध्याय है और इसमें भगवत्तत्वरूप ज्ञानकाण्ड का निरूपण किया गया है।

* इसके पहले मन्त्र में 'ईशावास्यम्' वाक्य आने से इसका नाम

'ईशावास्य' माना गया है।

ऊँ ईशा वास्यमिदꣳ सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत् ।
तेन व्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम् ॥1॥

अखिल ब्रह्माण्ड में, जो कुछ भी, जडचेतन स्वरूप जगत् है, यह समस्त ईश्वर से व्याप्त है, उस ईश्वर को साथ रखते हुए त्यागपूर्वक इसे भोगते रहो आसक्त मत होओ। धन, भोग्यपदार्थ किसका है अर्थात् किसी का भी नहीं है।

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतꣳ समाः।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे ॥2॥

जगत् के एकमात्र कर्ता, धर्ता, हर्ता, सर्वशक्तिमान्, सर्वमय परमेश्वर का सतत स्मरण रखते हुए सब कुछ उन्हीं का समझकर उन्हीं की पूजा के लिए शास्त्रनियत कर्तव्याकर्मों का आचरण करते हुए ही सौ वर्षों तक जीने की इच्छा करो।

असुर्या नाम ते लोका अन्धेन तमसाऽऽवृताः।
ताꣳस्ते प्रेत्याभिगच्छन्ति ये के चात्महनो जनाः ॥3॥

असुरों की प्रसिद्ध नाना प्रकार की योनियाँ एवं नरकरूप लोक हैं, वे सभी अज्ञान तथा दुःख क्लेश रूप महान् अन्धकार से आच्छादित है, जो कोई भी आत्मा की हत्या करने वाले मनुष्य हों वे मरकर उन्हीं भयङ्कर लोकों को बार-बार प्राप्त होते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि शुक्लयजुर्वेदसंहिता के चालीसहवें अध्याय में ईशोपनिषद् है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- ईशादि नौ उपनिषद् - गीताप्रेस, पेज 01

77. महाभारतस्य खिलपर्व कथ्यते-

(A) मत्स्यपुराणम् **(B)** स्कन्दपुराणम्
(C) हरिवंशपुराणम् **(D)** पद्मपुराणम्

व्याख्या- वर्तमान महाभारत अठारह पर्वों में विभक्त है। जिसमें अनेक उपपर्व मुख्य घटनाओं के शीर्षक के रूप में हैं।

* यहाँ महाभारत के परिशिष्ट के रूप में स्वतन्त्र ग्रन्थ होने के कारण हरिवंशपुराण को खिलपर्व कहा जाता है।
* इसमें 16374 श्लोक हैं। इसे भी वैशम्पायन ने जनमेजय को सुनाया था।
* यह भी महाभारत के समान अनेक लेखकों की रचना के रूप में है।
* इसका अन्तिम पर्व (भविष्यपर्व) परिशिष्ट है और काल की दृष्टि से बहुत बाद की रचना है।
* इस ग्रन्थ के तीन खण्ड (पर्व) हैं- हरिवंश पर्व, विष्णुपर्व और भविष्यपर्व।
* हरिवंशपर्व में कृष्ण के वंश (वृष्णि, अन्धक) की कथा विस्तार से वर्णित है, इसी के नाम पर पूरे ग्रन्थ का नाम दिया गया है।
* पुराणों की दृष्टि से सृष्टि का वर्णन ध्रुव, दक्ष, वेन और पृथु के आख्यान, सूर्यवंश के वर्णन के प्रसंग में विश्वामित्र और वसिष्ठ की कथा एवं चन्द्रवंश के वर्णनक्रम में उर्वशी पुरूरवा नहुष, ययाति, यदु, वसुदेव तथा कृष्ण की कथाएँ वर्णित हैं।
* विष्णुपर्व सबसे बड़ा भाग है जिसमें महाभारत के नायक कृष्ण की विविध लीलाओं का वर्णन है।
* कृष्ण के पुत्र प्रद्युम्न तथा पौत्र अनिरुद्ध के विवाहों का भी विस्तृत विवरण है।
* भागवत में निरूपित कृष्णकथा से कहीं-कहीं विवरणों में पार्थक्य है। अतः प्राचीनतम कृष्णकथा का प्रतिनिधित्व इसमें मिलता है।
* भविष्यपर्व में विविध वृत्तों का पौराणिक शैली में परस्पर असम्बद्ध विवरण है।
* विष्णु के अवतारों का वर्णन, शिव और विष्णु की उपासना का समन्वय एवं शिव के दो उपासकों (हंस तथा डिम्भ) की कृष्ण द्वारा पराजय की कथा के अतिरिक्त अन्त में महाभारत और हरिवंश के माहात्म्य का निरूपण है।
* ध्वन्यालोक में आनन्दवर्धन ने कहा है कि कृष्णद्वैपायन ने महाभारत का हरिवंश के द्वारा समापन करके शान्तरस की पुष्टि की है।
* इस प्रकार हरिवंश को प्राचीन काल से ही महाभारत का अंश माना गया है।
* आदिपर्व के द्वितीयाध्याय में जो महाभारत में 100 पर्व माने गये हैं उनमें हरिवंश भी सम्मिलित हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि महाभारत के हरिवंश पर्व को ही 'खिल पर्व' कहा जाता है।

अतः विकल्प 'C' सही है।

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा ऋषि, पेज 159

78. पाणिनीयशिक्षानुसारं शम्भुमते मताः वर्णा सन्ति-

a 61 **b** 62
c 63 **d** 64

अधोलिखितेषु समुचितं विकल्पं चिनुत -

(A) a एवं d **(B)** b एवं c
(C) c एवं d **(D)** a एवं d

याख्या- पाणिनि कृत पाणिनीयशिक्षा में वर्णों से सम्बन्धित श्लोक हैं। इस श्लोक में वर्णों की संख्या बतायी गयी है- जिसमें पूरे श्लोकों की संख्या 60 है।

त्रिषष्टिः चतुःषष्टिर्वा वर्णाः शम्भुमते मताः।
प्राकृते-संस्कृते चापि स्वयं प्रोक्ताः स्वयम्भुवा॥3॥

प्राकृत और संस्कृत भाषा में शम्भु के मत में 63 या 64 वर्ण कहे गये हैं। स्वयं ब्रह्मा के द्वारा भी यही कहा गया है।

स्वरा विंशतिरेकश्च स्पर्शानां पञ्चविंशतिः।
यादयश्च स्मृता ह्यष्टौ चत्वारश्च यमाः स्मृताः ॥4॥
अनुस्वारो विसर्गश्च ᳲक ᳲपौ चापि पराश्रितौ।
दुःस्पृष्टश्चेति विज्ञेय ऌकारः प्लुत एव च ॥5॥

स्वर = 21 हैं
स्पर्श वर्ण = 25 हैं
यादयः = 08 हैं
यम = 04 हैं
अनुस्वार = 01
विसर्ग = 01
जिह्वामूलीय = 01
उपध्मानीय = 01
(ᳲक ᳲप ये दोनों पराश्रित हैं)
दुःस्पृष्ट = 01
प्लुत ऌकार = 01

- ➢ इस तरह = 21+25+8+4+1+1+2+1+1 = 64
- ➢ जहाँ प्लुत की गिनती नहीं होती है वहाँ वर्णों की कुल संख्या 63 सिद्ध है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि पाणिनीयशिक्षानुसार शम्भु के 63 या 64 वर्ण हैं। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- पाणिनीय शिक्षा - (3,4,5 श्लोक)

79. मनुस्मृत्यनुसारं समुचितमस्ति-
(A) आचार्यो ब्रह्मणो मूर्तिः
(B) आचार्यो मूर्ति प्रजापतेः
(C) आचार्यो मूर्तिरात्मनः
(D) आचार्यः पृथिव्या मूर्तिः

व्याख्या- आचार्य मनु द्वारा प्रणीत मनुस्मृति जिसमें बारह अध्याय हैं और 2694 श्लोक हैं।

* मनुस्मृति की सबसे प्राचीन टीका मेधातिथि की है। जिसका समय 900 ई. है।
* मनुस्मृति के द्वितीय अध्याय में धर्म की परिभाषा, धर्म के उपादान आदि का वर्णन किया गया है-

आचार्यो ब्रह्मणो मूर्तिः, पिता मूर्तिः प्रजापतेः।
माता पृथिव्या मूर्तिस्तु, भ्राता स्वो मूर्तिरात्मनः॥ 2/226॥

आचार्य परमात्मा की मूर्ति है, पिता ब्रह्मा की मूर्ति, माता पृथ्वी की मूर्ति और भाई अपनी ही मूर्ति है।

आचार्यश्च पिता चैव माता भ्राता च पूर्वजः।
नार्तेनाप्यवमन्तव्या ब्राह्मणेन विशेषतः ॥2/225॥

आचार्य, पिता, माता, बड़ा भाई- इनका दुखी होने पर भी मनुष्य और विशेषकर ब्राह्मण कदापि अपमान न करे।

अन्य महत्त्वपूर्ण सूक्तियाँ-

* **न स्नानमाचरेत् भुक्त्वा (4/129)**
  मनु कहते हैं- भोजन करके स्नान न करे।
* **यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः (3/56)**
  मनु कहते हैं- जिस कुल में स्त्रियाँ सम्मानित होती हैं, उस कुल से देवगण प्रसन्न होते हैं।
* **वेदोऽखिलो धर्ममूलम् । (2/6)**
  मनु कहते हैं- सम्पूर्ण वेद सभी विद्याओं के मूल हैं और वेदों के ज्ञाता स्मृतिशील हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि मनुस्मृति के अनुसार 'आचार्यो ब्रह्मणो मूर्तिः' यह पंक्ति सही है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- मनुस्मृति (2/226)

80. यथा हिरण्यं शुचि धातुमध्ये मेरुर्गिरीणां सरसां समुद्रः।
तारासु चन्द्रस्तपतां च सूर्यः पुत्रस्तथा ते द्विपदेषु वर्यः॥
.... श्लोकेऽस्मिन् कस्य पुत्रस्य वर्णनमस्ति -
(A) दशरथस्य **(B)** दुष्यन्तस्य
(C) दुर्योधनस्य **(D)** शुद्धोदनस्य

व्याख्या- * अश्वघोष द्वारा विरचित बुद्धचरितम् महाकाव्य जिसमें 28 सर्ग हैं।

* प्रथम सर्ग भगवत्प्रसूतिः (भगवान् का जन्म) नामक सर्ग है।
* प्रथम सर्ग में इक्ष्वाकुवंश के शुद्धोदन नामक राजा हुए।

इक्ष्वाकुवंशार्णवसम्प्रसूतः प्रेमाकरश्चन्द्र इव प्रजानाम् ।
शाक्येषु साकल्यगुणाधिवासः शुद्धोदनाख्यो नृपतिर्बभूव ॥1/1॥

इक्ष्वाकुवंश रूपी समुद्र में उत्पन्न, प्रजाओं के लिए चन्द्र सदृश

प्रेम का आकर, सम्पूर्ण गुणों का निधान-शुद्धोदन नामक राजा, शाक्यों में हुआ।

आसीन्महेन्द्रादिसमस्य तस्य पृथ्वीव गुर्वी महिषी नृपस्य। मायेति नाम्नी शिवरत्नसारा शीलेन कान्त्याऽप्यधिदेवतेव ॥1/2॥

महेन्द्र पर्वत के सदृश उस राजा की कल्याणमय रत्नों से सार वाली, पृथ्वी के समान गौरवशालिनी शील एवं कान्ति से अधिदेवता के तुल्य माया नाम की रानी थी।

यथा हिरण्यं शुचि धातुमध्ये मेरुर्गिरीणां सरसां समुद्रः। तारासु चन्द्रस्तपतां च सूर्यः पुत्रस्तथा ते द्विपदेषु वर्यः ॥1/37॥

जिस प्रकार धातुओं में शुद्ध स्वर्ण, पर्वतों में सुमेरु, जलाशयों में समुद्र, ताराओं में चन्द्रमा तथा तपाने वालों में में सूर्य श्रेष्ठ है, उसी प्रकार मनुष्यों में आपका पुत्र श्रेष्ठ है।

दीप्त्या च धैर्येण च यो रराज बालो, रविर्भूमिमिवावतीर्णः। तथातिदीप्तोऽपि निरीक्ष्यमाणो जहार चक्षूंषि यथा शशाङ्कः ॥1/12॥

तेज एवं धैर्य से वह, भूमि पर आये हुए बाल सूर्य की भाँति शोभित हुआ और अत्यन्त तेजस्वी होने पर भी देखे जाने पर नेत्र चन्द्रमा के समान हर लेता था।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'यथा हिरण्यं शुचि धातुमध्ये ....' इस पंक्ति में शुद्धोदन के पुत्र का वर्णन है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- बुद्धचरितम् (1/37)

81. अधस्तनयुग्मानां समीचीनतालिकां चिनुत-

(a)	**श्रीहर्षः**	**(i)**	**हर्षचरितम्**
(b)	**दण्डी**	**(ii)**	**मुद्राराक्षसम्**
(c)	**बाणभट्टः**	**(iii)**	**नैषधीयचरितम्**
(d)	**विशाखदत्तः**	**(iv)**	**दशकुमारचरितम्**

समुचितां तालिकां चिनुत -

(A) a-(ii), b-(iii), c-(iv), d-(i)
(B) a-(iii), b-(iv), c-(i), d-(ii)
(C) a-(iv), b-(i), c-(ii), d-(iii)
(D) a-(i), b-(ii), c-(iii), d-(iv)

व्याख्या-

ग्रन्थकार	**ग्रन्थ**
शूद्रक	मृच्छकटिकम् 10 अङ्क
विशाखदत्त	मुद्राराक्षसम् 7 अङ्क
भवभूति	उत्तररामचरितम् 7 अङ्क
कालिदास	अभिज्ञानशाकुन्तलम् 7 अङ्क
दण्डी	दशकुमारचरितम् 8 उच्छ्वास
बाणभट्ट	हर्षचरितम् 8 उच्छ्वास
श्रीहर्ष	नैषधीयचरितम् 22 सर्ग
सुबन्धु	वासवदत्ता
भारवि	किरातार्जुनीयम् 18 सर्ग
माघ	शिशुपालवधम् 20 सर्ग
भट्टनारायण	वेणीसंहारम् 6 अङ्क
भास	स्वप्नवासवदत्तम् 6 अङ्क
कालिदास	रघुवंशम् 19 सर्ग
कालिदास	कुमारसम्भवम् 17 सर्ग
बिल्हण	विक्रमाङ्कदेवचरितम्
नारायण पण्डित	हितोपदेश
अश्वघोष	बुद्धचरितम्

महत्त्वपूर्ण तथ्य-

बृहत्त्रयी

किरातार्जुनीयम्	शिशुपालधम्	नैषधीयचरितम्
भारवि	माघ	श्रीहर्ष

लघुत्रयी

रघुवंशम्	कुमारसम्भवम्	मेघदूतम्
कालिदास	कालिदास	कालिदास

गद्यबृहत्त्रयी

वासवदत्ता	कादम्बरी	दशकुमारचरितम्
सुबन्धु	बाणभट्ट	दण्डी

उपजीव्यग्रन्थत्रयी

रामायणम्	महाभारतम्	भागवतपुराणम्
वाल्मीकि	वेदव्यास	वेदव्यास

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि श्रीहर्ष - नैषधीयचरितम्,

दण्डी - दशकुमारचरितम्, बाणभट्ट - हर्षचरितम्, विशाखदत्त - मुद्राराक्षसम्। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- L.T. मिशन - सर्वज्ञभूषण, पेज 391-92

82. बौद्धदर्शनानुसारं चतुर्णाम् आर्यसत्यानाम् उचितः क्रमोऽस्ति-

(A) दुःखम्, समुदायः, निरोधः, मार्गः
(B) मार्गः, दुःखम्, निरोधः, समुदायः
(C) समुदायः, दुःखम्, मार्गः, निरोधः
(D) निरोधः, मार्गः, दुःखम्, समुदायः

व्याख्या- * बौद्ध दर्शन भारत एक अत्यन्त प्राचीन नास्तिक दर्शन है।

* **बौद्धधर्म की विशेषताएँ -**
अनीश्वरवादी, पुनर्जन्म में विश्वास, वेद विरोधी, नास्तिक, आत्मवादी, जन्म कारण ईश्वर नहीं

तदिदं सर्वं दुःखं दुःखायतनं दुःखसाधनं चेति भावयित्वा तन्निरोधोपायं तत्त्वज्ञानं संपादयेत्। अत एवोक्तम् दुःखसमुदाय-निरोधमार्गाश्चत्वार आर्यबुद्धस्याभिमतानि तत्त्वानि। तत्र दुःखं प्रसिद्धम्।

यह समूचा संसार दुःख है, दुःख का घर है और दुःख का साधन है। यहीं से दुःख मिलता है। इसीलिए कहा है- दुःख, समुदाय, निरोध और मार्ग।

ये चार तत्त्व आर्य बुद्ध के द्वारा सम्मत है। इनमें दुःख तो प्रसिद्ध है।

बौद्धदर्शन के चार सम्प्रदाय हैं-
(1) माध्यमिक (2) योगाचार (3) सौत्रान्तिक (4) वैभाषिक

भावनाचतुष्टय - भावनाचतुष्टय चार हैं-
1. सब कुछ क्षणिक है क्षणिक
2. सब कुछ दुःख है दुःख
3. सब का लक्षण अपने आप में है
4. सब कुछ शून्य है शून्य

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि बौद्धदर्शन के अनुसार चार आर्य सत्य हैं- दुखम्, समुदायः, निरोधः और मार्गः।

अतः विकल्प 'A' सही है।

स्रोत- सर्वदर्शनसंग्रह - उमाशङ्कर शर्मा ऋषि, पेज 76

83. मनुस्मृतिकारेण 'नारा' इति शब्देन किं गृहीतम्

(A) आपः **(B)** मनुष्यः
(C) पशुः **(D)** पक्षी

व्याख्या- * मनु कृत मनुस्मृति में बारह अध्याय हैं। 2694 श्लोक हैं, प्राचीनतम तथा सर्वाधिक मान्य है।

* इसमें समाजशास्त्र, नीतिशास्त्र, धर्मशास्त्र और अर्थशास्त्र- सभी का समावेश है। अतः सामाजिक व्यवस्था का आधारभूत ग्रन्थ है।
* मनुस्मृति में काम, अर्थ, मोक्ष और धर्मरूप चारों पुरुषार्थों का विशद विवेचन है-

आपो नारा इति प्रोक्ता आपो वै नरसूनवः।
ता यदस्यायनं पूर्वं तेन नारायणः स्मृतः ॥1/10॥

जल को नार कहते हैं क्योंकि जल नर (रूप परमात्मा) से उत्पन्न हुआ है। यही जल इस परमात्मा का प्रथम वासस्थान है इस कारण परमात्मा 'नारायण' कहा गया है।

यत्तत्कारणमव्यक्तं नित्यं सदसदात्मकम् ।
तद्विसृष्टः स पुरुषो लोके ब्रह्मेति कीर्त्यते ॥1/11॥

लोक और वेद में प्रसिद्ध, अव्यक्त नित्य और सत् असत् का आत्मा ऐसा कारण से उत्पन्न हुआ वह पुरुष 'ब्रह्मा' इस नाम से संसार से विख्यात है।

तदण्डमभवद्धैमं सहस्रांशुसमप्रभम् ।
तस्मिञ्जज्ञे स्वयं ब्रह्मा सर्वलोकपितामहः ॥1/9॥

वह बीज सूर्य के समान कान्ति वाला सुवर्ण का अण्डा हो गया और उसमें सब लोकों का कर्ता ब्रह्मा स्वयं उत्पन्न हुआ।

अन्य सूक्तियाँ-

* **आचारः परमो धर्मः (1/108)**
वेद और स्मृति दोनों में कहा गया है- आचार ही परम धर्म है।
* **नास्तिको वेदनिन्दकः (2/11)**
जो ब्राह्मण शास्त्र द्वारा धर्म के मूल वेद तथा स्मृति का निरादर करता है वह वेदनिन्दक होने से नास्तिक है।
* **ब्राह्मे मुहूर्ते बुध्येत । (4/92)**
सूर्योदय के पूर्व ब्राह्ममुहूर्त्त में जगकर धर्म और अर्थ की चिन्ता करे।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि 'नारा' शब्द का अर्थ (जल) आपः होता है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- मनुस्मृति (1/10)

84. अधोलिखितेषु केन सह कस्य सम्बन्धः?

(क)	भट्टोजिदीक्षितः	1	काशिका
(ख)	नरेन्द्राचार्यः	2	शब्दकौस्तुभः
(ग)	वामनः	3	लघुमञ्जूषा
(घ)	नागेशः	4	सारस्वतव्याकरणम्

समुचितां तालिकां चिनुत -

	क	ख	ग	घ
(A)	4	3	1	2
(B)	1	4	3	2
(C)	3	2	1	4
(D)	2	4	1	3

व्याख्या- भट्टोजिदीक्षित-

* डा. वेल्वलकर भट्टोजिदीक्षित का काल सन् 1600-1650 (वि.सं.-1657-1707) मानते हैं। अन्य ऐतिहासिक वि. सं. 1637 मानते हैं।

भट्टोजिदीक्षित ने शब्दकौस्तुभ के अतिरिक्त सिद्धान्तकौमुदी और उसकी व्याख्या प्रौढ़मनोरमा लिखी है।

सिद्धान्तकौमुदी के उत्तरकृदन्त के अन्त में शब्दकौस्तुभ का उल्लेख किया है-

इत्थं लौकिकशब्दानां दिङ्मात्रमिह दर्शितम् ।
विस्तरस्तु यथाशास्त्रं दर्शितः शब्दकौस्तुभे॥

➢ **शब्दकौस्तुभ के टीकाकार-**

नागेश - विषमपदी | राघवेन्द्राचार्य - प्रभा
वैद्यनाथ पायगुण्ड - प्रभा | कृष्णमित्र - भावप्रदीप
विद्यानथ शुक्ल - उद्योत | भास्कर दीक्षित- शब्दकौस्तुभदूषण

➢ **सारस्वत-व्याकरणकार (सं. - 1150 वि. के लगभग)**

क्षेमेन्द्रकृत सारस्वतप्रक्रिया के अन्त में लिखा है-

* इति श्रीनरेन्द्राचार्यकृते सारस्वते क्षेमेन्द्रटिप्पनं समाप्तम् ।

इससे प्रतीत होता है कि सारस्वतसूत्रों का मूल रचयिता नरेन्द्राचार्य नामक वैयाकरण है।

* एक नरेन्द्रसेन वैयाकरण 'प्रमाणप्रमेयकलिका' का कर्त्ता है।
* इसके गुरु का नाम कनकसेन और परमगुरु का नाम (गुरु का गुरु) का नाम अजितसेन था।

➢ **जयादित्य और वामन (सं. 650-700वि.)**

* जयादित्य और वामन दोनों की रचित सम्मिलित वृत्ति 'काशिका' नाम से प्रसिद्ध है।
* महाभाष्य और भर्तृहरि विरचित ग्रन्थों के बाद काशिकावृत्ति सर्वाधिक समादृत और महत्त्वपूर्ण मानी जाती है।
* इसमें बहुत से सूत्रों की वृत्ति और उदाहरण प्राचीन वृत्तियों से संगृहीत हैं।

➢ **नागेशभट्ट -**

* नागेशभट्ट महाराष्ट्रीय ब्राह्मण थे। इनके पिता का नाम शिवभट्ट और माता का नाम सती था।
* नागेशभट्ट ने हरिदीक्षित से व्याकरण का अध्ययन किया था। हरिदीक्षित भट्टोजिदीक्षित के पौत्र थे।
* महाभाष्यप्रदीपोद्योत में नागेश ने अपने दो ग्रन्थ लघुमञ्जूषा और शब्देन्दुशेखर उद्धृत किये हैं।
* नागेशभट्ट के वृत्तिदाता, प्रयाग के समीपस्थ शृङ्गवेरपुर के राजा रामसिंह थे।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि भट्टोजिदीक्षित-शब्दकौस्तुभ, नरेन्द्राचार्य-सारस्वतव्याकरण, वामन-काशिका, नागेश-लघुमञ्जूषा सम्बन्धित है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- संस्कृत व्याकरण का इतिहास-युधिष्ठिर मीमांसक, 160,169,177,178

85. सूत्रोदाहरणयोः युग्मं यथोचितं मेलयतु -

(क)	तुमुण्ण्वुलौ क्रियायां क्रियार्थायाम् -	1. पठितुं प्रवीणः
(ख)	समानकर्तृकेषु तुमुन् -	2. वेला भोक्तुम्
(ग)	पर्याप्तिवचनेष्वलमर्थेषु -	3. ज्ञातुम् इच्छामि
(घ)	कालसमयवेलासु तुमुन् -	4. कृष्णं दर्शको याति

	क	ख	ग	घ
(A)	1	3	4	2
(B)	4	3	1	2
(C)	2	3	4	1
(D)	4	1	2	3

व्याख्या- * भट्टोजिदीक्षित ने स्वयं सिद्धान्तकौमुदी की प्रौढ़मनोरमा नाम से प्रसिद्ध व्याख्या लिखी है।

* भट्टोजिदीक्षित का काल सन् 1600 से 1650 मानते हैं।
* भट्टोजि दीक्षित ने अष्टाध्यायी की शब्दकौस्तुभ नाम्नी महती वृत्ति लिखी है।

* 'शब्दकौस्तुभ' के प्रथम अध्याय के प्रथम पाद में भट्टोजिदीक्षित ने अपने शब्दों में प्रायः पतञ्जलि, कैयट और हरदत्त के ग्रन्थों से संग्रह है।

* **तुमण्ण्वुलौ क्रियायां क्रियार्थायाम् (3.3.10)**

एक क्रिया के लिए दूसरी क्रिया समीप में होने पर भविष्यत् काल में धातु परे तुमुन् और ण्वुल् प्रत्यय होते हैं।

उदाहरण- कृष्णं दर्शको याति- कृष्ण को देखने के लिए जाता है। कृष्णं द्रष्टुं याति- कृष्ण को देखने के लिए जाता है।

* **समानकर्तृकेषु तुमुन् (3.3.158)**

इच्छा अर्थ वाली एक कर्तृक धातुओं के उपपद होने पर धातु से तुमुन् प्रत्यय होता है।

उदाहरण-

1. ज्ञातुम् इच्छामि - जानना चाहता है।
2. इच्छति भोक्तुम् - खाना चाहता है।
3. वष्टि भोक्तुम् - खाना चाहता है।
4. वाञ्छति भोक्तुम् - खाना चाहता है।

* **पर्याप्तिवचनेष्वलमर्थेषु (3.4.66)**

अलमर्थेषु सामर्थ्य अर्थ वाले परिपूर्णतावाची शब्दों के उपपद रहते धातु से तुमुन् होता है।

उदाहरण- पठितुं प्रवीणः -

पर्याप्तो भोक्तुम् = खाने के लिए पर्याप्त है।

* **कालसमयवेलासु तुमुन् (3.3.167)**

काल, समय, वेला जैसे काल, अर्थवाची शब्दों के उपपद रहते धातुओं से तुमुन् प्रत्यय होता है।

उदाहरण- वेला भोक्तुम् - भोजन के लिए समय

भोक्तुं अनेहा, भोक्तुं कालः, भोक्तुं समयः।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि सूत्र और उदाहरण का क्रम इस प्रकार है- तुमुण्ण्वुलौ क्रियायां क्रियार्थायाम् - कृष्णं दर्शको याति

समानकर्तृकेषु तुमुन् - ज्ञातुम् इच्छामि

पर्याप्तिवचनेष्वलमर्थेषु - पठितुं प्रवीणः

कालसमयवेलासु तुमुन् - वेला भोक्तुम्

अतः विकल्प 'B' सही है।

स्रोत- वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज 870,874

86. 'प्रत्यर्थम्' इत्यत्र अव्ययीभावसमासो विद्यते-

(A) योग्यतार्थे **(B)** वीप्सार्थे
(C) पदार्थानतिवृत्त्यर्थे **(D)** सादृश्यार्थे

व्याख्या- अव्ययीभाव समास-

सूत्र- अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि-व्यृद्धि-अर्थाभाव-अत्यय-असम्प्रति-शब्दप्रादुर्भाव-पश्चात्-यथा-आनुपूर्व्य-यौगपद्य-सादृश्य-सम्पत्ति-साकल्य-अन्तवचनेषु।

'पूर्वपदार्थप्रधानः अव्ययीभावः।' जहाँ पूर्वपद की प्रधानता होती है, वहाँ अव्ययीभाव समास होता है।

सामासिक पद	अर्थ	लौकिक विग्रह
अधिहरि	हरि में (विभक्ति अर्थ में)	हरौ इति
अधिगोपम्	गोप में (विभक्ति अर्थ में)	गोपि इति
उपकृष्णम्	कृष्ण के समीप (समीप अर्थ में)	कृष्णस्य समीपम्
सुमद्रम्	मद्रदेशवासियों की (समृद्धि के अर्थ में)	मद्राणां समृद्धिः
दुर्यवनम्	यवनों की समृद्धि का अभाव (वृद्धि का अभाव अर्थ में)	यवनानां वृद्धिः
निर्मक्षिकम्	मक्खियों का अभाव (अभाव अर्थ में)	मक्षिकाणाम् अभावः
अतिहिमम्	हिम का अत्यय = नाश (अत्यय अर्थ में)	हिमस्य अत्ययः
अतिनिद्रम्	निद्रा इस समय उचित नहीं है (असम्प्रति इस समय उचित नहीं अर्थ में)	निद्रा सम्प्रति न युज्यते
इतिहरि	हरि नाम की प्रसिद्धि (शब्दप्रादुर्भाव)	हरिशब्दस्य प्रकाशः
अनुविष्णु	विष्णु के पीछे (पश्चात् अर्थ में)	विष्णोः पश्चात्
अनुरूपम्	रूप के योग्य यथा के (योग्यता अर्थ में)	रूपस्य योग्यम्
प्रत्यर्थम्	प्रत्येक अर्थ के प्रति (यथा के वीप्सा अर्थ में)	अर्थम् अर्थं प्रति
यथाशक्ति	शक्ति के अनुसार	शक्तिम् अनतिक्रम्य
सहरि	हरि के सदृश	हरेः सादृश्यम्

अनुज्येष्ठम्	ज्येष्ठ के क्रम से (आनुपूर्व्य अर्थ में)	ज्येष्ठस्य आनुपूर्व्येण
सचक्रम्	चक्र के साथ एक ही काल में (यौगपद्य)	चक्रेण युगपत्
ससखि	सखा के समान (सादृश्य अर्थात् समान अर्थ में)	सदृशः सख्या
सक्षत्रम्	क्षत्रियों के अनुसार (सम्पत्ति अर्थ में)	क्षत्राणां सम्पत्तिः
सतृणम्	तिनके को भी छोड़े बिना सम्पूर्ण खाता है (साकल्य) (सम्पूर्ण अर्थ में)	तृणम् अपि अपरित्यज्य
साग्नि	अग्निग्रन्थ की समाप्ति तक पढ़ता है	अग्निग्रन्थपर्यन्तम्

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'प्रत्यर्थम्' वीप्सा अर्थ में समास हुआ है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- L.T. मिशन - सर्वज्ञभूषण, पेज 151-152

87. 'स्थूलोऽहं, कृशोऽहं' इत्यत्र शाङ्करभाष्यानुसारं भवति-
(A) विकारः **(B)** अध्यासः
(C) अपवादः **(D)** परिणामः

व्याख्या- * महर्षि बादरायण व्यास प्रणीत ब्रह्मसूत्र है। भगवान् बादरायण मुनि ने ब्रह्मसूत्रों की रचना की। यह स्वल्प कलेवर ग्रन्थ समस्त वेदान्तसिद्धान्तों का आकर है।

* समस्त उपनिषदों का सूत्रों द्वारा ब्रह्म में तात्पर्य से समन्वय होने से इस ग्रन्थ का नाम ब्रह्मसूत्र है।
* इसी को वेदान्तदर्शन भी कहते हैं।
* आचार्य शङ्करमतानुसार सूत्रों और अधिकरणों की संख्या क्रमशः 555 और 191 है।
* ब्रह्मसूत्र में चार अध्याय और प्रत्येक अध्याय में चार पाद हैं।

अध्यासो नाम अतस्मिंस्तद्बुद्धिरित्यवोचम्। तद्यथा- पुत्रभार्यादिषु विकलेषु सकलेषु वा अहमेव विकलः सकलो वेति बाह्यधर्मानात्मन्यध्यस्यति; तथा देह-धर्मान् स्थूलोऽहं, कृशोऽहं, गौरोऽहं, तिष्ठामि, गच्छामि, लङ्घयामि चेति।

जैसे कि कोई पुत्र, स्त्री आदि के अपूर्ण और पूर्ण होने पर मैं ही अपूर्ण और पूर्ण हूँ, इस प्रकार बाह्यपदार्थों के धर्मों का अपने में अध्यास करता है तथा मैं स्थूल हूँ, मैं कृश हूँ, मैं गौर हूँ, मैं खड़ा हूँ, मैं जाता हूँ, मैं लाँघता हूँ, इस प्रकार देह के धर्मों का अध्यास करता है। वेदान्तमीमांसा शास्त्र का यह आदिसूत्र है अथवा प्रथम सूत्र है-

अथातो ब्रह्मजिज्ञासा (1.1)

पदच्छेद - अथ, अतः, ब्रह्मजिज्ञासा

सूत्रार्थ - विवेक आदि साधनचतुष्टय रूप सम्पत्तिसिद्धि के अनन्तर कर्मफल के अनित्य और ज्ञान फल मोक्ष के नित्य होने से मुमुक्षु को ब्रह्मजिज्ञासा करनी चाहिए।

जन्माद्यस्य यतः ॥2॥

पदच्छेद - जन्मादि, अस्य, यतः।

सूत्रार्थ - (अस्य) इस जगत् की (जन्मादि) उत्पत्ति, स्थिति तथा लय (यतः) जिससे होते हैं, वह ब्रह्म है।

शास्त्रयोनित्वात् ॥3॥

ऋग्वेद आदि शास्त्र का (योनि) कारण होने से ब्रह्म सर्वज्ञ है अथवा ब्रह्म केवल ऋग्वेद आदि शास्त्र प्रमाणक है अर्थात् ब्रह्म के यथार्थ स्वरूप के ज्ञान में ऋग्वेदादि शास्त्र ही प्रमाण है।

शास्त्र - ऋग्वेद आदि

योनि - कारण

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'स्थूलोऽहं, कृशोऽहं यह शाङ्करभाष्यानुसार अध्यास माना गया हैं।

अतः विकल्प 'B' सही है।

स्रोत- ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्य - सत्यानन्दसरस्वती, पेज 17

88. अत्र द्वौ कथनांशौ स्तः -
A - पशुपादप्रकृतिः प्रभागपादः
B - पशुः चतुष्पादयुक्ता भवन्ति। तेषामियं प्रकृतिर्भवति। अतः छन्दस्सु चत्वारः पाद भवन्ति। पद्यो चत्वारः पादाः छन्दनिरूपणे गण्यन्ते।
(A) (a) तथा (b) उभये सत्य कथने (b), (a) अंशस्य उचितमुदाहरणम्
(B) (a) कथनं सत्यम् (b) कथनं तथा न निर्दिशति (a) स्वरूपम्
(C) (a) कथनमसत्यम् (b) कथनं सत्यमस्ति
(D) (a) सत्यमस्ति (b) परिभाषां न प्रस्तौति

व्याख्या- उपर्युक्त कथन A में कहा गया है कि पशुओं के चार पाद अर्थात् चार पैर होते हैं। यह इनकी प्रकृति है।

और कथन B में कहा गया है कि 'पशुः चतुष्पादयुक्ता

भवन्ति' अर्थात् पशुओं के चार पाद अर्थात् पैर होते हैं। (पशु चार पैरों वाले होते हैं।)

जो कि पशुओं का स्वभाव है। ऐसे ही 'छन्दस्सु चत्वारः पादाः भवन्ति' अर्थात् छन्द में भी चार पाद अर्थात् चरण होते हैं। पद्यों में चार चरण होते हैं जो छन्दों में होते हैं। ऐसा छन्दःशास्त्र में निरूपण किया गया है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि कथन A और B दोनों सत्य हैं। कथन B, A अंश का उचित उदाहरण है।

अतः विकल्प 'A' सही है।

89. 'प्रवीणः' इति पदं कयोः उदाहरणं वर्तते-

a अर्थसङ्कोचस्य **b अर्थपरिवर्तनस्य**

c अर्थविस्तारस्य **d अर्थहानेः**

अधोलिखितेषु समुचितं विकल्पं चिनुत -

(A) a एवं b **(B)** b एवं c

(C) c एवं d **(D)** a एवं c

व्याख्या- अर्थपरिवर्तन (अर्थविकास) की दिशाएँ

* अर्थपरिवर्तन को विकास सिद्धान्त की दृष्टि से अर्थविकास भी कहा जाता है।
* कहीं पर अर्थ का विस्तार होता है।
* कहीं पर अर्थ में संकोच होता है।
* कहीं पर पुराने अर्थ के स्थान पर नया अर्थ आ जाता है।

1. अर्थविस्तार (Expansion of meaning)
2. अर्थसंकोच (Contraction of meaning)
3. अर्थादेश (Transjerence of meaning)

* इन तीनों के जो उदाहरण मिलते हैं, उन पर विचार करने से ज्ञात होता है कि कुछ स्थानों पर अर्थ अपने मूल अर्थ से उत्कृष्ट हो गया और कहीं पर वह अपने मूल अर्थ से निकृष्ट, अपकृष्ट हो गया है।
* इस दृष्टि से भी इनको दो भागों में रखा जाता है-

(क) अर्थोत्कर्ष (Elevation of Meaning)

(ख) अर्थापकर्ष (Deterioration of meaning)

1. अर्थविस्तार- कुछ शब्द मूलरूप में किसी विशेष या संकुचित अर्थ में प्रयुक्त होते थे। बाद में उनके अर्थ में विस्तार हो गया-

जैसे- प्रवीण- प्रवीण का अर्थ था- प्रकृष्टो वीणायाम् (वीणावादन में श्रेष्ठ या निपुण)

यह शब्द वीणा-वादन का निपुणता को छोड़कर केवल निपुण या दक्ष अर्थ में प्रयुक्त होने लगा है। इसमें अर्थविस्तार हुआ है।

अन्य उदाहरण- तैल- सबसे पहले तिल का तेल निकला था, उसके आधार पर तेल नाम पड़ा।

गोशाला, गोष्ठ - गायों के रहने के स्थान को गोशाला या गोष्ठ कहते थे।

उसमें बैल, भैंस, बकरी आदि भी बाधते हैं तो गोशाला नाम है। इस प्रकार अर्थ का विस्तार हुआ है।

2. अर्थसंकोच - अर्थविस्तार के विपरीत कुछ शब्दों के अर्थों में संकोच हुआ है।

जैसे- मृग- पशुमात्र के लिए था, अब केवल हिरन अर्थ रह गया।

वारिज, अम्बुज, सरसिज, सरोज, पंकज, नीरज-

इनका शाब्दिक अर्थ है- जल तालाब या कीचड़ में होने वाला। ये शब्द कमल अर्थ में रूढ़ हो गये।

पर्वत- पर्व (गाँठ) वाला। पहाड़ अर्थ में रूढ़ हो गया है। पर्व वाले गन्ने को पर्वत नहीं कहेंगे।

मन्दिर- मन्दिर अर्थ भवन था। यह देवमन्दिर अर्थ में प्रसिद्ध हो गया है।

3. अर्थादेश- अर्थादेश का अर्थ है- एक अर्थ के स्थान पर दूसरे अर्थ का आ जाना। आदेश का अर्थ है- एक को हटाकर दूसरे का आना।

उदाहरण- असुर- मूल अर्थ असु + र - देवता था। बाद में सुर (देवता) का उल्टा अ + सुर (राक्षस) अर्थ हो गया।

वर- मूल अर्थ श्रेष्ठ था। अब केवल दूल्हा अर्थ रह गया है।

सह्- वेद में सह् धातु का अर्थ जीतना था। अब सहन करना अर्थ रह गया है।

मौन- पाषण्ड, मुग्ध, कर्पट-कपड़ा आदि उदाहरण हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'प्रवीणः' पद अर्थविस्तार का उदाहरण है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज 336,337,340

90. रामायणाश्रितं रचनाद्वयं किमस्ति-

(A) मालविकाग्निमित्रम्, रत्नावली

(B) उत्तररामचरितम्, महावीरचरितम्

(C) प्रतिमानाटकम्, वेणीसंहारम्

(D) मालविकाग्निमित्रम्, स्वप्नवासवदत्तम्

व्याख्या- महावीरचरितम् -

* यह रामायण के छः काण्डों पर (बालकाण्ड से युद्ध काण्ड) आश्रित रामकथा का सार अङ्कों में प्रदर्शन करने वाला नाटक है।
* तदनुसार सीता-विवाह से लेकर राम-राज्याभिषेक तक की घटनाएँ इसमे वर्णित हैं।
* भवभूति के पूर्व रामकथा के इतने विस्तृत प्रसङ्गों को किसी के रूप में प्रस्तुत नहीं किया था, अतः सात अङ्कों में रामकथा की घटनाएँ कसी हुई हैं।
* इस रूपक में राम को महावीर दिखाया गया है किन्तु रावण की कूटनीति की असफलता में राम के पौरुष से अधिक उनका भाग्य काम करता दिखाया गया है।
* वीररस प्रधान इस नाटक में ओजगुणमयी गौडी शैली का प्राचुर्य है।

उत्तररामचरितम् -

* यह भवभूति के रूपकों में श्रेष्ठ है। कवित्व तथा नाट्यकौशल दोनों का प्रकर्ष इसमें प्रकट किया गया है।
* पूरे नाटक में राम का चरित्र शील, सत्य, और शक्ति का उत्स बनकर प्रकाशित हुआ है।
* रामायण के उत्तरकाण्ड के सीता निर्वासन के कथानक पर यह आश्रित है।
* यह सात अङ्कों का नाटक है।
* राम लोकाराधन के लिए स्नेह, दया, सुख की मूर्ति अपनी प्रियतमा सीता का परित्याग कर देते हैं-

स्नेहं दयां च सौख्यं च यदि वा जानकीमपि
आराधनाय लोकस्य मुञ्चतो नास्ति मे व्यथा।।
(उत्तर 1/12)

* राम का जीवन एकमात्र करुण रस के फलक पर विभिन्न रसों के चित्र अङ्कित करता है-

एको रसः करुण एव निमित्तभेदात् (3/47)

* यह करुण रस प्रधान नाटक है।

➢ **मालविकाग्निमित्रम् -**

* यह कालिदास की रचना है। जिसमें पाँच अङ्क हैं।
* यह ऐतिहासिक नाटक है जिसमें शुङ्गवंशी राजा अग्निमित्र तथा विदर्भराज कुमारी मालविका के विवाह की कथा है।
* इसका नायक अग्निमित्र और नायिका मालविका है।

भास के 13 नाटक हैं -

उदयनकथा मूलक- 1. प्रतिज्ञायौगन्धरायण
2. स्वप्नवासवदत्तम्

रामायणमूलक - 3. प्रतिमानाटक
4. अभिषेकनाटक

महाभारतमूलक - 5. ऊरुभङ्ग
6. दूतवाक्य
7. पञ्चरात्र
8. दूतघटोत्कच
9. कर्णभार
10. मध्यमव्यायोग
11. बालचरित

लोककथा मूलक - 12. अविमारक 13. चारुदत्त

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि रामायण पर आश्रित दो रचनाएँ हैं-

उत्तररामचरितम् और मालविकाग्निमित्रम् है जब कि प्रतिमानाटक भी है परन्तु, वेणीसंहार महाभारत-आश्रित है।

अतः विकल्प 'B' सही है।

स्त्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशङ्कर शर्मा, पेज 426-466

91. सिद्धान्तकौमुदीमाश्रित्यप्रकरणानां समीचीनं क्रमं चिनुत-

(A) कारकम्, परस्मैपदप्रक्रिया, कृदन्तम्, तद्धितम्
(B) कारकम्, तद्धितम्, परस्मैपदप्रक्रिया, कृदन्तम्
(C) परस्मैपदप्रक्रिया, कारकम्, तद्धितम्, कृदन्तम्
(D) परस्मैपदप्रक्रिया, कृदन्तम्, तद्धितम्, कारकम्

व्याख्या- आचार्य भट्टोजिदीक्षित कृत वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी व्याकरणशास्त्र का एक प्रक्रियाग्रन्थ है। जिसमें पाणिनि द्वारा रचित चार हजार सूत्रों की व्याख्या की गयी है। इसमें कात्यायन द्वारा रचित वार्तिकों का भी समावेश है।

इनके प्रमुख प्रकरणों का क्रम निम्नलिखित है-

1. संज्ञाप्रकरणम् 2. परिभाषाप्रकरणम्
3. सन्धिप्रकरणम् 4. षड्लिङ्गप्रकरणम्
5. अव्ययप्रकरणम् 6. स्त्रीलिङ्गप्रकरणम्
7. कारकप्रकरणम् 8. समासप्रकरणम्
9. तद्धितप्रकरणम् 10. तिङन्तप्रकरणम्
11. प्रत्ययान्ततिङन्त (णिच्, सन् आदि) प्रकरणम्
12. आत्मनेपदप्रकरणम्

13. परस्मैपदप्रकरणम्
14. कृदन्तप्रकरणम्
15. वैदिकप्रकरणम्
16. स्वरप्रकरणम्

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि सिद्धान्तकौमुदी के अनुसार प्रकरणों का क्रम इस प्रकार है-

(1) कारकप्रकरणम् (2) तद्धितप्रकरणम्
(3) परस्मैपदप्रकरणम् (4) कृदन्तप्रकरणम् है।

अतः विकल्प 'B' सही है।

स्रोत- वैयाकरण सिद्धान्तकौमुदी (मूलमात्रम्)- गोविन्दाचार्य, पेज भू. 80,147,372,385

92. मृगाक्षीशब्दे विद्यमानः मृग इति शब्दः उदाहरणं विद्यते-
(A) अर्थादेशस्य **(B)** अर्थविस्तारस्य
(C) अर्थसङ्कोचस्य **(D)** अर्थागमस्य

व्याख्या- अर्थपरिवर्तन की दिशाएँ

संसार की वस्तुएँ परिवर्तनशील हैं। भाषा भी परिवर्तनशील है। जिस प्रकार ध्वनियों में परिवर्तन होता है, उसी प्रकार प्रत्येक भाषा के शब्दों के अर्थों में भी परिवर्तन होता रहता है। इस अर्थपरिवर्तन को विकास सिद्धान्त की दृष्टि से अर्थविकास भी कहा जाता है।

यह अर्थ-परिवर्तन तीन प्रकार का होता है-
(1) अर्थविस्तार (2) अर्थसंकोच (3) अर्थादेश

1. अर्थविस्तार- कुछ शब्द मूलरूप से किसी विशेष या संकुचित अर्थ में प्रयुक्त होते थे। बाद में उनके अर्थ में विस्तार हो गया।

* **कुशल-** कुशल शब्द का अर्थ था- कुशान् लाति (कुशों को लाना)। कुश का अग्र भाग तीक्ष्ण होता है, उससे हाथ में छेद होने या कटने का भय रहता था। अतः कुश लाना चतुरता का सूचक था। यह शब्द धीरे-धीरे कुश लाना छोड़कर चतुरता या निपुणता का सूचक हो गया। इस प्रकार अर्थ में विस्तार हो गया।

अन्य उदाहरण- प्रवीण, गोशाला, महाराज, गवेषणा आदि।

2. अर्थसंकोच- अर्थ विस्तार के विपरीत कुछ शब्दों के अर्थों में संकोच हो गया। उनका विस्तृत अर्थ संकुचित या सीमित हो गया है। सभी वस्तु नाम अर्थ संकोच के उदाहरण हैं। व्युत्पत्ति के आधार पर उनका व्यापक अर्थ है, परन्तु वस्तु नाम होने पर वे उस अर्थ में रूढ़ हो गए हैं-

* **मृग-** पशुमात्र के लिए था। अब केवल हिरन अर्थ रह गया है। अंग्रेजी का Dear भी पशु मात्र का वाचक था, अब 'हिरन' अर्थ रह गया है।
* **वारिज, अम्बुज, सरसिज, सरोज, पंकज, नीरज** इनका शाब्दिक अर्थ है- जल, तालाब या कीचड़ में होने वाला। परन्तु ये सब कमल अर्थ में रूढ़ हो गए हैं। मछली, कीड़े आदि को नहीं कह सकते हैं।
* **वारिधि, नीरधि, अम्बुधि, तोयधि-** (समुद्र) का अर्थ है- जल धारण करने वाला। ये शब्द समुद्र अर्थ में रूढ़ हो गया।
* **सर्प-** रेंगने वाला। यह साँप अर्थ में रूढ़ हो गया है।

3. अर्थादेश- अर्थादेश का अर्थ है, एक अर्थ के स्थान पर दूसरे अर्थ का आ जाना। आदेश का अर्थ है- एक को हटाकर दूसरे का आना।

अर्थादेश में शब्द का प्राचीन अर्थ लुप्त हो जाता है और नया अर्थ आ जाता है।

जैसे-

असुर- मूल अर्थ असु + र (प्राण शक्ति सम्पन्न) देवता था। बाद में सुर देवता का उल्टा अ + सुर (राक्षस) हो गया।

वर- मूल अर्थ श्रेष्ठ था, अब केवल दूल्हा अर्थ रह गया है।

देवानां प्रियः - देवों का प्रिय अब मूर्ख अर्थ रह गया।

मुग्ध- मूल अर्थ था मूर्ख अब मोहित होना, सौन्दर्य पर मुग्ध होना।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'मृगाक्षी' शब्द में विद्यमान 'मृग' शब्द अर्थसङ्कोच का उदाहरण है।

अतः विकल्प 'C' सही है।

स्रोत- भाषा विज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज 338

93. अनैकान्तो विरुद्धश्चाप्यसिद्धः प्रतिपक्षितः।
कालात्ययापदिष्टश्च हेत्वाभासास्तु पञ्चधा॥
इति कस्य दार्शनिकस्य कथनमस्ति?
(A) विश्वनाथपञ्चाननस्य **(B)** अन्नम्भट्टस्य
(C) सदानन्दस्य **(D)** केशवमिश्रस्य

व्याख्या- आचार्य विश्वनाथ पञ्चानन कृत न्यायसिद्धान्तमुक्तावली में पञ्चहेत्वाभास की चर्चा की गयी है-

अनैकान्तो विरुद्धश्चाप्यसिद्धः प्रतिपक्षितः।
कालात्ययापदिष्टश्च हेत्वाभासास्तु पञ्चधा ॥7॥

अनैकान्त, विरुद्ध, असिद्ध, प्रतिपक्षित एवं कालात्ययापदिष्ट

इस प्रकार हेत्वाभास पाँच प्रकार के होते हैं। (जो केवल हेतु जैसे लगते हैं किन्तु हेतु नहीं होते, वह हेत्वाभास है।)

आद्यः साधारणस्तु स्यादसाधारणकोऽपरः।
तथैवानुपसंहारी त्रिधाऽनैकान्तिको भवेत् ॥72॥

पहला साधारण, दूसरा असाधारण एवं तीसरा अनुपसंहारी भेद से अनैकान्तिक हेत्वाभास तीन प्रकार का होता है।

यः सपक्षे विपक्षे च भवेत् साधारणस्तु सः ॥

जो हेतु सपक्ष एवं विपक्ष में भी होता है, वह साधारण कहलाता है।

यस्तूभयस्माद् व्यावृत्तः स चासाधारणो मतः ॥73॥

जो दोनों सपक्ष एवं विपक्ष से अलग रहे, वह हेतु असाधारण माना जाता है।

तथैवानुपसंहारी केवलान्वयिपक्षकः॥
पर्वतो वह्निमान् सत्वादिति तत्रादिमो भवेत् ॥
पृथ्वी नित्या गन्धवत्त्वादिति स्यादपरस्तथा।
सर्वं तुच्छं प्रमेयत्वादिति तत्रान्तिमो भवेत् ॥

उसी तरह केवलान्वयी पक्ष वाला अनुपसंहारी होता है।

यः साध्यवति नैवाऽस्ति स विरुद्ध उदाहृतः ॥74॥

जो साध्य के अधिकरण में नहीं है, वैसा हेतु विरुद्ध कहलाता है।

आश्रयासिद्धिराद्या स्यात्स्वरूपासिद्धिरप्यथ।
व्याप्यत्वासिद्धिरपरा स्यादसिद्धिरतस्त्रिधा ॥75॥

पहली आश्रयासिद्धि, उसके बाद स्वरूपासिद्धि, तीसरी व्याप्यत्वासिद्धि इस प्रकार असिद्धि तीन प्रकार की होती है।

पक्षासिद्धिर्यत्र पक्षो भवेन्मणिमयो गिरिः।

पक्षसिद्धि वहाँ होती है जहाँ मणिमय गिरि पक्ष होता है।

ह्रदो द्रव्यं धूमवत्त्वादत्रासिद्धिरथापरा ॥76॥

ह्रदो द्रव्यं धूमवत्त्वात् में दूसरी असिद्धि होती है।

व्याप्यत्वासिद्धिरपरा नीलधूमादिके भवेत् ।

नीलधूम आदि में व्याप्यत्वासिद्धि होती है।

विरुद्धयोः परामर्शे हेत्वोः सत्प्रतिपक्षता ॥77॥

परस्पर असमान अधिकरणवाले साध्यों के जो हेतु हैं, उनके साध्य व्याप्यवान् पक्ष तथा साध्याभाव व्याप्यवान् पक्ष, ऐसे दोनों परामर्शों में सत्प्रतिपक्षता होती है और उससे युक्त सत्प्रतिपक्ष होता है।

साध्यशून्यो यत्र पक्षस्त्वसौ बाध उदाहृतः ।
उत्पत्तिकालीनघटे गन्धादिर्यत्र साध्यते ॥78॥

जहाँ पक्ष साध्य से शून्य होता है, वह बाध कहलाता है। जहाँ उत्पत्ति कालीन घट में गन्ध आदि बाधित किया जाता है।

बाध को ही कालात्ययापदिष्ट नाम से जाना जाता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि न्यायसिद्धान्तमुक्तावली में पाँच हेत्वाभास बताये गये हैं- 'अनैकान्तो विरुद्धश्चाप्यसिद्धिः प्रतिपक्षितः .....' यह पंक्ति आचार्य विश्वनाथपञ्चानन की है।

अतः विकल्प 'A' सही है।

स्रोत- न्यायसिद्धान्तमुक्तावली - अनुमानोपखण्ड, पेज 44,71

94. अधस्तनेषु वेदान्तानुसारं षट्कसम्पत्तिषु गण्येते-

a श्रवणम् **b मननम्**
c श्रद्धा **d समाधानम्**

समुचितं विकल्पं चिनुत -

(A) a एवं d **(B)** b एवं c
(C) c एवं d **(D)** c एवं a

व्याख्या- आचार्य सदानन्द प्रणीत वेदान्तसार में अनुबन्धचतुष्टय वर्णनोपरान्त साधनचतुष्टय को परिभाषित करते हुए षट्कसम्पत्ति की चर्चा करते हैं-

साधनानि नित्यानित्यवस्तुविवेकेहामुत्रार्थफलभोगविरागशमादिषट्कसम्पत्तिमुमुक्षुत्वानि।

नित्य एवं अनित्यवस्तु का विवेक, इहलौकिक एवं पारलौकिक फल को भोगने के प्रति वैराग्य शम दम, उपरति, तितिक्षा, समाधान और श्रद्धा आदि छः प्रकार की सम्पत्ति तथा मोक्षप्राप्ति के प्रति इच्छा ये चार साधन हैं।

ब्रह्म ही नित्य वस्तु है, उसके अतिरिक्त अन्य सभी कुछ अनित्य है, इस प्रकार समझना ही नित्य-अनित्य वस्तु विवेक है।

शमादयस्तु शमदमोपरतितितिक्षासमाधानश्रद्धाख्याः शमस्तावच्छ्रवणादिव्यतिरिक्तविषयेभ्यो मनसो निग्रहः।

शम आदि तो शम, दम, उपरति, तितिक्षा, समाधान, श्रद्धा नाम वाले हैं। शम-श्रवण आदि से अतिरिक्त (सांसारिक) विषयों से मन को रोकना ही शम है।

दमो बाह्येन्द्रियाणां तद्व्यतिरिक्तविषयेभ्यो निवर्तनम्

बाह्य इन्द्रियों का उन (श्रवणादि) से अतिरिक्त विषयों से रोकना ही दम है।

निवर्तितानामेतेषां तद्व्यतिरिक्तविषयेभ्य उपरमणमुपरतिरथवा विहितानां कर्मणां विधिना परित्यागः

बाह्यविषयों से रोकी गयी इन (इन्द्रियों) को उस (ब्रह्मादि) से अतिरिक्त विषयों से पूर्णतया अवरुद्ध करना ही उपरति है अथवा शास्त्रोक्त (नित्यादि) कर्मों का विधिपूर्वक त्याग ही उपरति है।

तितिक्षा शीतोष्णादिद्वन्द्वसहिष्णुता।

सर्दी-गर्मी (सुख-दुःख) आदि द्वन्द्वों को सहन करना ही तितिक्षा है।

निगृहीतस्य मनसः श्रवणादौ तदनुगुणविषये च समाधिः समाधानम्

पूर्णतया नियन्त्रित मन का श्रवण आदि तथा उनके अनुकूल विषयों में भली प्रकार लगना ही समाधि है।

गुरूपदिष्ट वेदान्तवाक्येषु विश्वासः श्रद्धा

गुरु के द्वारा उपदिष्ट वेदान्त के वाक्यों में विश्वास श्रद्धा है।

मुमुक्षुत्वं मोक्षेच्छा।

मोक्ष की इच्छा ही मुमुक्षुत्व है।

इस प्रकार की विशेषताओं से युक्त हुआ प्रमाता ही अधिकारी है। 'जितेन्द्रिय ही शान्तचित्त रहता है।' इत्यादि श्रुतिवचन भी हैं

*** अनुबन्ध चतुष्टय-** 1. अधिकारी 2. विषय 3. सम्बन्ध 4. प्रयोजन

*** साधनचतुष्टय-** नित्यानित्यवस्तु विवेक, इहामुत्रार्थफलभोगविराग, शमादिषट्कसम्पत्ति, मुमुक्षुत्व

*** षट् कर्म-** नित्यकर्म, नैमित्तिककर्म, प्रायश्चित्तकर्म, उपासना कर्म, काम्यकर्म और निषिद्धकर्म

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि षट्कसम्पत्ति में शम, दम, उपरति, तितिक्षा, समाधान, श्रद्धा परिगणित हैं। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- वेदान्तसार - राकेश शास्त्री, पेज 132

95. अधोलिखितेषु केन सह कस्य सम्बन्धः?

(a)	**आख्यातम्**	**(i)**	**अदः**
(b)	**नाम**	**(ii)**	**भवति**
(c)	**निपातः**	**(iii)**	**परि**
(d)	**उपसर्गः**	**(iv)**	**नु**

समुचितं तालिकां चिनुत -

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	(iii)	(ii)	(i)	(iv)
(B)	(i)	(iii)	(ii)	(iv)
(C)	(iv)	(iii)	(i)	(ii)
(D)	(ii)	(i)	(iv)	(iii)

व्याख्या- आचार्य यास्क द्वारा प्रणीत निरुक्त है, जिसमें तीन काण्ड एवं बारह अध्याय हैं। यास्क का निरुक्त निघण्टु की व्याख्या है।

अद इति सत्त्वानामुपदेशो गौरश्वः पुरुषो हस्तीति।

भवतीति भावस्य, आस्ते, शेते व्रजति, तिष्ठतीति।

'अदः' अर्थात् अदस् इदम् आदि सर्वनाम पदों के द्वारा सत्त्व अर्थात् द्रव्यों का निर्देश किया जाता है और गौ, अश्व, पुरुष, हस्ति आदि संज्ञावाचक पदों से द्रव्यों का विशेष रूप से निर्देश होता है।

इसी प्रकार भू धातु से भवति पद से यहाँ भू धातु का ग्रहण करना चाहिए भाव अर्थात् क्रिया का सामान्य रूप से तथा आस्ते, शेते, व्रजति, तिष्ठति आदि से (विशेष रूप से क्रिया का निर्देश होता है।)

'अप' इत्युपजनम्। 'परि' इति सर्वतोभावम्।

'अधि' इत्यु परिभावमैश्वर्यं वा।

एवमुच्चावचानर्थान् प्राहुः। त उपेक्षितव्याः ॥3॥

अप उपजन को। परि यह उपसर्ग सर्वतोभाव को 'अधि' यह उपसर्ग उपपरिभाव अथवा ऐश्वर्य को कहता है।

इस प्रकार उपसर्ग भिन्न-भिन्न उच्चावच अर्थों को कहते हैं।

नु इत्येषोऽनेककर्मा। 'इदं नु करिष्यति' इति हेत्वपदेशे। 'कथं नु करिष्यति' इत्यनुपृष्टे। 'न न्वेतदकार्षीत्' इति च।

नु यह (निपात भी चित् के समान) अनेकार्थक है। 'इदं नु करिष्यति' यह जो करेगा, यहाँ हेतु के कथन में 'नु' का प्रयोग है।

षड्भावविकारा भवन्तीति वार्ष्यायणिः।

जायते, अस्ति, विपरिणमते, वर्धते, अपक्षीयते, विनश्यति इति।

क्रियाओं के छः भेद-

मुख्यरूप से- छः प्रकार के क्रियाओं के भेद विकार होते हैं, यह वार्ष्यायणि आचार्य का मत है-

1. जायते - उत्पन्न होता है।
2. अस्ति - रहता है।
3. विपरिणमते - परिवर्तित होता है।
4. वर्धते - बढ़ता है।
5. अपक्षीयते - क्षीण होता है।
6. विनश्यति - नष्ट होता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से होता है कि आख्यातम् - भवति, नाम- अदः, निपात-नु, उपसर्ग-परि से सम्बन्धित है। **अतः**

विकल्प 'D' सही है।

स्रोत- निरुक्त - छज्जूराम शास्त्री, पेज 25,41,46

96. निम्नाङ्कितेषु समुचितः सम्बन्धो वर्तते-

a हर्षस्य वांसखेडा - ताम्र अभिलेख

b पुलकेशिन् द्वितीयस्य - मन्दसौर अभिलेख

c यशोधर्मण - इलाहाबाद अभिलेख

d रुद्रदामन - गिरनार अभिलेख

अधस्तनेषु समीचीनं विकल्पं चिनुत -

(A) a एवं b **(B)** b एवं c

(C) c एवं d **(D)** a एवं d

व्याख्या- हर्ष का बाँसखेड़ा का ताम्रपत्र

स्थान - बासखेड़ा, जिला शाहजहाँपुर उत्तरप्रदेश

भाषा - संस्कृत

लिपि - उत्तर ब्राह्मी

काल - लगभग 628 ई.

विषय - हर्षवर्धन के पूर्वजों तथा उसकी उपलब्धियों का वर्णन

पुलकेशिन् द्वितीय का एहोल शिलालेख

स्थान - एहोल जिला - बीजापुर

भाषा - संस्कृत

लिपि - दक्षिणी ब्राह्मी

काल - वि. सं. 566 (499ई.)

विषय - पुलकेशिन् द्वितीय तक चालुक्य शासकों का वर्णन, पुलकेशिन् द्वितीय की कीर्ति का उल्लेख

समुद्रगुप्त का प्रयाग स्तम्भ अभिलेख

स्थान - इलाहाबाद, उत्तरप्रदेश (यह मूलतः कौशाम्बी में था जहाँ से इलाहाबाद किले में लाया गया।)

भाषा - संस्कृत

लिपि - ब्राह्मी

काल - समुद्रगुप्त (लगभग 335-76ई.)

विषय - समुद्रगुप्त का जीवन चरित तथा उपलब्धियों का विकास

रुद्रदामन का जूनागढ़ शिलालेख (गिरनार)

स्थान - जूनागढ़, गुजरात

भाषा - संस्कृत

लिपि - ब्राह्मी

काल - रुद्रदामन के राजत्वकालान्तर्गत 72वाँ वर्ष

विषय - रुद्रदामन के प्रान्तीय शासक सुविशाख द्वारा सुदर्शन बाँध का पुनर्निर्माण, बाँध का पूर्व इतिहास एवं रुद्रदामन की राजनैतिक उपलब्धियाँ का विवरण

* यह अभिलेख काठियावाड़ के जूनागढ़ जिले में गिरिनार पर्वत के कण्ट प्रदेश में घाटी की ओर जाने वाली भाग में शुद्ध संस्कृत भाषा में उत्कीर्ण है।

* इस अभिलेख का नायक रुद्रदामन है जिसकी उपाधि 'महाक्षत्रप' है। इस अभिलेख से रुद्रदामन के वंश, कृतित्व, व्यक्तित्व और सुदर्शन झील के इतिहास पर प्रकाश पड़ना है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि हर्ष वासखेड़ा का ताम्र अभिलेख पुलकेशिन् द्वितीय का एहोल शिलालेख समुद्रगुप्त का (इलाहाबाद) प्रयाग स्तम्भ रुद्रदामन (गिरनार) जूनागढ़ अभिलेख से सम्बन्धित है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- भारतीय पुरालेखों का अध्ययन-शिवस्वरूप सहाय, पेज 209,246,356,363

97. अधोऽङ्कितेषु योगसूत्रानुसारं योगाङ्गेषु गण्येते-

a स्वाध्यायः **b निरुद्धम्**

c प्रत्यक्षम् **d समाधिः**

समुचितं विकल्पं चिनुत -

(A) a एवं d **(B)** a एवं b

(C) a एवं c **(D)** b एवं d

व्याख्या- * योगदर्शन के प्रणेता महर्षि पतञ्जलि हैं।

* योग शब्द 'युज् + घञ्' से बना है जिसका अर्थ है - 'समाधि।'
* योग को 'सेश्वरसांख्य' कहा जाता है क्योंकि यह ईश्वरतत्त्व को मानता है।

योगसूत्र में चार पाद हैं-

(1) समाधिपाद (2) साधनपाद (3) विभूतिपाद (4) कैवल्य पाद

* योगदर्शन में पदार्थों (तत्त्वों) की संख्या 26 है।
* योगसूत्र तीन प्रमाण मानता है-

(1) प्रत्यक्ष (2) अनुमान (3) आगम (शब्द)

* **यमनियमाऽऽसनप्राणायामप्रत्याहारधारणाध्यानस-माधयोऽष्टावङ्गानि (2/29)**

यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि ये योग के आठ अङ्ग हैं।

* **अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमाः (2/30)**

अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह ये पाँच यम कहे जाते हैं।

शौचसन्तोषतपःस्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि नियमाः (2/32)

शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान नियम कहे जाते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि योगसूत्र के अनुसार योगाङ्गों में यम, नियम, आसन, प्राणायाम, धारण, ध्यान, समाधि है। शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय नियम के अन्तर्गत आते हैं। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- पातञ्जलयोगदर्शन (2/29,30,32)

98. याज्ञवल्क्यस्मृतेरनुसारं 'लिखितं भुक्तिः साक्षिण श्चेति' किम् ?

(A) प्रमाणम् **(B)** प्रकरणम्

(C) अनुमानम् **(D)** साधनम्

व्याख्या- याज्ञवल्क्यस्मृति के रचनाकार आचार्य याज्ञवल्क्य हैं। तीन भागों में विभाजित याज्ञवल्क्यस्मृति के द्वितीय भाग व्यवहाराध्याय के साक्षिप्रकरण में प्रमाणों को बताते हुये यह कारिका प्रस्तुत करते हैं-

प्रमाणं लिखितं भुक्तिः साक्षिणश्चेति कीर्तितम् ।
एषामन्यतमाभावे दिव्यान्यतममुच्यते ॥22॥

(किसी भी वाद के) लिखित, उपभोग और साक्षी ये तीन प्रमाण हैं। इनमें किसी के न होने पर दिव्य प्रमाणों में कोई प्रमाण होता है।

तपस्विनो दानशीलाः कुलीनाः सत्यवादिनः।
धर्मप्रधाना ऋजवः पुत्रवन्तो धनान्विताः ॥68॥
त्र्यवराः साक्षिणो ज्ञेयाः श्रौतस्मार्तक्रियापराः
यथाजाति यथावर्णं सर्वे सर्वेषु वा स्मृतः ॥69॥

तपस्वी, दानशीला, कुलीन, सत्यवक्ता, धर्मप्रधान, सरलस्वभाव, पुत्रवान्, धनयुक्त तथा श्रौतस्मार्त क्रिया में रत कम से कम तीन साक्षी होते हैं। ये जाति तथा वर्ण के अनुसार अथवा सभी जाति और वर्ग के लिए होते हैं।

ऋणादान प्रकरण- इस प्रकरण में ऋण से सम्बन्धित श्लोक का वर्णन है -

अशीतिभागो वृद्धिः स्यान्मासि मासि सबन्धके।
वर्णक्रमाच्छतं द्वित्रिचतुष्पञ्चकमन्यथा ॥37॥

बन्धक रखे जाने पर प्रत्येक मास में उसका अस्सीवाँ भाग ब्याज होता है। अन्य स्थिति में (बन्धक न होने पर) वर्ण क्रम (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र क्रम) से दो, तीन, चार और पाँच प्रतिशत वृद्धि होती है।

सन्ततिस्तु पशुस्त्रीणाम् ॥38॥

पशु और स्त्री की वृद्धि ब्याज उसकी सन्तान है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि याज्ञवल्क्यस्मृति के अनुसार लिखित, भुक्ति और साक्षी तीन प्रमाण है।

अतः विकल्प 'A' सही है।

स्रोत- याज्ञवल्क्यस्मृति (2/22)

99. गगनारविन्दं सुरभि, अरविन्दत्वात्, सरोजारविन्दवत् इत्यत्र तर्कभाषानुसारं कतमो हेत्वाभासः?

(A) स्वरूपासिद्धः **(B)** विरुद्धः

(C) आश्रयासिद्धः **(D)** व्याप्यत्वासिद्धः

व्याख्या- आचार्य गौतम प्रणीत न्यायदर्शन का प्रकरण ग्रन्थ तर्कभाषा जो आचार्य केशव मिश्र द्वारा प्रणीत है।

तर्कभाषा में पाँच हेत्वाभास का निरूपण किया गया है-

असिद्ध-विरुद्ध-अनैकान्तिकप्रकरणसम-
कालात्ययापदिष्टभेदात् पञ्चैव।

हेत्वाभास- (1) असिद्ध (2) विरुद्ध (3) अनैकान्तिक (4) प्रकरणसम (5) कालात्ययापदिष्ट भेद से पाँच प्रकार का होता है।

1. असिद्ध हेत्वाभास-

तत्र लिङ्गत्वेनानिश्चितो हेतुरसिद्ध तत्रासिद्धस्त्रिविधः। आश्रयासिद्धः, स्वरूपासिद्धः, व्याप्यत्वासिद्धश्चेति।

उसमें लिङ्ग के रूप में निश्चित न होने वाला हेतु असिद्ध हेत्वाभास कहलाता है।

वह असिद्ध तीन प्रकार का होता है-

(1) आश्रयासिद्ध (2) स्वरूपासिद्ध (3) व्याप्यत्वासिद्ध

आश्रयासिद्धो यथा गगनारविन्दं सुरभि, अरविन्दत्वात् सरोजारविन्दवत् । अत्र गगनारविन्दमाश्रयः, स च नास्त्येव।

आश्रयासिद्ध यह है जैसे आकाशकमल सुगन्धित होता है (प्रतिज्ञा), क्योंकि वह कमल (अथवा उसमें कमलत्व) है (हेतु), सरोवर में उत्पन्न कमल के समान उदाहरण। यहाँ आकाशकमल आश्रय है और वहाँ होता ही नहीं।

स्वरूपासिद्धो यथा, अनित्यः शब्दः, चाक्षुषत्वात् घटवत्

अत्र चाक्षुषत्वं हेतुः, स च शब्दे नास्त्येव तस्य श्रावणत्वात्।

स्वरूपासिद्ध यह है, जैसे शब्द, अनित्य है, क्योंकि वह चाक्षुष (चक्षु से ग्राह्य है) है (हेतु), घट के समान (उदाहरण)। यहाँ चाक्षुषत्व हेतु है और वह शब्द में नहीं है क्योंकि शब्द तो श्रोत्र से ग्राह्य होता है।

2. विरुद्ध हेत्वाभास-

साध्यविपर्ययव्याप्तो हेतुर्विरुद्धः। स यथा शब्दो नित्यः कृतकत्वादात्मवत् ।

साध्य के अभाव विपर्यय से व्याप्त हेतु विरुद्ध हेत्वाभास कहलाता है। वह इस प्रकार है, शब्द नित्य है, क्योंकि वह कृतक (जन्म) है (हेतु) आत्मा (उदाहरण)।

3. अनैकान्तिक हेत्वाभास-

सव्यभिचारोऽनैकान्तिकः।

स द्विविधः साधारणानैकान्तिकोऽसाधारणानैकान्तिकश्चेति। तत्र पक्षसपक्षविपक्षवृत्तिः साधारणः। यथा शब्दो नित्यः प्रमेयत्वात् व्योमवत्। अत्र हि प्रमेयत्वं हेतुस्तच्च नित्यानित्यवृत्ति।

स यथा- भूर्नित्या गन्धवत्त्वात् गन्धवत्त्वं हि सपक्षान्नित्याद् विपक्षाच्चानित्याद् व्यावृत्तं भूमात्रवृत्ति।

सव्यभिचार हेतु अनैकान्तिक हेत्वाभास कहलाता है। यह दो प्रकार का होता है - साधारण अनैकान्तिक और असाधारण अनैकान्तिक।

उनमें पक्ष, सपक्ष और विपक्ष में रहने वाले साधारण अनैकान्तिक है, जैसे शब्द नित्य है, क्योंकि वह प्रमेय है, आकाश के समान। यहाँ प्रमेयत्व हेतु है जो नित्य (पक्ष एवं सपक्ष) एवं अनित्य (विपक्ष) दोनों से व्यावृत्त होकर केवल पक्ष में ही रहता है वह साधारण अनैकान्तिक हेत्वाभास है।

जैसे भूमि नित्य है। क्योंकि यह गन्धवाली है। यहाँ गन्धत्व है, वह सपक्ष-नित्य से तथा विपक्ष अनित्य से व्यावृत्त है केवल पृथिवी में रहता है।

4. प्रकरणसम -

प्रकरणसमस्तु स एव यस्य हेतोः साध्यविपरीतसाधकं हेत्वन्तरं विद्यते। स यथा शब्दोऽनित्यो नित्यधर्मरहितत्वात्। शब्दो नित्योऽनित्यधर्मरहितत्वादिति। अयमेव हि सत्प्रतिपक्ष इति चोच्यते।

प्रकरणसम तो वह हेत्वाभास है जिस हेतु के साध्य के विपरीत अर्थ का साधक दूसरा हेतु विद्यमान होता है। वह इस प्रकार है, जैसे शब्द अनित्य है, क्योंकि वह नित्य के धर्म से रहित (हेतु)। शब्द नित्य है, क्योंकि वह अनित्य के धर्म से रहित है। यह प्रकरणसम ही सत्प्रतिपक्ष कहलाता है।

5. कालात्ययापदिष्ट हेत्वाभास-

पक्षे प्रमाणान्तरावधृतसाध्याभावो हेतुर्बाधित-विषयः कालात्ययापदिष्ट इति चोच्यते।

यथा अग्निरनुष्णः कृतकत्वाज्जलवत् ।

जिसके साध्य का अभाव अन्य प्रमाण से निश्चित कर दिया जाता है वह हेतु बाधितविषय तथा कालात्ययापदिष्ट कहलाता है। जैसे अग्नि अनुष्ण है, क्योंकि वह जन्य है, जैसे जल।

यहाँ कृतकत्व हेतु का साध्य अनुष्णत्व है उसका अभाव प्रत्यक्ष से ही निश्चित कर लिया गया है क्योंकि स्पर्शन प्रत्यक्ष से अग्नि में उष्णता की उपलब्धि होती है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि गगनारविन्दं सुरभि, अरविन्दत्वात् सरोजारविन्दवत् यह तर्कभाषा के अनुसार आश्रयासिद्ध का उदाहरण है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज 111

100. नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम् ।
देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत् ॥
उपर्युक्त श्लोकेन सम्बन्धोऽस्ति-

(A) वाल्मीकिरामायणस्य **(B)** महाभारतस्य
(C) जयपुराणस्य **(D)** भारतविजयस्य

व्याख्या- * महाभारत महर्षि वेदव्यास द्वारा विरचित महाकाव्य है।

* इस महाकाव्य को 'शतसाहस्रीसंहिता' के नाम से भी जाना जाता है।
* महाभारत का विकास क्रमशः जय, भारत तथा महाभारत इस रूप में तीन विविध उद्देश्यों की पूर्ति के लिए पृथक्-पृथक् अवसरों पर हुआ है।

➢ **जय -** महाभारत का मूलरूप जय के नाम से प्रसिद्ध था- **जयो नामेतिहासोऽयं श्रोतव्यो विजिगीषुणा।** महाभारत (1.62.20)

* महाभारत के मङ्गलश्लोक में नारायण, नर और सरस्वती को नमस्कार करके जय नामक ग्रन्थ के पाठ का स्पष्ट निर्देश है-

नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम् ।
देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत् ॥

* वर्तमान महाभारत के आदिपर्व के 65वें अध्याय से जय की सामग्री का आरम्भ हुआ था जिसमें क्षत्रियों की उत्पत्ति का वर्णन है। व्यास के इस ग्रन्थ में 8800 श्लोक थे।

अष्टौ श्लोकसहस्त्राणि अष्टौ श्लोकशतानि च ।
अहं वेद्मि शुको वेत्ति संजयो वेत्ति वा न वा ॥

* व्यास ने इस ग्रन्थ को वैशम्पायन को सुनाया था। इसमें अधर्म पर धर्म की विजय का निरूपण था।

➤ **भारत-** द्वितीय अवस्था में जय का विस्तार भारत के रूप में हुआ जिसमें 24000 (चौबीस सहस्र) श्लोक हो गये।

* इस ग्रन्थ में उपाख्यानों को सम्मिलित नहीं किया गया था। महाभारत में ही इस ग्रन्थ का संकेत दिया गया है-

चतुर्विंशतिसाहस्त्रीं चक्रे भारतसंहिताम् ।
उपाख्यानैर्विना तावद् भारतं प्रोच्यते बुधैः॥

भारत का प्रवचन वैशम्पायन ने जनमेजय के समक्ष नागयज्ञ के अवसर पर किया था।

➤ **महाभारत -** अन्तिम अवस्था में एक लाख से अधिक श्लोकों का महाभारत ग्रन्थ प्रस्तुत हुआ। इसी रूप में यह आज उपलब्ध है।

* भारत को 'महाभारत' के रूप में परिणत करने का अवसर नैमिषारण्य नामक पवित्र स्थान में होने वाला यज्ञ था जिसे शौनक ऋषि ने अनुष्ठित किया था।

* इसके प्रवक्ता सौति नामक ऋषि थे, जिन्होंने वैशम्पायन से सुने हुये भारत नामक ग्रन्थ को पर्याप्त परिवर्धित करके शौनकादि ऋषियों को सुनाया था।

* महाभारत में अध्यात्म, इतिहास, भूगोल, आख्यान, नीतिशास्त्र, आचार-विचार आदि समस्त सांस्कृतिक विषयों को इसमें समाविष्ट किया गया।

* इससे यह भारतवर्ष का विश्वकोश बन गया।

* विशालता और महत्ता ही इसके 'महाभारत' कहे जाने की पृष्ठभूमि में थी-

महत्त्वाद् भारवत्त्वाच्च महाभारतमुच्यते (1.1.274)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम्' यह मङ्गलाचरण महाभारत का है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा ऋषि, पेज 147

उत्तरमाला

1-(A)	2-(C)	3-(B)	4-(A)	5-(A)	6-(D)	7-(C)	8-(C)	9-(C)
10-(A)	11-(B)	12-(A)	13-(D)	14-(D)	15-(C)	16-(A)	17-(C)	18-(C)
19-(B)	20-(C)	21-(C)	22-(C)	23-(C)	24-(B)	25-(C)	26-(B)	27-(B)
28-(B)	29-(A)	30-(B)	31-(B)	32-(B)	33-(A)	34-(B)	35-(B)	36-(A)
37-(C)	38-(B)	39-(D)	40-(B)	41-(B)	42-(C)	43-(C)	44-(B)	45-(D)
46-(C)	47-(C)	48-(B)	49-(C)	50-(B)	51-(B)	52-(D)	53-(B)	54-(D)
55-(B)	56-(B)	57-(B)	58-(B)	59-(C)	60-(B)	61-(D)	62-(A)	63-(A)
64-(B)	65-(D)	66-(C)	67-(A)	68-(D)	69-(B)	70-(C)	71-(A)	72-(A)
73-(C)	74-(C)	75-(C)	76-(C)	77-(C)	78-(C)	79-(A)	80-(D)	81-(B)
82-(A)	83-(A)	84-(D)	85-(B)	86-(B)	87-(B)	88-(A)	89-(B)	90-(B)
91-(B)	92-(C)	93-(A)	94-(C)	95-(D)	96-(D)	97-(A)	98-(A)	99-(C)
100-(B)								

2	जून 2019	NTA UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् II

1. 'नमो अरिहंतानां नमो सवसिधानां ऐरेण महाराजेन..।' इति वाक्यं कस्मिन्नभिलेखे प्राप्यते?
(A) इलाहाबादलेखे (B) ऐहोल-शिलालेखे
(C) गिरनारलेखे (D) हाथीगुम्फा-लेखे

व्याख्या- ➢ **इलाहाबाद लेख-** समुद्रगुप्त का प्रयाग स्तम्भ अभिलेख **स्थान-** इलाहाबाद, उत्तर-प्रदेश (यह मूल रूप से कौशाम्बी में था जहाँ से इलाहाबाद किले में लाया गया)
भाषा- ब्राह्मी
काल- समुद्रगुप्त (लगभग 335-76 ई.)
विषय- समुद्रगुप्त के जीवनचरित एवं उपलब्धियों का वर्णन।इस स्तम्भलेख में समुद्रगुप्त की प्रशस्ति का उल्लेख है तथा यह प्रयाग में है। इसी कारण इसे 'प्रयाग-प्रशस्ति' कहा जाता है। इसके लेखक हरिषेण हैं, इसलिए इसे हरिषेण कृत 'प्रयाग-प्रशस्ति' नाम से भी जाना जाता है।
➢ **प्रत्यन्त सीमावर्ती राज्यों की विजय-** प्रशस्ति की 22वीं पंक्ति में इनका उल्लेख है। ऐसे राज्यों की दो कोटियाँ–राजतन्त्र और गणतन्त्र थीं।
(1) राजतन्त्र- समतट, डवाक, कामरूप, कर्तृपुर एवं नेपाल।
(2) गणतन्त्र- प्रशस्ति में कुल 9 गणतन्त्रों का उल्लेख है। खरपरिक, प्रार्जुन, मालव, यौधेय, अर्जुनायन, काक, सनकानिक, आभीर एवं मद्रक।
➢ **समुद्रगुप्त के सिक्के-** समुद्रगुप्त ने छह प्रकार की स्वर्ण मुद्राओं का प्रचलन किया।
(1) ध्वजधारी या दण्डधारी या गरुड़ प्रकार के सिक्के
(2) धनुर्धारी प्रकार (3) परशुधारी (4) अश्वमेध (5) व्याघ्रनिहन्ता
(6) वीणावादन
➢ **एहोल शिलालेख-** पुलकेशिन् द्वितीय का एहोल लेख-
स्थान- एहोल, जिला-बीजापुर
भाषा- संस्कृत
लिपि- दक्षिणी ब्राह्मी
काल- वि॰सं॰ 556 (499ई॰)
विषय- पुलकेशिन् द्वितीय तक चालुक्य शासकों का वर्णन तथा पुलकेशिन् द्वितीय की कीर्ति का उल्लेख।

येनायोजि न वेश्म स्थिरमर्थविधौ विवेकिना जिनवेश्म।
स विजयतां रविकीर्तिः कविताश्रितकालिदासभारविकीर्तिः॥

अर्थात् काव्य के क्षेत्र में कालिदास एवं भारवि के समान यशस्वी वह रविकीर्ति विजयी हो, जिस विवेकी के द्वारा जैन मन्दिरों का निर्माण कराया गया, अपना भवन निर्माण आदि नहीं किया गया।
हाथीगुम्फा अभिलेख-
स्थान- हाथीगुम्फा भुवनेश्वर के निकट उदयगिरि पहाड़ी, जिला-पुरी, उड़ीसा
लिपि- ब्राह्मी
काल- लगभग प्रथम शती ई॰पू॰ का उत्तरार्ध
विषय- चेदिवंशी राजा कलिंगाधिपति खारवेल के जीवन की घटनाओं का क्रमिक विवरण एवं उसकी राजनैतिक उपलब्धियाँ तथा लोकमंगल के कार्यों का उल्लेख
'नमो अरिहंतानां नमो सवसिधानं ऐरेण महाराजेन।'
अर्हतों को नमस्कार। सब सिद्धों को नमस्कार। इस लेख के पढ़ने का प्रयास जेम्स प्रिंसेप, कनिंघम, राजेन्द्रलाल मित्र, भगवान् लाल इन्द्रजी, व्हीलर,फ्लीट, ल्यूडर, राखालदास बनर्जी, काशी प्रसाद, जायसवाल, बेनीमाधव बरुआ, स्टेन कोनो, थामस, मुनि जिनविजय, रामप्रसाद चन्दा आदि ने किया है।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'नमो अरिहंतानां नमो..' यह वाक्य हाथीगुम्फा लेख में प्राप्त होता है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**
स्रोत- प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख (भाग-1)-परमेश्वरी लाल गुप्त, पेज–94

2. ऋक्प्रातिशाख्यानुसारं समानाक्षराणां का संख्या?
(A) षड् (B) अष्ट
(C) पञ्च (D) सप्त

व्याख्या- एक-एक शाखा से सम्बद्ध होने के कारण ही ये ग्रन्थ 'प्रातिशाख्य' कहलाते हैं। (शाखायां शाखायां प्रतिशाखम्, प्रतिशाखं भवं प्रातिशाख्यम्)
शौनक कृत ऋग्वेदप्रातिशाख्य में अठारह पटल हैं।
➢ समानाक्षर संज्ञा- **अष्टौ समानाक्षराण्यादितः (1)**
आदि में आठ अक्षर समानाक्षर हैं।
जैसे- अ, आ, ऋ, ॠ, इ, ई, उ, ऊ।
➢ सन्ध्यक्षर संज्ञा- **ततश्चत्वारि संध्यक्षराण्युत्तराणि (2)**

तत्पश्चात् आगे वाले चार अक्षर संध्यक्षर हैं।
जैसे- ए, ओ, ऐ, औ।

➢ ह्रस्व स्वरस्य उच्चारणकालः **मात्रा ह्रस्वः (27)**
ह्रस्व स्वर का उच्चारण काल एक मात्रा काल वाला होता है।
जैसे- अ, ऋ, इ, उ, ऌ ।

➢ दीर्घस्वरस्य उच्चारणकालः– **द्वे दीर्घः (29)**
दीर्घस्वर वर्ण दो (मात्रा) वाला कहा जाता है।
जैसे- आ, ॠ, ई, ऊ, ए, ओ, ऐ, औ ।

➢ प्लुतस्य **स्वरसंज्ञा उच्चारणकालः**
तिस्रः प्लुत उच्यते स्वरः (30) प्लुत स्वर वर्ण तीन मात्रा वाला कहा जाता है।

➢ रक्तसंज्ञा- **रक्तसंज्ञोऽनुनासिकः (36)**
अनुनासिक वर्ण रक्तसंज्ञक हैं।
जैसे- ङञणनमाः

➢ संयोगसंज्ञा- **संयोगस्तु व्यञ्जनसंन्निपातः (37)**
व्यञ्जन वर्णों का मेल सन्निपात संयोग कहलाता है।
जैसे- कार्त्स्यायन, 'प्रप्र वस्त्रिष्टुभमिषम्' इत्यादि।

➢ प्रगृह्यसंज्ञा- **ओकार आमन्त्रितजः प्रगह्यः (68)**
सम्बोधन आमन्त्रित से उत्पन्न ओकार प्रगृह्य संज्ञक होता है।
जैसे- ओकारः

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि ऋक्प्रातिशाख्यानुसारं समानाक्षरों की संख्या आठ है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- ऋक्प्रातिशाख्यम्-वीरेन्द्रकुमार वर्मा, पेज 43

3. बाष्कलशाखा कस्य वेदस्य विद्यते-
(A) ऋग्वेदस्य **(B) सामवेदस्य**
(C) यजुर्वेदस्य **(D) अथर्ववेदस्य**

व्याख्या- वेद	**शाखा**
ऋग्वेद -	1. शाकल 2. बाष्कल 3. आश्वलायन 4. शांखायन 5. माण्डूकायन
शुक्लयजुर्वेद -	1. माध्यन्दिन (वाजसनेयि) 2. काण्व
कृष्णयजुर्वेद-	1. तैत्तिरीय 2. मैत्रायणी 3. कठ 4. कपिष्ठल
सामवेद-	1. कौथुमीय 2. राणायनीय 3. जैमिनीय
अथर्ववेद-	1. पैप्पलाद 2. तौद 3.मौद 4. शौनकीय 5. जाजल 6.जलद 7. ब्रह्मवद 8. देवदर्श 9.चारणवैद्य

ऋग्वेद के अपर नाम- 1. दशतयी
2. होतृवेद

ऋग्वेद का द्विधा विभाजन

अष्टक क्रम	मण्डलक्रम
अष्टक (8)	मण्डल 10
अध्याय (64)	अनुवाक 85
वर्ग (2024)	सूक्त 1017+11=1028

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि बाष्कल शाखा ऋग्वेद की है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज 46

4. यजुर्वेदस्य निम्नलिखित भाष्यकारेषु कोऽर्वाचीनतमः?
(A) स्वामिदयानन्दः **(B) रावणः**
(C) उव्वटः **(D) महीधरः**

व्याख्या-स्वामी दयानन्द सरस्वती-
➢ आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती आधुनिक युग में वेदों के पुनरुद्धारक माने जाते हैं।
➢ उन्होंने नैरुक्त प्रक्रिया का आश्रय लेकर वेदों की नई व्याख्या प्रस्तुत की है।
➢ उन्होंने सम्पूर्ण शुक्लयजुर्वेद की संस्कृत और हिन्दी में व्याख्या की है।
➢ ऋग्वेद की व्याख्या मण्डल 7 के 80 सूक्त तक ही कर सके।
➢ वेद को अपौरुषेय की मान्यता प्रदान करते हैं।

रावणः - आचार्य रावण ने ऋग्वेद का पदपाठ प्रस्तुत किया है और ऋग्वेद पर भाष्य भी किया हैं।

उव्वटः - यह नाम उव्वट और उवट दोनों प्राप्त होते हैं
➢ यजुर्वेदभाष्य के अन्त में इन्होंने अपना परिचय भी दिया है। ये आनन्दपुर निवासी वज्रट के पुत्र थे।
➢ राजा भोज के शासनकाल में इन्होंने वेदभाष्य किया।
➢ इनका समय 11वीं शती ई॰ है।

अन्य ग्रन्थ- 1. ऋक्प्रातिशाख्य की टीका 2. यजुः प्रातिशाख्य की टीका 3. ऋक्सार्वानुक्रमणी पर भाष्य 4. ईशोपनिषद् पर भाष्य

महीधरः - ये काशी निवासी नागर ब्राह्मण थे।
➢ इन्होंने यजुर्वेदभाष्य का नाम 'वेददीप' रखा है।
➢ इनका समय 16वीं शती ई॰ का उत्तरार्ध है।
➢ इन्होंने एक तन्त्रग्रन्थ मन्त्रमहोदधि (1588) ई॰ में लिखा है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि यजुर्वेद के अर्वाचीन

भाष्यकार स्वामी दयानन्द हैं। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज 18

5. शारिपुत्रप्रकरणमस्ति-
(A) माघप्रणीतम् **(B) श्रीहर्षप्रणीतम्**
(C) अश्वघोषप्रणीतम् **(D) बिल्हणप्रणीतम्**

व्याख्या- अश्वघोष ''आर्यसुवर्णाक्षीपुत्रस्य साकेतस्य भिक्षोराचार्यस्य भदन्ताश्वघोषस्य महाकवेर्महावादिनः कृतिरियम्-'' इस वाक्य से यह स्पष्ट होता है कि इनकी माता का नाम सुवर्णाक्षी था। ये साकेत (अयोध्याक्षेत्र) के निवासी थे। ये बौद्ध भिक्षु आचार्य थे, जिन्हें भदन्त, महाकवि और महावादी भी कहा जाता था।

रचनायें- अश्वघोष की प्रमाणसिद्ध काव्यकृतियाँ हैं-

1-**बुद्धचरित -** यह मूलतः 28 सर्गों का महाकाव्य था, किन्तु अभी संस्कृत में अधूरा ही प्राप्त है।

2- **सौन्दरनन्द-** 18 सर्गों का पूर्णतः उपलब्ध संस्कृत महाकाव्य

3- **शारिपुत्रप्रकरण-** नौ अङ्कों का रूपक जो अंशतः प्राप्त है।

माघ- *सर्वाधिकारी सुकृताधिकारी श्रीवर्मलाख्य तस्य बभूव राज्ञः असक्तदृष्टिर्विरजा सदैव देवोऽपरः सुप्रभदेवनामा।।*

माघ के पितामह सुप्रभदेव थे, जो राजा वर्मलात के सर्वाधिकारी अर्थात् दीवान थे। वे पुण्यात्मा, अनासक्त तथा सात्त्विक वृत्ति के पुरुष थे।

➤ सुप्रभदेव के पुत्र का नाम दत्तक था, जो उदार, क्षमाशील, कोमल स्वभाव के एवं धर्मपरायण थे, इन्हें लोग सर्वाश्रय भी कहते थे।

➤ माघ का निवासस्थान श्रीमाल या भिन्नमाल नामक नगर में था इनका समय 700ई॰ के आस-पास माना जाता है।

➤ शिशुपालवधम् नामक महाकाव्य के रचयिता महाकवि माघ का संस्कृत महाकवियों में विशेष स्थान है।

➤ विद्वानों ने श्रेष्ठ महाकाव्य का प्रणेता माना है-**'काव्येषु माघः'**

शिशुपालवधम्- यह माघकवि की एकमात्र कृति, 20 सर्गों के महाकाव्य के रूप में है। देवर्षि नारद के द्वारा इन्द्र का सन्देश द्वारकापुरी में कृष्ण को मिलता है, जिसमें शिशुपाल के अत्याचार से जगत् की रक्षा की प्रार्थना है। इसी प्रकार अन्तिम सर्ग में श्रीकृष्ण शिशुपाल का वध कर देते हैं। इस मूल कथानक को माघ ने कलात्मकता और विविध वर्णनों का प्रयोग करके बड़ा बना दिया है, जिसमें किरातार्जुनीय की अपेक्षा, बड़े-बड़े सर्गों में विभक्त 1645 पद्य हैं। पन्द्रहवें सर्ग में 34 प्रक्षिप्त श्लोक अतिरिक्त हैं जिनकी व्याख्या मल्लिनाथ ने नहीं की है। पाँच पद्य कविवंश वर्णन के हैं, उन्हें लगाकर माघ की रचना 1650 पद्यों की है।

श्रीहर्ष- श्रीहर्षं कविराज-राजि मुकुटालङ्कारहीरः सुतम्। श्रीहीरः सुषुवे जितेन्द्रियचयं मामल्लदेवी च यम्॥
(नैषध 1/145)

श्रीहर्ष के पिता का नाम श्रीहीर और माता का नाम मामल्ल देवी था। कान्यकुब्ज नरेश जयचन्द्र उनके आश्रयदाता थे।

नैषधीयचरितम्- महाकवि श्रीहर्ष रचित महाकाव्य के रूप में नैषधीयचरित अत्यन्त प्रसिद्ध है। इसमें नल और दमयन्ती के परस्पर प्रणय एवं परिणय का कथानक है, जो महाभारत के वनपर्व से संकलित है। यह कथा बाइस सर्गों में निबद्ध है, जो बृहत्त्रयी के अन्तर्गत आती है।

अन्य रचनाएँ- 1. श्रीविजयप्रशस्ति 2. खण्डनखण्डखाद्य 3. गौडोर्वीशिकुलप्रशस्ति 4. अणर्ववर्णन 5. छिन्दप्रशस्ति 6. शिवशक्तिसिद्धि तथा 7. नवसाहसाङ्कचरितचम्पू। इनके अतिरिक्त खण्डनखण्डखाद्य में 'ईश्वराभिसन्धि' का उल्लेख है।

बिल्हण - एको भागः प्रकृतिसुभगं कुङ्कुमं यस्य सूते द्राक्षामन्यः सरस-सरयू-पुण्ड्रकच्छेद-पाण्डुम्। अपनी जन्मभूमि कश्मीर के प्रति बिल्हण की गवपूर्ण ममता थी। काश्मीर की तात्कालिक राजधानी प्रवरपुर (श्रीनगर) से तीन कोश की दूरी पर स्थित उत्तुङ्ग त्यों वाले 'जयवन' नामक स्थान के निकट 'खोनमुख' गाँव में उनका जन्म हुआ। यह स्थान केसर और अंगूर के लिए प्रसिद्ध था।

रचनाएँ- बिल्हण के नाम से तीन रचनाएँ मिलती हैं। विक्रमाङ्कदेवचरित महाकाव्य के अतिरिक्त कर्णसुन्दरी नामक नाटिका इन्होंने चालुक्य राजसभा में रहकर ही लिखी थी। इनकी तीसरी रचना चौरपञ्चाशिका नामक सुन्दर गीतिकाव्य है।

विक्रमाङ्कदेवचरित- बिल्हण को अमर बनाने वाला 18 सर्गों का ऐतिहासिक महाकाव्य है। कल्याण के चालुक्य राजा विक्रमादित्य षष्ठ के ऐतिहासिक चरित का इसमें वर्णन है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि शारिपुत्रप्रकरण के लेखक अश्वघोष हैं। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा ऋषि, पेज–228

6. ऋग्वेदसंहितायाः पदपाठकारो निम्नलिखितेषु कोऽस्ति?
(A) गार्ग्यः **(B) शाकल्यः**
(C) शौनकः **(D) यास्कः**

व्याख्या- आचार्य शाकल्य ने ऋग्वेद का पदपाठ किया है। ब्रह्माण्डपुराण में इनको प्रथम शाखाप्रवर्तक कहा गया है। इनके साथ ही रथीतर, बाष्कलि और भरद्वाज को भी शाखाप्रवर्तक कहा गया है।

शाकल्यः प्रथमस्तेषां तस्मादन्यो रथीतरः।
बाष्कलिश्च भरद्वाज इति शाखाप्रवर्तकाः॥

➢ **शौनक-** बृहद्देवता शौनक की कृति है। यह अतिमहत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। इसमें 8 अध्यायों में 1200 पद्य हैं। इसमें देवताओं का स्वरूप, उनका स्थान और उनकी विशेषताओं का वर्णन है। इसमें देवों से सम्बद्ध आख्यानों का भी संकलन पद्यों में है। यह देवशास्त्र का प्रामाणिक ग्रन्थ है। कात्यायन ने अपनी 'सर्वानुक्रमणी' में बृहद्देवता का बहुत उपयोग किया है।

➢ **गार्ग्य-** इन्होंने सामवेद का पदपाठ किया है।

➢ **रावण-** आचार्य रावण ने भी ऋग्वेद का पदपाठ प्रस्तुत किया है। कुछ स्थलों पर शाकल्य से पदपाठ भिन्न है। रावण ने ऋग्वेद पर भाष्य भी किया था।

➢ **यास्क-** यास्क ने निरुक्त में कहीं-कहीं शाकल्य के पदपाठ को अस्वीकार भी किया है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि ऋग्वेदसंहिता के पदपाठकार शाकल्य हैं। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 22

7. ग्रिमनियमानुसारेण तवर्गीयध्वनीनां परिवर्तनक्रमोऽस्ति-
(A) द > ध > ध > थ > थ > त
(B) त > थ > द > ध > ध > त
(C) थ > ध > त > द > ध > द
(D) त > थ > ध > द > द > त

व्याख्या- ग्रिम, ग्रासमान और वर्नर मूल भारोपीय भाषा से सम्बद्ध हैं। इन नियमों में मूल भारोपीय भाषा की ध्वनियों में परिवर्तन का वर्णन है

1. ग्रिम नियम (Grimm's Law):- यह ध्वनि नियम प्रो॰ याकोब ग्रिम (Jacob Grimm 1785-1863) के नाम से प्रसिद्ध है। इस नियम को ध्वनि परिवर्तन जर्मन में लाउत ध्वनि, फेशीबुंग-परिवर्तन, अंग्रेजी में साउन्ड ध्वनि नाम दिया गया था। प्रो॰ मैक्समूलर ने इसे ग्रिम नियम नाम दिया है। प्रो॰ ओटो येस्पर्सन का कथन है कि इस नियम को Rask's Law रास्क नियम नाम दिया जाना चाहिये, क्योंकि यह नियम डैनिश विद्वान् रास्क ने ही सर्वप्रथम प्रामाणिक रूप में अपनी Unddrsogelse पुस्तक में प्रकाशित किया था। प्रो॰ ग्रिम ने 1822ई॰ में जर्मन व्याकरण दायत्श जर्मन, ग्रामातिक-व्याकरण का द्वितीय संस्करण निकाला था। इस नियम की ओर पहले संकेत करने के विषय में प्रो॰ रास्क के अतिरिक्त प्रो॰ ईरे (Ihre) का भी नाम लिया जाता है।

प्रथम वर्ण-परिवर्तन (First sound shifting) :- यह वर्ण परिवर्तन ईसा के जन्म से पूर्व हो चुका था। इसका प्रभाव समान रूप से गाथिक, निम्न जर्मन और अंग्रेजी, डच आदि भाषाओं पर पड़ा है। भारोपीय मूलभाषा की व्यञ्जन ध्वनियाँ संस्कृत, लैटिन, ग्रीक आदि में सुरक्षित है। अंग्रेजी का उद्भव निम्न जर्मन से है, अतः इसके द्वारा संस्कृत और अंग्रेजी की तुलना से यह परिवर्तन स्पष्ट हो जाता है। इस वर्ण परिवर्तन में एक ओर संस्कृत, लैटिन, ग्रीक, स्लावोनिक भाषाएँ हैं, इनमें यह परिवर्तन हुआ है।

वर्ण परिवर्तन का क्रम–

क् त् प्
(अघोष अल्पप्राण)
(घोष अल्पप्राण)
ग् द् ब्
महाप्राण
ख् (ह्) थ् फ्
घ् ध् भ्

1- ग्रिम नियम के अनुसार मूल भारोपीय भाषा की निम्नलिखित ध्वनियों को अंग्रेजी और जर्मन भाषा में ये ध्वनियाँ हो जाती हैं- प्रथम को द्वितीय 1 को 2, क्रमशः क् त् प् को ह् ख् थ् फ् (चतुर्थ को तृतीय 4 को 3) क्रमशः घ् ध् भ् को ग् द् ब् (तृतीय को प्रथम 3 को। क्रमशः ग् द् ब् को क् त् प्।

2- ग्रासमान नियम- मूल भारोपीय दो अक्षर वाली धातुओं में दो महाप्राण (ह्) ध्वनियाँ थीं। सामान्यतया प्रथम महाप्राण (ह्) ध्वनि हट जाती है। द्वितीय वर्ण में महाप्राण (ह्) ध्वनि हटने पर प्रथम वर्ण में महाप्राण ध्वनि रहती है।

3- वर्नर नियम- यह ग्रिम नियम का संशोधन है। यदि मूल-ग्रिम नियमानुसार प्रथम वर्ण परिवर्तन नियम लगेगा। यदि उदात्त स्वर क् त् प् आदि से पूर्व उदात्त स्वर होगा, तो ग्रिम उदात्त स्वर क् त् प् के बाद होगा तो क् त् प् को ग् द् ब् होगा।

स्पटीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि ग्रिम-नियमानुसार तवर्गीयध्वनि क्रम परिवर्तन त, थ, ध, द, द, त। है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-242

8. अधस्तनेषु 'ध्वन्यते इति ध्वनिः' इत्यनेन कोऽभिप्रायः?
(A) व्यञ्जकशब्दार्थौ **(B) व्यञ्जनाशक्तिः**
(C) व्यङ्ग्यार्थः **(D) व्यङ्ग्यकाव्यम्**

व्याख्या- आचार्य आनन्दवर्धन प्रणीत ध्वन्यालोक के प्रथम उद्योत में 'ध्वनि का लक्षण' प्रतिपादित करते हुए कहते हैं-

यत्रार्थः शब्दो वा तमर्थमुपसर्जनीकृतस्वार्थौ।
व्यङ्क्तः काव्यविशेषः स ध्वनिरिति सूरिभिः कथितः॥
(ध्वन्या.का. -13)

जहाँ अर्थ अपने को अथवा शब्द अपने अर्थ को गुणीभूत करके उस प्रतीयमान अर्थ को अभिव्यक्त करते हैं, उस काव्यविशेष को विद्वान् लोग 'ध्वनिकाव्य' कहते हैं। **'सूरिभिः कथितः'** इस व्याख्या में 'प्रथमे हि विद्वांसो वैयाकरणाः' ऐसा कहते हैं। प्रथम विद्वान् वैयाकरण हैं, क्योंकि व्याकरण सब विद्याओं का मूल है। वे वैयाकरण सुनाई देने वाले वर्णों को ध्वनि कहते हैं। उसी प्रकार उनके मत को मानने वाले काव्यतत्त्वार्थदर्शी अन्य विद्वानों ने भी 1- वाच्य 2- वाचक 3- व्यङ्ग्यार्थ 4- व्यञ्जनाव्यापार 5- काव्य पद से व्यवहार्य काव्य इन पाँचों को ध्वनि कहा है।

* 'ध्वन्यते अनेन इति ध्वनिः' इस व्युत्पत्ति से वाच्य शब्द और वाच्यार्थ को बताते हैं।
* 'ध्वन्यते इति ध्वनिः' इस व्युत्पत्ति से व्यङ्ग्यार्थ को
* 'ध्वननं ध्वनिः' इस व्युत्पत्ति से व्यञ्जना व्यापार को
* 'ध्वन्यतेऽस्मिन्निति ध्वनिः' इस व्युत्पत्ति से पूर्वोक्त ध्वनिचतुष्टय काव्य को ध्वनि कहते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'ध्वन्यते इति ध्वनिः' इसका अभिप्राय व्यङ्ग्यार्थ से है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्त्रोत- ध्वन्यालोक (1/13)- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-37-53

9. 'भवाति' रूपमिदं कस्य लकारस्य विद्यते?
(A) लोट्लकारस्य (B) विधिलिङ्लकारस्य
(C) लेट्लकारस्य (D) लुट्लकारस्य

व्याख्या- लेट्लकार अत्यन्त जटिल लकार है। इसीलिए वैदिक काल के बाद लौकिक युग में इसके रूप प्रायः लुप्त हो गए। इस लकार में भू धातु के लेट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन के निम्नलिखित 12 प्रकार के रूप बनते हैं- भवति, भवाति, भाविषति, भाविषाति, भविषति, भविषाति, भाविषत्, भाविषात्, भवत्, भवात्, भविषत् तथा भविषात्। इन्हीं जटिलताओं के कारण ही इस लकार के प्रयोग लौकिक संस्कृत भाषा में नहीं पाये जाते।

'भू' धातु लेट्लकार-

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पु॰	भवाति, भवात्	भवातः	भवान्
मध्यम पु॰	भवासि, भवाः	भवाथः	भवाथ
उत्तम पु॰	भवानि, भवा	भवाव	भवाम

➢ अकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्दों से तृतीया बहुवचन में भिस् प्रत्यय के स्थान पर ऐस् आदेश विकल्प से होता है।
जैसे- देवैः, देवेभिः, प्रियैः, प्रियेभिः, रामैः, रामेभिः इत्यादि।

➢ अन्य रूप- देवासः जनासः, रथासः, ब्राह्मणासः रूप भी वैदिक भाषा में प्राप्त होता है।

➢ **प्रत्यय-** वैदिक भाषा के प्रत्ययों में भी लौकिक संस्कृत के प्रत्ययों से कुछ विशेषताएँ पाई जाती हैं।

➢ **पूर्वकालिक क्रियारूप-** इस प्रकार के रूप लौकिक भाषा में क्त्वा और ल्यप् प्रत्यय जोड़कर बनाये जाते हैं, परन्तु वैदिक भाषा में 'त्वी', 'त्वाय' तथा त्वा प्रत्यय जोड़कर भी बनाये जाते हैं। जैसे- त्वी जोड़कर- कृत्वी, गत्वी, भूत्वी आदि

➢ **तुमर्थक प्रत्यय-** तुमुन् प्रत्यय के अर्थ में वैदिक भाषा में से, सेन्, असे, असेन, क्से, कसेन्, अध्यै, अध्यैन्, कध्यै, कध्यैन्, तवै, तवेङ् तथा तवेन् शध्यै, शध्यैन् ये 15 प्रत्यय होते हैं।

उदाहरण– से - ✓वच् + से = 'वक्षे' बोलने के लिए
सेन्- ✓इ + सेन् = 'एषे' जाने के लिए
असे - ✓जीव + असे = 'जीवसे' जीने के लिए
असेन् - ✓जीव + असेन् = जीवसे जीने के लिए
(आदि उदात्त)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'भवाति' रूप लेट्लकार से सम्बन्धित है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्त्रोत- वैदिकसूक्त संग्रह- विजयशङ्कर पाण्डेय, पेज- (व्याकरण) -23

10. अधस्तनेषु वाल्मीकिरामायणस्य काण्डानां समुचितक्रमोऽस्ति
(A) बाल-अयोध्या-सुन्दर-अरण्य-किष्किन्धा-युद्ध-उत्तराणि
(B) बाल-अयोध्या-किष्किन्धा-अरण्य-सुन्दर-युद्ध-उत्तराणि
(C) अयोध्या-बाल-किष्किन्धा-अरण्य-सुन्दर-युद्ध-उत्तराणि
(D) बाल-अयोध्या-अरण्य-किष्किन्धा-सुन्दर-युद्ध-उत्तराणि

व्याख्या- रामायण महाकाव्य की रचना आदिकवि वाल्मीकि ने की थी। रामायण सात काण्डों में विभक्त है- 1-बालकाण्ड 2-अयोध्याकाण्ड 3-अरण्यकाण्ड 4- किष्किन्धाकाण्ड 5- सुन्दरकाण्ड 6- युद्धकाण्ड तथा 7- उत्तरकाण्ड। प्रत्येक काण्ड सर्गों में विभक्त है। सर्गों में रमणीय संस्कृत पद्य हैं, जो अनुष्टुप्, उपजाति, वंशस्थ आदि सुन्दर गेयात्मक छन्दों में निबद्ध हैं।

➢ **बालकाण्ड-** बालकाण्ड में 77 सर्ग हैं। इसके आरम्भ के चार सर्गों में रामायण की रचना की पूर्वपीठिका दी गयी है कि

नारद ने महर्षि वाल्मीकि को रामकथा सुनायी।
अयोध्या में दशरथ द्वारा अश्वमेध यज्ञ का अनुष्ठान, राम की बाल्यावस्था, विश्वामित्र द्वारा राम लक्ष्मण को ले जाने की याचना, तारकावध, अहल्या–उद्धार, राम द्वारा धनुर्भङ्ग, राम–सीता विवाह, अयोध्य–प्रस्थान आदि का वर्णन प्राप्त होता है।

➢ **अयोध्याकाण्ड-** इस काण्ड में 119 सर्ग हैं। अयोध्या के राजप्रासाद की घटनाएँ, भरत की अनुपस्थिति में राम के राज्याभिषेक की तैयारी, मन्थरा के परामर्श से कैकेयी द्वारा दशरथ से राम के वनवास का वर माँगना, राम के वियोग में दशरथ की मृत्यु, भरत का चित्रकूट गमन, आदि घटनायें वर्णित हैं।

➢ **अरण्यकाण्ड-** इस काण्ड में 75 सर्ग हैं। राम-लक्ष्मण-सीता का दण्डकारण्य में निवास, विराध आदि राक्षसों का वध, पञ्चवटी में निवास, रावण का छल से सीता को हर लेना, जटायु की रावण द्वारा हत्या, राम का करुण विलाप, राम की कबन्ध से भेंट, राम का सुग्रीव से मैत्री करने का परामर्श दिया जाना, ये वृत्तान्त वर्णित हैं।

➢ **किष्किन्धाकाण्ड-** इस काण्ड में 67 सर्ग हैं। प्रारम्भ में पम्पा सरोवर में वसन्त ऋतु की छटा देखकर राम का सीता के वियोग में दुःखी होना, हनुमान् द्वारा राम और और सुग्रीव की मैत्री होना राम द्वारा वाली वध, वाली की भार्या तारा का विलाप, सुग्रीव तथा अङ्गद का राज्याभिषेक, राम का प्रस्रवण गिरि पर चतुर्मास यापन, वर्षा वर्णन, शरद्वर्णन आदि का वर्णन है।

➢ **सुन्दरकाण्ड-** इस काण्ड में 68 सर्ग हैं। प्रारम्भ में हनुमान् द्वारा सागर पार करके लङ्का प्रवेश करना, रावण के अन्तःपुर में प्रत्येक स्थल में सीता की खोज, अशोक वन में सीता दर्शन, राम की दी हुई अँगूठी सीता को देना, हनुमान् की पूँछ में आग लगाना, लङ्का दहन आदि का वर्णन है।

➢ **युद्धकाण्ड-** इसमें 128 सर्ग हैं। प्रारम्भ में राम और रावण के बीच युद्ध का वर्णन है, रावण को मारकर राम के अयोध्या लौटने एवं राज्य पाकर प्रजा को प्रसन्न करने की कथा है। नल द्वारा समुद्र पर सेतु बन्धन, इन्द्रजित् का लक्ष्मण द्वारा वध, शक्ति से लक्ष्मण की मूर्च्छा और संजीवन, सीता की अग्निपरीक्षा, अयोध्या आना और राम का राज्याभिषेक आदि वृत्तान्त वर्णित हैं।

➢ **उत्तरकाण्ड-** इसमें 111 सर्ग हैं। प्रारम्भ में बालकाण्ड के समान अनेक इतिहास-पुराणात्मक आख्यान हैं। राम की कथा का अंश कम ही है। सीता का परित्याग, लव-कुश जन्म, शम्बूक वध, अश्वमेध यज्ञ का राम द्वारा अनुष्ठान, सीता का पाताल प्रवेश, लवकुश का राज्याभिषेक, राम का महाप्रस्थान आदि का वर्णन है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि रामायण के सात काण्डों के नाम क्रमशः बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, युद्धकाण्ड, उत्तरकाण्ड हैं। **अतः विकल्प 'D' है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा ऋषि, पेज 124-127

11. सारनाथ-बौद्धप्रतिमालेखस्य भाषाऽस्ति-

(A) संस्कृतम् **(B) प्राकृतम्**
(C) पालिः **(D) अपभ्रंशः**

व्याख्या ➢ कनिष्क प्रथम कालीन सारनाथ बौद्ध प्रतिमाभिलेख–
स्थान- सारनाथ जिला- वाराणसी, उत्तर प्रदेश
भाषा- प्राकृत, संस्कृत से प्रभावित
लिपि- ब्राह्मी
काल- प्रथम शताब्दी ई॰ उत्तरार्द्ध, सं.- 3=81ई॰
विषय- भिक्षु बल द्वारा विभिन्न लोगों के साथ छत्र और यष्टि की स्थापना, हित और सुख के लिए

➢ **समुद्रगुप्त का प्रयाग स्तम्भ अभिलेख–**
स्थान- इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश (यह मूलतः कौशाम्बी में था, जहाँ से इलाहाबाद किले में लाया गया)
भाषा- संस्कृत
लिपि- ब्राह्मी
काल- समुद्रगुप्त (लगभग-335-76ई॰)
विषय- समुद्रगुप्त का जीवन चरित तथा उपलब्धियों का वर्णन

➢ **पुलकेशिन् द्वितीय का एहोल लेख**
स्थान- एहोल जिला बीजापुर
भाषा- संस्कृत
लिपि- दक्षिणी ब्राह्मी
काल- वि॰स॰556 (499ई॰)
विषय- पुलकेशिन् द्वितीय तक चालुक्य शासकों का वर्णन।

➢ **रुद्रदामन का जूनागढ़ शिलालेख–**
स्थान- जूनागढ़ गुजरात
भाषा- संस्कृत
लिपि- दक्षिणी ब्राह्मी
काल- रुद्रदामन के राजत्व कालान्तर्गत
विषय- रुद्रदामन के प्रान्तीय शासक सुविशाख द्वारा सुदर्शन बाँध का पुनर्निर्माण, बाँध का पूर्व इतिहास एवं रुद्रदामन की राजनैतिक उपलब्धियाँ।

➢ **अशोक अभिलेख- प्रथम शिलालेख**
स्थान- गिरनार, जिला- जूनागढ़ महाराष्ट्र
भाषा- प्राकृत (पालि)

लिपि- ब्राह्मी
काल- अशोक कालीन (लगभग 272-32ई॰पू॰)
विषय- हिंसा और समाज का विरोध, व्यक्तिगत जीवन
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि सारनाथ बौद्ध प्रतिमाभिलेख की भाषा प्राकृत है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**
स्रोत- भारतीय पुरालेखों का अध्ययन- शिवस्वरूप सहाय, पेज-223

12. मुद्राराक्षसस्य तृतीयाङ्कस्य नाम अस्ति-
(A) मुद्राप्राप्तिः (B) भूषणविक्रयः
(C) प्रलोभनम् (D) कृतककलहः

व्याख्या- विशाखदत्त का परिचयः–
नाम- विशाखदत्त
पिता का नाम- भास्करदत्त
पितामह- बटेश्वरदत्त
निवासस्थान- बंगाल अथवा बिहार (अनुमान के आधार पर)
उपासक- शिव के
प्रिय छन्द- अनुष्टुप्, वसन्ततिलका, शार्दूलविक्रीडित
प्रिय अलङ्कार- अर्थालङ्कार
रीति- वैदर्भी, किन्तु उग्रता या भयङ्करता का वर्णन करने के लिए गौडी रीति का प्रयोग
समय- अधिकांश विद्वानों के अनुसार चतुर्थ शताब्दी
आश्रयदाता- तैलङ्ग महोदय के अनुसार- अवन्तिवर्मा
रचनाएँ- मुद्राराक्षस, देवीचन्द्रगुप्तम् अभिसारिकवञ्चितकम्
मुद्राराक्षस ही विशाखदत्त की एकमात्र प्रामाणिक रचना है।
*** मुद्राराक्षस का परिचय-**
लेखक - विशाखदत्त
काव्यविधा - नाटक (ऐतिहासिक)
विभाजन - 7 (सात अङ्कों में)
श्लोक संख्या- 169

अङ्क अङ्कों के नाम	श्लोक संख्या
प्रथम मुद्रा लाभ	27
द्वितीय राक्षस-विचार	23
तृतीय कृतक-कलह	33
चतुर्थ राक्षस-उद्योग	22
पञ्चम राक्षस-निकार	24
षष्ठ राक्षस-निर्वेद	21
सप्तम राक्षस-निग्रह	19
योग	= 169

गुण- ओज, माधुर्य तथा प्रसाद गुणों का समन्वय।
मुख्य रस- वीर रस
उपजीव्य- विष्णु पुराण तथा श्रीमद्भागवतमहापुराण
नायक- चाणक्य (कौटिल्य, विष्णुगुप्त) कुछ विद्वान् चन्द्रगुप्त को मानते हैं।
नायिका- (नायिकाविहीन नाटक) नायिका का अभाव
प्रतिनायक - राक्षस (सुबुद्धि शर्मा)
कञ्चुकी - 1- जाजलि (मलयकेतु का) 2- वैहीनर (चन्द्रगुप्त का)
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि मुद्राराक्षस के तृतीय अङ्क का नाम 'कृतककलह' है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**
स्रोत- मुद्राराक्षस- पुष्पा गुप्ता, पेज-192

13. अधस्तनेषु पुराणस्य पञ्चलक्षणेषु नास्ति-
(A) वंशः (B) मन्वन्तराणि
(C) संसर्गः (D) प्रतिसर्गः

व्याख्या- ➤ पुराण शब्द की व्युत्पत्ति पाणिनि, यास्क तथा स्वयं पुराणों ने भी दी है। 'पुरा भवम्' प्राचीन काल में होने वाला।
➤ पुराण शब्द ऋग्वेद में एक दर्जन से अधिक स्थानों पर मिलता है। यह वहाँ विशेषण है तथा उसका अर्थ है- प्राचीन (पूर्व में होने वाला)।
➤ यास्क के निरुक्त (3/19) के अनुसार पुराण की व्युत्पत्ति है- 'पुरा नवं भवति' (जो प्राचीन होकर भी नया है)
➤ वायुपुराण के अनुसार यह व्युत्पत्ति है- 'पुरा अनति' अर्थात् प्राचीन काल में जो जीवित था।
➤ अथर्ववेद के अनुसार पुराण का आविर्भाव ऋक्, साम, छन्द और यजुष् के साथ ही हुआ था।
'ऋचः सामानि छन्दांसि पुराणं यजुषा सह' (11/7/24)
➤ इतिहास तथा पुराण को संयुक्त रूप से नारद ने 'पञ्चम वेद' कहा है- 'इतिहासपुराणं पञ्चमं वेदानां वेदम्' (बृहदारण्यकोपनिषद् 2/4/10)
पुराण का लक्षण- प्रमुख पुराणों तथा अमरकोश जैसे प्राचीन ग्रन्थों में पुराण के लक्षण तथा विषयवस्तु के सम्बन्ध में यह श्लोक मिलता है-

सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च।
वंशानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम्॥
(विष्णुपुराण- 3.6.24, अमरकोश-1.6.5)

सर्ग - विश्व की सृष्टिप्रक्रिया।
प्रतिसर्ग - प्रलय तथा पुनः सृष्टि का वर्णन।
वंश - देवताओं और ऋषियों के वंशों का वर्णन।
मन्वन्तर - प्रत्येक मनु का काल और उस काल की प्रमुख घटनाओं का निरूपण।
वंशानुचरित - सूर्यवंश और चन्द्रवंश में उत्पन्न राजाओं का जीवन-चरित

पुराणों की संख्या- पुराणों का विकास दो प्रकार से हुआ है- महापुराण और उपपुराण
महापुराण प्राचीनतर हैं, जिनकी संख्या अठारह है।
उपपुराणों की भी संख्या अठारह ही है।

महापुराण	उपपुराण
ब्रह्मपुराण	सनत्कुमार
पद्मपुराण	नारसिंह
विष्णुपुराण	स्कान्द या शिव
वायुपुराण	शिवधर्म
भागवतपुराण	आश्चर्य
नारदपुराण	नारदीय
मार्कण्डेयपुराण	कापिल
अग्निपुराण	औशनस
भविष्यपुराण	वारुण
ब्रह्मवैवर्तपुराण	कल्कि
लिङ्गपुराण	कालिका
वराहपुराण	माहेश्वर
स्कन्दपुराण	साम्ब
वामनपुराण	सौर (सूर्य)
कूर्मपुराण	पराशर
मत्स्यपुराण	मारीच
गरुडपुराण	भार्गव
ब्रह्माण्डपुराण	नन्द

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि पुराण के पञ्चलक्षणों में 'संसर्ग' नहीं आता है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**
स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा ऋषि, पेज 174

14. पुराणसन्दर्भे सप्तद्वीपेषु गणना नास्ति?
(A) कुशद्वीपः **(B) प्लक्षद्वीपः**
(C) शाकद्वीपः **(D) आम्रद्वीपः**

व्याख्या- भुवनकोष के विषय में प्राचीन मत यही था कि पृथ्वी चार द्वीपों से घिरी है, परन्तु पुराणों के नवीन संस्करण में सात द्वीपों का सिद्धान्त मान लिया गया।
सात द्वीपों के नाम इस प्रकार हैं-
1. जम्बूद्वीप (क्षारसमुद्र या लवणोदधि द्वारा वेष्टित)
2. प्लक्षद्वीप या गोमेदक द्वीप (इक्षुरस समुद्र द्वारा वेष्टित)
3. शाल्मलिद्वीप (सुरासमुद्र के द्वारा वेष्टित)
4. कुशद्वीप (घृतसमुद्र द्वारा वेष्टित)
5. क्रौञ्चद्वीप (दधिसमुद्र द्वारा वेष्टित)
6. शाकद्वीप (क्षीरसमुद्र द्वारा वेष्टित)
7. पुष्करद्वीप (स्वादुजल समुद्र द्वारा वेष्टित)

➢ प्रत्येक द्वीप में सात नदियाँ तथा सात पर्वत होते हैं।
➢ द्वीपों का यह क्रम वायु, विष्णु, भागवत तथा मार्कण्डेय के अनुसार है।
➢ **मत्स्य के अनुसार द्वीपों का क्रम इस प्रकार है-**
1. जम्बूद्वीप 2. शाकद्वीप 3. कुशद्वीप 4. क्रौञ्चद्वीप 5. शाल्मलिद्वीप 6. प्लक्ष या गोमेद द्वीप 7. पुष्कर द्वीप

शाकद्वीप में सात पर्वत- 1. मेरु (उदय पर्वत) 2. जलधार (चन्द्र नाम से भी ख्यात, विष्णुपुराण में जलाधार) 3. दुर्ग शैल (नारद से भी प्रख्यात) 4. श्याम (दुन्दुभि) 5. अस्तगिरि (अपरनाम सोमक)
6. आम्बिकेय (अपर नामसुमनस्) 7. विभ्राज (अपरनाम केशव)

शाकद्वीप की सात नदियाँ-
1. सुकुमारी (मुनितप्ता)
2. कुमारी (तपःसिद्धा नाम से भी प्रख्यात)
3. नन्दा (अपरनाम पावनी)
4. शिविका (द्विविधा नाम भी)
5. इक्षु (अपरनाम कुहू)
6. वेणुका (अपरनाम अमृता)
7. सुकृता (अपरनाम गभस्ति)

शाकद्वीप के सात वर्षो के नाम-
1. उदयवर्ष (उदय पर्वत का प्रदेश)
2. सुकुमारवर्ष (अपर नाम शैशिर, जलधार पर्वत का प्रदेश)
3. कौमार (अपर नाम सुखोदय, नारद पर्वत का प्रदेश)
4. मणिचक (अपर नाम आनन्दक, श्यामपर्वत का प्रदेश)
5. कुसुमोत्कर (अपर नाम असित, सोमक पर्वत का देश)
6. मैनाक (क्षेमक नाम से भी ख्यात, आम्बिकेय पर्वत का देश
7. विभ्राज (ध्रुव नाम से भी ख्यात, विभ्राज पर्वत का देश)

⇒**'कुलपर्वतों की संख्या सात मानी गयी है- जिनके नाम हैं–**
1. महेन्द्र कुलपर्वत 2. मलय कुलपर्वत 3. सह्य कुलपर्वत
4. शुक्तिमान् कुलपर्वत 5. ऋक्ष कुलपर्वत 6. विन्ध्य कुलपर्वत
7. पारियात्र कुलपर्वत

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि सप्तद्वीपों में 'आम्रद्वीप' की गणना नहीं होती है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**
स्रोत- पुराण विमर्श- बलदेव उपाध्याय, पेज-323

15. कस्य वचः नारिकेलफलसम्मितं कल्पितम्?
(A) विशाखदत्तस्य (B) भारवेः
(C) दण्डिनः (D) बाणभट्टस्य

व्याख्या- भारविकृत किरातार्जुनीयम् महाकाव्य है, जिसमें 18 सर्ग हैं, जो बृहत्त्रयी के अन्तर्गत आता है। किरातार्जुनीयम् की टीका मल्लिनाथकृत 'घण्टापथ' टीका है, जिसमें मल्लिनाथ ने भारवि के विषय में कहा है- **नारिकेलफलसम्मितं वचो भारवेः** भारवि की प्रशंसा करते हुए कहा है कि बाह्यरूप से आपाततः अत्यन्त कठिन स्वरूप में प्रतीत होता है, परन्तु अर्थबोध होने पर नारिकेलफल के समान रसगर्भनिर्भर है।

⇒ भारवि के विषय में कुछ उक्तियां प्रचलित हैं-

1. 'भारवेरर्थगौरवम्' 2. 'भारवेरिव भारवेः'
3. 'प्रकृतिमधुरा भारविगिरः' (अभिनन्दः)

दण्डी के विषय में उक्ति-

1. दण्डिप्रबन्धाश्च त्रिषु लोकेषु विश्रुताः (राजशेखरस्य)
2. **उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्।**
दण्डिनः पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयो गुणाः।

महाकवि कालिदास की विशिष्टता उपमा के कारण है, भारवि का प्रधानगुण अर्थगौरव है, दण्डी की विशिष्टता पदलालित्य के कारण है, तो माघ में तीन गुणों का समन्वित प्रयोग प्रमुख वैशिष्ट्य है। माघ में ये सारी विशिष्टताएँ (उपमा, अर्थगौरव और पदलालित्य) वर्तमान हैं।

⇒ बाणभट्ट के विषय में कुछ उक्तियाँ-

1. वाणी बाणो बभूवेति (गोवर्धन)
2. बाणः कवीनामिह चक्रवर्ती
3. वाणी बाणस्य मधुरशीलस्य (धर्मदास)
4. बाणस्तु पञ्चाननः (श्रीचन्द्रदेव)
5. पञ्चबाणस्तु बाणः (जयदेव)

⇒ कालिदास विषयक उक्तियाँ-

1. कनिष्ठिकाधिष्ठितकालिदासः
2. न कालिदासादपरस्य वाणी (श्रीकृष्ण कवि)
3. काव्येषु माघः कविकालिदासः (घटखर्परस्य)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'नारिकेल-फलसम्मितंःवचः' यह भारवि के लिए प्रयोग किया गया है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा ऋषि, पेज 245

16. अधोलिखितेषु वैदिकभाषादृशा साधुप्रयोगो मन्यते-
(A) देवेभिः (B) विश्वा
(C) एमसि (D) उक्ताः सर्वेऽपि साधवः

व्याख्या- अग्निर्होता कविक्रतुः, सत्यश्चित्रश्रवस्तमः।
देवो देवेभिरा गमत्॥ (ऋषि 1.1.5)
उप त्वाग्ने दिवेदिवे, दोषावस्तर्धिया वयम्।
नमो भरन्त एमसि॥ (ऋ. 1.1.7)
याति देवः प्रवता यात्युद्वता याति शुभ्राभ्यां यजतो हरिभ्याम्।
आ देवो याति सविता परावतोऽप विश्वा दुरिता बाधमानः॥
(ऋग्. 1.35.3)

➤ देवा, देवौ दोनों रूप मिलते हैं। बहुवचन में आः और आसः (देवाः, देवासः, जनाः, जनासः, मर्त्याः, मर्त्यासः दो प्रकार के रूप बनते हैं।
➤ तृतीया विभक्ति के एकवचन में एन और एना (देवेन, देवेना) एवं बहुवचन में ऐः और एभिः (देवैः, देवेभिः) रूप बनते हैं।
➤ वैदिक संस्कृत में संज्ञा के अधिकारक उपसर्गों का स्वतन्त्र पृथक् प्रयोग बहुधा मिलता है। जैसे- रोचनात् अधि (1.49.1), मानुषान् अधि (1.48.7) अध्वरान् उप (1.48.11), गिरिभ्यः आ, (6.95.1) उत्तानपदः परि (10.72.3) आदि में है।
➤ वैदिक संस्कृत में अनेक शब्द ऐसे हैं, जिनका प्रयोग लौकिक संस्कृत में नहीं है।
जैसे- विचर्षणी, उक्थ, ऊति, उर्गिया, सीम्, रिक्वन् आदि शब्द वेदों में ही हैं और लौकिक संस्कृत में प्रयुक्त होते हैं।
➤ वेदों में इव के अर्थ के लिए 'न' का प्रचुर प्रयोग हुआ है। संस्कृत में यह अर्थ प्रयोग नहीं होता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि वैदिक-भाषा में देवेभिः, विश्वा, एमसि ये तीनों शब्द साधु हैं।
अतः विकल्प 'D' सही है।

स्रोत- ऋक्सूक्तसंग्रह- हरिदत्तशास्त्री, पेज 57, 59, 106

17. ''सत्यं बृहदृतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति''– मन्त्रांशोऽयं कस्मिन् वेदे विद्यते?
(A) ऋग्वेदे (B) यजुर्वेदे
(C) सामवेदे (D) अथर्ववेदे

व्याख्या- अथर्ववेद के बारहवें काण्ड में पृथिवीसूक्त वर्णित है।
सत्यं बृहदृतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति।
सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरुं लोकं पृथिवी नः कृणोतु॥
(12.1.1)

सत्य, महत्ता, ऋत, उग्रता (शक्ति), दीक्षा, तपस्या, ब्रह्म और यज्ञ पृथिवी को धारण करते हैं। भूत और भविष्यत् की पत्नी वह पृथ्वी हमारे लोक को (हमारे लिए विस्तृत बना दे)।

⇒ **पृथिवीसूक्त की अन्य महत्त्वपूर्ण सूक्तियाँ -**

(i) यस्यामापः परिचराः समानीरहोरात्रे अप्रमादं क्षरन्ति।

सा नो भूमिर्भूरिधारा पयोदुहामथो उक्षतु वर्चसा (12.1.9) जिस पृथिवी के चारों ओर विचरण करने वाला जल समान भाव से रात-दिन निर्बाध रूप से प्रवाहित होता है, अनेक धाराओं वाली वह पृथिवी में दुग्ध (जल) प्रदान करें तथा हमें तेज से सम्पृक्त करें।

(ii) सा नो भूमिर्विसृजतां माता पुत्राय मे पयः (12.1.8)

वह हमारी पृथिवी माता मुझ पुत्र के लिए दूध प्रदान करें (जैसे माता पुत्र को दूध देती है हमें उसी प्रकार दूध दे)

(iii) माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः। (12.1.10)

भूमि माता है, मैं पृथिवी का पुत्र हूँ, पर्जन्य पिता है, वह हमारा पालन पोषण करें।

स्पष्टीकरण - उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि 'सत्यं बृहदृतमग्रं दीक्षा तपो .... पृथिवीं धारयन्ति' यह सूक्ति अथर्ववेद के पृथिवीसूक्त से उद्धृत है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- वैदिकसूक्त संग्रह (12.1.1)- विजयशङ्कर पाण्डेय, पेज 136

18. वानीरकुञ्जोड्डीनशकुनिकोलाहलं शृण्वन्त्याः।
गृहकर्मव्यापृताया वध्वाः सीदन्त्यङ्ग्यस्य॥
काव्यप्रकाशानुसारम् उपर्युक्तमुदाहरणं कस्य?

(A) काक्वाक्षिप्तगुणीभूतव्यङ्ग्स्य
(B) असुन्दरगुणीभूतव्यंग्यस्य
(C) अस्फुटगुणीभूतव्यंग्यस्य
(D) सन्दिग्धप्राधान्यगुणीभूतव्यंग्यस्य

व्याख्या- आचार्य मम्मट प्रणीत काव्यप्रकाश के प्रथम उल्लास में काव्य के तीन भेद बताये गये हैं-

1. उत्तमकाव्य (ध्वनि काव्य) 2. मध्यमकाव्य (गुणीभूतव्यङ्ग्य) 3. अधमकाव्य (अवरकाव्य या चित्रकाव्य)

आचार्य मम्मट गुणीभूतव्यङ्ग्यकाव्य का लक्षण करते हुए कहते हैं-

अतादृशि गुणीभूतव्यङ्ग्यं व्यङ्ग्ये तु मध्यमम्।

वाच्य से अधिक चमत्कारी व्यङ्ग्य अर्थ न होने पर गुणीभूतव्यङ्ग्य नामक दूसरे प्रकार का काव्य मध्यमकाव्य कहा जाता है।

आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश के पाचवें उल्लास में गुणीभूतव्यङ्ग्य के आठ भेदों की चर्चा करते हैं-

अगूढमपरस्याङ्गं वाच्यसिद्ध्यङ्गमस्फुटम्।
सन्दिग्धतुल्यप्राधान्ये काक्वाक्षिप्तमसुन्दरम्।
व्यङ्ग्यमेव गुणीभूतव्यङ्ग्यस्याष्टौ भेदाः स्मृताः॥

1. अगूढ़ व्यङ्ग्य 2. इतर का अङ्ग (भूतव्यङ्ग्य) 3. वाच्यसिद्धि का अङ्ग 4. अस्फुट (गूढ़ व्यङ्ग्य) 5. सन्दिग्धप्राधान्य 6. तुल्य प्राधान्य 7. काकु से आक्षिप्त 8. असुन्दर व्यङ्ग्य- इस प्रकार गुणीभूतव्यङ्ग्य के आठ भेद बताये गये हैं।

⇒ **असुन्दर व्यङ्ग्य का उदाहरण-**

वानीरकुञ्जोड्डीनशकुनिकोलाहलं शृण्वन्त्याः
गृहकर्मव्यापृताया वध्वाः सीदन्त्यङ्गानि।।

बेत- वानीर की लताओं के कुञ्ज में उड़ते हुए पक्षियों के कोलाहल को सुनकर घर के काम में लगी हुई वधू के अङ्ग शिथिल हो रहे हैं। यहाँ 'दत्तसंकेत कोई लतागृह में प्रविष्ट हो गया' इस व्यङ्ग्य से बहू के अङ्ग शिथिल हो रहे हैं, यह वाच्य अधिक चमत्कारजनक है। यह असुन्दर गुणीभूतव्यङ्ग्य का उदाहरण है।

⇒ **काक्वाक्षिप्तगुणीभूतव्यङ्ग्य का उदाहरण-**

मथ्नामि कौरवशतं समरे न कोपाद्।
दुःशासनस्य रुधिरं न पिबाम्युरस्तः।।

⇒ **अस्फुटगुणीभूतव्यङ्ग्य का उदाहरण-**

अदृष्टे दर्शनोत्कण्ठा दृष्टे विच्छेदभीरुता।
नादृष्टेन न दृष्टेन भवता लभ्यते सुखम्।।

⇒ **सन्दिग्ध गुणीभूतव्यङ्ग्य का उदाहरण-**

हरस्तु किञ्चित् परिवृत्तधैर्यश्चन्द्रोदयारम्भ इवाम्बुराशिः।
उमामुखे बिम्बफलाधरोष्ठे व्यापारयामास विलोचनानि।।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'वानीरकुञ्जोड्डीनशकुनि..' यह 'असुन्दरगुणीभूतव्यङ्ग्य' का उदाहरण है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-211

19. 'प्रदीपः सर्वविद्यानामुपायः सर्वकर्मणाम्' पंक्तिरियं कस्याः?

(A) त्रय्याः **(B) आन्वीक्षिक्याः**
(C) वार्तायाः **(D) दण्डनीतेः**

व्याख्या- कौटिलीय अर्थशास्त्र में पन्द्रह अधिकरण, एक सौ पचास अध्याय, एक सौ अस्सी प्रकरण और छः हजार श्लोक हैं। सर्वप्रथम आचार्य कौटिल्य ने शुक्राचार्य और बृहस्पति के लिए नमस्कार किया है- 'नमः शुक्रबृहस्पतिभ्याम्' तदनन्तर विद्यासमुद्देश आन्वीक्षकी आदि की चर्चा करते हुए कहते हैं-

'आन्वीक्षकी त्रयी वार्ता दण्डनीतिश्चेति विद्याः।'
आन्वीक्षकी, त्रयी, वार्ता और दण्डनीति- ये चार विद्याएँ हैं-

⇒ **आन्वीक्षकी का लक्षण-**
प्रदीपः सर्वाविद्यानामुपायः सर्वकर्मणाम्।
आश्रयः सर्वधर्माणां शश्वदान्वीक्षकी मता।।
यह आन्वीक्षकी विद्या सर्वदा ही सब विद्याओं का प्रदीप सभी कार्यों का साधन और सब धर्मों का आश्रय मानी गयी है।

⇒ **त्रयी का लक्षण-** 'सामर्ग्यजुर्वेदास्त्रयस्त्रयी।' साम, ऋक्, तथा यजु इन तीनों वेदों का समन्वित नाम ही त्रयी है।

⇒ **वार्ता का लक्षण-** 'कृषि पाशुपाल्ये वाणिज्या च वार्ता' कृषि, पशुपालन और व्यापार ये वार्ताविद्या के विषय हैं।

⇒ **दण्डनीति का लक्षण-** 'आन्वीक्षकीत्रयीवार्तानां योगक्षेमसाधनो दण्डः तस्य नीतिर्दण्डनीतिः।' आन्वीक्षकी, त्रयी और वार्ता, इन सभी विद्याओं की सुख-समृद्धि दण्ड पर निर्भर है। दण्ड (शासन) को प्रतिपादित करने वाली नीति ही दण्डनीति कहलाती है।

* मनुसम्प्रदाय के अनुयायी आचार्य त्रयी, वार्ता और दण्डनीति, इन विद्याओं को मानते हैं। उनका मत है कि आन्वीक्षकी का समावेश त्रयी के अन्तर्गत हो जाता है। **त्रयी वार्ता दण्डनीतिश्चेति मानवाः।** त्रयीविशेषो ह्यान्वीक्षकीति

* आचार्य बृहस्पति के अनुयायी विद्वान् केवल दो ही विद्याएँ मानते हैं- वार्ता और दण्डनीति। उनके अनुसार त्रयी तो दुनियादार लोकयात्राविद् लोगों की आजीविका का साधनमात्र है।
वार्ता दण्डनीतिश्चेति बार्हस्पत्याः संवरणमात्रं हि त्रयी लोकयात्राविद इति।

* शुक्राचार्य के अनुयायी विद्वानों ने तो केवल दण्डनीति को ही विद्या माना है, उसी को सम्पूर्ण विद्याओं का स्थान एवं कारण स्वीकार किया है।
दण्डनीतिरेका विद्येत्यौशनसाः। तस्यां हि सर्वविद्यारम्भाः प्रतिबद्धा इति।
चतस्त्र एव विद्या इति कौटिल्यः। ताभिर्धर्माथौं यद्विद्यात्तद्विद्यानां विद्यात्वम्। त्रयी, वार्ता, दण्डनीति कौटिल्य चारों विद्याओं को मानते हैं और उनकी यथार्थता धर्म तथा अधर्म के ज्ञान में बताते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'प्रदीपः सर्वविद्यानामुपाय'.. आन्वीक्षकी का लक्षण है।
अतः विकल्प 'B' सही है।
स्रोत - कौटिलीय अर्थशास्त्र-वाचस्पति गैरोला, पेज 09

20. सत्कार्यवादस्य समर्थने हेतुर्नास्ति-
(A) असदकरणम् **(B) सर्वसम्भवाभावः**
(C) शक्तस्य शक्यकरणम् **(D) सर्वसम्भव-भावः**

व्याख्या- ईश्वरकृष्ण द्वारा प्रणीत सांख्यकारिका की नवीं कारिका में सत्कार्यवाद की विवेचना करते हुए कहते हैं-
असदकरणादुपादानग्रहणात् सर्वसम्भवाभावात्।
शक्तस्य शक्यकरणात् कारणभावाच्च सत्कार्यम्।।9।।
कारण-व्यापार के पूर्व भी कार्य (कारण में) विद्यमान रहता है, क्योंकि असत् या अविद्यमान होने पर कार्य की उत्पत्ति हो ही नहीं सकती। कार्य की उत्पत्ति के लिए उसके उपादानकारण का ग्रहण अवश्य करना पड़ता है। अर्थात् कार्य अपने उपादानकारण से नियतरूप से सम्बद्ध होता है, सभी कार्य सभी कारणों से उत्पन्न नहीं होते, जो कारण जिस कार्य को उत्पन्न करने में शक्त या समर्थ है, उससे उसी कार्य की उत्पत्ति होती है और कार्य कारणात्मक अर्थात् कारण से अभिन्न या उसी के स्वरूप का होता है।

⇒ ईश्वरकृष्ण ने सत्कार्यवाद के समर्थन में पाँच हेतुओं को बताते हैं-
1. असत्अकरणात्- उत्पत्ति से पहले भी कार्य, कारण में विद्यमान रहता है।
2. उपादानग्रहणात्- वस्तु के निर्माण के लिए मूलकारण, उपादान या समवायिकारण कहलाता है।
3. सर्वसम्भव-अभावात्- यदि हम सत्कार्यवाद के सिद्धान्त को मान्यता प्रदान नहीं करते हैं, तो उस स्थिति में प्रत्येक वस्तु से प्रत्येक वस्तु की उत्पत्ति माननी होगी।
जैसे- तेल को रेत, चावल, गेहूँ आदि सभी पदार्थों से प्राप्त होना चाहिये, किन्तु ऐसा नहीं होता। सभी कारणों से सभी कार्यों की उत्पत्ति नहीं होती। अतः उत्पत्ति से पूर्व में भी कार्य को कारण में सत् मानना उचित है।
4- शक्तस्य शक्यकरणात्- शक्त अर्थात् कार्यविशेष को उत्पन्न करने की शक्ति रखने वाला कारण ही, शक्य अर्थात् उस कार्य को (जिसे उत्पन्न करने की कारण में शक्ति है) उत्पन्न होता है, बालू में नहीं।
5- कारणभावात्- कार्य कारण से अलग न होकर कारण का ही एक रूप होता है। कार्य ही अविकसित रूप में कारण है तथा कारण ही विकसित रूप में कार्य है। जैसे- दही अपने मूलकारण दूध का विकसित रूप ही है और इस दही रूप में आने से पहले वह अपने मूलकारण दूध में सत् था।
6- शक्तस्य शक्य करणात्
दही के लिए दूध ही समर्थ कारण है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि सत्कार्यवाद के पाँच हेतुओं में सर्वसम्भव भावः हेतु परिगणित नहीं है।

अतः विकल्प 'D' सही है।

स्रोत- सांख्यकारिका (कारिका-9)- राकेश शास्त्री, पेज-29-12।

21. काव्यप्रकाशस्य कस्मिन्नुल्लासे व्यञ्जनायाः स्थापना अभवत्-
(A) सप्तमोल्लासे (B) अष्टमोल्लासे
(C) पञ्चमोल्लासे (D) प्रथमोल्लासे

व्याख्या- आचार्य मम्मट कृत काव्यप्रकाश में दश उल्लास हैं। प्रत्येक उल्लास के नाम निम्नलिखित हैं-

उल्लास संख्या	उल्लासों के नाम
प्रथम	काव्यप्रयोजन, कारण, स्वरूपनिर्णय
द्वितीय	शब्दार्थस्वरूप निर्णय
तृतीय	अर्थव्यञ्जकता निर्णय
चतुर्थ	ध्वनिनिर्णय
पञ्चम	ध्वनिगुणीभूतव्यङ्ग्य, संकीर्ण भेद निर्णय
षष्ठ	शब्दार्थचित्र निरूपण
सप्तम	दोष दर्शन
अष्टम	गुणालङ्कार भेद
नवम	शब्दालङ्कार निर्णय
दशम	अर्थालङ्कार निर्णय

प्रथम उल्लास- प्रथमोल्लास में मङ्गलाचरण, काव्य प्रयोजन, काव्य के हेतु, मम्मट का काव्यलक्षण, काव्यभेद आदि की चर्चा की गयी है।

द्वितीयोल्लास- शब्द के तीन भेद, अर्थ के तीन भेद अभिहितान्वयवाद, अन्विताभिधानवाद, अभिधा-लक्षणा, लक्षणा के लक्षण, भेद आदि का वर्णन किया गया है।

तृतीयोल्लास- अर्थ के भेद, आर्थी व्यञ्जना के भेद आदि का वर्णन किया गया है।

चतुर्थोल्लास- अविवक्षितवाच्य लक्षणामूलध्वनि के दो भेद, रस निरूपण, भरतमुनि के रससूत्र आदि का वर्णन प्राप्त होता है।

पञ्चमोल्लास- गुणीभूतव्यङ्ग्य के आठ भेद, रस प्रतीति के लिए व्यञ्जना अनिवार्य, व्यञ्जना की अनिवार्यता, व्यञ्जनावादी की ओर से उनका खण्डन आदि का वर्णन किया गया है।

षष्ठ उल्लास - शब्दार्थ चित्र निरूपण आदि का **वर्णन। सप्तम उल्लास -** दोष सामान्य लक्षण, श्रुतिकटु आदि पदगत 16 दोष और उनके उदाहरण। रसदोषों के अपवाद आदि का वर्णन प्राप्त होता है।

अष्टमोल्लास - गुण तथा अलङ्कारों का भेद,गुणों के भेद, वामनोक्त दस अर्थ गुणों का खण्डन आदि का वर्णन किया गया है।

नवमोल्लास - शब्दालङ्कार का वर्णन, अलङ्कार का लक्षण, अलङ्कारों की संख्या अनुप्रास, यमक, श्लेष आदि अलङ्कारों का वर्णन प्राप्त होता है।

दशमोल्लास - अलङ्कारों का वर्गीकरण, उपमा, उपमा के भेद, रूपक, रूपक के भेद, उत्प्रेक्षा, अपह्नुति, समासोक्ति, विभावना, विशेषोक्ति आदि अर्थालङ्कारों का वर्णन किया गया है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि व्यञ्जना का निरूपण पञ्चमोल्लास में किया गया है।

अतः विकल्प 'C' सही है।

स्रोत- काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज 197, 262

22. कौषीतकिब्राह्मणं केन वेदेन सम्बद्धमस्ति?
(A) शुक्लयजुर्वेदेन (B) कृष्णयजुर्वेदेन
(C) ऋग्वेदेन (D) सामवेदेन

व्याख्या-

वेद	ब्राह्मण	उपनिषद्
ऋग्वेद	1.ऐतरेय 2.शांखायन (कौषीतकि)	1. ऐतरेयोपनिषद् 2.कौषीतकि 3.बाष्कलोपनिषद्
शुक्लयजुर्वेद	1. शतपथ (माध्यन्दिन)	1.ईशावास्योपनिषद् 2. बृहदारण्यक
कृष्णयजुर्वेद	1. तैत्तिरीय 2.मैत्रायणी, 3.कठ,	1.कठोपनिषद् 2. मैत्रायणी 3.तैत्तिरीयोपनिषद्, 4.श्वेताश्वतरोपनिषद्
सामवेद	1. प्रौढ़ 2. षड्विंश, 3. सामविधान,4.आर्षेय, 5. देवताध्याय,6. उपनिषद् 7. संहितोपनिषद्,8. वंश, 9. जैमिनीय	1. छान्दोग्योपनिषद् 2.केनोपनिषद्
अथर्ववेद	1. गोपथ ब्राह्मण	1. प्रश्नोपनिषद् 2. माण्डूक्योपनिषद् 3. मुण्डकोपनिषद्

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि कौषीतकिब्राह्मण ऋग्वेद से सम्बन्धित है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 127

23. मनुस्मृतिः कति अध्यायेषु विभक्ताऽस्ति?
(A) दशाध्यायेषु (B) एकादशाध्यायेषु
(C) त्रयोदशाध्यायेषु (D) द्वादशाध्यायेषु

व्याख्या-* मनु कृत मनुस्मृति हिन्दू धर्म का एक प्राचीन धर्मशास्त्र (स्मृति) है। इसे मानव धर्म-शास्त्र, मनुसंहिता आदि नामों से भी जाना जाता है। यह उपदेश के रूप में है, जो मनु द्वारा ऋषियों को दिया गया।
* धर्मशास्त्रीय ग्रन्थकारों के अतिरिक्त शङ्कराचार्य, शबरस्वामी जैसे दार्शनिक भी प्रमाणरूपेण इस ग्रन्थ को उद्धृत करते हैं।
* धर्मशास्त्र के रूप में मनुस्मृति को विश्व की अमूल्य निधि माना जाता है।
* भारत में वेदों के उपरान्त सर्वाधिक मान्यता और प्रचलन मनुस्मृति का है। इसमें चारों वर्णों, चारों आश्रमों, सोलह संस्कारों तथा सृष्ट्युत्पत्ति उत्पत्ति के अतिरिक्त राज्य की व्यवस्था, राज्य के कर्तव्य, भाँति-भाँति के विवादों, सेना के प्रबन्ध आदि उन सभी विषयों पर परामर्श दिया गया है।
* मनु आदिपुरुष थे और उनका यह शास्त्र 'आदिशास्त्र' है।
* मनुस्मृति में कुल बारह अध्याय हैं और 2694 श्लोक हैं।
* मनु पर कई टीकाएँ प्राप्त होती हैं-
1. मेधातिथिकृत भाष्य
2. कुल्लूकभट्ट द्वारा रचित मन्वर्थमुक्तावली टीका
3. नारायणकृत मन्वर्थविवृत्ति टीका
4. राघवानन्दकृत मन्वर्थचन्द्रिका टीका
5. नन्दनकृतनन्दिनी टीका
6. गोविन्दराजकृत मन्वाशयानुसारिणी टीका आदि

⟹ **मनुस्मृति की विषयवस्तु-** मनुस्मृति भारतीय आचारसंहिता का विश्वकोश है, मनुस्मृति में बारह अध्याय दो हजार छः सौ चौरानबे श्लोक हैं। जिनमें सृष्टि की उत्पत्ति, संस्कार, नित्य और नैमित्तिक कर्म, आश्रमधर्म, वर्णधर्म, राजधर्म व प्रायश्चित्त आदि विषयों का उल्लेख है।
1. जगत् की उत्पत्ति, 2. संस्कारविधि, व्रतचर्या, उपचार 3. स्नान, विवाहलक्षण, महायज्ञ, श्राद्धकल्प 4. वृत्तिलक्षण, स्नातक व्रत 5. भक्ष्याभक्ष्य, शौच, अशुद्धि, स्त्रीधर्म 6. गृहस्थाश्रम, वानप्रस्थ, मोक्ष, संन्यास 7. राजधर्म 8. कार्यविनिर्णय, साक्षिप्रश्नविधान 9. स्त्रीपुंसधर्म, विभाग धर्म, धूत, कंटकशोधन, वैश्यचूडोपचार 10. संकीर्णजाति आपद्धर्म 11. प्रायश्चित्त 12. संसारगति, कर्म, कर्मगुणदोष, देशजाति, कुलधर्म, निःश्रेयस्
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि मनुस्मृति में बारह अध्याय हैं। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- मनुस्मृति- गिरिधर गोपाल शर्मा, भू. पेज 04

24. माध्यन्दिनशाखायाः अपरनाम किं प्रचलितमस्ति?
(A) कौथुमशाखा (B) बौधायनीशाखा
(C) वाजसनेयिशाखा (D) मैत्रायणीशाखा

व्याख्या- ऋग्वेद का अपर नाम 'दशतयी' है।
यजुर्वेद की दो शाखाएँ हैं- (1) शुक्लयजुर्वेद (2) कृष्णयजुर्वेद शुक्लयजुर्वेद की भी शाखाएँ हैं- (1) माध्यन्दिन या वाजसनेयि (2) काण्वसंहिता
➢ माध्यन्दिनसंहिता का अपरनाम वाजसनेयिसंहिता है।
➢ अथर्ववेद के अपरनाम- आंगिरस वेद, अथर्वाङ्गिरस, ब्रह्मवेद, भृग्वंगिरोवेद, क्षत्रवेद, भैषज्यवेद, छन्दोवेद, महीवेद आदि हैं।
➢ **माध्यन्दिन या वाजसनेयि-** इसमें चालीस अध्याय और 1975 मन्त्र हैं। अतएव यजुर्वेद के सन्दर्भ में केवल दो संख्याएँ रहती हैं- एक अध्याय की और दूसरी मन्त्र की।
जैसे- ईशा वास्यम् (यजुर्वेद 40.1) अर्थात् यह 40वें अध्याय का प्रथम मन्त्र है। शतपथब्राह्मण में यजुर्वेद के अक्षरों की संख्या 2,88000 अर्थात् 8 हजार 36 अक्षरों वाले बृहती छन्द के बराबर। अष्टौ बृहती सहस्राणि (8000×36=2,28000 अक्षराणि)

⟹ **काण्व संहिता-** इसमें भी 40 अध्याय हैं और मन्त्रसंख्या 2086 है; अर्थात् वाजसनेयि शाखा से इसमें 111 मन्त्र अधिक हैं। इसका विभाजन अध्याय, अनुवाक और मन्त्र के रूप में हुआ है। अध्याय 40, अनुवाक 328 और मन्त्र 2086 हैं।
आदित्य पुराण के अनुसार कण्व के पिता बोधायन थे और याज्ञवल्क्य उनके गुरु थे। महर्षि कण्व इस शाखा के प्रवर्तक हैं। आजकल काण्वसंहिता का प्रचार महाराष्ट्र में ही है और माध्यन्दिन का उत्तर भारत में।

⟹ **सामवेदीय शाखा-** सामवेद की तीन शाखाएँ हैं-
1. कौथुमीय (कौथुम) शाखा 2. राणायनीय शाखा
3. जैमिनीय शाखा

अथर्ववेद की शाखाएँ- महर्षि पतञ्जलि ने महाभाष्य में 'नवधाऽऽथर्वणो वेदः' (महा॰ आह्निक 1) कहकर अथर्ववेद की नौ शाखाओं का उल्लेख किया है-
1. पैप्पलाद 2. तौद 3. मौद 4. शौनकीय 5. जाजल 6. जलद 7. ब्रह्मवद 8. देवदर्श 9. चारणवैद्य

कृष्णयजुर्वेद की शाखाएँ- (1) तैत्तिरीयसंहिता (2) मैत्रायणी संहिता (3) काठकसंहिता (4) कपिष्ठल

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि माध्यन्दिन शाखा का अपर नाम 'वाजसनेयि' है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-65

25. याज्ञवल्क्यस्मृतौ व्यवहाराध्यायः कतमोऽस्ति?
(A) प्रथमः **(B) द्वितीयः**
(C) तृतीयः **(D) चतुर्थः**

व्याख्या- महर्षि याज्ञवल्क्य प्रणीत याज्ञवल्क्यस्मृति तीन अध्यायों में विभक्त है-(1) आचाराध्याय (2) व्यवहाराध्याय (3) प्रायश्चित्ताध्याय

आचाराध्याय- प्रथम आचाराध्याय में 13 प्रकरण हैं।

व्यवहाराध्याय- द्वितीय व्यवहाराध्याय में 25 प्रकरण हैं।

प्रायश्चित्ताध्याय- तृतीय प्रायश्चित्ताध्याय में 5 प्रकरण हैं।

⇒ **याज्ञवल्क्यस्मृति की टीकायें-** याज्ञवल्क्यस्मृति पर मुख्य चार टीकाकारों की टीकाएँ हैं, वे हैं- विश्वरूप, विज्ञानेश्वर, अपरार्क और शूलपाणि।

1. विज्ञानेश्वर की मिताक्षरा टीका का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है।
2. विश्वरूप की बालक्रीडा नाम की टीका गणपतिशास्त्री ने त्रिवेन्द्रम् संस्कृत ग्रन्थमाला में प्रकाशित की है।
3. अपरादित्य की टीका अपरार्क-धर्मशास्त्र-निबन्ध नाम से अभिहित है। यह आनन्दाश्रम प्रेस पूना से प्रकाशित है।
4. शूलपाणि की टीका दीपकलिका है, जो छोटे आकार की है।

⇒ **याज्ञवल्क्यस्मृति की श्लोक संख्या-** याज्ञवल्क्य-स्मृति की श्लोक संख्या के विषय में विश्वरूपाचार्य, विज्ञानेश्वर तथा अपरादित्य का मत एक नहीं है।

विश्वरूपाचार्य के अनुसार याज्ञवल्क्यस्मृति में 1003, विज्ञानेश्वर के मत में 1009 और अपरादित्य की व्याख्या में 1006 श्लोक पाये जाते हैं।

कुछ मूल पुस्तकों में उपलब्ध ''श्लोकानामपि विज्ञेयं सहस्रं चतुरुत्तरम्'' के आधार पर तो मूल श्लोकों की संख्या 1004 प्रतीत होती है। शूलपाणि ने अपनी व्याख्या में 1010 श्लोक माने हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि याज्ञवल्क्यस्मृति के द्वितीय अध्याय का नाम 'व्यवहाराध्याय' है।

अतः विकल्प 'B' सही है।

स्रोत- याज्ञवल्क्यस्मृति- उमेशचन्द्र पाण्डेय, पेज-6

26. अशोकस्य शहवाजगढीलेखः कस्यां लिप्यां प्राप्यते?
(A) ब्राह्मी **(B) खरोष्ठी**
(C) शारदा **(D) पुष्करी**

व्याख्या-

अशोक के अभिलेख और उनकी लिपि-

अशोक के अभिलेखों को सर्वप्रथम 1750 में टी. फैन्थेलर ने खोजा था। इन्होंने दिल्ली-मेरठ अभिलेख खोजा। अशोक के अभिलेखों को सर्वप्रथम 1837 में कलकत्ता टकसाल के अधिकारी एवं एशियाटिक सोसायटी के सचिव जेम्स प्रिंसेप ने पढ़ा था। इन्होंने दिल्ली-टोपरा अभिलेख को पढ़ा था। इस समय अलेक्जेण्डर कनिंघम इनके सहायक थे। अतः जेम्स प्रिंसेप ने ही पहली बार ब्राह्मी लिपि का सफलतापूर्वक उद्वाचन किया।

डी॰आर॰ भण्डारकर महोदय ने केवल अभिलेखों के ही आधार पर अशोक का इतिहास लिखने का प्रयास किया है।

चापड ही वह एक मात्र अभिलेख लेखक है, जिसका नाम अशोक के अभिलेखों में मिलता है।

लिपि- अशोक के शिलालेखों में कुल चार लिपियों ब्राह्मी, खरोष्ठी अरामाइक एवं यूनानी का प्रयोग हुआ है। अशोक के स्तम्भलेख एवं गुहालेख में केवल ब्राह्मी लिपि का प्रयोग हुआ है।

खरोष्ठी लिपि- शहवाजगढ़ी एवं मानसेहरा अभिलेख।

अरामाइक लिपि- लघमान एवं तक्षशिला अभिलेख।

द्वि-भाषिक लिपि- कन्दहार का अभिलेख। इसमें यूनानी एवं अरामाइक लिपियों का एक साथ प्रयोग हुआ है।

अशोक पहला भारतीय शासक था, जिसने अभिलेखों के सहारे सीधे अपनी प्रजा को सम्बोधित किया।

अशोक के अभिलेखों की भाषा 'प्राकृत' थी, क्योंकि यह आम जन की भाषा थी और अधिकतर लोगों के द्वारा बोली एवं समझी जाती थी।

अशोक ने 37 वर्ष तक शासन किया। उसने शिलालेखों में उसके शासनकाल के 8वें से लेकर 27वें वर्ष की घटनाएँ वर्णित हैं।

अशोक के अभिलेखों का विभाजन तीन प्रकार से हुआ है-

1- शिलालेख 2- स्तम्भलेख 3- गुहालेख

शिलालेख (I) दीर्घ शिलालेख, (II)लघु शिलालेख

दीर्घ शिलालेख- इनको चतुर्दश (14) शिलालेख भी कहते हैं, क्योंकि यह 14 लेखों का समुच्चय है, जो कि 8 स्थानों से प्राप्त हुए हैं।

बृहद् शिलालेख	स्थिति	खोजकर्ता	वर्ष
शहवाजगढ़ी	पाकिस्तान का पेशावर जिला	जनरल कोर्ट	1836
मनसेहरा	पाकिस्तान का हाजरा जिला	कनिंघम कैप्टन ले	1836
कालसी	उत्तराखण्ड का देहरादून जिला	फोरेस्ट	1860
गिरनार	गुजरात के जूनागढ़ में	कर्नल राड	1822
एर्रगुडि	आन्ध्रप्रदेश के कर्नूल जिला	अणुघोष	1929
धौली	ओडिशा का पुरी जिला	किटो	1837
जौगड़	ओडिशा का गंजाम जिला	वाल्टर इलियट	1837
सोपारा	महाराष्ट्र का थाने जिला	वाल्टर इलियट्	1850

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि शहवाजगढ़ी के लेख 'खरोष्ठी लिपि' में है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- प्राचीन भारत - सौरभ चौबे, पेज 207

27. अधोऽङ्कितेषु योगदर्शनानुसारेण समुचितः क्रमोऽस्ति-

(A) अस्तेय-अपरिग्रह-सत्य-ब्रह्मचर्य-अहिंसाः

(B) अपरिग्रह-ब्रह्मचर्य-सत्य-अस्तेय-अहिंसाः

(C) अहिंसा-सत्य-अस्तेय-ब्रह्मचर्य-अपरिग्रहाः

(D) सत्य-अहिंसा-अस्तेय-ब्रह्मचर्य-अपरिग्रहाः

व्याख्या- महर्षि पतञ्जलि मुनि प्रणीत पातञ्जलयोगदर्शन सूत्र में चार पाद हैं-

(i) समाधिपाद- 51 सूत्र
(ii) साधनपाद- 55 सूत्र
(iii) विभूतिपाद- 55 सूत्र
(iv) कैवल्यपाद- 34 सूत्र
= 51 सूत्र

पातञ्जलयोगदर्शन के द्वितीय पाद में पाँच यमों का वर्णन किया गया है- 'अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमाः' (2/30)।

अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह ये पाँच यम कहे जाते हैं।

1. अहिंसा- अहिंसाप्रतिष्ठायां तत्सन्निधौ वैरत्यागः (2/35) अहिंसा के प्रतिष्ठित हो जाने पर उस योगी के पास वैरभाव छूट जाता है।

2. सत्य- सत्यप्रतिष्ठायां क्रियाफलाश्रयत्वम् (2/36) सत्य के प्रतिष्ठत हो जाने पर क्रियाओं और उनके फलों की आश्रयता आ जाती है।

3. अस्तेय- अस्तेयप्रतिष्ठायां सर्वरत्नोपस्थानम्। (2/37) अस्तेय के प्रतिष्ठित हो जाने पर सभी रत्नों की उपस्थित होती है।

4. ब्रह्मचर्य- ब्रह्मचर्यप्रतिष्ठायां वीर्यलाभः। (2/38) ब्रह्मचर्य के प्रतिष्ठित हो जाने पर सामर्थ्य लाभ होता है।

5. अपरिग्रह- अपरिग्रहस्थैर्ये जन्मकथन्तासम्बोधः (2/39) अपरिग्रह के स्थिर होने पर जन्मों तथा उनके प्रकार का सम्यग्ज्ञान होता है।

* पातञ्जलयोगदर्शन के प्रथमपाद में पाँच वृत्तियों की चर्चा की गयी है- प्रमाणविपर्ययविकल्पनिद्रास्मृतयः।।1/6।।

प्रमाण, विपर्यय, विकल्प, निद्रा और स्मृति ये पाँच प्रकार की वृत्तियाँ होती हैं।

⟹ **योग का लक्षण है-** 'योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः' (1/2)

चित्त की वृत्तियों के निरोध को ही योग कहते हैं।

चित्त की पाँच भूमियों या अवस्थाओं का उल्लेख प्राप्त होता है- (1) क्षिप्त (2) मूढ़ (3) विक्षिप्त (4) एकाग्र (5) निरुद्ध

योगदर्शन का पहला सूत्र है- अथ योगानुशासनम्। (1/1) अथ इति अयम् शब्दः = अधिकारार्थः

प्रमाण नामक वृत्ति के भेद हैं- तीन (1) प्रत्यक्ष (2) अनुमान (3) आगम (शब्द) 'प्रत्यक्षानुमानागमाः प्रमाणानि' (1/7)

पञ्चक्लेश- अविद्याऽस्मितारागद्वेषाभिनिवेशाः पञ्चक्लेशाः

(1) विद्या (2) अस्मिता (3) राग (4) द्वेष (5) अभिनिवेश।

⟹ **अष्टाङ्ग योग-** यमनियमाऽऽसन- प्राणायाम- प्रत्याहार धारणाध्यान-समाधयोऽष्टावङ्गानि। (2/29) यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि।

⟹ **नियम-** शौच-सन्तोष-तपः-स्वाध्यायेश्वर-प्रणिधानानि नियमाः। (2/32) शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वरप्रणिधान नियम कहे जाते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि पाँच यम होते हैं- क्रमशः अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रहः। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- योगदर्शन-(2/30)- गीताप्रेस, पेज-53

28. 'श्लोकवार्तिकम्' कस्य दर्शनस्य ग्रन्थोऽस्ति?

(A) मीमांसादर्शनस्य **(B) वेदान्तदर्शनस्य**

(C) न्यायदर्शनस्य **(D) सांख्यदर्शनस्य**

व्याख्या- मीमांसादर्शन

महर्षि जैमिनि को 'मीमांसासूत्र' का रचयिता कहा जाता है।

मीमांसासूत्र (जैमिनिसूत्र) 12 अध्यायों में विभक्त है। अतः इसे 'द्वादशलक्षणी' भी कहा जाता है।

जैमिनिसूत्रों पर शबरस्वामीकृत विशद भाष्य है, जो 'शाबरभाष्य'

नाम से प्रसिद्ध है।

भाष्यकार के पश्चात् मीमांसादर्शन के व्याख्याकारों की दीर्घ परम्परा में सर्वाधिक अम्लानप्रतिभासम्पन्न कुमारिलभट्ट एवं प्रभाकरगुरु माने जाते हैं।

कुमारिल ने शाबरभाष्य पर अपनी वैदुष्यपूर्ण मौलिक व्याख्या की रचना कर एक प्रकार से भाष्यकार का महत्त्व बढ़ा दिया है। इनके तीन ग्रन्थ उपलब्ध हैं। तीनों ग्रन्थ शाबरभाष्य के भिन्न-भिन्न अंशों पर लिखी हुई व्याख्याएँ हैं- प्रथम ग्रन्थ का नाम 'श्लोकवार्तिक' है। इसमें शाबरभाष्य के प्रथम अध्याय के प्रथम पाद की टीका है।

द्वितीय ग्रन्थ का नाम- 'तंत्रवार्तिक' है। शाबरभाष्य के प्रथम अध्याय के अवशिष्ट तीन पाद, द्वितीय अध्याय एवं तृतीय अध्याय की गद्यात्मक टीका इसमें की गयी है।

तृतीय ग्रन्थ का नाम- 'टुप्टीका' है। इसमें शेष नौ अध्यायों की संक्षिप्त टीका है।

मीमांसा पर आधारित अन्यग्रन्थ-

मध्वाचार्य की 'जैमिनीयन्यायमाला' है।

जयन्तभट्ट ने 'न्यायमंजरी' लिखी है।

मण्डनमिश्र ने विधिविवेक, भावनाविवेक, विभ्रमविवेक लिखे हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'श्लोकवार्तिक' मीमांसादर्शन से सम्बन्धित है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- अर्थसंग्रह- राजेश्वरशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज भू. 19

29. 'न वञ्चनीयाः प्रभवोऽनुजीविभिः' इति केनोक्तम्?

(A) विशाखदत्तेन **(B) दण्डिना**
(C) भासेन **(D) भारविणा**

व्याख्या- भारविकृत एकमात्र ग्रन्थ किरातार्जुनीयम् महाकाव्य, जो बृहत्त्रयी के अन्तर्गत परिगणित है, जिसमें 18 सर्ग हैं। प्रथम सर्ग में युधिष्ठिर द्वारा भेजा गया वनेचर दुर्योधन के राजकार्यों को जानकर द्वैतवन में आया है और युधिष्ठिर से कहता है–

क्रियासु युक्तैर्नृप! चारचक्षुषो न वञ्चनीयाः प्रभवोऽनुजीविभिः।
अतोऽर्हसि क्षन्तुमसाधु साधु वा हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः॥

(1/4) हे राजन्। किसी कार्य को करने के लिए नियुक्त किए गए सेवकों के द्वारा स्वामी (झूठी तथा प्रिय बातें बताकर) नहीं ठगे जाने चाहिये। इसलिए मैं अप्रिय अथवा प्रिय बाते करूँ, उन्हें आप क्षमा करेंगे, क्योंकि मधुर तथा परिणाम में कल्याण देने वाली वाणी दुर्लभ होती है।

अन्य प्रमुख सूक्तियाँ- * हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः (1/4) मधुर तथा परिणाम में कल्याण देने वाली वाणी दुर्लभ होती है।

न हि प्रियं प्रवक्तुमिच्छन्ति मृषा हितैषिणः (1/2) कल्याण चाहने वाले लोग मिथ्याभूत मधुर वचन बोलने की इच्छा नहीं करते हैं।

वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः (1/8) महापुरुषों के साथ किया गया विरोधभाव भी दुष्टों के संसर्ग की अपेक्षा अच्छा है।

अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता (1/23) बलवान् के साथ किया गया वैर विरोध अनर्थपर्यवसायी होता है।

⇒ **विशाखदत्त-** विशाखदत्तकृत मुद्राराक्षस सात अङ्कों का नाटक है।

⇒ **मुद्राराक्षस की प्रमुख सूक्तियाँ-**

न हि खलु सर्वं जानाति।

प्रथम अङ्क में गुप्तचर कहता है, ''सभी लोग सब कुछ नहीं जानते हैं।''

अत्यादरः शङ्कनीयः।

प्रथम अङ्क में चाणक्य के घर जाकर चन्दनदास मन में सोचता है, ''आज अत्यधिक आदर किया जाना शङ्कनीय है।

पुरन्ध्रीणां प्रज्ञा पुरुषगुणविज्ञानविमुखी (2/7)।

राक्षस कहता है, कासपुष्प के अग्रभाग के समान स्त्रियों की बुद्धि ही पुरुषों के शौर्यादि गुणों की जानकारी से पराङ्मुख होती है।

⇒ **दण्डी-** दण्डी कृत ग्रन्थ दशकुमारचरितम् है, जिसमें आठ उच्छ्वास हैं। इसके नायक राजवाहन और नायिका अवन्तिसुन्दरी है।

*** दशकुमारचरितम् की प्रमुख सूक्तियाँ-**

दुष्करसाधनं प्रज्ञा इति

मित्रगुप्त कहता है कि जो कार्य करना कठिन है, उसके करने का उपाय बुद्धि है।

गृहिणः प्रियहिताय दारगुणाः इति

मित्रगुप्त कहता है कि पत्नी के गुण गृहस्थ के प्रिय और हित के लिये होते हैं।

दैव्याः शक्तेः पुरो न बलवती मानवी शक्तिः।

विश्रुत कहता है कि ईश्वरीय ताकत के आगे आदमी की ताकत बली नहीं है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'न वञ्चनीयाः प्रभवोऽनुजीविभिः' यह सूक्ति किरातार्जुनीयम् से उद्धृत है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- किरातार्जुनीयम् (1/4)- श्रीनिवास शर्मा, पेज 04

30. अधस्तनानां केन अभिलेखेन सह कस्य सम्बन्धः? समीचीनां तालिकां चिनुत-

तालिका-I	तालिका-II
(क) रुद्रदाम्नः	1. हाथीगुम्फा
(ख) खारवेलस्य	2. मन्दसौर
(ग) यशोधर्मणः	3. एहोलः
(घ) पुलकेशिनः	4. गिरनारः

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(A)	4	1	2	3
(B)	1	2	3	4
(C)	4	3	2	1
(D)	3	1	4	2

व्याख्या⇒ खारवेल का हाथीगुम्फा अभिलेख-
खारवेल के हाथीगुम्फा अभिलेख में सर्वप्रथम भारतवर्ष का विवरण मिलता है।
स्थान- हाथीगुम्फा भुवनेश्वर के निकट उदयगिरि पहाड़ी, जिला-पुरी, उड़ीसा
लिपि- ब्राह्मी
काल- लगभग प्रथम शती ई॰पू॰ का उत्तरार्ध
विषय- चेदिवंशी राजा कलिंगाधिपति खारवेल के जीवन की घटनाओं का क्रमिक विवरण एवं उसकी राजनैतिक उपलब्धियों तथा लोकमंगल के कार्यों का उल्लेख।

⇒ पुलकेशिन् का एहोल शिलालेख-
पुलकेशिन् द्वितीय का एहोल अभिलेख- यह अभिलेख कर्नाटक के बीजापुर में है, जिसकी भाषा संस्कृत है। इसके लेखक रविकीर्ति हैं। रविकीर्ति ने इसमें अपनी तुलना कालिदास एवं भारवि से की है।

⇒ यशोधर्मन् का मन्दसौर अभिलेख- यशोधर्मन् सम्भवतः औलिकर वंश का था। मन्दसौर से इसके दो अभिलेख मिलते हैं। इसने सारे उत्तर भारत में अपना प्रभुत्व स्थापित करने के उपलक्ष्य में 532 ई॰ में विजय स्तम्भ स्थापित किया।
यशोधर्मन् की मन्दसौर प्रशस्ति का लेखक वासुल था। इसमें लिखा है कि जिस मिहिरकुल ने शिव के अतिरिक्त अन्य किसी के सामने सिर नहीं झुकाया, उससे यशोधर्मन् ने अपनी चरण वन्दना करायी। मन्दसौर प्रशस्ति में उसे 'जनेन्द्र' कहा गया है।

⇒ रुद्रदामन् का जूनागढ़ अभिलेख-
सौराष्ट्र में जूनागढ़ से एक मील पूरब स्थित गिरनार पर्वत के उस प्रस्तरखण्ड पर जिस पर गुप्तवंशीय नरेश स्कन्दगुप्त का अभिलेख है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि **विकल्प 'A' सही है।**
स्रोत- भारतीय पुरालेखों का अध्ययन- पेज 173

31. अधस्तनयुग्मानां समीचीनमेलनतालिकां चिनुत-

तालिका-I	तालिका-II
(क) भारविः	1. बुद्धचरितम्
(ख) कालिदासः	2. रघुवंशम्
(ग) अश्वघोषः	3. किरातार्जुनीयम्
(घ) शूद्रकः	4. मृच्छकटिकम्

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(A)	3	2	1	4
(B)	2	1	4	3
(C)	1	2	3	4
(D)	4	3	2	1

व्याख्या महाकाव्यों की सूची-

ग्रन्थ	ग्रन्थकार	सर्ग
किरातार्जुनीयम्	भारवि	18सर्ग
बुद्धचरितम्	अश्वघोष	20सर्ग
रघुवंशम्	कालिदास	19सर्ग
कुमारसम्भवम्	कालिदास	17सर्ग
शिशुपालवधम्	माघ	20सर्ग
नैषधीयचरितम्	श्रीहर्ष	22सर्ग
हरविजयम्	रत्नाकर	50सर्ग
जानकीहरणम्	कुमारदास	20से 25सर्ग प्राप्त
भट्टिकाव्यम् (रावणवधम्)	भट्टि	22सर्ग
धर्मशर्माभ्युदयम्	हरिश्चन्द्र	21सर्ग
राघवपाण्डवीयम्	माधवभट्ट	13सर्ग

➢ **नाटकों की सूची-**

ग्रन्थ	ग्रन्थकार	अङ्क
मृच्छकटिकम्	शूद्रक	10
अभिज्ञानशाकुन्तलम्	कालिदास	07
उत्तररामचरितम्	भवभूति	07
मुद्राराक्षसम्	विशाखदत्त	07
प्रतिमानाटकम्	भास	07
अनर्घराघवम्	मुरारि	07
प्रसन्नराघवम्	जयदेव	07
स्वप्नवासवदत्तम्	भास	06
अभिषेकनाटकम्	भास	06
अविमारकम्	भास	06

वेणीसंहारम्	भट्टनारायण	06
कुन्दमाला	दिङ्नाग	06
मालविकाग्निमित्रम्	कालिदास	05
विक्रमोर्वशीयम् (त्रोटक)	कालिदास	05
रत्नावली (नाटिका)	हर्ष	04
कर्पूरमञ्जरी (सट्टक)	राजशेखर	04
चारुदत्तम्	भास	04
प्रियदर्शिका (नाटिका)	हर्ष	04
प्रतिज्ञायौगन्धरायण	भास	04

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि विकल्प A का जोड़ा सही है। **अतः विकल्प 'A'सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशङ्कर शर्मा ऋषि, पेज 243, 208, 229, 490

32. कौटिलीय-अर्थशास्त्रं कति अधिकरणेषु विभक्तमस्ति-
(A) अष्टदशाधिकरणेषु (B) द्वादशाधिकरणेषु
(C) दशाधिकरणेषु (D) पञ्चदशाधिकरणेषु

व्याख्या-

अधिकरण संख्या		**नाम**
1. प्रथम	–	विनयाधिकारिक (राजवृत्ति) निरूपण
2. द्वितीय	–	अध्यक्षों का निरूपण
3. तृतीय	–	धर्मस्थीयम् (न्याय का निरूपण)
4. चतुर्थ	–	कण्टकशोधन
5. पञ्चम	–	योगवृत्तम्
6. षष्ठ	–	मण्डलयोनि (प्रकृतियों का निरूपण)
7. सप्तम	–	षाड्गुण्य (छः गुणों का) निरूपण
8. अष्टम	–	व्यसनाधिकारिकम्(व्यसनों का निरूपण)
9. नवम	–	अभियास्यत्कर्म (आक्रमण का निरूपण)
10. दशम	–	साङ्ग्रामिक (संग्राम का निरूपण)
11. एकादश	–	संघवृत्तम् (संघवृत्त निरूपण)
12. द्वादश	–	आबलीयसं निरूपण
13. त्रयोदश	–	दुर्गलम्भोपायः (दुर्गप्राप्ति निरूपण)
14. चतुर्दश	–	औपनिषदं (औपनिषदिक निरूपण)
15. पञ्चदश	–	तन्त्रयुक्ति का निरूपण

⇒ **गुप्तचरों की नियुक्ति-**
धर्मोपधा आदि उपायों के द्वारा अमात्यवर्ग की परीक्षा कर लेने के अनन्तर राजा गुप्तचरों की नियुक्ति करे।
1. कापटिक 2. उदास्थित 3. गृहपतिक 4. वैदेहक 5. तापस 6. सत्री 7. तीक्ष्ण 8. रसद और 9. भिक्षुक आदि अनेक प्रकार के गुप्तचर होते हैं।

दूत तीन प्रकार के होते हैं-
1- निसृष्टार्थ 2- परिमितार्थ 3- शासनहर
अमात्यसम्पदोपेतो निसृष्टार्थः, पादगुणहीनः परिमितार्थः, अर्धगुणहीनः शासनहरः।

⇒ **दुर्ग-** चतुर्दिशं जनपदान्ते साम्परायिकं दैवकृतं दुर्गं कारयेत् अन्तर्द्वीपं स्थलं वा निम्नावरुद्धमौदकं, प्रास्तरं गुहां वा पार्वतं, निरुदकस्तम्बमिरिणं वा धान्वनं, खञ्जनोदकं स्तम्भगहनं वा वनदुर्गम्।
दुर्ग चार प्रकार के हैं-
1- औदक 2- पार्वत 3- धान्वन और 4- वन दुर्ग।
'प्रतिबन्धः प्रयोगो व्यवहारोऽवस्तारः परिहापणमुपभोगः परिवर्तनमपहारश्चेति कोषक्षयः।'

कोषक्षय के आठ कारण- 1- प्रतिबन्ध 2- प्रयोग 3- व्यवहार 4-अवस्तर 5- परिहायण 6- उपभोग 7- परिवर्तन 8- अपहार

⇒ **लेखक की छः योग्यताएँ-** 1- अर्थक्रम 2- सम्बन्ध 3- परिपूर्णता 4- माधुर्य 5- औदार्य 6- स्पष्टता
अर्थक्रमः सम्बन्धः, परिपूर्णता, माधुर्यमौदार्यं स्पष्टत्वम्, इति लेखसम्पत्।

उपाय- उपायाः सामोपप्रदानभेददण्डाः।
उपाय चार हैं- 1. साम, 2. दान, 3. दण्ड, 4. भेद

⇒ **कौटिल्य के अनुसार आठ प्रकार के विवाह होते हैं-**

1. विवाहपूर्वो व्यवहारः	धर्म विवाह
2. कन्यादानं कन्यामलङ्कृत्य	ब्राह्म विवाह
3. सहधर्मचर्या प्राजापत्यः	प्राजापत्य विवाह
4. गोमिथुनादानादार्षः	आर्ष विवाह
5. अन्तर्वेद्यामृत्विजे दानाद् दैवः	दैव विवाह
6. मिथस्समवायाद् गान्धर्वः	गान्धर्व विवाह
7. शुल्कादानादासुरः	आसुर विवाह

8. प्रसह्यादानाद् राक्षसः राक्षस विवाह

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि कौटिलीय अर्थशास्त्र पन्द्रह अधिकरणों में विभक्त है। **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत- कौटिलीय अर्थशास्त्र-वाचस्पति गैरोला, पेज 02-07

33. वेदान्तदर्शनानुसारं जगतः प्रपञ्चः किं कथ्यते?
(A) ईश्वरस्य स्वरूपम् **(B) अनन्तसत्ता**
(C) अनादितत्त्वम् **(D) विवर्तः**

व्याख्या ⇒ जगत् प्रपञ्च–
शांकर वेदान्त में ब्रह्म को छोड़कर और सभी पदार्थ 'असत्' हैं। इन पदार्थों का आरोप ब्रह्म पर होता है। ब्रह्म आरोप का 'अधिष्ठान' है। माया की विक्षेप-शक्ति के कारण जो सृष्टि होती है, वह मायिक है या भ्रान्ति है; यह आरोप तत्त्वज्ञान के द्वारा बाधित हो जाता है। ब्रह्म को अधिष्ठान मानकर जितने कार्य जगत् में होते हैं, वे ही नहीं, अपितु समस्त जगत् ही ब्रह्म का विवर्त है।

⇒ **विवर्त का अर्थ-** तत्त्व में अतत्त्वों के भान को ही विवर्त कहते हैं- **'अतत्त्वतोऽन्यथाप्रथा 'विवर्त' इत्युदाहृतः।'**
अर्थात् जब किसी वस्तु में अन्य वस्तु की मिथ्याप्रतीति होती है, तो इस प्रक्रिया को हम विवर्त कहते हैं। जैसे- रस्सी में सर्प की प्रतीति होना, सीपी में चाँदी की भ्रान्ति होना विवर्त है। क्योंकि इन दोनों स्थानों पर रस्सी एवं सीपी अपने स्वरूप का परित्याग किए बिना ही अन्यरूप को ग्रहण कर लेती है। यद्यपि यह रूप भ्रान्ति ही है, फिर भी इसको क्षणिक ही सही, अस्तित्व को नकारा नहीं जा सकता।

⇒ **परिणाम या विकार का अर्थ-** परिणाम में एक तत्त्व से यथार्थरूप में दूसरा तत्त्व अभिव्यक्त होता है-
'सतत्त्वतोऽन्यथा प्रथा 'विकार' इत्युदीरितः।'
अर्थात् जब वस्तु अपने स्वरूप का परित्याग करके किसी अन्य रूप को ग्रहण कर लेती है, तो उसे विकार के अन्तर्गत मानना होगा जैसे- दूध का दही के रूप में परिवर्तित होना विकार है; क्योंकि दही बनने के बाद उसे पुनः दूध रूप में बनाना असम्भव है। अपने रूप का त्याग करके ही दूध दही बनाता है। इस प्रक्रिया को परिणाम भी कहा जाता है।
अतः स्पष्ट है कि चराचररूप सम्पूर्ण जगत् प्रपञ्च शुद्ध चैतन्यस्वरूप परब्रह्म का विवर्त है, परिणाम नहीं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि जगत् का प्रपञ्च 'विवर्त' है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- वेदान्तसार- सन्तनारायण श्रीवास्तव्य,पेज-115

34. अधोलिखितेषु का वैदिकभाषायाः विशेषता नास्ति?
(A) सानुनासिकस्वराणां प्रयोगः
(B) लेट्लकारस्य प्रयोगः
(C) तुमुन्नर्थे तवैप्रत्ययस्य प्रयोगः
(D) क्त्वार्थे तवेङ्प्रत्ययस्य प्रयोगः

व्याख्या- वैदिक भाषा की प्रमुख विशेषताएँ-
वैदिक भाषा की पदरचना शिलष्ट– योगात्मक थी। पदरचना में विविधता और अनेकरूपता थी। यह विविधता लौकिक संस्कृत में अत्यन्त कम हो गई।
जैसे- देवौ, देवा, देवाः, देवासः (वैदिक साहित्य में) देवैः, देवेभिः लौकिक संस्कृत में एक-एक रूप रह गये।
* धातुरूपों में लेट् लकार का प्रयोग होता था। संस्कृत में नहीं रहा।
कृत् प्रत्ययों में तुमुन् के अर्थ में से, असे, अध्यै आदि 15 प्रत्यय थे। संस्कृत में तुमुन् ही शेष रहा है।
* वेद में संगीतात्मक स्वर (Accent) की मुख्यता थी। संस्कृत में बलाघातात्मक स्वर हो गया।
* दो स्वरों के मध्य में ड > ळ और ढ > ळ्ह हो जाता था। ईळे > इले, मीळ्हुषे > मीळहुषे।
संस्कृत में ये दोनों ध्वनियाँ नहीं हैं, हिन्दी में ळ, ळ्ह के विकसित रूप ड,ढ़ हैं।
* वैदिक संस्कृत में मध्य स्वरागम या स्वरभक्ति के अनेक उदाहरण मिलते हैं। जैसे- पृथ्वी > पृथिवी, स्वर्ण > सुवर्ण, स्वर् > सुवर् दर्शत > दरशत।
* वैदिक संस्कृत में अनुस्वार के स्थान पर ह्रस्व और दीर्घ ग्वुं - ग्वूं मिलते हैं। ये नासिक्य के साथ कण्ठ्य भी हैं। अल्प प्रयुक्त होने से इनकी गणना पृथक् नहीं की जाती है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि सानुनासिक स्वरों का प्रयोग, लेट्लकार का प्रयोग, तुमुन् के अर्थ में तवै प्रत्यय का प्रयोग वैदिक संस्कृत में प्रयोग होता है। 'क्त्वार्थे तवेङ्' -इसका प्रयोग नहीं होता है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- वैदिकसूक्त संग्रह- विजयशङ्कर पाण्डेय, पेज 14, 21, 04

35. निम्नलिखितेषु दर्शनेषु किं दर्शनं परमात्मनः सृष्टि-कर्तृत्वं न मन्यते?
(A) आर्हतदर्शनम् **(B) न्यायदर्शनम्**
(C) वेदान्तदर्शनम् **(D) योगदर्शनम्**

व्याख्या- भारतवर्ष में मुख्यरूप से नौ दर्शनों की प्रसिद्धि है- छह आस्तिक और तीन नास्तिक। वेद को प्रमाण मानने वाले

दर्शनों को आस्तिक और वेद को प्रमाण न मानने वाले दर्शनों को नास्तिक दर्शन कहा गया है।

आस्तिक दर्शन	नास्तिक दर्शन
1. पूर्वमीमांसा	1. चार्वाक
2. उत्तरमीमांसा	2. बौद्ध
3. साङ्ख्य	3. जैन
4. योग	
5. न्याय	
6. वैशेषिक	

ईश्वर को जगत् का कर्ता मानने के विषय में विभिन्न दर्शनों के विचार/मत निम्नलिखित हैं-

1. आर्हत अथवा जैन दर्शन- जैन दर्शन ईश्वर की सत्ता नहीं मानता। यह ईश्वर के अस्तित्व और जगत्कर्तृत्व का तर्क से खण्डन करता है। इनका कहना है कि कर्म की स्वतन्त्रता ईश्वर की अध्यक्षता के अभाव में भी तत्तत् फल देने में स्वयं कारण मानी जा सकती है, अतः ईश्वर की सत्ता मानना अयुक्त है।

2. न्याय दर्शन- उत्तरकालीन वैशेषिकों और नैयायिकों ने ईश्वर की सत्ता मुक्तकण्ठ से स्वीकार की है एवं उनकी सिद्धि के लिए तर्क भी दिए हैं। वे ईश्वर को जगत् का कर्ता, धर्ता, हर्ता और नियन्ता बताते हैं। ईश्वर सर्वज्ञ हैं, नित्यज्ञानाधिकरण हैं, उनमें ऐश्वर्यादि गुण हैं। सृष्टि और प्रलय उनकी इच्छा से होते हैं।

3. योग दर्शन- योग प्रतिपादित ईश्वर क्लेश, कर्म, विपाक, आशय से सर्वथा अस्पृष्ट पुरुष विशेष है- ''क्लेशकर्मविपाकाशयैरपरामृष्टः पुरुषविशेष ईश्वरः।।'' (योगसूत्र 1.24) ईश्वर नित्यमुक्त है। मुक्त पुरुष पूर्वकाल में बद्ध था। प्रकृतिलीन पुरुष की भविष्य में बन्ध की सम्भावना बनी रहती है, किन्तु ईश्वर सदैव मुक्त और ऐश्वर्यवान् है। अतः योग ईश्वर को भी पृथक् रूप स्वीकार करता है।

4. वेदान्तदर्शन- उपनिषदों को प्रमाण मानने वाले वेदान्त दर्शन में ईश्वर को ही जगत् का निमित्तोपादान कारण स्वीकार किया गया है। इसी से जगत् की उत्पत्ति, स्थिति और लय होता है- ''जन्माद्यस्य यतः।'' (ब्रह्मसूत्र 1.1.2)

5. वैशेषिक दर्शन- कणाद सूत्रों में ईश्वर का स्पष्ट उल्लेख नहीं हुआ है, तथापि प्रशस्तपाद से लेकर बाद के सभी वैशेषिकों ने ईश्वर की सत्ता स्पष्ट रूप से स्वीकार की है और कुछ ने ईश्वर सिद्धि के लिए प्रमाण भी प्रस्तुत किये हैं। ईश्वर इस जगत् के निमित्तकारण और परमाणु-उपादान कारण हैं। ईश्वर का कार्य सर्ग के समय अदृष्ट से गति लेकर परमाणुओं में आद्यस्पन्दन के रूप में सञ्चरित कर देना और प्रलय के समय इस गति का अवरोध करके वापस अदृष्ट में सङ्क्रमित कर देना है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि आर्हत दर्शन ईश्वर अर्थात् परमात्मा के द्वारा जगत् का कर्तृत्व स्वीकार नहीं करता। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- सर्वदर्शनसंग्रह- उमाशङ्कर शर्मा ऋषि, पृष्ठ 115

36. कर्मकाण्डस्य प्रधानता कस्मिन् दर्शने प्रतिपाद्यते?

(A) न्यायदर्शने **(B) चार्वाकदर्शने**

(C) मीमांसादर्शने **(D) योगदर्शने**

व्याख्या- मीमांसा शब्द की व्युत्पत्ति मान् धातु से जिज्ञासा अर्थ में सन् प्रत्यय करके की जाती है। अतः व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ से जिज्ञासा ही मीमांसा शब्द का वाचक होगा।

मीमांसा दर्शन के सूत्रकार महर्षि जैमिनि ने प्रतिज्ञासूत्र 'अथातो धर्मजिज्ञासा' में जिज्ञासा पद का प्रयोग किया है।

उपनिषद् वाङ्मय में मीमांसा का अर्थ उच्च दार्शनिक विषयों पर विचार विमर्श करने से है।

वस्तुतः इस शास्त्र का मुख्य प्रतिपाद्य विषय कर्मकाण्ड के स्वरूप का निरूपण करना है।

कर्मकाण्ड सम्बन्धी विशद प्रतिपादन ब्राह्मणवाङ्मय में मिलता है। इस प्रकार मीमांसाशास्त्र का आदिस्वरूप कर्मकाण्ड के अनुष्ठानों तथा विधि-निषेध और मन्त्रों के विनियोग से सम्बन्धित विषयों को प्रामाणिक रूप में उपस्थापित कराने वाला रहा होगा।

चार्वाक दर्शन- बृहस्पति के मत को मानने वाले, नास्तिकों के शिरोमणि (प्रधान) चार्वाक का दर्शन है।

- ➢ चार्वाक का जड़वाद या भौतिकवाद अवैदिक दर्शनों में सर्वाधिक प्राचीन है।
- ➢ 'बृहस्पति' को चार्वाक दर्शन का प्रथम आचार्य माना जाता है।
- ➢ यह शब्द चर्व् धातु से बना है, क्योंकि चार्वाक का मत ऊपर से सुन्दर और मीठा प्रतीत होता है।
- ➢ इस मत का नाम 'लोकायत' भी है, जिसका अर्थ है कि यह मत साधारण निम्नकोटि के मन्दबुद्धि लोगों के लिए है।
- ➢ चार्वाक मत में प्रत्यक्ष एकमात्र प्रमाण है, अनुमान, शब्द आदि को प्रमाण मानना निराधार है।
- ➢ चार्वाक के अनुसार पृथ्वी, जल, अग्नि और वायु ये चार महाभूत ही तत्त्व हैं।
- ➢ चार्वाक का सिद्धान्त (लक्ष्य) है- **यावज्जीवेत् सुखं जीवेत् ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत्। भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः?** खाओ, पीओ और मौज करो, यही जीवन का लक्ष्य है। जब तक जीये, सुख से जीये, द्रव्य न हो तो ऋण लेकर घृत पीये, क्योंकि

देह के भस्म हो जाने के बाद फिर उसका आना असम्भव है।

न्यायदर्शन- न्याय तथा वैशेषिक दर्शन परस्पर सम्बद्ध हैं तथा समानतन्त्र कहे जाते हैं।

वैशेषिक में तत्त्वमीमांसा प्रधान है, न्याय में तर्कशास्त्र और ज्ञानमीमांसा का प्राधान्य है।

वैशेषिक में सप्तपदार्थ तथा परमाणुवाद के विवरण द्वारा तत्त्व निरूपण किया गया है।

न्याय में प्रमा तथा प्रमाण की मीमांसा द्वारा तत्त्व विषयक सम्यक् ज्ञान का निरूपण किया गया है।

न्याय का प्रथम पदार्थ प्रमाण है तथा द्वितीय प्रमेय है।

वैशेषिक केवल दो प्रमाण मानता है- प्रत्यक्ष और अनुमान

न्याय ने प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द और उपमान इन चारों को प्रमाण माना है।

योगदर्शन- महर्षि पतञ्जलि योगसूत्र के रचयिता हैं।

भारतीयदर्शन में योग का अत्यधिक महत्त्व है।

योग के कई प्रकार हैं- गीता में ज्ञानयोग, भक्तियोग और कर्मयोग तथा ध्यानयोग का वर्णन है।

➢ योग शब्द 'युज्' धातु से बनता है, जिसका अर्थ है- समाधि। पतञ्जलि ने योग को 'चित्तवृत्तिनिरोध' बताया है। योग ने ईश्वर की सत्ता स्वीकार की है, अतः इसे 'सेश्वर सांख्य' भी कहा जाता है।

➢ योग शब्द का प्रचलित अर्थ मिलन है, अर्थात् जीवात्मा का परमात्मा से मिलन।

* पातञ्जल योग-सूत्र में चार पाद हैं- प्रथम समाधि पाद है, जिसमें समाधि के रूप एवं भेदों का और चित्त तथा उसकी वृत्तियों का वर्णन है।

* द्वितीय साधनापाद में क्रियायोग, क्लेश, क्लेश दूर करने के साधन योग के बहिरङ्गों आदि का वर्णन है।

* तृतीय विभूतिपाद में योग के अन्तरङ्गों का एवं योगशक्ति से उत्पन्न विभूतियों का वर्णन है।

* अन्तिम चतुर्थ कैवल्यपाद में समाधिसिद्धि तथा कैवल्य आदि का निरूपण है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि मीमांसा दर्शन में कर्मकाण्ड का विषय प्रतिपादित है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- अर्थसंग्रह- राजेश्वरशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज भू. 08

37. अधोलिखितेषु अर्थविस्तारस्योदाहरणं नास्ति-

(A) गवेषणा **(B) तैलम्**

(C) प्रवीणः **(D) श्राद्धः**

व्याख्या- अर्थविकास या अर्थपरिवर्तन की दिशाएँ- संसार की सभी वस्तुएँ परिवर्तनशील हैं। भाषा भी परिवर्तनशील है। जिस प्रकार ध्वनियों में परिवर्तन होता है, उसी प्रकार प्रत्येक भाषा के शब्दों के अर्थों में भी परिवर्तन होता रहता है। यह **अर्थपरिवर्तन तीन प्रकार का होता है-**

1. कहीं पर अर्थ का विस्तार होता है।
2. कहीं पर अर्थ का संकोच होता है।
3. कहीं पर पुराने अर्थ के स्थान पर नया अर्थ आ जाता है।

(i) अर्थविस्तार (ii) अर्थसंकोच

(iii) अर्थादेश (iv) अर्थोत्कर्ष

(vi) अर्थापकर्ष

⇒ **अर्थविस्तार-**

कुछ शब्द मूलरूप में किसी विशेष या संकुचित अर्थ में प्रयुक्त होते थे।

कुशल- कुशल शब्द का अर्थ था- कुशान् लाति (कुशों को लाना या लेना) कुश का अग्रभाग तीक्ष्ण होता है, जिससे हाथ में कटने का भय रहता था, अतः कुश लाना चतुरता का सूचक था। यह शब्द धीरे-धीरे कुश लाना अर्थ को छोड़कर चतुरता, निपुणता अर्थ देने लगा।

अन्य उदाहरण- प्रवीण, तैल, गवेषणा, महाराज, गोशाला आदि।

⇒ **अर्थसंकोच-** अर्थविस्तार के विपरीत कुछ शब्दों के अर्थों में संकोच हुआ है। यास्क ने निरुक्त में वस्तुओं के नामकरण पर विचार करते हुए- गो, अश्व, पृथ्वी आदि का उदाहरण देकर बताया है कि इनका व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ बहुत विस्तृत है, परन्तु ये किसी विशेष अर्थ में रूढ़ हो गए हैं। 'गच्छतीति गौः' चलने वाले को गो (गाय) कहते हैं। वारिज, अम्बुज, सरसिज, सरोज, पंकज, नीरज- इनका शाब्दिक अर्थ है- जल, तालाब या कीचड़ में होने वाला, परन्तु ये शब्द कमल अर्थ में रूढ़ हो गए हैं।

अन्य उदाहरण- जलद, तोयद, अम्बुद, वारिवाह (बादल), वारिधि, नीरधि, अम्बुधि, तोयधि (समुद्र), सर्प, पर्वत, मृग, सभ्य, श्राद्ध, वेदना, घृणा, समास, उपसर्ग, प्रत्यय, विशेषण, नामकरण आदि।

⇒ **अर्थादेश-** अर्थादेश का अर्थ है- एक अर्थ के स्थान पर दूसरे अर्थ का आ जाना। आदेश का अर्थ है- एक को हटाकर दूसरे को आना। अर्थादेश में शब्द का प्राचीन अर्थ लुप्त हो जाता है और नया अर्थ आ जाता है।

असुर- मूल अर्थ 'असु+र' प्राणशक्तिसम्पन्न 'देवता' था। बाद में सुर (देवता) का उल्टा अ+सुर राक्षस अर्थ हो गया।

वर- मूल अर्थ श्रेष्ठ था और अब केवल दूल्हा अर्थ रह गया है।
सह- वेद में सह् धातु का अर्थ जीतना था। अब सहन करना अर्थ रह गया है।
मौन- मूल अर्थ मुनि कर्म या मुनियों का आचरण था। अब चुप रहना अर्थ रह गया।
अन्य उदाहरण- देवानां प्रियः, बौद्ध बुद्धू, पाषण्ड, आकाशवाणी, साहस, खाद्य-खाद, भद्र-भद्दा, मुग्ध, वाटिका-बाड़ी, कर्पट-कपड़ा आदि।
⇒ **अर्थोत्कर्ष-** अर्थ की दृष्टि से विचार करने पर ज्ञात होता है कि अर्थ विकास की जो तीन दिशाएँ बताई गई हैं- उनमें कुछ में शब्दों में अर्थपरिवर्तन से अर्थ में उत्कर्ष आया है और कुछ में अर्थ में अपकर्ष (निकृष्टता)।
उदाहरण- मुग्ध, साहस-साहसी, गोष्ठ-गोष्ठी, सभ्य।
⇒ **अर्थापकर्ष-** इसी प्रकार अर्थपरिवर्तन से कुछ शब्दों के अर्थों में अपकर्ष (हीनता, निकृष्टता) आया है। असुर- ऋग्वेद में देव वाचक था, संस्कृत में राक्षस हो गया।
जुगुप्सा- पालन करना, छिपाना अर्थ था, अब घृणा अर्थ रह गया।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि अर्थविस्तार का उदाहरण गवेषणा, तैलम्, प्रवीण है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**
स्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र- कपिलदेव द्विवेदी, पेज 336-338

38. कुन्तकानुसारम् अधस्तनेषु सुकुमारमार्गस्य प्रथमो गुणः वर्तते?
(A) माधुर्यम् **(B) सौन्दर्यम्**
(C) स्वाभाविकम् **(D) लावण्यम्**

व्याख्या- आचार्य राजानक कुन्तक की एकमात्र प्रकृतशास्त्रीय कृति 'वक्रोक्तिजीवितम्' है। आचार्य कुन्तक के प्रकृत ग्रन्थ में कुल चार उन्मेष हैं। जिनमें चतुर्थ उन्मेष अपूर्ण ही रह गया है।
कवि ग्रन्थ की निर्विघ्न परिसमाप्ति हेतु शक्ति के परिस्पन्द मात्र उपकरण वाले, त्रिभुवन में विचित्र कर्म करने वाले परमतत्त्व शिव की वन्दना करता है, तदनन्तर कवीन्द्र वक्त्रेन्दु-लास्यमन्दिर-नर्तकी, सुभाषित विलास रूप अभिनवोज्ज्वला वाग्देवी को प्रणाम कर लोकोत्तरचमत्कारकारि वैचित्र्यसिद्धि के लिए इस काव्यविषयक अलङ्कारग्रन्थ की रचना की घोषणा करता है।
➢ अलङ्कार के ग्रन्थ एवं अलङ्कार्य काव्य के लक्षणों और प्रयोजनों का वर्णन कर काव्य के प्राणभूत शब्द तथा अर्थ की तर्क-युक्त विवेचना की जाती है।
इस प्रकार काव्य तथा साहित्य के अभिनव लक्षण नियत करने के पश्चात् आचार्य कुन्तक कवियों के व्यापार (काव्य) की वक्रता का व्याख्यान करते हैं। सर्वप्रथम वक्रता के छह भेद आचार्य ने माने हैं-
1. वर्णविन्यासवक्रता 2. पदपूर्वार्द्धवक्रता 3. प्रत्ययाश्रितवक्रता 4. वाक्यवक्रता 5. प्रकरणवक्रता 6. प्रबन्धवक्रता।
इस प्रकार काव्य के सामान्य लक्षण को बताकर उसके विशेष लक्षण का विषय बताने के लिए मार्ग-भेद के कारण होने वाले त्रैविध्य का कथन करते हैं-
सम्प्रति तत्र ये मार्गाः कविप्रस्थानहेतवः।
सुकुमारो विचित्रश्च मध्यमश्चोभयात्मकः॥ (1/24)
उस (काव्य) में कवि की प्रवृत्ति के कारणभूत जो सुकुमार-विचित्र और उभयात्मक मध्यम मार्ग सम्भव हैं, उन्हें बताते हैं।
सुकुमार मार्ग का लक्षण-
असमस्तमनोहारिपदविन्यासजीवितम्।
माधुर्यं सुकुमारस्य मार्गस्य प्रथमो गुणः॥ (1/30)
इस प्रकार 'सुकुमार' नामक मार्ग का लक्षण बताकर उसी सुकुमार मार्ग के गुणों को लक्षित करते हैं-
समास (की प्रचुरता से) हीन हृदयहारी पदों के विन्यासरूप प्राण वाला 'माधुर्य' नामक गुण सुकुमार मार्ग का पहला गुण है।
अक्लेशव्यञ्जिताकूतं झगित्यर्थसमर्पणम्।
रसवक्रोक्तिविषयं यत्प्रसादः स कथ्यते॥ (1/31)
इस प्रकार माधुर्य नामक सुकुमार मार्ग के प्रथम एवं प्रधान गुण का कथन कर प्रसाद नामक दूसरे गुण को बताते हैं-
शृङ्गारादि रस एवं (सर्वालङ्कारसामान्य) वक्रोक्तिविषयक अभिप्राय को अनायास ही प्रकट कर देने वाला एवं अर्थ की तुरन्त प्रतीति कराने वाला जो गुण है, वह प्रसाद गुण होता है, ऐसा कहा जाता है।
वर्णविन्यासविच्छित्तिपदसंधानसंपदा।
स्वल्पया बन्धसौन्दर्यं लावण्यमभिधीयते॥ (1/32)
इस प्रकार सुकुमार मार्ग के द्वितीय गुण प्रसाद का कथन कर तृतीय गुण लावण्य को लक्षित करते हैं-
अक्षरों की विचित्र संघटना की शोभा से लक्षित पदों की योजना की अत्यल्प सम्पत्ति से उत्पन्न शोभा द्वारा निष्पन्न वाक्य-रचना का सौन्दर्य 'लावण्य' नामक गुण कहा जाता है।
श्रुतिपेशलताशालि सुस्पर्शमिव चेतसा।
स्वभावमसृणच्छायमाभिजात्यं प्रचक्षते॥ (1/33)
इस प्रकार सुकुमार मार्ग के माधुर्य, प्रसाद तथा लावण्य तीन गुणों का प्रतिपादन कर अब चौथे गुण आभिजात्य का कथन करते हैं-
सुनने में रमणीयता से सम्पन्न एवं हृदय के साथ सुन्दर स्पर्श के समान स्वभावतः स्निग्ध कान्ति से युक्त वस्तु आभिजात्य नामक

गुण कही जाती है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि कुन्तक के अनुसार सुकुमारमार्ग का प्रथम गुण माधुर्य गुण है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- वक्रोक्तिकाव्यजीवितम् (1/30) राधेश्याम मिश्र, पेज 113

39. पञ्चमहायज्ञेषु किं न गण्यते?

(A) देवयज्ञः **(B) पितृयज्ञः**
(C) ब्रह्मयज्ञः **(D) विष्णुयज्ञः**

व्याख्या- मनु प्रणीत मनुस्मृति में द्वादश अध्याय हैं। स्मृति धर्मशास्त्र है- 'धर्मशास्त्रं तु वै स्मृतिः' (2/10)

वेद के वाक्यों ने जिसके करने की आज्ञा दी है, उसी का नाम 'धर्म' है- **'चोदनालक्षणोऽर्थोः धर्मः'**।

वेद का धर्म मूल है- **वेदोऽखिलो धर्ममूलम्**

मनुस्मृति के अनुसार धर्म के उपादान प्रमाण पाँच हैं -

वेदोऽखिलो धर्ममूलं स्मृतिशीले च तद्विदाम्।
आचारश्चैव साधूनामात्मनस्तुष्टिरेव च॥ (2.6)

सम्पूर्ण वेद, वेद-शास्त्र जानने वालों के रचे हुए धर्म-शास्त्र-स्मृतियाँ, वेदवेत्ताओं के मन की स्वाभाविक प्रवृत्तिशीलता, वेदवेत्ता साधुओं-शिष्टजनों के मन का सन्तोष, ये सब धर्म के प्रमाण हैं।

⇒ **धर्म का लक्षण-**

वेदः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः।
एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षाद् धर्मस्य लक्षणम्॥ (2/12)

श्रुति-वेद, स्मृति-धर्मशास्त्र, सदाचार, भद्रपुरुषों का आचार-व्यवहार, जो अपने को प्रिय लगे तथा उचित संकल्प से उत्पन्न अभिकांक्षा या इच्छा ये चार धर्म के मूल कहे गये हैं।

⇒ **पञ्चमहायज्ञ-**

अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञस्तु तर्पणम्।
होमो दैवो बलिर्भौतो नृयज्ञोऽतिथिपूजनम्॥ (3/70)

पितरों का तर्पण करना, वेद का पठन-पाठन, ब्रह्मयज्ञ, पितृयज्ञ, देवयज्ञ, भूतयज्ञ, होम करना, जीवों को अन्न की बलि देना और नृयज्ञ एवं अतिथि का आदर सत्कार करना, ये ही पञ्चमहायज्ञ हैं।

⇒ **पञ्चयज्ञ-अहुतं च हुतं चैव तथा प्रहुतमेव च।**
ब्राह्यं हुतं प्राशितं च पञ्चयज्ञान्प्रचक्षते॥ (3/73)

अहुत, हुत, प्रहुत, ब्राह्महुत और प्राशित ये पञ्चयज्ञ कहलाते हैं।

⁎ **संस्कारों की संख्या-**

➢ गौतम के अनुसार चालीस संस्कारों और आत्मा के आठ-शील-गुणों का वर्णन किया है।

➢ वैखानस ने अठारह संस्कारों के नाम गिनाये हैं।

➢ अङ्गिरा ने पञ्चीस संस्कार गिनाये हैं।

➢ व्यास ने सोलह संस्कार गिनाये हैं।

⁎ **सोलह संस्कार-** गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूडाकर्म, कर्णवेध, विद्यारम्भ, उपनयन, वेदारम्भ, केशान्त, समावर्तन, विवाह और अन्त्येष्टि।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि पञ्चमहायज्ञों में 'विष्णुयज्ञ' परिगणित नहीं है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- श्रौतयज्ञ परिचय- वेणीराम शर्मा गौड़, पेज 4

40. 'उद्भिदा यजेत पशुकामः' इत्यत्र उद्भिद् शब्दो यागस्य नामधेयो भवति-

(A) मत्वर्थलक्षणाभयात् **(B) वाक्यभेदभयात्**
(C) तत्प्रख्यशास्त्रात् **(D) तद्व्यपदेशात्**

व्याख्या-मीमांसा शब्द की व्युत्पत्ति मान् धातु से जिज्ञासा के अर्थ में सन् प्रत्यय करके की जाती है। यह पूजित विचार या पूजित जिज्ञासा के अर्थ में भी प्रसिद्ध है।

* लौगाक्षिभास्कर कृत 'अर्थसंग्रह' है। महर्षि जैमिनि कृत 'मीमांसादर्शन' है; इसका प्रकरणग्रन्थ 'अर्थसंग्रह' है।
* जैमिनि सूत्र 12 अध्यायों में विभक्त है। अतः इसे द्वादशलक्षणी भी कहा जाता है।
* लौगाक्षि इनके वंश (कुल) का नाम था और भास्कर स्वयं का नाम था।
* कीथ के अनुसार इनके पिता का नाम मुद्गल एवं पितामह का नाम रुद्र था।
* अर्थसंग्रह के मङ्गलाचरण में और तर्ककौमुदी के प्रारम्भिक तथा अन्तिम के दो श्लोकों में वासुदेव और रमा इन दो नामों का उल्लेख किया है।

तत्र 'उद्भिदा यजेत पशुकामः'-

चार कारणों में प्रथम 'उद्भिदा यजेत पशुकामः' है। यहाँ मत्वर्थलक्षणा के भय से 'उद्भिद्' शब्द को याग का नामधेय माना जाता है। क्योंकि 'उद्भिदा यजेत' इस वाक्य से फल (पशु) को उद्देश्य करके याग का विधान एवं याग को उद्देश्य करके गुण का विधान नहीं माना जा सकता और मानने पर 'वाक्यभेद' उपस्थित होगा। यदि उद्भिद् शब्द को गुणपरक मानकर प्रमाणान्तर से अप्राप्त याग का विधान करते हैं तो प्रकृत स्थल में 'गुणविशिष्ट कर्मविधि' मानना होगा। ऐसी स्थिति में 'उद्भिदा यजेत पशुकामः' का वाक्यबोध 'उद्भिद्वता यागेन पशुं भावयेत्' होगा और विशिष्ट विधि में मत्वर्थलक्षणा होती ही है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'उद्भिदा यजेत

पशुकामः' यहाँ उद्भिद् शब्द के याग का नामधेय 'मत्वर्थलक्षणाभयात् है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- अर्थसंग्रह- राजेश्वर शास्त्री मुसलगाँवकर, पेज 280

41. अधोलिखितेषु उपन्यासकारं चिनुत-
(A) बाणभट्टः (B) बिल्हणः
(C) दण्डी (D) अम्बिकादत्तव्यासः

व्याख्या⟹ बाणभट्ट- बाणभट्ट संस्कृत गद्य-काव्य के मूर्धाभिषिक्त सम्राट् हैं। बाण ने गद्य में पद्यों से अधिक चमत्कार प्रदर्शन किया है। बाण की रीति पाञ्चाली है। पाञ्चाली की विशेषता है कि उसमें शब्द और अर्थ का समन्वय और सन्तुलन रहता है। 'शब्दार्थयोः समो गुम्फः पाञ्चाली रीतिरिष्यते।' कादम्बरी बाण की प्रौढ़ और अन्तिम कृति है। इसमें एक काल्पनिक कथा वर्णित है। यह गद्यकाव्य का 'कथा' भेद है।

रचनाएँ- मुख्यरूप से दो ग्रन्थ- हर्षचरित और कादम्बरी

इनके तीन ग्रन्थ और माने जाते हैं- चण्डीशतक, मुकुटताडितक, पार्वतीपरिणय।

हर्षचरित- यह महाकवि बाण की प्रथम रचना है। ऐतिहासिक वृत्त पर आश्रित होने से यह गद्यकाव्य का भेद आख्यायिका है। इसमें 8 उच्छ्वास हैं।

⟹ **दण्डी-** दण्डी भी गद्यकाव्य के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं। इनकी रचना का नाम दशकुमारचरितम् है, जो गद्यकाव्य है, जिसमें कथा और आख्यायिका नामक दोनों गद्य भेदों के लक्षण उपन्यस्त हैं।

अन्य रचनाएँ- अवन्तिसुन्दरीकथा

काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ- काव्यादर्श-यह तीन परिच्छेदों का पद्यात्मक काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ है।

⟹ **बिल्हण-** कश्मीर निवासी बिल्हण ने विक्रमाङ्कदेवचरित नामक महाकाव्य 18 सर्गों में प्रायः 1085 ई॰ में लिखा। इसके अन्तिम सर्ग में कवि ने आत्म-वृत्तान्त भी दिया है।

बिल्हण की तीन रचनाएँ मिलती हैं- **विक्रमाङ्कदेवचरित (महाकाव्य), कर्णसुन्दरी (नाटिका), चौरपञ्चाशिका (गीतिकाव्य)** है। विक्रमाङ्कदेवचरित बिल्हण को अमर बनाने वाला 18 सर्गों का ऐतिहासिक महाकाव्य है।

⟹ **अम्बिकादत्त व्यास-** प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास के प्रणेता अम्बिकादत्त व्यास हैं। व्यास जी ने शिवराजविजय 1870 ई॰ में लिखा, जो काशी से 1901ई॰ में उनकी मृत्यु के बाद प्रकाशित हुआ। एक घड़ी (24 मिनट) 100 श्लोकों की रचना करने से व्यास जी को 'घटिकाशतक' की उपाधि दी गयी थी।

सौ प्रश्नों को एक साथ ही सुनकर उन सभी प्रश्नों का उत्तर उसी क्रम में देने के की अद्भुत क्षमता होने के कारण उन्हें 'शतावधान' की उपाधि दी गयी थी।

शिवराजविजय में व्यास जी की चेतना प्राचीन-नवीन दोनों के संगम की है। देशभक्ति, इतिहास, स्वाधीनता तथा धर्मरक्षा की भावनाएँ इसमें समन्वित हैं। यवनों के अत्याचार और शिवाजी के न्यायपूर्ण कार्यों का सूर्योदय दोनों का यथार्थ निरूपण करने में कवि को सफलता मिली है। मुख्य रस 'वीर' है, किन्तु अन्य रसों की भी उचित उद्भावना हुई है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि उपन्यासकार अम्बिकादत्त व्यास जी हैं। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा ऋषि, पेज 412

42. अधोलिखितेषु भर्तृहरिमतेन ध्वनेः भेदद्वयं चिनुत-
(A) पश्यन्ती, वैखरी (B) प्राकृत, वैखरी
(C) प्राकृतः वैकृतः (D) वैखरी, वैकृतः

व्याख्या- भर्तृहरि प्रणीत 'वाक्यपदीयम्' है। इस ग्रन्थ का नाम वाक्यपदीय रखा, जिसका अर्थ है कि वाक्य और पद के विषय में विचार के लिए आरम्भ ग्रन्थ (वाक्यं च पदं च वाक्यपदे ते अधिकृत्य कृतो ग्रन्थो वाक्यपदीयम्)। इस वाक्यपदीय में तीन काण्ड हैं, इसीलिए इसे त्रिकाण्डी भी कहा जाता है।

* ब्रह्मकाण्ड में 156, वाक्यकाण्ड में 486, पदकाण्ड में लगभग1218 कारिकाएँ प्राप्त होती हैं।
* वाक्यपदीयम् के प्रथमकाण्ड ब्रह्मकाण्ड में प्राकृत, वैकृत दो प्रकार की ध्वनि बतायी गयी है-

स्वभावभेदान्नित्यत्वे ह्रस्वदीर्घप्लुतादिषु।
प्राकृतस्य ध्वनेः कालः शब्दस्येत्युपचर्यते॥ (1/76)

प्राकृत ध्वनि को स्फोट का एक विशेष रूप मान लेने से प्राकृत ध्वनि का ही एकमात्रिक आदि काल ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत में स्थिर रहता है, जो स्फोट के नित्य होने पर भी शब्द में आरोपित है वास्तविक नहीं।

ध्वनि दो प्रकार की है एक प्राकृत और दूसरी वैकृत- 'प्राकृतो वैकृतश्चेति द्विविधो ध्वनिः' जिसमें प्राकृत ध्वनि के बिना सामान्य रूप से या विशेष रूप से स्फोट की प्रतीत नहीं हो सकती। अतः प्राकृत ध्वनि को स्फोट का स्वरूप मानते हैं। वैकृत ध्वनि तो प्राकृत ध्वनि के बाद 'यह वही है' इस प्रतीति का नियामक होता है। अतः स्फोट रूप नहीं है और उसके कालभेद, द्रुत आदि स्फोट में प्रतीति नहीं होते, जिनसे द्रुत आदि वृत्तियों के ग्रहण को रोकने के लिए कोई प्रयत्न नहीं करना पड़ता।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि भर्तृहरि के द्वारा ध्वनि के दो भेद माने गये हैं- प्राकृत ध्वनि और वैकृत ध्वनि।
अतः विकल्प 'C' सही है।

स्रोत- वाक्यपदीयम् (1/76)- सूर्यनारायण शुक्ल, पेज- 85-86

43. अधस्तनानां महाभारतीयपर्वणां समुचितः क्रमोऽस्ति?
(A) शान्तिपर्व, स्त्रीपर्व, अनुशासनपर्व, आश्वमेधिकपर्व
(B) स्त्रीपर्व, शान्तिपर्व, अनुशासनपर्व, आश्वमेधिकपर्व
(C) अनुशासनपर्व, स्त्रीपर्व, आश्वमेधिकपर्व, शान्तिपर्व
(D) आश्वमेधिकपर्व, अनुशासनपर्व, स्त्रीपर्व, शान्तिपर्व

व्याख्या- विश्व-साहित्य में सबसे बड़ा ग्रन्थ 'महाभारत' ही है, जिसमें एक लाख से कुछ अधिक श्लोक हैं, इसे 'शत-साहस्री संहिता' भी कहते हैं। इसे अठारह पर्वों में विभक्त किया गया है, जो पुनः अनेक उपपर्वों तथा अध्यायों में विभक्त है।
महाभारत के लेखक का नाम व्यास, कृष्णद्वैपायन, वेदव्यास है। वे पराशर ऋषि के पुत्र थे। महाभारत के विषय में कहा गया है- जो बातें महाभारत में नहीं हैं, वे भारतवर्ष में नहीं है।
'यन्न भारते तन्न भारते'
⟹ महाभारत के अठारह पर्वों के नाम इस प्रकार हैं-
1- आदिपर्व 2- सभापर्व 3- वनपर्व 4- विराट्पर्व 5- उद्योगपर्व 6- भीष्मपर्व 7- द्रोणपर्व 8- कर्णपर्व 9- शल्यपर्व 10- सौप्तिक पर्व 11- स्त्रीपर्व 12- शान्तिपर्व 13- अनुशासनपर्व 14- आश्वमेधिकपर्व 15- आश्रमवासिकपर्व 16- मौसलपर्व
17- महाप्रस्थानिकपर्व 18- स्वर्गारोहणपर्व।
इसके परिशिष्ट के रूप में 'हरिवंश-पर्व' है, जिसमें भगवान् कृष्ण का जीवनचरित वर्णित है। इस पर्व को मिलाकर ही श्लोक संख्या एक लाख होती है।
इन पर्वों में शान्तिपर्व बहुत बड़ा है (चौदह सहस्र श्लोक)। दूसरा महाप्रस्थानिकपर्व सबसे छोटा (115 श्लोक) हैं।
महाभारत का विकास- महाभारत का विकास क्रमशः जय, भारत तथा महाभारत–इस रूप में विविध उद्देश्यों की पूर्ति के लिए पृथक् पृथक् अवसरों पर हुआ।
जय- महाभारत का मूलरूप जय के नाम से प्रसिद्ध था। **'जयो नामेतिहासोऽयं श्रोतव्यो विजिगीषुणा'** (महाभारत-1/62/20) महाभारत के मङ्गलश्लोक में नारायण, नर और सरस्वती को नमस्कार करके 'जय' नामक ग्रन्थ के पाठ का स्पष्ट निर्देश है-
नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम्।
देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत्॥
जय को बढ़ाने का काम दूसरे लोगों ने किया। व्यास के इस ग्रन्थ में 8800 श्लोक थे।
भारत- द्वितीय अवस्था में जय का विस्तार 'भारत' के रूप में हुआ, जिसमें 24000 श्लोक हो गये।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि महाभारतीय पर्वों का क्रम है- स्त्रीपर्व, शान्तिपर्व, अनुशासनपर्व, आश्वमेधिक पर्व।
अतः विकल्प 'B' सही है।
स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा ऋषि, पेज 151

44. जीवाजीवाख्ये द्वे तत्त्वे कस्मिन् दर्शने मन्येते?
(A) बौद्धदर्शने **(B) सांख्यदर्शने**
(C) वेदान्तदर्शने **(D) जैनदर्शने**

व्याख्या⟹ जैनदर्शन- जैन शब्द 'जिन' शब्द से बना है, जिसका अर्थ है- विजयी अर्थात् रागद्वेषादि शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला मुक्त पुरुष, जिसे 'वीतराग' भी कहते हैं। जैन अपने धर्मप्रचारक सिद्धों को तीर्थंकर कहते हैं और इनकी संख्या चौबीस बताते हैं। ऋषभदेव प्रथम तीर्थंकर माने जाते हैं।
तत्त्वमीमांसा - जैन तत्त्वमीमांसा वस्तुवादी और सापेक्षतावादी बहुतत्त्ववाद है, जिसे अनेकान्तवाद कहते हैं। चेतन जीव और अचेतन जीव दो प्रमुख और स्वतन्त्र तत्त्व हैं।
जैन दर्शन के त्रिरत्न- सम्यक् दर्शन, सम्यक्ज्ञान और सम्यक् चरित्र–मोक्षप्राप्ति के मार्ग माने गये हैं।
⟹ **चार्वाक दर्शन-** चार्वाक के अनुसार पृथ्वी, जल, अग्नि, और वायु ये चार महाभूत ही तत्त्व हैं। आकाश का अनुमान होता है, अतः चार्वाक उसे तत्त्व नहीं मानते, वह आवरणभाव मात्र है।
⟹ **सांख्यदर्शन-** महर्षि कपिलमुनि प्रणीत सांख्यदर्शन में पच्चीस तत्त्वों की चर्चा हुई है- प्रकृति, महत् या बुद्धि, अहङ्कार, पञ्चज्ञानेन्द्रियाँ, पञ्चकर्मेन्द्रियाँ, पञ्चतन्मात्राएँ, पञ्चमहाभूत मन और पुरुष = 25
मूलप्रकृतिरविकृतिर्महदाद्याः प्रकृतिविकृतयः सप्त।
षोडशकस्तु विकारो न प्रकृतिर्न विकृतिः पुरुषः॥
(सा॰ का॰-03)
⟹ **योगदर्शन-** महर्षि पतञ्जलिकृत योगदर्शन है। इसमें चार पाद हैं- समाधिपाद, साधनापाद, विभूतिपाद, कैवल्यपाद। योग शब्द युज् धातु से बनता है, जिसका अर्थ है- समाधि।
योग सांख्य के पच्चीस तत्त्वों के अतिरिक्त ईश्वर की सत्ता भी स्वीकार करता है। योगदर्शन में तत्त्वों की संख्या 26 मानी गयी है। प्रकृति, महत् (बुद्धि), अहङ्कार, पञ्चज्ञानेन्द्रियाँ, पञ्चकर्मेन्द्रियाँ, पञ्चतन्मात्राएँ, पञ्चमहाभूत, मन, पुरुष और ईश्वर = 26
⟹ **वेदान्तदर्शन-** शङ्कराचार्य कृत वेदान्तदर्शन में दो तत्त्वों की चर्चा की गयी है- ब्रह्म और जीव।

दर्शन	ग्रन्थ	अध्याय	सूत्र	प्रमाण	पदार्थ-तत्त्व
सांख्य	सांख्यसूत्र	6	537	3	25
योग	योगसूत्र	4पाद	195	3	26
न्याय	न्यायसूत्र	5	60-70	4	16
वैशेषिक	वैशेषिकसूत्र		10	370	2 7
पूर्वमीमांसा	मीमांसासूत्र	12	2644	6	-
उत्तरमीमांसा (वेदान्त)	ब्रह्मसूत्र	4	555	6	2

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'जीवाजीवाख्ये द्वे तत्त्वे'- यह जैन दर्शन मानता है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- सर्वदर्शनसंग्रह- उमाशङ्कर शर्मा ऋषि, पेज 124

45. पाणिनीयशिक्षानुसारं कस्य प्राणिनः ध्वनिः एकमात्रिकवर्ण-तुल्यः भवति-
(A) नकुलस्य (B) शिखिनः
(C) वायसस्य (D) चाषस्य

व्याख्या- * वेदों के गूढ़ एवं वास्तविक अर्थों को जानने के लिए जिन सहायक तत्त्वों की आवश्यकता होती है, उन्हें वेदाङ्ग कहते हैं।

* वेदाङ्ग की संख्या छह है- शिक्षा, व्याकरण, छन्द, निरुक्त ज्योतिष, कल्प।

* वेदाङ्ग के विषय में पाणिनीय शिक्षा में निम्न श्लोक प्राप्त होता है-

छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते।
ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते॥
शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य, मुखं व्याकरणं स्मृतम्।
तस्मात् साङ्गमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते॥ (41-42)

छन्द - पाद (पैर)
कल्प - हस्त (हाथ)
ज्योतिष - चक्षु (नेत्र)
निरुक्त - श्रोत्र (कान)
शिक्षा- घ्राण (नाक)
व्याकरण - मुख

* वेदाङ्गों में शिक्षा सर्वप्रथम परिगणित है, जिसका अर्थ है- वर्णोच्चारण की शिक्षा देना।

'स्वरवर्णाद्युच्चारणप्रकारो यत्र शिक्ष्यते उपदिश्यते सा शिक्षा' अर्थात् जिसमें स्वर वर्ण आदि के उच्चारण की शिक्षा दी जाती है, उसे शिक्षा कहते हैं।

* शिक्षा को वेद का प्राण कहा गया है- 'शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य'। तैत्तिरीयोपनिषद् में शिक्षा के छः अङ्गों का उल्लेख है - वर्ण, स्वर, मात्रा, बल, साम, सन्तान।

पाणिनीय शिक्षा- पाणिनीय शिक्षा वैदिक और लौकिक दोनों के लिए उपयुक्त है। पाणिनीय शिक्षा में साठ (60) श्लोक हैं। पाणिनीय शिक्षा में वर्णों की संख्या, उच्चारणप्रक्रिया का ध्वनि-शास्त्रीय वर्णन, स्थान और प्रयत्न का विवरण, संवृत, विवृत, घोष, अघोष, पाठक के गुण-दोषों का वर्णन आदि प्राप्त होता है।

चाषस्तु वदते मात्रां द्विमात्रं चैव वायसः।
शिखी रौति त्रिमात्रं तु नकुलस्त्वर्धमात्रकम्॥ (पा.शि.-49)

नीलकण्ठ पक्षी एक मात्राकालिक शब्द बोलता है, कौआ द्विमात्रिक शब्द बोलता है, मयूर तीन मात्रा का शब्द बोलता है, नेवला आधी मात्रा का शब्द बोलता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि एक-मात्राकालिक बोलने वाला नीलकण्ठ (चाषः) है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- पाणिनीयशिक्षा - (श्लोक 49)

46. अधोलिखितेषु वेदान्तमते असमीचीनं कथनं चिनुत-
(A) काम्यकर्माणि स्वर्गादिसाधनानि
(B) निषिद्धानि कर्माणि अनिष्टसाधनानि
(C) नित्यानि कर्माणि अनिष्टसाधनानि
(D) नैमित्तिकानि प्रायश्चित्तादीनि कर्माणि पापक्षयादिसाधनानि

व्याख्या- वेदान्त दर्शन- आचार्य बादरायण विरचित 'ब्रह्मसूत्र' इसका आधारग्रन्थ है। इसी का दूसरा नाम 'वेदान्त सूत्र' भी है। ब्रह्मसूत्र पर लिखा गया आचार्य शङ्कर का 'शारीरक-भाष्य' इस दर्शन का अद्भुत ग्रन्थ माना गया है।

इसमें ब्रह्मसूत्रों की अद्वैतवादी व्याख्या प्रस्तुत की गयी है।

शङ्कराचार्य को अद्वैतवाद का प्रवर्तक आचार्य माना जाता है। अद्वैतमत को शाङ्करमत या शाङ्करदर्शन भी कहते हैं।

आचार्य शङ्कर का सिद्धान्त अद्वैतवाद के नाम से प्रसिद्ध है। तदनुसार उन्होंने ब्रह्म के अतिरिक्त अन्य समस्त जगत् का मिथ्या प्रतिपादित किया (ब्रह्मसत्यं जगन्मिथ्या)। उन्होंने मायावाद की स्थापना की।

शङ्कराचार्य के अनुसार सम्पूर्ण दृश्यमान् जगत् ब्रह्म का विवर्तमात्र है। जैसे हमें रज्जु में सर्प की भ्रान्ति हो जाती है, ठीक उसी प्रकार ब्रह्मतत्त्व में ही हमें जगत् की भ्रान्ति हो रही है। उन्होंने आत्मा को स्वतः सिद्ध माना।

सदानन्दयोगीन्द्र ने अद्वैतवेदान्त पर अत्यन्त सरस शैली में वेदान्तसार नामक प्रकरण ग्रन्थ की रचना की।

वेदान्तसार के मङ्गलाचरण में इन्होंने श्लेष के माध्यम से अपने गुरु अद्वयानन्द को नमन किया है।

अनुबन्धचतुष्टय की चर्चा करते हैं- अधिकारी, विषय, सम्बन्ध और प्रयोजन, तत्पश्चात् छह प्रकार के कर्मों का विवेचन करते हुए कहते हैं-

षड्विधकर्म-

1. काम्यानि स्वर्गादीष्टसाधनानि ज्योतिष्टोमादीनि।
स्वर्गादि कामनाओं के साधनस्वरूप ज्योतिष्टोमयाग आदि काम्यकर्म हैं।

2. निषिद्धानि नरकाद्यनिष्टसाधनानि ब्राह्मणहननादीनि। नरक आदि अनिष्ट के साधनरूप ब्राह्मणहनन आदि निषिद्ध कर्म हैं।

3. नित्यान्यकरणे प्रत्यवायसाधनानि सन्ध्यावन्दनादीनि।
जिसके न करने पर भविष्य में दुःख की सम्भावना हो, सन्ध्यावन्दन आदि नित्यकर्म हैं।

4. नैमित्तिकानि पुत्रजन्माद्यनुबन्धीनि जातेष्ट्यादीनि।
पुत्रजन्म के अवसर पर किए जाने वाले जातेष्टि यज्ञ आदि नैमित्तिक कर्म हैं।

5. प्रायश्चित्तानि पापक्षयसाधनानि चान्द्रायणादीनि।
पाप के प्रक्षालन हेतु किए जाने वाले चान्द्रायण व्रत आदि प्रायश्चित्त कर्म हैं।

6. उपासनानि सगुणब्रह्मविषयमानसव्यापाररूपाणि शाण्डिल्य-विद्यादीनि।
मन की वृत्ति को स्थिर करने के लिए सगुण ब्रह्म-विषयक मानसिक व्यापाररूप शाण्डिल्यविद्या आदि उपासना कर्म हैं।

स्पष्टीकरण- विवरण से स्पष्ट है कि वेदान्तानुसार छः कर्म माने गये हैं, जिसमें 'नित्यानि कर्माणि अनिष्टसाधनानि' यह अशुद्ध है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- वेदान्तसार- राकेश शास्त्री, पेज 127

47. षड्भावविकारा भवन्ति मतमिदं कस्य विद्यते?
(A) वार्ष्यायणेः (B) शाकपूणेः
(C) शाकटायनस्य (D) यास्कस्य

व्याख्या- यास्क कृत निरुक्त निघण्टु का व्याख्या ग्रन्थ है। मूलग्रन्थ निघण्टु कहलाता है।

'षड्भावविकारा भवन्तीति वार्ष्यायणिः। जायते, अस्ति, विपरिणमते, वर्धते, अपक्षीयते, विनश्यति इति।'
छह प्रकार की क्रियाओं के भेद (विकार) होते हैं। यह वार्ष्यायणि आचार्य का मत है।
1. जायते - उत्पन्न होता है
2. अस्ति - रहता है
3. विपरिणमते- परिवर्तित होता है
4. वर्धते - बढ़ता है
5. अपक्षीयते - क्षीण होता है
6. विनश्यति - नष्ट होता है।

'इन्द्रियनित्यं वचनमौदुम्बरायणः।'
वचन अर्थात् शब्द इन्द्रिय में नियत है। अर्थात् जब तक वक्ता बोलता है, तब तक उसकी वाक् इन्द्रिय में और जब तक श्रोता सुनता है तब तक उसकी श्रोत्रेन्द्रिय में विद्यमान रहता है। न उसके पहले था और न बाद में रहता है। इसलिए यह अनित्य है, यह औदुम्बरायण का मत है।

न निर्बद्धा उपसर्गा अर्थान्निराहुरिति शाकटायनः। नामाख्यातयोस्तु कर्मोपसंयोगद्योतका भवन्ति।
(नाम तथा आख्यात से) अलग करके गुम्फित किये हुए उपसर्ग, अर्थों को निश्चित रूप से नहीं कहते हैं।
नाम और आख्यात के अर्थ को उनके साथ मिलकर द्योतन करने वाले होते हैं, यह शाकटायन का मत है।

यदि मन्त्रार्थप्रत्ययानर्थकं भवतीति कौत्सः। अनर्थका हि मन्त्राः।
यदि मन्त्रों के अर्थ का बोध कराने के लिए है, तो व्यर्थ है; यह कौत्स का मत है। क्योंकि मन्त्रों का कोई अर्थ नहीं होता है।

उच्चावचाः पदार्था भवन्तीति गार्ग्यः। तद् य एषु पदार्थः प्राहुरिमे तं नामाख्यातयार्थविकरणम्।
इन उपसर्गों के भी उच्चावच अर्थात् नाना प्रकार के शब्द निरुक्त में नाना प्रकार के इस अर्थ में प्रयुक्त होते हैं। इसलिए इनका जो अर्थ होता है नाम तथा आख्यात से अलग प्रयुक्त होने पर भी नाम और आख्यात के अर्थ परिवर्तन करने वाले उस अर्थ को ये उपसर्ग कहते ही हैं, यह गार्ग्य का मत है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि षड्भावविकार आचार्य वार्ष्यायणि का मत है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- निरुक्त- कपिलदेव शास्त्री, पेज 23

48. एध् वृद्धौ इत्यस्माद् धातोः 'ऐधिष्ट' इति रूपं निष्पद्यते-
(A) विधिलिङ्लकारे (B) लुङ्लकारे
(C) आशीर्लिङ्लकारे (D) लङ्लकारे

व्याख्या- **लुङ् लकार**

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	ऐधिष्ट	ऐधिषाताम्	ऐधिषत
मध्यमपुरुष	ऐधिष्ठाः	ऐधियाथाम्	ऐधिढ्वम्
उत्तमपुरुष	ऐधिषि	ऐधिष्वहि	ऐधिष्महि

विधिलिङ्लकार			
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	एधेत	एधेयाताम्	एधेरन्
मध्यमपुरुष	एधेथाः	एधेयाथाम्	एधेध्वम्
उत्तमपुरुष	एधेय	एधेवहि	एधेमहि

आशीर्लिङ्लकार			
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	एधिषीष्ट	एधिषीयास्ताम्	एधिषीरन्
मध्यमपुरुष	एधिषीष्ठाः	एधिषीयास्थाम्	एधिषीध्वम्
उत्तमपुरुष	एधिषीय	एधिषीवहि	एधिषीमहि

लङ्लकार			
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	ऐधत	ऐधेताम्	ऐधन्त
मध्यमपुरुष	ऐधथाः	ऐधेथाम्	ऐधध्वम्
उत्तमपुरुष	ऐधे	एधावहि	ऐधामहि

ऌङ्लकार			
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	ऐधिष्यत	ऐधिष्येताम्	ऐधिष्यन्त
मध्यमपुरुष	ऐधिष्यथाः	ऐधिष्येथाम्	ऐधिष्यध्वम्
उत्तमपुरुष	ऐधिष्ये	ऐधिष्यावहि	ऐधिष्यामहि

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'एध्-वृद्धौ' धातु से 'ऐधिष्ट' रूप लुङ्लकार प्रथमपुरुष एकवचन में बनता है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी-गोविन्दाचार्य, पेज-495

49. 'मालामतिक्रान्तः- अतिमालः' इत्यत्र समासविधायकं वर्तते?
(A) अत्यादयः क्रान्त्याद्यर्थे द्वितीयया
(B) अवादयः कुष्टाद्यर्थे द्वितीयया
(C) कुगतिप्रादयः
(D) एकविभक्ति चापूर्वनिपाते

व्याख्या- लघुसिद्धान्तकौमुदीकार आचार्य वरदराज तत्पुरुष समास के अन्तर्गत कुछ वार्तिकों को उद्धृत करते हैं-

⟹ **प्रादयो गताद्यर्थे प्रथमया-** यह वार्तिक है। गत आदि अर्थों में वर्तमान प्र आदि निपातों का प्रथमान्त सुबन्त के साथ नित्य समास होता है और वह तत्पुरुष समास कहलाता है।

प्रादि समास के क्षेत्र को फैलाने के लिए ही यह वार्तिक है।

प्राचार्यः - प्रगत आचार्यः। दूर गया हुआ आचार्य, श्रेष्ठ आचार्य, अपने विषय में दक्ष या आचार्य का भी आचार्य।

⟹ **अत्यादयः क्रान्त्याद्यर्थे द्वितीयया-** क्रान्त अर्थात् पार गया हुआ। लांघ चुका, पारगामी आदि अर्थों में वर्तमान 'अति' आदि निपातों का द्वितीया समर्थ सुबन्त के साथ समास होता है। उसे तत्पुरुष समास कहा जाता है।

अतिमालः - माला का अतिक्रमण करने वाला, सुगन्ध से माला आदि को मात दे चुका कोई पदार्थ।

मालाम् अतिक्रान्तः- यह लौकिक विग्रह है।

माला अम् अति- अलौकिक विग्रह है।

'अति' इस प्रादि निपात का माला अम् इस सुबन्त के साथ 'अत्यादयः क्रान्ताद्यर्थे द्वितीयया' से समास हुआ। प्रातिपदिकसंज्ञा, सुप् का लुक् करके 'माला अति' बनने के बाद 'प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' से अति की उपसर्जनसंज्ञा होकर पूर्वप्रयोग हुआ। पुनः ह्रस्व करने के लिए 'एकविभक्ति चापूर्वनिपाते' से माला की भी उपसर्जनसंज्ञा हुई और 'गोस्त्रियोरुपसर्जनस्य' से उपसर्जन माला को ह्रस्व होकर अतिमाल बना। सु, रुत्वविसर्ग करके अतिमालः सिद्ध हुआ। इसी तरह 'अतिक्रान्तो' मानुषम् अतिमानुषः, अतिक्रान्तः अर्थम् अत्यर्थः आदि जगहों पर इस वार्तिक से समास किया जा सकता है।

⟹ **अवादयः क्रुष्टाद्यर्थे तृतीयया-** यह भी वार्तिक है। क्रुष्ट- (कूजित,आहूत)

⟹ **पर्यादयो ग्लानाद्यर्थे चतुर्थ्या-** ग्लान (खिन्न, दुःखी, थका हुआ)

⟹ **निरादयः क्रान्ताद्यर्थे पञ्चम्या-** क्रान्त (निकला हुआ, पार किया हुआ)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि मालामतिक्रान्तः अतिमालः में समास विधायक सूत्र-'अत्यादयः क्रान्ताद्यर्थे द्वितीयया' है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी-गोविन्दाचार्य, पेज-939

50. कौटिल्यमते 'कृषिपाशुपाल्ये वाणिज्या' इति विषयाः सन्ति?
(A) त्रय्याः **(B) दण्डनीतेः**
(C) वार्तायाः **(D) आन्वीक्षक्याः**

व्याख्या- कौटिल्य कृत अर्थशास्त्र में पन्द्रह अधिकरण एक सौ पचास अध्याय, एक सौ अस्सी प्रकरण और छः हजार श्लोक हैं। प्रथम अधिकरण के प्रथम अध्याय में चार प्रकार की विद्या आदि का वर्णन किया गया है।

आन्वीक्षकी त्रयी वार्ता दण्डनीतिश्चेति विद्याः। आन्वीक्षकी, त्रयी, वार्ता और दण्डनीति ये चार विद्याएँ हैं।

⇒ **आन्वीक्षिकी का लक्षण-**
प्रदीपः सर्वविद्यानामुपायः सर्वकर्मणाम्।
आश्रयः सर्वधर्माणां शश्वदान्वीक्षकी मता।। (1.1.1)
यह आन्वीक्षकी विद्या सर्वदा ही सब विद्याओं की प्रदीप, सभी कार्यों का साधन और सब धर्मों का आश्रय मानी गयी है।
⇒ **त्रयी का लक्षण-** सामर्ग्यजुर्वेदास्त्रयी। साम, ऋक् तथा यजु इन तीनों वेदों का समन्वित नाम ही **'त्रयी'** है। अथर्ववेद और इतिहासवेद ही वेद कहे जाते हैं।
शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्दोविचिति (विचिति=विवेक, विचार) और ज्योतिष, ये छह वेदांग हैं।
त्रयी में निरूपित यह धर्म, चारों वर्णों और चारों आश्रमों को अपने -अपने धर्म में स्थिर रखने के कारण लोक का बहुत ही उपकारक है।
ब्राह्मण का धर्म अध्ययन-अध्यापन, यज्ञ, याजन और दान देना तथा दान लेना है।
'स्वधर्मो ब्राह्मणस्याध्ययनमध्यापनं यजनं याजनं दानं प्रतिग्रहश्चेति।'
क्षत्रिय का धर्म है- पढ़ना, यज्ञ करना, दान देना, शस्त्रबल से जीविकोपार्जन और प्राणियों की रक्षा करना।
क्षत्रियस्याध्ययनं यजनं दानं शास्त्राजीवो भूतरक्षणं च।
वैश्य का धर्म पढ़ना, यज्ञ करना, दान देना, कृषिकार्य एवं पशुपालन और व्यापार करना है।
वैश्यस्याध्ययनं यजनं दानं कृषिपाशुपाल्ये वाणिज्या च।
इसी प्रकार शूद्र का अपना धर्म है कि वह ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य की सेवा करें, खेती, पशुपालन तथा व्यापार करें और शिल्प, गायन, वादन एवं चारण, भाट आदि का कार्य करें।
शूद्रस्य द्विजातिशुश्रूषा वार्ता कारुकुशीलवकर्म च।
⇒ **वार्ता का लक्षण-** कृषिपाशुपाल्ये वाणिज्या च वार्ता।
कृषि, पशुपालन और व्यापार ये वार्ताविद्या के विषय हैं।
⇒ **दण्डनीति का लक्षण-** आन्वीक्षकी त्रयीवार्तानां योगक्षेमसाधनो दण्डः। तस्य नीतिः दण्डनीतिः।
आन्वीक्षकी, त्रयी, वार्ता इन सभी विद्याओं की सुख-समृद्धि दण्ड पर निर्भर है। दण्ड को प्रतिपादित करने वाली नीति ही दण्डनीति कहलाती है।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'कृषिपाशुपाल्ये वाणिज्या च वार्ता' यह वार्ता का लक्षण है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**
स्रोत- कौटिलीय अर्थशास्त्र- वाचस्पति गैरोला, पेज-12

51. निम्नलिखितेषु को हेत्वाभासो नास्ति-
(A) असिद्धः **(B) विरुद्धः**
(C) अनैकान्तिकः **(D) असत्प्रतिपक्षः**

व्याख्या- केशवमिश्र प्रणीत तर्कभाषा में पाँच हेत्वाभासों का निरूपण करते हुये कहते हैं कि-
असिद्ध-विरुद्ध-अनैकान्तिक-प्रकरणसम-कालात्य-यापदिष्ट-भेदात् पञ्चैव।
वह हेत्वाभास पाँच प्रकार के हैं- 1. असिद्ध 2. विरुद्ध 3. अनैकान्तिक 4. प्रकरणसम (सत्प्रतिपक्ष) 5. कालात्ययापदिष्ट (बाधित)।
1. असिद्ध हेत्वाभास- स त्रिविधः- 1 आश्रयासिद्ध 2. स्वरूपासिद्ध 3. व्याप्यत्वासिद्ध–भेदात्।
(i) **आश्रयासिद्धः -** यस्य हेतोराश्रयो नावगम्यते स आश्रयासिद्धः यथा गगनारविन्दं सुरभि, अरविन्दत्वात्, सरोजारविन्दवत्, जिस हेतु का आश्रय सिद्ध न हो, वह हेतु आश्रयासिद्ध होता है। गगनारविन्दं सुरभि, अरविन्दत्वात्।
(ii) **स्वरूपासिद्धः** - स उच्यते यो हेतुराश्रये नावगम्यते
'यथा सामान्यमनित्यं कृतकत्वादिति'
जो हेतु आश्रय में ज्ञात नहीं होता, उसे स्वरूपासिद्ध कहा जाता है।
जैसे- 'सामान्यम् अनित्य' सामान्य जाति अनित्य है। कृतकत्वात् कृतक उत्पन्न होने से।
(iii) **व्याप्यत्वासिद्धः -** व्याप्यत्वासिद्धस्तु स एव यत्र हेतोर्व्याप्ति-र्नावगम्यते।
जिस हेतु में व्याप्ति का ज्ञान नहीं होता, वह व्याप्यत्वासिद्ध होता है।
2. विरुद्ध- साध्यविपर्ययव्याप्तो हेतुः विरुद्धः। यथा शब्दो नित्यः कृतकत्वात् इति।
साध्याभाव का व्याप्य हेतु विरुद्ध कहा जाता है।
जैसे- शब्दः नित्यः कृतकत्वात्। शब्द नित्य है कृतक उत्पन्न होने से।
3. अनैकान्तिक- साध्यसंशयहेतुरनैकान्तिकः सव्यभिचार इति वा उच्यते। स द्विविधः साधारणानैकान्तिको असाधारणानैकान्तिकश्चेति।
जो हेतु साध्यसंशय का जनक होता है, उसे अनैकान्तिक या व्यभिचार कहा जाता है। उसके दो भेद होते हैं-
साधारण अनैकान्तिक और असाधारण अनैकान्तिक।
4. प्रकरणसम- (सत्प्रतिपक्ष)- यस्य प्रतिपक्षभूतं हेत्वन्तरं विद्यते स प्रकरणसमः। स एव सत्प्रतिपक्ष इति चोच्यते। तद्यथा-शब्दोऽनित्यो नित्यधर्मानुपलब्धेः, शब्दो नित्योऽनित्य-धर्मानुपलब्धेः इति।
जिस हेतु का प्रतिपक्षभूत अन्य हेतु होता है, वह प्रकरण-सम होता है। उसे सत्प्रतिपक्ष भी कहा जाता है।

यथा- शब्दः अनित्यः नित्यधर्मानुपलब्धेः- शब्द अनित्य है, क्योंकि उसमें नित्यधर्म नित्यत्वनियत धर्म की उपलब्धि नहीं होती।

5. कालात्ययापदिष्ट (बाधित)- यस्य प्रत्यक्षादिप्रमाणेन पक्षे साध्याभावः परिच्छिन्नः स कालात्ययापदिष्टः। स एव बाधितविषय इत्युच्यते।

यथा- अग्निरनुष्णः कृतकत्वाज्जलवत्। जिस हेतु के साध्य का अभाव पक्ष में प्रत्यक्ष आदि प्रमाण से निश्चित होता है, वह हेतु कालात्ययापदिष्ट होता है। उसे बाधितविषयक भी कहा जाता है।

यथा- अग्निः अनुष्णः कृतकत्वात् जलवत् अग्नि अनुष्णत्व-उष्णस्पर्शाभाव का आश्रय है कृतक कार्य होने से, जल के समान।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि हेत्वाभास में असत्प्रतिपक्ष परिगणित नहीं है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- तर्कभाषा- आचार्य विश्वेश्वर, पेज 246

52. अभिनिहितस्वरितो भेदोऽस्ति-

(A) आश्रितस्वरितस्य **(B) जात्यस्वरितस्य**
(C) तैरोविरामस्वरितस्य **(D) स्वतन्त्रस्वरितस्य**

व्याख्या- वेदों के अध्ययन में स्वर शास्त्र का विशेष महत्त्व है। क्योंकि वैदिक मन्त्रों के शुद्ध उच्चारण एवं अर्थबोध के लिए स्वरों का ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है। किसी शब्द के किसी अक्षर को स्वर में पढ़े जाने पर ही उस शब्द के अर्थ का निर्णय होता है। यदि किसी शब्द के अक्षर के स्वर को बदल दिया जाये, तो उसका अर्थ परिवर्तित हो जाता है। यथा- इन्द्रशत्रुः शब्द है। इसमें दो पद हैं- इन्द्र और शत्रु। यदि आप पद को उदात्त समझे तो इसका विग्रह बहुव्रीहि समास में 'इन्द्रः शत्रुः यस्य सः' होगा अर्थात् ''इन्द्र है मारने वाला जिसका।'' यदि अन्तिम पद को उदात्त माना जाये तो इसका विग्रह तत्पुरुष समास में 'इन्द्रस्य शत्रुः' होगा, जिसका अर्थ होगा- इन्द्र को मारने वाला।

⇒ **स्वर के प्रकार-** वैदिक वाङ्मय में मुख्यतः तीन स्वर मान्य हैं- उदात्त, अनुदात्त और स्वरित।

उदात्त- उच्चैरुदात्तः। कण्ठ, तालु आदि स्थानों के ऊपर के भाग से जिस स्वर का उच्चारण होता है, वह उदात्त कहलाता है।

अनुदात्त- नीचैरनुदात्तः। कण्ठ, तालु आदि स्थानों के नीचे के भाग से उच्चरित स्वर अनुदात्त कहलाता है।

स्वरित- 'समाहारः स्वरितः' उदात्तत्व और अनुदात्तत्व दोनों धर्मों का मेल जिस वर्ण में होता है, वह स्वरित होता है। इस प्रकार स्वरित में उदात्त और अनुदात्त दोनों स्वरों के धर्म का मिश्रण होता है।

स्वरित दो प्रकार का होता है- स्वतन्त्र और आश्रित

स्वरित
- स्वतन्त्र
  - नित्य (जात्य)
    - क्षैप्र
    - प्रश्लिष्ट
    - अभिनिहित
  - संधिज
- आश्रित
  - पादवृत्त
  - प्रातिहत
  - तैरोव्यञ्जन
  - तैरोविराम
  - तायाभाव

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि अभिनिहित स्वर स्वतन्त्र स्वरित का भेद है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

53. ऑन दि सब्लाइम (On the Sublime) **ग्रन्थस्य प्रणेता वर्तते?**

(A) अरस्तू **(B) क्रोञ्चे**
(C) प्लेटो **(D) लान्जाइनस**

व्याख्या- अरस्तू का अनुकरण सिद्धान्त एक स्तर पर प्लेटो के अनुकरण सिद्धान्त की प्रतिक्रिया है और दूसरे स्तर पर उसका विकास भी। अरस्तू (384 ई.पूर्व. से 322 ई.पूर्व.) यूनानी दार्शनिक थे। यह प्लेटो के शिष्य व सिकन्दर के गुरु थे। उनका जन्म स्टेगेरिया नामक नगर में हुआ था। अरस्तु ने भौतिकी, अध्यात्म, कविता, नाटक, संगीत, तर्कशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, नीतिशास्त्र सहित कई विषयों पर रचना की।

अरस्तू के प्रमुख ग्रन्थ- हिस्ट्री ऑफ एनिमल्स, पॉएटिक्स, मेटाफिजिक्स, प्रोब्लेम्स, ऑन मेमोरी, ऑन स्लीप, ऑन ड्रीम्स, ऑन दी हेअवेंस, ऑन दी यूनिवर्स, ऑन दी सोल आदि ग्रन्थ हैं।

⇒ **लान्जाइनस-**यह अंग्रेजी (Longinus) ग्रीक परम्परागत रूप से काव्य में 'उदात्त तत्त्व' (On the Sublime) नामक कृति का रचनाकार माना जाता है। लान्जाइनस का असली नाम ज्ञात नहीं है। वह यूनानी काव्यालोचन का शिक्षक था। उसका काल पहली से लेकर तीसरी सदी तक होने का अनुमान है।

⇒ **क्रोञ्चे-** जन्म- 25 फरवरी, 1866 इटली

मृत्यु - 20 नवम्बर, 1952 नापोलि इटली

पत्नी- अडेले रॉसी

⇒ **प्लेटो-** जन्म 428/427 या 424/423 ईसा पूर्व एथेंस

मृत्यु- 348/347 ईसापूर्व (उम्र 80) एथेंस

राष्ट्रीयता- यूनानी

किताब- रिपब्लिक

रिपब्लिक प्लेटो द्वारा 380 ईसापूर्व के आस-पास रचित ग्रन्थ है, जिसमें सुकरात के जीवन का वर्णन है। प्लेटो के अनुसार मानव के व्यक्तित्व के तीन आन्तरिक तत्त्व होते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'ऑन दि सब्लाइम' यह लांजाइनस की रचना है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- भारतीय पाश्चात्य काव्यशास्त्र तथा आलोचना –योगेन्द्र प्रतापसिंह, पेज 197

54. विश्वनाथकविराजेन प्रतिपादितं काव्यस्वरूपं किम्?
(A) रीतिरात्मा काव्यस्य
(B) वाक्यं रसात्मकं काव्यम्
(C) रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्
(D) काव्यस्यात्मा ध्वनिः

व्याख्या-

ग्रन्थ	ग्रन्थकार	काव्यलक्षण
काव्यप्रकाश	आचार्य मम्मट	तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनःक्वापि।
साहित्यदर्पण	आचार्य विश्वनाथ	वाक्यं रसात्मकं काव्यम्
रसगङ्गाधर	पण्डितराज जगन्नाथ	रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्
काव्यालङ्कारसूत्र	वामन	रीतिरात्मा काव्यस्य
ध्वन्यालोक	आनन्दवर्धन	काव्यस्यात्मा ध्वनिः
काव्यालङ्कार	भामह	शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्
वक्रोक्तिजीवितम्	कुन्तक	वक्रोक्तिः काव्यजीवितम्
काव्यादर्श	दण्डी	शरीरं तावदिष्टार्थव्यवच्छिन्ना -पदावली
औचित्यविचारचर्चा	क्षेमेन्द्र	औचित्यं रससिद्धस्य स्थिरं-काव्यस्य जीवितम्
शृङ्गारप्रकाश	भोज	अदोषं गुणवद्काव्यमलङ्कारै-रलङ्कृतम् रसान्वितं कविः-कुर्वन् कीर्तिं प्रीतिं च विदन्ति

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि विश्वनाथ जी का काव्यलक्षण है- 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- साहित्यदर्पण- शालिग्रामशास्त्री, पेज 19

55. यशोधर्मणः मन्दसौरस्तम्भलेखस्य लिपिरस्ति–
(A) देवनागरी **(B) ब्राह्मी**
(C) खरोष्ठी **(D) शारदा**

व्याख्या- यशोधर्मन् छठी शताब्दी के आरम्भिक काल में मालवा के महाराजा थे। छठी शती ई. के द्वितीय चरण में मालवा प्रान्त के स्थानीय शासक के रूप से आगे बढ़कर यशोधर्मन् पूरे उत्तरी भारत पर छा गया।

यह लेख मन्दसौर (मध्यप्रदेश) नगर में नदी के बाएँ किनारे पर स्थित महादेव घाट की सीढ़ियों पर लगे एक शिला फलक पर अंकित मिला था। इसे 1885 में पीटर पेटर्सन ने प्रकाशित किया, किन्तु इसे ढूँढ निकालने का श्रेय फ्लीट के एक लिपिक को दिया जाता है, जिसे उन्होंने वहाँ यशोधर्मन् के अभिलेख की प्रतिलिपि करने के लिए भेजा था। तदन्तर फ्लीट ने इसे सम्पादन कर प्रकाशित किया, बाद में उनके पाठ, अनुवाद एवं व्याख्या सम्बन्धी भूलों को लेकर अनेक लेख प्रकाशित हुए हैं। इस लेख की भाषा संस्कृत एवं लिपि ब्राह्मी है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि यशोधर्मण्न् के मन्दसौर के स्तम्भ लेख की लिपि ब्राह्मी है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख (भाग-2)- परमेश्वरीलाल गुप्ता, पेज-102

56. निम्नलिखितेषु कतमं ब्राह्मणं सामवेदीयं नास्ति?
(A) ताण्ड्यब्राह्मण **(B) शतपथब्राह्मण**
(C) षड्विंशब्राह्मण **(D) छान्दोग्यब्राह्मण**

व्याख्या-ब्राह्मण ग्रन्थों के अर्थ में ब्राह्मण शब्द विभिन्न तीन अर्थों को लेकर ब्रह्मन् शब्द से अण् प्रत्यय करके बना है।
(1) वेदमन्त्रों की व्याख्या और विनियोग प्रस्तुत करने वाले ग्रन्थ को ब्राह्मण कहते हैं।
(2) शतपथ के अनुसार यज्ञों की व्याख्या और विवरण प्रस्तुत करने वाले ग्रन्थों को ब्राह्मण कहते हैं।
(3) जिन वैदिक ग्रन्थों में वैदिक रहस्यों का उद्घाटन किया गया है, उन्हें ब्राह्मण कहते हैं।

ब्राह्मण ग्रन्थों का मुख्य प्रतिपाद्य विषय यज्ञ एवं यज्ञप्रक्रिया का सर्वाङ्गीण विवेचन है।

चारों वेदों के ब्राह्मण ग्रन्थ निम्नलिखित हैं-

ऋग्वेद के ब्राह्मण- ऋग्वेद से सम्बन्धित दो ब्राह्मण ग्रन्थ हैं - 1. ऐतरेय ब्राह्मण 2. शांखायन ब्राह्मण

शुक्लयजुर्वेदीय-शतपथ ब्राह्मण

कृष्णयजुर्वेदीय- तैत्तिरीय ब्राह्मण

सामवेदीय ब्राह्मण- 1. पञ्चविंश ब्राह्मण 2. षड्विंश ब्राह्मण 3. सामविधान ब्राह्मण 4. आर्षेय ब्राह्मण 5. देवताध्याय ब्राह्मण 6. मन्त्र ब्राह्मण 7. संहितोपनिषद् ब्राह्मण 8. वंश ब्राह्मण 10 जैमिनीय या आर्षेय ब्राह्मण 11. जैमिनीय उपनिषद् या छान्दोग्य ब्राह्मण।

अथर्ववेदीय ब्राह्मण- गोपथ ब्राह्मण

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि ताण्ड्य ब्राह्मण,

षड्विंश ब्राह्मण, छान्दोग्य ब्राह्मण सामवेद से सम्बन्धित हैं। जबकि शतपथ ब्राह्मण, शुक्लयजुर्वेद से सम्बन्धित है।

अतः विकल्प 'B' सही है।

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-130

57. काण्वशतपथब्राह्मणम् केन वेदेन सम्बद्धम् अस्ति?

(A) ऋग्वेदेन **(B) अथर्ववेदेन**

(C) यजुर्वेदेन **(D) सामवेदेन**

व्याख्या- यजुर्वेद मुख्य रूप से दो भागों में विभक्त है- शुक्ल यजुर्वेद तथा कृष्णयजुर्वेद। शुक्लयजुर्वेद की भी दो शाखाएँ हैं। उनकी एक-एक संहिता प्राप्त होती है। माध्यन्दिन या वाजसनेयि संहिता तथा काण्वसंहिता।

सौ अध्याय होने के कारण शतपथ कहा जाता है, जिसकी व्याख्या गणरत्नमहोदधि आदि ने निम्न प्रकार से की है- **शतं पन्थानो मार्गानामाध्याया यस्य तत् शतपथम्** अर्थात् जिसमें सौ अध्याय रूपी मार्ग हैं, उसे शतपथ कहते हैं। काण्व शतपथ में 104 अध्याय हैं, तथापि शत संख्या के महत्त्व के कारण उसे शतपथ ही कहा जाता है। यह माध्यन्दिन और काण्व दोनों शाखाओं में उपलब्ध है। माध्यन्दिन में सौ अध्याय और काण्व में 104 अध्याय हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि काण्वशतपथ ब्राह्मण यजुर्वेद से सम्बद्ध है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-132

58. अधस्तनयुग्मानां वाल्मीकिरामायणस्योपजीविग्रन्थेषु केन सह कस्य सम्बन्धः? समुचितां तालिकां चिनुत

तालिका-I	तालिका-II
(क) रामायण मञ्जरी	i. विलोमकाव्यम्
(ख) यादवराघवीयम्	ii. चित्रकाव्यम्
(ग) अनर्घराघवम्	iii. महाकाव्यम्
(घ) रामलीलामृतम्	iv. नाटकम्

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(A)	iii	i	iv	ii
(B)	iii	iv	i	ii
(C)	ii	iv	iii	i
(D)	iv	ii	i	iii

व्याख्या⟹ रामायणमञ्जरी- आचार्य क्षेमेन्द्र के ग्रन्थों को चार श्रेणी में विभक्त किया गया है, जिसमें रामायणमञ्जरी महाकाव्य है। इस महाकाव्य में रामायण की प्रख्यात कथाओं को संक्षेप रूप में प्रस्तुत किया गया है।

⟹ **यादवराघवीयम्-** वेंकटाध्वरी (16 शतक के पूर्वार्ध) ने यादव-राघवीय नामक लघुकाव्य में विलोम पद्धति से राम और कृष्ण दोनों का एकत्र वर्णन किया है। यह श्लेषकाव्य न होकर विलोम काव्य है, जिसमें साधारण क्रम से पढ़ने पर राम का चरित निकलता है और श्लोक को उलटे क्रम से पढ़ने पर कृष्ण का इसमें 300 श्लोक हैं।

⟹ **अनर्घराघव-** मुरारि की एकमात्र कृति अनर्घराघव प्राप्त होती है। यह सात अङ्कों का नाटक है, इसमें रामायण की कथावस्तु वर्णित है। विश्वामित्र यज्ञ की रक्षा के लिए दशरथ से राम और लक्ष्मण को माँगते हैं यहाँ से लेकर रामराज्याभिषेक तक की कथा वर्णित है।

⟹ **रामलीलामृतम्-** यह एक चित्रकाव्य है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि रामायणमञ्जरी महाकाव्य, यादवराघवीयम् विलोमकाव्य, अनर्घराघवम् नाटक है रामलीलामृतम् चित्रकाव्य है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा ऋषि, पेज-532

संस्कृत साहित्य का इतिहास- बलदेव उपाध्याय, पेज-309,223

59. 'यं ब्रह्माणमियं देवी वाग्वश्येवानुवर्तते' इति केन उद्घोषितम्-

(A) भवभूतिना **(B) भासेन**

(C) माघेन **(D) भट्टनारायणेन**

व्याख्या- भवभूति प्रणीत उत्तररामचरितम् के प्रथम अङ्क में नान्दीपाठ के पश्चात् सूत्रधार भवभूति का परिचय देते हुए कहता है-

यं ब्रह्माणमियं देवी वाग्वश्येवानुवर्तते।

उत्तरं रामचरितं तत्प्रणीतं प्रयोक्ष्यते॥ (उ.रा.1.2)

यह देवी सरस्वती वशवर्तिनी के तुल्य जिस ब्रह्म भवभूति का अनुसरण करती है, उसके द्वारा बनाए हुए उत्तररामचरित नाटक का हम अभिनय करेंगे।

* राजशेखर ने निम्न श्लोक के द्वारा भास के नाटकों में स्वप्नवासवदत्तम् को सर्वश्रेष्ठ बताया है-

भासनाटकचक्रेऽपिच्छेकैः क्षिप्ते परीक्षितुम्।

स्वप्नवासवदत्तस्य दाहकोऽभून्न पावकः॥

अर्थात् समालोचकों ने भास के सभी नाटकों की कठोर परीक्षा की, किन्तु समालोचनारूपी अग्नि स्वप्नवासवदत्तम् नाटक को न जला सकी, अर्थात् स्वप्नवासवदत्तम् निर्दोष नाटक सिद्ध हुआ।

* भारतीय विद्वानों ने महाकवि माघ की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है।

माघेन विघ्नितोत्साहा नोत्सहन्ते पदक्रमे।
स्मरन्तो भारवेरेव कवयः कपयो यथा॥
जैसे माघ महीने की ठण्डक से पीड़ित बन्दर दुबक कर बैठे रहते हैं और केवल सूर्य की कान्ति का ध्यान करते हैं, वैसे ही कवि लोग माघ की प्रतिभा से अभिभूत होकर काव्य-रचना त्यागकर केवल भारवि का नाम लेते हैं।

* महाकवि भट्टनारायण द्वारा रचित एकमात्र ग्रन्थ वेणीसंहार प्राप्त होता है, जिसमें छह अङ्क हैं। इसके नायक भीम तथा नायिका द्रौपदी हैं। वेणीसंहार का प्रधान रस वीर है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि 'यं ब्रह्माणमियं देवी वाग्वश्येवानुवर्तते' यह वाक्य भवभूति के लिए है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- उत्तररामचरितम् (1.2)- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-4

60. अधस्तनीयानां युग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत

तालिका-I	तालिका-II
(क) पाणिनिः	i. वृत्तिः
(ख) कात्यायनः	ii. सूत्रम्
(ग) पतञ्जलिः	iii. वार्तिकम्
(घ) जयादित्यः	iv. इष्टिः

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(A)	i	ii	iii	iv
(B)	i	iii	ii	iv
(C)	iii	ii	iv	i
(D)	ii	iii	iv	i

व्याख्या- पाणिनि- संस्कृत भाषा के समस्त प्राचीन आर्ष व्याकरणों में एकमात्र पाणिनीय व्याकरण अपने साङ्गोपाङ्ग रूप में सम्प्रति उपलब्ध होने से प्राचीन आर्ष वाङ्मय की एक अनुपम निधि है। पाणिनीय शास्त्र के चार नाम व्यवहृत उपलब्ध होते हैं - अष्टक, अष्टाध्यायी, शब्दानुशासन और वृत्तिसूत्र।
पाणिनि ग्रन्थ आठ अध्यायों में विभक्त है, अतः उसके अष्टक और अष्टाध्यायी ये दो नाम प्रसिद्ध हुए। अष्टाध्यायी आठ अध्यायों में तथा प्रत्येक अध्याय पादों में विभक्त है। अष्टाध्यायी में लगभग चार हजार सूत्र हैं।
पाणिनीय ग्रन्थ का शब्दानुशासन नाम महाभाष्य के आरम्भ में मिलता है .... **'शब्दानुशासनं नाम शास्त्रमधिकृतं वेदितव्यम्'।** पाणिनीय ग्रन्थ के वृत्तिसूत्र पद का प्रयोग महाभाष्य आदि अनेक ग्रन्थों में उपलब्ध होता है।
कात्यायन- पाणिनीय व्याकरण पर रचे वार्तिकों में कात्यायन के ही वार्तिक को अधिक प्रसिद्धि मिली। महाभाष्य में प्रायः इन्हीं के वार्तिकों का व्याख्यान है। कात्यायन का वार्तिक पाठ,पाणिनीय व्याकरण का एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अङ्ग है। इसके बिना पाणिनीय व्याकरण अधूरा रहता है।
पतञ्जलि - पतञ्जलि का महाभाष्य कात्यायनीय वार्तिकों के आधार पर ही रचा गया है। कात्यायन का वार्तिक पाठ सम्प्रति स्वतन्त्र रूप में उपलब्ध नहीं होता।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि **विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- व्याकरण महाभाष्य- जयशंकरलाल त्रिपाठी, पेज-4-5

61. ऋग्वेदे वरुणसूक्तस्य (1.2) ऋषिः कः?
(A) शुनःशेपः **(B) मधुच्छन्दाः**
(C) हिरण्यस्तूपः **(D) गौतमः**

व्याख्या-

सूक्त	ऋषि	देवता	मन्त्र संख्या
अग्निसूक्त	मधुच्छन्दा	अग्नि	09
वरुणसूक्त	शुनःशेप	वरुण	21
इन्द्रसूक्त	गृत्समद	इन्द्र	15
विष्णुसूक्त	दीर्घतमा	विष्णु	6
सवितृसूक्त	हिरण्यस्तूप	सविता	11
पुरुषसूक्त	नारायण	पुरुष	16
हिरण्यगर्भसूक्त	हिरण्यगर्भ	क सञ्ज्ञक प्रजापति	10
वाक् सूक्त	वाक्	परमात्मा	8

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि ऋग्वेदीय वरुणसूक्त के ऋषि शुनःशेप हैं। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- ऋक्सूक्तसंग्रह-हरिदत्त शास्त्री, पेज-68

62. 'क्व सूर्यप्रभवो वंशः क्व चाल्पविषया मतिः'। इत्यत्र 'अल्पविषया मतिः' इति कस्य कृते प्रयुक्तम्?
(A) विशाखदत्तस्य **(B) भासस्य**
(C) कालिदासस्य **(D) बाणभट्टस्य**

व्याख्या-

⇒ **क्व सूर्यप्रभवो वंशः क्व चाल्पविषया मतिः।**
तितीर्षुर्दुस्तरं मोहादुडुपेनास्मि सागरम्॥ (रघु. 1.2)
प्रस्तुत श्लोक कालिदास विरचित रघुवंशम् के प्रथम सर्ग से उद्धृत है, जिसमें कालिदास अपने विषय में कहते हैं कि कहाँ सूर्य से उत्पन्न वंश और कहाँ अल्प विषय जानने वाली मेरी बुद्धि! दुस्तर समुद्र को अज्ञानता के कारण छोटी नाव से पार करना चाहता हूँ।
⇒ विशाखदत्त प्रणीत मुद्राराक्षस नाटक में सात अङ्क हैं, जिसके नायक चाणक्य चन्द्रगुप्त हैं, एवं इस नाटक में नायिका का अभाव है।

सुलभेष्वर्थलाभेषु परसंवेदने जनः।
क इदं दुष्करं कुर्यादिदानीं शिविना विना॥ (मुद्रा. 1.24)
चाणक्य द्वारा बार-बार राक्षस का परिवार माँगे जाने पर भी चन्दनदास जब अपने जीवन, परिवार व धन की परवाह किये बिना उसे नहीं सौंपता, तब चाणक्य मन-ही-मन उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए कहता है कि दूसरे की वस्तु दे देने पर, धन की प्राप्ति आसान होने पर अब अर्थात् इस कलियुग में शिवि के अतिरिक्त कौन सा मनुष्य इस कठिन कार्य को कर सकता है?

⇒ महाकवि भास द्वारा रचित प्रतिमानाटक के द्वितीय अङ्क में सीता के विषय में कहते हैं-

सूर्य इव गतो रामः सूर्य दिवस इव लक्ष्मणोऽनुगतः।
सूर्यदिवसावसाने छायेव न दृश्यते सीता॥ (प्रतिमा. 2.7)
सायंकालीन सूर्य के समान राम वन चले गए। सूर्य के पीछे जैसे दिवस चला जाता है, उसी प्रकार राम के पीछे लक्ष्मण चले गए। सूर्य और दिवस की समाप्ति पर छाया नहीं दिखती, उसी प्रकार अब सीता भी दिखाई नहीं पड़ती हैं।

⇒ हर्षचरितम् के प्रथम उच्छ्वास में बाणभट्ट कालिदास के विषय में कहते हैं-

निर्गतासु न वा कस्य कालिदासस्य सूक्तिषु।
प्रीतिर्मधुरसान्द्रासु मञ्जरीष्विव जायते॥ (हर्षचरितम् 1.16)
नई उकसी हुई मञ्जरी के समान मधुर एवं सरस कालिदास की सूक्तियों में उत्तरमात्र से ही किसे आनन्द नहीं आता।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'क्व सूर्यप्रभवो वंशः क्व चाल्पविषया मतिः', में 'अल्पविषया मतिः' कालिदास के लिए प्रयुक्त है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- रघुवंशम् (1/2)- हरगोविन्द शास्त्री, पेज 02

63. दुर्गेण कस्मिन् ग्रन्थे टीका लिखिता?
(A) बृहद्देवतायाम् (B) बौधायनगृह्यसूत्रे
(C) कात्यायनशुल्बसूत्रे (D) निरुक्ते

व्याख्या- दुर्गाचार्य द्वारा निरुक्त पर ऋज्वर्थ वृत्ति है। इसमें निरुक्त के प्रत्येक शब्द को उद्धृत करके उसकी व्याख्या की गई है। यह टीका अत्यन्त विद्वत्तापूर्ण और प्रामाणिक है। निरुक्त के उपलब्ध व्याख्याकारों में दुर्गासिंह अथवा दुर्गाचार्य, समय की दृष्टि से सर्वप्रथम माने जा सकते हैं। दुर्गाचार्य का भाष्य बहुत विस्तृत है तथा अनेक स्थानों पर इस विद्वान् भाष्यकार ने निरुक्त के वाक्यों के एक से अधिक अर्थ प्रस्तुत किए हैं। दुर्ग की टीका के अध्ययन से यह पता चलता है कि दुर्ग के समय में भी निरुक्त के कुछ प्रामादिक पाठ तथा पाठभेद विद्यमान थे।

बृहद्देवता- बृहद्देवता के रचयिता आचार्य शौनक माने गए हैं। यह आठ अध्यायों में विभक्त है, जिसमें 1200 श्लोक हैं। प्रत्येक अध्याय में प्रायः पाँच-पाँच पद्यों का वर्ग है। निरुक्त में की गयी देवता विवेचना को इसमें पल्लवित किया गया है। निरुक्त से इसमें अन्य सामग्री भी ली गयी है। बृहद्देवता निरुक्त पर आश्रित ही नहीं, अपितु उसकी आलोचना भी करती है।

बौधायन गृह्यसूत्र- बौधायन गृह्यसूत्र कृष्णयजुर्वेदीय गृह्यसूत्र है। बौधायन गृह्यसूत्र के रचयिता बोधायन हैं, इनका समय 900 ई.पू. के लगभग माना जाता है। यह बौधायन कल्पसूत्र का एक विशिष्ट अंश है। श्री शामशास्त्री द्वारा सम्पादित इसका संस्करण 1920 ई. में मैसूर से प्रकाशित हुआ।

कात्यायन शुल्बसूत्र- कात्यायन शुल्बसूत्र का सम्बन्ध शुक्ल यजुर्वेद से है। कात्यायन का समय चतुर्थ शती ई.पू. माना जाता है। इस शुल्बसूत्र को कात्यायन शुल्ब परिशिष्ट या कातीय शुल्ब परिशिष्ट भी कहते हैं। इसमें वेदियों के निर्माण के लिए आवश्यक रेखागणितीय निर्देश है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि दुर्ग द्वारा निरुक्त पर टीका लिखी गयी है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-205

64. आर्हतदर्शने चतुर्विधबन्धेषु परिगणितो नास्ति-
(A) प्रकृतिबन्धः (B) विषयबन्धः
(C) स्थितिबन्धः (D) प्रदेशबन्धः

व्याख्या- बन्ध-

'मिथ्यादर्शनाविरतिप्रमादकषायवशाद्योगवशाच्चात्मा सूक्ष्मैकक्षेत्राव-गाहिनामनन्तप्रदेशानां पुद्गलानां कर्मबन्ध-योग्यानामादानमुपश्लेषणं यत्करोति स बन्धः' अर्थात् जब मिथ्या-दर्शन, अविरति (आसक्ति) प्रमाद (असावधानी) और कषाय (पाप) के कारण तथा योग के भी कारण आत्मा उन पुद्गलों का आदान अर्थात् आलिङ्गन करती है, जो पुद्गल (शरीर) अपने सूक्ष्म क्षेत्र में प्रवेश करते हैं, अनन्त सभी स्थानों में निवास करते हैं तथा अपने पूर्वकृत कर्मों के बन्धन में पकने लायक होते हैं; इसी क्रिया का नाम बन्ध है।

बन्धन के भेद-

'बन्धश्चतुर्विध इत्युक्तं, प्रकृतिस्थित्यनुभवप्रदेशास्तद्विधयः'
प्रकृतिबन्ध, स्थितिबन्ध, अनुभवबन्ध तथा प्रदेशबन्ध के भेद से बन्धन के चार भेद हैं।

➢ **प्रकृतिबन्ध-** प्रकृतिबन्धन आठ प्रकार का होता है, इसे मूल प्रकृति भी कहते हैं तथा द्रव्यों के धर्म और अधर्म नामक कर्मों

के अनुसार इसमें अन्तर भेद भी होता है।

➢ **स्थितबन्ध-** जैसे बकरी, गाय, भैंस आदि के दूध अपने माधुर्य के स्वभाव से किसी निश्चित काल तक च्युत नहीं होते, उसी प्रकार मूल प्रकृतियों में प्रथम तीन ज्ञानवरणादि तथा अन्तराय कुल मिलाकर चार कर्मों का इस सूत्र के अनुसार उत्कृष्ट स्थिति का परिणाम करोड़ों-करोड़ों तीस सागरोपम जैसे काल हैं, इतने समय तक मतवाले (हाथी) की तरह अपने स्वभाव को न छोड़ना स्थितिबन्ध है।

➢ **अनुभवबन्ध-** जैसे बकरी, गाय, भैंस आदि के दूध में तीव्र, मन्द आदि स्वभाव के अनुसार अपने-अपने कार्य करने की विशेष सामर्थ्य की उत्पत्ति होती है, उसी प्रकार कर्म पुद्गलों की अपने कार्य करने की विशेष सामर्थ्य उत्पन्न होती है। यही अनुभवबन्ध है।

➢ **प्रदेशबन्ध-** कर्म के रूप में परिणत पुद्गलों के जो द्वयणुकादि स्कन्ध हैं, जिनके अनन्त स्थान हुआ करते हैं, उनका अपने अवयवों में प्रवेश कर जाना ही प्रदेशबन्ध है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि प्रकृतिबन्ध, स्थितिबन्ध तथा प्रदेशबन्ध ये बन्ध के अन्तर्गत परिगणित है जबकि विषयबन्ध बन्ध के अन्तर्गत परिगणित नहीं हैं। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- सर्वदर्शनसंग्रह- उमाशंकर शर्मा ऋषि,पेज-137-141

65. स्वेच्छाकेसरिणः स्वच्छस्वच्छायायासितेन्दवः।
त्रायन्तां वो मधुरिपोः प्रपन्नार्तिच्छिदो नखाः॥
इत्यस्मिन् मङ्गलाचरणे ग्रन्थकारेण इष्टदेवस्य कस्य रसाभिव्यञ्जक-स्वरूपस्य स्मरणं कृतम् -

(A) शृङ्गाररसाभिव्यञ्जकस्य
(B) वीररसाभिव्यञ्जकस्य
(C) शान्तरसाभिव्यञ्जकस्य
(D) करुणरसाभिव्यञ्जकस्य

व्याख्या- आनन्दवर्धन ध्वन्यालोक के मंगलाचरण में नृसिंह रूपी विष्णु की स्तुति करते हुए कहते हैं-

स्वेच्छाकेसरिणः स्वच्छस्वच्छायायासितेन्दवः।
त्रायन्तां वो मधुरिपोः प्रपन्नार्तिच्छिदो नखाः॥

स्वयं अपनी इच्छा से सिंह (नृसिंह) रूप धारण किए हुए मधुरिपु विष्णु भगवान् के, अपनी निर्मल कान्ति से चन्द्रमा को लज्जित करने वाले शरणागतों के दुःखनाशन में समर्थ, नख तुम सब की रक्षा करें।

स्पष्टीकरण- ग्रन्थकार ने विघ्नों के नाश और उन पर विजय प्राप्ति के लिए वीर रस के स्थायिभाव उत्साह की विशेष उपयोगिता की दृष्टि से ही ग्रन्थकार ने अपने इष्ट देव के वीररसाभिव्यञ्जक स्वरूप का स्मरण किया है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- ध्वन्यालोक (1.1)- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-1

66. पाणिनीयशिक्षायाम् अधमपाठकेषु को न परिगणितः?

(A) गीती **(B) लिखितपाठकः**
(C) पदानि विच्छिद्यपाठकः **(D) शीघ्री**

व्याख्या- महर्षि पाणिनि द्वारा रचित पाणिनीय शिक्षा ऋग्वेद का शिक्षा ग्रन्थ है, जिसमें साठ श्लोक हैं। पाणिनीय शिक्षा में स्वर, व्यञ्जन, अधम पाठक, उत्तम पाठक आदि के लक्षण वर्णित हैं-

गीती शीघ्री शिरःकम्पी तथा लिखितपाठकः।
अनर्थज्ञोऽल्पकण्ठश्च षडेते पाठकाधमाः॥ (पा.शि.32)

गाने की तरह पढ़ने वाला, ज्यादा शीघ्रता से पढ़ने वाला, शिर हिलाकर पढ़ने वाला, अनभ्यस्त अकण्ठस्थीकृत वेदादिशास्त्र को लेखन के आधार पर पढ़ने वाला, अर्थज्ञान के बिना पढ़ने वाला और शुष्ककण्ठत्व-न्यूनप्राणत्वादि दोषयुक्त रूप में पढ़ने वाला ये छह प्रकार के पाठक पाठकों में अधम हैं।

उत्तम पाठक के लक्षण-

माधुर्यमक्षरव्यक्तिः पदच्छेदस्तु सुस्वरः।
धैर्यं लयसमर्थं च षडेते पाठका गुणाः॥ (पा.शि.33)

मधुरता, वर्णों की स्पष्टता, पद विभाग, सुस्वरता, लययुक्तता ये छह पाठक सम्बन्धी गुण जानने चाहिए।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि गीती, लिखित पाठक तथा शीघ्री ये अधम पाठक के लक्षण हैं, जबकि पदानि विच्छिद्य पाठकः' यह अधम पाठक के लक्षण में नहीं है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- पाणिनीय शिक्षा- शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन,पेज-43

67. 'विभागं चेत्पिता कुर्यादिच्छया विभजेत्सुतान्।' इति कस्य ग्रन्थस्य वचनमस्ति?

(A) मनुस्मृत्याः **(B) याज्ञवल्क्यस्मृत्याः**
(C) पराशरस्मृत्याः **(D) नारदस्मृत्याः**

व्याख्या-

विभागं चेत्पिता कुर्यादिच्छया विभजेत्सुतान्।
ज्येष्ठं वा श्रेष्ठभागेन सर्वे वा स्युः समांशिनः॥ (याज्ञ.2.114)

उपर्युक्त श्लोक याज्ञवल्क्यस्मृति के व्यवहाराध्याय से उद्धृत है, जिसमें दाय के दो भेद करते हुए याज्ञवल्क्य कहते हैं- यदि पिता सम्पत्ति का विभाग करें, तो उसे अपनी इच्छानुसार पुत्रों में बाँटे।

ज्येष्ठ पुत्र को श्रेष्ठभाग, मझले को मध्यम और सबसे छोटे को कनिष्ठ भाग देकर विभाजन करें; अथवा सबको समान अंश दे। याज्ञवल्क्यस्मृति में लेख्य के दो प्रकार बताए हैं-

यः कश्चिदर्थो निष्णातः स्वरुच्या तु परस्परम्।
लेख्यं तु साक्षिमत्कार्यं तस्मिन्धनिकपूर्वकम्॥ (याज्ञ 2.84)

जब धनी और अधमर्ण ऋण में अपनी इच्छा से परस्पर कोई बात तय हुई हो, तो साक्षियों के सामने उसे लिख देना चाहिए। लेख में धनिक का उल्लेख करें।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि विभागं चेत्पिता कुर्यादिच्छया विभजेत्सुतान्, यह पंक्ति याज्ञवल्क्यस्मृति के द्वितीय अध्याय (व्यवहाराध्याय) में वर्णित है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्त्रोत- याज्ञवल्क्यस्मृति (2.114)

68. आकृतिमूलकवर्गीकरणे हिन्दीभाषा मन्यते-

(A) प्रश्लिष्ट बहिर्मुखी

(B) श्लिष्ट बहिर्मुखी वियोगात्मिका

(C) श्लिष्ट बहिर्मुखी संयोगात्मिका

(D) श्लिष्टान्त वियोगात्मिका

व्याख्या- विश्व की भाषाओं के दो प्रकार के वर्गीकरण हैं- आकृतिमूलक और पारिवारिक। आकृतिमूलक वर्गीकरण के दो भेद हैं- योगात्मक और अयोगात्मक। योगात्मक के तीन भेद हैं- श्लिष्ट योगात्मक, अश्लिष्ट योगात्मक तथा प्रश्लिष्ट योगात्मक। योगात्मक भाषाएँ प्रकृति और प्रत्यय के संयोग से बनी हुई होती हैं। इस वर्गीकरण का श्रेय 'प्रो. श्लेगल' को है।

आकृतिमूलक वर्गीकरण-

आकृतिमूलक वर्गीकरण का आधार पदों और वाक्यों की रचना है। पद किस प्रकार बनते हैं, वाक्यों की रचना किस प्रकार होती है, इस आधार पर किए जाने वाले वर्गीकरण को आकृतिमूलक कहते हैं। इसे पदरचनात्मक वर्गीकरण भी कहते हैं। इस वर्गीकरण को सिन्टैक्स वाक्यरचना के आधार पर होने से 'वाक्य रचनात्मक' और टाइप के आधार पर होने से 'टिपिकल रूपात्मक' भी कहते हैं।

आकृतिमूलक वर्गीकरण

भाषा **अश्लिष्ट** **योगात्मक**

श्लिष्ट

अन्तर्मुखी बहिर्मुखी

संयोगात्मक (अरबी) वियोगात्मक (हिब्रू) संयोगात्मक (संस्कृत) वियोगात्मक (हिन्दी)

प्रश्लिष्ट

पूर्णप्रश्लिष्ट (चेरोफी) आंशिक प्रश्लिष्ट (बास्क)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि श्लिष्ट बहिर्मुखी वियोगात्मिका, यह आकृतिमूलक वर्गीकरण से सम्बन्धित है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्त्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र- कपिलदेव द्विवेदी, पेज 357

69. निम्नलिखितेषु ऋग्वेदस्य प्राचीनतमो भाष्यकारः कोऽस्ति?

(A) वेङ्कटमाधव **(B) सायण**

(C) उव्वट **(D) स्कन्दस्वामी**

व्याख्या- स्कन्दस्वामी- मन्त्रक्रम से ऋग्वेद के भाष्य करने वाले उपलब्ध भाष्यकारों में स्कन्दस्वामी सबसे प्राचीन भाष्यकार हैं। उनके भाष्य के प्रत्येक अध्याय के अन्त में यह श्लोक उद्धृत है-

बलभीविनिवासस्येतामृगर्थागमसंहृतिम्।
भर्तृध्रुवसुतश्चक्रे स्कन्दस्वामी यथास्मृति॥

ये स्कन्दस्वामी गुजरात की प्रसिद्ध नगरी बलभी के निवासी थे। इनके पिता का नाम भर्तृध्रुव था। ये शतपथ ब्राह्मण के भाष्यकार हरिस्वामी के गुरु थे। स्कन्दस्वामी ने 600-625 ई. के मध्य ऋग्वेद पर भाष्य लिखा था।

वेंकटमाधव- सम्पूर्ण ऋग्वेद पर वेंकटमाधव ने अपना भाष्य लिखा है और वह आज उपलब्ध है। वेंकटमाधव के पितामह का नाम माधव, पिता का नाम वेंकट तथा माता का नाम सुन्दरी था। वेंकटमाधव का समय 13वीं शती से पूर्व है। वेंकटमाधव का भाष्य अभी तक चार स्थानों से प्रकाशित हुआ है। सर्वप्रथम पं.

साम्बशिव शास्त्री के सम्पादकत्व में त्रिवेन्द्रम् संस्कृत सीरीज में दो भागों में क्रमशः 1929ई. तथा 1935ई. में इसका प्रकाशन हुआ।

सायण- वेद के भाष्यकारों में सायण का स्थान सर्वोपरि है। वैदिक साहित्य में उपलब्ध प्रायः सभी ग्रन्थों पर इन्होंने अपना भाष्य लिखा। सायण आन्ध्र प्रान्त के अन्तर्गत तुङ्गभद्रा नदी के दक्षिण तट पर स्थित विजयनगर राज्य के निवासी थे। इनके पिता का नाम मायण तथा माता का नाम श्रीमती या श्रीमायी था। आचार्य सायण का समय 1315ई.से 1387ई. तक है।

उव्वट- यह नाम उव्वट और उवट दोनों प्रकार से लिखा जाता है। यजुर्वेद भाष्य के अन्त में इन्होंने अपना परिचय दिया है। ये आनन्दपुर निवासी वज्रट के पुत्र थे। राजा भोज के शासनकाल में इन्होंने वेदभाष्य किया। इनका समय 11वीं शती ई. है। इन्होंने यजुर्वेद भाष्य के अतिरिक्त निम्नलिखित ग्रन्थ लिखे-

1. ऋक्प्रातिशाख्य की टीका
2. यजुःप्रातिशाख्य की टीका
3. ऋक्सर्वानुक्रमणी पर भाष्य
4. ईशोपनिषद् पर भाष्य।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि ऋग्वेद के सबसे प्राचीन भाष्यकार स्कन्दस्वामी हैं। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज 22

70. शब्दे व्याकरणे स्वीकारे महाभाष्ये का शङ्का नोत्थापिता?

(A) ल्युडर्थस्य अनुपपन्नतायाः
(B) तत्र भव इत्यस्य अनुपपन्नतायाः
(C) प्रोक्तादीनां तद्धितार्थानाम् अनुपपन्नतायाः
(D) षष्ठ्यर्थस्य अनुपपन्नतायाः

व्याख्या- व्याकरण महाभाष्य के पस्पशाह्निक में व्याकरण को शब्द मानने पर तीन दोष तथा सूत्र मानने पर दो दोष होते हैं-

व्याकरण का अर्थ शब्द मानने पर तीन दोष-

1. ल्युट् प्रत्यय के अर्थ की अनुपपत्ति- 'शब्द पक्ष में' व्याक्रियते शब्दा अनेन इस व्युत्पत्ति में वि+आङ्+कृ+ल्युट् =अन यहाँ करण अर्थ में ल्युट् होता है, किन्तु व्याकरण का अर्थ शब्द मानने पर यह अर्थ उत्पन्न नहीं हो सकता, क्योंकि व्याकरण = शब्द के द्वारा किसी की व्युत्पत्तिव्याकृति नहीं की जाती है। इसके विपरीत शब्द की ही व्याकृति (प्रकृति-प्रत्यय विभागादि-ज्ञान) की जाती है। अतः शब्द व्याकृति का कारण नहीं अपितु कर्म है।

2. 'तत्र भवः' भव अर्थ वाले तद्धित प्रत्यय की 'अनुपपत्ति- व्याकरणे भवो योगः वैयाकरणः' कहा जाता है, परन्तु व्याकरण=शब्द में तो कोई योग नहीं होता है, अपितु एक सूत्र में ही कहीं-कहीं दूसरा योग सूत्र कल्पित कर लिया जाता है।

3. प्रोक्त अर्थ वाले तद्धित प्रत्यय भी नहीं उपपन्न होते हैं, क्योंकि पाणिनिना प्रोक्तम् इस अर्थ में पाणिनीयम् आदि शब्द बनाने के लिए 'तेन प्रोक्तम्' से तद्धित प्रत्यय होते हैं, परन्तु व्याकरण शब्द मानने पर ये प्रत्यय नहीं हो सकते, क्योंकि पाणिनि आदि के द्वारा प्रोक्त शब्द नहीं अपितु सूत्र ही प्रोक्त है।

व्याकरण का अर्थ सूत्र मानने पर दोष-

1. व्याकरणसूत्रम् - यहाँ षष्ठी का अर्थ उपपन्न नहीं हो सकता, क्योंकि षष्ठी का अर्थ सम्बन्ध है और वह दो भिन्न पदार्थों में ही होता है, जैसे राज्ञः पुरुषः। परन्तु जब व्याकरण शब्द का अर्थ सूत्र माना जाता है, तब व्याकरण और सूत्र एक ही हो जाते हैं, दोनों में भेद नहीं है, अतः षष्ठ्यर्थ भेद सम्बन्ध की उपपत्ति नहीं हो सकती।

2. दूसरा दोष यह है कि 'व्याकरणात् शब्दान् प्रतिपद्यामहे' अर्थात् व्याकरण से शब्दों का ज्ञान करते हैं, ऐसा व्यवहार होता है, किन्तु इस सूत्रपक्ष में नहीं हो सकता क्योंकि केवल सूत्र से शब्दों की प्रतिपत्ति का ज्ञान नहीं होता है। उसके लिए तो व्याख्यान की भी आवश्यकता पड़ती है। उदाहरण, प्रत्युदाहरण, वाक्य का अध्याहार ये सब मिलकर ही व्याख्यान होते हैं। केवल सूत्र का सन्धिविच्छेद कर देना व्याख्यान नहीं है।

अतः व्याकरण का अर्थ सूत्र को मानने पर उक्त दो दोष हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि व्याकरण का अर्थ शब्द मानने पर षष्ठ्यर्थ अनुपपन्नता के विषय में शंका नहीं उठायी गयी। **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत- व्याकरण महाभाष्य- जयशङ्करलाल त्रिपाठी, पेज 119-123

71. अशोकस्य शाहबाजगढी अभिलेखः कुत्र प्राप्यते?

(A) जूनागढ़ गुजरातप्रान्ते (B) पेशावर-पाकिस्तानदेशे
(C) गुर्जरा मध्यप्रदेशे (D) भावू राजस्थान प्रदेशे

व्याख्या- अशोक पहला भारतीय शासक था, जिसने अभिलेखों के सहारे सीधे अपनी प्रजा को सम्बोधित किया। अशोक के अभिलेखों की भाषा प्राकृत थी। दक्षिण भारत में अशोक के जो भी अभिलेख मिले हैं, वे अधिकतर दक्षिण के सोने की खानों के आस-पास मिले हैं। अशोक के अभिलेखों का विभाजन तीन वर्गों में किया जा सकता है-

शिलालेख, स्तम्भलेख, और गुहालेख।

शिलालेख
दीर्घशिलालेख — लघुशिलालेख

दीर्घ शिलालेख- इनको चतुर्दश शिलालेख भी कहते हैं, क्योंकि

यह 14 लेखों का समुच्चय है; जो कि आठ स्थानों से प्राप्त हुए हैं।

बृहद् शिलालेख	स्थिति	खोजकर्ता	वर्ष
शाहबाजगढ़ी	पाकिस्तान का पेशावर जिला	जनरलकोर्ट	1836
मानसेहरा	पाकिस्तान का हाजरा जिला	कनिंघम, कैप्टन ले.	
कालसी	उत्तराखण्ड का देहरादून जिला	फोरेस्ट	1860
गिरनार	गुजरात के जूनागढ़ में	कर्नलटाड	1822
एर्रगुडि	आन्ध्रप्रदेश का कर्नूल जिला	अणुघोष	1929
धौली	ओडिशा का पुरी जिला	किटो	1837
जौगड़	ओडिशा का गंजाम जिला	वाल्टर इलियट	1850
सोपारा	महाराष्ट्र का थाने जिला	--	--

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि अशोक का शाहबाजगढ़ी अभिलेख पाकिस्तान के पेशावर जिले से जनरल कोर्ट के द्वारा 1836ई. में प्राप्त हुआ। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- प्राचीन भारत- सौरभ चौबे, पेज-208

72. तर्कभाषानुसारम् इन्द्रियार्थसन्निकर्षः कस्य करणम्?

(A) अनुमानस्य **(B) प्रत्यक्षस्य**

(C) उपमानस्य **(D) इन्द्रियस्य**

व्याख्या- आचार्य केशवमिश्र प्रणीत तर्कभाषा न्यायदर्शन का प्रकरण ग्रन्थ है, जिसमें सोलह पदार्थों का विवेचन है। तर्कभाषा में चार प्रकार के प्रमाणों का वर्णन है-

प्रत्यक्ष प्रमाण- साक्षात्कारिप्रमाकरणं प्रत्यक्षम्। साक्षात्कारिणी च प्रमा सैवोच्यते या इन्द्रियजा, अर्थात् साक्षात्कार करने वाली प्रमा का करण प्रत्यक्ष कहलाता और साक्षात्कार करने वाली प्रमा वह है, जो इन्द्रिय से उत्पन्न होती है।

प्रत्यक्ष प्रमा के दो भेद हैं- सविकल्पक तथा निर्विकल्पक और इसका करण तीन प्रकार का है-

(i) कभी इन्द्रिय

(ii) कभी इन्द्रियार्थ–सन्निकर्ष

(iii) कभी ज्ञान।

प्रत्यक्ष प्रमा का द्वितीय करण है। इन्द्रियार्थसन्निकर्ष उसके विषय में कहते हैं- **'यदा निर्विकल्पकानन्तरं सविकल्पकं नामजात्यादियोजनात्मकं डित्थोऽयं, ब्राह्मणोऽयं, श्यामोऽयमेति विशेषणविशेष्यावगाहि ज्ञानमुत्पद्यते, तदेन्द्रियार्थसन्निकर्षः करणम्'** अर्थात् निर्विकल्पक ज्ञान के अनन्तर नाम जाति आदि से विशिष्ट यह डित्थ है, ब्राह्मण है, यह श्याम है, इस प्रकार का विशेषण तथा विशेष्य का ग्रहण करने वाला सविकल्पक ज्ञान उत्पन्न होता है, तब इन्द्रियार्थसन्निकर्ष करण होता है।

इन्द्रिय तथा अर्थ का जो सन्निकर्ष प्रत्यक्ष ज्ञान का निमित्त होता है, वह छः प्रकार का होता है- 1. संयोग 2. संयुक्तसमवाय 3. संयुक्तसमवेत समवाय 4. समवाय 5. समवेत समवाय 6. विशेष्य-विशेषणभाव

अनुमान प्रमाण- 'लिङ्गपरामर्शोऽनुमानम्। येन हि अनुमीयते तदनुमानम्। लिङ्गपरामर्शेन चानुमीयतेऽतो लिङ्गपरामर्शोऽनुमानम्' लिङ्गपरामर्श ही अनुमान है, जिससे अनुमिति की जाती है वह अनुमान कहलाता है। लिङ्गपरामर्श से अनुमिति की जाती है, अतः लिङ्गपरामर्श ही अनुमान है।

उपमान प्रमाण- 'अतिदेशवाक्यार्थस्मरणसहकृतं गोसादृश्यविशिष्ट-पिण्डज्ञानमुपमानम्' अतिदेश वाक्य के अर्थ का स्मरण करने के साथ गौ की समानता से युक्त पिण्ड का ज्ञान ही उपमान है।

उपमान प्रमाण में उपमिति प्रमा का करण है। गौ की समानता से युक्त पिण्ड ज्ञान के पश्चात् यह पिण्ड गवय शब्द का वाच्य है। इस प्रकार जो गवय शब्द तथा सञ्ज्ञी वस्तु गोसदृश पिण्ड के सम्बन्ध की प्रतीति होती है, वह उपमिति कहलाती है।

'सञ्ज्ञासञ्ज्ञिसम्बन्धप्रतीतिरुपमितिः' अर्थात् सञ्ज्ञा और सञ्ज्ञी के सम्बन्ध की प्रतीति ही उपमिति है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि इन्द्रियार्थसन्निकर्ष प्रत्यक्ष प्रमा का करण है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- तर्कभाषा- आचार्य विश्वेश्वर, पेज 53

73. अनुमितिज्ञाने व्यापार उच्यते?

(A) करणम् **(B) परामर्शः**

(C) व्याप्तिः **(D) हेतुः**

व्याख्या- विश्वनाथपञ्चानन भट्टाचार्य द्वारा रचित न्यायसिद्धान्तमुक्तावली में अनुमान प्रमाण के प्रसंग में अनुमिति का लक्षण करते हुए कहते हैं- अनुमिति में व्याप्ति का ज्ञान ही करण होता है और परामर्श ही व्यापार होता है। जैसे कि जिस पुरुष ने महानस आदि में, धुएँ

आदि में आग की व्याप्ति का ग्रहण किया है अर्थात् धुआँ और आग का व्यभिचाररहित सम्बन्ध जान लिया है, बाद में वही पुरुष कहीं पर्वत आदि में मूल से विच्छेद न हुए धुएँ की रेखा को देख लेता है, उसके बाद धुआँ वह्नि से व्याप्य है इस प्रकार की व्याप्ति का स्मरण उसको हो जाता है और बाद में यह वह्नि से व्याप्य धुएँ वाला है ऐसा ज्ञान हो जाता है। यही ज्ञान परामर्श कहा जाता है। उसके बाद पर्वत वह्नि से युक्त है, ऐसी अनुमिति हो जाती है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि अनुमिति ज्ञान में परामर्श ही व्यापार होता है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- न्यायसिद्धान्तमुक्तावली (अनुमानखण्ड-66)- गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज-1

74. अधोलिखितेषु केन्टुम् वर्गे नास्ति

(A) जर्मनभाषा **(B) रूसीभाषा**

(C) फ्रेञ्चभाषा **(D) ग्रीकभाषा**

व्याख्या- भारोपीय परिवार की भाषाओं को ध्वनि के आधार पर दो भागों में विभाजित किया गया है- 1. केन्टुम् वर्ग 2. शतम् वर्ग। इस विभाजन का श्रेय 'प्रो. अस्कोली' को जाता है। यह विभाजन उन्होंने 1870 ई. में किया। भारोपीय परिवार का विभाजन निम्नवत् है-

भारोपीय परिवार

शतम् वर्ग	केन्टुम् वर्ग
(1) भारत-ईरानी	(1) ग्रीक
(2) बाल्टो-स्लाविक	(2) केल्टिक
(3) आर्मीनी	(3) जर्मानिक या ट्यूटानिक
(4) अल्बानी	(4) इटालिक
	(5) हिटाइट
	(6) तोखारी

इटालिक या रोमान्स वर्ग का क्षेत्रीय विभाजन इस प्रकार है- 1. इटालियन 2. फ्रेञ्च 3. स्पेनिश 4. रूमानियन 5. पुर्तगाली

बाल्टो-स्लाविक- शतम् वर्ग- रूसी भाषा

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि जर्मन, फ्रेञ्च, ग्रीक, केन्टुम् वर्ग के अन्तर्गत हैं, जबकि रूसी भाषा शतम् वर्ग के अन्तर्गत परिगणित है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-385

75. कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः, अत्र 'जिजीविषेत्' पदस्य कोऽर्थः ?

(A) जीवितुमिच्छेत् **(B) जेतुमिच्छेत्**

(C) ज्ञातुमिच्छेत् **(D) प्राप्तुमिच्छेत्**

व्याख्या-

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे॥ (ईशो.-2)

उपर्युक्त मन्त्र शुक्लयजुर्वेद से सम्बन्धित ईशावास्योपनिषद् से उद्धृत है। प्रस्तुत मन्त्र में श्रुति का यह उपदेश है कि आत्मतत्त्व से अपरिचित व्यक्ति के आत्मोपलब्धि (आत्मज्ञान) के अयोग्य होने के कारण उसके पूर्व चित्तशुद्धय शास्त्र विहित अग्निहोत्र कर्म निष्काम भाव से करें।

मन्त्रार्थ- इस लोक में शास्त्र विहित कर्मों को करते हुए ही सौ वर्ष जीवित रहने की इच्छा करें। जिस प्रकार तुझ मनुष्य में कर्म लिप्त नहीं होता है, इससे भिन्न अन्य कोई मार्ग नहीं है।

पदों के अर्थ-

कुर्वन्नेव- निर्वर्तयन्नेवेह कर्माण्यग्निहोत्रादीनि

जिजीविषेत् - जीवितुमिच्छेत्

शतम् - शतसंख्याकाः समाः संवत्सरान्

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि जिजीविषेत् पद का अर्थ जीवितुमिच्छेत् है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- ईशादि नौ उपनिषद्- गीता प्रेस, पेज-28

76. महाभारतोपजीविकाव्यं नास्ति

(A) बृहत्कथामञ्जरी **(B) शिशुपालवधम्**

(C) मध्यमव्यायोग **(D) भारतमञ्जरी**

व्याख्या-

बृहत्कथामञ्जरी- आचार्य क्षेमेन्द्र ने आचार्य गुणाढ्य की बृहत्कथा का अनुवाद इस ग्रन्थ में प्रस्तुत किया। बृहत्कथामञ्जरी में 18 लम्बक अर्थात् अध्याय हैं। इस कथा का नायक वत्सराज उदयन का पुत्र नरवाहनदत्त है। प्राचीन कथानकों को सरस शैली में क्षेमेन्द्र ने निबद्ध किया है। क्षेमेन्द्र ने सूचित किया है कि उन्हें मूल बृहत्कथा की प्रति उपलब्ध थी।

शिशुपालवधम्- महाकवि माघ द्वारा रचित शिशुपालवध महाकाव्य में 20 सर्ग हैं, जिसका उपजीव्य महाभारत का सभापर्व है। शिशुपालवध महाकाव्य का नायक श्रीकृष्ण तथा प्रतिनायक शिशुपाल है।

मध्यमव्यायोग- महाकवि भास द्वारा मध्यमव्यायोग नामक एकांकी नाटक है। मध्यम पाण्डव भीम के द्वारा घटोत्कच के हाथ से एक ब्राह्मण पुत्र को बचाने का वर्णन है। भीम अपने पुत्र घटोत्कच को

देखकर आनन्दित होता है तथा पत्नी हिडिम्बा से उसका पुनर्मिलन होता है। यह महाभारताश्रित रूपक है।

भारतमञ्जरी- आचार्य क्षेमेन्द्र द्वारा भारतमञ्जरी महाभारत का संक्षिप्त रूपान्तर है। इस रचना के द्वारा क्षेमेन्द्र ने साहित्य जगत् में बड़ी प्रतिष्ठा प्राप्त की और उन्हें इसी रचना के कारण 'व्यासदास' की उपाधि दी गयी। इसमें 10892 श्लोक तथा 19 पर्व हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि शिशुपालवधम्,मध्यमव्यायोग तथा भारतमञ्जरी महाभारत पर आश्रित हैं, जबकि बृहत्कथामञ्जरी गुणाढ्य की बृहत्कथा पर आश्रित है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा ऋषि, पेज-424

77. दर्शयज्ञः कस्यां तिथौ क्रियते

(A) पौर्णमास्याम् **(B) अमावस्याम्**
(C) अष्टम्याम् **(D) चतुर्दश्याम्**

व्याख्या- अथर्ववेद में उल्लेख है कि सर्वप्रथम अथर्वा ऋषि ने ही यज्ञपद्धति का आविष्कार किया और उसका प्रचार किया। अंगिरस् ऋषियों ने यज्ञ की उपयोगिता आदि पर मनन-चिन्तन किया और उसके फलस्वरूप अन्न आदि प्राप्त किया।

* ऐतरेय ब्राह्मण में समस्त श्रौतयज्ञों को पाँच भागों में बाँटा गया है- 1. अग्निहोत्र 2. दर्शपौर्णमास 3. चातुर्मास्य 4. पशु 5. सोम दर्शपौर्णमास यज्ञ दो यज्ञों का सम्मिलित रूप है- दर्शयज्ञ तथा पौर्णमास यज्ञ।

दर्शयज्ञ अमावस्या तथा पौर्णमास यज्ञ पूर्णिमा को किया जाता है। दर्शयज्ञ (अमावस्या) में अग्नि के लिए पुरोडाश और इन्द्र के लिए दही तथा दूध के बने द्रव्य की आहुतियाँ दी जाती हैं। पौर्णमास यज्ञ (पूर्णिमा) में अग्नि और सोम के लिए घी और पुरोडाश (पिसे हुए चावल का पूआ) की आहुति दी जाती है।

स्पष्टीकरण- विवेचन से स्पष्ट है कि दर्शयज्ञ अमावस्या तिथि को किया जाता है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- श्रौतयज्ञ परिचय-वेणीरामशर्मा गौड़, पेज-8

78. 'यो जात एव प्रथमो मनस्वान् देवो देवान् क्रतुना पर्यभूषत्' मन्त्रांशोऽयं कस्य सूक्तस्य विद्यते?

(A) सूर्यसूक्तस्य **(B) वरुणसूक्तस्य**
(C) अग्निसूक्तस्य **(D) इन्द्रसूक्तस्य**

व्याख्या ⇒ इन्द्रसूक्त-

यो जात एव प्रथमो मनस्वान् देवो देवान् क्रतुना पर्यभूषत्।
यस्य शुष्माद्रोदसी अभ्यसेतां नृम्णस्य मह्ना स जनास इन्द्रः॥
(ऋ. 2.12.1)

उपर्युक्त मन्त्र ऋग्वेद के द्वितीय मण्डल के 12वें सूक्त से उद्धृत, है जिसे इन्द्रसूक्त के नाम से जाना जाता है। इस सूक्त के ऋषि गृत्समद तथा देवता इन्द्र हैं। मन्त्र में प्रयुक्त छन्द त्रिष्टुप् है।

मन्त्रार्थ- हे मनुष्यों! अथवा हे असुरों! जो उत्पन्न होते ही सब देवताओं में प्रमुख परम मनस्वी हुआ, दिव्य गुणों से युक्त होते हुए जिसने यज्ञ से या वृत्र के वध आदि कर्मों से अन्य देवताओं को अलंकृत किया, या अन्य देवताओं की शक्ति का अतिक्रमण किया, जिसके शारीरिक बल से द्युलोक, पृथिवी लोक डरते थे, या काँपते थे, महती सेना के महत्त्व से युक्त वही इन्द्र है।

⇒ सूर्यसूक्त-

चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः।
आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च॥
(ऋ. 1.115.1)

उपर्युक्त ऋचा ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के 115वें सूक्त के रूप में उद्धृत है, जिसे सूर्यसूक्त के रूप में जाना जाता है, इस सूक्त के ऋषि कुत्स तथा देवता सूर्य हैं। मन्त्र में प्रयुक्त छन्द त्रिष्टुप् है।

मन्त्रार्थ- किरणों का या देवताओं का समूह रूप, आश्चर्यजनक और मित्र, वरुण एवं अग्नि का अर्थात् सम्पूर्ण संसार का चक्षु अर्थात् प्रकाशक वह सूर्य देवता उदय हुआ है। उदय होने के बाद उसने द्युलोक, पृथिवी लोक और अन्तरिक्ष लोक को सब ओर से प्रकाश से भर दिया है। वह सूर्य जङ्गम अर्थात् गतिशील और तस्थुष अर्थात् स्थावर संसार की आत्मा है। सूर्य उदय होने पर स्थावर और जङ्गम की संसार में वृद्धि होती है।

⇒ वरुण सूक्त-

यच्चिद्धि ते विशो यथा प्र देव वरुण व्रतम्।
मिनीमसि द्यविद्यवि॥ (ऋ.1.25.1)

उपर्युक्त मन्त्र ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के 25वें सूक्त के रूप में उद्धृत है जिसे वरुण सूक्त के रूप में जाना जाता है। इस सूक्त के ऋषि शुनःशेप तथा देवता वरुण हैं। मन्त्र में प्रयुक्त छन्द गायत्री है।

मन्त्रार्थ- हे वरुण देव! जिस प्रकार संसार में प्रजाजन कभी प्रमाद करते हैं, उसी प्रकार हम भी आपके नियमों का जो कुछ भी प्रतिदिन प्रमाद से उल्लंघन करते हैं, हमारे प्रमादों का परिमार्जन करके उन नियमों को पूर्ण बनाइए।

अग्निसूक्त- अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्।
होतारं रत्नधातमम्॥ (ऋ. 1.1.1)

यजमान की कामनाओं को पूरा करने वाले यज्ञ के पुरोहित, दान आदि गुणों से सम्पन्न, देवताओं के ऋत्विक् और होता एवं रत्नों अर्थात् यज्ञ के फलस्वरूप प्राप्त होने वाले श्रेष्ठ पदार्थों को धारण करने वाले अग्नि देवता की मैं ऋषि स्तुति करता हूँ।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि 'यो जात एव प्रथमो मनस्वान् देवो देवान् क्रतुना पर्यभूषत्,' मन्त्र इन्द्र सूक्त से उद्धृत है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- ऋक्सूक्तसंग्रह (2.12.1)- हरिदत्त शास्त्री, पेज-177

79. भावनायां लिङ्गादिज्ञानं करणं भवति -
(A) भावनोत्पादकत्वेन
(B) शब्दभावनानिवर्तकत्वेन
(C) आर्थीभावनोत्पादकत्वेन
(D) शब्दभावनाभाव्यनिर्वर्तकत्वेन

व्याख्या- लौगाक्षिभास्कर प्रणीत अर्थसंग्रह मीमांसा का प्रकरण ग्रन्थ है, जिसमें भावना का लक्षण निम्नवत् है-
'भावना नाम भवितुर्भवनानुकूलो भावयितुर्व्यापारविशेषः' उत्पन्न होने वाली की उत्पत्ति में अनुकूल, उत्पत्ति का कारणभूत जो उत्पादयिता का व्यापारविशेष होता है, उसका नाम भावना है। भावना के दो भेद हैं- शाब्दीभावना तथा आर्थीभावना।
⇒ **शाब्दीभावना- 'तत्र पुरुषप्रवृत्त्यनुकूलो भावयितुर्व्यापारविशेषः शाब्दीभावना'–** अर्थात् उनमें भावयिता का पुरुष में प्रवृत्ति उत्पन्न करने वाला व्यापारविशेष शाब्दी भावना है।
शाब्दी भावना वैदिक वाक्य में प्रयोजक पुरुष का अभाव होने के कारण लिङ्गादिशब्दनिष्ठ होती है। इसीलिए 'शाब्दीभावना' इस नाम का व्यवहार किया जाता है। शाब्दी भावना के तीन अंश होते हैं– साध्य, साधन तथा इतिकर्त्तव्यता, साधन की आकांक्षा होने पर लिङ्ग आदि का ज्ञान करण के रूप में अन्वित होता है, किन्तु उसका करणत्व भावनोत्पादक के रूप में नहीं है, क्योंकि उसके लिङ्गादिज्ञान के पहले भी शब्द में उसकी सत्ता रहती है किन्तु भावना का प्रकाशक होने से अथवा शाब्दी भावना के भाव्य का सम्पादक होने से ही लिङ्गादिज्ञान शाब्दीभावना का हेतु है-
'किन्तु भावनाज्ञापकत्वेन शब्दभावनाभाव्यनिर्वर्तकत्वेन वा'।
⇒ **आर्थी भावना- 'प्रयोजनेच्छाजनितक्रियाविषयव्यापार आर्थीभावना'**
अर्थात् प्रयोजन विषयक इच्छा से उत्पन्न क्रिया विषयक व्यापार आर्थी भावना है।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि भावना में लिङ्गादि ज्ञान करण में शब्दभावनाभाव्यनिर्वर्तकत्वेन है।
अतः विकल्प 'D' सही है।

स्रोत- अर्थसंग्रह- वाचस्पति उपाध्याय, पेज-25

80. अधोलिखितेषु खकारस्य बाह्यप्रयत्नविषयकम् उपयुक्तं विकल्पं चिनुत-
(A) विवारः श्वासः अघोषः अल्पप्राणः
(B) संवारः नादः घोषः अल्पप्राणः
(C) विवारः श्वासः अघोषः महाप्राणः
(D) संवारः नादः घोषः महाप्राणः

व्याख्या- यत्न या प्रयत्न दो प्रकार के होते हैं- आभ्यन्तर प्रयत्न तथा बाह्य प्रयत्न। आभ्यन्तर प्रयत्न पाँच प्रकार के होते हैं- 1. स्पृष्ट 2. ईषत्स्पृष्ट 3. विवृत 4. ईषत्विवृत 5. संवृत
बाह्यप्रयत्न के 11 भेद होते हैं-
1. विवार 2. संवार 3. श्वास 4. नाद 5. घोष 6. अघोष 7. अल्पप्राण 8. महाप्राण 9. उदात्त 10. अनुदात्त 11. स्वरित।
बाह्यप्रयत्न का प्रत्याहारों के आधार पर विभाजन निम्नवत् है-

विवार,श्वास,अघोष	संवार,नाद,घोष	अल्पप्राण	महाप्राण	उदात्त अनुदात्त स्वरित
क ख श	ग घ ङ य	क ग ङ य	ख घ श	अ ए
च छ ष	ज झ ञ व	च ज ञ व	छ झ ख	इ ओ
ट ठ स	ड ढ ण र	ट ड ण र	ठ ढ स	उ ऐ
त थ	द ध न ल	त द न ल	थ ध ह	ॠ औ
प फ	ब भ म	प ब म	फ भ	ॡ

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि खकार का उच्चारण विवार, श्वास, अघोष तथा महाप्राण है।
अतः विकल्प 'C' सही है।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी- गीताप्रेस- पेज-13

81. बौद्धदर्शन पञ्चविधस्कन्धेषु परिगणितो नास्ति-
(A) विज्ञानम् **(B) वेदना**
(C) सञ्ज्ञा **(D) विशेषणम्**

व्याख्या- बौद्धदर्शन में चित्त और उसके विकारों को पञ्चस्कन्ध के नाम से जाना जाता है। पञ्चस्कन्ध हैं-
'सोऽयं चित्तचैत्तात्मकः स्कन्धः पञ्चविधो रूप-विज्ञान-वेदना सञ्ज्ञा संस्कारसञ्ज्ञकः' चित्त और चित्त के विकारों में यह स्कन्ध अर्थात् अमूर्त तत्त्व पाँच प्रकार का है- 1. रूप स्कन्ध 2. विज्ञान स्कन्ध 3. वेदना स्कन्ध 4. सञ्ज्ञा स्कन्ध और 5. संस्कार स्कन्ध
रूपस्कन्ध- विषयों के साथ इन्द्रियों का नाम रूपस्कन्ध है, जिसकी व्युत्पत्तियाँ हैं, जिनमें विषयों का निरूपण होता है और जो निरूपित होते हैं।
विज्ञान स्कन्ध- आलयविज्ञान और प्रवृत्तिविज्ञान का प्रवाह विज्ञान स्कन्ध है।

वेदना स्कन्ध- पहले कहे गए इन दोनों स्कन्धों के सम्बन्ध से उत्पन्न सुख-दुःख आदि प्रतीतियों का प्रवाह वेदना सम्बन्ध है।
सञ्ज्ञा स्कन्ध- गौ इत्यादि शब्दों को व्यक्त करने वाले ज्ञानों का प्रवाह सञ्ज्ञा स्कन्ध है।
संस्कार स्कन्ध- वेदनास्कन्ध पर आधारित रागद्वेषादि क्लेश, मद मानादि उपक्लेश तथा धर्म-अधर्म को संस्कार स्कन्ध कहते हैं।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचना से स्पष्ट है कि पञ्चस्कन्धों में विज्ञान, वेदना तथा सञ्ज्ञा आते हैं, जबकि विशेषणम् पञ्चस्कन्ध में नहीं आता। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- सर्वदर्शनसंग्रह- उमाशंकर शर्मा ऋषि, पेज-75

82. 'दीर्घाज्जसि च' इत्यनेन भवति -
(A) पूर्वसवर्णदीर्घः (B) पूर्वसवर्णदीर्घस्य निषेधः
(C) वृद्धिः एकादेशः (D) गुणादेशस्याभावः

व्याख्या- दीर्घाज्जसि च (6.1.101)-
'दीर्घाज्जसि च' पूर्वसवर्णदीर्घनिषेधक विधिसूत्र है। संहिता के विषय में दीर्घवर्ण से उत्तर इच् वर्ण या जस् प्रत्यय परे रहते पूर्वसवर्ण दीर्घ नहीं होता है।
उदाहरण- कुमारी जस् (अस्) -यण् प्राप्त हुआ
'प्रथमयोः पूर्वसवर्णः' ने यण् का बाध किया, परन्तु 'दीर्घाज्जसि च' सूत्र के द्वारा पूर्वसवर्ण दीर्घ का निषेध होकर कुमार्यः बना।
प्रथमयोः पूर्वसवर्णः (6.1.102)
'प्रथमयोः पूर्वसवर्णः' पूर्वसवर्णदीर्घ विधायक विधिसूत्र है। अक् प्रत्याहार से प्रथमा और द्वितीया विभक्ति सम्बन्धी अच् के परे रहने पर पूर्व और पर के स्थान पर पूर्वसवर्ण दीर्घ एकादेश होता है।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'दीर्घाज्जसि च' इस सूत्र से पूर्वसवर्ण दीर्घ का निषेध होता है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- अष्टाध्यायी (6.1.101)- ईश्वरचन्द्र, पेज- 692

83. 'सर्पिषो नाथनम्' इह षष्ठी विभक्तिर्भवति -
(A) कर्मणः शेषत्वेन विवक्षायाम्
(B) करणस्य शेषत्वेन विवक्षायाम्
(C) सम्बन्धस्य सम्बन्धत्वेन विवक्षायाम्
(D) अधिकरणस्य शेषत्वेन विवक्षायाम्

व्याख्या- आशिषि नाथः (2.3.55)-
आशीर्वाद अर्थ में नाथ् धातु के कर्म में सम्बन्धमात्र की विवक्षा में षष्ठी विभक्ति होती है।
उदाहरण- सर्पिषो नाथनम् - घी सम्बन्धी इच्छा, इस वाक्य में नाथ् धातु के कर्म सर्पिष् में सम्बन्ध की विवक्षा होने पर सर्पिषः में षष्ठी विभक्ति 'आशिषि नाथः' सूत्र से हुई। सूत्र में आशिषि पद का प्रयोग इसलिए किया गया है, क्योंकि नाथ् धातु का आशिष् से भिन्न अर्थात् याचना के अर्थ में उसके कर्म में द्वितीया विभक्ति ही होती है।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि सर्पिषो नाथनम् में षष्ठी विभक्ति का विधान कर्म की शेषत्व की विवक्षा में हुआ है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**
स्रोत- सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) (2.3.55)- राममुनि पाण्डेय, पेज-115

84. अलङ्कारसम्प्रदायस्य प्रवर्तकाचार्यः कः?
(A) वामनः (B) भरतः
(C) भामह (D) रुद्रटः

व्याख्या-

सम्प्रदाय	प्रवर्तकआचार्य	काल	ग्रन्थ
रस सम्प्रदाय	आचार्य भरतमुनि	ई.पू.द्वितीय शताब्दी	नाट्यशास्त्र
अलङ्कार सम्प्रदाय	आचार्य भामह	500ई.	काव्यालङ्कार
रीति सम्प्रदाय	आचार्य वामन	800-850ई.	काव्यालङ्कार सूत्रवृत्ति
ध्वनि सम्प्रदाय	आचार्य आनन्दवर्धन	नवम शताब्दी उत्तरार्ध	ध्वन्यालोक
वक्रोक्ति सम्प्रदाय	आचार्य कुन्तक	11वीं शताब्दी पूर्वार्ध	वक्रोक्ति-जीवितम्
औचित्य सम्प्रदाय	आचार्य क्षेमेन्द्र	11वीं शताब्दी उत्तरार्ध	औचित्य-विचारचर्चा

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि अलङ्कार सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य भामह हैं। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा ऋषि, पेज-578

85. निम्नलिखितेषु केन ज्योतिशशास्त्रमाधृत्य ऋग्वेदस्य कालो निर्धारितः?
(A) वेबरमहोदयेन
(B) मैक्डानल
(C) बालगंगाधरतिलकमहोदयेन
(D) विल्सनमहोदयेन

व्याख्या- बालगंगाधर तिलक-
आचार्य बालगंगाधर तिलक ने ज्योतिषीय गणना के आधार पर ऋग्वेद का रचनाकाल छह हजार ई.पू. से चार हजार ई.पू. माना है। उन्होंने विभिन्न नक्षत्रों में वसन्त सम्पात के आधार पर तिथि निर्धारित की है। उन्होंने वैदिक काल को चार भागों में विभक्त किया

है और विभिन्न स्तरों में वैदिक साहित्य के अङ्गों का उल्लेख है।

(1) अदिति काल 6 हजार से 4 हजार ई.पू.

(2) मृगशिरा काल 4 हजार से 2500 ई.पू.

(3) कृत्तिका काल 2500 से 1400 ई.पू.

(4) सूत्र काल 1400 से 500 ई.पू.

ए0 वेबर- जर्मन विद्वान् प्रो. ए बेवर ने कहा है वेदों का समय निश्चित नहीं किया जा सकता। वे उस तिथि के बने हुए हैं, जहाँ तक पहुँचने के लिए हमारे पास उपयुक्त साधन नहीं है। प्रो. बेवर यह भी कहते हैं कि वेदों के समय को कम-से-कम 1200 ई.पू. या 1500 ई.पू. के बाद का कथमपि स्वीकार नहीं किया जा सकता।

मैक्डानल- 1300 ई.पू. ऋग्वेद की रचना का प्रारम्भ माना है, जो बोगाजकोई अभिलेख के आधार पर माना है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि बालगंगाधर तिलक ने ऋग्वेद का काल निर्धारण ज्योतिषशास्त्र के आधार पर किया है।

अतः विकल्प 'C' सही है।

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-39

86. चक्षुषा घटरूपत्वग्रहणे कः सन्निकर्षः ?

(A) समवायः

(B) संयुक्तसमवायः

(C) संयुक्तसमवेतसमवायः

(D) विशेषणविशेष्यभावः

व्याख्या- प्रत्यक्ष ज्ञान का हेतु इन्द्रिय और पदार्थ का सन्निकर्ष-संयोग सन्निकर्ष, संयुक्तसमवायसन्निकर्ष, संयुक्तसमवेतसमवाय सन्निकर्ष, समवाय सन्निकर्ष, समवेतसमवायसन्निकर्ष और विशेषण विशेष्य भावरूप से सन्निकर्ष के छः प्रकार होते हैं।

संयोग सन्निकर्ष- चक्षुषा घट प्रत्यक्षजनने संयोगः सन्निकर्षः। अर्थात् नेत्र से घट का प्रत्यक्ष होने में संयोग नामक सन्निकर्ष होता है।

संयुक्तसमवायसन्निकर्ष-

घटरूपप्रत्यक्षजनने संयुक्तसमवायः सन्निकर्षः चक्षुः संयुक्ते घटे रूपस्य समवायात् अर्थात्घट के रूप का प्रत्यक्ष करने में संयुक्तसमवाय नाम सन्निकर्ष है, क्योंकि नेत्र से संयुक्त घट में रूप समवायसम्बन्ध से स्थित रहता है।

संयुक्तसमवेतसमवाय सन्निकर्ष-

रूपत्वसामान्यप्रत्यक्षे संयुक्तसमवेतसमवायः सन्निकर्षः। चक्षुः संयुक्ते घटे रूपं समवेतं, तत्र रूपत्वस्य समवायात् अर्थात् रूपत्व जाति के प्रत्यक्ष में संयुक्त समवेत समवाय नामक सन्निकर्ष होता है, क्योंकि चक्षु से संयुक्त घट में रूप समवेत है तथा उसमें रूपत्व समवाय सम्बन्ध से स्थित है।

समवायसन्निकर्ष-

श्रोत्रेण शब्दसाक्षात्कारे समवायः सम्बन्धः। कर्णविवर वर्त्याकाशस्य श्रोत्रत्वाच्छब्दस्याकाशगुणत्वाद् गुणगुणिनोश्च समवायात् अर्थात् कर्ण विवर में स्थित आकाश ही श्रोत्र होने से तथा आकाश का गुण शब्द होने के कारण एवं गुण-गुणी का समवाय सम्बन्ध होने से श्रोत्र द्वारा शब्द का साक्षात्कार करने से समवाय सन्निकर्ष है।

समवेत-समवाय सन्निकर्ष-

शब्दत्वसाक्षात्कारे समवेतसमवायः सन्निकर्षः, श्रोत्रसमवेते शब्दे शब्दत्वस्य समवायात्। अर्थात् श्रोत्र में समवेत रूप में विद्यमान शब्द में शब्दत्व जाति के समवाय सम्बन्ध से स्थित रहने के कारण शब्दत्व के साक्षात्कार में समवेत समवाय नामक सन्निकर्ष होता है।

विशेषणविशेष्यभाव सन्निकर्ष-

अभावप्रत्यक्षे विशेषणविशेष्यभावः सन्निकर्षः। घटाऽभाववद्भूतलमित्यत्र चक्षुः संयुक्ते भूतले घटाऽभावस्य विशेषणत्वात् अर्थात् भूतल घट के अभाव वाला है। यहाँ नेत्र से संयुक्त भूतल में घट का अभाव विशेषण है। अतः अभाव का प्रत्यक्ष करने में विशेषण विशेष्यभाव सन्निकर्ष होता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि चक्षु से घटरूपत्व में संयुक्त समवेत समवाय सन्निकर्ष है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- तर्कसंग्रह- आद्याप्रसाद मिश्र, पेज 47

87. प्र + एजते = प्रेजते इत्यत्र एकारो भवति

(A) आद्गुणः सूत्रेण गुणत्वात्

(B) वृद्धिरेचि सूत्रेण वृद्धित्वात्

(C) एङि पररूपम् सूत्रेण पररूपत्वात्

(D) एङः पदान्तादति सूत्रेण पूर्वरूपत्वात्

व्याख्या- 'प्र + एजते' इस पद में आद्गुणः सूत्र से गुण की प्राप्ति थी, परन्तु उसे बाधकर वृद्धिरेचि सूत्र से वृद्धि प्राप्त हुई, उसे भी बाधकर 'एङि पररूपम्' सूत्र से अवर्णान्त उपसर्ग से एङादि धातु के परे रहने पर पूर्व और पर के स्थान पर पररूप एकदेश होता है। यहाँ पर अवर्णान्त उपसर्ग है- प्र और एङादि धातु परे है- एजते। पूर्व में प्र का अ और परे है एजते का ए, दोनों के स्थान पर परसवर्ण ए ही हुआ- प्र + ए + जते = प्रेजते प्रयोग सिद्ध हुआ।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि प्र + एजते में एकार 'एङि पररूपम्' सूत्र से पररूप हुआ।

अतः विकल्प 'C' सही है।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी- गोविन्दाचार्य, पेज-61

88. मनुस्मृत्यनुसारं कति पाकयज्ञाः -
(A) चत्वारः **(B) पञ्च**
(C) षट् **(D) दश**

व्याख्या- धर्मशास्त्रीय ग्रन्थ के अन्तर्गत परिगणित मनुस्मृति के द्वितीय अध्याय में चार प्रकार के पाकयज्ञों का वर्णन है-

ये पाकयज्ञाश्चत्वारो विधियज्ञसमन्विताः।
सर्वे ते जपयज्ञस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम्॥ (मनु.2.86)

जो विधियज्ञ सहित चार पाकयज्ञ (वैश्वदेव, होम,बलिकर्म, नित्यश्राद्ध और अतिथिभोजन) हैं। वे सब जपयज्ञ की सोलहवीं कला के योग्य भी नहीं हैं।

* मनुस्मृति के प्रथम अध्याय में क्षत्रियों के पाँच कर्म बताए गए हैं-

प्रजानां रक्षणं दानमिज्याध्ययनमेव च
विषयेष्वप्रसक्तिश्च क्षत्रियस्य समासतः॥ (मनु.1.89)

प्रजा की रक्षा, दान देना, यज्ञ करना, पढ़ना और विषयों में न लगना ये क्षत्रियों के कर्म संक्षेप में बताये गये हैं।

* **अध्यापनमध्ययनं यजनं याजनं तथा**
दानं प्रतिग्रहं चैव ब्राह्मणानामकल्पयत्॥ (मनु.1.88)

पढ़ना, पढ़ाना, यज्ञ करना, यज्ञ कराना, दान देना, दान लेना, ये छः कर्म ब्राह्मणों के हैं।

* **काम से उत्पन्न दोषों की संख्या दस है-**

मृगयाऽक्षो दिवास्वप्नः परिवादः स्त्रियो मदः।
तौर्यत्रिकं वृथाट्या च कामजो दशको गणः॥ (मनु.7.47)

मृगया, जुआ खेलना, दिन में सोना, पराया दोष कहना, स्त्रियों में आसक्ति, मद्यपान, बजाना, नाचना, गाना और वृथा घूमना, ये दश दोष 'काम' से उत्पन्न होते हैं।

स्पष्टीकरण- विवेचन से स्पष्ट है कि मनुस्मृति के अनुसार पाकयज्ञों की संख्या चार है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- मनुस्मृति (2.86)- गिरिधर गोपालशर्मा,पेज-92

89. वेदान्तसारमतेन कर्मेन्द्रियाणामुत्पत्तिः भवति-
(A) आकाशादीनां रजोंऽशेभ्यः समस्तेभ्यः
(B) आकाशादीनां रजोंऽशेभ्योः व्यस्तेभ्यः
(C) आकाशादीनां सत्त्वांशेभ्यो व्यस्तेभ्यः
(D) आकाशादीनां सत्त्वांशेभ्यो समस्तेभ्यः

व्याख्या- सदानन्द प्रणीत वेदान्तसार में कर्मेन्द्रियों की उत्पत्ति के विषय में निम्न वर्णन प्राप्त होता है-

'कर्मेन्द्रियाणि वाक्पाणिपादपायूपस्थाख्यानि' वाक् (वाणी), पाणि (हाथ), पाद (पैर), पायु (गुदा) और उपस्थ (जननेन्द्रिय) ये कर्मेन्द्रियाँ हैं। इन कर्मेन्द्रियों की उत्पत्ति आकाश आदि रजो अंश से क्रमशः अलग-अलग होती है-

'एतानि पुनराकाशादीनां रजोंऽशेभ्यो व्यस्तेभ्यः पृथक् पृथक् क्रमेणोत्पद्यन्ते'। अर्थात् इन आकाश आदि सूक्ष्मभूतों के रजोगुणांश से ये क्रमशः अलग-अलग उत्पन्न होती है।

* **ज्ञानेन्द्रियों की उत्पत्ति-**

'एतानि आकाशादीनां सात्त्विकांशेभ्यो व्यस्तेभ्यः पृथक् पृथक् क्रमेणोत्पद्यन्ते' अर्थात् आकाश आदि सूक्ष्मभूतों में रहने वाले सत्त्वगुण के अंश से अलग-अलग क्रमानुसार उत्पन्न होती है। ज्ञानेन्द्रियों की संख्या पाँच है- श्रोत्र (कान), त्वक् (त्वचा), चक्षु (आँख), जिह्वा (जीभ या रसना) घ्राण (नाक)।

* **बुद्धि, मन की उत्पत्ति-**

'एते पुनराकाशादिगतसात्विकांशेभ्यो मिलितेभ्यो उत्पद्यन्ते' मन और बुद्धि आकाशादि सूक्ष्मभूतों में रहने वाले सत्त्वगुण के सामूहिक अंश से उत्पन्न होते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि कर्मेन्द्रियों की उत्पत्ति आकाश आदि के रजो अंश के सामूहिक अंश से अलग-अलग होती है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- वेदान्तसार- सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-69

90. 'अल्पक्लेशं मरणं दारिद्र्यमनन्तकं दुःखमिति' केनोक्तम्?
(A) बाणभट्टेन **(B) माघेन**
(C) शूद्रकेण **(D) भारविणा**

व्याख्या- महाकवि शूद्रक प्रणीत मृच्छकटिकम् के प्रथम अङ्क में गरीबी (दरिद्रता) के विषय में चारुदत्त कहता है-

द्रारिद्र्यान्मरणाद्वा मरणं मम रोचते न दारिद्र्यम्।
अल्पक्लेशं मरणं, दारिद्र्यमनन्तकं दुःखम्॥ (मृच्छ.1.11)

निर्धनता और मृत्यु में से मृत्यु मुझे अच्छी लगती है, निर्धनता नहीं मृत्यु में थोड़ा कष्ट है, किन्तु निर्धनता कभी न समाप्त होने वाला दुःख है। महाकवि माघ द्वारा रचित शिशुपालवध के प्रथम सर्ग में माघ 'विद्वानों (सत्पुरुषों) के आगमन से लाभ होता है,' का वर्णन करते हैं-

'गृहानुपैतुं प्रणयादभीप्सवो भवन्ति नापुण्यकृतां मनीषिणः' (शिशु.1.14)

भागवान् श्रीकृष्ण ने पूजनीय नारद महामुनि की यथाविधि पूजा की ठीक ही है, सत्पुरुष, पुण्यकर्म नहीं करने वालों के यहाँ जाना नहीं चाहते। बाणभट्ट विरचित कादम्बरी के शुकनासोपदेश में विषयभोगरूपी मृगतृष्णा के विषय में निम्न वर्णन प्राप्त होता है-

'इन्द्रियहरिणहारिणी च सततदुरन्तेयमुपभोगमृगतृष्णिका' (कादम्बरी)

इन्द्रियरूपी हरिणों का हरण करने वाली यह विषयभोगरूपी मृगतृष्णा परिणाम में सदा दुःख देने वाली होती है।

⇒ महाकवि भारवि प्रणीत किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग में मायावी पुरुषों के विषय में निम्न वर्णन प्राप्त होता है-

व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवं, भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः।
प्रविश्य हि घ्नन्ति शठास्तथाविधान् असंवृताङ्गान्निशिता इवेषवः॥

(किरात.1.30)

जो मायावियों के प्रति मायावी नहीं होते हैं, वे मन्दबुद्धि पराजय को प्राप्त होते हैं। धूर्त लोग ऐसे लोगों के आत्मीय बनकर उन्हें वैसे ही मार डालते हैं, जैसे तीक्ष्ण बाण कवचहीन शरीर वालों में प्रवेश करके उन्हें मार डालते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि- 'अल्पक्लेशं मरणं दारिद्र्यमनन्तकं दुःखम्', यह पंक्ति शूद्रक द्वारा रचित मृच्छकटिकम् के प्रथम अङ्क से उद्धृत है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- मृच्छकटिकम् (1.11) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-31

91. 'रुदति प्राव्राजीत्' अत्र रुदति पदे सप्तमी विभक्तिः अस्ति-
(A) निर्धारणे
(B) सामीप्ये अधिकरणे
(C) अनादराधिक्ये भावलक्षणे
(D) कर्मप्रवचनीययोगे

व्याख्या- षष्ठी चानादर(2.3.38)-

अनादराधिक्ये भावलक्षणे षष्ठीसप्तम्यौ स्तः।

अनादर के आधिक्य होने पर जिसकी क्रिया से दूसरी क्रिया लक्षित हो उससे षष्ठी और सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे-

'रुदति रुदतो वा प्राव्राजीत्' रोते हुए को छोड़कर संन्यास ले लिया। इस वाक्य में रोदन (रोने की क्रिया) क्रिया से प्रव्रजन क्रिया लक्षित होती है और अनादर अर्थ में भी प्रतीत होती है। अतः 'षष्ठी चानादरे' सूत्र से रुदत् शब्द सप्तमी विभक्ति में रुदति और षष्ठी विभक्ति एकवचन में रुदतः बना।

⇒ **यतश्च निर्धारणम्** (2.3.41)-

'जातिगुणक्रियासंज्ञाभिः समुदायादेकदेशस्य पृथक्करणं निर्धारणं यतस्ततः षष्ठीसप्तम्यौ स्तः'- अर्थात् जाति, गुण, क्रिया और सञ्ज्ञा के द्वारा किसी समुदाय से एक भाग को पृथक् किया जाता है तो उस समुदाय वाचक शब्द से षष्ठी एवं सप्तमी विभक्ति होती है।

जाति द्वारा निर्धारण का उदाहरण-

नृणां नृषु वा द्विजः श्रेष्ठः - मनुष्यों में ब्राह्मण श्रेष्ठ होता है।

गुण द्वारा निर्धारण का उदाहरण-

गवां गोषु वा कृष्णा बहुक्षीरा-गायों में काली गाय बहुत दूध देती है।

क्रिया के द्वारा निर्धारण का उदाहरण-

गच्छतां गच्छत्सु वा धावञ्छीघ्रः- चलने वालों में दौड़ने वाला श्रेष्ठ होता है।

सञ्ज्ञा द्वारा निर्धारण का उदाहरण- छात्राणां छात्रेषु वा मैत्रः पटुः- छात्रों में मैत्र पटु अर्थात् कुशल है। कर्मप्रवचनीय योग में द्वितीया, तृतीया एवं पञ्चमी विभक्ति का विधान होता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि रुदति प्राव्राजीत् यहाँ 'रुदति' इस पद में सप्तमी विभक्ति का विधान 'अनादराधिक्ये भावलक्षणे' से हुआ। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत-सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज-100

92. अरस्तूविरचितं पुस्तकमस्ति -

(A) दि रिपब्लिक	**(B) आन द सब्लाइम**
(C) पॉएटिक्स	**(D) टेल ऑफ टू सीरीज**

व्याख्या- 'पॉएटिक्स' अरस्तू द्वारा लगभग 350 ई.पू. में लिखी गयी साहित्य चिन्तन और सिद्धान्त सम्बन्धी पुस्तक है। यह नाट्य सिद्धान्त सम्बन्धी विश्व की सर्वाधिक प्राचीन उपलब्ध पुस्तक है। यह पाश्चात्य साहित्य सिद्धान्तों का विस्तृत परिचय देने वाली पहली पुस्तक है। इसमें अरस्तू ने काव्य के अर्थ में ग्रीक काव्य और नाटक दोनों को शामिल किया है। उन्होंने काव्य में प्रणीत काव्य और महाकाव्य दोनों को शामिल किया है।

⇒ 'दि रिपब्लिक' पुस्तक प्लेटो द्वारा 380 ईसा पूर्व के आस-पास रचित ग्रन्थ है, जिसमें सुकरात की वार्ताएँ वर्णित हैं। इन वार्ताओं में न्याय, नगर तथा न्यायप्रिय मानव की चर्चा है। यह प्लेटो की सर्वश्रेष्ठ रचना मानी जाती है।

⇒ 'लान्जाइनस' एक महान् समीक्षक के रूप में परिचित हैं। उनके नाम पर 'आन द सब्लाइम' नामक एक ही रचना का उल्लेख मिलता है। उनके जीवन तथा रचनात्मकता पर प्रकाश डालने वाले प्रमाण सन्देहास्पद हैं।

⇒ **टेल ऑफ टू सीरीज–** फ्रांसीसी क्रान्ति के पहले और दौरान पेरिस और लन्दन की पृष्ठभूमि में रचित 1859ई. में चार्ल्स डिकेन्स द्वारा लिखित उपन्यास है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि अरस्तू द्वारा रचित 'पॉएटिक्स' है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र तथा आलोचना - योगेन्द्र प्रतापसिंह, पेज 197

93. तर्कसंग्रहानुसारं पदार्थाः कति सन्ति?

(A) सप्त	**(B) षोडश**
(C) नव	**(D) दश**

व्याख्या- आचार्य अन्नंभट्ट प्रणीत तर्कसंग्रह न्याय-वैशेषिक का प्रकरण ग्रन्थ है, जिसमें सात पदार्थों का वर्णन है-

'द्रव्य-गुण-कर्म-सामान्य-विशेष-समवायाभावाः सप्तपदार्थाः'
अर्थात् द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय एवं अभाव ये सात पदार्थ हैं।
तर्कसंग्रह के अनुसार द्रव्य की संख्या नौ है-
तत्र द्रव्याणि पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशकालदिगात्ममनांसि नवैव। पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, काल, दिशा, आत्मा और मन ये नौ द्रव्य हैं।
* केशवमिश्र प्रणीत, तर्कभाषा में सोलह पदार्थों का वर्णन है- प्रमाण, प्रमेय, संशय, प्रयोजन, दृष्टान्त, सिद्धान्त, अवयव, तर्क, निर्णय, वाद, जल्प, वितण्डा, हेत्वाभास, छल जाति, निग्रहस्थान।
* तर्कसंग्रह के अनुसार कर्म के पाँच भेद हैं-
उत्क्षेपण, अपक्षेपण, आकुञ्चन, प्रसारण, गमन।
सामान्य के दो भेद हैं। पर तथा अपर।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि तर्कसंग्रह के अनुसार पदार्थों की संख्या सात है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**
स्रोत- तर्कसंग्रह- अनितासेन गुप्ता, पेज-27

94. मनुमते अनारोग्यमनायुष्यमस्वर्ग्यं चाऽस्ति?
(A) अविधा **(B) अतिभोजनम्**
(C) उच्छिष्टभोजनम् **(D) अवशिष्टभोजनम्**

व्याख्या- मनुस्मृति के द्वितीय अध्याय में अतिभोजन के दोषों में निम्नवत् वर्णन प्राप्त होता है-
अनारोग्यमनायुष्यमस्वर्ग्यं चातिभोजनम्
अपुण्यं लोकविद्विष्टं तस्मात्तत्परिवर्जयेत्॥ (मनु.2.57)
अधिक भोजन करना, आरोग्य, आयु, स्वर्ग, पुण्य का नाशक और लोकनिन्दित है, इसलिए उसे त्याग दें।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'अनारोग्यमनायुष्यमस्वर्ग्यं' का कारण अतिभोजन है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**
स्रोत- मनुस्मृति (2.57)- गिरिधरगोपाल शर्मा, पेज-82

95. कुरुचरः इत्यत्र 'चरेष्टः' सूत्रेण ट प्रत्ययो विधीयते
(A) अधिकरणे उपपदे **(B) सुबन्ते उपपदे**
(C) कर्मण्युपपदे **(D) उपसर्गे उपपदे**

व्याख्या- चरेष्टः 3.2.16
अधिकरण के उपपद होने पर 'चर्' धातु से 'ट' प्रत्यय होता है।
कुरुचरः- कुरुषु यह अधिकरण उपपद में है। अतः चर् धातु से 'ट' प्रत्यय होकर अनुबन्ध लोप। 'उपपदमतिङ्' से उपपद समास होकर सुप् विभक्ति का 'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' से लुक् होकर 'कुरुचर् + अ' बना। वर्णसम्मेलन होने पर कुरुचर बना। सु विभक्ति एवं उसका रुत्व और विसर्ग करके 'कुरुचरः' सिद्ध हुआ।
स्पष्टीकरण - उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि कुरुचरः में 'ट' प्रत्यय का विधान अधिकरण उपपद अर्थ में हुआ है।
अतः विकल्प 'A' सही है।
स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी- गोविन्दाचार्य, पेज-790

96. त्रिविक्रमभट्टप्रणीतं चम्पूकाव्यमस्ति
(A) नलचम्पू **(B) राजचम्पू**
(C) रामायणचम्पू **(D) जीवन्धरचम्पू**

व्याख्या-

ग्रन्थ	**ग्रन्थकार**	**काल**
नलचम्पू	त्रिविक्रमभट्ट	915 ई. लगभग
मदालसाचम्पू	त्रिविक्रमभट्ट	915 ई. लगभग
जीवन्धरचम्पू	हरिश्चन्द्र	897 ई. पश्चात्
रामायणचम्पू	राजा भोज	1005-1054 ई.
यशस्तिलकचम्पू	सोमदेव सूरि	959 ई.
भारतचम्पू	अनन्तभट्ट	1500 ई.
भागवतचम्पू	अनन्तभट्ट	1500 ई.
भरतेश्वराभ्युदयचम्पू	आशाधर सूरि	1243 ई.
पुरुदेवचम्पू	अर्हदास	13वीं शती उत्तरार्ध
यतिराजविजयचम्पू	अहोबल सूरि	14वीं शती उत्तरार्ध

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि त्रिविक्रमभट्ट द्वारा प्रणीत नलचम्पू है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**
स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा, पेज-415

97. सवितर्का समापत्तिः उच्यते-
(A) शब्दार्थज्ञानविकल्पैः सङ्कीर्णा
(B) स्वरूपशून्येवार्थमात्रनिर्भासा
(C) श्रुतानुमानप्रज्ञाभ्यामन्य विषया
(D) उक्तेषु त्रिषु न कापि

व्याख्या- महर्षि पतञ्जलिकृत पातञ्जलयोगदर्शन के समाधिपाद में समापत्ति का लक्षण निम्नवत् है-
क्षीणवृत्तेरभिजातस्येव मणेर्ग्रहीतृग्रहणग्राह्येषु तत्स्थतदञ्जनता समापत्तिः (योगसूत्र 1.41)
श्रेष्ठ मणि के समान क्षीणवृत्तियों वाले तथा ग्रहीता, ग्रहण और ग्राह्य विषयों में स्थित होने वाला चित्त का उनके आकार को ग्रहण कर लेना समापत्ति है-
सवितर्का और निर्वितर्का के भेद से समापत्ति के दो भेद हैं-
तत्र शब्दार्थज्ञानविकल्पैः संकीर्णा सवितर्का समापत्तिः (योगसूत्र 1.42)

उनमें से शब्द, अर्थ और ज्ञान के विकल्पों से मिली-जुली हुई समापत्ति सवितर्का समापत्ति है।
निर्वितर्का समापत्ति है।

स्मृतिपरिशुद्धौ स्वरूपशून्येवार्थमात्रनिर्भासा निर्वितर्का।

(योगसूत्र.1.43)

स्मृति की निवृत्ति हो जाने पर अपने ज्ञानात्मक रूप से शून्य जैसी केवल अर्थ को ही प्रकाशित करने वाली निर्वितर्का समापत्ति होती है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि शब्दार्थ ज्ञानविकल्पैः सङ्कीर्णा सवितर्का समापत्ति कही जाती है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- पातञ्जलयोगदर्शनम् (समाधिपाद/42) गीताप्रेस, पेज-32

98. 'न हि रसादृते कश्चिदर्थः' प्रवर्तते इति केनोक्तम् -

(A) भामहेन (B) भरतेन

(C) विश्वनाथेन (D) मम्मटेन

व्याख्या- रस सम्प्रदाय के प्रवर्तक भरतमुनि द्वारा रचित नाट्यशास्त्र में 36 अध्याय हैं, जिसमें रस, भाव एवं नाट्य के अङ्कों आदि का विवेचन है।

नाट्यशास्त्र के छठे अध्याय में रस निरूपण के विषय में निम्न वर्णन प्राप्त होता है-

न हि रसादृते कश्चिदर्थः प्रवर्त्तते।

तत्र विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः॥ (नाट्यशास्त्र 6.32)

रस के बिना अन्य नाट्याङ्ग रूप अर्थ की प्रवृत्ति नहीं होती। विभाव, अनुभाव तथा सञ्चारी भावों के संयोग से रस निष्पन्न होता है।

अलङ्कार सम्प्रदाय के प्रर्वतक आचार्य भामह के काव्यालङ्कार में काव्य लक्षण निम्नवत् है-

'शब्दार्थौ साहितौ काव्यं गद्यं पद्यं च तद्‌द्विधा' (काव्यालङ्कार1.16)

शब्द और अर्थ दोनों मिलकर काव्य कहलाते हैं, उसके दो भेद होते हैं- गद्य और पद्य।

* रसवादी आचार्य विश्वनाथ द्वारा रचित साहित्यदर्पण के प्रथम परिच्छेद में काव्य का लक्षण निम्नवत् है-

'वाक्यं रसात्मकं काव्यं' (सा.दा.1.3) रसात्मक वाक्य ही काव्य है।

* समन्वयवादी आचार्य मम्मट के काव्यप्रकाश के प्रथम उल्लास में काव्य का लक्षण निम्नवत् है-

'तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि' (काव्य प्रकाश सूत्र-1)

दोषों से रहित गुणों से युक्त यदि कहीं पर अलङ्कार न भी हो, तो शब्द और अर्थ की समष्टि काव्य है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि 'न हि रसादृते कश्चिदर्थः प्रवर्तते' मत आचार्य भरत के नाट्यशास्त्र के छठे अध्याय में वर्णित है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- नाट्यशास्त्र (षष्ठ अध्याय)- ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज-182

99. चार्वाकदर्शनस्य कृते किम् अपरनाम प्रचलितमस्ति?

(A) ब्रह्मदर्शनम् (B) परलोकदर्शनम्

(C) ऐहलौकिकदर्शनम् (D) लोकायतदर्शनम्

व्याख्या- माधवाचार्य विरचित सर्वदर्शनसंग्रह के चार्वाक दर्शन प्रकरण में चार्वाक दर्शन के लिए 'लोकायतम्' इस शब्द का प्रयोग किया गया है-

'चार्वाकमतस्य 'लोकायतम्' इत्यन्वर्थम् अपरं नामधेयम्'।

सभी लोग नीतिशास्त्र और कामशास्त्र के अनुसार अर्थ और काम को ही पुरुषार्थ समझते हैं, परलोक की बात स्वीकार नहीं करते तथा चार्वाक मत का अनुसरण करते हैं। इसलिए चार्वाक मत का दूसरा नाम अर्थ के अनुकूल ही है लोकायत। लोक अर्थात् संसार में, 'आयत' अर्थात् व्याप्त या फैला हुआ।

* चार्वाक दर्शन केवल प्रत्यक्ष प्रमाण को मानता है।
* चार्वाक दर्शन ईश्वर की सत्ता को नहीं मानता है।
* चार्वाक दर्शन में चार प्रकार के भूत तत्त्व हैं- पृथ्वी, जल, तेज और वायु।

चार्वाक दर्शन से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण तथ्य-

त्रयो वेदस्य कर्तारः भण्डधूर्तनिशाचराः
लोकसिद्धो राजा परमेश्वरः
भूतेभ्यश्चैतन्यमुपजायते

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि चार्वाक दर्शन का अपर नाम लोकायत दर्शन है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- सर्वदर्शनङ्ग्रह - उमाशंकर शर्मा ऋषि, पेज-3

100. यस्य हलः इत्यत्र यस्य इत्यनेन ग्रहणं भवति

(A) केवल यकारस्य

(B) अकारसहितं यकारस्य

(C) यत् प्रातिपदिकेन निष्पन्नस्य षष्ठ्यन्तस्य

(D) उक्तेषु न कस्यापि

व्याख्या- यस्य हलः (6.4.49)-

सूत्रार्थ आर्धधातुक परे रहते हल् (व्यञ्जन) से उत्तर य का लोप होता है। यस्य अर्थात् सस्वर यकार अर्थात् अकार सहित यकार का ही लोप होता है। हलः अर्थात् हल् से उत्तर यकार का लोप होता है।

यस्य इति संघातग्रहणम्- सूत्र में पठित यस्य यकारोत्तरवर्ती अकार उच्चारणार्थ नहीं है, किन्तु यकार और अकार दोनों के लोप के लिए 'य' ऐसे समूह का निर्देश किया गया है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि 'यस्य हलः' सूत्र में यस्य पद से अकार सहित यकार का ग्रहण किया गया है।

अतः विकल्प 'B' सही है।

स्रोत- अष्टाध्यायी (6.4.49) - ईश्वरचन्द्र, पेज-793

उत्तरमाला

1-(D)	2-(B)	3-(A)	4-(A)	5-(C)	6-(B)	7-(D)	8-(C)	9-(C)
10-(D)	11-(B)	12-(D)	13-(C)	14-(D)	15-(B)	16-(D)	17-(D)	18-(B)
19-(B)	20-(D)	21-(C)	22-(C)	23-(D)	24-(C)	25-(B)	26-(B)	27-(C)
28-(A)	29-(D)	30-(A)	31-(A)	32-(D)	33-(D)	34-(D)	35-(A)	36-(C)
37-(D)	38-(A)	39-(D)	40-(A)	41-(D)	42-(C)	43-(B)	44-(D)	45-(D)
46-(C)	47-(A)	48-(B)	49-(A)	50-(C)	51-(D)	52-(D)	53-(D)	54-(B)
55-(B)	56-(B)	57-(C)	58-(A)	59-(A)	60-(D)	61-(A)	62-(C)	63-(D)
64-(B)	65-(B)	66-(C)	67-(B)	68-(B)	69-(D)	70-(D)	71-(B)	72-(B)
73-(B)	74-(B)	75-(A)	76-(A)	77-(B)	78-(D)	79-(D)	80-(C)	81-(D)
82-(B)	83-(A)	84-(C)	85-(C)	86-(C)	87-(C)	88-(A)	89-(B)	90-(C)
91-(C)	92-(C)	93-(A)	94-(B)	95-(A)	96-(A)	97-(A)	98-(B)	99-(D)
100-(B)								

3	दिसम्बर 2018	NTA UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् II

1. माण्डूकायनी शाखा कस्य वेदस्य विद्यते–
(A) यजुर्वेदस्य (B) अथर्ववेदस्य
(C) ऋग्वेदस्य (D) सामवेदस्य

व्याख्या- 1- ऋग्वेद की शाखाएँ- चरणव्यूह के अनुसार ऋग्वेद की प्रमुख पाँच शाखाएँ हैं-

(i) शाकल- सम्प्रति ऋग्वेद की यही शाखा प्रचलित है। यही शाखा उपलब्ध भी है।

(ii) बाष्कल- यह शाखा अनुपलब्ध है। इस शाखा में 1025 सूक्त थे।

(iii) आश्वलायन- यह संहिता और इसका ब्राह्मण सम्प्रति अनुपलब्ध है। इस शाखा के श्रौतसूत्र और गृह्यसूत्र ही उपलब्ध हैं।

(iv) शांखायन- यह शाखा अनुपलब्ध है। इसके ब्राह्मण, आरण्यक, श्रौतसूत्र और गृह्यसूत्र उपलब्ध हैं।

(v) माण्डूकायन- यह शाखा सम्प्रति अप्राप्य है।

2- यजुर्वेद की शाखाएँ- यजुर्वेद मुख्यतः दो भागों में विभक्त है- (i) शुक्ल यजुर्वेद, (ii) कृष्ण यजुर्वेद। शुक्ल यजुर्वेद की दो शाखाएँ हैं, उनकी एक-एक संहिता उपलब्ध है-

(क) माध्यन्दिन या वाजसनेयि संहिता

(ख) काण्व संहिता

कृष्ण यजुर्वेद की चार शाखाएँ उपलब्ध हैं-

(i) तैत्तिरीय (ii) मैत्रायणी

(iii) काठक (कठ) (iv) कपिष्ठल-कठ शाखा

3- सामवेद की शाखाएँ-

(क) कौथुमीय (कौथुम) (ख) राणायनीय (ग) जैमिनीय

4- अथर्ववेद की शाखाएँ- पतञ्जलि ने महाभाष्य में और सायण ने अथर्ववेद-भाष्यभूमिका में अथर्ववेद की 9 शाखाओं का उल्लेख किया है-

(i) पैप्पलाद (ii) तौद (iii) मौद
(iv) शौनकीय (v) जाजल (vi) जलद
(vii) ब्रह्मवद (viii) देवदर्श (ix) चारणवैद्य

इनमें से केवल दो शाखाएँ उपलब्ध हैं- शौनकीय, पैप्पलाद

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि माण्डूकायनी MeKe$Ji Jeo keâ nw **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-46

2. साङ्ख्यरीत्या मोक्षप्राप्तिः कस्मादङ्गीक्रियते–
(A) ज्ञानात् (B) धर्मात्
(C) ऐश्वर्यात् (D) वैराग्यात्

व्याख्या- आचार्य ईश्वरकृष्णकृत साङ्ख्यकारिका की द्वितीय कारिका में मोक्ष-प्राप्ति का प्रशस्यतर उपाय व्यक्त, अव्यक्त और ज्ञ वेः विज्ञान को बताया है- **''तद्विपरीतः श्रेयान् व्यक्ताव्यक्तज्ञविज्ञानात्।''** (का.2) साङ्ख्यशास्त्र द्वारा निरूपित पचीस पदार्थों के तत्त्वज्ञान से सत्त्वपुरुषान्यता अर्थात् प्रकृति और पुरुष की भिन्नता का ज्ञान होता है, यही ज्ञान मोक्ष का कारण बनता है।

44वीं कारिका में बताया गया है कि किस कारण का कौन सा कार्य होता है-

धर्मेण गमनमूर्ध्वं, गमनमधस्ताद् भवत्यधर्मेण।

ज्ञानेन चापवर्गो विपर्ययादिष्यते बन्धः॥ (का.44)

अर्थात् धर्म से ऊपर की ओर स्वर्गादि लोकों में गमन होता है, और अधर्म से नीचे की ओर भूतल पर तिर्यक् योनियों में गमन होता है। विवेकख्यातिरूप तत्त्वज्ञान से अपवर्ग अर्थात् मोक्ष होता है तथा इसके विपरीत अज्ञान से बन्धन माना जाता है।

स्पष्टीकरण- स्पष्ट है कि साङ्ख्यमतानुसार ज्ञान से मोक्ष की प्राप्ति मानी गई है ज्ञानेन चापवर्गः। **अतः विकल्प A सही है।**

स्रोत- साङ्ख्यकारिका- (कारिका 2,44)

3. 'खलु कृत्वा'–निरुक्तानुसारं 'खलु' पदं विद्यते-
(A) प्रतिषेधार्थे (B) पदपूरणार्थे
(C) समुच्चयार्थे (D) निश्चयार्थे

व्याख्या- आचार्य यास्क निरुक्त के प्रथम अध्याय के द्वितीय पाद में निपातों के वर्णन में कुछ निषेधार्थक निपातों का उल्लेख करते हैं।

*** मा-** यह निपात प्रतिषेध अर्थात् निषेध अर्थ में आता है। जैसे-

मा कार्षीः- मत कर। **मा हार्षीः-** मत हरण कर।

*** खलु-** यह निपात भी निषेधार्थक ही है। **जैसे-खलु कृत्वा- न करके। खलु कृतम् -** नहीं किया। यह निपात पदपूर्ति के लिए भी प्रयुक्त होता है। जैसे- **एवं खलु। तद् बभूव-** वह बात इस प्रकार हुई थी।

*** न-** यह निपात लौकिक संस्कृत में निषेधार्थ में आता है और वेद में उपमा और निषेध अर्थ में भी आता है। प्रतिषेध अर्थ में जो न आता है उसकी पहचान यह है कि निषेध्य वस्तु के आगे उसको रखते हैं और उपमार्थक 'न' का प्रयोग जिससे उपमा दी जाती है उससे ठीक बाद आता है।

(i) **नेन्द्रं देवममंसत-** आदित्य की किरणों ने इन्द्र को अपना दीपयिता नहीं माना-प्रतिषेधार्थक।

(ii) **दुर्मदासो न सुरायाम्-** सुरा पी लेने पर दुर्मदों की भाँति लड़ने लगे- उपमार्थक।

*** पदपूरणार्थक अन्य निपात-** उ, सीम्, इत् इत्यादि।

*** समुच्चयार्थक निपात-** वा,त्व च, आ, इत्यादि।

*** निश्चयार्थक निपात-** किल

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'खलु कृत्वा' में 'खलु' निपात निषेधार्थक है। **अतः विकल्प A सही है।**

स्त्रोत- निरुक्त- छज्जूराम- शास्त्री, पेज-20

4. तर्कसङ्ग्रहदीपिकानुसारं 'तज्जन्यत्वे सति तज्जन्यजनकः' कः -

(A) हेतुः (B) परामर्शः
(C) व्यापारः (D) उपनयः

व्याख्या- तर्कसङ्ग्रहकार अन्नम्भट्ट ने प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द प्रमाणों के निरूपण के प्रसङ्ग में प्रत्यक्षप्रमाण के पश्चात् अनुमान प्रमाण के द्विविध भेदों का उल्लेख किया है- 1. स्वार्थानुमान और 2. परार्थानुमान **(अनुमानं द्विविधं-स्वार्थं परार्थं च।)** परार्थानुमान के निरूपण में अन्नम्भट्ट ने पञ्चावयव वाक्य की चर्चा की है-

''यत्तु स्वयं धूमादग्निमनुमायं परं प्रति बोधयितुं पञ्चावयववाक्यं प्रयुज्यते तत्परार्थानुमानम्।'' अर्थात् जो स्वयं धूम से अग्नि का अनुमान करके दूसरे व्यक्ति को समझाने के लिए पाँच अवयवों वाले वाक्य का प्रयोग किया जाता है, वह परार्थानुमान होता है।

पञ्चावयव में कौन से पाँच अवयव होते हैं, इस पर कहते हैं- **'प्रतिज्ञा-हेतूदाहरणोपनयनिगमनानि पञ्चावयवाः।'** दीपिका टीका में स्वयं अन्नम्भट्ट इन पाँचों को परिभाषित करते हैं-

1. **साध्यवत्तया पक्षवचनं प्रतिज्ञा** अर्थात् साध्यविशिष्ट पक्षबोधक वचन प्रतिज्ञा है। **पर्वतो वह्निमान्** यह प्रतिज्ञा वाक्य है।

2. **पञ्चम्यन्तं लिङ्गप्रतिपादकं वचनं हेतुः** तृतीया अथवा पञ्चमी विभक्ति वाला लिङ्गप्रतिपादक वाक्य हेतु कहलाता है। **धूमवत्त्वात** यह हेतुवाक्य है।

3. **व्याप्तिप्रतिपादकमुदाहरणम्** व्याप्तिप्रतिपादक दृष्टान्तवचन उदाहरण होता है। **यो यो धूमवान् स सोऽग्निमान्-** यह उदाहरणवाक्य है।

4- **पक्षधर्मताज्ञानार्थमुपनयः** व्याप्तिविशिष्टत्वरूप से हेतु की पक्षधर्मता का प्रतिपादक वाक्य उपनय कहलाता है। **तथा च अयम् -** यह उपनयवाक्य है।

5. **अबाधितत्वादिकं निगमनप्रयोजनम्-** साध्य का अबाधितत्वप्रतिपादक वचन निगमन कहलाता है। **तस्मात्तथा-** यह निगमनवाक्य है।

स्वार्थानुमिति और परार्थानुमिति- इन दोनों का लिङ्गपरामर्श ही कारण होता है, इस कारण से लिङ्गपरामर्श ही अनुमान है। **(स्वार्थानुमितिपरार्थानुमित्योर्लिङ्गपरामर्श एव करणम्। तस्माल्लिङ्गपरामर्शोऽनुमानम्)**

व्यापारवान् कारण ही 'करण' होता है- **'व्यापारवत्कारणं करणम्।'**

व्यापार क्या है- इसके उत्तर में दीपिका टीकाकार अन्नम्भट्ट कहते हैं- **'तज्जन्यत्वे सति तज्जन्यजनको व्यापारः'** अर्थात् जो कारण से जन्य हो एवं उसके दूसरे जन्य का जनक हो, वह व्यापार कहा जाता है। जैसे- चाक का घूमना चाक का जन्य अर्थात् कार्य होता हुआ, चाकजन्य घट का जनक है, क्योंकि उसके घूमे बिना घट बन ही नहीं सकता, अतः यह घूमना चाक का व्यापार हुआ।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि **'तज्जन्यत्वे सति तज्जन्यजनकः** यह व्यापार का लक्षण है। **अतः विकल्प C सही है।**

स्त्रोत- तर्कसङ्ग्रह- गोविन्दाचार्य, पेज-188-90

5. 'व्रीहीनवहन्ती' ति कस्य विधेरुदाहरणम् अर्थसङ्ग्रहदिशा–

(A) नियमविधेः (B) आर्थी-परिसङ्ख्याविधेः
(C) श्रौती-परिसङ्ख्याविधेः (D) अपूर्वविधेः

व्याख्या- लौगाक्षिभास्कर कृत अर्थसङ्ग्रह नामक प्रकरणग्रन्थ में नियमविधि का लक्षण इस प्रकार किया है- **'नाना साधनसाध्यक्रियायामेकसाधनप्राप्तौ अप्राप्तस्य अपरसाधनस्य प्रापको विधिर्नियमविधिः।**

अर्थात् विविध साधनों से सिद्ध होने वाली क्रिया के अनुष्ठान में एक साधन के प्राप्त रहने पर अप्राप्त दूसरे साधन की प्राप्ति कराने वाली विधि को 'नियमविधि' कहते हैं।
अत्यन्त अप्राप्त पदार्थ का विधान करने वाली विधि को 'अपूर्वविधि' कहते हैं।

पदार्थ की पाक्षिक अप्राप्ति होने पर तद्विधायक वाक्य को नियमविधि तथा जहाँ दोनों पदार्थों की एक काल में प्राप्ति हो, वहाँ दोनों में से एक पदार्थ को निवृत्ति कराने वाली विधि को 'परिसङ्ख्याविधि' कहते हैं।

जैसा कि लौगाक्षिभास्कर ने तन्त्रवार्तिककार कुमारिलभट्ट का वचन उद्धृत किया है-

विधिरत्यन्तमप्राप्तौ नियमः पाक्षिके सति।
तत्र चान्यत्र च प्राप्तौ परिसङ्ख्येति गीयते॥

उपर्युक्त श्लोक को अर्थसङ्ग्रहकार ने सरल शब्दों में इस प्रकार बताया है-

1. **'प्रमाणान्तरेणाप्राप्तस्य प्रापको विधिरपूर्वविधिः'** अर्थात् प्रमाणान्तर से अप्राप्त पदार्थ के प्रापक वाक्य को अपूर्वविधि कहते हैं। जैसे- 'यजेत स्वर्गकामः।' इत्यादि। प्रकृति में प्रमाणान्तर से स्वर्गप्राप्ति हेतु अप्राप्त याग का विधान किया गया है। अतः यह अपूर्व विधि है।
2. **'पक्षेऽप्राप्तस्य प्रापको विधिर्नियमविधिः।'** पक्ष में अप्राप्त के प्रापक विधि को नियमविधि कहते हैं; जैसे- **''व्रीहीनवहन्ति''।** प्रकृत उदाहरण दर्शपूर्णमास प्रकरण का है। पुरोडाश तैयार करने हेतु व्रीहि (चावल) का अवहनन 'नखविदलन' से भी हो सकता है, परन्तु 'नखविदलन' क्रिया का परित्याग करके 'अवहनन' के द्वारा किया जाना चाहिए, यह नियम 'व्रीहीनवहन्ति' विधि द्वारा किया जाता है। इसीलिए इसे 'नियमविधि' की सञ्ज्ञा दी गई है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'व्रीहीनवहन्ति' नियमविधि का उदाहरण है, **अतः विकल्प A सही है।**

स्रोत- अर्थसङ्ग्रह- राजेश्वरशास्त्रिमुसलगाँवकर, पेज-263

6. 'मानवश्रौतसूत्रम्' केन वेदेन सह सम्बद्धम् विद्यते—
(A) ऋग्वेदेन (B) अथर्ववेदेन
(C) सामवेदेन (D) कृष्णयजुर्वेदेन

व्याख्या- वेदों के छः अङ्गों में 'कल्प' वेदाङ्ग को वेदपुरुष का 'हाथ' बताया गया है- **'हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते'** (पा.शि.)
कल्पसूत्रों के चार भेद हैं-

(i) श्रौतसूत्र (ii) गृह्यसूत्र (iii) धर्मसूत्र (iv) शुल्बसूत्र
श्रौतसूत्रों में वेदों में वर्णित बड़े यज्ञ-याग-इष्टियों का विस्तृत विवेचन और वर्णन है।

श्रौतसूत्रों का वेदों के अनुसार वर्गीकरण-

1. ऋग्वेद- (i) आश्वलायन (ii) शांखायन श्रौतसूत्र
2- (क) शुक्ल यजुर्वेद- कात्यायन श्रौतसूत्र
(ख) कृष्ण यजुर्वेद- (i) बौधायन (ii) वाधूल (iii) मानव (मैत्रायणीय) (iv) भारद्वाज (v) आपस्तम्ब (vi) काठक (vii) सत्याषाढ (हिरण्यकेशी) (viii) वैखानस (ix) वाराह
3- सामवेद- (i) आर्षेय (मशक) कल्प (ii) क्षुद्रकल्प (iii) जैमिनीय श्रौतसूत्र (iv) लाट्यायन श्रौतसूत्र (v) द्राह्यायण श्रौतसूत्र
4- अथर्ववेद- वैतान श्रौतसूत्र।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि मानव श्रौतसूत्र कृष्णयजुर्वेद से सम्बन्धित है, **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-215-16

7. पुरुषस्यास्तित्वं साङ्ख्यरीत्या कस्माद् हेतोः—
(A) त्रैगुण्यात् (B) अधिष्ठानात्
(C) भेदानां परिमाणात् (D) विषयत्वात्

व्याख्या- आचार्य ईश्वरकृष्ण ने अपने साङ्ख्यशास्त्रीय ग्रन्थ साङ्ख्यकारिका में 17वीं कारिका में पाँच हेतुओं से पुरुष का अस्तित्व सिद्ध किया है-

सङ्घातपरार्थत्वात् त्रिगुणादिविपर्ययादधिष्ठानात्।
पुरुषोऽस्ति भोक्तृभावात् कैवल्यार्थं प्रवृत्तेश्च॥ (का.17)

अर्थात् पुरुष (आत्मा) का अस्तित्व है, क्योंकि-

1. **सङ्घातपरार्थत्वात्-** क्योंकि जड़ वस्तुओं के सङ्घात अपने से भिन्न दूसरे के लिए होते हैं।
2. **त्रिगुणादिविपर्ययात्-** जडवर्ग में रहने वाले त्रिगुणत्व का अभाव भी किसी में होता है।
3. **अधिष्ठानात्-** सुखदुःखमोहात्मक जडवर्ग को अधिष्ठित करने वाला कोई अधिष्ठाता होता है।
4. **भोक्तृभावात्-** सुखदुःखादि भोग्यपदार्थों का कोई भोक्ता होता है।

5. कैवल्यार्थं प्रवृत्तेश्च- जडवर्ग से भिन्न आत्मरूप कैवल्य को प्राप्त करने के लिए महर्षियों और शास्त्रों की प्रवृत्ति होती है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि पुरुष का अस्तित्व उपर्युक्त पाँच कारणों से सिद्ध होता है; **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- साङ्ख्यकारिक- (का. 17) सन्तनारायण श्रीवास्तव्य, पेज-

8. शब्दनित्यत्वे वार्त्तिककृतः किं प्रमाणम्–
(A) सर्वे सर्वपदादेशाः दाक्षीपुत्रस्य पाणिनेः
(B) तदशिष्यं सञ्ज्ञाप्रमाणत्वात्
(C) पृषोदरादीनि यथोपदिष्टम्
(D) सिद्धन्तु नित्यशब्दत्वात्

व्याख्या- 'सिद्धं तु नित्यशब्दत्वात्' प्रकृत वार्तिक को महाभाष्यकार पतञ्जलि ने तृतीय आह्निक में 'वृद्धिरादैच्' सूत्र के भाष्य में उद्धृत किया है। इस वार्तिक का अर्थ है कि शब्द नित्य होता है अतः 'वृद्धिरादैच्' सूत्र में सञ्ज्ञा सञ्ज्ञी में अन्योन्याश्रय दोष नहीं होगा। वार्तिककार कात्यायन ने शब्द के नित्यत्व की सिद्धि के लिए उपर्युक्त वार्तिक लिखा है।

'पृषोदरादीनि यथोपदिष्टम्'।।6.3.109।। पृषोदर-पृषद् उदरं यस्य तत् पृषोदरम्। पृषोदर आदि शब्द जिस रूप में उच्चारित किये गये हैं, वे उसी रूप में साधु हैं। पाणिनि ने पृषोदरादिगण में कुछ शब्द गिनाए हैं जिन्हें व्याकरण शास्त्र के अनुसार ठीक-ठीक सिद्ध नहीं किया जा सकता अतः उन्हें एक गण में रखकर यथावत् साधु मान लिया गया है। श्मशानं शवानां शयनम् इति, दक्षिणतारम्, दक्षिणतीरम्, वाग्वादः, वाड्वालिः आदि।

तदशिष्यं सञ्ज्ञा प्रमाणत्वात्।। 1.2.53।। जिसका शासन किया जा सके उसे शिष्य कहा जाता है। 'अशिष्य' अर्थात् जिसका शासन न किया जा सके। तत् पद के द्वारा प्रासङ्गिक युक्तवद्भाव का निर्देश किया गया है। 'सञ्ज्ञाप्रमाण' का अर्थ है 'लोकव्यवहार' पाणिनि जी का कहना है कि उपर्युक्त युक्तवद्भाव अर्थात् लिङ्ग और वचन का शासन नहीं किया जा सकता क्योंकि वह लोकव्यवहार के अधीन है। जैसे- 'दारा' शब्द स्त्रीवाची है परन्तु लोक में पुँल्लिङ्ग व बहुवचनान्त प्रयुक्त होता है- दाराः।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि **विकल्प D सही है।**

स्रोत- व्याकरण महाभाष्य-(तृतीय आह्निक) चारुदेव शास्त्री, पेज- 132

9. 'अखण्डेषु कारणेषु फलावचः' इत्यनेन कस्यालङ्कारस्य लक्षणं प्रोक्तमाचार्यमम्मटेन–
(A) सङ्करस्य (B) समासोक्तेः
(C) विभावनायाः (D) विशेषोक्तेः

व्याख्या- आचार्य मम्मट ने काव्यप्रकाश के दशम उल्लास में अर्थालङ्कारों का निरूपण किया है।

1. विशेषोक्ति- ''विशेषोक्तिरखण्डेषु कारणेषु फलावचः'' कारणों के मिलने पर भी जहाँ कार्य का कथन नहीं होता वहाँ विशेषोक्ति अलङ्कार होता है। जैसे- **निद्रानिवृत्तावुदिते द्युरत्ने सखीजने द्वारपदं पराप्ते।**

श्लथीकृताश्लेषरसे भुजङ्गे
चचाल नालिङ्गनतोऽङ्गना सा।। (का.475)

निद्रा की निवृत्ति हो जाने पर, सूर्य उदित होने पर, सखियों के द्वारस्थान पर आ जाने पर, प्रेमी के द्वारा आलिङ्गन के आनन्द को शिथिल कर देने पर भी वह अङ्गना आलिङ्गन से नहीं हटी। विशेषोक्ति **तीन** प्रकार की होती है- **अनुक्तनिमित्ता, उक्तनिमित्ता, अचिन्त्यनिमित्ता।**

2. सङ्कर-''अविश्रान्तिजुषामात्मन्यङ्गाङ्गित्वं तु सङ्करः'' अनेक अलङ्कारों की एक वाक्य में स्थिति होने पर संसृष्टि तथा सङ्कर दो अलङ्कार माने जाते हैं।

जहाँ अनेक अलङ्कार परस्पर निरपेक्ष रूप से स्थित होते हैं वहाँ संसृष्टि अलङ्कार होता है- **''सेष्टा संसृष्टिरेतेषां भेदेन यदिह स्थितिः।''**

जहाँ अनेक अलङ्कारों की सापेक्ष स्थिति होती है वहाँ सङ्करालङ्कार माना जाता है। यह तीन प्रकार का होता है- 1. अङ्गाङ्गिभाव सङ्कर 2. सन्देहसङ्कर 3. एकाश्रयानुप्रवेशसङ्कर

उदाहरण-

आत्ते सीमन्तरत्ने मरकतिनि हृते हेमताटङ्कपत्रे
लुप्तायां मेखलायां झटिति मणितुलाकोटियुग्मे गृहीते।
शोणं बिम्बोष्ठकान्त्या त्वदरिमृगदृशामित्वरीणामरण्ये
राजन्! गुञ्जाफलानां स्रज इति शबरा नैव हारं हरन्ति।।

हे राजन्! तुम्हारे डर से जङ्गलों में भागती हुई शत्रुओं की स्त्रियों के मरकतमणियों से युक्त शिरोभूषण छीन लेने पर, सोने के बने ताटङ्कपत्र निकाल लेने पर, करधनी तोड़ लेने पर और मणिजटित नूपुरों को ले लेने पर भी बिम्बासदृश ओष्ठ की कान्ति से लाल हो रहे शुभ्रमोतियों के हार को- ''यह घुँघुचियों की माला है''- ऐसा समझकर भील नहीं छीनते।

3. समासोक्ति-''परोक्तिर्भेदकैः श्लिष्टैः समासोक्तिः।'' श्लेषयुक्त भेदक विशेषणों द्वारा अप्रकृत के व्यवहार का कथन समासोक्ति कहलाता है। समासेन संक्षेपेण उक्तिः समासोक्तिः। उदाहरण-

लब्ध्वा तव बाहुस्पर्श यस्याः स कोऽप्युल्लासः।
जयलक्ष्मीस्तव विरहे न खलूज्ज्वला दुर्बला ननु सा।।

यहाँ 'जयलक्ष्मी' शब्द केवल अप्रकृत कान्ता-रूपी अर्थ का वाचक नहीं है अपितु श्लेषयुक्त विशेषणों के द्वारा जयलक्ष्मी शब्द नायिका का बोधक भी होता है।

4. विभावना- ''क्रियायाः प्रतिषेधेऽपि फलव्यक्ति-र्विभावना।'' कारण का निषेध होने पर भी फल की उत्पत्ति का वर्णन होने पर विभावनालङ्कार होता है।

कुसुमितलताभिरहताऽप्यधत्त रुजमलिकुलैरदष्टापि।
परिवर्त्तते स्म नलिनीलहरीभिरलोलिताप्यघूर्णत सा॥
(का. 474)

खिली हुई लताओं से ताडित न होने पर भी वह नायिका पीड़ा को प्राप्त हो रही थी, भ्रमर कुल से न काटे जाने पर भी तड़प रही थी और कमलिनियों से युक्त लहरों के चक्कर में पड़े बिना भी चक्कर खा रही थी।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि **विकल्प D सही है।**

स्रोत- काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज 498

10. 'अग्निष्टोमाख्यः' सोमयागः कदा अनुष्ठीयते–

(A) शरदि (B) वसन्ते
(C) ग्रीष्मे (D) प्रावृषि

व्याख्या- अग्निष्टोम सोमयाग का एक प्रकार है। सोमलता द्वारा जो यज्ञ किया जाता है उसे सोमयाग कहते हैं। यह वसन्त ऋतु में होता है। यद्यपि यह यज्ञ एक ही दिन में पूर्ण होता है, तथापि अपने अङ्ग के साथ पाँच दिनों में सुसम्पन्न होता है। इस यज्ञ में सोलह ऋत्विक् होते हैं (कात्यायन श्रौतसूत्र 7/1/7) जो कि चार गणों में विभक्त होते हैं- अध्वर्यु, ब्रह्मा, होता, उद्गाता। प्रत्येक गण में चार-चार ऋत्विक् होते हैं।

* **सोमयाग के 7 भेद होते हैं-** अग्निष्टोम (ज्योतिष्टोम), अत्यग्निष्टोम, उक्थ्य, षोडशी, वाजपेय, अतिरात्र, आप्तोर्याम।

* अग्निष्टोम साम में जिस यज्ञ की समाप्ति हो और उसके बाद अन्य साम न पढ़ा जाए उसे 'अग्निष्टोम कहते हैं।

* उक्थ्य साम, षोडशी साम, वाजपेय साम, अतिरात्र साम और आप्तोर्याम नामक साम पढ़कर जिन यज्ञों की समाप्ति होती है, वे यज्ञ क्रम में से उक्थ्य आदि नामों से कहे जाते हैं।

* अग्निष्टोम साम के अनन्तर षोडशी साम जिस यज्ञ में पढ़ा जाता है। वह 'अत्यग्निष्टोम' कहा जाता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'अग्निष्टोम' नामक सोमयाग वसन्त ऋतु में किया जाता है। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- यज्ञ माहात्म्य- वेणीराम शर्मा गौड, पेज-109

11. 'सच्चिदानन्दानन्ताद्वयं ब्रह्म' इत्यादिना वेदान्तसारे किं लक्षितम्–

(A) अवस्तु (B) वस्तु
(C) अज्ञानम् (D) अधिकारी

व्याख्या- सदानन्दयोगीन्द्र प्रणीत वेदान्तदर्शन के प्रकरणग्रन्थ वेदान्तसार में साधनचतुष्टय अर्थात् (i) अधिकारी (ii) विषय (iii) सम्बन्ध, और (iv) प्रयोजन, वस्तु, अवस्तु, अज्ञान आदि का निरूपण किया है।

1. वस्तु- ''वस्तु सच्चिदानन्दानन्ताद्वयं ब्रह्म'' अर्थात् सच्चिदानन्द, अनन्त और अद्वैत ब्रह्म वस्तु है तथा अज्ञान आदि से लेकर सम्पूर्ण जडप्रपञ्च अवस्तु है।

2. अवस्तु- ''अज्ञानादिसकलजडसमूहोऽवस्तु'' अर्थात् अज्ञान आदि से लेकर समस्त जडप्रपञ्च अवस्तु है।

3. अज्ञानम्- ''अज्ञानं तु सदसद्भ्यामनिर्वचनीयं त्रिगुणात्मकं ज्ञानविरोधि भावरूपं यत्किञ्चिदिति वदन्त्यहमज्ञ इत्याद्यनुभवात्...।'' अर्थात् अज्ञान तो सत् और असत् दोनों से विलक्षण होने से अनिर्वचनीय, त्रिगुणात्मक, ज्ञान का विरोधी तथा भावरूप होने से 'यत्किञ्चित्'- ऐसा कहते हैं। 'मैं अज्ञानी हूँ', इत्यादि अनुभव से।

4. अधिकारी-''अधिकारी तु विधिवदधीतवेदवे-दाङ्गत्वेना....'' अर्थात् अधिकारी तो वह जिज्ञासु प्रमाता है जिसने वेद-वेदाङ्गों का विधिपूर्वक अध्ययन करके, सम्पूर्ण वेदों के अभिप्राय को भलीभाँति जान लिया है। इस जन्म अथवा पूर्वजन्म में काम्य और निषिद्ध कर्मों का त्यागकर, नित्य, नैमित्तिक, प्रायश्चित्त और उपासना कर्मों के अनुष्ठान से, सम्पूर्ण पापों से मुक्त, अत्यन्त निर्मल अन्तःकरण वाला होकर, साधन चतुष्टय से सम्पन्न हो।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'सच्चिदानन्दानन्ताद्वयं ब्रह्म' इत्यादि से 'वस्तु' का लक्षण किया गया है।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- वेदान्तसार- राकेश शास्त्री, पेज-149

12. पाणिनीयशिक्षानुसारेण विसर्गस्य रूपपरिवर्तनं (गतिः) कतिविधम् भवति–

(A) सप्तविधम् (B) नवविधम्
(C) अष्टविधम् (D) त्रिविधम्

व्याख्या- महर्षि पाणिनि प्रणीत 'पाणिनीय शिक्षा' में विसर्ग की आठ गतियाँ बताई गई हैं-

ओभावश्च विवृत्तिश्च षशसा रेफ एव च।
जिह्वामूलमुपध्मा च गतिरष्टविधोष्मणः॥ (पा.शि.14)

अर्थात् विसर्गात्मक ऊष्मा के आठ स्वरूप उपलब्ध होते हैं-
1. ओकार- शिवो वन्द्यः
2. विवृत्ति- विसर्ग के स्थान में अन्ततोगत्वा आदेश के रूप में आये यकारादि वर्णों का लोप हो जाने पर ('लोपः शाकल्यस्य' आदि नियमों से) तथा अन्य कारणों से भी स्वरों के बीच सन्धि का अभाव 'विवृत्ति' है।
3. षकार - रामष्षष्ठः 4. शकार - हरिश्शेते
5. सकार - कस्कः 6. रेफ - अहर्पतिः
7. जिह्वामूलीय - क≍ करोति 8. उपध्मानीय - प≍ पचति

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि विसर्ग की आठ गतियाँ होती हैं। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- पाणिनीय शिक्षा, श्लोक-14

13. फललक्षणा निम्नलिखितासु लक्षणासु कस्याः पर्याया विद्यते–
(A) गौणीलक्षणायाः (B) रूढिवतीलक्षणायाः
(C) प्रयोजनवतीलक्षणायाः (D) शुद्धालक्षणायाः

व्याख्या- आचार्य विश्वनाथ ने साहित्यदर्पण के द्वितीय परिच्छेद में शब्दशक्ति विवेचन के प्रसङ्ग में लक्षणा के रूढिवती, प्रयोजनवती आदि भेद, तत्पश्चात् प्रयोजनवती लक्षणा के उपादानवती, लक्षणलक्षणा आदि भेद प्रभेद बतलाए हैं। प्रयोजनवती लक्षणा को फललक्षणा भी कहा है- **''व्यङ्ग्यस्य गूढागूढत्वाद् द्विधा स्युः फललक्षणाः। (कारिका 10)**
अर्थात् व्यङ्ग्य के गूढ और अगूढ होने के कारण फललक्षणा वाली अर्थात् प्रयोजनवती लक्षणाएँ पुनः दो प्रकार की होती हैं।
आचार्य विश्वनाथ ने लक्षणा के 80 भेद बताएँ हैं (एवमशीतिप्रकारा लक्षणाः) जबकि आचार्य मम्मट ने 6 भेद बताएँ हैं (लक्षणा तेन षड्विधा- काव्यप्रकाश)
* लक्षणा को **त्रिस्थूणा** कहा गया है क्योंकि इसके तीन प्रमुख आधार स्तम्भ हैं-
(i) मुख्यार्थबाध
(ii) मुख्यार्थ के साथ लक्ष्यार्थ का योग होना
(iii) रूढ़ि अथवा प्रयोजन का लक्ष्यार्थ- हेतु बनना
* अलङ्कारशास्त्र में लक्षणा को 'गौणीवृत्ति' अथवा 'भक्ति' भी कहा गया है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि **विकल्प C सही है।**

स्रोत- साहित्यदर्पण- अभिराज राजेन्द्र मिश्र, पेज-175

14. ''कथाप्रसङ्गेषु मिथः सखीमुखात्तृणेऽपि तन्व्या नलनामनि श्रुते'' अत्र नलपदस्यार्थोऽस्ति-
(A) शत्रुः (B) नृपः
(C) अग्निः (D) तृणम्

व्याख्या- श्रीहर्ष विरचित नैषधीयचरितम् में 22 सर्ग हैं, यह शृङ्गाररस प्रधान महाकाव्य है। इसमें नल दमयन्ती के प्रणय और विवाह की कथा वर्णित है। प्रश्नोक्त पद्यांश प्रथम सर्ग से उद्धृत है। पद्य का अर्थ इस प्रकार है-

कथाप्रसङ्गेषु मिथः सखीमुखात्तृणेऽपि तन्व्या नलनामनि श्रुते।
द्रुतं विधूयान्यदभूयतानया मुदा तदाकर्णनसज्जकर्णया।। 1.35

मिथः - परस्पर, आपस में **कथाप्रसङ्गेषु-** वार्तालाप के दौरान
सखीमुखात्- सखियों के मुख से **नलनामनि-** नल नामक
तृणे अपि - तृण के भी **श्रुते -** सुनने पर
अनया - यह **तन्व्या -** कृशाङ्गी
द्रुतम् - तुरन्त **अन्यद् -** अन्य कार्य
विधूय - छोड़कर **मुदा -** हर्ष से
तदाकर्णनसज्जकर्णया- उसके कीर्तन सुनने के लिए तत्पर कानों वाली
अभूयत - हो जाती थी।

नैषधीयचरितम् के कुछ अन्य शब्दार्थ-
1. **विनिद्ररोमा-** रोमाञ्चित, विनिद्राणि रोमाणि यस्याः, विनिद्ररोमा 'विनिद्ररोमाजनि शृण्वती नलम्'' (1.34)
2. **अनागसे-** निरपराध के लिए, 'अनागसे शंसति बालचापलम्'। (1.25)
3. **पार्विकशर्वरीश्वरः-** पूर्णिमा का चन्द्रमा, पर्वणि भवः पार्विकः, पार्विकश्चासौ शर्वरीश्वरः चन्द्रमाः, न शारदः पार्विकशर्वरीश्वरः। (1.20)
4. **वेधसा-** ब्रह्मा के द्वारा, 'पुरेदमूर्ध्वं भवतीति वेधसा।' (1.18)
5. **चिकुराः-** केश,'द्विफालबद्धाश्चिकुराः शिरःस्थितम्।' (1.16)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि प्रश्नोक्त पद्यांश में 'नल' शब्द का अर्थ 'तृण' है। **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत- नैषधीयचरितम् (1.35)

15. साहित्यदर्पणानुसारं रसस्य किं विशेषणं न साधु–
(A) लोकानुभूतिः (B) ब्रह्मास्वादसहोदरः
(C) अभिन्नः (D) स्वप्रकाशः

व्याख्या- आचार्य विश्वनाथ प्रणीत काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ में 10 परिच्छेद हैं, तृतीय परिच्छेद में रसनिरूपण करते हुए रस का

स्वरूप तथा आस्वादन का प्रकार बतलाया है-

सत्त्वोद्रेकादखण्डस्वप्रकाशानन्दचिन्मयः।
वेद्यान्तरस्पर्शशून्यो ब्रह्मास्वादसहोदरः॥2॥
लोकोत्तरचमत्कारप्राणः कैश्चित्प्रमातृभिः।
स्वाकारवदभिन्नत्वेनायमास्वाद्यते रसः॥3॥

उपर्युक्त श्लोकों में विश्वनाथ जी ने रस के विशेषण दिए हैं-

1. अखण्ड 2. अद्वितीय 3. स्वयम्प्रकाश
4. आनन्दस्वरूप 5. चिन्मय 6. वेद्यान्तर स्पर्शशून्य अर्थात् रससाक्षात्कार के समय अन्य विषयों के स्पर्श से शून्य
7. ब्रह्मास्वादसहोदर 8. अलौकिक चमत्कार रूपी प्राण (सार) वाला 9. स्वाकारवत् 10. अभिन्न

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि रस के विशेषणों में से 'लोकानुभूति' रस का विशेषण नहीं है। **अतः विकल्प A सही है।**

स्रोत- साहित्यदर्पण- शालिग्राम शास्त्री, पेज-48

16. तस्मादकृतकं शास्त्रं स्मृतिं च सनिबन्धनाम्।
आश्रित्यारभ्यते शिष्टैः शब्दानामनुशासनम्॥
वाक्यपदीयस्यास्यां कारिकायाम् 'अकृतकं शास्त्रम्' इति किम्?

(A) ब्रह्मसूत्रम् (B) व्याकरणशास्त्रम्
(C) मीमांसाशास्त्रम् (D) अपौरुषेयं शास्त्रम्

व्याख्या- महावैयाकरण भर्तृहरि ने वाक्यपदीय के ब्रह्मकाण्ड की 43वीं कारिका में वेदों को 'अकृतकं शास्त्रम्' कहा है।

अन्वयः - तस्मात् अकृतकम् शास्त्रम् सनिबन्धनाम् स्मृतिम् च आश्रित्य शिष्टैः शब्दानाम् अनुशासनम् आरभ्यते।।

तस्मात् - इस कारण
अकृतकम् - अकृत्रिम, अपौरुषेय
शास्त्रम् - ऋग्वेदादि शास्त्र
च - और
सनिबन्धनाम् - सनिमित्तक
स्मृतिम् - साङ्गोपाङ्गरूप स्मृति को
आश्रित्य - आश्रय करके
शिष्टैः - वेदादि शास्त्रज्ञ महर्षियों के द्वारा
शब्दानाम् अनुशासनम् - लौकिक और वैदिक साधु शब्दों का उपदेश
आरभ्यते - किया जाता रहा है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'अकृतकं शास्त्रम्' का अर्थ 'अपौरुषेयं शास्त्रम्' है। **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत- वाक्यपदीयम्- जयदत्त उप्रेती, पेज-31

17. 'तादात्म्यसम्बन्धावच्छिन्नप्रतियोगिताकः' तर्कसङ्ग्रहे कः प्रोक्तः–

(A) प्रागभावः (B) प्रध्वंसाभावः
(C) अन्योन्याभावः (D) अत्यन्ताभावः

व्याख्या- तर्कसङ्ग्रह नामक न्यायवैशेषिकशास्त्र से सम्बद्ध प्रकरणग्रन्थ में अन्नम्भट्ट ने वैशेषिक दर्शन में मान्य सप्तपदार्थों का निरूपण किया है- द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय और अभाव। इनमें से अभाव नामक पदार्थ चार प्रकार का होता है-

1. प्रागभाव- (अनादिः सान्तः प्रागभावः) जिसका आदि नहीं है और अन्त है। यह कार्योत्पत्ति के बाद होता है।

2. प्रध्वंसाभाव- (सादिरनन्तः प्रध्वंसः) जिसका आदि है किन्तु अन्त नहीं। यह कार्योत्पत्ति के बाद होता है।

3. अत्यन्ताभाव- (त्रैकालिकसंसर्गावच्छिन्नप्रतियोगिताकः) भूत, भविष्य, वर्तमान तीनों कालों में होने वाले और संसर्गयुक्त प्रतियोगिता जिसमें है। जैसे- भूतल में घट नहीं है।

4. अन्योन्याभाव- (तादात्म्यसम्बन्धावच्छिन्नप्रतियोगिताकः) तादात्म्य- सम्बन्ध से युक्त प्रतियोगिता वाले अभाव को अन्योन्याभाव कहा जाता है। जैसे- घट पट नहीं है और पट घट नहीं है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि प्रश्नोक्त लक्षण अन्योन्याभाव का है। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- तर्कसङ्ग्रह- गोविन्दाचार्य, पेज- 288

18. ''सहस्रगुणमुत्स्रष्टुमादत्ते हि रसं रविः'' उक्तिरियं कुत्र प्राप्यते–

(A) किरातार्जुनीये (B) रघुवंशे
(C) मेघदूते (D) मालविकाग्निमित्रे

व्याख्या- 1. रघुवंशम्- कालिदास रचित 19 सर्गों वाला, लघुत्रयी में परिगणित, 31 रघुवंशी राजाओं के वर्णन से युक्त, वीर रसप्रधान सुप्रसिद्ध महाकाव्य है।

प्रमुख सूक्तियाँ-

1. हेम्नः संलक्ष्यते ह्यग्नौ विशुद्धिः श्यामिकाऽपि वा।। (1.10)
2. सहस्रगुणमुत्स्रष्टुमादत्ते हि रसं रविः।।(1.18)
3. प्रतिबध्नाति हि श्रेयः पूज्यपूजाव्यतिक्रमः।। (1.79)
4. स्ववीर्यगुप्ता हि मनोः प्रसूतिः।।(2.4)

5. तेजसां हि न वयः समीक्ष्यते।। (11.1)

2. किरातार्जुनीयम्- भारवि रचित 18 सर्गों का वीररसप्रधान, बृहत्त्रयी में परिगणित महाकाव्य है। इसमें किरातरूपी शिव और अर्जुन के युद्ध व पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति का वर्णन मुख्यरूप से है।

प्रमुख सूक्तियाँ-

1. हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः। (1.4)
2. वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः। (1.8)
3. अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता। (1.23)
4. विचित्ररूपाः खलु चित्तवृत्तयः। (1.37)
5. सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः परमापदां पदम्। (2.30)

3. मेघदूतम्- कालिदासरचित विप्रलम्भशृङ्गार से परिपूर्ण, लघुत्रयी में परिगणित खण्डकाव्य है। इसप्रकार मल्लिनाथ की 'संजीवनी' टीका सुप्रद्धित है। सम्पूर्ण ग्रन्थ मन्दाक्रान्ता छन्द में रचित है। 50 से अधिक संस्कृत टीकाएँ प्राप्त होती है।

कुछ प्रमुख सूक्तियाँ निम्नलिखित हैं-

1. कामार्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु। (पूर्वमेघ-5 कामार्त स्वभाव से ही चेतन एवं अचेतन के विषय में अविवेकी हो जाते हैं)

2. याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा। (पूर्वमेघ-6) (उच्चगुण वाले व्यक्ति से निष्फल याचना भी श्रेष्ठ है किन्तु नीच से सफल याचना भी श्रेष्ठ नहीं)

3. रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय। (पूर्वमेघ-20) सभी रिक्त पदार्थ हल्के और पूर्ण पदार्थ गौरवयुक्त होते हैं।

4. कान्तोदन्तः सुहृदुपनतः सङ्गमात्किञ्चिदूनः। (उत्तरमेघ-40) (मित्र द्वारा लाया गया प्रियतम का सन्देश प्रिय मिलन से कुछ ही कम होता है।)

4. मालविकाग्निमित्रम्- कालिदास प्रणीत, शृङ्गार रसप्रधान, 5 अङ्कों का नाटक है। इसमें मालविका और अग्निमित्र के प्रणय और विवाह का वर्णन है। कुछ प्रमुख सूक्तियाँ-

1. पुराणमित्येव न साधु सर्वम्। (1.2)
(प्राचीन है- इतने मात्र से ही सब कुछ अच्छा नहीं होता।)

2. कार्यसिद्धिपथः सूक्ष्मः स्नेहेनाप्युपलभ्यते। (4.6)

3. नाट्यं भिन्नरुचेर्जनस्य बहुधाप्येकं समाराधकम्। (1.4)

स्पष्टीकरण - उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि प्रश्नोक्त सूक्ति रघुवंशम् की है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- रघुवंशम् (1/8)

19. कतिविधास्तुष्टयः साङ्ख्ये परिगणिताः–

(A) अष्टौ	(B) सप्त
(C) नव	(D) तिस्रः

व्याख्या- आचार्य ईश्वरकृष्ण ने अपने सांख्यशास्त्रीय ग्रन्थ सांख्यकारिका की 47वीं कारिका में विपर्यय (अविद्या), अशक्ति, तुष्टि तथा सिद्धि के भेदों को गिनाया है-

पञ्चविपर्ययभेदा भवन्त्यशक्तिश्च करणवैकल्यात्।
अष्टाविंशतिभेदा तुष्टिर्नवधाऽष्टधा सिद्धिः॥ (का.47)

अर्थात् **1-** विपर्यय अर्थात् अविद्या के पाँच भेद होते हैं- (i) अविद्या (ii) अस्मिता (iii) राग (iv) द्वेष (v) अभिनिवेश

2- इन्द्रिय विकलता से उत्पन्न अशक्ति के 11 भेद, नौ तुष्टियों की विपर्ययरूप नौ तुष्टियाँ, आठ सिद्धियों की विपर्ययरूप आठ असिद्धियाँ = 28 भेद

3- तुष्टि के 9 भेद होते हैं- (i) प्रकृति, (ii) उपादान, (iii) काल और (iv) भाग्य-चार आध्यात्मिक तुष्टियाँ शब्दादि विषयों से वैराग्य होने पर पाँच बाह्य तुष्टियाँ = (v) पार (vi) सुपार (vii) पारापार (viii) अनुत्तमाम्भस् (ix) उत्तमाम्भस् ।

4- सिद्धि के 8 भेद- अध्ययन, शब्द, ऊह, सुहृत्प्राप्ति और दान-ये पाँच सिद्धियाँ तथा दुःखत्रय की विघातरूप तीन और सिद्धियाँ।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि तुष्टियाँ नौ प्रकार की होती हैं। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- साङ्ख्यकारिका- सन्तनारायण श्रीवास्तव्य, पेज-271

20. 'शब्दज्ञानानुपाती वस्तुशून्यः' इति लक्षणलक्षिता चित्तवृत्तिः का योगदर्शनानुसारेण –

(A) विपर्ययः	(B) निद्रा
(C) प्रमाणम्	(D) विकल्पः

व्याख्या- महर्षि पतञ्जलि प्रणीत 'योगदर्शन' भारतीय आस्तिक षड्दर्शनों में अन्यतम है। इसमें चार पाद हैं- 1. समाधिपाद 2. साधनपाद 3. विभूतिपाद 4. कैवल्यपाद।

1. विपर्यय- विपर्ययो मिथ्याज्ञानमतद्रूपप्रतिष्ठम्॥
अर्थात् जो उस वस्तु के स्वरूप में प्रतिष्ठित नहीं है, ऐसा मिथ्याज्ञान विपर्यय कहलाता है।

2. निद्रा- अभावप्रत्ययालम्बना वृत्तिर्निद्रा- अभाव के ज्ञान का अवलम्बन करने वाली वृत्ति निद्रा है। (सूत्र 10)

3. प्रमाण- प्रमाणवृत्ति तीन प्रकार की होती है- **प्रत्यक्षानुमानागमाः प्रमाणानि॥** (सूत्र 7)

4. विकल्प- शब्दज्ञानानुपाती वस्तुशून्यो विकल्पः॥ (सूत्र 9) अर्थात् जो ज्ञान शब्दजनित ज्ञान के साथ-साथ होने वाला है और जिसका विषय वास्तव में नहीं है, वह विकल्प है

5. स्मृति- अनुभूतविषयासम्प्रमोषः स्मृतिः॥ (सूत्र 11) अर्थात् अनुभव किये हुए विषय का न छिपना अर्थात् प्रकट हो जाना स्मृति है। उपर्युक्त पाँचों चित्त की वृत्तियाँ हैं।
महर्षि पतञ्जलि के अनुसार चित्त की वृत्तियाँ असंख्य होती हैं। अतः उनको पाँच श्रेणियों में बाँटा गया है-

वृत्तयः पञ्चतय्यः क्लिष्टाऽक्लिष्टाः॥ (सूत्र 5)

प्रमाणविपर्ययविकल्पनिद्रास्मृतयः॥ (सूत्र 6)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि **विकल्प D सही है।**
स्रोत- पातञ्जलयोगदर्शन - सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव - पेज 38

21. 'ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति' उक्तिरियं कुत्र प्राप्यते –

(A) हर्षचरिते (B) मालविकाग्निमित्रे
(C) उत्तररामचरिते (D) नैषधीयचरिते

व्याख्या- 1. हर्षचरित- यह बाणभट्ट की प्रथम रचना मानी जाती है। इस आख्यायिका में आठ उच्छ्वास हैं। प्रथम दो उच्छ्वासों में हर्ष ने अपने वंश का वर्णन किया है और आगे के 6 उच्छ्वासों में हर्ष के पूर्वजों का वर्णन करते हुए हर्ष जन्म से लेकर राज्यश्री के मिलने तक का वर्णन है। यह ग्रन्थ अपूर्ण है। इसकी कुछ प्रसिद्ध सूक्तियाँ निम्नलिखित हैं-

* **मरणाच्च मे जीवितमेवास्मिन्समये साहसम्।** (पञ्चमोच्छ्वास) (मरने से बढ़कर साहस का काम मेरा जीवित रहना है।
* **परिवर्तमानः एकः कालः शैलानिवानन्तः।** (5/2) (एकाकी कालचक्र जब परिवर्तित होता है तो अनेक महापुरुषों को समान समय में ही बिना किसी लगाव के समाप्त कर डालता है।)
* **नियतिर्विधाय पुंसां प्रथमं सुखमुपरि दारुणं दुःखम्।** (5/1)

(नियति प्रारम्भ में मनुष्यों को सुख प्रदान करके फिर वज्र के सदृश कठोर दुःख प्रदान करने लगती है।)

2. मालविकाग्निमित्रम्- कालिदास प्रणीत, शृङ्गाररसप्रधान 5 अङ्कों का नाटक है। इसमें कुल 96 श्लोक। इसमें मालविका और अग्निमित्र के प्रणय और विवाह का वर्णन है। अग्निमित्र धीरललित कोटि का नायक है। इसकी कुछ प्रसिद्ध उक्तियाँ निम्नलिखित हैं-

* **पुराणमित्येव न साधु सर्वं न चापि काव्यं नवमित्यवद्यम्।**
सन्तः परीक्ष्यान्यतरद् भजन्ते मूढः परप्रत्ययनेयबुद्धिः॥ (1-2)
* **कार्यसिद्धिपथः सूक्ष्मः स्नेहेनाप्युपलभ्यते। (4.6)**
* **श्लिष्टा क्रिया कस्यचिदात्मसंस्था**
संक्रान्तिरन्यस्य विशेषयुक्ता।
यस्योभयं साधु स शिक्षकाणां
धुरि प्रतिष्ठापयितव्य एव॥ (1.16)
* **नाट्यं भिन्नरुचेर्जनस्य बहुधाप्येकं समाराधकम्। (1.4)**

3. उत्तररामचरित- यह भवभूति विरचित 7 अङ्कों का करुणरसप्रधान नाटक है। इसके उपजीव्य वाल्मीकिरामायण का उत्तरकाण्ड (सर्ग 42-97) और पद्मपुराण, पातालखण्ड, अध्याय 1-68 तक माने जाते हैं। सप्तम अङ्क में गर्भाङ्क की योजना, विदूषक रहित नाटक, तृतीय अङ्क में छायाङ्क की योजना इसकी प्रमुख विशेषताएँ हैं। कुछ प्रमुख सूक्तियाँ निम्नलिखित हैं-

* **अपिग्रावा रोदित्यपि दलति वज्रस्य हृदयम्। (1/28)**
* **तीर्थोदकं च वह्निश्च नान्यतः शुद्धिमर्हतः। (1/13)**
* **ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति। (1/10)**
* **सतां केनापि कार्येण लोकस्याराधनं व्रतम्॥ (1/41)**
* **गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः। (4/11)**
* **नैषधीयचरितम्-** श्रीहर्ष विरचित 22 सर्गों का शृङ्गारप्रधान, वैदर्भी रीति- संवलित, बृहत्त्रयी में परिगणित सुप्रसिद्ध महाकाव्य है। इसमें नल-दमयन्ती की प्रणयकथा वर्णित है।

कुछ प्रमुख सूक्तियाँ-

* **क्व भोगमाप्नोति न भाग्यभाग्जनः। (1/102)**
* **आर्जवं हि कुटिलेषु न नीतिः। (5/103)**
* **कार्यं निदानाद्धि गुणानधीते। (3/17)**
* **झटिति पराशयवेदिनो हि विज्ञाः। (4/118)**
* **भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः। (17/70)**

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि **विकल्प C सही है।**
स्रोत- उत्तररामचरितम् (1.10)

22. 'राजन्तमध्वराणां गोपामृतस्य दीदिविम् '– अत्र 'दीदिविम् ' पदस्य कोऽर्थः?

(A) इन्द्रम् (B) प्रकाशमानम्
(C) द्युलोकम् (D) पुनर्जायमानम्

व्याख्या- उपर्युक्त मन्त्र ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के प्रथम सूक्त का आठवाँ मन्त्र है। अग्निसूक्त के ऋषि मधुच्छन्दा, देवता-अग्नि, छन्द-गायत्री है। गायत्री छन्द चौबीस वर्णों का होता है।
राजन्तमध्वराणां गोपामृतस्य दीदिविम्। वर्धमानं स्वे दमे॥
राजन्तम्- प्रकाशित होते हुए, अध्वराणां-हिंसारहित यज्ञों के गोपाम्-रक्षक, ऋतस्य-सत्य कर्मफलों के, दीदिविम्-पुनःपुनः प्रकाशमान,

वर्धमानम्-बढ़ने वाले, स्वे-अपने, दमे-यज्ञशाला में।
दीदिविम्- यङ्लुगन्त 'दिव्' धातु से 'कि' प्रत्यय
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'दीदिविम्' का अर्थ 'प्रकाशमानम्' है **अतः विकल्प B सही है।**
स्रोत- ऋक्सूक्तसङ्ग्रह - हरिदत्त शास्त्री, पेज-60

23. कस्माद् हेतोः प्रधानस्यानुपलब्धिः सांख्यरीत्या?
(A) समानाभिहारात् (B) सौक्ष्म्यात्
(C) अतिदूरात् (D) मनोऽनवस्थानात्

व्याख्या- आचार्य ईश्वरकृष्ण ने अपने साङ्ख्यशास्त्रीय ग्रन्थ साङ्ख्यकारिका की 7वीं कारिका में यह बताया है कि किन कारणों से विद्यमान होने पर भी वस्तुओं का प्रत्यक्षज्ञान नहीं होता है, वे कारण हैं-

1. अत्यधिक दूर होने से [अतिदूरात्]
2. अत्यधिक समीप होने से [सामीप्यात्]
3. इन्द्रिय के नाश होने से [इन्द्रियघातात्]
4. मन की अस्थिरता से [मनः अनवस्थानात्]
5. सूक्ष्म होने से [सौक्ष्म्यात्]
6. किसी व्यवधान के आ जाने से [व्यवधानात्]
7. किसी के द्वारा अभिभूत हो जाने से [अभिभवात्]
8. समानजातीय वस्तु में मिल जाने से [समानाभिहारात्]

इस प्रश्न पर कि उपर्युक्त कारणों में से कौन सा कारण है जिससे प्रधान-पुरुष आदि का प्रत्यक्ष नहीं हो पाता, 8वीं कारिका में बतलाया है-

सौक्ष्म्यात् तदनुपलब्धिर्नाभावात् कार्यतस्तदुपलब्धेः।
महदादि तच्च कार्यं प्रकृतिसरूपं विरूपं च ॥ (का. 8)

अर्थात् उन प्रधान पुरुषादि का अप्रत्यक्ष होना, सूक्ष्म (निरवयव) होने के कारण है, उनके अभाव के कारण नहीं है, क्योंकि अपने कार्यरूप लिङ्ग से उनकी उपलब्धि होती है अर्थात् अनुमान से उनकी उपलब्धि होती है, और वे कार्य हैं महत्तत्त्वादि, जिनका प्रकृति के साथ सारूप्य (साधर्म्य) भी है और वैरूप्य भी।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि प्रधान के अत्यन्त सूक्ष्म होने के कारण (सौक्ष्म्यात्) उसकी उपलब्धि प्रत्यक्ष प्रमाण द्वारा सम्भव नहीं हो पाती अपितु उसके कार्यरूप लिङ्ग से उसकी अनुमिति होती है। **अतः विकल्प B सही है।**
स्रोत- सांख्यकारिका - (का ० 8)

24. तर्कभाषारीत्या अभावात्मककार्यस्य कारणं कीदृशम्भवति?
(A) निमित्तकारणम् (B) असमवायिकारणम्
(C) समवाय्यसमवायिकारणम् (D) समवायिकारणम्

व्याख्या- * विश्व में दो प्रकार के कार्य माने गये हैं- 1. भावात्मक या भावकार्य; जैसे- घट-पट-आदि कार्य और 2. अभावात्मक कार्य
* न्याय वैशेषिक के अनुसार भावकार्य वे कहे जा सकते हैं, जिनमें सत्ता नामक सामान्य रहती है। द्रव्य, गुण तथा कर्म में ही सत्ता जाति रहती है। अतः भावकार्य का अर्थ है द्रव्य, गुण तथा कर्म के रूप में होने वाले कार्य।
* न्याय वैशेषिक मत में अभाव भी एक पदार्थ है जो कि अभावात्मक है। अभाव चार प्रकार का है- प्रागभाव, प्रध्वंसाभाव, अत्यन्ताभाव और अन्योन्याभाव। इनमें से केवल प्रध्वंसाभाव ही कार्यरूप है, अन्य नहीं।
* समवायि, असमवायि तथा निमित्त यह तीन प्रकार का कारण भावात्मक कार्यों का ही होता है।
* जो अभावात्मक कार्य अर्थात् प्रध्वंसाभाव है उसका तो केवल निमित्त कारण ही होता है।
* जैसा तर्कभाषाकार आचार्य केशवमिश्र ने कारण निरूपण के प्रसंग में इस प्रकार कहा है-
''तदेतद् भावानामेव त्रिविधं कारणम्। अभावस्य तु निमित्तमात्रं तस्य क्वचिदप्यसमवायात्। समवायस्य भावद्वयधर्मत्वात्।''
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि अभावात्मक कार्य का कारण निमित्त कारण होता है **अतः विकल्प A सही है।**
स्रोत- तर्कभाषा- श्रीनिवास शास्त्री, पेज-43-44

25. साहित्यदर्पणानुसारं रसास्वादने को हेतुः?
(A) काव्यपाठः (B) पात्राणि
(C) सहृदयता (D) सत्त्वोद्रेकः

व्याख्या- आचार्य विश्वनाथ ने अपने काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ साहित्यदर्पण के तृतीय परिच्छेद में रसनिरूपण करने के साथ ही रसास्वादन का हेतु भी बतलाया है-

सत्त्वोद्रेकादखण्डस्वप्रकाशानन्दचिन्मयः।
वेद्यान्तरस्पर्शशून्यो ब्रह्मास्वादसहोदरः॥
लोकोत्तरचमत्कारप्राणः कैश्चित्प्रमातृभिः।
स्वाकारवदभिन्नत्वेनायमास्वाद्यते रसः॥ (कारिका 3/2-3)

* अर्थात् सत्त्व का उद्रेक होने के कारण, कुछ प्रमाताओं (सहृदयों)

द्वारा अखण्ड (अद्वितीय) स्वयंप्रकाशस्वरूप, आनन्दमय, अनुभूयमान अन्य विषय के संस्पर्श से शून्य, ब्रह्मास्वादसहोदर अलौकिक चमत्कार से अनुप्राणित इस रस का, अपने आकार की ही भाँति अभिन्नरूप से आस्वादन किया जाता है।

* रजोगुण तथा तमोगुण से अस्पृष्ट मन को यहाँ सत्त्व कहा गया है।
* इस सत्त्व के उद्रेक का अर्थ है- रजोगुण एवं तमोगुण को अभिभूत कर उसका प्रकाशित होना।
* इस सत्त्वोद्रेक का कारण होता है- 'उसी प्रकार के अलौकिक काव्यार्थ का अनुशीलन।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'सत्त्वोद्रेक' ही रसास्वादन में हेतु है **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत- साहित्यदर्पण- अभिराज राजेन्द्र मिश्र, पृष्ठ-218

26. जहदजहल्लक्षणायाः वेदान्ते किमपरं नाम प्रयुक्तम्?

(A) भागलक्षणा (B) सारोपालक्षणा
(C) जहल्लक्षणा (D) अजहल्लक्षणा

व्याख्या- मुख्यार्थ का बाध होने पर उससे युक्त अर्थान्तर का ग्रहण जिस शक्ति से होता है, उसे लक्षणा कहते हैं, जो अर्थान्तर गृहीत होता है वह लक्ष्यार्थ तथा जिस पद में लक्षणा होती है, उसे लाक्षणिक पद कहते हैं।

यह लक्षणा तीन प्रकार की होती है- 1. जहल्लक्षणा, 2. अजहल्लक्षणा, 3. जहदजहल्लक्षणा।

➢ **जहल्लक्षणा-** वाच्यार्थ का पूर्णरूप से परित्याग हो जाने पर उससे संबद्ध दूसरे अर्थ का बोध कराने वाली शब्द की वृत्ति को जहल्लक्षणा कहते हैं। जैसे- **'गङ्गायां घोषः'** इसमें गङ्गा शब्द अपने प्रवाहरूप मुख्य अर्थ का बाध हो जाने पर उसका परित्याग कर उससे सम्बद्ध गङ्गातट रूप अर्थान्तर का बोध कराता है। घोष अर्थात् गाँव या बस्ती का आधार गङ्गा की धारा या प्रवाह तो हो नहीं सकता इसलिए उसका बाध या परित्याग हो जाता है। तदनन्तर गङ्गा से सम्बद्ध तट रूप अर्थ लिया जाता है।

➢ **अजहल्लक्षणा-** अजहल्लक्षणा वह लक्षणा है जिसमें वाच्यार्थ या मुख्यार्थ का परित्याग किये बिना उससे सम्बद्ध अर्थ का बोध या ग्रहण हो जाता है। इसको **उपादान लक्षणा** भी कहते हैं, क्योंकि वाच्यार्थ से अतिरिक्त अर्थ का उपादान या ग्रहण इस लक्षणा के द्वारा किया जाता है। जैसे- **'कुन्ताः प्रविशन्ति'।** कुन्त अर्थात् भालों का तो प्रविशन्ति क्रिया के साथ अन्वय बनता नहीं, क्योंकि प्रवेश क्रिया को जीवित पदार्थ ही कर सकता है। भाले तो जड़ पदार्थ हैं। अतः 'कुन्ताः' का 'कुन्तधारिणः' अर्थात् 'भाले वाले पुरुष' ऐसा अर्थ लक्षणा से ग्रहण किया गया।

➢ **जहदजहल्लक्षणा-** तीसरी लक्षणा जहदजहल्लक्षणा इसलिए कही जाती है, क्योंकि इसमें मुख्य अर्थ या वाच्यार्थ का अंशतः तो त्याग होता है, परन्तु अंशतः त्याग नहीं (अजहत्) होता है। दूसरे शब्दों में, इस लक्षणा में वाच्यार्थ का पूर्णतः त्याग न होकर एक ही अंश या भाग का त्याग होता है। इसी से इसका दूसरा नाम **'भागत्याग लक्षणा'** और संक्षिप्त नाम केवल **'भागलक्षणा' है,** जैसा कि वेदान्तसार में दिये गये **'तत्त्वमसि'** वाक्य के अर्थ बोध में अपेक्षित इस लक्षणा को इसी नाम से निर्दिष्ट करने से स्पष्ट है। पूर्ण अर्थ के एक भाग का ग्रहण करने से भी इसका भागलक्षणा नाम माना जा सकता है। जैसे- **सोऽयं देवदत्तः आदि।**

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि जहदजहल्लक्षणा को वेदान्त में 'भागलक्षणा' या 'भागत्यागलक्षणा' भी कहते हैं। **अतः विकल्प A सही है।**

स्रोत- वेदान्तसार - राकेश शास्त्री, पेज 235

27. अधोऽङ्कितेषु केन सह कस्य सम्बन्धः?

समुचितां तालिकां चिनुत -

(a)	अयोगात्मकभाषा	(i)	संस्कृत भाषा
(b)	श्लिष्टयोगात्मकभाषा	(ii)	तुर्की
(c)	प्रश्लिष्टयोगात्मकभाषा	(iii)	तिब्बती भाषा
(d)	अश्लिष्टयोगात्मकभाषा	(iv)	चेरोफी

Options

(A) (a) (iv), (b) (iii), (c) (ii), (d) (i)
(B) (a) (ii), (b) (i), (c) (iv), (d) (iii)
(C) (a) (i), (b) (ii), (c) (iii), (d) (iv)
(D) (a) (iii), (b) (i), (c) (iv), (d) (ii)

व्याख्या- विश्व की भाषाओं के दो प्रकार के वर्गीकरण हैं- आकृतिमूलक और पारिवारिक। आकृतिमूलक वर्गीकरण के दो भेद हैं- योगात्मक और अयोगात्मक। अयोगात्मक भेद एक ही प्रकार का है। योगात्मक के तीन भेद हैं- 1. शिलष्ट, 2. अश्लिष्ट, 3. प्रश्लिष्ट। योगात्मक भाषाएँ प्रकृति और प्रत्यय के संयोग से बनी हुई होती हैं।

आकृतिकमूलक वर्गीकरण-

1. अयोगात्मक भाषाएँ- अयोगात्मक उन भाषाओं को कहते हैं, जिनमें प्रकृति और प्रत्यय या अर्थतत्व और सम्बन्धतत्व का

संयोग नहीं होता है। प्रत्येक शब्द स्वतंत्र होता है। इसमें प्रत्येक शब्द प्रकृति या मूल के तुल्य होता है, अतः इसे Root (धातु,मूल) Language कहते हैं। इन भाषाओं में प्रकृति और प्रत्यय जैसी चीज नहीं होती। इस वर्ग के अन्तर्गत आने वाली भाषाएँ है- चीनी, तिब्बती आदि।

2. योगात्मक भाषाएँ- योगात्मक भाषाएँ उनको कहते हैं, जिनमें प्रकृति और प्रत्यय का संयोग रहता है। प्रकृति (अर्थतत्त्व) और प्रत्यय (सम्बन्धतत्त्व) का संयोग विभिन्न प्रकार से हो सकता है, अतः योगात्मक भाषाओं को तीन वर्गों में विभक्त किया गया है- (1) अश्लिष्ट (2) श्लिष्ट (3) प्रश्लिष्ट

(क) अश्लिष्ट योगात्मक भाषाएँ- अश्लिष्ट योगात्मक भाषाओं में प्रकृति और प्रत्यय इस प्रकार जुड़ा हुआ होता है कि दोनों को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। इसके चार भाग किये गये हैं- (1) पूर्वयोगात्मक (2) मध्ययोगात्मक (3) अन्तयोगात्मक (4) पूर्वान्तयोगात्मक इस वर्ग की भाषाओं में- 'काफिर, सन्थाली, तुर्की, मफोर' आदि प्रमुख हैं।

(ख) श्लिष्ट योगात्मक भाषाएँ- श्लिष्ट योगात्मक भाषाओं में प्रकृति और प्रत्यय घनिष्ठता से मिले होते हैं। दोनों इस प्रकार मिले होते हैं कि प्रकृति और प्रत्यय को अलग-अलग बताना संभव नहीं होता है। इसके दो भाग किये गये हैं और दोनों के पुनः दो-दो भाग हैं-

(1) अन्तर्मुखी श्लिष्ट- अन्तर्मुखी श्लिष्ट के दो भेद- (क) संयोगात्मक अन्तर्मुखी (ख) वियोगात्मक अन्तर्मुखी

(2) बहिर्मुखी श्लिष्ट- बहिर्मुखी श्लिष्ट के दो भेद- (क) संयोगात्मक बहिर्मुखी (ख) वियोगात्मक बहिर्मुखी।

इस वर्ग की प्रमुख भाषाओं में हैं- अरबी, हिब्रू, संस्कृत तथा हिन्दी।

(ग) प्रश्लिष्ट योगात्मक भाषाएँ- प्रश्लिष्ट योगात्मक भाषाओं में प्रकृति और प्रत्यय इतने अधिक घनिष्ठ रूप से मिले होते हैं कि दोनों को न अलग पहचाना जा सकता है और न दोनों को एक-दूसरे से अलग किया जा सकता है। इसके दो भेद किये गये-

(1) पूर्ण प्रश्लिष्ट योगात्मक (2) आंशिक प्रश्लिष्ट योगात्मक।

इस वर्ग की भाषाएँ हैं- चेरोकी, बास्क

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि तिब्बती भाषा अयोगात्मक भाषा है, संस्कृत, श्लिष्ट योगात्मक, चेरोकी प्रश्लिष्ट योगात्मक तथा तुर्की अश्लिष्ट योगात्मक है। **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत- भाषाविज्ञान - भोलानाथ तिवारी, पेज 96-99

28. अजहत्स्वार्था लक्षणा का भवति?

(A) लक्षणलक्षणा (B) फललक्षणा
(C) उपादानलक्षणा (D) साध्यवसानिका

व्याख्या- महाकवि विश्वनाथ अपने ग्रन्थ साहित्यदर्पण में अभिधा शक्ति का निरूपण करने के बाद लक्षणा का विवेचन करते हुए कहते हैं-

मुख्यार्थबाधे तद्युक्तो ययाऽन्योऽर्थः प्रतीयते।
रूढेः प्रयोजनाद्वाऽसौ लक्षणा शक्तिरर्पिता।। (2/5)

अर्थ- मुख्यार्थ के बाधित होने पर रूढि अथवा प्रयोजन के बल पर जिस शब्दशक्ति के द्वारा उस (मुख्यार्थ) से संयुक्त अर्थ की प्रतीति होती है, वही लक्षणा है। यह अर्पित अर्थात् आरोपित शब्दशक्ति है (न कि अभिधा के समान स्वाभाविक शक्ति)।

उपादान लक्षणा- साहित्यदर्पणकार विश्वनाथ ग्रन्थ के द्वितीय परिच्छेद की कारिका संख्या 6 में उपादान लक्षणा की विवेचना करते हुए कहते हैं-

मुख्यार्थस्येतराक्षेपो वाक्यार्थेऽन्वयसिद्धये।
स्यादात्मनोऽप्युपादानादेषोपादानलक्षणा।। (2/6)

अर्थ- जब वाक्यार्थ में अपने अन्वय की सिद्धि के लिए, मुख्यार्थ अन्य अर्थ का आक्षेप (ग्रहण) कर लेता है तब अपना भी अस्तित्व बने रहने के कारण इसे उपादान लक्षणा कहते हैं। इसी को वैयाकरण 'अजहत्स्वार्था लक्षणा' कहते हैं। जैसे- काकेभ्यो दधि रक्ष्यताम् । अजहल्लक्षणा का लक्षणा है जिसमें मुख्यार्थ का बिना परित्याग किए उससे सम्बद्ध अर्थ का बोध हो जाता है।

रूढि में उपादान लक्षणा का उदाहरण है- **श्वेतो धावति** (श्वेतवर्ण अश्व दौड़ रहा है)। प्रयोजन में इसका उदाहरण है- **कुन्ताः प्रविशन्ति** (अर्थात् कुन्तधारी) योद्धा प्रवेश कर रहे हैं। प्रथम उदाहरण में प्रयोजन के अभाववश रूढि (मात्र) है। दूसरे सन्दर्भ में कुन्तादि का अत्यन्त गहन होना प्रयोजन व्यक्त करता है और यहाँ मुख्यार्थ का अपना भी उपादान बना हुआ है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि अजहत्स्वार्थालक्षणा को ही 'उपादान लक्षणा' कहते हैं। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- साहित्यदर्पण - राजेन्द्र मिश्र, पेज 157

29. 'तपसा ब्रह्मचर्येण श्रद्धया विद्यया आत्मानम् अन्विष्यात्' इत्युक्तिः कस्याम् उपनिषदि प्राप्यते?

(A) केनोपनिषदि (B) श्वेताश्वतरोपनिषदि
(C) प्रश्नोपनिषदि (D) मुण्डकोपनिषदि

व्याख्या- प्रश्नोपनिषद्- प्रश्नोपनिषद् अथर्ववेद के पिप्पलाद शाखीय ब्राह्मण भाग के अन्तर्गत है। इस उपनिषद् में पिप्पलाद ऋषि ने सुकेशा आदि छः प्रश्नों का क्रम से उत्तर दिया है, इसलिए इसका नाम प्रश्नोपनिषद् हो गया।

'तपसा ब्रह्मचर्येण श्रद्धया विद्ययाऽऽत्मानमन्विष्यादित्यमभिजयन्ते'। (1/10)

प्रस्तुत पंक्ति प्रश्नोपनिषद् के प्रश्न एक के दसवें खण्ड से उद्धृत है-

अर्थ- तपस्या के साथ ब्रह्मचर्यपूर्वक (और) श्रद्धा से युक्त होकर अध्यात्म विद्या के द्वारा परमात्मा की खोज करके (जीवन सार्थक) करते हैं।

'अहोरात्रो वै प्रजापतिस्तस्याहरेव प्राणो रात्रिरेव रयिः'। (प्र.प.13)

अर्थ- दिन और रात का जोड़ा ही प्रजापति है उसका दिन ही प्राण है और रात्रि ही रवि है।

कठोपनिषद्- कठोपनिषद् कृष्ण यजुर्वेद की कठशाखा के अन्तर्गत है। इसमें नचिकेता और यम के संवादरूप में परमात्मा के रहस्यमय तत्त्व का बड़ा ही उपयोगी और विशद वर्णन है। इसमें दो अध्याय हैं और प्रत्येक अध्याय में तीन-तीन वल्लियां हैं।

कठोपनिषद् की प्रमुख सूक्तियाँ

'मनसैवेदमाप्तव्यं नेह नानास्ति किञ्चन' (2/1/11)

अर्थ- (शुद्ध) मन से ही यह परमात्मतत्त्व प्राप्त किये जाने योग्य है, इस जगत् में (एक परमात्मा के अतिरिक्त) नाना (भिन्न-भिन्न भाव) कुछ भी नहीं है।

'उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत'। (1/3/14)

अर्थ- (हे मनुष्यों) उठो, जागो (सावधान हो जाओ और) श्रेष्ठ महापुरुषों को पाकर उनके पास जाकर (उनके द्वारा) उस परब्रह्म परमेश्वर को जान लो।

'ज्ञानमात्मनि महति नियच्छेत्तद्यच्छेच्छान्त आत्मनि' (1/3/13)

अर्थ- उस मान को ज्ञानस्वरूप बुद्धि में विलीन करें, ज्ञान रूप बुद्धि को महान् आत्मा में विलीन करें, और उसको शान्त स्वरूप परमपुरुष परमात्मा में विलीन करें।

केनोपनिषद्- यह उपनिषद् सामवेद के 'तलवकार ब्राह्मण' के अन्तर्गत है। तलवकार को 'जैमिनीय उपनिषद्' भी कहते हैं। इस उपनिषद् में सबसे पहले केन शब्द आया है, इसी से इसका नाम केनोपनिषद् पड़ गया।

केनोपनिषद् की सूक्तियाँ

*** 'आत्मना विन्दते वीर्यं विद्यया विन्दतेऽमृतम्'।**

(के.उ. खण्ड 2/4)

अर्थ- अन्तर्यामी परमात्मा से, परमात्मा को जानने की शक्ति (ज्ञान) प्राप्त करता है, (और उस) विद्या (ज्ञान से) अमृतरूप परब्रह्म पुरुषोत्तम को प्राप्त होता है।

*** 'यत् प्राणेन न प्राणिति येन प्राणः प्रणीयते'।**

(1.1.8)

अर्थ- जो प्राण के द्वारा चेष्टायुक्त नहीं होता, (बल्कि) जिससे प्राण चेष्टायुक्त होता है।

श्वेताश्वतरोपनिषद् की सूक्तियाँ

*** ''पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भव्यम्''।** (3/3/15)

अर्थ- जो अब से पहले हो चुका है, जो भविष्य में होने वाला है यह परम् पुरुष परमात्मा ही है।

*** ''नवद्वारे पुरे देही हंसो लेलायते बहिः''।** (3.3.18)

अर्थ- नौ द्वार वाले, शरीर रूपी नगर में अन्तर्यामी रूप से हृदय में स्थित वह प्रकाशमान परमेश्वर बाह्य जगत् में भी लीला कर रहा है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि प्रस्तुत यह उक्ति- तपसा ब्रह्मचर्येण...! प्रश्नोपनिषद् से उद्धृत है। **अतः विकल्प (C) सही है।**

स्रोत- ईशादि नौ उपनिषद् - पेज 180

30. साङ्ख्यदर्शनेऽन्तःकरणं किमात्मकम्?

(A) मनोबुद्धी एव (B) बुद्धिरेव

(C) बुद्ध्यहङ्कारमनांसि (D) बुद्ध्यहङ्कारावेव

व्याख्या

ईश्वरकृष्ण विरचित सांख्यदर्शन के प्रकरणग्रन्थ सांख्यकारिका में तेरह प्रकार के करण बताये हैं- पांच कर्मेन्द्रियाँ, पांच ज्ञानेन्द्रियाँ तथा तीन अन्तःकरण। सांख्यकारिका की 33वीं कारिका में अंतःकरण के स्वरूप की विवेचना करते हुए कहते हैं-

''अन्तःकरणं त्रिविधं दशधा बाह्यं त्रयस्य विषयाख्यम्। साम्प्रतकालं बाह्यं त्रिकालमाभ्यन्तरं करणम्।'' (सा.-का.-33)

अर्थ- अन्तःकरण तीन प्रकार के हैं, और बाह्यकरण दस प्रकार के हैं जो विषयों को (ग्रहण करके) अन्तःकरणत्रय के समक्ष प्रस्तुत कर देते हैं। बाह्यकरण केवल वर्तमान काल के पदार्थों को अपना विषय बनाते हैं, जबकि आन्तरिक करण (भूत, वर्तमान और भविष्य इन) त्रैकालिक पदार्थों को अपना विषय बनाते हैं।

सांख्यकारिका की वाचस्पतिमिश्र कृत टीका सांख्यतत्त्वकौमुदी में अन्तःकरण की व्याख्या करते हुए कहा गया-

''अन्तःकरणं त्रिविधम् बुद्धिरहङ्कारो मनः इति, शरीराभ्यन्तरवर्तित्वादन्तःकरणम् ।''

अर्थ- अन्तःकरण के तीन भेद हैं- बुद्धि, अहङ्कार और मन (स्थूल) शरीर के भीतर निवास करने के कारण वह अन्तःकरण है। बाह्यकरण दस प्रकार के हैं, वे त्रिविध अन्तःकरण

के प्रति विषयों का आख्यान (कथन) करते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि अन्तःकरण के स्वरूप में मन, बुद्धि और अहङ्कार को शामिल किया जाता है। **अतः विकल्प (C) सही है।**

31. 'रीतिरात्मा काव्यस्य' मतमिदं कस्य विद्यते?

(A) वामनस्य (B) रुद्रटस्य

(C) भामहस्य (D) कुन्तकस्य

व्याख्या- काल विभाग के क्रम मे काव्यशास्त्र में अनेक सम्प्रदायों का जन्म हुआ। इन सम्प्रदायों की स्थापना काव्यात्मभूत तत्त्व के विषय में मतभेद के कारण हुई है। जो लोग रस को काव्य की आत्मा मानते हैं वे रस सम्प्रदाय के अन्तर्गत आते हैं। जो अलङ्कारों को काव्य की आत्मा मानते हैं वे अलङ्कार सम्प्रदाय के अन्तर्गत आते हैं। इसी प्रकार रीति को काव्य की आत्मा मानने वाले, ध्वनि को काव्य की आत्मा मानने वाले, वक्रोक्ति को काव्य की आत्मा मानने वाले अलग-अलग सम्प्रदाय स्थापित हुए।

1. रस सम्प्रदाय- सबसे मुख्य तथा प्राचीन सम्प्रदाय रस सम्प्रदाय है। 'रस सम्प्रदाय के संस्थापक भरतमुनि हैं।' भरतमुनि का **'विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः'** यह प्रसिद्ध रससूत्र ही रससिद्धांत का प्राणभूत है। भरतमुनि ने नाट्यशास्त्र के छठे अध्याय में रसों का और सातवें अध्याय में भावों का बहुत विस्तार के साथ विवेचन किया है। यही रस सिद्धांत का आधार है। भरतमुनि के रस सिद्धांत के व्याख्याकार के रूप में भट्टनायक, भट्टलोल्लट, शङ्कुक, अभिनवगुप्त आदि आचार्य बहुत प्रसिद्ध हैं।

2. अलङ्कारसम्प्रदाय- आचार्य भामह इस अलङ्कार सम्प्रदाय के प्रवर्तक माने जाते हैं। उद्भट, दण्डी, रुद्रट, प्रतिहारेन्दुराज, जयदेव आदि अनेक आचार्य इस अलङ्कार सम्प्रदाय के अन्तर्गत आ जाते हैं। अलङ्कार सम्प्रदाय के अनुयायी भी रस की सत्ता मानते हैं, किन्तु उसे प्रधानता नहीं देते हैं। उनके मत में काव्य का प्राणभूत जीवनाधायक तत्व अलङ्कार ही है। अलङ्कारविहीन काव्य की कल्पना वैसी ही है जैसे उष्णताविहीन अग्नि की कल्पना।

अङ्गीकरोति यः काव्यं शब्दार्थावनलङ्कृती।
असौ न मन्यते कस्मादनुष्णमनलंकृती॥

अलङ्कारसम्प्रदायवादी, काव्य में अलङ्कारों को ही प्रधान मानते हैं और इसका अन्तर्भाव रसवदलङ्कारों में करते हैं। रसवत्, प्रेम, ऊर्जस्विन् और समाहित चार प्रकार के रसवदलङ्कार माने जाते हैं।

3. रीति सम्प्रदाय- वामन ने काव्य में अलङ्कार की प्रधानता के स्थान पर रीति की प्रधानता का प्रतिपादन किया। 'रीतिरात्मा काव्यस्य' यह उनका प्रमुख सिद्धांत है। इसलिए उन्हें रीतिसम्प्रदाय का प्रवर्तक माना जाता है। रीति की विवेचना करते हुए उन्होंने कहा- **''विशिष्टपदरचना रीतिः''** इस प्रकार इस सिद्धांत में 'गुण' और रीति का अत्यन्त घनिष्ठ सम्बन्ध है। इसलिए रीतिसम्प्रदाय को 'गुणसम्प्रदाय' के नाम से भी जाना जाता है।

4. वक्रोक्ति सम्प्रदाय- कुन्तक ने काव्य में रीति की प्रधानता को समाप्त कर वक्रोक्ति की प्रधानता की स्थापना की। वामन ने भी **'सा दृश्याल्लक्षणा वक्रोक्तिः'** लिखकर काव्य में वक्रोक्ति का स्थान माना है। कुन्तक ने वक्रोक्ति को जो गौरव प्रदान किया है वह उन आचार्यों ने नहीं किया है। इसलिए कुन्तक ही इस सम्प्रदाय के संस्थापक माने जाते हैं। उन्होंने इस वक्रोक्ति सिद्धान्त के ऊपर वक्रोक्तिजीवित नामक अपने विशाल एवं अत्यन्त महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ की रचना की। वामन की वैदर्भी रीति को कुन्तक **सुकुमार मार्ग** कहते हैं। इसी प्रकार गौड़ी रीति को **विचित्रमार्ग** तथा **पाञ्चाली रीति** को **मध्यममार्ग** के नाम से कहते हैं।

5. ध्वनि सम्प्रदाय- इस सम्प्रदाय के संस्थापक आनन्दवर्धनाचार्य माने जाते हैं। **'काव्यस्यात्मा ध्वनिः'** काव्य की आत्मा ध्वनि है। इन सभी सम्प्रदायों में ध्वनि सम्प्रदाय सबसे अधिक प्रबल एवं महत्त्वपूर्ण सम्प्रदाय रहा है।

ध्वनि सिद्धान्त के विरोध में वैयाकरण, साहित्यिक, वेदान्ती, मीमांसक, नैयायिक सभी ने आवाज उठाई, किन्तु अन्त में काव्यप्रकाशकार मम्मट ने बड़ी प्रबल युक्तियों द्वारा उन सबका खण्डन करके ध्वनि सिद्धांत की पुनः स्थापना की। इसलिए उनको **ध्वनिप्रतिष्ठापक परमाचार्य** कहा जाता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि **'रीतिरात्मा काव्यस्य'** इस मत के प्रवर्तक वामन हैं। **अतः विकल्प (A) सही है।**

स्रोत- काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, भू. पेज- 17

32. ग्रिमनियमानुसारेण प्रथमवर्णपरिवर्तने तवर्गीय-ध्वनीनां कः परिवर्तनक्रमोऽस्ति?

(A) त→थ, द→त, ध→द

(B) त→य, द→त, ध→द

(C) त→द, द→थ, थ→द

(D) त→थ, ध→त, द→थ

व्याख्या- ग्रिमनियम का संक्षिप्त इतिहास- यह ध्वनि नियम प्रो. याकोब ग्रिम के नाम से प्रसिद्ध है। इस नियम को ध्वनि परिवर्तन (जर्मन में लाउत ध्वनि, फेशींबुंग-परिवर्तन, अंग्रेजी में Sound Shifting, साउण्ड=ध्वनि, शिफ्टिंग=परिवर्तन नाम दिया गया। प्रो. मैक्समूलर ने इसे ग्रिम

नियम नाम दिया है। प्रो. ओटो येस्पर्सन का कहना है कि इस नियम को **रास्क-नियम** नाम दिया जाना चाहिये क्योंकि यह नियम डैनिश विद्वान् रास्क ने ही सर्वप्रथम प्रामाणिक रूप में अपनी पुस्तक **(Undersogelse)** में प्रकाशित किया था।

ध्वनि नियम- विभिन्न भाषाओं के अध्ययन से ज्ञात होता है कि उसमें समय-समय पर कुछ परिवर्तन होते रहते हैं। ये परिवर्तन भाषा की परिवर्तनशीलता के कारण होते हैं। इन व्यापक परिवर्तनों को नियम की सीमा में बांधने का प्रयत्न किया गया है।

ग्रिम नियम- ग्रिम नियम के अनुसार मूल भारोपीय भाषा की निम्नलिखित ध्वनियों को अंग्रेजी और जर्मन भाषा में ध्वनियाँ हो जाती हैं- (प्रथम को द्वितीय, 1 को 2) क्रमशः क्, त्, प् को ह् (ख्) थ्, फ् (चतुर्थ को तृतीय 4 को 3) क्रमशः घ्, ध्, भ् को ग् द् ब् । (तृतीय को प्रथम 3 को 1) क्रमशः ग् द् ब् को क् त् प् ।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि- त को थ, द को त तथा ध को द होगा। **अतः विकल्प (A) सही है।**

स्रोत- भाषाविज्ञान - भोलानाथ तिवारी, पेज 364-65

33. अधस्तनेषु किं मेलनं समुचितम्?

(A) आ मुक्तेः - आङ्मर्यादाभिविध्योः
(B) दम्पती - स्त्रियां संज्ञायाम्
(C) घृतगन्धि - वोपसर्जनात्
(D) मुहूर्तसुखम् - यस्य चायामः

व्याख्या-

➢ **आङ्मर्यादाऽभिविध्योः** (2/1/12)

अर्थ- मर्यादा और अभिविधि अर्थों में विद्यमान आङ् अव्यय का पञ्चम्यन्त समर्थ सुबन्त के साथ विकल्प से समास होता है और वह अव्ययीभाव कहलाता है। यथा- आ मुक्तेः संसारः।

मुक्ति होने तक संसार है। यहाँ मर्यादा अर्थगम्य है। '**आमुक्तेः**' लौकिक विग्रह और 'आमुक्ति+ङसि' अलौकिक विग्रह। '**आङ् मर्यादाभिविध्योः**' सूत्र से विकल्प से समास होने पर प्रातिपदिक संज्ञा, सुप् का लुक्, प्रथमानिर्दिष्ट आ की उपसर्जनसंज्ञा और उसका पूर्व प्रयोग करके '**आमुक्ति**' बना। '**एकदेशविकृतन्यायेन प्रातिपदिक**' मानकर सुप्रत्यय अव्यय होने के कारण उसका '**अव्ययादाप्सुपः**' से '**लुक्**' होने पर आमुक्ति सिद्ध हो जाता है। समास न होने के पक्ष में वाक्य ही रह जाता है- '**आ मुक्तेः**'। यहां पर '**आङ्मर्यादावचने**' सूत्र से **आङ्** की कर्मप्रवचनीय संज्ञा होने पर '**पञ्चम्यपाङ्परिभिः**' से पञ्चमी होकर '**आ मुक्तेः**' बना।

➢ **स्त्रियां संज्ञायाम्**

अर्थ- संज्ञा के विषय में बहुव्रीहि समास में यदि अन्य पदार्थ स्त्रीवाच्य हो तो दन्त शब्द को दतृ समासान्त आदेश होता है। यथा- अय इव दन्ताः यस्याः सा- **अयोदती**।

➢ **यस्य चायामः**

अर्थ- जिसकी दीर्घता 'अनु' शब्द से द्योतित होती हो, ऐसे लक्षणवाची शब्द के साथ अनु का विकल्प से अव्ययीभाव समास होता है। यथा- **अनुगङ्गम्। गङ्गायाः अनु।**

➢ **वोपसर्जनस्य**

अर्थ- जिसमें सब अवयव उपसर्जन हैं उस बहुव्रीहि समास के अवयवभूत सह शब्द को स आदेश विकल्प से होता है, उत्तरपद परे रहते। यथा- '**सपुत्रः**' **सहपुत्रः** बहुव्रीहि के सभी पद उपसर्जन होते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि '**आङ्मर्यादाऽभिविध्योः**' सूत्र से '**आ मुक्तेः**' में अव्ययीभाव समास हुआ। **अतः विकल्प (A) सही है।**

स्रोत- भैमीव्याख्या (भाग-चार), पेज 45

34. 'मौद' शाखा केन वेदेन सह सम्बद्धा वर्तते?

(A) सामवेदेन (B) ऋग्वेदेन
(C) अथर्ववेदेन (D) कृष्णयजुर्वेदेन

व्याख्या-

♦ हमारे वैदिक साहित्य में चार वेद हैं। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद।
♦ इन चारों वेदों की अलग-अलग शाखायें प्राप्त होती हैं जो इस प्रकार हैं-

वेद		शाखाएँ
ऋग्वेद-	–	शाकल, बाष्कल, आश्वलायन, शांखायन, माण्डूकायन।
शुक्ल यजुर्वेद	–	माध्यन्दिन (वाजसनेयीशाखा) काण्व शाखा
कृष्ण यजुर्वेद	–	तैत्तिरीय शाखा, मैत्रायणी शाखा कठ शाखा, कपिष्ठल शाखा
सामवेद-	–	तलवकार, सात्युग्र,कौथुमीय शाखा, राणायनीय दुर्वासस, भागुरि, गौलण्डि, शाखा, जैमिनीय शाखा, औप-गौर्गुलजि ममन्यव, कारडि, सावर्णि, गार्ग्य, वार्षगण्य और दैवन्त्य।
अथर्ववेद	–	पैप्पलाद, तौद, मौद, शौनकीय, जाजल, जलद, ब्रह्मवद, देवदर्श, चारणवैद्य। इनमें दो शाखा ही प्राप्त है-पैप्पलाद, शौनकीय।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि मौद शाखा अथर्ववेद से सम्बद्ध है। **अतः विकल्प (C) सही है।**

स्रोत- अथर्ववेद (भाग-1)- आचार्य वेदान्त तीर्थ, पेज-7

35. 'स्वच्छजलवत् सहसैव..... सर्वत्र विहितस्थितिः' इत्यादिना काव्यप्रकाशकृता को गुणो मतः?

(A) माधुर्यगुणः (B) समाधिगुणः
(C) ओजोगुणः (D) प्रसादगुणः

व्याख्या- आचार्य मम्मट कृत काव्यप्रकाश के अष्टम उल्लास में गुणों के विषय में बताते हुए कहते हैं-

काव्यगुण- 'ये रसस्याङ्गिनो धर्माः शौर्यादय इवात्मनः। उत्कर्षहेतवस्ते स्युरचलस्थितयो गुणाः॥'

(का.प्र. 8.66)

अनुवाद- जो आत्मा के शौर्यादि धर्म के समान काव्य में अंगीभूत प्रधान रस के उत्कर्षाधायक धर्म हैं और अचल स्थिति अर्थात् नियत रूप से रहने वाले हैं, वे गुण कहे जाते हैं।

गुण के प्रकार- 'आह्लादकत्वं माधुर्यं शृङ्गारे द्रुतिकारणम्॥' (का.प्र.- 8.68)

चित्त की द्रुति का कारण आह्लादकत्व आनन्द स्वरूपता ही माधुर्य गुण है और शृङ्गार रस में रहता है।

वह माधुर्यगुण, करुण, विप्रलम्भशृङ्गार और शान्तरस में उत्तरोत्तर चमत्कारजनक होता है।

''करुणे विप्रलम्भे तच्छान्ते चातिशयान्वितम्''

ओजगुण- 'दीप्त्यात्मविस्तृतेर्हेतुरोजो वीररसस्थितिः'॥ (का.प्र. 8.69)

चित्त के विस्तार का हेतुभूत दीप्ति ही ओजगुण है और उसकी स्थिति वीररस में होती है।

ओज सामान्यतः वीररस में रहता है किन्तु बीभत्स और रौद्र रसों में क्रमशः उसका आधिक्य उत्तरोत्तर चमत्कारजनक रहता है। **''बीभत्सरौद्ररसयोस्तस्याधिक्यं क्रमेण च''**

प्रसाद गुण- 'शुष्केन्धनाग्निवत् स्वच्छजलवत्सहसैव यः॥' (का.प्र. 8.70)

'व्याप्नोत्यन्यत् प्रसादोऽसौ सर्वत्र विहितस्थितिः॥'

सूखे ईंधन में अग्नि के समान तथा स्वच्छ वस्त्र में जल के समान जो गुण सहसा चित्त में व्याप्त हो जाता है उसे प्रसाद गुण कहते हैं।

इसकी स्थिति सर्वत्र है अर्थात् यह सभी रसों तथा सभी रचनाओं में रहता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'स्वच्छजलवत्सहसैव... सर्वत्र विहितस्थितिः' में प्रसाद गुण है। **अतः विकल्प (D) सही है।**

स्रोत- काव्यप्रकाश (अष्टम उल्लास)- विश्वेश्वर, पेज- 390

36. अधोऽङ्कितेषु समासप्रकरणानुसारं केन सह कस्य सम्बन्धः?

(क) हंसौ (i) जातेश्च
(ख) ब्राह्मणक्षत्रियविट्शूद्राः (ii) पुमान् स्त्रिया
(ग) शूद्राभार्यः (iii) न निर्धारणे
(ग) नृणां द्विजः श्रेष्ठः (iv) वर्णानामानुपूर्व्येण

	क	ख	ग	घ
(A)	(ii)	(iv)	(i)	(iii)
(B)	(iii)	(iv)	(ii)	(i)
(C)	(i)	(iv)	(ii)	(iii)
(D)	(iv)	(i)	(iii)	(ii)

व्याख्या- जातेश्च- जातिवाची शब्द से विहित स्त्रीप्रत्ययान्त भाषितपुंस्क तथा ऊङ्- प्रत्यय रहित जो शब्द, उसको भी पुंवद्भाव नहीं होता है। यथा- **'शूद्राभार्यः'। शूद्र जाति की स्त्री भार्या है जिसकी ऐसा पुरुष। 'शूद्राभार्या यस्य सः'** लौकिक विग्रह और **'शूद्रा+सु भार्या+सु'** अलौकिक विग्रह में अनेकमन्यपदार्थे सूत्र से बहुव्रीहि समास होने पर **'जातेश्च'** सूत्र के द्वारा **'शूद्राभार्यः'** सिद्ध हो जाता है।

पुमान् स्त्रिया- स्त्रीवाचक शब्द के साथ पुरुषवाचक शब्द का कथन होने पर पुरुषवाचक शब्द का शेष होता है, यदि उन शब्दों में स्त्रीत्वकृत और पुंस्त्वकृत विशेषता का ही भेद हो और अन्य मूल प्रकृति समान ही हो। यथा- **'हंसी च हंसश्च हंसौ'। हंसी और हंस। हंसी च हंसश्च लौकिक विग्रह** में **'पुमान् स्त्रिया'** सूत्र के द्वारा स्त्रीवाचक हंसी की निवृत्ति और पुंवाचक हंस शब्द का शेष होता है। अर्थगत द्वित्त्व के कारण हंस शब्द से द्विवचन औ-प्रत्यय होने पर 'हंसौ' सिद्ध हो जाता है।

न निर्धारणे (2/2/10)- निर्धारण अर्थ में विहित जो षष्ठी, तदन्त सुबन्त का समर्थ सुबन्त के साथ तत्पुरुष समास नहीं होता है। यथा- **'नृणां द्विजः श्रेष्ठः'** है। **मनुष्यों में द्विज श्रेष्ठ है।** यहाँ पर जाति के आधार पर द्विज को श्रेष्ठ बताया जा रहा है। अतः **'यतश्चनिर्धारणम्'** सूत्र से निर्धारण अर्थ में षष्ठी होकर **'नृणाम्'** बना। निर्धारणार्थ में षष्ठी होने के कारण **'नृणां द्विजः'** में प्राप्त षष्ठी समास का 'न निर्धारणे' सूत्र से निषेध होने के कारण वाक्य ही रह जाता है- **'नृणां द्विजः श्रेष्ठः'**

वर्णानामानुपूर्व्येण- वर्णों का उसके क्रम से ही पूर्वनिपात

होता है। यहाँ पर वर्ण शब्द अकारादि का बोधक न होकर ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि का बोधक है। 'आनुपूर्व्य' शब्द का अर्थ है- क्रम। श्रुति और स्मृतियों के प्रमाण से एवं सृष्टि क्रम के अनुसार भी वर्ण क्रम है- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। अमरकोशकार ने भी यही क्रम लिखा है- ब्राह्मणक्षत्रियविट्शूद्राः। यथा-

'ब्राह्मणक्षत्रियविट्शूद्राः'। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। ब्राह्मणश्च क्षत्रियश्च विट् च शूद्रश्च लौकिक विग्रह और ब्राह्मण+सु क्षत्रिय+सु विश्+सु शूद्र+सु अलौकिक विग्रह में **'चार्थे द्वन्द्वः'** से द्वन्द्वसमास होने पर

'वर्णानामानुपूर्व्येण' वार्तिक से **ब्राह्मणक्षत्रियविट्शूद्राः** प्रयोग सिद्ध हुआ।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि **'जातेश्च'** सूत्र से **शूद्राभार्यः, पुमान् स्त्रिया सूत्र से हंसौ, न निर्धारणे** सूत्र से **नृणां द्विजः श्रेष्ठः** तथा **वर्णानामानुपूर्व्येण 'वार्तिक'** से ब्राह्मणक्षत्रियविट्छूद्राः प्रयोग सिद्ध होगा। **अतः विकल्प (A) सही है।**

स्रोत- भैमीव्याख्या (भाग-चार), पेज 240,238,83

37. 'सारङ्गी' इत्यत्र स्त्रियां ङीष्-प्रत्यय विधायकं सूत्रम् किमस्ति ?
(A) अन्यतो ङीष्
(B) वर्णादनुदात्तात्तोपधात्तो नः
(C) जातेरस्त्रीविषयादयोपधात्
(D) षिद्गौरादिभ्यश्च

व्याख्या- ♦ **अन्यतो ङीष् (4.1.40)- 'तोपधभिन्नाद् वर्णवाचिनोऽनुदात्तान्तात् प्रातिपदिकात् स्त्रियां ङीष्'** अर्थात् तोपध से भिन्न किन्तु जिसके अन्त में अनुदात्त स्वर है ऐसा जो वर्णवाची शब्द, तदन्त अनुपसर्जन अदन्त प्रातिपदिक से ङीष् प्रत्यय होता है स्त्रीत्वविवक्षा में।

उदाहरण- **सारङ्गी (सारंग वर्णवाली), कल्माषी (कालुष्य वर्ण वाली)।**

♦ सारङ्गी वर्णवाली। वर्णवाची सारङ्ग शब्द अनुपसर्जन, तोपध भिन्न व अनुदात्तान्त है। अतः 'अन्यतो ङीष्' सूत्र से ङीष् होने पर 'यस्येति च' से गकारोत्तरवर्ती अकार का लोप होकर सारङ्गी बनने के बाद स्वादि कार्य होता है। इसके रूप नदी शब्द के समान ही हुआ करते हैं।

♦ **षिद्गौरादिभ्यश्च (4.1.41)- षिद्भ्यो गौरादिभ्यश्च ङीष् स्यात्** अर्थात् जिस शब्द में षकार की इत्सञ्ज्ञा हो गयी हो ऐसे शब्दों से और गौर आदि गणपठित शब्दों से स्त्रीत्व की विवक्षा होने पर ङीष् प्रत्यय होता है। उदाहरण- **नर्तकी, गौरी, गार्ग्यायणी आदि।**

♦ **वर्णादनुदात्तात्तोपधात्तो नः** (4.1.39)- जिसके अन्त में अनुदात्त स्वर है तथा जिसकी उपधा में तकार है ऐसा जो वर्णवाची शब्द, तदन्त अनुपसर्जन अदन्त प्रातिपदिक से ङीष् प्रत्यय तथा तकार को नकार आदेश ये दोनों कार्य विकल्प से होते हैं। स्त्रीत्व की विवक्षा में।

उदाहरण- एनी एता, रोहिणी-रोहिता, आदि।

♦ **जातेरस्त्रीविषयादयोपधात् (4.1.63)-** जो नित्य स्त्रीलिङ्ग न हो और जिसकी उपधा में यकार भी न हो ऐसे जातिवाचक प्रातिपदिक से स्त्रीत्व की विवक्षा में ङीष् प्रत्यय होता है। उदाहरण- तटी, वृषली आदि।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि सारङ्गी में अन्यतो ङीष् (4.1.40) सूत्र से ङीष् प्रत्यय होगा। **अतः विकल्प (A) सही है।**

स्रोत- भैमीव्याख्या (भाग-6), पेज 24,32,36,69

38. तेजो यत्ते रूपं कल्याणतमं तत्ते पश्यामि' इत्युद्धरणं वर्तते-

(A) कठोपनिषदि	(B) ईशोपनिषदि
(C) बृहदारण्यकोपनिषदि	(D) तैत्तिरीयोपनिषदि

व्याख्या- ईशावास्योपनिषद्- यह ईशावास्योपनिषद् शुक्ल यजुर्वेद काण्वशाखीय संहिता का चालीसवाँ अध्याय है। शुक्लयजुर्वेद के प्रथम उनतालीस अध्यायों में कर्मकाण्ड का निरूपण हुआ है और 40वें अध्याय में परमतत्त्व रूप ज्ञानकाण्ड का निरूपण किया गया है।

ईशोपनिषद् की सूक्तियाँ- 'तेजो यत्ते रूपं कल्याणतमं तत्ते पश्यामि' (श्लोक-16)

अर्थ- इस तेज को (समेट लीजिए या अपने तेज में मिला लीजिये) जो आपका अतिशय कल्याणमय दिव्य स्वरूप है उस आपके दिव्य स्वरूप की मैं आपकी कृपा से ध्यान के द्वारा देख रहा हूँ।

मा गृधः कस्य स्विद्धनम् । (श्लोक-1)

अर्थ- इसमें आसक्त मत हो क्योंकि धन-भोग्य-पदार्थ, किसका है अर्थात् किसी का भी नहीं।

कठोपनिषद्- कठोपनिषद् उपनिषदों में बहुत प्रसिद्ध है यह कृष्णयजुर्वेद की कठशाखा के अन्तर्गत है। इसमें नचिकेता और यम के संवादरूप में परमात्मा के रहस्यमय तंत्र का बड़ा ही उपयोगी और विशद वर्णन है। इसमें दो अध्याय हैं और प्रत्येक अध्याय में तीन-तीन वल्लियाँ हैं।

प्रमुख सूक्तियाँ-

अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे॥ (1/2/18)

अर्थ- अजन्मा नित्य सदा एकरस रहने वाला और पुरातन है अर्थात् क्षय और वृद्धि से रहित है, शरीर के नाश किये जाने पर भी इसका नाश नहीं किया जा सकता।

'उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत' (1/3/14)

अर्थ- हे मनुष्यों! उठो जागो सावधान हो जाओ और श्रेष्ठ महापुरुषों को पाकर उनके पास जाकर उनके द्वारा उस परब्रह्म परमेश्वर को जान लो।

तैत्तिरीयोपनिषद्- यह उपनिषद् कृष्णयजुर्वेदीय तैत्तिरीय शाखा के अन्तर्गत तैत्तिरीय आरण्यक का अङ्ग है। तैत्तिरीय आरण्यक के दस अध्याय हैं। उनमें से सातवें, आठवें और नवें अध्यायों को ही तैत्तरीय उपनिषद् कहा जाता है।

प्रमुख सूक्तियाँ- ''तस्माद्वा एतस्मादात्मन आकाशः सम्भूतः।'' (तै. 2-1)

अर्थ- निश्चय ही सर्वत्र प्रसिद्ध उस परमात्मा से पहले-पहल आकाश तत्त्व उत्पन्न हुआ।

♦ **''आचार्याय प्रियं धनमाहृत्य प्रजातन्तुं मा व्यवच्छेत्सीः।''**

अर्थ- आचार्य के लिए दक्षिणा के रूप में वाञ्छित धन लाकर दो फिर उसकी आज्ञा से गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करके सन्तान परम्परा को चालू रखो, उसका उच्छेद न करना।

♦ **बृहदारण्यकोपनिषद् की प्रमुख सूक्तियाँ- ''असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय मृत्योर्मामृतं गमय।''**

अर्थ- मुझे असत् से सत् की ओर ले जाओ। यहाँ मृत्यु ही असत् है और अमृत् सत् है।

♦ **''आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्यः।''**

अर्थ- यह आत्मा ही दर्शनीय, श्रवणीय, मननीय और ध्यान किये जाने योग्य है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि प्रश्नगत (तेजो यत्ते रूपं.....) यह उद्धरण ईशावास्योपनिषद् से लिया गया है। **अतः विकल्प (B) सही है।**

स्रोत- ईशादि नौ उपनिषद्, गीता प्रेस, पेज 42

39. 'सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च' अस्य मन्त्रस्य द्रष्टा ऋषिः कः?

(A) दीर्घतमा (B) मधुच्छन्दा
(C) वसिष्ठः (D) कुत्स आङ्गिरसः

व्याख्या- ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के 115वें सूक्त के पहले मन्त्र में ऋषि कुत्स आङ्गिरस् त्रिष्टुप् छन्द में देवता सूर्य की स्तुति करते हुए कहते हैं-

'सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च' (ऋ. 1.115.1)

सूर्य जंगम और स्थावर दोनों की आत्मा है।

♦ ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के पहले सूक्त के पाँचवें मन्त्र में ऋषि- मधुच्छन्दा गायत्री छन्द में अग्नि देवता की स्तुति करते हुए कहते हैं- **'अग्निर्होता कविक्रतुः, सत्यश्चित्रश्रवस्तमः'।** (ऋ.1.1.5)

हे अग्नि ! तुम होता, अशेषबुद्धिसम्पन्न या सिद्ध कर्मा, सत्यपरायण, अतिशय कीर्ति से युक्त और दीप्तिमान् हो।

♦ ऋग्वेद के द्वितीय मण्डल के 12वें सूक्त के सातवें मंत्र में ऋषि गृत्समद त्रिष्टुप् छन्द में इन्द्र देवता की स्तुति करते हुए कहते हैं-

'यः सूर्यं य उषसं जजान यो अपां नेता'।

(ऋ. 2.12.7)

जो सूर्य और उषा को उत्पन्न करते हैं और जो जल प्रेरित करते हैं।

♦ अथर्ववेद के पहले मण्डल के उन्तीसवें सूक्त के पहले मन्त्र में ऋषि अनुष्टुप् छन्द में ब्रह्मणस्पति देवता की स्तुति करते हुए कहते हैं-

'तेनास्मान् ब्रह्मणस्पतेभि राष्ट्राय वर्धय।'

उसी मणि के द्वारा तु हमें देश के हित के निमित्त विस्तृत करे। (अथर्व. 1.29.1)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च' मन्त्र के द्रष्टा ऋषि कुत्स आङ्गिरस हैं। **अतः विकल्प (D) सही है।**

स्रोत- ऋक्सूक्तसंग्रह- हरिदत्त शास्त्री, पेज- 146

40. वेदे 'सूनरी' कस्याः विशेषणम्?

(A) उषसः (B) सरस्वत्याः
(C) अपालायाः (D) घोषायाः

व्याख्या- ऋग्वेद के पहले मण्डल के 48वें सूक्त में ऋषि प्रस्कण्व उषा देवता की स्तुति करते हुए कहते हैं-

- **'आ घा योषेव सूनर्युषा याति प्रभुञ्जती'।** (ऋ. 1.48.5)
  सबका पालन करती हुई उषा देवी सुन्दरी युवती स्त्री के समान प्रतिदिन आती है।
- **विश्वमस्या नानाम चक्षसे जगज्ज्योतिष्कृणोति सूनरी।'** (ऋ. 1.48.8)
  यह सुन्दरी उषा सबके लिए प्रकाश उत्पन्न करती है।

कुछ प्रमुख देवता के विशेषण :-

देवता		**विशेषण**
उषस्	–	मघोनी, हिरण्यवर्णा, ऋतावरी, पुराणी, सुभगा, सूनरी, सूनृतावती, अमर्त्या, अन्तिवामा इत्यादि।
अग्नि	–	ऋत्विक्, होता, पुरोहित, रत्नधातमम्, गृहपति, दमूनस्, घृतलोम, सहस्राक्ष, असुर इत्यादि।
विष्णु	–	उरुक्रम, उरुगाय, कुचर, वृष्णः, त्रिविक्रम, भीम इत्यादि।
इन्द्र	–	वृत्रहा, सुशिप्र, वज्रबाहु, हिरण्यबाहु, मरुत्वान्, अच्युतच्युत इत्यादि।
सोम	–	मौज्जवत, वृत्रहन्तम्, सहस्रधार, पवमान, महिष्ठ, इन्द्रपति इत्यादि।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'सूनरी' विशेषण उषस् देवता का है। **अतः विकल्प (A) सही है।**

स्रोत- ऋक्सूक्त संग्रह- हरिदत्त शास्त्री, पेज- 123

41. 'नित्यज्ञानाधिकरणत्वम्' इति तर्कसंग्रहदीपिकायां कस्य लक्षणं प्रोक्तम्?

(A) मनसः (B) ईश्वरस्य
(C) परमाणोः (D) जीवात्मनः

व्याख्या- आचार्य अन्नंभट्ट ने वैशेषिक दर्शन के सिद्धान्तों को आधार बनाकर सूत्ररूप में अत्यन्त सरल एवं लघुग्रन्थ तर्कसङ्ग्रह की रचना की। तर्कसङ्ग्रहकार ने अपने ग्रन्थ में सात पदार्थों का नाम उल्लेख किया। वे इसप्रकार हैं- द्रव्य-गुण-कर्म-सामान्य-विशेष-समवाय-अभावाः सप्तपदार्थाः। आचार्य अन्नंभट्ट ने सप्त पदार्थों की व्याख्या के क्रम में सर्वप्रथम द्रव्य पदार्थ का उल्लेख करते हुए- पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, काल, दिक्, आत्मा और मन कुल नौ द्रव्य को ही स्वीकार किया।

नौ द्रव्यों की विवेचना के क्रम में ग्रन्थकार ने दिशा का लक्षण करने के पश्चात् आत्मा का लक्षण बताते हुए कहते हैं-

''ज्ञानाधिकरणमात्मा। स द्विविधो- जीवात्मा परमात्मा चेति।''

अर्थ- ज्ञान का अधिकरण आत्मा है और जीवात्मा एवं परमात्मा इस रूप में वह दो प्रकार का होता है। जबकि उन दोनों में परमात्मा सभी का स्वामी (ईश्वर), सर्वज्ञ एवं एक है। जीवात्मा प्रत्येक शरीर में भिन्न है, किन्तु (वह भी) सर्वव्यापक एवं नित्य है।

*** तर्कसङ्ग्रहदीपिका के अनुसार ज्ञान का अधिकरण ईश्वर को बताया गया है-**

''नित्यज्ञानाधिकरणत्वमीश्वरत्वम्'' - (त.सं.दी.)

*** तर्कसङ्ग्रह के अनुसार मन का लक्षण-**

सुखदुःखाद्युपलब्धिसाधनमिन्द्रियं मनः। तच्च प्रत्यात्मनियतत्त्वादनन्तं परमाणुरूपं नित्यं च।

अर्थ- सुख आदि की उपलब्धि का साधन इन्द्रिय ही मन है और वह प्रत्येक आत्मा के साथ नियम से रहने के कारण अनन्त, परमाणु-रूप और नित्य बताया गया है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि प्रश्नगत **नित्यज्ञानाधिकरणत्त्वम्** लक्षण **'ईश्वर'** का है। **अतः विकल्प (B) सही है।**

स्रोत- तर्कसंग्रह - आद्याप्रसाद, पेज 28

42. निरुक्ते कति पदजातानि उपदिष्टानि?

(A) त्रीणि (B) षट्
(C) चत्वारि (D) पञ्च

व्याख्या- आचार्य यास्क ने अपने ग्रन्थ निरुक्त में लोक और वेद में चार प्रकार पदों का वर्णन किया है-

''चत्वारि पदजातानि, नामाख्याते चोपसर्ग निपाताश्च''

अर्थ- नाम, आख्यात, उपसर्ग और निपात ये चार पद जातियाँ शब्दों के भेद हैं।

नाम और आख्यात का लक्षण- निरुक्तकार ने 'नाम' और 'आख्यात' का लक्षण करते हुए कहा-

'भावप्रधानमाख्यातम्, सत्त्वप्रधानानि नामानि'।

अर्थ- भाव- क्रिया है मुख्य जिसमें वह आख्यात है। सत्त्व-द्रव्य है प्रधान जिसमें वे नाम कहलाते हैं। इसका तात्पर्य यह है कि जहाँ क्रिया प्रधान हो और कारकादि गौण हो, वह

आख्यात है एवं जहाँ सत्त्व अर्थात् लिङ्ग संख्या वचनादि जिसका अनुगमन करे ऐसा सत्त्व-द्रव्य प्रधान हो और क्रिया गौण हो, वह नाम कहलाता है।

उपसर्ग निरूपण- नाम, आख्यात से अलग हुए प्र, परा, अप, सम्, आदि उपसर्ग स्वतंत्र अर्थों को नहीं कहते हैं। ऐसा शाकटायन आचार्य का कहना है।

''न निर्बद्धा उपसर्गा अर्थान्निराहुरिति शाकटायनः।''

नाम और आख्यात के अर्थ के साथ मिलकर ही ये उपसर्ग द्योतक हैं- नामाख्यात के विशेषार्थ के प्रकाशक हैं। स्वतंत्रतया इनका कोई अर्थ नहीं-

''नामाख्यातयोस्तु कर्मोपसंयोगद्योतका भवन्ति।''

आचार्य गार्ग्य का कहना है कि- **''उच्चावचाः पदार्था भवन्तीति गार्ग्यः।''**

अर्थ- इन उपसर्गों के अर्थ अनेक प्रकार के हुआ करते हैं ऐसा मत गार्ग्य आचार्य का है अर्थात् स्वतंत्र रूप से भी उपसर्ग सार्थक ही हैं, निरर्थक नहीं।

निपात- आचार्य यास्क निपात का लक्षण निरूपित करते हुए कहते हैं- **''उच्चावचेष्वर्थेषु निपतन्ति।''**

अर्थ- अनेकविध अर्थों में ये गिरते हैं- इनके अनेक अर्थ हैं, इसलिए ये निपात नाम से कहे जाते हैं।

''अप्युपमार्थेऽपि कर्मोपसङ्ग्रहार्थेऽपि पदपूरणाः।''

अर्थ- इन निपातों में कुछ तो उपमार्थ में प्रयुक्त होते हैं- कुछ अर्थोपसंग्रह में और कुछ केवल पदपूर्ति के लिए ही प्रयुक्त होते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि निरुक्त में चार प्रकार के पद बताये गये हैं। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- निरुक्तम् - छज्जूराम शास्त्री, पेज- 3

43. 'गौतमधर्मसूत्रम्' केन वेदेन सह सम्बद्धम् विद्यते?

(A) अथर्ववेदेन (B) कृष्णयजुर्वेदेन
(C) ऋग्वेदेन (D) सामवेदेन

व्याख्या-

- धर्मसूत्र आचार संहिता से सम्बद्ध ग्रन्थ है।
- धर्मसूत्र स्मृतियों के पूर्व रूप हैं।
- समाज को शान्ति और स्थिरता प्रदान करना धर्मसूत्रों का उद्देश्य है।
- कर निर्धारण, कर के प्रकार, कर का उपयोग, सम्पत्ति विभाजन तथा स्त्रीधन का स्वरूप धर्मसूत्रों में प्राप्त होता है।
- सामवेद का एक ही धर्मसूत्र प्राप्त होता है- गौतमधर्मसूत्र।

वेद	-	**धर्मसूत्र**
सामवेद	-	गौतम धर्मसूत्र
ऋग्वेद	-	वसिष्ठ धर्मसूत्र, विष्णु धर्मसूत्र
यजुर्वेद	-	बौधायन, वैखानस, आपस्तम्ब, विष्णु, हारीत, हिरण्यकेशी, शंख।
अथर्ववेद	-	कोई धर्मसूत्र प्राप्त नहीं है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से ज्ञात होता है कि गौतम धर्मसूत्र सामवेद का है। **अतः विकल्प (D) सही है।**

स्रोत- संस्कृतसाहित्य का इतिहास-उमाशङ्करशर्मा 'ऋषि', पेज- 91

44. महाभाष्ये व्याकरणस्य आनुषङ्गिकप्रयोजनेषु ''विभक्तिं कुर्वन्ति'' इत्यस्य क्रमोऽस्ति-

(A) सप्तमः (B) षष्ठः
(C) दशमः (D) पञ्चमः

व्याख्या- व्याकरण अध्ययन के पाँच मुख्य प्रयोजन- महर्षि पतञ्जलि महाभाष्य के प्रथम आह्निक पस्पशाह्निक में व्याकरणाध्ययन के पाँच प्रयोजन बताते हैं-

''रक्षोहागमलध्वसन्देहाः प्रयोजनम्''

अर्थात् 1. रक्षा 2. ऊह, 3. आगम, 4. लघु और 5. असन्देह ये पाँच मुख्य प्रयोजन हैं।

व्याकरणाध्ययन के तेरह आनुषङ्गिक (गौण) प्रयोजन- व्याकरण के पाँच मुख्य प्रयोजन बताने के बाद महर्षि पतञ्जलि तेरह आनुषङ्गिक प्रयोजनों की चर्चा करते हैं- 1. तेऽसुराः 2. दुष्टःशब्दः 3. यदधीतम् 4. यस्तु प्रयुङ्क्ते 5. अविद्वांसः 6. विभक्तिं कुर्वन्ति 7. यो वा इमाम् 8. चत्वारि 9. उत त्वः 10. सक्तुमिव 11. सारस्वतीम् 12. दशम्यां पुत्रस्य 13. सुदेवो असि वरुण इति।

अर्थ- 1. वे असुर 2. दोषयुक्त शब्द 3. जिसे पढ़ा 4. जो प्रयुक्त करता है 5. अविद्वान् लोग 6. विभक्ति का प्रयोग करते हैं 7. जो इस वेद रूप वाणी को 8. चार 9. एक कोई 10. सत्तुओं के समान 11. सरस्वती देवी सम्बन्धी 12. दशवीं रात्रि के बाद 13. हे वरुण ! सुदेव हो।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि व्याकरण महाभाष्य में तेरह आनुषङ्गिक प्रयोजनों में विभक्तिं, कुर्वन्ति, छठें (षष्ठः) क्रम पर है। **अतः विकल्प (B) सही है।**

45. 'मशककल्पसूत्रम्' कस्य वेदस्य वर्तते?

(A) अथर्ववेदस्य (B) ऋग्वेदस्य
(C) सामवेदस्य (D) कृष्णयजुर्वेदस्य

व्याख्या- ♦ कल्पसूत्र- कल्पसूत्र ग्रन्थ का तात्पर्य प्रयोगविधि के यथार्थ प्रतिपादक ग्रन्थों से है।

- जिनसे सिद्ध प्रयोग का ज्ञान हो, वह कल्प है।
- जिन ग्रन्थों में यज्ञ-सम्बन्धी विधियों का समर्थन या प्रतिपादन किया जाता है उन्हें 'कल्प' कहते हैं।
- जिन ग्रन्थों में वैदिक कर्मों का सांगोपांग विवेचन किया जाता है उन्हें 'कल्प' कहते हैं।
- कल्पसूत्र के चार भेद हैं- श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र, धर्मसूत्र, शुल्बसूत्र।
- मशककल्पसूत्र एवं द्राह्यायन श्रौतसूत्र सामवेद से सम्बन्धित हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'मशककल्पसूत्रम्' ये सामवेदीय श्रौतसूत्र है। **अतः विकल्प (C) सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज- 219

46. भरतमुनिना रसस्य संख्या कियती स्वीकृता?

(A) षट् (B) दश
(C) अष्टौ (D) नव

व्याख्या- भरतमुनि और धनञ्जय के अनुसार नाट्य में आठ रस स्वीकृत हैं- **अष्टौ नाट्ये रसाः स्मृताः**

नाट्यशास्त्र के छठवें अध्याय में भरतमुनि ने कहा है-

शृङ्गारहास्यकरुणा रौद्रवीरभयानकाः।
बीभत्साद्भुतसंज्ञौ चेत्यष्टौ नाट्ये रसाः स्मृताः। (6/15)

नाट्य में स्वीकृत रस आठ हैं-

1. शृङ्गार 2. हास्य 3. करुण 4. रौद्र 5. वीर 6. भयानक 7. बीभत्स रस 8. अद्भुत रस।

- मम्मट ने काव्यप्रकाश में आठ नाट्यरसों का विवेचन करने के पश्चात् शान्त को नवाँ रस माना है- **''शान्तोऽपि नवमो रसः''**
- रुद्रट ने काव्यालंकार में 'प्रेयान्' नामक दसवें रस की उद्भावना की है-
- रूपगोस्वामी ने मधुर नामक भक्तिरस को प्रधान रस माना है- **''मधुराख्यो भक्तिरसः''**
- आचार्य विश्वनाथ ने नव रस के अतिरिक्त वात्सल्य नामक एक अन्य रस को स्वीकार किया है- **'स्फुटं चमत्कारितया वत्सलं च रसं विदुः।' (सा.द. 3/251)**
- एक अन्य परवर्ती लेखक विश्वनाथ चक्रवर्ती ने मधुर को भक्तिरसराज कहा है।
- रस संख्या के विषय में भोज का अपना अलग मत है, उन्होंने अग्निपुराणोक्त नौ रसों के अतिरिक्त प्रेयान्, उदात्त और उद्धत्त तीन रस अधिक मानते हुए कुल 12 रस मानते हैं-

शृङ्गारवीरकरुणरौद्राद्भुत्भयानकाः।
बीभत्सहास्यप्रेयांसः शान्तोदात्तोद्धताः॥

(अग्निपुराण)

- रामचन्द्र गुणचन्द्र नव रसों के अतिरिक्त लौल्य, स्नेह, व्यसन, दुःख और सुख आदि अन्य रस मानते हैं।
- एक परवर्ती लेखक भानुदत्त ने रसतरंगिणी में 'मायारस' का उल्लेख किया है।
- एक जैन लेखक ने लज्जा स्थायिभाव वाला 'व्रीडनक रस' भी माना है।
- इस प्रकार गम्भीरतापूर्वक विचार विमर्श के पश्चात् रसवादी आचार्यों ने काव्य, नाटक और संगीत में आठ अथवा नव रस ही मानते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि भरतमुनि अपने नाट्यशास्त्र के छठवें अध्याय में रसों की संख्या आठ ही मानते हैं। **अतः विकल्प (C) सही है।**

स्रोत- नाट्यशास्त्र - ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज 157

47. उभयप्राप्तौ कर्मणि इति कारकसूत्रस्योदाहरणं किम्?

(A) आश्चर्यो गवां दोहोऽगोपेन
(B) अधिकरणवाचिनश्च
(C) कृत्यानां कर्तरि वा
(D) कर्तृकर्मणोः कृति

व्याख्या-1. उभयप्राप्तौ कर्मणि (2.3.66)-

उभयोः प्राप्तिः यस्मिन् कृति तत्र कर्मण्येव षष्ठी स्यात्।

अर्थ- कृदन्त के योग में कर्ता और कर्म दोनों में षष्ठी विभक्ति होने पर केवल कर्म में ही षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे- **आश्चर्यो गवां दोहोऽगोपेन** (जो ग्वाला नहीं है, उसके द्वारा गाय का दोहन आश्चर्यजनक है)

इस वाक्य में कृदन्त अदोह (दुह् + घञ्) के योग में **'कर्तृकर्मणोः कृति'** सूत्र से कर्ता अगोप और कर्म 'गो' दोनों में षष्ठी विभक्ति प्राप्त है लेकिन **'उभयप्राप्तौ कर्मणि'** सूत्र से कर्म गो में ही षष्ठी विभक्ति का नियम होने से **'गो'** में ही षष्ठी विभक्ति होकर **'गवाम्'** बना।

2. अधिकरणवाचिनश्च- (2.3.68)

क्तस्ययोगे षष्ठी स्यात्। इदमेषामासितम्।

अर्थ- अधिकरणवाचक क्त प्रत्ययान्त शब्दों के योग में षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे- **'इदम् एषाम् आसितम्'** (यह इनका आसन है)।

आस् धातु से **'क्त'** प्रत्यय जोड़कर **'आसितम्'** बनता है। अधिकरण वाचक **'क्त'** प्रत्ययान्त **'आसितम्'** के योग में

अनुक्त कर्ता 'इदम्' **'अधिकरणवाचिनश्च'** सूत्र से षष्ठी विभक्ति होकर **'एषाम्'** बना।

3. **कृत्यानां कर्तरि वा (2.3.71)-** कृत् प्रत्ययों के योग में षष्ठी विभक्ति विकल्प से होती है। जैसे- **मया मम वा सेव्यो हरिः (मेरे द्वारा हरि की सेवा की जानी चाहिये)**

यहां सेव् धातु से ण्यत् प्रत्यय लगाकर सेव्यः बना। ण्यत् कृत्य प्रत्यय के अन्तर्गत आता है। हरि कर्म है और यह उक्त है, अतः उक्त कर्म से प्रथमा विभक्ति होती है। कर्ता **'अस्मद्'** शब्द अनुक्त है। उसमें **'कर्तृकर्मणोः कृति'** सूत्र से नित्य षष्ठी विभक्ति प्राप्त थी। लेकिन उसको बाध करके **'कृत्यानां कर्तरि वा'** सूत्र से विकल्प से षष्ठी विभक्ति करने पर मम बना। अनुक्त कर्ता से **'कर्तृकरणयोस्तृतीया'** सूत्र से तृतीया विभक्ति होकर **'मया'** भी बना।

4. **कर्तृकर्मणोः कृति (2.3.65)-** कृद्योगे कर्तरि कर्मणि च षष्ठी स्यात्।

अर्थ- कृत्प्रत्ययान्त के योग में अनुक्त (अनभिहित) कर्ता और कर्म में षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे- **'कृष्णस्य कृतिः'**

इस वाक्य में कृत् प्रत्ययान्त कृति (कृ + क्तिन्) के कर्ता कारक कृष्ण में **'कर्तृकर्मणोः कृति'** सूत्र से षष्ठी विभक्ति होकर **'कृष्णस्य'** बना।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि 'उभयप्राप्तौ कर्मणि' इस सूत्र का उदाहरण- आश्चर्यो गवां दोहोऽगोपेन है। **अतः विकल्प (A) सही है।**

स्रोत- अष्टाध्यायी - ईश्वरचन्द्र, पेज 216

48. ''वागर्थाविव'' इत्यत्र कतमः समासः?

(A) केवलसमासः (B) अव्ययीभावसमासः
(C) द्विगुसमासः (D) कर्मधारयसमासः

व्याख्या- आचार्य वरदराज लघुसिद्धान्तकौमुदी के समास प्रकरण के अन्तर्गत केवल समास के प्रसङ्ग में एक वार्तिक उद्धृत करते हैं-

''इवेन समासो विभक्त्यलोपश्च''

अर्थ- समर्थ शब्द का इव शब्द के साथ समास होता है तथा अन्तर्वर्तिनी विभक्ति का लोप भी नहीं होता।

रघुवंश महाकाव्य के मंगलाचरण में प्रकृत वार्तिक का उदाहरण वागर्थाविव के रूप में है। वागर्थाविव **(वाणी और अर्थ की तरह)** **'वागर्थौ इव'** यह लौकिक विग्रह और **'वागर्थ औ इव'** यह अलौकिक विग्रह है। अलौकिक विग्रह में समास करने के लिए वार्तिक लगा- **'इवेन समासो विभक्त्यलोपश्च'।** इसके द्वारा समास होने के बाद **'वागर्थ औ इव'** की प्रातिपदिक संज्ञा हो गई और बीच में विद्यमान औ विभक्ति का **'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः'** से **'लुक्'** प्राप्त हुआ तो इसी वार्तिक के द्वारा उसके अलुक् का विधान होकर **'वागर्थौ इव'** बना। औकार के स्थान पर **'एचोऽयवायावः' से 'आव्'** आदेश होकर **'वागर्थाविव'** बन जाता है। जीमूतस्येव, भूतपूर्वम्, अधमर्णः आदि उदाहरण भी केवल समास के हैं।

अव्ययीभाव समास के उदाहरण-

यथाशक्ति - शक्तिमनतिक्रम्य
सुमद्रम् - मद्राणां समृद्धिः
निर्मक्षिकम् - मक्षिकाणाम् अभावः

द्विगु समास के उदाहरण-

1. अष्टाध्यायी 2. चतुरङ्गुलम्
3. चतुर्युगम् 4. त्रिभुवनम्
5. त्रिलोकी

कर्मधारय समास के उदाहरण-

1. जम्बूपादपः 2. परमराजः
3. कृष्णसर्पः 4. नीलोत्पलम्

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि वागर्थाविव में केवल समास है। **अतः विकल्प (A) सही है।**

स्रोत- भैमीव्याख्या - (भाग-4), पेज 14

49. 'लोकेऽधिको हरिः' इत्यत्र सप्तमीविभक्तौ को नियमः?

(A) यस्मादधिकं यस्य चेश्वरवचनं तत्र सप्तमी
(B) अधिरीश्वरे
(C) तदस्मिन्नधिकमिति दशान्ताड्डः इति सूत्रनिर्देशात्
(D) सप्तमीपञ्चम्यौ कारकमध्ये

व्याख्या-

तदस्मिन्नधिकमिति दशान्ताड्डः (5.2.45), यस्मादधिकं यस्य चेश्वरवचनं तत्र सप्तमी (2.3.9)

अधिकशब्देन योगे **'सप्तमीपञ्चम्याविष्येते', 'तदस्मिन्नधिकम्', 'यस्मादधिकम्' इति च सूत्रनिर्देशात्।** अर्थात् सूत्रकार ने **'तदस्मिन्नधिकमिति दशान्ताड्डः'** सूत्र में अधिक शब्द के योग में सप्तम्यन्त **'अस्मिन्'** शब्द का प्रयोग किया है और **'यस्माद् अधिकं यस्य चेश्वरवचनं तत्र सप्तमी'** सूत्र में अधिक शब्द के योग में पञ्चम्यन्त **'यस्मात्'** का प्रयोग किया है। इन सूत्रों के निर्देश से यह विदित होता है कि अधिक शब्द के योग में सप्तमी और पञ्चमी विभक्तियाँ भी होती हैं।

'लोके लोकाद्वा अधिको हरिः' (हरि लोक से बढ़कर हैं) उपर्युक्त ज्ञापन से अधिक शब्द के योग में सप्तमी और पञ्चमी दोनों का होना सिद्ध होने से सप्तमी होने पर **'लोके'** और पञ्चमी होने पर **'लोकाद्'** बन जाता है। इस तरह **'लोके अधिको हरिः'** और **'लोकाद् अधिको हरिः'** ये दोनों वाक्य सिद्ध हो जाते हैं।

अधिरीश्वरे- स्वस्वामिसम्बन्धेऽधिकर्मप्रवचनीयसञ्ज्ञः स्यात्।

अर्थ- स्वस्वामिभाव सम्बन्ध में अधि शब्द की कर्म प्रवचनीय सञ्ज्ञा होती है।

सप्तमीपञ्चम्यौ कारकमध्ये (2.3.7)- शक्तिद्वयमध्ये यौ कालाध्वानौ ताभ्यामेते स्तः।

अर्थ- दो कारकों (शक्तियों) के मध्य में जो कालवाचक और मार्गवाचक शब्द हैं उनसे 'सप्तमी' और 'पञ्चमी' विभक्ति होती है।

जैसे- अद्यभुक्त्वाऽयं द्व्यहे द्व्यहाद् वा भोक्ता (यह आज खाकर के दो दिन के बाद खायेगा)।

इस वाक्य में एक ही कर्ता की दो शक्तियों के मध्य कालवाचक शब्द '**द्व्यह**' है। '**सप्तमीपञ्चम्यौ कारकमध्ये**' सूत्र से द्व्यह में सप्तमी विभक्ति होकर '**द्व्यहे**' बनेगा और पञ्चमी विभक्ति होकर '**द्व्यहाद्**' बनेगा।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि लोकेऽधिकोहरिः इस वाक्य में सप्तमी विभक्ति '**तदस्मिन्नधिकमिति दशान्ताड्डः**' सूत्र से होगी। **अतः विकल्प (C) सही है।**

50. एध् धातोः लङ्लकारे उत्तमपुरुषबहुवचनस्य किं रूपं भवति?

(A) एधामहि (B) ऐधेमहि

(C) एधामहै (D) ऐधामहि

व्याख्या-

	एध् धातु लङ्लकार		
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	ऐधत	ऐधेताम्	ऐधन्त
मध्यम पुरुष	ऐधथाः	ऐधेथाम्	ऐधध्वम्
उत्तम पुरुष	ऐधे	ऐधावहि	ऐधामहि
	लोट् लकार		
	एधताम्	एधेताम्	एधन्ताम्
	एधस्व	एधेथाम्	एधध्वम्
	एधै	एधावहै	एधामहै
	विधिलिङ् लकार		
	एधेत	एधेयाताम्	एधेरन्
	एधेथाः	एधेयाथाम्	एधेध्वम्
	एधेय	एधेवहि	एधेमहि
	लुङ् लकार		
	एधिष्ट	ऐधिषाताम्	एधिषत
	ऐधिष्ठाः	ऐधिषाथाम्	ऐधिढ्वम्
	ऐधिषि	ऐधिष्वहि	ऐधिष्महि

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि एध् धातु लङ्लकार उत्तमपुरुष बहुवचन का रूप '**ऐधामहि**' होगा। **अतः विकल्प (D) सही है।**

स्रोत- धातुरूपनन्दिनी - जनार्दन हेगडे, पेज 2,3

51. 'सत्या विशुद्धिस्तत्रोक्ता विद्यैवैकपदागमा' वाक्यपदीयस्य अस्यां कारिकायां 'विद्यैवैकपदागमा' इत्यनेन पदेन किं स्वरूपा विद्या लक्ष्यते?

(A) अर्थरूपा (B) शब्दरूपा

(C) प्रणवरूपा (D) वर्णरूपा

व्याख्या- वाक्यपदीयम् के ब्रह्मकाण्ड में दर्शनों के वेदमूलक होने पर भी सबमें आग्रह के कारण एकता न होने से ब्रह्मप्राप्ति के सच्चा मार्ग का प्रतिपादन करते हुए आचार्य भर्तृहरि कहते हैं-

सत्या विशुद्धिस्तत्रोक्ता विद्यैवैकपदागमा।
युक्ता प्रणवरूपेण सर्ववादाविरोधिनी॥ (वाक्य 1.9)

अर्थ- जो रागद्वेष आदि से रहित विशिष्ट शुद्धिवाली है और एक प्रणव (ॐकार) ही जिसे व्यक्त कर सकता है वह ब्रह्मरूपा एकत्वबोधिका विद्या ही सत्य है। वही विद्या सत्य अर्थ प्रकाशित करने के कारण वेद में वर्णित है क्योंकि जितने परमाणुकारणवाद, प्रधानकारणवाद आदि वाद हैं इन सबसे कोई विरोध भी नहीं है अतः वही वेद का परम सिद्धान्त है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'सत्या विशुद्धिस्तत्रोक्ता विद्यैवैकपदागमा' पंक्ति से प्रणवरूपा के स्वरूप को स्पष्ट किया गया है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- वाक्यपदीयम् (1.9)

52. अज्ञानस्य समष्ट्योपहितं चैतन्यं वेदान्ते किमुच्यते?

(A) प्राज्ञः (B) वैश्वानरः

(C) ईश्वरः (D) विराट्

व्याख्या- योगीन्द्र सदानन्द वेदान्तसार नामक प्रकरणग्रन्थ में अज्ञान निरूपण के प्रसङ्ग में समष्टि एवं व्यष्टि अज्ञान के इन दो रूपों की चर्चा करते हैं।

'इदमज्ञानं समष्टिव्यष्ट्यभिप्रायेणैकमनेकमिति च व्यवह्रियते'।

- वेदान्तदर्शन विशुद्धसत्त्वप्रधान अज्ञान की इस समष्टि उत्कृष्ट उपाधियुक्त चैतन्य को 'ईश्वर' इस नाम से सम्बोधित करता है।

  'एतदुपहितं चैतन्यं..... ईश्वर इति च व्यपदिश्यते।'

- उत्कृष्ट उपाधियुक्त होने से यह समष्टि विशुद्धतत्त्वप्रधान गुणयुक्त है। इस उपाधि से युक्त चैतन्य सम्पूर्ण अज्ञान का प्रकाशक होने से सब कुछ जानने वाला, सबका ईश्वर, सबको नियन्त्रित करने वाला आदि गुणों से युक्त अव्यक्त, अन्तर्यामी, संसार का कारणरूप ईश्वर इत्यादि नामों से कहा जाता है।

- ईश्वर की यह समष्टि सम्पूर्ण विश्वप्रपञ्च का कारण होने से 'कारणशरीर' है। **'ईश्वरस्य इयं समष्टि अखिलकारणत्वात् कारणशरीरम्'।**
- ईश्वर को आनन्द की प्रचुरता एवं कोश के समान आच्छादक होने से 'आनन्दमयकोश' कहा जाता है।
  'आनन्दप्राचुरत्वात् कोशवदाच्छादकत्वात् च आनन्दमयकोशः'।
- सभी कुछ ईश्वर में विलीन होने से **'सुषुप्ति'।** इसी कारण स्थूल एवं सूक्ष्म शरीरप्रपञ्च का **'लयस्थान'** भी कहा जाता है-
  ''सर्वोपरमत्वात्सुषुप्ति अतएव स्थूल सूक्ष्मप्रपञ्च 'लयस्थानम्' इति च उच्यते''
- वेदान्त के सृष्टिक्रम में ब्रह्म के पश्चात् ईश्वर का ही स्थान है।
- अज्ञान की यह व्यष्टि निकृष्ट उपाधि से युक्त होने के कारण मलिनसत्त्वप्रधान होती है। इस उपाधि से युक्त चैतन्य अल्पज्ञता एवं अशक्तता आदि गुणों वाला होने से व्यष्टिगत एक ही अज्ञान का प्रकाशक होने के कारण 'प्राज्ञ' इस प्रकार कहा जाता है।
- वेदान्त में ईश्वर को सर्वज्ञ, सर्वेश्वर, सर्वनियन्ता, अन्तर्यामी, अव्यक्त एवं जगत् का कारण कहा गया है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से सुस्पष्ट है कि अज्ञान की समष्टि उपहित चैतन्य को 'ईश्वर' कहा जाता है।

अतः विकल्प (C) सही है।

स्रोत- वेदान्तसार - राकेश शास्त्री, पेज 154

53. 'केवलाघो भवति केवलादी'- अस्य मन्त्रस्य द्रष्टा कः?

(A) कण्वः (B) गविष्ठिरः
(C) भिक्षुराङ्गिरसः (D) ब्रह्मा

व्याख्या-

- **मोघमन्नं विन्दते अप्रचेताः सत्यं ब्रवीमि वध इत्स तस्य।**
  नार्यमणं पुष्यति नो सखायं केवलाघो भवति केवलादी।। (ऋग्वेद- 10.117.6)
  उपर्युक्त मन्त्र ऋग्वेद के दशम मण्डल के 117वें सूक्त के रूप में उद्धृत है जिसके देवता अग्नि तथा द्रष्टा ऋषि भिक्षु आंगिरस हैं एवं त्रिष्टुप् छन्द का प्रयोग है।
  अर्थ- जिसका मन उदार नहीं है उसका भोजन वृथा है। उसका भोजन उसकी मृत्यु के समान है। जो न तो देवता को देता है और न मित्र को देता है और स्वयं भोजन करता है वह केवल पाप ही खाता है।
- **उप त्वाग्ने दिवेदिवे दोषावस्तर्धिया वयम्।**
  नमो भरन्त एमसि।। (ऋग्वेद 1.1.7)
  उपर्युक्त मन्त्र ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के प्रथम सूक्त के रूप में उद्धृत है जिसके देवता अग्नि तथा ऋषि मधुच्छन्दा हैं इस मन्त्र में गायत्री छन्द का प्रयोग है।
  अर्थ- हे अग्निदेव! हम यज्ञ का अनुष्ठान करने वाले प्रतिदिन और दिन रात उत्तम बुद्धि से नमस्कार करते हुए तुम्हारे समीप आते हैं।
- **प्रावेपा मा बृहतो मादयन्ति प्रवातेजा इरिणे वर्वृतानाः।**
  सोमस्येव मौजवतस्य भक्षो विभीदको जागृविर्मह्यमच्छान्।। (ऋग्वेद 10.34.1)
  उपर्युक्त मन्त्र ऋग्वेद के दशम मण्डल के 34वें सूक्त के रूप में उद्धृत है, जिसे अक्षसूक्त के नाम से जाना जाता है जिसके ऋषि कवष ऐलूष एवं देवता अक्षकृषि प्रशंसा एवं मन्त्र त्रिष्टुप् छन्द का प्रयोग है।
- **एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्च पूरुषः।**
  पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि।।
  (ऋग्वेद 10.90.3)
  उपर्युक्त मन्त्र ऋग्वेद के दशम मण्डल के 90वें सूक्त के रूप में उद्धृत है जिसे पुरुषसूक्त के नाम से जाना जाता है। इस मन्त्र के ऋषि नारायण एवं देवता पुरुष तथा छन्द अनुष्टुप् है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि 'केवलाघो भवति केवलादी' ऋग्वेद के दशम मण्डल से उद्धृत है जिसके द्रष्टा ऋषि भिक्षु आङ्गिरस हैं।

अतः विकल्प (C) सही है।

स्रोत- ऋग्वेद (10.117.6)

54. साङ्ख्यदर्शने कैवल्यं कस्य मन्यते?

(A) अहङ्कारस्य (B) महतः
(C) पुरुषस्य (D) प्रधानस्य

व्याख्या-

- सांख्यकारिका में आचार्य ईश्वरकृष्ण कैवल्य के सन्दर्भ में एक कारिका उद्धृत करते हैं-
  प्राप्ते शरीरभेदे चरितार्थत्वात् प्रधानविनिवृत्तौ।
  ऐकान्तिकमात्यन्तिकमुभयं...कैवल्यमाप्नोति।।
  (का. 68)

शरीर प्राप्त होने पर, भोग एवं अपवर्ग- दोनों ही प्रयोजनों (पुरुषार्थों) के पूर्व से ही सिद्ध हुए रहने के कारण प्रकृति के निवृत्त हो जाने से पुरुष ऐकान्तिक और आत्यन्तिक मुक्ति प्राप्त कर लेता है।

- वाचस्पति मिश्र कृत 'तत्त्वकौमुदी' टीका में भी कहा गया है- 'ऐकान्तिकम् = अवश्यम्भावि, आत्यन्तिकम् = अविनाशि, इत्युभयं कैवल्यम् = दुःखत्रयविगमं प्राप्नोति पुरुषः'' प्रकृति के प्रवृत्तहीन होने पर वह पुरुष ऐकान्तिक एवं आत्यन्तिक कैवल्य प्राप्त कर लेता है।
- **''पुरुषोऽस्ति भोक्तृभावात् कैवल्यार्थं प्रवृत्तेश्च''** **(का. 17)**
  पुरुष की सत्ता सिद्धि के प्रसङ्ग में कैवल्य का मोक्ष के लिए प्रवृत्ति होने के कारण पुरुष की पृथक् सत्ता सिद्ध होती है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि सांख्यदर्शन में कैवल्य की प्राप्ति पुरुष को ही होती है।

अतः विकल्प (C) सही है।

55. 'रि च' इत्यनेन सूत्रेण किं कार्यं भवति?

(A) उपधायाः दीर्घः रेफस्य च लोपः
(B) पूर्वस्वरस्य दीर्घः रादौ प्रत्यये परे
(C) रेफस्य लोपः रादौ प्रत्यये परे
(D) तासस्त्योः सस्य लोपः रादौ प्रत्यये परे

व्याख्या- रि च (7.4.51)- तासि प्रत्यय और अस् धातु के सकार का लोप होता है रादि (रेफ आदि में हो, ऐसे) प्रत्यय के परे होने पर। जैसे- भवितासि- मध्यमपुरुष के एकवचन में सिप् आता है, अनुबन्ध लोप। तासि, अनुबन्धलोप, इद् का आगम, गुण, अवादेश, वर्णसम्मेलन के बाद- भवितास् सि में तास् के सकार का तासस्त्योर्लोपः से लोप होकर भवितासि सिद्ध हो जाता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'रि च' (7.4.51) सूत्र से सकार का लोप होता है। **अतः विकल्प (D) सही है।**

स्रोत- अष्टाध्यायी - ईश्वरचन्द्र - पेज 975

56. अधस्तनेषु उचितसम्बन्धयुतं विकल्पं चिनुत-

(A) वि मृळीकाय ते मनो रथीरश्वं न संदितम्- **इन्द्रसूक्तम्**
(B) ऋतस्य बुध्न उषसामिषण्यन्वृषा मही रोदसी आ विवेश - **वरुण सूक्त।**
(C) यो रध्रस्य चोदिता यः कृशस्य यो ब्रह्मणो नाधमानस्य कीरेः - **अग्निसूक्तम्**
(D) यस्य व्रते पृथिवी नन्नमीति यस्य व्रते शफवज्जर्भुरीति- **पर्जन्यसूक्तम्**

व्याख्या-

- **वि मृळीकाय ते मनो रथीरश्वं न संदितम्।**
  गीर्भिर्वरुण सीमहि॥ (ऋग्वेद 1.25.3)
  उपर्युक्त मन्त्र ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के 25वें सूक्त से उद्धृत है। इस मंत्र के द्रष्टा ऋषि शुनःशेप तथा देवता वरुण हैं एवं छन्द गायत्री है। इस सूक्त को वरुणसूक्त के नाम से जाना जाता है।
- **ऋतस्य बुध्न उषसामिषण्यन्**
  वृषा मही रोदसी आ विवेश।
  मही मित्रस्य वरुणस्य माया
  चन्द्रेव भानुं वि दधे पुरुत्रा॥ (ऋग्वेद 3.61.7)
  उपर्युक्त मंत्र ऋग्वेद के तृतीय मण्डल के 61वें सूक्त के रूप में उद्धृत है जिसके देवता उषस् तथा ऋषि विश्वामित्र हैं एवं छन्द त्रिष्टुप् है यह मन्त्र उषस्सूक्त में है।
- **यो रध्रस्य चोदिता यः कृशस्य**
  यो ब्रह्मणो नाधमानस्य कीरेः।
  युक्तग्राव्णो योऽविता सुशिप्रः
  सुतसोमस्य स जनास इन्द्रः॥ (ऋग्वेद 2.12.6)
  उपर्युक्त मंत्र ऋग्वेद के द्वितीय मण्डल के बारहवें सूक्त के रूप में उद्धृत है जिसके देवता इन्द्र तथा ऋषि गृत्समद हैं एवं त्रिष्टुप् छन्द का प्रयोग है इस सूक्त को इन्द्रसूक्त के रूप में जाना जाता है।
- **यस्य व्रते पृथिवी नन्नमीति**
  यस्य व्रते शफवज्जर्भुरीति।
  यस्य व्रत ओषधीर्विश्वरूपाः
  स नः पर्जन्यः महि शर्म यच्छ॥ (ऋग्वेद 5.83.5)
  उपर्युक्त मंत्र ऋग्वेद के चतुर्थ मण्डल के 83वें सूक्त के रूप में उद्धृत है इस मंत्र के देवता पर्जन्य तथा ऋषि अत्रि हैं एवं छन्द त्रिष्टुप् है। इस सूक्त को पर्जन्यसूक्त के नाम से जाना जाता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'यस्य व्रते पृथिवी नन्नमीति यस्य व्रते शफवज्जर्भुरीति मंत्र' पर्जन्य सूक्त से है जिसका क्रम सुमेलित है शेष के क्रम सुमेलित नहीं है। **अतः विकल्प (D) सही है।**

स्रोत- वैदिकसूक्तसंग्रह - विजयशङ्कर पाण्डेय, पेज 160

57. काव्यस्यात्मा ध्वनिरिति सिद्धान्तः प्रधानतया केन प्रतिपादितः?
(A) अभिनवगुप्तेन (B) भरतमुनिना
(C) मम्मटेन (D) आनन्दवर्धनेन

व्याख्या-

- आचार्य आनन्दवर्धन प्रणीत ध्वन्यालोक में काव्य की आत्मा ध्वनि को मानते हुए कहते हैं-
'काव्यस्यात्मा ध्वनिः' (ध्वन्यालोक 1.1) अर्थात् काव्य की आत्मा ध्वनि है।
- ध्वन्यालोक में चार उद्योत हैं।
- ध्वन्यालोक में ध्वनि के प्रथमतया दो भेद हैं-
वाच्यार्थ तथा प्रतीयमानार्थ
- आचार्य भरतमुनि रससम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य हैं इनके द्वारा रचित नाट्यशास्त्र नामक ग्रन्थ है जिसमें 36 अध्याय हैं। नाट्यशास्त्र में अलङ्कार के चार प्रकारों का वर्णन है।
- आचार्य मम्मट को **समन्वयवादी** आचार्य कहा जाता है। इन्हें 'ध्वनि का प्रतिष्ठापक परमाचार्य' भी कहा जाता है। इनके द्वारा रचित काव्यप्रकाश नामक ग्रन्थ काव्यशास्त्रीयग्रन्थ है।
- आचार्य कुन्तक काव्य की आत्मा वक्रोक्ति को मानते हैं-
वक्रोक्तिरेव वैदग्ध्यभङ्गीभणितिरुच्यते''
- आचार्य विश्वनाथ काव्य की आत्मा रस को मानते हैं-
'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्'
- आचार्य वामन काव्य की आत्मा रीति को मानते हैं-
'रीतिरात्मा काव्यस्य'

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि काव्य की आत्मा ध्वनि है यह सिद्धान्त आचार्य आनन्दवर्धन का है। **अतः विकल्प (D) सही है।**

स्रोत- काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, भू. पेज 18

58. 'अदूरवर्तिनीं सिद्धिं राजन्विगणयात्मनः' रघुवंशे इयमुक्तिः कस्य-
(A) कौत्सस्य (B) सिंहस्य
(C) वसिष्ठस्य (D) अरुन्धत्याः

व्याख्या-

- रघुवंश महाकाव्य महाकवि कालिदास द्वारा रचित है। इसमें **19 सर्ग** हैं इसकी गणना **लघुत्रयी** में की जाती है। पुत्रप्राप्ति के लिए कामधेनु की पुत्री नन्दिनी नामक गाय की सेवा करने विषयक वार्ता को बताते हुए महर्षि वसिष्ठ नन्दिनी गाय को देखकर राजा दिलीप से कहते हैं-
अदूरवर्तिनीं सिद्धिं राजन्विगणयात्मनः।
उपस्थितेयं कल्याणी नाम्नि कीर्तित एव यत्॥
हे महाराज! आप अपने पुत्रप्राप्ति रूप कार्य की सिद्धि को निकट आई हुई समझें। क्योंकि यह 'सामने आयी हुयी' कल्याणमूर्ति नन्दिनी नाम लेते ही उपस्थित हुई है।
(रघु. 1.87)
- रघुवंशम् के द्वितीय सर्ग में नन्दिनी गाय की सेवा करते हुए राजा दिलीप से कुम्भोदर नामक सिंह कहता है-
स त्वं, निवर्त्तस्व विहाय लज्जां
गुरोर्भवान्दर्शितशिष्यभक्तिः।
शस्त्रेण रक्ष्यं यदशक्यरक्षं
न तद्यशः शस्त्रभृतां क्षिणोति॥ (रघु. 2.40)
तुम लज्जा को छोड़कर वापस जाओ तुमने गुरु के सम्बन्ध में शिष्यों के योग्य भक्ति दिखला दी और जो रक्षा करने योग्य वस्तु शस्त्र से रक्षा करने के योग्य नहीं होती वह नष्ट होती हुई भी शस्त्रधारी की कीर्ति को नष्ट नहीं कर सकती है।
- रघुवंशम् के पञ्चम सर्ग में दान के निमित्त राजा रघु के यहाँ पधारे वरतन्तु के शिष्य कौत्स राजा रघु से कहते हैं-
सर्वत्र नो वार्तमवेहि राजन्नाथे
कुतस्त्वय्यशुभं प्रजानाम्।
सूर्ये तपत्यावरणाय दृष्टेः
कल्पेत लोकस्य कथं तमिस्रा॥ (रघु. 5.13)
हे राजन् ! सब विषयों में हम लोगों का कुशल है यह जानो, तुम्हारे ऐसे राजा के रहने पर प्रजाओं को दुःख कहाँ से है क्योंकि सूर्य के प्रकाशमान होने पर अन्धकार समूह लोगों की दृष्टि को ढँकने के लिए किसी प्रकार से भी समर्थ नहीं होता है।
- रघुवंशम् के द्वितीय सर्ग में नन्दिनी गाय राजा दिलीप से कहती है-
भक्त्या गुरौ मय्यनुकम्पया च
प्रीताऽस्मि ते पुत्र! वरं वृणीष्व।
न केवलानां पयसां प्रसूतिम्
अवेहि मां कामदुघां प्रसन्नाम्॥ (रघु. 2.63)
हे पुत्र वसिष्ठ महर्षि के विषय में भक्ति से और मेरे विषय में दया रखने से मैं तुझ पर प्रसन्न हूँ। इसलिए तू वर माँगो और मुझे केवल दूध देने वाली गाय मत समझो प्रसन्न होने

पर अभिलाषाओं को पूरी करने वाली जानो।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि 'अदूरवर्तिनीं सिद्धिं राजन्विगणयात्मनः' यह वचन वसिष्ठ ने राजा दिलीप से कहा। **अतः विकल्प (C) सही है।**

स्रोत- रघुवंशमहाकाव्यम् - हरगोविन्द मिश्र, पेज 29

59. कस्याम् उपनिषदि 'भृगुवल्ली' उपदिष्टा?

(A) तैत्तिरीयोपनिषदि (B) केनोपनिषदि

(C) ऐतरेयोपनिषदि (D) बृहदारण्यकोपनिषदि

व्याख्या-

➢ **तैत्तिरीयोपनिषद्-** यह उपनिषद् कृष्णयजुर्वेदीय तैत्तिरीय शाखा के अन्तर्गत तैत्तिरीय आरण्यक का अङ्ग है। तैत्तिरीय आरण्यक में दस अध्याय हैं, उनमें से सातवें आठवें और नवें अध्यायों को ही तैत्तिरीय उपनिषद् कहा जाता है। इस उपनिषद् में तीन वल्लियाँ हैं- शिक्षावल्ली, ब्रह्मानन्दवल्ली, भृगुवल्ली।

➢ **केनोपनिषद्-** यह उपनिषद् सामवेद की जैमिनीय शाखा से सम्बद्ध है।

- इसे तवलकारोपनिषद् भी कहते हैं। इसमें चार खण्ड हैं- प्रथम दो खण्ड पद्यात्मक तथा शेष दो गद्यात्मक।
- प्रथम खण्ड में उपास्य ब्रह्म और निर्गुण ब्रह्म में अन्तर बताया गया है।
- द्वितीय खण्ड में ब्रह्म के रहस्यमय स्वरूप का विवेचन है।
- तृतीय और चतुर्थ खण्डों में 'उमा हैमवती आख्यान' द्वारा परब्रह्म की सर्वशक्तिमत्ता का विवेचन है।

➢ **ऐतरेयोपनिषद्-** ऐतरेय आरण्यक के द्वितीय अध्याय के चतुर्थ खण्ड से लेकर षष्ठ खण्ड तक का नाम 'ऐतरेय उपनिषद्' है। इसमें तीन अध्याय हैं। परमात्मा के ईक्षण से सृष्टि का उल्लेख, पुनर्जन्म के सिद्धान्त एवं 'प्रज्ञान ब्रह्म' का वर्णन है।

➢ **बृहदारण्यकोपनिषद्-** यह शतपथ ब्राह्मण के 41वें काण्ड का अन्तिम भाग है। यह शुक्लयजुर्वेद से सम्बद्ध है। इसमें 6 अध्याय हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि 'भृगुवल्ली' तैत्तिरीय उपनिषद् के अन्तर्गत है। **अतः विकल्प (A) सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 179

60. अधस्तनेषु किं मेलनं सत्यमस्ति-

(A) त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति - सक्तुमिव

(B) म्लेच्छो ह वा एष यदपशब्दः - दुष्टः शब्दः

(C) प्रायश्चित्तीया मा भूमेत्यध्येयं व्याकरणम् - सारस्वतीम्

(D) न चान्तरेण व्याकरणं कृतस्तद्धिता वा शक्या विज्ञातुम् - सुदेवोऽसि

व्याख्या-

- महर्षि पतञ्जलि महाभाष्य के पस्पशाह्निक में व्याकरणशास्त्र के पाँच मुख्य प्रयोजन तथा तेरह गौण प्रयोजनों का उल्लेख करते हैं-

पाँच मुख्य प्रयोजन- 'रक्षोहागमलघ्वसन्देहाः' प्रयोजनम् अर्थात् रक्षा, ऊह, आगम, लघु, असन्देह ये पाँच व्याकरणशास्त्र के मुख्य प्रयोजन हैं।

तेरह गौण प्रयोजन- 1. तेऽसुराः, 2. दुष्टःशब्दः 3. यदधीतम्, 4. यस्तु प्रयुङ्क्ते, 5. अविद्वांसः, 6. विभक्तिं कुर्वन्ति, 7. यो वा इमाम्, 8. चत्वारि 9. उत त्वः, 10. सक्तुमिव, 11. सारस्वतीम्, 12. दशम्यां पुत्रस्य, 13. सुदेवो असि वरुण इति।

- **सक्तुमिव-** सक्तुमिव तितउना पुनन्तो... जैसे सत्तू को चलनी से छानते हैं ऐसे ही जब ज्ञानी लोग अपने प्रकृष्ट ज्ञान के बल से वाणी का व्याकरण (विश्लेषण, प्रकृतिप्रत्यय विभाग) करते हैं उस अवस्था में समान दर्शन वाले आपस में सायुज्य का अनुभव करते हैं कल्याणमयी लक्ष्मी इनकी वाणी में निहित होती है।

'सक्तुः - सचतेर्दुर्धावो भवति। कसतेर्वा विपरीताद् विकसितो भवति। तितउ-परिपवनं भवति' सक्तु सच् धातु से निष्पन्न होता है, इसका अर्थ धोना (साफ करना) या कठिन होता है। हो सकता है कि सक्तु कस् धातु के आद्यन्त विपर्यय करने से बना हो, खिला सा होता है। तितउ का अर्थ है चलनी।

- **दुष्टः शब्दः-** 'दुष्टः शब्दः स्वरतो वर्णतो.....' स्वर और वर्ण की दृष्टि से अशुद्ध उच्चारण किया हुआ दोषयुक्त शब्द अपने विवक्षित अर्थ को नहीं कहता है। वह वाणीरूप वज्र उस यजमान को मार देता है। जैसे 'इन्द्रशत्रु' में स्वरदोष के कारण वृत्रासुर मारा गया। हम दोषयुक्त शब्दों का प्रयोग न करें इसलिए हमें व्याकरण पढ़ना चाहिए।
- **सारस्वतीम्-** 'प्रायश्चित्तीया मा भूमेत्यध्येयं व्याकरणम्' सारस्वतीम्। प्रायश्चित्त के निमित्त सरस्वती देवता के लिए इष्टि याग करें। 'हम प्रायश्चित्त के योग्य न हों इसलिए हमें व्याकरण पढ़ना चाहिए।
- **सुदेवो असि-** सुदेवो असि वरुण यस्य ते सप्त सिन्धवः। अनुक्षरन्ति काकुदं सूर्म्यं सुषिरामिव।

हे वरुण! तुम सुदेव हो क्योंकि तुम्हारी सात नदियाँ लौहप्रतिमा के समान तालु में प्रकाशित होती हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'प्रायश्चित्तीया मा भूमेत्यध्येयं व्याकरणम्' यह व्याकरण के गौण प्रयोजन सारस्वतीम् के अन्तर्गत है। **अतः विकल्प (C) सही है।**

स्रोत- महाभाष्य - जयशंकरलाल त्रिपाठी, पेज 29

61. अधोऽङ्कितेषु समुचितं विकल्पं चिनुत-
(A) वैभाषिकाः - तत्र बोधात्मको जीवः। अबोधात्मकस्त्वजीवः
(B) योगाचाराः - हीनयानम्
(C) माध्यमिकाः - महायानम्
(D) सौत्रान्तिकाः - तज्ज्ञानं पञ्चविधं मतिश्रुतावधिमनःपर्याय-केवलभेदेन

व्याख्या-

♦ माधवाचार्य विरचित सर्वदर्शनसंग्रह नामक ग्रन्थ के 'आर्हतदर्शन' नामक प्रकरण में जैनतत्त्वमीमांसा के अन्तर्गत जीव और अजीव नामक दो तत्त्व बताये गये हैं-
जीव- 'तत्र बोधात्मको जीवः' उनमें ज्ञान के रूप में जीव है।
अजीव- 'अबोधात्मस्त्वजीवः' - अज्ञान के रूप में अजीव है।

♦ बौद्धदर्शन के सुप्रसिद्ध चार सम्प्रदाय हैं-
(i) माध्यमिक (शून्यवाद)- यह मत नागार्जुन से सम्बद्ध है। माध्यमिक और योगाचार महायान शाखा से सम्बद्ध है। पूर्ण असत् या पूर्ण सत् को अस्वीकार कर दोनों की सोपाधिक सत्ता मानने वाला, मध्यमार्ग का अवलम्बन करने वाला।
(ii) योगाचार- योग और आचार का समन्वय करने वाला। योग के द्वारा मानसिक सत्ता (आलय विज्ञान) को स्वीकार करके बाह्य पदार्थों से विश्वास हटा देना।
(iii) सौत्रान्तिक- सुत्तपिटक से सम्बद्ध, इसके बहुत से ग्रन्थ सुत्तान्त नाम से विख्यात हैं।
(iv) वैभाषिक- विभाषा (अभिधर्म महाविभाषा) नामक ग्रन्थ में इनके सिद्धान्त प्रतिपादित हैं, इसलिए इनका नाम वैभाषिक पड़ा।

* सर्वदर्शनसंग्रह के आर्हतदर्शन के अन्तर्गत सम्यक् ज्ञान और उसके पाँच आलयों का वर्णन किया गया है-
तज्ज्ञानं पञ्चविधं मतिश्रुतावधिमनःपर्यायकेवलभेदेन' वह सम्यक् ज्ञान 1. मति 2. श्रुत 3. अवधि 4. मनःपर्याय 5. केवल - इन भेदों के कारण पाँच प्रकार का है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि माध्यमिक बौद्धों का सम्बन्ध महायान शाखा से है। **अतः विकल्प (C) सही है।**

स्रोत- सर्वदर्शनसंग्रह - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज 32

62. आग्निवेश्यगृह्यसूत्रम् कस्य वेदस्य वर्तते-
(A) कृष्णयजुर्वेदस्य (B) सामवेदस्य
(C) ऋग्वेदस्य (D) अथर्ववेदस्य

व्याख्या-

♦ गृह्यसूत्रों का सम्बन्ध गृहस्थ जीवन से है। गृहस्थ जीवन से सम्बद्ध सभी संस्कार इसमें संगृहीत हैं। जीवन से सम्बद्ध सभी सोलह संस्कार गृह्यसूत्र के अन्तर्गत आते हैं। संस्कारों की सभी विधियों का उल्लेख इस सूत्र में प्राप्त होता है। चारों वेदों से सम्बद्ध गृह्यसूत्रों का वर्णन निम्नवत् है-

♦ **ऋग्वेद के गृह्यसूत्र-** ऋग्वेद के तीन गृह्यसूत्र हैं-
* आश्वलायन गृह्यसूत्र
* शांखायन गृह्यसूत्र
* कौषीतकि गृह्यसूत्र

♦ **शुक्लयजुर्वेद के गृह्यसूत्र-**
पारस्कर गृह्यसूत्र

♦ **कृष्णयजुर्वेद के गृह्यसूत्र-**
(i) बौधायन गृह्यसूत्र (ii) मानव गृह्यसूत्र
(iii) भारद्वाज गृह्यसूत्र (iv) आपस्तम्ब गृह्यसूत्र
(v) काठक गृह्यसूत्र (vi) आग्निवेश्य गृह्यसूत्र
(vii) हिरण्यकेशी गृह्यसूत्र (viii) वाराह गृह्यसूत्र
(ix) वैखानस गृह्यसूत्र (x) चारायणीय गृह्यसूत्र
(xi) बैजवाप गृह्यसूत्र

♦ **सामवेद के गृह्यसूत्र-**
(i) गोभिल गृह्यसूत्र (ii) कौथुम गृह्यसूत्र
(iii) खादिर गृह्यसूत्र (iv) द्राह्मायण गृह्यसूत्र
(v) जैमिनीय गृह्यसूत्र

♦ **अथर्ववेद का गृह्यसूत्र-**
(i) कौशिक गृह्यसूत्र

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि आग्निवेश्य गृह्यसूत्र कृष्णयजुर्वेद से सम्बन्धित हैं। **अतः विकल्प (A) सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 231

63. अर्थशास्त्रस्य चतुर्थमधिकरणं वर्तते-
(A) धर्मस्थीयम् (B) षाड्गुण्यम्
(C) योगवृत्तम् (D) कण्टकशोधनम्

व्याख्या- अर्थशास्त्र आचार्य कौटिल्य की रचना है, जिसमें 15 अधिकरण हैं। कौटिलीय अर्थशास्त्र में पुरुषार्थचतुष्टय, राजा एवं राजा के स्वरूप, दण्ड आदि के विषय वर्णित हैं-

प्रथम अधिकरण	-	विनयाधिकारिक प्रकरण
द्वितीय अधिकरण	-	अध्यक्षप्रचार
तृतीय अधिकरण	-	धर्मस्थीय
चतुर्थ अधिकरण	**-**	**कण्टकशोधन**
पंचम अधिकरण	-	योगवृत्त
षष्ठ अधिकरण	-	मण्डलयोनि
सप्तम अधिकरण	-	षाड्गुण्य
अष्टम अधिकरण	-	व्यसनाधिकारिक
नवम अधिकरण	-	अभियास्यत्कर्म
दशम अधिकरण	-	साङ्ग्रामिक
एकादश अधिकरण	-	वृत्तसंघ
द्वादश अधिकरण	-	आबलीयस
त्रयोदश अधिकरण	-	दुर्गलम्भोपाय
चतुर्दश अधिकरण	-	औपनिषदिक
पञ्चदश अधिकरण	-	तन्त्रयुक्ति

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि अर्थशास्त्र का चतुर्थ अधिकरण 'कण्टकशोधनम् ' है, अतः विकल्प (D) सही है।

64. 'शोणो धावति' इति उदाहरणे वेदान्तरीत्या का लक्षणा?
(A) जहल्लक्षणा (B) साध्यवसानालक्षणा
(C) अजहल्लक्षणा (D) भागलक्षणा

व्याख्या- वेदान्त के अनुसार लक्षणा तीन प्रकार की होती है-

1. जहल्लक्षणा- 'वाच्यार्थमशेषतः परित्यज्य तत्सम्बन्धिन्यर्थान्तरे वृत्तिर्जहल्लक्षणा' अर्थात् वाच्यार्थ का पूर्णरूप से परित्याग करके वाच्यार्थ से सम्बद्ध किसी दूसरे अर्थ का बोध कराने वाली वृत्ति जहल्लक्षणा कहलाती है। इसे **'लक्षणलक्षणा'** भी कहते हैं। उदाहरण- **गङ्गायां घोषः** इस वाक्य में गङ्गाशब्द अपने वाच्यार्थ का पूर्णतया परित्याग करके अपने से सम्बद्ध गंगातटरूप अर्थान्तर का लक्षणा से बोध कराता है।

2. अजहल्लक्षणा- वाच्यार्थापरित्यागेन तत्सम्बन्धिनी वृत्तिरजहल्लक्षणा अर्थात् वाच्यार्थ का बिना परित्याग किए हुए वाच्यार्थ से सम्बद्ध अर्थ का बोध कराने वाली वृत्ति अजहल्लक्षणा कहलाती है। इस लक्षणा को **'उपादान लक्षणा'** भी कहते हैं। उदाहरण- **'शोणो धावति'** अर्थात् लाल दौड़ रहा है। इस उदाहरण में शोणवर्ण जड़ होने के कारण धावति क्रिया के कर्त्ता रूप से वाक्यार्थ में अन्वित नहीं हो सकता है इसलिए वाक्यार्थ में अपने अन्वय की सिद्धि के लिए 'शोण' शब्द अपने वाच्यार्थ का बिना परित्याग किए हुए अपने से सम्बद्ध शोणवर्ण वाला 'अश्व' इस अर्थान्तर का लक्षणा से बोध कराता है।

3. जहदजहल्लक्षणा- वाच्यार्थैकदेशपरित्यागेनैकदेशवृत्तिर्जहदजहल्लक्षणा अर्थात् वाच्यार्थ के एक अंश का परित्याग करके अवशिष्ट अंश का बोध कराने वाली जहदजहल्लक्षणा कहलाती है। इस वृत्ति के द्वारा वाच्यार्थ के एक भाग का परित्याग कर दिया जाता है और एक भाग को ग्रहण कर लिया जाता है। एक भाग का परित्याग करने के कारण भागत्याग तथा भागमात्र को ग्रहण करने से भागलक्षणा भी कहते हैं जैसे – सोऽयं देवदत्तः तत्त्वमसि।

स्पष्टीकरण- विवेचन से स्पष्ट है कि 'शोणो धावति' इस उदाहरण में अजहल्लक्षणा है। **अतः विकल्प (C) सही है।**
स्रोत- वेदान्तसार- सन्तनारायण श्रीवास्तव्य, पेज 127

65. नीतिमञ्जरीप्रतिपाद्यविषयाः केन सम्बद्धाः?
(A) अथर्ववेदेन (B) ऋग्वेदेन
(C) कृष्णयजुर्वेदेन (D) सामवेदेन

व्याख्या- अनुक्रमणी साहित्य से ही सम्बद्ध नीतिमञ्जरी नामक ग्रन्थ प्रख्यात है। इसमें ऋग्वेद के अष्टक क्रम से, उसके समस्त आख्यानों एवं उनसे संकेतित नीति और उपदेशों का अत्यन्त रोचक ढंग से प्रस्तुतीकरण है। **द्या द्विवेद** ने अत्यन्त सूक्ष्म दृष्टि से ऋग्वेद का अध्ययन करके यह ग्रन्थ लिखा। इस ग्रन्थ के भाष्य में षड्गुरुशिष्य की ऋग्वेदभाषा से पर्याप्त सहायता ली गई है। बृहद्देवता में भी ऋग्वैदिक आख्यान है पर नीतिमञ्जरी की विशेषता यह है कि इसमें उन आख्यानों से मिलती व्यावहारिक शिक्षा को भी आख्यान के साथ ही श्लोक में निबद्ध कर दिया है।

ऋग्वेद से सम्बन्धित अन्य ग्रन्थ-

शब्दावृत्त्यनुक्रमणी, छन्दोऽनुक्रमणी, देवतानुक्रमणी, मन्त्रार्थानुक्रमणी, नामानुक्रमणी, गूढार्थपदानुक्रमणी, विभक्त्यर्थनुक्रमणी, समयानुक्रमणी, इतिहासानुक्रमणी, गलित प्रदीप, ऋक्पदवर्णानुक्रमणी।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि नीतिमञ्जरी ऋग्वेद से सम्बन्धित है। **अतः विकल्प (B) सही है।**

66. तं राजा प्रणयन् सम्यक् त्रिवर्गेणाभिवर्धते अत्र त्रिवर्गस्याभिप्रायः कः?
(A) ब्राह्मणः क्षत्रियः वैश्यश्च (B) भूः भुवः स्वश्च
(C) साम दामं भेदश्च (D) धर्मः अर्थः कामश्च

व्याख्या-

- मनुस्मृति के सप्तम अध्याय में राजा द्वारा दिए गए दण्ड के विषय में निम्न वर्णन प्राप्त होता है-

तं राजा प्रणयन्सम्यक् त्रिवर्गेणाभिवर्धते।
कामात्मा विषमः क्षुद्रो दण्डेनैव निहन्यते॥
(मनु. 7.27)

यदि राजा भलीभाँति विचार कर दण्ड देता है तो धर्म, अर्थ और काम की वृद्धि होती है और जो राजा, कामी और अनुचित दण्ड देने वाला होता है तो वह उसी दण्ड से मारा जाता है।

- मनुस्मृति के प्रथम अध्याय में ब्रह्मा के द्वारा चारों वर्णों की उत्पत्ति का वर्णन प्राप्त होता है-

लोकानां तु विवृद्ध्यर्थं मुखबाहूरुपादतः।
ब्राह्मणं क्षत्रियं वैश्यं शूद्रं च निरवर्त्तयत्॥
(मनु. 1.31)

ब्रह्मा ने लोकों की वृद्धि के लिए मुख, बाहु, जंघा और चरण से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इनको क्रम से बनाया।

- वेदान्त में लोकों की संख्या 14 है जिनमें भूः भुवः स्वः से ऊपर के लोक हैं। 14 लोकों के नाम हैं- भूः, भुवः, स्वः, महः, जनः, तप, सत्यम्, अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल, महातल, पाताल।
- कौटिलीय अर्थशास्त्र में साम, दाम, भेद, दण्ड ये चार उपाय हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि तं राजा प्रणयन् सम्यक् त्रिवर्गेणाभिवर्धते में त्रिवर्ग से अभिप्राय धर्म, अर्थ, काम है। **अतः विकल्प (D) सही है।**

स्रोत- मनुस्मृति - गिरिधर गोपाल शर्मा, पेज 158

67. अर्थसंग्रहरीत्या शाब्दीभावनाया लक्षणं किम् ?
(A) भवितुर्भवनानुकूलो भावकव्यापारविशेषः
(B) भवितुर्भवनानुकूलो भावयितुर्व्यापारविशेषः
(C) प्रयोजनेच्छाजनित क्रियाविषयव्यापारः
(D) पुरुषप्रवृत्त्यनुकूलो भावयितुर्व्यापारविशेषः

व्याख्या-लौगाक्षिभास्कर कृत अर्थसंग्रह मीमांसादर्शन का एक प्रकरण ग्रन्थ है जिसमें धर्म का लक्षण, विधि का लक्षण आदि का वर्णन है। अर्थसंग्रह के अनुसार भावना का लक्षण है-

'भावना नाम भवितुर्भवनानुकूलो भावयितुर्व्यापारविशेषः' उत्पन्न होने वाले का भावानुकूल उत्पत्ति में कारणभूत जो प्रयोजक का व्यापार विशेष होता है वह भावना है।

भावना के दो भेद हैं- शाब्दीभावना व आर्थीभावना

- **शाब्दीभावना- 'तत्र पुरुषप्रवृत्त्यनुकूलो भावयितुर्व्यापारविशेषः'** शाब्दीभावना अर्थात् प्रयोज्य पुरुष की प्रवृत्ति के अनुकूल प्रयोजक के व्यापारविशेष को शाब्दीभावना कहते हैं। शाब्दी, लिङ् अंश के द्वारा कही जाती है। 'सा च लिङंशेनोच्यते'। शाब्दीभावना के तीन अंश होते हैं- साध्य, साधन, इतिकर्तव्यता।
- **आर्थीभावना- प्रयोजनेच्छाजनितक्रिया-विषय व्यापारः** आर्थीभावना अर्थात् स्वर्ग आदि प्रयोजन को लक्ष्य करके याग आदि क्रिया को सम्पादित करने का पुरुष में जो मानसिक व्यापार उत्पन्न होता है उसे आर्थीभावना कहते हैं। आर्थीभावना आख्यात अंश के द्वारा कही जाती है 'सा चाख्यातत्वांशेनोच्यते।' आर्थीभावना के तीन अंश होते है- साध्य, साधन, इतिकर्तव्यता।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'पुरुष प्रवृत्त्यनुकूलो भावयितुर्व्यापारविशेषः' शाब्दी भावना का लक्षण है। **अतः विकल्प (D) सही है।**

स्रोत- अर्थसंग्रह - ग़जानन शास्त्री मुसलगाँवकर, पेज 30

68. रुद्रदाम्नः गिरनारलेखः कस्यां भाषायां विद्यते?
(A) संस्कृतभाषायाम् (B) पालिभाषायाम्
(C) अपभ्रंशभाषायाम् (D) प्राकृतभाषायाम्

व्याख्या- रुद्रदामन् का गिरनार लेख- गुजरात के जूनागढ़ से प्रायः 2 किलोमीटर की दूरी पर पूर्व गिरिनार नामक पहाड़ी की एक शिला के पश्चिमी मुख पर ऊपर की ओर कार्दमवंशीय प्रथम रुद्रदामा नामधारी शक राज का यह लेख अंकित है।

- इसी शिला पर सम्राट् अशोक के 14 शिला-प्रज्ञापन एवं गुप्त सम्राट् स्कन्दगुप्त के भी लेख-द्वय उत्कीर्ण हैं।
- गिरिनार जूनागढ़ का प्राचीन नाम है।
- लेख की भाषा संस्कृत है, यत्र-तत्र प्राकृत का प्रभाव भी परिलक्षित होता है।
- इसकी लिपि पश्चिमोत्तर प्रदेश की कुषाण-कालीन ब्राह्मी है।
- यह मौर्यौत्तरकाल में मथुरा, तक्षशिला और सुराष्ट्र में विकसित हुई।

प्राकृत भाषा- अशोक के अभिलेखों को सबसे पहले 1750 में टी. फैन्थैलर ने खोजा था।

- अशोक के अभिलेखों को सर्वप्रथम 1837 में एशियाटिक सोसायटी के सचिव जेम्स प्रिन्सेप ने पढ़ा था।
- अशोक पहला भारतीय शासक था जिसने अभिलेखों के सहारे सीधे अपनी प्रजा को सम्बोधित किया।

- अशोक के अभिलेखों की भाषा 'प्राकृत' थी।
- यह सामान्य जन की भाषा थी।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि रुद्रदामन् का गिरनार अभिलेख संस्कृत भाषा में है। **अतः विकल्प (A) सही है।**
स्रोत- भारतीय अभिलेखशास्त्र, पुरालिपिशास्त्र एवं कालक्रमपद्धति अमिता शर्मा, पेज 61

69. वाग्ग्मी इत्यत्र को मत्वर्थीयप्रत्ययः-
(A) ग्मिनि (B) विनि
(C) मिनि (D) इनिः

याख्या- ग्मिनि प्रत्ययः- वाचो ग्मिनिः (5.2.124)- वाच् इस प्रथमान्त वाच् प्रातिपदिक से मत्वर्थ में 'ग्मिनिँ' प्रत्यय होता है।
वाग्ग्मी, प्रशस्त वाणी वाला, बोलने में चतुर।
'प्रशस्ता वागस्त्यस्य' विग्रह करके 'वाच् + सुँ' इस स्थिति में 'वाचो ग्मिनिः' सूत्र से ग्मिनि प्रत्यय, अनुबन्धलोप, प्रातिपदिक संज्ञा सुप् का लुक् करके - 'वाच् + ग्मिन्'
चकार को 'चोः कुः' से कुत्व होकर ककार बना, 'झलां जशोऽन्ते' से जश्त्व होकर गकार हुआ - वाग्ग्मिन् बना।
सु आदि कार्य पुनः अनुबन्धलोप होकर - 'वाग्ग्मी' रूप सिद्ध होता है।
* **विनि प्रत्ययः -** अस्मायामेधास्रजोविनिः (5.2.121)- असन्त (अस् शब्द जिसके अन्त में है, यथा- यशस् आदि) माया, मेधा और स्रज् - इन प्रथमान्त प्रातिपदिकों से मत्वर्थ में तद्धित सञ्ज्ञक विनि प्रत्यय होता है।
उदाहरण- यशस् + विनि = यशस्वी, मया + विनि = मायावी, मेधा + विनि = मेधावी, स्रज् + विनि = स्रग्वी - ये प्रयोग सिद्ध होते हैं।
* **इनि प्रत्ययः-** अतइनिठनौ (5.2.115)- प्रथमान्त अदन्त प्रातिपदिक से मत्वर्थ में तद्धितसञ्ज्ञक इनि और ठन् प्रत्यय विकल्प से होता है।
उदाहरण- दण्ड + इनि = दण्डिन् 'दण्डी' (दण्ड वाला)
धन + इनि = धनिन् (धनी) धन वाला
छत्र + इनि = छत्रिम् (छत्री) छाता वाला

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्यान से स्पष्ट है कि 'वाग्ग्मी' पद में 'ग्मिनि' मत्वर्थीय प्रत्यय का प्रयोग हुआ है। **अतः विकल्प (A) सही है।**
स्रोत- भैमीव्याख्या, भाग पाँच - भीमसेन शास्त्री, पेज 318

70. कथाप्रसङ्गेन जनैरुदाहृतादनुस्मृताखण्डलसूनुविक्रमः। तवाभिधानाद् व्यथते नताननः स दुःसहान्मन्त्रपदादिवोरगः॥ अत्र कोऽलङ्कारः-
(A) लुप्तोपमा (B) मालोपमा
(C) श्लिष्टोपमा (D) उत्प्रेक्षा

व्याख्या- भारवि प्रणीत किरातार्जुनीयम् महाकाव्य में 18 सर्ग हैं जिसकी गणना संस्कृत बृहत्त्रयी में होती है। महाकाव्य के नायक अर्जुन तथा प्रधान रस वीर है।
किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग में दुर्योधन अर्जुन के पराक्रम का स्मरण करके नतमस्तक होकर दुःखी हो उठता है। इस प्रसंग को वनेचर युधिष्ठिर के समक्ष सर्प से उपमा देते हुए कहता है-

कथाप्रसङ्गेन जनैरुदाहृताद
नुस्मृताखण्डलसूनुविक्रमः।
तवाभिधानाद् व्यथते नताननः
स दुःसहान्मन्त्रपदादिवोरगः॥ (किराता.1.24)

वार्तालाप में प्रसंगवश आप लोगों के सम्बन्ध में चर्चा चलने पर अर्जुन के पराक्रम का स्मरण करके जैसे श्रेष्ठ विष वैद्यों द्वारा उच्चारण किए गये गरुड और वासुकि के नामों से युक्त अत्यन्त दुःसह मंत्र से गरुड के पादविक्षेप का स्मरण कर नीचा मुख किए सर्प व्यथित होता है, वैसे ही नीचा मुख किए हुए दुःखित होता है।
इस श्लोक के दो-दो अर्थ हैं एक दुर्योधन पक्ष में और दूसरा सर्पपक्ष में-

1. कथाप्रसङ्गेन जनैः-
   दुर्योधनपक्ष में- बातचीत के प्रसङ्ग में लोगों के द्वारा
   सर्प पक्ष में- विषवैद्यों में श्रेष्ठ लोगों के द्वारा।
2. तवाभिधानात्-
   दुर्योधनपक्ष में- आप (युधिष्ठिर) के नाम से।
   सर्पपक्ष में- वासुकि और गरुड़ के नाम से
3. अनुस्मृताखण्डलसूनुविक्रमः-
   दुर्योधन पक्ष में- इन्द्र के पुत्र अर्जुन के पराक्रम का स्मरण करके।

सर्पपक्ष में- स्मरण कर लिया गया है इन्द्र के सूनु (अनुज) अर्थात् विष्णु के पक्षी।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि इस श्लोक के शिलष्ट दो-दो अर्थ उपमा के द्वारा निर्देशित हैं। अतः श्लेषानुप्राणित (श्लिष्टोपमा) अलङ्कार है। **अतः विकल्प (C) सही है।**
स्रोत- किरातार्जुनीयम् - रामसेवक दुबे, पेज 103

71. 'तस्मादृचः साम यजूंषि दीक्षा' पंक्तिरियं कुत्र प्राप्यते?
(A) ऋग्वेदे (B) ईशोपनिषदि
(C) शुक्लयजुर्वेदे (D) मुण्डकोपनिषदि

व्याख्या-
तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे...।
अर्थ- उन परमेश्वर से ही ऋग्वेद की ऋचाएँ, सामवेद के **''तस्मादृचः साम यजूंषि दीक्षा''** मन्त्र और यजुर्वेद की श्रुतियाँ एवं यज्ञादि कर्मों की दीक्षा उत्पन्न हुए हैं। यह सूक्ति अथर्ववेद की

शौनकी शाखा के अन्तर्गत 'मुण्डकोपनिषद्' के द्वितीय मुण्डक के प्रथम खण्ड का छठवाँ मन्त्र है, मुण्डकोपनिषद् में कुल तीन मुण्डक एवं प्रत्येक मुण्डक में दो-दो मन्त्र हैं, प्रथम मुण्डक के प्रथम खण्ड में 9 मन्त्र हैं, द्वितीय खण्ड में 13 मन्त्र हैं, द्वितीय मुण्डक के प्रथम खण्ड में 10 एवं द्वितीय खण्ड में 11 मन्त्र हैं, तृतीय मुण्डक के प्रथम खण्ड में 10 एवं द्वितीय खण्ड में 11 मन्त्र हैं। अतः कुल मन्त्रों की संख्या 64 है।

जिस यज्ञ में सब कुछ अर्थात् सबका आत्मरूप पुरुष आहुत कर दिया जाता है।

ऋग्वेद- वैदिक साहित्य का सबसे प्राचीन व प्रथम ग्रन्थ का नाम ऋग्वेद है, ऋग्वेद में विभिन्न देवों की स्तुति वाले मन्त्र हैं। अतः इसे ऋग्वेद कहते हैं, ऋग्वेद में कुल सूक्तों की संख्या 1028 है, जिसमें 11 बालखिल्य सूक्त माने जाते हैं। इसमें मन्त्रों की संख्या 10580 - 1/4 है, कहीं कहीं मन्त्रों की संख्या 10552 भी मानी गयी है।

* **ईशावास्योपनिषद्-** यह उपनिषद् शुक्लयजुर्वेद काण्व शाखीय संहिता का चालीसवाँ अध्याय है, इसी को पहला उपनिषद् माना जाता है। शुक्ल यजुर्वेद के प्रथम (39) उनतालीस अध्यायों में कर्मकाण्ड का निरूपण हुआ है, इस अन्तिम 40वें अध्याय में भगवत्तत्वरूप ज्ञानकाण्ड का निरूपण किया गया है, इस उपनिषद् में कुल (18) अष्टादश मन्त्र हैं।

सूक्ति- हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम् ।

अर्थ- सत्य स्वरूप आप सर्वेश्वर का श्रीमुख, ज्योतिर्मय सूर्यमण्डल रूप पात्र से ढँका हुआ है।

* **शुक्लयजुर्वेद-** इस वेद की दो शाखाएँ हैं- माध्यन्दिन या वाजसनेयि संहिता तथा काण्वसंहिता, माध्यन्दिन शाखा में चालीस (40) अध्याय 303 अनुवाक तथा 1975 मन्त्र हैं।

काण्व शाखा का विभाजन अध्याय और अनुवाक के रूप में हुआ है। काण्व शाखा में 40 अध्याय 328 अनुवाक और 2086 मन्त्र प्राप्त होते हैं।

सूक्ति- ॐ इषे त्वोर्ज्जे त्वा वाय वस्थ देवो वः।

अर्थ- हे शमी वृक्ष की शाखा! वर्षा के लिए तुम्हें और अन्न या बल के लिए तुम्हें काटता हूँ।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'तस्मादृचः साम यजूंषि दीक्षा' यह पंक्ति मुण्डकोपनिषद् में प्राप्त होती है। **अतः विकल्प (D) सही है।**

72. मनुस्मृतौ 'सर्वतेजोमयो हि सः' अस्मिन् श्लोकांशे सः पदेन कः प्रोक्तः?

(A) सूर्यः (B) नृपः

(C) प्राज्ञः (D) गुरुः

व्याख्या- मनु प्रणीत मनुस्मृति धर्मशास्त्र विषयक ग्रन्थ है जिसमें बारह अध्याय तथा 2694 श्लोक हैं। मनुस्मृति में संस्कार, विवाह, राजधर्म, धर्म, दुर्ग आदि विषयक वर्णन प्राप्त होते हैं।

मनुस्मृति के सप्तम अध्याय में राजा के विषय में वर्णन प्राप्त होता है-

यस्य प्रसादे पद्मा श्रीर्विजयश्च पराक्रमे।
मृत्युश्च वसति क्रोधे सर्वतेजोमयो हि सः॥

(मनु. 7.11)

जिसकी प्रसन्नता में बहुत सी लक्ष्मी बसती है अर्थात् प्रसन्न होने पर बहुत सी धन सम्पत्ति देता है, जिसके पराक्रम में विजय और जिसके कोप में मृत्यु होती है ऐसा वह राजा सब तेजों की मूर्ति है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त श्लोक के वर्णन से स्पष्ट है कि 'सर्वतेजोमयो हि सः' में सः पद राजा के लिए प्रयुक्त हुआ है। **अतः विकल्प (B) सही है।**

स्रोत- मनुस्मृति -शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पेज 303

73. ऋग्वेदप्रातिशाख्ये कियन्ति समानाक्षराणि उक्तानि?

(A) दश (B) पञ्चविंशतिः

(C) चत्वारि (D) अष्टौ

व्याख्या- ऋग्वेद प्रातिशाख्य महर्षि शौनक की रचना है जिसमें 18 पटल हैं। ऋग्वेद प्रातिशाख्य में सञ्ज्ञा, परिभाषा, स्वर, सन्धि, उच्चारणदोष, छन्द आदि का विवेचन है।

- **समानाक्षर सञ्ज्ञा-** अष्टौ समानाक्षराण्यादितः अर्थात् आदि (प्रारम्भ) के आठ अक्षर समानाक्षर सञ्ज्ञक होते हैं। आठ अक्षर हैं- **अ, आ, ऋ, ॠ, इ, ई, उ, ऊ** समानाक्षर सञ्ज्ञा का प्रयोजन समान स्थान वाले दो समानाक्षर एक दीर्घ-स्वर वर्ण को प्राप्त हो जाते हैं।
- **सन्ध्यक्षर सञ्ज्ञा-** ततश्चत्वारि संध्यक्षराण्युत्तराणि- सन्ध्यक्षर के आगे वाले चार अक्षर सन्ध्यक्षर सञ्ज्ञक होते हैं। चार अक्षर हैं- **ए, ओ, ऐ, औ।**
- **अघोष सञ्ज्ञा-** अन्त्याः सप्त तेषामघोषाः अर्थात् ऊष्म वर्णों में अन्तिम सात वर्ण अघोष सञ्ज्ञक होते हैं। अघोष सञ्ज्ञक वर्ण हैं- **श, ष, स, अः, ᳵक, ᳵप, अं।**
- **सोष्म सञ्ज्ञा-** युग्मौ सोष्माणौ अर्थात् प्रत्येक वर्ग में सम वर्ण सोष्म सञ्ज्ञक होते हैं। सोष्म सञ्ज्ञक हैं- **खघ, छझ, ठढ, थध, फभ।**

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि समानाक्षर सञ्ज्ञक वर्णों की संख्या आठ है। **अतः विकल्प (D) सही है।**

स्रोत- ऋग्वेदप्रातिशाख्यम्, पेज 42

74. 'महदरण्यम्' इत्यर्थे स्त्रीप्रत्यये किं भवति?
(A) अरण्या (B) अरण्यानी
(C) महारण्या (D) महारण्यानी

व्याख्या- द्रवरुणभवशर्वरुद्रमृडहिमारण्ययवयवनमातुलाचार्याणामानुक् (4.1.49)

इन्द्र, वरुण, भव, शर्व, रुद्र, मृड, हिम, अरण्य, यव, यवन, मातुल और आचार्य इन बारह शब्दों से स्त्रीत्व की विवक्षा में ङीष् प्रत्यय एवं इनको ही आनुक् का आगम भी होता है।

महद् अरण्यम् अरण्यानी (बड़ा जंगल)

अरण्य शब्द से 'हिमारण्ययोर्महत्त्वे' के अनुसार महत्त्व अर्थ में 'इन्द्र-वरुण-भव-शर्व-रुद्र-मृड-हिमारण्य-यव-यवनमातुलाचार्याणामानुक्' से आनुक् आगम और ङीष् प्रत्यय।

सवर्ण दीर्घ करके - अरण्यानी

सु आदि कार्य फिर 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल्' से लोप होकर अरण्यानी रूप सिद्ध हुआ।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि महद् अरण्यम् इस पद में ङीष् प्रत्यय होकर अरण्यानी रूप बनेगा। **अतः विकल्प (B) सही है।**

स्रोत- भैमीव्याख्या (भाग 6) भीमसेन शास्त्री, पेज 52,53

75. तर्कसंग्रहरीत्या मनः कीदृक्?
(A) एकमनित्यं परमाणुरूपञ्च
(B) अनन्तं परमाणुरूपं नित्यञ्च
(C) एकं विभु नित्यञ्च
(D) अनन्तं विभु नित्यञ्च

व्याख्या-

आचार्य अन्नंभट्टकृत तर्कसंग्रह न्याय-वैशेषिक का एक प्रकरण ग्रन्थ है जिसमें सात पदार्थों का वर्णन है- द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय, अभाव।

द्रव्य नामक पदार्थ के नौ भेद हैं- पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, काल, दिक्, आत्मा और मन।

तर्कसंग्रह के अनुसार मन का लक्षण-

'सुखाद्युपलब्धि साधनमिन्द्रियं मनः। तच्च प्रत्यात्मनियतत्वादनन्तं परमाणुरूपं नित्यं च' अर्थात् सुख, दुःख आदि की प्राप्ति के साधन इन्द्रिय को मन कहते हैं। वह प्रत्येक आत्मा में निश्चित रूप से विद्यमान होने से अनन्त है। परमाणुरूप में है और नित्य भी है।

मन
↓ अनन्त ↓ परमाणुरूप ↓ नित्य

- वैशेषिक दर्शन की नौ द्रव्य परम्परा में मन की अन्तिम द्रव्य के रूप में गणना की गयी है। इसे अन्तरिन्द्रिय भी कहते हैं।
- विद्वानों ने मन का निर्वचन **'मन्यते ज्ञायते अनेन इति मनः'** किया है।
- दीपिका टीका में अन्नम्भट्ट ने कहा है- **सुखेति 'स्पर्शरहितत्वे सति क्रियात्वम्'** अर्थात् जो स्पर्शरहित रहते हुए भी क्रियावान् रहता है, उसे 'मन' कहते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि 'मन' नामक नौवाँ द्रव्य अनन्त, परमाणुरूप तथा नित्य है। **अतः विकल्प (B) सही है।**

स्रोत- तर्कसंग्रह - गोविन्दाचार्य, पेज 76

76. 'शिशुपालवधस्य' सर्गसंख्या काऽस्ति?
(A) विंशतिः (B) एकविंशतिः
(C) सप्तविंशतिः (D) पञ्चविंशतिः

व्याख्या- शिशुपालवध का सामान्य परिचय-

- महाकवि 'माघ' विरचित शिशुपालवधम् 20 सर्गों तथा 1650 श्लोकों वाला महाकाव्य है।
- इसकी गणना बृहत्त्रयी के अन्तर्गत होती है।
- यह वीर रस प्रधान महाकाव्य है। इसमें वंशस्थ, अनुष्टुप्, उपजाति (कुल प्रयुक्त छन्द 25) हैं।
- इसका अपरनाम श्र्यङ्कमहाकाव्य (श्रीपदाङ्कमहाकाव्य) है।
- उपजीव्य ग्रन्थ महाभारत का सभापर्व (सर्ग 33 से 45 तक) तथा श्रीमद्भागवत पुराण (10वाँ स्कन्ध, 74वाँ अध्याय) है।
- श्रीकृष्ण धीरोदात्त नायक हैं तथा सत्यभामा/रुक्मणी नायिका हैं।
- श्रियः पतिः श्रीमति शासितुं जगत् (वंशस्थ छन्द), वस्तुनिर्देशात्मक मङ्गलाचरण है।
- माघ के पितामह सुप्रभदेव, पिता-दत्तक (सर्वाश्रय) माता-ब्राह्मी, निवास- श्रीभिन्नमाल (भीनमाल), राजस्थान (आबूपर्वत तथा लूनानदी के बीच स्थित) है।
- उपाधि- घण्टामाघ, सर्वाश्रय है।
- 'माघे सन्ति त्रयो गुणाः', 'मेघे माघे गतं वयः', नवसर्गगते माघे नवशब्दो न विद्यते- ये प्रशस्तियाँ हैं।
- शिशुपालवध का प्रारम्भ नारद द्वारा भेजे गये इन्द्र के सन्देश से तथा अन्त शिशुपाल का कृष्ण द्वारा वध से होता है।

संस्कृत वाङ्मय के कुछ महत्त्वपूर्ण महाकाव्य-

महाकाव्य	रचनाकार	सर्ग एवं श्लोक
रघुवंशम्	कालिदास	19 सर्ग/ 1569 श्लोक लगभग
किरातार्जुनीयम्	भारवि	18 सर्ग/ 1030 श्लोक
शिशुपालवधम्	माघ,	20 सर्ग/ 1650 श्लोक
नैषधीयचरितम्	श्रीहर्ष,	22 सर्ग/ 2830 श्लोक लगभग
भट्टिकाव्य (रावणवधम्)	भट्टि	22 सर्ग/ 1624 श्लोक लगभग
हरविजयम्	रत्नाकर	50 सर्ग/ 4321 श्लोक (सबसे बड़ा महाकाव्य)
राघवपाण्डवीयम्	कविराज (माधवभट्ट)	13 सर्ग/ 6682 श्लोक

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि **विकल्प (A) सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशङ्कर शर्मा, पेज- 262

77. 'मा नो वधाय हत्नवे जिहीलानस्य रीरधः' अत्र स्तूयमानो देवः कः?

(A) रुद्रः (B) भिन्नः
(C) वरुणः (D) अग्निः

व्याख्या- ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के 25वें सूक्त के दूसरे मन्त्र में ऋषि शुनःशेप गायत्री छन्द में वरुण देवता की स्तुति करते हुए कहते हैं-

- **''मा नो वधाय हत्नवे जिहीलानस्य रीरधः''**
  हे वरुण देवता! अनादर कर और घातक बनकर तुम हमारा वध नहीं करना। (ऋ. 1.25.2)
- **अतो विश्वानि अद्भुता चिकित्वाँ अभि पश्यति**
  ज्ञानी मनुष्य वरुण की कृपा से वर्तमान और भविष्य सारी अद्भुत घटनाओं को देखते हैं। (1.25.11)
- ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के प्रथम सूक्त में ऋषि मधुच्छन्दा गायत्री छन्द में अग्नि देवता की स्तुति करते हुए कहते हैं-
  ''अग्निना रयिमश्नवत् पोषमेव दिवे दिवे''
  अग्नि के अनुग्रह से यजमान को धन मिलता है, और वह धन अनुदिन बढ़ता है। (ऋ. 1.1.3)
  स नः पितेव सूनवे अग्ने सूपायनो भव
  जिस तरह पुत्र पिता को आसानी से पा जाता है उसी तरह हम भी तुम्हें पा सकें। (ऋ. 1.1.9)
- ऋग्वेद के द्वितीय मण्डल के बारहवें सूक्त में ऋषि गृत्समद त्रिष्टुप् छन्द के द्वारा इन्द्र देवता की स्तुति करते हुए कहते हैं-
  यो जिगीवाँल्लक्षमाददर्यः पुष्टानि स जनास इन्द्रः
  जो लक्ष्य जीतकर व्याध की तरह शत्रु के सारे धन ग्रहण करते हैं वे ही इन्द्र हैं। (ऋ. 2.12.4)
  यः सूर्यं य उषसं जजान यो अपां नेता स जनास इन्द्रः।
  जो सूर्य और उषा को उत्पन्न करते हैं और जो जल प्रेरित करते हैं वही इन्द्र हैं। (ऋ. 2.12.7)
- ऋग्वेद के दसवें मण्डल के इकहत्तरवें सूक्त में ऋषि बृहस्पति ने त्रिष्टुप् छन्द के द्वारा परब्रह्म ज्ञान देवता की स्तुति करते हुए कहते हैं-
- **यस्तित्याज सचिविदं सखायं न तस्य वाच्यपि भागो अस्ति** (ऋ. 10.71.6)
  जो विद्वान् मित्र को छोड़ देता है, उसकी वाणी से कोई फल नहीं।
- **अत्राह त्वं विजहुर्वेद्याभिरोहब्राह्मणो विचरन्त्युत्वे।**
  कोई-कोई स्तोतज्ञ (ब्राह्मण) वेदार्थ ज्ञात होकर विचरण करते हैं। (ऋ. 10.71.8)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि मा नो वधाय..... इस मन्त्र में वरुण देवता की स्तुति की गयी है। **अतः विकल्प (C) सही है।**

स्रोत- ऋक्सूक्त संग्रह (1.25.2)

78. काव्यमीमांसानुसारं काव्यकविः कतिधा भवति?

(A) चतुर्धा (B) त्रिधा
(C) पञ्चधा (D) अष्टधा

व्याख्या- राजशेखर काव्यमीमांसा के प्रथम अधिकरण के काव्यपाककल्प नामक पंचम अध्याय में कवियों के विषय में बताते हैं-

कविः- ''प्रतिभाव्युत्पत्तिमांश्च कविः कविरित्युच्यते।''
प्रतिभा तथा व्युत्पत्ति से युक्त कवि ही कवि कहा जाता है।

कवि के प्रकार- 'स च त्रिधा' अर्थात् कवि तीन प्रकार के होते हैं- 1. शास्त्रकवि 2. काव्यकवि 3. उभयकवि

1. शास्त्रकवि- 'तत्र त्रिधा शास्त्रकविः' शास्त्रकवि तीन प्रकार के होते हैं-

(i) जो शास्त्र का निर्माण करता है- 'यः शास्त्रं विधत्ते'।

(ii) जो शास्त्र में काव्य को निविष्ट करता है- 'यश्च शास्त्रे काव्यं संविधत्ते'।

(iii) जो काव्य में शास्त्र का सन्निवेश करता है- 'योऽपि काव्ये शास्त्रार्थं निधत्ते'।

2. काव्यकवि- 'काव्यकविः पुनरष्टधा'- काव्यकवि भी आठ प्रकार के हैं- 1. रचनाकवि 2. शब्दकवि 3. अर्थकवि 4. अलङ्कारकवि 5. उक्तिकवि 6. रसकवि 7. मार्गकवि 8. शास्त्रार्थकवि।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि काव्य कवि आठ प्रकार के होते हैं। **अतः विकल्प (D) सही है।**

स्रोत- काव्यमीमांसा - गंगासागर राय, पेज 37

79. जातिवाच्ये सति हस्त शब्दस्य मत्वर्थीयः कः प्रयोगः?

(A) हस्तवान् (B) हस्ती

(C) हस्तालुः (D) हस्तिकः

व्याख्या- 'हस्ताज्जातौ' (5.2.133) 'हस्त' इस प्रातिपदिक से मत्वर्थ में इनि प्रत्यय होता है, जाति वाच्य होने पर।

- हस्ती = हाथी। संस्कृत में हाथी की सूँड को 'हस्त' भी कहते हैं।
- 'हस्तः अस्य अस्ति'- ऐसा विग्रह करके 'हस्त सु' इस स्थिति में ''हस्ताज्जातौ'' सूत्र से 'इनि' प्रत्यय होने पर अनुबन्ध लोप, प्रातिपदिक संज्ञा, सुप् का लुक्, भसंज्ञा और अकार लोप होकर 'हस्तिन्' शब्द बनता है। एकदेशविकृतन्यायेन प्रातिपदिकत्वात् स्वादिकार्य होकर 'हस्ती' सिद्ध हो जाता है। यहाँ पर हस्तित्व जाति का बोध हो रहा है।
- इस सूत्र में 'जातौ' पद का प्रयोग होने से जातिवाच्य होने पर ही यह प्रत्यय होता है, अन्यथा नहीं होता है। जैसे- पुरुष व्यक्तिवाची में 'इनि' प्रत्यय नहीं हुआ अपितु 'मतुप्' होकर 'हस्तवान्' हो जाता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि 'हस्त' इस प्रातिपदिक से जातिवाच्य होने पर मत्वर्थीय 'इनि' प्रत्यय से 'हस्ती' शब्द सिद्ध होगा। **अतः विकल्प (B) सही है।**

स्रोत- वैयाकरण सिद्धान्तकौमुदी-गोविन्दाचार्य पेज 901

80. ''बुध-युध-नश-जनेङ्-प्रु-द्रु-स्रुभ्यो णेः'' इति नियमेन शुद्धः प्रयोगः कः?

(A) बोधयति पद्मम् (B) बोध्यते काष्ठानि

(C) बोधयते पद्मम् (D) वेदम् अध्यापयते

व्याख्या- भट्टोजिदीक्षित सिद्धान्तकौमुदी में परस्मैपद प्रक्रिया प्रकरण में एक सूत्र उद्धृत करते हैं-

सूत्र- बुध-युध-नश-जनेङ्-प्रु-द्रु-स्रुभ्यो णेः (1.3.86)

सूत्रार्थ- णिजन्त बुध्, युध्, नश्, जन्, इङ्, प्रु, द्रु, स्रु धातुओं से परस्मैपद होता है।

उदाहरण-

i. बोधयति पद्मम् (सूर्य) कमल को खिलाता है।

यहाँ भ्वादि और दिवादि में पठित 'बुध अवगमने' धातु से णिच् होने के बाद 'बोधि' धातु बन जाती है। इससे 'णिचश्च' सूत्र से उभयपद प्राप्त होने पर 'बुधयुधनशजनेङ्प्रुद्रुस्रुभ्यो णेः' से केवल परस्मैपद का विधान होने पर लट्, तिप्, शप्, गुण अयादेश होकर 'बोधयति' सिद्ध हो जाता है।

ii. योधयति काष्ठानि (लकड़ियों से टकराता है)

iii. नाशयति दुःखम् (श्रीहरि दुःखों का नाश करते हैं)

iv. जनयति सुखम् (श्रीहरि सुख उत्पन्न करते हैं)

v. अध्यापयति वेदम् (वेद पढ़ाता है)

vi. प्रावयति, द्रावयति, स्रावयति आदि इसी सूत्र के उदाहरण हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि प्रस्तुत सूत्र परस्मैपद का विधान करता है, अतः 'बोधयति पद्मम्' यही प्रयोग परस्मैपद होने से सही है। **अतः विकल्प (A) सही है।**

स्रोत- वैयाकरण सिद्धान्तकौमुदी (पञ्चम भाग)-गोविन्दाचार्य, पेज-445

81. भाषाविज्ञानानुसारेण भारोपीयपरिवारस्य भाषा नास्ति-

(A) मय (B) तोखारी

(C) इटालिक (D) आर्मीनी

व्याख्या-

- भारोपीय शब्द भारत + यूरोपीय का संक्षिप्त रूप है।
- यह Indo European का अनुवाद है।
- भारोपीय में भारतवर्ष से लेकर यूरोप तक फैली हुई भाषाओं का संग्रह है।
- भारोपीय परिवार की भाषाओं को ध्वनि के आधार पर दो भागों में विभक्त किया जाता है- (क) केन्टुम् (ख) शतम्।
- इस विभाजन का श्रेय प्रो. अस्कोली (Ascoly) को है।
- भारोपीय परिवार को केन्टुम् और शतम् वर्ग के आधार पर इस प्रकार बाँटा जाता है-

शतम् वर्ग	केन्टुम् वर्ग
1. भारत-ईरानी (आर्य)	1. ग्रीक
2. बाल्टो-स्लाविक	2. केल्टिक
3. आर्मीनी	3. जर्मनिक (ट्यूटानिक)
4. अल्बानी (इलीरी)	4. इटैलिक
	5. हिटाइट
	6. तोखारी

- ♦ मय भाषा अमेरिकी परिवार की है जो मध्य अमेरिका में बोली जाती है।
- ♦ अमेरिकी परिवार में लगभग 1000 भाषाएँ मानी जाती हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि तोखारी, इटालिक, आर्मीनी ये भारोपीय भाषाएँ हैं जबकि 'मय' अमेरिकी परिवार की भाषा है। **अतः विकल्प (A) सही है।**

स्रोत- भाषा विज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 410

82. हर्षचरितम् कति उच्छ्वासेषु विभक्तम्?

(A) सप्तसु (B) अष्टसु
(C) चतुर्षु (D) दशसु

व्याख्या- हर्षचरितम् का सामान्य परिचय-
हर्षचरित महाकवि बाणभट्ट विरचित ऐतिहासिक कथानक पर आश्रित पहला गद्यकाव्य है।

- ♦ बाणभट्ट के दो प्रसिद्ध गद्यकाव्य हैं- 1. कादम्बरी (कथा) दो भाग। 2. हर्षचरितम् (आख्यायिका) आठ उच्छ्वासों में विभक्त एक आख्यायिका है।
- ♦ हर्षचरित में दो कथानक हैं- 1. बाणभट्ट की आत्मकथा (वंश वर्णन) 2. हर्ष का जीवन परिचय।
- ♦ प्रथम तीन उच्छ्वासों में बाणभट्ट के पूर्वजों का वर्णन, शेष पाँच उच्छ्वासों में हर्ष का सम्पूर्ण जीवन वृत्तान्त है।
- ♦ हर्षचरित का उपजीव्य ग्रन्थ इतिहास प्रसिद्ध है।

बाणभट्ट का वंश वर्णन-
वत्स कुबेर पाशुपत अर्थपति (इनके 11 पुत्र)
चित्रभानु बाणभट्ट (पुलिनभट्ट/पुलिन्दभट्ट/भूषणभट्ट)

संस्कृत वाङ्मय के कुछ गद्यकाव्य-

गद्यकाव्य	रचनाकार	विभाजन
दशकुमारचरितम्	दण्डी	दश उच्छ्वास
वासवदत्ता (कथा)	सुबन्धु	एकांकी
कादम्बरी (कथा)	बाणभट्ट	दो भागों में
हर्षचरितम् (आख्यायिका)	बाणभट्ट	आठ उच्छ्वास
शिवराजविजय	अम्बिकादत्त व्यास	3 विराम 12 निःश्वास
गद्यचिन्तामणि	वादीभसिंह	ग्यारह लम्भक

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि हर्षचरितम् में आठ उच्छ्वास हैं। **अतः विकल्प (B) सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज- 396

83. 'शमप्रधानेषु तपोधनेषु गूढं हि दाहात्मकमस्ति तेजः। स्पर्शानुकूला इव सूर्यकान्तास्तदन्यतेजोऽभिभवाद् वमन्ति॥ अत्र 'तत्' पदेन किं द्योतते?

(A) शमः (B) तपः
(C) धनम् (D) तेजः

व्याख्या- महाकवि कालिदास विरचित अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के द्वितीय अङ्क के सातवें श्लोक में राजा दुष्यन्त अपने सेनापति भद्रसेन से कहता है-

'शमप्रधानेषु तपोधनेषु गूढं हि दाहात्मकमस्ति तेजः।
स्पर्शानुकूला इव सूर्यकान्तास्तदन्यतेजोऽभिभवाद् वमन्ति।।'

शब्दार्थ- शमप्रधानेषु = शान्तिप्रधान, तपोधनेषु = तपस्वियों में, दाहात्मकं = जला देने वाला, गूढं = गुप्त, तेजः = तेज, हि = क्योंकि, स्पर्शानुकूलाः = स्पर्श के योग्य, सूर्यकान्ताः इव = सूर्यकान्तमणि के समान, तत् = उस (तेज)

अनुवाद- शान्तिप्रधान तपस्वियों में जला देने वाला गुप्त तेज रहता है। क्योंकि स्पर्श के योग्य सूर्यकान्त मणियों के तुल्य (वे) अन्य तेज से तिरस्कृत होने पर उस (तेज) को प्रकट करते हैं। (अभि. 2.7)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'तत्' शब्द से 'तेज' का अर्थ द्योतित हो रहा है। **अतः विकल्प (D) सही है।**

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-108

84. तर्कसंग्रहरीत्या 'आद्यस्यन्दना समवायिकारणं' किम्भवति?

(A) द्रव्यत्वम् (B) द्रवत्वम्
(C) गुरुत्वम् (D) स्नेहः

व्याख्या- न्यायवैशेषिक के प्रकरणग्रन्थ तर्कसंग्रह में आचार्य अन्नम्भट्ट द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय, अभाव, इन सात पदार्थों की चर्चा करते हैं। जिनमें पृथिवी, अप, तेज, वायु, आकाश, काल, दिक्, आत्मा, मन इन नौ द्रव्यों को बताने के बाद रूप, रस, गन्ध इत्यादि 24 गुणों का वर्णन करते हैं।

द्रवत्वम्- आद्यस्यन्दनासमवायिकारणं द्रवत्वम्। अर्थात् प्रथम बहना का असमवायिकारण (ही) द्रवत्व है।

पृथकत्व- पृथग् व्यवहारासाधारणकारणं पृथक्त्वम्। पृथक् व्यवहार के असाधारण कारण को पृथकत्व कहा गया है।

गुरुत्व- आद्यपतनासमवायिकारणं गुरुत्वम्। प्रथम गिरने का असमवायिकारण ही गुरुत्व है।

स्नेह- चूर्णादिपिण्डीभावहेतुर्गुणः स्नेहः। चूर्ण आदि को

पिण्ड बना देने के कारण रूप गुण को स्नेह कहा जाता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि तर्कसंग्रहरीत्या आद्यस्यन्दनासमवायिकारणं द्रवत्वम् है। **अतः विकल्प (B) सही है।**

स्रोत- तर्कसंग्रह - राकेश शास्त्री, पेज.-168

85. ''मेदश्छेदकृशोदरं लघुभवत्युत्थानयोग्यं वपुः'' इत्येवं कस्य वैशिष्ट्यं प्रतिपादितम् ?

(A) मृगयायाः (B) पर्यटनस्य
(C) तपश्चर्यायाः (D) पादपसिञ्चनस्य

व्याख्या- प्रस्तुत पंक्ति महाकवि कालिदास द्वारा विरचित अभिज्ञानशाकुन्तलम् के द्वितीय अङ्क के पाँचवें श्लोक से उद्धृत है। द्वितीय अङ्क के प्रारम्भ में ''राजा दुष्यन्त और विदूषक मृगया (शिकार) खेलने राजा दुष्यन्त नहीं जायेंगे, क्योंकि माधव्य ने आज विश्राम करने की इच्छा व्यक्त की है।''– यह बात सुनकर सेनापति भद्रसेन महाराज दुष्यन्त के मृगया (शिकार) के लिए उत्साहित करते हुए शिकार करने का लाभ बताते हुए कहता है-

मेदश्छेदकृशोदरं लघु भवत्युत्थानयोग्यं वपुः
सत्त्वानामपि लक्ष्यते विकृतिमच्चित्तं भयक्रोधयोः।
उत्कर्षः स च धन्विनां यदिषवः सिध्यन्ति लक्ष्ये चले
मिथ्यैव व्यसनं वदन्ति मृगयामीदृग्विनोदः कुतः।।

अनुवाद- (मृगया से) शरीर, चर्बी कम होने से घटे हुए पेट वाला, चुस्त और उत्साह के योग्य हो जाता है। जीवों के भय और क्रोध की अवस्था में क्षुब्ध मन का भी ज्ञान होता है। यह धनुर्धारियों के लिए बड़े ही गौरव की बात है कि चंचल लक्ष्य पर (उनके) बाण सफल होते हैं। शिकार खेलने की व्यर्थ ही लोग व्यसन कहते हैं। इतना मनोरंजन और कहाँ?

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि 'मेदश्छेदकृशोदरं लघु भवत्युत्थानयोग्यं वपुः' में मृगया का वैशिष्ट्य प्रतिपादित है। **अतः विकल्प (A) सही है।**

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-104

86. पण्डितराजजगन्नाथानुसारं निम्नलिखितेषु को न रसदोषः?

(A) स्थायिव्यभिचारिणां शब्दवाच्यत्वम्
(B) रसस्य व्यङ्ग्यत्वम्
(C) विच्छिन्नरसस्य पुनर्दीपनम्
(D) समबलप्रबलप्रतिकूलरसाङ्गानां निबन्धनम्

व्याख्या- पण्डितराज जगन्नाथ रसगङ्गाधर के प्रथम आनन में रसदोषों की चर्चा करते हैं-

1. **वमन दोष-** ''व्यङ्ग्ययस्य वाच्यीकरणे सामान्यतो वमनाख्यदोषस्य वक्ष्यमाणत्वात्।'' व्यङ्ग्य को वाच्य बना देने पर 'वमन' नामक दोष होता है।

2. **निरर्थकत्व दोष-** 'आस्वाद्यताऽवच्छेदकरूपेण प्रत्ययाजनकतया, रसस्थले वाच्यवृत्तेः कापेयककल्पत्वेन विशेषदोषत्वाच्च' रस शृङ्गारादि पदों से रसों को वाच्य बना देने पर 'निरर्थकत्व' नामक विशेष दोष भी होता है।

3. **शब्दवाच्यत्व दोष-** 'स्थायिव्यभिचारिणामपि शब्दवाच्यत्वं दोषः' स्थायिभावों और व्यभिचारिभावों का भी नामोल्लेखपूर्वक वर्णन करना शब्दवाच्यत्व दोष होता है।

4. **''विभावानुभावयोरसम्यक् प्रत्यये, विलम्बेन प्रत्यये वा, न रसास्वाद इति तयोर्दोषित्वम्''** विभावों और अनुभावों की अच्छी तरह प्रतीति न होना, अथवा विलम्ब से प्रतीति होना दोष है।

5. **''समबल-प्रबल-प्रतिकूलरसाङ्गानां निबन्धनन्तु प्रकृतरसपोष-प्रातीपिकमिति दोषः''** जहाँ जिस रस का वर्णन करना कवि को इष्ट हो उस प्रस्तुत रस के विरोधी रसों के समबल अथवा प्रबल अङ्गों का वर्णन करना दोष है।

6. **''प्रबन्धे प्रकृतस्य रसस्य प्रसङ्गान्तरेण विच्छिन्नस्य पुनर्दीपने सामाजिकानां न सामग्र्येण रसास्वाद इति विच्छिन्नदीपनं दोषः।''** किसी भी प्रबन्ध में जिस रस का वर्णन चल रहा हो, उसका यदि एक बार किसी भी प्रसङ्गान्तर से विच्छेद हो जाय, तब पुनः आगे उसका दीपन करने से विच्छिन्न कथा को दुबारा उठाने से 'विच्छिन्नदीपन' नामक दोष होता है।

7. **''तथा तत्तद्रसप्रस्तावनानर्हेऽवसरे प्रस्तावः, विच्छेदानर्हे च विच्छेदः''** इसी तरह जहाँ जिस रस का प्रस्ताव नहीं करना चाहिए वहाँ उस रस का प्रस्ताव करना, और जहाँ जिस रस का विच्छेद नहीं करना चाहिए वहाँ उस रस का विच्छेद कर देना दोष है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि 'रसस्य व्यङ्ग्यत्वम्' यह रस दोष नहीं है। **अतः विकल्प (B) सही है।**

स्रोत- रसगङ्गाधर - मदनमोहन झा, पेज 206,208

87. साध्यशून्यः पक्षो मुक्तावल्यां क उदाहृतः?

(A) बाधः (B) व्याप्यत्वासिद्धः
(C) सत्प्रतिपक्षः (D) अनैकान्तिकः

व्याख्या- श्री विश्वनाथ पञ्चानन प्रणीत न्यायसिद्धान्तमुक्तावली के अनुमानखण्ड में 'बाध' को परिभाषित करते हैं-

➢ **बाध- ''साध्यशून्यो यत्र पक्षस्त्वसौ बाध उदाहृतः''**
जहाँ पक्ष साध्य से शून्य होता है, वह बाध कहलाता है। पक्ष का अर्थ है- पक्षतावच्छेक से विशिष्ट। (का. 78)

➢ **असिद्धि- आश्रयासिद्धिराद्या स्यात् स्वरूपासिद्धिरप्यथ। व्याप्यत्वासिद्धिरपरा स्यादसिद्धिरतस्त्रिधा।।**
पहली आश्रयासिद्धि, उसके बाद स्वरूपासिद्धि, तीसरी

व्याप्यत्वासिद्धि इस कारण असिद्धि तीन प्रकार की होती है।

➢ **अनैकान्तिक- 'साधारणाद्यन्यतमत्वमनैकान्तिकत्वम्'** साधारणत्व, असाधारणत्व, अनुपसंहारित्व में से किसी एक का होना अनैकान्तिकत्व है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'साध्यशून्यः पक्षः' मुक्तावली में 'बाध' की परिभाषा है।

अतः विकल्प (A) सही है।

स्रोत- न्यायसिद्धान्तमुक्तावली - महानन्द झा, पेज 160

88. याज्ञवल्क्यस्मृत्यनुसारं किं स्त्रीधनं नास्ति?

(A) अध्यग्नि (B) आधिवेदनिकम्
(C) अन्वाधेयकम् (D) सामान्यार्थः

व्याख्या- याज्ञवल्क्यस्मृति के रचयिता 'याज्ञवल्क्य' वैदिक ऋषि हैं, वे शुक्लयजुर्वेद के द्रष्टा थे।

- याज्ञवल्क्यस्मृति के सुप्रसिद्ध टीकाकार विश्वरूप, विज्ञानेश्वर और अपरार्क हैं।
- के.पी. जायसवाल ने इस स्मृति का समय 150 ई. से 200 ई. के मध्य निश्चित किया है।
- पी.वी. काणे ने इसका समय ईसापूर्व प्रथम शताब्दी तथा ईसा के पश्चात् तृतीय शताब्दी के बीच का निर्धारित किया है।
- याज्ञवल्क्यस्मृति अनुष्टुप् छन्द में निबद्ध है।
- इसमें लगभग एक हजार श्लोक हैं।
- याज्ञवल्क्यस्मृति तीन भागों में विभक्त है।
- प्रथम आचाराध्याय है, इसमें चौदह विद्याएँ, धर्मोपादान, आचार के दस सिद्धान्त आदि तेरह प्रकरण हैं।
- द्वितीय व्यवहाराध्याय- इसमें पच्चीस प्रकरण हैं।
- तृतीय प्रायश्चित्ताध्याय इसमें आपद्धर्म, यतिधर्म, प्रायश्चित्त आदि छह प्रकरण हैं।
- याज्ञवल्क्य के द्वितीय भाग व्यवहाराध्याय के 143वें श्लोक में स्त्रीधन की चर्चा की गयी है।

स्त्रीधन- 'पितृमातृपतिभ्रातृदत्तमध्यग्न्युपागतम् ।
आधिवेदनिकाद्यं च स्त्रीधनं परिकीर्तितम्॥

पिता, माता, पति और भाई द्वारा दिया गया धन, विवाह के समय अग्नि के समीप धन तथा दूसरा विवाह करते समय प्रथम पत्नी के परितोषार्थ उसे दिया गया धन इत्यादि स्त्रीधन कहे गये हैं। (याज्ञ.1.43)

- **'बन्धुदत्तं तथा शुल्कमन्वाधेयकमेव च।'**
स्त्री के माता-पिता के बन्धुओं द्वारा दिया गया धन, परिणय के शुल्क के रूप में दिया गया धन, विवाह के बाद पति तथा पितृकुल से प्राप्त धन भी स्त्री-धन होता है।

'अतीतायामप्रजसि बान्धवास्तदवाप्नुयुः॥' (याज्ञ.144)

ऐसी स्त्रीधन वाली स्त्री के बिना संतान के मर जाने पर उसके बन्धु पति आदि उस स्त्रीधन को प्राप्त करते हैं

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि अध्यग्नि, आधिवेदनिकम् तथा अन्वाधेयकम् ये तीनों स्त्रीधन हैं जबकि सामान्यार्थः स्त्रीधन नहीं है। **अतः विकल्प (D) सही है।**

स्रोत- याज्ञवल्क्यस्मृति- गंगासागर राय, पेज-284

89. 'अग्निष्टोमाख्ये' सोमयागे कति शस्त्राणि भवन्ति?

(A) द्वादश (B) पञ्चदश
(C) एकादश (D) अष्ट

व्याख्या- चारों वेदों में यज्ञ का बहुत अधिक महत्त्व बताया गया है। यह वह विधि है जिसके द्वारा प्राकृतिक संतुलन बना रहता है। प्रकृति में एक नैसर्गिक चक्र की व्यवस्था है, प्रत्येक पदार्थ पुनः अपने स्थान पर पहुँचता है। ऋग्वेद और यजुर्वेद के द्वारा वर्षचक्ररूपी यज्ञ में वसन्त ऋतु घी है, ग्रीष्म ऋतु समिधा और शरद् ऋतु हव्य है।

* यजुर्वेद में यज्ञ को सृष्टिचक्र का नाभि कहा है।

* अथर्वा ऋषि यज्ञ के प्रवर्तक माने गये हैं। ऐतरेय ब्राह्मण में समस्त श्रौतयज्ञों को पाँच भागों में विभक्त किया गया है- (i) अग्निहोत्र (ii) दर्शपौर्णमास (iii) चातुर्मास्य (iv) पशु (v) सोम।

श्रौत और स्मार्त 21 याग ये हैं-

(क) पाकयज्ञ- ये गृह्ययाग हैं, ये सात हैं- (1) औपासन होम (2) वैश्वदेव (3) पार्वण (4) अष्टका (5) मासिक श्राद्ध (6) श्रवणा (7) शूलगव।

(ख) हविर्याग- ये श्रौतयाग हैं, ये सात हैं- (1) अग्निहोत्र (2) दर्श-पौर्णमास (3) आग्रयण (4) चातुर्मास्य (5) पशुबन्ध (6) सौत्रामणि (7) पितृयज्ञ।

(ग) सोमयाग- ये श्रौतयाग हैं; ये सात हैं- (1) अग्निष्टोम (2) अत्यग्निष्टोम (3) उक्थ्य (4) षोडशी (5) वाजपेय (6) अतिरात्र (7) अप्तोर्याम।

सोमयाग के अन्तर्गत ही अग्निष्टोम को बताया गया है यह श्रौतयाग हैं- अग्निष्टोम यज्ञायज्ञा वो अग्नये (ऋ. 6.48.1 और साम. 35)। ऋचा पर सामगान 'अग्निष्टोम' कहलाता है।

''द्वादशाग्निष्टोमस्य शस्त्राणि'' (ता.ब्रा. 6.3.3) अर्थात् अग्निष्टोम के बारह शस्त्र हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि सोमयाग के अन्तर्गत अग्निष्टोम के 12 शस्त्र हैं। **अतः विकल्प (A) सही है।**

स्रोत- श्रौतयज्ञ परिचय - श्रीवेणीराम शर्मा गौड़, पेज- 30

90. 'प्रतिहर्ता' ऋत्विक् कस्य गणस्य विद्यते?

(A) ब्रह्मगणस्य (B) उद्गातृगणस्य
(C) होतृगणस्य (D) अध्वर्युगणस्य

व्याख्या- मुख्यतः ऋत्विक् चार गणों में विभक्त हैं- (1) अध्वर्युगण (2) ब्रह्मगण (3) होतृगण (4) उद्गातृगण।

प्रत्येक गण में चार-चार ऋत्विक् होते हैं। जो इस प्रकार से हैं-

अध्वर्युगण	**ब्रह्मगण**	**होतृगण**	**उद्गातृगण**
(i) अध्वर्यु	(i) ब्रह्मा	(i) होता	(i) उद्गाता
(ii) प्रतिप्रस्थाता	(ii) ब्राह्मणाच्छंसी	(ii) मैत्रावरुण	(ii) प्रस्तोता
(iii) नेष्टा	(iii) आग्नीध्र	(iii) अच्छावाक	(iii) प्रतिहर्ता
(iv) उन्नेता	(iv) पोता	(iv) ग्रावस्तुत	(iv) सुब्रह्मण्य

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'प्रतिहर्ता' उद्गातृगण से सम्बन्धित है। **अतः विकल्प (B) सही है।**

स्रोत- श्रौतयज्ञ परिचय - श्रीवेणीराम शर्मा गौड़, पेज- 28

91. 'जन्माद्यस्य यतः' इत्यस्मिन् सूत्रे 'यतः' पदेन किमभिधीयते?

(A) प्रकृतिः (B) जगत्
(C) ब्रह्मः (D) सृष्टिः

व्याख्या-

- बादरायण प्रणीत ब्रह्मसूत्र वेदान्त प्रस्थानत्रयी में अन्यतम ग्रन्थ है। प्रस्थानत्रयी में उपनिषद्, गीता, ब्रह्मसूत्र आते हैं। ब्रह्मसूत्र में चार अध्याय, प्रत्येक अध्याय में 4-4 पाद और कुल 555 सूत्र हैं।
- ब्रह्मसूत्र के प्रथम सूत्र 'अथातो ब्रह्मजिज्ञासा।' (1.1.1) में ब्रह्मविषयक जिज्ञासा का अधिकार बतलाकर द्वितीय सूत्र में ब्रह्म का लक्षण (स्वरूप) बतलाया गया है- जन्माद्यस्य यतः (1.1.2)
  अर्थात् (अस्य) इस जगत् की (जन्मादि) उत्पत्ति, स्थिति और लय (यतः) जिससे होते हैं, वह ब्रह्म है।
- शाङ्करभाष्य में कहा गया है कि 'यतः' पद से इस जगत् के उत्पत्ति, स्थिति और लय के कारण का निर्देश किया गया है- ''यतः इति कारण-निर्देशः। अस्य जगतः नामरूपाभ्यां..... मनसाप्यचिन्त्यरचनारूपस्य जन्मस्थितिभङ्गं यतः सर्वज्ञात्सर्वशक्तेः कारणाद्भवति तद्ब्रह्म इति वाक्यशेषः।'' अर्थात् 'यतः'- यह शब्द कारण का निर्देशक है। जो नाम – रूप से अभिव्यक्त हुआ है तथा अनेक कर्ता और भोक्ताओं से संयुक्त है, मन से भी अचिन्त्य रचना, रूप वाले इस जगत् की उत्पत्ति, स्थिति और लय जिस सर्वज्ञ, शक्तिमान् कारण से होते हैं 'वह ब्रह्म है' यह वाक्यशेष है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'जन्माद्यस्य यतः' सूत्र में 'यतः' पद 'ब्रह्म' के लिए आया है।

अतः विकल्प (C) सही है।

स्रोत- ब्रह्मसूत्र शाङ्करभाष्य-स्वामी सत्यानन्द सरस्वती, पेज-34-35

92. अधोऽङ्कितेषु केन सह कस्य सम्बन्धः? समुचितां तालिकां चिनुत-

(A) अचोऽन्त्यादि (i) प्रगृह्यः
(B) इ इन्द्रः (ii) उपधा
(C) कृत्तद्धितसमासाश्च (iii) टि
(D) अन्त्यादलः पूर्वो वर्णः (iv) प्रातिपदिकम्

(A) (a) (i) (b) (ii) (c) (iv) (d) (iii)
(B) (a) (iv) (b) (ii) (c) (iii) (d) (i)
(C) (a) (ii) (b) (i) (c) (iii) (d) (iv)
(D) (a) (iii) (b) (i) (c) (iv) (d) (ii)

व्याख्या- महर्षि पाणिनि द्वारा विरचित अष्टाध्यायी में 8 अध्याय तथा प्रत्येक अध्याय में चार-चार पाद हैं। इस प्रकार अष्टाध्यायी में कुल 32 पाद एवं लगभग 4000 सूत्र हैं।

अष्टाध्यायी के ही 1275 सूत्रों को सरल से सरल शब्दों में समझाने और पाठकों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए- भट्टोजिदीक्षित के शिष्य वरदराजाचार्यजी ने लघुसिद्धान्त कौमुदी की रचना की। इसके कुछ प्रमुख सूत्र इस प्रकार हैं-

(i) अचोऽन्त्यादि टि (1.1.64)- 'अचां मध्ये योऽन्त्यः स आदिर्यस्य तट्टिसंज्ञं स्यात्'।

अचों के मध्य जो अन्त्य अच्, वह जिसके आदि में हो, वह समुदाय 'टि' संज्ञक होता है। जैसे- 'ज्ञान' में 'अकार' की और 'मनस्' में 'अस्' की टि संज्ञा हो जाती है।

(ii) निपात् एकाजनाङ् (1.1.14)- 'एकोऽज् निपात् आङ्वर्जः प्रगृह्यः स्यात्।' आङ् को छोड़कर मात्र एक अच् वाला निपात प्रगृह्य संज्ञक होता है। जैसे- इ इन्द्रः, उ उमेशः।

(iii) कृत्तद्धितसमासाश्च (1.2.46)- 'कृत्तद्धितान्तौ समासाश्च तथा स्युः'। कृदन्त, तद्धितान्त और समास भी प्रातिपदिक संज्ञक होते हैं।

कृदन्त- जो धातु के बाद लगते हैं। जैसे- कारकः

तद्धितान्त- सुबन्त शब्दों से लगते हैं। जैसे- शालीयः

समासान्त- अनेक पदों का एकपद होना- जैसे रामः+हरिः+श्यामः- रामहरिश्यामाः।

(iv) अलोऽन्त्यात्पूर्व उपधा (1.1.65)- 'अन्त्यादलः पूर्वो वर्ण उपधासंज्ञः। वर्णों के समुदाय में से जो अन्तिम वर्ण हो, उससे पूर्व के वर्ण की यह उपधा संज्ञा होती है। जैसे- राम के 'मकार' की उपधा संज्ञा हुई है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि **विकल्प (D) सही है।**

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी-गोविन्द प्रसाद शर्मा, पेज- 61,76,131,175

93. 'सन्निहितसाधनादधिकस्यानुपादित्सा' इत्यनेन योगाङ्गनियमेषु कः?
(A) सन्तोषः (B) ईश्वरप्रणिधानम्
(C) शौचम् (D) तपः

व्याख्या- महर्षि पतञ्जलि पातञ्जलयोगदर्शन के द्वितीय साधनपाद में यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि इन अष्टाङ्गयोग की चर्चा करते हुए अहिंसा-सत्य-अस्तेय-ब्रह्मचर्य-अपरिग्रह पाँच यम बताते हैं।

पाँच यमों को बताने के बाद पाँच नियमों को बताते हैं-

नियम- शौचसन्तोषतपःस्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि नियमाः (2/32)

शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान- ये पाँच 'नियम' कहे जाते हैं।

योगसूत्र के व्यासभाष्य में भाष्यकार शौचादि सभी पाँचों नियमों को परिभाषित करते हैं।

(i) शौच- शौच मृज्जलादिजनितं मेध्याभ्यवहरणादि च बाह्यम्। आभ्यन्तरं चित्तमलानामाक्षालनम्।

मिट्टी और जल से होने वाला तथा पवित्र भोजनादि बाहरी 'शौच' है। चित्त के दोषों का धोना भीतरी 'शौच' है।

(ii) सन्तोष- सन्तोषः सन्निहितसाधनादधिकस्यानुपादित्सा

विद्यमान साधनों से अधिक साधनों का संग्रह करने की अनिच्छा संतोष है।

(iii) तपः- तपो द्वन्द्वसहनं व्रतानि चैषां यथायोगं कृच्छ्रचान्द्रायण सान्तपनादीनि।

द्वन्द्वों को सहना तप या तपस्या है। बुभुक्षा, पिपासा, सर्दी-गर्मी आदि द्वन्द्व हैं। शरीर की अनुकूलता के अनुसार कृच्छ्र, चान्द्रायण तथा सान्तपन इत्यादि व्रत भी तप हैं।

(iv) स्वाध्याय- 'स्वाध्यायो मोक्षशास्त्राणामध्ययनं प्रणवजपो वा'

मोक्षशास्त्रों का अध्ययन अथवा ओङ्कार का जप 'स्वाध्याय है।

(v) ईश्वरप्रणिधान- ''ईश्वरप्रणिधानं तस्मिन् परमगुरौ सर्वकर्मार्पणम्''

परमगुरु ईश्वर के प्रति सभी कर्मों का अर्पण करना 'ईश्वरप्रणिधान' है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'सन्निहितसाधनादधिकस्यानुपादित्सा' यह व्यासभाष्य में सन्तोष नामक योगाङ्गनियम की परिभाषा है। **अतः विकल्प (A) सही है।**

स्रोत- पातञ्जल योगदर्शन-सतीश आर्य, पेज 385-386

94. ''वेः शब्दकर्मणः' इति सूत्रस्योदाहणम्भवति-
(A) चित्तं विकरोति कामः (B) स्वरान् विकुरुते
(C) शत्रुमधिकुरुते (D) छात्राः विकुर्वते

व्याख्या- भट्टोजिदीक्षित सिद्धान्तकौमुदी में आत्मनेपदप्रक्रिया प्रकरण के अन्तर्गत धातुओं की आत्मनेपद की प्रक्रिया को बताते हुए पाणिनीयसूत्र को उद्धृत करते हैं-

- वेः शब्दकर्मणः (1.3.34) वेः परस्मात् शब्द कर्मकात् कृ धातोरात्मनेपदं भवति।

  उदाहरण- स्वरान् विकुरुते।
- यहाँ 'वि' उपसर्ग पूर्वक 'कृ' धातु है और उच्चारण करना अर्थ है। अतः ''वेः शब्दकर्मणः'' सूत्र से आत्मने पद होकर विकुरुते बन गया है।
- अकर्मकाच्च (1.3.35) वेः परस्मात् अकर्मकात् 'कृ' धातोरात्मनेपदं भवति।

  सूत्रार्थ- 'वि' से परे अकर्मक 'कृ' धातु से आत्मनेपद होता है।

  उदाहरण- छात्राः विकुर्वते। (छात्रगण विकार को प्राप्त होते हैं)

  यहाँ पर 'वि' उपसर्ग भी है और अकर्मकता भी। अतः वि+कृ धातु से ''अकर्मकाच्च'' सूत्र से आत्मनेपद होकर प्रथमपुरुष बहुवचन में 'विकुर्वते' सिद्ध हुआ।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि ''वेः शब्दकर्मणः' सूत्र का उदाहरण 'स्वरान् विकुरुते' होगा। **अतः विकल्प (B) सही है।**

स्रोत- वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (भाग-5), गोविन्दाचार्य, पेज 397

95. 'दण्डिकः' इत्यस्मिन् पदे कः तद्धितप्रत्ययः?
(A) इक् (B) ठन्
(C) छत्र् (D) ठक्

व्याख्या- आचार्य भट्टोजिदीक्षित सिद्धान्तकौमुदी के मत्वर्थीय तद्धितप्रकरण के अन्तर्गत पाणिनीय सूत्र उद्धृत करते हैं-

सूत्र- अत इनिँठनौ (5.2.115)

सूत्रार्थ- प्रथमान्त अदन्त प्रातिपदिक से मत्वर्थ में तद्धितसंज्ञक इनिँ और ठन् प्रत्यय विकल्प से हों।

- दण्ड अस्य अस्ति इति दण्डिकः दण्डी वा (दण्ड वाला)
- 'दण्ड' शब्द अदन्त प्रातिपदिक है अतः 'दण्ड सु' इस प्रथमान्त प्रातिपदिक से मत्वर्थ में ''अत इनिँठनौ'' सूत्र से 'इनि' और 'ठन्' प्रत्यय हो जाते हैं।
- दण्ड + ठन् = दण्डिकः
- 'ठन्' प्रत्यय के पक्ष में नकार और अकार अनुबन्धों का लोप, सुब्लुक्, 'ठस्येकः' से ठकार को इक् आदेश एवं 'यस्येति च' सूत्र से लोप कर विभक्ति लाने से 'दण्डिकः' प्रयोग सिद्ध हो जाता है।
- दण्ड + इनिँ = दण्डिन् (दण्डी)
- इनिँ पक्ष में अनुबन्ध इकार का लोप एवं सुब्लुक् करने से - दण्ड + इन्

- 'यस्येति च' सूत्र से लोप होकर 'दण्डिन्' शब्द निष्पन्न होता है। प्रथमा के एकवचन में सुँ विभक्ति लाने पर ''सौ च'' से उपधा दीर्घ, हल्ङ्यादिलोप तथा पदान्त नकार का भी 'न लोपः प्रातिपदिकान्तस्य'। से लोप करने पर 'दण्डी' प्रयोग सिद्ध हो जाता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि दण्ड + ठन् प्रत्यय होने पर ''दण्डिकः'' प्रयोग सिद्ध होगा।

अतः विकल्प (B) सही है।

स्रोत- वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (भाग-3), गोविन्दाचार्य, पेज 881

96. 'मनसा हरिं व्रजति' इत्यत्र 'गत्यर्थकर्मणी...' इत्यादि सूत्रेण कर्मणि चतुर्थी कथन्न भवति-
(A) व्रजधातोः गत्यर्थाभावात्
(B) गत्यर्थकर्मणोऽभावात्
(C) अध्ववाचिकर्मत्वात्
(D) चेष्टायाः प्रतीत्यभावात्

व्याख्या- आचार्य भट्टोजिदीक्षित वैयाकरणसिद्धान्त कौमुदी कारक प्रकरण चतुर्थी विभक्ति के अन्तर्गत एक सूत्र उद्धृत करते हैं-

''गत्यर्थकर्मणि द्वितीयाचतुर्थ्यौ चेष्टायामनध्वनि''

यदि गति शारीरिक व्यापार मुक्त हो और कर्म मार्गवाची न हो तो गत्यर्थक धातुओं के कर्म में द्वितीया और चतुर्थी होती है।

जैसे- ग्रामं ग्रामाय वा गच्छति। (गाँव को जाता है)

वहाँ पर गत्यर्थक 'गम्' धातु का प्रयोग है और यह गमन चेष्टायुक्त है। ग्राम मार्गवाची नहीं है और यह गच्छति का कर्म भी है। अतः 'ग्राम' शब्द से ''गत्यर्थकर्मणि द्वितीयाचतुर्थ्यौ चेष्टायामनध्वनि'' सूत्र के द्वारा चतुर्थी होने पर 'ग्रामाय गच्छति' वाक्य बनता है और द्वितीया होने पर 'ग्रामं गच्छति'। इस प्रकार 'ग्राम' में चतुर्थी एवं द्वितीया दोनों विभक्तियाँ पर्यायेण होती हैं।

- मनसा हरिं व्रजति (मन से हरि की शरण में जाता है) इस वाक्य में मन से शरण ग्रहण होने के कारण शारीरिक व्यापार नहीं है, अतः उपर्युक्त सूत्र की प्राप्ति हुयी, अपितु 'कर्मणि द्वितीया' से द्वितीया विभक्ति कर्म होकर 'मनसा हरिं व्रजति' वाक्य सिद्ध हो जाता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'चेष्टायाः प्रतीत्यभावात्' 'मनसा हरिं व्रजति' इस प्रयोग में चतुर्थी नहीं हुई। **अतः विकल्प (D) सही है।**

स्रोत- वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (भाग-2), गोविन्दाचार्य, पेज 276

97. ''त्रयो धर्मस्कन्धाः यज्ञो अध्ययनं दानम् इति''- इत्युक्तिः कस्याम् उपनिषदि लभ्यते?
(A) तैत्तिरीयोपनिषदि (B) छान्दोग्योपनिषदि
(C) बृहदारण्यकोपनिषदि (D) ऐतरेयोपनिषदि

व्याख्या- छान्दोग्योपनिषद्- यह सामवेदीय उपनिषद् है, इसमें आठ अध्याय हैं। प्रत्येक अध्याय में अनेक खण्ड हैं।

रैक्व द्वारा अध्यात्म शिक्षा, सत्यकाम जाबाल की कथा, महर्षि आरुणि द्वारा अपने पुत्र श्वेतकेतु को अद्वैतवाद का उपदेश, ऋषि सनत्कुमार द्वारा नारद को उपदेश आदि विषय प्रतिपादित हैं।

छान्दोग्य की प्रमुख सूक्तियाँ-

- ''त्रयो धर्मस्कन्धाः यज्ञोऽध्ययनं दानमिति''
  धर्म के तीन स्कन्ध (आधारस्तम्भ) हैं- यज्ञ, अध्ययन और दान। (छान्दोग्य 2.23.1)
- ''सर्वं खल्विदं ब्रह्म'' (3.14.1)
  यह सारा जगत् निश्चय ब्रह्म ही है।
- ''तत्त्वमसि (6.16.3)
  वही (ब्रह्म) तू है।
- ''ओङ्कार एवेदं सर्वम् (3.14.1)
  ओङ्कार ही यह सब कुछ है।

➢ **तैत्तिरीयोपनिषद्-** कृष्णयजुर्वेद तैत्तिरीयशाखा से सम्बद्ध है। इस उपनिषद् में तीन वल्लियाँ हैं- 1. शीक्षावल्ली 2. ब्रह्मानन्दवल्ली 3. भृगुवल्ली।

सूक्तियाँ- सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म (2.1.1)
ब्रह्म सत्य ज्ञान और अनन्त है।

- अन्नं न निन्द्यात् (3.7.1) अन्न की निन्दा न करें।
- रसो वै सः (2.7.1) वह रस ही है।

➢ **बृहदारण्यकोपनिषद्-** यह शुक्लयजुर्वेद से सम्बद्ध है। इसमें 6 अध्याय है।

सूक्तियाँ- असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मुझे असत्य से सत् की ओर ले जाओ। मुझे अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाओ। (1.3.28)

- अहं ब्रह्मास्मि
  मैं ब्रह्म हूँ। (1.4.10)
- नेह नानास्ति किञ्चन (4.4.19)
  ब्रह्म को मन से ही देखना चाहिए, इसमें नाना कुछ भी नहीं है।
- नेति नेति (4.5.3)

➢ **ऐतरेयोपनिषद्-** यह ऋग्वेद से सम्बद्ध उपनिषद् है। इसमें तीन अध्याय हैं।

सूक्तियाँ- परोक्षप्रिया इव हि देवाः (ऐतरेय 1.3.14)
देवगण परोक्षप्रिय ही होते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि ''त्रयो धर्मस्कन्धाः...'' यह सूक्ति छान्दोग्योपनिषद् में है। **अतः विकल्प (B) सही है।**
स्रोत- ईशादि नौ उपनिषद्

98. अथर्ववेदीयकृषिसूक्तस्य द्रष्टा ऋषिः कः?
(A) मधुच्छन्दा (B) भिक्षुः
(C) विश्वामित्रः (D) बुधः

व्याख्या-
- **अथर्ववेद का अर्थ-** 'अथर्वों का वेद' अर्थात् अभिचार मन्त्रों से सम्बन्धित ज्ञान।
- अथर्ववेद योग-साधना, चित्तवृत्तिनिरोध, ब्रह्म की प्राप्ति आदि विषयों से सम्बद्ध वेद माना जाता है।
- अथर्ववेद को 'साहित्य समाज का दर्पण' कहा जाता है।
- अथर्ववेद में समाज से सम्बन्धित रीति-रिवाज, जादू-टोना, कर्मकाण्ड आदि का भी वर्णन प्राप्त होता है।
- अथर्ववेद को 'आंगिरस वेद' तथा 'अथर्वाङ्गिरस वेद' भी कहते हैं। इसमें मंत्रों की संख्या 1772 है। अथर्ववेद की 9 शाखाओं का उल्लेख मिलता है।

अथर्ववेदीय कुछ प्रमुख सूक्त

सूक्त	ऋषि	देवता	मन्त्र
कृषिसूक्त	विश्वामित्र	सीता	09
पृथ्वीसूक्त	अथर्वा	भूमि	63
कालसूक्त	भृगु	काल	10
राष्ट्राभिवर्धनसूक्त	वशिष्ठ	ब्रह्मणस्पति	06
विवाहसूक्त	सावित्री	सूर्य, आत्मा, सोम, विवाह	64
रोहितसूक्त	ब्रह्मा	अध्यात्म, रोहित, अग्नि, मरुत, आदित्य	60

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि अथर्ववेदीय कृषिसूक्त के द्रष्टा ऋषि विश्वामित्र हैं। **अतः विकल्प (C) सही है।**
स्रोत- अथर्ववेद- (भाग-1), पेज-126

99. अधोङ्कितेषु समुचितं विकल्पं चिनुत-
(A) जीवाजीवास्रवबन्धसम्वरनिर्जरमोक्षास्तत्त्वानि- सौत्रान्तिकाः
(B) भावनाभिर्भावितानि पञ्चभिः पञ्चधाक्रमात्, महाव्रतानि- व्यासभाष्यम्
(C) तत्र जीवा द्विविधाः संसारिणो मुक्ताश्च- आर्हताः
(D) स्यान्नास्ति चावक्तव्यः- वैभाषिकाः

व्याख्या-
- माधवाचार्य कृत सर्वदर्शनसंग्रह के आर्हत दर्शन के प्रकरण में जैनदार्शनिकों के सात तत्त्वों का उल्लेख किया गया है- 'जीवाजीवास्रवबन्धसम्वरनिर्जरमोक्षास्तत्त्वानि'
जैन दार्शनिक सात तत्त्वों का वर्णन करते हैं- 1. जीव 2. अजीव 3. आस्रव 4. बन्ध 5. संवर 6. निर्जरा और 7. मोक्ष- ये सात तत्त्व हैं।
- जैन दर्शन के सप्तभङ्गीनय को सर्वदर्शनसंग्रह में इस प्रकार वर्णन किया गया है-
1. स्यादस्ति- किसी प्रकार है।
2. स्यान्नास्ति- किसी प्रकार नहीं है।
3. स्यादस्ति च नास्ति च- किसी प्रकार है और नहीं है।
4. स्यादवक्तव्यः- किसी प्रकार अवर्णनीय है।
5. स्यादस्ति चावक्तव्यः- किसी प्रकार है और अवर्णनीय है।
6. स्यान्नास्ति चावक्तव्यः- किसी प्रकार नहीं है, और अवर्णनीय है।
7. स्यादस्ति च नास्ति चावक्तव्यः- किसी प्रकार है, नहीं हैं और अवर्णनीय है।
- आर्हतदर्शन में जैनों के पञ्चमहाव्रतों की चर्चा की गयी है-
भावनाभिर्भावितानि पञ्चभिः पञ्चधा क्रमात् ।
महाव्रतानि लोकस्य साधयन्त्यव्ययं पदम् ॥
पाँच भावनाओं के द्वारा पाँच प्रकार से क्रमशः भावित ये अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह- पञ्च महाव्रत संसार के अक्षय (स्थायी) पद की सिद्धि करते हैं।
- आर्हतदर्शन में जीव दो प्रकार के बताये गये हैं-
''तत्र जीवा द्विविधाः संसारिणो मुक्ताश्च''
जीव दो प्रकार के हैं- संसारी और मुक्त।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'तत्र 'जीवा द्विविधाः संसारिणो मुक्ताश्च' यह कथन आर्हतदर्शन का है। **अतः विकल्प (C) सही है।**
स्रोत- सर्वदर्शनसंग्रह-उमाशंकर शर्मा ऋषि, पेज 146,135,130

100. योगदर्शने सर्वा चित्तभूमयः काः?
(A) निद्रा, तन्द्रा, प्रमादः, मोदः, दुःखम्
(B) क्षिप्तम्, मूढम्, विक्षिप्तम्, एकाग्रम्, निरुद्धम्
(C) क्षिप्तम्, प्रक्षिप्तम्, मूढम्, विमूढम्, सम्मूढम्
(D) स्मृतिः, विस्मृतिः, निरुद्धम्, एकाग्रम्, मोहः

व्याख्या- महर्षि पतञ्जलि योगसूत्र में ''अथ योगानुशासनम्'' इस प्रथम सूत्र के द्वारा ग्रन्थ का प्रारम्भ करते हैं। यहाँ 'अथ' शब्द अधिकार वाचक है- 'अर्थत्ययमधिकारार्थः....' इसी सूत्र के व्यासभाष्य में भाष्यकार चित्त की पाँच भूमियों (अवस्थाओं) की चर्चा करते हैं-

पाँच चित्तभूमियाँ- 'क्षिप्तं मूढं विक्षिप्तमेकाग्रं, निरुद्धमिति चित्तभूमयः' क्षिप्त, मूढ, विक्षिप्त, एकाग्र और निरुद्ध-चित्त की ये पाँच भूमियाँ होती हैं।

पाँच चित्तवृत्तियाँ- 'प्रमाणविपर्ययविकल्पनिद्रास्मृतयः'

1. प्रमाण 2. विपर्यय 3. विकल्प 4. निद्रा 5. स्मृति। ये पाँच प्रकार की चित्तवृत्तियाँ होती हैं। (1/6)

पञ्चक्लेश- 'अविद्याऽस्मितारागद्वेषाभिनिवेशाः पञ्च क्लेशाः।'

1. अविद्या 2. अस्मिता 3. राग 4. द्वेष 5. अभिनिवेश। ये पाँच प्रकार के क्लेश होते हैं।

अष्टाङ्गयोग- 'यमनियमाऽऽसनप्राणायामप्रत्याहारधारणाध्यान-समाधयोऽष्टावङ्गानि'। (2/29)

यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि। ये आठ प्रकार के योग के अङ्ग बताये गये हैं।

पाँच यम- 'अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहाः यमाः'

अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह। ये पाँच प्रकार के यम बताये गये हैं। (2/30)

पाँच नियम- 'शौचसन्तोषतपःस्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि नियमाः'। (2/32) शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वरप्रणिधान। ये पाँच नियम कहे जाते हैं।

संयम- 'त्रयमेकत्र संयमः।'

धारणा, ध्यान, समाधि ये तीन प्रकार संयम के बताये गये हैं। (3/4)

क्रियायोग- 'तपः स्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि क्रियायोगः।'

तप, स्वाध्याय, ईश्वरप्रणिधान ये तीन प्रकार क्रियायोग के बताये गये हैं। (2/1)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि क्षिप्त, मूढ, विक्षिप्त, एकाग्र और निरुद्ध- ये पाँच चित्तभूमियाँ हैं। **अतः विकल्प (B) सही है।**

स्त्रोत- पातञ्जलयोगदर्शन - सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पेज- 01, 06

उत्तरमाला

1.C	2.A	3.A	4.C	5.A	6.D	7.B	8.D	9.D
10.B	11.B	12.C	13.C	14.D	15.A	16.D	17.C	18.B
19.C	20.D	21.C	22.B	23.B	24.A	25.D	26.A	27.D
28.C	29.C	30.C	31.A	32.A	33.A	34.C	35.D	36.A
37.A	38.B	39.D	40.A	41.B	42.C	43.D	44.B	45.C
46.C	47.A	48.A	49.C	50.D	51.C	52.C	53.C	54.C
55.D	56.D	57.D	58.C	59.A	60.C	61.C	62.A	63.D
64.C	65.B	66.D	67.D	68.A	69.A	70.C	71.D	72.B
73.D	74.B	75.B	76.A	77.C	78.D	79.B	80.A	81.A
82.B	83.D	84.B	85.A	86.B	87.A	88.D	89.A	90.B
91.C	92.D	93.A	94.B	95.B	96.D	97.B	98.C	99.C
100.B								

4	जुलाई 2018	NTA UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् II

1. शांखायन-शाखायाः सम्बन्धः वर्तते?
(A) अथर्ववेदेन (B) ऋग्वेदेन
(C) सामवेदेन (D) कृष्णयजुर्वेदेन

व्याख्या-

वेद -	**शाखायें**
ऋग्वेद-	(1) शाकल (2) बाष्कल (3) आश्वलायन (4) शांखायन (5) माण्डूकायन
शुक्लयजुर्वेद-	(1) माध्यन्दिन या वाजसनेयि शाखा (2) काण्व शाखा
कृष्णयजुर्वेद-	(1) तैत्तिरीय शाखा (2) मैत्रायणी शाखा (3) कठ शाखा (4) कपिष्ठल शाखा
सामवेद-	(1) कौथुमीय (2) राणायनीय (3) जैमिनीय शाखा
अथर्ववेद-	(1) पैप्पलाद (2) तौद (3) मौद (4) शौनकीय (5) जाजल (6) जलद (7) ब्रह्मवद (8) देवदर्श (9) चारणवैद्य

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि शांखायन शाखा का सम्बन्ध ऋग्वेद से है। **अतः विकल्प B सही है।**
स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 09

2. 'द्राह्यायणश्रौतसूत्रम्' कस्य वेदस्य विद्यते?
(A) अथर्ववेदस्य (B) कृष्णयजुर्वेदस्य
(C) ऋग्वेदस्य (D) सामवेदस्य

व्याख्या-
वेद श्रौतसूत्र वर्ण्य विषय

ऋग्वेद- (1) आश्वलायन श्रौतसूत्र,लेखक- आश्वलायन,अध्याय-12
(2) शांखायन श्रौतसूत्र, लेखक-सुयज्ञशांखायन, अध्याय-18
शुक्लयजुर्वेद (1) कात्यायन श्रौतसूत्र, लेखक-कात्यायन, अध्याय-30
कृष्णयजुर्वेद (1) बौधायन श्रौतसूत्र, लेखक-बौधायन, अध्याय-30
(2) आपस्तम्ब श्रौतसूत्र, लेखक-आपस्तम्ब, अध्याय-30
(3) सत्याषाढ या हिरण्यकेशी प्रश्न (अध्याय)-24
(4) वैखानस श्रौतसूत्र, लेखक- विखनस, अध्याय-32
(5) भारद्वाज श्रौतसूत्र, लेखक-भारद्वाज, प्रश्न (अध्याय)-15
(6) वाधूल श्रौतसूत्र, लेखक- वाधूल, प्रपाठक (अध्याय)-15
(7) वाराह श्रौतसूत्र, लेखक- वाराह, अध्याय-3 (संबद्ध मैत्रायणी शाखा)
(8) मानव श्रौतसूत्र (मैत्रायणी शाखा), 5 भाग 11 अध्याय
सामवेद (1) आर्षेय कल्प या मशक कल्पसूत्र, रचयिता- मशक ऋषि भाग-दो (1-आर्षेयकल्प, 2-क्षुद्रकल्प), अध्याय-11
(2) लाट्यायन श्रौतसूत्र, प्रपाठक (अध्याय)-10, सूत्र-2641
(3) द्राह्यायण श्रौतसूत्र (अन्यनाम-छान्दोग्य सूत्र, प्रधान सूत्र और वशिष्ठ सूत्र), पटल (अध्याय)-31
(4) जैमिनीय श्रौतसूत्र, रचयिता- जैमिनि मुनि, खण्ड-3,अध्याय-18
अथर्ववेद (1) वैतान श्रौतसूत्र, अध्याय-8, कंडिकाएँ-43

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि द्राह्यायण श्रौतसूत्र का संबन्ध सामवेद से है। **अतः विकल्प D सही है।**
स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 10

3. एतद्वचो जरितर्मापिमृष्ठा आ यत्ते घोषानुत्तरा युगानि- इति मन्त्रांशो वर्तते?
(A) पुरूरवा-उर्वशीसूक्ते (B) सरमा-पणिसूक्ते
(C) विश्वामित्र-नदीसूक्ते (D) यम-यमीसूक्ते

व्याख्या- पुरूरवा-उर्वशी संवाद- ऋषि-पुरूरवा और उर्वशी, छन्द-त्रिष्टुप् देवता-पुरूरवा ऐल, उर्वशी, स्वर-धैवत।
इषुर्न श्रिय इषुधेरसना गोषाः शतसा न रंहिः।
अवीरे क्रतौ वि दविद्युतन्नोरा न मायुं चिन्तयन्त धुनयः।। (3)
*** विश्वामित्र-नदीसूक्ते-** एतद्वचो जरितर्मापि मृष्ठा आ यत्ते घोषानुत्तरा युगानि। उक्थेषु कारो प्रति नो जुषस्व मा नो नि कः पुरुषत्रा नमस्ते।।
नोट- वेद- ऋग्वेद, सूक्त त्रयस्त्रिंशत्, मण्डलम्- तृतीय, छन्द- त्रिष्टुप्- अनुष्टुप्, ऋषि-विश्वामित्र गाथिन्, देवता-नदी।
*** यम-यमी संवाद सूक्तः-** उशन्ति घाते अमृतास एतदेकस्य चित् त्यजसं मर्त्यस्य। नि ते मनो मनसि धाय्यस्मे जन्युः पतिस्तन्वमा विविश्याः।। (3)

नोट- देवता-यम, वैवस्वती यमी, ऋषि-वैवस्वती, यमः वैवस्वतः, स्वर-धैवत।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि दिया गया मन्त्र विश्वामित्र-नदी संवाद सूक्त से लिया गया है।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- ऋग्वेद (3.33.8) - सत्यवीर शास्त्री, पेज 413

4. अधस्तनेषु उचितं सम्बन्धयुतं विकल्पं चिनुत?
(A) यो रध्रस्य चोदिता यः कृशस्य- इन्द्रदेवता
(B) राजन्तमध्वराणां गोपामृतस्य दीदिविम्- विष्णुसूक्तम्
(C) विश्वं प्रतीची सप्रथः उदस्थात्- सवितृसूक्तम्
(D) अहं सुवे पितरमस्य मूर्धन् - रुद्रदेवता

व्याख्या- यो रध्रस्य चोदिता यः कृशस्य यो ब्रह्मणो नाधमानस्य कीरेः। युक्तग्राव्णो योऽविता सुशिप्रः सुतसोमस्य स जनास इन्द्रः (मन्त्र.6)

अनुवाद- जो समृद्धशाली व्यक्ति को प्रेरणा देने वाला है, जो निर्धन को प्रेरणा देने वाला है, जो याचना करने वाले और स्तुति करने वाले ब्राह्मण को प्रेरणा देने वाला है और सुन्दर ठोड़ी वाला, जो व्याभिषव करने के लिए पत्थरों को उद्यत किये हुए सोमरस को निचोड़ने वाले यजमान की रक्षा करता है, हे असुरों! वही इन्द्र है।

(2) राजन्तमध्वराणां गोपामृतस्य दीदिविम्।
वर्धमानं स्वे दमे॥ (अग्नि सू.-8)

अनुवाद- प्रकाशमान होते हुए, हिंसारहित यज्ञों के रक्षक, सत्यकर्मफलों को पुनः-पुनः प्रकाशित करने वाले और अपने गृह यज्ञशाला में बढ़ने वाले (अग्नि के समीप हम जाते हैं)।

(3) अहं सुवे पितरमस्य मूर्धन्मम योनिरप्स्वान्तः समुद्रे॥
ततो वि तिष्ठे भुवनानु विश्वोतामूं द्यां वर्ष्मणोपस्पृशामि॥
(वाक् सू.-7)

अनुवाद- इस ब्रह्म के शिरःस्थानीय द्युलोक को अथवा इस ब्रह्म के सिर पर आकाश को मैं उत्पन्न करती हूँ समुद्र अर्थात् परमात्मा में जो अणु अर्थात् व्यापनशील बुद्धियाँ हैं, उनमें मेरा ही कारण है। अथवा समुद्रों में, जलों में मैं ही कारणरूप से विद्यमान हूँ। अथवा समुद्र या अन्तरिक्ष और जलशरीर देवों में कारण हूँ। इसलिए सम्पूर्ण भुवनों अर्थात् पञ्चमहाभूतों में प्रविष्ट होकर मैं ही उनको विविध रूपसे व्याप्त किये हुए हूँ और इस द्युलोक को मैं सर्वत्र व्यापक होते हुए अपने कारणभूत शरीर से स्पर्श कर रही हूँ।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि दिये गये विकल्पों में विकल्प A में सूक्त एवं देवता उचित रूप से संबद्ध है।

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- ऋग्वेद (2.12.6)-सत्यवीर शास्त्री, पेज 323

5. यो वाघते ददाति सूनरं वसु-अत्र 'वाघते' पदस्य कोऽर्थः?
(A) यज्ञकर्त्रे (B) राज्ञे
(C) बाधकाय (D) सूर्याय

व्याख्या-

ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के चालीसवें सूक्त में कण्व ऋषि बृहस्पति देवता की स्तुति करते हुये इस मन्त्र को उद्धृत करते हैं-

यो वाघते ददाति सूनरं वसु स धत्ते अक्षिति श्रवः।
तस्मा इलां सुवीरामा यजामहे सुप्रतूर्तिमनेहसम्॥ (1.40.4)

अनुवाद- जो मनुष्य ऋत्विक् के ग्रहण योग्य धन दान करता है, वह अक्षय अन्न प्राप्त करता है। उसके लिए हम लोग इला के पास याचना करते हैं। इडा सुवीरा है, वह शत्रु का हनन करती है। उन्हें कोई नहीं मार सकता।

सायणभाष्य में 'वाघते' पद के विषय में बताया गया है-
यः यजमानः वाघते ऋत्विजे सूनरं सुष्ठु नेतव्यं वसु धनं ददाति।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से यह स्पष्ट होता है कि वाघते पद का अर्थ यज्ञकर्त्रे है। **अतः विकल्प A सही है।**

स्रोत- ऋग्वेद (1.40.4)

6. नामाख्याताभ्यां वियुक्ताः अपि उपसर्गाः वाचकाः भवन्तीति कः मन्यते?
(A) वार्ष्यायणिः (B) शाकटायनः
(C) गार्ग्यः (D) कौत्सः

व्याख्या-

यास्क विरचित निरुक्त में पदों का चार प्रकार से विभाजन किया गया है- नाम, आख्यात, उपसर्ग एवं निपात।

➢ **आख्यात-** 'भावप्रधानमाख्यातम्' भवतीति भावः अर्थात् भाव या क्रिया की जिसमें प्रधानता होती है उसे 'आख्यात' पद कहते हैं। जैसे- आस्ते, शेते, व्रजति, तिष्ठतीति।

➢ **नाम-** 'सत्त्वप्रधानानि नामानि' सत्त्व अर्थात् द्रव्य की प्रधानता जिसमें होती है उसे नाम पद कहते हैं। जैसे गौरश्वः पुरुषो हस्तीति।

➢ **उपसर्ग-** उपसर्गों की संख्या 22 है इन उपसर्गों का अपना अर्थ होता है या नहीं इस विषय में दो मत पाए जाते हैं प्रथम पक्ष उपसर्गों को द्योतक मानता है।

➢ द्योतक पक्ष में **'न निर्बद्धा उपसर्गा अर्थान्निराहुरिति शाकटायनः नामाख्यातयोस्तु कर्मोपसंयोगद्योतका भवन्ति'** अर्थात् नाम और आख्यात से अलग करके वाक्य में प्रयुक्त किए हुए उपसर्ग अर्थों को निश्चित रूप से नहीं कहते हैं। नाम और

आख्यात के अर्थ को उनके साथ मिलकर द्योतन करने वाले होते हैं, यह शाकटायन का मत है। द्योतक पक्ष में उपसर्गों का अपना अर्थ नहीं होता है वे जिसके साथ मिलते हैं उसके अर्थ में विशेषता का बोध कराते हैं।

➢ द्योतक पक्ष का खण्डन करते हुए आचार्य गार्ग्य उपसर्गों को वाचक मानते हैं '**उच्चावचाः पदार्था भवन्तीति गार्ग्यः**' अर्थात् इन उपसर्गों के भी उच्चावच अर्थात् नाना प्रकार के शब्द नाना प्रकार के इस अर्थ में प्रयुक्त होते हैं इसलिए इनका जो अर्थ होता है वह नाम तथा आख्यात से अलग प्रयुक्त होने पर भी नाम तथा आख्यात के अर्थ में परिवर्तन करने वाले उस अर्थ को उपसर्ग कहते ही हैं – यह गार्ग्य का मत है। इस पक्ष में उपसर्गों का अपना अर्थ होता है और वे उस अर्थ के वाचक होते हैं।

उपर्युक्त विवरण से यह स्पष्ट है कि नाम और आख्यात से अलग होने पर भी उपसर्ग वाचक (अपने अर्थ को कहने वाले) होते हैं यह मत गार्ग्य का है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि नामाख्याताभ्यां वियुक्तः गार्ग्यः मन्यन्ते। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- निरुक्त - छज्जूराम शास्त्री, पेज 11

7. वेदेष्वेव प्रयुज्यते प्रत्ययः?

(A) अध्यै (B) तुमुन्
(C) क्त्वा (D) क्त

व्याख्या-

तुमुन् प्रत्यय के अर्थ में इस प्रत्यय के अतिरिक्त से, सेन्, असेन्, क्से, क्सेन्, अध्यै, अध्यैन्, कध्यै, कध्यैन्, शध्यै, शध्यैन्, तवै, तवेङ्, तवेन् ये 15 प्रत्यय किये जाते हैं। से, सेन् असेन् (आने के लिए) असे, असेन्, जीवसे (जीने के लिए) क्से क्सेन् श्रियसे (आश्रय पाने के लिए) अध्यै, अध्यैन्, उपाचरध्यै (आचरण करने के लिए। कध्यै, कध्यैन्- आहुवध्यै (आवाहन के लिए) शध्यै, शध्यैन्- पिबध्यै (पीने के लिए)। तवै-पातवै (पिलाने के लिए)। तवेङ् -सूतवे (उत्पन्न करने के लिए) गन्तवे (जाने के लिए)।

तुमुन् प्रत्यय- पठ्+तुमुन्- पठितुम्, गम्+तुमुन् गन्तुम्, भव्+तुमुन- भवितुम् आदि।

क्त्वा प्रत्यय- गम्+क्त्वा-गत्वा, पठ्+क्त्वा- पठित्वा, भू+क्त्वा- भूत्वा, पा+क्त्वा-पीत्वा आदि।

क्त प्रत्यय- पठ्+क्त- पठितः, लिख्+क्त- लिखितः, गम्+क्त- गतः आदि।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'अध्यै' प्रत्यय केवल वेद में प्रयुक्त होता है और तुमुन्, क्त्वा और क्त प्रत्यय लौकिक संस्कृत में प्रयुक्त होते हैं। **अतः विकल्प A सही है।**

स्रोत- ऋक्सूक्तसंग्रह- हरिदत्त शास्त्री, भू. पेज 32

8. 'यस्मान्न ऋते विजयन्ते' इत्यत्र 'यस्मात्' पदेन कः ग्रह्यते?

(A) विष्णुः (B) रुद्रः
(C) इन्द्रः (D) वरुणः

व्याख्या-

ऋग्वेद के द्वितीय मण्डल के बारहवें सूक्त में ऋषि गृत्समद इन्द्र देवता की स्तुति करते हुये यह मन्त्र उद्धृत करते हैं-

यस्मान्न ऋते विजयन्ते जनासो यं युध्यमाना अवसे हवन्ते।
यो विश्वस्य प्रतिमानं बभूव यो अच्युतच्युत्स जनास इन्द्रः॥
(2.12.9)

अर्थ- जिस इन्द्र के बिना मनुष्य विजय को प्राप्त नहीं करते, युद्ध करते हुये सैनिक अपनी रक्षा के लिए जिसका आह्वान करते हैंः जो सम्पूर्ण जगत् का प्रतिनिधि या रक्षक है, जो क्षयरहित पर्वतों का भी विनाश करने वाला है अथवा अचल को भी बनाने वाला है, हे असुरों! वही इन्द्र है।

सायणभाष्य- यस्मादृते जनासो जनाः न विजयन्ते विजयं न प्राप्नुवन्ति। अतः युध्यमानाः युद्धं कुर्वाणा जना अवसे स्वरक्षणाय यमिन्द्रं हवन्ते आह्वयन्ति।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'यस्मान्न ऋते...' मन्त्र में 'यस्मात्' पद का अर्थ 'इन्द्र' है। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- ऋक्सूक्तसंग्रह (2.12.9)- हरिदत्त शास्त्री, पेज 186

9. 'ऋग्वेदस्य' कस्मिन् मण्डले 'विश्वामित्रनदीसंवादसूक्तम्' विद्यते?

(A) द्वितीये (B) दशमे
(C) तृतीये (D) अष्टमे

व्याख्या-

मण्डल	सूक्त	संवाद
1. ऋग्.10	95	पुरूरवा-उर्वशी संवाद
2. ऋग्. 10	10	यम-यमी संवाद
3. ऋग्. 10	108	सरमा-पणि संवाद
4. ऋग्. 3	33	विश्वामित्र- नदी संवाद
5. ऋग्. 1	165	इन्द्र-मरुत् संवाद
6. ऋग्. 1	179	अगस्त्य-लोपामुद्रा संवाद
7. ऋग्. 7	83	वशिष्ठ-सुदास संवाद
8. ऋग्. 10	86	इन्द्र-इन्द्राणी वृषाकपि संवाद

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि ऋग्वेद के तृतीय मण्डल में विश्वामित्रनदी संवाद सूक्त है। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 57

10. परिशिष्टभागमतिरिच्य निरुक्ते कति अध्यायाः सन्ति?
(A) सप्त (B) द्वादश
(C) पञ्च (D) चतुर्दश

व्याख्या-

यास्क के निरुक्त में कुल 12 अध्याय हैं। अन्त में परिशिष्ट के रूप में 2 अध्याय हैं। इस प्रकार यह 14 अध्यायों में विभक्त है। किन्तु प्रश्न में परिशिष्ट को छोड़कर अध्यायों की संख्या पूछी गई है। अतः प्रश्नानुसार उत्तर 2 (द्वादश अध्यायः) सही है।

निरुक्त का वर्ण्य विषय अध्यायवार

अध्याय 1- निघण्टु नाम, आख्यात आदि चार पदविभाग, शब्दनित्यता का विवेचन, षड्भाव-विकार, उपसर्गों का अर्थ विवेचन, सभी नाम धातुज हैं – इसका प्रतिपादन, मन्त्रों की सार्थकता का प्रतिपादन, अर्थज्ञान का महत्त्व।

अध्याय 2 और 3- नैघण्टुककाण्ड। अध्याय 2 के प्रारंभ में निर्वचन और वर्ण परिवर्तन आदि से संबद्ध भाषाशास्त्रीय विवेचन।

अध्याय 4 से 6- नैगम काण्ड या ऐकपदिक काण्ड। इन तीन काण्डों में वेदों के निघंटु में पठित कठिन शब्दों की सोदाहरण व्याख्या।

अध्याय 7 से 12- दैवतकाण्ड। इन अध्यायों में देवतावाचक शब्दों की विस्तृत व्याख्या। द्युलोक, अन्तरिक्ष और पृथिवी- स्थानीय देवों का विवेचन।

अध्याय 13 और 14- इनमें निर्वचन-प्रक्रिया, सृष्टि-उत्पत्ति तथा दार्शनिक महत्त्व के अनेक विषयों का विवेचन है।

➢ **निघण्टु और निरुक्त-** यास्क का निरुक्त वस्तुतः निघंटु ग्रन्थ की व्याख्या या भाष्य है। निघण्टु वैदिक शब्दों का संकलन है। इसमें 5 अध्याय हैं तथा कुल संग्रहीत शब्दों की संख्या 1768 है।

निघण्टु में अध्यायवार शब्दों की संख्या- प्रथम अध्याय- 414 शब्द, द्वितीय अध्याय- 514 शब्द, तृतीय अध्याय-410 शब्द, चतुर्थ अध्याय- 279 शब्द तथा पञ्चम अध्याय-151 शब्द। निघंटु के रचयिता प्रजापति कश्यप हैं।

➢ **निरुक्त के टीकाकार-** निरुक्त की सम्प्रति 3 टीकाएँ उपलब्ध हैं- 1- दुर्गाचार्य की टीका- ऋज्वर्थ-वृत्ति
2- स्कन्द माहेश्वर की टीका लाहौर से प्रकाशित हुई
3- वररुचि की टीका- निरुक्त-निचय।

निरुक्त के प्रतिपाद्य विषयः-

वर्णागमो वर्णविपर्ययश्च, द्वौ चापरौ वर्णविकारनाशौ।
धातोस्तदर्थातिशयेन योगस्तदुच्यते पञ्चविधं निरुक्तम्॥

संक्षेप में निरुक्त के प्रतिपाद्य विषय 5 बताए गये हैं-
(1) वर्णागम-विचार (2) वर्ण विपर्यय-विचार, (3) वर्ण विकार-विचार, (4) वर्णनाश- विचार, (5) धातुओं का अनेक अर्थों में प्रयोग।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि परिशिष्ट भाग को छोड़कर निरुक्त में बारह अध्याय हैं। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 204

11. 'प्रचोदयात्' इति कस्मिन् लकारे रूपमस्ति?
(A) लिङ् (B) लोट्
(C) लृट् (D) लेट्

व्याख्या-

ऋग्वेद के तीसरे मण्डल के बासठवें सूक्त के दसवें मन्त्र में विश्वामित्र ऋषि सवितृ देवता की स्तुति के सन्दर्भ में इस मन्त्र का उल्लेख करते हैं-

तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्। (ऋ. 3.62.10)

जो सविता हम लोगों की बुद्धि को प्रेरित करता है, सम्पूर्ण श्रुतियों में प्रसिद्ध उस द्योतमान जगत्स्रष्टा परमेश्वर के संभजनीय पर ब्रह्मात्मक तेज का हम लोग ध्यान करते हैं।

सायणभाष्य में भी प्रचोदयात् के विषय में कहा गया है कि

प्रचोदयात् चोदयतेर्लेटि आडागमः यद्वृत्तयोगादनिघातः आगमस्यानुदात्तत्वे णिचः स्वरः।

उपर्युक्त पंक्ति से यह सिद्ध होता है कि 'प्रचोदयात्' में लेट्लकार का प्रयोग हुआ है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'प्रचोदयात्' शब्द में लेट्लकार का प्रयोग किया गया। **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत- ऋग्वेद (3.62.10)- राम गोविन्द त्रिवेदी, पेज 346

12. 'स जातो अत्यरिच्यत'-इत्यत्र 'स' पदेन कः गृह्यते?
(A) इन्द्रः (B) पुरुषः
(C) प्रजापतिः (D) विष्णुः

व्याख्या-

इन्द्रः - ऋग्वेद के द्वितीय मण्डल के 12वें सूक्त इन्द्रसूक्त के प्रथम मंत्र– 'नृम्णस्य मह्ना स जनास इन्द्रः.....।।' (महती सेना के महत्त्व से युक्त वह ही इन्द्र है।) इसी प्रकार सायणभाष्य में भी लिखा है- ''नृम्णस्य सेनालक्षणस्य बलस्य मह्ना महत्त्वेन युक्तः स इन्द्रो, नाहमिति।'' इस प्रकार स्पष्ट है कि इस मन्त्रांश में सः पद का अर्थ 'इन्द्र' है।

पुरुषः ऋग्वेद के 10/90 सूक्त 5वें मन्त्र – 'स जातो अत्यरिच्यत.....।।' (अर्थात् उस आदि पुरुष से विराट् (ब्राह्मण देह, व्यक्त जगत्) उत्पन्न हुआ। ब्राह्मण देह का आश्रय लेकर उससे पुरुष (जीवात्मा) उत्पन्न हुआ। वह उत्पन्न होते ही सबसे आगे बढ़ गया अर्थात् पशु, पक्षी, मनुष्य आदि के रूप में चेतनता को प्राप्त करके अन्य जगत् से बढ़कर था। पश्चात् उस पुरुष ने भूमि और शरीरों को बनाया।

इसी प्रकार सायण भाष्य में लिखा है-''स जातो विराट्पुरुषोऽत्यरिच्यत अतिरिक्तोऽभूत्।'' इस प्रकार स्पष्ट है कि यहाँ सः पद आदि पुरुष का सूचक है।

हिरण्यगर्भ (प्रजापतिः- ऋग्वेद के 10वें मण्डल 121वें सूक्त के मंत्र संख्या 1 के मंत्रांश ''स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां......।।'' (वह (प्रजापति) पृथ्वी और द्युलोक को धारण किये हुए हैं।) सायणभाष्य में लिखा है- ''स हिरण्यगर्भः पृथिवीं विस्तीर्णां द्यां दिवमुत......।'' इस प्रकार स्पष्ट है कि प्रस्तुत मन्त्रांश में 'सः' पद हिरण्यगर्भ (प्रजापति) का द्योतक है।

विष्णुः ऋग्वेद के 9वें मण्डल 154वें सूक्त के 5वें मन्त्र के मंत्रांश- 'उरुक्रमस्य स हि बन्धुरित्था' (परम पराक्रम वाले अथवा महान् दुर्गों वाले सर्वव्यापक विष्णु के परम स्थान में मधुर अमृत का स्रोत है। इस प्रकार से वह विष्णु निश्चय ही सबका बन्धु है। अतः स्पष्ट है कि प्रस्तुत मंत्रांश में सः पद विष्णु का द्योतक है।

अग्निः - ऋग्वेद के मण्डल 1, सूक्त संख्या 1 के मन्त्र संख्या 2, के ''मंत्रांश स देवाँ एह वक्षति।।'' (वह (अग्नि) इस यज्ञ में (हविष) देवताओं को प्राप्त करावे। इस मंत्रांश में 'सः' पद अग्नि का द्योतक है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि- 'स जातो अत्यरिच्यत' इस मंत्राश में 'सः' पद पुरुष का वाचक है। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- ऋक्सूक्तसंग्रह (ऋग्वेद 10.90.5)-हरिदत्त शास्त्री, पेज 396

13. Vedic Grammar- **इत्याख्यस्य ग्रन्थस्य प्रणेता वैदेशिको विद्वान् कः?**

(A) एच.टी. कोलब्रुक (B) एफ़॰मैक्समूलरः
(C) ए. मैकडानलः (D) एच. विल्सनः

व्याख्या- (1) एच.टी. कोलब्रुक- एच.टी. कोलब्रुक ने 1805ई. में एशियाटिक रिसर्चेज में On the vedas वेद विषयक लेख लिखकर पाश्चात्त्य जगत् का ध्यान वेदों की ओर आकृष्ट किया।

(2) एफ. मैक्समूलरः- मैक्समूलर ने सर्वप्रथम सायण भाष्य सहित ऋग्वेद का संपादन 1849 से 1875 के मध्य लगभग 27 वर्षों में किया। इन्होंने ऋग्वेद के प्रसिद्ध सूक्तों के अनुवाद एवं व्याख्या पर एक संकलन Vedic Hymns निकाला। इसके अलावा History of the Ancient Sanskrit Literature नामक वैदिक साहित्य का इतिहास पर एक पुस्तक का प्रकाशन 1859 ई. में किया।

(3) ए. मैकडॉनल- मैकडॉनल ने वैदिक व्याकरण पर दो ग्रन्थ लिखे- (क) Vedic Grammar (ख) Vedic Grammar for Students तथा लौकिक संस्कृत व्याकरण पर एक ग्रन्थ- Sanskrit Grammar for Students दिया। मैकडानल वस्तुतः वैदिक संस्कृत के पाणिनि हैं। मैकडॉनल ने Vedic Mythology (वैदिक देवशास्त्र) ग्रन्थ 1897 में प्रकाशित किया। वैदिक साहित्य का इतिहास पर एक ग्रन्थ History of Sanskrit Literature सन् 1900 में प्रकाशित हुआ।

(4) एच. विल्सन- एच. विल्सन ने सबसे पहले पूरे ऋग्वेद का अंग्रेज़ी में अनुवाद 1850 हमें प्रकाशित किया। यह सायण भाष्य पर आधारित है।

स्पष्टीकरण- उपरोक्त व्याख्या के आधार पर मैकडॉनल के Vedic Grammar प्रणेता हैं। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 36

14. सामवेदीयाः षड्ज-मध्यम-पञ्चमस्वराः कतमे त्रैस्वर्यस्वरे अन्तर्भवन्ति?

(A) अनुदात्ते (B) स्वरिते
(C) प्रचये (D) उदात्ते

व्याख्या-

मूल स्वर तीन हैं- उदात्त, अनुदात्त और स्वरित। इनमें से उदात्त स्वर उच्च ध्वनि या तीव्र स्वर के लिए था, अनुदात्त निम्न या हल्के स्वर के लिए और स्वरित इन दोनों के मध्यगत स्वर के लिए था। इन तीन मूल स्वरों के आधार पर ही षड्ज आदि लौकिक स्वरों का विकास हुआ। नारदीय शिक्षा और पाणिनीय शिक्षा के अनुसार उदात्त आदि से इन लौकिक स्वरों का विकास हुआ।

उदात्ते निषादगान्धारौ अनुदात्ते ऋषभधैवतौ।
स्वरितप्रभवा ह्येते षड्जमध्यम-पंचमाः।। (पा.शि. 12)

मूलस्वर	लौकिक स्वर
(1) उदात्त	निषाद, गान्धार
(2) अनुदात्त	ऋषभ, धैवत
(3) स्वरित	षड्ज, मध्यम, पञ्चम

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि सामवेदीय षड्ज-

मध्यम- पञ्चमस्वराः स्वरिते अन्तर्भवन्ति। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 93

15. बृहती-छन्दसि अक्षराणां संख्या विद्यते?

(A) 48 (B) 28

(C) 36 (D) 32

व्याख्या-

छन्दस् (छन्द) शब्द छद् (ढँकना) धातु से बना है। यास्क ने निरुक्त (7.12) में छन्दस् का निर्वचन दिया है। 'छन्दांसि छादनात्' अर्थात् छन्द भावों को आच्छादित करके उसे समष्टि रूप प्रदान करता है। कात्यायन ने सर्वानुक्रमणी (12.6) में छन्द का लक्षण दिया है- ''यदक्षरपरिमाणं तच्छन्दः'' जिसमें वर्णों या अक्षरों की संख्या निर्धारित होती है उसे छन्द कहते हैं। ऋग्वेद में 20 छन्दों का प्रयोग हुआ है। इनमें से केवल 7 छन्द ही मुख्य रूप से प्रयुक्त हैं –

प्रमुख छन्द एवं उनके अक्षरों की संख्याः-

क्रम स०	छन्द	अक्षर	
1.	गायत्री	24	छन्द में अक्षरों का कम या अधिक होना- इसके लिए ये पारिभाषिक शब्द हैं
2.	उष्णिक्	28	एक अक्षर कम-निचृत्।
3.	अनुष्टुप्	32	एक अक्षर अधिक-भुरिक्।
4.	बृहती	36	दो अक्षर अधिक-स्वराट् जैसे- दो अक्षर कम-विराट् गायत्री के 3 पाद में 24 अक्षर होते हैं। 23 अक्षर होने पर- निचृत्
5.	पंक्ति	40	गायत्री। 25 अक्षर होने पर- भुरिक् गायत्री। 22 अक्षर होने पर- विराट्
6.	त्रिष्टुप्	44	गायत्री। 26 अक्षर होने पर- स्वराट् गायत्री।
7.	जगती	48	

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'बृहती' छन्द में अक्षरों की संख्या 36 होती है। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 203

16. दर्शपौर्णमासेष्टियागे अनुयाजानां संख्या विद्यते?

(A) पञ्च (B) त्रयः

(C) एकादश (D) अष्ट

व्याख्या-

दर्शपौर्णमास यागः- दर्शपौर्णमास नाम के याग अमावस्या और पूर्णिमा को क्रमानुसार करना चाहिये। अमावस्या और पूर्णिमा में अनुष्ठान होने से ही इन कर्मों का दर्शपौर्णमास यह नाम पड़ा। यद्यपि 'दर्शपौर्णमासौ' यहाँ पर द्विवचन ही सर्वत्र पाया जाता है। पूर्णमासी के दिन अग्नि के लिए आठ कपालों में संस्कृत पुरोडाश का याग, अग्नीषोम के लिये घृत का उपांशुयाग और अग्नीषोम के लिए एकादश कपाल पुरोडाशयाग– ये तीन याग होते हैं। अमावस्या के दिन अग्नि के लिए पुरोडाशयाग एक, इन्द्र के लिए दधियाग दूसरा और इन्द्र के लिए दुग्ध का याग तीसरा– यों तीन याग होते हैं। दोनों में मिलाकर कुल छः याग होते हैं-

दर्शपौर्णमास याग के पदार्थः- पाँच प्रयाज, दो आज्यभाग, अन्वाहार्य, दक्षिणा, तीन अनुयाज, प्रधान याग, शंयुवाक, व्यूहन, सूक्त-वाक्, पत्नीसंयाज, दक्षिणाग्निहोम, बहिर्होम, प्रणीताविमोक आदि विष्णुक्रमादि, यजमान कर्म, व्रतविसर्ग, ब्राह्मणभोजन आदि। ये दर्शपौर्णमास जीवनभर करने चाहिये। यदि जीवनभर करने की शक्ति ना हो तो तीस वर्ष तक करके बन्द कर दें।

प्रयाज- जिनसे देवताओं का प्रकृष्ट रूप से यजन होता है वे प्रयाज कहलाते हैं।

अन्वाहार्य- यज्ञ में हुए दोषों को जो दूर करता है वह अन्वाहार्य है- ऋत्विक् के भोजन योग्य भात।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि दर्शपौर्णमास याग में तीन अनुयाजों की संख्या प्राप्त होती है। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- श्रौतयज्ञ परिचय- वेणीराम शर्मा गौड़, पेज 8-14

17. वृक्षस्य नु ते पुरुहूत वयाः- इत्यत्र 'नु' विद्यते?

(A) उपमार्थीयः (B) हेत्वपदेशार्थीयः

(C) अनुप्रश्नार्थीयः (D) अवकुत्सार्थीयः

व्याख्या-

निरुक्तकार आचार्य यास्क ने चतुर्विध पदों का उल्लेख किया है- ''चत्वारि पदजातानि नामाख्याते चोपसर्गनिपाताश्च'' [निरुक्त1.1] अर्थात् चार प्रकार के पद होते हैं– नाम अर्थात् सञ्ज्ञा, आख्यात अर्थात् क्रियापद, उपसर्ग और निपात अर्थात् अव्यय। इनमें से निपात विविध अर्थों में प्रयुक्त हुआ करते हैं [उच्चावचेष्वर्थेषु निपतन्ति। निरुक्त 1.2] इसीलिए इन्हें निपात कहा गया। इनमें से कुछ निपात उपमार्थक होते हैं, जैसे- इव, न, चित्, नु। कुछ अर्थोपसंग्रह में प्रयुक्त होते हैं,जैसे- च, आ, वा, उ, हि इत्यादि। कुछ निपात पादपूर्ति के लिए प्रयोग में आते हैं, जैसे- सीम्, इत्, उ इत्यादि। किन्तु ये सभी निपात अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग अर्थों में प्रयुक्त होते हैं। जैसे कि 'नु' अनेकार्थक है [नु

इत्येषोऽनेककर्मा।।1.2।।]। यह निम्नलिखित अर्थों में प्रयुक्त होता है-

1. हेत्वपदेश अर्थात् हेतुकथन- इदं नु करिष्यति (इस कारण इस कार्य को करेगा।)

2. अनुप्रश्न अर्थात् किसी बात पर सन्देह व्यक्त करते हुए प्रश्न करना, जैसे- कथं नु करिष्यति? अरे! तू कहता तो है कि वह इस कार्य को करेगा, पर करेगा कैसे?- यही अनुप्रश्न है। इसी अर्थ में 'ननु' भी आता है।

3. उपमा अर्थ में- ''वृक्षस्य नु ते पुरुहूत वयाः'' हे इन्द्र! वृक्ष की शाखाओं की भाँति तेरी रक्षाएँ चारों ओर फैली हैं। यहाँ नु उपमार्थक है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि प्रश्नगत 'नु' निपात उपमार्थक है। **अतः विकल्प A सही है।**

स्रोत- निरुक्तम् - आचार्य विश्वेश्वर, पेज 47

18. 'नियतवाचोयुक्तयो नियतानुपूर्व्या भवन्ति'- इति कथनं वर्तते?

(A) शाकटायनस्य (B) औदुम्बरायणस्य

(C) गार्ग्यस्य (D) कौत्सस्य

व्याख्या-

आचार्य यास्क ने निरुक्त के प्रथम अध्याय के पञ्चम पाद में निरुक्तशास्त्र के प्रयोजन के विषय में चर्चा की है। उन्होंने बताया कि इस निरुक्त के बिना मन्त्रों का अर्थज्ञान नहीं होता। अर्थ को जाने बिना मनुष्य को स्वर और व्याकरण प्रक्रिया का यथावत् ज्ञान नहीं हो सकता, इसलिए यह निरुक्त व्याकरण का ज्ञान कराने वाला और वेदार्थ ज्ञान में सहायक है। [अथापीदमन्तरेण मन्त्रेष्वर्थप्रत्ययो न विद्यते। अर्थमप्रतियतो नात्यन्तं स्वरसंस्कारोद्देशः। तदिदं विद्यास्थानं व्याकरणस्य कार्त्स्न्यं स्वार्थसाधकं च ।। 1.5] इस पर प्रतिपक्षी आचार्य कौत्स ने कहा कि यदि यह निरुक्त मन्त्रों के अर्थज्ञान के लिए है तो यह व्यर्थ ही है क्योंकि मन्त्र तो निरर्थक होते हैं। [यदि मन्त्रार्थप्रत्ययाय, अनर्थकं भवति इति कौत्सः। अनर्थका हि मन्त्राः।। 1.5] तब कौत्स ने यह सिद्ध करने के लिए कि मन्त्र निरर्थक होते हैं, विविध तर्क दिए। जिनमें से पहला तर्क दिया कि मन्त्र निश्चित शब्दों की रचना वाले और निश्चित क्रम वाले होते हैं [नियतवाचोयुक्तयो नियतानुपूर्व्या भवन्ति। 1.5] अर्थात् लौकिक भाषा की तरह इन मन्त्रों में हम जरा भी उलटफेर नहीं कर सकते और न इनके शब्दों की जगह इनके पर्याय रख सकते हैं। ''अग्न आयाहि वीतये'' में ''आगच्छ विभावसो!'' पर्याय और क्रम नहीं बदल सकते।

2. औदुम्बरायणः शब्द के नित्यत्व और अनित्यत्व के सम्बन्ध में यास्क ने इनका मत उद्धृत किया है। ये शब्द को अनित्य मानते हैं और कहते हैं कि शब्द उच्चारण के पश्चात् नष्ट हो जाता है- ''इन्द्रियनित्यं वचनमौदुम्बरायणः।''

3. शाकटायनः ''न निर्बद्धा उपसर्गा अर्थान्निराहुरिति शाकटायनः'' अर्थात् नाम और आख्यात से अलग हुए उपसर्ग स्वतन्त्र अर्थों को नहीं कहते- ऐसा शाकटायन आचार्य का मत है।

4. गार्ग्यः ''उच्चावचाः पदार्था भवन्ति इति गार्ग्यः।'' उपसर्गों के अनेक प्रकार के अर्थ हुआ करते हैं अर्थात् स्वतन्त्ररूप से भी उपसर्ग सार्थक हैं- यह गार्ग्य का मत है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि प्रश्नगत उद्धरण कौत्स का वचन है। **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत- निरुक्तम् - आचार्य विश्वेश्वर, पेज 98

19. ऋक्संहितायाः समुपलब्धभाष्येषु प्रथमो भाष्यकारः विद्यते?

(A) सायणः (B) आनन्दतीर्थः

(C) स्कन्दस्वामी (D) वेङ्कटमाधवः

व्याख्या-

(1) **सायणः-** सायण के पिता- मायण

माता	-	श्रीमती
बड़े भाई-	-	माधव
छोटे भाई-	-	भोगनाथ
गुरु-	-	श्रीकण्ठ
मृत्यु-	-	1387ई.

इन्होंने सर्वप्रथम कृष्णयजुर्वेद की तैत्तिरीयसंहिता पर भाष्य लिखा। तदनंतर ऋग्वेद की शाकल संहिता, शुक्लयजुर्वेद की काण्व संहिता, सामवेद की कौथुम-संहिता ओर अथर्ववेद की शौनक संहिता पर भाष्यों की रचना की।

(2) आनन्दतीर्थः- काल-1255 से 1335, अपर नाम- मध्व। इन्होंने ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के 40 सूक्तों पर भाष्य लिखा। इन्होंने वेद का प्रतिपाद्य नारायण को माना।

(3) स्कन्दस्वामी- निवासी- गुजरात की राजधानी वलभी पिता-भर्तृध्रुव। ऋग्वेद के भाष्यकारों में स्कन्दस्वामी सबसे प्राचीन हैं। स्कन्दस्वामी ने 600 से 625 के मध्य ऋग्वेद पर भाष्य लिखा। स्कन्दस्वामी का यह भाष्य केवल चतुर्थ अष्टक तक ही प्राप्त है। इसके अतिरिक्त इन्होंने यास्क के निरुक्त पर टीका भी लिखी।

(4) वेङ्कटमाधवः- पितामह- माधव, पिता- वेङ्कट, नाना-

भवगोल, माता- सुन्दरी, भाई- संकर्षण, पुत्र- वेङ्कट तथा गोविन्द। साम्बशिव शास्त्री ने इनका समय 1050-1150ई. के मध्य माना। इनका भाष्य अत्यन्त संक्षिप्त है। इसमें मन्त्रों के पदों की ही व्याख्या है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि ऋक्संहिता के उपलब्ध भाष्यों में प्रथम भाष्यकार स्कन्दस्वामी जी हैं। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 22

20. ऋक्प्रातिशाख्यस्य पटलसंख्या कियती?

(A) 16 (B) 14
(C) 12 (D) 18

व्याख्या-

वर्तमान में उपलब्ध प्रातिशाख्य ग्रन्थों की संख्या 5 है-

(1) ऋक्प्रातिशाख्य (2) अथर्ववेदप्रातिशाख्य
(3) तैत्तिरीयप्रातिशाख्य (3) सामप्रातिशाख्य
(5) वाजसनेयिप्रातिशाख्य

(1) ऋक्प्रातिशाख्य- रचियता- महर्षि शौनक, काल- 800ई.पू.-600ई.पू. के मध्य ऋक्प्रातिशाख्य में कुल तीन अध्याय हैं और प्रत्येक अध्याय में 6 पटल हैं। इस प्रकार कुल 18 पटल हैं। प्रत्येक पटल वर्गों में विभाजित है। प्रत्येक वर्ग में सामान्यतः 5 श्लोक हैं।

(2) तैत्तिरीयप्रातिशाख्य- कृष्णयजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा से सम्बद्ध यह प्रातिशाख्य 2 खण्डों में विभक्त है। प्रत्येक खण्ड में 12 अध्याय और कुल 24 अध्याय हैं।

(3) वाजसनेयिप्रातिशाख्य- शुक्लयजुर्वेद की वाजसनेयि संहिता से संबद्ध वाजसनेयि प्रातिशाख्य है। इस प्रातिशाख्य की रचना महर्षि शौनक के शिष्य कात्यायन ने की है। वाजसनेयि प्रातिशाख्य में कुल 18 अध्याय तथा प्रत्येक अध्याय में 169 सूत्र हैं।

(4) अथर्ववेदप्रातिशाख्य- अथर्ववेद से संबद्ध दो प्रातिशाख्य ग्रन्थ प्रकाशित हैं- एक विश्वबन्धुशास्त्री द्वारा पंजाब विश्वविद्यालय ग्रन्थमाला से 1923 ई. में प्रकाशित हुआ, दूसरा ग्रन्थ डॉ. ह्विटनी द्वारा 1862 ई. में शौनकीया चतुरध्यायिका के नाम से प्रकाशित है। इसमें कुल 4 अध्याय हैं।

(5) सामप्रातिशाख्य- सामवेद से सम्बद्ध तीन प्रातिशाख्य प्रकाशित हैं।

(क) सामतन्त्र, इसके रचयिता औद्व्रजि हैं।

(ख) पुष्पसूत्र, इसकी रचना पुष्प ऋषि द्वारा की गई। सामवेदीय सर्वानुक्रमणी के अनुसार पुष्पसूत्र की रचना वररुचि ने की। इसमें कुल 10 प्रपाठक या अध्याय हैं।

(ग) ऋक्तन्त्र, इसके रचयिता आचार्य शाकटायन हैं। इसमें कुल 5 प्रपाठक और 200 सूत्र हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि ऋक्प्रातिशाख्य में पटलों की संख्या 18 है। **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत- संस्कृत वाङ्मय का बृहद इतिहास (खण्ड 2), पेज 13

21. अथर्ववेदेन सम्बद्धा शिक्षा का वर्तते?

(A) लोमशी शिक्षा (B) माण्डूकी शिक्षा
(C) गौतमी शिक्षा (D) केशवी शिक्षा

व्याख्या-

वेदों से सम्बद्ध शिक्षाग्रन्थ

वेद	शिक्षाग्रन्थ
ऋग्वेद	पाणिनीय शिक्षा, स्वराङ्कुशा, षोडशश्लोकी, शैशिरीय, आपिशलि शिक्षा
यजुर्वेद (शुक्लयजु.)	याज्ञवल्क्य शिक्षा, वासिष्ठी शिक्षा, कात्यायनी, पाराशरी, माध्यन्दिनी शिक्षा आदि।
कृष्णयजुर्वेद	भारद्वाज शिक्षा, व्यास शिक्षा, शम्भु शिक्षा, कोहलीय, सर्वसम्मत, आरण्य, सिद्धान्त शिक्षा आदि।
सामवेद	गौतमी शिक्षा, लोमशी शिक्षा, नारदीय शिक्षा
अथर्ववेद	माण्डूकी शिक्षा

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि अथर्ववेद की माण्डूकी शिक्षा है। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (द्वितीय खण्ड), भू. पेज 55

22. 'शिवसंकल्पसूक्तम्' माध्यन्दिनसंहितायां कस्मिन् अध्याये समुपलभ्यते?

(A) षोडशे (B) चतुस्त्रिंशे
(C) एकत्रिंशे (D) चत्वारिंशे

व्याख्या-

यजुर्वेदीय माध्यन्दिनसंहिता का अध्यायवार वर्ण्यविषय

अध्याय	वर्ण्य विषय
1 और 2	इसमें दर्श और पौर्णमास से संबद्ध यज्ञों का वर्णन है।
3	अग्निहोत्र और चातुर्मास्य इष्टियों का वर्णन

4-8	अग्निष्टोम और सोमयाग का वर्णन
9-10	इसमें वाजपेय और राजसूय यज्ञों का वर्णन है।
11-18	इसमें अग्निचयन और विविध प्रकार की वेदियों के निर्माण से संबद्ध मन्त्र हैं।
19-21	सौत्रामणी याग का विधान
22-25	अश्वमेध यज्ञ का विस्तृत वर्णन (अध्याय 24 जन्तु विज्ञान की दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण है, इसमें सैकड़ों पशु-पक्षियों का उल्लेख है।)
26-29	इन अध्यायों को खिल अध्याय कहते हैं। इनमें पूर्वोक्त यागों से संबद्ध नवीन मंत्र हैं।
30	इसमें पुरुषमेध का वर्णन।
31	इसे पुरुषसूक्त और विष्णुसूक्त भी कहते हैं। इसमें विराट् पुरुष के स्वरूप का वर्णन है।
32	इसमें विराट् पुरुष के दार्शनिक और आध्यात्मिक स्वरूप का वर्णन है।
33	सर्वमेध सूक्त
34	इसमें प्रारंभ के 6मन्त्र 'शिवसंकल्प उपनिषद्' कहे जाते हैं।
35	इसमें पितृमेध का वर्णन है।
36-38	इनमें प्रवर्ग्यनामक यज्ञ से संबद्ध मंत्र हैं।
39	इसमें अन्त्येष्टि से संबद्ध मन्त्र हैं, इसे प्रायश्चित्ताध्याय भी कहते हैं।
40	इसे ईशोपनिषद् और ईशावास्योपनिषद् कहते हैं। यह अध्याय यजुर्वेद का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अध्याय है। इसे उपनिषदों में प्रथम स्थान प्राप्त है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि शिवसंकल्पसूक्त माध्यन्दिन संहिता के 34वें अध्याय (चतुस्त्रिंशे) में है। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 75

23. भर्तृहरिदिशा को ब्रह्मामृतमश्नुते?
(A) शब्द प्रवृत्तितत्त्वज्ञः
(B) पञ्चविंशतितत्त्वज्ञः
(C) प्रमाणादिषोडशपदार्थ निष्णातः
(D) याज्ञिकः

व्याख्या- आचार्य भर्तृहरि ने वाक्यपदीयम् के ब्रह्मकाण्ड में बतलाया है कि शब्द का सम्यक् ज्ञान ही ब्रह्म की प्राप्ति का उपाय है और शब्द के तत्त्व का ज्ञान ही मोक्ष प्राप्ति का साधन है।

तस्माद्यः शब्दसंस्कारः सा सिद्धिः परमात्मनः।
तस्य प्रवृत्तितत्त्वज्ञः तद्ब्रह्मामृतमश्नुते॥ (कारिका 133)

अर्थात् शब्द की प्रवृत्ति (षड्भावविकार रूपी) को जो भलीभाँति जानता है वही उपनिषद् में वर्णित अमृत ब्रह्म को प्राप्त कर सकता है।

2. पञ्चविंशतितत्त्वज्ञः- साङ्ख्यशास्त्र में 25 तत्त्वों का वर्णन मिलता है। इन 25 तत्त्वों के सम्यक् ज्ञान से पुरुष को कैवल्य प्राप्त होता है- यह साङ्ख्यमत है।

3. प्रमाणादिषोडशपदार्थ निष्णातः- न्यायशास्त्र के अनुसार प्रमाणादि 16 पदार्थों के सम्यक् ज्ञान से निःश्रेयस् की प्राप्ति होती है- यह गौतम ऋषि प्रणीत न्यायसूत्र के प्रथम सूत्र में कहा गया है (प्रमाणप्रमेयसंशयप्रयोजनदृष्टान्त-सिद्धान्तावयवतर्क-निर्णयवादजल्पवितण्डाहेत्वाभासच्छलजातिनिग्रहस्थानानां तत्त्वज्ञानान्निःश्रेयसाधिगमः।।)। अतः यह न्यायशास्त्र का मत है।

4. याज्ञिकः- पूर्वमीमांसक यज्ञ को ही धर्म मानते हैं और उसी से कल्याण की प्राप्ति बतलाते हैं।
'यागादिरेव धर्मः' (अर्थसङ्ग्रह, लौगाक्षिभास्कर)।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि भर्तृहरि के मत में शब्दप्रवृत्तितत्त्वज्ञ ब्रह्मामृत को प्राप्त करता है। **अतः विकल्प A सही है।**

स्रोत- वाक्यपदीयम् (1.133)-जयदत्त उप्रेती, पेज 89

24. परेषामसमाख्येयं मणिरूप्यादिविज्ञानं भर्तृहरिदिशा कस्माज्जायते?
(A) शाब्दात् (B) अनुमानाद्
(C) अभ्यासाद् (D) उपमानात्

व्याख्या-
वाक्यपदीयकार महावैयाकरण भर्तृहरि पाँच प्रमाण मानते हैं- प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, अभ्यास और अदृष्ट। इनमें से अभ्यास नामक प्रमाण को भर्तृहरि पृथक् प्रमाण इसलिए मानते हैं क्योंकि मणि आदि के मूल्यों के तारतम्य का जो ज्ञान है वह दूसरों को बताया नहीं जा सकता किन्तु अभ्यास से ही होता है-

परेषामसमाख्येयमभ्यासादेव जायते।
मणिरूप्यादिविज्ञानं तद्विदां नानुमानिकम्॥ (कारिका35)

अर्थात् लौकिक मणि और गिन्नी आदि के मूल्य के तारतम्य का

ज्ञान जानकार स्वर्णकारों को ही होता है। वे इसे चाहने पर भी नहीं बता सकते। क्योंकि किसी वस्तु की विशेषता का ज्ञान तो अभ्यास से ही होता है। इस अभ्यास से होने वाले ज्ञान को अनुमान नहीं कहा जा सकता।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि मणिरूप्यादि का मूल्यज्ञान इत्यादि भर्तृहरि के मत में 'अभ्यास' नामक प्रमाण से होता है। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- वाक्यपदीयम् (कारिका 35)-जयदत्त उप्रेती, पेज 25

25. 'एध्' धातोः लुङ्लकारे प्रथमपुरुषबहुवचने कः प्रयोगः?

(A) ऐधन्त (B) ऐधिष्ट
(C) ऐधिषत (D) ऐधत

व्याख्या-

एध् लङ्लकार		
एकव॰	**द्विव॰**	**बहुव॰**
प्र॰पु॰- ऐधत	ऐधेताम्	ऐधन्त
म॰पु॰- ऐधथाः	ऐधेथाम्	ऐधध्वम्
उ॰पु॰- ऐधे	ऐधावहि	ऐधामहि
लुङ्लकार		
ऐधिष्ट	ऐधिषाताम्	ऐधिषत
ऐधिष्ठाः	ऐधियाथाम्	ऐधिढ्वम्
ऐधिषि	ऐधिष्वहि	ऐधिष्महि
लट्लकार		
एधते	एधेते	एधन्ते
एधसे	एधेथे	एधध्वे
एधे	एधावहे	एधामहे
लृट्लकार		
एधिष्यते	एधिष्येते	एधिष्यन्ते
एधिष्यसे	एधिष्येथे	एधिष्यध्वे
एधिष्ये	एधिष्यावहे	एधिष्यामहे

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त धातु रूपों को देखने से स्पष्ट होता है कि 'एध्' धातोः लुङ्लकारे प्र॰पु॰बहुवचनरूपम् 'ऐधिषत' भवति। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज 495

26. 'लोटो लङ्वत्' इति सूत्रप्रवृत्तिः कस्मिन् प्रयोगे जाता?

(A) अभवः (B) भवाम
(C) भवेताम् (D) अभविष्यत्

व्याख्या- लोटो लङ्वत्॥3।4।85॥ प्रकृत सूत्र कहता है कि लोट् लकार लङ् के समान होता है। लङ्लकार में ङकार की इत्सञ्ज्ञा होने से यह ङित् है, इसी प्रकार लोट्लकार टित् है। अतः जो कार्य लङ् में ङित् होने से स्वतः प्रवृत्त नहीं हो रहे थे अतः पाणिनि ने यह सूत्र बनाया। लोट्लकार को भी लङ् की भाँति ङित् माना जाए जिससे ङित् मानकर होने वाले सभी कार्य प्रवृत्त हो जाएँ।

1. अभवः- भू धातु से 'अनद्यतने लङ्' से लङ्लकार, अडागम, अनुबन्धलोप, उसके स्थान पर मध्यमपुरुष का एकवचन सिप् आदेश, अनुबन्धलोप, सार्वधातुक सञ्ज्ञा, शप्, अनुबन्धलोप, गुण, अवादेश होकर 'अभव+सि' बना। इकार का 'इतश्च' से लोप होकर 'अभवस्' बना। सकार का रुत्वविसर्ग होकर 'अभवः' सिद्ध हुआ।

2. भवाम- भू धातु से लोट्लकार, उसके स्थान पर उत्तमपुरुष बहुवचन मस् आया 'आडुत्तमस्य पिच्च' से आट् का आगम हुआ- 'भू+आ मस्' बना। सार्वधातुक संज्ञा, शप्, गुण, अवादेश होकर 'भव आमस्' बना। 'भव+आमस्' में 'अकः सवर्णे दीर्घः' से दीर्घादेश होकर 'भवामस्' बना, सकार का 'नित्यं ङितः' से लोप हुआ, 'भवाम' सिद्ध हुआ। लोट्लकार का रूप होने से ये सभी कार्य ''लोटो लङ्वत्'' सूत्र के बल से होते हैं।

3. भवेताम्- भू धातु, विधिलिङ्लकार, प्रथमपुरुष द्विवचन में भू+तस्। 'तस्थस्थमिपां तान्तन्तामः' से 'भू+ताम्', सार्वधातुकसंज्ञा, शप्, अनुबन्धलोप, धातु को गुण, अवादेश-'भव+ताम्', यासुट् का आगम- 'भव+यास्+ताम्'- ''अतो येयः'' से यास् = इय्, 'भव+इय्+ताम्', गुण='भवेय ताम्' 'लोपो वयोर्वलि' से यलोप=भवेताम्।

4. अभविष्यत्- भू धातु लृङ्लकार, प्रथमपुरुष एकवचन का रूप है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि 'लोटो लङ्वत्' सूत्र 'भवाम' प्रयोग में प्रयुक्त होता है। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी (3.4.85) - गोविन्दाचार्य, पेज 401

27. 'महद् यशो यस्य सः' इति विग्रहे बहुव्रीहिसमासे कः प्रयोगः?

(A) महायशः (B) महायशसः
(C) महायशाः (D) महायशष्कः

व्याख्या-

लौकिक विग्रह- महद् यशः यस्य सः = महायशस्को महायशाः (बड़े यश वाला) अलौकिक विग्रह- महत् सुँ यशस् सुँ।
यहाँ दोनों पद अन्य पदार्थ को विशिष्ट कर रहे हैं अतः 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से इन का बहुव्रीहि समास हो जाता है।

समास में विशेषण का पूर्वनिपात, समास की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा तथा 'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' से प्रातिपदिक के अवयव सुँपों का लुक करने पर- महत्+यशस्।

पुनः ''आन्महतः समानाधिकरणजातीययोः'' सूत्र द्वारा महत् के तकार को आकार आदेश होकर सवर्णदीर्घ हो जाता है- महा-यशस्। इस बहुव्रीहिसमास से किसी सूत्र द्वारा किसी समासान्त का विधान नहीं किया गया अतः यह शेषबहुव्रीहि है।

* इस शेषबहुव्रीहि से प्रकृत 'शेषाद्विभाषा' सूत्र द्वारा विकल्प से समासान्त कप् प्रत्यय हो जाता है।

कप् पक्ष में 'महायशस्+क' इस स्थिति में 'स्वादिष्वसर्वनामस्थाने' सूत्र द्वारा पदसञ्ज्ञा के कारण 'ससजुषो रुः' से पदान्त सकार को रुँ आदेश तथा 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' से रेफ् को विसर्ग आदेश हो जाता है- महायशः+क।

'सोऽपदादौ' से विसर्ग को सकार आदेश करने पर-'महायशस्क'। अब विशेष्यानुसार विभक्ति लाकर 'महायशस्कः' प्रयोग सिद्ध हो जाता है।

* जिस पक्ष में समासान्त कप् प्रत्यय नहीं होता वहाँ विभक्ति लाकर पुंलिङ्ग में 'वेधस्' शब्द की तरह प्रक्रिया होती है।

महायस्+सुँ- 'यहाँ अत्वसन्तस्य चाऽधातोः' से उपधादीर्घ, हल्ड्याब्भ्यो॰ से अपृक्त सकार का लोप तथा प्रकृति के सकार को रुत्वविसर्ग करने पर 'महायशाः' प्रयोग सिद्ध हो जाता है।

इस प्रकार 'महायशस्कः' तथा महायशाः ये दो प्रयोग निष्पन्न होते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'महद् यशो यस्य सः महायशाः' तथा 'महायशस्कः' का विग्रह हुआ।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज 967

28. 'कुगतिप्रादयः' इति समासविधायकसूत्रस्य किमुदाहरणं नास्ति?

(A) पटपटाकृत्य (B) कुम्भकारः
(C) सुपुरुषः (D) हस्तेकृत्य

व्याख्या-'कुगतिप्रादयः' (2.2.18)- समर्थ सुबन्त शब्दों के साथ कुशब्द, गतिसञ्ज्ञक शब्द और प्र आदि का समास होता है।

पटपटाकृत्य- पटत् कृत्वा इस शब्द में पटत् से 'अव्यक्तानु-करणाद् द्व्यजवरार्धादनितौ डाच्' सूत्र से डाच् प्रत्यय की विवक्षा में डाचि बहुलं द्वे भवतः से द्वित्व फिर टिलोप पररूप आदि कार्य तब 'पटपटा कृत्वा' – बना कृत्वा के योग में पटपटा की 'ऊर्यादिच्विडाचश्च' से गतिसञ्ज्ञा करने के बाद 'कुगति प्रादयः' इस सूत्र से समास होता है।

सुपुरुषः- 'शोभनः पुरुषः' लौकिक विग्रह तथा सु पुरुष सु अलौकिक विग्रह इस स्थिति में 'कुगति प्रादयः' से प्रादि सु के साथ समर्थ सुबन्त 'पुरुष सु' का समास हुआ।

हस्तेकृत्य- हस्ते कृत्वा में एकारान्त अव्यय हस्ते की **नित्यं हस्ते पाणावुपयमने (1.4.77)** इस सूत्र से गतिसञ्ज्ञा होने के बाद कुगतिप्रादयः इस सूत्र से समास होता है।

कुम्भकारः- 'कुम्भं करोति' लौकिक विग्रह तथ 'कुम्भ अम् कृ' इस अलौकिक विग्रह में कुम्भ शब्द से 'उपपदमतिङ्' (2.2.19) सूत्र से उपपद समास होता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि पटापटाकृत्य, सुपुरुषः तथा हस्ते कृत्य में कुगतिप्रादयः (2.2.18) से नित्य समास जबकि कुम्भकारः इस उदाहरण में 'उपपदमतिङ्' (2.2.19) से उपपद समास होता है। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज 935

29. 'प्रगृह्यम्' इत्यत्र कः कृत्यप्रत्ययः?

(A) ण्यत् (B) यत्
(C) क्यप् (D) तव्यत्

व्याख्या-प्रगृह्यम् (प्रगृह्यते इति) प्र उपसर्गपूर्वक ग्रह धातु से **पदास्वैरिबाह्यापक्ष्येषु च**।। 3।1।119।। सूत्र से क्यप् प्रत्यय हुआ। तत्पश्चात् **ग्रहिज्यावयिव्यधिवष्टिविचतिवृश्चतिपृच्छ-तिभृज्जतीनां ङिति च**।।6.1.16।। सूत्र से ग्रह् के र् को सम्प्रसारण होकर ऋ हुआ = प्रगृह् + क्यप्। क्यप् के ककार की 'लशक्वतद्धिते' से और पकार की हलन्त्यम् से इत्सञ्ज्ञा होकर 'तस्य लोपः' से लोप हुआ- 'प्रगृह्य' बना, 'सामान्ये नपुंसकम्' से नपुंसकलिङ्ग की विवक्षा में प्रगृह्यम् रूप सिद्ध होता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट हुआ कि 'प्रगृह्यम्' में क्यप् नामक कृत्य प्रत्यय है। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- अष्टाध्यायी (3.1.119)- ईश्वरचन्द्र, पेज 297

30. 'विद्वांसः सन्ति अस्मिन्' इति विग्रहे को मत्वर्थीयः प्रयोगः?

(A) विद्वद्वान (B) विदुष्मान्
(C) विद्वत्वान् (D) विद्वन्मान्

व्याख्या-तसौ मत्वर्थे (1.4.19)

तान्त-सान्तौ भसञ्ज्ञौ स्तो मत्वर्थे प्रत्यये परे। गरुत्मान्।

वसोः सम्प्रसारणम्- विदुष्मान्।

मतुँप् के अर्थ वाला कोई प्रत्यय परे हो तो तकारान्त और सकारान्त प्रातिपदिक भसंज्ञक हो जाते हैं।

जैसे- विद्वांसः सन्त्यस्य अस्मिन् वा विदुष्मान् (जिसके विद्वान् लोग हैं ऐसा वंश आदि अथवा जिसमें विद्वान् हैं ऐसा देश, प्रदेश आदि। विद्वस् + जस् - से सन्त्यस्य या सन्त्यस्मिन् अर्थों में 'तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुँप्' सूत्र से मतुँप् प्रत्यय होकर सुँब्लुक् करने से- विद्वस् + मत् 'तसौ मत्वर्थे' से पदसंज्ञा की अपवादभसंज्ञा के हो जाने से 'वसु-स्रंसु-ध्वंस्वनडुहां दः' द्वारा सकार को पदमूलक दत्व नहीं होता। पुनः 'वसोः सम्प्रसारणम्' से वसु के वकार की सम्प्रसारणम् उकार तथा 'सम्प्रसारणाच्च' से पूर्वरूप एकादेश करने पर

'विदुस् मत्' अन्त में 'आदेशप्रत्यययोः' से सकार को मूर्धन्य षकार का आदेशकर पूर्ववत् विभक्तिकार्य करने से 'विदुष्मान्' प्रयोग सिद्ध होता है।

इसी प्रकार- वपुष्मान्, आयुष्मान्, चक्षुष्मान्, ज्योतिष्मान्, धनुष्मान् आदि में भसंज्ञा के कारण रुँत्व नहीं होता।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि विदुष्मान् 'विद्वांसः सन्ति अस्मिन् मत्वर्थीय तद्धित प्रत्यय है। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज 112

31. या स्वयमेवाध्यापिका सा किमुच्यते?

(A) उपाध्यायानी (B) उपाध्याया
(C) आचार्यानी (D) आचार्याणी

व्याख्या-

महर्षि पाणिनि अष्टाध्यायी के चतुर्थ अध्याय में स्त्रीत्व की विवक्षा में 'ङीष्' प्रत्यय का विधान करने के लिए एक सूत्र लिखते हैं- ''इन्द्र-वरुण-भव-शर्व-रुद्र-मृड-हिमाऽरण्य-यव-यवन-मातुलाऽऽचार्याणाम् आनुँक्'' (4.1.49)

इन्द्र, वरुण, भव, शर्व, रुद्र, मृड, हिम, अरण्य, यव, यवन, मातुल और आचार्य- इन सभी बारह प्रातिपदिकों से स्त्रीत्व की विवक्षा में ङीष् प्रत्यय तथा इन प्रातिपदिकों को 'आनुँक्' का आगम भी हो जाता है। जैसे- इन्द्राणी, वरुणानी, भवानी आदि।

इसी सूत्र में कात्यायन ने एक वार्तिक लिखा-

''मातुलोपाध्याययोरानुँग्वा''

मातुल और उपाध्याय इन दो प्रातिपदिकों से पुंयोग में स्त्रीत्व की विवक्षा में ङीष् प्रत्यय तो नित्य होता है परन्तु आनुँक् का आगम विकल्प से।

जैसे- (i) मातुलस्य स्त्री (पत्नी) मातुलानी (यहाँ ङीष् प्रत्यय के साथ आनुँक् का आगम हुआ है)

(ii) मातुलस्य स्त्री मातुली (यहाँ ङीष् प्रत्यय हुआ परन्तु आनुँक् का आगम नहीं हुआ)

इसी प्रकार- उपाध्यायस्य स्त्री =

(i) उपाध्याय+आनुँक्+ङीष्=उपाध्यायानी (उपाध्याय की पत्नी)

(ii) उपाध्याय+ङीष्= उपाध्यायी (उपाध्याय की पत्नी)

यहाँ प्रथम उदाहरण में आनुँक् का आगम हुआ है, दूसरे में नहीं।

विशेष नियम- यदि 'उपाध्यायस्य स्त्री' इसप्रकार पुंयोग विवक्षित न होगा अर्थात् कोई स्त्री स्वयं अध्यापिका होगी तो वहाँ ङीष् का विकल्प होगा अर्थात् टाप् प्रत्यय भी हो सकता है किन्तु आनुँक् की प्रवृत्ति नहीं होगी।

या तु स्वयमेव अध्यापिका तत्र वा ङीष् वाच्यः (सि.कौ.)

उपाध्याय + ङीष् = उपाध्यायी (स्वयं अध्यापिका)

उपाध्याय + टाप् = उपाध्याया (स्वयं अध्यापिका)

''आचार्यादणत्वं च'' आचार्य प्रातिपदिक से परे आनुँक् (आन्) के नकार को णकार नहीं होता।

जैसे- आचार्यस्य स्त्री = आचार्यानी (आचार्य की पत्नी)

यदि कोई स्त्री स्वयं व्याख्यायी' पण्डिता अध्यापिका होगी तो पुंयोग के अभाव में ''इन्द्र-वरुण-भव..'' सूत्र से ङीष् प्रत्यय और आनुक् न होकर ''अजाद्यतष्टाप्'' से टाप् प्रत्यय ही होगा। आचार्य + टाप् = आचार्या (स्वयं आचार्या)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'या स्वयमेव अध्यापिका सा उपाध्याया अथवा आचार्या।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी - (भैमी व्याख्या, खण्ड 6), पेज 55

32. 'वृत्तिसर्गतायनेषु क्रमः' इत्यात्मनेपदविधायकसूत्रस्य सर्गार्थक-'क्रमधातोरुदाहरणं' चिनुत।

(A) अध्ययनाय क्रमते (B) ऋचि क्रमते बुद्धिः
(C) क्रमन्तेऽस्मिन् शास्त्राणि (D) आक्रमते सूर्यः

व्याख्या-

वृत्तिसर्गतायनेषु क्रमः (1.3.38):- वृत्ति का अर्थ है- बिना व्यवधान के चलना। सर्ग का अर्थ है- उत्साह। तायन का अर्थ है- विस्तार। वृत्ति, सर्ग और तायन अर्थ गम्यमान होने पर क्रम धातु से आत्मनेपद होता है।

उदाहरण- (1) ऋचि क्रमते बुद्धिः-......वृत्ति अर्थ गम्यमान होने के कारण क्रम धातु से 'वृत्तिसर्गतायनेषु क्रमः' से आत्मनेपद होकर 'क्रमते' सिद्ध होता है। ऋग्वेद में इसकी बुद्धि का प्रतिबन्ध नहीं होता अर्थात् ऋग्वेद के अध्ययन में यह आगे चलता ही रहता है यहाँ अप्रतिबन्ध होने के कारण वृत्ति अर्थ है।

(2) अध्ययनाय क्रमते, उत्सहते- पढ़ने के लिए सदा उत्साहित रहता है। उत्साह को सर्ग कहते हैं। सर्ग अर्थ गम्यमान होने के

कारण क्रम् धातु से 'वृत्तिसर्गतायनेषु क्रमः' सूत्र से आत्मनेपद होकर क्रमते सिद्ध होता है।

(3) क्रमन्तेऽस्मिन् शास्त्राणि- इस व्यक्ति में शास्त्र निरन्तर बढ़ते रहते हैं वृद्धि को तायन कहते हैं। 'तायृ सन्तानपालनयोः' धातु से तायन बना है सन्तान का अर्थ निरन्तर बढ़ते रहना है। तायन अर्थ गम्यमान होने के कारण क्रम् धातु से 'वृत्तिसर्गतायनेषु क्रमः' सूत्र से आत्मनेपद होकर क्रमते सिद्ध होता है।

आङ् उद्गमने (1.3.40)- ऊपर उठना अर्थ गम्यमान होने पर आङ् उपसर्ग से परे क्रम् धातु से आत्मनेपद होता है।

उदाहरण- आक्रमते सूर्यः- सूर्य ऊपर उठता है उदित होता है। यहाँ पर आङ्पूर्वक क्रम धातु है और ऊपर उठना अर्थ भी अतः आङ् उद्गमने सूत्र से आत्मनेपद का विधान हुआ।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि 'अध्ययनाय क्रमते' इस उदाहरण में 'वृत्तिसर्गतायनेषु क्रमः' सूत्र से सर्ग अर्थ में आत्मनेपद का विधान है। **अतः विकल्प A सही है।**

स्रोत- अष्टाध्यायी (1.3.38) - ईश्वरचन्द्र, पेज 92

33. 'बोधयति पदम्' इत्यत्र परस्मैपदविधायकं किमस्ति पाणिनिसूत्रम्?

(A) विभाषाऽकर्मकात्
(B) निगरणचलनार्थेभ्यश्च
(C) बुध-युध-नश-जनेङ्-प्रु-द्रु-स्रुभ्यो-णेः
(D) अणावकर्मकाच्चित्तवत्कर्तृकात्

व्याख्या-

अकर्मक उप उपसर्गपूर्वक 'रम्' धातु से परस्मैपद विकल्प से होता है। उदा॰- यावद् भुक्तम् उपरमति अपरमते वा (प्रत्येक भोजन से निवृत्त होता है)। अध्ययनाद् उपरमति उपरमते वा (अध्ययन से बचता है)।

निगरणचलनार्थेभ्यश्च- निगरण (निगलना) तथा चलन (चलना) अर्थ वाली ण्यन्त धातुओं से परस्मैपद होता है।

उदा॰- निगारयति, आशयति, भोजयति (भोजन कराता है)। चलयति, चोपयति (धीरे-धीरे चलता है), कम्पयति (कँपाता है)। 'चलयति' में 'घटादयो मितः' से मित् सञ्ज्ञा और 'मितां ह्रस्वः' से ह्रस्व होता है। ण्यन्त 'अद' (भक्षणार्थक) धातु से परस्मैपद नहीं होता है- जैसे- देवदत्तः अत्ति, देवदत्तेन अदायते।

बुधयुधनशजनेङ्प्रद्रुस्रुभ्यो णेः- बुध, युध, नश्, जन्, इङ्, प्रु, द्रु तथा स्रु इन ण्यन्त धातुओं से परस्मैपद होता है। उदा॰- पद्मं बोधयति (कमल को खिलाता है)। काष्ठानि योधयति। दुखं नाशयति (दुख का नाश करता है) सुखं जनयति (सुख को उत्पन्न करता है)।

अणावकर्मकाच्चित्तवत्कर्तृकात्- अणौ= अण्यन्त अवस्था में चित्तवत् =चेतन कर्तृकात् = कर्त्ता वाला। जो धातु अण्यन्त अवस्था में अकर्मक हो तथा साथ ही चेतन कर्त्ता वाला हो तो उससे ण्यन्त अवस्था में परस्मैपद होता है।

जैसे- (अण्यन्ते) आस्ते देवदत्तः (ण्यन्ते) आसयति देवतत्तः यहाँ देवदत्त (कर्त्ता) चेतन है तथा 'आस्' धातु अण्यन्त अवस्था में अकर्मक है। अतः णिजन्त दशा में परस्मैपद हो गया। इसी प्रकार 'शाययति' बनता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'बोधयति पद्मम्' यहाँ परस्मैपद विधायक सूत्र 'बुध-युधनशजनेङ्प्रद्रुस्रुभ्यो णेः' है। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- अष्टाध्यायी (1.3.86) - ईश्वरचन्द्र, पेज 104

34. अधोलिखितानां केन सह कस्य सम्बन्धः इति समीचीनां तालिकां चिनुत।

(क)	अपवर्गे तृतीया	(i)	ओदनं भुञ्जानो विषं भुङ्क्ते।
(ख)	तथायुक्तं चाऽनीप्सितम्	(ii)	प्रद्युम्नः कृष्णात् प्रति।
(ग)	धारेरुत्तमर्णः	(iii)	क्रोशेन अनुवाकोऽधीतः।
(घ)	प्रतिनिधि-प्रतिदाने च यस्मात्	(iv)	भक्ताय धारयति मोक्षं हरिः

Options

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(A)	(iii)	(i)	(iv)	(ii)
(B)	(iii)	(ii)	(iv)	(i)
(C)	(ii)	(iii)	(i)	(iv)
(D)	(iv)	(ii)	(iii)	(i)

व्याख्या-

1- तथायुक्तं चानीप्सितम्:- ईप्सिततम के समान क्रिया से युक्त 'अनीप्सित' की भी कर्मसञ्ज्ञा होती है। कुछ पदार्थ कर्त्ता द्वारा अनीप्सित होते हुए भी क्रिया से ईप्सित के समान संयुक्त होते हैं। क्रिया से सटे हुए ऐसे अनीप्सित पदार्थों की भी ''तथायुक्तं चानीप्सितम्'' सूत्र से कर्म संज्ञा होती है। यथा- 'ओदनं भुञ्जानो विषं भुङ्क्ते' (भात खाता हुआ विष खाता है।) इस वाक्य में कर्त्ता को खाने में ओदन (भात) ईप्सिततम है। विष कर्त्ता के लिए अनीप्सित अर्थात् द्वेष्य है लेकिन ओदन के साथ अनीप्सित विष की भी 'तथायुक्तं चानीप्सितम्' सूत्र से कर्मसंज्ञा तथा ''कर्मणि द्वितीया'' से द्वितीया विभक्ति हुई। इसी प्रकार 'ग्रामं गच्छन् तृणं स्पृशति' में भी तृण की कर्म संज्ञा हुई।

2- अपवर्गे तृतीया- अपवर्ग का अर्थ है क्रिया की समाप्ति होने पर फल की भी प्राप्ति। फल की प्राप्ति अर्थ के द्योतित होने पर काल और मार्गवाची शब्दों से अत्यन्त संयोग में तृतीया विभक्ति होती है। यथा- 'अह्ना क्रोशेन वा अनुवाकोऽधीतः' (दिन भर या कोश भर में अनुवाक पढ़ लिया।) इस वाक्य में दिन भर या कोश भर में अनुवाक पढ़ लिया गया और उसे याद भी कर लिया गया। अतः 'अपवर्गे तृतीया' सूत्र से कालवाचक 'अह्ना' (दिन) और मार्गवाचक 'क्रोशेन' में (कोश में) तृतीया विभक्ति हुई।

3- धारेरुत्तमर्णः- 'णिजन्त' 'धृ' धातु के योग में 'उत्तमर्ण' (महाजन) की सम्प्रदान संज्ञा होती है। यथा- भक्ताय धारयति मोक्षं हरिः। (भक्त के लिए हरि मोक्ष के ऋणी हैं) इस वाक्य में णिजन्त 'धृ' धातु के योग में उत्तमर्ण भक्त की ''धारेरुत्तमर्णः'' सूत्र से सम्प्रदान संज्ञा तथा ''चतुर्थी सम्प्रदाने'' सूत्र से चतुर्थी विभक्ति होकर 'भक्ताय' बना।

4- प्रतिनिधिप्रतिदाने च यस्मात्- प्रतिनिधि और प्रतिदान के अर्थ में कर्मप्रवचनीय संज्ञक प्रति के योग में जिसका प्रतिनिधित्व हो तथा जिससे प्रतिदान अर्थात् कोई चीज बदली जाय उससे पञ्चमी विभक्ति होती है।

यथा- ''प्रद्युम्नः कृष्णात् प्रति'' (प्रद्युम्न कृष्ण के प्रतिनिधि हैं) यहाँ 'प्रतिनिधि' अर्थ में 'प्रति' की 'प्रतिः प्रतिनिधिप्रतिदानयोः' सूत्र से कर्मप्रवचनीय संज्ञा हुई और 'प्रतिनिधिप्रतिदाने च यस्मात्' सूत्र से प्रतिनिधि के अर्थ में प्रयुक्त प्रति के योग में कृष्णात् में पंचमी विभक्ति हुई। इसी प्रकार 'तिलेभ्यः प्रतियच्छति माषान्' में भी तिलेभ्यः में पञ्चमी विभक्ति हुई।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि दिये गये विकल्पों में **विकल्प A सही है।**

स्रोत- कारकप्रकरण - राममुनि पाण्डेय, पेज 60,30, 68, 90

35. ''पराजेरसोढः'' इत्यनेन सूत्रेण कतमं कारकं भवति?

(A) अधिकरणम् (B) सम्प्रदानम्
(C) अपादानम् (D) करणम्

व्याख्या-1- अधिकरणम्- ''आधारोऽधिकरणम्'' आधार की अधिकरण संज्ञा होती है अर्थात् कर्ता और कर्म के द्वारा उसमें रहने वाले क्रिया के आधारभूत कारक की अधिकरण संज्ञा होती है। अर्थात् जो क्रिया का आधार हो उस कारक की अधिकरण संज्ञा हो।

2- सम्प्रदानम्- ''कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्'' दान के कर्म से जिसको चाहता है, उस की सम्प्रदान संज्ञा होती है। 'सम्यक् प्रदीयते अस्मै इति सम्प्रदानम्' इस व्युत्पत्ति में 'दा' धातु से दो उपसर्ग लगे हैं सम् और प्र। जिसे कोई वस्तु दी जाए और पुनः वापस न लिया जाए वह सम्प्रदान है।

3- अपादानम्- ''ध्रुवमपायेऽपादानम्''- अपाय (अलग होने) के अर्थ में ध्रुव (स्थिर) की अपादान संज्ञा होती है।

4- पराजेरसोढः- 'परा' (उपसर्ग) पूर्वक 'जि' धातु के योग में असह्य वस्तु की 'अपादान' संज्ञा होती है।
जैसे- 'अध्ययनात्पराजयते।' (अध्ययन से हार मान रहा है।)- जब किसी के लिए अध्ययन असह्य या कष्टकर हो गया है तो उपर्युक्त नियम से पराजयते के योग में अध्ययन की अपादान संज्ञा होती है और उसमें पञ्चमी विभक्ति होती है। इस उदाहरण का भाव है- अध्ययन से थक गया है।

5- करणम् ''साधकतमं करणम्''- क्रिया की सिद्धि में जो कारक सबसे अधिक सहायक होता है उसकी करण संज्ञा होती है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'पराजेरसोढः' सूत्र से 'अपादान' कारक होता है। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- कारकप्रकरण - राममुनि पाण्डेय, पेज 82

36. ''प्रातिपदिकम्'' इति संज्ञा केन सूत्रेण विधीयते?

(A) प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा
(B) प्रातिपदिकान्तनुम्विभक्तिषु
(C) ङ्याप्प्रातिपदिकात्
(D) अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्

व्याख्या-महर्षि पाणिनि ने अष्टाध्यायी में प्रातिपदिकसञ्ज्ञा-विधायक दो सूत्रों का उल्लेख किया है-

1- अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्।। 1.।2।45।।

2- कृत्तद्धितसमासाश्च।। 1।2।46।।

1-अर्थवद ...अर्थवान्, धातुभिन्न, प्रत्ययभिन्न शब्द की प्रातिपदिकसञ्ज्ञा होती है। जैसे- 'पुरुष' शब्द अर्थवान् है, धातुभिन्न है, प्रत्ययभिन्न है अतः इसकी प्रातिपदिक संज्ञा है।

2- कृत्तद्धितसमासाश्च- कृदन्त, तद्धितान्त और समासयुक्त शब्दों की भी प्रातिपदिकसञ्ज्ञा होती है। जैसे- 'कृ+ण्वुल्' इस दशा में 'कारक' शब्द निष्पन्न होता है। ण्वुल् एक कृत् प्रत्यय है अतः 'कारक' शब्द कृदन्त होने से प्रातिपदिकसञ्ज्ञक हुआ।
'शाला+छ'- 'शालीय' तद्धित प्रत्ययान्त होने से प्रातिपदिक संज्ञा हुई। इसी प्रकार औपगवः, वाचस्पत्यम् इत्यादि तद्धितान्त होने से प्रातिपदिकसञ्ज्ञक होते हैं।
राज्ञः पुरुषः- राजपुरुषः यहाँ समास होकर 'राजपुरुष' समस्तपद बना। इसकी प्रातिपदिक संज्ञा 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से हुई।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्' प्रातिपदिक संज्ञा का विधान करता है।

अतः विकल्प 'D' सही है।

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज 129

37. निम्नाङ्कितेषु 'प्रगृह्यम्' इति संज्ञाविधायकं सूत्रं किमस्ति?

(A) ओत् (B) तरप्तमपौ घः

(C) तृतीयासमासे (D) आद्यन्तवदेकस्मिन्

व्याख्या-

➤ **ओत्** (1.1.15)

अनुवृत्ति- निपातः, प्रगृह्यम्। अर्थ- 'येन विधिस्तदन्तस्य' के द्वारा तदन्तविधि होने से ओत् का अर्थ ओकारान्त (निपात) है। ओकारान्त निपात छः ही हैं। ओ, आहो, उताहो, हो, अहो व अथो। इनमें 'ओ' की प्रगृह्यसंज्ञा 'निपात एकाजनाङ्' से हो जाती है। शेष पाँच की प्रगृह्यसंज्ञा में प्रस्तुत सूत्र की उपयोगिता है।

सूत्रार्थ- ओकारान्त निपात की प्रगृह्यसंज्ञा होती है।

उदाहरण- उताहो अनिष्टम्। उताहो असत्यम्। अहो अद्या शीतम् नो इदानीम्। अधो इति। अहो आश्चर्यम्। अहो ईशा।

➤ **आद्यन्तवदेकस्मिन्-** (1.120)

पद - आद्यन्तवत् अव्यय, एकस्मिन् (7.1) **सूत्रार्थ-** एक में भी आदिवत् तथा अन्तवत् कार्य होते हैं। उदाहरण- औपगवः, आभ्याम्।

➤ **तरप्तमपौ घः (1.121)**

पद- तरप्तमपौ (1.2) घः (1.1)

सूत्रार्थ- तरप् तथा तमप् - ये दो प्रत्यय घसंज्ञक होते हैं।

उदाहरण- कुमारितरा, कुमारितमाः, ब्राह्मणितरा, ब्राह्मणितमा।

➤ **तृतीया समासे (1.1.29)**

पद- तृतीया समासे (1.1)

अनुवृत्ति- सर्वादीनि-सर्वनामानि

अर्थ- तृतीया समासे का अर्थ है- तृतीया तत्पुरुष समास। इस सूत्र की प्रवृत्ति प्रतिपदोक्त तृतीया समास में ही होती है। 'कर्तृकरणे कृता बहुलम् आदि की दशा में यह निषेध नहीं होता है।

सूत्रार्थ- तृतीया तत्पुरुष समास में सर्वादिगण पठित शब्दों की सर्वनाम संज्ञा नहीं होती है।

उदाहरण- मासपूर्वाय, द्व्यहपूर्वाय।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि प्रगृह्य संज्ञा विधायक सूत्र 'ओत्' है। **अतः विकल्प A सही है।**

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज 77

38. 'ब्राह्मणेनावश्यं शब्दा ज्ञेयाः' कथनमिदं पतञ्जलिना कस्य व्याकरणप्रयोजनस्य विषये कृतम्?

(A) रक्षाविषये (B) ऊहविषये

(C) आगमविषये (D) लघुविषये

व्याख्या- महर्षि पतञ्जलि महाभाष्य पस्पशाह्निक में **'कानि पुनः शब्दानुशासनस्य प्रयोजनानि'** के द्वारा शब्दानुशासन (व्याकरण शास्त्र) के अध्ययन के प्रयोजन कौन-कौन से हैं? इसकी चर्चा करते हैं।

व्याकरण के पाँच प्रयोजन-''रक्षोहागमलघ्वसन्देहाः प्रयोजनम्''

1. रक्षा 2. ऊह 3. आगम 4. लघु और 5. असन्देह ये व्याकरण के पाँच मुख्य प्रयोजन हैं।

1. रक्षा 'रक्षार्थं वेदानामध्येयं व्याकरणम्। लोपागमवर्णविकारज्ञो हि सम्यक् वेदान् परिपालयिष्यति इति।

वेदों की रक्षा के लिए व्याकरण का अध्ययन करना चाहिए। क्योंकि वर्णादि के लोप, आगम और वर्णविकार इनको जानने वाला वैयाकरण ही वेदों की रक्षा सम्यक् रूप से कर सकता है।

2. ऊहः खल्वपीति- न सर्वैर्लिङ्गैर्न च सर्वाभिर्विभक्तिभिर्वेदे मन्त्रा निगदिताः। ते चावश्यं यज्ञगतेन पुरुषेण यथायथं विपरिणमयितव्याः तन्नावैयाकरणः शक्नोति यथायथं विपरिणमयितुम्। तस्माद् अध्येयं व्याकरणम्।

अपेक्षित परिवर्तन- ऊह भी व्याकरणाध्ययन का प्रयोजन है। वेद में मन्त्र सभी लिङ्गों और सभी विभक्तियों के साथ नहीं पढ़े गये है। यज्ञकार्य में प्रवृत्त पुरुष के उन मन्त्रों के अर्थानुसार उचित रीति से अवश्य बदल लेना चाहिए। परन्तु अवैयाकरण उन मन्त्रों के अपेक्षित लिङ्ग और विभक्ति के साथ नहीं बदल सकता इसलिए विपरिणाम की सामर्थ्य प्राप्ति के लिए व्याकरणशास्त्र का अध्ययन करना चाहिए।

3. आगमः 'ब्राह्मणेन निष्कारणो धर्मः षडङ्गो वेदोऽध्येयो ज्ञेयश्च'। प्रधानं च षट्स्वङ्गेषु व्याकरणम्। प्रधाने च कृत्तो यत्नः फलवान् भवति।' वेदवचन भी व्याकरणाध्ययन का प्रयोजन है। मन्त्र कहता है- 'ब्राह्मणों को निष्कारण छः अङ्गों वाले वेद का अध्ययन करना चाहिए। छह वेदाङ्गों में व्याकरण ही प्रमुख अङ्ग है और प्रधान के विषयों में किया गया प्रयत्न सफल होता है।

4. लघु- ''लघ्वर्थं चाध्येयं व्याकरणम्। ब्राह्मणेन अवश्यं शब्दा ज्ञेयाः। न चान्तरेण व्याकरणं लघुनोपायेन शब्दाः शक्या विज्ञातुम्।'' लाघव के लिए भी व्याकरण का अध्ययन करना चाहिए। ''ब्राह्मण को शब्दों का ज्ञान अवश्य करना चाहिए।'' व्याकरण के अतिरिक्त

किसी अन्य उपाय द्वारा लाघव से शब्दों का ज्ञान करना सम्भव नहीं है।

5. असन्देह- असन्देहार्थं चाध्येयं व्याकरणम्। याज्ञिकाः पठन्ति- ''स्थूलपृषतीमाग्निवारुणीमनड्वाहीमालभेत इति।'' असन्देह= (सन्देह के प्रागभाव) के लिए भी व्याकरण का अध्ययन करना चाहिए। याज्ञिक यह पढ़ते हैं कि- 'अग्नि और वरुण देवताओं वाली अर्थात् उनके उद्देश्यवाली, स्थूलपृषती अनड्वाही (गाय) का आलम्भन समर्पण करें। यहाँ 'स्थूलपृषती' पदार्थ में बहुव्रीहि और तत्पुरुष समास को लेकर सन्देह होता है; जो अवैयाकरण निश्चित नहीं कर सकता।

स्पष्टीकरण- ''ब्राह्मणेन अवश्यं शब्दाः ....ज्ञेयाः'' यह वचन 'लघु' व्याकरण प्रयोजन के सन्दर्भ में कहा गया है। **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत- व्याकरणमहाभाष्यम् (पस्पशाह्निक)-मधुसूदन मिश्र, पेज 10

39. पतञ्जलिमतानुसारं शब्दः कः?

(A) अर्थरूपम्

(B) यद् इङ्गितं चेष्टितम्

(C) यद्भिन्नेष्वभिन्नं,छिन्नेष्वछिन्नम्

(D) प्रतीतपदार्थको लोके ध्वनिः

व्याख्या- महर्षि पतञ्जलि महाभाष्य पस्पशाह्निक में सर्वप्रथम 'अथ शब्दानुशासनम्' अब शब्दानुशासन प्रारम्भ किया जाता है। अब प्रश्न होता है कि 'केषां शब्दानाम्' किन शब्दों का अनुशासन प्रारम्भ किया जा रहा है। तो उत्तर मिलता है ''लौकिकानां वैदिकानां च'' लौकिक और वैदिक शब्दों का अनुशासन प्रारम्भ किया जा रहा है। इसी सन्दर्भ में सहज जिज्ञासा होती है कि-गौः इत्यत्र कः शब्दः? यह गाय है, इस ज्ञान में 'शब्द' क्या है? इसके उत्तर में महर्षि पतञ्जलि का उत्तर है कि- स्फोटरूप शब्द- ''येनोच्चारितेन सास्नालाङ्गूलककुदखुरविषाणिनां सम्प्रत्ययो भवति, सः शब्दः'' ध्वनियों से अभिव्यक्त होने वाले जिसके द्वारा सास्ना (गले में लटकने वाली खाल) पूँछ, ककुद् (कन्धे के ऊपर निकला हुआ मांसपिण्ड) खुर और विषाण (सींग) से युक्त गोरूप पशु का सम्यक् ज्ञान होता है, वह स्फोटरूप शब्द है।

ध्वनिरूप शब्द- ''प्रतीतपदार्थको लोके ध्वनिः शब्दः'' लोकव्यवहार में पदार्थबोधक के रूप में प्रसिद्ध अर्थात् पदार्थ की प्रतीति कराने वाली ध्वनि को शब्द कहा जाता है।

स्पष्टीकरण- इस प्रकार स्पष्ट है कि महर्षि पतञ्जलि के अनुसार 'प्रतीतपदार्थको लोके ध्वनिः' यह ध्वनिरूप शब्द का लक्षण है। **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत- महाभाष्य (पस्पशाह्निक)-जयशंकर लाल त्रिपाठी, पेज 19

40. पाणिनीयशिक्षानुसारं स्वराणां संख्या का?

(A) विंशतिः (B) एकविंशतिः

(C) अष्टादश (D) पञ्चविंशतिः

व्याख्या- ऋग्वेद से सम्बद्ध शिक्षाग्रन्थ संख्या में अधिक नहीं हैं, केवल चार पाँच ही हैं वे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। उनमें पाणिनीय शिक्षा सर्वाधिक लोकप्रिय है। पाणिनि के मत के अनुकूल शिक्षा को बताने के बाद वाणी के अर्थात् वैदिक और लौकिक संस्कृत के वर्णों के उच्चारण के प्रकारों को स्पष्ट करते हैं। इसके बाद वर्णों की चर्चा करते हुए कहते हैं-

त्रिषष्टिश्चतुःषष्टिर्वा वर्णाः शम्भुमते मताः।
प्राकृते संस्कृते चापि स्वयं प्रोक्ताः स्वयम्भुवा॥3॥

प्राकृत और संस्कृत भाषा में ब्रह्मा जी के द्वारा स्वयं बताये गए वर्ण सम्भावित रूप में तिरसठ या चौसठ माने गये हैं।

स्वरा विंशतिरेकश्च स्पर्शानां पञ्चविंशतिः।
यादयश्च स्मृता ह्यष्टौ चत्वारश्च यमाः स्मृताः॥4॥
अनुस्वारो विसर्गश्च-ᳵ कᳵ पौ चाऽपि पराश्रितौ।
दुस्स्पृष्टश्चेति विज्ञेयो ऌकारः प्लुत एव च ॥5॥

स्वर बीस और एक (इक्कीस), स्पर्श पच्चीस, यकारादि (अन्तःस्थ और ऊष्म) वर्ण आठ, यम वर्ण चार, अनुस्वार (एक) विसर्ग (एक) क ख परक तथा प फ परक जिह्वामूलीय तथा उपध्मानीय वर्ण दो, दुस्स्पृष्टता को प्राप्त लुप्त ऌकार (एक) जानना चाहिए। इस प्रकार तिरसठ वर्ण होते हैं। अनुस्वार के मतभेद से ह्रस्व और दीर्घ का अनुस्वार- रङ्ग रूप में दो संख्या लेने पर। चौसठ वर्ण होते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि पाणिनीय शिक्षा के अनुसार स्वर वर्ण इक्कीस बताये गये हैं। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- पाणिनीय शिक्षा-(श्लोक 4)-शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, पेज 07

41. 'समीकरणम्' कस्य दिशा वर्तते?

(A) ध्वनिपरिवर्तनस्य (B) रूपपरिवर्तनस्य

(C) अर्थपरिवर्तनस्य (D) वाक्यपरिवर्तनस्य

व्याख्या- ध्वनिपरिवर्तन- परिवर्तन सृष्टि का नियम है। विश्व की प्रत्येक वस्तु में निरंतर परिवर्तन होता रहा है, हो रहा है और होता रहेगा। भाषा का प्रमुख तत्त्व ध्वनि है। वक्ता की ध्वनि पर दो प्रकार का प्रभाव पड़ता है- 1. आभ्यंतर 2. बाह्य। वक्ता और श्रोता से सम्बद्ध कारणों को आभ्यंतर कारण कहते हैं- जैसे- प्रयत्नलाघव, मुख-सुख, अज्ञान, शीघ्रभाषण आदि। इसके अतिरिक्त अन्य कारणों को बाह्यकारण कहते हैं। ये कारण बाहर से ध्वनि को

प्रभावित करते हैं। जैसे - सामाजिक, राजनीतिक, भौगोलिक आदि कारण।

ध्वनिपरिवर्तन की दिशाएँ- ध्वनि परिवर्तनों का मुख्य कारण प्रयत्नलाघव या मुख सुख है।

1. समीकरण- जब दो विषम ध्वनियाँ एकत्र होती हैं तो एक ध्वनि दूसरी को प्रभावित करके अपने सदृश बना लेती है। यह समीकरण दो प्रकार का होता है- (क) पुरोगामी समीकरण (ख) पश्चगामी समीकरण।

3. आगम- उच्चारण की सुविधा के लिए शब्दों के आदि, मध्य या अन्त में कुछ ध्वनियाँ जोड़ दी जाती हैं, इन्हें आगम कहते हैं।

2. विषमीकरण- यह समीकरण का उल्टा है। इसमें दो समध्वनियों में से एक ध्वनि विषम रूप से धारण करती है।

4. लोप- कभी-कभी मुखसुख, प्रयत्नलाघव या उच्चारण में शीघ्रता स्वराघात आदि के कारण कुछ ध्वनियों का लोप हो जाता है।

5. समाक्षरलोप- जहाँ पर दो समान ध्वनियाँ एक के बाद दूसरी आती है वहाँ एक का लोप कर दिया जाता है।

6. वर्णविपर्यय 7. महाप्राणीकरण 8. अल्पप्राणीकरण 9. घोषीकरण 10. अघोषीकरण 11. अनुनासिकीकरण 12. ऊष्मीकरण 13. सन्धिकार्य 14. मात्राभेद।

2. रूपपरिवर्तन की दिशाएँ- रूपपरिवर्तन सामान्यतः दो दिशाओं में होता है- (i) सरलीकरण हेतु समरूपता (ii) संदेह निवारणार्थ नए रूपों की उत्पत्ति। संक्षेप में रूपपरिवर्तन के निम्नलिखित कारण हैं- (क) सरलीकरण (ख) नवीनता की अभिरुचि (ग) सादृश्य (घ) अज्ञता (च) बल।

3. अर्थपरिवर्तन- जिस प्रकार ध्वनियों में परिवर्तन होता है, उसी प्रकार प्रत्येक भाषा के शब्दों के अर्थों में भी परिवर्तन होता रहता है। यह अर्थ परिवर्तन तीन प्रकार का होता है- (i) कहीं पर अर्थ का विस्तार होता है। (ii) कहीं पर अर्थ में संकोच होता है। (iii) कहीं पर पुराने अर्थ के स्थान पर नया अर्थ आ जाता है। इन्हें ये नाम दिये गये हैं- (क) अर्थविस्तार (ख) अर्थसंकोच (ग) अर्थादेश।

4. वाक्यपरिवर्तन- विकास क्रम के अनुसार विश्व की प्रत्येक भाषा में परिवर्तन होते हैं। भाषा में परिवर्तन के कारण वाक्यों के पठन और प्रयोग में भी परिवर्तन होता है। वाक्यपरिवर्तन की प्रमुख दिशाएँ ये हैं- (क) पदक्रम में परिवर्तन (ख) अन्वय में परिवर्तन (ग) अधिक पद प्रयोग (घ) पद या प्रत्यय का लोप (च) कोष्ठ और डैश का प्रयोग (छ) आदरार्थक बहुवचन (ज) प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष कथन (झ) कारक के लिए अर्धविराम।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि समीकरण ध्वनिपरिवर्तन की दिशा में होता है। **अतः विकल्प A सही है।**

स्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 233

42. हिब्रूभाषा कस्य भाषापरिवारस्य भाषाऽस्ति?

(A) चीनीपरिवारस्य (B) भारोपीयपरिवारस्य
(C) सूडानीपरिवारस्य (D) सामी-हामीपरिवारस्य

व्याख्या-

विश्व की भाषाओं के परिवारों की संख्या के विषय में पर्याप्त मतभेद है। जर्मन विद्वान् 'विल्हेल्म फॉन हुम्बोल्ट' ने इनकी संख्या 13 मानी हैं। फ्रीडरिश म्यूलर आदि विद्वान् इनकी संख्या 100 के लगभग मानते हैं। निर्विवाद रूप से स्वीकृत प्रमुख 18 भाषापरिवारों का उल्लेख यहाँ किया जा रहा है-

(क) यूरेशिया (यूरोप- एशिया) भूखण्डः- (1) भारोपीय परिवार, (2) द्रविड़ परिवार, (3) बुरुशस्की परिवार, (4) काकेशी परिवार (5) यूराल अल्ताई परिवार, (6) चीनी परिवार (7) जापानी कोरियाई परिवार (8) अत्युत्तरी (हाइपरबोरी) परिवार, (9) बास्क परिवार (10) सामी-हामी परिवार

(ख) अफ्रीकी भूखण्डः- (1) सूडानी परिवार, (2) बान्तू परिवार, (3) होतेन्तोत-बुशमैनी परिवार।

(ग) प्रशान्त महासागरी भूखण्डः- (1) मलय पोलिनेशियाई परिवार (2) पापुई परिवार, (3) आस्ट्रेलियन परिवार, (4) दक्षिण पूर्व एशियाई परिवार।

(घ) अमेरिकी भूखण्डः- (1) अमेरिकी परिवार।

(1) चीनी परिवारः- क्षेत्र- सम्पूर्ण चीन, बर्मा, स्याम, तिब्बत। प्रमुख भाषाएँः- (1) चीनी (2) थाई या स्यामी (3) ब्राह्मी या बर्मी (4) तिब्बती (5) अनामी

(2) भारोपीय परिवार- भारोपीय परिवार में भारतवर्ष से लेकर यूरोप तक फैली हुई भाषाओं का संग्रह है। इस परिवार की दस शाखाएँ हैं- (1) भारत-ईरानी (आर्य) (क) भारतीय (ख) ईरानी (2) बाल्टो-स्लाविक- (क) बाल्टिक (ख) स्लाविक
(3)- आर्मीनी, (4) अल्बानी (इलीरी), (5) ग्रीक (हेलेनिक), (6) केल्टिक, (7) जर्मानिक, (8) इटालिक, (9) हिटाइट (हित्ती), (10) तोखारी। भारोपीय परिवार की भाषाओं को ध्वनि के आधार पर दो भागों में विभक्त किया जाता है- (क) केन्टुम् (ख) शतम् उपरिलिखित भारोपीय परिवार की दस शाखाओं में प्रथम चार परिवार शतम् वर्ग में तथा शेष छह केन्टुम् वर्ग में आते हैं।

ईरानी-भारती चैव, बाल्टी- सुस्लाविकी तथा।
आर्मीनी अल्बनी चैताः, शतम्- वर्गे समाश्रिताः॥
इटालिकी च ग्रीकी च, जर्मानिक् केल्टिकी तथा।
हित्ती तोखारिकी चैताः, केन्टुम् वर्गे प्रकीर्तिताः॥

(3) सूडानी परिवार- क्षेत्र - अफ्रीका में भूमध्य रेखा के उत्तर में पश्चिम से पूर्व तक। इसके उत्तर में हामी परिवार है और दक्षिण में बान्तू परिवार।

प्रमुख भाषाएँ- (क) वुले (ख) मन-फू (ग) कनूरी (घ) नीलोटिक (ङ) बन्तूइड (च) हौसा, कुलभाषाएँ- 435

(4) सामी-हामी परिवार- क्षेत्र-(क) सामी- (एशिया में) अरब, ईराक, फिलिस्तीन, सीरिया (अफ्रीका में) मिस्र, इथियोपिया, तुनिसिया, अल्जीरिया, मोरक्को। (ख) हामी- (अफ्रीका में) लीबिया, सोमाली लैण्ड, इथियोपिया।

प्रमुख भाषाएँ- सामी- अक्कदियन, कनानित, अरमाइक, अरबी, एबीसीनियन, हिब्रू।

हामी - लीबियन, मेरोइटिक, एथियोपिक (कुशीत) मिश्री सामी, हामी परिवार की भाषाएँ श्लिष्ट योगात्मक और अन्तर्मुखी हैं। इसमें सम्बन्धतत्त्व अधिकतर धातु के अन्दर ही स्वरों के परिवर्तन से सूचित किए जाते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि हिब्रू भाषा सामी-हामी परिवार के अन्तर्गत आती है। **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 402

43. संस्कृत भाषायाः यूरोपीयभाषाभिः सम्बन्धः सर्वप्रथमं केनोद्घाटितः?

(A) मैक्समूलर महोदयेन,
(B) विन्टरनित्जमहोदयेन
(C) सर विलियमजोन्स महोदयेन
(D) वेबर महोदयेन

व्याख्या- सर विलियम जोन्स ने 1786 ई० में संस्कृत भाषा का अध्ययन करते समय संस्कृत की लैटिन और ग्रीक से अनेक अंशों में समानता प्राप्त की और इनके तुलनात्मक अध्ययन पर बल दिया। इस प्रकार संस्कृत भाषा तुलनात्मक भाषा-विज्ञान की मूल बनी। सर विलियम जोन्स द्वारा डाली हुई नींव ही आज विकसित, पुष्पित और पल्लवित होकर भाषाविज्ञान के रूप में प्रसिद्ध है। इस प्रकार सर विलियम जोन्स ने ही सर्वप्रथम संस्कृत और यूरोपीय भाषाओं के परस्पर सम्बन्ध के रहस्य का उद्घाटन किया। सर विलियम जोन्स हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस थे। इन्होंने 1786 ई० में 'रॉयल एशियाटिक सोसाइटी' की स्थापना की थी। इसके उद्घाटन भाषण में इन्होंने संस्कृतभाषा का महत्त्व बताते हुए कहा था कि ''यह ग्रीक से अधिक पूर्ण, लैटिन से अधिक विस्तृत एवं दोनों से अधिक परिष्कृत है। ग्रीक और इसकी आश्चर्यजनक समानता है।'' (Otto Jesperson: Language, p. 33.) जोन्स की इस घोषणा के फलस्वरूप पाश्चात्त्य विद्वानों का तुलनात्मक भाषाविज्ञान की ओर ध्यान आकृष्ट हुआ। सर जोन्स तुलनात्मक भाषाविज्ञान के जन्मदाता के रूप में विख्यात हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है, कि **विकल्प C सही है।**

स्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 4

44. बान्तू परिवारः कस्य खण्डस्य भाषापरिवारोऽस्ति?

(A) यूरेशियाखण्डस्य
(B) अफ्रीकाखण्डस्य
(C) प्रशान्तमहासागरीयखण्डस्य
(D) अमेरिकाखण्डस्य

व्याख्या-

विश्व भाषाओं के पारिवारिक वर्गीकरण के अनुसार 18 भेद बताये गये हैं। इन 18 भाषापरिवारों को चार भूखण्डों के अन्तर्गत रखा गया है-

1- यूरेशिया (यूरोप-एशिया) भूखण्डः- यूरेशिया भूखण्ड के अन्तर्गत 10 (दस) भाषा परिवारों को रखा है।

1. भारोपीय (भारत-यूरोपीय परिवार 2. द्रविड़ परिवार 3. बुरुशस्की परिवार 4. काकेशी परिवार 5. यूराल-अल्ताई परिवार 6. चीनी परिवार 7. जापानी-कोरियाई परिवार 8. अत्युत्तरी (हाइपरबोरी) परिवार 9. बास्क परिवार 10. सामी-हामी परिवार

2- अफ्रीका भूखण्ड- अफ्रीका भूखण्ड के अन्तर्गत निम्नलिखित तीन (3) परिवार आते हैं। 1. सूडानी परिवार 2. बान्तू परिवार 3. होतेन्तोत- बुशमैनी परिवार।

3- प्रशान्त महासागरीय भूखण्ड- प्रशान्त महासागरीय भूखण्ड के अन्तर्गत चार (4) भाषा परिवारों की गणना की जाती है-

(i) मलय-पोलिनेशियाई परिवार। (ii) पापुई परिवार। (iii) आस्ट्रेलियन परिवार। (iv) दक्षिण-पूर्व एशियाई परिवार।

4- अमेरिका भूखण्डः- अमेरिका भूखण्ड के अन्तर्गत केवल एक भाषा परिवार की गणना की जाती है- (1) अमेरिकी परिवार।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि 'बान्तू परिवार' अफ्रीका भूखण्ड का भाषापरिवार है। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 372

45. अर्थसङ्ग्रहे प्रत्ययस्य लिङंशेन कीदृशी भावना प्रोक्ता?

(A) शाब्दी (B) आर्थी
(C) शाब्दी आर्थी च (D) स्वर्गभावना

व्याख्या-''भावना नाम भवितुर्भवनानुकूलो भावयितुर्व्यापार विशेषः।'' सा द्विधा। शाब्दी भावना आर्थी भावना चेति। अर्थ- उत्पत्तिशील की उत्पत्ति में कारणभूत जो उत्पादयिता का मानसिक व्यापारविशेष होता है उसे भावना कहा जाता है। भावना दो प्रकार की होती है- शाब्दीभावना
(2) आर्थीभावना

➢ **शाब्दीभावनाः- तत्र पुरुषप्रवृत्त्यनुकूलो भावयितुर्व्यापार-विशेषः शाब्दीभावना। सा च लिङंशेनोच्यते।**

अर्थ- प्रयोजक के उस व्यापार विशेष को, जो प्रयोज्य पुरुष की प्रवृत्ति को उत्पन्न करने वाला होता है, शाब्दी भावना कहा जाता है। शाब्दी भावना का बोध 'लिङ्' अंश से होता है। प्रयोजक पुरुष जब 'लिङ्' अंश को सुनता है तब वह यह समझता है कि यह प्रयोजक पुरुष मुझे कर्म में प्रवृत्त करना चाहता है अतः इस प्रयोजकवृद्ध में मेरी प्रवृत्ति को उत्पन्न करने वाला व्यापार है। यही व्यापार लिङ्-वाच्य शाब्दी भावना है, क्योंकि नियमतः जिस शब्द से जिस अर्थ का बोध होता है वह अर्थ उसी शब्द का वाच्य होता है, जैसे- 'गामानय' यहाँ 'गो' शब्द का अर्थ 'गोत्व' इसीलिए होता है।

➢ **आर्थीभावना- ''प्रयोजनेच्छाजनितक्रियाविषयव्यापार आर्थीभावना''। सा च आख्यातत्वांशेनोच्यते।**

अर्थ- स्वर्ग आदि प्रयोजन को लक्ष्य करके याग आदि क्रिया को अनुष्ठित करने का पुरुष में जो मानसिक व्यापार (कर्म) उत्पन्न होता है उसे आर्थीभावना कहते हैं। आर्थीभावना आख्यातत्व अंश का वाच्य होती है, क्योंकि आख्यातसामान्य व्यापार अर्थात् क्रिया का वाचक होता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि लिङ् अंश के द्वारा शाब्दीभावना कही जाती है, जबकि आख्यात अंश के द्वारा आर्थीभावना। **अतः विकल्प A सही है।**

स्रोत- अर्थसंग्रह - राजेश्वरशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज 30

46. अर्थसंग्रहानुसारं 'शब्दसामर्थ्यम्' इत्यनेन कतमं प्रमाणं लक्षितम्?

(A) श्रुतिः (B) प्रकरणम्
(C) लिङ्गम् (D) वाक्यम्

व्याख्या- जैमिनिकृत मीमांसादर्शन का प्रकरण ग्रन्थ अर्थसंग्रह है जिसके प्रणेता लौगाक्षिभास्कर हैं। 'अथातो धर्मजिज्ञासा' से प्रारम्भ होता हुआ भावना आदि को बताते हैं तत्पश्चात् चार विधियाँ उत्पत्ति विधि, विनियोगविधि, प्रयोगविधि और अधिकारविधि, को बताते हैं। विनियोगविधि के अन्तर्गत छह प्रमाण हैं- श्रुति, लिङ्ग, वाक्य, प्रकरण, स्थान और सामाख्या श्रुति की चर्चा करते हुए कहते हैं कि-

➢ **श्रुतिः- तत्र निरपेक्षो रवः श्रुतिः। सा च त्रिविधा- विधात्री, अभिधात्री विनियोक्त्री च।**

प्रमाणान्तर की अपेक्षा किये बिना जो शब्द पदार्थ के विनियोग में समर्थ होता है उस शब्द को 'श्रुति' कहते हैं।

श्रुति के तीन भेद हैं-

विधान करने वाली - विधात्री
अभिधान करने वाली - अभिधात्री
विनियोग करने वाली - विनियोक्त्री

- ➢ **लिङ्ग-** शब्दसामर्थ्यं लिङ्गम् - शब्दसामर्थ्य को ही लिङ्ग कहते हैं।
- ➢ **वाक्य-** समभिव्याहारो वाक्यम्- समभिव्याहार अर्थात् सहोच्चारण को वाक्य कहते हैं।
- ➢ **प्रकरण-** उभयाकाङ्क्षा प्रकरणम्। दो वाक्यों की परस्पर आकाङ्क्षा को प्रकरण कहते हैं।
- ➢ **स्थान-** देशसामान्यं स्थानम्। देश की समानता को स्थान कहते हैं।
- ➢ **समाख्या-** समाख्या यौगिकः शब्दः। यौगिक शब्दों को समाख्या कहते हैं। समाख्या के दो भेद- वैदिकी समाख्या, लौकिकी समाख्या

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'शब्दसामर्थ्यं लिङ्गम्'। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- अर्थसंग्रह - राजेश्वरशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज 121

47. तर्कसङ्ग्रहदीपिकानुसारं स्पर्शानुमेयः कः पदार्थ?

(A) आकाशम् (B) मनः
(C) आत्मा (D) वायुः

व्याख्या- अन्नंभट्ट विरचित तर्कसंग्रह अत्यन्त लोकप्रिय रचना है जो प्रारंभिक स्तर पर न्याय-वैशेषिक दर्शन की मूल अवधारणाओं से परिचित कराती है। इनके द्वारा रचित तर्कसंग्रह की स्वोपज्ञ टीका तर्कसंग्रहदीपिका है जिसे न्याय-वैशेषिक दर्शन का अग्रिम सोपान माना जा सकता है।

* द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय तथा अभाव ये सात पदार्थ तर्कसंग्रह के प्रतिपाद्य विषय हैं। तर्कसंग्रहदीपिका में तर्कसंग्रह के प्रतिपाद्य विषय का विश्लेषण करते हुए न्याय तथा वैशेषिक दर्शनों के अन्य उपयोगी विषयों का भी प्रतिपादन किया गया है। तर्कसंग्रहदीपिका में अन्नंभट्ट ने पृथ्वी, जल, वायु,

आकाश, आदि नौ द्रव्यों का लक्षण बताया है। वायु का लक्षण बताते हुए कहते हैं-

वायुः- वायुं लक्षयति रूपरहितेति। आकाशादावतिव्याप्ति-वारणाय स्पर्शवानिति। पृथिव्यादावतिव्यप्तिवारणाय रूपरहितेति। स्पर्शानुमेयो वायुः। रूपरहित आदि से वायु का लक्षण करते हैं। आकाशादि में अतिव्याप्ति को रोकने के लिए 'स्पर्शवान्' कहा। पृथिवी आदि में अतिव्याप्ति को रोकने के लिए 'रूपरहित' कहा है। वायु का स्पर्श से अनुमान होता है। (स्पर्शानुमेयो वायुः)।

आकाशः- शब्दगुणकमिति। नन्वाकाशमपि किं पृथिव्यादिवन्नाना नेत्याह- तच्चैकमिति।

अर्थ- आकाश का लक्षण करते हुए कहते हैं- शब्द गुण वाला द्रव्य आकाश है। पृथिवी आदि के समान क्या आकाश भी अनेक (भेद वाला) है? नहीं वह एक ही है, क्योंकि भेद में प्रमाण का अभाव है।

मनः- मन का लक्षण करते हुए तर्कसंग्रहदीपिका में कहा गया है- ''स्पर्शरहित होते हुए क्रिया वाला होना मन का लक्षण है। (स्पर्शरहितत्वे सति क्रियावत्त्वं मनसो लक्षणम्)। मन का विभाजन करते हुए कहते हैं- एक-एक आत्मा का एक-एक मन होने से आत्मा के अनेक होने के कारण मन भी अनेक हैं। (एकैकस्यात्मन एकैकं मन आवश्यकम् इत्यात्मनोऽनैकत्वान्मनसोऽप्यनेकत्वमित्यर्थः)

आत्मा- ज्ञानाधिकरणमात्मा। स द्विविधः जीवात्मा परमात्मा चेति। अर्थः- जो द्रव्य ज्ञान का अधिकरण है वह आत्मा है। वह दो प्रकार का है-(1) जीवात्मा तथा (2) परमात्मा। उनमें परमात्मा ईश्वर है, सर्वज्ञ है तथा एक ही है। जीवात्मा प्रतिशरीर भिन्न, सर्वव्यापक तथा नित्य है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि तर्कसंग्रहदीपिका के अनुसार स्पर्शानुमेय पदार्थ वायु है। **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत- तर्कसंग्रह - गोविन्दाचार्य, पेज 89

48. तर्कसङ्ग्रहानुसारम् आत्मनो विशेषगुणः कः?

(A) वेगसंस्कारः (B) स्थितिस्थापकः संस्कारः

(C) प्रत्यत्नः (D) शब्दः

व्याख्या- तर्कसंग्रह अन्नंभट्ट विरचित लोकप्रिय ग्रन्थ है। जो प्रारंभिक स्तर पर न्यायवैशेषिक दर्शन की मूल अवधारणाओं से परिचय कराती है। द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय तथा अभाव ये सात पदार्थ तर्कसंग्रह के प्रतिपाद्य विषय हैं। तर्कसंग्रह में इनका संक्षिप्त विवेचन किया गया है।

तर्कसंग्रह में आत्मा के गुणों का विवेचन करते हुए कहते हैं- **''बुद्ध्यादयोऽष्टावात्ममात्रविशेषगुणाः। बुद्धीच्छाप्रयत्ना द्विविधाः नित्या अनित्याश्च। नित्या ईश्वरस्य अनित्या जीवस्य।''**

अर्थः- बुद्धि आदि आठ गुण केवल आत्मा में रहने वाले विशेष गुण हैं। बुद्धि, इच्छा तथा प्रयत्न दो प्रकार के होते हैं- (1) नित्य तथा (2) अनित्य। नित्य ईश्वर के तथा अनित्य जीव के होते हैं। तर्कसंग्रह में गुणों को दो वर्गों में विभाजित किया गया है- (i) सामान्य तथा (ii) विशेष गुण।

सामान्य गुणः- संख्या, परिमाण, पृथक्त्व, संयोग, विभाग, परत्व, अपरत्व, (नैमित्तिक) असांसिद्धिक द्रवत्व, गुरुत्व, स्थितिस्थापक तथा वेग ये सामान्य गुण हैं।

विशेष गुणः- बुद्धि, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, यत्न, रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, स्नेह, सांसिद्धिक द्रवत्व, धर्म तथा अधर्म (अदृष्ट), भावना नामक संस्कार तथा शब्द ये विशेष गुण हैं। इन विशेष गुणों में से बुद्धि, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, धर्म तथा अधर्म ये आठ गुण दूसरे वर्ग में आते हैं और केवल आत्मा में रहते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि दिये गये विकल्पों में 'शब्द' आत्मा का विशेष गुण है। **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत- तर्कसंग्रह - गोविन्दाचार्य, पेज 266

49. तर्कभाषानुसारम् आत्मा कीदृशः?

(A) सर्वस्मिन् एकोऽणुश्च

(B) विभुरनित्यश्च

(C) देहेन्द्रियाद्यनतिरिक्तः

(D) प्रतिशरीरं भिन्नो विभुर्नित्यश्च

व्याख्या- न्यायदर्शन के प्रकरण ग्रन्थ तर्कभाषा में आचार्य केशव मिश्र ने प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द इन चार प्रमाणों का विवेचन करने के बाद द्वादश प्रमेयों का वर्णन करते हैं- 'आत्मशरीरेन्द्रियार्थबुद्धिमनःप्रवृत्तिदोषप्रेत्यभावफलदुःखापवर्गास्तु प्रमेयम्' इति सूत्रम्।

1- आत्मा, 2- शरीर, 3- इन्द्रिय, 4- अर्थ, 5- बुद्धि, 6- मन, 7- प्रवृत्ति, 8- दोष, 9- प्रेत्यभाव, 10- फल, 11- दुःख और 12- अपवर्ग ये 12 प्रमेय हैं। इन 12 प्रमेयों में प्रथम प्रमेय आत्मा की परिभाषा करते हुए केशव मिश्र कहते हैं-

आत्मा- ''आत्मत्वसामान्यवानात्मा। स च देहेन्द्रियादिव्यतिरिक्तः प्रतिशरीरं भिन्नो विभुर्नित्यश्च। स च मानसप्रत्यक्षः।''

अर्थः- 'आत्मत्व' सामान्य (जाति) जिसमें रहता है वह आत्मा (कहलाता) है। वह देह, इन्द्रिय आदि से पृथक् है। प्रत्येक शरीर में अलग-अलग, नित्य और विभु (व्यापक) है। और यह मानस प्रत्यक्ष का विषय है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि आत्मा 'प्रतिशरीरं भिन्नो विभुर्नित्यश्च'। **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत- तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज 175

50. साध्यशून्यो यत्र पक्षः सः कीदृशो हेत्वाभासः?
(A) बाधः (B) आश्रयासिद्धः
(C) असाधारणोऽनैकान्तिकः (D) विरुद्धः

व्याख्या- श्रीविश्वनाथपञ्चाननभट्टाचार्य प्रणीत न्यायसिद्धान्तमुक्तावली में हेत्वाभास की चर्चा की गई है-

अनैकान्तो विरुद्धश्चाप्यसिद्धः प्रतिपक्षितः।
कालात्ययापदिष्टश्च हेत्वाभासास्तु पञ्चधा।।

अनैकान्त, विरुद्ध, असिद्ध, प्रतिपक्षित एवं कालात्ययापदिष्ट- इस प्रकार हेत्वाभास पाँच प्रकार के होते हैं।

आद्यः साधारणस्तु स्यादसाधारणकोऽपरः।
तथैवानुपसंहारी त्रिधाऽनैकान्तिको भवेत्।।

पहला साधारण, दूसरा असाधारण, तीसरा अनुपसंहारी भेद से अनैकान्तिक हेत्वाभास तीन प्रकार का होता है।

असाधारण अनैकान्तिक- यस्तूभयस्माद् व्यावृत्तः स चासाधारणो मतः। जो दोनों (सपक्ष एवं विपक्ष) से अलग रहे, वह हेतु 'असाधारण' माना जाता है।

विरुद्ध हेत्वाभास- यः साध्यवति नैवाऽस्ति स विरुद्ध उदाहृतः। जो साध्य के अधिकरण में नहीं है, वैसा हेतु विरुद्ध कहलाता है।

आश्रयासिद्ध- पक्षासिद्धिर्यत्र पक्षो भवेन्मणिमयो गिरिः। पक्षासिद्धि वहाँ होती है जहाँ मणिमय गिरि पक्ष होता है। ह्रदो द्रव्यं धूमवत्वात् में दूसरी असिद्धि होती है।

बाध- **साध्यशून्यो यत्र पक्षस्त्वसौ बाध उदाहृतः।**
उत्पत्तिकालीनघटे गन्धादिर्यत्र साध्यते।।

जहाँ पक्ष साध्य से शून्य होता है, वह बाध कहलाता है, जहाँ उत्पत्तिकालीन घट में गन्ध आदि साधित किया जाता है।

नोट- बाध को ही कालात्ययापदिष्ट हेत्वाभास भी कहते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'साध्यशून्यो यत्र पक्षः' यह बाध हेत्वाभास का लक्षण है। **अतः विकल्प A सही है।**

स्रोत- न्यायसिद्धान्तमुक्तावली (का. 78) (अनुमानोपमानखण्ड)-गजानन शास्त्री मुसलगाँवकर, पेज 71

51. तर्कभाषारीत्या समवायस्य प्रत्यक्षग्राह्यत्वे इन्द्रियार्थसन्निकर्षः कः?
(A) संयोगः
(B) संयुक्तसमवायः
(C) विशेषण- विशेष्यभावः
(D) संयुक्तसमवेतसमवायः

व्याख्या- आचार्य केशव मिश्र प्रणीत तर्कभाषा में प्रत्यक्ष प्रमाण को परिभाषित करते हैं इसी क्रम में षोढा सन्निकर्ष का लक्षण करते हैं। षोढा सन्निकर्ष की संख्या छः है-

(1) संयोग सन्निकर्ष- तत्र यदा चक्षुषा घटविषयं ज्ञानं जन्यते तदा चक्षुरिन्द्रियं घटोऽर्थः। अनयोः सन्निकर्षः संयोग एव। जब चक्षु द्वारा घट आदि विषय का ज्ञान होता है। तब चक्षु इन्द्रिय घट विषय है। इन दोनों का सन्निकर्ष संयोग ही है।

उदा॰ (1) चक्षुषा घटविषयं ज्ञानं जन्यते – चक्षु से घट का ज्ञान।
(2) मनसाऽन्तरिन्द्रियेण यदात्मविषयकज्ञानं जन्यते। मन से आत्मा का ज्ञान।

(2) सयुक्तसमवायसन्निकर्ष- यदा चक्षुरादिना घटगतरूपादिकं गृह्यते, घटे श्यामं रूपमस्तीति, तदा चक्षुरिन्द्रियं, घटरूपमर्थः अनयोः सन्निकर्षः सयुक्तसमवाय एव।
जब चक्षु आदि से घट में रहने वाले रूप आदि का ग्रहण होता है कि 'घट' श्याम रूप है, तब चक्षु इन्द्रिय है, घट का रूप विषय है इन दोनों का सन्निकर्ष संयुक्त समवाय ही है।
उदा॰- (1) चक्षु से घट रूप का ज्ञान, (2) मन से आत्मा में समेवत सुखादि का ज्ञान।

(3) संयुक्त समवेतसमवाय सन्निकर्ष- 'यदा पुनश्चक्षुषा घटरूपसमवेतं रूपत्वादिसामान्यं गृह्यते, तदा चक्षुरिन्द्रिय रूपत्वादिसामान्यमर्थः अनयोः सन्निकर्षः सयुक्तं समवेतसमवाय एव।'
जब चक्षु के द्वारा घट के रूप में समवेत रूपत्व आदि सामान्य का ग्रहण होता है तब चक्षु इन्द्रिय है इन दोनों का सन्निकर्ष संयुक्त समवेतसमवाय ही है।
उदा॰- चक्षु से घटरूप में समवेत रूपत्व का ज्ञान

(4) समवायः सन्निकर्ष- ''यदा श्रोत्रेन्द्रियेण शब्दो गृह्यते तदा श्रोत्रमिन्द्रियं शब्दोऽर्थः अनयोः सन्निकर्षः समवाय एव।
जब श्रोत्रेन्द्रिय शब्द से ग्रहण होता है तब श्रोत्र इन्द्रिय है, शब्द अर्थ है इन दोनों का सन्निकर्ष समवाय ही है।
उदा॰- श्रोत्रेन्द्रिय से शब्द का ग्रहण

(5) समवेतसमवायसन्निकर्षः- 'यदा पुनः शब्दसमवेतं शब्दत्वादिकं सामान्यं श्रोत्रेन्द्रियेण गृह्यते तदा श्रोत्रेन्द्रियं, शब्दत्वादि सामान्यमर्थः। अनयोः, सन्निकर्षः समवेत समवाय एव।
जब शब्द में समवेत शब्दत्व आदि जाति का श्रोत्र इन्द्रिय से ग्रहण किया जाता है तब श्रोत्र इन्द्रिय है, शब्दत्व जाति विषय है, इन दोनों का सन्निकर्ष समवेत समवाय है।
उदा॰- श्रोत्र इन्द्रिय से शब्द में समवेत शब्दत्व का ज्ञान।

(6) विशेषण विशेष्यभाव सन्निकर्षः- ''यदा चक्षुषा संयुक्ते भूतले घटाभावो गृह्यते'' इह भूतले घटो नास्ति इति तदा विशेष्य विशेषणभावः सम्बन्धः।

जब चक्षु से संयुक्त भूमि पर 'यहाँ भूतल पर घट नहीं है' इस प्रकार भूतल पर घट का अभाव का ग्रहण होता है तब विशेष्य विशेषण भाव सन्निकर्ष हुआ करता है।

उदा॰- चक्षु से संयुक्त भूतल में घटाभाव का ग्रहण

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि समवाय का प्रत्यक्ष ग्रहण संयुक्तसमवायसन्निकर्ष द्वारा होता है। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज 64

52. वेदान्तसारानुसारं 'सगुणब्रह्मविषयमानसव्यापाररूपाणि' कर्माणि निम्नलिखितेषु कानि भवन्ति?

(A) काम्यकर्माणि (B) नित्यकर्माणि
(C) उपासनाकर्माणि (D) साध्यकर्माणि

व्याख्या- आचार्य सदानन्द योगीन्द्र द्वारा प्रणीत वेदान्तदर्शन का प्रकरण ग्रन्थ वेदान्तसार है। वेदान्तसार के प्रारम्भ में मङ्गलाचरण, अनुबन्ध चतुष्टय के अन्तर्गत कर्मों को बताया गया है, उसी का विस्तारपूर्वक उल्लेख किया है-

1- काम्य कर्म- काम्यानि स्वर्गादीष्टसाधनानि ज्योतिष्टोमादीनि। स्वर्ग आदि कामनाओं के साधनस्वरूप ज्योतिष्टोमयाग आदि काम्यकर्म हैं।

2- निषिद्ध कर्म- निषिद्धानि नरकाद्यनिष्टसाधनानि ब्राह्मणहननादीनि।

नरक आदि अनिष्ट के साधनरूप ब्राह्मणहनन आदि निषिद्ध कर्म हैं।

3- नित्यकर्म- नित्यान्यकरणे प्रत्यवायसाधनानि सन्ध्यावन्दनादीनि। जिनके न करने पर पाप होता हो वे सन्ध्यावन्दन आदि नित्यकर्म हैं।

4- नैमित्तिक कर्म- नैमित्तिकानि पुत्रजन्माद्यनुबन्धीनि जातेष्ट्यादीनि। पुत्रजन्म के अवसर पर किए जाने वाले जातेष्टियज्ञ आदि नैमित्तिककर्म हैं।

5- प्रायश्चित्त कर्म- प्रायश्चित्तानि पापक्षयसाधनानि चान्द्रायणादीनि। पाप के प्रक्षालन हेतु किये जाने वाले चान्द्रायणव्रत आदि प्रायश्चित्त कर्म हैं।

6- उपासना कर्म- उपासनानि सगुणब्रह्मविषयमानसव्यापाररूपाणि शाण्डिल्यविद्यादीनि।

मन की वृत्ति को स्थिर करने के लिए सगुण ब्रह्मविषयक मानसिकव्यापाररूप शाण्डिल्यविद्या आदि उपासना कर्म हैं।

*** एतेषां नित्यादीनां बुद्धिशुद्धिः परं प्रयोजनमुपासनानां तु चित्तैकाग्र्यम्।**

इन कर्मों में नित्य आदि कर्मों के अनुष्ठान का मुख्यप्रयोजन बुद्धि की शुद्धि करना है जबकि उपासनाकर्मों का परमप्रयोजन चित्त को एकाग्र करना है।

नित्यनैमित्तिकप्रायश्चित्तोपासनानां त्ववान्तरफलं पितृलोकसत्यलोकप्राप्तिः ''कर्मणा पितृलोको विद्यया देवलोक'' इत्यादि-श्रुतेः।

नित्य, नैमित्तिक, प्रायश्चित्त एवं उपासना कर्मों का गौणफल तो पितृलोक एवं सत्यलोक की प्राप्ति ही है। ''कर्म द्वारा पितृलोक एवं विद्या द्वारा सत्यलोक की प्राप्ति होती है'' इत्यादि श्रुतिवचन भी है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'सगुणब्रह्मविषयमानसव्यापार-' उपासना कर्म का लक्षण है।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव्य, पेज 14

53. 'जीवब्रह्मैक्यं शुद्धचैतन्यं प्रमेयम् इत्ययम् अनुबन्धः कतमः?

(A) अधिकारी (B) विषयः
(C) सम्बन्धः (D) प्रयोजनम्

व्याख्या- सदानन्द प्रणीत वेदान्तसार में अनुबन्धों की संख्या चार है- **अधिकारी- अधिकारी तु विधिवदधीतवेदवेदाङ्गत्वेनापात- तोऽधिगत ..... साधनचतुष्टयसम्पन्नः प्रमाता'** अर्थात् जिसने इस जन्म में अथवा अन्य जन्म में वेद और वेदाङ्गों का विधिपूर्वक अध्ययन करके... साधनचतुष्टय से सम्पन्न प्रमाता पुरुष अधिकारी है।

विषय- 'विषयो जीवब्रह्मैक्यं शुद्धचैतन्यं प्रमेयं तत्रैव वेदान्तानां तात्पर्यात्'। जीव और ब्रह्म की एकता अर्थात् अभेद जो शुद्धचैतन्यरूप है और इस शास्त्र का प्रमेय है, समस्त वेदान्तवाक्यों का तात्पर्य जीव और ब्रह्म की आत्यन्तिक एकता ही है।

सम्बन्ध- 'सम्बन्धस्तु तदैक्यप्रमेयस्य तत्प्रतिपादकोपनिषत्प्रमाणस्य च बोध्यबोधकभावलक्षणः'। अर्थात् जीव और ब्रह्म की एकता रूप प्रमेय का और उसका प्रतिपादन करने वाले उपनिषद् रूपी प्रमाण का परस्पर बोध्य बोधक भाव ही इस शास्त्र का सम्बन्ध है।

प्रयोजन- 'प्रयोजनं तु तदैक्यप्रमेयगताज्ञाननिवृत्तिः स्वस्वरूपानन्दा-वाप्तिश्च'। जीव और ब्रह्म की एकता रूप प्रमेय के सम्बन्ध में जो अज्ञान है उसकी निवृत्ति होना और अपने वास्तविक स्वरूप आनन्द की प्राप्ति होना वेदान्त का प्रयोजन है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि 'जीवब्रह्मैक्यं शुद्धचैतन्यं प्रमेयम्' विषयानुबन्ध का लक्षण है।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव्य, पेज 30

54. समष्ट्यज्ञानोपहितं चैतन्यं किं भवति?

(A) जीवः (B) ईश्वरः
(C) ब्रह्म (D) प्राज्ञः

व्याख्या- सदानन्द योगीन्द्र ने वेदान्तसार में अज्ञान का निरूपण करते हुए यह बतलाया है कि अज्ञान एक होने पर भी श्रुति आदि में समष्टि के अभिप्राय से एक और व्यष्टि के अभिप्राय से अनेक कहा जाता है। **(इदमज्ञानं समष्टिव्यष्ट्यिभिप्रायेणैकमने- कमिति च व्यवह्रियते।)**

इनमें से जो समष्टिरूप अज्ञान है वह विशुद्धसत्त्वप्रधान है। अज्ञान की इस समष्टिरूप उपाधि से उपहित चैतन्य को सर्वज्ञता, सर्वेश्वरता, सर्वनियन्तृता आदि से सम्पन्न अव्यक्त, अन्तर्यामी, जगत् का कारण तथा ईश्वर भी कहा जाता है। समस्त अज्ञानों का वह अवभासक है क्योंकि 'यः सर्वज्ञः सर्ववित्' ऐसी श्रुति प्राप्त होती है। **(इयं समष्टिरुत्कृष्टोपाधितया विशुद्धसत्त्वप्रधाना। एतदुपहितं चैतन्यं सर्वज्ञत्वसर्वेश्वरत्वसर्वनियन्तृत्वादिगुणकम-व्यक्तमन्तर्यामी जगत्कारणमीश्वर इति च व्यपदिश्यते, सकलाज्ञानावभासकत्वात्।)**

अद्वैत के अनुसार एकमात्र ब्रह्म ही सत्य है, जीव तथा ईश्वर दोनों ही कल्पित हैं। कल्पित का तात्पर्य उपाधि के भेद से अज्ञान द्वारा कल्पित से है। जैसे स्वच्छ स्फटिक गुलाब के फूल के अत्यन्त पास रखा रहने पर लाल दिखाई देता है, ठीक उसी प्रकार शुद्ध ब्रह्म ही विविध उपाधिवश ईश्वर के रूप में तथा जीव के रूप में जाना जाता है।

जो व्यष्टिरूप अज्ञान है वह निकृष्टोपाधि होने के कारण मलिनसत्त्वप्रधान है। इस अज्ञानव्यष्टि से उपहित (ढँका हुआ) चैतन्य (जो कि जीव है) अल्पज्ञत्व, अनीश्वरत्वादि गुणों से युक्त होने से 'प्राज्ञ' कहलाता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि समष्ट्यज्ञान से उपहित चैतन्य 'ईश्वर' कहलाता है। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव्य, पेज 42

55. 'अतत्त्वतोऽन्यथाप्रथा' किमुच्यते?

(A) विकारः (B) विवर्तः
(C) शब्दः (D) अनुपहितचैतन्यम्

व्याख्या- महर्षि बादरायण द्वारा प्रणीत वेदान्तदर्शन का प्रकरणग्रन्थ सदानन्द योगीन्द्र द्वारा रचित वेदान्तसार है। इसमें अध्यारोप विषयक सिद्धान्त का विस्तृत विवेचन एवं अद्वैत का प्रतिपादन करने के पश्चात् ग्रन्थकार इसी के द्वितीय पक्ष 'अपवाद' को स्पष्ट करते हैं।

''सतत्त्वतोऽन्यथाप्रथा विकार इत्युदीरितः।
अतत्त्वतोऽन्यथाप्रथा विवर्त्त इत्युदाहृतः''।।49।।

'अपने मूलरूप का परित्याग करके अन्यरूप को ग्रहण करना ही 'विकार' इसप्रकार कहा गया है।
जैसे- दूध का दही रूप में परिवर्तित हो जाना।
* अपने रूप को बिना छोड़े अन्य वस्तु की मिथ्या प्रतीति 'विवर्त' कहलाता है। जैसे- रज्जु का सर्प रूप में प्रतीत होना।

शब्द- शब्द का तत्त्व आकाश है तमोगुण की प्रधानता से युक्त और विक्षेपशक्ति सम्पन्न अज्ञान से उपहित चैतन्य से आकाश उत्पन्न होता है।

अनुपहित चैतन्य- अज्ञान से उपहित चैतन्य ईश्वर और प्राज्ञ का आधारभूत जो अनुपहित चैतन्य होता है इसको तुरीय (चतुर्थ) कहा जाता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'अतत्त्वतोऽन्यथाप्रथा विवर्त इत्युदाहृतः।' यह विवर्त का लक्षण है।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव्य, पेज 115

56. 'ब्रह्मसूत्रम्' इत्यस्य ग्रन्थस्य रचयिता कोऽस्ति?

(A) बादरायणः (B) पाराशरः
(C) शङ्कराचार्यः (D) जैमिनिः

व्याख्या-

बादरायणः- आचार्य बादरायण का समय 400 ई.पू. के लगभग निर्धारित किया जाता है। इन्होंने अपने ग्रन्थ 'ब्रह्मसूत्र' में वेदान्त दर्शन के सिद्धान्तों को व्यवस्थित रूप प्रदान किया। इस दृष्टि से इन्हें वेदान्तदर्शन का संस्थापक अथवा प्रणेता आचार्य भी कहा जाता है। भारतीय परम्परा महर्षि बादरायण तथा महर्षि पराशर के पुत्र कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास को एक ही स्वीकार करती है। ब्रह्मसूत्र में चार अध्याय, सोलह पाद, एक सौ बानवे अधिकरणों में पाँच सौ पचपन सूत्र हैं। ब्रह्मसूत्र को ही उत्तरमीमांसा, बादरायणसूत्र, ब्रह्ममीमांसा, वेदान्तसूत्र, व्याससूत्र तथा शारीरक सूत्र के नाम से भी जाना जाता है।

आचार्य जैमिनि- आचार्य जैमिनि कृष्णद्वैपायन व्यास के सामवेदीय शिष्य थे। इन्होंने 'पूर्वमीमांसादर्शन' के प्रसिद्ध ग्रन्थ 'जैमिनिसूत्र' की संरचना की। इन्होंने सामवेद की राणायनीय नामक शाखा के जैमिनीय नामक नवम भेद की संरचना की। इसी प्रकार जैमिनीय ब्राह्मण तथा जैमिनीयोपनिषद् ब्राह्मण नामक सामवेदीय ब्राह्मण ग्रन्थों का भी इन्होंने प्रणयन किया।

इसके अलावा इन्होंने जैमिनिसूत्र, जैमिनिनिघण्टु, 'जैमिनिपुराण','ज्येष्ठमाहात्म्य' 'जैमिनिभागवत', 'जैमिनिभारत', 'जैमिनिगृह्यसूत्र' तथा 'जैमिनिस्मृति' इत्यादि ग्रन्थों की भी संरचना की। आचार्य जैमिनि द्वारा विरचित 'जैमिनिसूत्र' पूर्वमीमांसा' अथवा 'कर्ममीमांसा' नाम से भी प्रसिद्ध है।

शङ्कराचार्यः- शङ्कराचार्य को अद्वैतवाद का प्रवर्तक आचार्य माना जाता है। अद्वैतमत को शाङ्करमत या शाङ्करदर्शन भी कहते हैं। ब्रह्मसूत्र पर उपलब्ध भाष्यों में सर्वाधिक प्राचीन शाङ्करभाष्य माना जाता है। शङ्कराचार्य का जन्म केरल प्रदेश की पूर्णा नदी के तटवर्ती ग्राम कालडी में वैशाख शुक्ल 5 को 788 ई॰ में हुआ। इनके पिता का नाम शिवगुरु तथा माता का नाम सुभद्रा था। शङ्कराचार्य ने वेदान्तसूत्र पर भाष्य लिखा। इसके अलावा इन्होंने उपनिषद्भाष्य, गीताभाष्य, विष्णुसहस्रनामभाष्य, सनत्सुजातीयभाष्य, हस्तामलकभाष्य, ललितात्रिशतीभाष्य, विवेकचूडामणि, प्रबोधसुधाकर, उपदेशसाहस्री, अपरोक्षानुभूति, शतश्लोकी, दशश्लोकी, मनीषापञ्चक आदि की रचना की।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण के आधार पर स्पष्ट है कि ब्रह्मसूत्र के रचनाकार बादरायण हैं। **अतः विकल्प A सही है।**

स्रोत- वेदान्तसार - राकेश शास्त्री, भू. पेज 04

57. 'शारीरक' इति नाम्ना किं भाष्यं प्रसिद्धमस्ति?

(A) सांख्यकारिकाभाष्यम् (B) मीमांसाभाष्यम्

(C) ब्रह्मसूत्रभाष्यम् (D) उपनिषद्भाष्यम्

व्याख्या- ब्रह्मसूत्रभाष्यम्- बादरायण रचित ब्रह्मसूत्र वेदान्तदर्शन का आधार ग्रन्थ है। यह प्रस्थानत्रयी में अन्यतम है- 1. उपनिषद् 2. ब्रह्मसूत्र 3. गीता। ब्रह्मसूत्र की महत्ता के कारण अनेक आचार्यों ने अपने-अपने मतानुसार इस पर भाष्य किये जिनमें से प्रमुख भाष्यों का विवरण निम्नलिखित है-

भाष्यकार	भाष्य का नाम	मत
1. शङ्कराचार्य	शारीरकभाष्य	केवलाद्वैत
2. भास्कर	भास्करभाष्य	भेदाभेद
3. रामानुज	श्रीभाष्य	विशिष्टाद्वैत
4. मध्व	पूर्णप्रज्ञभाष्य	द्वैत
5. निम्बार्क	वेदान्तपारिजात	द्वैताद्वैत
6. श्रीकण्ठ	शैवभाष्य	शैवविशिष्टाद्वैत
7. श्रीपति	श्रीधरभाष्य	वीर शैवविशिष्टाद्वैत
8. वल्लभाचार्य	अणुभाष्य	शुद्धाद्वैत
9. विज्ञानभिक्षु	विज्ञानामृत	अविभागाद्वैत
10. बलदेव	गोविन्दभाष्य	अचिन्त्य भेदाभेद

इन सभी भाष्यों में शंकराचार्य विरचित शारीरकभाष्य की कोई तुलना नहीं है। 'शारीरक' यानी इस शीर्यमाण कुत्सित शरीर में जो विशुद्ध चेतन आत्मा है। जो कि वस्तुतः परमात्मा से अभिन्न है- उसका विशदरूप से वर्णन करने वाला व्याख्या ग्रन्थ

शीर्यते रोगादिना इति शरीरम् (शृ +ईरन्), तस्मिन् शरीरे भवः शारीरम् (शरीर+अण्, शारीरम् एव शारीरकम्

शङ्कराचार्य जी ने प्रमुख उपनिषदों पर भी महत्त्वपूर्ण भाष्य किये।

* आचार्य वाचस्पति मिश्र ने साङ्ख्यकारिका पर साङ्ख्यतत्त्वकौमुदी नामक टीका लिखी। गौडपादाचार्य द्वारा विरचित साङ्ख्यकारिका का भाष्य गौडपादभाष्य नाम से प्रसिद्ध है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि शारीरकभाष्य ब्रह्मसूत्र पर है। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- वेदान्तसार - राकेश शास्त्री, भू. पेज 04

58. 'दृष्टवदानुश्रविकः' इत्यस्मिन् सांख्यकारिकाप्रयोगे 'आनुश्रविकः' इत्यस्य पदस्य कोऽर्थः?

(A) श्रुतिः (B) स्मृतिः

(C) वेदाङ्गम् (D) पुराणम्

व्याख्या- आचार्य ईश्वरकृष्ण कृत साङ्ख्यकारिका की प्रथम कारिका में त्रिविध दुःखों की ऐकान्तिक और आत्यन्तिक निवृत्ति में दृष्ट उपायों को अनुपयोगी बताया। तत्पश्चात् द्वितीय कारिका में 'आनुश्रविक' अर्थात् वैदिक उपायों को भी दृष्ट उपायों के तुल्य बताकर उन्हें भी दुःखत्रय की ऐकान्तिक और आत्यन्तिक निवृत्ति में असमर्थ बताया-

दृष्टवदानुश्रविकः स ह्यविशुद्धिक्षयातिशययुक्तः।
तद्विपरीतः श्रेयान् व्यक्ताव्यक्तज्ञविज्ञानात्॥2॥

उपर्युक्त कारिका में आनुश्रविक पद वेद अर्थात् श्रुति के लिए आया है। 'आनुश्रविक' शब्द का निर्वचन साङ्ख्यतत्त्वकौमुदीकार आचार्य वाचस्पति मिश्र जी ने इस प्रकार किया है-

''गुरुपाठादनुश्रूयते इत्यनुश्रवो वेदः। एतदुक्तं भवति- श्रूयते एव परं न केनापि क्रियते। तत्र भव आनुश्रविकः, तत्र प्राप्तो ज्ञात इति यावत्।''

अर्थात् गुरु के द्वारा किए जाने वाले उच्चारण के अनन्तर जो सुना जाता है अर्थात् श्रवणेन्द्रिय का विषय बनता है, वह अनुश्रव अर्थात् वेद है। इसी कारण वेद को श्रुति भी कहा जाता है। इसका अभिप्राय यह है कि जो गुरुपरम्परा से केवल सुना जाता है, रामायणादि के समान किसी व्यक्ति-विशेष के द्वारा निर्मित नहीं किया गया। उसमें होने वाला, अर्थात् अनुश्रव (वेद) में प्राप्त होने वाला, अर्थात् ज्ञात होने वाला 'आनुश्रविक' है।

वेद के अन्य पर्यायवाची- श्रुति, आम्नाय, छन्द, ब्रह्म, निगम आदि

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'आनुश्रविक' पद 'श्रुति' के लिए आया है। **अतः विकल्प A सही है।**

स्रोत- सांख्यकारिका (कारिका 2)- राकेश शास्त्री, पेज 05

59. अव्यक्तं कीदृशं भवति?

(A) सक्रियम् (B) निष्क्रियम्
(C) आश्रितम् (D) सावयवम्

व्याख्या- महर्षि कपिलमुनि प्रणीत 'सांख्यदर्शन' के प्रकरणग्रन्थ महर्षि ईश्वरकृष्ण द्वारा रचित सांख्यकारिका ग्रन्थ है जिसमें व्यक्त तथा अव्यक्त के विषय में बताया गया है। प्रस्तुत विकल्प में सक्रियम्, आश्रितम्, तथा सावयवम् व्यक्त का लक्षण है अतः निष्क्रियम् अव्यक्त का लक्षण है।

हेतुमदनित्यमव्यापि सक्रियमनेकमाश्रितं लिङ्गम्।
सावयवं परतन्त्रं व्यक्तं विपरीतमव्यक्तम्॥10॥

व्यक्त	अव्यक्त
हेतुमत्	कारणरहित
अनित्यम्	नित्य
अव्यापी	व्यापक
सक्रियम्	निष्क्रियम्
अनेकम्	एकम्
आश्रितम्	अनाश्रितम्
लिङ्गम्	लिङ्गरहित
सावयवम्	निरवयव
परतन्त्त्रम्	स्वतन्त्रम्

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि निष्क्रियम् अव्यक्त का धर्म है। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- सांख्यकारिका (कारिका 10)- राकेश शास्त्री, पेज 37

60. व्यक्तस्य च प्रधानस्य च कः समानधर्मः?

(A) त्रिगुणत्वम् (B) सक्रियत्वम्
(C) हेतुमत्वम् (D) लिङ्गत्वम्

व्याख्या- कपिलमुनि प्रणीत 'सांख्यदर्शन' का प्रकरण ग्रन्थ ईश्वरकृष्ण द्वारा रचित 'सांख्यकारिका' है। जिसमें व्यक्त तथा प्रधान अर्थात् अव्यक्त के समान धर्म और दोनों के विपरीत धर्म बताये गये हैं।

'त्रिगुणमविवेकि विषयः सामान्यमचेतनं प्रसवधर्मि।
व्यक्तं तथा प्रधानं, तद्विपरीतस्तथा च पुमान्'॥ 11॥
(सा०का० 11)

व्यक्त तथा प्रधान के समान धर्म		पुरुष (विपरीत)
त्रिगुणम्	–	गुणरहितता
अविवेकि	–	विवेकित्व
विषयः	–	अविषयत्व
सामान्यम्	–	असामान्यत्व
अचेतनम्	–	चेतनत्व
प्रसवधर्मि	–	अप्रसवधर्मित्व

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि विकल्प A 'त्रिगुणत्वम्' व्यक्त तथा प्रधान दोनों का समान धर्म है इसके विपरीत सक्रियत्व, हेतुत्वम् तथा लिङ्गम् धर्म है।
अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- सांख्यकारिका (कारिका 11)- राकेश शास्त्री, पेज 38

61. सांख्यदर्शनानुसारं ''त्रैगुण्यविपर्ययात्'' किं सिध्यति?

(A) अव्यक्तस्यनित्यत्वम् (B) पुरुषबहुत्वम्
(C) व्यक्तस्यत्रिगुणात्मकत्वम् (D) अव्यक्तस्यकारणत्वम्

व्याख्या- ईश्वरकृष्ण अपनी कृति सांख्यकारिका में पुरुष की सत्ता सिद्ध करने के बाद सांख्य के महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त 'पुरुष-बहुत्व' के सिद्धान्त प्रतिपादित करने के लिए निम्न कारिका प्रस्तुत करते हैं-

''जन्ममरणकरणानां प्रतिनियमादयुगपत्प्रवृत्तेश्च
पुरुषबहुत्वं सिद्धं त्रैगुण्यविपर्ययाच्चैव''।।का.18।।

उपर्युक्त कारिका द्वारा पुरुषबहुत्व की सत्ता सिद्ध करने के लिए ग्रन्थकार ने तीन हेतु बताये हैं-

अर्थ- जन्म, मरण और इन्द्रियों की व्याख्या होने के कारण और एक साथ प्रवृत्ति का अभाव होने से तथा तीनों गुणों के भेद के कारण ही पुरुषों की अनेकता सिद्ध होती है।

जन्ममरणकरणानां- पुरुष अर्थात् आत्मा अनेक हैं, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति का जन्म और मरण अलग-अलग समय में होता है। यदि पुरुष एक होता तो सभी का एक साथ जन्म और एक साथ मरण होता किन्तु व्यवहार में ऐसा नहीं होता। इसलिए जन्म- मरण की अलग-अलग व्यवस्थाओं के कारण पुरुष की अनेकता सिद्ध होती है।

अयुगपत्प्रवृत्तेः- यदि एक ही पुरुष की सत्ता सभी शरीरों में स्वीकार की जाए तो उनकी सभी क्रियाएँ एक साथ होनी चाहिए। जैसे- एक के बैठने पर सभी बैठे, एक के चलने पर सभी शरीर चले, किन्तु व्यवहार में इस प्रकार की, एक साथ आचरण करने की प्रवृत्ति नहीं देखी जाती है। प्रत्येक शरीर की एक ही समय में अलग-अलग क्रियाएँ होती हैं। अतः पुरुष (आत्मा) एक नहीं अनेक हैं।

त्रैगुण्यविपर्ययात्- पुरुषबहुत्व को सिद्ध करने के लिए कारिका के अन्त में तृतीय तर्क का उल्लेख करते हुए ग्रन्थकार कहते हैं कि इस संसार में भिन्न-भिन्न स्वभाव वाले लोग हैं और यह स्वभाव परिवर्तन उनमें स्थित सत्व, रजस् और तमोगुण की भिन्नता अर्थात् न्यूनाधिक्य के कारण होता है। जैसे ऊर्ध्वतेजस् योगी में सत्त्वगुण की अधिकता होती है। सामान्य व्यक्ति में रजोगुण प्रभावी रहता है, किन्तु पशु-पक्षी एवं आलसी व्यक्ति में तमोगुण का बाहुल्य होता है। यदि प्रत्येक शरीर में एक पुरुष की सत्ता होती तो प्राणियों में इस प्रकार इन तीन गुणों का वैषम्य नहीं होता और वे सब एक स्वभाव वाले होंगे, किन्तु व्यवहार में ऐसा नहीं है। इसलिए प्रत्येक शरीर में भिन्न-भिन्न पुरुषों की सत्ता स्वीकार करना उचित है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि सांख्य दर्शन के अनुसार 'त्रैगुण्यविपर्ययात्' पुरुष की बहुलता सिद्ध करता है। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- सांख्यकारिका (कारिका 18)- राकेश शास्त्री, पेज 59

62. अधस्तनानां केन सह कस्य सम्बन्धः? समीचीनां तालिकां चिनुत-

(क)	मिथ्याज्ञानमतद्रूपप्रतिष्ठम्	(i)	स्वाध्यायात्
(ख)	इष्टदेवतासम्प्रयोगः	(ii)	यमाः
(ग)	अनुभूतविषयासम्प्रमोषः	(iii)	विपर्ययः
(घ)	सार्वभौमा महाव्रतम्	(iv)	स्मृतिः

Options

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(A)	(iii)	(i)	(iv)	(ii)
(B)	(i)	(iii)	(ii)	(iv)
(C)	(ii)	(i)	(iii)	(iv)
(D)	(iv)	(ii)	(i)	(iii)

व्याख्या- महर्षि पतञ्जलि योगसूत्र के प्रथमपाद समाधिपाद में प्रमाण, विपर्यय, विकल्प, निद्रा, स्मृति इन पाँच प्रकार की वृत्तियों की चर्चा करते हैं जिसमें विपर्यय और स्मृति वृत्तियों का लक्षण इस प्रकार है-

1. **विपर्यय-** विपर्ययो मिथ्याज्ञानमतद्रूपप्रतिष्ठम् (1.8)
   शेष वस्तु से भिन्न रूप में प्रतिष्ठित मिथ्याज्ञान 'विपर्यय' कहा जाता है।
2. **स्मृति-** अनुभूतविषयासम्प्रमोषः स्मृतिः (1.11)
   अनुभूतविषय की चित्त में उपस्थिति (अस्तेय) 'स्मृति' नामक वृत्ति कहलाती है।
3. **सार्वभौम महाव्रत-** जातिदेशकालसमयानवच्छिन्ना सार्वभौमा-महाव्रतम् (2.31)
   जाति, देश, काल और आचार परम्परा से सीमित न होते हुए ये सार्वभौम (यम) महाव्रत कहे जाते हैं।
4. **स्वाध्यायात्-** स्वाध्यायादिष्टदेवतासम्प्रयोगः (2.44)
   स्वाध्याय के स्थिर होने से इष्ट देवताओं का सम्पर्क होता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि **विकल्प A सही है।**

स्रोत- पातञ्जलयोगदर्शनम् - सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पेज 36-45

63. ''यथा मधुकरराजं मक्षिका उत्पतन्तमनूत्पतन्ति, निविशमानमनुनिविशन्ते तथेन्द्रियाणि चित्तनिरोधे निरुद्धानीत्येषः...।''
एषा व्याख्या कस्य योगाङ्गस्य, व्यासभाष्यानुसारेण?

(A) प्रत्याहारस्य (B) धारणायाः
(C) ध्यानस्य (D) ब्रह्मचर्यस्य

व्याख्या- महर्षि पतञ्जलि योगसूत्र के द्वितीयपाद साधनपाद में योग के आठ अङ्गों की चर्चा करते हैं-

*** अष्टाङ्गयोग- ''यमनियमाऽऽसन प्राणायाम प्रत्याहार-धारणा ध्यान समाधयोऽष्टावङ्गानि'' (2.29)**

यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि- ये आठ योग के अङ्ग हैं।

यम नियमादि की व्यवस्था के बाद यथावसर 'प्रत्याहार योगाङ्ग की चर्चा करते हैं-

*** प्रत्याहार- स्वविषयासम्प्रयोगे चित्तस्वरूपानुकार इवेन्द्रियाणां प्रत्याहारः** (2।54)

अपने विषयों के साथ सन्निकर्ष न होने पर इन्द्रियों का चित्त के स्वरूप का अनुसरण सा कर लेना 'प्रत्याहार' है। इस सूत्र की व्याख्या में व्यासभाष्य में भाष्यकार लिखते हैं-

''यथा मधुकरराजं मक्षिका उत्पतन्तम् अनूत्पतन्ति, निविशमानमनुनिविशन्ते तथेन्द्रियाणि चित्तनिरोधे निरुद्धानीत्येषः प्रत्याहारः''

जैसे- मधुमक्खियाँ उड़ते हुए मधुमक्खियों के राजा के पीछे उड़ जाती हैं और बैठते हुए उस मधुमक्खियों के राजा के पीछे बैठ जाती हैं, वैसे ही इन्द्रियाँ भी चित्त का निरोध होने पर निरुद्ध हो जाती है। यही 'प्रत्याहार' है।

*** धारणा- देशबन्धचित्तस्य धारणा (3/1)**

चित्त का सात्विक वृत्ति को किसी बाहरी या भीतरी प्रदेश में लगाना 'धारणा' है।

*** ध्यान- तत्र प्रत्यैकतानता ध्यानम् (3/2)**
एक विषय में ज्ञान की एकतानता ही ध्यान है।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि प्रश्नोक्त व्यासभाष्य की पंक्तियाँ प्रत्याहार योगाङ्ग के विषय में कही गयी हैं। **अतः विकल्प A सही है।**
स्रोत- पातञ्जलयोगदर्शनम् (2/54)-सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पेज 314

64. योगदर्शनस्य व्यासभाष्यानुसारेण चित्तभूमीनां समुचितः क्रमोऽस्ति-
(A) क्षिप्तम्, विक्षिप्तम्, मूढम्, एकाग्रम्, निरुद्धम्।
(B) क्षिप्तम्, मूढम्, विक्षिप्तम्, एकाग्रम्, निरुद्धम्।
(C) विक्षिप्तम्, मूढम्, एकाग्रम्, क्षिप्तम्, निरुद्धम्।
(D) निरुद्धम्, मूढम्, विक्षिप्तम्, क्षिप्तम्, एकाग्रम्।

व्याख्या- महर्षि पतञ्जलि पातञ्जलयोगदर्शन के समाधिपाद में ''अथ योगानुशासनम्'' अब योगशास्त्र आरम्भ हुआ। इस सूत्र के व्यासभाष्य में भाष्यकार कहते हैं- अथेत्ययमधिकारार्थः.... योगः समाधिः......क्षिप्तं, मूढं, विक्षिप्तमेकाग्रं, निरुद्धमिति चित्तभूमयः।
चित्त की पाँच भूमियाँ- चित्त की पाँच भूमियाँ बतायी गयी हैं- 1. क्षिप्त 2. मूढ 3. विक्षिप्त 4. एकाग्र और 5. निरुद्ध-ये पाँच चित्त की भूमियाँ या अवस्थायें हैं।
(1) **क्षिप्तम्- रजसा विषयेष्वेव वृत्तिमत्-** रजोगुण के उद्रेक के कारण विषयों में ही व्यापृत रहने वाली चित्तकी अवस्था क्षिप्त भूमि है।
(2) **मूढम्- तमसा निद्रादिवृत्तिमत् -** तमोगुण के उद्रेक के कारण मूर्च्छादि व्यापारवान् चित्त की स्थिति मूढ भूमि कही जाती है।
(3) **विक्षिप्तम्- क्षिप्ताद्विशिष्टं विक्षिप्तं सत्त्वाधिक्येन समादधदपि चित्तं रजोमात्रयाऽन्तराऽन्तरा विषयान्तरवृत्तिमद्-** क्षिप्तादि भूमि से कुछ बेहतर या अच्छी भूमि इसमे सत्त्वगुणाधिक्य रहता है इसमें किञ्चित्कालपर्यन्त समाधि लगने पर रजोगुण के जोर मारते रहने के कारण बीच-बीच में अन्य विषयों की ओर चित्त दौड़ जाता है। चित्त की यह अवस्था इसकी 'विक्षिप्त' नामक भूमि कही जाती है।
4. एकाग्रम्- ''एकस्मिन्नेव विषयेऽग्रं शिखा यस्य चित्त दीपस्येत्येकाग्रं....''
इस अवस्था में चित्त की सात्त्विक वृत्ति किसी एक विषय की ओर लगी रहती है, रजोगुण और तमोगुण दबे रहते हैं, अतः उस एक विषय की ओर अग्र या उन्मुख वृत्ति वाली अवस्था को 'एकाग्रभूमि' कहते हैं।
5. निरुद्धम्- ''निरुद्धं च निरुद्धसकलवृत्तिकं संस्कारमात्रशेषम् इत्यर्थः'' जिस अवस्था में चित्त की तामस और राजसी वृत्तियों के साथ-साथ सात्त्विक वृत्तियों का भी निरोध हो जाता है। केवल संस्कारमात्र चित्त में रहते हैं, उसे 'निरुद्धभूमि' कहते हैं।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि चित्त की पाँच भूमियों का सही क्रम विकल्प B में उल्लिखित है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**
स्रोत- पातञ्जलयोगदर्शनम् - सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पेज 01

65. जैनदर्शनानुसारेण निम्नाङ्कितस्य सप्तभङ्गिन्यायस्य समुचितः क्रमः कोऽस्ति?
(A) स्यादस्ति च नास्ति च, स्यादवक्तव्यः, स्यादस्ति, स्यान्नास्ति, स्यादस्ति च वक्तव्यः, स्यान्नास्ति चावक्तव्यः, स्यादस्ति च नास्ति चावक्तव्यः।
(B) स्यादस्ति, स्यान्नास्ति, स्यादस्ति च नास्ति च, स्यादवक्तव्यः, स्यादस्ति चावक्तव्यः, स्यान्नास्ति चावक्तव्यः, स्यादस्ति च नास्ति चावक्तव्यम् ।
(C) स्यादस्ति च नास्ति चावक्तयः, स्यान्नास्ति चावक्तव्यः, स्यात् अस्ति, स्यादस्ति चावक्तव्यः, स्याद्वक्तव्यः, स्यादस्ति च नास्ति च, स्यान्नास्ति, स्यादस्ति।
(D) स्यादस्ति, स्याद्वक्तव्यः, स्यादस्ति चावक्तव्यः, स्यादास्ति च नास्ति च, स्यान्नास्ति चावक्तव्यः, स्यादस्ति च नास्ति चावक्तव्यः।

व्याख्या- जैनदर्शन के स्याद्वाद को 'सप्तभङ्गीनय' भी कहते हैं। ये सात भङ्ग इस प्रकार हैं-
1. स्याद् अस्ति- सापेक्षतया वस्तु है।
2. स्यात् नास्ति- सापेक्षतया वस्तु नहीं है।
3. स्याद् अस्ति च नास्ति च - सापेक्षतया वस्तु है और नहीं है।
4. स्याद् अवक्तव्यम्- सापेक्षतया वस्तु अवक्तव्य है।
5. स्याद् अस्ति च अवक्तव्यम्- सापेक्षतया वस्तु है और अवक्तव्य है।
6. स्याद् नास्ति च अवक्तव्यम्- सापेक्षतया वस्तु नहीं है और अवक्तव्य है।
7. स्याद् अस्ति च नास्ति च अवक्तव्यम्- सापेक्षतया वस्तु है, नहीं है और अवक्तव्य भी है।
* जैन दर्शन के अनुसार किसी वस्तु का ज्ञान उसके द्रव्य, रूप, देश और काल की दृष्टि से किया जाता है। वस्तु की अपने द्रव्य, रूप, देश और काल की दृष्टि से सत्ता है किन्तु अन्य द्रव्य, रूप, देश और काल की दृष्टि से सत्ता नहीं है।
ज्ञान की इस सापेक्षता के प्रकाशन के लिए प्रत्येक न्यायवाक्य के पूर्व 'स्यात्' पद का प्रयोग किया जाता है।

* प्रथम भङ्ग 'स्यात् अस्ति' को यदि घड़े के विषय में प्रयुक्त करें तो इसका अर्थ है- सापेक्षतया घड़ा है अर्थात् मिट्टी का बना हुआ, गोल आकार का घड़ा, इस कमरे में, इस समय विद्यमान है किन्तु द्वितीय भङ्ग 'स्यात् नास्ति' के अनुसार सापेक्षतया घड़ा नहीं है- अर्थात् घड़ा पीतल का नहीं है, चौकोर नहीं है, उस कमरे में नहीं है और अन्य समय में नहीं है। इस वाक्य में घड़े के अस्तित्व का निषेध है। तृतीय भङ्ग 'स्यात् अस्ति नास्ति' का अर्थ है, सापेक्षतया घड़ा है भी और नहीं भी है, अर्थात् घड़ा मिट्टी का है पीतल का नहीं है, गोल है चौकोर नहीं, इस कमरे में है उस कमरे में नहीं, इस समय है अन्य समय में नहीं। इस वाक्य में घड़े के अस्तित्व का विधान और निषेध दोनों हैं।

* चतुर्थ भङ्ग 'स्यात् अवक्तव्यम्' का अर्थ है कि वस्तु में यद्यपि अस्तित्व और नास्तित्व दोनों एक साथ विद्यमान रहते हैं तथापि भाषा की सीमा के कारण हम इन दोनों का विधान एक साथ नहीं कर सकते। यहाँ अवक्तव्यम् का अर्थ है कि युगपत् निर्वचन की अशक्यता।

* शेष तीन भङ्ग चतुर्थ भङ्ग को क्रमशः प्रथम, द्वितीय और तृतीय भङ्ग के साथ मिला देने से बनते हैं। जैन न्याय के अनुसार नय के ये सात भङ्ग या प्रकार होते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि **विकल्प B सही है।**

स्रोत- सर्वदर्शनसंग्रह - उमाशङ्कर शर्मा ऋषि, पेज 146

66. अधोलिखितानां केन सह कस्य सम्बन्धः? समीचीनां तालिकां चिनुत।

(क) माध्यमिकाः	(i) बाह्यार्थानुमेयत्वम्
(ख) योगाचाराः	(ii) सर्वशून्यत्वम्
(ग) सौत्रान्तिकाः	(iii) बाह्यार्थप्रत्यक्षत्वम्
(घ) वैभाषिकाः	(iv) बाह्यार्थशून्यत्वम्

Options

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(A)	(iii)	(i)	(ii)	(iv)
(B)	(iv)	(i)	(iii)	(ii)
(C)	(ii)	(iv)	(i)	(iii)
(D)	(i)	(iii)	(iv)	(ii)

व्याख्या- बौद्ध लोग चार प्रकार की भावना (दृष्टिकोण) से परम पुरुषार्थ का वर्णन करते हैं- 1. माध्यमिक, 2. योगाचार, 3. सौत्रान्तिक और 4. वैभाषिक

4- **माध्यमिक या शून्यवाद-** यह मत नागार्जुन (दूसरी शती ई.) से सम्बद्ध है जिनके माध्यमिक शास्त्र के अनुसार संसार असत् या शून्य है (सर्वशून्यत्वम्)। द्रष्टा, दृश्य, दर्शन सभी स्वप्न के समान भ्रम हैं। फिर भी शून्य का अभिप्राय ऐसा सत् है जो चतुष्कोटि (सत्, असत्, सदसत्, असन्नासत्) से विलक्षण, अनिर्वचनीय है। व्यावहारिक वस्तुएँ सभी शून्य या असत् हैं किन्तु उनकी पृष्ठभूमि में ऐसी सत्ता है जो अनौपाधिक और अविकृत है। माध्यमिक-कारिका में कहा गया है-

न सन्नासन्न सदसन्न चाप्यनुभयात्मकम्।
चतुष्कोटिविनिर्मुक्तं तत्त्वं माध्यमिका विदुः॥

* स्मरणीय है कि शंकराचार्य ने अनुभयात्मक के अलावा सभी को स्वीकार कर ब्रह्म की शक्ति माया को कोटित्रयशून्य कहा है जिसके फलस्वरूप उन्हें प्रच्छन्न बौद्ध की सञ्ज्ञा कुछ लोग दिया करते हैं।

योगाचार- दिङ्नाग, धर्मकीर्ति, असंग आदि आचार्य इस मत के पोषक रहे हैं। इसके अनुसार बाह्य अर्थ तो शून्य है किन्तु चित्त जो सभी वस्तुओं का ज्ञाता है, कभी भी असत् नहीं हो सकता अन्यथा हमारे ज्ञान भी असत् हो जाएँगे। इसी कारण सर्व दर्शनसङ्ग्रहकार माधवाचार्य ने इनका सिद्धान्त 'बाह्यार्थशून्यत्वं' बताया है।

सौत्रान्तिक- माध्यमिक और योगाचार सम्प्रदाय जहाँ महायान के हैं, सौत्रान्तिक और वैभाषिक हीनयान के भेद हैं। सौत्रान्तिक मतानुसार मानसिक और बाह्य दोनों पदार्थ सत् हैं यद्यपि बाह्य पदार्थों के प्रत्यक्ष के लिए विषय, चित्त, इन्द्रियाँ तथा सहायक तत्त्वों जैसे प्रकाश आकार- इन चार वस्तुओं की आवश्यकता होती है।

वैभाषिक- बाह्य वस्तुओं को अनुमेय न मानकर ये पूर्णतया प्रत्यक्षगम्य मानते हैं क्योंकि जब तक उनका प्रत्यक्ष न हो, उनकी सत्ता किसी दूसरे साधन से सिद्ध नहीं हो सकती; इसीलिए इनका सिद्धान्त 'बाह्यार्थप्रत्यक्षत्वम्' कहा जाता है। विभाषा या अभिधर्ममहाविभाषा नामक ग्रन्थ में इनके सिद्धान्त प्रतिपादित हैं इसलिए इनका 'वैभाषिक' नाम पड़ा।

माध्यमिक और योगाचार, बौद्धों के महायान सम्प्रदाय से सम्बन्धित हैं और सौत्रान्तिक तथा वैभाषिक हीनयान के भेद हैं।

स्पष्टीकरण- इस प्रकार स्पष्ट है कि-

(i) माध्यमिक- सर्वशून्यत्वम्
(ii) योगाचार - बाह्यार्थशून्यत्वम्
(iii) सौत्रान्तिक - बाह्यार्थनुमेयत्वम्
(iv) वैभाषिक - बाह्यार्थप्रत्यक्षत्वम्

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- सर्वदर्शनसंग्रह - उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज 31

67. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत-

(क)	हर्षचरितम्	(i)	शूद्रकः
(ख)	मुद्राराक्षसम्	(ii)	दण्डी
(ग)	दशकुमारचरितम्	(iii)	विशाखदत्तः
(घ)	मृच्छकटिकम्	(iv)	बाणभट्टः

Options

	(क)	**(ख)**	**(ग)**	**(घ)**
(A)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)
(B)	(iii)	(ii)	(i)	(iv)
(C)	(ii)	(iv)	(iii)	(i)
(D)	(i)	(ii)	(iv)	(iii)

व्याख्या- शूद्रक- मृच्छकटिक नाटक के लेखक के विषय में बहुत विवाद है। भारतीय और पाश्चात्य विद्वानों ने इस विषय में पर्याप्त विवेचन किया है, परन्तु अभी तक कोई निश्चित मत निर्धारित नहीं हो सका है। शूद्रक के समय के विषय में भी पर्याप्त मतभेद है- भास ने चार अंकों में 'चारुदत्त' नामक नाटक लिखा जो कि अपूर्ण माना गया। इसी में शूद्रक ने 6 अंक जोड़कर 10 अंकों का मृच्छकटिक नाटक लिखा। अतः शूद्रक भास के परवर्ती हुए। भास का समय 5वीं शताब्दी ई.पू. है अतः शूद्रक 5वीं ई.पू. के बाद हुए। इसी प्रकार वामन (775ई. के लगभग) ने शूद्रक के प्रबन्ध (नाटक) का उल्लेख किया है-

"शूद्रकादिरचितेषु प्रबन्धेष्वस्य भूयान् प्रपञ्चो दृश्यते।"

अतः स्पष्ट है कि शूद्रक का समय 750 ई. के बाद का नहीं हो सकता।

1- मृच्छकटिकम्- मृच्छकटिकम् नाटक शूद्रककृत 10 अंकों का एक प्रकरण ग्रन्थ है। इसका नायक चारुदत्त नाम का एक निर्धन ब्राह्मण तथा नायिका वसन्तसेना नाम की एक गणिका है। इसमें 'पालक' नामक राजा को मारकर आर्यक के राजा होने का वर्णन है। इसमें नाटकीयता के साथ काव्य का भी समन्वय है। इसमें शृंगार (सम्भोग शृंगार) रस अंगी है और हास्य, करुण, भय, अद्भुत आदि अंग रस हैं।

इसमें दो प्रणय कथाएँ और एक राजनीतिक कथा परस्पर संश्लिष्ट एवं अविभाज्य रूप से प्रस्तुत की गई है- (i) चारुदत्त और वसन्तसेना। (ii) शर्विलक और मदनिका की प्रणय कथा।

(2) दशकुमारचरितम्- दशकुमारचरितम् दण्डी द्वारा विरचित एक गद्यकाव्य है। इसका वर्तमान स्वरूप तीन भागों में विभाजित है- 1. पञ्च उच्छ्वासात्मक पूर्वपीठिका 2. अष्ट उच्छ्वासात्मक दशकुमारचरित और 3. उत्तरपीठिका। 10 राजकुमारों द्वारा अपने-अपने पर्यटनों, विचित्र अनुभवों तथा पराक्रमों का मनोरञ्जनात्मक वर्णन है।

(3) मुद्राराक्षसम्- विशाखदत्तरचित मुद्राराक्षस 7 अंको का राजनीति विषयक नाटक है। इसमें मुद्रा (अंगूठी) द्वारा नन्द वंश के मुख्य मंत्री राक्षस को वश में करने का वर्णन है। अतः इसका नाम मुद्राराक्षस पड़ा। विशाखदत्त ने परंपरागत राजा (चन्द्रगुप्त) को नायक न मानकर प्रधानामात्य (चाणक्य) को नायक बनाया है। मुद्राराक्षस में नायिका और विदूषक का अभाव, रक्तपात के बिना वीर रस का वर्णन, शृंगार और हास्य रस का अभाव है।

मुद्राराक्षस के अलावा विशाखदत्त के नाम से दो अन्य रचनाओं का भी उल्लेख मिलता है। 1. देवीचन्द्रगुप्तम्, 2. अभिसारिकवंचितक या अभिसारिकाबन्धितक।

(4) हर्षचरितम्- हर्षचरितम् महाकवि बाणभट्ट की प्रथम रचना है। यह ऐतिहासिक वृत्त पर आधारित होने से गद्यकाव्य का भेद आख्यायिका है। इसमें 8 उच्छ्वास हैं। प्रथम दो उच्छ्वासों में हर्ष ने अपने वंश का वर्णन किया है और आगे के 6 उच्छ्वासों में हर्ष के पूर्वजों का वर्णन करते हुए हर्ष के जन्म से लेकर राज्यश्री के मिलने तक का वर्णन है।

हर्षचरित के अतिरिक्त बाणभट्ट की दो अन्य रचनाएँ कादम्बरी (कथा) तथा चण्डीशतक (दुर्गा की स्तुति का काव्य) भी प्राप्त होती हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि दिये गये विकल्पों में **विकल्प A सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज 396, 504, 318, 491

68. अभिज्ञानशाकुन्तले शकुन्तलायाः प्रतिकूलदैवशमनार्थं कण्वः कुत्र गतः?

(A) काशीतीर्थम् (B) प्रयागतीर्थम्

(C) काञ्चीतीर्थम् (D) सोमतीर्थम्

व्याख्या- "इदानीमेव दुहितरं शकुन्तलामतिथिसत्काराय नियुज्य दैवमस्याः प्रतिकूलं शमयितुं सोमतीर्थं गतः।" जब राजा दुष्यंत हिरण का पीछा करते हुए जंगल में महर्षि कण्व के आश्रम के समीप पहुँचते हैं तो कण्व के शिष्य वैखानस से पूछते हैं कि क्या महर्षि कण्व आश्रम में हैं तो वैखानस जवाब देता है कि- अभी ही अपनी पुत्री शकुन्तला को अतिथि सत्कार के लिए नियुक्त करके उसके प्रतिकूल भाग्य को शान्त करने के लिए सोमतीर्थ को गये हुए हैं।

अभिज्ञानशाकुन्तलम् नामक नाटक में कुल सात (7) अंक हैं। इसके प्रथम अंक में यह जानकारी दी गई है कि कण्व शकुन्तला के प्रतिकूल भाग्य को शान्त करने के लिए सोमतीर्थ गये हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि प्रश्न में दिये गये चार विकल्पों में **विकल्प D सही है।**

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (प्रथमोऽङ्कः)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 31

69. ''उपपन्ना हि दारेषु प्रभुता सर्वतोमुखी'' अभिज्ञानशाकुन्तले इयमुक्तिर्भवति-

(A) मारीचस्य (B) शारद्वतस्य
(C) कण्वस्य (D) शार्ङ्गरवस्य

व्याख्या-

* कालिदासकृत अभिज्ञानशाकुन्तलम् न केवल भारतवर्ष अपितु विश्व का सर्वोत्तम नाटक रत्न है। इसमें कुल सात अङ्क हैं।
* कालिदास को भारत का शेक्सपियर भी कहा जाता है।
* अभिज्ञानशाकुन्तलम् शृंगार रस प्रधान नाटक है।
* इसका नायक दुष्यन्त धीरोदात्त प्रकृति का है।
* नायिका शकुन्तला राजर्षि विश्वामित्र और मेनका अप्सरा की पुत्री है। जन्म से परित्यक्त शकुन्तला का पालन-पोषण कण्व ऋषि ने किया है।
* अभिज्ञानशाकुन्तलम् के अन्य प्रमुख पात्रों में कण्व अथवा कश्यप ऋषि, विदूषक, अनसूया और प्रियंवदा (शकुन्तला की सहेलियाँ), शार्ङ्गरव और शारद्वत, महर्षि मारीच आदि हैं।

प्रमुख उक्तियाँ (कण्व का कथन)

(1) पीड्यन्ते गृहिणः कथं नु तनयाविश्लेषदुःखैर्नवैः-
अर्थ- गृहस्थ लोग नवीन (पहली बार) पुत्री वियोग से कितना अधिक दुःखित होते होंगे।

(2) 'सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम्-
अर्थ- वह यह शकुन्तला (सम्प्रति) अपने पतिगृह को जा रही है, तुम सब अपनी स्वीकृति दो।

(3) 'वाष्पं कुरु स्थिरतया विरतानुबन्धम्' (काश्यप)
अर्थ- नेत्रों की दर्शनशक्ति को रोकने वाले अश्रु (प्रवाह) को धैर्यपूर्वक रोको।

(4) 'मार्गे पदानि खलु ते विषमी भवन्ति'
अर्थ- इस मार्ग में तुम्हारे पैर वस्तुतः लड़खड़ा रहे हैं।

(5) 'सोऽयं न पुत्रकृतकः पदवीं मृगस्ते'-
अर्थ- पुत्र के समान पाला गया यह हरिण तुम्हारे मार्ग को नहीं छोड़ रहा है।

शार्ङ्गरव का कथन -

(1)- 'जनाकीर्णं मन्ये हुतवहपरीतं गृहमिव'-
अर्थ- लोगों (भीड़) से संकुल (युक्त) इस राजगृह को अग्नि से घिरे हुए घर के समान समझ रहा हूँ।

(2)- ''चिरस्य वाच्यं न गतः प्रजापतिः''-
अर्थ- प्रजापति चिरकाल के पश्चात् निन्दा के पात्र नहीं हुए।

(3)- ''शकुन्तला मूर्तिमती च सत्क्रिया।''-
अर्थ- और शकुन्तला शरीरधारिणी सत्क्रिया (पूजा) है।

(4)- ''किं कृतकार्यद्वेषो धर्मं प्रति विमुखता कृतावज्ञा?'' (5.18)
अर्थ- क्या आप अपने किये हुए कार्य से घृणा करते हैं? या धर्म के प्रति विमुख हो रहे हैं अथवा किये हुए (कार्य) का निरादर कर रहे हैं।

शारद्वत का कथन- (1) 'स्थाने भवान् पुरप्रवेशादित्थंभूतः संवृत्तः।'-
अर्थ- यह उचित ही है कि आप नगर में प्रवेश करने से इस प्रकार के हो गये हैं।

(2)- ''अभ्यक्तमिव स्नातः शुचिरशुचिमिव प्रबुद्ध इव सुप्तम्।''
अर्थ- नहाया हुआ (व्यक्ति) तेल लगाये हुए को, पवित्र (व्यक्ति) अपवित्र को, जागा हुआ (व्यक्ति) सोये हुए को (समझता है)।

(3) ''उपपन्ना हि दारेषु प्रभुता सर्वतोन्मुखी।''
अर्थ- क्योंकि पत्नी पर (पति की) सब प्रकार की प्रभुता (अधिकार) स्वीकार की गई है।

मारीच का कथन- (1)- ''तत्कोटिमत्कुलिशमाभरणं मघोनः''-
अर्थ- वह वज्र इन्द्र का आभूषण हो गया है।

(2)- ''दुष्यन्त इत्यभिहितो भुवनस्य भर्ता।''-
अर्थ- यह दुष्यन्त इस नाम से प्रसिद्ध पृथ्वी का स्वामी है।

(2) ''आशीरन्या न ते योग्या पौलोमी सदृशी भव।''-
अर्थ- तुम इन्द्राणी के समान होओ, अन्य कोई आशीर्वाद तुम्हारे योग्य नहीं है।

(3)- ''श्रद्धा वित्तं विधिश्चेति त्रितयं तत् समागतम्''- अर्थ- (सौभाग्य से) श्रद्धा, धन और विधि ये तीनों यहाँ एकत्र हो गए हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'उपपन्ना हि दारेषु....।' उक्ति शारद्वत ने कही है। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (5/26)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 294

70. मेघदूते अस्याः नद्याः उल्लेखो नास्ति?

(A) तुङ्गभद्रा (B) रेवा
(C) गन्धवती (D) गम्भीरा

व्याख्या- मेघदूतम् कालिदास प्रणीत प्रसिद्ध खण्डकाव्य या गीतिकाव्य है।
मेघदूतम् दो भागों -(1) पूर्वमेघ (2) उत्तरमेघ में विभक्त है।
* इसका प्रधानरस विप्रलम्भशृंगार है तथा छन्द मन्दाक्रान्ता है।
* मेघदूत की रीति वैदर्भी रीति मेघदूतम् का उपजीव्य- ब्रह्मवैवर्तपुराण तथा वाल्मीकि रामायण
* नायक- यक्ष (हेममाली), नायिका- यक्षिणी (विशालाक्षी)
* मैक्समूलर ने मेघदूतम् का जर्मन भाषा में पद्यानुवाद और श्वेट्ज ने जर्मनभाषा में गद्यानुवाद किया।
* डॉ॰ कीथ ने मेघदूत को शोकगीत (Elegy) कहा है।
मेघदूतम् में कुल 115 पद्य हैं। पूर्वमेघ में 63 पद्य और उत्तरमेघ में 52 पद्य
* मेघदूतम् का नायक 'यक्ष' धीरललित नायक है तथा नायिका यक्षिणी स्वकीया एवं पद्मिनी है।
* मेघदूतम् में वर्णित प्रमुख नदियाँ- रेवा, वेत्रवती, निर्विन्ध्या, सिन्धु, शिप्रा, गन्धवती, गम्भीरा, चर्मण्वती, सरस्वती, (गङ्गा) जाह्नवी, यमुना तथा मानसरोवर

(1) ''रेवां द्रक्ष्यस्युपलविषमे विन्ध्यपादे विशीर्णाम्।''
अर्थ- तुम आगे बढ़ोगे तो तुम्हें चट्टानों के कारण ऊबड़-खाबड़ विन्ध्याचल की तलहटी में बिखरी हुई अर्थात् सभी ओर बह रही नर्मदा (रेवा) नदी दिखाई देगी।

(2) ''धूतोद्यानं कुवलयरजोगन्धिभिर्गन्धवत्याः।''
अर्थ- वही समीप ही एक छोटी नदी बहती है। जिसका नाम गन्धवती है। यहाँ जब युवतियाँ स्नान करती हैं तो उनके शरीर में लगे हुए सुगंधित द्रव्य जल में घुल जाते हैं। वहाँ जल विहार करती हुई युवतियों के स्नान करने से महकता हुआ और कमल की गंध से बसी हुई इस नदी की ओर से आने वाला पवन महाकाल के मन्दिर के उपवन को बारंबार झुला रहा होगा।

(3) ''गम्भीरायाः पयसि सरितश्चेतसीव प्रसन्ने।''
अर्थ- वहाँ से आगे चलने पर तुम्हें गम्भीरा नदी मिलेगी। उस नदी के निर्मल जल पर तुम्हारे सहज सलोने शरीर की परछाई स्पष्ट दिखाई देगी।

मेघदूतम् में वर्णित पर्वतः- रामगिरि, आम्रकूट, विन्ध्य, नीचगिरि, देवगिरि, हिमालय, क्रौञ्चपर्वत, कैलाश।

मेघदूतम् में वर्णित प्रमुख नगरः- मालदेश, दशार्ण, विदिशा, उज्जयिनी, विशाला, अवन्ति, दशपुर, ब्रह्मावर्त, कुरुक्षेत्र, कनखल, अलका।

मेघदूतम् में वर्णित मेघमार्गः- रामगिरि-मालदेश-आम्रकूट-विन्ध्य-नर्मदा-दशार्ण- विदिशा-वेत्रवती-नीचैर्गिरि-उज्जयिनी- निर्विन्ध्या-अवन्ति-सिन्धु-शिप्रा-गन्धवती-गम्भीरा-देवगिरि-चर्मण्वती-दशपुर-कुरुक्षेत्र- सरस्वती- कनखल-हिमालय-गङ्गा- क्रौञ्च-कैलाश-मानसरोवर-अलकापुरी।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि तुङ्गभद्रा नदी का उल्लेख मेघदूतम् में नहीं हुआ है। **अतः विकल्प A सही है।**

स्रोत- मेघदूतम् , दयाशंकर शास्त्री, पूर्वमेघ, श्लोक 20,37,45-पेज 89,123,139

71. ''सुलभेष्वर्थलाभेषु परसंवेदने जनः।
क इदं दुष्करं कुर्यादिदानीं शिविना विना॥
एषा उक्तिः कं लक्षयति?
(A) चाणक्यम् (B) राक्षसम्
(C) चन्दनदासम् (D) भागुरायणम्

व्याख्या- प्रश्नगत श्लोक विशाखदत्त विरचित मुद्राराक्षस नाटक के प्रथम अङ्क से उद्धृत है। चाणक्य द्वारा बार-बार राक्षस का परिवार माँगे जाने पर भी चन्दनदास जब अपने जीवन, परिवार व धन की परवाह किये बिना उसे नहीं सौंपता तब चाणक्य मन ही मन उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा करता है-

सुलभेष्वर्थलाभेषु परसंवेदने जनः।
क इदं दुष्करं कुर्यादिदानीं शिविना विना॥1.24

अर्थात् दूसरे की वस्तु दे देने पर धन की प्राप्ति आसान होने पर अब अर्थात् इस कलियुग में महाराज शिवि के अतिरिक्त कौन-सा मनुष्य इस कठिन कार्य को कर सकता है?

राक्षस का परिवार चन्द्रगुप्त को सौंप देने मात्र से ही विविध प्रकार की राजकीय कृपा प्राप्त हो सकती है- इस बात को जानते हुए भी चन्दनदास शरणागत आये हुए राक्षस के परिवार की रक्षा करने के लिए अपना सर्वस्व देने के लिए तत्पर है। राजा शिवि ने तो ऐसा श्रेष्ठ कार्य सतयुग में किया था परन्तु चन्दनदास ने तो यह कार्य कलियुग में करके उनके यश को लघु कर दिया है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि चाणक्य का उपर्युक्त कथन चन्दनदास को लक्ष्य करके है। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- मुद्राराक्षसम् (1/24) - पुष्पा गुप्ता, पेज 61

72. मृच्छकटिके विदूषकस्य नाम भवति-
(A) आर्यकः (B) मैत्रेयः
(C) शर्विलकः (D) संस्थानकः

व्याख्या- शूद्रककृत मृच्छकटिकम् नाटक 10 अङ्कों का एक प्रकरण ग्रन्थ है। इसका नायक चारुदत्त नाम का एक निर्धन ब्राह्मण था तथा नायिका वसन्तसेना नाम की एक गणिका है। इसमें

चारुदत्त और वसन्तसेना के प्रेम का वर्णन है। साथ ही इसमें 'पालक' नामक राजा को मारकर आर्यक के राजा होने का वर्णन है।

मृच्छकटिकम् नाटक के प्रमुख पात्र- चारुदत्त (नायक), मैत्रेय (चारुदत्त का मित्र), शकार (प्रतिनायक), संवाहक (चारुदत्त का भूतपूर्व सेवक), शर्विलक (एक साहसी ब्राह्मण), वसन्तसेना (नायिका), रदनिका (चारुदत्त की परिचारिका), चेटी (वसन्तसेना की दासी), धूता (चारुदत्त की पत्नी)।

संस्कृत नाटकों में विदूषक

नाटक	लेखक	विदूषक
1. अभिज्ञानशाकुन्तलम्	कालिदास	माढव्य/माधव्य
2. विक्रमोर्वशीयम्	कालिदास	माणवक
3. मालविकाग्निमित्रम्	कालिदास	गौतम
4. मृच्छकटिकम्	शूद्रक	मैत्रेय
5. रत्नावली	श्रीहर्ष	वसन्तक
6. स्वप्नवासवदत्तम्	भास	वसन्तक
7. मालतीमाधवम्	भवभूति	विदूषक का अभाव
8. महावीरचरितम्	भवभूति	विदूषक का अभाव
9. उत्तररामचरितम्	भवभूति	विदूषक का अभाव
10.मुद्राराक्षसम्	विशाखदत्त	विदूषक का अभाव

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि मृच्छकटिक के विदूषक का नाम 'मैत्रेय' है। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- मृच्छकटिकम् - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज 13

73. ''निपीय यस्य क्षितिरक्षिणः कथाः तथाद्रियन्ते न बुधाः सुधामपि।'' इति कस्य कथा अत्र उल्लिखिता?

(A) दुष्यन्तस्य (B) रघोः

(C) रामचन्द्रस्य (D) नलस्य

व्याख्या- महाकवि श्रीहर्ष द्वारा विरचित बृहत्त्रयी के अन्तर्गत परिगणित 'नैषधीयचरितम्' महाकाव्य के प्रथम सर्ग के प्रथम श्लोक में महाराज नल की कथा का वर्णन किया गया है-

निपीय यस्य क्षितिरक्षिणः कथाः तथादियन्ते न बुधाः सुधामपि।

नलः सितच्छत्रितकीर्तिमण्डलः स राशिरासीन्महसां महोज्ज्वलः॥ (नैषध.1.1)

जिस पृथ्वीपालक की कथाओं का भलीभाँति आस्वादन कर विद्वान् लोग अमृत का भी वैसा (राजा नल के कथा के समान) आदर नहीं करते। अपने यश-समूह को शुभ्र छत्र बनाने वाले तथा बड़े उत्सव वाले वे नल तेजों की राशि हुए।

अन्य सूक्तियाँ (1) आर्जवं हि कुटिलेषु न नीतिः।(नैषध॰ 05/103)

अर्थ- कुटिल जनों के प्रति सरलता नीति नहीं होती

(2) क्व भोगमाप्नोति न भाग्यभाग्जनः? (नैषध॰1/102)

अर्थ- भाग्यशाली जन कहाँ सुख प्राप्त नहीं करता है?

(3) न्याय्यमुपेक्षते हि कः (नैषध॰9/46)

दमयन्ती के कहने पर कि नल ने उसका पाणिग्रहण न किया तो वह फाँसी लगाकर मर जायेगी ये सुनकर नल कहता है कि मृत्यु के बाद भी इन्द्र उसका ग्रहण कर लेगें- न्याय से प्राप्त वस्तु की कौन उपेक्षा करता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि प्रस्तुत सूक्ति में राजा नल के कथा का वर्णन है। **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत- नैषधीयचरितम् (1/1) - सुरेन्द्रदेव शास्त्री, पेज 01

74. किरातार्जुनीयस्य प्रधानो रसोऽस्ति-

(A) शृङ्गारः (B) वीरः

(C) शान्तः (D) अद्भुतः

व्याख्या- महाकवि भारवि प्रणीत 'किरातार्जुनीयम्' 18 सर्गों का वीर रस प्रधान महाकाव्य है। इसका उपजीव्य महाभारत का वनपर्व है। इस महाकाव्य में अर्जुन द्वारा भगवान् शिव की तपस्या से पाशुपतास्त्र की प्राप्ति का वर्णन है।

भारवि के काव्य में (किरातार्जुनीयम् में) प्रधान रस के रूप में 'वीर' रस का प्रयोग किया गया है। वीर रस की अभिव्यक्ति काव्य के प्रथम सर्ग से ही प्रारंभ हो जाती है। जब द्रौपदी युधिष्ठिर के उत्साह को प्रबोधित करने और शत्रुओं से प्रतिशोध लेने के लिए ओज से भरे शब्दों को कहती है-

अबन्ध्यकोपस्य विहन्तुरापदां भवन्ति वश्याः स्वयमेव देहिनः।
अमर्षशून्येन जनस्य जन्तुना न जातहार्देन न विद्विषादरः॥

अर्थ- अनिष्फल क्रोध करने वाले और शत्रुओं का विनाश करने वाले व्यक्ति के वश में प्राणी स्वयं ही हो जाते हैं। व्यक्ति के क्रोध से हीन होने पर उसका न तो मित्रगण ही आदर करते हैं और न ही उससे शत्रु भय करते हैं।

संस्कृत ग्रन्थों के अंगी रस

ग्रन्थ	रस	ग्रन्थ	रस
अभिज्ञानशाकुन्तलम्	शृङ्गाररस	जानकीहरणम्	शृङ्गाररस
मेघदूतम्	विप्रलम्भशृङ्गार	शिवराजविजय	वीररस
उत्तररामचरितम्	करुणरस	नागानन्द	शान्तरस/वीररस
शिशुपालवधम्	वीररस	प्रबोधचन्द्रोदय	करुण/वीर
रघुवंशम्	वीररस	महाभारतम्	शान्तरस
बुद्धचरितम्	शान्तरस	गीतगोविन्दम्	शृङ्गाररस
रावणवध (भट्टिकाव्य)	वीररस	रत्नावली	शृङ्गाररस

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि किरातार्जुनीयम् का प्रधान रस वीर है। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि'- पेज 244

75. वेणीसंहारे दुर्योधनस्य कञ्चुकी भवति-

(A) विनयन्धरः (B) जयन्धरः
(C) रुधिरप्रियः (D) सुन्दरकः

व्याख्या- भट्टनारायण प्रणीत वेणीसंहारम् महाभारत पर आधारित वीर रस प्रधान नाटक है। इस नाटक में कुल 6 अंक हैं। वेणीसंहारम् नाटक के नायक भीम धीरोद्धत नायक हैं, नायिका द्रौपदी तथा प्रतिनायक दुर्योधन है। वेणीसंहारम् की प्रस्तावना में भट्टनारायण ने अपने को 'मृगराजलक्ष्मा' (मृगराज या सिंह की उपाधिवाला) कहा है। भट्टनारायण गौडी रीति और ओजगुण के कवि हैं-

ओजः संसूचकैः शब्दैर्युद्धोत्साहप्रकाशकैः।
वेण्यामुज्जृम्भयन् गौडी भट्टनारायणो वभूः।।

वेणीसंहारम् के प्रमुख पात्र- भीम, युधिष्ठिर, अर्जुन, नकुल सहदेव, कृष्ण (अर्जुन के सारथि), धृतराष्ट्र, दुर्योधन, कर्ण, संजय (धृतराष्ट्र के सारथि), जयन्धर, विनयन्धर, द्रौपदी, बुद्धिमती, भानुमती (दुर्योधन की पत्नी)।

संस्कृत नाटकों में कञ्चुकी -

नाटक	कञ्चुकी	नाटक	कञ्चुकी
प्रतिज्ञायौगन्धरायण	बादरायण	उत्तररामचरितम्	गृष्टि
दूतवाक्यम्	बादरायण	रत्नावली	बाभ्रव्य
स्वप्नवासवदत्तम्	बादरायण	वेणीसंहारम्	जयन्धर (युधिष्ठिर का)
अभिज्ञानशाकुन्तलम्	वातायन		विनयन्धर (दुर्योधन का)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि वेणीसंहार में दुर्योधन का कञ्चुकी 'विनयन्धर' है। **अतः विकल्प A सही है।**

स्रोत- वेणीसंहारम् - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज 27

76. ''अर्पणं स्वस्यवाक्यार्थे परस्यान्वयसिद्धये। उपलक्षणहेतुत्वादेषा.....।। साहित्यदर्पणानुसारतः रिक्त स्थानं पूरयत।

(A) लक्षण-लक्षणा (B) उपादान लक्षणा
(C) सारोपा लक्षणा (D) साध्यवसाना लक्षणा

व्याख्या- श्री विश्वनाथ कविराज ने अपने ग्रन्थ साहित्यदर्पण में लक्षणा के बारे में बताते हुए लिखा है-

''मुख्यार्थबाधे तद् युक्तो ययाऽन्योऽर्थः प्रतीयते।
रुढेः प्रयोजनाद्वाऽसौ लक्षणा शक्तिरर्पिता।।''

अभिधा शक्ति के द्वारा जिसका बोधन किया जाए वह मुख्यार्थ कहलाता है, इसका (मुख्यार्थ) का अन्वय अनुपपन्न होने पर, रूढ़ि (प्रसिद्धि) के कारण अथवा किसी विशेष प्रयोजन का सूचन करने के लिए मुख्यार्थ से संबद्ध अन्य अर्थ का ज्ञान जिस शक्ति के द्वारा होता है, उसे लक्षणा कहते हैं। यह शक्ति 'अर्पित' अर्थात् कल्पित है।

उपादान लक्षणाः-

''मुख्यार्थस्येतराक्षेपो वाक्यार्थेऽन्वयसिद्धये।
स्यादात्मनोऽप्युपादानादेषोपादानलक्षणा।।''

वाक्यार्थ में, अङ्गरूप से अपने अन्वय की सिद्धि के लिए, जहाँ मुख्य अर्थ अन्य अर्थ का आक्षेप कराता है वहाँ 'आत्मा' अर्थात् मुख्यार्थ के भी बने रहने से, उस लक्षणा को ''उपादान लक्षणा' कहते हैं। यथा- 'श्वेतो धावति' इस उदाहरण में श्वेत (वर्ण) जड़ होने के कारण दौड़ने में कर्ता होकर अन्वित नहीं हो सकता, अतः वाक्यार्थ में अपने अन्वय की सिद्धि के लिए 'श्वेत' शब्द श्वेत रंग वाले अश्वादि का आक्षेप कराता है। यह 'रूढ़ि' में उपादान है- 'कुन्ताः प्रविशन्ति' (भाले प्रवेश कर रहे हैं) यहाँ पर कुन्त शब्द कुन्त (भाला) धारण करने वाले 'पुरुषों' का आक्षेप कराता है।

लक्षण-लक्षणा –

''अर्पणं स्वस्य वाक्यार्थे परस्यान्वयसिद्धये।
उपलक्षणहेतुत्वादेषा लक्षणलक्षणा।।''

वाक्यार्थ में मुख्यार्थ से भिन्न अर्थ के अन्वय बोध के लिए जहाँ कोई शब्द अपने स्वरूप का समर्पण कर दे अर्थात् मुख्यार्थ का परित्यागकर लक्ष्य अर्थ का उपलक्षण मात्र बन जाय उस लक्षणा को लक्षण-लक्षणा कहते हैं, क्योंकि यह उपलक्षण का ही हेतु होती है, इसमें मुख्यार्थ का वाक्य में अन्वय नहीं होता। इसका रूढ़ि और प्रयोजन में क्रम से उदाहरण है- 'कलिङ्गः साहसिकः' और 'गङ्गायां घोषः'। इन उदाहरणों में क्रम से पुरुष और तट के अन्वय को सिद्ध करने के लिए कलिङ्ग और गङ्गाशब्द अपने स्वरूप का समर्पण करते हैं। (इसी लक्षण-लक्षणा को जहत्स्वार्थवृत्ति भी कहते हैं)

सारोपा और साध्यवसाना-लक्षणा -

''विषयस्यानिगीर्णस्यान्यतादात्म्यप्रतीतिकृत्।
सारोपा स्यान्निगीर्णस्य मता साध्यवसानिका।।''

अनाच्छादित स्वरूप विषय (उपमेय) का अन्य (उपमान) के साथ अभेदज्ञान कराने वाली लक्षणा को 'सारोपा' कहते हैं और निगीर्ण स्वरूप (आच्छादित) विषय का विषयी के साथ अभेद ज्ञान कराने वाली लक्षणा को 'साध्यवसाना' कहते हैं।

रूढि में सारोपा उपादान लक्षणा का उदाहरण-'अश्वः श्वेतो धावति'। प्रयोजन में सारोपा लक्षणा का उदाहरण- 'एते कुन्ताः प्रविशन्तिः'

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि दिये गये श्लोक में रिक्तस्थान लक्षण-लक्षणा द्वारा पूरित होगा। **अतः विकल्प A सही है।**

स्रोत- साहित्यदर्पण (1/7) - शालिग्राम शास्त्री, पेज 32

77. अधस्तनयुग्मानां समीचीनतालिकां चिनुत-

(क)	आशङ्कसे यदग्निं तदिदं स्पर्शक्षमं रत्नम्।	(i)	रत्नावली
(ख)	अल्पक्लेशं मरणं दारिद्र्यमनन्तकं दुःखम्।	(ii)	मुद्राराक्षसम्
(ग)	गजेन्द्राश्च नरेन्द्राश्चप्रायः सीदन्ति दुःखिताः।	(iii)	अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(घ)	आनीय झटिति घटयति विधिरभिमतमभिमुखीभूतः।	(iv)	मृच्छकटिकम्

Options

	(क)	**(ख)**	**(ग)**	**(घ)**
(A)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)
(B)	(iii)	(iv)	(ii)	(i)
(C)	(iv)	(ii)	(i)	(iii)
(D)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)

व्याख्या- (1) ''आशङ्कसे यदग्निं तदिदं स्पर्शक्षमं रत्नम्।'' प्रस्तुत श्लोकांश अभिज्ञानशाकुन्तलम् के प्रथम अंक से उद्धृत है। जब राजा दुष्यंत प्रियंवदा से शकुन्तला के बारे में बात करता है तो प्रियंवदा कहती है- हे आर्य धर्म के आचरण में भी यह परवश है। पिता का तो इसे अनुरूप वर को देने का संकल्प है। तब दुष्यंत स्वयं से यह बात कहता है- आशङ्कसे यदग्निं....। (तू जिसके अग्नि होने की आशंका कर रहा है वह तो स्पर्शयोग्य रत्न है)।

1. अभिज्ञानशाकुन्तलम् की कुछ महत्त्वपूर्ण सूक्तियाँ-

(i) 'अकृतार्थेऽपि मनसिजे रतिमुभयप्रार्थना कुरुते'- दुष्यन्त (द्वितीय अङ्क) (कामभाव के कृतार्थ न होने पर भी एक-दूसरे की अभिलाषा प्रीति को बढ़ाती ही है)।

(ii) अचेतनं नाम गुणं न लक्षयेत्-दुष्यन्त (षष्ठ अंक) (अचेतन पदार्थ तो सचमुच ही गुण को नहीं पहचान सकता)।

(iii) अज्ञातहृदयेष्वेवं वैरीभवति सौहृदम्- शाङ्र्गरव (पञ्चम अंक)। (जिसके हृदय के विषय में ज्ञान नहीं है उनसे प्रेम करना अपना ही शत्रु बन जाना है।)

(iv) गुणवते कन्यका प्रतिपादनीया- अनुसूया (चतुर्थ अंक) (गुणवान् वर को कन्या देनी चाहिए)।

मृच्छकटिकम् की सूक्तियाँ-

(i) ''अल्पक्लेशं मरणं, दारिद्र्यमनन्तकं दुःखम्''। (चारुदत्त) प्रस्तुत श्लोकांश शूद्रककृत मृच्छकटिकम् के प्रथम अङ्क से लिया गया है। जब विदूषक चारुदत्त से पूछता है- हे मित्र, मृत्यु और निर्धनता में से तुम्हें कौन-सी वस्तु अच्छी लगती है। इसी का जवाब देते हुए चारुदत्त कहता है- मृत्यु में थोड़ा कष्ट है, किन्तु निर्धनता कभी न समाप्त होने वाला दुःख है।)

(ii) ''कालात्यये मधुकराः करिणः कपोलम्'' (चारुदत्त) (जिस प्रकार (मद का) समय व्यतीत हो जाने पर भ्रमण करते हुए और जिसकी घनी मदराशि सूख गई, ऐसे हाथी के कपोल को त्याग देते हैं)।

(iii) 'धृतः शरीरेण मृतः स जीवति' (चारुदत्त) (वह तो शरीर धारण किये हुए भी मृतक के समान जीवन व्यतीत करता है।)

मुद्राराक्षस की प्रमुख सूक्तियाँ-

(i) ''गजेन्द्राश्च नरेन्द्राश्च प्रायः सीदन्ति दुःखिताः'' प्रस्तुत श्लोकांश विशाखदत्त प्रणीत मुद्राराक्षस नामक नाटक से लिया गया है। (स्वयं राज्यतन्त्रादि भार से घिर कर राजसुख का भोग कर रहे राजा लोग तथा मत्त हस्ती स्वभाव से बलशाली होकर भी प्रायः दुखित एवं खिन्न रहा करते हैं।

रत्नावली की सूक्तियाँ-

1. ''आनीय झटिति घटयति विधिरभिमतमभिमुखीभूतः'' प्रस्तुत श्लोकांश महाकवि हर्ष विरचित नाटक रत्नावली के प्रथम अङ्क से लिया गया है। प्रस्तुत श्लोक में सूत्रधार नदी से (नदी द्वारा पुत्री के विवाह की चिन्ता के विषय में) कहता है-''अनुकूल भाग्य दूसरे द्वीप से की जा रही जलनिधि के बीच से तथा दिशाओं के अन्तिम छोर से भी इष्टवस्तु को शीघ्र लाकर मिला देता है।''

अन्य सूक्तिः- (i) ''आभाति मकरकेतोः पार्श्वस्था चापयष्टिरिव'' (राजा) कामदेव के समीप में अवस्थित (वासवदत्ता), पुष्पमय होने के कारण सुकुमार, मध्यभाग में क्षीण, कामदेव के समीप धनुर्लतासी प्रतीत हो रही है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि दिये गये विकल्पों में **विकल्प B सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज 244

78. ''लोके हि लोहेभ्यः कठिनतराः खलु स्नेहमयाः बन्धनपाशाः'' इति हर्षचरिते कस्य मनसि समजायत?

(A) राज्यवर्धनस्य (B) प्रभाकरवर्धनस्य
(C) कुरङ्गकस्य (D) हर्षवर्धनस्य

व्याख्या- महाकवि बाणभट्ट द्वारा रचित 'हर्षचरितम्' आख्यायिका ग्रन्थ के पञ्चम उच्छ्वास में हर्षवर्धन की कथा का वर्णन है।

''लोके हि लोहेभ्यः कठिनतराः खलु स्नेहमयाः बन्धनपाशाः'' एक समय रात के चौथे प्रहर में जब पौ फटने को हुई तो हर्ष ने स्वप्न में देखा कि सभी दिशाओं को अपने ज्वालापुञ्ज से पिञ्जरित करती हुई दुर्निवार वनाग्नि से एक शेर जल रहा है और अपने बच्चों को छोड़कर उसी वन की अग्नि में शेरनी छलांग मार कूद रही है। उनके मन में यह विचार आया- 'सचमुच संसार में स्नेह के बन्धनपाश लोहे से भी बढ़कर कठोर होते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णनों से स्पष्ट है कि हर्षवर्धन के मन में यह विचार आया कि सचमुच संसार में स्नेह के बन्धनपाश लोहे से भी बढ़कर कठोर होते हैं। **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत- हर्षचरितम् - शिवनाथ पाण्डेय, पेज 06

79. ''श्रीहीरः सुषुवे जितेन्द्रियचयं मामल्लदेवी च यम्''- इति वार्ता केन सम्बद्धा?

(A) माघेन (B) भारविणा
(C) श्रीहर्षेण (D) कालिदासेन

व्याख्या- श्रीहीरः सुषुवे जितेन्द्रियचयं.....। प्रस्तुत पंक्ति महाकवि श्रीहर्ष प्रणीत महाकाव्य नैषधीयचरितम् के प्रथम सर्ग के अंतिम श्लोक की है। जिसमें श्रीहर्ष अपने माता-पिता (मामल्लदेवी और श्रीहीर) तथा अपने जन्म के वृत्तान्त के साथ नैषधीयचरितम् के प्रथम सर्ग का समापन करते हैं।

श्रीहर्षः- श्रीहर्षं कविराजराजिमुकुटालङ्कारहीरःसुतं
श्रीहीरः सुषुवे जितेन्द्रियचयं मामल्लदेवी च यम् ।
तच्चिन्तामणिमन्त्रचिन्तन्फले शृङ्गारभंग्या महा-
काव्येचारुणि नैषधीयचरिते सर्गोऽयमादिर्गतः।।

अर्थः- कविराज समूह के मुकुट के आभूषण रूप हीरे श्रीहीर तथा मामल्लदेवी ने इन्द्रियों के समूह को जीतने वाले जिस श्रीहर्ष नाम के पुत्र को उत्पन्न किया। उसके चिन्तामणि मन्त्र की उपासना के फलस्वरूप शृङ्गाररस की रचना से मनोहर नैषधीयचरित नामक महाकाव्य में प्रथम सर्ग समाप्त हुआ।

➢ **भारविः-** महाकवि भारवि प्रणीत किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग के अंतिम श्लोक की अंतिम पंक्ति में भारवि कहते हैं-

'दिनकृतमिव लक्ष्मीस्त्वां समभ्येतु भूयः।'

अर्थः- सूर्य की भाँति राज्यलक्ष्मी (कान्ति) फिर से प्राप्त हो। इसमें 'लक्ष्मी' शब्द का प्रयोग हुआ है।

➢ **माघः-** महाकवि माघ प्रणीत शिशुपालवधम् प्रथम सर्ग के अंतिम श्लोक की पंक्ति में माघ कहते हैं-

'तस्मिन्नुत्पतिते पुरः सुरमुनाविन्दोः श्रियं बिभ्रति।'

अर्थः- नारद महामुनि इस प्रकार कहकर आकाश में जाकर चन्द्रमा की शोभा धारण करने लगे।

प्रस्तुत श्लोक में श्री शब्द का प्रयोग हुआ है।

➢ **कालिदासः-** महाकवि कालिदास रघुवंशम् महाकाव्य के प्रथम सर्ग के अंतिम श्लोक में कहते हैं-

निर्दिष्टां कुलपतिना स पर्णशाला मध्यास्य प्रयतपरिग्रहद्वितीयः।
तच्छिष्याध्ययननिवेदितावसानां संविष्टः कुशशयने निशां निनाय।।

अर्थः- अपनी धर्मपत्नी सुदक्षिणा के साथ उस राजा दिलीप ने कुलपति महर्षि वसिष्ठ से बताई गई पर्णशाला में जाकर कुश आसन पर सोते हुए वसिष्ठ के शिष्यों के अध्ययन से सूचित अन्त वाली रात्रि को बिताया।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि श्रीहीरः सुषुवे...। का सम्बन्ध 'श्रीहर्ष' से है। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- नैषधीयचरितम् (1/145)-सुरेन्द्रदेव शास्त्री, पेज 287

80. ''स बाल आसीद् वपुषा चतुर्भुजो मुखेन पूर्णेन्दुनिभस्त्रिलोचनः।'' इति शिशुपालवधस्य पद्यांशः केन सम्बद्धः?

(A) शिशुपालेन (B) श्रीकृष्णेन
(C) नारदेन (D) रावणेन

व्याख्या- प्रस्तुत पद्यांश में नारदमुनि श्रीकृष्ण को शिशुपाल के विषय में बताते हुए कहते हैं कि-

''स बाल आसीद्वपुषा चतुर्भुजो मुखेन पूर्णेन्दुनिभस्त्रिलोचनः।
युवा कराक्रान्तमहीभृदुच्चकैरसंशयं सम्प्रति तेजसा रविः॥''

(शिशु.1/70)

अर्थः- यह शिशुपाल बाल्यावस्था में ही चार भुजा वाला अर्थात् विष्णु के सदृश था और मुख से पूर्ण चन्द्रमा के समान था अतएव तीन नेत्र वाला शंकर जी की तरह था। अब इस समय तारुण्यावस्था में और राजाओं से कर लेने वाला हुआ है। सूर्य पक्ष में (कर किरणों से आक्रांत व्याप्त है महीभुज पर्वत जिसके) ऐसा यह निःसंशय सूर्य है।

* प्रस्तुत श्लोक में कवि श्रीकृष्ण का निरूपण करते हुए कहते हैं-

''स तप्तकार्तस्वरभास्वराम्बरः कठोरताराधिपदलाञ्छनच्छविः।
विदिद्युते वाडवजातवेदसःशिखाभिराश्लिष्ट इवाम्भसां निधिः''
।।20।।

अर्थः- पीताम्बर धारण किये श्यामवर्ण श्रीकृष्ण वडवाग्नि की ज्वाला से युक्त समुद्र की सी शोभा को प्राप्त हुए।

* प्रस्तुत पद्य में कवि नारद की तुलना शरद्कालीन मेघ से करते हुए कहते हैं-

''विहङ्गराजाङ्गरुहैरिवायतैर्हिरण्मयोर्वीरुहवल्लितन्तुभिः।

कृतोपवीतं हिमशुभ्रमुच्चकैर्घनं घनान्ते तडितां गणैरिव।।7।।''

अर्थः- सुवर्ण के यज्ञोपवीत को धारण करने वाले नारद बिजली की रेखा से युक्त शरत् कालीन मेघ की शोभा को प्राप्त हुए।

* प्रस्तुत श्लोक में नारद रावण द्वारा स्वर्ग की, की गई दुर्दशा का वर्णन करते हुए कहते हैं-

''पुरीमवस्कन्द लुनीहि नन्दनं मुषाण रत्नानि हरामराङ्गनाः।

विगृह्य चक्रे नमुचिद्विषा बली य इत्थमस्वास्थ्यमहर्दिवं दिवः।।51।।''

अर्थः- रावण ने इन्द्र के साथ विरोध कर अमरावती पर बार-बार चढ़ाई की नन्दनवन को तहस-नहस कर डाला। रत्नों को चुराया। अप्सराओं को हरण किया। इस प्रकार प्रतिदिन स्वर्ग में भी अशान्ति मचाए रहा करता था।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि प्रश्न में दिये गये पद्यांश 'स बाल आसीद्वपुषा...।'- का सम्बन्ध शिशुपाल से है। **अतः विकल्प A सही है।**

स्रोत- शिशुपालवधम् (1/70) - तारिणीश झा, पेज 146

81. ''वैदेहिबन्धोर्हृदयं विदद्रे'' रघुवंशस्य अस्मिन् पद्यांशे 'वैदेहिबन्धुः' भवति-

(A) लक्ष्मणः (B) भरतः

(C) रामः (D) रघुः

व्याख्या- रघुवंशम् जो कि कविकुलगुरु कालिदासकृत सुप्रसिद्ध 19 सर्गों का महाकाव्य है, इसके चौदहवें सर्ग में श्रीराम अपने भद्रमुख नामक गुप्तचर से यह पूँछते हैं कि प्रजा मेरे विषय में क्या कहती है? तो पहले तो वह चुप रहा किन्तु राम के आग्रहपूर्वक पूँछे जाने पर उसने सीता सम्बन्धित लोकापवाद की बात बताई जिससे श्रीराम का हृदय उसी तरह फट गया जैसे घन की चोट से तपाया हुआ लोहा फट जाता है-

कलत्रनिन्दागुरुणा किलैवमभ्याहतं कीर्तिविपर्ययेण।

अयोघनेनाय इवाभितप्तं वैदेहिबन्धोर्हृदयं विदद्रे।। 14.33।।

टीकाकार मल्लिनाथ ने वैदिहिबन्धोः का अर्थ 'वैदेहिबल्लभस्य' अर्थ किया है। वैदेही अर्थात् सीता का जो बन्धु अर्थात् सुहृत् है वह राम।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'वैदेहिबन्धु' का अर्थ 'राम' है। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- रघुवंशम् (14/33) - हरगोविन्द मिश्र, पेज 354

82. काव्यमीमांसोक्तकथानुसारं पुरा पुत्रीयन्ती सरस्वती कुत्र तपस्यामास?

(A) विन्ध्यगिरौ (B) तुषारगिरौ

(C) सह्यगिरौ (D) मेरुगिरौ

व्याख्या- श्री राजशेखर ने अपने ग्रन्थ काव्यमीमांसा के तृतीय अध्याय- 'काव्यपुरुषोत्पत्तिः' में सरस्वती-पुत्र, काव्य-पुरुष की उत्पत्ति का वर्णन करते हुए कहा है- एक बार शिष्यों ने बृहस्पति से कथाप्रसंग में पूछा कि आपके गुरु सरस्वती-पुत्र, काव्यपुरुष कैसे हैं। तब बृहस्पति ने उनसे कहा- (''पुरा पुत्रीयन्ती सरस्वती तुषारगिरौ तपस्यामास। प्रीतेन मनसा तां विरिञ्चिः प्रोवाच-पुत्रं ते सृजामि।'') प्राचीन काल में सरस्वती ने पुत्र की इच्छा से हिमालय (तुषारगिरौ) पर तपस्या की। प्रसन्नमना ब्रह्मा ने उनसे कहा- तेरे लिए मैं पुत्र की रचना करता हूँ। तदनन्तर देवी ने काव्य-पुरुष को उत्पन्न किया।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि देवी सरस्वती ने पुत्रप्राप्ति की इच्छा से 'तुषारगिरि' (हिमालय) पर तपस्या की। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- हिन्दी काव्यमीमांसा (काव्यपुरुषोत्पत्ति)-गंगासागर राय, पेज 12

83. जगन्नाथमते काव्यं कतिविधं भवति-

(A) द्विविधम् (B) त्रिविधम्

(C) चतुर्विधम् (D) पञ्चविधम्

व्याख्या- पण्डितराज जगन्नाथ अपने काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ रसगङ्गाधर के प्रथम आनन में काव्य के चार भेदों को बताते हुए कहते हैं- ''तच्चोत्तमोत्तमोत्तममध्यमाधमभेदाच्चतुर्धा।''

1-उत्तमोत्तम, 2-उत्तम, 3- मध्यम और 4- अधम

1- **उत्तमोत्तम-** जिसमें शब्द और अर्थ (वाच्य, लक्ष्य, व्यङ्ग्य) दोनों अपने को गौण (अप्रधान) बनाकर किसी चमत्कारजनक अर्थ को अभिव्यक्त करें, व्यञ्जनावृत्ति द्वारा समझावें उसे उत्तमोत्तम काव्य कहते हैं। ''शब्दार्थौ यत्र गुणीभावितात्मानौ कमप्यर्थमभिव्यङ्क्तस्तदाद्यम्।।''

2- **उत्तम-** जिस काव्य में व्यंग्य अप्रधान होकर ही चमत्कार का कारण हो, वह द्वितीय 'उत्तम' नामक काव्य कहलाता है।

''यत्र व्यङ्ग्यमप्रधानमेव सच्चमत्कारकारणं तद् द्वितीयम्।''

3- **मध्यम-** जहाँ वाच्य अर्थ का चमत्कार व्यंग्य अर्थ के चमत्कार के अधिकरण में न रहे अर्थात् जिस काव्य में व्यंग्य अर्थ का चमत्कार लघु अंश में रहकर भी व्यापक वाच्य अर्थ के चमत्कार में अन्तर्युक्त हो जाने से स्पष्टतया अनुभूत न हो, वह मध्यम नामक काव्य कहलाता है।

''यत्र व्यङ्ग्यचमत्कारासमानाधिकरणो वाच्य चमत्कारस्तत्तृतीयम्।''

4- अधम- जिस काव्य में वाच्य अर्थ के चमत्कार से परिपोषित होकर शब्द का चमत्कार प्रधान हो उसको अधम काव्य कहते हैं। इस काव्य में भी कुछ न कुछ व्यंग्य अवश्य रहता है, परन्तु वह रहकर भी चमत्कार जनक न होने से अविवक्षित रहता है अतः उसकी प्रधानता नहीं रहती ऐसा समझना चाहिए।

''यत्रार्थ चमत्कृत्युपस्कृता शब्दचमत्कृतिः प्रधानं, तदधमं चतुर्थम्।''

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि पण्डितराज जगन्नाथ ने काव्य के चार प्रकारों का उल्लेख किया। (उत्तमोत्तम, उत्तम, मध्यम और अधम) अतः दिये गये विकल्पों में **विकल्प C सही है।**

स्रोत- रसगङ्गाधर - मदनमोहन झा, पेज 37

84. ''त्रयः समुदिताः, न तु व्यस्ताः''- इति काव्यप्रकाशे प्रथमे उल्लासे किम् अधिकृत्य उल्लिखितम्?

(A) काव्यलक्षणम् (B) काव्यभेदम्
(C) काव्य-हेतुम् (D) काव्यफलम्

व्याख्या- आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश के प्रथम उल्लास में काव्यहेतु को परिभाषित करते हुए कहते हैं कि शक्ति, लोकव्यवहार तथा काव्यनिर्माण का अभ्यास ये तीनों मिलकर काव्य उद्भव के कारण हैं न कि अलग-अलग। उसी प्रंसग में काव्यहेतु को परिभाषित करते हैं-

➤ **काव्यहेतु-** शक्तिर्निपुणता लोकशास्त्रकाव्याद्यवेक्षणात्।
काव्यज्ञशिक्षयाभ्यास इतिहेतुस्तदुद्भवे।।

कवि में रहने वाली उसकी स्वाभाविक प्रतिभारूप (1) शक्ति, (2)-लोक (व्यवहार) शास्त्र तथा काव्य आदि के पर्यालोचनसे उत्पन्न निपुणता और (3)- काव्य (की रचनाशैली तथा आलोचनापद्धति) को जानने वाले (गुरु) की शिक्षा के अनुसार (काव्यनिर्माण का) अभ्यास ये (तीनों मिलकर समष्टि रूप से उस (काव्य) के विकास (उद्भव) के कारण हैं। **(त्रयः समुदिताः, न तु व्यस्ताः, तस्य काव्यस्योद्भवे निर्माणे समुल्लासे च हेतुर्न तु हेतवः)॥**

यहाँ ग्रन्थकार ने शक्ति, लोकव्यवहार, शास्त्र एवं काव्य आदि के पर्यालोचन से उत्पन्न व्युत्पत्ति तथा काव्य की रचनाशैली और गुण-दोषों के जानने वाले विद्वानों की शिक्षा के अनुसार अभ्यास इन तीनों की समष्टि को काव्य-निर्माण की योग्यता प्राप्त करने का कारण माना है।

काव्यलक्षण- दोषों से रहित, गुण-युक्त और (साधारणतः अंलकार सहित) परन्तु कहीं-कहीं अलङ्कारः रहित शब्द और अर्थ (दोनों की समष्टि) काव्य कहलाती है। **(तद्दोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि)।** 'क्वापि' इस पद से (ग्रन्थकार) यह कहते हैं कि (साधारणतः) सब जगह अलङ्कार सहित (शब्द तथा अर्थ होने चाहिए) परन्तु कहीं (जहाँ व्यङ्ग्य या रसादि की स्थिति विद्यमान हो वहाँ) स्पष्ट रूप अलङ्कार की सत्ता न होने पर भी काव्यत्व की हानि नहीं होती है। **(सर्वत्रसालङ्कारौ क्वचित् स्फुटालंकारविरहेऽपि काव्यत्वहानिः)**

काव्यभेदम्:- काव्यप्रकाशकार काव्य के तीन मुख्य भेदों - (1) ध्वनि काव्य (2) गुणीभूतव्यङ्ग्य-काव्य और (3) चित्रकाव्य का उल्लेख करते हैं-

1- ध्वनि काव्य- ''इदमुत्तममतिशयिनि व्यङ्ग्ये वाच्याद् ध्वनिर्बुधैः कथितः।।''

वाच्य (अर्थ) की अपेक्षा व्यङ्ग्य (अर्थ) के अधिक चमत्कार युक्त होने पर (इदं) काव्य उत्तम होता है, और विद्वानों ने उसको 'ध्वनि' (काव्य नाम से) कहा है।

2- गुणीभूतव्यङ्ग्य काव्य- ''अतादृशि गुणीभूतव्यङ्ग्यं व्यङ्ग्ये तु मध्यमम्।।''

उस प्रकार के (अर्थात् वाच्य से अधिक चमत्कारी) व्यङ्ग्य (अर्थ) न होने पर गुणीभूत व्यङ्ग्य (नामक दूसरे प्रकार का काव्य) होता है जो मध्यम काव्य कहा जाता है।

3- चित्र-काव्य- ''शब्दचित्रं वाच्यचित्रमव्यङ्ग्यं त्ववरं स्मृतम्।।''

व्यङ्ग्य (अर्थ) से रहित 'शब्दचित्र' तथा अर्थचित्र (दो प्रकार) अधम (काव्य) कहा गया है।

चित्रमिति गुणालङ्कारयुक्तम्। अव्यङ्गमितिस्फुटप्रतीयमानार्थरहितम्। अवरम् अधमम्।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'त्रयः समुदिताः न तु व्यस्ताः' यह काव्यप्रकाश के प्रथम उल्लास में काव्यहेतु के सन्दर्भ में आया है। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- काव्यप्रकाश (1.3)-सीताराम दोतोलिया, पेज 41-43

85. काव्यप्रकाशे उपमानोपमेययोः अभेदे अयमलङ्कारः भवति-

(A) रूपकम् (B) उपमा
(C) उत्प्रेक्षा (D) श्लेषः

व्याख्या- आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश के नवमोल्लास में शब्दालङ्कार रूप दसवें में अर्थालङ्कारों की चर्चा करते हैं, जिसमें 5 शब्दालंकार, 61 अर्थालङ्कार और 1 उभयालङ्कार कुल मिलाकर 67 प्रकार के अलङ्कारों का निरूपण किया गया है।

1- उपमा अलङ्कार- ''साधर्म्यमुपमा भेदे।''

(उपमान तथा उपमेय का) भेद होने पर (उनके) साधर्म्य (का

वर्णन) उपमा (कहलाता) है। यह उपमा दो प्रकार की होती है- 1- पूर्णोपमा और 2- लुप्तोपमा (पूर्णा लुप्ता च)। उपमान, उपमेय, साधारणधर्म और उपमावाचक (इव आदि पद इन चारों) का ग्रहण होने पर पूर्णा (उपमा) तथा (उन चारों में से) एक या दो या तीन का लोप होने पर लुप्ता (उपमा) होती है।

2- रूपक अलङ्कार- ''तद्रूपकमभेदो य उपमानोपमेययोः।'' उपमान और उपमेय का (जिनका भेद प्रसिद्ध है उनका सादृश्यातिशयवश) जो अभेद (वर्णन) है वह रूपक (अलङ्कार) है। **यथा- ज्योत्स्नाभस्मच्छुरणधवला बिभ्रती तारकास्थी- न्यन्तर्द्धानव्यसनरसिका रात्रिकापालिकीयम्।**

द्वीपाद् द्वीपं भ्रमति दधती चन्द्रमुद्राकपाले

न्यस्तं सिद्धाञ्जनपरिमलं लाञ्छनस्यच्छलेन॥

इस उदाहरण में रात्रि के ऊपर कापालिकी का आरोप किया गया है। यही प्रधान रूपक है।

3- उत्प्रेक्षा अलङ्कार- ''सम्भावनमथोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य समेन यत्।''

प्रकृत (अर्थात् वर्ण्य उपमेय) की सम (अर्थात् उपमान) के साथ सम्भावना (अर्थात् उत्कटकोटिक सन्देह) उत्प्रेक्षा कहलाती है। **यथा- लिम्पतीव तमोऽङ्गानि वर्षतीवाञ्जनं नभः।**

असत्पुरुषसेवेव दृष्टिर्विफलतां गता॥

(वर्षाकाल की रात्रि के समय) अन्धकार अङ्गों को लीप-सा रहा है, आकाश काजल की वृष्टि-सी कर रहा है और दुष्ट पुरुष की सेवा के समान दृष्टि विफल-सी हो गई है।

4. श्लेष अलङ्कार- ''वाच्यभेदेन भिन्ना यद् युगपद्भाषणस्पृशः।

श्लिष्यन्ति शब्दाः, श्लेषोऽसावक्षरादिभिरष्टधा॥''

अर्थभेद से भिन्न-भिन्न शब्द जब एक साथ उच्चारण के विषय होने से एक रूप (श्लिष्ट) प्रतीत होते हैं वह श्लेष अलङ्कार है तथा वह अक्षर आदि भेदों से आठ प्रकार का होता है।

1-वर्णश्लेष, 2- पदश्लेष, 3- लिङ्गश्लेष, 4-वचनश्लेष, 5- भाषाश्लेष, 6- प्रकृतिश्लेष, 7- प्रत्ययश्लेष, 8- विभक्तिश्लेष।

उदाहरण- पृथुकार्त्तस्वरपात्रं भूषितनिःशेषपरिजनं देव।

विलसत्करेणुगहनं सम्प्रति सममावयोः सदनम्॥

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि उपमान और उपमेय का सादृश्यातिशयवश जो अभेद वर्णन होता है वहाँ रूपक अलङ्कार होता है। **अतः विकल्प A सही है।**

स्रोत- काव्यप्रकाश (सू. 139)-सीताराम दोतोलिया, पेज 445

86. आसु का नाट्यवृत्तिर्नभवति-

(A) अभिधा (B) आरभटी

(C) सात्वती (D) भारती

व्याख्या- शब्द अपने अर्थ को प्रकट कैसे करता है? इस सन्दर्भ में 'शब्दब्रह्म' की स्थापना करने वाले वाक्यपदीयकार आचार्य भर्तृहरि ने अत्यन्त वैज्ञानिक विवेचन करते हुए बताया कि शब्द के भीतर अर्थ प्रकाशन की एक विलक्षण शक्ति निहित होती है। उसी शक्ति से वह अपने अर्थ का प्रकाशन करता है। ये शक्तियाँ तीन प्रकार की हैं- अभिधा, लक्षणा, व्यञ्जना।

अभिधा- अभिधा से वाच्य अथवा मुख्यार्थ का प्रकाशन करने वाला शब्द 'वाचक' कहा जाता है। जैसे- गौः शब्द। इसका एक निश्चित अर्थ है- सास्नादिमान् पशुविशेष।

लक्षणा- लक्षणा शक्ति से लक्ष्य अर्थ को बताने वाला शब्द 'लाक्षणिक' कहा जाता है। जैसे- संसद ने सर्वसम्मति से यह प्रस्ताव पास कर दिया। यहाँ पर संसद अपने मुख्यार्थ (संसद-भवन) को छोड़कर सांसदभूत सदस्यों का बोध करायेगी। मुख्यार्थ से जुड़े इसी अर्थ को लक्ष्यार्थ कहते हैं।

व्यञ्जना- व्यङ्ग्य अर्थ को प्रकाशित करने वाला शब्द 'व्यञ्जक' कहा जाता है। जैसे- गतोऽस्तमर्कः (सूर्यास्त हो गया) कहने पर सुनने वाले विविधश्रोता विविध अर्थों की प्रतीति करते हैं। जैसे- चोर को चोरी करने का, प्रणयीयुगल को संकेत स्थान पर पहुँचने का, बच्चे को दादी से कहानी सुनने का अभिप्राय अपने-अपने वैशिष्ट्य के कारण प्रतीत होता है। इन अतिरिक्त अभिप्रायों को ही व्यङ्ग्यार्थ कहते हैं।

वृत्ति

साहित्यदर्पणकार श्री विश्वनाथ कविराज ने नाटक की चार वृत्तियों का वर्णन अपने ग्रन्थ साहित्यदर्पण में किया है।

''श्रृंगारे कैशिकी, वीरे सात्वत्यारभटी पुनः।

रसे रौद्रे च बीभत्से, वृत्तिः सर्वत्र भारती।।

श्रृंगार रस में विशेषतः कैशिकी वृत्ति और वीर, रौद्र तथा वीभत्स रस में सात्वती तथा आरभटी वृत्ति उपयुक्त है। किन्तु भारती वृत्ति सर्वत्र उपयुक्त हो सकती है। ये चार वृत्तियाँ सम्पूर्ण नाटक की उपजीव्य हैं। इस प्रकार ये चार नाट्य वृत्तियाँ- (कैशिकी, सात्वती, आरभटी और भारती) आचार्य विश्वनाथ ने बताईं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि दिये गये विकल्पों में तीन-आरभटी, सात्वती और भारती ये नाट्य वृत्तियाँ हैं और अभिधा शब्दशक्ति के अन्तर्गत आती हैं। **अतः विकल्प A सही है।**

स्रोत- साहित्यदर्पण (6/122) - शालिग्रामशास्त्री, पेज 199

87. ''भम धम्मिअ-'' इत्यादिश्लोकः ध्वन्यालोके प्रथमे उद्द्योते अस्य उदाहरणं भवति-

(A) वाच्ये प्रतिषेधे विधिरूपस्य

(B) वाच्ये विधिरूपे प्रतिषेधरूपस्य

(C) वाच्ये विधिरूपेऽनुभयरूपस्य

(D) वाच्ये प्रतिषेधेऽनुभयरूपस्य

व्याख्या- आचार्य आनन्दवर्धन ने ध्वन्यालोक के प्रथम उद्द्योत में प्रतीयमान अर्थ के वर्णन में मुख्यतः 5 प्रकार के प्रतीयमान अर्थ के भेद बताये हैं-

1- वाच्य के विधिरूप होने पर प्रतीयमान का निषेधरूप होना। जैसे- भम धम्मिअ वीसत्थो सो सुणओ अज्ज मारिओ देण।

गोलाणइकच्छकुडंगवासिणा दरिअसीहेण।।

(भ्रम धार्मिक विस्रब्धः स शुनकोऽद्य मारितस्तेन।

गोदानदीकच्छकुञ्जवासिना दृप्तसिंहेन।।)

पण्डित जी महाराज! गोदावरी के किनारे कुञ्ज में रहने वाले मदमत्त सिंह ने आज उस कुत्ते को मार डाला है, अब आप निश्चिन्त होकर घूमिये।

यहाँ इस श्लोक का वाच्यार्थ तो विधिरूप है कि 'निश्चिन्त होकर घूमो।'' किन्तु प्रतीयमान अर्थ वस्तुतः निषेधरूप है कि इस स्थान पर कभी मत आइयेगा, नहीं तो कुत्ते की जगह सिंह से भेंट होगी।

2- प्रतिषेधरूप वाच्यार्थ होने पर प्रतीयमान का विधिरूप होना। जैसे- श्वश्रूरत्र निमज्जति अत्राहं दिवसकं प्रलोकय।

मा पथिक रात्र्यन्धक शय्यायां मम निमंक्ष्यसि।।

हे पथिक! दिन में अच्छी तरह देख लो, यहाँ सासजी सोती हैं और यहाँ मैं सोती हूँ रात में रतौंधीग्रस्त होकर कहीं मेरी खाट पर न गिर पड़ना।

3- वाच्य विधिरूप होने पर प्रतीयमानार्थ का अनुभयरूप होना, अर्थात् विधि और निषेध दोनों से भिन्न होना। जैसे-

व्रज ममैवैकस्या भवतु निःश्वास रोदितव्यानि।

मा तवापि तया विना दाक्षिण्यहतस्य जनिषत।।

तुम जाओ, मैं अकेली ही इन निःश्वास और रोने को भोगूँ (सो अच्छा है) कहीं दाक्षिण्य के चक्कर में पड़कर, उसके बिना तुम्हें भी यह सब न भोगना पड़े।

4- प्रतिषेधरूप वाच्य के होने पर प्रतीयमान का अनुभयरूप होना। जैसे- प्रार्थये तावत्प्रसीद निवर्तस्व मुखशशिज्योत्स्ना। विलुप्ततमोनिवहे। अभिसारिकाणां विघ्नं करोएयन्यासामपि हताशे।

5.वाच्य और प्रतीयमान का विषय भेद होने से व्यङ्ग्यार्थ का वाच्यार्थ से अत्यन्त भिन्न होना। जैसे-

कस्य वा न भवति रोषो दृष्ट्वा प्रियायाः सव्रणमधरम्।

सभ्रमरपद्माघ्रायिणि वारितवामे सहस्वेदानीम्।।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है 'भम धम्मिअ..' इत्यादि श्लोक वाच्य के विधिरूप होने पर प्रतीयमानार्थ के निषेधरूप होने के उदाहरण रूप में ध्वन्यालोककार के द्वारा उद्धृत किया गया है। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- ध्वन्यालोक (1/4)- आचार्य विश्वेश्वर, पेज 13

88. दशरूपकतः रिक्तस्थानं पूरयत-''आनन्दनिस्यन्दिषु रूपकेषु व्युत्पत्तिमात्रं फलमल्पबुद्धिः। योऽपीतिहासादिवदाह साधुस्तस्मै नमः...॥

(A) काव्यपराङ्मुखाय (B) नाट्यपराङ्मुखाय

(C) शास्त्रपराङ्मुखाय (D) स्वादुपराङ्मुखाय

व्याख्या- प्राचीन भारतीय परंपरा के अनुसार विघ्नों के विनाश तथा उससे होने वाली ग्रन्थ की समाप्ति के लिए दशरूपककार आचार्य धनञ्जय ने श्लोकों - (1) नमस्तस्यै गणेशाय यत्कण्ठः...।। तथा (2) दशरूपानुकारेण यस्य माद्यन्ति.....। से अपने इष्टदेव गणेश एवं विष्णु को नमस्कार करते हुए मङ्गलाचरण किया। दशरूपक के इस प्रथम प्रकाश में मङ्गल से आरंभ करके ग्रन्थ का प्रयोजन (फल) बताते हुए कहते हैं-

आनन्दनिस्यन्दिषु रूपकेषु व्युत्पत्तिमात्रं फलमल्पबुद्धिः। योऽपीतिहासादिवदाह साधुस्तस्मै नमः स्वादुपराङ्मुखाय॥6॥

जो अल्पबुद्धि वाले सज्जन (व्यक्ति) आनन्द को प्रवाहित करने वाले रूपकों के (अध्ययन या उनके अभिनय के दर्शन) का फल भी, इतिहास आदि (ग्रन्थों के अध्ययन) के समान, एकमात्र (धर्म आदि का) ज्ञान ही बतलाते हैं, रसास्वाद से विमुख उन जन को नमस्कार है (अर्थात् ऐसे लोग प्रणाम करने लायक हैं)।।

उपर्युक्त श्लोक के द्वारा धनञ्जय ने यह दिखलाया है कि-(सहृदय व्यक्तियों के द्वारा) स्वयं अनुभव किया जाने वाला, परमानन्द स्वरूप, रसास्वादन दशरूपकों का फल है न कि इतिहास आदि की तरह केवल त्रिवर्ग (धर्म, अर्थ तथा काम) आदि का ज्ञान। (रसास्वाद से विमुख जन को नमस्कार है''- इस कथन में) 'नमः' यह कथन उपहासपूर्वक कहा गया हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण को देखने से स्पष्ट हो जाता है कि दिये गये रिक्त स्थान पर स्वादुपराङ्मुखाय होगा।

अतः विकल्प D सही है।

स्रोत- दशरूपक (1/5) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज 05

89. ''कटुकौषधवच्छास्त्रमविद्याव्याधिनाशनम्।'' इत्युक्तिः एषु कस्मिन् अलङ्कारग्रन्थेऽस्ति-
(A) साहित्यदर्पणे (B) वक्रोक्तिजीविते
(C) रसगङ्गाधरे (D) काव्यप्रकाशे

व्याख्या- काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ वक्रोक्तिजीवितम् राजानक कुन्तक की एकमात्र रचना है। इसमें चार उन्मेष हैं।
चतुर्वर्गफलास्वादमप्यतिक्रम्य तद्विदाम्' इस प्रथमोन्मेष की पाँचवीं कारिका के व्याख्यान में यह उक्ति आचार्य कुन्तक द्वारा कही गयी है-

'कटुकौषधवच्छास्त्रमविद्याव्याधिनाशनम्।' (17)

अर्थात् शास्त्र कड़वी ओषधी के समान अविद्यारूपी व्याधि का नाश करने वाला होता है।

'आह्लाद्यमृतवत्काव्यमविवेकगदापहम्' (1.7)

काव्य आह्लादि अमृतरस के समान अविवेक रूपी रोग का विनाश करता है।

➢ आचार्य कुन्तक वक्रोक्तिजीवितम् के प्रथम उन्मेष की सातवीं कारिका में काव्य का लक्षण करते हुए कहते हैं-

शब्दार्थौ सहितौ वक्रकविव्यापारशालिनि। बन्धे व्यवस्थितौ काव्यं तद्विदाह्लादकारिणि॥7॥

अर्थात् शास्त्रादि प्रसिद्ध शब्द तथा अर्थ के उपनिबन्धन से भिन्न कविव्यापार से शोभित काव्यतत्त्वज्ञों को आनन्दित करने वाले काव्य में विशेष रूप से स्थित सहभाव से युक्त शब्द तथा अर्थ दोनों मिलकर काव्य होता है।

➢ काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ साहित्यदर्पण आचार्य विश्वनाथ की रचना है जिसमें दस परिच्छेद हैं। काव्यप्रयोजन (पुरुषार्थचतुष्टय) के सन्दर्भ में कहते हैं- कटुकौषधोपशमनीयस्य रोगस्य सितशर्करारोगशमनीयत्वे कस्य वा रोगिणः सितशर्कराप्रवृत्तिः साधीयसी न स्यात्?'

अर्थात् जब कड़वी कसैली औषध से होने वाली रोगशान्ति मीठी खांड (शर्करा) से ही हो सकती हो, तब भला कौन ऐसा होगा जो अपने ताप शमन के लिए मीठी खांड (काव्य) के प्रति लालायित न हो उठे?

➢ **आचार्य विश्वनाथ का काव्य प्रयोजन है-**

चतुर्वर्गफलप्राप्तिः सुखादल्पधियामपि।
काव्यादेव यतस्तेन तत्स्वरूपं निरूप्यते।। (सा.द.1.2)

अर्थात् काव्य एक ऐसी वस्तु है जिससे अल्पबुद्धि मानव को, बिना किसी कष्टसाधना के, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष रूप पुरुषार्थचतुष्टय की प्राप्ति हुआ करती है।

➢ आचार्य मम्मट द्वारा विरचित काव्यप्रकाश भी काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ है। जिसमें दस उल्लास हैं। आचार्य मम्मट द्वारा प्रतिपादित काव्यप्रयोजन है-

शक्तिर्निपुणता लोकशास्त्रकाव्याद्यवेक्षणात्।
काव्यज्ञशिक्षयाभ्यास इति हेतुस्तदुद्भवे॥
(काव्यप्रकाश 1.3)

कवि में रहने वाली उसकी स्वाभाविक प्रतिभारूप शक्ति, लोकव्यवहार, शास्त्र तथा काव्य आदि के पर्यालोचन से उत्पन्न निपुणता और काव्य को शिक्षा को जानने वाले अभ्यास ये तीनों मिलकर उस काव्य के उद्भव के कारण हैं।
पण्डितराज जगन्नाथ द्वारा रचित रसगंगाधर में चार आनन हैं। पण्डितराज जगन्नाथ के अनुसार काव्य का लक्षण है -

रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्। (का॰1)

रमणीय अर्थ का प्रतिपादन करने वाला शब्द 'काव्य' है।

स्पष्टीकरण- 'कटुकौषधवच्छास्त्रमविद्याव्याधिनाशनम्' यह पंक्ति आचार्य कुन्तक द्वारा रचित वक्रोक्तिजीवितम् नामक ग्रन्थ से है। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- वक्रोक्तिजीवितम् (1/7) - राधेश्याम मिश्र, पेज 15

90. एषु किं काण्डं रामायणे नास्ति?
(A) किष्किन्धाकाण्डम् (B) सीताकाण्डम्
(C) बालकाण्डम् (D) युद्धकाण्डम्

व्याख्या- रामायण महर्षि वाल्मीकि की कृति है, इसमें 24000 श्लोक हैं अतः इसे 'चतुर्विंशतिसाहस्री संहिता' भी कहते हैं। रामायण में मुख्यतः अनुष्टुप् छन्द का प्रयोग हुआ है। वाल्मीकिरामायण को आदिकाव्य की संज्ञा दी जाती है, इसे 'आर्षकाव्य' भी कहा जाता है। वाल्मीकिरामायण में कुल सात काण्ड तथा 645 सर्ग हैं जिनका विवरण निम्न है-

काण्ड का नाम तथा सर्ग संख्या-	
काण्ड का नाम	**सर्ग संख्या**
1- बालकाण्ड	77
2- अयोध्याकाण्ड	119
3- अरण्यकाण्ड	75
4- किष्किन्धाकाण्ड	67
5- सुन्दरकाण्ड	68
6- युद्धकाण्ड	128
7- उत्तरकाण्ड	111
कुल सर्ग	645

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि दिये गये विकल्पों में सीताकाण्ड रामायण में नहीं है। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज 122

91. अस्य महापुराणेषु गणना नास्ति?

(A) पद्मपुराणस्य (B) ब्रह्मपुराणस्य
(C) विष्णुपुराणस्य (D) आदित्यपुराणस्य

व्याख्या- पुराणों का विकास दो रूपों में हुआ है महापुराण तथा उपपुराण। महापुराण प्राचीनतर हैं, जिनकी संख्या अठारह है। इस विषय में एक संग्रहश्लोक मिलता है-

मद्वयं भद्वयं चैव ब्रत्रयं वचतुष्टयम्।
अनापलिंगकूस्कानि पुराणानि पृथक् पृथक्।।

अर्थात् ''म'' से दो पुराण मत्स्य तथा मार्कण्डेय, भ से दो पुराण- भविष्य तथा भागवत, ब्र-से तीन पुराण- ब्रह्म, ब्रह्माण्ड, तथा ब्रह्मवैवर्त, व से चारपुराण- विष्णु, वामन, वराह तथा वायु। पुनः अ से अग्नि, ना से नारद, प से पद्म, लिं से लिङ्ग, ग से गरुड, क से कूर्म और स्क स्कन्द ये 18 पुराण पृथक् - पृथक् हैं।

* **उपपुराण-** उपपुराणों की संख्या 18 है- सनत्कुमार, नारसिंह, स्कान्द (या शिव), शिव-धर्म, आश्चर्य, नारदीय, कपिल, औशनस, वारुण, कल्कि, कालिका, माहेश्वर, साम्ब, सौर (सूर्य), पाराशर, मारीच, भार्गव तथा नन्द।

महापुराण	उपपुराण
1. ब्रह्मपुराण	1. सनत्कुमार
2. पद्मपुराण	2. नारसिंह
3. विष्णुपुराण	3. स्कान्द या शिव
4. वायुपुराण	4. शिवधर्म
5. भागवतपुराण	5. आश्चर्य
6. नारदपुराण	6. नारदीय
7. मार्कण्डेयपुराण	7. कपिल/कापिल
8. अग्निपुराण	8. औशनस
9. भविष्यपुराण	9. वारुण
10. ब्रह्मवैवर्तपुराण	10. कल्कि
11. लिङ्गपुराण	11. कालिका
12. वराहपुराण	12. माहेश्वर
13. स्कन्दपुराण	13. साम्ब
14. वामनपुराण	14. सौर (सूर्य)
15. कूर्मपुराण	15. पाराशर
16. मत्स्यपुराण	16. मारीच
17. गरुडपुराण	17. भार्गव
18. ब्रह्माण्डपुराण	18. नन्द

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि पुराणों में आदित्य पुराण की गणना नहीं होती है। **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा, पेज 176

92. एषु किम् उपपुराणं न भवति?

(A) कूर्मपुराणम् (B) साम्बपुराणम्
(C) नृसिंहपुराणम् (D) एकाम्रपुराणम्

व्याख्या- पुराण- इतिहास तथा पुराण को प्राचीन साहित्य में समान स्तर पर रखा गया है। वैदिक साहित्य के अतिरिक्त महाभारत में भी कहा गया है- 'इतिहासपुराणाभ्यां वेदं समुपबृंहयेत्।' अर्थात् वेद के अर्थ का पल्लवन इतिहास और पुराण के द्वारा करना चाहिये।

➢ **पुराण का लक्षणः-**

सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च।
वंशानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम्।।

सर्ग– विश्व की सृष्टि की प्रक्रिया
प्रतिसर्ग– प्रलय तथा पुनः सृष्टि का वर्णन
वंश– देवताओं और ऋषियों के वंशों का वर्णन
मन्वन्तर– प्रत्येक मनु का काल और उस काल की प्रमुख घटनाओं का निरूपण
वंशानुचरित– सूर्यवंश और चन्द्रवंश में उत्पन्न राजाओं का जीवन चरित
पुराणों की संख्या– पुराणों का विभाजन दो रूप से हुआ है- पुराण और महापुराण। महापुराण और उपपुराणों की संख्या अठारह है।

महापुराण- 1- ब्रह्मपुराण (आदिपुराण), 2- पद्मपुराण, 3- विष्णुपुराण, 4- वायुपुराण, 5- भागवतपुराण, 6- नारद (बृहन्नारदीय) पुराण, 7- मार्कण्डेयपुराण, 8- अग्निपुराण, 9- भविष्यपुराण, 10- ब्रह्मवैवर्तपुराण, 11- लिङ्गपुराण, 12- वराहपुराण, 13- स्कन्दपुराण, 14- वामनपुराण, 15-कूर्मपुराण 16- मत्स्यपुराण, 17- गरुडपुराण, 18- ब्रह्माण्डपुराण।

उपपुराण- 1- सनत्कुमार, 2- नृसिंह (नारसिंह), 3- स्कान्द (या शिव), 4- शिवधर्म, 5- आश्चर्य, 6- नारदीय, 7- कपिल, 8- औशनस, 9- वरुण, 10- कल्कि, 11- कालिका, 12-माहेश्वर, 13- साम्ब, 14- सौर (सूर्य), 15- पाराशर, 16- मारीच, 17- भार्गव, 18- नन्द।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि महापुराण में 'कूर्मपुराण' की गणना होती है जबकि उपपुराण में नृसिंह, साम्ब पुराण, एकाम्रपुराण आता है। **अतः विकल्प A सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा , पेज 177

93. एषु किं पर्व महाभारते नास्ति-
(A) मौसलपर्व (B) कुन्तीपर्व
(C) शान्तिपर्व (D) उद्योगपर्व

व्याख्या- महाभारत के रचयिता कृष्णद्वैपायन वेदव्यास हैं। इनके पिता का नाम पराशर ऋषि तथा माता का नाम सत्यवती था। विश्व वाङ्मय का सर्वाधिक विशाल ग्रन्थ महाभारत है। इसमें एक लाख से अधिक श्लोक हैं। इसे 'शतसाहस्री संहिता' भी कहते हैं। यह अट्ठारह पर्वों में विभक्त है। इसका सबसे बड़ा पर्व शांतिपर्व (14 हज़ार श्लोक) है तथा सबसे छोटा पर्व महाप्रस्थानिक (115 श्लोक) है। अट्ठारह पर्वों के अलावा अन्त में इसके परिशिष्ट के रूप में 'हरिवंश पर्व' में कृष्ण जीवनचरित वर्णित है, इसे मिलाकर श्लोकों की संख्या एक लाख होती है।

महाभारत के 18 पर्व उनके अध्याय तथा श्लोक संख्याः-

क्रम पर्व	अध्याय	श्लोक
1. आदिपर्व	233	9000
2. सभापर्व	81	
3. वनपर्व	315	
4. विराटपर्व	72	2700
5. उद्योगपर्व	196	7100
6. भीष्मपर्व	122	6100
7. द्रोणपर्व	202	10,000
8. कर्णपर्व		
9. शल्यपर्व	65	3700
10. सौप्तिकपर्व	18	810
11. स्त्रीपर्व	27	820
12. शान्तिपर्व	365	14723
13. अनुशासनपर्व	168	10000
14. आश्वमेधिकपर्व	92	4250
15 आश्रमवासिकपर्व	39	110
16 मौसलपर्व	304	
17 महाप्रस्थानिकपर्व	3115	
18 स्वर्गारोहणपर्व	5	220

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि महाभारत के अठारह पर्वों के अन्तर्गत कुन्तीपर्व सम्मिलित नहीं है। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज 145

94. कौटिलीयार्थशास्त्रे सर्वविद्यानां प्रदीपः सर्वकर्मणाम् उपायः, सर्वधर्माणामाश्रयः भवति-
(A) आन्वीक्षिकी (B) त्रयी
(C) वार्ता (D) दण्डनीतिः

व्याख्या- आचार्य कौटिल्य कृत अर्थशास्त्र में पन्द्रह अधिकरण, एक सौ पचास अध्याय, एक सौ अस्सी प्रकरण और छह हजार श्लोक हैं।

➤ आचार्य कौटिल्य चार विद्याओं को मानते हैं- आन्वीक्षिकी त्रयी वार्ता दण्डनीतिश्चेति विद्याः। (1) आन्वीक्षिकी (2) त्रयी (3) वार्ता (4) दण्डनीति।

1- चार विद्याओं में सर्वप्रथम आन्वीक्षिकी का लक्षण प्रस्तुत करते हैं- **प्रदीपः सर्वविद्यानामुपायः सर्वकर्मणाम्।**
आश्रयः सर्वधर्माणां शश्वदान्वीक्षिकी मता॥

यह आन्वीक्षिकी विद्या सर्वदा ही सब विद्याओं का प्रदीप, सभी कार्यों का साधन और धर्मों का आश्रय मानी गई है।

2- त्रयी स्थापना- सामर्ग्यजुर्वेदास्त्रयस्त्रयी। साम, ऋक् यजुः इन तीनों वेदों का समन्वित नाम ही त्रयी है।

3- वार्ता- कृषिपाशुपाल्ये वाणिज्या च वार्ता।
कृषि, पशुपालन और व्यापार, ये वार्ता विद्या के विषय हैं।

4- दण्डनीति- आन्वीक्षिकीत्रयीवार्तानां योगक्षेमसाधनो दण्डः।
आन्वीक्षिकी, त्रयी और वार्ता इन सभी विद्याओं की सुख समृद्धि दण्ड पर निर्भर है। दण्ड को प्रतिपादित करने वाली नीति ही दण्डनीति कहलाती है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि आन्वीक्षिकी का लक्षण 'प्रदीपः सर्वविद्यानामुपायः सर्वकर्मणाम् ......' है। **अतः विकल्प A सही है।**

स्रोत- कौटिलीय अर्थशास्त्र - श्री वाचस्पति गैरोला, पेज 9

95. मनुसंहितानुसारं राज्ञः सचिवानां संख्या भवति-
(A) 10-12 (B) 7-8
(C) 3-4 (D) 5-6

व्याख्या- मनु के अनुसार सात या आठ मन्त्रियों की मन्त्रिपरिषद् होती है, अतएव राजा सात या आठ मन्त्रियों की नियुक्ति करता है। मनु के अनुसार ये मन्त्री वंशक्रमनुगत, शास्त्रज्ञाता, शूरवीर, शास्त्र विद्या में प्रवीण, उत्तम वंश में उत्पन्न और भलीभाँति परीक्षा करके नियुक्त किए गए हों।

मौलाञ्छास्त्रविदः शूराँल्लँब्धलक्षान् कुलोद्भवान्।
सचिवान्सप्त चाष्टौ वा प्रकुर्वीत परीक्षितान्॥
(मनु. 7.54)

मनु ने राजा के लिए चिन्तनीय 6 गुणों को बताया है- सन्धि, विग्रह, यान, आसन, द्वैधीभाव और संश्रय।

सन्धिं च विग्रहं चैव यानमासनमेव च।
द्वैधीभावं संश्रयं च षड्गुणांश्चिन्तयेत्सदा।। (7.160)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि मनु ने 7 या 8 सचिवों की परिषद् मानी है। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- मनुस्मृति (7/54)-गिरिधर गोपाल शर्मा, पेज 170-171

**96. ''तमसा बहुरूपेण वेष्टिताः कर्महेतुना।
अन्तःसञ्ज्ञा भवन्त्येते सुख-दुःखसमन्विताः।।
इति मनुवचनं केन सम्बद्धम्?**

(A) उद्भिदेन (B) अण्डजेन
(C) जरायुजेन (D) स्वेदजेन

व्याख्या- आचार्य मनु ने मनुस्मृति के प्रथम अध्याय में सृष्ट्युत्पत्ति के अन्तर्गत उद्भिज्ज, अण्डज, जरायुज और स्वेदज प्राणियों के विषय में चर्चा की है।

1- उद्भिज्ज- बीज से पृथ्वी को फोड़कर अथवा टहनी लगाने से जो सब वृक्ष उगते हैं उनको उद्भिज्ज कहते हैं। फल पक जाने पर जो सूख जाते हैं और जिनमें बहुत से फल और फूल लगते हैं उन्हें 'ओषधि' कहते हैं। जिनमें फूल न लगें किन्तु फल लगें उन्हें वनस्पति कहते हैं। जिनमें फूल और फल दोनों लगे उन्हें वृक्ष कहते हैं। अनके प्रकार के गुच्छ, गुल्म, तृण लता और प्रतान, बीज बोने या टहनी लगाने से उग आते हैं। ये सभी पूर्वजन्म के कर्म के कारण बहुत से तमोगुण से घिरे हुए हैं, सुख-दुःख से युक्त हैं और इनके भीतर चेतना है-

**तमसा बहुरूपेण वेष्टिताः कर्महेतुना।
अन्तःसञ्ज्ञा भवन्त्येते सुखदुःखसमन्विताः।।**
मनु.1.49।।

2- अण्डज- पक्षी, साँप, मगरमच्छ, मछली और कछुए अण्डज हैं और जितने ऐसे जीव, जल और स्थल में पैदा होते हैं वे सब भी अण्डज हैं।

**अण्डजाः पक्षिणः सर्पाः नक्राः मत्स्याश्च कच्छपाः।
यानि चैव प्रकाराणि स्थलजान्यौदकानि च।।** मनु.1.44।।

3- जरायुज- पशु, मृग, ऊपर नीचे दोनों ओर दाँत वाले, राक्षस, पिशाच और मनुष्य ये सब जरायुज हैं। जरायु गर्भावरण की त्वचा को कहते हैं, उसी से सब उत्पन्न होते हैं-

**पशवश्च मृगाश्चैव व्यालाश्चोभयतोदतः।
रक्षांसि च पिशाचाश्च मनुष्याश्च जरायुजाः।।** (मनु. 1.43)

4- स्वेदज- डाँस, मच्छर, जूँ, मक्खी, खटमल और अन्य ऐसे ही जीव जो गरमी से उत्पन्न होते हैं वे स्वेदज हैं। ये प्राणियों के पसीने आदि मलिन द्रव्यों से उत्पन्न होते हैं-

स्वेदजं दंशमशकं यूकामक्षिकमत्कुणम्।
ऊष्मणश्चोपजायन्ते यच्चान्यत्किञ्चिदीदृशम्।।1.45।।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि प्रश्नगत मनु का कथन उद्भिदों से सम्बद्ध है। **अतः विकल्प A सही है।**

स्रोत- मनुस्मृति (1/49)- गिरिधर गोपाल शर्मा, पेज 29

97. श्रीमद्भगवद्गीतायां कर्मयोगः कतमोऽध्यायः?

(A) द्वितीयोऽध्यायः (B) तृतीयोऽध्यायः
(C) चतुर्थोऽध्यायः (D) पञ्चमोऽध्यायः

व्याख्या- महर्षि वेदव्यास द्वारा विरचित महाभारत के भीष्मपर्व में वर्णित श्रीमद्भगवद्गीता सर्वाधिक लोकप्रिय भारतीय सनातनधर्म का ग्रन्थरत्न है। गीता में उन सभी विषयों का समावेश है जो हमें पृथक्-पृथक् शास्त्रों में प्राप्त होते हैं। अतएव महर्षि वेदव्यास ने कहा है- **गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः।
या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्माद्विनिःसृता।।**

अर्थः- गीता सुगीता करने योग्य है अर्थात् श्रीगीताजी को भली-भाँति पढ़कर अर्थ और भाव सहित अन्तःकरण में धारण कर लेना मुख्य कर्तव्य है, जो कि स्वयं पद्मनाभ भगवान् श्रीविष्णु के मुखारविन्द से निकली हुई है, फिर अन्य शास्त्रों के विस्तार से क्या प्रयोजन? श्रीमद्भगवद्गीता में कुल 18 अध्याय और 700 श्लोक हैं। इसका सबसे बड़ा अध्याय 18वाँ अध्याय (मोक्षसंन्यासयोग 78 श्लोक) तथा सबसे छोटा अध्याय 12वाँ और 15वाँ (भक्तियोग तथा पुरुषोत्तमयोग 20 श्लोक) हैं।

श्रीमद्भगवद्गीता के अध्याय एवं उनके नामः-

अध्याय अध्यायनाम

1. अर्जुनविषादयोग 8 अक्षरब्रह्मयोग 15 पुरुषोत्तमयोग
2. सांख्ययोग 9 राजविद्याराजगुह्ययोग 16 देवासुरसम्पद्विभागयोग
3. कर्मयोग 10 विभूतियोग 17 श्रद्धात्रयविभागयोग
4. ज्ञानकर्मसंन्यासयोग 11 विश्वरूपदर्शनयोग 18 मोक्षसंन्यास योग
5. कर्मसंन्यासयोग 12 भक्तियोग
6. आत्मसंयमयोग 13 क्षेत्रक्षेत्रज्ञविभागयोग
7. ज्ञानविज्ञानयोग 14 गुणत्रयविभागयोग

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि श्रीमद्भगवद्गीता में 'कर्मयोग' तृतीय अध्याय को कहा जाता है।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- श्रीमद्भगवद्गीता - अध्याय तीन

98. ''एपिग्राफिया इण्डिका' इति पत्रिकायाः प्रकाशनम् केन प्रारब्धम्?
(A) जेम्स प्रिंसेपमहोदयेन
(B) सर विलियमजोंसमहोदयेन
(C) जे॰बर्जेसमहोदयेन
(D) कीलहार्न महोदयेन

व्याख्या- एपिग्राफिया इण्डिका नामक पत्रिका आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया की ओर से 1882 से 1977 तक प्रकाशित होती थी। इसका पहला संस्करण जेम्स बर्जेस महोदय द्वारा सम्पादित किया गया था (1882 ई. में)। 1892 से 1920 के मध्य तक यह पत्रिका तीन महीने में एक बार 'द इण्डियन एंटीक्वरी' के परिशिष्टरूप में प्रकाशित होती रही। इस पत्रिका के लगभग 43 संस्करण प्रकाशित हुए। ये सभी संस्करण पुरालेखशास्त्र की शाखा के ASI अधिकारियों द्वारा सम्पादित किये जाते थे। अतः इस पत्रिका के प्रकाशन में जेम्स बर्जेस की मुख्य भूमिका रही।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है।
कि विकल्प C सही है। स्रोत- गूगल विकीपीडिया

99. 'धम्मलिपि' नाम कस्य लेखेषु प्राप्यते?
(A) अशोकस्य (B) समुद्रगुप्तस्य
(C) खारवेलस्य (D) कनिष्कस्य

व्याख्या- मौर्य सम्राट् अशोक के ब्राह्मी, खरोष्ठी, आरामेयिक और यूनानी- लिपियों में अंकित अभिलेख देश के विभिन्न भागों से प्राप्त हुए अशोक के 14 अभिलेख प्राप्त हुए हैं।
अशोक के अभिलेखों को धम्मलिपि या धम्मानुशासन धर्मलिपि, धर्मानुशासन, धर्मशास्त्र कहा है। अशोक ने भी इन्हें धम्मलिपि नाम दिया है- 'इयं धम्मलिपि'। प्रथम शिलालेख ही प्रारम्भ होता है- 'इयं धम्मलिपि देवानां पियेना पियदसिला लेखिता' से। इसलिए इन्हें 'धम्मलिपि' नाम से सम्बोधित किया जाता है।
* समुद्रगुप्त का प्रयागस्तम्भ अभिलेख –
स्थान - प्रयागराज, उत्तर प्रदेश
भाषा - संस्कृत
लिपि - ब्राह्मी
काल - समुद्रगुप्त, (लगभग 335-76ई.)
विषय - समुद्रगुप्त का जीवनचरित तथा उपलब्धियों का वर्णन।
*** खारवेल का हाथीगुम्फा अभिलेख –**
स्थान- हाथीगुम्फा- भुवनेश्वर के निकट उदयगिरि पहाड़ी जिला पुरी, उड़ीसा। लिपि - ब्राह्मी
काल - लगभग प्रथमशती ई.पू. का उत्तरार्ध
विषय - चेदिवंशी राजा कलिंगाधिपति खारवेल के जीवन की घटनाओं का क्रमिक विवरण एवं उसकी राजनैतिक उपलब्धियों तथा लोकमंगल के कार्यों का उल्लेख।
*** कनिष्क का सारनाथ बौद्धप्रतिमाभिलेख**
स्थान - सारनाथ, जिला – वाराणसी, उत्तर-प्रदेश
भाषा - प्राकृत संस्कृत से प्रभावित
लिपि - ब्राह्मी
काल - प्रथम शताब्दी ई॰ उत्तरार्द्ध
विषय - भिक्षु बल द्वारा विभिन्न लोगों के साथ, छत्र और यष्टि की स्थापना, हित और सुख के लिए।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरणों से स्पष्ट है कि धम्मलिपि अशोक के लेखों में प्राप्त है। **अतः विकल्प A सही है।**
स्रोत- भारतीय पुरालेख - शिवस्वरूप सहाय, पेज 90

100. भारतवर्षे दानलेखानाम् उत्कीर्णनं बाहुल्येन कस्मिन् धातौ कृतम्?
(A) लौहधातौ (B) ताम्रधातौ
(C) रजतधातौ (D) स्वर्णधातौ

व्याख्या- प्राचीनकाल में भारतवर्ष में दान की परम्परा का प्रचलन था इस काल में जो भी दान राजा या जिसके द्वारा दिया जाता था उसका लेख ताम्रधातु पर लिखा जाता था जिनमें से कुछ दान लेखों के ताम्रपत्र का विवरण है-
(1) स्कन्दगुप्त का इन्दौर ताम्रपत्र अभिलेख
स्थान- ग्राम- इन्दौर, तहसील- अनूपशहर, जिला-बुलन्दशहर, उ.प्र.
भाषा - संस्कृत
विषय - देवविष्णु ब्राह्मण द्वारा इन्द्रपुर में सूर्यमन्दिर को अक्षयनीवी दान दिए जाने का उल्लेख।
(2) प्रभावती गुप्त का पूना ताम्रपत्र अभिलेख
स्थान - पूना, जिला महाराष्ट्र
भाषा - संस्कृत लिपि-दक्षिण भारतीय नेकदार सिरवाली ब्राह्मी
विषय- गुप्त वंशावली, वैष्णव सन्त चनाल स्वामी को दङ्गुण नामक ग्राम दान तथा प्रशासनिक आदेश।
(3) हर्ष का बाँसखेड़ा का ताम्रपत्र लेख-
यह ताम्रपत्र महाराजाधिराज श्री हर्षवर्धन द्वारा लिखवाया गया है यह उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जिले के बाँसखेड़ा नामक स्थान से प्राप्त हुआ। इस ताम्रपत्र में उन गाँवों का विवरण है जो अग्रहारु दाना के लिए इस प्रतापी राजा ने ब्राह्मणों को दिया।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि भारतवर्ष में दान लेखों के प्रचलन में ताम्रधातु का अधिक प्रयोग होता था।
अतः विकल्प B सही है।

उत्तरमाला

1- B	2- D	3- C	4- A	5- A	6- C	7- A	8- C	9- C	10- B
11- D	12- B	13- C	14- B	15- C	16- B	17- A	18- D	19- C	20- D
21- B	22- B	23- A	24- C	25- C	26- B	27- C	28- B	29- C	30- B
31- B	32- A	33- C	34- A	35- C	36- D	37- A	38- D	39- D	40- B
41- A	42- D	43- C	44- B	45- A	46- C	47- D	48- D	49- D	50- A
51- B	52- C	53- B	54- B	55- B	56- A	57- C	58- A	59- B	60- A
61- B	62- A	63- A	64- B	65- B	66- C	67- A	68- D	69- B	70- A
71- C	72- B	73- D	74- B	75- A	76- A	77- B	78- D	79- C	80- A
81- C	82- B	83- C	84- C	85- A	86- A	87- B	88- D	89- B	90- B
91- D	92- A	93- B	94- A	95- B	96- A	97- B	98- C	99- A	100- B

5	जनवरी 2017	NTA UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् II

1. अधस्तनेषु उचितसम्बन्धयुतं विकल्पं चिनुत

(A) द्यावाचिदस्मै पृथिवी नमेते ...। अग्निसूक्तम्

(B) यस्य ब्रह्मवर्धनं यस्य सोमः ...। सोमसूक्तम्

(C) राजन्तमध्वराणां गोपामृतस्य दीदिविम्..रुद्रसूक्तम्

(D) ता वां वास्तून्युश्मसि गमध्यै यत्र गावो भूरिशृङ्गा अयासः। विष्णुसूक्तम्

व्याख्या-

(A) द्यावा चिदस्मै पृथिवी नमेते- (इन्द्र सूक्त 2.12.13)

प्रस्तुत मन्त्र ऋग्वेद के द्वितीय मण्डल के 12वें सूक्त (इन्द्र सूक्त) से उद्धृत है जिसमें इन्द्र की स्तुति की गई है- ''इस इन्द्र के लिए द्युलोक और पृथिवी लोक भी प्रणाम करने के लिये स्वयं झुक जाते हैं।''

(B) यस्य ब्रह्म वर्धनं यस्य सोमः (इन्द्रसूक्त 2.12.14)

प्रस्तुत मन्त्र ऋग्वेद के द्वितीय मण्डल के 12वें सूक्त (इन्द्र सूक्त) से उद्धृत है जिसमें इन्द्र की स्तुति की गई है- वृद्धि करने वाले ब्रह्म नामक स्तोत्र जिसको बढ़ाते हैं, सोम रस जिसको बढ़ाने वाला है, हे असुरों! वही इन्द्र है।

(C) राजन्तमध्वराणां गोपामृतस्य दीदिविम्- (अग्नि सूक्त 1.1.8)

प्रस्तुत मन्त्र ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के प्रथम सूक्त (अग्निसूक्त) से उद्धृत है जिसमें अग्नि की स्तुति करते हुए कहा गया है कि 'प्रकाशमान होते हुये, हिंसारहित यज्ञों के रक्षक, सत्य कर्मफलों को पुनः पुनः प्रकाशित करने वाले हैं।

(D) ता वां वास्तून्युश्मसि गमध्यै यत्र गावो भूरिशृङ्गा अयासः (विष्णुसूक्त 1.154.6)

प्रस्तुत मन्त्र ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के 154वें सूक्त (विष्णुसूक्त) से उद्धृत है जिसमें विष्णु की स्तुति की गई है- हे यजमान और हे उसकी पत्नी! जहाँ बड़े-बड़े ऊँचे सींगों वाली गायें अथवा अनेक प्रकार से फैलने वाली किरणें निवास करती हैं या अत्यधिक प्रकाश से युक्त हैं। इस विष्णु के प्रिय उस लोक को प्राप्त करूँ, जहाँ उस विष्णु के भक्तजन आनन्द का अनुभव करते हैं।

स्पष्टीकरण- विकल्प D में विष्णु की स्तुति की गई है जो कि सुमेलित है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- ऋक्सूक्त संग्रह (1.154.6)- हरिदत्त शास्त्री, पेज 170

2. अधस्तनयुग्मानां समुचितां तालिकां चिनुत-

(क) पुराणी देवि युवतिः पुरन्धिरनु- व्रतं चरसि विश्ववारे — (i) इन्द्रसूक्तम्

(ख) स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव — (ii) विष्णुसूक्तम्

(ग) यः पृथिवीं व्यथमानामदृंहद्यः पर्वतान्प्रकुपिताँ अरम्णात् — (iii) उषस्सूक्तम्

(घ) तदस्य प्रियमभिपाथो अश्यां नरो यत्र देवयवो मदन्ति — (iv) अग्निसूक्तम्

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(A)	(iii)	(iv)	(i)	(ii)
(B)	(iv)	(i)	(iii)	(ii)
(C)	(i)	(iii)	(ii)	(iv)
(D)	(ii)	(iv)	(i)	(iii)

व्याख्या-

(ख) स नः पितेव सूनवे, अग्ने सूपायनो भव- (अग्निसूक्त 1.1.9)

ऋषि-मधुच्छन्दा, देवता-अग्नि, छन्द-गायत्री।

अग्नि की स्तुति करते हुए कहा गया है कि- हे अग्निदेव! जिस प्रकार पिता पुत्र के लिए सुप्राप्य और कल्याण करने वाला होता है,उसी प्रकार तुम भी हमारे लिए सुप्राप्य बनो और हमारे कल्याण के लिए हमारे संग रहो।

(क) पुराणी देवि युवतिः पुरन्धिरनु व्रतं चरसि विश्ववारे- (उषस् सूक्त 3.61.1)

ऋषि-विश्वामित्र, देवता-उषस्, छन्द-त्रिष्टुप्।

हे उषा देवी! तुम पुरातनी युवती के समान हो अथवा सनातन काल से युवती ही बनी हुई हो, बहुत अधिक बुद्धिमती हो और तुम हमारे यज्ञ आदि नियमों, व्रतों को लक्ष्य करके विचरण करती हो।

(ग) यः पृथिवीं व्यथमानामदृंहद् यः पर्वतान्प्रकुपिताँ अरम्णात्- (इन्द्र सूक्त 2.12.2)

ऋषि-गृत्समद, देवता-इन्द्र, छन्द- त्रिष्टुप्।

इन्द्र की स्तुति में, हे असुरों! जिसने हिलती हुई पृथिवी को स्थिर कर दिया था जिसने पृथिवी को और उस पर रहने वाले प्राणियों को स्थिरता प्रदान की थी जिसने कुपित हुए अर्थात्

इच्छानुसार इधर उधर स्वच्छन्द विचरण करते हुए पंखों से युक्त पर्वतों को अपने-अपने स्थान पर नियमित कर दिया।

(घ) तदस्य प्रियमभिपाथो अश्यां नरो यत्र देवयवो मदन्ति- (विष्णु सूक्त 1.154.5)

ऋषि-दीर्घतमा, देवता-विष्णु, छन्द-त्रिष्टुप्।

इस विष्णु के उस प्रिय लोक द्युलोक को प्राप्त करूँ जहाँ पर देवताओं को प्राप्त करने की इच्छा वाले देवताओं की पूजा करने वाले लोग आनन्द को प्राप्त करते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि **विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्त शास्त्री, पेज 233

3. ''नाहं वेद भ्रातृत्वं नो स्वसृत्वमिन्द्रो विदुरङ्गिरसश्च घोराः'' इति मन्त्रांशो वर्तते।

(A) विश्वामित्र-नदीसूक्ते (B) सरमा-पणि सूक्ते

(C) यम-यमी सूक्ते (D) पुरुरवा-उर्वशी सूक्ते

व्याख्या-

➢ **सरमा पणि सूक्त**

नाहं वेद भ्रातृत्वं नो स्वसृत्वमिन्द्रो विदुरङ्गिरसश्च घोराः।
गोकामा मे अच्छदयन्यदायमपात इत पणयो वरीयः॥

(ऋ.10.108.10)

प्रस्तुत मन्त्र ऋग्वेद के दशम मण्डल के 108वें सूक्त का दसवाँ मन्त्र है इस मन्त्र के देवता सरमा, पणि एवं ऋषि पणि, सरमा हैं। प्रस्तुत मन्त्र में त्रिष्टुप् एवं स्वर धैवत है।

सरमा ने पणि से कहा कि- मैं न तो भ्रातृत्व को जानती हूँ न स्वसृत्व को, इन्द्र तथा भयानक अंगिरस इसको जानते हैं जब मैं आई वे गायों की इच्छा करने वाले मालूम पड़े। अतः हे पणियों किसी विस्तृत स्थान पर चले जाओ।

➢ **विश्वामित्र-नदी सूक्त** ऋग्वेद के तृतीय मण्डल के 33वें सूक्त के रूप में यह सूक्त वर्णित है जिसके ऋषि विश्वामित्र एवं देवता विपाट्, शुतुद्री (नदियाँ) हैं इस सूक्त के मन्त्रों में पंक्ति त्रिष्टुप् एवं उष्णिक् छन्द हैं। इस सूक्त में 13मन्त्र हैं।

इन्द्रो अस्माँ अरदद्वज्रबाहुरपाहन्वृत्रं परिधिं नदीनाम्।
देवोऽनयत्सविता सुपाणिस्तस्य वयं प्रसवे याम उर्वीः॥
(ऋ.3.33.6)

वज्रधारी इन्द्र ने हमें खोदकर बाहर किया। उसने नदियों को घेरने वाले वृत्र को मारा। सुन्दर हाथों वाले सवितृ देव ने हम लोगों को लाया। हम जितनी चौड़ी हैं, उसकी आज्ञा में निरन्तर बहती हैं।

➢ **यम-यमी सूक्त-**

यम-यमी सूक्त ऋग्वेद के दशम मण्डल के दसवें सूक्त के रूप में वर्णित है। जिसके ऋषि यमी वैवस्वती, यम वैवस्वत एवं देवता यम वैवस्वत, यमी वैवस्वती हैं। छन्द त्रिष्टुप् तथा स्वर धैवत है, मन्त्रों की संख्या 14 है।

किं भ्रातासद्यदनाथं भवाति किमु स्वसा यन्निर्ऋतिर्निगच्छात्।
काममूता बह्वे तद्रपामि तन्वा मे तन्वं सं पिपृग्धि॥

(ऋ.10.10.11)

यमी ने यम से कहा- वह कैसा भ्राता है, जिसके रहते भगिनी अनाथ हो जाय और भगिनी ही क्या है, जिसके रहते भ्राता का दुःख दूर न हो? मैं काममूर्च्छित होकर नाना प्रकार से बोल रही हूँ, यह विचार करके भली भाँति मेरा सम्भोग करो।

➢ **पुरूरवा उर्वशी सूक्त-**

पुरूरवा उर्वशी सूक्त ऋग्वेद के दशम मण्डल के 95वें सूक्त के रूप में वर्णित है। इसके ऋषि पुरूरवा ऐल और उर्वशी तथा देवता उर्वशी और पुरूरवा ऐल है। इस मन्त्र में त्रिष्टुप् छन्द तथा स्वर धैवत एवं मन्त्रों की संख्या 14 है।

सा वसु दधती श्वसुराय वय उषो यदि वष्ट्यन्तिगृहात्।
अस्तं ननक्षे यस्मिञ्चाकन्दिवा नक्तं श्नथिता वैतसेन॥

(ऋ.10.95.4)

हे उषा! उर्वशी यदि श्वसुर को भोजन कराना चाहती तो निकटस्थ घर से पति के पास जाती और दिन-रात स्वामी के पास रमणसुख भोगती।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि प्रस्तुत मन्त्र सरमा पणि संवाद सूक्त से गृहीत है। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- ऋग्वेद (10-108-10)- वेदान्ततीर्थ, पेज 465

4. ''को दम्पती समनसा वि यूयोदध यदग्निः श्वशुरेषु दीदयत्'' इति मन्त्रांशो वर्तते-

(A) सरमा-पणि सूक्ते (B) विश्वामित्र नदी सूक्ते

(C) पुरूरवा-उर्वशी सूक्ते (D) यम-यमी सूक्ते।

व्याख्या-

➢ **पुरूरवा उर्वशी सूक्त-** ऋग्वेद के दशम मण्डल के 95वें सूक्त के रूप में वर्णित है, इस सूक्त के ऋषि पुरुरवा ऐल और उर्वशी तथा देवता उर्वशी और पुरुरवा ऐल हैं। इस मन्त्र में त्रिष्टुप् छन्द तथा स्वर धैवत एवं मन्त्रों की संख्या 18 है।

कदासूनुः पितरं जात इच्छाच्चक्रन्नाश्रु वर्तयद्विजानन्।
को दम्पती समनसा वि यूयोदध यदग्निः श्वशुरेषु दीदयत्॥

(ऋ.10.95.12)

पुरुरवा ने उर्वशी से कहा- तुम्हारा पुत्र मेरे पास किस प्रकार रहेगा? वह मेरे पास आकर रोवेगा। पारस्परिक प्रेम के बन्धन को कौन सद्गृहस्थ तोड़ना स्वीकार करेगा? तुम्हारे श्वसुर के घर में श्रेष्ठ आलोक जगमगा उठा है।

➢ **विश्वामित्र नदी सूक्त-**

प्र पर्वतानामुशती उपस्थादश्वे इव विषिते हासमाने।
गावेव शुभ्रे मातरा रिहाणे विपाट्छुतुद्री पयसा जवेते॥
(ऋ.3.33.1)

पर्वतों की गोद से निकलकर समुद्र की ओर जाने की इच्छा करती हुई परस्पर स्पर्धा से दौड़ती हुई, खुले बाग वाली दो घोड़ियों की तरह बछड़े को चाटती हुई दो सफेद माता गायों की तरह विपाट् और शुतुद्री प्रवाह से तेजी से बह रही हैं।

➢ **सरमा पणि सूक्त-**

किमिच्छन्ती सरमा प्रेदमानड् दूरे ह्यध्वा जगुरिः पराचैः।
कास्मेहितिः का परितक्म्यासीत्कथं रसाया अतरः पयांसि॥ (ऋ.10.108.1)

सरमा क्या इच्छा करती हुई इस स्थान पर पहुँची है, क्योंकि मार्ग बहुत दूर उभरा हुआ तथा गमनागमन से रहित है। हममें तुम्हारा कौन सा अभिप्रेत अर्थ निहित है? तुम्हारी यात्रा कैसी थी? रसा नदी के जल को तुमने कैसे पार किया?

➢ **यम-यमी सूक्त-**

ओ चित् सखायं सख्या ववृत्यां तिरः पुरू चिदर्णवं जगन्वान्।
पितुर्नपातमा दधीत वेधा अधि क्षमि प्रतरं दीध्यानः॥
(ऋ.10.10.1)

यमी अपने भाई यम से कहती है- विस्तृत समुद्र के मध्य द्वीप में आकर इस निर्जन प्रदेश में मैं तुम्हारा सहवास चाहती हूँ, क्योंकि माता की गर्भावस्था से ही तुम मेरे साथी हो। विधाता ने मन ही मन समझा है कि तुम्हारे द्वारा मेरे गर्भ से जो पुत्र उत्पन्न होगा वह हमारे पिता का एक श्रेष्ठ नाती होगा। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- (i) ऋग्वेद (10-95-12)- वेदान्ततीर्थ, पेज 430
(ii) वैदिकवाङ्मयसार - सर्वज्ञभूषण, पेज 13

5. अधस्तनेषु सामवेदस्य ब्राह्मणमस्ति-
(A) शांखायनब्राह्मण (B) कौषीतकिब्राह्मण
(C) षड्विंशब्राह्मण (D) तैत्तिरीयब्राह्मण

व्याख्या-

ऋग्वेद के ब्राह्मण-
* ऐतरेय ब्राह्मण
* शांखायन (कौषीतकि) ब्राह्मण

शुक्लयजुर्वेद के ब्राह्मण-
* शतपथ ब्राह्मण

कृष्णयजुर्वेद के ब्राह्मण-
* तैत्तिरीय ब्राह्मण

सामवेद के ब्राह्मण
* तांड्य ब्राह्मण * मन्त्र ब्राह्मण (उपनिषद् ब्राह्मण)
* षड्विंश ब्राह्मण * देवताध्याय ब्राह्मण
* सामविधान ब्राह्मण * वंश ब्राह्मण
* आर्षेय ब्राह्मण * संहितोपनिषद् ब्राह्मण

अथर्ववेद के ब्राह्मण-
* गोपथ ब्राह्मण

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि सामवेद का ब्राह्मण 'षड्विंश ब्राह्मण' है। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-10

6. ''अन्धं तमः प्रविशन्ति येऽविद्यामुपासते। ततो भूय इव ते तमो य उ विद्यायां रताः'' सन्दर्भोऽयं वर्तते-
(A) कठोपनिषदि (B) ईशोपनिषदि
(C) श्वेताश्वतरोपनिषदि (D) बृहदारण्यकोपनिषदि

व्याख्या-

कठोपनिषद् कृष्णयजुर्वेद की कठशाखा से सम्बन्धित उपनिषद् है जिसमें दो अध्याय एवं प्रत्येक अध्याय में तीन-तीन वल्ली हैं-

कठोपनिषद् की कुछ प्रमुख सूक्तियाँ-

* **न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यः** (1.1.27) मनुष्य धन से कभी भी तृप्त नहीं होता।
* **श्रेयश्च प्रेयश्च मनुष्यमेत** (1.2.2)- मनुष्य में श्रेय और प्रेय ये दोनों गुण समान रूप से आते हैं।
* **आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु।**
बुद्धिं तु सारथिं विद्धि मनः प्रग्रहमेव च॥ (1.3.3)

तुम आत्मा को रथी जान, शरीर को रथ समझ, बुद्धि को सारथि जान और मन को लगाम समझ।

➢ **ईशोपनिषद्-** ईशावास्योपनिषद् शुक्लयजुर्वेद की काण्वशाखा का चालीसवाँ अध्याय है। ईशावास्योपनिषद् में कुल 18 मन्त्र हैं।

ईशावास्योपनिषद् के प्रमुख मन्त्र-

अन्धं तमः प्रविशन्ति येऽविद्यामुपासते।
ततो भूय इव ते तमो य उ विद्यायां रताः।।(मन्त्र-9)

जो मनुष्य अविद्या की उपासना करते हैं वे अज्ञान स्वरूप घोर अन्धकार में प्रवेश करते हैं जो मनुष्य विद्या में रत हैं अर्थात् ज्ञान के मिथ्याभिमान में मत्त हैं वे उससे भी मानों अधिकतर अन्धकार

में प्रवेश करते हैं।

विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नुते।। (मन्त्र-11)
अन्धं तमः प्रविशन्ति येऽसम्भूतिमुपासते।
ततो भूय इव ते तमो य उ सम्भूत्यां रताः।। (मन्त्र-12)

➢ **श्वेताश्वतरोपनिषद्-** श्वेताश्वतरोपनिषद् शुक्लयजुर्वेद से सम्बन्धित उपनिषद् है इस उपनिषद् में शिव (रुद्र) का परम पुरुष के रूप में वर्णन है।

श्वेताश्वतरोपनिषद् की प्रमुख सूक्तियाँ-

एको हि रुद्रो न द्वितीयाय तस्थुः।। (3.2)
मायां तु प्रकृतिं विद्यान्मायिनं तु महेश्वरम्। (4.10)
अजामेकां लोहितशुक्लकृष्णां बह्वीः प्रजाः सृजमानां सरूपाः (4.5)

➢ **बृहदारण्यकोपनिषद्-**

बृहदारण्यकोपनिषद् शतपथ ब्राह्मण के 14वें काण्ड का अन्तिम भाग है। यह उपनिषद् शुक्लयजुर्वेद से सम्बद्ध है। आकार की दृष्टि से यह उपनिषद् सबसे विशालकाय है। इस उपनिषद् में छः अध्याय हैं और अध्याय उपखण्डों में विभक्त हैं। याज्ञवल्क्य-मैत्रेयी संवाद इसी उपनिषद् में प्राप्त होता है।

बृहदारण्यकोपनिषद् के प्रमुख मन्त्र-

* आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्यो (4.5.6)
* अमृतत्वस्य तु नाशास्ति वित्तेनेति। (4.5.3)
* आत्मनस्तु कामाय जाया प्रियाभवति (4.5.6)
* असतो मा सद् गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्माऽमृतं गमय।।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि अन्धन्तमः प्रविशन्ति येऽविद्यामुपासते......मन्त्र ईशोपनिषद् से उद्धृत है। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- ईशादि नौ उपनिषद् (ईश. -9) - गीताप्रेस, पेज 34

7. ''सृष्ट्युत्पत्तिकाल एव वेदानामुत्पत्तिकालः'' इति कः स्वीकरोति?

(A) मैक्डानलः (B) मैक्समूलरः
(C) एम. विन्टरनिट्जः (D) महर्षिदयानन्दः

व्याख्या-

➢ **मैक्समूलर-** मैक्समूलर ने गौतमबुद्ध के आविर्भाव को अपना आधार माना है। बुद्ध ने वैदिकी हिंसा का खण्डन किया है अतः वैदिक काल बुद्ध के जन्म से पूर्व होना चाहिए। मैक्समूलर ने वैदिक काल को चार भागों में विभक्त किया है-

छन्दकाल - 1200 ई.पू.-1000 ई.पू.
मन्त्रकाल - 1000 ई.पू.-800 ई.पू.
ब्राह्मणकाल - 800 ई.पू. - 600 ई.पू.
सूत्रकाल - 600 ई.पू. - 400 ई.पू.

बोगाजकोई के शिलालेख की प्राप्ति के बाद यह मत सर्वथा निरस्त हो गया।

➢ **एम. विन्टरनित्स-** एम. विन्टरनित्स ने सभी मतों की विस्तृत आलोचना के बाद अपना समन्वयात्मक मत दिया। इन्होंने वैदिक काल को 2500 ई.पू. से 500 ई.पू. तक माना है।

➢ **महर्षिदयानन्द-**

आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेदों के सन्दर्भों के द्वारा प्रतिपादित किया है कि वेदों का उद्भव परमात्मा से सृष्टि उत्पत्ति काल से ही प्रारम्भ हुआ। उसने ही अग्नि से ऋग्वेद, वायु से यजुर्वेद, और सूर्य से सामवेद को प्रकट किया। **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-39

8. अधस्तनयुग्मानां समुचितां तालिकां चिनुत-

(क) कात्यायनशुल्बसूत्रम् (i) व्याकरणम्
(ख) त्रिमुनि (ii) कृष्णयजुर्वेदः
(ग) ऋक्तन्त्रप्रातिशाख्यम् (iii) शुक्लयजुर्वेदः
(घ) आपस्तम्बगृह्यसूत्रम् (iv) सामवेदः

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(A)	(ii)	(i)	(iii)	(iv)
(B)	(iii)	(i)	(iv)	(ii)
(C)	(ii)	(iii)	(i)	(iv)
(D)	(ii)	(i)	(iv)	(iii)

व्याख्या-

➢ **कात्यायन शुल्बसूत्र-** कात्यायन शुल्बसूत्र का सम्बन्ध शुक्ल यजुर्वेद से है। कात्यायन शुल्बसूत्र को 'कात्यायन शुल्ब परिशिष्ट या कातीय शुल्ब परिशिष्ट' भी कहते हैं। इस शुल्बसूत्र के दो भाग हैं। प्रथम भाग सूत्रों में है तथा द्वितीय भाग श्लोकात्मक है। प्रथमभाग में 102 सूत्र तथा द्वितीय भाग में 40 श्लोक हैं।

यजुर्वेद के अन्य शुल्बसूत्र- बौधायन शुल्बसूत्र, मानव शुल्बसूत्र, आपस्तम्ब शुल्बसूत्र, मैत्रायणीय शुल्बसूत्र, हिरण्यकेशि शुल्बसूत्र, वाराह शुल्बसूत्र।

➢ **त्रिमुनि-** त्रिमुनि के अन्तर्गत पाणिनि, कात्यायन तथा पतञ्जलि आते हैं। पाणिनि ने अष्टाध्यायी, कात्यायन ने अष्टाध्यायी पर वार्तिक एवं पतञ्जलि ने इन दोनों पर महाभाष्य की रचना की। इन सबका सम्बन्ध व्याकरण से है।

➢ **ऋक्तन्त्रप्रातिशाख्य-** ऋक्तन्त्रप्रातिशाख्य का सम्बन्ध सामवेद की कौथुमशाखा से है। इसे 'ऋक्तन्त्र व्याकरण' भी कहते हैं। इसमें पाँच प्रपाठक और 280 सूत्र हैं। इसके रचयिता आचार्य शाकटायन हैं।

➢ **आपस्तम्ब गृह्यसूत्र-** आपस्तम्ब गृह्यसूत्र का सम्बन्ध कृष्णयजुर्वेद से है। यह आपस्तम्ब कल्पसूत्र का एक अंश है। इस कल्प में 30 प्रश्न (अध्याय) हैं। इनमें से 25,26 और 27 अध्याय गृह्यसूत्र हैं।

कृष्णयजुर्वेद के अन्य गृह्यसूत्र- बौधायन, मानव, भारद्वाज काठक, आग्निवेश्य, हिरण्यकेशि, वाराह, वैखानस, चारायणीय, वैजवाप।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि कात्यायन शुल्बसूत्र का सम्बन्ध शुक्ल यजुर्वेद से, त्रिमुनि का सम्बन्ध व्याकरण से, ऋक्तन्त्रप्रातिशाख्य का सम्बन्ध सामवेद से, आपस्तम्ब गृह्यसूत्र का सम्बन्ध कृष्णयजुर्वेद से है। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव, पेज-9,116,198

9. वेदानां विकृतिपाठः कतिविधः?

(A) त्रिविधः (B) पञ्चविधः
(C) अष्टविधः (D) नवविधः

व्याख्या-

वेदों के संरक्षण के उपाय- वेदों के संरक्षण के उपाय की अष्ट विकृतियाँ हैं। वेद के मन्त्रों के उच्चारण में तथा उनकी सुरक्षा में कोई अन्तर न आने पाए इसके लिए अनेक उपाय किए गए हैं इन उपायों को ही विकृतियाँ कहते हैं इनमें मन्त्रों को घुमा फिरा कर अनेक प्रकार से उच्चारण किया जाता है। ये विकृतियाँ 8 हैं-

''जटा, माला, शिखा, रेखा, ध्वजो, दण्डो, रथो, घनः।
अष्टौ विकृतयः प्रोक्ताः क्रमपूर्वा महर्षिभिः॥''

जटापाठ, मालापाठ, शिखापाठ, रेखापाठ, ध्वजपाठ, दण्डपाठ, रथपाठ, घनपाठ ये वेदों की अष्ट विकृतियाँ हैं। उपर्युक्त आठ विकृतियों के अतिरिक्त तीन पाठ और भी हैं- **संहितापाठ, पदपाठ, क्रमपाठ।**

* वेदों में स्वर सम्बन्धी तीन नियम हैं-

उदात्त स्वर- उदात्त वर्ण पर कोई चिह्न नहीं होता।

अनुदात्त स्वर- अनुदात्त वर्ण पर नीचे पड़ी लकीर खींची जाती है।

स्वरित स्वर- स्वरित वर्ण पर ऊपर, खड़ी लकीर खींची जाती है।

➢ महर्षि पतञ्जलि ने महाभाष्य में व्याकरण अध्ययन के पाँच प्रयोजन बताए हैं- **'रक्षोहागमलध्वसन्देहाः प्रयोजनम्'**

(1) **रक्षा-** वेदों की रक्षा के लिए।
(2) **ऊह** (तर्क)- यथा विभक्ति परिवर्तन, वाच्यपरिवर्तन आदि के लिए।
(3) **आगम-** ब्राह्मण को निष्काम भाव से वेद पढ़ना चाहिए इस आदेश की पूर्ति के लिए।
(4) **लघु-** सरल ढंग से शब्द ज्ञान के लिए।
(5) **असन्देह-** शब्द और अर्थ विषयक सन्देह के निराकरण के लिए।

➢ महर्षि पतञ्जलि ने महाभाष्य में अथर्ववेद की नौ शाखाओं का उल्लेख किया- पैप्पलाद, तौद, मौद, शौनकीय, जाजल, जलद, ब्रह्मवद, देवदर्श, चारणवैद्य। परन्तु इनमें से दो ही शाखाएँ प्राप्त होती हैं- शौनकीय शाखा, पैप्पलाद शाखा।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि वेदों की विकृति पाठ की आठ विधियाँ हैं। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी,पेज-8

10. द्विविधो विभाजनक्रमो वर्तते-

(A) अथर्ववेदस्य (B) ऋग्वेदस्य
(C) ईशोपनिषदः (D) कठोपनिषदः

व्याख्या-

ऋग्वेद का विभाजन- ऋग्वेद संहिता का विभाजन दो प्रकार से किया गया है- (1) अष्टक, अध्याय, वर्ग और मन्त्र (2) मण्डल, अनुवाक, सूक्त और मन्त्र।

(A) **अष्टक क्रम-** इसमें पूरे ऋग्वेद को 8 समान भागों में बाँटा गया है। इसलिए इसे अष्टक कहते हैं। प्रत्येक अष्टक को आठ अध्यायों में बाँटा गया है। इस प्रकार पूरे ऋग्वेद में 64 अध्याय हैं। बालखिल्य सूक्तों को सम्मिलित करते हुए ऋग्वेद में 8 अष्टक, 64 अध्याय, 2024 वर्ग और 10,552 मन्त्र हैं।

(B) **मण्डल क्रम-** ऋग्वेद को ऋषि और देवता के अनुसार 10 मण्डलों में विभक्त किया गया है। बालखिल्य के 11 सूक्तों के 80 मन्त्रों को सम्मिलित करते हुए 85 अनुवाक 1028 सूक्त और 10552 मन्त्र हैं।

➢ **यजुर्वेद का विभाजन-** यजुर्वेद दो भागों में विभक्त है- शुक्लयजुर्वेद तथा कृष्णयजुर्वेद। शुक्लयजुर्वेद की दो शाखाएँ हैं- माध्यन्दिन या वाजसनेयि संहिता तथा काण्व संहिता। दोनों ही संहिताओं में 40-40 अध्याय हैं। इसप्रकार शुक्लयजुर्वेद का विभाजन अध्यायों में हुआ है।

➢ **कृष्णयजुर्वेद का विभाजन-** कृष्णयजुर्वेद की शाखाओं का विभाजन विभिन्न प्रकार से किया गया है।

* **तैत्तिरीय संहिता-** काण्डों में विभक्त (7 काण्ड, 44 प्रपाठक, 631 अनुवाक)

* **मैत्रायणी संहिता-** काण्डों में विभक्त (4 काण्ड, 54 प्रपाठक, 3144 मन्त्र)

* **काठक संहिता-** खण्डों में विभक्त (5 खण्ड, 53 उपखण्ड, 843 अनुवाक, 3028 मन्त्र)

* **कठ-कपिष्ठल संहिता-** यह शाखा ''चरणव्यूह'' के अनुसार चरकों की 12 शाखाओं में से एक है। डा. रघुवीर ने इसका एक सुन्दर संस्करण 1932 में लाहौर से प्रकाशित किया था। यह ऋग्वेद के तुल्य अष्टकों और अध्यायों में विभक्त हैं। इसके केवल छः अष्टक उपलब्ध हैं।

➢ **सामवेद का विभाजन-** सामवेद की विभिन्न शाखाओं का विभाजन निम्नवत् है-

* **कौथुम शाखा-** कौथुम शाखा का विभाजन अध्याय, खण्ड और मन्त्र के रूप में है।

* **राणायनीय शाखा-** प्रपाठक, अर्धप्रपाठक, दशति और मन्त्र के रूप में है।

* **जैमिनीय शाखा-** इसमें 1687 मन्त्र हैं।

➢ **अथर्ववेद का विभाजन-** अथर्ववेद की नौ शाखाओं में दो ही शाखाएँ प्राप्त होती हैं (1) शौनकीयशाखा (2) पैप्पलाद शाखा।
(1) शौनकीय शाखा- 20 काण्ड 730 सूक्त एवं 5987 मन्त्र
(2) पैप्पलाद शाखा- काण्डों में विभक्त।

➢ **ईशोपनिषद्-** ईशावास्योपनिषद् शुक्लयजुर्वेद का 40वाँ अध्याय है। इसमें मन्त्रों की संख्या 18 है। इस उपनिषद् में सम्भूति-असम्भूति, विद्या-अविद्या का वर्णन है।

➢ **कठोपनिषद्-** कृष्णयजुर्वेद की कठशाखा से सम्बन्धित है इसमें दो अध्याय हैं और प्रत्येक अध्याय में तीन-तीन वल्ली हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि ऋग्वेद का विभाजन दो प्रकार से (अष्टक एवं मण्डल क्रम में) हुआ है। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-46

11. शुक्लयजुर्वेदस्य कति शाखाः समुपलभ्यन्ते?

(A) 4 (B) 3
(C) 5 (D) 2

व्याख्या-

➢ **ऋग्वेद की शाखाएँ-**

महर्षि पतञ्जलि ने महाभाष्य में ऋग्वेद की 21 शाखाओं का उल्लेख किया है 'एकविंशतिधा बाह्वृच्यम्' इनमें से केवल पाँच शाखाओं का ही मुख्य रूप से उल्लेख प्राप्त होता है। चरणव्यूह के अनुसार ऋग्वेद की पाँच शाखाएँ हैं-
(1) शाकल शाखा (2) बाष्कल शाखा (3) आश्वलायन शाखा (4) शांखायन शाखा (5) माण्डूकायन शाखा।

➢ यजुर्वेद मुख्य रूप से दो भागों में विभक्त है-
(1) शुक्लयजुर्वेद (2) कृष्णयजुर्वेद

शुक्लयजुर्वेद की शाखा- शुक्ल यजुर्वेद की दो शाखाएँ हैं-

(1) माध्यन्दिन या वाजसनेयि शाखा- इस शाखा में 40 अध्याय एवं 1975 मन्त्र हैं।

(2) काण्व शाखा- काण्व शाखा का विभाजन अध्याय, अनुवाक मन्त्र के रूप में है। इस प्रकार इस शाखा में चालीस अध्याय, 328 अनुवाक और 2086 मन्त्र हैं।

➢ **सामवेद की शाखाएँ-**

महर्षि पतञ्जलि ने महाभाष्य में 'सहस्रवर्त्मा सामवेदः' कह कर सामवेद की एक हजार शाखाएँ मानी हैं।

सामतर्पण में सामवेद की 13 शाखाओं का उल्लेख प्राप्त होता है- (1) राणायन (2) शाट्यमुग्र्य (सात्यमुग्रि) (3) व्यास (4) भागुरि (5) औलुण्डी (6) गौल्गुलवि (7) भानुमान् औपमन्यव (8) काराटि (द्वाराल) (9) मशक गार्ग्य (10) वार्षगण्य (वार्षगव्य) (11) कुथुम (कौथुमि, कुथुमि) (12) शालिहोत्र (13) जैमिनि। परन्तु इन 13 शाखाओं में से केवल तीन शाखाएँ ही प्राप्त होती हैं- 1. कौथुमीय शाखा (2) राणायनीयशाखा (3) जैमिनीयशाखा

➢ **अथर्ववेद की शाखाएँ-** 'नवधाऽऽथर्वणो वेदः' कहकर पतञ्जलि ने अथर्ववेद की नौ शाखाओं का उल्लेख किया-
(1) पैप्पलाद (2) तौद (3) मौद (40 शौनकीय (50 जाजल (6) जलद (7) ब्रह्मवद (8) देवदर्श (9) चारणवैद्य।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि शुक्ल यजुर्वेद की दो शाखायें उपलब्ध हैं। **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-9

12. अधस्तनयुग्मानां समुचितां तालिकां चिनुत-

(क)	पिङ्गलः	(i)	ज्योतिषम्
(ख)	शुल्बसूत्राणि	(ii)	निरुक्तम्
(ग)	लगधः	(iii)	छन्दःशास्त्रम्
(घ)	तदिदं विद्यास्थानं व्याकरणस्य कार्त्स्न्यं स्वार्थसाधकञ्च	(iv)	कल्पः

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(A)	(i)	(iii)	(iv)	(ii)
(B)	(iii)	(i)	(ii)	(iv)
(C)	(ii)	(iv)	(iii)	(i)
(D)	(iii)	(iv)	(i)	(ii)

व्याख्या-

वेदाङ्गों की संख्या छः है- शिक्षा, व्याकरण, छन्द, निरुक्त, ज्योतिष, कल्प।

* **ज्योतिष-** पाणिनीय शिक्षा में **'ज्योतिषामयनं चक्षुः'** ज्योतिष को चक्षु कहा गया है। ज्योतिष का अर्थ है ज्योतिर्विज्ञान। ज्योतिष विषयक केवल एक ही प्राचीन ग्रन्थ उपलब्ध होता है जो महर्षि लगध का 'वेदाङ्ग ज्योतिष' तथा दूसरे का नाम 'याजुष ज्योतिष' है।

* **निरुक्त-** पणिनीय शिक्षा में **'निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते'** निरुक्त को श्रोत्र (कान) कहा गया है। निरुक्त महर्षि यास्क की रचना है जिसमें परिशिष्ट सहित चौदह अध्याय हैं। निरुक्त का अर्थ है - निर्वचन या व्युत्पत्ति।

'तदिदं विद्यास्थानं व्याकरणस्य कात्स्न्र्यं स्वार्थसाधकं च' यह निरुक्तशास्त्र व्याकरण का पूरक भी है क्योंकि शब्दार्थ के परिज्ञान द्वारा स्वर-संस्कार के विधान में व्याकरण की सहायता करता है और अपने अर्थ का साधक भी है।

'षड्भावविकारा भवन्तीति वार्ष्यायणिः' मुख्य रूप से क्रियाओं के छः भेद हैं ऐसा वार्ष्यायणि मानते हैं। छः प्रकार की क्रियाएँ हैं- जायते, अस्ति, विपरिणमते, वर्धते, अपक्षीयते, विनश्यति।

'नामानि आख्यातजानि इति शाकटायनो नैरुक्तसमयश्च' सारे ही नाम आख्यातज हैं, यह शाकटायन और नैरुक्तों का सिद्धान्त है।

* **छन्दशास्त्र-** पाणिनीय शिक्षा में **'छन्दः पादौ तु वेदस्य'** छन्द को वेदपुरुष का पैर कहा गया है।

पिंगल के छन्दसूत्र के पूर्वभाग में वैदिक छन्दों का विवेचन है तथा उत्तरभाग में लौकिक छन्दों का विश्लेषण है।

* **कल्प-** पाणिनीय शिक्षा में **'हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते'** कल्प को वेदपुरुष का हाथ कहा गया है। कल्प को चार भागों में बाँटा गया है। जिन ग्रन्थों में यज्ञ सम्बन्धी विधियों का प्रतिपादन हो उसे कल्प कहते हैं।

* **श्रौतसूत्र-** श्रौत का अर्थ है- **श्रुति प्रतिपादित या वेदों में वर्णित।** श्रौतसूत्रों में वेदों में वर्णित बड़े यज्ञ-याग इष्टियों का विस्तार से विवेचन है।

* **गृह्यसूत्र-** गृह्यसूत्रों में गृहस्थ से सम्बद्ध सोलह संस्कार, पञ्च महायज्ञ, सात पाकयज्ञ, गृह निर्माण, गृह प्रवेश, पशुपालन आदि का विस्तृत वर्णन है।

* **धर्मसूत्र-** इनमें वर्णाश्रम के कर्तव्यों, आचार-विचार, मान्यताओं और सामाजिक जीवन के कर्तव्य- अकर्तव्यों का वर्णन है।

* **शुल्बसूत्र-** ये शुद्ध रूप से गणितशास्त्रीय वैज्ञानिक ग्रन्थ है। इनमें गणितशास्त्र के अंग ज्यामितिशास्त्र से सम्बद्ध अनेक प्रमेय दिए गये हैं। शुल्बसूत्र में सभी प्रकार की वेदियों के निर्माण की पूरी विधि दी गई है। **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-190,199,214,208, निरुक्तम्-आचार्य विश्वेश्वर,पेज 96

13. महत् किमस्ति?

(A) प्रकृतिः (B) विकृतिः

(C) प्रकृतिविकृती (D) न प्रकृतिः न विकृतिः

व्याख्या-

सांख्यकारिकाकार ईश्वरकृष्ण ने पदार्थों का वर्णन इस प्रकार किया है-

मूलप्रकृतिरविकृतिर्महदाद्याः प्रकृतिविकृतयः सप्त।
षोडशकस्तु विकारो न प्रकृतिर्न विकृतिः पुरुषः॥ (सां.का.3)

मूलप्रकृति किसी का विकार नहीं है - महत् आदि सात पदार्थ (तत्त्व) प्रकृति विकृति अर्थात् कार्य और कारण दोनों हैं सोलह पदार्थ केवल विकार अर्थात् कार्य हैं, पुरुष न प्रकृति है न विकृति।

* प्रकृतिः- मूल प्रकृति (अविकृति) =1
* विकृतिः (विकार)-ः पाँच ज्ञानेन्द्रिय, पाँच कर्मेन्द्रिय- पाँच महाभूत, मन =16
* प्रकृति विकृति- महत्, अहंकार, पाँच तन्मात्रा =7
* न प्रकृतिः न विकृतिः- पुरुष =1
* पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ- श्रोत्र, नेत्र, घ्राण, त्वक्, रसना
* पाँच कर्मेन्द्रियाँ- वाक्, पाणि, पाद, पायु, उपस्थ
* पाँच महाभूत- आकाश, वायु, तेज, जल, पृथिवी
* पाँच तन्मात्रा- शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- सांख्यकारिका- (का. - 3) राकेश शास्त्री,पेज-8

14. 'तल्लिङ्गलिङ्गिपूर्वकम्' लक्षणमिदं कस्य विद्यते?

(A) शब्दप्रमाणस्य (B) अनुमानप्रमाणस्य

(C) प्रत्यक्षप्रमाणस्य (D) उपमानप्रमाणस्य

व्याख्या-

ईश्वरकृष्ण ने सांख्यकारिका में प्रमाण का वर्णन इसप्रकार किया है-

प्रतिविषयाध्यवसायो दृष्टं त्रिविधमनुमानमाख्यातम्।
तल्लिङ्गलिङ्गिपूर्वकमाप्तश्रुतिराप्तवचनन्तु ॥5॥

(A) **शब्द प्रमाण-** सांख्यकारिका में शब्दप्रमाण का लक्षण निम्नवत् है- **''आप्तश्रुतिराप्तवचनं तु''** आप्तवचन अर्थात्

आगम प्रमाण युक्त श्रुति अर्थात् युक्त वाक्य से उत्पन्न उसके अर्थ ज्ञान को कहते हैं। जो वस्तु जैसी है उसे वैसा ही बताने वाला व्यक्ति 'आप्त' कहलाता है तथा श्रुति का अर्थ है- वाक्य से उत्पन्न होने वाला अर्थात् आप्तव्यक्ति द्वारा कहे गये वाक्य से उत्पन्न होने वाला ज्ञान ही आप्त श्रुति है।

(B) **अनुमान प्रमाण- ''तल्लिङ्गलिङ्गिपूर्वकम्''** अनुमान प्रमाण लिङ्ग तथा लिङ्गी के ज्ञान से उत्पन्न होता है। लिङ्ग को दार्शनिक भाषा में व्याप्त या साधन कहते हैं क्योंकि यह लिङ्गी व्यापक की अपेक्षा कम स्थानों पर रहता है। लिङ्गी का अर्थ है-ः व्यापक अर्थात् अपेक्षाकृत अधिक स्थानों पर रहना।
अनुमान प्रमाण के तीन भेद हैं- पूर्ववत्, सामान्यतोदृष्ट, शेषवत्।

(C) **प्रत्यक्ष प्रमाण-''प्रतिविषयाध्यवसायो दृष्टम्''** विषय से सन्निकृष्ट इन्द्रिय पर आश्रित बुद्धि-व्यापार या ज्ञान को प्रत्यक्ष प्रमाण कहते हैं।

(D) सांख्यशास्त्र में उपमान प्रमाण की चर्चा नहीं की गयी है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि तल्लिङ्गलिङ्गिपूर्वकम् यह लक्षण अनुमान प्रमाण का है। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- सांख्यकारिका- (का. - 5) राकेश शास्त्री, पेज-16

15. व्यक्तं कीदृक् न भवति?

(A) हेतुमत् (B) अव्यापि
(C) अनाश्रितम् (D) सावयवम्

व्याख्या-

सांख्यकारिकाकार ईश्वरकृष्ण के अनुसार व्यक्त और अव्यक्त का लक्षण निम्नवत् है- **'हेतुमदनित्यमव्यापि सक्रियमनेकमाश्रितं लिङ्गम्। सावयवं परतन्त्रं व्यक्तं विपरीतमव्यक्तम्॥'** (सां.का.10)

व्यक्त पदार्थ - हेतुमद्, अनित्य, अव्यापि,सक्रिय अनेक, आश्रित, लिङ्गी, सावयव तथा परतन्त्र होते हैं।
अव्यक्त पदार्थ इसके विपरीत होते हैं अर्थात् अहेतुमत्, नित्य, व्यापि, असक्रिय, एक, अनाश्रित, अलिङ्गी, निरवयव, स्वतन्त्र।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि व्यक्त पदार्थ हेतुमत्, अव्यापी, सावयव होता है वह अनाश्रित न होकर आश्रित होता है। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- सांख्यकारिका-(कारिका 10) राकेश शास्त्री, पेज-32-33

16. ''तदैक्यप्रमेयस्य तत्प्रतिपादकोपनिषत्प्रमाणस्य च बोध्यबोधकभावः'' वेदान्तसारानुसारं लक्षणमिदं कस्यास्ति?

(A) अधिकारिणः (B) विषयस्य
(C) सम्बन्धस्य (D) प्रयोजनस्य

व्याख्या-

सदानन्द प्रणीत वेदान्तसार में अनुबन्धों की संख्या चार है- अधिकारी, विषय, सम्बन्ध, प्रयोजन।

(A) **अधिकारी- 'अधिकारी तु विधिवदधीत..... नितान्तनिर्मलस्वान्तः साधनचतुष्टयसम्पन्नः प्रमाता।'**

जिसने इस जन्म में अथवा अन्य जन्मों में वेदों और वेदाङ्गों का विधिपूर्वक अध्ययन करने के द्वारा समस्त वेदान्त के अर्थ को सामान्य रूप से समझ लिया है, काम्य एवं निषिद्ध कर्मों का परित्याग करके नित्य, नैमित्तिक, प्रायश्चित्त, उपासना कर्मों का अनुष्ठान करने से, समस्त कल्मषों के दूर हो जाने के कारण जिसका अन्तःकरण अत्यन्त निर्मल हो गया है, प्रमाणों के द्वारा व्यवहार करने में समर्थ साधनचतुष्टय से सम्पन्न प्रमाता इस ग्रन्थ का अधिकारी है।

(B) **विषय- 'विषयो जीवब्रह्मैक्यं शुद्धचैतन्यं प्रमेयं तत्रैव वेदान्तानां तात्पर्यात्।'**
जीव और ब्रह्म की एकता अर्थात् अभेद ही वेदान्त का विषय है।

(C) **सम्बन्ध-**
'सम्बन्धस्तु तदैक्यप्रमेयस्य तत्प्रतिपादकोपनिषत्प्रमाणस्य च बोध्यबोधकभावलक्षणः।'
जीव और ब्रह्म की एकतारूप प्रमेय का और उसका प्रतिपादन करने वाले उपनिषद् रूप प्रमाण का परस्पर बोध्य-बोधकभाव ही इस शास्त्र का सम्बन्ध है।

(D) **प्रयोजन- 'प्रयोजनं तु तदैक्यप्रमेयगताज्ञाननि-वृत्तिः स्वस्वरूपानन्दावाप्तिश्च।'**
जीव और ब्रह्म की एकतारूप प्रमेय के सम्बन्ध में जो अज्ञान है उसकी निवृत्ति होना और अपने वास्तविक स्वरूप आनन्द की प्राप्ति होना इस ग्रन्थ का प्रयोजन है।

स्पष्टीकरण- 'तदैक्यप्रमेयस्य तत्प्रतिपादकोपनिषत्प्रमाणस्य च बोध्यबोधकभावः' यह लक्षण सम्बन्ध का है।
अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- वेदान्तसार- आद्याप्रसाद मिश्र, पेज 36

17. 'समष्टिव्यष्ट्यभिप्रायेणैकमनेकमिति' उक्तिरियं वेदान्तसारे कस्य सन्दर्भेऽस्ति?

(A) विद्यायाः (B) अज्ञानस्य
(C) अध्यारोपस्य (D) समाधेः

व्याख्या-

(A) **शुक्लयजुर्वेद** का चालीसवाँ अध्याय ईशावस्योपनिषद् है, इसके मन्त्र संख्या ग्यारह में विद्या और अविद्या की चर्चा की

गयी है जो इस प्रकार है-

विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नुते॥ (ईश.मन्त्र.11)

जो साधक पुरुष विद्या अर्थात् ज्ञान को अथवा ज्ञानरूप साधन को अर्थात् ज्ञानमार्ग को और कर्म रूप साधन को दोनों को एक साथ जान लिया करता है वह कर्मों के यथावत् अनुष्ठान के द्वारा मृत्यु को अर्थात् जन्म-मृत्यु के बन्धन को पार करके तत्त्वज्ञान अथवा ब्रह्मज्ञान के द्वारा अमृत अर्थात् मोक्ष को प्राप्त कर लिया करता है।

(B) **अज्ञान- अज्ञानं तु सदसद्भ्यामनिर्वचनीयं त्रिगुणात्मकं ज्ञानविरोधि भावरूपम्।**

अज्ञान सत् या असत् रूप से अनिर्वचनीय, त्रिगुणात्मक, ज्ञान का विरोधी, भावरूप है।

* इस अज्ञान के दो भेद हैं- **'इदमज्ञानं समष्टिव्यष्ट्यभिप्रायेणै-कमनेकमिति च व्यवह्रियते'** यह अज्ञान समष्टि के अभिप्राय से एक और व्यष्टि के अभिप्राय से अनेक कहा जाता है।
* इस अज्ञान की दो शक्तियाँ भी हैं-

'अस्याज्ञानस्यावरणविक्षेपनामकमस्ति शक्तिद्वयम्'

अज्ञान की आवरण और विक्षेप नामक दो शक्तियाँ हैं।

(C) **अध्यारोप-**

'असर्पभूतायां रज्जौ सर्पारोपवद् वस्तुन्यवस्त्वारोपोऽध्या-रोपः' कभी भी सर्पभाव को न प्राप्त होने वाली रस्सी पर सर्प के आरोप के समान, वस्तु पर अवस्तु का आरोप करना ही अध्यारोप है।

(D) **समाधि-** वेदान्तसार में समाधि के दो भेद हैं-

(1) सविकल्पक समाधि (2) निर्विकल्पक समाधि

* निर्विकल्पक समाधि के आठ अंग हैं- यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि।
* निर्विकल्पक समाधि के चार विघ्न हैं- लय, विक्षेप, कषाय और रसास्वाद।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि **''समष्टिव्यष्ट्यभिप्राये-णैकमनेकमिति''** यह लाइन अज्ञान के सन्दर्भ में कही गई है। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- वेदान्तसार- आद्याप्रसाद मिश्र, पेज 42

18. अज्ञानोपहितं चैतन्यं कीदृशं कारणं भवति ?

(A) निमित्तकारणम्
(B) उपादानकारणम्
(C) निमित्तकारणम् उपादानकारणम् च
(D) कीदृशमपि कारणम् न

व्याख्या-

सदानन्दप्रणीत वेदान्तसार में अज्ञान की दोनों शक्तियों आवरण और विक्षेप के स्वरूप के विषय में वर्णन प्राप्त होता है-

'शक्तिद्वयवदज्ञानोपहितं चैतन्यं स्वप्रधानतया निमित्तं स्वोपाधिप्रधानतयोपादानं च भवति'

अपनी आवरण और विक्षेप नाम वाली दो शक्तियों से सम्पन्न अज्ञान से उपहित चैतन्य अपनी प्रधानता से जगत् का निमित्त कारण तथा अपनी उपाधि की प्रधानता से उपादान कारण होता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त प्रश्न में अज्ञान से उपहित चैतन्य कैसा कारण होता है यह पूछा गया है इसलिए अज्ञान से उपहित चैतन्य निमित्त और उपादान दोनों कारण होता है। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- वेदान्तसार-सन्तनारायण श्रीवास्तव्य, पेज-59

19. वेदान्तसारानुसारं सूक्ष्मशरीरे कति अवयवानि भवन्ति?

(A) षोडशावयवानि (B) पञ्चदशावयवानि
(C) सप्तदशावयवानि (D) त्रयोदशावयवानि

व्याख्या-

* सदानन्दप्रणीत वेदान्तसार के अनुसार सूक्ष्मशरीर का निर्माण सत्रह अवयवों से होता है-

'सूक्ष्मशरीराणि सप्तदशावयवानि लिङ्गशरीराणि'

सूक्ष्मशरीर को लिङ्गशरीर भी कहते हैं।

सत्रह अवयवों के नाम-

* पञ्च ज्ञानेन्द्रियाँ- श्रोत्र, त्वक्, चक्षु, जिह्वा, घ्राण
* पञ्च कर्मेन्द्रियाँ- वाक्, पाणि, पाद, पायु, उपस्थ
* पञ्च वायु- प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान, बुद्धि और मन

⇒ तर्कभाषा के अनुसार पदार्थों की संख्या सोलह है-

प्रमाण, प्रमेय, संशय, प्रयोजन, दृष्टान्त, सिद्धान्त, अवयव, तर्क, निर्णय, वाद, जल्प, वितण्डा, हेत्वाभास, छल, जाति, निग्रहस्थान।

⇒ सांख्य के अनुसार सूक्ष्मशरीर / लिङ्गशरीर में 18 अवयव होते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि वेदान्तसार के अनुसार सूक्ष्मशरीर का निर्माण सत्रह अवयवों से होता है। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- वेदान्तसार- सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-65

20. तर्कसङ्ग्रहानुसारं रूपं कतिविधम् ?

(A) पञ्चविधम् (B) सप्तविधम्
(C) षड्विधम् (D) नवविधम्

व्याख्या-
अन्नम्भट्ट प्रणीत 'तर्कसंग्रह' न्यायवैशेषिक का प्रकरणग्रन्थ है।
* तर्कसंग्रह में कर्म के पाँच भेद बताए गये हैं-
'उत्क्षेपणापक्षेपणाऽकुञ्चनप्रसारणगमनानि पञ्चकर्माणि'
(1) उत्क्षेपण (2) अपक्षेपण (3) आकुञ्चन (4) प्रसारण (5) गमन
* चौबीस गुणों के अन्तर्गत रूप नामक गुण प्रथम गुण है जिसका लक्षण है-
'चक्षुर्मात्रगाह्यो गुणो रूपम्' अर्थात् जिस गुण का ग्रहण मात्र चक्षु इन्द्रिय के द्वारा ही किया जाता है उसे रूप कहते हैं।
वह रूप नामक गुण सात प्रकार का होता है-
'तच्च शुक्ल-नील-पीत-रक्त-हरित-कपिश-चित्र-भेदात्सप्तविधम्' अर्थात् वह रूप शुक्ल (सफेद), नील, पीत, रक्त, हरित, कपिश, चित्र के भेद से सात प्रकार का होता है।
* चौबीस गुणों के अन्तर्गत परिगणित रस नामक गुण द्वितीय गुण है जिसका लक्षण है-
'रसनाग्राह्यो गुणो रसः' जिस गुण का रसना इन्द्रिय से ग्रहण किया जाता है उसे रस कहते हैं उस रस के छः भेद हैं- **'स च मधुर-अम्ल-लवण-कटु-कषाय-तिक्तभेदात् षड्विधः'** अर्थात् मधुर (मीठा), अम्ल (खट्टा), लवण (नमकीन), कटु (कड़वा), कषाय (कसैला) और तिक्त (तीता) के भेद से रस के छः भेद हैं।
* तर्कसंग्रह के अनुसार द्रव्य के नव भेद हैं **'तत्र द्रव्याणि पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशकालदिगात्ममनांसि नवैव'** अर्थात् पृथ्वी,जल, तेज, वायु, आकाश, काल, दिक्, आत्मा, मन के भेद से द्रव्य के नव भेद हैं।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि रूप के सात भेद हैं। **अतः विकल्प B सही है।**
स्रोत- तर्कसंग्रह- गोविन्दाचार्य, पेज 80

21. 'गौरश्वः पुरुषो हस्ती' इति पदसमुदायः प्रमाणं कथं न भवति?
(A) योग्यताविरहात् (B) आकाङ्क्षाविरहात्
(C) सान्निध्याभावात् (D) पदसमूहाभावात्

व्याख्या-
➤ तर्कभाषाकार केशवमिश्र प्रमाणविवेचन के क्रम में शब्द प्रमाण का लक्षण करते हैं- **'आप्तवाक्यं शब्दः'** अर्थात् आप्त के वाक्य को शब्द कहते हैं। जो पदार्थ जैसा है उसका उसी रूप में उपदेश करने वाला आप्त पुरुष कहलाता है।
* इसी क्रम में वाक्य का लक्षण करते हैं: **'वाक्यं त्वाकाङ्क्षायोग्यता-सन्निधिमतां पदानां समूहः।'** आकाङ्क्षा, योग्यता और सन्निधि वाले पदों का समूह वाक्य होता है।
गौ, अश्व, पुरुष, हस्ती ये पदसमूह वाक्य नहीं है, क्योंकि इनमें परस्पर आकाङ्क्षा का अभाव है।
* इसीप्रकार 'अग्निना सिञ्चति' यह भी वाक्य नहीं है क्योंकि अग्नि द्वारा सेचन रूपी कार्य नहीं हो सकता अतः इसमें योग्यता का अभाव है यह भी वाक्य नहीं हो सकता।
* इसी प्रकार प्रहर-प्रहर में एक साथ उच्चरित न किए गए 'गाय को लाओ' इत्यादि पदसमूह वाक्य नहीं होते, क्योंकि वहाँ परस्पर सन्निधि का अभाव होता है।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि 'गौरश्वः पुरुषो हस्ती' इस समुदाय में परस्पर आकाङ्क्षा न होने से वाक्य नहीं है।
अतः विकल्प B सही है।
स्रोत- तर्कभाषा- श्रीनिवास शास्त्री,पेज-122

22. असाधारणधर्मः कस्य लक्षणम्?
(A) लक्षणस्य (B) उद्देशः
(C) परीक्षायाः (D) आत्मनः

व्याख्या-
तर्कभाषाकार आचार्य केशवमिश्र के अनुसार न्यायशास्त्र की तीन प्रकार की प्रवृत्ति होती है-
उद्देश- 'उद्देशस्तु नाममात्रेण वस्तुसंकीर्तनम्' अर्थात् नाम मात्र से पदार्थ का कथन उद्देश है।
लक्षण- 'लक्षणन्त्वसाधारणधर्मवचनम्' असाधारण धर्म का कथन लक्षण है, जैसे- 'गोः सास्नादिमत्त्वम्' अर्थात् गलकम्बल आदि वाली होना गौ का लक्षण है।
परीक्षा- 'लक्षितस्य लक्षणमुपपद्यते न वेति विचारः परीक्षा' अर्थात् जिसका लक्षण किया गया है उसका यह लक्षण ठीक है या नहीं इस प्रकार का विचार करना परीक्षा है।
* बारह प्रमेयों के अन्तर्गत परिगणित आत्मा प्रथम प्रमेय है जिसका लक्षण है- **'तत्रात्मत्वसामान्यवानात्मा'** अर्थात् आत्मत्व जाति जिसमें रहती है वह आत्मा है। वह आत्मा देह, इन्द्रिय से भिन्न है, प्रत्येक शरीर में पृथक्-पृथक् है विभु एवं नित्य है।
* आत्मा, शरीर, इन्द्रिय, अर्थ, बुद्धि, मन, प्रवृत्ति, दोष, प्रेत्यभाव, फल, दुःख तथा अपवर्ग ये बारह प्रमेय हैं।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि 'असाधारणधर्मः' लक्षण का लक्षण है। **अतः विकल्प A सही है।**
स्रोत- तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज - 7

23. तर्कभाषायां 'प्रकरणसम'हेत्वाभासस्य काऽपरा सञ्ज्ञा?
(A) बाधितविषयः (B) सत्प्रतिपक्षः
(C) सव्यभिचारः (D) अनुपसंहारी

व्याख्या-
तर्कभाषाकार केशवमिश्र अनुमान प्रमाण के सन्दर्भ में हेतु से भिन्न हेत्वाभास को परिभाषित करते हैं-
'असिद्ध-विरुद्ध अनैकान्तिक-प्रकरणसम-कालात्ययापदिष्टभेदात् पञ्चैव' अर्थात् (1) असिद्ध (2) विरुद्ध (3) अनैकान्तिक (4) प्रकरणसम (5) कालात्ययापदिष्ट ये पाँच हेत्वाभास हैं।
असिद्ध हेत्वाभास-'तत्र लिङ्गत्वेनानिश्चितो हेतुरसिद्धः' उनमें लिङ्ग के रूप में निश्चित न होने वाला हेतु असिद्ध हेत्वाभास कहलाता है। वह असिद्ध हेत्वाभास तीन प्रकार का होता है-
(1) आश्रयासिद्ध (2) स्वरूपासिद्ध (3) व्याप्यत्वासिद्ध।
* **विरुद्ध हेत्वाभास-'साध्यविपर्ययव्याप्तो हेतुर्विरुद्धः'** साध्य के अभाव से व्याप्त हेतु विरुद्ध हेत्वाभास कहलाता है।
* **अनैकान्तिक हेत्वाभास- 'सव्यभिचारोऽनैकान्तिकः'** सव्यभिचार हेतु अनैकान्तिक हेत्वाभास कहलाता है। अनैकान्तिक हेत्वाभास दो प्रकार का होता है- (1) साधारण अनैकान्तिक हेत्वाभास (2) असाधारण अनैकान्तिक हेत्वाभास।
* **प्रकरणसम हेत्वाभास - 'प्रकरणसमस्तु स एव यस्य हेतोः साध्य-विपरीतसाधकं हेत्वन्तरं विद्यते'** जिस हेतु के साध्य के विपरीत अर्थ का साधक दूसरा हेतु विद्यमान होता है वह प्रकरणसम हेत्वाभास कहलाता है। इस प्रकरणसम हेत्वाभास को ही सत्प्रतिपक्ष भी कहते हैं। 'अयमेव हि सत्प्रतिपक्ष इति चोच्यते'।
* **कालात्ययापदिष्ट या बाधितविषय हेत्वाभास-**
'पक्षे प्रमाणान्तरावधृतसाध्याभावो हेतुर्बाधितविषयः कालात्ययापदिष्ट इति चोच्यते' जिसके साध्य का अभाव अन्य प्रमाण से निश्चित कर दिया जाता है वह हेतु बाधितविषय तथा कालात्ययापदिष्ट कहलाता है।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि प्रकरणसम हेत्वाभास की अपरा सञ्ज्ञा सत्प्रतिपक्ष है। **अतः विकल्प B सही है।**
स्रोत- तर्कभाषा- बदरीनाथ शुक्ल, पेज-122

24. तर्कभाषानुसारं समवायिकारणं किम्भवति?
(A) गुणः (B) द्रव्यम्
(C) कर्म (D) सामान्यम्

व्याख्या-
* आचार्य केशवमिश्र तर्कभाषा में तीन प्रकार के कारण बताए हैं- (1) समवायिकारण (2) असमवायिकारण (3) निमित्तकारण।
* **समवायिकारण-** 'यत्समवेतं कार्यमुत्पद्यते तत्समवायिकारणम्' अर्थात् जिसमें समवेत होकर कार्य उत्पन्न होता है वह समवायिकारण है। उदाहरण - तन्तु पट के समवायिकारण हैं, मिट्टी का पिण्ड भी घट का समवायिकारण है।
इसी क्रम में पूर्वपक्ष का खण्डन करते हुए केशवमिश्र कहते हैं कि गुणों का आश्रय न होने के कारण घट आदि में द्रव्यत्व का अभाव होने लगेगा क्योंकि **'समवायिकारणं द्रव्यमिति द्रव्यलक्षणयोगात्'** अर्थात् समवायी कारण द्रव्य होता है, यह द्रव्य का लक्षण घटित हो जाता है, तथा द्रव्य निरूपण के प्रसंग में द्रव्य का लक्षण करते हैं- जो समवायी कारण होता है वह द्रव्य का लक्षण है।
* **असमवायिकारण- 'यत्समवायिकारणप्रत्यासन्नम-वधृतसामर्थ्यं तदसमवायिकारणम्'** अर्थात् जो समवायि कारण में निकटतः सम्बद्ध होता है और जिसकी कार्य के प्रति सामर्थ्य निश्चित होती है वह असमवायी कारण होता है। उदाहरण- तन्तुसंयोग पट का असमवायी कारण है।
* **निमित्त कारण- 'यन्न समवायिकारणम्, नाप्यसमवायिकारणम् अथ च कारणम्'** अर्थात् जो न समवायी कारण है, न ही असमवायी कारण है किन्तु कारण है वह निमित्त कारण कहलाता है जैसे वेमा आदि पट का निमित्त कारण है।
* **गुण-** 'सामान्यमान् असमवायिकारणम् अस्पन्दात्मा गुणः' अर्थात् सामान्य से युक्त, असमवायी कारण होने वाला, कर्मस्वरूप न होने वाला गुण कहलाता है। वह द्रव्य के आश्रित ही रहा करता है। गुणों के 24 प्रकार हैं-
(1) रूप (2) रस (3) गन्ध (4) स्पर्श (5) संख्या (6) परिमाण (7) पृथक्त्व (8) संयोग (9) विभाग (10) परत्व (11) अपरत्व (12) गुरुत्व (13) द्रवत्व (14) स्नेह (15) शब्द (16) बुद्धि (17) सुख (18) दुःख (19) इच्छा (20) द्वेष (21) प्रयत्न (22) धर्म (23) अधर्म (24) संस्कार
* **कर्म-** 'चलनात्मकं कर्म' अर्थात् कर्म का स्वरूप है क्रिया (चलना, हिलना, गति)। कर्म के पाँच प्रकार हैं- उत्क्षेपण, अपक्षेपण, आकुञ्चन, प्रसारण, गमन।
* **सामान्य-** 'अनुवृत्तिप्रत्ययहेतुः सामान्यम्' अर्थात् समानाकारक प्रतीति का हेतु सामान्य जाति है। वह द्रव्य आदि तीन (द्रव्य, गुण, कर्म) में रहती है।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि 'समवायिकारणं द्रव्यम्' द्रव्य का लक्षण है। **अतः विकल्प B सही है।**
स्रोत- तर्कभाषा- बदरीनाथ,पेज-47

25. 'पठति' इति क्रियापदं कीदृश्याः भाषायाः उदाहरणमस्ति-
(A) अयोगात्मिकायाः
(B) प्रश्लिष्टयोगात्मिकायाः
(C) श्लिष्टयोगात्मिकायाः
(D) अश्लिष्टयोगात्मिकायाः

व्याख्या-

भाषा का वर्गीकरण दो प्रकार से किया जाता है (1) अयोगात्मक (2) योगात्मक। योगात्मक वर्गीकरण के तीन भेद हैं- (1) अश्लिष्ट योगात्मक (2) श्लिष्ट योगात्मक (3) प्रश्लिष्ट योगात्मक।

श्लिष्ट योगात्मक- श्लिष्ट योगात्मक भाषाओं में अर्थतत्त्व और सम्बन्धतत्त्व अर्थात् प्रकृति और प्रत्यय घनिष्ठता से मिले होते हैं। यह संयोग 'नीर-क्षीरन्याय' कहा जा सकता है। इस वर्ग की भाषाओं के दो भेद किए हैं (क) अन्तर्मुखी (ख) बहिर्मुखी। इन दोनों के भी दो भेद किए जाते हैं संयोगात्मक तथा वियोगात्मक। अन्तर्मुखी में अरबी और बहिर्मुखी में संस्कृत प्रतिनिधि भाषा है। संस्कृत में भी शब्दों के अन्दर परिवर्तन होता है, जैसे-दैविक, नैतिक, पपाठ, जगाम, ममार आदि।

गम् से गच्छति, पठ् से पठति, हस् से हसति इन सारे उदाहरणों में अ + ति प्रत्यय का प्रयोग हुआ है। ये **बहिर्मुखी श्लिष्ट योगात्मक** के उदाहरण हैं।

प्रश्लिष्टयोगात्मक - प्रश्लिष्ट योगात्मक भाषाएँ उन्हें कहते हैं जिनमें प्रकृति और प्रत्यय इस प्रकार से जुड़े हुए होते हैं कि उनको अलग-अलग करना सम्भव नहीं होता है। इस संयोग को दधिघृतन्याय कहा जा सकता है। इसके उदाहरण हैं- आर्जव-ऋजु + अ, सौवर-स्वर + अ, दित्सति-दा + स +ति।

अश्लिष्ट योगात्मक- अश्लिष्ट योगात्मक भाषाओं में अर्थ-तत्त्व और सम्बन्धतत्त्व अर्थात् प्रकृति और प्रत्यय इस प्रकार से जुड़े रहते हैं कि इनको स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। इस प्रकार के जोड़ को पूर्णतया न जुड़े होने से अश्लिष्ट और जुड़े होने के कारण योगात्मक कहा जाता है। इस संयोग को तिल तण्डुल-न्याय कहा जा सकता है।

अयोगात्मक भाषा- अयोगात्मक उन भाषाओं को कहते हैं, जिनमें प्रकृति और प्रत्यय का संयोग नहीं होता है। प्रत्येक शब्द स्वतन्त्र होता है। इसे Root language कहते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है 'पठति' श्लिष्ट योगात्मक भाषा है। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- भाषा-विज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-365

26. ग्रीकभाषा कस्य परिवारस्य भाषा अस्ति?
(A) भारोपीय-परिवारस्य (B) सेमेटिक-परिवारस्य
(C) सूडानी-परिवारस्य (D) काकेशी-परिवारस्य

व्याख्या-

विश्व भाषाओं के पारिवारिक वर्गीकरण के अनुसार 18 भेद माने गए हैं। **यूरेशिया (यूरोप एशिया) खण्ड में-** 1 द्राविड 2- भारोपीय 3- काकेशी 4- बुरुशस्की 5- यूराल अल्ताई 6- बास्क 7- चीनी 8- अत्युत्तरी (हाइपरबोरी) 9- जापानी- कोरियाई 10- सामी हामी (सेमेटिक, हैमेटिक)

अफ्रीका खण्ड में- 11 सूडानी 12- होतेन्तोत बुशमैनी 13- बान्तू (सामी-हामी)

प्रशान्त महासागरीय खण्ड में- 14 मलय बहुद्वीपीय 15- पापुई 16- आस्ट्रेलियन 17- दक्षिणपूर्व एशियन

अमेरिका खण्ड में- 18 अमेरिकी परिवार हैं।

भारोपीय परिवार की शाखाएँ- भारोपीय शब्द भारत+यूरोपीय का संक्षिप्त रूप है। यह Indo-European का अनुवाद है। भारोपीय में भारतवर्ष से लेकर यूरोप तक फैली हुई भाषाओं का संग्रह है। इसकी दस शाखाएँ हैं-

1- भारत ईरानी (आर्य) - (क) भारतीय (ख) ईरानी
2- बाल्टो स्लाविक (क) बाल्टिक (ख) स्लाविक
3- आर्मीनी
4- अल्बानी (इलीरी)
5- ग्रीक (हेलेनिक)
6- केल्टिक
7- जर्मानिक (ट्यूटानिक)
8- इटालिक
9- हिटाइट (हित्ती)
10- तोखारी

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि ग्रीकभाषा भारोपीय परिवार की भाषा के अन्तर्गत आती है। **अतः विकल्प A सही है।**

स्रोत- भाषा-विज्ञान एवं भाषा शास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-369

27. निम्नलिखितासु भाषासु का भाषा 'सतम्' वर्गस्य नास्ति?
(A) संस्कृत भाषा (B) ईरानी भाषा
(C) ग्रीक भाषा (D) फारसी भाषा

व्याख्या-

भारोपीय परिवार की भाषाओं को ध्वनि के आधार पर दो

भागों में विभक्त किया गया है- (1) केन्टुम् वर्ग (2) शतम् वर्ग। इस विभाजन का श्रेय प्रो. अस्कोली को दिया जाता है। यह मत उन्होंने 1870. ई. में प्रस्तुत किया। सभी भारोपीय भाषाओं को इन दो भागों में विभक्त किया गया है-
भारोपीय परिवार को **केन्टुम् और शतम् वर्ग** के आधार पर निम्न प्रकार से बाँटा जा सकता है-

भारोपीय भाषा

शतम् वर्ग	**केन्टुम् वर्ग**
संस्कृत- शतम्	लैटिन - केन्टुम्
अवेस्ता (ईरानी)- सतम्	ग्रीक - हेकटोन
फारसी- सद्	केल्टिक - केत्
हिन्दी- सौ	तोखारी - कन्ध
रूसी - स्तो	गाथिक - हुन्ड
लिथुआनियन- स्जिम्तास	जर्मन - हुन्डर्ट
	फ्रेञ्च - सं./सेन्ट
	इटालियन - केन्तो

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि शतम् वर्ग की भाषा संस्कृत, ईरानी (अवेस्ता), फारसी है जबकि ग्रीक भाषा केन्टुम् वर्ग की है। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-385

28. अंग्रेजी-भाषायाः सम्बन्धः कया भाषाशाखया अस्ति?
(A) कैल्टिकशाखया (B) जर्मनिकशाखया
(C) इटैलिकशाखया (D) ग्रीकशाखया

व्याख्या-

जर्मनिक या ट्यूटानिक- जर्मनिक या ट्यूटानिक का क्षेत्रीय विभाजन इस प्रकार है-
पूर्वी क्षेत्र- गाथिक
उत्तरी क्षेत्र- आइसलैण्डिक (आइसलैण्ड में), नार्वेजियन (नार्वे में), डेनिश (डेनमार्क में), स्वीडिश (स्वीडन में)
पश्चिमी क्षेत्र- अंग्रेज़ी (इग्लैण्ड), उच्चजर्मन (दक्षिणी जर्मनी में), निम्न जर्मन (उत्तरी जर्मनी में), डच (हालैण्ड में), फ्लेमिश (बेल्जियम में) यह भारोपीय परिवार की सबसे अधिक विस्तृत भू भाग में बोली जाने वाली भाषा है। इसकी एक शाखा अंग्रेजी विश्व में सबसे अधिक फैली हुई है। जर्मन और डच भाषा का साहित्य भी उच्चकोटि का है।

केल्टिक- यह भाषा यूरोप के बहुत बड़े भूभाग में बोली जाती थी। यह पूर्व में एशिया माइनर तक फैली हुई थी। अब यह यूरोप के पश्चिमी भाग में ही सीमित रह गई है। फ्रांस के पश्चिमोत्तर भाग तथा ग्रेट ब्रिटेन में बोली जाती है।

इटैलिक- इटालिक या रोमान्स वर्ग का क्षेत्रीय विभाजन इस प्रकार है- (1) इटालियन- इटली, सिसिली, कोर्सिका।

(2) फ्रेञ्च- फ्रांस में (3) स्पेनिश- स्पेन में, (4) रूमानियन रूमानिया में (5) पुर्तगाली- पुर्तगाल में।
रोमान्स वर्ग की भाषाओं का विकास लैटिन से हुआ है। लैटिन मूलतः रोम और उसके समीपवर्ती जिले की भाषा थी।

ग्रीक- ग्रीक भाषा का क्षेत्र दक्षिणी, अल्बानिया और यूगोस्लाविया,बल्गोरिया-टर्की- साइप्रस का कुछ भाग है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि अंग्रेजी भाषा का सम्बन्ध जर्मनिक शाखा से है। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-391-392

29. संस्कृतभाषायां निम्नलिखितेषु स्वरेषु कस्य स्वरस्य दीर्घो नास्ति?
(A) ऋकारस्य (B) अकारस्य
(C) इकारस्य (D) ऌकारस्य

व्याख्या-

श्रीवरदराजाचार्य कृत लघुसिद्धान्तकौमुदी के संज्ञाप्रकरण में स्वरों की चर्चा की गयी है-

अ- इ- उ- ऋ- एषां वर्णानां प्रत्येकमष्टादशभेदाः।

अ, इ, उ, ऋ इन चार वर्णों के अठारह-अठारह भेद होते हैं। इनका ह्रस्व और दीर्घ दोनों होता है।

ऌवर्णस्य द्वादश तस्य दीर्घाभावात्।
एचामपि द्वादश, तेषां ह्रस्वाभावात्। ए, ओ, ऐ, औ का ह्रस्व (छोटा) नहीं होता इसलिए बारह ही भेद माने जाते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि संस्कृत भाषा के स्वरों में ऌ का दीर्घ नहीं होता है। **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी-धरानन्दशास्त्री, पेज 16

30. अन्त्यादलः पूर्ववर्णस्य का सञ्ज्ञा भवति?
(A) अपृक्तसञ्ज्ञा (B) उपधासञ्ज्ञा
(C) टि-सञ्ज्ञा (D) सर्वनामस्थान सञ्ज्ञा

व्याख्या-

* **अपृक्तसञ्ज्ञा-** अपृक्तसञ्ज्ञा का विधान करने वाला सञ्ज्ञा सूत्र है- **अपृक्त एकाल्प्रत्ययः** (1.2.41) अर्थात् जो प्रत्यय एक वर्णरूप हो गया हो उसकी अपृक्त सञ्ज्ञा होती है।
उदा.- 'वाच् स्' यहाँ 'स्' एक वर्णरूप प्रत्यय है अतः स् अपृक्त सञ्ज्ञक है।

* **उपधा सञ्ज्ञा-** उपधा सञ्ज्ञा का विधान करने वाला सञ्ज्ञा सूत्र है- **'अलोऽन्त्यात्पूर्व उपधा** (1.1.64)' अन्तिम अल् (स्वर या व्यञ्जन) से पूर्व वर्ण की उपधा सञ्ज्ञा होती है।
उदाहरण- गम् में मकार से पूर्व वर्ण गकारोत्तरवर्ती अकार की, मुच् में चकार से पूर्व वर्ण मकारोत्तरवर्ती उकार की उपधा सञ्ज्ञा होगी।
* **टि सञ्ज्ञा-** टि सञ्ज्ञा का विधान करने वाला सञ्ज्ञा सूत्र है- **अचोऽन्त्यादि टि** (1.1.63) अर्थात् अचों (स्वरों) के मध्य में जो अन्तिम अच् (स्वर), वह है आदि में जिसके, उस समुदाय की टि सञ्ज्ञा होती है।

उदाहरण- मनस् में नकारोत्तरवर्ती अकार अन्तिम स्वर है अतः पूर्ण समुदाय अस् की टि सञ्ज्ञा होगी। राजन् में अन् की टि सञ्ज्ञा होगी।
* **सर्वनामस्थान सञ्ज्ञा-** सर्वनामस्थान सञ्ज्ञा विधायक सञ्ज्ञासूत्र है- **शि सर्वनामस्थानम्** (1.141)- शि की सर्वनामस्थान सञ्ज्ञा होती है।

उदाहरण- वनानि, दधीनि, मधूनि।

(2) **सुडनपुंसकस्य** (1.1.42)- नपुंसकलिङ्ग से भिन्न सुट् (सु, औ, जस्, अम्, औट् इन पाँच) प्रत्ययों की सर्वनामस्थान सञ्ज्ञा होती है। उदाहरण- राजा, राजानौ, राजानः, राजानम्, राजानौ में क्रमशः सु, औ, जस्, अम्, औट् इन पाँच प्रत्ययों की सर्वनामस्थान सञ्ज्ञा है।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि अन्तिम अल् से पूर्व वर्ण की उपधा सञ्ज्ञा होगी। **अतः विकल्प B सही है।**
स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी- गोविन्दाचार्य, पेज-175

31. निषेध-विकल्पयोः सञ्ज्ञा का ?
(A) अपृक्त सञ्ज्ञा (B) विभाषा सञ्ज्ञा
(C) उपधा सञ्ज्ञा (D) प्रगृह्य सञ्ज्ञा

व्याख्या-
* **विभाषा सञ्ज्ञा-** विभाषा सञ्ज्ञा विधायक सञ्ज्ञासूत्र है-

न वेति विभाषा (1.1.43) न का अर्थ है निषेध तथा वा का अर्थ है निषेध तथा विकल्प - इन दो अर्थों की विभाषा सञ्ज्ञा होती है।
* **प्रगृह्यसञ्ज्ञा-** प्रगृह्यसञ्ज्ञा विधायक सञ्ज्ञासूत्रों की संख्या आठ है- **(1) ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम् (1.1.11)-** दीर्घ ईकारान्त, दीर्घ ऊकारान्त, तथा दीर्घ एकारान्त द्विवचनान्त की प्रगृह्य सञ्ज्ञा होती है। उदाहरण- हरी एतौ, विष्णू इमौ, गंगे अमू, आदि।

(2) अदसो मात् (1.1.12)- अदस् शब्द के मकार से परे ईत् तथा ऊत् प्रगृह्यसञ्ज्ञक होते हैं। उदाहरण- अमी ईशाः अमू आसाते।

(3) शे (1.1.13)- शे इस सुबादेश की प्रगृह्य सञ्ज्ञा होती है (प्रायः वेदों में) उदाहरण- युष्मे इति, त्वे इति, मे इति।

(4) निपात एकाजनाङ् (1.1.14)- आङ् को छोड़कर एक अच् स्वरूप निपात की प्रगृह्य सञ्ज्ञा होती है। उदाहरण- अ अपेहि, इ इन्द्रम् आदि।

(5) ओत् (1.1.15) ओकारान्त निपात की प्रगृह्य सञ्ज्ञा होती है। उदाहरण- उताहो अनिष्टम्, अहो अद्य शीतम्।

(6) सम्बुद्धौ शाकल्यस्येतावनार्षे (1.1.16)- सम्बुद्धिनिमित्तक ओकार की अवैदिक 'इति' शब्द के परे रहते विकल्प से प्रगृह्य सञ्ज्ञा होती है। यह सूत्र विकल्प से प्रगृह्य सञ्ज्ञा का विधान करता है। उदाहरण- विष्णो इति।
(7) ईदूतौ च सप्तम्यर्थे इति प्रगृह्यम् (1.1.19)- सप्तमी के अर्थ में ईकारान्त व ऊकारान्त की प्रगृह्य सञ्ज्ञा होती है। **उदाहरण-** तनू इति, गौरी अधिश्रितः आदि।
(8) उञः ऊँ (1.1.17)- यह सूत्र उञ् अव्यय की प्रगृह्य सञ्ज्ञा का विधान करता है।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि निषेध विकल्प का विधान करने वाला सूत्र **'न वेति विभाषा'** है।
अतः विकल्प B सही है।
स्रोत- अष्टाध्यायी (1.1.43)- ईश्वरचन्द्र, पेज 25

32. 'सुडनपुंसकस्य' इति सूत्रेण का सञ्ज्ञा क्रियते?
(A) सर्वनामस्थान सञ्ज्ञा (B) निष्ठा सञ्ज्ञा
(C) प्रातिपदिक सञ्ज्ञा (D) पद सञ्ज्ञा

व्याख्या-
➢ सर्वनामस्थान सञ्ज्ञा का विधान करने वाला सञ्ज्ञासूत्र है-

(1) शि सर्वनामस्थानम् (1.1.41)- शि की सर्वनाम स्थान सञ्ज्ञा होती है। उदाहरण- वनानि, दधीनि, मधूनि।

(2) सुडनपुंसकस्य (1.1.42)- नपुंसकलिङ्ग से भिन्न सुट् (सु, औ, जस्, अम्, औट्) इन पाँच प्रत्ययों की सर्वनामस्थान सञ्ज्ञा होती है। उदाहरण- राजा में सु, राजानौ में औ, राजानः में जस्, राजानम् में अम्, राजानौ में औट् की सर्वनामस्थान सञ्ज्ञा होती है।
➢ प्रातिपदिकसञ्ज्ञा का विधान करने वाले सञ्ज्ञासूत्र हैं-

(1) अर्थवदधातुरप्रत्ययः (1.2.45)- धातुरहित, प्रत्यय व प्रत्ययान्त रहित सार्थक शब्दस्वरूप की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा होती है। उदाहरण- राम, कृष्ण, लता आदि।

(2) कृत्तद्धितसमासाश्च (1.2.46)- कृत् प्रत्ययान्त,

तद्धित प्रत्ययान्त तथा समास भी प्रातिपदिकसञ्ज्ञक होते हैं। उदाहरण- कारकः (कृत्), शालीयः (तद्धित), राजपुरुषः (समास)

➢ निष्ठा सञ्ज्ञा का विधान करने वाला सञ्ज्ञासूत्र है-

क्तक्तवतू निष्ठा (1.1.26)- क्त तथा क्तवतु प्रत्यय की निष्ठा सञ्ज्ञा होती है। उदाहरण- मुक्तः में क्त प्रत्यय, भुक्तवान् में क्तवतु प्रत्यय।

➢ **पदसञ्ज्ञा-** पदसञ्ज्ञा का विधान करने वाला सञ्ज्ञासूत्र है-

(1) सुप्तिङन्तं पदम् (1.4.14)- सुबन्त तथा तिङन्त शब्दों की पद सञ्ज्ञा होती है। उदाहरण- देवः सुबन्त तथा पठति तिङन्त की पद सञ्ज्ञा हुई है।

(2) नः क्ये (1.4.15)- नकारान्त शब्द की क्यच्, क्यङ् व क्यष् प्रत्यय परे रहते पदसञ्ज्ञा होती है। उदाहरण- राजीयति, राजायते।

(3) सिति च (1.4.16)- सित् प्रत्यय परे रहते पूर्व की पद सञ्ज्ञा होती है। उदाहरण- भवत् + छस् = भवदीयः।

(4) स्वादिष्वसर्वनामस्थाने (1.4.17)- सर्वनामस्थान भिन्न सु आदि प्रत्ययों के परे रहते पूर्व शब्दसमुदाय की पद सञ्ज्ञा होती है। उदाहरण- राजाभ्याम् = राजन् + भ्याम् में राजन् की पदसञ्ज्ञा होगी।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'सुडनपुंसकस्य' सूत्र से सर्वनामस्थान सञ्ज्ञा होती है। **अतः विकल्प A सही है।**

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी-(1.1.93) गोविन्दाचार्य, पेज 166

33. 'अनुविष्णु' इत्यत्र 'अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि' इत्यादिसूत्रेण कस्मिन् अर्थेऽव्ययीभावसमासः?

(A) समीपार्थे (B) असम्प्रत्यर्थे
(C) पश्चादर्थे (D) आनुपूर्व्यार्थे

व्याख्या-

अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि- व्यृद्ध्यर्थाभावाऽत्ययाऽसम्प्रति-शब्दप्रादुर्भावपश्चाद्-यथाऽऽनुपूर्व्य- यौगपद्य-सादृश्यसम्पत्ति-साकल्याऽन्तवचनेषु। (2.1.6)

1- विभक्ति 2- समीप 3- समृद्धि 4- व्यृद्धि 5- अर्थाभाव 6- अत्यय 7- असम्प्रति 8- शब्दप्रादुर्भाव 9- पश्चाद् 10- यथा- (योग्यता,वीप्सा,पदार्थानतिवृत्ति और सादृश्य) 11- आनुपूर्व्य 12- यौगपद्य 13- सादृश्य 14- सम्पत्ति 15- साकल्य 16- अन्त- इन सोलह अर्थों में से किसी भी अर्थ में वर्तमान जो अव्यय, वह समर्थ सुबन्त के साथ नित्य समास होता है। और वह समास अव्ययीभाव संज्ञक होता है।

सामासिक पद	**अर्थ**	
अधिहरि	विभक्ति अर्थ	(हरि में)
अधिगोपम्	विभक्ति अर्थ	(गोप में)
उपकृष्णम्	समीप अर्थ	(कृष्ण के समीप)
सुमद्रम्	समृद्धि अर्थ में	(मद्रदेशवासियों की समृद्धि)
दुर्यवनम्	अभाव अर्थ	(यवनों का अभाव)
निर्मक्षिकम्	अभाव अर्थ	(मक्खियों का अभाव)
अतिहिमम्	नाश अर्थ	(हिम का अत्यय)
अतिनिद्रम्	समय उचित नहीं है	(निद्रा का समय उचित नहीं है)
इतिहरि	नाम की प्रसिद्धि	(शब्द प्रादुर्भाव)
अनुविष्णु	**पश्चात् अर्थ**	**(विष्णु के पीछे)**
अनुरूपम्	योग्यता अर्थ	(रूप के योग्य)
प्रत्यर्थम्	वीप्सा अर्थ में	(प्रत्येक अर्थ के प्रति)
यथाशक्ति	उल्लंघन न करना	(शक्ति के उल्लंघन के बिना)
सहरि	सदृश अर्थ	हरि के सदृश
अनुज्येष्ठम्	आनुपूर्व्य अर्थ में	ज्येष्ठ के क्रम से
सचक्रम्	यौगपद्य अर्थ	(चक्र के साथ एक ही काल में)
ससखि	सादृश्य अर्थ	(सखा के समान)
सक्षत्रम्	सम्पत्ति अर्थ	(क्षत्रियों के अनुरूप)
सतृणम् (अत्ति)	सम्पूर्ण अर्थ	(तिनकों को छोड़े बिना)
साग्नि	अन्त अर्थ	(अग्निग्रन्थ पर्यन्तम्)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि अनुविष्णु 'पश्चात्' अर्थ में प्रयोग हुआ है। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी-गोविन्दाचार्य, पेज 900

34. 'व्यूढोरस्कः' इत्यत्र कीदृशः समासः?

(A) अव्ययीभावः (B) तत्पुरुषः
(C) द्वन्द्वः (D) बहुव्रीहिः

व्याख्या-

व्यूढोरस्कः- (चौड़ी छाती वाला पुरुष)

लौकिक-विग्रह व्यूढं उरो यस्य सः

अलौकिक-विग्रह व्यूढ सु+उरस् सु

अनेकमन्यपदार्थे- सूत्र से बहुव्रीहि समास होकर विशेषण का पूर्वनिपात समास की प्रातिपदिक संज्ञा एवं प्रातिपदिक के अवयवों सुपों का लुक् करने पर व्यूढ+उरस्

'आद्गुणः' सूत्र से गुण करने पर व्यूढोरस् बना।

अब यहाँ बहुव्रीहि समास के अन्त में उरस् शब्द आया है जो

उरःप्रभृतिगण का पहला शब्द है अतः 'उरः प्रभृतिभ्यः कप्' सूत्र द्वारा समासान्त कप् प्रत्यय होकर पकार अनुबन्ध का लोप करने से हुआ।

व्यूढोरस् + क

ससजुषो रुः से पदान्त सकार को रुँ आदेश उकारलोप

खरवसानयोर्विसर्जनीयः से रेफ को विसर्ग आदेश करने पर व्यूढोरः+क

सोऽपदादौ- सूत्र से विसर्ग को सकार आदेश कर विभक्ति कार्य करके **'व्यूढोरस्कः'** प्रयोग सिद्ध हो जाता है।

अन्य उदाहरण- प्रियसर्पिष्कः

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'व्यूढोरस्कः' में बहुव्रीहि समास है। **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी-गोविन्दाचार्य, पेज 966

35. 'सर्पिषोऽपि स्याद्' इत्यत्र 'अपि' शब्दस्य कर्मप्रवचनीयसञ्ज्ञा कस्मिन् अर्थे भवति?

(A) सम्भावनाद्योतकतायाम्

(B) अन्ववसर्गद्योतकतायाम्

(C) समुच्चयद्योतकतायाम्

(D) पदार्थद्योतकतायाम्

व्याख्या-

अपिः पदार्थसम्भावनाऽन्ववसर्गगर्हासमुच्चयेषु (1.4.96)

पदार्थ, सम्भावना, अन्ववसर्ग (कामाचारानुज्ञा), गर्हा (निन्दा), और समुच्चय अर्थों के द्योतित होने पर 'अपि' की कर्मप्रवचनीय संज्ञा होती है।

जैसे- **सर्पिषोऽपि स्यात्**। घी का बिन्दु हो सकता है) यहाँ 'अपि की अपिः पदार्थसम्भावनान्ववसर्गगर्हासमुच्चयेषु' सूत्र से कर्मप्रवचनीय संज्ञा और अपि शब्द के पदार्थ की द्योतकता है। **'इयमेव ह्यपिशब्दस्य पदार्थद्योतकता नाम'** यही व्याकरण में पाणिनि के द्वारा कहा गया है।

* **अपि स्तुयाद् विष्णुम्** (वह विष्णु की स्तुति कर सकता है।) यहाँ अपि शब्द सम्भावना अर्थ को द्योतित करता है।

* **अपि स्तुहि-** (चाहे स्तुति करो या न करो) अन्ववसर्ग के अर्थ में अपि की कर्मप्रवचनीय संज्ञा हुई है।

* **धिग् देवदत्तम् अपि स्तुयाद् वृषलम्-** (निन्दा या तिरस्कार) गर्हा के अर्थ में अपि की 'अपिः पदार्थ- सम्भावनान्ववसर्गगर्हासमुच्चयेषु' सूत्र से कर्मप्रवचनीय संज्ञा हुई।

* **अपि सिञ्च अपि स्तुहि-** (सींचो भी और स्तुति भी करो) यहाँ अपि समुच्चय अर्थ को प्रकट करता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'सर्पिषोऽपि स्याद्' में अपि शब्द 'पदार्थ' अर्थ में प्रयोग हुआ है। **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत- सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज 53

36. 'अधिकरणवाचिनश्च' इति सूत्रस्योदाहरणं किं भवति?

(A) राज्ञां मतः

(B) द्विरह्नो भोजनम्

(C) शब्दानामनुशासनमाचार्यस्य

(D) इदम् एषाम् आसितम्

व्याख्या-

अधिकरणवाचिनश्च (2.3.68)-

क्तस्य योगे षष्ठी स्यात्। इदमेषामासितं शयितं गतं भुक्तम् वा। अधिकरणवाचक क्तप्रत्ययान्त शब्दों के योग में षष्ठी विभक्ति होती है।

जैसे- **1. इदम् एषाम् आसितम्** (यह इनका आसन है)- 'आस्ते अस्मिन् इति आसितम्' यहाँ पर आस् धातु से क्त प्रत्यय जोड़कर आसितम् बनता है। अधिकरणवाचक क्तप्रत्ययान्त आसितम् के योग में अनुक्त कर्ता इदम् 'अधिकरणवाचिनश्च' सूत्र से षष्ठी विभक्ति होकर एषाम् बना।

(2) इदमेषां शयितम् (यह इनकी शय्या है)-

'शेते अस्मिन् इति शयितम्' में शी अकर्मक धातु से अधिकरण के अर्थ में क्त प्रत्यय हुआ है अतः 'अधिकरणवाचिनश्च' सूत्र से अधिकरणवाची शयितम् के योग में एषाम् में षष्ठी विभक्ति हुई है।

(3) इदमेषां गतम् (यह इनका गमन मार्ग है)-

'गच्छति अस्मिन् इति गतम्' इस अधिकरण अर्थ में गम् धातु से क्त प्रत्यय होता है अतः कर्ताकारक एतत् में अधिकरणवाचिनश्च सूत्र से षष्ठी विभक्ति होकर एषाम् बना।

(4) इदमेषां भुक्तम् - (यह इनका भोजनपात्र है)

'भुङ्क्ते अस्मिन् इति भुक्तम्' इस अधिकरण अर्थ में भुज् धातु से क्त प्रत्यय होकर भुक्तम् बना। अतएव अधिकरण वाचक भुक्तम् के योग में कर्ताकारक एतत् में अधिकरणवाचिनश्च सूत्र से षष्ठी विभक्ति होकर एषाम् बना।।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि इदम् एषाम् आसितम् उदाहरण में 'अधिकरणवाचिनश्च' सूत्र से षष्ठी विभक्ति का विधान हुआ है। **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत- सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज 185

37. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत-

(क)	भासः	(i)	मालतीमाधवम्
(ख)	कालिदासः	(ii)	मृच्छकटिकम्
(ग)	भवभूतिः	(iii)	मालविकाग्निमित्रम्
(घ)	शूद्रकः	(iv)	पञ्चरात्रम्

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(A)	(iv)	(iii)	(i)	(ii)
(B)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)
(C)	(iii)	(iv)	(ii)	(i)
(D)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)

व्याख्या-

➤ महाकवि भास द्वारा रचित नाटकों को ट्रावनकोर राज्य से टी॰ गणपति शास्त्री ने सन् 1909 ई. में प्राप्त कर उसे प्रकाशित कराया- जिनकी संख्या 13 है-

(**क**) **उदयनकथामूलक-** (1) प्रतिज्ञायौगन्धरायण (2) स्वप्नवासवदत्तम्

(**ख**) **महाभारतमूलक-** (1) ऊरुभंगम्, (2) दूतवाक्यम् (3) पञ्चरात्रम् (4) बालचरितम् (5) दूतघटोत्कचम् (6) कर्णभारम् (7) मध्यमव्यायोगम्

(**ग**) **रामायणमूलक-** (1) प्रतिमानाटकम् (2) अभिषेकनाटकम्

(**घ**) **कल्पनामूलक-** (1) अविमारकम् (2) चारुदत्तम्

➤ **कालिदास-** कालिदास द्वारा रचित ग्रन्थों की संख्या सात है जिसमें दो महाकाव्य, दो गीतिकाव्य या खण्डकाव्य तथा तीन नाटक।

महाकाव्य- रघुवंशम्, कुमारसम्भवम्

गीतिकाव्य (खण्डकाव्य)- ऋतुसंहारम्, मेघदूतम्

नाटक- मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोर्वशीयम्,अभिज्ञानशाकुन्तलम्।

➤ **भवभूति-** भवभूति द्वारा रचित तीन ग्रन्थ प्राप्त होते हैं-

(1) मालतीमाधवम् (2) महावीरचरितम् (3) उत्तररामचरितम्

शूद्रक- शूद्रक द्वारा रचित केवल एक ही ग्रन्थ प्राप्त होता है। जो कि प्रकरण है जिसका नाम मृच्छकटिकम् है इसमें दस अङ्क हैं। नायक चारुदत्त तथा नायिका वसन्तसेना एवं सहनायिका धूता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि भास की रचना पञ्चरात्रम्, कालिदास की रचना मालविकाग्निमित्रम्, भवभूति की रचना मालतीमाधवम् एवं शूद्रक की रचना मृच्छकटिकम् है।

अतः विकल्प A सही है।

स्रोत- संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज क-275, ख-137, ग-395, घ-301

38. शिशुपालवधमहाकाव्यस्य प्रथमसर्गस्य नाम भवति-

(A) श्रीकृष्णगुणकीर्तनम् (B) नारदगुणकीर्तनम्

(C) कृष्णनारदसम्भाषणम् (D) नारदावतरणम्

व्याख्या-

महाकवि माघ द्वारा रचित शिशुपालवध महाकाव्य में बीस सर्ग हैं। जिसकी गणना बृहत्त्रयी के अन्तर्गत होती है। इस महाकाव्य के नायक श्रीकृष्ण एवं प्रतिनायक शिशुपाल हैं।

शिशुपालवध महाकाव्य के 20 सर्गों के नाम इस प्रकार हैं-

प्रथम सर्ग - श्रीकृष्ण नारद का सम्भाषण
द्वितीय सर्ग - उद्धव तथा बलराम के साथ मन्त्रणा
तृतीय सर्ग - द्वारिकापुरी से कृष्ण का प्रस्थान
चतुर्थ सर्ग - रैवतक वर्णन
पञ्चम सर्ग - रैवतक पर सेना का प्रस्थान तथा शिविर का वर्णन
षष्ठ सर्ग - छह ऋतुओं का वर्णन
सप्तम सर्ग - वनविहार वर्णन
अष्टम सर्ग - जलविहार वर्णन
नवम सर्ग - सूर्यास्त वर्णन
दशम सर्ग - मद्यपान वर्णन
एकादश सर्ग - प्रभात वर्णन
द्वादश सर्ग - श्रीकृष्ण का सेनासहित प्रस्थान
त्रयोदश सर्ग - श्रीकृष्ण का यज्ञसभा में प्रवेश
चतुर्दश सर्ग - महाराजयुधिष्ठिर का भगवान् श्रीकृष्ण का प्रथमार्घ्य
पञ्चदश सर्ग - श्रीकृष्ण की पूजा से शिशुपाल का कोपाग्नि से भड़कना
षोडश सर्ग - शिशुपाल द्वारा प्रेषित दूत का कृष्ण से संवाद
सप्तदश सर्ग - यदुवंश क्षोभवर्णन
अष्टादश सर्ग - संकुल युद्ध वर्णन
एकोनविंशति सर्ग - द्वन्द्वयुद्ध वर्णन
विंशति सर्ग - शिशुपालवध वर्णन

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि शिशुपालवध के प्रथम सर्ग का नाम 'श्रीकृष्ण नारद सम्भाषण' है।

अतः विकल्प C सही है।

स्रोत- शिशुपालवधम् -हरगोविन्द शास्त्री, पेज 54

39. सानुमत्याः उपाख्यानम् अभिज्ञानशाकुन्तले कस्मिन् अङ्के अस्ति?

(A) सप्तमे (B) षष्ठे

(C) पञ्चमे (D) चतुर्थे

व्याख्या-

सप्त अङ्कात्मक, शृङ्गाररसप्रधान, महाभारत आदिपर्व के शकुन्तलोपाख्यान पर आधारित, महाकवि कालिदास द्वारा विरचित, दुष्यन्त शकुन्तला की प्रणय कथा से समन्वित, विश्वविख्यात नाटक का नाम है- **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**। जिस नाटक की अङ्कवार प्रमुख घटनाएँ निम्नवत् हैं-

* **प्रथम अङ्क-** मृग का अनुसरण करते हुए दुष्यन्त कण्व ऋषि के आश्रम पहुँचता है और शकुन्तला को देखकर मोहित हो जाता है, शकुन्तला भी उस पर आसक्त होती है। ग्रीष्म ऋतु का वर्णन।
* **द्वितीय अङ्क-** शकुन्तला पर आसक्त राजा का कामी अवस्था में प्रवेश। भाग्यवश ऋषि कुमारों का प्रवेश और राजा द्वारा राक्षसों से यज्ञ की सुरक्षा के लिये राजा को आश्रम में रुकने की स्वीकृति। माता द्वारा दुष्यन्त को बुलाया जाना।
* **तृतीय अङ्क-** राजा के द्वारा गान्धर्व विवाह का प्रस्ताव। शान्ति -जल लेकर आश्रम की स्वामिनी गौतमी का प्रवेश, यज्ञ में राक्षसों के विघ्न को दूर करने के लिए राजा का प्रस्थान। शकुन्तला का गर्भिणी होना।
* **चतुर्थ अङ्क-** शकुन्तला का पतिगृह हस्तिनापुर के लिए गमन अर्थात् - विदाई, दुर्वासा के द्वारा शकुन्तला को शाप मिलना, कण्व का सोमतीर्थ से आगमन।
* **पञ्चम अङ्क-** शार्ङ्गरव, शारद्वत और गौतमी का शकुन्तला को लेकर राजद्वार पर आगमन। दुर्वासा के शाप के प्रभाव के कारण शकुन्तला का तिरस्कार, राजा द्वारा शकुन्तला को पहचानने से इनकार करना। अँगूठी का न मिलना, शचीतीर्थ में अँगूठी के गिर जाने का पता चलना।
* **षष्ठ अङ्क-** धीवर वृत्तान्त, **सानुमती उपाख्यान**, अँगूठी के मिलने से राजा को शकुन्तला सम्बन्धी वृत्तान्त याद आना और राजा का पश्चात्ताप करना, मातलि का आगमन और इन्द्र का सन्देश प्राप्त होना।
* **सप्तम अङ्क-** राजा की दानवों पर विजय। इन्द्र के द्वारा राजा को स्वर्ग से विदा करना। लौटते समय राजा का हेमकूट पर्वत पर मारीच ऋषि का आश्रम देखना। मारीच ऋषि से मिलना। शकुन्तला और पुत्र सर्वदमन (भरत) से मिलन होना।

*** षष्ठ अङ्क में वर्णित सानुमती के प्रमुख कथन-**

* **सानुमती- निर्वर्तितं मया पर्यायनिर्वर्तनीयमप्सरस्तीर्थ-सांनिध्यं यावत् साधुजनस्याभिषेककाल इति।**

सानुमती- जब तक सज्जनों के स्नान का समय है, तब तक अप्सरातीर्थ पर बारी-बारी से वहाँ उपस्थित रहने का जो नियम है, वह मैंने पूरा कर लिया है।

* **सानुमती- उत्सवप्रियाः खलु मनुष्याः। गुरुणा कारणेन भवितव्यम्।** मनुष्य उत्सवप्रिय होते हैं। यह कोई बड़ा कारण होगा।

सानुमती- लतासंश्रिता द्रक्ष्यामि तावत् सख्याः प्रतिकृतिम्। ततोऽस्या भर्तुर्बहुमुखमनुरागं निवेदयिष्यामि।

मैं लता का सहारा लेकर अपनी सखी का चित्र देखती हूँ, तत्पश्चात् उसके पति के विविध प्रकार से प्रकट हुए प्रेम को उसे बताऊँगी।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि अभिज्ञानशाकुन्तल का सानुमती उपाख्यान षष्ठ अङ्क में वर्णित है।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (अङ्क 6)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 375

40. आसु कस्याः उल्लेखो मेघदूते नास्ति-

(A) रेवायाः (B) शिप्रायाः
(C) तुङ्गभद्रायाः (D) गन्धवत्याः

व्याख्या-

कालिदासकृत मेघदूत एक खण्डकाव्य है, जो दो खण्डों में विभक्त है- पूर्वमेघ और उत्तरमेघ।

मेघदूत में प्रमुख नदियों का वर्णनः-

गन्धवती, गम्भीरा, चर्मण्वती, जाह्नवी, निर्विन्ध्या, यमुना, रेवा, वेत्रवती, शिप्रा, सरस्वती।

मेघदूतम् में प्रमुख पर्वतों का वर्णनः-

आम्रकूट, कैलास, नीचैर्गिरि, विन्ध्य, हिमालय, रामगिरि।

मेघदूतम् में प्रमुख राजधानियों (नगरों) का वर्णनः-

अलकापुरी, अवन्ति, उज्जयिनी, कुरुक्षेत्र, दशपुर, दशार्ण, देवगिरि, ब्रह्मावर्त, माल, विदिशा, विशाला आदि।

मेघदूतम् में गन्धवती नदी का वर्णनः-

* भर्तुः कण्ठच्छविरिति गणैः--- स्नानतिक्तैर्मरुद्भिः। (पूर्वमेघ-37)

चन्दन आदि से सुगन्धित गन्धवती (नामक नदी) की वायु से कम्पित उपवन वाले त्रैलोक्यस्वामी पार्वतीपति (महादेव) के पवित्र स्थान (महाकाल) में जाना।

* **शिप्रावातः प्रियतम इव प्रार्थनाचाटुकारः॥ (पूर्वमेघ-32)**

शिप्रा नदी का वायु याचना करने में चापलूस प्रियतम के समान स्त्रियों की संभोग से होने वाली थकान को दूर करता है।

***रेवां द्रक्ष्यस्युपलविषमे विन्ध्यपादे विशीर्णां- भक्तिच्छेदैरिव विरचितां भूतिमङ्गे गजस्य॥ (पूर्वमेघ-19)**

ऊँची-नीची विन्ध्य पर्वत की तलहटी पर बिखरी हुई नर्मदा (नामक नदी) को हाथी के शरीर पर रेखाचित्र द्वारा किये गये शृङ्गार के समान देखोगे।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि मेघदूतम् में रेवा, शिप्रा, गन्धवती आदि नदियों का वर्णन प्राप्त होता है, किन्तु 'तुङ्गभद्रा' नदी का वर्णन नहीं है। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- मेघदूतम् - शेषराज शर्मा रेग्मी, भू. पेज 35

41. मृच्छकटिकम् इति कस्य रूपकस्य उदाहरणं भवति?

(A) नाटकस्य (B) प्रकरणस्य
(C) व्यायोगस्य (D) समवकारस्य

व्याख्या- प्रकरण-

शूद्रक प्रणीत मृच्छकटिकम् रूपक का एक भेद प्रकरण ग्रन्थ है जिसमें दस अंक हैं। मृच्छकटिकम् का नायक चारुदत्त धीरप्रशान्त कोटि का तथा गणिका नायिका वसन्तसेना एवं कुल स्त्री नायिका धूता है तथा मुख्य रस शृङ्गार है। प्रकरण का लक्षण-

भवेत् प्रकरणे वृत्तं लौकिकं कविकल्पितम्।
शृङ्गारोऽङ्गी नायकस्तु विप्रोऽमात्योऽथवा वणिक्।।
सापायधर्मकामार्थपरो धीरप्रशान्तकः
नायिका कुलजा क्वापि वेश्या क्वापि द्वयं क्वचित्।
तेन भेदास्त्रयः तस्य तत्र भेदस्तृतीयकः।।(सा.द. 6/224-227)

प्रकरण रूपक का भेद है, इसमें वृत्त लौकिक तथा कविकल्पित होता है।

शृङ्गार मुख्य रस होता है, ब्राह्मण, अमात्य या वणिक् में से कोई एक नायक होता है।

नायक धीरप्रशान्त कोटि का होता है, तथा विपरीत परिस्थितियों में भी धर्म, अर्थ, काम में परायण होता है।

प्रकरण की नायिका कुलस्त्री या वेश्या होती है। किसी प्रकरण में कुलस्त्री तथा वेश्या दोनों ही नायिका रूप में दिखलायी जाती है। इन नायिकाओं की विविधता से प्रकरण के तीन भेद हो जाते हैं।

➢ **नाटक-** नाटक की कथावस्तु इतिहास प्रसिद्ध होती है, नाटक के इतिवृत्त में पाँच सन्धियाँ होती हैं। नाटक का नायक धीरोदात्त कोटि का होता है। इसका नायक किसी प्रसिद्ध राजवंश का कोई राजर्षि हो सकता है। इसमें न्यूनतम अंकों की संख्या पाँच तथा अधिकतम अङ्कों की संख्या दस होती है। नाटक का मुख्य रस शृङ्गार या वीर होता है। जैसे- अभिज्ञानशाकुन्तलम्, स्वप्नवासवदत्तम् आदि।

➢ **व्यायोग-** व्यायोग का कथानक प्रख्यात हुआ करता है, जिसमें स्त्रीपात्रों की संख्या बहुत कम और पुरुषपात्रों की संख्या अधिक हुआ करती है। जिसके लिए गर्भ और विमर्श सन्धियों की योजना अपेक्षित नहीं रहा करती है और जिसकी कथावस्तु एक अङ्क में समाप्त होती है। इसका नायक कोई प्रसिद्ध पुरुष हुआ करता है। जिसमें धीरोदात्त प्रकृति के ही नायक का चित्रण अपेक्षित है। जैसे- सौगन्धिकाहरण।

➢ **समवकार-** समवकार का कथानक प्रख्यात हुआ करता है, जिसमें स्त्री पात्रों की संख्या कम और पुरुष पात्रों की संख्या अधिक हुआ करती है। इसका कथानक एक ही अङ्क में समाप्त हो जाता है। इसमें कैशिकी वृत्ति का वर्णन नहीं होता है। इसका नायक देव विशेष का होना आवश्यक है जो धीरोदात्त प्रकृति का होता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त प्रकरण का लक्षण मृच्छकटिकम् पर घटित होता है अतः मृच्छकटिकम् एक प्रकरण ग्रन्थ है।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 307

42. कृतककोपवृत्तान्तः मुद्राराक्षसे कस्मिन्नङ्केऽस्ति?

(A) प्रथमे (B) द्वितीये
(C) तृतीये (D) चतुर्थे

व्याख्या-

विशाखदत्त प्रणीत मुद्राराक्षस नाटक में सात अंक है। इस नाटक का कथानक ऐतिहासिक है। इस नाटक में विदूषक एवं नायिका का सर्वथा अभाव है। नाटक का नायक चाणक्य, जो धीरोदात्त कोटि का है कुछ लोग चाणक्य के स्थान पर चन्द्रगुप्त को नायक मानते हैं। इस नाटक में मुद्रा के द्वारा राक्षस को पराजित करने का उल्लेख कवि ने किया है।

नाटक के सात अङ्कों के नाम-

प्रथम अङ्क	-	मुद्रालाभ	- 27 श्लोक
द्वितीय अङ्क	-	राक्षस विचार	- 23 श्लोक
तृतीय अङ्क	-	कृतककलह	- 33 श्लोक
चतुर्थ अङ्क	-	राक्षस उद्योग	- 22 श्लोक
पञ्चम अङ्क	-	राक्षस निकार	- 24 श्लोक
षष्ठ अङ्क	-	राक्षस निर्वेद	- 21 श्लोक
सप्तम अङ्क	-	राक्षस निग्रह	- 19 श्लोक

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि कृतककोपवृत्तान्त का वर्णन मुद्राराक्षस के तृतीय अङ्क में प्राप्त होता है। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- मुद्राराक्षसम् -पुष्पा गुप्ता, पेज 192

43. कालक्रमानुसारेण तालिकां चिनुत-

(a) भारविः (b) भासः
(c) कालिदासः (d) विश्वनाथः

व्याख्या-

(A)	(a)	(b)	(c)	(d)
(B)	(b)	(a)	(c)	(d)
(C)	(c)	(a)	(b)	(d)
(D)	(b)	(c)	(a)	(d)

ग्रन्थकार	अनुमानित समय
(1) भास	100ई.पू.से 200ई.के मध्य
(2) कालिदास	ई.पू. प्रथमशताब्दी
(3) भारवि	छठी शताब्दी
(4) विश्वनाथ	14वीं शताब्दी

रचनाएँ- कालिदास (रघुवंशम्, कुमारसम्भवम्, ऋतुसंहारम्, मेघदूतम्, मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोर्वशीयम्, अभिज्ञानशाकुन्तलम्) भारवि किरातार्जुनीयम् नामक महाकाव्य एक मात्र रचना विश्वनाथ- साहित्यदर्पण, राघवविलास, कुवलयाचरित आदि।

भास- प्रतिज्ञायौगन्धरायण, स्वप्नवासवदत्तम्, ऊरुभंग, दूतवाक्य, पञ्चरात्र, बालचरित, दूतघटोत्कच, कर्णभार, मध्यमव्यायोग, प्रतिमानाटक, अभिषेकनाटक, अविमारक, चारुदत्त।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि कालक्रम के अनुसार भास, कालिदास, भारवि, विश्वनाथ का क्रम सही है। **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा ऋषि, पेज अ-242, ब-465, स-201, द-587

44. विश्वनाथमते हास्यं कतिविधं भवति?

(A) चतुर्विधम् (B) पञ्चविधम्
(C) षड्विधम् (D) द्विविधम्

व्याख्या-

आचार्य विश्वनाथ साहित्यदर्पण के तृतीय परिच्छेद में रसों के भेदों का वर्णन किया है-

श्रृङ्गारहास्यकरुणरौद्रवीरभयानकाः।
बीभत्सोऽद्भुत इत्यष्टौ रसाः शान्तस्तथा मतः॥

(सा.द.3.182)

(1) श्रृङ्गार (2) हास्य (3) करुण (4) रौद्र (5)वीर (6) भयानक (7) बीभत्स (8) अद्भुत (9) शान्त।

हास्य रस-

विकृताकारवाग्वेषचेष्टादेः कुहकाद्भवेत्।
हास्यो हासस्थायिभावः श्वेतः प्रमथदैवतः॥

(सा.द.3.214)

हास्य वह रस है जिसे हास स्थायिभाव का अभिव्यञ्जक कहा जाया करता है। इसका वर्ण श्वेत है और इसके अधिष्ठातृदेव प्रमथगण हैं।

हास्य रस के छः भेद हैं-

ज्येष्ठानां स्मितहसिते मध्यानां विहसितावहसिते च।
नीचानामपहसितं तथातिहसितं तदेष षड्भेदः॥

(सा.द.3.217)

(1) उत्तम प्रकृतिगत 'स्मित' हास्य
(2) उत्तम प्रकृतिगत 'हसित' हास्य
(3) मध्यम प्रकृतिगत 'विहसित' हास्य
(4) मध्यम प्रकृतिगत 'अवहसित' हास्य
(5) अधम प्रकृतिगत 'अपहसित' हास्य
(6) अधम प्रकृतिगत 'अतिहसित' हास्य

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि हास्य के छः भेद हैं जबकि वीररस के चार भेद दानवीर, धर्मवीर, युद्धवीर, दयावीर, एवं श्रृङ्गार रस के दो भेद सम्भोग श्रृङ्गार एवं विप्रलम्भ श्रृङ्गार है। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- साहित्यदर्पण (3/217)-शालिग्राम शास्त्री, पेज 115

45. काव्यलक्षणविचारे ''स्ववचनविरोधाद् अपास्तम्'' इति कथनेन कस्य मतं विश्वनाथेन निराकृतम्?

(A) आनन्दवर्धनस्य (B) वामनस्य
(C) मम्मटस्य (D) व्यक्तिविवेकस्य

व्याख्या-

'काव्यस्यात्मा ध्वनिः' अर्थात् काव्य की आत्मा ध्वनि है। इसी प्रसंग में आनन्दवर्धन काव्य के दो भेद करते हैं वाच्यार्थ और प्रतीयमानार्थ-

योऽर्थः सहृदयश्लाघ्यः काव्यात्मेति व्यवस्थितः।
वाच्यप्रतीयमानाख्यौ तस्य भेदावुभौ स्मृतौ॥

(ध्वन्या.1.2)

सहृदयों द्वारा प्रशंसित जो अर्थ काव्य के आत्मा रूप में प्रतिष्ठित है उसके वाच्य और प्रतीयमान दो भेद कहे गये हैं। जिसका खण्डन करते हुए साहित्यदर्पणकार विश्वनाथ कहते हैं, जिसमें वाच्यरूप अर्थ काव्य का आत्मतत्त्व बना दिखाई दे रहा है और अन्यत्र यह कहा है कि काव्य का जो आत्मभूत तत्त्व है वह ध्वनि ही है, ये दोनों परस्पर विरुद्ध कथन क्यों काव्य स्वरूप के निरूपण में प्रमाण होने लगे। ध्वनिकार ने जो ध्वनि के दो भेद वाच्य और प्रतीयमान किए हैं वह उनका वदतो व्याघात स्ववचन विरोध है। **अतः विकल्प A सही है।**

स्रोत- साहित्यदर्पण- शालिग्राम शास्त्री, पेज 18

46. साहित्यदर्पणमते नीलवर्णः महाकालदैवतः रसः कः भवति?

(A) रौद्रः (B) वीरः
(C) भयानकः (D) बीभत्सः

व्याख्या-

आचार्य विश्वनाथ साहित्यदर्पण के तृतीय परिच्छेद में रसों का वर्णन एवं उनके भेदों आदि का वर्णन किया है-

➢ **शृङ्गार रस-** 'स्थायिभावो रतिः श्यामोवर्णोऽयं विष्णुदैवतः'

अर्थात् रति जिसका स्थायीभाव है वह शृङ्गार रस है। यह श्याम वर्ण का एवं इसके देवता विष्णु हैं।

➢ **हास्य रस-** 'हास्यो हासस्थायिभावः श्वेतः प्रमथदैवतः' (सा.द.3.214)

हास स्थायीभाव है जिसका ऐसा हास्य रस है इसका वर्ण श्वेत है और इसके देवता प्रमथगण हैं।

➢ **करुण रस-** 'धीरैः कपोतवर्णोऽयं कथितो यमदैवतः' (सा.द.3.222)

शोक स्थायीभाव है जिसका वह करुण रस है। इसका वर्ण कपोत एवं देवता यम हैं।

➢ **रौद्र रस-** 'रौद्रः क्रोधस्थायिभावो रक्तो रुद्राधिदैवतः' (सा.द.3.227)

क्रोध स्थायीभाव है जिसका वह रौद्र रस है। इसका वर्ण रक्त एवं देवता रुद्र हैं।

➢ **वीर रस-** महेन्द्रदैवतो हेमवर्णोऽयं समुदाहृतः (सा.द.3.232)

उत्साह स्थायीभाव है जिसका वह वीर रस है। इसका वर्ण स्वर्ण एवं देवता महेन्द्र हैं।

➢ **भयानक रस-** 'भयानको भयस्थायिभावः भूताधिदैवतः' (सा.द.3.235)

भय स्थायीभाव है जिसका वह भयानक रस है इसका वर्ण कृष्ण एवं देवता काल है।

➢ **बीभत्स रस-** नीलवर्णो महाकालदैवतोऽयमुदाहृतः (सा.द.3.239)

जुगुप्सा स्थायीभाव है जिसका वह बीभत्स रस है इसका वर्ण नीला एवं देवता महाकाल हैं।

➢ **अद्‌भुत रस-** अद्‌भुतो विस्मयस्थायिभावो गन्धर्वदैवतः (सा.द.3.242)

विस्मय स्थायीभाव है जिसका वह अद्‌भुत रस है। इसका वर्ण पीत एवं देवता गन्धर्व हैं।

➢ **शान्त रस-** 'शान्तः शमस्थायिभाव उत्तमप्रकृतिर्मतः' (सा.द.3.245)

शम स्थायीभाव है जिसका वह शान्त रस है इसका वर्ण कुन्दपुष्पवत् एवं देवता श्रीनारायण हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि नील वर्ण और महाकाल देवता बीभत्स रस के हैं। **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत- साहित्यदर्पण (3/239)-शालिग्राम शास्त्री, पेज 120

47. जतुकर्णीपुत्रः भवति-

(A) भवभूतिः (B) कालिदासः
(C) माघः (D) श्रीहर्षः

व्याख्या-

➢ भवभूति प्रणीत उत्तररामचरितम् नाटक में नान्दी पाठ के पश्चात् सूत्रधार भवभूति के विषय में सूचना देते हुए कहता है-

'अस्ति खलु तत्रभवान् काश्यपः श्रीकण्ठपदलाञ्छनः पदवाक्य-प्रमाणज्ञो भवभूतिर्नाम जतुकर्णीपुत्रः' कश्यपगोत्र में उत्पन्न श्रीकण्ठ उपाधिधारी, व्याकरण, मीमांसा और न्यायशास्त्र के ज्ञाता जतुकर्णी के पुत्र माननीय भवभूति नाम के एक महान् विद्वान् हैं।

➢ **श्रीहर्ष-** नैषधीयचरितम् के लेखक श्रीहर्ष ने सर्गान्त में अपने विषय में वर्णन करते हुए कहते हैं-

श्रीहर्षं कविराजराजिमुकुटालङ्कारहीरः सुतं
श्रीहीरः सुषुवे जितेन्द्रियचयं मामल्लदेवी च यम् (1.145)

कविराजसमूह के मुकुट के आभूषणरूप हीरे श्रीहीर तथा मामल्लदेवी ने इन्द्रियों के समूह को जीतने वाले जिस श्रीहर्ष नाम के पुत्र को उत्पन्न किया।

➢ **कालिदास** के जीवन वृत्तान्त के विषय में सामग्री का सर्वथा अभाव है। कालिदास के द्वारा रचित सात रचनाएँ हैं-

महाकाव्य- रघुवंशम्, कुमारसम्भवम्।

गीतिकाव्य (खण्डकाव्य)- ऋतुसंहारम्, मेघदूतम्।

नाटक- विक्रमोर्वशीयम्, मालविकाग्निमित्रम्, अभिज्ञानशाकुन्तलम्।

➢ **माघ-** माघ द्वारा रचित केवल एक ही ग्रन्थ शिशुपालवध महाकाव्य है जिसमें बीस सर्ग हैं इस ग्रन्थ के नायक श्रीकृष्ण एवं प्रतिनायक शिशुपाल है।

* **माघ के विषय में प्रशस्तियाँ-** (i) नवसर्गगते माघे नवशब्दो न विद्यते। (ii) माघे सन्ति त्रयो गुणाः।

माघ के पिता का नाम दत्तक था जो महान् वैयाकरण थे।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि 'जातुकर्णीपुत्र भवभूति' हैं। **अतः विकल्प A सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 395

48. शाकुन्तले दुष्यन्तपुत्रस्य प्रथमं नाम किम् आसीत्?

(A) भरतः (B) सर्वदमनः

(C) गौतमः (D) वातायनः

व्याख्या-

अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के सप्तम अङ्क में दुष्यन्तपुत्र के द्वारा शेर के दाँत गिने जाने के अवसर पर पहली तापसी कहती है कि- **'किं नोऽपत्यनिर्विशेषाणि सत्त्वानि विप्रकरोषि? हन्त, वर्धते ते संरम्भः। स्थाने खलु ऋषिजनेन सर्वदमन इति कृतनामधेयोऽसि'** अर्थात् पितृतुल्य प्रिय इन प्राणियों को तू क्यों तंग (परेशान) कर रहा है? हाय तेरा क्रोध बढ़ता ही जा रहा है ऋषियों ने ठीक ही तेरा नाम सर्वदमन रखा है। इसी क्रम में दुष्यन्त पुत्र के विषय में ऋषि मारीच दुष्यन्त से कहते हैं-

इहायं सत्त्वानां प्रसभदमनात् सर्वदमनः।

पुनर्यास्यत्याख्यां भरत इति लोकस्य भरणात्॥

(अभि.7.33)

आप इसको वंशप्रतिष्ठा स्वरूप चक्रवर्ती सम्राट् समझें। अद्वितीय महारथी यह अस्खलित और शान्त गति वाले रथ से समुद्रों को पार करके भविष्य में सातद्वीपों से युक्त सारी पृथ्वी पर विजय करेगा। यहाँ पर जीवों को बलात् वश में करने के कारण इसका नाम सर्वदमन था। भविष्य में यह संसार का पालन करेगा अतः इसका नाम 'भरत' पड़ेगा।

इसप्रकार दुष्यन्त के पुत्र का प्रथम नाम सर्वदमन एवं द्वितीय नाम भरत है। **अतः विकल्प B सही है।**

अभिज्ञानशाकुन्तलम् के कुछ प्रमुख पात्रों का नाम-

सेनापति	-	भद्रसेन
विदूषक	-	माधव्य (माढव्य)
कञ्चुकी	-	वातायन
ऋषिकुमार	-	गौतम एवं नारद
कण्व शिष्य	-	शार्ङ्गरव, शारद्वत
राजा का भृत्य	-	रैवतक, करभक, कञ्चुकी,
दो पुलिस वाले	-	सूचक, जानुक।
मारीच का शिष्य	-	गालव

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् -कपिलदेव द्विवेदी, पेज 448

49. साहित्यदर्पणानुसारेण एषु कस्य रूपकमध्ये गणनं न भवति-

(A) समवकारस्य (B) नाटिकायाः

(C) प्रकरणस्य (D) प्रहसनस्य

व्याख्या-

आचार्य विश्वनाथ ने साहित्यदर्पण के षष्ठ परिच्छेद में रूपकों की गणना की है। दस रूपक निम्नवत् हैं -

नाटकमथ प्रकरणं भाणव्यायोगसमवकारडिमाः।

ईहामृगाङ्कवीथ्यः प्रहसनमिति रूपकाणि दश।।(सा.द.6.3)

अर्थात् (1) नाटक (2) प्रकरण (3) भाण (4) व्यायोग (5) समवकार (6) डिम (7) ईहामृग (8) अङ्क (9) वीथी (10) प्रहसन ये रूपक के दस भेद हैं।

इसी क्रम में उपरूपक के भी 18 भेदों का वर्णन करते हैं, जिनके नाम हैं- (1) नाटिका (2) त्रोटक (3) गोष्ठी (4) सट्टक (5) नाट्यरासक (6) प्रस्थानक (7) उल्लाप्य (8) काव्य (9) प्रेङ्खण (10) रासक (11) संलापक (12) श्रीगदित (13) शिल्पक (14) विलासिका (15) दुर्मल्लिका (16) प्रकरणिका (17) हल्लीश (18) भाणिका ये उपरूपक के 18 भेद हैं।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- साहित्यदर्पण (6/3) - शालिग्राम शास्त्री, पेज 170

50. एषु गतिसञ्ज्ञाविधायकं सूत्रं किमस्ति?

(A) ऊर्यादिच्विँडाचश्च

(B) कुगतिप्रादयः

(C) तत्रोपपदं सप्तमीस्थम्

(D) एक विभक्ति-चापूर्वनिपाते

व्याख्या-

➢ **ऊर्यादिच्विँडाचश्च** (1.4.60)- ऊरी-आदिगण में पढ़े गये शब्द, च्विँ प्रत्ययान्त शब्द तथा डाच् प्रत्ययान्त शब्द क्रिया के योग में गतिसंज्ञक हों।

जैसे- ऊरीकृत्य, शुक्लीकृत्य,पटपटाकृत्य,सुपुरुषः।

यह सूत्र गति सञ्ज्ञाविधायक सञ्ज्ञासूत्र है।

➢ **कुगतिप्रादयः-** (2.2.18)- कुत्सितवाचक अव्यय, गतिसञ्ज्ञक और प्र आदि शब्द इनका समर्थ सुबन्त के साथ नित्य समास होता है। यह सूत्र गति समास विधायक विधिसूत्र है।

उदाहरण- कुपुरुषः, सुपुत्रः, आदि।

तत्रोपपदं सप्तमीस्थम् (3.1.92)- धातोः सूत्र के अधिकार के अन्तर्गत कर्मण्यण् आदि सूत्रों में सप्तमी विभक्ति द्वारा निर्दिष्ट कुम्भ आदि तद्वाचक पद की उपपद सञ्ज्ञा होती है।

यह सूत्र उपपद सञ्ज्ञाविधायक सञ्ज्ञा सूत्र है।

➢ **एकविभक्ति चापूर्वनिपाते (1.2.44)-** विग्रह में जो नियत विभक्ति वाला है उसकी उपसर्जन सञ्ज्ञा होती है किन्तु उसका पूर्वनिपात नहीं होता है।

यह सूत्र उपसर्जनसञ्ज्ञा विधायक सञ्ज्ञासूत्र है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि गतिसञ्ज्ञा विधायक सञ्ज्ञासूत्र 'ऊर्यादिच्विँडाचश्च' है। **अतः विकल्प A सही है।**

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी (1.4.61)-गोविन्दाचार्य, पेज 935

उत्तरमाला

1- D 2- A 3- B 4- C 5- C 6- B 7- D 8- B 9- C 10- B 11- D 12- D 13- C
14- B 15- C 16- C 17- B 18- C 19- C 20- B 21- B 22- A 23- B 24- B 25- C
26- A 27- C 28- B 29- D 30- B 31- B 32- A 33- C 34- D 35- D 36- D 37- A
38- C 39- B 40- C 41- B 42- C 43- D 44- C 45- A 46- D 47- A 48- B 49- B
50- A

6	जुलाई 2016	NTA UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् II

1. वाजसनेयिमाध्यन्दिनसंहिता सम्बन्धिता अस्ति -
(A) कृष्णयजुर्वेदेन (B) शुक्लयजुर्वेदेन
(C) सामवेदेन (D) अथर्ववेदेन

व्याख्या-

वेद		संहिता
* ऋग्वेद	-	(1) शाकल संहिता
		(2) बाष्कल संहित21I
* शुक्लयजुर्वेद	-	(1) वाजसनेयिमाध्यन्दिनसंहिता
		(2) काण्वसंहिता
* कृष्णयजुर्वेद	-	(1) तैत्तिरीय संहिता
		(2) कठ संहिता
* सामवेद	-	जैमिनीय संहिता
* अथर्ववेद	-	शौनक संहिता

स्पष्टीकरण-उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि वाजसनेयिमाध्यन्दिन संहिता शुक्लयजुर्वेद से सम्बन्धित है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- वैदिकसाहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-9,10

2. वेदा अपौरुषेयाः सन्तीति मतमस्ति-
(A) महर्षिदयानन्दस्य (B) ए. वेबरस्य
(C) मैक्समूलरस्य (D) विन्टरनिट्जस्य

व्याख्या-

वेद के भाष्यकारों ने वेद को अपौरुषेय माना है । इसके लिए किसी ने मीमांसा के तर्कों को उद्धृत किया, किसी ने न्याय-वैशेषिक के, किसी ने अन्य पुराणों के साक्ष्य उद्धृत किये हैं-

* **स्वामी दयानन्द सरस्वती-** आधुनिक युग के विद्वानों में इनका नाम आता है। इन्होंने वेद की नित्यता एवं अपौरुषेयता का समर्थन किया है तथा इसके लिए शास्त्रीय तथा लौकिक युक्तियाँ दी हैं। स्वामी विद्यानन्द विदेह ने भी महर्षि दयानन्द का समर्थन किया है।

* **मैक्समूलर-** पाश्चात्य विद्वान् भारतीय परम्परागत वेद के अपौरुषेयत्व सिद्धान्त को स्वीकार नहीं करते। मैक्समूलर, रास आदि पाश्चात्य विद्वान् वेद को मनुष्यकृत मानकर ही उसके अध्ययन में प्रवृत्त हुए और उसके कालनिर्धारण की दिशा में प्रयास किये। जे म्यूर ने अपने 'ओरिजिनल संस्कृत टेक्स्ट्स' के तृतीय भाग के द्वितीय अध्याय में वैदिक संहिताओं के उन स्थलों को उद्धृत किया है जिनमें वैदिक सूक्तों की उत्पत्ति के विषय में उल्लेख है।

* **आचार्य सायण-** वेदों की व्याख्या करने वाले आचार्यों में आचार्य सायण का स्थान अग्रगण्य है। इन्होंने भी वेदों को अपौरुषेय और नित्य माना हैं।

* **आनन्द कुमार स्वामी-** इन्होंने वेदों को सिद्धों की वाणी कहा है।

⇒ **स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि महर्षि दयानन्द ने वेद को अपौरुषेय कहा है। पाश्चात्य विद्वानों ने वेदों को पौरुषेय माना है। **अतः विकल्प 'A'सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-18

3. वैतानश्रौतसूत्रं केन वेदेन सह सम्बद्धमस्ति -
(A) सामवेदेन (B) ऋग्वेदेन
(C) अथर्ववेदेन (D) कृष्णयजुर्वेदेन

व्याख्या-वेदों से सम्बन्धित श्रौतसूत्र निम्नलिखित हैं-

वेद		श्रौतसूत्र
ऋग्वेद	-	(1) आश्वलायन (2) शांखायन
शुक्लयजुर्वेद	-	(1) कात्यायन श्रौतसूत्र
कृष्णयजुर्वेद	-	(1) बौधायन (2) वाधूल (3) मानव (4) भारद्वाज (5) आपस्तम्ब (6) काठक (7) सत्याषाढ़ (8) वाराह (9) वैखानस श्रौतसूत्र
सामवेद	-	(1) जैमिनीय (2) लाट्यायन (3) द्राह्यायण (4) निदान (5) उपनिदान
अथर्ववेद	-	वैतान श्रौतसूत्र

⇒ **स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि 'वैतान-श्रौतसूत्र' अथर्ववेद से सम्बन्धित है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-225

**4. 'स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव।
सचस्वा नः स्वस्तये॥' अस्य मन्त्रस्य का देवता अस्ति?**
(A) रुद्रः (B) अग्निः
(C) सोमः (D) सविता

व्याख्या-

मन्त्र	देवता	ऋषि
* स नः पितेव सूनवे-(1.1.9)	अग्नि	मधुच्छन्दा
* अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्-(1.1.1)	अग्नि	मधुच्छन्दा
* राजन्तमध्वराणां गोपामृतस्य दीदिविम्। (1.1.8)	अग्नि	मधुच्छन्दा
* आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो-(1.35.2)	सविता	हिरण्यस्तूप
* विचक्रमाणस्त्रेधोरुगायः-(1.154.1)	विष्णु	दीर्घतमा
* मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः (1.154.2)	विष्णु	दीर्घतमा
* यस्य त्री पूर्णा मधुना-(1.154.4)	विष्णु	दीर्घतमा
* यो जात एव प्रथमो मनस्वान्-(2.12.1)	इन्द्र	गृत्समद
* यो रध्रस्य चोदिता यः-(2.12.6)	इन्द्र	गृत्समद
* यः सूर्यं य उषसं जजान (2.12.7)	इन्द्र	गृत्समद
* बोधि बृहद्वदेम विदथे सुवीराः।। (2.33.15)	रुद्र	गृत्समद
* ता आ चरन्ति समना पुरस्तात्- (4.51.8)	उषा	वामदेव
* पीतोऽमर्त्यो मर्त्याँ आविवेश (8.48.12)	सोम	कण्वपुत्र प्रगाथ
* सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः- (10.90.1)	पुरुष	नारायण
* छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद्- (10.90.9)	पुरुष	नारायण
* चन्द्रमा मनसो जातः- (10.90.13)	पुरुष	नारायण

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि 'स नः [illegible] **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- ऋक्सूक्तसंग्रह-हरिदत्त शास्त्री, कृष्णकुमार, पेज-60

5. मुण्डकोपनिषद् केन वेदेन सह सम्बद्धा अस्ति-
(A) यजुर्वेदेन (B) अथर्ववेदेन
(C) ऋग्वेदेन (D) सामवेदेन

व्याख्या-

वेदों से सम्बन्धित उपनिषद्

वेद		उपनिषद्
* ऋग्वेद	-	(1) ऐतरेय (2) कौषीतकि
* शुक्लयजुर्वेद	-	(1) ईशोपनिषद् (2) बृहदारण्यक उपनिषद्
* कृष्णयजुर्वेद	-	(1) तैत्तिरीय (2) कठ (3) श्वेताश्वतर (4) मैत्रायणी (5) महानारायण उपनिषद्
* सामवेद	-	(1) छान्दोग्य (2) केन उपनिषद्
* अथर्ववेद	-	(1) प्रश्नोपनिषद् (2) मुण्डकोपनिषद् (3) माण्डूक्योपनिषद्

⇒ **स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'मुण्डकोपनिषद्' अथर्ववेद से सम्बन्धित है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-177

6. 'षड्विंशब्राह्मणम्' इति ग्रन्थः केन वेदेन सह सम्बद्धोऽस्ति-
(A) यजुर्वेदेन (B) ऋग्वेदेन
(C) अथर्ववेदेन (D) सामवेदेन

व्याख्या-

वेद से सम्बन्धित ब्राह्मण-

वेद		ब्राह्मण
* ऋग्वेद	-	(1) ऐतरेय (2) कौषीतकि (शांखायन) ब्राह्मण
* शुक्लयजुर्वेदेन	-	शतपथ ब्राह्मण
* कृष्णयजुर्वेद	-	तैत्तिरीय ब्राह्मण
* सामवेद-		(1) ताण्ड्य महाब्राह्मण (पञ्चविंश या प्रौढ) (2) **षड्विंश ब्राह्मण** एवं अद्भुत ब्राह्मण (3) सामविधान (4) आर्षेय (5) मन्त्र (उपनिषद्) (6) देवताध्याय (7) वंश (8) संहितोपनिषद् ब्राह्मण
* अथर्ववेद		गोपथ ब्राह्मण

⇒ **स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि 'षड्विंशब्राह्मणम्' सामवेद से सम्बन्धित है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-143

7. 'तलवकार- आरण्यकम्' केन वेदेन सह सम्बद्धमस्ति?
(A) ऋग्वेदेन (B) यजुर्वेदेन
(C) अथर्ववेदेन (D) सामवेदेन

व्याख्या-

वेद और उनसे सम्बन्धित आरण्यक :-

वेद		आरण्यक
* ऋग्वेद	-	(1) ऐतरेय (2) शांखायन आरण्यक
* शुक्लयजुर्वेद	-	बृहदारण्यक
* कृष्णयजुर्वेद	-	तैत्तिरीय आरण्यक, मैत्रायणी आरण्यक
* सामवेद	-	(i) तलवकार आरण्यक (जैमिनीय आरण्यक) (ii) छान्दोग्यारण्यक (ताण्ड्यब्राह्मण)
* अथर्ववेद	-	कोई आरण्यक नहीं।

⇒ **स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि 'तलवकार आरण्यक' सामवेद से सम्बन्धित है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-166

8. 'विश्वामित्र-नदी' सूक्तस्य कः ऋषिरस्ति?
(A) वसिष्ठः (B) विश्वामित्रः
(C) मधुच्छन्दाः (D) दीर्घतमाः

व्याख्या-

	सूक्त	देवता	ऋषि	मन्त्र
*	विश्वामित्र नदी संवाद सूक्त (3.33)	- नदी	- विश्वामित्र	- 13
*	पुरुरवा-उर्वशी (10/95)	-पुरुरवा उर्वशी-	पुरुरवा ऐल उर्वशी ऋषिका	- 18
*	यम/यमी (10/10)	-यमी वैवस्वती यमो वैवस्वत	यमी वैवस्वती यमो वैवस्वत	- 14
*	सरमा/पणि (10/108)	- सरमा, एवं पणि-	पणि एवं सरमा	-11
*	पुरुषसूक्त (10/90)	- पुरुष	- नारायण	- 16
*	नासदीय सूक्त (10/129)	-परमात्मा	- परमेष्ठी प्रजापति	- 7
*	हिरण्यगर्भ सूक्त (10/121)	- क संज्ञक प्रजापति	- हिरण्यगर्भ	- 10
*	वाक्सूक्त (10/125)	- परमात्मा	- वाक्	- 8
*	अग्निसूक्त (1.1)	- अग्नि	- मधुच्छन्दा	- 9
*	विष्णुसूक्त (1.154)	- विष्णु	- दीर्घतमा	- 6

⇒ **स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि विश्वामित्र नदी संवादसूक्त के ऋषि विश्वामित्र हैं। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- ऋक्सूक्त संग्रह- हरिदत्त शास्त्री, पेज-207

9. 'पुरूरवा-उर्वशी' सूक्ते कति मन्त्राः सन्ति?

(A) 17 **(B)** 18

(C) 19 **(D)** 20

व्याख्या-

सूक्त	मन्त्र
* पुरूरवा उर्वशी संवाद सूक्त (10/95)	18
* विश्वामित्र-नदी संवाद (3.33)	13
* सरमा-पणि संवाद (10/108)	11
* यम-यमी संवाद (10/10)	14
* इन्द्र सूक्त (2/12)	15
* उषस् सूक्त (3/61)	07
* रुद्र सूक्त (2/33)	15
* पर्जन्य सूक्त (5.83)	10
* सवितृ सूक्त (1.35)	11

⇒ **स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि पुरूरवा-उर्वशी सूक्त में 18 मन्त्र हैं। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- वैदिकवाङ्मय- परीक्षादृष्टि- सर्वज्ञभूषण,पेज-10

10. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत-

(क) यम-यमी संवादसूक्तम् (i) यजुर्वेदः

(ख) कठोपनिषद् (ii) सामवेदः

(ग) लाट्यायनश्रौतसूत्रम् (iii) ऋग्वेदः

(घ) माण्डूक्योपनिषद् (iv) अथर्ववेदः

	क	ख	ग	घ
(A)	III	I	II	IV
(B)	I	III	II	IV
(C)	IV	I	III	II
(D)	III	II	IV	I

व्याख्या- ऋग्वेद के संवाद सूक्त-

ऋग्वेद (1) पुरुरवा-उर्वशी संवाद (10.95)
(2) यम-यमी संवाद (10.10)
(3) सरमा-पणि संवाद (10.108)
(4) विश्वामित्र-नदी संवाद (3.33)

कृष्णयजुर्वेद उपनिषद् (1) मैत्रायणी उपनिषद्
(2) कठोपनिषद्
(3) तैत्तिरीय उपनिषद्
(4) श्वेताश्वतर उपनिषद्
(5) महानारायण उपनिषद्

सामवेद के श्रौतसूत्र (1) जैमिनीय **(2) लाट्यायन**
(3) द्राह्यायण

अथर्ववेद के उपनिषद् (1) प्रश्नोपनिषद् **(2) माण्डूक्योपनिषद्**
(3) मुण्डकोपनिषद्

⇒ **स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि यम यमी संवाद सूक्त ऋग्वेद से, कठोपनिषद् यजुर्वेद से, लाट्यायन श्रौतसूत्र सामवेद से तथा माण्डूक्योपनिषद् अथर्ववेद से सम्बन्धित है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-57,175,219,10

11. अधस्तनेषु को ग्रन्थः कल्पवेदाङ्गान्तर्गतोऽस्ति?

(A) पारस्करगृह्यसूत्रम्

(B) काशकृत्स्नव्याकरणम्

(C) ऋग्वेदप्रातिशाख्यम्

(D) पाणिनीयशिक्षा

व्याख्या-वेदाङ्गों की संख्या छः है-

शिक्षाव्याकरणं छन्दो निरुक्तं ज्योतिषं तथा।

कल्पश्चेति षडङ्गानि वेदस्याहुर्मनीषिणः।।

(1) शिक्षा (2) व्याकरण (3) छन्द (4) निरुक्त

(5) ज्योतिष (6) कल्प ये छः वेदाङ्ग हैं।

* कल्पसूत्र के चार भेद हैं-

(1) श्रौतसूत्र (2) गृह्यसूत्र (3) धर्मसूत्र (4) शुल्बसूत्र

वेद	**गृह्यसूत्र**
ऋग्वेद	- (1) आश्वलायन (2) शांखायन (3) कौषीतकि
शुक्लयजुर्वेद	- **पारस्करगृह्यसूत्र**
कृष्णयजुर्वेद	- (1) बौधायन (2) मानव (3) भारद्वाज (4) आपस्तम्ब (5) काठक (6) आग्निवेश्य (7) हिरण्यकेशि (8) वाराह (9) वैखानस
सामवेद-	(1) गोभिल (2) कौथुम (3) खादिर (4) द्राह्यायण (5) जैमिनीय गृह्यसूत्र
अथर्ववेद-	कौशिक गृह्यसूत्र

⇒ **स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि कल्पवेदाङ्ग के अन्तर्गत 'पारस्करगृह्यसूत्र' आता है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-228

12. अधोऽङ्कितेषु वेदाङ्गमस्ति-
(A) ईशोपनिषद् (B) ऐतरेयारण्यकम्
(C) मानवशुल्बसूत्रम् (D) शतपथब्राह्मणम्

व्याख्या-वेदाङ्ग का अर्थ है- वेद के अङ्ग। वेदाङ्ग छः हैं- (1)शिक्षा(2)व्याकरण (3) छन्द (4) निरुक्त(5)ज्योतिष(6) कल्प।

कल्प के अन्तर्गत- (1) श्रौतसूत्र (2) गृह्यसूत्र (3) धर्मसूत्र (4) शुल्बसूत्र आते हैं।

वेद	**शुल्बसूत्र**
ऋग्वेद -	कोई शुल्बसूत्र प्राप्त नहीं होता
शुक्लयजुर्वेद-	कात्यायन शुल्बसूत्र
कृष्णयजुर्वेद -	(1) बौधायन (2) मानव शुल्बसूत्र (3) आपस्तम्ब (4) कात्यायन (5) मैत्रायणीय (6) वाराह शुल्बसूत्र
सामवेद-	कोई शुल्बसूत्र प्राप्त नहीं होता।
अथर्ववेद-	कोई शुल्बसूत्र प्राप्त नहीं होता।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि वेदाङ्ग के अन्तर्गत 'कल्प' और कल्प के अन्तर्गत 'शुल्बसूत्र' आता है। यजुर्वेद से सम्बन्धित मानव शुल्बसूत्र है। ईशोपनिषद् उपनिषद् ग्रन्थ है, ऐतरेयारण्यक आरण्यक ग्रन्थ है, शतपथ ब्राह्मणम् ब्राह्मणग्रन्थ है, मानवशुल्बसूत्रम् कल्पवेदाङ्ग है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-241

13. 'अधिवसति वैकुण्ठं हरिः' इत्यत्र कर्मसंज्ञाविधायकं सूत्रं किमस्ति?
(A) उपान्वध्याङ्वसः (B) अधि-शीङ्स्थासां कर्म
(C) अधिरीश्वरे (D) अधिपरी अनर्थकौ

व्याख्या-

अधिशीङ्स्थासां कर्म (1.4.46) अधि पूर्वक शीङ् धातु, अधिपूर्वक स्था धातु तथा अधिपूर्वक आस् धातु के आधार की कर्म संज्ञा होती है।

उदाहरण- हरिः वैकुण्ठम् अधिशेते। (हरि वैकुण्ठ में रहता है।) यहाँ पर हरि का आधार वैकुण्ठ है और अधि उपसर्ग पूर्वक शीङ् धातु का प्रयोग होने पर हरि के आधार वैकुण्ठ की 'अधिशीङ्स्थासां' कर्म से कर्मसंज्ञा और 'कर्मणि द्वितीया' से द्वितीया विभक्ति हुई है।

अभिनिविशश्च (1.4.47) अभि तथा नि उपसर्ग पूर्वक 'विश्' धातु के आधार की कर्मसंज्ञा होती है।

उदाहरण- सन्मार्गम् अभिनिविशते। (सन्मार्ग पर चलता है।) यहाँ 'सन्मार्ग' अभिनिविश् धातु का आधार है। 'अभिनिविशश्च' सूत्र के द्वारा सन्मार्गम् की कर्मसंज्ञा और कर्मणि द्वितीया से द्वितीया विभक्ति हुई है।

उपान्वध्याङ्वसः (1.4.48)-उप, अनु, अधि तथा आङ् पूर्वक वस् धातु के आधार की कर्मसंज्ञा होती है। उप आदि उपसर्गों में प्रत्येक के साथ 'वस्' धातु का सम्बन्ध है।

उदाहरण- अधिवसति वैकुण्ठं हरिः - (हरि वैकुण्ठ में निवास करते हैं) यहाँ पर अधि उपसर्ग से युक्त वस् धातु होने के कारण आधार 'वैकुण्ठ' की कर्मसंज्ञा हुई और 'कर्मणि द्वितीया' से द्वितीया विभक्ति हुई है।

⇒ **स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि 'अधिवसति वैकुण्ठं हरिः' इसका कर्मसंज्ञाविधायक सूत्र 'उपान्वध्याङ्वसः' है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- कारकप्रकरण- राममुनि पाण्डेय, पेज-44

14. 'इत्थम्भूतलक्षणे' इति सूत्रस्योदाहरणं किम्भवति?
(A) जटाभिस्तापसः
(B) जपमनु प्रावर्षत्
(C) मासं कल्याणी
(D) लक्षणेत्थम्भूताख्यानभागवीप्सासु प्रतिपर्यनवः

व्याख्या-

➤ **इत्थम्भूतलक्षणे (2.3.21)**

'वह इस प्रकार है'- इसप्रकार कथन में लक्षणवाची शब्द से तृतीया होती है।

* **जटाभिस्तापसः** - जटाओं से तपस्वी जान पड़ता है।
* **चन्दनेन पण्डितः** - चन्दन से पण्डित
* **पुस्तकैः छात्रः** - पुस्तकों से छात्र
* **वर्णेन गौरः** - रंग से गोरा।
* **कमण्डलुना छात्रः** - कमण्डल से छात्र
* **वेषेण यतिः** - वेश से संन्यासी

➤ **अनुर्लक्षणे (1.4.84)**

लक्षण अर्थात् हेतु के अर्थ में अनु की कर्मप्रवचनीय संज्ञा होती है।

उदा॰- **जपमनु प्रावर्षत्।**

इस वाक्य में लक्षण के अर्थ में अनु की **'अनुर्लक्षणे'** सूत्र से कर्मप्रवचनीय संज्ञा हुई और 'कर्मप्रवचनीययुक्ते द्वितीया' सूत्र से जपम् में द्वितीया विभक्ति हुई।

➤ **कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे (2.3.5)**

अनुवृत्ति- द्वितीया

अर्थ- अत्यन्त संयोग के अर्थ में अर्थात् निरन्तरता के द्योतित होने पर काल एवं मार्गवाचक शब्दों में द्वितीया विभक्ति होती है।

उदाहरण- मासं कल्याणी (मास पर्यन्त शुभ है।)
मासम् अधीते (महीने भर लगातार पढ़ता है।)
मासं गुडधानाः (महीने भर लगातार गुड़ और लावा है।)

➤ **लक्षणेत्थम्भूताख्यानभागवीप्सासु प्रतिपर्यनवः (1.4.89)**

अर्थ- इत्थम्भूताख्यान का अर्थ है- 'वह इस प्रकार का है'- ऐसा कथन। वीप्सा व्याप्ति को कहते हैं।

लक्षण, इत्थम्भूताख्यान, भाग और वीप्सा अर्थों में प्रति, परि तथा अनु की कर्मप्रवचनीय तथा निपातसंज्ञा होती है।

उदा॰- **लक्षण-** वृक्षं प्रति विद्योतते विद्युत् (वृक्ष पर बिजली चमकती है)

इत्थम्भूताख्यान- साधुर्देवो मातरं प्रति (परि, अनु)
(देव माता के प्रति अच्छा व्यवहार करता है।)

भाग का उदाहरण- लक्ष्मीः हरिं प्रति परि अनु वा
(लक्ष्मी हरि का भाग है)

वीप्सा का उदाहरण- वृक्षं वृक्षं प्रति परि अनु वा सिञ्चति (प्रत्येक वृक्ष को सींचता है।)

⟹ **स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'इत्थम्भूतलक्षणे' का उदाहरण 'जटाभिस्तापसः'है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- कारकप्रकरण- राममुनि पाण्डेय, पेज-62

15. 'अधिगोपम्' इत्यत्राव्ययीभावसमासः कस्मिन्नर्थे भवति-

(A) समीपार्थे (B) अत्ययार्थे
(C) विभक्त्यर्थे (D) साकल्यार्थे

व्याख्या-

अव्ययं विभक्ति- समीप- समृद्धि-व्यृद्ध्यर्थाभावात्ययाऽसम्प्रति-शब्दप्रादुर्भाव- पश्चाद्- यथाऽऽनुपूर्व्य-यौगपद्य- सादृश्य- सम्पत्ति-साकल्याऽन्तवचनेषु। (2.1.6)

(1) विभक्ति (2) समीप (3) समृद्धि (4) व्यृद्धि (5) अर्थाभाव (6) अत्यय (7) असम्प्रति (8) शब्दप्रादुर्भाव (9) पश्चाद् (10) यथा, (योग्यता, वीप्सा,पदार्थानतिवृत्ति और सादृश्य) (11) आनुपूर्व्य (12) यौगपद्य (13) सादृश्य (14) सम्पत्ति (15) साकल्य और (16) अन्त (समाप्ति)। इन सोलह अर्थों में से किसी भी अर्थ में वर्तमान जो अव्यय है उसका समर्थ सुबन्त के साथ नित्यसमास होता है, और वह समास अव्ययीभावसञ्ज्ञक होता है।

सामासिकपद		**अर्थ**
अधिहरि	-	विभक्ति अर्थ में
अधिगोपम्	-	विभक्ति अर्थ में
उपकृष्णम्	-	समीप अर्थ में
सुमद्रम्	-	समृद्धि अर्थ में
दुर्यवनम्	-	व्यृद्धि अर्थ में
निर्मक्षिकम्	-	अभाव अर्थ में
अतिहिमम्	-	नाश(अत्यय) अर्थ में
अतिनिद्रम्	-	असम्प्रति अर्थ में
इतिहरि	-	नाम की प्रसिद्धि अर्थ में
अनुविष्णु	-	पश्चात् अर्थ में
अनुरूपम्	-	योग्यता अर्थ में
प्रत्यर्थम्	-	(वीप्सा अर्थ में) प्रत्येक अर्थ के प्रति
यथाशक्ति	-	पदार्थानतिवृत्ति अर्थ में शक्ति के
	-	उल्लंघन के बिना
सहरि	-	(हरि के सदृश) यथा के सदृश अर्थ में
अनुज्येष्ठम्	-	(ज्येष्ठ के क्रम से) आनुपूर्व्य अर्थ में
सचक्रम्	-	यौगपद्य अर्थ में एक साथ एक ही काल में
ससखि	-	सादृश्य (अर्थात् समान अर्थ में समास)
सक्षत्रम्	-	सम्पत्ति अर्थ में

सतृणम् (अत्ति) - सम्पूर्ण अर्थ में

साग्नि (अधीते) - अन्त अर्थात् 'यहाँ तक' इस अर्थ में समास

⟹ **स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि 'अधिगोपम्' विभक्ति अर्थ में है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी- गोविन्दाचार्य, पेज- ८९६

16. व्यधिकरणबहुव्रीहिसमासे किं ज्ञापकम्?

(A) 'अनेकमन्यपदार्थे इत्यत्र 'अनेक'- ग्रहणम्

(B) 'हलदन्तात् सप्तम्याः संज्ञायाम्' इत्यत्र 'संज्ञायाम्' इत्यस्य ग्रहणम्

(C) 'सप्तमीविशेषणे बहुव्रीहौ' इत्यत्र 'सप्तमी' इत्यस्य ग्रहणम्

(D) 'शेषो बहुव्रीहिः' इत्यत्र 'शेष' ग्रहणम्

व्याख्या-

बहुव्रीहि समास में पूर्वनिपात का विशेष विधान करते हुए भट्टोजिदीक्षित सिद्धान्तकौमुदी में पाणिनीय सूत्र की वृत्ति में लिखते हैं-

सूत्र- सप्तमी विशेषणे बहुव्रीहौ (2.2.35)

वृत्ति- सप्तम्यन्तं विशेषणं च बहुव्रीहौ पूर्वं प्रयोज्यम्। कण्ठेकालः। अतएव ज्ञापकात् व्यधिकरणपक्षे बहुव्रीहिः।

सूत्रार्थ- बहुव्रीहि समास में सप्तम्यन्त शब्द तथा विशेषण शब्द का पूर्व में प्रयोग होता है।

उदाहरण- कण्ठेकालः (कण्ठ में काला या नीलवर्ण है जिसका वह नीलकण्ठ शृङ्गार)।

कण्ठे कालो यस्य- लौकिक विग्रह

कण्ठ ङि काल सु - अलौकिक विग्रह

इस भिन्न विभक्ति अर्थात् व्यधिकरण में उक्त ज्ञापक के द्वारा समास हुआ।

सप्तम्यन्त पद कण्ठ ङि का 'सप्तमीविशेषणे बहुव्रीहौ' से पूर्वप्रयोग होकर 'कण्ठेकालः' बना।

⟹ यहाँ यह शंका उपस्थित होती है कि 'कण्ठेकालः' में समानाधिकरण न होने से जब बहुव्रीहि समास की प्राप्ति ही नहीं थी तब सप्तम्यन्त पद के पूर्वनियत की सम्भावना ही कैसे हो गयी?

* 'अतएव ज्ञापकात् व्यधिकरणपक्षे बहुव्रीहिः' व्यधिकरण (भिन्न-भिन्न विभक्ति) शब्दों में सप्तम्यन्त शब्द का पूर्वप्रयोग का विधान **''सप्तमीविशेषणे बहुव्रीहौ''** इस सूत्र से किये जाने के कारण ही यह ज्ञापन मिलता है। कभी-कभी बहुव्रीहि समास में भिन्न-भिन्न विभक्ति वाले पदों का भी समास होता है। केवल समानाधिकरण अर्थात् समान विभक्ति की ही बहुव्रीहि समास में समास नहीं होता अपितु व्यधिकरण अर्थात् भिन्न-भिन्न विभक्ति वाले पदों का भी बहुव्रीहि समास होता है।

⟹ **स्पष्टीकरण- 'अतएव ज्ञापकाद् व्यधिकरण पक्षे बहुव्रीहिः'** अर्थात् जब बहुव्रीहि समास में सब पद प्रथमान्त होने से समानाधिकरण ही होते हैं, कोई पद व्यधिकरण नहीं होता तो पाणिनि का 'सप्तमीविशेषणे बहुव्रीहौ' सूत्र से सप्तम्यन्त पद का पूर्वनिपात करना यह ज्ञापित करता है कि क्वचित् व्यधिकरणपदों में भी बहुव्रीहि समास हो जाता है। यदि ऐसा न होता तो सूत्रकार पाणिनि सप्तम्यन्त पद का बहुव्रीहि में पूर्वनिपात क्यों कहते? उनका ऐसा कहना व्यधिकरणपद बहुव्रीहिसमास के होने का ज्ञापक है। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी- गोविन्दाचार्य, पेज-952

17. 'वर्णानामतिशयितः सन्निधिः' को भवति?

(A) घिसञ्ज्ञः **(B) उपधासञ्ज्ञः**

(C) निष्ठासञ्ज्ञः **(D) संहितासञ्ज्ञः**

व्याख्या- घि संज्ञा-शेषो घ्यसखि (1.4.7) असखि का अर्थ है- सखि शब्द को छोड़कर। शेष का अर्थ है- जिन शब्दों की नदी संज्ञा नहीं है।

सूत्रार्थ- जिनकी नदी संज्ञा नहीं है ऐसे ह्रस्व इकार और ह्रस्व उकार है अन्त में जिनके, उन शब्दों की घि संज्ञा होती है, सखि शब्द को छोड़कर।

उदा०- पुँल्लिङ्ग व नपुंसकलिङ्ग में ह्रस्व इकारान्त व ह्रस्व उकारान्त की घिसंज्ञा शब्द- हरिः, भानुः, वारि, मधु आदि।

घि संज्ञा- पतिः समास एव (1.4.8)

अर्थ- पति शब्द समास में ही घि संज्ञक होता है। समस्तपद में आये 'पति' शब्द की ही घि संज्ञा होती है, केवल 'पति' शब्द की नहीं।

उदाहरण- भूपतिः, प्रजापतिः रमापतिः, सीतापतिः, उमापतिः आदि

विशेष- सूत्रस्थ 'एव' शब्द अवधारणार्थक है। 'समासे एव' का अभिप्राय है कि पति शब्द की समास होने पर ही घि संज्ञा होती है।

अलोऽन्त्यात्-पूर्व उपधा (1.1.64)

सूत्रार्थ- अन्त्य अल् से पूर्व वर्ण की उपधा संज्ञा होती है।

उदा०- गम्, मुच्, भिद्, वृध्।

गम् में अन्त्य अल् मकार है इससे पूर्व अकार है जिसकी

उपधा संज्ञा हुई है। मुच् में 'उ' की, भिद् में 'इ' की, वृध् में 'ऋ' की उपधा संज्ञा।

क्तक्तवतू निष्ठा (1.1.25)

सूत्रार्थ- क्त तथा क्तवतु प्रत्यय की निष्ठा संज्ञा होती है।

उदा०- भुक्तः (क्त), भुक्तवान् (क्तवतु)

भुज् की 'भूवादयो धातवः (1.3.1)' से धातुसंज्ञा होकर धातोः,प्रत्ययः, परश्च के अधिकार में निष्ठा तथा क्तक्तवतू निष्ठा से क्त प्रत्यय होता है।

संहिता संज्ञा- परः सन्निकर्षः संहिता (1.4.108)

वृत्ति - 'वर्णानामतिशयितः सन्निधिः संहितासंज्ञः स्यात्।' वर्णों के अत्यधिक सामीप्य की 'संहितासंज्ञा' होती है।

उदाहरण- मधु अपि = मध्वपि

यहाँ उकार तथा अकार की अत्यधिक समीपता है, इनकी संहिता संज्ञा होकर संहितायाम् के अधिकार में 'इको यणचि' से यण् आदेश होता है।

* अत्यधिक समीपता का अर्थ है- दो वर्णों के मध्य आधी मात्रा या इससे भी कम काल का व्यवधान होना।

⟹ **स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'वर्णानामतिशयितः सन्निधिः' को संहितासंज्ञा कहेंगे। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी- गोविन्दाचार्य, पेज-22

18. अधोलिखितेषु कस्य सर्वनामस्थानसंज्ञा भवति?

(A) 'टा' इत्यस्य (B) 'ङे' इत्यस्य

(C) 'शि' इत्यस्य (D) 'ङि' इत्यस्य

व्याख्या-

शि सर्वनामस्थानम् (1.1.41)

अर्थ- शि पद के द्वारा 'जश्शसोः शिः' से जस् व शस् के स्थान पर होने वाले शि आदेश का ही ग्रहण होता है।

सूत्रार्थ- शि की सर्वनामस्थानसंज्ञा होती है।

उदा०- वनानि, दधीनि, मधूनि।

वन+जस्- इस दशा में शि आदेश और सर्वनामस्थान संज्ञा, अनुबन्ध लोप, ''नपुंसकस्य झलचः'' के द्वारा नुम् आगम वन शि- वन इ- वन नुम् इ- वन न् इ-

'सर्वनामस्थाने चाऽसम्बुद्धौ'- सूत्र से दीर्घ होकर वनानि बना।

सुप् प्रत्यय-	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सु	औ	जस्
द्वितीया	अम्	औट्	शस्
तृतीया	टा	भ्याम्	भिस्
चतुर्थी	ङे	भ्याम्	भ्यस्
पञ्चमी	ङसि	भ्याम्	भ्यस्
षष्ठी	ङस्	ओस्	आम्
सप्तमी	ङि	ओस्	सुप्

⟹ **स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि सर्वनामस्थान संज्ञा 'शि' है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी- गोविन्दाचार्य, पेज-240

19. निमित्तात् कर्मयोगे, इत्यत्र 'योग' शब्दस्य भट्टोजिदीक्षितमते कोऽर्थः?

(A) चित्तवृत्तिनिरोधः

(B) संयोगसम्बन्धः केवलम्

(C) संयोग-समवायसम्बन्धौ

(D) स्वरूपसम्बन्धः

व्याख्या-

* आचार्य भट्टोजिदीक्षित ने सिद्धान्तकौमुदी के कारक प्रकरण के 'सप्तम्यधिकरणे च' (2.6.36) सूत्र पर 'निमित्तात्कर्मयोगे' वार्तिक उद्धृत किया है जिसका अर्थ है- कर्मयोग में निमित्तवाची शब्द से सप्तमी विभक्ति होती है यदि वह निमित (फल) उस क्रिया के कर्म से संयुक्त हो।

* इस वार्तिक में 'निमित्त' शब्द का अर्थ है- फल। (निमित्तमिह फलम्) 'योग' का अर्थ है- संयोगसमवायात्मक अर्थात् संयोग या समवाय सम्बन्ध **(योगः संयोगसमवायात्मकः)**

उदाहरण - चर्मणि द्वीपिनं हन्ति। (चमड़े के लिए गैंड़े को मारता है) इस उदाहरण में हनन क्रिया का फल चर्म है और वह हनन क्रिया का कर्म द्वीपी से संयुक्त है। अतः 'निमित्तात् कर्मयोगे' वार्तिक से निमित्तवाचक चर्मन् में सप्तमी विभक्ति होकर 'चर्मणि' बना।

इसीप्रकार- दन्तयोः कुञ्जरं हन्ति। (दाँतों के लिए हाथी को मारता है।) केशेषु चमरीं हन्ति। (केशों के लिए चमरी को मारता है।)

➢ चित्तवृत्तिनिरोध-पतञ्जलिकृत योगसूत्र में यह योग का लक्षण दिया गया है कि चित्तवृत्ति के निरोध को योग कहते हैं। **'योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः'**

⟹ **स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि **विकल्प C सही है।**

स्रोत- सिद्धान्तकौमुदी कारक प्रकरण- राममुनि पाण्डेय, पेज-97

20. 'अधि रामे भूः' इत्यत्र 'अधि' शब्दस्य कर्मप्रवचनीय संज्ञा- विधायकं सूत्रं किमस्ति?

(A) अधिरीश्वरे (B) उपोऽधिके च

(C) अधि-परी अनर्थकौ (D) हीने

व्याख्या-

अधिरीश्वरे (1.4.97) स्व-स्वामिभाव रूप सम्बन्ध अर्थ में अधि शब्द की कर्मप्रवचनीय और निपात संज्ञा होती है।

यस्मादधिकं यस्य चेश्वरवचनं तत्र सप्तमी-(2.3.9) जिससे अधिक हो और जिसका ईश्वरत्व या स्वामित्व कहा जाय उन शब्दों में कर्मप्रवचनीय के योग में सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे- अधिरामे भूः (पृथिवी राम की स्व है।) यहाँ अधि की **'अधिरीश्वरे'** से कर्मप्रवचनीय संज्ञा हुई तथा यहाँ स्वामी वाचक राम शब्द में 'यस्मादधिकं यस्य चेश्वरवचनं तत्र सप्तमी' सूत्र से सप्तमी विभक्ति करने पर रामे बना।

अधि भुवि रामः (राम पृथ्वी के स्वामी हैं।)

उपोऽधिके च (1.4.87) अधिक और हीन अर्थ द्योतित होने पर 'उप' अव्यय की कर्मप्रवचनीय संज्ञा होती है। अधिक अर्थ द्योतित होने पर सप्तमी विभक्ति होती है और हीन अर्थ में द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे- उप हरिं सुराः (सभी देवता हरि से हीन हैं।)

अधिपरी अनर्थकौ- (1.4.92) अर्थरहित अधि एवं परि कर्मप्रवचनीय संज्ञक हैं। जैसे-कुतः अध्यागच्छति, कुतः पर्यागच्छति। (कहाँ से आता है)

हीने- (1.4.86) अनु शब्द से हीन अर्थात् न्यूनता अर्थ द्योतित होने पर अनु की कर्मप्रवचनीय संज्ञा होती है।

जैसे- अनु हरिं सुराः (देवता हरि से पीछे या न्यून हैं।) यहाँ 'हीने' सूत्र से अनु की कर्मप्रवचनीय संज्ञा हुई और 'कर्मप्रवचनीययुक्ते द्वितीया' सूत्र से द्वितीया विभक्ति होकर 'हरिम्' बना।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'अधि रामे भूः' में अधि शब्द की 'अधिरीश्वरे' सूत्र से कर्मप्रवचनीय संज्ञा हुई है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- अष्टाध्यायी- ईश्वरचन्द्र, पेज-143

21. को ध्वनिः अघोषमहाप्राणः अस्ति?

(A) घ् **(B) छ्**

(C) ज् **(D) ढ्**

व्याख्या-

भाषाविज्ञान के अनुसार अघोष वे ध्वनियाँ हैं जिनके उच्चारण में स्वरतन्त्रियाँ खुली रहती हैं और वायु बिना अवरोध के बाहर आती है। स्वरतन्त्रियों में कम्पन न होने कारण इन्हें अघोष कहते हैं। वर्गों के प्रथम और द्वितीय वर्ण-क-ख, च-छ, ट-ठ, त-थ, प-फ, अघोष व्यञ्जन हैं।

चूँकि जब वायुप्रवाह अधिक होता है तब उन वर्णों को महाप्राण कहते हैं। वर्गों के द्वितीय चतुर्थ वर्ण महाप्राण होते हैं अतः चवर्ग में छ् और झ् वर्ण महाप्राण हैं।

घोष अघोष की चर्चा व्याकरणशास्त्र में भी की गयी है जो इस प्रकार है- लघुसिद्धान्तकौमुदीकार वरदराजाचार्य ने सञ्ज्ञाप्रकरण में दो प्रकार के प्रयत्न बताए हैं- बाह्य प्रयत्न और आभ्यन्तर प्रयत्न। आभ्यन्तर प्रयत्न 5 होते हैं- स्पृष्ट, ईषत्स्पृष्ट, ईषद्विवृत, विवृत और संवृत। (यत्नो द्विधा आभ्यन्तरो बाह्यश्च। आद्यः पञ्चधा।)

बाह्यप्रयत्न 11 प्रकार का होता है- विवार, संवार, श्वास, नाद, घोष, अघोष, अल्पप्राण, महाप्राण, उदात्त, अनुदात्त, स्वरित। (बाह्यप्रयत्नस्त्वेकादशधा।)

व्यञ्जनों के बाह्यप्रयत्न का वर्गीकरण इस प्रकार किया गया है-

1. खर् वर्णों अर्थात् खफछठथचटतकपशषस का बाह्यप्रयत्न विवार, श्वास और अघोष होता है। (खरो विवाराः श्वासा अघोषाश्च।
2. हश् वर्णों अर्थात् ह य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द का बाह्य प्रयत्न संवार, नाद और घोष होता है। (हशः संवारा नादा घोषाश्च।)
3. वर्गों के प्रथम, तृतीय, पञ्चम और यण् (य् व् र् ल्) अल्पप्राण यत्न वाले होते हैं। (वर्गाणां प्रथमतृतीयपञ्चमा यणश्चाल्पप्राणाः।)
4. वर्गों के द्वितीय, चतुर्थ और (शल् श् ष् स् ह्) महाप्राण यत्न वाले होते हैं। (वर्गाणां द्वितीयचतुर्थौ शलश्च महाप्राणाः।)

* ज्- हश् वर्णों में आने से तथा चवर्ग का तृतीय वर्ण होने से संवार, नाद, घोष और अल्पप्राण यत्न वाली ध्वनि है।

* ढ्- हश् वर्णों में आने से और टवर्ग का चतुर्थ वर्ण होने से संवार नाद घोष और महाप्राण ध्वनि है।

⇒**स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि छ् वर्ण अघोष तथा महाप्राण ध्वनि है। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी, (प्रथम भाग) भैमी व्याख्या, पेज-28

22. ग्रिमनियमानुसारं संस्कृतस्य क्, त्, प् इति ध्वनयः जर्मनभाषायां केषु ध्वनिषु परिवर्तिताः?

(A) च्, छ्, ज् **(B) ख्, थ्, फ्**

(C) ग्, द्, ब् **(D) ऊष्मसु**

व्याख्या-

क, त, प

ग द ब ख (ह) थ फ

वर्ण परिवर्तन का क्रम क्, त्, प् (अघोष अल्पप्राण)

(घोष अल्पप्राण) (महाप्राण)

ग्, द्, ब् ख्,(ह्) थ्, फ्

ग्रिम नियम- यह ध्वनि नियम प्रो॰ याकोब ग्रिम (Jacob Grimm 1785-1863) के नाम से प्रसिद्ध है। इस नियम को ध्वनिपरिवर्तन (जर्मन में लाउत ध्वनि (Laut verschiebung) फेशीबुंग परिवर्तन, sound shifting नाम दिया गया। प्रो॰ मैक्समूलर ने इसे (ग्रिम नियम) Grimm's Law नाम दिया है। प्रो॰ ऑटो येस्पर्सन (Otto-Jespersen) का कथन है कि इस नियम को Rask's Law (रास्क-नियम) नाम दिया जाना चाहिये।

प्रथम वर्ण परिवर्तन- यह वर्ण परिवर्तन ईसा के जन्म से पूर्व हो चुका था, इसका प्रभाव समान रूप से गाथिक, निम्न जर्मन और अंग्रेजी, डच आदि भाषाओं पर पड़ा है। भारोपीय मूलभाषा की व्यंजन ध्वनियाँ संस्कृत, लैटिन, ग्रीक आदि में सुरक्षित हैं। अंग्रेजी का उद्भव निम्न जर्मन से है अतः इसके द्वारा संस्कृत और अंग्रेजी की तुलना से यह परिवर्तन स्पष्ट हो जाता है।

⇒**स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि क्, त्, प् ध्वनियों का, ख्, थ् फ् ध्वनियों में परिवर्तन होता है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- भाषाविज्ञान- कपिलदेव द्विवेदी, पेज 242

23. संस्कृतभाषा कीदृशी अस्ति?
(A) श्लिष्टयोगात्मिका (B) प्रश्लिष्टयोगात्मिका
(C) अयोगात्मिका (D) अश्लिष्टयोगात्मिका

व्याख्या-

विश्व की भाषाओं के वर्गीकरण के दो भेद हैं- आकृतिमूलक और पारिवारिक। आकृतिमूलक वर्गीकरण के भी दो भेद हैं- योगात्मक और अयोगात्मक।

अयोगात्मक भेद एक ही प्रकार का है। योगात्मक के तीन भेद हैं- श्लिष्ट (Inflecting), अश्लिष्ट (Agglutinating), प्रश्लिष्ट (Incorporating)। योगात्मक भाषायें प्रकृति और प्रत्यय के संयोग से बनी हुई होती हैं।

आकृतिमूलक वर्गीकरण को वंशवृक्ष के रूप में दर्शाया गया है-

भाषा

अयोगात्मक (चीनी, तिब्बती) - योगात्मक

अश्लिष्ट

पूर्वयोगात्मक (काफिर) मध्ययोगात्मक (सन्थाली) अन्तयोगात्मक (तुर्की) पूर्वान्तयोगात्मक (मफोर)

श्लिष्ट

अन्तर्मुखी - बहिर्मुखी

अन्तर्मुखी संयोगात्मक (अरबी) वियोगात्मक (हिब्रू)

बहिर्मुखी संयोगात्मक (संस्कृत) वियोगात्मक (हिन्दी)

प्रश्लिष्ट

पूर्णप्रश्लिष्ट (चेरोकी) आंशिकप्रश्लिष्ट (बास्क)

⇒**स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त विवेचन के द्वारा स्पष्ट होता है कि संस्कृत भाषा श्लिष्ट योगात्मक (बहिर्मुखी-संयोगात्मक) के अन्तर्गत आती है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र–कपिलदेव द्विवेदी, पेज- 385-386

24. ग्रीकभाषा कस्य भाषापरिवारस्य भाषा अस्ति?
(A) सेमिटिक-परिवारस्य (B) बान्टू-परिवारस्य
(C) भारोपीय-परिवारस्य (D) काकेशी-परिवारस्य

व्याख्या-

विश्व भाषाओं के पारिवारिक वर्गीकरण के अनुसार 18 भेद माने गये हैं। **भारोपीय परिवार-**

यूरेशिया भूखण्ड के अन्तर्गत भारोपीय परिवार आता है जिनकी भाषायें निम्नलिखित हैं-

भाषायें- संस्कृत, अवेस्ता, ग्रीक, लैटिन आदि भाषायें हैं।

सेमिटिक या सामी- हामी परिवार- यह भी यूरेशिया भूखण्ड के अन्तर्गत है-

प्रमुख भाषायें- सामी- अक्कदियन, कनानित, अरमाइक, अरबी, एबीसीनियन।

हामी- लीबियन, मेरोइटिक, एथियोपिक (कुशीत), मिश्री।

काकेशी परिवार-

यह यूरेशिया भूखण्ड के अन्तर्गत ही सम्मिलित है। इस परिवार की प्रमुख भाषायें हैं-

प्रमुख भाषायें- उत्तरी वर्ग- कबर्डिन, सर्कासियन, चेचेनिश, लेगियन।

दक्षिणी वर्ग- जार्जियन, मिग्रेलियन, लासिश, स्वानियन।

बान्टू परिवार- यह भाषा अफ्रीका भूखण्ड के अन्तर्गत आता है। इन क्षेत्रों में बोली जाने वाली प्रमुख भाषायें हैं-

इनमें 150 भाषायें हैं।

पूर्वी वर्ग- जुलू, काफिर, स्वाहिली

मध्य वर्ग- सेसुतो

पश्चिमी वर्ग- हेरेरो, कांगो

⇒**स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'ग्रीकभाषा' भारोपीय परिवार के अन्तर्गत आती है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र–कपिलदेव द्विवेदी, पेज- 357,385,386,397,402

25. संस्कृतस्य 'शतम्' इत्यस्य कृते 'केन्टुम्' इत्ययं शब्दः कस्यां भाषायां विद्यते?
(A) लैटिनभाषायाम् **(B) ग्रीकभाषायाम्**
(C) जर्मनभाषायाम् **(D) ईरानीभाषायाम्**

व्याख्या-
* 'सौ' के लिए मूल भारोपीय भाषा का Kmtom (क्मतोम्) माना जाता है। इसका विभिन्न भाषाओं में विकास इस प्रकार माना जाता है।

मूल भारोपीय शब्द Kmtom (क्मतोम् = शतम्)

शतम् वर्ग	केन्टुम् वर्ग
संस्कृत-शतम्	लैटिन-केन्टुम् (Centum)
अवेस्ता-सतम्	ग्रीक-हेकटोन (Hekaton)
फारसी-सद	केल्टिक-आयरिश-केत् (cet)
हिन्दी-सौ	तोखारी-कन्ध (Kandh)
रूसी-स्तो (Sto)	गाथिक-हुन्ट (Hund)
लिथुआनियन-स्जिम्तास (Szimatas)	जर्मन-हुन्डर्ट (Hundert)
	फ्रेंच-सं (सेन्ट, Cent)
	इटालियन-केन्तो

⇒**स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त विवरण से ज्ञात होता है कि संस्कृत के शतम् शब्द को लैटिन भाषा में केन्टुम् कहा जाता है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- भाषा-विज्ञान एवं भाषाशास्त्र- कपिलदेव द्विवेदी, पेज 385

26. सिन्धीभाषायाः विकासः प्राकृतभाषायाः अभवत् ?
(A) शौरसेनी-प्राकृतात् **(B) पैशाची-प्राकृतात्**
(C) मागधी-प्राकृतात् **(D)अर्धमागधी-प्राकृतात्**

व्याख्या-भारतीय आर्यभाषाएँ-

भारतीय आर्यभाषाओं को काल की दृष्टि से तीन भागों में बाँटा जाता है-

क- प्राचीन भारतीय आर्यभाषाएँ- (2500 ई0पू0 से 500 ई0पू0)

ख- मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाएँ- (500 ई0पू0 से 1000 ई0 तक)

ग- आधुनिक भारतीय आर्यभाषाएँ- (1000 ई0 से वर्तमान समय तक)

आधुनिक भारतीय आर्यभाषाएँ- आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं का विकास मध्यकालीन अपभ्रंश भाषाओं से हुआ है। प्राचीन पाँच प्राकृतों से पाँच अपभ्रंश भाषाओं का विकास हुआ है। इन पाँच अपभ्रंशों के साथ ही ब्राचड़ एवं खास दो अपभ्रंशों को और लिया जाता है। इसप्रकार अपभ्रंशों से आधुनिक भारतीय भाषाओं का विकास माना जाता है।

अपभ्रंश		विकसित आधुनिक भाषाएँ
1. शौरसेनी	-	(क) पश्चिमी हिन्दी
	-	(ख) राजस्थानी
	-	(ग) गुजराती
2. महाराष्ट्री	-	मराठी
3. मागधी	-	(क) बिहारी (ख) बंगाली
	-	(ग) उड़िया (घ) असमी
4. अर्धमागधी	-	पूर्वी हिन्दी
5. पैशाची	-	लहँदा
6. ब्राचड़	-	(क) सिन्धी (ख) पंजाबी
7. खस	-	पहाड़ी

⇒**स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि ब्राचड़ पैशाची प्राकृत के अन्तर्गत ही परिगणित है। अतः सिद्ध है कि सिन्धी भाषा का विकास पैशाची प्राकृत से हुआ है। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- भाषाविज्ञान- एवं भाषाशास्त्र- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-442

27. सत्कार्यवादस्य सिद्धिः कस्माद् हेतोः न भवति?
(A) असदकरणात्
(B) सर्वस्मात् सर्वसम्भवात्
(C) शक्तस्य शक्यकरणात्
(D) कारणभावात्

व्याख्या-

असदकरणादुपादानग्रहणात् सर्वसम्भवाभावात्।
शक्तस्य शक्यकरणात् कारणभावाच्च सत्कार्यम्।।
(सां.का.-09)

सत्कार्यवाद को सिद्ध करने के लिए पाँच हेतु बताये गये हैं- (1) असदकरणात् (2) उपादानग्रहणात् (3) सर्वसम्भव-अभावात् (4) शक्तस्य शक्यकरणात् (5) कारणभावात्।

असदकरणात्- उत्पत्ति से पहले भी कार्य-कारण में विद्यमान रहता है। यदि ऐसा नहीं होता तो कारण में असत् वस्तुरूप कार्य को भी प्रकट करने की सामर्थ्य होती, किन्तु कारण में विद्यमान कार्य की ही अभिव्यक्ति होती है। जैसे तेल निकालने के लिए तिलों

को ही व्यक्ति लेता है, चावलों को नहीं। वह जानता है कि चावलों से असत् वस्तु तेल की प्राप्ति नहीं हो सकती। अतः सत्कार्यवाद का सिद्धान्त मान्य है।

उपादान-ग्रहणात्- मिट्टी घड़े का उपादान कारण है। मिट्टी के बिना घड़ा नहीं बन सकता। वस्तु के निर्माण के लिए मूलकारण उपादान या समवायिकारण आवश्यक होता है।

सर्वसम्भवाभावात्- यदि हम सत्कार्यवाद के सिद्धान्त को मान्यता प्रदान नहीं करते हैं, तो उस स्थिति में प्रत्येक वस्तु से प्रत्येक वस्तु की उत्पत्ति माननी होगी। जैसे- तेल को रेत, चावल गेहूँ आदि सभी पदार्थों से प्राप्त होना चाहिए, किन्तु ऐसा नहीं होता। क्योंकि कारण में पहले से ही कार्य विद्यमान रहता है।

शक्तस्य शक्यकरणात्- शक्य अर्थात् कार्य विशेष को उत्पन्न करने की शक्ति रखने वाला कारण ही, शक्य (उस कार्य को) उत्पन्न करता है। इसलिए सत्कार्यवाद का सिद्धान्त मान्य है। जिस प्रकार तिलों में ही तेल को उत्पन्न करने की शक्ति है, बालू में नहीं।

कारणभावात्- कार्य-कारण से अलग न होकर कारण का एक रूप होता है। वस्तुतः कारण और कार्य परस्पर सापेक्ष हैं। क्योंकि किसी को कार्य तभी कहा जाता है जब उसका कोई कारण होता है तथा कारण की अपेक्षा से ही उसे कार्य माना जाता है।

सत्कार्यवाद

1. असत्-अकरणात् (बालू से तेल नहीं)
2. उपादानग्रहणात् (घड़े के निर्माण हेतु मिट्टी लेनी होगी)
3. सर्वसम्भव-अभावात् (सभी वस्तुओं से सभी की उत्पत्ति सम्भव नहीं, तिल से तेल प्राप्त, दूध से जल नहीं)
4. कारणभावात्- (कारण कार्य अभिन्न है) दूध का विकसित रूप ही दही है।

⇒ **स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि सत्कार्यवाद की सिद्धि में सर्वस्मात् -सर्वसम्भवात् हेतु नहीं है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- सांख्यकारिका (का.-9) राकेश शास्त्री, पेज 29

28. प्रधानपुरुषयोः को धर्मः समानः?

(A) त्रिगुणत्वम् **(B) अहेतुत्वम्**
(C) सामान्यत्वम् **(D) अचेतनत्वम्**

व्याख्या-

अव्यक्त और व्यक्त का साम्य, पुरुष का दोनों से वैषम्य

त्रिगुणमविवेकि विषयः सामान्यमचेतनं प्रसवधर्मि।
व्यक्तं तथा प्रधानं तद्विपरीतस्तथा च पुमान्।। (सां.का.-11)

पुरुष		**प्रधान अव्यक्त प्रकृति**	**व्यक्त**
			महत् आदि 23 पदार्थ
1- गुणरहितता			1- त्रिगुणम्
2- विवेकत्व			2- अविवेकि
3- अविषयत्व	वैषम्य		3- विषय
4- असामान्यत्व			4- सामान्यम्
5- चेतनत्व			5- अचेतनम्
6- अप्रसवधर्मित्व			6- प्रसवधर्मि

पुमान् - विपरीतः व्यक्तम् + अव्यक्तम्

हेतुमदनित्यमव्यापि सक्रियमनेकमाश्रितं लिङ्गम्।
सावयवं परतन्त्रं व्यक्तं विपरीतमव्यक्तम्।। (सां.का.10)

व्यक्त	**अव्यक्त (मूलप्रकृति)**	**व्यक्त**	**अव्यक्त**
हेतुमत् -	1-(कारणरहित) अहेतुमत्	आश्रित-	6-अनाश्रित
अनित्य -	2- नित्य	लिङ्गसहित-	7-लिङ्गरहित
अव्यापी -	3- व्यापक	सावयव -	8- निरवयव
सक्रिय -	4- निष्क्रिय	परतन्त्र -	9- स्वतन्त्र
अनेक -	5- एक		

⇒ **स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि प्रधान और पुरुष में 'अहेतुत्वम्' धर्म समान है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- सांख्यकारिका (का.-10-11)- राकेश शास्त्री, पेज 37-38

29. अव्यक्तं कस्माद् हेतोः कारणं भवति?

(A) नित्यत्वात् **(B) परिणामवत्त्वात्**
(C) चैतन्यात् **(D) निष्क्रियत्वात्**

व्याख्या-

हेतुमदनित्यमव्यापि सक्रियमनेकमाश्रितं लिङ्गम्।
सावयवं परतन्त्रं व्यक्तं विपरीतमव्यक्तम्।। (सां.का.-10)

सांख्य की सृष्टिप्रक्रिया में अव्यक्त प्रकृति से व्यक्त पदार्थ महत् आदि की उत्पत्ति होती है अर्थात् अव्यक्त मूलप्रकृति का प्रथम परिणाम व्यक्त पदार्थ है अतः परिणामत्त्वात् अव्यक्त (प्रकृति) सभी 23 व्यक्त पदार्थो का कारण है। सत्त्व, रजस् और तमोगुण की साम्यावस्था का नाम ही मूलप्रकृति है। कारिका के प्रथम तीन चरण में ग्रन्थकार ने व्यक्त पदार्थों के नौ गुण-हेतुमत्, अनित्य, अव्यापी, सक्रिय, अनेक, आश्रित, लिङ्ग, सावयव, और परतन्त्र का उल्लेख करके चतुर्थ चरण में मात्र इतना कहा है कि अव्यक्त इन गुणों के

विपरीत गुणों वाला होता है। अर्थात् अहेतुमत्, नित्य, व्यापी, निष्क्रिय, एक, अनाश्रित, अलिङ्गी, निरवयव और स्वतन्त्र रूप वाली प्रकृति अव्यक्त तत्त्व है। **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- सांख्यकारिका (का.15-16) राकेश शास्त्री, पेज 51-52

30. प्रकृतिपुरुषयोः सम्बन्धः कीदृशो भवति?

(A) जलाग्निवत् **(B) कार्यकारणवत्**
(C) मातृपुत्रवत् **(D) पङ्ग्वन्धवत्**

व्याख्या-

पुरुषस्य दर्शनार्थं कैवल्यार्थं तथा प्रधानस्य।
पङ्ग्वन्धवदुभयोरपि संयोगस्तत्कृतः सर्गः॥ (सां.का.21)

प्रकृति के दर्शन के लिए एवं पुरुष के कैवल्य के लिए दोनों पुरुष एवं प्रकृति का संयोग अन्धे और लँगड़े के समान (होता है) पूरी सृष्टि उस संयोग के द्वारा ही बनी हुई है।

पुरुष एवं प्रकृति के संयोग

प्रदर्शन कैवल्य
प्रकृति के लिए पुरुष के लिए

संयोग

पङ्गु - अन्धवत्
पुरुष - प्रकृति

⇒ **स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि प्रकृति और पुरुष में पङ्गु-अन्धवत् (लँगड़े-अन्धे के समान) सम्बन्ध है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- सांख्यकारिका (का.21) राकेश शास्त्री, पेज 68

31. अध्यारोपः किं भवति-

(A) मिथ्याज्ञानम् **(B) अस्पष्टं ज्ञानम्**
(C) यथार्थज्ञानम् **(D)वस्तुनि अवस्त्वारोपः**

व्याख्या-

अध्यारोप- 'असर्पभूतायां रज्जौ सर्पारोपवद्वस्तुन्य-वस्त्वारोपोऽध्यारोपः।।'

सर्प की सत्ता से रहित रस्सी में सर्प के आरोप के समान वस्तु में अवस्तु का आरोप ही अध्यारोप है।

अज्ञान- 'अज्ञानं तु सदसद्भ्यामनिर्वचनीयं त्रिगुणात्मकं ज्ञानविरोधि भावरूपं यत्किञ्चिदिति।'

अज्ञान को तो सत् और असत् दोनों से विलक्षण होने से अनिर्वचनीय, त्रिगुणात्मक, ज्ञान का विरोधी तथा भावरूप होने से यत्किञ्चित् ऐसा कहते हैं।

अज्ञान के भेद- 'अस्याज्ञानस्यावरणविक्षेपनामकमस्ति शक्तिद्वयम्'

आवरण और विक्षेप नामक अज्ञान की दो शक्तियाँ हैं।

⇒ **स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त विवेचन से ज्ञात होता है कि अध्यारोप का लक्षण 'वस्तुनि अवस्त्वारोपः' है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- वेदान्तसार- राकेश शास्त्री, पेज 149

32. आवरणम् कस्य शक्तिरस्ति-

(A) रजोगुणस्य **(B) अज्ञानस्य**
(C) जीवस्य **(D) चैतन्यस्य**

व्याख्या-सदानन्द योगीन्द्र प्रणीत वेदान्तसार में अज्ञान की दो शक्तियाँ बतायी गयी हैं- **आवरणविक्षेपशक्ति-अस्याज्ञानस्यावरणविक्षेपनामकमस्ति शक्तिद्वयम्।** इस अज्ञान की आवरण और विक्षेप नामक दो शक्तियाँ हैं।

जीवन्मुक्त का लक्षण- भिद्यते हृदयग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्वसंशयाः।
क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन्दृष्टे परावरे।।

अपने स्वरूपभूत अखण्ड ब्रह्म के ज्ञान से, ब्रह्मविषयक अज्ञान का बाध होने के द्वारा, स्वरूपभूत अखण्ड ब्रह्म का साक्षात्कार हो जाने पर, अज्ञान, उसके कार्य, सञ्चित कर्म, संशय और विपर्यय आदि का नाश हो जाने से समस्त बन्धनों से रहित हुआ ब्रह्मनिष्ठ पुरुष जीवन्मुक्त होता है।

अपवाद- अपवादो नाम रज्जुविवर्तस्य सर्पस्य रज्जुमात्रत्ववद् वस्तु विवर्तस्यावस्तुनोऽज्ञानादेः प्रपञ्चस्य वस्तुमात्रत्वम् तदुक्तम्

''सतत्त्वतोऽन्यथाप्रथा विकार इत्युदीरितः।
अतत्त्वतोऽन्यथाप्रथा विवर्त इत्युदीरितः''॥

जिस प्रकार रज्जु का विवर्त्त सर्प रज्जुमात्र ही होता है। उसी प्रकार (ब्रह्म रूप) वस्तु का विवर्त अर्थात् ब्रह्मरूप वस्तु में अज्ञान के कारण भाषित होने वाला जो अवस्तुभूत अज्ञानादि प्रपञ्च है, उसका वस्तुमात्र ही रह जाना अपवाद है।

ऐसा कहा गया है- किसी वस्तु का वस्तुतः अन्यरूप से प्रसिद्ध होना विकार कहा गया है, और मिथ्यारूप से अन्यवस्तु के रूप में भासित होना विवर्त कहा गया है।

⇒ **स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त विवरण से ज्ञात होता है कि आवरण अज्ञान की प्रथम शक्ति है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- वेदान्तसार- राकेश शास्त्री- पेज-173

33. वेदान्तसारानुसारं लिङ्गशरीरे कस्य गणना न भवति-

(A) बुद्धेः **(B) मनसः**
(C) प्राणस्य **(D) आकाशस्य**

व्याख्या-

सूक्ष्मशरीराणि सप्तदशावयवानि लिङ्गशरीराणि। अवयवास्तु ज्ञानेन्द्रियपञ्चकं बुद्धिमनसी कर्मेन्द्रियपञ्चकं वायुपञ्चकं चेति।

सत्रह अवयवों से युक्त सूक्ष्मशरीर ही लिङ्ग शरीर है। पञ्चज्ञानेन्द्रियाँ, बुद्धि एवं मन, पञ्चकर्मेन्द्रियाँ तथा पञ्चवायु ही इसके अवयव हैं। श्रोत्र, त्वक्, चक्षु, जिह्वा और घ्राण नामक पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ हैं। वाक्, पाणि, पाद, पायु, उपस्थ- पाँच कर्मेन्द्रियाँ हैं।

प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान- पाँच वायु हैं।

बुद्धिर्नाम निश्चयात्मिकान्तःकरणवृत्तिः- निश्चय करने वाली अन्तःकरण की वृत्ति ही बुद्धि है।

मनो नाम सङ्कल्पविकल्पात्मिकान्तःकरणवृत्तिः- सङ्कल्प विकल्प करने वाली अन्तःकरण की वृत्ति वस्तुतः मन है।

इन दोनों में ही चित्त और अहङ्कार दोनों का अन्तर्भाव हो जाता है।

सूक्ष्मशरीर (17 अवयव)

पञ्चज्ञानेन्द्रियाँ+बुद्धि+मन+पञ्चकर्मेन्द्रियाँ+पञ्चवायु =17

⇒**स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त वर्णन से ज्ञात होता है कि वेदान्तसार के अनुसार लिङ्गशरीर में सत्रह अवयवों की गणना होती है। और आकाश उनमें सम्मिलित नहीं है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- वेदान्तसार- राकेश शास्त्री, पेज-185

34. गौतमसूत्रोक्तषोडशपदार्थेषु कस्य पदार्थस्य निम्नाङ्कितेषु ग्रहणं नास्ति-

(A) 'संशय' पदार्थस्य **(B) 'विशेष' पदार्थस्य**

(C) 'अवयव' पदार्थस्य **(D) 'निर्णय' पदार्थस्य**

व्याख्या-

गौतम प्रणीत न्यायसूत्र में षोडश पदार्थों की चर्चा की गयी है- प्रमाण-प्रमेय-संशय-प्रयोजन-दृष्टान्त-सिद्धान्त-अवयव-तर्क-निर्णय-वाद-जल्प-वितण्डा-हेत्वाभास-च्छल-जाति-निग्रहस्थानानां तत्त्वज्ञानान्निः श्रेयसाधिगमः। (न्या.सू.-1.1.1)

इन षोडश पदार्थों के तत्त्वज्ञान से निःश्रेयस की प्राप्ति कराना प्रयोजन है।

संशय-'एकस्मिन् धर्मिणि विरुद्धनानार्थावमर्शः संशयः।' स च त्रिविधः। एक धर्मी में अनेक विरुद्ध धर्मों का ज्ञान संशय है। वह तीन प्रकार का है-

अवयव- 'अनुमानवाक्यस्यैकदेशा अवयवाः।'

अनुमान के वाक्य के अंश (एकदेश) अवयव (कहे जाते) हैं।

निर्णय- निर्णयोऽवधारणज्ञानम्। तच्च प्रमाणानां फलम्। निश्चित ज्ञान ही निर्णय है और वह प्रमाणों का फल होता है।

⇒अन्नम्भट्ट कृत तर्कसंग्रह में सप्त पदार्थों की चर्चा की गयी है- **द्रव्य-गुण-कर्म-सामान्य-विशेष-समवायाऽभावाः सप्तपदार्थाः** के अन्तर्गत पाँचवाँ पदार्थ विशेष है इसका लक्षण है- **विशेष-** नित्यद्रव्यवृत्तयो विशेषास्त्वनन्ता एव। नित्य द्रव्यवृत्ति वाले विशेष नामक पदार्थ तो अनन्त ही हैं।

⇒**स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि गौतमसूत्र के षोडश पदार्थों में विशेष नामक पदार्थ सम्मिलित नहीं है। वैशेषिक दर्शन के सात पदार्थों में 'विशेष' नामक पदार्थ परिगणित है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत-तर्कभाषा- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-8

35. मृत्पिण्डः घटस्य कीदृशं कारणमुच्यते?

(A) निमित्तकारणम्

(B) समवायिकारणम्

(C) असमवायिकारणम्

(D) समवाय्यसमवायिकारणम्

व्याख्या-

केशवमिश्र प्रणीत तर्कभाषा में तीन कारणों की चर्चा की गयी है- कारणं त्रिविधम् -समवायि-असमवायि-निमित्तभेदात्

वह कारण समवायि, असमवायि तथा निमित्तकारण के भेद से तीन प्रकार का है।

समवायिकारण- यत्समवेतं कार्यमुत्पद्यते तत्समवायिकारणम्। यथा तन्तवः पटस्य समवायिकारणम्।

उनमें से समवायिकारण वह, जिसमें कार्य समवाय सम्बन्ध से उत्पन्न होता है। जैसे तन्तु पट के समवायिकारण है। क्योंकि तन्तुओं में ही पट समवाय सम्बन्ध से उत्पन्न होता है, तुरी आदि में नहीं। **पटश्च स्वगतरूपादेः समवायिकारणम्। एवं मृत्पिण्डोऽपि घटस्य समवायिकारणं, घटश्च स्वगतरूपादेः समवायिकारणम्।** पट अपने रूप आदि का समवायिकारण होता है। इसी प्रकार मिट्टी का पिण्ड भी घट का समवायिकारण है तथा घट अपने में स्थित रूप आदि का समवायिकारण है।

असमवायिकारण- यत्समवायिकारणप्रत्यासन्नमवधृतसामर्थ्यं तदसमवायिकारणम्। यथा तन्तुसंयोगः पटस्यासमवायिकारणम्। जो समवायि कारण में प्रत्यासन्न होता है और जिसकी कार्य के प्रति सामर्थ्य निश्चित होती है वह असमवायि कारण है। जैसे- तन्तुसंयोग पट का असमवायिकारण है।

निमित्तकारण- यन्न समवायिकारणम्, नाप्यसमवायिकारणम्। अथ च कारणम्। यथा वेमादिकं पटस्य निमित्तकारणम्। जो न समवायिकारण है न ही असमवायिकारण है किन्तु कारण है वह निमित्तकारण कहलाता है।

उदाहरण- वेमा आदि पट का निमित्तकारण है।

➢ **स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि मृत्पिण्डः घटस्य समवायिकारणमुच्यते। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- तर्कभाषा- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-25, 32

36. यदा चक्षुरादिना घटगतरूपादिकं गृह्यते तदाऽनयोरिन्द्रियार्थसन्निकर्षः कः?

(A) संयोगः (B) समवायः

(C) संयुक्तसमवायः (D) समवेतसमवायः

व्याख्या- आचार्य केशवमिश्र द्वारा रचित तर्कभाषा न्यायदर्शन का प्रकरण ग्रन्थ है। इन्होंने तर्कभाषा में प्रत्यक्ष ज्ञान का कारण इन्द्रियार्थसन्निकर्ष को माना है। सन्निकर्ष सर्वप्रथम दो प्रकार का होता है वैदिक एवं लौकिक। लौकिक सन्निकर्ष छः प्रकार के होते हैं।-

सन्निकर्ष		इन्द्रिय		ज्ञान
1- संयोग	-	चक्षु	-	घट
2- संयुक्तसमवाय	-	चक्षु	-	घटरूप
3- संयुक्तसमवेतसमवाय	-	चक्षु	-	घटरूपत्व
4- समवाय	-	श्रोत्र	-	शब्द
5- समवेत समवाय	-	श्रोत्र	-	शब्दत्व
6- विशेषण विशेष्यभाव	-	चक्षु	-	भूतले घटाभाव

➢ **स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि घटगत रूपादि में 'संयुक्तसमवाय सन्निकर्ष' है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- तर्कभाषा- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-53

37. 'जीवच्छरीरं सात्मकं प्राणादिमत्त्वात्' इत्यत्र 'प्राणादिमत्त्वम्' कीदृशो हेतुः?

(A) केवलान्वयी (B) केवलव्यतिरेकी

(C) अन्वय-व्यतिरेकी (D) असद्धेतुः

व्याख्या-

तर्कभाषाकार आचार्य केशवमिश्र ने अनुमान प्रमाण के निरूपण में अनुमान के दो भेद स्वार्थानुमान और परार्थानुमान किये हैं **(तच्चानुमानं द्विविधम्, स्वार्थं परार्थं चेति।)** परार्थानुमान में पञ्चावयववाक्य का प्रयोग किया जाता है जिसमें- 1. प्रतिज्ञा 2. हेतु 3. उदाहरण 4. उपनय 5. निगमन होते हैं। इन पञ्चावयवों में हेतु तीन प्रकार के होते हैं- अन्वयव्यतिरेकी, केवलव्यतिरेकी और केवलान्वयी।

⇒**अन्वयव्यतिरेकी-** 'यत्राग्निर्नास्ति तत्र धूमोऽपि नास्ति, यथा महाह्रद' जहाँ अग्नि नहीं होती, वहाँ धूम भी नहीं होता, जैसे- महाह्रद यानी जलाशय में व्यतिरेकव्याप्ति है। क्योंकि महाह्रद में धूम और अग्नि का अभाव (व्यतिरेक) रहता है। 'महानस' के उदाहरण में अन्वयव्याप्ति बतायी गयी है और महाह्रद के उदाहरण में व्यतिरेकव्याप्ति बतायी गई है। इसीलिए 'धूमवत्त्वहेतु' को अन्वयव्यतिरेकी कहा गया है।

केवलव्यतिरेकी- केवलव्यतिरेकी हेतु वह होता है जिसके साथ केवल व्यतिरेकव्याप्ति बनती है, अन्वयव्याप्ति नहीं बन पाती, इसका उदाहरण है- ''जीवच्छरीरं सात्मकं प्राणादिमत्त्वात्''- जीवित शरीर सात्मक (आत्मायुक्त) है, प्राणादिमान् होने से।

केवलान्वयी- अन्वयव्यतिरेकी और केवलव्यतिरेकी के अतिरिक्त कोई हेतु केवलान्वयी भी होता हैः शब्दोऽभिधेयः प्रमेयत्वात्- शब्द अभिधेय है, प्रमेय होने से, यत्प्रमेयं तदभिधेयं यथा घटः- जो प्रमेय होता है वह अभिधेय होता है। जैसे- घट। केवलान्वयी का लक्षण इस प्रकार बताया गया है-

सर्वेषु केषुचिद्वापि सपक्षेषु समन्वयि।
विपक्षशून्यं पक्षस्य व्यापकं केवलान्वयि।।

उस हेतु को केवलान्वयी हेतु कहते हैं जिसमें केवल अन्वयव्याप्ति ही उपलब्ध होती है, व्यतिरेकव्याप्ति कभी भी उसमें उपलब्ध नहीं होती, क्योंकि उसके लिए दृष्टान्त ही नहीं दिखाया जा सकता।

⇒**स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'जीवच्छरीरं सात्मकं प्राणादिमत्त्वात्' में 'प्राणादिमत्त्वम्' में 'केवलव्यतिरेकी' हेतु है **अतः विकल्प B सही है।**

स्रोत- तर्कभाषा- गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज-137,139,145

38. 'साध्याभावसाधकं हेत्वन्तरं यस्य विद्यते सः'- हेत्वाभासेऽन्नम्भट्टेन केन नाम्ना प्रोक्तः?

(A) 'सत्प्रतिपक्ष' नाम्ना (B) 'असिद्ध' नाम्ना

(C) 'सव्यभिचार' नाम्ना (D) 'विरुद्ध' नाम्ना

व्याख्या-

अन्नम्भट्टानुसार प्रणीत तर्कसंग्रह में पाँच हेत्वाभासों की चर्चा की गयी है-

हेत्वाभास- सव्यभिचारविरुद्धसत्प्रतिपक्षऽसिद्धबाधिताः पञ्च हेत्वाभासाः। हेत्वाभास पाँच होते हैं- सव्यभिचार, विरुद्ध, सत्प्रतिपक्ष, असिद्ध और बाधित।

1. सव्यभिचारोऽनैकान्तिकः। स त्रिविधः साधारणासाधारणानुपसंहारिभेदात् - इनमें जो सव्यभिचारी अनैकान्तिक हेत्वाभास है वह- साधारण, असाधारण और अनुपसंहारी भेद से तीन प्रकार का होता है।

(i) साधारण अनैकान्तिक- तत्र साध्याभाववद्वृत्तिः साधारणोऽनैकान्तिकः। यथा पर्वतो वह्निमान् प्रमेयत्वादिति।

उनमें भी साध्य के अभाव में भी विद्यमान रहने वाला हेतु साधारण अनैकान्तिक हेत्वाभास है। जैसे-पर्वत अग्निवाला है, क्योंकि यह प्रमेय है।

(ii) असाधारण अनैकान्तिक- सर्वसपक्षविपक्षव्यावृत्तः पक्षमात्रवृत्तिरसाधारणः। यथा-शब्दो नित्यः शब्दत्वादिति।

सभी सपक्ष एवं विपक्ष को छोड़कर केवल पक्ष में विद्यमान रहता है। वह असाधारण अनैकान्तिक हेत्वाभास होता है। जैसे- शब्द- नित्य है, शब्दत्व के कारण।

(iii) अनुपसंहारी- अन्वयव्यतिरेकदृष्टान्तरहितोऽनुपसंहारी। यथा- सर्वमनित्यं प्रमेयत्वादिति।

अन्वय व्यतिरेक-व्याप्ति युक्त दृष्टान्त से रहित अनुपसंहारी अनैकान्तिक हेत्वाभास होता है। जैसे- सभी कुछ अनित्य है प्रमेयत्व के कारण। यहाँ सभी का पक्ष होने के कारण कोई दृष्टान्त ही नहीं है।

2. विरुद्ध हेत्वाभास- साध्याभावव्याप्तो हेतुर्विरुद्धः। यथा- शब्दो नित्यः कृतकत्वादिति। साध्य के अभाव से व्याप्त हेतु विरुद्ध हेत्वाभास है। जैसे-शब्द नित्य है, कार्य होने से। यहाँ कृतकत्व, नित्यत्व के अभावरूप अनित्यत्व से व्याप्त है।

3. सत्प्रतिपक्ष हेत्वाभास- यस्य साध्याभावसाधकं हेत्वन्तरं विद्यते स सत्प्रतिपक्षः। यथा शब्दो नित्यः श्रावणत्वाच्छब्दवत्। शब्दोऽनित्यः कार्यत्वाद् घटवदिति।

जिस हेतु के साध्य के अभाव को सिद्ध करने वाला दूसरा हेतु होता है, वह सत्प्रतिपक्ष हेत्वाभास होता है। इसी को प्रकरणसम भी कहते हैं। जैसे-शब्द नित्य है। श्रावणत्व के कारण, शब्द के समान। शब्द अनित्य है कार्य होने से, घट के समान।

4. असिद्ध हेत्वाभास- असिद्धस्त्रिविधः - आश्रयासिद्धः, स्वरूपासिद्धः व्याप्यत्वासिद्धश्चेति।

आश्रयासिद्धो यथा- गगनारविन्दं सुरभि अरविन्दत्वात् सरोजारविन्दवत्। अत्र गगनारविन्दमाश्रयः, स च नास्त्येव। असिद्ध नामक हेत्वाभास तीन प्रकार का होता है।

(i) आश्रयासिद्ध (ii) स्वरूपासिद्ध (iii) व्याप्यत्वासिद्ध

(i) आश्रय असिद्ध जैसे- आकाश कमल से सुगन्धित होता है, कमल होने के कारण, सरोवर में उत्पन्न कमल के समान। यहाँ आकाश कमल का जो आश्रय है, वह वस्तुतः होता ही नहीं है।

(ii) स्वरूपासिद्ध हेत्वाभास- स्वरूपासिद्धो यथा-शब्दो गुणश्चाक्षुषत्त्वात् रूपवत्। अत्र चाक्षुषत्वं शब्दे नास्ति शब्दस्य श्रावणत्वात्।

स्वरूप असिद्ध- यहाँ चाक्षुषत्व शब्द में नहीं है, क्योंकि शब्द का तो श्रवणेन्द्रिय द्वारा ग्रहण होता है।

(iii) व्याप्यत्वासिद्ध हेत्वाभास- सोपाधिको हेतुर्व्याप्यत्वासिद्धः। साध्यव्यापकत्वे सति साधनाव्यापकत्वमुपाधिः।

पर्वतो धूमवान् वह्निमत्त्वात् इत्यत्रार्द्रेन्धनसंयोग उपाधिः।

उपाधि से युक्त हेतु व्याप्यत्वासिद्ध नामक हेत्वाभास होता है। साध्य के व्यापक होने पर साधन का अव्यापक पदार्थ उपाधि होता है। यथा- पर्वत धूमवान् है। वह्निमत्त्वात् होने के कारण। यहाँ गीले ईंधन का संयोग उपाधि है।

5. बाधित हेत्वाभास- यस्य साध्याभावः प्रमाणान्तरेण पक्षे निश्चितः सः बाधितः। यथा वह्निरनुष्णो द्रव्यत्वादिति।

जिस हेतु के साध्य का अभाव अन्य प्रमाण द्वारा निश्चित होता है, वह बाधित हेत्वाभास है। जैसे- अग्नि शीतल होती है, द्रव्य होने के कारण।

⇒ **स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'साध्याभावसाधकं हेत्वन्तरं यस्य विद्यते सः' यह लक्षण सत्प्रतिपक्ष हेत्वाभास का है।

अतः विकल्प 'A' सही है।

स्रोत- तर्कसंग्रह- आद्याप्रसाद मिश्र, पेज-57

39. तर्कसंग्रहे तर्कलक्षणं किं युक्तम्?

(A) मिथ्याज्ञानम्

(B) व्याप्यारोपेण व्यापकारोपः

(C) सन्निकृष्टसंयोगहेतुः

(D) एकस्मिन् धर्मिणि विरुद्धनानाधर्मवैशिष्ट्यावगाहि ज्ञानम्

व्याख्या-अन्नम्भट्ट कृत तर्कसंग्रह के अन्तर्गत गुण लक्षण प्रकरण में ग्रन्थकार ने सभी प्रकार के व्यवहार के हेतु रूप गुण को बुद्धि माना था तथा उसके स्मृति और अनुभव दो भेदों का उल्लेख किया था। तत्पश्चात् अनुभव को भी यथार्थ अनुभव और अयथार्थ अनुभव रूप में दो भागों में विभाजित किया। इसी क्रम में अयथार्थ अनुभव के संशय, विपर्यय और तर्क नामक तीन भेदों को बताया गया है। अयथार्थानुभवस्त्रिविधः- संशयविपर्ययतर्कभेदात्।

संशय- एकस्मिन् धर्मिणि विरुद्धनानाधर्मवैशिष्ट्यावगाहिज्ञानं संशयः यथा- स्थाणुर्वा पुरुषो वेति।
एक धर्मी में परस्पर विरुद्ध अनेक प्रकार के धर्मों की विशिष्टता से युक्त ज्ञान 'संशय' है। जैसे- यह स्थाणु है या पुरुष।
विपर्यय- मिथ्याज्ञानं विपर्ययः। यथा शुक्ताविदं रजतमिति। मिथ्याज्ञान ही विपर्यय है। जैसे- सीपी में 'यह चाँदी है' ऐसा ज्ञान होना।
तर्क- व्याप्याऽऽरोपेण व्यापकारोपस्तर्कः। यथा-यदा वह्निर्न स्यात्तर्हि धूमोऽपि न स्यादिति।
व्याप्य के आरोप के साथ व्यापक का आरोप करना (ही) तर्क है। जैसे- जब अग्नि नहीं होती तो धूम भी नहीं होता।
संयोग- संयुक्तव्यवहारहेतुः संयोगः। सर्वद्रव्यवृत्तिः। संयुक्त व्यवहार का कारण संयोग नामक गुण है। यह भी सभी द्रव्यों में विद्यमान रहता है।
⟹ **स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त वर्णन से ज्ञात होता है कि तर्क का लक्षण 'व्याप्यारोपेण व्यापकारोपस्तर्कः' है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**
स्रोत- तर्कसंग्रह- आद्याप्रसाद मिश्र, पेज-63

40. अभावप्रत्यक्षे अन्नम्भट्टानुसारं कः सन्निकर्षोऽङ्गीकृतः?
(A) विशेषण-विशेष्यभावः (B) समवायः
(C) संयुक्तसमवेत-समवायः (D) संयोगः

व्याख्या-
प्रत्यक्षज्ञानहेतुरिन्द्रियार्थसन्निकर्षः षड्विधः-संयोगः, संयुक्तसमवायः, संयुक्तसमवेतसमवायः। समवायः, समवेतसमवायः, विशेषणविशेष्यभावश्चेति।
प्रत्यक्ष ज्ञान का हेतु इन्द्रिय और पदार्थ का सन्निकर्ष-
(1) संयोग (2) संयुक्तसमवाय (3) संयुक्त समवेत समवाय (4) समवाय (5) समवेत समवाय (6) विशेषण-विशेष्यभाव रूप से छः प्रकार का होता है।
(1) चक्षुषा घटप्रत्यक्षजनने संयोगः सन्निकर्षः।
नेत्र से घट का प्रत्यक्ष होने में 'संयोग' नामक सन्निकर्ष होता है।
(2) घटरूपप्रत्यक्षजनने संयुक्तसमवायः सन्निकर्षः, चक्षुःसंयुक्ते घटे रूपस्य समवायात्।
घट के रूप का प्रत्यक्ष करने में 'संयुक्तसमवाय' नामक सन्निकर्ष है। क्योंकि नेत्र से संयुक्त घट में रूप समवायसम्बन्ध से स्थित रहता है।
(3) रूपत्वसामान्यप्रत्यक्षे संयुक्तसमवेतसमवायः सन्निकर्षः, चक्षुःसंयुक्ते घटे रूपं समवेतं तत्र रूपत्वस्य समवायात्।
रूपत्व जाति के प्रत्यक्ष में 'संयुक्तसमवेतसमवाय' नामक सन्निकर्ष होता है, क्योंकि चक्षु से संयुक्त घटरूप समवेत है तथा उसमें रूपत्व समवाय सम्बन्ध से स्थित है।
(4) श्रोत्रेण शब्दसाक्षात्कारे समवायः सन्निकर्षः, कर्णविवर-वर्त्याकाशस्य श्रोत्रत्वाच्छब्दस्याकाशगुणत्वाद् गुणगुणिनोश्च समवायात्। कर्णविवर में स्थित आकाश ही श्रोत्र होने से तथा आकाश का गुण शब्द होने के कारण एवं गुण-गुणी का समवाय सम्बन्ध होने से श्रोत्र द्वारा शब्द का साक्षात्कार करने में समवाय सन्निकर्ष है।
(5) शब्दत्वसाक्षात्कारे समवेतसमवायः सन्निकर्षः। श्रोत्रसमवेते शब्दे शब्दत्वस्य समवायात्।
इसी प्रकार श्रोत्र में समवेत रूप से विद्यमान शब्द में शब्दत्व जाति के समवाय सम्बन्ध से स्थित रहने के कारण, शब्दत्व के साक्षात्कार में 'समवेत समवाय' नामक सन्निकर्ष होता है।
(6) अभावप्रत्यक्षे विशेषणविशेष्यभावः सन्निकर्षः। घटाभाववद्भूतलमित्यत्र चक्षुःसंयुक्ते भूतले घटाभावस्य विशेषणत्वात्।
'भूतल घट के अभाव वाला है', यहाँ नेत्र से संयुक्त भूतल में घट का अभाव विशेषण है। अतः अभाव का प्रत्यक्ष करने में विशेषण-विशेष्यभाव सन्निकर्ष होता है।
⟹ **स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त विवेचन से ज्ञात होता है कि अभाव प्रत्यक्ष में 'विशेषण-विशेष्यभाव सन्निकर्ष' है।
अतः विकल्प 'A' सही है।
स्रोत- तर्कसंग्रह- आद्याप्रसाद मिश्र, पेज-48

41. गन्धवत्त्वं कस्य लक्षणम्?
(A) अपः (B) पृथिव्याः
(C) वायोः (D) अग्नेः

व्याख्या-
अन्नम्भट्ट प्रणीत तर्कसंग्रह में सर्वप्रथम सप्त पदार्थों की चर्चा के उपरान्त नव द्रव्यों की चर्चा करते हुए उन नौ द्रव्यों में सर्वप्रथम पृथिवी का लक्षण करते हैं- **तत्र गन्धवती पृथिवी।** गन्ध से युक्त पृथिवी कहलाती है।

पृथिवी
↓ नित्य (परमाणुरूपा)
↓ अनित्य (कार्यरूपा) पुनः सा त्रिविधा
- शरीरं (अस्मदादीनाम्)
- इन्द्रिय (गन्साग्राहकं घ्राण नासाग्रवर्ती)
- विषय (मृत्पाषाणादि)

आपः- शीतस्पर्शवत्यः आपः। शीतस्पर्श वाला जल है।

अग्नि (तेजः)- उष्णस्पर्शवत्तेजः। उष्ण स्पर्श वाला तेज है।

वायुः- रूपरहितस्पर्शवान् वायुः। रूप से रहित और स्पर्श युक्त वायु है।

⇒**स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'गन्धवत्त्वं पृथिवी' का लक्षण है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- तर्कसंग्रह- आद्याप्रसाद मिश्र, पेज-23

42. कविराजराजिमुकुटालङ्कारहीरः मामल्लदेवी च कस्य पितरौ?

(A) भासस्य (B) श्रीहर्षस्य
(C) दण्डिनः (D) भारवेः

व्याख्या-

कवि	माता	पिता
* श्रीहर्ष	- मामल्लदेवी	- श्रीहीर
* अश्वघोष	- सुवर्णाक्षी	- पृथु (भास्करदत्त)
* भारवि	- सुशीला	- श्रीधर (नारायणस्वामी)
* माघ	- ब्राह्मी	- दत्तक (सर्वाश्रय)
* हर्षवर्धन	- यशोमती	- प्रभाकरवर्धन
* बाणभट्ट	- राजदेवी	- चित्रभानु
* दण्डी	- गौरी	- वीरदत्त
* भवभूति	- जतुकर्णी	- नीलकण्ठ
* बिल्हण	- नागदेवी	- ज्येष्ठकलश
* अम्बिकादत्तव्यास		- दुर्गादत्त
* पण्डिता क्षमाराव		- पं. शङ्करपाण्डुरङ्ग

⇒**स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि श्रीहीर और मामल्लदेवी श्रीहर्ष के पिता-माता हैं। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- संस्कृतसाहित्य का इतिहास- उमाशङ्कर शर्मा, पेज-284

43. अधस्तनयुग्मानां समीचीनतालिकां चिनुत-

(क) श्रीहर्षः (i) हर्षचरितम्
(ख) दण्डी (ii) मुद्राराक्षसम्
(ग) बाणभट्टः (iii) नैषधीयचरितम्
(घ) विशाखदत्तः (iv) दशकुमारचरितम्

	क	ख	ग	घ
A	(i)	(iii)	(iv)	(ii)
B	(iii)	(iv)	(i)	(ii)
C	(ii)	(iii)	(iv)	(i)
D	(iv)	(iii)	(ii)	(i)

व्याख्या-

ग्रन्थ	ग्रन्थकार	विभाजन
* हर्षचरितम्	- बाणभट्ट	- आठ उच्छ्वास
* मुद्राराक्षसम्	- विशाखदत्त	- सात अङ्क
* नैषधीयचरितम्	- श्रीहर्ष	- बाइस सर्ग
* दशकुमारचरितम्	- दण्डी	- आठ उच्छ्वास
* अभिज्ञानशाकुन्तलम्	- कालिदास	- सात अङ्क
* किरातार्जुनीयम्	- भारवि	- अठारह सर्ग
* शिशुपालवधम्	- माघ	- बीस सर्ग
* बुद्धचरितम्	- अश्वघोष	- अट्ठाइस सर्ग

⇒**स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि कौन किस ग्रन्थ के कवि हैं। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- संस्कृत सा. का इति.- उमाशङ्करशर्मा, पेज-285,381,395,501

44. दशकुमारचरितस्य नायकः कः?

(A) राजहंसः (B) उपहारवर्मा
(C) राजवाहनः (D) अपहारवर्मा

व्याख्या-

ग्रन्थकार	ग्रन्थ	नायक	नायिका
* दण्डी	- दशकुमारचरितम्	- राजवाहन	- अवन्तिसुन्दरी
* भास	- स्वप्नवासवदत्तम्	- उदयन	- वासवदत्ता/पद्मावती
* शूद्रक	- मृच्छकटिकम्	- चारुदत्त	- वसन्तसेना/धूता
* कालिदास	- अभिज्ञानशाकुन्तलम्	- दुष्यन्त	- शकुन्तला
* भारवि	- किरातार्जुनीयम्	- अर्जुन	- द्रौपदी
* श्रीहर्ष	- नैषधीयचरितम्	- नल	- दमयन्ती
* माघ	- शिशुपालवधम्	- श्रीकृष्ण	- सत्यभामा/रुक्मिणी
* कालिदास	- रघुवंशम्	- राम	- सीता
* विशाखदत्त	मुद्राराक्षस	चाणक्य/चन्द्रगुप्त	नायिका का अभाव

⇒**स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि दशकुमारचरितम् के नायक राजवाहन हैं। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- संस्कृतसाहित्य का इति.- उमाशङ्करशर्मा ऋषि, पेज-383

45. विश्वनाथमतानुसारं वीररसः कतिविधः?

(A) द्विविधः (B) त्रिविधः
(C) पञ्चविधः (D) चतुर्विधः

व्याख्या-

आचार्य विश्वनाथकृत साहित्यदर्पणानुसार वीररस का लक्षण एवं उनके भेद इसप्रकार हैं-

➢ **वीररस लक्षण-** उत्तमप्रकृतिर्वीर उत्साहस्थायिभावकः। महेन्द्रदैवतो हेमवर्णोऽयं समुदाहृतः।। (सा.द.3/232-233) उत्तम पात्र (रामादि) में आश्रित वीररस होता है। इसका स्थायीभाव उत्साह, देवता महेन्द्र, रंग सुवर्ण के सदृश होता है।
स च वीरो दानवीरो धर्मवीरो युद्धवीरो दयावीरश्चेति चतुर्विधः। वीररस चार प्रकार के हैं- (1) दानवीर (2) धर्मवीर (3) दयावीर (4) युद्धवीर।

➢ **शृङ्गार रस-** विप्रलम्भ और सम्भोग ये दो शृङ्गाररस के भेद हैं। 'विप्रलम्भोऽथ संभोग इत्येष द्विविधो मतः। (सा.द. 3/186) विप्रलम्भ के चार भेद-(1) पूर्वराग (2) मान (3) प्रवास (40) करुण

शृङ्गार रस

(1) सम्भोग (2) विप्रलम्भ

पूर्वराग - मान - प्रवास - करुण

हास रस- ज्येष्ठानां स्मितहसिते मध्यानां विहसितावहसिते च। नीचानामपहसितं तथातिहसितं तदेष षड्भेदः।। (सा.द. 3/217)
हास्य के छः भेद- उत्तम श्रेणी के लोगों में स्मित और हसित होते हैं। मध्यमश्रेणी के लोगों में 'विहसित और अवहसित' होते हैं। नीच पुरुषों में अपहसित और अतिहसित होते हैं।
हास्यरस के भेद
(1) स्मित (2) हसित (3) विहसित (4) अवहसित (5) अपहसित (6) अतिहसित

⇒ **स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि वीररस के चार भेद होते हैं। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- साहित्यदर्पण- शालिग्राम शास्त्री, पेज-118

46. बृहत्त्रय्यां न गण्यते-
(A) नैषधीयचरितम् **(B) रघुवंशम्**
(C) किरातार्जुनीयम् **(D) शिशुपालवधम्**

व्याख्या-

बृहत्त्रयी

किरातार्जुनीयम्	शिशुपालवधम्	नैषधीयचरितम्
भारवि	माघ	श्रीहर्ष
18सर्ग	20सर्ग	22सर्ग

लघुत्रयी

रघुवंशम्	कुमारसम्भवम्	मेघदूतम्
कालिदास	कालिदास	कालिदास
19सर्ग	17सर्ग	2 भाग

गद्यत्रयी

वासवदत्ता	कादम्बरी	दशकुमारचरितम्
सुबन्धु	बाणभट्ट	दण्डी

⇒ **स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि बृहत्त्रयी के अन्तर्गत रघुवंशम् नहीं आता **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- संस्कृतसाहित्य का इति.- उमाशङ्करशर्मा 'ऋषि', पेज 208

47. गद्यकाव्यं नास्ति-
(A) कादम्बरी (B) दशकुमारचरितम्
(C) बुद्धचरितम् (D) हर्षचरितम्

व्याख्या-

	ग्रन्थ		विधा
*	वासवदत्ता	-	गद्यकाव्य (कथा)
*	कादम्बरी	-	गद्यकाव्य (कथा)
*	दशकुमारचरितम्	-	आख्यायिका
*	हर्षचरितम्	-	आख्यायिका
*	बुद्धचरितम्	-	महाकाव्य
*	रघुवंशम्	-	महाकाव्य
*	किरातार्जुनीयम्	-	महाकाव्य
*	शिशुपालवधम्	-	महाकाव्य
*	नैषधीयचरितम्	-	महाकाव्य
*	कुमारसम्भवम्	-	महाकाव्य
*	अभिज्ञानशाकुन्तलम्	-	नाटक
*	स्वप्नवासवदत्तम्	-	नाटक
*	उत्तररामचरितम्	-	नाटक
*	मुद्राराक्षसम्	-	नाटक
*	वेणीसंहारम्	-	नाटक
*	मृच्छकटिकम्	-	प्रकरण
*	रत्नावली	-	नाटिका
*	नलचम्पू	-	चम्पूकाव्य

⇒ **स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि गद्यकाव्य 'बुद्धचरितम्' नहीं है। यह एक महाकाव्य है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- संस्कृतसाहित्य का इतिहास- उमाशङ्करशर्मा ऋषि, पेज-229

48. केन कविना बौद्धधर्मस्य प्रचारार्थं काव्यानि लिखितानि?
(A) कालिदासेन (B) माघेन
(C) अश्वघोषेण (D) भवभूतिना

व्याख्या-

➢ **अश्वघोष-** बौद्ध महाकवि अश्वघोष महान् धर्मप्रचारक, दार्शनिक तथा उच्चकोटि के विद्वान् थे। इनकी रचनाओं के अन्त में यह वाक्य मिलता है- आर्यसुवर्णाक्षीपुत्रस्य साकेतस्य भिक्षोराचार्यस्य भदन्ताश्वघोषस्य महाकवेर्महावादिनः कृतिरियम्। इससे यह स्पष्ट होता है कि इनकी माता का नाम सुवर्णाक्षी था। ये साकेत के निवासी थे। ये बौद्ध भिक्षु तथा आचार्य थे जिसे भदन्त, महाकवि और महावादी भी कहा जाता था। बौद्धधर्म के प्रचारार्थ इन्होंने बुद्धचरितम् आदि काव्य लिखें।

रचनायें- अश्वघोष की प्रमाणसिद्ध काव्यकृतियाँ चार हैं-
(1) बुद्धचरित (2) सौन्दरनन्द (3) शारिपुत्रप्रकरण (4) राष्ट्रपाल नाटक।

➢ **कालिदास-** कालिदास के ग्रन्थों के अनुशीलन से यह ज्ञात होता है कि कालिदास जन्म से ब्राह्मण तथा शिवभक्त थे। कुछ विद्वान् इन्हें शैव सम्प्रदाय का मानते हैं।

रचनायें- इनकी सात रचनायें हैं-
महाकाव्य- कुमारसम्भवम्, रघुवंशम्
नाटक- मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोर्वशीयम्, अभिज्ञानशाकुन्तलम्
गीतिकाव्य- ऋतुसंहारम्, मेघदूतम् (खण्डकाव्य)

➢ **माघ-** शिशुपालवध नामक महाकाव्य के रचयिता महाकवि माघ का स्थान संस्कृत महाकवियों में विशेष महत्त्व रखता है। इनके पितामह 'सुप्रभदेव' थे। पिता 'दत्तक' जो अत्यन्त उदार, क्षमाशील कोमल एवं धर्मपरायण थे। इन्हें लोग 'सर्वाश्रय' भी कहते थे क्योंकि यह सबकी सहायता के लिए तत्पर रहते थे।
'माघे सन्ति त्रयो गुणाः' माघ विषयक प्रशस्तियों में यह सर्वाधिक प्रसिद्ध है।
कालिदास, भारवि, दण्डी के साथ माघ की महत्ता का वर्णन किया गया है- **उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्।**
दण्डिनः पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयो गुणाः।
महाकवि कालिदास की विशिष्टता उपमा के कारण है, भारवि का प्रधानगुण अर्थगौरव है, दण्डी की विशिष्टता पदलालित्य के कारण है तो माघ में तीनों गुणों का समन्वय है।

➢ **भवभूति-** भवभूति ने शास्त्रीय ज्ञान व्यापक रूप से प्राप्त किया था। वेदों, दर्शनों और कर्मकाण्ड के ये प्रमुख विद्वान् थे। इनके रूपकों में मालतीमाधवम् की प्रस्तावना से ज्ञात होता है कि ये विदर्भ प्रदेश के पद्मपुर के निवासी थे। इन्होंने अपने पितामह (भट्टगोपाल), पिता-नीलकण्ठ एवं माता जतुकर्णी के नाम लिये हैं। इन्होंने तीनों रूपकों में स्वयं को 'पदवाक्यप्रमाणज्ञ' अर्थात् व्याकरण, मीमांसा, न्यायशास्त्र का विद्वान् कहा है।

रचनायें- भवभूति ने तीन रूपकों की रचना की-
(i) मालतीमाधवम्- (शृङ्गाररस का प्रकरण)
(ii) महावीरचरितम्- (वीररस का रामायणाश्रित नाटक)
(iii) उत्तररामचरितम्- (करुण रस का रामायणाश्रित नाटक)

⇒ **स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि जो कवि बौद्धधर्म का प्रचार करते हुए काव्यग्रन्थों को लिखा वह कवि 'अश्वघोष' हैं। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- संस्कृतसाहित्य का इतिहास-उमाशङ्करशर्मा ऋषि, पेज-229

49. नैषधीयचरिते कति सर्गाः सन्ति?
(A) एकोनविंशतिः (B) द्वाविंशतिः
(C) अष्टाविंशतिः (D) चतुर्विंशतिः

व्याख्या-

	ग्रन्थकार	ग्रन्थ	विभाजन
*	श्रीहर्ष	नैषधीयचरितम्	22सर्ग
*	कालिदास	रघुवंशम्	19सर्ग
*	कालिदास	कुमारसम्भवम्	17सर्ग
*	अश्वघोष	सौन्दरनन्द	18सर्ग
*	अश्वघोष	बुद्धचरितम्	28सर्ग
*	भट्टि	भट्टिकाव्य	22सर्ग
*	रत्नाकर	हरविजयम्	50सर्ग

⇒ **स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि 'नैषधीयचरितम्' में द्वाविंशतिः (22) सर्ग हैं। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- संस्कृतसाहित्य का इतिहास-उमाशङ्करशर्मा ऋषि, पेज-287

50. किरातार्जुनीयमहाकाव्यस्य कथावस्तु कुतः गृहीतम्?
(A) महाभारतस्य आदिपर्वतः
(B) महाभारतस्य भीष्मपर्वतः
(C) महाभारतस्य वनपर्वतः
(D) रामायणमहाकाव्यात्

व्याख्या-

ग्रन्थकार	ग्रन्थ	उपजीव्य ग्रन्थ
भारवि	किरातार्जुनीयम्	महाभारत का वनपर्व
माघ	शिशुपालवधम्	महाभारत का सभापर्व
श्रीहर्ष	नैषधीयचरितम्	महाभारत का वनपर्व
कालिदास	रघुवंशम्	वाल्मीकीय रामायण/पद्मपुराण
कालिदास	अभिज्ञानशाकुन्तलम्	महाभारत का आदिपर्व एवं पद्मपुराण
भट्टनारायण	वेणीसंहारम्	महाभारत का सभापर्व
शूद्रक	मृच्छकटिकम्	भासकृत चारुदत्तम् नाटक
बाणभट्ट	कादम्बरी	गुणाढ्य की बृहत्कथा सुमनस् वृत्तान्त
अश्वघोष	बुद्धचरितम्	'ललितविस्तर' बौद्धग्रन्थ
भास	स्वप्नवासवदत्तम्	इतिहासप्रसिद्ध उदयन-विषयक लोककथायें
भवभूति	उत्तररामचरितम्	उत्तरकाण्ड (42 से97 सर्ग तक)

स्पष्टीकरण-उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि किरातार्जुनीयम् की कथावस्तु महाभारत के वनपर्व से ली गयी है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्करशर्मा ऋषि, पेज-243

उत्तरमाला

1. (B)	**2.** (A)	**3.** (C)	**4.** (B)	**5.** (B)	**6.** (D)	**7.** (D)	**8.** (B)	**9.** (B)	**10.** (A)
11. (A)	**12.** (C)	**13.** (A)	**14.** (A)	**15.** (C)	**16.** (C)	**17.** (D)	**18.** (C)	**19.** (C)	**20.** (A)
21. (B)	**22.** (B)	**23.** (A)	**24.** (C)	**25.** (A)	**26.** (B)	**27.** (B)	**28.** (B)	**29.** (B)	**30.** (D)
31. (D)	**32.** (B)	**33.** (D)	**34.** (B)	**35.** (B)	**36.** (C)	**37.** (B)	**38.** (A)	**39.** (B)	**40.** (A)
41. (B)	**42.** (B)	**43.** (B)	**44.** (C)	**45.** (D)	**46.** (B)	**47.** (C)	**48.** (C)	**49.** (B)	**50.** (C)

7	जुलाई 2016	NTA UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् III

1. ऋग्वेदीय-नासदीयसूक्तस्य (10.129) ऋषिरस्ति-
(A) प्रजापतिः परमेष्ठी (B) सुकीर्तिः काक्षीवतः
(C) यज्ञः प्राजापत्यः (D) कुल्मल बर्हिषः

व्याख्या-

सूक्त	ऋषि	देवता	छन्द
1. अग्निसूक्त (1.1)	विश्वामित्र	अग्नि	गायत्री
2. वरुणसूक्त (1.25)	शुनःशेप	वरुण	गायत्री
3. सवितृसूक्त (1.35)	हिरण्यस्तूप	सविता	1 और 9 में जगती शेष में त्रिष्टुप्
4. सूर्यसूक्त (1.115)	कुत्स	सूर्य	त्रिष्टुप्
5. विष्णुसूक्त (1.154)	दीर्घतमा	विष्णु	त्रिष्टुप्
6. इन्द्रसूक्त (2.12)	गृत्समद	इन्द्र	त्रिष्टुप्
7. उषस् सूक्त (3.61)	विश्वामित्र	उषस्	त्रिष्टुप्
8. अक्ष सूक्त (10.34)	कवषऐलूष	अक्षकृषि प्रशंसा	7वें मन्त्र में जगती शेष में त्रिष्टुप्
9. पुरुष सूक्त (10.90)	नारायण	पुरुष	अन्तिम में त्रिष्टुप् शेष में अनुष्टुप्
10. हिरण्यगर्भ सूक्त (10.121)	हिरण्यगर्भ	क संज्ञक प्रजापति	त्रिष्टुप्
11. नासदीय सूक्त (10.129)	परमेष्ठी प्रजापति	परमात्मा	त्रिष्टुप्
12. वाक् सूक्त (10.125)	वाक्	परमात्मा	दूसरें मन्त्र में जगती शेष त्रिष्टुप्

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि ऋग्वेदीय नासदीय सूक्त के ऋषि परमेष्ठी प्रजापति हैं। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्त शास्त्री, पेज 430

2. अथर्ववेदस्य पृथिवीसूक्ते (12.1) कति मन्त्राः सन्ति ?
(A) 23 (B) 33
(C) 53 (D) 63

व्याख्या-

वेद	सूक्त	ऋषि	देवता	मन्त्रसंख्या
अथर्ववेद	पृथिवी सूक्त (12.1)	अथर्वा	भूमि	63
यजुर्वेद	शिवसंकल्प सूक्त	याज्ञवल्क्य	मनस्	06
यजुर्वेद	प्रजापति सूक्त	प्रजापति	परमेश्वर	05
अथर्ववेद	राष्ट्राभिवर्धन (1.29)	वशिष्ठ	ब्रह्मणस्पति/ अभीवर्तमणि	06
अथर्ववेद	कालसूक्त (10.53)	भृगु	काल	10
ऋग्वेद	अग्निसूक्त (1.1)	मधुच्छन्दा	अग्नि	09
	इन्द्रसूक्त (2.12)	गृत्समद	इन्द्र	15
	उषस् सूक्त (3.61)	विश्वामित्र	उषस्	7
	अक्षसूक्त (10.34)	कवषऐलूष	अक्ष	14

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि पृथिवीसूक्त में कुल 63 मन्त्र हैं। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- अथर्ववेद (12.1) - वेदान्ततीर्थ, पेज 101

3. सृष्ट्युत्पत्तिविषयकं सूक्तमस्ति ऋग्वेदे-
(A) पुरुषसूक्तम् (10.90) (B) अग्निसूक्तम् (1.1)
(C) इन्द्रसूक्तम् (2.12) (D) वाक्सूक्तम् (10.125)

व्याख्या-

सृष्टि उत्पत्ति विषयक दार्शनिक सूक्त-

पुरुषसूक्त (ऋ. 10.90)- यह सूक्त चारों वेदों में आया है। इसमें पुरुष (परमात्मा) के विराट् रूप का वर्णन किया गया है और उसी से समस्त विश्व की सृष्टि का वर्णन है। पुरुष को ही सृष्टि का सर्वस्व, वर्तमान, भूत और भविष्य बताया गया है।

नासदीयसूक्त (ऋ. 10.129)- यह सूक्त वैदिक ऋषियों की प्रतिभा, ज्ञान और अलौकिक दार्शनिक चिन्तन का परिचायक है। इस सूक्त में सृष्टि की उत्पत्ति से पूर्व की स्थिति का वर्णन करते हुए कहा गया है कि उस समय न असत् था और न सत्, न रात्रि थी और न दिन। सृष्टि का सूचक कोई चिह्न नहीं था।

इस सूक्त में प्रतिभा की शक्ति से अद्वैत तत्त्व की शाश्वत स्थिति की अनुभूति की गई है।

हिरण्यगर्भसूक्त (ऋ. 10.121)- इस सूक्त में उदात्त दार्शनिक भावों की अभिव्यक्ति करते हुए क अर्थात् प्रजापति का महत्त्व वर्णित है। 9 मन्त्रों में 'कस्मै देवाय हविषा विधेम' अर्थात् ऐसे प्रजापति देव को हम अपनी स्तुति अर्पित करते हैं, यह कहा गया है। वह प्रजापति सृष्टि के प्रारम्भ में हिरण्यगर्भ के रूप में प्रकट हुआ। वही सृष्टि का नियामक है।

अन्य सूक्त -

अस्यवामीय सूक्त (ऋ. 1.164)- यह ऋग्वेद के प्रथम मण्डल का दीर्घतमा ऋषि द्वारा दृष्ट अतिमहत्त्वपूर्ण सूक्त है इसमें 52 मन्त्रों में दर्शन, अध्यात्म, मनोविज्ञान, भाषाविज्ञान ज्योतिष और भौतिक विज्ञान से सम्बद्ध अनेक तथ्यों का वर्णन है। इस सूक्त में ही एकेश्वरवाद का प्रतिपादक मन्त्र 'एकं सद् विप्रा॰' आया है।

श्रद्धासूक्त (ऋ. 10.151)- इस सूक्त में पाँच ही मन्त्र हैं। यह श्रद्धा ही जीवन को पवित्र बनाती है और महान् लक्ष्यों को प्राप्त कराती है। श्रद्धा से ही ब्रह्मप्राप्ति सम्भव है।

वाक्सूक्त (ऋ. 10.125)- ऋग्वेद के अतिमहत्त्वपूर्ण सूक्तों में वाक्सूक्त है। इस सूक्त के आठ मन्त्रों में वाक्तत्त्व, शब्दब्रह्म या वाग्देवी का ब्रह्म के रूप में वर्णन किया गया है।

संज्ञानसूक्त (ऋ. 10.191)- इस सूक्त के चार मन्त्रों में सामाजिक, सौहार्द, सामञ्जस्य, सह-अस्तित्व, ऐकमत्य और संगठन का उपदेश दिया गया है।

दानस्तुतिसूक्त (ऋ. 10.107 व 117)- ऋग्वेद के इन सूक्तों में दान की महिमा का गुणगान है। वैदिक संस्कृति में त्याग और दान इन दो गुणों को सर्वोच्च स्थान दिया गया है। वह मित्र नहीं जो मित्र को धन-दान न दे। ''केवलाघो भवति केवलादी'' अकेला खाने वाला अकेला ही पापी होता है।

अक्षसूक्त (ऋ. 10.34)- इस सूक्त के चौदह मन्त्रों में अक्ष (द्यूत,जुआ) की कड़े शब्दों में निन्दा की गई है। यह सामाजिक कुरीति है। शिक्षा दी गयी है कि जुआ न खेलो, कृषि करो, कृषि की आय से ही सन्तुष्ट रहो।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि सृष्टि उत्पत्ति सम्बन्धित सूक्त पुरुषसूक्त है। **अत: विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्त शास्त्री, पेज 392-404

4. 'शुन:शेपम्' इत्याख्यानं कस्मिन् ग्रन्थे प्राप्यते ?

(A) कौषीतकिब्राह्मणग्रन्थे (B) ऐतरेयब्राह्मणग्रन्थे

(C) सामविधानब्राह्मणग्रन्थे (D) ऐतरेयारण्यकग्रन्थे

व्याख्या- वेदों के अनुसार ब्राह्मणग्रन्थों के नाम-

ऋग्वेदीय ब्राह्मण – 1. ऐतरेय ब्राह्मण 2. शांखायन ब्राह्मण (कौषीतकि ब्राह्मण)

ऐतरेय ब्राह्मण- ऐतरेय ब्राह्मण का आख्यान शुनःशेप आख्यान है जिसे 'हरिश्चन्द्र-उपाख्यान' भी कहते हैं। इसका चरैवेति गान विश्व-विश्रुत है। शुनःशेप ऋषि ऋग्वेद प्रथम मण्डल के सात सूक्तों के द्रष्टा हैं।

कौषीतकि ब्राह्मण- यह ऋग्वेद का द्वितीय ब्राह्मण है। इसके रचयिता शांखायन ऋषि माने जाते हैं। शांखायन आरण्यक में इनकी वंशपरम्परा का उल्लेख मिलता है। तदनुसार उद्दालक आरुणि से कहोल कौषीतकि को उनसे गुण शांखायन को और उनसे शांखायन आरण्यक के लेखक को यह विद्या परम्परा से प्राप्त हुई शांखायन ने अपने गुरु के नाम को भी अमर करने हेतु इसका नाम 'कौषीतकि ब्राह्मण' रखा।

शतपथ ब्राह्मण- यह शुक्लयजुर्वेदीय ब्राह्मण है। इसके रचयिता वाजसनि के पुत्र याज्ञवल्क्य माने जाते हैं। वाजसनि के पुत्र होने से इन्हें 'वाजसनेय' कहा जाता है। सूर्य की कृपा से प्राप्त शुक्लयजुर्वेद की व्याख्या वाजसनेय याज्ञवल्क्य ने की। माध्यन्दिन (शुक्लयजुर्वेदीय) शतपथ ब्राह्मण में 14 काण्ड, 100 अध्याय, 438 ब्राह्मण और 7624 कण्डिकाएँ हैं। सम्पूर्ण ग्रन्थ 14 भागों में विभक्त है।

सामविधान ब्राह्मण- यह सामवेदीय ब्राह्मण है। इसमें जादू-टोने से सम्बद्ध सामग्री बहुत है। सामविधान ब्राह्मण में तीन प्रपाठक और पच्चीस अनुवाक हैं।

गोपथ ब्राह्मण- यह अथर्ववेदीय एकमात्र ब्राह्मण है। पहले इसे शौनकीय शाखा से समझा जाता था, क्योंकि इसमें उस शाखा के कुछ मन्त्रों के प्रतीक हैं। पैप्पलाद शाखा के अथर्ववेद का प्रथम मन्त्र 'शं नो देवीरभिष्टय' है। इसके रचयिता गोपथ ऋषि हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'शुनःशेप' आख्यान ऐतरेय ब्राह्मण में प्राप्त है। **अत: विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 120-121

5. महर्षिणा दयानन्देन कस्य वेदस्य भाष्यं कृतमस्ति ?

(A) पैप्पलादसंहितायाः (B) शौनकसंहितायाः

(C) काण्वसंहितायाः (D) वाजसनेयिमाध्यन्दिनसंहितायाः

व्याख्या-

स्वामी दयानन्द सरस्वती- आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती आधुनिक युग में वेदों के पुनरुद्धारक माने जाते हैं। उन्होंने शुक्लयजुर्वेद सम्पूर्ण की संस्कृत, हिन्दी में व्याख्या की है।

श्री सातवलेकर- वेदमूर्ति पं. श्रीपाद दामोदर सातवलेकर आधुनिक युग के सायण हैं। उन्होंने चारों वेदों, तैत्तिरीय, मैत्रायणी, काठक, दैवत आदि के विशुद्ध संस्करण निकाले हैं। चारों वेदों का हिन्दी में 'सुबोध-भाष्य' प्रकाशित किया है। ये स्वामी दयानन्द के समर्थक हैं।

ऋग्वेदीय भाष्यकार-

स्कन्दस्वामी- ऋग्वेद का सबसे प्राचीन भाष्य स्कन्दस्वामी का उपलब्ध है। ऋग्वेद के भाष्य में वेंकटमाधव ने लिखा है कि स्कन्दस्वामी, नारायण, उद्गीथ आचार्यों ने मिलकर ऋग्वेद का भाष्य किया था।

यजुर्वेदीय भाष्यकार-

उव्वट या उवट- यजुर्वेद भाष्य के अन्त में इन्होंने अपना परिचय दिया है। ये आनन्दपुर निवासी वज्रट के पुत्र थे। राजा भोज के समय में इन्होंने वेदभाष्य किया। अतः इनका समय 11वीं शती ई. है। यजुर्वेदभाष्य के अतिरिक्त ये ग्रन्थ लिखे हैं-

1. ऋक्प्रातिशाख्य की टीका
2. यजुःप्रातिशाख्य की टीका
3. ऋक्सर्वानुक्रमणी पर भाष्य
4. ईशोपनिषद् पर भाष्य

हलायुध- सायण से पूर्ववर्ती हलायुध ने काण्वसंहिता पर अपना भाष्य लिखा है। इस भाष्य का नाम 'ब्राह्मणसर्वस्व' है। उन्होंने कुछ अन्य ग्रन्थ भी लिखे हैं- मीमांसासर्वस्व, वैष्णवसर्वस्व, शैवसर्वस्व, पण्डितसर्वस्व आदि।

सायण- सायण ने माध्यन्दिन संहिता पर भाष्य न लिखकर काण्व संहिता पर अपना भाष्य लिखा है।

सामवेदीय भाष्यकार-

माधव- (600 ई. के लगभग) ये सामवेद के प्रथम भाष्यकार हैं। इन्होंने सम्पूर्ण सामवेद का भाष्य लिखा है। जिसका नाम 'विवरण' है।

गुणविष्णु- सामवेद की कौथुम शाखा पर छान्दोग्य मन्त्र भाष्य लिखा है।

अथर्ववेदीय भाष्यकार-

सायण- अथर्ववेद पर केवल सायण का ही भाष्य प्राप्त होता है। सायण ने पूरे अथर्ववेद पर भाष्य लिखा था, परन्तु प्रकाशित ग्रन्थों में केवल 12 काण्डों (1 से 4, 6 से 8, 11, 17 से 20 काण्ड) का ही भाष्य मिलता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि महर्षि दयानन्द ने वाजसनेयि माध्यन्दिनसंहिता पर भाष्य किया था। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 18

6. 'शतायुषः पुत्रपौत्रान् वृणीष्व बहून् पशून् हस्ति-हिरण्यमश्वान्' इति कथनमस्ति-

(A) वाजश्रवसः (B) नचिकेतसः
(C) यमराजस्य (D) याज्ञवल्क्यस्य

व्याख्या- कठोपनिषद् उपनिषदों में बहुत प्रसिद्ध है। यह कृष्णयुजर्वेद की कठशाखा के अन्तर्गत है। इसमें नचिकेता और यम के संवाद रूप में परमात्मा के रहस्यमय तत्त्व का बड़ा ही उपयोगी और विशद वर्णन है। इसमें दो अध्याय हैं और प्रत्येक अध्याय में तीन-तीन वल्लियाँ हैं।

शतायुषः पुत्रपौत्रान् वृणीष्व
बहून् पशून् हस्तिहिरण्यमश्वान्।
भूमेर्महदायतनं वृणीष्व
स्वयं च जीव शरदो यावदिच्छसि॥ (1. 1.23)

यम नचिकेता से कहते हैं- नचिकेता! तुम बड़े भोले हो, क्या करोगे इस वर को लेकर? तुम ग्रहण करो इन सुख की विशाल सामग्रियों को। सौ-सौ वर्ष जीने वाले पुत्र पौत्रादि बड़े परिवार को माँग लो। गौ आदि बहुत से उपयोगी पशु, हाथी, सुवर्ण, घोड़े और विशाल भूमण्डल के महान् साम्राज्य को माँग लो और इन सबको भोगने के लिये जितने वर्षों तक जीने की इच्छा हो, उतने ही वर्षों तक जीते रहो।

नचिकेता का कथन- तीसरा वर इस मन्त्र में माँगते हैं-

येयं प्रेते विचिकित्सा मनुष्येऽस्तीत्येके नायमस्तीति चैके।
एतद्विद्यामनुशिष्टस्त्वयाहं वराणामेष वरस्तृतीयः। (1. 1.20)

मृत मनुष्य के विषय में जो यह सन्देह है, कुछ लोग कहते हैं कि मृत्यु के बाद भी आत्मा का अस्तित्व रहता है। अन्य लोग कहते हैं कि 'नहीं रहता' (तो) आप से शिक्षित हुआ मैं इसको जानूँ, वरों में यह तीसरा वर है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'शतायुषः पुत्रपौत्रान् .....' इस पंक्ति को यम ने कहा है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- ईशादि नौ उपनिषद् (कठोप. 1.1.23) शाङ्करभाष्य-गीताप्रेस, पेज 220

7. अधोऽङ्कितेषु एकमसत्यमस्ति-

(A) विद्यां च अविद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह इति ईशोपनिषदि वर्तते
(B) ईशोपनिषद् तैत्तिरीयशाखायां वर्तते
(C) याज्ञवल्क्यमैत्रेयी-संवादो बृहदारण्यकोपनिषदि वर्तते
(D) नचिकेतसः वर्णनं कठोपनिषदि वर्तते

व्याख्या-ईशावास्योपनिषद्- यह शुक्लयजुर्वेदीय

काण्वशाखीय संहिता का चालीसवाँ अध्याय है। मन्त्र-भाग का अंश होने से इसका विशेष महत्त्व है। इसी को सबसे पहला उपनिषद् माना जाता है। शुक्लयजुर्वेद के प्रथम उन्तालीस अध्यायों में कर्मकाण्ड का निरूपण हुआ है। यह उस काण्ड का अन्तिम अध्याय है और इसमें भगवत्तत्त्वरूप ज्ञानकाण्ड का निरूपण किया गया है। इसके पहले मन्त्र में 'ईशावास्यम्' वाक्य आने से इसका नाम 'ईशावास्य' माना गया है।

प्रमुख मन्त्र-

तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम्। (ईशा. मन्त्र-01)

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः। (ईशा. मन्त्र-02)

विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह ।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नुते॥ (ईशा. मन्त्र-11)

योऽसावसौ पुरुषः सोऽहमस्मि। (ईशा. मन्त्र-16)

बृहदारण्यकोपनिषद्- शुक्लयजुर्वेद से सम्बद्ध शतपथ ब्राह्मण के अन्तिम छः अध्यायों को बृहदारण्यक कहते हैं। इसमें आरण्यक और उपनिषद् दोनों ही मिश्रित हैं। इसलिए इसका नाम 'बृहदारण्यकोपनिषद्' पड़ा। यह विशालकाय एवं प्राचीनतम उपनिषद् है। इस उपनिषद् में तीन भाग हैं और प्रत्येक भाग में दो-दो अध्याय हैं। इस प्रकार कुल छः अध्याय हैं। इनमें प्रथम भाग को मधुकाण्ड, द्वितीय भाग को याज्ञवल्क्यकाण्ड और तृतीय भाग को खिलकाण्ड कहते हैं।

* इसमें याज्ञवल्क्य और मैत्रेयी संवाद का प्रमुख वर्णन है।

कठोपनिषद्-

कृष्णयजुर्वेद की कठ शाखा के अन्तर्गत आता है। कठोपनिषद् उपनिषदों में बहुत प्रसिद्ध है। इसमें नचिकेता और यम के संवाद रूप परमात्मा के रहस्यमय तत्त्व का बड़ा ही उपयोगी और विशद वर्णन है। इसमें दो अध्याय हैं और प्रत्येक अध्याय में तीन-तीन वल्लियाँ हैं।

प्रमुख मन्त्र-

* अनन्दा नाम ते लोकास्तान् स गच्छति ता ददत्। (कठ. 1.1.3)
* सस्यमिव मर्त्यः पच्यते सस्यमिवाजायते पुनः।। (कठ. 1.1.6)
* नमस्तेऽस्तु ब्रह्मन् स्वस्ति मेऽस्तु। (कठ 1.1.9)
* शान्तसंकल्पः सुमना यथा स्याद्वीतमन्युर्गौतमो माभि मृत्यो (कठ 1.1.10)
* स्वर्गे लोके न भयं किंचनास्ति (कठ 1.1.12)
* येयं प्रेते विचिकित्सा मनुष्येऽस्तीत्येके नायमस्तीति चैके। (कठ. 1.1.20)
* शतायुषः पुत्रपौत्रान् वृणीष्व बहून् पशून् हस्तिहिरण्यमश्वान्। (1.1.23)
* न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यः। (कठ. 1.1.27)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'ईशावास्योपनिषद्' तैत्तिरीय शाखा का नहीं है अपितु शुक्लयजुर्वेद की काण्वशाखा से सम्बन्धित है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- (A) ईशादि नौ उपनिषद् (ईशोपनिषद्-11)
(C) वैदिक साहित्य का इति.-पारसनाथ द्विवेदी, पेज 154,156

8. अनयोः कथनयोर्विषये उचितं युग्मं चिनुत।
क. 'शीक्षावल्ली' कठोपनिषदि वर्तते
ख. शीक्षावल्याम् गुरु सम्बन्धितो व्यवहारो निरूपितः
(A) (क) असत्यम् (ख) सत्यम्
(B) (क) सत्यम् (ख) असत्यम्
(C) उभे सत्ये स्तः
(D) उभे असत्ये स्तः

व्याख्या- तैत्तिरीयोपनिषद्- यह उपनिषद् कृष्णयजुर्वेदीय तैत्तिरीय शाखा के अन्तर्गत तैत्तिरीय आरण्यक का अङ्ग है। तैत्तिरीय आरण्यक में दस अध्याय हैं। उनमें से सातवें, आठवें और नवें अध्यायों को ही तैत्तिरीय उपनिषद् कहा जाता है।
यह शीक्षावल्ली, ब्रह्मानन्दवल्ली, भृगुवल्ली में विभाजित है। शीक्षावल्ली के अनुवाक 11 में गुरु शिष्य को उपदेश देते हुए कहते हैं कि- **स्वाध्यायान्मा प्रमदः।**
गृहस्थ को अपना जीवन कैसा बनाना चाहिये, यह बात समझाने के लिए इस अनुवाक का आरम्भ किया गया है। आचार्य शिष्य को भलीभाँति अध्ययन कराकर समावर्तन संस्कार के समय गृहस्थाश्रम में प्रवेश हेतु उपदेश देते हैं। पुत्र! तुम सदा सत्य भाषण करना, आपत्ति पड़ने पर भी झूठ का कदापि आश्रय न लेना।

कठोपनिषद्- कठोपनिषद् कृष्णयजुर्वेद की कठ शाखा से सम्बद्ध है। इसमें दो अध्याय हैं और दोनों अध्याय तीन-तीन वल्लियों में विभाजित है। इसमें यम और नचिकेता का संवाद है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि शिक्षावल्ली तैत्तिरीयोपनिषद् से सम्बन्धित है न कि कठोपनिषद् से। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज 15

9. 'उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत' इत्युद्धरणं कुत्र वर्तते ?
(A) केनोपनिषदि (B) कठोपनिषदि
(C) तैत्तिरीयोपनिषदि (D) बृहदारण्यकोपनिषदि

व्याख्या- कठोपनिषद्- * यह कृष्णयजुर्वेदीय कठ शाखा के अन्तर्गत है।
* यह मन्त्र कठोपनिषद् के प्रथम अध्याय की तृतीय वल्ली में

परमात्मा के स्वरूप का वर्णन करके तथा उसकी प्राप्ति का महत्त्व और साधन बतलाकर मनुष्यों को सावधान करता हुआ कहता है-

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत ।
क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया दुर्गं पथस्तत्कवयो वदन्ति॥ (कठ. 1.3.14)

हे मनुष्यों ! तुम जन्म जन्मान्तर से अज्ञाननिद्रा में सो रहे हो अब तुम्हें परमात्मा की दया से यह दुर्लभ मनुष्य शरीर मिला है। इसे पाकर अब एक क्षण भी प्रमाद में मत खोओ। शीघ्र सावधान हो जाओ। श्रेष्ठ महापुरुषों के पास जाकर उनके उपदेश द्वारा अपने कल्याण का मार्ग और परमात्मा का रहस्य समझ लो।

अन्य प्रमुख मन्त्र-

* **ये ये कामा दुर्लभा मर्त्यलोके**
सर्वान् कामांश्छन्दतः प्रार्थयस्व। (कठ 1.1.25)

यम नचिकेता से कहते हैं- जो जो भोग मृत्युलोक में दुर्लभ हैं, उन सबको तुम अपने इच्छानुसार माँग लो।

* **श्रेयश्च प्रेयश्च मनुष्यमेतस्तौ सम्परीत्य विविनक्ति धीरः। श्रेयो हि धीरोऽभि प्रेयसो वृणीते प्रेयो मन्दो योगक्षेमाद् वृणीते॥** (कठ 1.2.2)

यम का नचिकेता से कथन- अधिकांश मनुष्य तो पुनर्जन्म में विश्वास न होने के कारण इस विषय में विचार ही नहीं करते, वे भोगों में आसक्त होकर अपने देवदुर्लभ मनुष्य जीवन को पशुवत् भोगों के भोगने में ही समाप्त कर देते हैं। किन्तु जिनका पुनर्जन्म में और परलोक में विश्वास है, उन विचारशील मनुष्यों के सामने जब ये श्रेय और प्रेय दोनों आते हैं, तब वे इन दोनों के गुण-दोषों पर विचार कर दोनों को पृथक्-पृथक् समझते हैं।

केनोपनिषद्-

* यह उपनिषद् सामवेद के 'तलवकार ब्राह्मण' के अन्तर्गत आता है।
* तलवकार को 'जैमिनीय-उपनिषद्' भी कहते हैं।
* केनोपनिषद् को तलवकार 'उपनिषद्' और ब्राह्मणोपनिषद् भी कहते हैं।

प्रमुख मन्त्र-

* **तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि नेदं यदिदमुपासते।** (केनो. 1.1.4)

उसको ही तू ब्रह्म जान, वाणी के द्वारा बताने में आने वाले जिस तत्त्व की लोग उपासना करते हैं, यह ब्रह्म नहीं है।

* **आत्मना विन्दते वीर्यं विद्यया विन्दतेऽमृतम्।**
(केनो. 2.2.4)

मन्त्रविद्या से अमृतरूप परब्रह्म की प्राप्ति होती है, यह इसीलिये कहा गया है कि जिससे मनुष्य में परब्रह्म पुरुषोत्तम के यथार्थ स्वरूप को जानने के लिये रुचि और उत्साह की वृद्धि हो।

* **भूतेषु भूतेषु विचिन्त्य धीराः प्रेत्यास्माल्लोकादमृता भवन्ति।** (2.2.5)

बुद्धिमान् पुरुष प्राणी-प्राणी में परब्रह्म परमेश्वर को समझकर इस लोक से प्रयाण करके अमर हो जाते हैं।

तैत्तिरीयोपनिषद्-

यह उपनिषद् कृष्णयजुर्वेदीय तैत्तिरीय शाखा के अन्तर्गत तैत्तिरीय-आरण्यक का अङ्ग है।

प्रमुख मन्त्र-

* **स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम् ।** (तैत्तिरीयोपनिषद् 11 अनुवाक)

वेदों को पढ़ने और पढ़ाने में कभी प्रमाद नहीं करना चाहिये।

* **मातृदेवो भव। पितृदेवो भव। आचार्यदेवो भव। अतिथि देवो भव।**

तुम माता में देवबुद्धि करने वाले बनो, पिता को देवरूप समझने वाले होओ, आचार्य को देवरूप समझने वाले बनो। अतिथि को देवतुल्य समझने वाले होओ।

* **सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म।**

ब्रह्म सत्य, ज्ञानस्वरूप और अनन्त है।

* **अन्नाद्भूतानि जायन्ते जातान्यन्नेन वर्धन्ते।**

अन्न से ही सब प्राणी उत्पन्न होते हैं, उत्पन्न होकर अन्न से ही बढ़ते हैं।

बृहदारण्यकोपनिषद् के प्रमुख मन्त्र-

* **असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय मृत्योर्मामृतं गमयेति।** (बृहदा. 1.3.28)

मुझे असत् से सत् की ओर ले जाओ मुझे अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाओ और मृत्यु से अमृत की ओर ले जाओ।

* **आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्यः।** (बृहदा. 2.4.5)

हे मैत्रेयि ! इस आत्मा के ही दर्शन, श्रवण, मनन एवं विज्ञान से सबका ज्ञान हो जाता है।

* **न वा अरे जायायै कामाय जाया प्रिया भवत्यात्मनस्तु।**
(बृहदा. 2.4.5)

याज्ञवल्क्य मैत्रयी से कहते हैं- स्त्री के प्रयोजन के लिए स्त्री प्रिया नहीं होती, अपने ही प्रयोजन के लिये स्त्री प्रिया होती है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट होता है कि '**उत्तिष्ठत जाग्रत**-' यह मन्त्र कठोपनिषद् से उद्धृत है।

अतः विकल्प 'B' सही है।

स्रोत- कठोपनिषद् - (1.3.14)

10. अधोलिखितानां केन सह कस्य सम्बन्धः? इति समीचीनां तालिकां चिनुत।

(क) मा गृधः कस्यस्विद्धनम् (i) केनोपनिषद्

(ख) उमाया उपदेशः (ii) बृहदारण्यकोपनिषद्

(ग) अथ शीक्षां व्याख्यास्यामः (iii) ईशोपनिषद्

(घ) आत्मा वा अरे द्रष्टव्यो मन्तव्यः (iv) तैत्तिरीयोपनिषद्

	क	ख	ग	घ
(A)	ii	iv	iii	i
(B)	i	iii	iv	ii
(C)	iv	ii	iii	i
(D)	iii	i	iv	ii

व्याख्या-

*** मा गृधः कस्यस्विद्धनम् । (ईशावास्य-मन्त्र 01)**
आसक्त मत होओ धन, भोग्य-पदार्थ किसका है अर्थात् किसी का भी नहीं है।

*** बहुशोभमानामुमां हैमवतीं तां होवाच किमेतद् यक्षमिति।**
यह मन्त्र केनोपनिषद् के खण्ड तीन से उद्धृत है।
इसमें अत्यन्त शोभामयी हिमाचलकुमारी उमादेवी प्रकट हो गयी हैं। इन्द्र पर कृपा करके करुणामय परब्रह्म पुरुषोत्तम ने ही उमारूपा साक्षात् ब्रह्मविद्या को प्रकट किया था।

*** अथ शीक्षां व्याख्यास्यामः। (तैत्तिरीयो. 1.2)**
तैत्तिरीयोपनिषद् के अनुवाक दो में शिक्षा का वर्णन किया गया है।
'अब हम शिक्षा का वर्णन करेंगे।'
वर्ण, स्वर, मात्रा, बल, साम, संतान यह शिक्षा के भेद हैं।

*** आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः मन्तव्यः। (बृहदा. 2.4.5)**
याज्ञवल्क्य मैत्रयी से कहते हैं- हे मैत्रेयि! इस आत्मा के ही दर्शन, श्रवण, मनन एवं विज्ञान से इस सबका ज्ञान हो जाता है।

मन्त्र	उपनिषद्
मा गृधः कस्यस्विद्धनम्	ईशावास्योपनिषद्
उमायाः उपदेशः	केनोपनिषद्
अथ शीक्षां व्याख्यास्यामः	तैत्तिरीयोपनिषद्
आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः	बृहदारण्यकोपनिषद्

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि मिलान करने पर **विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज A-174, B-175, C-179, D-171

11. षड्वेदाङ्गेषु किं न गण्यते ?

(A) निरुक्तम् (B) छन्दस्
(C) मीमांसा (D) कल्पः

व्याख्या- वेदाङ्ग-

शिक्षा व्याकरणं छन्दो निरुक्तं ज्योतिषं तथा।
कल्पश्चेति षडङ्गानि वेदस्याहुर्मनीषिणः।।

षड्वेदाङ्ग
1. शिक्षा 2. व्याकरण 3. छन्द 4. निरुक्त
5. ज्योतिष 6. कल्प

वेद
1. ऋग्वेद 2. यजुर्वेद 3. सामवेद 4. अथर्ववेद

षड्दर्शन-
1. सांख्य 2. योग 3. न्याय 4. वैशेषिक
5. पूर्वमीमांसा 6. उत्तरमीमांसा

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि षड्वेदाङ्गों में मीमांसा की गणना नहीं होती। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज–172

12. यास्कमते पदानां प्रकाराः कति भवन्ति ?

(A) चत्वारः (B) पञ्च
(C) द्वौ (D) षड्

व्याख्या- यास्क द्वारा रचित निरुक्त में पदों की संख्या चार बतायी गयी है-

*** चत्वारि पदजातानि नामाख्याते चोपसर्गनिपाताश्च तानीमानि भवन्ति ।**

1. नाम 2. आख्यात 3. उपसर्ग 4. निपात।

षड्भावविकार- षड्भावविकारा भवन्तीति वार्ष्यायणिः:-
जायते, अस्ति, विपरिणमते, वर्धते, अपक्षीयते, विनश्यति

तास्त्रिविधाः ऋचः:-
1. परोक्षकृताः 2. प्रत्यक्षकृताः 3. आध्यात्मिक्य

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि यास्कमत में पदों की संख्या चार है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज 08

13. षड्भावविकारेषु कतमो नास्ति ?

(A) जायते (B) नश्यति
(C) वर्धते (D) स्मरति

व्याख्या- यास्क कृत निरुक्त में सम्पूर्ण चौदह अध्यायों

का संकलन है। जिसके प्रथम अध्याय में षड्भावविकारों की चर्चा की गई है-

षड्भावविकार- वार्ष्यायणि का मत है कि- छः प्रकार के भावविकार होते हैं। 1.जायते (उत्पन्न) 2.अस्ति (होना) 3.विपरिणमते (परिवर्तित होना) 4.वर्धते (बढ़ना) 5.अपक्षीयते (घटना) 6.विनश्यति (नष्ट होना)।

*** प्रथम भावविकार है-** 'जायते' अर्थात् उत्पन्न होना। बीज से अङ्कुर निकलता है तब यह कहा जाता है कि अंकुर पैदा हुआ यद्यपि पैदा होना के साथ-साथ होना रूप क्रिया या भावविकार भी है।

*** दूसरा भाव विकार है-** 'अस्ति' जिसका अर्थ है 'होना' अपनी सत्ता धारण करना। वैयाकरणों ने अस्ति का अर्थ किया है भावानुकूलो व्यापारः । अस्ति, भवति, विद्यते, वर्तते ये सभी धातुएँ सामान्य सत्ता अथवा 'भाव' को ही कहती हैं।

*** तीसरा भावविकार-** 'विपरिणमते' जिसका अभिप्राय है 'परिवर्तन'

*** चौथा भावविकार-** 'वर्धते' (वृद्धि) यह वृद्धि दो प्रकार की हो सकती है। पहली अपनी शरीर की वृद्धि तथा दूसरी अपने से सम्बद्ध या संयुक्त पदार्थों की वृद्धि।

*** पाँचवाँ भावविकार-** 'अपक्षीयते' (ह्रास) अथवा अपक्षय। यह भी दो प्रकार का बताया गया है- पहला शरीर का ह्रास तथा दूसरा अपने से युक्त पदार्थों का ह्रास।

*** छठा भाव विकार-** 'विनश्यति' (नष्ट होना) विनाश। जब ह्रास अपनी सीमा पर आ जाता है तब विनाश का प्रारम्भ हो जाता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट होता है कि षड्भावों में 'स्मरति' की गणना नहीं होती। **अत: विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज 23

14. याज्ञवल्क्यशिक्षा केन वेदेन सम्बद्धा अस्ति ?

(A) ऋग्वेदेन (B) यजुर्वेदेन

(C) सामवेदेन (D) अथर्ववेदेन

व्याख्या- ऋग्वेदीय शिक्षा

1. पाणिनीय शिक्षा 2. स्वराङ्कुशा शिक्षा
3. षोडशश्लोकी शिक्षा 4. शैशिरीय शिक्षा
5. आपिशलि शिक्षा

सामवेदीय शिक्षा

1. गौतमी शिक्षा 2. लोमशी शिक्षा 3. नारदीय शिक्षा

यजुर्वेद-(शुक्लयजुर्वेदीय शिक्षा)

1. याज्ञवल्क्य शिक्षा 2. वाशिष्ठी शिक्षा
3. पाराशरी शिक्षा 4. कात्यायनी शिक्षा
5. माण्डव्य शिक्षा 6. अमोघानन्दिनी शिक्षा
7. लघु अमोघानन्दिनी शिक्षा 8. माध्यन्दिनी शिक्षा
9. वर्णरत्नप्रदीपिका शिक्षा 10. केशवी शिक्षा
11. हस्तस्वर प्रक्रिया 12. अवसाननिर्णय शिक्षा (मल्लशर्मशिक्षा)
13. स्वरभक्ति लक्षणपरिशिष्ट शिक्षा 14. क्रमसन्धान शिक्षा
15. मनःस्वार शिक्षा 16. यजुर्विधान शिक्षा
17. स्वराष्टक शिक्षा 18. क्रमकारिका शिक्षा

कृष्णयजुर्वेदीय शिक्षा-

1. भारद्वाज शिक्षा 2. व्यास शिक्षा (तैत्तिरीय संहिता)
3. शम्भु शिक्षा 4. कौहलीय शिक्षा
5. सर्वसम्मत शिक्षा 6. आरण्य शिक्षा
7. सिद्धान्त शिक्षा

अथर्ववेदीय शिक्षा-

1. माण्डूकी शिक्षा

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि याज्ञवल्क्य शिक्षा यजुर्वेद से सम्बन्धित है। **अत: विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य का इति. - गजानन शास्त्री मुसलगाँवकर, पेज 253

15. 'नैगमकाण्डम्' कस्मिन् ग्रन्थे वर्तते-

(A) आपस्तम्बगृह्यसूत्रे (B) निरुक्ते

(C) गौतमधर्मसूत्रे (D) बौधायनधर्मसूत्रे

व्याख्या-

* यास्ककृत निरुक्त 'निघण्टु' ग्रन्थ की व्याख्या है।
* निघण्टु ग्रन्थ पाँच अध्यायों और तीन काण्डों में विभक्त है।
* प्रथम तीन अध्याय 'नैघण्टुक काण्ड' कहलाते हैं।
* चौथा अध्याय 'ऐकपदिक' या 'नैगम काण्ड' कहलाता है।
* पाँचवा अध्याय 'दैवत काण्ड' है।

दैवतकाण्ड- निघण्टु के शब्दों को तीन भागों में विभक्त किया गया है। एक तो वे शब्द जो वेद में प्रधान रूप से स्तुत देवताओं के नाम हैं। इन शब्दों को 'दैवत' कहते हैं। निघण्टु का पाँचवाँ अध्याय देवतानामों का संग्रह है, इसीलिए उसे 'दैवतकाण्ड' कहते हैं। इसमें अग्नि से लेकर देवपत्नी शब्द पर्यन्त 151 शब्द हैं।

ऐकपदिक या नैगमकाण्ड- दूसरे वे शब्द हैं जो अनेकार्थक हैं अथवा अनवगत संस्कार हैं अर्थात् जिनमें यह स्पष्ट नहीं है कि यह शब्द किस धातु से किस प्रत्यय से बना है- उसका नाम 'ऐकपदिक या नैगम' है। अर्थ- निश्चयात्मक होने के कारण इन्हें नैगम-निगमों का समूह भी कहते हैं। इसीलिये चौथे अध्याय का नाम ऐकपदिक या नैगमकाण्ड है।

निघण्टु- तीसरे प्रकार के शब्द हैं- पर्यायशब्द अथवा एकार्थक अनेक शब्द और एकार्थक अनेक धातु, इनका नाम निघण्टु ही रहने दिया। यद्यपि निघण्टु नैगम और दैवतकाण्ड के शब्दों में उपयुक्त रीति से भेद दिखाकर उन्हें भिन्न कर दिया और उनकी संज्ञा भी पृथक् कर दी। प्राचीनकाल में शब्दसंग्रह रूप कोशग्रन्थों को 'निघण्टु' कहा करते थे।

'अर्थावबोधे निरपेक्षतया पदजातं यत्रोक्तं तन्निरुक्तम्'। इस लक्षण से निघण्टु को भी निरुक्त मान लिया गया।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'नैगम काण्ड' निरुक्त के अन्तर्गत आता है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, भू. पेज 11

16. 'सिद्धे शब्दार्थसम्बन्धे' इति भाष्यवार्तिके नित्यपर्यायवाची 'सिद्ध' शब्द एवोपात्तो, न त्वसन्दिग्धो 'नित्य' शब्दस्तत्र को हेतुः ?

(A) अवधारणार्थे 'सिद्ध' शब्दप्रयोगात्।

(B) पूर्वपदलोप-परकस्य 'सिद्ध' शब्दस्य प्रयोगात्।

(C) व्याख्यानतो विशेषप्रतिपत्तेः 'सिद्ध' शब्दस्य नित्यार्थकत्वात्

(D) नित्यपर्यायवाचिनं सिद्धशब्दस्य मङ्गलार्थत्वादपि।

व्याख्या- वैयाकरण और मीमांसक शब्द की नित्यता का और नैयायिक अनित्यता का समर्थन करते हैं। आचार्य पाणिनि के अनुसार तो केवल शब्द ही नहीं अपितु, शब्द अर्थ और सम्बन्ध- ये तीनों ही नित्य हैं। 'स्फोट' रूप शब्द तो नित्य हैं ही। जब शब्द और अर्थ- ये दोनों नित्य हैं तो इनका सम्बन्ध स्वतः नित्य है। इसी तथ्य को कात्यायन ने अपने सबसे पहले वार्तिक में लिखा है- सिद्धे शब्दार्थसम्बन्धे

शब्द भी सिद्ध है, अर्थ भी सिद्ध है और इन दोनों का सम्बन्ध भी सिद्ध=नित्य है।

* इस वार्तिक में 'सिद्ध' शब्द के ग्रहण से क्या लाभ है, क्यों नहीं 'सिद्ध' शब्द के स्थान पर 'नित्य' शब्द का ही ग्रहण कर लिया जाय- **'किं न महता कण्ठेन नित्यशब्द एवोपात्तः .....'** इसके उत्तर में भाष्यकार कहते हैं ''मङ्गलार्थम्'' मङ्गल के लिए 'सिद्ध' शब्द का प्रयोग है।

* **''माङ्गलिक आचार्यो महतः शास्त्रौघस्य मङ्गलार्थं सिद्धशब्दमादितः प्रयुङ्क्ते ....''**

माङ्गलिक आचार्य कात्यायन विशाल वार्तिकसमुदाय के मङ्गल (साफल्य) के लिए आदि में 'सिद्ध' शब्द का प्रयोग करते हैं। क्योंकि जिनके आदि में मङ्गल है ऐसे शास्त्रों का विस्तार एवं प्रचार प्रसार होता है, ऐसे शास्त्र के अध्येता वीर पुरुष और दीर्घायु पुरुष होते हैं, अध्येता सिद्धार्थ होते हैं । इसीकारण कात्यायन ने प्रथम वार्तिक सिद्धे शब्दार्थसम्बन्धे में 'सिद्धे' शब्द का प्रयोग किया है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'सिद्धे शब्दार्थसम्बन्धे' कात्यायन के इस प्रथम वार्तिक में 'सिद्धे' शब्द नित्य अर्थ का पर्यायवाची होता हुआ मङ्गलार्थक भी है।

अतः विकल्प 'D' सही है।

स्रोत- व्याकरण महाभाष्य (प्रथम आह्निक)-चारुदेव शास्त्री, पेज 25

17. वृत्तिसमवायार्थो वर्णानामुपदेशः इत्यत्र 'समवाय' शब्दस्य कोऽर्थः ?

(A) नित्यसम्बन्धः

(B) समूहः

(C) वर्णानामानुपूर्व्येण सन्निवेशः

(D) वृत्तिनियामकसम्बन्धः

व्याख्या- महर्षि पाणिनि द्वारा 'अइउण्' आदि चतुर्दश सूत्रों में किये गए वर्णोपदेश का क्या प्रयोजन है- ''अत्र किमर्थो वर्णानामुपदेशः ? '' ऐसा महाभाष्य पस्पशाह्निक में प्रश्न किया गया। इस प्रश्न के उत्तर में महर्षि पतञ्जलि महाभाष्य में समाधानवार्तिक को उद्धृत करते हैं कि- ''वृत्तिसमवायार्थ उपदेशः''

'वृत्तिसमवायार्थो वर्णानामुपदेशः कर्तव्यः'- (भाष्यम्)

अर्थात् वृत्तिसमवायार्थ वर्णों का उपदेश मानना चाहिए।

* **'वृत्तिसमवायार्थ'- इसका क्या आशय है?**

(क) वृत्तये समवायः = वृत्तिसमवायः (वृत्ति के लिए समवाय)

(ख) वृत्त्यर्थो वा समवायः = वृत्तिसमवायः (जिसका फल वृत्ति है वह समवाय)

(ग) वृत्तिप्रयोजनो वा समवायः = वृत्तिसमवायः (जिसका प्रयोजन वृत्ति है, वह समवाय 'वृत्तिसमवाय' है)

* **वृत्ति- 'वृत्ति' शब्द का क्या अर्थ है-**

''शास्त्रप्रवृत्तिः'' अर्थात् शास्त्र (सूत्रों) की प्रवृत्ति = लागू होना वृत्ति है।

* **समवाय- 'समवाय' का अर्थ क्या है?**

'वर्णानामानुपूर्व्येण संनिवेशः'

अर्थात् वर्णों का आनुपूर्वी क्रम से सन्निवेश = उपस्थापन समवाय है।

* **उपदेश- 'उपदेश' का अर्थ क्या है?**

'उच्चारणम्' उपदेश का अर्थ है- उच्चारण।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि 'वृत्तिसमवायार्थो वर्णानामुपदेशः' इस वाक्य में 'समवाय' शब्द का अर्थ 'वर्णानामानुपूर्व्येण सन्निवेशः है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- व्याकरण-महाभाष्यम् (पस्पशाह्निक)- मधुसूदन मिश्र, पेज 69

18. अधोलिखितप्रयोगेषु 'इणः षीध्वंलुँङ्-लिटां धोऽङ्गात्' इति भ्वादिगणीय सूत्रस्योदाहरणं किमस्ति?
(A) एधध्वे (B) एधाञ्चकृढ्वे
(C) एधिष्यध्वे (D) एधध्वम्

व्याख्या- लघुसिद्धान्तकौमुदी के भ्वादिगण में धातुरूप सिद्धि- प्रक्रिया के अन्तर्गत 'एध्' धातु लिट् लकार, मध्यमपुरुष, बहुवचन के रूप 'एधाञ्चकृढ्वे' की सिद्धिप्रसंग में, आचार्य वरदराज इस सूत्र को उद्धृत करते हैं-
इणः षीध्वंलुँङ्लिँटां धोऽङ्गात् (8.3.78)
अर्थ- इणन्त अङ्ग से परे षीध्वम् (आशीर्लिङ्) शब्द के तथा लुँङ् और लिँट् के धकार को मूर्धन्य (ढकार) आदेश हो।
वृत्ति- इण्णन्ताद् अङ्गात् परेषां षीध्वंलुँङ्लिँटां धस्य ढः स्यात्। एधाञ्चकृढ्वे।
'एधाम् + चकृ + ध्वे' में इणन्त अङ्ग है चकृ इससे परे 'ध्वे' यह लिँट् विद्यमान है अतः इस सूत्र में इसके धकार के स्थान पर मूर्धन्य ढकार होकर अनुस्वार और परसवर्ण करने से 'एधाञ्चकृढ्वे' प्रयोग सिद्ध होता है।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि भ्वादिगणीय 'एध्' धातु इणः षीध्वं-सूत्र से षकार को ढकार आदेश करने पर 'एधाञ्चकृढ्वे' बना। **अतः विकल्प 'B' सही है।**
स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी- भैमीव्याख्या (खण्ड 2), पेज 214-15

19. एषु शुद्धो मत्वर्थीयप्रयोगः कः ?
(A) विद्युद्वान् (B) विद्युद्मान्
(C) विद्युत्वान् (D) विद्युत्मान्

व्याख्या- विद्युत् शब्द के तकारान्त होने के कारण **तसौ मत्वर्थे-** सूत्र से भसंज्ञा हो जाती है, फलतः पदसंज्ञा का बाध हो जाता है।
अतः पदत्वाभावात् झलां जशोऽन्ते सूत्र से तकार को जश्त्व नहीं होता।
विद्युत्वान्- (बिजली वाला) विद्युत् अस्य अस्ति विग्रह करके विद्युत्+सु- इस स्थिति में
तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप्- से मतुप् होने पर अनुबन्ध लोप, प्रातिपदिकसंज्ञा, सुप् का लुक् करके विद्युत्+मत्-पद बना। यहाँ पर झय् है तकार। अतः **झयः** (8.2.10)- सूत्र से मतुप् के मकार को वकार आदेश होकर विद्युत्वत् शब्द बना है। स्वादिकार्य में विद्युत्वान् सिद्ध हो जाता है।
इसी प्रकार- गरुत्मान्, मरुत्वान् भी बनते हैं।
इसका रूप- विद्युत्वान् विद्युत्वन्तौ विद्युत्वन्तः धीमान् की तरह चलता है।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि विद्युत्वान् मत्वर्थीय प्रयोग है। जबकि विद्युद्वान् विद्युद्मान्, विद्युत्मान् यह अशुद्ध प्रयोग हैं। **अतः विकल्प 'C' सही है।**
स्रोत- वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (भाग-3)- गोविन्दाचार्य, पेज-856

20. 'वास्तव्यः' इत्यत्र 'वस्' धातोः 'तव्यत्' प्रत्ययो भवति कस्मिन्नर्थे?
(A) कर्तरि (B) कर्मणि
(C) भावे (D) स्वार्थे

व्याख्या- वसतीति वास्तव्यः- निवास करता है, इस अर्थ में वस् निवासे धातु के कर्ता अर्थ में 'वसेस्तव्यत्कर्तरि णिच्च' वार्तिक से तव्यत् प्रत्यय होकर 'वस्+तव्य' बना। प्रत्यय को णिद्वद्भाव होने के कारण उसके परे रहते 'अत उपधायाः' से उपधाभूत अकार की वृद्धि आकार होकर वास्तव्य बना। इसके बाद प्रातिपदिकसंज्ञा होने से स्वादि कार्य होकर प्रथमा एकवचन में 'वास्तव्यः' सिद्ध हो जाता है।
वास्तव्यः वास्तव्यौ वास्तव्याः इस प्रकार से रूप बनते हैं।
'कर्तरि कृत्' (3.4.67)- कृत् प्रत्यय कर्ता अर्थ में होता है।
तयोरेव कृत्यक्तखलर्थाः (3.4.70)- कृत्य, क्त और खलर्थ प्रत्यय भाव और कर्म अर्थ में ही होते हैं।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'वास्तव्यः' में प्रत्यय 'कर्तरि' अर्थ में है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**
स्रोत- वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (भाग-6)-गोविन्दाचार्य, पेज-8

21. निम्नलिखितेषु शब्देषु अर्थसंकोचस्य उदाहरणं किमस्ति?
(A) सिंहः (B) वृकः
(C) कुशलः (D) मृगः

व्याख्या- संसार की सभी वस्तुएँ परिवर्तनशील हैं। भाषा भी परिवर्तनशील है। जिस प्रकार ध्वनियों में परिवर्तन होता है, उसी प्रकार प्रत्येक भाषा के शब्दों के अर्थों में भी परिवर्तन होता रहता है। यह अर्थ परिवर्तन तीन प्रकार का होता है-
1. अर्थविस्तार (Expansion of meaning)
2. अर्थसंकोच (Contraction of meaning)
3. अर्थादेश (Transforence of meaning)
अर्थविस्तार- किसी अर्थविशेष के क्षेत्र का पूर्व की अपेक्षा बाद में बढ़ जाना ही अर्थविस्तार है। जब पहले शब्द के अर्थ का क्षेत्र सीमित हो और बाद में उसकी सीमा का विस्तार हो जाय तो उसे अर्थविस्तार कहते हैं।
जैसे- 'प्रवीण' प्रवीण शब्द का अर्थ पहले 'प्रकृष्टो-वीणायाम्' अर्थात् वीणावादन में निपुण था, बाद में किसी भी कार्य में आगे रहने वाले को प्रवीण कहा जाने लगा।

अन्य उदाहरण- कुशल, गोष्ठ, गवेषणा, तैल आदि।
अर्थसंकोच- अर्थविस्तार का विपरीत ही अर्थसंकोच है। उनका विस्तृत अर्थ संकुचित या सीमित हो गया है। जैसे *गच्छतीति गौः चलने वाले को 'गो' (गाय) कहते हैं। मनुष्य भी चलता है, उसे गो (गाय) नहीं कह सकते।
* 'अश्नुते अध्वानम् इति अश्वः' सड़क पर चलने वाले को 'अश्व' (घोड़ा) कहते हैं। सभी सड़क पर चलने वाले को अश्व (घोड़ा) नहीं कह सकते।
मृग- पशु-मात्र के लिए था। अब केवल हिरन अर्थ रह गया है। अंग्रेजी का Deer भी पशुमात्र का वाचक था, अब 'हिरन' अर्थ रह गया है।
अर्थसंकोच के अन्य उदाहरण- जगत्, पंकज, अम्बुद (बादल), नीरधि (समुद्र), सर्प, पर्वत, तटस्थ, मन्दिर, सभ्य, श्राद्ध, तर्पण, अनुकूल, वेदना, घृणा आदि।
अर्थादेश- अर्थादेश का अर्थ है – एक अर्थ के स्थान पर दूसरे अर्थ का आ जाना। आदेश का अर्थ है- एक को हटाकर दूसरे का आना।
उदाहरण- असुर- मूल अर्थ असु+र देवता था। बाद में सुर (देवता) का उल्टा अ+सुर (राक्षस) अर्थ हो गया।
अन्य उदाहरण- वर (दूल्हा), सह, मौन, देवानां प्रियः, पाषण्ड, आकाशवाणी, साहस, भद्र-भद्दा, मुग्ध, वाटिका-बाड़ी, कर्पट-कपड़ा आदि।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि अर्थसंकोच का उदाहरण मृग है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**
स्त्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 338

22. निम्नलिखितेषु को ध्वनिः महाप्राणो नास्ति ?

(A) ध् (B) भ्
(C) ह् (D) ड्

व्याख्या- प्राण का अर्थ है- 'हवा' 'श्वास' या 'हवा की शक्ति' इस आधार पर कुछ व्यञ्जन अल्पप्राण कहे जाते हैं और कुछ महाप्राण

महाप्राण- जिन व्यञ्जनों के उच्चारण में हवा का आधिक्य हो या श्वास-बल अधिक हो, उन्हें महाप्राण (Aspirated) कहते हैं। 'ह' ध्वनि शुद्ध 'प्राण' से बहुत मिलती जुलती है, इसी कारण महाप्राण ध्वनियों को ह युक्त लिखा जाता है।

महाप्राण ध्वनियाँ- ख, घ, छ, झ, ठ, ढ, थ, ध, फ, भ, न्ह, म्ह, ल्ह, र्ह, ।

अल्पप्राण- जिन व्यञ्जनों के उच्चारण में हवा का आधिक्य न हो या श्वास बल कम हो, उन्हें 'अल्पप्राण' (Unaspirated) कहते हैं।

अल्पप्राण ध्वनियाँ- क, ग, ङ, च, ज, ञ, ट, ड, ण, त, द, न, प, ब, म, य, ल, र, ड़ ।
प्रयत्न के आधार पर व्यञ्जनों के मुख्यतः निम्नाङ्कित भेद होते हैं-

स्पर्श- (Stop) स्पर्श का अर्थ है 'छूना'। इसके उच्चारण में एक उच्चारण अवयव दूसरे का स्पर्श करता है।
उदाहरण- क से म तक के वर्ण ।

संघर्षी- (Fricative) इनके उच्चारण में दो उच्चारण अवयव एक दूसरे के इतने निकट चले जाते हैं कि दोनों के बीच से निकलने वाली हवा घर्षण या संघर्ष करती हुई बाहर निकालती है।
उदाहरण- स, ष, श, ह संघर्षी व्यञ्जन हैं।

स्पर्श संघर्षी- (Affricate) इन ध्वनियों के उच्चारण में प्रारम्भिक चरण स्पर्श का होता है, अन्तिम चरण संघर्ष का।
उदाहरण- चना, नाच।

नासिक्य- इनके उच्चारण में हवा नाक से निकलती है। ङ, ञ, ण, न, म नासिक्य व्यञ्जन हैं।

पार्श्विक- इनके उच्चारण में मुँह के मध्य भाग में दो अवयव एक दूसरे से मिलकर वायु को अवरुद्ध कर देते हैं, किन्तु हवा एक या दोनों पार्श्वों से निकलती रहती है।
उदाहरण- ल।

उक्षिप्त- इसके उच्चारण में जीभ ऊपर उठकर झटके से नीचे आती है।
जैसे- ड़, ढ़।

कम्पनजात- इसके उच्चारण में किसी अवयव की नोक में से वायु के प्रवाह से कम्पन्न होता है।
जैसे- र।
नोट- धीरेन्द्र वर्मा तथा बाबूराम सक्सेना ने हिन्दी 'र' को लुण्ठित कहा है।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि महाप्राणध्वनियों में ड् की परिगणना नहीं है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**
स्त्रोत- भाषाविज्ञान- भोलानाथ तिवारी, पेज-318-320

23. ऐश्वर्यं कस्य लक्षणं भवति-

(A) रजोगुणस्य (B) सत्त्वगुणस्य
(C) तमोगुणस्य (D) पुरुषस्य

व्याख्या- ईश्वरकृष्ण सांख्यकारिका में बुद्धि का लक्षण करते हुए उसके सात्त्विक एवं तामस धर्मों को बताते हैं-
बुद्धि (महत्)- 'अध्यवसायो बुद्धिः' निश्चय बुद्धि है। बुद्धि का स्वरूप अध्यवसाय है, यहाँ 'अध्यवसाय' से अर्थ प्रायः 'निश्चय' से है। अतः निश्चय ही बुद्धि है।

बुद्धि के आठ धर्म- धर्म, ज्ञान, विराग एवं ऐश्वर्य सत्त्वगुण की प्रधानता के कारण सात्त्विक तथा इनके ठीक विपरीत अधर्म, अज्ञान, राग तथा अनैश्वर्य तमोगुण की प्रधानता के कारण तामसिक माने गए हैं।

अध्यवसायो बुद्धिर्धर्मो ज्ञानं विराग ऐश्वर्यम्।
सात्त्विकमेतद्रूपं तामसमस्माद्विपर्यस्तम्॥ (का- 23)

ऐश्वर्यम्- अणिमा, लघिमा, गरिमा, महिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, वशित्व एवं ईशित्व- इन आठ सिद्धियों की प्राप्ति ही 'ऐश्वर्य' कहलाता है। सिद्धियों का प्रादुर्भाव भी बुद्धि का ही धर्म है, जो सत्त्वगुण के प्रभावी होने से प्राप्त होता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'ऐश्वर्यम्' यह सत्त्वगुण की प्रधानता के कारण बुद्धि का सात्त्विक धर्म माना जाता है, **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- सांख्यकारिका (का.-23)- राकेश शास्त्री, पेज 76

24. वेदान्तसारानुसारं तितिक्षायाः किं लक्षणम् अस्ति ?
(A) विहितानां कर्मणां विधिना परित्यागः
(B) मोक्षेच्छा
(C) शीतोष्णादिद्वन्द्वसहिष्णुता
(D) जन्ममरणबन्धनात् मुक्तिः

व्याख्या- 'साधनचतुष्टयसम्पन्न प्रमाता वेदान्त का अधिकारी होता है, ऐसा कहने से यह आकाङ्क्षा उत्पन्न होती है कि चार साधन कौन-कौन से हैं, अतः इनका वर्णन करते हुए कहते हैं-

साधनानि नित्यानित्यवस्तुविवेकेहामुत्रार्थफलभोगविराग-शमादिषट्कसम्पत्तिमुमुक्षुत्वानि।

साधन हैं- 1. नित्यानित्यवस्तुविवेक 2. इहामुत्रार्थफलभोगविराग 3.शमादिषट्कसम्पत्ति 4. मुमुक्षुत्व

नित्यानित्यवस्तुविवेक- केवल ब्रह्म ही नित्य वस्तु है और इससे भिन्न (प्रतीत होने वाला) सब कुछ अनित्य है, ऐसा प्रमाणों के द्वारा विवेचन करना नित्यानित्यवस्तुविवेक है।

नित्यानित्यवस्तुविवेकस्तावद् ब्रह्मैव नित्यं वस्तु ततोऽन्यद -खिलमनित्यमिति विवेचनम्।

इहामुत्रार्थफलभोगविराग- इस लोक में प्राप्त होने वाले माला चन्दन-कामिनी आदि विषयभोग जिस प्रकार कर्मजन्य होकर अनित्य हैं उसी प्रकार परलोक में प्राप्त होने वाले अमृतादि विषयभोग भी अनित्य हैं, इसलिए उन भोगों से अत्यन्त विरति का होना इहामुत्रार्थफलभोगविराग है ।

ऐहिकानां स्रक्चन्दनवनितादिविषयभोगानां कर्मजन्यतयानित्य-त्ववदामुष्मिकाणामप्यमृतादिविषयभोगानामनित्यतया तेभ्यो नितरां विरतिरिहामुत्रार्थफलभोगविरागः।

शमादयस्तु शमदमोपरतितितिक्षासमाधानश्रद्धाख्याः ।
शमादि हैं- शम, दम, उपरति, तितिक्षा, समाधान, श्रद्धा ।

शम- शमस्तावच्छ्रवणादिव्यतिरिक्तविषयेभ्यो मनसो निग्रहः।
श्रवण, मनन और निदिध्यासन से भिन्न विषयों से मन को हटा लेना ही शम है।

दम- दमो बाह्येन्द्रियाणां तद्व्यतिरिक्तविषयेभ्यो निवर्त्तनम्।
बाह्य इन्द्रियों को श्रवणादि के अतिरिक्त विषयों से हटाने को दम कहते हैं।

उपरति- निवर्तितानामेतेषां तद्व्यतिरिक्तविषयेभ्य उपरमणमुपरतिः, अथवा विहितानां कर्मणां विधिना परित्यागः।
फिर से विषयों की ओर प्रवृत्त होने का उत्साह न रह जाने से स्थिर हो जाना उपरति है।

तितिक्षा- तितिक्षा शीतोष्णादिद्वन्द्वसहिष्णुता ।
शीत-उष्ण (मान-अपमान, लाभ-हानि, जय-पराजय, निन्दा-स्तुति, हर्ष-शोक) आदि द्वन्द्वों को सहन करना तितिक्षा है।

समाधान- निगृहीतस्य मनसः श्रवणादौ तदनुगुणविषये च समाधिः समाधानम्।
निगृहीत चित्त का श्रवणादि में तथा श्रवणादि के अनुकूल विषयों में स्थिर हो जाना समाधान है।

श्रद्धा- गुरूपदिष्टवेदान्तवाक्येषु विश्वासः श्रद्धा।
गुरु और वेदान्त वाक्यों में विश्वास होना ही श्रद्धा है।

मुमुक्षुत्व- मुमुक्षुत्वं मोक्षेच्छा।
मोक्ष की इच्छा से युक्त होना मुमुक्षुत्व है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'शीतोष्णादिद्वन्द्वसहिष्णुता' ही तितिक्षा है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज 20

25. 'अथातो धर्मजिज्ञासा' इति जैमिनीयसूत्रे वेदाध्ययनस्य दृष्टार्थत्वं को ब्रूते ?
(A) 'अथ' शब्दः (B) 'अतः' शब्द
(C) 'धर्म' शब्दः (D) 'जिज्ञासा' शब्दः

व्याख्या- महर्षि जैमिनिकृत बारह अध्यायों वाले मीमांसादर्शन का प्रकरणग्रन्थ है अर्थसंग्रह, जिसके रचनाकार लौगाक्षिभास्कर हैं।

* जैमिनि के मीमांसासूत्रों में 'अथातो धर्मजिज्ञासा' प्रथम सूत्र है।
* 'अथ' शब्द वेदाध्ययन की अनन्तरता का वाचक है । तथा 'अतः' शब्द वेदाध्ययन की दृष्टार्थता का बोधक है।
* शङ्कराचार्य ने 'अथ' शब्द का अर्थ आनन्तर्यवाचक और 'अतः' पद का अर्थ हेतुवाचक माना है।

'अर्थात् ब्रह्मजिज्ञासा' यह ब्रह्मसूत्र का प्रथमसूत्र है।
* महाभाष्यकार पतञ्जलि ने व्याकरण के महाभाष्य के प्रथम सूत्र 'अथ शब्दानुशासनम्' में 'अथ' शब्द का अर्थ अधिकार वाचक माना है।
* पातञ्जलयोगदर्शन के प्रथमसूत्र 'अथ योगानुशासनम्' के पहला शब्द 'अथ' अधिकार वाचक है। योगानुशासनम् अर्थात् योगशास्त्र (आरम्भ हुआ) जानना चाहिये।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि अतः शब्द 'वेदाध्ययन की दृष्टार्थता' का वाचक है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**
स्रोत- अर्थसंग्रह- राजेश्वरशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज-6-7

26. 'आदित्यो यूपः' इत्यत्र किंविधोऽर्थवादः ?
(A) भूतार्थवादः (B) अनुवादः
(C) निषेधशेषः (D) गुणवादः

व्याख्या- लौगाक्षिभास्कर कृत अर्थसंग्रह में अर्थवाद का लक्षण करते हुए बताते हैं-
'प्राशस्त्यनिन्दान्यतरपरं वाक्यम् अर्थवादः।'
प्रशंसापरक अथवा निन्दापरक वाक्य को अर्थवाद कहते हैं।
सः द्विविधः- विधिशेषो निषेधशेषश्चेति।
तत्र वायव्यं श्वेतमालभेत भूतिकाम इत्यादि विधिशेषस्य
अर्थवाद के दो प्रभेद हैं- (1) विधिशेष (2) निषेधशेष उनमें वायव्यं श्वेतमालभेत भूतिकामः (ऐश्वर्यप्राप्ति का इच्छुक व्यक्ति वायु देवता के लिए श्वेत पशु का आलम्भन करें।
स पुनस्त्रिधा- 'विरोधे गुणवादः स्यादनुवादोऽवधारिते। भूतार्थवादस्तद्धानादर्थवादस्त्रिधा मत' इति।
वह अर्थवाद पुनः तीन प्रकार का होता है-
1. गुणवाद 2. अनुवाद 3. भूतार्थवाद
गुणवाद- प्रमाणान्तरविरोधे सत्यर्थवादो गुणवादः। यथा 'आदित्यो यूप' इत्यादि।
जिस अर्थवाद का प्रमाणान्तर से विरोध हो वह गुणवाद कहा जाता है। यथा- आदित्यो यूपः। यूप आदित्य है इत्यादि।
अनुवाद- प्रमाणान्तरावगतार्थबोधकोऽर्थवादोऽनुवादः।
यथा- अग्निर्हिमस्य भेषजमित्यत्र हिमविरोधित्वऽस्याग्नौ प्रत्यक्षावगतत्वात्।
प्रमाणान्तर से अवगत अर्थ के बोधक अर्थवाद को अनुवाद कहा जाता है। जैसे- अग्निर्हिमस्य भेषजम् अग्नि शैत्य की ओषधि है। प्रकृत में प्रत्यक्ष प्रमाण से पूर्व से ही ज्ञात है कि अग्नि हिम का विरोधी है। अतः अनुवाद है।
भूतार्थवाद- प्रमाणान्तरविरोधतत्प्राप्तिरहितार्थ-बोधकोऽर्थवादो भूतार्थवादः। यथेन्द्रो वृत्राय वज्रमुदयच्छदित्यादि।
जिसका दूसरे किसी प्रमाण से विरोध न हो रहा हो एवं जिसके द्वारा अवबोधित अर्थ प्रमाणान्तर से सम्भव नहीं हो उसे भूतार्थवाद कहा जाता है।
जैसे- 'इन्द्रो वृत्राय वज्रमुदयच्छत्' इन्द्र ने वृत्र का हनन करने के लिए वज्र उठा लिया।

अर्थवाद
(1) गुणवाद (2) अनुवाद (3) भूतार्थवाद

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त से स्पष्ट है कि 'आदित्यो यूपः' गुणवाद का उदाहरण है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**
स्रोत- अर्थसंग्रह- राजेश्वरशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज- 350

27. यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत् क्वचित् इति उक्तिः कस्य विषये ?
(A) योगवाशिष्ठस्य (B) श्रीमद्भागवतस्य
(C) महाभारतस्य (D) मृच्छकटिकस्य

व्याख्या- विश्व-साहित्य में सबसे बड़ा ग्रन्थ महाभारत ही है जिसमें एक लाख से कुछ अधिक श्लोक हैं। यह भारत के सांस्कृतिक विषयों का विराट् कोश तथा आचार की संहिता है। महाभारत के सन्दर्भ में लोकोक्ति है-
* **धर्मे चार्थे च कामे च मोक्षे च भरतर्षभ।**
यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत् क्वचित्॥ (1/62/53)
* **'यन्न भारते तन्न भारते ।'** जो बातें महाभारत में नहीं हैं वे भारतवर्ष में नहीं होती हैं।
रामायण- महर्षि वाल्मीकिकृत रामायण में चौबीस सहस्र पद्य या श्लोक हैं। इसीलिए इसे 'चतुर्विंशतिसाहस्री संहिता' कहते हैं। रामायण सात काण्डों में विभक्त है। रामायण के प्रसङ्ग में लोकोक्ति कही गयी है-
रम्या रामायणी कथा।
यावत्स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महीतले।
तावद् रामायणकथा लोकेषु प्रचरिष्यति॥ (1.2.37)
श्रीमद्भागवत- यह 18 महापुराणों के अन्तर्गत सर्वाधिक प्रसिद्ध महापुराण है। इसमें 18 हजार श्लोक हैं। द्वादश स्कन्धात्मक व्यासरचित इस महापुराण में उच्चकोटि के दर्शन, औपनिषदिक अध्यात्म की व्याख्या मिलती है- **'विद्यावतां भागवते परीक्षा ।'**
मृच्छकटिकम्- मृत्+शकटिकम् अर्थात् 'मिट्टी की गाड़ी' का वर्णन प्रमुख है। जिसके कारण मृच्छकटिकम् नाम पड़ा। यह शूद्रक प्रणीत एक प्रकरणग्रन्थ है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि यदिहास्ति तदन्यत्र---यह उक्ति महाभारत के लिए प्रसिद्ध है।

अतः विकल्प 'C' सही है।

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज 117

28. श्रीमद्भगवद्गीता महाभारतस्य कस्मिन् पर्वणि वर्तते?

(A) कर्ण-पर्वणि (B) भीष्म-पर्वणि

(C) अनुशासन-पर्वणि (D) शान्ति-पर्वणि

व्याख्या-

* श्रीमद्भगवद्गीता महाभारत के भीष्मपर्व से उद्धृत है।
* महाभारत के आदिपर्व से अभिज्ञानशाकुन्तलम् उद्धृत है।
* महाभारत के सभापर्व से शिशुपालवधम् का अवतरण हुआ है।
* महाभारत के वनपर्व से नैषधीयचरितम् और किरातार्जुनीयम् यह दोनों महाकाव्य अवतरित हैं।

पर्व	विषय वर्णन
आदिपर्व	चन्द्रवंश का इतिहास
सभापर्व	कौरव पाण्डवों की उत्पत्ति
वनपर्व	पाण्डवों का वनवास
विराटपर्व	पाण्डवों का अज्ञातवास
उद्योगपर्व	श्रीकृष्ण का दौत्यकर्म
भीष्मपर्व	अर्जुन को गीता का उपदेश, युद्ध का प्रारम्भ, भीष्म का आहत होना
द्रोणपर्व	अभिमन्यु एवं द्रोणवध
कर्णपर्व	कर्ण का युद्ध और वध
शल्यपर्व	शल्य का युद्ध और वध
सौप्तिकपर्व	सोते हुए पाण्डवों के पुत्रों का अश्वत्थामा द्वारा वध
स्त्रीपर्व	शोकाकुल स्त्रियों का विलाप
शान्तिपर्व	युधिष्ठिर को भीष्म द्वारा ज्ञान दिया जाना
अनुशासनपर्व	धर्म एवं नीति की कथाएँ, भीष्म का स्वर्गारोहण
आश्वमेधिकपर्व	युधिष्ठिर द्वारा अश्वमेध का अनुष्ठान
आश्रमवासिकपर्व	धृतराष्ट्र आदि का वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश
मौसलपर्व	यादवों का पारस्परिक संघर्ष और नाश
महाप्रस्थानिकपर्व	पाण्डवों की हिमालय यात्रा
स्वर्गारोहणपर्व	पाण्डवों का स्वर्गारोहण

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि श्रीमद्भगवद्गीता 'भीष्मपर्व' से ली गयी है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा, पेज 158

29. वाल्मीकिरामायणानुसारं दशरथस्य पुत्रेष्टियज्ञे पुरोहित आसीत् ।

(A) वसिष्ठः (B) ऋष्यशृङ्गः

(C) भरद्वाजः (D) विश्वामित्रः

व्याख्या- वाल्मीकिकृत आदिकाव्य रामायण में सात काण्ड हैं। पहले काण्ड अर्थात् बालकाण्ड में दशरथ के पुत्रेष्टि यज्ञ के पुरोहित ऋष्यशृङ्ग थे।

ऋष्यशृङ्गस्तु जामाता पुत्रांस्तव विधास्यति। (रामा. 01.9.19)

वशिष्ठ- राजा दशरथ के कुलगुरु थे। रामायण में दशरथ वशिष्ठ से कहते हैं कि-

* **अभिवाद्य वसिष्ठं च न्यायतः प्रतिपूज्य च।** (1.13.2)

वसिष्ठ जी को प्रमाण करके राजा ने न्यायतः उनका पूजन किया।

* **भवान् स्निग्धः सुहृन्मह्यं गुरुश्च परमो महान्। (1.13.4)**

आप मेरे सुहृद्-अकारण हितैषी, गुरु और परम महान् हैं।

भरद्वाज- भरद्वाज महर्षि वाल्मीकि के शिष्य थे।

एवमुक्तो भरद्वाजो वाल्मीकेन महात्मना। (1.2.7)

महात्मा वाल्मीकि के ऐसा कहने पर नियमपरायण शिष्य भरद्वाज ने अपने गुरु मुनिवर वाल्मीकि को वल्कल वस्त्र दिया।

स शिष्यहस्तादादाय वल्कलं नियतेन्द्रियः। (1.2.8)

शिष्य के हाथ से वल्कल वस्त्र लेकर वे जितेन्द्रिय मुनि वहाँ की विशाल शोभा देखते हुए सब ओर विचरने लगे।

विश्वामित्र- कुशिकवंशी गाधिपुत्र विश्वामित्र राजा दशरथ से राम-लक्ष्मण को लेने आये थे-

शीघ्रमाख्यात मां प्राप्तं कौशिकं गाधिनः सुतम्। (1.18.39)

अभ्यागच्छन्महातेजा विश्वामित्रो महामुनिः। (1.18.38)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि दशरथ के पुत्रेष्टियज्ञ के पुरोहित ऋष्यशृङ्ग हैं। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- वाल्मीकि रामायण (बालकाण्ड सर्ग-15) गीता प्रेस, पेज 62

30. वाल्मीकिरामायणानुसारं शम्बूकः केन हतः?

(A) दशरथेन (B) रामेण

(C) परशुरामेण (D) भरतेन

व्याख्या- वाल्मीकि कृत आर्षकाव्य रामायण के उत्तरकाण्ड में श्रीराम के द्वारा शम्बूकवध का वर्णन प्राप्त होता है-

शूद्रं मां विद्धि काकुत्स्थ शम्बूको नाम नामतः। (उत्तरकाण्ड 76.3)

देवलोक पर विजय पाने की इच्छा से ही तपस्या में लगा हूँ। आप मुझे शूद्र समझिये। मेरा नाम शम्बूक है।

भाषतस्तस्य शूद्रस्य खड्गं सुरुचिरप्रभम्।
निष्कृष्य कोशाद् विमलं शिरश्चिच्छेद राघवः॥ (उत्तरकाण्ड. 76.4)
श्रीरामचन्द्र जी ने म्यान से चमचमाती हुई तलवार खींच ली और उसी से उसका सिर काट लिया।
श्रीराम द्वारा विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा के समय राक्षसों का संहार और ताटका वध।
शरेणोरसि विव्याध सा पपात ममार च। (1.26.25)
श्रीराम ने एक बाण मारकर उसकी (ताटका) छाती चीर डाली तब ताटका पृथ्वी पर गिरी और मर गयी।
राम के द्वारा त्रिशिरा का वध-
रामश्चिच्छेद बाणेन ध्वजं चास्य समुच्छ्रितम्।
ततो हतरथात् तस्मादुत्पतन्तं निशाचरम्॥
चिच्छेद रामस्तं बाणैर्हृदये सोऽभवज्जडः। (3.27.16)
श्रीराम ने एक बाण से उसकी ध्वजा भी काट डाली ।
तदन्तर जब वह उस नष्ट हुए रथ से कूदने लगा, उसी समय श्रीराघवेन्द्र ने अनेक बाणों द्वारा उस निशाचर की छाती छेद डाली। फिर तो वह जडवत् हो गया।

खर का वध-

स पपात खरो भूमौ दह्यमानः शराग्निना।
रुद्रेणेव विनिर्दग्धः श्वेतारण्ये यथान्धकः॥ (3.30.27)
दण्डकवन में श्रीराम के उस बाण की आग में जलता हुआ निशाचर खर पृथ्वी पर गिर पड़ा।
वालिवध- राम ने किष्किन्धाकाण्ड में वालिवध किया-
राघवेण महाबाणो वालिवक्षसि पातितः। (4.16.35)
श्रीरघुनाथ जी ने वज्र की भाँति गड़गड़ाहट और प्रज्वलित अशनि की भाँति प्रकाश पैदा करने वाला वह महान् बाण छोड़ दिया तथा उसके द्वारा वाली के वक्षस्थल पर चोट पहुँचायी।

कुम्भकर्ण का वध-

चकर्त रक्षोऽधिपतेः शिरस्तदा
यथैव वृत्रस्य पुरा पुरंदरः। (6.67.167)
राम ने उस बाण से राक्षसराज कुम्भकर्ण के महान् पर्वत शिखर के समान ऊँचे, सुन्दर गोलाकार दाढों से युक्त तथा हिलते हुए मनोहर कुण्डलों से अलङ्कृत मस्तक को धड़ से अलग कर दिया।

रावणवध-

बिभेद हृदयं तस्य रावणस्य दुरात्मनः। (6.108.18)
महान् वेगशाली श्रेष्ठ बाण ने छूटते ही दुरात्मा रावण के हृदय को विदीर्ण कर डाला।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि वाल्मीकिरामायणानुसार शम्बूक को राम ने मारा था। **अतः विकल्प 'B' सही है।**
स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा ऋषि, पेज 127

31. महापुराणेषु न गण्यते-
(A) एकाम्रपुराणम् (B) ब्रह्मपुराणम्
(C) लिङ्गपुराणम् (D) पद्मपुराणम्

व्याख्या- * पुराण का विकास दो रूप में हुआ है- महापुराण और उपपुराण।
* महापुराण प्राचीनतर हैं जिनकी संख्या अठारह है।
मद्वयं भद्वयं चैव ब्रत्रयं वचतुष्टयम्।
अनापलिंगकूस्कानि पुराणानि पृथक्-पृथक्॥

म से = मत्स्य और मार्कण्डेय पुराण
भ से = भविष्य और भागवत पुराण
ब्र से = ब्रह्म, ब्रह्माण्ड, ब्रह्मवैवर्त पुराण
व से = विष्णु, वामन, वराह तथा वायु पुराण
अ से = अग्नि पुराण
ना से = नारद पुराण
प से = पद्म पुराण
लिं से = लिङ्ग पुराण
ग से = गरुड़ पुराण
कू से = कूर्म पुराण
स्क से= स्कन्द पुराण

उपपुराण- इनकी भी संख्या अठारह है।
1. सनत्कुमार 2. नारसिंह 3. स्कान्द (शिव) 4. शिवधर्म 5. आश्चर्य 6. नारदीय 7. कापिल 8. औशनस 9. वारुण 10. कल्कि 11. कालिका 12. माहेश्वर 13. साम्ब 14. सौर 15. पाराशर 16. मारीच 17. भार्गव 18. नन्द।

पुराणों का अन्य विभाजन-

* सात्त्विक, तामस और राजस के रूप में हुआ है जो क्रमशः विष्णु, शिव और ब्रह्मा या अन्य देवताओं को महत्त्व देने के आधार पर है।
सात्त्विक (वैष्णव) पुराण- विष्णु, नारद, भागवत, गरुड़, पद्म तथा वराह
तामस (शैव) पुराण- मत्स्य, कूर्म, लिङ्ग, शिव, अग्नि, स्कन्द
राजस (ब्राह्म) पुराण- ब्रह्माण्ड, ब्रह्मवैवर्त, मार्कण्डेय, ब्रह्म, वामन तथा भविष्य
1. ब्रह्म 2. पद्म 3. विष्णु 4. वायु 5. भागवत 6. नारद 7. मार्कण्डेय 8. अग्नि 9. भविष्य 10. ब्रह्मवैवर्त 11. लिङ्ग 12. वराह 13. स्कन्द 14. वामन 15. कूर्म 16. मत्स्य 17. गरुड़ 18. ब्रह्माण्ड

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि महापुराणों में 'एकाम्रपुराण' की गणना नहीं होती है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा ऋषि, पेज – 176

32. कौटिल्यानुसारं मानवाः कां विद्यां पृथक् न मन्यन्ते-

(A) आन्वीक्षकीम् (B) त्रयीम्
(C) वार्ताम् (D) दण्डनीतिम्

व्याख्या- कौटिल्यकृत अर्थशास्त्र में पन्द्रह अधिकरण हैं। विनयाधिकारिक नामक प्रथम अधिकरण में चार विद्याओं की चर्चा की गयी है-

आन्वीक्षकी, त्रयी, वार्ता और दण्डनीति- ये चार विद्याएँ हैं-

आन्वीक्षकी त्रयी वार्ता दण्डनीतिश्चेति विद्याः।

मनु के अनुसार- 'त्रयीवार्ता दण्डनीतिश्चेति मानवाः। त्रयीविशेषो आन्वीक्षकीति।' मनु सम्प्रदाय के अनुयायी आचार्य त्रयी, वार्ता और दण्डनीति इन तीन विद्याओं को मानते हैं। उनका मत है कि आन्वीक्षकी का समावेश त्रयी के अन्तर्गत हो जाता है।

आचार्य बृहस्पति के अनुसार- 'वार्ता दण्डनीतिश्चेति बार्हस्पत्याः संवरणमात्रं हि त्रयी लोकयात्राविद इति।' आचार्य बृहस्पति के अनुयायी विद्वान् केवल दो ही विद्याएँ मानते हैं- वार्ता और दण्डनीति। उनके मतानुसार त्रयी तो दुनियादार लोगों की आजीविका का साधनमात्र है।

शुक्राचार्य के अनुसार- 'दण्डनीतिरेका विद्येत्यौशनसाः तस्यां हि सर्वविद्यारम्भाः प्रतिबद्धा इति'।

शुक्राचार्य के अनुयायी विद्वानों ने तो केवल दण्डनीति को ही विद्या माना है, उसी को सम्पूर्ण विद्याओं का स्थान एवं कारण स्वीकार किया है।

आचार्य कौटिल्य के अनुसार- 'चतस्र एव विद्या इति कौटिल्यः। ताभिर्धर्मार्थौ यद्विद्यात्तद्विद्यानां विद्यात्वम्।'

आचार्य कौटिल्य उक्त चारों विद्याओं को मानते हैं और उनकी यथार्थता धर्म तथा अधर्म के ज्ञान को बताते हैं।

सांख्यं योगो लोकायतं चेत्यान्वीक्षकी ।

सांख्य, योग, लोकायत ये आन्वीक्षकी विद्या के अन्तर्गत हैं।

आचार्य	**विद्या**
मनु	त्रयी, वार्ता, दण्डनीति
बृहस्पति	वार्ता, दण्डनीति
शुक्राचार्य	दण्डनीति
कौटिल्य	आन्वीक्षकी, त्रयी, वार्ता, दण्डनीति

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि मनु के अनुसार विद्या तीन हैं- त्रयी, वार्ता, दण्डनीति । **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- कौटिलीय अर्थशास्त्र - वाचस्पति गैरोला, पेज 08

33. कौटिल्यानुसारं त्रयीं के संवरणमात्रं मन्यन्ते ?

(A) मानसाः (B) मानवाः
(C) बार्हस्पत्याः (D) औशनसाः

व्याख्या- कौटिलीय अर्थशास्त्र में 180 प्रकरण, 150 अध्याय और 15 अधिकरण, 6000 श्लोक हैं।

* इसके मङ्गलाचरण में शुक्र और बृहस्पति को नमस्कार किया गया है।
* प्रथम प्रकरण के प्रथम अध्याय में विद्यासमुद्देशः आन्वीक्षकी स्थापना का वर्णन है।
* प्रथम प्रकरण के द्वितीय अध्याय में त्रयीस्थापना का वर्ण्य विषय है।
* प्रथम प्रकरण के अध्याय तीन में वार्तादण्डनीतिस्थापना विषय की चर्चा की गयी है।
* आन्वीक्षकी विद्या सर्वदा ही सब विद्याओं का प्रदीप, सभी कार्यों का साधन और सब धर्मों का आश्रय मानी गई है।

प्रदीपः सर्वविद्यानामुपायः सर्वकर्मणाम्।
आश्रयः सर्वधर्माणां शश्वदान्वीक्षकी मता।।

बृहस्पति ने विद्या के विषय में कहा है-

संवरणमात्रं हि त्रयी लोकयात्राविद इति।

आचार्य बृहस्पति के अनुयायी विद्वान् केवल दो ही विद्याओं को मानते हैं। वार्ता और दण्डनीति।

उनके मतानुसार त्रयी तो दुनियादार लोगों की आजीविका का साधनमात्र है।

त्रयी- सामर्ग्यजुर्वेदास्त्रयस्त्रयी। साम,ऋक्, यजुः इन तीनों वेदों का समन्वित नाम ही त्रयी है।

वार्ता- कृषिपाशुपाल्ये वाणिज्या च वार्ता।

कृषि पशुपालन और व्यापार ये वार्ताविद्या के विषय हैं।

दण्डनीति- आन्वीक्षकीत्रयीवार्तानां योगक्षेमसाधनो दण्डः तस्य नीतिः दण्डनीतिः।

आन्वीक्षकी, त्रयी, वार्ता इन सभी विद्याओं की सुख- समृद्धि दण्ड पर निर्भर है। दण्ड को प्रतिपादित करने वाली नीति ही दण्डनीति कहलाती है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'कौटिल्यानुसार त्रयी को संवरणमात्र बृहस्पति मानते हैं।' **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- कौटिलीय अर्थशास्त्र- वाचस्पति गैरोला, पेज 08

34. मनुसंहितानुसारम् एषु किं ब्राह्मणस्य कर्म न भवति-

(A) अध्यापनम् (B) प्रजारक्षणम्
(C) यजनम् (D) याजनम्

व्याख्या- आचार्य मनु प्रणीत मनुस्मृति में 12 अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में ब्राह्मणादि चारों वर्णों के कर्मों की चर्चा की गयी है-

ब्राह्मण-

अध्यापनमध्ययनं यजनं याजनं तथा।
दानं प्रतिग्रहं चैव ब्राह्मणानामकल्पयत्॥ (1.88)

पढ़ना, पढ़ाना, यज्ञ करना, यज्ञ कराना, दान देना, दान लेना ये छः कर्म ब्राह्मणों के रचे गये हैं।

क्षत्रिय-

प्रजानां रक्षणं दानमिज्याध्ययनमेव च।
विषयेष्वप्रसक्तिश्च क्षत्रियस्य समासतः॥ (1.89)

प्रजा की रक्षा, दान देना, यज्ञ करना, पढ़ना और विषयों में न लगना ये क्षत्रिय के कर्म संक्षेप से बनाए।

वैश्य-

पशूनां रक्षणं दानमिज्याध्ययनमेव च।
वाणिक्पथं च कुसीदं च वैश्यस्य कृषिमेव च॥ (1.90)

पशुओं की रक्षा, दान देना, यज्ञ करना, पढ़ना, व्यापार, ब्याज और खेती ये कर्म वैश्य के बनाए।

शूद्र-

एकमेव तु शूद्रस्य प्रभुः कर्म समादिशत्।
एतेषामेव वर्णानां शुश्रूषामनसूयया॥ (1.91)

प्रभु ने शूद्र का एक ही कर्म बनाया है कि वह इन चारों वर्णों की निष्कपट होकर सेवा करें।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि ब्राह्मण का कर्म प्रजारक्षण करना नहीं है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- मनुस्मृति - गिरिधर गोपाल शर्मा, पेज 45

35. मनुसंहितानुसारं सचिवानां संख्या भवेत् ?

(A) 3-4 (B) 5-6
(C) 7-8 (D) 9-10

व्याख्या-

*** सचिवों की संख्या-**

मनुकृत मनुस्मृति द्वादश अध्यायों में विभक्त है। जिसके सातवें अध्याय में राजादि का वर्णन किया गया है-

मौलाञ्छास्त्रविदः शूराँल्लब्धलक्षान्कुलोद्भवान्।
सचिवान्सप्त चाष्टौ वा प्रकुर्वीत परीक्षितान्॥ (7/54)

वंशपरम्परागत, शास्त्रों के जानने वाले, शूर, शस्त्रविद्या में निपुण, कुलीन और परीक्षित ऐसे सात या आठ मन्त्रियों को राजा नियुक्त करें।

*** व्यसनों की संख्या-**

दश कामसमुत्थानि तथाष्टौ क्रोधजानि च।
व्यसनानि दुरन्तानि प्रयत्नेन विवर्जयेत्॥ (7/45)

काम से उत्पन्न हुए दस व्यसन और क्रोध से उत्पन्न हुए आठ व्यसन हैं, इन व्यसनों को राजा यत्नपूर्वक छोड़ दे क्योंकि ये अन्त में दुस्सह कष्टदायक हैं।

*** कामज दोषों की संख्या-**

मृगयाऽक्षो दिवास्वप्नः परिवादः स्त्रियो मदः।
तौर्यत्रिकं वृथाट्या च कामजो दशको गणः॥ (7/47)

मृगया, जुआ खेलना, दिन में सोना, पराया दोष कहना, स्त्रियों में आसक्ति, मद्यपान, बजाना, नाचना, गाना और वृथा घूमना ये दस (दोष) काम से उत्पन्न होते हैं।

*** क्रोधज दोषों की संख्या-**

पैशुन्यं साहसं ईर्ष्यासूयार्थदूषणम्।
वाग्दण्डजं च पारुष्यं क्रोधजोऽपि गणोऽष्टकः॥
(7/48)

चुगली, दुःसाहस, द्रोह, ईर्ष्या, असूया (गुणों में दोष निकालना) दूसरे की वस्तु हरना, कठोर वचन बोलना और अनुचित दण्ड देना ये आठ दोष क्रोध से उत्पन्न हैं।

सर्वेषां तु विशिष्टेन ब्राह्मणेन विपश्चिता।
मन्त्रयेत्परमं मन्त्रं राजा षाड्गुण्यसंयुतम्॥ (7/58)

राजा को चाहिये कि सन्धि, विग्रह, यान, आसन, द्वैध और आश्रय इन छः विषयों की सलाह मन्त्रियों में से धार्मिक पण्डित और ब्राह्मण के साथ करें।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि मनु के अनुसार सचिवों की संख्या 7-8 होनी चाहिये। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- मुनस्मृति - गिरिधर गोपाल शर्मा (7/45)

36. 'याज्ञवल्क्यस्मृत्यनुसारं रिक्ते स्थाने कः शब्दः उपयुक्तः
'दर्शने प्रत्यये दाने .... विधीयते।'

(A) व्यवहारम् (B) प्रातिभाव्यम्
(C) ऋणादानम् (D) वाक्पारुष्यम्

व्याख्या-

* याज्ञवल्क्यस्मृति के रचयिता याज्ञवल्क्य वैदिक ऋषि हैं, वे शुक्लयजुर्वेद के द्रष्टा थे।
* याज्ञवल्क्यस्मृति में लगभग एक हजार श्लोक और वह अनुष्टुप् छन्द में हैं।
* याज्ञवल्क्यस्मृति तीन भागों में विभक्त है-
 (1) आचाराध्याय (2) व्यवहाराध्याय (3) प्रायश्चित्ताध्याय
* याज्ञवल्क्यस्मृति के सुप्रसिद्ध टीकाकार विश्वरूप, विज्ञानेश्वर

और अपरार्क ने वृद्ध याज्ञवल्क्य को अनेक बार उद्धृत किया है।
∗ **दर्शने प्रत्यये दाने प्रातिभाव्यं विधीयते।**
आद्यौ तु वितथे दाप्यावितरस्य सुता अपि॥ (2.53)
दर्शन (दिखा देना), प्रत्यय (विश्वास दिलाना) और दान (स्वयं देने की प्रतिज्ञा) को प्रातिभाव्य (प्रतिभू या जामिन होना) कहते हैं। प्रथम दो प्रकार का प्रातिभाव्य करने वाले झूठा पड़े तो राजा उनसे धनी व्यक्ति को दिलावे, तीसरे प्रकार का प्रातिभाव्य करने वाले के झूठा पड़ने पर उसके पुत्रों से भी वह धन वसूल करें।
∗ **स्मृत्योर्विरोधे न्यायस्तु बलवान् व्यवहारतः।**
अर्थशास्त्रात्तु बलवद्धर्मशास्त्रमिति स्थितिः॥ (2.21)
जब दो स्मृतियों (धर्मशास्त्र के वचनों) में परस्पर विरोध हो तो व्यवहार से दिया गया न्याय बलवान् होता है।
अर्थशास्त्र की अपेक्षा धर्मशास्त्र का प्रमाण अधिक सबल होता है।
∗ **स्मृत्याचारव्यपेतेन मार्गेणाऽऽधर्षितः परैः।**
आवेदयति चेद्राज्ञे व्यवहारपदं हि तत्॥ (2.5)
यदि धर्मशास्त्र और समय के आचार के विरुद्ध ढंग से दूसरों द्वारा पीड़ित होकर राजा निवेदन करें तो वह व्यवहार का विषय होता है।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'दर्शने प्रत्यये दाने प्रतिभाव्यम् विधीयते'। **अतः विकल्प 'B' सही है।**
स्रोत- याज्ञवल्क्यस्मृति - उमेश चन्द्र पाण्डेय, पेज 211

37. रघुवंशस्य चतुर्दशसर्गस्य नाम किम् ?
(A) सीतापवादः (B) सीतापरित्यागः
(C) श्रीराममनस्तापः (D) सीतावनवासः

व्याख्या-

	सर्ग संख्या	**सर्गों का नाम**	**श्लोक**
1.	प्रथम	वशिष्ठाश्रमाभिगमन	95
2.	द्वितीय	नन्दिनीवरदान	75
3.	तृतीय	रघुराज्याभिषेक	70
4.	चतुर्थ	रघुदिग्विजय	88
5.	पञ्चम	स्वयंवर अभिगमन	75
6.	षष्ठ	स्वयंवर वर्णन	86
7.	सप्तम	अजपाणिग्रहण	71
8.	अष्टम	अजविलाप	95
9.	नव	मृगयावर्णन	82
10.	दश	रामावतार	86
11.	एकादश	सीताविवाहवर्णन	93
12.	द्वादश	रावणवध	104
13.	त्रयोदश	दण्डकाप्रत्यागमन	79
14.	चतुर्दश	सीतापरित्याग	87
15.	पञ्चदश	श्रीरामस्वर्गारोहण	103
16.	षोडश	कुमुद्वती परिणय	88
17.	सप्तदश	अतिथि वर्णन	81
18.	अष्टादश	वंशानुक्रम	53
19.	नवदश (एकोनविंशति)	अग्निवर्णशृङ्गार	57

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि रघुवंश के चौदहवें सर्ग का नाम 'सीतापरित्याग' है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**
स्रोत- रघुवंशम् - हरगोविन्द मिश्र, पेज 369

38. 'अतिदुर्धरो बान्धवस्नेहः सर्वप्रमाथी'-हर्षचरिते इयमुक्तिर्भवति-
(A) प्रभाकरवर्धनस्य (B) हर्षवर्धनस्य
(C) भाण्डिनः (D) यशोमत्याः

व्याख्या- हर्षचरितम् के पाँचवें उच्छ्वास में प्रभाकरवर्धन अपने छोटे पुत्र हर्षवर्धन से कहते हैं कि-
अतिदुर्धरो बान्धवस्नेहः सर्वप्रमाथी।
बान्धव का स्नेह अत्यन्त दुःखदायी और दुःसह होता है।
हर्षवर्धन- लोके हि लोहेभ्यः कठिनतराः खलु स्नेहमया बन्धनपाशाः।
सचमुच संसार में स्नेह के बन्धन पाश लोहे से भी बढ़कर कठोर होते हैं।
भाण्डि- 'देव! तृतीयमहः कृताहारस्यास्याद्य इति।' भाण्डि ने कहा राजा से- देव! आज तीन दिन बीत गए, इन्होंने अपना आहार नहीं किया।
यशोमती- 'नास्ति मत्समा सीमन्तिनी दुःखभागिनी'
मेरे समान दुखिया नारी कोई नहीं।
अन्य सूक्तियाँ- यशोमती का कथन
विधवानां यशसा ख्यातुमिच्छामि लोके न वपुषा। (पञ्चमोच्छ्वास)
हे वत्स! इस लोक में मैं, शरीर से नहीं, प्रत्युत विधवाओं के यश से रहना चाहती हूँ।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'अतिदुर्धरो बान्धवस्नेहः-' यह पंक्ति प्रभाकरवर्धन की है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**
स्रोत- हर्षचरितम् (पञ्चम उच्छ्वास) - शिवनाथ पाण्डेय, पेज 60

39. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां मेलनतालिकां चिनुत-
क. अनङ्गोऽयमनङ्गत्वमद्य निन्दिष्यति ध्रुवम् - उत्तररामचरितम्
ख. उदेति पूर्वं कुसुमं ततः फलम् - कादम्बरी
ग. प्रभवति शुचिर्बिम्बग्राहे मणिर्न मृदादयः - रत्नावली
घ. न हि क्षुद्रनिर्घातपाताभिहता चलति वसुधा - अभिज्ञानशाकुन्तलम्

	क	ख	ग	घ
(A)	1	2	3	4
(B)	3	4	1	2
(C)	2	3	4	1
(D)	4	1	2	3

व्याख्या- हर्षकृत नाटिका रत्नावली के प्रथम अङ्क में राजा उदयन नायिका वासवदत्ता से कहते हैं कि-

अनङ्गोऽयमनङ्गत्वमद्य निन्दिष्यति ध्रुवम्।
यदनेन न सम्प्राप्तः पाणिस्पर्शोत्सवस्तव॥ (1/22)

यह अनङ्ग (कामदेव) आज निश्चय ही अपनी शरीरहीनता को धिक्कारेगा, क्योंकि इसने (शरीर न होने के कारण) तुम्हारे हस्तस्पर्श के आनन्द को नहीं प्राप्त किया।

* कालिदासकृत अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के सातवें अङ्क में राजा दुष्यन्त ऋषि मारीच से कहते हैं-

उदेति पूर्वं कुसुमं ततः फलं
घनोदयः प्राक् तदनन्तरं पयः।
निमित्तनैमित्तिकयोरयं क्रम-
स्तव प्रसादस्य पुरस्तु सम्पदः॥ (7/30)

भगवन् ! फूल आते हैं, फिर फल होते हैं। पहले बादल आते हैं, तत्पश्चात् वर्षा होती है। कारण और कार्य का यह क्रम है, किन्तु आपकी कृपा के आगे सम्पत्ति चलती है।

* महाकवि भवभूति प्रणीत उत्तररामचरितम् नाटक के द्वितीय अङ्क में आत्रेयी वनदेवता से कहती है-

वितरति गुरुः प्राज्ञे विद्यां यथैव तथा जडे
न तु खलु तयोर्ज्ञाने शक्तिं करोत्यपहन्ति वा।
भवति हि पुनर्भूयान्भेदः फलं प्रति तद्यथा
प्रभवति शुचिर्बिम्बग्राहे मणिर्न मृदादयः॥ (2/4)

गुरु जिस प्रकार व्युत्पन्न शिष्य को उसी प्रकार मन्द-बुद्धि शिष्य को भी विद्या देता है। वह उन दोनों शिष्यों के ज्ञान में न तो सामर्थ्य की वृद्धि करता है और न ही सामर्थ्य को नष्ट करता है। परन्तु (विद्या के) फल में बहुत अधिक अन्तर होता है, जैसे स्वच्छ मणि प्रतिबिम्ब को ग्रहण करने में समर्थ होते हैं, मिट्टी आदि पदार्थ नहीं।

बाणभट्ट प्रणीत कादम्बरी महाश्वेतावृत्तान्त में चन्द्रापीड-महाश्वेता के विषय में चिन्तन करता हुआ कहता है कि-

'नहि क्षुद्रनिर्घातपाताभिहता चलति वसुधेति।

इसकी (महाश्वेता) की ऐसी विकलता के पीछे अवश्य ही कोई महान् कारण है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'अनङ्गोऽयमनङ्गत्वमद्य'- यह सूक्ति रत्नावली से, 'उदेति पूर्वं कुसुमं ततः फलम्' यह अभिज्ञानशाकुन्तलम् से, प्रभवति शुचिर्बिम्बेग्राहे ...... यह उत्तररामचरितम् से न हि क्षुद्रनिर्घातपाताभिहता- यह कादम्बरी से सम्बन्धित है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- (A) रत्नावली (1.22), (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (7-30), (C) उत्तररामचरितम् (2-4), (D) कादम्बरी (महाश्वेतावृत्तान्त) - राजदेव मिश्र, पेज 31

40. 'अखण्डेषु कारणेषु फलावचः'- कस्य अलङ्कारस्य लक्षणम्

(A) विशेषोक्तेः (B) विभावनायाः
(C) समासोक्तेः (D) वक्रोक्तेः

व्याख्या- आचार्य मम्मटकृत काव्यप्रकाश के नवें उल्लास में शब्दालङ्कार और दसवें उल्लास में अर्थालङ्कारों का निरूपण किया गया है।

वक्रोक्ति- मम्मट ने वक्रोक्ति को शब्दालङ्कार के अन्तर्गत माना है जिसका लक्षण इस प्रकार है-

यदुक्तमन्यथावाक्यमन्यथाऽन्येन योज्यते।
श्लेषेण काक्वा वा ज्ञेया सा वक्रोक्तिस्तथा द्विधा॥

जो वक्ता द्वारा अन्य प्रकार से अन्य अर्थ में कहा हुआ वाक्य दूसरे के द्वारा श्लेष अर्थात् शब्द के दो अर्थ वाला होने से काकु अर्थात् बोलने के लहजे से, अन्य प्रकार से अर्थात् वक्ता के अभिप्राय से भिन्न अर्थ में लगा लिया जाता है, वह वक्रोक्ति नामक शब्दालङ्कार होता है। और वह उस प्रकार से श्लेष वक्रोक्ति और काकुवक्रोक्ति दो तरह का होता है।

उदाहरण-

गुरुजनपरतन्त्रतया दूरतरं देशमुद्यतो गन्तुम्।
अलिकुलकोकिलललिते नैष्यति सखि! सुरभि समयेऽसौ।

गुरुजनों (माता-पिता) के अधीन होने से (उनकी आज्ञा से) वे विदेश जाने को उद्यत हुए थे, उनकी इच्छा से नहीं इसलिए हे सखि, भ्रमरसमूह एवं कोकिलों की मधुर ध्वनि से मधुर वसन्त समय में नहीं लौटेंगे।

स्पष्टीकरण- यह नायिका और उसकी सखी के बीच की बातचीत है। नायिका ने निराशापूर्ण भाव से कहा है कि वे गुरुजनों के आज्ञाकारी हैं, उन्हें मेरी चिन्ता नहीं है, इसलिए वे वसन्त में लौटकर आयेंगे, यह आशा नहीं है। उसकी सखी इसी वाक्य को फिर भिन्नकण्ठध्वनि से बोलती है। तब नहीं आयेंगे का अर्थ अवश्य आवेंगे, यह हो जाता है। इसलिए यह काकुवक्रोक्ति का उदाहरण दिया है।

विशेषोक्ति- आचार्य मम्मट ने दसवें उल्लास में अर्थालङ्कारों के अन्तर्गत विशेषोक्ति, विभावना और समासोक्ति अलङ्कारों को रखा है।

विशेषोक्तिरखण्डेषु कारणेषु फलावचः।
सम्पूर्ण कारणों के होने पर फल का न कहना ही विशेषोक्ति है।
उदाहरण-
कर्पूर इव दग्धोऽपि शक्तिमान् यो जने जने।
नमोऽस्तु वार्यवीर्याय तस्मै मकरकेतवे॥
जो कामदेव कपूर के समान भस्म हो जाने पर भी जन-जन में शक्तिमान् हो गया है, उस अप्रत्याहत पराक्रमवाले कामदेव को नमस्कार है।
स्पष्टीकरण- यहाँ भस्म हो जाना शक्तिक्षय का कारण है। उसके विद्यमान होने पर भी कामदेव की शक्ति का क्षय नहीं हुआ है। यह कारण के होने पर भी कार्य के न होने से विशेषोक्ति अलङ्कार है।
विभावना-
क्रियायाः प्रतिषेधेऽपि फलव्यक्तिर्विभावना।
सम्पूर्ण कारणों के निषेध होने पर भी फल की उत्पत्ति (कहना) विभावना है।
उदाहरण-
कुसुमितलताभिरहताऽप्यधत्त रुजमलिकुलैरदष्टापि।
परिवर्त्तते स्म नलिनीलहरीभिरलोलिताप्यघूर्णत सा॥
स्पष्टीकरण- खिली हुई लताओं से ताडित न होने पर भी वह नायिका पीड़ा को प्राप्त हो रही थी, भ्रमर कुल से न काटे जाने पर भी तड़प रही थी और कमलिनियों से युक्त लहरों के चक्कर में पड़े बिना भी चक्कर खा रही थी।
यहाँ लताओं की चोट पीड़ा का हेतु हो सकती थी, भ्रमर का काटना तड़पने का और कमलिनियों की लहरों के चक्कर में फँस जाना चक्कर आने का कारण हो सकता था। परन्तु उन कारणों से निषेध होने पर भी कार्य को बताया गया। इसलिए विभावना अलङ्कार है।
समासोक्ति- परोक्तिर्भेदकैः श्लिष्टैः समासोक्तिः।
श्लेषयुक्त विशेषणों द्वारा अप्रकृत (के व्यवहार) का कथन 'समासेन संक्षेपेण उक्तिः' (दो अर्थों का संक्षेप से कथन होने के कारण) समासोक्ति अलङ्कार होता है।
उदाहरण-
लब्ध्वा तव बाहुस्पर्शं यस्याः स कोऽप्युल्लासः।
जयलक्ष्मीस्तव विरहे न खलूज्ज्वला दुर्बला ननु सा॥
तुम्हारे बाहु स्पर्श को पाकर जिसको वह कुछ अनिर्वचनीय प्रसन्नता होती है वह जयलक्ष्मी तुम्हारे वियोग में प्रसन्न नहीं है, निश्चय ही दुर्बल हो गयी है। यहाँ केवल विशेष्यवाचक जयलक्ष्मी शब्द कान्ता रूप अर्थ का वाचक नहीं है अपितु श्लेषयुक्त विशेषणों के द्वारा जयलक्ष्मी शब्द नायिका का बोधक भी है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'अखण्डेषु कारणेषु फलावचः' यह विशेषोक्ति का लक्षण है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**
स्त्रोत- काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज 498

41. 'शिखरिणि क्व नु नाम कियच्चिरं, किमभिधानमसावकरोत्तपः।' इत्यादि-श्लोकः ध्वन्यालोके उदाहरणरूपेण उल्लिखितः-
(A) अविवक्षितवाच्य-प्रसङ्गे
(B) अप्रस्तुतप्रशंसालङ्कारप्रसङ्गे
(C) विवक्षितान्यपरवाच्य-प्रसङ्गे
(D) दीपकालङ्कारप्रसङ्गे

व्याख्या- आचार्य आनन्दवर्धनकृत ध्वन्यालोक में चार उद्योत हैं। प्रथम उद्योत में ध्वनिकाव्य के भेद की चर्चा करते हैं-
स चाविवक्षितवाच्यो विवक्षितान्यपरवाच्यश्चेति द्विविधः सामान्येन।
वह (ध्वनि) सामान्यतः अविवक्षितवाच्य (लक्षणामूल) और विवक्षितान्यपरवाच्य (अभिधामूल) भेद से दो प्रकार का होता है। उनमें से प्रथम (अविवक्षितवाच्य, लक्षणामूल ध्वनि) का उदाहरण है-
उदाहरण-
सुवर्णपुष्पां पृथिवीं चिन्वन्ति पुरुषास्त्रयः।
शूरश्च कृतविद्यश्च यश्च जानाति सेवितुम्॥
सुवर्ण जिसका पुष्प है ऐसी पृथिवी का चयन अर्थात् पृथिवीरूप लता के सुवर्णरूप पुष्पों का चयन तीन ही पुरुष करते हैं- शूर, विद्वान् और जो सेवा करना जानता है।
दूसरे (विवक्षितान्यपरवाच्य, अभिधामूलध्वनि) का भी उदाहरण देते हैं-
शिखरिणि क्व नु नाम कियच्चिरं किमभिधानमसावकरोत्तपः।
सुमुखि येन तवाधरपाटलं दशति बिम्बफलं शुकशावकः॥
हे सुमुखि! इस शुकशावक ने किस पर्वत पर, कितने दिनों तक कौन सा तप किया है, जिसके कारण तुम्हारे अधर के समान रक्तवर्ण बिम्बफल को काट रहा है।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि शिखरिणि क्व नु-यह विवक्षितपरवाच्य, अभिधामूलध्वनि का उदाहरण है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**
स्त्रोत- ध्वन्यालोक – आचार्य विश्वेश्वर, पेज-56

42. कालक्रमानुसारं तालिकां चिनुत-
(i) अप्पयदीक्षितः (ii) भरतः (iii) विश्वनाथकविराजः (iv) वामनः

	क	ख	ग	घ
(a)	ii	iv	iii	i
(b)	ii	iv	i	iii
(c)	ii	i	iii	iv
(d)	i	ii	iv	iii

व्याख्या-

ग्रन्थकार	ग्रन्थ	काल
भरतमुनि	नाट्यशास्त्र	ई.पू. द्वितीय शताब्दी
भामह	काव्यालङ्कार	500 ई.
दण्डी	काव्यादर्श	सातवीं शताब्दी
उद्भट	काव्यालङ्कारसारसंग्रह	अष्टमशताब्दी का उत्तरार्ध
वामन	काव्यालङ्कारसूत्र	800-850 ई. लगभग
रुद्रट	काव्यालङ्कार	नवम शताब्दी का पूर्वार्द्ध
आनन्दवर्धन	ध्वन्यालोक	नवीं शताब्दी उत्तरार्ध
राजशेखर	काव्यमीमांसा	दशम शताब्दी
धनञ्जय/धनिक	दशरूपक	दशम शताब्दी का उत्तरार्ध
कुन्तक	वक्रोक्तिजीवितम्	एकादश शताब्दी का पूर्वार्द्ध
मम्मट	काव्यप्रकाश	1050 ई. (एकादश उत्तरार्ध)
आचार्य विश्वनाथ	साहित्यदर्पण	14वीं शताब्दी
अप्पयदीक्षित	कुवलयानन्द, चित्रमीमांसा	षोडश शताब्दी
पण्डितराज जगन्नाथ	रसगङ्गाधर	17वींशताब्दी का मध्यमान

कालक्रम- भरत-वामन-विश्वनाथ-अप्पयदीक्षित

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि भरतमुनि का काल ई.पू. द्वितीय शताब्दी, वामन का काल नवम शताब्दी, विश्वनाथ का काल 14वीं शताब्दी एवं अप्पयदीक्षित का काल 16वीं शताब्दी है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- काव्यप्रकाश-आचार्य विश्वेश्वर, पेज भू. 18,44,87,91

43. 'प्रारभ्यते न खुल विघ्नभयेन नीचैः, प्रारम्भ विघ्नविहताः विरमन्ति मध्याः।' मुद्राराक्षसे कस्येयमुक्तिः?

(A) विराधगुप्तस्य (B) चाणक्यस्य
(C) राक्षसस्य (D) चन्द्रगुप्तस्य

व्याख्या- विशाखदत्त द्वारा प्रणीत मुद्राराक्षस सात अङ्कों का नाटक है। जिसके द्वितीय अङ्क में विराधगुप्त राक्षस को समझाते हुए कहता है-

प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः
प्रारम्भविघ्नविहता विरमन्ति मध्याः।
विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः
प्रारब्धमुत्तम गुणास्त्वमिवोद्वहन्ति॥ (2/17)

राक्षस के द्वारा चन्द्रगुप्त को मारने के लिए बनाई गई अपनी योजनाओं के पूर्णरूप से असफल हो जाने पर उसका गुप्तचर विराधगुप्त उसे समझाते हुए कहता है कि- निस्सन्देह विघ्नों के भय से नीच मनुष्यों के द्वारा कार्य प्रारम्भ नहीं किया जाता। मध्यम श्रेणी के मनुष्य प्रारम्भ करके विघ्नों से प्रताड़ित किए जाने पर छोड़ देते हैं। परन्तु विघ्नों के द्वारा बार-बार प्रताड़ित किए जाने पर भी उत्तम पुरुष प्रारम्भ किये हुए कार्य को नहीं छोड़ते। यह श्लोक नीतिशतकम् में भी प्राप्त होता है। इस श्लोक में तीन श्रेणी के लोगों का वर्णन किया गया है- अधम, मध्यम और उत्तम। प्रथम अङ्क में सभा की प्रशंसा करते हुए सूत्रधार कहता है कि

* **चीयते बालिशस्यापि सत्क्षेत्रपतिता कृषिः।**
न शालेः स्तम्बकरिता वप्तुर्गुणमपेक्षते॥ (1/3)

एक मूर्ख की भी उपजाऊ भूमि पर बोई गई खेती वृद्धि को प्राप्त होती है। धान की सघनता बोने वाले के गुणों को नहीं देखती।

* **अत्यादरः शङ्कनीयः। (प्रथम अङ्क)**

चन्दनक का कथन- अत्यधिक आदर शंका उत्पन्न करता है।

* **पुरन्ध्रीणां प्रज्ञा पुरुषगुणविज्ञानविमुखी॥ (2/7)**

राक्षस का कथन- स्त्रियों की चञ्चल बुद्धि स्वभाव से मनुष्य के गुणों को पहचानने में विमुख होती है।

* **भव्यं रक्षति भवितव्यता। (द्वितीय अङ्क)**

विराधगुप्त राक्षस से कहता है- भाग्य भावी की रक्षा करता है।

* **'दैवमविद्वान्सः प्रमाणयन्ति'। (तृतीय अङ्क)**

चाणक्य का कथन- भाग्य को मूर्ख लोग मानते हैं।

* **श्रीर्लब्धप्रसरेव वेशवनिता दुःखोपचर्या भृशम् (3/5)**

चन्द्रगुप्त मन ही मन सोचता है- आश्चर्य है कि राजलक्ष्मी अतिप्रसिद्ध वाराङ्गना की भाँति अत्यन्त कष्ट से आराध्य होती है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से ज्ञात होता है कि प्रारभ्यते न खलु .... यह सूक्ति मुद्राराक्षस ग्रन्थ में विराधगुप्त का कथन है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- मुद्राराक्षसम् - परमेश्वरदीन पाण्डेय, पेज 118

44. 'सिद्धिर्भ्रान्तिर्नास्ति सत्यं तथापि, स्वेच्छाचारी भीत एवास्मि भर्तुः' इत्युक्तिः रत्नावल्यां केन सम्बद्धा ?

(A) उदयनेन (B) वसन्तकेन
(C) बाभ्रव्येण (D) यौगन्धरायणेन

व्याख्या- महाकवि हर्ष द्वारा प्रणीत चार अङ्कों वाली रत्नावली नाटिका के प्रथम अङ्क में उदयन का प्रधानमन्त्री यौगन्धरायण कहता है कि-

* **प्रारम्भेऽस्मिन्स्वामिनो वृद्धिहेतौ दैवेनेत्थं दत्तहस्तावलम्बे। सिद्धेर्भ्रान्तिर्नास्ति सत्यं तथापि, स्वेच्छाचारी भीत एवास्मि भर्तुः॥ (1/7)**

स्वामी के चक्रवर्ती पद रूप अभ्युदय के कारणभूत इस कार्य में भाग्य के द्वारा इस तरह का हाथ का सहारा देने पर सफलता के

विषय में सन्देह नहीं करने वाला मैं स्वामी से डर रहा हूँ।

उदयन का कथन-

* **अचिन्त्यो हि मणिमन्त्रौषधीनां प्रभावः।**

रत्नावली के द्वितीय अङ्क में राजा उदयन कहते हैं कि मणि, मन्त्र और ओषधियों का प्रभाव अचिन्तनीय हुआ करता है। विदूषक राजा उदयन से द्वितीय अङ्क में कहता है कि-

* **सखि अतोऽपि मेऽधिकतरं सन्तापो वर्धते।**

सखि इससे भी मेरा सन्ताप अधिक बढ़ रहा है।

* **दुर्लभजनानुरागो लज्जा गुर्वी परवश आत्मा।**
प्रियसखि विषमं प्रेम मरणं शरणं न वरमेकम्।। (2/7)

विदूषक वसन्तक अपने मित्र राजा उदयन से कहता है कि- इसने (सारिका ने) यह कहा है। दुर्लभ व्यक्ति के प्रति प्रेम है। भारी लज्जा है। अपना शरीर दूसरे के अधीन है। प्रिय सखि, इस तरह प्रेम सङ्कटों से भरा हुआ है। अतः मेरे लिये अब केवल मृत्यु ही सबसे अच्छा उपाय है।

बाभ्रव्य-

* **हा दैव, किमिदमकारणमेव भरतकुलं संशयतुलामारोपितम्।** (चतुर्थ अङ्क)

राजा उदयन का कञ्चुकी बाभ्रव्य है यह चतुर्थ अङ्क में कहता है कि- हे विधाता! क्यों अकारण ही भरतवंश को संशयतुला (सन्देहरूपी तराजू) पर चढ़ा दिया ?

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'सिद्धेर्भ्रान्तिर्नास्ति सत्यं तथापि-' यह सूक्ति यौगन्धरायण के द्वारा कही गयी है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- रत्नावली (1.7) - श्रीकृष्ण त्रिपाठी, पेज 12

45. दशरूपकानुसारं- बीजवन्तो मुखाद्यर्था विप्रकीर्णा यथायथम्। ऐकार्थ्यमुपनीयन्ते इत्यादि लक्षणं भवति-
(A) मुखसन्धेः (B) गर्भसन्धेः
(C) निर्वहणसन्धेः (D) प्रतिमुखसन्धेः

व्याख्या- धनञ्जय और धनिक द्वारा प्रणीत दशरूपक के प्रथम प्रकाश में पञ्चसन्धियों की चर्चा की गयी है-

मुखप्रतिमुखे गर्भः सावमर्शोपसंहृतिः।

मुख, प्रतिमुख, गर्भ, सावमर्श और उपसंहृति।

मुखसन्धि-

मुखं बीजसमुत्पत्तिर्नानार्थरससम्भवा।
अङ्गानि द्वादशैतस्य बीजारम्भसमन्वयात्।। (1/24)

जहाँ अनेक प्रकार के प्रयोजन और रस को निष्पन्न करने वाली बीजोत्पत्ति होती है, वह मुखसन्धि है। बीज और आरम्भ से मिलकर इसके 12 अङ्ग होते हैं।

बारह अङ्गों के नाम- 1. उपक्षेप 2. परिकर 3.परिन्यास 4. विलोभन 5. युक्ति 6. प्राप्ति 7. समाधान 8. विधान 9. परिभावना 10. उद्भेद 11. भेद 12. करण।

(2) प्रतिमुखसन्धि-

लक्ष्यालक्ष्यतयोद्भेदस्तस्य प्रतिमुखं भवेत्।
बिन्दुप्रयत्नानुगमादङ्गान्यस्य त्रयोदश।। (1/30)

जहाँ उस बीज का कुछ लक्ष्य रूप में और कुछ अलक्ष्य रूप में उद्भेद होता है वह प्रतिमुख सन्धि कहलाती है। बिन्दु + प्रयत्न से मिलकर इसके तेरह अंग होते हैं।

तेरह अङ्ग- 1. विलास 2. परिसर्प 3. विधूत 4. शम 5. नर्म 6. नर्मद्युति 7. प्रगमन 8. निरोध 9. पर्युपासन 10. वज्र 11. पुष्प 12. उपन्यास 13. वर्णसंहार।

(3) गर्भसन्धि-

गर्भस्तु दृष्टनष्टस्य बीजस्यान्वेषणं मुहुः।
द्वादशाङ्गः पताका स्यान्न वा स्यात्प्राप्तिसम्भवः।। (1/36)

जहाँ दिखलाई देकर खोये हुए बीज का बार-बार अन्वेषण किया जाता है वह गर्भसन्धि है। इसमें पताका कहीं होती है कहीं नहीं भी होती, किन्तु प्राप्त्याशा नाम की कार्यावस्था होती ही है। इसके बारह अङ्ग हैं।

बारह अङ्ग- 1. अभूताहरण 2. मार्ग 3. रूप 4. उदाहरण 5. क्रम 6. संग्रह 7. अनुमान 8. तोटक 9. अधिबल 10. उद्वेग 11. संभ्रम 12. आक्षेप।

(4) अवमर्शसन्धि-

क्रोधेनावमृशेद्यत्र व्यसनाद्वा विलोभनात्।
गर्भनिर्भिन्नबीजार्थः सोऽवमर्श इति स्मृतः।। (1/43)

जहाँ क्रोध से, व्यसन से अथवा प्रलोभन से विमर्श किया जाता है तथा जिसमें गर्भसन्धि द्वारा निर्भिन्नबीजार्थ का सम्बन्ध दिखलाया जाता है वह अवमर्श सन्धि है।

तेरह अङ्ग- 1. अपवाद 2. संफेट 3. विद्रव 4. द्रव 5. शक्ति 6. द्युति 7. प्रसङ्ग 8. छलन 9. व्यवसाय 10. विरोधन 11. प्ररोचना 12. विचलन 13. आदान।

निर्वहणसन्धि-

बीजवन्तो मुखाद्यर्था विप्रकीर्णा यथायथम्।
ऐकार्थ्यमुपनीयन्ते यत्र निर्वहणं हि तत्।। (1/48)

जहाँ बीज से सम्बन्ध रखने वाले मुख सन्धि आदि में अपने-अपने स्थान पर बिखरे हुए अर्थों को एक मुख्य प्रयोजन के साथ दिखलाया जाता है वह निर्वहण सन्धि कहलाती है।

चौदह अङ्ग- 1. सन्धि 2. विबोध 3. ग्रथन 4. निर्णय 5. परिभाषण 6. प्रसाद 7. आनन्द 8. समय 9. कृति 10. भाषा

11. उपगूहन 12. पूर्वभाव 13. उपसंहार 14. प्रशस्ति।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि दशरूपक में सन्धियाँ पाँच होती हैं। बीजवन्तो मुखाद्यर्था....यह निर्वहण सन्धि का लक्षण है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- दशरूपक - श्रीनिवास शास्त्री, पेज 81

46. प्रशंसात उन्मुखीकरणं दशरूपके कस्य लक्षणं भवति?

(A) भारत्याः (B) वीथ्याः
(C) प्ररोचनायाः (D) प्रहसनस्य

व्याख्या- आचार्य विश्वनाथ कृत साहित्यदर्पण के षष्ठ परिच्छेद में जिसमें दृश्य, श्रव्य काव्यों का निरूपण किया है-

भारती –

भारती संस्कृतप्रायो वाग्व्यापारो नराश्रयः। (6/29)
तस्याः प्ररोचना वीथी तथा प्रहसनामुखे।

संस्कृत बहुल वाग्व्यापार, जो नर के ही आश्रय हो, नारी के नहीं, उसे भारती कहते हैं। भारती के चार अङ्ग होते हैं-

1. प्ररोचना 2. वीथी 3. प्रहसन 4. आमुख।

प्ररोचना- अंगान्यत्रोन्मुखीकारः प्रशंसातः प्ररोचना। (6/30)

प्रशंसा के द्वारा श्रोताओं को प्रकृत वस्तु की ओर आकर्षित करना प्ररोचना कहलाता है।

उदाहरण- रत्नावली में श्रीहर्ष इत्यादि।

वीथी-

वीथ्यामेको भवेदङ्कः कश्चिदेकोऽत्र कल्प्यते।
आकाशभाषितै रूक्तैश्चित्रां प्रत्युक्तिमाश्रितः॥
सूचयेद् भूरिशृङ्गारं किंचिदन्यान् रसान्प्रति।
मुखनिर्वहणे संधी अर्थप्रकृतयोऽखिलाः॥ (6/254)

वीथी में एक ही अङ्क होता है और कोई एक पुरुष उत्तम-मध्यम या अधम नायक कल्पित कर लिया जाता है। आकाशभाषित के द्वारा विचित्र युक्ति प्रत्युक्ति होती है। शृङ्गार की बहुलता रहती है। इसमें मुख और निर्वहण सन्धियाँ होती हैं। अर्थप्रकृतियाँ सब रहती हैं। शृङ्गार की अधिकता के कारण कैशिकी वृत्ति प्रधान रहती है।

प्रहसन-

भाणवत्संधिसन्ध्यंगलास्यांगाङ्कैर्विनिर्मितम्।
भवेत्प्रहसनं वृत्तं निन्द्यानां कविकल्पितम्॥ (सा.द. 6/264)

भाण के समान सन्धि, सन्ध्यङ्ग, लास्याङ्ग और अङ्कों के द्वारा सम्पादित, निन्दनीय पुरुषों का कवि-कल्पित वृत्तान्त प्रहसन कहलाता है। इसमें न आरभटी होती है, न विष्कम्भक और न प्रवेशक। इसमें हास्यरस प्रधान रहता है। वीथ्यङ्ग कहीं होते हैं कहीं नहीं भी होते।

आमुख (प्रस्तावना)-

नटी विदूषको वापि पारिपार्श्विक एव वा सूत्रधारेण सहिताः संलापं यत्र कुर्वते।
चित्रैर्वाक्यैः स्वकार्योत्थैः प्रस्तुताक्षेपिभिर्मिथः।
आमुखं तत्तु विज्ञेयं नाम्ना प्रस्तावनाऽपि सा॥ (6/31)

जहाँ नटी, विदूषक अथवा पारिपार्श्विक सूत्रधार के साथ अपने कार्य के विषय में विचित्र वाक्यों से इस प्रकार बातचीत करें, जिससे प्रस्तुत कथा का सूचन हो जाय उसे आमुख कहते हैं और उसी का नाम प्रस्तावना भी है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'प्रशंसात उन्मुखीकरणं' यह 'प्ररोचना' का लक्षण है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- साहित्यदर्पण - शालिग्राम शास्त्री, पेज 175

47. तर्कसंग्रहदीपिकानुसारं 'परमाणुष्वेव पाको, न द्व्यणुकादावपीति केषाम्मते ?

(A) नैयायिकानाम् (B) वैशेषिकानाम्
(C) साङ्ख्यानाम् (D) वेदान्तिनाम्

व्याख्या- न्यायवैशेषिक के प्रकरणग्रन्थ तर्कसंग्रह की अन्नम्भट्टकृत तर्कसंग्रहदीपिका टीका में 24 गुणों में 'रूप' गुण की व्याख्या में 'पाक' की चर्चा आती है-

* वैशेषिकों के मत में-**'परमाणुष्वेव पाकः न द्व्यणुकादौ' इति पीलुपाकवादिनो वैशेषिकाः**

पृथ्वी में रूप, रस, गन्ध और स्पर्श ये चारों गुण पाक द्वारा उत्पन्न होते हैं, अतः अनित्य हैं। अन्यत्र ये अपाकज हैं और नित्य तथा अनित्य दोनों प्रकार के होते हैं। ये नित्य पदार्थों में नित्य तथा अनित्य में अनित्य हैं।

* 'पिठरपाकवादिनो नैयायिकाः'- नैयायिकों को पिठरपाकवादी माना जाता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि परमाणुष्वेव पाको, न द्व्यणुकादावपि यह वैशेषिकों का मत है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- तर्कसंग्रह - गोविन्दाचार्य, पेज 92

48. तर्कसंग्रहानुसारम् आत्ममात्रविशेषगुणेषु कस्य परिगणनं नास्ति ?

(A) बुद्धेः
(B) इच्छायाः
(C) स्थिति-स्थापकसंस्कारस्य
(D) धर्मस्य

व्याख्या- अन्नम्भट्टकृत तर्कसंग्रह में 24 गुणों की चर्चा की

गयी है, जिसमें 'बुद्धि' नामक गुण का लक्षण करते हुए कहते हैं- सर्वव्यवहारहेतुर्ज्ञानं बुद्धिः (सम्पूर्ण व्यवहारों का जो कारण गुण है उसे ज्ञान अर्थात् बुद्धि कहते हैं-

बुद्ध्यादयोऽष्टावात्ममात्रविशेषगुणाः। बुद्धीच्छाप्रयत्ना द्विविधाः नित्या अनित्याश्च। नित्या ईश्वरस्य अनित्या जीवस्य।

बुद्धि, सुख, दुःख, इच्छा,द्वेष, प्रयत्न, धर्म और अधर्म ये आठ केवल आत्मा में रहने वाले विशेष गुण हैं। उनमें बुद्धि, इच्छा और प्रयत्न ये तीन नित्य और अनित्य होते हैं। ये ईश्वर में नित्य होते हैं और जीव में अनित्य हैं।

संस्कारस्त्रिविधः वेगो भावना स्थितिस्थापकश्चेति।

वेगः पृथिव्यादिचतुष्टयमनोवृत्तिः।

वेग, भावना और स्थितिस्थापक के भेद से संस्कार तीन प्रकार का होता है और यह वेग, पृथिवी, जल, तेज, वायु और मन में रहता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि **विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- तर्कसंग्रह - गोविन्दाचार्य, पेज 267, 303

49. तर्कभाषानुसारं प्रमायाः करणं किम्भवति ?

(A) प्रमाता (B) प्रमेयम्
(C) तर्कः (D) इन्द्रियसंयोगादिः

व्याख्या- न्यायदर्शन के प्रकरणग्रन्थ तर्कभाषा में आचार्य केशवमिश्र षोडश पदार्थों में प्रथम परिगणित 'प्रमाण' पदार्थ का लक्षण करते हैं- 'प्रमाकरणं प्रमाणम्' अर्थात् प्रमा का करण प्रमाण है।

* यहाँ प्रमा की परिभाषा है- 'यथार्थानुभवः प्रमा' यथार्थ अनुभव का नाम प्रमा है।
* 'करण' का लक्षण करते हैं- 'साधकतमं करणम्' साधकतम को 'करण' कहते हैं।
* प्रमा के करण तो प्रमाता, प्रमेय आदि बहुत से होते हैं, तो क्या वे सभी प्रमा के करण होते हैं अथवा नहीं-?

इसके उत्तर में केशवमिश्र कहते हैं—प्रमाता और प्रमेय के होने पर भी इन्द्रियसन्निकर्ष सम्बन्ध के बिना प्रमा की उत्पत्ति नहीं होती, किन्तु इन्द्रियसंयोगादि के होने पर शीघ्र ही 'प्रमा' की उत्पत्ति होती है। इसलिए इन्द्रियसंयोगादि ही 'प्रमा' का कारण है—

''सत्यपि प्रमातरि प्रमेये च प्रमानुत्पत्तेरिन्द्रियसंयोगादौ सति अविलम्बेन प्रमोत्पत्तेरत इन्द्रियसंयोगादिरेव करणम्''

अतः इन्द्रियसंयोगादि ही प्रमा का करण होने से उसी को प्रमाण कहा जाता है—

''अत इन्द्रियसंयोगादिरेव प्रमाकरणत्वात् प्रमाणं न प्रमात्रादि–''

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि इन्द्रियसंयोगादि ही प्रमा का करण है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज 68, 69, 70

50. व्याप्यस्य पक्षवृत्तित्वधीः किमुच्यते ?

(A) पक्षता (B) सपक्षः
(C) परामर्शः (D) व्याप्तिः

व्याख्या- परामर्श- ''व्याप्यस्य पक्षवृत्तित्वधीः परामर्श उच्यते'' साध्य के व्याप्य का पक्ष में रहने का जो ज्ञान है उसी को परामर्श कहते हैं।

व्याप्ति- व्याप्तिः साध्यवदन्यस्मिन्नसम्बन्ध उदाहृतः।।

साध्य (जो हेतु के द्वारा अनुमेय है, जैसे वह्नि आदि) से युक्त भिन्न वस्तु में हेतु (धूम आदि) का सम्बन्ध न होना व्याप्ति कहा जाता है।

पक्ष- सिषाधयिषया शून्या सिद्धिर्यत्र न विद्यते।
स पक्षस्तत्र वृत्तित्वज्ञानादनुमितिर्भवेत्।।

साधन (अनुमान) करने की इच्छा से शून्य सिद्धि जहाँ नहीं है, वह पक्ष कहलाता है। उसमें वृत्तित्व के ज्ञान से अनुमिति होती है।

अन्नम्भट्ट के अनुसार- पक्ष, सपक्ष और विपक्ष की परिभाषा इस प्रकार है—

पक्ष- 'सन्दिग्धसाध्यवान् पक्षः' सन्दिग्ध साध्य वाला 'पक्ष' कहलाता है।

जैसे- धूमकत्व हेतु में पर्वत। क्योंकि पर्वत में धुएँ को उठते हुए देखकर व्यक्ति को उसमें अग्नि होने का सन्देह हुआ। अतः इस स्थिति में पर्वत यहाँ 'पक्ष' संज्ञा वाला होगा।

सपक्ष- 'निश्चितसाध्यवान् सपक्षः'- निश्चितरूप से साध्य वाला सपक्ष होता है।

जैसे- रसोई घर क्योंकि अग्नि और धूम के साहचर्य को सिद्ध करने के लिए अग्नि साध्य होगा, जिसकी रसोई घर में स्थिति अनिवार्यतः देखने को मिलती है। अतः महानस अर्थात् रसोईघर इस उदाहरण में सपक्ष संज्ञा वाला कहा जायेगा।

विपक्ष- 'निश्चितसाध्याऽभाववान् विपक्षः' साध्यरूप अग्नि के निश्चितरूप से अभाव वाला ही विपक्ष होता है।

जैसे- जलाशय को अग्नि के अभाव के उदाहरण रूप में निश्चयपूर्वक प्रस्तुत किया जा सकता है, क्योंकि जलाशय में अग्नि का पूर्णतया अभाव होता है। अतः वह धूमाग्नि सिद्धि उदाहरण में विपक्ष कहा जायेगा।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'व्याप्यस्य पक्षवृत्तित्वधीः परामर्श उच्यते'। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- न्यायसिद्धान्तमुक्तावली (अनुमानखण्ड), गणेशदत्त शास्त्रिशुक्लः, पेज 03

51.'मही मित्रस्य वरुणस्य माया चन्द्रेव भानुं विदधे पुरुत्रा' इति मन्त्रांशो वर्तते-
(A) उषस्सूक्ते (B) कालसूक्ते
(C) वरुणसूक्ते (D) पर्जन्यसूक्ते

व्याख्या- उषस् सूक्त ऋग्वेद के मण्डल 3, सूक्त 61 है। इसके ऋषि विश्वामित्र, देवता उषस् हैं। छन्द त्रिष्टुप् है।

उषस् सूक्त-

* **ऋतस्य बुध्न उषसामिषण्यन्वृषा मही रोदसी आ विवेश। मही मित्रस्य वरुणस्य माया चन्द्रेव भानुं विदधे पुरुत्रा॥**
(उषस् सूक्त मं.-7)

वर्षा करने वाले सूर्य प्राकृतिक नियमों के अथवा अग्निहोत्र आदि नियमों के ज्ञापक सत्यभूत दिन के मूल में उषा को प्रेरित करता हुआ महान् द्युलोक और पृथ्वीलोक में सब ओर प्रविष्ट हो गया। मित्र देवता और वरुण देवता की महती माया अर्थात् विचित्र शक्ति-रूपा उषा देवी सुनहरी कान्ति के समान स्वर्णिम सूर्य को बहुत स्थानों में प्रसारित करती है।

* **अव स्यूमेव चिन्वती मघोन्युषा याति स्वसरस्य पत्नी (उषस् सू. मं.** 4)

धन सम्पत्तिशालिनी सूर्य की या दिन की पत्नी होती हुई यह उषा देवी वस्त्र के समान आच्छादित करने वाले अन्धकार का विनाश करती हुई अथवा अपने वस्त्र से अन्धकार को फेंकती हुई चली जाती है।

* **ऋतावरी दिवो अर्कैरबोध्या रेवती रोदसी चित्रमस्थात्। (उषस् सूक्त मं.-6)**

सत्य से युक्त अथवा सत्य नियमों का पालन कराने वाली उषा देवी द्युलोक से आने वाले अपने तेज पुञ्ज से जानी जाती है।

वरुणसूक्त-

वेद मासो धृतव्रतो द्वादश प्रजावतः। वेदा य उपजायते॥

कर्मविशेष को स्वीकार करने वाला अर्थात् अपने अधिकृत कर्तव्य का पालन करने वाला वह वरुण देवता उत्पन्न होने वाली प्रजा से युक्त अथवा दिनों समेत चैत्र से लेकर फाल्गुन तक बारहों महीनों को जानता है और जो तेरहवाँ मास उत्पन्न हो जाता है, उसको भी वह जानता है।

निषसाद धृतव्रतो वरुणः पस्त्याश्३स्वा। साम्राज्याय सुक्रतुः॥ (मन्त्र -10)

अपने स्वीकृत नियमों का पालन करने वाले और श्रेष्ठ कर्मों को करने वाले वरुण देवता प्रजा के साम्राज्य की सिद्धि के लिए दिव्य प्रजाओं में आकर अधिष्ठित हुए हैं।

पर्जन्यसूक्त-

यत्पर्जन्य कनिक्रदत् स्तनयन् हंसि दुष्कृतः।
प्रतीदं विश्वं मोदते यत्किं च पृथिव्यामधि॥ (म. 09)

हे पर्जन्य! जब तुम अत्यधिक शब्द करते हुये और गरजते हुए दुष्टों को मारते हो, यह सारा संसार और जो कुछ भी इस पृथिवी पर है,प्रसन्न हो जाता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि ''मही मित्रस्य वरुणस्य माया चन्द्रेव भानुं विदधे पुरुत्रा'' यह मन्त्रांश उषस् सूक्त से सम्बद्ध है। **अतः विकल्प A सही है।**

स्रोत- ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्त शास्त्री, पेज 241

52. ऋग्वेदीय- पर्जन्यसूक्तस्य कः ऋषिरस्ति ?
(A) विश्वामित्रः (B) गौतमः
(C) अत्रिः (D) कण्वः

व्याख्या-

सूक्त	मण्डल/सूक्त	ऋषि	देवता	मंत्रसंख्या
अक्षसूक्त	10-34	कवष ऐलूष	अक्षकृषि प्रशंसा	14
पुरुषसूक्त	10-90	नारायण	पुरुष	16
हिरण्यगर्भसूक्त	10-121	हिरण्यगर्भ	क संज्ञक प्रजापति	10
वाक्सूक्त	10-125	वाक्	परमात्मा	08
नासदीयसूक्त	10-129	परमेष्ठी	सृष्टि-स्थिति-प्रलय कर्ता परमात्मा	07
अग्निसूक्त	1-1	मधुच्छन्दा	अग्नि	09
वरुणसूक्त	1-25	शुनःशेप	वरुण	21
सूर्यसूक्त	1-115	कुत्स	सूर्य	06
इन्द्रसूक्त	2-12	गृत्समद	इन्द्र	15
उषस् सूक्त	3-61	विश्वामित्र	उषस्	07
पर्जन्यसूक्त	5-83	अत्रि	पर्जन्य	10
यम-यमी संवाद	10-10	यमी वैवस्वती यम वैवस्वत	यमी वैवस्वती यम वैवस्वत	14
पुरूरवा उर्वशी संवाद	10-95	पुरूरवा ऐल उर्वशी	उर्वशी पुरूरवा	14
सरमा पणिसंवाद	10-108	पणि, सरमा	सरमा, पणि	11
विश्वामित्र नदी संवाद	3.33	विश्वामित्र	नदियाँ विपाट्/शुतुद्री	13

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि पर्जन्यसूक्त के ऋषि 'अत्रि' हैं। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- ऋक्सूक्त संग्रह - हरिदत्त शास्त्री, पेज 283

53. यजुर्वेदीय शिवसंकल्पमन्त्राणां का देवता ?

(A) मनस् (B) शिवः
(C) संकल्पः (D) विष्णुः

व्याख्या-

सूक्त	ऋषि	देवता	छन्द	मन्त्र
शिवसंकल्पसूक्त (यजुर्वेद)	याज्ञवल्क्य	मनस्	त्रिष्टुप्	06
पृथिवीसूक्त (12.1) (अथर्ववेद)	अथर्वा	भूमि	त्रिष्टुप्, जगती, पंक्ति	63
कालसूक्त (अथर्ववेद)	भृगु	काल	त्रिष्टुप्	10
राष्ट्राभिवर्धनसूक्त वशिष्ठ (अथर्ववेद)	वशिष्ठ	ब्रह्मणस्पति अभीवर्तमणि	अनुष्टुप्	6
ज्ञानसूक्त (10/7)	बृहस्पति	परब्रह्मज्ञान	9वें में जगती शेष में त्रिष्टुप्	11

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि यजुर्वेदीय शिवसंकल्पमन्त्र के देवता 'मनस्' है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- वैदिक सूक्तसंग्रह - विजयशङ्कर पाण्डेय, पेज 51

54. ऋग्वेदप्रातिशाख्यानुसारं रक्त-संज्ञका के सन्ति ?

(A) कण्ठ्यवर्णाः (B) अयोगवाहाः
(C) निरनुनासिकवर्णाः (D) अनुनासिकवर्णाः

व्याख्या- रक्तसंज्ञा

* **रक्तसंज्ञोऽनुनासिकः-** अनुनासिक वर्ण रक्तसंज्ञक हैं।
जैसे- ङ, ञ, ण, न, म।

* **समानाक्षरसंज्ञा-** अष्टौ समानाक्षराण्यादितः।
आदि अर्थात् प्रारम्भ के आठ अक्षरों की समानाक्षर संज्ञा है।
उदाहरण- अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ।

* **सन्ध्यक्षरसंज्ञा-** 'ततश्चत्वारि सन्ध्यक्षराण्युत्तराणि।'
तत्पश्चात् आगे वाले चार अक्षर सन्ध्यक्षर हैं।
उदाहरण- ए, ओ, ऐ, औ।

* **संयोगसंज्ञा-** संयोगस्तु व्यञ्जनसंनिपातः।
व्यञ्जन वर्णों का मेल (सन्निपात) संयोग संज्ञा है। यथा- प्रप्रवस्त्रिष्टुभमिषम्।

* **प्रगृह्यसंज्ञा-** ओकार आमन्त्रितजः प्रगृह्यः।
सम्बोधन (आमन्त्रित) से उत्पन्न अर्थात् सम्बोधन पद के अन्त में विद्यमान ओकार प्रगृह्य संज्ञक होता है।
यथा- (i) इन्दो इति (i) विष्णो इति

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि रक्तसंज्ञक अनुनासिक वर्ण होते हैं। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- ऋग्वेद प्रातिशाख्यम् - वीरेन्द्र कुमार वर्मा, पेज 69

55. 'तिस्र एव देवताः' इति कथनमस्ति ?

(A) निरुक्ते दैवतकाण्डे
(B) ऋक्प्रातिशाख्ये
(C) निरुक्ते द्वितीयेऽध्याये
(D) अथर्ववेदे राष्ट्राभिवर्धनसूक्ते

व्याख्या- यास्क प्रणीत निरुक्त निघण्टु ग्रन्थ की व्याख्या है। यह निघण्टु ग्रन्थ पाँच अध्याय और तीन काण्डों में विभाजित है। प्रथम तीन अध्याय 'नैघण्टुक काण्ड' कहलाते हैं। चौथा अध्याय ऐकपदिक या 'नैगमकाण्ड' कहा जाता है और पाँचवा अध्याय दैवतकाण्ड है।

दैवतकाण्ड- निघण्टु के शब्दों को तीन भागों में बाँटा गया है। एक तो वे शब्द जो वेदों में प्रधानरूप से स्तुत देवताओं के नाम है। इन शब्दों को दैवत कहते हैं।

नैगमकाण्ड- दूसरे वे शब्द जो अनेकार्थक हैं। अर्थात् जिनमें यह स्पष्ट नहीं है कि यह शब्द किस धातु से, किस प्रत्यय से मिलकर बना है उनका नाम ऐकपदिक या नैगम है।

नैघण्टुक काण्ड- पर्याय शब्द अथवा एकार्थक अनेक शब्द और एकार्थक अनेक धातु, इनका नाम निघण्टु ही रहने दिया। प्राचीन काल में शब्दसंग्रहरूप कोशग्रन्थों को निघण्टु कहा करते थे। यह पञ्चाध्यायात्मक उपर्युक्त निघण्टु ग्रन्थ भी वैदिक शब्दों का छोटा सा संग्रह कोष है।

* यास्क निरुक्त के सप्तम अध्याय के द्वितीयपाद के दैवतकाण्ड में देवता की चर्चा करते हुए कहते हैं-

* **तिस्र एव देवता इति नैरुक्ताः। 'अग्निः पृथिवीस्थानः वायुर्वेन्द्रो वान्तरिक्षस्थानः। सूर्यो द्युस्थानः।'**

तीन ही देवता हैं- पहला अग्नि जो कि पृथिवीस्थानीय है दूसरा वायु अथवा विद्युदाख्य इन्द्र और तीसरा द्युस्थानीय सूर्य है।

* ऋग्वेद में इनकी संख्या तीन ही बताई गई है। वास्तव में उक्त देवता तत्तत् स्थानों के प्रतिनिधि देवता हैं, यही नैरुक्तों की मान्यता है।

* देवता की संख्या विभिन्न दृष्टियों से भिन्न-भिन्न हो सकती है। यहाँ स्थान को आधार बनाकर उनकी संख्या को निश्चित करने का प्रयास किया गया है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से ज्ञात होता है कि निरुक्त के अनुसार देवताओं की संख्या तीन है। 'तिस्र एव देवता' यह निरुक्त के दैवतकाण्ड में है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज 280

56. जन्मादयो विकाराः ब्रह्मणः कां शक्तिमुपाश्रिताः भवन्ति
(A) आवरणशक्तिम्
(B) आध्यात्मिकीं शक्तिम्
(C) कालशक्तिम्
(D) भिन्नात्मिकां शक्तिम्

व्याख्या- भर्तृहरिकृत वाक्यपदीय के आदिम ब्रह्मकाण्ड में सर्वप्रथम शब्दतत्त्व की नित्यता को दर्शाते हुए उससे ही नामरूपात्मक जगत् की उत्पत्ति मानी गई है। प्रथम श्लोक में कहा गया है-

अनादिनिधनं ब्रह्म शब्दतत्त्वं यदक्षरम्।
विवर्ततेऽर्थभावेन प्रक्रिया जगतो यतः॥1॥

जो उत्पत्ति और विनाश से रहित कभी क्षीण न होने वाला अविनाशी ब्रह्म परमेश्वर अथवा वेद है, वही शब्दतत्त्व और अर्थ का मूल शब्दब्रह्म कहलाता है।

ब्रह्म की किन शक्तियों से जन्मादि षड्विकार उत्पन्न होते हैं, उसको बताते हैं-

अध्याहित कला यस्य कालशक्तिमुपाश्रिताः।
जन्मादयो विकाराः षड्भावभेदस्य योनयः॥3॥

जिस ब्रह्म की अविनाशी शक्तियाँ समय की शक्ति को प्राप्त हुई, उसी से पैदा होना, अस्तित्व में आना, बढ़ना परिवर्तन होना, अपक्षय होना ये षड्विकार उत्पन्न होने वाली वस्तुओं के रूपान्तर पदार्थों के भेद-प्रभेदों के कारण हुआ करते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि 'जन्मादयो विकाराः ब्रह्मणः कालशक्तिमुपाश्रिताः' है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- वाक्यपदीयम् (1/3) - शिवशङ्कर अवस्थी, पेज 58

57. अत्रातीतविपर्यासः केवलामनुपश्यति।
छन्दस्यश्छन्दसां योनिमात्मा छन्दोमयीं तनुम्॥
अस्यां कारिकायाम् 'छन्दस्यः' इत्यस्य शब्दस्य कोऽर्थः?
(A) वेदार्थग्रहणसमर्थः
(B) स्वतन्त्रः
(C) वैदिकछन्दसां निर्माता
(D) वैदिकछन्दसां प्रयोगे निष्णातः

व्याख्या- भर्तृहरिकृत वाक्यपदीयम् के ब्रह्मकाण्ड में कहा गया है-

अत्रातीतविपर्यासः केवलामनुपश्यति।
छन्दस्यः छन्दसां योनिमात्मा छन्दोमयीं तनुम्॥1/17॥

(अत्र) इस व्याकरण में (अतीतविपर्यासः) शब्दों के अपभ्रंश प्रयोग की आशंका या भय नहीं रहता। (छन्दस्यः) वेदों के और (छन्दसां) संस्कृत भाषा के शब्दों के ज्ञान से शुद्ध हुआ अन्तःकरण वेदमन्त्रों के (योनिम्) कारणरूप (छन्दोमयीम्) छन्दोवाक् अथवा आद्यऋषियों की अन्तरात्मा में सूक्ष्म रूप से ईश्वर प्रेरणा से प्राप्त वेदवाणी रूप शरीर को जो एकमात्र मूल-यथार्थ ज्ञान-विज्ञान से परिपूर्ण वाणी है, उसको ही एक वैयाकरण, विद्वान् भाषा शब्दों के संस्कार के लिए (अनुपश्यति) आश्रय रूप में जानता है।

भर्तृहरि ने छन्दस्य शब्द का अर्थ किया है-

छन्दस्यः छन्दसि साधुः रक्षकत्वात्।
छन्दस्य आत्मा व्याकरणादपगतशब्दार्थविपर्यासः
छन्दोमयीं तनुं परमं वेदरूपं पश्यतीति व्याचख्यौ।
द्वावुपादानशब्देषु शब्दौ शब्दविदो विदुः।
एको निमित्तं शब्दानामपरोऽर्थे प्रयुज्यते। (1/43)

शब्दशास्त्र और शब्दतत्त्व को जानने वाले उपादान अर्थात् अर्थरूप प्रयोजन को दर्शाने के लिए जो शब्द वक्ता द्वारा बोले जाते हैं, उनमें शब्द दो प्रकार का है। उपादान शब्दों के मध्य में जो उनका बाह्यरूप है अर्थात् वर्णसमुदाय रूप वाचक अंश है, वह एक वैखरी रूप, ध्वन्यात्मक अंश कारण रूप अंश है, वह शब्द के अर्थ में प्रयुक्त होता है। वैयाकरणों ने इस शब्द के वाच्य अर्थ रूप अंश को मध्यमावाक् और स्फोट नाम से अभिहित किया है। 'स्फुटत्यर्थोऽस्मादिति स्फोटः'- इस व्युत्पत्ति के अनुसार स्फोट, शब्द का वह वास्तविक और नित्य स्वरूप है, जो उस शब्द के अर्थ को प्रकाशित करता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि छन्दस्य शब्द का अर्थ 'वेदार्थग्रहणसमर्थ' है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- वाक्यपदीयम् (1.17) - शिवशङ्कर अवस्थी, पेज 126

58. स्फोटः भेदवान् कथं प्रतीयते ?
(A) भिन्नद्रव्यानाम् अभिव्यक्तिसाधनात्
(B) भिन्नोच्चारणात्
(C) भिन्नार्थेषु प्रयोगात्
(D) नादस्य क्रमजन्मत्वात्

व्याख्या- भर्तृहरिकृत वाक्यपदीयम् के (प्रथमकाण्ड) ब्रह्मकाण्ड में स्फोट की चर्चा की गयी है-

नादस्य क्रमजन्मत्वान्न पूर्वो न परश्च सः।
अक्रमः क्रमरूपेण भेदवानिव जायते॥ (1/48)

(नादस्य) अकेले ध्वनि के ही (क्रमजन्मत्वात्) क्रमशः एक-एक वर्ण के पश्चात् दूसरे-दूसरे वर्ण के पैदा होने से (सः) वह स्फोट नाद ध्वनि के समान न तो पहले वाला और न बाद वाला इस प्रकार के व्यपदेश को प्राप्त हुआ करता है। वस्तुतः पौर्वापर्य के व्यवहार से रहित होने के कारण स्फोट सर्वथा क्रमशून्य एक रूप रहा करता है, किन्तु व्यञ्जक नाद या ध्वनि के वाला जैसा हो जाया करता है। वस्तुतः स्फोट एकरूप ही है और इस प्रकार स्फोट

और नाद भिन्न-भिन्न हुआ करते हैं, यह कारिका का आशय है।

शब्दस्योर्ध्वमभिव्यक्तेर्वृत्तिभेदं तु वैकृताः।
ध्वनयः समुपोहन्ते स्फोटात्मा तैर्न भिद्यते॥ (1/76)

शब्द की अभिव्यक्ति अर्थात् उच्चारण के पश्चात् ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत नामक वृत्तियों को एक, दो, तीन मात्राओं वाली विकार को प्राप्त ध्वनियाँ निष्पन्न करती हैं, किन्तु इस उच्चारण प्रक्रिया से उनके द्वारा स्फोटरूप शब्दात्मा में ह्रस्वादि भेद नहीं होता। वह स्फोट सदा एक ही रूप में बना रहता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट होता है कि स्फोटः भेदवान् नादस्य क्रमजन्मत्वात् प्रतीयते। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- वाक्यपदीयम् (1/47) - शिवशङ्कर अवस्थी, पेज 218

59. एषूदाहरणेषु वैषयिकाधारस्योदाहरणं किमस्ति ?
(A) मोक्षे इच्छाऽस्ति (B) कटे आस्ते
(C) स्थाल्यां पचति (D) सर्वस्मिन्नात्मास्ति

व्याख्या- आधारोऽधिकरणम् (1.4.45)

क्रिया के साक्षात् आधार कर्ता और कर्म होते हैं लेकिन उनके कर्ता और कर्म के आधार को भी परम्परा से क्रिया का आधार माना जाता है। अधिकरण उसे कहते हैं जो कर्ता या कर्म का आधार होता है।

सप्तम्यधिकरणे च (2.3.36)

अधिकरण कारक में सप्तमी विभक्ति होती है। सूत्र में आये हुए 'च' के कारण दूरवाची और समीपवाची शब्दों में भी सप्तमी विभक्ति होती है।

सूत्र में चकार की अनुवृत्ति इस सूत्र के पूर्ववर्ती 'दूरान्तिकार्थेभ्यो द्वितीया च' से दूरान्तिकार्थेभ्यः की अनुवृत्ति आती है अतः दूर और अन्तिक के अर्थ वाले शब्दों से भी सप्तमी होती है।

आधार- आधार तीन प्रकार के होते हैं-
(1) औपश्लेषिक (2) वैषयिक (3) अभिव्यापक

औपश्लेषिक- संयोग सम्बन्धी आधार। जहाँ आधार और आधेय का संयोग भौतिक हो उसे औपश्लेषिक आधार कहते हैं।

(i) कटे आस्ते- (चटाई पर बैठता है।)

बैठना क्रिया का साक्षात् आश्रय है। उस कर्ता का आधार है कट। बैठने वाले का कट के साथ स्पर्शमात्र का संयोग है। अतः यहाँ औपश्लेषिक आधार है और सप्तम्यधिकरणेन सूत्र से औपश्लेषिक आधार कट में सप्तमी विभक्ति होकर कटे बना।

(ii) स्थाल्यां पचति। (पतीली में पकाता है।)

2. वैषयिक आधार- जिस आधार के साथ आधेय का बौद्धिक संश्लेषण हो उसे वैषयिक आधार कहते हैं।

उदाहरण- मोक्षे इच्छास्ति (मोक्ष सम्बन्धी इच्छा है।)

यहाँ मोक्ष का विषय है। अतः इच्छारूपी कर्ता के वैषयिक आधार मोक्ष की 'आधारोऽधिकरणम्' सूत्र से अधिकरणसंज्ञा हुई और 'सप्तम्यधिकरणे च' से सप्तमी विभक्ति होकर 'मोक्षे' बना।

3. अभिव्यापक आधार- जिस आधार के सम्पूर्ण अवयवों में आधेय व्याप्त रहता है। उसे अभिव्यापक आधार कहते हैं।

उदाहरण- सर्वस्मिन् आत्मा अस्ति- (सबमें आत्मा व्याप्त है।)

आधेय आत्मा है और सर्व अभिव्यापक है। अतः आधारोऽधिकरणम् सूत्र से सर्व की अभिव्यापक आधार संज्ञा हुई और 'सप्तम्यधिकरणे च' सूत्र से सप्तमी विभक्ति होकर सर्वस्मिन् बना।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि वैषयिक आधार का उदाहरण 'मोक्षे इच्छास्ति' है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज 93

60. पाणिनीयशिक्षानुसारम् उदात्तस्वरोच्चारणकाले हस्तः कुत्र निधेयः?
(A) हृदि (B) कर्णमूले
(C) सर्वास्ये (D) मूर्ध्नि

व्याख्या- * षड्वेदाङ्गों में शिक्षा का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

* शिक्षा का प्रथम सोपान वर्णशिक्षा है।
* शिक्षा का अर्थ सायण ने ऋग्वेदभाष्यभूमिका में किया है- ''वर्णस्वराद्युच्चारणप्रकारो यत्रोपदिश्यते सा शिक्षा।''

जिसमें वर्ण, स्वर आदि उच्चारण प्रकारों का उपदेश हो, उसे शिक्षा कहते हैं।

* पाणिनीयशिक्षा ऋग्वेदीय शिक्षा के अन्तर्गत आती है।
* इस शिक्षा में साठ (60) श्लोक हैं।

पहले श्लोक में पाणिनि ने लौकिक और वैदिक शिक्षा को बताया गया है-

* **अथ शिक्षां प्रवक्ष्यामि पाणिनीयं मतं यथा।**
शास्त्रानुपूर्वं तद् विद्याद् यथोक्तं लोकवेदयोः॥1॥

अब मैं पाणिनि के मत के अनुकूल शिक्षा को कहूँगा। शिष्यजन पाणिनि के उस मत को वैदिक, लौकिक विषयों में पूर्वाचार्यों से प्रोक्त लौकिक वैदिक शिक्षाशास्त्रों में जो कहा गया है उसी के अनुगत जाने।

* **त्रिषष्टिश्चतुःषष्टिर्वा वर्णाः शम्भुमते मताः।**
प्राकृते संस्कृते चापि स्वयं प्रोक्ताः स्वयम्भुवा॥3॥

प्राकृत और संस्कृत भाषा में शम्भु के मत में तिरसठ या चौंसठ वर्ण कहे गये हैं। स्वयं ब्रह्मा के द्वारा भी यह कहा गया है।

* **स्वरा विंशतिरेकश्च स्पर्शानां पञ्चविंशतिः।**
यादयश्च स्मृता ह्यष्टौ चत्वारश्च यमाः स्मृताः॥4॥

* **अनुस्वारो विसर्गश्च क पौ चापि पराश्रितौ**
दुःस्पृष्टश्चेति विज्ञेयो ऌकारः प्लुत एव च॥5॥
इक्कीस स्वर, पच्चीस व्यञ्जन, यादि आठ और यम चार जानने चाहिए। अनुस्वार एक, विसर्ग एक, क प दो (जिह्वामूलीय, उपध्मानीय) पराश्रित, दुःस्पृष्ट एक और प्लुत ऌकार एक जानना चाहिये।
* **अनुदात्तो हृदि ज्ञेयो मूर्ध्न्युदात्त उदाहृतः।**
स्वरितः कर्णमूलीयः सर्वास्ये प्रचयः स्मृतः॥48॥
अनुदात्त स्वर का स्थान हृदय को, उदात्त का मूर्धा को, स्वरित का कर्णमूल को और प्रचय का समस्त मुख (नासाग्रभाग से तात्पर्य है) को समझना चाहिए।
* **मन्त्रो हीनः स्वरतो वर्णतो वा मिथ्याप्रयुक्तो न तमर्थमाह। स वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति यथेन्द्रशत्रुः स्वरतोऽपराधात्॥52॥**
स्वर से अथवा वर्ण से हीन मन्त्र मिथ्याप्रयुक्त होने के कारण उस अर्थ को नहीं कहता है। वह मन्त्र वाणीरूपी वज्र होकर यजमान का नाश करता है, जिस प्रकार स्वरदोष से युक्त इन्द्रशत्रुः (शब्द)।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि उदात्त स्वर के उच्चारण काल में मूर्द्धा का प्रयोग होता है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**
स्रोत- पाणिनीयशिक्षा - (श्लोक 48)

61. व्यासभाष्यानुसारेण का उक्तिः सत्या ?
(A) चित्तं हि प्रख्याप्रवृत्तिस्थितिशीलत्वात् त्रिगुणम्।
(B) चित्तवृत्तीनां निरोधः असाध्यः।
(C) सर्ववृत्तिनिरोधे सम्प्रज्ञातः समाधिः।
(D) चित्तवृत्तिबोधे पुरुषस्य अनादिः सम्बन्धः न हेतुः।

व्याख्या- पातञ्जल कृत योगदर्शन के (प्रथमपाद) समाधिपाद में योग का लक्षण -
* **योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः**।।1/2।।
योग चित्तवृत्तियों का निरोध है।
व्यासभाष्य में सूत्रस्थ 'योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः' में चित्त को परिभाषित करते हुये कहते हैं-
***चित्तं हि प्रख्याप्रवृत्तिस्थितिशीलत्वात् त्रिगुणम्।**
चित्त प्रकाशशील, चेष्टाशील एवं स्थैर्यशील होने से त्रिगुणात्मक है।
* इसी प्रकार व्यासभाष्य में योग को बताते हैं-
सर्वशब्दाग्रहणात्सम्प्रज्ञातोऽपि योग इत्याख्यायते।
सर्व शब्द का प्रयोग न किये जाने के कारण सम्प्रज्ञात समाधि भी योग कही जाती है।

व्यासभाष्य के अन्य- महत्त्वपूर्ण वचन-
अथ योगानुशासनम् (1/1)। अब योगशास्त्र आरम्भ होता है।
* 'अथ' शब्द का अर्थ व्यासभाष्य में 'अथेत्ययमधिकारार्थः' अर्थात् यह 'अथ' शब्द अधिकारवाचक है।
* क्षिप्तं, मूढं, विक्षिप्तमेकाग्रं, निरुद्धमिति चित्तभूमयः। क्षिप्त, मूढ़, विक्षिप्त, एकाग्र और निरुद्ध चित्त की ये पाँच भूमियाँ हैं।
* स च वितर्कानुगतो, विचारानुगत, आनन्दानुगतोऽस्मितानुगत इत्युपरिष्टात्प्रवेदयिष्यामः।
वह सम्प्रज्ञात योग वितर्कानुगत, विचारानुगत, आनन्दानुगत तथा अस्मितानुगत इन चार अवस्थाओं वाला होता है।
* **सर्ववृत्तिनिरोधस्त्वसम्प्रज्ञातसमाधिः॥ (1/1)**
सभी वृत्तियों का निरोध होने पर तो असम्प्रज्ञात समाधि होती है। (वही असम्प्रज्ञात योग है।)
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि व्यासभाष्य के अनुसार चित्त के विषय में 'चित्तं हि प्रख्याप्रवृत्तिस्थितिशीलत्वात् त्रिगुणत्वम्।' यह पंक्ति सत्य है अन्य तीन विकल्प असंगत हैं।
अतः विकल्प 'A' सही है।
स्रोत- पातञ्जलयोगदर्शन - सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पेज 09

62. ब्रह्मसूत्रस्य रचयिता कोऽस्ति ?
(A) शङ्कराचार्यः (B) बादरायणः
(C) कपिलः (D) सदानन्दः

व्याख्या-

ग्रन्थ	आचार्य
ब्रह्मसूत्र	बादरायण
शारीरकभाष्य	शङ्कराचार्य
सांख्यदर्शन	कपिल
वेदान्तसार	सदानन्द
न्यायदर्शन	गौतम
वैशेषिकदर्शन	कणाद
पूर्वमीमांसादर्शन	जैमिनि
उत्तरमीमांसा/वेदान्तदर्शन	बादरायण
योगदर्शन	पतञ्जलि

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि ब्रह्मसूत्र के रचनाकार बादरायण हैं। **अतः विकल्प 'B' सही है।**
स्रोत- वेदान्तसार - राकेश शास्त्री, पेज भू. 04

63. शब्दप्रमाणस्य फलं किम्भवति ?
(A) पदज्ञानम् (B) वाक्यार्थज्ञानम्
(C) शक्तिज्ञानम् (D) पदजन्यपदार्थस्मरणम्

व्याख्या- अन्नम्भट्टप्रणीत तर्कसंग्रह में चार प्रमाण बताये

गये हैं- प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द। ये शब्दप्रमाण की चर्चा करते हुए कहते हैं कि-

आप्तवाक्यं शब्दः- आप्त (व्यक्ति) का वाक्य शब्दप्रमाण होता है। आप्तपुरुष से अभिप्राय यथार्थ वक्ता से है।

शक्तं पदम्- शक्ति से युक्त पद होता है। इस पद से यह अर्थ समझना चाहिए, इस प्रकार का ईश्वरसङ्केत ही शक्ति है।

वाक्यार्थज्ञानम्- आकांक्षा-योग्यता-सन्निधिश्च वाक्यार्थज्ञाने हेतुः। आकांक्षा, योग्यता, सन्निधि वाक्य के अर्थज्ञान के प्रति कुल तीन हेतु हैं।

एक पद का अन्य अर्थ के अभाव में शब्द का बोध करवाने की असमर्थता ही आकांक्षा होती है तथा पदों का बिना किसी विलम्ब के उच्चारण करना ही सन्निधि होती है।

शब्दप्रमाण के फल- **वाक्यार्थज्ञानं शाब्दज्ञानम्। तत्करणं तु शब्दः।** वाक्य के अर्थ का ज्ञान ही शाब्द-ज्ञान होता है और उसका 'करण' शब्द ही है।

वाक्यार्थ ज्ञान के हेतु	आकाङ्क्षा योग्यता सन्निधि(आसत्ति)
शाब्दबोध हेतु एक शब्द के साथ अन्य शब्द का प्रयोग	अर्थ का बाधारहित होना / पदों का अविलम्ब उच्चारण

गौरश्वः पुरुषो हस्ती | अग्निना सिञ्चति गाम् आनय

आकांक्षायाः | योग्यतायाः | सन्निध्याः अभावः एषु वाक्येषु

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि शब्द प्रमाण का फल वाक्यार्थज्ञान है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- तर्कसंग्रह - अनितासेन गुप्ता, पेज 111

64. न्यायसिद्धान्तमुक्तावल्यां साध्यशून्यो यत्र पक्षस्त्वसौ क उदाहृतः ?

(A) विरुद्धः (B) बाधः

(C) अनैकान्तिकः (D) सत्प्रतिपक्षः

व्याख्या- श्रीविश्वनाथपञ्चाननभट्टाचार्य प्रणीत न्यायसिद्धान्तमुक्तावली के अनुमानखण्ड में हेत्वाभास की चर्चा करते हैं-

अनैकान्तो विरुद्धश्चाप्यसिद्धः प्रतिपक्षितः।
कालात्ययापदिष्टश्च हेत्वाभासास्तु पञ्चधा॥

अनैकान्त, विरुद्ध, असिद्ध, प्रतिपक्षित एवं कालात्ययापदिष्ट- इस प्रकार हेत्वाभास पाँच प्रकार के होते हैं।

आद्यः साधारणस्तु स्यादसाधारणकोऽपरः।
तथैवानुपसंहारी त्रिधाऽनैकान्तिको भवेत्॥

पहला साधारण, दूसरा असाधारण एवं तीसरा अनुपसंहारी भेद से अनैकान्तिक हेत्वाभास तीन प्रकार का होता है।

यः सपक्षे विपक्षे च भवेत् साधारणस्तु सः॥

जो हेतु सपक्ष एवं विपक्ष में भी होता है, वह साधारण कहलाता है।

यस्तूभयस्माद् व्यावृत्तः स चासाधारणो मतः॥

जो दोनों (सपक्ष एवं विपक्ष) से अलग रहे, वह हेतु असाधारण माना जाता है।

तथैवानुपसंहारी केवलान्वयिपक्षकः।

उसी तरह केवलान्वयी पक्ष वाला अनुपसंहारी होता है।

विरुद्ध- यः साध्यवति नैवाऽस्ति स विरुद्ध उदाहृतः।

जो साध्य के अधिकरण में नहीं है, वैसा हेतु विरुद्ध कहलाता है।

आश्रयासिद्धिराद्या स्यात्स्वरूपासिद्धिरप्यथ।
व्याप्यत्वासिद्धिरपरा स्याद् सिद्धिरतस्त्रिधा॥

पहली आश्रयासिद्धि, उसके बाद स्वरूपासिद्धि, तीसरी व्याप्यत्वासिद्धि, इस कारण असिद्धि तीन प्रकार की होती है।

पक्षासिद्धिर्यत्र पक्षो भवेन्मणिमयो गिरिः।

पक्षासिद्धि वहाँ होती है जहाँ मणिमय गिरि पक्ष होता है।

ह्रदो द्रव्यं धूमत्त्वादत्रासिद्धिरथापरा॥

ह्रदो द्रव्यं धूमवत्वात् में दूसरी असिद्धि होती है।

व्याप्यत्वासिद्धिरपरा नीलधूमादिके भवेत्॥

नीलधूम आदि में व्याप्यत्वासिद्धि होती है।

सत्प्रतिपक्ष- विरुद्धयोः परामर्शे हेत्वोः सत्प्रतिपक्षता॥

परस्पर असमान अधिकरणवाले साध्यों के जो हेतु हैं उनके साध्य व्याप्यवान् पक्ष तथा साध्याभाव व्याप्यवान् पक्ष ऐसे दोनों परामर्शों में सत्प्रतिपक्षता होती है और उससे युक्त सत्प्रतिपक्ष होता है।

बाध- साध्यशून्यो यत्र पक्षस्त्वसौ बाध उदाहृतः।
उत्पत्तिकालीनघटे गन्धादिर्यत्र साध्यते॥

जहाँ पक्ष साध्य से शून्य होता है वह बाध कहलाता है, जहाँ उत्पत्तिकालीन घट में गन्ध आदि साधित किया जाता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'साध्यशून्यो यत्र पक्षस्त्वसौ बाध उदाहृतः'। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- न्यायसिद्धान्तमुक्तावली - महानन्द झा, पेज 127

65. बौद्धदर्शनस्य भावनाचतुष्टये किं नोपदिष्टम् ?

(A) सर्वं क्षणिकं क्षणिकम् (B) स्वलक्षणं स्वलक्षणम्

(C) सामान्यं सामान्यम् (D) शून्यं शून्यम्

व्याख्या- भारतीयदर्शन को मुख्यरूप से दो भागों में विभाजित किया गया है- (1) आस्तिक (2) नास्तिक

आस्तिक दर्शन

सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, पूर्वमीमांसा, उत्तरमीमांसा।

नास्तिक दर्शन

(1) चार्वाक (2) जैन (3) बौद्ध

* **बौद्धदर्शन के चार भेद-** ये बौद्ध लोग चार प्रकार की भावना (दृष्टिकोण) से परम पुरुषार्थ का वर्णन करते हैं। ये बौद्ध माध्यमिक, योगाचार, सौत्रान्तिक और वैभाषिक के नाम से प्रसिद्ध है।

1. सब कुछ शून्य होना -सर्वं शून्यम् (माध्यमिक)
2. बाह्यपदार्थों का शून्य होना -बाह्यार्थशून्यत्व (योगाचार)
3. बाह्यपदार्थों का अनुमान से ज्ञान होना - बाह्यार्थानुमेयत्वम् (सौत्रान्तिक)
4. बाह्यपदार्थों का प्रत्यक्ष से ज्ञान होना- बाह्यार्थप्रत्यक्षत्व (वैभाषिक)

*** भावनाचतुष्टय**

1. सब कुछ क्षणिक है क्षणिक -सर्वं क्षणिकं क्षणिकं
2. सब कुछ दुःख है दुःख -दुखं दुखं
3. सबों का लक्षण अपने आप में है -स्वलक्षणं स्वलक्षणं
4. सब कुछ शून्य है शून्य -शून्यं शून्यम्

* **चार आर्यसत्य**- 1. दुःख 2. समुदाय 3. निरोध 4. मार्ग दुःखसमुदायनिरोधमार्गाश्चत्वार आर्यबुद्धस्याभिमतानि तत्त्वानि।

* बौद्ध के अनुसार पाँच स्कन्ध हैं-

1. रूपस्कन्ध 2. विज्ञानस्कन्ध 3. वेदनास्कन्ध 4. संज्ञास्कन्ध 5. संस्कारस्कन्ध

सोऽयं चित्तचैत्तात्मकः स्कन्धः पञ्चविधो रूप-विज्ञान-वेदना संज्ञासंस्कारसंज्ञकः।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि भावनाचतुष्टय के अन्तर्गत 'सामान्यं सामान्यम्' नहीं आता है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- सर्वदर्शन संग्रह - उमाशङ्कर शर्मा ऋषि, पेज 31

66. शयिता सविधेऽप्यनीश्वरा सफलीकर्तुमहो मनोरथान् पण्डितराजजगन्नाथेन कस्य काव्यस्य उदाहरणरूपे उद्धृतोऽयं श्लोकः ?

(A) अधमस्य (B) उत्तमोत्तमस्य
(C) उत्तमस्य (D) मध्यमस्य

व्याख्या- पं. राज जगन्नाथ कृत रसगङ्गाधर के अन्तर्गत चार आनन हैं। प्रथम आनन में काव्य के चार भेदों की चर्चा करते हैं- **तच्चोत्तमोत्तमोत्तममध्यमाधमभेदाश्चतुर्धा।**

1. उत्तमोत्तम 2.उत्तम 3. मध्यम 4. अधम

उत्तमोत्तम काव्य- शब्दार्थौ यत्र गुणीभावितात्मानौ कमप्यर्थमभि- व्यङ्क्तस्तदाद्यम् ।

जिसमें शब्द और अर्थ (वाच्य, लक्ष्य, व्यङ्ग्य) दोनों अपने को गौण बनाकर किसी (चत्मकारजनक प्रधान) अर्थ को व्यक्त करते हैं, उसे उत्तमोत्तम काव्य कहते हैं।

उदाहरण- शयिता सविधेऽप्यनीश्वरा सफलीकर्तुमहो मनोरथान् दयिता दयिताननाम्बुजं दरमीलन्नयना निरीक्षते।।

नववधू अपने प्रियतम के समीप सोई है, परन्तु आश्चर्य है कि वह अपने मनोगत मनोरथों को सफल बनाने में असमर्थ है- उसे लज्जा और भय ने दबा रखा है, जिससे वह कुछ कर नहीं पाती इस स्थिति में प्रियतम की अभिलाषायें भी पूर्ण नहीं हो पातीं यह स्वतः सिद्ध है, फिर भी वह प्रियतम की दयिता है, प्रेयसी है, केलि विमुख भी नवोढा पत्नी सहृदय प्रेमियों के लिए अप्रीतिकर नहीं अपितु प्रीतिवर्धक होती है।

अब यहाँ ग्रन्थकार इस पद्य से होने वाले उस व्यङ्ग्य को दर्शाते हैं जिसके बल पर यह श्लोक उत्तमोत्तम काव्य का उदाहरण है।

यत्र व्यङ्ग्यप्रधानमेव सच्चमत्कारकारणं तद् द्वितीयम्।।

जिस काव्य में व्यङ्ग्य अप्रधान होकर ही चमत्कार का कारण हो, वह द्वितीय उत्तम नामक काव्य कहलाता है।

उदाहरण – राघवविरहज्वाला-सन्तापितसह्यशैलशिखरेषु। शिशिरे सुखं शयानाः कपयः कुप्यन्ति पवनतनयाय।।

*** यत्र व्यङ्ग्यचमत्कारासमानाधिकरणो वाच्यचमत्कारस्तत्तृतीयम्।** जिस काव्य में व्यङ्ग्य अर्थ का चमत्कार लघु अंश में रहकर भी व्यापक वाच्य अर्थ के चमत्कार में अन्तर्मुख हो जाने से स्पष्टतया अनुभूत न हो वह मध्यम नामक काव्य कहलाता है।

उदाहरण- तनयमैनाकगवेषणलम्बीकृत-जलधिजठर प्रविष्ट हिमगिरिभुजायमानाया भगवत्या भागीरथ्याः सखी इति।

*** यत्रार्थचमत्कृत्युपस्कृता शब्दचमत्कृतिः प्रधानं तदधमं चतुर्थम्।** जिस काव्य में वाच्य अर्थ चमत्कार से परिपोषित होकर शब्द का चमत्कार प्रधान हो, उसको 'अधमकाव्य' कहते हैं। इस काव्य में भी कुछ न कुछ व्यङ्ग्य अवश्य रहता है, परन्तु वह रहकर भी चमत्कारजनक न होने से अविवक्षित रहता है अतः उसकी प्रधानता नहीं रहती।

मित्रात्रिपुत्त्रनेत्राय त्रयीशात्रवशत्रवे।
गोत्रारिगोत्रजत्राय गोत्रात्रे ते नमो नमः।।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'शयिता सविधेऽप्यनीश्वरा ....' यह उत्तमोत्तम काव्य का उदाहरण है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- रसगङ्गाधर - मदनमोहन झा, पेज 38

67. उपकारकत्वादलङ्कारः सप्तममङ्गम् इति यायावरीयः। उक्तिरियं कुत्रास्ति ?
(A) नाट्यशास्त्रे (B) काव्यप्रकाशे
(C) काव्यमीमांसायाम् (D) वक्रोक्तिजीविते

व्याख्या-
* राजशेखरकृत काव्यमीमांसा में अठारह अध्याय थे जिसमें केवल प्रथम अधिकरण ही प्राप्त हैं। जो अठारह अध्यायों में विभाजित हैं।
* प्रथम अधिकरण का नाम 'कविरहस्य' है जिसमें कवियों की चर्चा की गयी है।
* द्वितीय अधिकरण का नाम 'शास्त्रनिर्देशः' है। जिसमें शास्त्र, काव्य का विशद् वर्णन है।
* **'उपकारकत्वादलङ्कारः सप्तममङ्गम् इति यायावरीयः।'** यायावर कुल में उत्पन्न आचार्य राजशेखर का कथन है कि उपयोगी होने से अलङ्कार सातवाँ अङ्ग है।
* मम्मटकृत काव्यप्रकाश में अलङ्कार का लक्षण-
उपकुर्वन्ति तं सन्तं येऽङ्गद्वारेण जातुचित्।
हारादिवदलङ्कारास्तेऽनुप्रासोपमादयः॥
अर्थ- जो काव्य में विद्यमान उस अङ्गी रस को शब्द तथा अर्थरूप अङ्गों के द्वारा कभी-कभी उत्कर्षयुक्त करते हैं, वे अनुप्रास और उपमा आदि हार आदि के समान (काव्य के) अलङ्कार होते हैं।
आचार्यभरतमुनि कृत नाट्यशास्त्र में नाट्य की महत्ता-
न तज्ज्ञानं न तच्छिल्पं न सा विद्या न सा कला।
नासौ योगो न तत्कर्म नाट्येऽस्मिन् यन्न दृश्यते। (1/16)
विश्व में ऐसा कोई भी ज्ञान, शिल्प, विद्या, कला, योग एवं कर्म नहीं है जिसका उपयोग नाट्य में न होता हो।
* काव्यमीमांसा में काव्यपुरुष के शिष्यों ने विशेष विषय पर अपने ग्रन्थ लिखे-

कवि	रचना
सहस्राक्ष	कविरहस्य
उक्तिगर्भ	उक्तिविषयक (औक्तिक)
सुवर्णनाभ	रीति का निर्णय
प्रचेता	अनुप्रास के विवेचक अंश
यम	यमक
चित्राङ्गद	चित्रकाव्य
आचार्यश्लेष	शब्दश्लेष
पुलस्त्यवास्तविकता अर्थात्	स्वभावोक्ति
औपकायन	उपमालङ्कार
पराशर	अतिशयोक्ति
उतथ्य	अर्थश्लेष
कुबेर	उभयालङ्कार
कामदेवविनोद	(हास्य)
नन्दिकेश्वर	रस विषयक ग्रन्थ
धिषण (बृहस्पति)	दोष विषयक ग्रन्थ
उपमन्युगुणों और दोष	
कुचमार	औपनिषदिक

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण में स्पष्ट है कि 'उपकारकत्वादलङ्कारः सप्तममङ्गम्' यह राजशेखरकृत काव्यमीमांसा में उद्धृत है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**
स्रोत- काव्यमीमांसा - गंगासागर राय, पेज 03

68. वक्रोक्तिजीवितानुसारं कविव्यापारवक्रत्वप्रकाराः कति सम्भवन्ति ?
(A) त्रयः (B) चत्वारः
(C) पञ्च (D) षट्

व्याख्या- * आचार्य कुन्तककृत वक्रोक्तिजीवितम् में चार उन्मेष हैं।
* कवि ग्रन्थ की निर्विघ्न परिसमाप्ति हेतु शक्ति के परिस्पन्द मात्र उपकरण वाले त्रिभुवन में विचित्र कर्म करने वाले परमतत्त्व शिव की वन्दना करता है।
* आचार्य कुन्तक कवियों के व्यापार (काव्य) की वक्रता का व्याख्यान करते हैं। सर्वप्रथम वक्रता के छः भेद आचार्य ने माने हैं-
कविव्यापारवक्रत्वप्रकाराः सम्भवन्ति षट्।
प्रत्येकं बहवो भेदास्तेषां विच्छित्तिशोभिनः॥ (1/18)
वर्णविन्यासवक्रत्वं पदपूर्वार्द्धवक्रता।
वक्रतायाः परोऽप्यस्ति प्रकारः प्रत्ययाश्रयः॥ (1/19)
(1) वर्णविन्यास वक्रता (2) पदपूर्वार्द्धवक्रता (3) प्रत्ययाश्रितवक्रता (4) वाक्यवक्रता (5) प्रकरणवक्रता (6) प्रबन्धवक्रता
* **धर्मादिसाधनोपायः सुकुमारक्रमोदितः।**
काव्यबन्धोऽभिजातानां हृदयाह्लादकारकः॥ (1/3)
कोमल परिपाटी से कहा गया महाकाव्य धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के साधन का उपाय है तथा अभिजात राजपुत्रों आदि के हृदय को आह्लादित करने वाला होता है।
वक्रोक्तिकार का काव्यलक्षण-
शब्दार्थौ सहितौ वक्रकविव्यापारशालिनि।
बन्धे व्यवस्थितौ काव्यं तद्विदाह्लादकारिणि॥ (1/7)
शास्त्रादि प्रसिद्ध शब्द तथा अर्थ के उपनिबन्धन से भिन्न कविव्यापार से शोभित काव्यतत्त्वज्ञों को आनन्दित करने वाले काव्य में

विशेष रूप से स्थित सहभाव से युक्त शब्द तथा अर्थ दोनों मिलकर काव्य होता है।

वक्रोक्ति का लक्षण-

उभावेतावलङ्कार्यौ तयोः पुनरलङ्कृतिः।
वक्रोक्तिरेव वैदग्ध्यभङ्गीभणितिरुच्यते॥ (1/10)

यह शब्द तथा अर्थ दोनों ही अलङ्कार्य हैं फिर शब्द तथा अर्थ दोनों की अलङ्कृति चातुर्यपूर्ण कथन वक्रोक्ति कहलाती है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि वक्रोक्तिजीवितानुसार कविव्यापारवक्रता षट् प्रकाराः सन्ति। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- वक्रोक्तिजीवितम् - राधेश्याम मिश्र भू., पेज 24

69. काव्यप्रकाशानुसारं शृङ्गारे द्रुतिकारणम् आह्लादकत्वं कस्य ?

(A) माधुर्यम् (B) ओजसः
(C) प्रसादस्य (D) समतायाः

व्याख्या- आचार्य मम्मट कृत काव्यप्रकाश के गुणालङ्कारनियतगुणनिर्णय नामक अष्टमोल्लास में गुणों की चर्चा करते हुए कहते हैं कि

'माधुर्यौजः प्रसादाख्यास्त्रयस्ते न पुनर्दश'

(वे गुण) माधुर्य, ओज, प्रसाद नामक तीन गुण होते हैं। वामन के अभिप्रेत दस गुण नहीं।

माधुर्यगुण-

आह्लादकत्वं माधुर्यं शृङ्गारे द्रुतिकारणम्।

चित्त के द्रवीभाव का कारण और शृङ्गार में रहने वाला जो आह्लादस्वरूपरूपत्व है वह माधुर्य नामक गुण कहलाता है।

करुणे विप्रलम्भे तच्छान्ते चातिशयान्वितम्।

यह माधुर्य गुण सामान्यतः सम्भोगशृङ्गार में रहता है। परन्तु करुण, विप्रलम्भ, शृङ्गार तथा शान्त रस में वह उत्तरोत्तर अधिक चमत्कारजनक होता है।

ओजगुण- दीप्यात्मविस्तृतेर्हेतुरोजो वीररसस्थितिः।

चित्त के द्रवीभाव का कारणभूत आह्लादकत्व जिस प्रकार माधुर्यगुण कहलाता है, वीररस में रहने वाली आत्मा चित्त के विस्तार रूप दीप्तत्व का जनक ओजगुण कहलाता है।

बीभत्सरौद्ररसयोस्तस्याधिक्यं क्रमेण च॥

यह ओज सामान्यतः वीर रस में रहता है परन्तु बीभत्स और रौद्र रसों में क्रमशः इसका आधिक्य रहता है।

प्रसाद गुण-

शुष्केन्धनाग्निवत् स्वच्छजलवत्सहसैव यः।
व्याप्नोत्यन्यत् प्रसादोऽसौ सर्वत्र विहितस्थितिः॥

सूखे ईंधन में अग्नि के समान अथवा स्वच्छ जल के समान जो चित्त में सहसा व्याप्त हो जाता है, वह सर्वत्र सब रसों में रहने वाला प्रसाद गुण कहलाता है।

प्रमुख आचार्यों के अनुसार गुणों की संख्या-

वामन- वामन ने गुणों की संख्या दश मानी है।

भामह- भामह ने तीन गुण माने हैं।

विश्वनाथ- विश्वनाथ ने तीन गुण स्वीकार किये हैं।

माधुर्यमोजोऽथ प्रसाद इति ते त्रिधा। (सा. द. 8/1)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि 'आह्लादकत्वं माधुर्यं शृङ्गारे द्रुतिकारणम्' यह माधुर्य का लक्षण है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज 388

70. पण्डितराजजगन्नाथमते काव्यस्य कति भेदाः स्वीकृताः?

(A) त्रयः (B) द्वौ
(C) चत्वारः (D) पञ्च

व्याख्या- पण्डितराज जगन्नाथ कृत रसगङ्गाधर में चार आनन हैं। प्रथम आनन के अन्तर्गत काव्यभेदों की चर्चा की गयी है-

काव्यभेद-

* **तच्चोत्तमोत्तमोत्तममध्यमाधमभेदाश्चतुर्धा।**

काव्य के चार भेद हैं- 1. उत्तमोत्तम 2. उत्तम 3. मध्यम 4. अधम।

* आचार्य मम्मट के अनुसार काव्य के भेद तीन हैं-
(1) उत्तम (2) मध्यम (3) अधम

काव्यहेतु-

* पण्डितराजजगन्नाथ ने काव्य के एक हेतु प्रतिभा को मानते हैं। 'तस्य च कारणं कविगता केवला प्रतिभा'। इसी प्रकार वामन, रुद्रट भी प्रतिभा को ही काव्य का कारण मानते हैं।

* दण्डी, वाग्भट और पीयूषवर्ष, प्रतिभा, व्युत्पत्ति, और अभ्यास को काव्य का हेतु मानते हैं।

* आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश में तीन हेतु की स्वीकार करते हैं-

शक्तिर्निपुणता लोकशास्त्रकाव्याद्यवेक्षणात्।
काव्यज्ञशिक्षयाभ्यास इति हेतुस्तदुद्भवे॥

शक्ति, निपुणता और अभ्यास ये तीन हेतु हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि पं. राज जगन्नाथ के मत में चार काव्य माने गये हैं। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- रसगङ्गाधर - मदनमोहन झा, पेज 37

71. ब्राह्मीलिपेः उद्वाचने प्रथमां सफलतां कः प्राप्तवान्?

(A) मैक्समूलरः (B) विलियम जोन्सः
(C) जेम्स प्रिंसेपः (D) ह्विटनी

व्याख्या- ब्राह्मी लिपि भारतवर्ष की प्राचीन लिपि है,

पहले इस लिपि के लेख अशोक के समय अर्थात् ईसा पूर्व की तीसरी शताब्दी तक के ही मिले परन्तु कुछ वर्ष पूर्व इस लिपि के दो छोटे-छोटे लेख प्राप्त हुए जिनमें से एक पिप्रावा के स्तूप से और दूसरा बर्ली गाँव से।

अशोक के अभिलेखों को सबसे पहले 1750 में टी. फैन्थैलर ने खोजा था।

अशोक के अभिलेखों को सर्वप्रथम 1837 में कलकत्ता टकसाल के अधिकारी एवं एशियाटिक सोसायटी के सचिव जेम्स प्रिन्सेप ने पढ़ा था। इन्होंने दिल्ली-टोपरा अभिलेख को पढ़ा था। इस समय अलेक्जेण्डर कनिंघम इनके सहायक थे। अतः जेम्स प्रिंसेप ने ही सबसे पहली बार ब्राह्मी लिपि का सफलतापूर्वक उद्‌वाचन किया। लेकिन इन्होंने एक गलती कर दी कि देवानांप्रिय का समीकरण लंका के राजा तिस्स से स्थापित कर दिया।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त से स्पष्ट है कि ब्राह्मी लिपि का प्रथम वाचन 'जेम्स प्रिंसेप' ने किया **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- प्राचीन भारत-सौरभ चौबे, पेज 266

72. अशोकस्य शिलालेखानां भाषा का अस्ति ?

(A) प्राकृतम् (B) संस्कृतम्
(C) अपभ्रंशः (D) अवेस्ता

व्याख्या- अशोक के अभिलेख-

प्रथम शिलालेख-	(गिरनार)
स्थान -	गिरनार जिला-जूनागढ़ महाराष्ट्र
भाषा -	प्राकृत (पालि)
लिपि -	ब्राह्मी
काल -	अशोककालीन लगभग (272-32 ई.पू.)
विषय -	हिंसा और साम्राज्यवाद का विरोध, व्यक्तिगत जीवन

* अशोक के चौदह शिलालेखों का वर्णन प्राप्त होता है।
* यह धम्म लिपि देवानांप्रिय (देवताओं में प्रिय) प्रियदर्शी राजा (अशोक) द्वारा लिखवाई गयी।
* कोई भी जीव बलि के लिए नहीं मारा जायेगा।
* पहले देवानांप्रिय प्रियदर्शी राजा के रन्धनागार रसोई में प्रतिदिन बहुत लाख प्राणी सूप के लिए मारे जाते थे। परन्तु जब से यह धम्मलिपि लिखवाई तीन प्राणी ही मारे जाते हैं। दो मोर और एक हिरन।
* वह हिरन भी सदैव नहीं। ये तीन प्राणी भी बाद में नहीं मारे जाएँगे।
* गुजरात की गिरनार पहाड़ियों में प्राप्त अशोक के चौदह शिलालेखों में से प्रथम शिलालेख पर राजा जीवों पर दया की भावना से पशुयज्ञ और पशु-मांस भक्षण की निषेधाज्ञा जारी की गई है।
* ये अभिलेख प्राकृत भाषा में हैं और ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण किये गये हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि अशोक के शिलालेख की भाषा प्राकृत थी। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- भारतीय पुरालेखों का अध्ययन- शिवस्वरूप सहाय, पेज– 90

73. कुत्र अशोकस्य नाम प्रदत्तम् ?

(A) मास्कि-शिलालेखे
(B) प्रयागस्तम्भलेखे
(C) गिरनार-शिलालेखे
(D) कान्धार-द्विभाषी शिलालेखे

व्याख्या- अशोक के अभिलेख- मौर्य सम्राट् अशोक के ब्राह्मी, खरोष्ठी, आरामेयिक और यूनानी लिपियों में अंकित अभिलेख देश के विभिन्न भागों से प्राप्त हुए हैं। इनमें से सबसे अधिक संख्या ब्राह्मी लिपि में लिखे गये अभिलेखों की है, जो देश के प्रायः सभी भागों से मिले हैं।

* इन अभिलेखों में से अधिकांश में अशोक का उल्लेख देवानांप्रिय और प्रियदर्शी राजा उपाधियों से हुआ है।

कुछ विद्वान् इन अभिलेखों के अशोक के होने से सन्देह प्रकट करते रहे। किन्तु मास्कि अभिलेख में देवानांपियस असोकस और गुर्जरा अभिलेख में देवानांपियस पियदसिनो असोकराजस के स्पष्ट उल्लेख प्राप्त होने से यह भ्रम निर्मूल सिद्ध हो गया।

कौशाम्बी वाले स्तम्भलेख में अशोक की द्वितीय महिषी कारुवाकी (चारुवाकी) के पुत्र तीवर का नाम है और पाङ्गुररिया लेख में कुमार सम्ब का उल्लेख है।

अशोक के जीवनकाल में कुछ प्रमुख कार्यों का परिचय-

1. आठवें वर्ष कलिंग विजय (13 वाँ शिलाभिलेख)
2. दसवें वर्ष- सम्बोधि (बोधगया) की यात्रा (8वाँ शिलालेख)
3. बारहवें वर्ष- युक्तों, राजुकों और प्रादेशिकों को दौर पर जाने का आदेश (तीसरा शिलाभिलेख)

धम्मलिपि का आलेखन (चौथा तथा छठाशिलाभिलेख)

अभिलेखों का मुख्य उद्देश्य अशोक द्वारा धर्म प्रतिपादन था। उनसे स्पष्ट रूप से प्रकट होता है कि वह स्वयं बौद्ध धर्म का अनुयायी था और संघ के प्रति कर्त्तव्यनिर्वाह के प्रति सजग था।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि अशोक का नाम

मास्कि अभिलेख में उल्लेख प्राप्त होता है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख - परमेश्वरी लाल गुप्त, पेज 09, 10

74. गिरनारस्य तडागेन सम्बद्धो नासीत्-
(A) चन्द्रगुप्तः मौर्यः (B) अशोकः मौर्यः
(C) कनिष्कः कुषाणः (D) रुद्रदामा शकः

व्याख्या- सौराष्ट्र प्रान्त के गिरनार (जूनागढ़) में स्थित गिरनार पर्वत पर गुप्तवंशीय नरेश का नाम अंकित है।
रैवतक एवं उर्जयत पर्वतों के जल स्रोतों के ऊपर कृत्रिम बाँध बनाकर पलासिनी नदी एवं सुवर्णसिकता नदी को आपस में जोड़कर सुदर्शन झील का निर्माण किया गया था।
यह बाँध दो बार टूटा। सबसे पहली बार शक रुद्रदामन् के समय टूटा। इसने सुविशाख पह्नव के माध्यम से बिना जनता के ऊपर कर वेगार डाले अपने कोष से झील का पुनर्निर्माण कराया। स्कन्दगुप्त के समय यह बाँध पुनः टूट गया। इस समय सौराष्ट्र का राज्यपाल पर्णदत्त था। इसके पुत्र चक्रपालित ने बाँध का पुनः पुनर्निर्माण करवाया इस झील का इतिहास जूनागढ़ अभिलेख से विदित होता है। इसी अभिलेख में चार शासकों एवं उनके चार राज्यपालों का उल्लेख क्रमशः मिलता है-

चार शासक	सौराष्ट्र के चार गवर्नर
चन्द्रगुप्त	पुष्यगुप्त वैश्य
अशोक यवन	तुषास्प
रुद्रदामन्	सुविशाख पह्लव
स्कन्दगुप्त	पर्णदत्त

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि गिरनार तड़ाग का सम्बन्ध चन्द्रगुप्त, अशोक, रुद्रदामन् से है जबकि कनिष्क कुषाण का सम्बन्ध गिरनार तड़ाग से नहीं है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- प्राचीन भारत का इतिहास - सौरभ चौबे, पेज 263

75. अत्र वर्तते कालिदासस्य नामोल्लेखः-
(A) तन्तुवाय-श्रेण्याः मन्दसौर शिलालेखे
(B) प्रभावतगुप्तायाः पूना-ताम्रपट्टलेखे
(C) पुलकेशिद्वितीयस्य एहोल-शिलालेखे
(D) मिहिरभोजस्य ग्वालियर-शिलालेखे

व्याख्या- पुलकेशिन् द्वितीय के आश्रित कवि रविकीर्ति के दक्षिण भारत के ऐहोल नामक ग्राम में प्राप्त शिलालेख में कालिदास का उल्लेख है। यह शिलालेख शक संवत् 556 अर्थात् 634 ई. का है। इसमें रविकीर्ति अपने आपको कालिदास और भारवि जैसा महाकवि बताता है-

येनायोजि नवेऽश्मस्थिरमर्थविधौ विवेकिना जिनवेश्म।
स विजयतां रविकीर्तिः कविताश्रितकालिदासभारविकीर्तिः॥

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि कालिदास का नामोल्लेख पुलकेशिन् द्वितीय के ऐहोल शिलालेख में प्राप्त होता है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज भू. 13

उत्तरमाला

1.A 2.D 3.A 4.B 5.D 6.C 7.B 8.A 9.B 10.D 11.C 12.A 13.D 14.B 15.B 16.D 17.C 18.B 19.C 20.A 21.D 22.D 23.B 24.C 25.B 26.D 27.C 28.B 29.B 30.B 31.A 32.A 33.C 34.B 35.C 36.B 37.B 38.A 39.B 40.A 41.C 42.A 43.A 44.D 45.C 46.C 47.B 48.C 49.D 50.C 51.A 52.C 53.A 54.D 55.A 56.C 57.A 58.D 59.A 60.D 61.A 62.B 63.B 64.B 65.C 66.B 67.C 68.D 69.A 70.C 71.C 72.A 73.A 74.C 75.C

8	दिसम्बर 2015	NTA UGC–NET/JRF संस्कृतम्	प्रश्नपत्रम् III

1. दानस्तुतिसूक्तानि संहितायां सन्ति -
(A) काण्वसंहितायाम् **(B)** तैत्तिरीयसंहितायाम्
(C) ऋग्वेदसंहितायाम् **(D)** माध्यन्दिनसंहितायाम्

व्याख्या- ऋग्वेद में आर्य-संस्कृति का विशद निरूपण हुआ है। इसमें सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, शैक्षिक, नैतिक, आध्यात्मिक, दार्शनिक, कलात्मक एवं वैज्ञानिक तथ्यों का भी यथास्थान निरूपण हुआ है।

* ऋग्वेद में मुख्य रूप से विभिन्न देवों की स्तुति है और उनसे यश, विद्या, श्रीवृद्धि आदि की प्रार्थनाएँ की गई हैं।
* अनेक स्थलों पर मनोविज्ञान, सृष्टि-उत्पत्ति, आयुर्वेद, भाषाविज्ञान, ज्योतिष आदि से संबद्ध सामग्री भी प्रचुर मात्रा में मिलती है।
* आध्यात्मिक और दार्शनिक भाव तो पद-पद पर प्राप्य हैं।
* हिरण्यगर्भ, नासदीय एवं पुरुष आदि सूक्त सृष्टि-प्रक्रिया का विवेचन प्रस्तुत करते हैं। साथ ही आचारशिक्षा, नीतिशिक्षा, धर्मशिक्षा तथा कर्तव्योपदेश आदि का वर्णन पग-पग पर प्राप्य है।

ऋग्वेद के कुछ महत्त्वपूर्ण सूक्त -

1. पुरुषसूक्त (ऋग् ० 10.90)- यह सूक्त चारों वेदों में आया है।
* इसमें पुरुष के विराट् रूप का वर्णन किया गया है और उसी से समस्त विश्व की सृष्टि का वर्णन है।
* इसमें पुरुष को सहस्त्रों सिर, पैर आदि से युक्त बताया गया है।
* उससे चराचर जगत् की सृष्टि तथा चारों वेदों की उत्पत्ति कही गयी है।
* सर्वप्रथम चातुर्वर्ण्य-व्यवस्था का इसमें उल्लेख है।
* चारों वर्णों को विराट् पुरुष का मुख आदि अंग बताया गया है।
* यज्ञप्रक्रिया को सृष्टि का प्रथम धर्म कहा गया है।
* पुरुष को ही सृष्टि का सर्वस्व, वर्तमान, भूत और भविष्य बताया गया है।

2. नासदीयसूक्त (ऋग् ० 10.129)- यह सूक्त वैदिक ऋषियों के ज्ञान और अलौकिक दार्शनिक चिन्तन का परिचायक है।
* इसमें सृष्टि की उत्पत्ति से पूर्व की स्थिति का वर्णन करते हुए कहा गया है कि उस समय न असत् था और सत्, न रात्रि थी और न दिन। सृष्टि का कोई चिह्न नहीं था।

3. हिरण्यगर्भसूक्त (ऋग् ० 10.121)- इस सूक्त में उदात्त दार्शनिक भावों की अभिव्यक्ति करते हुए 'क' अर्थात् प्रजापति का महत्त्व वर्णित है।
* 9 मंत्रों में 'कस्मै देवाय हविषा विधेम' अर्थात् ऐसे प्रजापति देव को हम अपनी स्तुति अर्पित करते हैं, यह कहा गया है।
* वह प्रजापति सृष्टि के प्रारम्भ में हिरण्यगर्भ (सुवर्णपिण्ड) के रूप में प्रकट हुआ। वही सृष्टि का नियामक हुआ।

4. श्रद्धासूक्त (ऋग् ० 10.151)- इस सूक्त में यद्यपि 5 ही मंत्र हैं, परन्तु भावगाम्भीर्य और विचारों की उदात्तता के कारण यह सूक्त अत्यन्त आदरणीय माना जाता है।
* मंत्र में श्रद्धा की परिभाषा दी गयी है- किसी कार्य में अतिशय हार्दिक संकल्प से अभिनिवेश या प्रवृत्ति श्रद्धा है।
* यह श्रद्धा ही जीवन को पवित्र बनाती है और महान् लक्ष्यों को प्राप्त कराती है।
* वेदों में उच्च लक्ष्य की प्राप्ति के लिए ऋत और सत्य के साथ श्रद्धा को आवश्यक बताया गया है।

5. वाक्सूक्त (ऋग्० 10.125)- ऋग्वेद के महत्त्वपूर्ण सूक्तों में वाक्सूक्त है।
* इस सूक्त के 8 मंत्रों में वाक्तत्त्व, शब्दब्रह्म, शब्दतत्त्व या वाग्देवी का ब्रह्म के रूप में वर्णन किया गया है। वाक्तत्त्व सर्वत्र व्याप्त है।
* यह इन्द्र, अग्नि, सोम, मित्र, वरुण आदि की ऊर्जा का स्रोत है।
* यह राष्ट्रनिर्मात्री शक्ति है। वाक्तत्त्व ही प्रतिभा है।
* पूरा सूक्त उत्तमपुरुष में 'वाक् आम्भृणी' ऋषिका द्वारा आत्मविवेचन के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

6. दानस्तुतिसूक्ति (ऋग् ० 10.107 और 117)- ऋग्वेद के इन सूक्तों में दान की महिमा का गुणगान है।
* वैदिक संस्कृति में त्याग और दान- इन दो गुणों को सर्वोच्च स्थान दिया गया है।
* इन सूक्तों में कहा गया है कि दानी अमर हो जाता है।
* उसके यहाँ अर्थसंकट कभी नहीं होता, वह समाज और राष्ट्र में सर्वत्र पूजा जाता है।
* उसे सूर्यलोक और स्वर्ग में भी उच्चस्थान प्राप्त होता है। दानी को ही सन्त, महात्मा, ऋषि और ब्रह्मा कहा जाता है।

8. संज्ञानसूक्त (ऋग् ० 10.191)- इस सूक्त के 4 मंत्रों में सामाजिक सौहार्द, सौमनस्य, सह-अस्तित्व, ऐकमत्य और संगठन का उपदेश दिया गया है।

* यह सूक्त सामाजिक, राष्ट्रीय और आर्थिक चिन्तन में समवेत-स्वर या समन्वय की भावना का प्रतिपादक है।

9. **अक्षसूक्त (ऋग् 10.34)-** इस सूक्त के 14 मंत्रों में अक्ष की कड़े शब्दों में निन्दा की गयी है।

* यह सामाजिक कुरीति है। जुआँ खेलना स्वयं को और अपने परिवार को नष्ट करना है।

10. **विवाहसूक्त (ऋग् 10.85)-** अथर्ववेद में भी विवाह से संबद्ध दो सूक्त (कांड 14 सूक्त 1 और 2) आये हैं।

* अधिकांश मंत्र वे ही हैं।
* इसमें सूर्या (सूर्य की पुत्री) का सोम (चन्द्रमा) से विवाह का वर्णन है।

स्पष्टीकरण - उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'दानस्तुतिसूक्ति' ऋग्वेदसंहिता में वर्णित है। **अतः विकल्प (C) सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज 55

2. ऋग्वेदीयषष्ठमण्डलस्य ऋषिः वर्त्तते -

(A) भरद्वाजः (B) वामदेवः
(C) वसिष्ठः (D) विश्वामित्रः

व्याख्या- ऋग्वेद-संहिता का विभाजन दो प्रकार से किया गया है- (1) अष्टकक्रम (2) मण्डलक्रम

अष्टकक्रम- पूरे ऋग्वेद को 8 समान भागों में बाँटा गया है, इन्हें 'अष्टक' कहते हैं। प्रत्येक अष्टक को 8 अध्यायों में बाँटा गया है। अतः पूरे ऋग्वेद में 64 अध्याय हैं। अध्याय वर्गों में विभाजित हैं, प्रत्येक अध्याय में वर्गों की संख्या भिन्न-भिन्न है। इस प्रकार ऋग्वेद में बालखिल्य सूक्तों को भी सम्मिलित करते हुए 8 अष्टक, 64 अध्याय, 2024 वर्ग और 10552 मंत्र हैं। इसमें बालखिल्य सूक्तों सहित 1028 सूक्त हैं और 3,97,256 अक्षर हैं।

मण्डलक्रम- यह विभाजन अधिक सुसंगत और उपयुक्त है। इसमें पूरे ऋग्वेद को ऋषि और देवता के अनुसार 10 मण्डलों में विभक्त किया गया है। इसमें बालखिल्य के 11 सूक्तों के 80 मंत्रों को सम्मिलित करते हुए 85 अनुवाक, 1028 सूक्त और 10,552 मंत्र हैं।

*** मंत्रद्रष्टा ऋषि -** सुविधा की दृष्टि से ऋग्वेद के मण्डल, सूक्त, मंत्र-संख्या और संबद्ध ऋषियों की सारणी दी जा रही है।

मण्डल	सूक्तसंख्या	मंत्रसंख्या	ऋषि नाम
1.	191	2006	मधुच्छन्दा, मेधातिथि, दीर्घतमा, अगस्त्य, गौतम, पराशर आदि।
2.	43	429	गृत्समद एवं उनके वंशज
3.	62	617	विश्वामित्र एवं उनके वंशज
4.	58	589	वामदेव एवं उनके वंशज
5.	87	727	अत्रि एवं उनके वंशज
6.	75	765	भरद्वाज एवं उनके वंशज
7.	104	841	वसिष्ठ एवं उनके वंशज
8.	103	1716	कण्व, भृगु, अंगिरस् एवं वंशज
9.	114	1108	ऋषिगण, विषय-पवमान-सोम
10.	191	1754	वित, विमद, इन्द्र, श्रद्धा-कामायनी, इन्द्राणी, शची, उर्वशी, नारायण आदि।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरणों से स्पष्ट है कि ऋग्वेद के षष्ठ मण्डल में भरद्वाज ऋषि का वर्णन प्राप्त है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज 47

3. 'बृहदारण्यकम्' कस्य वेदस्य वर्तते?

(A) सामवेदस्य (B) यजुर्वेदस्य
(C) ऋग्वेदस्य (D) अथर्ववेदस्य

व्याख्या- आरण्यकग्रन्थों का उद्भव नैसर्गिक प्रक्रिया के अनुरूप ब्राह्मणग्रन्थों के पश्चात् हुआ है।

* स्थूल से सूक्ष्म की ओर जाना मानवीय प्रवृत्ति है।
* वेदों और ब्राह्मणों में वर्णित यज्ञप्रक्रिया कष्टसाध्य, दुर्बोध और नीरस होने के कारण अरुचिकर होती जा रही थी, अतः आत्मिक शान्ति के लिए अध्यात्म की आवश्यकता अनुभव की गई।

* आवश्यकता आविष्कार की जननी है, अतः आरण्यकों की सृष्टि हुई।
* आरण्यकग्रन्थ ब्राह्मणग्रन्थों और उपनिषदों को जोड़ने वाली कड़ी है।
* ब्राह्मणग्रन्थों में यज्ञों के दार्शनिक और आध्यात्मिक पक्ष का जो अंकुरण हुआ है, उसका पल्लवित रूप आरण्यकग्रन्थ हैं।
* आरण्यकों में पवित्र ब्रह्मविद्या का वर्णन है। आरण्यकग्रन्थ उपनिषदों का पूर्वरूप हैं।
* उपनिषदों में आत्मा, परमात्मा, सृष्ट्युत्पत्ति, ज्ञान- कर्म, उपासना और तत्त्वज्ञान का प्रतिपादन है। उसी तत्त्वज्ञान का प्रारम्भिक रूप हम आरण्यकों में पाते हैं।

उपलब्ध आरण्यकग्रन्थ-

सम्प्रति केवल 6 आरण्यकग्रन्थ प्राप्य हैं। वेदों के अनुसार इन्हें इस प्रकार रख सकते हैं।

1. ऋग्वेदीय - ऋग्वेद से सम्बद्ध दो आरण्यकग्रन्थ हैं-

(i) ऐतरेय और (ii) शांखायन आरण्यक।

(i) ऐतरेय आरण्यक- यह ऐतरेयब्राह्मण का ही परिशिष्ट भाग है। इसमें पांच भाग हैं। इसमें प्राणविद्या, आत्मविद्या आदि का वर्णन है।

(ii) शांखायन आरण्यक- यह ऋग्वेदीय आरण्यक है। इसमें 15 अध्याय हैं। अध्याय 3 से 6 तक को 'कौषीतकि उपनिषद्' कहते हैं। अध्याय 7 से 8 को संहितोपनिषद् कहते हैं। इसी को कौषीतकि आरण्यक भी कहा जाता है।

2. शुक्लयजुर्वेदीय- इसमें बृहदारण्यक प्राप्त है। यह माध्यन्दिन और काण्व दोनों शाखाओं में प्राप्य है।

बृहदारण्यक - यह शुक्लयजुर्वेदीय आरण्यक है। यह शतपथ ब्राह्मण आरण्यक की अपेक्षा उपनिषद् के रूप में अधिक मान्यता प्राप्त है। इसमें आत्मतत्त्व की विशद व्याख्या है।

3. कृष्णयजुर्वेदीय- कृष्णयजुर्वेद की तैत्तिरीय और काठक शाखाओं का एक आरण्यक है- तैत्तिरीय आरण्यक।

मैत्रायणी शाखा का एक आरण्यक 'मैत्रायणीय आरण्यक' है इसको 'मैत्रायणीय उपनिषद्' भी कहते हैं।

4. सामवेदीय- सामवेद की जैमिनिशाखा का 'तवलकार आरण्यक' है। इसको 'जैमिनीय उपनिषद् ब्राह्मण' भी कहते हैं। सामवेद की कौथुम शाखा का आरण्यक नहीं है। छान्दोग्य उपनिषद् कौथुम शाखा से सम्बद्ध है।

5. अथर्ववेदीय- अथर्ववेद का कोई पृथक् आरण्यक नहीं है। गोपथब्राह्मण के ही ब्रह्मविद्यापरक कुछ अंशों को आरण्यक कह सकते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'बृहदारण्यक' यजुर्वेद से सम्बद्ध है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज 163

4. 'आग्नीध्र'- नामा ऋत्विक् कस्य गणस्य वर्तते?

(A) ब्रह्मगणस्य **(B)** अध्वर्युगणस्य
(C) होतृगणस्य **(D)** उद्गातृगणस्य

व्याख्या- समस्त वेदों के अलग-अलग ऋत्विक् बताये गये हैं-

जैसे -ऋग्वेद के ऋत्विक् - होता
यजुर्वेद के ऋत्विक् - अध्वर्यु
सामवेद के ऋत्विक् - उद्गाता
अथर्ववेद के ऋत्विक् - ब्रह्मा

इस प्रकार समस्त वेदों के अलग-अलग ऋत्विक् बताये गये हैं, जिसमें सोलह ऋत्विक् होते हैं, जो चार गणों में विभक्त रहते हैं। वे हैं- अध्वर्युगण, ब्रह्मगण, होतृगण और उद्गातृगण। प्रत्येक गण में चार-चार ऋत्विक् होते हैं, सब मिलाकर सोलह ऋत्विक् होते हैं। वे इस प्रकार हैं -

अध्वर्युगण	**ब्रह्मगण**	**होतृगण**	**उद्गातृगण**
अध्वर्यु	ब्रह्मा	होता	उद्गाता
प्रतिप्रस्थाता	ब्राह्मणाच्छंसी	मैत्रावरुण	प्रस्तोता
नेष्टा	आग्नीध्र	अच्छावाक	प्रतिहर्ता
उन्नेता	पोता	ग्रावस्तुत्	सुब्रह्मण्य

लिखने के क्रम के अनुसार ही संख्या भी होती है- पहला, दूसरा, तीसरा, चौथा। जैसे- अध्वर्युगण में अध्वर्यु पहला है, प्रतिप्रस्थाता दूसरा है, नेष्टा तीसरा है, उन्नेता चौथा है; इत्यादि। उसी के अनुसार दक्षिणा में भी क्रम हैं जितनी गायें दक्षिणा में देने को कही गयी हैं, उन्हें बराबर-बराबर चार भागों में विभक्त कर एक-एक गण के लिए एक-एक भाग दे। एक-एक भाग के लिए दी जाने वाली दक्षिणा भी समविभाग न करके विषम विभाग करके ही देना चाहिए।

जैसे-अध्वर्यु जितनी गायें पाये उससे आधी प्रतिप्रस्थाता अध्वर्यु के भाग की, तृतीय भाग नेष्टा और उसका चतुर्थ भाग उन्नेता पाये।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरणों से स्पष्ट है कि 'आग्नीध्र' नाम ऋत्विक् का वर्णन ब्रह्मगण में है । **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- श्रौतयज्ञ परिचय- वेणीराम शर्मा गौड़, पेज 28

5. 'सुमन्तु'- ऋषये व्यासः कं वेदं प्रोक्तवान् ?

(A) यजुर्वेदम् **(B)** ऋग्वेदम्
(C) अथर्ववेदम् **(D)** सामवेदम्

व्याख्या- वस्तुतः वेद चार हैं - ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद।

* अथर्ववेद में मारण-मोहन-उच्चाटन सम्बन्धी मन्त्रों का सङ्कलन किया गया है।

* सम्भवतः ये विषय उस समय समाज द्वारा अनादृत रहे हों अतः इसकी गणना वेद के अन्तर्गत न की गई हो।

* यजुर्वेद के भाष्यकार महीधर का कथन है कि ब्रह्मा से चली आ रही वेद-परम्परा को ग्रहण करके वेदव्यास ने मन्दमति मनुष्यों के लिए वेद को ऋक्, यजुः, साम और अथर्व के रूप में विभक्त कर क्रमशः पैल, वैशम्पायन, जैमिनि और सुमन्तु को उपदेश दिया-

तत्रादौ ब्रह्म-परम्परया प्राप्तं वेदं वेदव्यासो मन्दमतीन् मनुष्यान् विचिन्त्य तत्कृपया चतुर्धा व्यस्य ऋग्यजुःसामाथर्वाख्याश्चतुरो वेदान् पैल-वैशम्पायन-जैमिनि सुमन्तुभ्यः क्रमादुपदिदेश। (यजुर्वेदभाष्य)

इस प्रकार स्पष्ट है कि महर्षि वेदव्यास ने ऋग्वेद का उपदेश पैल को, यजुर्वेद का उपदेश वैशम्पायन को, सामवेद का उपदेश जैमिनि को और अथर्ववेद का उपदेश सुमन्तु को दिया।

इस प्रकार वेद का चतुर्धा विभाजन किया जाता है। प्राचीन काल में वेद को 'त्रयी' कहा जाता था, बाद में जब अथर्ववेद को वेद की संज्ञा प्राप्त हो गयी तो वेद चार हो गये और 'वेदचतुष्टय' की प्रसिद्धि हो गई। वेदों के इस प्रकार का पृथक्करण करने के कारण व्यास को 'वेदव्यास' कहा जाता है-

'विव्यास वेदान् यस्मात्स वेदव्यास इति स्मृतः।'

वेदव्यास द्वारा ऋषियों को दिये गये वेदों का उपदेश-

पैल - ऋग्वेद
वैशम्पायन - यजुर्वेद
जैमिनि - सामवेद
सुमन्तु - अथर्ववेद

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'महर्षि वेदव्यास' ने 'सुमन्तु' को अथर्ववेद का उपदेश दिया। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य का इतिहास-पारसनाथ द्विवेदी, पेज 4

6. दर्शपौर्णमासेष्टियागे प्रयाजानां संख्या विद्यते -

(A) एकादश **(B)** पञ्च
(C) त्रयः **(D)** नव

व्याख्या- यज्ञादि का स्वरूप- श्रुति में वैदिक यज्ञ पाँच प्रकार के बताये गये हैं -

1. अग्निहोत्र 2. दर्शपूर्णमास 3. चातुर्मास्य
4. पशुयाग 5. सोमयाग

* स्मृति में सात पाकयज्ञ, सात हविर्यज्ञ, सात सोमसंस्थाएँ हैं। इन सब श्रौत और स्मार्तों को मिलाकर इक्कीस यज्ञ कहे गये हैं।

सात पाकयज्ञ	**सात हविर्यज्ञ**
1. औपासन होम	1. अग्निहोत्र
2. वैश्वदेव	2. दर्शपूर्णमास
3. पार्वण	3. आग्रयण
4. अष्टका	4. चातुर्मास्य
5. मासिश्राद्ध	5. निरूढपशुबन्ध
6. श्रवणा	6. सौत्रामणी
7. शूलगव।	7. पिण्ड पितृयज्ञ।

सात सोम संस्थाएँ -

1. अग्निष्टोम	4. षोडशी
2. अत्यग्निष्टोम	5. वाजपेय
3. उक्थ्य	6. अतिरात्र
7. अप्तोर्याम।	

इनमें सात पाकयज्ञ स्मार्त्त हैं और सात हविर्यज्ञ, सात सोमयज्ञ श्रौत हैं।

दर्शपूर्णमास याग- दर्शपूर्णमास नामक याग अमावस्या और पूर्णिमा में अनुष्ठान होने से ही इन यागों का 'दर्शपूर्णमास' यह नाम पड़ा है। दर्श अर्थात् अमावस्या, पूर्णमास अर्थात् पौर्णमासी।

दर्शपूर्णमासयाग में पाँच प्रयाज और तीन अनुयाज बताये गये हैं। जिनसे देवताओं का प्रकृष्ट रूप से यजन होता है वे प्रयाज हैं तथा 'अनु' अर्थात् 'प्रधान याग के अनन्तर जिनसे यजन किया जाता है'- इस व्युत्पत्ति से होता द्वारा पढ़े जाने वाले याज्या मन्त्र अनुयाज है।

पञ्च प्रयाज	**तीन अनुयाज**
1. दो आज्यभाग	1. भागप्राशन
2. प्रधानयाग	2. अन्वाहार्य
3. स्विष्टकृत्	3. दक्षिणा
4. प्राशित्रावदान	
5. इडावदान।	

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरणों से स्पष्ट है कि दर्शपौर्णमासयाग में पञ्चप्रयाज बताये हैं। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- श्रौतयाग परिचय- वेणीराम शर्मा गौड़, पेज 13

7. याज्ञवल्क्यशिक्षानुसारं कति विवृत्तयः?
(A) चतस्रः (B) तिस्रः
(C) पञ्च (D) षट्

व्याख्या- विवृत्ति क्या है? -

जहाँ दो स्वरों के बीच में सन्धि न दिखाई दे वहाँ विवृत्ति जानना चाहिए। जैसा कि **शुक्लयजुर्वेद संहिता** के **'यऽईशे'** इस मन्त्र में हुआ है।

विवृत्ति का उच्चारण- जिस प्रकार आकाश में स्थित (चमकने वाली) बिजली मणियों में गुँथे हुए सूत्र के समान स्फुटित होने पर जितना समय लगता है, उतने ही समय में विवृत्ति का उच्चारण होता है।

जिस प्रकार केश (बाल) काटते समय छुरा से 'कुट' शब्द निकलता है उसी तीव्रता से विवृत्ति का उच्चारण करें।

विवृत्ति के भेद -

1. पिपीलिका 2. पाकवती 3. वत्सानुसारिणी
4. वत्सानुसृजिता

पिपीलिका पाकवती तथा वत्सानुसारिणी।
वत्सानुसृजिता चैव चतस्रस्ता विवृत्तयः॥10॥

1. पिपीलिका- विवृत्ति के आदि और अन्त में जहाँ पर दोनों ओर दीर्घ वर्ण हों, वहाँ पिपीलिका (जन्तुवत्) नाम की विवृत्ति होती है। **जैसे- संहितोक्त 'नाभ्याऽआसीत्'।**

2. पाकवती- विवृत्ति के आदि और अन्त में जहाँ पर दोनों ओर ह्रस्व वर्ण हो और उसी प्रकार सन्धि-विच्छेद हुआ हो तो पाकवती नाम की विवृत्ति होती है। **यथा- विनऽइन्द्र**

3. वत्सानुसारिणी- संधि-विश्लेष के साथ प्रारम्भिक वर्ण दीर्घ होता है और पीछे का वर्ण ह्रस्व। **यथा- 'ताऽअस्य'**

4. वत्सानुसृजिता- जहाँ आद्यक्षर ह्रस्व और परवर्ण दीर्घ होता है। **यथा- 'तानऽआवोढमश्विना'**

स्पष्टीकरण- इस प्रकार उपर्युक्त विवरणों से स्पष्ट है कि याज्ञवल्क्य शिक्षानुसार 4 विवृत्तियाँ हैं। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- याज्ञवल्क्यशिक्षा- डॉ. नरेश झा, पेज 89

8. ऋक्संहितायाः समुपलब्धेषु भाष्येषु प्रथमो भाष्यकारः वर्तते -
(A) आनन्दतीर्थः (B) सायणः
(C) स्कन्दस्वामी (D) वेङ्कटमाधवः

व्याख्या- ऋग्वेद की उपलब्ध ऋक्संहिता पर अनेक भाष्यकारों ने अपने-अपने भाष्य लिखें हैं, जिनमें कुछ प्रमुख इस प्रकार हैं-

ऋग्वेदसंहिता भाष्यकार :

स्कन्दस्वामी - (625 ई. के लगभग)। ऋग्वेद का सबसे प्राचीन भाष्य स्कन्दस्वामी का ही उपलब्ध होता है। ऋग्वेद के भाष्य में वेंकटमाधव ने लिखा है कि स्कन्दस्वामी, नारायण और उद्गीथ आचार्यों ने मिलकर ऋग्वेद का भाष्य किया था।

स्कन्दस्वामी नारायण उद्गीथ इति ते क्रमात् ।
चक्रुः सहैकम् ऋग्भाष्यं, पदवाक्यार्थगोचरम् ॥

स्कन्दस्वामी का भाष्य ऋग्वेद के चतुर्थ अष्टक तक मिलता है। शेष भाग नारायण और उद्गीथ ने किया है।

नारायण - नारायण ने स्कन्दस्वामी के भाष्य में सहायता की थी। 'क्रमात्' से ज्ञात होता है कि चतुर्थ अष्टक के बाद के अंश पर इन्होंने ऋग्वेद का भाष्य लिखा है।

उद्गीथ - आचार्य उद्गीथ ने भी स्कन्दस्वामी के भाष्य में सहायता की थी। इन्होंने ऋग्वेद के अन्तिम भाग पर भाष्य लिखा है।

माधवभट्ट - (षष्ठ शती ई.) ये स्कन्दस्वामी (7वीं शती), वेंकटमाधव (10वीं शती) और सायण (14वीं शती) से पूर्ववर्ती हैं। स्कन्दस्वामी, वेंकटमाधव और सायण ने इनके भाष्य का अनुसरण किया है।

वेंकटमाधव- (1050 से 1150 ई. के मध्य) इन्होंने पूरे ऋग्वेद का भाष्य लिखा है। इन्होंने प्रथम अध्याय के अन्त में अपना परिचय दिया है। इनके पितामह-माधव, पिता-वेंकटाचार्य, माता-सुन्दरी, गोत्र- कौशिक, निवासस्थान- चोल देश।

आनन्दतीर्थ - (1255 से 1335 विक्रमी संवत्, 13वीं शती ई.)। इनका दूसरा नाम 'मध्व' है। इन्होंने माध्व वैष्णव सम्प्रदाय चलाया है। इन्होंने ऋग्वेद के 40 सूक्तों का पद्यात्मक भाष्य किया है।

सायण - (14वीं शती ई.) ये विजयनगर के संस्थापक महाराज बुक्क और महाराज हरिहर के अमात्य एवं सेनानी थे। इन्होंने अपने बड़े भाई माधव के आदेशानुसार वेदभाष्य किया।

स्कन्दस्वामी 625 ई. लगभग	नारायण सातवीं शती उत्तरार्द्ध	उद्गीथ सातवीं शती उत्तरार्द्ध	माधवभट्ट छठी शती ई.
वेंकटमाधव 1050 से 1150 ई. के मध्य	आनन्दतीर्थ 1255 से 1335 ई.	सायण 14वीं शती ई.	

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरणों से स्पष्ट है कि ऋग्वेदसंहिता के

उपलब्ध भाष्यों में प्रथमभाष्यकार स्कन्दस्वामी हैं।

अतः विकल्प 'C' सही है।

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 22

9. वैदिकस्वरप्रक्रियायाः वृत्तिकारः कः?

(A) भट्टोजिदीक्षितः **(B)** पाणिनिः

(C) पतञ्जलिः **(D)** कात्यायनः

व्याख्या- संस्कृत व्याकरण का प्रमुख ग्रन्थ 'अष्टाध्यायी' महर्षि पाणिनि प्रणीत है जिसे उन्होंने सूत्रों में वर्णित किया है, जिस पर कात्यायन ने वार्तिक एवं पतञ्जलि ने महाभाष्य एवं भट्टोजिदीक्षित ने उनकी वृत्ति लिखी।

भट्टोजिदीक्षित - प्रक्रियानुसारी ग्रन्थों में भट्टोजिदीक्षित प्रणीत सिद्धान्तकौमुदी में समग्र पाणिनि अष्टक को संकलित किया गया है। जिसमें उन्होंने सम्पूर्ण अष्टाध्यायी की वृत्ति लिखी है। संज्ञा, समास, परिभाषा, सन्धि, सुबन्त, अव्यय, स्त्रीप्रत्यय, कारक तथा तद्धित प्रकरणों को निबद्ध किया है। यहाँ तक लौकिक शब्दों के निर्वचन की प्रक्रिया है। इसके अतिरिक्त वैदिक शब्दों के अन्वाख्यान की प्रक्रिया को दर्शाने के लिए अन्तिम दो प्रकरणों में 'वैदिक प्रकरण' और 'स्वर प्रकरण' में वैदिक प्रयोग तथा वेदों में प्रयुक्त स्वर सम्बन्धी विशेषताओं का निदर्शन किया है।

उन्होंने स्वर-वैदिकी को सर्वान्त में जोड़ दिया। वैदिक-प्रक्रिया में 263 तथा स्वरप्रक्रिया में 329 सूत्रों की व्याख्या की गयी है।

सिद्धान्तकौमुदी का प्रक्रिया विवरण-

1. संज्ञा-प्रकरण	8. समास
2. परिभाषा-प्रकरण	9. तद्धित
3. सन्धि-प्रकरण	10. तिङन्तप्रक्रिया
4. सुबन्त-प्रकरण	11. भ्वादि
5. अव्यय	12. कृदन्त
6. स्त्रीप्रत्यय	13. वैदिकीप्रक्रिया
7. कारक	14. स्वरप्रक्रिया

पाणिनि- महर्षि पाणिनि की अमरकृति 'अष्टाध्यायी' के नाम से सुविदित है। इसका दूसरा नाम 'पाणिनीयाष्टक' भी प्रसिद्ध है। जिसे उन्होंने आठ अध्यायों में, सूत्रों में वर्णित किया है जिससे ये व्याकरण सूत्रकार भी कहे जाते हैं।

प्रत्येक अध्याय चार-चार पादों में विभक्त है। इस प्रकार इसमें 32 पाद हैं।

कात्यायन- पाणिनि अष्टाध्यायी सूत्रों पर कात्यायन ने वार्तिक लिखे। जहाँ भी सूत्रों में उनको कमियाँ दिखीं, उसके सुधार में उन्होंने वार्तिकों की रचना की, इसीलिए इन्हें वार्तिककार भी कहते हैं।

पतञ्जलि- महर्षि पतञ्जलि ने अष्टाध्यायी की व्याख्या के रूप में महाभाष्य की रचना की जिससे इन्हें भाष्यकार भी कहा गया।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि वैदिक स्वरप्रक्रिया के वृत्तिकार भट्टोजिदीक्षित हैं। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड 15)

10. 'ब्राह्मणसर्वस्व'- नामकं वेदभाष्यं केन विरचितम् ?

(A) हरिस्वामिना **(B)** हलायुधेन

(C) गुणविष्णुना **(D)** उव्वटेन

व्याख्या- ऋग्वेद -

वेदभाष्यकार	–	**प्रमुख भाष्य**
माधवभट्ट		नामानुक्रमणी, आख्यातानुक्रमणी, निर्वचनानुक्रमणी, छन्दोऽनुक्रमणी, स्वरानुक्रमणी आदि।
सायण	–	'माधवीयवेदार्थप्रकाश'

शुक्लयजुर्वेद - माध्यन्दिनशाखा

वेदभाष्यकार	–	**प्रमुख भाष्य**
उव्वट		ऋक्प्रातिशाख्य की टीका, यजुःप्रातिशाख्य की टीका, ऋक्सर्वानुक्रमणी पर भाष्य, ईशोपनिषद् पर भाष्य
महीधर	–	'वेददीप', मन्त्रमहोदधि

काण्वशाखा-

हलायुध	–	ब्राह्मणसर्वस्व, मीमांसासर्वस्व, वैष्णव सर्वस्व, शैवसर्वस्व, पण्डित-सर्वस्व

कृष्णयजुर्वेद-

भट्टभास्कर	–	'ज्ञानयज्ञ'

सामवेद-

वेदभाष्यकार	–	**प्रमुखभाष्य**
माधव	–	विवरण
गुणविष्णु	–	छान्दोग्य-मन्त्रभाष्य, मंत्रब्राह्मण-भाष्य, पारस्करगृह्यसूत्र-भाष्य

अथर्ववेद- सायण ने पूरे अथर्ववेद पर भाष्य लिखा।

प्रमुख ब्राह्मण ग्रन्थों के भाष्यकार

वेदभाष्यकार	ब्राह्मण
नीलकण्ठ	काण्वशतपथब्राह्मण
हरिस्वामी	माध्यन्दिन शतपथब्राह्मण
गोविन्दस्वामी	ऐतेरयब्राह्मण 'बौधायनीय-धर्मविवरण'
षड्गुरुशिष्य	ऐतेरयब्राह्मण, ऐतरेय आरण्यक, सर्वानुक्रमणी वेदार्थदीपिका
सायण	ऐतरेय ब्राह्मण
भवस्वामी	तैत्तिरीय ब्राह्मण
जयस्वामी	ताण्ड्य ब्राह्मण
भास्कर मिश्र	आर्षेय ब्राह्मण

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'ब्राह्मणसर्वस्व' वेदभाष्य हलायुध द्वारा लिखा गया है।

अतः विकल्प 'B' सही है।

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज 24

11. 'वाक्सूक्तम्' ऋग्वेदस्य कस्मिन् मण्डले विद्यते?

(A) दशमे (B) पञ्चमे

(C) अष्टमे (D) सप्तमे

व्याख्या-

ऋग्वेद के प्रमुख सूक्त-

पुरुषसूक्त - (ऋग् 10.90) यह सूक्त चारों वेदों में आया है इसमें पुरुष परमात्मा के विराट् रूप का वर्णन किया गया है। उसी से समस्त विश्व की सृष्टि का वर्णन है।

यथा-

पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भव्यम् (10.90.2)

'ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत् बाहू राजन्यः कृतः।

ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत॥

(10.90.12)

नासदीयसूक्त - (ऋग् ० 10.129) यह सूक्त वैदिक ऋषियों के प्रतिभा ज्ञान के लिए विख्यात अलौकिक चिन्तन का परिचायक है। इसमें भी सृष्टि- उत्पत्ति का वर्णन किया गया है।

हिरण्यगर्भसूक्त - (ऋग् ० 10.121) इस सूक्त में उदात्त दार्शनिक भावों की अभिव्यक्ति करते हुए 'क' अर्थात् प्रजापति का महत्त्व वर्णित है। 9 मंत्रों में 'कस्मै देवाय हविषा विधेम' अर्थात् ऐसे प्रजापति देव को हम अपनी स्तुति अर्पित करते हैं- ऐसा कहा गया है।

श्रद्धासूक्त - (ऋग् ०10.151) इस सूक्त में यद्यपि 5 ही मंत्र हैं, परन्तु भावगाम्भीर्य और विचारों की उदात्तता के कारण यह सूक्त अत्यन्त आदरणीय माना जाता है। मंत्र में श्रद्धा की परिभाषा दी गयी है।

संज्ञानसूक्त- (ऋग् ० 10.191) इस सूक्त के 4 मंत्रों में सामाजिक, सौहार्द, सामञ्जस्य, सह-अस्तित्व, ऐकमत्य और संगठन का उपदेश दिया गया है। यह सूक्त सामाजिक, राष्ट्रीय और आर्थिक चिन्तन में समवेत-स्वर या समन्वय की भावना का प्रतिपादक है।

यथा- 'सं गच्छध्वं सं वदध्वं, सं वो मनांसि जानताम्।'

वाक्सूक्त- (ऋग् ० 10.125) ऋग्वेद के अतिमहत्त्वपूर्ण सूक्तों में वाक्सूक्त है। यह 8 मंत्रों में वाक्तत्त्व, शब्दब्रह्म, वादतत्त्व या वाग्देवी का ब्रह्म के रूप में वर्णन किया गया है। वाक्तत्त्व सर्वत्र व्याप्त है। यह इन्द्र, अग्नि, सोम, मित्र, वरुण आदि की ऊर्जा का स्रोत है।

दानस्तुतिसूक्त- (ऋग् 10.107-117) ऋग्वेद के इस सूक्त में दान की महिमा का गुणगान है। वैदिक संस्कृति में त्याग और दान इन दो गुणों को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। वह समाज एवं राष्ट्र में सर्वत्र पूजा जाता है जो दानी होता है।

- अस्यवामीयसूक्त ऋक्. 1.164
- अक्षसूक्त ऋक्. 10.34
- विवाहसूक्त ऋक्. 10.85

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'वाक्सूक्त' ऋग्वेद के दशम मण्डल में वर्णित है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 54

12. ऋग्वेदसंहिताया आंग्लपद्यानुवादकः वैदेशिकः विद्वान् वर्तते?

(A) एच. विल्सनः (B) ए.ए. मैक्डानलः

(C) आर.टी.एच. ग्रीफिथः (D) विलियम कैलेण्डः

व्याख्या- प्रमुख वैदेशिक विद्वान् :-

➢ **चार्ल्स विल्किन्स-** चार्ल्स विल्किन्स पहला अंग्रेज था जिसने वारेन् हेस्टिंग्ज की प्रेरणा से बनारस में रहकर संस्कृत भाषा का अध्ययन किया था। उसने 1785 ई. में भगवद्गीता का अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित किया। 1787 ई. में हितोपदेश का तथा 1795 ई. में महाभारत के शकुन्तलोपाख्यान का अंग्रेजी अनुवाद किया।

➢ **सर विलियम जोन्स-** (1746-1794) विलियम जोन्स ने संस्कृत का ज्ञान प्राप्तकर 1789 में संस्कृत के महाकवि कालिदास के प्रमुख नाटक अभिज्ञानशाकुन्तल का अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित किया।

➢ **एच. एच. विल्सन-** डॉ. विल्सन ने 1850 में सायण भाष्य का उपयोग करते हुए सम्पूर्ण ऋग्वेद का अंग्रेजी में अनुवाद प्रकाशित किया है।

➢ **आर. टी. एच. ग्रिफिथ-** ग्रिफिथ महोदय ने 1889-1892 के मध्य सायणभाष्य का उपयोग करते हुए ऋग्वेद का अंग्रेजी में पद्यानुवाद किया है। इसके अतिरिक्त यजुर्वेद की माध्यन्दिन संहिता तथा सामवेद का अंग्रेजी में पद्यानुवाद किया।

➢ **डा. कीलहार्न-** डॉ. कीलहार्न जर्मन निवासी थे। वे पूना में डेक्कन कॉलेज में अध्यापक रहे। इन्होंने अथक परिश्रम कर 'पातञ्जल महाभाष्य' का सम्पादन किया। 'परिभाषेन्दुशेखर' का कई खण्डों में अंग्रेजी में अनुवाद किया।

ग्रासमन- ग्रासमन जर्मनी के संस्कृत एवं भाषाविज्ञान के विद्वान् थे। इन्होंने 1867-1877 ई. में सायणभाष्य की उपेक्षा कर स्वतन्त्र रीति से ऋग्वेद का दो भागों में जर्मन पद्यानुवाद किया। इसके अतिरिक्त उन्होंने 1873-1875 में 'वैदिक कोश' लिखा है।

लुडविग- लुडविग जर्मन विद्वान् थे। इन्होंने 1873-88 ई. में ऋग्वेद का छः खण्डों में जर्मन भाषा में गद्यानुवाद किया है।

मैक्डोनल- मैक्डोनल ने 'वैदिक व्याकरण', वैदिक 'माइथोलॉजी' और 'संस्कृत साहित्य का इतिहास' आदि ग्रन्थों का प्रणयन किया।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि ऋग्वेदसंहिता के आंग्ल पद्यानुवादक वैदेशिक विद्वान् आर.टी.एच. ग्रिफिथ हैं। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज 20

13. सामविकाराः परिगणिताः सन्ति?

(A) सप्तः **(B)** चत्वारः

(C) त्रयः **(D)** षट्

व्याख्या- * सामविकार- किसी भी ऋचा को गान का रूप देने के लिए कुछ परिवर्तन किए जाते हैं, इन्हें सामवेद की पारिभाषिक शब्दावली में 'विकार' कहा जाता है। इस प्रकार सामवेद में 6 प्रकार के विकार बताए गये हैं। जिनमें स्तोभ प्रमुख है-

(क) स्तोभ	**(घ)** विश्लेषण
(ख) विकार	**(ङ)** अभ्यास
(ग) विकर्षण	**(च)** विराम

(क) स्तोभ- ऋचा को गान का रूप देने के लिए कुछ अतिरिक्त पद मंत्र के साथ जोड़ दिए जाते हैं। ये पद आलाप के लिए होते हैं। जैसे- औहोवा-हाउ आदि।

स्तोभ अक्षरों को दो वर्गों में विभक्त किया गया है-

1. अन्वयी - अन्वयी ऋचा के प्रारम्भ में जुड़ते हैं।

2. अनुषंगी - ये दो शब्दों के मध्य में या मंत्र के अन्त में जुड़ते हैं।

(ख) विकार- मंत्र के शब्दों में ज्ञान की दृष्टि से कुछ परिवर्तन किया जाता है। जैसे- 'अग्ने' को 'ओग्नायि' बोलना।

(ग) विश्लेषण- एक पद का पृथक्करण अर्थात् एक पद को दो या दो से अधिक खंडों में विभक्त करना।

(घ) विकर्षण- एक स्वर को लम्बा खींचकर देर तक उच्चारण करना। जैसे- 'ये' को 'या' 2, 3 'यि' अर्थात् दीर्घ और प्लुत तक लम्बा खींचना।

(ङ) अभ्यास- किसी पद का दो या अधिक बार उच्चारण करना। जैसे- या 2 'यि', तो या 2 यि। दो बार उच्चारण करना।

(घ) विराम- गान की सुविधा के लिए किसी पद के बीच में रुक जाना। जैसे- गृणानो हव्य दातये का 'गृणानो' है।

➢ **साम गान-** सामयोनि मंत्रों का आश्रय लेकर ऋषियों ने विभिन्न गानों की रचना की है। सामगान चार प्रकार का है-

1. ग्रामगेय गान - इसे प्रकृतिगान अथवा वेयगान भी कहते हैं।

2. आरण्यगान - इसे आरण्यक गेयगान भी कहते हैं, यह वनों या पवित्र स्थानों पर होता है।

3. ऊहगान - ऊह का अर्थ है- विचारपूर्वक विन्यास। पूर्वार्चिक से सम्बद्ध उत्तरार्चिक का गान इस विधि से होता है।

4. ऊह्यगान - ऊह्यगान रहस्यगान है।

सामगान की 5 भक्तियाँ है -

1. प्रस्ताव	2. उद्गीथ
3. प्रतिहार	4. उपद्रव
5. निधन	

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि सामविकार छः बताये गये हैं। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज 88

14. 'पदक्रमसदन' नामकं भाष्यं कस्य प्रातिशाख्यस्य विद्यते?

(A) वाजसनेयिप्रातिशाख्यस्य **(B)** ऋक्प्रातिशाख्यस्य

(C) अथर्वप्रातिशाख्यस्य **(D)** तैत्तिरीयप्रातिशाख्यस्य

व्याख्या- प्रातिशाख्य- प्रत्येक शाखा से सम्बद्ध व्याकरण आदि का बोध कराने वाले ग्रन्थ प्रातिशाख्य कहलाते हैं। चारों वेदों की अनेक शाखाओं के अनुसार प्रातिशाख्य ग्रन्थों की संख्या भी है।

प्रातिशाख्य ग्रन्थों का शिक्षा, व्याकरण और छन्द तीनों से साक्षात् सम्बन्ध है।

1. ऋक्प्रातिशाख्य- ऋग्वेदप्रातिशाख्य ऋग्वेद की शाकल शाखा की शैशिरीय उपशाखा से लिया गया है। इसको पार्षद या पारिषदसूत्र भी कहते हैं। इसके रचयिता शौनक हैं। इसमें 18 पटल (अध्याय) है।

भाष्य - उव्वटभाष्य (11वीं शती ई.), विष्णुमित्र कृत वृत्ति

2. शुक्लयजुःप्रातिशाख्य (वाजसनेयिप्रातिशाख्य)- इसके रचयिता कात्यायन हैं। इसमें 8 अध्याय हैं। इसमें मुख्यरूप से इन विषयों का वर्णन है :- (i) वर्णविचार, (ii) स्वर-विचार, (iii) सन्धि-विचार, (iv) पदपाठविचार, (v) क्रमपाठ-विचार आदि।

भाष्य - उव्वटकृत मातृवेदनात्मकभाष्य
अनन्तभट्टकृत पदार्थप्रकाशकभाष्य

3. तैत्तिरीयप्रातिशाख्य- यह कृष्णयजुर्वेदीय तैत्तिरीयसंहिता से सम्बद्ध है। इसमें दो प्रश्नों (खंडों) में 12-12 अध्याय हैं। इस प्रकार पूरे ग्रन्थ में 24 अध्याय हैं।

इसमें मुख्यरूप से वर्ण-समाम्नाय, स्वर एवं व्यंजन सन्धियाँ, स्वरों के भेद और संहिता का स्वरूप आदि विषयों का वर्णन है।

*** वेदों के पाठ के दो प्रकार-**

(i) प्रकृतिपाठ (ii) विकृतिपाठ

भाष्य-

* महिषेय-कृत, - 'पदक्रमसदन' भाष्य
* सोमयार्य-कृत - 'त्रिभाष्यरत्न' भाष्य
* गोपालयज्वा कृत - 'वैदिकाभरण' भाष्य

4. अथर्ववेदीय प्रातिशाख्य- इसके दो प्रातिशाख्य उपलब्ध होते हैं - (i) शौनकीय चतुरध्यायिका (ii) अथर्ववेदप्रातिशाख्य

अथर्ववेदप्रातिशाख्य- इसमें सन्धि, स्वर और पदपाठ के नियम विशेष रूप से बताये गये हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'पदक्रमसदन' नामक भाष्य 'तैत्तिरीयप्रातिशाख्य' का भाष्य है।

अतः विकल्प 'D' सही है।

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 198

15. पाणिनीयशिक्षायां कति श्लोकाः सन्ति?

(A) चतुःषष्टिः (B) त्रिषष्टिः
(C) षष्टिः (D) सप्ततिः

व्याख्या- शिक्षा का प्रथम सोपान वर्णशिक्षा है। ऋक्प्रातिशाख्य को भी वर्णशिक्षा नाम से जाना जाता है।

''निन्दन्त्यकृत्स्नेति च वर्णशिक्षाम् ।''

सायण- शिक्षा का अर्थ आचार्य सायण ने ऋग्वेदभाष्यभूमिका में किया है -

''वर्णस्वराद्युच्चारणप्रकारो यत्रोपदिश्यते सा शिक्षा।''

शिक्षाशास्त्रों में 'पाणिनीयशिक्षा' ही प्रामाणिकतम एवं प्राचीनतम है।

1. पाणिनीयशिक्षा- महर्षि पाणिनि द्वारा रचित 'पाणिनीय शिक्षा' ऋग्वेद से सम्बन्धित शिक्षाग्रन्थ है। ऋग्वेद से सम्बन्धित शिक्षा ऋक्प्रातिशाख्य भी प्राप्त होती है जिसके रचनाकार आचार्य शौनक हैं।

पाणिनीयशिक्षा में श्लोकों की संख्या 60 है। पाणिनीय-शिक्षा में शिक्षा को वेदपुरुष का प्राण कहा गया है-

**छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते।
ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते ॥41॥
शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम् ।
तस्मात् साङ्गमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते ॥42॥**

2. भरद्वाजशिक्षा- इनमें पदों की शुद्धता तथा ध्वनि भेद से उदात्त आदि स्वरों में भेद का वर्णन है।

3. याज्ञवल्क्यशिक्षा- इसमें 232 श्लोक हैं। इसमें वैदिक स्वरों का विवेचन है। वर्णों के भेद, स्वरूप, लोप, आगम, विकार, प्रकृतिभाव आदि का वर्णन है।

4. प्रातिशाख्य प्रदीप शिक्षा- इसमें स्वर-वर्ण आदि की शिक्षा का विस्तृत विवेचन है। प्राचीन वैयाकरणों के मतों का भी उल्लेख है।

अन्य कुछ मुख्य शिक्षा-ग्रन्थ ये हैं -

(i) व्यास शिक्षा (ii) वासिष्ठी शिक्षा (iii) कात्यायनी शिक्षा (iv) पाराशरी शिक्षा (v) माण्डव्य शिक्षा आदि।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'पाणिनीय शिक्षा' में **60 श्लोक** हैं। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज 192

16. 'मघवा' देवः कः?

(A) इन्द्रः (B) विष्णुः
(C) वरुणः (D) हिरण्यगर्भः

व्याख्या- **इन्द्र -**

- ऋग्वेद का सबसे महान् देवता है।
- स्तुति 250 सूक्तों में की गयी है।
- **तीन विशेष गुण -**
  1 महान् कार्यों को करने की शक्ति
  2 अतुल पराक्रम
  3 असुरों को युद्ध में जीतना
- प्रमुख शस्त्र वज्र था।
- इनको शचीपति, शतक्रतु, मरुत्वान्, मघवा, शक्र, शचीवान् इत्यादि नामों से जाना जाता है।

विष्णुः –

- स्तुति ऋग्वेद के पहले मण्डल के 154 सूक्त में की गई है।
- विष्णु शब्द 'विष्लृ व्याप्तौ' धातु से बनता है, जिसका अर्थ है- व्यापनशील होना। इसी कारण ये सूर्य के वाचक हुये, जिसका अर्थ है-तीनों लोकों को प्रकाशित करने वाला।
- इनको परम-पद का 'अधिष्ठाता' कहा गया है। परमपद उच्चलोक है।
- यह त्रिविक्रम, उरुक्रम, उरुगाय इत्यादि नामों से जाने जाते हैं।

वरुणः -

- वरुण की स्तुति 12 सूक्तों में की गई है।
- वरुण का मुख्य रूप शासक का है, जो प्रशासन तथा नियमों का संचालन करता है।
- इनको धृतव्रत और असुर (असु-प्राण को, र-देने वाला) नाम से जाना जाता है।

हिरण्यगर्भः -

- पुरुष में जो 'विराट्' उत्पन्न होता है वही हिरण्यगर्भ है।
- पुराणों में इनको ब्रह्मा कहा गया है।
- इनको प्रजापति नाम से भी जाना जाता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'मघवा' इन्द्र देवता हैं। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- ऋक्सूक्तसंग्रह- हरिदत्त शास्त्री, भूमिका पेज 12

17. 'यः पृथिवीं व्यथमानामदृंहद्यः पर्वतान्प्रकुपिताँ अरम्णात्' अस्य मन्त्रस्य द्रष्टा ऋषिः कः?

(A) विश्वामित्रः **(B)** मधुच्छन्दा
(C) गृत्समदः **(D)** इन्द्रः

व्याख्या- इन्द्रसूक्त -

- ऋग्वेद के दूसरे मण्डल के 12वें सूक्त में वर्णित है।
- देवता- इन्द्र, ऋषि- गृत्समद, छन्द- त्रिष्टुप्, कुल मन्त्र- 15

प्रमुख मन्त्र -

- यः पृथिवीं व्यथमानामदृंहद् यः पर्वतान्प्रकुपिताँ अरम्णात्।
- यो अन्तरिक्षं विममे वरीयो।
- यो जात एव प्रथमो मनस्वान्, देवो देवान्क्रतुना पर्यभूषत्। यस्य शुष्माद्रोदसी अभ्यसेतां, नृम्णस्य मह्ना स जनास इन्द्रः।।
- यो रध्रस्य चोदिता यः कृशस्य यो ब्रह्मणो नाधमानस्य कीरेः।
- द्यावा चिदस्मै पृथिवी नमेते शुष्माच्चिदस्य पर्वता भयन्ते।

➢ **अग्निसूक्त -**

- ऋग्वेद के पहले मण्डल के पहले सूक्त में वर्णित है।
- ऋषि - मधुच्छन्दा
- देवता - अग्नि
- छन्द - गायत्री
- कुल मन्त्र - 9

प्रमुख मन्त्र -

- यदङ्ग दाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि।
  तवेत्तत्सत्यमङ्गिरः।।
- राजन्तमध्वराणां गोपामृतस्य दीदिविम्।
  वर्धमानं स्वे दमे।।
- स नः पितेव सूनवे, अग्ने सूपायनो भव सचस्वा नः स्वस्तये।।

➢ **सूर्यसूक्त -**

- ऋग्वेद के पहले मण्डल के 115वें सूक्त से लिया गया है।
- ऋषि - कुत्स
- देवता - सूर्य
- छन्द - त्रिष्टुप्
- कुल मन्त्र - 6

प्रमुख मन्त्र -

- चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः।
  आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च।।
- यत्रा नरो देवयन्तो युगानि वितन्वते प्रति भद्राय भद्रम्।
- तन्मित्रस्य वरुणस्याभिचक्षे सूर्यो रूपं कृणुते द्योरुपस्थे।
  अनन्तमन्यद्रुशदस्य पाजः कृष्णमन्यद्धरितः सं भरन्ति।।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि प्रस्तुत मन्त्र इन्द्र सूक्त से लिया गया है इसके द्रष्टा 'गृत्समद' ऋषि हैं। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- ऋक्सूक्तसंग्रह (2.12.2) - हरिदत्त शास्त्री, पेज 178

18. ऋग्वेदस्य शाकलसंहितायां कति सन्ध्यक्षराणि स्वीकृतानि?

(A) एकम् **(B)** द्वे
(C) चत्वारि **(D)** त्रीणि

व्याख्या- ऋग्वेद शाकलसंहिता - ऋग्वेद शाकलसंहिता में समानाक्षर, संध्यक्षर, ऊष्मवर्ण, यम, रिफित आदि अनेक विषयों का वर्णन हुआ है।

➢ **समानाक्षर संज्ञा -**

'अष्टौ समानाक्षराण्यादितः'

समानाक्षर आठ होते हैं -

यथा - अ, आ, ऋ, ॠ, इ, ई, उ, ऊ।

समानाक्षरसंज्ञायाः प्रयोजनम् - समान स्थान वाले दो समानाक्षर (एक दीर्घ 'स्वर' - वर्ण को प्राप्त हो जाते हैं।

➢ **संध्यक्षर संज्ञा -**

'ततश्चत्वारि संध्यक्षराण्युत्तराणि'

तत्पश्चात् आगे वाले चार (अक्षर) संध्यक्षर हैं।

तत्पश्चात् अर्थात् तेभ्यः समानाक्षरेभ्यः, उत्तराणि चत्वारि, (संध्यक्षराणि) संध्यक्षरसंज्ञकानि, भवन्ति।

यथा- ए, ओ, ऐ, औ।

संध्यक्षरसंज्ञायाः प्रयोजनम् - 'संध्यानि संध्यक्षराण्याहुरेके'

समानाक्षर के बाद चार संध्यक्षर होते हैं।

अकार की इकार, उकार, एकार और ओकार के साथ सन्धि होने पर, जो 'अक्षर' निष्पन्न होते हैं वे वैसे अर्थात् 'संध्यक्षर' कहे जाते हैं।

जैसे- ए, ओ, ऐ, औ।

संध्यक्षरसंज्ञा का प्रयोजन - 'कुछ (लोग) संधि से उत्पन्न अक्षरों को संध्यक्षर कहते हैं।

समानाक्षरों के अनन्तर 'संध्यक्षर' हैं तथापि सूत्रकार ने 'उत्तराणि' पद का प्रयोग इसलिए किया है जिससे कोई यह न समझ बैठे कि संध्यक्षरों में ल और ऌ ये दो स्वर वर्ण आते हैं। संध्यक्षरों में इन दो 'स्वर' वर्णों का प्रतिबोध करने के लिए ही सूत्रकार ने 'उत्तराणि' पद का प्रयोग किया है।

ज्ञातव्य है कि इस प्रातिशाख्य में 'स्वर' वर्णों का क्रम इस प्रकार है- अ, आ, ऋ, ॠ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ओ, ऐ, औ, ऌ, (ॡ) ई।

जो ये 'समानाक्षर' और 'संध्यक्षर' संज्ञा वाले वर्ण हैं, बारह वर्णों को, स्वरसंज्ञक वर्ण जानना चाहिए।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णनों से स्पष्ट है कि संध्यक्षर चार हैं। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- ऋग्वेदप्रातिशाख्यम् - वीरेन्द्रकुमार वर्मा, पेज 43

19. 'इष्टप्राप्त्यनिष्टपरिहारयोरलौकिकमुपायं यो ग्रन्थो वेदयति, स वेदः' इति लक्षणं कस्य?

(A) महीधरस्य **(B)** लौगाक्षिभास्करस्य

(C) सायणस्य **(D)** पारस्करस्य

व्याख्या- वेद का अर्थ - विद् (ज्ञाने) + घञ् = वेद इसका आशय है - ज्ञान। अतः वेद शब्द का अर्थ होता है- ज्ञान की राशि या ज्ञान का संग्रह-ग्रन्थ।

वेद शब्द चार धातुओं से विभिन्न अर्थों में बनता है-

1. विद सत्तायाम् (होना, दिवादि)
2. विद ज्ञाने (जानना, अदादि)
3. विद विचारणे (विचारना, रुधादि)
4. विद्ऌ लाभे (प्राप्त करना, तुदादि)

'सत्तायां विद्यते ज्ञाने, वेत्ति विन्ते विचारणे।

विन्दति विन्दते प्राप्तौ, श्यन्लुक्श्नम्शेष्विदं क्रमात्॥

➢ ऋक्प्रातिशाख्य के व्याख्याकार विष्णुमित्र ने वेद का अर्थ बताया है-

'विद्यन्ते ज्ञायन्ते लभ्यन्ते एभिर्धर्मादि-पुरुषार्था इति वेदाः।

अर्थात् 1. जिन ग्रन्थों के द्वारा धर्म, अर्थ, काम और मोक्षरूपी पुरुषार्थचतुष्टय के अस्तित्व का बोध हो।
2. पुरुषार्थचतुष्टय का ज्ञान हो एवं
3. जिनसे पुरुषार्थचतुष्टय की प्राप्ति हो वही वेद हैं।

➢ आचार्य सायण के अनुसार वेद शब्द का अर्थ-

'इष्टप्राप्त्यनिष्ट-परिहारयोरलौकिकम् उपायं यो ग्रन्थो वेदयति, स वेदः।' (तैत्तिरीय संहिता-भाष्य की भूमिका)

अर्थात् जो ग्रन्थ इष्ट-प्राप्ति और अनिष्ट-निवारण का अलौकिक उपाय बताता है, उसे वेद कहते हैं।

मन्त्र और ब्राह्मण दोनों का सामूहिक नाम 'वेद' है। वेद शब्द के पर्याय के रूप में अनेक शब्दों का प्रयोग किया जाता है। जैसे-

1. श्रुति 2. निगम
3. आगम 4. त्रयी
5. छन्दस् 6. आम्नाय
7. स्वाध्याय आदि।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि प्रस्तुत पंक्ति में वेद का लक्षण आचार्य सायण द्वारा किया गया है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज 01

20. 'वाधूलशुल्बसूत्रम्' केन वेदेन सम्बद्धमस्ति?

(A) अथर्ववेदेन **(B)** सामवेदेन

(C) ऋग्वेदेन **(D)** यजुर्वेदेन

व्याख्या- 1. ऋग्वेद - ऋग्वेद का ऋत्विक् 'होता' है। मन्त्र 10580-1/4 हैं। सूक्त 1028, अनुवाक 85, मण्डल 10 मुख्य देवता अग्नि, आचार्य पैल हैं।

कल्पसूत्र

श्रौतसूत्र	गृह्यसूत्र	धर्मसूत्र	शुल्बसूत्र
1. आश्वलायन	1. आश्वलायन	1. वशिष्ठ	कोई नहीं
2. कौषीतकि या शांखायन	2. शांखायन	(एकमात्र)	
	3. शाम्बव्य		

2. यजुर्वेद -

ऋत्विक् - अध्वर्यु
शाखाएँ - 85
मुख्यदेवता - वायु
मुख्य आचार्य - वैशम्पायन
विषय - विविधयागादि

कल्पसूत्र

श्रौतसूत्र	गृह्यसूत्र	धर्मसूत्र	शुल्बसूत्र
1 शुक्ल यजुर्वेद			
1 कात्यायन या पारस्कर	1कात्यायन या पारस्कर	1 हारीत 2 शंख	1 कात्यायन
2 कृष्णयजुर्वेद			
1 कठ	1 कठ	1 विष्णु	1 मानव
2 आपस्तम्ब	2 आपस्तम्ब	2 वशिष्ठ	2 बौधायन
3 बौधायन	3 बौधायन	3 आपस्तम्ब	3 आपस्तम्ब
4 सत्याषाढ	4 सत्याषाढ	4 बौधायन	4 मैत्रायणी
5 वैखानस	5 वैखानस	5 हिरण्यकेशी	5 वाराह
6 भारद्वाज	6 भारद्वाज	6 वैखानस	6 वाधूल
7 वाधूल	7 वाधूल		

3. सामवेद -

ऋत्विक् - उद्गाता
शाखाएँ - 1000 (सहस्रवर्त्मा सामवेदः)
उत्तरार्चिक - 1225 मन्त्र
पूर्वार्चिक - 650 मन्त्र
कुल मन्त्र - 1875 मन्त्र
सामविकार - 6
सामगान - 5
मुख्यदेव एवं आचार्य - सूर्य एवं जैमिनि
विषय - स्तुतिस्तोम

कल्पसूत्र

श्रौतसूत्र	गृह्यसूत्र	धर्मसूत्र	शुल्बसूत्र
1 लाट्यायन	1 खादिर	गौतम (एकमात्र)	कोई नहीं
2 द्राह्यायण	2 गोभिल		
3 मशक/आर्षेय	3 गौतम		
4 खादिर	4 जैमिनीय		
5 जैमिनीय			

4. अथर्ववेद - ऋत्विक् - ब्रह्मा, सूक्त - 731
देवता/आचार्य - सोम/सुमन्तु, मन्त्र - 6000,
काण्ड - 20

कल्पसूत्र

श्रौतसूत्र	गृह्यसूत्र	धर्मसूत्र	शुल्बसूत्र
वैतान (एकमात्र)	1 कौशिक (एकमात्र)	कोई नहीं	कोई नहीं

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि वाधूल शुल्बसूत्र यजुर्वेद से लिया गया है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज 09

21. 'विलोहितः' इति कस्याः देवतायाः विशेषणम् अस्ति?
(A) विष्णोः **(B)** वायोः
(C) रुद्रस्य **(D)** इन्द्रस्य

व्याख्या- 1. रुद्र अन्तरिक्षस्थानीय देवता हैं। सम्पूर्ण ऋग्वेद में 'रुद्र' से सम्बन्ध तीन ही सूक्त हैं। (1/114, 2/33, 7/46)।

रुद्र शब्द की व्युत्पत्ति -

'रौतीति सतो रोरूयमाणो द्रवतीति वा रोदयतेर्वा, यदरुदत्तद्रुद्रस्य रुद्रत्वम्, यदरोदीत तदद्रुस्य रुद्रत्वम्।

निवास स्थान- अन्तरिक्ष

ऋषि - गृत्समद

विशेषण - पशुपति, त्र्यम्बक, शर्व, भव, नीललोहित, मरुत्पिता, मरुत्वान्, असुर, कृत्तिवास, रक्तवर्णी, मृण्याकु, बभ्रु, वङ्कु, जलाषभेषज, नीलकण्ठ, अधृष्म, द्रुतगामी, प्रचेतस्, नीलोदर, लोहित-पृष्ठ, विलोहित इत्यादि।

2. विष्णु - विष्णु द्यु-स्थानीय देवता है। सम्पूर्ण ऋग्वेद में विष्णु से सम्बन्धित 5 ही सूक्त प्राप्त होते हैं।

विष्णु शब्द की व्युत्पत्ति -

'विष्णातेर्विशतेर्वा स्याद् वेवेष्टेर्व्याप्तिकर्मणः।

ऋषि - दीर्घतमा

निवासस्थान - द्युलोक

विशेषण - उरुक्रम, उरुगाय, त्रिविक्रम, भीम, कुचर, गिरिष्ठा, गिरिक्षित, गिरिजा, वृष्ण, मातरिश्वा आदि।

3. इन्द्र - इन्द्र अन्तरिक्षस्थानीय देवता हैं। स्तुति ऋग्वेद में लगभग 250 सूक्तों में की गयी है। जो ऋग्वेद का चतुर्थांश है। इसके अतिरिक्त 50 सूक्तों में अन्य देवताओं के साथ की गयी है।

इन्द्र शब्द की व्युत्पत्ति -

इरां दृणाति, इरां ददाति, इरां दधाति, इरां धारयते, इन्दवे द्रवति, इन्दौ रमते, इन्दञ्छत्रूणां दारयिता।

स्थान - अन्तरिक्ष

ऋषि - गृत्समद

विशेषण - वृत्रहा, सुशिप्र, सोमपा, वज्री, शक्र, पुरन्दर, वज्रहस्त, मरुत्वान्, मरुत्सखा, वज्रबाहु, हरिकेश, हिरण्यबाहु, चित्रबाहु, शचीपति, वसुपति, वज्रिन्, शतक्रतु, मनस्वान् आदि।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि विलोहित 'रुद्र' देवता का विशेषण है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- वैदिकसूक्तसंग्रह - गीताप्रेस, पेज 19

22. 'छन्दःसूत्रम्' इति वेदाङ्गग्रन्थस्य प्रणेता विद्यते -

(A) हलायुधः **(B)** पिङ्गलः
(C) लगधः **(D)** भरतः

व्याख्या- ➢ पिङ्गलः - 'छन्द' वेदाङ्ग को वेद-पुरुष के पादों (पैर) के रूप में माना जाता है - 'छन्दः पादौ तु वेदस्य'। वेद छन्दोमयी वाणी है।

कात्यायन ने अपनी सर्वानुक्रमणी में अक्षर परिमाण को ही छन्द का लक्षण बतलाया है-

''यदक्षरपरिमाणं तच्छन्दः''।

अर्थात् जहाँ अक्षरों की संख्या निश्चित होती है, उसे छन्द कहते हैं।

वेदमन्त्रों के साथ छन्दों का घनिष्ठ सम्बन्ध है। 'छन्दयति पृणाति रोचते इति छन्दः', अर्थात् जिस वाणी को सुनते ही मन आह्लादित हो जाता है, वह छन्दोमयी वाणी ही वेद है।

यास्काचार्य ने छन्द शब्द की व्युत्पत्ति **छद् (ढँकना) आच्छादने, आवरणे** से बताई है जो वेद को आसुरी हस्तक्षेप से सुरक्षित रखता है, वह छन्द है।

आचार्य पिङ्गल द्वारा रचित 'छन्दःसूत्रम्' प्रमुख ग्रन्थ है। आचार्य पिङ्गल छन्दःशास्त्र के प्रणेता माने जाते हैं।

➢ **हलायुध-** शुक्लयजुर्वेद काण्वसंहिता के हलायुध प्रमुख वेद भाष्यकार माने जाते हैं। इनके भाष्य का नाम 'ब्राह्मणसर्वस्व' है।

इनका समय 12 वीं शती ई. है। इनके कुछ अन्य प्रमुख ग्रन्थ - मीमांसासर्वस्व, वैष्णवसर्वस्व, शैवसर्वस्व, पण्डित-सर्वस्व आदि।

➢ **लगध-** ज्योतिषशास्त्र के प्रणेता आचार्य लगध हैं। वेदाङ्गज्योतिष के दो प्रतिनिधि ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं -

1 आर्च ज्योतिष (ऋग्वेद) - 36 पद्य
2 याजुष ज्योतिष (यजुर्वेद) - 43 पद्य

इस ग्रन्थ के प्राचीनतम टीकाकार **सोमाकार** है।

➢ **भरत-** नाट्यशास्त्र के प्रणेता आचार्य भरतमुनि हैं। इसमें 36 अध्याय हैं। भरतमतानुसार नाट्यशास्त्र पञ्चमवेद है। **'नाट्यस्तु पञ्चमो वेदः'**

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'छन्दःसूत्रम्' के प्रणेता आचार्य पिङ्गल हैं। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज 199

23. यास्कीयनिरुक्तग्रन्थे काण्डानि विद्यन्ते?

(A) पञ्च **(B)** त्रीणि
(C) सप्त **(D)** नव

व्याख्या- मुनि यास्क द्वारा रचित 'निरुक्त' उनका प्रमुख ग्रन्थ है। जो तीन काण्डों एवं बारह अध्यायों में विभक्त है। वेदों में निरुक्त को श्रोत्र (कर्ण) के समान बताया गया है। तीन काण्ड इस प्रकार हैं -

1. नैघण्टुक काण्ड
2. नैगम काण्ड
3. दैवत काण्ड

नैघण्टुक काण्ड - नैघण्टुक काण्ड तीन अध्यायों में विभक्त है। जिसमें प्रथम अध्याय में नाम, आख्यात आदि चार पदविभाग, शब्द नित्यता का विवेचन, षड्भाव-विकार, उपसर्गों का अर्थ विवेचन, सभी नाम धातुज हैं- इसका प्रतिपादन, मंत्रों की सार्थकता, अर्थज्ञान का प्रतिपादन। द्वितीय और तृतीय अध्याय में निर्वचन, वर्णपरिवर्तन आदि से सम्बन्धित भाषाशास्त्रीय विवेचन का वर्णन है।

नैगम काण्ड- नैगम काण्ड या ऐकपदिक काण्ड भी तीन अध्यायों 4 से 6 अध्यायों में विभाजित है। इन तीनों काण्डों में वेदों के निघण्टु में पठित कठिन शब्दों की सोदाहरण व्याख्या की गयी है।

दैवत काण्ड - दैवत काण्ड 6 अध्यायों, 7 से 12 अध्याय तक वर्णित है। इन अध्यायों में देवतावाचक शब्दों की विस्तृत व्याख्या तथा द्युलोक, अन्तरिक्ष और पृथिवीस्थानीय देवों का विवेचन है।

* इसके अतिरिक्त दो अध्याय परिशिष्टरूप में जोड़े गये हैं। अध्याय 13 और 14 जिसमें निर्वचन-प्रक्रिया, सृष्टि-उत्पत्ति तथा दार्शनिक महत्त्व के अनेक विषयों का विवेचन है।

* यास्क का निरुक्त वस्तुतः निघण्टु की व्याख्या या भाष्य है। निघण्टु वैदिक शब्दकोश या वैदिक शब्दों का संकलन है। इसमें 5 अध्याय हैं तथा संगृहीत शब्दों की संख्या 1738 है।

निरुक्त के प्रतिपाद्य विषय- संक्षेप में निरुक्त के प्रतिपाद्य विषय 5 बताए गये हैं।

वर्णागमो वर्णविपर्ययश्च द्वौ चापरौ वर्णविकारनाशौ।
धातोस्तदर्थातिशयेन योगस्तदुच्यते पञ्चविधं निरुक्तम्॥

1 वर्णागम-विचार
2 वर्णविपर्यय-विचार
3 वर्णविकार-विचार
4 वर्णनाश-विचार

5 धातुओं का अनेक अर्थों में प्रयोग सम्बन्धी विचार

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि निरुक्त में 3 काण्ड हैं। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति- कपिलदेव द्विवेदी, पेज 204

24. 'भद्रैषां लक्ष्मीर्निहिताधिवाचि' इति पंक्तिः कस्मिन् प्रसङ्गे महाभाष्ये उद्धृता?

(A) शब्दपरिभाषाप्रसङ्गे
(B) व्याकरणाध्ययनप्रयोजनप्रसङ्गे
(C) शब्दार्थसम्बन्धप्रसङ्गे
(D) व्याकरणलक्षणप्रसङ्गे

व्याख्या- महाभाष्य- पाणिनि की अष्टाध्यायी का विशद व्याख्यान पतञ्जलि ने अपने महाभाष्य में किया है। भाष्य का लक्षण-

'सूत्रार्थो वर्ण्यते यत्र वाक्यैः सूत्रानुसारिभिः।
स्वपदानि च वर्ण्यन्ते भाष्यं भाष्यविदो विदुः॥

इसका विभाजन आह्निकों में है - 'अह्ना निर्वृत्तम्' -आह्निकम्' अर्थात् एक-एक दिन के अध्ययनीय या अध्यापित विषय का संग्रह एक-एक आह्निक में किया गया है।

- इसमें 84 आह्निक हैं।
- प्रथम आह्निक - पस्पशाह्निकम् है।

➢ **पस्पशाह्निक का प्रतिपाद्य विषय -**

- शब्द स्वरूप
- व्याकरणाध्ययन का प्रयोजन
- शब्दानुशासन की पद्धति
- शब्द-अर्थ-सम्बन्ध की नित्यता
- व्याकरणशास्त्र द्वारा नियम का बोधन आदि।

➢ **शब्दानुशासन (व्याकरणाध्ययन) का प्रयोजन-**

*** मुख्य प्रयोजन-** मुख्य प्रयोजन पाँच हैं -
रक्षा, ऊह, आगम, लघु और असन्देह।

*** गौण प्रयोजन -** तेऽसुराः, दुष्टः शब्दः, यदधीतम्, यस्तु प्रयुङ्क्ते, अविद्वांसः, विभक्तिं कुर्वन्ति, यो वा इमाम्, चत्वारि, उत त्वः, सक्तुमिव, सारस्वतीम्, दशम्यां पुत्रस्य, सुदेवो असि वरुण।

➢ **सक्तुमिव -**

''सक्तुमिव तितउना पुनन्तो यत्र धीरा मनसा वाचमक्रत।
अत्रा सखायः सख्यानि जानते भद्रैषां लक्ष्मीर्निहिताधिवाचि।।

जिस (व्याकरण) में ध्यान लगाने से वैयाकरणों ने चलनी के द्वारा सत्तुओं के समान (ध्यानयुक्त) मन (प्रकृष्ट ज्ञान) द्वारा वाणी को किया। इस (ब्रह्मप्रतिपादक शब्द) के विषय में समानज्ञान वाले (यथार्थ ज्ञान वाले होते हुए) सायुज्य-ऐक्य प्राप्त करते हैं। (इनकी वाणी में कल्याणमयी लक्ष्मी (स्वप्रकाशरूपा शक्ति) अधिक रहती है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि प्रस्तुत पंक्ति व्याकरणाध्ययन प्रयोजन के प्रसंग में उद्धृत है।

अतः विकल्प 'B' सही है।

स्रोत- व्याकरण-महाभाष्यम्, पस्पशाह्निकम् - जयशङ्कर लाल त्रिपाठी, पेज 56

25. 'लोटो लङ्वत्' इति सूत्रेण अधोलिखितविकल्प मात्रेषु किमभिप्रेतः?

(A) अडागमः **(B)** आडागमः
(C) आदेशः **(D)** सलोपः

व्याख्या- ➢ **लोटो लङ्वत् (3/4/85) -**

लोटस्तामादयः सलोपश्च।

लोट्लकार लङ् के समान होता है।

लङ्लकार में ङकार की इत्संज्ञा होने से वह ङित् है। इसी प्रकार लोट्लकार स्वतः ङित् नहीं, टित् है। अतः ङित् को मानकर होने वाले कार्य नहीं हो पा रहे थे। इसलिए पाणिनि ने इस सूत्र को बनाया।

लोट्लकार को भी लङ् के समान ङित् लकार माना जाय, जिससे ङित् को मानकर होने वाले कार्य हो जायें।

यह सूत्र **ताम्** आदि आदेश करना हो अथवा **नित्यं ङितः** से **सलोप** करना हो तब प्रवृत्त होगा, अन्यत्र नहीं।

➢ **सेर्ह्यपिच्च (3/4/87॥)**

लोटः सेर्हिः सोऽपिच्च।

लोट्लकार के 'सि' के स्थान पर 'हि' आदेश होता है और वह अपित् होता है।

सिप् के पकार की इत्संज्ञा होती है, अतः वह स्वतः पित् है। अतः यह सूत्र पित् को अपित् होने का अतिदेश कर रहा है।

'लोटो लङ्वत्' से अङित् लकार को ङित् लकार का अतिदेश किया था। अब यहाँ पित् प्रत्यय को अपित् कर रहे हैं। इसी को अतिदेश कहते हैं। जो जैसा नहीं है, उसको वैसा मान लिया जाए। यही अतिदेश है।

➢ **आडुत्तमस्य पिच्च (3/4/92)**

लोडुत्तमस्याट् स्यात् पिच्च।

लोट्लकार के उत्तमपुरुष को आट् का आगम होता है और वह आट्सहित उत्तमपुरुष पित् के समान होता है।

➢ **लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः (6/4/71)**

एष्वङ्गस्याट् ।

लुङ्, लङ्, लृङ् के परे रहने पर धातुरूप अङ्ग को अट् आगम का होता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि ''लोटो लङ्वत्'' सूत्र सलोप का विधान करता है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज 401

26. 'इजादेश्च गुरुमतोऽनृच्छः' इति सूत्रेण किं विधीयते?

(A)	आम्प्रत्ययः	**(B)**	लुक्
(C)	क्राद्यनुप्रयोगः	**(D)**	सलोपः

व्याख्या- ➢**'इजादेश्च गुरुमतोऽनृच्छः' (3/1/36)**

इजादिर्यो धातुर्गुरुमानृच्छत्यन्यस्तत आम् स्याल्लिटि।

ऋच्छ् धातु से भिन्न इजादि जो गुरु-वर्ण से युक्त धातु, उससे परे आम् प्रत्यय होता है, लिट् के परे होने पर।

- इच् एक प्रत्याहार है, वह आदि में है जिस धातु के वह धातु इजादि हुआ।
- जिस धातु में दीर्घ वर्ण या संयोग हो वह धातु गुरुमान् अर्थात् गुरुसंज्ञक वर्ण वाला होता है।
- ऋच्छ् धातु में च्, छ् का संयोग है, अतः यह भी गुरुमान् हुआ।
- ऋच्छ् धातु से आम् प्रत्यय अभीष्ट नहीं था, इसलिए निषेध करने के लिए सूत्र में 'अनृच्छः' पढ़ा गया।
- आम् के मकार की इत्संज्ञा नहीं होती है। अतः पूरा आम् धातु से परे होता है। लिट् परे रहते विहित होने से धातु और लिट् के बीच में बैठ जाता है।

➢ **आम्प्रत्ययवत्कृञोऽनुप्रयोगस्य (1/3/63)**

आम्प्रत्ययो यस्मादित्यतद्गुणसंविज्ञानो बहुव्रीहिः।

आम्प्रकृत्या तुल्यमनुप्रयुज्यमानात् कृञोऽप्यात्मनेपदम् ।

आम् प्रकृति वाली धातु अर्थात् आम् प्रत्यय जिस धातु से होता है, ऐसी धातु के समान अनुप्रयोग की जाने वाली कृ धातु से भी आत्मनेपद ही होता है।

➢ **धि च (8/2/25 ॥)**

धादौ प्रत्यये परे सस्य लोपः। एधिताध्वे।

धकारादि प्रत्यय के परे होने पर सकार का लोप होता है।

एधिताध्वे -

एध् + लुट्
एध् + ध्वम्
एध् तास् + ध्वम्
एध् इतास् + ध्वम्
एधिताधि च सलोप + ध्वम्
एधिता + ध्वम्
एधिता + ध्वे (टित आत्मनेपदानां टेरे)
एधिताध्वे

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'इजादेश्च गुरुमतोऽनृच्छः' सूत्र से **आम् प्रत्यय** का विधान हुआ है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज 482

27. अधोऽङ्कितयुग्मेभ्यः समीचीना तालिका चेतव्या?

(क) कृत्यानां कर्तरि वा (2.3.71) — **(i) दण्डिकः**

(ख) उगितश्च (4.1.6) — **(ii) मम मया वा सेव्यो हरिः**

(ग) ई च खनः (3.1.111) — **(iii) भवती**

(घ) अत इनि-ठनौ (5.2.115) — **(iv) खेयम्**

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(A)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)
(B)	(ii)	(iv)	(iii)	(i)
(C)	(i)	(iii)	(iv)	(ii)
(D)	(ii)	(i)	(iii)	(iv)

व्याख्या- भट्टोजिदीक्षित द्वारा रचित सिद्धान्तकौमुदी व्याकरण का प्रमुख ग्रन्थ है जिसमें सन्धि, समास, कारक, प्रत्यय आदि अनेक विषयों का वर्णन हुआ है।

➢ **कृत्यानां कर्तरि वा-** यह कारकविधायक सूत्र है जो षष्ठी का विधान करता है। 'कृत्य' प्रत्ययान्त शब्दों के योग में अनुक्त कर्ता में तृतीया के स्थान पर विकल्प से षष्ठी विभक्ति हो।

जैसे - मया मम वा सेव्यो हरिः।

इस प्रकार पक्ष में तृतीया तथा विकल्प से षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होता है।

➢ **उगिश्च -** उगिदन्तात्प्रातिपदिकात् स्त्रियां ङीप् स्यात्। जिसमें उक् अर्थात् उ, ऋ, ऌ की इत्संज्ञा हो गयी हो ऐसे प्रातिपदिकों से स्त्रीत्वविवक्षा में ङीप् प्रत्यय होता है।

जैसे - भवती, भवन्ती, पचन्ती, दीव्यन्ती।

जैसे - 'भवत्' प्रातिपदिक में।

'उगितश्च' से ङीप् लगाकर, अनुबन्धलोप,

भवत् + ई = भवती
भवत + ई = भवन्ती
पच् = पचन्ती

➢ **अत इनिठनौ -** ह्रस्व अकारान्त प्रथमान्त प्रातिपदिक से इनि

और ठन् प्रत्यय होते हैं। ये प्रत्यय मत्वर्थीय के अन्तर्गत आते हैं।
जैसे - दण्ड + इनि = 'अत इनिठनौ'
दण्डिन् = नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य तथा उपधादीर्घ होकर = दण्डी
दण्ड + ठन = अत इनिठनौ
'ठस्येकः' से इक आदेश
दण्डिकः

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरणों से स्पष्ट है कि 'कृत्यानां कर्तरि वा' से 'मया मम वा सेव्यो हरिः' 'उगितश्च' से ङीप् तथा ह्रस्व अवर्णान्त से मत्वर्थीय इनि प्रत्यय तथा भवत् में ङीप् जोड़कर भवती, पचन्ती आदि सिद्ध हैं। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- अष्टाध्यायी -ईश्वरचन्द्र, पेज 219, 423, 295, 600

28. 'दन्तुरः' इत्यत्र कः प्रत्ययः?
(A) र (B) अच्
(C) इरच् (D) उरच्

व्याख्या- ➢ उरच् प्रत्यय - 'दन्त उन्नत उरच्' (5/2/106)

उन्नता दन्ताः सन्त्यस्य दन्तुरः।

* दाँतों का उन्नत होना अर्थ गम्यमान हो तो प्रथमान्त 'दन्त' शब्द से मत्वर्थ में 'उरच्' प्रत्यय होता है।
* चकार इत्संज्ञक है, 'उर' बचता है। जहाँ 'उन्नत दाँत वाला' अर्थ न होकर केवल सामान्य दाँत वाला अर्थ होगा, वहाँ उरच् न होकर मतुप् के योग में 'दन्तवान्' बनता है।

दन्तुरः - ऊँचे दाँत वाला व्यक्ति। उन्नता दन्ता सन्त्यस्य।
दन्त + उरच् = 'दन्त उन्नत उरच्' सूत्र से
दन्त + उरच् = 'हलन्त्यम्' से च् की इत्संज्ञा 'तस्य लोपः' से उसका लोप
दन्त + उर = 'यचि भम्' से दन्त की 'भ' संज्ञा
दन्त् + उर = 'यस्येति च' से त के (अ) का लोप
दन्तुर + सुप् = 'ङ्याप्प्रातिपदिकात्' से सुप्
दन्तुर + सुप् = (प) की 'हलन्त्यम्' एवं (उ) की 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' से इत्संज्ञा 'तस्यलोपः' से लोप
दन्तुर + स = 'ससजुषो रुः' से रुत्व
दन्तुर + रु = रु के उ की 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' से इत्संज्ञा 'तस्य लोपः' से लोप
दन्तुर + र् = 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' से विसर्ग
दन्तुर + ः = दन्तुरः

➢ **अच् प्रत्यय- 'नन्दिग्रहिपचादिभ्यो ल्युणिन्यचः'** (3/1/134)

नन्दि आदि, ग्रहि आदि और पच् आदि धातुओं से क्रमशः ल्यु, णिनि और अच् प्रत्यय होते हैं।

'यथासंख्यमनुदेशः समानाम्' के नियम से क्रमशः विधान होने पर नन्दि आदि धातुओं से ल्यु, ग्रहि आदि धातुओं से णिनि और पच् आदि धातुओं से अच् प्रत्यय हो जाते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'दन्तुर' में (उरच्) प्रत्यय है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज 1115

29. 'सुमुखा शाला' इत्यत्र स्वाङ्गलक्षणङीष् कथं न?
(A) अप्राणिस्थत्वात् (B) अमूर्तत्वात्
(C) विकारजत्वात् (D) द्रवत्वात्

व्याख्या- ङीष् विधायक सूत्र -

सूत्र - 'स्वाङ्गाच्चोपसर्जनादसंयोगोपधात्' (4.1.54) - जिसकी उपधा में संयोग न हो ऐसा जो उपसर्जनसञ्ज्ञक स्वाङ्गवाची शब्द तदन्त अदन्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व की विवक्षा में विकल्प से ङीष् प्रत्यय हो।

यथा - अतिकेशी / अतिकेशा = केशान्, अतिक्रान्ता पक्ष में ङीप् होकर
अतिकेश + ङीष् (ई) = अतिकेशी
अभाव पक्ष में टाप् (अजाद्यतष्टाप्) करके-
अतिकेश + टाप्
अतिकेश + आ = सवर्ण दीर्घ होकर = अतिकेशा

इसी प्रकार - चन्द्रमुखी / चन्द्रमुखा- चन्द्र इव मुखं यस्याः सा
चन्द्रमुख + ङीष् (ई) = चन्द्रमुखी
चन्द्रमुख + टाप् = चन्द्रमुखा

*** असंयोगोपधात् किम् ?** असंयोग होने पर ही 'ङीष्' होगा अन्यथा संयोग होने पर टाप् हो जायेगा।
यथा- सुगुल्फ + टाप् = सुगुल्फा

*** उपसर्जनात् किम् ?** क्योंकि उपसर्जन न होने पर ङीष् न हो तब केवल टाप् प्रत्यय होगा।
यथा - शिखा + टाप् (आ) = शिखा

*** स्वाङ्ग -** स्वाङ्ग से यहाँ अपना अङ्ग नहीं समझना चाहिए व्याकरण में यह परिभाषिक शब्द माना गया है। वैयाकरणों ने स्वाङ्ग को त्रिविध बताया है।

1. अद्रवं मूर्तिमत्स्वाङ्गं प्राणिस्थमविकारजम् ।
2. अतस्थं तत्र दृष्टं च।

3. तेन चेत्तत्तथायुतम् ।।

अद्रव मूर्तिमत् स्वाङ्ग प्राणिस्थमविकारणम् - जो पदार्थ द्रव न हो, मूर्तिमान् हो, विकार से उत्पन्न न हुआ हो एवं प्राणियों में स्थित रहता हो वह 'स्वाङ्ग' कहलाता है।

जैसे - प्राणिस्थ केश, मुख, स्तन आदि स्वाङ्ग हैं, तदन्तों से प्रकृतसूत्र द्वारा ङीष् तथा पक्ष में टाप् होता है।

जैसे - सुकेशी-सुकेशा

चन्द्रमुखी - चन्द्रमुखा

- इनसे भिन्न स्थलों में ङीष् नहीं होता तब टाप् होता है।

जैसे - सुमुखा शाला सुन्दरं मुखं यस्याः सा सुमुखा (सुन्दर द्वारा वाला घर)

- यहाँ मुख शब्द प्राणिस्थ न होने से स्वाङ्ग नहीं है अतः ङीष् नहीं हुआ।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरणों से स्पष्ट है कि 'सुमुखा शाला' में अप्राणिस्थत्वात् के कारण स्वाङ्गलक्षण ङीष् नहीं हुआ। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग 6), पेज 63

30. 'शत्रुमधिकुरुते' इत्यत्र क्रियापदे आत्मनेपदविधायकं सूत्रं किम् ?

(A) वेः शब्दकर्मणः **(B)** अकर्मकाच्च

(C) अधेः प्रसहने **(D)** उपपराभ्याम्

व्याख्या- 'वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी' भट्टोजिदीक्षित प्रणीत उनका प्रमुख व्याकरण ग्रन्थ है।

आत्मनेपद विधायक कुछ प्रमुख सूत्र -

* **भावकर्मणोः (1/3/13)-** भाव और कर्म अर्थ में हुए लकार के स्थान पर आत्मनेपद प्रत्यय होते हैं।

यथा - बभूवे, अनुबभूवे।

* **कर्तरि कर्मव्यतिहारे (1/3/14) -** क्रिया का विनिमय अर्थात् अदला-बदली अर्थ द्योत्य होने पर धातु से कर्तृवाच्य में आत्मनेपद होता है।

यथा - व्यतिराते, व्यतिराते, व्यतिराते।

व्यतिभाते, व्यतिभाते, व्यतिभाते, व्यतिबभे।

व्यतिलुनीते।

* **नेर्विशः (1/3/17) -** नि उपसर्ग से परे विश् धातु से आत्मनेपद होता है।

निविशते । निविविशे । निवेक्ष्यते ।

* **विपराभ्यां जेः (1/3/19) -** वि तथा परा उपसर्ग से परे जि धातु से आत्मनेपद होता है।

यथा - विजयते। पराजयते।

* **अकर्मकाच्च (1/3/26) -** उद् उपसर्गपूर्वक स्था धातु यदि अकर्मक हो तो उससे आत्मनेपद होता है।

यथा - भोजनकाले उपतिष्ठते।

* **अधेः प्रसहने (1/3/33) -** अधि उपसर्ग से युक्त कृ धातु से अभिभव अर्थ में आत्मनेपद हो जाता है।

यथा - शत्रुमधिकुरुते

* **उपपराभ्याम् (1/3/39) -** वृत्ति, सर्ग, तायन अर्थ गम्यमान होने पर उप और परा उपसर्गों से भी परे क्रम् धातु से आत्मनेपद होता है।

यथा - उपक्रमते। पराक्रमते।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरणों से स्पष्ट है कि 'शत्रुमधिकुरुते' - इस उदाहरण में आत्मनेपदविधायक 'अधेः प्रसहने' सूत्र है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- वैयाकरण सिद्धान्तकौमुदी (भाग 5)-गोविन्दाचार्य, पेज 397

31. 'अध्यापयति वेदम्' इत्यत्र क्रियापदे परस्मैपदविधायकं सूत्रं किम्?

(A) विभाषाऽकर्मकात्

(B) निगरणचलनार्थेभ्यश्च

(C) परेर्मृषः

(D) बुधयुधनशजनेङ्प्रुद्रुस्रुभ्यो णेः

व्याख्या- 'वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी' भट्टोजिदीक्षित द्वारा प्रणीत है।

परस्मैपदविधायक प्रमुख सूत्र -

* **अनुपराभ्यां कृञः (1/3/79) -** क्रियाफल के कर्तृगामी होने पर और गन्धन आदि अर्थ होने पर अनु अथवा परा उपसर्ग पूर्वक कृ धातु से परस्मैपद ही होता है।

यथा - अनुकरोति। पराकरोति।

* **अभिप्रत्यतिभ्यः क्षिपः (1/3/80) -** अभि, प्रति और अति उपसर्गों से परे क्षिप् धातु से कर्ता अर्थ में परस्मैपद होता है।

यथा - अभिक्षिपति। अभिभूत करता है।

प्रतिक्षिपति। अतिक्षिपति।

* **प्राद्वहः (1/3/81) -** प्र उपसर्ग से परे वह् धातु से परस्मैपद होता है।

यथा - प्रवहति।

* **परेर्मृषः (1/3/82) -** परि उपसर्ग से परे मृष् धातु से परस्मैपद होता है।

यथा - परिमृष्यति।

* **व्याङ्परिभ्यो रमः (1/3/83) -** वि, आङ् और परि उपसर्ग से परे रम् धातु से परस्मैपद होता है।

यथा - विरमति, परिरमति, आरमति।

* **उपाच्च (1/3/84) -** उप उपसर्ग से परे रम् धातु से भी परस्मैपद होता है।

यथा - उपरमति (प्रेरणा में उपरमयति।)

* **विभाषाऽकर्मकात् (1/3/85) -** उप उपसर्ग से परे रम् धातु अकर्मक अवस्था में हो तो उससे आत्मनेपद विकल्प से होता है।

यथा- उपरमति, उपरमते।

* **बुधयुधनशजनेङ्प्रुद्रुस्रुभ्यो णेः (1/3/86)-** णिजन्त, बुध्, युध्, नश्, जन्, इङ्, प्रु, द्रु और स्रु धातुओं से परस्मैपद होता है।

यथा - अध्यापयति वेदम् ।
बोधयति पद्मम् ।
योधयति, नाशयति, प्रावयति
द्रावयति, स्रावयति आदि।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'अध्यापयति देवान्' में परस्मैपदविधायक सूत्र 'बुधयुधनशजनेङ्प्रुद्रुस्रुभ्यो णेः' है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (भाग 5)-गोविन्दाचार्य, पेज 445

32. 'एकोनिमित्तं शब्दानामपरोऽर्थे प्रयुज्यते' इति पंक्तिः कुत्र उपलभ्यते?

(A) महाभाष्ये **(B)** वाक्यपदीये
(C) पाणिनीयशिक्षायाम् **(D)** अष्टाध्याय्याम्

व्याख्या- महाकवि भर्तृहरि द्वारा रचित **'वाक्यपदीयम्'** व्याकरण ग्रन्थ है। वाक्यपदीयम् में तीन काण्ड हैं, इसीलिए इसे त्रिकाण्डी भी कहा जाता है।

1. ब्रह्मकाण्ड (कारिकाएँ) 156
2. वाक्यकाण्ड (कारिकाएँ) 486
3. पदकाण्ड (कारिकाएँ) 1218

वाक्यपदीयम् में कुल (कारिकाएँ) 1860 हैं।

*** ब्रह्मकाण्ड को मुख्यतः 'आगमकाण्ड' कहा जाता है।**

व्याकरणसम्मत शब्द का स्वरूप -

'द्वावुपादानशब्देषु शब्दौ शब्दविदो विदुः।
एको निमित्तं शब्दानामपरोऽर्थे प्रयुज्यते ॥1/43॥

शब्दविद् वैयाकरण उपादान या वाचक शब्दों में दो अन्य शब्द निहित हैं, ऐसा मानते हैं। एक शब्दों का निमित्त है, जिसे 'स्फोट' कहते हैं और दूसरा स्वरूपार्थ के रूप में प्रयुक्त होता है।

इसप्रकार प्रत्येक वाचक शब्द तीन शब्दों का समुदाय होता है-

(i) वाचक या अभिधान शब्द
(ii) स्वरूपार्थ या अभिधेय शब्द
(iii) निमित्त शब्द

*** उपादान शब्द-** उपादान शब्द को वाचक शब्द भी कहते हैं। जिनके उच्चारण करते ही दो शब्द लक्षित होते हैं-

(क) शब्द की अवधारणा
(ख) स्वरूपार्थ की अवधारणा

इनमें एक शब्द प्रतिपादक का निमित्त है और दूसरा अर्थप्रतिपत्ति का निमित्त है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि प्रस्तुत पंक्ति **'वाक्यपदीयम्'** से ली गयी है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- वाक्यपदीयम् (1/43)- शिवशंकर अवस्थी, पेज 60

33. 'शास्त्रानुपूर्व्यं तद्विद्यात् यथोक्तं लोकवेदयोः' इति पंक्तिः कस्मिन् ग्रन्थे उपलभ्यते?

(A) पाणिनीयशिक्षायाम् **(B)** अष्टाध्याय्याम्
(C) वाक्यपदीये **(D)** महाभाष्ये

व्याख्या- 1. पाणिनीय शिक्षा- शिक्षा का प्रथम सोपान वर्ण- शिक्षा है। शिक्षा का अर्थ सायण ने ऋग्वेदभाष्यभूमिका में किया है-

''वर्णस्वराद्युच्चारणप्रकारो यत्रोपदिश्यते सा शिक्षा।''

अर्थात् जिसमें वर्ण, स्वर आदि उच्चारण प्रकारों का उपदेश हो, उसे 'शिक्षा' कहते हैं।

शिक्षाशास्त्रों में **'पाणिनीय शिक्षा'** ही प्रामाणिकतम तथा प्राचीनतम है।

अथ शिक्षां प्रवक्ष्यामि पाणिनीयं मतं यथा।
शास्त्रानुपूर्व्यं तद्विद्याद्यथोक्तं लोकवेदयोः॥1॥

अर्थात् अब मैं पाणिनिप्रोक्त 'शिक्षा' (नामक वेदांग) को प्रकृष्ट रूप से कहूँगा। उस (पाणिनीय मत) को शास्त्रोपदेष्टृपरम्परा से प्राप्त लोक और वेद में जैसा कहा गया है, वैसा जानें।

2. महाभाष्य- पाणिनि की अष्टाध्यायी का विशद व्याख्यान पतञ्जलि ने अपने महाभाष्य में किया है।

''सूत्रार्थो वर्ण्यते यत्र वाक्यैः सूत्रानुसारिभिः।
स्वपदानि च वर्ण्यन्ते भाष्यं भाष्यविदो विदुः॥

इसका विभाजन आह्निकों में है- 'अह्ना निर्वृत्तम् - आह्निकम्' अर्थात् एक दिन में अध्यापनीय विषय का संग्रह एक-एक आह्निक में किया गया है। प्रथम आह्निक का नाम 'पस्पशाह्निक' है।

अथेत्ययं शब्दोऽधिकारार्थः प्रयुज्यते। शब्दानुशासनं नाम शास्त्रमधिकृतं वेदितव्यम् ।

यहाँ 'अथ' शब्द अधिकार के अर्थ में प्रयुक्त किया गया है। 'शब्दानुशासन' नामक शास्त्र का अधिकार (अर्थात् प्रारम्भ) किया जा रहा है, ऐसा समझना चाहिए।

3. वाक्यपदीय- वाक्यपदीय के रचनाकार भर्तृहरि हैं। वाक्यपदीय व्याकरण का दार्शनिक ग्रन्थ है। इसे त्रिकाण्डी भी कहते हैं। इसकी अनादिनिधन आदि चार कारिकाओं, वृत्ति और श्रीवृषभाचार्य की पद्धति में शब्दब्रह्म का निरूपण किया गया है।

''अनादिनिधनं ब्रह्म शब्दतत्त्वं यदक्षरम् ।
विवर्ततेऽर्थभावेन प्रक्रिया जगतो यतः॥1॥

उत्पत्ति और नाश से रहित शब्दतत्त्वात्मक ब्रह्म जो अक्षर या ओङ्कार के नाम से जाना जाता है, जिससे जगत् की प्रक्रिया या विकार अर्थ के रूप में परिणत होते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि प्रस्तुत पंक्ति **पाणिनीय-शिक्षा** से ली गयी है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- पाणिनीय-शिक्षा - रमाशङ्कर मिश्र, पेज 03

34. संस्कृतभाषाध्वनिसन्दर्भेऽधोलिखितेषु 'अर्धस्वरः' कः?

(A) क **(B)** ष
(C) म **(D)** व

व्याख्या- संस्कृत भाषा ध्वनि सन्दर्भ में स्वर, अर्धस्वर, स्पर्श, संघर्षी, स्पर्शसंघर्षी, अनुनासिक, पार्श्विक, लुण्ठित, उत्क्षिप्त, अन्तःस्थ आदि विभिन्न विषयों का वर्णन किया गया है।

स्वर - अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ओ, ऐ, औ स्वरों के 4 भेद हैं।

स्वर	अर्धसंवृत	अर्धविवृत	विवृत
इ	ए	अ	आ
ई	ओ		आ
उ			
इ			

स्पर्श - क् ख् ग् घ्
ट् ठ् ड् ढ्
त् थ् द् ध्
प् फ् ब् भ्

संघर्षी - ह, .ख्, .ग्, स्, श्, .ज्, .फ्, .व्
स्पर्श संघर्षी - च्, छ्, ज्, झ्
अनुनासिक - ङ्, ञ्, ण्, न्, म्, न्ह, म्ह
पार्श्विक - ल्
लुंठित - ऱ् (ऱ्ह)।
उत्क्षिप्त - ड़, ढ़ ।
अर्धस्वर - य्, व्, ऱ्, ल् ।
अन्तःस्थ - य्, व्, र्, ल् ।
अघोष संघर्षी - श्, ष्, स् ।
घोष ऊष्म - ह
अघोष ऊष्म - ः (विसर्ग)
शुद्ध अनुनासिक - ं (अनुस्वार)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'व' अर्धस्वर है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज 148-149

35. अर्थविस्तारोदाहरणेष्वन्यतमो नास्ति?

(A) तैलम् **(B)** मुग्धः
(C) गौः **(D)** सभ्यः

व्याख्या- अर्थपरिवर्तन (अर्थविकास) की दिशाएँ-
अर्थ-परिवर्तन को विकास सिद्धान्त की दृष्टि से 'अर्थविकास' भी कहा जाता है।
अर्थ-परिवर्तन तीन प्रकार का होता है -
1. अर्थविस्तार 2. अर्थसंकोच 3. अर्थादेश
अन्य दो भेद- (1) अर्थोत्कर्ष (2) अर्थापकर्ष

1. अर्थविस्तार- कुछ शब्द मूलरूप से संकुचित अर्थ में प्रयुक्त होते थे। बाद में उनके अर्थ में विस्तार हो गया। यथा-

(i) कुशल- कुशल शब्द का अर्थ था- कुशान् लाति (कुशों को लाने वाला) बाद में इसका अर्थविस्तार होकर चतुरता एवं निपुणता हो गया।

(ii) प्रवीण- प्रवीण का अर्थ था- प्रकृष्टो वीणायाम् (वीणावादन में श्रेष्ठ या निपुण) इसमें अर्थ विस्तार होकर निपुण या दक्ष अर्थ निकला।

(iii) तैल- सबसे पहले 'तिल' का तेल (द्रव) निकला था। अब अर्थ-विस्तार होकर तेल या द्रवमात्र के लिए प्रयुक्त होने लगा।

2. अर्थसंकोच - अर्थविस्तार के विपरीत कुछ शब्दों के अर्थों का संकोच हुआ। यथा-

(i) जगत्- इसका व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ है-गतिशील, संसरणशील। परन्तु यह शब्द संसार अर्थ में रूढ़ हो गया।

(ii) गौः- इसका व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ- 'गच्छतीति गौः' चलने वाले को 'गो' (गाय) कहते हैं। परन्तु अब यह पशु विशेष 'गाय' अर्थ में रूढ़ हो गया है।

(iii) सभ्य- पहले इस शब्द का अर्थ- 'सभा में बैठने वाला' था परन्तु अब सुसंस्कृत, शिष्ट के लिए हो गया।

3. अर्थादेश - अर्थादेश का अर्थ है, एक अर्थ के स्थान पर दूसरे अर्थ का आ जाना। आदेश का अर्थ है- एक को हटाकर दूसरे का आना। यथा-

(i) असुर- मूल अर्थ असु + र (प्राणशक्ति संपन्न) 'देवता' था। बाद में सुर का उल्टा अ + सुर (राक्षस) अर्थ हो गया।

(ii) मौन- मूल अर्थ 'मुनि-कर्म' था। अब 'चुप रहना' अर्थ रह गया।

(iii) देवानां प्रियः- देवों का प्रिय। अशोक की उपाधि थी। बौद्धों के द्वेष के कारण ब्राह्मणों ने 'देवानां प्रियः' का अर्थ 'मूर्ख' कर दिया।

(iv) मुग्ध- मूल अर्थ था 'मूर्ख'। इसका अर्थ हो गया है- 'मोहित होना' सौन्दर्य पर मुग्ध होना।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरणों से स्पष्ट है कि 'गौः' शब्द अर्थविस्तार का उदाहरण नहीं है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्त्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र- कपिलदेव द्विवेदी, पेज 337

36. अर्थसङ्कोचोदाहरणेष्वन्यतमो नास्ति?

(A) जलदः (B) सभ्यः
(C) मनुष्यः (D) पङ्कजम्

व्याख्या- अर्थपरिवर्तन की दिशाएँ- संसार की सभी वस्तुएँ परिवर्तनशील हैं और भाषा भी विकास की दृष्टि से परिवर्तनशील है। जिस प्रकार ध्वनियों में परिवर्तन होता है उसी प्रकार भाषा के शब्दों के अर्थों में भी परिवर्तन होता है। भाषाविज्ञान में परिवर्तन की तीन दिशाएँ बतायी गयी हैं -

1. अर्थविस्तार
2. अर्थसंकोच
3. अर्थादेश

अर्थादेश के फिर दो भेद हो जाते हैं-

(क) अर्थोत्कर्ष (ख) अर्थापकर्ष

1. अर्थ विस्तार- कुछ शब्द मूलरूप में किसी विशेष या संकुचित अर्थ में प्रयुक्त होते थे। बाद में उनके अर्थ में विस्तार हो गया। जैसे - कुशल, प्रवीण, तैल, गोशाला, गोष्ठ, महाराज, गवेषणा

2. अर्थ संकोच- अर्थविस्तार के विपरीत कुछ अर्थ संकुचित अर्थात् सीमित हो गया है या जिनका व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ बहुत विस्तृत है, परन्तु ये किसी विशेष अर्थ में रूढ़ हो गये हैं।
जैसे - गो, अश्व, पृथ्वी, जगत्, संसार, अम्बुज, पंकज, वारिधि, सरसिज, जलद, तोयद, सर्प, पर्वत, तटस्थ, मध्यस्थ, उदासीन, मन्दिर, मृदा, सभ्य, श्राद्ध, तर्पण, अनुकूल, प्रतिकूल, वेदना, घृणा इनके अलावा समास, उपसर्ग, प्रत्यय, विश्लेषण, नामकरण आदि शब्द अर्थसंकोच के उदाहरण हैं।

3. अर्थादेश- अर्थादेश का अर्थ है- एक को हटाकर उसके स्थान पर दूसरा अर्थ आना। अर्थादेश में शब्द का प्राचीन अर्थ लुप्त हो जाता है और नया अर्थ आ जाता है।
जैसे - असुर, वर, सह, मौन, देवानां प्रियः, बौद्ध-बुद्ध, पाखण्ड, आकाशवाणी, साहस, खाद-खाला, भद्र-भद्दा, मुग्धा, वाटिका आदि।

(i) अर्थोत्कर्ष - उनमें कुछ शब्दों में परिवर्तन से अर्थ में उत्कर्ष आ जाता है।
जैसे - मुग्ध, साहस-साहसी, कर्पट-कपड़ा, गोष्ठ- गोष्ठी, गवेषणा, सभ्य।

(ii) अर्थापकर्ष - कुछ शब्दों में परिवर्तन से अर्थ में अपकर्ष आ जाता है।
जैसे - असुर, जुगुप्सा, शौच, देवानां प्रियः, भद्र-भद्दा, घृणा, महाराज, लिङ्ग, चतुर्वेदी।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'सभ्यः' अर्थसंकोच के अन्तर्गत आता है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्त्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज 337

37. ध्वनिवैज्ञानिकैः करणत्वेन किं स्वीक्रियते?

(A) मृदुतालु (B) वर्त्सः
(C) ऊर्ध्वैष्ठिः (D) नासिकाविवरः

व्याख्या- वाग्यंत्र के समस्त अवयवों को कार्य और उपयोगिता की दृष्टि से दो भागों में विभक्त किया जाता है- 1. करण 2. स्थान

1. करण- वाग्यन्त्र के उन अवयवों को कहते हैं जो सामान्यतया इधर-उधर गतिशील हो सकते हैं और इस आधार पर वे अपनी विभिन्न स्थितियाँ धारण कर सकते हैं। इसी आधार पर जिह्वा के अग्र, मध्य और पश्च भेद किये जाते हैं। इसको ऊँचाई और निचाई के आधार पर संवृत, अर्ध-संवृत, अर्ध-विवृत और विवृत भेद किये जाते हैं।

इसी प्रकार ओष्ठ के वृत्ताकार, अवृत्ताकार भेद किये जाते हैं।

2. स्थान या उच्चारण-स्थान- वाग्यंत्र के उन अवयवों को कहते हैं, जो अपने स्थान पर स्थिर रहते हैं और जिह्वा जिन स्थानों के पास जाती है या उनका स्पर्श करती है। दन्त, तालु, मूर्धा आदि इस प्रकार के अवयव हैं।

* **मृदुतालु (Soft Palate, कोमल तालु)-** गलबिल (कण्ठमार्ग) की ओर से आगे आने पर कोमल तालु मिलता है। यह कठोर तालु की समाप्ति से लेकर गलबिल तक फैला हुआ है।

यह कोमल मांस-खण्ड के तुल्य है।

ध्वनि-विज्ञान में यह एक महत्त्वपूर्ण अवयव है। यह मुख-विवर और नासिकाविवर के मध्य कपाट या ढक्कन के तुल्य कार्य करता है। स्वरों (अ, इ आदि) और स्पर्श व्यंजनों (क, ख, ग आदि) के उच्चारण में कोमल तालु ऊपर उठकर नासारन्ध्र को बन्द कर देता है, अतः पूरी वायु मुख-मार्ग से निकलती है नासिक्य ध्वनियों के उच्चारण में कोमल तालु नीचे आ जाता है और मुख-द्वार को बन्द कर देता है, अतः पूरी वायु नासाविवर से ही निकलती हैं ध्वनिवैज्ञानिक ने इसे ही करण के रूप में स्वीकार करते हैं।

* **वर्त्स (Alveolus)-** यह दाँतों के मूल से लेकर कठोर तालु के प्रारम्भ तक का भाग है। दाँतों की जड़ में यह उभरा हुआ खुरदुरा भाग 'वर्त्स' कहलाता है।

* **नासाविवर (Nasal Cavity, नेज़ल केविटी)-** यह गलबिल से प्रारम्भ होकर नासिका के अग्रभाग तक फैला हुआ है। इसके अन्दर एक विवर है। इस विवर से वायु के निर्गत होने पर अनुनासिक या नासिक्य ध्वनियाँ उत्पन्न होती हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि ध्वनिवैज्ञानिक करण के रूप में मृदुतालु (कोमल तालु) को स्वीकार करते हैं। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र- कपिलदेव द्विवेदी, पेज 136

38. ''सा च त्रिविधा विधात्री, अभिधात्री, विनियोक्त्री च'' इत्यत्र सा का?

(A) वैदिकीसमाख्या **(B)** श्रुतिः

(C) लौकिकीसमाख्या **(D)** शब्दशक्तिः

व्याख्या- अर्थसंग्रह लौगाक्षिभास्कर द्वारा रचित है। इसमें चार विधियाँ हैं-

1. उत्पत्तिविधि 2. विनियोगविधि
3. प्रयोगविधि 4. अधिकारविधि

1. उत्पत्ति विधि-

'कर्मस्वरूपमात्रबोधको विधिरुत्पत्तिविधिः

यथा - अग्निहोत्रं जुहोति।

अर्थात् (याग आदि) कर्म के केवल स्वरूप के बोधक विधि को उत्पत्तिविधि कहते हैं। जैसे- अग्निहोत्रं जुहोति।

2. विनियोगविधि-

'अङ्गप्रधानसम्बन्धबोधको विधिर्विनियोगविधिः।

यथा- दध्ना जुहोतीति।

अर्थात् (द्रव्य, देवता आदि) अङ्ग तथा प्रधान (होम आदि) के सम्बन्ध के ज्ञापक विधि को विनियोग विधि कहते हैं। जैसे - दध्ना जुहोति।

'एतस्य विधेः सहकारिभूतानि षट्प्रमाणानि- श्रुति-लिङ्ग-वाक्य-प्रकरण-स्थान-समाख्यारूपाणि।

अर्थात् इस विनियोगविधि के सहायक छः प्रमाण -

(i) श्रुति (ii) लिङ्ग (iii) वाक्य (iv) प्रकरण

(v) स्थान (vi) समाख्या रूप में है।

तत्र निरपेक्षो रवः श्रुतिः। सा च त्रिविधा - विधात्री, अभिधात्री, विनियोक्त्री च।

अर्थात् उन (छः प्रकार के प्रमाणों) में (शेषत्व या अङ्गत्व का बोध कराने के लिए दूसरे प्रमाण की) आवश्यकता से रहित शब्द श्रुति (नामक प्रमाण) है। वह तीन प्रकार की होती है -

(i) विधात्री (ii) अभिधात्री और (iii) विनियोक्त्री।

विनियोग विधि के सहकारी प्रमाण

1 श्रुति 2 लिङ्ग 3 वाक्य 4 प्रकरण 5 स्थान 6 समाख्या

1 विधात्री 2 अभिधात्री 3 विनियोक्त्री

1 विभक्तिरूपा 2 एकाभिधानरूपा 3 एकपदरूपा

1 तृतीयाश्रुति 2 द्वितीयाश्रुति 3 सप्तमी श्रुति

1 द्रव्यात्मिका 2 गुणात्मिका 1 क्रियात्मिका 2 मन्त्रात्मिका

(व्रीहिभिर्यजेत) (अरुणया..क्रीणाति) (व्रीहीन् प्रोक्षति) (इमाम् ..आदत्ते)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरणों से स्पष्ट है कि तीनों भेद 'श्रुति' नामक प्रमाण के हैं। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- अर्थसंग्रह - वाचस्पति उपाध्याय, पेज 57

39. अर्थसंग्रहानुसारं 'शाब्दीभावना' इत्यनेन कः अभिप्रायः?

(A) अपौरुषेयवाक्यम्

(B) समभिव्यवहारः

(C) पुरुषप्रवृत्त्यनुकूलो भावयितुर्व्यापारविशेषः

(D) प्रयोजनेच्छाजनितक्रियाविषयव्यापारः

व्याख्या- लौगाक्षिभास्कररचित 'अर्थसंग्रह' पूर्वमीमांसा दर्शन का प्रमुख प्रकरण ग्रन्थ है।

भावना - अर्थसंग्रह में दो प्रकार की भावना बतायी गयी है-

1. शाब्दी भावना 2. आर्थी भावना

1. शाब्दी भावना-

'पुरुषप्रवृत्त्यनुकूलो भावयितुर्व्यापारविशेषः शाब्दीभावना। सा च लिङंशेनोच्यते।

उनमें अर्थात् शाब्दी तथा आर्थी भावनाओं में व्यक्ति की प्रवृत्ति की जनक अथवा सहायक प्रयोजन का व्यापारविशेष शाब्दी भावना है। वह लिङ् अंश से व्यक्त होती है, क्योंकि लिङ् का श्रवण होने पर निश्चित रूप से प्रतीत होता है कि यह मुझे प्रवृत्त कर रहा है अर्थात् यह मेरी प्रवृत्ति के अनुकूल व्यापार करने वाला है।

शाब्दी भावना में तीन अंश बताए गये हैं -

(क) साध्य - किं भावयेत् (ख) साधन - केन भावयेत्

(ग) इतिकर्तव्यता - कथं भावयेत्

इन तीनों अंशों का अभिप्राय क्रमशः यह है कि शाब्दी भावना से किस फल को सिद्ध किया जाए, किस साधन से सिद्ध किया जाये तथा किस प्रकार सिद्ध किया जाये।

2. आर्थी भावना-

'प्रयोजनेच्छाजनितक्रियाविषयव्यापार आर्थीभावना। सा चाख्यातत्वांशेनोच्यते, आख्यातसामान्यस्य व्यापार-वाचित्वात्।

स्वर्ग आदि उद्देश्य की इच्छा से होने वाली याग आदि क्रिया से सम्बद्ध व्यापार आर्थीभावना है। वह आख्याततत्व अंश से व्यक्त होती है। क्योंकि आख्यात व्यापार को ही प्रकट करते हैं। इसमें भी साध्य, साधन, इतिकर्तव्यता तीन अंशों की अपेक्षा होती है।

यजेत

धातु (यज्) — **भावना (त प्रत्यय)**

भावना (त प्रत्यय) → आर्थी (आख्यात करना), शाब्दी (लिङ् चाहिए)

आर्थी →

साध्य	साधन	इतिकर्तव्यता
किं भावयेत्	केन भावयेत्	कथं भावयेत्
स्वर्गादिफल	याग आदि धात्वर्थ	प्रयाजादि अङ्गघात

शाब्दी → लौकिकी (पुरुषनिष्ठ), वैदिकी (लिङ्गादिनिष्ठ)

लिङ्गादिनिष्ठ →

साध्य	साधन	इतिकर्तव्यता
किं भावयेत्	केन भावयेत्	कथं भावयेत्
अङ्गत्रयोपेत आर्थीभावना	लिङ्गादि का ज्ञान	अर्थवाद से ज्ञेय प्राशस्त्य आदि।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि शाब्दभावना का अभिप्राय 'पुरुषप्रवृत्त्यानुकूलोभावयितुर्व्यापारविशेषः' है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- अर्थसंग्रह - कामेश्वरनाथ मिश्र, पेज 27

40. अर्थसंग्रहानुसारं विधिश्चतुर्विधः उत्पत्तिविधिः, विनियोगविधिः, अधिकारविधि .... च।

(A) नियमविधिः **(B)** प्रयोगविधिः

(C) यज्ञविधिः **(D)** परिसंख्याविधिः

व्याख्या- अर्थसंग्रह नामक मीमांसाग्रन्थ लौगाक्षिभास्कर द्वारा प्रणीत है। लौगाक्षिभास्कर के दो ही ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं -

1 मीमांसा दर्शन का 'अर्थसंग्रह'

2 वैशेषिकदर्शन का 'तर्ककौमुदी'

अर्थसंग्रह में चार प्रकार की विधियों का वर्णन है -

1. उत्पत्तिविधि 2. विनियोगविधि
3. अधिकारविधि 4. प्रयोगविधि

'अर्थसंग्रहानुसारं विधिश्चतुर्विधः - उत्पत्तिविधिः, विनियोगविधिः, अधिकारविधिः, प्रयोगविधिश्चेति।

1. उत्पत्ति विधि -

तत्र कर्मस्वरूपमात्रबोधको विधिरुत्पत्तिविधिः, यथा 'अग्निहोत्रं जुहोति'।

उन (चारों प्रकार की विधियों में (याग आदि) कर्म के केवल स्वरूप के बोधक विधि को उत्पत्तिविधि कहते हैं।

जैसे - 'अग्निहोत्रं जुहोति'।

2. विनियोग विधि -

'अङ्गप्रधानसम्बन्धबोधको विधिर्विनियोगविधिः।' यथा- 'दध्ना जुहोति'।

अर्थात् (द्रव्य, देवता आदि) अङ्ग तथा प्रधान (होम आदि) के सम्बन्ध के ज्ञापक विधि को विनियोग विधि कहते हैं।

जैसे- 'दध्ना जुहोति'।

3. अधिकार विधि -

'कर्मजन्यफलस्वाम्यबोधको विधिरधिकारविधिः। कर्मजन्यफलस्वाम्यं कर्मजन्यफलभोक्तृत्वम् । स च 'यजेत स्वर्गकामः' इत्यादिरूपः।

अर्थात् (यागादि) कर्म से उत्पन्न होने वाले (स्वर्गादि) फल के स्वामित्व का ज्ञान कराने वाली विधि अधिकारविधि है। कर्म से उत्पाद्य फल के स्वामित्व का अर्थ है- कर्म से उत्पाद्य फल का भोक्ता होना और उस अधिकारविधि का रूप है- 'स्वर्गकामो यजेत'।

4. प्रयोग विधि -

'प्रयोगप्राशुभावबोधकोविधिः प्रयोगविधिः। स चाङ्गवाक्यैकवाक्यतापन्नः प्रधानविधिरेव।

अर्थात् प्रयोग कर्मसम्पादन में शीघ्रता के भाव की ज्ञापक विधि प्रयोगविधि है। वह अङ्गवाक्यों के साथ एकवाक्यता को प्राप्त प्रधानविधि ही है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरणों से स्पष्ट है कि प्रस्तुत पंक्ति में रिक्तस्थान की जगह प्रयोगविधि होगा। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- अर्थसंग्रह -कामेश्वरनाथ मिश्र, पेज 46, 61, 115, 138

41. योगदर्शनानुसारं कः 'योगाङ्गैः' सह सम्बद्धः न अस्ति?

(A) विकल्पः **(B)** नियमः
(C) प्रत्याहारः **(D)** प्राणायामः

व्याख्या- 'योगसूत्र' महर्षि पतञ्जलि द्वारा प्रणीत है। यह 'योगदर्शन' का आधार है-

योगदर्शन को 'सेश्वर सांख्य' भी कहा जाता है। योगसूत्र पर व्यास ने 'योगभाष्य' लिखा है।

योगसूत्र में चार पाद हैं -

1 समाधिपाद 2 साधनपाद
3 विभूतिपाद 4 कैवल्यपाद

इसमें कुल 195 सूत्र हैं।

1 समाधिपाद - योग तथा समाधि के स्वरूप एवं भेदों का वर्णन है।

योग - 'योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः'

समाधि - समाधि दो प्रकार की है - सम्प्रज्ञात तथा असम्प्रज्ञात

2 साधनपाद - योग प्राप्ति के साधन तथा अष्टयोगाङ्गों का वर्णन।

अष्टाङ्गयोग - यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि- ये आठ योग के अङ्ग हैं।

'यमनियमाऽऽसनप्राणायामप्रत्याहारधारणाध्यानसमाधयोऽष्टावङ्गानि। (2/29)

(क) यमाः - अहिंसादयः पञ्च, अहिंसा इत्यादि पाँच यम हैं।

'अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमाः। (2/30)

(ख) नियम - शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वरप्रणिधान नियम कहे जाते हैं।

'शौचसन्तोषतपःस्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि नियमाः। (2/32)

(ग) आसन - जो शारीरिक स्थिति स्थायी और सुखद हो, वह आसन है।

'स्थिरसुखमासनम्' (2/46)

(घ) प्राणायाम - उस आसनजय के होने पर श्वास और प्रश्वास की गति को रोकना प्राणायाम है।

'तस्मिन् सति श्वासप्रश्वासयोर्गतिविच्छेदः प्राणायामः।' (2/49)

(ङ) प्रत्याहार - इन्द्रियों को अपने-अपने विषयों से हटा लेना प्रत्याहार है।

स्वविषयासम्प्रयोगे चित्तस्वरूपानुसार इवेन्द्रियाणां प्रत्याहारः ॥ (2/54)

(च) धारणा - चित्त को किसी बाहरी या भीतरी प्रदेश में लगाना धारणा है।

'देशबन्धश्चित्तस्य धारणा।' (3/1)

(छ) ध्यान - उस विषय में ज्ञान की एकतानता ही ध्यान है।

'तत्र प्रत्ययैकतानता ध्यानम्।' (3/2)

(ज) समाधि - समाधि दो प्रकार की होती है -

(1) सविकल्पक (2) निर्विकल्पक

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरणों से स्पष्ट है कि 'विकल्पः' योग का अङ्ग नहीं है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- योगसूत्र - (2/29)

42. 'अथातो ब्रह्मजिज्ञासा' इत्यत्र 'अथ' शब्दः कस्मिन् अर्थे अस्ति?

(A) हेत्वर्थे **(B)** अधिकारार्थे
(C) अन्तयार्थे **(D)** आनन्तर्यार्थे

व्याख्या- वेदान्तदर्शन का प्रमुख ग्रन्थ 'ब्रह्मसूत्र' है जो महर्षि बादरायण प्रणीत है। जिस पर आदि शंकराचार्य ने शांकरभाष्य लिखा है।

वेदान्तमीमांसा शास्त्र का यह आदि ग्रन्थ है-

'अथातो ब्रह्मजिज्ञासा' ॥1॥

अथ अतः ब्रह्मजिज्ञासा।

सूत्रार्थ - विवेक आदि साधनचतुष्टयरूप सम्पत्तिसिद्धि के अनन्तर कर्मफल के अनित्य और ज्ञानफल मोक्ष के नित्य होने से मुमुक्षु को ब्रह्मजिज्ञासा करनी चाहिए।

यद्यपि अध्याय की सिद्धि के अनन्तर विषय और प्रयोजन की सिद्धि होने पर प्रस्तुत ग्रन्थ अर्थात् ब्रह्मसूत्र का आरम्भ करना युक्त है। तत्र अथ शब्द आनन्तर्यार्थः परिगृह्यते। 'अथ' शब्द आनन्तर्यार्थ का बोधक है।

➢ **अथ योगानुशासनम् -** भाष्यम् । अथेत्ययमधिकारार्थः। योगानुशासनं शास्त्रमधिकृतं वेदितव्यं। योगः समाधिः।

- 'अथ' शब्द अधिकारार्थक है। योगानुशासन रूप शास्त्र आरम्भ हुआ है, यह जानना चाहिए।
- योग का अर्थ है समाधि।
- वह चित्त का सार्वभूमि धर्म है।
- क्षिप्त, मूढ, विक्षिप्त, एकाग्र और निरुद्ध- ये चित्त की पाँच भूमियाँ हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'अथातो ब्रह्मजिज्ञासा' प्रस्तुत सूत्र में अथ शब्द 'आनन्तर्य' अर्थ में है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- ब्रह्मसूत्र (शाङ्करभाष्य)- स्वामी सत्यानन्द सरस्वती, पेज 19

43. व्याप्यस्य 'पक्षधर्मत्वधीः' इति किम्?

(A) परामर्शः **(B)** अनुमितिः

(C) पक्षता **(D)** प्रतिज्ञा

व्याख्या- विश्वनाथपञ्चानन भट्टाचार्य प्रणीत न्यायसिद्धान्तमुक्तावली नामक टीका 'कारिकावली' ग्रन्थ की है। 'कारिकावली' में कुल 168 कारिकाएँ हैं।

* **अनुमिति -** अनुमिति में परामर्श ही व्यापार है और व्याप्ति का ज्ञान करण होता है।

'व्यापारस्तु परामर्शः करणं व्याप्तिधीर्भवेत्।'

* **परामर्श -** व्याप्य अर्थात् व्याप्ति से विशिष्ट जो धूम आदि हेतु हैं, उनका पक्ष अर्थात् सन्दिग्ध साध्य वाला विषय पर्वत आदि में वृत्तित्व अर्थात् रहने का ज्ञान परामर्श कहलाता है।

'व्याप्यस्य पक्षवृत्तित्वधीः परामर्श उच्यते।'

* **व्याप्ति -** साध्य (जो हेतु के द्वारा अनुमेय है, जैसे वह्नि आदि) से युक्त भिन्न वस्तु में हेतु (धूम आदि) का सम्बन्ध न होना व्याप्ति कहा जाता है।

'व्याप्तिः साध्यवदन्यस्मिन्नसम्बन्ध उदाहृतः'। (68)

अथवा हेतु के अधिकरण में रहने वाले अभाव के अप्रतियोगी (अविरोधी) साध्य के साथ हेतु का एक ही अधिकरण में रहना व्याप्ति है।

'अथवा हेतुमन्निष्ठविरहाऽप्रतियोगिना।
साध्येन हेतोरैकाधिकरण्यं व्याप्तिरुच्यते॥' (69)

* **पक्ष-** साधन (अनुमान) करने की इच्छा से शून्य सिद्धि जहाँ नहीं है, वह पक्ष कहलाता है। उसमें वृत्तित्व के ज्ञान से अनुमिति होती है।

'सिषाधयिषया शून्या सिद्धिर्यत्र न विद्यते।
स पक्षस्तत्र वृत्तित्वज्ञानादनुमितिर्भवेत्॥' (70)

* **हेत्वाभास -** अनैकान्त, विरुद्ध, असिद्ध, प्रतिपक्षित एवं कालात्ययापदिष्ट- इस प्रकार हेत्वाभास पाँच प्रकार के होते हैं। (जो केवल हेतु जैसे लगते हैं लेकिन हेतु नहीं होते वे हेत्वाभास कहलाते हैं।

'अनैकान्तो विरुद्धश्चाप्यसिद्धः प्रतिपक्षितः।
कालात्ययापदिष्टश्च हेत्वाभासास्तु पञ्चधा॥' (71)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि प्रश्नोक्त पंक्ति 'परामर्श' का लक्षण है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- न्यायसिद्धान्तमुक्तावली (अनुमानोपमान खण्ड) महानन्द झा, पेज 21

44. जैनदर्शनानुसारं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि ....।

(A) जीवः **(B)** मोक्षमार्गः

(C) मनःपर्यायः **(D)** मोक्षः

व्याख्या- ➢ **जैनदर्शन -** जैन शब्द 'जिन' से बना है।

* 'जिन'-'जि' + नक्, आदि वृद्धि होकर जैन शब्द बना है। 'जिन' शब्द का अर्थ है - **विजेता**
* अर्थात् रागद्वेषादि मनोविकारों का दमन कर विजय प्राप्त करने वाला 'जिन' कहलाता है -

'रागद्वेषादिमनोविकाराञ्जयतीति जिनः।'

* 'जिन' के उपासक 'जैन' कहलाये **'जिन उपास्यदेवतास्येति जैनः।'**
* 'जैन दर्शन' के आदिप्रवर्तक **'ऋषभदेव'** हैं। जैनों के कुल 24 तीर्थंकर हैं। इनके अन्तिम तीर्थंकर **'महावीर स्वामी'** हैं।

➢ **त्रिरत्न -** सम्यक् ज्ञान, सम्यक् श्रद्धा (दर्शन) और सम्यक् चरित्र (आचरण) त्रिरत्न कहलाते हैं। ये ही **'मोक्षप्राप्ति'** के **'निश्चित मार्ग'** हैं।

1. सम्यक् ज्ञान - जैनाचार्य **'उमास्वाति'** ने ज्ञान के दो भेद किये हैं - (क) निर्विकल्पक (ख) सविकल्पक

(क) निर्विकल्पक ज्ञान- चक्षु, अचक्षु, अवधि तथा केवल चार प्रकार का होता है।

(ख) सविकल्पक ज्ञान - सविकल्पक ज्ञान प्रत्यक्ष और परोक्ष के भेद से दो प्रकार का होता है।

अप्रत्यक्ष एवं प्रत्यक्ष सविकल्पक ज्ञान- मति, श्रुति, अवधि, मनःपर्याय और केवल के भेद से पाँच प्रकार का होता है।

2. सम्यक् दर्शन- जिनदेव द्वारा कहे गये तत्त्वों में रुचि होना ही सम्यक्दर्शन कहलाता है। सम्यक्दर्शन के आठ अङ्ग हैं -

(क) जीव **(ख)** अजीव **(ग)** आस्रव **(घ)** बन्ध **(ङ)** संवर **(च)** निर्जरा **(छ)** मोक्ष

* इन्हीं जीव आदि सातों तत्त्वों में विश्वास रखना ही सम्यक् दर्शन है।

3. सम्यक् चरित्र - रागद्वेषादि सांसारिक वासनाओं के परित्याग के लिए किया जाने वाला आचरण ही सम्यक् चरित्र है। सम्यक् आचरण के लिए **'पाँच महाव्रतों'** का पालन करना आवश्यक है। वे निम्नलिखित हैं -

(क) अहिंसा **(ख)** सत्य **(ग)** अस्तेय **(घ)** ब्रह्मचर्य **(ङ)** अपरिग्रह

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि ये त्रिरत्न मोक्ष के मार्ग हैं। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- भारतीय दर्शन एवं संस्कृति- महराजदीन पाण्डेय, पेज 233

45. 'सर्वं शून्यम्' इति केन बौद्धसम्प्रदायेन स्वीकृतम् ?

(A) माध्यमिकेन **(B)** सौत्रान्तिकेन
(C) योगाचारेण **(D)** वैभाषिकेन

व्याख्या- बौद्ध दर्शन के संस्थापक 'गौतम बुद्ध' हैं। इनका नाम सिद्धार्थ था। इनके माता-पिता मायादेवी और शुद्धोधन थे। 19 वर्ष की अवस्था में इन्होंने 'महाभिनिष्क्रमण' (गृहत्याग) किया था। बौद्ध दर्शन के चार सम्प्रदाय हैं -

1 माध्यमिक (शून्यवाद)
2 योगाचार (विज्ञानवाद)
3 सौत्रान्तिक (बाह्यार्थानुमेयवाद)
4 वैभाषिक (बाह्यार्थ प्रत्यक्षवाद)

सर्वं शून्यम् - माध्यमिक (शून्यवादी)
बाह्यपदार्थस्य शून्यम् - योगाचार (विज्ञानवादी)
बाह्यपदार्थस्य अनुमानात् ज्ञायते - सौत्रान्तिक
बाह्यपदार्थस्य प्रत्यक्षात् ज्ञायते - वैभाषिक

➢ **चार आर्य सत्य -** महात्मा बुद्ध ने चार आर्यसत्यों का प्रतिपादन किया -

1 दुःख **2** दुःखसमुदय **3** दुःखनिरोध **4** दुःखनिरोधगामिनी

➢ **अष्टाङ्गिक मार्ग -** यह अष्टाङ्ग मार्ग बौद्ध धर्म का **'आचार मार्ग'** है। इसे श्रेष्ठ मार्ग भी कहा गया है। ये आठ मार्ग हैं-

1 सम्यक् दृष्टि **5** सम्यक् आजीव
2 सम्यक् संकल्प **6** सम्यक् व्यायाम
3 सम्यक् वाक् **7** सम्यक् स्मृति
4 सम्यक् कर्मान्त **8** सम्यक् समाधि

➢ **त्रिरत्न -** बौद्ध धर्म के त्रिरत्न निम्न हैं-

1 बुद्ध **2** धम्म **3** संघ

➢ **प्रमाण-** प्रमाण दो हैं - **1** प्रत्यक्ष **2** अनुमान

➢ **द्वादश निदान -** प्रतीत्यसमुत्पाद का ज्ञान द्वादश निदानों से होता है।

1. अविद्या **7.** वेदना
2. संस्कार **8.** तृष्णा
3. विज्ञान **9.** उपादान
4. नामरूप **10.** भव
5. षडायतन **11.** जाति
6. स्पर्श **12.** जरामरण

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरणों से स्पष्ट है कि 'सर्वं शून्यम्' माध्यमिक सम्प्रदाय से लिया गया है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- भारतीय दर्शन एवं संस्कृति -महराजदीन पाण्डेय, पेज 305

46. तर्कसंग्रहानुसारं 'संस्कारमात्रजनकं ज्ञानम्' अस्ति?

(A) अनुभवः **(B)** यथार्थः
(C) स्मृतिः **(D)** प्रमाणम्

व्याख्या- वैशेषिक दर्शन के आदिप्रवर्तक महर्षि कणाद माने जाते हैं। वैशेषिकदर्शन का प्रकरणग्रन्थ तर्कसंग्रह अन्नम्भट्ट' द्वारा रचित है। जो एक प्रमेयप्रधान ग्रन्थ है।

इसमें सात पदार्थ बताये गये हैं -

1 द्रव्य 5 विशेष
2 गुण 6 समवाय
3 कर्म 7 अभाव
4 सामान्य

1. द्रव्य - नौ प्रकार के बताये गये हैं।

'तत्र द्रव्याणि पृथिव्याप्तेजोवाखाकाशकाल-दिगात्मनांसि नवैव।

(i) पृथ्वी (ii) जल (iii) तेज (iv) वायु (v) आकाश (vi) काल (vii) दिक् (viii) आत्मा (ix) मन।

2. गुण - चौबीस प्रकार के बताए गये हैं -

(1) रूप (2) रस (3) गन्ध (4) स्पर्श (5) संख्या (6) परिमाण (7) पृथक्त्व (8) संयोग (9) विभाग (10) परत्व (11) अपरत्व (12) गुरुत्व (13) द्रव्यत्व (14) स्नेह (15) शब्द (16) बुद्धि (17) सुख (18) दुःख (19) इच्छा (20) द्वेष (21) प्रयत्न (22) धर्म (23) अधर्म (24) संस्कार।

3. कर्म - पाँच प्रकार के बताये गये हैं -

(i) उत्क्षेपण (ii) अपक्षेपण (iii) आकुञ्चन (iv) प्रसारण (v) गमन। उत्क्षेपणापक्षेपणाकुञ्चनप्रसारणगमनानि पञ्च कर्माणि।

4. सामान्य - सामान्य दो प्रकार के बताये गयें हैं-

(i) पर (ii) अपर

5. विशेष - विशेष अनन्त बताये गये हैं। (नित्यद्रव्यवृत्तयो विशेषास्तवन्ता एव)

6. समवाय - समवाय एक बताया गया है।

7. अभाव - अभाव चार प्रकार के बताये गये हैं-

(i) प्रागभाव (ii) प्रध्वंसाभाव (iii) अन्योन्याभाव (iv) अत्यन्ताभाव

चौबीस प्रकार के गुणों में सोलहवाँ गुण बुद्धि है, जो इस प्रकार बताया गया-

*** बुद्धि - 'सर्वव्यवहारहेतुर्गुणो बुद्धिर्ज्ञानम्' सा द्विविधा– स्मृतिरनुभवश्च।**

समस्त व्यवहारों के कारण भूत गुण को 'बुद्धि' अर्थात् ज्ञान कहते हैं वह दो प्रकार की होती है -

(i) स्मृति (ii) अनुभव

*** स्मृति - संस्कारमात्रजन्यं ज्ञानं स्मृतिः।**

संस्कार-मात्र से उत्पन्न ज्ञान को 'स्मृति' कहते हैं।

*** अनुभव- तद्भिन्नं ज्ञानमनुभवः। स द्विविधः यथार्थोऽयथार्थश्च।**

स्मृति से भिन्न ज्ञान को 'अनुभव' कहते हैं। वह दो प्रकार का होता है। यथार्थ, अयथार्थ।

*** यथार्थ - तद्वति तत्प्रकारकोऽनुभवो यथार्थः।**

यथा- रजते इदं रजतम् इति ज्ञानम्। सैव प्रमेत्युच्यते।

*** अयथार्थ - तदभाववति तत्प्रकारकोऽनुभवोऽयथार्थः।**

यथा- शुक्तौ इदं रजतम् इति ज्ञानम्। सैवाप्रमत्युच्यते।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरणों से स्पष्ट है कि 'संस्कारमात्रजन्यं ज्ञानम्' यह लक्षण स्मृति का है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- तर्कसंग्रह - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज 38

47. तर्कसंग्रहानुसारं शब्दसाक्षात्कारे कः सन्निकर्षः?

(A) समवायः **(B)** संयोगः

(C) समवेतसमवायः **(D)** विशेषण-विशेष्यभावः

व्याख्या- * न्याय, वैशेषिक दर्शन का प्रधान प्रकरण ग्रन्थ 'तर्कसंग्रह' अन्नम्भट्ट प्रणीत है।

* तर्कसंग्रह प्रमेयप्रधान ग्रन्थ है चूँकि प्रमेयों का ज्ञान प्रमाण द्वारा होता है, अतः यहाँ चार प्रकार के प्रमाण बताए गये हैं -

(1) प्रत्यक्ष (2) अनुमान

(3) उपमान (4) शब्द

*** प्रत्यक्ष - तत्र प्रत्यक्षज्ञानकरणं प्रत्यक्षम् । इन्द्रियार्थसन्निकर्ष- जन्यं ज्ञानं प्रत्यक्षम्।**

अर्थात् प्रत्यक्षज्ञान का करण प्रत्यक्ष कहलाता है तथा इन्द्रियार्थ-सन्निकर्षजन्य ज्ञान को प्रत्यक्ष कहते हैं।

प्रत्यक्षज्ञानहेतुः इद्रियार्थसन्निकर्षः षड्विधः -

(1) संयोग (4) समवाय

(2) संयुक्त समवाय (5) समवेत समवाय

(3) संयुक्त समवेत समवाय (6) विशेषण-विशेष्य-भाव

(1) संयोग - चक्षुषा घटप्रत्यक्षजनने संयोगः सन्निकर्षः।

अर्थात् चक्षु से घट का प्रत्यक्ष ज्ञान होना संयोग सन्निकर्ष है।

(2) संयुक्तसमवाय - घटरूपप्रत्यक्षज्ञानजनने संयुक्तसमवायः सन्निकर्षः, चक्षुः संयुक्ते घटे रूपस्य समवायात्।

अर्थात् चक्षु से घटरूप का प्रत्यक्ष ज्ञान होना संयुक्त समवाय सन्निकर्ष कहलाता है। चक्षु से संयुक्त घट में रूप का समवाय होने से।

(3) संयुक्तसमवेतसमवाय - रूपत्वसामान्यप्रत्यक्षे संयुक्त-समवेतसमवायसन्निकर्षः। चक्षुः संयुक्ते घटे रूपं समवेतं, तत्र रूपत्वस्य समवायात्।

अर्थात् चक्षुसंयुक्त घटरूप में समवेतरूपत्व सामान्य का ज्ञान होना संयुक्तसमेवतसमवाय कहलाता है।

(4) समवाय- श्रोत्रेण शब्दसाक्षात्कारे समवायः सम्बन्धः। कर्णविवरवर्त्याकाशस्य श्रोत्रत्वाच्छब्दस्याकाशगुणत्वाद् गुणगुणिनोश्च समवायात् ।

अर्थात् श्रोत्र द्वारा शब्द का साक्षात्कार समवायसन्निकर्ष कहलाता है।

(5) समवेतसमवाय - शब्दत्वसाक्षात्कारे समवेतसमवायः सन्निकर्षः। श्रोत्रसमवेते शब्दे शब्दत्वस्य समवायात्।

अर्थात् श्रोत्र द्वारा शब्द में समवेत शब्दत्व का साक्षात्कार होना समवेत समवाय कहलाता है।

(6) विशेषणविशेष्यभाव- जब भूतल पर घट के अभाव का प्रत्यक्ष होता है तो भूतल पर घट के अभाव को कहने के लिए 'भूतल का घटाभाव' विशेषण होता है और 'भूतल' विशेष्य होता है। अतः किसी वस्तु के अभाव का प्रत्यक्ष कराने के लिए न्यायवैशेषिक शास्त्र में 'विशेष-विशेषण भाव-सन्निकर्ष' को मान्यता दी गई।

*** अभावप्रत्यक्षे विशेषणविशेष्यभावः सन्निकर्षः। घटाभाववद्भूतलम् इत्यत्र चक्षुःसंयुक्ते भूतले घटाभावस्य विशेषणत्वात्।**

अर्थात् अभाव का प्रत्यक्ष ज्ञान होना विशेषणविशेष्यभाव सन्निकर्ष कहलाता है। जैसे - चक्षु से संयुक्त भूतल में घटाभाव का ज्ञान होना।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरणों से स्पष्ट है कि शब्द साक्षात्कार समवाय सन्निकर्ष है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- तर्कसंग्रह - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज 48

48. ''श्रीहीरः सुषुवे जितेन्द्रियचयं मामल्लदेवी च यम्'' इति वार्ता केन सम्बद्धा?

(A) माघेन **(B)** भारविणा

(C) श्रीहर्षेण **(D)** भासेन

व्याख्या- ➢ **माघ-** शिशुपालवधम् नामक महाकाव्य के प्रणेता महाकवि माघ हैं जो इनकी एकमात्र रचना है। इन्हें विद्वानों ने श्रेष्ठ महाकाव्य प्रणेता माना है। **(काव्येषु माघः)**

सर्वाधिकारी सुकृताधिकारी श्री वर्मलाख्यस्य बभूव राज्ञः।
असक्तदृष्टिर्विरजाः सदैव देवोऽपरः सुप्रभदेवनामा ॥

पितामह - सुप्रभदेव थे जो राजा वर्मलात या श्रीवर्मल के सर्वाधिकारी अर्थात् दीवान थे।

पिता - दत्तक

माता - ब्राह्मी

स्थान - गुजरात (भीनमाल)

समय - सातवीं शती उत्तरार्द्ध (675 ई. लगभग)

➢ **भवभूति -** महाकवि भवभूति ने तीन नाटकों की रचना की है- (1) मालतीमाधवम् (2) महावीरचरितम् (3) उत्तररामचरितम्

पिता - नीलकण्ठ

माता - जतुकर्णी

मूलनाम - श्रीकण्ठ

समय - आठवीं शताब्दी पूर्वार्द्ध

आश्रयदाता - यशोवर्मन्

पितामह - भट्टगोपाल

* कल्हण ने राजतरंगिणी में राजा यशोवर्मा को भवभूति तथा वाक्पतिराज का आश्रयदाता बताया है।

कविर्वाक्पतिराजश्रीभवभूत्यादिसेवितः।
जितो ययौ यशोवर्मा तद्गुणस्तुतिवन्दिताम्॥

➢ **श्रीहर्ष -** श्रीहर्ष द्वारा रचित 'नैषधीयचरितम्' महाकाव्य उनका प्रमुख ग्रन्थ है जिसमें उन्होंने अपना जीवन परिचय दिया है। इसके अतिरिक्त भी अनेक ग्रन्थों की रचना की।

'श्रीहर्षं कविराजराजिमुकुटालङ्कारहीरः सुतम्।
श्रीहीरः सुषुवे जितेन्द्रियचयं मामल्लदेवी च यम्॥
(1/145)

यह नैषधीयचरित के प्रथम सर्ग का अन्तिम (145) श्लोक है जिसमें उन्होंने अपना परिचय दिया है।

पिता - श्रीहीर

माता - मामल्लदेवी

समय - 12वीं शती

आश्रयदाता - जयचन्द्र

उपाधि - नवभारती, कविपण्डित

➢ **भास -** महाकवि भास के तेरह नाटक प्राप्त होते हैं। इनके जीवन चरित के विषय में कोई भी विवरण प्राप्त नहीं होता।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरणों से स्पष्ट है कि 'श्रीहीरः सुषुवे जितेन्द्रियचयं मामल्लदेवी च यम्' श्रीहर्ष के विषय में कहा गया है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज 216, 395, 221, 274

49. ''नन्दोन्मूलनदृष्टवीर्यमहिमाबुद्धिस्तु मा गान्मम'' मुद्राराक्षसे कस्येयमुक्तिः?

(A) चन्द्रगुप्तस्य **(B)** चाणक्यस्य
(C) राक्षसस्य **(D)** चन्दनदासस्य

व्याख्या- 'नाटककार विशाखदत्त' की सर्वाधिक प्रसिद्ध एवं अमर कृति एकमात्र 'मुद्राराक्षसम्' नाटक है।

* मुद्रा के द्वारा राक्षस के निग्रह की घटना अंकित की गई है। इसलिए इसका नाम मुद्राराक्षस रखा-

'मुद्रया गृहीतं राक्षसमधिकृत्य कृतो ग्रन्थः मुद्राराक्षसम्।'

* कथावस्तु का मूल स्रोत - **श्रीमद्भागवत तथा विष्णुपुराण।**

* 'चाणक्य' के ही गुप्तचरों के पलायन की सूचना शिष्य द्वारा उनको दिये जाने पर शिष्य से कहते हैं -

(स्वगतम्)

'सर्वेषामेव शिवाः पन्थानः सन्तु। (प्रकाशम्) वत्स। अलं विषादेन। पश्य -

(मन ही मन) सभी का कल्याण हो। (प्रकट रूप में) वत्स। विषाद मत करो। देखो -

ये याताः किमपि प्रधार्य्य हृदये, पूर्वं गता एव ते
ये तिष्ठन्ति, भवन्तु तेऽपि गमने कामं प्रकामोद्यमाः।
एका केवलमर्थसाधनविधौ सेनाशतेभ्योऽधिका
नन्दोन्मूलनदृष्टवीर्यमहिमा बुद्धिस्तु मा गान्मम ॥1.26॥

जिन्होंने पहले ही भागने का विचार हृदय में कर लिया था, वे लोग तो चले ही गये। अब जो रह गये हैं, यदि वे भागने के इच्छुक हों तो इच्छानुसार चले जायें, किन्तु कार्य पूर्ण करने में सैकड़ों सेनाओं से बढ़कर, नन्दवंश का विनाश करने में लगी शक्तिमहिमा वाली मेरी बुद्धि मुझसे अलग न होवे।

सूक्तियाँ -

1. 'लब्धायां पुरि यावदिच्छमुषितं कृत्वा पदं नो गले'- **चन्द्रगुप्त**
2. 'अत्यादरः शङ्कनीयः।' – **चन्दनदास**
3. 'अनुचित उपचारो हृदयस्य परिभवादपि दुःखमुत्पादयति'- **चन्दनदास**
4. 'न युक्तं प्राकृतमपि रिपुमवज्ञातुम्।'- **चाणक्य**
5. 'चीयते बालिशस्यापि सत्क्षेत्रपतिता कृषिः।'- **सूत्रधार**

6. 'न शालेः स्तम्बकरिता वप्तुर्गुणमपेक्षते।' - **सूत्रधार**
7. 'भव्यं रक्षति भवितव्यता।'- **विराधगुप्त**
8. 'दैवमविद्वांसः प्रमाणयन्ति।' - **चाणक्य**
9. 'अयमपरो गण्डस्योपरि स्फोटः।' - **राक्षस**
10. 'प्रायो भृत्यास्त्यजन्ति प्रचलितविभवं स्वामिनं सेवमानाः।' **कञ्चुकी**

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि प्रश्नोक्त उक्ति चाणक्य की है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- मुद्राराक्षसम् - (1/26)

50. समीचीनां तालिकां चिनुत -

(क) अभिज्ञानशाकुन्तलम्	**(i) उत्तररामचरितम्**
(ख) तीर्थोदकञ्च वह्निश्च नान्यतः शुद्धिमर्हतः	**(ii) श्रीहर्षो निपुणः कविः**
(ग) रत्नावली	**(iii) हर्षचरितम्**
(घ) परिवर्तमान एकः कालः शैलानिवानन्तः	**(iv) श्रद्धा वित्तं विधिश्चेति त्रितयं तत् समागतम्**

	क	ख	ग	घ
(A)	(iv)	(i)	(ii)	(iii)
(B)	(iii)	(i)	(ii)	(iv)
(C)	(iv)	(ii)	(i)	(iii)
(D)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)

व्याख्या- ➢ अभिज्ञानशाकुन्तलम् - महाकवि कालिदास द्वारा रचित 'अभिज्ञानशाकुन्तल' विश्व प्रसिद्ध नाटक ग्रन्थ है। जैसा कि कहा गया है -

काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला।
तत्रापि च चतुर्थोऽङ्कः तत्र श्लोकचतुष्टयम् ॥

प्रमुख श्लोक -

(1) श्रद्धा वित्तं विधिश्चेति त्रितयं तत् समागतम् । (7/29)
(2) अवेहि तनयां ब्रह्मन् अग्निगर्भां शमीमिव। (4/4)
(3) शुश्रूषस्व गुरून् कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीजने। (4/18)
(4) अस्मान् साधु विचिन्त्य संयमधनान् ....। (4/17)
(5) अतः परीक्ष्य कर्तव्यं विशेषात् सङ्गतं रहः। (5/24)
(6) तदेषां भवतः कान्ता, त्यज वैनां गृहाण वा। (5/26)
(7) उदेति पूर्वं कुसुमं ततः फलं घनोदयः प्राक् तदनन्तरं पयः। (7/30)
(8) छाया न मूर्च्छति मलोपहतप्रसादे शुद्धे तु दर्पणतले सुलभावकाशा। (7/32)

➢ **उत्तररामचरितम् -** 'उत्तररामचरितम्' महाकवि भवभूति द्वारा प्रणीत है।

प्रमुख सूक्तियाँ -

(1) अपि ग्रावा रोदित्यपि दलति वज्रस्य हृदयम्। (1/28)
(2) एते हि हृदयमर्मच्छिदः संसारभावाः।
(3) इयं गेहे लक्ष्मीरियममृतवर्तिर्नयनयोः। (1/38)
(4) दुर्जनोऽसुखमुत्पादयति।
(5) तीर्थोदकं च वह्निश्च नान्यतः शुद्धिमर्हतः। (1/13)

➢ **रत्नावली -** श्रीहर्षवर्धन द्वारा रचित रत्नावली नाटिका ग्रन्थ है जो चार अंकों में विभाजित है।

प्रमुख सूक्तियाँ -

(1) श्रीहर्षो निपुणः कविः परिषदप्येषा गुणग्राहिणी। (1/4)
(2) द्वीपादन्यस्मादपि मध्यादपि जलनिधेर्दिशोऽप्यन्तात्। (1/6)
(3) परिपाण्डुना मुखेन प्रियमिव हृदयस्थितं रमणी। (1/24)
(4) यातोऽस्मि पद्मनयने समयो ममैव ....।
(5) हरिहरब्रह्ममुखान्देवान्दर्शयामि देवराजं च। (4/10)

➢ **हर्षचरितम् -** हर्षचरितम् महाकवि बाणभट्ट द्वारा प्रणीत ग्रन्थ है।

प्रमुख सूक्तियाँ -

(1) अतिदुर्धरो बान्धवस्नेहः सर्वप्रमाथी। (5 उच्छ्वास)
(2) परिवर्तमान एकः कालः शैलानिवानन्तः। (5/12)
(3) लोके हि लोहेभ्यः कठिनतराः खलु स्नेहमया बन्धनपाशाः।
(4) मरणाच्च मे जीवितमेवास्मिन्समये साहसम्। (5 उच्छ्वास)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि प्रस्तुत तालिका में **विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् - 7/29, रत्नावली - बैद्यनाथ पाण्डेय, पेज 7, उत्तररामचरितम् - 1/13, हर्षचरितम् - 5/12, पेज-258, 273, 292

51. अभिज्ञानशाकुन्तलं षष्ठाङ्कगतः धीवरवृत्तान्तः कस्य उदाहरणं भवति?

(A) प्रवेशकस्य **(B)** विष्कम्भकस्य
(C) अङ्कावतारस्य **(D)** प्रस्तावनायाः

व्याख्या- * अर्थोपक्षेपक - ये पाँच होते हैं -

(1) विष्कम्भक (2) चूलिका (3) अङ्कास्य (4) अङ्कावतार (5) प्रवेशक।

➢ **विष्कम्भक -** बीते हुए और आगे होने वाले कथा भागों का सूचक, संक्षिप्त अर्थ वाला तथा मध्यम पात्रों द्वारा प्रयुक्त जो अर्थोपक्षेपक है, वह विष्कम्भक कहलाता है।

''वृत्तवर्तिष्यमाणानां कथांशानां निदर्शकः।
संक्षेपार्थस्तु विष्कम्भो मध्यपात्रप्रयोजितः॥''

अभिज्ञानशाकुन्तल के 4 अंक में **'गान्धर्वेण विधिना निवृत्तकल्याणा शकुन्तला'** से सम्पन्न हो चुके हुए दुष्यन्त और शकुन्तला के गान्धर्व विवाह की सूचना दी है तथा **'अभिज्ञानाभरण-दर्शनेन शापो निवर्तिष्यते'** से भविष्य में घटित होने वाले शाप निवृत्ति की ओर संकेत किया गया है। अतः यह **'शुद्ध विष्कम्भक'** है।

➢ **अङ्कावतार -** प्रथम अङ्क की कथा का विच्छेद किये बिना द्वितीय अङ्क अवतरित होता है। वह अङ्कावतार कहलाता है।

'अङ्कावतारस्त्वङ्कान्ते पातोऽङ्कस्याविभागतः।'

अभिज्ञानशाकुन्तल के **द्वितीय अंक** में प्रथम अंक के राजा के कथन -

'मन्दौत्सुक्योऽस्मि नगरगमनं प्रति। न खलु शक्नोमि शकुन्तलाव्यापारादात्मनं निवर्तयितुम् ।' से राजा द्वारा नगर जाने की उत्सुकता मन्द पड़ जाने की कथा आगे द्वितीय अङ्क में विदूषक के कथन -

'ह्यः किलास्मास्ववहीनेषु तत्रभवतो मृगानुसारेणाश्रमपदं प्रविष्टस्य तापसकन्यका शकुन्तला ममाधन्यताया दर्शिता। साम्प्रतं नगरगमनाय मनः कथमपि न करोति।' से प्रथम अङ्क की कथा का विच्छेद हुए बिना द्वितीय अङ्क अवतरित हुआ है। अतः यह **'अङ्कावतार'** का उदाहरण है।

➢ **प्रवेशक -** भूत और भविष्य के कथांशों का सूचक, नीचपात्रों द्वारा अनुदात्त उक्तियों से प्रयुक्त, दो अंकों के बीच में स्थित शेष (अप्रदर्शनीय) अर्थ का सूचक प्रवेशक कहलाता है।

''तद्वदेवानुदात्तोक्त्या नीचपात्रप्रयोजितः।''
प्रवेशोऽङ्कद्वयस्यान्तः शेषार्थस्योपसूचकः॥

अभिज्ञानशाकुन्तल के **पञ्चम अङ्क** में भूतकाल की घटना शक्रावतार में गिरकर अंगूठी खोने - **'नूनं ते शक्रावताराभ्यन्तरे शचीतीर्थसलिलं वन्दमानायाः प्रभ्रष्टमङ्गुलीयकम्'** यह गौतमी का कथन एवं **षष्ठ अङ्क** में उसके मिल जाने पर दुष्यन्त के भावी वियोग की सूचना- **'तस्य दर्शनेन भर्तुरभिमता जनः स्मारितः। मुहूर्तं प्रकृतिगम्भीरोऽपि पर्यश्रुनयन आसीत् ।'** श्याल का कथन है। अतः यहाँ प्रवेशक है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि अभिज्ञानशाकुन्तलम् के षष्ठ अङ्क में प्रवेशक है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज 317

52. ''तीव्राघातप्रतिहततरुः स्कन्धलग्नैकदन्तः''- केन छन्दसा विनिर्मितोऽयं श्लोकपादः?

(A) हरिणी **(B)** शिखरिणी
(C) मन्दाक्रान्ता **(D)** मालिनी

व्याख्या- 'महाकवि कालिदास' द्वारा विरचित **'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' 7 अङ्कों** का विश्वविख्यात नाटक है।

इस नाटक का उपजीव्य- महाभारत के आदिपर्व का शकुन्तलोपाख्यानम् (68-74 अध्याय) है।

सातों अङ्कों के नाम -

(1) आश्रमप्रवेश (5) प्रत्याख्यान
(2) आश्रमनिवेश (6) पश्चात्ताप
(3) मिलन (7) पुनर्मिलन
(4) विदाई

➢ **हरिणी छन्द -** जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः नगण, सगण, मगण, रगण, सगण, लघु तथा गुरु वर्ण होते हैं और 6, 4, 7 पर यति होती है। उसे **हरिणी** छन्द कहते हैं -

'नसमरसलागः षड्वेदैर्हयैर्हरिणी मता'

यथा-
'इदमशिशिरैरन्तस्तापाद् विवर्णमणीकृतं
निशि निशि भुजन्यस्तापाङ्गप्रसारिभिरश्रुभिः।
अनभिलुलितज्याघाताङ्कं मुहुर्मणिबन्धनात्
कनकवलयं स्रस्तं स्रस्तं मया प्रतिसार्यते॥ (3/10॥)

➢ **शिखरिणी छन्द -** शिखरिणी छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः दो यगण, एक मगण, नगण, सगण तथा भगण, लघु तथा गुरु वर्ण होता है और 6 एवं 11 पर यति होती है।

'रसै रुद्रैश्छिन्ना यमनसभलागः शिखरिणी'।

यथा- यदालोके सूक्ष्मं व्रजति सहसा तद् विपुलतां ....
...... न मे दूरे किञ्चित् क्षणमपि न पार्श्वे रथजवात् ।
(अभि. 1-9)

➢ **मन्दाक्रान्ता छन्द -** इस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः मगण, भगण, नगण, दो तगण, दो गुरु वर्ण होते हैं एवं 4, 6, 7 पर यति होती है।

''मन्दाक्रान्ता जलधिषडगैः म्भौ नतौ ताद्गुरू चेत्॥''

यथा -
'तीव्राघातप्रतिहततरुस्कन्धलग्नैकदन्तः
पादाकृष्टव्रततिवलयासङ्गसञ्जातपाशः।
मूर्तो विघ्नस्तपस इव नो भिन्नसारङ्गयूथो
धर्मारण्यं प्रविशति गजः स्यन्दनालोकभीतः॥'
(अभि. 1-33)

मालिनी छन्द - इस छन्द के प्रत्येक चरण में दो नगण, मगण, दो गुरु वर्ण एवं 7, 8 पर यति होती है।

'ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः।'

यथा - सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यं ....

.... किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम् ॥

(अभि. 1-20)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरणों से स्पष्ट है कि प्रस्तुत श्लोक में मन्दाक्रान्ता छन्द है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् - (1/33)

53. ''शरीरभाजां भवदीयदर्शनं व्यनक्ति कालत्रितयेऽपि योग्यताम्'' शिशुपालवधे कस्य प्रशंसेयम् ?

(A) नारदस्य **(B)** श्रीकृष्णस्य

(C) वसुदेवस्य **(D)** बलरामस्य

व्याख्या- महाकवि 'माघ' द्वारा विरचित 'शिशुपालवधम्' महाकाव्य बृहत्त्रयी के अन्तर्गत आता है। इसमें कुल 20 सर्ग हैं।

टीका - सर्वङ्कषा (मल्लिनाथ)

1. ''हरत्यघं सम्प्रति हेतुरेष्यतः शुभस्य पूर्वाचरितैः कृतं शुभैः। शरीरभाजां भवदीयदर्शनं व्यनक्ति कालत्रितयेऽपि योग्यताम्॥'' (1/26)

प्रस्तुत श्लोक में भगवान् श्रीकृष्ण द्वारा **'नारद ऋषि'** की प्रशंसा की गयी है।

2. ''विलोकनेनैव तवामुना मुने
कृतः कृतार्थोऽस्मि निबर्हितांहसा।
तथापि शुश्रूषुरहं गरीयसी
गिरोऽथवा श्रेयसि केन तृप्यते॥'' (1/29)

इस श्लोक में भगवान् श्रीकृष्ण द्वारा **'महर्षि नारद'** की प्रशंसा की गयी है।

3. कृतः प्रजाक्षेमकृता प्रजासृजा
सुपात्रनिक्षेपनिराकुलात्मना।
सदोपयोगेऽपि गुरुस्त्वमक्षयो
निधिः श्रुतीनां धनसम्पदामिव॥ (1/28)

प्रस्तुत श्लोक में भगवान् श्रीकृष्ण द्वारा **'नारद मुनि'** की प्रशंसा की गयी है।

4. 'इति ब्रुवन्तं तमुवाच स व्रती
न वाच्यमित्थं पुरुषोत्तम त्वया।
त्वमेव साक्षात्करणीय इत्यतः
किमस्ति कार्यं गुरुयोगिनामपि॥' (1/31)

प्रस्तुत श्लोक में महर्षि नारद द्वारा **'भगवान् श्रीकृष्ण'** की प्रशंसा की गयी है।

5. 'उदासितारं निगृहीतमानसैः
गृहीतमध्यात्मदृशा कथञ्चन।
बहिर्विकारं प्रकृतेः पृथग्विदुः
पुरातनं त्वां पुरुषं पुराविदः॥' (1/33)

प्रस्तुत श्लोक में मुनि नारद द्वारा **'भगवान् श्रीकृष्ण'** की प्रशंसा की गई है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि प्रस्तुत पंक्ति में **'महर्षि नारद'** की प्रशंसा की गई है।

अतः विकल्प 'A' सही है।

स्रोत- शिशुपालवधम् (1/26)

54. ''ज्ञाने मौनं क्षमा शक्तौ त्यागे श्लाघाविपर्ययः। गुणा गुणानुबन्धित्वात् तस्य सप्रसवा इव॥'' कस्य गुणाः श्लोकेऽस्मिन् उल्लिखिताः?

(A) रघोः **(B)** रामस्य

(C) अजस्य **(D)** दिलीपस्य

व्याख्या- **'महाकवि कालिदास'** द्वारा विरचित **'रघुवंशम् महाकाव्य'** लघुत्रयी के अन्तर्गत वर्णित है।

सर्ग - 19

टीका - संजीवनी (मल्लिनाथ)

➢ **रघुवंशम् महाकाव्य में राजा दिलीप के गुणों का कथन-**

1. ''तदन्वये शुद्धिमति प्रसूतः शुद्धिमत्तरः।
दिलीप इति राजेन्दुरिन्दुः क्षीरनिधाविव।।'' (1/12)
2. ''प्रजानामेव भूत्यर्थं स ताभ्यो बलिमग्रहीत् ।
सहस्रगुणमुत्स्रष्टुमादत्ते हि रसं रविः।।'' (1/18)
3. ''सेना परिच्छदस्तस्य द्वयमेवार्थसाधनम् ।
शास्त्रेष्वकुण्ठिता बुद्धिर्मौर्वी धनुषि चातता।।'' (1/19)
4. ''ज्ञाने मौनं क्षमा शक्तौ त्यागे श्लाघाविपर्ययः।
गुणा गुणानुबन्धित्वात् तस्य सप्रसवा इव।।'' (1/22)
5. ''द्वेष्योऽपि संमतः शिष्टस्तस्यार्त्तस्य यथौषधम् ।
त्याज्यो दुष्टः प्रियोऽप्यासीदङ्गुलीवोरगक्षता।।'' (1/28)

➢ **महारानी सुदक्षिणा के गुणों का वर्णन -**

6. ''तस्य दाक्षिण्यरूढेन नाम्ना मगधवंशजा।
पत्नी सुदक्षिणेत्यासीदध्वरस्येव दक्षिणा।।'' (1/31)

➢ **अरुन्धती सहित महर्षि वशिष्ठ का वर्णन -**

7. ''विधेः सायन्तनस्यान्ते स ददर्श तपोनिधिम् ।
अन्वासितमरुन्धत्या स्वाहयेव हविर्भुजम् ।।'' (1/56)

➢ **कामधेनु पुत्री नन्दिनी के गुणों का वर्णन -**

8. "रजः कणैः खुरोद्धूतैः स्पृशद्भिर्गात्रमन्तिकात् ।
तीर्थाभिषेकजां शुद्धिमादधाना महीक्षितः।।" (1/85)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि प्रस्तुत श्लोक में '**राजा दिलीप**' के गुणों का वर्णन है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- रघुवंशम् (1/22)

55. 'पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः' - उत्तररामचरिते उक्तिरियं भवति -

(A) सीतायाः **(B)** मुरलायाः
(C) तमसायाः **(D)** वासन्त्याः

व्याख्या- 'महाकवि भवभूति' द्वारा विरचित '**उत्तररामचरितम्**' नाटक 7 अङ्कों का है।

रीति - गौणी एवं वैदर्भी का समन्वय

प्रधानरस - करुण

उपजीव्य - वाल्मीकिरामायण उत्तरकाण्ड (सर्ग 42-97) पद्मपुराण (पातालखण्ड 1-68 तक)

विशेषताएँ - विदूषकरहित नाटक
सप्तम अङ्क में गर्भनाटक की योजना।

उक्तियाँ -

(1) "दुर्जनोऽसुखमुत्पादयति।" **सीता का कथन**

(2) "यैवं प्रलपन्तं प्रलापयसि।" **सीता का कथन**

(3) "किमिति किलैषा मंस्यत एष परित्याग एषोऽभिषङ्ग इति।" **सीता का कथन**

(4) "सन्तापकारिणो बन्धुजन विप्रयोगा भवन्ति।" **सीता का कथन**

(5) "अपि ग्रावा रोदित्यपि दलति वज्रस्य हृदयम् ।।" (1/28) **लक्ष्मण का कथन**

(6) "अनिर्भिन्नो गभीरत्वादन्तर्गूढघनव्यथः।
पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः।।" (3/1)
मुरला का कथन

(7) "करुणस्य मूर्तिरथवा शरीरिणी विरहव्यथेव वनमेति जानकी।" (3/4)
तमसा का कथन

(8) "प्रियाशोको जीवं कुसुममिव घर्मो ग्लपयति।" (3/30)
तमसा का कथन

(9) "एको रसः करुण एव निमित्तभेदाद्।" (3/47)
तमसा का कथन

(10) "वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि।
लोकोत्तराणां चेतांसि को हि विज्ञातुमर्हति।" (2/7)
वासन्ती का कथन

(11) "अयि कठोर! यशः किल ते प्रियम् ....मन्यसे।" (3/27)
वासन्ती का कथन

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरणों से स्पष्ट है कि प्रस्तुत पंक्ति या उक्ति 'मुरला' की है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- उत्तररामचरितम् (3/1)

56. रत्नावल्याः मङ्गलाचरणस्य प्रथमे श्लोके कस्य स्तुतिः प्राप्यते?

(A) विष्णोः **(B)** ब्रह्मणः
(C) शिवस्य **(D)** गणेशस्य

व्याख्या- 'महाकवि श्रीहर्ष' द्वारा विरचित '**रत्नावली**' नामक नाटिका 4 अङ्कों में रचित है। जिसका मङ्गलाचरण है-

1. **पादाग्रस्थितया मुहुः स्तनभरेणानीतया नम्रतां
शम्भोः सस्पृहलोचनत्रयपथं यान्त्या तदाराधने।
ह्रीमत्या शिरसीहितः सपुलकस्वेदोद्गमोत्कम्पया
विश्लिष्यन्कुसुमाञ्जलिर्गिरिजया क्षिप्तोऽन्तरे पातु वः
॥1/1॥**

भगवान् शिव की आराधना में, बार-बार चरणों के अग्रभाग पर (अर्थात् चरणों की उँगलियों के सहारे) खड़ी होने वाली, स्तनों के भार से (बार-बार) झुकती हुयी (कल्याण करने वाले) शम्भु के अनुरागयुक्त तीनों नेत्रों का विषय बनने वाली (अतएव) रोमाञ्च, स्वेद और कम्पन्न से युक्त होने के कारण लज्जित होने वाली पार्वती के द्वारा (शिव) के सिर पर (समर्पित करने के लिए) (अतएव शिव के शिर पर न पहुँच सकने के कारण उमा और शिव के) बीच में ही बिखरती हुयी पुष्पाञ्जलि तुम्हारी की रक्षा करें।

टिप्पणी - भगवान् शिव की स्तुति की गयी है। वस्तुनिर्देशात्मक मंगलाचरण है। शार्दूलविक्रीडित छन्द है।

2. **औत्सुक्येन कृतत्वरा सहभुवा व्यावर्तमाना ह्रिया
तैस्तैर्बन्धुवधूजनस्य वचनैर्नीताभिमुख्यं पुनः।
दृष्ट्वाग्रे वरमात्तसाध्वसरसा गौरी नवे सङ्गमे
संरोहत्पुलका हरेण हसता श्लिष्टा शिवायाऽस्तु वः॥
(1/2)**

टिप्पणी - भगवान् शिव की स्तुति, वस्तुनिर्देशात्मक मंगलाचरण शार्दूलविक्रीडित छन्द।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि रत्नावली नामक नाटिका के मंगलाचरण के प्रथम श्लोक में 'भगवान् शिव' की

स्तुति की गयी है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- रत्नावली नाटिका (1/1)

57. पुण्यवर्मा कस्य देशस्य राजा आसीत् दशकुमारचरिते?

(A) विदर्भस्य (B) वाराणस्याः
(C) गौणस्य (D) मगधस्य

व्याख्या- 'महाकवि दण्डी' विरचित **'दशकुमारचरितम्'** उच्छ्वासों में विभक्त है। इसके तीन भाग हैं -

1. पूर्वपीठिका - 5 उच्छ्वास
2. मूलभाग - 8 उच्छ्वास
3. उत्तरपीठिका - 1 उच्छ्वास

रीति - वैदर्भी

गुण - प्रसाद

* दशकुमारचरितम् में 10 राजकुमारों का वर्णन है। **पुष्पपुरी (पटना)** के राजा **राजहंस** नायक एवं **मालवा** का राजा **मानसार** प्रतिनायक है।

* राजा राजहंस के पुत्रों सहित 10 राजकुमारों के नाम इस प्रकार हैं -

1. राजवाहन (राजकुमार)
2. सोमदत्त
3. पुष्पोद्भव
4. अपहारवर्मा
5. उपहारवर्मा
6. अर्थपाल
7. मित्रगुप्त
8. मन्त्रगुप्त
9. प्रगति
10. सुश्रुत (विश्रुत)

* राजकुमार सुश्रुत (विश्रुत) द्वारा विन्ध्याटवी भ्रमण करते हुए भूख एवं प्यास से पीड़ित 8 वर्ष का बालक कुएँ के पास देखा।

* उसकी याचना पर कुएँ में गिरे हुए वृद्ध को बाहर निकाला फिर वृद्ध से उसकी दशा पूछी तो वृद्ध ने कुछ इस प्रकार कहना प्रारम्भ किया-

''श्रूयतां महाभाग, विदर्भो नाम जनपदः तस्मिन्भोजवंशभूषणम् अंशावतार इव धर्मस्य, अतिसत्त्वः, सत्यवादी, वदान्यः, विनीतः, विनेता प्रजानाम्, रञ्जितभृत्यः, कीर्तिमान् .... पुण्यश्लोकः, पुण्यवर्मा नामासीत् । सः पुण्यैः कर्मभिः प्राप्य पुरुषायुषं, पुनरपुण्येन प्रजानामगण्यतामरेषु। तदनन्तरमनन्तवर्मा नाम तदायतिरवनिमध्यतिष्ठत् ।''

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि पुण्यवर्मा विदर्भ देश का राजा था। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- दशकुमारचरितम् - विश्वनाथ झा, पेज 238

58. मम्मटमते कति काव्यगुणाः?

(A) दश (B) पञ्च
(C) त्रयः (D) अष्टौ

व्याख्या- 'आचार्य मम्मट' द्वारा विरचित **'काव्यप्रकाश'** काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ है।

➢ **गुण का लक्षण -**

'ये रसस्याङ्गिनो धर्माः शौर्यादय इवात्मनः।
उत्कर्षहेतवस्ते स्युरचलस्थितयो गुणाः॥

'आत्मा के शौर्यादि धर्मों के समान (काव्य के आत्मभूत) प्रधान रस के जो अपरिहार्य और उत्कर्षाधायक धर्म हैं वे गुण कहलाते हैं।

➢ **गुण के भेद -**

''माधुर्यौजःप्रसादाख्यास्त्रयस्ते न पुनर्दश।''

आचार्य मम्मट 'वामन' के 10 गुणों का खण्डन करते हुए बताते हैं कि गुण तीन प्रकार का होता है-

1. माधुर्य 2. ओज 3. प्रसाद

➢ **माधुर्य गुण का लक्षण -**

'आह्लादकत्वं माधुर्यं शृंगारे द्रुतिकारणम्।
करुणे विप्रलम्भे तच्छान्ते चातिशयान्वितम्।।'

➢ **ओज गुण का लक्षण -**

'दीप्त्यात्मविस्तृतेर्हेतुरोजो वीररसस्थिति।
बीभत्सरौद्ररसयोस्तस्याधिक्यं क्रमेण च।।'

➢ **प्रसाद गुण का लक्षण -**

'शुष्केन्धनाग्निवत् स्वच्छजलवत्सहसैव यः
व्याप्नोत्यन्यत् प्रसादोऽसौ सर्वत्र विहितस्थितिः।।'

➢ **वामनोक्त शब्दगुणों का खण्डन -**

'केचिदन्तर्भवन्त्येषु दोषत्यागात्परे श्रिताः।
अन्ये भजन्ति दोषत्वं कुत्रचिन्न ततो दश।।'

वामनोक्त दस गुणों में से कुछ इन तीनों गुणों के अन्तर्भूत हो जाते हैं, कुछ दोषाभाव रूप होते हैं और कुछ गुण न होकर दोषरूप हो जाते हैं। इसलिए दस गुण नहीं माने जाते हैं।

* **अन्तर्भाव -** श्लेष, समाधि, उदारता, प्रसाद - ओज
माधुर्य - माधुर्य, अर्थव्यक्ति - प्रसाद

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि मम्मटोक्त गुण 3 हैं। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- काव्यप्रकाश (8/38) -आचार्य विश्वेश्वर, पेज 388

59. ध्वन्यालोकतः रिक्तस्थानं पूरयत - ''यत्नतः .... तौ शब्दार्थौ महाकवेः।''

(A) अवगन्तव्यौ **(B)** प्रत्यभिज्ञेयौ
(C) परिहन्तव्यौ **(D)** संस्मरणीयौ

व्याख्या- आचार्य आनन्दवर्धन द्वारा विरचित 'ध्वन्यालोक' काव्य शास्त्रीय ग्रन्थ है।

ध्वन्यालोक में ध्वनि की सत्ता सिद्ध करते हुए बताते हैं -

सरस्वती स्वादु तदर्थवस्तु निःष्यन्दमाना महतां कवीनाम्।
अलोकसामान्यमभिव्यनक्ति परिस्फुरन्तं प्रतिभाविशेषम्॥
(1/6)

आस्वादमय रसभावरूप उस अर्थतत्त्व को प्रवाहित करने वाली महाकवियों की वाणी अलौकिक और परिस्फुरित होती हुई प्रतिभा के विशेष को अभिव्यक्त करती है।

चूँकि वह प्रतीयमान अर्थ ही ध्वनि है अतः प्रतीयमान अर्थ की सत्ता सिद्ध करते हैं।

शब्दार्थशासनज्ञानमात्रेणैव न वेद्यते।
वेद्यते स तु काव्यार्थतत्त्वज्ञैरेव केवलम्। (1/7)

प्रतीयमान अर्थ की सत्ता सिद्ध करते हुए बताते हैं कि वह प्रतीयमान अर्थ केवल शब्दमात्र शब्दशास्त्र (व्याकरण) आदि के और अर्थशास्त्र आदि के जानने से विदित नहीं होता, अपितु केवल काव्य के अर्थ के तत्त्व को जानने वालों को ही विदित होता है।

इस प्रकार वाच्य से अतिरिक्त व्यङ्ग्य अर्थ के अस्तित्व का प्रतिपादन करके यह प्रदर्शित करते हैं कि काव्य में प्रधानता भी इस व्यङ्ग्य अर्थ की ही है।

सोऽर्थस्तद्व्यक्तिसामर्थ्ययोगी शब्दश्च कश्चन।
यत्नतः प्रत्यभिज्ञेयौ तौ शब्दार्थौ महाकवेः। (1/8)

वह प्रतीयमान अर्थ और उस प्रतीयमान अर्थ को अभिव्यक्त करने की सामर्थ्य से युक्त जो कोई विशेष शब्द हैं। इन दोनों शब्द और अर्थ को पहचानना चाहिए।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि रिक्तस्थान में 'प्रत्यभिज्ञेयौ' शब्द आयेगा। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- ध्वन्यालोक (कारिका 1/8)

60. दशरूपकानुसारं फलस्याप्राप्तावुपाययोजनादिरूपः चेष्टा-विशेषः भवति -

(A) आरम्भः **(B)** प्रयत्नः
(C) प्राप्त्याशा **(D)** नियताप्तिः

व्याख्या- दशरूपक नामक लक्षणपरक ग्रन्थ आचार्य धनञ्जय द्वारा रचित है जो चार प्रकाशों में विभाजित हैं।

दशरूपक में पाँच प्रकार की कार्यावस्थाओं का वर्णन है -

(1) आरम्भ (2) प्रयत्न (3) प्राप्त्याशा (4) नियताप्ति (5) फलागमः

(1) आरम्भ - 'औत्सुक्यमात्रमारम्भः फललाभाय भूयसे।'

प्रचुर फल प्राप्ति के लिए उत्सुकतामात्र होना ही आरम्भ कहलाता है।

(2) प्रयत्न -'प्रयत्नस्तु तदप्राप्तौ व्यापारोऽतित्वरान्वितः'।
(1/20)

फल के प्राप्त न होने पर उसके लिए अत्यन्तवेगपूर्वक उद्योग करना ही प्रयत्न कहलाता है।

यथा- रत्नावली में -

आलेख्याभिलेखनादिर्वत्सराजसमागमोपायः।

(3) प्राप्त्याशा -'उपायापायशङ्काभ्यां प्राप्त्याशा प्राप्तिसम्भवः।'

उपाय के होने तथा विघ्न की शङ्का होने से जो फलप्राप्ति की सम्भावना मात्र होती है, वह प्राप्त्याशा कहलाती है।

यथा - रत्नावल्याम् तृतीयेऽङ्के 'वेषपरिवर्ताभिसरणादौ समागमोपाये सति वासवदत्तालक्षणापायशङ्कायाः।

(4) नियताप्ति -'अपायाभावतः प्राप्तिर्नियताप्तिः सुनिश्चिता'। (1/21)

विघ्नों के अभाव से फल की निश्चित रूप से प्राप्ति ही नियताप्ति कहलाती है।

यथा- रत्नावली में अन्त में राजा को रत्नावली की प्राप्ति।

(5) फलागम -'समग्रफलसंपत्तिः फलयोगो यथोदितः।'

पूर्णरूप से फल की प्राप्ति ही फलागम है जैसा कि पहले कहा गया है।

यथा - रत्नावली नाटिका में राजा को रत्नावली की प्राप्ति तथा चक्रवर्ती पद की प्राप्ति।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरणों से स्पष्ट है कि प्रस्तुत लक्षण 'प्रयत्न' का है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- दशरूपक - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज 23

61. शक्तिर्निपुणता लोकशास्त्रकाव्याद्यवेक्षणात् .... इति हेतुस्तदुद्भवे। काव्यप्रकाशतः रिक्तस्थानं पूरयत।

(A) काव्यज्ञशिक्षयाभ्यासः **(B)** लोकतत्त्वानुशीलनम्

(C) रसभावयोश्चिन्तनम् **(D)** भावाभासस्य चिन्तनम्

व्याख्या- 'ध्वनिप्रस्थापनपरमाचार्य मम्मट' द्वारा रचित **काव्यप्रकाश 10 उल्लासों** में विभक्त है।

इन्होंने काव्य के तीन हेतु बताये हैं-

'शक्तिर्निपुणता लोकशास्त्रकाव्याद्यवेक्षणात् ।
काव्यज्ञशिक्षयाभ्यास इति हेतुस्तदुद्भवे॥

(1) शक्ति (2) लोक (व्यवहार), शास्त्र तथा काव्य आदि के पर्यालोचन से उत्पन्न निपुणता और (3) काव्य को जानने वाले (गुरु) की शिक्षा के अनुसार (काव्य-निर्माण का) अभ्यास, ये (तीनों मिलकर समष्टि-रूप से) उस (काव्य) के विकास (उद्भव) के कारण हैं।

➢ **काव्य के छः प्रयोजन -**

'काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये।
सद्यः परनिर्वृतये कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे॥

काव्य यशजनक अर्थ का उत्पादक, (लोक) व्यवहार का बोधक, (शिव अर्थात् कल्याण, शिवेतर अर्थात् उससे भिन्न) अनिष्ट का नाशक, पढ़ने (या सुनने, देखने आदि) के साथ ही (सद्यः) परम आनन्द देने वाला और स्त्री के समान (सरसरूप से कर्तव्याकर्तव्य का) उपदेश प्रदान करने वाला होता है।

➢ **काव्य का लक्षण -**

'तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि।

दोषों से रहित, गुण-युक्त और (साधारणतः अलङ्कार सहित परन्तु) कहीं-कहीं अलङ्कार-रहित शब्द और अर्थ (दोनों की समष्टि) काव्य (कहलाती) है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि रिक्तस्थान में **'काव्यज्ञशिक्षयाभ्यास'** शब्द आयेगा। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- काव्यप्रकाश (कारिका 1/3) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज 16

62. काव्यप्रकाशे उपमानोपमेययोः विपर्यासे कोऽलङ्कारः?

(A) अनन्वयः **(B)** विभावना

(C) विशेषोक्तिः **(D)** उपमेयोपमा

व्याख्या- 'आचार्य मम्मट' द्वारा रचित **'काव्यप्रकाश'** 10 उल्लासों में विभक्त है। जिसके नौवें एवं दशवें उल्लास में अलंकारों का वर्णन है। नौवें में शब्दालंकार एवं दशवें में अर्थालंकारों का वर्णन है।

1. अनन्वय अलंकार -

'उपमानोपमेयत्वे एकस्यैवैकवाक्यगे अनन्वयः'

एक वाक्य में एक ही के उपमान तथा उपमेय (दोनों) होने पर अनन्वय (अलंकार) होता है।

उदाहरण-

'न केवलं भाति नितान्तकान्तिर्नितम्बिनी सैव नितम्बिनीव।
यावद्विलासायुधलास्यवासास्ते तद्विलासा इव तद्विलासाः॥

2. विभावना अलंकार -

'क्रियायाः प्रतिषेधेऽपि फलव्यक्तिर्विभावना।'

कारण का निषेध होने पर भी फल की उत्पत्ति (का वर्णन) होने पर विभावना (अलङ्कार) होता है।

उदाहरण -

'कुसुमितलताभिरहताऽप्यधत्त रुजमलिकुलैरदष्टापि।
परिवर्त्तते स्म नलिनीलहरीभिरलोलिताप्यघूर्णत सा॥

3. विशेषोक्ति अलङ्कार -

'विशेषोक्तिरखण्डेषु कारणेषु फलावचः।'

कारणों के एकत्र होने पर भी कार्य का कथन न करना विशेषोक्ति (अलङ्कार) होता है।

उदाहरण -

'कर्पूर इव दग्धोऽपि शक्तिमान् यो जने जने।
नमोऽस्त्ववार्यवीर्याय तस्मै मकरकेतवे॥

4. उपमेयोपमा अलङ्कार -

'विपर्यास उपमेयोपमा तयोः।

उन दोनों (उपमान और उपमेय) का परिवर्तन हो जाना ही उपमेयोपमा अलङ्कार होता है।

उदाहरण -

'कमलेव मतिर्मतिरिव कमला तनुरिव विभा विभेव तनुः।
धरणीव धृतिर्धृतिरिव धरणी सततं विभाति बत यस्य॥

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि प्रस्तुत पंक्ति में **उपमेयोपमा अलङ्कार** है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- काव्यप्रकाश (सूत्र-135) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज 460

63. कालक्रमानुसारेण तालिकां चिनुत -

(a) अप्पयदीक्षितः **(b)** भरतः

(c) आनन्दवर्धनः **(d)** दण्डी

(A) (a) (b) (c) (d)

(B) (b) (c) (a) (d)

(C) (c) (a) (b) (d)

(D) (b) (d) (c) (a)

व्याख्या- * भरत - साहित्यशास्त्र के सबसे प्राचीन आचार्य भरतमुनि नाट्यशास्त्र के प्रणेता हैं। इनका समय ई.पू. द्वितीय शताब्दी है। इनका एकमात्र ग्रन्थ नाट्यशास्त्र है जो समस्त कलाओं का विश्वकोष है।

* इसमें 36 अध्याय हैं एवं 6000 श्लोक हैं। इसको 'षट्साहस्त्री संहिता' भी कहा जाता है।

*** दण्डी -** दण्डी का समय छठवीं शताब्दी है। दण्डी ने अपने 'अवन्तिसुन्दरीकथा' में अपने को महाकवि भारवि का प्रपौत्र बतलाया है और बाण तथा मयूर कवि की प्रशंसा की है।

रचनाएं -

(i) दशकुमारचरितम् (ii) काव्यादर्श (iii) अवन्तिसुन्दरी कथा

*** आनन्दवर्धन -** ध्वनिप्रस्थापनाचार्य आनन्दवर्धन कश्मीर के निवासी हैं। इनका समय नवम शताब्दी पूर्वार्द्ध है।

इनकी रचनाएँ -

1. विषमबाणलीला **2.** अर्जुनचरित **3.** देवीशतक **4.** तत्त्वालोक **5.** ध्वन्यालोक

➢ **अप्पयदीक्षित -** अप्पयदीक्षित दक्षिण भारत की विभूति हैं। इन्हें 104 ग्रन्थों का कर्ता कहा जाता है।

इनकी रचनाएँ -

1. वृत्तिवार्तिकग्रन्थ **2.** चित्रमीमांसा **3.** कुवलयानन्द

कवि		समय
भरतमुनि	–	ई.पू. द्वितीय शताब्दी
दण्डी	–	छठवीं शताब्दी
आनन्दवर्धन	–	नवमशताब्दी पूर्वार्द्ध
अप्पयदीक्षित	–	17वीं शताब्दी

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि कालक्रमानुसार **विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज 18, 29, 91

64. 'दोषा गुणा-गुणा दोषा यत्र स्युर्मृदवं हि तत्' - दशरूपके कस्मिन् प्रसङ्गे इयमुक्तिः?

(A) वीथ्यङ्गप्रसङ्गे **(B)** नृत्यलक्षणप्रसङ्गे
(C) सन्धिभेदप्रसङ्गे **(D)** प्रहसनलक्षणप्रसङ्गे

व्याख्या- श्री धनञ्जय द्वारा विरचित 'दशरूपक' नाट्यशास्त्रीय ग्रन्थ है यह चार प्रकाशों में विभक्त है -

प्रथम प्रकाश - वस्तु का वर्णन।
द्वितीय प्रकाश - नायक का वर्णन।
तृतीय प्रकाश - रूपक का वर्णन।
चतुर्थ प्रकाश - रस का वर्णन।

➢ **वीथी के 13 अंग -**

उद्घात्यकावगलिते प्रपञ्चत्रिगते छलम्।
वाक्केल्यधिबले गण्डमवस्यन्दितनालिके।
असत्प्रलापव्याहारमृदवानि त्रयोदश। (3/12)

उद्घात्यक - 'गूढार्थपदपर्यायमाला प्रश्नोत्तरस्य वा। (3/13)
यत्रान्योन्यं समालापो द्वेधोद्घात्यं तदुच्यते।।'

अवलगितम् - 'यत्रैकत्र समावेशात्कार्यमन्यत्प्रसाध्यते। (3/14)
प्रस्तुतेऽन्यत्र वाऽन्यत्स्यात्तच्चावगलितं द्विधा।'

प्रपञ्च - असद्भूतं मिथः स्तोत्रं प्रपञ्चो हास्यकृन्मतः। (3/15)

त्रिगतम् - श्रुतिसाम्यादनेकार्थयोजनं त्रिगतं त्विह।
नटादित्रितयालापः पूर्वरङ्गे तदिष्यते। (3/16)

छलनम् - प्रियाभैरप्रियैर्वाक्यैर्विलोभ्य छलनाच्छलम्।

वाक्केलि - विनिवृत्यास्य वाक्केली द्विस्त्रिः प्रत्युक्तितोऽपि वा। (3/17)

अथाधिबलम् - अन्योन्यवाक्याधिक्योक्तिः स्पर्धयाऽधिबलं भवेत्।

गण्ड - गण्डः प्रस्तुतसम्बन्धि भिन्नार्थं सहसोदितम्। (3/18)

अवस्पन्दित - रसोक्तस्यान्यथा व्याख्या यत्रावस्यन्दितं हि तत्।

नालिका - सोपहासा निगूढार्था नालिकैव प्रहेलिका। (3/19)

असत्प्रलाप - असम्बद्धकथाप्रायोऽसत्प्रलापो यथोत्तरः। (3/20)

व्याहार - अन्यार्थमेव व्याहारो हास्यलोभकरं वचः।

मृदव - दोषा गुणा गुणा दोषा यत्र स्युर्मृदवं हि तत्।

नृत्यलक्षण - अन्यद्भावाश्रयं नृत्यम् ।
भाव पर आश्रित नृत्य नाट्य से भिन्न होता है।

सन्धिभेद - मुखप्रतिमुखे गर्भः सावमर्शोपसंहृतिः।

प्रहसनलक्षण - तद्वत्प्रहसनं त्रेधा शुद्धवैकृतसंकरैः।
पाखण्डिविप्रप्रभृतिचेटचेटीविटाकुलम्
चेष्टितं वेषभाषाभिः शुद्धं हास्यवचोन्वितम्। (3/54)
कामुकादिवचोवेषैः षण्ढकञ्चुकितापसैः विकृतं। (3/55)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरणों से स्पष्ट है कि प्रस्तुत लक्षण वीथ्यङ्ग (मृदव) का है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- दशरूपक - रमाशङ्कर त्रिपाठी, पेज 218

65. ''न तज्ज्ञानं न तच्छिल्पं न सा विद्या न सा कला।'' इत्यादि श्लोकः भवति।

(A) काव्यप्रशंसा **(B)** गुणप्रशंसा
(C) नाट्यप्रशंसा **(D)** अलङ्कारप्रशंसा

व्याख्या- नाट्यशास्त्र के प्रथम प्रणेता आचार्य भरतमुनि हैं। इनकी एकमात्र रचना नाट्यशास्त्र है जो समस्त कलाओं का विश्वकोष है। **अध्याय - 36, श्लोक -** 6000

इसे 'षट्साहस्री संहिता' भी कहा जाता है। छन्द प्रायः **अनुष्टुप्** है। स्वयं भरतमुनि ने 'नाट्यशास्त्र' का परिचय देते हुए लिखा है-

'न तज्ज्ञानं न तच्छिल्पं न सा विद्या न सा कला।
नासौ योगो न तत्कर्म नाट्येऽस्मिन् यन्न दृश्यते॥
(1/117)

अर्थात् - जो बात उन्होंने नाट्य के विषय में कही है वही बात उनके 'नाट्यशास्त्र' पर भी चरितार्थ होती है। उनका 'नाट्यशास्त्र' न केवल नाट्य का ही अपितु समस्त ललित एवं उपयोगी कलाओं का आकर ग्रन्थ है। (जो नाट्य में न मिले ऐसा न तो कोई ज्ञान, शिल्प, विद्या, कला, योग और न ही कोई कार्य हो सकता है।)

*** नाट्यशास्त्र के टीकाकार -**

1. उद्भट
2. भट्टलोल्लट
3. श्री शंकुक
4. भट्टनायक
5. अभिनवगुप्त

*** नाट्यशास्त्र पर उपलब्ध अन्य ग्रन्थ एवं ग्रन्थकर्ताओं की सूची -**

	ग्रन्थ	ग्रन्थकार
1.	नाट्यशास्त्र	भरतमुनि एवं इनके टीकाकार
2.	अभिनयदर्पण	नन्दिकेश्वर
3.	दशरूपक	धनञ्जय, इनके टीकाकार
4.	भाव-प्रकाशन	शारदातनय
5.	शृंगारप्रकाश	भोज
6.	नाट्यदर्पण	रामचन्द्र - गुणचन्द्र
7.	साहित्यदर्पण	विश्वनाथ कविराज

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि प्रस्तुत पंक्ति में नाट्यशास्त्र की प्रशंसा की गयी है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- नाट्यशास्त्रम् (श्लोक 1/117) -ब्रजमोहन शास्त्री, पेज 113

66. ''तमसा बहुरूपेण वेष्टिताः कर्महेतुना।
अन्तःसंज्ञा भवन्त्येते सुखदुःखसमन्विताः॥
इति मनुवचनं केन सम्बद्धम् ?

(A) अण्डजेन प्राणिना **(B)** उद्भिदा
(C) स्वेदजेन प्राणिना **(D)** जरायुजेन प्राणिना

व्याख्या- * आचार्य मनु विरचित 'मनुस्मृति' प्रथम स्मृतिग्रन्थ है। यह बारह अध्यायों में विभक्त हैं।

* मनुस्मृति में आचार्य मनु ने चार प्रकार के प्राणियों की उत्पत्ति बतायी है।

*** जरायुज प्राणी -**

पशवश्च मृगाश्चैव व्यालाश्चोभयतोदतः।
रक्षांसि च पिशाचाश्च मनुष्याश्च जरायुजाः॥ (1/43)

पशु, मृग, सर्प, दोनों ओर दाँतो वाले, राक्षस, पिशाच और मनुष्य ये सब जरायुज हैं अर्थात् झिल्ली से उत्पन्न होते हैं।

*** अण्डज प्राणी -**

अण्डजाः पक्षिणः सर्पा नक्रा मत्स्याश्च कच्छपाः।
यानि चैवं प्रकाराणि स्थलजान्यौदकानि च॥ (1/44)

पक्षी, सर्प, मगर, मछली और कछुए अण्डज हैं और जितने ऐसे जीव जल और स्थल में पैदा होते हैं वे सब भी अण्डज हैं।

*** स्वेदज -**

स्वेदजं दंशमशकं यूकामक्षिकमत्कुणम्।
ऊष्मणश्चोपजायन्ते यच्चाऽन्यत्किंचिदीदृशम्॥ (1/45)

दंश, मच्छर, जूँ, मक्खी, खटमल और अन्य ऐसे ही जो गर्मी से उत्पन्न होते हैं वे स्वेदज हैं।

*** उद्भिज्जप्राणी -**

उद्भिज्जाः स्थावराः सर्वे बीजकाण्डप्ररोहिणः।
ओषध्यः फलपाकान्ता बहुपुष्पफलोपगाः। (1/46)
तमसा बहुरूपेण वेष्टिताः कर्महेतुना।
अन्तःसंज्ञा भवन्त्येते सुखदुःखसमन्विताः। (1/49)

बीज से पृथ्वी फोड़कर जो वृक्ष उगते हैं उनको उद्भिज्ज कहते हैं और फल पकने पर जो सूख जाते हैं जिनमें बहुत से फल और फूल लगते हैं। ये पूर्वजन्म के कर्म के कारण बहुत से तमोगुण से घिरे हुए हैं, सुख-दुःख से युक्त हैं और इनके भीतर चेतना है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि प्रस्तुत लक्षण उद्भिद् प्राणियों का है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- मनुस्मृति (1/49)

67. मनुसंहितातः रिक्तं स्थानं पूरयत -

''नृपतौ कोशराष्ट्रे च .... सन्धिविपर्ययौ''।

(A) अमात्ये **(B)** दूते

(C) सेनापतौ **(D)** मन्त्रिणि

व्याख्या- 'मनुस्मृति' आचार्य मनु द्वारा विरचित आद्यस्मृति ग्रन्थ है जो बारह अध्यायों में विभाजित है।

अमात्ये दण्ड आयत्तो दण्डे वैनयिकी क्रिया।
नृपतौ कोशराष्ट्रे च दूते संधिविपर्ययौ॥ (7/65)

मनुस्मृति में कौन किसके अधीन है इसको प्रस्तुत श्लोक के माध्यम से बताते हैं - दण्ड सेनापति के अधीन, विनय दण्ड के अधीन, कोश और देश राजा के अधीन, सन्धिविग्रह दूत के अधीन होते हैं।

दूतं चैव प्रकुर्वीत सर्वशास्त्रविशारदम्।
इङ्गिताऽऽकारचेष्टज्ञं शुचिं दक्षं कुलोद्गतम्। (7/63)

जो इंगित आकार और चेष्टा का ज्ञाता, कुलीन, सब शास्त्रों का ज्ञाता, चतुर, पवित्र उसे दूत नियुक्त करें।

दूत प्रशंसा -

अनुरक्तः शुचिर्दक्षः स्मृतिमान्देशकालवित्।
वपुष्मान्वीतभीर्वाग्मी दूतो राज्ञः प्रशस्यते। (7/64)

जो प्रीतियुक्त, धन से पवित्र, चतुर, स्मरणशक्ति वाला, देशकाल का ज्ञाता, सुन्दर, निर्भय और बातचीत करने में निपुण हो ऐसे राजदूत की प्रशंसा होती है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है प्रस्तुत रिक्तस्थान में 'दूते' शब्द सही होगा। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- मनुस्मृति (श्लोक 7/65)

68. कस्मिन् पुराणे 'काशी-खण्डः' समुपलभ्यते?

(A) लिङ्गपुराणे **(B)** शिवपुराणे

(C) ब्रह्माण्डपुराणे **(D)** स्कन्दपुराणे

व्याख्या- पुराण महर्षि वेदव्यास की रचना है। पुराणों की संख्या 18 बताई गई है।

➢ **पुराण का लक्षण -** विष्णुपुराण आदि में प्रतिपाद्य विषयों के आधार पर पुराण का लक्षण किया है-

''सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च।
वंशानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम्॥

लिङ्गपुराण - इसमें 11 सहस्र श्लोक हैं। इसमें शिव के 28 अवतारों का वर्णन है। इसमें शिवलिंग की पूजा का माहात्म्य वर्णित है।

शिवपुराण - इसे वायुपुराण भी कहा जाता है। इसमें 112 अध्याय और 10 सहस्र श्लोक हैं।

ब्रह्माण्डपुराण - इसमें तीर्थ माहात्म्य और उपाख्यानों का संग्रह है। इसके सात खण्डों में अध्यात्म-रामायण दी गयी है।

स्कन्दपुराण - इसमें 5 संहिताएँ हैं -

(1) सनत्कुमारीय (2) ब्राह्म

(3) वैष्णव (4) शंकर / अगस्त्य

(5) सौर

इसके अतिरिक्त काशीखंड नामक 50 छोटे अध्याय हैं। इसमें 81 सहस्र श्लोक हैं। यह सबसे विशालकाय पुराण है। इसमें मुख्यतः शिवभक्ति का वर्णन है। इसमें प्राप्त सूतसंहिता बहुत प्रसिद्ध है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि काशीखंड स्कन्दपुराण में प्राप्त होता है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज 97

69. याज्ञवल्क्यस्मृत्यनुसारं रिक्तस्थानं पूरयत -

''स्मृत्योर्विरोधे न्यायस्तु बलवान् व्यवहारतः।
अर्थशास्त्रात्तु बलवद् .... इति स्थितिः''॥

(A) धर्मशास्त्रम् **(B)** राजादेशः

(C) नृपस्येच्छा **(D)** नीतिशास्त्रम्

व्याख्या- याज्ञवल्क्य द्वारा रचित याज्ञवल्क्यस्मृति अनुष्टुप् छन्द में वर्णित है। इसमें लगभग 1000 श्लोक हैं। यह तीन भागों में विभाजित है -

(1) आचाराध्याय (2) व्यवहाराध्याय

(3) प्रायश्चित्ताध्याय

व्यवहाराध्याय- इसके विषय में याज्ञवल्क्य कहते हैं -

'स्मृत्याचारव्यपेतेन मार्गेणाऽधर्षितः परैः।
आवेदयति चेद्राज्ञे व्यवहारपदं हि तत् ॥ (2/5)

यदि कोई व्यक्ति जो दूसरों के द्वारा स्मृतिनियमों और आचार अथवा रुढ़ियों के विरोध में पीड़ित किया जाता है, वह राजा या न्यायाधिकारी को सूचित करता है तो इसको 'व्यवहारपद' कहते हैं।

याज्ञवल्क्य ने बीस व्यवहारपदों की गणना की है-

(1) ऋणादान (11) सीमाविवाद

(2) उपनिधि (12) वाक्पारुष्य

(3) स्वामिविक्रय (13) दण्डपारुष्य

(4) सम्भूय-समुत्थान (14) स्तेय

(5) दत्ताप्रदानिक (15) साहस

(6) वेतनादान (16) स्त्रीसंग्रहण
(7) संविद्-व्यतिक्रम (17) दायविभाग
(8) क्रीतानुशय (18) द्यूतसमाह्वय
(9) विक्रीयासंप्रदान (19) अभ्युपेत्याशुश्रूषा
(10) स्वामिपालविवाद (20) प्रकीर्ण

'स्मृत्योर्विरोधे न्यायस्तु बलवान् व्यवहारतः।
अर्थशास्त्रात्तु बलवद्धर्मशास्त्रमिति स्थितिः॥ (2/21)

दो स्मृतियों में विरोध होने पर व्यवहार (प्राचीन व्यवहार) से किया निर्णय बलवान् होता है। (किन्तु सार्वकालिक) व्यवस्था यह है कि अर्थशास्त्र की अपेक्षा धर्मशास्त्र बलवान् होता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरणों से स्पष्ट है कि प्रस्तुत पंक्ति में रिक्त स्थान में 'धर्मशास्त्रम्' होगा। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- याज्ञवल्क्यस्मृति (श्लोक 2/21)

70. याज्ञवल्क्यस्मृत्यनुसारेण सबन्धके ऋणे मासि-मासि वृद्धिः भवति -
(A) पञ्चाशद् भागः **(B)** अशीतिभागः
(C) त्रिंशद् भागः **(D)** विंशो भागः

व्याख्या- महर्षि याज्ञवल्क्य द्वारा विरचित 'याज्ञवल्क्यस्मृति' स्मृति ग्रन्थ है जो तीन भागों में विभाजित है।
(1) आचाराध्याय (2) व्यवहाराध्याय (3) प्रायश्चित्ताध्याय

जिसके व्यवहार नामक भाग में ऋण एवं ऋणवृद्धि के विषय में बताया गया है।

अशीतिभागो वृद्धिः स्यान्मासि मासि सबन्धके।
वर्णक्रमाच्छतं द्वित्रिचतुष्पञ्चकमन्यथा॥ (2/37)

बन्धक रखे जाने पर प्रत्येक मास में उसका अस्सीवाँ भाग ब्याज होता है। अन्य स्थिति में बन्धक न होने पर वर्णक्रम (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र क्रम) से दो, तीन, चार और पाँच प्रतिशत वृद्धि होती है।

कान्तारगास्तु दशकं सामुद्रा विंशकं शतम् ।

जो (सूद पर धन लेकर अधिक कमाने के लिए) जंगल में चले जायें उनसे दश प्रतिशत जो समुद्र में चले जायें उनसे बीस प्रतिशत ब्याज लें।

रसस्याष्टगुणा परा।
वस्त्रधान्यहिरण्यानां चतुस्त्रिद्विगुणा परा॥ (2/39)

रस (तेल घृत) आदि की वृद्धि स्वीकृत वृद्धि से अधिकतम आठगुनी हो सकती है। वस्त्र, धान्य और स्वर्ण की अधिकतम वृद्धि क्रमशः चौगुनी, तिगुनी या दुगुनी हो सकती है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'वृद्धि मासे मासे अशीतिभागः' भवति। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- याज्ञवल्क्यस्मृति (श्लोक 2/37)

71. श्रीमद्भगवद्गीतायाः विश्वरूपदर्शनयोगः अस्ति -
(A) दशमेऽध्याये **(B)** एकादशेऽध्याये
(C) प्रथमाध्याये **(D)** त्रयोदशाध्याये

व्याख्या- श्रीमद्भगवद्गीता महर्षि वेदव्यास द्वारा विरचित है जो महाभारत के भीष्मपर्व से ली गयी है। यह अठारह अध्यायों में विभाजित है।

जिनमें सभी अध्यायों का नामकरण विषय वस्तु के आधार पर किया गया है। जो निम्नवत् हैं -

प्रथम अध्याय - अर्जुनविषादयोग
द्वितीय अध्याय - सांख्ययोग
तृतीय अध्याय - कर्मयोग
चतुर्थ अध्याय - ज्ञानकर्मयोग
पञ्चम अध्याय - कर्मसंन्यासयोग
षष्ठ अध्याय - दिव्ययोग
सप्तम अध्याय - ज्ञानविज्ञानयोग
अष्टम अध्याय - अक्षरब्रह्मयोग
नवम अध्याय - राजगुह्यराजविद्यायोग
दशम अध्याय - विभूतियोग
एकादश अध्याय - विश्वरूपदर्शनयोग
द्वादश अध्याय - भक्तियोग
त्रयोदश अध्याय - क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोग
चतुर्दश अध्याय - गुणत्रयविभागयोग
पञ्चदश अध्याय - पुरुषोत्तमयोग
षोडश अध्याय - दैवासुरसंग्रामयोग
सप्तदश अध्याय - श्रद्धात्रयविभागयोग
अष्टादश अध्याय - मोक्षसंन्यासयोग

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'विश्वरूपदर्शनयोग' एकादश अध्याय का नाम है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- श्रीमद्भगवद्गीता (अध्याय 11)

72. 'शतसाहस्री संहिता' इति कस्य अपरं नाम?
(A) रामायणस्य **(B)** भविष्यपुराणस्य
(C) स्कन्दपुराणस्य **(D)** महाभारतस्य

व्याख्या- ➢ **रामायण-** रामायण महर्षि वाल्मीकि की कृति है। इसमें रामकथा आद्योपान्त वर्णित है। इसमें सात काण्ड हैं -

बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, युद्धकाण्ड और उत्तरकाण्ड।

इसमें लगभग 24 सहस्र श्लोक हैं अतः इसे 'चतुर्विंशति-साहस्री संहिता' भी कहते हैं। यह मुख्यतः अनुष्टुप् छन्दों में है। भाव, भाषा, शैली, परिष्कार और काव्यत्व के कारण रामायण का स्थान भारतीय काव्यों में सर्वोच्च माना जाता है।

यावत् स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महीतले।
तावद् रामायणकथा लोकेषु प्रचरिष्यति॥ (1/2/37)

➢ **महाभारत -** भारतीय लौकिक साहित्य में रामायण के पश्चात् महाभारत का ही स्थान है। इसमें चतुर्वर्ग के सभी विषय, धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष प्रतिपादित हैं। महाभारत में स्वयं इस तथ्य का उल्लेख है।

धर्मे चार्थे च कामे च मोक्षे च भरतर्षभ।
यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत् क्वचित् ॥
(1/62/53)

यह 18 पर्वों में विभाजित है।

(1) आदिपर्व (10) सौप्तिकपर्व
(2) सभापर्व (11) स्त्रीपर्व
(3) वनपर्व (12) शान्तिपर्व
(4) विराटपर्व (13) अनुशासनपर्व
(5) उद्योगपर्व (14) आश्वमेधिकपर्व
(6) भीष्मपर्व (15) आश्रमवासिकपर्व
(7) द्रोणपर्व (16) मौसलपर्व
(8) कर्णपर्व (17) महाप्रस्थानिकपर्व
(9) शल्यपर्व (18) स्वर्गारोहणपर्व

महाभारत की प्रगति के तीन चरण -

जय - 8800 श्लोक
भारत - 24000 श्लोक (चतुर्विंशति साहस्री)
महाभारत - 1 लाख (शतसाहस्री)

➢ **भविष्यपुराण -** इसमें तीर्थ-माहात्म्य और भविष्यवाणियाँ हैं। इसमें चारों वर्णों के कर्तव्य, सूर्य, नागदेव एवं अग्नि की पूजा का वर्णन है। इसका परिशिष्ट भविष्योत्तरपुराण है। भविष्यपुराण में 50,000 श्लोक हैं।

➢ **स्कन्दपुराण -** इसमें 5 संहिताएँ हैं - सनत्कुमारीय, ब्राह्मी, वैष्णवी, शंकर या अगस्त्य और सौर। इनके अतिरिक्त 'काशीखण्ड' नामक 50 छोटे अध्याय हैं। इसमें वाराणसी एवं उसके समीपवर्ती मन्दिरों का वर्णन है। इसमें 81,000 श्लोक हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'शतसाहस्री संहिता' महाभारत को कहा गया है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज 123

73. रामायणस्य श्लोकसंख्या भवति -

(A) 31000-40000 **(B)** 22000-25000
(C) 11000-15000 **(D)** 5000-10000

व्याख्या- आदिकवि महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित 'रामायण' आदिकाव्य है। यह सात काण्डों में विभाजित है -

(1) बालकाण्ड (2) अयोध्याकाण्ड (3) अरण्यकाण्ड
(4) किष्किन्धाकाण्ड (5) सुन्दरकाण्ड (6) युद्धकाण्ड
(7) उत्तरकाण्ड

इसमें लगभग 24000 श्लोक हैं अतः इसे 'चतुर्विंशति साहस्री संहिता' भी कहते हैं। यह मुख्यतः अनुष्टुप् छन्दों में है। गायत्री मंत्र में 24 वर्ण होते हैं, अतः यह मान्यता है कि उसको आधार मानकर 24 हजार श्लोक हैं और प्रत्येक एक सहस्र श्लोक के बाद गायत्री के नए वर्ण से नया श्लोक प्रारम्भ होता है। रामचरित का सर्वांगपूर्ण वर्णन होने के कारण यह धार्मिक ग्रन्थ एवं आचार-संहिता माना जाता है।

यावत् स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महीतले।
तावद् रामायणकथा लोकेषु प्रचरिष्यति॥

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि रामायण में 24000 श्लोक हैं। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- कपिलदेव द्विवेदी, पेज 103

74. हरिषेण विरचिते इलाहाबादशिलालेखे 'कविराज' इत्युपाधिः भवति?

(A) चन्द्रगुप्तस्य **(B)** अशोकस्य
(C) समुद्रगुप्तस्य **(D)** स्कन्दगुप्तस्य

व्याख्या- हरिषेण विरचित समुद्रगुप्त का इलाहाबाद शिलालेख अथवा प्रयाग स्तम्भ अभिलेख है।

स्थान - इलाहाबाद, उत्तरप्रदेश (यह मूलतः कौशाम्बी में था जहाँ से इलाहाबाद किले में लाया गया।
भाषा - संस्कृत
लिपि - ब्राह्मी
काल - समुद्रगुप्त (लगभग 335-76 ई.)
विषय - समुद्रगुप्त का जीवनचरित

इलाहाबाद किले में अब स्थापित मूलरूप से कौशाम्बी में

स्थापित कौशाम्बी के अशोक स्तम्भ पर अशोक के लेख के नीचे ब्राह्मी लिपि में समुद्रगुप्त का यह लेख उत्कीर्ण है।

इसे महादण्डनायक ध्रुवभूति के पुत्र समुद्रगुप्त के कुमारामात्य एवं सन्धिविग्रहिक हरिषेण नामक कवि ने उत्कीर्ण कराया था।

लेख का नाम - इस स्तम्भ में समुद्रगुप्त की प्रशस्ति का उल्लेख है तथा यह प्रयाग में है। इससे इसको **'प्रयागप्रशस्ति'** कहा जाता है। चूँकि इसका लेखक 'हरिषेण' हैं इससे इसको **'हरिषेण की प्रयाग प्रशस्ति'** नाम से भी जाना जाता है।

* अंग्रेजी में इसको **'Allahabad Pillar Inscription'** कहते हैं।

* यह तिथिविहीन अभिलेख है इसमें समुद्रगुप्त की विजयों का आद्योपान्त उल्लेख है।

'निशिताविदग्धमति- गान्धर्व्वललितैर्व्रीडित-त्रिदशपतिगुरु- तुम्बुरुनारदादेर्व्विद्वज्जनोपजीव्यानेक-काव्य-विक्रयाभिः प्रातिष्ठित-कविराज-शब्दस्य सुचिर-स्तोतव्यानेकाद्भुतोदारचरितस्य।

तीक्ष्ण एवं विदग्धमति, वाद्य एवं कण्ठ संगीत द्वारा इन्द्र, गुरु बृहस्पति, तुम्बरु तथा नारदादि को लज्जित करने वाला था, विद्वानों की जीविकार्जनोपयोगी अनेक काव्यों की रचना द्वारा 'कविराज' उपाधि को प्रतिष्ठित करने वाला था, चिरकाल तक स्तुत्य जिसके अनेक विलक्षण एवं उदार कार्य थे।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि इलाहाबाद शिलालेख में समुद्रगुप्त को 'कविराज' की उपाधि दी गयी है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- भारतीय पुरालेखों का अध्ययन-शिवस्वरूप सहाय, पेज 246-251

75. अर्थशास्त्रे आन्वीक्षकीत्रयीवार्तानां योगक्षेमसाधनो भवति -

(A) साम **(B)** दानम्
(C) भेदः **(D)** दण्डः

व्याख्या- 'अर्थशास्त्र' आचार्य कौटिल्य द्वारा रचित है। यह पन्द्रह अधिकरणों में विभक्त है जो निम्नलिखित है -

(1) विनयाधिकारिक निरूपण (2) अध्यक्षों का निरूपण
(3) न्याय का निरूपण (4) कण्टकशोधन
(5) योगवृत्त निरूपण (6) प्रकृतियों का निरूपण
(7) छह गुणों का निरूपण (8) व्यसनों का निरूपण
(9) आक्रमण का निरूपण (10) संग्राम का निरूपण
(11) संघवृत्त निरूपण (12) आबलीयस का निरूपण
(13) दुर्ग प्राप्ति का निरूपण (14) औपनिषदिक निरूपण
(15) तंत्रयुक्ति का निरूपण

1. विनयाधिकरण - यह अधिकरण 17 प्रकरणों में विभाजित है जिसमें आन्वीक्षकी, त्रयी, वार्ता, दण्डनीति का वर्णन है एवं उसके अन्तर्गत साम, दान, दण्ड, भेद चार प्रकार के दण्ड बताये गये हैं।

*** आन्वीक्षकी-**

सांख्यं योगो लोकायतं चेत्यान्वीक्षकी।

धर्माधर्मौ त्रय्यामर्थानर्थौ वार्तायां नयापनयौ दण्डनीत्याम्। बलाबले चैतासां हेतुभिरन्वीक्षमाणान्वीक्षकी लोकस्योपकरोति।

प्रदीपः सर्वविद्यानामुपायः सर्वकर्मणाम् ।
आश्रयः सर्वधर्माणां शश्वदान्वीक्षकी मता।

*** त्रयी -** एष त्रयीधर्मश्चतुर्णां वर्णानामाश्रमाणां च स्वधर्मस्थापनादौपकारिकः।

साम, ऋक् तथा यजुः इन तीनों वेदों का समन्वित नाम ही त्रयी है।

*** वार्ता -** कृषिपाशुपाल्ये वाणिज्या च वार्ता। धान्यपशुहिरण्य-कुप्यविष्टिप्रदानादौपकारिकी।

कृषि, पशुपालन और व्यापार ये वार्ताविद्या के विषय हैं। यह विद्या, धान्य, पशु, हिरण्य, ताम्र आदि खनिज पदार्थ प्रदान करने से परम उपकारिणी है।

*** दण्ड -** आन्वीक्षकीत्रयीवार्तानां योगक्षेमसाधनो दण्डः। तस्य नीतिर्दण्डनीतिः।

आन्वीक्षकी, त्रयी और वार्ता इन सभी की सुख-समृद्धि दण्ड पर निर्भर है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि प्रस्तुत उक्ति दण्ड के विषय में कही गयी है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- कौटिल्य अर्थशास्त्र - वाचस्पति गैरोला, पेज 12

उत्तरमाला

1-(C)	2-(A)	3-(B)	4-(A)	5-(C)	6-(B)	7-(A)	8-(C)	9-(A)	10-(B)	11-(A)
12-(C)	13-(D)	14-(D)	15-(C)	16-(A)	17-(C)	18-(C)	19-(C)	20-(D)	21-(C)	22-(B)
23-(B)	24-(B)	25-(D)	26-(A)	27-(A)	28-(D)	29-(A)	30-(C)	31-(D)	32-(B)	33-(A)
34-(D)	35-(C)	36-(B)	37-(A)	38-(B)	39-(C)	40-(B)	41-(A)	42-(D)	43-(A)	44-(B)
45-(A)	46-(C)	47-(A)	48-(C)	49-(B)	50-(A)	51-(A)	52-(C)	53-(A)	54-(D)	55-(B)
56-(C)	57-(A)	58-(C)	59-(B)	60-(B)	61-(A)	62-(D)	63-(D)	64-(A)	65-(C)	66-(B)
67-(B)	68-(D)	69-(A)	70-(B)	71-(B)	72-(D)	73-(B)	74-(C)	75-(D)		

संस्कृत प्रवक्ता (PGT) परीक्षाओं के लिए

प्रवक्तास्मि

संस्कृत

हल प्रश्न-पत्र
आदर्श प्रश्न-पत्र

(स्त्रोत सहित हल)

सम्पादक
सर्वज्ञभूषण

सह-सम्पादक
सत्यप्रकाश साहू
सुमन सिंह

* **प्रकाशनाधिकारिणी संस्था**

संस्कृतगङ्गा (पञ्जीकृत)
59, मोरी, दारागञ्ज, प्रयागराज
(कोतवाली दारागञ्ज के आगे, गङ्गाकिनारे,
संकटमोचन छोटे हनुमान् मन्दिर के पास)
कार्यालय - 7800138404, 9839852033
email-Sanskritganga@gmail.com
वेबसाइट– www.Sanskritganga.org
www.Sanskritganga.in

* **प्रकाशक**

संस्कृतगंगा
दारागंज, प्रयागराज

* **मुख्यवितरक**

राजू पुस्तक केन्द्र
अल्लापुर, प्रयागराज (उत्तर प्रदेश)
मो० 9453460552

* पुस्तकें डाक द्वारा आर्डर करें–**8004545095**
8004545096

* प्रथमसंस्करण – नवम्बर - 2015
* द्वितीयसंस्करण – जुलाई - 2016
* तृतीयसंस्करण – मार्च - 2020
*
* **मूल्य – ₹145/-** (एक सौ पैंतालीस रुपये मात्र)
* पृष्ठविन्यास - **नितिन कुमार, संदीप कुमार**

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

1. राजू पुस्तक भण्डार, अल्लापुर, प्रयागराज
   सम्पर्क सूत्र : 0532-2460638, 9453460552
2. संस्कृतगङ्गा, दारागञ्ज, प्रयागराज - 7800138404
3. गौरव बुक एजेन्सी, कैण्ट, वाराणसी
4. विजय मैग्जीन सेन्टर, बलरामपुर
5. जायसवाल बुक सेन्टर, हरदोई
6. शिवशंकर बुक स्टाल, जौनपुर
7. न्यू पूर्वांचल बुक स्टाल, जौनपुर
8. कृष्णा बुक डिपो बस्ती
9. मौर्या बुक डिपो, पाण्डेयपुर, वाराणसी
10. मनीष बुक स्टोर, गोरखपुर
11. द्विवेदी ब्रदर्स, गोरखपुर
12. विद्यार्थी पुस्तक मन्दिर, गोरखपुर
13. रंजन मिश्रा, गोरखपुर (बस स्टैण्ड)
14. आशीर्वाद बुक डिपो, अमीनाबाद, लखनऊ
15. मालवीय पुस्तक केन्द्र, अमीनाबाद, लखनऊ
16. मॉडर्न मैग्जीन बुक शॉप, कपूरशाला, लखनऊ
17. साहू बुक स्टॉल, अलीगंज, लखनऊ
18. भूमि मार्केटिंग, लखनऊ
19. दुर्गा स्टोर, राजा की मण्डी, आगरा
20. महामाया पुस्तक केन्द्र, बिलासपुर
21. डायमण्ड बुक स्टाल, ज्वालापुर, हरिद्वार
22. कम्पटीशन बुक हाउस, सब्जी मण्डी रोड, बरेली
23. अजय गुप्ता बुक स्टोर, लखीमपुर
24. शिवशंकर बुक स्टाल, रीवा
25. कृष्णा बुक एजेन्सी, वाराणसी
26. गर्ग बुक डिपो, जयपुर
27. अग्रवाल बुक सेन्टर, मुखर्जी नगर, नयी दिल्ली
28. चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी (सभी बुक स्टालों पर)
29. विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक वाराणसी
30. मोतीलाल बनारसी दास, वाराणसी
31. केशवी बुक डिस्ट्रीब्यूटर्स, नयी दिल्ली
32. महावीर बुक स्टाल, खजूरी बाजार, इन्दौर
33. हिन्दी बुक डिपो, मुरादाबाद
34. माँ बुक स्टेशनर्स, शहडोल छत्तीसगढ़

उ. प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयनबोर्ड, इलाहाबाद
UP-PGT (प्रवक्ता) संस्कृत पाठ्यक्रम

1. निम्नलिखित साहित्यिक ग्रन्थों का अध्ययन (गद्य, पद्य एवं नाटक)

- बाणभट्ट की कादम्बरी कथामुख
- त्रिविक्रमभट्ट का नलचम्पू (प्रथम उच्छ्वास)
- माघ का शिशुपालवधम् (प्रथमसर्ग)
- कालिदास का अभिज्ञानशाकुन्तलम् (सम्पूर्ण)
- शूद्रक का मृच्छकटिकम् (सम्पूर्ण)
- कालिदास का रघुवंशमहाकाव्यम् (द्वितीय सर्ग)
- श्रीहर्ष का नैषधीयचरितम् (प्रथमसर्ग)

→ इन दोनों ग्रन्थों का भी सामान्य अध्ययन अपेक्षित है।

2. संस्कृतसाहित्य का इतिहास– गद्यकाव्य, महाकाव्य एवं नाटक के उद्भव और विकास का सामान्य परिचय

3. संस्कृतवाङ्मय में प्रतिबिम्बित भारतीयदर्शन

निम्नलिखित दार्शनिकग्रन्थों के प्रमुख दार्शनिक सिद्धान्तों का सामान्य परिचय

- श्रीमद्भगवद्गीता ● केशवमिश्र की तर्कभाषा/अन्नंभट्ट का तर्कसंग्रह ● ईश्वरकृष्ण की सांख्यकारिका ● सदानन्द का वेदान्तसार

4. काव्यशास्त्र– मम्मट के काव्यप्रकाश एवं विश्वनाथ के साहित्यदर्पण के अनुसार निम्नलिखित काव्यशास्त्रीय विषयों का ज्ञान–

- काव्यप्रयोजन ● काव्यहेतु ● काव्यलक्षण ● काव्यभेद ● शब्दशक्तियाँ (अभिधा, लक्षणा, व्यञ्जना)
- ध्वनि ● रस ● काव्यगुण

अलङ्कार– (शब्दालङ्कार) अनुप्रास, यमक, श्लेष। **(अर्थालङ्कार)**– उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, सन्देह, भ्रान्तिमान्, अतिशयोक्ति, स्वभावोक्ति, विरोधाभास, परिसंख्या, विभावना एवं विशेषोक्ति।

5. भाषाविज्ञान– ● भाषा का उद्भव एवं विकास ● ध्वनिनियम (ग्रिम, ग्रासमान एवं वर्नर) ● ध्वनिपरिवर्तन एवं अर्थपरिवर्तन

6. व्याकरण– ● सभी गणों की प्रतिनिधि धातुओं का दसों लकारों में रूप (लघुसिद्धान्तकौमुदी के आधार पर)

यथा– (i) भ्वादिगण–भू धातु (होना)
(ii) अदादिगण–अद् धातु (खाना)
(iii) जुहोत्यादिगण–हु धातु (हवन करना)
(iv) दिवादिगण–दिव् धातु (खेल करना)
(v) स्वादिगण– सु धातु (स्नान, मद्य चुआना, निचोड़ना)
(vi) तुदादिगण– तुद् धातु (दुःख देना)
(vii) रुधादिगण– रुधिर् धातु (रोकना)
(viii) तनादिगण–तन् धातु (तानना, फैलाना)
(ix) क्र्यादिगण–क्रीञ् धातु (खरीदना)
(x) चुरादिगण–चुर् धातु (चोरी करना)

भट्टोजिदीक्षित के सिद्धान्तकौमुदी के आधार पर निम्नलिखित व्याकरण विषयों का ज्ञान

- कारक एवं विभक्तियों का प्रक्रियात्मक ज्ञान ● समास ● सन्धि का सामान्य ज्ञान

लघुसिद्धान्तकौमुदी के आधार पर निम्नलिखित प्रत्ययों का ज्ञान

कृदन्तप्रत्यय– ● तव्यत् ● अनीयर् ● यत् ● घञ् ● तृच् ● क्त ● क्तवतु ● क्त्वा ● ल्यप् ● शतृ ● शानच् ● तुमुन्

तद्धितप्रत्यय– ● अण् ● वतुप्/मतुप् ● मयट् ● ठक् ● ढक् ● फक् ● ख ● यत् ● छ

स्त्रीप्रत्यय– ● टाप् ● ङीप् ● ङीष् ● ङीन्

➔ वाच्यपरिवर्तन (कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य, भाववाच्य) ➔ संस्कृत सुभाषित एवं सूक्तियों का ज्ञान ➔ अशुद्धिपरिमार्जन

7. अपठित, अनुवाद एवं निबन्धरचना

- संस्कृत के गद्य, पद्य खण्डों का हिन्दी रूपान्तर
- हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद
- संस्कृत में निबन्ध रचना
- संस्कृत में पत्रलेखन

8. नाटक में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दों का ज्ञान– (दशरूपक अथवा साहित्यदर्पण के अनुसार)

- प्रस्तावना ● सूत्रधार ● कञ्चुकी ● विदूषक
- कथावस्तुभेद ● नायकभेद ● पताकास्थानक
- पञ्च अर्थोपक्षेपक– विष्कम्भक, चूलिका, अङ्कास्य, अङ्कावतार, प्रवेशक
- पञ्च अर्थप्रकृतियाँ– बीज, बिन्दु, पताका, प्रकरी, कार्य
- पञ्च कार्यावस्थायें– आरम्भ, यत्न, प्राप्त्याशा, नियताप्ति, फलागम
- पञ्च सन्धियाँ– मुख, प्रतिमुख, गर्भ, अवमर्श (विमर्श), उपसंहृति (निर्वहण)
- नियतश्राव्य ● सर्वश्राव्य ● स्वगत ● जनान्तिक
- अपवारित ● आकाशभाषित ● रूपक के दस भेद ● नेपथ्य
- नान्दी ● प्रेक्षागृह आदि

संस्कृतगङ्गा उवाच

प्रिय संस्कृतमित्राणि!

नमः संस्कृताय

- सभी संस्कृतमित्रों के लिए संस्कृतगङ्गा की यह प्रस्तुति आदर्श-प्रश्नपत्र एवं अब तक की PGT परीक्षाओं का हलप्रश्नपत्र के रूप में संस्कृतसेवार्थ समर्पित है।
- अभी तक संस्कृतगङ्गा में हुए PGT प्रागीक्षणों (टेस्टसीरीज) का सङ्कलन इस पुस्तक में प्रकाशित किया जा रहा है।
- उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा सेवा चयनबोर्ड इलाहाबाद एवं लोकसेवा आयोग उ0 प्र0 इलाहाबाद द्वारा पूछे जा रहे सवालों को आदर्श मानकर इसमें सम्भावित प्रश्नों का संग्रह किया गया है, आशा है सभी संस्कृतमित्रों को यह सङ्कलन अच्छा लगेगा।
- पुस्तक के अन्त में सन् 2000 से अब तक की सभी **PGT, GIC** एवं **GGIC** प्रवक्ता परीक्षाओं का हलप्रश्नपत्र भी जोड़ा गया है तथा सभी प्रश्नों का उत्तर स्रोत सहित दिया गया है।
- इस मॉडल पेपर में यह प्रयास किया गया है कि किसी प्रश्न की पुनरावृत्ति न हो एवं न ही कोई उत्तर गलत हो।
- इसके सभी प्रश्नों के उत्तर प्रामाणिक पुस्तकों एवं विद्वानों की सलाह से दिये जा रहे हैं, फिर भी कुत्रचित् मुद्रणदोष या सम्पादकीय त्रुटियाँ मिलें, तो कृपया सूचित करें।
- साथ ही उन सभी संस्कृतमित्रों को कोटिशः धन्यवाद, जिन्होंने प्रूफसंशोधन आदि कार्य में संस्कृतगङ्गा का सहयोग किया, विशेषरूपेण **अम्बिकेशप्रतापसिंह, श्रीकान्त, दिनेश दुबे, अमितसिंह, मनीषशर्मा, राजीवसिंह, सच्चिदानन्द शुक्ल, रवीन्द्रमिश्र, उमापतिवर्मा, दीपचन्द्र चौरसिया, ज्ञानसिंह, नीलम गुप्ता** एवं **कविता सिंह** का।
- किसी भी तरह की सलाह, परामर्श या शिकायत हेतु हमें याद करें या बात करें – **9839852033, 9792961808**

मार्च, 2020

– सम्पादक

विषयानुक्रमणी

प्रवक्ता परीक्षा (PGT) हलप्रश्नपत्रम् (Solved Papers)

PGT आदर्शप्रश्नपत्र (Model Papers)

1	प्रवक्ता चयन परीक्षा (PGT) संस्कृत	2019 परीक्षा तिथि 03 फरवरी 2019

1. 'यथा गौस्तथा गवयः' यह उदाहरण है?
(A) उपमान का (B) अनुमान का
(C) प्रत्यक्ष का (D) बुद्धिव्यवसाय का
स्रोत- तर्कभाषा- गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज 179

2. 'चतुर्वर्गफलप्राप्तिः' यह काव्य प्रयोजन स्वीकृत है?
(A) मम्मट द्वारा (B) दण्डी द्वारा
(C) विश्वनाथ द्वारा (D) आनन्दवर्धन द्वारा
स्रोत- साहित्यदर्पण- (1/2) शालिग्राम शास्त्री, पेज 07

3. काव्यप्रकाश के अनुसार श्लेष अलङ्कार के भेद हैं-
(A) आठ (B) दश (C) ग्यारह (D) सात
स्रोत- काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज 415

4. 'द्रक्ष्यति' यह धातु रूप है-
(A) दृक्ष धातु का लट् लकार का प्रथम पुरुष एकवचन
(B) पश्य धातु का लृट् लकार का प्रथम पुरुष एकवचन
(C) दृश् धातु का लृट् लकार का प्रथम पुरुष एकवचन
(D) द्रक्ष्य धातु का लोट् लकार का प्रथम पुरुष एकवचन
स्रोत- रूपचन्द्रिका- ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज 154

5. याच् में शानच् प्रत्यय होने पर रूप बनता है?
(A) याचन् (B) याचयन्ती
(C) याचशान् (D) याचमानः
स्रोत- रचनानुवादकौमुदी- कपिलदेव द्विवेदी, पेज 204

6. कुन्ती में ढक् प्रत्यय के योग से रूप बनता है-
(A) कुन्ताढः (B) कौन्तेयः
(C) कौन्तेयाढ्यः (D) कुन्तीढः
स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी- भैमी व्याख्या (भाग 5), पेज 42, 43

7. कादम्बरी कथामुख में वर्णन हुआ है?
(A) अगस्त्याश्रम का
(B) हारीताश्रम का
(C) जाबाल्याश्रम का
(D) उपर्युक्त तीनों का
स्रोत- कादम्बरी- जयशङ्करलाल त्रिपाठी, पेज 169, 182, 99

8. 'करोति कस्य नाह्लादं कथा कान्तेव भारती' यह उक्ति किस कवि की है?
(A) बाणभट्ट की (B) त्रिविक्रमभट्ट की
(C) शूद्रक की (D) कालिदास की
स्रोत- नलचम्पू (1/3)- रामनाथ त्रिपाठी, पेज 13

9. त्रिविक्रमभट्ट ने नलचम्पू में सबसे पहले स्तवन किया है-
(A) कामदेव का (B) विष्णु देव का
(C) गिरिसुता का (D) भगवान् शङ्कर का
स्रोत- नलचम्पू (1/1)- रामनाथ त्रिपाठी, पेज 1-2

10. 'गतं तिरश्चीनमनूरुसारथेः' में 'अनूरुसारथेः' पद का अर्थ है?
(A) नारद का (B) सूर्य का
(C) हविर्भुक् का (D) पङ्गु का
स्रोत- शिशुपालवध- (1/2)- तारिणीश झा, पेज 06

11. 'हरत्यघं सम्प्रति हेतुरेष्यतः' यह पद्यांश है-
(A) शिशुपालवधम् का
(B) अभिज्ञानशाकुन्तलम् का
(C) श्रीमद्भगवद्गीता का
(D) मृच्छकटिकम् का
स्रोत- शिशुपालवधम् (1/26)- तारिणीश झा, पेज 57

12. दरिद्रता के वर्णन से पूर्ण रूपक प्रणीत किया है-
(A) बाणभट्ट ने (B) माघ ने
(C) त्रिविक्रमभट्ट ने (D) शूद्रक ने
स्रोत- मृच्छकटिकम् - रमाशङ्कर त्रिपाठी, पेज भू. (xxxi)

13. 'प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः' यह भरतवाक्य किस नाटक में प्रयुक्त हुआ है?
(A) नलचम्पू में
(B) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में
(C) मृच्छकटिक में
(D) उत्तररामचरितम् में
स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (7/35)- कपिलदेव द्विवेदी, पेज 453

1. (A) **2.** (C) **3.** (A) **4.** (C) **5.** (D) **6.** (B) **7.** (D) **8.** (B) **9.** (D) **10.** (B) **11.** (A) **12.** (D) **13.** (B)

14. ब्रह्मजिज्ञासा के साधन चतुष्टय में निम्न में से किसका ग्रहण नहीं हुआ है?
(A) नित्यानित्यवस्तुविवेक
(B) इहामुत्रार्थफलभोगानुराग
(C) शमादिषट्कसम्पत्ति
(D) मुमुक्षुत्व
स्रोत- वेदान्तसार- राकेश शास्त्री, पेज 132

15. सांख्य मत में जो प्रमाण स्वीकार नहीं किया गया वह है-
(A) दृष्ट (B) अनुमान
(C) आप्त (D) अर्थापत्ति
स्रोत- सांख्यकारिका (का.-04)- रमेशचन्द्र पाण्डेय, पेज 42

16. निम्न में से कौन सा सिद्धान्त श्रीमद्भगवद्गीता में नहीं कहा गया है?
(A) पुनर्जन्मसिद्धान्त (B) आत्मा की नित्यता
(C) सांख्ययोग सिद्धान्त (D) अधर्मोत्थान सिद्धान्त
स्रोत- श्रीमद्भगवद्गीता- गीताप्रेस, पेज भू. 10-12

17. राजा नल की नगरी का नाम था-
(A) अवन्ती (B) विशाला
(C) निषधा (D) काशी
स्रोत- नलचम्पू- (1/29) रामनाथ त्रिपाठी, पेज 48

18. राजा नल की कथा किस ग्रन्थ में नहीं है?
(A) रामायण में (B) स्कन्द पुराण में
(C) विक्रमाङ्कदेवचरित में (D) मत्स्य पुराण में
स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशङ्कर शर्मा ऋषि, पेज 310
नोट- उपर्युक्त प्रश्न के उत्तर को आयोग ने 'F' कर दिया है।

19. राजा नल के मन्त्री का नाम था?
(A) बालाहक (B) श्रुतिशील
(C) विदध (D) बाहुक
स्रोत- नलचम्पू- रामनाथ त्रिपाठी, पेज भू. 71

20. 'बृहत्कथामञ्जरी' का विभाजन है-
(A) लम्बकों में **(B)** लावाणकों में
(C) उच्छ्वासों में **(D)** निःश्वासों में
स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशङ्कर शर्मा ऋषि, पेज 424

21. 'यष्टयः प्रविशन्ति' में लक्षणा है?
(A) उपादानलक्षणा (B) लक्षणलक्षणा
(C) शुद्धा सारोपा (D) गौणी साध्यवसाना
स्रोत- काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज 53

22. शिशुपालवध की कथा का आधार है?
(A) महाभारत (B) श्रीमद्भगवद्गीता
(C) विष्णुपुराण (D) दशावतार
स्रोत- शिशुपालवधम् - तारिणीश झा, पेज भू. 15

23. किस ग्रन्थ की गणना बृहत्त्रयी के अन्तर्गत नहीं है-
(A) किरातार्जुनीयम् (B) शिशुपालवधम्
(C) नैषधीयचरितम् (D) रघुवंशम्
स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा ऋषि, पेज 208

24. नीचे लिखे गये ग्रन्थों में कौन सा ग्रन्थ काव्यशास्त्र का नहीं है?
(A) ध्वन्यालोक (B) सरस्वतीकण्ठाभरण
(C) कविकिर्णाभरण (D) कविकण्ठाभरण
संस्कृत शास्त्रों का इतिहास- बलदेव उपाध्याय, पेज 212, 228

25. निम्नलिखित में से जो न्यायसूत्रकार के मत में नहीं है?
(A) अनुमान (B) उपमान
(C) प्रत्यक्ष (D) परोक्ष
स्रोत- तर्कभाषा- गजानन शास्त्री मुसलगॉवकर, पेज 59

26. पञ्चतन्मात्राओं से उत्पत्ति होती है?
(A) पञ्च प्राणों की
(B) पञ्च मकारों की
(C) पञ्च इन्द्रियों की
(D) पञ्च महाभूतों की
स्रोत- सांख्यकारिका (का. 22)- राकेश शास्त्री, पेज 70
नोट- उपर्युक्त प्रश्न का समीचीन विकल्प न होने के कारण आयोग ने इस प्रश्न के उत्तर को 'F' कर दिया था।

27. 'विश्वपा' शब्द के पञ्चमी एकवचन का रूप है?
(A) विश्वपा (B) विश्वपः
(C) विश्वपाः (D) विश्वपि
स्रोत- रूपचन्द्रिका- ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज 07

14. (B) **15.** (D) **16.** (D) **17.** (C) **18.** (C/F) **19.** (B) **20.** (A) **21.** (A) **22.** (A) **23.** (D) **24.** (C) **25.** (D) **26.** (D) **27.** (B)

28. शिशुपालवध में 'हिरण्यगर्भाङ्गभूः' कहा गया है?
(A) नारद को (B) श्रीकृष्ण को
(C) बलराम को (D) गर्ग को
स्रोत- शिशुपालवधम् (1/1)- तारिणीश झा, पेज 02

29. 'अथवाऽनार्यः परदारव्यवहारः' यह उक्ति है?
(A) कण्व की (B) माधव्य की
(C) इन्द्र की (D) दुष्यन्त की
स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (अङ्क-7)- कपिलदेव द्विवेदी, पेज 421

30. 'गुणः खलु अनुरागस्य कारणम्' यह उक्ति है?
(A) चारुदत्त की (B) मैत्रेय की
(C) शकार की (D) वसन्तसेना की
स्रोत- मृच्छकटिकम् - (प्रथमोऽङ्क)- रमाशङ्कर त्रिपाठी, पेज 65

31. निर्वात दीपवत् अचलत्व होता है?
(A) सविकल्पक समाधि का (B) सगुण ब्रह्म का
(C) जीव का (D) निर्विकल्पक समाधि का
स्रोत- वेदान्तसार- राकेश शास्त्री, पेज 275
नोट- उपर्युक्त प्रश्न में मुद्रण दोष होने के कारण आयोग ने इस प्रश्न के उत्तर को 'F' कर दिया है।

32. वेदान्तसार के अनुसार प्रयोजन है?
(A) दुःखनिवृत्ति
(B) अभ्युदयलाभ
(C) पाण्डित्य सम्पादन
(D) अज्ञाननिवृत्ति और स्वस्वरूपानन्दावाप्ति
स्रोत- वेदान्तसार- राकेश शास्त्री, पेज 116, 143, 145

33. वेदान्तसार में लिङ्गशरीर है-
(A) षोडशावयव
(B) पञ्चदशावयव
(C) एकादशावयव
(D) सप्तदशावयव
स्रोत- वेदान्तसार- राकेश शास्त्री, पेज 185

34. विश्वनाथ के मतानुसार हास्य होता है?
(A) द्विविध (B) त्रिविध
(C) चतुर्विध (D) षड्विध
स्रोत- साहित्यदर्पण-(3/217) शालिग्रामशास्त्री, पेज 118

35. व्यायोग में नायक होता है?
(A) धीरप्रशान्त (B) धीरोदात्त
(C) धीरोद्धत (D) धीरललित
स्रोत- साहित्यदर्पण- शालिग्रामशास्त्री, पेज 65

36. ''अर्थे सत्यर्थभिन्नानां वर्णानां सा पुनः श्रुतिः'' यह लक्षण है?
(A) अनुप्रास का (B) यमक का
(C) श्लेष का (D) उपमा का
स्रोत- काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज 409

37. संस्कृत भाषा में निम्नलिखित में से दीर्घ नहीं होता है?
(A) ऋकार का (B) अकार का
(C) इकार का (D) ऌकार का
स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी- आद्याप्रसाद मिश्र, पेज 20-21

38. 'द्वियमुनम्' में समास है?
(A) द्विगु (B) द्वन्द्व
(C) अव्ययीभाव (D) तत्पुरुष
स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी- आद्याप्रसाद मिश्र, पेज 157

39. 'पक्वः' में प्रत्यय है?
(A) क्त (B) क्तवतु (C) घञ् (D) यत्
स्रोत- रचनानुवादकौमुदी- कपिलदेव द्विवेदी, पेज 201-202

40. 'वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि' यह सुभाषित है?
(A) रघुवंशम् में
(B) उत्तररामचरितम् में
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में
(D) वेणीसंहारम् में
स्रोत- उत्तररामचरितम् (2/7)- आनन्दस्वरूप, पेज 169

41. ''गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः'' यह सूक्ति किस ग्रन्थ से है?
(A) उत्तररामचरितम् में
(B) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में
(C) मृच्छकटिकम् में
(D) मालविकाग्निमित्रम् में
स्रोत- उत्तररामचरितम् (4/11)- आनन्दस्वरूप, पेज 347

28. (A) **29.** (D) **30.** (D) **31.** (D/F) **32.** (D) **33.** (D) **34.** (D) **35.** (C) **36.** (B) **37.** (D) **38.** (C) **39.** (A) **40.** (B) **41.** (A)

42. 'चण्डीशतक' के रचयिता कौन हैं?
(A) मयूरभट्ट
(B) बाणभट्ट
(C) रामानुजाचार्य
(D) भर्तृहरि
स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशङ्कर शर्मा ऋषि, पेज 395

43. एक मात्र वर्ण ''दकार'' का प्रयोग करते हुए जिस महाकवि ने पद्य निर्मित किया है वे हैं-
(A) कालिदास
(B) माघ
(C) भारवि
(D) भवभूति
स्रोत- शिशुपालवधम् - (19/114)- हरगोविन्द शास्त्री, पेज 894

44. शकुन्तला की अँगूठी किस स्थान पर गिरी थी?
(A) सोमतीर्थ (B) शचीतीर्थ
(C) कण्वाश्रम (D) प्रभासतीर्थ
स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज 283

45. नलचम्पू महाभारत के किस पर्व से सम्बन्धित है?
(A) सभापर्व (B) भीष्मपर्व
(C) वनपर्व (D) द्रोणपर्व
स्रोत- नलचम्पू- तारिणीश झा, पेज भू. 21

46. नलचम्पू में जो अलङ्कार बहुलता पूर्वक प्रयुक्त हुआ है-
(A) यमक (B) अनुप्रास
(C) रूपक (D) श्लेष
स्रोत- नलचम्पू- तारिणीश झा, पेज भू. 22

47. 'बोध्यबोधकभावलक्षणः' किसको अभिव्यक्त करता है?
(A) अधिकारी को (B) विषय को
(C) सम्बन्ध को (D) प्रयोजन को
स्रोत- वेदान्तसार- सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज 30

48. वैशेषिकदर्शन में प्रमाण के कितने भेद उपदिष्ट हैं?
(A) 4 (B) 6
(C) 2 (D) 5
स्रोत- सर्वदर्शनसंग्रह- उमाशङ्कर शर्मा ऋषि, पेज 88

49. चार्वाक दर्शन में कितने प्रमाण हैं?
(A) 3 (B) 4
(C) 5 (D) 1
स्रोत- सर्वदर्शनसंग्रह- उमाशङ्कर शर्मा ऋषि, पेज 04
नोट - उपर्युक्त प्रश्न में उचित विकल्प न होने के कारण आयोग ने इस प्रश्न के उत्तर को 'F' कर दिया था।

50. श्रीमद्भगवद्गीता के द्वितीय अध्याय का नाम है?
(A) कर्मयोग (B) सांख्ययोग
(C) ज्ञानकर्मसंन्यासयोग (D) कर्मसंन्यासयोग
स्रोत- श्रीमद्भगवद्गीता- गीताप्रेस, पेज 47

51. साक्षात् संकेतित अर्थ की बोधक शक्ति है-
(A) तात्पर्या **(B)** अभिधा **(C)** लक्षणा **(D)** व्यञ्जना
स्रोत- काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज 42

52. आचार्य मम्मट द्वारा स्वीकृत रसदोषों की संख्या है-
(A) बारह **(B)** चौदह **(C)** तेरह **(D)** ग्यारह
स्रोत- काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज 358

53. 'उगितश्च' सूत्र से किस प्रत्यय का विधान होता है?
(A) ङीष् का **(B)** ङीप् का
(C) ङीन् का **(D)** ति का
स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी- आद्याप्रसाद मिश्र, पेज 123

54. 'ग्रामं गच्छन् तृणं स्पृशति' यहाँ तृणं में किस सूत्र से द्वितीया विभक्ति होती है?
(A) कर्तुरीप्सिततमं कर्म **(B)** कर्मणि द्वितीया
(C) अकथितं च **(D)** तथायुक्तं चानीप्सितम्
स्रोत- सिद्धान्तकौमुदी- राममुनि पाण्डेय, पेज 30-31
नोट- 'तथायुक्तं चानीप्सितं' सूत्र से कर्मसंज्ञा तथा 'कर्मणि द्वितीया' से द्वितीया विभक्ति होती है। आयोग ने इस प्रश्न का उत्तर 'D' माना है।

55. 'महाकवि कालिदास उपमा के सम्राट् हैं तो बाण परिसंख्या के' इस कथन के कथनकार हैं-
(A) डॉ0 जनार्दन पाण्डेय **(B)** डॉ0 रमाशङ्कर त्रिपाठी
(C) डॉ0 अवनीश कुमार **(D)** डॉ0 विश्वेश्वर
संस्कृत साहित्य का प्रामाणिक इतिहास- रमाशंकर त्रिपाठी, पेज 268

42. (B) **43.** (B) **44.** (B) **45.** (C) **46.** (D) **47.** (C) **48.** (C) **49.** (D) **50.** (B) **51.** (B) **52.** (C) **53.** (B) **54.** (B/D) **55.** (B)

56. राजा शूद्रक की राजधानी थी?
(A) उज्जयिनी (B) अयोध्या
(C) विदिशा (D) धारानगरी
स्रोत- कादम्बरी कथामुख- तारिणीश झा, पेज 45

57. 'अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता' यह सूक्ति है?
(A) शिशुपालवध में (B) किरातार्जुनीय में
(C) रघुवंश में (D) कुमारसम्भव में
स्रोत- किरातार्जुनीयम् (1/23)- श्रीनिवास शर्मा, पेज 15

58. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के नान्दीपाठ में भगवान् शिव की मूर्तियाँ निर्दिष्ट हैं-
(A) पाँच (B) नव
(C) ग्यारह (D) आठ
स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/1)- कपिलदेव द्विवेदी, पेज 01

59. 'मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति' यहाँ पर 'लक्ष्म' और 'लक्ष्मी' का अर्थ है?
(A) लक्ष्म और लक्ष्मी देवी (B) लाक्षा और विष्णुपत्नी
(C) चिह्न और शोभा (D) अमृत और छवि
अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/20)- कपिलदेव द्विवेदी, पेज 46

60. मृच्छकटिकम् की नायिका है-
(A) वसन्तसेना (B) विचर्चिका
(C) मालती (D) सागरिका
स्रोत- मृच्छकटिकम् - श्रीनिवास शास्त्री, पेज 01

61. कर्मयोग का सिद्धान्त प्रतिपादित है-
(A) सांख्यतत्त्वकौमुदी में (B) तर्कभाषा में
(C) वेदान्तसार में (D) श्रीमद्भगवद्गीता में
स्रोत- श्रीमद्भगवद्गीता (2/47)- गीताप्रेस, पेज भू. 9

62. 'सत्कार्यवाद' सिद्धान्त उपलब्ध होता है-
(A) सिद्धान्तकौमुदी में (B) सांख्यकारिका में
(C) वेदान्तसार में (D) तर्कभाषा में
स्रोत- सांख्यकारिका (का. 9)- राकेश शास्त्री, पेज 29

63. प्रत्यक्ष प्रमाण का अवगम होता है?
(A) अनुमान से (B) शब्द से
(C) षोढा सन्निकर्ष से (D) अभाव से
स्रोत- तर्कभाषा- गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज 77

64. आरोपित शब्द व्यापार का दूसरा नाम है-
(A) व्यञ्जना व्यापार (B) तात्पर्या व्यापार
(C) अभिधा व्यापार (D) लक्षणा व्यापार
स्रोत- साहित्यदर्पण- शालिग्रामशास्त्री, पेज 29-30

65. 'वर्णसाम्यमनुप्रासः' यह अनुप्रास अलङ्कार का लक्षण है-
(A) साहित्यदर्पण के अनुसार
(B) काव्यप्रकाश के अनुसार
(C) चन्द्रालोक के अनुसार
(D) अलङ्कारसर्वस्व के अनुसार
स्रोत- काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज 404

66. भाषाविज्ञान के अर्थपरिवर्तन कारणों में जो कारण नहीं है वह है-
(A) अर्थविस्तार (B) अर्थसङ्कोच
(C) अर्थव्यञ्जकता (D) अर्थविपर्यय
स्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र- कपिलदेव द्विवेदी, पेज 336

67. 'पाणिपादम्' में समास है-
(A) इतरेतरद्वन्द्व (B) समाहारद्वन्द्व
(C) कर्मधारय (D) बहुव्रीहिः
स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी- आद्याप्रसाद मिश्र, पेज 196

68. प्रच्छ् धातु में क्त्वा प्रत्यय के योग से रूप बनता है?
(A) पृष्ट्वा (B) प्रष्ट्वा
(C) प्रच्छत्वा (D) प्रच्छित्वा
स्रोत- रचनानुवादकौमुदी- कपिलदेव द्विवेदी, पेज 208

69. 'सुभाषितं हारि विशत्यधो गलान्नदुर्जनस्यार्करिपोरिवामृतम्' यह सूक्ति उद्धृत है?
(A) कादम्बरी से (B) शिशुपालवधम् से
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से (D) नीतिशतकम् से
स्रोत- कादम्बरीकथामुख- (श्लोक 07)

70. 'नमस्तस्मै कृता येन रम्या रामायणी कथा' यह कहकर महर्षि वाल्मीकि का अभिवादन किया गया है-
(A) कादम्बरी में
(B) रामायण में
(C) नलचम्पू में
(D) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में
स्रोत- नलचम्पू (1.11)- रामनाथ त्रिपाठी, पेज 12

56. (C) **57.** (B) **58.** (D) **59.** (C) **60.** (A) **61.** (D) **62.** (B) **63.** (C) **64.** (D) **65.** (B) **66.** (C) **67.** (B) **68.** (A) **69.** (A) **70.** (C)

71. निम्न में से नलचम्पू की सूक्ति है-
(A) नैको रसः कवेः (B) सर्वं सहा सूरयः
(C) उपर्युक्त दोनों (D) इनमें से कोई नहीं
स्रोत- नलचम्पू- 1/15,16

72. शिशुपालवध महाकाव्य के प्रथम सर्ग में प्रयुक्त छन्द है-
(A) वंशस्थ, पुष्पिताग्रा, शिखरिणी
(B) वंशस्थ, पुष्पिताग्रा, मन्दाक्रान्ता
(C) वंशस्थ, पुष्पिताग्रा, शार्दूलविक्रीडित
(D) मन्दाक्रान्ता, पुष्पिताग्रा, शिखरिणी
स्रोत- शिशुपालवधम् - 1/1, 74, 75

73. 'रथाङ्गपाणिः' पद में समास है-
(A) तत्पुरुष (B) कर्मधारय
(C) बहुव्रीहि (D) द्वन्द्व
स्रोत- शिशुपालवधम् (1/21)- तारिणीश झा, पेज 48

74. मृच्छकटिक की कथावस्तु किस नगर से सम्बद्ध है?
(A) उज्जयिनी नगर से (B) अयोध्या नगर से
(C) काशी नगर से (D) काञ्ची नगर से
स्रोत- मृच्छकटिकम् (1/6)- रमाशंकर त्रिपाठी, पेज 10

75. निम्न में से मृच्छकटिकम् का सहवचन है-
(A) सुखं हि दुःखान्यनुभूय शोभते
(B) विभवाऽनुगता भार्या
(C) शून्यमपुत्रस्य गृहम्
(D) उपर्युक्त तीनों
स्रोत- मृच्छकटिकम् (1/8,10) रमाशंकर त्रिपाठी, पेज 13, 30

76. पञ्चीकरण प्रक्रिया का विशद विवेचन है-
(A) तर्कभाषा में (B) सांख्यकारिका में
(C) वेदान्तसार में (D) उपर्युक्त तीनों में
स्रोत- वेदान्तसार- राकेश शास्त्री, पेज 200

77. 'अधोलिखित में से सत्कार्यवाद का हेतु नहीं है-
(A) असदकरण (B) उपादानग्रहण
(C) सर्वसम्भवभाव (D) शक्त का शक्यकरण
स्रोत- सांख्यकारिका (का. 9)- राकेश शास्त्री, पेज 29

नोट- उपर्युक्त प्रश्न में मुद्रण दोष के कारण दो विकल्प सही होने से आयोग ने इस प्रश्न के उत्तर को 'F' कर दिया था। यहाँ मुद्रणदोष दूर कर दिया गया है।

78. सांख्यकारिका के अनुसार सत्त्व गुण में नहीं होता है-
(A) लाघव (B) प्रकाशत्व
(C) उपर्युक्त दोनों (D) चलत्व
स्रोत- सांख्यकारिका (का. 13)- राकेश शास्त्री, पेज 45

79. अधोलिखित में से श्रीमद्भगवद्गीता में जो नहीं कहा गया-
(A) ईशावास्यमिदं सर्वम्
(B) कर्मब्रह्मोद्भवं विद्धि
(C) योगस्थः कुरु कर्माणि
(D) ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म
स्रोत- श्रीमद्भगवद्गीता- 2/48, 3/15, 8/13

80. 'कुमारपालित' पात्र के रूप में वर्णित हैं-
(A) मृच्छकटिकम् में (B) कादम्बरी में
(C) नलचम्पू में (D) शिशुपालवधम् में
स्रोत- कादम्बरी कथामुख- तारिणीश झा, पेज 101

81. गद्यकाव्य का प्रभेद नहीं है?
(A) वृत्तगन्धि (B) चूर्णक
(C) कल्लिका प्राय (D) मुक्तक
स्रोत- साहित्यदर्पण- (7/330) शालिग्राम शास्त्री, पेज 226

82. 'वेतालपञ्चविंशतिका' ग्रन्थ के लेखक हैं-
(A) त्रिविक्रमभट्ट (B) त्रिविक्रमसेन
(C) त्रिबलादित्य (D) त्रिरत्नाकर
स्रोत- संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड 5)- पेज 252
नोट- उपर्युक्त प्रश्न के उत्तर को आयोग ने 'F' मान लिया है।

83. कथा साहित्य के रचनाकार के रूप में किसकी गणना नहीं है?
(A) क्षमाराव (B) महालिङ्ग शास्त्री
(C) नरहरि (D) रङ्गनाथाचार्य
स्रोत- संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड 5), पेज 259

84. निम्नलिखित में से कौन कवयित्री संस्कृत साहित्य की नहीं है?
(A) शीला भट्टारिका (B) विकटनितम्बा
(C) विज्जका (D) पत्रलेखा
स्रोत- कादम्बरी कथामुख- जयशङ्करलाल त्रिपाठी, पेज भू. 37

71. (C) **72.** (C) **73.** (C) **74.** (A) **75.** (D) **76.** (C) **77.** (C) **78.** (D) **79.** (A) **80.** (B) **81.** (C) **82.** (B) **83.** (C) **84.** (D)

85. माघ को 'घण्टामाघ' की उपाधि से अलंकृत किया गया है?
(A) अच्छोद सरोवर के वर्णन के कारण
(B) रैवतक पर्वत के वर्णन के कारण
(C) नारद के वर्णन के कारण
(D) इनमें से कोई नहीं
स्रोत- शिशुपालवधम् (4/20)- हरगोविन्द शास्त्री, पेज भू. 19

86. 'हतो नरो वा कुञ्जरो मे न निर्णयः' इनमें कौन सा अलङ्कार है?
(A) भ्रान्तिमान् (B) उत्प्रेक्षा
(C) सन्देह (D) अपह्नुति
स्रोत- काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज 462

87. पट का समवायिकारण है-
(A) कुलाल (B) वेमा
(C) तुरी (D) तन्तु
स्रोत- तर्कभाषा- गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज 39

88. वेदान्तसार के अनुसार सत्ता के कितने प्रकार हैं?
(A) दो (B) तीन
(C) चार (D) पाँच
स्रोत- वेदान्तसार- राकेश शास्त्री, पेज 84

89. वेदान्तदर्शन के अनुसार प्रमाण हैं?
(A) चार (B) पाँच
(C) छः (D) तीन
स्रोत- वेदान्तसार- राकेश शास्त्री, पेज भू. 73

90. शिशुपालवध महाकाव्य में सर्गों की संख्या है?
(A) सोलह (B) सत्रह
(C) अठारह (D) बीस
स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा ऋषि, पेज 262

91. 'अग्निगर्भां शमीमिव' यह उपमा दी गयी है-
(A) शकुन्तला की
(B) गौतमी की
(C) प्रियंवदा की
(D) अनसूया की
स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/4)- कपिलदेव द्विवेदी, पेज 498

92. अधोलिखित में से जो यत् प्रत्यय से निष्पन्न नहीं है?
(A) कार्यम् (B) शप्यम्
(C) ग्लेयम् (D) जेयम्
स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी- (3.1.124) गोविन्दाचार्य, पेज 780

93. वेदान्तसार के अनुसार अज्ञान है-
(A) भावरूप (B) अभावरूप
(C) शून्यरूप (D) निष्क्रिय
स्रोत- वेदान्तसार- राकेश शास्त्री, पेज 149

94. अधोलिखित में जो अर्थोपक्षेपकों में परिगणित नहीं है-
(A) विष्कम्भक (B) प्रवेशक
(C) प्रकरी (D) चूलिका
स्रोत- दशरूपक (1/58)- रमाशंकर त्रिपाठी, पेज 99

95. सांख्यमत में आधिभौतिक दुःख है-
(A) ज्वरातिसार से उत्पन्न दुःख
(B) स्वजनवियोगजन्य दुःख
(C) सर्पादि से उत्पन्न दुःख
(D) भूतप्रेतादि जन्य दुःख
स्रोत- सांख्यकारिका (1/1)- रमेशचन्द्र पाण्डेय, पेज 1-2

96. 'स्वधर्मे निधनं श्रेयः' यह श्रीमद्भगवद्गीता के किस अध्याय में है-
(A) द्वितीय में (B) तृतीय में
(C) चतुर्थ में (D) पञ्चम में
स्रोत- श्रीमद्भगवद्गीता (3/35)- गीताप्रेस, पेज 58

97. काव्यप्रकाश की संकेत टीका के प्रणेता हैं-
(A) माणिक्यचन्द्र (B) वामन
(C) मम्मट (D) मल्लिनाथ
स्रोत- काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज भू. 72

98. नाटक में इतिवृत्त होता है-
(A) कल्पित (B) अप्रसिद्ध
(C) प्रसिद्ध (D) मिश्र
स्रोत- साहित्यदर्पण (6/7)- शालिग्राम शास्त्री, पेज 175

99. ''श्लिष्टैः पदैरनेकार्थाभिधाने'' यह लक्षण है-
(A) अनुप्रास का (B) श्लेष का
(C) सन्देह का (D) भ्रान्तिमान् का
स्रोत- साहित्यदर्पण (10/11)- शालिग्राम शास्त्री, पेज 282

85. (B) **86.** (C) **87.** (D) **88.** (B) **89.** (C) **90.** (D) **91.** (A) **92.** (A) **93.** (A) **94.** (C) **95.** (C)
96. (B) **97.** (A) **98.** (C) **99.** (B)

100. 'सुमद्रम्' में 'सु' उपसर्ग का अर्थ है-

(A) समीप **(B)** शोभन
(C) समृद्धि **(D)** युगपत्

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी (भाग 4)- पेज 28

101. 'एध्' धातु के आशीर्लिङ् उत्तम पुरुष एकवचन में रूप होता है-

(A) एधेय **(B)** एधिषीय
(C) एधिताहे **(D)** एधिषि

स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी- गोविन्दाचार्य, पेज 494-495

102. 'वृत्तवर्तिष्यमाणानां कथांशानां निदर्शकः' यह लक्षण है-

(A) प्रवेशक का **(B)** अङ्कावतार का
(C) अङ्कास्य का **(D)** विष्कम्भक का

स्रोत- दशरूपक (1/59)- रमाशंकर त्रिपाठी, पेज 99

103. अधोलिखित वाक्यों में शुद्ध वाक्य है-

(A) कृष्णम् अभितः गोपाः सन्ति।
(B) कृष्णेन अभितः गोपाः सन्ति।
(C) कृष्णाद् अभितः गोपाः सन्ति।
(D) कृष्णस्य अभितः गोपा सन्ति।

स्रोत- सिद्धान्तकौमुदी- राममुनि पाण्डेय, पेज 46

104. 'बृहत्कथा' किस भाषा शैली में लिखी गयी रचना है?

(A) मागधी **(B)** पैशाची
(C) वैदर्भी **(D)** गौड़ी

संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा ऋषि, पेज 423

105. 'ऋते रवेः क्षालयितुं क्षमेत कः क्षपातमस्काण्डमलीमसं नभः' यह उक्ति है?

(A) किरातार्जुनीयम् की **(B)** रघुवंशम् की
(C) शिशुपालवधम् की **(D)** नैषधम् की

स्रोत- शिशुपालवधम् (1/38)- हरगोविन्दशास्त्री, पेज 27

106. शिशुपालवध का अङ्गीरस है-

(A) हास्य रस **(B)** शृङ्गार रस
(C) रौद्र रस **(D)** वीर रस

स्रोत- शिशुपालवधम् - हरगोविन्दशास्त्री, भूमिका पेज 6

107. 'अतः परीक्ष्य कर्तव्यं विशेषात् संङ्गतं रहः' यह उक्ति है?

(A) कण्व की **(B)** मारीच की
(C) दुष्यन्त की **(D)** शार्ङ्गरव की

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (5/24)- कपिलदेव द्विवेदी, पेज 291

108. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में दुष्यन्त की मनःस्थिति जानने के लिए मेनका ने अपनी सखी को भेजा था?

(A) सानुमती **(B)** उर्वशी
(C) रम्भा **(D)** तिलोत्तमा

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज 318

109. वेदान्तसार के अनुसार प्रमाता विशेषण है?

(A) ईश्वर का **(B)** जीवन्मुक्त का
(C) विषय का **(D)** अधिकारी का

स्रोत- वेदान्तसार- राकेश शास्त्री, पेज 122

110. 'प्रायश्चित्त कर्म' क्या है?

(A) सन्ध्यावन्दनादि **(B)** जातेष्टि आदि
(C) चान्द्रायणव्रत **(D)** शाण्डिल्य विद्या

स्रोत- वेदान्तसार- राकेश शास्त्री, पेज 127

111. भाषा के उद्भव सिद्धान्तों में कौन सा नहीं है?

(A) आवेग सिद्धान्त
(B) वेग सिद्धान्त
(C) सङ्गीत सिद्धान्त
(D) रणन सिद्धान्त

स्रोत- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र- कपिलदेव द्विवेदी, पेज 65-78

112. योगदर्शन में पदार्थों की संख्या है?

(A) 25 **(B)** 26
(C) 24 **(D)** 22

स्रोत- सर्वदर्शनसंग्रह- उमाशंकर शर्मा ऋषि, पेज 558

113. 'शरीरं तावदिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली' यह परिभाषा किसकी है?

(A) दण्डी की (B) भामह की
(C) मम्मट की (D) आनन्दवर्धन की

स्रोत- काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज 24

100. (C) **101.** (B) **102.** (D) **103.** (A) **104.** (B) **105.** (C) **106.** (D) **107.** (D) **108.** (A) **109.** (D) **110.** (C) **111.** (B) **112.** (B) **113.** (A)

114. बोधव्यवैशिष्ट्य पर आधारित है-
(A) आर्थीव्यञ्जना
(B) शाब्दीव्यञ्जना
(C) उपादान लक्षणा
(D) गौणी लक्षणा
स्रोत- काव्यप्रकाश (तृतीयोल्लास)- आचार्य विश्वेश्वर, पेज 82

115. आचार्य मम्मट ने विरोधाभास अलङ्कार के प्रकार माने हैं?
(A) 8 (B) 10
(C) 11 (D) 12
स्रोत- काव्यप्रकाश (दशमोल्लास)- आचार्य विश्वेश्वर, पेज 502

116. 'पंगोश्च' सूत्र से किस स्त्रीप्रत्यय का विधान होता है-
(A) ऊङ् (B) ङीप्
(C) ङीष् (D) ङीन्
स्रोत- लघुसिद्धान्तकौमुदी (4.1.68)- आद्याप्रसाद मिश्र, पेज 141

117. 'सहस्रगुणमुत्स्रष्टुमादत्ते हि रसं रविः' सूक्ति है-
(A) रघुवंश की
(B) मेघदूत की
(C) अभिज्ञानशाकुन्तल की
(D) कुमारसम्भव की
स्रोत- रघुवंशम् (1/18)- हरगोविन्द शास्त्री, पेज 08

118. 'त्रयीमयाय त्रिगुणात्मने नमः' यह पद्यांश उद्धृत है-
(A) नलचम्पू से
(B) कादम्बरी कथामुख से
(C) शिशुपालवध से
(D) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से
स्रोत- कादम्बरी कथामुख (1/11)- तारिणीश झा, पेज 01

119. 'त्रिविक्रमभट्ट का वंश था-
(A) भट्टवंश (B) शाण्डिल्यवंश
(C) भरद्वाजवंश (D) गर्गवंश
स्रोत- नलचम्पू- तारिणीश झा, पेज 21-26

120. बहिर्विकारं प्रकृतेः पृथग् विदुः।
पुरातनं त्वां पुरुषं पुराविदः॥ यह पद्यांश उद्धृत है-
(A) सांख्यकारिका से (B) शिशुपालवध से
(C) नलचम्पू से (D) मृच्छकटिक से
स्रोत- शिशुपालवधम् (1/33)- हरगोविन्द शास्त्री, पेज 23

121. 'भवितव्यानां द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र'- यह सूक्ति उद्धृत है-
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से (B) नलचम्पू से
(C) कादम्बरी से (D) शिशुपालवधम् से
स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/16)- कपिलदेव द्विवेदी, पेज 38

122. ''अनाघ्रातं पुष्पं किसलयमलूनं कररुहैः''-यह उक्ति है-
(A) शकुन्तला की (B) दुष्यन्त की
(C) विदूषक की (D) प्रियंवदा की
स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (2/10)- कपिलदेव द्विवेदी, पेज 115

123. नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो, न शोषयति मारुतः।
इस पद्य में 'एनम्' शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?
(A) आत्मा के लिए (B) ब्रह्म के लिए
(C) जगत् के लिए (D) चित्त के लिए
स्रोत- श्रीमद्भगवद्गीता (1/23)- गीताप्रेस, पेज 32

124. ''मखशतपरिपूतं गोत्रमुद्भासितं यद्'' यह कथन है-
(A) शर्विलक का
(B) शकार का
(C) चारुदत्त का
(D) विदूषक का
स्रोत- मृच्छकटिकम् (10/12)- श्रीनिवास शास्त्री, पेज 304

125. तर्कभाषा में कारणों की संख्या है-
(A) पाँच (B) नव
(C) तीन (D) सात
स्रोत- तर्कभाषा- आचार्य विश्वेश्वर, पेज 25

114. (A) **115.** (B) **116.** (A) **117.** (A) **118.** (B) **119.** (B) **120.** (B) **121.** (A) **122.** (B) **123.** (A) **124.** (C) **125.** (C)

2	प्रवक्ता चयन परीक्षा (PGT) संस्कृत	2013 परीक्षा तिथि 22 फरवरी 2015

आवश्यक निर्देश

1. अभ्यर्थी अपना अनुक्रमांक केवल आवरण पृष्ठ तथा प्रश्न-पुस्तिका के साथ दिए गए उत्तर-पत्रक के निर्दिष्ट स्थान पर लिखेंगे, अन्यत्र कहीं नहीं।
2. प्रश्न-पुस्तिका मिलने के उपरान्त अभ्यर्थी को तुरन्त जाँच कर सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि पुस्तिका में पूरे पृष्ठ हैं तथा कोई प्रश्न छूट तो नहीं गया है। यदि कोई विसंगति है, तो प्रश्न-पुस्तिका मिलने के 10 मिनट के भीतर ही कक्ष-निरीक्षक को सूचित करना चाहिए तथा त्रुटिरहित दूसरी पुस्तिका प्राप्त कर लेनी चाहिए।
3. प्रश्न-पुस्तिका में किसी विसंगति के अतिरिक्त, किसी भी स्थिति में, अभ्यर्थी को कोई दूसरी प्रश्न-पुस्तिका नहीं दी जाएगी। अभ्यर्थी को प्रश्न-पुस्तिका को उपयोग में लाने और उत्तर-पत्रक को पूरित करने में सावधानी बरतनी चाहिए।
4. अभ्यर्थी को सभी 125 प्रश्नों के उत्तर भरने हैं। गलत उत्तर के लिए नकारात्मक अंक नहीं दिये जायेंगे।
5. उत्तर-पत्रक को भरने के पूर्व अभ्यर्थी उत्तर-पत्रक पर मुद्रित महत्वपूर्ण निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
6. अभ्यर्थी को दिए गए चार विकल्पों में से एक अति उपयुक्त विकल्प का चयन कर OMR शीट में उत्तर-पत्रक में दिए गए निर्देशानुसार भरना है।
7. किसी भी परिस्थिति में प्रश्न-पुस्तिका का कोई भी कागज अलग नहीं करना है।
8. अभ्यर्थी परीक्षा भवन में प्रवेश पत्र के अतिरिक्त सादा या लिखा कोई अन्य कागज नहीं लाएँगे। यदि कोई अभ्यर्थी कोई अतिरिक्त कागज, नोट, पुस्तक, कैलकुलेटर, स्लाइड रूल, मोबाइल फोन आदि अपने साथ परीक्षा भवन में रखे पाया जाता है, तो उसे अनुचित साधन प्रयोग के अन्तर्गत दण्डित किया जा सकता है।
9. केवल काला/नीला बॉल पेन उत्तर भरने के लिए प्रयोग करें।

1. √ वह् धातु से तुमुन्प्रत्यय लगने पर रूप होगा -

(A) वहितुम्　(B) वहेतुम्
(C) वोढितुं　(D) वोढुम्

स्रोत– रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-206

2. 'यस्य न सविधे दयिता दवदहनस्तुहिनदीधितिस्तस्य। यस्य च सविधे दयिता दवदहनस्तुहिनदीधितिस्तस्य॥' इस पद्य में अलंकार है -

(A) यमक　(B) श्लेष
(C) वक्रोक्ति　(D) लाटानुप्रास

स्रोत– काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-407

3. अशुद्ध वाक्य बतलाइये -

(A) रमेशः पठितवान्
(B) राधा अहं च पठावः
(C) रामश्च अहं च त्वं च पठसि
(D) मीना नृत्यंचकार

स्रोत– रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-102

4. 'कुन्ती' शब्द से 'कौन्तेय' पद बनता है अधोलिखित सूत्र से -

(A) 'तस्यापत्यम्' सूत्र से　(B) 'स्त्रीभ्यो ढक्' सूत्र से
(C) 'अत इञ्' सूत्र से　(D) 'लुक् स्त्रियाम्' सूत्र से

स्रोत– ''स्त्रीभ्यो ढक्'' (अष्टा0 4/1/120)–ईश्वरचन्द्र

5. 'नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः' पंक्ति ली गयी है -

(A) तर्कभाषा से　(B) वेदान्तसार से
(C) श्रीमद्भगवद्गीता से　(D) सांख्यकारिका से

स्रोत– श्रीमद्भगवद्गीता (2/16)

6. अपादान कारक में विभक्ति होती है-

(A) चतुर्थी　(B) पञ्चमी
(C) सप्तमी　(D) तृतीया

स्रोत– सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज-59

1. (D)　2. (D)　3. (C)　4. (B)　5. (C)　6. (B)

7. 'भासते प्रतिभासार रसाभाताहताविभा।
भावितात्मा शुभा वादे देवाभा बत ते सभा॥'
नामक पद्य में चित्रबन्ध है-

(A) खड्गबन्ध (B) सर्वतोभद्र
(C) मुरजबन्ध (D) पद्मबन्ध

स्रोत– काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-436

8. 'खण्डकाव्य' कहा जाता है जो,

(A) काव्य के एक देश का अनुसरण करता है
(B) खण्डों में विभक्त हो
(C) खण्डिता नायिका के चरित पर आधारित हो
(D) महाकाव्य के कुछ सर्गों का निबद्धीकरण हो

स्रोत– साहित्यदर्पण (6/329)– शालिग्राम शास्त्री,पेज-226

9. 'तत्त्वमसि' वाक्य के अर्थबोध हेतु स्वीकार की जाती है-

(A) जहल्लक्षणा (B) अजहल्लक्षणा
(C) भागलक्षणा (D) व्यञ्जना

स्रोत– वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-127

10. यदि उपमेय की उपमान के साथ सम्भावना व्यक्त की जाय तो अलंकार होता है-

(A) उत्प्रेक्षा (B) रूपक
(C) उपमेयोपमा (D) सन्देह

स्रोत– काव्यप्रकाश (सूत्र-136)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज-460

11. तर्कभाषा के रचयिता का नाम है -

(A) अक्षपादगौतम (B) वात्स्यायन
(C) वाचस्पति मिश्र (D) केशव मिश्र

स्रोत– तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज-28

12. 'बभूव' रूप बनता है -

(A) 'भू' धातु लोट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन में
(B) 'भू' धातु लिट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन में
(C) 'भू' धातु लङ्लकार मध्यमपुरुष द्विवचन में
(D) 'भू' धातु लङ्लकार प्रथममपुरुष एकवचन में

स्रोत– रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज- 145

13. साहित्यदर्पण के रचयिता हैं -

(A) आचार्य विश्वनाथ (B) विद्यानाथ
(C) सागरनन्दी (D) शिङ्गभूपाल

स्रोत– साहित्यदर्पण - शालिग्राम शास्त्री पेज-1

14. 'शुष् + क्त' प्रत्यय के योग से शब्द बनेगा -

(A) शुष्कः (B) शुष्थः
(C) शुष्तः (D) शुष्वः

स्रोत– लघुसिद्धान्तकौमुदी - (भैमीव्याख्या खण्ड-3), पेज-112

15. 'किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्' पंक्ति ग्रहण की गयी है -

(A) 'कादम्बरी' से
(B) 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' से
(C) 'शिशुपालवधम्' से
(D) 'मृच्छकटिकम्' से

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/20)–कपिलदेव द्विवेदी, पेज-46

16. अनुमान प्रमाण के भेद हैं -

(A) उपमान तथा प्रत्यक्ष (B) अर्थापत्ति तथा अभाव
(C) स्वार्थ तथा परार्थ (D) षोढासन्निकर्ष तथा व्याप्ति

स्रोत– तर्कसंग्रह - गोविन्दाचार्य, पेज- 182

17. 'क्वचिद् बुधैरप्यपथेन गम्यते' सूक्ति का स्रोत है -

(A) कुमारसम्भवम् (B) मृच्छकटिकम्
(C) नैषधीयचरितम् (D) महावीरचरितम्

स्रोत– नैषधीयचरितम् (9/36)

18. 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः' सूक्ति ग्रहण की गयी है-

(A) 'नीतिशतकम्' से (B) 'किरातार्जुनीयम्' से
(C) 'उत्तररामचरितम्' से (D) 'कुमारसम्भवम्' से

स्रोत– किरातार्जुनीयम् (1/4) – रामसेवक दुबे, पेज-50

19. ≍ प तथा ≍ फ को कहा जाता है -

(A) प् तथा फ् (B) जिह्वामूलीय
(C) उपध्मानीय (D) यमवर्ण

स्रोत– लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दप्रसाद शर्मा, पेज- 20

7. (D)	8. (A)	9. (C)	10. (A)	11. (D)	12. (B)	13. (A)	14. (A)	15. (B)
16. (C)	17. (C)	18. (B)	19. (C)					

20. काव्य की आत्मा को ध्वनि मानने वाले आचार्य हैं -
(A) आनन्दवर्धन (B) क्षेमेन्द्र
(C) भामह (D) वामन
स्रोत– ध्वन्यालोक (1.1) – आचार्य विश्वेश्वर, पेज-2

21. आचार्य मम्मट ने शान्तरस का स्थायीभाव स्वीकार किया है -
(A) शम को (B) निर्वेद को
(C) शान्ति को (D) दैन्य को
स्रोत– काव्यप्रकाश (सूत्र-47) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-138

22. संकेतित अर्थ को देने वाला शब्द कहलाता है -
(A) वाचक (B) लक्षक
(C) व्यञ्जक (D) गौण
स्रोत– काव्यप्रकाश (सूत्र-9) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-42

23. काव्यप्रकाश के अनुसार काव्य के प्रयोजनों की संख्या है -
(A) पञ्च (B) सप्त
(C) षट् (D) एकादश
स्रोत– काव्यप्रकाश (1/2) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-10

24. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में शकुन्तला को शाप दिया था –
(A) नारद ने (B) दुर्वासा ने
(C) विश्वामित्र ने (D) वसिष्ठ ने
स्रोत– अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/1)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-184

25. 'ग्रामं गच्छन् तृणं स्पृशति' में 'तृण' शब्दगत द्वितीया विभक्ति होती है –
(A) 'कर्मणि द्वितीया' से (B) 'अकथितं च' से
(C) 'तथायुक्तं चानीप्सितम्' से (D) 'अभिनिविशश्च' से
स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज-19

26. आचार्य मम्मट के अनुसार काव्य का लक्षण है -
(A) रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्
(B) तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि
(C) वाक्यं रसात्मकं काव्यम्
(D) शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्
स्रोत– काव्यप्रकाश (सूत्र- 1) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-19

27. 'अनुपपद्यमानार्थदर्शनात् तदुपपादकीभूता-र्थान्तरकल्पनम्' यह लक्षण है -
(A) अभाव का (B) अर्थापत्ति का
(C) शरीर का (D) असमवायि कारण का
स्रोत– तर्कभाषा - श्रीनिवासशास्त्री, पेज- 138

28. 'परस्य हृदये लग्नं न घूर्णयति यच्छिरः' - पंक्ति ग्रहण की गयी है -
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से (B) मृच्छकटिकम् से
(C) कादम्बरी से (D) नलचम्पू से
स्रोत– नलचम्पू (1/5) – तारिणीश झा, पेज-6

29. कौन-सा शब्द संस्कृत में अशुद्ध है -
(A) मयंक (B) शशाङ्क
(C) कलङ्क (D) भुजङ्ग
स्रोत– संस्कृत हिन्दी शब्दकोष - वामन शिवराम आप्टे

30. बाणभट्ट का समय स्वीकार किया जाता है -
(A) 202 ई.पू. लगभग
(B) 303 ई. लगभग
(C) 606 ई. के लगभग
(D) इनमें से कोई नहीं
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-491

31. 'श्रेयसि केन तृप्यते' - सूक्ति ग्रहण की गयी है -
(A) शिशुपालवधम् से
(B) किरातार्जुनीयम् से
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से
(D) मृच्छकटिकम् से
स्रोत– शिशुपालवधम् (1/29) – तारिणीश झा, पेज-63

32. 'नक्तन्दिवम्' में समास होगा -
(A) कर्मधारय (B) अव्ययीभाव
(C) द्वन्द्व (D) तत्पुरुष
स्रोत– किरातार्जुनीयम् - रामसेवक दुबे, पेज- 66

20. (A)	**21. (B)**	**22. (A)**	**23. (C)**	**24. (B)**	**25. (A)**	**26. (B)**	**27. (B)**	**28. (D)**
29. (A)	**30. (C)**	**31. (A)**	**32. (C)**					

33. नाटक में 'स्वगतम्' का अर्थ है -
(A) अश्राव्य (B) सर्वश्राव्य
(C) स्वागतयोग्य (D) स्वयं गया हुआ
स्रोत– दशरूपक (1.64) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-105

34. संयोगादि के द्वारा अनेकार्थक शब्दों के वाचकत्व के नियन्त्रित होने पर वाच्यार्थ से भिन्न अर्थ की प्रतीति कराने वाले व्यापार को कहा जाता है -
(A) तात्पर्या (B) अभिधा
(C) व्यञ्जना (D) लक्षणा
स्रोत– साहित्यदर्पण (2.14) -शालिग्राम शास्त्री, पेज-40

35. √क्री धातु की लट्लकार प्रथम पुरुष एकवचन में रूप बनता है -
(A) क्रेष्यति (B) क्रीणाति
(C) क्रेषोष्ट (D) क्रीणीतः
स्रोत– रूपचन्द्रिका – ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज-531

36. 'किमिव हि दुष्करमकरुणानाम्' - सूक्ति ग्रहण की गयी है -
(A) नलचम्पू से (B) शिशुपालवधम् से
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से (D) कादम्बरी से
स्रोत– कादम्बरी कथामुखम् - तारिणीश झा, पेज-271

37. 'गङ्गायां घोषः' में शैत्य तथा पावनत्व की प्रतीति होती है-
(A) अभिधा वृत्ति से (B) लक्षणा वृत्ति से
(C) आधारत्व की विवक्षा से (D) व्यञ्जना से
स्रोत– काव्यप्रकाश– आचार्य विश्वेश्वर, पेज - 72

38. √'कृ + ण्वुल्' प्रत्यय के संयोग से शब्द बनता है -
(A) कारकः (B) कर्त्ता
(C) कृण्वुल् (D) कृतिः
स्रोत– लघुसिद्धान्तकौमुदी- (भैमी व्याख्या खण्ड-3), पेज- 36

39. 'मित्रावरुणौ' में समास होता है -
(A) 'इद्वृद्धौ' सूत्र से
(B) 'ईदग्नेः सोमवरुणयोः' सूत्र से
(C) 'अग्नेः स्तुत्स्तोमसोमाः' सूत्र से
(D) 'देवता द्वन्द्वे च' सूत्र से
स्रोत– सिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य (भाग-II), पेज-833

40. 'अनुर्लक्षणे' सूत्र विधायक है -
(A) कर्मप्रवचनीयसंज्ञा का (B) उपसर्गसंज्ञा का
(C) गतिसंज्ञा का (D) निपातसंज्ञा का
स्रोत– सिद्धान्तकौमुदी - राममुनि पाण्डेय, पेज-32

41. यथार्थ अनुभव को न्याय की शब्दावली में कहा गया है -
(A) प्रमाण (B) आदर्श
(C) प्रमा (D) करण
स्रोत– तर्कसंग्रह - गोविन्दाचार्य, पेज- 124

42. अवान्तर प्रयोजन की समाप्ति से कथावस्तु के मुख्य प्रयोजन में विच्छेद प्राप्त हो जाने पर जो उसके अविच्छेद का कारण होता है, उसे कहते हैं -
(A) बिन्दु (B) बीज
(C) आरम्भ (D) फलागम
स्रोत– दशरूपक- (1.17)- केशवरावमुसलगॉवकर, पेज-27

43. भाषा की कौन-सी प्रकृति सत्य नहीं है -
(A) भाषा प्रतीकों की एक व्यवस्था है।
(B) जिन प्रतीकों से भाषा का निर्माण होता है उन्हें वाक् प्रतीक कहते हैं।
(C) प्रत्येक समुदाय में भाषा एक होती है।
(D) भाषा सम्बन्धी प्रतीक यादृच्छिक होते हैं।
स्रोत– भाषाविज्ञान - डॉ0 भोलानाथ तिवारी, पेज- 5

44. मम्मट ने विप्रलम्भ शृंगार के भेद स्वीकार किये हैं -
(A) चार (B) पाँच
(C) सात (D) दश
स्रोत– काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-123

45. 'वासवदत्ता' के रचयिता हैं -
(A) भास (B) सुबन्धु
(C) दण्डी (D) बाणभट्ट
संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास, कपिलदेव द्विवेदी पेज- 482

46. 'पुष्पा स्वलेखन्या पत्रं लिखति' - वाक्य का वाच्य परिवर्तन होगा -
(A) पुष्पा स्वलेखनीं पत्रं लिखति
(B) पुष्पया स्वलेखन्या पत्रं लिख्यते
(C) पुष्पया स्वलेखन्या पत्रेण लिख्यते
(D) पत्रेण पुष्पा स्वलेखन्या लिख्यते
स्रोत– रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-117

33. (A)	**34. (C)**	**35. (B)**	**36. (D)**	**37. (D)**	**38. (A)**	**39. (D)**	**40. (A)**	**41. (C)**
42. (A)	**43. (C)**	**44. (B)**	**45. (B)**	**46. (B)**				

47. रामायण कथानक के प्रसङ्ग में सुग्रीवादि का वृत्तान्त कहा जाता है -

(A) प्रकरी (B) उपचारवृत्तान्त
(C) पताका (D) सन्धि

स्रोत– दशरूपक - रमाशङ्कर त्रिपाठी, पेज-15

48. 'यत्र च गुरुव्यतिक्रमं नक्षत्रराशयः, मात्राकलहं लेखशालिकाः, मित्रोदयद्वेषमुलकाः, अपत्यत्यागं कोकिलाः, बन्धुजीवविघातं ग्रीष्मदिवसाः कुर्वन्ति, न जनाः।' इन पंक्तियों में प्रसिद्ध अलंकार है -

(A) उपमा (B) परिसंख्या
(C) यमक (D) वक्रोक्ति

स्रोत– नलचम्पू - तारिणीश झा, पेज-44, 45

49. नाटक के मंगलाचरण को कहा जाता है -

(A) मंगलाशासन (B) नन्दिताकरण
(C) नान्दी (D) वेदस्तवन

स्रोत– अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-5

50. 'अन्तवन्त इमे देहाः' का तात्पर्य है कि -

(A) ये शरीर नाशवान् है
(B) आत्मा अजर-अमर है
(C) आत्मा नश्वर है
(D) शरीर का अन्त हो चुका है

स्रोत– श्रीमद्भगवद्गीता (2/18) – गीताप्रेस गोरखपुर

51. 'मृच्छकटिकम्' के सम्बन्ध में अधोलिखित कथन सत्य है -

(A) 'मृच्छकटिकम्' केवल प्राकृत भाषा में लिखा गया है।
(B) 'मृच्छकटिकम्' एक नाटक है।
(C) 'मृच्छकटिकम्' में केवल पद्यों का प्रयोग है।
(D) 'मृच्छकटिकम्' एक प्रकरण है।

स्रोत– मृच्छकटिकम् - रमाशङ्कर त्रिपाठी, पेज-xxvii

52. प्रत्यक्ष का लक्षण है -

(A) असाक्षात्कारिप्रमाकरणं प्रत्यक्षम्
(B) साक्षात्कारिप्रमाकरणं प्रत्यक्षम्
(C) इन्द्रियजं प्रत्यक्षम्
(D) यद् दृश्यते तत् प्रत्यक्षम्

स्रोत– तर्कभाषा - श्रीनिवासशास्त्री, पेज- 51

53. बाणभट्ट ने अपनी कादम्बरी का लेखन किया है -

(A) पाञ्चाली रीति में (B) वैदर्भी रीति में
(C) गौड़ी रीति में (D) लाटी रीति में

स्रोत– कादम्बरीकथामुखम् - डॉ0 राजेन्द्र मिश्र, पेज- 42

54. निम्नलिखित सूक्तियों को उनके रचनाकारों के साथ सुमेलित कीजिए -

(अ) सतीव योषित्प्रकृतिः सुनिश्चला पुमांसमभ्येति भवान्तरेष्वपि। — (i) कालिदास
(ब) हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः। — (ii) माघ
(स) अतिकृपणाः खल्वमी प्राणाः। — (iii) भारवि
(द) स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु। — (iv) बाणभट्ट

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(B)	(iii)	(iv)	(ii)	(i)
(C)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)
(D)	(iv)	(ii)	(iii)	(i)

स्रोत–(अ) शिशुपालवधम् (1/72) (ब) किरातार्जुनीयम् (1/4)
(स) कादम्बरी कथामुख - समीर शर्मा, पेज-139
(द) मेघदूतम् (1/29) - दयाशंकर शास्त्री, पेज-107

55. बालक आदि की अपनी स्वाभाविक क्रिया या रूप का वर्णन कहा जाता है -

(A) अतिशयोक्ति (B) परिसंख्या
(C) स्वभावोक्ति (D) रसोक्ति

स्रोत– काव्यप्रकाश (सूत्र-167)- आचार्य विश्वेश्वर, पेज- 505

56. गौणीलक्षणा का ज्ञान होता है -

(A) समवाय से (B) सादृश्य से
(C) संयोग से (D) अर्थापत्ति से

स्रोत– साहित्यदर्पण (2/9)–शालिग्राम शास्त्री, पेज-35

57. 'यथा गौस्तथा गवयः' उदाहरण है -

(A) उपमान का (B) अनुमान का
(C) प्रत्यक्ष का (D) अर्थापत्ति का

स्रोत– तर्कभाषा - श्रीनिवासशास्त्री, पेज-119

47. (C) 48. (B) 49. (C) 50. (A) 51. (D) 52. (B) 53. (A) 54. (C) 55. (C) 56. (B) 57. (A)

58. महाकवि बाणभट्ट के गुरु का नाम था -

(A) भत्सु/भर्वु (B) मौखरि

(C) सदानन्द (D) वात्स्यायन

स्रोत– कादम्बरी–कथामुखम् (श्लोक-4) – समीर शर्मा, पेज-3

59. 'अद्' - धातु से लिट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन में रूप बनता है -

(A) अत्त (B) आदत्

(C) जघास (D) अत्ता

स्रोत– रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज-246

60. श्रीमद्भगवद्गीता में भीम के शंख का नाम था -

(A) पाञ्चजन्य (B) पौण्ड्र

(C) देवदत्त (D) दिव्य

स्रोत– श्रीमद्भगवद्गीता (1/15) – गीताप्रेस गोरखपुर

61. 'पृष्टवान्' शब्द में प्रकृति तथा प्रत्यय है -

(A) प्रच्छ् + क्तवतु (B) पृष्ट् + वान्

(C) पृच्छ् + क्त (D) पृच्छ् + मतुप्

स्रोत– लघुसिद्धान्तकौमुदी-(भैमी व्याख्या खण्ड-3), पेज- 107

62. अज्ञान की दो शक्तियाँ वेदान्त में कही गयी हैं -

(A) आवरण तथा विक्षेप (B) माया तथा अविद्या

(C) इन्द्रिय तथा शरीर (D) जड़ तथा चेतन

स्रोत– वेदान्तसार- सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-56

63. अविवक्षितवाच्य तथा विवक्षितान्यपरवाच्य भेद हैं -

(A) अभिधा के (B) लक्षणा के

(C) ध्वनि के (D) तात्पर्या के

स्रोत– ध्वन्यालोक प्रथम उद्योत - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-55

64. 'एधनीयम्' पद में प्रत्यय है -

(A) ईय (B) अनीयर्

(C) तव्यत् (D) ढक्

स्रोत– लघुसिद्धान्तकौमुदी - (भैमीव्याख्या खण्ड-3), पेज- 27

65. 'नलचम्पू' विभक्त किया गया है -

(A) अध्यायों में (B) अंकों में

(C) उच्छ्वासों में (D) सर्गों में

स्रोत– संस्कृतसाहित्य का इतिहास - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि',पेज-416

66. श्रीमद्भगवद्गीता में माया का कौन-सा गुण नहीं है -

(A) दैवी (B) दुरत्यया

(C) गुणमयी (D) असती

स्रोत– श्रीमद्भगवद्गीता (7/14) – गीताप्रेस गोरखपुर

67. रस सिद्धान्त के प्रसंग में चित्रतुरगादिन्याय का समुल्लेख किया है -

(A) शंकुक ने (B) भट्टनायक ने

(C) भट्टलोल्लट ने (D) नान्यदेव से

स्रोत– काव्यप्रकाश (चतुर्थ उल्लास) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज- 103

68. 'तथा रामायणादीनां भविता दुःखहेतुता' पंक्ति ग्रहण की गयी है -

(A) काव्यप्रकाश से (B) साहित्यदर्पण से

(C) नाट्यशास्त्र से (D) वेदान्तसार से

स्रोत– साहित्यदर्पण (3/6) - शालिग्राम शास्त्री, पेज-52

69. निम्नलिखित तथ्यों का सही सुमेलन कीजिए -

(अ) अनुमितिवाद (i) विश्वनाथ

(ब) व्यक्तिविवेक (ii) शंकुक

(स) वात्सल्यरस (iii) महिमभट्ट

(द) कवि-सृष्टि की श्रेष्ठता (iv) मम्मट

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(B)	(iv)	(iii)	(i)	(ii)
(C)	(ii)	(iv)	(iii)	(i)
(D)	(ii)	(iii)	(i)	(iv)

स्रोत–काव्यप्रकाश-आचार्य विश्वेश्वर, पेज–102, भू. 60, 16, 05

70. 'भक्तिर्भवे न विभवे व्यसनं शास्त्रे न युवतिकामास्त्रे। चिन्ता यशसि न वपुषि प्रायः परिदृश्यते महताम् ।' प्रस्तुत पद्य में अलंकार है -

(A) विरोधाभास (B) परिसंख्या

(C) कारणमाला (D) भ्रान्तिमान्

स्रोत– काव्यप्रकाश - पारसनाथ द्विवेदी, पेज- 655

58. (A)	59. (C)	60. (B)	61. (A)	62. (A)	63. (C)	64. (B)	65. (C)	66. (D)
67. (A)	68. (B)	69. (D)	70. (B)					

71. सांख्य में तत्त्वों की संख्या है -
(A) पच्चीस (B) छब्बीस
(C) पन्द्रह (D) सोलह
स्रोत– सांख्यकारिका (कारिका-3) - राकेशशास्त्री, पेज- 8

72. वेदान्तसार के रचयिता हैं -
(A) सदानन्द (B) परिव्राजक
(C) बादरायण (D) विद्यारण्य
स्रोत– वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, भू0 xvi

73. अनुबन्धचतुष्टय में क्या नहीं आता है -
(A) विषय (B) सम्बन्ध
(C) प्रयोजन (D) पूर्वपक्ष
स्रोत– वेदान्तसार - प्रो0 सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज- 9

74. √'हु' धातु से लोट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन में रूप बनता है -
(A) हेर्धि (B) जुहाव
(C) हूयात् (D) जुहोतु एवं जुहुतात्
स्रोत– रूपचन्द्रिका – ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज-298

75. वेदान्तदर्शन में असर्पभूत रज्जु में सर्प के आरोप को कहा कहा जाता है -
(A) भ्रम (B) अध्यारोप
(C) मायाजन्य (D) आभास
स्रोत– वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज- 36

76. भाषाविज्ञान में अग्रस्वरों के उच्चारण में जिह्वा की चार कोटियों में कौन नहीं है -
(A) उच्च (B) मध्य
(C) निम्नमध्य (D) निम्नोच्च
स्रोत– भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-197

77. गोविन्द ठक्कुर है -
(A) एकावली के रचनाकार
(B) महाकवि
(C) काव्यप्रकाश के टीकाकार
(D) श्रीकण्ठविजय के रचयिता
स्रोत– काव्यप्रकाश - पारसनाथ द्विवेदी, भूमिका- 52

78. रस को पानकरसन्याय से चर्व्यमाण स्वीकृत किया है -
(A) भट्टलोल्लट ने (B) भट्टनायक ने
(C) आचार्य शंकुक ने (D) श्रीमदभिनवगुप्तपाद ने
स्रोत– काव्यप्रकाश (चतुर्थ उल्लास)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज-108

79. 'नीलोत्पलम्' शब्द में समास है -
(A) द्वन्द्व (B) अव्ययीभाव
(C) कर्मधारय (D) बहुव्रीहि
स्रोत– संस्कृतव्याकरणप्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज-249

80. न्यायदर्शन के अनुसार लिंगत्व का लक्षण है -
(A) उपाधित्वं लिंगत्वम्
(B) अव्याप्तिबलेनार्थगमकं लिङ्गम्
(C) व्याप्तिबलेनार्थगमकं लिङ्गम्
(D) धूमाग्नोः स्वाभाविकं सम्बन्धं लिङ्गम्
स्रोत– तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज-79

81. तर्कभाषा में शब्दप्रमाण का लक्षण है -
(A) आप्तवाक्यं शब्दः (B) वेदोक्तं वाक्यं शब्दः
(C) शास्त्रोक्तं शब्दः (D) लोकवाक्यं शब्दः
स्रोत– तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज-122

82. √दा + यत् प्रत्यय के संयोग से शब्द निर्मित होगा -
(A) दायः (B) देयम्
(C) दानम् (D) दत्त्वा
स्रोत– संस्कृतव्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज- 476

83. कौन सा वाक्य अशुद्ध है –
(A) राधा कृष्णेन सह वनं जगाम ।
(B) सुधा रामायणं पठितवती ।
(C) पिता पुत्रं प्रश्नं पृच्छति ।
(D) शोभा मोहनेन जलं याचयामास
स्रोत– अष्टाध्यायी (1.4.24)

84. - ॿ क तथा - ॿख का उच्चारणस्थान है -
(A) कण्ठ (B) तालु
(C) ओष्ठ (D) जिह्वामूल
स्रोत– लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्द प्रसाद शर्मा, पेज-20

71. (A)	72. (A)	73. (D)	74. (D)	75. (B)	76. (D)	77. (C)	78. (D)	79. (C)
80. (C)	81. (A)	82. (B)	83. (D)	84. (D)				

85. 'आभा पुष्पं जिघ्रति' का हिन्दी अनुवाद होगा -
(A) आभा फूल खाती है
(B) आभा को फूल से नफरत है
(C) आभा पुष्प पसन्द करती है ।
(D) आभा फूल सूँघती है।
स्रोत– रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-151

86. आचार्य भरतमुनि के अनुसार नाटक में गीत का उद्भव हुआ है -
(A) ऋग्वेद से (B) संगीत से
(C) गान्धर्ववेद से (D) सामवेद से
स्रोत– नाट्यशास्त्र (1/17) – ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज-92

87. जिस नायिका का नायक दूर देश में किसी प्रयोजन से रहता हो, तो उस नायिका को कहते हैं –
(A) स्वाधीनपतिका (B) अभिसारिका
(C) कलहान्तरिता (D) प्रोषितप्रिया
स्रोत– दशरूपक (2.27) - श्रीनिवास शास्त्री, पेज-156

88. 'पितरौ' समस्त पद का विग्रह होगा -
(A) माता च पिता च (B) पिता च पिता च
(C) मातृ च पितृ च (D) माता च माता च
स्रोत– लघुसिद्धान्तकौमुदी भैमी व्याख्या (भाग-4), पेज- 239

89. 'वेश्या: श्मशानसुमना इव वर्जनीया:' पंक्ति ग्रहण की गयी है -
(A) 'मृच्छकटिकम्' से (B) 'नलचम्पू' से
(C) 'शिशुपालवधम्' से (D) 'उत्तररामचरितम्' से
स्रोत– मृच्छकटिकम् (4/14) – रमाशङ्कर त्रिपाठी, पेज-260

90. 'योगः कर्मसु कौशलम्' योग का लक्षण है -
(A) योगसूत्र में (B) हठयोगप्रदीपिका में
(C) श्रीमद्भगवद्गीता में (D) सांख्यतत्त्वकौमुदी में
स्रोत– श्रीमद्भगवद्गीता (2/50) – गीताप्रेस गोरखपुर

91. सभंगश्लेष अलंकार के भेद बतलाये गये हैं-
(A) चार (B) सात
(C) आठ (D) दश
स्रोत– काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-415

92. समस्तवस्तुविषय तथा एकदेशविवर्ति ये भेद हैं-
(A) उपमालंकार के
(B) उत्प्रेक्षालंकार के
(C) सांगरूपक के
(D) निरंगरूपक के
स्रोत– काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-466

93. 'नलचम्पू' के रचयिता हैं -
(A) श्रीहर्ष (B) माघ
(C) त्रिविक्रमभट्ट (D) बिल्हण
स्रोत– संस्कृतसाहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज- 415

94. 'चारुदत्त' नायक है -
(A) शिशुपालवधम् में (B) रघुवंशम् में
(C) मृच्छकटिकम् में (D) कादम्बरी में
स्रोत– मृच्छकटिकम् - रमाशङ्कर त्रिपाठी, भू0 पेज-31

95. नाटक में किसी पात्र के द्वारा मुँह फेरकर दूसरे व्यक्ति से रहस्यात्मक बात कही जाती है, उसे कहते हैं -
(A) जनान्तिक (B) आकाशभाषित
(C) अपवारित (D) अंकास्य
स्रोत– दशरूपक (1.66)- रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-106

96. 'विन्ध्याटवी' का वर्णन प्राप्त होता है -
(A) नलचम्पू में (B) कादम्बरीकथामुखम् में
(C) मृच्छकटिकम् में (D) हर्षचरितम् में
स्रोत– कादम्बरी - समीर शर्मा,पेज-96

97. 'अनुविष्णु' समस्तपद का विग्रह होगा -
(A) अनुविष्णोः (B) विष्णोः पश्चात्
(C) अनुकर्ता विष्णुम् (D) विष्णोरनुयायी
स्रोत– लघुसिद्धान्तकौमुदी भैमीव्याख्या (चतुर्थ भाग) पेज-32

98. गीता में मूल प्रकृति के प्रकार हैं -
(A) आठ (B) दो
(C) पाँच (D) दश
स्रोत– श्रीमद्भगवद्गीता (7/4) – गीताप्रेस गोरखपुर

85. (D)	86. (D)	87. (D)	88. (A)	89. (A)	90. (C)	91. (C)	92. (C)	93. (C)
94. (C)	95. (C)	96. (B)	97. (B)	98. (A)				

99. आभ्यन्तर परिवर्तन के द्वारा एक दूसरे से सम्बद्ध ध्वनियों तथा रूपिमों के मध्य के प्रत्यावर्तन के अध्ययन को कहते हैं -

(A) रूपध्वनिमविज्ञान

(B) ध्वनिविज्ञान

(C) शब्दरूपध्वनिमविज्ञान

(D) रूपप्रक्रियात्मक ध्वनिविज्ञान

स्रोत– भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-286

100.'प्रत्यक्षर-श्लेषघनाकथा' कही जाती है -

(A) अवन्तिसुन्दरी कथा (B) कादम्बरी कथा

(C) वासवदत्ता कथा (D) शिवराजविजयम्

स्रोत– वासवदत्ता - (श्लोक-03) - जमुना पाठक, पेज-08

101. सांख्यदर्शन में महदादि प्रकृति के विकार कहे गये हैं -

(A) द्वादश (B) त्रयोदश

(C) षोडश (D) एकविंशति

स्रोत– सांख्यकारिका (का0-03)- राकेश शास्त्री, पेज-08

102. शिशुपालवध के अनुसार शिशुपाल है -

(A) हिरण्यकशिपु का जन्मान्तर

(B) कंस का जन्मान्तर

(C) रावण का जन्मान्तर

(D) जलन्धर का जन्मान्तर

स्रोत– शिशुपालवधम् (1/69) – तारिणीश झा, पेज-144

103. भाषाविज्ञान के अनुसार व्यंजनों के मूल चार प्रकारों में कौन सा प्रकार नहीं आता है -

(A) स्पर्शी (B) संघर्षी

(C) निःश्वासी (D) पार्श्विक

स्रोत– भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-169

104.'कृ' धातु से स्त्रीलिंग में शतृ प्रत्यय लगाने पर रूप बनेगा -

(A) कुर्वनी (B) कुर्वन्ती

(C) कुर्वती (D) कुर्वन्ता

स्रोत– लघुसिद्धान्तकौमुदी - भैमीव्याख्या (खण्ड-3), पेज-132

105. रस सिद्धान्त के अन्तर्गत साधारणीकरण व्यापार का सर्वप्रथम उल्लेख किया है -

(A) अभिनवगुप्त ने (B) भट्टनायक ने

(C) भट्टोद्भट ने (D) श्रीशंकुक ने

स्रोत– काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-107

106. सांख्यदर्शन कहा जाता है -

(A) अद्वैतवादी (B) द्वैताद्वैतवादी

(C) त्रैतवादी (D) द्वैतवादी

स्रोत– भारतीयदर्शन - चन्द्रधर शर्मा, पेज-139

107.'धिया निबद्धेयमतिद्वयी कथा' के अन्तर्गत 'अतिद्वयी' कथा से दो किन कथाओं का उल्लेख है -

(A) कादम्बरी तथा हर्षचरितम्

(B) बृहत्कथा तथा वासवदत्ता

(C) पद्मिनी तथा रयीशः

(D) तिलकमंजरी तथा अवन्तिसुन्दरी

स्रोत– कादम्बरी-कथामुखम् (श्लोक -20)-समीर शर्मा, पेज-14

108.'मृच्छकटिकम्' का शाब्दिक अर्थ है -

(A) मिट्टी की गाड़ी (B) मिट्टी का घोड़ा

(C) मृत गन्त्री (D) कठिन प्रयास

स्रोत– संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-308

109. भाषाविज्ञान के अनुसार स्वर के उच्चारण से सम्बद्ध चार प्रकारों में कौन-सा प्रकार नहीं है -

(A) पार्श्विक (B) नासिक्यरंजन

(C) प्रतिवेष्टन (D) तनन

स्रोत– भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज- 149

110. अधोलिखित शब्दों तथा उनके प्रत्ययों के साथ सुमेलित कीजिए -

(अ) शिक्षकः	(i) शानच्
(ब) अजा	(ii) वुन्
(स) बुद्धिमान्	(iii) टाप्
(द) याचमानः	(iv) मतुप्

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	(i)	(iv)	(iii)	(ii)
(B)	(ii)	(i)	(iv)	(iii)
(C)	(iv)	(ii)	(iii)	(i)
(D)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)

स्रोत– लघुसिद्धान्तकौमुदी भैमी व्याख्या, पेज– 5/90, 6/4, 3/137

99. (A) 100. (C) 101. (C) 102. (C) 103. (C) 104. (C) 105. (B) 106. (D) 107. (B) 108. (A) 109. (A) 110. (D)

111. नाटक में सन्धियों की संख्या होती है -
(A) दो (B) चार (C) दश (D) पाँच
स्रोत– साहित्यदर्पण– शालिग्राम शास्त्री, पेज-184

112. रसनावृत्ति का उल्लेख किया है -
(A) आचार्य विश्वनाथ ने (B) आचार्य मम्मट ने
(C) आचार्य आनन्दवर्धन ने (D) आचार्य भामह ने
स्रोत– साहित्यदर्पण - शालिग्राम शास्त्री, पेज- 51

113. हरत्यघं सम्प्रति हेतुरेष्यतः शुभस्य पूर्वाचरितैः कृतं शुभैः। शरीरभाजां भवदीयदर्शनं व्यनक्ति कालत्रितयेऽपि योग्यताम्॥
इस पद्य का कथन किया है -
(A) शिशुपालवध में नारद ने (B) नलचम्पू में नल ने
(C) शिशुपालवध में श्रीकृष्ण ने (D) कादम्बरी में बाणभट्ट ने
स्रोत– शिशुपालवधम् (1/26)-जनार्दन गंगाधर रटाटे, पेज-61

114. 'काव्य रस कार्य नहीं है' इसको प्रमाणित करने हेतु कौन-सा कथन सत्य है -
(A) रस विभावानुभावव्यभिचारि भावों से निष्पन्न होता है।
(B) लौकिक कारणों के समान ही रस के कारण कहे गये हैं।
(C) विभावादि के नाश होने पर रस की स्थिति नहीं रहती है।
(D) सहृदयों के हृदय में रस पहले से ही विद्यमान रहता है।
स्रोत– काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-109, 110

115. सांख्यदर्शन में रजोगुण होता है -
(A) स्थिर (B) उपष्टम्भक तथा चल
(C) अनुपष्टम्भक तथा अचल (D) लघु तथा प्रकाशक
स्रोत–सांख्यतत्त्वकौमुदी प्रभा (का0-13)-आद्याप्रसाद मिश्र, पेज-186

116. आचार्यों ने व्यभिचारी भावों की संख्या स्वीकृत की है–
(A) दश (B) त्रयस्त्रिंशत्
(C) एकविंशति (D) सप्तदश
स्रोत– दशरूपक (चतुर्थ प्रकाश) - श्रीनिवास शास्त्री, पेज- 268

117. भाषाविज्ञान के अन्तर्गत अध्ययन का क्षेत्र नहीं है–
(A) अर्थपरिवर्तन (B) ध्वनिपरिवर्तन
(C) काव्य ध्वनिनिरूपण (D) पदविज्ञान
स्रोत– भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-8

118. अधोलिखित में से लक्षणा के लिए कौन-सा हेतु अपेक्षित नहीं है -
(A) मुख्यार्थबाध (B) समवायसम्बन्ध
(C) रूढि (D) प्रयोजन
स्रोत– काव्यप्रकाश - (सूत्र 12) आचार्य विश्वेश्वर, पेज- 51

119. 'ध्वनिर्बुधैः कथितः' इस काव्यप्रकाश की पंक्ति में 'बुधैः' का अर्थ है -
(A) काव्यशास्त्रिभिः (B) नैयायिकैः
(C) वेदान्तिभिः (D) वैयाकरणैः
स्रोत– काव्यप्रकाश (सूत्र-2)- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-28

120. 'क्रोशेन अनुवाकोऽधीतः' में तृतीया विभक्ति का प्रयोग किया गया है -
(A) 'सहयुक्तेऽप्रधाने' सूत्र से
(B) 'इत्थम्भूतलक्षणे' सूत्र से
(C) 'प्रकृत्यादिभ्य उपसंख्यानम्' सूत्र से
(D) 'अपवर्गे तृतीया' सूत्र से
अपवर्गे तृतीया (2/3/6)–सिद्धान्तकौमुदी (कारक)-राममुनि पाण्डेय, पेज-42

121. 'साधर्म्यमुपमा भेदे' में उपमा का लक्षण लिखा है -
(A) आचार्य विश्वनाथ ने (B) आचार्य मम्मट ने
(C) जयदेव ने (D) पण्डितराज जगन्नाथ ने
स्रोत–काव्यप्रकाश (सूत्र-124)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज-443

122. 'जनान्तिक' में एक मुद्रा का प्रकाशन होता है उसे कहते हैं -
(A) चिन्मुद्रा (B) अंगुष्ठानामिके
(C) मत्तवारणी (D) त्रिपताकाकर
स्रोत– दशरूपक (1.65)- श्रीनिवासशास्त्री, पेज- 104

123. 'सन्ततिः शुद्धवंश्या हि परत्रेह च शर्मणे' सूक्ति ग्रहण की गयी है -
(A) शिशुपालवधम् से (B) किरातार्जुनीयम् से
(C) रघुवंशम् से (D) मालविकाग्निमित्रम् से
स्रोत– रघुवंशम् (1/69) – हरगोविन्द मिश्र, पेज-24

124. न्यायदर्शन के अनुसार कारण का लक्षण है -
(A) अन्यथासिद्धनियतपूर्वभावित्वम्
(B) अनन्यथासिद्धनियतपूर्वभावित्वम्
(C) अन्यथासिद्धनियतपश्चाद्भावित्वम्
(D) अनन्यथासिद्धनियतपश्चाद्भावित्वम्
स्रोत– तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज-18

125. कौन-सा कथन असत्य है -
(A) प्रकृति बद्ध होती है और मुक्त होती है।
(B) प्रकृति से सुकुमार कोई वस्तु नहीं है।
(C) प्रकृति ईश्वर है तथा पुरुष जीव है।
(D) ज्ञान से अपवर्ग की प्राप्ति होती है।
स्रोत– भारतीयदर्शन - सतीशचन्द्र चट्टोपाध्याय, पेज- 276

111. (D)	**112. (A)**	**113. (C)**	**114. (C)**	**115. (B)**	**116. (B)**	**117. (C)**	**118. (B)**	**119. (D)**
120. (D)	**121. (B)**	**122. (D)**	**123. (C)**	**124 (B)**	**125. (C)**			

3 प्रवक्ता चयन परीक्षा (PGT) संस्कृत 2011

परीक्षा तिथि
15 जून 2016

सामान्य निर्देश
(कृपया इन निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़ें)

1. परीक्षार्थी अपना अनुक्रमांक इस पृष्ठ के ऊपर बाईं तरफ दिए गए स्थान पर अवश्य लिखें।
2. परीक्षार्थी को अपने उत्तर केवल उत्तर-पत्रिका पर ही अंकित करने हैं जो अलग से दी जा रही है।
3. यह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है कि परीक्षार्थी उत्तर पत्रिका में काले या नीले बॉल प्वाइंट पेन से ही अपना नाम, रोल नम्बर भरने एवं हस्ताक्षर करने के अतिरिक्त अन्य विवरण भी भरें। **यदि परीक्षार्थी इन विवरणों को नहीं भरता है तो उसकी उत्तर पत्रिका जाँची नहीं जाएगी।**
4. इस प्रश्न-पत्र में 125 प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के समान अंक है।
5. इस प्रश्न-पुस्तिका में कुल 12 मुद्रित पृष्ठ हैं। परिक्षार्थी को अपना प्रश्न-पुस्तिका मिलने पर उसके पृष्ठ गिनने हैं। यदि परिक्षार्थी को कोई अधूरी अथवा दोषपूर्ण प्रश्न-पुस्तिका मिलती है तो वह कमरे के पर्यवेक्षक से प्रार्थना करके उसे परीक्षा आरम्भ होने के 10 मिनट के अन्दर बदलवा सकते हैं।
6. परीक्षा के उपरान्त OMR उत्तर-पत्रिका की ``Original" शीट पर्यवेक्षक को दीजिए तथा ``duplicate"शीट अपने साथ ले जाइये।
7. परीक्षार्थी प्रश्न-पुस्तिका एवं उत्तर-पत्रिका में कही भी अलग से दिखाई देने वाला कोई निशान न लगाए। यदि इस प्रकार का कोई निशान पाया गया तो वह 'कैनवेसिंग' समझा जाएगा और ऐसे परीक्षार्थी का पेपर रद्द कर दिया जाएगा।
8. प्रश्न-पुस्तिका में से कोई पृष्ठ अलग न करें। परीक्षा के पश्चात् पूर्ण प्रश्न-पुस्तिका और उत्तर-पत्रिका कमरे के पर्यवेक्षक को लौटा दें।
9. प्रत्येक प्रश्न के लिए चार विकल्प दिए गये हैं। जिनमें से केवल एक सही है। (A), (B), (C) और (D) में सबसे सही विकल्प को केवल काले/नीले बॉल प्वाइंट पेन का प्रयोग करते हुए उत्तर-पत्रिका में उपयुक्त गोले को भर दें।
10. प्रत्येक प्रश्न के उत्तर के रूप में केवल एक ही सही विकल्प है। यदि एक प्रश्न के लिए एक से अधिक विकल्पों पर निशान लगाया जाता है अथवा गोले को उत्तर-पत्रिका में बताए गए ढंग से गाढ़ा (Dark) नहीं किया है तो उसे गलत उत्तर माना जाएगा और उस उत्तर के लिए कोई अंक नहीं मिलेगा।
11. परीक्षा भवन में केलकुलेटर, डिजिटल, डायरी, सैल्यूलर फोन एवं एलेक्ट्रॉनिक उपकरण और पेजर को अपने पास रखना एवं इनका प्रयोग करना वर्जित है।

1. कौन सी धातु उभयपदी धातु नहीं है –

(A) हृ (B) याच्
(C) पच् (D) तुद्

स्रोत– सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)- राममुनि पाण्डेय, पेज-20

नोट– आयोग ने यहाँ 'कौन-सी धातु उभयपदी धातु नहीं है' ऐसा प्रश्न पूछा है, जबकि चारों विकल्प 'हृ, याच्, पच् तुद्' उभयपदी धातुयें हैं। अतः 'उभयपदी' के स्थान पर 'द्विकर्मक' शब्द का प्रयोग उचित होगा। आयोग का यह प्रश्न अस्पष्ट है।

2. 'गुह इवाप्रतिहतशक्तिः' गुह का अभिप्राय है -

(A) गुहावासी (B) कामदेव
(C) कार्तिकेय (D) गूद

स्रोत– कादम्बरीकथामुख – समीर शर्मा, पेज- 16

3. 'न प्रभातरलं ज्योतिरुदेति वसुधातलात्' उक्ति है -

(A) नैषधीयचरित की (B) मृच्छकटिक की
(C) उत्तररामचरित की (D) अभिज्ञानशाकुन्तल की

स्रोत– अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/26)–कपिलदेव द्विवेदी, पेज- 73

4. अधोलिखित पद्यों में 'शाकुन्तल' के प्रसिद्ध चार पद्यों की गणना नहीं की जाती-

(A) पातुं न प्रथमं व्यवस्यति...............
(B) शुश्रूषस्व गुरून् कुरू...............
(C) यास्यत्यद्य शकुन्तलेति...............
(D) उद्गलितदर्भकवला मृग्यः.................

स्रोत– अभिज्ञानशाकुन्तलम्–कपिलदेव द्विवेदी, भू. पेज- 68

5. 'द्वयमिदमतीव लोके प्रियं नराणां सुहृच्च वनिता च' श्लोकांश किस ग्रन्थ का है-

(A) मेघदूतम् (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(C) मृच्छकटिकम् (D) रघुवंशम्

स्रोत– मृच्छकटिकम् (4.25)–रमाशंकर त्रिपाठी, पेज- 279

6. मृच्छकटिकम् के प्रथम अंक का नाम है-

(A) अलंकारन्यासः (B) सन्धिविच्छेदः
(C) मदनिकाशर्विलकः (D) द्यूतकरसंवाहकः

स्रोत– मृच्छकटिकम् (अंक-1)–रमाशंकर त्रिपाठी, पेज- 117

1. (D)	2. (C)	3. (D)	4. (D)	5. (C)	6. (A)

7. 'अयं हि पातकी विप्रो न वध्यो मनुरब्रवीत्' यह कथन किसका है-

(A) वृद्धा (B) शकार
(C) अधिकरणिक (D) श्रेष्ठी कायस्थ

स्रोत– मृच्छकटिकम् (9/39)–रमाशंकर त्रिपाठी, पेज- 633

8. 'केनोडुपेन परलोकनदीं तरिष्ये' यह कथन किसका है-

(A) चारुदत्त (B) शकार
(C) चेट (D) विट

स्रोत– मृच्छकटिकम् (8/23)–रमाशंकर त्रिपाठी, पेज- 505

9. 'कादम्बरी' शब्द प्रसिद्ध है –

(A) भीरू स्त्री (B) अप्सरा
(C) मदिरा (D) कादम्बधारिणी

स्रोत– शुकनासोपदेश- तारिणीश झा, भू0 पेज- 12

10. 'अकारणाविष्कृतवैरदारुणादसज्जनात् कस्य भयं न जायते' इस श्लोकांश के रचयिता हैं-

(A) भवभूति (B) श्रीहर्ष
(C) बाणभट्ट (D) कालिदास

स्रोत– कादम्बरीकथामुख (श्लोक-5)- समीर शर्मा, पेज- 4

11. 'स्फुरत्कलालापविलासकोमला- यह वाक्यांश किसके वैशिष्ट्य को प्रकट करता है

(A) कादम्बरी के (B) वासवदत्ता के
(C) शकुन्तला के (D) कथाकाव्य के

स्रोत– कादम्बरी-कथामुख (श्लोक-8) समीर शर्मा, पेज-6

12. 'कुथेन नागेन्द्रमिवेन्द्रवाहनम्' शिशुपालवध में इस उपमान सूचक वाक्य से लक्षित है -

(A) श्रीकृष्ण (B) शिशुपाल
(C) नारद (D) हिरण्यकशिपु

स्रोत– शिशुपालवधम् (1.8)- जनार्दन गंगाधर रटाटे, पेज- 20

13. 'आर्तत्राणाय वः शस्त्रं न प्रहर्तुमनागसि' अभिज्ञान-शाकुन्तलम् में यह कथन है-

(A) गौतमी (B) मातलि
(C) वैखानस (D) राजा का सारथि

स्रोत– अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1.11)- कपिलदेव द्विवेदी, पेज- 26

14. 'जगत्प्रभोरप्रसहिष्णु वैष्णवं न चक्रमस्याक्रमताधिकन्धरम्' श्लोकांश में 'वैष्णवं' पद प्रयुक्त हुआ है-

(A) भगवान् कृष्ण (B) विष्णु-उपासक
(C) जगत्पालक विष्णु (D) भस्मी विशेष

स्रोत– शिशुपालवधम् (1.54)- जनार्दन गंगाधर रटाटे, पेज- 123

15. हु (हवन करना) धातु के लृट्लकार में प्रथम पुरुष बहुवचन का रूप होगा-

(A) जुहोष्यन्ति (B) होष्यन्ति
(C) जुहुस्यन्ति (D) हविष्यन्ति

स्रोत– रचनानुवादकौमुदी – कपिलदेव द्विवेदी, पेज- 166

16. 'भी' धातु के लट्लकार के प्रथम पुरुष के बहुवचन में रूप होगा-

(A) बिभ्यन्ति (B) भेष्यन्ति
(C) बिभ्यति (D) बिभेन्ति

स्रोत– रचनानुवादकौमुदी – कपिलदेव द्विवेदी, पेज- 166

17. 'चण्डीशतक' किसकी रचना है-

(A) त्रिविक्रमभट्ट (B) बाणभट्ट
(C) नारायणभट्ट (D) दण्डी

स्रोत– संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा ऋषि, पेज- 395

18. 'दाक्षी' में स्त्रीप्रत्यय है-

(A) ङीष् (B) ङीन्
(C) टाप् (D) ङीप्

स्रोत– लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या,खण्ड-6), पेज- 76

19. 'युवतिः' में स्त्री प्रत्यय है-

(A) ङीन् (B) ङीष्
(C) ऊन् (D) ङीप्
(E) ति

स्रोत– लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, खण्ड-6) पेज-88

नोट– आयोग ने 'युवति' में स्त्री प्रत्यय पूछा है, जबकि विकल्प में सही उत्तर 'ति' प्रत्यय नहीं दिया गया है। यदि 'युवति' के स्थान पर 'युवती' शब्द रख दिया जाय तो `B' विकल्प सही हो सकता है।

7. (C)	8. (D)	9. (C)	10. (C)	11. (D)	12. (C)	13. (C)	14. (B)	15. (B)
16. (C)	17. (B)	18. (A)	19. (E)					

20. पट का निमित्तकारण होता है :-

(A) तन्तु (B) तुरी
(C) तन्तुसंयोग (D) तन्तुरूप

स्रोत– तर्कसंग्रह – गोविन्दाचार्य, पेज- 149

21. 'त्रिविधं प्रमाणमिष्टम्' कथन प्राप्त होता है –

(A) अर्थसंग्रह (B) प्रमाणवार्तिक
(C) सांख्यकारिका (D) तर्कभाषा

स्रोत– सांख्यकारिका (कारिका-4) – राकेश शास्त्री, पेज-12

22. सांख्य मतानुसार पुरुष है :-

(A) प्रकृति (B) प्रकृति और विकृति
(C) न प्रकृति न विकृति (D) विकृति

स्रोत– सांख्यकारिका (कारिका-3) – राकेश शास्त्री, पेज-08

23. तर्कभाषा में प्रमेयों की संख्या है -

(A) बारह (B) दस
(C) आठ (D) चार

स्रोत– तर्कभाषा- गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज-249

24. तर्कभाषा के अनुसार गुण नहीं है –

(A) स्नेह (B) दिक्
(C) द्वेष (D) बुद्धि

स्रोत– तर्कभाषा – गजाननशास्त्री - मुसलगाँवकर, पेज-379

25. 'हरिः .... आस्ते' रिक्तस्थान की पूर्ति कीजिए -

(A) वैकुण्ठम् (B) वैकुण्ठे
(C) वैकुण्ठेन (D) वैकुण्ठाय

स्रोत– अष्टाध्यायी (2.3.36)- ईश्वरचन्द्र, पेज-206

26. '.... आलयः निर्मितः' रिक्तस्थान की पूर्ति कीजिए -

(A) मासेन (B) मासम्
(C) मासाय (D) मासात्

स्रोत– अष्टाध्यायी (2.3.6)- ईश्वरचन्द्र, पेज-196

27. सांख्यकारिका के अनुसार 'अव्यक्त' है-

(A) असामान्यम् (B) अनाश्रितम्
(C) अप्रसवधर्मि (D) अविषयम्

स्रोत–सांख्यकारिका (कारिका-10,11)–राकेश शास्त्री, पेज-32-38

28. 'प्रयत्नलाघव' कारण है-

(A) ध्वनिनियम का (B) अर्थपरिवर्तन का
(C) भाषा के ह्रास का (D) ध्वनिपरिवर्तन का

स्रोत– भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र, कपिलदेव द्विवेदी, पेज- 227

29. 'सत्यर्थे पृथगर्थायाः .... विनिगद्यते'।

(A) अनुप्रासः (B) यमकम्
(C) उपमा (D) व्यतिरेकः

स्रोत– साहित्यदर्पण (10/8) शालिग्राम शास्त्री, पेज-280

30. अधोलिखित में से कौन सा रूपक नहीं है-

(A) मालविकाग्निमित्रम् (B) मुद्राराक्षसम्
(C) शारिपुत्रप्रकरण (D) कर्पूरमञ्जरी

स्रोत– संस्कृतसाहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा ऋषि, पेज-539

31. सिद्धत्वेऽध्यवसायस्य .... निगद्यते-

(A) पूर्णोपमा (B) रूपकम्
(C) अतिशयोक्तिः (D) स्वभावोक्तिः

स्रोत– साहित्यदर्पण (10.46) शालिग्राम शास्त्री, पेज-323

32. .... डिम्भादेः स्वक्रियारूपवर्णनम्-

(A) स्वभावोक्तिः (B) अन्योक्तिः
(C) अतिशयोक्तिः (D) मालोपमा

स्रोत– काव्यप्रकाश (सूत्र-168)- पारसनाथ द्विवेदी, पेज-625

33. 'संकेतग्रह में शब्द का अर्थ 'अपोह' मान्य है -

(A) नैयायिकों के द्वारा (B) वेदान्तियों के द्वारा
(C) बौद्धों द्वारा (D) मीमांसकों द्वारा

स्रोत– काव्यप्रकाश- पारसनाथ द्विवेदी, पेज-48

34. 'बुद्धिनाशात्प्रणश्यति' किस ग्रन्थ का सन्दर्भ है -

(A) वेद (B) वायुपुराण
(C) गीता (D) कादम्बरी

स्रोत– गीता (2/63)

35. 'गुडाकेश' कौन कहा जाता है-

(A) सञ्जय (B) धृतराष्ट्र
(C) श्रीकृष्ण (D) अर्जुन

स्रोत– गीता (1/24)

20. (B)	21. (C)	22. (C)	23. (A)	24. (B)	25. (B)	26. (A)	27. (B)	28. (D)
29. (B)	30. (D)	31. (C)	32. (A)	33. (C)	34. (C)	35. (D)		

36. कालिदास किस रीति के कवि हैं-
(A) वैदर्भी (B) गौडी
(C) पाञ्चाली (D) लाटी
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास–कपिलदेव द्विवेदी, पेज-346

37. शिशुपालवध के प्रथमसर्ग में प्रयुक्त छन्द है-
(A) मालिनी (B) वंशस्थ
(C) उपेन्द्रवज्रा (D) शिखरिणी
स्रोत– शिशुपालवधम् (1/1) जनार्दन गंगाधर रटाटे, पेज-4

38. 'पिशङ्गमौञ्जीयुजमर्जुनच्छविम्'- किसे समझ लिया गया-
(A) श्रीकृष्ण को (B) नारद को
(C) अर्जुन को (D) बलराम को
स्रोत– शिशुपालवधम् (1/6) जनार्दन गंगाधर रटाटे, पेज-16

39. 'जनमेजयः' में प्रत्यय है-
(A) खश् (B) खच्
(C) क (D) तृच्
स्रोत– लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमीव्याख्या खण्ड-3), पेज-59

40. साहित्यदर्पण विभक्त है-
(A) उल्लासों में (B) उच्छ्वासों में
(C) परिच्छेदों में (D) निःश्वासों में
स्रोत– संस्कृतसाहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा ऋषि, पेज-587

41. 'कार्यम्' में प्रत्यय है-
(A) यत् (B) ण्यत्
(C) क्यप् (D) ल्यप्
स्रोत– लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमीव्याख्या खण्ड-3), पेज-23

42. 'कटे आस्ते' उदाहरण में आधार है-
(A) औपश्लेषिक
(B) वैषयिक
(C) अभिव्यापक
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं
स्रोत– सिद्धान्तकौमुदी (कारण प्रकरण)–राममुनि पाण्डेय, पेज-93

43. भाषा की उत्पत्ति का सिद्धान्त प्राचीनतम है-
(A) प्रतीक का सिद्धान्त (B) संगीत सिद्धान्त
(C) रणन सिद्धान्त (D) दिव्योत्पत्तिसिद्धान्त
स्रोत– भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र – कपिलदेव द्विवेदी, पेज-66

44. कर्पूरमञ्जरी की भाषा है :-
(A) अपभ्रंश (B) पैशाची
(C) शौरसेनी (D) शिलालेखीय प्राकृत
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास–कपिलदेव द्विवेदी,पेज-435

45. 'नियतिकृतनियमरहिता' – किसे कहा गया है
(A) कविभारती (B) कविप्रतिभा
(C) कवि दृष्टि (D) कविप्रसिद्धि
स्रोत– काव्यप्रकाश (1.1)–पारसनाथ द्विवेदी, पेज-2

46. सांख्यकारिका के अनुसार रजोगुण होता है :-
(A) वरणकम् (B) उपष्टम्भकम्
(C) आच्छादकम् (D) प्रकाशकम्
स्रोत– सांख्यकारिका (कारिका-13) - राकेश शास्त्री, पेज-45

47. 'सप्तर्षयः में कौन सा समास है-
(A) द्विगु (B) बहुव्रीहि
(C) अव्ययीभाव (D) तत्पुरुष
स्रोत–वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (खण्ड-2)-गोविन्दाचार्य, पेज-499

48. '............ दुह्यमानासु गतः' रिक्तस्थान में उचित पद का प्रयोग होगा-
(A) गावः (B) गोभिः
(C) गोभ्यः (D) गोषु
स्रोत– सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)- राममुनि पाण्डेय, पेज- 95

49. सूक्ष्मशरीर कितने तत्त्वों का समुदाय है-
(A) 16 (B) 18
(C) 21 (D) 25
स्रोत– सांख्यकारिका (का. 40)- राकेश शास्त्री, पेज- 114

50. 'नृत्तावसाने नटराजराजो ननाद ढक्कां नवपञ्चवारम्- भाषा की उत्पत्ति के सिद्धान्त का सूचक है-
(A) संकेत सिद्धान्त (B) आवेग सिद्धान्त
(C) दिव्योत्पत्ति सिद्धान्त (D) संगीत सिद्धान्त
स्रोत– भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र – कपिलदेव द्विवेदी, पेज-66

36. (A)	**37. (B)**	**38. (B)**	**39. (A)**	**40. (C)**	**41. (B)**	**42. (A)**	**43. (D)**	**44. (C)**
45. (A)	**46. (B)**	**47. (D)**	**48. (D)**	**49. (B)**	**50. (C)**			

51. मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाओं में संगणित है-
(A) बर्मी (B) तमिल
(C) पालि (D) ग्रीक
स्रोत– भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र–कपिलदेव द्विवेदी, पेज-431

52. प्रवेशक और विष्कम्भक का उल्लेख नहीं है-
(A) मालतीमाधवम् (B) रत्नावली
(C) मुद्राराक्षसम् (D) कर्पूरमञ्जरी
स्रोत– ....

53. जो प्रासंगिक कथा दूर तक चलती है उसे कहा जाता है-
(A) प्रकरी (B) पताका
(C) प्रस्तावना (D) जनान्तिकम्
स्रोत– दशरूपक (1/13)- रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-14

54. ''नास्ति जीवितादन्यदभिमततरमिह जगति सर्वजन्तूनाम्'' सूक्ति किस ग्रन्थ की है-
(A) मृच्छकटिकम् (B) नलचम्पूः
(C) कादम्बरी (D) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
स्रोत– कादम्बरीकथामुख– समीर शर्मा, पेज-138

55. 'राष्ट्रियः समाज्ञापयति' – 'राष्ट्रियः' में प्रत्यय है-
(A) खञ् (B) घ
(C) छ (D) ल्यप्
स्रोत– लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, खण्ड-5) पेज-110

56. नलचम्पू में कितने उच्छ्वास हैं-
(A) चार (B) सात
(C) आठ (D) दस
संस्कृत साहित्य का इतिहास – उमाशंकर शर्मा ऋषि, पेज-416

57. त्रिविक्रमभट्ट की रचना है-
(A) रामायणचम्पू (B) मदालसाचम्पू
(C) यशस्तिलकचम्पू (D) इनमें से कोई नहीं
स्रोत– संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा ऋषि, पेज-416

58. 'दृश्यते न च यत्र स्त्रीनवा पीनपयोधरा' – श्लोकांश किस ग्रन्थ का है-
(A) मृच्छकटिकम् (B) नलचम्पूः
(C) शिशुपालवधम् (D) शृंगारशतकम्
स्रोत– नलचम्पू (1.26) – तारिणीश झा, पेज-39

59. संसार में दरिद्र के समान नहीं है-
(A) म्यानविहीन तलवार (B) शुष्क वृक्ष
(C) दन्तहीन सर्प (D) पंखविहीन पक्षी
स्रोत–मृच्छकटिकम् (5.41) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-374

60. 'सिन्धु-हिन्दु' में ध्वनि परिवर्तन का कारण है :-
(A) लिपि दोष (B) बलाघात
(C) सादृश्य (D) भौगोलिक
स्रोत– भाषाविज्ञान एवं भाषाशस्त्र – कपिलदेव द्विवेदी, पेज-97

61. 'मतिस्तु गौः पङ्कगतेव सीदति' – कथन किसका है-
(A) विदूषक (B) चारुदत्त
(C) शकार (D) अधिकरणिक
स्रोत– मृच्छकटिकम् (9.25)- रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-609

62. ''उपासिके ! त्वं किल चारुदत्तेन मारितासि'' – उपासिका का सम्बन्ध है-
(A) कौलधर्म से (B) बौद्धधर्म से
(C) वैष्णवधर्म से (D) कापालिक मत से
स्रोत– मृच्छकटिकम् – रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-700

63. 'समन्तत उपस्थित एष राष्ट्रियबन्धः' – राष्ट्रियबन्धः का अभिप्राय है-
(a) राष्ट्र का बन्धन (b) चारुदत्त का बन्धन
(c) राजा का बन्धन (d) रोहसेन का बन्धन
स्रोत– मृच्छकटिकम् – रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-725

64. 'एष क्रीडति कूपयन्त्रघटिका न्यायप्रसक्तो विधिः!' सूक्ति गृहीत है-
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से
(B) मृच्छकटिकम् से
(C) शिशुपालवधम् से
(D) नलचम्पू से
स्रोत– मृच्छकटिकम् (10.60)– रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-742

65. 'जेयम्' में प्रत्यय है-
(A) तृच् (B) केलिमर्
(C) यत् (D) क्त
स्रोत– लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, खण्ड-3) पेज-17

51. (C)	**52. (D)**	**53. (B)**	**54. (C)**	**55. (B)**	**56. (B)**	**57. (B)**	**58. (B)**	**59. (A)**
60. (D)	**61. (D)**	**62. (B)**	**63. (C)**	**64. (B)**	**65. (C)**			

66. 'गातृ' में प्रत्यय है-
(A) शतृ (B) ण्वुल्
(C) ल्युट् (D) तृच्
स्रोत– अष्टाध्यायी (3/1/133) - ईश्वरचन्द्र

67. 'ज्ञा' (जानना) धातु (परस्मैपद) के लृट्लकार के उत्तम पुरुष के एकवचन में रूप होगा-
(A) जानिष्यामि (B) जनिष्यामि
(C) ज्ञाष्यामि (D) ज्ञासिष्यामि
स्रोत– रचनानुवादकौमुदी- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-184

68. शक् (समर्थ होना) धातु के लट्लकार में मध्यम पुरुष एकवचन का रूप होगा-
(A) शक्नोसि (B) शक्नोषि
(C) शक्नुसि (D) शक्नुषि
स्रोत– रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-173

69. भुक्तिवाद के संस्थापक कौन हैं -
(A) अभिनवगुप्त (B) भट्टलोल्लट
(C) शंकुक (D) भट्टनायक
स्रोत– काव्यप्रकाश – पारसनाथ द्विवेदी, पेज-137

70. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में मातलि कौन है-
(A) कण्व शिष्य (B) द्वारपाल
(C) तपस्वी (D) इन्द्र–सारथि
स्रोत– अभिज्ञानशाकुन्तलम् – कपिलदेव द्विवेदी, भू0 पेज-99

71. 'सागरमुज्झित्वा कुत्र वा महानद्यवतरति' - यह कथन है–
(A) रामायणम् (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(C) रघुवंशम् (D) मृच्छकटिकम्
स्रोत– अभिज्ञानशाकुन्तलम् (अंक-3) कपिलदेव द्विवेदी, पेज-151

72. 'उच्चार्यत्वाद्यदेकत्र स्थाने तालुरदादिके। सादृश्यं व्यञ्जनस्यैव .... उच्यते' – रिक्तस्थान की पूर्ति कीजिए-
(A) छेकानुप्रासः (B) वृत्यनुप्रासः
(C) श्रुत्यनुप्रासः (D) अन्त्यानुप्रासः
स्रोत– साहित्यदर्पण (10.5) शालिग्राम शास्त्री, पेज-276

73. '........... प्रणमामि' रिक्तस्थान में कौन से पद का प्रयोग होगा-
(A) सदाशिवं (B) सदाशिवेन
(C) सदाशिवाय (D) सदाशिवात्
स्रोत– कर्मणि द्वितीया (अष्टाध्यायी)

74. '.......... चमरीं हन्ति' से पूर्व रिक्तस्थान में कौन से पद का प्रयोग होगा-
(A) केशान् (B) कैशैः
(C) केशेभ्यः (D) केशेषु
स्रोत– सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)–राममुनि पाण्डेय, पेज-95

75. 'भक्तिः .... कल्पते' उचित पद द्वारा रिक्तस्थान की पूर्ति कीजिए-
(A) ज्ञानम् (B) ज्ञाने
(C) ज्ञानाय (D) ज्ञानात्
स्रोत– सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)- राममुनि पाण्डेय, पेज- 53

76. '........... वस्त्रं देहि' से पूर्व रिक्तस्थान में कौन से पद का प्रयोग होगा-
(A) दरिद्राय (B) दरिद्रस्य
(C) दरिद्रम् (D) दरिद्रे
स्रोत– अष्टाध्यायी (2.3.13)-ईश्वरचन्द्र, पेज-

77. 'त्रिवर्गसाध्यम् ....' उचित विधा द्वारा रिक्तस्थान की पूर्ति कीजिए-
(A) महाकाव्यम् (B) खण्डकाव्यम्
(C) नाट्यम् (D) चम्पूकाव्यम्
स्रोत–

78. जिस लक्षणा में मुख्यार्थ का भी ग्रहण होता है, वह कौन-सी लक्षणा कहलाती है-
(A) प्रयोजनमूला (B) रूढिमूला
(C) उपादान-लक्षणा (D) लक्षण–लक्षणा
स्रोत– साहित्यदर्पण (2/6)- शालिग्राम शास्त्री, पेज-31

79. प्राचीनतम महाकाव्य कौन-सा है-
(A) कुमारसम्भवम् (B) किरातार्जुनीयम्
(C) बुद्धचरितम् (D) जानकीहरणम्
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी , पेज-146, 168

66. (D) 67. (C) 68. (B) 69. (D) 70. (D) 71. (B) 72. (C) 73. (A) 74. (D)
75. (C) 76. (A) 77. (C) 78. (C) 79. (A)

80. अधोलिखित रूपकों में से कौन सा रूपक प्राचीनतम है-

(A) मृच्छकटिकम् (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम्

(C) मुद्राराक्षसम् (D) शारिपुत्रप्रकरण

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-303

81. तमोगुण का प्रयोजन है-

(A) प्रवृत्तिः (B) प्रकाशः

(C) नियमनम् (D) विषादः

स्रोत– सांख्यकारिका (का. 13) राकेश शास्त्री, पेज-45

82. स्पृह् धातु के प्रयोग में जिसकी स्पृहा होती है, वहाँ विभक्ति होती है-

(A) तृतीया (B) पञ्चमी

(C) द्वितीया (D) चतुर्थी

स्रोत– सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)- राममुनि पाण्डेय, पेज-49

83. 'माण्डूक्यकारिका' किसकी रचना है-

(A) धर्मकीर्ति (B) गौड़पाद

(C) प्रशस्तपाद (D) कुमारदास

स्रोत– वेदान्तसार – राकेश शास्त्री पेज-24

84. संस्कृतभाषा है-

(A) अयोगात्मिका (B) शिलष्टयोगात्मिका

(C) प्रश्लिष्टयोगात्मिका (D) अश्लिष्टयोगात्मिका

स्रोत– भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र–कपिलदेव द्विवेदी, पेज-357

85. मम्मट के मत में मध्यमकाव्य है-

(A) शब्दचित्रम् (B) ध्वनिः

(C) गुणीभूतव्यङ्ग्यम् (D) वाच्यचित्रम्

स्रोत– काव्यप्रकाश (सूत्र-3) पारसनाथ द्विवेदी, पेज-31

86. 'परवल्लिङ्गं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः' उदाहरण नहीं है-

(A) सीतारामौ (B) मयूरीकुक्कुटौ

(C) अर्धपिप्पली (D) कुक्कुटमयूर्यौ

स्रोत– लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, खण्ड-4) पेज-169

87. तात्पर्यावृत्ति स्वीकृत की गयी है-

(A) अन्विताभिधानवादियों द्वारा

(B) ध्वनिवादियों द्वारा

(C) अभिहितान्वयवादियों द्वारा

(D) ध्वनिविरोधियों द्वारा

स्रोत– काव्यप्रकाश – पारसनाथ द्विवेदी, पेज-39

88. 'दीर्घसक्थः' में समास है-

(A) तत्पुरुष (B) बहुव्रीहि

(C) अव्ययीभाव (D) द्वन्द्व

स्रोत– लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, खण्ड-4) पेज-207

89. 'द्वन्द्वे घि' सूत्र से पूर्व प्रयोग का उदाहरण है-

(A) ईशकृष्णौ (B) शिवकेशवौ

(C) हरिहरौ (D) राजदन्तम्

स्रोत– लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, खण्ड-4) पेज-235

90. 'मृच्छकटिकम्' में विदूषक का नाम क्या है-

(A) माधव्य (B) वसन्तक

(C) मैत्रेय (D) आत्रेय

स्रोत– मृच्छकटिकम् – रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-xlii

91. ''मांसवृक्षैरियं मूर्खैर्भाराक्रान्ता वसुन्धरा'' किसका कथन है-

(A) चेट (B) शकार

(C) विट (D) विदूषक

स्रोत– मृच्छकटिकम् (8.6)- रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-470

**92. 'किं कवेस्तेन काव्येन किं काण्डेन धनुष्मतः ।
परस्य हृदये लग्नं न घूर्णयति यच्छिरः ॥'
यह श्लोक किस गन्थ का है-**

(A) मृच्छकटिकम् (B) उत्तररामचरितम्

(C) नलचम्पूः (D) नीतिशतकम्

स्रोत– नलचम्पू (1.5)- तारिणीश झा, पेज-5

93. शंकराचार्य के 'गुरूणां गुरुः' हैं-

(A) गोविन्दपाद (B) गौडपाद

(C) बादरायण (D) वाचस्पति मिश्र

स्रोत– वेदान्तसार – राकेश शास्त्री, पेज-25

94. 'स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः' यह वचन किस ग्रन्थ का है-

(A) गीता (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम्

(C) नीतिशतकम् (D) वेदान्तसारः

स्रोत– गीता (3.35)

80. (B)	**81. (C)**	**82. (D)**	**83. (B)**	**84. (B)**	**85. (C)**	**86. (A)**	**87. (C)**	**88. (B)**
89. (C)	**90. (C)**	**91. (C)**	**92. (C)**	**93. (B)**	**94. (A)**			

95. भगवद्गीता को अध्यायों के अन्त में किस शास्त्र के नाम से जान जाता है-

(A) आगमशास्त्र (B) औषधशास्त्र
(C) तन्त्रशास्त्र (D) योगशास्त्र

स्रोत– गीता (1.47)

96. 'अयं जनः कस्य हस्ते समर्पितः' - कथन है-

(A) अनसूया (B) अनसूया एवं प्रियंवदा
(C) गौतमी (D) प्रियंवदा

स्रोत– अभिज्ञानशाकुन्तलम् (अंक-4)–कपिलदेव द्विवेदी, पेज-221

97. अर्थो हि कन्या परकीय एव तामद्य संप्रेष्य परिग्रहीतुः। जातो ममायं विशदः प्रकामं, प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा॥ इस श्लोक में छन्द है-

(A) उपजाति (B) शिखरिणी
(C) इन्द्रवज्रा (D) उपेन्द्रवज्रा

स्रोत– अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/22)- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-240

98. 'तपोधनं वेत्सि न मामुपस्थितम्'- 'तपोधन' में समास है-

(A) तत्पुरुष (B) द्वन्द्व
(C) अव्ययीभाव (D) बहुव्रीहि

स्रोत– अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/1) कपिलदेव द्विवेदी, पेज-184

99. 'शान्तानुकूलपवनश्च शिवश्च पन्थाः उक्ति है-

(A) गौतमी (B) कण्व
(C) आकाशभाषित (D) प्रियंवदा

स्रोत– अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/11)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-216

100. 'ओदकान्तं स्निधो जनोऽनुगन्तव्यः - कथन है-

(A) शार्ङ्गरव (B) शारद्वत
(C) गौतमी (D) प्रियंवदा

स्रोत– अभिज्ञानशाकुन्तलम् (अंक-4)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-225

101. 'शकुन्तला के गर्भ में दुष्यन्त का तेज पल रहा है'- कण्व को किसके द्वारा पता चला?

(A) गौतमी द्वारा
(B) अनसूया एवं प्रियंवदा द्वारा
(C) कण्व के तपोबल द्वारा
(D) अशरीरिणी छन्दोमयी वाणी द्वारा

स्रोत– अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/4)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-198

102. 'को नामोष्णोदकेन नवमालिकां सिञ्चति' कथन है-

(A) गौतमी (B) प्रियंवदा
(C) अनसूया (D) शार्ङ्गरव

स्रोत– अभिज्ञानशाकुन्तलम् (अंक-4)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-190

103. 'दिष्ट्या धूमाकुलितदृष्टेरपि यजमानस्य पावक एवाहुतिः पतिता' इस दृष्टान्त द्वारा किसने अपनी कृतार्थता स्वीकार की है-

(A) कण्व (B) गौतमी
(C) मातलि (D) शकुन्तला

स्रोत– अभिज्ञानशाकुन्तलम् (अंक-4)- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-197

104. 'तुद्' धातु के लृट्लकार मध्यम पुरुष के बहुवचन का रूप है -

(A) तोष्यस्थः (B) तोष्यस्थ
(C) तोत्स्यथ (D) तोतस्यथ

स्रोत– रूपचन्द्रिका- ब्रह्मानन्द त्रिपाठी- पेज-386

105. 'ब्रू' धातु के लट्लकार मध्यम पुरुष के बहुवचन का रूप है -

(A) ब्रूसि (B) ब्रवीषि
(C) ब्रवीसि (D) ब्रविसि

स्रोत– रचनानुवादकौमुदी – कपिलदेव द्विवेदी, पेज-161

नोट– आयोग ने यहाँ 'बहुवचन' का रूप पूछा है जो कि चारों विकल्पों में नहीं है, अतः यह प्रश्न विवादित है। विवाद से बचने के लिए 'बहुवचन' के स्थान पर 'एकवचन' कर देने से प्रश्न का स्वरूप सही हो जायेगा।

106. 'स .... उपवसति' के मध्य रिक्तस्थान में कौन सा उचित पद होगा ?

(A) ग्रामम् (B) ग्रामेण
(C) ग्रामात् (D) ग्रामे

स्रोत– अष्टाध्यायी (1.4.48)- ईश्वरचन्द्र, पेज-127

107. '.................. उदिते पद्मं विकसति' – से पूर्व रिक्तस्थान में उचित पद होगा -

(A) सूर्य (B) सूर्येण
(C) सूर्यस्य (D) सूर्ये

स्रोत– अष्टाध्यायी (2.3.37) 'यस्य च भावेन भावलक्षणम्'

95. (D) 96. (B) 97. (C) 98. (D) 99. (C) 100. (A) 101. (D) 102. (B) 103. (A) 104. (C) 105. (B) 106. (A) 107. (D)

108.'सप्तगङ्गम्' में समास है –

(A) बहुव्रीहि (B) अव्ययीभाव
(C) द्वन्द्व (D) द्विगु

स्रोत– लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड-4), पेज-44

109.'स .... बिभेति' रिक्तस्थान में उचित पद होगा -

(A) उपवनात् (B) उपवनस्य
(C) उपवने (D) उपवनेन

सिद्धान्तकौमुदी (कारक 1.4.25) आद्याप्रसाद मिश्र, पेज-58

110. भारतस्य .... हिमालयोऽस्ति रिक्तस्थान की पूर्ति कीजिए -

(A) उत्तरदिशायाँ (B) उत्तरे दिशायां
(C) उत्तरे दिशि (D) उत्तरस्यां दिशि

स्रोत– कुमारसम्भवम् (1.1)

111. 'भगवान् हनुमान् को नमस्कार' संस्कृत में अनुवाद होगा -

(A) भगवते हनुमते नमः
(B) भगवते हनुमानाय नमः
(C) भगवतस्य हनुमानय नमः
(D) भगवते हनुमताय नमः

स्रोत– अष्टाध्यायी (2.3.16)-ईश्वरचन्द्र, पेज-199

112. 'उनके द्वारा हँसा जाता है' संस्कृत में अनुवाद होगा-

(A) तेन हसति (B) तेन हस्यते
(C) तैः हस्यते (D) तै हस्यन्ते

स्रोत– रचनानुवादकौमुदी – कपिलदेव द्विवेदी, पेज-52, 53

113.'जटाभिः तापसः' में तृतीया विभक्ति हुई है-

(A) येनाङ्गविकारः (B) अपवर्गे तृतीया
(C) कर्तृकरणयोस्तृतीया (D) इत्थम्भूतलक्षणे

स्रोत– सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण) – राममुनि पाण्डेय, पेज-43

114. पाणिनि ने किस विश्वविद्यालय से शिक्षा ग्रहण की थी?

(A) नालन्दा (B) तक्षशिला
(C) अलकापुरी (D) वलभी

स्रोत– संस्कृत शास्त्रों का इतिहास- बलदेव उपाध्याय, पेज-426

115.'अथवाऽनार्यः परदारव्यवहारः' कथन है-

(A) तापसी (B) गौतमी
(C) मातलि (D) दुष्यन्त

स्रोत– अभिज्ञानशाकुन्तलम् (अंक-7)- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-421

116. हन् धातु लट् लकार के प्रथम पुरुष का द्विवचन रूप है-

(A) हतौ (B) हन्तौ
(C) हतः (D) हनतः

स्रोत– रचनानुवादकौमुदी – कपिलदेव द्विवेदी, पेज- 164

117.'भी' धातु लृट्लकार के प्रथम पुरुष का एकवचन रूप है –

(A) भीष्यति (B) बिभीष्यति
(C) भेष्यति (D) भेस्यति

स्रोत– रचनानुवादकौमुदी – कपिलदेव द्विवेदी, पेज- 166

118.'दुह्' धातु का लङ्लकार के उत्तम पुरुष का एकवचन रूप है-

(A) अदुहम् (B) अदुह्मम्
(C) अदोहम् (D) अदुहम्

स्रोत– रचनानुवादकौमुदी – कपिलदेव द्विवेदी, पेज-162

119.'दा' धातु (आत्मनेपद) विधिलिङ् के उत्तम पुरुष एकवचन का रूप है-

(A) ददीय (B) दादीय
(C) दिदय (D) ददीत

स्रोत– रचनानुवादकौमुदी – कपिलदेव द्विवेदी, पेज-167

120. इत्संज्ञाविधायक सूत्र कितने हैं-

(A) 14 (B) 4
(C) 7 (D) 5

स्रोत–अष्टाध्यायी–(1.3.2 से 1.3.8 तक)-ईश्वरचन्द्र, पेज-79-82

नोट– इत्संज्ञाविधायक सूत्र 6 (छह) होते हैं, एक सूत्र इत्संज्ञा का निषेध करता है। अतः यह प्रश्न भी स्पष्ट नहीं है।

121.'........... नमस्कृत्य' रिक्तस्थान की पूर्ति उचित पद द्वारा कीजिए-

(A) मुनित्रयात् (B) मुनित्रयस्य
(C) मुनित्रयं (D) मुनित्रये

स्रोत– व्याकरणसिद्धान्तकौमुदी (खण्ड-1)- गोविन्दाचार्य, पेज- 01

108. (B)	109. (C)	110. (D)	111. (A)	112. (C)	113. (D)	114. (B)	115. (D)	116. (C)
117. (C)	118. (C)	119. (A)	120. (C)	121. (C)				

122.'शमीदृषदम्' में समास है-

(A) बहुव्रीहि
(B) कर्मधारय
(C) द्वन्द्व
(D) अव्ययीभाव

स्रोत– लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, खण्ड-4) पेज-242

123.'राजदन्तः' में समास है-

(A) द्वन्द्व
(B) तत्पुरुष
(C) बहुव्रीहि
(D) अव्ययीभाव

स्रोत– लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड-4) पेज-233

124.'राम, मैं और तुम घर को जायेंगे'- संस्कृत में अनुवाद होगा -

(A) रामः अहं च त्वं च गृहं गमिस्यति
(B) रामः अहं च त्वं च गृहं गमिस्यसि
(C) रामः अहं च त्वं च गृहं गमिष्यन्ति
(D) रामः अहं च त्वं च गृहं गमिष्यामः

स्रोत– रचनानुवादकौमुदी – कपिलदेव द्विवेदी, पेज- 102

125.'मेरे द्वारा एक बालिका देखी गयी' संस्कृत में अनुवाद होगा -

(A) मया एकं बालिका दृष्टम्
(B) मया एका बालिका दृष्टा
(C) मया एका बालिका दृष्टाः
(D) मया एकां बालिका दृष्टाम्

स्रोत– रचनानुवादकौमुदी – कपिलदेव द्विवेदी, पेज-52

122. (C) **123.** (B) **124** (D) **125.** (B)

4	प्रवक्ता चयन परीक्षा (PGT) संस्कृत	2010 परीक्षा तिथि 29 मई 2011

आवश्यक निर्देश

1. अभ्यर्थी अपना अनुक्रमांक केवल आवरण पृष्ठ तथा प्रश्न-पुस्तिका के साथ दिए गए उत्तर-पत्रक के निर्दिष्ट स्थान पर लिखेंगे, अन्यत्र कहीं नहीं।
2. प्रश्न-पुस्तिका मिलने के उपरान्त अभ्यर्थी को तुरन्त जाँच कर सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि पुस्तिका में पूरे पृष्ठ हैं तथा कोई प्रश्न छूट तो नहीं गया है। यदि कोई विसंगति है, तो प्रश्न-पुस्तिका मिलने के 10 मिनट के भीतर ही कक्ष-निरीक्षक को सूचित करना चाहिए तथा त्रुटिरहित दूसरी पुस्तिका प्राप्त कर लेनी चाहिए।
3. प्रश्न-पुस्तिका में किसी विसंगति के अतिरिक्त, किसी भी स्थिति में, अभ्यर्थी को कोई दूसरी प्रश्न-पुस्तिका नहीं दी जाएगी। अभ्यर्थी को प्रश्न-पुस्तिका को उपयोग में लाने और उत्तर-पत्रक को पूरित करने में सावधानी बरतनी चाहिए।
4. अभ्यर्थी को सभी 125 प्रश्नों के उत्तर भरने हैं। गलत उत्तर के लिए नकारात्मक अंक नहीं दिये जायेंगे।
5. उत्तर-पत्रक को भरने के पूर्व अभ्यर्थी उत्तर-पत्रक पर मुद्रित महत्वपूर्ण निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
6. अभ्यर्थी को दिए गए चार विकल्पों में से एक अति उपयुक्त विकल्प का चयन कर OMR शीट में उत्तर-पत्रक में दिए गए निर्देशानुसार भरना है।
7. किसी भी परिस्थिति में प्रश्न-पुस्तिका का कोई भी कागज अलग नहीं करना है।
8. अभ्यर्थी परीक्षा भवन में प्रवेश पत्र के अतिरिक्त सादा या लिखा कोई अन्य कागज नहीं लाएँगे। यदि कोई अभ्यर्थी कोई अतिरिक्त कागज, नोट, पुस्तक, कैलकुलेटर, स्लाइड रूल, मोबाइल फोन आदि अपने साथ परीक्षा भवन में रखे पाया जाता है, तो उसे अनुचित साधन प्रयोग के अन्तर्गत दण्डित किया जा सकता है।
9. केवल काला/नीला बॉल पेन उत्तर भरने के लिए प्रयोग करें।

1. 'ए' तथा 'ऐ' की सवर्णसंज्ञा पाणिनि को अभीष्ट है या नहीं ?

(A) हाँ
(B) नहीं
(C) दोनों में सवर्ण संज्ञा की परिभाषा ही नहीं लागू होती
(D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत– लघुसिद्धान्तकौमुदी-भैमी व्याख्या (खण्ड-1), पेज-20

2. 'परस्मैपदम्' में कौन समास है ?

(A) अव्ययीभाव (B) कर्मधारय
(C) तत्पुरुष (D) केवलसमास

स्रोत– संस्कृतव्याकरण प्रवेशिका- बाबूराम सक्सेना, पेज-255

3. 'समिदाधानम्' का विग्रह होगा ?

(A) समिध् + आधानम् (B) समिद् + आधानम्
(C) समिदा + धानम् (D) समिद + आधानम्

स्रोत– लघुसिद्धान्तकौमुदी– भैमी व्याख्या (खण्ड-1), पेज-106

4. 'अहरहः' का विग्रह है ?

(A) अहर् + अह (B) अहर् + अहः
(C) अहन् + अहः (D) अहन् + अहन्

स्रोत– लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज-122

5. अन्तःकरणतत्त्वस्य दम्पत्योः स्नेहसंश्रयात् ।
आनन्दग्रन्थिरेकोऽयमपत्यमिति पठ्यते।।
– इस श्लोक में महत्त्व प्रतिपादित है–

(A) प्रेम का महत्त्व (B) पति का महत्त्व
(C) पत्नी का महत्त्व (D) पुत्र का महत्त्व

स्रोत– उत्तररामचरितम् (3/17)- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-196

6. उत्तररामचरितम् में किस पात्र की भूमिका नगण्य है ?

(A) सूत्रधार (B) नायक
(C) नायिका (D) विदूषक

स्रोत– उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0 पेज-62

1. (B) **2. (C)** **3. (A)** **4. (D)** **5. (D)** **6. (D)**

7. कौन-सा कथन गलत है ?

(A) संस्कृत में वचनों की संख्या है – तीन
(B) संस्कृत में पुरुषों की संख्या है – तीन
(C) संस्कृत में लिङ्गों की संख्या है – तीन
(D) संस्कृत में कारकों की संख्या है – तीन

स्रोत– संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका- डॉ0 बाबूराम सक्सेना पेज-175

8. महाभारत के सन्दर्भ में कौन-सा कथन सत्य है -

(A) इसमें तीन लाख श्लोक हैं
(B) इसकी कथावस्तु अठारह पर्वों में विभक्त है
(C) यह पौराणिक उपन्यास है
(D) यह विश्व का सबसे बड़ा खण्डकाव्य है

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-117, 118

9. व्यधिकरण तत्पुरुष समास के कितने भेद हैं ?

(A) चार (B) पाँच
(C) छः (D) सात

स्रोत– संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका- बाबूराम सक्सेना पेज-241, 242

10. ''स्फुटता न पदैरपाकृता, न च स्वीकृतमर्थगौरवम्'' - यह किस काव्य से सम्बद्ध है ?

(A) शिशुपालवधम् (B) किरातार्जुनीयम्
(C) जानकीहरणम् (D) रघुवंशम्

स्रोत– किरातार्जुनीयम् (2/27) – रामसेवक दुबे, भू. पेज-28

**11. ''दुष्यन्तेनाहितं तेजो दधानां भूतये भुवः।
अवेहि तनयां ब्रह्मन्नग्निगर्भां शमीमिव॥''
– यह सूचना कण्व को किससे प्राप्त हुई ?**

(A) गौतमी (B) अनसूया
(C) प्रियंवदा (D) छन्दोमयी वाणी

स्रोत– अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/4)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-198

12. ''सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम्'' – यह किससे कहा गया है ?

(A) सखियों से (B) वन-देवियों से
(C) लता-पादपों से (D) पशु-पक्षियों से

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/9)–कपिलदेव द्विवेदी, पेज-213

13. 'जटाधरः सञ्जुहुधीह पावकम्' – यह कथन किसको कहा गया है ?

(A) युधिष्ठिर (B) अर्जुन
(C) भीम (D) दुर्योधन

स्रोत– किरातार्जुनीयम् (1/44) – रामसेवक दुबे, पेज-144

14. कादम्बरी का प्रमुख नायक कौन है ?

(A) शूद्रक (B) तारापीड
(C) चन्द्रापीड (D) वैशम्पायन

स्रोत– वस्तुनिष्ठ संस्कृतसाहित्यम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-298

15. 'सत्यं न लक्षितो मया समयवेगः' यह – कथन है ?

(A) ब्रह्मचारीगुरु का (B) योगिराज का
(C) गौरसिंह का (D) श्यामसिंह का

स्रोत– शिवराजविजय - रमाशङ्कर मिश्र, पेज- 45

16. 'यायजूक' शब्द का अर्थ है ?

(A) यात्राशील (B) भ्रमणशील
(C) दुराचारी (D) यज्ञशील

स्रोत– शिवराजविजय - रमाशङ्कर मिश्र, पेज- 52

17. शुद्ध वाक्य चुनिए –

(A) शिष्याय व्याकरणं बोधयति
(B) शिष्याय वेदं पाठयति
(C) शिष्यं व्याकरणं बोधयति
(D) शिष्यं वेदाय पाठयति

स्रोत– अष्टाध्यायी- (1.4.52) – ईश्वरचन्द्र, पेज-130

18. शुद्ध वाक्य चुनिए –

(A) श्यामा गीतं शृण्वती नृत्यति
(B) श्यामा गीतं शृण्वन्ती नृत्यति
(C) श्यामा गीतं श्रुवन्ती नृत्यति
(D) श्यामा गीतं श्रुवन्ती नर्तते

संस्कृतगङ्गा वस्तुनिष्ठ संस्कृतव्याकरणम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-230

19. 'कृताधिपत्याम्' में समास है –

(A) तत्पुरुष (B) बहुव्रीहि
(C) समानाधिकरण तत्पुरुष (D) व्यधिकरण तत्पुरुष

स्रोत– किरातार्जुनीयम् - रामसेवक दुबे, पेज-68, 69

7. (D)	8. (B)	9. (C)	10. (B)	11. (D)	12. (C)	13. (A)	14. (C)	15. (B)
16. (D)	17. (C)	18. (A)	19. (B)					

20. किरातार्जुनीयम् प्रथमसर्ग के अन्त्य अधोलिखित श्लोक में कौन छन्द है ?
'विधिसमयनियोगाद्दीप्तिसंहारजिह्मम्'
(A) उपजाति (B) वंशस्थ
(C) वसन्ततिलका (D) मालिनी
स्रोत– किरातार्जुनीयम् (1/46) - रामसेवक दुबे, पेज-153

21. 'यां चिन्तयामि सततं मयि सा विरक्ता' - पंक्ति किस पुस्तक से उद्धृत है ?
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (B) मेघदूतम्
(C) उत्तररामचरितम् (D) नीतिशतकम्
स्रोत– नीतिशतकम् - तारिणीश झा, (परिशिष्ट 21वाँ श्लोक)

22. मन किस प्रकार की इन्द्रिय है ?
(A) कर्मेन्द्रिय (B) ज्ञानेन्द्रिय
(C) उभयात्मक (D) इनमें से कोई नहीं
स्रोत–सांख्यतत्त्वकौमुदी प्रभा (कारिका-27)-आद्याप्रसाद मिश्र, पेज-23

23. औचित्य को काव्य की आत्मा किसने माना है ?
(A) रुय्यक (B) कुन्तक
(C) क्षेमेन्द्र (D) मम्मट
स्रोत– काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, भू. पेज-61

24. जहाँ कोई शब्द अन्य अर्थ के लिए अपने अर्थ का त्याग कर देता है, वहाँ लक्षणा होती है–
(A) उपादान लक्षणा (B) लक्षण लक्षणा
(C) सारोपा लक्षणा (D) गौणी लक्षणा
स्रोत– काव्यप्रकाश- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-58

25. ''लिम्पतीव तमोऽङ्गानि वर्षतीवाञ्जनं नभः''- में अलङ्कार है–
(A) अपह्नुति (B) रूपक
(C) उत्प्रेक्षा (D) सन्देह
स्रोत– काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-461

26. ''शरीरं तावदिष्टार्थ व्यवच्छिन्ना पदावली'' यह परिभाषा किसकी है ?
(A) दण्डी (B) भामह
(C) मम्मट (D) आनन्दवर्द्धन
स्रोत– काव्यादर्श (1/10) - रामचन्द्र मिश्र, पेज-09

27. ''विरतास्वभिधाद्यासु ययार्थो बोध्यते परः'' यह किस वृत्ति का लक्षण है ?
(A) तात्पर्या (B) अभिधा
(C) लक्षणा (D) व्यञ्जना
स्रोत– साहित्यदर्पण (2/12) - शालिग्राम शास्त्री, पेज-39

28. 'शिशुपालवधम्' - में सर्गों की कुल संख्या है-
(A) 19 (B) 20
(C) 18 (D) 17
स्रोत– शिशुपालवधम् - जनार्दन गंगाधर रटाटे, भू0-20

29. 'शिशुपालवधम्' की कथावस्तु महाभारत के किस पर्व से उद्धृत है ?
(A) सभापर्व (B) वनपर्व
(C) आदिपर्व (D) विराटपर्व
स्रोत– शिशुपालवधम्- जनार्दन गंगाधर रटाटे, भू0-20

30. 'शिशुपालवधम्' के प्रथम सर्ग में कुल कितने श्लोक हैं ?
(A) 70 (B) 60
(C) 75 (D) 50
स्रोत– शिशुपालवधम्- जनार्दन गंगाधर रटाटे, पेज-161

31. भगिनी में किस प्रत्यय के योग से 'भागिनेयः' पद बनता है ?
(A) अण् (B) यत्
(C) ढक् (D) क्त
स्रोत– संस्कृतव्याकरण-प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज-274

32. 'सतां सद्भिः सङ्गः कथमपि हि पुण्येन भवति' - का अर्थ है ?
(A) सज्जनों का सत्य के साथ मिलन बड़े पुण्य से होता है
(B) सज्जनों का सज्जनों से मिलन बड़े पुण्य से होता है
(C) सत्य का सज्जनों से मिलना पुण्यकारी है
(D) सज्जनों का दुर्जनों से मिलन पुण्यकारी नहीं है
स्रोत–उत्तररामचरितम् (2/1), कपिलदेव द्विवेदी, पेज-97

20. (D)	**21. (D)**	**22. (C)**	**23. (C)**	**24. (B)**	**25. (C)**	**26. (A)**	**27. (D)**	**28. (B)**
29. (A)	**30. (C)**	**31. (C)**	**32. (B)**					

33. 'न्यायधारा हि साधवः' का अर्थ है?
(A) न्याय की धारा अच्छी होती है
(B) न्याय की धारा साधुओं की धारा हैं
(C) सज्जन न्यायमार्ग का ही आश्रय लेते हैं
(D) सज्जन न्यायमार्ग का परित्याग करते हैं
स्रोत– किरातार्जुनीयम् (11/30) – श्रीनिवास शर्मा, पेज-244

34. 'न बाधतेऽस्य त्रिगणः परस्परम्' सूक्ति उद्धृत है?
(A) मृच्छकटिकम् में (B) किरातार्जुनीयम् में
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में (D) नीतिशतकम् में
स्रोत– किरातार्जुनीयम् (1/11) – रामसेवक दुबे, पेज-69

35. निम्नलिखित वाक्यों में कौन शुद्ध है ?
(A) सूर्ये अस्ते गते गोपा गृहम् अगच्छन्
(B) सूर्ये अस्तं गते गोपाः गृहम् अगच्छन्
(C) सूर्यस्य अस्ते गते गोपाः गृहम् अगच्छन्
(D) सूर्यस्य अस्तं गते गोपाः गृहम् अगच्छन्
स्रोत– संस्कृतव्याकरण प्रवेशिका- बाबूराम सक्सेना पेज-220

36. निम्नांकित काव्यप्रयोजनों में कौन आचार्य मम्मट द्वारा मान्य नहीं है ?
(A) यश (B) धनार्जन
(C) प्रीति (D) व्यवहारज्ञान
स्रोत– काव्यप्रकाश (1/2)- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-10

37. विश्वनाथ ने काव्य में वक्रोक्ति को किस रूप में माना है ?
(A) रीति (B) गुण
(C) अलंकार (D) आत्मा
स्रोत– साहित्यदर्पण - कमलादेवी, पेज-57

38. शृंगाररस का स्थायीभाव है -
(A) शोक (B) रति
(C) हास (D) उत्साह
स्रोत– नाट्यशास्त्रम् - ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज-160

39. 'लिम्पतीव तमोऽङ्गानि वर्षतीवाञ्जनं नभः' - में अलङ्कार है -
(A) अपह्नुति (B) रूपक
(C) उत्प्रेक्षा (D) सन्देह
स्रोत– काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-461

40. जहाँ उपमेय में उपमान की सम्भावना होती है, वह अलङ्कार है ?
(A) उपमा B) उत्प्रेक्षा
(C) रूपक (D) निदर्शना
स्रोत– काव्यप्रकाश आचार्य विश्वेश्वर, पेज-460

41. नलचम्पू की कथावस्तु का आधार है -
(A) शान्तिपर्व (B) भीष्मपर्व
(C) वनपर्व (D) सभापर्व
स्रोत– नलचम्पू-तारिणीश झा भू0 पेज - 21

42. 'नेदीयसि' का अर्थ है -
(A) अत्यन्त समीप में (B) नदी के तल में
(C) न देने के अर्थ में (D) इसमें से कोई नहीं
स्रोत– शिवराजविजय - विजयशङ्कर चौबे- पेज-63

43. हारीत किसका पुत्र था ?
(A) महर्षि अगस्त्य का
(B) महर्षि जाबालि का
(C) महर्षि श्वेतकेतु का
(D) महर्षि विश्वामित्र का
स्रोत– कादम्बरीकथामुखम् - तारिणीश झा, भू. पेज-33

44. कैवल्य को प्राप्त करने वाला/वाली है -
(A) पुरुष (B) प्रकृति
(C) मन (D) अहङ्कार
स्रोत–सांख्यतत्त्वकौमुदीप्रभा (का0-17)-आद्याप्रसाद मिश्र, पेज-200

45. 'ददामि' किस धातु का रूप है ?
(A) दद् (B) धा
(C) दा (D) दध
स्रोत– रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज- 167

46. अपादान कारक में विभक्ति होती है -
(A) द्वितीया (B) तृतीया
(C) चतुर्थी (D) पञ्चमी
स्रोत– सिद्धान्तकौमुदी - राममुनि पाण्डेय, पेज-59

33. (C)	34. (B)	35. (B)	36. (C)	37. (C)	38. (B)	39. (C)	40. (B)	41. (C)
42. (A)	43. (B)	44. (A)	45. (C)	46. (D)				

47. सुमेलित कीजिए -

(अ)	सुबन्धु	(i)	वासवदत्ता
(ब)	बाण	(ii)	शिवराजविजय
(स)	दण्डी	(iii)	हर्षचरित
(द)	अम्बिकादत्त	(iv)	काव्यादर्श

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	(i)	(iii)	(iv)	(ii)
(B)	(iii)	(iv)	(ii)	(i)
(C)	(i)	(iv)	(ii)	(iii)
(D)	(ii)	(iii)	(i)	(iv)

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–482, 490, 466, 508

48. 'बृहत्त्रयी' - के अन्तर्गत नहीं है ?

(A) किरातार्जुनीयम् (B) शिशुपालवधम्
(C) कुमारसम्भवम् (D) नैषधीयचरितम्

स्रोत– शिशुपालवधम् - तारिणीश झा, भू. पेज-12

49. 'चोरयति' - में धातु है -

(A) चोर् (B) चुर्
(C) चोरय् (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत– रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-185

50. किस नाटक का अङ्गीरस करुणरस है ?

(A) महावीरचरितम् (B) उत्तररामचरितम्
(C) वेणीसंहारम् (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत– उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू0- 86

51. 'वयसा षोडशवर्षदेशीयः कम्बुकण्ठः, आयतललाटः, सुबाहुर्विशाललोचनः' - ये विशेषण किसके लिये प्रयुक्त हुए हैं ?

(A) रघुवीर सिंह (B) शिवाजी
(C) गौर सिंह (D) श्यामसिंह

स्रोत– शिवराजविजय - रमाशङ्कर मिश्र, पेज-9

52. निम्न में से कौन-सी कृति भर्तृहरि की नहीं है ?

(A) वैराग्यशतकम् (B) भट्टिकाव्यम्
(C) नीतिशतकम् (D) वाक्यपदीयम्

स्रोत– संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव, पेज-541

53. निम्नाङ्कित में कौन-सी सूक्ति मेघदूतम् से सम्बद्ध नहीं है ?

(A) कामार्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु
(B) अकृतार्थेऽपि मनसिजे रतिमुभयप्रार्थना कुरुते
(C) याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाऽधमे लब्धकामा
(D) स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु

स्रोत– मेघदूतम् - दयाशङ्कर शास्त्री, भू0- 42-43

54. कर्मधारय समास किस समास का ही एक भेद है ?

(A) अव्ययीभाव (B) तत्पुरुष
(C) बहुव्रीहि (D) द्विगु

स्रोत– संस्कृतव्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज- 235

55. 'न तादृशा आकृतिविशेषा गुणविरोधिनो भवन्ति' - प्रियंवदा द्वारा उक्त वाक्य किसके लिये है ?

(A) दुष्यन्त (B) शकुन्तला
(C) महर्षि कण्व (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत– अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज- 180

56. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' - नाटक में विदूषक है ?

(A) वसन्तक (B) मैत्रेय
(C) माधव्य (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत– अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू. पेज- 99

57. 'कम्बुकण्ठः' - समस्त पद का सही विग्रह होगा -

(A) कम्बुः कण्ठः यस्य सः
(B) कम्बोः कण्ठः
(C) कम्बुश्चासौ कण्ठश्च
(D) कम्बुरिव कण्ठो यस्य सः

स्रोत– शिवराजविजय - रमाशङ्कर मिश्र, पेज-9

47. (A) 48. (C) 49. (B) 50. (B) 51. (C) 52. (B) 53. (B) 54. (B) 55. (A) 56. (C) 57. (D)

58. 'समाक्षर लोप' - की अवधारणा प्रस्तुत की -

(A) सर विलियम जोन्स ने
(B) ब्लूमफील्ड ने
(C) मैक्समूलर ने
(D) वर्नर ने

स्रोत– भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज- 235

59. 'नीतिशतकम्' - किस प्रकार के काव्य के अन्तर्गत आता है ?

(A) गद्यकाव्य (B) प्रबन्धकाव्य
(C) मुक्तककाव्य (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत– संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकरशर्मा ऋषि, पेज-344

60. 'कल्याणि सञ्जीवय जगत्पतिम्' - इस पद्यांश में 'जगत्पतिम्' की व्यञ्जना है -

(A) राम के लिये (B) शिवजी के लिये
(C) राजा के लिये (D) सीता के लिये

स्रोत– उत्तररामचरितम् (3/10) – कपिलदेव द्विवेदी, पेज-176

61. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के किस अङ्क में विष्कम्भक समाप्त होता है ?

(A) प्रथम (B) द्वितीय
(C) तृतीय (D) चतुर्थ

स्रोत– अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज- 190

62. 'प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः -------पुनर्भवं परिगत शक्तिरात्मभूः' यह भरतवाक्य किस ग्रन्थ का है?

(A) मृच्छकटिकम् (B) मालविकाग्निमित्रम्
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (D) उत्तररामचरितम्

स्रोत– अभिज्ञानशाकुन्तलम् (7/35) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-453

63. 'नवसर्गगते माघे नव शब्दो न विद्यते' - उक्ति किस ग्रन्थ के लिए उद्धृत है ?

(a) मेघदूतम् (b) शिशुपालवधम्
(c) कुमारसम्भवम् (d) जानकीहरणम्

संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-204

64. मृच्छकटिकम् का विदूषक है -

(A) मैत्रेय (B) माधव्य
(C) माणवक (D) गौतम

स्रोत– मृच्छकटिकम् - रमाशङ्कर त्रिपाठी, भू0 पेज- 42

65. श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार कर्मयोगी को कर्म करना चाहिए -

(A) कीर्ति के लिए (B) लोकसंग्रह के लिए
(C) सुख के लिए (D) स्वर्ग के लिए

स्रोत– श्रीमद्भगवद्गीता (3/20)

66. ''अपि ग्रावा रोदित्यपि दलति वज्रस्य हृदयम्'' - इसका सम्बन्ध है -

(A) रत्नावली से (B) स्वप्नवासवदत्तम् से
(C) मृच्छकटिकम् से (D) उत्तररामचरितम् से

स्रोत– उत्तररामचरितम् (1/28) – कपिलदेव द्विवेदी, पेज-52

67. निम्नाङ्कित वाक्यों में शुद्ध वाक्य कौन-सा है ?

(A) कृष्णा अश्वः धावति
(B) कृष्णः अश्वं धावति
(C) कृष्णम् अश्वं धावति
(D) कृष्णः अश्वः धावति

स्रोत– संस्कृतव्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज- 137

68. कर्मवाच्य के कर्ता में कौन-सी विभक्ति होती है ?

(A) प्रथमा (B) द्वितीया
(C) तृतीया (D) इनमें से सभी

स्रोत– रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज- 275

69. कारक कितने प्रकार के हैं ?

(A) पाँच (B) छः
(C) सात (D) आठ

स्रोत– संस्कृतव्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज- 175

70. दुह् धातु के लट्लकार मध्यम पुरुष बहुवचन का रूप है -

(A) दुहथ (B) दुहथः
(C) दोहथ (D) दुग्ध

स्रोत– रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज- 162

58. (B)	59. (C)	60. (A)	61. (D)	62. (C)	63. (B)	64. (A)	65. (B)	66. (D)
67. (D)	68. (C)	69. (B)	70. (D)					

71. मेघदूतम् के अनुसार यक्ष के शापान्त की तिथि है -

(A) वैशाख पूर्णिमा (B) देवोत्थानी एकादशी
(C) शिव चतुर्दशी (D) कृष्ण जन्माष्टमी

स्रोत– मेघदूतम् (उत्तरमेघ 50) - विजेन्द्र कुमार शर्मा, पेज-77

72. समुद्धर्ता का विग्रह है -

(A) समुद + धर्ता (B) समुद् + हर्ता
(C) समुत + धर्ता (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत– ल0सि0कौ0 (8.4.61) भैमीव्याख्या (खण्ड-1), पेज-117

73. 'अ' या 'आ' के बाद 'ए' या 'ऐ' आए तो दोनों के स्थान पर 'ऐ' होने की सन्धि है -

(A) गुण (B) वृद्धि
(C) दीर्घ (D) पररूप

स्रोत– अष्टाध्यायी (6/1/85) - ईश्वरचन्द्र, पेज-687

74. 'कवि' शब्द के चतुर्थी एकवचन में होता है -

(A) कवयः (B) कविना
(C) कवये (D) कवौ

स्रोत– संस्कृतव्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज-73

75. 'पचास' को संस्कृत में कहा जाता है -

(A) पञ्चदश (B) पञ्चाशत्
(C) पञ्चशतम् (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत– संस्कृतव्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज-153

76. 'धूमज्योतिः सलिलमरुतां सन्निपातः' - किसके लिये कहा गया है ?

(A) वायु (B) आकाश
(C) वर्षा (D) मेघ

स्रोत– मेघदूतम् (पूर्वमेघ-5) - विजेन्द्र कुमार शर्मा, पेज-9

77. शर्मिष्ठा के पिता थे ?

(A) ययाति (B) शुक्राचार्य
(C) दानवराज वृषपर्वा (D) पुरु

स्रोत– अभिज्ञानशकुलन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज- 211

78. शाकुन्तल की कथा और कहाँ प्राप्त होती है ?

(A) महाभारत में
(B) पद्मपुराण में
(C) वायुपुराण में
(D) महाभारत और पद्मपुराण दोनों में

संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज- 335

79. 'कृषीवल' से तात्पर्य है -

(A) कृषि से (B) किसान से
(C) सिंचाई के साधन से (D) वृष्टि से

स्रोत– किरातार्जुनीयम् (1/17) – रामसेवक दुबे, पेज-86

80. निरस्त नारीसमया में 'समया' का तात्पर्य है -

(A) समान (B) माया वाली
(C) समय (D) मर्यादा

स्रोत– किरातार्जुनीयम् (1/28) – रामसेवक दुबे, पेज-110

81. भ्रान्तिमान् अलङ्कार में प्राणतत्त्व है -

(A) सन्देह (B) संशय
(C) भ्रान्ति का निश्चय (D) भ्रान्ति का अनिश्चय

काव्यप्रकाश (सूत्र–200)–आचार्य श्रीनिवासशास्त्री, पेज- 589

82. 'साहित्यदर्पण' के प्रथम परिच्छेद का नाम है -

(A) काव्यदोष निरूपण
(B) काव्यस्वरूप निरूपण
(C) काव्यप्रयोजन निरूपण
(D) काव्यलक्षण निरूपण

स्रोत– साहित्यदर्पण (प्रथम परिच्छेद) - राजेन्द्रमिश्र, पेज- 140

83. नाट्यशास्त्र में 'नान्दी' से अभिप्रेत है -

(A) नान्दी देवता (B) बैल
(C) मङ्गलाचरण (D) पात्र

स्रोत– उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-5

84. 'माता पुत्रं प्रीणाति' का कर्मवाच्य होगा -

(A) मात्रा पुत्रं प्रीण्यते (B) मात्रा पुत्रः प्रीण्यते
(C) मात्रा पुत्रः प्रीणायते (D) मात्रा पुत्रः प्रीणीयते

स्रोत– बृहद्धातुकुसुमाकर - हरेकान्त मिश्र, पेज-420

71. (B)	**72. (B)**	**73. (B)**	**74. (C)**	**75. (B)**	**76. (D)**	**77. (C)**	**78. (D)**	**79. (B)**
80. (D)	**81. (C)**	**82. (B)**	**83. (C)**	**84. (B)**				

85. 'सोलहवाँ बालक पढ़ता है' का संस्कृत में अनुवाद होगा-

(A) षोडशतमः बालकः पठति
(B) षोडशः बालकः पठति
(C) षड्दशतमः बालकः पठति
(D) षोडशबालकः पठति

स्रोत– वस्तुनिष्ठ संस्कृतव्याकरणम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-257

86. 'नलचम्पू' के रचयिता हैं ?

(A) कल्हण (B) विशाखदत्त
(C) क्षेमेन्द्र (D) त्रिविक्रमभट्ट

संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज- 602

87. 'नलचम्पू' काव्य की नायिका है -

(A) रूपवती (B) नलिनी
(C) दमयन्ती (D) पद्मावती

स्रोत– नलचम्पू - तारिणीश झा,भू0 पेज-3

88. 'कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे' सूत्र द्वारा किस विभक्ति का निर्देश किया गया है ?

(A) द्वितीया (B) तृतीया (C) चतुर्थी (D) पञ्चमी

स्रोत– अष्टाध्यायी (2/3/5)- ईश्वरचन्द्र, पेज-195

89. मेघदूत किस छन्द में निबद्ध है ?

(A) अनुष्टुप् (B) मन्दाक्रान्ता
(C) शिखरिणी (D) वंशस्थ

स्रोत– मेघदूतम् - विजेन्द्र कुमार शर्मा, पेज-20

90. 'शिवराजविजय' है -

(A) ऐतिहासिक उपन्यास (B) चम्पू
(C) खण्डकाव्य (D) गीतिकाव्य

स्रोत– शिवराजविजय - रमाशङ्कर मिश्र, भू0 पेज-12

91. 'अहं तव गृहं विचेष्यामि'-का कर्मवाच्य में रूपान्तरण होगा-

(A) मया तव गृहं विचेष्ये
(B) मया तव गृहं विचेतास्मि
(C) मया तव गृहं विचेतामहे
(D) मया तव गृहं विचेष्यते

स्रोत– बृहद्-अनुवाद चन्द्रिका- चक्रधर नौटियाल,पेज- 350

92. 'भवन्तः कुत्र भविष्यन्ति ?' का भाववाच्य में रूपान्तरण होगा -

(A) भवद्भिः कुत्र भवितारः ?
(B) भवद्भिः कुत्र भविष्ये ?
(C) भवद्भिः कुत्र भविष्यते ?
(D) भवता कुत्र भविता ?

स्रोत– ---------- पेज-

93. अभिनेतागण जहाँ पर नाटक के उपयुक्त वेषभूषा धारण करते हैं, उसे कहते हैं -

(A) पूर्वरङ्ग (B) नेपथ्य
(C) जनान्तिक (D) स्वगत

स्रोत– अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-460

94. नाटक में जो बात सुनाने योग्य नहीं होती है, उसे कहते है -

(A) प्रकाश (B) स्वगत
(C) अपवारित (D) जनान्तिक

स्रोत– दशरूपक (1.64) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-105

95. 'बीभत्स' का स्थायीभाव है -

(A) रति (B) जुगुप्सा
(C) शोक (D) क्रोध

स्रोत– नाट्यशास्त्रम्-ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज-160

96. साहित्यदर्पण में कितने परिच्छेद हैं ?

(A) आठ (B) नौ (C) दस (D) ग्यारह

स्रोत– साहित्यदर्पण - राजेन्द्र मिश्र, भू0 पेज-39

97. ध्वनिसिद्धान्त के प्रतिष्ठापक आचार्य हैं -

(A) विश्वनाथ (B) भरतमुनि
(C) आनन्दवर्धन (D) कुन्तक

स्रोत–साहित्यदर्पण (3/175)-अभिराज राजेन्द्र मिश्र, भू. पेज-22

98. भाषा की उत्पत्ति विषयक 'रणन-सिद्धान्त' के मूल प्रवर्तक स्वीकार किये जाते हैं -

(A) रूसो (B) सुसमिल्श
(C) प्लेटो (D) न्वारे

स्रोत– भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज- 68

85. (B)	**86. (D)**	**87. (C)**	**88. (A)**	**89. (B)**	**90. (A)**	**91. (D)**	**92. (C)**	**93. (B)**
94. (B)	**95. (B)**	**96. (C)**	**97. (C)**	**98. (C)**				

99. ग्रिम नियम के अनुसार निम्न जर्मन THREE का उच्च जर्मन में परिवर्तित रूप है -

(A) DREE (B) THREI
(C) THIRI (D) DREI

स्रोत– भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज- 245

100. 'ऋ' में किस प्रत्यय के संयोग से 'अर्य' शब्द बनता है ?

(A) शतृ (B) यत्
(C) अच् (D) क्त

स्रोत– संस्कृतव्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज- 477

101. न्याय वैशेषिक स्वीकार करता है -

(A) स्वतः प्रामाण्य, परतः अप्रामाण्य
(B) परतः प्रामाण्य, स्वतः अप्रामाण्य
(C) स्वतः प्रामाण्य, स्वतः अप्रामाण्य
(D) परतः प्रामाण्य, परतः अप्रामाण्य

स्रोत– तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज- 156

102. सांख्य के अनुसार प्रमाण हैं -

(A) प्रत्यक्ष, अनुमान, अर्थापत्ति
(B) प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान
(C) प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द
(D) प्रत्यक्ष, उपमान, शब्द

सांख्यतत्वकौमुदी प्रभा (का-4)- आद्याप्रसाद मिश्र, पेज- 115

103. सांख्य के अनुसार पुरुषार्थ हैं -

(A) धर्म और काम (B) भोग और अपवर्ग
(C) धर्म और मोक्ष (D) अर्थ और मोक्ष

स्रोत– भारतीय दर्शन - राममूर्ति पाठक, पेज-153-154

104. वेदान्तसार के अनुसार उपासना का परम प्रयोजन है -

(A) चित्त की शुद्धि (B) चित्त की एकाग्रता
(C) पाप का विनाश (D) पितृलोक की प्राप्ति

स्रोत– वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-17

105. साहित्यदर्पण में 'काव्य में रस की स्थिति' को कहा गया है -

(A) शरीर (B) आत्मा
(C) अवयव संस्थान (D) अलङ्करण

स्रोत– साहित्यदर्पण - कमला देवी, पेज-65

106. 'त्रिभुवनप्रसवभूमिरिव विस्तीर्णा' विशेषण किसके लिए प्रयुक्त है ?

(A) उज्जयिनी (B) विन्ध्याटवी
(C) विदिशा (D) हेमकूट

स्रोत– कादम्बरीकथामुखम् - तारिणीश झा, पेज-44

107. 'नृ' शब्द के प्रथमा विभक्ति एकवचन का रूप है -

(A) नरः (B) ना
(C) नः (D) नृः

स्रोत– संस्कृतव्याकरण प्रवेशिका- बाबूराम सक्सेना, पेज- 78

108. राजा नल के महामन्त्री का नाम है -

(A) सालङ्कायन (B) श्रुतिशील
(C) वीरसेन (D) बाहुक

स्रोत– नलचम्पू–तारिणीश झा, भू0 पेज-11

109. मृच्छकटिक के निम्नांकित पात्रों में कौन संस्कृत नहीं बोलता ?

(A) चारुदत्त (B) वसन्तसेना
(C) आर्यक (D) शर्विलक

स्रोत– संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास, कपिलदेव,पेज- 324

110. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के अनुसार 'वेत्रवती' है -

(A) नदी (B) उद्यानपालिका
(C) प्रतिहारी (D) अप्सरा

स्रोत– अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू. पेज-100

111. निम्नांकित सूक्तियों को उनके रचनाकारों के साथ सुमेलित कीजिए -

(अ) वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः (i) कालिदास
(ब) दिष्ट्या वर्धसे (ii) भर्तृहरि
(स) कोऽन्यो हुतवहाद् दग्धुं प्रभवति (iii) भवभूति
(द) न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः (iv) भारवि

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	(iv)	(i)	(ii)	(iii)
(B)	(i)	(iii)	(ii)	(iv)
(C)	(iv)	(iii)	(i)	(ii)
(D)	(iii)	(ii)	(iv)	(i)

स्रोत– **(अ)** किरातार्जुनीयम् (1/8) – रामसेवक दुबे पेज-61
(ब) उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-190
(स) अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, - 185
(द) नीतिशतकम् (श्लोक-75)-तारिणीश झा, पेज-122

99. (D) 100. (B) 101. (D) 102. (C) 103. (B) 104. (B) 105. (B) 106. (C) 107. (B) 108. (B) 109. (B) 110. (C) 111. (C)

112. दुर्वासा ऋषि के क्रोधित हो जाने पर किसने उन्हें प्रसन्न किया ?

(A) शकुन्तला (B) अनसूया
(C) प्रियंवदा (D) अनसूया एवं प्रियंवदा दोनों

स्रोत– अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज- 187

113. कवि कालिदास के सम्बन्ध में निम्नांकित में से कौन-सा कथन असत्य है ?

(A) कालिदास ने अपने किसी भी ग्रन्थ में अपने जीवन से सम्बद्ध किसी भी बात का उल्लेख नहीं किया है।
(B) वे कश्मीर के निवासी थे।
(C) कालिदास का उज्जयिनी के प्रति विशेष आग्रह था।
(D) वे शिव की उपासना करते थे।

स्रोत– अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज- 10, 11

114. 'किरातार्जुनीयम्' में 'कुरूणामधिपस्य' शब्द प्रयुक्त किया गया है -

(A) युधिष्ठिर के लिये (B) अर्जुन के लिये
(C) दुर्योधन के लिये (D) भीम के लिये

स्रोत– किरातार्जुनीयम् (1/1) – रामसेवक दुबे, पेज-39

115. 'परमात्मने नमः' यहाँ 'नमः' के योग में जो विभक्ति है, वह है -

(A) कारक विभक्ति (B) उपपद विभक्ति
(C) (1) तथा (2) दोनों (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत– सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज-55

116. 'पितरौ' समस्तपद में कौन-सा समास है ?

(A) इतरेतर द्वन्द्वसमास (B) समाहार द्वन्द्वसमास
(C) एकशेष द्वन्द्वसमास (D) केवल समास

स्रोत– संस्कृतव्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज- 260

117. मनुष्य का कौन-सा भूषण स्थायी है ?

(A) स्नान (B) उज्ज्वल हार
(C) परिष्कृत वाणी (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत– नीतिशतकम् (श्लोक-15)- राजेश्वरप्रसाद मिश्र, पेज- 53

118. 'रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय' का सम्बन्ध किस ग्रन्थ से है ?

(A) किरातार्जुनीयम् (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(C) मेघदूतम् (D) रघुवंशम्

स्रोत– मेघदूतम् (पूर्वमेघ-20) - विजेन्द्रकुमार शर्मा, पेज- 35

119. 'सर्व' के पञ्चमी एकवचन में रूप बनेगा -

(A) सर्वस्मात् (B) सर्वात्
(C) सर्वस्य (D) सर्वाः

स्रोत– संस्कृतव्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज- 144

120. 'उत्तररामचरितम्' नाटक में तमसा और मुरला हैं-

(A) वनदेवता
(B) सीता की सखियाँ
(C) नदी विशेषाधिष्ठात्री देवियाँ
(D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत– उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-155-56

121. 'रात्रिर्गमिष्यति भविष्यति सुप्रभातम्' पद्यांश का सम्बन्ध किस रचनाकार से है ?

(A) भर्तृहरि (B) अम्बिकादत्तव्यास
(C) भवभूति (D) भारवि

स्रोत– शिवराजविजयम् (1/2)– रमाशङ्कर मिश्र- पेज-104

122. 'शफर' से अभिप्राय है -

(A) बादल
(B) विशाल नदी
(C) जल में चमकने वाली एक छोटी मछली
(D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत– मेघदूतम् (पूर्वमेघ-44)-तारिणीश झा, पेज-93

123. कृष्ण का षष्ठी द्विवचन में रूप बनेगा -

(A) कृष्णस्य (B) कृष्णौ
(C) कृष्णानाम् (D) कृष्णयोः

स्रोत– रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज-

124. 'इयम्' किस लिङ्ग का रूप है ?

(A) पुंलिङ्ग (B) स्त्रीलिङ्ग
(C) नपुंसकलिङ्ग (D) स्त्रीलिङ्ग व पुल्लिङ्ग दोनों

स्रोत– संस्कृतव्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज- 128

125. 'षट्सप्ततिः' का अर्थ है -

(A) 76 (B) 67
(C) 660 (D) 607

स्रोत– संस्कृतव्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज- 156

112. (C)	113. (B)	114. (C)	115. (B)	116. (C)	117. (C)	118. (C)	119. (A)	120. (C)
121. (B)	122. (C)	123. (D)	124 (B)	125. (A)				

5	प्रवक्ता चयन परीक्षा (PGT) संस्कृत	2009 परीक्षा तिथि 31 जनवरी 2010

नोट : इस प्रश्नपत्र में **125** बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं। **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं–

1. कादम्बरी में किस रीति का प्रयोग है ?
(A) गौड़ी (B) वैदर्भी
(C) पाञ्चाली (D) लाटी

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-496

2. इन्द्रायुध किसका अवतार था ?
(A) चन्द्रमा का (B) कपिञ्जल का
(C) पुण्डरीक का (D) वैशम्पायन का

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास–कपिलदेव द्विवेदी, पेज-493

3. 'अतिगहनं तमो यौवनप्रभवम्' यह सूक्ति किस ग्रन्थ से उद्धृत है ?
(A) कादम्बरी (B) नलचम्पू
(C) मृच्छकटिकम् (D) अभिज्ञानशाकुन्तलम्

स्रोत– शुकनासोपदेश - तारिणीश झा, पेज-01

4. 'को नामोष्णोदकेन नवमालिकां सिञ्चति' यह कथन किसका है?
(A) अनसूया का (B) प्रियंवदा का
(C) शार्ङ्गरव का (D) शकुन्तला का

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (अंक-4)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-190

5. निम्नांकित किस नाटक में सर्वाधिक शोषित, दलित एवं उपेक्षित वर्ग का सहानुभूतिपूर्ण चित्रण हुआ है ?
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (B) मृच्छकटिकम्
(C) उत्तररामचरितम् (D) मालविकाग्निमित्रम्

स्रोत– मृच्छकटिकम् - आचार्य जगदीशचन्द्र मिश्र, भू. पेज- 18

6. श्रीमद्भगवद्गीता महाभारत के किस पर्व से सम्बन्धित है ?
(A) शान्तिपर्व (B) वनपर्व
(C) भीष्मपर्व (D) उद्योगपर्व

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-118

7. 'शब्दो नित्यः कृतकत्वात्' में कौन-सा हेत्वाभास है?
(A) असिद्ध (B) विरुद्ध
(C) अनैकान्तिक (D) प्रकरणसम

स्रोत– तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज-115

8. सामान्य रहता है -
(A) द्रव्य, गुण, विशेष में
(B) द्रव्य, गुण, कर्म में
(C) द्रव्य, कर्म, विशेष में
(D) द्रव्य, गुण, समवाय में

स्रोत– तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री , पेज-244

9. सांख्य स्वीकार करता है -
(A) असतः सत् जायते
(B) एकस्य सतो विवर्तः कार्यजातं न वस्तु सत्
(C) सतः सत् जायते
(D) सतः असत् जायते

स्रोत–सांख्यतत्त्वकौमुदीप्रभा (का0-9)–आद्याप्रसाद मिश्र, पेज-153

10. सांख्य के अनुसार बुद्धि के प्रमुख परिणाम हैं -
(A) विपर्यय, अशक्ति, सिद्धि, तमस्
(B) विपर्यय, अशक्ति, तुष्टि, सिद्धि
(C) विपर्यय, अशक्ति, मोह, तामिस्र
(D) विपर्यय, तमस्, मोह, तामिस्र

स्रोत– सांख्यतत्त्वकौमुदीप्रभा (का0-46)-आद्याप्रसाद मिश्र, पेज- 269

11. अज्ञानोपहित चैतन्य जगत् का कारण है -
(A) निमित्त (B) उपादान
(C) निमित्त एवं उपादान (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत– वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-62

1. (C) 2. (B) 3. (A) 4. (B) 5. (B) 6. (C) 7. (B) 8. (B) 9. (C) 10. (B) 11. (C)

12. पञ्च ज्ञानेन्द्रिय एवं बुद्धि के द्वारा निर्मित होते हैं–

(A) प्राणमयकोश (B) मनोमयकोश

(C) विज्ञानमयकोश (D) आनन्दमयकोश

स्रोत– वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-68

13. 'मिथ्या रूप से अन्य वस्तु के रूप में भासित होना' कहलाता है -

(A) आरम्भवाद (B) असत्कार्यवाद

(C) परिणामवाद (D) विवर्तवाद

स्रोत– वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-115, 116

14. अध्यवसाय की सिद्धि होने पर अलंकार होता है -

(A) स्वभावोक्ति (B) रूपक

(C) अतिशयोक्ति (D) उत्प्रेक्षा

स्रोत– काव्यप्रकाश (सूत्र-152)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज-482

15. आचार्य मम्मट के अनुसार काव्य का लक्षण है -

(A) वाक्यं रसात्मकं काव्यम्

(B) वक्रोक्तिः काव्यजीवितम्

(C) तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि

(D) रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्

स्रोत– काव्यप्रकाश (सूत्र 1)- आचार्य विश्वेश्वर, पेज- 19

16. जहाँ कोई शब्द अन्य अर्थ के लिए अपने अर्थ का त्याग कर देता है, वहाँ होती है–

(A) उपादान लक्षणा (B) लक्षण लक्षणा

(C) सारोपा लक्षणा (D) गौणी लक्षणा

स्रोत– काव्यप्रकाश (सूत्र 13)- आचार्य विश्वेश्वर, पेज- 53

17. न छिपाये गये उपमेय पर उपमान का अभेदारोप होने पर अलंकार होता है–

(A) उत्प्रेक्षा (B) परिसंख्या

(C) रूपक (D) उपमा

स्रोत– काव्यप्रकाश (सूत्र 138)- आचार्य विश्वेश्वर, पेज-463

**18. पृथुकार्तस्वरपात्रं भूषितनिःशेषपरिजनं देव ।
विलसत्करेणुगहनं सम्प्रति सममावयोः सदनम् ॥
यह किस अलंकार का उदाहरण है?**

(A) अनुप्रास (B) यमक

(C) श्लेष (D) उत्प्रेक्षा

स्रोत– काव्यप्रकाश (नवम उल्लास)- आचार्य विश्वेश्वर, पेज- 417

19. भाषा की उत्पत्ति विषयक 'समन्वय सिद्धान्त' के प्रवर्तक भाषाशास्त्री हैं -

(A) प्लेटो (B) हेनरी स्वीट

(C) जी0 रेवेज (D) न्वारे

स्रोत– भाषाविज्ञान- डॉ. कर्णसिंह, पेज-34

20. 'धर्म' का 'धम्म' रूप में परिवर्तन उदाहरण है -

(A) पुरोगामी समीकरण का

(B) पश्चगामी समीकरण का

(C) पुरोगामी विषमीकरण का

(D) पश्चगामी विषमीकरण का

स्रोत– भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-233

21. कर्मप्रवचनीय अप, आङ् के योग में कौन विभक्ति होती है ?

(A) तृतीया (B) चतुर्थी

(C) पञ्चमी (D) षष्ठी

स्रोत– पञ्चम्यपाङ्परिभिः (अष्टाध्यायी 2/3/10)

22. जिस समास में प्रथम पद प्रधान रहता है, उसे कहते हैं -

(A) तत्पुरुष समास (B) बहुव्रीहि समास

(C) अव्ययीभावसमास (D) द्वन्द्व समास

स्रोत– लघुसिद्धान्तकौमुदी – भैमी व्याख्या खण्ड-4, पेज-2

23. नर्तक में किस प्रत्यय के संयोग से नर्तकी शब्द बनता है?

(A) टाप् (B) ङीप्

(C) ङीष् (D) ङीन्

स्रोत– संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका- बाबूराम सक्सेना, पेज-514

12. (C)	**13. (D)**	**14. (C)**	**15. (C)**	**16. (B)**	**17. (C)**	**18. (C)**	**19. (B)**	**20. (B)**
21. (C)	**22. (C)**	**23. (C)**						

24. निम्नांकित वाक्यों में कौन शुद्ध है?

(A) अध्ययनं हेतु काश्यां तिष्ठति

(B) अध्ययनं हेतौ काश्यां तिष्ठति

(C) अध्ययनस्य हेतोः काश्यां तिष्ठति

(D) अध्ययनस्य हेतुं काश्यां तिष्ठति

स्रोत– संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज-222

25. उत्तररामचरित में राम किस कोटि के नायक हैं ?

(A) धीरललित (B) धीरोदात्त

(C) धीरप्रशान्त (D) धीरोद्धत

स्रोत– वस्तुनिष्ठ-संस्कृतसाहित्यम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-303

26. 'सत्कार्यवाद' का कारण है -

(A) प्रकृतिस्वरूपज्ञान (B) सामीप्य

(C) समानाभिहार (D) सर्वसम्भवाभाव

स्रोत– सांख्यतत्त्वकौमुदी प्रभा (का० 9)- आद्याप्रसाद मिश्र, पेज-153

27. पुरुष का लक्षण है -

(A) अचेतन (B) विवेकी

(C) प्रसवधर्मी (D) पङ्ग्वन्ध

स्रोत– सांख्यकारिका (का०-11) - राकेश शास्त्री, पेज-38

28. ''न प्रकृतिर्न विकृतिः'' यह कारिकांश किसके लिए प्रयुक्त है ?

(A) अहङ्कार (B) ज्ञानेन्द्रियाँ

(C) कर्मेन्द्रियाँ (D) पुरुष

स्रोत–सांख्यतत्वकौमुदी प्रभा (का०-3)-आद्याप्रसाद मिश्र, पेज-112

29. सांख्य की प्रकृति नहीं है -

(A) अव्यक्त (B) त्रिगुणात्मिका

(C) प्रधान (D) अप्रधान

स्रोत–सांख्यतत्त्वकौमुदी प्रभा (का०-10, 11)-आद्याप्रसाद मिश्र पेज-167-171

30. 'भोक्तृभाव' किसकी सत्ता का परिचायक है ?

(A) प्रकृति (B) पुरुष

(C) अविवेकी (D) प्रबन्ध

स्रोत–सांख्यतत्त्वकौमुदी प्रभा (का०-17)-आद्याप्रसाद मिश्र, पेज-200

31. 'अधिकारिविषयसम्बन्धप्रयोजनानि' किससे सम्बद्ध है ?

(A) विवर्त (B) बन्ध

(C) अनुबन्ध (D) प्रबन्ध

स्रोत– वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव,पेज-9

32. 'सन्ध्यावन्दन' इत्यादि कैसा कर्म है?

(A) नित्य (B) नैमित्तिक

(C) उपासना (D) प्रायश्चित्त

स्रोत– वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-14

33. 'किस पञ्चीकृत पदार्थ में शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध ये पाँचों गुण पाए जाते हैं ?

(A) तेज (B) वायु

(C) जल (D) पृथिवी

स्रोत– वेदान्तसार-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-80

34. ''वस्तुन्यवस्त्वारोपः'' से परिभाषित है -

(A) अपवाद (B) पञ्चीकरण

(C) अध्यारोप (D) जीवन्मुक्ति

स्रोत– वेदान्तसार-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-37

35. वस्तु है -

(A) अज्ञानादिजड़समूह (B) ब्रह्म

(C) त्रिगुणात्मक (D) अनिर्वचनीय

स्रोत– वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-37

36. परार्थानुमान में प्रतिज्ञावाक्य है -

(A) पर्वतो वह्निमान् (B) यो यो धूमवान् स स वह्निमान्

(C) तस्मात्तथा (D) धूमवत्त्वात्

स्रोत– तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पेज-92

37. 'आप्तवाक्य' है -

(A) रूप (B) शब्द

(C) अनुमिति (D) उपमिति

स्रोत– तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पेज-122

24. (C)	**25. (B)**	**26. (D)**	**27. (B)**	**28. (D)**	**29. (D)**	**30. (B)**	**31. (C)**	**32. (A)**
33. (D)	**34. (C)**	**35. (B)**	**36. (A)**	**37. (B)**				

38. 'समवाय' क्या है ?

(A) वाक्यार्थ (B) वाक्य
(C) पदार्थ (D) पद

स्रोत– तर्कसंग्रह – आद्याप्रसाद मिश्र, पेज-18

39. 'विशेष पदार्थ' की वृत्ति है -

(A) नित्य द्रव्य (B) कर्म
(C) अनित्य द्रव्य (D) गुण

स्रोत– तर्कसंग्रह – आद्याप्रसाद मिश्र, पेज-74

40. ''कार्यनियतपूर्ववर्ति'' क्या है ?

(A) कार्य (B) कारण
(C) पदार्थ (D) करण

स्रोत– तर्कसंग्रह – आद्याप्रसाद मिश्र, पेज-42

41. 'अभितः' या 'सर्वतः' के योग में कौन-सी विभक्ति होती है ?

(A) षष्ठी (B) पञ्चमी
(C) तृतीया (D) द्वितीया

स्रोत– संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका – बाबूराम सक्सेना, पेज-186

42. 'द्वादश' पद में समास है -

(A) बहुव्रीहि (B) तत्पुरुष
(C) अव्ययीभाव (D) द्वन्द्व

स्रोत– लघुसिद्धान्तकौमुदी – (भैमी व्याख्या भाग-4), पेज-165

43. 'ध्वनि-परिवर्तन' का आन्तरिक कारण है -

(A) प्रयत्नलाघव (B) बोलने की शीघ्रता
(C) ध्वनियों का प्रवेश (D) बलाघात

स्रोत– भाषाविज्ञान – कर्ण सिंह, पेज-163

44. 'ई' से संकेतित स्वर है -

(A) वर्तुल (B) केन्द्रीय
(C) पश्च (D) अग्र

स्रोत– भाषाविज्ञान – डॉ. कर्ण सिंह, पेज-156

45. पाणिनि के अनुसार बाह्यप्रयत्नों की संख्या है -

(A) 2 (B) 5
(C) 11 (D) 7

स्रोत– लघुसिद्धान्तकौमुदी – श्रीधरानन्द शास्त्री, पेज-20

46. साक्षात्संकेतित अर्थ की बोधिका है -

(A) अभिधा (B) लक्षणा
(C) तात्पर्या (D) व्यञ्जना

स्रोत– साहित्यदर्पण – राजेन्द्र मिश्र, पेज-146

47. ''रूढेः प्रयोजनाद्वासौ लक्षणा शक्तिरर्पिता'' यह कथन है -

(A) विश्वनाथ का (B) आनन्दवर्धन का
(C) मम्मट का (D) पण्डितराज जगन्नाथ का

स्रोत– साहित्यदर्पण – राजेन्द मिश्र, पेज-154

48. 'विपरीतलक्षणा' का दूसरा नाम है -

(A) अजहल्लक्षणा या उपादान लक्षणा
(B) जहल्लक्षणा या लक्षणलक्षणा
(C) जहदजहल्लक्षणा/भागत्यागलक्षणा/भागलक्षणा
(D) गौणीलक्षणा

स्रोत– ------------------------

49. रसानुभव के विषय में अभिव्यक्तिवाद के प्रवर्त्तक हैं -

(A) आनन्दवर्धन (B) अभिनवगुप्त
(C) मम्मट (D) विश्वनाथ

स्रोत– साहित्यदर्पण – डॉ. राजेन्द्र मिश्र, पेज-78

50. 'वीभत्स' का स्थायीभाव है -

(A) रति (B) जुगुप्सा
(C) शोक (D) क्रोध

स्रोत– दशरूपक (चतुर्थ प्रकाश)–डॉ. बैजनाथ पाण्डेय, पेज-450

51. रसशास्त्र में साधारणीकरण के प्रतिपादक हैं -

(A) भट्टनायक (B) शङ्कुक
(C) भट्टलोल्लट (D) अभिनवगुप्त

स्रोत– काव्यप्रकाश– श्रीनिवास शास्त्री, पेज-128

38. (C)	39. (A)	40. (B)	41. (D)	42. (D)	43. (A)	44. (D)	45. (C)	46. (A)
47. (A)	48. (C)	49. (B)	50. (B)	51. (A)				

52. ''शरीरं तावदिष्टार्थ व्यवच्छिन्ना पदावली'' यह परिभाषा किसकी है ?

(A) दण्डी की (B) भामह की

(C) मम्मट की (D) आनन्दवर्धन की

स्रोत– काव्यादर्श - (1/10) – रामचन्द्र मिश्र, पेज-09

53. ''विरतास्वभिधाद्यासु ययार्थो बोध्यते परः'' यह किस वृत्ति का लक्षण है ?

(A) तात्पर्या (B) अभिधा

(C) लक्षणा (D) व्यञ्जना

स्रोत– साहित्यदर्पण (2/12) – शालिग्राम शास्त्री, पेज-39

54. 'महाकाव्य' में कम से कम कितने सर्ग होने चाहिए ?

(A) 28 (B) 35

(C) 8 (D) 12

स्रोत– साहित्यदर्पण (6/320) - शालिग्राम शास्त्री, पेज-225

55. नाटक में कम से कम व अधिक से अधिक कितने अङ्क होने चाहिए ?

(A) 5-10 (B) 4-7

(C) 5-7 (D) 7-10

स्रोत– उत्तररामचरितम् – कपिलदेव द्विवेदी (परिशिष्ट-2), पेज-508

56. ''स्त्रीणामशिक्षित-पटुत्वममानुषीषु'' इस उक्ति से युक्त नाटक है?

(A) ऊरुभङ्गम् (B) मालविकाग्निमित्रम्

(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (D) विक्रमाङ्कचरितम्

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (5/22)–कपिलदेव द्विवेदी, पेज-287

57. ''अतः परीक्ष्य कर्तव्यं विशेषात् संगतं रहः'' अभिज्ञानशाकुन्तलम् में यह उक्ति किसकी है ?

(A) कण्व की (B) मारीच की

(C) दुष्यन्त की (D) शार्ङ्गरव की

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (5/24)–कपिलदेव द्विवेदी, पेज-291

58. स्त्रियो हि नाम खल्वेता निसर्गादेव पण्डिताः ।
पुरुषाणां तु पाण्डित्यं शास्त्रैरेवोपदिश्यते ॥
प्रस्तुत श्लोक किस पुस्तक से उद्धृत है ?

(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (B) मृच्छकटिकम्

(C) वेणीसंहारम् (D) शिशुपालवधम्

स्रोत–मृच्छकटिकम् (4/19)–आचार्य जगदीशचन्द्र मिश्र, पेज-200

59. लघुत्रयी के अन्तर्गत कौन-कौन से ग्रन्थ आते हैं ?

(A) किरातार्जुनीयम्, शिशुपालवधम्, नैषधीयचरितम्

(B) मृच्छकटिकम्, मेघदूतम्, शिशुपालवधम्

(C) रघुवंशम्, कुमारसम्भवम्, किरातार्जुनीयम्

(D) रघुवंशम्, मेघदूतम्, कुमारसम्भवम्

स्रोत– मेघदूत–शेषराज शर्मा रेग्मी, पेज भू.-19

60. रैवतक पर्वत का वर्णन किस काव्य में है ?

(A) उत्तररामचरितम् (B) कुमारसम्भवम्

(C) शिशुपालवधम् (D) दशकुमारचरितम्

स्रोत– शिशुपालवधम् (सर्ग-4) - हरगोविन्द शास्त्री, पेज-173

61. 'नलचम्पू' के रचयिता हैं -

(A) कल्हण (B) विशाखदत्त

(C) क्षेमेन्द्र (D) त्रिविक्रमभट्ट

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास–कपिलदेव द्विवेदी, पेज-602

62. नलचम्पू में किस रस की प्रधानता है ?

(A) श्रृंगार (B) वीर

(C) रौद्र (D) शान्त

स्रोत– नलचम्पू – तारिणीश झा, पेज-26

63. ''त्रिभुवनप्रसवभूमिरिव विस्तीर्णा'' विशेषता किसके लिए प्रयुक्त है ?

(A) विदिशा (B) उज्जयिनी

(C) विन्ध्याटवी (D) हेमकूट

स्रोत– कादम्बरी-कथामुखम् – तारिणीश झा, पेज-44

52. (A) 53. (D) 54. (C) 55. (A) 56. (C) 57. (D) 58. (B) 59. (D) 60. (C) 61. (D) 62. (A) 63. (A)

64. ''नवसर्गगते माघे नव शब्दो न विद्यते'' यह उक्ति किस ग्रन्थ के लिए प्रचलित है ?

(A) मेघदूतम् (B) शिशुपालवधम्
(C) कुमारसम्भवम् (D) जानकीहरणम्

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास–कपिलदेव द्विवेदी, पेज-203-4

65. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के किस अङ्क में 'विष्कम्भक' समाप्त होता है ?

(A) द्वितीय (B) प्रथम
(C) चतुर्थ (D) पञ्चम

स्रोत– अभिज्ञानशाकुन्तलम्– कपिलदेव द्विवेदी पेज-190

66. ''श्रद्धा वित्तं विधिश्चेति त्रितयं तत्समागतम्'' किस नाटक का श्लोक है?

(A) मुद्राराक्षसम् (B) उत्तररामचरितम्
(C) विक्रमोर्वशीयम् (D) अभिज्ञानशाकुन्तलम्

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (7/29)–कपिलदेव द्विवेदी, पेज-441

67. ''आप्तवाक्यं शब्दः'' किस दर्शन से सम्बन्धित है ?

(A) जैन (B) बौद्ध
(C) मीमांसा (D) न्याय

स्रोत– तर्कभाषा – श्रीनिवास शास्त्री, पेज-122

68. मन किस प्रकार की इन्द्रिय है ?

(A) कर्मेन्द्रिय (B) ज्ञानेन्द्रिय
(C) उभयात्मक (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–सांख्यतत्त्वकौमुदी प्रभा (का0-27)-आद्याप्रसाद मिश्र, पेज-231

69. 'साहित्यदर्पण' के अनुसार काव्य में रस की स्थिति है–

(A) शरीर जैसी (B) आत्मा जैसी
(C) अवयव संस्थान जैसी (D) अलंकरण जैसी

स्रोत– साहित्यदर्पण – कमलादेवी, पेज-57

70. अभिहितान्वयवाद मत है -

(A) आनन्दवर्धन का (B) प्रभाकरगुरु का
(C) मीमांसक कुमारिलभट्ट का (D) मम्मट का

स्रोत– काव्यप्रकाश (द्वितीय उल्लास) श्रीनिवास शास्त्री, पेज-34

71. 'साहित्यदर्पण' के प्रथम परिच्छेद का नाम है -

(A) काव्यदोष निरूपण (B) काव्यस्वरूप निरूपण
(C) काव्यप्रयोजन निरूपण (D) काव्यलक्षण निरूपण

स्रोत– साहित्यदर्पण – डॉ. कमलादेवी, पेज- 72

72. 'पाणिपादम्' में समास है -

(A) इतरेतर द्वन्द्व (B) समाहार द्वन्द्व
(C) एकशेष द्वन्द्व (D) अलुक् तत्पुरुष

स्रोत– संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका–बाबूराम सक्सेना, पेज- 259

73. नाट्यशास्त्र में 'नान्दी' से अभिप्रेत है -

(A) नान्दी देवता (B) बैल
(C) मंगलाचरण (D) पात्र

स्रोत– अभिज्ञानशाकुन्तलम् – कपिलदेव द्विवेदी, पेज-5

74. निम्नलिखित में कौन-सा वाक्य शुद्ध है ?

(A) अध्ययनात् पराजयते
(B) अध्ययनाम् पराजयते
(C) अध्ययनः पराजयते
(D) अध्ययनस्य पराजयते

स्रोत– 'पराजेरसोढः' अष्टाध्यायी (1/4/26)

75. 'मृच्छकटिकम्' का विदूषक है -

(A) माधव्य (B) मैत्रेय
(C) माणवक (D) गौतम

स्रोत– मृच्छकटिकम् – जगदीशचन्द्र मिश्र, भूमिका पेज-31

76. 'चन्द्रशेखरः' में कौन सा समास है ?

(A) तत्पुरुष (B) बहुव्रीहि
(C) द्विगु (D) कर्मधारय

स्रोत– संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका- बाबूराम सक्सेना, पेज-263

77. 'चित्रगुः' का विग्रह वाक्य है -

(A) चित्रा चासौ गौः (B) चित्रा गावो यस्य सः
(C) चित्राणां गवां समाहारः (D) चित्रायाः गौः

स्रोत– संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका- बाबूराम सक्सेना, पेज-265

64. (B)	**65. (C)**	**66. (D)**	**67. (D)**	**68. (C)**	**69. (B)**	**70. (C)**	**71. (B)**	**72. (B)**
73. (C)	**74. (A)**	**75. (B)**	**76. (B)**	**77. (B)**				

78. 'क्षिप्तः' में कौन-सा प्रत्यय है ?

(A) क्तवतु (B) शतृ
(C) तुमुन् (D) क्त

स्रोत– रचनानुवादकौमुदी – कपिलदेव द्विवेदी, पेज-201

79. ''विचार जब ध्वन्यात्मक होकर होठों पर प्रकट होती है तो वह भाषा कहलाती है।'' यह किसका विचार है?

(A) डॉ. मङ्गलदेव शास्त्री का
(B) डॉ. भोलाशंकर व्यास का
(C) पतञ्जलि का (D) प्लेटो का

स्रोत– भाषाविज्ञान - भोलानाथ तिवारी पेज-2

80. 'दर्शनम्' में कौन-सा प्रत्यय है ?

(A) ल्युट् (B) अनीयर्
(C) घञ् (D) ण्वुल्

स्रोत– रचनानुवादकौमुदी – कपिलदेव द्विवेदी, पेज-210

81. सांख्यकारिका के कारिकाकार हैं -

(A) कपिल (B) कणाद
(C) गौतम (D) ईश्वरकृष्ण

स्रोत– सांख्यतत्त्वकौमुदीप्रभा- आद्याप्रसाद मिश्र, पेज-47

82. 'यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः' श्लोकांश श्रीमद्भगवद्गीता के किस अध्याय से सम्बन्ध है?

(A) द्वितीय (B) पञ्चम
(C) षोडश (D) अष्टादश

स्रोत– श्रीमद्भगवद्गीता (18/78)

83. 'वर्णानामतिशयितः सन्निधिः' क्या है ?

(A) प्रातिपदिक (B) पद
(C) पररूप (D) संहिता

स्रोत– लघुसिद्धान्तकौमुदी– धरानन्द शास्त्री, पेज-25

84. 'प्रमाता' किसे कहा जाता है ?

(A) प्रयोजन को (B) विषय को
(C) सम्बन्ध को (D) अधिकारी को

स्रोत– वेदान्तसार-सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-11

85. ज्योतिष्टोमादि कौन-सा कर्म है?

(A) प्रायश्चित्त (B) काम्य
(C) निषिद्ध (D) नित्य

स्रोत– वेदान्तसार – प्रो. सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-14

86. 'तर्कभाषा' के लेखक कौन हैं?

(A) सदानन्द (B) केशवमिश्र
(C) ईश्वरकृष्ण (D) रामकृष्ण

स्रोत– तर्कभाषा– श्रीनिवास शास्त्री, पेज-1

87. सत्य कथन का चयन करें –

(A) दुष्यन्त-शकुन्तला का विवाह गान्धर्व था
(B) दुष्यन्त-शकुन्तला का विवाह दैव था
(C) दुष्यन्त-शकुन्तला का विवाह प्राजापत्य था
(D) दुष्यन्त-शकुन्तला का विवाह पैशाची था

स्रोत– अभिज्ञानशाकुन्तलम्- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-180

88. सूची - I एवं सूची - II को सुमेलित कीजिए तथा दिये गये कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए :

सूची – I	सूची - II
(अ) वीर	(i) रति
(ब) हास्य	(ii) शोक
(स) करुण	(iii) हास
(द) शृंगार	(iv) उत्साह

कूट :

	अ	ब	स	द
(A)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(B)	(iii)	(iv)	(ii)	(i)
(C)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)
(D)	(i)	(ii)	(iv)	(iii)

स्रोत– साहित्यदर्पण – डॉ. कमलादेवी, पेज-29

89. रैवतक पर्वत का वर्णन है

(A) कादम्बरी में (B) शिशुपालवधम् में
(C) किरातार्जुनीयम् में (D) कुमारसम्भवम् में

स्रोत– शिशुपालवधम् (चतुर्थ सर्ग)-हरगोविन्द शास्त्री, पेज-173

78. (D)	**79. (D)**	**80. (A)**	**81. (D)**	**82. (D)**	**83. (D)**	**84. (D)**	**85. (B)**	**86. (B)**
87. (A)	**88. (C)**	**89. (B)**						

90. महाकाव्य की कथावस्तु होती है

(A) कविकल्पित (B) मिश्रित
(C) इतिहासप्रसिद्ध (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत– साहित्यदर्पण (6/318) – शालिग्राम शास्त्री, पेज-225

91. रस की अवस्था को प्राप्त भाव अर्थात् स्थायीभाव कितने हैं?

(A) सात (B) आठ
(C) नौ (D) दस

स्रोत– साहित्यदर्पण – कमलादेवी, पेज-29

92. कादम्बरी क्या है?

(A) आख्यायिका (B) कथा
(C) नाटक (D) भाण

कादम्बरी-कथामुखम् (श्लोक-20) – तारिणीश झा, पेज-24

93. मुख्यतः कादम्बरी की शैली है

(A) वैदर्भी (B) गौड़ी
(C) पाञ्चाली (D) इनमें से सभी

स्रोत– कादम्बरी-कथामुखम् – तारिणीश झा, पेज-49

94. 'भवानि' में लकार है

(A) लट् (B) लोट्
(C) लङ् (D) विधिलिङ्

स्रोत– रचनानुवादकौमुदी– कपिलदेव द्विवेदी, पेज-145

95. कौन चारुदत्त के घर में सेंध लगाकर वसन्तसेना के गहने चुरा लेता है?

(A) शर्विलक (B) संवाहक
(C) दर्दुरक (D) मदनिका

स्रोत– मृच्छकटिकम्- जगदीशचन्द्र मिश्र, पेज-29-31

96. ''रसोइया चावलों से भात पकाता है'' का संस्कृत रूपान्तर है-

(A) पाचकः तण्डुलान् ओदनं पचति
(B) पाचकः तण्डुलेन ओदनं पचसि
(C) पाचकः तण्डुलात् ओदनानि पचति
(D) पाचकः तण्डुलं ओदनं पचथः

स्रोत– सिद्धान्तकौमुदी (कारक–प्रकरण) राममुनि पाण्डेय, पेज-19

97. चारुदत्त किस श्रेणी के नायक हैं?

(A) धीरोदात्त (B) धीरोद्धत
(C) धीरप्रशान्त (D) धीरललित

स्रोत– मृच्छकटिकम्- जगदीशचन्द्र मिश्र, पेज-14

98. वेदान्तानुसार मन का स्वरूप है

(A) अभिमान (B) संकल्प-विकल्प
(C) अनुसन्धान (D) निश्चय

स्रोत– वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-66

99. खण्डकाव्य है–

(A) दशकुमारचरित (B) नलचम्पू
(C) मेघदूत (D) किरातार्जुनीयम्

स्रोत– मेघदूतम् – दयाशङ्कर शास्त्री, पेज-32

100. वेदान्त का एक अनुबन्ध है-

(A) अधिकारी (B) अद्वैत
(C) ब्रह्म (D) ज्ञान

स्रोत– वेदान्तसार – सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज-9

101. पट का समवायिकारण है-

(A) तन्तु (B) तन्तुवाय
(C) तन्तुसंयोग (D) तन्तुत्व

स्रोत– तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज- 28

102. महाभारत पर आधारित महाकाव्य है-

(A) कुमारसम्भव (B) रघुवंश
(C) रावणवध (D) शिशुपालवध

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-263

103. महाकाव्य में न्यूनतम सर्ग होने चाहिए-

(A) दस (B) आठ
(C) बारह (D) चौदह

स्रोत– साहित्यदर्पण (6/320) - शालिग्राम शास्त्री, पेज-225

104. उत्तररामचरित का प्रधानरस है-

(A) श्रृंगार (B) शान्त
(C) करुण (D) वीर

स्रोत– उत्तररामचरितम् – कपिलदेव द्विवेदी, पेज-86

90. (C) 91. (B) 92. (B) 93. (C) 94. (B) 95. (A) 96. (A) 97. (C) 98. (B) 99. (C) 100. (A) 101. (A) 102. (D) 103. (B) 104. (C)

105. बृहत्त्रयी के अन्तर्गत नहीं है-

(A) किरातार्जुनीयम् (B) शिशुपालवधम्
(C) रघुवंशम् (D) नैषधीयचरितम्

स्रोत– संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज-208

106. पदलालित्य के लिए प्रसिद्ध हैं-

(A) कालिदास (B) दण्डी
(C) भारवि (D) माघ

स्रोत– संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-477

107. अगले सर्ग की कथावस्तु कहाँ सूचित की जाती है?

(A) सर्गारम्भ में (B) सर्ग के मध्य में
(C) सर्गान्त में (D) कहीं भी

स्रोत– साहित्यदर्पण (6/321)- शालिग्राम शास्त्री, पेज-225

108. शृंगाररस का स्थायीभाव है-

(A) रति (B) हास
(C) शोक (D) क्रोध

स्रोत– साहित्यदर्पण - कमला देवी, पेज-29

109. 'नवसर्गगते .... नवशब्दो न विद्यते' उक्ति है-

(A) कालिदास के विषय में (B) श्रीहर्ष के विषय में
(C) माघ के विषय में (D) भारवि के विषय में

स्रोत– संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास–कपिलदेव द्विवेदी, पेज- 204

110. आचार्य मम्मट ने काव्य के कुल कितने प्रयोजन बताये हैं?

(A) छह (B) पाँच
(C) सात (D) आठ

स्रोत– काव्यप्रकाश (1/2) – आचार्य विश्वेश्वर, पेज-10

111. 'अनाघ्रातं पुष्पं किसलयमलूनं कररुहैः' वचन किसके सम्बन्ध में है?

(A) प्रियंवदा के (B) शकुन्तला के
(C) गौतमी के (D) अनसूया के

स्रोत– अभिज्ञानशाकुन्तलम् (2/10)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-115

112. साहित्यजगत् को किसका उच्छिष्ट कहा जाता है?

(A) बाणभट्ट (B) श्रीहर्ष
(C) दण्डी (D) सुबन्धु

स्रोत– संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-499

113. आचार्य दण्डी की कृति है-

(A) काव्यादर्श (B) दशकुमारचरित
(C) अवन्तिसुन्दरी कथा (D) इनमें से सभी

स्रोत– संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-466

114. 'उदिते नैषधे काव्ये क्व माघः क्व च भारविः' – यहाँ 'नैषधे' पद किस महाकवि की ओर संकेत करता है?

(A) भारवि (B) माघ
(C) श्रीहर्ष (D) अम्बिकादत्तव्यास

स्रोत– संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-226

115. विद्वानों के लिए औषधि है-

(A) माघकाव्य (B) किरात
(C) मेघदूत (D) नैषध

स्रोत– संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास–कपिलदेव द्विवेदी, पेज-234

116. 'नाट्यशास्त्र' को कहा गया है-

(A) चतुर्थवेद (B) पञ्चमवेद
(C) वेदत्रयी (D) संहिता

स्रोत– संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-265

117. नान्दी प्रयुक्त होता है-

(A) काव्य में (B) चम्पूकाव्य में
(C) गद्यकाव्य में (D) नाटक में

स्रोत– अभिज्ञानशाकुन्तलम् – कपिलदेव द्विवेदी, पेज-460

118. स्वर की विषमता होने पर भी जो शब्द साम्य होता है, वह अलंकार है-

(A) अनुप्रास (B) यमक
(C) रूपक (D) उत्प्रेक्षा

स्रोत– काव्यप्रकाश – आचार्य विश्वेश्वर, पेज-404

105. (C) 106. (B) 107. (C) 108. (A) 109. (C) 110. (A) 111. (B) 112. (A) 113. (D)
114. (C) 115. (D) 116. (B) 117. (D) 118. (A)

119. जहाँ उपमेय में उपमान की सम्भावना होती है, वह अलंकार है-

(A) उपमा (B) उत्प्रेक्षा
(C) रूपक (D) निदर्शना

स्रोत– काव्यप्रकाश – श्रीनिवास शास्त्री, पेज- 487

120. विश्व साहित्य के इतिहास में सबसे बड़ा महाकाव्य है –

(A) रामायण (B) महाभारत
(C) शिशुपालवध (D) श्रीमद्भगवद्गीता

स्रोत– संस्कृत साहित्य का इतिहास– उमाशङ्करशर्मा 'ऋषि', पेज-145

121. नलचम्पू कितने उच्छ्वासों में वर्णित है ?

(A) सात (B) आठ
(C) पाँच (D) छह

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-604

122. सूची - I एवं सूची - II को सुमेलित कीजिए तथा दिये गये कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए -

सूची – I	सूची - II
(अ) पादेन खञ्जः	(i) द्वितीया
(ब) गुरवे नमः	(ii) पञ्चमी
(स) चौरात् बिभेति	(iii) चतुर्थी
(द) बलिं याचते वसुधाम्	(iv) तृतीया

कूट :

	अ	ब	स	द
(A)	(i)	(ii)	(iv)	(iii)
(B)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)
(C)	(iii)	(iv)	(i)	(ii)
(D)	(ii)	(iv)	(iii)	(i)

स्रोत–(A) येनाङ्गविकारः (2/3/20) (B) नमःस्वति0 (2/3/16) (C) भीत्रार्थानां0 (1/4/25) (D) अकथितं च (1/4/51) अष्टाध्यायी - ईश्वरचन्द्र

123. 'सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यं' किस नाटक से उद्धृत है?

(A) उत्तररामचरितम्
(B) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(C) मालविकाग्निमित्रम्
(D) विक्रमोर्वशीयम्

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/20)- कपिलदेव द्विवेदी, पेज-46

124. सूची - I एवं सूची - II को सुमेलित कीजिए तथा दिये गये कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए –

सूची – I	सूची - II
(अ) किरातार्जुनीयम्	(i) श्रीकृष्ण
(ब) शिशुपालवधम्	(ii) अर्जुन
(स) वेणीसंहारम्	(iii) दुष्यन्त
(द) अभिज्ञानशाकुन्तलम्	(iv) भीम

	अ	ब	स	द
(A)	(iii)	(ii)	(iv)	(i)
(B)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(C)	(ii)	(i)	(iv)	(iii)
(D)	(iii)	(ii)	(i)	(iv)

स्रोत– संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-298

125. 'अर्थगौरव' के लिए कौन कवि प्रसिद्ध हैं ?

(A) कालिदास
(B) भास
(C) भारवि
(D) माघ

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-193

॥ कार्यं वा साधयेयं देहं वा पातयेयम् ॥

119. (B) 120. (B) 121. (A) 122. (B) 123. (B) 124. (C) 125. (C)

6 प्रवक्ता चयन परीक्षा (PGT) संस्कृत 2005

परीक्षा तिथि
03 सितम्बरी 2006

1. ''मनस्तु साधुध्वनिभिः पदे पदे, हरन्ति सन्तो मणिनूपुरा इव''–
पंक्तियाँ किस ग्रन्थ से उद्धृत हैं?
(A) नीतिशतक (B) मेघदूत
(C) कादम्बरी (D) शिशुपालवध

स्रोत–कादम्बरीकथामुखम् (श्लोक-6) - तारिणीश झा, पेज–8

2. 'विन्ध्यवनभूमिरिव वेत्रलतावती' निम्नांकित में से किसका विशेषण है?
(A) प्रतिहारी (B) चाण्डालकन्या
(C) महाश्वेता (D) कुलदेवी

स्रोत–कादम्बरीकथामुखम् - अभिराजराजेन्द्रमिश्र, पेज–40

3. शिशुपालवधम् के प्रथमसर्ग का प्रधान छन्द है –
(A) वसन्ततिलका (B) इन्द्रवज्रा
(C) उपजाति (D) वंशस्थ

स्रोत–शिशुपालवधम् (प्रथम सर्ग) - तारिणीश झा, पेज–05

4. ''श्रियः पतिः श्रीमति शासितुं जगत्'' में 'श्रीमति' शब्द निम्नांकित में से किसका विशेषण है?
(A) लक्ष्मी (B) नारद
(C) वसुदेव का घर (D) क्षीरसागर

स्रोत–शिशुपालवधम् (1/1) - तारिणीश झा, पेज–4

5. ''सती च योषित्प्रकृतिः सुनिश्चला पुमांसमभ्येति भवान्तरेष्वपि'' पंक्ति किस ग्रन्थ से उद्धृत है?
(A) शिशुपालवधम् (B) शिवराजविजयम्
(C) मनुस्मृति (D) कुमारसम्भवम्

स्रोत–शिशुपालवधम् (1/72) - तारिणीश झा, पेज–149

6. 'येनाङ्गविकारः' एवं 'इत्थम्भूतलक्षणे' सूत्रों से विभक्ति होती है –
(A) द्वितीया (B) द्वितीया एवं तृतीया
(C) तृतीया (D) तृतीया एवं पञ्चमी

स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना, पेज–197, 199

7. 'दाक्षी' में स्त्री प्रत्यय है –
(A) ङीष् (B) ङीन्
(C) टाप् (D) ऊङ्

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (4.1.65) - गोविन्दाचार्य, पेज–1174

8. कादम्बरी में किस रीति का प्रयोग हुआ है?
(A) वैदर्भी रीति (B) गौड़ी रीति
(C) लाटी रीति (D) पाञ्चाली रीति

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–496

9. 'वयसि प्रथमे' सूत्र से विहित प्रत्यय है –
(A) ङीष् (B) टाप्
(C) ङीप् (D) ङीन्

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (4.1.20) - गोविन्दाचार्य, पेज–1160

10. 'अवेस्ता' भाषा है :
(A) ईरानी (B) भारतीय
(C) ग्रीक (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

स्रोत–भाषाविज्ञान - कर्ण सिंह, पेज–89

11. भाषा के 'धातु सिद्धान्त' के समर्थक हैं –
(A) रूसो (B) मैक्समूलर
(C) हारडर (D) अरस्तू

स्रोत–भाषाविज्ञान - कर्ण सिंह, पेज–30-31

12. कर्मवाच्य सम्भव है –
(A) सकर्मक अकर्मक में
(B) केवल सकर्मक में
(C) केवल अकर्मक में
(D) उपर्युक्त सभी में

स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–441

13. यास्क का सम्बन्ध है :
(A) निरुक्त से (B) प्रातिशाख्य से
(C) महाभाष्य से (D) प्राचीन व्याकरण से

स्रोत–हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव द्विवेदी, पेज भू.–23

1. (C) 2. (A) 3. (D) 4. (C) 5. (A) 6. (C) 7. (A) 8. (D) 9. (C) 10. (A) 11. (B) 12. (B) 13. (A)

14. 'नक्षत्रवाची' शब्द काल विशेष को प्रकट करता है तो विभक्ति होती है –

(A) चतुर्थी - पञ्चमी (B) प्रथमा - द्वितीया
(C) द्वितीया - तृतीया (D) तृतीया - सप्तमी

स्रोत–कारकप्रकरण (2.3.45) - राममुनि पाण्डेय, पेज–100

15. 'पञ्चगङ्गम्' में कौन सा समास है?

(A) अव्ययीभाव (B) द्विगु
(C) कर्मधारय (D) बहुव्रीहि

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या भाग-4) पेज–42

16. 'सप्तर्षयः' में समास है –

(A) तत्पुरुष (B) बहुव्रीहि
(C) द्विगु (D) कर्मधारय

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (2.1.50) - गोविन्दाचार्य, पेज–925

17. 'शिशुपालवधम्' का मूलस्रोत है महाभारत का :

(A) आदिपर्व (B) शान्तिपर्व
(C) सभापर्व (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–शिशुपालवधम् - तारिणीश झा, पेज भू.–17

18. एक प्रसिद्ध नाटक में मधुकरिका कौन है?

(A) मेनका की सखी
(B) दुष्यन्त की परिचारिका
(C) मारीच के आश्रम की तपस्विनी
(D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज भू.–100

19. चारुदत्त के पुत्र का क्या नाम है?

(A) शूरसेन (B) आर्यक
(C) रोहसेन (D) रेभिल

स्रोत–मृच्छकटिकम् - श्रीनिवास शास्त्री, पेज भू.–19

20. ''किं कवेस्तेन काव्येन किं काण्डेन धनुष्मतः। परस्य हृदये लग्नं न घूर्णयति यच्छिरः॥'' यह पद्य वाक्य उद्धृत है –

(A) उत्तररामचरितम् से (B) नीतिशतकम् से
(C) नलचम्पूः से (D) वेणीसंहारम् से

स्रोत–नलचम्पू (1/5) - तारिणीश झा, पेज–6

21. कादम्बरी का प्रमुख पात्र है?

(A) चन्द्रापीड (B) चाण्डालकन्या
(C) कादम्बरी (D) शुकनास

स्रोत–कादम्बरीकथामुखम् - तारिणीश झा, पेज भू.–53

22. 'धूता' किस कृति से सम्बन्धित है?

(A) किरातार्जुनीयम् (B) वेणीसंहारम्
(C) मृच्छकटिकम् (D) नागानन्दम्

स्रोत–मृच्छकटिकम् - श्रीनिवास शास्त्री, पेज–18

23. नीचे दो पृथक् तालिकायें दी गयी हैं, इनकी सहायता से सही सुमेलित विकल्प चुनें –

तालिका-I	तालिका-II
(क) असाधारणधर्मवचनम्	(i) करणम्
(ख) साधकतमम्	(ii) समवायिकारणम्
(ग) अनन्यथासिद्धपश्चाद्भावित्वम्	(iii) कार्यत्वम्
(घ) यत्समवेतं कार्यमुत्पद्यते	(iv) लक्षणम्

	क	ख	ग	घ
(A)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(B)	(iv)	(i)	(iii)	(ii)
(C)	(iv)	(ii)	(iii)	(i)
(D)	(i)	(iii)	(iv)	(ii)

स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज–7, 17, 20, 33

24. 'सत्त्वगुण' होता है –

(A) भारी (B) चञ्चल
(C) लघु, प्रकाशक (D) उपष्टम्भक

स्रोत–सांख्यकारिका (का0-13) - राकेश शास्त्री, पेज–45

25. सांख्यदर्शन के अनुसार सृष्टि का निर्माण कितने तत्त्वों से हुआ है?

(A) 25 तत्त्वों से (B) 23 तत्त्वों से
(C) 24 तत्त्वों से (D) 5 तत्त्वों से

स्रोत–सांख्यकारिका (का0-3) - राकेश शास्त्री, पेज–8

26. सांख्यदर्शन के प्रवर्त्तक हैं?

(A) भारद्वाज मुनि (B) कपिल मुनि
(C) बादरायण मुनि (D) भौमिक मुनि

स्रोत–सांख्यकारिका - राकेश शास्त्री, पेज भू.–19

14. (D)	**15. (A)**	**16. (A)**	**17. (C)**	**18. (B)**	**19. (C)**	**20. (C)**	**21. (A)**	**22. (C)**
23. (B)	**24. (C)**	**25. (A)**	**26. (B)**					

27. निम्नांकित तालिका-1 में तर्कभाषा के अनुसार कुछ सम्प्रत्यय एवं तालिका-2 में उनके भेद अंकित हैं। उनकी सहायता से सही सुमेलित विकल्प चुनें –

तालिका-1	तालिका-2
(क) प्रमेय	(i) 3
(ख) अवयव	(ii) 16
(ग) पदार्थ	(iii) 5
(घ) कारण	(iv) 12

	क	ख	ग	घ
(A)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)
(B)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(C)	(iii)	(iv)	(ii)	(i)
(D)	(iv)	(ii)	(iii)	(i)

स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज–24, 92, 267, 175

28. निम्नांकित तालिका-1 में सांख्यकरिका के अनुसार कुछ सम्प्रत्यय एवं तालिका-2 में उनके भेद अंकित हैं। उनकी सहायता से सही सुमेलित विकल्प चुनें –

तालिका-1	तालिका-2
(क) प्रकृतिः	(i) अनेकः
(ख) प्रकृति-विकृतिः	(ii) षोडश
(ग) विकृतिः	(iii) एकः
(घ) न प्रकृतिः, न विकृतिः	(iv) सप्त

	क	ख	ग	घ
(A)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(B)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)
(C)	(iii)	(iv)	(ii)	(i)
(D)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)

स्रोत–सांख्यकारिका (का0-3) - राकेश शास्त्री, पेज–8

29. रिक्तस्थानों की पूर्ति के लिए निम्नांकित चार विकल्पों में से कौन-सा विकल्प उपयुक्त है?

(क)............ लघु प्रकाशकम्

(ख) गुरु वरणकम् ....

(ग)................ अर्थतो वृत्तिः

(घ) उपष्टम्भकं चलञ्च..............

(A) प्रतीपवत्, सत्वम्, तमः, रजः

(B) सत्वम्, तमः, प्रदीपवत्, रजः

(C) तमः, रजः, सत्वम्, प्रदीपवत्

(D) रजः, तमः, सत्वम्, प्रदीपवत्

स्रोत–सांख्यकारिका (का0-13) - राकेश शास्त्री, पेज–45

30. ''अचेतनं नाम गुणं न लक्षयेत्''–यह पंक्ति किसने किससे कही?

(A) दुष्यन्त ने धीवर से

(B) विदूषक ने दुष्यन्त से

(C) धीवर ने मन में

(D) दुष्यन्त ने अँगूठी से

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (6/13)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–350

31. .... षड्भागमक्षय्यं ददत्यारण्यका हि नः॥ उपर्युक्त रिक्तस्थान की पूर्ति के लिए कौन-सा विकल्प उपयुक्त है?

(A) यशः (B) तपः

(C) मनः (D) धनम्

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (2/13)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–120

32. 'सर्वथा चक्रवर्तिनं पुत्रमाप्नुहि' से क्या निर्दिष्ट है?

(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् के कथानक का प्रयोजन

(B) कालिदास को पुत्रप्राप्ति

(C) कुमारकार्तिकेय का जन्म

(D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–28

33. नाटक में 'प्रवेशक' का प्रयोग होता है –

(A) प्रारम्भ में

(B) अन्त में

(C) दो अंकों के मध्य में

(D) चार अंकों के मध्य में

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–463

34. निम्नलिखित में से कौन 'कञ्चुकी' की विशेषता नहीं है?

(A) अन्तःपुर में जाने वाला वृद्ध

(B) गुणवान् ब्राह्मण

(C) सब कार्यों को करने में कुशल

(D) राजा का विश्वस्त मित्र

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–461

27. (A) 28. (C) 29. (B) 30. (D) 31. (B) 32. (A) 33. (C) 34. (D)

35. 'मृगनयना' में त्रिलुप्ता उपमा दिखलाने के लिए निम्नलिखित विग्रहों में से कौन उपयुक्त है?

(A) मृगस्य नयना

(B) मृगीव नयना चञ्चला

(C) मृगस्य नयने इव चञ्चले नयने यस्याः सा

(D) मृगस्य नयने इव नयने यस्याः सा

स्रोत–काव्यप्रकाश (दशम उल्लास)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज–457

36. शब्दपरिवृत्ति असहिष्णुत्व प्राप्त होता है –

(A) अर्थालङ्कार में

(B) शाब्दीव्यञ्जना में

(C) शब्दालङ्कार में

(D) उपर्युक्त B एवं C दोनों में

स्रोत–काव्यप्रकाश (नवम उल्लास)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज–400

37. ''शरीरभाजां भवदीयदर्शनं, व्यनक्ति कालत्रितयेऽपि योग्यताम्'' सूक्ति उद्धृत है –

(A) कादम्बरी से

(B) शिशुपालवधम् से

(C) हर्षचरितम् से

(D) उपर्युक्त में से किसी से भी नहीं

स्रोत–शिशुपालवधम् (1/26) - तारिणीश झा, पेज–57

38. ''सुरभिं सुरभिं सुमनोहरैः'' में कौन-सा अलंकार है?

(A) श्लेष (B) यमक

(C) उपमा (D) भ्रान्तिमान्

स्रोत–छन्दोलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज–60

39. 'प्रतिभा', 'व्युत्पत्ति' और 'अभ्यास' में सर्वमान्य हेतु है :

(A) प्रतिभा (B) व्युत्पत्ति

(C) अभ्यास (D) उपर्युक्त में से कोई भी नहीं

स्रोत–काव्यप्रकाश (1/3) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–16

40. ''प्रतिकूलतानुपगते हि विधौ, विफलत्वमेति बहुसाधनता'' में अलङ्कार है –

(A) श्लेष (B) अनुप्रास

(C) उपमा (D) उत्प्रेक्षा

स्रोत–शिशुपालवधम् (9/6) - हरगोविन्द शास्त्री, पेज–386

41. 'काव्यप्रकाश' के नवम उल्लास का नाम है –

(A) शब्दालङ्कारनिर्णयात्मकः

(B) काव्यस्य प्रयोजन-कारण-स्वरूप-निर्णयात्मकः

(C) शब्दार्थस्वरूप-निर्णयात्मकः

(D) गुणीभूतव्यङ्ग्यनिरूपणात्मकः

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–439

42. 'तददोषौ शब्दार्थौ' में विशेष्य पद क्या है?

(A) तद्

(B) अदोषौ

(C) शब्दार्थौ

(D) उपर्युक्त सभी

स्रोत–काव्यप्रकाश - डॉ0 श्रीनिवास शास्त्री, पेज–20

43. 'अन्विताभिधानवाद' मत है –

(A) आनन्दवर्धन का

(B) प्रभाकरगुरु का

(C) कुमारिलभट्ट का

(D) मम्मट का

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–37

44. निम्नाङ्कित रिक्तस्थान की पूर्ति के लिए कौन-सा विकल्प उपयुक्त है?

'प्रतिपुरुषविमोक्षार्थम् ....

(A) स्वार्थम् इव परार्थम् आरम्भः

(B) परार्थ इव स्वार्थ आरब्धः

(C) स्वार्थ इव परार्थ आरम्भः

(D) आरब्धः स्वार्थ इव परार्थः

स्रोत–सांख्यकारिका (का0-56) - राकेश शास्त्री, पेज–156

45. इनमें से कौन-सा सम्बन्धत्रय में नहीं आता?

(A) समानाधिकरणम्

(B) विशेषणविशेष्यभावः

(C) लक्ष्यलक्षणभावः

(D) प्रत्यक्षप्रत्ययभावः

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–122

35. (C)	36. (C)	37. (B)	38. (B)	39. (A)	40. (A)	41. (A)	42. (C)	43. (B)
44. (C)	45. (D)							

46. निम्नांकित तालिका-1 में सन्निकर्ष एवं तालिका-2 में उनके उदाहरण दिये गये हैं। इनके आधार पर दिये गये विकल्पों में से सही सुमेलित विकल्प चुनें –

तालिका-1	**तालिका-2**
(क) संयुक्तसमवाय	(i) चक्षुषा संयुक्ते भूतले घटाभावः
(ख) संयुक्त समवेतसमवाय	(ii) चक्षुषा घटरूपसमवेतं रूपत्वादिकम्
(ग) समवेतसमवाय	(iii) श्रोत्रेन्द्रियेण शब्दसमवेतं शब्दत्वादिकम्
(घ) विशेष्यविशेषणभाव	(iv) चक्षुरादिना घटगतरूपादिकम्

	क	ख	ग	घ
(A)	(iv)	(ii)	(iii)	(i)
(B)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)
(C)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(D)	(i)	(iv)	(iii)	(ii)

स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज–64, 66, 67, 68

47. 'संकल्पविकल्पात्मिकान्तः करणवृत्तिः' किससे सम्बन्धित है?

(A) मन (B) बुद्धि
(C) शरीर (D) प्रकृति

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–66

48. 'मोक्षेच्छा' किसे कहते हैं?

(A) मुमुक्षुत्वम्
(B) गुरूपदिष्टवेदान्तवाक्येषु विश्वासः
(C) शीतोष्णादिद्वन्द्वसहिष्णुता
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–20

49. आवरण और विक्षेप किसकी शक्तियाँ हैं?

(A) ब्रह्म (B) ज्ञान
(C) अज्ञान (D) जीव

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–57

50. 'सुषुप्तवज्जाग्रति यो न पश्यति' स्वभाव वाला कौन होता है?

(A) ईश्वर (B) जीवन्मुक्त
(C) मुमुक्षु (D) प्राज्ञ

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–192

51. ''करोति कस्य नाह्लादं कथा कान्तेव भारती'' सूक्ति किस ग्रन्थ से उद्धृत है?

(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (B) नलचम्पू
(C) कादम्बरी (D) हर्षचरित

स्रोत–नलचम्पू (1/13) - तारिणीश झा, पेज–15

52. शिशुपालवधम् महाकाव्य में कितने सर्ग हैं?

(A) दस (B) पन्द्रह
(C) बीस (D) बाइस

स्रोत–शिशुपालवधम् - तारिणीश झा, पेज भू.–15

53. ''नवसर्गगते .... नवशब्दो न विद्यते'' उक्ति है –

(A) कालिदास के विषय में (B) श्रीहर्ष के विषय में
(C) माघ के विषय में (D) भारवि के विषय में

स्रोत–शिशुपालवधम् - तारिणीश झा, पेज भू.–68

54. शिशुपालवधम् का प्रमुख रस है –

(A) शृङ्गार (B) शान्त
(C) वीर (D) करुण

स्रोत–शिशुपालवधम् - तारिणीश झा, पेज भू.–57

55. 'सूत्रधार' होता है –

(A) नायक के रूप में अभिनय करने के लिए
(B) नाटक आरम्भ करने के लिए
(C) अभिनय का निर्देशन एवं नियन्त्रण करने के लिए
(D) नान्दी पढ़ने के लिए

स्रोत–छन्दोलंकारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज–48

56. ''अहो रागपरिवाहिणी गीतिः'' राजा दुष्यन्त का यह कथन किसकी प्रशंसा में है?

(A) शकुन्तला के गाने पर
(B) प्रियंवदा के गाने पर
(C) हंसपदिका के गाने पर
(D) गौतमी के गाने पर

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (अङ्क-5)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–243

46. (A) 47. (A) 48. (A) 49. (C) 50. (B) 51. (B) 52. (C) 53. (C) 54. (C) 55. (C) 56. (C)

57. 'विषमबाणलीला' किसकी रचना है?
(A) दण्डी (B) भामह
(C) आनन्दवर्धन (D) रुद्रट
स्रोत–ध्वन्यालोक - आचार्य विश्वेश्वर, पेज भू.–35

58. अवन्तिसुन्दरी के लेखक हैं –
(A) दण्डी (B) बाणभट्ट
(C) भट्टनारायण (D) अम्बिकादत्तव्यास
स्रोत–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेवद्विवेदी, पेज–466

59. 'मृच्छकटिकम्' किस कोटि का रूपक है?
(A) भाण (B) प्रहसन
(C) प्रकरण (D) व्यायोग
स्रोत–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–307

60. कादम्बरी में वर्णित इन्द्रायुध था –
(A) मन्त्री (B) राजा
(C) घोड़ा (D) वज्र
स्रोत–कादम्बरी कथामुखम्-तारिणीश झा, भू. पेज–39

61. ''रसस्य च प्राधान्यान्नालंकारता'' में किस अलंकार का निषेध किया गया है?
(A) रसवद् का (B) शब्दालङ्कार का
(C) शृङ्गार का (D) उपर्युक्त सभी का
स्रोत–काव्यप्रकाश (सूत्र-1) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–19

62. ''लिम्पतीव तमोऽङ्गानि, वर्षतीवाञ्जनं नभः। असत्पुरुषसेवेव, दृष्टिर्विफलतां गता।'' में कौन-सा अलंकार है?
(A) उपमा (B) उत्प्रेक्षा
(C) यमक (D) श्लेष
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–461

63. इनमें से कौन काव्यप्रयोजन नहीं है?
(A) शक्ति (B) निपुणता
(C) अभ्यास (D) उपर्युक्त सभी
स्रोत–काव्यप्रकाश (1/2) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–10

64. ''गौ शुक्लश्चलो डित्थः'' किसका विचार है?
(A) मम्मट का
(B) आनन्दवर्धन का
(C) महाभाष्यकार का
(D) उपर्युक्त में से किसी का भी नहीं
स्रोत–काव्यप्रकाश (द्वितीय उल्लास)-श्रीनिवास शास्त्री, पेज–47

65. 'संकेतित अर्थ' कितने प्रकार का होता है?
(A) छह प्रकार का (B) सात प्रकार का
(C) तीन प्रकार का (D) चार प्रकार का
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–43

66. 'सकलप्रयोजनमौलिभूतम्' किसे कहा गया है?
(A) यश को (B) धनोपार्जन को
(C) व्यवहारज्ञान को (D) सद्यःपरनिर्वृत्ति को
स्रोत–काव्यप्रकाश (1/2) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–10

67. 'यवनिका' शब्द का अर्थ है –
(A) यवन देश की कन्या (B) यवन सैनिक
(C) पर्दे के पीछे (D) पर्दा
स्रोत–छन्दोऽलंकारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज–43

68. ''क्या जल्दी है? रेलगाड़ी के चलने में देर है। घबराइए नहीं।'' इस वाक्य का सही संस्कृत रूपान्तर है –
(A) का त्वरा। रेलयानं न चलति। व्याकुली मा भूः।
(B) का त्वरा। चिरेण प्रयास्यति रेलयानम्। मा स्म व्याकुली भूः।
(C) का शीघ्रता। रेलयानमद्य न चलिष्यति। मा स्म व्याकुलताम्।
(D) शीघ्रता का। अचिरं प्रयास्यति रेलयानम्। मा स्म व्याकुली भूः।

69. ''हृदये गृह्यते नारी'' सूक्ति किस ग्रन्थ से उद्धृत है?
(A) मृच्छकटिकम्
(B) रत्नावली
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(D) हर्षचरितम्
स्रोत–मृच्छकटिकम् (1/50) - रमाशङ्कर त्रिपाठी, पेज–95

70. 'गीता' महाभारत के किस पर्व में वर्णित है?
(A) भीष्म पर्व (B) शान्ति पर्व
(C) आदि पर्व (D) अनुशासन पर्व
स्रोत–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेवद्विवेदी, पेज–118

71. 'लब्धापि दुःखेन परिपाल्यते' किसका कथन है?
(A) शुकनास का (B) चन्द्रापीड का
(C) तारापीड का (D) विलासवती का
स्रोत–शुकनासोपदेश - रमाकान्त झा/हरिहर झा, पेज–19

57. (C)	58. (A)	59. (C)	60. (C)	61. (A)	62. (B)	63. (D)	64. (C)	65. (D)
66. (D)	67. (D)	68. (B)	69. (A)	70. (A)	71. (A)			

72. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' का सर्वप्रथम अंग्रेजी अनुवाद किसने किया?

(A) शेक्सपियर (B) गेटे
(C) विलियम जोन्स (D) मैक्समूलर

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–17

73. 'मृच्छकटिकम्' की नायिका है –

(A) कुलजा (B) वेश्या
(C) तापसी (D) कुलजा एवं वेश्या दोनों

स्रोत–मृच्छकटिकम् - श्रीनिवास शास्त्री, पेज भू.–34

74. कौन-सा नारी पात्र मृच्छकटिक में नहीं है?

(A) वसन्तसेना की सखी
(B) वसन्तसेना की माता
(C) वसन्तसेना की परिचारिका
(D) वसन्तसेना की सपत्नी

स्रोत–मृच्छकटिकम् - श्रीनिवास शास्त्री, पेज–01

75. निम्नलिखित में शुद्ध वाक्य है –

(A) मया चन्द्रः पश्यति
(B) मया चन्द्रः पश्यते
(C) मया चन्द्रः दृश्यते
(D) मया चन्द्रः पश्यामि

स्रोत–वस्तुनिष्ठ संस्कृतव्याकरणम् - सर्वज्ञभूषण, पेज–161

76. शकारी, अवन्तिजा, चाण्डाली एवं ढक्की ये प्रकार हैं–

(A) वेश्याओं के
(B) विशिष्ट नायिकाओं के
(C) प्राकृत के
(D) काव्य की रीतियों के

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–435

77. 'तया भूयते' का कर्तृवाच्य प्रयोग है –

(A) सा भवति
(B) सः भवति
(C) सः भविष्यति
(D) तेन भविष्यति

स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–115

78. निम्नलिखित तालिका-1 में पात्रों के प्रकार दिए गए हैं और तालिका-2 में इनके प्रसिद्ध उदाहरण दिए गए हैं। इनके आधार पर दिए गए विकल्पों में से सही सुमेलित को चुनें –

तालिका-1	तालिका-2
(क) विदूषक	(i) शिशुपाल
(ख) नगररक्षक	(ii) मैत्रेय, माधव्य
(ग) पूर्व जन्म में रावण	(iii) सोमरात
(घ) पुरोहित	(iv) चन्दनक

	क	ख	ग	घ
(A)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)
(B)	(iii)	(ii)	(i)	(iv)
(C)	(ii)	(iv)	(i)	(iii)
(D)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)

स्रोत–मृच्छकटिकम् - श्रीनिवास शास्त्री, पेज–1
शिशुपालवधम् (1/69) तारिणीश झा, पेज–144
अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज भू.–99

79. इनमें से कौन-सा हेत्वाभास नहीं है?

(A) आश्रयासिद्ध (B) बाधित
(C) अनैकान्तिक (D) विपक्षव्यावृत्ति

स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज–109, 118

80. पञ्चावयव वाक्य का प्रयोग होता है :

(A) स्वार्थानुमान में (B) परार्थानुमान में
(C) सभी अनुमानों में
(D) उपर्युक्त में से किसी में भी नहीं

स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज–92

81. रिक्तस्थानों की पूर्ति के लिए निम्नलिखित चार विकल्पों में से कौन-सा विकल्प उपर्युक्त है?

(क) लिङ्गपरामर्शः ....
(ख) व्याप्तिबलेनार्थगमकम् ......
(ग) स्वाभाविकः सम्बन्धः ....
(घ) साध्यव्यापकत्वे सति साधनाव्यापकत्वम् ......

(A) अनुमानम्, व्याप्तिः, लिङ्गम्, उपाधिः
(B) अनुमानम्, उपमानम्, प्रतिज्ञा, व्याप्तिः
(C) अनुमानम्, लिङ्गम्, व्याप्तिः, उपाधिः
(D) व्याप्तिः, प्रमाणम्, उपाधिः, अनुमानम्

स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज–78, 79, 84, 82

72. (C) 73. (D) 74. (A) 75. (C) 76. (C) 77. (A) 78. (C) 79. (D) 80. (B) 81. (C)

82. 'कैशिकी वृत्ति' किस रस में होती है?
(A) शृङ्गार रस (B) वीर रस
(C) रौद्र रस (D) अद्‌भुत रस

स्रोत–दशरूपक (द्वितीय प्रकाश) - बैजनाथ पाण्डेय, पेज–222

83. आचार्य कुन्तक के अनुसार काव्य का लक्षण है –
(A) रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्
(B) तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती काव्यम्
(C) वाक्यं रसात्मकं काव्यम्
(D) वक्रोक्तिः काव्यजीवितम्

स्रोत–साहित्यदर्पण - राजेन्द्र मिश्र, पेज भू.–94

84. आरोपित शब्दव्यापार है –
(A) लक्षणा (B) अभिधा
(C) व्यञ्जना (D) लक्षणा एवं व्यञ्जना दोनों

स्रोत–साहित्यदर्पण - राजेन्द्र मिश्र, पेज भू.–64

85. काव्यप्रकाश के प्रथम उल्लास का नाम है?
(A) ध्वनिस्वरूप निरूपण (B) अर्थव्यञ्जकता निरूपण
(C) काव्यस्वरूप निरूपण (D) शब्दार्थस्वरूप निरूपण

स्रोत–काव्यप्रकाश (प्रथम उल्लास)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज–33

86. प्रयोजन सदैव गम्य है –
(A) इंगित से (B) व्याजोक्ति से
(C) व्यञ्जना से (D) उपर्युक्त सभी से

स्रोत–काव्यप्रकाश (सूत्र-18) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–67

87. 'गौरयम्' उदाहरण है –
(A) शुद्धा लक्षणा का
(B) सारोपा लक्षणा का
(C) शाब्दी व्यञ्जना का
(D) साध्यवसाना गौणी लक्षणा का

स्रोत–काव्यप्रकाश (द्वितीय उल्लास)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज–62

88. 'रसादिध्वनि' के अन्तर्गत आते हैं –
(A) रस
(B) भाव
(C) रसाभास, भावाभासादि
(D) उपर्युक्त सभी

स्रोत–काव्यप्रकाश (चतुर्थ उल्लास)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज–94

89. काव्यप्रकाशकार द्वारा की गई रस की परिभाषा है –
(A) विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः
(B) व्यक्तः स तैर्विभावाद्यैः स्थायीभावो रसः स्मृतः
(C) ब्रह्मास्वादमिवानुभावयन् अलौकिकचमत्कारकारी शृङ्गारादिको रसः
(D) पुरोडाशप्रतीकाशः

स्रोत–काव्यप्रकाश (चतुर्थ उल्लास)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज–95

90. 'व्यक्तिविवेक' के रचनाकार हैं –
(A) भोजराज (B) धनञ्जय
(C) क्षेमेन्द्र (D) महिमभट्ट

स्रोत–काव्यप्रकाश - पारसनाथ द्विवेदी, पेज भू.–25

91. √अद भक्षणे धातु का लुङ्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप है –
(A) अघसः (B) अघसत्
(C) आदत् (D) अत्स्यति

स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–160

92. श्यन्, शः तथा श्नुः प्राप्त होते हैं क्रमशः –
(A) दिवादि, तुदादि एवं स्वादि में
(B) तुदादि, जुहोत्यादि एवं दिवादि में
(C) अदादि, चुरादि एवं स्वादि में
(D) भ्वादि, दिवादि एवं तुदादि में

स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–142

93. ''मैं जाना चाहता हूँ'' का संस्कृत रूपान्तर है –
(A) अहम् आजिगमिषामि
(B) अहं जिगमिषामि
(C) अहं गमिष्यामि
(D) अहं गन्तुं नेच्छामि

स्रोत–संस्कृतव्याकरणप्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–460

94. ग्रिम, ग्रासमैन एवं वर्नर सम्बन्धित हैं –
(A) भौतिक नियमों से
(B) जैविक नियमों से
(C) व्याकरण के नियमों से
(D) ध्वनि नियमों से

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–241

82. (A)	83. (D)	84. (A)	85. (C)	86. (C)	87. (D)	88. (D)	89. (B)	90. (D)
91. (B)	92. (A)	93. (B)	94. (D)					

95. भाषाओं का आकृतिमूलक वर्गीकरण विषयक कौन-सा विकल्प सही है?
(A) योगात्मक, वियोगात्मक, संयोगात्मक, एकल
(B) अयोगात्मक, अश्लिष्ट, श्लिष्ट, प्रश्लिष्ट
(C) श्लिष्ट, अश्लिष्ट, प्रश्लिष्ट, विश्लिष्ट
(D) चीनी, भारोपीय, द्रविड़, लैटिन
स्रोत–भाषाविज्ञान - कर्ण सिंह, पेज–56

96. 'स्त्रीप्रमाणः' में समास है –
(A) अव्ययीभाव (B) द्वन्द्व
(C) द्विगु (D) बहुव्रीहि
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी भैमी व्याख्या (खण्ड-4), पेज–201

97. 'असि' में लकार है –
(A) लट् (B) लिट्
(C) लङ् (D) लुङ्
स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–160

98. तुखारी (तोखारी) शाखा का पता कब लगा?
(A) इक्कीसवीं शताब्दी में
(B) बीसवीं शताब्दी में
(C) अट्ठारहवीं शताब्दी में
(D) उपर्युक्त में से किसी में भी नहीं
स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–395

99. 'हरिहरौ' में कौन-सा समास है?
(A) तत्पुरुष (B) बहुव्रीहि
(C) द्वन्द्व (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं
स्रोत–अष्टाध्यायी (2.2.32) - ईश्वरचन्द्र, पेज–190

100. 'एधनीयम्' में कौन-सा प्रत्यय है?
(A) तव्यत् (B) अनीयर्
(C) यत् (D) ण्यत्
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी भैमी व्याख्या (खण्ड-3), पेज–27

101. 'सम्प्रदान' में कौन-सी विभक्ति होती है?
(A) द्वितीया (B) तृतीया
(C) चतुर्थी (D) पञ्चमी
स्रोत–अष्टाध्यायी (2.3.13) - ईश्वरचन्द्र, पेज–197

102. 'गौरी' में कौन-सा प्रत्यय है?
(A) ङीप् (B) ङीष्
(C) टाप् (D) ङीन्
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी भैमी व्याख्या (खण्ड-6), पेज–24

103. वह लकार जो केवल वेद में पाया जाता है –
(A) लुट् लकार (B) लङ् लकार
(C) लेट् लकार (D) लट् लकार
स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–294

104. 'सूर्या' में कौन-सा प्रत्यय है?
(A) टाप् (B) चाप्
(C) ङीप् (D) ण्यत्
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–132

105. 'ख' कौन-सी ध्वनि है –
(A) मूर्धन्य (B) तालव्य
(C) दन्त्य (D) कण्ठ्य
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–26

106. ध्वनि-परिवर्तन का सर्वप्रमुख कारण है –
(A) प्रयत्नलाघव (B) प्रयोगाधिक्य
(C) बलाघात (D) शारीरिक विभिन्नता
स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–227

107. इनमें से कौन 'रूपक' नहीं है?
(A) मृच्छकटिकम् (B) विक्रमोर्वशीयम्
(C) महावीरचरितम् (D) दशकुमारचरितम्
स्रोत–कादम्बरीकथामुखम्-राजेन्द्र मिश्र/गिरिजाशङ्कर चतुर्वेदी, पेज भू.–16

108. श्रीमद्भगवद्गीता के एकादश अध्याय का नाम है–
(A) विश्वरूपदर्शनयोग (B) सांख्ययोग
(C) गुणविभागयोग (D) पुरुषोत्तमयोग
स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (अध्याय-11) - गीताप्रेस

109. निम्नलिखित में से कौन 'योग' के अंग नहीं हैं?
(A) यम-नियम (B) आसन-प्राणायाम
(C) प्रत्याहार-धारणा (D) चित्त-परिकर्म
स्रोत–योगदर्शन (साधनपाद-29)-सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पेज–265

110. स्थितप्रज्ञ किसे कहते हैं?
(A) जो सभी मनोकामनाओं को छोड़ देता है
(B) जो अपने आप में सन्तुष्ट रहता है
(C) जो दुःखों से घबराता नहीं है
(D) जिसमें उपर्युक्त तीनों गुण हों
स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (2/56) - गीताप्रेस

111. ''नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः'' गीता का यह सिद्धान्त किस दर्शन से सम्बन्ध रखता है?
(A) बौद्धदर्शन (B) जैनदर्शन
(C) सांख्यदर्शन (D) वेदान्तदर्शन
स्रोत–सांख्यकारिका - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज भू. (v)

95. (B)	**96. (D)**	**97. (A)**	**98. (B)**	**99. (C)**	**100. (B)**	**101. (C)**	**102. (B)**	**103. (C)**
104. (B)	**105. (D)**	**106. (A)**	**107. (D)**	**108. (A)**	**109. (D)**	**110. (D)**	**111. (C)**	

112. 'योगसूत्र' पर भाष्य लिखा है –

(A) वाल्मीकि ने (B) पाणिनि ने
(C) शंकराचार्य ने (D) व्यास ने

स्रोत–भारतीयदर्शन - बद्रीनाथ सिंह, पेज–216

113. श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार आत्मा किससे श्रेष्ठ है?

(A) मन से (B) बुद्धि से
(C) कर्मेन्द्रियों से (D) ज्ञानेन्द्रियों से

स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (3/43) - गीताप्रेस, पेज–63

114. वेदान्तदर्शन के मत से सूक्ष्मशरीर का निर्माण कितने तत्त्वों से हुआ है?

(A) 20 (B) 18
(C) 17 (D) 15

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–65

115. ''जीवब्रह्मैक्यं शुद्धचैतन्यं प्रमेयं तत्र..........।'' यह पंक्ति किस ग्रन्थ से उद्धृत है?

(A) तर्कभाषा (B) वेदान्तसार
(C) सांख्यकारिका (D) प्रशस्तपादभाष्य

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–30

116. 'अनुबन्ध' किसे कहते हैं?

(A) नित्यानित्यवस्तुविवेक को
(B) अधिकारिविषयसम्बन्धप्रयोजनानि को
(C) इहामुत्रार्थफलभोगविराग को
(D) उपर्युक्त में से किसी को भी नहीं

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–9

117. 'आनुश्रविक' कहते हैं –

(A) लौकिक उपाय को (B) वैदिक उपाय को
(C) भौतिक उपाय को (D) नैतिक उपाय को

स्रोत–सांख्यकारिका (का0-2) - राकेश शास्त्री, पेज–5

118. 'उष्ट्र' का 'ऊँट' ध्वनि परिवर्तन निम्नलिखित में से कौन-सा प्रकार है?

(A) विपर्यय (B) लोप
(C) आगम (D) अनुनासिकता

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–237

119. 'कटे आस्ते' यह कैसा आधार है?

(A) वैषयिक (B) अभिव्यापक
(C) औपश्लेषिक (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–215

120. 'वैनतेय' पद में किस प्रत्यय का विधान है?

(A) मयट् (B) वतुप्
(C) ढक् (D) मतुप्

स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–274

121. 'अस्' धातु का लृट्लकार प्रथम पुरुष एकवचन का रूप है –

(A) भविष्यति (B) असि
(C) अस्मि (D) सन्ति

स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–160

122. 'नखभिन्नः' का लौकिक विग्रह है –

(A) नखः भिन्नः (B) नखैः भिन्नः
(C) नखेन भिन्नः (D) नखात् भिन्नः

स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–243

123. 'एडका' शब्द किस प्रत्यय के योग से बना है?

(A) टाप् (B) चाप्
(C) डाप् (D) आप्

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड-6), पेज–4

124. ''गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः'' सूक्ति किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है?

(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (B) दशकुमारचरितम्
(C) किरातार्जुनीयम् (D) उत्तररामचरितम्

स्रोत–उत्तररामचरितम् (4/11) - शिवबालक द्विवेदी, पेज–410

125. नलचम्पू के मंगलाचरण में किस देवता की स्तुति है?

(A) शिव-पार्वती की
(B) गणेश की
(C) सरस्वती की
(D) उपर्युक्त में से किसी की भी नहीं

स्रोत–नलचम्पू (1/1) - तारिणीश झा, पेज–1

112. (D)	113. (B)	114. (C)	115. (B)	116. (B)	117. (B)	118. (D)	119. (C)	120. (C)
121. (A)	122. (B)	123. (A)	124. (D)	125. (A)				

7	प्रवक्ता चयन परीक्षा (PGT) संस्कृत	2004 परीक्षा तिथि 09 मई 2015

1. **'गण्डस्योपरि पिण्डकः संवृत्तः' है –**
   (A) सूक्ति (B) काव्य-लक्षण
   (C) मुहावरा (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (अंक-2)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–91

2. **'सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तःकरणप्रवृत्तयः' यह कथन किसका है?**
   (A) माघ (B) श्रीहर्ष
   (C) भारवि (D) कालिदास

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/22) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–54

3. **'शकार' का विवेचन किस कृति में है –**
   (A) किरातार्जुनीयम् (B) मृच्छकटिकम्
   (C) वेणीसंहार (D) नागानन्द

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-324

4. **'मृच्छकटिकम्' में है –**
   (A) अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता
   (B) अहो अविश्वसनीयाः पुरुषाः
   (C) अहो दुरासदो राजमहिमा
   (D) अहो निर्धनता सर्वापदामास्पदम्

स्रोत–मृच्छकटिकम् (1/14) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज–36

5. **'मृच्छकटिकम्' के निम्नांकित पात्रों में कौन संस्कृत नहीं बोलता है –**
   (A) चारुदत्त (B) वसन्तसेना
   (C) आर्यक (D) शर्विलक

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–324

6. **'मृच्छकटिकम्' किस प्रकार का रूपक है?**
   (A) नाटक (B) भाण
   (C) व्यायोग (D) प्रकरण

स्रोत–मृच्छकटिकम् - रमाशंकर त्रिपाठी, भू. पेज–xxxi

7. **किस महाकाव्य को विद्वानों के लिए औषधि कहा जाता है?**
   (A) शिशुपालवधम् (B) नैषधीयचरितम्
   (C) किरातार्जुनीयम् (D) रघुवंशम्

स्रोत–नैषधीयचरितम् - सुरेन्द्रदेव शास्त्री, पेज भू.–52

8. **'स्वर्गारोहणकाव्य' के रचनाकार हैं –**
   (A) पाणिनि (B) पतञ्जलि
   (C) वररुचि (D) भर्तृहरि

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–254

9. **'राघवविलास' किसकी रचना है?**
   (A) राजशेखर (B) कुन्तक
   (C) भरत (D) विश्वनाथ

स्रोत–साहित्यदर्पण-भवानीशंकर शर्मा (महाजनीय), पेज भू.–19

10. **'मेघे माघे गतं वयः' यह सूक्ति किस विद्वान् के द्वारा कही गयी है?**
   (A) मल्लिनाथ सूरि (B) राजशेखर
   (C) बल्लभदेव (D) माघ

स्रोत–मेघदूतम् - दयाशंकर शास्त्री, पेज-44

11. **नाट्यशास्त्र के प्रवर्त्तक हैं :**
   (A) धनञ्जय (B) रामचन्द्र गुणचन्द्र
   (C) भरतमुनि (D) विश्वनाथ

स्रोत–दशरूपक - बैजनाथ पाण्डेय, पेज–03

12. **'श्रद्धा वित्तं विधिश्चेति त्रितयं तत्समागतम्' किस नाटक का श्लोक है?**
   (A) मुद्राराक्षसम् (B) उत्तररामचरितम्
   (C) विक्रमोर्वशीयम् (D) अभिज्ञानशाकुन्तलम्

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (7/29)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–441

13. **निम्नलिखित में से कौन महाकाव्य नहीं है?**
   (A) किरातार्जुनीयम् (B) मेघदूतम्
   (C) नैषधीयचरितम् (D) रघुवंशम्

स्रोत–मेघदूतम् - दयाशंकर शास्त्री, पेज भू.–32

1. (C) 2. (D) 3. (B) 4. (D) 5. (B) 6. (D) 7. (B) 8. (C) 9. (D) 10. (A) 11. (C) 12. (D) 13. (B)

14. 'जग्राह पाठ्यमृग्वेदात्' यह कथन है :
(A) भरतमुनि का (B) धनञ्जय का
(C) मम्मट का (D) उपर्युक्त में से किसी का नहीं
स्रोत–नाट्यशास्त्र (1/17) - बाबूलाल शुक्ल शास्त्री, पेज–06

15. बाण ने 'कादम्बरी' में किस रीति का प्रयोग किया है?
(A) गौड़ी (B) वैदर्भी
(C) पाञ्चाली (D) लाटी
स्रोत–कादम्बरीकथामुखम् - तारिणीश झा, पेज भू.–24

16. 'हारीत' पुत्र था –
(A) महर्षि अगस्त्य का (B) महर्षि जाबालि का
(C) महर्षि श्वेतकेतु का (D) महर्षि विश्वामित्र का
स्रोत–कादम्बरीकथामुखम् - तारिणीश झा, पेज भू.–33

17. शाल्मली वृक्ष का वर्णन किस ग्रन्थ में है?
(A) रघुवंश में (B) किरातार्जुनीय में
(C) कादम्बरी में (D) शिवराजविजय में
स्रोत–कादम्बरीकथामुखम् - तारिणीश झा, पेज भू.–32

18. 'त्रिभुवनप्रसवभूमिरिव विस्तीर्णा' विशेषता किसके लिए प्रयुक्त है?
(A) विदिशा (B) उज्जयिनी
(C) विन्ध्याटवी (D) हेमकूट
स्रोत–कादम्बरीकथामुखम् - तारिणीश झा, पेज–44

19. 'नलचम्पू' की कथावस्तु का मूल आधार है महाभारत का –
(A) शान्तिपर्व (B) भीष्मपर्व
(C) वनपर्व (D) सभापर्व
स्रोत–नलचम्पू - तारिणीश झा, पेज भू.–3-4

20. 'नलचम्पू' के रचयिता हैं –
(A) बाणभट्ट (B) विश्वेश्वर पाण्डेय
(C) आचार्य मेधाव्रत (D) त्रिविक्रमभट्ट
स्रोत–नलचम्पू - धुरन्धर पाण्डेय, पेज भू.–07

21. 'नलचम्पू' कथा की नायिका है –
(A) प्रियंगुमंजरी (B) रूपवती
(C) किन्नरी (D) दमयन्ती
स्रोत–नलचम्पू - धुरन्धर पाण्डेय, पेज भू.–48

22. सभङ्गश्लेष का सर्वाधिक प्रयोग किस ग्रन्थ में हुआ है?
(A) कादम्बरी (B) वासवदत्ता
(C) नलचम्पू (D) दशकुमारचरितम्
स्रोत–नलचम्पू (1/16) - धुरन्धर पाण्डेय, पेज–16

23. 'नवसर्गगते माघे नव शब्दो न विद्यते' यह उक्ति किस ग्रन्थ के लिए प्रचलित है?
(A) मेघदूतम् (B) शिशुपालवधम्
(C) कुमारसम्भवम् (D) जानकीहरणम्
स्रोत–शिशुपालवधम् - तारिणीश झा, पेज भू.–68

24. 'शिशुपालवधम्' महाकाव्य में कितने सर्ग हैं?
(A) सत्रह (B) अठारह
(C) सोलह (D) बीस
स्रोत–शिशुपालवधम् - तारिणीश झा, पेज भू.–15

25. रैवतक पर्वत का वर्णन किस काव्य में है?
(A) कुमारसम्भवम् (B) शिशुपालवधम्
(C) नैषधीयचरितम् (D) किरातार्जुनीयम्
स्रोत–शिशुपालवधम् - तारिणीश झा, पेज भू.–24

26. शिशुपालवधम् महाकाव्य का अंगीरस है –
(A) शृङ्गार रस (B) वीर रस
(C) अद्भुत रस (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं
स्रोत–शिशुपालवधम् - तारिणीश झा, पेज भू.–57

27. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के किस अंक में प्रथम 'विष्कम्भक' समाप्त होता है?
(A) द्वितीय (B) तृतीय
(C) चतुर्थ (D) पञ्चम
स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–134

28. 'स्त्रीणामशिक्षितपटुत्वममानुषीषु' यह सूक्ति किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है?
(A) रघुवंशम् (B) स्वप्नवासवदत्तम्
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (D) शिशुपालवधम्
स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (5/22)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–287

14. (A)	**15. (C)**	**16. (B)**	**17. (C)**	**18. (A)**	**19. (C)**	**20. (D)**	**21. (D)**	**22. (C)**
23. (B)	**24. (D)**	**25. (B)**	**26. (B)**	**27. (B)**	**28. (C)**			

29. **सांख्यदर्शन के मत से सूक्ष्मशरीर का निर्माण हुआ है –**
(A) 17 तत्त्वों से (B) 20 तत्त्वों से
(C) 18 तत्त्वों से (D) इनमें से किसी से भी नहीं
स्रोत–सांख्यतत्त्वकौमुदी (का0-40)-आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–257

30. **सांख्य के अनुसार प्रमाणों की संख्या है :**
(A) 4 (B) 5
(C) 3 (D) 2
स्रोत–सांख्यतत्त्वकौमुदी (का0-4)-आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–115

31. **'कैवल्यार्थं प्रवृत्तेश्च' चरितार्थ होता है –**
(A) पुरुष (B) प्रकृति
(C) ईश्वर (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं
स्रोत–सांख्यतत्त्वकौमुदी (का0-17)-आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–200

32. **'वेदान्तसार' के रचनाकार हैं :**
(A) आचार्य शंकर (B) दयानन्द सरस्वती
(C) सदानन्द योगीन्द्र (D) भास्कराचार्य
स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज भू.–xix

33. **बुद्धि, ज्ञानेन्द्रियों के साथ मिलकर निर्माण करती है :**
(A) प्राणमयकोश (B) आनन्दमयकोश
(C) विज्ञानमयकोश (D) मनोमयकोश
स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–68

34. **'मिथ्यारूप से अन्य वस्तु के रूप में भासित होना' कहलाता है –**
(A) आरम्भवाद (B) असत्कार्यवाद
(C) परिणामवाद (D) विवर्तवाद
स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–116

35. **'ब्रह्म' को कहा गया है –**
(A) सत् (B) चित्
(C) आनन्द (D) सच्चिदानन्द
स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–37

36. **'तितिक्षा' का अर्थ है –**
(A) मोक्षेच्छा (B) शीतोष्णादिद्वन्द्वसहिष्णुता
(C) नित्यवस्तुविवेक (D) नित्यानित्यवस्तुविवेक
स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–20-21

37. **वेदान्त के अनुसार अज्ञान की शक्ति है –**
(A) आवरण (B) विक्षेप
(C) आवरण विक्षेप दोनों (D) इनमें से कोई नहीं
स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–56

38. **पञ्चीकरण प्रक्रिया का उल्लेख किस ग्रन्थ में है?**
(A) तर्कभाषा (B) वेदान्तसार
(C) सांख्यकारिका (D) ईशोपनिषद्
स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–78

39. **वेदान्त पढ़ने का अधिकारी है –**
(A) साधनचतुष्टयसम्पन्नः प्रमाता
(B) काम्यनिषिद्ध कर्मों को ही मात्र न करने वाला
(C) वेद-वेदाङ्गों का ही मात्र अध्ययन करने वाला
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं
स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–11

40. **विवर्त का आशय है –**
(A) यथार्थ परिवर्तन
(B) अयथार्थ परिवर्तन
(C) दोनों प्रकार के परिवर्तन
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं
स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–115-116

41. **'आप्तवाक्यं शब्दः' किस दर्शन से सम्बन्धित है?**
(A) जैन (B) बौद्ध
(C) मीमांसा (D) न्याय
स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज–122

42. **निम्नलिखित में से एक कर्मेन्द्रिय है –**
(A) वाक् (B) श्रोत्र
(C) घ्राण (D) चक्षुः
स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–69

43. **श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार कर्मयोगी को कर्म क्यों करना चाहिए?**
(A) कीर्ति के लिए (B) लोक-संग्रह के लिए
(C) सुख के लिए (D) स्वर्ग के लिए
स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (3/20) - गीताप्रेस, पेज–56

29. (C)	30. (C)	31. (A)	32. (C)	33. (C)	34. (D)	35. (D)	36. (B)	37. (C)
38. (B)	39. (A)	40. (B)	41. (D)	42. (A)	43. (B)			

44. 'समत्वं योग उच्यते' किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है?
(A) योगशास्त्र (B) वेदान्तदर्शन
(C) गीता (D) उपनिषद्
स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (2/48)

45. 'निष्काम कर्म' का अर्थ है :
(A) अकाम कर्म करना
(B) कोई भी कर्म न करना
(C) अपना काम किये जाना
(D) अनासक्तभाव से किया गया काम
स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (3/19)

46. 'श्रीमद्भगवद्गीता' के अनुसार मनुष्य का अधिकार है –
(A) ज्ञान पर (B) कर्म करने पर
(C) फल पर (D) इनमें से किसी पर नहीं
स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (2/47)

47. 'गीता' महाभारत के किस पर्व में वर्णित है?
(A) आदिपर्व (B) अनुशासनपर्व
(C) भीष्मपर्व (D) शान्तिपर्व
स्रोत–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–118

48. विशेषण-विशेष्यभाव का सम्बन्ध होता है –
(A) भाव से
(B) अभाव से
(C) भाव और अभाव दोनों से
(D) उपर्युक्त में से किसी से भी नहीं
स्रोत–तर्कसंग्रह - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–48

49. 'इन्द्रियार्थसन्निकर्षजन्यज्ञान' है –
(A) प्रत्यक्ष (B) उपमान
(C) अनुमान (D) आप्तवचन
स्रोत–तर्कसंग्रह - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–45

50. केवल नेत्र से ग्रहण किया जाने वाला गुण है –
(A) रूप (B) स्पर्श
(C) गन्ध (D) रस
स्रोत–तर्कसंग्रह - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–29

51. तर्कभाषा/तर्कसंग्रह के अनुसार प्रमा के कितने भेद हैं?
(A) एक (B) दो
(C) चार (D) पाँच
स्रोत–तर्कसंग्रह - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–40

52. सामान्य रहता है :
(A) द्रव्य, गुण और विशेष में
(B) द्रव्य, गुण और कर्म में
(C) द्रव्य, कर्म और विशेष में
(D) द्रव्य, गुण और समवाय में
स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज–244

53. सांख्य के अनुसार बुद्धि के प्रमुख परिणाम हैं –
(A) विपर्यय, अशक्ति, सिद्धि और तमस्
(B) विपर्यय, अशक्ति, तुष्टि और सिद्धि
(C) विपर्यय, अशक्ति, मोह और सिद्धि
(D) विपर्यय, अशक्ति, मोह और तमस्
स्रोत–सांख्यतत्त्वकौमुदी (का0-46)-आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–269

54. सांख्य स्वीकार करता है –
(A) असतः सत् जायते
(B) एकस्य सतो विवर्तः कार्यजातं न वस्तु सत्
(C) सतः असत् जायते
(D) सतः सत् जायते
स्रोत–सांख्यतत्त्वकौमुदी (का0-09)-आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–153

55. 'पुरुषबहुत्वं' को कौन-सा दर्शन स्वीकार करता है?
(A) सांख्य (B) न्याय
(C) मीमांसा (D) वैशेषिक
स्रोत–सांख्यतत्त्वकौमुदी (का0-18)-आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–205

56. सांख्य की प्रकृति है –
(A) व्यक्त (B) त्रिगुणात्मिका
(C) चेतन (D) अप्रधान
स्रोत–सांख्यतत्त्वकौमुदी (का0-11)-आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–171

57. ध्वनि परिवर्तन का सबसे प्रमुख कारण है –
(A) बलाघात (B) अज्ञान
(C) प्रयत्नलाघव (D) सादृश्य
स्रोत–भाषाविज्ञान - कर्णसिंह, पेज–163

44. (C)	**45. (D)**	**46. (B)**	**47. (C)**	**48. (B)**	**49. (A)**	**50. (A)**	**51. (C)**	**52. (B)**
53. (B)	**54. (D)**	**55. (A)**	**56. (B)**	**57. (C)**				

58. 'प्रवीण' उदाहरण है –
(A) अर्थ-विस्तार का (B) अर्थ-संकोच का
(C) अर्थादेश का (D) अर्थोत्कर्ष का
स्रोत–भाषाविज्ञान - कर्णसिंह, पेज–240

59. भाषा की दैवी उत्पत्ति के सिद्धान्त का समर्थन किसने किया है?
(A) सुसमिल्स (B) रूसो
(C) अरस्तू (D) हेर्डर
स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–67

60. स्वराघात के कारण ध्वनि परिवर्तन होता है, इस नियम के प्रवर्तक हैं –
(A) वर्नर (B) ग्रासमान
(C) ग्रिम (D) ग्रियर्सन
स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–246

61. वह लकार जो केवल वेद में पाया जाता है –
(A) लुट् लकार (B) लङ् लकार
(C) लेट् लकार (D) लट् लकार
स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–294

62. 'आसीत्' क्रिया का लकार है –
(A) लुङ् (B) लङ्
(C) लिट् (D) लृङ्
स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–352

63. 'पठ्' धातु लोट्लकार, प्रथम पुरुष द्विवचन का रूप है –
(A) पठ (B) पठामि
(C) पठताम् (D) पठतु
स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–146

64. 'भू' धातु लोट्लकार उत्तमपुरुष एकवचन में हो जाता है –
(A) भवामि (B) भवानि
(C) भविष्यामि (D) भवन्तु
स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–145

65. 'गम्' धातु लिट्लकार प्रथम पुरुष एकवचन में हो जाता है –
(A) अगच्छत् (B) जग्मुः
(C) जगाम (D) अगमत्
स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–149

66. 'कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे' सूत्र है –
(A) कर्ताकारक का (B) कर्मकारक का
(C) करणकारक का (D) सम्प्रदानकारक का
स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–187

67. 'ओदनं भुञ्जानो विषं भुङ्क्ते' में ओदन की कर्मसंज्ञा किस सूत्र से हुई है?
(A) कर्मणि द्वितीया (B) तथायुक्तं चानीप्सितम्
(C) अकथितं च (D) कर्तुरीप्सिततमं कर्म
संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–179, 180

68. 'बालकेभ्यः मिष्टान्नं रोचते' रेखाङ्कित पद में कौन-सी विभक्ति है?
(A) पञ्चमी (B) चतुर्थी
(C) सप्तमी (D) इसमें से कोई नहीं
स्रोत–अष्टाध्यायी (1/4/33) - ईश्वरचन्द्र, पेज–123

69. 'जटाभिस्तापसः' में तृतीया विभक्ति का हेतु है –
(A) इत्थम्भूतलक्षणे (B) करणता
(C) अङ्गविकार (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं
स्रोत–अष्टाध्यायी (2.3.21) - ईश्वरचन्द्र, पेज–201

70. 'सर्वस्मिन् शरीरे आत्मा अस्ति' इस वाक्य में अधिकरण है –
(A) आत्मा (B) शरीर
(C) अस्ति (D) इनमें से कोई नहीं
स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–93

71. 'पाणिपादम्' में समास है :
(A) इतरेतर द्वन्द्व (B) समाहार द्वन्द्व
(C) एकशेष द्वन्द्व (D) अलुक् तत्पुरुष
स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–259

58. (A)	59. (A)	60. (A)	61. (C)	62. (B)	63. (C)	64. (B)	65. (C)	66. (B)
67. (D)	68. (B)	69. (A)	70. (B)	71. (B)				

72. 'निर्मक्षिकम्' में समास है –
(A) तत्पुरुष (B) अव्ययीभाव
(C) द्वन्द्व (D) बहुव्रीहि
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–155

73. 'रूपवद्भार्यः' में कौन-सा समास है –
(A) अव्ययीभाव (B) द्विगु
(C) बहुव्रीहि (D) द्वन्द्व
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–187

74. 'चक्रपाणिः' में समास है –
(A) तत्पुरुष (B) बहुव्रीहि
(C) द्विगु (D) द्वन्द्व
स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–263

75. 'नर्तकी' शब्द नर्तक में किस प्रत्यय के संयोग से बनता है?
(A) टाप् (B) ङीप्
(C) ङीष् (D) ङीन्
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–127

76. 'अर्य' शब्द 'ऋ' में किस प्रत्यय के संयोग से बनता है?
(A) शतृ (B) यत्
(C) अच् (D) क्त
स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–477

77. 'नन्दिग्रहिपचादिभ्यो ल्युणिन्यचः' सूत्र किस प्रत्यय से बनता है?
(A) ल्यु (B) णिनि
(C) अच् (D) उपर्युक्त तीनों
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–785

78. 'कुर्वाणः' में प्रत्यय है :
(A) शतृ (B) शानच्
(C) आन् (D) मान्
स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–204

79. 'टाप्' प्रत्यय होता है –
(A) अकारान्त प्रातिपदिक से
(B) ईकारान्त प्रातिपदिक से
(C) उकारान्त प्रातिपदिक से
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–122

80. 'तेन पाठः पठ्यते' प्रयोग है –
(A) कर्तृवाच्य का (B) कर्मवाच्य का
(C) भाववाच्य का (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं
स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–53

81. 'रामो गच्छति ग्रामम्' प्रयोग है –
(A) कर्तृवाच्य का (B) कर्मवाच्य का
(C) भाववाच्य का (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं
स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–52, 53

82. 'अहं तव गृहं विचेष्यामि' का कर्मवाच्य में रूपान्तरण होगा –
(A) मया तव गृहं विचेष्ये
(B) मया तव गृहं विचेतास्मि
(C) मया तव गृहं विचेताहे
(D) मया तव गृहं विचेष्यते
स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–52, 53

83. 'भवन्तः कुत्र भविष्यन्ति' का भाववाच्य में रूपान्तरण होगा –
(A) भवद्भिः कुत्र भवितारः (B) भवद्भिः कुत्र भविष्ये
(C) भवद्भिः कुत्र भविष्यते (D) भवता कुत्र भविता
स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–52, 53

84. नाटक में 'विदूषक' होता है –
(A) नाटक का नायक (B) नाटक का प्रतिनायक
(C) हास्यरस का पात्र (D) करुणरस का पात्र
स्रोत–साहित्यदर्पण (3/42) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–68

85. नाटक में जो बात सुनाने योग्य नहीं होती है, उसे कहते हैं –
(A) प्रकाश (B) आत्मगत (स्वगत)
(C) अपवारित (D) जनान्तिक
स्रोत–साहित्यदर्पण (6/137) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–201

86. नाटकों में भरतवाक्य का प्रयोग होता है :
(A) प्रारम्भ में (B) अन्त में
(C) मध्य में (D) कहीं भी
स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–453

72. (B)	**73. (C)**	**74. (B)**	**75. (C)**	**76. (B)**	**77. (D)**	**78. (B)**	**79. (A)**	**80. (B)**
81. (A)	**82. (D)**	**83. (C)**	**84. (C)**	**85. (B)**	**86. (B)**			

87. अभिनेता गण जहाँ पर नाटक के उपयुक्त वेश-भूषा धारण करते हैं, उसे कहते हैं –

(A) पूर्वरङ्ग (B) नेपथ्य
(C) जनान्तिक (D) स्वगत

स्रोत–नाट्यशास्त्र - ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज–78

88. सूत्रधार होता है :

(A) नायक के रूप में अभिनय करने के लिए
(B) नाटक आरम्भ करने के लिए
(C) अभिनय का निर्देशन एवं नियन्त्रण करने के लिए
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज–48

89. नाट्यशास्त्र में 'नान्दी' से अभिप्रेत है :

(A) नान्दी देवता (B) बैल
(C) मंगलाचरण (D) पात्र

स्रोत–छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज–47

90. 'सतां सद्भिः सङ्गः कथमपि हि पुण्येन भवति' यह सूक्ति किस नाट्यग्रन्थ से सम्बद्ध है?

(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (B) उत्तररामचरितम्
(C) मृच्छकटिकम् (D) विक्रमोर्वशीयम्

स्रोत–उत्तररामचरितम् (2/1) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–97

91. 'सर्वः कान्तमात्मीयं पश्यति' यह सूक्ति वाक्य किसके द्वारा कथित है –

(A) चारुदत्त (B) चाणक्य
(C) दुष्यन्त (D) उदयन

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–111

92. 'शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्' सूक्ति है –

(A) रघुवंशम् की
(B) कुमारसम्भवम् की
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् की
(D) विक्रमोर्वशीयम् की

स्रोत–कुमारसम्भवम् (5/33) - राष्ट्रिय-संस्कृत-संस्थान, पेज–114

93. निम्नलिखित में से कौन-सा वाक्य शुद्ध है?

(A) अध्ययनात् पराजयते (B) अध्ययनाम् पराजयते
(C) अध्ययनः पराजयते (D) अध्ययनस्य पराजयते

स्रोत–अष्टाध्यायी (1.4.26) - ईश्वरचन्द्र, पेज–120

94. निम्नांकित वाक्यों में कौन-सा वाक्य शुद्ध है?

(A) अध्ययनं हेतु काश्यां तिष्ठति
(B) अध्ययनं हेतो काश्यां तिष्ठति
(C) अध्ययनस्य हेतोः काश्यां तिष्ठति
(D) अध्ययनस्य हेतु काश्यां तिष्ठति

स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–222

95. शुद्ध वाक्य है –

(A) आवां पठावः (B) अहं पठावः
(C) वयं पठावः (D) यूयं पठावः

स्रोत–वस्तुनिष्ठ संस्कृतव्याकरणम् - सर्वज्ञभूषण, पेज–161

96. "सीता .... गृहम् आगतवती।" इस वाक्य का पूरक पद होगा –

(A) रेलयानम् (B) बसयानेन
(C) शकटयानया (D) साइकिलयान

स्रोत–अष्टाध्यायी (2.3.18) - ईश्वरचन्द्र, पेज–200

97. "देशे-देशे कलत्राणि देशे-देशे च बान्धवाः तं तु देशं न पश्यामि यत्र भ्राता सहोदरः" उपर्युक्त श्लोक में महत्त्व प्रतिपादित है –

(A) कलत्र का (B) बन्धु का
(C) देश का (D) सहोदर भ्राता का

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास - बलदेव उपाध्याय, पेज–34

98. रस सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य हैं –

(A) विश्वनाथ (B) मम्मट
(C) भरतमुनि (D) कुन्तक

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, भू. पेज–16

99. अध्यवसाय की सिद्धि होने पर अलंकार हता है –

(A) स्वभावोक्ति (B) रूपक
(C) अतिशयोक्ति (D) उत्प्रेक्षा

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–482

100. 'लिम्पतीव तमोऽङ्गानि वर्षतीवाञ्जनं नभः' में अलङ्कार है –

(A) अपह्नुति (B) रूपक
(C) उत्प्रेक्षा (D) सन्देह

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–461

87. (B)	88. (C)	89. (C)	90. (B)	91. (C)	92. (B)	93. (A)	94. (C)	95. (A)
96. (B)	97. (D)	98. (C)	99. (C)	100. (C)				

101. 'अयं मार्तण्डः किं स खलु तुरगैः सप्तभिरितः। कृशानुः किं सर्वा प्रसरति दिशो नैष नियतम्।' में अलङ्कार है :

(A) उपमा (B) रूपक
(C) उत्प्रेक्षा (D) सन्देह

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–462

102. काल्पनिक अभेदारोप होने पर अलङ्कार होता है :

(A) अनुप्रास (B) उत्प्रेक्षा
(C) रूपक (D) उपमा

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–463

103. 'लताकुञ्जं गुञ्जन् मदवदलिपुञ्जं चपलयन्' में अलङ्कार है :

(A) यमक (B) श्लेष
(C) अनुप्रास (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–छन्दोऽलङ्कारमञ्जूषा - लक्ष्मीकान्त दीक्षित, पेज–25

104. भ्रान्तिमान् अलंकार में प्राण तत्त्व है :

(A) सन्देह (B) संशय
(C) भ्रान्ति का निश्चय (D) भ्रान्ति का अनिश्चय

स्रोत–काव्यप्रकाश - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–678

105. अभिहितान्वयवाद मत है :

(A) आनन्दवर्धन का
(B) प्रभाकर गुरु का
(C) मीमांसक (कुमारिल भट्ट) का
(D) मम्मट का

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–36

106. किस रस में आरभटी वृत्ति होती है?

(A) रौद्र (B) शृङ्गार
(C) वीर (D) अद्भुत

स्रोत–साहित्यदर्पण (6/122) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–199

107. वृक्ष किस प्रकार का शब्द है?

(A) यौगिक (B) योगाभास
(C) योगरूढ़ (D) अव्यक्तयोग

चन्द्रालोक (प्रथम मयूख, श्लोक 9-10), कृष्णमणि त्रिपाठी, पेज–678

108. 'साहित्यदर्पण' के प्रथम परिच्छेद का नाम है –

(A) काव्यदोष निरूपण
(B) काव्यस्वरूप निरूपण
(C) काव्यप्रयोजन निरूपण
(D) काव्य-लक्षण निरूपण

स्रोत–साहित्यदर्पण - शालिग्राम शास्त्री, पेज–23

109. 'काव्यालङ्कार' किसकी रचना है –

(A) दण्डी (B) भामह
(C) वामन (D) रुद्रट

स्रोत–काव्यप्रकाश - पारसनाथ द्विवेदी, भू. पेज–14

110. 'इति हेतुस्तदुद्भवे' इस कथन का सम्बन्ध निम्नलिखित में से किस ग्रन्थ से है?

(A) साहित्यदर्पण (B) काव्यप्रकाश
(C) दशरूपक (D) औचित्यविचारचर्चा

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–16

111. 'गुणवृत्त्या पुनस्तेषां वृत्तिः शब्दार्थयोर्मता' किसका कथन है?

(A) विश्वनाथ का (B) जगन्नाथ का
(C) मम्मट का (D) वामन का

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–390

112. मन किस प्रकार की इन्द्रिय है :

(A) कर्मेन्द्रिय (B) ज्ञानेन्द्रिय
(C) उभयात्मक (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–सांख्यकारिका (का0-27)-राकेशशास्त्री, पेज–84

113. आचार्य वामन की काव्य परिभाषा है –

(A) काव्यस्यात्मा ध्वनिः
(B) शब्दार्थौ सहितं काव्यम्
(C) रीतिरात्मा काव्यस्य
(D) रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्

स्रोत–वस्तुनिष्ठ संस्कृत साहित्यम्-सर्वज्ञभूषण, पेज–302

114. 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' किस आचार्य का कथन है?

(A) मम्मट (B) आनन्दवर्धन
(C) विश्वनाथ (D) जगन्नाथ

स्रोत–साहित्यदर्पण - शालिग्राम शास्त्री, पेज–19

101. (D)	102. (C)	103. (C)	104. (C)	105. (C)	106. (A)	107. (D)	108. (B)	109. (B)
110. (B)	111. (C)	112. (C)	113. (C)	114. (C)				

115. औचित्य को काव्य की आत्मा किसने माना है?
(A) रुय्यक (B) कुन्तक
(C) क्षेमेन्द्र (D) मम्मट
स्रोत–काव्यप्रकाश - पारसनाथ द्विवेदी, भू. पेज–26

116. 'ध्वनिरात्मा काव्यस्य' इस परिभाषा से सम्बद्ध आचार्य हैं –
(A) विश्वनाथ (B) आनन्दवर्धन
(C) दण्डी (D) वामन
स्रोत–ध्वन्यालोक - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–02

117. आचार्य मम्मट के अनुसार काव्य का लक्षण है –
(A) वाक्यं रसात्मकं काव्यम्
(B) वक्रोक्तिः काव्यजीवितम्
(C) तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि
(D) रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्
स्रोत–काव्यप्रकाश (सूत्र-1) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–18

118. आचार्य मम्मट ने उत्तम काव्य माना है –
(A) गुणीभूतव्यङ्ग्य को (B) शब्द-चित्र को
(C) अर्थ-चित्र को (D) ध्वनि को
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–28

119. जहाँ कोई शब्द अन्य अर्थ के लिए अपने अर्थ का त्याग कर देता है, वहाँ लक्षणा होती है –
(A) उपादान लक्षणा (B) लक्षण लक्षणा
(C) शुद्धा लक्षणा (D) गौणी लक्षणा
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–53

120. लक्षणा स्वीकृति का आधार है –
(A) योग्यता (B) संकेतग्रह
(C) आसत्ति (D) मुख्यार्थबाध
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेशर, पेज–51

121. निम्नांकित काव्य प्रयोजनों में कौन आचार्य मम्मट द्वारा मान्य नहीं है?
(A) यश (B) धनार्जन
(C) प्रीति (D) व्यवहारज्ञान
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–10

122. आचार्य विश्वनाथानुसार काव्य का प्रयोजन है –
(A) पुरुषार्थ-चतुष्टय (B) मोक्ष
(C) अर्थ (D) इनमें से कोई नहीं
स्रोत–साहित्यदर्पण - कमला देवी, पेज–44

123. 'गङ्गायां घोषः' में कौन लक्षणा है –
(A) प्रयोजनमूला
(B) रुढ़िमूला
(C) रुढ़ि-लक्षण-लक्षणा
(D) प्रयोजनमूला-लक्षण-लक्षणा
स्रोत–साहित्यदर्पण - शालिग्राम शास्त्री, पेज–29

124. 'साहित्यदर्पण' के अनुसार काव्य में रस की स्थिति है–
(A) शरीर जैसी
(B) आत्मा जैसी
(C) अवयव संस्थान जैसी
(D) अलंकरण जैसी
स्रोत–साहित्यदर्पण - कमलादेवी, पेज–65

125. नाटक में कौन-सा रस सर्वमान्य नहीं है?
(A) शान्त (B) श्रृंगार
(C) वीर (D) हास्य
स्रोत–दशरूपक - बैजनाथ पाण्डेय, पेज–367

115. (C) 116. (B) 117. (C) 118. (D) 119. (B) 120. (D) 121. (C) 122. (A) 123. (D) 124. (B) 125. (A)

8	प्रवक्ता चयन परीक्षा (PGT) संस्कृत	2003

1. **'हरिहरौ' शब्द का विग्रह होगा–**
   (A) हरि च हरौ च (B) हरिश्च हरश्च
   (C) हरि च हरौ (D) हरि हरौ च

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड-4), पेज–235

2. **'सप्तर्षयः' में कौन सा समास है?**
   (A) अव्ययीभाव (B) तत्पुरुष
   (C) द्वन्द्व (D) बहुव्रीहि

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड-4), पेज–99

3. **'सहरि' में कौन सा समास है?**
   (A) अव्ययीभाव (B) तत्पुरुष
   (C) बहुव्रीहि (D) द्वन्द्व

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड-4), पेज–36

4. **'उपराजम्' में कौन सा समास है?**
   (A) बहुव्रीहि (B) तत्पुरुष
   (C) अव्ययीभाव (D) द्वन्द्व

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड-4), पेज–52

5. **'कुपुरुषः' में कौन सा समास है?**
   (A) नञ् तत्पुरुषसमास (B) प्रादि तत्पुरुषसमास
   (C) गति तत्पुरुषसमास (D) उपपद तत्पुरुषसमास

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड-4), पेज–127

6. **'रामकृष्णौ' में कौन सा समास है?**
   (A) एकशेष द्वन्द्व (B) समाहार द्वन्द्व
   (C) इतरेतर द्वन्द्व (D) उपर्युक्त में से कोई भी नहीं

स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–257

7. **'चन्द्रशेखरः' में कौन सा समास है?**
   (A) समानाधिकरण बहुव्रीहि
   (B) व्यधिकरण बहुव्रीहि
   (C) तत्पुरुष
   (D) द्वन्द्व

स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–263

8. **'पितरौ' शब्द का विग्रह है–**
   (A) माता पिता च (B) पिता च
   (C) माता च पिता च (D) मातापिताश्च

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड-4), पेज–239

9. **'हरित्रातः' में कौन सा समास है?**
   (A) द्वितीया तत्पुरुष (B) तृतीया तत्पुरुष
   (C) चतुर्थी तत्पुरुष (D) षष्ठी तत्पुरुष

स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–243

10. **'अब्राह्मणः' में कौन-सा समास है?**
    (A) अव्ययीभाव (B) बहुव्रीहि
    (C) द्वन्द्व (D) तत्पुरुष

स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–252

11. **'यस्य च भावेन भावलक्षणम्' सूत्र है–**
    (A) कर्म कारक (B) करण कारक
    (C) अपादान कारक (D) अधिकरण कारक

स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–220

12. **''कर्तृकर्मणोः कृति'' सूत्र है–**
    (A) सम्प्रदान कारक (B) करण कारक
    (C) सम्बन्ध कारक (D) कर्मकारक

स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–225

13. **'मातुर्निलीयते कृष्णः' रेखांकित पद में कौन सी विभक्ति है?**
    (A) तृतीया (B) चतुर्थी
    (C) पञ्चमी (D) सप्तमी

स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–209

14. **'बालकेभ्यः मिष्ठान्नं रोचते' रेखांकित पद में कौन-सी विभक्ति है?**
    (A) पञ्चमी (B) चतुर्थी
    (C) सप्तमी (D) तृतीया

स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–200

1. (B)	2. (B)	3. (A)	4. (C)	5. (B)	6. (C)	7. (B)	8. (C)	9. (B)
10. (D)	11. (D)	12. (C)	13. (C)	14. (B)				

15. 'जटाभिस्तापसः' में तृतीया विभक्ति का हेतु है–
(A) इत्थम्भूतलक्षणता (B) करणता
(C) अङ्गविकार (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं
स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–199

16. 'गम्' धातु लिट्लकार प्रथमपुरुष द्विवचन का रूप है–
(A) जगाम (B) जग्मतुः
(C) जग्मथुः (D) जग्म
स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–314

17. 'भू' धातु लुङ्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप है–
(A) अभूत् (B) अभवत्
(C) भवेत् (D) बभूव
स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–312

18. 'द्रक्ष्यसि' क्रिया का लकार है?
(A) लुट् (B) लृट
(C) लुङ् (D) लट्
स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–318

19. 'पठ्' धातु लङ्लकार प्रथम पुरुष बहुवचन का रूप है–
(A) पठेयुः (B) पठन्ति
(C) अपठन् (D) अपठत्
स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–324

20. 'कर्त्री' में कौन सा प्रत्यय है?
(A) टाप् (B) ङीप्
(C) ङीष् (D) ङीन्
स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–512

21. 'पठनीय' शब्द में कौन सा प्रत्यय है?
(A) तव्यत् (B) तव्य
(C) अनीयर् (D) यत्
स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–475

22. 'देय' में कौन सा प्रत्यय है?
(A) शतृ (B) शानच्
(C) तव्य (D) यत्
स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–476

23. 'य्' वर्ण का उच्चारणस्थान है–
(A) कण्ठ (B) तालु
(C) मूर्धा (D) दन्त
स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–41

24. 'ग' वर्ण का उच्चारणस्थान है–
(A) ओष्ठ (B) दन्त
(C) कण्ठ (D) तालु
स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–41

25. 'दैत्य+अरिः' में कौन सी सन्धि है?
(A) गुण सन्धि (B) दीर्घ सन्धि
(C) वृद्धि सन्धि (D) अयादि सन्धि
स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–46

26. 'शिशुपालवधम्' में कितने सर्ग हैं?
(A) 17 (B) 18
(C) 19 (D) 20
स्रोत–शिशुपालवधम् - तारिणीश झा, भू. पेज–15

27. शिशुपालवध के किस सर्ग में यमुना नदी का वर्णन है?
(A) प्रथम सर्ग (B) चतुर्थ सर्ग
(C) द्वादश सर्ग (D) त्रयोदश सर्ग
स्रोत–शिशुपालवधम् - तारिणीश झा, भू. पेज–27

28. 'नैषधीयचरितम्' में कितने सर्ग स्वीकृत किये गये हैं?
(A) 18 (B) 20
(C) 22 (D) 27
संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेवद्विवेदी, पेज–224

29. मूलतः 'बुद्धचरितम्' की सर्ग संख्या का उल्लेख मिलता है–
(A) 28 (B) 32
(C) 35 (D) 37
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–169

30. 'बुद्धचरित' महाकाव्य में महात्माबुद्ध को बुद्धत्व की प्राप्ति का वर्णन किस सर्ग में हुआ है?
(A) 9वें सर्ग में (B) 12वें सर्ग में
(C) 14वें सर्ग में (D) 16वें सर्ग में
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–169

15. (A)	**16. (B)**	**17. (A)**	**18. (B)**	**19. (C)**	**20. (B)**	**21. (C)**	**22. (D)**	**23. (B)**
24. (C)	**25. (B)**	**26. (D)**	**27. (C)**	**28. (C)**	**29. (A)**	**30. (C)**		

31. शिवराजविजय कितने निःश्वासों में विभक्त है?
(A) दश (B) बारह
(C) आठ (D) छः
स्रोत–शिवराजविजय - रमाशङ्कर मिश्र, भू. पेज–16

32. 'तिलकमञ्जरी' किसकी रचना है?
(A) विद्यापति (B) कल्हण
(C) धनपाल (D) अगस्त्य
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–517

33. 'ऋतुसंहार' है–
(A) महाकाव्य (B) गद्यकाव्य
(C) गीतिकाव्य (D) नाटक
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–525

34. 'गाथासप्तशती' किसकी रचना है?
(A) घटकर्पर (B) अश्वघोष
(C) हाल (D) सिद्धसेनदिवाकर
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–561

35. 'शिवशतक' के लेखक हैं–
(A) सोमेश्वर (B) आनन्दवर्धन
(C) गोकुलनाथ (D) बल्लाल
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–566

36. महाकाव्य में कम से कम कितने सर्ग होने चाहिए?
(A) 28 (B) 35
(C) 8 (D) 12
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–132

37. महाकाव्य में अङ्गीरस नहीं होता है–
(A) श्रृंगार (B) वीर
(C) शान्त (D) रौद्र
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–132

38. सभी रूपकों का सामान्य लक्षण किस रूपक के समान है–
(A) भाण (B) प्रहसन
(C) प्रकरण (D) नाटक
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-उमाशंकर शर्मा ऋषि, पेज–437

39. स्वप्नवासवदत्तम् नाटक में कुल कितने अंक हैं?
(A) पाँच (B) छः
(C) सात (D) आठ
संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेवद्विवेदी, पेज–275

40. संस्कृत नाट्यशास्त्र में रूपक के कितने भेद हैं?
(A) 8 (B) 10
(C) 12 (D) 14
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–264

41. संस्कृत नाट्यशास्त्र में उपरूपकों के कितने भेद हैं?
(A) 10 (B) 14
(C) 18 (D) 22
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–264

42. निम्नलिखित में से किसका मत है कि संस्कृत नाटकों की उत्पत्ति 'स्वांगवाद' से हुई है?
(A) प्रो0 हिलब्रान्ड (B) स्टेन कोनो
(C) उपर्युक्त दोनों (D) डॉ0 पिशेल
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–266

43. किसने यह विचार व्यक्त किया कि 'पुत्तलिका नृत्य' से नाटकों की उत्पत्ति हुई?
(A) प्रो0 रिजवे (B) प्रो0 ल्यूडर्स
(C) प्रो0 विन्डिश (D) डॉ0 पिशेल
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–266

44. 'प्रयाग प्रशस्ति' किसकी रचना है?
(A) प्रवरसेन (B) हलायुध
(C) हरिषेण (D) बाणभट्ट
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–254

45. यजुर्वेद का प्रतिपाद्य विषय है–
(A) ज्ञान (B) कर्मकाण्ड
(C) स्तुति (D) गान
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–63

46. जैमिनिशाखा किस वेद से सम्बन्धित है?
(A) ऋग्वेद (B) यजुर्वेद
(C) सामवेद (D) अथर्ववेद
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–84

31. (B)	**32. (C)**	**33. (C)**	**34. (C)**	**35. (C)**	**36. (C)**	**37. (D)**	**38. (D)**	**39. (B)**
40. (B)	**41. (C)**	**42. (C)**	**43. (D)**	**44. (C)**	**45. (B)**	**46. (C)**		

47. 'अध्वर्यु' से युक्त वेद है–
(A) ऋग्वेद (B) यजुर्वेद
(C) अथर्ववेद (D) सामवेद
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–63

48. 'आपरितोषाद् विदुषां न साधु मन्ये प्रयोगविज्ञानम्' यह सूक्ति किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है?
(A) उत्तररामचरितम् (B) महाभारतम्
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (D) किरातार्जुनीयम्
स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/2)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–8

49. 'गण्डस्योपरि पिण्डकः संवृत्तः' क्या है–
(A) सूक्ति (B) काव्यलक्षण
(C) मुहावरा (D) उपरोक्त में से कोई नहीं
स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (अङ्क-2)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–91

50. दुष्यन्त की मनःस्थिति जानने के लिए मेनका ने अपनी किस सखी को भेजा था?
(A) सानुमती (B) उर्वशी
(C) रम्भा (D) तिलोत्तमा
स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (अंक-6)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–318

51. मैत्रेय विदूषक किस नाटक से सम्बद्ध है?
(A) मृच्छकटिकम् (B) मालविकाग्निमित्रम्
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (D) स्वप्नवासवदत्तम्
स्रोत–मृच्छकटिकम् - रमाशंकर त्रिपाठी, भू. पेज–43

52. 'मेघे माघे गतं वयः' यह सूक्ति किस विद्वान् के द्वारा कही गयी है?
(A) मल्लिनाथ सूरि (B) राजशेखर
(C) बल्लभदेव (D) माघ
स्रोत–मेघदूतम् - दयाशंकर शास्त्री, पेज–44

53. 'विक्रमोर्वशीयम्' का नायक है?
(A) विक्रमादित्य (B) अग्निमित्र
(C) विक्रम (पुरूरवा) (D) माधव
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–329

54. 'राघवविलास' किसकी रचना है?
(A) राजशेखर (B) कुन्तक
(C) भरत (D) विश्वनाथ
स्रोत–साहित्यदर्पण - राजेन्द्र मिश्र, पेज–39

55. पाणिनीय शिक्षा में ध्वनियाँ कितने सर्गों में विभक्त हैं?
(A) चार (B) पाँच
(C) छः (D) सात
स्रोत–पाणिनीय शिक्षा (श्लोक-9) आचार्य कौण्डिन्यायन पेज–79

56. 'घोषवती वीणा' का सम्बन्ध किस नाटक से है?
(A) चारुदत्तम् (B) मृच्छकटिकम्
(C) महावीरचरितम् (D) स्वप्नवासवदत्तम्
स्रोत–स्वप्नवासवदत्तम् - तारिणीश झा, भू पेज–31

57. किस स्थान पर शकुन्तला की अँगूठी गिरी–
(A) मार्ग (B) कण्वाश्रम
(C) प्रभासतीर्थ (D) शचीतीर्थ
स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (अङ्क-5)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–283

58. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में मातलि कौन था?
(A) दुष्यन्त का पुरोहित (B) दुष्यन्त का सेनापति
(C) इन्द्र का सारथि (D) कण्व का शिष्य
स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू. पेज–99

59. अभिज्ञानशाकुन्तलम् की कथा महाभारत के किस पर्व से सम्बन्धित है?
(A) वनपर्व (B) सभापर्व
(C) आदिपर्व (D) शान्तिपर्व
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–335

60. 'गङ्गायां घोषः' किस लक्षणा का उदाहरण है–
(A) रूढ़ि लक्षणलक्षणा
(B) रुढ़ि उपादानलक्षणा
(C) प्रयोजन लक्षणलक्षणा
(D) प्रयोजन उपादानलक्षणा
स्रोत–साहित्यदर्पण - राजेन्द्र मिश्र, पेज–159

61. 'कलिङ्गः साहसिकः' किस लक्षणा भेद का उदाहरण है?
(A) रूढ़िवती सारोपा लक्षणलक्षणा
(B) रूढ़िवती साध्यवसाना लक्षणलक्षणा
(C) रूढ़िवती साध्यवसाना सोपादानलक्षणा
(D) इनमें से कोई नहीं
स्रोत–साहित्यदर्पण - राजेन्द्र मिश्र, पेज–159

47. (B)	**48. (C)**	**49. (C)**	**50. (A)**	**51. (A)**	**52. (A)**	**53. (C)**	**54. (D)**	**55. (B)**
56. (D)	**57. (D)**	**58. (C)**	**59. (C)**	**60. (C)**	**61. (B)**			

62. साहित्यदर्पण के रचयिता कौन थे?
(A) पं0 जगन्नाथ (B) राजशेखर
(C) मम्मट (D) आचार्य विश्वनाथ
स्रोत–साहित्यदर्पण - राजेन्द्र मिश्र, पेज–39

63. 'रीतिरात्मा काव्यस्य' किसकी उक्ति है?
(A) मम्मट (B) कुन्तक
(C) विश्वनाथ (D) वामन
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, भू. पेज–17

64. किसने वक्रोक्ति को काव्य की आत्मा कहा है?
(A) कुन्तक (B) मम्मट
(C) विश्वनाथ (D) राजशेखर
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, भू. पेज–17

65. 'नाट्यशास्त्र' किसकी रचना है?
(A) मम्मट (B) माधवाचार्य
(C) भरत (D) रुय्यक
स्रोत–साहित्यदर्पण - डॉ0 राजेन्द्र मिश्र, पेज–14

66. 'उत्पत्तिवाद' किससे सम्बन्धित है?
(A) भट्टलोल्लट (B) भट्टशङ्कुक
(C) भट्टनायक (D) अभिनवगुप्त
स्रोत–साहित्यदर्पण - राजेन्द्र मिश्र, भू. पेज–15

67. 'अनुमितिवाद' के समर्थक हैं?
(A) भट्टलोल्लट (B) भट्टशंकुक
(C) भट्टनायक (D) अभिनवगुप्त
स्रोत–साहित्यदर्पण - राजेन्द्र मिश्र, भू. पेज–15

68. ''विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः'' किससे सम्बन्धित है?
(A) आचार्य मम्मट (B) आचार्य विश्वनाथ
(C) आचार्य भरत (D) आचार्य वामन
स्रोत– नाट्यशास्त्र (षष्ठ अध्याय)-ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज–182

69. अभिव्यक्तिवाद के समर्थक हैं–
(A) भट्टनायक (B) अभिनवगुप्त
(C) भट्टलोल्लट (D) शंकुक
स्रोत–साहित्यदर्पण - राजेन्द्र मिश्र, भू. पेज–16

70. 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' किस आचार्य का कथन है?
(A) मम्मट (B) आनन्दवर्धन
(C) विश्वनाथ (D) जगन्नाथ
स्रोत–साहित्यदर्पण - राजेन्द्र मिश्र, पेज–133

71. 'ध्वनिरात्मा काव्यस्य' इस परिभाषा से सम्बद्ध आचार्य हैं?
(A) विश्वनाथ (B) दण्डी
(C) वामन (D) आनन्दवर्धन
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, भू. पेज–18

72. आचार्य विश्वनाथ ने काव्य का लक्षण साहित्यदर्पण के किस परिच्छेद में दिया है?
(A) प्रथम (B) द्वितीय
(C) तृतीय (D) चतुर्थ
स्रोत–साहित्यदर्पण - राजेन्द्र मिश्र, पेज–115

73. 'संस्कारमात्रजन्यं ज्ञानं स्मृतिः' किस दर्शन से सम्बन्धित है–
(A) न्यायदर्शन (B) सांख्यदर्शन
(C) मीमांसादर्शन (D) जैनदर्शन
स्रोत–तर्कभाषा - गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, पेज–16

74. तर्कसंग्रह के अनुसार पदार्थों की संख्या है–
(A) सात (B) नौ
(C) ग्यारह (D) तेरह
स्रोत–तर्कसंग्रह - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–18

75. तर्कभाषा के अनुसार कर्मों की संख्या है–
(A) तीन (B) चार
(C) पाँच (D) छः
स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज–244

76. तर्कसंग्रह के अनुसार कारण के कितने भेद हैं?
(A) दो (B) तीन
(C) चार (D) पाँच
स्रोत–तर्कसंग्रह - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–43

62. (D)	**63. (D)**	**64. (A)**	**65. (C)**	**66. (A)**	**67. (B)**	**68. (C)**	**69. (B)**	**70. (C)**
71. (D)	**72. (A)**	**73. (A)**	**74. (A)**	**75. (C)**	**76. (B)**			

77. तर्कसंग्रह के अनुसार गुणों की संख्या है–

(A) 20 (B) 30
(C) 24 (D) 25

स्रोत–तर्कसंग्रह - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–19

78. श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार निष्काम कर्म का अर्थ है–

(A) निरुद्देश्य कर्म करना
(B) सकाम कर्म करना
(C) अनासक्त होकर कर्म करना
(D) कर्म संन्यास

स्रोत–गीता (3/9, 19)

79. श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार कर्मयोगी को कर्म क्यों करना चाहिए?

(A) कीर्ति के लिए (B) लोकसंग्रह के लिए
(C) सुख के लिए (D) लोकत्याग के लिए

स्रोत–श्रीमदभगवत्गीता, (3/25)

80. गीता का स्वधर्म सिद्धान्त है–

(A) वर्णव्यवस्था का सिद्धान्त (B) कर्म सिद्धान्त
(C) आत्म सिद्धान्त (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (3/19,-25), (4/16-21), (2/47)

81. जगत् ब्रह्म का है–

(A) परिणाम (B) विवर्त
(C) उपर्युक्त दोनों (D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–17

82. 'अध्यास' का अर्थ है–

(A) स्मृति (B) संशय
(C) भ्रान्ति (D) साक्षात्कार

स्रोत–भारतीय दर्शन - डॉ0 बद्रीनाथ सिंह, पेज–317

83. साधनचतुष्टय में कौन नहीं है?

(A) नित्यानित्यवस्तुविवेक (B) शमदमादिसाधनसम्पत्
(C) आत्मसंयम (D) मुमुक्षुत्व

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–20

84. 'तितिक्षा' कहते हैं–

(A) सर्वदा वासनाओं का त्याग
(B) निषिद्ध विषयों से बाह्य इन्द्रियों का निवर्तन
(C) सभी मौसमों को सहन करने का अभ्यास
(D) मन का संयम

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–20,21

85. जगत् की उत्पत्ति का कारण है–

(A) अज्ञानोपहित (B) ईश्वर
(C) ब्रह्म (D) आत्मा

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–56,57

77. (C) 78. (C) 79. (B) 80. (B) 81. (B) 82. (C) 83. (C) 84. (C) 85. (A)

9 | प्रवक्ता चयन परीक्षा (PGT) संस्कृत | 2002

1. 'दुर्यवनम्' में समास है–
(A) तत्पुरुष (B) अव्ययीभाव
(C) बहुव्रीहि (D) द्वन्द्व
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी भैमी व्याख्या (खण्ड-4), पेज–28

2. 'पञ्चगङ्गम्' में समास है–
(A) अव्ययीभाव (B) द्वन्द्व
(C) तत्पुरुष (D) बहुव्रीहि
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी भैमी व्याख्या (खण्ड-4), पेज–43

3. 'कृष्णाश्रितः' में समास है–
(A) अव्ययीभाव (B) तत्पुरुष
(C) द्वन्द्व (D) बहुव्रीहि
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी भैमी व्याख्या (खण्ड-4), पेज–61

4. 'हरित्रातः' में समास है–
(A) तत्पुरुष (B) बहुव्रीहि
(C) अव्ययीभाव (D) द्वन्द्व
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी भैमी व्याख्या (खण्ड-4), पेज–67

5. 'चोरभयम्' में समास है–
(A) तत्पुरुष (B) बहुव्रीहि
(C) अव्ययीभाव (D) द्वन्द्व
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी भैमी व्याख्या (खण्ड-4), पेज–76, 77

6. 'कुपुरुषः' में समास है–
(A) अव्ययीभाव (B) द्वन्द्व
(C) तत्पुरुष (D) बहुव्रीहि
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी भैमी व्याख्या (खण्ड-4), पेज–127

7. 'रूपवद्भार्यः' में समास है–
(A) तत्पुरुष (B) अव्ययीभाव
(C) द्वन्द्व (D) बहुव्रीहि
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी भैमी व्याख्या (खण्ड-4), पेज–197

8. 'पीताम्बरः' में समास है–
(A) तत्पुरुष (B) बहुव्रीहि
(C) द्वन्द्व (D) अव्ययीभाव
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी भैमी व्याख्या (खण्ड-4), पेज–191

9. 'प्राप्तोदकः' में समास है–
(A) द्वन्द्व (B) बहुव्रीहि
(C) अव्ययीभाव (D) तत्पुरुष
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी भैमी व्याख्या (खण्ड-4), पेज–188

10. 'पाणिपादम्' में समास है–
(A) इतरेतर द्वन्द्व (B) समाहार द्वन्द्व
(C) एकशेष द्वन्द्व (D) अलुक् तत्पुरुष
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी भैमी व्याख्या (खण्ड-4), पेज–240

11. 'टाप्' प्रत्यय होता है–
(A) अकारान्त प्रातिपदिक से
(B) ईकारान्त प्रातिपदिक से
(C) उकारान्त प्रातिपदिक से
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी भैमी व्याख्या (खण्ड-6), पेज–4

12. ङीप् प्रत्यय होता है–
(A) अकारान्त प्रातिपदिक से
(B) ईकारान्त प्रातिपदिक से
(C) उकारान्त प्रातिपदिक से
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी भैमी व्याख्या (खण्ड-6), पेज–8

13. लावणिकी शब्द लावणिक में किस प्रत्यय के संयोग से बनता है?
(A) टाप् (B) ङीप्
(C) ङीष् (D) ङीन्
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी भैमी व्याख्या (खण्ड-6), पेज–16

14. 'नर्तकी' शब्द नर्तक में किस प्रत्यय के संयोग से हुआ?
(A) टाप् (B) ङीप्
(C) ङीष् (D) ङीन्
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी भैमी व्याख्या (खण्ड-6), पेज–24

1. (B) 2. (A) 3. (B) 4. (A) 5. (A) 6. (C) 7. (D) 8. (B) 9. (B)
10. (B) 11. (A) 12. (C) 13. (B) 14. (C)

15. 'कुम्भकारः' में प्रत्यय है–
(A) शतृ (B) शानच्
(C) अण् (D) घञ्
स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–90

16. 'बालकेन ग्रन्थः दृश्यते' प्रयोग है–
(A) कर्तृवाच्य का
(B) कर्मवाच्य का
(C) भाववाच्य का
(D) उपर्युक्त में से किसी का भी नहीं
स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–52-53

17. 'छात्रेण उपविश्यते' में प्रयोग है–
(A) कर्तृवाच्य
(B) कर्मवाच्य
(C) भाववाच्य
(D) उपर्युक्त में से किसी का भी नहीं
स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–52-55

18. 'भू' धातु लोट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन में हो जाता है–
(A) भविता (B) भवतु
(C) भवतः (D) भव
स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–145

19. 'गम्' धातु लट्लकार मध्यमपुरुष द्विवचन में हो जाता है–
(A) गच्छतः (B) गच्छामि
(C) गच्छावः (D) गच्छथः
स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–149

20. 'आसीत्' क्रिया का लकार है–
(A) लुङ् (B) लङ्
(C) लिट् (D) लृङ्
स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–160

21. 'गम्' धातु लिट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन में हो जाता है–
(A) अगच्छत् (B) जग्मुः
(C) जगाम (D) अगमत्
स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–149

22. 'पठ्' धातु विधिलिङ् प्रथमपुरुष द्विवचन में हो जाता है–
(A) पठ् (B) पठताम्
(C) पठेताम् (D) पठेत्
स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–324

24. ''कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे' सूत्र है–
(A) कर्ताकारक का (B) कर्मकारक का
(C) करणकारक का (D) सम्प्रदानकारक का
स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–38

25. 'रामः गृहम् अधितिष्ठति' में गृह की कर्मसंज्ञा किस सूत्र से हुई है?
(A) कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे (B) अकथितं च
(C) अधिशीङ्स्थासां कर्म (D) सहयुक्तेऽप्रधाने
स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनिपाण्डेय, पेज–29

26. 'मासमास्ते' रेखांकित पद में कौन सी विभक्ति है?
(A) प्रथमा विभक्ति (B) द्वितीया विभक्ति
(C) तृतीया विभक्ति (D) चतुर्थी विभक्ति
स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–23

27. 'बालकाय मोदकाः रोचन्ते' में रेखांकित पद में कौन-सी विभक्ति है?
(A) द्वितीया विभक्ति (B) तृतीया विभक्ति
(C) चतुर्थी विभक्ति (D) पञ्चमी विभक्ति
स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) (1/4/33)-राममुनि पाण्डेय, पेज-47

28. 'पुष्पेभ्यः स्पृहयति' में कौन सा कारक है?
(A) कर्मकारक (B) करणकारक
(C) सम्प्रदानकारक (D) अपादानकारक
स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी कारक (1/4/36)-राममुनि पाण्डेय, पेज-49

29. 'मातुः स्मरति' रेखांकित पद में कौन सी विभक्ति है?
(A) पञ्चमी विभक्ति (B) चतुर्थी विभक्ति
(C) तृतीया विभक्ति (D) षष्ठी विभक्ति
स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) (2.3.52)-राममुनि पाण्डेय, पेज-76

15. (C)	16. (B)	17. (C)	18. (B)	19. (D)	20. (B)	21. (C)	22. (C)	24. (B)
25. (C)	26. (B)	27. (C)	28. (C)	29. (D)				

30. 'कृष्णस्य कृतिः' में 'कृष्ण' पद में षष्ठी विभक्ति किस सूत्र से हुई?

(A) षष्ठी शेषे (B) षष्ठी हेतुप्रयोगे
(C) कर्तृकर्मणोः कृति (D) उभयप्राप्तौ कर्मणि

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण) (2/3/65) - राममुनि पाण्डेय, पेज-82

31. आचार्य मम्मट के अनुसार काव्य के कितने प्रयोजन हैं?

(A) चार (B) पाँच
(C) छः (D) सात

स्रोत–काव्यप्रकाश (1/2) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–10

32. 'तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि से सम्बन्धित आचार्य हैं–

(A) विश्वनाथ (B) मम्मट
(C) भामह (D) रुय्यक

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–19

33. आचार्य विश्वनाथ की काव्य परिभाषिक शब्दावली है–

(A) रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्
(B) वाक्यं रसात्मकं काव्यम्
(C) वक्रोक्तिः काव्यजीवितम्
(D) तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–27

34. संकेतित अर्थ की बोधक शक्ति है–

(A) तात्पर्या (B) अभिधा
(C) लक्षणा (D) व्यञ्जना

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–50

35. 'गङ्गायां घोषः' का लक्ष्यार्थ है–

(A) गङ्गातटे घोषः
(B) घोषप्रान्तवाहिन्यां गङ्गायाम्
(C) घोषे शीतत्वं-पाषाणत्वम्
(D) गङ्गाजलप्रवाहे घोषः

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–61

36. 'कमलमिव मनोज्ञं मुखम्' में कौन-सा अलंकार है–

(A) उपमा (B) रूपक
(C) उत्प्रेक्षा (D) यमक

स्रोत– काव्यप्रकाश - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–527

37. 'राम-लक्ष्मणौ' व्यञ्जना है–

(A) संयोग (B) विरोधिता
(C) साहचर्य (D) अर्थ

स्रोत– काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–78

38. 'सशङ्खचक्रो हरिः' में व्यञ्जना है–

(A) संयोग (B) साहचर्य
(C) विरोधिता (D) विप्रयोग

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–78

39. अलंकार सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य हैं–

(A) दण्डी (B) वामन
(C) भामह (D) क्षेमेन्द्र

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, भू. पेज–16

40. 'ध्वन्यालोक' किसकी रचना है?

(A) रुद्रट (B) राजशेखर
(C) अभिनवगुप्त (D) आनन्दवर्धन

स्रोत–साहित्यदर्पण - अभिराजराजेन्द्र मिश्र, पेज–22

41. 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः' यह कथन किससे सम्बन्धित है–

(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (B) किरातार्जुनीयम्
(C) नैषधीयचरितम् (D) मेघदूतम्

स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/4) - रामसेवक दुबे, पेज–50

42. 'अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता' यह उक्ति किसने कही है–

(A) भीम (B) द्रौपदी
(C) दुर्योधन (D) उपर्युक्त में से कोई भी नहीं

स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/23) - रामसेवक दुबे, पेज–98

43. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में अङ्गीरस है–

(A) वीर (B) शृङ्गार
(C) करुण (D) शान्त

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू., पेज–60

30. (C)	**31. (C)**	**32. (B)**	**33. (B)**	**34. (B)**	**35. (A)**	**36. (A)**	**37. (C)**	**38. (A)**
39. (C)	**40. (D)**	**41. (B)**	**42. (D)**	**43. (B)**				

44. 'नाट्यशास्त्र' किसकी रचना है?
(A) भरतमुनि (B) मम्मट
(C) विश्वनाथ (D) जगन्नाथ
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–263

45. 'नवपलाशपलाशवनं पुरः स्फुटपरागपरागतपङ्कजम्' में अलंकार है–
(A) अनुप्रास (B) यमक
(C) श्लेष (D) उत्प्रेक्षा
स्रोत–साहित्यदर्पण (10.8) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–280

46. योऽसकृत्परगोत्राणां पक्षच्छेदक्षणक्षमः।
शतकोटिदतां बिभ्रद् विबुधेन्द्र स राजते।।
में अलंकार हैं?
(A) उपमा (B) यमक
(C) श्लेष (D) रूपक
स्रोत–छन्दोऽलंकारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज–63

47. किसी प्रकृत अर्थात् प्रस्तुत वस्तु की अप्रस्तुत-वस्तु के रूप में सम्भावना प्रकट करने पर अलंकार होता है–
(A) अनुप्रास (B) श्लेष
(C) उत्प्रेक्षा (D) यमक
स्रोत–छन्दोऽलंकारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज–69

48. अध्यवसाय की सिद्धि होने पर अलंकार होता है–
(A) स्वभावोक्ति (B) रूपक
(C) अतिशयोक्ति (D) उत्प्रेक्षा
स्रोत–छन्दोऽलंकारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज–71

49. 'सैषा स्थली यत्र विचिन्विता त्वां भ्रष्टं मया नूपुरमेकमूर्व्याम्' में अलंकार है–
(A) उपमा (B) रूपक
(C) उत्प्रेक्षा (D) श्लेष
स्रोत–छन्दोऽलंकारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज–70

50. उपमान की अपेक्षा उपमेय की अधिकता या न्यूनता का वर्णन होने पर अलंकार होता है–
(A) भ्रान्तिमान् (B) व्यतिरेक
(C) अपह्नुति (D) दृष्टान्त
स्रोत–छन्दोऽलंकारसौरभम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज–75

51. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में विदूषक का चित्रण हुआ है?
(A) प्रथम अंक में (B) द्वितीय अंक में
(C) तृतीय अंक में (D) पञ्चम अंक में
स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–90

52. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के किस अंक के प्रारम्भ में शुद्ध विष्कम्भक का प्रयोग किया गया है?
(A) प्रथम अंक (B) द्वितीय अंक
(C) तृतीय अंक (D) चतुर्थ अंक
स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–134

53. नाटकों में विष्कम्भक का प्रयोग होता हैं?
(A) प्रारम्भ में (B) अन्त में
(C) मध्य में (D) कहीं पर भी
स्रोत–दशरूपक (1.59) - बैजनाथ पाण्डेय, पेज–117

54. अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक में प्रवेशक का प्रयोग हुआ है–
(A) तृतीय अंक में (B) द्वितीय अंक में
(C) पञ्चम अंक में (D) षष्ठ अंक में
स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - शिवबालक द्विवेदी, पेज–376

55. नाटकों में प्रवेशक की भाषा होती है–
(A) संस्कृत
(B) प्राकृत
(C) संस्कृत एवं प्राकृत दोनों
(D) उपर्युक्त में से कोई भी नहीं
स्रोत–दशरूपक (1.60) - बैजनाथ पाण्डेय, पेज–119

56. साहित्यदर्पण के प्रथम परिच्छेद का नाम है–
(A) काव्यदोष निरूपण
(B) काव्यस्वरूप निरूपण
(C) काव्यप्रयोजन निरूपण
(D) काव्यलक्षण निरूपण
स्रोत–साहित्यदर्पण - शालिग्राम शास्त्री, पेज–23

57. विक्रमोर्वशीयम् का विदूषक है–
(A) माणवक (B) मैत्रेय
(C) वसन्तक (D) माधव्य
स्रोत–वस्तुनिष्ठसंस्कृतसाहित्यम् - सर्वज्ञभूषण, पेज–304

44. (A)	**45. (B)**	**46. (C)**	**47. (C)**	**48. (C)**	**49. (C)**	**50. (B)**	**51. (B)**	**52. (C)**
53. (A)	**54. (D)**	**55. (B)**	**56. (B)**	**57. (A)**				

58. अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक का विदूषक है–
(A) मैत्रेय (B) माधव्य
(C) माणवक (D) गौतम
स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू. पेज–99

59. मृच्छकटिकम् नाटक का विदूषक है–
(A) गौतम (B) माधव्य
(C) माणवक (D) मैत्रेय
स्रोत–मृच्छकटिकम् - रमाशङ्कर त्रिपाठी, पेज–42

60. 'गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः' उक्ति किससे सम्बन्धित है?
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (B) वेणीसंहारम्
(C) उत्तररामचरितम् (D) विक्रमोर्वशीयम्
स्रोत–उत्तररामचरितम् (4/11)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–291

61. 'प्रियाशोको जीवं कुसुममिव घर्मो ग्लपयति' यह उक्ति किससे सम्बन्धित है–
(A) मृच्छकटिकम् (B) मुद्राराक्षसम्
(C) उत्तररामचरितम् (D) मालविकाग्निमित्रम्
स्रोत–उत्तररामचरितम् (3/30) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–220

62. 'स्वर्गारोहरण' किसकी रचना है?
(A) पतञ्जलि (B) पाणिनि
(C) वररुचि (कात्यायन) (D) बाणभट्ट
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–254

63. 'पृथ्वीराजविजय' किसकी रचना है?
(A) वस्तुपाल (B) चण्डकवि
(C) माधवाचार्य (D) सोमनाथ
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–255

64. 'महावीरचरित' किसकी रचना है?
(A) कालिदास (B) शूद्रक
(C) भवभूति (D) अश्वघोष
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–395

65. 'प्रियदर्शिका' नाटिका का नायक है–
(A) वस्तुमित्र (B) उदयन
(C) मित्रावस्तु (D) दृढवर्मा
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास, कपिलदेव द्विवेदी, पेज–369

66. नागानन्द के नायक का नाम है–
(A) जीमूतवाहन (B) दुष्यन्त
(C) उदयन (D) शंखचूड़
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास, कपिलदेव द्विवेदी, पेज–371

67. नागानन्द नाटक के नायिका का क्या नाम है?
(A) इरावती (B) मलयवती
(C) लक्ष्मी (D) मदनिका
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–371

68. 'वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः' किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है–
(A) उत्तररामचरितम् (B) मेघदूतम्
(C) किरातार्जुनीयम् (D) कादम्बरी
स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1.8) - राजेन्द्र मिश्र, पेज–50

69. संस्कृत साहित्य में अर्थगौरव के लिए प्रसिद्ध हैं–
(A) श्रीहर्ष (B) माघ
(C) भारवि (D) दण्डी
स्रोत–किरातार्जुनीयम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज–24

70. 'प्रबोधचन्द्रोदय' किसका नाटक है?
(A) राजशेखर (B) कृष्णमिश्र
(C) दिङ्नाग (D) मुरारि
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–438

71. शूद्रक अवतार था–
(A) पुण्डरीक (B) पृथु
(C) वैशम्पायन (D) चन्द्रापीड
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–493

72. 'स्फुटता न पदैरपाकृता, न च न स्वीकृतमर्थगौरवम्' उक्ति किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है–
(A) शिशुपालवधम् (B) किरातार्जुनीयम्
(C) जानकीहरणम् (D) रघुवंशम्
स्रोत–किरातार्जुनीयम् (2/27) - रामसेवक दुबे, भू. पेज–30

73. सांख्यदर्शन का प्रमुख सिद्धान्त है–
(A) प्रमाण (B) पुरुष
(C) सत्कार्यवाद (D) प्रकृति
स्रोत–सांख्यकारिका (कारिका-9) - राकेश शास्त्री, भू. पेज–29

58. (B)	59. (D)	60. (C)	61. (C)	62. (C)	63. (B)	64. (C)	65. (B)	66. (A)
67. (B)	68. (C)	69. (C)	70. (B)	71. (D)	72. (B)	73. (C)		

74. सांख्यकारिका में कुल कितने तत्त्वों का विवेचन हुआ है–
(A) पाँच (B) दश
(C) बीस (D) पच्चीस

स्रोत–सांख्यकारिका (कारिका-22) - राकेश शास्त्री, पेज–70

75. 'कैवल्यार्थं प्रवृत्तेश्च' किसके लिए प्रयुक्त है–
(A) पुरुष
(B) प्रकृति
(C) ईश्वर
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

स्रोत–सांख्यकारिका (का0-17)-राकेश शास्त्री, पेज–56

76. किस दर्शन में यह प्रतिपादित किया गया कि आत्माएँ अनेक हैं?
(A) न्यायदर्शन
(B) मीमांसादर्शन
(C) सांख्यदर्शन
(D) वेदान्तदर्शन

स्रोत–सांख्यकारिका (का0-18) - राकेश शास्त्री, पेज–59

77. सांख्य के अनुसार प्रमाणों की संख्या है–
(A) दो
(B) तीन
(C) चार
(D) पाँच

स्रोत–सांख्यकारिका (का0-4) - राकेश शास्त्री, पेज–12

78. 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म' यह महावाक्य किस उपनिषद् से सम्बद्ध है?
(A) बृहदारण्यकोपनिषद्
(B) छान्दोग्योपनिषद्
(C)श्वेताश्वतरोपनिषद्
(D) माण्डूक्योपनिषद्

स्रोत–छान्दोग्य उपनिषद् (3/14/1)-गीताप्रेस गोरखपुर, पेज-280

79. 'प्रकृति' छन्द में अक्षरों की संख्या होती है–
(A) 36 (B) 44
(C) 72 (D) 84

वैदिक संस्कृत साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–190

80. किस वेदाङ्ग को पुरुष का नेत्र समझा जाता है?
(A) शिक्षा (B) कल्प
(C) निरुक्त (D) ज्योतिष

स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–172

81. 'तत्त्वमसि' महावाक्य किससे सम्बन्धित है?
(A) कठोपनिषद्
(B) बृहदारण्यकोपनिषद्
(C) छान्दोग्योपनिषद्
(D) माण्डूक्योपनिषद्

स्रोत–छान्दोग्य उपनिषद् (6/8/7)-गीताप्रेस गोरखपुर, पेज–619

82. न्यायदर्शन के प्रणेता हैं–
(A) कपिल (B) गौतम
(C) शङ्कर (D) पतञ्जलि

स्रोत–भारतीय दर्शन – चटर्जी और दत्त, पेज–68

83. तर्कभाषा के अनुसार अनुमान के कितने अवयव हैं?
(A) तीन (B) चार
(C) पाँच (D) दो

स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज–92

84. तर्कभाषा के अनुसार निम्नलिखित में से कौन अलौकिक प्रत्यक्ष का भेद नहीं है?
(A) सामान्य लक्षण
(B) प्रतिज्ञा
(C) ज्ञानलक्षण
(D) योगज

स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज–61

85. हेत्वाभास के कितने भेद हैं?
(A) तीन (B) पाँच
(C) सात (D) चार

स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज–110

74. (D)	**75. (A)**	**76. (C)**	**77. (B)**	**78. (B)**	**79. (D)**	**80. (D)**	**81. (C)**	**82. (B)**
83. (C)	**84. (B)**	**85. (B)**						

10 | प्रवक्ता चयन परीक्षा (PGT) संस्कृत | 2000

1. निम्नलिखित सूक्ति किस रचना से ली गई है?
''एष क्रीडति कूपयन्त्रघटिका न्यायप्रसक्तो विधिः॥''
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (B) स्वप्नवासवदत्तम्
(C) मृच्छकटिकम् (D) रत्नावली

स्रोत–मृच्छकटिकम् (10/60) - रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-742

2. मृच्छकटिकम् का नायक कौन है?
(A) शकार (B) दुर्योधन
(C) संवाहक (D) चारुदत्त

संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेवद्विवेदी, पेज–321

3. 'मृच्छकटिकम्' की कथा किसमें समायोजित है?
(A) उद्योत (B) सर्ग
(C) अङ्क (D) उच्छ्वास

संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेवद्विवेदी, पेज–307

4. ''आ परितोषाद् विदुषां न साधु मन्ये प्रयोगविज्ञानम् बलवदपि शिक्षितानामात्मन्यप्रत्ययं चेतः॥''
यह श्लोक किस काव्य का है?
(A) उत्तररामचरितम् (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(C) किरातार्जुनीयम् (D) शिशुपालवधम्

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/2) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–8

5. 'कामी स्वतां पश्यति' यह सूक्ति है–
(A) दुष्यन्त की (B) कण्व की
(C) शकुन्तला की (D) दुर्वासा की

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (2/2) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–95

6. 'विक्रमोर्वशीयम्' है –
(A) चम्पूकाव्य (B) खण्डकाव्य
(C) नाटक (D) त्रोटक

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेवद्विवेदी, पेज–329

7. 'मेघदूतम्' किस प्रकार की रचना है –
(A) महाकाव्य (B) उपन्यास
(C) खण्डकाव्य (D) चम्पूकाव्य

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकरशर्मा 'ऋषि', पेज–332

8. महाकाव्य-लेखन की अलङ्कार-बहुल पद्धति 'विचित्रमार्ग' के प्रवर्तक हैं –
(A) भारवि (B) कालिदास
(C) माघ (D) श्रीहर्ष

स्रोत– संस्कृतसाहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा ऋषि, पेज–241

9. हर्षचरितम् में उच्छ्वास हैं –
(A) दश (B) सात
(C) ग्यारह (D) आठ

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेवद्विवेदी, पेज–491

10. 'दशकुमारचरितम्' की कथावस्तु के विचार कहाँ से लिए गये हैं?
(A) ऋग्वेद से (B) छान्दोग्य उपनिषद् से
(C) बृहत्कथा से (D) महाभारत से

स्रोत–संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (खण्ड-5), पेज-63

11. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' का दुष्यन्त नायक है –
(A) धीरप्रशान्त (B) धीरोदात्त
(C) धीरललित (D) धीरोद्धत

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू. पेज–86

12. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में शकुन्तला को शाप किसने दिया –
(A) वसिष्ठ (B) नारद
(C) दुर्वासा (D) विश्वामित्र

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, भू. पेज–39

13. धीवर प्रसङ्ग 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के किस अङ्क में है–
(A) तृतीय (B) पञ्चम
(C) षष्ठ (D) सप्तम

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–307

14. ''अविश्रमोऽयं लोकतन्त्राधिकारः।'' इस उक्ति से युक्त नाटक है :
(A) मुद्राराक्षसम् (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(C) मृच्छकटिकम् (D) इनमें कोई नहीं

अभिज्ञानशाकुन्तलम् (अङ्क-5) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–249

1. (C)	**2. (D)**	**3. (C)**	**4. (B)**	**5. (A)**	**6. (D)**	**7. (C)**	**8. (A)**	**9. (D)**
10. (C)	**11. (B)**	**12. (C)**	**13. (C)**	**14. (B)**				

15. निम्नलिखित अवतरण में किसके विशेषण हैं – अतिशुद्धस्वभावमपि कृष्णचरितम्, अकरमपि हस्तस्थितसकलभुवनतलं राजानम् अद्राक्षीत्।
(A) शूद्रक　(B) वैशम्पायन
(C) पुण्डरीक　(D) चन्द्रापीड

स्रोत–कादम्बरीकथामुखम् - समीर शर्मा, पेज–54

16. 'बाण' का काल कौन-सा है?
(A) सप्तम शताब्दी का पूर्वार्ध
(B) छठी शताब्दी
(C) चतुर्थ शताब्दी
(D) अष्टम शताब्दी

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–491

17. अगस्त्याश्रम में राम के रहने के लिए पर्णकुटी का निर्माण किसने किया था –
(A) राम　(B) लक्ष्मण
(C) अगस्त्य　(D) शिव

स्रोत–वाल्मीकिरामायण (अरण्यकाण्ड) सर्ग-15 श्लोक = 20

18. कादम्बरी है –
(A) आख्यायिका　(B) कथा
(C) प्रकरण　(D) ऐतिहासिक काव्य

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–493

19. 'सदाभिमानैकधना हि मानिनः' यह सूक्ति है –
(A) रामायण में　(B) शिशुपालवध में
(C) नलचम्पू में　(D) कुमारसम्भव में

स्रोत–शिशुपालवधम् (1/67) - तारिणीश झा, पेज–140

20. 'शिशुपालवधम्' का रचयिता कौन है?
(A) सुबन्धु　(B) भारवि
(C) भट्टि　(D) माघ

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास, कपिलदेव द्विवेदी पेज–199

21. सांख्यकारिका के रचयिता कौन हैं?
(A) कपिल　(B) वाचस्पति मिश्र
(C) गौडपाद　(D) ईश्वरकृष्ण

स्रोत–सांख्यकारिका - राकेश शास्त्री, भू. पेज–31

22. सांख्य के निम्नलिखित तत्त्वों में चेतनतत्त्व कौन-सा है?
(A) बुद्धि　(B) अहंकार
(C) मन　(D) पुरुष

स्रोत–सांख्यकारिका (कारिका-11) - राकेश शास्त्री, पेज–38

23. प्रकृति से साक्षात् उत्पन्न है –
(A) अहङ्कार　(B) पञ्चतन्मात्रा
(C) पञ्चमहाभूत　(D) महत्

स्रोत–सांख्यकारिका (कारिका-22) - राकेश शास्त्री, पेज–70

24. सांख्याभिमत में कितने तत्त्व ''प्रकृति और विकृति'' हैं?
(A) तीन　(B) पाँच
(C) सात　(D) एकादश

स्रोत–सांख्यकारिका (कारिका-3) - राकेश शास्त्री, पेज–8

25. सांख्यमतानुसार 'अव्यक्त' है –
(A) पुरुष　(B) ईश्वर
(C) प्रकृति　(D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–सांख्यकारिका (कारिका-10) - राकेश शास्त्री, पेज–32

26. सांख्यदर्शनानुसार प्रकाश से सम्बद्ध है –
(A) रजोगुण　(B) प्रधान
(C) सत्त्वगुण　(D) इनमें से कोई नहीं

स्रोत–सांख्यकारिका (कारिका-13) - राकेशशास्त्री, पेज–45

27. वेदान्तसार में वेदान्त के किस मत का निरूपण है?
(A) शुद्धाद्वैतवाद　(B) अद्वैतवाद
(C) विशिष्टाद्वैतवाद　(D) द्वैताद्वैतवाद

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, भू. पेज–xxii

28. वेदान्तसार के अनुसार सृष्टिक्रम में पञ्चभूतों की उत्पत्ति का क्रम क्या है?
(A) पृथ्वी → जल → वायु → तैजस् → आकाश
(B) आकाश → तैजस् → वायु → जल → पृथ्वी
(C) आकाश → वायु → तैजस् → जल → पृथ्वी
(D) आकाश → जल → वायु → तैजस् → पृथ्वी

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–79

15. (A)	**16. (A)**	**17. (B)**	**18. (B)**	**19. (B)**	**20. (D)**	**21. (D)**	**22. (D)**	**23. (D)**
24. (C)	**25. (C)**	**26. (C)**	**27. (B)**	**28. (C)**				

29. 'पञ्चीकरण' का निरूपण करता है –

(A) न्याय (B) वेदान्त
(C) सांख्य (D) वैशेषिक

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–78, 79

30. 'तत्त्वमसि' है –

(A) ब्रह्मवाक्य (B) अनुभववाक्य
(C) महावाक्य (D) आचार्यवाक्य

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–121

31. 'पुत्तलिका-नृत्य' से संस्कृत-नाटक की उत्पत्ति मानने वाला विद्वान् है –

(A) डॉ० कीथ (B) डॉ० कोनो
(C) डॉ० पिशेल (D) डॉ० हर्टल

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–266

32. यह भास की रचना नहीं है –

(A) प्रतिज्ञायौगन्धरायणम्
(B) रत्नावली
(C) स्वप्नवासवदत्तम्
(D) दरिद्रचारुदत्तम्

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेवद्विवेदी, पेज–275

33. रूपकों में किस आचार्य ने आठ ही रस को स्वीकार किया है?

(A) भरतमुनि (B) धनञ्जय
(C) मम्मट (D) पण्डितराज जगन्नाथ

स्रोत–नाट्यशास्त्र (6/15) - प्रो० ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज–157

34. संस्कृत-नाटक में 'नान्दी' का उद्देश्य है –

(A) अर्थ-प्राप्ति (B) यश-प्राप्ति
(C) आनन्द प्राप्ति (D) विघ्नोपशान्ति

स्रोत–साहित्यदर्पण (6/23) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–172

35. रूपकों में स्त्रियों की भाषा होती है –

(A) संस्कृत (B) संस्कृत और प्राकृत
(C) प्राकृत (D) शौरसेनी

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेवद्विवेदी, पेज–272

36. निम्नलिखित में से किसके मतानुसार संस्कृत गद्यकाव्य के अन्तर्गत 'प्रबन्धकल्पनाकथा' और 'आख्यायिकोपलब्धार्था' का विभाजन हुआ है –

(A) पतञ्जलि (B) भर्तृहरि
(C) दण्डी (D) वामन

संस्कृतसाहित्य का इतिहास-डॉ. उमाशङ्करशर्मा 'ऋषि', पेज–375,376

37. तर्कभाषा के रचयिता हैं –

(A) गौतम (B) वात्स्यायन
(C) केशवमिश्र (D) पतञ्जलि

स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, भू. पेज–28

38. तर्कभाषा के अनुसार पदार्थों की संख्या है –

(A) सात (B) सोलह
(C) नौ (D) दस

स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज–4

39. 'न्यायदर्शन' में निम्नलिखित में से कौन से प्रमाण स्वीकृत हैं?

(A) प्रत्यक्ष, अनुमान (B) प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द
(C) प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द
(D) प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, अर्थापत्ति

स्रोत– तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज–50

40. तर्कभाषा के अनुसार कारणों की संख्या है –

(A) तीन (B) चार
(C) पाँच (D) दो

स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज–24

41. ''ध्वनिपरिवर्तन तो जिह्वानर्तन है।'' के बारे में आप का मत क्या है?

(A) यह उक्ति सही है
(B) यह उक्ति सही नहीं है
(C) यह उक्ति सर्वथा असम्बद्ध उक्ति है
(D) यह उक्ति एकाङ्गी है

42. ध्वनि परिवर्तन का आभ्यन्तर कारण है –

(A) अनुकरण की अपूर्णता
(B) अन्य भाषाओं का प्रभाव
(C) सादृश्य (D) काल प्रभाव

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–228

29. (B)	**30. (C)**	**31. (C)**	**32. (B)**	**33. (A)**	**34. (D)**	**35. (C)**	**36. (C)**	**37. (C)**
38. (B)	**39. (C)**	**40. (A)**	**41. (D)**	**42. (A)**				

43. **क्या ध्वनि परिवर्तन के लिए वर्नर ने ग्रिम-नियम में सुधार किया है?**
(A) हाँ
(B) नहीं
(C) दोनों का कोई सम्बन्ध नहीं है
(D) कुछ भी नहीं

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–246

44. **क्या 'अर्थपरिवर्तन का कारण ध्वनिपरिवर्तन है'?**
(A) हाँ
(B) नहीं
(C) कुछ-कुछ
(D) दोनों के अधिष्ठान भिन्न हैं

45. **'पठेत' रूप है –**
(A) लट्, प्रथम पुरुष, एकवचन
(B) लट्, म0पु0, बहुवचन
(C) विधिलिङ्, प्र0पु0, एकवचन
(D) विधिलिङ्, म0पु0, बहुवचन

स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–146

46. **'अदातम्' रूप है –**
(A) लुङ्, उ0पु0, एकवचन
(B) लुङ्, म0पु0, द्विवचन
(C) लङ्, उ0पु0, एकवचन
(D) लङ्, प्र0पु0, बहुवचन

स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–167

47. **'अभवत' रूप है :**
(A) लङ्, प्र0पु0, एकवचन
(B) लङ्, म0पु0, बहुवचन
(C) लुङ्, प्र0पु0, एकवचन
(D) लुङ्, म0पु0, बहुवचन

स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–145

48. **मिल् सङ्गमे का लट्लकार अन्यपुरुष एकवचन का रूप है :**
(A) मिलति (B) मिलते
(C) दोनों नहीं (D) दोनों ही

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–430

49. **रुधिर् आवरणे का लट्लकार अन्यपुरुष एकवचन का रूप है –**
(A) रुणद्धि (B) रुन्धे
(C) दोनों नहीं (D) दोनों ही

स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–466

50. **कर्ता का 'ईप्सिततम' कारक कहलाता है –**
(A) कर्म (B) करण
(C) सम्प्रदान (D) अपादान

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–16

51. **दा+यत् का शुद्ध रूप है :**
(A) दायः (B) दीयम्
(C) देयम् (D) दायम्

स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–214

52. **'पच्' धातु में 'क्त' प्रत्यय लगाकर रूप बनेगा–**
(A) पचितः (B) पक्तः
(C) पक्वः (D) पचतः

स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–202

53. **गणपति+अण् का रूप होगा :**
(A) गणपत्यण् (B) गणपतिम्
(C) गाणपत्यम् (D) गाणपतम्

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (खण्ड-5) - भीमसेन शास्त्री, पेज–7

54. **'लावणिकः' का स्त्रीलिङ्ग क्या होगा?**
(A) लावणिकी (B) लावणिका
(C) लावणिकिनी (D) लावणिजा

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या, खण्ड-6), पेज–16

55. **''लौकिकानां हि साधूनामर्थं वागनुवर्तते।
ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति॥''
यह उपर्युक्त श्लोक किस ग्रन्थ से है –**
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(B) शिशुपालवधम्
(C) उत्तररामचरितम्
(D) रघुवंशम्

स्रोत–उत्तररामचरितम् (अङ्क-1/10) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–22

43. (A)	44. (C)	45. (D)	46. (B)	47. (B)	48. (A)	49. (D)	50. (A)	51. (C)
52. (C)	53. (D)	54. (A)	55. (C)					

56. ''कस्यात्यन्तं सुखमुपनतं दुःखमेकान्ततो वा। नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण।।'' इस श्लोक का सन्देश है –
(A) संसार परिवर्तनशील है
(B) दुःख में स्थिर रहना चाहिए
(C) सुख-दुःख परिवर्तनशील है
(D) नीच का साथ नहीं करना चाहिए

स्रोत–उत्तरमेघ (श्लोक-49) - आर0 बी0 शास्त्री, पेज–122

57. ''सुजनः खलु भृत्यानुकम्पकः स्वामी निर्धनकोऽपि शोभते। पिशुनः पुनर्द्रव्यगर्वितो दुष्करः खलु परिणामदारुणाः'' इस श्लोक के ग्रन्थ और उसके कवि हैं –
(A) मृच्छकटिकम्/शूद्रक (B) भर्तृहरि/नीतिशतकम्
(C) किरातार्जुनीयम्/भारवि
(D) मेघदूतम्/कालिदास

स्रोत–मृच्छकटिकम् (3/2) - रमाशङ्कर त्रिपाठी, पेज–179

58. ''पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम्'' इस सूक्ति के रचयिता हैं –
(A) कालिदास (B) माघ
(C) भारवि (D) भर्तृहरि

स्रोत–किरातार्जुनीयम् (श्लोक-41) - रामसेवक दुबे, पेज–138

59. ''ज्वलति चलितेन्धनोऽग्निर्विप्रकृतः पन्नगः फणां कुरुते। प्रायः स्वंमहिमानं क्षोभात् प्रतिपद्यते हि जनः।।'' यह श्लोक निम्नलिखित में किससे सम्बन्धित है –
(A) मृच्छकटिकम्/शूद्रक
(B) अभिज्ञानशाकुन्तलम्/मातलि
(C) उत्तररामचरितम्/लव
(D) किरातार्जुनीयम्/द्रौपदी

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (6/31)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–385

60. निम्नलिखित वाक्यों में शुद्ध है –
(A) त्वया सह अहं चित्रं द्रक्षिष्यामि
(B) तव सह अहं चित्रं द्रक्षष्यामि
(C) त्वया सह अहं चित्रं द्रक्ष्यामि
(D) त्वया सः अहम् चित्रं द्रक्ष्यामि

सिद्धान्तकौमुदी (कारक) (2.3.19) - राममुनि पाण्डेय, पेज–42

61. ''साधनचतुष्टयसम्पन्न'' किसके लिए है –
(A) सम्बन्ध (B) विषय
(C) अधिकारी (D) प्रयोजन

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–11

62. 'श्रीमद्भगवद्गीता' में कितने अध्याय हैं?
(A) चौदह (B) सत्रह
(C) अठारह (D) बीस

संस्कत साहित्य का इतिहास - उमाशंकरशर्मा 'ऋषि', पेज–158

63. गीता का कर्म-सिद्धान्त क्या है?
(A) कर्मत्याग (B) अशुभ कर्मत्याग
(C) अनासक्त कर्म (D) साकांक्ष कर्म

स्रोत– गीता 5/10, 2/47, 48, 3/9, 3/19

64. 'तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि' लक्षण है –
(A) अलङ्कार का (B) गुण का
(C) काव्य का (D) दोष का

स्रोत–काव्यप्रकाश (सूत्र-1) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–19

65. मम्मट के अनुसार काव्य-प्रयोजनों की संख्या है –
(A) चार (B) पाँच
(C) छः (D) सात

स्रोत–काव्यप्रकाश (1.2) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–10

66. तत्सदृश अन्य वस्तु का निषेध निम्न अलङ्कार करता है –
(A) उत्प्रेक्षा (B) सन्देह
(C) विरोधाभास (D) परिसंख्या

स्रोत–काव्यप्रकाश (10.119) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–526

67. साहित्यदर्पण में परिच्छेदों की संख्या है –
(A) आठ (B) दस
(C) सात (D) नौ

संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज–587

68. लक्षणा के 80 भेद किसने किये हैं?
(A) वामन ने (B) विश्वनाथ ने
(C) मम्मट ने (D) कुन्तक ने

स्रोत–साहित्यदर्पण - शालिग्राम शास्त्री, पेज–39

56. (C)	**57. (A)**	**58. (C)**	**59. (B)**	**60. (C)**	**61. (C)**	**62. (C)**	**63. (C)**	**64. (C)**
65. (C)	**66. (D)**	**67. (B)**	**68. (B)**					

69. संकेतित अर्थ को बताने वाली शक्ति है :
(A) अभिधा (B) लक्षणा
(C) व्यञ्जना (D) तात्पर्या
स्रोत–साहित्यदर्पण (2.4) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–26

70. ''उत्पत्तिवाद'' के प्रतिपादक हैं –
(A) भट्टलोल्लट (B) शंकुक
(C) भट्टनायक (D) अभिनवगुप्त
स्रोत–काव्यप्रकाश (चतुर्थ उल्लास)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज–101

71. शुद्ध वाक्य है–
(A) नमस्कृत्वा हरिं गच्छति
(B) नमस्कृत्य हरये गच्छति
(C) नमस्कृत्य हरिं गच्छति
(D) नमस्कृत्वा हरिं गच्छति
स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–205

72. अधोलिखित वाक्यों में एक वाक्य शुद्ध है –
(A) रामाः दीनाय धनं ददन्ति
(B) रामा दीनान् धनं ददन्ति
(C) रामाः दीनं धनं ददति
(D) रामाः दीनाय धनं ददति
स्रोत–(i) सिद्धान्तकौमुदी कारक (1/4/32)-राममुनि पाण्डेय, पेज–46
(ii) रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-167

73. 'शत्रवः स्वर्गम् अगच्छन्' वाक्य का णिजन्त रूप होगा –
(A) शत्रवः स्वर्गम् अगमयत्
(B) शत्रून् स्वर्गम् अगमयत्
(C) शत्रून स्वर्गम् अगच्छन्
(D) शत्रवे स्वर्गम् अगमयत्
स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी कारक (1/4/5)-राममुनि पाण्डेय, पेज–24

74. 'आसने उपविश्य प्रेक्षते' वाक्य का दूसरा वाक्य है –
(A) आसनं उपविश्य प्रेक्षते
(B) आसनं प्रेक्षते
(C) आसनात् प्रेक्षते
(D) आसने प्रेक्षते
स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी कारकप्रकरण - राममुनि पाण्डेय, पेज–63

75. 'रामेण बाणेन हतो बाली' इस वाक्य का कर्तृवाच्य रूप है –
(A) रामः बाणेन बाली हतवान्
(B) रामेण बाणेन बालीं हतः
(C) रामः बाणेन बालीं हतवान्
(D) रामेण बाणेन बालि हतवान
स्रोत–अष्टाध्यायी (3.4.67, 2.3.18, 2.3.2)

76. ''यन्नाट्यवस्तुनः पूर्वरङ्गविघ्नोपशान्तये।
कुशीलवाः प्रकुर्वन्ति .... स उच्यते।।''
उपर्युक्त लक्षण में रिक्तस्थान का पूरक शब्द है –
(A) सूत्रधारः (B) पूर्वरङ्गः
(C) संस्थापकः (D) रङ्गमञ्चः
स्रोत–साहित्यदर्पण (6/22) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–172

77. ''शिरसि धृतसुरापगे स्मरारावरुणमुखेन्दुरुचिर्गिरीन्द्रपुत्री।
अथ चरणयुगानते स्वकान्ते स्मितसरसा भवतोऽस्तु भूतिहेतुः।।''
उपर्युक्त श्लोक है –
(A) ईश-स्तुति (B) मङ्गलाचरण
(C) पूर्वरङ्ग (D) द्वादशपदा नान्दी
स्रोत–साहित्यदर्पण (6/25) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–173

78. रूपकों के भेदक तत्त्व हैं –
(A) अङ्क, संवाद, रस (B) वस्तु, नेता, रङ्गमञ्च
(C) वस्तु, नेता, रस (D) रस, कथोपकथन, अङ्क
स्रोत–दशरूपक (1.11) - केशवराव मुसलगाँवकर, पेज–18

79. ''तवास्मि गीतरागेण हारिणा प्रसभं हृतः।
एष राजेव दुष्यन्तः सारङ्गेणातिरंहरसा।।''
उपर्युक्त श्लोक किसका उदाहरण है :
(A) नान्दी (B) पताकास्थानक
(C) बिन्दु (D) प्रस्तावना
स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1.5) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–13

80. आरम्भ, यत्न, प्राप्त्याशा, नियताप्ति और फलागम
(A) अर्थोपक्षेपक हैं (B) अर्थप्रकृतियाँ हैं
(C) सन्धियाँ हैं (D) अवस्थाएँ हैं
स्रोत–दशरूपक (1/19) - केशवराव मुसलगाँवकर, पेज–30

69. (A) 70. (A) 71. (C) 72. (D) 73. (B) 74. (C) 75. (C) 76. (B) 77. (D) 78. (C) 79. (D) 80. (D)

81. करुण रस का स्थायीभाव है –
(A) उत्साह (B) क्रोध
(C) भय (D) शोक
स्रोत–नाट्यशास्त्रम् (6/7) - ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज–160

82. अलङ्कार का भेद नहीं है –
(A) शब्दालङ्कार (B) वर्णालङ्कार
(C) अर्थालङ्कार (D) उभयालङ्कार
स्रोत–काव्यप्रकाश - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–472

83. 'मम्मट' के अनुसार काव्य-प्रयोजन नहीं है –
(A) प्रतिभा (B) यश
(C) अर्थ (D) अनिष्ट-नाश
स्रोत–काव्यप्रकाश (1.2) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–10

84. ''अर्थे सत्यर्थभिन्नानां वर्णानां सा पुनः श्रुतिः'' किस अलङ्कार से सम्बन्धित है –
(A) यमक (B) रूपक
(C) अनुप्रास (D) उपमा
स्रोत–काव्यप्रकाश (9.83) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–409

85. 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' के प्रतिपादक हैं :
(A) मम्मट (B) जगन्नाथ
(C) विश्वनाथ (D) आनन्दवर्धन
स्रोत–साहित्यदर्पण - शालिग्राम शास्त्री, पेज–19

86. 'श्लिष्टैः पदैरनेकार्थाभिधाने श्लेष इष्यते' श्लेष के इस लक्षण के प्रतिपादक हैं –
(A) विश्वनाथ (B) मम्मट
(C) रुद्रट (D) भामह
स्रोत–साहित्यदर्पण (10/11) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–282

87. 'स मुख्योऽर्थस्तत्र मुख्यो व्यापारोऽस्याभिधोच्यते' यह वचन है :
(A) काव्यप्रकाश का (B) साहित्यदर्पण का
(C) ध्वन्यालोक का (D) नाट्यशास्त्र का
स्रोत–काव्यप्रकाश (2.8) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–50

88. 'यो-हे-हो' सिद्धान्त सम्बन्ध है –
(A) भाषोत्पत्ति से (B) ध्वनिपरिवर्तन से
(C) भाषावर्गीकरण से (D) अर्थविस्तार से
स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–72

89. मे-पोल-सिद्धान्त में 'मे-पोल' क्या है?
(A) एक खम्भा (B) एक ग्रह
(C) एक त्योहार (D) एक वृक्ष
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-266

90. क्या ग्रिम-नियम का त्रिभुज निम्नवत् है?

क ख ग

य र ल   प फ ब
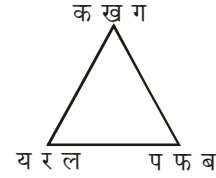
(A) बिल्कुल सही (B) बिल्कुल गलत
(C) कुछ हद तक सही है (D) कह नहीं सकते
स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–242

91. 'ओदनं भुञ्जानो विषं भुङ्क्ते' उदाहरण हैं –
(A) अभुक्त्यर्थस्य न (B) तथायुक्तं चानीप्सितम्
(C) अनुर्लक्षणे (D) हेतौ
स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी कारक (1/4/50)-राममुनि पाण्डेय, पेज–19

92. हरिमभिवर्तते वाक्य में 'हरिम्' में द्वितीया विभक्ति का कारण है :
(A) कर्मत्व (B) अनभिहितत्व
(C) 'अभि' का प्रयोग (D) ईप्सितत्व
स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी कारक (1/4/90)-राममुनि पाण्डेय, पेज–34

93. 'सह' के योग में कौन-सी विभक्ति होती है?
(A) द्वितीया (B) तृतीया
(C) चतुर्थी (D) षष्ठी
स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी कारक (2/3/19)-राममुनि पाण्डेय, पेज–42

94. 'भीत्रार्थानां भयहेतुः' सूत्र से सम्बद्ध है :
(A) करण (B) अपादान
(C) सम्प्रदान (D) कर्म
स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी कारक (1/4/25)-राममुनि पाण्डेय, पेज–60

95. 'पितरौ' में समास है –
(A) तत्पुरुष (B) बहुव्रीहि
(C) द्वन्द्व (D) अव्ययीभाव
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (चतुर्थ खण्ड) भैमी व्याख्या, पेज–239

81. (D)	**82. (B)**	**83. (A)**	**84. (A)**	**85. (C)**	**86. (A)**	**87. (A)**	**88. (A)**	**89. (C)**
90. (B)	**91. (B)**	**92. (C)**	**93. (B)**	**94. (B)**	**95. (C)**			

96. 'पौर्वशालः' का विग्रह है –

(A) शालायाः पूर्वम्

(B) पौर्व एव शालः

(C) पूर्वी शाला यस्य सः

(D) पूर्वस्यां शालायां भवः

स्रोत– लघुसिद्धान्तकौमुदी भैमी व्याख्या (खण्ड-4), पेज–102

97. 'द्वियमुनम्' में समास है –

(A) द्विगु (B) तत्पुरुष

(C) अव्ययीभाव (D) कर्मधारय

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी भैमी व्याख्या (खण्ड-4), पेज–42

98. 'सुमद्रम्' में कौन-सा समास है?

(A) कर्मधारय (B) बहुव्रीहि

(C) अव्ययीभाव (D) षष्ठीतत्पुरुष

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी भैमी व्याख्या (खण्ड-4), पेज–28

99. 'पीताम्बरः' शब्द में कौन-सा समास है?

(A) कर्मधारय (B) बहुव्रीहि

(C) द्वन्द्व (D) तत्पुरुष

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी भैमी व्याख्या (खण्ड-4), पेज–191

100. 'पठितवत्' में प्रत्यय है –

(A) क्तवतु (B) वतुप्

(C) क्त (D) मतुप्

स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–222

96. (D) 97. (C) 98. (C) 99. (B) 100. (A)

11 प्रवक्ता चयन परीक्षा UP-GGIC संस्कृत 2015

परीक्षा तिथि 15 सितम्बर 2015

1. भगवद्गीता महाभारतस्य कस्मिन् पर्वणि विद्यते?
(A) कर्णपर्वणि (B) भीष्मपर्वणि
(C) शल्यपर्वणि (D) द्रोणपर्वणि
संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज–150

2. 'मेघे माघे गतं वयः' कस्येयमुक्तिः?
(A) मल्लिनाथस्य (B) राजशेखरस्य
(C) हेमचन्द्रस्य (D) गोवर्धनाचार्यस्य
स्रोत–मेघदूत - दयाशंकर शास्त्री, पेज–44

3. हितोपदेशस्य रचनाकारोऽस्ति–
(A) नारायणपण्डितः (B) विष्णुशर्मा
(C) त्रिविक्रमभट्टः (D) विशाखदत्तः
स्रोत–संस्कृतसाहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा ऋषि, पेज–433

4. 'दुर्मुख' नाम्नः गुप्तचरस्य उल्लेखो वर्तते–
(A) अभिज्ञानशाकुन्तले (B) उत्तररामचरिते
(C) मेघदूते (D) मुद्राराक्षसे
स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, भूमिका पेज–139

5. 'न प्रभातरलं ज्योतिरुदेति वसुधातलात्' इत्युक्तिः वर्तते–
(A) मृच्छकटिके (B) अभिज्ञानशाकुन्तले
(C) उत्तररामचरिते (D) मेघदूते
स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/26) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–73

6. बाणभट्टस्य विषये 'वाणी बाणो बभूवेति' कथनस्य लेखकः आसीत्
(A) चन्द्रदेवः (B) बिल्हणः
(C) गोवर्धनाचार्यः (D) धर्मदासः
स्रोत–कादम्बरीकथामुखम् - समीर शर्मा, भू0 पेज–16

7. कविवरजयदेव-रचितं सरसं संस्कृत-काव्यमस्ति
(A) गीतगिरीशम् (B) गीतगोविन्दम्
(C) शृङ्गारशतकम् (D) अमरुशतकम्
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा ऋषि, पेज–353

8. 'एको हि दोषो गुणसन्निपाते निमज्जतीन्दोः किरणेष्विवाङ्कः' इति सूक्तिः अस्मिन् काव्ये उपलभ्यते–
(A) कुमारसम्भवे (B) शिशुपालवधे
(C) नैषधीयचरिते (D) किरातार्जुनीये
स्रोत–कुमारसम्भवम् (1/3) - देवनारायण मिश्र, पेज-6

9. बाणभट्टस्य गद्ये रीतिरस्ति–
(A) पाञ्चाली (B) वैदर्भी
(C) गौड़ी (D) लाटी
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–496

10. अधोलिखितेषु बृहत्त्रय्यां परिगण्यते–
(A) रामायणम् (B) रघुवंशम्
(C) शिशुपालवधम् (D) महाभारतम्
स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–202

11. 'न तज्ज्ञानं न तच्छिल्पं न सा विद्या न सा कला' इति कस्मात् ग्रन्थात् उद्धृतोऽस्ति?
(A) साहित्यदर्पणात् (B) काव्यप्रकाशात्
(C) नाट्यशास्त्रात् (D) दशरूपकात्
स्रोत–नाट्यशास्त्र (1/116) – ब्रजमोहन चतुर्वेदी, पेज-113

12. 'शस्त्रेण रक्ष्यं यदशक्यरक्ष्यं न तद्यशः शस्त्रभृतां क्षिणोति' इयमुक्तिः कालिदासस्य कस्मिन् ग्रन्थे अस्ति?
(A) मेघदूते (B) अभिज्ञानशाकुन्तले
(C) रघुवंशे (D) कुमारसम्भवे
स्रोत–रघुवंश (2/40) – श्रीहरिगोविन्दमिश्र, पेज-45

13. 'पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः' इति उक्तिः केन कविना सम्बद्धा अस्ति?
(A) कालिदासेन (B) भासेन
(C) भवभूतिना (D) अश्वघोषेन
स्रोत–उत्तररामचरितम् (3/1) – कपिलदेव द्विवेदी, पेज–156

1. (B)	2. (A)	3. (A)	4. (B)	5. (B)	6. (C)	7. (B)	8. (A)	9. (A)
10. (C)	11. (C)	12. (C)	13. (C)					

14. मृच्छकटिकस्य नान्दीपाठे कस्याः देवतायाः समाधेर्माध्यमेन रक्षाकामना कृताऽस्ति?

(A) ब्रह्मणः (B) विष्णोः
(C) सरस्वत्याः (D) शङ्करस्य

स्रोत–मृच्छकटिकम् (1/1) – रमाशङ्कर त्रिपाठी, पेज–1

15. आदिकाव्ये सर्ग-संख्याऽस्ति–

(A) पञ्चशतम् (B) चतुःशतम्
(C) षट्शतम् (D) त्रिशतम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा ऋषि, पेज–127

16. 'धर्मे चार्थे च कामे च मोक्षे च भरतर्षभ।
यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत्क्वचित्॥'
कस्य महाकाव्यस्य प्रशंसायामियमुक्तिः?

(A) रामायणस्य (B) विष्णुपुराणस्य
(C) महाभारतस्य (D) हरविजयस्य

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा ऋषि, पेज–145

17. 'एको रसः करुण एव निमित्तभेदात्' इति सूक्तिः केन नाटकेन सम्बद्धाऽस्ति?

(A) शाकुन्तलेन (B) मृच्छकटिकेन
(C) वेणीसंहारेण (D) उत्तररामचरितेन

स्रोत–उत्तररामचरितम् (3/47) – कपिलदेव द्विवेदी, पेज–260

18. 'भामिनीविलासः' इति मुक्तककाव्यस्य रचयिता वर्तते

(A) विश्वनाथः (B) जगन्नाथः
(C) भर्तृहरिः (D) जयदेवः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा ऋषि, पेज–357

19. वेदाङ्गानां संख्या भवति–

(A) पञ्च (B) षट्
(C) सप्त (D) अष्टौ

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशंकर शर्मा ऋषि, पेज–88

20. 'सर्वे शब्दाः धातुभ्य एव समुत्पन्नाः' मतमिदं प्रतिपादितम्–

(A) अष्टाध्याय्याम् (B) पातञ्जल-महाभाष्ये
(C) निरुक्ते (D) शौनक-प्रातिशाख्ये

स्रोत–निरुक्त (1/4) - उमाशंकर शर्मा ऋषि, पेज-19

21. 'न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यः' इत्ययं श्लोकांश अस्ति

(A) ईशावास्योपनिषदि (B) छान्दोग्योपनिषदि
(C) तैत्तिरीयोपनिषदि (D) कठोपनिषदि

स्रोत–कठोपनिषद् (1/27) - डॉ0 बैजनाथ पाण्डेय, पेज-43

22. 'उरुक्रमः' कस्य विशेषणं भवति?

(A) वरुणस्य (B) विष्णोः
(C) इन्द्रस्य (D) रुद्रस्य

स्रोत–वैदिकसूक्तसंग्रह (1.154.5)-विजयशंकर पाण्डेय, पेज-62

23. ऋग्वेदस्य मण्डलानां संख्या अस्ति–

(A) एकादश (B) दश
(C) नव (D) सप्त

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशंकर शर्मा ऋषि, पेज–35

24. प्रथमः वेदकालनिर्णायकोऽस्ति–

(A) राथः (B) मैक्समूलरः
(C) सायणः (D) मैक्डानलः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा ऋषि, पेज–99

25. शिवसंकल्पसूक्तं केन वेदेन सम्बद्धम् अस्ति?

(A) ऋग्वेदेन (B) सामवेदेन
(C) कृष्णयजुर्वेदेन (D) शुक्लयजुर्वेदेन

स्रोत–वैदिकसूक्तसंग्रह - विजयशंकर पाण्डेय, पेज–51

26. ज्योतिषमाधारीकृत्य वेदानां कालं चतुःसहस्रविक्रमपूर्वं मन्यमानो विद्वानस्ति

(A) बालगङ्गाधर-तिलकः (B) मैक्समूलरः
(C) वासुदेवशरण-अग्रवालः (D) विण्टरनित्जः

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–40

27. ऋग्वेदस्य प्रथममण्डलस्य प्रथमसूक्ते कः स्तूयते?

(A) इन्द्रः (B) विष्णुः
(C) अग्निः (D) वरुणः

स्रोत–वैदिकसूक्तसंग्रह (ऋ01/1) - विजयशंकर पाण्डेय, पेज-31

28. विष्णोस्त्रीणि पदानि पूर्णानि भवन्ति–

(A) अमृतेन (B) मधुना
(C) उदकेन (D) घृतेन

स्रोत–वैदिकसूक्तसंग्रह (ऋ01/154/4) - विजयशंकर पाण्डेय, पेज-60

14. (D)	**15. (A)**	**16. (C)**	**17. (D)**	**18. (B)**	**19. (B)**	**20. (C)**	**21. (D)**	**22. (B)**
23. (B)	**24. (B)**	**25. (D)**	**26. (A)**	**27. (C)**	**28. (B)**			

29. 'कस्मै देवाय हविषा विधेम' अनेन मन्त्रभागेन परामृश्यते–
(A) इन्द्रः (B) प्रजापतिः
(C) विष्णुः (D) अग्निः
स्रोत–वैदिकसूक्तसंग्रह (ऋ0 10.121.1)-विजयशंकर पाण्डेय, पेज-116

30. रथरूपकमुपलभ्यते
(A) ईशावास्योपनिषदि (B) कठोपनिषदि
(C) प्रजापतिसूक्ते (D) इन्द्रसूक्ते
स्रोत–कठोपनिषद् (अध्याय-1, वल्ली-3, मन्त्र संख्या-3)

31. सांख्यदर्शने कति तत्त्वानि मन्यन्ते?
(A) सप्त (B) षोडश
(C) एकम् (D) पञ्चविंशतिः
स्रोत–सांख्यकारिका (का0-3) - राकेश शास्त्री, पेज–8

32. तर्कभाषायां लिङ्गपरामर्शः अस्ति–
(A) प्रत्यक्षम् (B) अनुमानम्
(C) उपमानम् (D) शब्दः
स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज–78

33. सांख्यदर्शने कार्यकारणसिद्धान्तः कः?
(A) आरम्भवादः (B) सत्कार्यवादः
(C) संघातवादः (D) विवर्तवादः
स्रोत–सांख्यकारिका (का0-9) - राकेशशास्त्री, पेज-29

34. 'तत्त्वमसि' इति महावाक्यं विद्यते–
(A) कठोपनिषदि (B) छान्दोग्योपनिषदि
(C) बृहदारण्यकोपनिषदि (D) ईशावास्योपनिषदि
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–182

35. सांख्यकारिकायाः कर्तुर्नामास्ति?
(A) कपिलः (B) ईश्वरकृष्णः
(C) व्यासः (D) वाचस्पतिः
स्रोत–सांख्यकारिका - राकेश शास्त्री, भू. पेज–29

36. तर्कभाषानुसारं प्रमाणानि कतिविधानि?
(A) त्रिविधानि (B) चतुर्विधानि
(C) द्विविधानि (D) पञ्चविधानि
स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज–50

37. 'स्थितप्रज्ञस्य' लक्षणं गीतायाः कस्मिन्नध्याये कृतमस्ति?
(A) तृतीये (B) द्वितीये
(C) चतुर्थे (D) पञ्चमे
स्रोत–गीता (2/54) – गीताप्रेस गोरखपुर

38. सांख्यदर्शने पुरुषः अस्ति–
(A) प्रकृतिः अविकृतिश्च
(B) अप्रकृतिः विकृतिश्च
(C) प्रकृतिः विकृतिश्च
(D) न प्रकृतिः न विकृतिः
स्रोत–सांख्यकारिका (का0-3) - राकेशशास्त्री, पेज-08

39. अधोलिखितानाम् अनुबन्धचतुष्टयानां समीचीनं क्रमं चिनुत–
(A) अधिकारी, सम्बन्धः, विषयः, प्रयोजनम्
(B) अधिकारी, विषयः, सम्बन्धः, प्रयोजनम्
(C) अधिकारी, प्रयोजनम्, सम्बन्धः, विषयः
(D) अधिकारी, विषयः, प्रयोजनम्, सम्बन्धः
स्रोत–वेदान्तसार - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–27

40. अनुबन्ध-चतुष्टयस्य निरूपणमस्ति–
(A) तर्कभाषायाम् (B) तर्कसंग्रहे
(C) वेदान्तसारे (D) सांख्यकारिकायाम्
स्रोत–वेदान्तसार - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–27

41. तर्कसंग्रहस्य लेखकोऽस्ति–
(A) केशवमिश्रः (B) विष्णुगुप्तः
(C) वररुचिः (D) अन्नम्भट्टः
स्रोत–तर्कसंग्रह - आद्या प्रसाद मिश्र, पेज–17

42. लघु प्रकाशकञ्चेति द्वे वैशिष्ट्ये स्तः–
(A) रजोगुणे (B) तमोगुणे
(C) सत्त्वगुणे (D) नास्ति कुत्रापि
स्रोत–सांख्यकारिका (कारिका-13) - राकेशशास्त्री, पेज-45

43. शून्यवादः निबद्धो वर्तते–
(A) जैनदर्शने (B) चार्वाकदर्शने
(C) वैशेषिकदर्शने (D) बौद्धदर्शने
स्रोत–सांख्यकारिका - राकेश शास्त्री, भू. पेज–12

29. (B)	30. (B)	31. (D)	32. (B)	33. (B)	34. (B)	35. (B)	36. (B)	37. (B)
38. (D)	39. (B)	40. (C)	41. (D)	42. (C)	43. (D)			

44. प्राचीनतमा भारतीयाऽऽर्यभाषाऽस्ति–
(A) पाणिनीयसंस्कृतम् (B) नाट्यगतं संस्कृतम्
(C) वैदिकसंस्कृतम् (D) प्राकृतगर्भसंस्कृतम्
स्रोत–भाषाविज्ञान - कर्णसिंह, पेज–89

45. 'देवानां प्रियः' इति वाक्यम् उदाहरणं भवति–
(A) अर्थापत्तेः (B) अर्थविस्तारस्य
(C) अर्थसंकोचस्य (D) अर्थविपर्ययस्य
स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–340

46. 'शोभा वेदपाठं करोति' इत्यस्य वाच्यपरिवर्तनमेवं भवति
(A) शोभा वेदपाठं क्रियते
(B) शोभया वेदपाठः क्रियते
(C) शोभया वेदपाठं करोति
(D) शोभया वेदपाठं कृणुते
स्रोत–रचनानुवादकौमुदी – कपिलदेव द्विवेदी, पेज-52

47. अधोलिखितेषु किं शुद्धं वर्तते?
(A) आस्तिकः = अस्ति + ठक्
(B) आस्तिकः = असि + ठक्
(C) आस्तिकः = अस्ति + यत्
(D) आस्तिकः = असि + ठञ्
स्रोत–अष्टाध्यायी (4/4/60) – ईश्वरचन्द्र, पेज-541

48. 'चटका' इत्यत्र स्त्रीप्रत्यय-विधायकं सूत्रमस्ति–
(A) यञश्च (B) स्त्रियाम्
(C) अजाद्यतष्टाप् (D) उगितश्च
स्रोत–अष्टाध्यायी (4/1/4) – ईश्वरचन्द्र, पेज–422

49. कस्मात् कारणात् 'स्थल' इति शब्दस्य 'थल' इति उच्चारणं क्रियते?
(A) आगमस्य (B) स्वरभक्तेः
(C) आदिलोपस्य (D) भागातिरेकस्य
स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–235

50. 'त्रिलोकी' पदे स्त्रीप्रत्ययः अस्ति–
(A) ङीष् (B) ङीन्
(C) ङीप् (D) ति
स्रोत–अष्टाध्यायी (4/1/21) – ईश्वरचन्द्र, पेज-427

51. 'राष्ट्रियः' इति पदे प्रत्ययोऽस्ति
(A) छ (B) इञ्
(C) इण् (D) घ
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमीव्याख्या भाग-5) पेज–110

52. 'क्रोशं कुटिला नदी' इत्यस्मिन् द्वितीया भवति–
(A) 'कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे' इति सूत्रेण
(B) 'साधकतमं करणम्' इति सूत्रेण
(C) 'कर्तृकरणयोस्तृतीया' इति सूत्रेण
(D) 'कर्तुरीप्सिततमं कर्म' इति सूत्रेण
स्रोत–अष्टाध्यायी (2/3/5) - ईश्वरचन्द्र, पेज–195

53. अर्थविस्तारस्योदाहरणं वर्तते–
(A) भार्या (B) तैलम्
(C) मौनम् (D) श्राद्धम्
स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–336

54. 'उत्थानम्' इति पदस्य सन्धिविच्छेदो भविष्यति–
(A) उत् + थानम् (B) उद् + स्थानम्
(C) उद् + थानम् (D) उत् + स्थानम्
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–74

55. 'पदम्' अस्ति–
(A) योग्यताकांक्षासत्तियुक्तम्
(B) सुप्तिङन्तम्
(C) अर्थवदप्रत्ययम्
(D) सन्धि-समासरहितम्
स्रोत–अष्टाध्यायी (1/4/14)–ईश्वरचन्द्र, पेज-114

56. 'प्रयत्नलाघवम् इति कस्याभ्यन्तरकारणमस्ति?
(A) ध्वनिपरिवर्तनस्य (B) भाषापरिवर्तनस्य
(C) अर्थपरिवर्तनस्य (D) वाक्यपरिवर्तनस्य
स्रोत–भाषाविज्ञान - कर्णसिंह, पेज–163

57. कः समासः नित्यनपुंसकलिङ्गे एकवचने प्रयुक्तः भवति?
(A) द्वन्द्वः (B) अव्ययीभावः
(C) द्विगुः (D) बहुव्रीहिः
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (2/4/18) - गोविन्दाचार्य, पेज–895

44. (C)	45. (D)	46. (B)	47. (A)	48. (C)	49. (C)	50. (C)	51. (D)	52. (A)
53. (B)	54. (B)	55. (B)	56. (A)	57. (B)				

58. 'रुच्यर्थानां प्रीयमाणः' इत्यादि सूत्रं कस्याः विभक्तेः विधायकम्?

(A) चतुर्थ्याः (B) तृतीयायाः
(C) द्वितीयायाः (D) पञ्चम्याः

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–47

59. 'कर्ता' इत्यत्र प्रत्ययोऽस्ति–

(A) कृ + तृच् (B) कृ + णिच्
(C) कृ + अण् (D) कृ + ण्वुल्

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–782

60. 'नीलोत्पलम्' अस्मिन् समासोऽस्ति–

(A) अव्ययीभावः (B) द्वन्द्वः
(C) कर्मधारयः (D) बहुव्रीहिः

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड-4), पेज–112

61. 'गाङ्गः' इति पदे प्रत्ययोऽस्ति–

(A) अण् (B) अप्
(C) अच् (D) अञ्

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड-5) पेज–38

62. 'प्रौढः' पदे सन्धिविच्छेदः भवति–

(A) प्र + ओढः (B) प्र + औढः
(C) प्र + ऊढः (D) प्रौ + ढः

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या खण्ड-1), पेज–61

63. 'भू' धातोः लुङ्लकारे मध्यमपुरुषैकवचने रूपं भवति–

(A) अभूः (B) अभूत
(C) अभूत् (D) अभूव

स्रोत–रूपचन्द्रिका – ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–104

64. पररूपसन्धेः उदाहरणमस्ति–

(A) प्रार्च्छति (B) उपैति
(C) उपैधते (D) प्रेजते

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या प्रथमखण्ड), पेज–66

65. ईदूदेद्द्विवचनं भवति–

(A) प्रातिपदिकम् (B) तद्धितः
(C) सुप् (D) प्रगृह्यम्

स्रोत–अष्टाध्यायी (1/1/11)–ईश्वरचन्द्र, पेज-13

66. 'मातृ' शब्दस्य तृतीया-विभक्तौ एकवचने रूपं भवति–

(A) मातृणा (B) मात्रया
(C) मात्रा (D) मात्रेण

स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका – बाबूराम सक्सेना, पेज–89

67. ऊष्मवर्णाः सन्ति–

(A) अकः (B) यणः
(C) झषः (D) शलः

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–24

68. कादयो मावसानाः सन्ति–

(A) अर्धस्वराः (B) स्पर्शाः
(C) तालव्याः (D) मूर्धन्याः

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–24

69. 'शर्वाणी' इति पदे प्रत्ययो वर्तते–

(A) ङीप् (B) ङीष्
(C) ङीन् (D) णिनि

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–1165

70. 'चोरभयम्' इति समस्तपदस्य समासविग्रहे भवति–

(A) चौरेण भयम् (B) चौरस्य भयम्
(C) चौराद् भयम् (D) चौराय भयम्

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या चतुर्थ भाग), पेज–76

71. 'ष्टुना ष्टुः' इति सूत्रस्योदाहरणं भवति–

(A) अजन्तः (B) रामष्षष्ठः
(C) तच्च (D) लब्धः

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमीव्याख्या प्रथम खण्ड), पेज–101

72. 'इत्थम्भूतलक्षणे' इति सूत्रेण का विभक्तिः?

(A) प्रथमा (B) तृतीया
(C) द्वितीया (D) चतुर्थी

स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी - डा० आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–38

73. 'इन्द्राणी' इत्यत्र कः आगमः?

(A) नुट् (B) नुक्
(C) नुम् (D) आनुक्

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (4-1-49) - गोविन्दाचार्य, पेज–1165

58. (A)	**59. (A)**	**60. (C)**	**61. (A)**	**62. (C)**	**63. (A)**	**64. (D)**	**65. (D)**	**66. (C)**
67. (D)	**68. (B)**	**69. (B)**	**70. (C)**	**71. (B)**	**72. (B)**	**73. (D)**		

74. 'मति' शब्दस्य तृतीया एकवचने रूपं भवति–
(A) मतिना (B) मत्या
(C) मतेन (D) मतिभिः
स्रोत–रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–25

75. 'रमा' शब्दस्य पञ्चमीविभक्तेरेकवचने रूपं भवति–
(A) रमात् (B) रमायाम्
(C) रमयाः (D) रमायाः
स्रोत–रूपचन्द्रिका – ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–22

76. 'अहिनकुलम्' इति पदे समासोऽस्ति–
(A) द्वन्द्वः (B) द्विगुः
(C) तत्पुरुषः (D) अव्ययीभावः
स्रोत–वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (खण्ड-2)-गोविन्दाचार्य, पेज–817

77. 'विद्वत्' शब्दस्य पुँल्लिङ्गे षष्ठीविभक्तौ रूपाणि–
(A) विदुषस्य विदुषोः विदुषाम्
(B) विदुषः विदुषोः विदुषाम्
(C) विदुषः विदुषयोः विदुषाणाम्
(D) विदुषस्य विदुषयोः विदुषाणाम्
स्रोत–रूपचन्द्रिका – ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पेज–71

78. 'इति हेतुस्तदुद्भवे' इति कस्य मतम्?
(A) जगन्नाथस्य (B) हेमचन्द्रस्य
(C) मम्मटस्य (D) विश्वनाथस्य
स्रोत–काव्यप्रकाश (1/3) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज - 16

79. मम्मटानुसारेण काव्यस्य कति प्रयोजनानि सन्ति?
(A) पञ्च (B)षट्
(C) त्रीणि (D) चत्वारि
स्रोत–काव्यप्रकाश (1/2) – आचार्य विश्वेश्वर, पेज - 10

80. वामनमतानुसारेण काव्यस्यात्मा अस्ति–
(A) वृत्तिः (B) अलङ्कारः
(C) रसः (D) रीतिः
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, भू. पेज–17

81. साक्षात्सङ्केतितमर्थं बोधयति
(A) अभिधा (B) लक्षणा
(C) तात्पर्या (D) व्यञ्जना
स्रोत–काव्यप्रकाश (सूत्र-9) – आचार्य विश्वेश्वर, पेज–42

82. 'गङ्गायां घोषः' इत्यस्मिन् शैत्यपावनत्वयोः प्रतीतौ शब्दशक्तिर्वर्तते–
(A) अभिधा (B) लक्षणा
(C) व्यञ्जना (D) तात्पर्या
स्रोत–काव्यप्रकाश (सूत्र-23) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-70

83. आचार्यमम्मटानुसारेण काव्यस्योपदेशो भवति–
(A) प्रभुसम्मितम् (B) सुहृत्सम्मितम्
(C) कान्तासम्मितम् (D) गुरुसम्मितम्
स्रोत–काव्यप्रकाश (1/2) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–10

84. ध्वनिसिद्धान्तस्य मूलाधारभूतः सिद्धान्तोऽस्ति–
(A) शब्दब्रह्मत्वम् (B) शब्दनित्यत्वम्
(C) अनुमितिवादः (D) स्फोटवादः
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–29

85. 'विनिर्गतं मानदमात्ममन्दिरात्' - इत्यादि पद्यम् उदाहरणमस्ति–
(A) व्यङ्ग्यकाव्यस्य (B) शब्दचित्रस्य
(C) अर्थचित्रस्य (D) गुणीभूतव्यङ्ग्यस्य
स्रोत–काव्यप्रकाश (प्रथम उल्लास)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज–32

86. 'परोक्तिर्भेदकैः श्लिष्टैः' इति लक्षणमस्ति–
(A) निदर्शनायाः (B) दीपकस्य
(C) दृष्टान्तस्य (D) समासोक्तेः
स्रोत–काव्यप्रकाश (सूत्र-147) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-474

87. 'धनिनोऽपि निरुन्मादा युवानोऽपि न चञ्चलाः' अत्र कोऽलङ्कारः?
(A) विभावना (B) उपमा
(C) विशेषोक्तिः (D) रूपकम्
स्रोत–साहित्यदर्पण – शालिग्रामशास्त्री, पेज–351

88. 'रामरावणयोर्युद्धं रामरावणयोरिव' अत्र अलङ्कारः भवति–
(A) अनन्वयः (B) उपमा
(C) उत्प्रेक्षा (D) उपमेयोपमा
स्रोत–काव्यप्रकाश (दशम उल्लास)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज–443

74. (B)	**75. (D)**	**76. (A)**	**77. (B)**	**78. (C)**	**79. (B)**	**80. (D)**	**81. (A)**	**82. (C)**
83. (C)	**84. (D)**	**85. (C)**	**86. (D)**	**87. (C)**	**88. (A)**			

89. लिम्पतीव तमोऽङ्गानि वर्षतीवाञ्जनं नभः अत्रायमलङ्कारः–
(A) उपमा (B) उत्प्रेक्षा
(C) अतिशयोक्तिः (D) समासोक्तिः
स्रोत–काव्यप्रकाश (दशम उल्लास)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज–461

90. 'अद्‌भुत'–रसस्य स्थायिभावोऽस्ति–
(A) शमः (B) विस्मयः
(C) भयम् (D) उत्साहः
स्रोत–साहित्यदर्पण (3/242) - शालिग्राम शास्त्री, पेज-120

91. सन्ध्यङ्गानां संख्या अस्ति–
(A) चतुःषष्टिः (B) षट्षष्टिः
(C) सप्ततिः (D) अशीतिः
स्रोत–दशरूपक - केशवराव मुसलगाँवकर, भू. पेज–48

92. 'रसनिष्पत्तिसन्दर्भे साधारणीकरण-शब्दं सर्वप्रथमं प्रयुक्तवान्–
(A) भट्टलोल्लटः (B) भट्टनायकः
(C) भरतमुनिः (D) अभिनवगुप्तः
स्रोत–साहित्यदर्पण - अभिराज राजेन्द्र मिश्र, पेज–229

93. नाट्यलक्षणे धनञ्जयः उक्तवान्
(A) नाट्यं भिन्नरुचेः......एकं समाराधनम्
(B) नटस्य कर्म नाटकम्
(C) अनुकरणं नाट्यम्
(D) अवस्थानुकृतिर्नाट्यम्
स्रोत–दशरूपक - केशवराव मुसलगाँवकर, पेज–8

94. मुखसन्धौ अर्थप्रकृतिर्भवति–
(A) बिन्दुः (B) पताका
(C) प्रकरी (D) बीजम्
स्रोत–दशरूपक (1/24) – रमाशंकर त्रिपाठी

95. 'त्रिपताकाकरेण' समाचर्यते मञ्चोपरि–
(A) अपवारितम् (B) आकाशभाषितम्
(C) जनान्तिकम् (D) स्वगतम्
स्रोत–दशरूपक (1/65) - बैजनाथ पाण्डेय, पेज–125

96. 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' इति काव्यलक्षणेन सम्बद्धः आचार्यः अस्ति–
(A) पण्डितराजजगन्नाथः (B) कविराज-विश्वनाथः
(C) आचार्यः कुन्तकः (D) आचार्यः दण्डी
स्रोत–साहित्यदर्पण (प्रथम परिच्छेद)-शालिग्राम शास्त्री, पेज–19

97. मम्मटानुसारेण मध्यमकाव्यं भवति–
(A) शब्दचित्रम् (B) वाच्यचित्रम्
(C) ध्वनिः (D) गुणीभूतव्यङ्ग्यम्
स्रोत–काव्यप्रकाश (सूत्र-3) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-31

98. केन नियमेन 'ग् द् ब्' वर्णाः 'क् त् प्' वर्णरूपेण परिणमन्ति?
(A) ग्रिम-नियमेन (B) ग्रासमान-नियमेन
(C) वर्नर-नियमेन (D) तालव्य-नियमेन
स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–242

99. निम्नाङ्कितेषु उचितः क्रमः कः?
(A) बीजं, बिन्दुः, कार्यं, पताका, प्रकरी
(B) प्रकरी, पताका, कार्यं, बीजं, बिन्दुः
(C) बीजं, बिन्दुः, पताका, प्रकरी, कार्यम्
(D) कार्यं, बीजं, प्रकरी, पताका, बिन्दुः
स्रोत–दशरूपक (1.18) – रमाशंकर त्रिपाठी, पेज-22

100. ''यत्रार्थः शब्दो वा तमर्थमुपसर्जनीकृतस्वार्थौ'' कारिकेयं केनाचार्येण लिखिता?
(A) मम्मटेन (B) आचार्यविश्वनाथेन
(C) आनन्दवर्धनाचार्येण (D) आचार्यवामनेन
स्रोत–ध्वन्यालोक (1/13) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज-37

101. 'तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि' अत्र 'तद्' पदस्य किं तात्पर्यम्?
(A) काव्यम् (B) शब्दः
(C) अर्थः (D) वाक्यम्
स्रोत–काव्यप्रकाश (प्रथम उल्लास)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज–19

102. यत्र हेतुं विना कार्योत्पत्तिः सञ्जायते तत्र भवत्यलङ्कारः–
(A) विशेषोक्तिः (B) आक्षेपः
(C) परिसंख्या (D) विभावना
स्रोत–साहित्यदर्पण (10/66) - शालिग्राम शास्त्री, पेज-350

89. (B)	90. (B)	91. (A)	92. (B)	93. (D)	94. (D)	95. (C)	96. (B)	97. (D)
98. (A)	99. (C)	100. (C)	101. (A)	102. (D)				

103. यत्र हेतौ सति अपि फलस्य अभावो कथ्यते तत्र अलङ्कारः भवति–
(A) समासोक्तिः (B) अतिशयोक्तिः
(C) विभावना (D) विशेषोक्तिः
स्रोत–साहित्यदर्पण (10/88) – शालिग्राम शास्त्री, पेज-351

104. भाषाया आकृतिमूलके वर्गीकरणं न कथ्यते–
(A) रूपात्मकम् (B) पदात्मकम्
(C) ध्वन्यात्मकम् (D) रचनात्मकम्
स्रोत–भाषाविज्ञान - कर्ण सिंह, पेज–55

105. रससूत्रव्याख्याकारेषु कोऽभिमतो मम्मटस्य?
(A) शङ्कुकः (B) भट्टलोल्लटः
(C) भट्टनायकः (D) अभिनवगुप्तः
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–113

106. पूर्णोपमायां कति तत्त्वानि आवश्यकानि?
(A) चत्वारि (B) त्रीणि
(C) पञ्च (D) षट्
स्रोत–काव्यप्रकाश (दशम उल्लास)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज–443

107. आकाशभाषिते पात्रसंख्या भवति?
(A) एकम् (B) द्वे
(C) त्रीणि (D) चत्वारि
स्रोत–दशरूपक (1/67) - रमाशङ्कर त्रिपाठी, पेज-107

108. 'कुशलः' इत्युदाहरणमस्ति–
(A) अर्थसङ्कोचस्य (B) अर्थादेशस्य
(C) अर्थविस्तारस्य (D) अर्थोत्कर्षस्य
स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–336

109. बाणभट्टरचितं हर्षचरितमस्ति–
(A) आख्यायिका (B) कथा
(C) उपन्यासिका (D) चम्पूः
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज–395

110. मेघदूतस्य अभिशप्तः यक्षः कुत्र निवसति?
(A) विन्ध्याचले (B) आम्रकूटे
(C) रामगिरौ (D) सुमेरुपर्वते
स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-1) - विजेन्द्र कुमार शर्मा, पेज-1

111. कस्य वचनं नारिकेलफल-सम्मितं कल्पितम्?
(A) कालिदासस्य (B) माघस्य
(C) भारवेः (D) श्रीहर्षस्य
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-राकेश कुमार जैन, पेज–109

112. शिशुपालवधस्य प्रथमसर्गे द्वारिकायां कस्यागमनं दृश्यते?
(A) शिशुपालस्य (B) नारदस्य
(C) युधिष्ठिरस्य (D) इन्द्रस्य
संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज–262

113. अधोलिखितेषु लघुत्रय्यां नास्ति–
(A) रघुवंशम् (B) किरातार्जुनीयम्
(C) कुमारसम्भवम् (D) मेघदूतम्
संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज–208

114. संस्कृतसाहित्ये बृहत्तमं महाकाव्यमस्ति–
(A) शिशुपालवधम् (B) नैषधीयचरितम्
(C) हरविजयम् (D) जानकीहरणम्
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज–278

115. शिवराजविजय-काव्यस्य समारम्भो भवति–
(A) शिवराज-वर्णनेन (B) गौरसिंह-वर्णनेन
(C) सूर्योदय-वर्णनेन (D) अफजलखान-वर्णनेन
स्रोत–शिवराजविजयम् (प्रथमो निश्वासः)-रमाशङ्कर मिश्र, पेज-3

116. 'अभिज्ञानशाकुन्तलस्य प्रारम्भे नान्दीपद्ये स्रष्टुः आद्या सृष्टिः का?
(A) पृथ्वी (B) अग्निः
(C) जलम् (D) वायुः
स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1.1) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–1

117. 'अर्थो हि कन्या परकीय एव' शाकुन्तले कस्येयमुक्तिः?
(A) गौतम्याः (B) कण्वस्य
(C) शार्ङ्गरवस्य (D) शारद्वतस्य
स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/22)-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–240

118. मृच्छकटिकस्य रूपकविधा अस्ति–
(A) नाटकम् (B) प्रकरणम्
(C) समवकारः (D) डिमः
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज–495

119. भवभूतेः उत्तररामचरिते किं नाम प्रथमोऽङ्कः?
(A) पञ्चवटीप्रवेशः (B) छाया
(C) चित्रदर्शनम् (D) कुमारविक्रमः
स्रोत–उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–96

120. 'रत्नावली' कस्य रचना अस्ति?
(A) भासस्य (B) जयदेवस्य
(C) मुरारेः (D) हर्षस्य
स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज–514

103. (D)	**104. (C)**	**105. (D)**	**106. (A)**	**107. (A)**	**108. (C)**	**109. (A)**	**110. (C)**	**111. (C)**
112. (B)	**113. (B)**	**114. (C)**	**115. (C)**	**116. (C)**	**117. (B)**	**118. (B)**	**119. (C)**	**120. (D)**

12	प्रवक्ता चयन परीक्षा UP-GIC संस्कृत	2012 परीक्षा तिथि 14 जून 2015

1. पञ्चतन्त्रस्य रचनाकारोऽस्ति–

(A) अपहारवर्मा (B) विष्णुशर्मा

(C) सुबन्धुः (D) कृष्णमिश्रः

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–575

2. 'तत्र च श्लोकचतुष्टयम्' इत्युक्तौ 'तत्र' इति पदेन आशयोऽस्ति–

(A) उत्तररामचरितस्य तृतीयोऽङ्कः

(B) अभिज्ञानशाकुन्तलस्य च चतुर्थोऽङ्कः

(C) मृच्छकटिकस्य प्रथमोऽङ्कः

(D) उक्तेषु किमपि न

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–341-42

3. बृहत्त्रयीमध्ये महाकाव्यानां कालाश्रितः क्रमोऽस्ति

(A) शिशुपालवधम्, किरातार्जुनीयम्, नैषधम्

(B) नैषधम्, शिशुपालवधम्, किरातार्जुनीयम्

(C) किरातार्जुनीयम्, नैषधम्, शिशुपालवधम्

(D) किरातार्जुनीयम्, शिशुपालवधम्, नैषधम्

स्रोत–शिशुपालवधम् - तारिणीश झा, भू. पेज–12

4. ऋग्वेदे (1.1.1) होतारमिति पदं कस्य देवस्य विशेषणमस्ति?

(A) इन्द्रस्य (B) अग्नेः

(C) विष्णोः (D) रुद्रस्य

स्रोत–वेदचयनम् (ऋ. 1.1.1) - विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी, पेज–09

5. यमेन श्रेयप्रेयविवेचनं कस्यां उपनिषदि विद्यते?

(A) बृहदारण्यके (B) छान्दोग्ये

(C) ईशावास्ये (D) कठोपनिषदि

स्रोत–ईशादि नौ उपनिषद् (कठो. 1.22) - गीताप्रेस

6. शिक्षावेदांगस्य सम्बन्धोऽस्ति?

(A) वैदिकयज्ञेन (B) पदनिर्वचनेन

(C) मन्त्रोच्चारणेन (D) ज्योतिषशास्त्रेण

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–85

7. लौकिकविषयस्य सर्वाधिकवर्णनं कस्मिन् वेदे विद्यते?

(A) यजुर्वेदे (B) अथर्ववेदे

(C) ऋग्वेदे (D) सामवेदे

स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–96

8. ऋग्वेदस्य (1.154) सूक्ते विष्णुदेवाय मन्त्राणां संख्या अस्ति–

(A) 5 (B) 7

(C) 8 (D) 6

स्रोत–वेदचयनम् - विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी, पेज–90

9. सांख्यस्य मूलसिद्धान्तोऽस्ति–

(A) प्रकृतिपुरुषैक्यम् (B) प्रकृतिपुरुषविवेकः

(C) प्रकृतिबहुलम् (D) पुरुषैकत्वम्

स्रोत–सांख्यकारिका (का0-2) - राकेशशास्त्री, पेज–05

10. सांख्यकारिकामतेन प्रमाणानां संख्यास्ति?

(A) 5 (B) 4

(C) 6 (D) 3

स्रोत–सांख्यकारिका (का0-4) - राकेशशास्त्री, पेज–12

11. वेदान्तसारस्य रचयिता अस्ति?

(A) सदानन्दः (B) ब्रह्मानन्दः

(C) चिदानन्दः (D) कुवलयानन्दः

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, भू. पेज–xix

12. 'प्रमाकरणं प्रमाणम्' इति वाक्यमस्ति?

(A) वेदान्तसारस्य (B) सांख्यकारिकायाः

(C) तर्कभाषायाः (D) बुद्धस्य

स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज–11-12

13. 'राग' इत्यस्मिन् पदे प्रत्ययोऽस्ति?

(A) घञ् (B) अच्

(C) क (D) नन्

स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–212

1. (B)	2. (B)	3. (D)	4. (B)	5. (D)	6. (C)	7. (B)	8. (D)	9. (B)
10. (D)	11. (A)	12. (C)	13. (A)					

14. पररूपसन्धेः उदाहरणमस्ति?
(A) प्रेजते (B) प्राच्छीति
(C) उपैति (D) उपैधते
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–51

15. 'गार्ग्यायणी' इत्यस्मिन् पदे प्रत्ययोऽस्ति?
(A) ङीप् (B) ङीष्
(C) ङीन् (D) क्तिन्
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी -गोविन्दप्रसाद शर्मा, पेज–1159

16. सौत्रान्तिकसम्प्रदायः सम्बद्ध अस्ति?
(A) बौद्धदर्शनेन (B) जैनदर्शनेन
(C) चार्वाकदर्शनेन (D) योगदर्शनेन
स्रोत–भारतीय दर्शन - बद्रीनाथसिंह, पेज–174

17. मम्मटानुसारेण उत्तमकाव्यमस्ति?
(A) शब्दचित्रम् (B) वाच्यचित्रम्
(C) गुणीभूतव्यङ्ग्यम् (D) ध्वनिः
स्रोत–काव्यप्रकाश (1/04) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–28

18. सम्मोहस्य कारणं किम्?
(A) क्रोधः (B) तृष्णा
(C) भयः (D) धनम्
स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (2/63) - गीताप्रेस, पेज–47

19. शुद्धं वाक्यमस्ति?
(A) राजकाय वस्त्रं ददाति
(B) रजकं वस्त्रं ददाति
(C) रजके वस्त्रं ददाति
(D) रजकस्य वस्त्रं ददाति
स्रोत–वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (खण्ड-2)-गोविन्दाचार्य, पेज–253

20. बाणभट्टस्य कृतिः हर्षचरितमस्ति?
(A) कथा (B) आख्यायिका
(C) उपन्यास (D) चम्पू
स्रोत–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–491

21. अधोलिखितेषु ऐतिहासिकमहाकाव्यमस्ति?
(A) नैषधीयचरितम् (B) जानकीहरणम्
(C) विक्रमाङ्कदेवचरितम् (D) कुमारसम्भवम्
स्रोत–संस्कृतसाहित्य का इतिहास-उमाशंकरशर्मा 'ऋषि', पेज–311

22. 'लेट्' लकारस्य प्रयोगेण युक्ता भाषास्ति?
(A) प्राकृतम् (B) पालिः
(C) लौकिकसंस्कृतम् (D) वैदिकसंस्कृतम्
स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–294

23. अधोलिखितेषु प्रकरणनामकः रूपकोऽस्ति?
(A) मृच्छकटिकम् (B) स्वप्नवासवदत्तम्
(C) मुद्राराक्षसम् (D) उत्तररामचरितम्
स्रोत–मृच्छकटिकम् - रमाशंकर त्रिपाठी, भू. पेज–xxvii

24. दशरूपकानुसारेण नागानन्दस्य नायकः जीमूतवाहनः अस्ति?
(A) धीरप्रशान्तः (B) धीरोदात्तः
(C) धीरललितः (D) धीरोद्धतः
स्रोत–दशरूपक (द्वितीय प्रकाश) - बैजनाथ पाण्डेय, पेज–137

25. गोपथब्राह्मणमस्ति?
(A) अथर्ववेदस्य (B) सामवेदस्य
(C) ऋग्वेदस्य (D) यजुर्वेदस्य
स्रोत–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–77

26. बृहद्देवतायाः कर्ता अस्ति?
(A) यास्कः (B) शौनकः
(C) भारविः (D) कात्यायनः
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–246

27. मेघदूते प्रयुक्तं छन्दः अस्ति?
(A) मन्दाक्रान्ता (B) मालिनी
(C) स्रग्धरा (D) वंशस्थ
स्रोत–मेघदूतम् - विजेन्द्र कुमार शर्मा, पेज–4

28. कादम्बरीगद्यकाव्यस्य नायकोऽस्ति?
(A) शुकनासः (B) तारापीडः
(C) चन्द्रापीडः (D) पुण्डरीकः
स्रोत–कादम्बरीकथामुखम् -तारिणीश झा, भू० पेज–52

29. 'अग्निमीळे पुरोहितम्' इति मन्त्रांशं कस्य वेदस्यास्ति?
(A) ऋग्वेदस्य (B) यजुर्वेदस्य
(C) सामवेदस्य (D) अथर्ववेदस्य
स्रोत–वेदचयनम् (1.1.1) - विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी, पेज–01

14. (A)	15. (B)	16. (A)	17. (D)	18. (A)	19. (D)	20. (B)	21. (C)	22. (D)
23. (A)	24. (B)	25. (A)	26. (B)	27. (A)	28. (C)	29. (A)		

30. नित्यनपुंसकलिङ्गे एकवचने समासः भवति?

(A) द्वन्द्वः (B) द्विगुः

(C) अव्ययीभावः (D) बहुव्रीहिः

स्रोत–अष्टाध्यायी (2.4.18) - ईश्वरचन्द्र, पेज–225

31. ''आदिरन्त्येन सहेता'' इति सूत्रं संज्ञाविधायकमस्ति?

(A) प्रत्ययस्य (B) प्रत्याहारस्य

(C) अनुबन्धस्य (D) लोपस्य

स्रोत–अष्टाध्यायी (1.1.70) - ईश्वरचन्द्र, पेज–52

32. 'मनोरथः' इत्यस्य सन्धिविच्छेदः अस्ति?

(A) मनः + रथः (B) मनस् + रथः

(C) मनर् + रथः (D) मन + रथः

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी-गोविन्दप्रसाद शर्मा, पेज–122

33. 'जनार्दनः' इत्यस्मिन् प्रत्ययः अस्ति?

(A) ल्युट् (B) ल्यु

(C) ण्वुल् (D) अण्

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमीव्याख्या खण्ड-3)-भीमसेनशास्त्री, पेज–41

34. 'श्रेयसि केन तृप्यते' इति इयमुक्तिः उद्धृतास्ति?

(A) मेघदूतात् (B) रामायणात्

(C) कुमारसम्भवात् (D) शिशुपालवधात्

स्रोत–शिशुपालवधम् (1/29) - तारिणीश झा, पेज–63

35. 'मासिकम्' पदे प्रत्ययः अस्ति?

(A) ठक् (B) ठञ्

(C) ठन् (D) ट्यु

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–1045

36. 'आचार्यानी' पदे प्रत्ययः अस्ति?

(A) ङीप् (B) ङीन्

(C) क्तिन् (D) ङीष्

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–133

37. महाभारतस्य विभाजने पर्वणां संख्या अस्ति?

(A) 20 (B) 21

(C) 18 (D) 16

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–117

38. अधोलिखितेषु का भाषा 'केन्टुम्' वर्गे नहि आयाति?

(A) ग्रीक (B) फ्रेञ्च

(C) रूसी (D) लैटिन

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–385

39. अर्थसंकोचस्य उदाहरणमस्ति?

(A) प्रवीणः (B) तैलम्

(C) असुरः (D) सरसिजम्

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–338

40. 'विनिर्गतं मानदमात्ममन्दिरात्' उदाहरणमस्ति?

(A) व्यङ्ग्यकाव्यस्य (B) शब्दचित्रस्य

(C) अर्थचित्रस्य (D) गुणीभूतव्यङ्ग्यस्य

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–32

41. 'उपकृतं बहु तत्र किमुच्यते' उदाहरणमस्ति–

(A) लक्षणलक्षणायाः (B) उपादानलक्षणायाः

(C) सारोपालक्षणायाः (D) साध्यवसानालक्षणायाः

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–92

42. उपमेयमसत्यं कृत्वा उपमानं सत्यरूपेण स्थापने अलङ्कारः भवति–

(A) रूपकः (B) व्यतिरेकः

(C) निदर्शना (D) अपह्नुतिः

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–470

43. रामकथायां जटायु - आख्यानम् अर्थप्रकृतिः अस्ति

(A) बीज-अर्थप्रकृतिः (B) पताका-अर्थप्रकृतिः

(C) प्रकरी-अर्थप्रकृतिः (D) कार्य-अर्थप्रकृतिः

स्रोत–दशरूपक - बैजनाथ पाण्डेय, पेज–22

44. जैनदर्शने द्रव्यस्य भेदानां संख्या अस्ति–

(A) 9 (B) 5

(C) 7 (D) 3

45. ''इन्द्रियाणि पराण्याहुरिन्द्रियेभ्यः परं मनः'' इत्यंशो वर्तते–

(A) अग्निसूक्ते (B) ईशावास्योपनिषदि

(C) गीतायाम् (D) प्रजापतिसूक्ते

स्रोत – गीता (3/42)

30. (C)	**31. (B)**	**32. (B)**	**33. (B)**	**34. (D)**	**35. (B)**	**36. (D)**	**37. (C)**	**38. (C)**
39. (D)	**40. (C)**	**41. (A)**	**42. (D)**	**43. (C)**	**44. (D)**	**45. (C)**		

46. 'हरेऽव' इत्यस्य सन्धिविधायकसूत्रमस्ति–
(A) एङः पदान्तादति (B) एङि पररूपम्
(C) अदेङ्गुणः (D) आद्गुणः
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–67

47. मैक्समूलरमहोदयेन ऋग्वेदस्य कालः स्वीकृतः–
(A) 1200 ख्रिष्टाब्दपूर्वकम्
(B) 5000 ख्रिष्टाब्दकपूर्वम्
(C) ख्रिष्टाब्दस्य प्रथमशताब्द्याम्
(D) 1300 विक्रमसंवत्पूर्वम्
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-39

48. 'सागरिका' नायिकाऽस्ति–
(A) मृच्छकटिके (B) प्रतिमानाटके
(C) रत्नावलीनाटिकायाम् (D) शिवराजविजये
स्रोत–रत्नावली नाटिका - श्रीकृष्ण त्रिपाठी, भू0 पेज भू.–25

49. जातस्य हि ध्रुवोमृत्युरिति सूक्तिः अस्ति–
(A) श्रीमद्भगवद्गीतायाः (B) सांख्यकारिकायाः
(C) तर्कभाषायाः (D) स्यादवादमञ्जरीतः
स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (2.27) - गीताप्रेस

50. स्याद्वादस्य प्रतिपादनं कृतम्–
(A) बौद्धदर्शनेन (B) चार्वाकदर्शनेन
(C) वैशेषिकदर्शनेन (D) जैनदर्शनेन
स्रोत–भारतीयदर्शन की रूपरेखा - हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पेज–148

51. न्यायदर्शनं कं प्रमाणं नहि स्वीकरोति?
(A) अनुमानम् (B) उपमानम्
(C) अर्थापत्तिम् (D) शब्दम्
स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज–50

52. अयादिसन्धिविधायकं सूत्रं वर्तते–
(A) एचोऽयवायावः (B) इको यणचि
(C) अनचि च (D) लोपः शाकल्यस्य
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, पेज–38

53. मतिशब्दस्य चतुर्थी विभक्तौ एकवचने रूपं भवति
(A) मत्याः (B) मतिये
(C) मत्याम् (D) मत्यै
स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–127

54. 'चटक + टाप्' इत्यस्मिन् रूपं निर्मीयते–
(A) चटकी (B) चटका
(C) चटटा (D) चटकाय
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दप्रसाद शर्मा, पेज–1154

55. 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' इति काव्यलक्षणमुक्तम्–
(A) मम्मटेन (B) दण्डिना
(C) विश्वनाथेन (D) आनन्दवर्धनेन
स्रोत–साहित्यदर्पण - शालिग्राम शास्त्री, पेज–19

56. 'वृत्तवर्तिष्यमाणानां कथांशानां निदर्शकः' इति नाटके कथ्यते
(A) अङ्कावतारः (B) प्रकाशः
(C) विष्कम्भकः (D) चूलिका
स्रोत–दशरूपक (1.59) - बैजनाथ पाण्डेय, पेज–116

57. ध्वन्यालोके ध्वनिस्वरूपं निरूपितम्–
(A) प्रथमोद्योते द्वितीयकारिकायाम्
(B) प्रथमोद्योते चतुर्दशकारिकायाम्
(C) प्रथमोद्योते पञ्चमकारिकायाम्
(D) प्रथमोद्योते त्रयोदशकारिकायाम्
स्रोत–ध्वन्यालोक (1/13) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–37

58. 'वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः' इतीयं सूक्तिः कस्मात् उद्धृता?
(A) किरातार्जुनीयात् (B) शिशुपालवधात्
(C) मेघदूतात् (D) अभिज्ञानशाकुन्तलात्
स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/8) - रामसेवक दुबे, पेज–61

59. 'पञ्चगङ्गम्' इत्यस्मिन्पदे समासोऽस्ति
(A) अव्ययीभावः (B) तत्पुरुषः
(C) बहुव्रीहिः (D) द्वन्द्वः
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी (2.1.20)-आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–157

60. 'यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं' इत्यनेन सम्बद्धं सूक्तं अस्ति–
(A) वाक्सूक्तम् (B) शिवसंकल्पसूक्तम्
(C) नासदीयसूक्तम् (D) यम-यमीसूक्तम्
स्रोत–वेदचयनम् (शुक्लयजुर्वेद 34.1)-विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी, पेज–239

46. (A)	47. (A)	48. (C)	49. (A)	50. (D)	51. (C)	52. (A)	53. (D)	54. (B)
55. (C)	56. (C)	57. (D)	58. (A)	59. (A)	60. (B)			

61. निरुक्तस्य रचयिता अस्ति–
(A) यास्कः (B) पाणिनिः
(C) शौनकः (D) कात्यायनः
स्रोत–हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, भू. पेज–23

62. 'उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत' कस्मिन् उपनिषदि विद्यते?
(A) मुण्डकोपनिषदि (B) प्रश्नोपनिषदि
(C) कठोपनिषदि (D) छान्दोग्योपनिषदि
स्रोत–कठोपनिषद् (1.3.14) - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–93

63. सांख्यदर्शनस्य सिद्धान्तः अस्ति–
(A) शून्यवादः (B) विवर्तवादः
(C) असत्कार्यवादः (D) सत्कार्यवादः
स्रोत–सांख्यकारिका (का0-9) - राकेश शास्त्री, पेज–29,30

64. तमोगुणः भवति?
(A) भारयुक्तः (B) प्रेरकः
(C) प्रकाशकः (D) क्रियाशीलः
स्रोत–सांख्यकारिका (का0-13) - राकेश शास्त्री, पेज–45,46

65. तर्कभाषायाः रचयिता अस्ति?
(A) सदानन्दः (B) केशवमिश्रः
(C) वात्स्यायनः (D) उदयनाचार्यः
स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज–01

66. पटस्य निमित्तकारणं भवति?
(A) तन्तुसंयोगः (B) तन्तुरूपम्
(C) तन्तवः (D) तुरी
स्रोत–तर्कसंग्रह - गोविन्दाचार्य, पेज–149

67. 'सुषुप्तवज्जाग्रति यो न पश्यति' इति कस्य स्वभावोऽस्ति?
(A) मुमुक्षोः (B) जीवन्मुक्तस्य
(C) प्राज्ञस्य (D) ईश्वरस्य
स्रोत–वेदान्तसार - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–151

68. वैशेषिकदर्शनस्य प्रवर्तक आचार्यः अस्ति?
(A) बिल्वादः (B) कणादः
(C) विप्वलादः (D) पुष्पादः
स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज भू.–18

69. 'अर्हत्' इत्यस्य प्रतिपादकं दर्शनमस्ति?
(A) चार्वाकदर्शनम् (B) बौद्धदर्शनम्
(C) जैनदर्शनम् (D) वेदान्तदर्शनम्
स्रोत–सर्वदर्शनसंग्रह-उमाशङ्कर शर्मा ऋषि, भू. पेज-46

70. लघुसिद्धान्तकौमुदी केन कृता?
(A) पाणिनिना (B) भट्टोजिदीक्षितेन
(C) पतञ्जलिना (D) वरदराजेन
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य, भू0 पेज–xxiii

71. 'तत्पुरुषः' इति सूत्रमस्ति?
(A) विधिः (B) परिभाषा
(C) नियमः (D) अधिकारः
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - आद्याप्रसाद मिश्र, पेज–160

72. 'निष्कौशाम्बिः' इत्यस्मिन् समासोऽस्ति?
(A) नित्यतत्पुरुषः (B) बहुव्रीहिः
(C) अव्ययीभावः (D) केवलसमासः
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्द प्रसाद शर्मा, पेज–937

73. क्रियायाः केन साक्षात् सम्बन्धोऽस्ति?
(A) पदेन (B) कारकेण
(C) विशेषणेन (D) निपातेन
स्रोत–सिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरण)-राममुनि पाण्डेय, पेज–09

74. सुबन्ततिङन्तौ कथ्येते?
(A) धातुः (B) प्रातिपदिकः
(C) प्रत्ययः (D) पदम्
स्रोत–अष्टाध्यायी (1.4.14) - ईश्वरचन्द्र, पेज–114

75. अधोलिखितेषु कः वेदान्तसारानुसारेण अनुबन्धचतुष्टयान्तर्गतं नास्ति?
(A) अधिकारी (B) साधनम्
(C) सम्बन्धः (D) प्रयोजनम्
स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–09

76. 'परः सन्निकर्षः' .... अस्ति–
(A) वृद्धिः (B) प्रातिपदिकम्
(C) सर्वनामस्थानम् (D) संहिता
स्रोत–अष्टाध्यायी (1.4.108) - ईश्वरचन्द्र, पेज–147

61. (A)	**62. (C)**	**63. (D)**	**64. (A)**	**65. (B)**	**66. (D)**	**67. (B)**	**68. (B)**	**69. (C)**
70. (D)	**71. (D)**	**72. (A)**	**73. (B)**	**74. (D)**	**75. (B)**	**76. (D)**		

77. वैदिकवाङ्मये ध्वनि-विज्ञानस्य प्राचीनं नाम अस्ति?
(A) शिक्षा (B) व्याकरणम्
(C) निरुक्तम् (D) कल्पः
स्रोत–i. वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-कपिलदेव द्विवेदी, पेज-193
ii. भाषाविज्ञान - कर्ण सिंह, पेज 134

78. अवेस्ताभारोपीयपरिवारस्य कया शाखया सम्बद्धास्ति?
(A) भारत-ईरानीशाखया (B) ग्रीकशाखया
(C) हित्तीशाखया (D) तोखारीशाखया
स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–416

79. 'गङ्गायां घोषः' इत्यस्य लक्ष्यार्थोऽस्ति?
(A) गङ्गातटे घोषः
(B) गङ्गाजलप्रवाहे घोषः
(C) घोषे शीतत्वं पावनत्वं च
(D) गङ्गाजले घोषः
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–61

80. 'ये रसस्याङ्गिनो धर्माः शौर्यादय इवात्मनः। उत्कर्षहेतवस्ते स्युरचलस्थितयो गुणाः॥' इति कस्योक्ति;?
(A) आनन्दवर्धनस्य (B) मम्मटस्य
(C) वामनस्य (D) कुन्तकस्य
स्रोत–काव्यप्रकाश (6.66) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–380

81. पृथुकार्त्तस्वरपात्रं भूषितनिःशेषपरिजनं देव। विलसत्करेणुगहनं सम्प्रति सममावयोः सदनम्॥ इत्ययं श्लोकः कस्य अलंकारस्य अस्ति?
(A) अनुप्रासस्य (B) यमकस्य
(C) श्लेषस्य (D) उत्प्रेक्षायाः
स्रोत–काव्यप्रकाश (9.371) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–417

82. 'आरभटीवृत्तिः' कस्मिन् रसे भवति?
(A) वीरे (B) शृङ्गारे
(C) रौद्रे बीभत्से च (D) अद्भुते
स्रोत–साहित्यदर्पण (6/122) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–199

83. 'नान्दी' प्रयुक्तो भवति?
(A) महाकाव्ये (B) खण्डकाव्ये
(C) गद्यकाव्ये (D) रूपके
स्रोत–साहित्यदर्पण (6.22) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–173

84. अस्मिन् कः पञ्चसन्धिभेदः नास्ति?
(A) मुखः (B) सम्मुखः
(C) प्रतिमुखः (D) गर्भः
स्रोत–दशरूपक (1.24) - बैजनाथ पाण्डेय, पेज–39

85. ''वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः'' इत्ययं कुत्र विद्यते?
(A) शिशुपालवधे (B) बुद्धचरिते
(C) किरातार्जुनीये (D) नैषधीयचरिते
स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/8) - रामसेवक दुबे, पेज–61

86. ''सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तः करणप्रवृत्तयः'' इति कस्य उक्तिः?
(A) भर्तृहरेः (B) भासस्य
(C) कालिदासस्य (D) भवभूतेः
स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/22) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–54

87. नलचम्पूकारः कोऽस्ति?
(A) कल्हणः (B) विशाखदत्तः
(C) क्षेमेन्द्रः (D) त्रिविक्रमभट्टः
स्रोत–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–602-03

88. भट्टनारायणस्य रचना अस्ति–
(A) मुद्राराक्षसम् (B) चारुदत्तम्
(C) महावीरचरितम् (D) वेणीसंहारम्
स्रोत–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–381

89. भामिनीविलासकाव्यस्य कर्त्ता अस्ति–
(A) जगन्नाथः (B) क्षेमेन्द्रः
(C) अप्पयदीक्षितः (D) विश्वनाथः
स्रोत–संस्कृतसाहित्य का इतिहास-उमाशंकरशर्मा 'ऋषि', पेज–357

90. मृच्छकटिके वसन्तसेनां मृत्युमुखात् कः रक्षति?
(A) चन्दनकः (B) कुम्भीलकः
(C) शर्विलकः (D) संवाहकः
स्रोत–मृच्छकटिकम् - आचार्य जगदीश चन्द्र मिश्र, भू., पेज–41

91. गद्यकाव्यत्रय्यां आयान्ति?
(A) दशकुमारचरितम्, वासवदत्ता, कादम्बरी।
(B) कादम्बरी, शूद्रककथा, हर्षचरितम्।
(C) हर्षचरितम्, दशकुमारचरितम्, शूद्रककथा।
(D) शिवराजविजयः, कादम्बरी, हर्षचरितम्।
स्रोत–कादम्बरीकथामुखम् -तारिणीश झा, भू0 पेज–11

77. (A)	78. (A)	79. (A)	80. (B)	81. (C)	82. (C)	83. (D)	84. (B)	85. (C)
86. (C)	87. (D)	88. (D)	89. (A)	90. (D)	91. (A)			

92. 'हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठम्' इति श्लोकांशः सूचकः अस्ति?
(A) देवतायाः (B) ब्राह्मणः
(C) धनदस्य (D) मनसः
स्रोत–वैदिकसूक्तसंग्रह (शुक्लयजुर्वेद 34.6)-विजयशंकर पाण्डेय, पेज–55

93. .... 'समवर्तताग्रे' मन्त्रस्य रिक्तांशे प्रयोज्यमस्ति।
(A) हिरण्यगर्भः (B) ब्रह्मा
(C) विराड् (D) इन्द्रः
स्रोत–वैदिकसूक्तसंग्रह (10.121.1)-विजयशंकर पाण्डेय, पेज–116

94. 'उरुगायः' इति पदं ऋग्वेदे सूचयति?
(A) इन्द्रम् (B) बृहस्पतिम्
(C) वरुणम् (D) विष्णुम्
स्रोत–वैदिकसूक्तसंग्रह (1.154.1)-विजयशंकर पाण्डेय, पेज–57

95. नचिकेता कस्माद् वरत्रयं लब्धवान्?
(A) इन्द्रात् (B) वशिष्ठात्
(C) यमात् (D) सूर्यात्
स्रोत–कठोपनिषद् (1.1.9) - गीताप्रेस, पेज–22

96. निघण्टोः शब्दराशेः निर्वचनाय वेदाङ्गोऽस्ति?
(A) व्याकरणम् (B) निरुक्तम्
(C) कल्पः (D) शिक्षा
स्रोत–हिन्दी निरुक्त - कपिलदेव शास्त्री, पेज भू.–11

97. पुरुषबहुत्व - व्याख्यायै दर्शनमस्ति?
(A) पुरुषार्थदर्शनम् (B) धर्मदर्शनम्
(C) सांख्यदर्शनम् (D) सर्वदार्शनिकम्
स्रोत–सांख्यकारिका (का.-18) - राकेश शास्त्री, पेज–59

98. मायाकृत-लोकसत्ताभासः वर्णितोऽस्ति?
(A) तर्कसंग्रहे (B) वेदान्तसारे
(C) त्रिपिटके (D) त्रिषु कुत्रापि न
स्रोत–भारतीय दर्शन - डा0 शोभा निगम, पेज-231

99. 'योगस्थः कुरु कर्माणि' श्लोकांशे वर्णितम्?
(A) तत्त्वम् (B) सत्यम्
(C) संसारभुक्तम् (D) अनासक्ततया कर्म
स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (2.45)

100. वेदान्तदर्शनस्यापरं नामास्ति?
(A) पूर्वमीमांसा (B) उलूकदर्शनम्
(C) उत्तरमीमांसा (D) तत्त्वचिन्तनम्
स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज भू.–08

101. शतपथब्राह्मणं कस्य वेदस्य अस्ति?
(A) ऋग्वेदस्य (B) सामवेदस्य
(C) यजुर्वेदस्य (D) अथर्ववेदस्य
स्रोत–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–118

102. सरमा-पणिसंवादः वर्णितः अस्ति?
(A) यजुर्वेदे (B) सामवेदे
(C) अथर्ववेदे (D) ऋग्वेदे
स्रोत–वैदिक साहित्य का इतिहास - पारसनाथ द्विवेदी, पेज–58

103. 'परिमाणमात्रे प्रथमेऽति' अस्योदाहरणमस्ति?
(A) चितो व्रीहिः (B) धृतो व्रीहिः
(C) बहुव्रीहिः (D) द्रोणो व्रीहिः
स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्द प्रसाद शर्मा, पेज–867

104. 'करिन्' प्रातिपदिकस्य सप्तम्येकवचनं रूपमस्ति?
(A) करिणौ (B) करीणाम्
(C) करिणि (D) करिणोः
स्रोत–रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–126

105. लिखित-भाषास्वरूपेषु प्राचीनतममस्ति?
(A) वैदिकसंस्कृतम् (B) पालिः
(C) अपभ्रंशः (D) लौकिकसंस्कृतम्
स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–425

106. मध्यकालिकी आर्यभाषा नास्ति–
(A) अपभ्रंशः (B) प्राकृतम्
(C) पालिः (D) बांग्ला
स्रोत–भाषाविज्ञान – डा0 कर्ण सिंह, पेज–124

107. कः नियमः ग्, द्, ब् इति व्यञ्जनानि क्रमानुसारेण क्, त्, प् इति व्यञ्जने परिवर्तते–
(A) वर्नरनियमः (B) ग्रिमनियमः
(C) ग्रासमाननियमः (D) तालव्यनियमः
स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–242

108. 'देवानां प्रियः' अर्थपरिवर्तनं लभते–
(A) 'धार्मिक' इत्यर्थे (B) धर्मगुरुरित्यर्थे
(C) 'मूर्ख' इत्यर्थे (D) सभ्यस्यार्थे
स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–340

92. (D)	93. (A)	94. (D)	95. (C)	96. (B)	97. (C)	98. (B)	99. (D)	100. (C)
101. (C)	102. (D)	103. (D)	104. (C)	105. (A)	106. (D)	107. (B)	108. (C)	

109. मम्मटस्य शास्त्रे सकलप्रयोजनमौलिभूतं काव्यप्रयोजनम् उक्तम्?
(A) काव्यं यशसे
(B) सद्यः परनिर्वृतये
(C) कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे
(D) शिवेतरक्षतये
स्रोत–काव्यप्रकाश (1/2) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–10

110. 'वाक्यं रसात्मकं......' इत्यस्मिन् रिक्तस्थाने योज्यम्–
(A) काव्यम् (B) तत्त्वम्
(C) सत्यम् (D) दिव्यम्
स्रोत–साहित्यदर्पण - शालिग्राम शास्त्री, पेज–19

111. 'तात्पर्यार्थोऽपि केषुचित्' कथनं सम्बद्ध्यते?
(A) वैय्याकरणैः (B) वैदिकैः
(C) मीमांसकैः (D) कर्मकाण्ड-गुरुभिः
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–35

112. रसविचारे भट्टनायकस्य विशिष्टं योगदानमस्ति?
(A) अभिधा-विचारः (B) सात्त्विक-विचारः
(C) ध्वनिविरोध-विचारः (D) साधारणीकरण-विचारः
स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–107

113. मम्मटमते गुणाः सन्ति?
(A) मुख्यधर्माः (B) रसस्याङ्गिनो धर्माः
(C) सञ्चारिणो धर्माः (D) अस्थिराः धर्माः
स्रोत–काव्यप्रकाश (8.66) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–380

114. अतिशयोक्ति-नामकेऽलङ्कारे भवति?
(A) उपमानेन उपमेयस्य निगरणम्
(B) उपमानोपमेययोः साधर्म्यम्
(C) उपमेयतः उपमानस्य श्रेष्ठत्वम्
(D) उपमानस्य सम्भावनमुपमेये
स्रोत–काव्यप्रकाश (10.100) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–483

115. दशरूपकेषु नास्ति?
(A) भाणः (B) सट्टकम्
(C) प्रहसनम् (D) वीथी
स्रोत–साहित्यदर्पण (6.3) - शालिग्राम शास्त्री, पेज–170

116. यत्रार्थः शब्दो वा तमर्थमुपसर्जनीकृतस्वार्थौ। व्यङ्क्तः काव्यविशेषः स ध्वनिरितिः......॥ कारिकायाः रिक्तांशे योज्यमस्ति–
(A) शास्त्रज्ञैः कथितम् (B) ध्वनौ संसूचितम्
(C) आचार्यैणोक्तम् (D) सूरिभिः कथितः
स्रोत–ध्वन्यालोक (1/13) - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–37

117. ''यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत्क्वचित्'' कथनेन कस्य परिचयः भवति?
(A) रामायणस्य (B) महाभारतस्य
(C) मनुस्मृतेः (D) सर्वदर्शनसंग्रहस्य
स्रोत–संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेवद्विवेदी, पेज–117

118. ''हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः'' इति कथितम् केन?
(A) कालिदासेन (B) अश्वघोषेण
(C) माघेन (D) भारविणा
स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/4) - रामसेवक दुबे, पेज–50

119. ''मूर्खस्य नास्त्यौषधम्'' इति नीतेः कविरस्ति?
(A) बिल्हणः (B) राजशेखरः
(C) भर्तृहरिः (D) भल्लटः
स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-11) - तारिणीश झा, पेज–18

120. ''स्तनयुगमश्रुस्नातम्.....................'' इत्यादि कादम्बरीकथामुखश्लोकस्य वक्ताऽस्ति?
(A) जाबालिः (B) शूद्रकः
(C) शुकनासः (D) वैशम्पायनः शुकः
स्रोत–कादम्बरीकथामुखम् - तारिणीश झा, पेज–100

109. (B)	110. (A)	111. (C)	112. (D)	113. (B)	114. (A)	115. (B)	116. (D)	117. (B)
118. (D)	119. (C)	120. (D)						

13 | प्रवक्ता चयन परीक्षा UP-GIC संस्कृत | 2009

1. **'गाङ्गः' में प्रत्यय है–**
   (A) अण्　(B) अप्
   (C) अच्　(D) अञ्

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्द प्रसाद शर्मा, पेज–1001

2. **'मासिकम्' में प्रत्यय है–**
   (A) ठक्　(B) ठञ्
   (C) ठप्　(D) ट्यु

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्द प्रसाद शर्मा, पेज–1045

3. **द्विकर्मक दुह्, याच् आदि बारह धातुओं का कर्मवाच्य बनाने में उनका गौणकर्म किस विभक्ति में आता है?**
   (A) प्रथमा　(B) द्वितीया
   (C) तृतीया　(D) चतुर्थी

स्रोत–वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (भाग-2)-गोविन्दाचार्य, पेज–197,198

4. **'निष्ठा' संज्ञा किन प्रत्ययों की होती है?**
   (A) तव्य-तव्यत्　(B) शतृ-शानच्
   (C) अनीय-अनीयर्　(D) क्त-क्तवतु

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्द प्रसाद शर्मा, पेज–806

5. **इनमें से कौन सा 'कृत्य' प्रत्यय नहीं है?**
   (A) तव्य　(B) तव्यत्
   (C) क्यप्　(D) क्यच्

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्द प्रसाद शर्मा, पेज–773

6. **सन्धि नियम की दृष्टि से कौन सा रूप शुद्ध है?**
   (A) पुना रमते　(B) पुनः रमते
   (C) पुनर् रमते　(D) पुनो रमते

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्द प्रसाद शर्मा, पेज–122

7. **'श्रीमद्भगवद्गीता' के द्वितीय अध्याय का नाम है–**
   (A) विभूतियोग　(B) साङ्ख्ययोग
   (C) अक्षरब्रह्मयोग　(D) ज्ञानविज्ञानयोग

स्रोत–श्रीमद्भगवद्गीता (द्वितीय अध्याय) - गीताप्रेस गोरखपुर

8. **'गीता' के अनुसार कर्मयोगी को कर्म करना चाहिए–**
   (A) यश के लिए　(B) सुख के लिए
   (C) लोकसंग्रह के लिए　(D) धनसंग्रह के लिए

स्रोत–श्रीमद्भगवत्गीता (3/20)-गीताप्रेस, गोरखपुर, पेज–56

9. **'नीलो घटः' में गुण-गुणी का कौन सा सम्बन्ध है?**
   (A) समवाय सम्बन्ध　(B) संयोग सम्बन्ध
   (C) असमवाय सम्बन्ध　(D) समवेत समवाय सम्बन्ध

स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज–34

10. **'न्यायशास्त्र' में प्रमेयों की संख्या मानी गई है–**
   (A) दस　(B) बारह
   (C) आठ　(D) चार

स्रोत–तर्कभाषा - श्रीनिवास शास्त्री, पेज–175

11. **'सांख्यदर्शन' का मूल सिद्धान्त है–**
   (A) प्रकृति-पुरुषैक्य　(B) प्रकृति-पुरुष-विवेक
   (C) प्रकृतिबहुत्व　(D) पुरुषैकत्व

स्रोत–सांख्यकारिका (का0-2) - राकेशशास्त्री, पेज–5

12. **'सांख्य के अनुसार इन्द्रियों की उत्पत्ति होती है–**
   (A) भौतिकतत्त्व से　(B) बुद्धितत्त्व से
   (C) अहङ्कार से　(D) गुणत्रय से

स्रोत–सांख्यकारिका (का0-22) - राकेशशास्त्री, पेज–70-71

13. **'वेदान्तसार' में निर्विकल्पक समाधि के अङ्ग गिनाए गए हैं**
   (A) आठ　(B) सात
   (C) पाँच　(D) दस

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–179

14. **'वेदान्तसार' के अनुसार सूक्ष्मशरीर के अवयव हैं–**
   (A) आठ　(B) सत्रह
   (C) बारह　(D) अठारह

स्रोत–वेदान्तसार - सन्तनारायण श्रीवास्तव, पेज–65

1. (A)　2. (B)　3. (A)　4. (D)　5. (D)　6. (A)　7. (B)　8. (C)　9. (A)　10. (B)
11. (B)　12. (C)　13. (A)　14. (B)

15. कुमारिलभट्ट इनमें से क्या थे?

(A) व्यञ्जनावादी (B) सांख्यमतानुयायी
(C) मीमांसक (D) नैयायिक

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–35

16. 'रामकथा' में जटायु आख्यान कौन सी अर्थप्रकृति है?

(A) बीज अर्थप्रकृति (B) पताका अर्थप्रकृति
(C) प्रकरी अर्थप्रकृति (D) कार्य अर्थप्रकृति

स्रोत–दशरूपकम् - रमाशङ्कर त्रिपाठी, पेज–14

17. 'विनिर्गतं मानदमात्ममन्दिरात्' आदि उदाहरण है

(A) व्यङ्ग्यकाव्य का (B) शब्दचित्र का
(C) अर्थचित्र का (D) गुणीभूतव्यङ्ग्य का

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–32

18. केवल 'जाति' में शब्द का संकेतग्रह मानने वाले मतवादी हैं–

(A) वैयाकरण (B) मीमांसक
(C) वेदान्ती (D) बौद्ध

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–47

19. 'अपोह' को शब्दार्थ मानने वाले मतवादी हैं–

(A) मीमांसक (B) बौद्ध
(C) नैयायिक (D) वेदान्ती

स्रोत–काव्यप्रकाश – आचार्य विश्वेश्वर, पेज–49

20. मम्मट द्वारा उपादान लक्षणा के उदाहरण 'गौरनुबन्ध्यः' में किस आचार्य के मत का खण्डन किया गया है?

(A) कुमारिलभट्ट (B) मुकुलभट्ट
(C) प्रभाकरभट्ट (D) भट्टलोल्लट

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–55

21. 'उपकृतं बहु तत्र किमुच्यते' आदि उहाहरण है–

(A) लक्षणलक्षणा का
(B) उपादानलक्षणा का
(C) सारोपा लक्षणा का
(D) साध्यवसाना लक्षणा का

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–59

22. मम्मट के अनुसार व्यङ्ग्यरूप प्रयोजन में अपरिहार्य है–

(A) व्यञ्जना (B) अभिधा
(C) तात्पर्या (D) रूढ़ि

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–69-70

23. रसनिष्पत्ति के सन्दर्भ में 'साधारणीकरण' का सर्वप्रथम प्रयोग किया है–

(A) भट्टलोल्लट ने (B) भट्टनायक ने
(C) भरतमुनि ने (D) आनन्दवर्धन ने

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–107

24. अभिनवगुप्त के मतानुसार 'रसप्रतीति' है–

(A) निर्विकल्पकरूप (B) सविकल्पकरूप
(C) उभयाभावस्वरूप (D) ज्ञाप्य

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–112

25. मम्मट की सम्मति में गुण हैं–

(A) रस के उत्कर्षाधायक तत्त्व
(B) रस के अङ्गभूत धर्म
(C) काव्य के जीवनाधायक तत्त्व
(D) दोषरहित काव्यरूप

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–380

26. शब्दगत एवं अर्थगत बीस गुणों के प्रतिपादक आचार्य हैं–

(A) भामह (B) रुय्यक
(C) रुद्रट (D) वामन

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–388

27. अभङ्गश्लेष को अर्थालङ्कारों में परिगणित करने वाले आचार्य हैं–

(A) रुद्रट (B) रुय्यक
(C) शङ्कुक (D) कुन्तक

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–422

28. 'सकलकलं पुरमेतज्जातं सम्प्रति सुधांशुबिम्बमिव' में मम्मट के अनुसार प्रधान अलङ्कार है–

(A) उपमा (B) श्लेष
(C) अनुप्रास (D) उत्प्रेक्षा

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–426

29. उत्कृष्ट कविकल्पना की स्थिति में अलङ्कार होता है–

(A) उपमा (B) रूपक
(C) उत्प्रेक्षा (D) श्लेष

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–460

15. (C) 16. (C) 17. (C) 18. (B) 19. (B) 20. (B) 21. (A) 22. (A) 23. (B) 24. (C) 25. (A) 26. (D) 27. (B) 28. (A) 29. (C)

30. उपमेय को असत्य सिद्ध कर उपमान को सत्यरूप से स्थापित करने में अलङ्कार होता है

(A) रूपक (B) व्यतिरेक
(C) निदर्शना (D) अपह्नुति

स्रोत– काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–470

31. प्रस्तुत में अप्रस्तुत का परिस्फुरण होने पर अलङ्कार होता है

(A) समासोक्ति (B) अतिशयोक्ति
(C) विशेषोक्ति (D) विनोक्ति

स्रोत–साहित्यदर्पण - शालिग्राम शास्त्री, पेज–336

32. अध्यवसाय के सिद्ध हो जाने पर अलङ्कार होता है–

(A) पर्यायोक्ति (B) अतिशयोक्ति
(C) स्वभावोक्ति (D) सहोक्ति

स्रोत–साहित्यदर्पण - शालिग्राम शास्त्री, पेज–323

33. बाणभट्ट कृत 'हर्षचरित' है–

(A) कथा (B) आख्यायिका
(C) उपन्यासिका (D) चम्पू

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–491

34. किस प्रकार के काव्य को 'एकदेशानुकारि' कहा गया है–

(A) खण्डकाव्य (B) महाकाव्य
(C) गद्यकाव्य (D) चम्पूकाव्य

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–521

35. अधोलिखित में से प्रकरण नामक रूपक है–

(A) उत्तररामचरितम् (B) मुद्राराक्षसम्
(C) स्वप्नवासवदत्तम् (D) मृच्छकटिकम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–307

36. अधोलिखित में से कौन सा काव्य अर्वाचीन है?

(A) हर्षचरितम् (B) महावीरचरितम्
(C) सीताचरितम् (D) विक्रमाङ्कदेवचरितम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–260

37. अधोलिखित में से कौन सा ऐतिहासिक महाकाव्य है?

(A) नैषधीयचरितम् (B) जानकीहरणम्
(C) विक्रमाङ्कदेवचरितम् (D) बुद्धचरितम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज–311

38. भट्टनारायण की रचना है–

(A) मुद्राराक्षसम् (B) दरिद्रचारुदत्तम्
(C) महावीरचरितम् (D) वेणीसंहारम्

स्रोत–वेणीसंहारम् - पं0 परमेश्वरदीन पाण्डेय, भू. पेज–4

39. नाट्य में जहाँ प्रस्तुत भावी कथावस्तु की अन्योक्तिमय सूचना दी जाती है, वह होता है–

(A) पताकास्थानक (B) पताका
(C) आधिकारिक (D) प्रकरण

स्रोत–दशरूपकम् 1/14- रमाशङ्कर त्रिपाठी, पेज–15

40. रूपक में भूत अथवा भावी घटनाओं की सूचना जहाँ मध्यम पात्रों द्वारा दी जाती है, वह होता है–

(A) आकाशभाषित (B) विष्कम्भक
(C) प्रवेशक (D) अङ्कास्य

स्रोत–दशरूपकम् (1.59) - रमाशङ्कर त्रिपाठी, पेज–99

41. 'फलागम' की परिगणना होती है–

(A) अर्थप्रकृतियों में (B) कार्यावस्थाओं में
(C) नाट्यसन्धियों में (D) अर्थोपक्षेपकों में

स्रोत–दशरूपकम् (1.19) - रमाशङ्कर त्रिपाठी, पेज–23

42. रूपकभेदों में एकल अभिनय होता है–

(A) प्रकरण में (B) डिम में
(C) भाण में (D) व्यायोग में

स्रोत–दशरूपकम् (1.49) - रमाशङ्कर त्रिपाठी, पेज–232

43. आचार्य धनञ्जय ने दशरूपक में नागानन्द के नायक जीमूतवाहन को माना है–

(A) धीरप्रशान्त (B) धीरोदात्त
(C) धीरललित (D) धीरोद्धत

स्रोत–दशरूपकम् (2.4) - रमाशङ्कर त्रिपाठी, पेज–116

44. अधोलिखित में से कौन सा महाकाव्य पचास सर्गों में निबद्ध है?

(A) जानकीहरण (B) भट्टिकाव्य
(C) सौन्दरानन्द (D) हरविजय

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिल देव द्विवेदी, पेज–248

30. (D)	31. (A)	32. (B)	33. (B)	34. (A)	35. (D)	36. (C)	37. (C)	38. (D)	39. (A)
40. (B)	41. (B)	42. (C)	43. (B)	44. (D)					

45. गङ्गा-यमुना के सङ्गम का वर्णन प्राप्त होता है–

(A) माघकृत शिशुपालवध में

(B) कालिदासकृत रघुवंश में

(C) भासकृत प्रतिमानाटक में

(D) भवभूतिकृत उत्तररामचरित में

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा, 'ऋषि', पेज–216

46. 'प्रसन्नराघव' नाटक के रचयिता हैं–

(A) वत्सराज (B) नीलकण्ठ दीक्षित(C) जयदेव (D) वेंकटाध्वरी

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि' पेज–540

47. 'अभिज्ञानशाकुन्तल' के चतुर्थ अङ्क में 'लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु' पद्यांश में अलङ्कार है–

(A) उत्प्रेक्षा (B) अतिशयोक्ति

(C) उपमा (D) अर्थान्तरन्यास

स्रोत–अभिज्ञानशाकुन्तल (4/2) - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–190

48. मेघदूत में यक्ष 'वक्रः पन्था यदपि भवतः' आदि कहकर मेघ से किस नगरी में जाने का अनुरोध करता है?

(A) अलका (B) उज्जयिनी

(C) विदिशा (D) दशार्ण

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ-28) - दयाशङ्कर शास्त्री, पेज–105

49. पूर्वमेघ में विन्ध्याचल की तलहटी में बिखरी हुई किस नदी का वर्णन है?

(A) रेवा (B) चर्मण्वती

(C) शिप्रा (D) गन्धवती

स्रोत–मेघदूतम् (पूर्वमेघ) - तारिणीश झा, पेज–40

50. 'सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ते' किसकी उक्ति है–

(A) कालिदास (B) भर्तृहरि

(C) वाल्मीकि (D) माघ

स्रोत–नीतिशतकम् (श्लोक-33) - तारिणीश झा, पेज–55

51. 'मृच्छकटिक' प्रकरण के प्रथम अङ्क का नाम है–

(A) द्यूतकरसंवाहक (B) अलङ्कारन्यास

(C) मदनिकाशर्विलक (D) व्यवहार

स्रोत–मृच्छकटिकम् - श्रीनिवास शास्त्री, पेज–52

52. 'शरीरेऽरिः प्रहरति, हृदये स्वजनस्तथा' सूक्ति का स्रोत है

(A) प्रतिमानाटकम् (B) नीतिशतकम्

(C) उत्तररामचरितम् (D) नलचम्पूः

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–289

53. 'शिवराजविजय' गद्यकाव्य का आरम्भ होता है–

(A) शिवाजी की शूरता के वर्णन से

(B) सूर्योदय-वर्णन से

(C) गौरसिंह के वर्णन से

(D) अफ़जल खाँ के वर्णन से

स्रोत–शिवराजविजय - रमाशङ्कर मिश्र, भू. पेज–3

54. भारवि कवि के वचन को कहा गया है–

(A) पुटपाक के समान

(B) द्राक्षापाक के समान

(C) नारिकेलपाक के समान

(D) रसालपाक के समान

स्रोत–किरातार्जुनीयम् - राजेन्द्र मिश्र, भू. पेज–27

55. 'भामिनीविलास' काव्य के रचयिता हैं–

(A) विश्वनाथ (B) क्षेमेन्द्र

(C) अप्पयदीक्षित (D) जगन्नाथ

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास–कपिलदेव द्विवेदी, पेज–555

56. 'किरातार्जुनीयम्' शब्द निष्पन्न होता है–

(A) छ प्रत्यय से (B) ङीप् प्रत्यय से

(C) ल्युट् प्रत्यय से (D) युच् प्रत्यय से

स्रोत–किरातार्जुनीयम् - राजेन्द्र मिश्र, भू. पेज–18

57. किरातार्जुनीय महाकाव्य के प्रथमसर्ग में प्रायः प्रयुक्त छन्द है–

(A) इन्द्रवज्रा (B) उपजाति

(C) वंशस्थ (D) द्रुतविलम्बित

स्रोत–किरातार्जुनीयम् - राजेन्द्र मिश्र, पेज–22

58. भासकृत अधोलिखित नाटकों में से कौन सा रामायणमूलक है?

(A) अभिषेकनाटकम् (B) ऊरुभङ्गम्

(C) बालचरितम् (D) पञ्चरात्रम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–275

45. (B) 46. (C) 47. (A) 48. (B) 49. (A) 50. (B) 51. (B) 52. (A) 53. (B) 54. (C) 55. (D) 56. (A) 57. (C) 58. (A)

59. किस प्राचीन गद्यकाव्य में लोकजीवन का सर्वाधिक चित्रण है?

(A) दशकुमारचरितम् (B) वासवदत्ता
(C) कादम्बरी (D) हर्षचरितम्

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज–389

60. 'शृङ्गारामृतशीतांशुः' विशेषण किस काव्य के लिए प्रसिद्ध है?

(A) शृङ्गारशतकम् (B) अमरुशतकम्
(C) मेघदूतम् (D) नैषधीयचरितम्

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज–291

61. अधोलिखित में से कौन सा काव्य गीतिकाव्य नहीं है?

(A) अमरुशतकम् (B) गीतगोविन्दम्
(C) मत्तविलासः (D) भामिनीविलासः

संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास-राधावल्लभ त्रिपाठी, पेज–314

62. सर्वप्रथम 'पञ्चतन्त्र' का सम्पादन किस विदेशी विद्वान् ने किया?

(A) नार्मन ब्राउन (B) हर्टेल
(C) मैक्डॉनल (D) मैक्समूलर

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–575

63. अधोलिखित में से क्षेमेन्द्ररचित काव्यों में नहीं है–

(A) रामायणमञ्जरी (B) भारतमञ्जरी
(C) कर्पूरमञ्जरी (D) बृहत्कथामञ्जरी

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज–280

64. संस्कृत-साहित्य में हास्य-व्यङ्ग्य का सर्वश्रेष्ठ रचनाकार माना जाता है–

(A) भास (B) क्षेमेन्द्र
(C) दामोदर (D) शूद्रक

स्रोत–संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', पेज–303

65. बृहत्त्रयी के अन्तर्गत कौन सा ग्रन्थ नहीं है?

(A) शिशुपालवधम् (B) नैषधीयचरितम्
(C) रघुवंशम् (D) किरातार्जुनीयम्

स्रोत–शिशुपालवधम् - तारिणीश झा, भू. पेज–12

66. 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः' सूक्ति किस काव्य की है?

(A) कुमारसम्भवम् (B) रामायणम्
(C) शिशुपालवधम् (D) किरातार्जुनीयम्

स्रोत–किरातार्जुनीयम् (1/4) - राजेन्द्र मिश्र, पेज–42

67. अधोलिखित में से कौन सा सिद्धान्त ध्वनिसिद्धान्त का मूल आधार है?

(A) शब्दब्रह्मत्व (B) शब्दनित्यत्व
(C) स्फोटवाद (D) अभिधावृत्ति

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–28

68. वेत्रवती नदी किस नगरी में स्थित थी?

(A) अलका में (B) विदिशा में
(C) उज्जयिनी में (D) अवन्ती में

स्रोत–मेघदूतम् पूर्वमेघ - तारिणीश झा, पेज–53

69. काव्यप्रकाश में उल्लिखित 'अनलङ्कृती' किसका विशेषण है?

(A) शब्द का (B) अर्थ का
(C) शब्दार्थ का (D) पद्य का

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–19

70. मम्मट के अनुसार काव्य कितने प्रकार का होता है?

(A) तीन (B) चार
(C) दो (D) पाँच

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–28

71. रघुवंशमहाकाव्य किसकी स्तुति से प्रारम्भ होता है?

(A) गणेश-लक्ष्मी की (B) शिव-पार्वती की
(C) विष्णु-लक्ष्मी की (D) सरस्वती की

स्रोत–रघुवंशमहाकाव्य (1.1) - श्रीहरगोविन्द मिश्र, पेज–02

72. भास द्वारा लिखित उपलब्ध नाटकों की संख्या है–

(A) तेरह (B) ग्यारह
(C) आठ (D) दस

स्रोत–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–275

73. संस्कृत भाषा है–

(A) अयोगात्मक (B) श्लिष्टयोगात्मक
(C) प्रश्लिष्टयोगात्मक (D) अश्लिष्टयोगात्मक

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र-कपिलदेव द्विवेदी, पेज–357

59. (A) 60. (D) 61. (C) 62. (B) 63. (C) 64. (B) 65. (C) 66. (D) 67. (C) 68. (B) 69. (C) 70. (A) 71. (B) 72. (A) 73. (B)

74. अपभ्रंश है–

(A) प्राचीन भारतीय आर्यभाषा

(B) नवीन भारतीय आर्यभाषा

(C) द्राविड परिवार की भाषा

(D) मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–431

75. पालि में संस्कृत की यह ध्वनि नहीं मिलती–

(A) आ (B) ए

(C) ऐ (D) ओ

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–434

76. अर्थसंकोच का उदाहरण है–

(A) प्रवीण (B) तैल

(C) असुर (D) सरसिज

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–338

77. 'धर्म' का 'धम्म' होना इसका उदाहरण है

(A) तालव्य नियम (B) सादृश्य

(C) समीकरण (D) विषमीकरण

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–233

78. किस नियम में ग्, द्, ब्, हो जाते हैं क्, त्, प्?

(A) वर्नरनियम (B) ग्रिमनियम

(C) ग्रासमाननियम (D) तालव्यनियम

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–241

79. व्यंग्य-प्रयोग इनमें से किसका कारण है?

(A) ध्वनि-नियम (B) ध्वनि-परिवर्तन

(C) अर्थ-परिवर्तन (D) शब्द-परिवर्तन

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–344

80. 'प्रयत्नलाघव' किसका कारण है–

(A) ध्वनि-नियम (B) अर्थ-परिवर्तन

(C) भाषा का ह्रास (D) ध्वनि-परिवर्तन

स्रोत–भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र - कपिलदेव द्विवेदी, पेज–227

81. तुमर्थक प्रत्यय अधिक उपलब्ध होते हैं–

(A) पालि में (B) प्राकृत में

(C) वैदिकसंस्कृत में (D) लौकिकसंस्कृत में

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्त शास्त्री, भू. पेज–32

82. 'लेट्लकार' प्रयुक्त हुआ है–

(A) वैदिकसंस्कृत में (B) लौकिकसंस्कृत में

(C) पालि में (D) प्राकृत में

स्रोत–ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्त शास्त्री, पेज–32

83. काव्यप्रकाश में 'तात्पर्यार्थोऽपि केषुचित्' में किसके मत का संकेत है–

(A) नैयायिक (B) वैयाकरण

(C) मीमांसक (D) वैष्णव

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–35

84. मम्मट के अनुसार उत्तमकाव्य होता है–

(A) शब्दचित्र (B) वाच्यचित्र

(C) गुणीभूतव्यङ्ग्य (D) ध्वनि

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–28

85. 'ग्रामतरुणं तरुण्याः......' उदाहरण है–

(A) अवरकाव्य का (B) मध्यमकाव्य का

(C) उत्तमकाव्य का (D) लक्षणा का

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–31

86. मम्मट के अनुसार काव्य का प्रधान प्रयोजन है–

(A) यशःप्राप्ति (B) शिवेतरक्षति

(C) कान्तासम्मित उपदेश (D) सद्यःपरनिर्वृति

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–10

87. निम्न में से कौन सा अनुप्रास-भेद नहीं है?

(A) वृत्यानुप्रास (B) छेकानुप्रास

(C) मध्यानुप्रास (D) अन्त्यानुप्रास

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–404

88. किस अलङ्कार में उपमान-पक्ष उपमेय पक्ष का निगरण कर लेता है?

(A) उपमा (B) रूपक

(C) समासोक्ति (D) अतिशयोक्ति

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–482

89. 'भेदे सति साधर्म्यम्' होता है–

(A) रूपक (B) उपमा

(C) उत्प्रेक्षा (D) दीपक

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–443

74. (D) 75. (C) 76. (D) 77. (C) 78. (B) 79. (C) 80. (D) 81. (C) 82. (A) 83. (C)
84. (D) 85. (B) 86. (D) 87. (C) 88. (D) 89. (B)

90. किस अलङ्कार में कारण होने पर भी कार्य नहीं होता–

(A) विशेषोक्ति (B) समासोक्ति

(C) विभावना (D) व्यतिरेक

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–498

91. भूत एवं भावी घटनाओं की सूचना देने वाला नाट्यप्रयोग है–

(A) जनान्तिक (B) विष्कम्भक

(C) अपवारित (D) आकाशभाषित

स्रोत–दशरूपकम् - रमाशङ्कर त्रिपाठी, पेज–99

92. शृङ्गार रस में कौन सी वृत्ति का प्रयोग होता है?

(A) कैशिकी (B) सात्वती

(C) आरभटी (D) भारती

स्रोत–दशरूपकम् (2.62) - रमाशङ्कर त्रिपाठी, पेज–195

93. ध्वन्यालोक में 'काव्यस्यात्मा स एवार्थः' से अभिप्राय है–

(A) करुणरस (B) प्रतीयमान अर्थ

(C) वाच्यार्थ (D) लक्ष्यार्थ

स्रोत–ध्वन्यालोक - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–29

94. अधोलिखित युग्मों में से कौन सा युग्म है, जो विरोधी होकर भी एक दूसरे का अनुपूरक है?

(A) उपमा-उत्प्रेक्षा (B) रूपक-दीपक

(C) काव्यलिङ्ग-परिसंख्या (D) विभावना-विशेषोक्ति

स्रोत–काव्यप्रकाश (सूत्र-161, 162)-आचार्य विश्वेश्वर, पेज–498

95. रसनिष्पत्ति के प्रसङ्ग में भुक्तिवादी आचार्य हैं–

(A) भट्टनायक (B) भट्टलोल्लट

(C) श्रीशङ्कुक (D) अभिनवगुप्त

स्रोत–काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर, पेज–105

96. काव्यशास्त्रियों में आचार्य मम्मट हैं–

(A) ध्वनिवादी (B) रीतिवादी

(C) अलङ्कारवादी (D) समन्वयवादी

स्रोत–संस्कृतसाहित्य का अर्वाचीन समी. काव्यशास्त्र-राजेन्द्र मिश्र, पेज–105

97. अधोलिखित में से किसकी वृद्धिसंज्ञा नहीं है–

(A) आ (B) ओ

(C) औ (D) ऐ

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्द प्रसाद शर्मा, पेज–52

98. किसकी प्रगृह्य संज्ञा नहीं होती?

(A) ओकारान्त द्विवचन (B) ऊकारान्त द्विवचन

(C) ईकारान्त द्विवचन (D) एकारान्त द्विवचन

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्द प्रसाद शर्मा, पेज–73

99. सन्धि कहाँ आवश्यक नहीं मानी जाती?

(A) एकपद में (B) धातूपसर्ग में

(C) समास में (D) वाक्य में

स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–45

100. 'मनोरथः' में सन्धि-विच्छेद होगा–

(A) मनो + रथः (B) मनस् + रथः

(C) मनर् + रथः (D) मनु + रथः

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्द प्रसाद शर्मा, पेज–122

101. 'शिवेहि' में सन्धिविच्छेद होगा–

(A) शिव + एहि (B) शिव + इहि

(C) शिवे + इहि (D) शिव + आ + इहि

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्द प्रसाद शर्मा, पेज–64-65

102. 'विद्वान् + लिखति' में सन्धि होगी–

(A) विद्वाल्लिखति (B) विद्वान्लिखति

(C) विद्वालँलिखति (D) विद्वाल्ँलिखति

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्द प्रसाद शर्मा, पेज–91-92

103. 'सम् + स्कर्ता' द्वारा कौन सा सन्धिरूप नहीं बनेगा?

(A) संस्कर्ता (B) संस्स्कर्ता

(C) सँस्स्कर्ता (D) सँर्स्कर्ता

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्द प्रसाद शर्मा, पेज–109

104. कौन सा समास नित्य नपुंसकलिङ्ग एकवचन में प्रयुक्त होता है?

(A) अव्ययीभाव (B) द्वन्द्व

(C) द्विगु (D) बहुव्रीहि

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्द प्रसाद शर्मा, पेज–895

90. (A) 91. (B) 92. (A) 93. (B) 94. (D) 95. (A) 96. (D) 97. (B) 98. (A) 99. (D) 100. (B) 101. (D) 102. (D) 103. (D) 104. (A)

105. 'समानाधिकरण तत्पुरुष' समास का नाम क्या है?

(A) द्वितीया तत्पुरुष (B) प्रादि तत्पुरुष

(C) कर्मधारय (D) द्विगु

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्द प्रसाद शर्मा, पेज–929

106. 'कुपुत्रः' में समास है–

(A) अव्ययीभाव (B) कर्मधारय

(C) बहुव्रीहि (D) प्रादि तत्पुरुष

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्द प्रसाद शर्मा, पेज–934

107. बहुव्रीहि समास में कौन सा पद प्रधान होता है?

(A) पूर्व (B) उत्तर

(C) उभय (D) अन्य

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्द प्रसाद शर्मा, पेज–951

108. 'निष्कौशाम्बिः' में समास है–

(A) गतितत्पुरुष (B) बहुव्रीहि

(C) अव्ययीभाव (D) केवलसमास

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्द प्रसाद शर्मा, पेज–937

109. संस्कृत में 'कारकों' की संख्या मानी गई है–

(A) पाँच (B) छः

(C) सात (D) आठ

स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–175

110. कर्मवाच्य और भाववाच्य में कर्ता में कौन सी विभक्ति होती है?

(A) प्रथमा (B) द्वितीया

(C) तृतीया (D) चतुर्थी

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी भाग-II (समास प्रकरण)-गिरिजाशङ्कर शास्त्री, पेज–124

111. किस अर्थ में प्रथमा विभक्ति नहीं होती?

(A) प्रातिपदिकार्थ (B) लिङ्ग

(C) हेतु (D) परिमाण

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्द प्रसाद शर्मा, पेज–867

112. कौन सा वाक्य शुद्ध है?

(A) रजकाय वस्त्रं ददाति (B) रजकं वस्त्रं ददाति

(C) रजके वस्त्रं ददाति (D) रजकस्य वस्त्रं ददाति

स्रोत–वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (भाग-2)-गोविन्दाचार्य, पेज–253

113. 'रुच्यर्थानां प्रीयमाणः' यह सूत्र किस विभक्ति का विधायक है?

(A) द्वितीया (B) तृतीया

(C) चतुर्थी (D) पञ्चमी

स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–200

114. 'यतश्च निर्धारणम्' किन विभक्तियों का विधायक है?

(A) प्रथमा-तृतीया (B) पञ्चमी-सप्तमी

(C) षष्ठी-सप्तमी (D) चतुर्थी-द्वितीया

स्रोत–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - बाबूराम सक्सेना, पेज–216

115. कौन सा रूप शतृ प्रत्यय की दृष्टि से अशुद्ध है?

(A) कुर्वन् (B) कुर्वती

(C) कुर्वन्ति (D) कुर्वत्

स्रोत–वस्तुनिष्ठ-संस्कृतव्याकरणम् - सर्वज्ञभूषणः, पेज–228

116. कौन सा प्रत्यय कर्मवाच्य एवं भाववाच्य में नहीं लगता?

(A) खल् (B) कृत्य

(C) क्त (D) क्तवतु

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्द प्रसाद शर्मा, पेज–774, 807

117. 'तदीयः' में प्रत्यय है–

(A) छ (B) त्यप्

(C) ईय् (D) क्यप्

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्द प्रसाद शर्मा, पेज–1039

118. 'शिक्षकः' में प्रत्यय है–

(A) ठक् (B) ण्वुल्

(C) अण् (D) वुन्

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्द प्रसाद शर्मा,पेज–1024

119. 'यशस्करः' में प्रत्यय है–

(A) क (B) ट

(C) क्त (D) खश्

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्द प्रसाद शर्मा, पेज–791

120. 'रागः' में प्रत्यय है–

(A) घञ् (B) क

(C) अच् (D) अप्

स्रोत–लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्द प्रसाद शर्मा, पेज–840-41

105. (C) 106. (D) 107. (D) 108. (A) 109. (B) 110. (C) 111. (C) 112. (D) 113. (C) 114. (C) 115. (C) 116. (D) 117. (A) 118. (D) 119. (B) 120. (A)

GIC प्रवक्ता

संस्कृत

जय जय GIC

सम्पादक
सर्वज्ञभूषण

लेखिका
सुमन सिंह

सह-सम्पादक
शुभम ममगाई

www.Sanskritganga.in

- **प्रकाशक**
  संस्कृतगङ्गा (पञ्जीकृत)
  59, मोरी, दारागञ्ज, प्रयागराज 211006
  (कोतवाली दारागञ्ज के आगे, गङ्गाकिनारे संकटमोचन छोटे हनुमान् मन्दिर के पास), Mb. : 9839852033
  email-Sanskritganga@gmail.com

- **प्रकाशन-सहयोग**
  युनिवर्सल बुक
  1519 अल्लापुर, प्रयागराज
  ☎: 0532-2460638, 9453460552

- पुस्तकें डाक द्वारा भी आर्डर कर सकते हैं–
  Mob. : 8004545095
  8004545096

- **अक्षर संयोजक- नितिन कुमार, सन्दीप कुमार**

- **प्रथम संस्करण – 21 जून - 2021**
  अन्ताराष्ट्रिय योग दिवस

- **मूल्य – 275/-** (दो सौ पचहत्तर रुपये मात्र)

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

1. राजू पुस्तक भण्डार, अल्लापुर, प्रयागराज
   सम्पर्क सूत्र : 0532-2503638, 9453460552
2. संस्कृतगङ्गा, दारागञ्ज, प्रयागराज - 8004545096
3. गौरव बुक एजेन्सी, कैण्ट, वाराणसी
4. विजय मैग्जीन सेन्टर, बलरामपुर
5. जायसवाल बुक सेन्टर, हरदोई
6. शिवशंकर बुक स्टाल, जौनपुर
7. न्यू पूर्वांचल बुक स्टाल, जौनपुर
8. कृष्णा बुक डिपो बस्ती
9. मौर्या बुक डिपो, पाण्डेयपुर, वाराणसी
10. मनीष बुक स्टोर, गोरखपुर
11. द्विवेदी ब्रदर्स, गोरखपुर
12. विद्यार्थी पुस्तक मन्दिर, गोरखपुर
13. रंजन मिश्रा, गोरखपुर (बस स्टैण्ड)
14. आशीर्वाद बुक डिपो, अमीनाबाद, लखनऊ
15. मालवीय पुस्तक केन्द्र, अमीनाबाद, लखनऊ
16. मॉडर्न मैग्जीन बुक शॉप, कपूरथला, लखनऊ
17. साहू बुक स्टॉल, अलीगंज, लखनऊ
18. भूमि मार्केटिंग, लखनऊ
19. दुर्गा स्टोर, राजा की मण्डी, आगरा
20. महामाया पुस्तक केन्द्र, बिलासपुर
21. डायमण्ड बुक स्टाल, ज्वालापुर, हरिद्वार
22. कम्पटीशन बुक हाउस, सब्जी मण्डी रोड, बरेली
23. अजय गुप्ता बुक स्टोर, लखीमपुर
24. शिवशंकर बुक स्टाल, रीवा
25. कृष्णा बुक एजेन्सी, वाराणसी
26. गर्ग बुक डिपो, जयपुर
27. अग्रवाल बुक सेन्टर, मुखर्जी नगर, नयी दिल्ली
28. चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी (सभी बुक स्टालों पर)
29. विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक वाराणसी
30. मोतीलाल बनारसी दास, वाराणसी
31. केशवी बुक डिस्ट्रीब्यूटर्स, नयी दिल्ली
32. महावीर बुक स्टाल, खजूरी बाजार, इन्दौर
33. हिन्दी बुक डिपो, मुरादाबाद
34. माँ बुक स्टेशनर्स, शहडोल छत्तीसगढ़
35. ज्ञानगंगा, राँची, झारखण्ड

संस्कृतगङ्गा उवाच

प्रिय-संस्कृतमित्राणि

नमः संस्कृताय।

* 'GIC प्रवक्ता' (संस्कृत) परीक्षा के लिए ''**जय जय GIC**'' नामक यह पुस्तक संस्कृत जगत् के लिए सादर समर्पित है।
* GIC प्रवक्ता (संस्कृत) के पाठ्यक्रम के अनुसार जो जो आवश्यक सामग्री अपेक्षित थी, वह इस पुस्तक में संकलित करने का पूरा प्रयास किया गया है।
* वैदिकवाङ्मय, भारतीय दार्शनिक चिन्तन, व्याकरण, भाषाविज्ञान, लौकिक संस्कृतसाहित्य, काव्यशास्त्र आदि सभी विषयों को यथास्थान समाहित किया गया है।
* पुस्तक मुद्रणदोष से रहित हो इसके लिए पूर्ण प्रयास किया गया है फिर भी कुत्रचित् दोष दिखायी पड़े तो अवश्य सूचित करें, ताकि आगामी संस्करण में उसे दूर किया जा सके ।
* **''जय जय GIC''** यह नामकरण अपने सुधी छात्रों को ध्यान में रखकर किया गया है ताकि परीक्षारूपी युद्ध में वे अवश्य विजयी हों इस धिया से यह नाम रखा गया है।

''विजयतां संस्कृतच्छात्राः, सिद्ध्यन्तु भवतां मनोरथाः''

* पुस्तक के लेखन एवं प्रूफरीडिंग में **'सुमन जी'** एवं **'शुभम ममगाई'** का अतुलनीय योगदान रहा, इसके लिए माँ सरस्वती की कृपा सदैव इन पर बनी रहे यही कामना करता हूँ।
* इस पुस्तक को शुद्ध एवं प्रामाणिक बनाने में हमारे कई भगीरथों ने अथक प्रयास किए जिसमें **शङ्करदत्त त्रिपाठी, शिवम चतुर्वेदी, गौरव पाण्डेय, नीलोत्पल नाथ त्रिपाठी, रूबी अग्रहरि, संगीता राय,** आदि विशेषरूपेण स्मरणीय हैं।
* **'जय जय GIC'** के कवर पेज की डिजाइनिंग **अम्बिकेश प्रताप सिंह** की कल्पना से प्रसूत तथा **ब्रह्मानन्द मिश्र** की कम्प्यूटर कला का कमाल समझा जाए।
* इस पुस्तक के अक्षर संयोजन के लिए **संदीपकुमार** एवं **नितिनकुमार** को साधुवाद तथा मुद्रणकार्य के लिए **राजकुमार गुप्ता** (राजू पुस्तक केन्द्र) के महत् परिश्रम को सादर नमन।

दिनाङ्क- 21 जून 2021
अन्ताराष्ट्रिय योगदिवस

भवदीय
सर्वज्ञभूषण
संस्कृतगङ्गा, दारागंज प्रयागराज

❑❑

GIC प्रवक्ता (संस्कृत) का पाठ्यक्रम

♦ **वैदिक साहित्य**

ऋग्वेद- अग्नि सूक्त (1.1.1), विश्वेदेवा सूक्त (1.89), विष्णु सूक्त (1.154), प्रजापति सूक्त (10.121)
यजुर्वेद - शिवसंकल्प सूक्त (34.1-6)।
कठोपनिषद् - प्रथम अध्याय (1-3 वल्ली)।
ईशावास्योपनिषद् - (सम्पूर्ण),
वैदिक वाङ्मय का संक्षिप्त इतिहास (काल निर्धारण, प्रतिपाद्य विषय), वेदांग का संक्षिप्त परिचय (शिक्षा, निरुक्त, छन्द)

♦ **दार्शनिक चिन्तन** **सांख्यदर्शन**- सृष्टि प्रक्रिया, प्रमाण, सत्कार्यवाद, त्रिगुण का स्वरूप, पुरुष का स्वरूप **(ग्रन्थ-सांख्यकारिका) वेदान्त दर्शन -** अनुबन्ध चतुष्टय, साधन चतुष्टय, माया का स्वरूप, ब्रह्म का स्वरूप **(ग्रन्थ वेदान्तसार)**
न्याय/वैशेषिक दर्शन– प्रमाण (प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द) **(ग्रन्थ- तर्कभाषा, तर्कसंग्रह)**
गीता दर्शन – निष्काम कर्मयोग, स्थितप्रज्ञ का स्वरूप **(ग्रन्थ गीता : द्वितीय अध्याय)**
♦ जैन दर्शन एवं बौद्ध दर्शन का सामान्य परिचय **(ग्रन्थ- भारतीय दर्शन -बलदेव उपाध्याय)**

♦ **व्याकरण**

1. **लघुसिद्धान्तकौमुदी** – संज्ञा प्रकरण, सन्धि प्रकरण, कृदन्त प्रकरण, तद्धित प्रकरण, स्त्रीप्रत्यय, समास।
2. **सिद्धान्तकौमुदी-** कारक प्रकरण।
3. **वाच्य परिवर्तन** (कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य, भाववाच्य) ।
4. **शब्दरूप-** अजन्त, हलन्त, (पुं. स्त्री. नपुं.)।
5. **धातुरूप-** (परस्मैपदी, आत्मनेपदी) भू, एध, अद्, हु, दा, दिव्, सूङ्, तुद्, रुध्, तन्, क्री, चुर् ।

♦ **भाषाविज्ञान**

1. भाषा की उत्पत्ति और परिभाषा 2. भाषाओं का वर्गीकरण 3. ध्वनि परिवर्तन 4. अर्थ परिवर्तन

♦ **साहित्य शास्त्र**

काव्यप्रकाश/साहित्यदर्पण- काव्यप्रयोजन, काव्य–लक्षण, काव्यहेतु, काव्यभेद। शब्द-शक्ति (अभिधा, लक्षणा, व्यंजना)।रस का स्वरूप, रस भेद, विभाव-अनुभाव-संचारी भाव, स्थायी भाव, भाव का स्वरूप। गुण का स्वरूप एवं भेद। रीति का स्वरूप एवं भेद।
अधोलिखित अलंकार का सामान्य परिचय
शब्दालंकार- अनुप्रास, यमक, श्लेष। **अर्थालंकार**-उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति, अर्थान्तरन्यास।
दशरूपक- नाट्यलक्षण, नाट्यभेद, अर्थप्रकृति, कार्यावस्था, पञ्चसन्धि, नायक का स्वरूप एवं भेद।
पारिभाषिक शब्द- नान्दी, प्रस्तावना, सूत्रधार, कंचुकी, प्रवेशक, विष्कम्भक, प्रकाश, आकाशभाषित, जनान्तिक, अपवारित, स्वगत, भरतवाक्य। **ध्वन्यालोक** (प्रथम उद्योत)-ध्वनि का स्वरूप

♦ **लौकिक साहित्य**

रामायण एवं महाभारत काल निर्धारण, उपजीव्यता, महत्त्व ।
प्रमुख महाकाव्य- किरातार्जुनीयम् (प्रथम सर्ग), शिशुपालवधम् (प्रथम सर्ग), नैषधीयचरितम् (प्रथम सर्ग), रघुवंशम् (द्वितीय सर्ग), कुमारसम्भवम् (प्रथम सर्ग)
प्रमुख खण्डकाव्य- मेघदूतम्, नीतिशतकम्।
प्रमुख गद्यकाव्य- कादम्बरी (कथामुख), शिवराजविजयः (प्रथम निःश्वास)।
कथा साहित्य- पञ्चतन्त्र, हितोपदेशः।
नाटक- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1-4 अंक), उत्तररामचरितम् (1-3 अंक), मृच्छकटिकम् (प्रथम अंक), रत्नावली, प्रतिमानाटकम्।
चम्पूकाव्य- नलचम्पू (आर्यावर्त वर्णन)।
♦ **महाकाव्य, खण्डकाव्य, गद्यकाव्य, चम्पूकाव्य एवं नाट्यकाव्य की उत्पत्ति एवं विकास ।**

विषय सूची

वैदिक साहित्य

दार्शनिक चिन्तन

व्याकरण

साहित्यशास्त्र

लौकिकसाहित्य

खण्डकाव्य

गद्यकाव्य

कथासाहित्य

नाटक

चम्पूकाव्य

1. वैदिक साहित्य

1. अग्निसूक्त (1.1)

मण्डल-1, **सूक्त**-1 **कुल मन्त्र**-9, **ऋषि**- मधुच्छन्दा, **देवता** - अग्नि, **छन्द**-गायत्री, **स्वर** - षड्ज

1. अग्निमीळे पुरोहितं, यज्ञस्य देवमृत्विजम्।
होतारं रत्नधातमम्॥

अर्थ- यज्ञ के पुरोहित, दीप्तिमान्, देवों को बुलाने वाले ऋत्विक् और रत्नधारी अग्नि की मैं स्तुति करता हूँ।

2. अग्निः पूर्वेभिर्ऋषिभिरीड्यो नूतनैरुत।
स देवाँ एह वक्षति॥

अर्थ- प्राचीन ऋषियों ने जिसकी स्तुति की थी, आधुनिक ऋषि जिसकी स्तुति करते हैं, वह अग्नि, देवों को इस यज्ञ में बुलावें।

3. अग्निना रयिमश्नवत्, पोषमेव दिवे दिवे।
यशसं वीरवत्तमम्॥

अर्थ- अग्नि के अनुग्रह से यजमान को धन मिलता है और वह धन अनुदिन बढ़ता और कीर्तिकर होता है तथा उनसे अनेक वीर पुरुषों की नियुक्ति की जाती है।

4. अग्ने यं यज्ञमध्वरं, विश्वतः परिभूरसि।
स इद् देवेषु गच्छति॥

अर्थ- हे अग्निदेवता! जिस यज्ञ को तुम चारों ओर से घेरे रहते हो, उसमें राक्षसादि-द्वारा हिंसा कर्म सम्भव नहीं है और वही यज्ञ देवों को तृप्ति देने स्वर्ग जाता है या देवताओं का सामीप्य प्राप्त करता है।

5. अग्निर्होता कविक्रतुः, सत्यश्चित्रश्रवस्तमः।
देवो देवेभिरा गमत्॥

अर्थ- हे अग्नि! तुम होता, अशेषबुद्धिसम्पन्न या सिद्ध-कर्मा, सत्यपरायण, अतिशय कीर्ति से युक्त और दीप्तिमान् हो। देवों के साथ इस यज्ञ में आओ।

6. यदङ्ग दाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि।
तवेत्तत्सत्यमङ्गिरः॥

अर्थ- हे अग्नि! तुम जो हविष् देने वाले यजमान का कल्याण साधन करते हो, वह कल्याण, हे अङ्गिर! तुम्हारा ही प्रीति साधक है।

7. उप त्वाग्ने दिवेदिवे, दोषावस्तर्धिया वयम्।
नमो भरन्त एमसि॥

अर्थ- हे अग्नि! हम अनुदिन, दिन-रात, अन्तस्तल के साथ तुम्हें नमस्कार करते-करते तुम्हारे पास आते हैं।

8. राजन्तमध्वराणां गोपामृतस्य दीदिविम्।
वर्धमानं स्वे दमे॥

अर्थ- हे अग्नि! तुम प्रकाशमान, यज्ञ रक्षक, कर्मफल के द्योतक और यज्ञशाला में वर्धनशाली हो।

9. स नः पितेव सूनवे, अग्ने सूपायनो भव।
सचस्वा नः स्वस्तये॥

अर्थ- जिस तरह पुत्र-पिता को आसानी से पा जाता है, उसी तरह हम भी तुम्हें पा सकें या तुम हमारे अनायास-लभ्य बनो और हमारा मंगल करने के लिए हमारे पास निवास करो।

विश्वेदेवाः सूक्त

मण्डल	8	**सूक्त** 30
ऋषि-वैवस्वत मनु	**देवता**-विश्वेदेव	**छन्दः**-पहले मन्त्र में गायत्री, दूसरे मन्त्र में उष्णिक् , तीसरे मन्त्र में बृहती और चौथे मन्त्र में अनुष्टुप् ।

1. नहि वो अस्त्यर्भको देवासो न कुमारकः।
विश्वे सतोमहान्त इत् ॥1॥

अन्वय- देवासः ! वः अर्भकः नहि अस्ति, नः कुमारकः । विश्वे सतोमहान्तः इत् ।

शब्दार्थ– वः = तुममें से कोई। **अर्भकः**=शिशु ।

देवासः देवताओं। **कुमारकः** = किशोर। **महान्तः इत्** = निश्चय ही महान् हो।

हिन्दी अनुवाद- हे देवताओं तुम सब में कोई भी शिशु नहीं है और न कोई कुमार (किशोर) अवस्था का है। एक समान आयु वाले तरुण होते हुए तुम सब देवता निश्चय ही महान् हो।

सतोमहान्तः- अस् + शतृ = सत् । सतः महान्तः= सतोमहान्तः। कर्मधारय तत्पुरुष समास, विभक्ति का अलुक् ।

2. इति स्तुतासो असथा रिशादसो ये स्थ त्रयश्च त्रिंशच्च। मनोर्देवा यज्ञियासः॥

अन्वय- रिशादसः मनोः यज्ञियासः देवाः ये त्रयः च त्रिंशत् च स्थ इति। स्तुतासः असथ।

शब्दार्थ-स्तुतासः = स्तुति किये जाते हुए। **असथ** = रहे हो, कामना करते हो। **रिशासदः** =हिंसक शत्रुओं को खा जाने वाले। **मनोः** = मनु के। **यज्ञियासः**= यज्ञ के योग्य, पूजनीय।

हिन्दी अनुवाद– हिंसक शत्रुओं को खा जाने (नष्ट करने) वाले और मनु के यज्ञ के योग्य अर्थात् पूजनीय हे विश्वेदेवो! जो तुम तीन और तीस अर्थात् तैंतीस हो वे तुम स्तुति किये जाते रहते हो। अथवा स्तुति किये जाते हुए हवियों की कामना करते हो।

व्याकरण– स्तुतासः - ष्टुञ् (स्तु) + क्त = स्तुत। प्रथमा का बहुवचन। वैदिक रूप।

असथ – अस् धातु, लेट् लकार, मध्यम पुरुष बहुवचन। 'अस् ' के 'अ' के लोप का छान्दस अभाव।

यज्ञियासः- यज्ञम् अर्हति अर्थ में 'घञ् ' प्रत्यय। यज्ञ + घ + (इय) = यज्ञिय। प्रथमा का बहुवचन।

विशेष- देवों की संख्या 33 मानी गई है। ये तीन वर्गों में विभक्त हैं – पृथिवी स्थानीय, द्यु स्थानीय और अन्तरिक्ष स्थानीय। मनु को मानवों का पूर्वज माना जाता है। यह बात अगले मन्त्र में भी कही गई है।

3. ते नस्त्राध्वं तेऽवत त उ नो अधि वोचत। मा नः पथः पित्र्यान्मानवादधि दूरं नैष्ट परावतः॥

अन्वय– ते नः त्राध्वम् , ते अवत, ते उ नः अधिवोचत। मानवात् पित्र्यात् परावतः पथः नः दूरम् मा अधिनैष्ट

शब्दार्थ–त्राध्वम् = रक्षा करो। **अवत** = बचाओ। **अधिवोचत** = हमारे समर्थन में बोलो। **पथः** मार्ग से। **पित्र्यात्** = पितरों के। **मानवात्** = मनु द्वारा प्रदर्शित । **मा अधिनैष्ट** = मत ले जाना। **परावतः** = सुदूर स्थित।

हिन्दी अनुवाद– हे विश्वेदेवो वे तुम सब पीड़ा पहुँचाने वालो राक्षसों से हमारी रक्षा करो। वे तुम सब धन आदि प्रदान करके हमें बचाओ। वे तुम सब हमारे समर्थन में बोलो या आशीर्वाद प्रदान करो। मनु द्वारा प्रदर्शित पितरों के सूदूर स्थित मार्ग से हमको दूर मत ले जाना।

व्याकरण– त्राध्वम् – त्रैङ्' धातु लोट् लकार, मध्यम पुरुष, बहुवचन। वैदिक रूप है। लोक में 'त्रायध्वम् ' रूप होगा।

पित्र्यात् – 'पितुः आगतम् ' अर्थ में पितृ + यत् = पित्र्य।

मानवात् – मनु + अण् = मानव।

नैष्ट –नी धातु, लुङ् लकार, मध्यम पुरुष का बहुवचन। वैदिक रूप है।

परावतः– परा + मतुप् = परावत् । पञ्चमी विभक्ति का एकवचन।

विशेष– अधि पूर्वक 'वच' धातु का अर्थ सिफारिश करना (To speak for) और सहायता के लिए आना (To come to the help) है।

4. ये देवास इह स्थन विश्वे वैश्वानरा उत। अस्मभ्यं शर्म सप्रथो गवेऽश्वाय यच्छत॥

अन्वय – ये विश्वे देवासः इह स्थन उत वैश्वानराः, अस्मभ्यम् गवे अश्वाय सप्रथः शर्म यच्छत।

शब्दार्थ- हि स्थन = यहाँ हो। **वैश्वानराः** = सर्वजनकल्याणकारी यज्ञ क़ी अग्नियाँ। **शर्म** = सुख। **सप्रथः=** सर्वत्र प्रसिद्ध विशाल।

हिन्दी अनुवाद– जो तुम सब विश्वेदेव यहाँ हो अर्थात् इस यज्ञ में उपस्थित हो और सब सर्वजनकल्याणकारी यज्ञ की अग्नियाँ यहां उपस्थित हैं, वे तुम सब हमारे लिये, हमारी गौओं के लिए हमारे घोड़ों के लिये सर्वत्र प्रसिद्ध या विशाल सुख को प्रदान करो।

व्याकरण–

देवासः– देवाः का छान्दस रूप।

यच्छत– दाण् (यच्छ) धातु, लोट् लकार, मध्यम पुरुष, बहुवचन।

स्थन– 'अस्' धातु, लट् लकार, मध्यम पुरुष बहुवचन। यहाँ 'थ' को 'थन' वैदिक निपातनात् हुआ है।

वैश्वानराः– विश्वे नरः यस्मिन् अयं विश्वानरः यज्ञ। विश्वानरे उपस्थितः अर्थ में विश्वानर + अण् + वैश्वानर।

शर्म –शृणाति हिनस्ति दुःखम् अर्थ में शृ + मनिन् (मन्) = शर्म।

विशेष – राथ ने 'इह' का अर्थ (Atour Sacrifice) और ' स्थन' का अर्थ (Assembled here) किया है। छन्द के आग्रह से 'गवेऽश्वाय' को गवे अश्वाय पढ़ना चाहिये।

विष्णु- सूक्त

मण्डल-1 देवता-विष्णु, **छन्द**-त्रिष्टुप्, **ऋषि**-दीर्घतमा

1. विष्णोर्नु कं वीर्याणि प्रवोचं यः पार्थिवानि विममे रजांसि।
यो अस्कभायदुत्तरं सधस्थं विचक्रमाणस्त्रेधोरुगायः।

अन्वय– विष्णोः वीर्याणि नु कम् प्रवोचम् , यः पार्थिवानि रजांसि विममे, यः त्रेधा विचक्रमाणः उरुगायः उत्तरम् सधस्थम् अस्कभायत्

शब्दार्थ– विष्णुः–व्यापनशीन विष्णु देवता। **नु**=शीघ्र। **वीर्याणि**=वीर कार्यों को। **प्रवोचम्** = कहता हूँ। **पार्थिवानि**– पृथ्वी सम्बन्धी। **रजांसि** = रजः कणों को, लोकों को। **विममे** = विशेष रूप से बनाया। **अस्कभायत्** – स्तम्भित किया, आधार रूप से बनाया। **उत्तरम्** = अति उत्कृष्ट। **सस्धस्थम्** = साथ रहने का स्थान। **विचक्रमाणः** = लांघते हुये। **त्रेधा** =तीन प्रकार से, या तीन डगों में। **उरुगायः** = महान् पुरुषों से स्तुति किया जाता हुआ।

हिन्दी अनुवाद– हे मनुष्यो मैं व्यापनशील विष्णु देवता के वीर कार्यों को बहुत शीघ्र कहता हूँ, जिस विष्णु ने पृथिवी सम्बन्धी रजः कणों अर्थात् अग्नि, वायु, आदित्य आदि विशेष लोकों की विशेष, रूप से रचना की। और जिस विष्णु ने तीन प्रकार से या तीन डगों में अपने बनाये हुए लोकों को लांघते हुए एवं महान् पुरुषों से स्तुति किये जाते हुए होकर ऊँचे या अति उत्कृष्ट तीनों लोकों के आश्रयभूत साथ रहने के स्थान को स्तम्भित किया, आधार रूप से बनाया।

व्याकरण– विष्णोः– 'विष्लृ व्याप्तौ' धातु से विष् + नु = विष्णु। षष्ठी विभक्ति का एकवचन।

वीर्याणि – वीर् + यत् = वीर्य । नपुंसकलिंग, द्वितीया विभक्ति बहुवचन।

प्रवोचम् – 'प्र+वच् ' धातु, लङ् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन। छान्दस अट् का अभाव। वर्तमानकाल में 'लङ् ' का प्रयोग।

पार्थिवानि – पृथिवी + अण् = पार्थिव।

अस्कभायत् – 'स्कम्भ' धातु लङ्लकार, प्रथम पुरुष एकवचन। यहाँ 'श्ना' को वैदिक 'शायच् ' आदेश हुआ। लोक में 'अस्कभ्नात्' रूप होगा।

विचक्रमाणः वि+क्रम् धातु से लिट् के अर्थ में 'कानच् ' प्रत्यय

त्रेधा – त्रि + धा = त्रेधा।

विममे – वि + मा धातु लिट् लकर, प्रथम पुरुष एकवचन।

उरुगायः – ' उरुभिः गीयते' अर्थ में उरु + गै + अच् (अ) = उरुगाय।

उत्तरम् – उत् + तरप् = उत्तर

सधस्थम् – सह + स्था + क = सधस्थ।

विशेष– 'त्रेधा विचक्रमाणः' का अर्थ पीटर्सन ने 'तीन डगों में परिक्रमा करते हुये किया है। छन्द की पूर्ति के लिए 'वीर्याणि' का 'वीरियाणि' एवं 'त्रेधा' का 'त्रयेधा' उच्चारण करना चाहिये।

2. प्र तद्विष्णुः स्तवते वीर्येण मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः।
यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा।

अन्वय– यस्य उरुषु त्रिषु विक्रमणेषु विश्वा भुवनानि अधिक्षियन्ति तत् विष्णुः वीर्येण प्रस्तवते, भीमः कुचरः गिरिष्ठाः मृगः न।

शब्दार्थ – **प्रस्तवते** = स्तुति किया जाता है। **भीमः** = भयानक । **कुचरः** =कुत्सित हिंसा आदि कार्य करने वाला, स्वतन्त्रता पूर्वक भूमि पर विचरण करने वाला। **गिरिष्ठाः** = पर्वतों में रहने वाला। **उरुषु** = विस्तीर्ण। **विक्रमणेषु** = डगों में। **अधिक्षियन्ति** = निवास करते हैं।

हिन्दी अनुवाद – जिस विष्णु के विस्तीर्ण लम्बे तीन डगों में सम्पूर्ण लोक आ जाते हैं या आश्रय लेकर निवास करते हैं,उस विष्णु की वीर कार्यों से स्तुति उसी प्रकार की जाती है, जिस प्रकार भयानक, कुत्सित हिंसा आदि कार्य करने वाले या स्वतन्त्रता पूर्वक भूमि पर विचरण करने वाले, पर्वत आदि उन्नत प्रदेशों में रहने वाले एवं विरोधियों को ढूंढ कर मारने वाले सिंह आदि की स्तुति की जाती है।

व्याकरण–

स्तवते– 'स्तु' धातु से कर्म कारक में लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन। व्यत्यय से 'यक् ' के स्थान पर 'शप्' हुआ। वैदिक रूप। लोक में स्तूयते रूप होगा।

कुचरः कु + चर् + ट।

मृगः – मार्ष्टि गच्छति अन्विषति अर्थ में मृज् + क = मृग। अथवा मृ + गम् + अ = मृग।

गिरिष्ठाः – गिरिषु तिष्ठति अर्थ में – गिरि + स्था + क्विप्

विश्वा – विश्व पद प्रथमा विभक्ति, बहुवचन। लोक में 'विश्वानि' बनेगा।

वीर्येण – वीर् –यत् =वीर्य। तृतीया विभक्ति, एकवचन=वीर्येण

विक्रमणेषु – वि + क्रम् + ल्युट् (अन) = विक्रमण। सप्तमी विभक्ति, बहुवचन= विक्रमणेषु।

अधिक्षियन्ति – अधि + क्षि, लट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन।

3. प्र विष्णवे शूषमेतु मन्म गिरिक्षित उरुगायाय वृष्णे।
य इदं दीर्घं प्रयतं सधस्थमेको विममे त्रिभिरित्पदेभिः॥

अन्वय – यः इदम् दीर्घम् प्रयतम् सधस्थम् एकः इत् त्रिभिः पदेभिः विममे, गिरिक्षिते उरुगायाय वृष्णे विष्णवे मन्म शूषम् प्र एतु।

शब्दार्थ – **शूषम्** = बल । **प्र एतु** = प्राप्त होवे। **मन्म** = मननीय, स्तुति के योग्य। **गिरिक्षिते** = वाणियों में निवास करने वाले, उन्नत प्रदेश में रहने वाले। **वृष्णे** = कामनाओं को पूर्ण करने वाले। **दीर्घम्** =विस्तृत। **प्रयतम्** = नियमों में बंधा हुआ। **सधस्थम्** = सबका सम्मिलित रहने का स्थान। **विममे** = नाप लिया था।

हिन्दी अनुवाद- जिस विष्णु ने इस दृश्यमान अति विस्तृत नियमों में बंधे हुए सबसे सम्मिलित स्थान लोकत्रय को अकेले ही तीन डगों में नाप लिया था, उस वाणियों में निवास करने वाले या उन्नत प्रदेश में रहने वाले, बहुतों के द्वारा स्तुति किये जाने वाले, कामनाओं को पूर्ण करने वाले और सर्वव्यापक विष्णु के लिये हमारा यह मननीय या स्तुति के योग्य बल, जो हमारे कृत्यों से उत्पन्न हुआ है, प्राप्त होवे।

व्याकरण– शूषम् – शूष् + घञ्, मन्म – मन् + मनिन्

गिरिक्षिते – गिरि + क्षि + क्विप् = गिरिक्षित् । गिरौ क्षयति अर्थ में।

उरुगायाय– उरुभिः गीयते तस्मै। उरु + गा + यक् = उरुगाय। चतुर्थी विभक्ति, एकवचन = उरुगायाय।

प्रयतम् – प्र + यम् + क्त = प्रयत।
सधस्थम् – सह + स्था + क = सधस्थ। 'सह' के 'ह' को 'ध' आदेश।
विममे – वि + मा, धातु, लिट् लकार, प्रथम पुरुष एकवचन।
वृष्णे – वृष् + कनिन् (अन्) = वृषन् वेद में चतुर्थी का एकवचन।

4. यस्य त्री पूर्णा मधुना पदान्यक्षीयमाणा स्वधया मदन्ति। य उ त्रिधातु पृथिवीमुत द्याम् एको दाधार भुवनानि विश्वा॥

अन्वय – यस्य मधुना पूर्णा त्री पदानि अक्षीयमाणा स्वधया मदन्ति,य उ एकः पृथिम् द्याम् उत त्रिधातु विश्वा भुवनानि दाधार।

शब्दार्थ– पूर्णा = भरे हुये। **मधुना** = दिव्य अमृत से **अक्षीयमाणा**-क्षीण न होते हुए। **स्वधया**= अन्न के द्वारा, **मदन्ति**= आनन्दित करते हैं। **त्रिधातु** = पृथिवी-जल-तेज इन तीनों धातुओं से युक्त। **उत**= और, **दाधार**-धारण करता है।

हिन्दी अनुवाद– जिस विष्णु के मधुर दिव्य अमृत से भरे हुए तीन पद कभी क्षीण न होते हुए अन्न के द्वारा आनन्दित करते हैं, और जो अकेला ही विस्तृत पृथिवी लोक को द्यु लोक और अन्तरिक्ष लोक को, तीन धातुओं पृथिवी, जल, तेज से युक्त बनाता हुआ सभी लोकों को धारण करता है।

व्याकरण–

त्री– 'जस्' का लोप और 'त्रि' को दीर्घ। वैदिक रूप। लोक में 'त्रीणि' होगा।
अक्षीयमाणा– क्षि + यक् + (मुक् का आगम) + **शानच्** = क्षीयमाण। **न+ क्षीयमाण** = अक्षीयमाण।
पूर्णा – लोक में पूर्णानि होगा।
मदन्ति – 'मदी हर्षे' धातु लट् लकार' प्रथम पुरुष, बहुवचन। लोक में 'मदयन्ति' या 'माद्यन्ति' रूप होगा।
त्रिधातु – त्रयाणां धातूनां समाहारः।
विश्वा – वैदिक रूप। लोक में 'विश्वानि' होगा।
द्याम् – द्यो शब्द, द्वितीया का एकवचन।
दाधार – धृ धातु, लिट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन। वर्तमान काल में लिट्।

5. तदस्य प्रियमभि पाथो अश्यां नरो यत्र देवयवो मदन्ति। उरुक्रमस्य स हि बन्धुरित्था विष्णोः पदे परमे मध्व उत्सः॥

अन्वय– अस्य प्रियम् तत् पाथः अभि अश्याम्, यत्र देवयवः नरः मदन्ति। उरुक्रमस्य विष्णोः परमे पदे मध्वः उत्सः। इत्था सः हि बन्धुः।

शब्दार्थ– पाथः लोक को। **अभि अश्याम्** = प्राप्त करूँ। **देवयवः** = विष्णु देवता के भक्त। **मदन्ति** = आनन्दित होते हैं। **उरुक्रमस्य** = परम पराक्रम वाले, महान् डगों वाले। **इत्था** = इस प्रकार से। **मध्वः** = मधुर अमृत का। **उत्स** = स्रोत।

हिन्दी अनुवाद– इस विष्णु के प्रिय उस लोक को प्राप्त करूँ, जहाँ उस विष्णु देव के भक्त जन आनन्द का अनुभव करते हैं। परम पराक्रम वाले अथवा महान् डगों वाले सर्वव्यापक विष्णु के परम स्थान में मधुर अमृत का स्रोत है। इस प्रकार से वह विष्णु निश्चय से सबका बन्धु है।

व्याकरण–

अश्याम् – अश् धातु, आशीर्लिङ् , उत्तम पुरुष, एकवचन।
पाथः– पा + असुन् (थुट् का आगम)
देवयवः- देव+यु+क्विप् = देवयु । प्रथमा विभक्ति का बहुवचन।
मदन्ति - मद् धातु, लट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन।
इत्था - 'इत्थम् ' का वैदिक रूप।
मध्वः - 'मधु' शब्द षष्ठी विभक्ति का एकवचन। लोक में 'मधुनः' बनेगा।

6. ता वां वास्तून्युश्मसि गमध्यै, यत्र गावो भूरिशृङ्गा अयासः। अत्राह तदुरुगायस्य वृष्णः परमं पदमव भाति भूरि॥

अन्वय– यत्र भूरिशृङ्गाः गावः अयासः, वाम् ता वास्तूनि गमध्यै उश्मसि। अत्र अह उरुगायस्य वृष्णः तत् परमम् पदम् भूरि अव भाति।

शब्दार्थ– वास्तूनि = निवास योग्य स्थान या लोक। **उश्मसि** = कामना करते हैं। **गमध्यै** = जाने के लिये। **गावः** = गौयें, किरणें। **भूरिशृङ्गाः** = बड़े ऊँचे सीगों वाली, अनेक प्रकार से फैलने वाली। **अयासः** = निवास करती है, प्रकाश से युक्त हैं। **अह** = निश्चय से। **अवभाति** = प्रकाशित हो रहा है। **भूरि**= अत्यधिक।

हिन्दी अनुवाद- हे यजमान और हे उसकी पत्नी ! जहाँ बड़े-बड़े ऊंचे सींगों वाली गौयें अथवा अनेक प्रकार से फैलने वाली किरणें निवास क़रती हैं या अत्यधिक प्रकाश से युक्त हैं, तुम दोनों के उन निवास योग्य स्थानों या लोकों पर जाने के लिये हम कामना करते हैं। यहाँ निश्चय ही महान् जनों से या बहुतों से स्तुति किये जाने वाले और कामनाओं को पूरा करने वाले विष्णु देव का परम पद या सर्वोत्कृष्ट अन्तरिक्ष लोक अत्यधिक रूप से प्रकाशित हो रहा है।

व्याकरण–

ता - वैदिक रूप है। लोक में 'तानि' होगा।
गमध्यै - ' गम् ' धातु से 'तुमुन् ' प्रत्यय के अर्थ में वैदिक 'अध्यैन् ' प्रत्यय।
वाम् - युवयोः का रूप है।
उश्मसि - 'वश् कान्तौ' धातु, लट् लकार, उत्तम पुरुष, बहुवचन। छान्दस रूप।

अयासः- 'इण् गतौ' + अच् = अय।
प्रथमा विभक्ति का बहुवचन वैदिक रूप।

अवभाति - अव+भा धातु लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन।

हिरण्यगर्भ सूक्त (10.121)

मण्डल-10, **सूक्त-**121 **कुल मन्त्र-**10, **ऋषि-** हिरण्यगर्भ, **देवता -**क संज्ञक प्रजापति, **छन्द-** त्रिष्टुप्

**1. हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।**

अर्थ- हिरण्यगर्भ (प्रजापति) सर्वप्रथम उत्पन्न हुआ। उत्पन्न होते ही वह सम्पूर्ण प्राणियों का अद्वितीय स्वामी हो गया (तथा) उसने इस पृथिवी और द्युलोक को धारण किया (उसे छोड़कर) हम किस देवता के लिए हवि से विधान (पूजन) करें।

**2.य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः।
यस्य छायामृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम।।**

अर्थ- जो (हिरण्यगर्भ) प्राण (आत्मा) दाता (और) बलदाता है। जिसके आदेश की समस्त (प्राणी तथा) देवता उपासना करते हैं, जिसकी छाया अमृत है, जिसकी (छाया) मृत्यु है, (उसके अतिरिक्त) किस देवता के लिए हवि से विधान करें।

**3. यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव।
य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम।।**

अर्थ- जो (हिरण्यगर्भ) अपनी महिमा से- श्वास-प्रश्वास लेने वाले, पलकों का संचालन करने वाले और गतिशील प्राणिजगत् का अकेला ही राजा हो गया और जो दो पैरों वाले (मनुष्यों) तथा चार पैरों वाले (पशुओं) का स्वामित्व करता है, (उसके अतिरिक्त) किसके लिए हवि से विधान करें।

**4. यस्येमे हिमवन्तो महित्वा यस्य समुद्रं रसया सहाहुः।
यस्येमाः प्रदिशो यस्य बाहू कस्मै देवाय हविषा विधेम।।**

अर्थ- जिस (हिरण्यगर्भ) की महिमा से ये बर्फीले पर्वत (स्थित) हैं, नदियों के साथ समुद्र को जिसका बताया जाता है, जिसकी ये प्रधान दिशाएँ हैं (तथा) जिसकी भुजाएँ (रक्षिका) हैं, (उसके अतिरिक्त) किस देवता के लिए हवि से विधान करें।

**5.येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृळहा येन स्वः स्तभितं येन नाकः।
यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम।।**

अर्थ- जिसके द्वारा उन्नत द्युलोक और पृथिवी को दृढ़ (स्थिर) किया गया, जिसके द्वारा स्वर्गलोक और नागलोक स्तब्ध कर दिया गया; जो अन्तरिक्ष में लोकों को नापने वाला है, (उसके अतिरिक्त) किस देवता के लिए हवि से विधान करें।

**6. यं क्रन्दसी अवसा तस्तभाने अभ्यैक्षेतां मनसा रेजमाने।
यत्राधि सूर उदितो विभाति कस्मै देवाय हविषा विधेम।।**

अर्थ- (प्राणियों की) रक्षा के लिए स्थिर बनाए गए तथा मन से काँपते हुए द्युलोक और पृथिवीलोक जिस (प्रजापति) की ओर देखते हैं, जिसे आधार बना कर सूर्य उदित होकर चमकता है, (उसके अतिरिक्त) किस देवता के लिए हवि से विधान करें।

**7. आपो ह यद्बृहतीर्विश्वमायन्गर्भं दधाना जनयन्तीरग्निम्।
ततो देवानां समवर्ततासुरेकः कस्मै देवाय हविषा विधेम।।**

अर्थ- जब गर्भ धारण करती हुई और अग्नि को उत्पन्न करती हुई, विशाल जल राशि ने विश्व को व्याप्त कर लिया, तब देवताओं का एकमात्र प्राणभूत (प्रजापति) उत्पन्न हुआ, (उसके अतिरिक्त किस देवता के लिए हवि से विधान करें।

**8. यश्चिदापो महिना पर्यपश्यद्दक्षं दधाना जनयन्तीर्यज्ञम्।
यो देवेष्वधि देव एक आसीत्कस्मै देवाय हविषा विधेम।।**

अर्थ- जिसने अपनी महिमा से दक्ष (प्रजापति) को धारण करती हुई तथा यज्ञ को उत्पन्न करती हुई जलराशि को चारों ओर देखा, जो देवताओं में एक अद्वितीय देव हो गया, (उसके अतिरिक्त) किस देवता के लिए हवि से विधान करें।

**9. मा नो हिंसीज्जनिता यः पृथिव्या यो वा दिवं सत्यधर्मा जजान।
यश्चापश्चन्द्रा बृहतीर्जजान कस्मै देवाय हविषा विधेम।।**

अर्थ- वह (प्रजापति) हमें कष्ट न दे, जो पृथिवी को उत्पन्न करने वाला है, तथा सत्यनियमवाला जिसने द्युलोक को उत्पन्न किया है, (तथा) जिसने आनन्ददायक विशाल जलराशि को उत्पन्न किया है, (उसके अतिरिक्त) हम किस देवता के लिए हवि से विधान करें।

**10.प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम्।।**

अर्थ- हे प्रजापति! तुम्हारे अतिरिक्त अन्य कोई इन (वर्तमान तथा) उन (भूत) सम्पूर्ण उत्पन्न पदार्थों को व्याप्त नहीं कर पाया; जिस (फल) की कामना करते हुए हम तुम्हें हवि प्रदान करते हैं, वह (फल) हमारा हो जाय। हम लोक समृद्धियों (धनों) के स्वामी हो जायें।

शिवसंकल्प सूक्त (अध्याय-34)

शुक्लयजुर्वेद माध्यन्दिनवाजसनेयिसंहिता

अध्याय-34 **कण्डिका** 1-6 **कुल मन्त्र**-06, **ऋषि**- याज्ञवल्क्य, **देवता** -मनस्, **छन्द**-त्रिष्टुप्

1. यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति।
दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥

अर्थ- जो मन पुरुष की जाग्रतावस्था में अधिक दूर चला जाता है, जो एकमात्र आत्मा का दर्शन करने वाला है; जो पुरुष की सुषुप्तावस्था में उसी प्रकार लौट आता है (तथा) जो समस्त बाह्य इन्द्रियों का एकमात्र प्रकाशक है; वह मेरा मन शुभ सङ्कल्प वाला होवे।

2. येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः।
यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥

अर्थ- जिस मन में कर्मनिष्ठ बुद्धिमान् पुरुष यज्ञ में तथा उपासनाओं में कर्म करते हैं, जो सब (इन्द्रियों) से पहले उत्पन्न होता है, और यज्ञ करने में समर्थ है, तथा जो प्राणिमात्र के शरीर के भीतर रहता है, वह मेरा मन शुभ संकल्प वाला होवे।

3.यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु।
यस्मान्न ऋते किञ्चन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥

अर्थ- जो मन विशेषज्ञान तथा सामान्यज्ञान (का साधन) है, जो धैर्य रूप है, जो प्राणियों के भीतर (इन्द्रियों की प्रेरक) अमर ज्योति है तथा जिसके बिना कोई भी काम नहीं किया जा सकता, वह मेरा मन शुभ सङ्कल्प वाला होवे।

4. येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत्परिगृहीतममृतेन सर्वम्।
येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥

अर्थ- जिस अमर मन के द्वारा इस संसार में भूत, भविष्यत् और वर्तमानकाल के सब पदार्थ जाने जाते हैं, और जिसके द्वारा सात होता वाला (अग्निष्टोम) यज्ञ किया जाता है, वह मेरा मन शुभ संकल्प वाला होवे।

5. यस्मिन्नृचः साम यजूँषि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः।
यस्मिँश्चित्तं सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥

अर्थ- रथ चक्र की नाभि में तीलियों की भाँति जिस मन में ऋचाएँ, साम और यजुः प्रतिष्ठित होते हैं, जिसमें प्राणियों का सर्वपदार्थविषयक ज्ञान निहित है, वह मेरा मन शुभसङ्कल्प वाला होवे।

6.सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्ने नीयतेऽभीशुभिर्वाजिन इव।
हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥

अर्थ- जैसे अच्छा सारथी घोड़ों को इधर-उधर प्रेरित करता है और अपने वश में रखता है, उसी प्रकार जो मन प्राणियों को बार-बार इधर-उधर प्रेरित करता है और अपने वश में रखता है, जो हृदय में स्थित है, जो जरा से रहित तथा अत्यन्त वेगवान् है, वह मेरा मन शुभ सङ्कल्प वाला होवे।

कठोपनिषद्

- कठोपनिषद् उपनिषदों में बहुत प्रसिद्ध है। यह **यजुर्वेद** की **कठ शाखा** से सम्बन्धित है।
- कठोपनिषद् में कुल **2 अध्याय** हैं और प्रत्येक अध्याय में **तीन-तीन वल्लियाँ** हैं।

प्रथम अध्याय	द्वितीय अध्याय
प्रथम वल्ली -29	प्रथम वल्ली - 15
द्वितीय वल्ली-25	द्वितीय वल्ली- 15
तृतीय वल्ली- 17	तृतीय वल्ली- 18
कुल मन्त्र-71	**कुल मन्त्र-48**

- इसप्रकार कठोपनिषद् में लगभग 119 मन्त्र हैं।

कठोपनिषद् का तथ्यात्मक अध्ययन

- सर्वप्रथम यम नचिकेता की कथा का वर्णन तैत्तिरीय ब्राह्मण में मिलता है। पुनः कठोपनिषद् में यम नचिकेता की कथा है।
- इसके अतिरिक्त **नचिकेता का उपाख्यान** महाभारत के अनुशासन पर्व में भी आया है।
- **आत्मतत्त्व विवेचन** की दृष्टि से कठोपनिषद् अत्यन्त प्रसिद्ध है।
- कठोपनिषद् में **यज्ञ विद्या (अग्निविद्या)** का संक्षेप में वर्णन प्राप्त होता है।
- **प्रथम अध्याय-** प्रथम अध्याय में नचिकेता और यम के उपाख्यान द्वारा **आत्मा और ब्रह्म की व्याख्या** की गयी है।

प्रथम अध्याय, प्रथम वल्ली

कठोपनिषद् का शान्तिपाठ

ॐ सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै।
तेजस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहै।

ॐ = पूर्णब्रह्म-परमात्मन् | सह = साथ-साथ
नौ = हम दोनों की | अवतु = रक्षा करें
भुनक्तु = पालन करें | वीर्यम् = शक्ति
करवावहै = प्राप्त करें | अधीतम् = पढ़ी हुयी विद्या
तेजस्वि = तेजोमयी | अस्तु = हो
मा विद्विषावहै = हम दोनों परस्पर द्वेष न करें।

- गौतम वंशीय महर्षि अरुण के पुत्र उद्दालक ऋषि ने फल की कामना से **विश्वजित् नामक यज्ञ** किया।
- उद्दालक यज्ञ की दक्षिणा में दुग्ध तथा प्रजनन शक्ति से हीन गायें दे रहे थे तो नचिकेता के मन में श्रद्धा बुद्धि उत्पन्न हुयी और उसने पिता से पूछा- ''आप मुझे किसको दान कर रहे हैं?'' दो तीन बार पूछने पर पिता ने क्रुद्ध होकर कहा ''तुझे मृत्यु को देता हूँ।'' पिता की आज्ञा से नचिकेता ने मृत्यु के समीप जाना सहर्ष स्वीकार कर लिया।
- नचिकेता यमलोक पहुँचा तो उस समय यमराज कहीं बाहर गये थे अतएव नचिकेता तीन दिन अन्न जल ग्रहण किये बिना ही यमराज की प्रतीक्षा करता रहा। जब यम लौटकर आये तो उन्होंने नचिकेता का सत्कार किया और तीन रात्रियों के बदले तीन वरदान मांगने को कहा।

प्रथम वर- (पितृ परितोष)

- नचिकेता ने प्रथम वर के रूप में पिता की प्रसन्नता माँगी-

शान्तसङ्कल्पःसुमना यथा स्याद् वीतमन्युर्गौतमो माभि मृत्यो।
त्वत्प्रसृष्टं माभिवदेत्प्रतीत एतत्त्रयाणां प्रथमं वरं वृणे॥
(1/1/10)

अनुवाद – मृत्युदेव ! तीन वरों में मैं प्रथम वर यही मांगता हूँ कि मेरे गौतमवंशीय पिता उद्दालक, जो क्रोध के आवेश में मुझे आपके पास भेजकर अब अशान्त और दुःखी हो रहे हैं, मेरे प्रति क्रोधरहित, शान्तचित्त और सर्वथा सन्तुष्ट हो जाएँ तथा आपके द्वारा अनुमति पाकर जब मैं घर जाऊँ, तब वे मुझे अपने पुत्र नचिकेता के रूप में पहचानकर मेरे साथ पूर्ववत् बड़े स्नेह से बातचीत करें।

द्वितीय वर (अग्निविद्या का ज्ञान)

- दूसरे वर के रूप में नचिकेता ने उस अग्निविद्या का ज्ञान माँगा जिसके द्वारा अत्यन्त सुख के लोक, स्वर्ग की प्राप्ति होती है और किसी प्रकार का भय नहीं रह जाता।

स त्वमग्निँ स्वर्ग्यमध्येषि मृत्यो प्रब्रूहि त्वं श्रद्दधानाय मह्यम्।
स्वर्गलोका अमृतत्वं भजन्त एतद् द्वितीयेन वृणे वरेण॥
(1/1/13)

- नचिकेता की विलक्षण प्रतिभा देखकर यम ने प्रसन्न होकर इस अग्निविद्या को नचिकेता के नाम से ही प्रसिद्ध होने का वरदान दिया और अनेक रूपों वाली माला सृङ्का प्रदान की।

तृतीय वर (आत्मतत्त्व का ज्ञान)

- तीसरे वर के रूप में नचिकेता ने मनुष्य की मृत्यु के बाद के आत्मास्तित्व के विषय में जिज्ञासा की।

येयं प्रेते विचिकित्सा मनुष्येऽस्तीत्येके नायमस्तीति चैके।
एतद्विद्यामनुशिष्टस्त्वयाहं वराणामेष वरस्तृतीयः॥
(1/1/20)

- नचिकेता के दृढ़ संकल्प और आत्मज्ञान प्राप्ति के लिए योग्यता देखकर यम ने आत्मतत्त्व का उपदेश दिया।

प्रथम अध्याय : द्वितीय वल्ली

- द्वितीय वल्ली में जीवात्मा और परमात्मा के स्वरूप का पृथक्-पृथक् वर्णन किया गया है।

श्रेय तथा प्रेय मार्ग-

- प्रेय मार्ग भौतिक सुख-समृद्धि का मार्ग है।
- श्रेय अर्थात् दुःखों से छूटकर नित्य आनन्दस्वरूप परब्रह्म पुरुषोत्तम को प्राप्त करने का मार्ग है।

श्रेयश्च प्रेयश्च मनुष्यमेतस्तौ सम्परीत्य विविनक्ति धीरः।
श्रेयो हि धीरोऽभि प्रेयसो वृणीते प्रेयो मन्दो योगक्षेमात् वृणीते॥
कठ. (1/2/2)

आत्मा का स्वरूप

- यमराज आत्मा के शुद्ध स्वरूप और उसकी नित्यता का निरूपण नचिकेता से करते हैं।
- यह आत्मा, अजन्मा, नित्य, सदा एकरस रहने वाला, पुरातन है और कभी भी इसका नाश नहीं किया जा सकता।

''अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे।''

प्रथम अध्याय : तृतीय वल्ली

- तृतीय वल्ली में परमात्मा को प्राप्त करने का साधन यम ने नचिकेता को बताया है।
- जीवात्मा शरीर, मन, बुद्धि तथा इन्द्रियों का पारस्परिक सम्बन्ध प्रदर्शित करने के लिए कठोपनिषद् में रथ रूपक को प्रस्तुत किया गया है।
- **आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु।**
  बुद्धिं तु सारथिं विद्धि मनः प्रग्रहमेव च॥ (1/3/3)
  इन्द्रियाणि हयानाहुर्विषयाँस्तेषु गोचरान्।
  आत्मेन्द्रियमनोयुक्तं भोक्तेत्याहुर्मनीषिणः॥ (1/3/4)
- यम नचिकेता को बताते हुये कहते हैं कि तुम जीवात्मा को रथ का स्वामी समझो और शरीर को रथ तथा बुद्धि को सारथि समझो और मन को लगाम समझो।
- **जीवात्मा** - रथी, **शरीर** - रथ,**बुद्धि** -सारथी,**मन** - लगाम **इन्द्रियाँ** - घोड़े, **विषय** - मार्ग
- यम नचिकेता से इन्द्रियों के विषय में बताते हुए कहते हैं कि -

इन्द्रियेभ्यः पर ह्यर्था अर्थेभ्यश्च परं मनः।
मनसस्तु परा बुद्धिर्बुद्धेरात्मा महान् परः॥ (1/3/10)

(इन्द्रियाँ-विषय-मन-बुद्धि-आत्मा अव्यक्त (माया) परम पुरुष)

- इन्द्रियों से शब्दादि विषय बलवान् हैं शब्दादि विषयों से मन प्रबल है और मन से भी बुद्धि प्रबल है और बुद्धि से भी महान् आत्मा अत्यन्त श्रेष्ठ और बलवान् है।

➢ **आत्मा का साक्षात्कार-** आत्मा के साक्षात्कार की प्रक्रिया यह है कि स्थूल तत्त्व को उससे अधिक सूक्ष्म तत्त्व में उत्तरोत्तर विलीन करना पड़ता है।

यच्छेद्वाङ्मनसी प्राज्ञस्तद्यच्छेज्ज्ञान आत्मनि।
ज्ञानमात्मनि महति नियच्छेत्तद्यच्छेच्छान्त आत्मनि॥
(1/3/13)

बुद्धिमान् साधक को चाहिये कि वाक् आदि समस्त इन्द्रियों को मन में निरुद्ध करें फिर उस मन को ज्ञानस्वरूप बुद्धि में विलीन करें।ज्ञानस्वरूप बुद्धि को महान आत्मा में विलीन करें और उस आत्मा को शान्त स्वरूप परमपुरुष परमात्मा में विलीन करें।

➢ वाणी → मन → बुद्धि → आत्मा → परमपुरुष परमात्मा
➢ यम मनुष्यों को उद्‌बोधित करते हुए कहते हैं कि आत्मज्ञान की ओर उन्मुख होने और श्रेष्ठ आचार्यों के उपदेश से ज्ञान प्राप्त करके ही इस परब्रह्म परमेश्वर को जाना जा सकता है।

उतिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।
क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया दुर्गं पथस्तत्कवयो वदन्ति॥

➢ हे मनुष्यों! उठो जागो और श्रेष्ठ महापुरुषों के पास जाकर उस परब्रह्म परमेश्वर को जान लो। कठ. (1/3/14)

ईशावास्य या ईश उपनिषद्

* यह उपनिषद् शुक्लयजुर्वेद (वाजसनेयी संहिता) का अन्तिम चालीसवाँ अध्याय है।
* ज्ञातव्य है कि एकमात्र यही ऐसा उपनिषद् है जो वैदिक संहिता का भाग है। अन्यथा शेष सभी ब्राह्मण-ग्रन्थों के भाग हैं।
* इसके रचयिता ऋषि दध्यङ् आथर्वण थे।
* प्रथम मन्त्र 'ईशावास्य' शब्द समूह से प्रारम्भ है, और
* कुल 18 मन्त्र हैं।
* इस उपनिषद् को 'ईशोपनिषद्' या 'ईशावास्योपनिषद्' कहते हैं।

ईशावास्योपनिषद्

शान्तिपाठ

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते॥
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

अन्वयः– ॐ अदः पूर्णम्, इदं पूर्णं, पूर्णात् पूर्णम् उदच्यते। पूर्णस्य पूर्णम् आदाय, पूर्णम् एव अवशिष्यते।

शब्दार्थ– ॐ– ब्रह्म का प्रतीक, माङ्गलिक पद। **अदः–** वह (कारणब्रह्म)। **पूर्णम्-** पूरा है। **इदम्-** यह (कार्यब्रह्म)। **उदच्यते-** उत्पन्न हुआ है। **आदाय-** लेकर। **अवशिष्यते-** बचा रहता है।

अनुवाद– ओम् वह परब्रह्म सब प्रकार से पूर्ण है, उसका अंशभूत यह जगत् भी पूर्ण है। उस पूर्ण परब्रह्म से यह पूर्ण उत्पन्न हुआ है। पूर्णब्रह्म की पूर्णता को ग्रहण कर लेने पर भी वह परब्रह्म एवं जगत् पूर्णरूप में ही बचा रहता है।

ॐ ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम् ॥1॥

अन्वयः– जगत्यां यत् किञ्च जगत्, इदं सर्वम् ईशावास्यम्, तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः, मा गृधः, धनं कस्यस्विद्?

शब्दार्थ– जगत्याम्- सम्पूर्ण संसार में। **यत्**- जो। **किञ्च**- कुछ भी। **जगत्**- जड़ प्रकृति से युक्त होते हुए भी, गतिमान्। **इदं**- यह, स्थूल जगत्। **सर्वम्**- सब ईशा-ईश्वर से। **वास्यं**- व्याप्त। **तेन**- उस ईश्वर रूपी कारण से युक्त हुए से। **त्यक्तेन**- उसके द्वारा प्रदत्त। **भुञ्जीथा**ः- भोग करो। **मा**- मत। **गृधः** लोभ करो। **धनम्**- भोग्य वस्तुएँ। **कस्य स्वित्-** किसका है?

अनुवाद– अखिल विश्व में जो कुछ भी गतिशील अर्थात् चर-अचर पदार्थ हैं, उन सब में ईश्वर अपनी गतिशीलता के साथ व्याप्त है। उस (कारणरूप) ईश्वर से सम्पन्न हुए से तुम त्याग की भावनापूर्वक भोग करो। आसक्त मत हो क्योंकि धन अथवा भोग्य पदार्थ किसके हैं अर्थात् किसी के भी नहीं हैं? अथवा केवल ईश्वर के हैं अतः किसी अन्य के धन का लोभ मत करो।

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे॥2॥

अन्वयः– इह कर्माणि कुर्वन् एवं शतं समाः जिजीविषेत्। एवं त्वयि नरे कर्म न लिप्यते। इतः अन्यथा न अस्ति।

शब्दार्थ– इह- इस भौतिक जगत् में। **कर्माणि-** कर्मों को। **शतं समाः–** सौ वर्षों तक। **जिजीविषेत्-** जीने की इच्छा करें। **त्वयि**– तुझमें। **नरे**– अनासक्त मनुष्य में। **लिप्यते-** आसक्त होता है। **इतः-** कर्मसम्पादन से। **अन्यथा-** दूसरा कोई उपाय।

अनुवाद– इस लोक में शास्त्र निर्दिष्ट कर्मों को करते हुए ही सौ वर्ष जीने की इच्छा करे। इस प्रकार मनुष्यत्वाभिमानी तुझमें कर्म लिप्त नहीं होंगे। इससे अतिरिक्त दूसरा मार्ग भी नहीं है।

असुर्या नाम ते लोका अन्धेन तमसाऽऽवृताः।
तांस्ते प्रेत्याभिगच्छन्ति ये के चाऽऽत्महनो जनाः॥3॥

अन्वयः— असुर्या नाम ते लोकाः, अन्धेन तमसा आवृताः। ये के च आत्महनः जनाः, ते प्रेत्य तान् अभिगच्छन्ति।

शब्दार्थ— असुर्याः— सूर्यविहीन, अन्धकारित, असुर सम्बन्धी। **लोकाः-** वासस्थान, शरीर। **अन्धेन-** अज्ञान से। **तमसा-** अन्धकार से। **आवृताः-** आच्छादित हैं। **आत्महनः-** आत्मा का ह्रास करने वाले। **प्रेत्य-** मर कर। **अभिगच्छन्ति-** जाते हैं।

अनुवाद— असुरों अर्थात् अज्ञानियों के प्रसिद्ध वे लोक अज्ञानरूप गहन अन्धकार से आच्छादित हैं। जो आत्मा का हनन अर्थात् ह्रास करने वाले अर्थात् अविद्यादोष से ग्रस्त जीव हैं वे मर कर उन्हीं दुःख क्लेशरूप भयंकर लोकों को जाते हैं।

अनेजदेकं मनसो जवीयो नैनद्देवा आप्नुवन् पूर्वमर्षत्।
तद्धावतोऽन्यानत्येति तिष्ठत् तस्मिन्नपो मातरिश्वा दधाति ।।4।।

अन्वयः— अनेजत् एकं मनसः जवीयः पूर्वम् अर्षत्, एनत् देवाः न आप्नुवन्। तत् तिष्ठत् अन्यान् धावतः अत्येति, तस्मिन् मातरिश्वा अपः दधाति।

शब्दार्थ— अनेजत्- निश्चल। **एकम्-** अद्वितीय। **मनसः-** अन्तःकरण की गति से। **जवीयः-** अत्यधिक वेगवान्। **पूर्वम्-** पहले। **अर्षत्-** व्याप्त। **एनत्-** इसको। **देवाः-** दिव्य स्वभाव वाली इन्द्रियाँ, देवता। **आप्नुवन्-** प्राप्त किया। **तिष्ठत्-** स्थित होता हुआ। **अन्यान्-** काल अथवा पञ्चतत्त्वों को। **धावतः-** दौड़ते हुए का। **अत्येति-** उल्लङ्घन करता है। **तस्मिन्-** उसमें। **मातरिश्वा-** वायु। **अपः-** जल वर्षण आदि कर्मों को। **दधाति-** धारण करता है।

अनुवाद— वह ब्रह्म अपने स्वरूप में कम्पनरहित अथवा अविचलित, अकेला अथवा अद्वितीय, मन से भी वेगवान्, पहले से वर्तमान तथा सर्वज्ञ है। इसको दिव्यगुण स्वभाव वाले इन्द्र देवता अथवा इन्द्रियाँ भी नहीं प्राप्त कर सकती हैं। वह स्थिर रहते हुए ही दूसरे दौड़ने वालों का अतिक्रमण कर देता है। उसके होने पर ही वायु आदि देवता जलवर्षण आदि क्रियाओं को धारण करते हैं।

तदेजति तन्नैजति तद्दूरे तद्वन्तिके।
तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाह्यतः ॥5॥

अन्वयः— तत् एजति, तत् न एजति, तद् दूरे, तत् उ अन्तिके, तत् अस्य सर्वस्य अन्तः, तत् अस्य सर्वस्य उ बाह्यतः।

शब्दार्थ— तत्- वह आत्मतत्त्व। **एजति-** गतिशील। **दूरे-** इन्द्रियसीमा के बाहर। **अन्तिके-** भौतिक शरीर के पास। **अन्तः-** हृदय में। **बाह्यतः-** सांसारिक पदार्थों में।

अनुवाद— वह आत्मतत्त्व चलता है, वह नहीं चलता है। वह दूर है, वह समीप भी है। वह इन सबके अन्तर्गत है, वह ही इन सबके बाहर भी है।

यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्येवानुपश्यति।
सर्वभूतेषु चाऽऽत्मानं ततो न विजुगुप्सते ॥6॥

अन्वयः— तु यः सर्वाणि भूतानि आत्मनि एव अनुपश्यति च सर्वभूतेषु आत्मानं (पश्यति), ततः न विजुगुप्सते।।

शब्दार्थ— यः- जो मुमुक्षु। **सर्वाणि-** समग्र। **भूतानि-** चेतन-अचेतन पदार्थों को। **आत्मनि-** आत्मा में। **एव-** ही। **अनुपश्यति-** निरन्तर देखता है। **सर्वभूतेषु-** सम्पूर्ण **चर-** अचर जगत् में। **आत्मानं-** स्वयं को। **ततः-** उस (अभेददर्शन) के पश्चात्। **विजुगुप्सते-** घृणा करता है।

अनुवाद— परन्तु जो व्यक्ति समस्त प्राणियों को आत्मा में देखता है और समग्र प्राणियों में आत्मा (स्वयं) को देखता है, उस (अभेददर्शन की अनुभूति के अनन्तर) वह (किसी से) घृणा करता है।

यस्मिन् सर्वाणि भूतान्यात्मैवाभूद्विजानतः।
तत्र को मोहः कः शोक एकत्वमनुपश्यतः॥7॥

अन्वय— यस्मिन् विजानतः सर्वाणि भूतानि आत्मा एव अभूत् तत्र एकत्वम् अनुपश्यतः कः मोहः कः शोकः?

शब्दार्थ— यस्मिन्- जिस दशा में। **विजानतः-** विशेष अर्थात् ब्रह्मज्ञ के। **सर्वाणि-** समस्त। **भूतानि-** प्राणी। **आत्मा-** ब्रह्मांश। **अभूत्-** हो गए। **तत्र-** उस क्षण में। **एकत्वम्-** अद्वैतरूप परमात्मतत्त्व को। **अनुपश्यतः-** सूक्ष्मता से अनुभव कर लेने वाले के। **मोहः-** आसक्ति। **शोकः-** सांसारिक कष्ट।

अनुवाद— जिसमें विशेष ज्ञान सम्पन्न योगी के लिए सभी प्राणी आत्मा ही हो गए, उस अवस्था में एकत्व का अनुभव कर लेने वाली पुरुष के लिए कौन सा मोह और कौन-सा शोक?

स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरं शुद्धमपापविद्धम् ।
कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान्
व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः॥8॥

अन्वयः- सः पर्यगात् शुक्रम् अकायम् अव्रणम् अस्नाविरं शुद्धम् अपापविद्धम् कविः मनीषी परिभू : स्वयम्भूः शाश्वतीभ्यः समाभ्यः याथातथ्यतः अर्थान् व्यदधात् ।।8।।

शब्दार्थ- सः- आत्मा। **पर्यगात्-** संसार में सर्वत्र गया हुआ, सर्वव्याप्त। **शुक्रम्-**शुद्ध अथवा दीप्त। **अकायम्-** शरीर से रहित **अव्रणम्—** अक्षत। **अस्नाविरम्—** नाड़ी संस्थान से रहित।

शुद्धम्- निर्मल अथवा पवित्र। **अपापविद्धम्-** शुभ अशुभ कर्मों के सम्पर्क से शून्य। **कविः-** क्रान्तदर्शी अथवा मेधावी। **मनीषी-** मनोभावों का ज्ञाता। **परिभूः-** श्रेष्ठ स्वयंभू-स्वेच्छा से आविर्भूति होने वाला। **शाश्वतीभ्यः-** व्यवधानशून्य, निरन्तर। **समाभ्यः-** संवत्सर रूप प्रजापतियों को वर्षो से। **याथातथ्यतः-** योग्यतानुसार। **अर्थान्-** चराचरवस्तूनि। **व्यदधात्-** विभक्त किया है।

अनुवाद- वह आत्मा सर्वगत, शुद्ध अथवा दीप्त, अशरीरी, अक्षत शिराओं से रहित, निर्मल अथवा पवित्र, पापों से रहित, सर्वद्रष्टा, सर्वज्ञ, सर्वोत्कृष्ट तथा स्वयंसिद्ध है । उसी ने नित्यसिद्ध संवत्सर नामक प्रजापतियों के लिए अथवा अनेक वर्षो से यथायोग्य रीति से पदार्थों अथवा कर्त्तव्यों का विभाजन किया है।

अन्धं तमः प्रविशन्ति येऽविद्यामुपासते ।
ततो भूय इव ते तमो य उ विद्यायां रताः ॥9॥

अन्वयः- ये अविद्याम् उपासते (ते) अन्धं तम : प्रविशन्ति। ये विद्यायां रताः ते ततः उ भूयः इव तमः (प्रविशन्ति)।

शब्दार्थ- ये- जो मनुष्य। **अविद्याम्-** भौतिकज्ञानम्। **उपासते-** अनुष्ठान करते हैं। **अन्धम्-** घोर। **तमः-** अन्धकार। **प्रविशन्ति-** प्रवेश करते हैं। **विद्यायाम्-** आत्मज्ञान में। **रताः-** आसक्त हैं। **ततः-** उससे भी। **भूयः-** अधिक।

अनुवाद- जो मनुष्य अविद्या अर्थात् कर्म की उपासना करतें हैं वे घोर अन्धकार में प्रवेश करते हैं और जो विद्या में ही रत हैं वे उससे भी अधिक अन्धकार में प्रवेश करते हैं।

अन्यदेवाहुर्विद्ययान्यदाहुरविद्यया।
इति शुश्रुम धीराणां ये नस्तद्विचचक्षिरे ॥10॥

अन्वयः- विद्यया अन्यत् एव आहुः, अविद्यया अन्यत् आहुः। इति धीराणां शुश्रुम, ये नः तत् विचचक्षिरे ।।10।।

शब्दार्थ- विद्यया- देवताज्ञान अथवा देवोपासना से। **अन्यत्-** दूसरा अर्थात् स्वर्गादि लोकों की प्राप्ति। **आहुः-** बताते हैं। **अविद्यया-** कर्म से। **अन्यत्-** पृथक् अर्थात् पितृलोकों की प्राप्ति। **धीराणाम्-** बुद्धिमानों का। **शुश्रुम-** सुने हैं। **तत्-** ज्ञान तथा कर्म। **विचचक्षिरे-** व्याख्या की थी ।

अनुवाद-विद्या (देवताज्ञान) से अन्य ही फल बताते हैं । अविद्या (कर्म) से दूसरा ही फल बताते हैं । इस प्रकार धीर पुरुषों को हमने सुना है जिन्होंने हमें उस विषय की व्याख्या करके समझाया था।

विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह ।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नुते ॥11॥

अन्वयः- यः तत् उभयं विद्यां च अविद्यां च सह वेद, (सः) अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्यया अमृतम् अश्नुते ।।11।।

शब्दार्थ- यः- जो साधक। **तत् उभयम-** उन दोनों को। **विद्याम्-** देवताज्ञान को। **अविद्याम्-** कर्मयोग को। **सह-**एक साथ। **वेद-** जानता है। **सः-** वह। **अविद्यया-** कर्मानुष्ठान से। **मृत्युम्-** मरणस्थिति को। **विद्यया-** देवताज्ञान से। **अमृतम्-** अमृतत्त्व को। **अश्नाति-** भोग करता है ।

अनुवाद- जो मनुष्य उन दोनों विद्या अर्थात् देवताज्ञान के तत्त्व को तथा अविद्या अर्थात् कर्म के तत्त्व को एक साथ जान लेता है, वह कर्मों के अनुष्ठान से मृत्यु को पार करके अमृतत्त्व का भोग करता है।

अन्धं तमः प्रविशन्ति येऽसम्भूतिमुपासते।
ततो भूय इव ते तमो य उ सम्भूत्यां रताः ॥12॥

अन्वयः- ये असम्भूतिम् उपासते (ते) अन्धं तमः प्रविशन्ति, ये सम्भूत्यां रताः, ते तत उ भूयः इव तमः।।12।।

शब्दार्थः- ये- जो पुरुष। **असम्भूतिम्-** कारणरूप अव्यक्त प्रकृति। **उपासते-** आराधना करते हैं। **ते-** वे सांसारिक जन। **अन्धं तमः-** अदर्शनात्मक लोकों को। **प्रविशन्ति-** प्रवेश करते हैं। **ये-** जो साधक। **सम्भूत्याम्-** कार्यब्रह्म। **रताः-** अनुरागी हैं। **ते-** वे विद्वान्। **ततः भूय-** उसकी अपेक्षा अधिक। **प्रविशन्ति-** प्रवेश करते हैं।

अनुवाद- जो पुरुष कारण रूप अव्यक्त प्रकृति उपासना करते हैं वे घोर अन्धकार में प्रवेश करतें हैं, जो कार्यब्रह्म में ही आसक्त रहते हैं, वे मानो उससे भी अधिक अन्धकार में प्रवेश करते हैं।

अन्यदेवाहुः सम्भवादन्यदाहुरसम्भवात् ।
इति शुश्रुम धीराणां ये नस्तद्विचचक्षिरे॥13॥

अन्वयः- सम्भवात् अन्यत् एव आहुः असम्भवात् अन्यत् आहुः इति धीराणां शुश्रुम, ये नः तत् विचचक्षिरे।।13।।

शब्दार्थ- सम्भवात्- अव्यक्तप्रकृति की उपासना से। **अन्यत्-** अणिमादि ऐश्वर्यसिद्धि। **असम्भवात्-** अव्याकृत की उपासना से। **अन्यत्-** प्रकृतिलय। **तत्-**उस विषय विशेष को ।

अनुवाद-कार्यप्रकृति से दूसरा ही फल बताते हैं तथा कारण प्रकृति से दूसरा फल बताते हैं। इस प्रकार धीर पुरुषों के वचन हमने सुनें हैं जिन्होंने हमारे लिए उस विषय की व्याख्या की थी ।

सम्भूतिं च विनाशं च यस्तद्वेदोभयं सह।
विनाशेन मृत्युं तीर्त्वा सम्भूत्यामृतमश्नुते॥14॥

अन्वयः- यः तत् उभयं सम्भूतिं च विनाशं च सह वेद (सः) विनाशेन मृत्युं तीर्त्वा सम्भूत्या अमृतम् अश्नुते।

शब्दार्थः- सम्भूतिम्- उत्पत्ति अथवा कार्यब्रह्म। वेद जानता है। **अश्नुते-** पाता है। **विनाशम्-** मृत्यु अथवा कारण ब्रह्म।

अनुवाद- जो मनुष्य सम्भूति अर्थात् कार्य ब्रह्म तथा विनाश अर्थात् कारण ब्रह्म को साथ - साथ जानता है, वह कार्यब्रह्म की उपासना से मृत्यु को प्राप्त करके कारण ब्रह्म के द्वारा अमृत को प्राप्त कर लेता है।

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्।
तत्त्वं पूषन्नपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये ॥15॥

अन्वयः- पूषन्। सत्यस्य मुखं हिरण्मयेन पात्रेण अपिहितम्, सत्यधर्माय दृष्टये तत् त्वम् अपावृणु ।।15।।

शब्दार्थः- पूषन्- पोषक। **सत्यस्य-** सत् युक्त ईश्वर। **मुखम्-** प्रवेशद्वार। **हिरण्मयेन-** सुवर्ण सदृश चमकदार। **पात्रेण-** ढक्कन से। **अपिहितम्-** ढका हुआ है। **सत्यधर्माय-** सत् रूप के दर्शन के लिए। **तत्-** उस आवरणविशेष को। **त्वम्-** हे देव! । **अपावृणु-** हटा दीजिए।

अनुवाद- हे पोषण करने वाले! सत्य का मुख सुवर्णयुक्त पात्र से ढका हुआ है, सत्यधर्म को देखने के लिए अथवा सत्यधर्म का अनुष्ठान करने वाले मेरे लिए उस आवरण को हटा दीजिए।

पूषन्नेकर्षे यम सूर्य प्राजापत्य व्यूह रश्मीन्समूह ।
तेजो यत्ते रूपं कल्याणतमं तत्ते पश्यामि
योऽसावसौ पुरुषः सोऽहमस्मि ॥16॥

अन्वयः- पूषन्! एकर्षे! यम! सूर्य! प्राजापत्य! रश्मीन् व्यूह, तेजः समूह, यत् ते कल्याणतमं रूपं तत् ते पश्यामि, यः असौ असौ पुरुषः, अहं सः अस्मि ।।16।।

शब्दार्थ- पूषन्- पूषा अथवा सूर्य। **एकर्षे-** अद्वितीय ऋषि। **यम्-** नियामक। **सूर्य-** प्रेरणादायक। **प्राजापत्य-** प्रजाओं के स्वामी। **रश्मीन्-** किरणों को। **व्यूह-** बटोर लें। **समूह-** समेट लें। **कल्याणतमम्-** मङ्गलमय। **तत्-** श्रेष्ठ रूप। **ते-** आपके अनुग्रह से। **पश्यामि-** साक्षात् अनुभव कर रहा हू। **असौ असौ-** यह प्रत्यक्ष तथा परोक्ष। **पुरुषः-** परमचेतना, आत्मा। **अहम्-** अज्ञ जीव। **सः-** ईश्वर, ब्रह्म।

अनुवाद- हे जगत्पोषक सूर्य ! हे अद्वितीय ऋषि ! हे सर्वनियन्ता ! हे प्रेरणादायक ! हे प्रजाओं के अधिष्ठाता! किरणों को समेट लीजिए , तेज को आत्मसात् कर लीजिए । जो आपका अतिशय कल्याणमय रूप है, उसे आपकी कृपा से देखता हूँ। जो यह आदित्यमण्डलस्थ पुरुष है, मैं वही हूँ।

वायुरनिलममृतमथेदं भस्मान्तं शरीरम् ।
ॐ क्रतो स्मर कृतं स्मर क्रतो स्मर कृतं स्मर ॥17॥

अन्वयः- अथ वायु : अमृतम् अनिलम् इदं शरीरं भस्मान्तम् ।।ॐ क्रतो स्मर कृतं स्मर क्रतो स्मर कृतं स्मर ।।17 ।।

शब्दार्थ- अथ- मृत्यु के अनन्तर। **वायुः-** सूक्ष्मशरीर। **अमृतम्-** सूक्ष्मरूप। **अनिलम्-** प्राणवायु । **इदम्-** प्रस्तुत। **शरीरम्-** स्थूल शरीर। **भस्मान्तम्-** भस्मावशेष। **ॐ-** प्रणवरूप , ब्रह्म का प्रतीक। **क्रतो-** सङ्कल्पात्मक मन, करणीय कर्म। **क्रतु-** अनुष्ठित कर्म, यज्ञादि। **क्रतो-** सङ्कल्पात्मक जीव। **स्मर-** अनुरूप फल प्राप्त करो ।

अनुवाद- प्राण वायु अमृत रूप प्राणवायु में विलीन हो जाए, यह शरीर भस्मावशेष हो जाये । हे सङ्कल्पात्मक (ॐ रूप) मन! तू स्मरण कर, मेरे द्वारा सम्पादित कर्मों का स्मरण कर। हे सङ्कल्पात्मक जीव! तू स्मरण कर, अपनों द्वारा सम्पादित कर्मों का स्मरण कर। अथवा अकृत अर्थात् भविष्यत् काल में करणीय कर्मों का स्मरण कर, कृत अर्थात् भूतकाल में सम्पादित कर्मों का स्मरण कर ।

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नमउक्तिं विधेम॥ 18॥

अन्वयः- अग्ने! अस्मान् राये सुपथा नय, देव! विश्वानि वयुनानि विद्वान्। अस्मत् जुहुराणम्, एनः, युयोधि, ते भूयिष्ठां नम उक्तिं विधेम ।।18।।

शब्दार्थ- अग्ने- ज्वलनशील पदार्थ अथवा अग्नि के अधिष्ठापक देव। **राये-** धन अथवा कर्मफल के लिए। **सुपथा-** शोभन अथवा समुचित मार्ग से। **नय-** ले चलिए। **देव-** गुणविशिष्ट पुरुष। **विश्वानि-** समग्र। **वयुनानि-** कर्मों अथवा ज्ञानों को। **विद्वान्-** जानता है। **अस्मत्-** हमसे। **जुहुराणम्-** कुटिलताओं को। **एनः-** पापों को। **युयोधि-** अलग कर दीजिए। **ते-** देवादिगुणविशिष्ट आपके लिए। **भूयिष्ठाम्-** अत्यधिक। **नम-** प्रणाम। **उक्तिम्-** वचनों को। **विधेम-** सम्पादित करते हैं।

अनुवाद- हे अग्नि के अधिष्ठातृ देव ! हमें ऐश्वर्य अथवा कर्म की पराकाष्ठा को पाने के लिए सन्मार्ग से ले चलिए । हे देव!

आप सम्पूर्ण कर्म अथवा ज्ञान को जानने वाले हैं अतः हमसे हमारे मार्ग के प्रतिबन्धक पापों को दूर कर दीजिए । आपके लिए अत्यधिक नमस्कार के वचन कहते हैं , बारम्बार नमन करते हैं।

वेदों का रचनाकाल

➢ वेदों का रचनाकाल निर्धारण वैदिक वाङ्मय की एक जटिल समस्या है। विभिन्न विद्वानों ने भाषा, रचनाशैली, धर्म एवं दर्शन, भूगर्भशास्त्र, ज्योतिष, उत्खनन में प्राप्त सामग्री, अभिलेख आदि के आधार पर वेदों का रचनाकाल निर्धारित करने का प्रयास किया है, किन्तु इनसे अभी तक कोई सर्वमान्य रचनाकाल निर्धारित नहीं हो सका है।

➢ भारतीय षड्दर्शन- पूर्वमीमांसा, उत्तरमीमांसा (वेदान्त), सांख्य-योग, न्याय-वैशेषिक एवं वेदभाष्यकारों ने वेद के अपौरुषेयत्व का कथन किया है। पूर्वमीमांसा वेद को नित्य एवं अनुत्पन्न मानती है।

➢ पाश्चात्त्य विद्वान् भारतीय परम्परागत 'वेद के अपौरुषेयत्व सिद्धान्त' को स्वीकार नहीं करते। उनका मानना है कि वेद आर्यों की रचना है, मानवकृत (पौरुषेय) हैं; अतएव अपौरुषेय नहीं है।

प्रो. मैक्समूलर का मत

➢ प्रो. मैक्समूलर ने सन् 1859 ई. में स्वरचित ग्रन्थ **"A History of Ancient Sanskrit literature"** में वेदों के काल निर्णय का सर्वप्रथम प्रयास किया।

➢ मैक्समूलर के अनुसार सर्वप्राचीन ऋग्वेद की रचना 1200 ई. पू. (विक्रमपूर्व) में हुई होगी, क्योंकि विक्रम से लगभग 500 वर्ष पूर्व उदित हुआ बौद्ध धर्म वैदिक वाङ्मय की सत्ता को स्वीकार करता है।

➢प्रो. मैक्समूलर ने समग्र वैदिककाल को चार विभागों में बाँटा है –

1. छन्दकाल 2. मन्त्रकाल 3. ब्राह्मणकाल 4. सूत्रकाल इसमें प्रत्येक युग की विचार धारा के उदय तथा ग्रन्थ रचना के लिए उन्होंने 200 वर्षों का काल माना है।

1. सूत्रकाल - 600 ई. पू. से 200 ई. पू. तक
2. ब्राह्मणकाल- 800 ई. पू. से 600 विक्रमपूर्व (ई. पू.)
3. मन्त्रकाल - 1000 से 800 विक्रमपूर्व (ई. पू.)
4. छन्दकाल - 1200 से 1000 विक्रमपूर्व (ई. पू.)

➢ सन् 1890 ई. में प्रकाशित **"Physical Religion"** (भौतिक धर्म) नामक अपनी पुस्तक में प्रो. मैक्समूलर ने अपनी भूल स्वीकार करते हुए लिखा है कि- "इस भूतल पर कोई भी ऐसी शक्ति नहीं है, जो कभी निश्चय कर सके कि वैदिक मन्त्रों की रचना 1000 या 1500 या 2000 या 3000 विक्रमपूर्व में की गयी हो।"

➢ परन्तु हम भारतीयों का दुर्भाग्य कि वेदों के काल निर्णय के विषय में मैक्समूलर के 1200 विक्रमपूर्व को ही हम सनातन सत्य मानते आ रहे हैं, परीक्षाओं में भी यह प्रश्न प्रमुखता से पूछा जा रहा है, जबकि इस मत के प्रणेता मैक्समूलर ने स्वयं इसे अपनी भूल मानते हुए, इस मत का खण्डन कर चुके हैं।

ए. वेबर का मत

➢ जर्मन विद्वान् प्रो. ए. वेबर ने कहा है – "वेदों का समय निश्चित नहीं किया जा सकता। वे उस तिथि के बने हुए हैं, जहाँ तक पहुँचने के लिए हमारे पास उपयुक्त साधन नहीं हैं। वर्तमान प्रमाण, हम लोगों को उस समय के उन्नत शिखर तक पहुँचाने में असमर्थ हैं।"

➢ प्रो. वेबर यह भी कहते हैं कि – "वेदों के समय को कम से कम 1200 ई. पू. या 1500 ई. पू. के बाद का कथमपि स्वीकार नहीं किया जा सकता।"

➢ प्रो. वेबर ने अपनी पुस्तक "History of Indian literature" यहाँ तक लिख दिया कि – "Any such of attempt of defining the relic antiquity is absolutely fruitless" अर्थात् वेदों का काल निर्धारण के लिए प्रयत्न करना सर्वथा बेकार है।

डॉ. जैकोबी का मत

➢ जर्मन विद्वान् डॉ. जैकोबी का वैदिक काल विषयक सिद्धान्त ज्योतिष की आधार शिला पर अवलम्बित है; जो बालगंगाधर तिलक के मत से मिलता-जुलता है।

➢ डॉ. जैकोबी ने कृत्तिका और बसन्तपात के आधार पर वेदमन्त्रों का रचनाकाल 4590 ई. पू. तथा ब्राह्मण ग्रन्थों का रचनाकाल 2500 ई. पू. के पश्चात् स्वीकार किया है।

➢ इसप्रकार संक्षेप में याकोबी के अनुसार 4500 ई. पू. से 3000 ई. पू. ऋग्वेद का रचनाकाल है तथा 3000 ई. पू. से. 2000 ई. पू. ब्राह्मणों का रचनाकाल है।

बालगंगाधर तिलक का मत

➢ लोकमान्य बालगंगाधर तिलक ने ऋग्वेद में उपलब्ध ज्योतिष विषयक साक्ष्यों के आधार पर वेदों का काल 4000 से 6000 विक्रमपूर्व स्वीकार किया है।

➢ **तिलक जी ने वैदिक काल को चार विभागों में रखा है-**

1. **अदितिकाल**	-	6000 ई. पू. से 4000 विक्रम पूर्व तक
2. **मृगशिरा काल**	-	4000 ई. पू. से. 2500 विक्रमपूर्व तक (ऋग्वेदसंहिता का मन्त्रकाल)
3. **कृत्तिका काल**	-	2500 से 1400 ई. पू. विक्रमपूर्व तक (तैत्तिरीय संहिता व ब्राह्मणकाल)
4. **अन्तिम काल**	-	1400 से 500 विक्रमपूर्व तक (सूत्रग्रन्थों का रचनाकाल)

➢ लोकमान्य तिलक जी ने **"Orion" (ओरायन)** के पश्चात् लिखे गये अपने ग्रन्थ "Arctic Home in the Vedas" में वेदकाल को 10000 (दस हजार) ई. पू. बतलाया। उन्होंने विज्ञान तथा ज्योतिष के आधार पर यह सिद्ध किया कि भारत में आने से पूर्व आर्य लोग उत्तरी ध्रुव में रहते थे, और वहाँ पर भी वे वैदिक धर्म को ही मानते थे।

एम. विण्टरनित्स का मत

➢ विण्टरनित्स ने ब्राह्मणग्रन्थों, पाणिनि व्याकरण की संस्कृत भाषा तथा अशोक के शिलालेखों की भाषा – इन सबका वैदिक भाषा से साम्य को ध्यान में रखते हुए, ऋग्वेद का काल जैकोबी तथा तिलक द्वारा निर्धारित तिथि (4500 से 6000 ई. पू.) के बीच में स्वीकार किया है।

भारतीय परम्परागत विचार

➢ भारतीय परम्परावादी विद्वानों के मतानुसार वेदों का काल निर्धारण करना मूर्खता ही नहीं बल्कि असम्भव है।

➢ भारतीय परम्परागत विद्वानों का विचार है कि – 'वेद नित्य हैं, और सृष्टि के प्रारम्भ से ही वेदों का आविर्भाव हुआ है, ऋग्वेद का पुरुष सूक्त वेदों की उत्पत्ति के लिए स्वयं प्रमाण हैं-

तस्मात् यज्ञात् सर्वहुतः ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दांसि जज्ञिरे तस्मात् यजुस्मादजायत॥

➢ भारतीय मत में जिस परमात्मा ने सृष्टि की उत्पत्ति की उसी ने सृष्टि के पूर्व वेदों की रचना की होगी, इसीलिए वेद अपौरुषेय हैं।

➢ भारतीय परम्परावादी विद्वानों का कहना है कि सृष्टिकर्ता विधाता ने सृष्ट्युत्पत्ति के पूर्व जिस विचारधारा की सर्वप्रथम कल्पना अपनी बुद्धि में की, वही आम्नाय या वेद हैं।

➢ ऋग्वेद का ही कथन है-

''तस्माद्दृचो पातक्षन् यजुस्तस्मादपाकयन्।
सामानि यस्य लोमानि अथर्वाङ्गिरसो मुखम्॥''

➢ आदि शङ्कराचार्य ने वेदों का सर्वज्ञानमयत्व मानते हुए कहते हैं- **महतः ऋग्वेदादेः शास्त्रस्य अनेकविद्यास्थानोपबृंहितस्य प्रदीपवत् सर्वार्थावद्योतिनः सर्वज्ञकल्पस्य योनिः...** अर्थात् ऋग्वेदादि महान् शास्त्र अनेक विद्यास्थानों से विकसित हुआ है, और यह प्रदीपवत् समस्त विषयों को प्रकाशित करता है। इसप्रकार के सर्वज्ञान सम्पन्न शास्त्र का उत्पत्ति स्थान ब्रह्म ही हो सकता है, क्योंकि सर्वज्ञ परब्रह्म परमात्मा के अतिरिक्त अन्य किसी से ऋग्वेदादि सर्वज्ञानसम्पन्न शास्त्र की उत्पत्ति नहीं हो सकती।

➢ **''ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।''** के अनुसार सर्वज्ञानमय पूर्णवेद की उत्पत्ति पूर्णब्रह्म से ही सम्भव है।

➢ भगवान् बादरायण व्यास ने भी ब्रह्मसूत्रस्थ **''विप्रतिषेधाच्च''** के द्वारा इसी मत को सूचित किया है।

➢ भगवान् जैमिनि ने पूर्वमीमांसादर्शन में **''नित्यस्तु स्याद् दर्शनस्य परार्थत्वात्''** इत्यादि छः सूत्रों द्वारा अनित्यवादी पक्षों के तर्कों का खण्डन करते हुए, वेदों का नित्यत्व प्रतिपादित करते हैं।

➢ उत्तरमीमांसा में महर्षि बादरायण व्यास जी ने **''शास्त्रयोनित्वात्''** इस सूत्र के द्वारा वेदों का उद्गम परब्रह्म से ही हुआ है। इस सिद्धान्त को स्थापित किया है।

➢ नैयायिकों का मानना है कि- "सृष्टि के आदि में ईश्वर की निःश्वासवायु से वेदों की उत्पत्ति हुई-

''अनादिनिधना नित्या वागुत्सृष्टा स्वयम्भुवा।
आदौ वेदमयी दिव्या यतः सर्वा प्रवृत्तयः॥''

➢ इसप्रकार भारतीय परम्परावादी विद्वान् वेदों को नित्य स्वीकार करते हुए अपौरुषेय मानते हैं।

ऋग्वेद संहिता का परिचय

➢ वैदिक साहित्य का सबसे प्राचीन व प्रथम ग्रन्थ का नाम ऋग्वेद है। इसका कारण यह है कि यह सभी वेदों में अभ्यर्हित (पूजित) है। ऋग्वेद शब्द में ऋच् या ऋक् का अर्थ है- स्तुतिपरक मन्त्र, **'ऋच्यते स्तूयतेऽनया इति ऋक्।'** जिन मन्त्रों के द्वारा देवों की स्तुति की जाती है,उन्हें **ऋक् या ऋचा** कहते हैं। ऋग्वेद में विभिन्न देवों की स्तुति वाले मन्त्र हैं, अतः इसे ऋग्वेद कहते हैं। भाषा, शैली, व्याकरण एवं मन्त्रों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि यह किसी एक समय की रचना नहीं, किन्तु विभिन्न काल में विभिन्न ऋषियों द्वारा हुई रचनाओं का संग्रह-ग्रन्थ है। ऐसी ऋचाओं के संग्रह के कारण इसे **ऋग्वेद-संहिता** भी कहते हैं। यहाँ पर

'संहिता' शब्द का प्रयोग संकलन या संग्रह अर्थ में होता है।

➢ **ऋग्वेद का महत्त्व-**ऋग्वेद को चारों वेदों में सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण, अक्षुण्ण तथा आदरणीय माना जाता है। परिमाण की दृष्टि से भी यह चारों वेदों में विशालकाय ग्रन्थ है। इसमें अधिकांश देव इन्द्र, अग्नि, सोम, विष्णु, मरुत् आदि प्राकृतिक तत्त्वों के प्रतिनिधि हैं।

➢ ऋग्वेद के **आचार्य पैल** हैं जो व्यास के शिष्य थे।

➢ **ऋत्विक् -** चारों वेदों के अनुसार यज्ञ में चार ऋत्विक् (ऋत्विज्) होते हैं- होता, अध्वर्यु, उद्गाता और ब्रह्मा। ऋग्वेद का ऋत्विक् **'होता'** माना जाता है।

➢ ऋग्वेद में **होता, ऋत्विक्** या ऋचाओं का पाठ करता है। अतएव ऋग्वेद को **होतृवेद** भी कहा जाता है।

➢ आयुर्वेद को ऋग्वेद का उपवेद भी कहा जाता है।

➢ ऋग्वेद की उत्पत्ति **अग्नि** से बतायी गयी है।

➢ ऋग्वेद वाक्तत्त्व का संकलन है।

ऋग्वेद का विभाजन

➢ ऋग्वेद में ऋचाओं का दो प्रकार से विभाजन है – 1. अष्टकक्रम 2. मण्डलक्रम

➢ प्रत्येक अष्टक में 8 अध्याय होते हैं, इसप्रकार ऋग्वेद में कुल 64 अध्याय हैं।

➢ प्रत्येक अध्याय के अवान्तर विभागों का नाम 'वर्ग'है।

➢ वर्गों में ऋचाओं की संख्या निश्चित नहीं है, किन्तु लगभग पाँच ऋचाओं का एक वर्ग होता है। किन्तु एक मन्त्र से लेकर नव मन्त्रों तक के भी वर्ग मिलते हैं।

➢ ऋग्वेद में समस्त वर्गों की संख्या 2024 है।

➢ मण्डलक्रम के अनुसार सम्पूर्ण ऋग्वेद दस मण्डलों में विभक्त है। अतः इसे **'दशतयी'** नाम से भी जाना जाता है।

➢ प्रत्येक मण्डल में अनुवाक, सूक्त और मन्त्र हैं।

➢ ऋग्वेद के दश मण्डलों में 85 अनुवाक हैं ।

➢ ऋग्वेद में कुल सूक्तों की संख्या 1028 है, जिसमें 11 बालखिल्य सूक्त माने जाते हैं।

➢ मन्त्रों की संख्या 10580-1/4 है। कहीं कहीं मन्त्रों की संख्या 10552 भी मानी गयी है।

ऋग्वेद के अपरनाम

1. दशतयी
2. होतृवेद

ऋग्वेद का द्विधा विभाजन

- अष्टकक्रम
  - अष्टक (8)
  - अध्याय (64)
  - वर्ग (2024)
- मण्डलक्रम
  - मण्डल (10)
  - अनुवाक (85)
  - सूक्त (1017+11=1028)

मण्डलक्रमानुसार ऋग्वेद का विभाजन

मण्डल	अनुवाक	सूक्तसंख्या	मन्त्रसंख्या	ऋषि नाम
प्रथम	24	191	2006	मधुच्छन्दा, मेधातिथि, दीर्घतमा
द्वितीय	4	43	429	गृत्समद
तृतीय	5	62	617	विश्वामित्र
चतुर्थ	5	58	589	वामदेव
पञ्चम	6	87	727	अत्रि
षष्ठ	6	75	765	भरद्वाज
सप्तम	6	104	841	वशिष्ठ
अष्टम	10	92+11	1716	कण्व, भृगु,अंगिरस बालखिल्य सूक्त
नवम	7	114	1108	सोम, पवमान
दशम	12	191	1754	त्रित, विमद, श्रद्धा,कामायनी
योग	85	1028	10552	

➢ **ऋग्वेद में छन्दोवर्णन- 'यदक्षरपरिमाणं तच्छन्दः'** अर्थात् जिसमें वर्णों या अक्षरों की संख्या निर्धारित हो, उसे छन्द कहते हैं। आचार्य पिङ्गल को छन्दशास्त्र का प्रणेता कहा जाता है, ऋग्वेद में मुख्यरूपेण सात छन्दों का प्रयोग हुआ है -

छन्द	अक्षर
गायत्री	24
उष्णिक्	28
अनुष्टुप्	32
बृहती	36
पंक्ति	40
त्रिष्टुप्	44
जगती	48

''गा उ अ बृ पं त्रि ज'' यह प्रत्येक छन्द का प्रथम अक्षर है। प्रत्येक छन्द में अक्षरों की संख्या 4-4 बढ़ती जाएगी। जैसे - गायत्री में 24 तो उष्णिक् में 28, अनुष्टुप् में 32 आदि।

ऋग्वेद की शाखायें-

➢ पतञ्जलि के अनुसार, **'एकविंशतिधा बाह्वृच्यम्'** अर्थात् महाभाष्य में ऋग्वेद की 21 शाखाओं का उल्लेख है।

➢ 'चरणव्यूह' के अनुसार वर्तमान में ऋग्वेद की 5 शाखायें प्राप्त हैं-

➢ वर्तमान समय में ऋग्वेद की केवल शाकल शाखा प्राप्त होती है।

शाखायें

1. शाकल 2. बाष्कल 3. आश्वलायन 4. शांखायन 5. माण्डूकायन

ऋग्वेदीय ब्राह्मण

➢ ऋग्वेद से सम्बद्ध दो ब्राह्मण ग्रन्थ हैं-

1. ऐतरेय ब्राह्मण 2. कौषीतकि (शांखायन) ब्राह्मण

➢ ऐतरेय ब्राह्मण में 40 अध्याय हैं।

➢ प्रत्येक पाँच अध्यायों की एक पञ्चिका और प्रत्येक अध्यायों में कण्डिकाएं हैं, जिसे खण्ड भी कहते हैं। 8 पञ्चिकाएँ और 285 खण्ड हैं।

➢ कौषीतकि ब्राह्मण शांखायन शाखा का ब्राह्मण है, इसलिए इसे 'शांखायन ब्राह्मण' भी कहते हैं।

➢ कौषीतकि ब्राह्मण में 30 अध्याय एवं 226 खण्ड हैं।

➢ प्रत्येक अध्याय में पाँच से लेकर सत्रह तक खण्ड हैं, कुल खण्डों की संख्या 226 है।

ऋग्वेदीय आरण्यक

➢ ऋग्वेद से सम्बद्ध दो आरण्यक ग्रन्थ हैं-

1. ऐतरेय आरण्यक 2. शांखायन आरण्यक

➢ ऐतरेय आरण्यक में 5 भाग हैं। इन भागों को आरण्यक या प्रपाठक कहते हैं।

➢ शांखायन आरण्यक में 15 अध्याय हैं।

उपनिषद्

➢ ऋग्वेद के दो उपनिषद् प्राप्त होते हैं-

1. ऐतरेय उपनिषद् 2. कौषीतकि उपनिषद्

➢ ऐतरेय आरण्यक के द्वितीय अध्याय के चतुर्थ खण्ड से लेकर षष्ठ खण्ड तक का नाम 'ऐतरेय उपनिषद्' है।

➢ ऐतरेय उपनिषद् में तीन अध्याय हैं।

➢ कौषीतकि उपनिषद् में चार अध्याय हैं।

कल्पसूत्र

➢ जिन ग्रन्थों में यज्ञ-सम्बन्धी विधियों का समर्थन या प्रतिपादन किया जाता है, उन्हें **'कल्प'** कहते हैं। इसके चार भेद हैं-

1. श्रौतसूत्र 2. गृह्यसूत्र 3. धर्मसूत्र 4. शुल्बसूत्र

ऋग्वेद के दो श्रौतसूत्र हैं-

आश्वलायन (12 अध्याय) — शांखायन (18 अध्याय)

ऋग्वेदीय तीन गृह्यसूत्र प्राप्त होते हैं-

आश्वलायन गृह्यसूत्र (4 अध्याय) — शांखायन गृह्यसूत्र (6 अध्याय) — कौषीतकि गृह्यसूत्र (5 अध्याय)

- एकमात्र ऋग्वेदीय धर्मसूत्र है- वासिष्ठ (वसिष्ठ) धर्मसूत्र, इसमें 4 अध्याय हैं।
- ऋग्वेद का कोई शुल्बसूत्र नहीं प्राप्त होता है।

प्रातिशाख्य

- 'ऋक्-प्रातिशाख्य' ऋग्वेद का एकमात्र उपलब्ध प्रातिशाख्य है।
- इसके रचयिता शौनक हैं।
- ऋग्वेद प्रातिशाख्य तीन अध्यायों में विभक्त है, प्रत्येक अध्याय में 6पटल हैं, कुल 18 पटल हैं।

ऋग्वेदीय शिक्षा

ऋग्वेद के दो शिक्षा ग्रन्थ

पाणिनीय शिक्षा — वसिष्ठ शिक्षा

ऋग्वेद का वर्ण्य-विषय

- 'यास्क' के अनुसार-ऋग्वेद की विषय वस्तु
  1. धर्म निरपेक्ष 2. धार्मिक 3. दार्शनिक सूक्त
- डॉ. विण्टरनित्स के अनुसार-
  1. काव्यात्मक गीत 2. यज्ञीय स्तुति
  3. दार्शनिक सूक्त 4. संवाद सूक्त
  5. धर्मनिरपेक्ष सूक्त 6. ऐन्द्रजालिक यन्त्र

  इसप्रकार ऋग्वेद प्राचीन भारतीय साहित्य का महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है।
- विभिन्न देवों के स्तुतिपरक मन्त्रों का संकलन ऋग्वेद में किया गया है। इस दृष्टि से ऋग्वेद का प्रतिपाद्य देवस्तुति है।
- ऋग्वेद के सम्पूर्ण विषयवस्तु को अनेक विद्वानों ने कई रूपों में विभाजित किया है, कुछ विद्वानों ने प्रतिपाद्य की दृष्टि से ऋग्वेद के सूक्तों को चार श्रेणियों में विभाजित किया है-
  1. धार्मिक सूक्त 2. दार्शनिक सूक्त 3. लौकिक सूक्त
  4. संवाद सूक्त

धार्मिक सूक्त

- ऋग्वेद का अधिकांश भाग धार्मिक सूक्तों की श्रेणी में आता है।
- धार्मिक सूक्तों में विभिन्न देवों को सम्बोधित करते हुए उनकी स्तुति की गई है-

इन्द्र सूक्त (1/32)	विष्णु सूक्त (1/154)
अग्नि सूक्त (1/1)	सवितृ सूक्त (1/35)
वरुण सूक्त (1/25)	पर्जन्य सूक्त (5/83)
उषा सूक्त (1/48)	उषस् सूक्त (4/51)
मरुत् सूक्त (1/85)	अश्विनौ सूक्त (7/71)

- इसके अतिरिक्त अन्य सूक्त भी ऋग्वेद के धार्मिक सूक्तों के अन्तर्गत प्राप्त होते हैं।

दार्शनिक सूक्त

- ऋग्वेद के लगभग 12 सूक्त ऐसे हैं, जिनमें उच्चकोटि के दार्शनिक विचारों के बीज मिलते हैं।
- दार्शनिक सूक्त अपेक्षाकृत अर्वाचीन दशम मण्डल में उपलब्ध होते हैं।
- दशम मण्डल मे आये हुये नासदीय सूक्त, हिरण्यगर्भ सूक्त, पुरुष सूक्त तथा वाक् सूक्त का दार्शनिक दृष्टिकोण से विशेष महत्त्व है।

(i) पुरुष सूक्त	—	10/90
(ii) हिरण्यगर्भ सूक्त	—	10/121
(iii) वाक् सूक्त	—	10/125
(iv) नासदीय सूक्त	—	10/129

- इनमें 'नासदीय', 'पुरुष' तथा 'हिरण्यगर्भ सूक्त' **सृष्टि उत्पत्ति सूक्त** माने जाते हैं।

लौकिक सूक्त

- जो सूक्त लौकिक जीवन तथा दैनन्दिन व्यवहार से सम्बद्ध विषयों का रोचक वर्णन करते हैं उन सूक्तों को 'लौकिक सूक्त' की संज्ञा प्रदान की गई है।
- लौकिक सूक्त भी अधिकांशतया दशम मण्डल में ही हैं।

1. विवाह सूक्त (10/85) 2. अक्षसूक्त (10/34)
3. सपत्नघ्न सूक्त (10/166) 4. ओषधिसूक्त (10/97)
5. आवर्तन सूक्त (10/97)

संवाद सूक्त

- ऋग्वेद में कुछ ऐसे सूक्त हैं जिनमें प्राचीनतम कथा-साहित्य की प्रधानता है, उन्हें संवाद सूक्त का नाम दिया गया है।
- डॉ. ओल्डेनवर्ग ने संवाद सूक्तों को 'आख्यान सूक्त' कहा है।
- डॉ. सिल्वाँ लेवी, वॉन श्रोदर तथा हर्टल का मत है कि ये संवाद सूक्त नाटक के अवशिष्ट अंश हैं।

➢ ये सूक्त संख्या में लगभग 20 माने गये हैं, जिनमें अधिकांशतः दशम मण्डल में उपलब्ध होते हैं-

➢ **मुख्य संवाद सूक्त**

1. पुरुरवा उर्वशी संवाद (10.95)
2. यम-यमी संवाद (10.10)
3. सरमा-पणि संवाद (10.108)
4. इन्द्र मरुत् संवाद (1/165)
5. अगस्त्य लोपामुद्रा संवाद (1/179)
6. विश्वामित्र नदी संवाद (3/33)

ऋग्वेद के देवता

➢ 'तिस्र एव देवताः' अर्थात् यास्क ने निरुक्त में तीन प्रकार के देवताओं का वर्णन किया है, जो हैं-

1. पृथिवीस्थानीय (अग्नि, बृहस्पति, सोम आदि)
2. अन्तरिक्ष स्थानीय (इन्द्र, रुद्र आदि)
3. द्युस्थानीय (सूर्य, विष्णु आदि)

मन्त्र-द्रष्टा ऋषिकाएँ

➢ ऋग्वेद में लगभग 24 मन्त्र द्रष्टा ऋषिकाओं का उल्लेख है।

➢ ऋग्वेद में इन 24 ऋषिकाओं द्वारा दृष्ट मन्त्र 224 हैं।

ऋग्वेद में 24 ऋषिकायें

1. सूर्य सावित्री 2. घोषा काक्षीवती 3. सिकता निवावरी
4. इन्द्राणी 5. यमी वैवस्वती 6. दक्षिणा प्राजापत्या
7. अदिति 8. वाक् आम्भृणी 9. अपाला आत्रेयी
10. विश्ववारा आत्रेयी 11. अगस्त्यस्वसा 12. जुहू ब्रह्मजाया
13. उर्वशी 14. सरमा देवशुनी
15. शिखण्डिन्यौ अप्सरसौ 16.पैलोमी शची 17. देवजामयः
18. श्रद्धा कामायनी 19. नदी 20. सार्पराज्ञी
21. गोधा 22.शश्वती आंगिरसी23. वसुक्रपत्नी
24. रोमशा ब्रह्मवादिनी

ऋग्वेद का रचना विन्यासक्रम

➢ ऋग्वेद को पौरुषेय मानने वाले, भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों के अनुसार ऋग्वेद के विभिन्न मण्डलों की रचना में शताब्दियों का अन्तर रहा है।

➢ ऋग्वेद का सबसे प्राचीन अंश द्वितीय से सप्तम मण्डल तक माना जाता है।

➢ 2 से 7 तक के मण्डल को 'वंश मण्डल ' अथवा 'परिवार मण्डल' कहते हैं।

➢ 8 वें मण्डल में अधिकांश सूक्त कण्व-परिवार के हैं।

➢ 9 वें मण्डल में समस्त मन्त्र सोम विषयक हैं। इसे 'पवमान सोम-मण्डल' भी कहा जाता है।

➢ ऋग्वेद का दशम मण्डल अर्वाचीन है।

➢ दशम मण्डल में देवताओं की स्तुति से सम्बद्ध सूक्त अपेक्षाकृत बहुत कम हैं।

ऋग्वेद के भाष्यकर्ता

➢ ऋग्वेद संहिता के भाष्यकर्ताओं में स्कन्दस्वामी, आनन्दतीर्थ, वेङ्कटमाधव, सायण आदि प्रमुख हैं।

1. स्कन्दस्वामी- ऋग्वेद का सबसे प्राचीन भाष्य स्कन्दस्वामी का ही उपलब्ध है।

➢ स्कन्दस्वामी ने 600-625 के मध्य ऋग्वेद पर भाष्य लिखा।

➢ स्कन्दस्वामी का भाष्य ऋग्वेद के प्रथम पाँच अष्टक तक प्राप्त होता है।

2. नारायण तथा उद्गीथ- ऋग्वेद के मध्यभाग पर नारायण एवं अन्तिम भाग पर उद्गीथ ने भाष्य लिखा है।

➢ उद्गीथ ने अपने भाष्य में प्रत्येक अध्याय के अन्त में अपना परिचय दिया है।

'वनवासीविनिर्गताचार्यस्य उद्गीथस्य कृता ऋग्वेदभाष्ये.....'

3. वेङ्कटमाधव- इनका समय 1050 से 1150 ई. के मध्य माना जाता है। इन्होंने प्रथम अध्याय के अन्त में अपना परिचय दिया है।

4. धानुष्क यज्वा-

➢ इन्हें 'त्रिवेदी भाष्यकार' कहा गया है।

➢ ये वैष्णव आचार्य थे। इनका समय लगभग 1300 विक्रम पूर्व माना जाता है।

5. आनन्दतीर्थ - इनका समय 1255 से 1335 विक्रम संवत् तक माना जाता है।

➢ इनका अपरनाम 'मध्व' है।

➢ इन्होंने ऋग्वेद के कुछ प्रमुख 40 सूक्तों पर पद्यात्मक भाष्य लिखा।

6. आत्मानन्द- आत्मानन्द ऋग्वेद के 'अस्यवामीय सूक्त' पर भाष्य लिखा है।

➢ इनका भाष्य 'अध्यात्म-परक' है।

7. सायण-

- सायण का समय 1315-1387 ई. तक (72 वर्ष तक जीवित रहे)
- वेदों के भाष्यकर्त्ताओं में आचार्य सायण का नाम विशेष उल्लेखनीय है।
- उन्होंने अपने बड़े भाई माधव के आदेशानुसार वेदभाष्य किया।
- सायण ने अपने भाई के नाम पर भाष्य का नाम **'माधवीय वेदार्थप्रकाश'** रखा।
- सायण ने **'ऋग्वेद-भाष्य-भूमिका'** नामक ग्रन्थ भी लिखा।

ऋग्वेद के पाश्चात्त्य विद्वान् एवं अनुवादक

1. **फ्रीड्रिश रोजेन** (Friedrich Rosen)- इन्होंने ऋग्वेद के केवल प्रथम अष्टक मूलपाठ लैटिन अनुवाद के साथ 1838 ई. में प्रकाशित किया।
2. **मैक्समूलर** इन्होंने सायण-भाष्य-सहित ऋग्वेद का सम्पादन किया। इनका समय 1849 से लेकर 1875 ई. तक है।
3. **थियोडोर आउफ्रेख्त-** इन्होंने रोमनलिपि में ऋग्वेद संहिता 1861-63 ई. में प्रकाशित की।
4. **विल्सन-**विल्सन ने सर्वप्रथम पूरे ऋग्वेद का अंग्रेजी में अनुवाद 1850 ई. में प्रकाशित किया।
5. **लुडविग -** इन्होंने सम्पूर्ण ऋग्वेद का छः भागों में जर्मन भाषा में अनुवाद किया।
6. **प्रो. ग्रिफिथ-** इन्होंने सम्पूर्ण ऋग्वेद का अंग्रेजी में पद्यानुवाद किया।
7. **प्रो. ओल्डेनबर्ग -** इन्होंने सम्पूर्ण ऋग्वेद का भाष्य जर्मन भाषा में दो भागों में प्रकाशित किया।
8. **लांग्ल्वा-** इन्होंने सम्पूर्ण ऋग्वेद का चार भागों में फ्रेंच भाषा में अनुवाद प्रकाशित किया।

ऋग्वेद के महत्त्वपूर्ण मन्त्र

1. **ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्, बाहू राजन्यः कृतः।**
   अर्थ- इनका मुख ब्राह्मण हुआ, दोनों बाहुओं से क्षत्रिय बनाया गया, दोनों उरुओं **(जघनों)** से वैश्य हुआ और पैरों से शूद्र उत्पन्न हुआ।
2. **सहस्राक्षेण शतशारदेन शतायुषा हविषा हार्षमेनम् ।**
   शतं यथेनं शरदो नयातीन्द्रो विश्वस्य दुरितस्य पारम् ॥
   अर्थ- मैंने जो आहुति दी है, उसके एक सहस्र नेत्र सौ वर्ष की परमायु और आयु देते हैं। (ऋग्वेद 10.161.3)
3. **अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् ।**
   होतारं रत्नधातमम् ॥ (ऋ. 1.1.1)
   अर्थ- यज्ञ के पुरोहित, दीप्तिमान्, देवों को बुलाने वाले ऋत्विक् और रत्नधारी अग्नि की मैं स्तुति करता हूँ।
4. **तस्मात् यज्ञात् सर्वहुतः ऋचः सामानि जज्ञिरे।**
   छन्दांसि जज्ञिरे तस्मात् यजुस्तस्मादजायत॥ (ऋ. 10.9.9)
   अर्थ- सर्वात्मक पुरुष के होम से युक्त उस यज्ञ से ऋक् और साम उत्पन्न हुए। उससे गायत्री आदि छन्द उत्पन्न हुए और उसी से यजुः की भी उत्पत्ति हुई।
5. **य आत्मदा बलदा...यस्यच्छायाऽमृतं मृत्युः।**
   अर्थ- जिन प्रजापति ने जीवात्मा को प्राण दिया है, बल दिया है, जिनकी आज्ञा सारे देवतामानते हैं, जिनकी छाया अमृत-रूपिणी है और जिनके वश में मृत्यु है, उन 'क' नामवाले प्रजापति की स्तुति करता हूँ। (ऋ. 10.121.2)
6. **अहं राष्ट्री संगमनी वसूनाम्-** (ऋ. 10.125.3)
   अर्थ- मैं राज्य की अधीश्वरी हूँ और धन देने वाली हूँ।
7. **हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ।** (ऋ. 10.121.1)
   अर्थ- सबसे पहले केवल परमात्मा या हिरण्यगर्भ थे। उत्पन्न होने पर वे सारे प्राणियों के अद्वितीय अधीश्वर थे।
8. **न वै स्त्रैणानि सख्यानि सन्ति।**
   अर्थ- स्त्रियों का प्रेम व मैत्री स्थायी नहीं होती ।
9. **पुरुष एवेदं सर्वं यद् भूतं, यच्च भव्यम् ।** (ऋ. 10.90.2)
   अर्थ- जो कुछ हुआ है और जो कुछ होने वाला है, सो सब ईश्वर (पुरुष) ही है।
10. **सहस्रशीर्षापुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।** (ऋ. 10.90.1)
    अर्थ- विराट् पुरुष (ईश्वर) सहस्र (अनन्त) शिरों, अनन्त चक्षुओं और अनन्त चरणों वाले हैं।
11. **ऋचां त्वः पोषमास्ते पुपुष्वान्।** (ऋ. 10.71.11)
    अर्थ- एक जन अनेक ऋचाओं का स्तव करते हुए, यज्ञानुष्ठान में सहायता करते हैं।
12. **सं गच्छध्वं सं वदध्वं,सं वो मनांसि जानताम्।**
    अर्थ- स्तोताओं, तुम मिलित होओ, एक साथ होकर स्तोत्र पढ़ो और तुम लोगों का मन एक सा हो। (10.191.2)
13. **समानी व आकूतिः, समाना हृदयानि वः।**
    अर्थ- पुरोहितों की स्तुति एक सी हो,इनका आगमन एक साथ हो, और इनके मन तथा चित्त एक समान हों।

14. **द्यावा चिदस्मै पृथिवी नमेते।** (ऋ. 2.12.13)
अर्थ- इन्द्र के लिये द्युलोक और पृथिवी लोक भी प्रणाम करने के लिये स्वयं झुक जाते हैं।

15. **पापमाहुर्यः स्वसारं निगच्छात्।** (ऋग् -10.10.12)
अर्थ- जो भ्राता भगिनी का सम्भोग करता है, उसे लोग पापी कहते हैं।

16. **बृहस्पतिर्या अविन्दन् निगूढाः सोमो ग्रावाण ऋषयश्च विप्राः।** (ऋग् -10.108.11)
अर्थ- बृहस्पति, सोम, सोमाभिषव कर्त्ता पत्थर, ऋषि और मेधावी लोग इस गुप्त स्थान में स्थित गायों की बात जान गये हैं।

ऋग्वेद संहिता-एक दृष्टि में

आचार्य - पैल
ऋत्विक् - होता
उपवेद - आयुर्वेद
अपरनाम - दशतयी, होतृवेद
विभाजन - 1. अष्टकक्रम 2. मण्डलक्रम
अष्टक - 8
मण्डल - 10
अध्याय - 64
वर्ग - 2024
मन्त्र - 10580-1/4 (10552)
अनुवाक - 85
सूक्त - 1028 (11 बालखिल्य सूक्त)
उत्पत्ति देवता - अग्नि
शाखा - 1. शाकल 2. बाष्कल 3. आश्वलायन 4. शांखायन 5. माण्डूकायन
ब्राह्मण - * ऐतरेय ब्राह्मण * कौषीतकि (शांखायन) ब्राह्मण
आरण्यक - * ऐतरेय आरण्यक * शांखायन आरण्यक
उपनिषद् - * ऐतरेय * कौषीतकि
श्रौतसूत्र - 1. आश्वलायन श्रौतसूत्र 2. शांखायन श्रौतसूत्र
गृह्यसूत्र - 1.आश्वलायन 2. शांखायन 3. कौषीतकि (शाम्बव्य)
धर्मसूत्र - 1.वसिष्ठ (वासिष्ठ) 2. विष्णु धर्मसूत्र
शुल्बसूत्र - उपलब्ध नहीं
शिक्षा - 1. पाणिनीय शिक्षा 2. वसिष्ठ शिक्षा
प्रातिशाख्य - ऋक्-प्रातिशाख्य
भाष्यकार - स्कन्दस्वामी, नारायण, उद्गीथ माधवभट्ट, वेङ्कटमाधव, धानुष्क यज्वा, आनन्दतीर्थ, आत्मानन्द, सायण।

वेद ऋग्वेद	भाष्यकार	भाष्य	सन् (वर्ष)
	स्कन्दस्वामी	प्रथम पाँच अष्टक पर	625 ई.
	नारायण	षष्ठ तथा सप्तम अष्टक पर	
	उद्गीथ	अष्टम अष्टक पर	
	वेङ्कटमाधव	सम्पूर्ण ऋग्वेद पर	1030-1150
	आनन्दतीर्थ	ऋग्वेद प्रथम 40 सूक्तों पर	**1198-1278 ई.**
	आत्मानन्द	अस्यवामीय सूक्त पर भाष्य	1100 ई.
	सायणाचार्य	'वेदार्थप्रकाश' नामक भाष्य	1315-1387 ई. (11वीं शती)
यजुर्वेद (शुक्लयजुर्वेद)			
	उव्वट (उवट)	शुक्लयजुर्वेदीय उव्वट भाष्य	11वीं शती
	महीधर	वेददीप (वाजसनेयि संहिता)	16वीं शती
	हलायुध	काण्व संहिता पर ब्राह्मणसर्वस्व	12वीं शती ई.
	सायण	काण्वसंहिता पर	

	अनन्ताचार्य	काण्वसंहिता के उत्तरार्ध पर	16वीं शती ई.
	आनन्दबोध		
	भट्टोपाध्याय	काण्वसंहिता पर	
	शौनक	माध्यन्दिनसंहिता 31वें अध्याय पर	
कृष्ण यजुर्वेद	कुण्डिन	तैत्तिरीय संहिता की वृत्ति	
	भवस्वामी	तैत्तिरीय संहिता भवस्वाम्यादिभाष्य	विक्रम से 800ई.पू
वेद	**भाष्यकार**	**भाष्य**	**सन् (वर्ष)**
	गुहदेव	तैत्तिरीय संहिता	8-9वीं वि.शती
	क्षुर	तैत्तिरीय संहिता	
	भट्टभास्कर मिश्र	ज्ञानयज्ञ तैत्तिरीय संहिता	11वीं शती ई.
	सायण	तैत्तिरीय संहिता	
सामवेद	माधव	विवरण (सामवेद संहिता)	600 ई. लगभग
	गुणविष्णु	छान्दोग्य-मन्त्रभाष्य	12वीं शती ई. उत्तरार्ध
	भरत स्वामी	सम्पूर्ण सामवेद पर	13-14वीं शती ई.
	भास्कर मिश्र, सायण	आर्षेय ब्राह्मण पर,सामवेदीय ब्राह्मणों पर	
अथर्ववेद	सायण	सम्पूर्ण अथर्ववेद पर	

चारों वेदों की शाखायें

शाकल, बाष्कल, माध्यन्दिन (वाजसनेयि), काण्व, तैत्तिरीय, मैत्रायणीय, कठ, कपिष्ठल, कौथुम, राणायनीय, जैमिनीय, शौनक, पैप्पलाद आदि

चारों वेदों की शाखायें

शाकल, बाष्कल, माध्यन्दिन (वाजसनेयि), काण्व, तैत्तिरीय, मैत्रायणीय, कठ, कपिष्ठल, कौथुम, राणायनीय, जैमिनीय, शौनक, पैप्पलाद आदि

वैदिक वाङ्मय-एक दृष्टि में

वेद

ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद

वेद		**आचार्य**	**वेद**		**देवता**
ऋग्वेद	-	पैल	ऋग्वेद	-	अग्नि
यजुर्वेद	-	वैशम्पायन	यजुर्वेद	-	वायु
सामवेद	-	जैमिनि	सामवेद	-	आदित्य (सूर्य)
अथर्ववेद	-	सुमन्तु	अथर्ववेद	-	सोम

वेद		**ऋत्विक्**	**वेद**		**उपवेद**
ऋग्वेद	-	होता	ऋग्वेद	-	आयुर्वेद
यजुर्वेद	-	अध्वर्यु	यजुर्वेद	-	धनुर्वेद
सामवेद	-	उद्गाता	सामवेद	-	गान्धर्ववेद
अथर्ववेद	-	ब्रह्मा	अथर्ववेद	-	सर्पवेद आदि

वेद	**–**	**शाखा**
ऋग्वेद	-	शाकल, बाष्कल
यजुर्वेद	-	माध्यन्दिन (वाजसनेयि),
	-	काण्व, तैत्तिरीय, मैत्रायणीय, कठ, कपिष्ठल
सामवेद	-	कौथुम, राणायनीय, जैमिनीय
अथर्ववेद	-	शौनक, पैप्पलाद

वेद	**-**	**ब्राह्मण**
ऋग्वेद	-	ऐतरेय, कौषीतकि (शांखायन)
* शुक्लयजुर्वेद	-	शतपथ ब्राह्मण
* कृष्णयजुर्वेद	-	तैत्तिरीय ब्राह्मण
सामवेद	-	तांड्य (पंचविंश), षड्विंश, सामविधान, आर्षेय देवताध्याय, उपनिषद्, (मन्त्रब्राह्मण), संहितोपनिषद् वंश ब्राह्मण
अथर्ववेद	-	गोपथ ब्राह्मण

वेद - आरण्यक

ऋग्वेद - ऐतरेय, शांखायन (कौषीतकि)

* शुक्लयजुर्वेद - बृहदारण्यक

* कृष्णयजुर्वेद - तैत्तिरीय

सामवेद - कोई आरण्यक प्राप्त नहीं होता

अथर्ववेद - कोई आरण्यक उपलब्ध नहीं

वेद - उपनिषद्

ऋग्वेद - ऐतरेय, शांखायन (कौषीतकि)

यजुर्वेद

* शुक्लयजुर्वेद - ईशोपनिषद् , बृहदारण्यकोपनिषद् ,

* कृष्णयजुर्वेद - तैत्तिरीय, कठ, श्वेताश्वतर, मैत्रायणी, महानारायण

सामवेद - छान्दोग्य, केनोपनिषद्

अथर्ववेद - प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य

वेद - शिक्षाग्रन्थ

ऋग्वेद - पाणिनीय शिक्षा, स्वराङ्कुशा, षोडशश्लोकी, शैशिरीय, आपिशलि शिक्षा

यजुर्वेद

* शुक्लयजुर्वेद - याज्ञवल्क्यशिक्षा, वासिष्ठी शिक्षा, कात्यायनी पाराशरी, माध्यन्दिनी शिक्षा आदि।

* कृष्णयजुर्वेद - भारद्वाज शिक्षा, व्यास शिक्षा, शम्भु शिक्षा, कौहलीय,सर्वसम्मत, आरण्य, सिद्धान्त शिक्षा आदि।

सामवेद - गौतमी शिक्षा, लोमशी शिक्षा, नारदीय शिक्षा।

अथर्ववेद - माण्डूकी शिक्षा।

वेद – श्रौतसूत्र

ऋग्वेद - शांखायन, आश्वलायन श्रौतसूत्र

यजुर्वेद
* शुक्लयजुर्वेद का कात्यायन श्रौतसूत्र
* कृष्णयजुर्वेद का बौधायन, वाधूल, मानव,

भारद्वाज, - आपस्तम्ब, काठक, सत्याषाढ (हिरण्यकेशी), वैखानस, वाराहश्रौतसूत्र

सामवेद - आर्षेय, कल्प या मशक,लाट्यायन, द्राह्यायण, जैमिनीय

अथर्ववेद - वैतान श्रौतसूत्र

वेद – गृह्यसूत्र

ऋग्वेद - आश्वलायन, शांखायन, कौषीतकि

यजुर्वेद

* शुक्लयजुर्वेद पारस्कर गृह्यसूत्र, बौधायन, मानव,- भारद्वाज, आपस्तम्ब, काठक, अग्निवेश्य, हिरण्यकेशि,वाराह, वैखानस

सामवेद - गोभिल, खादिर, द्राह्यायण, जैमिनीय, कौथुम

अथर्ववेद कौशिक गृह्यसूत्र

वेद - धर्मसूत्र

ऋग्वेद - वासिष्ठ धर्मसूत्र

यजुर्वेद - बौधायन, वैखानस, आपस्तम्ब, विष्णु, हारीत, हिरण्यकेशी, शंख

सामवेद - गौतम धर्मसूत्र

अथर्ववेद - कोई धर्मसूत्र प्राप्त नहीं है

वेद - शुल्बसूत्र

ऋग्वेद - कोई शुल्बसूत्र प्राप्त नहीं होता।

* शुक्लयजुर्वेद - कात्यायन शुल्बसूत्र

* कृष्णयजुर्वेद - बौधायन, आपस्तम्ब, मानव शुल्बसूत्र

सामवेद - कोई शुल्बसूत्र प्राप्त नहीं है।

अथर्ववेद - कोई शुल्बसूत्र प्राप्त नहीं है।

पाश्चात्त्य अनुवादक / सम्पादक

वैदिकवाङ्मय	अनुवादक	भाषा	सन् (वर्ष)
ऋग्वेद	विल्सन	अंग्रेजी	1850
	हेरमान ग्रासमान	जर्मन	1876-77
	अल्फ्रेड लुडविग	जर्मन	1876-88
	प्रो. ग्रिफिथ	अंग्रेजी (पद्यमय)	1889-92
	प्रो. ओल्डेनबर्ग	जर्मन	1909-12
	लांग्ल्वा	फ्रेंच	1848-51

वैदिकवाङ्मय	अनुवादक	भाषा	सन् (वर्ष)
ऐतरेयब्राह्मण	प्रो. हाग	अंग्रेजी	1993
	आउफ्रेक्ट	रोमन अक्षर	1879
कौषीतकि ब्राह्मण	प्रो. लिन्डनर	-	1887
	डॉ. कीथ	अंग्रेजी	1930
शुक्लयजुर्वेद	वेबर	देवनागरी	1849-52
वाजसनेयि/माध्यन्दिनसंहिता	प्रो. ग्रिफिथ	अंग्रेजी (पद्य)	1899
शतपथ ब्राह्मण	वेबर	-	1855
	कैलेंड	अंग्रेजी	1926
	ईग्लिंग	अंग्रेजी	-
तैत्तिरीय संहिता	वेबर	रोमन अक्षर	1871-72
मैत्रायणी संहिता	श्रेडर	-	1881-86
काठक संहिता	श्रेडर	-	1910
राणायनीय शाखा	स्टेवेन्सन	अंग्रेजी	1843
कौथुम शाखा	बेन्फे	जर्मन	1848
जैमिनीय शाखा	कैलेन्ड	रोमन अक्षर	1907
सामवेद	ग्रिफिथ	अंग्रेजी (पद्य)	1891-99
अद्भुत ब्राह्मण	वेबर	जर्मन	1858
अथर्ववेद	ग्रिफिथ	अंग्रेजी (पद्य)	1895-98
	ह्विटनी और लानमान	अंग्रेजी	1905
पैप्पलाद संहिता	ब्लूमफील्ड	अंग्रेजी	1901

यजुर्वेद

- विश्ववाङ्मय का सबसे प्राचीन ग्रन्थ वेद है,वेदों की संख्या चार है- ऋग्वेद,यजुर्वेद, सामवेद,अथर्ववेद। वेद शब्द ज्ञानार्थक **विद् धातु** से **घञ् प्रत्यय** के योग से निष्पन्न होता है जिसका अर्थ है – 'ज्ञान'। अतः वेद शब्द का अर्थ है- **'ज्ञान की राशि'** या **'ज्ञान का संग्रह ग्रन्थ'**। संस्कृत व्याकरण के अनुसार वेद शब्द चार धातुओं से विभिन्न अर्थों में बनता है-

सत्तायां विद्यते ज्ञाने, वेत्ति विन्ते विचारणे ।
विन्दति विन्दते प्राप्तौ, श्यन्लुक्श्नम्शेष्विदं क्रमात्॥

- अर्थात् विद् सत्तायाम्, विद् ज्ञाने,विद् विचारणे, विद्लृँ लाभे इन चार अर्थों में विद् धातु का प्रयोग होता है यहाँ पर विद् ज्ञाने धातु का ग्रहण किया गया है।
- आचार्य विष्णुमित्र ऋक्प्रातिशाख्य में इन्हीं (उपर्युक्त) अर्थों को समन्वित करते हुए कहते हैं- **'विद्यन्ते ज्ञायन्ते लभ्यन्ते एभिर्धर्मादि-पुरुषार्था इति वेदाः।'** अर्थात् वेद शब्द का भावार्थ है 'जिन ग्रन्थों के द्वारा धर्म,अर्थ,काम,और मोक्ष रूपी पुरुषार्थ चतुष्टय का बोध हो।
- आचार्य सायण तैत्तिरीय संहिता की भाष्य भूमिका में वेद की व्याख्या करते हुए कहते हैं-

''इष्टप्राप्त्यनिष्ट-परिहारयोरलौकिकम् उपायं यो ग्रन्थो वेदयति, स वेदः।''

- यजुर्वेद कर्मकाण्ड प्रधान ग्रन्थ है जिसका संकलन अध्वर्यु नामक ऋत्विक् के उपयोग के लिए होता था। यजुष् शब्द **यज् धातु से उसि प्रत्यय** के योग से सम्पन्न होता है जिसका अर्थ है– यज्ञ के साधक मन्त्र। यजुष् गद्य पद्यात्मक हैं इसीलिए इसे **'अनियताक्षरावसानम्'** कहा गया है,अर्थात् जिसमें पद्यों के समान अक्षरों की संख्या निश्चित नहीं होती है।
- विद्वानों के द्वारा यजुर्वेद के यजुष् शब्द की अनेक व्याख्याएँ प्रस्तुत की गई जो विभिन्न दृष्टिकोण के सूचक हैं यजुष् के कुछ

मुख्य अर्थ इसप्रकार हैं-

- आचार्य यास्क निरुक्त के सातवें अध्याय में यजुष् की व्याख्या करते हुए कहते हैं-**'यजुर्यजतेः'** अर्थात् यज्ञ से सम्बद्ध मन्त्रों को यजुष् कहते हैं।
  'शेषे यजुः शब्दः' अर्थात् पद्यबन्ध और गीति से रहित मन्त्रात्मक रचना को यजुष् कहते हैं।
- तैत्तिरीय संहिता की **भाष्यभूमिका** में सायण यजुर्वेद के महत्त्व का प्रतिपादन इस प्रकार करते हैं-

  'भित्तिस्थानीयो यजुर्वेदः, चित्रस्थानावितरौ। तस्मात् कर्मसु यजुर्वेदस्यैव प्राधान्यम्।' अर्थात् यजुर्वेद भित्ति है अन्य ऋग्वेद एवं सामवेद चित्र हैं इसलिए यजुर्वेद सबसे मुख्य है यज्ञ को आधार बनाकर ही ऋचाओं का पाठ और सामगान होता है।
- यजुर्वेद के दो सम्प्रदाय हैं– ब्रह्म सम्प्रदाय तथा आदित्य सम्प्रदाय । ब्रह्म सम्प्रदाय के अन्तर्गत कृष्ण यजुर्वेद तथा आदित्य सम्प्रदाय के अन्तर्गत शुक्ल यजुर्वेद आता है, इस प्रकार यजुर्वेद के दो भाग हैं। यद्यपि प्राचीनकाल में, यजुर्वेद की सौ या एक सौ एक शाखा **'एकशतमध्वर्युशाखाः' 'यजुरेकशताध्वकम्', 'शाखानां तु शतेनाथ यजुर्वेदमथाकरोत्',** प्राप्त होने का विवरण प्राप्त होता है।
- शुक्लयजुर्वेद की दो संहितायें प्राप्त होती हैं वाजसनेयि संहिता या माध्यन्दिन संहिता तथा काण्व संहिता दोनों ही संहिताओं में चालीस अध्याय प्राप्त होते हैं।
- सम्प्रति कृष्ण यजुर्वेद की केवल चार शाखाएँ ही उपलब्ध होती हैं- **तैत्तिरीय, मैत्रायणी, काठक, कपिष्ठल।**
- यज्ञादि कर्मों के प्रतिपादक गद्यात्मक मन्त्रों को यजुष् कहा जाता है।
- यजुर्वेद कर्मकाण्ड का वेद है जिसका संकलन अध्वर्यु नामक ऋत्विक् के उपयोग के लिए किया गया।

यजुर्वेद के सम्प्रदाय

ब्रह्म सम्प्रदाय	आदित्य सम्प्रदाय
(कृष्ण यजुर्वेद)	(शुक्ल यजुर्वेद)

- ब्रह्मसम्प्रदाय के अन्तर्गत कृष्ण यजुर्वेद तथा आदित्य सम्प्रदाय के अन्तर्गत शुक्ल यजुर्वेद है।
- पतञ्जलि ने महाभाष्य में यजुर्वेद की सौ या एक सौ एक शाखा का उल्लेख किया है-**'एकशतमध्वर्युशाखाः'**
- चरणव्यूह में यजुर्वेद की ८६ शाखाओं का उल्लेख प्राप्त होता है।
- वर्तमान समय में शुक्ल यजुर्वेद की दो तथा कृष्ण यजुर्वेद की चार शाखाओं का उल्लेख प्राप्त होता है।

यजुर्वेद की शाखाएँ

1. शुक्ल यजुर्वेद - क - माध्यन्दिन शाखा (वाजसनेयिशाखा)
   ख - काण्व शाखा
2. कृष्ण यजुर्वेद - क - तैत्तिरीय शाखा ख - मैत्रायणी शाखा
   ग - कठ शाखा घ - कपिष्ठल शाखा

- शुक्ल यजुर्वेद को 'वाजसनेयि संहिता' भी कहते हैं।
- शुक्ल यजुर्वेद के **ऋषि याज्ञवल्क्य हैं** जो मिथिला के निवासी थे।
- शुक्ल यजुर्वेद में यज्ञों से सम्बद्ध विशुद्ध मन्त्रात्मक भाग है।
- शुक्ल यजुर्वेद की दो शाखाएँ हैं, माध्यन्दिन या वाजसनेयि संहिता तथा काण्व संहिता।
- माध्यन्दिन शाखा में चालीस अध्याय, 303 अनुवाक तथा 1975 मन्त्र हैं।
- काण्व शाखा का विभाजन अध्याय और अनुवाक के रूप में हुआ है।
- काण्व शाखा में 40 अध्याय 328 अनुवाक और 2086 मन्त्र प्राप्त होते हैं।

शुक्ल यजुर्वेद

माध्यन्दिन या वाजसनेयि संहिता	काण्व संहिता
(40 अध्याय 303 अनुवाक और 1975 मन्त्र)	(40 अध्याय 328 अनुवाक और 2086 मन्त्र)

- वर्तमान समय में काण्वसंहिता का प्रचार महाराष्ट्र तथा माध्यन्दिन संहिता का प्रचार उत्तर भारत में है।
- प्राचीनकाल में काण्व शाखा का प्रचार उत्तर भारत में था।
- काण्वसंहिता में कुरु और पञ्चालों का उल्लेख प्राप्त होता है।

शुक्ल यजुर्वेद की विषय वस्तु

- प्रथम दो अध्यायों में दर्श एवं पौर्णमास यज्ञों से सम्बन्धित मन्त्र प्राप्त होते हैं।
- अध्याय तीन में अग्निहोत्र एवं चातुर्मास्य यज्ञों से सम्बन्धित मन्त्र प्राप्त होते हैं।
- अग्निष्टोम और सोमयाग का वर्णन अध्याय चार से आठ में वर्णित है।

- वाजपेय और राजसूय याग का वर्णन अध्याय नौ और दस में वर्णित है।
- अध्याय ग्यारह से अठारह तक अग्निचयन और विविध प्रकार की वेदियों के निर्माण से सम्बद्ध मन्त्र हैं।
- अध्याय सोलह को 'रुद्राध्याय' कहा जाता है।
- 'सौत्रामणी याग' का निरूपण अध्याय 19 से 21 में है।
- अध्याय 22-25 तक 'अश्वमेध यज्ञ' का विधान वर्णित है।
- 26 से 29 अध्याय को 'खिल अध्याय' कहते हैं।
- 'पुरुषमेध' का वर्णन अध्याय तीस में प्राप्त होता है।
- अध्याय 31 को 'पुरुषसूक्त' और 'विष्णुसूक्त' भी कहते हैं।
- विराट् पुरुष के दार्शनिक और आध्यात्मिक स्वरूप का वर्णन अध्याय 32 में है।
- अध्याय 33 में 'सर्वमेध सूक्त' है।
- शिवसंकल्प उपनिषद् या 'शिवसंकल्पसूक्त' अध्याय 34 में है।
- अध्याय 35 में 'पितृमेध' का वर्णन है।
- अध्याय 36-38 में 'प्रवर्ग्यनामक यज्ञ' से सम्बद्ध मन्त्र हैं।
- अध्याय 39 में 'अन्त्येष्टि' से सम्बन्धित मन्त्र हैं।
- अध्याय 39 को 'प्रायश्चित्त अध्याय' भी कहा जाता है।
- अध्याय 40 को 'ईशोपनिषद्' कहा जाता है।

शुक्ल यजुर्वेद के ब्राह्मण

- शुक्ल यजुर्वेद का केवल एक ब्राह्मण ग्रन्थ है - शतपथ ब्राह्मण
- शतपथ ब्राह्मण के रचयिता 'याज्ञवल्क्य' माने गए हैं।
- शतपथ ब्राह्मण का सम्बन्ध शुक्ल यजुर्वेद की माध्यन्दिन तथा काण्व दोनों शाखाओं से है।
- शतपथ ब्राह्मण में अध्यायों की संख्या 100 है।
- 'गणरत्न महोदधि' शतपथ ब्राह्मण को परिभाषित करते हुए कहते हैं, 'शतं पन्थानो मार्गा नामाध्याया यस्य तत् शतपथम्' अर्थात् जिसमें सौ अध्याय रूपी मार्ग हैं उसे शतपथ कहते हैं।
- काण्व शाखीय शतपथ ब्राह्मण का सम्पादन आचार्य **जे॰ एगलिंग** ने किया।
- काण्व शाखीय शतपथ ब्राह्मण में 104 अध्याय हैं।
- माध्यन्दिन शतपथ ब्राह्मण में 14 काण्ड ,100 अध्याय , 438ब्राह्मण तथा 7624 कंडिकाएँ हैं।
- **शतपथ ब्राह्मण के महत्त्वपूर्ण आख्यान -** मनु एवं श्रद्धा, जलप्लावन की कथा तथा मत्स्य, इन्द्र- वृत्र युद्ध, स्त्री - कामुक गन्धर्व, कद्रू - सुपर्णी, च्यवन - सुकन्या, स्वर्भानु और सूर्यग्रहण, नमुचि और वृत्र, पृथु वैन्य, पुरूरवा - उर्वशी, राजा केशिन्, वाणी का आख्यान, सृष्टि सम्बन्धी उपाख्यान।
- **शुक्लयजुर्वेदीय आरण्यक -** बृहदारण्यक
- शुक्ल यजुर्वेद के शतपथ ब्राह्मण की माध्यन्दिन और काण्व दोनों शाखाओं के अन्तिम छः अध्यायों को 'बृहदारण्यक' कहते हैं ।
- बृहदारण्यक का प्रथम प्रकाशन 1889 ई॰ **'आटो वोह्टलिङ्क'** ने किया।
- **शुक्लयजुर्वेद के उपनिषद् -** ईशावास्योपनिषद् , बृहदारण्यकोपनिषद्।

ईशावास्योपनिषद् का सामान्य परिचय

- ईशावास्योपनिषद् शुक्ल यजुर्वेद का 40 वाँ अध्याय है।
- ईशावास्योपनिषद् में कुल 18 मन्त्र हैं।
- ईशावास्योपनिषद् का प्रारम्भ 'ईशावास्यम्' से होता है।
- सबसे छोटा उपनिषद् किन्तु महत्त्व की दृष्टि से सर्वोपरि ।
- ईशावास्योपनिषद् में विद्या- अविद्या तथा सम्भूति- असम्भूति का निरूपण है।

बृहदारण्यकोपनिषद् का सामान्य परिचय

- बृहदारण्यकोपनिषद् शतपथ ब्राह्मण के 14 वें काण्ड का अन्तिम भाग है।
- बृहदारण्यकोपनिषद् सबसे बड़ा एवं प्राचीनतम उपनिषद् है।
- बृहदारण्यकोपनिषद् में तीन भाग हैं, प्रत्येक भाग में दो - दो अध्याय हैं।
- प्रथम भाग को मधुकाण्ड,द्वितीय भाग को याज्ञवल्क्यकाण्ड,तृतीय भाग को खिलकाण्ड कहते हैं।
- बृहदारण्यकोपनिषद् में कुल अध्यायों की संख्या छः है।
- प्रत्येक अध्याय ब्राह्मणों में विभाजित हैं, जो निम्नवत् है -

अध्याय	ब्राह्मण	मन्त्र
प्रथम अध्याय	छः ब्राह्मण	80
द्वितीय अध्याय	छः ब्राह्मण	66
तृतीय अध्याय	नौ ब्राह्मण	92
चतुर्थ अध्याय	छः ब्राह्मण	82
पञ्चम अध्याय	पन्द्रह ब्राह्मण	15
षष्ठ अध्याय	पाँच ब्राह्मण	75

- याज्ञवल्क्य - मैत्रेयी का संवाद बृहदारण्यकोपनिषद् में प्राप्त होता है।
- जनक और याज्ञवल्क्य संवाद, याज्ञवल्क्य और वचक्नु की कन्या गार्गी का संवाद भी इस उपनिषद् में प्राप्त होता है।

शुक्ल यजुर्वेद - एक अध्ययन

- **ऋत्विक् –** अध्वर्यु
- **शाखा–** माध्यन्दिन या वाजसनेयि शाखा -440 अध्याय, 303 अनुवाक, 1975 मन्त्र काण्वशाखा - 40 अध्याय, 328 अनुवाक, 2086 मन्त्र,
- शतपथ ब्राह्मण में यजुर्वेद के अक्षरों की संख्या 2,88000 (दो लाख अट्ठासी हजार) दी गयी है।
- **उपनिषद्-** ईशावास्योपनिषद्- 18 मन्त्र
- बृहदारण्यकोपनिषद्- 6 अध्याय, 47 ब्राह्मण

कल्पसूत्र-

1. **श्रौतसूत्र-** कात्यायन श्रौतसूत्र- 26 अध्याय
2. **गृह्यसूत्र-** पारस्कर गृह्यसूत्र- 3 काण्ड
3. **धर्मसूत्र-** हारीत धर्मसूत्र, शंख धर्मसूत्र
4. **शुल्बसूत्र-** (क) बौधायन शुल्बसूत्र- 3 परिच्छेद, 419सूत्र
   (ख) मानव शुल्बसूत्र
   (ग) आपस्तम्ब शुल्बसूत्र (6पटल, 21अध्याय, 498 सूत्र)
   (घ) कात्यायन शुल्बसूत्र, दो भाग
   (ङ) मैत्रायणीय शुल्बसूत्र
   (च) हिरण्यकेशी या सत्याषाढशुल्बसूत्र
   (छ) वराह शुल्बसूत्र

- **शिक्षाग्रन्थ-** याज्ञवल्क्य शिक्षा - (116 श्लोक)
- **प्रातिशाख्यग्रन्थ-** वाजसनेयि प्रातिशाख्य - रचयिता - कात्यायन अध्याय-8

कृष्णयजुर्वेद का सामान्य परिचय

- कृष्ण यजुर्वेद का सम्बन्ध 'ब्रह्म सम्प्रदाय' से है।
- इसमें मन्त्रों के साथ व्याख्या और विनियोग वाला अंश मिश्रित है।
- कृष्ण यजुर्वेद के पारायणकर्त्ता को 'मिश्र' नाम दिया गया है।
- चरणव्यूह में कृष्ण यजुर्वेद की 69 शाखा का उल्लेख मिलता है।
- कृष्ण यजुर्वेद में तैत्तिरीय शाखा के दो भेद हैं- औख्य,खांडिकेय।
- खांडिकेय के पाँच भेद - आपस्तम्ब, बौधायन, सत्याषाढ, हैरण्यकेश,काट्यायन।

कृष्ण यजुर्वेद की शाखा

तैत्तिरीयशाखा | मैत्रायणीशाखा | कठशाखा | कपिष्ठलशाखा

- वर्तमान समय में कृष्णयजुर्वेद की तैत्तिरीयसंहिता प्रतिनिधि संहिता है।
- इसके ऋषि तित्तिर हैं जो वैशम्पायन के शिष्य थे।
- तैत्तिरीय शाखा में 7 काण्ड, 44 प्रपाठक, 631अनुवाक हैं।
- तैत्तिरीय शाखा में मन्त्र और ब्राह्मण मिश्रित है।
- तैत्तिरीय संहिता का विशेष प्रचार महाराष्ट्र, आन्ध्र, दक्षिण भारत में है।
- आचार्य सायण ने सर्वप्रथम तैत्तिरीय संहिता का विस्तृत भाष्य किया था।
- भट्टभास्कर मिश्र ने 11वीं शती में ज्ञानयज्ञ नामक भाष्य तैत्तिरीय संहिता के ऊपर लिखा।
- तैत्तिरीय संहिता का अंग्रेजी में अनुवाद डा. कीथ ने किया।

मैत्रायणी संहिता की विषय वस्तु

काण्ड	विषयवस्तु
प्रथम काण्ड	संहिता, दर्शपूर्णमास, अध्वर, अग्निहोत्र, चातुर्मास्य, वाजपेय याग
द्वितीय काण्ड	काम्य इष्टियाँ, राजसूय और अग्निचिति
तृतीय काण्ड	अग्निचिति, अध्वर आदि की विधि, सौत्रामणी

	और अश्वमेध याग
चतुर्थ काण्ड	खिल नाम से प्रसिद्ध, राजसूय, अध्वर, प्रवर्ग्य आदि से सम्बन्धित सामग्री।

- मैत्रायणी संहिता में ऋग्वेद से 1701 ऋचाएँ उद्धृत की गई हैं।

काठक या कठ शाखा का सामान्य परिचय

- कठ शाखा चरकों की शाखा मानी जाती है।
- काठक शाखा पाँच खण्डों में विभक्त है।
- पाँच खण्डों के नाम हैं- इठिमिका, मध्यमिका, ओरिमिका, याज्यानुवाक्या, अश्वमेधादि अनुवचन।
- उपखण्डों को 'स्थानक' और अनुवचन नाम से सम्बोधित किया गया है।
- कठ शाखा में चालीस स्थानक, तेरह अनुवचन, 843 अनुवाक, 3091 मन्त्र।
  मन्त्र एवं ब्राह्मण की मिश्रित संख्या 18 हजार है।

खण्ड के नाम	स्थानक	विषय विवेचन
इठिमिका खण्ड	18	पुरोडाश, अध्वर, राजसूय वाजपेय आदि का वर्णन
मध्यमिका खण्ड	12	सावित्री, स्वर्ग,दीक्षित, आयुष्य पञ्चचूड़ आदि का वर्णन
ओरिमिका खण्ड	10	चातुर्मास्य, सौत्रामणी सत्र, प्रायश्चित्त, पुरोडाश ब्राह्मण, यजमान ब्राह्मण आदि का विवेचन याज्यानुवाक्या इसका समावेश ओरिमिका खण्ड
अश्वमेधादि अनुवचन	13	मन्त्र एवं ब्राह्मण भाग का मिश्रण।

- कठशाखा के विषय में पतञ्जलि का कथन- 'ग्रामे-ग्रामे काठकं कालापकं च प्रोच्यते'।

कठ-कपिष्ठल शाखा का सामान्य परिचय

- यह शाखा चरणव्यूह के अनुसार चरकों की 12 शाखाओं में से एक है।
- इस शाखा के प्रवर्तक कपिष्ठल ऋषि थे।
- कृष्ण यजुर्वेद की कठ कपिष्ठल शाखा अपूर्ण प्राप्त है।
- कठ-कपिष्ठल की केवल एक प्रति उपलब्ध है जो सरस्वती भवन पुस्तकालय काशी में सुरक्षित है।
- इस शाखा का विभाजन ऋग्वेद के समान अष्टक एवं अध्यायों में हैं।
- कठ-कपिष्ठल शाखा में कुल छः अष्टक, 48 अध्याय हैं।
- **कृष्णयजुर्वेदीय ब्राह्मण-** दो ब्राह्मण- तैत्तिरीय ब्राह्मण तथा मैत्रायणी ब्राह्मण
- तैत्तिरीय ब्राह्मण के रचयिता वैशम्पायन के शिष्य आचार्य तित्तिर हैं।
- तैत्तिरीय ब्राह्मण का प्रथम संस्करण 1890 में कलकत्ता सें प्रकाशित।
- तैत्तिरीय ब्राह्मण का द्वितीय संस्करण 1899 ई. में पूना से प्रकाशित।

तैत्तिरीय ब्राह्मण की विषय वस्तु

काण्ड	विषय वस्तु
प्रथम काण्ड	अग्न्याधान, गवामयन, वाजपेय, राजसूय सोमयाग नक्षत्रेष्टि का वर्णन
द्वितीय काण्ड	अग्निहोत्र, सौत्रामणी, बृहस्पतिसव, अनेक सूत्रों का वर्णन
तृतीय काण्ड	नक्षत्रेष्टि का वर्णन विस्तार के साथ, पुरुषमेध

मैत्रायणी ब्राह्मण का परिचय

- मैत्रायणी ब्राह्मण में तीन अध्याय हैं।
- मैत्रायणी ब्राह्मण मैत्रायणी संहिता का चतुर्थ अध्याय ही माना जाता है।
- 'रात्रि की उत्पत्ति' का आख्यान इस ब्राह्मण में प्राप्त होता है।
- 'पर्वतोपाख्यान' भी मैत्रायणी ब्राह्मण में वर्णित है।

कृष्ण यजुर्वेदीय ब्राह्मण

- तैत्तिरीय ब्राह्मण (3 काण्ड)
- मैत्रायणी ब्राह्मण (तीन अध्याय)

कृष्णयजुर्वेदीय आरण्यक का सामान्य परिचय

- कृष्ण यजुर्वेद के दो आरण्यक उपलब्ध हैं- तैत्तिरीय आरण्यक, मैत्रायणीय आरण्यक।

- **तैत्तिरीय आरण्यक-** राजेन्द्र लाल मिश्र ने 1782ई. में सायण भाष्य के साथ प्रकाशित किया।
- इसमें दस प्रपाठक या परिच्छेद हैं।
- प्रपाठकों का नामकरण उनके प्रथम पद के आधार पर किया गया है।
- तैत्तिरीय आरण्यक के दस प्रपाठक के नाम- भद्र, सह वै, चिति, युञ्जते, देव वै, परे, शिक्षा, ब्रह्मविद्या, भृगु, नारायणीय।
- तैत्तिरीय आरण्यक में कुल 170 अनुवाक हैं।
- सप्तम से नवम प्रपाठक को 'तैत्तिरीयोपनिषद्' कहते हैं।
- दशम प्रपाठक को 'महानारायणीयोपनिषद्' कहते हैं, जिसे 'खिल' भी कहते हैं।
- तैत्तिरीय आरण्यक में कुरुक्षेत्र, खाण्डव, पाञ्चाल, मत्स्य, काशी आदि के भौगोलिक नामों का उल्लेख है।
- 'श्रमण' शब्द का प्रयोग तपस्वी के अर्थ में किया गया है।
- तैत्तिरीय आरण्यक में जल के चार रूप बताए गये हैं- मेघ, विद्युत्, गर्जन, वृष्टि।
- जल के छः प्रकार बताये गए हैं- वृष्टि का जल, कूपजल, तडागजल, नद्यादि जल, पात्रजल, झरने का जल।

तैत्तिरीय आरण्यक में प्रतिपादित विषय

आरण्यक	प्रतिपादित विषय
प्रथम प्रपाठक	आरुण-केतुक नामक अग्नि की उपासना और इष्टका-चयन का वर्णन।
द्वितीय प्रपाठक	स्वाध्याय और पञ्च महायज्ञों का वर्णन
तृतीय प्रपाठक	चातुर्होत्र चिति से सम्बद्ध मन्त्र
चतुर्थ प्रपाठक	प्रवर्ग्य होम से सम्बद्ध मन्त्र
पञ्चम प्रपाठक	यज्ञ सम्बन्धी कतिपय संकेत
षष्ठ प्रपाठक	पितृमेध सम्बन्धी मन्त्रों का संकलन
सप्तम-नवम प्रपाठक	तैत्तिरीय उपनिषद्
दशम प्रपाठक	महानारायणीय उपनिषद् (खिलकाण्ड)

मैत्रायणीय आरण्यक का सामान्य परिचय

- मैत्रायणीय आरण्यक को मैत्रायणीय उपनिषद् भी कहते हैं।
- मैत्रायणीय आरण्यक में सात प्रपाठक हैं।
- इसमें आरण्यक और उपनिषद् दोनों के अंश मिश्रित हैं।
- मैत्रायणीय आरण्यक में परमात्मा को अग्नि और प्राण कहा गया है।
- अश्वपति, हरिश्चन्द्र, अम्बरीष, शर्याति, ययाति, युवनाश्व आदि राजाओं का उल्लेख मैत्रायणीय आरण्यक में प्राप्त होता है।

मैत्रायणीय आरण्यक में प्रतिपादित विषय

आरण्यक	प्रतिपादित विषय
प्रथम प्रपाठक	ब्रह्मयज्ञ। राजा बृहद्रथ को वैराग्य और मुनि शाकायन्य द्वारा उसे उपदेश
द्वितीय प्रपाठक	शाकायन्य द्वारा ब्रह्मविद्या का उपदेश
तृतीय प्रपाठक	जीवात्मा के स्वरूप का वर्णन, कर्मफल और पुनर्जन्म
चतुर्थ प्रपाठक	ब्रह्म-सायुज्य-प्राप्ति के उपाय
पञ्चम प्रपाठक	कौत्सायनी स्तुति, ब्रह्म की अनेक रूपों में स्थिति
षष्ठ प्रपाठक	ओम, प्रणव, उद्गीथ और गायत्री की उपासना, आत्मयज्ञ का वर्णन, षडंग योग, शब्द ब्रह्म, निर्विषय मन से मोक्षप्राप्ति।
सप्तम प्रपाठक	आत्म-स्वरूप वर्णन

कृष्ण यजुर्वेद के उपनिषद्

- तैत्तिरीयोपनिषद्, कठोपनिषद्, श्वेताश्वतरोपनिषद्, मैत्रायणीयोपनिषद्, महानारायणोपनिषद्।

तैत्तिरीयोपनिषद् का सामान्य परिचय

- तैत्तिरीय आरण्यक के तीन प्रपाठकों (7,8,9) को तैत्तिरीय उपनिषद् कहते हैं।
- तैत्तिरीय उपनिषद् का प्रारम्भ 'अथ शीक्षां व्याख्यास्यामः' से होता है।
- तैत्तिरीय उपनिषद् में तीन वल्ली हैं- शीक्षा वल्ली, ब्रह्मानन्द वल्ली, भृगुवल्ली।
- शीक्षा वल्ली में 12 अनुवाक, ब्रह्मानन्द वल्ली में नौ अनुवाक, भृगुवल्ली में 10 अनुवाक हैं।
- भृगु-वरुण संवाद, पञ्चकोश निरूपण का उल्लेख तैत्तिरीयोपनिषद् में प्राप्त होता है।

तैत्तिरीयोपनिषद् का विभाजन

वल्ली	अनुवाक
शीक्षा वल्ली	12
ब्रह्मानन्द वल्ली	9
भृगु वल्ली	10

कठोपनिषद् का सामान्य परिचय

- कठोपनिषद् कृष्णयजुर्वेद की कठ शाखा से सम्बन्धित है।
- कठोपनिषद् में दो अध्याय हैं, प्रत्येक अध्याय में तीन खण्ड हैं।
- यम-नचिकेता की कथा का वर्णन कठोपनिषद् में प्राप्त होता है।
- श्रेय-प्रेय का निरूपण कठोपनिषद् में प्राप्त होता है।

श्वेताश्वतरोपनिषद् का सामान्य परिचय

- श्वेताश्वतरोपनिषद् में कुल छः अध्याय हैं।
- इस उपनिषद् में सांख्य- योग, वेदान्त दर्शन के सिद्धान्त प्रतिपादित हैं।
- श्वेताश्वतरोपनिषद् में जगत् के मिथ्यात्व की कल्पना नहीं है।
- शिव को परमेश्वर कहा गया है।
- कपिल ऋषि का उल्लेख इस उपनिषद् में प्राप्त होता है।

मैत्रायणीयोपनिषद् का सामान्य परिचय

- इसे मैत्री उपनिषद् भी कहते हैं।
- इसमें सात अध्याय हैं।

श्वेताश्वतरोपनिषद् में प्रतिपादित विषय

अध्याय	प्रतिपादित विषय
प्रथम	हंस, त्रैतवाद, माया, क्षर-अक्षर, सत्य-तप से आत्मदर्शन
द्वितीय	योग, योगविधि, ब्रह्म तत्त्व का वर्णन
तृतीय	रुद्र, विश्वरूप, जीव का स्वरूप, आत्मा का स्वरूप
चतुर्थ	एकेश्वरवाद, त्रैतवाद, प्रकृति, माया-मायी, शिव ब्रह्मरूप
पञ्चम	क्षर-अक्षर, कपिल ऋषि, जीवात्मा का स्वरूप
षष्ठ	ब्रह्म के अनेक नाम, हंस, ईश्वर प्रकृति एवं जीव का नियन्ता, गुरुभक्ति

- मैत्रायणीय आरण्यक को ही मैत्रायणी उपनिषद् कहते हैं।
- इसमें वेद विरोधी सम्प्रदायों का उल्लेख है।
- आत्मा का बाह्य प्रतीक सूर्य है और आभ्यन्तर प्रतीक प्राण है।
- प्रकृति के सत्त्व, रजस् , तमस् इन तीन गुणों का ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र से सम्बन्ध बताया गया है।

महानारायणोपनिषद् का सामान्य परिचय

- तैत्तिरीय आरण्यक का दशम प्रपाठक महानारायणोपनिषद् कहा जाता है।
- इसके तीन पाठ मिलते हैं- द्रविण, आन्ध्र, कर्णाटक।
- इसे याज्ञिक्युपनिषद् भी कहते हैं।
- नारायण का परमात्म तत्त्व के रूप में उल्लेख है।

कृष्णयजुर्वेद–एक अध्ययन

ऋत्विक्-अध्वर्यु

शाखा-तैत्तिरीयशाखा- 7 काण्ड,44 प्रपाठक, 631 अनुवाक
मैत्रायणीयशाखा- 4 काण्ड, 54 प्रपाठक, 3144 मन्त्र
कठ(काठक)शाखा- 5खण्ड, 40स्थानक, 13अनुवचन, 843अनुवाक, 3091मन्त्र
कपिष्ठल(कठ)शाखा-6अष्टक, 48अध्याय

ब्राह्मण-
* तैत्तिरीय ब्राह्मण-3 काण्ड
* मैत्रायणीय ब्राह्मण-3 अध्याय

आरण्यक-
* तैत्तिरीय आरण्यक-10प्रपाठक
* मैत्रायणीय आरण्यक-सात प्रपाठक

उपनिषद्-
* तैत्तिरीयोपनिषद्-3वल्ली,
* कठोपनिषद्-2अध्याय
* श्वेताश्वतरोपनिषद्-6अध्याय
* मैत्रायणीयोपनिषद्-7अध्याय
* महानारायणोपनिषद्

श्रौतसूत्र-
* बौधायन श्रौतसूत्र-रचयिता बोधायन, 30प्रश्नों में विभाजित
* वाधूल श्रौतसूत्र
* मानव श्रौतसूत्र
* भारद्वाज श्रौतसूत्र
* आपस्तम्ब श्रौतसूत्र रचयिता-आपस्तम्ब
* काठक श्रौतसूत्र
* सत्याषाढ श्रौतसूत्र-24प्रश्न
* वाराह श्रौतसूत्र
* वैखानस श्रौतसूत्र-32 अध्याय

गृह्यसूत्र-
* बौधायन गृह्यसूत्र
* मानव गृह्यसूत्र
* भारद्वाज गृह्यसूत्र
* आपस्तम्ब गृह्यसूत्र
* काठक गृह्यसूत्र
* आग्निवेश्य गृह्यसूत्र
* हिरण्यकेशि गृह्यसूत्र
* वाराह गृह्यसूत्र
* वैखानस गृह्यसूत्र
* चारायणीय गृह्यसूत्र
* वैजवाप गृह्यसूत्र

शुल्ब सूत्र-
* बौधायन शुल्बसूत्र
* मानव शुल्बसूत्र
* आपस्तम्ब शुल्बसूत्र
* कात्यायन शुल्बसूत्र
* मैत्रायणीय शुल्बसूत्र
* हिरण्यकेशि (सत्याषाढ) शुल्बसूत्र
* वाराह शुल्बसूत्र

धर्मसूत्र-
* बौधायन धर्मसूत्र
* आपस्तम्ब धर्मसूत्र
* मानव धर्मसूत्र
* विष्णु धर्मसूत्र

नोट- इसके अलावा भरद्वाज, बृहस्पति आदि धर्मसूत्र भी प्राप्त होते हैं।

शिक्षा ग्रन्थ-
* व्यास शिक्षा
* वशिष्ठ शिक्षा
* भारद्वाज शिक्षा
* माण्डव्य शिक्षा

सामवेद

➢ **सामवेद का परिचय** - वैदिक वाङ्मय में सामवेद का विशिष्ट स्थान है। सामवेद वेदों का सार है। भारतीय परम्परा के अनुसार कृष्णद्वैपायन व्यास ने साममन्त्रों का भी संकलन किया जो सामवेदसंहिता के नाम से प्रसिद्ध है। बृहद्देवता ने स्पष्ट प्रतिपादित किया है कि 'जो साम को जानता है वह वेद के रहस्य को जानता है' (सामानि यो वेत्ति स वेद तत्त्वम्।

➢ गीता में भगवान् श्रीकृष्ण ने सामवेद को ही अपना स्वरूप मानकर इसकी महत्ता घोषित की है (वेदानां सामवेदोऽस्मि) ऋग्वेद कहता है कि जो व्यक्ति जागरणशील है उसी को साम की प्राप्ति होती है (यो जागार तमु सामानि यान्ति)। अथर्ववेद में साम को परब्रह्म का लोमभूत माना गया है (सामानि यस्य लोमानि) वस्तुतः साम के वैशिष्ट्य का अर्थ यही है कि वैदिक साहित्य में सामवेद का स्थान किसी भी अन्य वेद की अपेक्षा न्यून नहीं है। सामवेद उपासना का वेद है।

➢ **सामतात्पर्य-** साम अर्थात् स्वरों के आरोहावरोह से युक्त मन्त्रों का गान करना। साम का अर्थ है– गायन अर्थात् 'गीतियुक्त मन्त्र'। ऋचाएँ जब विशिष्ट गान पद्धति से गायी जाती हैं तो उसे 'साम' कहते हैं। **'साम'** शब्द से (ऋचाओं के) अक्षर एवं उनसे व्यक्त स्वरमालिका का ग्रहण होता है। **'स्वरलापन'** यह साम का प्रधान अंग है। जैमिनीय सूत्र में गीति को ही साम की संज्ञा प्रदान की गई है **(गीतिषु समाख्या)** बृहदारण्यकोपनिषद् में साम शब्द की व्युत्पत्ति इस प्रकार बताई है कि सा का अर्थ है 'ऋक्' और अम् का अर्थ है 'स्वर' अर्थात् ऋक् से सम्बद्ध स्वर प्रधान गायन को साम कहते हैं (सा च अमश्चेति तत्साम्नः सामत्वम्। तया सह सम्बद्धः अयो नाम स्वरः यत्र वर्तते तत्साम)

➢ **सामवेद संहिता का स्वरूप-**

- सामवेद का ऋत्विक् उद्गाता है।
- उद्गाता ऋग्वेद की ऋचाओं का शास्त्रीय तथा परम्परागत रूप में गायन करता है।
- 'ऋक् और साम' में परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध है।
- सामवेद में ऋग्वेद के लगभग सभी मण्डलों से मन्त्र संगृहीत हैं किन्तु अधिकांश मन्त्र आठवें तथा नवें मण्डल से ग्रहण किये गये हैं।

• बृहत् साम, रथन्तर साम आदि का ऋग्वेद में उल्लेख है।

सामवेद का विभाजन- प्राचीन दृष्टि से सामवेद को दो संहिताओं में विभाजित किया गया है।

1. आर्चिक संहिता 2. गान संहिता

- आर्चिक शब्द का अर्थ 'ऋक् समूह' है। आर्चिक संहिता के भी दो भेद किये गये हैं।

1. पूर्वार्चिक 2. उत्तरार्चिक

- गान संहिता को भी दो भागों में विभाजित किया गया है –

1. ग्रामगेय 2. आरण्यगेय

- सामवेद के दो मुख्य भाग हैं 1. पूर्वार्चिक 2. उत्तरार्चिक
- पूर्वार्चिक में चार काण्ड हैं - 1. आग्नेय 2. ऐन्द्र 3. पावमान 4. आरण्य

सामवेद

- आर्चिक संहिता
  - पूर्वार्चिक
  - उत्तरार्चिक
- गान संहिता
  - ग्रामगेय (वेयगान) — ऊहगान
  - आरण्यगेय — ऊह्यगान

- परिशिष्ट के रूप में महानाम्नी आर्चिक भी है।
- इसमें 6 अध्याय या प्रपाठक हैं। अध्यायों के अनुसार कांडो को बाँटा गया है।
- अध्यायों के खण्ड किये गये हैं।
- अध्याय 1 को 'आग्नेय काण्ड' माना जाता है।
- अध्याय 2 से 4 को 'ऐन्द्र काण्ड' माना जाता है।
- अध्याय 5 को 'पावमान काण्ड' माना जाता है।
- अध्याय 6 को 'आरण्य काण्ड' और परिशिष्ट को 'महानाम्नी आर्चिक' माना जाता है।

पूर्वार्चिक मन्त्र संख्या-650

- प्रथम से पञ्चम प्रपाठक **'ग्रामगान'** कहलाता है।
- छठा प्रपाठक **'अरण्यगान'** कहलाता है।

उत्तरार्चिक

- इसमें 9 प्रपाठक (21 अध्याय) हैं, कुल मन्त्र 1225 और कुल सूक्त 400 हैं।

पूर्वार्चिक विवरण

काण्ड	विषय	अध्याय (प्रपाठक)	खण्ड	मन्त्र
1. आग्नेय	अग्नि देवता	1	12	114
2. ऐन्द्र	इन्द्र देवता	2 से 4	12	352
3. पावमान	सोम देवता	5	11	119
4. आरण्यक	इन्द्र, अग्नि,सोम	6	5	55
5. महानाम्नी आर्चिक	इन्द्र	परिशिष्ट	-	10

- 400 सूक्तों में 287 सूक्तों में प्रत्येक में 3-3 मन्त्रों का समूह है।
- 66 सूक्तों में 2-2 मन्त्रों का समूह और शेष 47 सूक्तों में 1 से 12 तक मन्त्र समूह हैं।

उत्तरार्चिक

प्रपाठक	मन्त्र	सूक्त
9	1225	400

सामवेद मन्त्र संख्या वर्णन-

पूर्वार्चिक 650 + उत्तरार्चिक 1225 = कुल 1875

1875: ऋग्वेदीयमन्त्र 1771, नवीन मन्त्र 108

- सामवेद के कुल मन्त्र 1875 हैं।

सामवेदीय शाखाएँ- महाभाष्य में पतंजलि ने सामवेद की एक सहस्र शाखाओं का उल्लेख किया है, **(सहस्रवर्त्मा सामवेदाः)**। जैमिनिगृह्यसूत्र में 13 शाखाओं का उल्लेख मिलता है।

➢ जैमिनि, तलवकार, सात्युग्र, राणायनीय, दुर्वासस, भागुरि, गौरुण्डि, गौर्गुलजि,
औपममन्यव, कारडि, सावर्णि, गार्ग्य, वार्षगण्य और दैवन्त्य।

➢ उपर्युक्त 13 शाखाओं में से आजकल केवल तीन शाखाएं ही उपलब्ध हैं-

सामवेदीय शाखाएँ

कौथुमीय शाखा (गुजरात)	राणायनीय शाखा (महाराष्ट्र)	जैमिनीय शाखा (कर्णाटक)
अध्याय खण्ड मन्त्र	प्रपाठक अर्धप्रपाठक दशति मन्त्र	मन्त्र

सामवेदीय ब्राह्मण

- सामवेद के उपलब्ध ब्राह्मण 8 हैं।
- सायण ने इनका उल्लेख इस प्रकार किया है-

अष्टौ हि ब्राह्मणग्रन्थाः प्रौढं ब्राह्मणमादिमम्।
षड्विंशाख्यं द्वितीयं स्यात् ततः सामविधिर्भवेत्॥
आर्षेयं देवताध्यायो भवेदुपनिषत् ततः।
संहितोपनिषद् वंशो ग्रन्था अष्टावितीरिताः॥

1. तांड्य ब्राह्मण-

- इसे पंचविंश, महाब्राह्मण और ब्राह्मण भी कहते हैं।
- इसमें 25 अध्याय है तथा पाँच-पाँच अध्यायों की एक पंचिका है।
- इसका मुख्य प्रतिपाद्य विषय सोमयाग है।

2. षड्विंश ब्राह्मण-

- इसमें 26 अध्याय हैं।
- इसको पंचविंश (तांड्य का परिशिष्ट माना जाता है।)
- इसके अन्तिम अध्याय को 'अद्भुत ब्राह्मण' कहते हैं।

3. सामविधान ब्राह्मण-

- इसमें तीन प्रपाठक और 25 अनुवाक हैं।
- इसमें प्रतिपादित विषय अधिकांशतः धर्मशास्त्र के क्षेत्र में आते हैं।

4. आर्षेय ब्राह्मण-

- इस ब्राह्मण में 3 प्रपाठक हैं, जो 82 खण्डों में विभक्त हैं।
- इसमें सामगानों के नाम तथा उनके अन्य नामों का उल्लेख है।

5. दैवत ब्राह्मण-

- इसमें चार खण्ड हैं।
- यह सूत्र शैली में लिखा गया है।
- इसमें सामगानों के देवताओं का विशेषरूप से वर्णन है।

6. उपनिषद् ब्राह्मण-

- इसे मन्त्र ब्राह्मण और छान्दोग्य ब्राह्मण भी कहा जाता है।
- इसमें 10 प्रपाठक हैं, प्रत्येक प्रपाठक में 8-8 खण्ड हैं।
- इस पर दो व्याख्याएं हैं - 1. गुणविष्णु कृत छान्दोग्य मन्त्र-भाष्य
  2. सायण कृत-वेदार्थप्रकाश।

7. संहितोपनिषद् ब्राह्मण-

- संहितोपनिषद् रहस्य को बताने वाला यह ग्रन्थ ब्राह्मण ग्रन्थ माना जाता है।
- इसमें 5 खण्ड हैं जो सूत्रों में विभक्त हैं।

8. वंश ब्राह्मण-

- यह ब्राह्मण बहुत छोटा है। इसमें तीन खण्ड हैं।
- इसमें स्वयंभू ब्रह्मा से सामवेद की परम्परा का प्रारम्भ माना जाता है।

सामवेदीय अष्ट ब्राह्मण

तांड्य	षड्विंश	सामविधान	आर्षेय	दैवत	उपनिषद्	संहितोपनिषद्	वंश
25अध्याय	26अध्याय	3 प्रपाठक, 25 अनुवाक	3प्रपाठक	4खण्ड	10प्रपाठक	5खण्ड	3खण्ड

अन्य ब्राह्मण-

- आठ ब्राह्मणों के अतिरिक्त इसी वेद से सम्बद्ध जैमिनीय या तलवकार ब्राह्मण भी है जो 9 वाँ ब्राह्मण माना जाता है।
- जैमिनीय ब्राह्मण में 3 काण्ड हैं जो खण्डों में विभक्त हैं।

सामवेदीय आरण्यक-

- इसके दो आरण्यक प्राप्त होते हैं-

तलवकार (4 अध्याय)

छान्दोग्य (छान्दोग्योपनिषद् का प्रथम भाग)

सामवेदीय उपनिषद्-

- सामवेद के दो उपनिषद् प्राप्त होते हैं।

1. केन उपनिषद् 2. छान्दोग्य उपनिषद्

➢ **केन उपनिषद्-** केनोपनिषद् में 4 खण्ड हैं। प्रथम खण्ड-8 मन्त्र, द्वितीय खण्ड-5 मन्त्र, तृतीय खण्ड-12 मन्त्र, चतुर्थ खण्ड-9 मन्त्र

- इसको 'तलवकार उपनिषद्' भी कहते हैं।
- इसमें 4 खण्ड हैं।
- प्रथम दो खण्ड पद्यात्मक हैं और शेष दो गद्यात्मक हैं।

छान्दोग्य उपनिषद्-

- इसमें 8 अध्याय या प्रपाठक हैं।
- इसके प्रथम एवं द्वितीय अध्याय में ॐ, उद्गीथ एवं साम के गूढ़ रहस्यों का मार्मिक विवेचन है।

छान्दोग्योपनिषद्		
अध्याय	खण्ड	मन्त्र
प्रथम	13	104
द्वितीय	24	82
तृतीय	19	94
चतुर्थ	17	78
पञ्चम	24	88
षष्ठ	16	69
सप्तम	26	51
अष्टम	15	62

सामवेदीय प्रातिशाख्य ग्रन्थ-

➢ सामवेदीय प्रातिशाख्य ग्रन्थ मुख्य तीन हैं-

1- ऋक्तन्त्र 2- पुष्पसूत्र 3- सामतन्त्र

➢ ऋक्तन्त्र के प्रणेता आचार्य शाकटायन हैं।

➢ ऋक्तन्त्र में पाँच प्रपाठक हैं।

➢ पुष्पसूत्र के रचयिता गोभिल ऋषि हैं ।

➢ पुष्पसूत्र में 10 प्रपाठक हैं।

➢ सामतन्त्र के लेखक महर्षि औदव्रजि को माना जाता है।

➢ इसमें 13 प्रपाठक हैं।

सामवेदीय प्रातिशाख्य

प्रातिशाख्य	रचनाकार	प्रपाठक
ऋक्तन्त्र	शाकटायन	5
पुष्पसूत्र	गोभिल	10
सामतन्त्र	औदव्रजि	13

सामवेदीय शिक्षाग्रन्थ

सामवेद में 3 शिक्षा ग्रन्थ प्राप्त होते हैं-

शिक्षा	लेखक
1.गौतमी शिक्षा	गौतम
2.लोमशी शिक्षा	लोमश
3. नारदीय शिक्षा	नारद

सामवेदीय श्रौतसूत्र

➢ सामवेद के श्रौतसूत्र निम्नलिखित हैं -

आर्षेय (मशक), क्षुद्र कल्पसूत्र, जैमिनीय, लाट्यायन, द्राह्यायण, निदान, तथा उपनिदान।

➢ इनमें सामवेदीय प्रकाशित श्रौतसूत्रों की संख्या 4 है।

श्रौतसूत्र

आर्षेय या मशक कल्पसूत्र | लाट्यायन | द्राह्यायण | जैमिनीय

सामवेदीय गृह्यसूत्र

1- गोभिल गृह्यसूत्र 2- खादिर गृह्यसूत्र

3- द्राह्यायण गृह्यसूत्र 4- जैमिनीय गृह्यसूत्र

5- कौथुम गृह्यसूत्र

सामवेदीय धर्मसूत्र

➢ सामवेद का 'गौतम धर्मसूत्र' एकमात्र धर्मसूत्र है।

➢ इसके प्रणेता 'आचार्य गौतम' हैं।

➢ इसमें 28 अध्याय 1000 सूत्र हैं।

सामवेदीय कल्पसूत्रों का वर्गीकरण

श्रौतसूत्र	गृह्यसूत्र	धर्मसूत्र	शुल्बसूत्र
आर्षेय (मशक)	गोभिल	गौतम	कोई शुल्ब
लाट्यायन	खादिर		सूत्र नहीं
द्राह्मायण	द्राह्मायण		प्राप्त होता
जैमिनीय	जैमिनीय कौथुम		

सामवेद में सामगान के भेद -

➢ सामयोनि मन्त्रों का आश्रय लेकर ऋषियों ने विभिन्न गानों की रचना की है, सामगान के चार प्रकार हैं-

1-ग्रामगेयगान- इसे 'प्रकृतिगान' और 'गेयगान' भी कहते हैं।

2-आरण्यगान- इसे आरण्यक या **'रहस्यगान'** भी कहते हैं। यह वनों या पवित्र स्थानों पर ही गाया जाता है।

3-ऊहगान- ऊह का अर्थ है- विचारपूर्वक विन्यास।

➢ यह सोमयाग एवं विशेष धार्मिक अवसरों पर गाया जाता है।

4-ऊह्यगान- ऊह्यगान रहस्य गान है।

सामगान

1. ग्रामगेयगान 2. आरण्यगान 3. ऊहगान 4. ऊह्यगान

सामगान के विभाग

➢ सामगान के पाँच भाग निम्न हैं-

'प्रस्तावोद्गीथप्रतिहारोपद्रवनिधनानि भक्तयः'

अर्थात् सामगान के प्रस्ताव, उद्गीथ, प्रतिहार, उपद्रव और निधन ये पाँच भाग ह

भक्ति	गायक	मन्त्र का अंश
प्रस्ताव	प्रस्तोता	हुँ औग्नाइ
उद्गीथ	उद्गाता	ओम् आयाहि वीतये गृणानो हव्यदायते
प्रतिहार	प्रतिहर्ता	नि होता सत्सि बर्हिषि ओम्
उपद्रव	उद्गाता	नि होता सत्सि ब।
निधन	तीनों मिलकर	र्हिषि ओम्

सामविकार-

➢ सामगान में संगीत के अनुकूल जो शाब्दिक परिवर्तन किया जाता हैं, उसे सामविकार कहा जाता हैं। सामविकार के छः प्रकार होते हैं।

सामवेद के कुछ स्मरणीय तथ्य-

➢ सामवेद में गायन पद्धति है। इसमें स्वरों का सम्मिश्रण है।

➢ सामवेदीय मन्त्रों के ऊपर 1,2,3 संख्यायें दी गई हैं।

1- उदात्त 2- अनुदात्त 3-स्वरित

➢ नारदीय शिक्षा के अनुसार सामवेद में स्वर आदि के सूचक हैं-

''सप्त स्वराः, त्रयो ग्रामाः, मूर्छनास्त्वेकविंशतिः।
ताना एकोनपञ्चाशत्, इत्येतत् स्वरमण्डलम्।।''

सामविकार

विकार | विश्लेषण | विकर्षण | अभ्यास | विराम | स्तोभ

➢ अर्थात् स्वर सात हैं। ➢ ग्राम तीन हैं।

➢ मूर्च्छनाएँ 21 हैं। ➢ तान 49 हैं।

सप्त स्वर

षड्ज	-	(स)
ऋषभ	-	(रे)
गान्धार	-	(ग)
मध्यम	-	(म)
पंचम	-	(प)
धैवत	-	(ध)
निषाद	-	(नि)

सामवेदीय भाष्यकार

➢ सामवेद के भाष्यकार के रूप में इन आचार्यों का वर्णन प्राप्त होता है।

1. **माधव-** ये सामवेद के प्रथम भाष्यकार हैं। इनके भाष्य का नाम विवरण है।
2. **गुणविष्णु-** इन्होंने सामवेद की कौथुम शाखा पर 'छान्दोग्य-मन्त्रभाष्य' लिखा है।
3. **भरतस्वामी-** इन्होंने सम्पूर्ण सामवेद पर भाष्य लिखा था यह अभी प्रकाशित नहीं है।

भाष्यकार	भाष्य	वर्ष
माधव	विवरण	600 लगभग
गुणविष्णु	छान्दोग्य मन्त्रभाष्य	12 वीं शती ई. उत्तरार्ध
भरतस्वामी	सामवेदीय भाष्य	14 वीं शती ई. पूर्वार्ध

सामवेद के भारतीय अनुवादक-

	अनुवादक	भाषा		अनुवादक	भाषा
1.	सत्यव्रत	बंगला	4.	श्रीराम शर्मा	हिन्दी- भाष्य
2.	तुलसीराम स्वामी	हिन्दी- भाष्य	5.	वीरेन्द्र शास्त्री	हिन्दी- अनुवाद
3.	जयदेव विद्यालंकार	हिन्दी- भाष्य	6.	रामनाथ वेदालंकार	संस्कृत हिन्दी- भाष्य

सामवेद के पाश्चात्त्य अनुवादक

अनुवादक	विषय	भाषा	वर्ष
स्टेवेन्सन	राणायनीय शाखा	अंग्रेजी	1843 ई.
बेन्फे	कौथुम शाखा	जर्मन	1848 ई.
कैलेन्ड	जैमिनीय शाखा	रोमन	1907 ई.
ग्रिफिथ	सम्पूर्ण सामवेद	अंग्रेजी	1899 ई.
वेबर	अद्‌भुत ब्राह्मण	जर्मन	1858 ई.
बर्नेल	सामविधान ब्राह्मण दैवत ब्राह्मण,वंश-ब्राह्मण संहितोपनिषद् ब्राह्मण आर्षेय ब्राह्मण		1873 से 1877 तक
एर्टल	जैमिनीय उपनिषद्ब्राह्मण	अंग्रेजी	
कैलेण्ड	जैमिनीय ब्राह्मण	जर्मन	
स्टेनो कोनो	सामविधान ब्राह्मण		1893
ग्रास्ट्रा	जैमिनीय गृह्यसूत्र	डच	1906

➢ सामवेद संहिता - एक दृष्टि में

आचार्य - जैमिनि

ऋत्विक् - उद्गाता

उपवेद - गान्धर्ववेद

देवता - आदित्य (सूर्य)

विभाजन - दो भागों में (पूर्वार्चिक, उत्तरार्चिक)

पूर्वार्चिक - 4 काण्ड, 6 अध्याय (प्रपाठक)

उत्तरार्चिक - 9 प्रपाठक, 1225 मन्त्र, 400 सूक्त

शाखा - 1. कौथुमीय 2. राणायनीय 3. जैमिनीय

ब्राह्मण - 8 या 9

आरण्यक - 2 (तलवकार, छान्दोग्य)

उपनिषद् - 2 (केनोपनिषद्, छान्दोग्योपनिषद्)

प्रातिशाख्य - 3 (ऋक्तन्त्र, पुष्पसूत्र, सामतन्त्र)

शिक्षा - 3 (गौतमी, लोमशी, नारदीय)

श्रौतसूत्र - 4 (आर्षेय, लाट्यायन, द्राह्यायण, जैमिनीय)

गृह्यसूत्र - 5 (गोभिल, खादिर, द्राह्यायण, जैमिनीय, कौथुम)

धर्मसूत्र - 1 (गौतम धर्मसूत्र)

शुल्बसूत्र - नहीं प्राप्त होता है।

सामगान - 4 (ग्रामगेयगान, आरण्यगान, ऊहगान, ऊह्यगान)

सामविकार - 6 (विकार, विश्लेषण, विकर्षण, अभ्यास, विराम, स्तोभ)

सामभक्तियाँ - 5 (प्रस्ताव, उद्गीथ, प्रतिहार, उपद्रव, निधन)

भाष्यकार - माधव, गुणविष्णु, भरतस्वामी।

अथर्ववेद

- **अथर्ववेद का अर्थ-** 'अथर्वों का वेद।' अर्थात् अभिचार मन्त्रों से सम्बन्धित ज्ञान। वेदों की चारों संहिताओं में अथर्ववेद की एक निजी और अन्यतम विशिष्टता रही है। इस वेद के 'अथर्व' शब्द की सुन्दर व्याख्या यास्काचार्य के निरुक्त तथा गोपथ ब्राह्मण में उपलब्ध है। निरुक्त के अनुसार **'थर्व'** धातु गत्यर्थक है और अथर्व का अर्थ है- गतिहीन अथवा स्थिरता युक्त। अर्थात् जिसमें चित्त में स्थिरता एवं दृढ़ता लाई जा सके। तदनुसार गोपथ ब्राह्मण में प्रस्तुत है कि- समीपस्थ आत्मा को अपने अन्दर देखना।
- पाणिनीय धातु पाठ में **'थर्वी'** धातु हिंसा के अर्थ में पठित है। 'थर्व' धातु कुटिलता एवं हिंसावाची है। अतः अकुटिलता तथा अहिंसा योग से ब्रह्म प्राप्ति कराने के कारण इस संहिता को अथर्ववेद कहा गया।
- अथर्ववेद में विभिन्न ऋषियों के दृष्टमन्त्र हैं तथा अनेक विषयों का प्रतिपादन है, अतः इसके अनेक नाम पड़े हैं। अथर्ववेद तथा अन्य ग्रन्थों में अथर्ववेद के ये नाम प्राप्त होते हैं।

अथर्ववेद की शाखाएँ-

- पतञ्जलि ने महाभाष्य में 'नवधाऽथर्वणो वेदः' कहकर इस वेद की 9 शाखाओं का उल्लेख किया है जो इस प्रकार हैं- 1. पैप्पलाद 2. तौद (स्तौद) 3. मौद 4. शौनकीय 5. जाजल 6. जलद 7. ब्रह्मवद 8. देवदर्श 9. चारणवैद्य
- प्रपंचहृदय, चरणव्यूह और सायण की अथर्ववेद-भाष्य भूमिका में भी नौ शाखाओं का उल्लेख मिलता है।
- इसमें केवल पैप्पलाद एवं शौनकीय शाखा उपलब्ध होती है।

अथर्ववेद के उपवेद

- गोपथ ब्राह्मण में अथर्ववेद के 5 उपवेद का उल्लेख है- 1. सर्पवेद 2. पिशाचवेद 3. असुरवेद 4. इतिहासवेद 5.पुराणवेद

अथर्ववेद के अपर नाम

- ब्रह्मवेद, अथर्वाङ्गिरोवेद, भिषग्वेद, क्षत्रवेद, महीवेद, छन्दोवेद, अंगिरसवेद, भैषज्यवेद, भृग्वंगिरोवेद

अथर्ववेद की शाखाएँ (9)

पैप्पलाद | तौद | मौद | शौनकीय | जाजल | जलद | ब्रह्मवद | देवदर्श | चारणवैद्य

अथर्ववेद उपलब्ध शाखा (2)

पैप्पलाद | शौनकीय

अथर्ववेद के उपवेद (5)

सर्पवेद | पिशाचवेद | असुरवेद | इतिहासवेद | पुराणवेद

अथर्ववेद के अपर नाम

ब्रह्मवेद | अथर्वाङ्गिरोवेद | भिषग्वेद | क्षत्रवेद | महीवेद | छन्दोवेद

अंगिरसवेद | भैषज्यवेद | भृंग्वगिरोवेद

अथर्ववेद की शाखाओं के उल्लेखकर्त्ता

पतञ्जलि (महाभाष्य) (9) | चरणव्यूह (9) | प्रपंचहृदय (9) | सायण (9)

अथर्ववेद की उपलब्ध शाखा

पैप्पलाद
1. पिप्पलाद ऋषि के नाम पर नामकरण
2. एकमात्र प्रति काश्मीर में शारदा लिपि
3. प्रपञ्चहृदय माट ने 20 काण्ड बताया

शौनकीय
1. वर्तमान में प्रचलित अथर्ववेद संहिता यही है।
2. 20 काण्ड,730 सूक्त, 5987 मन्त्र
3. सबसे बड़ा-काण्ड-20वाँ (958 मन्त्र)
4. सबसे छोटा काण्ड-17 वाँ (30 मन्त्र)
5. गोपथ ब्राह्मण इसी शाखा से है।

अथर्ववेद की उपलब्ध शाखा

1. **शौनकीय शाखा (शौनक)**

- आजकल प्रचलित अथर्ववेद संहिता शौनकीय शाखा ही है ।
- इसमें 20 काण्ड,730 सूक्त, 5987 मन्त्र हैं।
- इसमें सबसे बड़े तीन काण्ड हैं -काण्ड-20 (958 मन्त्र)
  काण्ड- 6 (454 मन्त्र)
  काण्ड-19 (453 मन्त्र)
- सबसे छोटा काण्ड-17 वाँ काण्ड है (30 मन्त्र)

2. **पैप्पलाद शाखा**

- पिप्पलाद ऋषि के नाम पर इस शाखा का नामकरण हुआ पैप्पलाद।
- इस शाखा की संहिता 'पैप्पलाद संहिता' है।
- इस शाखा की एकमात्र प्रति काश्मीर में शारदा लिपि में प्राप्त हुई थी।
- तत्कालीन काश्मीर नरेश ने 1875 ई0 में वह प्रति प्रसिद्ध जर्मन विद्वान् डा0 राय को उपहार रूप में दी।
- प्रपञ्चहृदयकार ने पैप्पलाद शाखा का संकेत किया है। उन्होंने पैप्पलाद शाखा को 20 काण्डों का बताया।
- 1901 ई0 में अमेरिका में इसकी फोटो स्टेट प्रति छपी, बाद में डॉ0 रघुवीर ने भी इसका सुन्दर संस्करण प्रकाशित किया ।
- पतञ्जलि के प्रमाण से यह स्पष्ट है कि महाभाष्य काल में अथर्ववेद की यही शाखा सर्वाधिक प्रचलित थी।
- अथर्ववेद के देवता-सोम
- अथर्ववेद के ऋषि- अथर्वा ऋषि
- अथर्ववेद के ऋत्विक् - ब्रह्मा

अथर्ववेद के महत्त्वपूर्ण सूक्त

1. पृथिवीसूक्त (12वाँ काण्ड)
2. ब्रह्मचर्य सूक्त (11वाँ काण्ड)
3. काल सूक्त (19वाँ काण्ड)
4. विवाह सूक्त (14वाँ काण्ड)
5. व्रात्य सूक्त (15वाँ काण्ड)
6. मधुविद्या सूक्त (9वाँ काण्ड)
7. ब्रह्मविद्या सूक्त
8. रोहित सूक्त (13वाँ काण्ड)
9. कौशिक सूक्त
10. आयुष्यकर्म सूक्त
11. भैषज्यकर्म सूक्त
12. आरोग्य मन्त्र सूक्त
13. पौष्टिक मन्त्र
14. शान्ति सूक्त
15. प्रकीर्ण सूक्त

अथर्ववेद

देवता	ऋषि	ऋत्विक्
सोम	अथर्वाऋषि	ब्रह्मा

अथर्ववेद के कुछ महत्त्वपूर्ण सूक्त

* पृथिवीसूक्त * ब्रह्मचर्यसूक्त * कालसूक्त
* विवाहसूक्त * व्रात्यसूक्त * मधुविद्यासूक्त
* ब्रह्मविद्यासूक्त * रोहितसूक्त * कौशिकसूक्त
* आयुष्यकर्मसूक्त * भैषज्यकर्मसूक्त * आरोग्यमन्त्रसूक्त
* पौष्टिकमन्त्र * शान्तिसूक्त * प्रकीर्णसूक्त

अथर्ववेद ब्राह्मण

गोपथ ब्राह्मण
- पूर्वभाग (5 प्रपाठक) — 135 कण्डिकाएँ
- उत्तरभाग (6 प्रपाठक) — 123 कण्डिकाए

अथर्ववेदीय-ब्राह्मण

- अथर्ववेद का एकमात्र ब्राह्मण गोपथ ब्राह्मण है।
- गोपथ ब्राह्मण पैप्पलाद शाखा से संबद्ध है।
- पैप्पलाद शाखा के अथर्ववेद का प्रथम मन्त्र- 'शं नो देवीरभिष्टये' है।
- गोपथ ब्राह्मण दो भागों में विभक्त है- पूर्वभाग (5 प्रपाठक) उत्तरभाग (6 प्रपाठक) = 11 प्रपाठक हैं।
- पूर्व गोपथ ब्राह्मण में 135 कण्डिकाएँ हैं। उत्तर गोपथ ब्राह्मण में 123 कण्डिकाएँ।

  कुल मिलाकर गोपथ ब्राह्मण में 11 प्रपाठक 258 कण्डिकाएँ हैं। अथर्ववेद का आरण्यक नहीं उपलब्ध है।

अथर्ववेदीय उपनिषद्

➢ अथर्ववेद के उपलब्ध उपनिषद् तीन हैं –
(1) प्रश्नोपनिषद् (2) मुण्डकोपनिषद् (3) माण्डूक्योपनिषद्

प्रश्न उपनिषद्

➢ यह अथर्ववेद की पैप्पलाद शाखा से सम्बन्धित है जो सम्पूर्ण गद्यमय है।

➢ पिप्पलाद ऋषि अपने छह शिष्य ऋषियों द्वारा पूछे गए अध्यात्म विषयक प्रश्नों कासमुचित उत्तर देते हैं इन प्रश्नों के कारण ही इस उपनिषद् का नाम प्रश्नोपनिषद् पड़ा।

➢ छह शिष्यों के नाम इस प्रकार हैं-
1. कबन्धी कात्यायन 2. भार्गव वैदर्भि
3. कौसल्य आश्वलायन 4. सौर्य्यायणी
5. शैव्यसत्यकाम 6. सुकेशा भारद्वाज

अथर्ववेदीय उपनिषद्		
प्रश्न उपनिषद्	**मुण्डक उपनिषद्**	**माण्डूक्य उपनिषद्**
(सम्पूर्ण गद्यमय) * पिप्पलाद ऋषि द्वारा छः शिष्यों को आध्यात्मिक प्रश्नों का उत्तर देना * इसी कारण प्रश्न उपनिषद् नाम पड़ा	(3 मुण्डक) * हर मुण्डक 2-2 *खण्डों में 'सत्यमेव जयते' महावाक्य * 'द्वा सुपर्णा सयुजा' मन्त्र * 'वेदान्त' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग * चतुष्पाद आत्मा का वर्णन	(लघुकाय) * कुल 12 वाक्य। खण्ड ऋचा कण्डिका * ॐकार का विशेष वर्णन * ब्रह्म की चार अवस्थाएं वर्णित

2. मुण्डकोपनिषद्

➢ अथर्ववेदीय मुण्डकोपनिषद् कुल तीन मुण्डकों तथा प्रत्येक मुण्डक दो-दो खण्डों में विभक्त है।

➢ यह मुण्डक अर्थात् संन्यासियों के लिए विरचित है।

➢ इस उपनिषद् में ब्रह्मा ने अपने ज्येष्ठ पुत्र अथर्वा (अर्थवन्) को ब्रह्मविद्या का उपदेश दिया है।

➢ प्रसिद्ध वाक्य **'सत्यमेव जयते'** इसी उपनिषद् में है।

➢ द्वैतवाद का प्रतिपादक **''द्वा सुपर्णा सयुजा''** मन्त्र इसी उपनिषद् का है।

➢ वेदान्त शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम इसी उपनिषद् में उपलब्ध है।

3. माण्डूक्योपनिषद्

➢ यह उपनिषद् लघुकाय है। लघुता के कारण भी और भाव गाम्भीर्य के कारण बहुत महत्त्वपूर्ण है।

➢ इसमें कुल 12 वाक्य/खण्ड / कण्डिकाएँ हैं।

➢ इसमें विशेष रूप से ओम्कार का रहस्य वर्णित है।

➢ इसमें बताया गया है कि यह सारा संसार, वर्तमान, भूत और भविष्य सब कुछ 'ओम्' की ही व्याख्या है।

➢ इसी में ही ब्रह्म की चार अवस्थाएं बताई गई हैं जागृत, स्वप्न, सुषुप्ति, तुरीय।

➢ इसी सन्दर्भ में चतुष्पाद आत्मा का सूक्ष्मविवेचन भी प्राप्त होता है।

अथर्ववेदीय कल्पसूत्र

श्रौतसूत्र	गृह्यसूत्र	धर्मसूत्र	शुल्बसूत्र
वैतानसूत्र	कौशिक सूत्र	उपलब्ध	उपलब्ध
8 अध्याय	14 अध्याय	नहीं हैं।	नहीं हैं।
43 कण्डिकायें	141 कण्डिकायें		

अथर्ववेदीय श्रौतसूत्र

➢ अथर्ववेद का वैतान श्रौतसूत्र ही उपलब्ध है।
वैतान श्रौतसूत्र - ब्रह्मा के सभी कर्तव्य, इस श्रौतसूत्र के पहले ही अध्याय में दर्शपूर्ण मास के विवरण में प्रतिपादित हैं।

➢ यह श्रौतसूत्र गोपथ ब्राह्मण पर आश्रित है।

➢ इसमें 8 अध्याय और 43 कण्डिकाएँ हैं।

➢ ये श्रौत कर्म बतलाए गए हैं- दर्शपूर्णमास, अग्न्याधेय, उक्थ्य, षोडशी
अतिरात्र, वाजपेय, अग्निचयन, राजसूय आदि।

अथर्ववेदीय-गृह्यसूत्र

➢ अथर्ववेद का एक मात्र गृह्यसूत्र कौशिक (कौशिकसूत्र) उपलब्ध है।

➢ कौशिक गृह्यसूत्र का अथर्ववेद की शौनकीय शाखा से विशेष सम्बन्ध है।

➢ इसका विभाजन 14 तथा 141 कण्डिकाओं में हुआ है।

➢ शान्तिकर्म और अभिचार कर्मों का विशद विवेचन है।

➢ इसमें प्रायः प्रायश्चित्त कर्म और भविष्यवाणी का विशद विवेचन है।

➢ कौशिक सूत्र को 'संहिता विधि' या **'संहिता कल्प'** संज्ञा प्राप्त है।

- अथर्ववेद का धर्मसूत्र नहीं उपलब्ध है।
- अथर्ववेद का शुल्बसूत्र नहीं उपलब्ध है।

अथर्ववेदीय शिक्षा ग्रन्थ

- अथर्ववेद का केवल एक शिक्षाग्रन्थ है – **माण्डूकी शिक्षा**
- यह श्लोकात्मक है।
- साम स्वरों का इसमें विशद विवेचन है। इसमें कुल 179 श्लोक हैं।
- अथर्ववेद के स्वरों तथा वर्णों को भली-भाँति जानने के लिए यह शिक्षा उपयोगी है।

अथर्ववेदीय प्रातिशाख्य

- अथर्ववेद के दो प्रातिशाख्य ग्रन्थ उपलब्ध हैं।
  * शौनकीय चतुरध्यायिका
  * अथर्ववेद प्रातिशाख्य

अथर्ववेदीय शिक्षाग्रन्थ

माण्डूकी शिक्षा

179 श्लोक

साम स्वरों और वर्णों का वर्णन

अथर्ववेदीय प्रातिशाख्य

* शौनकीय चतुरध्यायिका	* अथर्ववेद प्रातिशाख्य
* 4 अध्याय	* 3 प्रपाठक
* सूत्र संख्या – 434	* प्रथम प्रपाठक में 3 पाद
* सबसे प्राचीन प्रातिशाख्य	* द्वितीय और तृतीय प्रपाठक में 4पाद
	* कुल सूत्र संख्या 221 है।

1. शौनकीय चतुरध्यायिका

- इसके लेखक शौनक हैं।
- इसमें चार अध्याय हैं और सूत्रसंख्या 434 है।
- 1. ध्वनि विचार 2. सन्धि विवेचन 3. संहिता पाठ में दीर्घत्व, द्वित्व, णत्व, स्वरसन्धि। 4. अवग्रह, प्रगृह्य आदि का विवेचन।
- यही सबसे प्राचीन अथर्ववेदीय प्रातिशाख्य है।
- इसका इंग्लिश अनुवाद के सहित संस्करण डॉ0 व्हिटनी ने प्रकाशित किया है।
  * प्रथम अध्याय में 105 सूत्र
  * द्वितीय अध्याय में 107 सूत्र
  * तृतीय अध्याय में 96 सूत्र
  * चतुर्थ अध्याय में 126 सूत्र

2. अथर्ववेदीय प्रातिशाख्य

- यह प्रपाठकों में विभक्त है।
- प्रपाठक पुनः पादों तथा सूत्रों में विभक्त हैं।
- प्रथम प्रपाठक में 3 पाद हैं।
- द्वितीय और तृतीय प्रपाठक में चार चार पाद हैं।
- कुल सूत्र संख्या 221 है।
- इस प्रातिशाख्य में सन्धि,स्वर तथा पदपाठ के नियम बताये गए हैं।
- जिनमें स्वरों का वर्णन अधिक विस्तार से किया गया है।
- डॉ. सूर्यकान्त ने इसका एक सुन्दर संस्करण 1940 में लाहौर से प्रकाशित किया था।
- इस ग्रन्थ की भाषा शैली सूत्रात्मक है।
- इस प्रातिशाख्य ग्रन्थ में अथर्ववेद के उच्चारण सम्बन्धी नियमों का भी उल्लेख है।

अथर्ववेद के भारतीय भाष्यकार

दुर्गादास लाहिड़ी

- सायण-भाष्य सहित अथर्ववेद (शौनक शाखा) को 5 भागों में प्रकाशित किया।

शंकर पाण्डुरंग -

- अथर्ववेद का सायण भाष्य-सहित संस्करण 4 भागों में निकाला था (बम्बई 1898 ई.)
- यह बहुत शुद्ध संस्करण है।

सातवलेकर

- अथर्ववेद संहिता (शौनकीय) 1943 ई0 में प्रकाशित की।
- इन्होंने 'अथर्ववेद' का सुबोध-भाष्य 5 भागों में प्रकाशित किया।
- इन्हें आधुनिक युग का 'सायण' कहा जाता है।
- यह अथर्ववेद का सर्वोत्तम व्याख्या ग्रन्थ है।
- यह ग्रन्थ श्री सातवलेकर के अगाध वेदज्ञान और अथक परिश्रम का परिचायक है।

क्षेमकरण त्रिवेदी

- सम्पूर्ण ऋग्वेद का हिन्दी भाष्य किया है।

जयदेव विद्यालंकार

- सम्पूर्ण अथर्ववेद का हिन्दी भाष्य किया ।

श्रीरामशर्मा

- इन्होंने इसे हिन्दी अनुवाद के साथ प्रकाशित किया है।

विश्वबन्धु-

➢ सायण भाष्य सहित अथर्ववेद 5 भागों में निकाला है।

भगवद्दत्त

➢ अथर्ववेदीय पंचपटलिका और माण्डूकी शिक्षा पर भाष्य टीका लिखी

विश्वबन्धु-

➢ अथर्ववेदीय प्रातिशाख्य और अथर्ववेदीय बृहत् सर्वानुक्रमणी पर भाष्यटीका लिखी –

➢ गोपथ ब्राह्मण पर भाष्य लिखा - **राजेन्द्र लाल मिश्र**

क्षेमकरण त्रिवेदी -

➢ गोपथ ब्राह्मण हिन्दी अनुवाद सहित प्रकाशित किया।

डॉ0 विजयपाल शास्त्री-

➢ गोपथ ब्राह्मण पर भाष्य मिलता है।

अथर्ववेदीय पाश्चात्त्य विद्वान्

रोठ और ह्विटनी

➢ अथर्ववेद संहिता (शौनकीय शाखा) का सर्वप्रथम संपादन किया और 1856 ई0 में उसे प्रकाशित किया।

ब्लूम फील्ड और गार्बे

➢ अथर्ववेद (पैप्पलाद शाखा) की एक अति जीर्ण काश्मीर से शारदा लिपि में प्राप्त प्रति से फोटो-प्रति तीन बड़ी जिल्दों में 1901 ई0 में छपवाई।

कैलेण्ड-

➢ अथर्ववेद- संहिता का एक आलोचनात्मक संस्करण उट्रिच (हालैंड) से प्रकाशित किया।

ग्रिफिथ-

➢ अथर्ववेद का अंग्रेजी में पद्यानुवाद वाराणसी से 1895-1898 में छपवाया था।

ह्विटनी और लानामान-

➢ अथर्ववेद का अंग्रेजी में अनुवाद 150 पृष्ठ की भूमिका तथा विविध टिप्पणियों से युक्त है।

➢ जो 1905 ई0 में दो भागों में प्रकाशित किया।

ब्लूमफील्ड

➢ पैप्पलाद संहिता का अंग्रेजी में अनुवाद 1901 ई0 में प्रकाशित किया था ।

अथर्ववेदीय ब्राह्मण के पाश्चात्त्य अनुवादक गास्ट्रा-

➢ गोपथ ब्राह्मण का एक सुन्दर संस्करण 1919 ई0 में प्रकाशित किया।

अथर्ववेदीय कल्पसूत्र के पाश्चात्त्य अनुवादक

ब्लूमफील्ड-

➢ अथर्ववेदीय कौशिक सूत्र 1890 ई0 में प्रकाशित किया था ।

अथर्ववेद संहिता -एक दृष्टि में

➢ **आचार्य -** सुमन्तु, **ऋषि-**अथर्वा, **ऋत्विक्-** ब्रह्मा

➢ **उपवेद-** पिशाचवेद, सर्पवेद,पुराणवेद,इतिहासवेद,असुरवेद

➢ **अपरनाम -** ब्रह्मवेद, क्षत्रवेद, महीवेद, भैषज्यवेद, छन्दोवेद, भिषग्वेद, अथर्वाङ्गिरोवेद, आंगिरसवेद, भृग्वंगिरो वेद

➢ **विभाजन-** 20 काण्ड

➢ **उत्पत्ति देवता-** सोम

➢ **शाखायें-**
- पैप्पलाद
- मौद
- जाजल
- ब्रह्मवद
- चारणवैद्य
- तौद
- शौनकीय
- जलद
- देवदर्श

➢ **उपलब्ध शाखा**	-	पैप्पलाद, शौनकीय (शौनक)
➢ **ब्राह्मण**	-	गोपथ ब्राह्मण
➢ **आरण्यक**	-	नहीं है (उपलब्ध नहीं)
➢ **उपनिषद्**	-	प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य
➢ **श्रौतसूत्र**	-	वैतान श्रौतसूत्र
➢ **गृह्यसूत्र**	-	कौशिक गृह्यसूत्र
➢ **धर्मसूत्र**	-	उपलब्ध नहीं
➢ **शुल्बसूत्र**	-	उपलब्ध नहीं
➢ **शिक्षा**	-	माण्डूकी शिक्षा

➢ **प्रातिशाख्य-** 1. शौनकीय चतुरध्यायिका
2. अथर्ववेद प्रातिशाख्य

भारतीय भाष्यकार-

1. दुर्गादास लाहिड़ी
2. शंकर पांडुरंग पण्डित
3. सातवलेकर
4. क्षेमकरण त्रिवेदी
5. जयदेव विद्यालंकार
6. श्रीराम शर्मा
7. विश्वबन्धु
8. डॉ0 रघुवीर
9. भगवद् दत्त
10. डॉ0 विजयपाल शास्त्री
11. राजेन्द्र लाल मिश्र

पाश्चात्त्य अनुवादक

1. रोठ और ह्विटनी
2. ब्लूमफील्ड और गार्वे
3. कैलेन्ड
4. ग्रिफिथ
5. ह्विट्नी और लानमान
6. गास्ट्रा

वेदाङ्ग का संक्षिप्त परिचय

शिक्षा

शिक्षाग्रन्थ-

➢ उपलब्ध शिक्षाग्रन्थ 35 हैं। 32 शिक्षा ग्रन्थों का एक संकलन 'शिक्षा-संग्रह' नाम से प्रकाशित हुआ।

➢ इसमें ध्वनिविज्ञान से सम्बन्ध उनेक महत्त्वपूर्ण तथ्य दिए गए हैं।

पाणिनीय शिक्षा-

➢ पाणिनीय शिक्षा वैदिक और लौकिक दोनों के लिए उपयुक्त है।

➢ पाणिनीय शिक्षा में साठ श्लोक हैं।

➢ पाणिनीय शिक्षा में वर्णों की संख्या,उच्चारण-प्रक्रिया का ध्वनि-शास्त्रीय वर्णन,स्थान और प्रयत्न का विवरण,संवृत-विवृत,घोष-अघोष,पाठक के गुण-दोषों का वर्णन आदि प्राप्त होता है।

➢ **भारद्वाज शिक्षा-** पदों की शुद्धता तथा ध्वनि भेद से उदात्त आदि स्वरों में भेद का वर्णन किया है।

➢ **याज्ञवल्क्य शिक्षा-** याज्ञवल्क्य शिक्षा में 232 श्लोक हैं।

* इसमें वैदिक स्वरों का विवेचन है।

* वर्णों के भेद,स्वरूप,परस्पर साम्य,वैषम्य,लोप आगम-विकार,प्रकृतिभाव आदि का वर्णन है।

➢ **प्रातिशाख्य प्रदीप शिक्षा-**

इसमें स्वर-वर्ण आदि की शिक्षा का विवेचन तथा प्राचीन वैयाकरण के मतों का उल्लेख प्राप्त होता है।

➢ **नारदीय शिक्षा-**

नारदीय शिक्षा में सामवेद के स्वरों का विस्तार से वर्णन है।

➢ **अन्य महत्त्वपूर्ण शिक्षा ग्रन्थ-** व्यासशिक्षा, वशिष्ठशिक्षा ,कात्यायनी शिक्षा, पाराशरी शिक्षा,माण्डव्य शिक्षा,माध्यन्दिनी शिक्षा,वर्णरत्नप्रदीपिका,केशवी शिक्षा,स्वरांकन शिक्षा,स्वरभक्ति लक्षण शिक्षा।

व्याकरण वेदाङ्ग –

वेद को व्याकरण का मुख माना जाता है–**'मुखं व्याकरणं स्मृतम्'।**

➢जिस शास्त्र के द्वारा शब्दों के प्रकृति प्रत्यय का विवेचन किया जाता है उसे व्याकरण कहते हैं **'व्याक्रियन्ते विविच्यन्ते शब्दाः अनेन इति व्याकरणम्'**

➢ व्याकरण शास्त्र को दो भागों में बाँटा जा सकता है- वैदिक व्याकरण तथा लौकिक व्याकरण।

➢ व्याकरण शास्त्र में पद-पदार्थ, वाक्य-वाक्यार्थ आदि का विवेचन प्राप्त होता है।

ऋग्वेद के एक मन्त्र में व्याकरण शास्त्र को एक वृषभ के रूपक में बाँधा गया है-

चत्वारि शृंगा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य।
त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्यां आविवेश।।

* चत्वारि शृंगा - नाम, आख्यात, उपसर्ग, निपात।

निरुक्त वेदाङ्ग

➢ निरुक्त आचार्य यास्क की कृति है जिसमें बारह अध्याय है तथा दो अध्याय परिशिष्ट के रूप में है। परिशिष्ट सहित 14 अध्याय है।

➢ निरुक्त वेदपुरुष का श्रोत्र (कान) है – **'निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते'**

➢ निरुक्त निघण्टु का व्याख्यान ग्रन्थ है जिसमें ऋग्वेद के शब्दों का संग्रह है।

➢ निरुक्त के प्रारम्भिक तीन अध्याय **'नैघण्टुक काण्ड'** कहे जाते हैं।

➢ चार, पाँच, छः अध्याय को **'नैगम काण्ड'** कहा जाता है।

➢ अन्तिम छः अध्याय (7-12) को **'दैवत काण्ड'** के नाम से जाना जाता है।

➢ निरुक्त में शब्दों का निर्वचन तीन प्रकार से किया गया है - प्रत्यक्ष, परोक्ष, अतिपरोक्ष।

➢ निरुक्त को **'शब्द व्युत्पत्ति शास्त्र'** भी कहा जाता है।

➢ निरुक्त में तीन काण्ड हैं- नैघण्टुक काण्ड, नैगम काण्ड,दैवत काण्ड।

➢ नैगम काण्ड को 'ऐकपदिक' भी कहा जाता है।

➢ वैदिक शब्दों का संग्रह निघण्टु में तथा उनकी व्याख्या निरुक्त में है।

➢ दुर्गाचार्य, यास्क कृत निरुक्त के प्रसिद्ध टीकाकार हैं।

➢ वेदों के अर्थों को स्पष्ट करने में निरुक्त आवश्यक है और व्याकरण शास्त्र का पूरक है।

➢ वेदमन्त्रों के कठिन शब्दों की व्युत्पत्ति निरुक्त करता है-
'अर्थावबोधे निरपेक्षतया पदजातं यत्रोक्तं तन्निरुक्तम्' - सायण

➢ निरुक्त में चार प्रकार के पद हैं- नाम, आख्यात, उपसर्ग, निपात **'चत्वारि पदजातानि नामाख्याते च, उपसर्गनिपाताश्च'**

यास्क के पूर्ववर्ती निरुक्तकार-

➢ आग्रायण, औपमन्यव, और्णवाभ, गार्ग्य, गालव, वार्ष्यायणि, शाकपूणि आदि।

निरुक्त के टीकाकार- निरुक्त की तीन टीकाएँ प्राप्त होती है जो हैं-

1 दुर्गाचार्य कृत ऋज्वर्थ वृत्ति टीका

2 स्कन्द महेश्वर कृत टीका जो लाहौर से प्रकाशित हुई।

3 वररुचि कृत निरुक्त निचय टीका

➢ निरुक्त के पाँच प्रतिपाद्य विषय हैं-
वर्णागम, वर्णविपर्यय, वर्णविकार, वर्णनाश, धातु का अनेक अर्थों में प्रयोग।

''वर्णागमो वर्णविपर्ययश्च द्वौ चापरौ वर्णविकारनाशौ। धातोस्तदर्थातिशयेन योगस्तदुच्यते पञ्चविधं निरुक्तम्॥''

निरुक्त में प्रतिपादित विषय-

प्रतिपादितविषय	अध्याय
निघण्टु, नाम आख्यात आदि पद विभाग, शब्दनित्यता का विवेचन मन्त्रों की सार्थकता का प्रतिपादन, अर्थ ज्ञान का महत्त्व	अध्याय-एक
निर्वचन, वर्णपरिवर्तन आदि से सम्बन्ध भाषाशास्त्रीय विवेचन।	अध्याय 2-3
वेदों के निघण्टु में पढ़े गए कठिन शब्दों की उदाहरण सहित व्याख्या।	अध्याय 4-6
देवतावाची शब्दों की विस्तृत व्याख्या, द्युलोक, अन्तरिक्ष, पृथिवी स्थानीय देवों का निरूपण।	7-12
निर्वचन प्रक्रिया, सृष्टि उत्पत्ति, आदि अनेक विषयों का विवेचन।	अध्याय 13-14

नोट- निरुक्त का अध्याय 13,14 परिशिष्ट के रूप में हैं।

छन्द-वेदाङ्ग

- छन्द शब्द छद् धातु (ढँकना) से बना है।
- 'छन्दांसि छादनात्' अर्थात् छन्द भावों को आच्छादित करके उसे समष्टि रूप प्रदान करता है- आचार्य यास्क।
- **'यदक्षरपरिमाणं तच्छन्दः'** जिसमें वर्णों या अक्षरों की संख्या निर्धारित होती है, उसे छन्द कहते हैं- आचार्य कात्यायन।
- वैदिक छन्दों का आधार अक्षर या वर्णों की संख्या है।
- छन्द को वेद का पाद (पैर) कहा जाता है **'छन्दः पादौ तु वेदस्य'**।
- आठ अध्यायों में विभक्त छन्दःसूत्र के रचयिता आचार्य पिङ्गल हैं।
- वैदिक छन्द वृत्तात्मक हैं तथा इनमें मात्रिक छन्दों का अभाव है।
- निदानसूत्र में छन्दों के नाम और लक्षण दिये गए हैं।
- **पिंगल के छन्दःसूत्र** के पूर्वभाग में वैदिक छन्दों का तथा उत्तरभाग में लौकिक छन्दों का विवेचन प्राप्त होता है।
- वैदिक छन्दों को 'अक्षर छन्द' भी कहा जाता है।
- वैदिक छन्द दो प्रकार के होते हैं- अक्षरगणनानुसारी तथा पादाक्षरगणनानुसारी।
- जिसमें अक्षरों की गणना हो उसे अक्षरगणनानुसारी तथा जिसमें पदों की गणना हो उसे 'पादाक्षरगणनानुसारी' छन्द कहते हैं।
- वैदिक छन्दों की कुल संख्या 26 है।
- ऋग्वेद में प्रयुक्त छन्दों की संख्या बीस है।
- वेदों में मुख्य रूप से सात छन्दों का प्रयोग है जो हैं- गायत्री, उष्णिक्, अनुष्टुप्, बृहती, पंक्ति, त्रिष्टुप्, जगती।
- हलायुध ने छन्दसूत्र पर 'मृतसंजीवनी' टीका लिखी।
- ऋग्वेद में अधिकांश 20 अक्षरों वाले छन्दों से लेकर 48 अक्षरों वाले छन्द प्रयुक्त हैं।

छन्द विषयक नियम

- पद के अन्त के साथ शब्द का अन्त होता है।
- ह्रस्व स्वर के बाद संयुक्त वर्ण होंगे तो पूर्ववर्ती लघु स्वर को गुरु माना जाता है।

बाद में कोई स्वर हो तो पूर्ववर्ती दीर्घस्वर को ह्रस्व कर दिया जाता है।

- शब्द के अन्तर्गत और सन्धि स्थानों में प्राप्त य् व् को आवश्यक्तानुसार क्रमशः इ,उ पढ़ा जाता है।
- एकादेश हुए स्वरों को उच्चारण के समय आवश्यकतानुसार एकादेश से पूर्व की स्थिति में पढ़ा जाता है।
- ए और ओ के बाद पूर्वरूप हुए अ को आवश्यक्तानुसार फिर अ पढ़ा जाता है।

छन्द नाम	अक्षर/वर्ण	पाद
1. गायत्री	24	3
2. उष्णिक्	28	3
3. अनुष्टुप्	32	4
4. बृहती	36	4
5. पंक्ति	40	5
6. त्रिष्टुप्	44	4
7. जगती	48	4
8. अतिजगती	52	5
9. अतिशक्वरी	60	5
10. अष्टि	64	5

- छन्द में एक अक्षर कम होने पर निचृत् कहलाता है जैसे- निचृत् गायत्री, निचृत् उष्णिक् आदि। निचृत् गायत्री में 23 अक्षर होते हैं।
- छन्द में एक अक्षर अधिक होने पर भुरिक् कहलाता है जैसे- भुरिक् गायत्री, भुरिक् उष्णिक् भुरिक अनुष्टुप् आदि। भुरिक् गायत्री में 25 अक्षर होते हैं।
- छन्द में दो अक्षर कम होने पर विराट् कहा जाता है जैसे- विराट् गायत्री, विराट् उष्णिक् आदि। इस प्रकार विराट् गायत्री में 22 अक्षर होंगे।
- छन्द में दो अक्षर अधिक होने पर स्वराट् कहा जाता है जैसे- स्वराट् गायत्री, स्वराट् उष्णिक् स्वराट् अनुष्टुप् आदि। इस प्रकार स्वराट् गायत्री में 26 अक्षर होंगे।

2. भारतीय दार्शनिक चिन्तन

(सांख्यकारिका)

सांख्य की सृष्टि प्रक्रिया

↓

मूल प्रकृति

↓

महत् या बुद्धि

↓

अहङ्कार

सात्त्विक अहंकार से → पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ+पाँच कर्मेन्द्रियाँ+मन

तामसिक अहंकार से → पाँच तन्मात्रा → पाँच महाभूत

➢ पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ हैं- श्रोत्र, त्वक्, चक्षु, रसना, घ्राण।

➢ पाँच कर्मेन्द्रियाँ हैं- वाक्, पाणि, पाद, पायु, उपस्थ।

➢ पाँच तन्मात्राएँ हैं- शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध।

➢ पाँच महाभूत हैं- आकाश, वायु,तेज, जल, पृथिवी।

पाँच महाभूतों की उत्पत्ति क्रम

1. पाँच तन्मात्रा	2. महाभूत
शब्द	आकाश
शब्द+स्पर्श	वायु
शब्द+स्पर्श+रूप	अग्नि
शब्द +स्पर्श+रूप+रस	जल
शब्द+स्पर्श+रूप+रस+गन्ध	पृथिवी

➢ बुद्धि का लक्षण है- '**अध्यवसायो बुद्धिः**' अर्थात् निश्चयात्मक अथवा निश्चय करने वाला तत्त्व बुद्धि है। (का0-23)

➢ बुद्धि के आठ गुण- धर्म, अधर्म, ज्ञान, अज्ञान, वैराग्य, राग, ऐश्वर्य, अनैश्वर्य।

➢ बुद्धि के चार सात्त्विक गुण- धर्म, ज्ञान, वैराग्य, ऐश्वर्य।

➢ बुद्धि के चार तामसिक गुण- अधर्म,अज्ञान, राग, अनैश्वर्य।

➢ व्यक्ति को '**अभ्युदय**' एवं '**निःश्रेयस्**' की प्राप्ति कराने वाला कारण धर्म है।

➢ त्रिगुणात्मिका '**प्रकृति**' एवं निर्गुण, तेजोरूप '**पुरुष**' का विवेक भेदपूर्वक साक्षात्कार ही सांख्यदर्शन की भाषा में ज्ञान कहलाता है।

➢ आसक्ति का अभाव वैराग्य है।

➢ अणिमा, लघिमा, गरिमा, महिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, वशित्व एवं ईशित्व इन आठ सिद्धियों की प्राप्ति ही ऐश्वर्य है।

बुद्धि के धर्म (गुण)

सत्त्व अंश (धर्म, ज्ञान, वैराग्य, ऐश्वर्य)

तामसिक अंश (अधर्म, अज्ञान, राग, अनैश्वर्य)

➢ अहङ्कार- ''**अभिमानोऽहंकारः**''अर्थात् 'मैं' इस प्रकार के अभिमान को अहंकार कहते हैं।

➢ अहंकार से दो प्रकार के कार्य उत्पन्न होते हैं-

1. ग्यारह इन्द्रियों का समूह 2. पञ्चतन्मात्राओं का समूह।

➢ ग्यारह इन्द्रियों के समूह वैकृत नामक सात्त्विक अहंकार से तथा पञ्चतन्मात्राओं के समूह भूतादि नामक तामसिक अहङ्कार से उत्पन्न होते हैं। (का0-24)

अहंकार

सात्त्विक अहंकार (वैकृत) → पञ्चज्ञानेन्द्रियाँ+पञ्चकर्मेन्द्रियाँ+ मन

तामसिक अहंकार (भूतादि) → पञ्चतन्मात्रा

➢ इन्द्रियाँ दो प्रकार की होती हैं- अन्तः इन्द्रिय, बाह्य इन्द्रिय

➢ ज्ञान कराने वाली इन्द्रिय को '**ज्ञानेन्द्रिय**' कहा जाता है इसे '**बुद्धीन्द्रिय**'भी कहते हैं।

➢ रूप, रस और गन्धादि विषयों को बुद्धिपूर्वक आलोचन, पर्यालोचन आदि करके जो ज्ञान में साधक अथवा करण होती हैं वे बुद्धीन्द्रिय अथवा ज्ञानेन्द्रिय कहलाती हैं।

➢ ज्ञान के साधक इन्द्रिय को ज्ञानेन्द्रिय तथा कर्म के साधक इन्द्रिय को कर्मेन्द्रिय कहा जाता है।

➢ मन को **उभयेन्द्रिय** कहा गया है क्योंकि यह ज्ञानेन्द्रिय तथा

कर्मेन्द्रिय दोनों के साथ समान रूप से कार्य करता है।

➢ एकादश इन्द्रियों के बीज मन, संकल्प करने वाला तथा समान धर्मभाव के कारण दोनों प्रकार का होता है। **'उभयात्मकमत्र मनः संकल्पकमिन्द्रियं च'** (का0-27)

➢ पाँच ज्ञानेन्द्रियों का व्यापार शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध आदि विषयों का प्रकाशन मात्र माना जाता है **'रूपादिषु पञ्चानामालोचनमात्रमिष्यते वृत्तिः'** (का0-28)

➢ पाँच कर्मेन्द्रियों का व्यापार बोलना, ग्रहण करना, चलना, त्यागकरना, और आनन्द का अनुभव कराना माना जाता है **'वचनादानविहरणोत्सर्गानन्दाश्च'** (का0-28)

➢ नाम, जाति, गुण, क्रिया आदि विशेषताओं का संकल्प-विकल्प करना मन का कार्य है।

➢ यह वस्तु त्यागने योग्य है अथवा ग्रहण करने योग्य इसका निश्चय बुद्धि करती है।

पाँच ज्ञानेन्द्रियों के कार्य

ज्ञानेन्द्रिय	कार्य
श्रोत्र (कान)	शब्द
त्वक् (त्वचा)	स्पर्श
चक्षु (आँख)	रूप
रसना (जीभ)	रस
घ्राण (नाक)	गन्ध

पाँच कर्मेन्द्रियो के कार्य

कर्मेन्द्रिय	कार्य
वाक् (वाणी)	बोलना (भाषण)
पाणि (हाथ)	लेना (ग्रहण)
पाद (पैर)	चलना (गमनागमन)
पायु (गुदा)	त्याग करना (मलत्याग)
उपस्थ (जननेन्द्रिय)	आनन्द प्रदान करना

पाँच वायु की स्थिति

वायु	**स्थिति** (का0-29)
प्राण –	नासिका, हृदय, नाभि, पैर का अँगूठा
अपान –	गले की घुंडी, पीठ, पैर, गुदा, जननेन्द्रिय
समान –	हृदय, नाभि, शरीर के जोड़
उदान –	हृदय, कण्ठ, तालु, सिर- भौहों के बीच
व्यान –	सम्पूर्ण शरीर में त्वचा

➢ करण तेरह प्रकार के हैं **'करणं त्रयोदशविधम्'**।

➢ तेरह प्रकार के करण हैं- एकादश इन्द्रिय, बुद्धि, अहंकार (का0-32)

➢ करण के कार्य हैं- आहरण, धारण तथा प्रकाश

➢ वाक् इत्यादि कर्मेन्द्रियाँ अपने-अपने विषय का आहरण या ग्रहण करती हैं।

➢ बुद्धि, अहंकार और मन अपने प्राण इत्यादि व्यापार के द्वारा देह को धारण करती है।

➢ ज्ञानेन्द्रियाँ शब्द, स्पर्श इत्यादि को प्रकाशित करती हैं।

तेरह करण

पञ्चकर्मेन्द्रियाँ (वाक्, पाणि, पाद, पायु, उपस्थ)

पञ्चज्ञानेन्द्रियाँ (श्रोत्र, त्वक्,चक्षु, रसना, घ्राण)

तीन अन्तःकरण (मन, बुद्धि, अहंकार)

➢ त्रयोदशकरण को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है-

1. आभ्यन्तरकरण- बुद्धि, अहंकार,मन

2. बाह्यकरण- पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच कर्मेन्द्रियाँ।

करण के दो भेद

आभ्यन्तरकरण (3) — मन, बुद्धि, अहंकार,

बाह्यकरण (10) — पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ पाँच कर्मेन्द्रियाँ

➢ अन्तःकरण तीन हैं - **'अन्तःकरणं त्रिविधम्'** (का0-33) बुद्धि, अहंकार, मन।

➢ अन्तःकरण को प्रस्तुत करने वाले बाह्यकरण दस हैं पञ्चज्ञानेन्द्रियाँ+पञ्चकर्मेन्द्रियाँ

➢ वर्तमान विषयक होते हैं- बाह्य करण

➢ अन्तःकरण को **आभ्यन्तर करण** भी कहते हैं।

➢ ज्ञानेन्द्रियाँ बाहर स्थित अपने-अपने विषयों के सम्पर्क में आकर उन्हें प्रकाशित करके उनकी सूचना अन्तः करण को प्रदान करती हैं।

➢ बाह्यकरण केवल वर्तमानकाल के विषयों में प्रभावी होते हैं इसलिए इसे **'साम्प्रत्कालम्'** कहा गया है।

➢ आभ्यन्तर अर्थात् अन्तःकरण भूत, भविष्य और वर्तमान तीनों कालों में प्रभावी होते हैं।

➢ **'स्वालक्षण्यं वृत्तिस्त्रयस्य'** में त्रयस्य पद से अभिप्राय मन, बुद्धि, अहंकार से है।

➢ अन्तः करण में दो प्रकार की शक्तियों को माना जाता है- ज्ञानशक्ति तथा क्रियाशक्ति।

➢ बुद्धि, मन, अहंकार ज्ञानशक्ति का तथा प्राणादि क्रियाशक्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं।

➢ मन, बुद्धि, अहंकार और इन्द्रिय भेद से करण के चार भेद भी माने गये हैं।

➢ प्रत्यक्ष दिखाई देने वाले पदार्थ के सम्बन्ध में चार प्रकार के करणों की प्रवृत्ति कभी एक साथ और कभी क्रमशः कही गयी है।

➢ परोक्ष पदार्थों के ज्ञान के सम्बन्ध में केवल मन, बुद्धि, अहंकार ये तीन अन्तः करण का व्यापार प्रत्यक्षपूर्वक एक साथ और क्रमपूर्वक होता है।

तीन अन्तः करण के कार्य		
अन्तः करण		**कार्य**
बुद्धि	–	निश्चय
अहंकार	–	अभिमान
मन	–	संकल्प

➢ दस बाह्यकरणों में पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ स्थूल और सूक्ष्म दो विषयों में प्रवृत्त होती हैं।

➢ कर्मेन्द्रियों में वाक् इन्द्रिय शब्द के विषय में प्रवृत्त होती हैं शेष चारों ही शब्द स्पर्श इत्यादि पाँचों विषयों में प्रवृत्त होती हैं।

➢ तीनों अन्तः करण प्रधान हैं क्योंकि मन एवं अहंकार के साथ बुद्धि सभी विषयों में व्याप्त होती है।

➢ बाह्य इन्द्रियाँ द्वार या साधनमात्र हैं, मन तथा अहंकार से युक्त बुद्धि साधनवती या प्रधान है।

➢ करण पुरुष के सम्पूर्ण प्रयोजन को प्रकाशित करके बुद्धि को समर्पित कर देते हैं।

➢ सभी ज्ञानेन्द्रियों, मन और अहंकार का लक्ष्य बुद्धि होता है।

➢ समस्त विषयों के सम्बन्ध में होने वाले पुरुष के भोग को बुद्धि ही सम्पादित करती है।

➢ प्रकृति एवं पुरुष के सूक्ष्म भेद को प्रकट करती है- बुद्धि। **'प्रधानपुरुषान्तरं सूक्ष्मम्'- बुद्धिः।** (का0-37)

➢ सांख्य के अनुसार दुःख की हमेशा के लिए निवृत्ति ही मोक्ष अथवा कैवल्य है।

➢ पञ्चतन्मात्रा अर्थात् शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध ये सूक्ष्म विषय हैं।

➢ पञ्चतन्मात्राओं से पञ्चमहाभूत की उत्पत्ति होती है।

➢ आकाश आदि पञ्चमहाभूत विशेष अर्थात् स्थूल कहे जाते हैं, ये सुखात्मक, दुःखात्मक और मोहात्मक होते हैं।

➢ शान्त घोर और मूढ होते हैं-**पञ्चमहाभूत**

➢ सूक्ष्म अर्थात् इन्द्रियों द्वारा जिनका प्रत्यक्ष नहीं किया जाता वे अविशेष हैं।

➢ नित्य होता है- **सूक्ष्मशरीर।**

➢ अनित्य होता है- माता-पिता से उत्पन्न स्थूलशरीर।

➢ सूक्ष्मशरीर की गति सर्वत्र होती है।

➢ प्रलयकाल में सूक्ष्मशरीर भी अपने कारण में समाहित हो जाता है।

➢ सूक्ष्मशरीर को **लिङ्गशरीर** भी कहते हैं।

➢ सांख्य का **सूक्ष्मशरीर 18 तत्त्वों** से निर्मित होता है। (का0-40) पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच कर्मेन्द्रियाँ, पाँच तन्मात्राएँ, महत्, अहंकार, मन ये सूक्ष्मशरीर के 18 अवयव हैं।

➢ सूक्ष्मशरीर होता है- सृष्टि के आरम्भ में उत्पन्न, सभी जगह गति करने में सक्षम, प्रलयकाल तक स्थायीरूप से रहने वाला, भोगरहित, भावों से युक्त, महत् से लेकर सूक्ष्मतन्मात्रापर्यन्त, 18 तत्त्वों से निर्मित।

➢ सूक्ष्मशरीर ही संसरण या गमनागमन करता है।

➢ सूक्ष्मशरीर का आधार **छः कोषों** से निर्मित स्थूलशरीर होता है।

➢ 18 तत्त्वों से निर्मित सूक्ष्मशरीर केवल तन्मात्रारूप में स्थित रहता है।

➢ सूक्ष्मशरीर निरूपभोग अर्थात् भोगरहित होता है।

➢ पुरुष की सत्ता का द्योतक होने के कारण सूक्ष्मशरीर को लिङ्गशरीर भी कहते हैं।

➢ लिङ्ग का लक्षण है- **'लिंग्यते अनेन इति लिङ्गम्'** अथवा **'लीनं गमयति इति लिङ्गम्'**

सूक्ष्मशरीर के 18 अवयव: महत् (बुद्धि), पञ्चतन्मात्राएँ, अहंकार, पञ्चकर्मेन्द्रियाँ, मन, पञ्चज्ञानेन्द्रियाँ
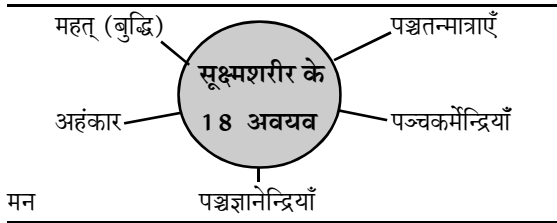
सूक्ष्मशरीर के 18 अवयव	
1. महत्	- 01
2. अहंकार	- 01
3. मन	- 01
4. पञ्चज्ञानेन्द्रियाँ	- 05
5. पञ्चकर्मेन्द्रियाँ	- 05
6. पञ्चतन्मात्राएँ	- 05
कुल योग	**- 18**

➢ सूक्ष्मशरीर के द्वारा स्थूलशरीर के माध्यम से जो भी कार्य सम्पन्न किए जाते हैं उन सबका मुख्य प्रयोजन पुरुष के भोग एवं अपवर्ग को सम्पादित करना है।

➢ प्रकृति अर्थात् स्वभाव से ही सिद्ध सांसिद्धिक तथा वैकृतिक धर्म, अधर्म इत्यादि भाव करण अर्थात् निमित्तरूप बुद्धि के आश्रित रहते हैं। (का0-43)

➢ कलल अर्थात् जरायु से परिवेष्टित रजोमिश्रितवीर्य इत्यादि भाव कार्य अर्थात् नैमित्तिक शरीर के आश्रित रहते हैं।

➢ रजस् और वीर्य के मिश्रण को **'कलल'** कहा जाता है।

➢ धर्म से ऊर्ध्व लोक में गति होती है **'धर्मेण गमनमूर्ध्वम्'** (का0-44)

➢ अधर्म से अधोलोक में गति होती है- **'गमनमधस्ताद् भवत्यधर्मेण'** (का0-44)

➢ सांख्य में ज्ञान से मोक्ष होता है **'ज्ञानेन चापवर्गः'** (का0-44)

➢ अज्ञान से बन्धन की प्राप्ति होती है **'विपर्ययादिष्यते बन्धः'** (का0-44)

➢ धर्म से अभिप्राय यम, नियम आदि अष्टाङ्गयोग, अभ्युदय एवं निःश्रेयस् के साधक यज्ञ, दान आदि अनुष्ठान सभी श्रेष्ठकर्मों से है।

➢ लोक हैं- ऊर्ध्वलोक, अधोलोक।

➢ ऊर्ध्वलोकों की संख्या सात है- भूः, भुवः, स्वः, महः, जनः, तपः, सत्यलोक।

➢ अधोलोक की संख्या भी सात है- अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल, महातल, पाताल।

➢ विवेकख्याति सम्भव है- **सांख्यशास्त्र द्वारा**।

भावों के फल

धर्म	**अधर्म**	**ज्ञान**	**अज्ञान**
ऊर्ध्वलोक की प्राप्ति	अधोलोक की प्राप्ति	मोक्ष की प्राप्ति	बन्धन की प्राप्ति

➢ वैराग्य से प्रकृतिलय होता है **'वैराग्यात् प्रकृतिलयः'** (का0-45)

➢ रजोमय राग से संसरण होता है **'संसारो भवति राजसाद्रागात्'** (का0-45)

➢ ऐश्वर्य से इच्छा की सफलता होती है **'ऐश्वर्यादविघातः'** (का0-45)

➢ ऐश्वर्य के अभाव से इच्छा की सफलता का हनन होता है **'विपर्ययात् तद्विपर्यासः'** (का0-45)

बुद्धि में स्थित भावों के कार्य

वैराग्य	**राग**	**ऐश्वर्य**	**अनैश्वर्य**
प्रकृतिलय में आवागमन	संसार का पूरा होना	इच्छाओं का होना	इच्छाओं का पूरा न होना

सृष्टि के भेद

➢ सांख्य के अनुसार सृष्टि दो प्रकार की होती है- भौतिक एवं बौद्धिक।

➢ बुद्धि (बौद्धिक) के चार प्रमुख परिणाम हैं- विपर्यय, अशक्ति, तुष्टि, सिद्धि। इन्हें **प्रत्ययसर्ग** या **बुद्धिसर्ग** कहते हैं।

➢ प्रत्ययसर्ग (बुद्धिसर्ग) के कुल **पचास भेद** हैं। 5 विपर्यय + 28 अशक्ति + 9 तुष्टि + 8सिद्धि = 50 प्रत्ययसर्ग

➢ विपर्यय के **पाँच भेद**- तम, मोह, महामोह, तामिस्र, अन्धतामिस्र।

➢ अशक्ति की संख्या **अट्ठाइस** है; जिसमें सत्रह प्रकार के बुद्धि के दोष तथा एकादश इन्द्रियों के वध हैं। (का0-28)

➢ बाधिर्य, कुण्ठिता, अन्धत्वी, जडता, अजिघ्रता,मूकता, कैवल्य, पंगुत्व, कौण्ड्य, उदावर्त, मन्दता, असुवर्णा, अनिला, मनोज्ञा, अदृष्टि, अपरा, सुपरा, असुनेत्रा, वसुनाडिका, अनुत्तमाम्भसिका, अप्रतार, असुतार, अतारतार, असदामुदित, अरम्यक्, अप्रमोद, अमुदित, आमोदमान- ये **28 अशक्तियाँ** हैं।

➢ **तुष्टि के नौ भेद-** 1. प्रकृति, 2. उपादान, 3. काल, 4. भाग, 5. पार, 6. सुपार, 7. पारापार, 8. अनुत्तमाम्भस्, 9. उत्तमाम्भस्। (का0-47)

➢ **आठ प्रकार की सिद्धियाँ-**1-3त्रिदुःख विनाश, 4.अध्ययन,5.ऊह, 6.शब्द, 7.सुहृत्प्राप्ति, 8.दान।

➢ बुद्धि के उपघातों के साथ ग्यारह इन्द्रियों की विकलता अशक्ति कहलाती है।

➢ नौ तुष्टि और सिद्धियों के विपर्ययभाव से बुद्धि के सत्रह उपघात होते हैं।

➢ विपर्यय, अशक्ति, तुष्टि अंकुशरूप में सिद्धि की बाधक होती हैं।

➢ पुरुष का भोग-अपवर्ग रूप प्रयोजन ही पुरुषार्थ है।

➢ बौद्धिक परिणाम के बिना तन्मात्र परिणाम सम्भव नहीं है।

➢ तन्मात्रपरिणाम के बिना बौद्धिक परिणाम भी सम्भव नहीं है।

भौतिक सर्ग या सृष्टि

➢ देवसृष्टि के आठ प्रकार होते हैं -1. ब्राह्म 2. प्राजापत्य 3. ऐन्द्र 4. पैत्र 5. गान्धर्व 6. यक्ष 7. राक्षस 8. पैशाच

➢ तिर्यक् सृष्टि के पाँच भेद होते हैं-

1. पशु 2. पक्षी 3. मृग 4. सरीसृप 5. स्थावर।

➢ मनुष्यसृष्टि एक प्रकार की होती है।

भौतिक सृष्टि

देवसृष्टि	तिर्यक् सृष्टि	मनुष्यसृष्टि
(8प्रकार)	(5 प्रकार)	(1 प्रकार)

इसप्रकार **भौतिक सृष्टि चौदह प्रकार** की होती है।

➢ ब्रह्म से लेकर तृणपर्यन्त भौतिक सृष्टि में ऊपर के लोक में सत्त्वगुण की प्रधानता, अधोलोक अर्थात् नीचे के लोक में तमोगुण की प्रधानता मध्यलोक में रजोगुण की प्रधानता है।

लोक	गुण	सृष्टि
ऊर्ध्व	सत्त्वगुण	देवसृष्टि
अधः	तमोगुण	तिर्यक् सृष्टि
मध्य	रजोगुण	मानुषी सृष्टि

सांख्य के अनुसार प्रमाण

➢ **'दृष्टमनुमानमाप्तवचनम्'** (का0-4) इस कथन से सांख्य तीन प्रमाण मानता है - (i) दृष्ट (प्रत्यक्ष) (ii) अनुमान तथा (iii) आप्तवचन।

➢ सांख्य को तीन ही प्रमाण अभीष्ट है (का0-4) **'त्रिविधं प्रमाणमिष्टम्'**। इन्हीं तीन प्रमाणों के ज्ञान से ही प्रमेयों का ज्ञान होता है- **'प्रमेयसिद्धिः प्रमाणाद्धि'**

अन्य आचार्यों द्वारा स्वीकृत प्रमाण

➢ **चार्वाक -** केवल प्रत्यक्ष को प्रमाण के रूप में मानता है।

➢ **बौद्ध-दर्शन -** दो प्रमाण मानता है- (प्रत्यक्ष, अनुमान)

➢ **सांख्य-योग**-तीन प्रमाण मानता है-(प्रत्यक्ष,अनुमान,शब्द)

➢ **न्याय- वैशेषिक -** चार प्रमाण मानता है- (प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द)

➢ **प्रभाकर मीमांसक -** पाँच प्रमाण मानते हैं- (प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द ,अर्थापत्ति)

➢ **भाट्ट मीमांसक -** छः प्रमाण मानते हैं- (प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द,अर्थापत्ति, अभाव)

➢ **पौराणिक -** आठ प्रमाण (प्रत्यक्ष, अनुमान,उपमान, शब्द,अर्थापत्ति,अभाव, सम्भव,ऐतिह्य)

➢ **'प्रतिविषयाध्यवसायो दृष्टम्'** (का0-5) प्रत्यक्ष प्रमाण का लक्षण है। विषय से सम्बद्ध इन्द्रिय पर आश्रित बुद्धि-व्यापार या ज्ञान को प्रत्यक्ष प्रमाण कहते है।

➢ **'तल्लिङ्गलिङ्गिपूर्वकम् अनुमानम्'** (का0-05) यह अनुमान प्रमाण का लक्षण है। लिङ्ग और लिङ्गी के ज्ञान से जो उत्पन्न होता है उसे अनुमान प्रमाण कहते हैं।

➢ सर्वप्रथम अनुमान के दो भेद होते हैं - **वीतानुमान, अवीतानुमान**

➢ वीतानुमान के दो भेद- **पूर्ववत्, सामान्यतोदृष्ट।**

➢ अवीतानुमान का एक भेद - **शेषवत्।**

➢ इस प्रकार **पूर्ववत्, शेषवत् ,सामान्यतोदृष्ट** के भेद से अनुमान प्रमाण के तीन भेद हैं।

➢ **'आप्तश्रुतिराप्तवचनम्'** (का0-05) अर्थात् आप्त पुरुष की उक्ति ही शब्द प्रमाण है।

➢ शब्दप्रमाण को **आगमप्रमाण** या **आप्तप्रमाण** भी कहा जाता है।

➢ जो जिस रूप में है उसको उसी रूप में कहना आप्तवचन तथा उपदेश करने वाले को आप्तपुरुष कहते हैं।

➢ सामान्यविषयों का ज्ञान प्रत्यक्ष प्रमाण से होता है।

➢ इन्द्रियों से दिखाई न देने वाले अर्थात् परोक्ष पदार्थों का ज्ञान अनुमान प्रमाण से होता है।

➢ मूलप्रकृति आदि का ज्ञान सामान्यतोदृष्ट नामक अनुमान प्रमाण से होता है।

➢ सांख्य के अनुसार वस्तुओं का प्रत्यक्ष आठ रूपों से नहीं होता है -

(i) अत्यधिक दूर होने से (ii) अत्यधिक समीप होने से
(iii) इन्द्रियों के नाश होने से (iv) मन की अस्थिरता से
(v) सूक्ष्म होने से (vi) बीच में किसी रुकावट के आ जाने से
(vii) समान वस्तु में मिल जाने से (viii) अपने कारण से उत्पन्न होने से।

अतिदूरात् सामीप्यादिन्द्रियघातान्मनोऽनवस्थानात्।
सौक्ष्म्याद् व्यवधानादभिभवात् समानाभिहाराच्च॥
(का0-07)

➢ प्रकृति की उपलब्धि नहीं होती है - सूक्ष्म होने के कारण।
➢ अभाव के कारण नहीं अपितु सूक्ष्मता के कारण प्रकृति की उपलब्धि नहीं होती है।
'सौक्ष्म्यात्तदनुपलब्धिर्नाभावात्' (का0-08)
➢ सत्कार्यवाद सांख्यदर्शन का प्रमुख सिद्धान्त है **'सतः सत् जायते'**
➢ **सांख्य की दृष्टि में सत्कार्यवाद है- असदकरणादुपादानग्रहणात् सर्वसम्भवाभावात्। शक्तस्य शक्यकरणात् कारणभावाच्च सत्कार्यम्॥(का-09)**
➢ सत्कार्यवाद सिद्धान्त में पाँच हेतु हैं-
(i) असदकरणाद् (ii) उपादानग्रहणात् (iii) सर्वसम्भवाभावात् (iv) शक्तस्य शक्यकरणात् (v) कारणभावात्
➢ सत्कार्यवाद सिद्धान्त के अनुसार - कार्य हमेशा अपने कारण रूप में विद्यमान रहता है।
➢ सांख्यशास्त्र के अनुसार न तो किसी वस्तु की उत्पत्ति होती है और न ही विनाश होता है।
➢ कार्य की उत्पत्ति का अर्थ है अव्यक्त से व्यक्त होना तथा विनाश का अर्थ है व्यक्त से अव्यक्त होना।
➢ मूलप्रकृति से उत्पन्न होते हैं- महद् आदि कार्य, महद् आदि कार्यों को 'व्यक्त' कहते हैं।
➢ प्रकृति है- त्रिगुणात्मिका, प्रधान, प्रसवधर्मिणी, अव्यक्त, जड तथा अचेतन।

अव्यक्त तथा व्यक्त पदार्थों का सादृश्य एवं वैषम्य का निरूपण

व्यक्त (महत् आदि कार्य)	अव्यक्त (प्रकृति)
हेतुमान्	अहेतुमान्
अनित्य	नित्य
अव्यापी	व्यापी
सक्रिय	निष्क्रिय
अनेक	एक
मूलकारण पर आश्रित	अनाश्रित
लिङ्गसहित	लिङ्गरहित
अवयवयुक्त	निरवयव
परतन्त्र	स्वतन्त्र

हेतुमदनित्यमव्यापि सक्रियमनेकमाश्रितं लिङ्गम्।
सावयवं परतन्त्रं व्यक्तं विपरीतमव्यक्तम्।
(का0-10)
➢ महत् तत्त्व से लेकर आकाश आदि स्थूलपर्यन्त सभी पदार्थों को व्यक्त कहा जाता है।
ये प्रत्यक्ष प्रमाण के विषय होते हैं।
➢ हेतुमत्- हेतु अर्थात् कारण जिसका होता है उसे हेतुमत् कहते हैं।
➢ अव्यक्त अर्थात् प्रकृति नित्य है क्योंकि वह किसी का कार्य नहीं होती है।
➢ सांख्यमत में अनित्य का अर्थ है- सूक्ष्म रूप से अपने कारण में रहने वाला।
➢ सांख्य में पुरुषबहुत्व के सिद्धान्त को मान्यता प्रदान की गई है।
➢ सारे व्यक्त पदार्थ अपने-अपने कारण पर आश्रित होते हैं।

व्यक्त तथा अव्यक्त का साम्य एवं पुरुष से उसके वैषम्य का निरूपण

त्रिगुणमविवेकि विषयः सामान्यमचेतनं प्रसवधर्मि।
व्यक्तं तथा प्रधानं, तद्विपरीतस्तथा च पुमान्॥ (का.-11)

व्यक्त तथा अव्यक्त	पुरुष
त्रिगुणात्मक	गुण से रहित (त्रिगुणातीत)
अविवेकी	विवेकी
विषयी	अविषयी
सामान्य	असामान्य
अचेतन	चेतन
प्रसवधर्मी	अप्रसवधर्मी

➢ **'व्यक्तं तथा प्रधानं, तद्विपरीतस्तथा च पुमान्'** (का0-11) इस कारिका में व्यक्त तथा अव्यक्त के साधर्म्य एवं पुरुष का उससे वैधर्म्य का निरूपण किया गया है।

सांख्य के त्रिविध गुण

➢ सांख्यानुसार तीन गुण हैं- सत्त्व, रजस् तथा तमस्। (का0-13)
➢ सत्त्व, रजस्, तमस् का स्वरूप है- सुख, दुःख, मोह।
प्रीत्यप्रीति-विषादात्मकाः। (का0-12) प्रीति का अर्थ - **सुख**, अप्रीति का अर्थ है- **दुःख** तथा विषाद का अर्थ है- **मोह**।
➢ तीनों गुणों के क्रमशः कार्य हैं- प्रकाश, प्रवर्तन, नियमन।
प्रकाश- प्रवृत्तिनियमार्थाः। (का0-12) जिसका अर्थ है- प्रकाश करना, प्रवृत्त करना, नियमन करना।
➢ तीनों गुणों के स्वभाव हैं- एक दूसरे को दबाना, आश्रय बनना, उद्भव या आविर्भाव।
''अन्योन्याभिभवाश्रयजननमिथुनवृत्तयश्च'' (का0-12)

➢ सत्त्व, रजस् तथा तमस् क्रमशः शान्त, घोर और मोह वृत्ति वाले हैं।

गुण	स्वरूप	कार्य/प्रयोजन	स्वभाव
1.सत्त्वगुण	प्रीति (सुखात्मक)	प्रकाश करना	एक दूसरे को दबाना
2.रजोगुण	अप्रीति (दुःखात्मक)	प्रवर्तन करना	आश्रय बनना
3.तमोगुण	विषाद (मोहात्मक)	नियमन करना	उद्भव या आविर्भाव करना

सत्त्व, रज, तम तीनों गुणों की विशेषताएँ

➢ **'सत्त्वं लघु प्रकाशकम्'** (का0-13) सत्त्व गुण हल्का होता है अतः प्रकाशक होता है।

➢ **'उपष्टम्भकं चलं च रजः'** (का0-13) रजोगुण चञ्चल होता है अतः उत्तेजक होता है।

➢ **'गुरु वरणकमेव तमः'** तमो गुण भारी होता है अतएव अवरोधक होता है।

सत्त्व गुण –हल्का – प्रकाशक
रजो गुण –चञ्चल (प्रवृत्तिशील)–उत्तेजक
तमो गुण –भारी – अवरोधक

➢ तीनों गुण अर्थात् सत्त्व, रजस् तथा तमस् विरोधी स्वभाव वाले होते हुए भी **'प्रदीपवच्चार्थतो वृत्तिः'** (का0-13) अर्थात् दीपक के समान व्यवहार करने वाले हैं।

➢ सत्त्वगुण के प्रभावी होने पर व्यक्ति स्वयं को हल्का, सुखी एवं आनन्दित अनुभव करता है।

➢ रजोगुण के प्रभावी होने पर व्यक्ति में चंचलता एवं गतिशीलता की अनुभूति होती है।

➢ तमोगुण के प्रभावी होने पर किसी भी काम को करने की इच्छा न होना, शरीर में आलस्य होना, सोने आदि में प्रवृत्त होना, होता है।

➢ सत्त्वगुण एवं तमोगुण दोनों गुण निष्क्रिय होते हैं रजोगुण ही उन्हें क्रियाशील बनाता है।

➢ सत्त्व आदि तीनों गुणों के कारण अविवेकित्व इत्यादि धर्मों की सत्ता सिद्ध होती है।

➢ कार्य का कारण गुणों के स्वभाव से युक्त होने से मूलप्रकृति (अव्यक्त) की सत्ता सिद्ध होती है।

पुरुष की सत्ता सिद्धि

संघातपरार्थत्वात् त्रिगुणादिविपर्ययादधिष्ठानात्
पुरुषोऽस्ति भोक्तृभावात् कैवल्यार्थं प्रवृत्तेश्च॥ ।।17।।

1. संघातपरार्थत्वात् (संघातों का दूसरों के लिए होना)
2. त्रिगुणादिविपर्ययात् (त्रिगुणादि से विपरीत स्वभाव वाला होने से)
3. अधिष्ठानात् (त्रिगुण समूह का अधिष्ठाता होने से)
4. भोक्तृभावात् (भोग्य एवं भोक्ताभाव से)
5. कैवल्यार्थं प्रवृत्तेः (मोक्ष के लिए प्रवृत्ति देखे जाने से)

➢ सांख्य का पुरुष सभी शरीरों का अधिष्ठाता है।

➢ सांख्य का पुरुष त्रिगुणरहित होने से सबसे भिन्न है।

➢ पुरुषबहुत्व का सिद्धान्त सांख्य का सिद्धान्त है।

➢ पुरुषबहुत्व की सत्ता सिद्ध करने वाले तीन हेतु हैं-
(i) जननमरणकरणानाम् (ii) अयुगपत्प्रवृत्तेः (iii) त्रैगुण्यविपर्ययात्

➢ जन्म, मरण तथा इन्द्रियों की व्यवस्था होने से और एक साथ प्रवृत्ति का अभाव होने से तथा तीनों गुणों के भेद के कारण पुरुष बहुत्व की सत्ता सिद्ध होती है।

➢ जननमरणकरणानाम् में करण से अभिप्राय तीन अन्तःकरण (मन, बुद्धि, अहंकार) तथा पाँच ज्ञानेन्द्रियों एवं पाँच कर्मेन्द्रियों से है।

➢ पुरुष के चेतन, निर्गुण, विशेष, अविषय, विवेकी एवं अप्रसवधर्मी होने के कारण साक्षित्व, कैवल्य, माध्यस्थ्य, द्रष्टृत्व एवं अकर्तृत्व आदि धर्मों की सिद्धि भी होती हैं। (का0-19)

पुरुष के धर्म
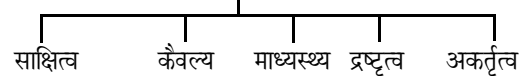
साक्षित्व | कैवल्य | माध्यस्थ्य | द्रष्टृत्व | अकर्तृत्व

➢ पुरुष के संयोग से जड़ प्रकृति चेतन के समान प्रतीत होती है।

➢ पुरुष गुणरहित एवं अपरिणामी होने के कारण वस्तुतः कर्ता नहीं होता बल्कि उसमें कर्तापन की प्रतीति भ्रान्तिमात्र है।

➢ सांख्य की सृष्टि 'पङ्ग्वन्धवत्' अर्थात् लगड़ा (पुरुष) और अन्धा (प्रकृति) के समान है। (का0-21)

➢ पुरुष के द्वारा प्रधान (प्रकृति) का दर्शन तथा प्रकृति (प्रधान) के द्वारा कैवल्य की प्राप्ति के लिए पुरुष और प्रकृति का संयोग अन्धे और लगड़े के समान होता है जिससे सृष्टिप्रक्रिया सम्पन्न होती है।

➢ पुरुष और प्रकृति के संयोग का प्रमुख रूप से दो प्रयोजन है-
1. प्रकृति का दर्शन 2. पुरुष को कैवल्य की प्राप्ति।

प्रकृति एवं पुरुष के संयोग का प्रयोजन

प्रदर्शन	**कैवल्यार्थ**
(प्रकृति के लिए)	(पुरुष के लिए)
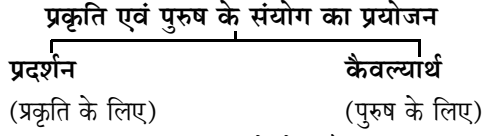
- महत् की उत्पत्ति मूलप्रकृति से होती है।
- अहंकार की उत्पत्ति महत् से होती है।
- सोलह पदार्थों का समूह अर्थात् पञ्चज्ञानेन्द्रियाँ, पञ्चकर्मेन्द्रियाँ, पञ्चतन्मात्राएँ तथा मन की उत्पत्ति अहंकार से होती है।
- पञ्चमहाभूतों की उत्पत्ति पाँच तन्मात्राओं से होती है।
- महत् को बुद्धि, प्रत्यय, महान् एवं उपलब्धि आदि नामों से भी जाना जाता है।
- सत्त्वगुण प्रधान अहंकार से पञ्चज्ञानेन्द्रियाँ, पञ्चकर्मेन्द्रियाँ, तथा मन की उत्पत्ति होती है।
- तमोगुण प्रधान अहंकार में पञ्च तन्मात्राओं की उत्पत्ति होती है।

प्रकृतेर्महान् ततोऽहङ्कारः तस्मात् गणश्च षोडशकः।
तस्मादपि षोडशकात् पञ्चभ्यः पञ्चभूतानि॥ (का0- 22)

वेदान्तसार

अनुबन्ध चतुष्टय

अधिकारी	विषय	सम्बन्ध	प्रयोजन

- वेदान्तशास्त्र में चार अनुबन्ध हैं - अधिकारी, विषय, सम्बन्ध और प्रयोजन।

'तत्रानुबन्धो नामाधिकारिविषयसम्बन्धप्रयोजनानि '

- **वेदान्त का प्रथम अनुबन्ध अधिकारी**- अधिकारी तो वह जिज्ञासु प्रमाता है, जिसने वेद- वेदाङ्गों का विधिपूर्वक अध्ययन करके समस्त वेदान्त के अर्थ को सामान्यरूप से जान लिया है तथा इस जन्म में अथवा अन्य जन्मों में कामनाओं को पूर्ण करने वाले काम्यकर्म तथा शास्त्रों द्वारा निषेध किये गये कर्मों को छोड़ने के साथ-साथ नित्य, नैमित्तिक, प्रायश्चित्त और उपासना कर्मों के अनुष्ठान से सम्पूर्णपापों से मुक्त, अत्यधिक निर्मल अन्तःकरण वाला जो साधन चतुष्टयसम्पन्न है, ऐसा प्रमाता पुरुष (इस ब्रह्मविद्या) वेदान्त का अधिकारी है।
- **अधिकारी तु विधिवदधीतवेदवेदाङ्गत्वेनापाततोऽ–धिगताखिलवेदार्थोऽस्मिन् जन्मनि जन्मान्तरे वा काम्यनिषिद्धवर्जनपुरस्सरं नित्यनैमित्तिकप्रायश्चित्तो-पासनानुष्ठानेन निर्गतनिखिलकल्मषतया नितान्तनिर्मलस्वान्तः साधनचतुष्टयसम्पन्नः प्रमाता।**

अधिकारी के निरूपणान्तर्गत ही काम्यादि कर्मों का वर्णन किया गया है-

- 1. स्वर्ग आदि कामनाओं के साधनस्वरूप ज्योतिष्टोमयाग आदि काम्यकर्म हैं –
  'काम्यानि स्वर्गादीष्टसाधनानि ज्योतिष्टोमादीनि।'
- 2. नरकादि अनिष्टस्थानों की प्राप्ति के साधनभूत ब्राह्मणहत्या, गोहत्या आदि निषिद्धकर्म हैं– **'निषिद्धानि नरकाद्यनिष्टसाधनानि ब्राह्मणहननादीनि।'**

3. जिसके न करने से भविष्य में दुःख की सम्भावना हो, ऐसे सन्ध्यावन्दन आदि नित्यकर्म हैं– **'नित्यान्यकरणे प्रत्यवायसाधनानि सन्ध्यावन्दनादीनि'**

4. पुत्र जन्मादि के अवसर पर किये जाने वाले जातेष्टि यज्ञ आदि नैमित्तिक कर्म हैं **'नैमित्तिकानि पुत्रजन्माद्यनुबन्धीनि जातेष्ट्यादीनि'**–

5. पाप के क्षय करने के लिये साधन बनने वाले चान्द्रायण आदि व्रत प्रायश्चित्त कर्म हैं –**'प्रायश्चित्तानि पापक्षयसाधनानि चान्द्रायणादीनि।'**

6. सगुणब्रह्म को विषय बनाने वाला मानसिक व्यापार ध्यान ही जिनका स्वरूप है उन शाण्डिल्यविद्या आदि को उपासनाकर्म कहते हैं।

'उपासनानि सगुणब्रह्मविषयमानसव्यापाररूपाणि शाण्डिल्यविद्यादीनि।'

- नित्य नैमित्तिक और प्रायश्चित्त कर्मों का परम प्रयोजन- बुद्धि की शुद्धि एवं उपासना रूप कर्मों का मुख्य प्रयोजन -चित्त की एकाग्रता है–
- नित्य नैमित्तिक प्रायश्चित्त कर्मों का गौण प्रयोजन- पितृलोक प्राप्ति तथा उपासना का गौण प्रयोजन - सत्यलोक (देवलोक) की प्राप्ति।

कर्म

करने योग्य कर्म — न करने योग्य कर्म

नित्य	नैमित्तिक	प्रायश्चित्त	उपासना	निषिद्ध	काम्य
(सन्ध्यावन्दनादि)	(जातेष्टि आदि)	(चान्द्रायणव्रतादि)	(सगुणोपासना)	गोहत्यादि	ज्योतिष्टोमादि

- **साधनचतुष्टय -** (i) नित्य एवं अनित्य वस्तुविवेक (ii) इहलौकिक एवं पारलौकिक फल को भोगने के प्रति वैराग्य (iii) शम, दम, उपरति, तितिक्षा, समाधान और श्रद्धा आदि छः प्रकार की सम्पत्ति **तथा** (iv) मोक्षप्राप्ति के प्रति इच्छा- ये चार साधन हैं।

साधनानिनित्यानित्यवस्तुविवेकेहामुत्रार्थफलभोग-विरागशमादिषट्कसम्पत्तिमुमुक्षुत्वानि

- इनमें एकमात्र ब्रह्म ही नित्य वस्तु है उसके अतिरिक्त अन्य सभी कुछ अनित्य है इसप्रकार समझना ही **नित्य-अनित्य-वस्तुविवेक** है।
- इस लोक की माला, चन्दन, सुन्दरी आदि भोग विलास विषयक सामग्री कर्म द्वारा उत्पन्न होने के कारण अनित्य के समान है। इसीप्रकार पारलौकिक स्वर्ग आदि विषयभोगों के कर्मजन्य होने से अनित्य होने के कारण उनके प्रति भी नितान्त वैराग्यभाव ही '**इहामुत्रार्थफलभोग विराग**' है।
- **ऐहिकानां स्रक्चन्दनवनितादिविषयभोगानां कर्मजन्यतयाऽनित्यत्ववदामुष्मिकाणामप्यमृतादि-विषयभोगानामनित्यतया तेभ्यो नितरां विरतिरिहा मुत्रार्थफलभोगविरागः साधनचतुष्टय**

1. **नित्यानित्यवस्तुविवेक-** नित्य अनित्य वस्तु का विवेक।
2. **इहामुत्रार्थफलभोगविराग-** इस लोक एवं परलोक विषयक भोगने के प्रति वैराग्यभाव।
3. **शमादिषट्कसम्पत्ति-** शम, दम, उपरति, तितिक्षा, समाधान और श्रद्धा इन छः प्रकार की सम्पत्ति से सम्पन्न होना
4. **मुमुक्षुत्व-** मोक्ष की प्रबल इच्छा का होना।

शमादिषट्कसम्पत्ति

'शमादयस्तु शमदमोपरतितितिक्षासमाधानश्रद्धाख्याः'।

- **1. शम-** श्रवण, मनन और निदिध्यासन को छोड़कर उनसे भिन्न विषयों से मन को हटा लेने को शम कहते हैं।

'शमस्तावच्छ्रवणादिव्यतिरिक्तविषयेभ्यो मनसो निग्रहः'।

- **2. दम-** श्रोत्रादि बाह्य इन्द्रियों को श्रवणादि के अतिरिक्त विषयों से हटाने को दम कहते हैं। '**दमो बाह्येन्द्रियाणां तद्व्यतिरिक्तविषयेभ्यो निवर्तनम्**'।
- **3. उपरति-** अन्तरिन्द्रिय मन और श्रोत्रादि बाह्य इन्द्रियों को अपने-अपने विषय से निवृत्त कर लेने पर श्रवण आदि के अतिरिक्त विषयों से इनका उपरत हो जाना अर्थात् फिर से विषयों की ओर प्रवृत्त होने का उत्साह न रह जाने से स्थिर हो जाना उपरति है।

'निवर्तितानामेतेषां तद्व्यातिरिक्तविषयेभ्य उपरमणमुपरतिः अथवा विहितानां कर्मणां विधिना परित्यागः'।

- अथवा सन्ध्यावन्दन अग्निहोत्र आदि अवश्य करणीय वेदविहित कर्मों का श्रुति और स्मृति में बताई गई विधि से परित्याग कर देना अर्थात् संन्यास ग्रहण कर लेना ही उपरति है।

4. तितिक्षा- शीत-उष्ण, मान -अपमान, लाभ -हानि, जय- पराजय, निन्दा- स्तुति, हर्ष-शोक आदि द्वन्द्वों को सहन करना तितिक्षा है।

'तितिक्षा शीतोष्णादिद्वन्द्वसहिष्णुता'।

- **5. समाधान-** निगृहीत चित्त का श्रवणादि में तथा श्रवणादि के अनुकूल गुरुशुश्रूषा, वेदान्तग्रन्थों का सम्पादन और उनकी रक्षा करना आदि विषयों में स्थिर हो जाना समाधान है। **'निगृहीतस्य मनसः श्रवणादौ तदनुगुणविषये च समाधिः समाधानम्' ।**
- **6. श्रद्धा -** गुरू द्वारा उपदिष्ट वेदान्त के वाक्यों में विश्वास श्रद्धा है।

गुरूपदिष्टवेदान्तवाक्येषु विश्वासः श्रद्धा।

- **मुमुक्षुत्व -** मोक्ष की इच्छा ही मुमुक्षुत्व है। '**मुमुक्षुत्वं मोक्षेच्छा**'।

'**एवम्भूतः प्रमाताधिकारी**'। इसप्रकार की विशेषताओं से युक्त हुआ प्रमाता अधिकारी है।

- **वेदान्त का द्वितीय अनुबन्ध- विषय** वेदान्त का प्रतिपाद्य विषय -जीव और ब्रह्म की एकता है। **विषयो जीवब्रह्मैक्यं शुद्धचैतन्यं प्रमेयं तत्रैव वेदान्तानां तात्पर्यात्।**
- शुद्धचैतन्य प्रमा का विषय है क्योंकि समस्त वेदान्तवाक्यों का अभिप्राय उसी शुद्धचैतन्य के प्रतिपादन में निहित है।
- **वेदान्त का तृतीय अनुबन्ध-सम्बन्ध**
  ज्ञान के विषय उन जीव और ब्रह्म का ऐक्य एवं उनका प्रतिपादन करने वाले उपनिषद्रूप प्रमाणवाक्यों का परस्पर बोध्य-बोधकभाव सम्बन्ध है।

  'सम्बन्धस्तु तदैक्यप्रमेयस्य तत्प्रतिपादकोप–निषत्प्रमाणस्य च बोध्यबोधकभावः।'
- **वेदान्त का चतुर्थ अनुबन्ध-प्रयोजन** चतुर्थ अनुबन्ध उस जीव एवं ब्रह्म के ऐक्यविषयक ज्ञान के साथ अज्ञान की निवृत्तिपूर्वक अपने स्वरूप का परिचय होने से चरम आनन्द की प्राप्ति ही मुख्य प्रयोजन है।

*** प्रयोजनं तु तदैक्यप्रमेयगताज्ञाननिवृत्तिः स्वस्वरूपानन्दावाप्तिश्च।**

* ''तरति शोकमात्मवित्'' इत्यादि श्रुतेः ''ब्रह्मविद् बह्मैव भवति '' इत्यादि श्रुतेश्च। ''आत्मज्ञानी शोक से तर जाता है'' इत्यादि तथा ''ब्रह्मज्ञानी ब्रह्म ही हो जाता है'' इत्यादि श्रुति का कथन प्रमाण है।

अज्ञान की शक्ति

- अज्ञान की दो शक्तियाँ हैं - आवरण और विक्षेप। **'अस्याज्ञानस्यावरणविक्षेपनामकमस्ति शक्तिद्वयम्'।**

* प्रमाता के सच्चिदानन्द स्वरूप को जो शक्ति ढक देती है, वह आवरण शक्ति है।

* सम्पूर्ण नामरूपात्मक जगत् को उत्पन्न करने वाली शक्ति है - विक्षेप शक्ति।

* तमोगुण प्रधान होती है- विक्षेप शक्ति।

- वेदान्त की दृष्टि में आत्मा का बन्धन अथवा मोक्ष सम्भव नहीं है यह तो केवल आभासमात्र है। रस्सी में सर्प के समान अथवा सीप में चाँदी के समान।

हस्तामलक नामक ग्रन्थ में आयी हुई कारिका -

''घनच्छन्नदृष्टिर्घनच्छन्नमर्कं यथा मन्यते निष्प्रभं चातिमूढः।
तथा बद्धवद्भाति यो मूढदृष्टेः स नित्योपलब्धिस्वरूपोऽहमात्मा।।''

जिस प्रकार मेघ से ढका हुआ दृष्टि वाला मूर्ख व्यक्ति, बादल से ढके हुए सूर्य को प्रकाशरहित मानता है उसीप्रकार मूढ सामान्य दृष्टि वालों को आत्मा (जन्म - मरणादि बन्धनों से) बँधा हुआ सा प्रतीत होता है।

अज्ञान ,माया की शक्ति

आवरण	विक्षेप
(सत्य को आवृत करना)	(सत् में असत् की उद्भावना)

आवरण एवं विक्षेप नामक दो महत्त्वपूर्ण शक्तियों से युक्त अज्ञान से उपहित चैतन्य सूक्ष्मशरीर से लेकर ब्रह्माण्डपर्यन्त दृश्यमान सम्पूर्ण जगत् प्रपञ्च का उपादान और निमित्त दोनों है।

- **शक्तिद्वयवदज्ञानोपहितं चैतन्यं स्वप्रधानतया निमित्तं स्वोपाधिप्रधानतयोपादानं च भवति।यथा- लूता तन्तुकार्यं प्रति स्वप्राधानतया निमित्तं स्वशरीरप्रधानतयोपादानं च भवति।**
- जिसप्रकार मकड़ी अपने जाला निर्माणरूप कार्य के प्रति अपने शरीर के चैतन्य की प्रधानता के कारण निमित्तकारण है तथा अपने शरीर से निकलने वाले लारवे की प्रधानता की दृष्टि से उपादानकारण भी है।
- उसीप्रकार अज्ञान से उपहित आत्मा अपने चैतन्य की प्रधानता होने से दृश्यमान सांसारिक प्रपञ्च का निमित्तकारण तथा अज्ञान की प्रधानता के समय उपादान कारण होता है।
- अज्ञानोपहित चैतन्य के लिए वेदान्त में ईश्वर, चैतन्य एवं आत्मा आदि अनेक शब्दों का प्रयोग मिलता है।
- लूता मकड़ी का नाम है। मकड़ी की विशेषता यह है कि अपने द्वारा निर्मित जाले में अन्य किसी बाह्य उपादान का सहयोग नहीं लेती है।

तत्त्वमसि महावाक्यार्थ

- अज्ञान आदि व्यष्टि इसकी उपाधि अल्पज्ञत्व आदि विशेषताओं से युक्त चैतन्य (अर्थात् जीव) इसकी उपाधि से रहित शुद्धचैतन्य ये तीनों (एक साथ) तप्तलोहपिण्ड के समान अभिन्न प्रतीत होने के कारण 'त्वम्' पद के वाच्यार्थ होते हैं।
- इस उपाधि से युक्त आधारभूत अनुपहित आनन्दरूप तुरीयचैतन्य 'त्वम्'पद का लक्ष्यार्थ होता है।
- अनुपहित शुद्धचैतन्य 'तत्' एवं 'त्वम्' इन दोनों पदों का लक्ष्यार्थ है इसीलिए 'तत्' एवं 'त्वम्' ये दोनों पद यहाँ लक्षण है तथा शुद्धचैतन्य लक्ष्य है।
- 'तत्त्वमसि' (वह तू है) इत्यादि वाक्य तीन सम्बन्धों से अखण्ड अर्थ का बोध कराने वाला होता है।
- समानाधिकरण्य, विशेषणविशेष्यभाव एवं लक्ष्यलक्षणभाव ये तीन सम्बन्ध होते हैं।
- **चार महावाक्यों** की विशेषचर्चा वेदान्तदर्शन में की गई है-

महावाक्य	उपनिषद्	वेद
1. प्रज्ञानं ब्रह्म	ऐतरेयोपनिषद् -5	ऋग्वेद
2. तत्त्वमसि	छान्दोग्योपनिषद् -6.8.	सामवेद
3. अहं ब्रह्मास्मि	बृहदारण्यकोपनिषद् 1.4.10	यजुर्वेद
4. अयमात्मा ब्रह्म	माण्डूक्योपनिषद् -2	अथर्ववेद

- महावाक्यों का वर्ण्यविषय ब्रह्म के स्वरूप एवं अद्वैत का प्रतिपादन करना है।
- 'तत्त्वमसि' महावाक्य वस्तुतः उपदेशवाक्य है। जो एक गुरु द्वारा अधिकारी प्रमाता को उपदेश रूप में दिया जाता है 'तत्त्वमसि' - यह ब्रह्म और जीव की एकता बताता है।
- यहाँ लक्ष्यलक्षणसम्बन्ध को **'भागलक्षणा'** भी कहा गया है।

सम्बन्धत्रयम्

पदों में	पदों के अर्थों में	आन्तरिक गुणों के कारण
समानाधिकरण्य	विशेषण विशेष्यभाव	लक्ष्यलक्षणभाव

'अहं ब्रह्मास्मि'- महावाक्य

- 'अहं ब्रह्मास्मि' **अनुभववाक्य** है। 'तत्त्वमसि' **उपदेशवाक्य** है।
- 'अहं ब्रह्मास्मि' में ब्रह्माकाराकारिचित्तवृत्ति तथा तद्गत चिदाभास दोनों की आवश्यकता होती है 'ब्रह्मास्मीत्यखण्डाकाराकारिता चित्तवृत्तिरुदेति'।
- वेदान्त की दृष्टि में अधिकारी को गुरु अध्यारोप एवं अपवादन्याय से 'तत्त्वमसि' महावाक्य के तत् एवं त्वम् पदों के अर्थो को भली प्रकार समझाकर उसके बाद अखण्ड अर्थ का बोध कराता है। जिसके परिणामस्वरूप उसके हृदय में अखण्ड आकार से आकारित इसप्रकार की चित्तवृत्ति का उदय होता है कि मैं ही नित्य, शुद्ध,बुद्ध, मुक्त, सत्यस्वभाव, परमानन्द स्वरूप, अनन्त एवम् अद्वैतब्रह्म हूँ।
- जीव और ब्रह्म का यह अखण्डार्थवाक्य का बोध कराता है।

लक्षणा

जहत्	अजहत्	जहदजहल्लक्षणा
(गंगायां घोषः)	(शोणो धावति)	(तत्त्वमसि)

1. जहद्लक्षणा 2. अजहल्लक्षणा 3.जहदजहल्लक्षणा

1. **जहद्लक्षणा-** इसे लक्षणलक्षणा भी कहते हैं। जो अपने मूल अर्थ को त्याग दे और दूसरा अर्थ ग्रहण करे।

2. **अजहल्लक्षणा-** जो अपने अर्थ को न छोड़े वह उपादान लक्षणा या अजहल्लक्षणा होती है।

3. **जहदजहल्लक्षणा-** जो अपने मूल अर्थ को त्याग दें और एक अंश का बोध कराये वह जहदजहल्लक्षणा है। इसे **भागलक्षणा** भी कहते हैं।

- तत्त्वमसि वाक्य का बोध जहदजहल्लक्षणा या भागलक्षणा से होता है।

(तर्कभाषा) न्याय/वैशेषिक दर्शन

प्रमाण – न्यायदर्शन में तर्कभाषा प्रमाण चार प्रकार के होते हैं- **'प्रत्यक्षानुमानोपमानशब्दाः प्रमाणानि'**।

प्रत्यक्ष प्रमाण- ''साक्षात्कारिप्रमाकरणं प्रत्यक्षम्''
साक्षात्कारिणी प्रमा के करण को प्रत्यक्ष प्रमाण कहते हैं।

- साक्षात्कारिणी प्रमा दो प्रकार की होती है-
  (i) सविकल्पक (ii) निर्विकल्पक
- साक्षात्कारिणी प्रमा का करण तीन प्रकार का होता है-

(i) कभी इन्द्रिय (ii) कभी इन्द्रिय और अर्थ का सन्निकर्ष
(iii) कभी ज्ञान

षोढा सन्निकर्ष

सन्निकर्ष	इन्द्रिय	विषय
संयोग सन्निकर्ष	चक्षु	घट
संयुक्त समवाय सन्निकर्ष	चक्षु	घटरूप
संयुक्तसमवेत समवाय सन्निकर्ष	चक्षु	घटरूपत्व जाति
समवाय सन्निकर्ष	श्रोत्र	शब्द
समवेत समवाय सन्निकर्ष	श्रोत्र	शब्दत्व
विशेषण- विशेष्यभाव सन्निकर्ष	श्रोत्र	भूतले घटाभाव

अनुमान प्रमाण-'लिङ्गपरामर्शोऽनुमानम्'
लिङ्ग परामर्श को ही अनुमान कहते हैं।

- जिससे अनुमिति की जाती है उसे अनुमान कहते हैं। लिङ्ग परामर्श से अनुमिति की जाती है अतः लिङ्गपरामर्श अनुमान है।

लिङ्ग परामर्श- धूमादि का ज्ञान। अग्नि का ज्ञान अनुमिति है और धूमादि का ज्ञान उस अनुमिति का कारण है।

लिङ्ग- 'व्याप्तिबलेनार्थगमकं लिङ्गम्'
व्याप्ति के आधार पर (बल पर) अर्थ का जो बोधक होता है, उसे लिङ्ग कहते हैं। जैसे - 'धूम' अग्नि का लिङ्ग है।

- **व्याप्तिः- साहचर्यनियमो व्याप्तिः'** साहचर्य (साथ-साथ रहना) नियम को व्याप्ति कहते हैं। जैसे ''यत्र यत्र धूमः,तत्र तत्र वह्निः'' जहाँ-जहाँ धुआँ है, वहाँ-वहाँ अग्नि है।

परामर्श- 'तस्य तृतीयं ज्ञानं परामर्शः'
उसके (लिङ्ग) के तृतीय ज्ञान को परामर्श कहते हैं।

- **अनुमान प्रमाण के प्रकार- 'तच्चानुमानं द्विविधम् स्वार्थं परार्थं चेति'** वह अनुमान दो प्रकार का है- (i) स्वार्थानुमान (ii) परार्थानुमान

(i) स्वार्थानुमान- '' स्वार्थं स्वप्रतिपत्तिहेतुः '' अपने ज्ञान (प्रतिपत्ति) का निमित्त स्वार्थानुमान है।
जैसे- कोई व्यक्ति स्वयं ही पाकशाला में धूम और अग्नि को साथ देखकर उनके साहचर्य का निश्चय करके पर्वत के समीप जाकर धूम रेखा को देखता है तो उसका संस्कार उद्बुद्ध हो जाता है और वह 'जहाँ धूम होता है वहाँ अग्नि होती है' इस व्याप्ति का स्मरण करता है तदन्तर यहाँ भी धूम है यह परामर्श करता है उस (लिङ्गपरामर्श) से 'यहाँ पर्वत में भी अग्नि है' इसप्रकार स्वयं ही समझ लेता है। यही स्वार्थानुमान है।

(ii) परार्थानुमान -
''यत्तु कश्चित् स्वयं धूमादग्निमनुमाय परं बोधयितुं पञ्चावयवमनुमानवाक्यं प्रयुङ्क्ते तत् परार्थानुमानम्''

जब कोई व्यक्ति स्वयं धूम से अग्नि का अनुमान करके दूसरे को उसका बोध कराने के लिए पाँच अवयव वाले अनुमान वाक्य का प्रयोग करता है, वह परार्थानुमान है।

परार्थानुमान के पाँच अवयव हैं-

1. प्रतिज्ञा- पर्वतोऽग्निमान्

2. हेतु- धूम वत्त्वात्

'' तृतीयान्तं पञ्चम्यन्तं वा लिङ्गप्रतिपादकं वचनं हेतुः'' लिङ्ग को बताने वाला तृतीयान्त अथवा पञ्चम्यन्त वाक्य हेतु है।

- हेतु तीन प्रकार का है-1. अन्वयव्यतिरेकी, 2. केवलान्वयी, 3.केवल व्यतिरेकी
- अन्वय और व्यतिरेक व्याप्ति से युक्त हेतु अन्वयव्यतिरेकी है। **''स चान्वयव्यातिरेकी, अन्वयेन व्यतिरेकेण च व्याप्तिमत्वात्''**
- जहाँ-जहाँ धूमवत्व होता है, वहाँ-वहाँ अग्निमत्व होता है- जैसे महानस में यह अन्वयव्याप्ति है।**यत्र-यत्र धूमवत्वं तत्राग्निमत्वं यथा महानसे इत्यन्वयव्याप्तिः'**
- जहाँ अग्नि नहीं होती वहाँ धुँआ भी नहीं होता जैसे- जलाशय में। यह व्यतिरेक व्याप्ति है। **'यत्राग्निर्नास्ति तत्र धूमोऽपि नास्ति यथा - महाह्रदे'**
- केवल व्यतिरेक व्याप्ति से युक्त हेतु केवल व्यतिरेकी कहलाता है। यथा- **'जीवच्छरीरं सात्मकं प्राणादिमत्वात्'** जीवित शरीर सात्मक है क्योंकि वह प्राण से युक्त है।
- केवल अन्वयव्याप्ति से युक्त हेतु केवलान्वयी कहलाता है। यथा- **शब्दोऽभिधेयः प्रमेयत्वात्।** शब्द अभिधेय है प्रमेय होने से

हेतु

अन्वयव्यतिरेकी | केवलान्वयी | केवलव्यतिरेकी

3. उदाहरण- यो यो धूमवान् स सोऽग्निमान्, यथा- महानसः।

4. उपनय- तथा चायम्।

5. निगमन- तस्मात् तथा।

उपमान प्रमाण- ''अतिदेशवाक्यार्थस्मरणसहकृतं गोसादृश्य विशिष्टपिण्डज्ञानमुपमानम्''।

अतिदेश वाक्य (जैसी गाय वैसी नीलगाय) के अर्थ का स्मरण करने के साथ 'गौ की समानता से युक्त पिण्ड (आकृति)का ज्ञान ही 'उपमान प्रमाण' है।

जैसे- **'यथा गौस्तथा गवयः'** जैसी गाय वैसे ही नीलगाय

उपमिति- संज्ञासंज्ञिसम्बन्धप्रतीतिरुपमितिः' अर्थात् सञ्ज्ञा और सञ्ज्ञी के सम्बन्ध की प्रतीति उपमिति है।

शब्दप्रमाण- 'आप्तवाक्यं शब्दः' आप्त का वाक्य शब्द प्रमाण है।

आप्त- यथाभूत का अर्थ ही उपदेश करने वाला पुरुष 'आप्त' कहलाता है।

वाक्य- 'वाक्यं त्वाकांक्षायोग्यतासन्निधिमतां पदानां समूहः'

आकांक्षा, योग्यता और सन्निधि से युक्त पदसमूह वाक्य है।

आकांक्षा का अर्थ है- एक पद का दूसरे के बिना अन्वय बोध न करा सकना।

योग्यता का अर्थ है- पदार्थों के पारस्परिक सम्बन्ध में बाधा न होना

सन्निधि का अर्थ है- पदों का अविलम्ब से उच्चारण किया जाना

पद- पदं च वर्णसमूहः - वर्णों का समूह पद है। समूह का अभिप्राय है एक ज्ञान का विषय होना।

नन्वर्थापत्तिः पृथक् प्रमाणमस्ति- अर्थापत्ति को मीमांसक पृथक् प्रमाण मानते हैं किन्तु नैयायिक इसका अन्तर्भाव अनुमान प्रमाण में करते हैं।

अर्थापत्ति- 'अनुपपद्यमानार्थदर्शनात् तदुपपादकीभूतार्थान्तराकल्पना अर्थापत्तिः' अनुपपद्यमान अर्थ को जानकर उसके उपपादक अर्थ की कल्पना अर्थापत्ति है।

अभाव- 'अभाव' को भी पृथक् प्रमाण मानते हैं अभाव का ज्ञान जिस प्रमाण से होता है उसे अभाव प्रमाण कहते हैं। जैसे- 'भूतले घटो नास्ति'।

प्रामाण्यवाद

प्रामाण्य का अर्थ 'ज्ञान का सत्य होना' है और अप्रमाण्य का अर्थ 'ज्ञान का असत्य होना' है।

1. बौद्धमत	प्रामाण्यस्वतः अप्रामाण्यपरतः
2. जैनमत	प्रामाण्य और अप्रामाण्यपरतः (उत्पत्ति)
	प्रामाण्य और अप्रामाण्यस्वतः (ज्ञाप्ति)
3. सांख्यमत	प्रामाण्य और अप्रामाण्य स्वतः
4. मीमांसामत	प्रामाण्यस्वतः अप्रामाण्यपरतः
5. न्यायवैशेषिक मत	प्रामाण्य और अप्रामाण्य परतः

(तर्कसंग्रह)

1. प्रत्यक्षप्रमाणम् –

- **'प्रत्यक्षज्ञानकरणं प्रत्यक्षम्'** - प्रत्यक्षज्ञान का करण प्रत्यक्ष है।
- **'इन्द्रियार्थसन्निकर्षजन्यं ज्ञानं प्रत्यक्षम्'** – इन्द्रिय तथा पदार्थ के सन्निकर्ष अर्थात् संयोग से उत्पन्न होने वाला ज्ञान प्रत्यक्ष है।

➢ **'प्रतिगतम् अक्षं प्रत्यक्षम्'** – यह प्रत्यक्ष की व्युत्पत्ति है। प्रत्यक्ष प्रमाण के दो भेद हैं – (1) निर्विकल्पक (2) सविकल्पक

प्रत्यक्ष प्रमाण

निर्विकल्पक | सविकल्पक

(1) **निर्विकल्पक –** 'निष्प्रकारकं ज्ञानं निर्विकल्पकम्' निष्प्रकारक ज्ञान निर्विकल्पक है। यथा – किञ्चिद् इदम् इति (यह कुछ है)

(2) **सविकल्पकम् –** 'सप्रकारकं ज्ञानं सविकल्पकम्।' सप्रकारकज्ञान सविकल्पक है।

यथा- डित्थोऽयम्, ब्राह्मणोऽयम्, श्यामोऽयम्।
(यह डित्थ है) (यह ब्राह्मण है) (यह श्याम है)

इन्द्रियार्थ सन्निकर्ष – 'प्रत्यक्षज्ञानहेतुरिन्द्रियार्थसन्निकर्षः षड्विधः' प्रत्यक्षज्ञान का हेतु इन्द्रिय एवं पदार्थ का सन्निकर्ष छः प्रकार का होता है

(i) संयोग (ii) संयुक्तसमवाय (iii) संयुक्तसमवेत समवाय
(iv) समवाय (v) समवेतसमवाय (vi) विशेषण विशेष्यभाव

(1) **संयोगसन्निकर्ष –** 'चक्षुषा घटप्रत्यक्षजनने संयोगः सन्निकर्षः' - चक्षु के द्वारा घट के प्रत्यक्ष ज्ञान में संयोग सन्निकर्ष होता है।

(2) **संयुक्तसमवायसन्निकर्ष –** 'घटरूपप्रत्यक्षजनने संयुक्तसमवायः सन्निकर्षः' घट के रूप के प्रत्यक्षज्ञान में संयुक्तसमवाय सन्निकर्ष होता है, क्योंकि चक्षु से संयुक्त घट में रूप समवाय सम्बन्ध से रहता है।

(3) **संयुक्तसमवेतसमवाय सन्निकर्ष –** 'रूपत्वसामान्यप्रत्यक्षे संयुक्तसमवेतसमवायः सन्निकर्षः' - रूपत्वजाति के प्रत्यक्ष में संयुक्तसमवेतसमवाय सन्निकर्ष होता है, क्योंकि चक्षु से संयुक्त घट में रूप समवाय सम्बन्ध से तथा रूप में रूपत्व समवाय सम्बन्ध से रहता है।

(4) **समवायसन्निकर्ष –** 'श्रोत्रेण शब्दसाक्षात्कारे समवायः सन्निकर्षः' - श्रोत्र (कर्ण) के द्वारा शब्द साक्षात्कार में समवायसन्निकर्ष होता है।

➢ कर्णविवर में विद्यमान आकाश ही श्रोत्र है।

➢ शब्द आकाश का गुण है तथा गुण एवं गुणी में समवाय सम्बन्ध होता है।

(5) **समवेतसमवायसन्निकर्ष –** 'शब्दत्वसाक्षात्कारे समवेतसमवायः सन्निकर्षः' शब्द जाति के प्रत्यक्ष में समवेतसमवायसन्निकर्ष होता है, क्योंकि शब्द में शब्दत्व समवायसम्बन्ध से रहता है।

(6) **विशेषणविशेष्यभाव सन्निकर्ष –** 'अभावप्रत्यक्षे विशेषणविशेष्यभावः सन्निकर्षः' - अभाव के प्रत्यक्ष में विशेषणविशेष्यभाव सन्निकर्ष होता है। क्योंकि 'भूतल घटाभाव वाला है' इस प्रकार के ज्ञान में चक्षु से संयुक्त भूतल में घटाभाव विशेषण है।

➢ इसप्रकार छः सन्निकर्षों से उत्पन्न ज्ञान प्रत्यक्ष है, उसका करण इन्द्रिय है, अतः इन्द्रिय ही प्रत्यक्ष प्रमाण है, यह सिद्ध होता है। **'तस्मात् इन्द्रियं प्रत्यक्षप्रमाणमिति सिद्धम्'**

षोढा सन्निकर्ष

	इन्द्रिय	पदार्थ	सन्निकर्ष
1.	चक्षु	घट	संयोग
2.	चक्षु	घटरूप	संयुक्तसमवाय
3.	चक्षु	घटरूपत्व	संयुक्तसमवेतसमवाय
4.	श्रोत्र	शब्द	समवाय
5.	श्रोत्र	शब्दत्व	समवेतसमवाय
6.	चक्षु	घटाभाव (विशेषण) भूतल (विशेष्य)	विशेषण विशेष्यभाव

अनुमानप्रमाण

➢ **अनुमान –**'अनुमितिकरणम् अनुमानम्' - अनुमिति का करण अनुमान है।

➢ **अनुमिति –** 'परामर्शजन्यं ज्ञानम् अनुमितिः' – परामर्श से उत्पन्न होने वाला ज्ञान अनुमिति है।

➢ **परामर्श –** 'व्याप्तिविशिष्टपक्षधर्मताज्ञानं परामर्शः' – व्याप्ति से विशिष्ट पक्षधर्मताज्ञान को परामर्श कहते हैं।यथा – 'वह्निव्याप्यधूमवान् अयं पर्वतः' – यह ज्ञान परामर्श है वह्निव्याप्य यह पर्वत धूमवान् है। इसी परामर्श से उत्पन्न 'पर्वतो वह्निमान्' यह ज्ञान अनुमिति है।

व्याप्ति– 'यत्र यत्र धूमः तत्र तत्र अग्निः' इति साहचर्यनियमो व्याप्तिः - 'जहाँ जहाँ धूम है वहाँ वहाँ अग्नि है' – यह साहचर्यनियम व्याप्ति है।

पक्षधर्मता– 'व्याप्यस्य पर्वतादिवृत्तित्वं पक्षधर्मता'- व्याप्य का पर्वतादि में रहना पक्षधर्मता है।

अनुमान के भेद- (1) स्वार्थानुमान (2) परार्थानुमान

1. **स्वार्थानुमान -** 'स्वार्थं स्वानुमितिहेतुः' – स्वार्थानुमान अपने अनुमिति ज्ञान का हेतु है।

- जैसे – कोई स्वयं ही बार-बार देखकर 'जहाँ जहाँ धुआँ है वहाँ वहाँ अग्नि है' इसप्रकार रसोईघर आदि में व्याप्ति को ग्रहण करके पर्वत के समीप जाकर उसमें अग्नि का सन्देह होने पर पर्वत में धूम को देखता हुआ 'जहाँ जहाँ धुआँ वहाँ वहाँ अग्नि' इस व्याप्ति का स्मरण करता है। तत्पश्चात् 'यह पर्वत अग्नि से व्याप्त धुएँ वाला है' यह ज्ञान उत्पन्न होता है। यही लिङ्गपरामर्श कहलाता है। इससे पर्वत वह्निमान् है, यह अनुमितिज्ञान उत्पन्न होता है। यही स्वार्थानुमान है।
- इसप्रकार द्विविध अनुमान में जो अनुमान अपने ज्ञान के लिए किया जाय, वह स्वार्थानुमान है – स्वस्य अर्थः प्रयोजनं यस्मात् तत् स्वार्थम्। 'स्वार्थं स्वप्रतिपत्तिहेतुः स्वानुमितिहेतुर्वा'

2. **परार्थानुमान -** 'यत्तु स्वयं धूमादग्निमनुमाय परं प्रति बोधयितुं पञ्चावयववाक्यं प्रयुज्यते तत्परार्थानुमानम्'

   जो स्वयं धूम से अग्नि का अनुमान करके दूसरे को समझाने के लिए पञ्चावयव वाक्य का प्रयोग किया जाता है, वह परार्थानुमान है।

पञ्चावयव वाक्यों की प्रक्रिया

- प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय तथा निगमन – ये पाँच अवयव हैं।

1. **प्रतिज्ञा –** पर्वतो वह्निमान् (पर्वत वह्निमान् है)
2. **हेतु -** धूमवत्त्वात् (क्योंकि वह धूमवान् है)
3. **उदाहरण –** यो यो धूमवान् स स वह्निमान् यथा- महानसः (जो जो धूमवान् होता है, वह वह वह्निमान् होता है, जैसे – रसोईघर)
4. **उपनय –** तथा चायम् – (उसीप्रकार यह है)
5. **निगमन –** तस्मात् तथा इति (अतः इसमें भी वैसी ही अग्नि है)

- इसप्रकार पञ्चावयव वाक्य के द्वारा प्रतिपादित लिङ्ग से दूसरा व्यक्ति भी पर्वत पर अग्नि का अनुमान कर लेता है।
- स्वार्थानुमिति तथा परार्थानुमिति में लिङ्गपरामर्श ही करण है, इसलिए लिङ्गपरामर्श अनुमान है। **'तस्मात् लिङ्गपरामर्शोऽनुमानम्'**

लिङ्ग के प्रकार

लिङ्ग तीन प्रकार के हैं – (i) अन्वयव्यतिरेकी (ii) केवलान्वयी (iii) केवलव्यतिरेकी

(i) **अन्वयव्यतिरेकी –** 'अन्वयेन व्यतिरेकेण च व्याप्तिमद् अन्वयव्यतिरेकि' अन्वय एवं व्यतिरेक से व्याप्तिमान् अन्वयव्यतिरेकी होता है।

- यथा – वह्नौ साध्ये धूमवत्त्वम् =वह्नि के साध्य होने पर धूमवत्त्व लिङ्ग।
- 'यत्र धूमः तत्र अग्निः' यथा-महानसः = जहाँ धुआँ होता है, वहाँ आग होती है। जैसे – रसोईघर। यह अन्वयव्याप्ति है।
- यत्र वह्निर्नास्ति तत्र धूमोऽपि नास्ति, यथा-ह्रदः = जहाँ आग नहीं होती वहाँ धुआँ नहीं होता, जैसे – सरोवर। यह व्यतिरेक व्याप्ति है।

(ii) **केवलान्वयी –** 'अन्वयमात्रव्याप्तिकं केवलान्वयि' – अन्वयमात्र व्याप्ति वाला लिङ्ग केवलान्वयी है। यथा - घटोऽभिधेयः प्रमेयत्वात् पटवत् जैसे – घट अभिधेय है क्योंकि वह प्रमेय है। यथा – पट।

यहाँ प्रमेयत्व तथा अभिधेयत्व की व्यतिरेक व्याप्ति नहीं है, क्योंकि सभी कुछ प्रमेय और अभिधेय है।

(iii) **केवलव्यतिरेकी** – 'व्यतिरेकमात्रव्याप्तिकं केवलव्यतिरेकि' – व्यतिरेक मात्र व्याप्ति वाला लिङ्ग केवलव्यतिरेकी है।

- यथा – पृथिवीतरेभ्यो भिद्यते गन्धवत्त्वात् यदितरेभ्यो न भिद्यते न तद् गन्धवत् यथा – जलम्।
  जैसे- पृथिवी इतर से भिन्न है, क्योंकि गन्धवती है, जो इतर से भिन्न नहीं है वह गन्धवती नहीं है, जैसे – जल।
- यह पृथिवी वैसी (गन्धरहित) नहीं है इसलिए उसके समान नहीं है यहाँ जो गन्धवान् है, वह इतर पदार्थों से भिन्न है। इसका अन्वय दृष्टान्त नहीं है क्योंकि पृथिवी मात्र ही पक्ष है।
- **पक्ष –** 'सन्दिग्धसाध्यवान् पक्षः'
  जहाँ साध्य सन्दिग्ध रूप से पाया जाये, उसे पक्ष कहा जाता है। यथा- धूमवत्त्वे हेतौ पर्वतः। जैसे- धूमवत्त्व हेतु में पर्वत।
- **सपक्ष-** 'निश्चितसाध्यवान् सपक्षः।'
  निश्चित साध्य वाला सपक्ष होता है। यथा- रसोईघर।
- **विपक्ष-** 'निश्चितसाध्याऽभाववान् विपक्षः।'
  निश्चित साध्य का अभाव वाला विपक्ष होता जैसे- महासरोवर

पक्ष - सन्दिग्धसाध्यवान् (पर्वतः)
सपक्ष - निश्चितसाध्यवान् (महानसः)
विपक्ष - निश्चितसाध्य- अभाववान् (महाह्रदः)

हेत्वाभास

- **हेतोः आभासाः =** हेतु के दोष
- **हेतुवद् आभासन्ते इति हेत्वाभासः =** हेतु की तरह प्रतीत होना। दुष्ट हेतु या दोषयुक्त हेतु।

इसप्रकार जो हेतु के समान भासित होता है किन्तु हेतु नहीं हो, वह हेत्वाभास कहलाता है।

हेत्वाभास के पाँच प्रकार-

1.सव्यभिचार 2. विरुद्ध 3. सत्प्रतिपक्ष 4. असिद्ध 5. बाधित

'सव्यभिचारि-विरुद्ध-सत्प्रतिपक्ष-असिद्ध- बाधिताः पञ्च हेत्वाभासाः'

हेत्वाभास

सव्यभिचार (अनैकान्तिक) विरुद्ध सत्प्रतिपक्ष असिद्ध बाधित

सव्यभिचार (अनैकान्तिक) — साधारण, असाधारण, अनुपसंहारी

असिद्ध — आश्रयासिद्ध, स्वरूपासिद्ध, व्याप्यत्वासिद्ध

- सव्यभिचारी अनैकान्तिक है। यह तीन प्रकार का है-

  (i) साधारण (ii) असाधारण (iii) अनुपसंहारी

  (i) **साधारण अनैकान्तिक हेत्वाभास-** साध्य-अभाववद्वृत्तिः साधारणोऽनैकान्तिकः

- साध्य के अभाव में रहने वाला साधारण अनैकान्तिक है।

  जैसे- पर्वतो वह्निमान् प्रमेयत्वात् इति।

  पर्वत वह्निमान् है, क्योंकि वह प्रमेय है।

  प्रमेयत्व वह्नि के अभाव वाले सरोवर में रहता है।

  (ii) **असाधारण अनैकान्तिक हेत्वाभास-** 'सर्वसपक्षविपक्षव्यावृत्तः पक्षमात्रवृत्तिरसाधारणः'

* जो सपक्ष एवं विपक्ष में न रहकर केवल पक्ष में रहे, वह असाधारण है।

  यथा- शब्दो नित्यः शब्दत्वात् इति।

  जैसे- शब्द नित्य है, क्योंकि वह शब्द है। शब्द सारे नित्य एवं अनित्य में न रहकर केवल शब्द में रहता है

  (iii) **अनुपसंहारी अनैकान्तिक हेत्वाभास-** 'अन्वयव्यतिरेकदृष्टान्तरहितोऽनुपसंहारी'

* अन्वय एवं व्यतिरेक दृष्टान्त से रहित हेत्वाभास अनुपसंहारी होता है।

  यथा- सर्वम् अनित्यं प्रमेयत्वात् इति। सब अनित्य है प्रमेयत्व के कारण। यहाँ 'सर्वं' पक्ष है इसलिए दृष्टान्त नहीं है।

* तर्कभाषा में अनैकान्तिक (सव्यभिचारी) हेत्वाभास के दो ही भेद कहे गये हैं साधारण एवं असाधारण।

2. विरुद्ध हेत्वाभास-

'साध्याभावव्याप्तो हेतुर्विरुद्धः' साध्य के अभाव से व्याप्त हेतु विरुद्ध है।

यथा- शब्दो नित्यः कृतकत्वात् इति।

जैसे- शब्द नित्य है कार्य होने के कारण यहाँ कृतकत्व नित्यत्व का अभाव अनित्यत्व से व्याप्त है।

3. सत्प्रतिपक्ष हेत्वाभास-'यस्य साध्य-अभावसाधकं हेत्वन्तरं विद्यते स सत्प्रतिपक्षः'

जिस हेतु के साध्य के अभाव को सिद्ध करने वाला अन्य हेतु है, वह सत्प्रतिपक्ष है।

* यथा- शब्दो नित्यः श्रावणत्वाच्छब्दवत्।

☆ शब्द नित्य है। श्रावणत्व के कारण शब्द के समान।

☆ शब्दो अनित्यः कार्यत्वाद् घटवत् इति।

☆ शब्द अनित्य है, कार्य होने के कारण, घट के समान।

4. असिद्ध हेत्वाभास

- असिद्ध हेत्वाभास तीन प्रकार का होता है-

  (i) आश्रयासिद्ध (ii) स्वरूपासिद्ध (iii) व्याप्यत्वासिद्ध

- 'स्वयम् असिद्धः कथं परान् साधयति' अर्थात् जहाँ हेतु की पक्ष में विद्यमानता निश्चित नहीं होती वहाँ असिद्ध हेत्वाभास होता है।

(i) **आश्रयासिद्ध हेत्वाभास-** जिस हेतु का आश्रय(पक्ष) प्रमाणसिद्ध न हो, वह आश्रयासिद्ध है- **'यस्य हेतोः आश्रयो नावगम्यते स आश्रयासिद्धः'** यथा- गगनारविन्दं सुरभि अरविन्दत्वात्।

आकाशकमल सुगन्धित होता है, क्योंकि वह कमल है, सरोवर में उत्पन्न कमल की तरह। यहाँ साध्य सुरभित्व का आश्रय गगनारविन्द की सत्ता ही नहीं है।

(ii) **स्वरूपासिद्ध हेत्वाभास-** स्वरूपासिद्ध वह हेत्वाभास है जिसके पक्ष में हेतु का अभाव होता है। जैसे- **'शब्दो गुणः चाक्षुषत्वात् रूपवत्।'** शब्द गुण है, दिखाई पड़ने के कारण, रूप के समान।

- यहाँ 'चाक्षुषत्व' शब्द में नहीं है क्योंकि शब्द श्रवण से ग्राह्य है।

(iii) **व्याप्यत्वासिद्ध हेत्वाभास-** 'सोपाधिको हेतुर्व्याप्यत्वासिद्धः' उपाधियुक्त हेतु व्याप्यत्वासिद्ध होता है।

* यथा- 'पर्वतो धूमवान् वह्निमत्त्वात्'
पर्वत धूमवान् है, वह्नियुक्त होने के कारण।
सोपाधिक होने से वह्निमत्त्व व्याप्यत्वासिद्ध है।

➢ **उपाधि-** 'साध्यव्यापकत्वे सति साधन-अव्यापकत्वम् उपाधिः'
साध्य के व्यापक होने पर साधन की अव्यापकता उपाधि है।

5. बाधित हेत्वाभास

➢ **'यस्य साध्याभावः प्रमाणान्तरेण निश्चितः सः बाधितः'।**
जिस हेतु के साध्य का अभाव किसी अन्य प्रमाण से निश्चित होता है वह बाधित हेत्वाभास है।

* यथा- वह्निरनुष्णो द्रव्यत्वात् इति।
अग्नि शीतल है, द्रव्य होने के कारण।
यहाँ 'अनुष्णत्व' (शीतलता) साध्य है उसका अभाव उष्णत्व स्पार्शनप्रत्यक्ष से ज्ञात होता है। इसलिए इसमें बाधित हेत्वाभास है।

उपमानप्रमाण

➢ **उपमान-** 'उपमितिकरणम् उपमानम्'
उपमिति का करण उपमान है।

➢ **उपमिति-** 'संज्ञासंज्ञिसम्बन्धज्ञानम् उपमितिः'
संज्ञा तथा संज्ञी के सम्बन्धज्ञान को उपमिति कहते हैं। उसका करण सादृश्यज्ञान है।

➢ **अवान्तरव्यापार-** 'अतिदेशवाक्यार्थस्मरणम् अवान्तरव्यापारः'
प्रामाणिक व्यक्ति के कहे हुए वाक्यार्थ का स्मरण अवान्तर व्यापार है।

➢ **उपमिति की प्रक्रिया-** जैसे कोई गवय शब्द के अर्थ को बिना जानता हुआ किसी जंगली पुरुष से गाय के सदृश गवय होता है (गो सदृशो गवयः) यह सुनकर वन में जाता हुआ वाक्य के अर्थ को स्मरण करते हुए गो सदृश पिण्ड को देखता है। तदनन्तर यह गवय शब्द से वाच्य है। यह उपमिति उत्पन्न होती है।

शब्दप्रमाण

➢ **शब्द-** 'आप्तवाक्यं शब्दः' आप्तपुरुषों का वाक्य शब्द प्रमाण है।

➢ **आप्त-** 'आप्तस्तु यथार्थवक्ता' आप्त तो यथार्थवक्ता है।
वाक्य- 'वाक्यं पदसमूहः' वाक्य पदों का समूह है।
जैसे- गाम् आनय (गाय लाओ)

➢ वाक्य से प्राप्त होने वाला अर्थ ही शाब्दबोध अथवा वाक्यार्थज्ञान कहलाता है।

पद- 'शक्तं पदम्' शक्त अर्थात् शक्तियुक्त (सामर्थ्यवान्) पद है।

➢ **शक्ति-** 'अस्मात् पदात् अयमर्थो बोद्धव्यः इति ईश्वरसङ्केतः शक्तिः'
इस पद से यह अर्थ जानना चाहिए- इस प्रकार का ईश्वरसङ्केत ही शक्ति है।

* 'अर्थस्मृत्यनुकूलः पदपदार्थसम्बन्धः शक्तिः'(दीपिका टीका)

वाक्यार्थज्ञान के हेतु- आकांक्षा, योग्यता और सन्निधि- वाक्यार्थ ज्ञान के प्रति हेतु है।

आकांक्षा- 'पदस्य पदान्तरव्यतिरेकप्रयुक्तान्वयाननुभावकत्वम् आकाङ्क्षा'
एक पद का दूसरे अर्थ के बिना प्रयुक्त होने पर शाब्दबोध करवाने की असमर्थता आकाङ्क्षा है।

➢ **योग्यता-** 'अर्थाबाधो योग्यता' अर्थ का बाधारहित होना योग्यता है।

➢ **सन्निधि-** 'पदानाम् अविलम्बेन उच्चारणं सन्निधिः'
पदों का बिना विलम्ब के उच्चारण सन्निधि है।

➢ इसप्रकार आकांक्षा, योग्यता, सन्निधि से रहित वाक्य प्रमाण नहीं है। यथा- गौः, अश्वः, पुरुषः, हस्ती- यह प्रमाण नहीं हैं, क्योंकि इसमें आकांक्षा का अभाव है।

➢ 'अग्निना सिञ्चेत्' इति न प्रमाणम्। क्योंकि इसमें योग्यता का अभाव है।

➢ एक-एक प्रहर में कहे गये 'गाम् ..... आनय' इत्यादि पद प्रमाण नहीं हैं, क्योंकि इनमें सन्निधि नहीं है।

वाक्य के दो प्रकार- तर्कसंग्रह के अनुसार वाक्य के दो प्रकार हैं- वैदिक और लौकिक

(i) वैदिक वाक्य- 'वैदिकमीश्वरोक्तत्वात् सर्वमेव प्रमाणम्'
ईश्वर वचन होने के कारण सारे वैदिक वाक्य प्रमाण हैं।

(ii) लौकिक वाक्य- लौकिक वाक्य तो आप्तकथित प्रमाण हैं, अन्य प्रमाण नहीं हैं।
'लौकिकं तु आप्तोक्तं प्रमाणम् अन्यद् अप्रमाणम्'

शाब्दज्ञान- 'वाक्यार्थज्ञानं शाब्दज्ञानम्।'
वाक्य के अर्थों का ज्ञान ही शाब्दज्ञान है, उसका करण शब्द है।

गीता

निष्काम कर्मयोग

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ॥47॥

तेरा कर्म करने में ही अधिकार है उसके फलों में कभी नहीं। इसलिये तू कर्मों के फल का हेतु मत हो तथा तेरी कर्म न करनें में भी आसक्ति न हो।

योगस्थः कुरु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा धनञ्जय।
सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते ॥48॥

हे धनञ्जय तू आसक्ति को त्यागकर तथा सिद्धि और असिद्धि में समान बुद्धिवाला होकर योग में स्थित हुआ कर्तव्यकर्मों को कर समत्व ही योग कहलाता है।

दूरेण ह्यवरं कर्म बुद्धियोगाद्धनंजय।
बुद्धौ शरणमन्विच्छ कृपणाः फलहेतवः ॥49॥

बुद्धियोग से सकाम कर्म अत्यन्त ही निम्न श्रेणी का है। इसलिये हे धनञ्जय तू समबुद्धि में ही रक्षा का उपाय ढूँढ़, अर्थात् बुद्धियोग का ही आश्रय ग्रहण कर क्योंकि फल के हेतु बनने वाले अत्यन्त दीन हैं।

बुद्धियुक्तो जहातीह उभे सुकृतदुष्कृते।
तस्माद्योगाय युज्यस्व योगः कर्मसु कौशलम् ॥50॥

समबुद्धियुक्त पुरुष पुण्य और पाप दोनों को इसी लोक में त्याग देता है अर्थात् उनसे मुक्त हो जाता है। इसलिये तू समत्वरूप योग में लग जा, यह समत्वरूप योग ही कर्मों में कुशलता है, अर्थात् कर्मबन्धन से छूटने का उपाय है।

कर्मजं बुद्धियुक्ता हि फलं त्यक्त्वा मनीषिणः।
जन्मबन्धविनिर्मुक्ताः पदं गच्छन्त्यनामयम् ॥51॥

क्योंकि समबुद्धि से युक्त ज्ञानीजन कर्मों से उत्पन्न होने वाले फल को त्यागकर जन्मरूप बन्धन से मुक्त हो निर्विकार परमपद को प्राप्त हो जाते हैं।

यदा ते मोहकलिलं बुद्धिर्व्यतितरिष्यति।
तदा गन्तासि निर्वेदं श्रोतव्यस्य श्रुतस्य च ॥52॥

जिस काल में तेरी बुद्धि मोहरूप दलदल को भलीभाँति पार कर जायेगी, उस समय तू सुने हुए और सुनने में आनेवाले इस लोक और पर लोकसम्बन्धी सभी भोगों से वैराग्य को प्राप्त हो जायगा।

श्रुतिविप्रतिपन्ना ते यदा स्थास्यति निश्चला ।
समाधावचला बुद्धिस्तदा योगमवाप्स्यसि ॥53॥

भाँति-भाँति के वचनों को सुनने से विचलित हुई तेरी बुद्धि जब परमात्मा में अचल और स्थिर ठहर जाएगी, तब तू योग को प्राप्त हो जायेगा, अर्थात् तेरा परमात्मा से नित्य संयोग हो जायेगा।

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि॥ (2/47)

- योग मार्ग में स्थित होकर कर्मों को करना चाहिए- **योगस्थः कुरु कर्माणि....।**
- गीता में समत्व को योग कहा गया है। **'समत्वं योग उच्यते'** (2/48)
- समत्वरूप योग ही कर्मों में कुशलता है अर्थात् कर्मबन्धन से छूटने का उपाय है-

योगः कर्मसु कौशलम् (2/50)

स्थितप्रज्ञ का स्वरूप

अर्जुन उवाच

स्थितप्रज्ञस्य का भाषा समाधिस्थस्य केशव ।
स्थितधीः किं प्रभाषेत किमासीत व्रजेत किम् ॥54॥

हे केशव! समाधि में स्थित परमात्मा को प्राप्त हुए स्थिरबुद्धि पुरुष का क्या लक्षण है? वह स्थिरबुद्धि पुरुष कैसे बोलता है, कैसे बैठता है और कैसे चलता है?

श्रीभगवानुवाच

प्रजहाति यदा कामान्सर्वान्पार्थ मनोगतान् ।
आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते ॥55॥

हे अर्जुन! जिस काल में यह पुरुष मन में स्थित सम्पूर्ण कामनाओं को भलीभाँति त्याग देता है और आत्मा से आत्मा में ही संतुष्ट रहता है उस काल में वह स्थितप्रज्ञ कहा जाता है।

दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः ।
वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते ॥56॥

दुःखों की प्राप्ति होने पर जिसके मन में उद्वेग नहीं होता, सुखों की प्राप्ति में जो सर्वथा निःस्पृह है तथा जिसके राग, भय और क्रोध नष्ट हो गये हैं, ऐसा मुनि स्थिरबुद्धि कहा जाता है।

यः सर्वत्रानभिस्नेहस्तत्तत्प्राप्य शुभाशुभम् ।
नाभिनन्दति न द्वेष्टि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥57॥

जो पुरुष सर्वत्र स्नेहरहित हुआ उस-उस शुभ या अशुभ वस्तु को प्राप्त होकर न प्रसन्न होता है और न द्वेष करता है, उसकी बुद्धि स्थिर है।

यदा संहरते चायं कूर्मोऽङ्गानीव सर्वशः ।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥58॥

और कछुआ सब ओर से अपने अंगों को जैसे समेट लेता है, वैसे ही जब यह पुरुष इन्द्रियों के विषयों से इन्द्रियों को सब प्रकार से हटा लेता है, तब उसकी बुद्धि स्थिर है ऐसा समझना चाहिये।

विषया विनिवर्तन्ते निराहारस्य देहिनः।
रसवर्जं रसोऽप्यस्य परं दृष्ट्वा निवर्तते ॥59॥

इन्द्रियों के द्वारा विषयों को ग्रहण न करने वाले पुरुष के भी केवल विषय तो निवृत्त हो जाते हैं, परंतु उनमें रहनेवाली आसक्ति निवृत्त नहीं होती। इस स्थितप्रज्ञ पुरुष की तो आसक्ति भी परमात्मा का साक्षात्कार करके निवृत्त हो जाती है।

यततो ह्यपि कौन्तेय पुरुषस्य विपश्चितः ।
इन्द्रियाणि प्रमाथीनि हरन्ति प्रसभं मनः ॥60॥

हे अर्जुन! आसक्ति का नाश न होने के कारण ये प्रमथन स्वभाववाली इन्द्रियाँ यत्न करते हुए बुद्धिमान् पुरुष के मन को भी बलात् हर लेती हैं।

तानि सर्वाणि संयम्य युक्त आसीत मत्परः ।
वशे हि यस्येन्द्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥61॥

उन सम्पूर्ण इन्द्रियों को वश में करके समाहित चित्त हुआ मेरे परायण होकर ध्यान में बैठे, क्योंकि जिस पुरुष की इन्द्रियाँ वश में होती हैं, उसी की बुद्धि स्थिर हो जाती है।

ध्यायतो विषयान्पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते ।
सङ्गात्सञ्जायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते ॥62॥

विषयों का चिन्तन करने वाले पुरुष की उन विषयों में आसक्ति हो जाती है, आसक्ति से उन विषयों की कामना उत्पन्न होती है और कामना में विघ्न पड़ने से क्रोध उत्पन्न होता है।

क्रोधाद्भवति सम्मोहः सम्मोहात्स्मृतिविभ्रमः ।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति ॥63॥

क्रोध से अत्यन्त मूढ़भाव उत्पन्न हो जाता है, मूढ़भाव से स्मृति में भ्रम हो जाता है, स्मृति में भ्रम हो जाने से बुद्धि अर्थात् ज्ञान शक्ति का नाश हो जाता है और बुद्धि का नाश हो जाने से यह पुरुष अपनी स्थिति से गिर जाता है।

रागद्वेषवियुक्तैस्तु विषयानिन्द्रियैश्चरन् ।
आत्मवश्यैर्विधेयात्मा प्रसादमधिगच्छति ॥64॥

परंतु अपने-अधीन किये हुए अन्तःकरणवाला साधक अपने वश में की हुई राग-द्वेष से रहित इन्द्रियों द्वारा विषयों में विचरण करता हुआ अन्तःकरण की प्रसन्नता को प्राप्त होता है।

प्रसादे सर्वदुःखानां हानिरस्योपजायते।
प्रसन्नचेतसो ह्याशु बुद्धिः पर्यवतिष्ठते ॥65॥

अन्तःकरण की प्रसन्नता होने पर इसके सम्पूर्ण दुःखों का अभाव हो जाता है, और उस प्रसन्न-चित्त वाले कर्मयोगी की बुद्धि शीघ्र ही सब ओर से हटकर एक परमात्मा में ही भलीभाँति स्थिर हो जाती है।

नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य न चायुक्तस्य भावना।
न चाभावयतः शान्तिरशान्तस्य कुतः सुखम् ॥66॥

न जीते हुए मन और इन्द्रियों वाले पुरुष में निश्चयात्मिका बुद्धि नहीं होती, और उस अयुक्त मनुष्य के अन्तःकरण में भावना भी नहीं होती, तथा भावनाहीन मनुष्य को शान्ति नहीं मिलती और शान्तिरहित मनुष्य को सुख कैसे मिल सकता है?

इन्द्रियाणां हि चरतां यन्मनोऽनु विधीयते ।
तदस्य हरति प्रज्ञां वायुर्नावमिवाम्भसि ॥67॥

क्योंकि जैसे जल में चलने वाली नाव को वायु हर लेती है, वैसे ही विषयों में विचरती हुई इन्द्रियों में से मन जिस इन्द्रिय के साथ रहता है, वह एक ही इन्द्रिय इस अयुक्त पुरुष की बुद्धि को हर लेती है।

तस्माद्यस्य महाबाहो निगृहीतानि सर्वशः ।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥68॥

इसलिये हे महाबाहो जिस पुरुष की इन्द्रियाँ इन्द्रियों के विषयों से सब प्रकार निग्रह की हुई हैं, उसी की बुद्धि स्थिर है।

या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी ।
यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः ॥69॥

सम्पूर्ण प्राणियों के लिये जो रात्रि के समान है, उस नित्य ज्ञानस्वरूप परमानन्द की प्राप्ति में स्थितप्रज्ञ योगी जागता है, और जिस नाशवान् सांसारिक सुखकी प्राप्ति में सब प्राणी जागते हैं, वह परमात्मा के तत्त्व को जानने वाले मुनि के लिये रात्रि के समान है।

आपूर्यमाणमचलप्रतिष्ठं–
समुद्रमापः प्रविशन्ति यद्वत ।
तद्वत्कामा यं प्रविशन्ति
सर्वे स शान्तिमाप्नोति न कामकामी ॥70॥

जैसे नाना नदियों के जल जब सब ओर से परिपूर्ण, अचल

प्रतिष्ठावाले समुद्र में उस को विचलित न करते हुए ही समा जाते हैं, वैसे ही सब भोग जिस स्थितप्रज्ञ पुरुष में किसी प्रकार का विकार उत्पन्न किये बिना ही समा जाते हैं, वही पुरुष परम शान्ति को प्राप्त होता है, भोगों को चाहने वाला नहीं।

विहाय कामान्यः सर्वान्पुमांश्चरति निःस्पृहः।
निर्ममो निरहङ्कारः स शान्तिमधिगच्छति ॥71॥

जो पुरुष सम्पूर्ण कामनाओं को त्यागकर ममतारहित, अहंकाररहित और स्पृहारहित हुआ विचरता है, वही शान्ति को प्राप्त होता है, अर्थात् वह शान्ति को प्राप्त है।

एषा ब्राह्मी स्थितिः पार्थ नैनां प्राप्य विमुह्यति।
स्थित्वास्यामन्तकालेऽपि ब्रह्मनिर्वाणमृच्छति ॥72॥

हे अर्जुन ! यह ब्रह्म को प्राप्त पुरुष की स्थिति है, इसको प्राप्त होकर योगी कभी मोहित नहीं होता और अन्तकाल में भी इस ब्राह्मी स्थिति में स्थित होकर ब्रह्मानन्द को प्राप्त हो जाता है।

➢ स्थिरबुद्धि पुरुष के लक्षण

- दुःख में उद्विग्न न होना।
- सुख में अत्यधिक हर्षित न होना।
- राग, भय, क्रोध से मुक्त।

➢ श्रीमद्भगवद्गीता में स्थितप्रज्ञ का वर्णन -

गीता में श्रीकृष्ण यह बताते हैं कि जिस समय मनुष्य अपने मन में सभी कामनाओं को मिटाकर आत्मा में सन्तुष्ट रहता है, उस काल में वह स्थितप्रज्ञ कहा जाता है-

प्रजहाति यदा कामान्सर्वान्पार्थ मनोगतान्।
आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते॥ (2/55)

➢ दुःख होने पर जो उद्वेग नहीं करता और अत्यधिक सुख में सर्वथा निःस्पृह है तथा जिसके मन से राग, भय, और क्रोध नष्ट हो गये हैं, ऐसा मुनि स्थिरबुद्धि कहा जाता है।

वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते (2/56)

जैन दर्शनम्

1. जैनधर्म की उत्पत्ति बौद्धधर्म के पहले की मानी जाती है।
2. जैनधर्म के अन्तिम तीर्थङ्कर-**'भगवान् महावीर'** थे।
3. इस धर्म का प्राचीन नाम **'निगण्ठ'** था, जो **'निर्ग्रन्थ'** शब्द का पाली रूपान्तरण है इसे अन्य नामों से भी जाना जाता है **जैसे-** दिगम्बर, आर्हत्, श्रमण, निवृत्तिमार्ग।
4. जैन दर्शन में- सर्वज्ञ, रागद्वेषी के विजयी, त्रैलोक्य-पूजित, यथार्थवादी, सामर्थ्यवान्, सिद्ध पुरुषों को **'अर्हत्'** कहा जाता हैं।

सर्वज्ञो जितरागादिदोषवस्त्रैलोक्यपूजितः।
यथास्थितार्थवादी च देवोऽर्हत् परमेश्वरः॥

(सर्व-दर्शन-संग्रह, पु0-6)

➢ अर्हत् शब्द प्रातिपदिक है। इसे प्राकृत भाषा में **अरिहन्त** भी कहते हैं।

➢ अर्हत्-पुरुषों के द्वारा प्रचारित यह दर्शन **'आर्हत् दर्शन'** कहलाता है।

➢ रागद्वेष पर विजय प्राप्त करने के कारण वर्धमान को **'जिन'** (जेता) की उपाधि प्राप्त हुई है। अतः ऐसे जिन के द्वारा प्रचारित धर्म **'जैन'** कहलाया।

➢ जैन धर्म के प्रचारक सिद्धों को **'तीर्थङ्कर'** कहा जाता है।

➢ जैन दर्शन के आद्य तीर्थङ्कर- **'ऋषभदेव'** थे।

➢ ऋषभदेव मनुवंशी महीपति- **नाभि** तथा महाराज्ञी- **मरुदेवी** के पुत्र थे।

➢ ऋषभदेव के सौ पुत्रों में ज्येष्ठ थे महाराज- भरत चक्रवर्ती, कनिष्ठ थे बाहुबलि आदि।

➢ जैन दर्शन में ऐसी मान्यता है कि ऋषभदेव के ज्येष्ठ पुत्र **'भरत'** के नाम पर ही इस देश का नाम **'भारतवर्ष'** रखा गया।

➢ भगवान् विष्णु के चौबीस अवतारों में ऋषभदेव की भी गणना की गई है।

पार्श्वनाथ

➢ जैन दर्शन के अन्तिम दो तीर्थङ्कर पार्श्वनाथ, महावीर ने इस दर्शन का प्रसार किया, जिससे यह विख्यात हुए।

➢ कुछ विद्वान् पार्श्वनाथ को ही जैनधर्म का प्रवर्तक मानते हैं।

➢ तीर्थङ्कर पार्श्वनाथ का समय महावीर से ढाई सौ वर्ष पूर्व माना जाता है।

➢ पार्श्वनाथ के पिता काशी के राजा-**अश्वसेन** तथा माता महारानी-**वामा देवी**।

➢ पार्श्वनाथ का जन्म काशी में **874 वि.पू. = 817 ई.पू.** हुआ था।

➢ बालक पार्श्वनाथ के पैर के अँगूठे पर सर्प का चिह्न देखकर उन्हें पार्श्वनाथ के नाम से प्रसिद्धि मिली। इसी कारण पार्श्वनाथ का चिह्न सर्प प्रसिद्ध है।

➢ पार्श्वनाथ ने तीस (30) वर्षों तक गार्हस्थ्य जीवन बिताया।

➢ पार्श्वनाथ ने सत्तर वर्षों तक जैनधर्म का प्रचार-प्रसार किया, अनन्तर निर्वाण (मोक्ष) को प्राप्त हुए।

- पार्श्वनाथ ने चार महाव्रतों-**अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य** का वर्णन किया है।
- पार्श्वनाथ वस्त्र धारण करने के पक्षपाती नहीं थे।

भगवान् महावीर

- जैनधर्म के अन्तिम तीर्थङ्कर- **'भगवान् महावीर'** थे।
- महावीर का जन्म वैशाली (बिहार के मुजफ्फ़रपुर जिला के बसाढ़ ग्राम) में **656 वि.पू.** माना जाता है।
- महावीर का जन्म **'ज्ञातृक'** नामक क्षत्रियवंश में हुआ।
- महावीर के पिता- **सिद्धार्थ** तथा माता- **त्रिशला**।
- महावीर की माता-त्रिशला एक राजकन्या थी।
- ऐसी मान्यता है कि महावीर का विवाह **'यशोदा देवी'** से हुआ था।
- महावीर ने अपने माता-पिता एवं ज्येष्ठ भ्राता-**नन्दिवर्धन** से आज्ञा लेकर गृहत्याग किया।
- महावीर ने तीस वर्ष की अवस्था में लगभग **(72 वि.पू.)** यतिधर्म को ग्रहण किया तथा अन्त में तेरह वर्षों के अभ्यास से **'कैवल्य'** को प्राप्त हुए।
- महावीर के प्रथम शिष्य का नाम- **इन्द्रभूति गौतम** है।
- महावीर ने अपने शिष्य इन्द्रभूति को पंचमहाव्रतों की शिक्षा प्रदान की।
- महावीर ने अङ्ग, मगध, कौशाम्बी आदि राज्यों के अधिपतियों को शिक्षा-दीक्षा प्रदान की।
- महावीर ने अर्धमागधी भाषा का अत्यधिक प्रयोग किया है। **72 वर्ष** की आयु में महावीर निर्वाण को प्राप्त हुए।
- जैन सम्प्रदाय के अनुसार इनका जन्म **656 वि.पू. (599 ई.पू.)** तथा मृत्यु **584 वि.पू. (527 ई.पू.)** बताया जाता है।
- महावीर ने वस्त्र परिधान का बहिष्कार कर नग्नत्व को ही स्वीकार किया।
- मौर्य वंश के संस्थापक आर्यावर्त के सम्राट् चन्द्रगुप्त मौर्य भी जैनधर्मानुयायी थे।

श्वेताम्बर-दिगम्बर

- मगध संघ ने श्वेताम्बर (सफेद कपड़ा) को धारण करना न्यायानुमोदित बतलाया।
- ई.पू. द्वितीय शतक से श्वेताम्बर तथा दिगम्बर इन दो सम्प्रदायों का उदय जैनधर्म में हुआ।
- श्वेताम्बर सम्प्रदाय के अनुसार दिगम्बरों की उत्पत्ति महावीर के निर्वाण के **609 वर्ष** बाद **(अर्थात्- वि.स. 139 = 82 ई.)** हुई है।
- तत्त्वज्ञान के विषय में श्वेताम्बर-दिगम्बर में कोई मतभेद नहीं है, पर अनेक विषयों में आचारगत पार्थक्य दृष्टिगोचर होता है।
- दिगम्बर सम्प्रदाय में धार्मिक नियमों की उग्रता स्पष्ट दिखाई देती है, परन्तु श्वेताम्बरों ने मानव कमजोरियों को ध्यान में रख कर कठोर नियमों को सरल किया है।
- दिगम्बरों का कथन है कि–
  ''केवली'' (केवलज्ञानसम्पन्नपुरुष) भोजन नहीं करता।
- स्त्रियों को मोक्ष नहीं प्राप्त हो सकता है।
- स्त्रियों को पुरुष-जन्म ग्रहण के अनन्तर ही मोक्ष प्राप्ति का विधान है।

यथा–

भुंक्ते न केवली न स्त्री मोक्षमेति, दिगम्बरः।

प्राहुरेषामयं भेदो महान् श्वेताम्बरैः सह।।

(सर्वदर्शन संग्रह-जिनदत्तसूरि का श्लोक)

जैन प्रमाण साहित्य

- जैन दर्शन में आचार सम्बन्धी ग्रन्थों की संख्या अधिक है, अपितु प्रमाण सम्बन्धी ग्रन्थों की संख्या कम।
- जैन दर्शन के ग्रन्थों को चार कालों में विभक्त किया गया है–

(क) आगम ग्रन्थ **(ख) आरम्भ काल**
(ग) मध्ययुग **(घ)अवान्तर युग**

आगम ग्रन्थ–

- जैनधर्म के मूल आगम ग्रन्थों की रचना के विषय में दोनों सम्प्रदायों में पर्याप्त मतभेद है।
- दिगम्बरों का मानना है कि जैनदर्शन के कई ग्रन्थ विलुप्त हो चुके हैं, वर्तमान में समुपलब्ध आगम ग्रन्थ श्वेताम्बर सम्प्रदाय में संरक्षित हुए हैं।
- जैन सिद्धान्तों की संख्या 45 है। जिनमें **11- अंग, 12- उपांग, 10-प्रकीर्ण, 6-छेदसूत्र, 4-मूलग्रन्थ तथा 2-स्वतन्त्र ग्रन्थ (नन्दी सूत्र तथा अनुयोगद्वार)** माने जाते हैं।
- **दिट्ठवाय** (दृष्टिवाद– जो अधुना उपलब्ध नहीं होता) में अङ्गों के अन्तर्गत आने वाले सभी अवशिष्ट अंशों का संकलन किया गया है, जिसे दिगम्बर नहीं स्वीकार करते हैं।
- अनेकान्तवाद, जीव तथा पुद्‌गलादि दार्शनिक सिद्धान्तों का विवेचन आगम ग्रन्थों में मिलता है।
- जैनधर्म के आगम ग्रन्थों में 'अर्धमागधी' भाषा प्राप्त होती है।

आरम्भ काल

- जैन दर्शन की सुव्यवस्था विक्रम की प्रथम शताब्दी में आरम्भ हुई।

- आरम्भकाल में मुख्य रूप से तीन विद्वान हुए–
  1. उमास्वाति 2. कुन्दकुन्दाचार्य 3. समन्तभद्र
  इन विद्वानों ने जैनदर्शन की नींव को मजबूत बनाने का पूर्ण प्रयास किया।

1. उमास्वाति–

- श्वेताम्बर, दिगम्बर उमास्वाति का बहुत सम्मान करते हैं तथा इन्हें अपने धर्म का अनुयायी भी मानते हैं।
- उमास्वाति मगध के निवासी थे।
- विक्रम के आरम्भ काल में इन्होंने अपना प्रख्याततम ग्रन्थ '**तत्त्वार्थसूत्र**' (तत्त्वार्थाधिगमसूत्र) की रचना की।
- तत्त्वार्थसूत्र पर उमास्वाति ने भाष्य लिखा तथा अन्य आचार्यों ने भी इस पर वृत्ति, टीका, भाष्य लिखा है।
- **देवनन्दि** (पूज्यपाद) ने उमास्वाति के तत्त्वार्थसूत्र पर '**सर्वार्थसिद्धि**' नामक टीका लिखी है।

2. कुन्दकुन्दाचार्य–

- इनका द्राविड नाम '**कोण्डकुण्डा**' था, जिसका संस्कृत रूपान्तर '**कुन्दकुन्द**' के रूप में प्रसिद्ध हुआ।
- यह द्रविड देश के विख्यात दिगम्बर जैनाचार्य थे।
- ऐतिहासिककार इन्हें विक्रम की प्रथम शताब्दी का मानते हैं।
- इस प्रकार यह उमास्वाति के समसामयिक प्रतीत होते हैं।
- कुन्दकुन्दाचार्य के ग्रन्थ इस सम्प्रदाय के सिद्धान्तों के विश्वकोष का काम करते हैं।
- कुन्दकुन्दाचार्य के चार ग्रन्थ जैनागम के माने जाते हैं–
  1. नियमसार 2. पञ्चास्तिकायसार
  3. समयसार 4. प्रवचनसार
- इनमें अन्तिम तीन ग्रन्थ जैन सम्प्रदाय में '**नाटकत्रयी**' के नाम से विख्यात हैं।

3. समन्तभद्र–

- समन्तभद्र के ग्रथों के काल से प्राप्त होता है कि इनका समय तृतीय या चतुर्थ शतक विक्रमी है।
- **देवनन्दि** (पूज्यपाद) के ग्रन्थ '**जैनेन्द्र व्याकरण**' में समन्तभद्र का उल्लेख मिलता है।
- पूज्यपाद ने उमास्वाति के तत्त्वार्थसूत्र पर '**सर्वार्थसिद्धि**' नामक जो टीका लिखी है, उस पर समन्तभद्र के सिद्धान्तों का प्रचुर प्रभाव पड़ा है।
- समन्तभद्र धर्मशास्त्री, तार्किक, योगी तीनों थे।
- समन्तभद्र का प्रख्याततम ग्रन्थ '**आत्ममीमांसा**' (देवागमस्त्रोत) है।
- स्वयंभूस्त्रोत (समन्तभद्रस्तोत्र) जैनधर्म के चौबीसों तीर्थङ्करों के धर्म का प्रतिपादन **143 पद्यों** में करता है।
- **स्तुतिविद्या**- (जिनस्तुतिशतक/जिनशतक/जिनशतकालङ्कार) इस ग्रन्थ में चित्रकाव्य में वर्णित, पद्यों की संख्या-**116** है तथा भक्तिरस का वर्णन किया गया है।
- धर्मशास्त्रीय आचार के विषय में समन्तभद्र की प्रमुख रचना '**रत्नकरण्ड श्रावकाचार**' है, रत्नकरण्ड श्रावकाचार इस ग्रन्थ में अखिल सागर मार्ग का प्रकाशन किया गया है, इसकी प्रसिद्धि जैन समुदाय में नितान्त व्यापक है तथा कन्नड़, तमिल भाषा में टीका भी प्राप्त है।

मध्ययुग–

- यह युग जैन दर्शन के इतिहास में स्वर्ण-युग समझा जाता है।
- इस काल का आरम्भ गुप्तकाल में हुआ।
- इस युग के कतिपय श्रेष्ठ आचार्यों का संक्षिप्त वर्णन किया जाता है–

1. सिद्धसेन दिवाकर 2. हरिभद्र 3. भट्ट अकलंक
4. विद्यानन्द 5. वादिराजसूरि

1. सिद्धसेन दिवाकर–

- इनका काल लगभग पंचम शताब्दी का माना जाता है।
- सिद्धसेन उज्जैन के किसी विक्रमादित्य के घनिष्ठ मित्र थे।
- इनके गुरु का नाम '**वृद्धवादी**' था।

इनके प्रसिद्ध ग्रन्थ–

(क) न्यायावतार– (सिद्धर्षि ने 10वें शतक में टीका लिखा) इस ग्रन्थ की रचना कर इन्होंने जैन-न्याय को जन्म दिया।

(ख) सन्मतितर्क– (विशदव्याख्याकार अभयदेवसूरी) यह नितान्त प्रमेय बहुल ग्रन्थ है।

2. हरिभद्र–

- जैनधर्म तथा दर्शन के अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ के रचयिता होने के अतिरिक्त इन्होंने लोकप्रिय '**षड्दर्शन-समुच्चय**', '**अनेकान्त-जयपताका**' की रचना की है।

3. भट्ट अकलंक–

- यह दिगम्बर मतानुयायी थे।
- इनका समय अष्टमशताब्दी का उत्तरार्ध माना जाता है।
- इन्होंने तत्त्वार्थसूत्र पर महत्त्वपूर्ण '**राजवार्तिक**' तथा आप्तमीमांसा के व्याख्यारूप में '**अष्टशती**' की रचना की।
- इनके तीन अन्य जैनन्याय ग्रन्थ–
  (क) लघीयस्त्रय (ख) न्यायविनिश्चय
  (ग) प्रमाण संग्रह
- अकलंक ने जैनदर्शन को सर्वमान्य बनाया समाज के लिए।

4. विद्यानन्द–

- इन्होंने '**अष्टशती**' पर '**अष्टसाहस्त्री**' तथा '**तत्त्वार्थसूत्र**' पर '**श्लोकवार्तिक**' लिखकर मीमांसकमूर्धन्य कुमारिलभट्ट की शैली का अनुकरण किया है।
- विद्यानन्द ने जैनदर्शन की परिभाषाएँ, लक्षण, प्रमाणशास्त्रों को सर्वमान्य बनाने का पूर्ण प्रयास किया।
- विद्यानन्द ने '**तत्त्वार्थ-श्लोकवार्त्तिक**' में पूर्वमीमांसा का सबल खण्डन किया है।
- इनके दो अन्य ग्रन्थ- **राजवार्त्तिक, श्लोकवार्तिक**।

- यह जैनेतर दर्शनों के भी प्रकाण्ड विद्वान थे।

5. वादिराजसूरि–

- यह दिगम्बर सम्प्रदाय के महान् तार्किक तथा द्राविड़ संघ के अनुयायी माने जाते हैं।
- इन्हें षट्तर्कषण्मुख, स्याद्वाद, विद्यापति आदि उपाधियाँ प्राप्त थीं।
- इनके '**एकीभावस्तोत्र**' के अनुसार इनके समान अन्य कोई तार्किक, शाब्दिक तथा कवि न था।
- दक्षिण के सोलंकी वंश के विख्यात राजा जयसिंह प्रथम (**838 श. सं.- 864 श.सं.**) के ये समकालीन थे।

इनके अन्य ग्रन्थ–

1. पार्श्वनाथचरित

2. 'न्यायविनिश्चय-विवरण'– यह न्यायविषयक सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ है तथा यह अकलंकदेव के '**न्यायविनिश्चय**' का भाष्य है।

- यशोधर के प्रख्यात जैन आख्यान पर वादिराज का '**यशोधरचरित**' नामक चार सर्ग का लघुकाव्य प्रसिद्ध है।

अवान्तर युग– इस युग के जैन दार्शनिक ग्रन्थों की संख्या अत्यधिक है।

1. देवसूरी– इनका समय **12वीं शताब्दी** है।

- इन्होंने '**प्रमाणनयतत्त्वालोकालंकार**' तथा इसकी टीका '**स्याद्वादरत्नाकर**' कि रचना की है, जो जैनन्याय के प्रमाणभूत ग्रन्थ माने जाते हैं।

2. हेमचन्द्र– यह देवसूरी के समकालीन थे।

- ब्राह्मणों के द्वारा निर्मित काव्य, व्याकरण, अलंकार ग्रन्थों के स्थान पर इन्होंने स्वयं जैनियों के उपकारार्थ काव्यादिकों की रचना की।
- इन्होंने जैनन्याय के विषय में '**प्रमाणमीमांसा**' नामक ग्रन्थ लिखा
- इन्हें सर्वशास्त्र-निपुणता के लिए '**कलिकालसर्वज्ञ**' की उपाधि प्राप्त थी।

3. मल्लिषेणसूरि– इनका समय (**1348 वि.=1282 ई.**) है।

- इन्होंने हेमचन्द्र के ग्रन्थ '**अन्ययोगव्यवच्छेद द्वात्रिंशिता**' की विस्तृत टीका '**स्याद्वादमञ्जरि**' लिखि।
- स्याद्वादमञ्जरि में ब्राह्मण, बौद्ध, चार्वाक दर्शनों की जैन-दृष्ट्या समालोचना है एवं जैन-सिद्धान्तों का प्रमाणपुरःसर विवेचन है।

4. गुणरत्न– इनका काल **1446 वि0 = 1409 ई.** है।

- गुणरत्न ने हरिभद्र के '**षड्दर्शनसमुच्चय**' की विस्तृत व्याख्या लिखि, जिसमें सभी दर्शनों के सिद्धान्तों की मार्मिक विवेचना प्राप्त होती है।

5. यशोविजय– इनका समय **17वीं शताब्दी का पूर्वार्ध** माना गया है।

- इनका ग्रन्थ '**जैन-तर्कभाषा**' अत्यन्त सरल, संक्षिप्त तथा उपादेय है।
- इन्होंने संस्कृत, प्राकृत, गुजराती, हिन्दी भाषाओं में खण्डनात्मक, प्रतिपादनात्मक, समन्वयात्मक ग्रन्थों की रचना की है।

जैनज्ञानमीमांसा

- जैनमतानुसार जीव चैतन्य है, ज्ञान उसका साक्षात् लक्षण है।
- ज्ञान दो प्रकार का है–

1. प्रत्यक्ष **2. परोक्ष**

प्रत्यक्ष– आत्मसापेक्ष (स्पष्ट/निर्मल) ज्ञान को प्रत्यक्ष कहते हैं।

प्रत्यक्ष के दो भेद- **सांव्यवहारिक** और **पारमार्थिक।**

- इन्द्रिय और मन निमित्त से होने वाले एक देश स्पष्टज्ञान को सांव्यवहारिक प्रत्यक्ष कहते हैं।
- सांव्यवहारिक के चार भेद- **अवग्रह, ईहा, अवाय, धारणा।**
- **पारमार्थिक प्रत्यक्ष-** यह तीन प्रकार का होता है –

प्रत्यक्ष ज्ञान के भेद–

1. अवधि **2. मनःपर्याय** **3. केवल**

परोक्ष– इन्द्रिय-मन/अस्पष्ट ज्ञान को परोक्ष कहते हैं, परोक्ष का दूसरा नाम अप्रत्यक्ष भी है।

2. परोक्ष– परोक्ष ज्ञान पाँच प्रकार का होता है।

1. स्मृति **2. प्रत्यभिज्ञान** **3. तर्क** **4. अनुमान** **5. आगम**

1. स्मृति– पहले अनुभव किये हुए पदार्थ को विषय करने वाले ज्ञान को **स्मृति** कहते हैं।

2. प्रत्यभिज्ञान– अनुभव और स्मरण पूर्वक होने वाले जोड़ रूप ज्ञान को **प्रत्यभिज्ञान** कहते हैं।

3. तर्क– व्याप्ति के ज्ञान को **तर्क** कहते हैं।

4. अनुमान– साधन से साध्य का ज्ञान होने को **अनुमान** कहते हैं।

5. आगम– आप्त के वचनों से होने वाले अर्थज्ञान को **आगम** कहते हैं।

उमास्वामी के अनुसार ज्ञान दो प्रकार का होता है-

1. मतिज्ञान **2. श्रुतज्ञान**

यह तीनों केवल आत्मा की योग्यता के बल से उत्पन्न होते हैं।

1. अवधि– दूरस्थित व्यवधान-युक्त पदार्थों का ज्ञान '**अवधि ज्ञान**' कहलाता है।

2. मनः पर्याय– जीव जब द्रोह ईर्ष्या आदि का क्षय कर लेता है, तब उसमें दूसरों के विचारों को जानने के योग्यता ही मनःपर्याय है।

3. केवल– आवरणीय कर्मों के नितान्त क्षय होने पर जब आत्मा अपने शुद्ध, सर्वज्ञ स्वरूप को प्राप्त होता है, वही केवल ज्ञान कहलाता है, इसके अधिकारी सम्यक्चरित्र के अनुष्ठान करने वाले सिद्ध पुरुष होते हैं।

1. मति– इन्द्रिय तथा मन के सम्पर्क से जो ज्ञान होता है **'मतिज्ञान'** कहलाता है।

- मतिज्ञान दो प्रकार का होता है– **इन्द्रियजन्य, अनिन्द्रियजन्य**।
- **इन्द्रियजन्य-**बाह्येन्द्रियों के द्वारा जन्य ज्ञान को इनिद्रयजन्य कहते है।
- **अनिन्द्रियजन्य-** मन ज्ञान ही अनिन्द्रिय है। मतिज्ञान विद्यमान वस्तु में प्रवृत्त होता है।

2. श्रुत– शब्द से उत्पन्न ज्ञान को श्रुतज्ञान कहते हैं। श्रुतज्ञान अतीत, विद्यमान, भविष्य इन त्रैकालिक विषयों में प्रवृत्त होता है।

- जैनदर्शन प्रत्यक्ष, अनुमान तथा आगम तीन प्रमाण स्वीकार करता है।
- जैन दर्शन में प्रत्यक्ष की सत्ता सर्वमान्य है।
- जैनाचार्यों ने युक्तियों के कारण लोकव्यवहार के लिए अनुमान प्रमाण स्वीकार किया है।
- जैन आगम में प्रतिपादित सत्य जैन दर्शन की मूलभित्ति है।
- जैन दर्शन श्रुति, स्मृति को अनेक दोषों से युक्त होने के कारण नहीं स्वीकार करता, अतः इसकी गणना नास्तिक दर्शनों में होती है।

स्याद्वाद

- जैन दर्शन का प्रधान सिद्धान्त है कि प्रत्यक्ष वस्तु अनन्त धर्मात्मक है।
- वस्तुओं का यथार्थ ज्ञान उसी को है, जिसने कैवल्य ज्ञान प्राप्त किया हो।
- जैन दर्शन में वस्तु के अनन्त धर्मों में से एक धर्म का ज्ञान **'नय'** कहलाता है।

'एक देशविशिष्टो यो नयस्य विषयो मतः'।

- साधारणतया ज्ञान तीन प्रकार का होता है–

1. दुर्णय 2. नय 3. प्रमाण

- नय शब्द की निरुक्ति है- **'नीयते परिच्छिद्यते एक देशविशिष्टोऽर्थः अनेन इति नयः'।** (स्याद् वादमञ्जरी)
- जैन दर्शन में वस्तु के परामर्श से पहले उसके सीमित तथा सापेक्ष बनाने के लिए **'स्यात्'** विशेषण जोड़ा जाता है।
- स्यात् (कथंचित्) शब्द अस् धातु के विधिलिङ् का रूप है।
- भगवती सूत्र में महावीर ने **'स्यादस्ति, स्यान्नास्ति तथा स्याद् अवक्तव्यम्'** इन तीन भंगो का स्पष्ट उल्लेख किया है।
- भंगो को ही **'मूलभंग'** कहते हैं।
- जैन न्याय में सत्ता के सापेक्ष रूप को स्वीकार करने के लिए परामर्श का सात रूप माना गया है, जिसे **'सप्तभंगी नय'** कहते हैं–

1. स्यादस्ति (किसी रूप में हैं–)
2. स्यान्नास्ति (किसी रूप में नहीं है)।
3. स्यादस्ति च नास्ति च (कथञ्चित् है और नहीं है)।
4. स्याद् अवक्तव्यम् (कथञ्चित् अथवा किसी प्रकार में है और अवक्तव्य है)।
6. स्यान्नास्ति च अवक्तव्यं च (कथञ्चित् नहीं है और अवक्तव्य है)।
7. स्यादस्ति च नास्ति च अवक्तव्यं च (कथञ्चित् है, नहीं है तथा अवक्तव्य है)।

(जैन तत्त्वसमीक्षा)

- जैन दर्शन में विस्तसर धारण करने वाले द्रव्य **'अस्तिकाय'** कहे जाते हैं।
- सत्ता धारण करने के कारण– **अस्ति।** शरीर की भाँति विस्तार से समन्वित होने के कारण–कार्य
- ऐसे पाँच द्रव्यों की स्वीकृत की गई है–

1. जीवास्तिकाय 2. पुद्गलास्तिकाय
3. आकाशास्तिकाय 4. धर्मास्तिकाय
5. अधर्मास्तिकाय

जीव

- चेतन द्रव्य की जीव कहते हैं- 'चैतन्यलक्षणो जीवः'।
- प्रत्येक जीव नैसर्गिक रूप से उन्नत ज्ञान, गुण, सामर्थ्य सम्पन्न होता है।
- जीव में आवरणीय कर्म के कारण धर्म का उदय नहीं होता है।
- जैन दर्शन जीव को मध्यम परिणामविशिष्ट मानता है।
- तात्त्विक दृष्टि से अरूपी होने के कारण उसका ज्ञान इन्द्रिय द्वारा नहीं अपितु स्वसंवेदन, प्रत्यक्ष तथा अनुमान के द्वारा उसका ज्ञान सम्भव है।

अजीव

- जैन दर्शन में **'पुद्गल'** शब्द का प्रयोग भूत सामान्य के लिए किया जाता है।

- सर्वदर्शन-संग्रह में 'पुद्गल' की निष्पत्ति है-
  'पूरयन्ति गलन्ति च' (जो पूर्ण हो जाय तथा गल जाय)।
- पुद्गल के दो रूप हैं– **अणु, संघात**
  अणु = पुद्गल के सूक्ष्मतम निरवयव अंश जिनका सूक्ष्म रूप में विभाजन नहीं किया जा सकता **'अणु'** कहलाता है।
  संघात = दो या दो से अधिक सूक्ष्म अंशो के परस्पर एकत्र होने से **'संघात'** बनता है, इन्हीं संघातों के द्वारा शरीर के भिन्न-भिन्न अंग मन-प्राण आदि की सृष्टि होती है।
- पौद्गलिक पदार्थों में चार गुण पाये जाते हैं–
  1. स्पर्श 2. रस 3. गन्ध 4. वर्ण

आकाश

- आकाश की सत्ता अनुमान के आधार पर स्वीकृत की गई है।
- आकाश दो प्रकार का माना गया है–
  1. लोकाकाश 2. अलोकाकाश
  लोकाकाश– जीव, पुद्गल आदि द्रव्यों की स्थिति इसी भाग में होती हे।
  अलोकाकाश– यह लोक से उपरितन आकाश होता है।

काल

- जैन दर्शन में अनुमान के आधार पर काल की कल्पना की गई है।
- वर्तना, परिणा, क्रिया, पुरत्व, अपरत्व ये पाँच काल के **'उपकार'** माने जाते हैं।
- किसी वस्तु का परिणाम काल की सत्ता पर अवलम्बित है। यथा- **कच्चे आम का पक जाना कालजन्य ही है।**
- काल के दो भेद माने जाते हैं।
  1. व्यावहारिक काल 2. पारमार्थिक काल

धर्म

- गतिशील जीव तथा पुद्गल के सहकारी कारण द्रव्य विशेष को **'धर्म'** की संज्ञा दी गई है।

अधर्म

- स्थितिशील जीव तथा पुद्गल की स्थिति के सहकारी कारण द्रव्यविशेष को **'अधर्म'** कहा जाता है।

रत्नत्रय

- जैन दर्शन में मोक्ष के तीन साधन हैं–
  1. सम्यक् दर्शन
  2. सम्यक् ज्ञान
  3. सम्यक् चरित्र
- दर्शन शब्द का अर्थ है- **श्रद्धा।**
- मोक्षोपयोगी तीनों साधनों को जैन दर्शन में **'रत्नत्रय'** की संज्ञा दी गई है।

(द्रव्य विभाग वर्णन)

द्रव्य
- बहुदेश-व्यापी (अस्तिकाय)
  - जीव
    - संसारी
      - जंगम (त्रस)
        - पञ्चेन्द्रिय
        - चतुरिन्द्रिय
        - त्रीन्द्रिय
        - द्वीन्द्रिय
      - स्थावर
    - मुक्त
    - अजीव
      - पुद्गल
        - अणु
        - संघात
      - आकाश
      - धर्म
      - अधर्म
- एकदेश-व्यापी (अनस्तिकाय) (काल)
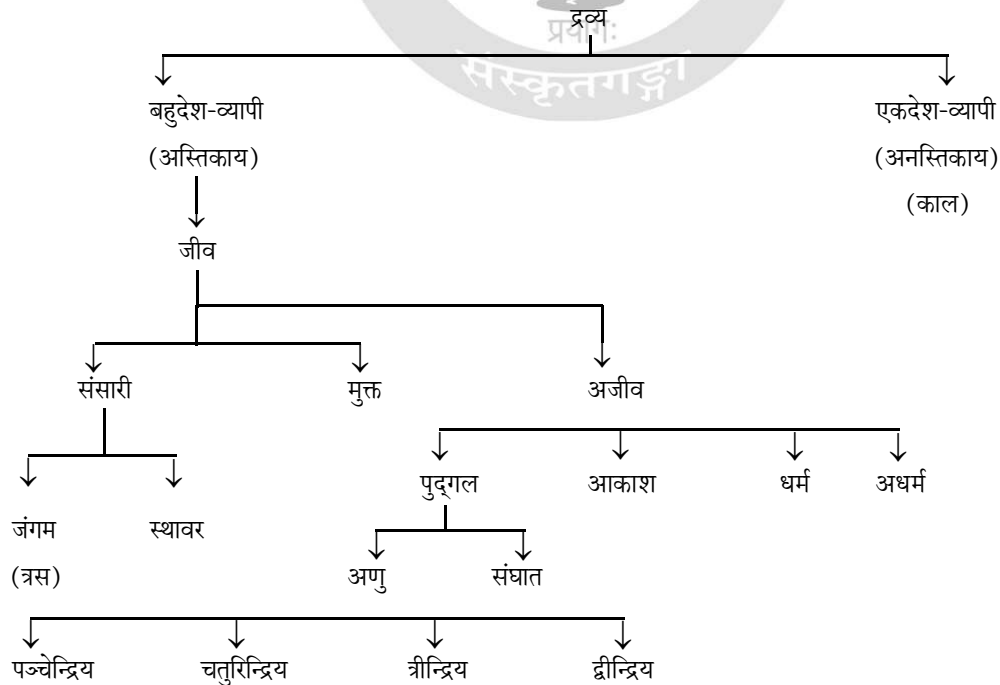
बौद्ध दर्शन

- बौद्धदर्शन के संस्थापक 'गौतम बुद्ध' हैं।
- बुद्ध का जन्म 563 ई0पू0 वैशाखी पूर्णिमा को हुआ था।
- गौतम का जन्म स्थान - लुम्बिनी का कपिलवस्तु (नेपाल) है।
- बुद्ध के बचपन का नाम 'सिद्धार्थ' था।
- **बुद्ध के पिता का नाम-** शुद्धोदन तथा **माता का नाम**- महामाया था।
- गौतम का जन्म 'शाक्य'वंश में हुआ था।
- गौतम का पालन-पोषण 'प्रजापति गौतमी' ने किया।
- सिद्धार्थ का विवाह 16वर्ष की आयु में हुआ।
- **सिद्धार्थ की पत्नी का नाम-** यशोधरा देवी तथा **पुत्र का नाम-** राहुल था।
- सिद्धार्थ जब प्रथम बार राजमहल से निकले तो उन्होंने देखा–
  (1) एक बीमार व्यक्ति (2) एक वृद्ध
  (3) एक संन्यासी (4) एक शव
  अतःइसके कारण उन्हें सांसारिक ज्ञान प्राप्त हुआ,जिससे वह अध्यात्म की ओर आकृष्ट हुए।
- सिद्धार्थ ने ज्ञान प्राप्ति तथा आध्यात्मिक चेतना,सत्य की खोज के लिए गृहस्थाश्रम का त्याग किया ।
- सिद्धार्थ को बिहार में निरंजना फाल्गुन नदी के किनारे एक पीपल के वृक्ष के नीचे वैशाख पूर्णिमा को ज्ञान की प्राप्ति हुई।
- गौतम को ज्ञान प्राप्ति होने पर 'बुद्ध' की उपाधि प्राप्ति हुई।
- बुद्ध ने जहाँ ज्ञान प्राप्त किया, वह स्थान 'बोध गया' के नाम से प्रसिद्ध है।
- बुद्ध ने सांख्यदर्शन की शिक्षा आलारकलाम से ली थी ।
- बुद्ध ने सर्वप्रथम सारनाथ (वाराणसी) में कौण्डिन्य आदि पञ्च शिष्यों को उपदेश दिया जिसे 'धर्मचक्र प्रवर्तन' कहा गया।
- बुद्ध ने अपने जीवन काल में सबसे अधिक उपदेश 'श्रावस्ती' में दिया।
- बुद्ध ने 483 ई0पू0 वैशाख पूर्णिमा को कुशीनगर (कसया, गोरखपुर) में 'निर्वाण' प्राप्त किया।
- बुद्ध को जन्म, बोधिप्राप्ति और निर्वाण की घटना एक ही तिथि 'वैशाखी पूर्णिमा' को प्राप्त हुई, अतः बौद्ध धर्म के लिए यह तिथि अत्यन्त पवित्र मानी जाती है।
- बौद्ध धर्म ग्रहण करने वाली पहली महिला 'गौतमी' थीं।
- शून्यवाद/माध्यमिक सम्प्रदाय के संस्थापक 'नागार्जुन' हैं।
- योगाचार मत का प्रसिद्ध ग्रन्थ 'लंकावतारसूत्र' है।
- सौत्रान्तिक मत का विशेष ग्रन्थ '6 सुत्तपिटक' है।
- वैभाषिक मत का प्रसिद्ध ग्रन्थ 'अभिधर्म विभाषा' है।
- **विज्ञानवाद के दो सिद्धान्त हैं-**
  (1) आलय विज्ञान (2) प्रवृत्तिविज्ञान।
- सम्राट् अशोक ने भी बौद्ध धर्म की दीक्षा ग्रहण की।
- बौद्धदर्शन **प्रत्यक्ष प्रमाण** स्वीकार करता है।

बौद्ध महासभाएँ

क्रम	स्थान	अध्यक्ष	शासनकाल
(1) प्रथम (483ई0पू0)	राजगृह	महाकश्यप (उपाली)	अजातशत्रु
(2) द्वितीय (383ई0पू0)	वैशाली	साबाकामी	कालाशोक
(3) तृतीय (251ई0पू0)	पाटलिपुत्र	मोगली पुत्ततिस्स	अशोक
(4) चतुर्थ (1ई。)	कुण्डलवन	वसुमित्र	कनिष्क

- चतुर्थ बौद्ध सम्मेलन के बाद बौद्धदर्शन दो भागों में विभक्त हो गया- (1) हीनयान (2) महायान
- बुद्ध के 'मध्यम मार्ग' क़ो सबसे उत्तम कहा गया है।
- बौद्धों के पूजा स्थल को 'चैत्य' कहा जाता है।
- बौद्ध धर्म का सबसे बड़ा स्तूप 'साँची स्तूप' है।
- बुद्ध के जीवन से सम्बन्धित बौद्ध धर्म के चिह्न-

(1) **जन्म** - कमल एवं बलीवर्द
(2) **गृहत्याग** - अश्व
(3) **ज्ञान** - पीपल (बोधि वृक्ष)
(4) **निर्वाण** - पद-चिह्न
(5) **मृत्यु** - स्तूप

- बुद्ध ने भिक्षुओं के 'संघ' की स्थापना की और मानव क्लेशों से उद्धार पाने के लिए 'विनय' तथा 'धर्म' की शिक्षा जनसाधारण को 'मागधी' भाषा में दी।

त्रिपिटक

(1) सुत्त पिटक (बुद्ध के उपदेश)
(2) विनय पिटक (आचार सम्बन्धी ग्रन्थ)
(3) अभिधम्म पिटक (दार्शनिक विषयों का विवेचन)

- तीनों पिटकों की रचना पाली भाषा में की गई है।
- बुद्ध ने चार आर्यसत्यों का रहस्योद्घाटन किया है-

(1) **दुःखम्** (इस संसार में जीवन दुःखों से परिपूर्ण है।)
(2) **दुःख समुदाय** (इन दुःखों का कारण विद्यमान है।)
(3) **दुःखनिरोध** (इन दुःखों से मुक्ति मिल सकती है।)

(4) **दुःखनिरोधगामिनि प्रतिपत्** (दुःख निरोध-प्राप्ति के लिए उचित उपाय/मार्ग।)

बौद्ध दर्शन की विशेषताएँ

(1) अनीश्वरवादी (2) अनात्मवादी (3) नास्तिक (4) वेद-विरोधी (5) पुनर्जन्म में विश्वास (6) जन्म का कारण ईश्वर को नहीं मानते

➢ **चित्त और उसके विकारों के पाँच स्कन्ध -**

(1) रूपस्कन्ध (2) विज्ञानस्कन्ध (3) वेदनास्कन्ध (4) संज्ञास्कन्ध (5) संस्कारस्कन्ध।

➢ **बौद्धों के द्वादश आयतन-**

(1) पञ्चज्ञानेन्द्रियाँ (2) पञ्चकर्मेन्द्रियाँ (3) मन (4) बुद्धि।

प्रमाण

प्रत्यक्षमनुमानं च प्रमाण द्वितयं तथा।

(1) प्रत्यक्ष (2) अनुमान। बौद्धमत में दो प्रमाण स्वीकृत हैं।

त्रिरत्न

(1) प्रज्ञा - तटस्थ निरीक्षण से विचार शून्यता ।

(2) शील - मनुष्य के मन में सबके प्रति प्रेम।

(3) समाधि - तत्त्व चिन्तन से समाधि की प्राप्ति।

अष्टांगिक मार्ग

प्रज्ञा –
- सम्यक् दृष्टि - मिथ्या दृष्टि का अन्त
- सम्यक् संकल्प - दृढ इच्छाशक्ति निश्चय आधार

शील –
- सम्यक् वाक् - अनुचित वाक् परिहार
- सम्यक् कर्मान्त - बुरे कर्मों का परित्याग
- सम्यक् आजीविका - छल, प्रपञ्च कर्मों से रहित आजीविका

समाधि –
- सम्यक् व्यायाम - सत्कर्म के लिए उद्योग
- सम्यक् स्मृति - चार आर्यसत्यों का स्मरण
- सम्यक् समाधि - चित्त की शून्यता, पूर्ण जाग्रत अवस्था

बौद्धदर्शन के चार सम्प्रदाय

(1) वैभाषिक - बाह्यार्थप्रत्यक्षवादम्
वाद - बाह्यार्थप्रत्यक्षवाद/सर्वास्तिवाद

(2) सौत्रान्तिक - बाह्यार्थनुमेयवादम्
वाद - बाह्यार्थनुमेयवाद

(3) योगाचार - बाह्यार्थशून्यत्वम्
वाद - विज्ञानवाद/आलयवाद

(4) माध्यमिक - सर्वशून्यत्वम्
वाद - शून्यवाद

हीनयान- सौत्रान्तिक + वैभाषिक

महायान- माध्यमिक + योगाचार

द्वादश निकाय

निकायों को भावचक्र या प्रतीत्यसमुत्पाद कहा जाता है–

(1) अविद्या (2) संस्कार (3) विज्ञान
(4) नामरूप (5) षणयतन (6) स्पर्श
(7) वेदना (8) तृष्णा (9) उपादान
(10) भव (11) जाति (12) जरामरण

निर्वाण

➢ निर्वाण के विषय में हीनयान और महायान की कल्पनाएँ भिन्न है।

➢ हीनयान के अनुसार निर्वाण सत्य, नित्य, पवित्र माना गया है।

➢ हीनयान में जब भिक्षु 'अर्हत्' की दशा को प्राप्त कर लेता है तो उसे निर्वाण प्राप्त हो जाता है।

➢ महायान का आदर्श मानव है बोधिसत्त्व, जगत्, के उपकार में लगा हुआ व्यक्ति।

➢ महायान का निर्वाण वेदान्त- मुक्ति का समकक्ष है।

3. संस्कृत व्याकरण

1. वृद्धि संज्ञा

सूत्र- वृद्धिरादैच् (1.1.1)

पदच्छेद- वृद्धिः आत् ऐच्

आ ऐ, औ

सूत्रार्थ- आ, ऐ, औ- इन तीन वर्णों की **वृद्धिसंज्ञा** होती है। जैसे- त्यागः में **आ**, सदैव में **ऐ**, महौषधि में **औ** वृद्धिसंज्ञक वर्ण हैं।

2. गुण संज्ञा

सूत्र- अदेङ् गुणः (1.1.2)

पदच्छेद- अत् एङ् गुणः

अ ए ओ

सूत्रार्थ- अ, ए, ओ- इन तीन वर्णों की **गुणसंज्ञा** होती है।

उदाहरण- रमेशः में 'ए', सूर्योदयः में 'ओ', महर्षि में 'अ' (र्) गुणसंज्ञक वर्ण हैं।

3. संयोग संज्ञा

सूत्र- हलोऽनन्तराः संयोगः (1.1.7)

पदच्छेद- हलः अनन्तराः संयोगः

सूत्रार्थ- ऐसे दो या दो से अधिक व्यञ्जन जिनके बीच में कोई स्वर न आया हो, उसे **संयोग** कहते हैं।

उदाहरण- (i) पुष्प में ष् + प् का संयोग है।
(ii) अग्नि में ग् + न् का संयोग है।
(iii) राष्ट्र में ष् + ट् + र् का संयोग है।
(iv) बुद्धि में द् + ध् का संयोग है।

4. अनुनासिक संज्ञा

सूत्र- मुखनासिकावचनोऽनुनासिकः (1.1.8)

पदच्छेद- मुख-नासिका-वचनः अनुनासिकः

सूत्रार्थ- जो वर्ण मुख तथा नासिका दोनों की सहायता से बोले जाते हों, उसकी **अनुनासिक संज्ञा** होती है।

उदाहरण- अँ, ङ्, ञ्, ण्, न्, म् आदि वर्ण अनुनासिक हैं।

नोट- जो वर्ण नासिका के साथ नहीं बोले जाते वे अननुनासिक या निरनुनासिक कहे जाते हैं। जैसे- क, ख, ग, घ, च, छ, ज आदि।

5. सवर्णसंज्ञा

सूत्र- ''तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम्'' (1.1.9)

पदच्छेद- तुल्य-आस्य-प्रयत्नं सवर्णम्

सूत्रार्थ- जिन दो या दो से अधिक वर्णों के कण्ठ तालु आदि उच्चारणस्थान तथा आभ्यन्तरप्रयत्न दोनों समान हों, वे परस्पर सवर्णी (सवर्णसंज्ञक) होते हैं।

उदाहरण- अ-आ, इ-ई, उ-ऊ आदि परस्पर सवर्णी हैं।

रमा + अपि = रमापि। मुनि + ईशः = मुनीशः

भानु + उदयः = भानूदयः पितृ + ऋणम् = पितृणम्

- उच्चारणस्थान और प्रयत्न का साम्य होने पर भी स्वर और व्यञ्जन की परस्पर सवर्णसंज्ञा नहीं होती है- ''नाज्झलौ''

यथा- दण्ड हस्तः, दधि शीतम्।

- **''ऋलृवर्णयोः मिथः सावर्ण्यं वाच्यम्''** इस वार्तिक से ऋ और लृ वर्ण आपस में सवर्णी हैं।

6. प्रगृह्य संज्ञा

सूत्र- ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम् (1.1.11)

पदच्छेद- ईत् ऊत् एत् द्विवचनं प्रगृह्यम्

सूत्रार्थ- द्विवचनान्त ई ऊ ए की **प्रगृह्यसंज्ञा** होती है।

उदाहरण- (i) हरी एतौ (ii) विष्णू इमौ (iii) गङ्गे अमू (iv) अग्नी इति (v) वायू इति (vi) माले इति (vii) पचेते इति

7. 'घ' संज्ञा

सूत्र- तरप्तमपौ घः (1.1.21)

पदच्छेद- तरप् - तमपौ घः

सूत्रार्थ- तरप् और तमप् - ये दो प्रत्यय **'घ' संज्ञक** होते हैं।

उदाहरण- कुमारितरा, कुमारितमा

8. निष्ठा संज्ञा

सूत्र- क्तक्तवतू निष्ठा (1.1.25)

पदच्छेद- क्त - क्तवतू निष्ठा

सूत्रार्थ- क्त तथा क्तवतु दोनों प्रत्ययों की **निष्ठा संज्ञा** होती है।

उदाहरण- भुक्तः, भुक्तवान्, पठितः, पठितवान् आदि।

9. सर्वनामसंज्ञा

सूत्र- सर्वादीनि सर्वनामानि (1.1.26)

पदच्छेद- सर्व-आदीनि सर्वनामानि

सूत्रार्थ- सर्व, विश्व, यत् , तद्, एतत्, इदम्, अदस्, अस्मद्, युष्मद् आदि शब्दों की **सर्वनामसंज्ञा** होती है।

10. अव्यय संज्ञा

सूत्र- स्वरादिनिपातमव्ययम् (1.1.36)

पदच्छेद- स्वरादि-निपातम् अव्ययम्

सूत्रार्थ- स्वरादिगण में पठित शब्दों की तथा निपात शब्दों की अव्यय संज्ञा होती है।

उदाहरण- स्वरादि- स्वर्, प्रातर् इत्यादि

निपात- च, वा, ह इत्यादि

- क्त्वा, ल्यप्, तुमुन् प्रत्ययान्त पद भी अव्ययसंज्ञक होते हैं- **यथा-** पठित्वा, प्रपठ्य, पठितुम् आदि।
- कुछ तद्धित प्रत्ययान्त शब्दों की भी अव्ययसंज्ञा होती है। जैसे- ततः, तत्र, तदा, विना आदि।
- अव्ययीभाव समास की अव्ययसंज्ञा होती है। जैसे- अधिहरि, अध्यात्मम्, उपगङ्गम्, यथाशक्ति आदि।

11. विभाषा संज्ञा

सूत्र- न वेति विभाषा (1.1.43)

पदच्छेद- न वा इति विभाषा

सूत्रार्थ- न का अर्थ है- निषेध। 'वा' का अर्थ है- विकल्प। निषेध तथा विकल्प इन दो अर्थों की **विभाषा संज्ञा** होती है।

12. सम्प्रसारण संज्ञा

सूत्र- इग्यणः सम्प्रसारणम् (1.1.44)

पदच्छेद- इक् यणः सम्प्रसारणम्

सूत्रार्थ- यण् के स्थान पर होने वाले इक् की **सम्प्रसारण संज्ञा** होती है।

यण् - य् व् र् ल् इक् - इ उ ऋ ऌ

उदाहरण- (i) यज् + क्त = इष्टः (ii) वप् + क्त = उप्तः

13. टि संज्ञा

सूत्र- अचोऽन्त्यादि टि (1.1.63)

पदच्छेद- अचः अन्त्य आदि टि

सूत्रार्थ- अचों के मध्य में जो अन्तिम अच् होता है, वह आदि में हो जिसके उस वर्णसमुदाय की **टि संज्ञा** होती है।

व्याख्या- किसी शब्द में जो अन्तिम स्वर होगा वही टिसंज्ञक वर्ण होगा, उस अन्तिम स्वर के बाद जो व्यञ्जन वर्ण होंगे वे भी टिसंज्ञक होंगे।

जैसे- (i) मनस् = म् अ न् अ स्

यहाँ अन्तिम स्वर है 'नकार' में विद्यमान अ । 'अ' के बाद 'स्' व्यञ्जन वर्ण भी टिसंज्ञा में गिना जाएगा अतः 'मनस्' में **'अस्'** की टिसंज्ञा होगी।

(ii) राजन् में **'अन्'** इस वर्णसमुदाय की टिसंज्ञा होगी।

(iii) 'राम' में **'अ'** टिसंज्ञक वर्ण है। क्योंकि यहाँ अन्तिम स्वर अकार के बाद कोई व्यञ्जन वर्ण नहीं है।

(iv) 'दधि' में **'इ'** टिसंज्ञक वर्ण है।

नोट-

(i) अन्तिम स्वर तथा उसके बाद आने वाले स्वर रहित व्यञ्जन वर्ण टिसंज्ञक होंगे। जैसे- 'आत्मन्' में अन्।

(ii) यदि अन्तिम स्वर के बाद व्यञ्जन वर्ण नहीं होगा तो केवल शब्द का अन्तिम स्वर ही टिसंज्ञक होगा। जैसे- दधि में टिसंज्ञक वर्ण हैं- **'इ'**।

14. उपधा संज्ञा

सूत्र- अलोऽन्त्यात् पूर्व उपधा (1.1.64)

पदच्छेद- अलः अन्त्यात् पूर्वः उपधा

सूत्रार्थ- अन्तिम वर्ण से पूर्व में रहने वाले वर्ण की **उपधा संज्ञा** होती है।

व्याख्या- किसी शब्द या धातु में जो अन्त्य वर्ण होगा, उसके ठीक पहले वाले वर्ण की उपधा संज्ञा होती है।

जैसे-

(i) राम- र् आ म् अ - यहाँ अन्तिम वर्ण है 'अ' तो अकार के ठीक पहले वाले वर्ण 'म्' की उपधा संज्ञा होगी।

(ii) 'गम्' में अन्तिम वर्ण मकार के पूर्व 'अकार' की उपधा संज्ञा होगी।

(iii) इसीप्रकार भिद् में 'इ' की, मुच् में 'उ' की, वृध् में 'ऋ' की उपधा संज्ञा होगी।

नोट- Second Last वर्ण उपधासंज्ञक होगा। वह वर्ण स्वर भी हो सकता है और व्यञ्जन भी।

15. नदी संज्ञा

सूत्र- यू स्त्र्याख्यौ नदी (1.4.3)

पदच्छेद- यू स्त्री आख्यौ नदी

सूत्रार्थ- 'यू' = (ई + ऊ) का अर्थ है ईकारान्त और ऊकारान्त

- **'स्त्र्याख्यौ'** का अर्थ है- नित्य स्त्रीलिङ्ग शब्द

इसप्रकार ईकारान्त तथा ऊकारान्त नित्यस्त्रीलिङ्ग शब्दों की नदी संज्ञा होती है।

उदाहरण- नदी, गौरी, वधू आदि नदीसंज्ञक पद हैं।

16. घि संज्ञा

सूत्र- शेषो घ्यसखि (1.4.7)

पदच्छेद- शेषः घि असखि

सूत्रार्थ- जिनकी नदी संज्ञा नहीं है, ऐसे ह्रस्व इकारान्त और ह्रस्व उकारान्त शब्दों की **घि संज्ञा** होती है। 'सखि' शब्द को छोड़कर।

उदाहरण- हरिः, भानुः, वारि, मधु आदि घिसंज्ञक हैं।

नोट- (i) 'पति' शब्द समास होने पर ही घिसंज्ञक होता है- जैसे- भूपतिः, सीतापतिः आदि। **'पतिः समास एव'**

17. पद संज्ञा

सूत्र- सुप्तिङन्तं पदम् (1.4.14)

पदच्छेद- सुप् तिङ् अन्तम् पदम्

सूत्रार्थ- सुबन्त (सुप् अन्त वाला) तथा तिङन्त (तिङ् अन्त वाला) शब्द की **पद संज्ञा** होती है।

व्याख्या-

(i) प्रातिपदिकों में प्रथमा से सप्तमी तक सु औ जस् आदि सुप् विभक्तियाँ लगाकर जो रामः, रामौ, रामाः आदि शब्दरूप बनते हैं, वे **सुबन्त पद** कहलाते हैं।

(ii) धातुओं से विभिन्न लकारों में तिप् तस् झि तथा त आताम् झ आदि 18 तिङ् प्रत्यय लगाकर जो पठति पठतः पठन्ति आदि धातुरूप बनते हैं, वे **तिङन्त पद** कहलाते हैं।

नोट- पद दो प्रकार के होते हैं-

(i) सुबन्त पद (शब्दरूप) रामः, हरिः, गुरुः आदि।

(ii) तिङन्त पद (धातुरूप) पठति, लभते, जानाति आदि।

18. संहिता संज्ञा

सूत्र- परः सन्निकर्षः संहिता (1.4.108)

पदच्छेद- परः सन्निकर्षः संहिता

सूत्रार्थ- वर्णों के अत्यधिक सामीप्य की **संहिता संज्ञा** होती है।

उदाहरण- मधु + अरिः = मध्वरिः (उ + अ)

रमा + ईशः = रमेशः (आ + ई)

19. सत् संज्ञा

सूत्र- तौ सत् (3.2.127)

सूत्रार्थ- शतृ एवं शानच् - इनकी **सत् संज्ञा** होती है।

20. प्रातिपदिक संज्ञा

सूत्र- अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम् (1.2.45)

पदच्छेद- अर्थवत् अधातुः अप्रत्ययः प्रातिपदिकम्

सूत्रार्थ- धातुरहित, प्रत्ययान्तरहित सार्थक शब्दस्वरूप की प्रातिपदिक संज्ञा होती है।

उदाहरण- राम, कृष्ण, लता आदि।

नोट- कृत्तद्धितसमासाश्च (1.2.46) कृत् प्रत्ययान्त, तद्धितप्रत्ययान्त तथा समास भी प्रातिपदिक संज्ञक होते हैं।

जैसे- कारकः (कृत्), शालीयः (तद्धित), राजपुरुषः (समास) आदि।

21. प्रत्ययसंज्ञा

प्रत्यय- धातु और प्रातिपदिक (शब्द) के बाद जो जुड़ते हैं, उनकी प्रत्यय संज्ञा होती है।

यथा-

(i) भवति में 'भू' धातु है 'तिप्' प्रत्यय है।

(ii) पाठकः में पठ् धातु है 'ण्वुल्' प्रत्यय है।

(iii) रामस्य में राम प्रातिपदिक है 'ङस्' प्रत्यय है।

➢ धातु के अन्त में लगने वाले प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं-

1. **कृत् प्रत्यय -** क्त, क्तवतु, तुमुन् आदि।
2. **तिङ् प्रत्यय -** तिप्, तस्, झि आदि 18 प्रत्यय।

➢ प्रातिपदिक (शब्दों) से लगने वाले प्रत्यय हैं-

1. **सुप् प्रत्यय -** सु औ जस् आदि 21 प्रत्यय।
2. **स्त्रीप्रत्यय -** टाप्, ङीप्, ङीष् आदि।
3. **तद्धितप्रत्यय -** मतुप्, अण्, इनि आदि।

कृत् प्रत्यय- कृत् प्रत्यय धातु के अन्त में लगते हैं, और वे दो प्रकार के शब्द बनाते हैं।

1. अव्यय- क्त्वा, ल्यप्, तुमुन् आदि।

2. विशेषण- तव्यत्, अनीयर्, यत्, ण्यत्, क्यप्, शतृ, शानच्, क्त, क्तवतु आदि।

उदाहरण- पठ् + क्त = पठितः, पठ् + अनीयर् = पठनीयम्

तिङ् प्रत्यय- दसों लकारों के प्रत्ययों को तिङ्प्रत्यय कहा जाता है। ये दो प्रकार के हैं- परस्मैपदी और आत्मनेपदी।

परस्मैपदी तिङ् प्रत्यय- (9)			
प्रथम पुरुष	तिप्	तस्	झि
मध्यम पुरुष	सिप्	थस्	थ
उत्तम पुरुष	मिप्	वस्	मस्
आत्मनेपदी तिङ् प्रत्यय- (9)			
प्रथम पुरुष	त	आताम्	झ
मध्यम पुरुष	थास्	आथाम्	ध्वम्
उत्तम पुरुष	इट्	वहि	महिङ्

➢ इस प्रकार ये 18 प्रत्यय तिङ् कहलाते हैं। तिप् के 'ति' से लेकर महिङ् के 'ङ्' तक 'तिङ्' कहा गया।

सुप् प्रत्यय- सुप् प्रत्यय प्रातिपदिक से जुड़कर पद बनाते हैं। जैसे- 'राम' प्रातिपदिक से 'सु' लगेगा तो 'रामः' यह पद बनेगा।

➢ सुप् प्रत्यय 21 होते हैं।

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सु	औ	जस्
द्वितीया	अम्	औट्	शस्
तृतीया	टा	भ्याम्	भिस्
चतुर्थी	ङे	भ्याम्	भ्यस्
पञ्चमी	ङसि	भ्याम्	भ्यस्
षष्ठी	ङस्	ओस्	आम्
सप्तमी	ङि	ओस्	सुप्

स्त्रीप्रत्यय- पुंलिङ्ग शब्द को स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए जिन प्रत्ययों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें स्त्रीप्रत्यय कहा जाता है।

जैसे- टाप्, डाप्, चाप्, ङीप्, ङीष्, ङीन्, ऊङ्, ति आदि।

उदाहरण-

अज + टाप् = अजा　　छात्र + टाप् = छात्रा

राजन् + ङीप् = राज्ञी　　कुमार + ङीप् = कुमारी

नर्तक + ङीष् = नर्तकी　　गौर + ङीष् = गौरी

नृ + ङीन् = नारी　　युवन् + ति = युवतिः आदि।

तद्धित प्रत्यय- शब्द के अन्त में लगने वाले प्रत्यय तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

यथा- मतुप्, इनि, त्व, तल्, ष्यञ्, तसिल् आदि।

उदाहरण- बुद्धि + मतुप् = बुद्धिमत् (बुद्धिमान्)
महत् + त्व = महत्त्वम्

22. स्थानी और आदेश

किसी वर्ण को या शब्द को हटाकर जब उसकी जगह, कोई दूसरा वर्ण या शब्द आकर बैठ जाता है, तब जिसे हटाया जाता है, उसे **'स्थानी'** कहते हैं।

➢ जो स्थानी की जगह आकर बैठ जाता है, उसे आदेश कहते हैं। व्याकरणशास्त्र में आदेश को शत्रु के समान कहा गया है- **''शत्रुवदादेशः''**

जैसे- प्रति + एकः = प्रत्येकः

यहाँ 'इ' को हटाकर उसके स्थान पर 'य्' बैठ गया है, अतः 'इ' स्थानी है तथा 'य्' आदेश है।

23. निमित्त

एक वर्ण को हटाकर उसकी जगह दूसरे वर्ण का आदेश जिसके कारण होता है, उसे **निमित्त** कहा जाता है।

जैसे- प्रति + एकः = प्रत्येकः में 'इ' स्थानी के स्थान पर 'य्' आदेश 'ए' स्वर (अच्) के कारण हुआ है अतः 'ए' निमित्त है।

24. आगम

जो वर्ण किसी वर्ण को हटाये बिना आकर बैठ जाता है, तो उसे हम **'आगम'** कहते हैं। **''मित्रवदागमः''** अर्थात् मित्र की तरह आगमन आगम कहा जाता है। ''सम् + सुट् + कृ + क्त'' = **संस्कृत** यहाँ सुट् का आगम हुआ है।

25. उपसर्ग संज्ञा

सूत्र- ''उपसर्गाः क्रियायोगे'' (1.4.59)

सूत्रार्थ- प्रादि जब किसी क्रिया के साथ लगते हैं तब इनकी उपसर्ग संज्ञा होती है।

➢ उपसर्गों की संख्या 22 है-

प्र परा अप सम् अनु अव निस् निर् दुस् दुर् वि आङ् नि अधि अपि अति सु उत् अभि प्रति परि उप।

26. कारक

कारक- कृ + ण्वुल् = कारकम् अर्थात् क्रियां करोति इति कारकम्।

➢ जिनका क्रिया के साथ सीधा सम्बन्ध होता है, या जो क्रिया की सिद्धि में सहायक होते हैं, उन्हें **'कारक'** कहा जाता है। **''क्रियाजनकत्वं कारकत्वम्''**, **''क्रियान्वयित्वं कारकत्वम्''**

➢ कारक छः होते हैं- 1. कर्ता 2. कर्म 3. करण 4. सम्प्रदान 5. अपादान 6. अधिकरण।

कर्ता कर्म च करणं सम्प्रदानं तथैव च।
अपादानाधिकरणे इत्याहुः कारकाणि षट्॥

➢ संस्कृत व्याकरण में सम्बन्ध और सम्बोधन को कारक नहीं माना जाता।

27. विभक्तियाँ

विभक्ति- जिसके द्वारा कारकों और संख्याओं को विभक्त किया जाता है, उसे विभक्ति कहते हैं। इसीलिए सुप् और तिङ् को भी विभक्ति कहते हैं।

➢ संस्कृत व्याकरण में **विभक्तियाँ सात** होती हैं-

1. प्रथमा 2. द्वितीया 3. तृतीया 4. चतुर्थी 5. पञ्चमी
6. षष्ठी 7. सप्तमी

➢ सम्बोधन में प्रथमा विभक्ति होती है।

28. पुरुष

संस्कृत में तीन पुरुष होते हैं-

1. प्रथमपुरुष या अन्य पुरुष- उत्तम पुरुष के अहं, आवां, वयम् और मध्यम पुरुष के त्वम्, युवां, यूयम् इन छह शब्दों को छोड़कर संस्कृत वाङ्मय के सभी कर्तृपद प्रथम पुरुष के अन्तर्गत गिने जाते हैं।

यथा- भवान् , भवती, बालकः, बालिका, सः, सा, नरः, वानरः, पिता, पुत्रः, इत्यादि।

और इन सभी कर्तृ पदों के साथ प्रथम पुरुष की क्रिया 'पठति, पठतः, पठन्ति' आदि क्रियाओं का ही प्रयोग होता है।

2. मध्यम पुरुष- जिससे बात कही जाय, वह मध्यम पुरुष है। इसमें 'त्वम्, युवाम्, यूयम्' कर्तृपद आते हैं। इनके साथ मध्यमपुरुष की क्रिया क्रमशः **त्वम्** के साथ पठसि **युवां** के साथ पठथः तथा **यूयं** के साथ पठथ का प्रयोग होगा।

3. उत्तम पुरुष- जो बात को कहता है; वह उत्तम पुरुष है। इसके अन्तर्गत 'अहं, आवाम्, वयम्' कर्तृपद आते हैं। इनके साथ उत्तम पुरुष की क्रिया क्रमशः **अहं** के साथ 'पठामि' **आवां** के साथ पठावः **वयं** के साथ 'पठामः' का प्रयोग होता है।

29. वचन

'वचन' का अर्थ होता है- संख्या।

संस्कृत में तीन वचन होते हैं-

1. **एकवचन-** एक वस्तु या एक व्यक्ति का बोध कराने के लिए एकवचन का प्रयोग होता है, जैसे- बालकः, हरिः, गुरुः, विद्यालयः आदि।
2. **द्विवचन-** दो व्यक्तियों या दो वस्तुओं के लिए द्विवचन का प्रयोग होता है। जैसे- बालकौ, हरी, गुरू, विद्यालयौ, पुस्तके आदि।
3. **बहुवचन-** तीन या तीन से अधिक व्यक्तियों या वस्तुओं का बोध कराने के लिए बहुवचन का प्रयोग किया जाता है। **''बहुषु बहुवचनम्''**

जैसे- बालकाः, हरयः, गुरवः, विद्यालयाः, पुस्तकानि आदि।

30. लिङ्ग

➢ 'लिङ्ग' शब्द का अर्थ है- चिह्न, लक्षण या पहचान।

संस्कृत में तीन लिङ्ग होते हैं-

1. पुंलिङ्ग- जिससे पुरुष जाति का बोध होता है।

जैसे- छात्रः, बालकः, मुनिः, विद्यालयः, काकः, व्याघ्रः आदि।

2. स्त्रीलिङ्ग- जिससे स्त्रीजाति का बोध होता है।

जैसे- छात्रा, बालिका, गौरी, नदी आदि।

3. नपुंसकलिङ्ग- जिससे न पुरुष जाति का बोध हो और न स्त्री जाति का बोध हो, उसे नपुंसकलिङ्ग कहते हैं।

जैसे- फलम्, जलम्, गृहम्, पुष्पम्, नेत्रम्, वारि, दधि, मधु आदि।

31. लकार

संस्कृत में दस लकार होते हैं-

1. **लट्लकार -** (वर्तमान काल) वर्तमान काल को सूचित करने के लिए लट्लकार का प्रयोग होता है।
2. **लिट्लकार-** (अनद्यतन परोक्षभूतकाल) परोक्षभूतकाल अर्थात् बहुत प्राचीनकाल को सूचित करने के लिए लिट्लकार की क्रिया का प्रयोग होता है।
3. **लुट्लकार-** (अनद्यतन भविष्यत् काल) आज के पश्चात् भविष्यकाल को सूचित करने के लिए लुट्लकार का प्रयोग होता है।
4. **लृट् -** (सामान्य भविष्यत् काल)
5. **लेट्लकार -** (संशय अर्थ में) लेट्लकार का प्रयोग वेदों में होता है, लौकिक संस्कृत में नहीं।
6. **लोट्लकार -** (प्रेरणा तथा आज्ञा अर्थ में)
7. **लङ्लकार -** (अनद्यतन भूतकाल) अब से पहले के भूतकाल को सूचित करने के लिए लङ् लकार का प्रयोग किया जाता है।
8. **लिङ् लकार-** इसके दो भेद हैं-

(i) विधिलिङ् - (विधि, निमन्त्रण, आमन्त्रण, सम्प्रश्न, प्रार्थना, चाहिए अर्थ में)

(ii) आशीर्लिङ् - (आशीर्वाद अर्थ में)

9. लुङ्लकार - (सामान्यभूत) सामान्यभूतकाल को सूचित करने के लिए।

10. लृङ्लकार- (हेतु हेतुमद्भाव भूत) जहाँ एक क्रिया का कारण दूसरी क्रिया हो।

32. धातुसंज्ञा

सूत्र- भूवादयो धातवः (1.3.1)

क्रियावाचक भू आदि की धातुसंज्ञा होती है। ये सभी धातुयें पाणिनीय धातुपाठ में दी गयी हैं। इनकी संख्या 1970 अर्थात् लगभग 2000 है।

➢ धातुओं के तीन प्रकार से रूप चलते हैं-

(i) परस्मैपदी √पठ्- पठति, पठतः, पठन्ति आदि।

(ii) आत्मनेपदी √लभ- लभते, लभेते, लभन्ते आदि।

(iii) उभयपदी √ज्ञा- जानाति, जानीतः, जानन्ति जानीते, जानाते, जानते।

33. गण (धातुओं के विभाग)

संस्कृत में दस गण होते हैं। संस्कृत व्याकरणशास्त्र में लगभग 2000 धातुयें हैं; प्रत्येक धातु किसी न किसी गण में ही परिगणित है।

	गण	धातुयें
1.	भ्वादिगण	1035 धातुयें
2.	अदादिगण	72 धातुयें
3.	जुहोत्यादिगण	24 धातुयें
4.	दिवादिगण	140 धातुयें
5.	स्वादिगण	35 धातुयें
6.	तुदादिगण	157 धातुयें
7.	रुधादिगण	25 धातुयें
8.	तनादिगण	10 धातुयें
9.	क्र्यादिगण	61 धातुयें
10.	चुरादिगण	411 धातुयें
	कुल धातुयें –	**1970**

भ्वाद्यदादि जुहोत्यादिर्दिवादिः स्वादिरेव च।
तुदादिश्च रुधादिश्च तनादिक्रीचुरादयः॥

➢ **भ्वादिगण की प्रमुख धातुएँ-** भू (होना), हस् (हँसना), पठ् (पढ़ना), रक्ष् (रक्षा करना), वद् (बोलना), पच् (पकाना), नम् (झुकना), गम् (जाना), दृश् (देखना), सद् (बैठना), स्था (रुकना), पा (पीना), घ्रा (सूँघना), स्मृ (स्मरण करना), जि (जीतना), श्रु (सुनना), वस् (रहना), सेव् (सेवा करना), लभ (पाना), वृध् (बढ़ना), मुद् (प्रसन्न होना), सह् (सहन करना), याच् (माँगना), नी (ले जाना) आदि।

➢ **अदादिगण की प्रमुख धातुएँ-** अद् (खाना), अस् (होना), ब्रू (कहना), दुह् (दुहना), रुद् (रोना), स्वप् (सोना), हन् (मारना), इ (जाना), आस् (बैठना), शी (सोना) आदि।

➢ **जुहोत्यादिगण की प्रमुख धातुएँ-** हु (हवन करना), भी (डरना), दा (देना), धा (धारण), करना आदि।

➢ **दिवादिगण की प्रमुख धातुएँ-** दिव् (चमकना), नृत् (नाचना), नश् (नष्ट होना), भ्रम् (घूमना), युध् (लड़ना), जन् (उत्पन्न होना) आदि।

➢ **स्वादिगण की प्रमुख धातुएँ-** सु (स्नान करना या रस निकालना), आप् (पाना), शक् (सकना) आदि।

➢ **तुदादिगण की प्रमुख धातुएँ-** तुद् (दुःख देना), इष् (चाहना), स्पृश् (छूना), प्रच्छ् (पूँछना), लिख् (लिखना), मृ (मरना), मुच् (छोड़ना) आदि।

➢ **रुधादिगण की प्रमुख धातुएँ-** रुध् (ढकना, रोकना), भुज् (पालन करना, भोजन करना), आदि।

➢ **तनादिगण की प्रमुख धातुएँ-** तन् (फैलाना), कृ (करना) आदि।

➢ **क्र्यादिगण की प्रमुख धातुएँ-** क्री (मोल लेना), ग्रह (पकड़ना), ज्ञा (जानना) आदि।

➢ **चुरादिगण की प्रमुख धातुएँ-** चुर् (चुराना), चिन्त् (सोचना), कथ् (कहना), भक्ष् (खाना) आदि।

स्वरसन्धि तालिका

सन्धि का नाम	सन्धिसूत्र	सूत्रार्थ	उदाहरण
1. यण् सन्धि	इको यणचि	**इक् + अच् = यण्**	
		इ/ई + अच् (असमान) =य्	यदि + अपि = यद्यपि
		उ/ऊ + अच् (असमान) = व्	मधु + अरिः = मध्वरिः
		ऋ ॠ + अच् (असमान) = र्	पितृ + आदेशः = पित्रादेशः
		ऌ + अच् (असमान) = ल्	ऌ + आकृतिः = लाकृतिः
2. अयादि सन्धि	एचोऽयवायावः	**एच् + अच् = अयवायाव**	
		ए + अच् = अय्	ने + अनम् = नयनम्
		ओ + अच् = अव्	पो + अनः = पवनः
		ऐ + अच् = आय्	नै + अकः = नायकः
		औ + अच् = आव्	पौ + अकः = पावकः
3. गुण सन्धि	आद्गुणः	**आत् + अच् = गुण**	
		अ/आ + इ/ई = ए	रमा + ईशः = रमेशः
		अ/आ + उ/ऊ = ओ	हित + उपदेशः = हितोपदेशः
		अ/आ + ऋ/ॠ = अर्	देव + ऋषिः = देवर्षिः
		अ/आ + ऌ = अल्	तव + ऌकारः = तवल्कारः
4. वृद्धि सन्धि	वृद्धिरेचि	**आत् + एच् = वृद्धि**	
		अ/आ + ए/ऐ = ऐ	सदा + एव = सदैव
			महा + ऐश्वर्यम् = महैश्वर्यम्
		अ/आ + ओ/औ = औ	जल + ओघः = जलौघः
			महा + औषधिः = महौषधिः
5. दीर्घ सन्धि	अकः सवर्णे दीर्घः	**अक् + अक् = दीर्घः**	
		अ/आ + अ/आ = आ	हिम + आलयः = हिमालयः
		इ/ई + इ/ई = ई	रवि + इन्द्रः = रवीन्द्रः
		उ/ऊ + उ/ऊ = ऊ	भानु + उदयः = भानूदयः
		ऋ ॠ + ऋ/ॠ = ॠ	मातृ + ऋणम् = मातॄणम्
6. पूर्वरूप सन्धि	एङः पदान्तादति	**एङ् + अ = पूर्वरूप**	
		ए + अ = (ऽ) पूर्वरूप	हरे + अव = हरेऽव
		ओ + अ = (ऽ) पूर्वरूप	विष्णो + अव = विष्णोऽव
7. पररूप सन्धि	एङि पररूपम्	**अवर्णान्त उपसर्ग + एङादिधातु = पररूप**	प्र + एजते = प्रेजते
		प्र, उप + ए, ओ धातु = पररूप	उप + ओषति = उपोषति
8. प्रकृतिभाव	प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम्	प्लुत/प्रगृह्य + अच् = प्रकृतिभाव	हरी + एतौ = हरी एतौ
			विष्णू + इमौ = विष्णू इमौ
			गङ्गे + अमू = गङ्गे अमू

स्वरसन्धि के कुछ अपवाद सूत्र/वार्तिक

(1) अक्षादूहिन्यामुपसंख्यानम् (वा.) 'अक्ष' शब्द के बाद 'ऊहिनी' शब्द के आने पर पूर्व और पर दोनों के (अ+ऊ) स्थान पर वृद्धिसंज्ञक 'औ' वर्ण आदेश होता है।

अक्ष + ऊहिनी

अक्ष् अ + ऊहिनी

अक्ष् औ हिनी

अक्षौहिणी (सेना)

नोट- पूर्वपदात्संज्ञायामगः (8.4.3) सूत्र से 'नकार' के स्थान पर 'णकार' आदेश होकर 'अक्षौहिणी' प्रयोग सिद्ध हो जाता है।

- अक्षौहिणी सेना होती है, जिसमें 21870 रथ, 21870 हाथी, 65610 घोड़े और 109350 पैदल सैनिक होते हैं।

(2) प्रादूहोढोढ्येषैष्येषु (वा.) - 'प्र' उपसर्ग के बाद ऊहः, ऊढः, ऊढिः, एषः, और एष्यः पद आयें तो पूर्व और पर दोनों के स्थान पर वृद्धिसंज्ञक वर्ण आदेश होते हैं।

(i) प्र + ऊहः

प्र् अ + ऊहः

प्र् औ हः

प्रौहः (उत्तम अर्थ करने वाला)

(ii) प्र + ऊढः

प्र् अ + ऊढः

प्र औ ढः

प्रौढः (परिपक्व)

(iii) प्र + ऊढिः

प्र् अ + ऊढिः

प्र् औ ढिः

प्रौढिः (परिपक्वता, प्रौढता)

उपर्युक्त उदाहरणों में गुण सन्धि हो रही थी, किन्तु यहाँ गुण को बाधकर वृद्धिसन्धि हो रही है।

(iv) प्र + एषः

प्र् अ + एषः

प्र् ऐ षः

प्रैषः (प्रेरणा)

(v) प्र + एष्यः

प्र् अ + एष्यः

प्र् ऐ ष्यः

प्रैष्यः (प्रेरणीय/सेवक आदि)

नोट- इन दोनों उदाहरणों में वृद्धि सन्धि तो हो रही थी किन्तु ''एङि पररूपम्'' सूत्र से पररूप भी प्राप्त हो रहा था। यदि पररूप हो जाता तो प्रेषः, प्रेष्यः ऐसे अशुद्ध रूप बन जाते।

(3) ऋते च तृतीयासमासे (वा.) - यदि पूर्व में अवर्ण हो और बाद में 'ऋत' शब्द हो और दोनों शब्दों में तृतीया तत्पुरुष समास हुआ हो तो पूर्व और पर दोनों वर्णों के स्थान पर वृद्धिसंज्ञक वर्ण हो जाता है।

सुखेन ऋतः = **सुखार्तः** (तृतीया तत्पुरुष समास)

सुख + ऋतः = **सुखार्तः** (सुख से युक्त) - वृद्धिसन्धि

दुःख + ऋतः = **दुःखार्तः** (दुःख से युक्त) - वृद्धिसन्धि

कष्ट + ऋतः = **कष्टार्तः** (कष्ट से युक्त) - वृद्धिसन्धि

किन्तु परमश्चासौ ऋतः = परमर्तः यहाँ वृद्धि नहीं हुई क्योंकि यहाँ तृतीया तत्पुरुष समास नहीं, बल्कि कर्मधारय समास है।

परम + ऋतः = परमर्तः (गुण सन्धि)

4. प्रवत्सतरकम्बलवसनार्णदशानामृणे (वार्तिक)- प्र, वत्सतर, कम्बल, वसन, ऋण तथा दश- इन छह शब्दों के बाद यदि 'ऋण' शब्द आये तो पूर्व और पर दोनों के स्थान पर वृद्धिसंज्ञक वर्ण हो जाता है।

(i) प्र + ऋणम्

प्र् अ + ऋणम्

प्र आर् णम्

प्रार्णम् (अधिक ऋण)

(ii) वत्सतर + ऋणम् = **वत्सतरार्णम्** (बछड़े के लिए ऋण)

(iii) कम्बल + ऋणम् = **कम्बलार्णम्** (कम्बल के लिए ऋण)

(iv) वसन + ऋणम् = **वसनार्णम्** (वस्त्र के लिए ऋण)

(v) ऋण + ऋणम् = **ऋणार्णम्** (ऋण चुकाने के लिए ऋण)

(vi) दश + ऋणम् = **दशार्णम्** (दस प्रकार के जल वाला देश)

5. उपसर्गादृति धातौ- अवर्णान्त उपसर्ग के बाद 'ऋ' से प्रारम्भ होने वाली धातु हो तो पूर्व और पर के स्थान पर वृद्धिसंज्ञक एक आदेश होता है।

जैसे- प्र + ऋच्छति = **प्रार्च्छति**

उप + ऋच्छति = **उपार्च्छति**

प्र + ऋणोति = **प्रार्णोति**

प्र + ऋञ्जते = **प्रार्ञ्जते**

(6) शकन्ध्वादिषु पररूपं वाच्यम् (वार्तिक)-

शकन्धु आदि गण में टिसंज्ञक पूर्व और पर वर्णों के स्थान पर पररूप सन्धि होती है।

जैसे- (i) शक + अन्धुः = **शकन्धुः** (शक नामक देश का कूप)

(ii) कर्क + अन्धुः = **कर्कन्धुः** (कर्क नामक राजा का कूप)

(iii) मनस् + ईषा = **मनीषा** (बुद्धि)

(iv) मार्त + अण्डः = **मार्तण्डः** (सूर्य)

(v) पतत् + अञ्जलिः = **पतञ्जलिः** (पतञ्जलि)

(7) स्वादीरेरिणोः (वार्तिक)- जब 'स्व' शब्द के बाद 'ईर' और 'ईरिन्' आदि शब्द आयें तो 'स्व' के अकार तथा 'ईर्' और 'ईरिन्' के ईकार के स्थान में ''ऐ'' वृद्धि हो जाती है।

जैसे- स्व + ईरः = **स्वैरः** (स्वेच्छाचारी)

स्व + ईरिणी = **स्वैरिणी** (स्वेच्छाचारिणी)

स्व + ईरम् = **स्वैरम्** (स्वेच्छाचारिता)

स्व + ईरी = **स्वैरी** (स्वेच्छाचारी)

व्यञ्जन (सन्धि) सन्धि

व्यञ्जन सन्धि- व्यञ्जन के बाद स्वर या व्यञ्जन आने पर जो विकार होता है, उसे व्यञ्जन सन्धि कहते हैं।
जैसे-

(i) वाक् + ईशः = वागीशः (व्यञ्जन + स्वर)

(ii) सत् + चित् = सच्चित् (व्यञ्जन + व्यञ्जन)

स्पष्टीकरण- यहाँ प्रथम उदाहरण में 'क्' व्यञ्जन के बाद 'ई' स्वर है तथा दूसरे उदाहरण में 'त्' व्यञ्जन के बाद 'च्' व्यञ्जन है। इससे स्पष्ट होता है कि व्यञ्जन वर्णों के बाद स्वर आये चाहे व्यञ्जन दोनों ही स्थितियों में व्यञ्जन सन्धि होगी।

1. श्चुत्व सन्धि

सूत्र- स्तोः श्चुना श्चुः

सूत्र विश्लेषण-

स्तु - सकार तवर्ग = स् त् थ् द् ध् न्

श्चु - शकार चवर्ग = श् च् छ् ज् झ् ञ्

सूत्रार्थ- सकार या तवर्ग (त् थ् द् ध् न्) के पहले या बाद में शकार या चवर्ग (च् छ् ज् झ् ञ्) का योग होने पर स् के स्थान पर श् तथा तवर्ग के स्थान पर चवर्ग हो जाता है।

स्थानी	आदेश	योग
स्	श्	श् या
त्	च्	चवर्ग का
थ्	छ्	योग पहले हो
द्	ज्	या बाद में।
ध्	झ्	
न्	ञ्	

उदाहरण-

रामस् + शेते = **रामश्शेते**

स्पष्टीकरण- इस उदाहरण में 'रामस्' में विद्यमान सकार के स्थान पर शकार हो गया; क्योंकि 'शेते' में शकार आ रहा था इसलिए।

ध्यान दें- इस सूत्र में सकार के बाद शकार आये ऐसा नहीं कहा गया है; अपितु योग होने पर कहा गया है। 'योग' का अर्थ है- 'मिलना'। तात्पर्य यह हुआ कि- 'स्तु' (सकार तवर्ग) पहले हो श्चु बाद में हो या श्चु (शकार चवर्ग) पहले हो 'स्तु' बाद में हो, बदलेगा 'स्तु' ही। जैसे-

(i) सत् + चित् = **सच्चित्**

(ii) याच् + ना = **याच्ञा**

- उपर्युक्त उदाहरण में 'सत्' के त् का 'चित्' के 'च्' से योग होने पर 'सत्' के 'त्' के स्थान पर 'च्' होकर 'सच्चित्' बन गया।
- दूसरे उदाहरण में 'याच्' के 'च्' का 'ना' के 'न्' से योग होने पर 'न्' के स्थान पर चवर्ग का 'ञ्' हो गया। जबकि 'ना' परवर्ण है तब भी।
- इससे सिद्ध हुआ कि सकार और तवर्ग चाहे पूर्व में हो चाहे पर में उनके स्थान पर ही शकार या चवर्ग आदेश के रूप में होंगे।

अवश्य देखें- श्चुत्व सन्धि में हमेशा-

स् के स्थान पर **श्** **त्** के स्थान पर **च्**

थ् के स्थान पर **छ्** **द्** के स्थान पर **ज्**

ध् के स्थान पर **झ्** **न्** के स्थान पर **ञ्** होगा।

स्तु (सकार तवर्ग) स्थानी हैं, श्चु (शकार चवर्ग) आदेश हैं।

अन्य उदाहरण-

सद् + जनः = **सज्जनः**

कस् + चित् = **कश्चित्**

शार्ङ्गिन् + जयः = **शार्ङ्गिञ्जयः**

बृहद् + झरः = **बृहज्झरः**

दुस् + चरित्रः = **दुश्चरित्रः**

उद् + ज्वलः = **उज्ज्वलः**

उत् + चारणम् = **उच्चारणम्**

2. ष्टुत्व सन्धि

सूत्र- 'ष्टुना ष्टुः' (8.4.41)

सूत्रार्थ- स्तु (सकार तवर्ग) के स्थान पर 'ष्टु' (षकार टवर्ग) होता है, 'ष्टु' के योग में।

स्तु = सकार तवर्ग- स् त् थ् द् ध् न्

ष्टु = षकार टवर्ग- ष् ट् ठ् ड् ढ् ण्

अर्थात् सकार या तवर्ग के पहले या बाद में षकार या टवर्ग (ट् ठ् ड् ढ् ण्) का योग होने पर स् को ष् तथा तवर्ग को टवर्ग हो जाता है।

स्थानी	आदेश	योग
स्	ष्	षकार या
त्	ट्	टवर्ग का योग
थ्	ठ्	होने पर
द्	ड्	
ध्	ढ्	
न्	ण्	

ध्यान रहे- सकार तवर्ग के पहले या सकार तवर्ग के बाद में षकार टवर्ग होने पर **स्** के स्थान पर '**ष्**'।

'**त्**' के स्थान पर '**ट्**'। '**थ्**' के स्थान पर '**ठ्**'।

'**द्**' के स्थान पर '**ड्**'। '**ध्**' के स्थान पर '**ढ्**'।

'**न्**' के स्थान पर '**ण्**' होता है।

उदाहरण-

1. तत् + टीका

   तट् + टीका (त् के स्थान पर ट्)

   तट्टीका

2. रामस् + षष्ठः

   रामष् + षष्ठः (स् के स्थान पर ष्)

   रामष्षष्ठः

3. उद् + डयनम्

   उड् + डयनम् (द् के स्थान पर ड्)

   उड्डयनम्

4. कृष् + नः

   कृष् + णः (न् के स्थान पर ण्)

   कृष्णः

5. दुष् + तः

   दुष् + टः (त् के स्थान पर ट्)

   दुष्टः

6. चक्रिन् + ढौकसे

   चक्रिण् + ढौकसे (न् के स्थान पर ण्)

   चक्रिण्ढौकसे

7. विष् + नुः

   विष् + णुः (न् के स्थान पर ण्)

   विष्णुः

8. पेष् + ता

   पेष् + टा (त् के स्थान पर ट्)

   पेष्टा

3.1 जश्त्व सन्धि

सूत्र- झलां जशोऽन्ते (8.2.39)

सूत्रविवरण- पदान्त झल् के स्थान पर 'जश् ' आदेश होता है।

➤ 'झल्' एक प्रत्याहार है जिसमें - वर्णों के पहले, दूसरे, तीसरे, चौथे और ऊष्म वर्ण आते हैं-

झल् = झ भ घ ढ ध
ज ब ग ड द
ख फ छ ठ थ
च ट त क प
श ष स ह

जश् = ज ब ग ड द (वर्गों के तीसरे अक्षर)

स्थानी (झल्)	आदेश (जश्)
(i) च् छ् ज् झ् श्	ज्
(ii) प् फ् ब् भ्	ब्
(iii) क् ख् ग् घ् ह्	ग्
(iv) ट् ठ् ड् ढ् ष्	ड्
(v) त् थ् द् ध् स्	द्

ध्यान रहे- झल् प्रत्याहार के बाद अच् हो, या हल् हो, या कोई वर्ण हो या न हो तो भी जश् होगा।

नोट- जश्त्व सन्धि दो प्रकार की होती है-

(i) पदान्त जश्त्व सन्धि

(ii) अपदान्त जश्त्व सन्धि

उदाहरण-

1. अच् + अन्तः
   अज् + अन्तः
   अजन्तः
2. वाक् + ईशः
   वाग् + ईशः
   वागीशः
3. षट् + आननः
   षड् + आननः
   षडाननः
4. दिक् + अम्बरः
   दिग् + अम्बरः
   दिगम्बरः
5. एतत् + मुरारिः
   एतद् + मुरारिः
   एतद् मुरारिः
6. सुप् + ईशः
   सुब् + ईशः
   सुबीशः
7. जगत् + ईशः
   जगद् + ईशः
   जगदीशः
8. वाक् + अत्र
   वाग् + अत्र
   वागत्र
9. दिक् + गजः
   दिग् + गजः
   दिग्गजः
10. चित् + आनन्दः
    चिद् + आनन्दः
    चिदानन्दः
11. सुप् + अन्तः
    सुब् + अन्तः
    सुबन्तः
12. कृत् + अन्तः
    कृद् + अन्तः
    कृदन्तः
13. तिप् + अन्तः
    तिब् + अन्तः
    तिबन्तः
14. अप् + जम्
    अब् + जम्
    अब्जम्
15. महत् + दानम्
    महद् + दानम्
    महद्दानम्

3.2 अपदान्त जश्त्व सन्धि

सूत्र- झलां जश् झशि (8.4.53)

सूत्रविश्लेषण- झलाम् - झल् वर्णों के स्थान पर

जश् - जश् वर्ण होते हैं

झशि - झश् वर्णों के (बाद) में आने पर

सूत्रार्थ- झल् वर्णों के बाद झश् वर्णों के आने पर झल् के स्थान पर जश् होगा।

(i) 'झल्' एक प्रत्याहार है, जिसमें वर्गों के 1,2,3,4 और श् ष् स् ह् आते हैं।

झल् = झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द
ख फ छ ठ थ च ट त क प
श ष स ह

(ii) 'जश्' एक प्रत्याहार है, जिसमें वर्गों के तीसरे वर्ण आते हैं

जश् = ज ब ग ड द।

(iii) 'झश्' भी एक प्रत्याहार है जिसमें वर्गों के तीसरे और चौथे वर्ण आते हैं।

झश् = झ भ घ ढ ध
ज ब ग ड द

स्थानी (झल्)	आदेश (जश्)
क् ख् ग् घ् ह्	ग्
च् छ् ज् झ् श्	ज्
ट् ठ् ड् ढ् ष्	ड्
त् थ् द् ध् स्	द्
प् फ् ब् भ्	ब्

ध्यान दें- 'स्थानेऽन्तरतमः' की सहायता से उच्चारणस्थान की साम्यता को लेकर ज् ब् ग् ड् द् (जश्) आदेश होता है।

उदाहरण-

(1) क्रुध् + धः
    क्रुद् + धः
    क्रुद्धः

(2) शुध् + धः
    शुद् + धः
    शुद्धः

(3) युध् + धः
    युद् + धः
    युद्धः

(4) लभ् + धः
    लब् + धः
    लब्धः

(5) दुह् + धम्
    दुग् + धम्

(6) वृध् + धिः
    वृद् + धिः

दुग्धम् **वृद्धिः**

(7) रुणध् + धिः (8) बोध् + धा

रुणद् + धिः बोद् + धा

रुणद्धिः **बोद्धा**

4. चर्त्व सन्धि

सूत्र- खरि च (8.4.55)

सूत्रार्थ- यदि झल् के बाद खर् आये तो झल् के स्थान पर 'चर्' होगा।

➢ 'झल्' एक प्रत्याहार है जिसमें वर्गों के प्रथम, द्वितीय, तृतीय चतुर्थ, एवं श ष स ह वर्ण आते हैं।

➢ **झल्** = झ् भ् घ् ढ् ध्
ज् ब् ग् ड् द्
ख् फ् छ् ठ् थ्
च् ट् त् क् प्
श् ष् स् ह्

➢ 'खर्' एक प्रत्याहार है जिसमें वर्गों के प्रथम, द्वितीय वर्ण और श् ष् स् आते हैं।

खर् = ख् फ् छ् ठ् थ्
च् ट् त् क् प्
श् ष् स्

➢ 'खरि च' सूत्र का सम्पूर्ण अर्थ करने के लिए 'झलाम्' और 'चर्' की अनुवृत्ति आती है।

स्थानी (झल्)	आदेश (चर्)	साम्य (उच्चारण स्थान)	परवर्ण (खर्)
क् ख् ग् घ्	क्	कण्ठ	ख् फ् छ्
च् छ् ज् झ्	च्	तालु	ठ् थ् च्
ट् ठ् ड् ढ्	ट्	मूर्धा	ट् त् क्
त् थ् द् ध्	त्	दन्त	प् श् ष्
प् फ् ब् भ्	प्	ओष्ठ	स्

➢ श् ष् स् के स्थान पर श् ष् स् आदेश होगा

उदाहरण-

(1) सद् + कारः (2) सद् + पात्रम्

सत् + कारः सत् + पात्रम्

सत्कारः **सत्पात्रम्**

(3) दिग् + पालः (4) भेद् + तुम्

दिक् + पालः भेत् तुम्

दिक्पालः **भेत्तुम्**

(5) छेद् + तव्यम् (6) लिभ् + सा

छेत् + तव्यम् लिप् + सा

छेत्तव्यम् **लिप्सा**

5. अनुस्वार सन्धि

सूत्र- मोऽनुस्वारः (8.3.23)

सूत्रार्थ- पदान्त 'म्' के बाद कोई भी व्यञ्जन (हल्) आये तो 'म्' के स्थान पर अनुस्वार (ं) हो जाता है।

पूर्ववर्ण	परवर्ण	सन्धिवर्ण
पदान्त मकार	हल्	ं अनुस्वार

उदाहरण-

(i) हरिम् + वन्दे = **हरिं वन्दे**

(ii) त्वम् + करोषि = **त्वं करोषि**

(iii) रामम् + भजामि = **रामं भजामि**

(iv) जलम् + वहति = **जलं वहति**

(v) धनम् + यच्छ = **धनं यच्छ**

(vi) दुःखम् + सहते = **दुःखं सहते**

6. तोर्लि सन्धि

सूत्र- तोर्लि (8.4.60)

सूत्रविश्लेषण- तोः - तवर्ग के बाद
लि - ल् वर्ण हो तो
परसवर्ण - परसवर्ण 'ल्' हो जाता है।

➢ 'अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः' से 'परसवर्ण' की अनुवृत्ति।

सूत्रार्थ- यदि तवर्ग (त् थ् द् ध् न्) के बाद 'ल्' वर्ण आये तो तवर्ग के स्थान पर 'ल्' हो जाता है।

पूर्ववर्ण	परवर्ण	सन्धिवर्ण
त् थ् द् ध् न्	ल्	ल्

उदाहरण-

(i) उद् + लिखितम् (ii) तद् + लीनः

उल् + लिखितम् तल् + लीनः

उल्लिखितम् **तल्लीनः**

(iii) उद् + लेखः (iv) विद्वान् + लिखति

उल् + लेखः विद्वाल्ँ + लिखति

उल्लेखः

(v) तद् + लयः
तल् + लयः
तल्लयः

(vi) महान् + लाभः
महाँल् + लाभः
महाँल्लाभः

(vii) विपद् + लीनः
विपल् + लीनः
विपल्लीनः

(viii) जगद् + लीयते
जगल् + लीयते
जगल्लीयते

(ix) यद् + लक्षणम्
यल् + लक्षणम्
यल्लक्षणम्

(x) विद्युद् + लेखा
विद्युल् + लेखा
विद्युल्लेखा

(xi) धनवान् + लुनीते
धनवालँ लुनीते
धनवाँल्लुनीते

7. परसवर्ण सन्धि

सूत्र- अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः (8.4.58)

सूत्रविश्लेषण-

अनुस्वारस्य- अनुस्वार (ं) के स्थान पर

परसवर्णः - परसवर्ण होता है।

ययि - 'यय्' प्रत्याहार का वर्ण बाद में आये तो।

सूत्रार्थ- अपदान्त अनुस्वार के बाद यदि यय् प्रत्याहार का कोई भी व्यञ्जन आये तो अनुस्वार को परसवर्ण हो जाता है।

- **परसवर्ण-** परस्य सवर्णः परसवर्णः। परसवर्ण का अर्थ है- पर = (बाद) में जो वर्ण हैं उसके सवर्णियों में से आदेश होना।
- अर्थात् अनुस्वार के बाद किसी भी वर्ग का कोई भी व्यञ्जन आने पर अनुस्वार के स्थान पर उस वर्ग का पञ्चम वर्ण हो जाता है।

यय् - 'यय्' एक प्रत्याहार है जिसमें श् ष् स् ह् को छोड़कर सभी व्यञ्जन वर्ण आते हैं।

यय् = य् व् र् ल्
ञ् म् ङ् ण् न्
झ् भ् घ् ढ् ध्
ज् ब् ग् ड् द्
ख् फ् छ् ठ् थ्
च् ट् त् क् प्।

पूर्ववर्ण (अनुस्वार)	परवर्ण (यय्)	सन्धिवर्ण (परसवर्ण)
अनुस्वार (ं)	क् ख् ग् घ् ङ्	ङ्
अनुस्वार (ं)	च् छ् ज् झ् ञ्	ञ्
अनुस्वार (ं)	ट् ठ् ड् ढ् ण्	ण्
अनुस्वार (ं)	त् थ् द् ध् न्	न्
अनुस्वार (ं)	प् फ् ब् भ् म्	म्

उदाहरण-

(1) गं + गा = **गङ्गा/गङ्गा**
(2) शं + खः = **शङ्खः/शङ्खः**
(3) अं + कः = **अङ्कः/अङ्कः**
(4) अं + कितः = **अङ्कितः**
(5) लं + घनम् = **लङ्घनम् / लङ्घनम्**
(6) अं + चितः = **अञ्चितः**
(7) मं + चः = **मञ्चः**
(8) झं + झा = **झञ्झा**
(9) खं + जः = **खञ्जः**
(10) लां + छनम् = **लाञ्छनम्**
(11) कुं + ठितः = **कुण्ठितः**
(12) घं + टा = **घण्टा**
(13) मुं + डा = **मुण्डा**
(14) दं + डः = **दण्डः**
(15) खं + ड = **खण्डः**
(16) शां + त = **शान्तः**
(17) मं + दः = **मन्दः**
(18) बं + धनम् = **बन्धनम्**
(19) मं + थनम् = **मन्थनम्**
(20) नं + दति = **नन्दति**
(21) कं + पनम् = **कम्पनम्**
(22) गुं + फितः = **गुम्फितः**
(23) लं + बः = **लम्बः**
(24) स्तं + भः = **स्तम्भः**
(25) पं + पा = **पम्पा**

➢ **विशेष-** अनुस्वार तभी अनुस्वार रह सकता है, जब उसके बाद य् व् र् ल् या श् ष् स् ह् हों। जैसे-

संयमः, संवारः, संरम्भः, संलापः, संयोगः, संशयः, संसारः, संहारः आदि।

➢ **वा पदान्तस्य-** पदान्त अनुस्वार के स्थान पर परसवर्ण विकल्प से होता है, यय् प्रत्याहार के वर्ण बाद में आयें तो।

अर्थात् पदान्त अनुस्वार में यह नियम वैकल्पिक है। जैसे-

(i) कार्यं करोति = **कार्यं करोति / कार्यङ्करोति।**

(ii) किं करोषि = **किं करोषि / किङ्करोषि**

(iii) किं चित् = **किंचित् / किञ्चित्**

(iv) कथं चलसि = **कथं चलसि / कथञ्चलसि।**

(v) त्वं करोषि = **त्वं करोषि / त्वङ्करोषि**

8. अनुनासिक सन्धि

सूत्र- यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा (8.4.45)

सूत्र विश्लेषण- यरः = पदान्त यर् के स्थान पर

अनुनासिके = अनुनासिक वर्ण बाद में आये तो

अनुनासिकः = अनुनासिक वर्ण होगा।

वा = विकल्प से।

सूत्रार्थ- अनुनासिक वर्ण यदि बाद में आयें तो पदान्त यर् वर्णों के स्थान पर विकल्प से अनुनासिक आदेश होता है।

➢ **अनुनासिक होने का अर्थ है-** उसी वर्ग का पञ्चमाक्षर हो जाना

यर् - यर् एक प्रत्याहार है जिसमें ह को छोड़कर सभी व्यञ्जन (हल्) वर्ण आते हैं।

पूर्ववर्ण पदान्त यर्	परवर्ण अनुनासिक वर्ण	सन्धिवर्ण अनुनासिक
क् ख् ग् घ् ङ्	ङ् ञ् ण् न् म्	ङ्
च् छ् ज् झ् ञ्	में से कोई भी	ञ्
ट् ठ् ड् ढ् ण्	अनुनासिक वर्ण	ण्
त् थ् द् ध् न्	बाद में आये	न्
प् फ् ब् भ् म्		म्

जैसे- (i) प्राक् + मुखः — प्राङ् + मुखः — **प्राङ्मुखः**

(ii) षट् + मासाः — षण् + मासाः — **षण्मासाः**

(iii) षट् + मुखः — षण् + मुखः — **षण्मुखः**

(iv) सद् + मतिः — सन् + मतिः — **सन्मतिः**

(v) दिक् + नागः — दिङ् + नागः — **दिङ्नागः**

(vi) जगत् + नाथः — जगन् + नाथः — **जगन्नाथः**

(vii) तत् + मित्रम् — तन् + मित्रम् — **तन्मित्रम्**

(viii) एतद् + मुरारिः — एतन् + मुरारिः — **एतन्मुरारिः**

ध्यान रहे- यह सन्धि वैकल्पिक है, सन्धि न होने पर जो सन्धि विच्छेद है, वही रूप रहेगा।

प्रत्यये भाषायां नित्यम् - (वार्तिक)

अनुनासिक वर्णों से प्रारम्भ होने वाले प्रत्ययों के बाद में आने पर पदान्त यर् के स्थान पर नित्य से अनुनासिक होता है।

(i) तत् + मात्रम् — तन् मात्रम् — **= तन्मात्रम्**

(ii) चित् + मयम् — चिन् + मयम् — **= चिन्मयम्**

(iii) वाक् + मयम् — वाङ् मयम् — **= वाङ्मयम्**

व्यञ्जन सन्धि तालिका

सन्धि का नाम	सन्धिसूत्र	सूत्रार्थ	उदाहरण
1. श्चुत्वसन्धि	स्तोः श्चुना श्चुः	स् तवर्ग + श् चवर्ग = श् चवर्ग	रामस् + चिनोति = रामश्चिनोति सत् + चित् = सच्चित्
2. ष्टुत्व सन्धि	ष्टुना ष्टुः	स् तवर्ग + ष् टवर्ग = ष् टवर्ग	रामस् + षष्ठः = रामष्षष्ठः रामस् + टीकते = रामष्टीकते तत् + टीका = तट्टीका
3. जश्त्व सन्धि	झलां जशोऽन्ते	झल् को जश् आदेश	जगत् + ईशः = जगदीशः षट् + आननः = षडाननः
4. चर्त्व सन्धि	खरि च	झल् + खर् = चर्	छेद् + ता = छेत्ता लिभ् + सा = लिप्सा
5. अनुस्वार सन्धि	मोऽनुस्वारः	पदान्त म् + हल् = अनुस्वार (ं)	हरिम् + वन्दे = हरिं वन्दे त्वम् करोषि = त्वं करोषि
6. तोर्लि सन्धि	तोर्लि	तवर्ग + ल् = ल्	उद् + लेख = उल्लेखः तद् + लीनः = तल्लीनः
7. परसवर्ण सन्धि	अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः	अनुस्वार + यय् = परसवर्ण (पञ्चमाक्षर)	गं + गा = गङ्गा मं + चः = मञ्चः
8. अनुनासिकसन्धि	यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा	यर् + अनुनासिक = अनुनासिक	जगत् + नाथः = जगन्नाथः दिक् + नागः = दिङ्नागः

विसर्ग सन्धि

विसर्ग सन्धि- विसर्ग के बाद स्वर या व्यञ्जन वर्णों के आने पर विसर्ग (:) में जो विकार या परिवर्तन होता है, उसे **विसर्ग सन्धि** कहते हैं। जैसे- मनः + रथः = मनोरथः

- विसर्ग हमेशा किसी न किसी स्वर के बाद ही आता है। जैसे- 'रामः' में 'अ' के बाद, हरिः में 'इ' के बाद, गुरुः में 'उ' के बाद विसर्ग आया है।
- विसर्ग सन्धि में विसर्ग से पहले आने वाले स्वर तथा विसर्ग के बाद आने वाले स्वर और व्यञ्जन दोनों का ही ध्यान रखा जाता है।

1. सत्व सन्धि

विसर्जनीयस्य सः (8.3.34) - यदि विसर्ग के आगे कोई खर् प्रत्याहार का वर्ण आये तो विसर्ग के स्थान पर 'स्' हो जाता है।

विसर्ग (:) + खर् = स्

खर् - खर् एक प्रत्याहार है जिसमें वर्गों के प्रथम, द्वितीय अक्षर और श ष स आते हैं। खर् में कुल 13 वर्ण आते हैं।

खर् = क ख, च छ, ट ठ, त थ, प फ, श ष स।

ध्यान रखें-

इस नियम को समझने के लिए निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना आवश्यक है-

(i) यदि विसर्ग के बाद च् या छ् आये तो ''विसर्जनीयस्य सः'' सूत्र से विसर्ग के स्थान पर 'स्' होता है और इस 'स्' को ''स्तोः श्चुना श्चुः'' सूत्र से 'श्' हो जाता है।

जैसे-

☆ रामः + चलति
रामस् + चलति
रामश्चलति

☆ निः + छलम्
निस् + छलम्
निश्छलम्

☆ निः + चलम्
निस् + चलम्
निश्चलम्

☆ गौः + चरति
गौस् + चरति
गौश्चरति

☆ कः + चित्
कस् + चित्
कश्चित्

☆ बालः + चलति
बालस् + चलति
बालश्चलति

☆ निः + चयः
निस् + चयः
निश्चयः

☆ पूर्णः + चन्द्रः
पूर्णस् + चन्द्रः
पूर्णश्चन्द्रः

☆ हरिः + छलति
हरिस् + छलति
हरिश्छलति

☆ हरिः + चलति
हरिस् + चलति
हरिश्चलति

(ii) यदि विसर्ग के बाद ट् या ठ् हो तो **''विसर्जनीयस्य सः''** सूत्र से विसर्ग के स्थान पर 'स्' होता है, और उस 'स्' को ''ष्टुना ष्टुः'' सूत्र से 'ष्' हो जाता है—

जैसे-

☆ रामः + टीकते ☆ धनुः + टङ्कारः ☆ रामः + ठकारः
रामस् + टीकते धनुस् + टङ्कारः रामस् + ठकारः
रामष्टीकते। धनुष्टङ्कारः रामष्ठकारः

(iii) यदि विसर्ग के बाद त् और थ् आये तो **''विसर्जनीयस्य सः''** सूत्र से विसर्ग के स्थान पर 'स्' हो जाता है और वह 'स्' जैसा का तैसा रहता है अर्थात् 'स्' ही रहता है। जैसे-

☆ हरिः + त्राता ☆ विष्णुः + तत्र ☆ बालः + तिष्ठति
हरिस्त्राता विष्णुस्तत्र बालस्तिष्ठति

☆ विष्णुः + त्रायते ☆इतः + ततः ☆ कृतः + तथा
विष्णुस्त्रायते इतस्ततः कृतस्तथा

☆ गजाः + तिष्ठन्ति ☆ विष्णुः + त्राता ☆ बालकः + थुडति
गजास्तिष्ठन्ति विष्णुस्त्राता बालकस्थुडति

☆ मनः + तापः ☆ नमः + ते
मनस्तापः नमस्ते

(iv) यदि विसर्ग के बाद क् या ख् आये तो विसर्ग के स्थान पर विसर्ग ही रहता है अथवा **''कुप्वोः ≍क ≍पौ च''** (8.3.37) सूत्र से विकल्प से जिह्वामूलीय हो जाता है।

विसर्ग को 'स्' नहीं होता है जैसे-

☆ बालकः क्रीडति अथवा बालक≍ क्रीडति।

☆ बालकः खेलति अथवा बालक≍ खेलति।

नोट-

☆ जिह्वामूलीय वर्णों को कण्ठ के भी नीचे जिह्वामूल से बोला जाता है।

☆ जिह्वामूलीय को आधे विसर्ग≍ के समान लिखा जाता है।

(v) यदि विसर्ग के बाद प या फ आये तो विसर्ग के स्थान पर विसर्ग ही रहता है अथवा **''कुप्वोः ≍क ≍पौ च''** (8.3.37) सूत्र से विसर्ग के स्थान पर उपध्मानीय होता है। विसर्ग को 'स्' नहीं होता। जैसे-

वृक्षः पतति = वृक्ष≍ पतति।

वृक्षः फलति = वृक्ष≍ फलति।

नोट-

☆ उपध्मानीय वर्ण का उच्चारण 'ओष्ठ' से होता है।

☆ उपध्मानीय को भी आधे विसर्ग ≍ के समान लिखा जाता है।

(vi) यदि विसर्ग के बाद शर् (श् ष् स्) आये तो **''वा शरि''** (8.3.36) सूत्र से विसर्ग को विसर्ग ही रहता है अथवा विसर्ग के स्थान पर 'स्' होकर परवर्ण श् ष् स् की तरह हो जाता है।

जैसे-

☆ हरिः + शेते
हरिस् + शेते
हरिश्शेते
हरिःशेते (विकल्प से)

☆ रामः + षष्ठः
रामस् + षष्ठः
रामष्षष्ठः/रामःषष्ठः (विकल्प से)

☆ निः + सन्देहम्
निस् + सन्देहम्
निस्सन्देहम्
निःसन्देहम् (विकल्प से)

☆ वायुः + सरति
वायुस् + सरति
वायुस्सरति
वायुःसरति (विकल्प से)

☆ बालकः + शयानः
बालकस् शयानः
बालकश्शयानः
बालकः शयानः (विकल्प से)

☆ मुनिः + शेते - मुनिस् + शेते = मुनिश्शेते

☆ कृष्णः + सर्पः - कृष्णस् + सर्पः = कृष्णस्सर्पः

2. रुत्व सन्धि

सूत्र - ससजुषो रुः (8.2.66)

☆ पदान्त सकार और 'सजुष्' के षकार के स्थान पर 'रु' आदेश होता है।

☆ 'रु' में 'उ' की इत्संज्ञा होकर लोप हो जाता है 'र्' शेष बचता है।

☆ जब 'रु' (र्) के ठीक पहले ह्रस्व 'अ' न हो और रु (र्) के ठीक बाद में खर् न हो, तो यह 'र्', 'र्' ही रहता है। इसे ही 'रुत्वसन्धि' कहते हैं।

☆ कविस् + अयम्	☆ हरेस् + इदम्
कवि रु + अयम्	हरे रु + इदम्
कवि र् अयम्	हरे र् + इदम्
कविरयम्	**हरेरिदम्**
☆ गौस् + अयम्	☆ प्रातस् + अहम्
गौ रु + अयम्	प्रात रु + अहम्
गौ र् + अयम्	प्रात र् + अहम्
गौरयम्	**प्रातरहम्**
☆ पाशैस् + बद्धः	☆ पितुस् + आज्ञा
पाशै रु + बद्धः	पितु रु + आज्ञा
पाशै र् + बद्धः	पितु र् + आज्ञा
पाशैर्बद्धः	**पितुराज्ञा**
☆ निस् + धनम्	☆ ऋषिस् + वदति
नि रु + धनम्	ऋषि रु + वदति
नि र् + धनम्	ऋषि र्+ वदति
निर्धनम्	**ऋषिर्वदति**
☆ मातुस् + आज्ञा	☆ भानोस् + अयम्
मातु रु + आज्ञा	भानो रु + अयम्
मातु र् आज्ञा	भानो र् अयम्
मातुराज्ञा	**भानोरयम्**
☆ मुनिस् आगच्छति	☆ हरिस् + जयति
मुनि रु आगच्छति	हरि रु + जयति
मुनि र् आगच्छति	हरि र्+ जयति
मुनिरागच्छति	**हरिर्जयति**
☆ कैस् + उक्तम्	☆ साधुस् + गच्छति
कै रु + उक्तम्	साधु रु + गच्छति
कै र्+ उक्तम्	साधु र् + गच्छति
कैरुक्तम्	**साधुर्गच्छति**
☆ भानुस् + उदेति	☆ हरिस् + अवदत्
भानु रु + उदेति	हरि रु + अवदत्
भानु र् + उदेति	हरि र् + अवदत्
भानुरुदेति	**हरिरवदत्**
☆ लक्ष्मीस् + इयम्	☆ पितुस् + इच्छा
लक्ष्मी रु + इयम्	पितु रु + इच्छा
लक्ष्मी र् + इयम्	पितु र् + इच्छा
लक्ष्मीरियम्	**पितुरिच्छा**
☆ गुरोस् + भाषणम्	
गुरो रु + भाषणम्	
गुरो र् + भाषणम्	
गुरोर्भाषणम्	

अन्य उदाहरण-

☆ कविस् + आगच्छति	= **कविरागच्छति**
☆ मुनिस् + इव	= **मुनिरिव**
☆ निस् + दयः	= **निर्दयः**
☆ पतिस् + उवाच	= **पतिरुवाच**
☆ हरेस् + जन्म	= **हरेर्जन्म**
☆ गुरोस् + आगमनम्	= **गुरोरागमनम्**
☆ मुनिस् + गच्छति	= **मुनिर्गच्छति**
☆ भानुस् + उदेति	= **भानुरुदेति**
☆ प्रातस् + एव	= **प्रातरेव**
☆ मातृस् + आदेशः	= **मातृरादेशः**

3. उत्व सन्धि

अतो रोरप्लुतादप्लुते (6.1.13)

यदि 'रु' के ठीक पहले 'ह्रस्व अ' हो और 'रु' के ठीक बाद में पुनः 'ह्रस्व अ' हो, तो ऐसे दो ह्रस्व अ के बीच बैठे 'रु' (र्) को 'उ' हो जाता है। इसे ही **उत्व सन्धि** कहते हैं।

➢ ध्यान रहे कि 'रु' के स्थान पर 'उ' नही होता, किन्तु उकार की इत्संज्ञा होकर लोप होने पर शेष बचे 'र्' के स्थान पर ही 'उ' होता है। सूत्र में 'रु' के कथन का यह तात्पर्य है कि 'रुँ' के 'र्' को ही उत्व हो, अन्य 'र्' को नहीं।

जैसे-

☆ शिवस् + अर्च्यः

शिव रु + अर्च्यः ('ससजुषो रुः' से 'रु')

शिव र् + अर्च्यः ('रु' के 'उ' का लोप)

शिव उ + अर्च्यः (अतो रोरप्लुतादप्लुते से 'उ')

शिवो + अर्च्यः (आद् गुणः से अ+उ = ओ गुण)

शिवोऽर्च्यः (''एङः पदान्तादति'' से पूर्वरूप)

☆ देवस् + अपि (पदान्त सकार)

देव रु + अपि ('ससजुषो रुः' से स् को 'रु' आदेश)

देव र्+ अपि ('रु' के 'उ' का लोप, 'र्' शेष)

देव उ + अपि (अतो रोरप्लुतादप्लुते से 'र्' को 'उ')

देवो + अपि (आद्गुणः से 'ओ' गुण)

देवोऽपि (''एङः पदान्तादति'' सूत्र से पूर्वरूप)

☆ शिवस् + अत्र = **शिवोऽत्र**

☆ सस् + अहम् = **सोऽहम्**

☆ सस् + अपि = **सोऽपि**

☆ रामस् + अयम् = **रामोऽयम्**

☆ रामस् + अवदत् = **रामोऽवदत्**

☆ देवस् + अधुना = **देवोऽधुना**

☆ कस् + अयम् = **कोऽयम्**

☆ सस् + अयम् = **सोऽयम्**

☆ रामस् + अस्ति = **रामोऽस्ति**

☆ सस् + अवदत् = **सोऽवदत्**

''हशि च'' (6.1.114) - यदि 'रु' (र्) के पूर्व ह्रस्व 'अ' हो और बाद में हश् प्रत्याहार के वर्ण आयें तो रु (र्) के स्थान पर 'उ' हो जाता है फिर अ+उ में गुण सन्धि हो जाती है। यह भी उत्व सन्धि है।

➢ हश् प्रत्याहार में वर्णों के तीसरे, चौथे और पाँचवे वर्ण तथा य व र ल ह वर्ण आते हैं।

जैसे-

☆ शिवस् + वन्द्यः (पदान्त सकार)

शिव रु + वन्द्यः (''ससजुषो रुः'' से 'रु' आदेश)

शिव र् + वन्द्यः ('रु' के 'उ' का लोप 'र्' शेष)

शिव उ + वन्द्यः (''हशि च'' से 'र्' के स्थान पर 'उ' आदेश)

शिवो + वन्द्यः (अ + उ = ओ गुण हुआ)

शिवो वन्द्यः (उत्व सन्धि)

☆ मनस् + रथः मन रु + रथः मन र् + रथः

मन उ + रथः मनो + रथः

मनोरथः

☆ रामस् + नमति = **रामो नमति**

☆ रामस् + हसति = **रामो हसति**

☆ मृगस् + धावति = **मृगो धावति**

☆ मेघस् + गर्जति = **मेघो गर्जति**

☆ सरस् + वरः = **सरोवरः**

☆ पयस् + धरः = **पयोधरः**

☆ रामस् + जयति = **रामो जयति**

☆ बालकस् + हसति = **बालको हसति**

☆ वीरस् + गच्छति = **वीरो गच्छति**

☆ पुरुषस् + वदति = **पुरुषो वदति**

☆ अधस् + गतिः = **अधोगतिः**

☆ यशस् + दा = **यशोदा**

☆ मनस् + भावः = **मनोभावः**

4. रलोप सन्धि

सूत्र- रो रि (8.3.14)

सूत्रार्थ- 'र्' के बाद 'र्' आये तो पूर्व 'र्' का लोप होता है।

जैसे-

☆ बालकास् + रमन्ते (पदान्त सकार)

बालका रु + रमन्ते ('ससजुषो रुः' से 'स्' के स्थान पर रु')

बालका र् + रमन्ते (''रो रि'' से पूर्व रेफ का लोप)

बालका रमन्ते (र लोप सन्धि)

☆ गौस् + रम्भते (पदान्त सकार)

गौरु + रम्भते (ससजुषो रुः)

गौर् + रम्भते (रो रि)

गौ रम्भते (र लोप सन्धि)

सूत्र- ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः (6.3.111)

'ढ् ' या 'र्' का लोप हुआ हो तो उससे पूर्ववर्ती अण् (अ इ उ) को दीर्घ हो जाता है। जैसे-

☆ लिढ् + ढः = लीढः

☆ पुनर् + रमते = पुनारमते

☆ हरिर् + रम्यः = हरी रम्यः

☆ शम्भुर् + राजते = शम्भू राजते

☆ गुरुर् + रुष्टः = गुरू रुष्टः
☆ निर् + रोगः = नीरोगः
☆ निर् + रसः = नीरसः
☆ अन्तर् + राष्ट्रियः = अन्ताराष्ट्रियः

5. रेफ को विसर्ग

सूत्र- खरवसानयोर्विसर्जनीयः (8.3.15) -

सूत्रार्थ- पदान्त रेफ (र्) के स्थान पर विसर्ग आदेश होता है यदि खर् प्रत्याहार के वर्ण बाद में आयें तो अथवा अवसान (विराम) हो तो- र् + खर् = विसर्ग (:) र् + ----- = विसर्ग (:)

➢ 'खर्' एक प्रत्याहार है जिसमें - क ख, च छ, ट ठ, त थ, प फ, तथा श ष स आते हैं।

➢ **अवसान में पदान्त 'र्' को विसर्ग-**

☆ पुनर् = पुनः ☆ शनैर् = शनैः
☆ उच्चैर् = उच्चैः ☆ नीचैर् = नीचैः

➢ **'खर्' बाद में आये तो पदान्त 'र्' को विसर्ग-**

☆ रामर् + खादति = रामः खादति
पुनर् + पृच्छति = पुनः पृच्छति
☆ रामस् + करोति (पदान्त स्)
राम रु + करोति (ससजुषो रुः)
राम र् + करोति (रु को 'र्')
रामः + करोति ('र्' को विसर्ग)
☆ वृक्षर् + फलति = वृक्षः फलति
☆ गुरु र् + पाठयति = गुरुः पाठयति

कृदन्त प्रकरण

तव्यत् - तव्य - अनीयर्

1. सामान्य परिचय-

* तव्यत्, तव्य और अनीयर् (प्रत्यय) धातु के बाद लगते हैं। (धातोः 3.1.91)

* तव्यत् तव्य और अनीयर् प्रत्यय 'कृत्' प्रत्यय के साथ-साथ 'कृत्य' प्रत्यय भी कहलाते हैं। (**कृदतिङ्** 3.1.93, **कृत्याः** 3.1.95)

* कृत्य प्रत्यय भाव और कर्म अर्थ में ही होते हैं। **तयोरेवकृत्यक्तखलर्थाः**

* सातों कृत्य प्रत्यय (तव्यत् तव्य अनीयर् यत् ण्यत् क्यप् केलिमर्) अर्ह अर्थात् 'योग्य' या 'चाहिए' अर्थ में होते हैं। जैसे- भवता पठितव्यम् (आपको पढना चाहिए), दर्शनीयं स्थानम् (देखने योग्य स्थान)

सूत्र- 'तव्यत्तव्यानीयरः' (3.1.96)

सूत्रार्थ- सभी धातुओं से भाव और कर्म अर्थ में तव्यत्, तव्य और अनीयर् प्रत्यय होते हैं।

उदाहरण- एधितव्यम् करणीयः

वार्तिक- 'केलिमर उपसंख्यानम्'

वार्तिकार्थ- 'तव्यत्तव्यानीयरः सूत्र में 'केलिमर्' प्रत्यय को भी गिनना चाहिए अर्थात् सभी धातुओं से 'केलिमर्' प्रत्यय होगा।

उदाहरण- पच् + केलिमर् = पचेलिमः (पकाने योग्य)

'यत्' प्रत्यय

सूत्र - अचो यत् (3.1.97)

सूत्रार्थ - अजन्त (जिनके अन्त में स्वर हो) धातुओं से यत् प्रत्यय होता है।

जैसे - पा + यत्= पेयम् (पीने योग्य) चेयम् (चुनने योग्य)

सूत्र- पोरदुपधात् (3.1.98)

सूत्रार्थ - जिसके अन्त में पवर्ग और उपधा में अत् हो उस धातु से यत् प्रत्यय होता है। यह सूत्र ण्यत् का अपवाद है।

जैसे -शप्यम् (शाप के योग्य)
लभ्यम् (प्राप्त करने योग्य)

'क्यप्'

सूत्र - 'एति-स्तु-शास्-वृ-दृ-जुषः क्यप्' (3.1.109)

सूत्रार्थ-इण्, स्तु, शास्, वृ, दृ, जुष्-धातुओं से क्यप् प्रत्यय होता है।

उदाहरण तालिका-

इण् + क्यप् = इत्यः (जाने योग्य)
स्तु + क्यप् = स्तुत्यः (स्तुति योग्य)
शास् + क्यप् = शिष्यः (अनुशासन करने योग्य)
वृ + क्यप् = वृत्यः (वरण करने योग्य, वरणीय)
आङ् + दृ + क्यप् = आदृत्यः (आदर करने योग्य आदरणीय)
जुष् + क्यप् = जुष्यः (प्रीति या सेवन करने योग्य)

'ण्यत्'

सूत्र- 'ऋहलोर्ण्यत्' (3.1.124)

सूत्रार्थ- ऋवर्णान्त धातु और हलन्त धातु से 'ण्यत्' प्रत्यय होता है।

सिद्धि प्रक्रिया-कृ + ण्यत् = कार्यम् (करने योग्य) हृ + ण्यत् = हार्यम् (हरण करने योग्य) धृ + ण्यत् = धार्यम् (धारण करने योग्य)

यत् ण्यत् क्यप् प्रत्ययान्त शब्दों की पहचान-

क्यप्-

* गुण का अभाव। जैसे - स्तु - स्तुत्यः नृत् - नृत्यम् ,दृश्-दृश्यम् आदि।
* 'तुक्' का आगम अर्थात् मध्य में 'त्' दिखना जैसे- इत्यः, स्तुत्यः आदि।

यत् -

* धातु के अन्तिम वर्ण को गुण। जैसे- चेयम्, जेयम् , पेयम् आदि।
* उपधा में कोई परिवर्तन न होना । जैसे- रम् - रम्यम्, लभ् - लभ्यम्

ण्यत्-

* अन्तिम वर्ण के स्थान पर वृद्धि जैसे- कृ - कार्यम् , लू - लाव्यम्
* उपधा में 'अ' को वृद्धि। जैसे पठ्- पाठ्यम्, ग्रह्- ग्राह्यम्
* उपधा में इक् को गुण। जैसे लिख् - लेख्यम्, दुह् - दोह्यम् आदि।

ण्वुल् और तृच् प्रत्यय

1. सामान्य परिचय-

* 'ण्वुल्' और 'तृच्' दोनों 'कृत्' प्रत्यय हैं। अतः 'कर्तरि कृत्' सूत्र से दोनों प्रत्ययों का कर्ता अर्थ (कर्तृवाच्य) में ही प्रयोग होगा।

सूत्र - ण्वुल् तृचौ (3.1.133)

सूत्रार्थ- धातुओं से ण्वुल् और तृच् प्रत्यय होते हैं। 'कर्तरि कृत्' सूत्र के अनुसार ये प्रत्यय कर्ता अर्थ में होते हैं।

जैसे- कारकः - (करोति इति, करने वाला)

कर्ता - (करोति इति, करने वाला)

सूत्र- 'नन्दि-ग्रहि-पचादिभ्यो ल्युणिन्यचः' (3.1.134)

सूत्रार्थ- नन्द्यादि ग्रह्यादि तथा पचादि धातुओं के बाद ल्यु, णिनि और अच् प्रत्यय होते हैं। क्रमशः अर्थात् नन्द्यादिगण से ल्यु, ग्रह्यादिगण से णिनि, तथा पचादिगण से 'अच्' प्रत्यय होंगे।

जैसे- नन्दि+ल्यु -नन्दनः (प्रसन्न करने वाला, पुत्र)

ग्रह्+णिनि- ग्राही (ग्रहण करने वाला)

पच्+अच्- पचः (पचति इति, जो पकाता है, अर्थात् पकानेवाला)

क्त - क्तवतु

सामान्य परिचय -

* क्त और क्तवतु दोनों प्रत्यय 'कृदतिङ्' के अधिकार में पढ़े गये हैं, अतः कृत्संज्ञक हैं। ये दोनों प्रत्यय सामान्यतः भूतकाल में प्रयुक्त होते हैं। अतः इनसे बने शब्दों को 'भूतकृदन्त' भी कहा जाता है।
* कृत्संज्ञक प्रत्यय 'कर्तरि कृत्' द्वारा कर्ता अर्थ में हुआ करते हैं, परन्तु क्त, क्तवतु - इनमें केवल 'क्तवतुँ' प्रत्यय ही कर्ता अर्थ में होता है। क्त प्रत्यय 'तयोरेव कृत्यक्तखलर्थाः' सूत्र से भाव और कर्म में ही होता है। यदि धातु अकर्मक हो तो क्त प्रत्यय भाव अर्थ में और यदि धातु सकर्मक हो तो क्त प्रत्यय कर्म अर्थ में होगा, परन्तु क्तवतुँ प्रत्यय धातु के सकर्मक या अकर्मक होने पर केवल कर्ता अर्थ में ही होता है।
* क्तक्तवतूँ निष्ठा (1.1.25) सूत्र से क्त, क्तवतुँ प्रत्यय की 'निष्ठा' संज्ञा होती है।

सूत्र- 'निष्ठा' (3.2.102)

. सूत्रार्थ - भूतकालिक अर्थ में धातु के बाद निष्ठासंज्ञक क्त, क्तवतु प्रत्यय हों।

जैसे- **स्नातं मया (मुझसे नहाया गया)**

सिद्धि प्रक्रिया -

स्ना + क्त - 'स्ना' इस अकर्मक धातु से भूतकाल अर्थ में 'निष्ठा' सूत्र से भाव अर्थ में ' क्त' प्रत्यय हुआ।

स्ना + त - 'लशक्वतद्धिते' से ' क्त' के ककार की इत् संज्ञा होकर 'तस्य लोपः' से लोप हुआ।

स्नात - 'आर्धधातुकस्येड् वलादेः' सूत्र से प्राप्त 'इट्' का 'एकाच उपदेशेऽनुदात्तात्' से निषेध करने पर 'स्नात' बना।

स्नातसु - कृदन्त होने के कारण प्रातिपदिक संज्ञा होकर प्रथमैकवचन में सुँ प्रत्यय।

स्नात अम् - 'सामान्ये नपुंसकम्' द्वारा नपुंसकलिङ्ग की विवक्षा में 'अतोऽम्' सूत्र से 'सुँ' को 'अम्' आदेश

स्नातम् - 'अमि पूर्वः' से पूर्वरूप एकादेश करके 'स्नातम्' प्रयोग सिद्ध हुआ।

'स्नातम्' - इति सिद्धम्

- अनुक्त होने से 'स्नातम्' के कर्ता में 'कर्तृकरणयोस्तृतीया' सूत्र से तृतीया विभक्ति हो जाती है। अतः 'मया स्नातम्' ऐसा वाक्य सिद्ध हुआ।

कृ + तवत्- कृतवान्

विश्वं कृतवान् विष्णुः (विष्णु ने विश्व को बनाया)

क्त - क्तवतु से सम्बद्ध कुछ विशेष नियम

*** रदाभ्यां निष्ठातो नः पूर्वस्य च दः** (8.2.42) र् और द् के बाद आने वाला निष्ठा प्रत्यय (क्त, क्तवतु) का त् 'न्' के रूप में परिवर्तित हो जाता है, तथा पूर्व में स्थित दकार भी नकार के साथ में परिवर्तित हो जाता है।

जैसे - शीर् (शॄ) + क्त = शीर्णः

भिद् + क्त = भिन्नः

छिद् + क्त = छिन्नः

*** संयोगादेरातो धातोर्यण्वतः (8.2.43) -** ऐसी धातु जिनका अन्तिम वर्ण दीर्घ 'आ' हो तथा जिनके आदि में संयोग हो तथा जो धातु यण् वाली हो। जैसे - 'ग्ला' इस धातु के आरम्भ में संयोग है अतः संयोगादि है, आकारान्त भी है तथा 'यण्' वाली भी है। इन तीन विशेषताओं से युक्त धातु के बाद आने वाले क्त क्तवतु के 'त्' को 'न्' हो जाता है। जैसे-

ग्ला + क्त = ग्लानः ग्ला + क्तवतु = ग्लानवान्

द्रा + क्त = द्राणः द्रा + क्तवतु = द्राणवान्

म्ला + क्त = म्लानः म्ला + क्तवतु = म्लानवान्

*** ल्वादिभ्यः -** (8.2.44) लू आदि 21 धातुओं के बाद आने वाला निष्ठा (क्त, क्तवतु) का तकार नकार के रूप में बदल जाता है। जैसे-

लू + क्त = लूनः, लू + क्तवतु = लूनवान्

धू + क्त = धूनः, धू + क्तवतु = धूनवान्

दू = दूनः, दूनवान्, ज्या - जीनः, जीनवान्

*** ओदितश्च-** (8.2.45) ऐसी धातुयें जिनमें 'ओ' की इत्संज्ञा हुई है, वे ओदित् कहलाती हैं, जैसे भुजो टुओश्वि इत्यादि ओदित् धातुओं के बाद आने वाले क्त-क्तवतु के 'त्' को 'न्' हो जाता है। जैसे -

भुजो (भुज्) = भुग्नः / भुग्नवान्

टुओश्वि (श्वि) = शूनः / शूनवान्

ओहाक् (हा) = हीनः / हीनवान्

रुजो (रुज्) = रुग्णः / रुग्णवान्

उद् + ओविजी (विज्) = उद्विग्नः / उद्विग्नवान्

*** शुषः कः** (8.2.51) - शुष् धातु के बाद आने वाले निष्ठा (क्त, क्तवतु) के 'त्' को 'क्' हो जाता है।

यथा- शुष् + क्त = शुष्कः

शुष् + क्तवतु = शुष्कवान्

*** पचो वः** (8.2.52) 'पच्' धातु के बाद आने वाले निष्ठा (क्त,क्तवतु) के 'त्' को 'व्' हो जाता है। जैसे-

पच् + क्त = पक्वः ('चोः कुः' से कुत्व)

पच् + क्तवतु = पक्ववान्

*** क्षायो मः** (8.2.53) 'क्षै' धातु के बाद आने वाले निष्ठा (क्त, क्तवतु) के 'त्' को 'म्' हो जाता है।

क्षै (क्षा) + क्त = क्षामः

क्षै (क्षा) + क्तवतु = क्षामवान्

परीक्षोपयोगी प्रश्न -

* छिन्नः, भिन्नः में प्रत्यय है - क्त।

* 'शुष् + क्त = शुष्कः' में तकार को ककार आदेश किस सूत्र से = शुषः कः।

* 'पक्वः' में निष्ठासंज्ञक क्त के तकार के स्थान पर वकार आदेश किस सूत्र से/ 'पचो वः'

* क्षा + क्तवतु से पद बनेगा = क्षामवान्।

शतृ और शानच् प्रत्यय

1. सामान्य परिचय-

* शतृ और शानच् पूर्वकृदन्त प्रकरण के प्रत्यय हैं।

* शतृ और शानच् प्रत्ययों से बने शब्दों को वर्तमान कृदन्त भी कहा जाता है।

* ये दोनों प्रत्यय सामान्य रूप से लट् के स्थान पर होते हैं।

* लट् दो प्रकार के होते हैं - परस्मैपद और आत्मनेपद और ये प्रत्यय भी दो हैं- शतृ और शानच्।

* शतृँ प्रत्यय का अन्त्य ऋकार (ऋ) की 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से तथा आदि शकार (श्) की 'लशक्वतद्धिते' सूत्र से इत् संज्ञा होकर 'तस्य लोपः' से लोप हो जाता है। केवल 'अत्' शेष बनता है।

* 'शानच्' प्रत्यय का आदि शकार भी 'लशक्वतद्धिते' सूत्र से तथा अन्त्य चकार् (च्) की 'हलन्त्यम्' से इत्संज्ञा होकर 'तस्य लोपः' से लोप हो जाता है। केवल 'आन' शेष बचता है।

* शानच् (आन) प्रत्यय 'तङानावात्मनेपदम्' सूत्र से आत्मनेपद संज्ञक है; अतः आत्मनेपदीधातुओं से शानच् प्रत्यय लगता है।

* शतृँ प्रत्यय 'लः परस्मैपदम्' से परस्मैपद संज्ञक है, अतः परस्मैपदी धातुओं से शतृ प्रत्यय लगता है।

* यदि धातु उभयपदी है, तो उससे शतृ शानच् दोनों प्रत्यय लगते हैं।

* 'तौ सत्' (3.2.127) सूत्र से शतृ और शानच् प्रत्ययों की 'सत्' संज्ञा होती है। जिसके फलस्वरूप 'लृटः सद् वा' सूत्र से ये दोनों प्रत्यय लृट् लकार में भी प्रयुक्त होते हैं।

सूत्र- लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे (3.2.124)

सूत्रार्थ- अप्रथमान्त (द्वितीयान्त आदि) शब्दों के साथ यदि लट् का समानाधिकरण हो तो 'लट्' के स्थान पर शतृ और शानच् आदेश होते हैं।

महत्त्वपूर्ण तथ्य- अप्रथमान्त - प्रथमा विभक्ति को छोड़कर द्वितीयान्त तृतीयान्त आदि।

समानाधिकरण- समान विभक्ति वाले पद

लँङ् इत्यनुवर्त्तमाने पुनर्लङ्ग्रहणात् प्रथमासामानाधिकरण्येऽपि क्वचित्। सन् द्विजः। अर्थात् शतृ और शानच् प्रत्ययों का प्रयोग कहीं कहीं प्रथमा विभक्ति के साथ समानाधिकरण होने पर भी दिखायी पड़ता

है। निष्कर्षतः इन प्रत्ययों का प्रयोग सातों विभक्तियों के साथ सम्भव है। जैसे - सन् द्विजः (ब्राह्मण है)

* विद् (जानना) धातु के बाद आने वाले शतृँ के स्थान पर विकल्प से वसुँ (वस्) आदेश हो जाता है। (सूत्र- विदेः शतुर्वसुँः 7.1.36)

जैसे- विद्+शतृ– (लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे)

विद् + वस् (विदेः शतुर्वसुः)

विद्वस् (विद्वान्)

वैकल्पिक रूप विद्+शतृ = विदन् भी रूप बनेगा।

उदाहरण–

पठ् + शतृ (लट्) = 'वर्तमाने लट्' सूत्र से कर्तृवाच्य में लट् पठन्।

सेव् + लट्- 'वर्तमाने लट्' से कर्तृवाच्य में लट् ।

सेव् + शानच् - सेवमानः इति सिद्धम्।

सूत्र- लृटः सद् वा (3.3.14)

सूत्रार्थ- लृट् के स्थान पर सत् संज्ञक अर्थात् शतृ और शानच् प्रत्यय विकल्प से होते हैं।

महत्त्वपूर्ण तथ्य- लृट् के स्थान पर शतृ और शानच् का विधान होने के कारण 'शप्' का बाध होकर 'स्यतासी लृलुटोः' सूत्र से 'स्य' विकरण प्रत्यय होगा। करिष्यन् (करता हुआ- भविष्यकाल में) करिष्यमाणः ।

तुमुन् प्रत्यय

1. सामान्य परिचय-

* यह उत्तर कृदन्त का प्रत्यय है।
* तुमुँन् प्रत्यय सभी धातुओं के बाद लगता है।
* 'तुमुँन्' प्रत्यय में 'हलन्त्यम्' से 'न्' की इत्संज्ञा तथा 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' से 'उँ' की इत्संज्ञा होकर 'तुम्' शेष बचता है।
* 'तुम्' मकारान्त कृत् प्रत्यय है, अतः 'कृन्मेजन्तः'(1.1.39) सूत्र से तुमुन्नन्त शब्द अव्यय होते हैं। 'मान्तत्वाद् अव्ययत्वम्'
* 'अव्ययकृतो भावे' इस भाष्य वचन के अनुसार 'तुमुँन्' भाव अर्थ में होता है।
* 'सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्वासु च विभक्तिषु' वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम्' इस परिभाषा के अनुसार तुमुन् प्रत्ययान्त शब्द अव्यय होने के कारण तीनों लिङ्गों, सातों विभक्तियों एवं तीनों वचनों में एक समान होते हैं। जैसे- पठितुम् - सर्वत्र समान रूप में रहता है।

सूत्र- तुमुँन्ण्वुलौ क्रियायां क्रियार्थायाम् (3.3.10)

सूत्रार्थ- क्रियार्था क्रिया के समीप रहते धातु से भविष्यत् अर्थ में तुमुँन् और ण्वुल् प्रत्यय होते हैं।

क्रियार्था क्रिया- किसी क्रिया की सिद्धि के लिए जब दूसरी क्रिया की जाती है, तो वह दूसरी क्रिया 'क्रियार्था क्रिया' कहलाती है। जैसे- बालकः भोक्तुं व्रजति। यहाँ जाने की क्रिया (व्रजति), खाने की क्रिया के लिए हो रही है, अतः जाने की क्रिया (व्रजति) क्रियार्था क्रिया है। क्रियार्था क्रिया (व्रजति) के उपपद अर्थात् समीप में रहने से भुज् धातु से तुमुन् प्रत्यय होकर (भोक्तुम्) बना है।

* 'उपपद' से समीप रहना अर्थ लिया जाता है, चाहे वह आगे रहे या पीछे। जैसे-पठितुं गच्छति। पढने के लिए जाता है।

पठ्+तुमुँन् - पठितुम् (पढने के लिए) इति सिद्धम्।

सूत्र-कालसमयवेलासु तुमुँन् (3.3.167)

सूत्रार्थ- काल, समय, वेला आदि कालवाची शब्दों के समीप आने वाले धातुओं से तुमुँन् प्रत्यय होता है।

महत्त्वपूर्ण तथ्य- ध्यान रहे- यहाँ न तो भविष्यत् काल है न ही क्रियार्था क्रिया, अतः पूर्वसूत्र 'तुमुण्ण्वुलौ क्रियायां-क्रियार्थायाम्' से 'तुमुँन्' की प्राप्ति नहीं थी।

सिद्धि प्रक्रिया- कालः भोक्तुम्। (भोजन का समय है)

भुज् + तुमुँन् - 'कालसमयवेलासु तुमुॅन्' सूत्र से तुमुॅन् प्रत्यय

भुज् + तुम् - अनुबन्ध लोप

भोज् + तुम् - 'पुगन्तलघूपधस्य च' से गुण

भोग् + तुम् - 'चोः कुः' से 'ज्' के स्थान पर 'ग्'।

भोक् + तुम् - 'खरि च' से 'ग' के स्थान पर 'क्'।

भोक्तुम् +सु- कृदन्त होने के कारण प्रातिपदिकसंज्ञा, सु प्रत्यय

भोक्तुम् - अव्ययसंज्ञक होने से 'सु' का लुक्।

'भोक्तुम्' इति सिद्धम्

उदाहरण- कालः भोक्तुम् (खाने का समय) समयः भोक्तुम् (खाने का समय) वेला भोक्तुम् (खाने का समय)

घञ् प्रत्यय

सामान्य परिचय- 'घञ्' 'कृदतिङ्' सूत्र से 'कृत्' संज्ञक प्रत्यय है।

* 'घञ्' प्रत्यय से बने शब्द पुँल्लिङ्ग में ही प्रयुक्त होते हैं। ('घञबन्तः' लिङ्गानुशासन 2.2)

*'घञ्' प्रत्यय में 'घ्' की 'लशक्वतद्धिते' सूत्र से तथा 'ञ्' की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा होकर दोनों (घ् और ञ्) का 'तस्य लोपः' से लोप हो जाता है। केवल 'अ' शेष बचता है।

सूत्र - भावे (3.3.18)

सूत्रार्थ - जब धात्वर्थ सिद्धावस्था को प्राप्त हुआ हो तो उसके वाच्य होने पर धातु के बाद 'घञ्' प्रत्यय होता है।

9. महत्त्वपूर्ण तथ्य - धातु के अर्थ (क्रिया) को ही भाव कहते हैं। वह धात्वर्थ दो प्रकार का होता है -

(i) साध्यावस्था - भवति, पठति, पचति आदि धातुरूपों में धात्वर्थ साध्यावस्थापन्न होता है। अर्थात् जिस क्रिया में अन्य क्रिया की आकांक्षा नहीं होती है, वह साध्यावस्थापन्न क्रिया है।

(ii) सिद्धावस्था - जिस क्रिया में अन्य क्रिया की आकांक्षा होती है, वह सिद्ध अवस्था को प्राप्त क्रिया है। जैसे - पाकः, त्यागः, पठनम् , गमनम् , हसितम् आदि कृदन्तपद सिद्धावस्थापन्न है।

नोट- सिद्धावस्था को प्राप्त धातु से ही 'घञ्' प्रत्यय होता है।

*घञ् प्रत्ययान्त शब्दों का रूप 'राम' शब्द की तरह चलता है। जैसे- पाकः, पाकौ, पाकाः आदि।

सिद्धि प्रक्रिया -

पच् + घञ्- 'भावे' सूत्र से सिद्धावस्थापन्न भाव के वाच्य होने पर 'पच्' धातु से 'घञ्' प्रत्यय हुआ।

पच् + अ - 'लशक्वतद्धिते' सूत्र से 'घ्' की तथा 'हलन्त्यम्' से 'ञ्' की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से दोनों (घ्, ञ्) का लोप

पाच् + अ - 'अत उपधायाः' सूत्र से 'ञित्' प्रत्यय परे रहते उपधा 'अ' को वृद्धि 'आ' आदेश हुआ।

पाक् + अ - 'चजोः कु घिण्ण्यतोः' से घित् प्रत्यय परे रहते कुत्व होकर 'च्' के स्थान पर 'क्' हुआ। पाक - वर्णसम्मेलन

पाक + सु - प्रातिपदिकसंज्ञा, प्रथमा एकवचन की विवक्षा में 'सु' प्रत्यय आया। पाकः- सत्व, विसर्ग हुआ

पाकः- इति सिद्धम्

सूत्र - अकर्त्तरि च कारके संज्ञायाम् (3.3.19)

सूत्रार्थ - कर्ता से भिन्न अर्थात् कर्म, करण आदि कारक के वाच्य होने पर संज्ञा के विषय में धातु से 'घञ्' प्रत्यय होता है।

8. महत्त्वपूर्ण तथ्य -

*घञि च भावकरणयोः (6.4.27) सूत्र से भाव अथवा करण अर्थ वाला घञ् प्रत्यय हो तो रञ्ज् (रन्ज्) धातु के नकार का लोप होता है।

*रञ्ज् धातु में ञकार, मूल रूप से नकार ही है इसे 'नश्चाऽपदान्तस्य झलि' द्वारा अनुस्वार होकर परसवर्ण ञकार हुआ है, उसी नकार का लोप हो जाता है।

* भाव और करण से भिन्न अर्थ होने पर नकार का लोप नहीं होता। जैसे रज्यति अस्मिन् इति रङ्गः (रञ्ज् + घञ्) यहाँ घञ् प्रत्यय अधिकरण अर्थ में है अतः नकार का लोप नहीं हुआ।

* इस सूत्र में आया हुआ 'संज्ञायाम्' शब्द प्रायिक है अतः संज्ञा से अन्य अर्थ में भी उदाहरण प्राप्त होता है। जैसे- 'को भवता लाभो लब्धः।' यहाँ 'लाभः' संज्ञा अर्थ में नहीं है।

प्रायिक - अधिकांश या प्रायशः। अर्थात् अधिकतर जगहों में संज्ञा अर्थ में ही प्रत्यय होता है पर कुछ जगहों में अक्सर असंज्ञा होने पर भी घञ् होता है।

सिद्धि प्रक्रिया- रागः (रज्यते अनेन इति रागः) रँगना या प्रेम रखना

रञ्ज् + घञ् - 'अकर्तरि च कारके संज्ञायाम्' सूत्र से 'रञ्ज्' धातु से करण अर्थ में 'घञ्' हुआ

रञ्ज् + अ - 'घञ् के घकार और ञकार का 'लशक्वतद्धिते' और 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा होकर 'तस्य लोपः' से लोप हुआ।

रज् + अ - 'घञि च भावकरणयोः' सूत्र से रञ्ज् के नकार (ञकार) का लोप हुआ।

राज् अ - 'अत उपधायाः' से ञित् प्रत्यय परे रहते 'रज्' की उपधा अकार को वृद्धि 'आ' हुई।

राग् अ - 'चजोः कु घिण्ण्यतोः' से घित् प्रत्यय परे रहते 'राज्' के 'ज्' के स्थान पर कुत्व 'ग्' आदेश हुआ।

राग - वर्णसम्मेलन हुआ

राग + सु (स्) - प्रातिपदिकसंज्ञा, सु प्रत्यय

रागः - इति सिद्धम्

सूत्र - निवास-चितिशरीरोपसमाधानेष्वादेश्च कः (3.3.41)

सूत्रार्थ - निवास, चयन, शरीर और समूह - इन चार अर्थों में 'चि' धातु से घञ् प्रत्यय होता है तथा धातु के आदि वर्ण 'च्' के स्थान पर 'क्' आदेश भी हो जाता है। कर्तृभिन्न काल में संज्ञा का विषय हो तो।

8. महत्त्वपूर्ण तथ्य-

(i) निवास - निवसति अत्र इति निवासः - जहाँ रहते हैं, उसे निवास कहते हैं।

(ii) चिति - चीयते इति चितिः - जिसका चयन किया जाता है अर्थात् यज्ञाग्नि विशेष या उसका स्थान विशेष।

(iii) शरीर - चीयते अस्मिन् अस्थ्यादिकम् इति कायः - अस्थियों का समूह

(iv) उपसमाधानम् - राशीकरणम् - ढेर लगाना, एकत्र करना, इकट्ठा करना।

निकायः (रहने का स्थान अर्थात् घर)

निचीयन्ते संगृह्यन्ते धनधान्यादि अस्मिन्निति निकायः

(i) निवास अर्थ में - नि + चि + घञ् = निकायः (घर)

(ii) चिति अर्थ में - आङ् + चि + घञ् = आकायः (अग्नि विशेष)

(iii) शरीर अर्थ में - नि + घञ् = कायः (शरीर)

(iv) उपसमाधान अर्थ में - गोमय + नि + चि + घञ् = गोमयनिकायः (गोबर का ढेर)

सूत्र - हलश्च (3.3.121)

सूत्रार्थ- हलन्त (व्यञ्जनान्त) धातु से करण या अधिकरण

कारकों में प्रायः घञ् प्रत्यय हो जाता है। पुंल्लिङ्ग विशिष्ट संज्ञा अर्थ में।

महत्त्वपूर्ण तथ्य -

* 'पुंसि संज्ञायां घः प्रायेण' (3.3.118) सूत्र से यहाँ 'घ' प्रत्यय प्राप्त था किन्तु उसका यहाँ अपवाद 'घञ्' प्रत्यय कहा गया। 'घाऽपवादः।'

. सिद्धि प्रक्रिया- रामः (रमन्ते योगिनः अस्मिन् इति रामः) (जिसमें योगिजन या भक्तजन रमण अर्थात् आनन्द मनाते हैं) अथवा रमते लोकोऽस्मिन्निति रामः, दशरथनन्दनः)

रम् + घञ् - 'हलन्त' रम् धातु से 'हलश्च' सूत्र द्वारा अधिकरण कारक में घञ् प्रत्यय।

रम् + अ - 'घञ्' प्रत्यय के घकार और ञकार की 'लशक्वतद्धिते' तथा 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से लोप हुआ।

राम् + अ - 'अत उपधायाः' सूत्र से धातु के उपधा अकार को वृद्धि (आ) हुआ।

राम - वर्णसम्मेलन

राम + सु (स्) - कृदन्त होने के कारण प्रातिपदिक संज्ञा, सु प्रत्यय

रामः - रुत्व, विसर्ग

रामः - इति सिद्धम्

सूत्र- एरच् (3.3.56)

सूत्रार्थ- इवर्णान्त धातु से अच् प्रत्यय होता है, यदि वह कर्ता से भिन्न (कर्म,करण,सम्प्रदान) कारक में अथवा भाव अर्थ में हो तथा संज्ञा का विषय हो। अर्थात् 'एरच्' सूत्र से अच् प्रत्यय तभी होगा जब धातु इवर्णान्त हो तथा भाव अर्थ में अथवा कर्ता से भिन्न कारक में होगा संज्ञावाची हो तो.....।

महत्त्वपूर्ण तथ्य-

* घाजन्तश्च (लिङ्गानुशासन 2.3) सूत्र से अच् प्रत्ययान्त शब्द पुँल्लिङ्ग में प्रयुक्त होते हैं।

* इस सूत्र से होने वाला अच् प्रत्यय 'भावे' (3.3.18)तथा 'अकर्तरि च कारके संज्ञायाम्' (3.3.19) सूत्रों द्वारा होने वाले 'घञ्' प्रत्यय का अपवाद है।

* इवर्णान्त धातु का तात्पर्य है- 'इ' वर्ण जिस धातु के अन्त में है, वह चाहे ह्रस्व 'इ' हो या दीर्घ 'ई'। जैसे- चि, जि, नी आदि धातुयें।

9. सिद्धि प्रक्रिया-चि+अच्- चयः (चयनं चयः, चुनना, संग्रह करना, बटोरना)

स्त्रियां क्तिन् (3.3.94)

स्त्रियां भावे अकर्तरि च कारके संज्ञायाम् धातोः परः क्तिन् प्रत्ययः।

'ॠल्वादिभ्यः क्तिन्निष्ठावद्वाच्यः' (वा.)

* इस वार्तिक से दीर्घ ॠकारान्त धातु तथा लू आदि गणपति 21 धातुओं के बाद आने वाला क्तिन् प्रत्यय निष्ठा (क्त, क्तवतु) की तरह माना जाता है। अर्थात् जैसे- निष्ठा प्रत्यय (क्त क्तवतु) में तकार को नकार आदेश होता है तो क्तिन् के तकार को भी नकार आदेश हो जाएगा। जैसे- कॄ+क्तिन् = कीर्णिः (बिखेरना), तॄ + क्तिन् = तीर्णिः (तैरना)

लू+क्तिन् = लूनिः (काटना) धू+क्तिन् = धूनिः (कम्पना)

सूत्र - अलंखल्वोः प्रतिषेधयोः प्राचां क्त्वा (3.4.18)

सूत्रार्थ - निषेध (प्रतिषेध) अर्थ में विद्यमान 'अलम्' और 'खलु' शब्दों के समीप आने वाली धातुओं से क्त्वा प्रत्यय होता है।

महत्त्वपूर्ण तथ्य - प्रतिषेधार्थक अर्थात् निषेधार्थक 'अलम्' और 'खलु' अव्यय के योग में ही इस सूत्र से क्त्वा प्रत्यय होता है अन्य प्रतिषेधार्थक अव्ययों के योग में नहीं। जैसे - 'मा कार्षीः' यहाँ 'क्त्वा' प्रत्यय नहीं हुआ।

उदाहरण तालिका -

(i) अलं दत्त्वा (मत दो) **(ii)** पीत्वा खलु (मत पीओ)

सूत्र - समानकर्तृकयोः पूर्वकाले (3.4.21)

सूत्रार्थ - समानकर्ता वाले दो क्रियाओं में पूर्वकाल में विद्यमान क्रियावाचक धातु से क्त्वा प्रत्यय होता है।

महत्त्वपूर्ण तथ्य - 'समानकर्तृकयोः' में उक्त द्विवचन प्रधान नहीं है, अतः दो या दो से अधिक धातुओं में भी यह नियम प्रवृत्त होता है।

उक्तं च - द्वित्वमतन्त्रम्। जैसे - बालकः भुक्त्वा, पीत्वा व्रजति/ बालक खाकर पीकर जाता है।

निष्कर्ष यह है कि इस सूत्र से क्त्वा प्रत्यय करते समय यह बात अवश्य ही ध्यातव्य है कि समान कर्ता वाली दो या दो से अधिक धातुओं में पूर्वकाल वाली क्रिया से ही क्त्वा प्रत्यय लगेगा।

जैसे-भुक्त्वा व्रजति (खाकर जाता है)

सूत्र-'आभीक्ष्ण्ये णमुल् च' (3.4.22)

सूत्रार्थ - क्रिया के पुनः पुनः अर्थ द्योतित होने पर पूर्वकालिक क्रिया में क्त्वा तथा णमुल् प्रत्यय होते हैं।

उदाहरण - क्त्वा/ स्मृत्वा स्मृत्वा शिवं नमति (स्मरण कर करके शिव को नमन करता है)

भुक्त्वा भुक्त्वा व्रजति। (खा-खाकर जाता है।)

इन दोनों उदाहरणों में क्रिया पुनः पुनः हो रही है, अतः क्त्वा प्रत्यय हुआ।

णमुल् होने पर स्मारं स्मारं शिवं नमति। भोजं भोजं व्रजति।(3.4.22)

ल्यप्

सूत्र - समासेऽनञ्पूर्वे क्त्वो ल्यप् (7.1.37)

सूत्रार्थ - जिस समास के पूर्वपद में नञ् से भिन्न कोई अन्य

अव्यय (उपसर्ग) स्थित हो तो उस समास में 'क्त्वा' प्रत्यय के स्थान पर ल्यप् आदेश हो जाता है।

महत्त्वपूर्ण तथ्य -

* यदि धातु के पूर्व उपसर्ग हो तो क्त्वा के स्थान पर 'ल्यप्' प्रत्यय होता है। जैसे - प्र + पठ् + क्त्वा (ल्यप्) = प्रपठ्य

* ल्यप् प्रत्यय क्त्वा के स्थान पर होने के कारण कित् न होते हुए भी 'स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ' सूत्र के अनुसार आर्धधातुक तथा कित् ।

* अनुबन्ध लोप होने पर 'क्त्वा' प्रत्यय तकारादि (त्वा) है तथा ल्यप् (य) प्रत्यय यकारादि है, क्त्वा के स्थान पर होने पर भी 'ल्यप्' को तकारादि प्रत्यय नहीं मानेंगे।

* समास के पूर्वपद में यदि नञ् होगा तो उत्तरपद में स्थित क्त्वा के स्थान पर ल्यप् नहीं होगा। जैसे -न कृत्वा - अकृत्वा (न करके), न गत्वा = अगत्वा, न पठित्वा = अपठित्वा।

प्रकृत्य (भली भॉंति या अच्छी तरह करके) सिद्धि प्रक्रिया-

कृ + क्त्वा	- 'समानकर्तृकयोः पूर्वकाले' सूत्र से 'कृ' धातु से क्त्वा प्रत्यय हुआ।
कृ + त्वा	- अनुबन्धलोप 'कृत्वा'
प्र + कृत्वा	- 'कुगतिप्रादयः' सूत्र से कृत्वा इस अव्यय के साथ 'प्र' का समास होने पर
प्र + कृ + ल्यप्	- 'समासेऽनञ्पूर्वे क्त्वो ल्यप्' सूत्र से क्त्वा के स्थान पर 'ल्यप्' प्रत्यय हुआ।
प्र + कृ + य	- अनुबन्धलोप
प्र + कृ + तुक् + य	- 'ह्रस्वस्य पिति कृति तुक्' से धातु और प्रत्यय के बीच तुक् का आगम।
प्र + कृ + त् + य	- अनुबन्धलोप
प्रकृत्य	- वर्णसम्मेलन
प्रकृत्य + सु	- प्रातिपदिक संज्ञा, सु प्रत्यय
प्रकृत्य	- 'क्त्वा-तोसुन्-कसुनः' सूत्र से अव्यय संज्ञा तथा 'अव्ययादाप्सुपः' से 'सु का लुक् ।
प्रकृत्य	- इति सिद्धम्।

तद्धित प्रत्यय तालिका

क्र.	शब्द	अर्थ	तद्धित प्रत्यय	सूत्र
1.	✹ **अग्र्यः** (अग्रे साधुः)	आगे रहने में प्रवीण, योग्य	अग्र + यत्	तत्र साधुः (4.4.98)
2.	✹ **अङ्गना** (कल्याणानि अङ्गानि सन्ति अस्याः)	सुन्दर अङ्गों वाली स्त्री	अङ्ग + न + टाप्	लोमादि-पामादि-पिच्छादिभ्यः शनेलचः (5.2.100)
3.	✹ **अङ्गुलीयम्** (अङ्गुल्यां भवम्)	अँगूठी	अङ्गुलि + छ	जिह्वामूलाङ्गुलेश्छः (4.3.62)
4.	✹ **अतः**	इसलिए	एतद् (अन्) + तस्	पञ्चम्यास्तसिँल् (5.3.7)
5.	✹ **अधीती** (अधीतम् अनेन)	जिसने अध्ययन कर रखा है, ऐसा व्यक्ति	अधीत + इनिँ	इष्टादिभ्यश्च (5.2.88)
6.	✹ **अन्ततः** (अन्ते)	अन्त में	अन्त + तसिँ	आद्यादिभ्यस्तसेरुपसंख्यानम् (वा0)
7.	✹ **अन्नमयम्** (प्रकृतं प्राचुर्येण प्रस्तुतम् अन्नम्)	अधिकता से विद्यमान अन्न	अन्न + मयट्	तत्प्रकृतवचने मयट् (5.4.21)
8.	✹ **अन्यदा** (अन्यस्मिन् काले)	अन्य समय में	अन्य+ दा	सर्वैकाऽन्य -किं-यत् - तदः काले दा (5.3.15)
9.	✹ **अपाच्यम्** (अपाचि जातं भवं वा)	दक्षिणदिशा (दक्षिण देश में पैदा हुआ या वहाँ होने वाला)	अप अञ्च् + यत्	द्युप्रागपागुदक्प्रतीचो यत् (4.2.100)
10.	✹ **अपूपमयम्** प्रकृताः (प्राचुर्येण प्रस्तुताः) अपूपाः	अधिकता से विद्यमान मालपूए	अपूप + मयट्	तत्प्रकृतवचने मयट् (5.4.21)
11.	✹ **अभितः**	दोनों ओर	अभि+ तसिँल्	पर्यभिभ्यां च (5.3.9)
12.	✹ **अमात्यः** (अमा भवः)	मन्त्री (साथ या समीप में होने वाला)	अमा+ त्यप्	* अमेह-क्व-तसिँ-त्रेभ्य एव (वा0) * अव्ययात् त्यप् (4.2.1.03)
13.	✹ **अमुतः (अमुष्मात्)**	उस से	अदस् + तसिँल्	पञ्चम्यास्तसिँल् (5.3.7)

क्र.	शब्द	अर्थ	तद्धित प्रत्यय	सूत्र
14.	**अर्घ्यः** (अर्हति इति अर्घ्यः)	पूज्य	अर्घ + यत्	दण्डादिभ्यो यत् (5.1.65)
15.	**अर्णवः** (प्रभूतम् अर्णोऽस्ति अस्मिन् इति)	समुद्र	अर्णस् + व	अर्णसो लोपश्च (वा.)
16.	**अर्शसः** (अर्शांसि विद्यन्ते अस्य)	अर्श, बवासीर वाला रोग	अर्शस् + अच्	अर्श- आदिभ्योऽच् (5.2.127)
17.	**अल्पशः** (अल्पानि ददाति)	थोड़ा देता है	अल्प+ शस्	बह्वल्पार्थाच्छस् कारका-दन्यतरस्याम् (5.4.42)
18.	**अवारपारीणः** (अवारपारे भवः)	इस पार और उस पार में होने वाला या पैदा हुआ	अवारपार+ख	राष्ट्राऽवारपाराद् घखौ (4.2.92)
19.	**अवारीणः** (अवारे भवो जातो वा)	इस तट में होने वाला या पैदा हुआ	अवार+ ख	अवारपाराद् विगृहीतादपि विपरीताच्चेति वक्तव्यम् (वा0)
20.	**अशीतिः** (अष्ट दशतः परिमाणमस्य सङ्घस्य इति)	अस्सी	अष्टदशत् (अशी) + ति	पङ्क्ति- विंशति-त्रिंशच्-चत्वारिंशत् - पञ्चाशत् - षष्टि-सप्तत्यशीति- नवति-शतम् (5.1.58)
21.	**अश्ममयम्** (अश्मनो विकारः)	पत्थर	अश्मन् + मयट्	मयड् वैतयोर्भाषायामभक्ष्याच्छादनयोः (4.3.141)
22.	**अश्वकः** (कुत्सितोऽश्वः)	निन्दित घोड़ा	अश्व+क	प्रागिवात् कः (5.3.70) कुत्सिते (5.3.74)
23.	**अस्मदीयः** (आवयोः अस्माकं वा अयम्)	हम दोनों का / हम सब का	अस्मद् + छ	युष्मदस्मदोरन्यतरस्यां खञ् च (4.3.1)
24.	**अहंयुः** (अहम् अस्ति अस्य इति)	अहङ्कार रखने वाला (घमण्डी)	अहम् + युस्	अहंशुभमोर्युस् (5.2.140)
25.	**अहीनः** (अह्नां समूहः)	सुत्याओं का समूहरूप एक यज्ञविशेष	अहन् + ख	अह्नः खः क्रतौ (वा.)
26.	**आक्षिकः** (अक्षैः दीव्यति)	पासों से खेलने वाला	अक्ष + ठक्	तेन दीव्यति खनति जयति जितम् (4.4.2)

क्र.	शब्द	अर्थ	तद्धित प्रत्यय	सूत्र
27.	✹ **आढ्यतमः** (अयम् एषाम् अतिशयेन आढ्यः)	सबसे अधिक धनी	आढ्य + तमप्	अतिशायने तमबिष्ठनौ (5.3.55)
28.	✹ **आत्मनीनम्** (आत्मने हितम्)	अपने लिए हितकर	आत्मन् + ख	आत्मन् - विश्वजन-भोगोत्तरपदात् खः (5.1.9)
29.	✹ **आदितः** (आदौ)	आदि में	आदि + तस्	आद्यादिभ्यस्तसेरुपसंख्यानम् (वा.)
30.	✹ **आदित्यः** (अदिते अपत्यम्)	अदिति की सन्तान	अदिति + ण्य	दित्यदित्यादित्यपत्युत्तर-पदाण्ण्यः (4.1.85)
31.	✹ **आधर्मिकः** (अधर्मं चरति)	अधर्म (पाप) का आचरण करने वाला	अधर्म + ठक्	अधर्माच्चेति वक्तव्यम् (वा0)
32.	✹ **आधिदैविकम्** (अधिदेवम्, अधिदेवे भवम् वा)	देवों में होने वाला	अधिदेव + ठञ्	अध्यात्मादेष्ठञ् इष्यते (वा0)
33.	✹ **आधिभौतिकम्** (अधिभूतम्, अधिभूते भवम् वा)	पृथ्व्यादि भूतों में होने वाला	अधिभूत + ठञ्	अध्यात्मादेष्ठञ् इष्यते (वा0)
34.	✹ **आध्यात्मिकम्** (अध्यात्मम् अध्यात्मे वा भवम्)	आत्मा में होने वाला	अध्यात्म + ठञ्	अध्यात्मादेष्ठञ् इष्यते (वा0)
35.	✹ **आपूपिकः** (अपूपभक्षणं शीलम् अस्य)	मालपुए खाना जिसका स्वभाव है, ऐसा पुरुष	अपूप+ ठक्	शीलम् (4.4.61)
36.	✹ **आम्रमयम्** (आम्रस्य विकारो अवयवो वा)	आम्रवृक्ष का विकार या उसका अवयव	आम्र + मयट्	नित्यं वृद्धशरादिभ्यः (4.3.142)
37.	✹ **आश्मः** (अश्मनेः विकारः)	पत्थर का विकार अर्थात् पत्थर से बना कोई पदार्थ	अश्मन् + अण्	तस्य विकारः (4.3.132)
38.	✹ **आश्वपतम्** (अश्वपतेः अपत्यम्)	अश्वपति की सन्तान	अश्वपति + अण्	अश्वपत्यादिभ्यश्च (4.1.84)
39.	✹ **आसिकः** (असिः प्रहरणम् अस्य इति)	जिसका हथियार तलवार है, ऐसा पुरुष	असि+ ठक्	प्रहरणम् (4.4.57)
40.	✹ **आह्निकम्** (अह्ना निर्वृत्तम्)	एक दिन में सम्पन्न किया गया कार्य	अहन् + ठञ्	तेन निर्वृत्तम् (5.1.78)
41.	✹ **इक्ष्वाकवः** (इक्ष्वाकोः अपत्यानि, इक्ष्वाकूणां जनपदानां राजानः)	इक्ष्वाकु की सन्तानें / इक्ष्वाकु देश के राजा लोग	इक्ष्वाकु + अञ्	जनपदशब्दात् क्षत्रियादञ् (4.1.166)

क्र.	शब्द	अर्थ	तद्धित प्रत्यय	सूत्र
42.	**इतः** (अस्मात्)	यहाँ से, इससे, इस कारण में	इदम् + तसिँल्	पञ्चम्यास्तसिँल् (5.3.7)
43.	(i) इत्थम (अनेन प्रकारेण) (ii) इत्थम् (एतेन प्रकारेण)	इस प्रकार वाला, ऐसा इस प्रकार वाला, ऐसा	इदम् + थमुँ एतद् + थमुँ	इदमस्थमुः (5.3.24) एतदोऽपि वाच्यः (वा.)
44.	**इयान्** (इदं प्रमाणम् अस्य)	यह है परिमाण इसका अर्थात् इतना	इदम् + वतुँप्	किमिदम्भ्यां वो घः (5.2.40)
45.	**इष्टी** (इष्टम् अनेन)	यज्ञ कर चुका व्यक्ति	इष्ट + इनि	इष्टादिभ्यश्च (5.2.88)
46.	**इह** (अस्मिन्)	इस पर / यहाँ पर	इदम् + ह	इदमो हः (5.3.11)
47.	**इहत्यः** (इह भवः इह जातः वा)	यहाँ होने वाला / यहाँ पैदा हुआ	इह+ त्यप्	अव्ययात् त्यप् (4.2.103)
48.	**उच्चकैः** (अज्ञातम् उच्चैः)	अज्ञात ऊँचा	उच्च् + अकँच् + ऐस्	अज्ञाते (5.3.73)
49.	**उच्चैस्तमाम्** (अतिशयेन उच्चैः)	अत्यधिक ऊँचे	उच्चैस् + तमप् + आँमु	(i) अतिशायने तमबिष्ठनौ (5.3.55) (ii) किमेत्तिङव्यय- घादाम्व द्रव्यप्रकर्षे (5.4.11)
50.	**उदीच्यम्** (उदीचि जातं भवं वा)	उत्तर दिशा या उत्तर देश में पैदा हुआ या वहाँ हीने वाला	उदीचि + यत्	द्युप्रागपागुदक्-प्रतीचो यत् (4.2.100)
51.	**उभयम्** (उभौ अवयवौ अस्य)	(दो अवयवों वाला अवयवी)	उभ + तयप्	संख्याया अवयवे तयप् (5.2.42)
52.	**ऊरुदघ्नम्** (ऊरू प्रमाणम् अस्य)	ऊरु के बराबर प्रमाण है जिसका अर्थात् नदी का जल उरू	ऊरु+ दघ्नम्	प्रमाणे द्वयसज्दघ्नञ्-मात्रचः (5.2.37)
53.	**ऊरुद्वयसम्** (ऊरू प्रमाणम् अस्य)	ऊरु (जंघा) के बराबर प्रमाण है जिसका	ऊरु+ द्वयसच्	प्रमाणे द्वयसज्दघ्नञ् - मात्रचः (5.2.37)
54.	**ऊरुमात्रम्** (ऊरू प्रमाणम् अस्य)	ऊरु (जंघा) के बराबर प्रमाण है	ऊरु+मात्रच्	प्रमाणे द्वयसञ्दघ्नञ् मात्रचः (5.2.37)
55.	**एकादशः** (एकादशानां पूरणः)	ग्यारह संख्या को पूर्ण करने वाला / ग्यारहवाँ	एकादशन् + डट्	तस्य पूरणे डट् (5.2.48)

क्र.	शब्द	अर्थ	तद्धित प्रत्यय	सूत्र
56.	✸ **एतर्हि** (अस्मिन् काले)	इस काल में / अब	इदम् + र्हिल्	इदमो र्हिल् (5.3.16)
57.	✸ **एतावान्** (एतत् परिमाणम् अस्य)	इतना	एतत् + वतुप्	यत्तदेतेभ्यः परिमाणे वतुप् (5.2.39)
58.	✸ **ऐन्द्रम्** (इन्द्रः देवता अस्य इति ऐन्द्रं हविः)	इन्द्र जिसका देवता है ऐसी हवि आदि	इन्द्र+ अण्	साऽस्य देवता (4.2.23)
59.	✸ **ऐहलौकिकम्** (इहलोके भवम्)	इस लोक में होने वाला	इहलोक + ठञ्	अध्यात्मादेष्ठञ् इष्यते (वा0)
60.	✸ **औडुपिकः** (उडुपेन तरति)	उडुप अर्थात् छोटी नौका के द्वारा पार करने वाला	उडुप + ठक्	तरति (4.4.5)
61.	✸ **औडुलोमिः** (उडुलोम्नः अपत्यम्)	उडुलोमन् नामक व्यक्ति की सन्तति	उडुलोमन् + इञ्	बाह्वादिभ्यश्च (4.1.96)
62.	✸ **औत्सः** (उत्से भव औत्सः)	उत्स अर्थात् झरने में होने वाला मण्डूक आदि	उत्स+ अञ्	उत्सादिभ्योऽञ् (4.1.86)
63.	✸ **औदुम्बरः देशः** (उदुम्बराः सन्ति अस्मिन् देशे)	उदुम्बर (गूलर) के पेड़ जिस देश में हैं, वह देश	उदुम्बर + अण्	तदस्मिन्नस्तीति देशे तन्नाम्नि (4.2.66)
64.	✸ **औपगवम्** (उपगोः इदम् औपगवम्)	उपगु की यह वस्तु	उपगु + अण्	तस्येदम् (4.3.120)
65.	✸ **औपगवः** (उपगोः अपत्यम्)	उपगु की सन्तान	उपगु + अण्	* प्राग्दीव्यतोऽण् (4.1.83) * तस्याऽपत्यम् (4.1.92)
66.	✸ **औपनिषदः** (पुरुषः) (उपनिषद्भिः प्रतिपाद्यते)	उपनिषदों से प्रतिपादित किया जाने वाला (आत्मा)	उपनिषद् + अण्	शेषे (4.2.91)
67.	✸ **औपाध्यायकः** (उपाध्यायात् आगतः)	उपाध्याय से आया हुआ ग्रन्थ	उपाध्याय + वुञ्	विद्यायोनि सम्बन्धेभ्यो वुञ् (4.3.77)
68.	✸ **कण्ठ्यम्** (कण्ठाय हितम्)	कण्ठ के लिए हितकर	कण्ठ + यत्	शरीरावयवाद् यत् (5.1.6)
69.	✸ **कतमः** (को भवतां)	कौन	किम् + डतमच्	वा बहूनां जातिपरिप्रश्ने डतमच् (5.3.93)

क्र.	शब्द	अर्थ	तद्धित प्रत्यय	सूत्र
70.	✹ **कतरः**	कौन	किम् + डतरच्	किंयत्तदो निर्धारणे द्वयोरेकस्य डतरच् (5.3.92)
71.	✹ **कतिथः** (कतीनां पूरणः)	कितनों का पूरण (कितनवाँ)	कति + थुँक + डट्	तस्य पूरणे डट् (5.2.48)
72.	✹ **कतिपयथः** (कतिपयानां पूरणः)	कुछेक का पूरण (कुछेकवाँ)	कतिपय + थुँक्+ डट्	तस्य पूरणे डट् (5.2.48)
73.	✹ **कथम्** (केन प्रकारेण)	कैसा	किम् + थमुँ	किमश्च (5.3.25)
74.	✹ **कदा** (कस्मिन् काले)	किस काल में, कब	किम् + दा	सर्वैकाऽन्य-किं-यत् - तदः काले दा (5.3.15)
75.	✹ **कर्मण्यः** (कर्मसु साधुः)	कर्मों के करने में प्रवीण या योग्य	कर्मन् + यत्	तत्र साधुः (4.4.98)
76.	✹ **कर्हि** (कस्मिन् अनद्यतने काले)	किस अनद्यतन काल में	किम् + र्हिल्	अनद्यतने र्हिलन्यतरस्याम् (5.3.21)
77.	✹ **कवर्गीयम्** (कवर्गे भवम्)	कवर्ग में होने वाला	कवर्ग + छ	वर्गान्ताच्च (4.3.63)
78.	✹ **काकम्** (काकानां समूहः)	कौओं का समूह	काक + अण्	तस्य समूहः (4.2.36)
79.	✹ **कानीनः** (कन्याया अपत्यम्)	अविवाहिता का पुत्र, कर्ण या व्यास	कन्या + अण्	कन्यायाः कनीन च (4.1.116)
80.	✹ **कापेयम्** (कपेर्भावः कर्म वा)	कपि का भाव अर्थात् वानरपना	कपि + ढक्	कपि - ज्ञात्योर्ढक् (5.1.126)
81.	✹ **कार्पासम्** (कर्पासस्य विकारः)	कपास का विकार अर्थात् सूती ओढ़ने का वस्त्र	कर्पास + अण्	बिल्वादिभ्योऽण् (4.3.134)
82.	✹ **कालिकम्** (काले भवं जातं वा)	समय पर होने वाला	काल + ठञ्	कालाट्ठञ् (4.3.11)
83.	✹ **काषायम्** (कषायेण रक्तं वस्त्रम्)	गेरुए रंग से रङ्गा हुआ वस्त्र आदि	कषाय + अण्	तेन रक्तं रागात् (4.2.1)
84.	✹ **किन्तमाम्** (इदम् एषाम् अतिशयेन किम्)	सबसे अधिक कुत्सित वस्तु	किंतम + आमुँ	किमेत्तिङव्यय-घादाम्वद्रव्यप्रकर्षे (5.4.11)

क्र.	शब्द	अर्थ	तद्धित प्रत्यय	सूत्र
85.	✹ **कियान्** (किं परिमाणमस्य)	क्या है परिमाण इसका अर्थात् कितना	किम् + वतुँप्	किमिदम्भ्यां वो घः (5.2.40)
86.	✹ **कुत्र** (कस्मिन्)	कहाँ पर, किसमें, किस पर	किम् + त्रल्	सप्तम्यास्त्रल् (5.3.10)
87.	✹ **कुमुद्वान्** (कुमुदाः सन्ति अस्मिन् देशे)	श्वेतकमल जिसमें है, ऐसा देश	कुमुद+ ड्मतुँप्	कुमुद-नड- वेतसेभ्यो ड्मतुँप् (4.2.86)
88.	✹ **कृतपूर्वी** (पूर्वं कृतम् अनेन)	जो पहले कर चुका है, ऐसा व्यक्ति	कृतपूर्व + इनिँ	सपूर्वाच्च (5.2.87)
89.	✹ **केशवः** (केशाः सन्ति अस्य इति)	केशों वाला	केश+ व	केशाद्वोऽन्यतरस्याम् (5.2.109)
90.	✹ **केशवान्** (केशाः सन्ति अस्य)	केशों वाला	केश + मतुँप्	तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुँप् (5.2.94)
91.	✹ **केशिकः** (केशाः सन्ति अस्य)	केशों वाला	केश+ ठन्	अत इनिँ - ठनौ (5.2.115)
92.	✹ **केशी** (केशाः सन्ति अस्य)	केशों वाला	केश + इनिँ	अत इनिँ - ठनौ (5.2.115)
93.	✹ **कौरव्यः** (कुरोः अपत्यम्)	कुरु की सन्तान	कुरु+ ण्य	कुरु- नादिभ्यो ण्यः (4.1.170)
94.	✹ **कौशेयम्** (कोशे सम्भवति)	कोश में सम्भव होने वाला (रेशमी वस्त्र)	कोश + ढञ्	कोशाड् ढञ् (4.3.42)
95.	✹**क्रमकः** (क्रमम् अधीते वेत्ति वा)	वैदिक क्रमपाठ को पढ़ने या जानने वाला	क्रम + वुन्	क्रमादिभ्यो वुन् (4.2.60)
96.	✹ **क्वत्यः** (क्व भवो जातो वा)	कहाँ होने वाला	क्व + त्यप्	* अमेह-क्व-तसिँ-त्रेभ्य एव (वा0) * अव्ययात् त्यप् (4.2.103)
97.	✹**क्षत्त्रियः** (क्षत्त्रस्य अपत्यम्)	क्षत्त्र की सन्तति	क्षत्त्र + घ	क्षत्त्राद् घः (4.1.138)
98.	✹ **गजता** (गजानां समूहः)	हाथियों का समूह या झुण्ड	गज+ तल्	गज-सहायाभ्यां चेति वक्तव्यम् (वा0)
99.	✹ **गरुत्मान्** गरुतौ (पक्षौ स्तोऽस्य)	दो पंख हैं इसके अर्थात् पक्षी या गरुड़	गरुत् + मतुँप्	तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुँप् (5.2.94)

क्र.	शब्द	अर्थ	तद्धित प्रत्यय	सूत्र
100.	✹ **गव्यम्** (गवि भवम्)	गौ में होने वाला	गो + यत्	गोरजादिप्रसङ्गे यत् (वा0)
101.	✹ **गहीयः** (गहे भवः)	गुफा आदि गहन स्थान में होने वाला	गह + छ	गहादिभ्यश्च (4.2.137)
102.	✹ **गाङ्गः** (गङ्गाया अपत्यम्)	गङ्गा की सन्तान, भीष्म	गङ्गा+ अण्	शिवादिभ्योऽण् (4.1.112)
103.	✹ **गाणपतम्** (गणपतेरपत्यादि)	गणपति की सन्तान	गणपति+ अण्	अश्वपत्यादिभ्यश्च (4.1.84)
104.	✹ **गार्ग्यः** (गर्गस्य गोत्रापत्यम्)	गर्ग का गोत्रापत्य अर्थात् पौत्र आदि सन्तान	गर्ग + यञ्	गर्गादिभ्यो यञ् (4.1.105)
105.	✹ **गोता** (गोः भावः गोत्वं गोता वा)	गाय या बैल का भाव या गोत्व जाति	गो + तल्	तस्य भावस्त्वतलौ (5.1.118)
106.	✹ **गोत्वम्** (गोः भावः गोत्व)	गोत्व जाति	गो + त्व	तस्य भावस्त्वतलौ (5.1.118)
107.	✹ **गोमयम्** (गोः पुरीषम्)	गौ का मल अर्थात् गोबर	गो + मयट्	गोश्च पुरीषे (4.3.143)
108.	✹ **गोमान्** (गावः सन्ति अस्य)	गौएं हैं जिसकी अर्थात् गौओं वाला व्यक्ति	गो + मतुँप्	तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुँप् (5.2.94)
109.	✹ **ग्रामता** (ग्रामाणां समूहः)	गाँवों का समूह	(i) ग्राम + तल् (ii) ग्रामत+टाप्	(i) ग्राम-जन-बन्धुभ्यस्तल् (4.2.42) (ii) अजाद्यतष्टाप् (4.1.4)
110.	✹ **ग्रामीणः** (ग्रामे जातो भवो वा)	ग्राम में पैदा हुआ या ग्राम में होने वाला	ग्राम+ खञ्	ग्रामाद् य-खञौ (4.2.93)
111.	✹ **ग्राम्यः** (ग्रामे जातो भवो वा)	ग्राम में पैदा हुआ या ग्राम में होने वाला	ग्राम+ य	ग्रामाद् य-खञौ (4.2.93)
112.	✹ **चतुर्थः** (चतुर्णां पूरणः)	चौथा	चतुर् + डट्	तस्य पूरणे डट् (5.2.48)
113.	✹ **चत्वारिंशत्** (चत्वारो दशतः परिमाणमस्य सङ्घस्य इति)	चालीस	चतुर्दशत् + शत्	पङ्क्ति-विंशति-त्रिंशच्-चत्वारिंशत्- पञ्चाशत्-षष्टि-सप्तत्यशीति- नवति-शतम् (5.1.58)

क्र.	शब्द	अर्थ	तद्धित प्रत्यय	सूत्र
114.	✸ **चाक्षुषम्** (चक्षुषा गृह्यते)	चक्षुरिन्द्रिय से जो ग्रहण किया जाता है अर्थात् रूप आदि	चक्षुष् + अण्	शेषे (4.2.91)
115.	✸ **चातुरम्** (चतुर्भिः उह्यते)	चार घोड़ों से खींचा जाने वाला छकड़ा	चतुर्दशी + अण्	शेषे (4.2.91)
116.	✸ **चातुर्दशम्** (चतुर्दश्यां दृश्यते)	चतुर्दशी में दिखायी देने वाला राक्षस	चतुर्दशी + अण्	शेषे (4.2.91)
117.	✸ **चिरन्तनः** (चिरे भवः)	प्राचीनकाल में होने वाला	चिर + ट्यु / ट्युल्	सायं-चिरं- प्राह्णे-प्रगेऽव्यये-भ्यष्ट्युट्युलौ तुँट् च (4.3.23)
118.	✸ **चूडालः** (चूडा अस्ति अस्य इति)	चूडा है इसका अर्थात् चुटियावाला	चूडा+ लच्	प्राणिस्थादातो लजन्यतरस्याम् (5.2.96)
119.	✸ **चूडावान्** (चूडा अस्ति अस्य इति)	चुटियावाला	चूडा+ मतुँप्	तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुँप् (5.2.94)
120.	✸ **चैत्रवत्** (चैत्रस्य इव)	चैत्रनामक व्यक्ति की तरह	चैत्र+ वतिँ	तत्र तस्येव (5.1.115)
121.	✸ **जनता** (जनानां समूहः)	लोगों का समूह	(i) जन + तल् (i) जनत + टाप्	(i) ग्राम-जन-बन्धुभ्यस्तल् (4.2.42) (ii) अजाद्यतष्टाप् (4.1.4)
122.	✸ **जाड्यम्** (जडस्य भावः कर्म वा)	जड़ का भाव अर्थात् जड़ता, जड़पना	जड+ ष्यञ्	गुणवचन-ब्राह्मणादिभ्यः कर्मणि च (5.1.123)
123.	✸ **जिह्वामूलीयम्** (जिह्वामूले भवम्)	जिह्वा के मूल में होने वाला	जिह्वामूल + छ	जिह्वामूलाङ्गुलेश्छः (4.3.62)
124.	✸ **ज्ञातेयम्** (ज्ञातेर्भावः कर्म वा)	बन्धुता या बन्धु का कर्म	ज्ञाति + ढक्	कपि- ज्ञात्योर्ढक् (5.1.126)
125.	✸ **ज्यायान्** (अयम् अनयोः अतिशयेन प्रशस्यः)	दोनों में अधिक प्रशंसनीय	प्रशस्य (ज्य) + ईयसुँन्	द्विवचनविभज्योपपदे तरबीयसुँनौ (5.3.57)
126.	✸ **ज्येष्ठः** (सर्वे इमे प्रशस्याः)	सबसे बढ़कर प्रशंसनीय	प्रशस्य (ज्य) + इष्ठन्	अतिशायने तमबिष्ठनौ (5.3.55)
127.	✸ **तत्र** (तस्मिन्)	उसमें, उस पर, वहाँ पर	तद् + त्रल्	सप्तम्यास्त्रल् (5.3.10)

क्र.	शब्द	अर्थ	तद्धित प्रत्यय	सूत्र
128.	✹ **तथा** (तेन प्रकारेण)	उस प्रकार वाला, वैसा	तद् + थाल्	प्रकारवचने थाल् (5.3.23)
129.	✹ **तदा** (तस्मिन् काले)	उस समय में, तब	तद् + दा	सर्वैकाऽन्य-किं-यत् - तदः काले दा (5.3.15)
130.	✹ **तदीयः** (तस्य अयम्)	उसका यह	तद् + छ	वृद्धाच्छः (4.2.113)
131.	✹ **तर्हि** (तस्मिन् अनद्यतने काले	उस अनद्यतन काल में, तब	तद् + र्हिल्	अनद्यतने र्हिलन्यतरस्याम् (5.3.21)
132.	✹ **तारकितम्** (तारकाः संजाता अस्य)	तारे उत्पन्न हो गये हैं इसके, ऐसा आकाश	तारका + इतच्	तदस्य सञ्जातं तारकादिभ्य इतच् (5.2.36)
133.	✹ **तावकः** (तव अयम्)	तेरा यह	युष्मद् + अण्	युष्मदस्मदोरन्यतरस्यां खञ् च (4.3.1)
134.	✹ **तावकीनः** (तव अयम्)	तेरा यह	युष्मद् + खञ्	युष्मदस्मदोरन्यतरस्यां खञ् च (4.3.1)
135.	✹ **तावान्** (तत् परिमाणम् अस्य)	जो परिमाण है उसका अर्थात् उतना	तद् +वतुँप्	यत्तदेतेभ्यः परिमाणे वतुँप् (5.2.39)
136.	✹ **तुल्यम्** (तुलया सम्मितम्)	तराजू द्वारा परिच्छिन्न तोला गया	तुला+ यत्	नौ-वयो-धर्म-विष-मूल-मूल-सीता-तुलाभ्यस्तार्य-तुल्य-प्राप्य-वध्याऽऽनाम्य-सम-समित- संमितेषु (4.4.91)
137.	✹ **तृतीयः** (त्रयाणां पूरणः)	तीसरा	त्रि+ तीय	त्रेः सम्प्रसारणं च (5.2.55)
138.	✹ **त्रयम्** (त्रयोऽवयवा अस्य)	तीन अवयव हैं इसके	त्रि+तयप्	संख्याया अवयवे तयप् (5.2.42)
139.	✹ **त्रितयम्** (त्रयं त्रितयम्)	तीन अवयवों वाला अवयवी	त्रि + तयप्	संख्याया अवयवे तयप् (5.2.42)
140.	✹ **त्रिंशत्** (त्रयो दशतः परिमाणमस्य सङ्घस्येति त्रिंशत्)	तीस	त्रिदशत् + शत्	पङ्क्ति-विंशति-त्रिंशच्-चत्वारिंशत्-पञ्चाशत्-षष्टि-सप्तत्यशीति-नवति-शतम् (5.1.58)

क्र.	शब्द	अर्थ	तद्धित प्रत्यय	सूत्र
141.	✸ **त्वचिष्ठः** (अयम् एषाम् अतिशयेन त्वग्वान्)	सब त्वचा वालों में अधिक त्वचावान्	त्वच् + मतुप्	तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप् (5.2.94)
142.	✸ **त्वदीयः** (तव अयम्)	तेरा यह	युष्मद् + छ	युष्मदस्मदोरन्यतरस्यां खञ् च (4.3.1)
143.	✸ **दण्डिकः** (दण्डोऽस्यास्तीति)	दण्ड वाला	दण्ड+ ठन्	अत इनिँ-ठनौ (5.2.115)
144.	✸ **दण्डी** (दण्डोऽस्यास्तीति)	दण्ड वाला	दण्ड + इनि	अत इनिँ-ठनौ (5.2.115)
145.	✸ **दण्ड्यः** (दण्डम् अर्हति)	सजा पाने के योग्य व्यक्ति	दण्ड + यत्	दण्डादिभ्यो यत् (5.1.65)
146.	✸ **दन्तुरः** (उन्नता दन्ताः सन्ति अस्य)	उन्नत दाँतों वाला	दन्त + उरच्	दन्त उन्नत उरच् (5.2.106)
147.	✸ **दन्त्यम्** (दन्तेभ्यो हितम्)	दाँतों के लिए हितकारी मञ्जन आदि	दन्त+ यत्	शरीरावयवाद् यत् (5.1.6)
148.	✸ **दाक्षिः** (दक्षस्य अपत्यम्)	दक्ष की सन्तान	दक्ष + इञ्	अत इञ् (4.1.95)
149.	✸ **दाक्षिणात्यः** (दक्षिणा जातो भवो वा)	दक्षिण दिशा में उत्पन्न हुआ	दक्षिणा+ त्यक्	दक्षिणा- पश्चात् - पुरसस्त्यक् (4.2.97)
150.	✸ **दाधिकम्** (दध्ना संस्कृतम्)	दही से संस्कार किया हुआ	दधि+ ठक्	संस्कृतम् (4.4.3)
151.	✸ **दाधिकः** (दध्ना चरति)	दही के साथ खाने वाला	दधि+ ठक्	चरति (4.4.8)
152.	✸ **दार्ढ्यम्** (दृढस्य भावः)	दृढ़पना, दृढ़ता	दृढ + ष्यञ्	वर्ण-दृढादिभ्यः ष्यञ् च (5.1.122)
153.	✸ **दार्दुरिकः** (दर्दुरं करोति)	दर्दुर को बनाने वाला कुम्भकार	दर्दुर+ ठक्	शब्ददर्दुरं करोति (4.4.34)
154.	✸ **दार्षदाः** (दृषदि पिष्टा)	पत्थर पर पीसे गये सत्तू	दृषद् + अण्	शेषे (4.2.91)
155.	✸ **दिवाभूता** (अदिवा दिवा सम्पद्यमाना भूता)	जो दिन न थी पर दिन बन गयी ऐसी रात	दिवा+ च्विँ	कृभ्वस्तियोगे सम्पद्यकर्तरि च्विँः (5.4.50)
156.	✸ **दिव्यम्** (दिवि जातं भवं वा)	स्वर्ग में पैदा हुआ या होने वाला	दिव् + यत्	द्युप्रागपागुदक्प्रतीचो यत् (4.2.100)

क्र.	शब्द	अर्थ	तद्धित प्रत्यय	सूत्र
157.	✹ **दिश्यम्** (दिशि भवम्)	दिशा में होने वाला	दिश् + यत्	दिगादिभ्यो यत् (4.3.54)
158.	✹ **देवदत्तमयम्** (देवदत्ताद् आगतम्)	देवदत्त से आया हुआ	देवदत्त+ मयट्	मयट् च (4.3.82)
159.	✹ **दैत्यः** (दितेः अपत्यम्)	दिति की सन्तान	दिति+ ण्य	दित्यदित्यादित्यपत्युत्तर-पदाण्ण्यः (4.1.85)
160.	✹ **दैवतः** (देवता एव)	देवता	देवता+ अण्	प्रज्ञादिभ्यश्च (5.4.38)
161.	✹ **दैवदत्तम्** (देवदत्ताद् आगतम्)	देवदत्त से आया हुआ	देवदत्त + अण्	तत आगतः (4.3.74)
162.	✹ **दैवदत्तः** (देवदत्तस्य अयम्)	देवदत्त का यह	देवदत्त+ अण्	तस्येदम् (4.3.120)
163.	✹ **दैवम्** (देवस्य अपत्यादि)	देव की सन्तान आदि	देव+ अञ्	देवाद् यञञौ (वा0)
164.	✹ **दैव्यम्** (देवस्य अपत्यादि)	देव की सन्तान आदि	देव +यञ्	देवाद् यञञौ (वा0)
165.	✹ **दोषातनम्** (दोषा भवम्)	रात्रि में होने वाला	दोषा+ ट्यु/ ट्युल्	सायं-चिरं- प्राह्णे-प्रगेऽव्ययेभ्यष्ट्युट्युलौ तुँट् च (4.3.23)
166.	✹ **दोषाभूतम्** (अदोषा दोषा सम्पद्यमानं भूतम्)	जो रात्रि न था परन्तु रात्रि हो गया, ऐसा दिन	दोषा + च्विँ	कृभ्वस्तियोगे सम्पद्यकर्तरि च्विँः (5.4.50)
167.	✹ **दौहित्रः** (दुहितुरनन्तरापत्यम्)	लड़की की सन्तान अर्थात् धेवता	दुहितृ + अञ्	अनृष्यानन्तर्ये बिदादिभ्योऽञ् (4.1.104)
168.	✹ **द्वयम्** (अवयवौ अस्य)	दो अवयव हैं इसके अर्थात् दो अवयवों वाला अवयवी	द्वि+ तयप्	संख्याया अवयवे तयप् (5.2.42)
169.	✹ **द्वितयम्** (द्वौ अवयवौ अस्य)	दो अवयवों वाला अवयवी	द्वि+ तयप्	संख्याया अवयवे तयप् (5.2.42)
170.	✹ **द्वितीयः** (द्वयोः पूरणः)	दूसरा	द्वि+ तीय	द्वेस्तीयः (5.2.54)
171.	✹ **द्वैमातुरः** (द्वयोर्मात्रोरपत्यम्)	दो माताओं की सन्तान	द्विमातृ + अण्	मातुरुत्संख्यासम्भद्रपूर्वायाः (4.1.115)

क्र.	शब्द	अर्थ	तद्धित प्रत्यय	सूत्र
172.	✹ **धर्म्यम्** (धर्मेण प्राप्यम्)	धर्म के द्वारा प्राप्त किये जाने वाले सुख	धर्म + यत्	नौ-वयो- धर्म-विष- मूल-मूल-सीता-तुलाभ्यस्तार्य-तुल्य-प्राप्य-वध्याऽऽनाम्य-सम-समित-संमितेषु (4.4.91)
173.	✹ **धानुष्कः** (धनुः प्रहरणम् अस्य)	जिसका हथियार धनुष है, ऐसा पुरुष	धनुष् + ठक्	प्रहरणम् (4.4.57)
174.	✹ **धार्मिकः** (धर्मं चरति)	धर्म का आचरण करने वाला	धर्म + ठक्	धर्मं चरति (4.4.41)
175.	✹ **धुर्यः** (धुरं वहति)	धुर को वहन करने वाले बैल, घोड़े	धुर् + यत्	धुरो यड्ढकौ (4.4.77)
176.	✹ **धैनुकम्** (धेनूनां समूहः)	गौओं का समूह	धेनु + ठक्	अचित्त-हस्ति-धेनोष्ठक् (4.2.46)
177.	✹ **धौरेयः** (धुरं वहति)	धुर् को वहन करने वाले बैल, घोड़े आदि	धुर् + ढक्	धुरो यड्ढकौ (4.4.77)
178.	✹ **नड्वलः** (नडाः सन्ति अस्मिन्)	नडतृण जिसमें हैं, ऐसा प्रदेश	नड+ ड्वलच्	नड-शादाड् ड्वलच् (4.2.87)
179.	✹ **नड्वान्** (नडाः सन्ति अस्मिन्)	नडतृण जिसमें हैं, ऐसा देश	नड+ ड्मतुँप्	कुमुद-नड-वेतसेभ्यो ड्मतुँप् (4.2.86)
180.	✹ **नभ्यः** (नाभये हितः नभ्यः अक्षः)	रथ के पहिया के दण्ड लिए हितकर	नाभि + यत्	उगवादिभ्यो यत् (5.1.2)
181.	✹ **नवतिः** (नव दशतः परिमाणमस्य संघस्य इति)	नब्बे	नवदशत् + ति	पंक्ति-विंशति- त्रिंशच् -चत्वारिंशत् -पञ्चाशत्-षष्टि -सप्तत्यशीति- नवति- शतम् (5.1.58)
182.	✹ **नस्यम्** (नासिकायै हितम्)	नासिका के लिए हितकर	नासिका + यत्	शरीरावयवाद् यत् (5.1.6)
183.	✹ **नाकुलः** (नकुलस्य अपत्यम्)	नकुल की सन्तान	नकुल + अण्	ऋष्यन्धकवृष्णिकुरुभ्यश्च (4.1.114)

क्र.	शब्द	अर्थ	तद्धित प्रत्यय	सूत्र
184.	✹ **नादेयम्** (नद्यां जातं भवं वा)	नदी में होने वाला	नदी + ढक्	नद्यादिभ्यो ढक् (4.2.96)
185.	✹ **नाव्यम्** (नावा तार्यम्)	नौका द्वारा पार किया जा सकनें वाला नदी आदि का जल	नौ + यत्	नौ-वयो-धर्म-विष-मूल-मूल-सीता-तुलाभ्यस्तार्य-तुल्य-प्राप्य-वध्याऽऽनाम्यसम-समित-संमितेषु (4.4.91)
186.	✹ **नित्यः** (नियतम् = सर्वकालेषु भवः)	सब कालों में अर्थात् हमेशा रहने वाला	नि+ त्यप्	त्यब्नेर्ध्रुव इति वक्तव्यम् (वा0)
187.	✹ **नैकटिकः** (निकटे वसति)	निकट रहने वाला	निकट + ठक्	निकटे वसति (4.4.73)
188.	✹ **नैषध्यः** (निषधानां राजा)	निषध देश का राजा	निषध + ण्य	क्षत्त्रियसमानशब्दाज्जन-पदात् तस्य राजन्यपत्यवत् (वा0)
189.	✹ **पङ्क्तिः** (पञ्च परिमाणम् अस्य)	पाँच पाद परिमाण हैं, जिसका ऐसा छन्द	पञ्चन् + ति	पंक्ति-विंशति-त्रिंशच्-चत्वारिंशत् पञ्चाशत्-षष्टि-सप्तत्यशीति-नवति शतम् (5.1.58)
190.	✹ **पचतिकल्पम्** (ईषदूनं पचति)	कुछ कम पकाता है।	पचति + कल्पप्	ईषदसमाप्तौ कल्पब्देश्यदेशीयरः (5.3.67)
191.	✹ **पचतिदेशीयम्** (ईषदूनं पचति)	कुछ कम पकाता है।	पचति + देशीयर्	ईषदसमाप्तौ कल्पब्देश्यदेशीयरः (5.3.67)
192.	✹ **पचतिदेश्यम्**	कुछ कम पकाता है।	पचति + देश्य	ईषदसमाप्तौ कल्पब्देश्य देशीयरः (5.3.67)
193.	✹ **पञ्चतयम्** (पञ्च अवयवा अस्य)	पाँच अवयव हैं इसके	पञ्चन् + तयप्	संख्याया अवयवे तयप् (5.2.42)
194.	✹ **पञ्चमः** (पञ्चानां पूरणः)	पाँचवाँ	पञ्चन् + डट्	तस्य पूरणे डट् (5.2.48)
195.	✹ **पाञ्चालः** (पञ्चालस्य अपत्यम्)	पञ्चाल की सन्तान	पञ्चाल + अञ्	जनपदशब्दात् क्षत्रियादञ् (4.1.166)

क्र.	शब्द	अर्थ	तद्धित प्रत्यय	सूत्र
196.	✸ **पञ्चाशत्** (पञ्च दशतः परिमाणमस्य सङ्घस्य इति)	पचास	पञ्चदशत् + शत्	पंक्ति-विंशति-त्रिंशच्-चत्वारिंशत् - पञ्चाशत् - षष्टि-सप्तत्यशीति- नवति-शतम् (5.1.58)
197.	✸ **पण्डितः** (पण्डा सञ्जाता अस्य)	सत्-असत् का विवेक करने वाली बुद्धि उत्पन्न हो गयी है जिसको, ऐसा पुरुष	पण्डा+ इतच्	तदस्य सञ्जातं तारकादिभ्य इतच् (5.2.36)
198.	✸ **पदकः** (पदमधीते वेत्ति वा)	वैदिक पदपाठ को पढ़ने या जानने वाला	पद + वुन्	क्रमादिभ्यो वुन् (4.2.60)
199.	✸ **पयस्यम्** (पयसो विकारः)	दूध का विकार दही, पनीर आदि	पयस् + यत्	गोपयसोर्यत् (4.3.158)
200.	✸ **परितः**	सब ओर	परि + तसिँल्	पर्यभिभ्यां च (5.3.9)
201.	✸ **पाञ्चालः** (पञ्चालस्य अपत्यम्)	पञ्चाल का पुत्र	पञ्चाल + अञ्	जनपदशब्दात् क्षत्रियादञ् (4.1.166)
202.	✸ **पाणिनीयम्** (पाणिनिना प्रोक्तम्)	पाणिनि द्वारा प्रथम प्रकाशित	पाणिनि + छ	वृद्धाच्छः (4.2.113)
203.	✸ **पाण्ड्यः** (पाण्डोः अपत्यम्)	पाण्डु की सन्तान	पाण्डु + ड्यण्	पाण्डोर्ड्यण् (वा0)
204.	✸ **पामनः** (पाम अस्ति अस्य इति)	गीली खुजली वाला व्यक्ति	पामन् + न	लोमादि- पामादि- पिच्छादिभ्यः शनेलचः (5.2.100)
205.	✸ **पामवान्** (पाम अस्ति अस्य इति)	गीली खुजली वाला व्यक्ति	पामन् + मतुँप्	तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुँप् (5.2.94)
206.	✸ **पारावारीणः** (पारावारे भवो जातो वा)	पार, अवार दोनों स्थानों में होने वाला	पारावार+ख	राष्ट्राऽवारपाराद् घ-खौ (4.2.92)
207.	✸ **पारीणः** (पारे भवो जातो वा)	पार तट पर होने वाला	पार + ख	राष्ट्राऽवारपाराद् घ-खौ (4.2.92)

क्र.	शब्द	अर्थ	तद्धित प्रत्यय	सूत्र
208.	◆ **पार्थिवः** (पृथिव्या ईश्वरः)	पृथ्वी का स्वामी अर्थात् राजा	पृथिवी+ अञ्	तस्येश्वरः (5.1.41)
209.	◆ **पार्श्वतः** (पार्श्वे)	पास में	पार्श्व + तसिँ	आद्यादिभ्यस्तसेरुप-संख्यानम् (वा0)
210.	◆ **पाशुपतम्** (पशुपतिः देवता अस्य इति)	शिव जिसका देवता है, ऐसी हविः आदि	पशुपति+ अण्	अश्वपत्यादिभ्यश्च (4.1.84)
211.	◆ **पाश्चात्त्यः** (पश्चात् जातो भवो वा)	पीछे या पश्चिम दिशा में पैदा हुआ	पश्चात् + त्यक्	दक्षिणा-पश्चात् - पुरसस्त्यक् (4.2.97)
212.	◆ **पिच्छिलः** (पिच्छम् अस्ति अस्य इति)	मोर पंख वाला	पिच्छ+ इलच्	लोमादि-पामादि-पिच्छादिभ्यः शनेलचः (5.2.100)
213.	◆ **पिच्छवान्** (पिच्छम् अस्ति अस्य इति)	मोर पंख वाला	पिच्छ+ मतुँप्	तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुँप् (5.2.94)
214.	◆ **पित्र्यम्** (पितरो देवता अस्येति)	पितर जिसके देवता हैं ऐसी हविः आदि	पितृ + यत्	वाय्वृतुपित्रुषसो यत् (4.2.30)
215.	◆ **पूर्वी** (पूर्वं कृतम् अनेन)	पहले कर चुका व्यक्ति	पूर्व + इनिँ	पूर्वादिनिँः (5.2.86)
216.	◆ **पैतामहकः** (पितामहात् आगतः)	दादा से आया हुआ	पितामह + वुञ्	विद्या-योनि-सम्बन्धेभ्यो वुञ् (4.3.77)
217.	◆ **पैप्पलम्** (पिप्पलस्य अवयवो विकारो वा)	पीपल का विकार, भस्म राख आदि	पिप्पल+अण्	अवयवे च प्राण्योषधि वृक्षेभ्यः (4.3.133)
218.	◆ **पौत्रः** (पुत्रस्यानन्तरापत्यम्)	पुत्र की सन्तान अर्थात् पोता	पुत्र + अञ्	अनृष्यानन्तर्ये बिदादि-भ्योऽञ् (4.1.104)
219.	◆ **पौनः पुनिकः** (पुनः पुनर्भवः)	बार बार होने वाला	पुनः पुनर् + ठञ्	कालाट्ठञ् (4.3.11)
220.	◆ **पौरवः** (पूरोरपत्यम्)	पूरु की सन्तान	पूरु + अण्	पूरोरण् वक्तव्यः (वा0)
221.	◆ **पौरस्त्यः** (पुरो जातो भवो वा)	पहले या पूर्व में पैदा हुआ	पुरस् + त्यक्	दक्षिणा-पश्चात् - पुरसस्त्यक् (4.2.97)

क्र.	शब्द	अर्थ	तद्धित प्रत्यय	सूत्र
222.	✹ **पौरोहित्यम्** (पुरोहितस्य भावः कर्म वा)	पुरोहितपना या पुरोहिताई	पुरोहित+ यक्	पत्यन्तपुरोहितादिभ्यो यक् (5.1.127)
223.	✹ **पौषम्** (पुष्येण युक्तम्)	ऐसा दिन जिसमें चन्द्रमा पुष्यनक्षत्र से युक्त हो	पुस्+ अण्	नक्षत्रेण युक्तः कालः (4.2.3)
224.	✹ **पौंस्नम्** (पुंसो भावः)	पुरुषपना, मर्दानगी	पुंस+स्नञ्	स्त्रीपुंसाभ्यां नञ्स्नञौ भवनात् (4.1.87)
225.	✹ **प्रगेतनः** (प्रगे भवो जातो वा)	प्रातः काल में होने वाला	प्रग+ ट्यु / ट्युल्	सायं- चिरं-प्राह्णे-प्रगेऽव्यये-भ्यष्ट्युट्युलौ तुट् च (4.3.23)
226.	✹ **प्रथिमा** (पृथोर्भावः)	विस्तृतपना, विस्तार विशालता, महत्ता	पृथु+इमनिँच्	पृथ्वादिभ्य इमनिँज्वा (5.1.121)
227.	✹ **प्राजापत्यः** (प्रजापतेः अपत्यम्)	प्रजापति की सन्तान	प्रजापति + ण्य	दित्यदित्यादित्यपत्युत्तरपदाण्ण्यः (4.1.85)
228.	✹ **प्राज्ञः** (प्रज्ञ एव)	जानकार, बुद्धिमान्, ज्ञाता	प्रज्ञ+ अण्	प्रज्ञादिभ्यश्च (5.4.38)
229.	✹ **प्रावृषिकः** (प्रावृषि जातः)	वर्षा ऋतु में होने वाला मेघ आदि	प्रावृष् + ठप्	प्रावृषष्ठप् (4.3.26)
230.	✹ **प्रावृषेण्यः** (प्रावृषि भवः)	वर्षा ऋतु में पैदा हुआ	प्रावृष् + एण्य	प्रावृष एण्यः (4.3.17)
231.	✹ **प्रास्थिकम्** (प्रस्थेन क्रीतम्)	प्रस्थभर वजन की वस्तु देकर खरीदी हुई वस्तु	प्रस्थ + ठञ्	तेन क्रीतम् (5.1.36)
232.	✹ **प्राह्णेतनः** (प्राह्णे भवो जातो वा)	पूर्वाह्ण में होने वाला या पैदा हुआ	प्राह्ण+ट्यु / ट्युल्	सायं-चिरं-प्राह्णे-प्रगेऽव्ययेभ्यष्ट्युट्युलौ तुँट् च (4.3.23)
233.	✹ **बन्धुता** (बन्धूनां समूहः)	बन्धुओं का समूह	बन्धु+ तल् बन्धुत + टाप्	ग्राम-जन-बन्धुभ्यस्तल् (4.2.42) अजाद्यतष्टाप् (4.1.4)
234.	✹ **बहुतः** (बहुभ्यः)	बहुतों से	बहु+ तसिँल्	पञ्चम्यास्तसिँल् (5.3.7)

क्र.	शब्द	अर्थ	तद्धित प्रत्यय	सूत्र
235.	✹ **बहुपटुः** (ईषदूनः पटुः)	कुछ कम चतुर	पटु + बहुच् बहुच् + पट	विभाषा सुँपो बहुच् पुरस्तात्तु (5.3.68)
236.	✹ **बहुशः** (बहूनि धनानि ददाति)	बहुत धन देता है।	बहु + शस्	बह्वल्पार्थाच्छस् कारकादन्यतरस्याम् (5.4.42)
237.	✹ **बादरिकः** (बदराणि उञ्छति इति)	बेरों की चुन चुन कर बटोरने वाला	बदर + ठक्	उञ्छति (4.4.32)
238.	✹ **बान्धवः** (बन्धुः एव)	बन्धु, सम्बन्धी	बन्धु + अण्	प्रज्ञादिभ्यश्च (5.4.38)
239.	✹ **बार्हस्पत्यम्** (बृहस्पतिः देवता अस्य इति)	बृहस्पति जिसका देवता है ऐसी हविः आदि	बृहस्पति + ण्य	दित्यदित्यादित्यपत्युत्तरपदाण्ण्यः (4.1.85)
240.	✹ **बाहविः** (बाहोः अपत्यम्)	बाहु नामक व्यक्ति की सन्तान	बाहु+ इञ्	बाह्वादिभ्यश्च (4.1.96)
241.	✹ **बाहीकः** (बहिर्भवः)	बाहर में होने वाला	बहिस् + ईकक्	ईकक् च (वा0)
242.	✹ **बाह्यः** (बहिर्भवः)	बाहरी	बहिस् + यञ्	बहिषष्टिलोपो यञ् च (वा0)
243.	✹ **बैदः** (बिदस्य गोत्र अपत्यम्)	बिद नामक ऋषि की पौत्र आदि सन्तति	बिद+ अञ्	अनृष्यानन्तर्ये बिदादिभ्योऽञ् (4.1.104)
245.	✹ **ब्राह्मण्यम्** (ब्राह्मणस्य भावः कर्म वा)	ब्राह्मण का भाव, ब्राह्मणपना	ब्राह्मण + ष्यञ्	गुणवचन-ब्राह्मणादिभ्यः कर्मणि च (5.1.123)
246.	✹ **भाद्रमातुरः** (भद्रमातुः अपत्यम्)	भली माता का पुत्र	भद्रमातृ + अण्	मातुरुत्संख्यासम्भद्रपूर्वायाः (4.1.115)
247.	✹ **भास्मनः** (भस्मनो विकारः)	भस्म से बना कोई पदार्थ	भस्मन् + अण्	तस्य विकारः (4.3.132)
248.	✹ **भूमा** (बहोर्भावः)	बहुतपना, बहुतायत	बहु+ इमनिच्	पृथ्वादिभ्य इमनिज्वा (5.1.121)
249.	✹ **भूयान्** (अयम् अनयोः अतिशयेन बहुः)	दो में अधिक विपुल या विशाल	बहु+ ईयसुँन्	द्विवचनविभज्योपपदे तरबीयसुँनौ (5.3.57)
250.	✹ **भूयिष्ठः** (अयम् एषाम् अतिशयेन बहुः)	सबमें अधिक विपुल या विशाल	बहु+ इष्ठन्	अतिशायने तमबिष्ठनौ (5.3.55)

क्र.	शब्द	अर्थ	तद्धित प्रत्यय	सूत्र
251.	✸ **भैक्षम्** (भिक्षाणां समूहः)	भिक्षाओं का समूह या ढेर	भिक्षा + अण्	भिक्षादिभ्योऽण् (4.2.37)
252.	✸ **भ्राष्ट्राः** (भ्राष्ट्रेषु संस्कृता भक्षा भ्राष्ट्रा यवाः)	भट्ठी में भूनकर संस्कृत किये खाने योग्य जौ	भ्राष्ट्र + अण्	संस्कृतं भक्षाः (4.2.15)
253.	✸ **मणिवः** (मणिः अस्ति अस्य)	मणिवाला सर्पविशेष	मणि+व	अन्येभ्योऽपि दृश्यते (वा0)
254.	✸ **मदीयः** (मम अयम्)	मेरा यह, मुझसे सम्बन्ध रखने वाला	अस्मद् + छ	युष्मदस्मदोरन्यतरस्यां खञ् च (4.3.1)
255.	✸ **मध्यतः** (मध्ये)	बीच में	मध्य + तसिँ	आद्यादिभ्यस्तसेरुपसंख्यानम् (वा0)
256.	✸ **मध्यमः** (मध्ये भवः)	मध्य में होने वाला	मध्य + म	मध्यान्मः (4.3.8)
257.	✸ **मातृभोगीणः** (मातृभोगाय हितः)	माता के शरीर के लिए हितकर आहार आदि	मातृभोग+ ख	आत्मन्-विश्वजन-भोगोत्तरपदात् खः (5.1.9)
258.	✸ **मामकीनः** (मम अयम्)	मेरा यह	अस्मद् + खञ्	युष्मदस्मदोरन्यतरस्यां खञ् च (4.3.1)
259.	✸ **मामकः** (मम अयम्)	मेरा यह	अस्मद् + अण्	युष्मदस्मदोरन्यतरस्यां खञ् च (4.3.1)
260.	✸ **मायावी** (माया अस्ति अस्य)	मायावाला, कपटी	माया+ विनिँ	अस्- माया-मेधा-स्रजो विनिँः (5.2.121)
261.	✸ **मायूरः** (मयूरस्य अवयवो विकारो वा)	मोर के टांग, सिर, गरदन आदि अवयव	मयूर+ अञ्	प्राणिरजतादिभ्योऽञ् (4.3.152)
262.	✸ **मार्त्तिकः** (मृत्तिकाया विकारः)	मिट्टी से बना कोई पदार्थ	मृत्तिका + अण्	तस्य विकारः (4.3.132)
263.	✸ **मार्दङ्गिकः** (मृदङ्गवादनं शिल्पम् अस्य)	मृदङ्ग बजाने में विशेष नैपुण्य रखने वाला व्यक्ति	मृदङ्ग + ठक्	शिल्पम् (4.4.55)
264.	✸ **मालीयः** (मालायां भवः)	माला में होने वाला, सूत, तागा आदि	माला + छ	वृद्धाच्छः (4.3.113)
265.	✸ **मासिकम्** (मासे भवं जातं वा)	महीने में होने वाला या पैदा होने वाला	मास+ ठञ्	कालाट्ठञ् (4.3.11)

क्र.	शब्द	अर्थ	तद्धित प्रत्यय	सूत्र
266.	✸ **माहेयम्** (मह्यां जातं भवं वा)	पृथ्वी में पैदा हुआ या पृथ्वी पर होने वाला	मही + ढक्	नद्यादिभ्यो ढक् (4.2.96)
267.	✸ **मीमांसकः** (मीमांसाम् अधीते वेद वा)	मीमांसाशास्त्र को पढ़ने या जानने वाला	मीमांसा + वुन्	क्रमादिभ्यो वुन् (4.2.60)
268.	✸ **मूल्यम्** (मूलेन आनाम्यम्)	मूल्य- मूल (पूंजी) द्वारा आनाम्य = अभिभवनीय	मूल + यत्	नौ -वयो- धर्म -विष- मूल-मूल-सीता-तुलाभ्यस्तार्य-तुल्य-प्राप्य-वध्याऽऽनाम्य-सम-समित-संमितेषु (4.4.91)
269.	✸ **मेधावी** (मेधा अस्य अस्ति)	बुद्धिमान्	मेधा+ विनिँ	अस्-माया-मेधा-स्रजो विनिँः (5.2.121)
270.	✸ **मौद्गः** (मुद्गानां विकारःमौदगः सूपः)	मूँगों का विकार अर्थात् मूंग की दाल	मुद्ग+ अण्	बिल्वादिभ्योऽण् (4.3.134)
271.	✸ **मौद्गीनम्** (मुद्गानां भवनं क्षेत्रम्)	मूँगधान्य का उत्पत्तिस्थान खेत	मुद्ग+ खञ्	धान्यानां भवने क्षेत्रे खञ् (5.2.1)
272.	✸ **मौर्वम्** (मूर्वाया अवयवो विकारो वा)	मूर्वा नामक ओषधि का अवयव काण्ड, मूल आदि अथवा मूर्वा का विकार भस्म राख आदि	मूर्वा+ अण्	अवयवे च प्राण्योषधिवृक्षेभ्यः (4.3.133)
273.	✸ **यतः** (यस्मात्)	जिससे, जिस कारण से	यद् + तसिँल्	पञ्चम्यास्तसिँल् (5.3.7)
274.	✸ **यत्र** (यस्मिन्)	जिसमें, जिस पर, जहाँ पर	यद् + त्रल्	सप्तम्यास्त्रल् (5.3.10)
275.	✸ **यथा** (येन प्रकारेण)	जिस विशेष से विशिष्ट, जिस प्रकार वाला, जैसा	यद् + थाल्	प्रकारवचने थाल् (5.3.23)
276.	✸ **यदा** (यस्मिन् काले)	जिस काल में, जब	यद् + दा	सर्वैकाऽन्य-किं-यत्-तदः काले दा (5.3.15)
277.	✸ **यर्हि** (यस्मिन् अनद्यतने काले)	जिस अनद्यतन काल में, जब	यद् + र्हिल्	अनद्यतने र्हिलन्यतरस्याम् (5.3.21)
278.	✸ **यशस्वी** (यशोऽस्यास्ति)	यशवाला, कीर्तिवाला, प्रसिद्ध	यशस् + विनिँ	अस् -माया-मेधा-स्रजो-विनिँः (5.2.121)

क्र.	शब्द	अर्थ	तद्धित प्रत्यय	सूत्र
279.	✸ **यावान्** (यत् परिमाणम् अस्य)	जो परिमाण है इस का अर्थात् जितना	यद् + वतुप्	यत्तदेतेभ्यः परिमाणे वतुँप् (5.2.39)
280.	✸ **युग्यः** (युगं वहति)	जुआ (युग) को खींचने वाले बैल	युग+ यत्	तद्वहति रथ-युग-प्रासङ्गम् (4.4.76)
281.	✸ **युवकयोः** (अज्ञातयोर्युवयोः)	अज्ञात तुम दो का, अज्ञात तुम दो में	युष्मद् + अकँच्	अव्ययसर्वनाम्नामकँच् प्राक्टेः (5.3.71)
282.	✸ **युष्मकाभिः** (अज्ञातैः युष्माभिः)	अज्ञात तुम सब से	युष्मद् + अकँच्	अव्ययसर्वनाम्नामकँच् प्राक्टेः (5.3.71)
283.	✸ **युष्मदीयः** (युवयोः युष्माकं वा अयम्)	तुम दोनों का अथवा तुम सब का यह	युष्मद् + छ	युष्मदस्मदोरन्यतरस्यां खञ् च (4.3.1)
284.	✸ **यौवनम्** (युवतीनां समूहः)	युवतियों का समूह	युवन् + अण्	भिक्षादिभ्योऽण् (4.2.37)
285.	✸ **यौष्माकः** (युवयोर्युष्माकं वाऽयम्)	तुम दोनों का अथवा तुम सब का यह	युष्मद् + अण्	युष्मदस्मदोरन्यतरस्याम् खञ् च (4.3.1)
286.	✸ **यौष्माकीणः** (युवयोर्युष्माकं वाऽयम्)	तुम दो का, तुम सब का यह	युष्मद् + खञ्	युष्मदस्मदोरन्यतरस्यां खञ् च (4.3.1)
287.	✸ **रथ्यः** (रथं वहति)	रथ को खींचकर आगे ले जाने वाला घोड़ा	रथ+ यत्	तद्वहति रथ-युग- प्रासङ्गम् (4.4.76)
288.	✸ **राजनः** (राज्ञोऽपत्यम्)	राजा की सन्तान जो क्षत्रिय जाति की नहीं	राजन् + अण्	तस्याऽपत्यम् (4.1.92)
289.	✸ **राष्ट्रियः** (राष्ट्रे भवो जातो वा)	राष्ट्र में होने वाला, या पैदा हुआ	राष्ट्र+ घ	राष्ट्राऽवारपाराद् घ-खौ (4.2.92)
290.	✸ **लक्ष्मणः** (लक्ष्मीः अस्ति अस्य)	धनवान्	लक्ष्मी+ न	लोमादि- पामादि- पिच्छादिभ्यः शनेलचः (5.2.100)
291.	✸ **लघिष्ठः** (अयम् एषाम् अतिशयेन लघुः)	सबसे अधिक छोटा वा हल्का	लघु + इष्ठन्	अतिशायने तमबिष्ठनौ (5.3.55)

क्र.	शब्द	अर्थ	तद्धित प्रत्यय	सूत्र
292.	✸ **लघीयान्** (अयम् अनयोः अतिशयेन लघुः)	इन दोनों में अधिक छोटा	लघु+ ईयसुँन्	द्विवचनविभज्योपपदे तरबीयसुँनौ (5.3.57)
293.	✸ **लघुतमः** (अयम् एषाम् अतिशयेन लघुः)	सबसे अधिक छोटा	लघु+ तमप्	अतिशायने तमबिष्ठनौ (5.3.55)
294.	✸ **लघुतरः** (अयम् अनयोः अतिशयेन लघुः)	इन दोनों में अधिक छोटा	लघु+ तरप्	द्विवचनविभज्योपपदे तरबीय सुँनौ (5.3.57)
295.	✸ **लोमशः** (लोमानि सन्ति अस्य इति)	लोम हैं इसके अर्थात् लोमों वाला व्यक्ति	लोमन् + श	लोमादि-पामादि-पिच्छादिभ्यः शनेलचः (5.2.100)
296.	✸ **लोमवान्** (लोमानि सन्ति अस्य इति)	लोमों वाला व्यक्ति	लोमन् + मतुँप्	तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुँप् (5.2.94)
297.	✸ **वत्सीयः** (वत्सेभ्यो हितः)	बछड़ों के लिए हितकारी ग्वाला	वत्स+ छ	तस्मै हितम् (5.1.5)
298.	✸ **वध्यः** (वधम् अर्हति इति)	मृत्युदण्ड दिये जाने योग्य	वध+ यत्	दण्डादिभ्यो यत् (5.1.65)
299.	✸ **वयस्यः** (वयसा तुल्यः)	आयु में समान मित्र को	वयस् + यत्	नौ -वयो-धर्म-विष-मूल-मूल-सीता-तुलाभ्यस्तार्य तुल्य-प्राप्य-वध्याऽऽनाम्य-सम-समित-संमितेषु (4.4.91)
300.	✸ **वरणाः** (वरणानाम् अदूरभवं नगरम्)	वरणा नदी के निकटवर्ती कोई प्राचीन नगर (काशी)	वरणा+ अण्	अदूरभवश्च (4.2.69)
301.	✸ **वर्ग्यम्** (वर्गे भवम्)	समूह में होने वाला	वाच् + यत्	दिगादिभ्यो यत् (4.3.54)
302.	✸ **वाग्मी** (प्रशस्ता वाग् अस्ति अस्य)	प्रशस्त वाणी वाला, बोलने में चतुर	वाच् + ग्मिनिँ	वाचो ग्मिनिँः (5.2.124)
303.	✸ **वात्स्यः** (वत्सस्य गोत्रापत्यम्)	वत्स नामक व्यक्ति का गोत्रापत्य	वत्स+ यञ्	गर्गादिभ्यो यञ् (4.1.105)
304.	✸ **वामदेव्यम्** (वामदेवेन दृष्टम्)	वामदेव से देखा गया साम	वामदेव + ड्यत् / ड्य	वामदेवाड्ड्यड्-ड्यौ (4.2.8)
305.	✸ **वायव्यम्** (वायुः देवता अस्य इति)	वायु जिसका देवता है ऐसी हविः, आदि	वायु+ यत्	वाय्वृतुपित्रुषसो यत् (4.2.30)

क्र.	शब्द	अर्थ	तद्धित प्रत्यय	सूत्र
306.	✹ **वाराणसेयम्** (वाराणस्यां जातं भवं वा)	वाराणसी में पैदा हुआ	वाराणसी + ढक्	नद्यादिभ्यो ढक् (4.2.96)
307.	✹ **वासिष्ठः** (वसिष्ठस्य अपत्यम्)	वसिष्ठ ऋषि की सन्तान	वसिष्ठ + अण्	ऋष्यन्धकवृष्णिकुरुभ्यश्च (4.1.114)
308.	✹ **वासुदेवः** (वसुदेवस्य अपत्यम्)	वसुदेव की सन्तान, श्रीकृष्ण	वसुदेव+ अण्	ऋष्यन्धकवृष्णिकुरुभ्यश्च (4.1.114)
309.	✹ **वास्त्रः** (वस्त्रेण परिवृतः)	वस्त्र से ढका रथ	वस्त्र+अण्	परिवृतो रथः (4.2.9)
310.	✹ **विदुष्मान्** (विद्वांसः सन्ति अस्य अस्मिन् वा)	जिसमें विद्वान् हैं ऐसा वंश , देश, प्रदेश	विद्वस् + मतुँप्	तदस्यास्त्यास्मिन्निति मतुँप्
311.	✹ **विद्वद्देश्यः** (ईषदूनो विद्वान्)	कुछ कम विद्वान् के तुल्य	विद्वेश्यस् + देश्य	ईषदसमाप्तौ कल्पब्देश्यदेशीयरः (5.3.67)
312.	✹ **विद्वद्देशीयः** (ईषदूनो विद्वान्)	कुछ कम विद्वान् लगभग विद्वान्	विद्वस् + देशीयर्	ईषदसमाप्तौ कल्पब्देश्यदेशीयरः (5.3.67)
313.	✹ **विद्वत्कल्पः** (विद्वत् तुल्यः)	विद्वान् के सदृश	विद्वस् + कल्पप्	ईषदसमाप्तौ कल्पब्देश्यदेशीयरः (5.3.67)
314.	✹ **विश्वजनीनम्** (विश्वजनेभ्यो हितम्)	सब लोगों के लिए हितकर वस्तु	विश्वजन + ख	आत्मन् - विश्वजन - भोगोत्तरपदात् खः (5.1.9)
315.	✹ **विषमीयम्** (विषमाद् आगतम्)	विपरीत या अनुचित हेतु से आया हुआ धन आदि कुछ भी	विषम + छ	गहादिभ्यश्च (4.2.137)
316.	✹ **विष्यः** (विषेण वध्यः)	विषद्वारा वध करने योग्य शत्रु आदि	विष+ यत्	नौ-वयो-धर्म-विष-मूल-मूल-सीता-तुलाभ्यस्तार्य-तुल्य-प्राप्य-वध्याऽऽनाम्य-सम -समित-संमितेषु (4.4.91)
317.	✹ **विंशः** (विंशतेः पूरणः)	बीसवाँ	विंशति+ डट्	तस्य पूरणे डट् (5.2.48)
318.	✹ **विंशतिः** (द्वौ दशतौ परिमाणमस्य सङ्घस्य इति)	बीस	द्विदशत् + शतिच्	पंक्ति-विंशति-त्रिंशच् -चत्वारिंशत्-पञ्चाशत्-षष्टि-सप्तत्यशीति- नवति- शतम् (5.1.58)

क्र.	शब्द	अर्थ	तद्धित प्रत्यय	सूत्र
319.	**व्रीहिकः** (व्रीहयः सन्ति अस्य अस्मिन् वा)	धानवाला	व्रीहि + ठन्	**व्रीह्यादिभ्यश्च** (5.2.116)
320.	**व्रीही**	धानवाला	व्रीहि + इनि	व्रीह्यादिभ्यश्च (5.2.116)
321.	**वेतस्वान्** (वेतसाः सन्ति अस्मिन् इति)	बेंत जिसमें हो ऐसा देश	वेतस+ ड्मतुँप्	कुमुद-नड-वेतसेभ्यो-ड्मतुँप् (4.2.86)
322.	**वैदिशम्** (विदिशाया अदूरभवम्)	विदिशा के निकट कोई प्राचीन नगर	विदिशा+ अण्	अदूरभवश्च (4.2.69)
323.	**वैनतेयः** (विनताया अपत्यम्)	विनता का पुत्र, गरुड	विनता+ ढक्	स्त्रीभ्यो ढक् (4.1.120)
324.	**वैयाकरणः** (व्याकरणम् अधीते वेत्ति वा)	व्याकरण का अध्येता या ज्ञाता	व्याकरण+ अण्	तदधीते तद्वेद (4.2.58)
325.	**वैश्वामित्रः** (विश्वामित्रस्य अपत्यम्)	विश्वामित्र ऋषि की सन्तान	विश्वामित्र+ अण्	ऋष्यन्धकवृष्णिकुरुभ्यश्च (4.1.114)
326.	**व्रैहेयम्** (व्रीहीणां भवनं क्षेत्रं)	चावालों का उत्पत्तिस्थान,खेत	व्रीहि+ ढक्	व्रीहि-शाल्योर्ढक् (5.2.2)
327.	**शंकणम्** (शंकवे हितम्)	खूँटी के लिए उपयोगी लकड़ी	शंकु+ यत्	उगवादिभ्यो यत् (5.1.2)
328.	**शरण्यः** (शरणे त्राणे साधुः)	रक्षा करने में प्रवीण, योग्य, समर्थ	शरण+यत्	तत्र साधुः (4.4.98)
329.	**शरमयम्** (शरस्य विकारो अवयवो वा)	सरकण्डे का विकार या अवयव	शर+ मयट्	नित्यं वृद्धशरादिभ्यः (4.3.142)
330.	**शाद्वलः** (शादाः सन्ति अस्मिन् इति)	हरी घास वाला प्रदेश	शर+ मयट्	नड-शादाड् ड्वलच् (4.2.87)
331.	**शाब्दिकः** (शब्दं करोति)	शाब्दिक	शब्द+ ठक्	शब्ददर्दुरं करोति (4.4.34)
332.	**शारावः** (शरावे उद्धृतः ओदनः)	शराव में निकाल कर रखा गया भात	शराव+ अण्	तत्रोद्धृतममत्रेभ्यः (4.2.13)
333.	**शारीरकीयः** (शरीरकम् अधिकृत्य कृतो ग्रन्थः)	जीवात्मा को विषय बनाकर रचा गया	शारीरक + छ	वृद्धाच्छः (4.2.113)

क्र.	शब्द	अर्थ	तद्धित प्रत्यय	सूत्र
334.	✹ **शालीयः** (शालायां जातो भवो वा)	घर में पैदा हुआ या घर में होने वाला	शाला+ छ	वृद्धाच्छः (4.2.113)
335.	✹ **शालेयम्** (शालीनां भवनं क्षेत्रम्)	शाली चावलों का उत्पत्तिस्थान खेत	शालि+ ढक्	व्रीहि-शाल्योर्ढक् (5.2.2)
336.	✹ **शिक्षकः** (शिक्षाम् अधीते वेद वा)	शिक्षा ग्रन्थ को पढ़ने या जानने वाला	शिक्षा+ वुन्	क्रमादिभ्यो वुन् (4.2.60)
337.	✹ **शिखावलम्** (शिखाः सन्ति अस्मिन् इति)	शिखाओं वाला तन्नामक नगर	शिखा+ वलच्	शिखाया वलच् (4.2.88)
338.	✹ **शिखावान्** (शिखावान् दीपः)	शिखा वाला दीपक	शिखा+ मतुँप्	तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुँप् (5.2.94)
339.	✹ **शुक्रियम्** (शुक्रो देवता अस्य इति)	शुक्र जिसका देवता है ऐसी हविः आदि	शुक्र + घन्	शुक्राद् घन् (4.2.25)
340.	✹ **शुक्लः** (पटः) शुक्लः (गुणः) अस्य अस्ति	सफेद गुणवाला कपड़ा आदि	शुक्ल+ मतुँप्	तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुँप् (5.2.94)
341.	✹ **शुभंयुः** (शुभम् अस्ति अस्य इति)	शुभवाला, कल्याणवाला	शुभम् + युस्	अहंशुभमोर्युस् (5.2.140)
342.	✹ **शैबः** (शिबीनां निवासः)	शिबि नामक क्षत्रियों का निवास स्थान देश	शिबि + अण्	तस्य निवासः (4.2.68)
343.	✹ **शैवः** (शिवस्य अपत्यम्)	शिव की सन्तान	शिव+ अण्	शिवादिभ्योऽण् (4.1.112)
344.	✹ **शौक्ल्यम्** (शुक्लस्य भावः)	शुक्लपना सुफेदपना, सुफेदी	शुक्ल+ ष्यञ्	वर्णदृढादिभ्यः ष्यञ् च (5.1.122)
345.	✹ **शौल्कशालिकः** (शुल्कशालाया आगतः)	चुंगीघर से आया हुआ	शुल्कशाला+ ठक्	ठगायस्थानेभ्यः (4.3.75)
346.	✹ **श्रावणः शब्दः** (श्रवणेन गृह्यते)	श्रवणेन्द्रिय से जो ग्रहण किया जाता है अर्थात् शब्द	श्रवण+ अण्	शेषे (4.2.91)
347.	✹ **श्रेयान्** (अयमनयोरतिशयेन प्रशस्यः)	दो में अधिक प्रशंसनीय अर्थात् बढ़िया	प्रशस्य + ईयसुँन्	द्विवचनविभज्योपपदे तरबीय सुँनौ (5.3.57)

क्र.	शब्द	अर्थ	तद्धित प्रत्यय	सूत्र
348.	✹ **श्रेष्ठः** (अयमेषामतिशयेन प्रशस्यः)	सबसे बढ़कर प्रशंसनीय, बढ़िया या उत्तम	प्रशस्य+इष्ठन्	अतिशायने तमबिष्ठनौ (5.3.55)
349.	✹ **श्वशुर्यः** (श्वशुरस्य अपत्यम्)	ससुर का पुत्र, साला,या देवर	श्वसुर + यत्	राज-श्वशुराद् यत् (4.1.137)
350.	✹ **श्वाफल्कः** (श्वफल्कस्य अपत्यम्)	श्वफल्क की सन्तान	श्वफल्क+अण्	ऋष्यन्धकवृष्णिकुरुभ्यश्च (4.1.114)
351.	✹ **श्वैतच्छत्रिकः** (श्वेतच्छत्रम् अर्हति)	श्वेत छत्रको प्राप्त करने योग्य व्यक्ति	श्वेतच्छत्र+ठक्	आर्हादगोपुच्छसंख्यापरिमाणात् ठक् (5.1.19)
352.	✹ **षष्ठः** (षण्णां पूरणः)	छठा	षष् + डट्	तस्य पूरणे डट् (5.2.48)
353.	✹ **षाण्मातुरः** (षण्णां मातृणाम् अपत्यम्)	छः माताओं की सन्तान, कार्तिकेय	षण्मातृ + अण्	मातुरुत्संख्यासम्भद्रपूर्वायाः (4.1.115)
354.	✹ **सख्यम्** (सख्युः भावः कर्म वा)	मित्रता, मित्रपना, मैत्री अथवा मित्र का कर्म	सखि+ य	सख्युर्यः (5.1.125)
355.	✹ **सदा**	सदा, हमेशा	सर्व + दा	सर्वैकाऽन्य-किं-यत्-तदः काले दा (5.3.15)
356.	✹ **सभ्यः** (सभायां साधुः)	सभा में निपुण या योग्य	सभा + य	सभाया यः (4.4.105)
357.	✹ **सममयम्** (समाद् आगतम्)	उचित हेतु से आया हुआ धन आदि कुछ भी वस्तु	सम+ मयट्	मयट् च (4.3.82)
358.	✹ **समरूप्यम्** (समाद् आगतम्)	उचित हेतु से आया हुआ धन आदि कुछ भी वस्तु	सम + रूप्य	हेतु-मनुष्येभ्योऽन्यतरस्यां रूप्यः (4.3.81)
359.	✹ **सर्वत्र**	सब जगह	सर्व + त्रल्	सप्तम्यास्त्रल् (5.3.10)
360.	✹ **सर्वदा**	हमेशा, सदा	सर्व + दा	सर्वैकाऽन्य-किं- यत्-तदः काले दा (5.3.15)
361.	✹ **सहायता** (सहायानां समूहः)	सहायकों का समूह	सहाय+ तल्	गज-सहायाभ्यां चेति वक्तव्यम् (वा0)

क्र.	शब्द	अर्थ	तद्धित प्रत्यय	सूत्र
362.	✸ **सात्तुकम्** (सक्तूनां समूहः)	सत्तुओं का समूह	सक्तु + ठक्	अचित-हस्ति-धेनोष्ठक् (4.2.46)
363.	✸ **साप्ततिकम्** (सप्तत्या क्रीतम्)	सत्तर से खरीदी गयी वस्तु	सप्तति+ ठञ्	तेन क्रीतम् (5.1.36)
364.	✸ **सामन्यः** (सामसु साधुः)	सामगान में प्रवीण वा योग्य	सामन् + यत्	तत्र साधुः (4.4.98)
365.	✸ **सामाजिकः** (समाजं रक्षति इति)	समाज की रक्षा करने वाला	समाज + ठक्	रक्षति (4.4.33)
366.	✸ **साम्मातुरः** (सम्मातुः अपत्यम्)	भली माता का पुत्र	सम्मातृ + अण्	मातुरुत्संख्यासम्भद्रपूर्वायाः (4.1.115)
367.	✸ **सायंप्रातिकः** (सायं प्रातः भवः)	शाम सवेरे होने वाला	सायंप्रातर् + ठञ्	कालाट्ठञ् (4.3.11)
368.	✸ **सायन्तनः** (साये भवः)	सायंकाल में होने वाला	सायं+ ट्यु/ट्युल्	सायं-चिरं-प्राह्णे-प्रगेऽव्ययेभ्यष्ट्युट्युलौ तुँट् च (4.3.23)
369.	✸ **सार्वभौमः** (सार्वभूमेः ईश्वरः)	सारी भूमि का स्वामी अर्थात् चक्रवर्ती राजा	सर्वभूमि + अण्	तस्येश्वरः (5.1.41)
370.	✸**सांवत्सरिकम्** (संवत्सरे भवं जातं वा)	वर्ष में होने वाला या वर्षभर में पैदा होने वाला	संवत्सर+ ठञ्	कालाट्ठञ् (4.3.11)
371.	✸ **सीत्यं क्षेत्रम्** (सीतया समितम्)	हलाग्र से जोतकर एक समान किया गया खेत	सीता+ यत्	नौ-वयो-धर्म-विष-मूल-मूल-सीता-तुलाभ्यस्तार्य-तुल्य-प्राप्य-वध्याऽऽनाम्य-सम-समित-संमितेषु (4.4.91)
372.	✸ **सैनापत्यम्** (सेनापतेः भावः कर्म वा)	सेनापति का भाव या कर्म	सेनापति + यक्	पत्यन्तपुरोहितादिभ्यो यक् (5.1.127)
373.	✸ **सौम्यम्** (सोमो देवताऽस्येति)	सोम जिसका देवता है ऐसी हविः या सूक्त	सोम + ट्यण्	सोमाट्ट्यण् (4.2.29)
374.	✸ **स्त्रैणम्** (स्त्रिया भावः)	स्त्री का भाव, स्त्रीपना	स्त्री + नञ्	स्त्रीपुंसाभ्यां नञ्स्नञौ भवनात् (4.1.87)

क्र.	शब्द	अर्थ	तद्धित प्रत्यय	सूत्र
375.	**स्रग्वी** (स्रग् अस्य अस्तीति)	मालावाला	स्रज् + विनिँ	अस् -माया-मेधा-स्रजो-विनिँः (5.2.121)
376.	**स्रजिष्ठः** (अयम् एषाम् अतिशयेन स्रग्वी)	सब मालावालों में अधिक मालावाला	स्रज् + इष्ठन्	अतिशायने तमबिष्ठनौ (5.3.57)
377.	**स्रजीयान्** (अयम् अनयोः अतिशयेन स्रग्वी)	दो मालावान् व्यक्तियों में अधिक मालावान् व्यक्ति	स्रज् + ईयसुँन्	द्विवचनविभज्योपपदे तरबीयसुँनौ (5.3.57)
378.	**स्रौघ्नः** (स्रुघ्ने जातः)	स्रुघ्न में उत्पन्न हुआ	स्रुघ्न+ अण्	तत्र जातः (4.3.25)
379.	**हास्तिकम्** (हस्तिनां समूहः)	हाथियों का समूह या झुण्ड	हस्तिन् + ठक्	अचित्त -हस्ति-धेनोष्ठक् (4.2.46)
380.	**हास्तिकः** (हस्तिना चरति)	हाथी के द्वारा गमन करने वाला	हस्तिन् + ठक्	चरति (4.4.8)
381.	**हैमवती** (हिमवतः प्रभवति)	सर्वप्रथम हिमालय में प्रकट होने वाली गङ्गा नदी	हिमवत् + अण्	प्रभवति (4.3.83)
382.	**हैयङ्गवीनम्** (ह्योगोदोहस्य विकारः)	कल के दुहे गोदुग्ध का विकार माखन या घृत	हियङ्गु + खञ्	हैयङ्गवीनं सञ्ज्ञायाम् (5.2.23)

स्त्रीप्रत्यय

1. 'टाप्'–प्रत्यय–विधायक–सूत्रम्

सूत्रम्–अजाद्यतष्टाप् 4.1.4
प्रत्यय – 'टाप्'
सूत्रार्थ–अजादिगण में पढ़े गए शब्द अथवा ह्रस्व अकारान्त शब्दों से स्त्रीत्व की विवक्षा में **'टाप्' प्रत्यय** होता है।
उदाहरण–अजा, एडका, अश्वा, चटका, मूषिका, बाला, वत्सा, होडा, मन्दा, विलाता, मेधा, गङ्गा, सर्वा, त्रिफला, त्र्यनीका, एता, रोहिता, गोपालिका, प्रजापालिका, पशुपालिका, भूपालिका, द्वारपालिका, बहुपरिव्राजका, अर्या, क्षत्रिया, अतिकेशा, चन्द्रमुखा, सुगुल्फा, कल्याणक्रोडा, सुजघना, शूर्पणखा, गौरमुखा, ताम्रमुखा, मुण्डा, धनक्रीता, शूद्रा।

2. 'ङीप्' प्रत्यय विधायक सूत्र/वार्तिक

सूत्रम्–1. ''उगितश्च'' 4.1.6
प्रत्यय–'ङीप्'
सूत्रार्थ–जिसमें उक् = उ, ऋ, लृ की इत्संज्ञा हो गयी हो, ऐसे प्रातिपदिकों से स्त्रीत्व की विवक्षा में **'ङीप्' प्रत्यय** होता है।
उदाहरण–भवती, भवन्ती, पचन्ती, दीव्यन्ती।

सूत्रम्–2. ''**टिड्ढाणञ्द्वयसज्दघ्नञ्मात्रच्तयप्-ठक्-ठञ्-कञ्-क्वरपः**'' 4.1.15
प्रत्यय–'ङीप्'
सूत्रार्थ–अनुपसर्जन जो टित् प्रत्यय, ढ, अण्, अञ्, द्वयसच्, दघ्नञ्, मात्रच्, तयप्, ठक्, ठञ्, कञ् और क्वरप् ये प्रत्यय जिनके अन्त में हों, ऐसे प्रधान व अदन्त प्रातिपदिकों से स्त्रीत्व की विवक्षा में 'ङीप्' होता है। **'टित्' का अर्थ है**–ऐसा प्रत्यय जिसका टकार इत् है।
उदाहरण–● **टित्** – कुरुचरी, नदी, चोरी, देवी, मद्रचरी, स्तनन्धयी
● **'ढ' प्रत्ययान्त**–सौपर्णेयी,
● **'अण्' प्रत्ययान्त**–ऐन्द्री, कुम्भकारी
● **'अञ्' प्रत्ययान्त**–औत्सी
● **'द्वयसच्' प्रत्ययान्त**–ऊरुद्वयसी
● **'दघ्नञ्' प्रत्ययान्त**–ऊरुदघ्नी
● **'मात्रच्' प्रत्ययान्त**–ऊरुमात्री
● **'तयप्' प्रत्ययान्त**–पञ्चतयी

- **'ठक्' प्रत्ययान्त**–आक्षिकी
- **'ठञ्' प्रत्ययान्त**–प्रास्थिकी, लावणिकी
- **'कञ्' प्रत्ययान्त**–यादृशी
- **'क्वरप्' प्रत्ययान्त**–इत्वरी

वार्तिक 3. ''नञ्स्नञीकक्ख्युँस्तरुणतलुनानामुपसंख्यानम्''
प्रत्यय–'ङीप्'
वार्तिकार्थ–नञ्-प्रत्ययान्त, स्नञ् प्रत्ययान्त, ईकक्-प्रत्ययान्त, और ख्युन्-प्रत्ययान्त प्रातिपदिकों से तथा 'तरुण' व 'तलुन' प्रातिपदिकों से स्त्रीत्व की विवक्षा में **'ङीप्' प्रत्यय** होता है।
उदाहरण–
- **'नञ्'-प्रत्ययान्त** – स्त्रैणी
- **'स्नञ्'-प्रत्ययान्त** – पौंस्नी
- **'ईकक्'-प्रत्ययान्त** – शाक्तीकी, याष्टीकी
- **'ख्युन्'-प्रत्ययान्त** – आढ्यङ्करणी
- **'तरुण'-प्रातिपदिक** – तरुणी
- **'तलुन'-प्रातिपदिक** – तलुनी

सूत्रम् 4. यञश्च 4.1.16
प्रत्यय–'ङीप्'
सूत्रार्थ–'यञ्' प्रत्ययान्त प्रातिपदिक से **'ङीप्'** प्रत्यय होता है; स्त्रीत्व की विवक्षा में।
उदाहरण–गर्ग + यञ् = गार्ग्य। गार्ग्य + ङीप् = गार्गी

सूत्रम् 5. ''वयसि प्रथमे'' 4.1.20
प्रत्यय – 'ङीप्'
सूत्रार्थ – प्रथम अवस्था अर्थात् कौमार अवस्था के सूचक शब्दों से स्त्रीत्व की विवक्षा में **'ङीप्' प्रत्यय** होता है।
उदाहरण–कुमारी, किशोरी

सूत्रम् 6. द्विगोः 4.1.21
प्रत्यय–'ङीप्'
सूत्रार्थ–अदन्त द्विगु समास से स्त्रीलिङ्ग की विवक्षा में **'ङीप्'** प्रत्यय होता है।
उदाहरण–त्रिलोकी, त्रिपादी, पञ्चमूली, अष्टाध्यायी, पञ्चवटी, चतुःसूत्री, सप्तश्लोकी, दशरथी

सूत्रम् 7. ''वर्णादनुदात्तात्तोपधात्तो नः'' 4.1.39
प्रत्यय–'ङीप्'
सूत्रार्थ–वर्णवाची जो अनुदात्तान्त तकारोपध (जिसकी उपधा 'तकार' है) तदन्त अनुपसर्जन प्रातिपदिक से स्त्रीत्व की विवक्षा में **'ङीप्'** प्रत्यय तथा तकार को नकारादेश विकल्प से होते हैं। 'ङीप्' होने के पक्ष में नकारादेश होता है, अन्यथा नहीं होता है। यहाँ 'वर्ण' शब्द सफेद, लाल, पीला आदि रंगों का वाचक है।
उदाहरण–एनी, रोहिणी, श्येनी, हरिणी

'ङीष्'-प्रत्यय विधायक सूत्र/वार्तिक

सूत्रम् 1. ''षिद्गौरादिभ्यश्च'' 4.1.41
प्रत्यय– 'ङीष्'
सूत्रार्थ–'षित्' = जिनका षकार इत् है; तथा गौरादिगण पठित अनुपसर्जन प्रातिपदिकों से स्त्रीत्व की विवक्षा में **'ङीष्' प्रत्यय** होता है।
उदाहरण–नर्तकी, गार्ग्यायणी, गौरी, अनड्वाही, अनडुही, खनकी, रजकी, वात्स्यायनी, मत्सी, सुन्दरी, कटी, शुनी

सूत्र 2. वोतो गुणवचनात् 4.1.44
प्रत्यय– ङीष्
सूत्रार्थ–ह्रस्व उकारान्त शब्दों से स्त्रीत्व-विवक्षा में वैकल्पिक **'ङीष्' प्रत्यय** होता है।
उदाहरण–

ङीष्	विकल्प	ङीष्	विकल्प
मृद्वी	मृदुः	पट्वी	पटुः
गुर्वी	गुरुः	लघ्वी	लघुः
पृथ्वी	पृथुः	तन्वी	तनुः
साध्वी	साधुः	ऋज्वी	ऋजुः

सूत्रम् 3. ''बह्वादिभ्यश्च'' 4.1.45
प्रत्यय– **'ङीष्'**
सूत्रार्थ–'बहु' आदि गण में पठित प्रातिपदिकों से स्त्रीत्व की विवक्षा में विकल्प से 'ङीष्' प्रत्यय होता है।
उदाहरण– बह्वी/बहुः, पद्धती/पद्धतिः, शक्ती/शक्तिः, कपी/कपिः

वार्तिक 4. 'कृदिकारादक्तिनः'
प्रत्यय– 'ङीष्'
वार्तिकार्थ–'कृत्' से सम्बन्धित इकारान्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व की विवक्षा में विकल्प से **'ङीष्'** प्रत्यय होता है; परन्तु 'क्तिन्' प्रत्ययान्त से नहीं होता है।
उदाहरण–रात्री/रात्रिः

वार्तिक 5. सर्वतोऽक्तिन्नर्थादित्येके
प्रत्यय–'ङीष्'
वार्तिकार्थ–'क्तिन्' प्रत्ययान्त से भिन्न सभी इदन्त प्रातिपदिकों से स्त्रीत्व की विवक्षा में विकल्प से **'ङीष्'** होता है। कुछ आचार्य ऐसा भी मानते हैं।
उदाहरण–शकटी/शकटिः

सूत्र 6. पुंयोगादाख्यायाम् 4.1.48
प्रत्यय–'ङीष्'
सूत्रार्थ–पुरुष के साथ सम्बन्ध के कारण पुंवाचक अदन्त शब्द से स्त्रीत्व की विवक्षा में 'ङीष्' होता है। स्त्री, वह पत्नी भी हो सकती है, और पुत्री, बहन आदि भी हो सकती है।
उदाहरण–(i) गोपस्य पत्नी, भगिनी, पुत्री **गोपी**।
(ii) बकस्य पत्नी **बकी**।
(iii) गणकस्य पत्नी **गणकी**
(iv)महापात्रस्य पत्नी **महापात्री**
(v) सूर्यस्य स्त्री मानुषी **सूरी (कुन्ती)**
(vi) केकयस्य अपत्यं स्त्री **केकयी**
(vii) देवकस्य दुहिता **देवकी**
(viii) रेवतस्य दुहिता **रेवती**
(ix) यमस्य भगिनी **यमी**

सूत्र 7. ''इन्द्र - वरुण - भव - शर्व - रुद्र - मृड - हिमाऽरण्य- यव - यवन - मातुलाऽऽचार्याणामानुक्'' 4.1.49
प्रत्यय–ङीष्
सूत्रार्थ–इन्द्र, वरुण, भव, शर्व, रुद्र, मृड, हिम, अरण्य, यव, यवन, मातुल, और आचार्य–इन बारह शब्दों से स्त्रीत्व की विवक्षा में **''ङीष्'' प्रत्यय** तथा इन शब्दों से **'आनुक्' आगम** होता है।
उदाहरण–इन्द्राणी, वरुणानी, भवानी, शर्वाणी, रुद्राणी, मृडानी, हिमानी, अरण्यानी, यवानी, यवनानी, मातुलानी, आचार्यानी

वार्तिक–'हिमारण्ययोर्महत्त्वे
वार्तिकार्थ–'हिम' और 'अरण्य' इन दो प्रातिपदिकों से 'महत्त्व' अर्थ में ही **'ङीष्'** प्रत्यय और **'आनुक्'** आगम होता है।
उदाहरण–(i) महत् हिमं = **हिमानी**

(ii) महत् अरण्यम् = **अरण्यानी**

वार्तिक–''यवाद् दोषे''
वार्तिकार्थ–दोष अर्थ द्योत्य होने पर 'यव' इस प्रातिपदिक से **'ङीष्'** प्रत्यय और **'आनुक्'** आगम होता है।
उदाहरण–दुष्टो यवो = **यवानी**

वार्तिक–'यवनाल्लिप्याम्'
वार्तिकार्थ–'यवन' इस प्रातिपदिक से लिपि विशेष अर्थ होने पर ही **'ङीष्' प्रत्यय** तथा 'आनुक्' आगम होता है।
उदाहरण–यवनानां लिपिः = **यवनानी**

वार्तिक–'मातुलोपाध्याययोरानुग् वा'
वार्तिकार्थ–'मातुल' और 'उपाध्याय' शब्दों से स्त्रीत्वविवक्षा में पुंयोग में 'आनुक्' आगम विकल्प से होता है।
उदाहरण–मातुली/मातुलानी। उपाध्यायी/उपाध्यायानी

वार्तिक–''आचार्यादणत्वं च''
वार्तिकार्थ–'आचार्य' इस प्रातिपदिक से परे 'आनुक्' के नकार को णत्व नही होता है।
उदाहरण–आचार्यस्य स्त्री = आचार्यानी

वार्तिक–''अर्यक्षत्रियाभ्यां वा स्वार्थे''
वार्तिकार्थ–'अर्य' और 'क्षत्रिय' – इन दो प्रातिपदिकों से स्वार्थ में **'ङीष्'** प्रत्यय और 'आनुक्' का आगम विकल्प से होता है।
उदाहरण–(i) अर्याणी/अर्या, (ii) क्षत्रियाणी/क्षत्रिया

सूत्रम् 8. ''क्रीतात् करणपूर्वात्'' 4.1.50
प्रत्यय–'ङीष्'
सूत्रार्थ– 'क्रीत' शब्द जिसके अन्त में हो तथा करणवाचक जिसका पूर्वावयव हो, ऐसे अदन्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व की विवक्षा में **'ङीष्' प्रत्यय** होता है।
उदाहरण–वस्त्रक्रीती
विशेष–यह सूत्र कहीं कहीं नही भी लगता है। यथा–**धनक्रीता।**

सूत्रम्–9. ''स्वाङ्गाच्चोपसर्जनादसंयोगोपधात्'' 4.1.54
प्रत्यय–''ङीष्'' (वैकल्पिक)
सूत्रार्थ–उपधा में संयोग न हो ऐसे उपसर्जन-संज्ञक स्वाङ्गवाची शब्द अन्त में हों तो ऐसे अदन्त प्रातिपदिकों से स्त्रीत्व की विवक्षा में विकल्प से **'ङीष्'** प्रत्यय होता है।
उदाहरण–

ङीष्	**टाप्**	**ङीष्**	**टाप्**
चन्द्रमुखी	चन्द्रमुखा	अतिकेशी	अतिकेशा
सुकेशी	सुकेशा	पीनस्तनी	पीनस्तना
ताम्रमुखी	ताम्रमुखा		

सूत्रम् 10. ''जातेरस्त्रीविषयादयोपधात्'' 4.1.63
प्रत्यय–'ङीष्'
सूत्रार्थ–जो नित्यस्त्रीलिङ्ग न हो, और यकार भी उपधा में न हो, ऐसे जातिवाचक प्रातिपदिक से स्त्रीत्व की विवक्षा में **'ङीष्'** होता है।
उदाहरण–मयूरी, वृषली, तटी, सूकरी, बह्वृची, औपगवी, कठी

वार्तिक 11. ''योपधप्रतिषेधे हयगवयमुकयमनुष्यमत्स्यानामप्रतिषेधः।''
प्रत्यय–''ङीष्''
वार्तिकार्थ–हय, गवय, मुकय, मनुष्य, तथा मत्स्य – इन यकारोपध प्रातिपदिकों से भी **'ङीष्'** प्रत्यय होता है।
उदाहरण–हयी, गवयी, मुकयी, मनुषी, मत्सी।
वार्तिक–'मत्स्यस्य ङ्याम्'
वार्तिकार्थ–'ङी' के परे होने पर ही 'मत्स्य' शब्द के उपधाभूत 'यकार' का लोप हो।
यथा–मत्स्य + ङीष् (यकार का लोप) = **मत्सी**
सूत्रम् 12. ''इतो मनुष्यजातेः'' 4.1.65
प्रत्यय–'ङीष्'
सूत्रार्थ–मनुष्यजातिवाचक ह्रस्व इकारान्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व की विवक्षा में 'ङीष्' प्रत्यय होता है।
उदाहरण–दाक्षी (दक्षस्य अपत्यं स्त्री)। प्लाक्षी (प्लक्षस्य अपत्यं स्त्री)

'ऊङ्'–प्रत्यय-विधायक-सूत्राणि

सूत्रम्–01. ''ऊङुतः'' 4.1.66
प्रत्यय–'ऊङ्'
सूत्रार्थ–जिसकी उपधा में 'यकार' न हो, ऐसे मनुष्य जातिवाची, ह्रस्व उकारान्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व की विवक्षा में **'ऊङ्' प्रत्यय** होता है।
उदाहरण–कुरूः

सूत्रम् 2. ''पङ्गोश्च'' 4.1.68
प्रत्यय–'ऊङ्'
सूत्रार्थ–'पङ्गु' इस प्रातिपदिक से स्त्रीत्व की विवक्षा में 'ऊङ्' प्रत्यय होता है।
उदाहरण–पङ्गूः
वार्तिक 3. ''श्वशुरस्योकाराकारलोपश्च''
प्रत्यय–''ऊङ्''
वार्तिकार्थ–'श्वशुर' शब्द से स्त्रीत्व विवक्षा में 'ऊङ्' प्रत्यय के साथ उकार और अकार का लोप होता है।
उदाहरण–श्वश्रूः (सास)
सूत्रम् 4. ''ऊरूत्तरपदादौपम्ये'' 4.1.69

प्रत्यय–'ऊङ्'

सूत्रार्थ–जिसका पूर्वपद उपमानवाची तथा उत्तरपद 'ऊरु' हो तो उससे स्त्रीत्व की विवक्षा में 'ऊङ्' प्रत्यय होता है।

उदाहरणम्–करभोरूः, रम्भोरूः, कदलीस्तम्भोरूः, गजनासोरूः, नागनासोरूः, सुन्दरोरूः स्त्री, पीवरोरूः स्त्री।

सूत्रम् 05. ''संहितशफलक्षणवामादेश्च'' 4.1.70

प्रत्यय–'ऊङ्'

सूत्रार्थ–संहित, शफ, लक्षण और वाम–ये शब्द हैं पूर्वपद में जिसके तथा 'ऊरु' शब्द है उत्तरपद में जिसके, ऐसे प्रातिपदिक से स्त्रीत्व की विवक्षा में 'ऊङ्' प्रत्यय होता है।

उदाहरणम्– (i) संहितौ ऊरू यस्याः सा **संहितोरूः**,
(ii) शफौ ऊरू यस्याः सा **शफोरूः**,
(iii) लक्षणौ ऊरू यस्याः सा **लक्षणोरूः**,
(iv) वामौ ऊरू यस्याः सा **वामोरूः**

वार्तिक–संहितसहाभ्यां चेति वक्तव्यम्

वार्तिकार्थ–'संहित' और 'सह' शब्द से उत्तरवर्ती 'ऊरु' शब्द वाले प्रातिपदिक से 'ऊङ्' होता है।

उदाहरणम्–संहितोरूः, सहोरूः

'ङीन्'-प्रत्यय-विधायक-सूत्राणि

सूत्रम् 01. ''शार्ङ्गरवाद्यञो ङीन्'' 4.1.73

प्रत्यय–'ङीन्'

सूत्रार्थ–'शार्ङ्गरव' आदि गणपठित शब्दों तथा **'अञ्'** प्रत्यय अन्त में हों–ऐसे जातिवाचक प्रातिपदिकों से स्त्रीत्व की विवक्षा में **'ङीन्'** प्रत्यय होता है।

उदाहरण्–शार्ङ्गरवी, ब्राह्मणी, बैदी

वार्तिक 02. ''नृनरयोर्वृद्धिश्च''

प्रत्यय–'ङीन्'

वार्तिकार्थ–'नृ' तथा 'नर'–इन दो जातिवाचक प्रातिपदिकों से स्त्रीत्व की विवक्षा में **'ङीन्'** प्रत्यय होता है; तथा इन शब्दों को वृद्धि आदेश होता है।

उदाहरणम्– (i) नृ + ङीन् = नारी (ii) नर + ङीन् = नारी

'ति'-प्रत्यय-विधायक-सूत्रम्

सूत्रम्–''यूनस्तिः'' 4.1.77

प्रत्यय–'ति'

सूत्रार्थ–'युवन्' शब्द से स्त्रीत्व की विवक्षा में 'ति' प्रत्यय होता है।

उदाहरणम्–युवन् + ति = युवतिः

'चाप्'–प्रत्यय-विधायक-वार्तिक

वार्तिक–''सूर्याद् देवतायां चाब् वाच्या''

प्रत्यय–'चाप्'

वार्तिकार्थ–देवता अर्थ में 'सूर्य' शब्द से 'चाप्' प्रत्यय होता है।

उदाहरणम्–सूर्यस्य स्त्री देवता = सूर्या (सूर्य + चाप्)

स्त्री-प्रत्यय-तालिका

क्र0	शब्द	अर्थ	मूलपद + स्त्रीप्रत्यय	प्रत्यय-विधायक-सूत्र
01.	• अजा	बकरी	अज + टाप्	अजाद्यतष्टाप्
02.	• एडका	मादा भेड	एडक + टाप्	अजाद्यतष्टाप्
03.	• अश्वा	घोड़ी	अश्व + टाप्	अजाद्यतष्टाप्
04.	• चटका	चिड़िया	चटक + टाप्	अजाद्यतष्टाप्
05.	• मूषिका	चुहिया	मूषक + टाप्	अजाद्यतष्टाप्
06.	• बाला	बालिका	बाल + टाप्	अजाद्यतष्टाप्
07.	• वत्सा	बछिया	वत्स + टाप्	अजाद्यतष्टाप्
08.	• होडा	कन्या	होड + टाप्	अजाद्यतष्टाप्
09.	• मन्दा	कन्या	मन्द + टाप्	अजाद्यतष्टाप्
10.	• विलाता	कन्या	विलात + टाप्	अजाद्यतष्टाप्
11.	• मेधा	बुद्धि	मेध + टाप्	अजाद्यतष्टाप्
12.	• गङ्गा	नदी विशेष	गङ्ग + टाप्	अजाद्यतष्टाप्
13.	• सर्वा	सभी (स्त्री)	सर्व + टाप्	अजाद्यतष्टाप्
14.	• भवती	आप (स्त्री)	भवत् + ङीप्	उगितश्च
15.	• भवन्ती	होती हुई	भवत् + ङीप्	उगितश्च
16.	• पचन्ती	पकाती हुई	पचत् + ङीप्	उगितश्च
17.	• दीव्यन्ती	चमकती हुई	दीव्यत् + ङीप्	उगितश्च
18.	• शूद्रा	शूद्र स्त्री	शूद्र + टाप्	अजाद्यतष्टाप्

क्र0	शब्द	अर्थ	मूलपद + स्त्रीप्रत्यय	प्रत्यय-विधायक-सूत्र
19.	• **कुरुचरी**	कुरु देश में विचरण करने वाली स्त्री	**कुरुचर + ङीप्**	"टिड्ढाणञ्-द्वयसज्-दघ्नञ्-मात्रच्-तयप्-ठक्-ठञ्-कञ्-क्वरपः"
20.	• **नदी**	दरिया, सरिता	**नद + ङीप्**	"टिड्ढाणञ्-द्वयसज्-दघ्नञ्-मात्रच्-तयप्-ठक्-ठञ्-कञ्-क्वरपः"
21.	• **सौपर्णेयी**	सुपर्णी की कन्या, गरुड़ की बहन	**सौपर्णेय + ङीप्**	"टिड्ढाणञ्-द्वयसज्-दघ्नञ्-मात्रच्-तयप्-ठक्-ठञ्-कञ्-क्वरपः"
22.	• **ऐन्द्री**	इन्द्र देवता है जिसका, ऐसी पूर्वदिशा	**ऐन्द्र + ङीप्**	"टिड्ढाणञ्-द्वयसज्-दघ्नञ्-मात्रच्-तयप्-ठक्-ठञ्-कञ्-क्वरपः"
23.	• **औत्सी**	झरने में उत्पन्न होने वाली मछली आदि	**औत्स + ङीप्**	"टिड्ढाणञ्-द्वयसज्-दघ्नञ्-मात्रच्-तयप्-ठक्-ठञ्-कञ्-क्वरपः"
24.	• **ऊरुद्वयसी**	ऊरु प्रमाण है जिसका, ऐसी नदी	**ऊरुद्वयस + ङीप्**	"टिड्ढाणञ्-द्वयसज्-दघ्नञ्-मात्रच्-तयप्-ठक्-ठञ्-कञ्-क्वरपः"
25.	• **ऊरुदघ्नी**	ऊरु (जंघा) पर्यन्त जल है, जिस नदी में	**ऊरुदघ्न + ङीप्**	"टिड्ढाणञ्-द्वयसज्-दघ्नञ्-मात्रच्-तयप्-ठक्-ठञ्-कञ्-क्वरपः"
26.	• **ऊरुमात्री**	ऊरु (जंघा) पर्यन्त जल है, जिस नदी में	**ऊरुमात्र + ङीप्**	"टिड्ढाणञ्-द्वयसज्-दघ्नञ्-मात्रच्-तयप्-ठक्-ठञ्-कञ्-क्वरपः"
27.	• **देवी**	देव स्त्री	**देव + ङीप्**	"टिड्ढाणञ्-द्वयसज्-दघ्नञ्-मात्रच्-तयप्-ठक्-ठञ्-कञ्-क्वरपः"
28.	• **पञ्चतयी**	पञ्च अवयवाः अस्याः (पाँच अवयव वाली स्त्री)	**पञ्चतय + ङीप्**	"टिड्ढाणञ्-द्वयसज्-दघ्नञ्-मात्रच्-तयप्-ठक्-ठञ्-कञ्-क्वरपः"
29.	• **आक्षिकी**	अक्षैर्दीव्यति (पाँसों से जुआ खेलने वाली स्त्री)	**आक्षिक + ङीप्**	"टिड्ढाणञ्-द्वयसज्-दघ्नञ्-मात्रच्-तयप्-ठक्-ठञ्-कञ्-क्वरपः"
30.	• **प्रास्थिकी**	प्रस्थेन क्रीता (एक प्रस्थ में खरीदी गयी स्त्री)	**प्रास्थिक + ङीप्**	"टिड्ढाणञ्-द्वयसज्-दघ्नञ्-मात्रच्-तयप्-ठक्-ठञ्-कञ्-क्वरपः"
31.	• **लावणिकी**	लवणं पण्यम् अस्याः (नमक का व्यापार करने वाली स्त्री)	**लावणिक + ङीप्**	"टिड्ढाणञ्-द्वयसज्-दघ्नञ्-मात्रच्-तयप्-ठक्-ठञ्-कञ्-क्वरपः"
32.	• **यादृशी**	यत् प्रमाणम् अस्य (जिस प्रकार थी)	**यादृश + ङीप्**	"टिड्ढाणञ्-द्वयसज्-दघ्नञ्-मात्रच्-तयप्-ठक्-ठञ्-कञ्-क्वरपः"
33.	• **इत्वरी**	यात्रा करने वाली स्त्री	**इत्वर + ङीप्**	"टिड्ढाणञ्-द्वयसज्-दघ्नञ्-मात्रच्-तयप्-ठक्-ठञ्-कञ्-क्वरपः"
34.	• **स्त्रैणी**	स्त्रियों की प्रकृति (स्त्रीत्व)	**स्त्रैण + ङीप्**	नञ् स्नञीकक्ख्युँस्तरुणतलुनानामुपसङ्ख्यानम् (वा0)
35.	• **पौंस्नी**	पुरुषार्थिनी स्त्री	**पौंस्न + ङीप्**	नञ्स्नञीकक्ख्युँस्तरुणतलुनानामुपसङ्ख्यानम् (वा0)
36.	• **शाक्तीकी**	बर्छी रखने वाली (भाला धारिणी स्त्री)	**शाक्तीक + ङीप्**	नञ्स्नञीकक्ख्युँस्तरुणतलुनानामुपसङ्ख्यानम् (वा0)
37.	• **याष्टीकी**	लाठी से सुसज्जित स्त्री	**याष्टीक + ङीप्**	नञ्स्नञीकक्ख्युँस्तरुणतलुनानामुपसङ्ख्यानम् (वा0)

क्र0	शब्द	अर्थ	मूलपद + स्त्रीप्रत्यय	प्रत्यय-विधायक-सूत्र
38.	• **आढ्यङ्करणी**	धनसम्पन्न स्त्री	**आढ्यङ्करण + ङीप्**	नञ्स्नञीकक्ख्युँस्तरुणतलुनानामुपसङ्ख्यानम् (वा0)
39.	• **तरुणी**	युवती	**तरुण + ङीप्**	नञ्स्नञीकक्ख्युँस्तरुणतलुनानामुपसङ्ख्यानम् (वा0)
40.	• **तलुनी**	सुन्दर तलवों वाली स्त्री	**तलुन + ङीप्**	नञ्स्नञीकक्ख्युँस्तरुणतलुनानामुपसङ्ख्यानम् (वा0)
41.	• **गार्गी**	गर्गस्य गोत्रापत्यं स्त्री (गर्ग गोत्र की सन्तति कन्या)	**गार्ग्य + ङीप्**	यञश्च
42.	• **गार्ग्यायणी**	गर्ग गोत्र की स्त्री	**गार्ग्यायण + ङीष्**	षिद्गौरादिभ्यश्च
43.	• **नर्तकी**	नाचने वाले स्त्री	**नर्तक + ङीष्**	षिद्गौरादिभ्यश्च
44.	• **गौरी**	पार्वती	**गौर + ङीष्**	षिद्गौरादिभ्यश्च
45.	• **अनड्वाही**	गाय	**अनडुह् + ङीष्**	षिद्गौरादिभ्यश्च
46.	• **अनडुही**	गाय	**अनडुह् + ङीष्**	षिद्गौरादिभ्यश्च
47.	• **कुमारी**	कौमार अवस्था की स्त्री	**कुमार + ङीप्**	वयसि प्रथमे
48.	• **किशोरी**	किशोरावस्था की स्त्री	**किशोर + ङीप्**	वयसि प्रथमे
49.	• **त्रिलोकी**	त्रयाणां लोकानां समाहरः (तीनों लोकों का स्वामी)	**त्रिलोक + ङीप्**	द्विगोः
50.	• **त्रिफला**	त्रयाणां फलानां समाहार (तीनों फलों का समाहार, औषधि विशेष)	**त्रिफल + टाप्**	अजाद्यतष्टाप्
51.	• **त्र्यनीका**	त्रयाणाम् अनीकानां समाहरः (तीन तरह की सेनाओं का समूह)	**त्र्यनीक + टाप्**	अजाद्यतष्टाप्
52.	• **एनी**	चितकबरी (अनेक रंगों वाली)	**एत + ङीप्**	वर्णादनुदात्तात्तोपधात्तो नः
53.	• **एता**	चितकबरी (अनेक रंगों वाली)	**एत + टाप्**	अजाद्यतष्टाप्
54.	• **रोहिणी**	लाल रंगों वाली	**रोहित + ङीप्**	वर्णादनुदात्तोत्तापधात्तो नः
55.	• **रोहिता**	लाल रंगों वाली	**रोहित + टाप्**	अजाद्यतष्टाप्
56.	• **मृद्वी (मृदुः)**	कोमल	**मृदु + ङीष्**	वोतो गुणवचनात्
57.	• **पट्वी (पटुः)**	चतुर स्त्री	**पटु + ङीष्**	वोतो गुणवचनात्
58.	• **बह्वी (बहुः)**	बहुत स्त्री	**बहु + ङीष्**	बह्वादिभ्यश्च
59.	• **रात्री (रात्रिः)**	रात	**रात्रि + ङीष्**	कृदिकारादक्तिनः (वा0)
60.	• **शकटी (शकटिः)**	छोटी गाड़ी	**शकटि + ङीष्**	सर्वतोऽक्तिन्नर्थादित्येके (वा0)
61.	• **गोपी**	गोपस्य स्त्री, पत्नी भगिनी पुत्री वा	**गोप + ङीष्**	पुंयोगादाख्यायाम्
62.	• **गोपालिका**	गाय पालने वाली स्त्री	**गोपालक + टाप्**	अजाद्यतष्टाप्
63.	• **सर्विका**	सब कुछ करने वाली स्त्री	**सर्वक + टाप्**	अजाद्यतष्टाप्

क्र0	शब्द	अर्थ	मूलपद + स्त्रीप्रत्यय	प्रत्यय-विधायक-सूत्र
64.	• **कारिका**	व्याकरण, सांख्यदर्शन आदि से संबद्ध पद्यसंग्रह	**कारक + टाप्**	अजाद्यतष्टाप्
65.	• **अश्वपालिका**	घोड़े पालने वाली स्त्री	**अश्वपालक + टाप्**	अजाद्यतष्टाप्
66.	• **बहुपरिव्राजका**	संन्यासिनी स्त्री	**बहुपरिव्राजक + टाप्**	अजाद्यतष्टाप्
67.	• **सूर्या**	सूर्यस्य देवता स्त्री (सन्ध्या)	**सूर्य + चाप्**	सूर्याद् देवतायां चाब्वाच्यः (वा0)
68.	• **सूरी**	सूर्यस्य मानुषी स्त्री (कुन्ती)	**सूर्य + ङीष्**	पुंयोगादाख्यायाम् ''सूर्यागस्त्योश्छे च'' ङ्यां च'' (वा) से 'यकार' का लोप
69.	• **इन्द्राणी**	इन्द्रस्य स्त्री (इन्द्र की पत्नी)	**इन्द्र + आनुक् + ङीष्**	''इन्द्र-वरुण-भव-शर्व-रुद्र-मृड-हिमारण्य-यव-यवन-मातुलाचार्याणाम् आनुक्''
70.	• **वरुणानी**	वरुण की स्त्री या पत्नी	**वरुण + आनुक् + ङीष्**	''इन्द्र-वरुण-भव-शर्व-रुद्र-मृड-हिमारण्य-यव-यवन-मातुलाचार्याणाम् आनुक्''
71.	• **शर्वाणी**	शर्वस्य स्त्री	**शर्व + आनुक + ङीष्**	''इन्द्र-वरुण-भव-शर्व-रुद्र-मृड-हिमारण्य-यव-यवन-मातुलाचार्याणाम् आनुक्''
72.	• **रुद्राणी**	रुद्रस्य स्त्री	**रुद्र + आनुक् + ङीष्**	''इन्द्र-वरुण-भव-शर्व-रुद्र-मृड-हिमारण्य-यव-यवन-मातुलाचार्याणाम् आनुक्''
73.	• **भवानी**	भवस्य स्त्री	**भव + आनुक् + ङीष्**	''इन्द्र-वरुण-भव-शर्व-रुद्र-मृड-हिमारण्य-यव-यवन-मातुलाचार्याणाम् आनुक्''
74.	• **मृडानी**	मृडस्य स्त्री	**मृड + आनुक् + ङीष्**	''इन्द्र-वरुण-भव-शर्व-रुद्र-मृड-हिमारण्य-यव-यवन-मातुलाचार्याणाम् आनुक्''
75.	• **हिमानी**	महद्धिमं हिमानी (बड़ी बर्फ)	**हिम + आनुक् + ङीष्**	''हिमारण्ययोर्महत्त्वे'' (वा0) ''इन्द्र-वरुण-भव............."
76.	• **अरण्यानी**	महद् अरण्यम् (बड़ा जंगल)	**अरण्य + आनुक् + ङीष्**	''हिमारण्ययोर्महत्त्वे'' (वा0) ''इन्द्र-वरुण-भव............"
77.	• **यवानी**	दुष्टो यवो यवानी (दूषित जौ, अथवा अजवाइन	**यव + आनुक् + ङीष्**	''यवाद् दोषे'' (वा0)
78.	• **यवनानी**	यवनानां लिपिः यवनानी (यवनों की लिपि, उर्दू, फारसी आदि)	**यवन + आनुक् + ङीष्**	यवनाल्लिप्याम् (वा0) (इन्द्र-वरुण-भव....)
79.	• **मातुलानी**	मातुलस्य पत्नी (मामी)	**मातुल + आनुक्+ङीष्**	''मातुलोपाध्याययोरानुग् वा'' ''इन्द्र-वरुण-भव..."
80.	• **मातुली**	मामा की पत्नी, मामी	मातुल + ङीष्	''मातुलोपाध्याययोरानुग् वा'' (वा0) ('आनुक्' का आगम विकल्प से)
81.	• **उपाध्यायानी**	उपाध्याय की पत्नी	**उपाध्याय+आनुक् + ङीष्**	इन्द्र-वरुण-भव-शर्व-रुद्र-मृड-हिमारण्य यव-यवन-मातुलाचार्याणाम्-आनुक्''
82.	• **उपाध्यायी**	उपाध्याय की पत्नी	**उपाध्याय + ङीष्**	''मातुलोपाध्याययोरानुग् वा'' (वा0) (आनुक् का आगम विकल्प से)
83.	• **आचार्यानी**	आचार्यस्य स्त्री	**आचार्य+आनुक्+ङीष्**	''इन्द्र-वरुण-भव-शर्व.... ''आचार्यदणत्वं च'' वार्तिक से णत्व का निषेध।

क्र0	शब्द	अर्थ	मूलपद + स्त्रीप्रत्यय	प्रत्यय-विधायक-सूत्र
84.	• **अर्याणी**	अर्य अर्थात् वैश्य जाति की स्त्री	**अर्य + आनुक् + ङीष्**	''अर्यक्षत्रियाभ्यां वा स्वार्थे'' (वा0) इन्द्र-वरुण-भव– ('आनुक्' और 'ङीष्' दोनों वैकल्पिक)
85.	• **अर्या**	वैश्य जाति की स्त्री	**अर्य + टाप्**	अजाद्यतष्टाप्
86.	• **क्षत्रियाणी**	क्षत्रिय जाति की स्त्री	**क्षत्रिय+आनुक्+ङीष्**	''अर्यक्षत्रियाभ्यां वा स्वार्थे'' (वा0) इन्द्र-वरुण-भव..... ('आनुक्' और 'ङीष्' दोनों वैकल्पिक)
87.	• **क्षत्रिया**	क्षत्रिय जाति की स्त्री	**क्षत्रिय + टाप्**	अजाद्यतष्टाप्
88.	• **वस्त्रक्रीती**	वस्त्रों के द्वारा खरीदी गयी वस्तु, भूमि स्त्री आदि।	**वस्त्रक्रीत + ङीष्**	''क्रीतात् करणपूर्वात्''
89.	• **अतिकेशी**	केशों को लाँघने वाली (लम्बी माला आदि)	**अतिकेश + ङीष्**	''स्वाङ्गाच्चोपसर्जनादसंयोगोपधात्''
90.	• **अतिकेशा**	केशो को लाँघने वाली (लम्बी माला आदि)	**अतिकेश + टाप्**	अजाद्यतष्टाप्
91.	• **चन्द्रमुखी**	चन्द्र के समान मुख वाली स्त्री	**चन्द्रमुख + ङीष्**	''स्वाङ्गाच्चोपसर्जनादसंयोगोपधात्''
92.	• **चन्द्रमुखा**	चन्द्र के समान मुखवाली स्त्री	**चन्द्रमुख + टाप्**	अजाद्यतष्टाप्
93.	• **सुगुल्फा**	सुन्दर गुल्फों वाली स्त्री	**सुगुल्फ + टाप्**	अजाद्यतष्टाप्
94.	•**कल्याणक्रोडा**	अच्छी छाती वाली स्त्री, (घोड़ी)	**कल्याणक्रोड + टाप्**	अजाद्यतष्टाप् ''न क्रोडादिबह्वचः'' सूत्र से 'ङीष्' प्रत्यय का निषेध
95.	• **सुजघना**	अच्छी जघनों वाली स्त्री	**सुजघन + टाप्**	अजाद्यतष्टाप् ''न क्रोडादिबह्वचः'' सूत्र से 'ङीष्' प्रत्यय का निषेध
96.	• **शूर्पणखा**	रावण की बहन, जिसके नख शूपे की तरह होते हैं	**शूर्पनख + टाप्**	अजाद्यतष्टाप् ''नखमुखात् सञ्ज्ञायाम्'' से 'ङीष्' प्रत्यय का निषेध
97.	• **गौरमुखा**	'गौरमुख' नाम वाली स्त्री या गोरे मुख वाली स्त्री	**गौरमुख + टाप्**	अजाद्यतष्टाप् ''नखमुखात् सञ्ज्ञायाम्'' से 'ङीष्' प्रत्यय का निषेध
98.	• **ताम्रमुखी**	ताम्रमुख वाली स्त्री	**ताम्रमुख + ङीष्**	''स्वाङ्गाच्चोपसर्जनादसंयोगोपधात्'' (विकल्प से 'ङीष्')
99.	• **ताम्रमुखा**	ताम्रमुख वाली स्त्री	**ताम्रमुख + टाप्**	अजाद्यतष्टाप्
100.	• **तटी**	नदी का किनारा	**तट + ङीष्**	जातेरस्त्रीविषयादयोपधात्
101.	• **बह्वृची**	बहुत ऋचाओं का अध्ययन करने वाली स्त्री	**बह्वृच + ङीष्**	जातेरस्त्रीविषयादयोपधात्
102.	• **मुण्डा**	मुण्डितशिर वाली स्त्री	**मुण्ड + टाप्**	अजाद्यतष्टाप्
103.	• **हयी**	घोड़ी	**हय + ङीष्**	''जातेरस्त्रीविषयादयोपधात्'' ''योपधप्रतिषेधे हयगवयमुकयमनुष्यमत्स्यानामप्रतिषेधः'' (वा0)

क्र०	शब्द	अर्थ	मूलपद + स्त्रीप्रत्यय	प्रत्यय-विधायक-सूत्र
104.	• **गवयी**	नीलगाय	**गवय + ङीष्**	"जातेरस्त्रीविषयादयोपधात्" "योपधप्रतिषेधे हयगवयमुकयमनुष्यमत्स्यानामप्रतिषेधः" (वा०)
105.	• **मुकयी**	खच्चरी	**मुकय + ङीष्**	"जातेरस्त्रीविषयादयोपधात्" "योपधप्रतिषेधे हयगवयमुकयमनुष्यमत्स्यानामप्रतिषेधः" (वा०)
106.	• **मनुषी**	मनुष्य जाति की स्त्री	**मनुष्य + ङीष्**	"जातेरस्त्रीविषयादयोपधात्" "योपधप्रतिषेधे......"
107.	• **मत्सी**	मादा मछली	**मत्स्य + ङीष्**	"जातेरस्त्रीविषयादयोपधात्" "योपधप्रतिषेधे....." "मत्स्यस्य ङ्याम्" (वा०)
108.	• **दाक्षी**	दक्षस्य अपत्यं स्त्री (दक्ष की कन्या)	**दाक्षि + ङीष्**	"इतो मनुष्यजातेः"
109.	• **कुरूः**	कुरोः अपत्यं स्त्री कुरु की सन्तान स्त्री	**कुरु + ऊङ्**	"ऊङुतः"
110.	• **पङ्गूः**	लँगडी स्त्री	**पङ्गु + ऊङ्**	"पङ्गोश्च"
111.	• **श्वश्रूः**	श्वशुरस्य स्त्री (सास)	**श्वशुर + ऊङ्**	"श्वशुरस्योकाराकारलोपश्च" (वा०)
112.	• **करभोरूः**	करभ के समान अर्थात् मांसल जंघा वाली स्त्री	**करभोरु + ऊङ्**	"ऊरूत्तरपदादौपम्ये"
113.	• **संहितोरूः**	सटी हुई जाँघों वाली स्त्री	**संहितोरु + ऊङ्**	"संहितशफलक्षणवामादेश्च"
114.	• **लक्षणोरूः**	सुलक्षण जाँघों वाली स्त्री	**लक्षणोरु + ऊङ्**	"संहितशफलक्षणवामादेश्च"
115.	• **वामोरूः**	सुन्दर जाँघों वाली स्त्री	**वामोरु + ऊङ्**	"संहितशफलक्षणवामादेश्च"
116.	• **शफोरूः**	जिसकी जाँघे मिली हुई हो ऐसी स्त्री	**शफोरु + ऊङ्**	"संहितशफलक्षणवामादेश्च"
117.	• **शार्ङ्गरवी**	शृङ्गरोः अपत्यं स्त्री (शृङ्गरु की कन्या)	**शार्ङ्गरव + ङीन्**	"शार्ङ्गरवाद्यञो ङीन्"
118.	• **बैदी**	बिदस्य अपत्यं स्त्री (बैद ऋषि की कन्या)	**बैद + ङीन्**	"शार्ङ्गरवाद्यञो ङीन्"
119.	• **ब्राह्मणी**	ब्राह्मण की पत्नी, कन्या	**ब्राह्मण + ङीन्**	"शार्ङ्गरवाद्यञो ङीन्"
120.	• **नारी**	स्त्री जाति	**नृ + ङीन्** **नर + ङीन्**	"नृनरयोर्वृद्धिश्च"
121.	• **युवतिः**	जवान, स्त्री	**युवन् + ति**	"यूनस्तिः"
122.	• **धनक्रीता**	धन द्वारा खरीदी गयी स्त्री	**धनक्रीत + टाप्**	अजाद्यतष्टाप्

केवलसमासः ''विशेषसंज्ञा-विनिर्मुक्तः केवलसमासः''

क्र0	सामासिक-पदम्	अर्थः	लौकिकविग्रहः	अलौकिक-विग्रहः	समासविधायक सूत्रम्
1.	भूतपूर्वः	जो पहले हुआ हो	पूर्वं भूतः	पूर्व अम् भूत सु	''सह सुपा''
	वागर्थाविव	वाणी और अर्थ की तरह	वागर्थौ इव	वागर्थ औ इव	इवेन समासो विभक्त्यलोपश्च (वा0)

1. पूर्वम् अदृष्टः = अदृष्टपूर्वः
2. पूर्वम् अभूतः = अभूतपूर्वः
3. न एकः = नैकः
4. नैकधा, नसंहत्ताः, नभिन्नवृत्तयः
5. आजन्मशुद्धानाम्, आसमुद्रक्षितीशानाम्
6. उत्तम ऋणे = उत्तमर्णः (ऋण देने वाला)
7. अधम ऋणे = अधमर्णः (ऋण लेने वाला)
8. निसर्गेण निपुणः = निसर्गनिपुणः (स्वभाव से चतुर)
9. प्रकृत्या वक्रः = प्रकृतिवक्रः (स्वभाव से टेढ़ा)
10. विस्पष्टं कटुकम् = विस्पष्टकटुकम् (स्पष्ट रूप से कटु)
11. अवश्यं स्तुत्यः = अवश्यस्तुत्यः
12. जीमूतस्य इव = जीमूतस्येव

अव्ययीभावसमासः (पूर्वपदार्थप्रधानः अव्ययीभावः)

सूत्रम्–

''अव्ययं विभक्ति - समीप - समृद्धि - व्यृद्ध्यर्थाभावात्ययासम्प्रति - शब्दप्रादुर्भाव - पश्चाद्यथानुपूर्व्य - यौगपद्य - सादृश्य - सम्पत्ति - साकल्यान्तवचनेषु''

क्र0	सामासिकदपदम्	अर्थ	लौकिकविग्रहः	अलौकिकविग्रहः	विशेषः
1.	**अधिहरि**	हरि में (विभक्ति अर्थ में)	हरौ इति	हरि ङि अधि	**अतिमालम्**
2.	**अधिगोपम्**	गोप में (विभक्ति अर्थ में)	गोपि इति	गोपा ङि अधि	**अतिखट्वम्**
3.	**उपकृष्णम्**	कृष्ण के समीप (समीप अर्थ में)	कृष्णस्य समीपम्	कृष्ण ङस् उप	**उपकूपम्, उपवृक्षम्**
4.	**सुमद्रम्**	मद्रदेशवासियों की समृद्धि ('समृद्धि' के अर्थ में)	मद्राणां समृद्धिः	मद्र आम् सु	भिक्षाणां समृद्धिः **सुभिक्षम्**
5.	**दुर्यवनम्**	यवनों की समृद्धि का अभाव (वृद्धि का अभाव अर्थ में)	यवनानां व्यृद्धिः	यवन आम् दुर्	शकानां व्यृद्धिः **दुःशकम्**
6.	**निर्मक्षिकम्**	मक्खियों का अभाव (अभाव अर्थ में)	मक्षिकाणाम् अभावः	मक्षिका आम् निर्	मशकानाम् अभावः **निर्मशकम्,** विघ्नानाम् अभावः **निर्विघ्नम्**
7.	**अतिहिमम्**	हिम का अत्यय = नाश (अत्यय अर्थ में)	हिमस्य अत्ययः	हिम ङस् अति	शीतस्य अत्ययः **अतिशीतम्**
8.	**अतिनिद्रम्**	निद्रा इस समय उचित नहीं है 'असम्प्रति' इस समय उचित नहीं अर्थ में)	निद्रा सम्प्रति न युज्यते	निद्रा ङस् अति	कम्बलं सम्प्रति न युज्यते **अतिकम्बलम्**
9.	**इतिहरि**	हरि नाम की प्रसिद्धि 'शब्दप्रादुर्भाव' (नाम की प्रसिद्धि अर्थ में)	हरिशब्दस्य प्रकाशः	हरि ङस् इति	(i) पाणिनि शब्दस्य प्रकाशः-**इतिपाणिनि** (ii) ज्ञानशब्दस्य प्रकाशः-**इतिज्ञानम्**
10.	**अनुविष्णु**	विष्णु के पीछे ('पश्चात्' अर्थ में)	विष्णोः पश्चात्	विष्णु ङस् अनु	**अनुरथम्, अनुशिष्यम्, अनुगोपालम्**
11.	**अनुरूपम्**	रूप के योग्य ('यथा' के योग्यता अर्थ में समास)	रूपस्य योग्यम्	रूप ङस् अनु	**अनुगुणम् अनुलेखम् अनुविद्यालयम्**
12.	**प्रत्यर्थम्**	प्रत्येक अर्थ के प्रति ('यथा' के वीप्सा अर्थ में समास)	अर्थम् अर्थं प्रति	अर्थ अम् प्रति	(i) छात्रं छात्रं प्रति **प्रतिच्छात्रम्** (ii) जनं जनं प्रति **प्रतिजनम्** (iii) गृहं गृहं प्रति **प्रतिगृहम्**

क्र०	सामासिकदपदम्	अर्थ	लौकिकविग्रहः	अलौकिकविग्रहः	विशेषः
13.	**यथाशक्ति**	शक्ति के अनुसार अर्थात् शक्ति के उल्लंघन के बिना (पदार्थानतिवृत्ति अर्थात् पद के अर्थ का उल्लंघन न करना - इस अर्थ में समास)	शक्तिम् अनतिक्रम्य	शक्ति अम् यथा	(i) बुद्धिम् अनतिक्रम्य **यथाबुद्धि** (ii) ज्ञानम् अनतिक्रम्य **यथाज्ञानम्**
14.	**सहरि**	हरि के सदृश (यथा के सदृश अर्थ में)	हरेः सादृश्यम्	हरि ङस् सह	"अव्ययं विभक्तिसमीप ...." इस सूत्र से समास
15.	**अनुज्येष्ठम्**	ज्येष्ठ के क्रम से (आनुपूर्व्य अर्थ में)	ज्येष्ठस्य आनुपूर्व्येण	ज्येष्ठ ङस् अनु	वृद्धस्य आनुपूर्व्येण अनुवृद्धम्
16.	**सचक्रम्**	चक्र के साथ एक ही काल में ('यौगपद्य' एक साथ-एक ही काल में-इस अर्थ में समास)	चक्रेण युगपत्	चक्र टा सह	"अव्ययं विभक्ति समीप ....." इस सूत्र से समास
17.	**ससखि**	सखा के समान (सादृश्य अर्थात् समान अर्थ में समास)	सदृशः सख्या	सखि टा सह	"अव्ययं विभक्ति....." सूत्र से समास
18.	**सक्षत्रम्**	क्षत्रियों के अनुरूप ('सम्पत्ति' अर्थ में समास)	क्षत्राणां सम्पत्तिः	क्षत्र आम् सह	"अव्ययं विभक्ति...." सूत्र से समास
19.	**सतृणम् (अत्ति)**	तिनके को भी छोड़े बिना सम्पूर्ण खाता है ('साकल्य' अर्थात् सम्पूर्ण अर्थ में समास)	तृणम् अपि अपरित्यज्य	तृण टा सह	"अव्ययं विभक्ति....." सूत्र से समास
20.	**साग्नि (अधीते)**	अग्निग्रन्थ की समाप्ति तक पढ़ता है ('अन्त' अर्थात् यहाँ तक-इस अर्थ में समास)	अग्निग्रन्थ-पर्यन्तम्	अग्नि टा सह	"अव्ययं विभक्ति....." सूत्र से समास
21.	**पञ्चगङ्गम्**	पाँच गङ्गाओं का समूह	पञ्चानां गङ्गानां समाहारः	पञ्चन् आम् गङ्गा आम्	"**नदीभिश्च**" सूत्र से समास
22.	**द्वियमुनम्**	दो यमुना नदी धाराओं का समूह	द्वयोर्यमुनयोः समाहारः	द्वि ओस् यमुना ओस्	"**नदीभिश्च**" सूत्र से समास
23.	**उपशरदम्**	शरद् ऋतु के समीप वाली ऋतु ('समीप' अर्थ में समास)	शरदः समीपम्	शरद् ङस् उप	"अव्ययं विभक्ति-समीप-...." सूत्र से समास
24.	**प्रतिविपाशम्**	विपाशा नदी के सम्मुख ('सम्मुख' इस अर्थ में समास)	विपाशं विपाशं प्रति (विपाशायाः अभिमुखम्)	विपाश अम् प्रति	"अव्ययं विभक्ति-समीप..." इस सूत्र समास
25.	**उपजरसम्**	बुढ़ापे के निकट ('समीप' अर्थ में समास)	जरायाः समीपम्	जरा ङस् उप	"अव्ययं विभक्ति...." इस सूत्र से समास
26.	**उपराजम्**	राजा के समीप ('समीप' अर्थ में समास)	राज्ञः समीपम्	राजन् ङस् उप	"अव्ययं विभक्ति....." इस सूत्र से समास
27.	**अध्यात्मम्**	आत्मा में, आत्मा के विषय में ('विभक्ति' अर्थ में समास)	आत्मनि	आत्मन् ङि अधि	"अव्ययं विभक्ति...." सूत्र से समास
28.	**उपचर्मम्/उपचर्म**	चमड़े के समीप ('समीप' अर्थ में (समास)	चर्मणः समीपम्	चर्मन् ङस् उप	"अव्ययं विभक्ति...." 'टच्' प्रत्यय होने पर उपचर्मम्
29.	**उपसमिधम्/ उपसमित्**	समिधा के पास = समिधा हवन की लकड़ी ('समीप' इस अर्थ में समास)	समिधः समीपम्	समिध ङस् उप	'टच्' प्रत्यय न होने पर उपसमित्

तत्पुरुषसमासः ''उत्तरपदार्थप्रधानः तत्पुरुषः''

क्र0	सामासिकपदम्	अर्थः	लौकिकविग्रहः	अलौकिक विग्रहः	सामासिक-सूत्रम्
1.	**कृष्णाश्रितः (हरिश्रितः) (लक्ष्मीश्रितः)**	कृष्ण का आश्रय लिया हुआ	कृष्णं श्रितः	कृष्ण अम् + श्रित सु	**''द्वितीया श्रितातीतपतितगतात्यस्त प्राप्तापन्नैः''** सूत्र से द्वितीया तत्पुरुष
2.	**अरण्यातीतः**	वन को पार किया हुआ	अरण्यम् अतीतः	अरण्य अम् + अतीत सु	**''द्वितीया श्रितातीत....''** सूत्र से द्वितीया तत्पुरुषसमास
3.	**कूपपतितः**	कुएँ में गिरा हुआ	कूपं पतितः	कूप अम् + पतित सु	**''द्वितीया श्रितातीतपतित.....''** सूत्र से द्वितीयातत्पुरुष
4.	**ग्रामगतः**	गाँव गया हुआ	ग्रामं गतः	ग्राम अम् + गत सु	**''द्वितीया श्रितातीत....''** सूत्र से द्वितीयातत्पुरुष
6.	**दुःखापन्नः**	दुःख को प्राप्त हुआ	दुःखम् आपन्नः	दुःख अम् + आपन्न सु	**''द्वितीया श्रितातीत .....''** सूत्र से द्वितीयातत्पुरुष
7.	**शङ्कुलाखण्डः**	सरोते से किया गया टुकड़ा	शङ्कुलया खण्डः	शङ्कुला टा + खण्ड सु	**''तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन''** सूत्र से तृतीया तत्पुरुष
8.	**सुखप्राप्तः**	सुख को पाया हुआ	सुखं प्राप्तः	सुख अम् + प्राप्त सु	''द्वितीया श्रितातीत......''
9.	**विद्यार्थः**	विद्या से प्रयोजन	विद्यया अर्थः	विद्या टा + अर्थ सु	**''तृतीया तत्कृतार्थेन....''** सूत्र से तृतीया तत्पुरुष (**धनार्थः, हिरण्यार्थः**)
10.	**हरित्रातः**	हरि के द्वारा रक्षित	हरिणा त्रातः	हरि टा + त्रात सु	**''कर्तृकरणे कृता बहुलम्''** इस सूत्र से तृतीयातत्पुरुष
11.	**नखभिन्नः**	नाखूनों से चीरा गया	नखैः भिन्नः	नख भिस् + भिन्न सु	**''कर्तृकरणे कृता बहुलम्''** इस सूत्र से तृतीयातत्पुरुष
12.	**नखनिर्भिन्नः**	नखों से फाडा गया	नखैः निर्भिन्नः	नख भिस् + निर्भिन्न सु	**'कृद्ग्रहणे गतिकारक-पूर्वस्यापि ग्रहणम्'** इससे नि उपसर्ग लगने पर भी समास का ग्रहण हुआ
13.	**यूपदारु (गृहदारु, कङ्कण-सुवर्णम्)**	खम्भे के लिए लकड़ी	यूपाय दारु	यूप ङे + दारु सु	**''चतुर्थी तदर्थार्थबलिहित सुखरक्षितैः''** इस सूत्र से चतुर्थीतत्पुरुष
14.	**द्विजार्थः**	ब्राह्मण के लिए (दान)	द्विजाय अयम्	द्विज ङे + अर्थ सु	**''चतुर्थी तदर्थार्थ....''** सूत्र से विकल्प तथा **''अर्थेन नित्य समासो विशेष्यलिङ्गता चेति वक्तव्यम्''** इस वार्तिक से नित्यसमास।
15.	**भूतबलिः**	भूतों के लिए बलि	भूतेभ्यो बलिः	भूत भ्यस् + बलि सु	**''चतुर्थी तदर्थार्थबलिहित सुखरक्षितैः''** सूत्र से चतुर्थी तत्पुरुष
16.	**गोहितम्**	गायों का हित	गोभ्यो हितम्	गो भ्यस् + हित सु	**''चतुर्थी तदर्थार्थबलिहित सुखरक्षितैः''** सूत्र से समास। इसी तरह **'गोसुखम्'' 'गोरक्षितम्** आदि
17.	**चोरभयम्**	चोर से डर	चोरात् भयम्	चोर ङसि + भय सु	**'पञ्चमी भयेन'** सूत्र से समास। **वृकभीः, भयभीतः, सिंहभीतिः।**

क्र0	सामासिकपदम्	अर्थ	लौकिकविग्रहः	अलौकिक विग्रहः	सामासिक-सूत्रम्
18.	**स्तोकान्मुक्तः**	थोड़े से मुक्त हुआ	स्तोकात् मुक्तः	स्तोक ङसि + मुक्त सु	''**स्तोकान्तिकदूरार्थकृच्छ्राणि क्तेन**'' सूत्र से अलुक् समास।
19.	**अन्तिकादागतः**	समीप से आया हुआ	अन्तिकाद् आगतः	अन्तिक ङसि + आगत सु	''**स्तोकान्तिकदूरार्थकृच्छ्राणि क्तेन**'' सूत्र से अलुक् समास।
20.	**अभ्याशादागतः**	समीप से आया हुआ	अभ्याशात् आगतः	अभ्याश ङसि + आगत सु	''**स्तोकान्तिकदूरार्थकृच्छ्राणि क्तेन**'' सूत्र से अलुक् समास।
21.	**दूरादागतः**	दूर से आया हुआ	दूरात् आगतः	दूर ङसि + आगत सु	'**स्तोकान्तिकदूरार्थ....**' सूत्र से अलुक् समास
22.	**कृच्छ्रादागतः**	कष्ट से आया हुआ	कृच्छ्रात् आगतः	कृच्छ्र ङसि + आगत सु	''**स्तोकान्तिक......**'' सूत्र से समास
23.	**राजपुरुषः**	राजा का आदमी/सेवक	राज्ञः पुरुषः	राजन् ङस् + पुरुष सु	'**षष्ठी**' सूत्र से षष्ठी तत्पु0 समास।
24.	**आत्मज्ञानम्**	आत्मा का ज्ञान	आत्मनः ज्ञानम्	आत्मन् ङस् + ज्ञान सु	'**षष्ठी**' सूत्र से षष्ठी तत्पु0 समास।
25.	**मनोविकारः**	मन का विकार	मनसः विकारः	मनस् ङस् + विकार सु	'**षष्ठी**' सूत्र से षष्ठी तत्पु0 समास
26.	**सत्सङ्गतिः**	सज्जनों की सङ्गति	सतां सङ्गतिः	सत् आम् + सङ्गति सु	'**षष्ठी**' सूत्र से षष्ठी तत्पु0 समास
27.	**पूर्वकायः**	शरीर का अगला आधा भाग	पूर्वं कायस्य	काय ङस् + पूर्व सु	'**पूर्वापराधरोत्तरमेकदेशिनै-काधिकरणे**' सूत्र से तत्पुरुष समास।
28.	**अपरकायः**	शरीर का दूसरा आधा भाग	अपरं कायस्य	काय ङस् + अपर सु	''**पूर्वापरा.....**'' सूत्र से समास
29.	**अर्धपिप्पली**	पिप्पली का आधा भाग	अर्धं पिप्पल्याः	पिप्पली ङस् + अर्ध सु	''**अर्धं नपुंसकम्**'' सूत्र से समास। इसी तरह ''**आसनार्धम् शरीरार्धम् पणार्धम्**'' आदि।
30.	**अक्षशौण्डः**	पासाओं से खेलने में चतुर	अक्षेषु शौण्डः	अक्ष् सुप् + शौण्ड सु	''**सप्तमी शौण्डैः**'' सूत्र से सप्तमीतत्पुरुष।
31.	**काव्यनिपुणः**	काव्यशास्त्र में निपुण	काव्ये निपुणः	काव्य ङि + निपुण सु	''**सप्तमी शौण्डैः**'' सूत्र से सप्तमीतत्पुरुष समास
32.	**वेदविद्वान्**	वेद को जानने वाला	वेदं विद्वान्	वेद अम् + विद्वस् सु	द्वितीया समास करके वेद-विद्वान् शब्द बना है (द्वि. त.)
33.	**मदान्धः**	मद से अन्धा	मदेन अन्धः	मद टा + अन्ध सु	तृतीया तत्पुरुष समास
34.	**धर्मनियमः**	धर्म के लिए नियम	धर्माय नियमः	धर्म ङे + नियम सु	चतुर्थी तत्पुरुष
35.	**द्विजेतरः**	ब्राह्मण से अलग	द्विजाद् इतरः	द्विज ङसि + इतर सु	पञ्चमी तत्पुरुष
37.	**पूर्वेषु-कामशमी**	पूर्वेषुकामशमी नामक प्राचीन एक गाँव	पूर्वा चासौ इषुकामशमी	पूर्वा सु + इषुकामशमी सु	दिशावचक तथा संज्ञावाचक होने के कारण ''**दिक्सङ्ख्ये संज्ञायाम्**'' से समास हुआ।

क्र०	सामासिकपदम्	अर्थ	लौकिकविग्रहः	अलौकिकविग्रहः	सामासिक-सूत्रम्
38.	**सप्तर्षयः**	सात ऋषियों की संज्ञा	सप्त च ते ऋषयः	सप्तन् जस् + ऋषि जस्	''**दिक्सङ्ख्ये संज्ञायाम्**'' से तत्पुरुष हुआ।
39.	**पौर्वशालः**	पूर्व दिशा वाली शाला में होने वाली	पूर्वस्यां शालायां भवः	पूर्वा ङि + शाला ङि	'**तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च**' से समास
40.	**पञ्चगवधनः** (द्विगु + बहुव्रीहि)	पाँच गाय धन हैं जिसका वह व्यक्ति	पञ्च गावो धनं यस्य	पञ्चन् जस् + गो जस् धन सु।	'**अनेकमन्यपदार्थे**' सूत्र से बहुव्रीहि
41.	**पञ्चगवम्**	पाँच गायों का समूह	पञ्चानां गवां समाहारः	पञ्चन् आम् + गो आम्	'**तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च**' सूत्र से समास ''**संख्यापूर्वो द्विगुः**'' से द्विगुसंज्ञा
42.	**नीलोत्पलम्**	नील कमल	नीलम् उत्पलम्/ नीलं च तद् उत्पलम्	नील सु + उत्पल सु	''**विशेषणं विशेष्येण बहुलम्**'' से कर्मधारय समास।
43.	**निर्मलगुणाः**	निर्मल गुण	निर्मलाः गुणाः अथवा निर्मलाश्च ते गुणाः	निर्मल जस् + गुण जस्	'**विशेषणं विशेष्येण बहुलम्**' से कर्मधारय समास।
44.	**कृष्ण-चतुर्दशी**	कृष्णपक्ष वाली चतुर्दशी	कृष्णा चतुर्दशी या कृष्णा चासौ चतुर्दशी	कृष्णा सु + चतुर्दशी सु	'**विशेषणं विशेष्येण बहुलम्**' से कर्मधारय समास।
45.	**अखिल-भूषणानि**	सारे आभूषण	'अखिलानि भूषणानि' या अखिलानि च तानि भूषणानि	अखिल जस् + भूषण जस्	'**विशेषणं विशेष्येण बहुलम्**' से कर्मधारय समास।
46.	**कृष्णसर्पः**	काला सर्प	कृष्णः सर्पः या कृष्णश्चासौ सर्पः	कृष्ण सु + सर्प सु	'**विशेषणं विशेष्येण बहुलम्**' से बहुलता के अर्थ में 'नित्य' समास
47.	**घनश्यामः**	बादल की तरह श्याम वर्ण वाले श्रीकृष्ण	घन इव श्यामः	घन सु + श्याम सु	'**उपमानानि सामान्यवचनैः**' सूत्र से समास
48.	**कर्पूरगौरः**	कपूर की तरह श्वेत वर्ण वाला	कर्पूर इव गौरः	कर्पूर सु + गौर सु	'**उपमानानि सामान्यवचनैः**' सूत्र से समास
49.	**शाकपार्थिवः**	शाक को प्रिय मानने वाला राजा	शाकप्रियः पार्थिवः	शाकप्रिय सु + पार्थिव सु	मध्यमपदलोपी समास
50.	**देवब्राह्मणः**	देवता का पूजन करने वाला ब्राह्मण	देवपूजको ब्राह्मणः	देवपूजक सु + ब्राह्मण सु	मध्यमपदलोपी समास
51.	**अब्राह्मणः**	ब्राह्मण से भिन्न, ब्राह्मण जैसा, क्षत्रिय आदि	न ब्राह्मणः	न ब्राह्मण सु	'**नञः' से नञ् तत्पुरुष** समास हुआ
52.	**अनश्वः**	घोड़े से भिन्न घोड़े जैसा गधा, खच्चर आदि	न अश्वः	न अश्व सु	'**नञः**' से नञ् तत्पुरुष समास हुआ
53.	**कुपुरुषः(कुमाता, कुदृष्टिः)**	निन्दित पुरुष	कुत्सितः पुरुषः	कु पुरुष सु	''**कुगतिप्रादयः**'' से समास
54.	**ऊरीकृत्य**	स्वीकार करके	ऊरी कृत्वा		''**कुगतिप्रादयः**'' से समास
55.	**शुक्लीकृत्य**	सफेद करके या अशुक्ल को शुक्ल करके	अशुक्लं शुक्लं कृत्वा	शुक्ल अम् कृत्वा	''**कुगतिप्रादयः**'' से समास

क्र0	सामासिकपदम्	अर्थ	लौकिकविग्रहः	अलौकिक विग्रहः	सामासिक-सूत्रम्
56.	**पटपटाकृत्य**	पटत् पटत् इस प्रकार शब्द करके	पटत् पटत् इति कृत्वा	**hěldehěldeâ** + क्त्वा + डाच्	‘**कुगतिप्रादयः**’ से समास
57.	**सुपुरुषः**	सुन्दर पुरुष	शोभनः पुरुषः	सु पुरुष सु	‘‘**कुगतिप्रादयः**’’ से ‘प्रादिसमास’ होगा (ऐसे ही सुराजा, दुर्जनः, दुर्दिनम्)
58.	**प्राचार्यः** (प्रादितत्पुरुष)	दूर गया हुआ आचार्य, श्रेष्ठ आचार्य, अपने विषय में दक्ष या आचार्य का भी आचार्य	प्रगतः आचार्यः	प्र आचार्य सु	‘**प्रादयो गताद्यर्थे प्रथमया**’ से समास। (इसीतरह प्रपितामहः, विपक्षः, प्रवीरः आदि)
59.	**अतिमालः**	माला का अतिक्रमण करने वाला या सुगन्ध से माला आदि को मात दे चुका कोई पदार्थ	मालाम् अतिक्रान्तः	माला अम् अति	‘‘**अत्यादयः क्रान्ताद्यर्थे द्वितीया**’ से समास, (अतिमानुषः अत्यर्थः इत्यादि)
60.	**अवकोकिलः** आदि	कोयली से कूजित प्रदेश	अवक्रुष्टः कोकिलया	कोकिला टा + अव	‘‘**अवादयः क्रुष्टाद्यर्थे तृतीया**’’ से समास
61.	**पर्यध्ययनः**	अध्ययन से थका हुआ या घबराया हुआ	परिग्लानः अध्ययनाय	अध्ययन ङे + परि	‘‘**पर्यादयो ग्लानाद्यर्थे चतुर्थ्या**’’ से समास
62.	**निष्कौशाम्बिः**	कौशाम्बी नगरी से निकला हुआ	निष्क्रान्तः कौशाम्ब्याः	कौशाम्बी ङसि + निर्	‘**निरादयः क्रान्ताद्यर्थे पञ्चम्या**’ इस वा0 से समास
63.	**कुम्भकारः**	घड़े को बनाने वाला	कुम्भं करोति	कुम्भ अम् + कृ	**उपपदमतिङ्** से समास। इसी तरह सूत्रकारः आदि बनता है
64.	**व्याघ्री**	विशेष रूप से सूँघने वाली	विशेषेण जिघ्रती		‘**उपपदमतिङ्**’ सूत्र से समास
65.	**अश्वक्रीती**	घोड़े के द्वारा खरीदी गई वस्तु भूमि आदि	अश्वेन क्रीता	अश्व टा क्रीत	‘**कर्तृकरणे कृताबहुलम्**’ से तृतीया तत्पुरुष
66.	**कच्छपी**	कच्छ से पीने वाली	कच्छेन पिबति	कच्छ टा + पा	**उपपदमतिङ्** से समास होता है
67.	**द्व्यङ्गुलम्**	दो अंगुल के बराबर नापवाली लकड़ी आदि	द्वे अङ्गुली प्रमाणम् अस्य	द्वि औ + अङ्गुलि औ	‘‘**तद्धितार्थोत्तरपद-समाहारे च**’’ सूत्र से द्विगुसमास
68.	**निरङ्गुलम्**	निकल गई अंगुली से जो, अंगूठी आदि	निर्गत अङ्गुलिभ्यः	निर् + अङ्गुलि + भ्यस्	‘‘**निरादयः क्रान्ताद्यर्थे पञ्चम्या**’’ से प्रादि तत्पुरुष
69.	**अहोरात्रः**	दिन - रात	अहन् च रात्रिश्च, अनयोः समाहारः	अहन् सु + रात्रि सु	‘**चार्थे द्वन्द्वः**’ से द्वन्द्व समास
70.	**सर्वरात्रः**	सारी रात	सर्वा चासौ रात्रिः	सर्वा सु + रात्रि सु	‘‘**विशेषणं विशेष्येण बहुलम्**’’ से कर्मधारय समास
71.	**पूर्वरात्रः**	रात का पहला भाग	पूर्वं रात्रेः	पूर्व सु + रात्रि ङस्	**पूर्वापराधरोत्तरमेकदेशिनै–काधिकरणे**’ से समास हुआ है
72.	**सङ्ख्यातरात्रः**	गिनी गई रात	सङ्ख्याता चासौ रात्रिः	सङ्ख्याता सु + रात्रि सु	‘‘**पूर्वकालैकसर्व जरत्पुराणनवकेवलाः समानाधिकरणेन**’’ से समास हुआ
73.	**द्विरात्रम्**	दो रातों का समूह	द्वयोः रात्र्योः समाहारः	द्वि ओस् + रात्रि ओस्	‘‘**तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे-च**’’ से समास हुआ

बहुव्रीहिः ''अन्यपदार्थप्रधानः बहुव्रीहिः''

क्र0	सामासिकपदम्	अर्थः	लौकिकविग्रहः	अलौकिकविग्रहः	सामासिक-सूत्रम्
1.	**कण्ठेकालः**	कण्ठ में काल या नील वर्ण है जिसका वह, (शंकर जी या नीलकण्ठ पंक्षी)	कण्ठे कालो यस्य सः	कण्ठ ङि + काल सु	**'अनेकमन्यपदार्थे'** सूत्र से बहुव्रीहि समास
2.	**प्राप्तोदकः**	प्राप्त हो गया है जल जिसको = ग्राम	प्राप्ततम् उदकं यं (ग्रामम्)	प्राप्त सु + उदक सु	**''अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
3.	**ऊढरथः**	ढो चुका है रथ जिसने (घोड़े ने)	ऊढः रथः येन	ऊढ सु + रथ सु	**'अनेकमन्यपदार्थे'** सूत्र से बहुव्रीहि समास
4.	**उपहृतपशुः**	जिसको पशु भेंट चढ़ाया गया है वह, (शम्भू के अर्थ में)	उपहृतः पशुः यस्मै (शम्भवे)	उपहृत सु + पशु सु	**'अनेकमन्यपदार्थे'** सूत्र से बहुव्रीहि समास
5.	**दत्तद्रव्यः**	जिसको द्रव्य दिया गया है वह	दत्तं द्रव्यं यस्मै (जनाय)	दत्त सु + द्रव्य सु	**'अनेकमन्यपदार्थे'** सूत्र से बहुव्रीहि समास
6.	**उद्धृतौदना**	निकाल लिया गया है भात जिससे वह (बटलोई)	उद्धृतः ओदनः यस्याः (स्थाल्याः)	उद्धृत सु + ओदन सु	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
7.	**पीताम्बरः**	पीले वस्त्र हैं जिसके वह (विष्णु)	पीतम् अम्बरम् अस्ति यस्य सः (विष्णुः)	पीत सु + अम्बर सु	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
8.	**वीरपुरुषः**	वीर पुरुष है जिस (ग्राम) के	वीराः पुरुषाः सन्ति यस्मिन् (ग्रामे)	वीर जस् + पुरुष जस्	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
9.	**समृद्धपुरुषाणि**	समृद्धपुरुष हैं, जिन नगरों में, वे नगर	समृद्धाः पुरुषाः सन्ति येषु (नगरेषु)	समृद्ध जस् + पुरुष जस्	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
10.	**प्रपतितः**	जिसके पत्ते अच्छी तरह झड़ चुके हैं, वह (वृक्ष)	प्रपतितानि पर्णानि यस्मात् (सः वृक्षः)	प्रपतित जस् + पर्ण जस्	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास (ऐसे ही - विधवा, निर्जनः, निर्गुणः, निष्फलं, निरर्थकः आदि)
11.	**अपुत्रः**	जिसका पुत्र नहीं है वह पुत्रहीन पुरुष	अविद्यमानः पुत्रो यस्य	अविद्यमान सु + पुत्र सु	**नञोऽस्त्यर्थानां वाच्यो वा चोत्तरपद-लोपः** (वा0) (अनाथः, अक्रोधः आदि)
12.	**चित्रगुः**	चितकबरी गायों वाला व्यक्ति	चित्राः गावः यस्य	चित्रा जस् + गो जस्	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
13.	**रूपवद्भार्यः**	रूपवती स्त्री वाला पुरुष	रूपवती भार्या अस्ति यस्य	रूपवती सु + भार्या सु	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
14.	**दीर्घजङ्घः**	लम्बी जाँघ वाला पुरुष	दीर्घे जङ्घे स्तः यस्य (पुरुषस्य)	दीर्घा औ + जङ्घा औ	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास

क्र0	सामासिकपदम्	अर्थः	लौकिकविग्रहः	अलौकिकविग्रहः	सामासिक-सूत्रम्
15.	**सुन्दरभार्यः**	सुन्दरी स्त्री वाला पुरुष	सुन्दरी भार्या अस्ति यस्य	सुन्दरी सु + भार्या सु	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
16.	**कल्याणीपञ्चमाः** (रात्रयः)	जिन रातों में पाँचवीं रात कल्याणदायिनी है, ऐसी सभी रातें	कल्याणी पञ्चमी यासां रात्रीणाम्	कल्याणी सु + पञ्चमी सु	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
17.	**स्त्रीप्रमाणः**	स्त्री जिसके लिए प्रमाण हो, वह पुरुष	स्त्री प्रमाणी यस्य सः	स्त्री सु + प्रमाणी सु	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
18.	**दीर्घसक्थः**	दीर्घ ऊरुओं वाला पुरुष	दीर्घे सक्थिनी स्तः यस्य (पुरुषस्य)	दीर्घ औ + सक्थि औ	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
19.	**जलजाक्षी**	कमल की तरह सुन्दर आँख वाली स्त्री	जलजे इव अक्षिणी यस्याः	जलजा औ + अक्षि औ	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
20.	**द्विमूर्धः**	दो सिर है जिसके वह पुरुष	द्वौ मूर्धानौ यस्य सः	द्वि औ + मूर्धन् औ	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
21.	**त्रिमूर्धः**	तीन सिर हैं जिसके वह पुरुष	त्रयो मूर्धानो यस्य सः	त्रि जस् + मूर्धन् जस्	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
22.	**अन्तर्लोमः**	अन्दर रोम है जिसके ऐसा पुरुष	अन्तर्लोमानि यस्य सः	अन्तर् + लोमन् जस्	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
23.	**बहिर्लोमः**	बाहर रोम है जिसके ऐसा वस्त्र	बहिर्लोमानि यस्य सः	बहिस् + लोमन् जस्	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
24.	**व्याघ्रपात्**	बाघ के पैरों की तरह पैर वाला	व्याघ्र पादौ इव पादौ यस्य सः	व्याघ्रपाद औ + पाद औ	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
25.	**द्विपात्**	दो पैरों वाला पुरुष	द्वौ पादौयस्य सः	द्वि औ पाद औ	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
26.	**सुपात्**	सुन्दर पैरों वाला पुरुष	सु शोभनौ पादौ यस्य सः	सु पाद + औ	**'अनेकमन्य पदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
27.	**उत्काकुत्**	उठे हुए तालु वाला	उद्गतं काकुदं यस्य सः	उत् + काकुद् सु	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
28.	**विकाकुत्**	विकृत तालु वाला पुरुष	विकृतं काकुदं यस्य सः	वि + काकुद् सु	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
29.	**पूर्णकाकुत्, पूर्णकाकुदः**	पूर्ण तालु वाला	पूर्णं काकुदं यस्य सः	पूर्ण सु+काकुद् सु	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
30.	**सुहृत् (सुहृद्मित्रम्)**	शोभन हृदय वाला मित्र	सु शोभनं हृदयं यस्य	सु + हृदय सु	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
31.	**दुर्हृत् (दुहृद्मित्रम्)**	दुष्ट हृदय वाला शत्रु	दुर् दुष्टं हृदयं यस्य	दुर् + हृदय सु	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
32.	**व्यूढोरस्कः**	चौड़ी छाती वाला पुरुष	व्यूढम् उरो यस्य	व्यूढ सु + उरस् सु (पुरुषस्य)	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
33.	**प्रियसर्पिष्कः**	जिसको घी प्रिय हो अर्थात् घी का प्रेमी व्यक्ति	प्रियं सर्पिः यस्य (पुरुषस्य)	प्रिय सु + सर्पिस् सु	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास

क्र0	सामासिकपदम्	अर्थः	लौकिकविग्रहः	अलौकिकविग्रहः	सामासिक-सूत्रम्
34.	युक्तयोगः	सफल हुआ है योग जिसका	युक्तो योगो यस्य	युक्त सु + योग सु	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
35.	कृतकृत्यः	कर लिया है अपना कर्तव्य जिसने	कृतं कृत्यं येन	कृत सु + कृत्य सु	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
36.	महायशस्कः, महायशाः	बड़े यश वाला व्यक्ति	महद् यशः यस्य (पुरुषस्य)	महत् सु + यशस् सु	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास

द्वन्द्व-समासः ''उभयपदार्थप्रधानः द्वन्द्वः''

क्र0	सामासिकपदम्	अर्थः	लौकिकविग्रहः	अलौकिकविग्रहः	सामासिक-सूत्रम्
1.	धवखदिरौ	धव और खदिर के वृक्ष	धवश्च खदिरश्च	धव सु खदिर सु	**'चार्थे द्वन्द्वः'** से द्वन्द्वसमास
2.	रामकृष्णौ	राम और कृष्ण	रामश्च कृष्णश्च	राम सु कृष्ण सु	**'चार्थे द्वन्द्वः'** से द्वन्द्वसमास
3.	हरिकृष्णरामाः	हरि कृष्ण और राम	हरिश्च कृष्णश्च रामश्च	हरि सु कृष्ण सु राम सु	**'चार्थे द्वन्द्वः'** से द्वन्द्वसमास
4.	संज्ञापरिभाषम्	संज्ञा और परिभाषा का समूह	संज्ञा च परिभाषा च अनयोः समाहारः	संज्ञा सु परिभाषा सु	**'चार्थे द्वन्द्वः'** से द्वन्द्वसमास
5.	हस्तचरणम्	हाथ और पैर	हस्तश्च चरणश्च या हस्तौ च चरणौ च एतेषां समाहारः	हस्त सु चरण सु या हस्त औ चरण औ	**'चार्थे द्वन्द्वः'** से द्वन्द्वसमास
6.	राजदन्ताः	दाँतो का राजा अर्थात् ऊपर सामने के दाँत	दन्तानां राजा	दन्त आम् राजन् सु	**'षष्ठी'** सूत्र से तत्पुरुष समास
7.	धर्मार्थौ/ अर्थधर्मौ	धर्म और अर्थ	धर्मश्च अर्थश्च	धर्म सु अर्थ सु	**'चार्थे द्वन्द्वः'** से द्वन्द्वसमास
8.	हरिहरौ	हरि और हर (विष्णु और शिव)	हरिश्च हरश्च	हरि सु हर सु	**'चार्थे द्वन्द्वः'** से द्वन्द्वसमास
9.	हरिहरगुरवः	हरि (विष्णु), हर (शिव) और गुरु	हरिश्च हरश्च गुरुश्च	हरि सु हर सु गुरु सु	**'चार्थे द्वन्द्वः'** से द्वन्द्वसमास
10.	ईशकृष्णौ	ईश और कृष्ण	ईशश्च कृष्णश्च	ईश सु कृष्ण सु	**'चार्थे द्वन्द्वः'** से द्वन्द्वसमास
11.	शिवकेशवौ	शिव और केशव	शिवश्च केशवश्च	शिव सु केशव सु	**'चार्थे द्वन्द्वः'** से द्वन्द्वसमास
12.	पितरौ मातापितरौ	माता और पिता	माता च पिता च	मातृ सु पितृ सु	**'चार्थे द्वन्द्वः'** से द्वन्द्वसमास
13.	पाणिपादम्	हाथ और पैर का समूह	पाणी च पादौ च तेषां समाहारः	पाणी औ पाद औ	**'चार्थे द्वन्द्वः'** से द्वन्द्वसमास
14.	मार्दङ्गिकवैणविकम्	मृदङ्गवादक और वेणुवादकों का समूह	मार्दङ्गिकाश्च वैणविकाश्च	मार्दङ्गिक जस् + वैणविक जस्	**'चार्थे द्वन्द्वः'** से द्वन्द्व समास
15.	रथिकाश्वारोहम्	रथिकों और घुड़सवारों का समूह	रथिकाश्च अश्वारोहाश्च तेषां समाहारः	रथिक जस् अश्वारोह जस्	**'चार्थे द्वन्द्वः'** से द्वन्द्वसमास

क्र0	सामासिकपदम्	अर्थः	लौकिकविग्रहः	अलौकिकविग्रहः	सामासिक-सूत्रम्
16.	**वाक्त्वचम्**	वाणी और त्वचा का समुदाय	वाक् च त्वक् च तयोः समाहारः	वाच् सु त्वच् सु	**'चार्थे द्वन्द्वः'** से द्वन्द्वसमास
17.	**त्वक्स्रजम्**	त्वचा और माला का समुदाय	त्वक् च स्रक् च तयोः समाहारः	त्वच् सु स्रक् सु	**'चार्थे द्वन्द्वः'** से द्वन्द्वसमास
18.	**शमीदृषदम्**	शमी और पत्थर का समुदाय	शमी च दृषत् च तयोः समाहारः	शमी सु दृषद् सु	**'चार्थे द्वन्द्वः'** से द्वन्द्वसमास
19.	**वाक्त्विषम्**	वाणी और कान्ति का समुदाय	वाक् च त्विट् च तयोः समाहारः	वाच् सु त्विष् सु	**'चार्थे द्वन्द्वः'** से द्वन्द्वसमास
20.	**छत्रोपानहम्**	छाते और जूते का समुदाय	छत्रं च उपानहौ च तेषां समाहारः	छत्र सु उपानह् औ	**'चार्थे द्वन्द्वः'** से द्वन्द्वसमास
21.	**प्रावृट्शरदौ**	बिजली और ठण्डी	प्रावृट् च शरच्च	प्रावृट् सु शरत् सु	द्वन्द्वसमास

समासान्ताः

क्र0	सामासिकपदम्	अर्थः	लौकिकविग्रहः	अलौकिकविग्रहः	सामासिक-सूत्रम्
1.	**अर्धर्चः**	ऋचा का आधा भाग	ऋचः अर्धम्	ऋच् ङस् अर्ध सु	**'अर्धं नपुंसकम्'** से समास
2.	**विष्णुपुरम्**	विष्णु की नगरी	विष्णोः पूः	विष्णु ङस् पुर् सु	**'षष्ठी'** से तत्पुरुषसमास
3.	**विमलापं सरः**	निर्मल जल है जिसका ऐसा तालाब	विमला आपो यस्य	विमला जस् अप् जस्	**'अनेकमन्यपदार्थे'** सूत्र से बहुव्रीहि-समास
4.	**राजाधुरा**	राजा का कार्यभार	राज्ञः धूः	राजन् ङस् धुर् सु	**'षष्ठी'** से तत्पुरुष समास
5.	**सखिपथः**	मित्र का रास्ता	सख्युः पन्थाः	सखि ङस् पथिन् सु	**'षष्ठी'** से तत्पुरुष समास
6.	**राम्यपथो देशः**	सुन्दर रास्ता है, जिसका, ऐसा देश	रम्याः पन्थानो यस्य सः	रम्य जस् पथिन् जस्	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहिसमास
7.	**गवाक्षः**	गाय की आखों जैसी खिड़की, झरोखा	गवाम् अक्षि इव	गो आम् अक्षि सु	**'षष्ठी'** से तत्पुरुष समास
8.	**प्राध्वो रथः**	वह रथ जो मार्ग पर चल पड़ा	प्रगतः अध्वानम्	प्र + अध्वन् अम्	**'अत्यादयः क्रान्ताद्यर्थे द्वितीयया''** (वा0) से समास
9.	**सुराजा**	अच्छा राजा	शोभनो राजा	सु + राजन् सु	**''कुगतिप्रादयः''** से तत्पुरुष समास
10.	**अतिराजा**	अच्छा राजा	अतिशयितो राजा	अति + राजन् सु	**'कुगतिप्रादयः'** से तत्पुरुष समास
11.	**परमराजः**	अच्छा राजा या महान् राजा	परमश्चासौ राजा	परम सु + राजन् सु	टच् प्रत्यय से 'परमराजः' बनेगा

कारक-सूत्रोदाहरण-तालिका

सूत्रम् / वार्तिकम्	उदाहरण

प्रथमाविभक्तिः

1. **प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा**	प्रथमाविभक्ति
क. अलिङ्ग प्रातिपदिकार्थमात्र	**उच्चैः, नीचैः**
ख. नियतलिङ्गप्रातिपदिकार्थमात्र	**कृष्णः, श्रीः, ज्ञानम्**
ग. अनियतलिङ्ग/लिङ्गमात्राधिक्य	**तटः, तटी, तटम्**
घ. परिमाणमात्र	**द्रोणो** ब्रीहिः
ङ. वचनमात्र	**एकः, द्वौ, बहवः**
2. **सम्बोधने च**	**हे देवदत्त!** अत्र आगच्छ

द्वितीयाविभक्तिः

3. **(क) कर्तुरीप्सिततमं कर्म**	कर्म संज्ञा
(ख) कर्मणि द्वितीया	**हरिं** भजति
4. **तथायुक्तं चानीप्सितम्**	ग्रामं गच्छन् **तृणं** स्पृशति। ओदनं भुञ्जानो **विषं** भुङ्क्ते

5. **अकथितं च**

♦ **दुह्–गां** दोग्धि पयः ♦ **याच्– बलिं** याचते वसुधाम् **अविनीतं** विनयं याचते ♦ **पच्– तण्डुलान्** ओदनं पचति ♦ **दण्ड – गर्गान्** शतं दण्डयति ♦ **रुध् – व्रजम्** अवरुणद्धि गाम् ♦**प्रच्छ – माणवकं** पन्थानं पृच्छति ♦ **चि– वृक्षम**वचिनोति फलानि ♦ **ब्रू, शास् –माणवकं** धर्मं ब्रूते, शास्ति वा ♦ **जि –** शतं जयति **देवदत्तम्** ♦ **मथ्– सुधां** क्षीरनिधिं मथ्नाति ♦ **मुष्** – **देवदत्तं** शतं मुष्णाति ♦ **नी, हृ, कृष् वह् –ग्रामम्** अजां नयति, हरति, कर्षति, वहति वा ♦ **भिक्ष्–बलिं** भिक्षते वसुधाम् ♦ **भाष् – माणवकं** धर्मं भाषते अभिधत्ते वक्ति वा।

6. **अकर्मकधातुभिर्योगे देशः कालो भावो गन्तव्योऽध्वा च कर्मसंज्ञक इति वाच्यम् (वार्तिक)**

(क). कुरून् स्वपिति (ख). मासम् आस्ते (ग). गोदोहम् आस्ते (घ). क्रोशम् आस्ते

7. **गतिबुद्धि-प्रत्यवसानार्थ-शब्द-कर्माकर्मकाणामणि कर्ता स णौ**

अण्यन्त अवस्था	**ण्यन्त अवस्था**
(क). शत्रवः स्वर्गम् अगच्छन्	**शत्रून्** स्वर्गम् अगमयत् ।
(ख). स्वे वेदार्थम् अविदुः ।	**स्वान्** वेदार्थम् अवेदयत् ।
(ग). देवा अमृतम् आश्नन् ।	**देवान्** अमृतम् आशयत् ।
(घ). विधिः वेदम् अध्यैत्	**वेदम्** अध्यापयत् विधिम्
(ङ). पृथ्वी सलिले आस्ते।	आसयत् सलिले **पृथ्वीम् ।**
9. **नीवह्योर्न (वा0)**	नाययति वाहयति वा **भारं भृत्येन।**
10. **नियन्तृकर्तृकस्य वहेरनिषेधः (वा0)**	वाहयति रथं वाहान् सूतः
11. **आदिखाद्योर्न (वा0)**	आदयति खादयति वा अन्नं वटुना।
12. **भक्षेरहिंसार्थस्य न (वा0)**	भक्षयति अन्नं **वटुना**
13. **जल्पतिप्रभृतीनामुपसङ्ख्यानम् (वा0)**	जल्पयति भाषयति वा **धर्मं पुत्रं** देवदत्तः ।
14. **दृशेश्च (वा0)**	दर्शयति **हरिं भक्तान्**
15. **शब्दायतेर्न (वा0)**	शब्दाययति **देवदत्तेन**

16. **ह्रक्रोरन्यतरस्याम्** — हारयति कारयति वा **भृत्यं भृत्येन** वा कटम्
17. **अभिवादिदृशोरात्मनेपदे वेति वाच्यम् (वा0)** — अभिवादयते दर्शयते देवं **भक्तं भक्तेन** वा।
18. **अधिशीङ्स्थासां कर्म** — अधिशेते अधितिष्ठति अध्यास्ते वा **वैकुण्ठं** हरिः ।
19. **अभिनिविशश्च** — अभिनिविशते **सन्मार्गम्**
20. **उपान्वध्याङ्वसः** — उपवसति अनुवसति अधिवसति आवसति वा **वैकुण्ठं** हरिः
21. **अभुक्त्यर्थस्य न (वा0)** — **वने** उपवसति

उपपद- द्वितीया विभक्तिः

22. **उभसर्वतसोः कार्या धिगुपर्यादिषु त्रिषु द्वितीयाऽऽम्रेडितान्तेषु ततोऽन्यत्रापि दृश्यते (वा0)**
    (क) **उभयतः** कृष्णं गोपाः।
    (ख) **सर्वतः** कृष्णम् ।
    (ग) **धिक्** कृष्णाऽभक्तम्
    (घ) **उपर्युपरि** लोकं हरिः (ङ) **अध्यधि** लोकम् ।
    (च) **अधोऽधः** लोकम् ।
23. **अभितः-परितः-समया-निकषा-हा-प्रति-योगेऽपि (वा.)**
    (क) **अभितः** कृष्णम् (ख) **परितः** कृष्णम्
    (ग) **ग्रामं** समया (घ) **निकषा** लङ्काम्
    (ङ) **हा** कृष्णाऽभक्तम् (च) बुभुक्षितं न **प्रति**भाति किञ्चित् ।
24. **अन्तराऽन्तरेण युक्ते** — (क) **अन्तरा** त्वां मां हरिः। (ख) **अन्तरेण** हरिं न सुखम् ।
25 **(क) अनुर्लक्षणे**
    (ख) कर्मप्रवचनीययुक्ते द्वितीया — **जप**मनु प्रावर्षत्
26. **तृतीयार्थे** — **नदीम्** अन्ववसिता सेना।
27. **हीने** — अनु **हरिं** सुराः
28. **उपोऽधिके च** — उप **हरिं** सुराः
29. **लक्षणेत्थंभूताख्यानभागवीप्सासु प्रतिपर्यनवः**
    (क) लक्षणे — **वृक्षं** प्रति परि अनु वा विद्योतते विद्युत्
    (ख) इत्थंभूताख्याने — भक्तो **विष्णुं** प्रति परि अनु वा
    (ग) भागे — लक्ष्मीः **हरिं** प्रति परि अनु वा
    (घ) वीप्सायाम् — **वृक्षं वृक्षं** प्रति परि अनु वा सिञ्चति।
30. **अभिरभागे**
    (क) लक्षणे — **हरिम**भिवर्तते।
    (ख) इत्थंभूताख्याने — भक्तो **हरिम**भि।
    (ग) वीप्सायाम् — **देवं देवम**भिसिञ्चति।
31. **अधिपरी अनर्थकौ** — (क) कुतोऽध्यागच्छति। (ख) कुतः पर्यागच्छति।
32. **सुः पूजायाम्** — (क). **सुसिक्तम्** (ख). **सुस्तुतम्**
33. **अतिरतिक्रमणे च** — **अतिदेवान्** कृष्णः
34. **अपिः पदार्थसम्भावनाऽन्ववसर्गगर्हासमुच्चयेषु**
    (क) पदार्थ — सर्पिषोऽपि स्यात् ।
    (ख) सम्भावनम् — अपि स्तुयात् विष्णुम्
    (ग) अन्ववसर्ग — अपि स्तुहि।
    (घ) गर्हा — धिक् देवदत्तम् अपि स्तुयात् वृषलम्
    (ङ) समुच्चय — अपि सिञ्च अपि स्तुहि
35. **कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे** — (क) **मासं** कल्याणी (ख) **मासम्** अधीते (ग) **क्रोशं** कुटिला नदी (घ). **क्रोश**मधीते (ङ) **क्रोशं** गिरिः

तृतीया विभक्ति

सूत्र	उदाहरण
36. **(क) साधकतमं करणम्**	करणसंज्ञा
(ख) कर्तृकरणयोस्तृतीया	रामेण **बाणेन** हतो बालिः।
37. **प्रकृत्यादिभ्य उपसंख्यानम् (वा0)**	(क) **प्रकृत्या** चारुः (ख) **प्रायेण** याज्ञिकः (ग) **गोत्रेण** गार्ग्यः (घ) **समेन** एति, विषमेण एति। (ङ) **द्विद्रोणेन** धान्यं क्रीणाति। (च) **सुखेन दुःखेन** वा याति।
38. **दिवः कर्म च (कर्म और करणसंज्ञा)**	**अक्षैः अक्षान्** वा दीव्यति।
39. **अपवर्गे तृतीया**	
क. कालवाचक	**अह्ना** अनुवाकः अधीतः
ख. मार्गवाचक	क्रोशेन अनुवाकः अधीतः
40. **सहयुक्तेऽप्रधाने**	**पुत्रेण** सह आगतः पिता।
41. **येनाङ्गविकारः**	**अक्ष्णा** काणः
42. **इत्थम्भूतलक्षणे**	**जटाभि**स्तापसः
43. **सञ्ज्ञोऽन्यतरस्यां कर्मणि**	**पित्रा पितरं** वा सञ्जानीते।
44. **हेतौ** (क) द्रव्य के प्रति हेतु	(क) **दण्डेन** घटः
(ख) क्रिया के प्रति हेतु	(ख) **पुण्येन** दृष्टः हरिः,**अध्ययनेन** वसति।
45. **अशिष्टव्यवहारे दाणः प्रयोगे चतुर्थ्यर्थे तृतीया (वा0)**	**दास्या** संयच्छते कामुकः

चतुर्थी विभक्तिः

सूत्र	उदाहरण
46. **(क) कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्**	सम्प्रदानसंज्ञा
(ख) चतुर्थी सम्प्रदाने	**विप्राय** गां ददाति
47. **क्रियया यमभिप्रैति सोऽपि सम्प्रदानम् (वा0)**	**पत्ये** शेते
48. **यजेः कर्मणः करणसंज्ञा सम्प्रदानस्य च कर्मसंज्ञा**	पशुना रुद्रं यजते।,पशुं रुद्राय ददाति इत्यर्थः।
49. **रुच्यर्थानां प्रीयमाणः**	**हरये** रोचते भक्तिः।
50. **श्लाघह्नुङ्स्थाशपां ज्ञीप्स्यमानः**	गोपी स्मरात् **कृष्णाय** श्लाघते ह्नुते तिष्ठते शपते वा।
51. **धारेरुत्तमर्णः**	**भक्ताय** धारयति मोक्षं हरिः
52. **स्पृहेरीप्सितः**	**पुष्पेभ्यः** स्पृहयति
53. **क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः**	**हरये** क्रुध्यति द्रुह्यति ईर्ष्यति असूयति वा ।
54. **क्रुधद्रुहोरुपसृष्टयोः कर्म**	**क्रूरम्** अभिक्रुध्यति अभिद्रुह्यति वा
55. **राधीक्ष्योर्यस्य विप्रश्नः**	**कृष्णाय** राध्यति ईक्षते वा ।
56. **प्रत्याङ्भ्यां श्रुवः पूर्वस्य कर्ता**	**विप्राय** गां प्रतिशृणोति आशृणोति वा।
57. **अनुप्रतिगृणश्च**	**होत्रे** अनुगृणाति प्रतिगृणाति वा।
58. **परिक्रयणे सम्प्रदानमन्यतरस्याम्**	**शतेन शताय** वा परिक्रीतः
59. **तादर्थ्ये चतुर्थी वाच्या (वा0)**	**मुक्तये** हरिं भजति।
60. **क्लृपि सम्पद्यमाने च (वा0)**	भक्तिः **ज्ञानाय** कल्पते, सम्पद्यते, जायते।
61. **उत्पातेन ज्ञापिते च (वा0)**	**वाताय** कपिला विद्युत् ।
62. **हितयोगे च (वा0)**	**ब्राह्मणाय** हितम्
63. **क्रियार्थोपपदस्य च कर्मणि स्थानिनः**	क. **फलेभ्यो** याति। ख. नमस्कुर्मो **नृसिंहाय**। ग. **स्वयंभुवे** नमस्कृत्य
64. **तुमर्थाच्च भाववचनात्**	**यागाय** याति।
65. **नमः स्वस्ति-स्वाहा-स्वधाऽलं वषड्योगाच्च** (उपपद-चतुर्थी-विभक्तिः)	(क) **हरये** नमः (ख) **प्रजाभ्यः** स्वस्ति। (ग) **अग्नये** स्वाहा (घ) **पितृभ्यः** स्वधा (ङ) **दैत्येभ्यः** हरिः अलम् (च) **इन्द्राय** वषट् ।

66. **अलमिति पर्याप्त्यर्थग्रहणम् (वा0)**	**दैत्येभ्यो** हरिः अलम्, प्रभुः, समर्थः, शक्तः ।
67. **मन्यकर्मण्यनादरे विभाषाऽप्राणिषु**	न **त्वां** तृणं मन्ये **तृणाय** वा।
68. **अप्राणिष्वित्यपनीय नौकाकान्न-शुकशृगाल वर्जेष्विति वाच्यम् (वा0)**	(क) न **त्वां** नावम् अन्नं वा मन्ये। (ख) न **त्वां** शुने मन्ये।
69. **गत्यर्थकर्मणि द्वितीयाचतुर्थ्यौ चेष्टायामनध्वनि**	**ग्रामं ग्रामाय** वा गच्छति।

पञ्चमी विभक्तिः

70. **क. ध्रुवमपायेऽपादानम्** **ख. अपादाने पञ्चमी**	(क) **ग्रामात्** आयाति। (ख) **धावतोऽश्वात्** पतति।
71. **जुगुप्साविरामप्रमादार्थानामुपसङ्ख्यानम् (वा.)**	(क)**पापात्** जुगुप्सते।(ख) **पापात्** विरमति।(ग) **धर्मात्** प्रमाद्यति ।
72. **भीत्रार्थानां भयहेतुः**	(क) **चोरात्** बिभेति।(ख) **चोरात्** त्रायते।
73. **पराजेरसोढः**	**अध्ययनात्** पराजयते।
74. **वारणार्थानामीप्सितः**	**यवेभ्यो** गां वारयति।
75. **अन्तर्धौ येनादर्शनमिच्छति**	**मातुः** निलीयते कृष्णः।
76. **आख्यातोपयोगे**	**उपाध्यायात्** अधीते।
77. **जनिकर्तुः प्रकृतिः**	**ब्रह्मणः** प्रजाः प्रजायन्ते।
78. **भुवः प्रभवः**	**हिमवतः** गङ्गा प्रभवति।
79. **'ल्यब्लोपे कर्मण्यधिकरणे च' (वा0)**	(क) **प्रासादात्** प्रेक्षते। (ख) **आसनात्** प्रेक्षते।(ग) **श्वसुरात्** जिह्रेति।
80. **(क) गम्यमानाऽपि क्रिया कारकविभक्तीनां निमित्तम् ।** **(ख) यतश्चाध्वकालनिर्माणं तत्र पञ्चमी (वा0)** **(ग) तदुक्तादध्वनः प्रथमासप्तम्यौ** **(घ) कालात् सप्तमी च वक्तव्या (वा0)**	क. **कस्मात्** त्वम् ? नद्याः ख. **वनात्** ग्रामो योजनं योजने वा ग. **कार्तिक्या** आग्रहायणी मासे।
81. **अन्यारादितरर्तेदिक्शब्दाञ्चूत्तरपदाजाहियुक्ते** (उपपद पञ्चमीविभक्तिः)	(क) अन्यः भिन्नः इतरः वा **कृष्णात्** (ख) आरात् **वनात्** (ग) ऋते **कृष्णात्** (घ) पूर्वो **ग्रामात्** (ङ) **चैत्रात्** पूर्वः फाल्गुनः (च) प्राक् प्रत्यक् वा **ग्रामात्** (छ) दक्षिणाहि **ग्रामात्** (ज) दक्षिणा **ग्रामात्** (झ) भवात् प्रभृति आरभ्य वा सेव्यः हरिः ञ. ग्रामात् बहिः
82. **(क) अपपरी वर्जने** **(ख) आङ्मर्यादावचने** **(ग) पञ्चम्यपाङ्परिभिः**	क. अपहरेः संसारः ख. परिहरेः संसारः ग. आमुक्तेः संसारः
83. **(क) प्रतिः प्रतिनिधिप्रतिदानयोः** **(ख) प्रतिनिधिप्रतिदाने च यस्मात्**	क. प्रद्युम्नः **कृष्णात्** प्रति। ख. **तिलेभ्यः** प्रतियच्छति माषान्
84. **अकर्तर्यृणे पञ्चमी**	**शतात्** बद्धः।
85. **विभाषा गुणेऽस्त्रियाम्**	(क) **जाड्यात्** जाड्येन वा बद्धः। (ख) **धूमादग्निमान्** । (ग) नास्ति घटोऽ**नुपलब्धेः**
86. **पृथग्विनानानाभिस्तृतीयाऽन्यतरस्याम्**	(क) पृथक् **रामेण रामात् रामं** वा।(ख) विना **रामेण रामात् रामं** वा। (ग) नाना **रामेण रामात् रामं** वा ।
87. **करणे च स्तोकाल्पकृच्छ्रकतिपयस्यासत्त्ववचनस्य**	**स्तोकेन स्तोकात्** वा मुक्तः
88. **दूरान्तिकार्थेभ्यो द्वितीया च** (द्वितीया, तृतीया, पञ्चमी का विधान)	क. ग्रामस्य **दूरं दूरात् दूरेण** वा ख. ग्रामस्य **अन्तिकम् अन्तिकात् अन्तिकेन** वा।

षष्ठीविभक्तिः

सूत्र	उदाहरण
89. षष्ठी शेषे	
(क) स्वस्वामिभावसम्बन्धः	(क) **राज्ञः** पुरुषः
(ख) कर्तृकारक के शेषत्व विवक्षा में षष्ठी	(ख) **सतां** गतम्
(ग) करणकारक से शेषत्व की विवक्षा में षष्ठी	(ग) **सर्पिषो** जानीते।
(घ) कर्मकारक के शेषत्व की विवक्षा में षष्ठी	(घ) **मातुः** स्मरति।
(ङ) कर्मकारक के शेषत्व की विवक्षा में षष्ठी	(ङ) **एधोदकस्यो**पस्कुरुते।
(च) कर्मत्व के शेष की विवक्षा में षष्ठी	(च) भजे **शम्भो**श्चरणयोः
(छ) करणत्व की शेषत्व विवक्षा में षष्ठी	(छ) **फलानां** तृप्तः ।
90. षष्ठी हेतुप्रयोगे	**अन्नस्य** हेतोर्वसति।
(''हैतो'' सूत्र द्वारा प्राप्त तृतीया का अपवाद)	
91. सर्वनाम्नस्तृतीया च	(क) **केन हेतुना** वसति।
(विकल्प से तृतीया एवं षष्ठी का विधान)	(ख) **कस्य हेतोः** वसति।
92. निमित्तपर्यायप्रयोगे सर्वासां प्रायदर्शनम् (वा0)	(क) किं निमित्तं वसति। केन निमित्तेन। कस्मै निमित्ताय।
(प्रायशः सभी विभक्तियों का प्रयोग)	(ख) किं कारणम् ,को हेतुः, किं प्रयोजनम्।
	(ग) ज्ञानेन निमित्तेन हरिः सेव्यः।(घ) ज्ञानाय निमित्ताय हरिः सेव्यः।
93. षष्ठ्यतसर्थप्रत्ययेन	(क) **ग्रामस्य** दक्षिणतः। (ख) **ग्रामस्य** पुरः। (ग) **ग्रामस्य** पुरस्तात्।
(पञ्चमी का अपवाद)	(घ) **ग्रामस्य** उपरि। (ङ) **ग्रामस्य** उपरिष्टात्
94. एनपा द्वितीया	(क) दक्षिणेन **ग्रामं ग्रामस्य** वा।
(विकल्प से द्वितीया, एवं षष्ठी का विधान)	(ख) उत्तरेण **ग्रामं ग्रामस्य** वा।
95. दूरान्तिकार्थैः षष्ठ्यन्यतरस्याम्	(क) दूरं **ग्रामस्य ग्रामात्** वा।
(विकल्प से पञ्चमी और षष्ठी का विधान)	(ख) निकटं **ग्रामस्य ग्रामात्** वा।
96. ज्ञोऽविदर्थस्य करणे	**सर्पिषः** ज्ञानम्
97. अधीगर्थदयेशां कर्मणि	(क) **मातुः** स्मरणम् (ख) **सर्पिषः** दयनम् (ग) **सर्पिषः** इशनम्
98. कृञः प्रतियत्ने	एधोदकस्य उपस्करणम्
99. रुजार्थानां भाववचनानामज्वरेः	चौरस्य रोगस्य रुजा।
100. अज्वरिसन्ताप्योरिति वाच्यम् (वा0)	(क) **रोगस्य** चौरज्वरः (ख) **रोगस्य** चौरसन्तापः
101. आशिषि नाथः	**सर्पिषः** नाथनम्
102.जासिनिप्रहणनाटक्राथपिषां हिंसायाम्	(क) **चौरस्य** उज्जासनम् (ख) **चौरस्य** निप्रहणनम्
(कर्म से शेषत्व विवक्षा में षष्ठी	(ग) **चौरस्य** उन्नाटनम् (घ) **चौरस्य** क्राथनम्
प्रणिहननम्, निहननम्, प्रहणनम्	(ङ) **वृषलस्य** पेषणम् ।
103. व्यवहृपणोः समर्थयोः	(क) **शतस्य** व्यवहरणम्
	(ख) **शतस्य** पणनम्
104.दिवस्तदर्थस्य (कर्म में षष्ठी)	**शतस्य** दीव्यति
105.विभाषोपसर्गे (कर्म में षष्ठी विभक्ति विकल्प से)	**शतस्य** शतं वा प्रतिदीव्यति।
106.प्रेष्यब्रुवोर्हविषो देवतासम्प्रदाने	अग्नये छागस्य हविषः वपायाः मेदसः प्रेष्य अनुब्रूहि वा।
107.कृत्वोऽर्थप्रयोगे कालेऽधिकरणे	(क) पञ्चकृत्वोऽह्नो भोजनम्
(कालवाचक अधिकरण में शेषत्व की विवक्षा में षष्ठी)	(ख) द्विरह्नो भोजनम्

सूत्र	उदाहरण
108. **कर्तृकर्मणोः कृति** (अनुक्त कर्त्ता और कर्म में षष्ठी)	(क) **कृष्णस्य** कृतिः। (ख) **जगतः** कर्त्ता कृष्णः।
109. **गुणकर्मणि वेष्यते** (वा.)	नेता **अश्वस्य** स्रुघ्नस्य स्रुघ्नं वा
110. **उभय प्राप्तौ कर्मणि** (कृत् प्रत्यय के योग में कर्त्ता और कर्म दोनों में यदि षष्ठी प्राप्त हो, तो कर्म में ही षष्ठी हो)	आश्चर्यो गवां दोहः अगोपेन
111. **स्त्रीप्रत्यययोरकाकारयोर्नायं नियमः** (वा0)	भेदिका बिभित्सा वा रुद्रस्य जगतः।
112. **शेषे विभाषा** (वा0)	(क) विचित्रा जगतः कृतिः हरेः हरिणा वा। (ख) शब्दानाम् अनुशासनम् आचार्येण आचार्यस्य वा।
113. **क्तस्य च वर्तमाने**	**राज्ञां** मतः बुद्धः पूजितः वा।
114. **अधिकरणवाचिनश्च** (अधिकरणवाचक क्त प्रत्यय के योग में अनुक्त कर्त्ता और कर्म में षष्ठी विभक्ति)	(क) **इदम्** एषाम् आसितम् (ख) **इदम्** एषां शयितम् (ग) इदम् **एषां** गतम् (घ) इदम् **एषां** भुक्तम्
115. **न लोकाव्ययनिष्ठाखलर्थतृनाम् ।**	(क) कुर्वन् कुर्वाणो वा सृष्टिं हरिः। (ख) हरिं दिदृक्षुः। (ग) हरिम् अलङ्करिष्णुः। (घ) दैत्यान् घातुकः हरिः।
116. **कमेरनिषेधः (वा.)**	(क) लक्ष्म्याः कामुकः हरिः।(ख) जगत्सृष्ट्वा सुखं कर्तुम् । (ग) विष्णुना हता दैत्याः। (घ) दैत्यान् हतवान् विष्णुः । (ङ) ईषत्करः प्रपञ्चः हरिणः। (च) सोमं पवमानः (छ) आत्मानं मण्डयमानः (ज) वेदमधीयन् (झ) कर्त्ता लोकान् ।
117. **द्विषः शतुर्वा (वा.)** (षष्ठी का निषेध विकल्प से)	मुरस्य मुरं वा द्विषन् ।
118. **अकेनोर्भविष्यदाधमर्ण्ययोः** (षष्ठी का निषेध)	(क) सतः पालकोऽवतरति। (ख) व्रजं गामी (ग) शतं दायी
119. **कृत्यानां कर्त्तरि वा** (अनुक्त कर्त्ता मे षष्ठी विकल्प से)	(क) मया मम वा सेव्यः हरिः। (ख) नेतव्याः व्रजं गावः कृष्णेन ।
120. **तुल्यार्थैरतुलोपमाभ्यां तृतीयान्यतरस्याम् ।** (तृतीया और षष्ठी विकल्प से)	तुल्यः सदृशः समो वा कृष्णस्य कृष्णेन वा ।
121. **चतुर्थी चाशिष्यायुष्यमद्रभद्रकुशलसुखार्थहितैः** (चतुर्थी और षष्ठी)	आयुष्यं चिरञ्जीवितं कृष्णाय कृष्णस्य वा भूयात्

सप्तमी विभक्तिः

सूत्र	उदाहरण
122. **आधारोऽधिकरणम् सप्तम्यधिकरणे च।** (सप्तमी विभक्ति)	(क) **कटे** आस्ते। (औपश्लेषिक आधार) (ख) **स्थाल्यां** पचति। (औपश्लेषिक आधार) (ग) **मोक्षे** इच्छा अस्ति। (वैषयिक आधार) (घ) **सर्वस्मिन्** आत्मा अस्ति। (अभिव्यापक आधार) (ङ) **तिलेषु** तैलम् (अभिव्यापक आधार) (च) **दध्नि** सर्पिः (अभिव्यापक आधार) (छ) वनस्य **दूरे अन्तिके** वा ।
123. **क्तस्येन्विषयस्य कर्मण्युपसंख्यानम् (वा.)**	(क) अधीती **व्याकरणे** ।
124. **साध्वसाधुप्रयोगे च (वा.)**	(क) साधुः कृष्णः **मातरि** (ख) असाधुः कृष्णः **मातुले**
125. **निमित्तात् कर्मयोगे (वा.)**	**चर्मणि** द्वीपिनं हन्ति ।, **दन्तयो**र्हन्ति कुञ्जरम् । **केशेषु** चमरीं हन्ति ।,**सीम्नि** पुष्कलको हतः ।

126. यस्य च भावेन भावलक्षणम्	(क) **गोषु** दुह्यमानासु गतः ।
(सति सप्तमी, भावे सप्तमी)	(ख) **ब्राह्मणेषु** अधीयानेषु गतः ।
127. अर्हाणां कर्तृत्वे अनर्हाणामकर्तृत्वे	(क) सत्सु तरत्सु असन्तः आसते ।
तद्वैपरीत्ये च (वा.)	(ख) असत्सु तिष्ठत्सु सन्तः तरन्ति ।
	(ग) सत्सु तिष्ठत्सु असन्तः तरन्ति ।
	(घ) असत्सु तरत्सु सन्तः तिष्ठन्ति ।
128. षष्ठी चानादरे	**रुदति रुदतः** वा प्राव्राजीत् ।
(षष्ठी और सप्तमी)	
129. स्वामीश्वराधिपतिदायादसाक्षिप्रतिभूप्रसूतैश्च	(क) **गवां** स्वामी; **गोषु** स्वामी ।
(षष्ठी और सप्तमी)	(ख) **गवाम्** ईश्वरः ; **गोषु** ईश्वरः
	(ग) **गवाम्** अधिपतिः, **गोषु** अधिपतिः
	(घ) **गवां** दायादः ; **गोषु** दायादः ।
	(ङ) **गवां** साक्षी, **गोषु** साक्षी ।
	(च) **गवां** प्रतिभूः **गोषु** प्रतिभूः ।
	(छ) **गवां** प्रसूतः **गोषु** प्रसूतः ।
130. आयुक्तकुशलाभ्यां चासेवायाम् । (षष्ठी और सप्तमी)	आयुक्तः कुशलः वा **हरिपूजने** हरिपूजनस्य वा।
131. यतश्च निर्धारणम् (षष्ठी और सप्तमी)	
(जाति)	(क) **नृणां नृषु** वा द्विजः श्रेष्ठः।
(गुण)	(ख) **गवां गोषु** वा कृष्णा बहुक्षीरा।
(क्रिया)	(ग) **गच्छतां गच्छत्सु** वा धावन् शीघ्रः।
(संज्ञा)	(घ) **छात्राणां छात्रेषु** वा मैत्रः पटुः।
132. पञ्चमी विभक्ते	माथुराः **पाटलिपुत्रकेभ्यः** आढ्यतराः।
133. साधुनिपुणाभ्यामर्चायां सप्तम्यप्रतेः	**मातरि** साधुः निपुणः वा।
134. अप्रत्यादिभिरिति वक्तव्यम् (वा0)	साधुः निपुणः वा मातरं प्रति परि अनु वा।
(प्रति, परि, अनु के योग में सप्तमी का निषेध)	
135. प्रसितोत्सुकाभ्यां तृतीया च (तृतीया और सप्तमी)	प्रसितः उत्सुकः **हरिणा हरौ** वा.
136. नक्षत्रे च लुपि (तृतीया और सप्तमी)	मूलेन आवाहयेत् देवीं श्रवणेन विसर्जयेत्
137. सप्तमी पञ्चम्यौ कारकमध्ये (सप्तमी और पञ्चमी)	(क) अद्य भुक्त्वा अयं द्व्यहाद् वा भोक्ता।
	(ख) अयम् इहस्थः क्रोशे क्रोशाद् वा लक्ष्यं विध्येत् ।
	(ग) लोके लोकाद् वा अधिको हरिः
138. क. अधिरीश्वरे	(क) उप **परार्धे** हरेर्गुणाः।
ख. **यस्मादधिकं यस्य चेश्वरवचनं तत्र सप्तमी**	(ख) अधि **भुवि** रामः।
(कर्मप्रवचनीय के योग में सप्तमी)	(ग) अधि**रामे** भूः।
139. विभाषा कृञि	यदत्र माम् अधिकरिष्यति।

कारक-संज्ञासूत्र-तालिका

'कर्तृसंज्ञा' विधायकसूत्र

1. **स्वतन्त्रः कर्त्ता** (क्रिया के साथ स्वतन्त्र रूप में जिसकी विवक्षा हो, उसे कर्त्ता कहते है)
2. **तत्प्रयोजको हेतुश्च**

'कर्मसंज्ञा' विधायकसूत्र

1. **कर्तुरीप्सिततमं कर्म** (ईप्सिततम की कर्मसंज्ञा)
2. **तथायुक्तं चानीप्सितम्** (अनीप्सित की कर्मसंज्ञा)
3. **अकथितं च** (अपादानादि कारकों की अविवक्षा में कर्मसंज्ञा)
4. **अकर्मकधातुभिर्योगे देशः कालो भावो गन्तव्योऽध्वा च कर्मसंज्ञक इति वाच्यम् (वार्तिक)**
5. **गति-बुद्धि-प्रत्यवसानार्थ-शब्द कर्माकर्मकाणामणि कर्ता स णौ (** अण्यन्तावस्था के कर्ता की ण्यन्तावस्था में कर्मसंज्ञा)
6. **हृक्रोरन्यतरस्याम्** (ण्यन्तावस्था में कर्ता की विकल्प से कर्मसंज्ञा)
7. **अभिवादिदृशोरात्मनेपदे वेति वाच्यम् (वार्तिक)** (विकल्प से कर्मसंज्ञा)
8. **अधिशीङ्स्थासां कर्म** ('आधार' की कर्मसंज्ञा)
9. **अभिनिविशश्च** ('आधार' की कर्मसंज्ञा)
10. **उपान्वध्याङ्वसः** ('आधार' की कर्मसंज्ञा)
11. **क्रुधद्रुहोरुपसृष्टयोः कर्म** (उपसर्ग युक्त 'क्रुध्' और द्रुह् धातु के योग में, जिसके प्रति कोप किया जाय,उसकी 'कर्मसंज्ञा)

'करणसंज्ञा' विधायकसूत्र

1. **साधकतमं करणम्** (क्रिया की सिद्धि में अत्यन्त उपकारक कारक की 'करणसंज्ञा')
2. **दिवः कर्म च।** ('कर्मसंज्ञा' और 'करणसंज्ञा')
3. **परिक्रयणे संप्रदानमन्यतरस्याम् ।**
   (परिक्रयण = पारिश्रमिक देकर खरीद लेना, में प्रकृष्ट उपकारक की संप्रदानसंज्ञा विकल्प से। पक्ष में 'करणसंज्ञा')

'सम्प्रदानसंज्ञा' विधायकसूत्र

1. **कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्** (कर्त्ता जिसके साथ सम्बन्ध बनाना चाहता है, उसकी 'सम्प्रदानसंज्ञा')
2. **रुच्यर्थानां प्रीयमाणः** (प्रीयमाण की 'सम्प्रदानसंज्ञा')
3. **श्लाघ-ह्नुङ्-स्था-शपां ज्ञीप्स्यमानः** (ज्ञीप्स्यमान की 'सम्प्रदानसंज्ञा')
4. **धारेरुत्तमर्णः** (उत्तमर्ण = उधार देने वाले की 'सम्प्रदानसंज्ञा')
5. **स्पृहेरीप्सितः** (ईप्सित की 'सम्प्रदानसंज्ञा')
6. **क्रुधद्रुहेर्ष्याऽसूयार्थानां यं प्रति कोपः** (जो कोप का विषय हो, उसकी सम्प्रदानसंज्ञा)
7. **राधीक्ष्योर्यस्य विप्रश्नः** (जिसके विषय में विविध प्रश्न किये जाय, उसकी 'सम्प्रदानसंज्ञा')
8. **प्रत्याङ्भ्यां श्रुवः पूर्वस्य कर्ता** (पूर्व प्रेरणा रूप व्यापार के कर्ता की सम्प्रदानसंज्ञा')
9. **अनुप्रतिगृणश्च** (जो पूर्व व्यापार प्रेरणा का कर्ता हो, उसकी 'सम्प्रदानसंज्ञा')
10. **क्रियया यमभिप्रैति सोऽपि सम्प्रदानम् (वा०)**

'अपादानसंज्ञा' विधायकसूत्र

1. **ध्रुवमपायेऽपादानम्** (ध्रुव या अवधिभूत की अपादानसंज्ञा)
2. **भीत्रार्थानां भयहेतुः** (भय के हेतु की अपादानसंज्ञा)
3. **पराजेरसोढः** (असह्य पदार्थ की अपादानसंज्ञा)
4. **वारणार्थानामीप्सितः** (ईप्सित की अपादानसंज्ञा)

5. **अन्तर्धौ येनादर्शनमिच्छति** (जिससे स्वयं को छिपाना चाहता है,उसकी अपादानसंज्ञा)
6. **आख्यातोपयोगे** (गुरु की अपादानसंज्ञा)
7. **जनिकर्तुः प्रकृतिः** (जनिकर्तुः हेतुरूपकारकस्य अपादानसंज्ञा)
8. **भुवः प्रभवः** (प्रकट होने के स्थान की अपादानसंज्ञा)

'अधिकरणसंज्ञा' विधायक सूत्र

1. **आधारोऽधिकरणम्**
   (कर्त्ता और कर्म द्वारा उनमें क्रिया का जो आधार हो,उसकी 'अधिकरणसंज्ञा')

उपपद - द्वितीया विभक्तिः

(क) उभयतः (ख) सर्वतः (ग) धिक् (घ) उपरि,उपरि
(ङ) अध्यधि (च) अधोऽधो (छ) अभितः (ज) परितः
(झ) समया (ञ) निकषा (ट) हा (ठ) प्रति
(ड) अन्तरा (ढ़) अन्तरेण (ण) पृथक् (त) विना
(थ) नाना

किन कर्मप्रवचनीय के योग में द्वितीया होती है ?

(क) अनु (ख) उप (ग) प्रति (घ) परि (ङ) अभि
(च) अधि (छ) सु (ज) अति (झ) अपि

उपपद-तृतीया विभक्तिः

1. सह, साकम्, सार्धम्, समम्, सत्रा।
2. फल प्राप्ति होने पर कालवाचक, मार्गवाचक, अह्न, क्रोश आदि पदों से तृतीया।
3. प्रकृति आदि गण के शब्दों से तृतीया। जैसे -
   प्रकृति, प्राय, गोत्र, सम, विषम, द्विद्रोण, सुखम्, दुःखम्
4. पृथक् , विना, नाना
5. स्तोक, अल्प, कृच्छ्र, कतिपय

उपपद - चतुर्थी-विभक्तिः

(क) नमः (ख) स्वस्ति (ग) स्वाहा (घ) स्वधा (ङ) अलम् (च) वषट्

उपपद - पञ्चमी-विभक्तिः

(क) अन्य (ख) आरात् (ग) इतर (घ) ऋते (ङ) दिक्शब्द
(च) प्राक् (छ) प्रत्यक् (ज) पूर्वम् (झ) दक्षिणा (ञ) दक्षिणाहि
(ट) प्रभृति (ठ) आरभ्य (ड) पृथक् (ढ) विना (ण) नाना (त) स्तोक
(थ) अल्प (द) कृच्छ्र (ध) कतिपय
(न) दूर एव अन्तिक (समीप) अर्थ वाले शब्दों से
इन कर्मप्रवचनीय के योग में पञ्चमी विभक्ति होती है– अप, परि, आङ्, और प्रति।

उपपद-षष्ठी विभक्तिः

दक्षिणतः, पुरः पुरस्तात् उपरि, उपरिष्टात् दक्षिणेन
दूर और अन्तिक (निकट) अर्थ वाले शब्दों के योग में षष्ठीविभक्ति।
तुल्यार्थक शब्द - तुल्य, सदृश, सम आदि के योग में षष्ठीविभक्ति

उपपद - सप्तमी विभक्तिः

साधु, निपुण

वाच्य

➢ वाक्य के कहने की विधि को संस्कृत में वाच्य कहते हैं। वाच्य तीन प्रकार के होते हैं-

1. कर्तृवाच्य 2. कर्मवाच्य 3. भाववाच्य

1. कर्तृवाच्य- जिस वाक्य में कर्ता प्रधान हो उसे कर्तृवाच्य कहते हैं।

कर्तृवाच्य के वाक्यों में-

(i) कर्ता में प्रथमा विभक्ति होती है

(ii) कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है

(iii) क्रिया का पुरुष तथा वचन कर्ता के अनुसार होता है।

जैसे-

	कर्ता	कर्म	क्रिया।
(i)	सीता	गृहं	गच्छति।
(ii)	अहं	रामायणं	पठामि।

उपर्युक्त दोनों वाक्यों के कर्ता में प्रथमाविभक्ति, कर्म में द्वितीया विभक्ति तथा क्रिया कर्ता के अनुसार प्रयुक्त है।

2. कर्मवाच्य- कर्मवाच्य के वाक्यों में कर्म की प्रधानता होती है, अतः-

(i) कर्म में प्रथमा विभक्ति होती है।

(ii) कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है।

(iii) क्रिया का पुरुष तथा वचन कर्म के अनुसार होता है।

	कर्ता	कर्म	क्रिया
जैसे-	बालकेन	पुस्तकं	पठ्यते।
	त्वया	विद्यालयः	गम्यते।
	मया	पत्रं	लिख्यते।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वाक्यों के कर्ता में तृतीया विभक्ति, कर्म में प्रथमा विभक्ति तथा क्रिया कर्म के अनुसार प्रयुक्त है। अतः सभी वाक्य कर्मवाच्य के उदाहरण हैं।

3. भाववाच्य- 'भाव' का अर्थ है- क्रिया। जिस वाक्य में भाव (क्रिया) की प्रधानता होती है, उसे भाववाच्य कहते हैं।

भाववाच्य में -

(i) कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है।

(ii) क्रिया हमेशा प्रथमपुरुष एकवचन की प्रयुक्त होगी।

(iii) अकर्मक (कर्म रहित) धातुओं से ही भाववाच्य होगा।

(iv) भाववाच्य में कर्म का अभाव होता है।

जैसे-

	कर्ता	क्रिया
(i)	मया	हस्यते।
(ii)	त्वया	स्थीयते।
(iii)	ईश्वरेण	भूयते।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त उदाहरणों में कर्ता में तृतीया विभक्ति तथा अकर्मक क्रिया प्रथमपुरुष एकवचन की प्रयुक्त है। कर्म पद का अभाव है।

वाच्य के सन्दर्भ में कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य

➢ वाक्य में जो प्रधान होता है, उसमें प्रथमा विभक्ति आती है कर्तृवाच्य के वाक्यों में कर्ता प्रधान होता है, अतः इसके कर्ता में प्रथमा विभक्ति आती है। इसीप्रकार कर्मवाच्य के वाक्यों में कर्मप्रधान होता है, अतः इसके कर्म में प्रथमा विभक्ति आती है।

➢ सकर्मक (कर्म सहित) धातुओं के रूप दो वाच्यों में होते हैं- (i) कर्तृवाच्य और (ii) कर्मवाच्य

➢ अकर्मक (कर्म रहित) धातुओं के रूप भी दो वाच्यों में होते हैं- (i) कर्तृवाच्य (ii) भाववाच्य

➢ सकर्मक एवं अकर्मक दोनों प्रकार की धातुओं से- कर्तृवाच्य
सकर्मक धातुओं से - कर्मवाच्य
अकर्मक धातुओं से - भाववाच्य

➢ कर्मवाच्य और भाववाच्य में सार्वधातुक लकारों (लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ्) में धातु और प्रत्यय के बीच 'यक्' लग जाता है। 'यक्' का 'य' शेष रहता है। धातु का रूप सदा आत्मनेपद में ही चलता है।

जैसे- पठ्यते, लिख्यते, हस्यते, नीयते, पीयते आदि।

कर्ता पदों की सूची

कर्तृवाच्य कर्ता	कर्मवाच्य कर्ता/भाववाच्य कर्ता
भवान्	भवता
भवती	भवत्या
त्वम्	त्वया
अहम्	मया
सः	तेन
सा	तया
कः	केन
का	कया

कर्तृवाच्य कर्ता	कर्मवाच्य कर्ता/भाववाच्य कर्ता
एषः	एतेन
एषा	एतया
यः	येन
या	यया
सर्वः	सर्वेण
सर्वा	सर्वया
अयम्	अनेन
इयम्	अनया
रामः	रामेण
बालकः	बालकेन
हरिः	हरिणा
मुनिः	मुनिना
पिता	पित्रा
माता	मात्रा
रमा	रमया
लता	लतया
नदी	नद्या
लक्ष्मीः	लक्ष्म्या
गुरुः	गुरुणा
साधुः	साधुना
मतिः	मत्या
युवतिः	युवत्या
मित्रम्	मित्रेण
फलम्	फलेन
वारि	वारिणा

कर्मवाच्य/भाववाच्य के अनुसार प्रमुख धातुरूप

भू धातु (अकर्मक, अनिट्, परस्मैपद)

1. लट् लकार		
भूयते	भूयेते	भूयन्ते
भूयसे	भूयेथे	भूयध्वे
भूये	भूयावहे	भूयामहे

2. विधिलिङ् लकार		
भूयेत	भूयेयाताम्	भूयेरन्
भूयेथाः	भूयाथाम्	भूयध्वम्
भूयेय	भूयेवहि	भूयेमहि।

3. लोट् लकार		
भूयताम्	भूयेताम्	भूयन्ताम्
भूयस्व	भूयेथाम्	भूयध्वम्
भूयै	भूयावहै	भूयामहै।

4. लङ् लकार		
अभूयत	अभूयेताम्	अभूयन्त
अभूयथाः	अभूयेथाम्	अभूयध्वम्
अभूये	अभूयावहि	अभूयामहि।

5. लृट् लकार		
भविष्यते	भविष्येते	भविष्यन्ते
भविष्यसे	भविष्येथे	भविष्यध्वे
भविष्ये	भविष्यावहे	भविष्यामहे

गम् धातु (सकर्मक, अनिट्, परस्मैपद, भ्वादिगण)

लट् लकार		
गम्यते	गम्येते	गम्यन्ते
गम्यसे	गम्येथे	गम्यध्वे
गम्ये	गम्यावहे	गम्यामहे

वद् धातु (सकर्मक,सेट्,परस्मैपद,भ्वादिगण)

उद्यते	उद्येते	उद्यन्ते
उद्यसे	उद्येथे	उद्यध्वे
उद्ये	उद्यावहे	उद्यामहे

पठ् धातु (सकर्मक,सेट्,परस्मैपद,भ्वादिगण)

पठ्यते	पठ्येते	पठ्यन्ते
पठ्यसे	पठ्येथे	पठ्यध्वे
पठ्ये	पठ्यावहे	पठ्यामहे

कृ धातु लट् लकार

क्रियते	क्रियेते	क्रियन्ते
क्रियसे	क्रियेथे	क्रियध्वे
क्रिये	क्रियावहे	क्रियामहे

याच् धातु (सकर्मक,सेट्,उभयपदी,भ्वादिगण)

याच्यते	याच्येते	याच्यन्ते
याच्यसे	याच्येथे	याच्यध्वे
याच्ये	याच्यावहे	याच्यामहे

पच् धातु (सकर्मक, अनिट्, उभयपदी, भ्वादिगण)

पच्यते	पच्येते	पच्यन्ते
पच्यसे	पच्येथे	पच्यध्वे
पच्ये	पच्यावहे	पच्यामहे

रुच् धातु (अकर्मक, सेट्, आत्मनेपद, भ्वादिगण)

रुच्यते	रुच्येते	रुच्यन्ते
रुच्यसे	रुच्येथे	रुच्यध्वे
रुच्ये	रुच्यावहे	रुच्यामहे

रम् धातु (अकर्मक, अनिट्, आत्मनेपद, भ्वादिगण)		
रम्यते	रम्येते	रम्यन्ते
रम्यसे	रम्येथे	रम्यध्वे
रम्ये	रम्यावहे	रम्यामहे

यज् धातु (सकर्मक,अनिट्,उभयपदी,भ्वादिगण)		
इज्यते	इज्येते	इज्यन्ते
इज्यसे	इज्येथे	इज्यध्वे
इज्ये	इज्यावहे	इज्यामहे

वह् धातु (सकर्मक,अनिट्,उभयपदी,भ्वादिगण)		
उह्यते	उह्येते	उह्यन्ते
उह्यसे	उह्येथे	उह्यध्वे
उह्ये	उह्यावहे	उह्यामहे

श्रु धातु (सकर्मक,अनिट्,परस्मैपद,भ्वादिगण)		
श्रूयते	श्रूयेते	श्रूयन्ते
श्रूयसे	श्रूयेथे	श्रूयध्वे
श्रूये	श्रूयावहे	श्रूयामहे

तुद् धातु (सकर्मक,अनिट्,उभयपदी,तुदादिगण)		
तुद्यते	तुद्येते	तुद्यन्ते
तुद्यसे	तुद्येथे	तुद्यध्वे
तुद्ये	तुद्यावहे	तुद्यामहे

भुज् धातु (अकर्मक,अनिट्,परस्मैपद,तुदादिगण)		
भुज्यते	भुज्येते	भुज्यन्ते
भुज्यसे	भुज्येथे	भुज्यध्वे
भुज्ये	भुज्यावहे	भुज्यामहे

हन् धातु (सकर्मक,अनिट्,परस्मैपद,अदादिगण)		
हन्यते	हन्येते	हन्यन्ते
हन्यसे	हन्येथे	हन्यध्वे
हन्ये	हन्यावहे	हन्यामहे

हस् धातु (अकर्मक,सेट्,परस्मैपद,भ्वादिगण)		
हस्यते	हस्येते	हस्यन्ते
हस्यसे	हस्येथे	हस्यध्वे
हस्ये	हस्यावहे	हस्यामहे

क्रीड् धातु (अकर्मक,सेट्,परस्मैपद,भ्वादिगण)		
क्रीड्यते	क्रीड्येते	क्रीड्यन्ते
क्रीड्यसे	क्रीड्येथे	क्रीड्यध्वे
क्रीड्ये	क्रीड्यावहे	क्रीड्यामहे

स्था धातु		
स्थीयते	स्थीयेते	स्थीयन्ते
स्थीयसे	स्थीयेथे	स्थीयध्वे
स्थीये	स्थीयावहे	स्थीयामहे

आस् धातु (अकर्मक,सेट्,आत्मनेपद,अदादिगण)		
आस्यते	आस्येते	आस्यन्ते
आस्यसे	आस्येथे	आस्यध्वे
आस्ये	आस्यावहे	आस्यामहे

जीव् धातु (अकर्मक,सेट्,परस्मैपद,भ्वादिगण)		
जीव्यते	जीव्येते	जीव्यन्ते
जीव्यसे	जीव्येथे	जीव्यध्वे
जीव्ये	जीव्यावहे	जीव्यामहे

धातु/अर्थ	कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य/ भाववाच्य	कर्मवाच्य/ भाववाच्य प्रयोग	कर्तृवाच्य प्रयोग
भू (होना)	भवति	भूयते	ईश्वरेण भूयते	ईश्वरः अस्ति।
भी (डरना)	बिभेति	भीयते	शिशुभिः मूषकेभ्यः भीयते	शिशवः मूषकेभ्यः बिभ्यति।
शी (सोना)	शेते	शय्यते	पथिकैः मार्गे शय्यते	पथिकाः मार्गे शेरते।
याच् (माँगना)	याचति	याच्यते	याचकैः भैक्ष्यं याच्यते	याचकाः भैक्ष्यं याचन्ते।
अद् (खाना)	अत्ति	अद्यते	तेन मिष्ठानं अद्यते	सः मिष्ठान्नं अत्ति।
वद् (बोलना)	वदति	उद्यते	आचार्येण सत्यम् उद्यते	आचार्यः सत्यं वदति।
ज्ञा (जानना)	जानाति	ज्ञायते	तेन श्लोकः न ज्ञायते	सः श्लोकं न जानाति।
खन् (खोदना)	खनति	खन्यते	श्रमिकेण भूमिः खन्यते	श्रमिकः भूमिं खनति।
वप् (बोना)	वपति	उप्यते	कृषकेण बीजानि उप्यन्ते	कृषकः बीजानि वपति।
स्था (ठहरना)	तिष्ठति	स्थीयते	मुनिना कुटीरे स्थीयते	मुनिः कुटीरे तिष्ठति।
कथ् (कहना)	कथयति	कथ्यते	ऋषिणा रामकथा कथ्यते	ऋषिः रामकथां कथयति।
दुह् (दोहना)	दोग्धि	दुह्यते	तेन गौः पयः दुह्यते	सः गां पयः दोग्धि।

धातु/अर्थ	कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य/ भाववाच्य	कर्मवाच्य/ भाववाच्य प्रयोग	कर्तृवाच्य प्रयोग
नी (ले जाना)	नयति	नीयते	भृत्येन भारः नीयते	भृत्यः भारं नयति।
गम् (जाना)	गच्छति	गम्यते	पुत्रेण ग्रामः गम्यते	पुत्रः ग्रामं गच्छति।
भक्ष् (खाना)	भक्षयति	भक्ष्यते	मया फलानि भक्ष्यन्ते	अहं फलानि भक्षयामि।
हन् (मारना)	हन्ति	हन्यते	राज्ञा सिंहः हन्यते	राजा सिंहं हन्ति।
पा (पीना)	पिबति	पीयते	शिशुना दुग्धं पीयते	शिशुः दुग्धं पिबति।
अस् (होना)	अस्ति	भूयते	तेन कुत्रापि न भूयते	सः कुत्रापि न भवति।
श्रु (सुनना)	शृणोति	श्रूयते	बालकेन कथा श्रूयते	बालकः कथां शृणोति।
सेव् (सेवा करना)	सेवते	सेव्यते	प्रजाभिः राजा सेव्यते	प्रजाः राजानं सेवन्ते।
चि (चुनना)	चिनोति	चीयते	मालाकारेण पुष्पाणि चीयन्ते	मालाकारः पुष्पाणि चिनोति।
हु (हवन करना)	जुहोति	हूयते	यतिभिः अग्नौ हूयते	यतयः अग्नौ जुह्वति।
स्वप् (सोना)	स्वपिति	सुप्यते	चालकेन मार्गे सुप्यते	चालकः मार्गे स्वपिति।
मन्थ् (मथना)	मथ्नाति	मथ्यते	मात्रा दधि मथ्यते	माता दधि मथ्नाति।
पूज् (पूजा करना)	पूजयति	पूज्यते	यत्र नार्यः पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः	यत्र नारीः पूजयन्ति रमन्ते तत्र देवताः।
कृ (करना)	करोति	क्रियते	ऋषिभिः शुभकर्माणि क्रियन्ते	ऋषयः शुभकर्माणि कुर्वन्ति।
धृ (धारण करना)	धारयति	धार्यते	शिष्येण वस्त्रं धार्यते	शिष्यः वस्त्रं धरति
गण् (गिनना)	गणयति	गण्यते	छात्रेण शतं गण्यते	छात्रः शतं गणयति।
लिख् (लिखना)	लिखति	लिख्यते	छात्रेण पत्रं लिख्यते	छात्रः पत्रं लिखति।
स्मृ (याद करना)	स्मरति	स्मर्यते	मया ईश्वरः स्मर्यते	अहं ईश्वरं स्मरामि।
दृश् (देखना)	पश्यति	दृश्यते	बालकेन चित्रं दृश्यते	बालकः चित्रं पश्यति।
प्रच्छ् (पूछना)	पृच्छति	पृच्छ्यते	अध्यापकेन प्रश्नः पृच्छ्यते	अध्यापकः प्रश्नं पृच्छति।
वस् (रहना)	वसति	उष्यते	बालकैः उद्याने उष्यते	बालकाः उद्याने वसन्ति।

कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य में प्रयोग

- कर्तृवाच्य के कर्ता में प्रथमा विभक्ति तथा कर्मवाच्य के कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है।
- कर्तृवाच्य के कर्म में द्वितीया विभक्ति तथा कर्मवाच्य के कर्म में प्रथमा विभक्ति हो जाती है।
- कर्मवाच्य में क्रिया का पुरुष और वचन कर्म के पुरुष और वचन के अनुसार हो जाता है।

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
अहं शिक्षां लभे	मया शिक्षा लभ्यते
सः पुस्तकं पठति	तेन पुस्तकं पठ्यते
सः ईश्वरं स्मरति	तेन ईश्वरः स्मर्यते
छात्राः प्रश्नं पृच्छन्ति	छात्रैः प्रश्नः पृच्छ्यते
गायकः गीतानि गायति	गायकेन गीतानि गीयन्ते
शिशुः दुग्धं पिबति	शिशुना दुग्धं पीयते
सः सत्यं वदति	तेन सत्यम् उद्यते
अहं पुस्तकं पश्यामि	मया पुस्तकं दृश्यते
माता ओदनं पचति	मात्रा ओदनं पच्यते
वयं युद्धं कुर्मः	अस्माभिः युद्धं क्रियते

कर्मवाच्य से कर्तृवाच्य में प्रयोग

- कर्मवाच्य में कर्ता की तृतीया विभक्ति कर्तृवाच्य के कर्ता में प्रथमा विभक्ति हो जाती है।
- कर्मवाच्य में कर्म के स्थान पर प्रयुक्त प्रथमा विभक्ति कर्तृवाच्य में द्वितीया विभक्ति हो जाती है।
- क्रिया के पुरुष और वचन कर्त्ता के अनुसार हो जाते हैं।
- कर्मवाच्य में प्रयुक्त क्त के स्थान पर कर्तृवाच्य में क्तवतु प्रत्यय हो जाता है।
- कर्मवाच्य में प्रयुक्त तव्यत् प्रत्यय के स्थान पर कर्तृवाच्य में विधिलिङ् का प्रयोग कर दिया जाता है।

वाच्य परिवर्तन अभ्यास

कर्मवाच्य	कर्तृवाच्य
अध्यापकेन पाठः पठ्यते	अध्यापकः पाठं पठति
अस्माभिः सिंहः दृश्यते	वयं सिंहं पश्यामः
सैनिकैः युद्धं क्रियते	सैनिकाः युद्धं कुर्वन्ति
रमेशेन ईश्वरः स्मर्यते	रमेशः ईश्वरं स्मरति
बालकेन पत्रं लिख्यते	बालकः पत्रं लिखति
गायकेन गीतं गीयते	गायकः गीतं गायति
नृपेण सिंहः हन्यते	नृपः सिंहं हन्ति
स्वामिना कथा कथ्यते	स्वामी कथां कथयति
तेन ग्रामः गम्यते	सः ग्रामं गच्छति
सेनया युद्धः जीयते	सेना युद्धं जयति
तेन कथा श्रूयते	सः कथां शृणोति
मया चन्द्रः दृश्यते	अहं चन्द्रं पश्यामि
गुरुभिः किं न ज्ञायते	गुरवः किं न जानन्ति
मया लोभः त्यजते	अहं लोभं त्यजामि
वृक्षैः फलानि दीयन्ते	वृक्षाः फलानि ददति

कर्तृवाच्य से भाववाच्य में प्रयोग

भाववाच्य के कर्त्ता में तृतीया विभक्ति होती है और क्रिया सदा प्रथम पुरुष एकवचन में होती है। उदाहरण-

कर्तृवाच्य	भाववाच्य
छात्रः क्रीडति	छात्रेण क्रीड्यते
बालकाः तिष्ठन्ति	बालकैः स्थीयते
सिंहः गर्जति	सिंहेन गर्ज्यते
अहं पठामि	मया पठ्यते
ईश्वरः अस्ति	ईश्वरेण भूयते
अश्वाः धावन्ति	अश्वैः धाव्यते
कन्याः लिखन्ति	कन्याभिः लिख्यते
अहं गच्छामि	मया गम्यते
त्वं खादसि	त्वया खाद्यते
लता वर्धते	लतया वर्ध्यते
युवां हसथः	युवाभ्यां हस्यते
पुष्पाणि विकसन्ति	पुष्पैः विकस्यते
गुरुः तिष्ठति	गुरुणा स्थीयते
वयं हसामः	अस्माभिः हस्यते
त्वं पठसि	त्वया पठ्यते

भाववाच्य	कर्तृवाच्य
हरिणा वैकुण्ठे उष्यते	हरिः वैकुण्ठे वसति
अस्माभिः विद्यालये स्थीयते	वयं विद्यालये तिष्ठामः
मयूरैः नृत्यते	मयूराः नृत्यन्ति
मया नैव रुद्यते	अहं नैव रोदिमि
तेन गृहे सुप्यते	सः गृहे स्वपिति

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
रामः वेदं पठति	रामेण वेदः पठ्यते।
बालकः चन्द्रं पश्यति	बालकेन चन्द्रः दृश्यते।
बालकः गीतां पठति	बालकेन गीता पठ्यते।
रामः पत्रं लिखति	रामेण पत्रं लिख्यते।
सुरेशः ग्रामं गच्छति	सुरेशेन ग्रामः गम्यते।
सः आपणं गच्छति	तेन आपणः गम्यते।
सः गीतं गायति	तेन गीतं गीयते।
सः रघुवंशं पठति	तेन रघुवंशं पठ्यते।
कृष्णः जलं पिबति	कृष्णेन जलं पीयते।
बालकः मोहनं पश्यति	बालकेन मोहनः दृश्यते।
बालिका पुस्तकं पठति	बालिकया पुस्तकं पठ्यते।
रजकः गर्दभं ताडयति	रजकेन गर्दभः ताड्यते।
कृषकः जलं पिबति	कृषकेण जलं पीयते।
सः दुग्धं पिबति	तेन दुग्धं पीयते।
कविः काव्यं करोति	कविना काव्यं क्रियते।
सा विद्यालयं गच्छति	तया विद्यालयः गम्यते।
माता ओदनं पचति	मात्रा ओदनं पच्यते।
रामः तीव्रं हसति	रामेण तीव्रं हस्यते।
भक्तः ज्ञानं प्राप्नोति	भक्तेन ज्ञानं प्राप्यते।
रामः धनं ददाति	रामेण धनं दीयते।
सः ईश्वरं स्मरति	तेन ईश्वरः स्मर्यते।
सः सत्यं वदति	तेन सत्यम् उद्यते।
सः कथां शृणोति	तेन कथा श्रूयते।
वृक्षाः फलानि ददति	वृक्षैः फलानि दीयन्ते।
सैनिकाः युद्धं कुर्वन्ति	सैनिकैः युद्धं क्रियते।
छात्राः पत्रं लिखन्ति	छात्रैः पत्रं लिख्यते।
तौ प्रयागं गच्छतः	ताभ्याम् प्रयागः गम्यते।
छात्राः पुस्तकानि नयन्ति	छात्रैः पुस्तकानि नीयन्ते।
तौ गृहं गच्छतः	ताभ्याम् गृहं गम्यते।
कृषकाः जलं पिबन्ति	कृषकैः जलं पीयते।
ते पुस्तकानि पठन्ति	तैः पुस्तकानि पठ्यन्ते।

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
बालकौ गीतं गायतः	बालकाभ्यां गीतं गीयते।
भक्तौ ईश्वरं स्मरतः	भक्ताभ्याम् ईश्वरः स्मर्यते।
तौ पुस्तकं पठतः	ताभ्याम् पुस्तकं पठ्यते।
त्वं गृहं गच्छसि	त्वया गृहं गम्यते।
त्वं पत्रं लिखसि	त्वया पत्रं लिख्यते।
त्वं किं लिखसि	त्वया किं लिख्यते।
यूवां पुस्तकं पठथः	युवाभ्याम् पुस्तकं पठ्यते।
त्वं कुत्र गच्छसि	त्वया कुत्र गम्यते।
त्वं ईश्वरं पश्यसि	त्वया ईश्वरः दृश्यते।
त्वं प्रश्नं पृच्छसि	त्वया प्रश्नः पृच्छ्यते।
युवां गृहं गच्छथः	युवाभ्यां गृहं गम्यते।
युवां प्रश्नानि पृच्छथः	युवाभ्यां प्रश्नानि पृच्छयन्ते।
युवां बालकौ पश्यथः	युवाभ्यां बालकौ दृश्येते।
यूयं पुस्तकानि पठथ	युष्माभिः पुस्तकानि पठ्यन्ते।
यूयं गीतानि गायथ	युष्माभिः गीतानि गीयन्ते।
अहं पुस्तकं पठामि	मया पुस्तकं पठ्यते।
अहं दुग्धं पिबामि	मया दुग्धं पीयते।
अहं पुस्तकं लिखामि	मया पुस्तकं लिख्यते।
अहं त्वां पश्यामि	मया त्वं दृश्यसे।
अहं जलं पिबामि	मया जलं पीयते।
अहं पत्रं लिखामि	मया पत्रं लिख्यते।
आवां गृहं गच्छावः	आवाभ्यां गृहं गम्यते।
आवां पुस्तकानि पठावः	आवाभ्यां पुस्तकानि पठ्यन्ते
आवां जलं पिबावः	आवाभ्यां जलं पीयते
वयं पत्रं लिखामः	अस्माभिः पत्रं लिख्यते
वयं नगरं गच्छामः	अस्माभिः नगरं गम्यते
वयं विद्यालयं गच्छामः	अस्माभिः विद्यालयः गम्यते
वयं बालकं पश्यामः	अस्माभिः बालकः दृश्यते।
रामः वेदं पठिष्यति	रामेण वेदः पठिष्यते
बालकः चन्द्रं द्रक्ष्यति	बालकेन चन्द्रः द्रक्ष्यते।
रमेशः पत्रं पठिष्यति	रमेशेन पत्रं पठिष्यते।
सीता काव्यं करिष्यति	सीतया काव्यं करिष्यते।
सः ग्रन्थं पठिष्यति	तेन ग्रन्थः पठिष्यते।
मोहनः दुग्धं पास्यति	मोहनेन दुग्धं पास्यते
मुनिः रामायणं कथयिष्यति	मुनिना रामायणं कथयिष्यते
छात्रः विद्यालयं गमिष्यति	छात्रेण विद्यालयः गंस्यते
राधा नृत्यं करिष्यति	राधया नृत्यं करिष्यते
शिशुः दुग्धं पास्यति	शिशुना दुग्धं पास्यते।
सः त्वां द्रक्ष्यति	तेन त्वं द्रक्ष्यसे

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
सः आपणं गमिष्यति	तेन आपणः गम्यते
तौ दुग्धं पास्यतः	ताभ्याम् दुग्धं पास्यते
तौ कार्याणि करिष्यतः	ताभ्याम् कार्याणि करिष्यन्ते
तौ वनं गमिष्यतः	ताभ्याम् वनं गंस्यते
ते पत्राणि पठिष्यन्ति	तैः पत्राणि पठिष्यन्ते
ते फलानि नेष्यन्ति	तैः फलानि नेष्यन्ते
ते कथां कथयिष्यन्ति	तैः कथा कथयिष्यते।

कर्तृवाच्य	भाववाच्य
सः हसति	तेन हस्यते
त्वं पठसि	त्वया पठ्यते
अहं गच्छामि	मया गम्यते
वयं हसामः	अस्माभिः हस्यते
ते हसन्ति	तैः हस्यते
रामः गच्छति	रामेण गम्यते
सीता गच्छति	सीतया गम्यते
पिता गच्छति	पित्रा गम्यते
अहं वदामि	मया उद्यते
यूयं पठथ	युष्माभिः पठ्यते
अहं हसामि	मया हस्यते
सा लिखति	तया लिख्यते
सः तिष्ठति	तेन स्थीयते
त्वं हससि	त्वया हस्यते
त्वं खादसि	त्वया खाद्यते
सः क्रीडति	तेन क्रीड्यते
रामः हसति	रामेण हस्यते
अहं तिष्ठामि	मया स्थीयते
श्यामः गच्छति	श्यामेन गम्यते
छात्रः क्रीडति	छात्रेण क्रीड्यते
बालकाः तिष्ठन्ति	बालकैः स्थीयते
ईश्वरः अस्ति	ईश्वरेण भूयते
गुरुः तिष्ठति	गुरुणा स्थीयते
मयूराः नृत्यन्ति	मयूरैः नृत्यते

शब्दरूप

अजन्त, हलन्त, (पुं. स्त्री. नपुं.)

1. अकारान्त पुंलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	बालकः	बालकौ	बालकाः
द्वितीया	बालकम्	बालकौ	बालकान्
तृतीया	बालकेन	बालकाभ्याम्	बालकैः
चतुर्थी	बालकाय	बालकाभ्याम्	बालकेभ्यः
पञ्चमी	बालकात्	बालकाभ्याम्	बालकेभ्यः
षष्ठी	बालकस्य	बालकयोः	बालकानाम्
सप्तमी	बालके	बालकयोः	बालकेषु
सम्बोधन	हे बालक!	हे बालकौ!	हे बालकाः!

तादृश-उसकी तरह

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	तादृशः	तादृशौ	तादृशाः
द्वितीया	तादृशम्	तादृशौ	तादृशान्
तृतीया	तादृशेन	तादृशाभ्याम्	तादृशैः
चतुर्थी	तादृशाय	तादृशाभ्याम्	तादृशेभ्यः
पञ्चमी	तादृशात्/द्	तादृशाभ्याम्	तादृशेभ्यः
षष्ठी	तादृशस्य	तादृशयोः	तादृशानाम्
सप्तमी	तादृशे	तादृशयोः	तादृशेषु
सम्बोधन	हे तादृश!	हे तादृशौ!	हे तादृशाः!

नोट- ये ही शब्द इसी अर्थ में शकारान्त भी हैं। उनके रूप व्यञ्जनान्त संज्ञाओं में मिलेंगे।

आकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्द

विश्वपा-संसार का रक्षक

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	विश्वपाः	विश्वपौ	विश्वपाः
द्वितीया	विश्वपाम्	विश्वपौ	विश्वपः
तृतीया	विश्वपा	विश्वपाभ्याम्	विश्वपाभिः
चतुर्थी	विश्वपे	विश्वपाभ्याम्	विश्वपाभ्यः
पञ्चमी	विश्वपः	विश्वपाभ्याम्	विश्वपाभ्यः
षष्ठी	विश्वपः	विश्वपोः	विश्वपाम्
सप्तमी	विश्वपि	विश्वपोः	विश्वपासु
सम्बोधन	हे विश्वपाः!	हे विश्वपौ!	हे विश्वपाः!

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	हाहाः	हाहौ	हाहाः
द्वितीया	हाहाम्	हाहौ	हाहान्
तृतीया	हाहा	हाहाभ्याम्	हाहाभिः
चतुर्थी	हाहै	हाहाभ्याम्	हाहाभ्यः
पञ्चमी	हाहाः	हाहाभ्याम्	हाहाभ्यः
षष्ठी	हाहाः	हाहौः	हाहाम्
सप्तमी	हाहे	हाहौः	हाहासु
सम्बोधन	हे हाहाः!	हे हाहौ!	हे हाहाः!

2. इकारान्त पुंलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	कविः	कवी	कवयः
द्वितीया	कविम्	कवी	कवीन्
तृतीया	कविना	कविभ्याम्	कविभिः
चतुर्थी	कवये	कविभ्याम्	कविभ्यः
पञ्चमी	कवेः	कविभ्याम्	कविभ्यः
षष्ठी	कवेः	कव्योः	कवीनाम्
सप्तमी	कवौ	कव्योः	कविषु
सम्बोधन	हे कवे!	हे कवी!	हे कवयः!

पति- स्वामी, मालिक

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पतिः	पती	पतयः
द्वितीया	पतिम्	पती	पतीन्
तृतीया	पत्या	पतिभ्याम्	पतिभिः
चतुर्थी	पत्ये	पतिभ्याम्	पतिभ्यः
पञ्चमी	पत्युः	पतिभ्याम्	पतिभ्यः
षष्ठी	पत्युः	पत्योः	पतीनाम्
सप्तमी	पत्यौ	पत्योः	पतिषु
सम्बोधन	हे पते!	हे पती!	हे पतयः!

किन्तु जब पति शब्द किसी शब्द के साथ समास के अन्त में आता है तो उसके रूप कवि के ही समान होते हैं, जैसे-

भूपति- राजा

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	भूपतिः	भूपती	भूपतयः
द्वितीया	भूपतिम्	भूपती	भूपतीन्
तृतीया	भूपतिना	भूपतिभ्याम्	भूपतिभिः
चतुर्थी	भूपतये	भूपतिभ्याम्	भूपतिभ्यः
पञ्चमी	भूपतेः	भूपतिभ्याम्	भूपतिभ्यः
षष्ठी	भूपतेः	भूपत्योः	भूपतीनाम्
सप्तमी	भूपतौ	भूपत्योः	भूपतिषु
सम्बोधन	हे भूपते!	हे भूपती!	हे भूपतयः!

सखि-मित्र

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सखा	सखायौ	सखायः
द्वितीया	सखायम्	सखायौ	सखीन्
तृतीया	सख्या	सखिभ्याम्	सखिभिः
चतुर्थी	सख्ये	सखिभ्याम्	सखिभ्यः
पञ्चमी	सख्युः	सखिभ्याम्	सखिभ्यः
षष्ठी	सख्युः	सख्योः	सखीनाम्
सप्तमी	सख्यौ	सख्योः	सखिषु
सम्बोधन	हे सखे!	हे सखायौ!	हे सखायः!

ईकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्द

(क) प्रधी- अच्छा ध्यान करने वाला

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	प्रधीः	प्रध्यौ	प्रध्यः
द्वितीया	प्रध्यम्	प्रध्यौ	प्रध्यः
तृतीया	प्रध्या	प्रधीभ्याम्	प्रधीभिः
चतुर्थी	प्रध्ये	प्रधीभ्याम्	प्रधीभ्यः
पञ्चमी	प्रध्यः	प्रधीभ्याम्	प्रधीभ्यः
षष्ठी	प्रध्यः	प्रध्योः	प्रध्याम्
सप्तमी	प्रध्यि	प्रध्योः	प्रधीषु
सम्बोधन	हे प्रधीः!	हे प्रध्यौ!	हे प्रध्यः!

(ख) सुधी-पण्डित, विद्वान्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सुधीः	सुधियौ	सुधियः
द्वितीया	सुधियम्	सुधियौ	सुधियः
तृतीया	सुधिया	सुधीभ्याम्	सुधीभिः
चतुर्थी	सुधिये	सुधीभ्याम्	सुधीभ्यः
पञ्चमी	सुधियः	सुधीभ्याम्	सुधीभ्यः
षष्ठी	सुधियः	सुधियोः	सुधियाम्
सप्तमी	सुधियि	सुधियोः	सुधीषु
सम्बोधन	हे सुधीः!	हे सुधियौ!	हे सुधियः!

(ग) सखी (सखायमिच्छतीति)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सखा	सखायौ	सखायः
द्वितीया	सखायम्	सखायौ	सख्यः
तृतीया	सख्या	सखीभ्याम्	सखीभिः
चतुर्थी	सख्ये	सखीभ्याम्	सखीभ्यः
पञ्चमी	सख्युः	सखीभ्याम्	सखीभ्यः
षष्ठी	सख्युः	सख्योः	सख्याम्
सप्तमी	सख्यि	सख्योः	सखीषु
सम्बोधन	हे सखीः!	हे सखायौ!	हे सखायः!

उकारान्त पुंलिङ्ग शब्द

भानु-सूर्य

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	भानुः	भानू	भानवः
द्वितीया	भानुम्	भानू	भानून्
तृतीया	भानुना	भानुभ्याम्	भानुभिः
चतुर्थी	भानवे	भानुभ्याम्	भानुभ्यः
पञ्चमी	भानोः	भानुभ्याम्	भानुभ्यः
षष्ठी	भानोः	भान्वोः	भानूनाम्
सप्तमी	भानौ	भान्वोः	भानुषु
सम्बोधन	हे भानो!	हे भानू!	हे भानवः!

ऊकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्द

स्वयम्भू-ब्रह्मा

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	स्वयम्भूः	स्वयम्भुवौ	स्वयम्भुवः
द्वितीया	स्वयम्भुवम्	स्वयम्भुवौ	स्वयम्भुवः
तृतीया	स्वयम्भुवा	स्वयम्भूभ्याम्	स्वयम्भूभिः
चतुर्थी	स्वयम्भुवे	स्वयम्भूभ्याम्	स्वयम्भूभ्यः
पञ्चमी	स्वयम्भुवः	स्वयम्भूभ्याम्	स्वयम्भूभ्यः
षष्ठी	स्वयम्भुवः	स्वयम्भुवोः	स्वयम्भुवाम्
सप्तमी	स्वयम्भुवि	स्वयम्भुवोः	स्वयम्भुषु
सम्बोधन	हे स्वयम्भूः!	हे स्वयम्भुवौ!	हे स्वयम्भुवः!

ऋकारान्त पुंलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पिता	पितरौ	पितरः
द्वितीया	पितरम्	पितरौ	पितॄन्
तृतीया	पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभिः
चतुर्थी	पित्रे	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
पञ्चमी	पितुः	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
षष्ठी	पितुः	पित्रोः	पितॄणाम्
सप्तमी	पितरि	पित्रोः	पितृषु
सम्बोधन	हे पितः!	हे पितरौ!	हे पितरः!

नृ-मनुष्य

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	ना	नरौ	नरः
द्वितीया	नरम्	नरौ	नॄन्
तृतीया	न्रा	नृभ्याम्	नृभिः
चतुर्थी	न्रे	नृभ्याम्	नृभ्यः
पंञ्चमी	नुः	नृभ्याम्	नृभ्यः
षष्ठी	नुः	न्रोः	नृणाम्/नॄणाम्
सप्तमी	नरि	न्रोः	नृषृ
सम्बोधन	हे नः!	हे नरौ!	हे नरः!

दातृ- देने वाला

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	दाता	दातारौ	दातारः
द्विवतीया	दातारम्	दातारौ	दातॄन्
तृतीया	दात्रा	दातृभ्याम्	दातृभिः
चतुर्थी	दात्रे	दातृभ्याम्	दातृभ्यः
पञ्चमी	दातुः	दातृभ्याम्	दातृभ्यः
षष्ठी	दातुः	दात्रोः	दातॄणाम्
सप्तमी	दातरि	दात्रोः	दातृषु
सम्बोधन	हे दातः!	हे दातारौ!	हे दातारः!

अकारान्त नपुंसकलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	फलम्	फले	फलानि
द्वितीया	फलम्	फले	फलानि
तृतीया	फलेन	फलाभ्याम्	फलैः
चतुर्थी	फलाय	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
पञ्चमी	फलात्/द्	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
षष्ठी	फलस्य	फलयोः	फलानाम्
सप्तमी	फले	फलयोः	फलेषु
सम्बोधन	हे फल!	हे फले!	हे फलानि!

इकारान्त नपुंसकलिङ्ग

(क) वारि-पाना

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वारि	वारिणी	वारीणि
द्वितीया	वारि	वारिणी	वारीणि
तृतीया	वारिणा	वारिभ्याम्	वारिभि
चतुर्थी	वारिणे	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
पञ्चमी	वारिणः	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
षष्ठी	वारिणः	वारिणोः	वारीणाम्
सप्तमी	वारिणि	वारिणोः	वारिषु
सम्बोधन	हे वारि/हे वारे!	हे वारिणी!	हे वारीणि!

(ख) दधि-दही

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	दधि	दधिनी	दधीनि
द्वितीया	दधि	दधिनी	दधीनि
तृतीया	दध्ना	दधिभ्याम्	दधिभिः
चतुर्थी	दध्ने	दधिभ्याम्	दधिभ्यः
पञ्चमी	दध्नः	दधिभ्याम्	दधिभ्यः
षष्ठी	दध्नः	दध्नोः	दध्नाम्
सप्तमी	दध्नि	दधनि	दध्नोः/दधिषु
सम्बोधन	हे दधे,हे दधि!	हे दधिनी!	हे दधीनि!

अक्षि- आँख

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अक्षि	अक्षिणी	अक्षीणि
द्वितीया	अक्षि	अक्षिणी	अक्षीणि
तृतीया	अक्ष्णा	अक्षिभ्याम्	अक्षिभिः
चतुर्थी	अक्ष्णे	अक्षिभ्याम्	अक्षिभ्यः
पञ्चमी	अक्ष्णः	अक्षिभ्याम्	अक्षिभ्यः
षष्ठी	अक्ष्णः	अक्ष्णोः	अक्ष्णाम्
सप्तमी	अक्ष्णि	अक्षणि	अक्ष्णोः अक्षिषु
सम्बोधन	हे अक्षि,हे अक्षे!	हे अक्षिणी!	हे अक्षीणि!

शुचि (पवित्र)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	शुचि	शुचिनी	शुचीनि
द्विवचन	शुचि	शुचिनी	शुचीनि
तृतीया	शुचिना	शुचिभ्याम्	शुचिभिः
चतुर्थी	शुचये, शुचिने	शुचिभ्याम्	शुचिभ्यः
पञ्चमी	शुचेः, शुचिनः	शुचिभ्याम्	शुचिभ्यः
षष्ठी	शुचेः, शुचिनः	शुच्योः, शुचिनोः	शुचीनाम्
सप्तमी	शुचौ, शुचिनि	शुच्योः, शुचिनोः	शुचिषु
सम्बोधन	हे शुचि, हे शुचे	हे शुचिनी	हे शुचीनि

उकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द
वस्तु-चीज

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वस्तु	वस्तुनी	वस्तूनि
द्विवचन	वस्तु	वस्तुनी	वस्तूनि
तृतीया	वस्तुना	वस्तुभ्याम्	वस्तुभिः
चतुर्थी	वस्तुने	वस्तुभ्याम्	वस्तुभ्यः
पञ्चमी	वस्तुनः	वस्तुभ्याम्	वस्तुभ्यः
षष्ठी	वस्तुनः	वस्तुनोः	वस्तूनाम्
सप्तमी	वस्तुनि	वस्तुनोः	वस्तुषु
सम्बोधन	हे वस्तो,हे वस्तु!	हे वस्तुनी!	हे वस्तूनि!

उकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द
बहु

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	बहु	बहुनी	बहूनि
द्वितीया	बहु	बहुनी	बहूनि
तृतीया	बहुना	बहुभ्याम्	बहुभिः
चतुर्थी	बहवे/बहुने	बहुभ्याम्	बहुभ्यः
पञ्चमी	बहोः/बहुनः	बहुभ्याम्	बहुभ्यः
षष्ठी	बहोः/बहुनः	बह्वोः/बहुनोः	बहूनाम्
सप्तमी	बहौ/बहूनि	बह्वोः/बहुनोः	बहुषु
सम्बोधन	हे बहो,हे बहु!	हे बहुनी!	हे बहूनि!

ऋकारान्त नपुंसकलिङ्ग
कर्तृ- करने वाला

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	कर्तृ	कर्तृणी	कर्तॄणि
द्वितीया	कर्तृ	कर्तृणी	कर्तॄणि
तृतीया	कर्त्रा /कर्तृणा	कर्तृभ्याम्	कर्तृभिः
चतुर्थी	कर्त्रे /कर्तृणे	कर्तृभ्याम्	कर्तृभ्यः
पञ्चमी	कर्तुः/कर्तृणः	कर्तृभ्याम्	कर्तृभ्यः
षष्ठी	कर्तुः/कर्तृणः	कर्त्रोः/कर्तृणोः	कर्तॄणाम्
सप्तमी	कर्तरि/कर्तृणि	कर्त्रोः/कर्तृणोः	कर्तृषु
सम्बोधन	हे कर्तृ!/हे कर्तः!	हे कर्तृणी!	हे कर्तॄणि!

आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

विद्या

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	विद्या	विद्ये	विद्याः
द्वितीया	विद्याम्	विद्ये	विद्याः
तृतीया	विद्यया	विद्याभ्याम्	विद्याभिः
चतुर्थी	विद्यायै	विद्याभ्याम्	विद्याभ्यः
पञ्चमी	विद्यायाः	विद्याभ्याम्	विद्याभ्यः
षष्ठी	विद्यायाः	विद्ययोः	विद्यानाम्
सप्तमी	विद्यायाम्	विद्ययोः	विद्यासु
सम्बोधन	हे विद्ये!	हे विद्ये!	हे विद्याः!

इकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

रुचि

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	रुचिः	रुची	रुचयः
द्वितीया	रुचिम्	रुची	रुचीः
तृतीया	रुच्या	रुचिभ्याम्	रुचिभिः
चतुर्थी	रुच्यै/ रुचये	रुचिभ्याम्	रुचिभ्यः
पञ्चमी	रुच्याः/रुचेः	रुचिभ्याम्	रुचिभ्यः
षष्ठी	रुच्याः/रुचेः	रुच्योः	रुचीनाम्
सप्तमी	रुच्याम्/रुचौ	रुच्योः	रुचिषु
सम्बोधन	हे रुचे!	हे रुची!	हे रुचयः!

ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

नदी

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वितीया	नदीम्	नद्यौ	नदीः
तृतीया	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
चतुर्थी	नद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
पञ्चमी	नद्याः	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
षष्ठी	नद्याः	नद्योः	नदीनाम्
सप्तमी	नद्याम्	नद्योः	नदीषु
सम्बोधन	हे नदि!	हे नद्यौ!	हे नद्यः!

ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

लक्ष्मी

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	लक्ष्मीः	लक्ष्म्यौ	लक्ष्म्यः
द्वितीया	लक्ष्मीम्	लक्ष्म्यौ	लक्ष्मीः
तृतीया	लक्ष्म्या	लक्ष्मीभ्याम्	लक्ष्मीभिः
चतुर्थी	लक्ष्म्यै	लक्ष्मीभ्याम्	लक्ष्मीभ्यः
पञ्चमी	लक्ष्म्याः	लक्ष्मीभ्याम्	लक्ष्मीभ्यः
षष्ठी	लक्ष्म्याः	लक्ष्म्योः	लक्ष्मीणाम्
सप्तमी	लक्ष्म्याम्	लक्ष्म्योः	लक्ष्मीषु
सम्बोधन	हे लक्ष्मि!	हे लक्ष्म्यौ!	हे लक्ष्म्यः!

स्त्री

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	स्त्री	स्त्रियौ	स्त्रियः
द्वितीया	स्त्रियम्/स्त्रीम्	स्त्रियौ	स्त्रियः, स्त्री
तृतीया	स्त्रिया	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभिः
चतुर्थी	स्त्रियै	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभ्यः
पञ्चमी	स्त्रियाः	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभ्यः
षष्ठी	स्त्रियाः	स्त्रियोः	स्त्रीणाम्
सप्तमी	स्त्रियाम्	स्त्रियोः	स्त्रीषु
सप्तमी	हे स्त्रि!	हे स्त्रियौ!	हे स्त्रियः!

श्री-लक्ष्मी

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	श्रीः	श्रियौ	श्रियः
द्वितीया	श्रियम्	श्रियौ	श्रियः
तृतीया	श्रिया	श्रीभ्याम्	श्रीभिः
चतुर्थी	श्रियै, श्रिये	श्रीभ्याम्	श्रीभ्यः
पञ्चमी	श्रियाः, श्रियः	श्रीभ्याम्	श्रीभ्यः
षष्ठी	श्रियाः, श्रियः	श्रियोः	श्रीणाम्, श्रियाम्
सप्तमी	श्रियाम्,	श्रियि	श्रियोः/श्रीषु
सम्बोधन	हे श्रीः!	हे श्रियौ!	हे श्रियः!

भी (डर), ह्री (लज्जा), धी (बुद्धि), सुश्री इत्यादि के रूप श्री के समान होते हैं।

उकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द
धेनु-गाय

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	धेनुः	धेनू	धेनवः
द्वितीया	धनुम्	धेनू	धेनूः
तृतीया	धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभिः
चतुर्थी	धेन्वै/धेनवे	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
पञ्चमी	धेन्वाः/धेनोः	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
षष्ठी	धेन्वाः/धेनोः	धेन्वाः	धेनूनाम्
सप्तमी	धेन्वाम्/धेनौ	धेन्वोः	धेनुषु
सम्बोधन	हे धेनौ!	हे धेनू!	हे धेनवः!

ऊकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द
वधू-बहू

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वधूः	वध्वौ	वध्वः
द्वितीया	वधूम्	वध्वौ	वधूः
तृतीया	वध्वा	वधूभ्याम्	वधूभिः
चतुर्थी	वध्वै	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
पञ्चमी	वध्वाः	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
षष्ठी	वध्वाः	वध्वोः	वधूनाम्
सप्तमी	वध्वाम्	वध्वोः	वधूषु
सम्बोधन	हे वधु!	हे वध्वौ	हे वध्वः!

(क) भू-पृथ्वी

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	भूः	भुवौ	भुवः
द्वितीया	भुवम्	भुवौ	भुवः
तृतीया	भुवा	भूभ्याम्	भूभिः
चतुर्थी	भुवै/भुवे	भूभ्याम्	भूभ्यः
पञ्चमी	भुवाः/भुवः	भूभ्याम्	भूभ्यः
षष्ठी	भुवाः/भुवः	भुवोः	भुवाम/भूनाम्
सप्तमी	भुवाम्/भुवि	भुवोः	भूषु
सम्बोधन	हे भूः!	हे भुवौ!	हे भुवः!

(ख) सुभ्रू - सुन्दर भौं वाली स्त्री

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सुभ्रूः	सुभ्रुवौ	सुभ्रुवः
द्वितीया	सुभ्रुवम्	सुभ्रुवौ	सुभ्रुवः
तृतीया	सुभ्रुवा	सुभ्रूभ्याम्	सुभ्रूभिः
चतुर्थी	सुभ्रुवे	सुभ्रूभ्याम्	सुभ्रूभ्यः
पञ्चमी	सुभ्रुवः	सुभ्रूभ्याम्	सुभ्रूभ्यः
षष्ठी	सुभ्रुवः	सुभ्रुवोः	सुभ्रुवाम्
सप्तमी	सुभ्रुवि	सुभ्रुवोः	सुभ्रुषु
सम्बोधन	हे सुभ्रु!	हे सुभ्रुवौ!	हे सुभ्रुवः!

ऋकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द
मातृ-माता

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	माता	मातरौ	मातरः
द्वितीया	मातरम्	मातरौ	मातृः
तृतीया	मात्रा	मातृभ्याम्	मातृभिः
चतुर्थी	मात्रे	मातृभ्याम्	मातृभ्यः
पञ्चमी	मातुः	मातृभ्याम्	मातृभ्यः
षष्ठी	मातुः	मात्रोः	मातृणाम्
सप्तमी	मातरि	मात्रोः	मातृषु
सम्बोधन	हे मातः!	हे मातरौ!	हे मातरः!

स्वसृ-बहिन

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	स्वसा	स्वसारौ	स्वसारः
द्वितीया	स्वसारम्	स्वसारौ	स्वसृः
तृतीया	स्वस्रा	स्वसृभ्याम्	स्वसृभिः
चतुर्थी	स्वस्रे	स्वसृभ्याम्	स्वसृभ्यः
पञ्चमी	स्वसुः	स्वसृभ्याम्	स्वसृभ्यः
षष्ठी	स्वसुः	स्वस्रोः	स्वसृणाम्
सप्तमी	स्वसरि	स्वस्रोः	स्वसृषु
सम्बोधन	हे स्वसः!	हे स्वसारौ!	हे स्वसारः!

(क) इदम् - यह

पुंल्लिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अयम्	इमौ	इमे
द्वितीया	इमम्/एनम्	इमौ/एनौ	इमान्/एनान्
तृतीया	अनेन/एनेन	आभ्याम्	एभिः
चतुर्थी	अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः
पञ्चमी	अस्मात्/द्	आभ्याम्	एभ्यः
षष्ठी	अस्य	अनयोः/एनयोः	एषाम्
सप्तमी	अस्मिन्	अनयोः/एनयोः	एषु

नपुंसकलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	इदम्	इमे	इमानि
द्वितीया	इदम्/एनत्	इम/एने	इमानि/एनानि
तृतीया	अनेन/एनेन	आभ्याम्	एभिः
चतुर्थी	अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः
पञ्चमी	अस्मात्/द्	आभ्याम्	एभ्यः
षष्ठी	अस्य	अनयोः/एनयोः	एषाम्
सप्तमी	अस्मिन्	अनयोः/एनयोः	एषु

स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	इयम्	इमे	इमाः
द्वितीया	इमाम्/एनाम्	इमे/एने	इमाः/एनाः
तृतीया	अनया/एनया	आभ्याम्	आभिः
चतुर्थी	अस्यै	आभ्याम्	आभ्यः
पञ्चमी	अस्याः	आभ्याम	आभ्यः
षष्ठी	अस्याः	अनयोः/एनयोः	आसाम्
सप्तमी	अस्याम्	अनयोः/एनयोः	आसु

(ख) एतद् - यह

पुंल्लिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	एषः	एतौ	एते
द्वितीया	एतम्/एनम्	एतौ/एनौ	एतान्/एनान्
तृतीया	एतेन/एनेन	एताभ्याम्	एतैः
चतुर्थी	एतस्मै	एताभ्याम्	एतेभ्यः
पञ्चमी	एतस्मात्/द्	एताभ्याम्	एतेभ्यः
षष्ठी	एतस्य	एतयोः/एनयोः	एतेषाम्
सप्तमी	एतस्मिन्	एतयोः/ एनयोः	एतेषु

नपुंसकलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	एतत्/द्	एते	एतानि
द्वितीया	एतत्/द् एनत् /द्	एते, एने	एतानि, एनानि
तृतीया	एतेन/एनेन	एताभ्याम्	एतैः
चतुर्थी	एतस्मै	एताभ्याम्	एतेभ्यः
पञ्चमी	एतस्मात/द्	एताभ्याम्	एतेभ्यः
षष्ठी	एतस्य	एतयोः/एनयोः	एतेषाम्
सप्तमी	एतस्मिन्	एतयोः/एनयोः	एतेषु

स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	एषा	एते	एताः
द्वितीया	एताम्/एनाम्	एते/एने	एताः/एनाः
तृतीया	एतया/एनया	एताभ्याम्	एताभिः
चतुर्थी	एतस्यै	एताभ्याम्	एताभ्यः
पञ्चमी	एतस्याः	एताभ्याम्	एताभ्यः
षष्ठी	एतस्याः	एतयोः/एनयोः	एतासाम्
सप्तमी	एतस्याम्	एतयोः/एनयोः	एतासु

(ग) तद् - वह

पुंल्लिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सः	तौ	ते
द्वितीया	तम्	तौ	तान्
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पञ्चमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

नपुंसकलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	तत्/तद्	ते	तानि
द्वितीया	तत्/तद्	ते	तानि
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पञ्चमी	तस्मात्/द्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सा	ते	ताः
द्वितीया	ताम्	ते	ताः
तृतीया	तया	ताभ्याम्	ताभिः
चतुर्थी	तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः
पञ्चमी	तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः
षष्ठी	तस्याः	तयोः	तासाम्
सप्तमी	तस्याम्	तयोः	तासु

(घ) अदस् - वह

पुंल्लिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	असौ	अमू	अमी
द्वितीया	अमुम्	अमू	अमून्
तृतीया	अमुना	अमूभ्याम्	अमीभिः
चतुर्थी	अमुष्मै	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
पञ्चमी	अमुष्मात्/द्	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
षष्ठी	अमुष्य	अमुयोः	अमीषाम्
सप्तमी	अमुष्मिन्	अमुयोः	अमीषु

नपुंसकलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अदः	अमू	अमूनि
द्वितीया	अदः	अमू	अमूनि
तृतीया	अमुना	अमूभ्याम्	अमीभिः
चतुर्थी	अमुष्मै	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
पञ्चमी	अमुष्मात्, द्	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
षष्ठी	अमुष्य	अमुयोः	अमीषाम्
सप्तमी	अमुष्मिन्	अमुयोः	अमीषु

स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	असौ	अमू	अमूः
द्वितीया	अमुम्	अमू	अमूः
तृतीया	अमुया	अमूभ्याम्	अमूंभिः
चतुर्थी	अमुष्यै	अमूभ्याम्	अमूभ्यः
पञ्चमी	अमुष्याः	अमूभ्याम्	अमूभ्यः
षष्ठी	अमुष्याः	अमुयोः	अमूषाम्
सप्तमी	अमुष्याम्	अमुयोः	अमूषु

यद् - जो

पुंल्लिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	यः	यौ	ये
द्वितीया	यम्	यौ	यान्
तृतीया	येन	याभ्याम्	यैः
चतुर्थी	यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः
पञ्चमी	यस्मात्/द्	याभ्याम्	येभ्यः
षष्ठी	यस्य	ययोः	येषाम्
सप्तमी	यस्मिन्	ययोः	येषु

नपुंसकलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	यत्/यद्	ये	यानि
द्वितीया	यत्/यद्	ये	यानि
तृतीया	येन	याभ्याम्	यैः
चतुर्थी	यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः
पञ्चमी	यस्मात्/द्	याभ्याम्	येभ्यः
षष्ठी	यस्य	ययोः	येषाम्
सप्तमी	यस्मिन्	ययोः	येषु

स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	या	ये	याः
द्वितीया	याम्	ये	याः
तृतीया	यया	याभ्याम्	याभिः
चतुर्थी	यस्यै	याभ्याम्	याभ्यः
पञ्चमी	यस्याः	याभ्याम्	याभ्यः
षष्ठी	यस्याः	ययोः	यासाम्
सप्तमी	यस्याम्	ययोः	यासु

किम् - कौन

पुँल्लिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	कः	कौ	के
द्वितीया	कम्	कौ	कान्
तृतीया	केन	काभ्याम्	कैः
चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः
पञ्चमी	कस्मात्, द्	काभ्याम्	केभ्यः
षष्ठी	कस्य	कयोः	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयोः	केषु

नपुंसकलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	किम्	के	कानि
द्वितीया	किम्	के	कानि
तृतीया	केन	काभ्याम्	कैः
चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः
पञ्चमी	कस्मात्, द्	काभ्याम्	केभ्यः
षष्ठी	कस्य	कयोः	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयोः	केषु

स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	का	के	काः
द्वितीया	काम्	के	काः
तृतीया	कया	क्राभ्याम्	काभिः
चतुर्थी	कस्यै	काभ्याम्	काभ्यः
पञ्चमी	कस्याः	काभ्याम्	काभ्यः
षष्ठी	कस्याः	कयोः	कासाम्
सप्तमी	कस्याम्	कयोः	कासु

धातु रूप

(1) भू सत्तायाम् (होना) परस्मैपदी।

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भवति	भवतः	भवन्ति
मध्यम पुरुष	भवसि	भवथः	भवथ
उत्तम पुरुष	भवामि	भवावः	भवामः

लिट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	बभूव	बभूवतुः	बभूवुः
मध्यम पुरुष	बभूविथ	बभूवथुः	बभूव
उत्तम पुरुष	बभूव	बभूविव	बभूविम

लुट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भविता	भवितारौ	भवितारः
मध्यम पुरुष	भवितासि	भवितास्थः	भवितास्थ
उत्तम पुरुष	भवितास्मि	भवितास्वः	भवितास्मः

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
मध्यम पुरुष	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उत्तम पुरुष	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भवतु-भवतात्	भवताम्	भवन्तु
मध्यम पुरुष	भव-भवतात्	भवतम्	भवत
उत्तम पुरुष	भवानि	भवाव	भवाम

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अभवत्	अभवताम्	अभवन्
मध्यम पुरुष	अभवः	अभवतम्	अभवत
उत्तम पुरुष	अभवम्	अभवाव	अभवाम

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भवेत्	भवेताम्	भवेयुः
मध्यम पुरुष	भवेः	भवेतम्	भवेत
उत्तम पुरुष	भवेयम्	भवेव	भवेम

आशीर्लिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भूयात्	भूयास्ताम्	भूयासुः
मध्यम पुरुष	भूयाः	भूयास्तम्	भूयास्त
उत्तम पुरुष	भूयासम्	भूयास्व	भूयास्म

लुङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अभूत्	अभूताम्	अभूवन्
मध्यम पुरुष	अभूः	अभूतम्	अभूत
उत्तम पुरुष	अभूवम्	अभूव	अभूम

लृङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अभविष्यत्	अभविष्यताम्	अभविष्यन्
मध्यम पुरुष	अभविष्यः	अभविष्यतम्	अभविष्यत
उत्तम पुरुष	अभविष्यम्	अभविष्याव	अभविष्याम

(2) एध-वृद्धौ (बढ़ना)। अकर्मक। सेट्। आत्मनेपदी।

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	एधते	एधेते	एधन्ते
मध्यम पुरुष	एधसे	एधेथे	एधध्वे
उत्तम पुरुष	एधे	एधावहे	एधामहे

लिट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	एधाञ्चक्रे	एधाञ्चक्राते	एधाञ्चक्रिरे
मध्यम पुरुष	एधाञ्चकृषे	एधाञ्चक्राथे	एधाञ्चकृढ्वे
उत्तम पुरुष	एधाञ्चक्रे	एधाञ्चकृवहे	एधाञ्चकृमहे
	एवम्- एधामास। एधाम्बभूव इत्यादि बोध्यम्।		

लुट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	एधिता	एधितारौ	एधितारः
मध्यम पुरुष	एधितासे	एधितासाथे	एधिताध्वे
उत्तम पुरुष	एधिताहे	एधितास्वहे	एधितास्महे

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	एधिष्यते	एधिष्येते	एधिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	एधिष्यसे	एधिष्येथे	एधिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	एधिष्ये	एधिष्यावहे	एधिष्यामहे

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	एधताम्	एधेताम्	एधन्ताम्
मध्यम पुरुष	एधस्व	एधेथाम्	एधध्वम्
उत्तम पुरुष	एधै	एधावहै	एधामहै

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ऐधत	ऐधेताम्	ऐधन्त
मध्यम पुरुष	ऐधथाः	ऐधेथाम्	ऐधध्वम्
उत्तम पुरुष	ऐधे	ऐधावहि	ऐधामहि

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	एधेत	एधेयाताम्	एधेरन्
मध्यम पुरुष	एधेथाः	एधेयाथाम्	एधेध्वम्
उत्तम पुरुष	एधेय	एधेवहि	एधेमहि

आशीर्लिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	एधिषीष्ट	एधिषीयास्ताम्	एधिषीरन्
मध्यम पुरुष	एधिषीष्ठाः	एधिषीयास्थाम्	एधिषीध्वम्
उत्तम पुरुष	एधिषीय	एधिषीवहि	एधिषीमहि

लुङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ऐधिष्ट	ऐधिषाताम्	ऐधिषत
मध्यम पुरुष	ऐधिष्टाः	ऐधिषाथाम्	ऐधिढ्वम्
उत्तम पुरुष	ऐधिषि	ऐधिष्वहि	ऐधिष्महि

लृङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ऐधिष्यत	ऐधिष्येताम्	ऐधिष्यन्त
मध्यम पुरुष	ऐधिष्यथाः	ऐधिष्येथाम्	ऐधिष्यध्वम्
उत्तम पुरुष	ऐधिष्ये	ऐधिष्यावहि	ऐधिष्यामहि

3. अद्-भक्षणे। (खाना)— परस्मैपदी

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अत्ति	अत्तः	अदन्ति
मध्यम पुरुष	अत्सि	अत्थः	अत्थ
उत्तम पुरुष	अद्मि	अद्वः	अद्मः

लिट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	जघास	जक्षतुः	जक्षुः
मध्यम पुरुष	जघसिथ	जक्षथुः	जक्ष
उत्तम पुरुष	जघास-जघस	जक्षिव	जक्षिम

आत्मनेपदी

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	आद	आदतुः	आदुः
मध्यम पुरुष	आदिथ	आदथुः	आद
उत्तम पुरुष	आद	आदिव	आदिम

लुट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अत्ता	अत्तारौ	अत्तारः
मध्यम पुरुष	अत्तासि	अत्तास्थः	अत्तास्थ
उत्तम पुरुष	अत्तास्मि	अत्तास्वः	अत्तास्मः

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अत्स्यति	अत्स्यतः	अत्स्यन्ति
मध्यम पुरुष	अत्स्यसि	अत्स्यथः	अत्स्यथ
उत्तम पुरुष	अत्स्यामि	अत्स्यावः	अत्स्यामः

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अत्तु-अत्तात्	अत्ताम्	अदन्तु
मध्यम पुरुष	अद्धि-अत्तात्	अत्तम्	अत्त
उत्तम पुरुष	अदानि	अदाव	अदाम

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	आदत्	आत्ताम्	आदन्
मध्यम पुरुष	आदः	आत्तम्	आत्त
उत्तम पुरुष	आदम्	आद्व	आद्म

विधिर्लिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अद्यात्	अद्याताम्	अद्युः
मध्यम पुरुष	अद्याः	अद्यातम्	अद्यात
उत्तम पुरुष	अद्याम्	अद्याव	अद्याम

अशीर्लिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अद्यात्	अद्यास्ताम्	अद्यासुः
मध्यम पुरुष	अद्याः	अद्यास्तम्	अद्यास्त
उत्तम पुरुष	अद्यासम्	अद्यास्व	अद्यास्म

लुङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अघसत्	अघसताम्	अघसन्
मध्यम पुरुष	अघसः	अघसतम्	अघसत
उत्तम पुरुष	अघसम्	अघसाव	अघसाम

ऌङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	आत्स्यत्	आत्स्यताम्	आत्स्यन्
मध्यम पुरुष	आत्स्यः	आत्स्यतम्	आत्स्यत
उत्तम पुरुष	आत्स्यम्	आत्स्याव	आत्स्याम

4. हु-दानादयोः। (देना,यज्ञ करना) परस्मैपदी ।

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	जुहोति	जुहुतः	जुह्वति
मध्यम पुरुष	जुहोषि	जुहुथः	जुहुथ
उत्तम पुरुष	जुहोमि	जुहुवः	जुहुमः

लिट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	जुहवाञ्चकार	जुहवाञ्चक्रतुः	जुहवाञ्चक्रुः
मध्यम पुरुष	जुहवाञ्चकर्थ	जुहवाञ्चक्रथुः	जुहवाञ्चक्र
उत्तम पुरुष	जुहवाञ्चकार-चकर	जुहवाञ्चकृव	जुहवाञ्चकृम

(लिट्) पक्षे

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	जुहाव	जुहुवतुः	जुहुवुः
मध्यम पुरुष	जुहविथ	जुहुवथुः	जुहुव
उत्तम पुरुष	जुहाव-जुहव	जुहुविव	जुहुविम

लुट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	होता	होतारौ	होतारः
मध्यम पुरुष	होतासि	होतास्थः	होतास्थ
उत्तम पुरुष	होतास्मि	होतास्वः	होतास्मः

ऌट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	होष्यति	होष्यतः	होष्यन्ति
मध्यम पुरुष	होष्यसि	होष्यथः	होष्यथ
उत्तम पुरुष	होष्यामि	होष्यावः	होष्यामः

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	जुहोतु-जुहुतात्	जुहुताम्	जुह्वतु
मध्यम पुरुष	जुहुधि-जुहुतात्	जुहुतम्	जुहुत
उत्तम पुरुष	जुहवानि	जुहवाव	जुहवाम

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अजुहोत्	अजुहुताम्	अजुहवुः
मध्यम पुरुष	अजुहोः	अजुहुतम्	अजुहुत
उत्तम पुरुष	अजुहवम्	अजुहुव	अजुहुम

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	जुहुयात्	जुहुयाताम्	जुहुयुः
मध्यम पुरुष	जुहुयाः	जुहुयातम्	जुहुयात
उत्तम पुरुष	जुहुयाम्	जुहुयाव	जुहुयाम

आशीर्लिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	हूयात्	हूयास्ताम्	हूयासुः
मध्यम पुरुष	हूयाः	हूयास्तम्	हूयास्त
उत्तम पुरुष	हूयासम्	हूयास्व	हूयास्म

लुङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अहौषीत्	अहौष्टाम्	अहौषुः
मध्यम पुरुष	अहौषीः	अहौष्टम्	अहौष्ट
उत्तम पुरुष	अहौषम्	अहौष्व	अहौष्म

लृङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अहोष्यत्	अहोष्यताम्	अहोष्यन्
मध्यम पुरुष	अहोष्यः	अहोष्यतम्	अहोष्यत
उत्तम पुरुष	अहोष्यम्	अहोष्याव	अहोष्याम

5. डुदाञ्-दाने। (देना) उभयपदी

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ददाति	दत्तः	ददति
मध्यम पुरुष	ददासि	दत्थः	दत्थ
उत्तम पुरुष	ददामि	दद्वः	दद्मः

लिट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ददौ	ददतुः	ददुः
मध्यम पुरुष	ददिथ-ददाथ	ददथुः	दद
उत्तम पुरुष	ददौ	ददिव	ददिम

लुट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	दाता	दातारौ	दातारः
मध्यम पुरुष	दातासि	दातास्थः	दातास्थ
उत्तम पुरुष	दातास्मि	दातास्वः	दातास्मः

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	दास्यति	दास्यतः	दास्यन्ति
मध्यम पुरुष	दास्यसि	दास्यथः	दास्यथ
उत्तम पुरुष	दास्यामि	दास्यावः	दास्यामः

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ददातु-दत्तात्	दत्ताम्	ददतु
मध्यम पुरुष	देहि-दत्तात्	दत्तम्	दत्त
उत्तम पुरुष	ददानि	ददाव	ददाम

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अददात्	अदत्ताम्	अददुः
मध्यम पुरुष	अददाः	अदत्तम्	अदत्त
उत्तम पुरुष	अददाम्	अदद्व	अदद्म

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	दद्यात्	दद्याताम्	दद्युः
मध्यम पुरुष	दद्याः	दद्यातम्	दद्यात
उत्तम पुरुष	दद्याम्	दद्याव	दद्याम

आशीर्लिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	देयात्	देयास्ताम्	देयासुः
मध्यम पुरुष	देयाः	देयास्तम्	देयास्त
उत्तम पुरुष	देयासम्	देयास्व	देयास्म

लुङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अदात्	अदाताम्	अदुः
मध्यम पुरुष	अदाः	अदातम्	अदात
उत्तम पुरुष	अदाम्	अदाव	अदाम

लृङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अदास्यत्	अदास्यताम्	अदास्यन्
मध्यम पुरुष	अदास्यः	अदास्यतम्	अदास्यत
उत्तम पुरुष	अदास्यम्	अदास्याव	अदास्याम

आत्मनेपदपक्षे

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	दत्ते	ददाते	ददते
मध्यम पुरुष	दत्से	ददाथे	दद्ध्वे
उत्तम पुरुष	ददे	दद्वहे	दद्महे

लिट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ददे	ददाते	ददिरे
मध्यम पुरुष	ददिषे	ददाथे	ददिध्वे
उत्तम पुरुष	ददे	ददिवहे	ददिमहे

लुट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	दाता	दातारौ	दातारः
मध्यम पुरुष	दातासे	दातासाथे	दाताध्वे
उत्तम पुरुष	दाताहे	दातास्वहे	दातास्महे

ऌट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	दास्यते	दास्येते	दास्यन्ते
मध्यम पुरुष	दास्यसे	दास्येथे	दास्यध्वे
उत्तम पुरुष	दास्ये	दास्यावहे	दास्यामहे

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	दत्ताम्	ददाताम्	ददताम्
मध्यम पुरुष	दत्स्व	ददाथाम्	दद्ध्वम्
उत्तम पुरुष	ददै	ददावहै	ददामहै

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अदत्त	अददाताम्	अददत
मध्यम पुरुष	अदत्थाः	अददाथाम्	अदद्ध्वम्
उत्तम पुरुष	अददि	अदद्वहि	अदद्महि

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ददीत	ददीयाताम्	ददीरन्
मध्यम पुरुष	ददीथाः	ददीयाथाम्	ददीध्वम्
उत्तम पुरुष	ददीय	ददीवहि	दहीमहि

आशीर्लिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	दासीष्ट	दासीयास्ताम्	दासीरन्
मध्यम पुरुष	दसीष्ठाः	दासीयास्थाम्	दासीध्वम्
उत्तम पुरुष	दासीय	दासीवहि	दासीमहि

लुङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अदित	अदिषाताम्	अदिषत
मध्यम पुरुष	अदिथाः	अदिषाथाम्	अदिध्वम्
उत्तम पुरुष	अदिषि	अदिष्वहि	अदिष्महि

ऌङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अदास्यत	अदास्येताम्	अदास्यन्त
मध्यम पुरुष	अदास्यथाः	अदास्येथाम्	अदास्यध्वम्
उत्तम पुरुष	अदास्ये	अदास्यावहि	अदास्यामहि

6. दिवु-क्रीडाविजिगीषाव्यवहार-द्युति-स्तुतिमोदमद-स्वप्न-कान्तिगतिषु। परस्मैपदी ।

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	दीव्यति	दीव्यतः	दीव्यन्ति
मध्यम पुरुष	दीव्यसि	दीव्यथः	दीव्यथ
उत्तम पुरुष	दीव्यामि	दीव्यावः	दीव्यामः

लिट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	दिदेव	दिदिवतुः	दिदिवुः
मध्यम पुरुष	दिदेविथ	दिदिवथुः	दिदिव
उत्तम पुरुष	दिदेव	दिदिविव	दिदिविम

लुट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	देविता	देवितारौ	देवितारः
मध्यम पुरुष	देवितासि	देवितास्थः	देवितास्थ
उत्तम पुरुष	देवितास्मि	देवितास्वः	देवितास्मः

ऌट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	देविष्यति	देविष्यतः	देविष्यन्ति
मध्यम पुरुष	देविष्यसि	देविष्यथः	देविष्यथ
उत्तम पुरुष	देविष्यामि	देविष्यावः	देविष्यामः

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	दीव्यतु-दीव्यात्	दीव्यताम्	दीव्यन्तु
मध्यम पुरुष	दीव्य-दीव्यतात्	दीव्यतम्	दीव्यत
उत्तम पुरुष	दीव्यानि	दीव्याव	दीव्याम

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अदीव्यत्	अदीव्यताम्	अदीव्यन्
मध्यम पुरुष	अदीव्यः	अदीव्यतम्	अदीव्यत
उत्तम पुरुष	अदीव्यम्	अदीव्याव	अदीव्याम

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	दीव्येत्	दीव्येताम्	दीव्येयुः
मध्यम पुरुष	दीव्येः	दीव्येतम्	दीव्येत
उत्तम पुरुष	दीव्येयम्	दीव्येव	दीव्येम

आशीर्लिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	दीव्यात्	दीव्यास्ताम्	दीव्यासुः
मध्यम पुरुष	दीव्याः	दीव्यास्तम्	दीव्यास्त
उत्तम पुरुष	दीव्यासम्	दीव्यास्व	दीव्यास्म

लुङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अदेवीत्	अदेविष्टाम्	अदेविषुः
मध्यम पुरुष	अदेवीः	अदेविष्टम्	अदेविष्ट
उत्तम पुरुष	अदेविषम्	अदेविष्व	अदेविष्म

लृङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अदेविष्यत्	अदेविष्यताम्	अदेविष्यन्
मध्यम पुरुष	अदेविष्यः	अदेविष्यतम्	अदेविष्यत
उत्तम पुरुष	अदेविष्यम्	अदेविष्याव	अदेविष्याम

7. षुञ्-अभिषवे- (स्नान करना) उभयपदी।

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सुनोति	सुनुतः	सुन्वन्ति
मध्यम पुरुष	सुनोषि	सुनुथः	सुनुथ
उत्तम पुरुष	सुनोमि	सुनुवः-सुन्वः	सुनुमः-सुन्मः

लिट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सुषाव	सुषुवतुः	सुषुवुः
मध्यम पुरुष	सुषविथ-सुषोथ	सुषुवथुः	सुषुव
उत्तम पुरुष	सुषाव-सुषव	सुषुविव	सुषुविम

लुट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सोता	सोतारौ	सोतारः
मध्यम पुरुष	सोतासि	सोतास्थः	सोतास्थ
उत्तम पुरुष	सोतास्मि	सोतास्वः	सोतास्मः

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सोष्यति	सोष्यतः	सोष्यन्ति
मध्यम पुरुष	सोष्यसि	सोष्यथः	सोष्यथ
उत्तम पुरुष	सोष्यामि	सोष्यावः	सोष्यामः

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सुनोतु-सुनुतात्	सुनुताम्	सुन्वन्तु
मध्यम पुरुष	सुनु-सुनुतात्	सुनुतम्	सुनुत
उत्तम पुरुष	सुनवानि	सुनवाव	सुनवाम

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	असुनोत्	असुनुताम्	असुन्वन्
मध्यम पुरुष	असुनोः	असुनुतम्	असुनुत
उत्तम पुरुष	असुनवम्	असुनुव-असुन्व	असुनुम-असुन्म

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सुनुयात्	सुनुयाताम्	सुनुयुः
मध्यम पुरुष	सुनुयाः	सुनुयातम्	सुनुयात
उत्तम पुरुष	सुनुयाम्	सुनुयाव	सुनुयाम

आशीर्लिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सूयात्	सूयास्ताम्	सूयासुः
मध्यम पुरुष	सूयाः	सूयास्तम्	सूयास्त
उत्तम पुरुष	सूयासम्	सूयास्व	सूयास्म

लुङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	असावीत्	असाविष्टाम्	असाविषुः
मध्यम पुरुष	असावीः	असाविष्टम्	असाविष्ट
उत्तम पुरुष	असाविषम्	असाविष्व	असाविष्म

लृङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	असोष्यत्	असोष्यताम्	असोष्यन्
मध्यम पुरुष	असोष्यः	असोष्यतम्	असोष्यत
उत्तम पुरुष	असोष्यम्	असोष्याव	असोष्याम

आत्मनेपदपक्षे

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सुनुते	सुन्वाते	सुन्वते
मध्यम पुरुष	सुनुषे	सुन्वाथे	सुनुध्वे
उत्तम पुरुष	सुन्वे	सुनुवहे-सुन्वहे	सुनुमहे-सुन्महे

लिट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सुषुवे	सुषुवाते	सुषुविरे
मध्यम पुरुष	सुषुविषे	सुषुवाथे	सुषुविध्वे-ध्वे
उत्तम पुरुष	सुषुवे	सुषुविवहे	सुषुविमहे

लुट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सोता	सोतारौ	सोतारः
मध्यम पुरुष	सोतासे	सोतासाथे	सोताध्वे
उत्तम पुरुष	सोताहे	सोतास्वहे	सोतास्महे

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सोष्यते	सोष्येते	सोष्यन्ते
मध्यम पुरुष	सोष्यसे	सोष्येथे	सोष्यध्वे
उत्तम पुरुष	सोष्ये	सोष्यावहे	सोष्यामहे

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सुनुताम्	सुन्वाताम्	सुन्वताम्
मध्यम पुरुष	सुनुष्व	सुन्वाथाम्	सुनुध्वम्
उत्तम पुरुष	सुनवै	सुनवावहै	सुनवामहै

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	असुनुत	असुन्वाताम्	असुन्वत
मध्यम पुरुष	असुनुथाः	असुन्वाथाम्	असुनुध्वम्
उत्तम पुरुष	असुन्वि	असुनुवहि-असुन्वहि	असुनुमहि-असुन्महि

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सुन्वीत	सुन्वीयाताम्	सुन्वीरन्
मध्यम पुरुष	सुन्वीथाः	सुन्वीयाथाम्	सुन्वीध्वम्
उत्तम पुरुष	सुन्वीय	सुन्वीवहि	सुन्वीमहि

आशीर्लिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सोषीष्ट	सोषीयास्ताम्	सोषीरन्
मध्यम पुरुष	सोषीष्ठाः	सोषीयास्थाम्	सोषीध्वम्
उत्तम पुरुष	सोषीय	सोषीवहि	सोषीमहि

लुङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	असोष्ट	असोषाताम्	असोषत
मध्यम पुरुष	असोष्ठाः	असोषाथाम्	असोढ्वम्
उत्तम पुरुष	असोषि	असोष्वहि	असोष्महि

लृङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	असोष्यत	असोष्येताम्	असोष्यन्त
मध्यम पुरुष	असोष्यथाः	असोष्येथाम्	असोष्यध्वम्
उत्तम पुरुष	असोष्ये	असोष्यावहि	असोष्यामहि

8. तुद-व्यथने।

(दुःख देना, पीड़ा करना, घाव करना।) **उभयपदी**

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तुदति	तुदतः	तुदन्ति
मध्यम पुरुष	तुदसि	तुदथः	तुदथ
उत्तम पुरुष	तुदामि	तुदावः	तुदामः

लिट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तुतोद	तुतुदतुः	तुतुदुः
मध्यम पुरुष	तुतोदिथ	तुतुदथुः	तुतुद
उत्तम पुरुष	तुतोद	तुतुदिव	तुतुदिम

लुट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तोत्ता	तोत्तारौ	तोत्तारः
मध्यम पुरुष	तोत्तासि	तोत्तास्थः	तोत्तास्थ
उत्तम पुरुष	तोत्तास्मि	तोत्तास्वः	तोत्तास्मः

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तोत्स्यति	तोत्स्यतः	तोत्स्यन्ति
मध्यम पुरुष	तोत्स्यसि	तोत्स्यथः	तोत्स्यथ
उत्तम पुरुष	तोत्स्यामि	तोत्स्यावः	तोत्स्यामः

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तुदतु-तुदतात्	तुदताम्	तुदन्तु
मध्यम पुरुष	तुद-तुदतात्	तुदतम्	तुदत
उत्तम पुरुष	तुदानि	तुदाव	तुदाम

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अतुदत्	अतुदताम्	अतुदन्
मध्यम पुरुष	अतुदः	अतुदतम्	अतुदत
उत्तम पुरुष	अतुदम्	अतुदाव	अतुदाम

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तुदेत्	तुदेताम्	तुदेयुः
मध्यम पुरुष	तुदेः	तुदेतम्	तुदेत
उत्तम पुरुष	तुदेयम्	तुदेव	तुदेम

आशीर्लिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तुद्यात्	तुद्यास्ताम्	तुद्यासुः
मध्यम पुरुष	तुद्याः	तुद्यास्तम्	तुद्यास्त
उत्तम पुरुष	तुद्यासम्	तुद्यास्व	तुद्यास्म

लुङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अतौत्सीत्	अतौत्ताम्	अतौत्सुः
मध्यम पुरुष	अतौत्सीः	अतौत्तम्	अतौत्त
उत्तम पुरुष	अतौत्सम्	अतौत्स्व	अतौत्स्म

लृङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अतोत्स्यत्	अतोत्स्यताम्	अतोत्स्यन्
मध्यम पुरुष	अतोत्स्यः	अतोत्स्यतम्	अतोत्स्यत
उत्तम पुरुष	अतोत्स्यम्	अतोत्स्याव	अतोत्स्याम

आत्मनेपदपक्षे

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तुदते	तुदेते	तुदन्ते
मध्यम पुरुष	तुदसे	तुदेथे	तुदध्वे
उत्तम पुरुष	तुदे	तुदावहे	तुदामहे

लिट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तुतुदे	तुतुदाते	तुतुदिरे
मध्यम पुरुष	तुतुदिषे	तुतुदाथे	तुतुदिध्वे
उत्तम पुरुष	तुतुदे	तुतुदिवहे	तुतदिमहे

लुट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तोत्ता	तोत्तारौ	तोत्तारः
मध्यम पुरुष	तोत्तासे	तोत्तासाथे	तोत्ताध्वे
उत्तम पुरुष	तोत्ताहे	तोत्तास्वहे	तोत्तास्महे

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तोत्स्यते	तोत्स्येते	तोत्स्यन्ते
मध्यम पुरुष	तोत्स्यसे	तोत्स्येथे	तोत्स्यध्वे
उत्तम पुरुष	तोत्स्ये	तोत्स्यावहे	तोत्स्यमहे

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तुदताम्	तुदेताम्	तुदन्ताम्
मध्यम पुरुष	तुदस्व	तुदेथाम्	तुदध्वम्
उत्तम पुरुष	तुदै	तुदावहै	तुदामहै

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अतुदत	अतुदेताम्	अतुदन्त
मध्यम पुरुष	अतुदथाः	अतुदेथाम्	अतुदध्वम्
उत्तम पुरुष	अतुदे	अतुदावहि	अतुदामहि

वि.लि.

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तुदेत	तुदेयाताम्	तुदेरन्
मध्यम पुरुष	तुदेथाः	तुदेयाथाम्	तुदेध्वम्
उत्तम पुरुष	तुदेय	तुदेवहि	तुदेमहि

आशीर्लिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तुत्सीष्ट	तुत्सीयास्ताम्	तुत्सीरन्
मध्यम पुरुष	तुत्सीष्ठाः	तुत्सीयास्थाम्	तुत्सीध्वम्
उत्तम पुरुष	तुत्सीय	तुत्सीवहि	तुत्सीमहि

लुङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अतुत्त	अतुत्साताम्	अतुत्सत
मध्यम पुरुष	अतुत्थाः	अतुत्साथाम्	अतुद्ध्वम्
उत्तम पुरुष	अतुत्सि	अतुत्स्वहि	अतुत्स्महि

लृङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अतोत्स्यत	अतोत्स्येताम्	अतोत्स्यन्त
मध्यम पुरुष	अतोत्स्यथाः	अतोत्स्येथाम्	अतोत्स्यध्वम्
उत्तम पुरुष	अतोत्स्ये	अतोत्स्यावहि	अतोत्स्यामहि

९. रुधिर्-आवरण।

(रोकना, घेर लेना, घेरना)। उभयपदी ।

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	रुणद्धि	रुन्द्धः	रुन्धन्ति
मध्यम पुरुष	रुणत्सि	रुन्द्धः	रुन्द्ध
उत्तम पुरुष	रुणध्मि	रुन्ध्वः	रुन्ध्मः

लिट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	रुरोध	रुरुधतुः	रुरुधुः
मध्यम पुरुष	रुरोधिथ	रुरुधथुः	रुरुध
उत्तम पुरुष	रुरोध	रुरुधिव	रुरुधिम

लुट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	रोद्धा	रोद्धारौ	रोद्धारः
मध्यम पुरुष	रोद्धासि	रोद्धास्थः	रोद्धास्थ
उत्तम पुरुष	रोद्धास्मि	रोद्धास्वः	रोद्धास्मः

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	रोत्स्यति	रोत्स्यतः	रोत्स्यन्ति
मध्यम पुरुष	रोत्स्यसि	रोत्स्यथः	रोत्स्यथ
उत्तम पुरुष	रोत्स्यामि	रोत्स्यावः	रोत्स्यामः

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	रुणद्धु-रुन्धात्	रुन्द्धाम्	रुन्धन्तु
मध्यम पुरुष	रुन्द्धि-रुन्धात्	रुन्द्धम्	रुन्द्ध
उत्तम पुरुष	रुणधानि	रुणधाव	रुणधाम

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अरुणत्-द्	अरुन्द्धाम्	अरुन्धन्
मध्यम पुरुष	अरुणः, त्	अरुन्द्धम्	अरुन्द्ध
उत्तम पुरुष	अरुणधम्	अरुन्ध्व	अरुन्ध्म

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	रुन्ध्यात्	रुन्ध्याताम्	रुन्ध्युः
मध्यम पुरुष	रुन्ध्याः	रुन्ध्यातम्	रुन्ध्यात
उत्तम पुरुष	रुन्ध्याम्	रुन्ध्याव	रुन्ध्याम

आशीर्लिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	रुध्यात्	रुध्यास्ताम्	रुध्यासुः
मध्यम पुरुष	रुध्याः	रुध्यास्तम्	रुध्यास्त
उत्तम पुरुष	रुध्यासम्	रुध्यास्व	रुध्यास्म

लुङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अरुधत्	अरुधताम्	अरुधन्
मध्यम पुरुष	अरुधः	अरुधतम्	अरुधत
उत्तम पुरुष	अरुधम्	अरुधाव	अरुधाम

अथवा (लुङ्) पक्षे

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अरौत्सीत्	अरौद्धाम्	अरौत्सुः
मध्यम पुरुष	अरौत्सीः	अरौद्धम्	अरौद्ध
उत्तम पुरुष	अरौत्सम्	अरौत्स्व	अरौत्स्म

ऌङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अरोत्स्यत्	अरोत्स्यताम्	अरोत्स्यन्
मध्यम पुरुष	अरोत्स्यः	अरोत्स्यतम्	अरोत्स्यत
उत्तम पुरुष	अरोत्स्यम्	अरोत्स्याव	अरोत्स्याम

आत्मनेपदपक्षे

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	रुन्द्धे	रुन्धाते	रुन्धते
मध्यम पुरुष	रुन्त्से	रुन्धाथे	रुन्ध्वे
उत्तम पुरुष	रुन्धे	रुन्ध्वहे	रुन्ध्महे

लिट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	रुरुधे	रुरुधाते	रुरुधिरे
मध्यम पुरुष	रुरुधिषे	रुरुधाथे	रुरुधिध्वे
उत्तम पुरुष	रुरुधे	रुरुधिवहे	रुरुधिमहे

लुट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	रोद्धा	रोद्धारौ	रोद्धारः
मध्यम पुरुष	रोद्धासे	रोद्धासाथे	रोद्धाध्वे
उत्तम पुरुष	रोद्धाहे	रोद्धास्वहे	रोद्धास्महे

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	रोत्स्यते	रोत्स्येते	रोत्स्यन्ते
मध्यम पुरुष	रोत्स्यसे	रोत्स्येथे	रोत्स्यध्वे
उत्तम पुरुष	रोत्स्ये	रोत्स्यावहे	रोत्स्यामहे

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	रुन्धाम्	रुन्धाताम्	रुन्धताम्
मध्यम पुरुष	रुन्त्स्व	रुन्धाथाम्	रुन्ध्वम्
उत्तम पुरुष	रुणधै	रुणधावहै	रुणधामहै

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अरुन्द्ध	अरुन्धाताम्	अरुन्धत
मध्यम पुरुष	अरुन्द्धाः	अरुन्धाथाम्	अरुन्ध्वम्
उत्तम पुरुष	अरुन्धि	अरुन्ध्वहि	अरुन्ध्महि

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	रुन्धीत	रुन्धीयाताम्	रुन्धीरन्
मध्यम पुरुष	रुन्धीथाः	रुन्धीयाथाम्	रुन्धीध्वम्
उत्तम पुरुष	रुन्धीय	रुन्धीवहि	रुन्धीमहि

आशीर्लिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	रुत्सीष्ट	रुत्सीयास्ताम्	रुत्सीरन्
मध्यम पुरुष	रुत्सीष्ठाः	रुत्सीयास्थाम्	रुत्सीध्वम्
उत्तम पुरुष	रुत्सीय	रुत्सीवहि	रुत्सीमहि

लुङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अरुद्ध	अरुत्साताम्	अरुत्सत
मध्यम पुरुष	अरुद्धाः	अरुत्साथाम्	अरुद्ध्वम्
उत्तम पुरुष	अरुत्सि	अरुत्स्वहि	अरुत्स्महि

ऌङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अरोत्स्यत	अरोत्स्येताम्	अरोत्स्यन्त
मध्यम पुरुष	अरोत्स्यथाः	अरोत्स्येथाम्	अरोत्स्यध्वम्
उत्तम पुरुष	अरोत्स्ये	अरोत्स्यावहि	अरोत्स्यामहि

10. तनु-विस्तारे।

(विस्तारः दैर्घ्यम्)। फैलाना, बढ़ाना। उभयपदी।

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तनोति	तनुतः	तन्वन्ति
मध्यम पुरुष	तनोषि	तनुथः	तनुथ
उत्तम पुरुष	तनोमि	तनुवः-तन्वः	तनुमः-तन्मः

लिट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ततान	तेनतुः	तेनुः
मध्यम पुरुष	तेनिथ	तेनथुः	तेन
उत्तम पुरुष	ततान-ततन	तेनिव	तेनिम

लुट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तनिता	तनितारौ	तनितारः
मध्यम पुरुष	तनितासि	तनितास्थः	तनितास्थ
उत्तम पुरुष	तनितास्मि	तनितास्वः	तनितास्मः

ऌट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तनिष्यति	तनिष्यतः	तनिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	तनिष्यसि	तनिष्यथः	तनिष्यथ
उत्तम पुरुष	तनिष्यामि	तनिष्यावः	तनिष्यामः

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तनोतु-तनुतात्	तनुताम्	तन्वन्तु
मध्यम पुरुष	तनु-तनुतात्	तनुतम्	तनुत
उत्तम पुरुष	तनवानि	तनवाव	तनवाम

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अतनोत्	अतनुताम्	अतन्वन्
मध्यम पुरुष	अतनोः	अतनुतम्	अतनुत
उत्तम पुरुष	अतनवम्	अतन्व,अतनुव	अतनुम-अतन्म

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तनुयात्	तनुयाताम्	तनुयुः
मध्यम पुरुष	तनुयाः	तनुयातम्	तनुयात
उत्तम पुरुष	तनुयाम्	तनुयाव	तनुयाम

आशीर्लिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तन्यात्	तन्यास्ताम्	तन्यासुः
मध्यम पुरुष	तन्याः	तन्यास्तम्	तन्यास्त
उत्तम पुरुष	तन्यासम्	तन्यास्व	तन्यास्म

लुङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अतानीत्	अतानिष्टाम्	अतानिषुः
मध्यम पुरुष	अतानीः	अतानिष्टम्	अतानिष्ट
उत्तम पुरुष	अतानिषम्	अतानिष्व	अतानिष्म

ऌङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अतनिष्यत्	अतनिष्यताम्	अतनिष्यन्
मध्यम पुरुष	अतनिष्यः	अतनिष्यतम्	अतनिष्यत
उत्तम पुरुष	अतनिष्यम्	अतनिष्याव	अतनिष्याम

आत्मनेपदपक्षे

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तनुते	तन्वाते	तन्वते
मध्यम पुरुष	तनुषे	तन्वाथे	तनुध्वे
उत्तम पुरुष	तन्वे	तन्वहे-तनुवहे	तन्महे-तनुमहे

लिट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तेने	तेनाते	तेनिरे
मध्यम पुरुष	तेनिषे	तेनाथे	तेनिध्वे
उत्तम पुरुष	तेने	तेनिवहे	तेनिमहे

लुट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तनिता	तनितारौ	तनितारः
मध्यम पुरुष	तनितासे	तनितासाथे	तनिताध्वे
उत्तम पुरुष	तनिताहे	तनितास्वहे	तनितास्महे

ऌट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तनिष्यते	तनिष्येते	तनिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	तनिष्यसे	तनिष्येथे	तनिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	तनिष्ये	तनिष्यावहे	तनिष्यामहे

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तनुताम्	तन्वाताम्	तन्वताम्
मध्यम पुरुष	तनुष्व	तन्वाथाम्	तनुध्वम्
उत्तम पुरुष	तनवै	तनवावहै	तनवामहै

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अतनुत	अतन्वाताम्	अतन्वत
मध्यम पुरुष	अतनुथाः	अतन्वाथाम्	अतनुध्वम्
उत्तम पुरुष	अतन्वि	अतन्वहि-अतनुवहि	अतन्महि-अतनुमहि

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तन्वीत	तन्वीयाताम्	तन्वीरन्
मध्यम पुरुष	तन्वीथाः	तन्वीयाथाम्	तन्वीध्वम्
उत्तम पुरुष	तन्वीय	तन्वीवहि	तन्वीमहि

आशीर्लिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तनिषीष्ट	तनिषीयास्ताम्	तनिषीरन्
मध्यम पुरुष	तनिषीष्ठाः	तनिषीयास्थाम्	तनिषीध्वम्
उत्तम पुरुष	तनिषीय	तनिषीवहि	तनिषीमहि

लुङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अतत-अतनिष्ट	अतनिषाताम्	अतनिषत
मध्यम पुरुष	अतथाःअतनिष्ठाः	अतनिषाथाम्	अतनिढ्वम्-अतनिध्वम्
उत्तम पुरुष	अतनिषि	अतनिष्वहि	अतनिष्महि

ऌङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अतनिष्यत	अतनिष्येताम्	अतनिष्यन्त
मध्यम पुरुष	अतनिष्यथाः	अतनिष्येथाम्	अतनिष्यध्वम्
उत्तम पुरुष	अतनिष्ये	अतनिष्यावहि	अतनिष्यामहि

11. डुक्रीञ् –द्रव्यविनिमये।
(खरीदना, बदले में लेना)। उभयपदी

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	क्रीणाति	क्रीणीतः	क्रीणन्ति
मध्यम पुरुष	क्रीणासि	क्रीणीथः	क्रीणीथ
उत्तम पुरुष	क्रीणामि	क्रीणीवः	क्रीणीमः

लिट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चिक्राय	चिक्रियतुः	चिक्रियुः
मध्यम पुरुष	चिक्रयिथ-चिक्रेथ	चिक्रियथुः	चिक्रिय
उत्तम पुरुष	चिक्राय- चिक्रय	चिक्रियिव	चिक्रियिम

लुट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	क्रेता	क्रेतारौ	क्रेतारः
मध्यम पुरुष	क्रेतासि	क्रेतास्थः	क्रेतास्थ
उत्तम पुरुष	क्रितास्मि	क्रेतास्वः	क्रेतास्मः

ऌट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	क्रेष्यति	क्रेष्यतः	क्रेष्यन्ति
मध्यम पुरुष	क्रेष्यसि	क्रेष्यथः	क्रेष्यथ
उत्तम पुरुष	क्रेष्यामि	क्रेष्यावः	क्रेष्यामः

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	क्रीणातु-क्रीणीतात्	क्रीणीताम्	क्रीणन्तु
मध्यम पुरुष	क्रीणीहि-क्रीणीतात्	क्रीणीतम्	क्रीणीत
उत्तम पुरुष	क्रीणानि	क्रीणाव	क्रीणाम

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अक्रीणात्	अक्रीणीताम्	अक्रीणन्
मध्यम पुरुष	अक्रीणाः	अक्रीणीतम्	अक्रीणीत
उत्तम पुरुष	अक्रीणाम्	अक्रीणीव	अक्रीणीम

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	क्रीणीयात्	क्रीणीयाताम्	क्रीणीयुः
मध्यम पुरुष	क्रीणीयाः	क्रीणीयातम्	क्रीणीयात
उत्तम पुरुष	क्रीणीयाम्	क्रीणीयाव	क्रीणीयाम

आशीर्लिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	क्रीयात्	क्रीयास्ताम्	क्रीयासुः
मध्यम पुरुष	क्रीयाः	क्रीयास्तम्	क्रीयास्त
उत्तम पुरुष	क्रीयासम्	क्रीयास्व	क्रीयास्म

लुङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अक्रैषीत्	अक्रैष्टाम्	अक्रैषुः
मध्यम पुरुष	अक्रैषीः	अक्रैष्टम्	अक्रैष्ट
उत्तम पुरुष	अक्रैषम्	अक्रैष्व	अक्रैष्म

ऌङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अक्रेष्यत्	अक्रेष्यताम्	अक्रेष्यन्
मध्यम पुरुष	अक्रेष्यः	अक्रेष्यतम्	अक्रेष्यत
उत्तम पुरुष	अक्रेष्यम्	अक्रेष्याव	अक्रेष्याम

आत्मनेपदे पक्षे

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	क्रीणीते	क्रीणाते	क्रीणते
मध्यम पुरुष	क्रीणीषे	क्रीणाथे	क्रीणीध्वे
उत्तम पुरुष	क्रीणे	क्रीणीवहे	क्रीणीमहे

लिट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चिक्रिये	चिक्रियाते	चिक्रियिरे
मध्यम पुरुष	चिक्रियिषे	चिक्रियाथे	चिक्रियिध्वे
उत्तम पुरुष	चिक्रिये	चिक्रियिवहे	चिक्रियिमहे

लुट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	क्रेता	क्रेतारौ	क्रेतारः
मध्यम पुरुष	क्रेतासे	क्रेतासाथे	क्रेताध्वे
उत्तम पुरुष	क्रेताहे	क्रेतास्वहे	क्रेतास्महे

ऌट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	क्रेष्यते	क्रेष्येते	क्रेष्यन्ते
मध्यम पुरुष	क्रेष्यसे	क्रेष्येथे	क्रेष्यध्वे
उत्तम पुरुष	क्रेष्ये	क्रेष्यावहे	क्रेष्यामहे

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	क्रीणीताम्	क्रीणाताम्	क्रीणताम्
मध्यम पुरुष	क्रीणीष्व	क्रीणाथाम्	क्रीणीध्वम्
उत्तम पुरुष	क्रीणै	क्रीणावहै	क्रीणामहै

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अक्रीणीत	अक्रीणाताम्	अक्रीणत
मध्यम पुरुष	अक्रीणीथाः	अक्रीणाथाम्	अक्रीणीध्वम्
उत्तम पुरुष	अक्रीणि	अक्रीणीवहि	अक्रीणीमहि

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	क्रीणीत	क्रीणीयाताम्	क्रीणीरन्
मध्यम पुरुष	क्रीणीथाः	क्रीणीयाथाम्	क्रीणीध्वम्
उत्तम पुरुष	क्रीणीय	क्रीणीवहि	क्रीणमहि

आशीर्लिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	क्रेषीष्ट	क्रेषीयास्ताम्	क्रेषीरन्
मध्यम पुरुष	क्रेषीष्ठाः	क्रेषीयास्थाम्	क्रेषीढ्वम्
उत्तम पुरुष	क्रेषीय	क्रेषीवहि	क्रेषीमहि

लुङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अक्रेष्ट	अक्रेषाताम्	अक्रेषत
मध्यम पुरुष	अक्रेष्ठाः	अक्रेषाथाम्	अक्रेढ्वम्
उत्तम पुरुष	अक्रेषि	अक्रेष्वहि	अक्रेष्महि

ऌङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अक्रेष्यत	अक्रेष्येताम्	अक्रेष्यन्त
मध्यम पुरुष	अक्रेष्यथाः	अक्रेष्येथाम्	अक्रेष्यध्वम्
उत्तम पुरुष	अक्रेष्ये	अक्रेष्यावहि	अक्रेष्यामहि

12. चुर-स्तेये। (चोरी करना) उभयपदी ।

परस्मैपदी

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चोरयति	चोरयतः	चोरयन्ति
मध्यम पुरुष	चोरयसि	चोरयथः	चोरयथ
उत्तम पुरुष	चोरयामि	चोरयावः	चोरयामः

लिट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चोरयाञ्चकार	चोरयाञ्चक्रतुः	चोरयाञ्चक्रुः
मध्यम पुरुष	चोरयाञ्चकर्थ	चोरयाञ्चक्रथुः	चोरयाञ्चक्र
उत्तम पुरुष	चोरयाञ्चकार	चोरयाञ्चकृव	चोरयाञ्चकृम

लुट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चोरयिता	चोरयितारौ	चोरयितारः
मध्यम पुरुष	चोरयितासि	चोरयितास्थः	चोरयितास्थ
उत्तम पुरुष	चोरयितास्मि	चोरयितास्व	चोरयितास्म

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चोरयिष्यति	चोरयिष्यतः	चोरयिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	चोरयिष्यसि	चोरयिष्यथः	चोरयिष्यथ
उत्तम पुरुष	चोरयिष्यामि	चोरयिष्यावः	योरयिष्यामः

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चोरयतु-चोरयतात्	चोरयताम्	चोरयन्तु
मध्यम पुरुष	चोरय-चोरयतात्	चोरयतम्	चोरयत
उत्तम पुरुष	चोरयाणि	चोरयाव	चोरयाम

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अचोरयत्	अचोरयताम्	अचोरयन्
मध्यम पुरुष	अचोरयः	अचोरयतम्	अचोरयत
उत्तम पुरुष	अचोरयम्	अचोरयाव	अचोरयाम

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चोरयेत्	चोरयेताम्	चोरयेयुः
मध्यम पुरुष	चोरयेः	चोरयेतम्	चोरयेत
उत्तम पुरुष	चोरयेयम्	चोरयेव	चोरयेम

आशीर्लिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चोर्यात्	चोर्यास्ताम्	चोर्यासुः
मध्यम पुरुष	चोर्याः	चोर्यास्तम्	चोर्यास्त
उत्तम पुरुष	चोर्यासम्	चोर्यास्व	चोर्यास्म

लुङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अचूचुरत्	अचूचुरताम्	अचूचुरन्
मध्यम पुरुष	अचूचुरः	अचूचुरतम्	अचूचुरत
उत्तम पुरुष	अचूचुरम्	अचूचुराव	अचूचुराम

लृङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अचोरयिष्यत्	अचोरयिष्यताम्	अचोरयिष्यन्
मध्यम पुरुष	अचोरयिष्यः	अचोरयिष्यतम्	अचोरयिष्यत
उत्तम पुरुष	अचोरयिष्यम्	अचोरयिष्याव	अचोरयिष्याम

आत्मनेपदपक्षे

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चोरयते	चोरयेते	चोरयन्ते
मध्यम पुरुष	चोरयसे	चोरयेथे	चोरयध्वे
उत्तम पुरुष	चोरये	चोरयावहे	चोरयामहे

लिट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चोरयाञ्चक्रे	चोरयाञ्चक्राते	चोरयाञ्चक्रिरे
मध्यम पुरुष	चोरयाञ्चकृषे	चोरयाञ्चक्राथे	चोरयाञ्चकृढ्वे
उत्तम पुरुष	चोरयाञ्चक्रे	चोरयाञ्चकृवहे	चोरयाञ्चकृमहे

लुट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चोरयिता	चोरयितारौ	चोरयितारः
मध्यम पुरुष	चोरयितासे	चोरयितासाथे	चोरयिताध्वे
उत्तम पुरुष	चोरयिताहे	चोरयितास्वहे	चोरयितास्महे

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चोरयिष्यते	चोरयिष्येते	चोरयिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	चोरयिष्यसे	चोरयिष्येथे	चोरयिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	चोरयिष्ये	चोरयिष्यावहे	चोरयिष्यामहे

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चोरयताम्	चोरयेताम्	चोरयन्ताम्
मध्यम पुरुष	चोरयस्व	चोरयेथाम्	चोरयध्वम्
उत्तम पुरुष	चोरयै	चोरयावहै	चोरयामहै

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अचोरयत	अचोरयेताम्	अचोरयन्त
मध्यम पुरुष	अचोरयथाः	अचोरयेथाम्	अचोरयध्वम्
उत्तम पुरुष	अचोरये	अचोरयावहि	अचोरयामहि

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चोरयेत	चोरयेयाताम्	चोरयेरन्
मध्यम पुरुष	चोरयेथाः	चोरयेयाथाम्	चोरयेध्वम्
उत्तम पुरुष	चोरयेय	चोरयेवहि	चोरयेमहि

आशीर्लिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चोरयिषीष्ट	चोरयिषीयास्ताम्	चोरयिषीरन्
मध्यम पुरुष	चोरयिषीष्ठाः	चोरयिषीयास्थाम्	चोरयिषीध्वम्
उत्तम पुरुष	चोरयिषीय	चोरयिषीवहि	चोरयिषीमहि

लुङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अचूचुरत	अचूचुरेताम्	अचूचुरन्त
मध्यम पुरुष	अचूचुरथाः	अचूचुरेथाम्	अचूचुरध्वम्
उत्तम पुरुष	अचूचुरे	अचूचुरावहि	अचूचुरामहि

ऌङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अचोरयिष्यत	अचोरयिष्येताम्	अचोरयिष्यन्त
मध्यम पुरुष	अचोरयिष्यथाः	अचोरयिष्येथाम्	अचोरयिष्यध्वम्
उत्तम पुरुष	अचोरयिष्ये	अचोरयिष्यावहि	अचोरयिष्यामहि

4. भाषाविज्ञान

भाषा की उत्पत्ति

- 'भाषा की उत्पत्ति' यह विषय अत्यन्त उलझा हुआ है। इस विषय पर विद्वानों ने जो विचार प्रस्तुत किये हैं, वे अपूर्ण और अनिर्णयात्मक हैं।
- भाषा उत्पत्ति के लिए दो बातें अनिवार्य हैं-

1. वाग्यन्त्र से ध्वनन या वर्णोच्चारण की क्षमता प्राप्त करना।
2. उच्चरित ध्वनि का, अर्थ के साथ सम्बन्ध स्थापित करने का प्रारम्भ।

- प्रथम बात प्रायः सभी पशु-पक्षियों एवं अन्य जीवों में प्राप्त होती है।
- पशु- पक्षियों में स्पष्ट उच्चारण या व्यक्त वाक् का अभाव है, अतः वे स्पष्ट रूप से बोलनें में असमर्थ हैं।
- मनुष्य को बोलने की क्षमता जन्म से प्राप्त है, अतः वह जन्म से वाग्यन्त्र या वागिन्द्रिय का प्रयोग करता है।
- दूसरी बात में शब्द और अर्थ के सम्बन्ध जानने की जिज्ञासा ही मुख्य विषय है।
- भाषा-उत्पत्ति विषयक समस्त सिद्धान्त अनुमान पर आश्रित हैं एवं विज्ञान अनुमान पर आश्रित न होकर तथ्यों पर निर्भर होता है।
- यह दर्शन, मानव-विज्ञान या समाज-विज्ञान का विषय होने के कारण भाषा-विज्ञान इस दिशा में अपनी असमर्थता प्रकट करता है।
- सामान्य लोकप्रियता का विषय होने से इसके प्रस्तावित सिद्धान्तों का वर्णन किया जा रहा है-

1. दिव्योत्पत्ति-सिद्धान्त

- यह सबसे प्राचीन मत है। इसके अनुसार- जिस प्रकार परमात्मा ने मानव- सृष्टि की, उसी प्रकार मानव के लिए एक परिष्कृत भाषा भी दी।
- दैवीय शक्ति ही इस सिद्धान्त का मूल है। उसी दैवी शक्ति ने ही सृष्टि के प्रारम्भ में ही वेदों का ज्ञान दिया, जिससे मानव अपना क्रिया-कलाप चला सका।
- वेदों, उपनिषदों तथा अनेक दर्शन ग्रन्थों में यह बात प्रमाणित है कि ईश्वर से ही वेदों की उत्पत्ति हुई।

समीक्षा- इस सिद्धान्त पर निम्न आपत्तियाँ की गयी हैं।

1. यह सिद्धान्त तर्क या विज्ञान संगत नहीं है, केवल आस्था पर निर्भर है।
2. यदि भाषा ईश्वर-प्रदत्त होती तो सृष्टि में भाषा भेद नहीं होता।
3. जर्मन् विद्वान् **हेर्डेर** ने लिखा है कि ''यदि भाषा ईश्वरकृत होती तो यह अधिक सुव्यवस्थित और तर्कसंगत होगी, अधिकांश भाषाएं अव्यवस्थित और त्रुटिपूर्ण हैं।''

2. सङ्केत-सिद्धान्त

- इसे **निर्णयवाद**, **निर्णयसिद्धान्त** तथा **स्वीकारवाद** आदि अनेक नामों से जाना जाता है।
- इस सिद्धान्त के प्रवर्तक 18वीं शताब्दी के फ्रेंच विद्वान् **'रूसो'** हैं।
- इनके अनुसार 'व्यक्ति प्रारम्भ में सङ्केतों के माध्यम से अपना अभिप्राय व्यक्त करता था तथा बाद में सामूहिक रूप से वस्तुओं की संज्ञा दी गयी।'
- इसे **'सामाजिक-समझौता'** कहा जा सकता है।

समीक्षा- इस सिद्धान्त की कुछ न्यूनताएं हैं-

1. बिना भाषा के सभा का आयोजन और विचार-विनिमय कैसे हुआ?
2. सङ्केत शब्दों के निर्माण के लिए क्या आधार था? किसी व्यक्ति का सुझाव मान लिया गया या फिर सबके अलग-अलग मत थे?
3. यदि भाषा के बिना सभा का आयोजन, सङ्केत निर्माण एवं सङ्केतों की सामाजिक सम्पुष्टि हो सकती है, तो भाषा की क्या आवश्यकता रह जाती है।

अतः यह सिद्धान्त मान्य नहीं है।

3. रणन-सिद्धान्त

- इस सिद्धान्त को **धातु-सिद्धान्त, अनुकरण-सिद्धान्त, अनुरणनमूलकतावाद, अनुरणात्मक-अनुकरण, डिंग-डांगवाद** आदि नामों से निर्दिष्ट किया गया है।
- इस सिद्धान्त के मूल प्रवर्तक **'प्लेटो'** थे तथा इसको **'हेस'** और **'मैक्समूलर'** ने व्यवस्थित किया।
- इस मत के अनुसार 'प्रकृति में एक सामान्य नियम है किसी वस्तु पर चोट मारने पर एक विशेष ध्वनि होती है। यह ध्वनि ही उसकी विशेषता है। इसी ध्वनि को रणन कहा जाता है।

समीक्षा-

1. इस सिद्धान्त में इतने दोष थे कि बाद में मैक्समूलर ने इसे छोड़ दिया।
2. इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि किस वस्तु से मस्तिष्क में कौन-सी ध्वनि झंकृत हुई।

3. यह सिद्धान्त शब्द और अर्थ में रहस्यात्मक स्वाभाविक सम्बन्ध मानता है। शब्द और अर्थ का साङ्केतिक सम्बन्ध है न कि स्वाभाविक यह मत अस्वीकृत होने पर भी रोचकता के लिए प्रचलित है।

4. ध्वन्यनुकरण-सिद्धान्त

- इस सिद्धान्त के अन्य नाम भी हैं, जैसे- **अनुकरण-सिद्धान्त, ध्वन्यात्मकानुकरण-सिद्धान्त, अनुकरणमूलकतावाद, शब्दानुकरणवाद, भों-भों-वाद** आदि।
- कुत्ते की ध्वनि को अंग्रेजी में BOW-WOW कहते हैं, अतः हिन्दी में यह **भों-भों-वाद** हुआ।
- इस सिद्धान्त का अभिमत है कि प्राकृतिक वस्तुओं,पशु-पक्षियों आदि की ध्वनि के अनुकरण पर विभिन्न वस्तुओं के नाम रखे जाते हैं। जो वस्तु जैसी ध्वनि करती है, उसका वैसा ही नाम पड़ता है। जैसे-काँव-काँव से काक या कौआ, कू-कू से कोयल, झर-झर से झरना आदि।

समीक्षा-

1. विश्व की भाषाओं में ध्वन्यनुकरण वाले शब्दों की संख्या एक प्रतिशत भी नहीं है। अतः यह भाषोत्पत्ति सम्बन्धी उचित समाधान नहीं है।
2. **प्रो0 रेनन** की आपत्ति है, यदि मनुष्य पक्षियों जैसे तुच्छ जीवों के शब्दों का अनुकरण करके भाषा बना सकता है, तो वह पशु-पक्षियों से निकृष्ट सिद्ध होता है।
3. कुछ भाषाओं में ध्वन्यनुकरण-शब्द हैं ही नहीं। जैसे- उत्तरी अमेरिका की **'अथवस्कन'** भाषा।

आंशिक रूप से स्वीकार्य होते हुए भी यह मत सम्पूर्ण रूप से स्वीकार नहीं हैं।

5. आवेग-सिद्धान्त

- इस सिद्धान्त को **'मनोभावाभिव्यक्तिवाद, मनोरागव्यञ्जक शब्दमूलकतावाद, पूह-पूह सिद्धान्त, मनोभावाभि-व्यञ्जकतावाद** आदि के नाम से जाना जाता है।
- इसके अनुसार आरम्भ में मनुष्य भाव प्रधान था और प्रसन्नता, दुःख, विस्मय, घृणा आदि के भाववश उसके मुख से ओ, छि, धिक्, आह आदि शब्द सहज ही निकले। धीरे-धीरे इन्हीं से भाषा का विकास हुआ।

समीक्षा- इसको माननें में निम्न कठिनाइयाँ हैं-

1. ये शब्द विचारपूर्वक प्रयुक्त नहीं होते हैं बल्कि आवेग की तीव्रता में अनायास निकल पड़ते हैं।
2. भिन्न-भिन्न भाषाओं में ऐसे शब्द एक रूप में नहीं मिलते यदि स्वभावतः निकलते तो सभी मनुष्यों में लगभग एक समान होते।
3. भाषा में आवेग शब्दों की संख्या 40-50 से अधिक नहीं होगी इन शब्दों से पूरी भाषा पर प्रकाश नहीं पड़ता। अतः इनको पूर्णतः भाषा का अंग नहीं माना जा सकता।

यह भी समस्या को समाप्त करनें में असमर्थ है।

6. श्रम-ध्वनि-सिद्धान्त

- इसे **यो-हे-हो-वाद, श्रम-परिहरणमूलकतावाद** भी कहा जाता है। इनके प्रतिपादक **'न्वायर' (न्वारे)** नामक भाषाशास्त्री हैं।
- इनके अनुसार 'परिश्रम का कार्य करते समय साँस तेजी से बाहर-भीतर आने-जाने,साथ-साथ स्वरतन्त्रियों को विभिन्न रूपों में कम्पित होने एवं तदनुकूल ध्वनियाँ उच्चरित होने से कार्य करने वाले को राहत मिलती है।
- उदाहरणार्थ कपड़ा धोते समय धोबी 'हियो' या 'छियो' कहता है और मजदूर आदि 'हो-हो, हूँ-हूँ कहते हैं।

समीक्षा-

1. यह मत भाषा की उत्पत्ति के लिए सर्वथा असन्तोष जनक है।
2. शारीरिक परिश्रम जन्य ये शब्द निरर्थक हैं। भाषा की उत्पत्ति के लिए सार्थक शब्दों की आवश्यकता है।
3. अर्थहीन शब्दों से भाषा की उत्पत्ति नहीं हो सकती। यह मत सबसे निकृष्ट और अग्राह्य है।

7. इंगित-सिद्धान्त

- इस सिद्धान्त के प्रवर्तन का श्रेय पालिनेशियन भाषा विद्वान् डॉ. **'राये'** को है। **डार्विन** भी इसके समर्थक हैं।
- **प्रो. रिचर्ड** इसे 'मौखिक इंगित सिद्धान्त' कहते हैं।
- इस मत के अनुसार प्रारम्भ में मानव ने अपनी आङ्गिक चेष्टाओं का ही वाणी के द्वारा अनुकरण किया और भाषा बनी। जैसे- पानी पीने के समय मुँह से 'पा' जैसी ध्वनि हुई, अतः 'पा' का अर्थ 'पीना' हुआ।

समीक्षा-

1. अपने अनुकरण पर शब्द-रचना हास्यास्पद है। दूसरे के अनुकरण पर शब्द रचना मान्य हो सकती है।
2. हाथ, पैर, ओष्ठ आदि के आधार पर शब्द- रचना की कल्पना निर्मूल है।
3. इंगित- सिद्धान्त पर बने शब्दों की संख्या भाषा में बहुत कम है। यह सिद्धान्त भी सारहीन है।

8. सम्पर्क- सिद्धान्त

- इस मत के प्रतिपादक **जी. रेवेज़ हैं,** जो मनोविज्ञान के विद्वान् थे।
- इनके मतानुसार 'मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, उसमें पारस्परिक

सम्पर्क की प्रवृत्ति जन्मसिद्ध है। प्रारम्भ में भूख आदि की अभिव्यक्ति के लिए मौखिक और साङ्केतिक अभिव्यक्ति का सहारा लिया होगा, उनसे जो ध्वनियाँ निकली वे धीरे-धीरे भाषा बनी।'

समीक्षा-

1. प्रो0 रेवेज़ का यह सिद्धान्त बालमनोविज्ञान, जीव-मनोविज्ञान और आदिम प्राणि-मनोविज्ञान पर आश्रित है एवं तर्कसंगत भी है।
2. कुछ अन्य भाषाशास्त्री भी इस मत को अमान्य नहीं करते किन्तु भाषोत्पत्ति के प्रश्न को अनिर्णीत मानते हैं।

9. सङ्गीत-सिद्धान्त

- इसको **प्रेम-सिद्धान्त, सिंग-सांग थ्योरी,** WOO-WOO थियरी भी कहा जाता है।
- डार्विन, स्पेन्सर एवं येस्पर्सन ने इसे कुछ रूपों में माना था।
- इनके सिद्धान्त के अनुसार, 'मानव के सङ्गीत से भाषा की उत्पत्ति हुई।'

समीक्षा-

1. गुनगुनाने से भाषा की उत्पत्ति होना केवल अनुमान पर आश्रित है, इसका कोई प्रमाण नहीं है।
2. प्रारम्भिक व्यक्ति गुनगुनाता था, इसका भी कोई पुष्ट आधार नहीं है।

   अतः यह सिद्धान्त भी अस्वीकार्य है।

10. प्रतीक-सिद्धान्त

- इस सिद्धान्त में माना जाता है कि 'संयोग से किसी शब्द का किसी अर्थ से सम्बन्ध हो जाता है, और वह शब्द उस अर्थ का प्रतीक हो जाता है।'
- भाषा-विज्ञान में ऐसे शब्दों को 'नर्सरी-शब्द' कहते हैं जैसे- माता, पिता, बाबा आदि।

समीक्षा-

1. प्रतीक सिद्धान्त मूलतः भाषा के प्रारम्भिक शब्दों की व्याख्या करता है। भाषा में 'नर्सरी-शब्द' आये, ये भी सत्य है।
2. यह स्थूल शब्दों की उत्पत्ति बता सकता है, सूक्ष्म अर्थ के बोधक शब्दों की उत्पत्ति बताने में असमर्थ है।

11. समन्वय-सिद्धान्त

- इस सिद्धान्त के प्रवर्तक प्रसिद्ध भाषाशास्त्री **'हेनरी स्वीट'** हैं।
- उन्होंने नये सिद्धान्त की अपेक्षा सर्वसिद्धान्त - संकलन को अधिक उपयुक्त समझा है।
- उनके अनुसार 'यदि सभी सिद्धान्तों में से आवश्यक तत्त्व को एकत्रित कर लिया जाय तो भाषा की उत्पत्ति सम्बन्धी समस्याओं का निराकरण हो सकता है।'

समीक्षा-

1. भाषा की उत्पत्ति समझाने के लिए अन्य कोई एकमत शुद्ध न होने से सबका समन्वय उपयुक्त माना गया।
2. यह सिद्धान्त सामान्यतया निर्विरोध रूप से स्वीकार किया जाता है।

12. प्रतिभा-सिद्धान्त

- प्रतिभा- सिद्धान्त के संस्थापक आचार्य **भर्तृहरि** हैं।
- 'वाक्यपदीय' में भर्तृहरि ने प्रतिभा को विश्व की आत्मा माना है और उसे सर्वशक्ति- सम्पन्न बताया है।
- इस प्रकार भाषा की उत्पत्ति मनुष्य के प्रतिभाओं से हुई है।
- भर्तृहरि, पूर्व-जन्म के संस्कारों को भी भाषोत्पत्ति का कारण मानते हैं।

समीक्षा

1. मनुष्यों में कोई मौलिक उद्भावना या शक्ति नहीं थी। अतः भाषोत्पत्ति सम्बन्धी 'समन्वय-सिद्धान्त'ही सर्वथा उत्कृष्ट है।

संस्कृत भाषा का उद्भव और विकास

- संस्कृत भाषा भारत- यूरोपीय अथवा भारत- जर्मनीय परिवार की प्रमुख भाषाओं में है।
- संस्कृत के मूल स्रोत के सम्बन्ध में चाहे जो भी कल्पनाएं की जायें, किन्तु इसके भाषायी इतिहास का प्रारम्भ इसके प्राचीनतम रूप 'ऋग्वेद' से ही मानना होगा।
- 'अवेस्ता' और 'हित्ती', भाषाओं के दो ऐसे रूप हैं जो कि ऋग्वेद से काफी बाद के होने पर भी वैदिक भाषा के प्राग्वैदिक रूपों की झाँकी प्रस्तुत कर सकते हैं।
- संस्कृत आर्यों की भाषा थी और आर्य का मूल निवास भारत ही है। इस बात को पश्चिमी देश नहीं मानते हैं क्योंकि पूरे विश्व को सभ्य और शिक्षित करने के ठेकेदार सिर्फ मिस्र, यूनान आदि देश ही हो सकते हैं।
- भारोपीय भाषाविज्ञानी संस्कृत के उस मूल रूप की स्थिति एशिया या यूरोप में चाहे जहाँ मानने की बात कहें, किन्तु संस्कृत से भाषा के जिस रूप का बोध होता है उसका जन्म एवं पोषण भारत की इसी भूमि पर हुआ था, इसमें कोई सन्देह नहीं।
- सौभाग्य की बात है कि संस्कृत विश्व की एक ऐसी पुरातन भाषा है, जिसके साहित्य भण्डार में विश्व की प्राचीनतम लिखित सामग्री प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है, जिसकी साहित्यिक भागीरथी का प्रवाह कई हजार वर्षो से निरवच्छिन्न रूप में प्रवाहमान रहा है यद्यपि उसके भाषिक विकास की प्रक्रिया अवश्य ही आज से लगभग ढाई हजार वर्ष पूर्व एक बिन्दु पर आकर स्थिर-सी हो गयी थी।

- ऋग्वैदिक काल के उपरान्त हमें इसके विकास के विभिन्न स्तरों के रूप अपेक्षाकृत अधिक स्पष्ट रूप में दृष्टिगोचर होने लगते हैं।
- ऋग्वेद तथा अथर्ववेद के मन्त्रों की भाषा संहिताओं तथा ब्राह्मण ग्रन्थों की भाषा, ब्राह्मणों तथा सूत्रों एवं उपनिषदों की भाषा, उपनिषदों तथा महाकाव्यों की भाषा की पारस्परिक तुलना करने पर स्पष्ट हो जाता है कि संस्कृत में, एक जीवित भाषा में कालक्रम से होने वाले परिवर्तनों के समान, उल्लेख्य परिवर्तन घटित हो रहे थे।
- संस्कृत भाषा के विकास स्तर को तीन-स्तरों पर देखा जा सकता है।

  1. वैदिक 2. उत्तरवैदिक 3. लौकिक
- वैदिक के अन्तर्गत संहिताओं तथा ब्राह्मण- ग्रन्थों की भाषा को,उत्तरवैदिक में आरण्यकों, उपनिषदों एवं सूत्र साहित्यों की भाषा को रखा जा सकता है।
- इसके बाद की साहित्यिक एवं शास्त्रीय भाषा को लौकिक के अन्तर्गत रखा जा सकता है।
- लौकिक साहित्य ग्रन्थ 'रामायण' है। रामायण काल से लेकर वर्तमान समय तक संस्कृत का विकास हो रहा है। इस प्रकार संस्कृत भाषा रूपी गङ्गा को वैदिक काल से लेकर वर्तमानकाल तक पहुँचने में अनेक मार्गों का अनुसरण करना पड़ा है।

1.3 भारोपीय परिवार

भारतीय यूरोपीय (भारोपीय) से मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषाओं की सामान्य रूपरेखा-

विश्व भाषाओं के पारिवारिक वर्गीकरण के अनुसार 18 भेद माने गये हैं। इन 18 भाषाओं को चार भूखण्डों में बाँटा गया है।

(क) यूरेशिया (यूरोप-एशिया)

(ख) अफ्रीका

(ग) प्रशान्त महासागरीय भूखण्ड

(घ) अमेरिका भूखण्ड

यूरेशिया भूखण्ड के अन्तर्गत ही भारोपीय परिवार की गणना की जाती है।

विश्व के भाषा परिवारों में भारोपीय परिवार का सबसे अधिक महत्त्व। इसके मुख्य कारण निम्न हैं -

- **प्रयोगाधिक्य -** इस परिवार की भाषाओं के बोलने वालों की संख्या सबसे अधिक है।
- **भौगोलिक व्यापकता -** प्रायः सारे विश्व में इस परिवार की भाषाएं बोली जाती हैं।
- **सांस्कृतिक उत्कर्ष -** इस परिवार के लोग सभ्यता और संस्कृति में विश्व में सबसे अग्रणी हैं।
- **भाषावैज्ञानिक उत्कर्ष -** भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र के अभ्युदय का सर्वाधिक श्रेय इसी परिवार को है। संस्कृत, अंग्रेजी, जर्मन और फ्रेंच में सर्वाधिक भाषाशास्त्रीय चिन्तन हुआ।
- **तुलनात्मक भाषाविज्ञान का जन्मदाता -** भारोपीय परिवार की विभिन्न भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन से ही तुलनात्मक भाषाविज्ञान का जन्म हुआ है।
- **भारोपीय परिवार के विभिन्न नाम**

  भारोपीय परिवार के विभिन्न नाम समय-समय पर सुझाए गए हैं। जिनमें प्रमुख चार नाम है-

  1 इण्डो जर्मनिक या भारत जार्मनिक परिवार

  2 आर्य परिवार

  3 भारोपीय परिवार - यह नाम अत्यन्त प्रचलित हुआ, अतः इसे ही अपनाया गया। यह नाम सर्वप्रथम फ्रेंच विद्वानों ने दिया।

4 भारत हित्ती परिवार-

- **भारोपीय परिवार की शाखाएँ -**
- भारोपीय शब्द भारत + यूरोपीय का मूल रूप है।
- यह Indo-European अनुवाद है।
- इस परिवार में भारतवर्ष से लेकर यूरोप तक फैली हुई भाषाओं का संग्रह है।
- इस परिवार में दस शाखाएँ हैं -

1. भारत-ईरानी (आर्य) (Aryan, Indo- Iranian)
2. बाल्टो स्लाविक (Balto-Slavic,Letto-Slavic)
3. आर्मीनी (Armenian)
4. अल्बानी (Albanian, Illyraian)
5. ग्रीक (Greek, Hellenic)
6. केल्टिक (Keltic)
7. जर्मानिक (ट्यूटानिक) (Germanic, Teutonic)
8. इटालिक (Italic)
9. हिटाइट (Hiltite)
10. तोखारी (To khorian)

- **केन्टुम् और शतम् (सतम्) वर्ग**
- भारोपीय परिवार की भाषाओं को ध्वनि के आधार पर दो भागों में विभक्त किया जाता है-

1. केन्टुम् 2. शतम्

- इस विभाजन का श्रेय **प्रो. अस्कोली** को है।

➢ सभी भारोपीय भाषाओं को दो भागों में विभक्त किया गया है
➢ प्रथम चार परिवार शतम् वर्ग में आते हैं और शेष छः परिवार 'केन्टुम्' वर्ग में
➢ 'सौ' के लिए मूल भारोपीय भाषा का शब्द क्मतोम् (Kmtom) माना जाता है।

मूल भारोपीय शब्द - Kmtom **(क्मतोम् = शतम्)**

शतम् (सतम्) वर्ग	केन्टुम् वर्ग
संस्कृत - शतम्	लैटिन - केन्टुम्
अवेस्ता - सतम्	ग्रीक - हेकटोन
फारसी - सद	केल्टिक - केत्
हिन्दी - सौ	तोखारी - कन्ध
रुसी - स्तो (Sto)	गाथिक - हुन्ड
लिथुआनियन - (स्जिम्तास)	जर्मन - हुन्डर्ट
	फ्रेंच - सं
	इटालियन - केन्तो

➢ **भारोपीय परिवार-विभाजन**

भारोपीय-परिवार को केन्टुम् और शतम् वर्ग के आधार पर निम्न प्रकार से बाँटा गया है-

शतम् वर्ग	केन्टुम् वर्ग
1. भारत-ईरानी	5. ग्रीक
2. बाल्टो स्लाविक	6. केल्टिक
3. आर्मीनी	7. जार्मनिक
4. अल्बानी	8. इटालिक
	9. हिटाइट
	10. तोखारी

भारोपीय परिवार की विशेषताएँ -

➢ रचना की दृष्टि से भारोपीय परिवार श्लिष्ट योगात्मक है।
➢ इस परिवार की मूल भाषाएँ संस्कृत, ग्रीक, लैटिन आदि संयोगात्मक थीं, परन्तु इनसे विकसित आधुनिक भाषाएँ हिन्दी, अंग्रेजी आदि वियोगात्मक हो गई।
➢ भारोपीय भाषाओं की धातुएँ प्रायः एकाक्षर थीं।
➢ इन भाषाओं में (संस्कृत में) प्रत्यय दो प्रकार के थे-

1. **कृत् -** जो सीधे धातु से जोड़े जाते थे। इन्हें Primary Suffixes कहते हैं। जैस - भू + त = भूत
2. **तद्धित -** ये शब्दो से जुड़ते हैं। जैसे - भूत + इक = भौतिक इन्हें Secondary Suffixes कहते हैं।

➢ शब्द या धातु से पद बनाने के लिए दो प्रकार से प्रत्यय लगते थे -

(क) सुप् - (Case-imdicating Suffixes)(शब्दों से)

(ख) तिङ्- (Verbal Suffixes) (धातुओं से)

➢ पदों का ही वाक्य में प्रयोग होता था।
➢ पदों को समस्त कर बृहत् पद बनाने की प्रवृत्ति मूल भारोपीय भाषा में थी। वह भारोपीय परिवार में भी रही।
➢ मूल भारोपीय भाषा में उदात्त स्वर के कारण स्वर भेद (गुण, वृद्धि, दीर्घ) होता था।
➢ भारोपीय भाषाओं में मूल प्रत्ययों का लोप हो गया और स्वर परिवर्तन से ही अर्थ-परिवर्तन का काम लिया जाने लगा। अंग्रेजी धातुओं में - Drink - Drank - Drunk, संस्कृत में देव > दैव, विधि > वैध, कुमार > कौमार
➢ भारोपीय भाषा में प्रत्ययों की अधिकता है। मूल भाषा से पृथक् होकर अनेक भाषाएँ विकसित हुईं।
➢ विश्व भाषा परिवारों में भारोपीय भाषा-परिवार का सबसे अधिक महत्त्व है। भारोपीय परिवार में भी आर्य परिवार या आर्य शाखा का सर्वाधिक महत्त्व है।

शतम् वर्ग

1.भारत ईरानी (आर्य) 2.बाल्टो स्लाविक 3.आर्मीनी 4. अल्बानी

1 आर्य या भारत ईरानी शाखा

➢ **प्राचीनतम साहित्य -** विश्व का प्राचीनतम ग्रन्थ 'ऋग्वेद' अपने शुद्ध और प्राचीनतम रूप में संस्कृत में उपलब्ध है।
➢ समस्त वैदिक साहित्य इसी शाखा में प्राप्त है।
➢ पारसियों का धर्मग्रन्थ अवेस्ता इसी शाखा में प्राप्त है।
➢ **प्राचीन वर्णमाला एवं ध्वनियाँ -** मूल भारोपीय भाषा की प्राचीन ध्वनियों के निर्धारण में संस्कृत और अवेस्ता का असाधारण योगदान है।
➢ **प्राचीन संस्कृति एवं सभ्यता -** विश्व की प्राचीनतम संस्कृति और सभ्यता का सर्वांगीण इतिहास संस्कृत और अवेस्ता भाषा के साहित्य से प्राप्त होता है।
➢ **भाषाशास्त्रीय देन -** भाषाशास्त्र को ध्वनिविज्ञान, पद विज्ञान (व्याकरण), अर्थविज्ञान का मौलिक आधार संस्कृत से ही प्राप्त होता है।

भारतीय आर्यभाषाएँ

कालविभाजन

भारतीय आर्यभाषाओं को काल की दृष्टि से तीन भागों में बाँटा गया है-

1. **प्राचीन भारतीय आर्यभाषाएँ -** 2500ई. पू. से 500ई. पू. तक
2. **मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाएँ -** 500ई.पू. से 1000ई. तक

3. आधुनिक भारतीय आर्यभाषाएँ - 1000 ई. से वर्तमान समय तक

प्राचीन भारतीय आर्यभाषाएँ

- विकास क्रम के अनुसार प्राचीन भारतीय आर्यभाषाओं को दो भागों में बाँटा गया है-

1. वैदिक संस्कृत 2. लौकिक संस्कृत

वैदिक संस्कृत -

- वैदिक संस्कृत को ही 'वैदिक', 'वैदिकी', 'छन्दस्' तथा 'छान्दस' आदि नामों से भी जाना जाता है।
- प्राचीनतम रूप ऋग्वेद में मिलता है।
- अन्य वेदों का समय इसके बाद ही माना जाता है।
- समस्त प्राचीनतम संस्कृत वाङ्मय वैदिक संस्कृत में मिलता है
- वैदिक भाषा की पद रचना श्लिष्ट योगात्मक थी।
- धातुरूपों में लेट् लकार का प्रयोग होता था।
- वेद में संगीतात्मक स्वर की प्रधानता थी।

लौकिक संस्कृत

- संस्कृत का सबसे प्राचीन एवं आदिकाव्य वाल्मीकिरामायण 500 ई.पू. का है।
- महाभारत, पुराण, काव्य, नाटक आदि ग्रन्थ 500 ई.पू. से आज तक अविच्छिन्न एवं अविहत गति से अपना गौरव स्थापित किये हुए हैं।
- यास्क, पतञ्जलि, कात्यायन, भास, कालिदास आदि के लेखों से यह स्वतः सिद्ध होता है कि ईसा पूर्व तक संस्कृत लोक व्यवहार की भाषा थी।
- संस्कृत में ही समस्त प्राचीनज्ञान, विज्ञान, कला, पुराण, काव्य, नाटक आदि है।
- संस्कृत ने न केवल भारतीय भाषाओं को अनुप्राणित किया अपितु विश्व भाषाओं मुख्यतया भारोपीय भाषाओं को भी प्रभावित किया।

मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाएँ

- मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाओं को तीन भागों में बाँटा गया है -

1.प्राचीन प्राकृत या पालि (500 ई. पू. से 100 ई. तक)

2.मध्यकालीन प्राकृत (100 ई. से 500 ई. तक)

3.परकालीन प्राकृत या अपभ्रंश (500 ई. से 1000ई. तक)

आधुनिक भारतीय आर्यभाषाएँ -

1. पश्चिमी हिन्दी - इसकी पाँच प्रमुख बोलियाँ हैं-

1. खड़ी बोली 2. ब्रजभाषा 3. बाँगरु 4. कन्नौजी 5. बुन्देली

2. राजस्थानी -

- इसका विकास शौरसेनी के नागर अपभ्रंश से हुआ है।
- पिंगल के अनुकरण पर राजस्थानी में **डिंगल** काव्य की रचना हुई। इसकी चार प्रमुख बोलियाँ हैं - मारवाड़ी, जयपुरी, मालवी, मेवाती।

3. गुजराती -

4. मराठी - 4 बोलियाँ मुख्य है- देशी, कोंकणी नागपुरी, बरारी

5. बिहारी - 3 प्रमुख भाषाएँ हैं- भोजपुरी, मैथिली, मगही

6. बंगाली 7. उड़िया 8. असमी

9. पूर्वी हिन्दी -इसकी तीन बोलियाँ हैं।अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी

10. लहँदा (लहँदी) - लहँदा का अर्थ है पश्चिमी। इसकी चार प्रमुख बोलियाँ हैं-

- केन्द्रीय बोली, दक्षिणी (मुलतानी), उत्तरपूर्वी (पोठवारी), उत्तरपश्चिमी (धन्नी)

11. सिन्धी -

- इसकी पाँच बोलियाँ हैं- विचौली, सिरैकी, लाड़ी, थरेली, कच्छी

12. पंजाबी

13. पहाड़ी - इसके तीन भाषा वर्ग हैं-

- पश्चिमी (30 बोलियाँ)
- मध्य (दो 1. गढ़वाली 2. कुमायूँनी)
- पूर्वी (नेपाली) यह नेपाल की राजभाषा है।

मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाएँ

- प्राचीन प्राकृत या पालि (500 ई.पू. से 100 ई. तक)

प्राचीन प्राकृत या पालि (प्रथम प्राकृत)

- तृतीय शताब्दी ई.पू. से प्रथम शती ई. तक के शिलालेख इसके अन्तर्गत आते हैं।
- पालि बौद्धग्रन्थ - महावंश, जातक आदि कथाएँ, प्राचीन जैनसूत्रों की भाषा, प्रारम्भिक नाटकों की भाषा प्राकृत रही है।
- प्राचीन प्राकृत को प्रथम प्राकृत भी कहते हैं।

प्राकृत की उत्पत्ति संस्कृत से - प्रकृति का अर्थ है-मूलभाषा संस्कृत, उससे उत्पन्न भाषा प्राकृत है।

- प्राकृत भाषा के सभी प्राचीन वैयाकरणों ने प्राकृत की उत्पत्ति संस्कृत से मानी है।
- प्रकृतिः संस्कृतं तत्र भवं तत आगतं वा प्राकृतम् (हेमचन्द्र)
- प्रकृतिः संस्कृतं तत्र भवं प्राकृतमुच्यते (प्राकृतसर्वस्व)
- प्रकृतिः संस्कृतं तत्र भवत्वात् प्राकृतं स्मृतम् (प्राकृत चन्द्रिका)
- प्राकृतस्य तु स्वयमेव संस्कृतं योनिः (प्राकृत संजीवनी)
- नाट्यशास्त्रकार भरतमुनि ने यह कहा है कि संस्कृत भाषा के शब्दों का ही विकृत एवं परिवर्तित रूप प्राकृत भाषा है।

पालि की व्युत्पत्ति -

- डा. मैक्स वेलेसन ने पाटलि (पाटलिपुत्र) से पालि की उत्पत्ति मानी है। पाटलि > पाडलि > पालि
- भिक्षु जगदीश काश्यप ने परियाय (बुद्धोपदेश) शब्द से पालि की उत्पत्ति मानी है।
  परियाय > पलियाय > पालियाय > पालि
- अमरकोश के टीकाकार भानुजी दीक्षित ने 'पालरक्षणे' से पालि शब्द माना है। पाल् + इ = पालि
- आचार्य बुद्धघोष और आचार्य धम्मपाल ने छठी शती ई. ने पालि शब्द का प्रयोग बुद्धवचन या मूल त्रिपिटक के लिये किया है। उससे यह शब्द 'पालि' भाषा के लिए आया है।
- अभिधानप्पदीपिका ने पा धातु से पालि शब्द माना है पा - पालेति रक्खतीति पालि, जो रक्षा करती है या पालन करती है।

पालि की प्रमुख विशेषताएँ

- पालि में वैदिक संस्कृत की 5 स्वर ध्वनियाँ लुप्त हो गई - ऋ , ॠ , ऌ , ऐ, औ।
- पालि में वैदिक संस्कृत के 5 व्यंजन लुप्त हो गए- श, ष, (ः) विसर्ग, जिह्वामूलीय, उपध्मानीय
- पालि मे दो नए स्वर आयें - ह्रस्व ऍ, ह्रस्व ओ।
- संस्कृत के ऐ > ए, औ > ओ हो गए।
- ड, ढ को ळ, ळह्।
- संधियों में केवल तीन संधियाँ हैं-

1. स्वर सन्धि 2. व्यंजन सन्धि 3. निग्गहीत (अनुस्वार) सन्धि

- पालि में हलन्त शब्द नही हैं। केवल अजन्त ही हैं।
- पालि में द्विवचन नहीं होता है।
- शब्दरूपों में चतुर्थी और षष्ठी के रूप समान होते हैं।
- स्त्री प्रत्यय सात हैं - आ, ई, इनी, नी, आनी, ऊ, ति।
- पालि में 500 से अधिक धातुएँ हैं, 9 गण हैं। अदादिगण और जुहोत्यादि गण नहीं है।
- पालि में लेट् लकार के रूप भी मिलते हैं - हनासि, दहासि
- आत्मनेपद का प्रयोग प्रायः लुप्त हो गया। परस्मैपद शेष रहा
- पालि में तद्भव शब्दों का आधिक्य है। तत्सम और देशज शब्द कम है।

शिलालेखी प्राकृत

- प्राचीन प्राकृत में अशोक के शिलालेखों की प्राकृत भी आती है, अतः इसे **शिलालेखी प्राकृत** भी कहते है।
- शिलालेखी प्राकृत को ही अशोकन प्राकृत, लाट प्राकृत भी कहते हैं।

मध्यकालीन प्राकृत (द्वितीय प्राकृत)

- मध्यकालीन प्राकृत को '**साहित्यिक प्राकृत**' भी कहते हैं।
- सर्वप्रथम भरतमुनि ने प्राकृत भाषाओं के विषय में विचार किया है। उनके मतानुसार 7 मुख्य प्राकृत है और 7 गौण
- **मुख्य प्राकृत -** मागधी, अवन्तिजा, प्राच्या, शौरसेनी, अर्धमागधी, बाहलीक, दाक्षिणात्य (महाराष्ट्री)
- **गौण प्राकृत -** शाबरी, आभीरी, चाण्डाली, सचरी, द्राविड़ी, उद्स्ता, वनेचरी
- प्राचीन प्राकृत वैयाकरण वररुचि ने चार प्राकृत मानी हैं- शौरसेनी, महाराष्ट्री, मागधी, पैशाची। मागधी के दो रूप हो गये (1) मागधी (2) अर्धमागधी

1- शौरसेनी

- इसका क्षेत्र शूरसेन (मथुरा के आस-पास) प्रदेश था।
- इसका विकास पालि कालीन स्थानीय भाषा से हुआ।
- मध्यदेश की भाषा थी।
- नाटकों में सर्वाधिक प्रयोग हुआ।
- स्त्रियों आदि का वार्तालाप शौरसेनी प्राकृत में ही होता था।
- शौरसेनी से वर्तमान **हिन्दी का विकास** हुआ
- राजशेखर कृत **कर्पूरमंजरी का समस्त गद्य भाग शौरसेनी प्राकृत** में है।
- भास, कालिदास आदि के **नाटकों में गद्य शौरसेनी** में ही है।

2 - महाराष्ट्री

- मूलस्थान महाराष्ट्र है। इससे ही **मराठी भाषा का विकास** हुआ।
- प्राकृत में सर्वाधिक साहित्य महाराष्ट्री में है।
- दण्डी ने काव्यादर्श में महाराष्ट्री को सर्वश्रेष्ठ प्राकृत माना है।
- प्राकृत नाटकों में **पद्यरचना महाराष्ट्री** में है।
- महाराष्ट्री प्राकृत के प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं - राजा हाल कृत गाहा सत्तसई (गाथा सप्तशती), प्रवरसेन कृत रावणवहो (सेतुबन्धः), वाक्पति कृत गउडवहो (गौडवधः), जयवल्लभ कृत - वज्जालग्ग, हेमचन्द्राचार्य कृत 'कुमारपालचरित'
- कर्पूरमञ्जरी के पद्य महाराष्ट्री में है।
- भरतमुनि ने दाक्षिणात्य प्राकृत से महाराष्ट्री का निर्देश किया है।

3- मागधी

- यह मगध की भाषा थी।
- प्राचीनतम रूप अश्वघोष के नाटकों में मिलता है।
- लंका में पालि को मागधी कहते हैं।
- कालिदास के नाटकों में तथा शूद्रक के मृच्छकटिक में मागधी का प्रयोग मिलता है।
- भरत के नाट्यशास्त्र के अनुसार अन्तःपुर के नौकर, अश्वपालक आदि की भाषा मागधी थी।
- इसके तीन प्रकार मिलते हैं -

1. शकारी 2. चाण्डाली 3. शाबरी

➤ मागधी से ही भोजपुरी, मैथिली, बंगला, उड़िया, असमी विकसित हुई।

4- अर्धमागधी

➤ अर्धमागधी का क्षेत्र मागधी और शौरसेनी के मध्य में है।
➤ यह कोसल के समीपवर्ती क्षेत्र की भाषा थी।
➤ इसमें मागधी के गुण अधिक है और साथ ही शौरसेनी के भी, अतः इसे अर्धमागधी कहा जाता है।
➤ मागधी को **ऋषिभाषा** या **आर्यभाषा** भी कहते हैं।
➤ भगवान् महावीर के सभी धर्मोपदेश इसी भाषा में हैं।
➤ अधिकांश **जैन साहित्य** इसी भाषा में है।
➤ इसमें गद्य और पद्य दोनों प्रकार का साहित्य है।
➤ आचार्य विश्वनाथ ने साहित्यदर्पण में इसे चेट, राजपुत्र एवं सेठों की भाषा बताया है।
➤ इसका प्राचीनतम प्रयोग **अश्वघोष के नाटको में** मिलता है।
➤ **मुद्राराक्षस और प्रबोधचन्द्रोदय में** अर्धमागधी का प्रयोग हुआ है।
➤ इससे **पूर्वी हिन्दी का विकास** हुआ है।

5 - पैशाची

➤ इसका क्षेत्र पश्चिमोत्तर भारत एवं अफगानिस्तान का क्षेत्र था।
➤ पैशाची को **पैशाचिकी, भूतभाषा, भूतभाषित** आदि भी कहते हैं।
➤ गुणाढ्य की प्रसिद्ध रचना 'बृहत्कथा' पैशाची प्राकृत में ही है।
➤ वर्तमान समय में इसका साहित्य **'नगण्य'** है।
➤ इसका विकसित रूप **'लहँदा' भाषा** है।
➤ हेमचन्द्र कृत-कुमारपालित और काव्यानुशासन में तथा हम्मीरमदमर्दन नाटक में इसका प्रयोग मिलता है।
➤ राक्षस, पिशाच, निम्नकोटि के पात्र लोहार आदि इसी भाषा का प्रयोग करते थे। (रक्षः पिशाचनीचेषु पैशाची द्वितयं भवेत्)

प्राकृत भाषाओं की सामान्य विशेषताएं -

➤ प्राकृत श्लिष्ट योगात्मक भाषा है।
➤ शब्दरूपों और धातुरूपों की संख्या प्राकृत में कम हो गई।
➤ शब्दरूप केवल तीन या चार प्रकार के रह गए।
➤ धातु के रूप भी प्रायः एक या दो प्रकार से चलने लगे।
➤ प्राकृत भाषा संयोगात्मक से वियोगात्मक की ओर अग्रसर हुई।
➤ प्राकृत भाषा में आत्मनेपद का अभाव हो गया।
➤ तद्भव शब्दों की संख्या प्राकृत में अधिक है। तत्सम शब्दों की कम।

अपभ्रंश (परकालीन प्राकृत, तृतीय प्राकृत)

➤ अपभ्रंश शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग आचार्य व्याडि और पतञ्जलि ने किया है। भर्तृहरि, भामह, दण्डी आदि ने भी अपभ्रंश का उल्लेख किया है।
➤ अपभ्रंश के सबसे प्राचीन उदाहरण भरतमुनि के नाट्यशास्त्र में मिलते हैं।
➤ दण्डी के समय से इसका प्रयोग प्रारम्भ हो गया था।
➤ अपभ्रंश साहित्य की प्रमुख रचनाएँ निम्न हैं-
हरिषेण कृत - पउमचरिउ
पुष्पदन्त कृत - महापुराण और जसहर चरिउ
विद्यापति कृत - कीर्तिलता
अद्दहमाण कृत - सन्देश-रासक
➤ अपभ्रंश को देशीभाषा, देसी, अपभ्रष्ट, अवहट्ट भी कहते हैं।
➤ मार्कण्डेय ने प्राकृत सर्वस्व में तीन अपभ्रंश माने हैं-
नागर, उपनागर, ब्राचड।
➤ नागर गुजरात की अपभ्रंश, ब्राचड सिन्धु की, उपनागर दोनों के मध्य की मानी जाती है।
➤ सामान्यतया सभी भाषाशास्त्री विद्वानों का मत है कि पाँच प्राकृतों से ही अपभ्रंश का विकास हुआ है।

भाषाविज्ञान बिन्दुवार अध्ययन

☞ 'वैदिकभाषा' किस भाषा के सबसे निकट है–**अवेस्ता**
☞ भाषा की परिभाषा में अन्तर्भूत नहीं है– **विभाषा**
☞ भारतीय भाषाओं की जननी है– **संस्कृत**
☞ भाषायाः कौशलानि सन्ति–**चत्वारि**
☞ भाषा.......विनिमयस्य साधनम् –**विचारस्य**
☞ बाह्यप्रयत्नस्तु–**एकादशधा**
☞ "विचार जब ध्वन्यात्मक होकर होठों पर प्रकट होती है, तो वह भाषा कहलाती है।" यह किसका विचार है– **प्लेटो का**
☞ अशोकस्य अभिलेखस्य लिपिः अस्ति–
ब्राह्मी एवं खरोष्ठी
☞ ग्रन्थलिपि अस्मिन् प्रान्ते प्रचुरप्रचारं गता– **मद्रासे**
☞ भाषा की कौन सी प्रकृति सत्य नहीं है– **प्रत्येक समुदाय में भाषा एक होती है।**
☞ पाण्डुलिपेः नामान्तरम् –**मातृका**
☞ तुलनात्मक-भाषाशास्त्रस्य अध्ययनस्य आरम्भकाले कयोः भाषयोः मध्ये ध्वनिसाम्यं प्रत्यक्षीकृतम् –**संस्कृत-लैटिन-मध्ये**
☞ ध्वनि के आधार पर भारोपीय भाषा के मुख्य विभाग हैं– **दो**
☞ भारोपीय भाषा में संस्कृत 'च वर्ग' की उत्पत्ति बताने वाला– **कालित्स (COLITZ)**

- भारतीय आर्यभाषा की कितनी अवस्थाएँ हैं– **तीन**
- 'संस्कृत' भाषा आती है –**भारोपीय**
- भारोपीयपरिवारस्य भाषा नास्ति–**तमिलभाषा**
- आंग्लभाषा भारोपीयपरिवारस्य कया भाषया सम्बद्धा अस्ति– **जर्मानिकभाषया**
- भारोपीयभाषापरिवारे शतमवर्गस्य कति प्रमुखभेदाः? **चत्वारः**
- भारोपीयभाषापरिवारे भारत-ईरानीवर्गः कस्मिन् वर्गे? **शतमवर्गे**
- भारोपीय परिवार की भाषा नहीं है–**सियोयन**
- का भारोपीया भाषा अस्ति–**ग्रीक**
- भारोपीय परिवार की भाषा – **मलयालम**
- कवर्गस्य त्रयः प्रकाराः आसन्– **मूलभारोपीयध्वनिषु**
- संस्कृतस्य भाषा-परिवारः कथ्यते– **भारोपीयः**
- भारोपीयभाषा कस्मिन् भाषाखण्डे समाहिताः– **यूरेशियाखण्डे**
- 'भारोपीय' प्रथमं केन उक्तम् – **थॉमस यंग**
- भाषा की उत्पत्ति का मूल कारण है– **शब्द**
- भाषाविज्ञाने यो-हे-हो- सिद्धान्तः कस्मिन् प्रसङ्गे प्रवृत्तः– **भाषोत्पत्ति से**
- 'मे पोल-सिद्धान्त' में 'पोल' क्या है–**एक खम्भा**
- 'यो-हे-हो वाद' किस प्रसङ्ग में आया है–**भाषा का उद्भव**
- भाषा की 'दैवी उत्पत्ति' के सिद्धान्त का समर्थन किसने किया है– **सुसमिल्श**
- **भाषा के 'धातु-सिद्धान्त' के प्रतिपादक हैं**–मैक्समूलर
- भाषा की उत्पत्ति विषयक 'समन्वय सिद्धान्त' के प्रवर्तक भाषाशास्त्री हैं– **हेनरीस्वीट**
- भाषा की उत्पत्ति विषयक 'रणन सिद्धान्त' के मूल प्रवर्तक स्वीकार किये जाते हैं –**प्लेटो**
- हिन्दी भाषा की उत्पत्ति हुयी है–**शौरसेनी अपभ्रंश से**
- दिगम्बर जैन आगमों की मुख्य भाषा है–**शौरसेनी**
- 'मराठी' किस भाषापरिवार के अन्तर्गत है– **आधुनिकभारतीयभाषा**
- 'अवेस्ता' का भाषापरिवार है– **भारतीय आर्यभाषा**
- मध्य आर्य भारतीय भाषा है– **MAGADHI (मागधी)**
- 'शतम्' वर्ग की भाषा है– **आर्मीनी**
- चीनी भाषा इस प्रकार में आती है– **ISOLATING अयोगात्मक**
- आधुनिक दृष्ट्या संस्कृतं कस्मिन् भाषावर्गे अन्तर्भवति? **भारत यूरोपीय परिवार**
- यह विभक्तिप्रधान भाषा है– **संस्कृत**
- यह संश्लिष्ट भाषा है– **INDO-EUROPEAN (भारोपीय)**
- 'पूर्वेभिः' इस पद का प्रयोग इसी भाषा में होता है– **VEDIC SANSKRIT (वैदिक संस्कृत)**
- 'संस्कृतभाषा' अस्ति – **INFLECTIONAL (श्लिष्ट योगात्मक)**
- संस्कृतभाषा है– **विभक्तिप्रधान**
- एकाक्षरी भाषा है– **चीनी**
- द्रविड भाषा है– **AGGLUTINATIVE (अश्लिष्ट योगात्मक)**
- 'शतम्' परिवार की भाषा है– **अवेस्ता**
- आकृतिमूलक वर्गीकरण को इस नाम से भी जाना जाता है– **रूपात्मक**
- 'बहड्डकहा' (बृहत्कथा) इति कथाग्रन्थस्य भाषा श्रूयते – **पैशाची**
- अयोगात्मकवर्गस्य प्रतिनिधिभाषाऽस्ति– **चीनी**
- 'अपभ्रंश' अस्ति – **मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा**
- भाषावर्गीकरणस्य आधारः स्वीकृतः–**आकृतिः**
- तुमर्थक प्रत्यय अधिक उपलब्ध होते हैं– **वैदिकसंस्कृत में**
- भारतीयार्यभाषासु प्राचीनतमा भाषा का अस्ति– **वैदिकसंस्कृतभाषा**
- संयोगात्मक भाषा– **संस्कृतम्**
- अधोनिर्दिष्टेषु वियोगात्मकभाषा....। **हिन्दी**
- भारतीय-आर्यभाषायाः अवस्थाः सन्ति– **तिस्त्रः**
- अयोगात्मकभाषासु न भवन्ति– **उपसर्गाः**
- भाषापरिवर्तनस्य कति बाह्यकारणानि–**अष्टौ**

- ☞ आर्यभाषापरिवारस्य भाषा न मन्यते – **तमिल**
- ☞ पारिवारिकवर्गीकरणस्य कति प्रमुखभेदाः– **अष्टादश**
- ☞ 'शतम्' वर्गस्य कति शाखाः सन्ति– **चतस्त्रः**
- ☞ 'शौरसेनी' इसके अन्तर्गत है– **प्राकृत**
- ☞ पालिभाषा प्राचीनकाले केन नाम्ना प्रसिद्धा आसीत्? **मागधी**
- ☞ भाषाओं का आकृतिमूलक वर्गीकरण विषयक विकल्प सही है– **अयोगात्मक, अश्लिष्ट, श्लिष्ट, प्रश्लिष्ट**
- ☞ तुखारी (तोखारी) शाखा का पता कब लगा– **बीसवीं शताब्दी में**
- ☞ 'अवेस्ता' भाषा है–**ईरानी**
- ☞ भाषाओं के पारिवारिक वर्गीकरण का आधार है– **इतिहास**
- ☞ निम्नलिखित में से कौन द्रविड परिवार की भाषा है– **कन्नड़**
- ☞ 'शतम्'-वर्गस्य भाषा नास्ति– **लैटिनभाषा**
- ☞ 'अपभ्रंश' शब्द का प्रयोग मध्यकालीन संस्कृत ग्रन्थों में होता है– **कुछ आधुनिक भारतीय भाषाओं के आरम्भिक रूपों को इंगित करने के लिये।**
- ☞ भाषाणां पारिवारिकं वर्गीकरणमेव मन्यते– **ऐतिहासिकं वर्गीकरणम्**
- ☞ भाषायाः आकृतिमूलकं वर्गीकरणं न कथ्यते– **ध्वन्यात्मकम्**
- ☞ युगाश्रित-निर्धारणे पालि-भाषाऽस्ति– **मध्ययुगीना**
- ☞ सम्बन्धतत्त्वाश्रयं वर्गीकरणं किम् – **परिवारमूलकम्**
- ☞ संस्कृतस्य सहभाषे आस्ताम्– **पालि-प्राकृते**
- ☞ 'अवेस्ता' की सदृशतम भाषा कौन है? **वैदिकसंस्कृतम्**
- ☞ श्लिष्ट योगात्मकता किस भाषा का वैशिष्ट्य है–**संस्कृत**
- ☞ अधोलिखितेषु भारतीयभाषापरिवारः किं नास्ति– **दक्षिण-एशियाई**
- ☞ सन्थाली..........अस्ति– **ऑस्ट्रो-एशियाई**
- ☞ मणिपुरी.......भाषा अस्ति– **तिब्बती-बर्मी**
- ☞ बोडो.........भाषा अस्ति– **तिब्बती-बर्मी**
- ☞ 'संस्कृत' किस तरह की भाषा है– **श्लिष्टयोगात्मक**
- ☞ संसार में भाषायें प्रचलित हैं– **लगभग 3,000**
- ☞ संस्कृत से सीधा सम्बन्ध किस भाषा का है–**प्राकृत**
- ☞ अधोलिखितेषु का भाषा 'केन्टुम्'–वर्गे नहि आयाति?**रूसी**
- ☞ अवेस्ता भारोपीयपरिवारस्य कया शाखया सम्बद्धास्ति? – **भारत-ईरानीशाखया**
- ☞ मध्यकालिकी आर्यभाषा नास्ति– **बांग्ला**
- ☞ लिखित-भाषास्वरूपेषु प्राचीनतममस्ति–**वैदिकसंस्कृतम्**
- ☞ आकृतिमूलकवर्गीकरणेन असम्बद्धम् **–व्यापारः**
- ☞ पारिवारिकवर्गीकरणेन असम्बद्धम् – **फलसाम्यम्**
- ☞ किं तत्त्वं वियोगात्मक-भाषायाः प्रकृतिलक्षणम् – **प्रकृति-प्रत्यय-पार्थक्यम्**
- ☞ का भाषा 'केन्टुम्'–वर्गेण असम्बद्धम्–**संस्कृत-भाषा**
- ☞ को भाषापरिवारः बृहत्तमा–**भारोपीयभाषापरिवारः**
- ☞ मराठीभाषायाः भाषापरिवारः कः–**भारोपीयः**
- ☞ अयोगात्मकभाषा का– **तिब्बती**
- ☞ दो क्रमिक व्यञ्जन महाप्राण ध्वनियों में से एक के महाप्राणत्वह्रास का प्रस्ताव जिसने किया, वह है– **ग्रासमान**
- ☞ 'स्वराघात के कारण ध्वनि परिवर्तन होता है।' इस नियम के प्रवर्तक हैं – **VERNER (वर्नर)**
- ☞ 'तालव्यीकरण' का नियम किसमें लागू होता है– **चकार में**
- ☞ किसमें ग्रासमान का नियम लागू होता है–**बभूव में**
- ☞ 'बभूव' इस पद में यह नियम लागू होता है– **ग्रासमान नियम**
- ☞ 'वर्नर' नियम के अनुसार 'क' का परिवर्तित रूप है– **ग्**
- ☞ ग्रिम नियम के अन्तर्गत 'भ' का परिवर्तित रूप है–**ब्**
- ☞ 'बभार' इस पद में यह नियम लागू होता है। **ग्रासमाननियम**
- ☞ कॉलिजनियमस्य उपयोगो भवति अस्मिन्– **चकार**
- ☞ कः नियमः ग्, द्, ब् इति व्यञ्जनानि क्रमानुसारेण क्, त्, प् इति व्यञ्जने परिवर्तते?–**ग्रिमनियम**
- ☞ ध्वनिनियमस्य प्रवर्तको वर्तते– **ग्रिम, ग्रासमान, वर्नर।**

- ☞ 'वर्गस्य प्रथमवर्णस्य परिवर्तनं केवलम् असंयुक्तध्वनिषु एव भवति, न तु संयुक्तध्वनिषु।' इति अपवादनियमः केन प्रदत्तः– **ग्रिममहोदयेन**
- ☞ ध्वनिनियमेषु क्रमेण प्रथमः को गण्यते?–**ग्रिमनियमः**
- ☞ ध्वनिनियमेषु द्वितीयः को गण्यते– **ग्रासमाननियमः**
- ☞ क्या ध्वनि परिवर्तन के लिये वर्नर ने ग्रिम नियम में सुधार किया है– **हाँ**
- ☞ ग्रिम, ग्रासमैन एवं वर्नर सम्बन्धित हैं –**ध्वनि नियमों से**
- ☞ ग्रिमनियम के अनुसार निम्न जर्मन 'THREE' का उच्च जर्मन में परिवर्तित रूप है –**DREI**
- ☞ ध्वनिनियमस्य कर्ता अस्ति– **ग्रासमानः**
- ☞ 'ग्रासमान-नियमः' केन सम्बद्धः अस्ति–**ध्वनितत्त्वेन**
- ☞ प्रथमवर्णपरिवर्तनं कस्मिन् ध्वनिनियमे समाहितम् – **ग्रिमनियमे**
- ☞ प्रसिद्धध्वनिनियमेषु अर्वाचीनतमः कः– **वर्नरनियमः**
- ☞ संस्कृतभाषायाः 'शतम्' इति पदं गाथिकभाषायां 'हुन्द' भवति, इति कस्य मतम् – **वर्नरमहोदयस्य**
- ☞ ग्रिमनियमस्य सम्बन्धः कति स्पर्शध्वनिभिः अस्तिः–**9**
- ☞ `d' का अघोष रूप कौन-सा है– **त्**
- ☞ 'स' का घोष रूप है– **ज्**
- ☞ यह सन्ध्यक्षर पालि भाषा में नहीं है– **ऐ**
- ☞ यह पश्चस्वर है– **आ**
- ☞ संस्कृत का 'ऐ' पालि भाषा में हो जाता है–**ए**
- ☞ यह अग्र स्वर है– **इ**
- ☞ 'अ' किस प्रकार का स्वर है? **केन्द्रीय स्वर**
- ☞ पालि में संस्कृत की यह ध्वनि नहीं मिलती– **ऐ**
- ☞ निर्दिष्टेषु स्पर्शः कः? **म्**
- ☞ तालव्येषु अन्तर्भवति– **श्**
- ☞ कण्ठ्यवर्णः–**ग्**
- ☞ संवृतस्वरः कः? **ऊ**
- ☞ तालव्यवर्णः– **ज**
- ☞ कः सन्ध्यक्षरः? **औ**
- ☞ भाषाविज्ञानदृष्ट्या अर्धस्वरः कः? **य्**
- ☞ ह्रस्वस्वरभक्तेः उच्चारणकालो भवति–**अर्धोनमात्राकालः**
- ☞ भाषाविज्ञानदृशा अर्धस्वरो भवति– **व्**
- ☞ 'ई' से सङ्केतित स्वर है? **अग्र**
- ☞ 'अघोष अल्पप्राण' ध्वनि कौन सी है? **क, त**
- ☞ 'अघोष-दन्त्य-संघर्षी' व्यञ्जनम् अस्ति – **स्**
- ☞ देवनागरी लिपि की उत्पत्ति किससे हुई?–**ब्राह्मी**
- ☞ अघोषध्वनिः अस्ति –**त्**
- ☞ प्राकृते प्रायः वर्गाणां द्वितीय-चतुर्थवर्णानां तथा शल् वर्णानां स्थाने परिवर्तितो भवति– **हकारः**
- ☞ भाषाविज्ञान के अनुसार व्यञ्जनों के मूल चार प्रकारों में कौन सा प्रकार नहीं आता है– **निःश्वासी**
- ☞ भाषाविज्ञान में अग्रस्वरों के उच्चारण में जिह्वा की चार कोटियों में कौन नहीं है– **निम्नोच्च**
- ☞ भाषाविज्ञान के अनुसार स्वर के उच्चारण से सम्बद्ध चार प्रकारों में कौन सा प्रकार नहीं है–**पार्श्विक**
- ☞ जिह्वाभाग-विशेषोच्चारणदृष्ट्या मध्यस्वरोऽस्ति– **अकारः**
- ☞ 'च' इति वर्णः कीदृशोऽस्ति?–**अघोष-अल्पप्राणः**
- ☞ 'अर्थसंकोच' का उदाहरण है– **वारिज**
- ☞ 'ब्रील महोदय' के अनुसार अर्थविकास की दिशाएँ होती हैं– **3**
- ☞ 'अर्थसंकोचस्य' उदाहरणमस्ति – **सरसिज**
- ☞ व्यंग्य-प्रयोग इनमें से किसका कारण है? **अर्थ-परिवर्तन का**
- ☞ एहोल-शिलालेखः कस्य वर्तते–**द्वितीयपुलकेशिनः**
- ☞ 'प्रवीण' उदाहरण है? **अर्थविस्तार का**
- ☞ अर्थविस्तारस्योदाहरणं नास्ति? **महापात्रः**
- ☞ अर्थविस्तारस्योदाहरणं वर्तते – **तैलम्**
- ☞ 'देवानां प्रियः' अर्थपरिवर्तनं लभते– **'मूर्ख' इत्यर्थे**
- ☞ 'कुशलः' इत्युदाहरणमस्ति – **अर्थविस्तारस्य**
- ☞ अर्थपरिवर्तनकारणेष्वन्यतमम्– **सादृश्यम्**
- ☞ 'देवानां प्रियः' इति वाक्यम् उदाहरणं भवति – **अर्थापकर्षस्य**
- ☞ भारोपीय भाषा का प्राचीनतम अभिलेखीय प्रमाण मिलता है– **ईरान से**
- ☞ ग्रन्थसम्पादने पाठभेदाः कुत्र दर्शनीयाः–**प्रतिपृष्ठमधोभागे**
- ☞ 'पण्डित जी > पण्डीजी' इसमें ध्वनिपरिवर्तन का कारण है– **प्रयत्नलाघव**
- ☞ ध्वनिसिद्धान्तस्य मूलाधारः सिद्धान्तः वर्तते– **स्फोटवादः**
- ☞ धर्म का 'धम्म' होना किसका उदाहरण है– **समीकरण**
- ☞ धर्म शब्द का रूपान्तर 'धम्म' सम्बन्धित है? **पालिभाषा से**

- ☞ 'प्रयत्नलाघवम्' इति कस्याभ्यन्तरकारणमस्ति? **ध्वनि-परिवर्तन**
- ☞ वर्नरनियमस्य प्रतिष्ठाता कालवर्नर कस्य देशस्य निवासी– **जर्मनी**
- ☞ ध्वनिपरिवर्तनस्य अन्तःकारणं नास्ति –**ध्वनिनां परिवेशम्**
- ☞ छात्राणाम् उच्चारणदोषं दूरीकरणाय भाषाशिक्षकः भाषाविज्ञानस्य कस्मिन् विज्ञाने पारङ्गतः भूयात्– **ध्वनिविज्ञाने**
- ☞ 'ध्वनि परिवर्तन तो जिह्वानर्तन है।' इसके बारे में आप क्या समझते हैं? **यह उक्ति एकाङ्गी है।**
- ☞ ध्वनिपरिवर्तन का आभ्यन्तर कारण है?–**अनुकरण की अपूर्णता**
- ☞ ध्वनिपरिवर्तन का सबसे प्रमुख कारण है?–**प्रयत्न-लाघव**
- ☞ 'ध्वनि-परिवर्तन' का आन्तरिक कारण है? **प्रयत्नलाघव**
- ☞ 'धर्म का धम्म' रूप में परिवर्तन उदाहरण है? **पश्चगामी समीकरण का**
- ☞ 'समाक्षर लोप' की अवधारणा प्रस्तुत की? मैक्समूलर ने
- ☞ भाषाविज्ञान की दृष्टि में 'प्रयत्नलाघव' का अर्थ है? **उच्चारण की सुविधा**
- ☞ 'वाराणसी' का 'बनारस' रूप में विकास उदाहरण है? **वर्ण-विपर्यय का**
- ☞ वर्णलोपस्य उदाहरणम् अस्ति– **गतम्**
- ☞ ध्वनिपरिवर्तनस्य कारणं नास्ति– **समीकरणं विषमीकरणं वा**
- ☞ ध्वनिपरिवर्तन का कारण कौन नहीं है? **आनुवांशिकता**
- ☞ भाषायां ध्वनि-परिवर्तनस्य कारणं नास्ति–**शुद्धोच्चारणम्**
- ☞ सूर्यः पदस्य 'सुज्जो' इति परिवर्तने कारणमस्ति– **स्थानपरिवर्तनम्**
- ☞ बलाघातेन 'त्रि' स्थाने भवति– **थ्री**
- ☞ ध्वनि-परिवर्तन के मुख्य कारण कितने हैं?– **2**
- ☞ आभ्यन्तर परिवर्तन के द्वारा एक दूसरे से सम्बद्ध ध्वनियों तथा रूपियों के मध्य के प्रत्यावर्तन के अध्ययन को कहते हैं –**रूपध्वनिम-विज्ञान**
- ☞ ध्वनिवैज्ञानिकैः कारणत्वेन किं स्वीक्रियते?–**मृदुतालु**
- ☞ 'उष्ट्र' का 'ऊँट' ध्वनि परिवर्तन निम्नलिखित में से कौन-सा प्रकार है? **लोप**
- ☞ कस्मात् कारणात् 'स्थल' इति शब्दस्य 'थल' इति उच्चारणं क्रियते ? **आदिलोपस्य**
- ☞ 'पुढवी' इति प्राकृत-शब्दस्य संस्कृतमूलमस्ति– पृथ्वी
- ☞ 'सम्मासम्बुद्धि' इति पालिप्रयोगस्य पूर्वरूपमस्ति– **सम्यक् सम्बुद्धिः**
- ☞ भारतीयार्यभाषायाः वर्गाणां प्रथमवर्णः पारसीकभाषायां तृतीयवर्णो भवति, कथम्? **मातृ > मादर**
- ☞ भाषा के परिवर्तन में आभ्यन्तर कारण कौन है? **प्रयत्नलाघव**
- ☞ लिप्यन्तरणज्ञानस्य मुख्यं प्रयोजनम्– **ग्रन्थसम्पादनम्**
- ☞ ऊष्मा भेदाः सन्ति– **त्रयः**
- ☞ 'वृक्ष' किस प्रकार का शब्द है? **योगरूढ**
- ☞ 'वे शब्द जिनके सार्थक खण्ड न हो सके' उन्हें कहते हैं– **रूढ (मूल)**
- ☞ वाक्य-विचार के अन्तर्गत क्या अध्ययन किया जाता है? **वाक्यों का**
- ☞ प्राचीन संस्कृत ग्रन्थों में प्राप्य 'यवनप्रिय' शब्द द्योतक है– **कालीमिर्च का**
- ☞ हरिषेणविरचिते इलाहाबादशिलालेखे 'कविराज' इत्युपाधिः भवति–**समुद्रगुप्तस्य**
- ☞ रुद्रदाम्नः गिरनारशिलालेखे सुदर्शनतडागस्य कः पुनर्निर्माता– **सुविशाषः**
- ☞ पिउदस्सि 'राजा' इति उल्लेखो मिलति– **अशोकस्याभिलेखेषु**
- ☞ **क**वि कालिदास के नाम का उल्लेख किसमें हुआ है?– एहोल के उत्कीर्णलेख में
- ☞ एषु कस्य देशस्य नाम हरिषेणस्य एलाहाबादशिलालेखे नास्ति– **चीनः**

5. साहित्य शास्त्र

काव्यप्रकाशः

अथ प्रथम उल्लासः

ग्रन्थारम्भे विघ्नविघाताय समुचितेष्टदेवतां ग्रन्थकृत् परामृशति-

अनुवाद- ग्रन्थ के प्रारम्भ में ग्रन्थकार (आचार्य मम्मट) विघ्नों के विनाश के लिए समुचित (प्रतिपाद्य विषय के अनुरूप) अपनी अभीष्ट देवी भारती का स्मरण करते हैं, स्तुति करते हैं -

नियतिकृतनियमरहितां ह्लादैकमयीमनन्यपरतन्त्राम् ।
नवरसरुचिरां निर्मितिमादधती भारती कवेर्जयति ॥1॥

अनुवाद - नियति के द्वारा निर्धारित नियमों से रहित, केवल आनन्दमयी (आनन्द-प्रचुरा), अन्य किसी के अधीन न रहने वाली अर्थात् समवायादि कारणों से निरपेक्ष, नव रसों के योग से मनोहारिणी निर्मिति (काव्य-सृष्टि) को प्रकट करने वाली कवि की भारती (वाग्देवी सरस्वती सर्वोत्कृष्टा है (मैं उसकी स्तुति करता हूँ) ।।1।।

इहाभिधेयं सप्रयोजनमित्याह -

काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये।
सद्यः परनिर्वृत्तये कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे ॥2॥

अनुवाद - 'काव्य-रचना यश के लिए, धन अर्जन के लिए, लोक व्यवहार के ज्ञान के लिए, अमंगल के नाश के लिए, सद्यः परमानन्द की प्राप्ति के लिए और कान्ता-सम्मित (प्रिया के सदृश) होने से उपदेश के लिए होता है ।।2।।

एवमस्य प्रयोजनमुक्त्वा कारणमाह -

शक्तिर्निपुणता लोकशास्त्रकाव्याद्यवेक्षणात्।
काव्यज्ञशिक्षयाभ्यास इति हेतुस्तदुद्भवे ॥3॥

अनुवाद - शक्ति, लोक-शास्त्र-काव्य आदि के पर्यवेक्षण से उत्पन्न निपुणता और काव्य के जानने वाले (कवि और आलोचक) की शिक्षा के द्वारा अभ्यास - ये तीनों मिलकर काव्य के उद्भव के हेतु हैं ।।3।।

काव्य का स्वरूप

(सू01) तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि ॥

इस प्रकार काव्य प्रयोजन तथा काव्य के कारणों का निरूपण करने के पश्चात् ग्रन्थकार अब काव्य के स्वरूप का विवेचन करते हैं -

अनुवाद - दोष-रहित, गुणसहित, कहीं-कहीं स्पष्ट अलंकारों से रहित भी शब्द और अर्थ (मिलकर) काव्य हैं ।।

यः कौमारहरः स एव हि वरस्ता एव चैत्रक्षपा -
स्ते चोन्मीलितमालतीसुरभयः प्रौढाः कदम्बानिलाः ।
सा चैवास्मि तथापि तत्र सुरतव्यापारलीलाविधौ
रेवारोधसि वेतसीतरुतले चेतः समुत्कण्ठते ॥1॥

अत्र स्फुटो न कश्चिदलंकारः रसस्य च प्राधान्यान्नलंकारता।

अनुवाद - दोष, गुण और अलंकारों का विवेचन आगे किया जायेगा। 'क्वापि' इस पद से यह कहते हैं कि सब जगह अलंकार युक्त, किन्तु कहीं पर अलंकार स्पष्ट न होने पर भी काव्यत्व की हानि नहीं होती । तद्भेदान् क्रमेणाह -

1. उत्तम काव्य (ध्वनिकाव्य)

(सू02)इदमुत्तममतिशयिनि व्यंग्ये वाच्याद् ध्वनिर्बुधैः कथितः ॥4॥

अनुवाद - वाच्य अर्थ की अपेक्षा व्यंग्य अर्थ में अधिक चमत्कार होने से वह उत्तम काव्य होता है और विद्वानों ने उसे 'ध्वनिःकाव्य' कहा है ।।4।।

यथा-निःशेषच्युतचन्दनं स्तनतटं निर्मृष्टरागोऽधरो
नेत्रे दूरमनञ्जने पुलकिता तन्वी तवेयं वपुः।
मिथ्यावादिनि दूति बान्धवजनस्याज्ञातपीडागमे
वापीं स्नातुमितो गतासि न पुनस्तस्याधमस्यान्तिकम् ॥2॥

अत्र तदन्तिकमेव रन्तुं गतासीति प्राधान्येनाधमपदेन व्यज्यते।

ध्वनि काव्य का उदाहरण -

अनुवाद - हे दूति ! तुम्हारे स्तनों के किनारों पर लगा हुआ चन्दन पूरा छूट गया है; तुम्हारे अधरों की लाली छूट गई है, तेरी आँखों का अंजन बिल्कुल पुँछ गया है और तुम्हारा कृश-शरीर पुलकित हो गया है। अरे अपनी सखी की पीड़ा को न समझने वाली, झूठ बोलने वाली दूति ! तू तो बावड़ी में स्नान करने गई थी, न कि उस नीच (अधम) के पास ।।2।।

2. मध्यम काव्य
(गुणीभूतव्यङ्ग्य काव्य)

(सू.3) अतादृशि गुणीभूतव्यंग्यं व्यंग्ये तु मध्यमम्।

अतादृशि वाच्यादनतिशायिनि । यथा -

अनुवाद - जहाँ पर वाच्यार्थ की अपेक्षा व्यंग्यार्थ में अधिक चमत्कार नहीं पाया जाता, उसे 'मध्यम-काव्य' कहते हैं। इसे ही 'गुणीभूतव्यंग्य' भी कहते हैं ।।3।।

अतादृशि - वैसा न होने पर अर्थात् व्यंग्यार्थ के अधिक चमत्कार जनक न होने पर गुणीभूतव्यंग्य काव्य होता है।

ग्रामतरुणं तरुण्या नववंजुलमंजरीसनाथकरम्।
पश्यन्त्या भवति मुहुर्नितरां मलिना मुखच्छाया ॥3॥

अनुवाद - वेतस (अशोक) लता की मंजरी को हाथ में लिये हुए ग्राम के उस नवयुवक को देखती हुई उस तरुणी के मुख की कान्ति (छवि) अत्यन्त मलिन (धूमिल) होती जा रही है ।।3।।

(3) चित्रकाव्य (अधमकाव्य)

इस प्रकार काव्य के ध्वनि और गुणीभूतव्यङ्ग्य (उत्तम और मध्यम) काव्य भेदों के निरूपण करने के पश्चात् अब तृतीय प्रकार अधमकाव्य–

(सू0 4) शब्दचित्रं वाच्यचित्रमव्यङ्ग्यं त्ववरं स्मृतम् ॥5॥

अनुवाद - व्यङ्ग्य से रहित काव्य अधमकाव्य (अवरकाव्य) कहा गया है। इसे ही विद्वानों ने चित्रकाव्य कहा है। यह दो प्रकार का होता है- शब्दचित्र और वाच्यचित्र ।।5।।

यथा-

स्वच्छन्दोच्छलदच्छकच्छकुहरच्छातेतराम्बुच्छटा-
मूर्च्छन्मोहमहर्षिहर्षविहितस्नानाह्निकाह्नाय वः।
भिद्यादुद्यदुदारदर्दुरदरीदीर्घादरिद्रद्रुम-
द्रोहोद्रेकमहोर्मिमेदुरमदामन्दाकिनी मन्दताम् ॥4॥

(i) शब्दचित्र का उदाहरण -

अनुवाद - स्वच्छन्द रूप से उछलती हुई किनारों के गड्ढे में अत्यन्त वेग से प्रवाहित होने वाली स्वच्छ जलधारा की छटा से विगत मोह वाले महर्षियों के सहर्ष स्नान तथा दैनिक कार्यों को सम्पन्न करने वाली, जहाँ तहाँ दिखाई पड़ने वाले मेढ़कों से भरी बड़ी-बड़ी दरारों से युक्त, बड़े-बड़े वृक्षों को उखाड़ फेंकने में निरत, ऊपर उठने वाली बड़ी-बड़ी तरंगों से उन्मत्त मन्दाकिनी गंगा आप लोगों के पापों को नष्ट करें ।।4।।

(ii) अर्थचित्र का उदाहरण-

विनिर्गतं मानदमात्ममन्दिराद् भवत्युपश्रुत्य यदृच्छयापि यम्।
ससम्भ्रमेन्द्रद्रुतपातितार्गलानिमीलिताक्षिव भियामरावती॥

अनुवाद- शत्रुओं के मान-मर्दन करने वाले हयग्रीव को स्वेच्छा से घूमने के लिए अपने महल से निकला हुआ, सुनकर घबराये हुए इन्द्र ने जिसकी अर्गला गिरा दी हैं ऐसी अमरावती नगरी ने मानों भय के कारण द्वाररूपी आँखे बन्द कर ली है।

अथ द्वितीय उल्लासः

(शब्दार्थस्वरूपनिर्णयः)

क्रमेण शब्दार्थयोः स्वरूपमाह -

(सू. 5) स्याद्वाचको लाक्षणिकः शब्दोऽत्र व्यञ्जकस्त्रिधा।
अत्रेति काव्ये। एषां स्वरूपं वक्ष्यते।

अनुवाद - (5) काव्य में वाचक, लाक्षणिक और व्यंजक ये तीन प्रकार के शब्द होते हैं।

(सू. 6) वाच्यादयस्तदर्थाः स्युः। वाच्य-लक्ष्य व्यङ्ग्याः।

अनुवाद (सू. 6) -
वाच्य आदि (वाच्य, लक्ष्य, व्यंग्य) उन (वाचक, लक्षक, व्यंजक) शब्दों के अर्थ होते हैं।

अनुवाद (सू. 7) तात्पर्यार्थोऽपि केषुचित्
वाच्य एव वाक्यार्थ इति 'अन्विताभिधानवादिनः।'
वाच्यादि का तात्पर्य वाच्य, लक्ष्य और व्यंग्य है।
किन्हीं आचार्यों के मत में तात्पर्यार्थ एक अर्थ होता है।

(सू. 8) सर्वेषां प्रायशोऽर्थानां व्यञ्जकत्वमपीष्यते
तत्र वाच्यस्य यथा -

अनुवाद- प्रायः सभी अर्थों की व्यंजकता भी इष्ट है।

(मातर्गृहोपकरणमद्य खलु नास्तीति साधितं त्वया।
तद्भण किं करणीयमेवमेव न वासरः स्थायी ॥6॥

(इति संस्कृतम्)

अनुवाद - हे मातः! आज घर में (अन्न, इन्धन, शाकादि) सामग्री नहीं है, यह तुमने बतला ही दिया था, तो अब यह बताओ। कि क्या करना चाहिए? क्योंकि इस प्रकार दिन भी तो स्थिर नहीं रहेगा अर्थात् दिन ढलता जा रहा है ।।6।।
यहाँ पर कोई नायिका स्वच्छन्द विहार की अभिलाषिणी है, यह व्यंग्यार्थ है।

लक्ष्यस्य यथा-

(साधयन्ती सखि सुभगं क्षणे क्षणे दूनासि मत्कृते ।
सद्भावस्नेहकरणीयसदृशकं तावद् विरचितं त्वया ॥7॥

लक्ष्य अर्थ की व्यंजकता (का उदाहरण) जैसे -

अनुवाद - हे सखि! मेरे लिए उस सुन्दर नायक को मनाती हुई तुम क्षण-क्षण बहुत दुःखी हुई हो। तुम्हें मेरे प्रति सद्भाव और स्नेह के कारण जो करना चाहिए था, वही कार्य तुमने कर लिया ।।7।।

(पश्य निश्चलनिष्पन्दा बिसिनीपत्रे राजते बलाका।
निर्मलमरकतभाजनपरिस्थिता शंङ्खशुक्तिरिव ॥8॥)

व्यंग्यार्थ की व्यंजकता का उदाहरण-

अनुवाद - देखो, कमलिनी के पत्ते पर निश्चल और निष्पन्द (बिना हिले-डुले) बैठी हुई बलाका निर्मल मरकतमणि के पात्र में रखी हुई शंखशुक्ति की तरह शोभित हो रही है ।।8।।

(सू. 9) साक्षात्संकेतितं योऽर्थमभिधत्ते स वाचकः

अनुवाद - जो साक्षात् संकेतिक अर्थ को कहता है उसे 'वाचक' शब्द कहते हैं।

(सू. 10) संकेतितश्चतुर्भेदो जात्यादिर्जातिरेव वा।)

अनुवाद - संकेतित अर्थ चार प्रकार का होता है - जाति, गुण, क्रिया और यदृच्छा अथवा केवल जाति रूप एक प्रकार का होता है।

अभिधा-वृत्ति

अनुवाद - 'सः' पद से साक्षात् संकेतित अर्थ गृहीत है और 'अस्य' का अभिप्राय है शब्द का।

(सू. 11) स मुख्योऽर्थस्तत्र मुख्यो व्यापारोऽस्याभिधोच्यते ॥8॥

स इति साक्षात् संकेतितः अस्येति शब्दस्य

अनुवाद - (सूत्र 11) वह (साक्षात् संकेतित) अर्थ ही मुख्य अर्थ है। उस मुख्य अर्थ के बोधन में शब्द का जो व्यापार है, उसे अभिधा कहते हैं ।।8।।

लक्षणा - निरूपण

(सू. 12) मुख्यार्थबाधे तद्योगे रूढितोऽथ प्रयोजनात्।
अन्योऽर्थो लक्ष्यते यत्सा लक्षणारोपिता क्रिया ॥9॥

अनुवाद - मुख्य अर्थ के बाध होने पर तथा उस (मुख्य अर्थ) के योग (सम्बन्ध) होने पर रूढ़ि अथवा प्रयोजन से जिसके द्वारा अन्य अर्थ की प्रतीति होती है, वह आरोपित वृत्ति (व्यापार) लक्षणा है ।।9।।

(सू. 13) स्वसिद्धये पराक्षेपः परार्थं स्वसमर्पणम्।
उपादानं लक्षणं चेत्युक्ता शुद्धैव सा द्विधा ॥10॥

लक्षणा के भेद

अनुवाद - अपने (वाच्यार्थ के) अन्वय की सिद्धि के लिए अन्य (दूसरे) अर्थ का आक्षेप करना 'उपादानलक्षणा' है और दूसरे के लिए (अमुख्य अर्थ के अन्वय की सिद्धि के लिए) अपने को समर्पित कर देना (मुख्यार्थ का समर्पण या त्याग करना) 'लक्षण लक्षणा' है। इस प्रकार उपादान और लक्षण रूप से ये दोनों (उपादानलक्षणा और लक्षणलक्षणा) शुद्धा ही कहीं गई हैं ।।10।।

सारोपा और साध्यवसाना

(सू. 14) सारोपान्या तु यत्रोक्तौ विषयी विषयस्तथा।

अनुवाद - जहाँ पर विषयी (आरोप्यमाण) और विषय (आरोपविषय) दोनों शब्दतः (स्वरूप से) कथित हों, वह एक (अन्या) 'सारोपा' लक्षणा है।

अनुवाद- जहाँ आरोप्यमाण और आरोप विषय का भेद छिपाया नहीं जाता और दोनों का समानाधिकरण रूप से निर्देश किया जाता है; वहाँ 'सारोपा' लक्षणा होती है।

साध्यवसाना लक्षणा

(सू. 15) विषय्यन्तः कृतेऽन्यस्मिन् सा स्यात् साध्यवसानिका ॥1॥

अनुवाद - जहाँ पर विषयी (आरोप्यमाण) के द्वारा अन्य आरोप विषय को अन्तर्लीन कर लिया जाता है, वहाँ 'साध्यवसाना' लक्षणा होती है ।।11।।

(सू. 16) भेदाविमौ च सादृश्यात्सम्बन्धान्तरतस्तथा।
गौणौ शुद्धौ च विज्ञेयौ ....॥

अनुवाद - ये (सारोपा और साध्यवसाना) दोनों भेद सादृश्य सम्बन्ध से तथा अन्य सम्बन्ध से गौण और शुद्ध भेद समझने चाहिए।

शुद्धा सारोपा और साध्यवसाना लक्षणा के उदाहरण।

अनुवाद -'आयुर्घृतम्' (घी आयु है) और 'आयुरेवेदम्' (यह आयु ही है)

लक्षणा के छः भेद

(सू.17) लक्षणा तेन षड्विधा

अनुवाद - (सू 0 17) उक्त प्रकार से (तेन) लक्षणा छः प्रकार की है।

अनुवाद - आदि के दोनों भेदों के साथ (लक्षणा) छः प्रकार की होती है।

लक्षणा
- शुद्धा
  - उपादान लक्षणा → कुन्ताः प्रविशन्ति
  - लक्षण लक्षणा → गंगायां घोषः
  - शुद्धा-सारोपा → आयुर्घृतम्
  - शुद्धा साध्यवसाना → आयुरेवेदम्
- गौणी
  - गौणी सारोपा → गौर्वाहीकः
  - गौरी साध्य-वसाना → गौरेयम्
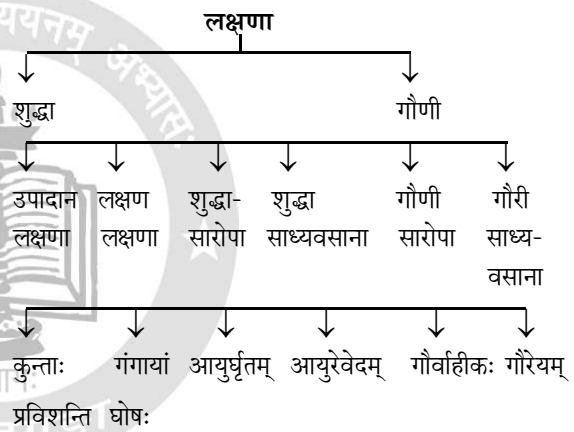
(सू. 18) व्यङ्ग्येन रहिता रूढौ सहिता तु प्रयोजने।

अनुवाद - रूढि में व्यंग्य से रहित और प्रयोजन में व्यंग्य के सहित होती है।

(सू. 19) तच्च गूढमगूढं वा

अनुवाद - और वह व्यंग्य गूढ (सहृदयमात्रवेद्य) अथवा अगूढ (जनसाधारणवेद्य) होता है।

(सू. 23) यस्य प्रतीतिमाधातुं लक्षणा समुपास्यते ॥14॥
फले शब्दैकगम्येऽत्र व्यंजनान्नापरा क्रिया॥

अनुवाद -जिस (प्रयोजन विशेष) की प्रतीति कराने के लिए लक्षणा का आश्रय लिया जाता है, केवल शब्द से गम्य उस प्रयोजन के विषय में व्यंजना के अतिरिक्त और कोई व्यापार नहीं है ।।14।।

(सू. 24) नाभिधा समयाभावात्।

अनुवाद - व्यञ्जना व्यापार ही क्यों होता है? 'ऐसा क्यों ? इस पर कहते हैं।

अनुवाद - समय अर्थात् संकेतग्रह न होने से अभिधा नहीं है

(सू. 25) हेत्वभावान्न लक्षणा ॥15॥

अनुवाद-हेतुओं के न होने से लक्षणा भी नहीं है ।।15।।

(सू. 26) लक्ष्यं न मुख्यं नाप्यत्र बाधो योगः फलेन नो।
न प्रयोजनमेतस्मिन् न च शब्दः स्खलद्गतिः ॥16॥

अनुवाद - (और भी) यहाँ पर लक्ष्यार्थ मुख्य अर्थ नहीं है, उसका यहाँ बाध भी नहीं है, और न (पावनत्वादि) फल के साथ सम्बन्ध ही है और न इसमें कोई प्रयोजन है तथा न शब्द स्खलद्गति ही है ।।16।।

अनुवाद - (वृत्ति) मुख्यार्थ का बाध आदि तीन हेतु हैं।

रस स्वरूप विचार

तत्र रस स्वरूपमाह - रस प्रकरण

(सू. 43) कारणान्यथ कार्याणि सहकारीणि यानि च।
रत्यादेः स्थायिनो लोके तानि चेन्नाट्यकाव्ययोः ॥27॥
विभावा अनुभावास्तत् कथ्यन्ते व्यभिचारिणः।
व्यक्तः स तैर्विभावाद्यैः स्थायीभावो रसः स्मृतः ॥28॥

अनुवाद - उन रस, भाव आदि में प्रथम रस के स्वरूप का विवेचन करते हैं - (सू0 43) लोक में रति आदि स्थायीभावों के जो कारण, कार्य और सहकारी हैं, वे यदि नाट्य और काव्य में प्रयुक्त होते हैं तो वे विभाव, अनुभाव और व्यभिचारीभाव कहे जाते हैं और उन विभावादि से व्यक्त वह स्थायीभाव रस कहा गया है ।।27-28।।

उक्तं हि भरतेन-विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः। एतद्विवृण्वते -विभावैर्ललनोद्यानादिभिरालम्बनोद्दीपनाकारणैः रत्यादिको भावो जनितः अनुभावैः कटाक्षभुजाक्षेपप्रभृतिः कार्यैः प्रतीतियोग्यः कृतः व्यभिचारिभिर्निर्वेदादिभिः सहकारिभिरूपचितो मुख्यया वृत्त्या रामादावनुकार्ये तद्रूपतानुसन्धानान्नर्त्तकेऽपि प्रतीयमानो रस इति भट्टलोल्लटप्रभृतयः।

जैसा कि भरत ने कहा है -

अनुवाद - विभाव, अनुभाव और व्यभिचारिभाव के संयोग के रस की निष्पत्ति होती है।

भट्टलोल्लट का उत्पत्तिवाद

अनुवाद - विभावों ललना आदि आलम्बन तथा उद्यान आदि उद्दीपन कारणों से रति आदि भाव (स्थायीभाव) उत्पन्न होता है, अनुभाव कटाक्ष, भुजाक्षेप आदि कार्यों से प्रतीति के योग्य किया जाता है, व्यभिचारीभाव अर्थात् निर्वेद आदि सहकारी भावों द्वारा परिपुष्ट (उपचित) किया गया मुख्य रूप से राम आदि अनुकार्य में तथा उनके रूप का अनुसन्धान अर्थात् रामादि के रूप का अनुसन्धान के कारण (अनुकर्ता) नर्तक में भी प्रतीयमान (प्रतीत होने वाला) रस है। यह भट्टलोल्लट प्रभृति विद्वानों का मत है।

'राम एवायम् अयमेव राम इति' न रामोऽयमित्यौत्तरकालिके बाधे रामोऽयमिति, रामः स्याद्वा न वाऽयमिति, रामसदृशोऽयमिति च **सम्यङ्मिथ्यासंशयसादृश्यप्रतीतिभ्यो विलक्षणया चित्रतुरगादिन्यायेन रामोऽयमिति प्रतिपत्त्या ग्राह्यो नटे -**

सेयं ममाङ्गेषु सुधारसच्छटा सुपूरकर्पूरशलालिका दृशोः।
मनोरथश्रीर्मनसः शरीरिणी प्राणेश्वरी लोचनगोचरं गोचरं गता (विश्वेश्वर टीका) ॥25॥

'यह मेरे अंगों में अमृत-रस की छटा, आँखों की सुन्दर कपूर की शलाका ओर मेरे मन की शरीर-धारिणी मनोरथश्री (मनोरथ की शोभा) वह प्राणेश्वरी (प्राणप्रिया) अब दृष्टिगोचर हुई अर्थात् दिखाई दी ।।25।।

श्री शंकुक का अनुमितिवाद

अनुवाद - 'यह राम ही है। या 'यह ही राम है' इस प्रकार की (सम्यक् प्रतीति) 'यह राम नहीं है' इस प्रकार उत्तरकाल में बाध होने पर 'यह राम है' इस प्रकार की (मिथ्या प्रतीति) 'यह राम है अथवा नहीं' इस प्रकार की (संशय प्रतीति), 'यह राम के समान है' इस प्रकार की (सादृश्य प्रतीति) इस प्रकार सम्यक् प्रतीति, मिथ्या प्रतीति, संशय प्रतीति और 'सादृश्य प्रतीति' से विलक्षण 'चित्रतुरगन्याय' से यह राम है इस प्रकार की प्रतीति होने से ग्राह्य **नट में -**

दैवादमद्य तया चपलायतनेत्रया वियुक्तश्च।
अविरलविलोलजलदः कालः समुपागतश्चायम् ॥26॥

इत्यादिकाव्यानुसन्धानबलाच्छिक्षाभ्यासनिर्वर्तितस्वकार्यप्रकटनेन च नटेनैव प्रकाशितैः कारणकार्यसहकारिभिः कृत्रिमैरपि तथाऽनभिमन्यमानैर्विभावादिशब्दव्यपदेश्यैः संयोगात् गम्यगमकभावरूपात्, अनुमीयमानोऽपि वस्तुसौन्दर्य-बलाद्रसनीयत्वेनान्यानुमीयमानविलक्षणः स्थायित्वेन सम्भाव्यमानो रत्यादिर्भावस्तत्रासन्नपि सामाजिकानां वासनया चर्व्यमाणो रस इति श्रीशंकुकः।

'दैववश आज मैं उस चंचल दीर्घ नेत्रों वाली (प्रियतमा) से विमुक्त हुआ और घने चारों ओर छाये हुए बादलों से युक्त यह समय आ गया है' ।।26।।

इत्यादि काव्यों के अनुसन्धान के बल से तथा शिक्षा और अभ्यास से सम्पादित अपने कार्य प्रकट न होने नट के द्वारा ही प्रकाशित होने वाले कृत्रिम होने पर भी वैसा न समझे जाने वाले विभावादि (विभाव, अनुभाव, संचारीभाव) शब्द से व्यवहृत होने वाले (कहे जाने वाले) कारण, कार्य और सहकारी (भावों) के साथ संयोग गम्य गमक भाव सम्बन्ध से अनुमीयमान होकर भी वस्तु के सौन्दर्य के कारण रसनीय (आस्वाद के योग्य) होने से अन्य अनुमीयमान विषयों से विलक्षण स्थायीभाव रूप में संभाव्यमान (ज्ञायमान) रति आदि भाव वहाँ नट में न रहने पर भी सामाजिकों की वासना के द्वारा आस्वाद्यमान (चर्व्यमाण) होकर 'रस कहलाता है, यह श्री शंकुक का मत है।।

'न ताटस्थ्येन नात्मगतत्वेन रसः प्रतीयते, नोत्पद्यते, नाभिव्यज्यते, अपितु काव्ये नाट्ये चाभिधातो। द्वितीयेन विभावादिसाधारणीकरणात्मना भावकत्वव्यापारेण भाव्यमानः स्थायी सत्त्वोद्रेकप्रकाशानन्दमय-संविद्विश्रान्तिसतत्त्वेन भोगेन भुज्यते' इति भट्टनायकः।

भट्टनायक का भुक्तिवाद

अनुवाद - 'न तटस्थ रूप से और न आत्मगत रूप से रस की प्रतीति होती है न उत्पत्ति होती है और न अभिव्यक्ति होती है, अपितु काव्य और नाटक में अभिधा से भिन्न विभावादि के साधारणीकरण रूप 'भावकत्व' नामक व्यापार से भाव्यमान (साधारणीकृत) स्थायीभाव सत्त्व के उद्रेक से प्रकाश और आनन्दमयसंविद् (ज्ञान) के विश्रान्त स्वरूप वाला अर्थात् वेद्यान्तर सम्पर्कशून्य भोग से भोगा जाता है अर्थात् भोजकत्व व्यापार द्वारा अनुभव (भोग) किया जाता है' यह भट्टनायक का मत है।

लोके प्रमदादिभिः स्थाय्यनुमानेऽभ्यासपाटववतां काव्ये नाट्ये च तैरेव कारणत्वादिपरिहारेण विभावनादिव्यापारवत्त्वादलौकिक-विभावादिशब्दव्यावहार्य्यैर्ममैवेते, शत्रोरवैते तटस्थस्यैवैते, न ममैवैते, न शत्रोरेवैते, न ताटस्थस्यैवैते, इति सम्बन्धाविशेषस्वीकारपरिहारनियमानध्यवसायात् साधारण्येन–प्रतीतैरभिव्यक्तः सामाजिकानां वासनात्मकतया स्थितः स्थायी रत्यादिको नियतप्रमातृगतत्वेन स्थितोऽपि साधारणोपायबलात् तत्कालविगलितपरमितप्रमातृ-भाववशोन्मिषितवेद्यान्तर–सम्पर्कशून्यापरमितभावेन प्रमात्र सकलसहृदयसंवादभाजा साधारण्येन स्वीकार इवाभिन्नोऽपि गोचरीकृतश्चर्व्यमाणतैकप्राणः विभावादिजीवितावधिः, पानकरसन्यायेन चर्व्यमाणः, पुर इव परिस्फुरन्, हृदयमिव प्रविशन् सर्वाङ्गीणमिवालिङ्गन्, अन्यत्सर्वमिव तिरोदधद्, ब्रह्मास्वादमिवानुभावयन्; अलौकिकचमत्कारकारी शृङ्गारादिको रसः।

अभिनवगुप्त का अभिव्यक्तिवाद

अनुवाद - लोक में प्रमदा आदि के द्वारा (रत्यादि) स्थायीभाव के अनुमान करने में निपुण सामाजिकों को काव्य और नाटक में उन्हीं कारणत्व आदि (कारण, कार्य, सहकारी आदि) को छोड़कर विभावन आदि व्यापार से युक्त होने से अलौकिक विभाव आदि शब्दों से व्यवहृत किये जाने वाले (व्यवहार्य) उन्हीं से 'ये मेरे ही हैं' ये शत्रु के ही हैं, 'ये तटस्थ के ही हैं, 'ये मेरे नहीं हैं' 'ये शत्रु के नहीं हैं,' ये तटस्थ के भी नहीं हैं, इस प्रकार के सम्बन्ध विशेष के स्वीकार अथवा परिहार (निषेध) करने के नियम का निश्चय न होने से साधारणरूप से प्रतीत होने वाले (ज्ञायमान) से अभिव्यक्त सामाजिकों में वासनारूप स्थित रत्यादि स्थायीभाव नियत प्रमाता (व्यक्तिगत सामाजिक) के रूप में स्थित होने पर भी साधारण उपायों के बल से उसी समय परमित प्रमातृ भाव के नष्ट हो जाने के कारण आविर्भूत हो गया है वेद्यान्तर के सम्पर्क से शून्य अपरिमित प्रमातृभाव जिसका ऐसे प्रमाता के द्वारा समस्त सहृदयों में समान अनुभव से युक्त सामान्य रूप से अपने आकार के समान अभिन्न रूप से अनुभूत होता हुआ आस्वादमात्र स्वरूप वाला विभाव आदि की स्थिति पर्यन्त रहने वाला, पानक रस के समान आस्वाद्यमान, सामने परिस्फुरित होता सा हृदय में प्रविष्ट होता हुआ सा, सारे अंगो को स्पर्श करता हुआ सा, अन्य सब को तिरोभूत करता हुआ सा, ब्रह्मास्वाद के समान आनन्द का अनुभव करता हुआ सा, अलौकिक चमत्कार को उत्पन्न करने वाला शृंगार आदि रस कहा जाता है।

स च न कार्यः, विभावादिविनाशेऽपि तस्य सम्भवप्रसङ्गात्। नापि- ज्ञाप्यः, सिद्धस्य तस्यासम्भवात्; अपितु विभावादिभिर्व्यञ्जितश्चर्वणीयः।

कारकज्ञापकाभ्यामन्यत् क्व दृष्टमिति चेन्न क्वचिद् दृष्टमित्यलौकिकत्वसिद्धेर्भूषणमेतन्न दूषणम् ।

रस की अलौकिकता

अनुवाद- और वह रस कार्य नहीं है, विभावादि का नाश होने पर भी उसकी स्थिति सम्भव हो जायेगी। वह ज्ञाप्य भी नहीं है; क्योंकि वह पूर्वसिद्धि अर्थात् पहले से विद्यमान नहीं है। अपितु विभावादि से व्यंजित और आस्वादनीय (चर्वणा के योग्य) है।
कारक और ज्ञापक के अतिरिक्त अन्यत्र कहाँ देखे जाते हैं? तो यह भी ठीक नहीं; (ऐसा कहा जाय); क्योंकि 'कहीं नहीं देखे जाते' यह बात अलौकिकता की सिद्धि का भूषण है, दूषण नहीं ।

तद्विशेषानाह -

(सू044) शृङ्गारहास्यकरुणरौद्रवीरभयानकाः बीभत्साद्भुतसंज्ञौ चेत्यष्टौ नाट्ये रसाः स्मृताः ॥29॥

रस भेद निरूपण

रस का सामान्य निरूपण करने के बाद अब रस-विशेष (रस के भेदों) का निरूपण करते हैं -

अनुवाद - शृंगार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, बीभत्स, और अद्भुत नाट्य में ये आठ रस कहे गये हैं।

तत्र शृंगारस्य द्वौ भेदौ, सम्भोगो विप्रलम्भश्च। तत्राद्यः परस्परावलोकनालिङ्गनाधरपानपरिचुम्बनाद्यनन्तभेदत्वादपरिच्छेद्य इत्येक एव गण्यते।

(1) शृंगार रस के भेद

अनुवाद - उन रसों में शृङ्गार के दो भेद होते हैं - सम्भोग शृङ्गार और विप्रलम्भ शृङ्गार। उनमें पहिला (सम्भोग शृङ्गार) परस्पर अवलोकन, आलिंगन, अधरपान, चुम्बन आदि अनन्त प्रकार का होने से असंख्येय है, किन्तु वह एक ही प्रकार का गिना जाता है । जैसे -

यथा-शून्यं वासगृहं विलोक्य शयनादुत्थाय किञ्चिच्छ्न
र्निद्राव्याजमुपागतस्य सुचिरं निर्वर्ण्य पत्युर्मुखम्।
विस्रब्धं परिचुम्ब्य जातपुलकामालोक्य गण्डस्थलीं
लज्जा नम्रमुखी प्रियेण हसता बाला चिरं चुम्बिता ॥30॥

अनुवाद - कोई नायिका शयन-गृह को सूना देखकर धीरे से शय्या (पलंग) से थोड़ा सा उठकर नींद का बहाना बनाकर सोए हुए प्रियतम के मुख को बड़ी देर तक देखकर निःशंक होकर चुम्बन करके तब पति के कपोलों को रोमांच (पुलकित) देखकर लज्जा से नम्र मुख वाली बाला का हँसते हुए प्रियतम ने चिरकाल तक चुम्बन किया ।।30।।

यथा- त्वं मुग्धाक्षि विनैव कञ्चुलिकया धत्से मनोहारिणीं
लक्ष्मीमित्याभिधायिनि प्रियतमे तद्वीटिकासंस्पृशि।
शय्योपान्तनिविष्टसस्मितसखीनेत्रोत्सवानन्दितो
निर्यातः शनकैरलीकवचनोपन्यासमालीनजनः ॥31॥

अपरस्तु अभिलाषविरहेर्ष्याप्रवासशापहेतुक इति पञ्चविधः।
क्रमेणोदाहरणम् -**और**

अनुवाद - हे मुग्धाक्षि ! (सुन्दर नेत्रों वाली) 'तुम तो बिना चोली के ही मन को हरण करने वाली शोभा धारण कर रही हो, अर्थात् तुम बिना चोली धारण किये ही बड़ी सुन्दर लग रही हो' इस प्रकार प्रियतम के कहने पर और उसकी गाँठ (खोलने के लिए) छूने पर शय्या के पास बैठी हुई मुस्कुराती हुई सखी के नेत्रों की उत्फुल्लता से आनन्दित हुई अन्य सखियाँ झूठी बात बनाकर धीरे-धीरे निकल गई अर्थात् वहाँ से खिसक गई ।।31।।

दूसरा (अर्थात् विप्रलमभ्शृङ्गार) अभिलाष, ईर्ष्या, विरह, प्रवास तथा शाप (रूप पाँच प्रकार के हेतुओं) के होने के कारण पाँच प्रकार का होता है।

अन्यत्र व्रजतीति का खलु कथा नाप्यस्य तादृक् सुहृद्
यो मां नेच्छति नागतश्च हहहा कोऽयं विधेः प्रक्रमः।
इत्यल्पेतरकल्पनाकवलितस्वान्ता निशान्तान्तरे
बाला वृत्तविवर्तनव्यतिकरा नाप्नोति निद्रां निशि ॥33॥

एषा विरहोत्कण्ठिता

विरहविप्रलम्भ का उदाहरण

अनुवाद - वे अन्यत्र कहीं दूसरी ओर चले गये, इस बात की सम्भावना ही नहीं, (यदि यह कहा जाय कि किसी मित्र के यहाँ चले गये तो उनका कोई वैसा मित्र भी नहीं है, वे मुझे नहीं चाहते, यह बात भी नहीं; फिर भी नहीं आये। अहह ! दैव (भाग्य) का यह कैसा प्रारब्ध (खेल; उद्योग) है? इस प्रकार की अनेक कल्पनाओं से ग्रसित (कवलित) हृदय-वाली बाला (मुग्धा) नायिका शयनगृह के भीतर करवटें बदलती रहती रात में नींद नहीं ले पाती ।।33।।

हास्यादीनां क्रमेणोदाहरणम्-

आकुञ्च्य पाणिमशुचिं मम मूर्ध्नि वेश्या
मन्त्राम्भसां प्रतिपदं पृषतैः पवित्रे।
तारस्वनं प्रथितथूत्क्मदात् प्रहारं
हा हा हतोऽहमिति रोदिति विष्णुशर्मा ॥37॥

(2) हास्य रस का उदाहरण

अनुवाद - वेश्या ने अपने अपवित्र हाथ को सिकोड़कर अर्थात् मुट्ठी बाँधकर मन्त्रों से पवित्र जल के बिन्दुओं से प्रतिपद पवित्र मेरे सिर पर जोर से थूत्कार करते हुए (थू-थू करते हुए) प्रहार कर दिया। 'हाय-हाय' मैं मर गया' इस प्रकार कहता हुआ विष्णुशर्मा रो रहा है। ।।37।।

हा मातस्त्वरिताऽसि कुत्र किमिदं हा देवताः क्वाशिषः
धिक् प्राणान् पतितोऽशनिर्हुतवहस्तेऽङ्गेषु दग्धे दृशौ।
इत्थं घर्घरमध्यरुद्धकरुणाः पौराङ्गनानां गिर -
श्चित्रस्थानपि रोदयन्ति शतधा कुर्वन्ति भित्तीरपि ॥38॥

(3) करुणरस का उदाहरण

अनुवाद - हे मातः! इतनी शीघ्रता से कहाँ चली? यह क्या हो गया? हाय देवताओं! (और ब्राह्मणों के) आशीर्वाद कहाँ चले गये? प्राणों को धिक्कार है। तुम्हारे अंगों पर वज्रपात के समान अग्नि गिर गई और नेत्र भी जल गये, इस प्रकार उच्च स्वर से चिल्लाने से (घरघराती) बीच में रुँधी हुई पौरांगनाओं (पुरवासिनी नारियों) के करुण-क्रन्दन से चित्र में लिखित नर-नारियों को भी रुला रही हैं और भित्तियों को शतधा विदीर्ण कर रही हैं ।।38।।

कृतमनुमतं दृष्टं वा यैरिदं गुरुपातकं
मनुजपशुभिर्निर्मर्यादैर्भवद्भिरुदायुधैः।
नरकरिपुणा सार्धं तेषां सभीमकिरीटिना-
मयमहमसृङ्मेदोमांसैः करोमि दिशां बलिम् ॥39॥

(4) रौद्ररस का उदाहरण

अनुवाद - नर पशुओं के सदृश मर्यादा का पालन न करने वाले, हाथ में हथियार लिए हुए आप लोगों ने यह महान् (गुरुहत्या रूप) पातक किया है, करने की अनुमति दी है अथवा देखा है । यह मैं नरकासुर के शत्रु कृष्ण, भीम तथा अर्जुन के साथ उनके (धृष्टद्युम्न आदि के) रक्त, चर्बी और मांस से दिशाओं को बलि प्रदान करता हूँ ।।39।।

क्षुद्राः संत्रासमेते विजहत हरयः क्षुण्णशक्रेभकुम्भा
युष्मद्देहेषु लज्जां दधति परममी सायका निष्पतन्तः।
सौमित्रे ! तिष्ठ पात्रं त्वमसि नहि रुषां नन्वहं मेघनादः
किञ्चिद् भ्रूभंगलीलानियमितजलधिं राममन्वेषयामि ॥40॥

(5) वीर रस का उदाहरण

अनुवाद - अरे क्षुद्र वानरों ! तुम भय को छोड़ दो, क्योंकि इन्द्र के हाथी ऐरावत के गण्डलस्थल को विदीर्ण करने वाले ये बाण तुम्हारे शरीर पर गिरने में लज्जा को धारण करते हैं। हे लक्ष्मण ! ठहरो, तुम भी मेरे क्रोध के पात्र नहीं हो, जानते हो, मैं मेघनाद हूँ, मैं तो भौंहों को थोड़ा वक्र करने मात्र से समुद्र को वश कर लेने वाले राम को खोज रहा हूँ ।।40।।

ग्रीवाभङ्गाभिरामं मुहुरनुपतति स्यन्दने दत्तदृष्टिः
पश्चार्द्धेन प्रविष्टः शरपतनभयाद् भूयसा पूर्वकायम्।
दर्भैरर्द्धावलीढैः श्रमविवृतमुखभ्रंशिभिः कीर्णवर्त्मा
पश्योदग्रप्लुतत्वाद्वियति बहुतरं स्तोकमुर्व्यां प्रयाति ॥41॥

6 - भयानक रस का उदाहरण

अनुवाद - देखो, पीछे दौड़ते हुए रथ पर गरदन मोड़ने से सुन्दर बार-बार दृष्टि डालता हुआ, बाण लगने के भय से शरीर के पिछले आधे भाग को अगले भाग में प्रविष्ट हुआ सा, थकावट के कारण खुले हुए मुख से गिरने वाले आधे चबाये हुए कुशों को मार्ग में बिखेरता हुआ यह मृग, ऊँची छलांग लगाने के कारण आकाश में अधिक और भूमि पर कम चलता है ।।41।।

उत्कृत्योत्कृत्य कृत्तिं प्रथममथ पृथूत्सेधभूयांसि मांसा-
न्यंसस्फिक्पृष्ठपिण्ड्याद्यवयवसुलभान्युग्रपूतीनि जग्ध्वा।
आर्त्तः पर्यस्तनेत्रः प्रकटितदशनः प्रेतरङ्कः करङ्का -
दङ्कस्थादस्थिसंस्थं स्थपुटगतमपि क्रव्यमव्यग्रमत्ति ॥42॥

7 - बीभत्स रस का उदाहरण

अनुवाद - पहिले चमड़े को उधेड़ -उधेड़ कर तब कन्धे, जाँघों, पीठ, पिंडली आदि अवयवों में सुलभ ऊँचे उठने से पुष्कल और उग्र दुर्गन्धियुक्त माँस को खाकर चारों ओर देखता हुआ, दाँत निकाले हुए भूखा दरिद्र प्रेत अपनी गोद में रखे हुए मुर्दे के अस्थि-पञ्जर में से हड्डियों के ऊँचे-नीचे भागों में लगे हुए कच्चे माँस को धीरे-धीरे खा रहा है ।।42।।

चित्रं महानेष बतावतारः क्व कान्तिरेषाऽभिनवैव भङ्गिः।
लोकोत्तरं धैर्यमहो प्रभावः काप्याकृतिर्नूतन एष सर्गः ॥43॥

8 - अद्भुत रस का उदाहरण

अनुवाद - अरे यह महान् अवतार तो विचित्र (अद्भुत) है, यह कान्ति और कहाँ? इसकी भङ्गिमा (गतिविधि) बिलकुल नई सी है। इसका धैर्य भी लोकोत्तर है अहो ! इसका प्रभाव भी अलौकिक है और आकृति भी अनिर्वचनीय है।यह एक नवीन सृष्टि है ।।43।।

एषां स्थायिभावानाह-

(सू0 45) रतिर्हासश्च शोकश्च क्रोधोत्साहौ भयं तथा।
जुगुप्सा विस्मयश्चेति स्थायिभावाः प्रकीर्त्तिताः ॥30॥

इस प्रकार स्थायीभावों का निरूपण करते हैं -

अनुवाद - रति, हास, शोक, क्रोध, उत्साह, भय, जुगुप्सा और विस्मय ये आठ स्थायीभाव कहे गये हैं ।।30।।

व्यभिचारिणो ब्रूते-

(सू0 46) निर्वेदग्लानिशंकाख्यास्तथाऽसूयामदश्रमाः।
आलस्यञ्चैव दैन्यं च चिन्ता मोहः स्मृतिर्धृतिः ॥31॥
व्रीडा चपलता हर्ष आवेगो जडता तथा।
गर्वो विषाद औत्सुक्यं निद्राऽपस्मार एव च ॥32॥
सुप्तं प्रबोधोऽमर्षश्चाप्यवहित्थमथोग्रता ।
मतिर्व्याधिस्तथोन्मादस्तथा मरणमेव च ॥33॥
त्रासश्चैव वितर्कश्च विज्ञेया व्यभिचारिणः।
त्रयस्त्रिंशदमी भावाः समाख्यातास्तु नामतः ॥34॥

अब व्यभिचारीभाव को कहते हैं -

अनुवाद– निर्वेद, ग्लानि, शंका, असूया, मद, श्रम, आलस्य, दैन्य, चिन्ता, मोह, स्मृति, धृति, व्रीडा, चपलता, हर्ष आवेग, जड़ता, गर्व, विषाद, औत्सुक्य, निद्रा, अपस्मार, सुप्त, प्रबोध, क्रोध, अवहित्था, उग्रता, मति, व्याधि, उन्माद, मरण, त्रास, वितर्क ये 33 व्यभिचारीभाव कहे गये हैं। ।।31-34।।

(सू0 47) निर्वेदस्थायिभावोऽस्ति शान्तोऽपि नवमो रसः।

अनुवाद - जिसका निर्वेद स्थायीभाव है वह 'शान्त' नामक नवम रस है।

अहौ वा हारे वा कुसुमशयने वा दृषदि वा
मणौ वा लोष्ठे वा बलवति रिपौ वा सुहृदि वा।
तृणे वा स्त्रैणे वा मम समदृशो यान्ति दिवसाः
क्वचित् पुण्यारण्ये शिव शिव शिवेति प्रलपतः ॥44॥

9 - शान्तरस

अनुवाद - निर्वेद के प्रायः अमङ्गल रूप होने से सर्वप्रथम उसका कथन उपादेय न होने पर भी (उसका) प्रथम उपादान (ग्रहण) 'व्यभिचारीभाव होने पर भी उसके स्थायीभावत्व के बतलाने के लिए' किया गया है।

अनुवाद - सर्प में अथवा हार में, फूलों की शय्या पर या पत्थर की शिला में, मणि में या ढेले में, बलवान् शत्रु अथवा मित्र में, तिनके में या स्त्रियों के समूह में समदृष्टि रखते हुए किसी तपोवन में 'शिव' 'शिव' इस प्रकार प्रलाप करते हुए मेरे दिन बीत रहे हैं ।।44।।

(सू0 48) रतिर्देवादिविषया व्यभिचारी तथाञ्जितः ॥35॥
भावः प्रोक्तः

भाव-ध्वनि

अनुवाद - (सू048)- देव आदि विषयक रति और (प्राधान्य रूप से) व्यञ्जित व्यभिचारी को भाव कहा गया है ।।35।।

(सू0 49) तदाभासा अनौचित्यप्रवर्त्तिताः।
तदाभासा रसाभासा भावाभासाश्च।

रसाभास और भावाभास

अनुवाद- (49) उनका (रस और भावों का) अनुचित रूप में प्रवृत्त होना रसाभाव और भावाभास है। तदाभास का तात्पर्य रसाभास और भावाभास है।

तत्र रसाभासो यथा -

स्तुमः कं वामाक्षि! क्षणमपि विना यं न रमसे
विलेभे कः प्राणान् रणमखमुखे यं मृगयसे।
सुलग्ने को यातः शशिमुखि ! यमालिङ्गसि बलात्
तपःश्रीः कस्यैषा मदननगरि ! ध्यायसि तु यम् ॥48॥

अत्रानेककामुकविषयमभिलाषं तस्याः 'स्तुमः इत्याद्यनुगतं बहुव्यापारोपादानं व्यनक्ति।

रसाभास का उदाहरण

उनमें रसाभास जैसे -

अनुवाद - हे सुन्दर नेत्रों वाली ! हम किसकी प्रशंसा करें ? जिसके बिना तुम क्षण भर भी प्रसन्न नहीं रहती (ऐसा, भाग्यशाली कौन है?) । किसने युद्ध रूपी यज्ञ में प्राणों की आहुति दी है जिसे तुम खोज रही हो? हे चन्द्रमुखि ! कौन ऐसे शुभ मुहूर्त्त में पैदा हुआ है, जिसका तुम बलात् आलिंगन करती हो? हे कामदेव की नगरी! किसकी यह तपः सम्पत्ति हैं, जिसका तुम ध्यान करती हो? ।।48।।

भावाभासो यथा -

राकासुधाकरमुखी तरलायताक्षी
सा स्मेरयौवनतरंगितविभ्रमांगी।
तत्किं करोमि विदधे कथमत्र मैत्रीं
तत् स्वीकृतिव्यतिकरे क इवाभ्युपायः ॥49॥

अत्र चिन्ता अनौचित्यप्रवर्त्तिता। एवमन्येऽप्युदाहार्याः

भावाभास का उदाहरण

अनुवाद - वह (सीता) पूर्णचन्द्र के समान मुख वाली, चञ्चल एवं दीर्घ नेत्रों वाली, तथा अभिनव यौवन से तरंगित हाव - भावादि विलास युक्त अंङ्गो से सुशोभित है, सो मैं क्या करूँ? उसके साथ मित्रता किस प्रकार करूँ? उसकी प्रणय-स्वीकृति प्राप्त करने का क्या उपाय है ? ।।49।।

यहाँ चिन्ता अनौचित्य रूप में प्रवर्तित होने से भावाभास है। इसी प्रकार अन्य उदाहरण भी समझने चाहिए।

(सू0 50) भावस्य शान्तिरुदयः सन्धिः शबलता तथा ॥36॥

अनुवाद - भाव की शान्ति, भाव का उदय, भावसन्धि तथा भावशबलता ये चार भी भावों के साथ गिने जाने चाहिए क्रमशः (उनके) उदाहरण (आगे देते हैं)

क्रमेणोदाहरणम् - तस्याः सान्द्रविलेपनस्तनतटप्रश्लेषमुद्राङ्कितं
किं वक्षश्चरणानतिव्यतिकरव्याजेन गोपाय्यते।
इत्युक्ते क्व तदित्युदीर्य सहसा तत्सम्प्रमार्ष्टुं मया
साऽऽश्लिष्टा रभसेन तत्सुखवशात्तन्व्या च तद्विस्मृतम् ॥50॥

अत्र कोपस्य।

अनुवाद - उस (अन्यस्त्री)के गाढ़- विलेपनवाले स्तनों के अग्रभाग की मुद्रा से अङ्कित अपनी छाती को चरणो में झुकने के बहाने से क्यों छिपा रहे हो (कुपित स्वपत्नी के द्वारा) ऐसा कहे जाने पर, वह (स्तनाग्र की मुद्रा मेरे वक्षः स्थल पर) कहाँ है? 'यह कहकर उस (अन्य स्त्री के आलिङ्गन के चिह्न) को मिटाने के लिए मैंने एकदम जोर से उस (स्वपत्नी) का आलिङ्गन कर लिया और उसके सुख के कारण वह (तन्वी) भी उसको भूल गयी ।।150।।

अथ अष्टम उल्लासः

(गुण-निरूपण)

काव्यप्रकाश के प्रथम उल्लास में ''तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि'' यह काव्य का लक्षण दिया गया है। इस काव्यलक्षण में मम्मट ने शब्दार्थौं का एक विशेषण 'सगुणौ' दिया है। इसी 'सगुणौ' विशेषण की स्पष्ट व्याख्या अष्टम उल्लास में करते हैं। सर्वप्रथम अग्निपुराणकार ने गुण की स्पष्ट व्याख्या करते हुए लिखा है कि जो काव्य में महती शोभा को अनुगृहीत करता है उसे गुण कहते हैं **(यः काव्ये महतीं छायामनुगृह्णात्यसौ गुणः अग्निपुराण-** अग्निपुराणकार ने काव्य में शोभाकारक धर्म को गुण कहा है **(काव्यशोभाकरान् धर्मानलंकारान् प्रचक्षते- अग्निपुराण)** और काव्य में शोभा के अनुग्राहक तत्त्व को गुण कहा है। इस प्रकार अग्निपुराण में गुण और अलङ्कारों का समान महत्त्व प्रतिपादित है। वामन ने जो गुण का लक्षण दिया है **(काव्यशोभायाः कर्त्तारो धर्माः गुणाः)** वह अग्निपुराण के गुण लक्षण से साम्य रखता है।

एवं दोषानुक्त्वा गुणालङ्कारविवेकमाह -

(सू 0 87) ये रसस्याङ्गिनो धर्माः शौर्यादय इवात्मनः।
उत्कर्षहेतवस्ते स्युरचलस्थितयो गुणाः॥66॥

अनुवाद - इस प्रकार सप्तम उल्लास में दोषों का निरूपण करने के पद अब (अष्टम उल्लास में) गुण और अलङ्कार का भेद निरूपण करते हैं -

अनुवाद– जो आत्मा के शौयादि धर्म के समान (काव्य में) अंगीभूत (प्रधान) रस के उत्कर्षक धर्म हैं और अचल स्थित (नियत रूप से रहने वाले) हैं, वे गुण कहे जाते हैं ।

(सू0 88) उपकुर्वन्ति तं सन्तं येऽङ्गद्वारेण जातुचित् ।
हारादिवदलङ्कारास्तेऽनुप्रासोपमादयः ॥67॥

अनुवाद - जो (धर्म) शब्द और अर्थ रूप अङ्ग के द्वारा इसमें विद्यमान अंगी (रस) को कभी-कभी उपकृत करते हैं। वे अनुप्रास, उपमा आदि हार आदि के समान अलङ्कार कहे जाते हैं ।।67।।

अपसारय घनसारं कुरु हारं दूर एव किं कमलैः।
अलमलमालिमृणालैरिति वदति दिवानिशं बाला ॥34॥

इत्यादौ वाचकमुखेन।

अनुवाद - (कोई विरहिणी नायिका सखी से कहती है) हे सखि ! कपूर को हटा लो, हार को भी दूर कर दो, कमलों से क्या लाभ? कमलनाल को भी रहने दो, इस प्रकार वह बाला रातों-दिन बोलती रहती है ।।344।।

गुण-भेद

(सू089) माधुर्यौजः प्रसादाख्यास्त्रयस्ते न पुनर्दश।

एषां क्रमेण लक्षणमाह -

अनुवाद - अब गुणों के भेद का निरूपण करते हैं -

माधुर्य, ओज और प्रसाद ये तीन ही गुण होते हैं, दश गुण नहीं ।

आह्लादकत्वं माधुर्यं शृङ्गारे द्रुतिकारणम् ॥68॥

शृंगारे अर्थात् सम्भोगे। द्रुतिर्गलितत्वमिव। श्रव्यत्वं पुनरोजः प्रसादयोरपि।

अनुवाद - चित्त की द्रुति का कारण आह्लादकत्व (आनन्दस्वरूपता) ही माधुर्य गुण है और वह शृंगार रस में रहता है ।।68।।

शृङ्गार में अर्थात् सम्भोग शृङ्गार में । द्रुति का अर्थ चित्त का द्रवीकरण (चित्त का पिघलना) है। श्रव्यत्व ओज और प्रसाद गुणों में भी होता है।

(सू091) करुणे विप्रलम्भे तच्छान्ते चातिशयान्वितम् ॥

अत्यन्त द्रुतिहेतुत्वात्।

अनुवाद - वह माधुर्य करुण, विप्रलम्भ शृंगार और शान्त रस में उत्तरोत्तर चमत्कारजनक होता है। अत्यन्त द्रवीभाव का कारण होने से।

(सू0 92) दीप्त्यात्मविस्तृतेर्हेतुरोजो वीररसस्थिति ॥69॥

चित्तस्य विस्ताररूपदीप्तत्वजनकमोजः।

अनुवाद - चित्त के विस्तार की हेतुभूत दीप्ति ही ओज गुण है और उसकी स्थिति वीररस में होती है ।।69।।

चित्त के विस्ताररूप दीप्तत्व का जनक ओज गुण है।

(सू093) बीभत्सरौद्ररसयोस्तस्याधिक्यं क्रमेण च।

वीराद्बीभत्से ततो रौद्रे सातिशयमोजः।

अनुवाद – (यह ओज सामान्यतः वीररस में रहता है किन्तु) बीभत्स और रौद्र रसों में क्रमशः उसका आधिक्य (अर्थात् उत्तरोत्तर चमत्कारजनकत्व) रहता है।

अर्थात् वीररस से बीभत्स में और वीभत्स से रौद्र रस में ओज गुण उत्तरोत्तर बढ़कर होता है।

(सू094) शुष्केन्धनाग्निवत् स्वच्छजलवत्सहसैव यः ॥70॥
व्याप्नोत्यन्यत् प्रसादोऽसौ सर्वत्र विहितस्थितिः॥

अन्यदिति व्याप्यमिह चित्तम् । सर्वत्रेति सर्वेषु, रसेषु, सर्वासु रचनासु च।

अनुवाद– सूखे इन्धन में अग्नि के समान तथा स्वच्छ (वस्त्र में) जल के समान जो (गुण) सहसा चित्त में व्याप्त हो जाता है, उसे प्रसाद गुण कहते हैं। इसकी स्थिति सर्वत्र है (अर्थात् यह सभी रसों तथा सभी रचनाओं में रहता है) ।।70।।

यहाँ पर 'अन्यत्' पद का अभिप्राय है व्याप्य चिन्त का ग्रहण है और व्याप्य का अभिप्राय है - सहृदय का हृदय। 'सर्वत्र' पद का अभिप्राय है - सभी रसों में तथा सभी रचनाओं में

(सू095) गुणवृत्त्या पुनस्तेषां वृत्तिः शब्दार्थयोर्मता ॥71॥

गुणवृत्त्या उपचारेण 'तेषां गुणानां। आकारे शौर्यस्येव'
कुतस्त्रय एव न दश इत्याह

अनुवाद उन माधुर्यादि गुणों की शब्द और अर्थ में स्थिति गौण रूप से मानी जाती है ।।71।।

गुणवृत्ति से अर्थात् उपचार से । 'तेषाम्' उन गुणों का। आकार में शौर्य के समान ।

अनुवाद - तीन ही गुण क्यों होते हैं ? दस क्यों नहीं ?

केचिदन्तर्भवन्त्येषु दोषत्यागात्परे श्रिताः।
अन्ये भजन्ति दोषत्वं कुत्रचिन्न ततो दश॥

अनुवाद– इनमें (वामन के 10 गुणों में) से कुछ (गुण तो ऐसे हैं) जो (माधुर्य, ओज, प्रसाद) इन तीनों में अन्तर्भूत हो जाते हैं और कुछ दोषाभाव मात्र है तथा कुछ कहीं दोष रूप हो जाते हैं। इसलिए दस गुण नहीं हैं ।।72।।

अथ नवम उल्लासः

विमर्श - मम्मट ने छः प्रकार के शब्दालङ्कारों का निरूपण किया है। काव्य प्रकाश के टीकाकार सोमेश्वर ने छः प्रकार के शब्दालङ्कार इस प्रकार बताये हैं -

वक्रोक्तिरनुप्रासो यमकं श्लेषचित्रके।
पुनरुक्तवदाभासः शब्दालंकृतयस्तु षट् ॥

अर्थात् वक्रोक्ति अनुप्रास, यमक, श्लेष, चित्र और पुनरुक्तवदाभास ये छः शब्दालङ्कार हैं। इन्हें शब्दालङ्कार इसलिए माना गया है कि इनमें शब्द के परिवर्तन कर देने पर अलङ्कार नष्ट हो जाता है। इस प्रकार शब्द परिवृत्यसह होने से ये शब्दालङ्कार कहे जाते हैं।

(1) वक्रोक्ति अलंकार

(सू0 103) यदुक्तमन्यथावाक्यमन्यथाऽन्येन योज्यते। श्लेषेण काक्वा वा ज्ञेया सा वक्रोक्तिस्तथा द्विधा ॥78॥

तथेति श्लेषवक्रोक्तिः काकुवक्रोक्तिश्च । तत्र पदभङ्गश्लेषेण

अनुवाद - वक्ता के द्वारा, अन्य अभिप्राय से कहा गया जो वाक्य अन्य के द्वारा श्लेष अथवा काकु (ध्वनिविकार) अन्य अर्थ (वक्ता के अभिप्राय से भिन्न अर्थ) में लगा लिया जाता है, वह वकोक्ति नामक शब्दालङ्कार है और वह दो प्रकार का होता है ।।78।।

अनुवाद (वृत्ति) वक्रोक्ति अलङ्कार दो प्रकार का होता है श्लेष वक्रोक्ति और काकुवक्रोक्ति। उनमें पदभंगश्लेष के द्वारा जैसे-

यथा-नारीणामनुकूलमाचरसि चेज्जानासि कश्चेतनो
वामानां प्रियमादधाति हितकृन्नैवाबलानां भवान् ।
युक्तं किं हितकर्तनं ननु वलाभावप्रसिद्धात्मनः।
सामर्थ्यं भवतः पुरन्दरमतच्छेदं विधातुं कुतः ॥352॥

अनुवाद - (वक्ता) यदि तुम स्त्रियों के (नारीणाम्) अनुकूल आचरण करते हो समझदार (बुद्धिमान्) हो। (श्रोता) यदि तुम शत्रुओं के (न+अरी-णाम्) अनुकूल आचरण नहीं करते हो तो बुद्धिमान् हो, (यह अर्थ लगाकर उत्तर देता है कि) कौन बुद्धिमान् (चेतनः) व्यक्ति विरोधियों का (वामानाम्) प्रिय करता है? (वक्ता) तो क्या आप अबलाओं - नारियों के (अबलानाम्) हितकारी (हितकृत्) नहीं हैं? (श्रोता) बल के अभाव के लिए प्रसिद्ध (निर्बल रूप से प्रसिद्ध) दुर्बलजन के हित का विनाश क्या उचित है? (वक्ता) अरे ! (बलासुर के विनाश करने में प्रसिद्ध) इन्द्र के अभिमत (अभीष्ट) का विनाश करने का सामर्थ्य आप में कहाँ है ?

अभंगश्लेषेण यथा -

अहो केनेदृशी बुद्धिर्दारुणा तव निर्मिता ।
त्रिगुणा श्रूयते बुद्धिर्न तु दारुमयी क्वचित् ॥353॥

अभंगश्लेष का उदाहरण, जैसे -

अनुवाद - अहो ! किसने तुम्हारी बुद्धि इस प्रकार दारुण (कठोर, कर) बना दी है? किन्तु त्रिगुणात्मक (सत्त्वरजस्तमोगुण रूप) बुद्धि तो (साख्यदर्शन में) सुनी जाती है, परन्तु दारुमयी (काष्ठ की बनी हुई) बुद्धि तो कहीं नहीं सुनी है ।।353।।

काक्वा यथा-गुरुजनपरतन्त्रतया दूरतरं देशमुद्यतो गन्तुम्। अलिकुलकोकिलललिते नैष्यति सखि!सुरभिसमयेऽसौ ॥354॥

काकु के द्वारा वक्रोक्ति का उदाहरण, जैसे -

अनुवाद - अरे सखि! गुरुजनों के परतन्त्र (अधीन) होने से वे विदेश जाने के लिए उद्यत (तैयार) थे, अतः हे सखि! भ्रमरकुल और कोयलों से रमणीय इस वसन्त काल में नहीं आयेंगे?।।354।।

(2) अनुप्रास अलंकार

(सू0104) वर्णसाम्यमनुप्रासः।

स्वरवैसादृश्येऽपि व्यञ्जनसदृशत्वं वर्णसाम्यम्। रसाद्यनुगतः प्रकृष्टो न्यासोऽनुप्रासः।

अनुवाद -वर्णों की समानता अनुप्रास अलङ्कार है । स्वरों की विसदृशता (असमानता) होने पर भी व्यञ्जनों की समानता ही वर्णसाम्य (वर्णों की समानता) है। रसादि के अनुकूल वर्णों का प्रकृष्ट न्यास (सन्निवेश) अनुप्रास है।

(सू0 105) छेकवृत्तिगतो द्विधा ।

अनुवाद (सू0105) - छेकगत और वृत्तिगत (वह) दो प्रकार का होता है ।

छेका विदग्धाः, वृत्तिर्नियतवर्णगतो रसविषयो व्यापारः। गत इति छेकानुप्रासो वृत्त्यनुप्रासश्च ।

अनुवाद (वृत्ति) छेक शब्द अर्थ विदग्ध (चतुर व्यक्ति) है और वृत्ति नियत वर्णों में रहने वाला रस विषयक व्यापार है । 'गत' इससे छेकानुप्रास और वृत्त्यनुप्रास (अभिप्रेत) है।

किं तयोः स्वरूपमित्याह -

(सू0 106) सोऽनेकस्य सकृत्पूर्वः .....

अनेकस्य अर्थात् व्यञ्जनस्य सकृदेकवारं सादृश्यं छेकानुप्रासः। उदाहरणम् -

अनुवाद - अनेक (वर्णों) का एक बार सादृश्य प्रथम अर्थात् छेकानुप्रास है अर्थात् अनेक व्यञ्जनों का सकृत् एक बार सादृश्य छेकानुप्रास है। जैसे -

ततोऽरुणपरिस्पन्दमन्दीकृतवपुः शशी ।
दध्रे कामपरिक्षामकामिनीगण्डपाण्डुताम् ॥355॥

अनुवाद - इसके बाद अरुण (सूर्य-सारथि) के परिस्पन्द (संचरण, गतिशील होने) से मन्दकान्ति (मलिन स्वरूप) वाले चन्द्रमा ने किसी काम से परिक्षीण (रति-खिन्न) कामिनी के कपोलों की पाण्डुता धारण कर ली ।।355।।

(सू0 107) एकस्याप्यसकृत्परः ॥79॥

एकस्य अपिशब्दादनेकस्य व्यञ्जनस्य द्विर्बहुकृत्वो वा सादृश्यं वृत्त्यनुप्रासः। तत्र -

अनुवाद एक अथवा अनेक (वर्णों, व्यञ्जनों) की अनेक बार सादृश्य (आवृत्ति) दूसरा अर्थात् वृत्त्यनुप्रास है।

एक वर्ण का और 'अपि' शब्द के अनेक व्यञ्जनों का दो बार अथवा अनेक बार सादृश्य वृत्यनुप्रास कहलाता है।

(सू0 108) माधुर्यव्यञ्जकैर्वर्णैरुपनागरिकोच्यते।

अनुवाद - माधुर्य व्यञ्जक वर्णों से युक्त वृत्ति उपनागरिका कही जाती है।

(सू0 109) ओजः प्रकाशकैस्तैस्तु परुषा ।

अनुवाद-ओज के प्रकाशक वर्णों से युक्त परुषा वृत्ति कहलाती है।

उभयत्रापि प्रागुदाहृतम् ('अनङ्गरङ्ग' 'इत्यादि, 'मूर्ध्नामुद्वृत्त' इत्यादि च)

अनुवाद (वृत्ति) - दोनों का उदाहरण पहिले दिया जा चुका है। अर्थात् अष्टम उल्लास में उपनागरिका वृत्ति का उदाहरण 'अनङ्गरङ्गप्रतिमम्' इत्यादि (उदाहरण सं0 349) तथा परुषावृत्ति का उदाहरण 'मूर्ध्नामुद्वृत्त' इत्यादि (उ0सं0350) में दिया जा चुका है।

(सू0112) शाब्दस्तु लाटानुप्रासो भेदे तात्पर्यमात्रतः ॥81॥

अनुवाद –तात्पर्यमात्र से भेद होने पर शब्दानुप्रास लाटानुप्रास कहलाता है ।।81।।

शब्दगतोऽनुप्रासः शब्दार्थयोरभेदेऽप्यन्वयमात्रभेदात् । लाटजनवल्लभत्वाच्च लाटानुप्रासः। एष पदानुप्रास इत्यन्ये।

अनुवाद (वृत्ति) - यह शब्दगत अनुप्रास (शब्दानुप्रास) शब्द और अर्थ का अभेद होने पर भी अन्वय (तात्पर्य) मात्र के भेद होने से तथा लाट देश के लोगों का प्रिय होने के कारण लाटानुप्रास कहलाता है। कुछ आचार्य इसे पदानुप्रास कहते हैं।

(3) यमक अलंकार

(सू0 116) अर्थे सत्यर्थभिन्नानां वर्णानां सा पुनः श्रुतिः। यमकम्

अनुवाद - अर्थ होने पर भिन्न-भिन्न अर्थ वाले वर्णों की पूर्वक्रम के पुनः श्रुति (पुनरावृत्ति) यमक अलङ्कार कहलाता है।

'समरसमरसोऽयम्' (यह समर-समरस है अर्थात् युद्ध में एकरस है) इत्यादि में एक (वर्ण समूह समर) के सार्थक होने पर और दूसरे (वर्णसमूह समरस में 'समर' के) के अनर्थक होने से 'भिन्नार्थानाम्' (भिन्न अर्थ वाले वर्णसमूह का) यह कहना युक्त (ठीक) नहीं है। इसलिए यमक के लक्षण में 'अर्थे सति' (अर्थ के होने पर) यह कहा गया है। 'सा' (उसी रूप में आवृत्ति) उससे 'सरो रसः' इससे विलक्षण रूप से अर्थात् उसी क्रम से स्थित (वर्णों की आवृत्ति होनी चाहिए।)

सन्नारीभरणोमायमाराध्य विधुशेखरम्।
सन्नारीभरणोऽमायस्ततस्त्वं पृथिवीं जय॥360॥

अनुवाद - सती (पतिव्रता) नारियों का भरण-पोषण करने वाली (अथवा पतिव्रता स्त्रियों के आभरण-आभूषण रूप= सन्नारीभरण) उमा (पार्वती) को प्राप्त करने वाले (सन्नारीभरणा या उमा तां याति अयते (प्राप्नोति) वा इति सन्नारीभरण + उमायः तम्) विधुशेखर शिव की आराधना करके सन्नारीभरण (सन्नाःमृता अरीणां शत्रूणाम् इभा गजा यत्र तादृशो रणो युद्धं यस्य सः सन्नारीभरणः) अर्थात् शत्रुओं के हाथियों के विनाशक युद्ध करने वाले, कपट-रहित (अमायः-न माया कपटः-अमायः = कपट-रहितः) आप पृथिवी का विजय प्राप्त करें ।।360।।

विनायमेनो नयताऽसुखादिना विना यमेनोनयता सुखादिना।
महाजनोऽदीयत मानसादरं महाजनोदी यतमानसादरम् ॥361॥

अनुवाद - इस महापुरुष (अयं महाजनः) दुर्जनों का दमन करने वाले (महाजनोदी - महान् उत्सवान् अजन्ति क्षिपन्ति इति महाजाः= दुर्जनाः, तान् नुदति इति महाजनोदी) और शत्रुओं का मान मर्दन करने वाले (मानसात्- (मानं शत्रूणामभिमानं सादयति विनाशयति इति मानसात्) हंस नामक जीवात्मा को (विना - विः =पक्षी, विश्चासौ ना च इति विना पक्षिरूपः पुरुषः हंसाख्यो जीव इति) बिना अपराध के ही (एनोऽपराधं विना) ले जाने वाले (नयता) प्राणों का भक्षण करने वाले (असुखादिना असून् प्राणान् खादति भक्षयति इति तेन असुखादिना प्राणभक्षकेण) सुख का नाश करने वाले (सुखादिना=सुखम् अत्ति भक्षयति तेन इति सुखादिना सुखभक्षकेण) सबको नीचा दिखाने वाले या हानि करने वाले (ऊनयता=हीनं हानिं वा कुर्वता) यमराज ने (यमेन) प्राणरक्षा के लिए प्रयत्न करने वाले लोगों को दुःख देकर (यतमानानां जीवनरक्षणाय प्रयत्नवतां सादं विषादं दुखं राति ददाति इति= यतमानसादरं) मानस से शीघ्र ही (अरं) अलग कर दिया (अदीयत-अखण्डयत)। अर्थात् यमराज ने शरीर से जीव को अलग कर दिया ।।361।।

(4) श्लेष अलंकार

(सू0 118) वाच्यभेदेन भिन्ना यद् युगपद् भाषणस्पृशः। श्लिष्यन्ति शब्दाः श्लेषोऽसावक्षरादिभिरष्टधा ॥84॥

अर्थभेदेन शब्दभेदः इति दर्शने 'काव्यमार्गे स्वरो न गण्यते' इति च नये वाच्यभेदेन भिन्ना अपि शब्दा यद् युगपदुच्चारणेन श्लिष्यन्ति भिन्नं स्वरूपमपह्नुवते स श्लेषः। स च वर्ण-पद-लिंग-भाषा-प्रकृति-प्रत्यय-विभक्ति-वचनानां भेदादष्टधा। क्रमेणोदाहरणम् -

अनुवाद - अर्थ भेद होने से भिन्न-भिन्न शब्द एक साथ उच्चारण-विषय के कारण जो एक रूप (श्लिष्ट) प्रतीत होते हैं, वह श्लेष अलङ्कार है और वह श्लेष अक्षर आदि के भेद से आठ प्रकार का होता है ।।84।।

अनुवाद (वृत्ति)- 'अर्थ भेद से शब्द भेद होता है' अर्थात् यदि 'अर्थ भिन्न-भिन्न हैं तो शब्द भी भिन्न-भिन्न होंगे' इस सिद्धान्त के अनुसार और 'काव्यमार्ग में स्वर (उदात्तादि स्वर) का विचार नहीं किया जाता' इस नियम (न्याय) के अनुसार - अर्थ के भेद से भिन्न होने पर भी शब्द जब एक साथ उच्चारण के द्वारा श्लिष्ट हो जाते हैं अर्थात् अपने भिन्न स्वरूप को छिपा लेते हैं, तब वह श्लेष अलङ्कार कहलाता है और वह श्लेष अलङ्कार वर्ण, पद, लिङ्ग,

भाषा, प्रकृति, प्रत्यय, विभक्ति और वचन के भेद से आठ प्रकार का होता है । क्रमशः उनका उदाहरण देते हैं -

(1) वर्णश्लेष

अलङ्कारः शङ्काकरनरकपालं परिजनो–
विशीर्णाङ्गों भृङ्गी वसु च वृष एको बहुवयाः।
अवस्थेयं स्थाणोरपि भवतिं सर्वामरगुरो -
विंधौ वक्रे मूर्ध्नि स्थितवति वयं के पुनरमी ॥369॥

अनुवाद - भय को उत्पन्न करने वाला मानव का कपाल (खोपड़ी) जिस शिव का अलङ्कार है और उनका अनुचर गलित अंगों वाला भृङ्गी है, और (सम्पत्ति) धन एक बूढ़ा बैल है । समस्त देवताओं के पूज्य गुरु (श्रेष्ठ) शिवजी के (स्थाणोः) भी मस्तक पर वक्र (टेढ़े) चन्द्रमा (भाग्य) के स्थित होने पर जब यह दुरवस्था है तो हम तुच्छ मनुष्यों की गणना ही क्या है? ।।369।।

(2) पदश्लेष

पृथुकार्त्तस्वरपात्रं भूषितनिःशेषपरिजनं देव।
विलसत्करेणुगहनं सम्प्रति सममावयोः सदनम् ॥370॥

अनुवाद - हे राजन् ! इस समय हम दोनों का (आपका और हमारा) घर पृथुकार्त्तस्वरपात्र (आपका-विशाल सुवर्ण के पात्रों युक्त और हमारा घर- बच्चों के करुण क्रन्दन का स्थान है), भूषितनिःशेष परिजन (आपका अलंकृत समस्त परिजनों वाला और हमारा-भूमि पर लेटने वाले समस्त परिजनों वाला है), विलसत्करेणुगहन (आपका आवास - सुन्दर हथिनियों से सुशोभित है और हमारा घर - बिल में रहने वाले चूहों के बिल की मिट्टी से भरा है) होने से एक समान है ।।370।।

अथ दशम उल्लासः

(अर्थालङ्कारविवेकः)

अलंकार काव्य का सबसे प्रमुख तत्त्व है। काव्य में शोभाकारक धर्म को अलंकार कहते हैं और वह शोभाकारक धर्म यदि अर्थ को अलंकृत करता है तो उसे अर्थालंकार कहते हैं ।

अर्थालङ्कारानाह -

(सू0 125) साधर्म्यमुपमा भेदे

उपमानोपमेययोरेव न तु कार्यकारणादिकयोः साधर्म्यं भवतीति तयोरेव समानेन धर्मेण सम्बन्ध उपमा।

अनुवाद – (उपमान और उपमेय का) भेद होने पर साधर्म्य (सादृश्य) का कथन उपमा (अलङ्कार) है।

अनुवाद (वृत्ति) -उपमान और उपमेय का ही साधर्म्य होता है, कार्य और कारण आदि का साधर्म्य नहीं होता। इसलिए उन दोनों का ही समान धर्म से सम्बन्ध होना उपमा है।

क्रमेणोदाहरणम् -

(1) वाक्यगा श्रौती उपमा का उदाहरण

स्वप्नेऽपि समरेषु त्वां विजयश्रीर्न मुञ्चति ।
प्रभावप्रभवं कान्तं स्वाधीनपतिका यथा ॥392॥

अनुवाद - हे राजन् ! स्वाधीनपतिका नायिका के समान विजयश्री युद्ध में प्रभुशक्तिसम्पन्न आपको स्वप्न में भी नहीं छोड़ती ।।392।।

(2) वाक्यगा आर्थी उपमा का उदाहरण

चकितहरिणलोललोचनायाः क्रुधि तरुणारुणतारहारिकान्ति।
सरसिजमिदमाननं च तस्याः सममिति चेतसि सम्मदं विधत्ते ॥393॥

अनुवाद - चकित हरिणी के समान चञ्चल नेत्र वाली उस नायिका का क्रोध में तरुण-अरुण (सूर्य-सारथि) के समान मनोहर कान्ति वाला यह मुख और यह कमल दोनों समान हो रहे हैं। इसलिए चित्त में आनन्द उत्पन्न करता है ।।393।।

(4) उत्प्रेक्षा अलंकार

(सू0137) सम्भावनमथोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य समेन यत्
समेन उपमानेन उदाहरणम् -

अनुवाद - जहाँ पर प्रकृत (उपमेय) की सम (उपमान) के साथ सम्भावना की जाती है, वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है।

(यहाँ पर सूत्र में) समेन का अर्थ उपमान के साथ है।

लिम्पतीव तमोऽङ्गानि वर्षतीवाञ्जनं नभः।
असत्पुरुषसेवेव दृष्टिर्विफलतां गता ॥418॥

अनुवाद - मानो अन्धकार अङ्गों में लिप्त हो रहा है (लेप लगा रहा है) और आकाश काजल की वर्षा कर रहा है तथा दुष्ट-पुरुष की सेवा के समान आँखें विफल सी हो गई हैं ।।418।।

(5) रूपक अलंकार

(सू0 139) तद्रूपकमभेदो य उपमानोपमेययोः।
अतिसाम्यादनपह्नुतभेदयोरभेदः

अनुवाद - उपमान और उपमेय का जो अभेद (अभेदारोप) है, उसे रूपक अलङ्कार कहते हैं।

अत्यन्त साम्य के कारण प्रसिद्ध वैधर्म्य वाचक उपमान और उपमेय में (अभेदारोप रूपक अलंकार है)।

यथा–ज्योत्स्नाभस्मच्छुरणधवला बिभ्रती तारकास्थी -
न्यन्तर्द्धानव्यसनरसिका रात्रिकापालिकीयम् ।
द्वीपाद् द्वीपं भ्रमति दधती चन्द्रमुद्राकपाले
न्यस्तं सिद्धाञ्जनपरिमलं लाञ्छनस्यच्छलेन ॥422॥

अनुवाद (वृत्ति) - आरोप विषय (उपमान) के समान आरोप्यमाण (उपमान) जब शब्दतः, उपात्त (कथित) होते हैं, तब समस्त वस्तुएँ जिसका विषय है ऐसा (समस्तानि) वस्तुति विषयोऽस्य इस

व्युत्पत्ति के अनुसार) समस्तवस्तुविषयक साङ्गरूपक होता। 'आरोपिताः' में बहुवचन अविवक्षित है। जैसे -

"चाँदनी रूप भस्म लगाने से सफेद (शुभ्र), तारका (तारे) रूपी अस्थियों को धारण किये हुए और अन्तर्धान (छिपने) की कला में निपुण (रसिक) यह रात्रि रूपी कापालिकी चन्द्ररूपी मुद्राकापाल में कलङ्क (लाञ्छन) के व्याज से सिद्धाञ्जन का चूर्ण रखे हुए एक द्वीप से दूसरे द्वीप घूम रही है ।।422।।

(6) अतिशयोक्ति अलङ्कार

(सू0 153) निगीर्याध्यवसानं तु प्रकृतस्य परेण यत्, प्रस्तुतस्य यदन्यत्वं यद्यर्थोक्तौ च कल्पनम् ॥100॥
कार्यकारणयोर्यश्च पौर्वापर्यविपर्ययः।
विज्ञेयाऽतिशयोक्तिः सा .... ॥

अनुवाद - उपमान के द्वारा उपमेय का निगरण करके काल्पनिक और अभेद का निश्चय (अध्यवसान) करना, प्रस्तुत का अन्य रूप में वर्णन करना, यदि के समानार्थक शब्दों के द्वारा कल्पना अर्थात् असंभव अर्थ की कल्पना करना और कार्य तथा कारण के पूर्वापर भाव का विपर्यय इस प्रकार अतिशयोक्ति अलंकार जानना चाहिए।

अनुवाद (वृत्ति) - उपमान के द्वारा अपने भीतर निगरण कर लिये गये उपमेय का जो अध्यवसान (तादात्म्य निश्चय) होता है, उसे प्रथम प्रकार की अतिशयोक्ति कहते हैं। **जैसे-**

कमलमनम्भसि कमले च कुवलये तानि कनकलतिकायाम्
सा च सुकुमारसुभगेत्युत्पातपरम्परा केयम् ॥450॥

अनुवाद- (अपनी प्रियतमा को देखकर कोई नायक उसकी सखी से कह रहा है कि) जल-स्थल पर कमल, उस कमल पर नीलकमल और वे तीनों (कमल) कनक-लता पर लगे हैं और वह कनकलता कोमल और सुन्दर है। यह कैसी उत्पात की परम्परा है ।।450।।

(7) अर्थान्तरन्यास अलंकार

(सू0 165) सामान्यं वा विशेषो वा तदन्येन समर्थ्यते। यत्तु सोऽर्थान्तरन्यासः साधर्म्येण परेण वा ॥109॥
साधर्म्येण वैधर्म्येण वा सामान्यं विशेषेण यत् समर्थ्यते, विशेषो वा सामान्येन सोऽर्थान्तरन्यासः।

अनुवाद - जहाँ पर सामान्य का विशेष के द्वारा अथवा विशेष का सामान्य के द्वारा समर्थन होता है, वह अर्थान्तरन्यास अलंकार साधर्म्य अथवा वैधर्म्य से दो प्रकार का होता है ।।109।।

(1) निजदोषावृतमनसामतिसुन्दरमेव भाति विपरीतम्। पश्यति पित्तोपहतः शशिशुभ्रं शङ्खमपि पीतम् ॥479॥

अनुवाद - अपने ही दोष से जिनका मन व्याप्त (आवृत) है उनका अति सुन्दर वस्तु भी विपरीत (बुरी) लगा करती है। पित्त (पीलिया) रोग से पीड़ित लोगों को चन्द्रमा के समान शुभ्र (सफेद) शङ्ख भी पीला दिखाई देता है ।।479।।

विमर्श - यहाँ पर पूर्वार्द्ध में कथित 'अपने ही दोष से व्याप्त मन वाले व्यक्ति को सुन्दर वस्तु भी बुरी लगती है' इस सामान्य का समर्थन उत्तरार्द्ध में कथित 'पीलिया रोग से पीड़ित व्यक्ति को सफेद शंख भी पीला दिखाई देता है' इस विशेष कथन से किया गया है, अतः यह साधर्म्य के द्वारा विशेष से सामान्य के समर्थन का उदाहरण है।

(2) सुसितवसनालङ्कारायां कदाचन कौमुदी -
महसि सुदृशि स्वैरं यान्त्यां गतोऽस्तमभूद्विधुः
तदनु भवतः कीर्तिः केनाप्यगीयत येन सा
प्रियगृहमगान्मुक्ताशङ्का क्व नासि शुभप्रदः ॥480॥

अनुवाद - सुन्दर श्वेत वस्त्रों और अलंकारों को धारण किये हुए सुनयना नायिका कभी (किसी दिन) चन्द्रमा की चाँदनी में अभिसार के लिए जा रही थी कि मार्ग में चन्द्रमा अस्त हो गया। उसके बाद आपकी कीर्ति का किसी ने गायन किया, जिससे वह (नायिका) निःशङ्क होकर प्रियतम के घर चली गई, आप कहाँ लोगों के लिए कल्याणकारी नहीं हैं ।।480।।

विमर्श - यहाँ पर 'आप कहाँ पर कल्याणकारी नहीं है' इस सामान्य कथन के द्वारा 'सुसितवसनालङ्कारायाम्' इत्यादि में उपकार विशेष का समर्थन किया गया है; अतः यह साधर्म्य के द्वारा सामान्य से विशेष के समर्थन का उदाहरण है।

काव्यप्रकाश प्रश्नोत्तरी

- मम्मटस्य ग्रन्थः अस्ति— **काव्यप्रकाशः**
- मम्मटस्य कीदृशः ग्रन्थः अस्ति- **लक्षणग्रन्थः**
- कस्य ग्रन्थस्य टीकाः गृहे गृहे विद्यन्ते तथाप्येष तथैव दुर्गमः- **काव्यप्रकाशस्य**
- उपलब्धासु काव्यप्रकाशस्य प्राचीनतमा टीका मन्यते– **सङ्केतटीका**
- गोविन्द-ठक्कुरः अस्ति–**काव्यप्रकाशस्य टीकाकारः**
- काव्यप्रकाशस्य मङ्गलश्लोके कस्याः प्रशंसा कृता– **कविभारत्याः**
- 'ग्रन्थारम्भे भारती कवेर्जयति' इति समुचितेष्टदेवतां कः परामृशति– **मम्मटः**
- 'नियतिकृतनियमरहितां नवरसरुचिराम्' किमस्ति– **काव्यम्**
- काव्यप्रकाशे काव्यप्रयोजनानि सन्ति- **6**

- ☞ 'संकेतितार्थः' कतिधा विभज्यते– **चतुर्धा**
- ☞ मम्मटाचार्येण काव्यभेदाः निरूपिताः – **त्रिविधाः**
- ☞ गुणीभूतव्यङ्ग्यस्य प्रभेदाः कति– **अष्ट**
- ☞ लक्षणायाः हेतवः सन्ति–**त्रयः**
- ☞ अर्थबोधस्य कति प्रमुखसाधनानि–**अष्ट**
- ☞ मम्मटानुसारं लक्षणायाः भेदाः कति– **6**
- ☞ शब्दशक्त्युद्भवो भावो ध्वनिः कतिधा निरूपितः काव्यप्रकाशे– **द्विधा**
- ☞ अविवक्षितवाच्यो ध्वनिः कतिधा उदाहृतः–**द्विधा**
- ☞ काव्यप्रकाशे शब्दः कतिधा निरूपितः – **त्रयः**
- ☞ पदगतदोषाः कति– **षोडश**
- ☞ मम्मटस्य मतेन काव्ये कति गुणाः– **त्रयः**
- ☞ काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये। सद्यः परनिर्वृतये कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे।। –यह उक्ति है– **मम्मट की**
- ☞ मम्मट के अनुसार प्रमुख काव्यप्रयोजन क्या है–**आनन्दप्राप्ति**
- ☞ मम्मट के अनुसार काव्य प्रयोजन नहीं है- **प्रतिभा**
- ☞ 'शिवेतरक्षतये' इत्यत्र शिवेतरपदे कस्य ग्रहणम्–**अमङ्गलस्य**
- ☞ काव्यप्रकाशे स्वीकृतेषु षट्प्रयोजनेषु मौलिभूतं प्रयोजन किम्? – **सद्यःपरनिर्वृति**
- ☞ 'कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे' यह उक्ति है- **मम्मट**
- ☞ श्रीहर्षादे.............दीनामिव धनम् –**धावका**
- ☞ ''काव्यं यशसे'' अत्र 'यशसे' पदे विभक्तिरस्ति–**चतुर्थी**
- ☞ इतिहास का स्वरूप है – **उपदेशप्रधानम्**
- ☞ 'काव्यं यशसे' इति मम्मटोक्तस्योदाहरणं विद्यते– **कालिदासादीनामिव यशः**
- ☞ आचार्य मम्मटानुसारेण काव्यस्योपदेशो भवति–**कान्तासम्मितः**
- ☞ **पुराणं कीदृशम्– सुहृत्सम्मितम्**
- ☞ 'काव्यं यशसे' के उल्लेख वाला ग्रन्थ है–**काव्यप्रकाश**
- ☞ 'काव्यज्ञशिक्षयाभ्यास इति हेतुस्तदुद्भवे' इयमुक्तिः कस्माद् ग्रन्थादुद्धृता?–**काव्यप्रकाशात्**
- ☞ 'शक्तिर्निपुणता लोकशास्त्रकाव्याद्यवेक्षणात् काव्यज्ञशिक्षयाभ्यास इति हेतुः' कस्य मतम्– **मम्मटस्य**
- ☞ का कवित्वबीजरूपः संस्कारविशेषः– **शक्तिः**
- ☞ 'इति हेतुस्तदुद्भवे' में तत् पद का अर्थ है–**काव्य**
- ☞ शक्तिः .... लोकशास्त्रकाव्याद्यवेक्षणात्– **निपुणता**
- ☞ शक्तिर्निपुणतेत्यादिना काव्यहेतुत्वेन कति परिगणिताः काव्यप्रकाशे? – **त्रयः**
- ☞ 'त्रयः समुदिता हेतुः' कौन मानता है –**मम्मट**
- ☞ काव्यप्रकाशस्य काव्यहेतुकारिकायां प्रयुक्तस्य 'शक्तिः' पदस्य कः आशयः– **कविप्रतिभाम्**
- ☞ काव्यहेतुविषये मम्मटरीत्या किं साधु वर्तते–**इति हेतुः**
- ☞ आचार्य मम्मट के अनुसार काव्य का लक्षण है- **तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि**
- ☞ ''स्वभावोक्तिरसौ चारु यथावद् वस्तुवर्णनम्।'' स्वभावोक्ति अलङ्कारस्य अस्मिन् लक्षणे 'चारु' शब्दस्य तात्पर्यमस्ति– **सहृदयहृदयावर्जकं वर्णनम्**
- ☞ मम्मटकृतकाव्यलक्षणे 'अनलङ्कृती' इति पदं कस्मिन् वचने प्रयुक्तम्– **द्विवचने**
- ☞ 'शब्दार्थ काव्य है' यह उक्ति किससे सम्बद्ध है–**मम्मट से**
- ☞ काव्यप्रकाश में उल्लिखित 'अनलङ्कृती' किसका विशेषण है– **शब्दार्थ का**
- ☞ 'सगुणावनलङ्कृती' का अभिप्राय है–**'सर्वत्र सालङ्कारौ' क्वचित्तु स्फुटालङ्कारविरहेऽपि न काव्यत्वहानिः।**
- ☞ 'तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि'अत्र 'तद्' पदस्य किं तात्पर्यम्– **काव्यम्**
- ☞ कस्य काव्यलक्षणं खण्डितं विश्वनाथेन–**मम्मटस्य**
- ☞ काव्यस्य शरीरं किम्– **शब्दार्थौ**
- ☞ काव्यं नाम किम्– **कवेः कर्म**
- ☞ अत्र स्फुटो न कश्चिदलङ्कारः। .... च प्राधान्यान्नालङ्कारता–**रसस्य**
- ☞ 'यः कौमारहरः स एव हि वरः' इत्यादौ रसस्य प्राधान्यात् स्फुटः कः अलङ्कारः परिलक्षितः–**न कश्चित्**
- ☞ 'शब्दपरिवृत्ति असहिष्णुत्व' प्राप्त होता है– **शब्दालङ्कार में**
- ☞ यः कौमारहरः स एव हि– **वरः**
- ☞ 'उपकृतं बहु तत्र किमुच्यते' इत्यादौ पद्ये मम्मटेन को ध्वनिभेदः स्वीकृतः**–अत्यन्ततिरस्कृतवाच्यध्वनिः।**
- ☞ 'स्फोटाश्रित'–काव्यसिद्धान्तोऽस्ति–**ध्वनिः**
- ☞ अर्थान्तरसङ्क्रमितवाच्यध्वनिः कस्य ध्वनेः प्रभेदः– **लक्षणामूलध्वनेः**
- ☞ सशङ्खचक्रो हरिः इत्यस्मिन् उदाहरणे 'हरिशब्दस्य' वाच्यार्थः अस्ति – **विष्णुः**
- ☞ मम्मटानुसारेण उत्तमकाव्यमस्ति- **ध्वनि को**
- ☞ मम्मट के मत में ध्वनिकाव्य है–**उत्तमम्**

- 'वाच्यादतिशयिनि व्यङ्ग्ये' काव्य होता है–**उत्तमम्**
- सारोपालक्षणा कस्यालङ्कारस्य बीजम् अस्ति– **रूपकस्य**
- ''वापीं स्नातुमितो गतासि न पुनस्तस्याधमस्यान्तिकम्'' इत्यत्र कः काव्यभेदः– **व्यङ्ग्यप्राधान्ययुक्तम्**
- 'अतिशयिनि व्यङ्ग्ये' परिभाषया परिचयः भवति– **ध्वनिकाव्यस्य**
- अतादृशि गुणीभूतव्यङ्ग्ये किं काव्यम्–**मध्यमम्**
- काव्यप्रकाश का सबसे प्राचीन टीका 'संकेत' के प्रणेता हैं– **माणिक्यचन्द्र**
- काव्यप्रकाश पर विश्वनाथकृत टीका है– **दर्पणटीका**
- काव्यप्रकाश की सबसे नवीन टीका है– **बालबोधिनी**
- 'बालबोधिनी' टीका के रचनाकार हैं– **वामनाचार्य**
- काव्यप्रकाश में कारिकाओं की कुल संख्या है– **142**
- 142 कारिकाओं का विभाजन किया गया है– **212 सूत्रों में**
- 'काव्यप्रकाश' के प्रथम उल्लास का नाम है– **काव्यप्रयोजनकारण स्वरूपनिर्णय**
- 'काव्यप्रकाश' के द्वितीय उल्लास का नाम है– **शब्दार्थस्वरूपनिर्णय**
- 'काव्यप्रकाश' के तृतीय उल्लास का नाम है– **अर्थव्यञ्जकतानिर्णय**
- 'काव्यप्रकाश' के चतुर्थ उल्लास का नाम है– **ध्वनिनिर्णय**
- 'काव्यप्रकाश' के पञ्चम उल्लास का नाम है– **ध्वनिगुणीभूतव्यङ्ग्य संकीर्णभेदनिर्णय**
- 'काव्यप्रकाश' के षष्ठ उल्लास का नाम है– **शब्दार्थचित्रनिरूपण**
- 'काव्यप्रकाश' के सप्तम उल्लास का नाम है– **दोषदर्शननिरूपण**
- 'काव्यप्रकाश' के अष्टम उल्लास का नाम है– **गुणालंकारभेदनिर्णय**
- काव्यप्रकाश के नवम उल्लास का नाम है– **शब्दालंकारनिर्णय**
- 'काव्यप्रकाश' के दशम उल्लास का नाम है– **अर्थालंकारनिर्णय**
- 'काव्यप्रकाश' के मङ्गलाचरण में वर्णन किया गया है– **सरस्वती का (कविभारती का)**
- 'काव्यप्रकाश' के मङ्गलाचरण में अलंकार है– **व्यतिरेक**
- मङ्गलाचरण में ब्रह्मा की सृष्टि से उत्कृष्ट सृष्टि बतायी गयी है– **कविभारती की**
- मङ्गलाचरण में कितने प्रकार की विशेषताओं का वर्णन किया गया है?– **चार**
- मङ्गलाचरण में छन्द है– **आर्या**
- नियतिकृतनियमरहितां ह्लादैकमयीमनन्यपरतन्त्राम्।
  नवरसरुचिरां निर्मितिमादधती भारती कवेर्जयति।।
  यह काव्यप्रकाश का है– **मङ्गलाचरण**
- 'काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये' यह काव्यप्रकाश का है– **काव्यप्रयोजन**
- 'कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे' यह काव्यप्रकाश का है– **काव्यप्रयोजन**
- आचार्यमम्मट ने काव्य के प्रयोजन बताएँ हैं– **6**
- काव्य की कौन-सी शैली सबसे विलक्षण है?– **उपदेशशैली**
- 'धर्मार्थकाममोक्षेषु वैचक्षण्यं कलासु च' यह भामह का है– **काव्यप्रयोजन**
- प्रयोजन षट्क का निरूपण किया है– **मम्मट ने**
- 'तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि' यह काव्य-परिभाषा है– **मम्मट की**
- उपदेशशैली के प्रकार हैं– तीन
  1. प्रभुसम्मित 2 सुहृत्सम्मित 3. कान्तासम्मित
- प्रभुसम्मित शैली को कहा जाता है– **शब्दप्रधान**
- सुहृतसम्मित शैली को कहा जाता है– **अर्थप्रधान**
- कान्तासम्मित शैली को कहा जाता है– **रसप्रधान**
- वेदशास्त्र आदि की शैली है– **प्रभुसम्मित**
- इतिहासपुराण आदि की शैली है– **सुहृत्सम्मित**
- काव्यादि की शैली है– **कान्तासम्मित**
- 'शक्तिर्निपुणता लोकशास्त्रकाव्याद्यवेक्षणात्' यह काव्य हेतु है– **मम्मट का**
- 'इति हेतुस्तदुद्भवे' यह है– **काव्यहेतु**
- शक्ति (प्रतिभा) निपुणता और अभ्यास को काव्य के उद्भव का कारण मानते हैं– **मम्मट**
- कवित्वबीजरूप संस्कार विशेष है– **शक्ति**

साहित्यदर्पणः

प्रथमः परिच्छेदः

ग्रन्थारम्भे निर्विघ्नेन प्रारिप्सितपरिसमाप्तिकामो वाङ्मयाधिकृततया वाग्देवतायाः सांमुख्यमाधत्ते-

(वाग्देवी-वन्दना)

(साहित्यदर्पण के रचयिता कविराज विश्वनाथ) अपने ग्रन्थ (साहित्यदर्पण) की निर्विघ्नसमाप्ति की कामना से, ग्रन्थारम्भ के पहले, वाङ्मय की एकमात्र अधिकारिणी भगवती वाग्देवी की दया-दीक्षा का ध्यान कर रहे हैं-

शरदिन्दुसुन्दररुचिश्चेतसि सा मे गिरां देवी।
अपहृत्यतमः सन्ततमर्थानखिलान्प्रकाशयतु॥1॥

शरच्चन्द्र की कान्ति से भी बढ़ी-चढ़ी कान्ति वाली, वह (त्रिभुवनवन्दिता) वाग्देवी सरस्वती हमारे हृदय का अज्ञानान्धकार दूर करती रहे और उसमें समस्त (काव्यात्मक) अर्थ-तत्त्वों को अवभासित करती रहे।

(काव्य-प्रयोजन : पुरुषार्थचतुष्टय की प्राप्ति)

चतुर्वर्गफलप्राप्तिः सुखादल्पधियामपि।
काव्यादेव यतस्तेन तत्स्वरूपं निरूप्यते॥2॥

(चतुर्वर्गप्राप्तिरूप काव्य-प्रयोजन का तात्पर्य)

चतुर्वर्गफलप्राप्तिर्हि काव्यतो 'रामादिवत्प्रवर्तितव्यं न रावणादिवत्' इत्यादि कृत्याकृत्यप्रवृत्तिनिवृत्त्युपदेशद्वारेण सुप्रतीतैव।

(चतुर्वर्ग-प्राप्ति का सरल सुखद साधन काव्य ही है)

पुरुषार्थचतुष्टय-प्राप्तिरूप काव्य-प्रयोजन वस्तुतः सर्वविदित है क्योंकि यह सभी जानते हैं कि काव्य उपदेश दिया करता है-राम के जैसा आचार-व्यवहार बनाओ, रावण के जैसा आचार-व्यवहार न बनाओ।' काव्य का यह उपदेश 'कृत्य'-धर्मादिरूप कर्त्तव्य-कर्म-की ओर हमारी प्रवृत्ति और 'अकृत्य' अधर्मादिरूप अकर्त्तव्य-अकर्म-की ओर से हमारी निवृत्ति का कारण है (और इस प्रकार चतुर्वर्ग-प्राप्ति का अन्यतम उपाय है)।

उक्तं च (भामहेन)-

'धर्मार्थकाममोक्षेषु वैचक्षण्यं कलासु च।
करोति कीर्तिं प्रीतिं च साधुकाव्यनिबन्धनम्॥' इति।

तत्किं पुनः काव्यमित्युच्यते-

वाक्यं रसात्मकं काव्यम् -

रसस्वरूपं निरूपयिष्यामः। रस एवात्मा साररूपतया जीवनाधायको यस्य। तेन विना तस्य काव्यत्वाभावस्य प्रातिपादितत्वात् 'रस्यते इति रसः' इति व्युत्पत्तियोगाद्भावतदाभासादयोऽपि गृह्यन्ते।

काव्य क्या है? 'काव्य वह वाक्य है जो रसात्मक हो।'

'रस क्या है? इसका निरूपण तो आगे (तृतीय परिच्छेद में) किया ही जायगा। यहां 'रसात्मक' वाक्य का अभिप्राय बता देना उचित है। 'रसात्मक' वाक्य उस वाक्य को कहते हैं जिसका आत्मतत्त्व 'रस' हुआ करता है। अथवा जिसे जीवित-जागृत रखने वाला एकमात्र सारतम तत्त्व 'रस' है। 'रस' के बिना कोई भी वाक्य काव्य नहीं हो सकता-यह ऐसी बात है जो पहले ही बता दी जा चुकी है। यहाँ 'रस' का अभिप्राय केवल (शृङ्गारादि) रस नहीं अपि तु वह है जो आस्वादविषय हो' इस 'रस' शब्द की व्युत्पत्ति के आधार पर जो भी सहृदयों के आस्वाद के विषय हुआ करते हैं जैसे कि भाव, रसाभास और भावाभास आदि 2 वे सभी यहाँ विवक्षित और समुच्चित हैं।

(काव्य-रसात्मकवाक्य-के निदर्शन)

तत्र रसो यथा-

शून्यं वासगृहं विलोक्य शयनादुत्थाय किञ्चिच्छनै-
र्निद्राव्याजमुपागतस्य सुचिरं निर्वर्ण्य पत्युर्मुखम्।
विस्रब्धं परिचुम्ब्य जातपुलकामालोक्य गण्डस्थलीं
लज्जानम्रमुखी प्रियेण हसता बाला चिरं चुम्बिता॥

अत्र हि संभोगशृङ्गाराख्यो रसः।

जैसे कि यह (प्राचीन) सूक्ति जिसमें 'रस' ही सारतम तत्त्व है-
'नवोढा सुन्दरी ने देखा कि शयनगृह से और सभी लोग जा चुके हैं, वह अपनी सेज से कुछ-कुछ धीरे-धीरे उठी, उसने नींद का बहाना बनाये सोने वाले अपने प्रियतम का मुँह बड़े ध्यान से देखा, उसे सचमुच सोया समझ कर निश्चिन्तता के साथ, उसका मुख-चुम्बन कर लिया और जैसे ही उसके कपोलों पर आनन्द का रोमाञ्च देखती वह लज्जा से अपना मुँह झुकायें खड़ी हुई कि उसने (प्रियतम ने) हँस-हँसकर, बड़ी देर तक, उस पर चुम्बनों की बौछार शुरू कर दी।

यहाँ जो वाक्य है वह 'काव्य' है क्योंकि इसमें इसका जीवनाधायक संभोगशृङ्गाररस साक्षात् विराजमान है।

द्वितीयः परिच्छेदः

वाक्यस्वरूपमाह–

वाक्यं स्याद्योग्यताकाङ्क्षासत्तियुक्तः पदोच्चयः। योग्यता पदार्थानां परस्परसम्बन्धे बाधाभावः। पदोच्चयस्यैतदभावेऽपि वाक्यत्वे 'वह्निना सिञ्चति' इत्याद्यपि वाक्यं स्यात्। आकाङ्क्षा = प्रतीतिपर्यवसानविरहः। स च श्रोतुर्जिज्ञासारूपः। निराकाङ्क्षस्य वाक्यत्वे, 'गौरश्वः पुरुषो हस्ती' इत्यादीनामपि वाक्यत्वं स्यात्। आसत्तिर्बुद्ध्यविच्छेदः। बुद्धिविच्छेदेऽपि वाक्यत्वे इदानीमुच्चारितस्य देवदत्तशब्दस्य दिनान्तरोच्चारितेन गच्छतीति पदेन सङ्गतिः

स्यात् । अत्राऽऽकाङ्क्षायोग्यतयोरात्मार्थधर्मत्वेऽपि पदोच्चयधर्मत्वमुपचारात्।

वाक्य का लक्षण कहते हैं–

आकाङ्क्षा योग्यता और आसत्ति से युक्त पदसमूह को वाक्य कहते हैं। पदार्थों की परस्पर सम्बन्ध में बाध न होने को ''योग्यता'' कहते हैं। योग्यता के न होने पर पदसमुदाय को वाक्य मानें तो ''वह्निना सिञ्चति'' अर्थात् आग से सेचन करता है इत्यादि प्रयोग भी वाक्य होगा। सेचन क्रिया में वह्नि की करणता न होने से (योग्यता न होने से) यह वाक्य नहीं है।

ज्ञान की समाप्ति के अभाव को 'आकाङ्क्षा' कहते हैं। यह श्रोता की जिज्ञासारूप है। आकाङ्क्षा से रहित पदसमूह को वाक्य मानें तो ''गौरश्वः पुरुषो हस्ती'' ''गाय, घोड़ा, पुरुष, हाथी'' इत्यादि पदसमूह भी वाक्य हो जायेगा। आकाङ्क्षा के न रहने से यह वाक्य नहीं है। बुद्धि का विच्छेद अर्थात् व्यवधान न होने का ''आसत्ति'' कहते हैं। बुद्धिविच्छेद होने पर भी पदसमूह को वाक्य मानें तो इस समय में उच्चारण किये गये ''देवदत्तः'' शब्द का दूसरे दिनमें उच्चारण किये गये ''गच्छति'' जाता है इस पद के साथ सगति होगी, अतः बुद्धिविच्छेद के होने से यह वाक्य नहीं है। यहाँ पर आकाङ्क्षा आत्मा का धर्म है और योग्यता पदार्थ का धर्म है तथाऽपि परस्परासम्बन्ध से ये पदसमूह के भी धर्म माने गये हैं।

वाक्योच्चयो महावाक्यम्–

योग्यताकाङ्क्षासत्तियुक्त इत्येव।

इत्थं वाक्यं द्विधा मतम्।

योग्यता, आकाङ्क्षा और आसत्ति से युक्त वाक्यसमूह को ''महावाक्य'' कहते हैं। इस प्रकार वाक्य के दो भेद हैं- वाक्य और महावाक्य ।।1।।

अर्थो वाच्यश्च लक्ष्यश्च व्यङ्ग्यश्चेति त्रिधा मतः ॥2॥

वाच्य, लक्ष्य और व्यङ्ग्य इस प्रकार अर्थ के तीन भेद होते हैं।

एषां स्वरूपमाह–

वाच्योऽर्थोऽभिधया बोध्यो लक्ष्यो लक्षणया मतः।

व्यङ्ग्यो व्यञ्जनया ताः स्युस्तिस्रः शब्दस्य शक्तयः ॥3॥

अर्थों का लक्षण कहते हैं- अभिधा से वाच्य अर्थ का, लक्षणा से लक्ष्य अर्थ का और व्यञ्जना से व्यङ्ग्यअर्थ का बोध होता है, इस प्रकार शब्द की तीन शक्तियाँ (वृत्तियाँ) होती हैं। ।।3।।

तत्र संकेतितार्थस्य बोधनादग्रिमाऽभिधा

उनमें सङ्केतित (मुख्य) अर्थ का बोध करने से पहली वृत्ति को ''अभिधा'' कहते हैं।

(संकेतग्रह के उपाय) उत्तमवृद्धेन मध्यमवृद्धिमुद्दिश्य 'गामानय' इत्युक्ते तं गवानयनप्रवृत्तमुपलभ्य बालोऽस्य वाक्यस्य 'सास्नादिमात्यिडानयनमर्थः' इति प्रथमं प्रतिपद्यते, अनन्तर च 'गां बधान' अश्वमानय इत्यादावावापोद्वापाभ्यां गोशब्दस्य 'सास्ना दिमानर्थः' आनयनपदस्य च आहरणमर्थः इति संकेतमवधारयति क्वचिच्च प्रसिद्ध पदसमभिव्याहारात् यथा इह प्रभिन्नकमलोदरे मधूनि मधुकरः पिबति' इत्यत्र। क्वचिद्आप्तोपदेशात्, यथा - 'अयमश्वश ब्दवाच्यः' इत्यत्र। तं च सङ्केतितमर्थ बोधयन्ती शब्दास्य शक्त्यन्तरानन्तरिता शक्तिरभिधा नाम।

उत्तम वृद्ध के मध्यम वृद्ध को उद्देश्य करके ''गाय लाओ'' ऐसा कहने पर मध्यम वृद्ध को गाय लाने पर तत्पर अनुमान कर बालक इस वाक्य का ''सास्ना (गलकम्बल) आदि से युक्त पिण्ड को लाना अर्थ है। ऐसा पहले समझ लेता है। पीछे ''गाय को बाँधो'' ''घोडे.को लाओ'' इत्यादि वाक्य में अन्वय और व्यतिरेक से गोशब्द-का सास्ना (गलकम्बल) वाला पिण्ड अर्थ है और आनय पद का लाना अर्थ है ऐसे सङ्केत (शक्ति) को निश्चय करता है। इस प्रकार व्यवहार शक्तिग्रह का उदाहरण है।

कहीं पर प्रसिद्ध अर्थ वाले पद के समीप उच्चारण से शक्तिग्रह होता है। जैसे- ''इस विकसित कमल के बीच में बैठकर मधुकर शहद पी रहा है'' यहाँ पर प्रसिद्धार्थ पद कमल के समीपोच्चारण से मधुकर पद का भ्रम में शक्तिग्रह होता है। कहीं पर आप्त (यथार्थ वक्ता) के उपदेश से शक्तिग्रह होता है। जैसे यह 'अश्व' शब्द से कहा जाता है। यहाँ पर आप्त के उपदेश से घोड़े से अश्व शब्द का शक्तिग्रह हुआ है। उस सङ्केतित (मुख्य) अर्थ का बोध कराने वाली, शब्द का किसी दूसरी शक्ति (वृत्ति) से व्यवधान-शून्य शक्ति (वृत्ति) को ''अभिधा'' कहते हैं। जाति, गुण, द्रव्य और क्रिया में सङ्केत (शक्ति) का ग्रहण किया जाता है। ।।4।।

संकेतोगृह्यते जातौ गुणद्रव्यक्रियासु च ॥4॥

शब्द चार प्रकार के हाते हैं- जातिवाचक, गुणवाचक, द्रव्यवाचक और क्रियावाचक।

लक्षणाशक्ति-निरूपण

अथ लक्षणा–

मुख्यार्थबाधे तद्युक्तो ययान्योऽर्थः प्रतीयते ।

रूढेः प्रयोजनाद्वाऽसौ लक्षणा शक्तिरर्पिता ॥5॥

अब लक्षणा का निरूपण करते हैं–

अभिधा शक्ति से निरूपित मुख्य अर्थ का बोध (प्राचीनों के मत में अन्वय की) अनुपपत्ति, नवीनों के मत में तात्पर्य की अनुपपत्ति होने पर रूढि (प्रसिद्धि) वा प्रयोजन का उद्देश्य जिस (वृत्ति) से

अन्य अर्थ की प्रतीति होती है उसे ''लक्षणा'' कहते हैं। यह शक्ति अर्पित अर्थात् स्वाभाविक से भिन्न है या ईश्वर से उद्भावित नहीं है। ।।5।।

'कलिङ्गः साहसिकः' इत्यादौ कलिङ्गादिशब्दो देशविशेषादिरूपे स्वार्थेऽसंभवन् यया शब्दशक्त्वा स्वसंयुक्तान् पुरुषादीन् प्रत्याययति, यया च 'गङ्गायां घोषः' इत्यादौ गङ्गादिशब्दो जलमयादिरूपार्थ-वाचकत्वात्प्रकृतेऽसंभवन् स्वस्य सामीप्यादि-सम्बन्धसम्बन्धिनं तटादिं बोधयति, सा शब्दस्यार्पिता स्वाभाविकेतरा ईश्वरानुद्भाविता वा शक्तिर्लक्षणा नाम। पूर्वत्र हेतू रूढिः प्रसिद्धिरेव। उत्तरत्र 'गङ्गातटे घोषः' इति प्रतिपादनालभ्यस्य शीतत्वपावनत्वातिशयस्य बोधनरूपं प्रयोजनम्। हेतुं विनापि यस्य कस्यचित्सम्बन्धिनो लक्षणेऽतिप्रसङ्गः स्यात्, इत्युक्तम्– 'रूढेः प्रयोजनाद्वाऽसौ' इति।

''कलिङ्गः साहसिकः'' अर्थात् ''कलिङ्गदेश साहसी है'' इत्यादि वाक्य में कलिङ्ग आदि शब्द देशविशेष आदि रूप स्वार्थ (मुख्य अर्थ) में अनुपपन्न होकर जिस शब्द शक्ति से स्व = मुख्य अर्थ देशविशेष, उसके साथ संयुक्त = संयोगसम्बन्ध से वर्तमान पुरुष आदियों की प्रतीति करता है। (रूढ़ि लक्षणा में)।

उसी तरह ''गङ्गायां घोषः'' अर्थात् ''गङ्गापर आभीरों का ग्राम है'' इत्यादि वाक्य में गङ्गाआदि शब्द जलमयादि (प्रवाह रूप अर्थ का वाचक होने से प्रकृत (प्रस्तुत) गङ्गा शब्द में, अन्वय में अनुपपन्न होकर जिस शब्दशक्ति से गङ्गा शब्द के सामीप्य आदि सम्बन्ध से सम्बद्ध तट आदि का बोध कराती है, वह शब्द की अर्पिता = अर्थात् स्वाभाविक से भिन्न अथवा ईश्वर से अनुद्भावित शक्ति को ''लक्षणा'' कहते हैं।

पहले ''कलिङ्गः साहसिकः'' इस वाक्य में हेतु रूढि अर्थात् प्रसिद्धि ही है। दूसरे ''गङ्गायां घोषः'' इस वाक्य में ''गङ्गातट में घोष है'' ऐसे प्रतिपादन से अलभ्य शीतलत्व और पावनत्व के आधिक्य का बोध करना प्रयोजन है। हेतु के बिना जिस किसी भी सम्बन्धी = मुख्य अर्थ के सम्बन्ध से युक्त की लक्षणा करेंगे तो अतिप्रसङ्ग (अव्याप्ति) होगा इसलिए कहा है– ''रूढेः प्रयोजनाद्वाऽसौ'' कुछ लोग (काव्यप्रकाशकार) ''कर्मणि कुशलः'' इसको रूढिमती लक्षणा का उदाहरण बताते हैं। उनका यह अभिप्राय है, ''कुशान् लाति'' अर्थात् कुशों को लाता है, इसमें कुशल पदका व्युत्पत्ति लभ्य कुशग्राहकत्व रूप मुख्य अर्थ यहाँ पर अनुपपन्न होता हुआ विवेचकत्व (दूर्वा तृण आदि का परिहारकत्वरूप) आदि साधर्म्य सम्बन्ध से सम्बद्ध दक्ष (निपुण) रूप अर्थ का बोधन करता है। उनसे भिन्न और लोग इस बात को नहीं मानते हैं। व्युत्पत्ति के कुशल पद का कुशग्राहक रूप अर्थ की प्राप्ति होने पर भी इस का दक्षरूप ही मुख्य अर्थ है। क्योंकि शब्दों की व्युत्पत्ति का निमित्त और प्रवृत्ति भिन्न-भिन्न होता है। व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ को मुख्य अर्थ मानेंगे तो निमित्त और प्रवृत्ति निमित्त भिन्न-भिन्न होता है। व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ को मुख्य अर्थ मानेंगे तो ''गौः शेते'' गाय सोती है यहाँ भी लक्षणा होगी, क्योंकि ''गमेर्डोः'' गाय सोती है यहाँ भी लक्षणा होगी, क्योंकि ''गामेर्डोः'' इस सूत्र से गम्धातु डो प्रत्यय से निष्पन्न गो शब्द का शयन काल में प्रयोग होने से लक्षणा करनी पड़ेगी।

तद्भेदानाह–

मुख्यार्थस्येतराक्षेपो वाक्यार्थेऽन्वयसिद्धये ।
स्यादात्मनोऽप्युपादानादेषोपादानलक्षणा ।।6।।

लक्षणा के भेद बतलाते हैं– वाक्यार्थ में मुख्य अर्थ के अन्वय की सिद्धि के लिए जहाँ अन्य अर्थ का आक्षेप होता है वहाँ पर मुख्य अर्थ का भी ग्रहण होने से उसे ''उपादान-लक्षणा'' कहते हैं। ।।6।।

रूढावुपादानलक्षणा यथा- 'श्वेतो धावति'। प्रयोजने यथा- 'कुन्ताः प्रविशन्ति'। अनयोर्हि श्वेतादिभिः कुन्तादिभिश्चाचेतनतया केवलैर्धावन-प्रवेशनक्रिययोः कर्तृतयान्वयमलभमानैरेतत्सिद्धये आत्मसम्बन्धिनोऽश्वादयः पुरुषादयश्चाक्षिप्यन्ते। पूर्वत्र प्रयोजनाभावाद्रूढिः, उत्तरत्र तु कुन्तादीनामतिगहनत्वं प्रयोजनम्। अत्र च मुख्यार्थस्यात्मनोऽप्युपादानम्। लक्षणलक्षणायां तु परस्यैवोपलक्षणमित्यनयोर्भेदः। इयमेवाजहत्स्वार्थेत्युच्यते।

रूढि में उपादानलक्षण जैसे- ''श्वेतो धावति'' (सफेद दौड़ रहा है)। प्रयोजन में उपादान लक्षणा जैसे- कुन्ताः प्रविशन्ति (भाले प्रवेश कर रहे हैं।) इन दो उदाहरणों में ''श्वेतो धावति'' यहाँ पर श्वेत आदि और ''कुन्ताः प्रविशन्ति'' यहाँ पर केवल कुन्त आदि अचेतन (जड़) होने से धावन और प्रवेशन क्रिया में कर्ता होकर अन्वित नहीं हो सकते हैं अतः अन्वय की सिद्ध के लिए श्वेत वर्णवाले अश्व आदि का कुन्तक के धारण करनेवाले पुरुष आदि का आक्षेप करते हैं। ''श्वेतो धावति'' यहाँ पर प्रयोजन न होने से रूढिमती लक्षणा। ''कुन्ताः प्रविशन्ति'' यहाँ पर कुन्तों की अतिगहनता प्रयोजन है। उपादान लक्षणा में मुख्यार्थ का भी ग्रहण होता है। लक्षणलक्षणा में तो लक्ष्य अर्थ का ही उपलक्षण होता है यह इन दोनों का भेद है। इसे ही अजहत् स्वार्था' कहते हैं। ।।6।।

लक्षण-लक्षणा

अर्पणं स्वस्य वाक्यार्थे परस्यान्वयसिद्धये।

उपलक्षणहेतुत्वादेषा लक्षणलक्षणा ॥7॥

लक्षणलक्षणा का लक्षण करते हैं- वाक्यार्थ में पर = मुख्य अर्थ से भिन्न अर्थ की अन्वयसिद्धि के लिए जहाँ मुख्य अर्थ का समर्पण होता है वहाँ लक्षणलक्षणा होती है। यह उपलक्षण (अमुख्य अर्थमात्रके बोधन) का कारण होती है। ।।7।।

रूढिप्रयोजनयोर्लक्षणलक्षणा यथा- 'कलिङ्गः साहसिकः' 'गङ्गायां घोषः' इति च। अनयोर्हि पुरुषतटयोर्वाक्यार्थेऽन्वयसिद्धये कलिङ्गगङ्गाशब्दा-वात्मानमर्पयतः।

यथा वा–

'उपकृतं बहु तत्र किमुच्यते, सुजनता प्रथिता भवता परम्।'
विदधदीदृशमेव सदा सखे! सुखितमास्स्व ततः शरदां शतम्॥'

अत्रापकारादीनां वाक्यार्थेऽन्वयसिद्धये उपकृतादयः शब्दा आत्मानमर्पयन्ति। अपकारिणं प्रत्युपकारादिप्रतिपादनान्मुख्यार्थबाधो वैपरीत्यलक्षणः सम्बन्धः, फलमप्यपकारातिशयः। इतमेव जहत्स्वार्थेत्युच्यते।

रूढ़ि लक्षणलक्षणा- ''कलिङ्गः साहसिकः''। प्रयोजन में लक्षणलक्षणा जैसे- ''गङ्गायां घोषः''। इन दोनों में क्रम से वाक्यार्थ में पुरुष और तट के अन्वय की सिद्धि के लिए ''कलिङ्ग'' और गङ्गा शब्द अपने मुख्यार्थ का समर्पण करते हैं।

अथवा- उपकृतम्. अपकारी को कोई कहता है- ''हे मित्र! आपने बहुत उपकार किया है, क्या कहना है आपने अत्यन्त सौजन्य का विस्तार किया है। आप ऐसे ही कर्म को करते हुए सौ साल तक सुखपूर्वक जीते रहें।'' इस वाक्यार्थ में अपकार आदियों के अन्वय की सिद्धि के लिए अपकृत आदि शब्द अपने स्वरूप का समर्पण करते हैं। अपकारी के प्रति उपकार आदि का प्रतिपादन करने से मुख्याऽर्थ का बाध (अन्वयाऽनुपपत्ति) है। वैपरीत्यरूप सम्बन्ध है। अपकार का आधिक्य फल (प्रयोजन) है। इसे ही जहत्स्वार्था (जहल्लक्षणा) कहते हैं। ।।7।।

विरतास्वभिधाद्यासु ययाऽर्थो बोध्यतेपरः ॥12॥
सा वृत्तिर्व्यञ्जना नाम शब्दस्यार्थादिकस्य च ।

अभिधा आदि वृत्तियों के विरत होने पर जिस वृत्ति से अन्य अर्थ का बोधन होता है। वह शब्द में तथा अर्थ आदि में रहने वाली वृत्ति ''व्यञ्जना'' कहलाती है।।12।।

अभिधालक्षणामूला शब्दस्य व्यञ्जना द्विधा। ॥13॥

अभिधामूलामाह–

अनेकार्थस्य शब्दस्य संयोगाद्यैर्नियन्त्रिते।

एकत्रार्थेऽन्यधीहेतुर्व्यञ्जना साऽभिधाश्रया ॥14॥

अभिधामूला व्यञ्जना का लक्षण कहते हैं–

संयोग आदियों से अनेकाऽर्थ शब्द के एक अर्थ के नियन्त्रित होने पर जिस से दूसरा अर्थ उपस्थित होता है उसे ''अभिधामूला'' व्यञ्जना कहते हैं। ।14।।

संयोगो विप्रयोगश्च साहचर्यं विरोधिता।

अर्थः प्रकरणं लिङ्गं शब्दस्यान्यस्य सन्निधिः॥

सामर्थ्यमौचिती देशः कालो व्यक्तिः स्वरादयः।

शब्दार्थस्यानवच्छेदे विशेषस्मृतिहेतवः॥ इति।

अनुवाद- यहां 'संयोगाद्यैः' इत्यादि कथन से अभिधानियामक तत्त्वों में 'संयोग' के अतिरिक्त जिन अन्यान्य तत्त्वों का समावेश अपेक्षित है उनमें 'विप्रयोग' आदि-आदि समझे जाने चाहिये। वस्तुतः इस प्रगङ्ग में (आचार्य भर्तृहरि की) यह सूक्ति स्मरणीय है- 'ऐसे प्रसङ्गों में, जहां किसी (अहनेकार्थक) शब्द के अर्थ का परिच्छेद अथवा निर्णय न हो रहा हो, जिन कारणों से किसी अर्थ-विशेष का ज्ञान संभव है वे हैं-संयोग, विप्रयोग, साहचर्य, विरोधिता, अर्थ, प्रकरण, लिङ्ग, शब्दान्तरसान्निध्य, सामर्थ्य, औचित्य, देश, काल, व्यक्ति और स्वर आदि।'

उपर्युक्त अर्थ विशेष-स्मारक तत्त्वों के उदाहरण-

(1) संयोग- जैसे कि, **'सशङ्खचक्रो हरिः'**। यहां (अनेकार्थक) 'हरि' शब्द इसलिये केवल भगवान् विष्णु का ही अर्थ दे सकता है क्योंकि शङ्ख और चक्र का सम्बन्ध इसी अर्थ में उपपन्न है (न कि अन्य अर्थों जैसे कि यम, अनिल, इन्द्र, चन्द्र, सूर्य, सिंह, भेक आदि आदि में)।

(2) विप्रयोग- जैसे कि **'अशङ्खचक्रो हरिः'**। यहाँ शङ्ख और चक्र के विश्लेप के कारण 'हरि' शब्द एकमात्र विष्णुवाचक ही बन रहा है (क्योंकि जैसे शङ्ख और चक्र विष्णु से ही संभव है न कि यमादि से)।

(3) साहचर्य- जैसे कि **'भीमार्जुनौ'**। यहाँ अर्जुन पद अनेकार्थक है (क्योंकि 'अर्जुन' के अर्थ पृथापुत्र पाण्डवप्रवीर किंवा एक वृक्षविशेष-दोनों हैं)। किन्तु 'साहचर्य' के कारण अर्थात् 'भीम' पद के भीमसेनरूप और 'अर्जुन' पद के पाण्डवप्रवीर भीमानुज अर्जुनरूप अर्थों में ही सहचरभाव की संगति के कारण 'अर्जुन' पद का अर्थ एकमात्र पृथापुत्र अर्जुन ही हो सकता है (न कि वृक्षविशेष)।

(4) विरोधिता- जैसे कि **'कर्णार्जुनौ'**। यहाँ 'विरोधिता' अर्थात् पारस्परिक वैरविरोध के भाव के कारण 'कर्ण' पद का अर्थ केवल सूतपुत्र कर्ण ही हो सकता है (न कि कान आदि आदि)।
(5) अर्थ- जैसे कि **'स्थाणुं वन्दे'**। यहां 'अर्थ' अर्थात् वन्दना के अर्थ अथवा प्रयोजन की दृष्टि से 'स्थाणु', पद का अभिप्राय एक मात्र भगवान् शिव हो सकता है (न कि और कुछ जैसे कि ढूंढ आदि)।
(6) प्रकरण- जैसे कि **'सर्वं जानाति देवः'**। यहाँ 'देव' पद, जो कि अनेकार्थक है, प्रकरण के कारण एक मात्र 'आप' इस अर्थ का ही उपस्थापक हो रहा है (न कि देवता आदि आदि का)।
(7) लिङ्ग- जैसे कि **'कुपितो मकरध्वजः'**। यहाँ लिङ्ग अर्थात् मीनध्वजरूप धर्मविशेष के कारण 'मकरध्वजशब्द' का अर्थ एकमात्र 'कामदेव' ही हो सकता है (न कि 'समुद्र' आदि) क्योंकि समुद्ररूप अर्थ में यह धर्मविशेष साक्षात् संगत नहीं।
(8) शब्दान्तरसान्निध्य- जैसे कि **'देवः पुरारिः'**। यहाँ 'अन्यशब्दसन्निधि' के कारण अर्थात् 'देव' शब्द के समीप्य से 'पुरारिः' पद केवल शिव का ही वाचक हो सकता है (न कि किसी शत्रुनगरसंहारक अन्य राजवीर आदि का)।
(9) सामर्थ्य- जैसे कि **'मधुना मत्तः पिकः'**। यहाँ सामर्थ्य के कारण अर्थात् कोकिल को उन्मत्त बनाने के सामर्थ्य के कारण 'मधु' पद का एकमात्र अर्थ वसन्त ऋतु ही हो सकता है (न कि और कुछ जैसे कि दैत्यविशेष, मधु आदि।)
(10) औचिती- अथवा औचित्य, जैसे कि **'पातु वो दयितामुखम्'**। यहाँ औचित्य के कारण कामार्त्त प्रेमी के परित्राण की योग्यता की दृष्टि से 'मुखम्' पद का अर्थ एक मात्र 'साम्मुख्य' अथवा अनुकूलता ही निकल सकता है (न कि मुंह जिसमें प्रेमी के परित्राण की कोई योग्यता नहीं)।
(11) देश- जैसे कि **'विभाति गगने चन्द्रः'**। यहाँ 'देश' के कारण अर्थात् आकाशरूप देश अथवा स्थान के विवक्षित होने की दृष्टि से 'चन्द्र' पद (जो कि कर्पूर आदि अर्थो का भी वाचक है) एक मात्र 'चन्द्रमा' का अर्थ रख सकता है।
(12) काल- जैसे कि **'निशि चित्रभानुः'** पद (जो कि अग्नि और सूर्य दोनों अर्थो का वाचक है) केवल 'अग्नि' का ही अर्थ रख सकता है।
(13) व्यक्ति- जैसे कि **'भाति रथाङ्गम्'**। यहाँ 'रथाङ्ग' पद (जो कि चक्र और चक्रवाक दोनों अर्थो जा वाचक है) व्यक्ति अर्थात् नपुंसकलिङ्ग के कारण एकमात्र रथ के चक्र (पहिये) का ही अर्थ दे सकता है।
(14) स्वर- 'स्वर' के द्वारा अनेकार्थक पद के अर्थ का निर्णय केवल वेद में ही संभव है न कि काव्य-साहित्य में। स्वर की अर्थ-नियामकता का उदाहरण इसीलिये यहाँ नहीं दिया जा रहा है।

लक्षणामूलामाह—

लक्षणोपास्यते यस्य कृते तत्तु प्रयोजनम् ।
यया प्रत्याय्यते सा स्याद्व्यञ्जना लक्षणाश्रया ॥15॥

अब लक्षणामूला व्यञ्जना को कहते हैं। **लक्षणोपास्यते इति।** लक्षणा जिसके लिए की जाती है वह प्रयोजन जिस वृत्ति से प्रतीत होता है उसे लक्षणामूला व्यञ्जना कहते हैं। ।।15।।

'गङ्गायां घोषः' इत्यादौ जलमयाद्यर्थबोधनादभिधायां तटाद्यर्थबोधनाच्च लक्षणायां विरतायां यथा शीतत्वपावनत्वाद्यातिशयादिर्बोध्यते सा लक्षणामूला व्यञ्जना।

एवं शाब्दीं व्यञ्जनामुक्त्वाऽऽर्थीमाह—

वक्तृबोद्धव्यवाक्यानामन्यसन्निधिवाच्ययोः ।
प्रस्तावदेशकालानां काकोश्चेष्टादिकस्य च ॥16॥
वैशिष्ट्यदन्यमर्थं या बोधयेत्साऽर्थसम्भवा ।

''गङ्गायां घोषः'' इत्यादि स्थल में जलमय आदि अर्थ का बोधन कर अभिधाके निवृत्त होने पर और तट आदि अर्थ का बोधन कर लक्षणा के निवृत्त होने पर जिस वृत्ति से शीतलत्व और पावनत्व आदि के आधिक्य आदि का बोध होता है उसे ''लक्षणामूला'' व्यञ्जना कहते हैं। इस प्रकार शाब्दी व्यञ्जना का प्रतिपादन कर आर्थी व्यञ्जना कहते हैं— **वक्तृबोद्धव्यति।** वक्ता, बोद्धव्य, वाक्य, अन्य का सामीप्य, वाच्य (अर्थ) प्रस्ताव (प्रकरण) देश, काल, काकु (ध्वनिविकार), और चेष्टा आदि इनकी विशेषता से जो शक्ति अन्य अर्थ का बोधन करती है उसे ''आर्थी व्यञ्जना'' कहते हैं। ।।16।।

तृतीयः परिच्छेदः

अथ कोऽयं रस इत्युच्यते—

विभावेनानुभावेन व्यक्तः सञ्चारिणा तथा ।
रसतामेति रत्यादिः स्थायी भावः सचेतसाम् ॥1।

अब रस क्या है? ऐसा प्रश्न कर उसका निरूपण करते हैं। **विभावेन।** विभाव (आलम्बन और उद्दीपन) अनुभाव ओर सञ्चारीभाव से व्यञ्जना वृत्ति से अभिव्यक्त सहृदयों के हृदय में विद्यमान रति आदि स्थायी भाव रस के स्वरूप में परिणत होता है।।।1।।

अस्य स्वरूपकथनगर्भ आस्वादनप्रकारः कथ्यते—

सत्त्वोद्रेकादखण्डस्वप्रकाशानन्दचिन्मयः।
वेद्यान्तरस्पर्शशून्यो ब्रह्मास्वादसहोदरः ॥2॥
लोकोत्तरचमत्कारप्राणः कैश्चित् प्रमातृभिः।

स्वाकारवदभिन्नत्वेनायमास्वाद्यते रसः ॥3॥

रस के स्वरूप का कथन और आस्वादन के प्रकार कहते हैं। **सत्त्वोद्रेकात् इति** सत्त्व गुण के आधिक्य से अखण्ड, स्वतः प्रकाशवाला, आनन्दमय, चिन्मय (ज्ञानस्वरूप) दूसरे वेद्य पदार्थ के सम्पर्क से रहित, ब्रह्मसाक्षात्कारके सदृश अलौकिक चमत्कारस्वरूप प्राणवाला रस कुछ विद्वानों से अपने आकार के समान अभिन्नरूप से आस्वादन किया जाता है

चतुर्थः परिच्छेदः

रस भेद स्थायी भाव

अथ काव्यभेदमाह-

काव्यं ध्वनिर्गुणीभूतव्यङ्ग्य चेति द्विधा मतम्।

तत्र -

वाच्यातिशयिनि व्यङ्ग्य ध्वनिस्तत्काव्यमुत्तमम् ॥1॥

वाच्यादधिकचमत्कारिणि व्यङ्ग्यार्थे ध्वन्यतेदस्मिन्निति व्युत्प्रत्त्या ध्वनिर्नामोत्तमं काव्यम्।

अनुवाद- अब काव्य के भेदों का निरूपण किया जा रहा है- 'काव्य' (रसात्मक वाक्य) के दो प्रमुख भेद हैं- (1) ध्वनि और (2) गुणीभूतव्यङ्ग्य।

अनुवाद- इन दोनों काव्य-भेदों में-'ध्वनि' संज्ञक काव्य, जिसे सर्वोत्तम काव्य-प्रकार कहा गया है, वह है जिसमें वाच्यार्थ की अपेक्षा,'व्यङ्ग्य' रूप अर्थ अधिक सुन्दर (अतिशय चमत्कारजनक) हुआ करता है।

(ध्वनिकाव्य के 2 भेद : 1 अविवक्षितवाच्य और 2 विवक्षितान्यपरवाच्य)

भेदौ ध्वनेरपि द्वावुदीरितौ लक्षणाभिधामूलौ।
अविवक्षितवाच्योऽन्यो विवक्षितान्यपरवाच्यश्च ॥2॥

तत्राविवाक्षितवाच्यो नाम लक्षणामूलो ध्वनिः। लक्षणामूलत्वादेवात्र वाच्यमविवक्षितं बाधितस्वरूपम्।

विवक्षितान्यपरवाच्यस्त्वभिधामूलः, अत एवात्र वाच्यं विवक्षितम्। अन्यपरं व्यङ्ग्यनिष्ठम्। अत्र हि वाच्योऽर्थः स्वरूपं प्रकाशयन्नेव व्यङ्ग्यार्थस्य प्रकाशकः।

अनुवाद- 'ध्वनि' काव्य के भी दो भेद बताए गए हैं- (1) लक्षणामूलक ध्वनिकाव्य और (2) अभिधामूलक ध्वनिकाव्य। इन दोनों भेदों में लक्षणामूलक ध्वनिकाव्य को तो 'अविवक्षितवाच्यध्वनि' काव्य कहा गया है और अभिधामूलक ध्वनि-काव्य का नाम 'विवक्षितान्यपरवाच्यध्वनि' काव्य है।

(अविवक्षितवाच्यध्वनि के दो भेदः1-'अर्थान्तरसंक्रमिवाच्य' ध्वनि)

अविवक्षितवाच्यस्य भेदावाह-

अर्थान्तरं संक्रमिते वाच्येऽत्यन्तं तिरस्कृते।
अविवक्षितवाच्योऽपि ध्वनिर्द्वैविध्यमृच्छति॥3॥

'अविवक्षितवाच्यध्वनि' काव्य भी दो प्रकार का हुआ करता है- (1) वह, जिसमें वाच्यार्थ अपने से भिन्न अर्थ में संक्रमित हो जाने के कारण 'अविवक्षित' (अपने स्वरूप में अनुपयुक्त) लगा करता है और (2), वह जिसमें वाच्यार्थ अत्यन्त तिरस्कृत रहने के कारण 'अविवक्षित' (सर्वथा अनन्वित) हो जाया करता है।

अविवक्षितवाच्यो नाम ध्वनिरर्थान्तरसङ्क्रमितवाच्यो-ऽत्यन्ततिरस्कृतवाच्यश्चेति द्विविधः।

तात्पर्य यह है कि 'अविवक्षितवाच्य' नामक ध्वनि-काव्य के दो भेद हुआ करते हैं-

(1) 'अर्थान्तरसंक्रमितवाच्यध्वनि' काव्य और (2) 'अत्यन्त तिरस्कृतवाच्यध्वनि' काव्य।

यत्र स्वयमनुपयुज्यमानो मुख्योऽर्थः स्वविशेषरूपेऽर्थान्तरे परिणमति, तत्र मुख्यार्थस्य स्वविशेषरूपार्थान्तरसंक्रमितत्वाद-र्थान्तरसङ्क्रमितवाच्यत्वम्।

'ध्वनि' काव्य के 'अर्थान्तरसंक्रमितवाच्य' होने का अभिप्राय है यहाँ ऐसे व्यंग्यार्थ के अवस्थान का, जिसका उपकरणभूत (व्यञ्जक) अर्थ एक ऐसा वाच्यार्थ हुआ करता है जो (प्रकरण की दृष्टि से) अपने सामान्य स्वरूप में अनुपयुक्त हो जाया करता है और फिर (अपनी अनुपपत्ति के निराकरण के लिये) अपने से भिन्न एक ऐसे अर्थ में परिणत हो जाया करता है जो कि उसी का एक विशेष रूप अंश हुआ करता है। तात्पर्य यह है कि ध्वनि-काव्य की 'अर्थान्तरसंक्रमितवाच्यता' यहाँ के (व्यञ्जक रूप से विराजमान) मुख्यार्थ की, अपने से भिन्न किन्तु अपने ही स्वरूप-विशेषभूत अर्थ (लक्ष्यार्थ) में संक्रान्ति अथवा परिणति है।

यथा-

'कदली कदली, करभः करभः, करिराजकरः करिराजकरः।
भुवनत्रितयेऽपि बिभर्ति तुलामिदमूरुयुगं न चमूरुदृशः॥'

उदाहरण के लिये यह सूक्ति-

'कदली-कदली है, करभ-करभ ही है और शुण्डादण्ड (हाथी की सूँड़) भी शुण्डादण्ड ही हैं। इस त्रिभुवन में कोई भी वस्तु ऐसी नहीं जो इस मृगनयनी सुन्दरी के उरुयुगल की समानता रख सके।'

अत्र द्वितीयकदल्यादिशब्दाः पौनरुक्त्यभिया सामान्यकदल्यादिरूपे मुख्यार्थे बाधिता जाड्यादिगुण-विशिष्टकदल्यादिरूपमर्थं बोधयन्ति। जाड्याद्यातिशयश्च व्यङ्ग्यः।

यह सूक्ति 'अर्थान्तरसंक्रमितवाच्यध्वनि' काव्य है क्योंकि यहाँ दूसरी बाद प्रयुक्त 'कदली' आदि शब्द ऐसे हैं जो 'पुनरुक्त' नहीं- क्योंकि 'पुनरुक्ति' तो एक भयंकर पद दोष है- अपितु अपने 'कदली' आदि रूप सामान्य भूत मुख्यार्थ में अनुपपन्न हैं और इसीलिये अपने से भिन्न किन्तु अपने ही विशेषस्वरूपभूत

जाड्यादिविशिष्ट 'कदली' आदि रूप (लक्ष्य) अर्थों का ही अवबोधन करा रहे हैं (अर्थात् अपने सामान्य अर्थ स्वरूप में अनुपयुक्त और अपने से भिन्न किन्तु अपने ही विशेष रूप अर्थ के उपलक्षक बने हुए दीख रहे हैं)। यहाँ जो व्यंग्य रूप से अवस्थित और अनुभूत अर्थ है वह है ऊरुद्वन्द्व के उपमान माने गये 'कदली' आदि पदार्थों की जड़ता आदि का अत्याधिक्य।

अष्टमः परिच्छेदः

गुणानाह–

रसस्याङ्गित्वमाप्तस्य धर्माः शौर्यादयो यथा। गुणाः–

गुणों का निरूपण करते हैं– **रसस्येति।** अङ्गित्व (शरीरित्व वा प्रधानत्व) को प्राप्त आत्मा के जैसे शौर्य आदि धर्म होते हैं वैसे ही अङ्गित्व (प्रधानत्व) को प्राप्त रस के धर्मों को गुण कहते हैं।

माधुर्यमोजोऽथ प्रसाद इति ते त्रिधा ॥1॥

ते गुणाः।

माधुर्य, ओज और प्रसाद इस प्रकार वे गुण तीन प्रकार के होते हैं।

चित्तद्रवीभावमयो ह्लादो माधुर्यमुच्यते।

माधुर्यमिति।

चित्त आर्द्रतास्वरूप सुखविशेष को ''माधुर्य'' कहते हैं।

संभोगे करुणे विप्रलम्भे शान्तेऽधिकं क्रमात्।

संभोग इति। संभोग, करुण, विप्रलम्भ शृङ्गार और शान्तरस इनमें क्रम से माधुर्य अधिक होता है। ।।2।।

ओजश्चित्तस्य विस्ताररूपं दीप्तत्वमुच्यते ॥4॥

वीरबीभत्सरौद्रेषु क्रमेणाधिक्यमस्य तु।

ओजगुण का लक्षण करते हैं–**ओज इति।** चित्त के विस्ताररूप दीप्ततत्त्व को ''ओज'' कहते हैं।।4।। वीर, बीभत्स और रौद्ररस में इसका क्रम से आधिक्य होता है।

चित्तं व्याप्नोति यः क्षिप्रं शुष्केन्धनमिवानलः ॥7॥

स प्रसादः समस्तेषु रसेषु रचनासु च।

प्रसाद गुण का लक्षण करते हैं- **चित्तमिति।** जैसे सूखी लकड़ी को अग्नि व्याप्त करता है उसी तरह जो शीघ्र चित्त को व्याप्त करता है। वह ''प्रसाद'' गुण है, वह समस्त रसों में और रचनाओं में होता है। प्रसाद गुण के व्यञ्जक शब्द श्रवणमात्र से अर्थ का बोधन करते हैं। ।।8।।

नवमः परिच्छेदः

पदसंघटना रीतिरङ्गसंस्थाविशेषवत्।

पदसंघटनेति। शरीर में जैसे कर, चरण आदि अवयवों का विन्यास होता है उसी तरह काव्य शरीर में रस आदि का उपकार करनेवाली सुबन्त, तिङन्त आदि पदों की संयोजना को ''रीति'' कहते हैं।

उपकर्त्री रसादीनां–

रसादीनामर्थाच्छब्दार्थशरीरस्य काव्यस्यात्मभूतानाम्।

-सा पुनः स्याच्चतुर्विधा ॥1॥

रसादीनामिति। रस आदि अर्थात् शब्दाऽर्थशरीरवाले काव्य के आत्मभूत रस भाव आदियों की उपकार करने वाली को ''रीति'' कहते हैं, यह भाव है।

सेति। वह रीति चार प्रकार की होती है। ।।1।।

वैदर्भी चाथ गौडी च पाञ्चाली लाटिका तथा।

सा = रीतिः।

वैदर्भी, गौडी, पाञ्चाली और लाटी (लाटिका)।

तत्र-

माधुर्यव्यञ्जकैर्वर्णैः रचना ललितात्मिका ॥2॥

अवृत्तिरल्पवृत्तिर्वा वैदर्भी रीतिरिष्यते।

उनमें **माधुर्येति।** माधुर्य गुण के व्यञ्जक वर्णों से आवृत्ति (समासरहित) वा अल्पवृत्ति (छोटे समासों)-से युक्त सुकुमारस्वरूप रचना को ''वैदर्भी'' रीति कहते हैं ।।3।।

अत्र दशगुणास्तन्मतोक्ताः श्लेषादयः।

ओजः प्रकाशकैर्वर्णैर्बन्ध आडम्बरः पुनः ॥3॥

समासबहुला गौडी–

यहाँ दश गुण कहने से उनके मत में कहे गये श्लेष आदि को **जानना चाहिये।** ओज गुण को प्रकाशित करनेवाले अक्षरों से उद्धत वर्णघटित रचना और प्रचुर समासों से युक्त रीति को ''गौडी'' कहते हैं।

-वर्णैः शेषैः पुनर्द्वयोः।

समस्तपञ्चषपदो बन्धः पाञ्चालिका मता ॥4॥

पाञ्चालिका का लक्षण कहते हैं- **वर्णैरिति।** वैदर्भी और गौडी रीतियों के अवशिष्ट वर्णों से उपलक्षित, पांच वा छः पदों के समास से युक्त रीति ''पाञ्चाली'' मानी गई है। ।।4।।

लाटी तु रीतिर्वैदर्भीपाञ्चाल्योरन्तर स्थिता।

लाटी का लक्षण- वैदर्भी और पाञ्चाली के बीच में रहने वाली दोनों के कुछ लक्षणों से युक्त रीति को ''लाटी'' कहते हैं।

दशमः परिच्छेदः

अथावसरप्राप्तानलङ्कारानाह–

शब्दार्थयोरस्थिरा ये धर्माः शोभातिशायिनः ।

रसादीनुपकुर्वन्तोऽलङ्कारास्तेऽङ्गदादिवत् ॥1॥

अब प्रसङ्ग से प्राप्त अलङ्कारों का लक्षण करते हैं–

रस आदियों का उपकार करते हुए शब्द और अर्थ की शोभा को बढ़ाने वाले अस्थिर जो धर्म हैं वे शरीर में अङ्गद (बाजूबन्द) के समान अलङ्कार कहलाते हैं। ।।1।।

अनुप्रासः शब्दसाम्यं वैषम्येऽपि स्वरस्य यत्।

अनुप्रास इति। स्वर की विषमता अर्थात् असमता होने पर भी व्यञ्जन की सरूपता होने को ''अनुप्रास'' कहते हैं।

छेको व्यञ्जनसङ्घस्य सकृत्साम्यमनेकधा ॥3।

छेक इति। व्यञ्जन समूह का एक बार अनेक प्रकार से समानता होने को ''छेकाऽनुप्रास'' कहते हैं। ।।3।।

उदाहरणं मम तातपादानाम्–

'आदाय बकुलगन्धानन्धीकुर्वन् पदे पदे भ्रमरान् ।
अयमेति मन्दमन्दं कावेरीवारिपावनः पवनः।।'

आदायेति। मौलसिरी के सुगन्ध लेकर पग पर भौंरों को मद से अन्धा करता हुआ, कावेरी नदी के जल से युक्त होने से पवित्र करने वाला, यह पवन (वायु) धीरे धीरे बह रहा है।

अत्रेति। ''गन्धानन्धी'' यहाँ पर संयुक्त ''न'' और ''ध'' की, ''कावेरीवारि'' यहाँ पर असंयुक्त ''व'' और ''र'' की ''पवनः पवनः'' यहाँ पर बहुत-से व्यञ्जनों की एक बार आवृत्ति है ''छेक'' कहते हैं विदग्ध (रसिक) पुरुष को, उससे प्रयोग किये जाने से यह छेकाऽनुप्रास है।

अनेकस्यैकधा साम्यमसकृद्वाप्यनेकधा ।
एकस्य सकृदप्येष वृत्यनुप्रास उच्यते ॥4॥

अत्रेति। अनेक व्यञ्जनसमूह की एक प्रकार से (केवल स्वरूप से क्रम से नहीं), समता अर्थात् आवृत्ति (यह पहला भेद है), अथवा अनेक व्यञ्जन समूह का अनेक प्रकार से (स्वरूप और क्रम से) समता (आवृत्ति) (यह दूसरा भेद है। अथवा एक व्यञ्जन का एक बार समता (आवृत्ति) (यह तीसरा भेद है) तथा एक व्यञ्जन की ''अपि'' शब्द से वारं वार समता (आवृत्ति) से अन्त्योऽनुप्रास होता है, यह चौथा भेद है।

उदाहरणम्–

'उन्मीलन्मधुगन्धलुब्धमधुव्याधूतचूताङ्कुर-
क्रीडत्कोकिलकाकलीकलकलैरुद्गीर्णकर्णज्वराः।
नीयन्ते पथिकैः कथं कथमपि ध्यानावधानक्षण-
प्राप्तप्राणसमासमागमरसोल्लासैरमी वासराः॥'

उदाहरण**– उन्मीलदिति।** प्रियतमा के चिन्तन में एकाग्रता के अवसर पर प्राण की समान प्रियतमा के समागमरस के आनन्द को पाने वाले पथिकों से, प्रचुरता उत्पन्न होने वाले मकरन्द के सुगन्ध से लुब्ध भौरों से प्रकम्पित आमों की मञ्जरियों में क्रीड़ा करने वाले कायलों की सूक्ष्मध्वनियों से और कोलाहलों से कानों में ज्वर उत्पन्न करने वाले वसन्त ऋतु के वे दिन बड़े ही कष्ट से बिताये जा रहे हैं।।

अत्रेति। यहाँ ''रसोल्लासैरमी'' इनमें र का और स का एक ही प्रकार से स्वरूप से साम्य है, उसी क्रम से नहीं। दूसरे चरण में ''क'' और ''ल'' की वारं वार उसी क्रम से आवृत्ति हुई है। पहले चरण में ''म'' का र का एक ही बार और ''ध'' की अनेक बार आवृत्ति हुई है। रसविषयक व्यापार से युक्त वर्णरचना को ''वृत्ति'' कहते हैं उसका अनुगत होकर उत्कर्ष से न्यास करने से ''वृत्यनुप्रास'' होता है।

सत्यर्थे पृथगर्थायाः स्वरव्यञ्जनसंहतेः।
क्रमेण तेनैवावृत्तिर्यमकं विनिगद्यते ॥8॥

सत्यर्थ इति– अर्थ के होने पर भिन्न अर्थ वाले स्वरों और व्यञ्जनों के समुदाय की उसी क्रम में आवृत्ति को ''यमक'' कहते हैं। ।।8।।

'नवपलाश-पलाशवनं पुरः स्फुटपराग-परागत-पङ्कजम्।
मृदुल-तान्त-लतान्तमलोकयत् स सुरभिं-सुरभिं सुमनोभरैः॥''

दिङ्मात्रमिति। थोड़ा-सा उदाहरण देते हैं–

नवेति। भगवान् श्रीकृष्ण ने आगे नये पत्तों वाले पलाशवृक्ष के वन जिसमें उत्पन्न होते हैं, पुष्पचूर्णों से व्याप्त विकसित कमलों से युक्त, कोमल और धूप से क्लान्त लताओं के प्रान्तभाग से संयुक्त और पुष्पों व समूह से सुगन्धपूर्ण वसन्त ऋतु को देखा।

इस पद्य में पदावृत्ति है, ''पलाश-पलाश'' और ''सुरभि- सुरभिम्'' यहाँ दोनों पद साऽर्थक हैं। ''लतान्त-लतान्त'' यहाँ पहला ''लतान्त'' निरर्थक है, दूसरा लतान्त सार्थक है। ''पराग-पराग'' यहाँ दूसरा ''पराग'' निरर्थक है (पहला ''पराग'' सार्थक है।) इस प्रकार और भी उदाहरण जानना चाहिये।

शिलष्टैः पदैरनेकार्थाभिधाने श्लेष इष्यते।
वर्णप्रत्ययलिङ्गानां प्रकृत्योः पदयोरपि ॥11॥

शिलष्टैरिति। शिलष्ट (अनेकार्थयुक्त) पदों से अनेक अर्थों का अभिधान होने पर ''श्लेष'' अलङ्कार नहीं है।

श्लेषाद्विभक्तिवचनभाषाणामष्टधा च सः।

भावार्थ– वर्णों, प्रत्ययों, लिङ्गों, प्रकृतियों, पदों और विभक्तियों, वचनों और भाषाओं के श्लेष (अनेक अर्थ का सम्बन्ध) होने से वह श्लेष अलङ्कार आठ प्रकार होता है।

क्रमेणोदाहरणम्–

'प्रतिकूलतामुपगते हि विधौ विफलत्वमेति बहुसाधनता।
अवलम्बनाय दिनभर्त्तुरभून्न पतिष्यतः करसहस्त्रमपि ॥'

क्रम से उदाहरण- **प्रतिकूलतामिति।** विधि (भाग्य वा चन्द्रमा) के प्रतिकूल होने पर बहुत साधन भी निष्फल हो जाते हैं, गिरते हुए अर्थात् अस्त पर्वत पर जाते हुए सूर्य के हजारों किरणों वा हाथ भी अवलम्बन के लिए नहीं (समर्थ) हुए।

अत्र 'विधौ' इति

विधुविधिशब्दयोरुकारेकारयोरौकाररूपत्वाच्छ्लेषः।

इस पद्य में ''विधौ'' इस सप्तम्यन्तपद में चन्द्रवाचक उकारान्त विधुशब्द और भाग्यवाचक इकारान्त विधि शब्द के उकार और इकार का औकार रूप होने से यह पदश्लेष का उदाहरण है।

साहित्यदर्पण प्रश्नोत्तरी

- ☞ साहित्यदर्पणस्य प्रणेता- **विश्वनाथः**
- ☞ साहित्यदर्पणस्य आरम्भे विश्वनाथः देवतां नमस्करोति- **वाग्देवताम्**
- ☞ 'परिच्छेद' विभाजन किस ग्रन्थ से सम्बद्ध है? **साहित्यदर्पण से**

☞ साहित्यदर्पणे परिच्छेदाः सन्ति- **दश**
☞ साहित्यदर्पणे अस्ति–**परिच्छेद**
☞ साहित्यदर्पणस्य प्रथमपरिच्छेदः अस्ति– **काव्य-स्वरूप-निरूपणम्**
☞ अधोलिखितेषु कतमत् विशेषणं विश्वनाथकृते न प्रयुज्यते– **चतुर्दशभाषावारविलासिनीभुजङ्गः**
☞ आचार्यविश्वनाथानुसारेण काव्यस्य प्रयोजनमस्ति– **पुरुषार्थ-चतुष्टय**
☞ 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' इत्यत्र रसमध्ये ग्रहणं कृतम्– **रस-भाव-तदाभासादीनाम्**
☞ विश्वनाथमते काव्यशरीरे रसस्य का स्थितिर्वर्तते– **आत्मवत्**
☞ विश्वनाथेन कृतं काव्यलक्षणम् -**वाक्यं रसात्मकं काव्यम्**

दशरूपक

अथ–श्रीधनञ्जयविरचितम्
दशरूपकम्

धनिककृतावलोकसहितं संस्कृत-हिन्दीव्याख्यासमन्वितं च

प्रथमः प्रकाशः

इह सदाचारं प्रमाणयद्भिरविघ्नेन प्रकरणस्य समाप्त्यर्थमिष्टयोः प्रकृताभिमतदेवतयोर्नमस्कारः क्रियते श्लोकद्वयेन—

नमस्तस्मै गणेशाय यत्कण्ठः पुष्करायते ।
मदाभोगघनध्वानो नीलकण्ठस्य ताण्डवे ॥1॥

उन गणेश को नमस्कार है, जिनका मद की परिपूर्णता (आभोग) के कारण गम्भीर ध्वनिवाला कण्ठ शङ्कर के उद्धत नृत्य में मृदङ्ग का काम करता है ।।1।।

दशरूपानुकारेण यस्य माद्यन्ति भावकाः ।
नमः सर्वविदे तस्मै विष्णवे भरताय च ॥2॥

(1) जिसके (मत्स्य, कूर्म आदि) दश रूपों की प्रतिमाओं से अथवा (रामलीला तथा रासलीला आदि में) दशरूपों के अनुकरण से भक्त-जन (ध्यान करने वाले व्यक्ति) प्रसन्नता से गद्गद हो उठते हैं, उन सर्वज्ञ विष्णु को तथा (2) जिसके (द्वारा विभक्त) दश (प्रकार के) नाटकों के अभिनय के द्वारा रसिक-जन प्रसन्न होते हैं उन (दश प्रकार के रूपकों के) सर्वज्ञ (आचार्य) भरत को भी नमस्कार है ।।2।।

कस्यचिदेव कदाचिद्दयया विषयं सरस्वती विदुषः।
घटयति कमपि तमन्यो व्रजति जनो येन वैदग्धीम् ॥3॥

सरस्वती कृपा करके कभी-कभी ही किसी विद्वान् को किसी (ऐसे) विषय से संयुक्त करती है, (अर्थात् सरस्वती की कृपा से कभी कोई विद्वान् या कवि ऐसे नाटक आदि ग्रन्थ का निर्माण करता है), जिससे (पढ़नेवाला) दूसरा व्यक्ति निपुणता (व्यवहार-निपुणता) को प्राप्त करता है ।।3।।

अवस्थानुकृतिर्नाट्यं– (राम आदि मूल पात्रों की) अवस्था का अनुकरण ही नाट्य है।

रूपं दृश्यतयोच्यते– यही नाट्य दृश्य होने के कारण रूप (भी) कहा जाता है।

रूपकं तत्समारोपात् –(नट में राम आदि का) आरोप किया जाने के कारण वह नाट्य रूपक (भी कहा जाता) है।

दशधैव रसाश्रयम् ॥7॥

रसों पर आश्रित (यह नाट्य) केवल दस तरह का होता है ।।7।।

नाटकं सप्रकरणं भाणः प्रहसनं डिमः ।
व्यायोगसमवकारौ वीथ्यङ्केहामृगा इति ॥8॥

(1) नाटक, (2) प्रकरण, (3) भाण, (4) प्रहसन, (5) डिम, (6) व्यायोग, (7) समवकार, (8) वीथी, (9) अङ्क, (10) ईहामृग

अन्यद्भावाश्रयं नृत्यम्– भाव पर आश्रित रहनेवाला नृत्य (नाट्य से) भिन्न होता है।

नृत्तं ताललयाश्रयम् –नृत्त ताल एवं लय पर आश्रित होता है।

आद्यं पदार्थाभिनयो मार्गो देशी तथा परम् ॥9॥

पहला (अर्थात् नृत्य) पदार्थाभिनयरूप होता है तथा इसे मार्ग भी कहते हैं। दूसरा (अर्थात् नृत्त) देशी भी कहा जाता है ॥9॥

मधुरोद्धतभेदेन तद् द्वयं द्विविधं पुनः
लास्यताण्डवरूपेण नाटकाद्युपकारकम् ॥10॥

वे दोनों (नृत्य तथा नृत्त) मधुर और उद्धत भेद से फिर दो-दो प्रकार के होते हैं। मधुर को लास्य तथा उद्धत को ताण्डव कहते हैं। (ये दोनों ही) नाटक आदि (रूपकों) के उपकारक होते हैं।।10।।

वस्तु नेता रसस्तेषां भेदकः– रूपकों को परस्पर एक-दूसरे से अलग करने वाले तत्त्व–वस्तु (कथावस्तु), नायक और रस उन (दशों रूपकों) के भेदकतत्त्व हैं।

–वस्तु च द्विधा –

कथा-वस्तु के भेद—

वस्तु (कथा-वस्तु) दो प्रकार की होती है।

उनमें मुख्य (कथावस्तु) को आधिकारिक और अङ्गरूप वस्तु को प्रासङ्गिक (कथावस्तु) कहते हैं। ।।11।।

तत्राधिकारिकं मुख्यमङ्गं प्रासङ्गिकं विदुः ॥11॥

फल का स्वामी होना ही अधिकार है, और उस फल का स्वामी ही अधिकारी है। उस फल की सिद्धि तक अभिव्याप्त या उस

अधिकारी के द्वारा निष्पन्न वृत्त या कथा आधिकारिक (वस्तु) कहलाती है।।12।।

अधिकारः फलस्वाम्यमधिकारी च तत्प्रभुः ।
तन्निर्वृत्तमभिव्यापि वृत्तं स्यादाधिकारिकम् ॥12॥
प्रासङ्गिकं परार्थस्य स्वार्थो यस्य प्रसङ्गतः।

(जो कथा या वृत्त) दूसरे (अर्थात् आधिकारिक कथा) के लिए होता है, किन्तु प्रसङ्गवश जिसका अपना प्रयोजन भी सिद्ध हो जाता है; वह प्रासङ्गिक (वृत्त) है।

सानुबन्धं पताकाख्यं प्रकरी च प्रदेशभाक् ॥13॥
प्रासङ्गिक कथा के भेद– पताका और प्रकरी।

अनुबन्ध सहित (अर्थात् मुख्य कथा के साथ गौण रूप से दूर तक चलने वाले) प्रासङ्गिक वृत्त को पताका तथा एक प्रदेश में रहनेवाले (अर्थात् थोड़ी दूर तक चलनेवाले) प्रासङ्गिक वृत्त को प्रकरी कहते हैं ।।13।।

प्रस्तुतागन्तुभावस्य वस्तुनोऽन्योक्तिसूचकम् ।
पताकास्थानकं तुल्यसंविधानविशेषणम् ॥14॥

पताकास्थानक–

पताका के प्रसङ्ग से (उससे मिलते-जुलते) 'पताकास्थानक' की व्युत्पत्ति करते हैं—

जो अन्योक्ति के द्वारा (अर्थात् किसी अन्यवस्तु के कथन के द्वारा) प्रस्तुत (अर्थात् प्रसङ्गप्राप्त) भावी कथानक (वस्तु) का सूचक होता है, उसे 'पताका-स्थानक' क़हते हैं। वह समान इतिवृत्त तथा समान विशेषण (के भेद से दो तरह का) होता है।।14।।

प्रख्यातोत्पाद्यमिश्रत्वभेदात्त्रेधापि तत्त्रिधा।
प्रख्यातमितिहासादेरुत्पाद्यं कविकल्पितम् ॥15॥

वह तीन प्रकार का (इतिवृत्त) भी (1) प्रख्यात, (2) उत्पाद्य (3) मिश्र भेद से तीन-तीन प्रकार का होता है। इतिहास आदि से लिया गया इतिवृत्त प्रख्यात कवि के द्वारा कल्पित इतिवृत्त उत्पाद्य कहा गया है। तथा उन दोनों (प्रख्यात तथा उत्पाद्य) के मिश्रण से मिश्र की रचना होती है। (ये सभी इतिवृत्त) दिव्य, मर्त्य तथा दिव्यादिव्य भेद से (भिन्न होते हैं)।।15।।

कार्यं त्रिवर्गस्तच्छुद्धमेकानेकानुबन्धि च ॥16॥

(उस इतिवृत्त के अभिनय, अभिनय के अवलोकन तथा अध्ययन का) फल है त्रिवर्ग। यह फल कभी तो शुद्ध (अर्थात् त्रिवर्गरूप धर्म, अर्थ तथा काम में से कोई एक ही) और कभी (अन्य)एक से अनुगत तथा कभी अनेक (अर्थात् दो) से अनुगत (एक होता है)।।16।।

फल की प्राप्ति के साधन (अर्थप्रकृतियां)

स्वल्पोद्दिष्टस्तु तद्धेतुर्बीजं विस्तार्यनेकधा।

उस (फल) का कारण ही बीज है। आरम्भ में इसका स्वल्प संकेत किया जाता है, किन्तु आगे चल कर यह अनेक प्रकार से पल्लवित होता है।

अवान्तरार्थविच्छेदे बिन्दुरच्छेदकारणम् ॥17॥

अवान्तर अर्थ से (अर्थात् अवान्तर कथा के कारण) मुख्य कथा-वस्तु के विच्छिन्न हो जाने पर, जो उसे जोड़ने तथा आगे बढ़ाने का कारण होता है, वह बिन्दु कहलाता है ।।17।।

बीजबिन्दुपताकाख्यप्रकरीकार्यलक्षणाः ।
अर्थप्रकृतयः पञ्च ता एताः परिकीर्तिताः ॥18॥

बीज, बिन्दु, पताका, प्रकरी तथा कार्य नामक ये पाँच अर्थप्रकृतियाँ कही गयी हैं ।।18।।

अवस्थाः पञ्च कार्यस्य प्रारब्धस्य फलार्थिभिः।
आरम्भयत्नप्राप्त्याशानियताप्तिफलागमाः॥19॥

कार्य की पाँच अवस्थाएँ–

(ग्रन्थकार नाटक की) अन्य पाँच अवस्थाओं को बतलाते हैं—

फल की इच्छावाले व्यक्तियों के द्वारा प्रारम्भ किये गये कार्य की पाँच अवस्थाएं (Stages) होती हैं— 1. आरम्भ, 2. यत्न, 3. प्राप्त्याशा, 4. नियताप्ति और 5. फलागम ।।19।।

औत्सुक्यमात्रमारम्भः फललाभाय भूयसे ।
प्रयत्नस्तु तदप्राप्तौ व्यापारोऽतित्वरान्वितः ॥20॥

1. महान् फल की प्राप्ति के लिए केवल उत्सुकता का होना ही 'आरम्भ' क़हा गया है।

2. अब प्रयत्न बतलाते हैं— उस (फल) के प्राप्त न होने पर (उसके लिए) अत्यन्त वेग के साथ कार्य प्रारम्भ कर देना ही 'प्रयत्न' है ।।20।।

उपायापायशङ्काभ्यां प्राप्त्याशा प्राप्तिसम्भवः।

3. अब प्राप्त्याशा को बतलाते हैं—

(फल-प्राप्ति के) उपाय तथा (फल-प्राप्ति के) विध्वंसक विघ्न की शङ्का— दोनों की उपस्थिति) —से जो फल-प्राप्ति की सम्भावनामात्र होती है। वह 'प्राप्त्याशा' कही जाती है (अर्थात् जहाँ फल-प्राप्ति के लिए तो उपाय चलता रहता है, किन्तु उसी बीच किसी विघ्न की सम्भावना के आ जाने से जब दर्शकों के मन में फल-प्राप्ति के प्रति द्विविधा की भावना आ जाती है तब प्राप्त्याशा नामक अवस्था होती है)।

अपायाभावतः प्राप्तिर्नियताप्तिः सुनिश्चिता ॥21॥

4. नियताप्ति को बतलाते हैं—विघ्नों के अभाव के कारण (जब

कि फल की) प्राप्ति पूर्ण निश्चित हो जाती है, तब नियताप्ति (नामक अवस्था) होती है। ।।21।।

5. फलागम–

समग्रफलसंपत्तिः फलयोगो यथोदितः।

जैसा कि पहले कहा गया है, समस्त फल की प्राप्ति ही 'फलागम' है।

अर्थप्रकृतयः पञ्च पञ्चावस्थासमन्विताः ॥22॥

यथासंख्येन जायन्ते मुखाद्याः पञ्च सन्धयः ।

पाँच अवस्थाओं से मिलकर पाँच अर्थप्रकृतियाँ ही क्रमशः मुख आदि पाँच सन्धियाँ बन जाती हैं।

अन्तरैकार्थसम्बन्धः सन्धिरेकान्वये सति ॥23॥

सन्धियों का लक्षण बतला रहे हैं–

सन्धि का सामान्य लक्षण बतला रहे हैं—

(कथांशों का) एक प्रयोजन से अन्वय (अर्थात् सम्बन्ध) होने पर (उनका) किसी एक अवान्तर प्रयोजन से सम्बन्धित होना ही सन्धि है ।।23।।

के पुनस्ते सन्धयः—

मुखप्रतिमुखे गर्भः सावमर्शोपसंहृतिः।

मुख, प्रतिमुख, गर्भ, सावमर्श और उपसंहृति ।

मुखं बीजसमुत्पत्तिर्नानार्थरससम्भवा ॥24॥

अङ्गानि द्वादशैतस्य बीजारम्भसमन्वयात्।

जहाँ अनेक प्रयोजनों तथा (शृङ्गारादि) रसों को उत्पन्न करनेवाली बीजोत्पत्ति पायी जाती है, वहां मुखसन्धि होती है। बीज (नामक अर्थप्रकृति) तथा आरम्भ (नामक कार्यावस्था) के सम्मिलन से इस (मुखसन्धि) के बारह भेद हो जाते हैं।

प्रतिमुख-सन्धि

लक्ष्यालक्ष्यतयोद्भेदस्तस्य प्रतिमुखं भवेत् ।

बिन्दुप्रयत्नानुगमादङ्गान्यस्य त्रयोदश ॥30॥

(जहाँ) उस (बीज) का कुछ-कुछ लक्ष्यरूप में और कुछ-कुछ अलक्ष्यरूप में प्रकाशन (उद्भेद) होता है (वहाँ) प्रतिमुख-सन्धि होती है) (अर्थात् जहाँ पर बीज का प्रस्फुटित होना कुछ लोगों को ज्ञात हो तथा कुछ को पूर्णरूप से निश्चय के साथ ज्ञात न हो वहाँ प्रतिमुख संधि होती है)। बिन्दु (नामक अर्थप्रकृति) तथा प्रयत्न (नामक कार्यावस्था) के संयोग से (इसका निर्माण होता है) । इसके तेरह अङ्ग होते हैं ।।30।।

गर्भसन्धि और उसके अङ्ग

गर्भस्तु दृष्टनष्टस्य बीजस्यान्वेषणं मुहुः ।

द्वादशाङ्गः पताका स्यान्न वा स्यात्प्राप्तिसंभवः॥36॥

यहाँ दिखलाई पड़ने के अनन्तर अदृश्य हो गये बीज का बार-बार अन्वेषण किया जाता है वहाँ गर्भसन्धि होती है। इसके बारह अङ्ग होते हैं। इसमें पताका (नामक अर्थप्रकृति) कहीं होती है और कहीं नहीं भी होती है; किन्तु प्राप्त्याशा (नामक कार्यावस्था) होनी ही चाहिए ।।36।।

विमर्श (अवमर्श) सन्धि तथा उसके अङ्ग

क्रोधेनावमृशेद्यत्र व्यसनाद्वा विलोभनात् ।

गर्भनिर्भिन्नबीजार्थः सोऽवमर्श इति स्मृतः ॥43॥

जहाँ क्रोध से, दुःख से अथवा प्रलोभन से (फल-प्राप्ति के विषय में) विमर्श किया जाय, एवं जिसमें गर्भ-सन्धि के प्रस्फुटित बीजार्थ का सम्बन्ध पाया जाय, वहाँ अवमर्श (या विमर्श) सन्धि होती है ।।43।।

निर्वहण-सन्धि तथा उसके अङ्ग

बीजवन्तो मुखाद्यर्था विप्रकीर्णा यथायथम्॥48॥

ऐकार्थ्यमुपनीयन्ते यत्र निर्वहणं हि तत्।

वह निर्वहण-सन्धि है, जहाँ कि बीज से युक्त मुख आदि (अर्थात् मुख, प्रतिमुख, गर्भ और अवमर्श) सन्धियों में नियमानुसार (यथायथं) बिखरे हुए (प्रारम्भ आदि) अर्थों का एक (अर्थात् प्रधान) प्रयोजन के लिए एक साथ समेटना पाया जाता है (अर्थात् प्रधान प्रयोजन के साथ सम्बन्ध दिखलाया जाता है)।।48-49।।

षट्प्रकारं चाङ्गानां प्रयोजनमित्याह—

उक्ताङ्गानां चतुःषष्टिः षोढा चैषां प्रयोजनम्॥54॥

उक्त (सन्धियों के) अङ्ग चौसठ (64) हैं तथा इनका प्रयोजन छः (6) प्रकार का है ।।54।।

कानि पुनस्तानि षट् प्रयोजनानि? (तान्याह)–

इष्टस्यार्थस्य रचना गोप्यगुप्तिः प्रकाशनम् ।

रागः प्रयोगस्याश्चर्यं वृत्तान्तस्यानुपक्षयः॥55॥

अच्छा वे छः (6) प्रयोजन कौन-कौन हैं? यह बतला रहे हैं—
(1) इष्ट अर्थ (बुद्धि में स्थिर की गई कथावस्तु) की रचना, (2) गोपनीय बात को गुप्त रखना, (3) (उस बात को) प्रकाशित करना (जो कथावस्तु को समृद्ध कर सके), (4) राग, (5) प्रयोग की अद्भुतता और (6) इतिवृत्त (अर्थात् कथानक) का विच्छिन्न न होना ।।55।।

पुनर्वस्तुविभागमाह–

द्वेधा विभागः कर्तव्यः सर्वस्यापीह वस्तुनः।

सूच्यमेव भवेत् किंचिद् दृश्यश्रव्यमथापरम् ॥56॥

यहाँ (रूपक में) सम्पूर्ण कथा-वस्तु का दो प्रकार से विभाग करना चाहिए; कथा-वस्तु का कुछ भाग एकमात्र सूच्य होना चाहिए और दूसरा भाग दृश्य तथा श्रव्य ।।56।।

कादृक्सूच्यं कीदृग्दृश्यश्रव्यमित्याह–

नीरसोऽनुचितस्तत्र संसूच्यो वस्तुविस्तरः ।

दृश्यस्तु मधुरोदात्तरसभावनिरन्तरः ॥57॥

रूपक में नीरस तथा अनुचित कथा-वस्तु स्पष्ट तथा सरल ढंग से सूचित कर देनी चाहिए। किन्तु देखने में मोहक, उदात्त तथा रस एवं भावों से पूर्ण हो उसे रङ्गमञ्च पर अभिनय के द्वारा प्रदर्शित करना चाहिये।।57।।

सूच्यस्य प्रतिपादनप्रकारमाह–

अर्थोपक्षेपकैः सूच्यं पञ्चभिः प्रतिपादयेत् ।

विष्कम्भचूलिकाङ्कास्याङ्कावतारप्रवेशकैः ॥58॥

(1) विष्कम्भक, (2) चूलिका, (3) अङ्कास्य, (4) अङ्कावतार और (5) प्रवेशक— इन पाँच अर्थोपक्षेपकों (कथावस्तु के सूचकों) के द्वारा सूच्य (कथा-भाग) का प्रतिपादन करना चाहिए ।।58।।

तत्र विष्कम्भः—

वृत्तवर्तिष्यमाणानां कथांशानां निदर्शकः ।

संक्षेपार्थस्तु विष्कम्भो मध्यपात्रप्रयोजितः॥59॥

एकानेककृतः शुद्धः सङ्कीर्णो नीचमध्यमैः।

1– विष्कम्भक (या विष्कम्भ)

अब विष्कम्भ (की परिभाषा दी जा रही) है—

व्यतीत हो चुके और आगे होने वाले कथा के अंशों का सूचक, संक्षिप्त अर्थवाला तथा मध्यम दर्जे के पात्रों के द्वारा प्रयुक्त (जो अर्थोपक्षेपक है वह) विष्कम्भक (कहा गया) है ।।59।।

वह (विष्कम्भक) दो प्रकार का होता है—

(1) शुद्ध तथा (2) सङ्कीर्ण । इन्हें बतला रहे हैं—

एक अथवा अनेक (मध्यम पात्रों) के द्वारा सम्पादित (विष्कम्भक) शुद्ध कहलाता है तथा नीच एवं मध्यम श्रेणी के पात्रों के द्वारा मिलकर प्रयुक्त विष्कम्भक सङ्कीर्ण कहलाता है।

अथ प्रवेशकः–

तद्वदेवानुदात्तोक्त्या नीचपात्रप्रयोजितः ॥60॥

प्रवेशोऽङ्कद्वयस्यान्तः शेषार्थस्योपसूचकः ।

2–प्रवेशक

अब प्रवेशक (की परिभाषा दी जा रही है)—

उसी तरह (अर्थात् विष्कम्भक की तरह भूत एवं भावी कथानक को जोड़ने वाला), नीच पात्रों के द्वारा निम्न भाषा (low language) से प्रयुक्त, दो अङ्कों के अन्तराल में स्थित, शेष (अर्थात् अभिनय के द्वारा अप्रदर्शित) अर्थ का सूचक (अर्थोपक्षेपक) प्रवेशक कहा गया है।

अन्तर्जवनिकासंस्थैश्चूलिकार्थस्य सूचना ॥61॥

3– चूलिका

जवनिका के भीतर स्थित पात्रों के द्वारा (किसी) अर्थ (बात) की सूचना 'चूलिका' (नामक अर्थोपक्षेपक) कहलाता है ।।61।।

अङ्कान्तपात्रैरङ्कास्यं छिन्नाङ्कस्यार्थसूचनात् ।

4– अङ्कास्य

अङ्क के अन्त में अभिनय करनेवाले पात्रों के द्वारा (जिस अङ्क में वे पात्र हैं उस अङ्क से) विच्छिन्न (disconnected), आगे आनेवाले अङ्क के अर्थ की सूचना देने के कारण यह अङ्कास्य कहलाता है।

5– अङ्कावतार

अङ्कावतारस्त्वङ्कान्ते पातोऽङ्कस्याविभागतः ॥2॥

जहाँ (पूर्व) अङ्क की समाप्ति हो जाने पर (अगले) अङ्क का, कथा-प्रवाह को बिना रोके या बदले (अविच्छिन्न रूप से), अवतरण होता है। वह अङ्कावतार कहलाता है।

एभिः संसूचयेत् सूच्यं दृश्यमङ्कैः प्रदर्शयेत् ।

इन (विष्कम्भकादि अर्थोपक्षेपकों) के द्वारा सूचित करने योग्य अर्थ को सूचित करना चाहिए तथा रङ्गमञ्च पर अभिनय करने योग्य अर्थ को अङ्कों के द्वारा (विभक्त करके) दिखलाना चाहिए।

पुनस्त्रिधा वस्तुविभागमाह—

नाट्यधर्ममपेक्ष्यैतत्पुनर्वस्तु त्रिधेष्यते ॥63॥

नाट्य-धर्म के अनुसार कथा-वस्तु के भेद

नाट्य-धर्म (नाट्य के स्वभाव, अभिनय के नियम) की दृष्टि से भी यह वस्तु फिर तीन प्रकार की बलताई गई है ।।63।।

सर्वेषां नियतस्यैव श्राव्यमश्राव्यमेव च ।

सर्वश्राव्यं प्रकाशं स्यादश्राव्यं स्वगतं मतम्॥64॥

(1) सबके लिए सुनने योग्य (= सर्वश्राव्य), (2) कुछ नियत जनों को ही सुनने योग्य (= नियतश्राव्य) तथा, (3) किसी को भी न सुनने योग्य (अश्राव्य) ।उनमें-(क) प्रकाश, (ख) स्वगत— सर्व को सुनने लायक वस्तु ''प्रकाश'' तथा अश्राव्य वस्तु ''स्वगत'' कही गई है ।।64।।

द्विधाऽन्यन्नाट्यधर्माख्यं जनान्तमपवारितम् ।

अन्य नाट्य-धर्म (अर्थात् नियतश्राव्य) दो प्रकार का है—1) जनान्त (जनान्तिक) और अपवारित।

1– जनान्तिक

त्रिपताकाकरेणान्यानपवार्यान्तरा कथाम् ॥65॥

अन्योन्यामन्त्रणं यत्स्याज्जनान्ते तज्जनान्तिकम् ।

चल रहे संवाद के बीच में, त्रिपताकारूप हाथ (की मुद्रा) के द्वारा दूसरे (पात्रों) को बचाकर, कतिपय जनों के मध्य दो पात्र आपस में जो बात-चीत करते हैं—वह जनान्तिक कहलाता है।

अथापवारितम्—

रहस्यं कथ्यतेऽन्यस्य परावृत्त्यापवारितम् ॥66॥

2– अपवारित

(बहुत पात्रों के रहते) जहाँ (किसी एक पात्र के द्वारा) मुँह दूसरी ओर करके दूसरे (पात्र) से गोपनीय बात कही जाती है, वह अपवारित (संवाद) कहलाता है ।।66।।

आकाशभाषित

किं ब्रवीष्येवमित्यादि विना पात्रं ब्रवीति यत् ।

श्रुत्वेवानुक्तमप्येकस्तत्स्यादाकाशभाषितम् ॥67॥

जहाँ कोई एक ही पात्र किसी दूसरे पात्र के बिना ही बात करता है तथा किसी के बिना कुछ कहे भी मानो सुन कर ही 'क्या कह रहे हो?''—इस प्रकार कथोपकथन करता है, वह आकाशभाषित होता है ।।67।।

प्रस्तावना–

सूत्रधारो नटीं ब्रूते मार्षं वाऽथ विदूषकम् ॥7॥

स्वकार्यं प्रस्तुताक्षेपि चित्रोक्त्या यत्तदामुखम् ।

प्रस्तावना वा

तत्र स्युः कथोद्धातः प्रवृत्तकम् ॥8॥

प्रयोगातिशयश्चाथ वीथ्यङ्गानि त्रयोदश ।

जहाँ सूत्रधार विचित्र उक्ति के द्वारा नटी, पारि-पार्श्विक अथवा विदूषक को प्रस्तुत अर्थ का आक्षेप करने वाला (अर्थात् प्रस्तुत अर्थ की सूचना देने वाला) अपना कार्य बतलाता है, वह आमुख है। इसे ही प्रस्तावना भी कहते हैं।।7-8।।

उस (आमुख या प्रस्तावना) में (क) कथोद्घात, (ख) प्रवृत्तक, (ग) प्रयोगातिशय तथा (घ) वीथी में होने वाले तेरह अङ्ग होते हैं ।।8-9।।

नायक के भेद

भेदैश्चतुर्धा ललितशान्तोदात्तोद्धतैरयम् ।

यह (नायक) ललित, शान्त, उदात्त और उद्धत भेद से **चार प्रकार** का होता है।

1. धीरललित

निश्चिन्तो धीरललितः कलासक्तः सुखी मृदुः॥3॥

चिन्ता से मुक्त, (ललित) कथाओं का प्रेमी, सुखी तथा कोमल प्रकृति का (नायक) धीरललित कहलाता है।

2– शान्त

सामान्यगुणयुक्तस्तु धीरशान्तो द्विजादिकः।

(अर्थात् धीरशान्त) सामान्य गुणों से युक्त द्विज आदि नायक धीरशान्त (नायक) कहा गया है।

3– धीरोदात्त

महासत्त्वोऽतिगम्भीरः क्षमावानविकत्थनः।

स्थिरो निगूढाहङ्कारो धीरोदात्तो दृढव्रतः ॥4॥

अब धीरोदात्त (नायक का लक्षण बतलाया जा रहा) है–

विशाल एवं अविचल अन्तःकरणवाला, अत्यन्त गम्भीर, क्षमाशील, आत्म-प्रशंसा न करने वाला (अर्थात् डींग न हाँकने वाला), अविचल, अभिमान को दबाकर रखने वाला तथा दृढव्रती (नायक) धीरोदात्त कहा गया है ।।

4– धीरोद्धत

दर्पमात्सर्यभूयिष्ठो मायाच्छद्मपरायणः

धीरोद्धतस्त्वहङ्कारी चलश्चण्डो विकत्थनः।

घमण्ड और डाह की अधिकता से युक्त (अर्थात् अत्यन्त घमण्डी एवं प्रबल ईर्ष्यालु), माया और कपट से भरपूर, अहङ्कारी, अस्थिर, अत्यन्त क्रोधी तथा अपनी प्रशंसा करने वाला (नायक धीरोद्धत नायक कहा गया है)

नान्दी

आशीर्वचनसंयुक्ता स्तुतिर्यस्मात् प्रयुज्यते।

देवद्विजनृपादीनां तस्मान्नान्दीति संज्ञिता॥(सा.द. 6/24)

नान्दी उसे कहते हैं, जो नाटक के प्रारम्भ में देवता, ब्राह्मण या राजाओं आदि की आशीर्वाद से युक्त स्तुति करता है।

सूत्रधार–

नाट्यस्य यदनुष्ठानं तत्सूत्रं स्यात् सबीजकम् ।

रङ्गदैवतपूजाकृत् सूत्रधार उदीरितः ॥

बीजसहित नाटक के अनुष्ठान को 'सूत्र' कहते हैं, जो उसको धारण करने वाला अर्थात् संचालन करने वाला होता है तथा रंगमंच के अधिष्ठातृ देव की पूजा करता है, उसे सूत्रधार कहते हैं।

नेपथ्य–

कुशीलवकुटुम्बस्य गृहं नेपथ्यमुच्यते ।

अभिनेतागण जहाँ पर नाटक के उपयुक्त वेषभूषा धारण करते हैं, उसे नेपथ्य कहते हैं।

कञ्चुकी–

अन्तःपुरचरो वृद्धो विप्रो गुणगणान्वितः ।

सर्वकार्यार्थकुशलः कञ्चुकीत्यभिधीयते ॥

अन्तःपुर में जाने वाले, वृद्ध, गुणवान् ब्राह्मण को, जो सब कार्यों को करने में कुशल होता है, कंचुकी कहते हैं। **(नाट्यशास्त्र)**

विदूषक–

कुसुमवसन्ताद्यभिधः कर्मवपुर्वेषभाषाद्यैः ।
हास्यकरः कलहरतिर्विदूषकः स्यात् स्वकर्मज्ञः ॥

(सा. द. 3-42)

जो अपने कार्यों, शारीरिक चेष्टाओं, वेष और बोली आदि के द्वारा जनता को हँसाता है, कलह में प्रेम करता है और अपने हास्य के कार्यों को ठीक जानता है, उसे विदूषक कहते हैं। कुसुम, वसन्त आदि उसके नाम होते हैं।

दशरूपक प्रश्नोत्तरी

☞ दशरूपकस्य रचयिता अस्ति- **धनञ्जयः**
☞ रूपकाणां भेदकतत्त्वम् – **रस, नेता, वस्तु**
☞ दशरूपके प्रकाशाः सन्ति- **चत्वारः**
☞ कस्मिन् रसे 'आरभटीवृत्तिः' अस्ति-**रौद्र**
☞ 'उन्मादः' अस्ति– **व्यभिचारीभावः**
☞ 'वस्तु च द्विधा' इति केन ग्रन्थेन सम्बद्धोऽस्ति– **दशरूपकेन**
☞ ''फलार्थिभिः प्रारब्धस्य कार्यावस्थाः'' सन्ति– **पञ्च**
☞ 'स्वीया'- नायिकायाः भेदाः– **त्रयोदश**
☞ 'फलागमस्य' परिगणना भवति—**कार्यावस्थासु**
☞ दशरूपकानुसारेण नागानन्दस्य नायकः जीमूतवाहनः अस्ति– **धीरोदात्तः**
☞ शृङ्गाररसाश्रया वृत्तिरस्ति– **कैशिकी**

ध्वन्यालोक

प्रथम उद्योतः

स्वेच्छाकेसरिणः स्वच्छस्वच्छायायासितेन्दवः।
त्रायन्तां वो मधुरिपोः प्रपन्नार्तिच्छिदो नखाः॥

स्वयं अपनी इच्छासे सिंह (नृसिंह) रूप धारण किये हुए (मधुरिपु) विष्णु भगवान् के, अपनी निर्मल कान्तिसे चन्द्रमा को खिन्न (लज्जित) करनेवाले, शरणागतों के दुःखनाशन में समर्थ, नख तुम सब (व्याख्याता तथा श्रोता) की रक्षा करें।

काव्यस्यात्मा ध्वनिरिति बुधैर्यः समाम्नातपूर्व-
स्तस्याभावं जगदुरपरे भाक्तमाहुस्तमन्ये।
केचिद् वाचां स्थितमविषये तत्त्वमूचुस्तदीयं
तेन ब्रूमः सहृदयमनःप्रीतये तत्स्वरूपम् ॥1॥

काव्य के आत्मभूत जिस तत्त्व को विद्वान् लोग ध्वनि नाम से कहते आये हैं, कुछ लोग उसका अभाव मानते हैं। दूसरे लोग उसे भाक्त (गौण, लक्षणागम्य) कहते हैं और कुछ लोग उसके रहस्य को वाणी का अविषय (अवर्णनीय, अनिर्वचनीय) बतलाते हैं। अतएव (ध्यनिके विषयमें इन नाना विप्रतिपत्तियों के होने के कारण उनका निराकरण कर, ध्वनिस्थापना द्वारा) सहृदयों (काव्यमर्मज्ञ जनों) की मन की प्रसन्नता (हृदयाह्लाद) के लिए हम उस (ध्वनि) के स्वरूप का निरूपण करते हैं ।।1।।

प्रतीयमानं पुनरन्यदेव वस्त्वस्ति वाणीषु महाकवीनाम् ।
यत् तत् प्रसिद्धावयवातिरिक्तं विभाति लावण्यमिवाङ्गनासु ॥4॥

(भ्रम धार्मिक विस्रब्धः स शुनकोऽद्य मारितस्तेन।
गोदावरीनदीकच्छकुञ्जवासिना दृप्तसिंहेन॥ इत च्छाया)

प्रतीयमान कुछ और ही चीज है जो रमणियों के प्रसिद्ध (मुख, नेत्र, श्रोत्र, नासिकादि) अवयवों से भिन्न (उनके) लावण्य के समान, महाकवियों की सूक्तियों में (वाच्य अर्थ से) अलग ही भासित होता है ।।4।।

वस्तुध्वनि का वाच्यार्थ से स्वरूपकृत भेद

वह (प्रतीयमान) अर्थ वाच्य सामर्थ्य से आक्षिप्त वस्तु मात्र, अलङ्कार और रसादि भेद से अनेक प्रकार का दिखाया जाएगा। उन सभी भेदों में वह वाच्य से अलग ही है। जैसे पहला (वस्तुध्वनि) भेद वाच्य से अत्यन्त भिन्न है। (क्योंकि) कहीं वाच्य के विधिरूप होने पर (भी) वह (प्रतीयमान) निषेधरूप होता है। जैसे- पण्डितजी महाराज! गोदावरी के किनारे कुञ्ज में रहने वाले मदमत्त सिंह ने आज उस कुत्ते को मार डाला है, अब आप निश्चिन्त होकर घूमिये।

2. **क्वचिद् वाच्ये प्रतिषेधरूपे विधिरूपो यथा-**
(श्वश्रूरत्र निमज्जति अत्राहं दिवसकं प्रलोकय।
मा पथिक रात्र्यन्धक शय्यायां मम निमंक्ष्यसि॥
(इति च्छाया)

3. **क्वचिद् वाच्ये विधिरूपेऽनुभयरूपो यथा-**
(व्रज ममैवैकस्या भवन्तु निःश्वासरोदितव्यानि।
मा तवापि तया बिना दाक्षिण्यहतस्य जनिषत॥
(इति च्छाया)

कहीं वाच्यार्थ प्रतिषेधरूप होनेपर (प्रतीयमानार्थ) विधिरूप होता है। जैसे- हे पथिक ! दिन में अच्छी तरह देख लो, यहाँ सास जी सोती हैं और यहाँ मैं सोती हूँ। (रात को) रतौंधीग्रस्त (होकर) कहीं हमारी खाट पर न गिर पड़ना।

कहीं वाच्य विधिरूप होने पर (प्रतीयमान अर्थ) अनुभयात्मक (विधि,निषेध दोनों से भिन्न) होता है। जैसे-

(तुम) जाओ, मैं अकेली ही इन निःश्वास और रोने को भोगूँ (सो अच्छा है) कहीं दाक्षिण्य (मेरे प्रति भी अनुराग अनेकम-

हिलासमरागो दक्षिणः कथितः') के चक्कर में पड़कर, उसके बिना तुमको भी यह सब न भोगना पड़े।

अलङ्कारध्वनि का वाच्यार्थ से भेद

इस प्रकार वाच्यार्थसे भिन्न प्रतीयमान (वस्तुध्वनि) के और भी भेद हो सकते हैं। यह तो उनका केवल दिग्दर्शनमात्र कराया है। दूसरा (अलङ्कारध्वनिरूप) प्रकार भी वाच्यार्थसे भिन्न है। उसे आगे (द्वितीय उद्योत में) सविस्तार दिखलायेंगे।

रसध्वनिका वाच्यार्थ से भेद

तीसरा (रसध्वनि) रसादिरूप भेद वाच्य की सामर्थ्य से आक्षिप्त होकर ही प्रकाशित होता है, साक्षात् शब्दव्यापार (अभिधा, लक्षणा, तात्पर्या शक्तिव्यापार) का विषय नहीं होता, इसलिए वाच्यार्थ से भिन्न ही है।

यत्रार्थः शब्दो वा तमर्थमुपसर्जनीकृतस्वार्थौ।
व्यङ्क्तः काव्यविशेषः स ध्वनिरिति सूरिभिः कथितः॥13॥

यत्रार्थो वाच्यविशेषः, वाचकविशेषः शब्दो वा, तमर्थं व्यङ्क्तः, स काव्यविशेषो ध्वनिरिति। अनेन वाच्यवाचकचारुत्वहेतुभ्य उपमादिभ्योऽनुप्रासादिभ्यश्च विभक्त एव ध्वनेर्विषय इति दर्शितम्।

इस प्रकार वाच्यार्थ से अतिरिक्त व्यङ्ग्यार्थ की सत्ता तथा प्राधान्य (सद्भाव शब्द का सत्ता तथा साधुभाव अर्थात् प्राधान्य दोनों अर्थ हैं) प्रतिपादन करके प्रकृत में उसका उपयोग दिखलाते हुए कहते हैं- जहाँ अर्थ अपने को (स्व) अथवा शब्द अपने अर्थ को गुणीभूत करके उस (प्रतीयमान) अर्थ को अभिव्यक्त करते हैं, उस काव्यविशेषको विद्वान् लोग ध्वनि (काव्य) कहते हैं।।13।।

जहाँ अर्थ वाच्यविशेष, अथवा वाचकविशेष शब्द, उस (प्रतीयमान) अर्थ को अभिव्यक्त करते हैं उस काव्यविशेष को 'ध्वनिकाव्य' कहते हैं। इससे वाच्यवाचक के

यदप्युक्तम्- **''प्रसिद्धप्रस्थानातिरेकिणो मार्गस्य काव्यत्वहानेर्ध्वनिर्नास्ति'', इति तदप्ययुक्तम्। यतो लक्षणकृतामेव स केवलं न प्रसिद्धः, लक्ष्ये तु परीक्ष्यमाणे स एव सहृदयहृदयाह्लादकारि काव्यतत्त्वम्।**

चारुत्वहेतु उपमादि और अनुप्रासादि से अलग ही ध्वनिका विषय है यह दिखलाया। और जो यह कहा था कि 'प्रसिद्ध (शब्दार्थशरीरं काव्यं वाले) मार्ग से भिन्न मार्ग में काव्यत्व ही नहीं रहेगा इसलिए ध्वनि नहीं है' वह ठीक नहीं है, क्योंकि वह केवल (उन) लक्षणकारों को ही प्रसिद्ध (ज्ञात) नहीं है, परन्तु लक्ष्य (रामायण, महाभारत प्रभृति) की परीक्षा करने पर तो सहृदयों के हृदयों को आह्लादित करने वाला काव्य का सारभूत वही (ध्वनि) है।

स चाविवक्षितवाच्यो विवक्षितान्यपरवाच्यश्चेति द्विविधः सामान्येन। तत्राद्यस्योदाहरणम् -

ध्वनि के दो मुख्य भेद

(इसलिए) ध्वनि है। वह सामान्यतः अविवक्षितवाच्य (लक्षणामूल) और विवक्षितान्यपरवाच्य (अभिधामूल) भेद से दो प्रकार का होता है। उनमें से प्रथम (अविवक्षितवाच्य, लक्षणामूल ध्वनि) का उदाहरण यह है

सुवर्णपुष्पां पृथिवीं चिन्वन्ति पुरुषास्त्रयः।
शूरश्च कृतविद्यश्च यश्च जानाति सेवितुम् ॥

द्वितीयस्यापि -

शिखरिणि क्व नु नाम कियच्चिरं किमभिधानमसावकरोत्तपः।
सुमुखि येन तवाधरपाटलं दशति बिम्बफलं शुकशावकः॥13॥

सुवर्ण जिसका पुष्प है ऐसी पृथिवी का चयन (अर्थात् पृथिवीरूप लता के सुवर्णरूप पुष्पों का चयन) तीन ही पुरुष करते हैं-शूर, विद्वान् और जो सेवा करना जानता है।

दूसरे (विवक्षितान्यपरवाच्य, अभिधामूलध्वनि) का भी (उदाहरण देते हैं) हे सुमुखि! इस शुकशावक ने किस पर्वत पर, कितने दिनों तक, कौन-सा तप किया है, जिसके कारण तुम्हारे अधर के समान रक्तवर्ण बिम्बफल को काट (नेका सौभाग्य-पुण्यातिशयलभ्य सौभाग्य-प्राप्त कर) रहा है।।13।।

ध्वन्यालोक प्रश्नोत्तरी

- ध्वनिसिद्धान्तस्य प्रवर्तकःअस्ति- **आनन्दवर्धनः**
- काव्यस्यात्मा ध्वनिः –**आनन्दवर्धनः**
- ध्वन्यालोकः विभक्तः अस्ति– **उद्योतेषु**
- आनन्दवर्धनाचार्यमतानुसारं काव्यस्यात्मा भवति–**ध्वनिः**
- 'लोचनं' कस्य ग्रन्थस्य आख्यानम् अस्ति– **ध्वन्यालोकस्य**
- 'ध्वन्यालोकः' इत्यस्मिन् ग्रन्थे कति उद्योताः सन्ति– **चत्वारः**
- काव्यस्यात्मा स एवार्थः कारिकायाः रचयिताऽस्ति– **आनन्दवर्धनः**
- ध्वन्यालोके ध्वनिविरोधिनां पक्षाः भवन्ति**–त्रयः**
- ध्वनिप्रभेदेषु उत्कृष्टः अस्ति- **रसध्वनिः**
- ध्वन्यालोके प्रतीयमानस्य तृतीयः प्रभेदः उक्तः– **रसादिः**
- ध्वनिकाव्यं भवति–**यत्र वाच्यातिशयि व्यङ्ग्यं प्रधानम्**

6. लौकिक साहित्य

1. रामायण

- रामायण महर्षि वाल्मीकि की कृति है।
- इसमें सात काण्ड हैं-

काण्ड का नाम	सर्ग संख्या
1. बालकाण्ड	77सर्ग
2. अयोध्याकाण्ड	119 सर्ग
3. अरण्यकाण्ड	75 सर्ग
4. किष्किन्धाकाण्ड	67 सर्ग
5. सुन्दरकाण्ड	68 सर्ग
6. युद्धकाण्ड	128 सर्ग
7. उत्तरकाण्ड	111 सर्ग
कुलसर्ग	**645 सर्ग**

- इसमें 24000 श्लोक हैं, अतः इसे **चतुर्विंशति साहस्त्री संहिता** भी कहते हैं।
- रामायण में मुख्यतः **अनुष्टुप्** श्लोक (छन्द) हैं।
- गायत्री मन्त्र में 24 वर्ण होते हैं। अतः यह मान्यता है कि इसको आधार मानकर रामायण में **24,000 श्लोक** लिखे गये हैं।
- प्रत्येक 1000 श्लोकों के बाद गायत्री मन्त्र के नये वर्ण से नया श्लोक प्रारम्भ होता है।
- संस्कृत साहित्य में इतिहास संज्ञक दो ग्रन्थ प्राप्त होते हैं एक रामायण दूसरा महाभारत।
- रामायण तथा महाभारत दोनों महाकाव्य के रूप में प्रसिद्ध हैं।
- वाल्मीकिकृत रामायण **आदिकाव्य** है।
- यह संस्कृतवाङ्मय में प्राप्त रामकथाओं के अतिरिक्त संसार के अनेक रामकथाओं जैसे अध्यात्म रामायण,अद्भुत रामायण, कम्बरामायण आदि राम विषयक काव्यों का मूल उपजीव्य स्वीकार किया जा सकता है।
- राजशेखर ने काव्यमीमांसा में इतिहास के दो भेद किये हैं,

  1. परिक्रिया **2. पुराकल्प**
- परिक्रियात्मक इतिहास एक नायक से सम्बद्ध है, पुराकल्पात्मक इतिहास अनेक नायकों से सम्बद्ध होता है।
- इसप्रकार रामायण केवल एक नायक विषयक होने से परिक्रियात्मक इतिहास स्वीकार किया जा सकता है।
- महाभारत में अनेक नायक सम्बन्धित कथायें होने से उसे पुराकल्पात्मक इतिहास माना जाना चाहिए।
- वेदों के बाद सर्वप्रथम अनुष्टुप् वाणी का प्रवर्तन आदि काव्य रामायण में ही है।
- ऋषि वाल्मीकि के द्वारा विरचित होने के कारण इसे **आर्षकाव्य** भी कहा जाता है।
- वाल्मीकि ने नारदजी से राम का वृत्तान्त सुना जो रामायण के बालकाण्ड का प्रथम सर्ग है जिसे **मूल रामायण** भी कहा जाता है।
- वाल्मीकि राम के समकालीन थे, अतः उन्होंने राम के चरित्र को काव्यबद्ध किया।
- ब्रह्मा की आज्ञा से वाल्मीकि ऋषि ने रामायण को रचा।

  न ते वागनृता काव्ये काचिदत्र भविष्यति।
  कुरु रामकथां पुण्यां श्लोकबद्धां मनोरमाम्॥
- महाभारत में प्राप्त रामोपाख्यान वाल्मीकि रामायण पर ही आधारित प्रतीत होता है। इससे वाल्मीकिरामायण की प्राचीनता प्रमाणित होती है।
- महाभारत के खिलभाग हरिवंश पुराण में रामायण महाकाव्य को लक्षित करके नाटक रचने का उल्लेख मिलता है-

  'रामायणं महाकाव्यमुद्दिश्य नाटकं कृतम्'
- स्कन्दमहापुराण में 'रामायणमाहात्म्य', पद्मपुराण के पातालखण्ड में 'रामकथा', अग्निपुराण का 'रामायणसार' गरुड़पुराण के पूर्वखण्ड में 'रामायणसार' का वर्णन,भागवतपुराण तथा बृहद्धर्मपुराण में रामविषयक आख्यान, आदिकवि वाल्मीकि रचित रामायण से आविर्भूत हुए हैं।
- यह सनातन काव्य बीज होने से परवर्ती काव्यों का उपजीव्य है।**'काव्यबीजं सनातनम्'-**
- रामायण ने अपने को वेदों का उपबृंहण करने वाला बतलाया है-

  स तु मेधाविनौ दृष्ट्वा वेदेषु परिनिष्ठतौ।
  वेदोपबृंहणार्थाय तावग्राहयत प्रभुः॥
- रामायण का महत्त्व एक शास्त्रीय ग्रन्थ के रूप में भी अङ्गीकार किया जा सकता है। कथाओं के मध्य-मध्य में धर्मशास्त्रीय, नीतिशास्त्रीय तथा राजनीति विषयक श्लोक आये हैं। जिनमें शास्त्रीयता दृष्टिगत होती है।

- बालकाण्ड में विश्वामित्र के साथ रहने वाले साधु महात्मा पितृ-देवताओं का तर्पण करके अग्निहोत्र करने के पश्चात् अमृत के समान हविष्य का भक्षण करते थे।
- इतिहास पुराण को भी पञ्चमवेद की संज्ञा प्राप्त है- **''इतिहासपुराणं पञ्चमं वेदानां वेदः ।''**
- रामायण महाकाव्य में राम धीरोदात्त क्षत्रिय नायक हैं।
- रामायण में **'तपःस्वाध्यायनिरतं तपस्वी वाग्विदां वरम्'** इत्यादि मङ्गलाचरणात्मक पद्य में वस्तुनिर्देशात्मक मङ्गलाचरण है।
- सर्गान्त में छन्द परिवर्तन की परम्परा का निर्वाह रामायण में सर्वत्र किया गया है।
- रामायण के प्रायः सभी रसों का वर्णन आया है परन्तु **करुणरस** प्रधान है।
- बुद्धचरित में अश्वघोष वाल्मीकि का नाम लेकर उन्हें प्रथम अनुष्टुप् छन्द का रचयिता स्वीकार करते हैं। **'वाल्मीकिरादौ च ससर्ज पद्यं'** (बुद्धचरित-1.43)

रामायण के विविध संस्करण

1. बम्बई संस्करण (देवनागरी संस्करण)-

- इसका प्रकाशन बम्बई के निर्णयसागर प्रेस से 1902 ई. में **के. पी. परब** के सम्पादन में हुआ।
- यह संस्करण भारत में सर्वाधिक लोकप्रिय है।
- इस संस्करण पर नागेश द्वारा अपने आश्रयदाता राम के नाम से लिखी **'तिलक'** टीका मिलती है।
- **'शिरोमणि'** और **'भूषण'** नामक टीकाएँ भी प्राप्त होती हैं।
- इसी संस्करण के आधार पर R.T.H ग्रिफिथ महोदय ने अंग्रेजी पद्यानुवाद किया।
- इसे **'देवनागरी संस्करण'** भी कहते हैं।

2. बंगाल संस्करण

- इस संस्करण का प्रकाशन इटालियन विद्वान् जी. गोरेशियो ने 1843 ई. से 1867ई. तक अनेक खण्डों में किया।
- इसी संस्करण के आधार पर इटालियन व फ्रेंच अनुवाद हुए।
- इसे **गौडीय संस्करण** भी कहते हैं।

3. पश्चिमोत्तर या काश्मीर संस्करण-

- 1923 ई. में डी. ए. वी. कालेज लाहौर के अनुसन्धान विभाग से प्रकाशित हुआ।
- इसमें कटक टीका भी दी गयी है।

4. दाक्षिणात्य संस्करण-

- यह संस्करण मद्रास के कुम्भकोणम् से 1929 ई. में प्रकाशित हुआ।
- बम्बई संस्करण से मिलता-जुलता संस्करण है।

रामायण की विषयवस्तु

1. बालकाण्ड -77 सर्ग

- बालकाण्ड के आरम्भ के 4 सर्गों में रामायण की रचना की पूर्व पीठिका दी गयी है। नारद ने महर्षि वाल्मीकि को राम कथा सुनायी।
- क्रौञ्चवध की घटना, अयोध्यापुरी का वर्णन, ऋषि शृङ्ग तथा शान्ता के विवाह का वर्णन।
- दशरथ द्वारा अश्वमेध यज्ञ ।
- ऋषिशृङ्ग द्वारा दशरथ का पुत्रेष्टि यज्ञ कराया गया।
- श्रीरामावतार, भरत , लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न का जन्म।
- ताटका वध।विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा।
- गङ्गा से कार्तिकेय की उत्पत्ति का प्रसङ्ग।
- सगर के पुत्रों की उत्पत्ति तथा यज्ञ की तैयारी।
- भगीरथ की तपस्या, गङ्गावतरण।
- मिथिला गमन, अहल्या का उद्धार।
- त्रिशङ्कु का यज्ञ। श्रीराम द्वारा धनुर्भङ्ग।
- श्रीरामादि चारों भाइयों का विवाह।
- वामनावतार,सागरमंथन वर्णन।

2. अयोध्याकाण्ड-119 सर्ग

- श्रीराम के राज्याभिषेक का प्रस्ताव।
- मन्थरा एवं कैकेयी प्रसङ्ग।दशरथ विलाप वर्णन।
- राम की वन यात्रा, स्त्रियों का विलाप।
- निषादराज गुह का वर्णन।
- प्रयाग भरद्वाज आश्रम में राम का अतिथि सत्कार।
- चित्रकूट की महत्ता एवं शोभा का वर्णन।
- राजा दशरथ का दिवंगत होना एवं रानियों का करुण विलाप।
- दशरथ का अन्त्येष्टि संस्कार एवं भरत का राज्य न स्वीकार करना भरत की वनयात्रा एवं चित्रकूट यात्रा का वर्णन।
- भरतसंताप एवं राजचिन्ह स्वरूप चरण पादुकाएँ लेकर अयोध्या आगमन।
- जाबालि का नास्तिक मत एवं राम द्वारा खण्डन।
- अनुसूया द्वारा सीता का सत्कार एवं पातिव्रत्य धर्म का उपदेश, अन्तिम सर्ग में दण्डकारण्य में प्रवेश।

3. अरण्यकाण्ड-75 सर्ग

- राम-लक्ष्मण-सीता का दण्डकारण्य में निवास।
- पञ्चवटी निवास, विराध आदि राक्षसों का वध।
- सुतीक्ष्ण एवं अगस्त्य आश्रम में राम आदि के जाने का वर्णन।
- पम्पासरोवर, पञ्चाप्सरतीर्थ एवं माण्डकर्णि मुनि की कथा।
- पञ्चवटी में लक्ष्मण द्वारा सुन्दर पर्णकुटी (पर्णशाला) निर्माण।

- हेमन्त ऋतु वर्णन।
- शूर्पणखा का वर्णन एवं लक्ष्मण का उसके नाक-कान काट लेना।
- खरदूषण सहित चौदह सहस्र राक्षसों का वध,त्रिशिरा वध।
- रावण द्वारा छल से सीता हरण,रावण द्वारा जटायु की हत्या।
- राम का करुण विलाप।
- राम की कबन्ध से भेंट तथा उनके द्वारा सुग्रीव से मैत्री करने का परामर्श।

4. किष्किन्धाकाण्ड-67 सर्ग

- पम्पासरोवर के वसन्तऋतु दर्शन से श्रीराम की व्याकुलता।
- हनुमान् द्वारा राम और सुग्रीव की मैत्री कराना।
- राम द्वारा बालि का वध, तारा का विलाप, सुग्रीव तथा अङ्गद का राज्याभिषेक।
- राम का प्रस्रवण पर्वत पर चातुर्मास यापन।
- वर्षा ऋतुवर्णन, सम्पाती कथा, जाम्बवान् द्वारा हनुमान् का उद्‌बोधन

5. सुन्दरकाण्ड -68 सर्ग

- हनुमान् द्वारा सागर लांघ कर लङ्का में प्रवेश।
- सीता की खोज, अशोकवन में सीता दर्शन, अङ्गुलीयक वृत्तान्त (अँगूठी वर्णन)।
- अशोक वाटिका विध्वंस, अक्षयकुमार वध एवं हनुमान् का बन्दी होकर रावण सभा में जाना।
- विभीषण द्वारा दूतवध निषेध तथा हनुमान् की पूँछ में आग लगाना तथा लङ्का-दहन।
- हनुमान् का लौटना तथा वानरों का मधुवन घर्षण।
- राम को हनुमान् द्वारा सीता की चूड़ामणि दिया जाना तथा सीता का वृत्तान्त सुनाना।
- इस काण्ड को 'सुन्दर' कहे जाने का कारण नायक और नायिका दोनों को संकट के विषम काल में शुभ समाचार प्राप्त होना।
- हनुमान् इस काण्ड के नायक हैं, उनके सुन्दर कार्यों के कारण इस काण्ड का नाम सुन्दरकाण्ड पड़ा
- अन्य काण्डों से अधिक काव्यात्मक होने से भी इसे 'सुन्दरकाण्ड' कहते हैं।

6. युद्धकाण्ड-128 सर्ग

- राम द्वारा हनुमान् प्रशंसा।
- श्रीराम के साथ वानर-सेना का प्रस्थान समुद्र तट पर पड़ाव।
- समुद्र से प्रार्थना, सेतु निर्माण।
- राम और रावण के बीच युद्ध का वर्णन।
- सभी काण्डों की अपेक्षा सबसे बड़ा काण्ड।
- रावण को सभा में मन्त्रणा,विभीषण परित्याग।
- विभीषण का राम की शरण में आना।
- रावण द्वारा गुप्तचर प्रयोग।
- अङ्गद दूत बनकर रावण के पास जाते हैं।
- कुम्भकर्ण को जगाना, कुम्भकर्ण वध।
- ब्रह्मास्त्र का प्रयोग, माया सीता का वध देखकर राम की मूर्च्छा।
- शक्ति से लक्ष्मण को मूर्च्छा और संजीवनी बूटी से मूर्च्छा की समाप्ति।
- राम द्वारा सूर्य पूजा (सर्ग-105)।
- रावण वध, विभीषण का राज्याभिषेक।
- सीता की अग्निपरीक्षा, ब्रह्मा द्वारा राम की स्तुति।
- सीता सहित राम का अयोध्या लौटना।
- राम का राज्याभिषेक और प्रजापालन।

नोट- पाश्चात्य विद्वानों का मत है कि रामायण की यहीं समाप्ति हो गयी थी, उत्तरकाण्ड प्रक्षिप्त है।

7. उत्तरकाण्ड-111 सर्ग

- बालकाण्ड के समान ही अनेक इतिहास पुराणात्मक आख्यान हैं।
- राम द्वारा प्रश्न पूछे जाने पर अगस्त्य ऋषि रावण के वंश की कथा सुनाते हैं।
- अगस्त्य ऋषि पुनः हनुमान् की कथा भी कहते हैं,सीता परित्याग।
- राजा नृग-उर्वशी-वशिष्ठ-ययाति के आख्यान।
- लवणासुर का शत्रुघ्न द्वारा वध तथा शत्रुघ्न का राज्याभिषेक।
- लव-कुश जन्म,रामचरित की रचना और गान,शम्बूक वध।
- इला-पुरुरवा आख्यान एवं राम द्वारा अश्वमेध यज्ञ का अनुष्ठान।
- शपथ लेकर सीता का पाताल प्रवेश।
- कुश लव का राज्याभिषेक तथा राम का महाप्रस्थान।
- अन्तिम सर्ग में रामायण का पाठफल कहा गया है।

प्रक्षिप्त अंश

- भारत में रामायण के विभिन्न संस्करणों में पाठ-भेद होने पर ऐसा भी माना गया है कि पूरी रामायण एक ही व्यक्ति महर्षि वाल्मीकि के द्वारा लिखी गयी थी जो मौखिक परम्परा से प्रचलित होने के कारण पृथक् संस्करणों में मिलती है।
- बालकाण्ड एवं उत्तरकाण्ड बाद में जोड़े गये हैं।इन यूरोपीय आलोचकों में वेबर तथा याकोबी प्रमुख हैं।
- प्रक्षिप्त मानने के इन्होंने निम्न तर्क दिये-

1. मूलकथा से असम्बद्धता।
2. भाषा-शैली का अन्तर होना।
3. प्रक्षिप्त काण्डों में ही राम को विष्णु का अवतार बताना।
4. महाभारत के रामोपाख्यान में तथा अन्य राम काव्यों में उत्तरकाण्ड की कथा नहीं है।
5. पाश्चात्त्य विद्वानों के मत में बड़ी त्रुटियाँ हैं। वस्तुतः रामायण की दीर्घकालीन मौखिक परम्परा के कारण कुछ सर्ग या श्लोक प्रक्षिप्त हुए हैं।

- सम्पूर्ण काण्डों को प्रक्षिप्त कहना पूर्वाग्रह तथा भ्रान्ति का द्योतक है।
- श्री वी. वरदाचार्य ने मूलग्रन्थ और प्रक्षिप्त अंश के विषय में पर्याप्त विवेचन किया और सारांश दिया है कि रामायण के सातों काण्ड मौलिक हैं।
- प्रसिद्ध समालोचक आनन्दवर्धन ने ध्वन्यालोक में सीतापरित्याग तक की कथा को मूल रामायण की कथा माना है।

रामायण में रस

- यद्यपि रामायण में करुण, शृङ्गार और वीर रस का व्यापक प्रयोग है, तथापि कवि का विशेष प्रयोग **करुण** की ओर ही है। अतः रामायण में **करुण रस** को ही अङ्गी रस स्वीकार किया गया है।
- आचार्य **आनन्दवर्धन ने (850ई॰)** ध्वन्यालोक में स्पष्ट रूप से रामायण में करुण रस की पुष्टि की है -

रामायणे हि करुणो रसः स्वयम् आदिकविना सूत्रतः।
(ध्वन्यालोक 4/5 के बाद)

- रस उद्भावना के कारण ही वाल्मीकि **'रससिद्ध-कवीश्वर'** कहलाते हैं।
- आदिकवि वाल्मीकि ने रामायण की रचना की प्रेरणा करुण रस के प्रसङ्ग से ही प्राप्त की थी।
- क्रौञ्च पक्षी के युगल में से एक के मारे जाने से कवि का हृदय शोकाकुल हो उठा था और वही शोक श्लोक बनकर निर्गत (निकला) हुआ-

'सोऽनुव्याहरणाद् भूयः शोकः श्लोकत्वमागतः
(रामायण -1.2.41)

- वाल्मीकि ने रामायण की समाप्ति सीता के आत्यन्तिक वियोग तक की कथा का समावेश करते हुए की है -जैसा कि आनन्दवर्धन ने लिखा है -

'निर्व्यूढश्च स एव सीतात्यन्तवियोगपर्यन्त मेवस्वप्रबन्धमुपरचयता' (ध्वन्यालोक 4/5 के बाद)

- महाकवि भवभूति ने भी रामायण के प्रसंगों को ध्यान में रखकर **'एको रसः करुण एव'** का उद्घोष किया है। अतः स्पष्ट है आदिकाव्य रामायण का अङ्गी रस करुण ही है।

रामायण की भाषा शैली

- महर्षि वाल्मीकि की शैली वैदर्भी है।
- प्रसाद, ओज और माधुर्य शैली गत तीनों गुण उनमें सन्निविष्ट हैं।
- आदिमहाकाव्य रामायण की भाषा सरस, प्राञ्जल, ललित और परिष्कृत है। यद्यपि कहीं-कहीं आर्ष प्रयोग भी प्राप्त होते हैं।

रामायण में छन्दोयोजना

- आदिकाव्य में अनुष्टुप् छन्द का सर्वाधिक प्रयोग हुआ है।
- अनुष्टुप् के सर्वाधिक प्रयोग से ज्ञात होता है कि अनुष्टुप् उनका प्रिय छन्द है।
- रामायण के सर्गान्त में प्रायः इन्द्रवज्रा तथा उपजाति छन्द हैं।

रामायण का समय निर्धारण

- रामायण की रचना समय के निर्धारण में विद्वानों में बहुत मतभेद है। तथापि अनेक विद्वत्गण की समीक्षा पर आधारित निष्कर्ष में कहा जा सकता है कि -
- रामायण वैदिक साहित्य के अन्तिम पड़ाव अर्थात् 700ई॰पू॰ तथा बौद्ध धर्म (500ई॰पू॰) उदय के मध्य रचा गया ।
- निष्कर्षतः रामायण का समय वर्तमान स्वरूप के साथ द्वितीय शताब्दी ई॰पू॰में स्थिर हो चुका था।

रामायण का वर्तमान स्वरूप

- श्लोकों की संख्या -24000
- चौबीस हजार श्लोक होने से इसे **चतुर्विंशतिसाहस्री संहिता** कहते हैं।
- रामायण में 7काण्ड और 500सर्ग हैं।
- बालकाण्ड में कहा गया है -

चतुर्विंशसहस्राणि श्लोकानामुक्तवान् ऋषिः ।
तथा सर्गशतान् पञ्च षट् काण्डानि तथोत्तरम् ॥

रामायण के प्रसिद्ध पद्य एवं सुभाषित रत्न

- वाल्मीकि के सुभाषित और अर्थान्तरन्यास अत्यन्त भाव युक्त एवं हृदयङ्गम करने योग्य संवेदना एवं व्यंजना प्रधान हैं -
- उत्साहवन्तः पुरुषा नावसीदन्ति कर्मसु।
- सुलभाः पुरुषा राजन् सततं प्रियवादिनः ।
  अप्रियस्य च पथ्यस्य, वक्ता श्रोता च दुर्लभः।।
- कुलीनमकुलीनं वा, वीरं पुरुषमानिनम्।
  चारित्रमेव व्याख्याति, शुचिं वा यदि वाऽशुचिम्।।
- न परेणाहृतं भक्ष्यं व्याघ्रः खादितुमिच्छति।

- भयं भीताद् हि जायते।
- ऋद्धि युक्ता हि पुरुषा न सहन्ते परस्तवम्।
- आम्रं छित्वा कुठारेण, निम्बं परिचरेत्तु कः।
- राम द्वारा रावण की मृत्यु के बाद विभीषण को उपदेश - मरणान्तानि वैराणि निवृत्तं नः प्रयोजनम्। क्रियातामस्य संस्कारो ममाप्येष यथा तव।।

रामायण की उपजीव्यता

- किसी काव्य की कथावस्तु के मूल स्रोत को उस काव्य का उपजीव्य कहा जाता है।
- रामायण की राम कथा ने लोगों पर ऐसा प्रभाव किया कि किसी कवि के लिए रामकथा से सम्बद्ध कथानक का आश्रय अपने काव्य की प्रसिद्धि और गौरव के लिए आवश्यक सा हो गया ।
- रामायण से परकालीन कवियों, नाट्यकारों तथा चम्पूकारों ने रामायण को उपजीव्य बनाया ।
- रामायण के उत्तरकाण्ड में स्वयं वाल्मीकि रामकथा की उपजीव्यता इन शब्दों में कहते है।-

'' न ह्यन्योऽर्हति काव्यानां यशोभाग् राघवाद् ऋते।''

रामायण पर आश्रित ग्रन्थ

रामायण ग्रन्थ

1.योग वासिष्ठ (वसिष्ठ रामायण)।
2. अध्यात्म रामायण।
3. कम्बरामायण-तमिल भाषा में ।
4. अद्भुत रामायण।
5. अगस्त्य रामायण।
6. रङ्गनाथ रामायण- तेलगु में ।
7. कृत्तिवास रामायण- बंगला भाषा में
8. रामचरितमानस (तुलसीकृत)- अवधीभाषा में ।

रामायण आधारित महाकाव्य

रघुवंशम्	-	कालिदास ।
रामचरित	-	कवि अभिनन्द ।
रावणवध	-	भट्टि कवि ।
सेतुबन्ध	-	प्रवरसेन।
जानकीहरण	-	कुमारदास ।
रामायणमंजरी	-	क्षेमेन्द्र।
रघुनाथाभ्युदय	-	वामनभट्ट बाण।
राघवपाण्डवीय	-	माधवभट्ट ।
रामायणसार	-	रघुनाथ ।

रामायण आधारित रूपक ग्रन्थ

1.भास	-	प्रतिमानाटक
2. भास	-	अभिषेकनाटक
3. दिङ्नाग	-	कुन्दमाला
4. भवभूति	-	उत्तररामचरित
5. भवभूति	-	महावीरचरित
6. राजशेखर	-	बालरामायण
7. मुरारि	-	अनर्घराघव
8. जयदेव	-	प्रसन्नराघव
9. शक्तिभद्र	-	आश्चर्य चूड़ामणि
10. रामभद्र	-	जानकीपरिणय
11. महादेव	-	अद्भुत दर्पण
12. दामोदर मिश्र	-	हनुमन्नाटक (महानाटक)

रामायण आश्रित चम्पूग्रन्थ

1. रामायणचम्पू	-	भोज
2. उत्तरचम्पू	-	वेंकटाध्वरि
3. चम्पूराघव	-	अनन्ताचार्य
4. अमोघराघव	-	दिवाकर
5. रामचन्द्र चम्पू	-	विश्वनाथ सिंह

रामायण विषयक महत्त्वपूर्ण तथ्य

- संस्कृत साहित्य में रामायण और महाभारत आधारभूत ग्रन्थ है।
- रामायण को काव्य तथा महाभारत को इतिहास कहा जाता है।
- बौद्ध साहित्य पर भी रामायण का प्रभाव दिखाई पड़ता है - 'दशरथ जातक' नामक बौद्धग्रन्थ में राम कथा प्राप्त होती है।
- जैन ग्रन्थों पर भी रामायण का प्रभाव मिलता है। जैन कवि विमलसूरि ने रामायण का प्रथम रूपान्तरण 118 सर्गात्मक प्राकृत काव्य **"पउमचरिउ" (पद्मचरित)** में किया था।
- रामायण की अमरता रामायण के बालकाण्ड में कही गयी है-
**यावत्स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महीतले।
तावद् रामायणकथा लोकेषु प्रचरिष्यति।।**
- नलचम्पूकार त्रिविक्रमभट्ट ने वाल्मीकि को नमन करते हुए कहा है- **सदूषणाऽपि निर्दोषा सखराऽपि सुकोमला। नमस्तस्मै कृता येन रम्या रामायणी कथा।**
- संस्कृत के मूर्धन्य विद्वान् प्रो0 सत्यव्रतशास्त्री ने थाईलैण्ड की रामकथा पर आधारित संस्कृत महाकाव्य **''श्रीरामकीर्ति महाकाव्य''** लिखा है।
- प्रो0 सत्यव्रत शास्त्री ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त करने वाले प्रथम संस्कृत विद्वान् हैं।
- कुश और लव ने ही सर्वप्रथम रामायण का मञ्चगान किया था।

2. महाभारत

- महाभारत के लेखक का नाम व्यास (कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास)है।
- **पिता का नाम -** पराशर ऋषि।
- **माता का नाम -** सत्यवती।
- यमुनाद्वीप में जन्म के कारण वेद व्यास को- द्वैपायन कहा जाता है।
- शरीर से कृष्ण वर्ण होने के कारण- कृष्णमुनि कहा जाता है।
- वैदिक मन्त्रों को याज्ञिक उपयोग के लिए चार वेदों में विभक्त करने के कारण- वेदव्यास कहा जाता है।

  'विव्यास वेदान् यस्मात् स तस्मात् व्यास इति स्मृतः'
- व्यास ने तीन वर्षों में महाभारत जैसे महान् ग्रन्थ की रचना की थी।

वंशावली -

- वशिष्ठ
- शक्ति
- पराशर + सत्यवती
- व्यास
- शुकदेव

- **जन्म स्थान**- उत्तरापथ हिमालय
- भारतीय जनमानस की विश्वास परम्परा के आधार पर व्यास को कौरवों और पाण्डवों के समकालीन माना जाता है।
- वेदव्यास वेदों के विभाजन कर्त्ता, महाभारत, एवं भागवत पुराण सहित सभी अट्ठारह पुराणों के कर्त्ता के रूप में प्रसिद्ध हैं।
- भारतीय विश्वास में प्रत्येक द्वापर में आकर वेदव्यास वेदों का विभाजन करते हैं। अट्ठाईसवें व्यास का नाम 'कृष्ण द्वैपायन व्यास' है।
- पाश्चात्त्य विद्वानों के अनुसार 'व्यास' किसी का नाम न होकर प्रतीकात्मक कल्पना है।

व्यास का अन्य नाम-

1. बादरायण व्यास (बदरिकाश्रम में ज्ञान की साधना की थी।
2. पराशर्य (पराशर का पुत्र)

महाभारत का परिचय एवं महत्त्वपूर्ण तथ्य

- विश्व वाङ्मय में सर्वाधिक विशाल ग्रन्थ महाभारत है।
- महाभारत में एक लाख से अधिक श्लोक हैं।
- यह भारतीय जीवन शैली की समग्र और यथार्थ प्रस्तुति है।
- यह आकरग्रन्थ है, इसकी मान्यताएँ शाश्वत अर्थात् सार्वकालिक और सार्वदेशिक हैं।
- भारतीय परम्परा महर्षि व्यास की गणना सप्त चिरंजीवियों में करती है।

  अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनुमांश्च विभीषणः।
  कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरजीविनः॥
- महाभारत भारतीय संस्कृति और आचार परम्परा का सर्वोत्तम विश्वसनीय और आदर्श एवं महानतम ग्रन्थ है।
- महाभारत एक आर्षमहाकाव्य है।
- ऋषि प्रणीत काव्यों को आर्षमहाकाव्य कहा जाता है।
- को एक लाख श्लोक होने के कारण महाभारत **शतसाहस्त्री संहिता** भी कहा जाता है।
- महाभारत, वाल्मीकि रामायण से चार गुना विशाल है।
- महाभारत में लेखक ने अपने युग के समस्त उल्लेखनीय विषयों को उल्लिखित किया है-**'यन्न भारते तन्न भारते।'**
- भारतवर्ष के समस्त पक्ष महाभारत में निहित हैं-

  धर्मे चार्थे च कामे च मोक्षे च भरतर्षभ ।
  यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत् क्वचित् ॥
- अनेक आध्यात्मिक तथा भक्तिपूर्ण ग्रन्थ जैसे-**गीता, विष्णुसहस्रनाम, अनुगीता, गजेन्द्रमोक्ष, भीष्मस्तवराज** (पञ्चरत्न) महाभारत के ही भाग हैं।
- वैदिक धर्म और सिद्धान्तों का व्यावहारिक रूप हमें महाभारत में उपलब्ध होता है।
- महाभारत जीवित भारतीय संस्कृति का प्रकाश स्तम्भ है।

महाभारत का समय

- बालगंगाधर तिलक -ई.पू. 5000
- डॉ. वचनदेव कुमार -ई.पू. 3100 वर्ष
- विण्टरनित्स-ई.पू. चौथी शताब्दी से पहले।
- रामजी उपाध्याय ई.पू. 600 से 1200 के मध्य
- चन्द्रशेखर पाण्डेय एवं डॉ. नानूराम व्यास-320ई.पू. से 50 ई. के मध्य।

काल विषयक प्रमाण

- कश्मीरी कवि क्षेमेन्द्र ने महाभारत की कथा का संक्षिप्त रूप ग्यारहवीं शताब्दी ई. के 'भारतमञ्जरी' के रूप में प्रस्तुत किया है।
- ब्युहलर ने 'भारतमञ्जरी' को महाभारत से मिलती जुलती कथा बताया है।
- कुमारिलभट्ट (8वीं शताब्दी ई. का आरम्भ) ने महाभारत के दस पर्वों का उल्लेख किया।
- आठवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में शंकराचार्य ने महाभारत को स्त्रियों और शूद्रों की स्मृति कहा है।

- कम्बोज प्रदेश (कम्पूचिया) में प्राप्त 600 ई. के एक अभिलेख में वहाँ के एक मन्दिर के लिए रामायण और महाभारत की प्रतिलिपियों को उपहार के रूप में प्रदान किये जाने का उल्लेख मिलता है।
- जावा और बालिद्वीप में भी महाभारत छठी शताब्दी में प्रचलित था।
- 445 ई. के एक गुप्तकालीन अभिलेख में महाभारत को 'शतसाहस्री संहिता' कहा गया है।
- गुप्तकाल के दानपात्रों में भी यही उल्लेख है-

'शतसाहस्त्रयां संहितायां वेदव्यासेनोक्तम्'

- शान्तिपर्व के सीरियन-भाषीय रूपान्तर के तीन अध्यायों के आधार पर हर्टेल ने भी इसे प्राचीन स्वीकार किया है।
- यूनानी लेखक दिया क्रिसोस्तोम (Dio chrysostom) 50 ई. में भारत आया था, उसने लिखा है कि भारत में एक लाख श्लोकों का 'इलियड' प्रचलित था।
- विन्टरनित्ज ने 'इलियड' से उसका तात्पर्य महाभारत ही माना है।
- अनेक गृह्यसूत्रों में महाभारत के पर्वों की कथाएँ तथा भारत, महाभारत का उल्लेख प्राप्त होता है।

निष्कर्ष

- महाभारत का मूल रूप तो वैदिक युग की समाप्ति 800 ई.पू. में 'जय' नाम से बन चुका था।
- 'भारत' की रचना 500 ई.पू. हुई।
- वर्तमान महाभारत-200ई. पू. से 100 ई. पू. तक बनाहोगा।

महाभारत का स्वरूप

- एक लाख से अधिक श्लोक हैं।
- 'शत-साहस्री-संहिता' भी कहते हैं।
- अट्ठारह पर्वों में विभक्त है।
- युधिष्ठिर इस ऐतिहासिक काव्य के नायक हैं।
- सबसे बड़ा पर्व शान्तिपर्व (14 हजार श्लोक)
- सबसे छोटा पर्व- महाप्रस्थानिक पर्व (1500 श्लोक) है।
- अट्ठारह पर्वों के अलावा अन्त में इसके परिशिष्ट के रूप में हरिवंश पर्व में कृष्ण जीवन चरित वर्णित है, इसे मिलाकर श्लोकों की संख्या एक लाख होती है।

महाभारत के संस्करण

1. कलकत्ता संस्करण- (1834-39 ई.)

- चार भागों में प्रकाशित ।
- बिना किसी टीका के प्रकाशित।
- हरिवंश पर्व सम्मिलित।
- बाद में 1875 ई. में अनुज मिश्र तथा नीलकण्ठ की टीका के साथ प्रकाशित हुआ।

2. बम्बई संस्करण (1862 ई.)

- नीलकण्ठी टीका के साथ प्रकाशित।
- कलकत्ता संस्करण की अपेक्षा उत्कृष्ट।
- गीताप्रेस गोरखपुर से यही संस्करण छह खण्डों में सुन्दर हिन्दी अनुवाद के साथ प्रकाशित।
- इस संस्करण के साथ हरिवंश पर्व नहीं है।
- गीताप्रेस से हरिवंश पर्व अलग ग्रन्थ के रूप में हिन्दी अनुवाद सहित प्रकाशित है।

3. मद्रास संस्करण (1855-60 ई.)

- दाक्षिणात्य पाठ का यह संस्करण मद्रास से तेलगू लिपि में प्रकाशित है।
- हरिवंश पर्व तथा नीलकण्ठी टीका के उद्धरण भी शामिल हैं।

विशेष- भारतवर्ष के बाहर महाभारत का कोई संस्करण प्रकाशित नहीं हुआ।

- आलोचनात्मक संस्करण का सम्पादन, प्रकाशन पुणे (महाराष्ट्र) के भण्डारकर ओरियेन्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट (BORI) के तत्त्वावधान में प्रकाशित है।
- यह 24 जिल्दों में प्रकाशित है।
- यह संस्कृतशोध का एक मानदण्ड माना जाता है।
- इसका प्रकाशन 1923 ई. में विराटपर्व से प्रारम्भ हुआ था।
- इसके सम्पादक प्रारम्भ में उतगीकर थे, बाद में अन्य सम्पादक हुये।
- यह प्रामाणिक एवं वैज्ञानिक संस्करण है।

महाभारत का विकास

(i) जय

- महाभारत का मूलरूप जय के नाम से प्रसिद्ध था।

जयोनामेतिहासोऽयं श्रोतव्यो विजिगीषुणा।

(महाभारत 1/62/20)

- महाभारत के मङ्गल श्लोक में भी स्पष्ट उल्लेख है-

नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम् ।
देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत् ॥

- वर्तमान महाभारत के आदिपर्व के 65वें अध्याय से जय की सामग्री का आरम्भ हुआ था।
- क्षत्रिय उत्पत्ति का वर्णन इसी में है।
- इसमें 8800 श्लोक थे।
- व्यास ने इसे वैशाम्पायन को सुनाया था।
- धर्मचर्चा मुख्य विषयवस्तु थी।

(ii) भारत

- द्वितीय अवस्था में जय का विस्तार भारत के रूप में हुआ।
- इसमें 24000 श्लोक थे।
- इसमें उपाख्यानों को सम्मिलित नहीं किया गया था।
- भारत का प्रवचन वैशम्पायन ने व्यास के आदेश पर जनमेजय के समक्ष नागयज्ञ के अवसर पर किया था।

(iii) महाभारत

- अन्तिम अवस्था में एक लाख से अधिक श्लोकों का महाभारत ग्रन्थ बना ।
- भारत को 'महाभारत' के रूप में परिणत करने का अवसर नैमिषारण्य नामक पवित्र स्थान पर होने वाला यज्ञ था।
- इस यज्ञ को शौनक ऋषि ने अनुष्ठित किया। यह द्वादशवार्षिक सत्र था।
- इसके प्रवक्ता सौति नामक ऋषि थे।
- बारह वर्षों के दीर्घकाल में सौति ने अपने श्रोताओं की जिज्ञासा शान्त की।
- भारतवर्ष का विश्वकोष 'महाभारत' है।

महत्वाद् भातरतत्वाच्च महाभरतमुच्यते।(1.1.274)

- पूना संस्करण के सम्पादक डॉ. सुक्थनकर के अनुसार इसके उपबृंहण का कार्य मुख्यतः भृगुवंशी ब्राह्मणों ने किया।
- कुलपति शौनक स्वयं भार्गव थे।
- कृष्ण की कथा से अलंकृत करने के लिए इसमें हरिवंश खिलपर्व (परिशिष्ट) के रूप में जोड़ा गया है।
- सौति ने विशालकाय महाभारत को अट्ठारह मुख्य एवं दीर्घकाय पर्वों में विभक्त किया।
- वैशम्पायन के अनुसार इसमें दो सहस्र अध्याय हैं।
- इसके वर्तमान संस्करण में 1925 अध्याय प्राप्त होते हैं।

महाभारत की विषय वस्तु

1. आदिपर्व

- 19 उपपर्व, 233 अध्याय, 9000 श्लोक।
- तीसरा पौष्य उपपर्व -गद्यात्मक है। जिसमें जनमेजय के सर्प यज्ञ की पृष्ठभूमि है।
- पैलोम तथा आस्तीक उपपर्व में महाभारत की भूमिका वर्णित है।
- शकुन्तला आख्यान, पुरुवंशी राजाओं का वर्णन इसी पर्व में मिलता है।
- धृतराष्ट्र का अपनी पत्नी गांधारी से 100 पुत्रों की प्राप्ति ।
- पाण्डु की पत्नियों (कुन्ती+माद्री) से नियोग द्वारा 5 पुत्रों के जन्म की घटनाएँ ।
- कौरवों पाण्डवों की शिक्षा, दीक्षा तथा विवाहादि का वर्णन।

2. सभापर्व

- 10 उपपर्व,81 अध्याय।
- पाण्डवों की दिग्विजय यात्रा,जरासन्ध वध।
- युधिष्ठिर द्वारा राजसूय यज्ञ,शिशुपाल वध।
- द्रोपदी का चीर हरण, द्यूत क्रीड़ा में युधिष्ठिर का हारना।
- 12 वर्ष का वनवास, एक वर्ष का अज्ञातवास।

3 वनपर्व

- 22 उपपर्व,315 अध्याय ।
- नल और राम के आख्यान प्राप्त होते हैं।
- सावित्री तथा सत्यवान् की कथा।
- दुःशासन द्वारा द्रौपदी का चीरहरण।
- इन्द्र द्वारा कवच- कुण्डल लेने की वर्णन
- मनोरंजन के विविध आख्यान है।
- पाण्डवों की तीर्थ यात्रा।

4. विराटपर्व

- उपपर्व- 72 अध्याय, 2700 श्लोक
- पाण्डव वेश बदलकर मत्सराज विराट के राजप्रसाद में अज्ञातरूप में रहते थे।
- द्रौपदी के प्रति आसक्त कीचक का भीम द्वारा वध।
- विराट की गायों का कौरवों द्वारा हरण कर लेने पर अर्जुन और कौरवों का भीषण युद्ध तथा कौरव पराजित।
- अन्तिम उपपर्व (वैवाहिक पर्व) में विराट की पुत्री उत्तरा का विवाह अर्जुन पुत्र अभिमन्यु के साथ हुआ।

5. उद्योगपर्व

- 10 उपपर्व, 196 अध्याय, 7100 श्लोक
- इसका मुख्य वृत्त शान्ति के लिए वार्तालाप एवं युद्ध की पूर्वपीठिका की प्रस्तुति।
- दोनों पक्ष मित्रसंग्रह में सन्नद्ध होते हैं।
- कृष्ण के पास सहायता हेतु अर्जुन और दुर्योधन जाते हैं। दुर्योधन को पूरी सेना, अर्जुन को शस्त्र न धारण करने वाली प्रतिज्ञा के साथ कृष्ण मिले।
- शान्ति प्रस्ताव जो पाण्डव केवल पाँच गाँव लेकर भी सन्तुष्ट रहने की बात करते हैं।
- कृष्ण का भी शान्ति दूत बनना व्यर्थ हो जाता है।
- अम्बोपाख्यान' के रूप में पूर्व कथा सुनाई गयी है।
- काशिराज की पुत्री अम्बा का हरण भीष्म ने किया था।

- दूसरे जन्म में अम्बा द्रुपद के घर में शिखण्डी के रूप में जन्म लेती है।
- शिखण्डी में भीष्म से बदला लेने की भावना।
- महाभारत युद्ध की प्रस्तावना।

6. भीष्म पर्व

- 5 पर्व,122 अध्याय, 6100 श्लोक
- भीष्म के सेनापतित्व में10 दिनों तक महाभारत युद्ध का वर्णन।
- सञ्जय धृतराष्ट्र को समस्त युद्ध वृत्तान्त दिव्य दृष्टि से देखकर बताता है।
- सभापर्व के समान इस पर्व के आरम्भ में भूगोल वर्णन है।
- युद्ध के आरम्भ में कृष्णार्जुन संवाद के रूप में 18 अध्यायों का अंश **श्रीमद्भगवद्गीता** है।
- युद्ध के तीसरे दिन भीष्म के पराक्रम से विवश होकर कृष्ण अपनी प्रतिज्ञा तोड़कर भीष्म के वध के लिए उद्यत होते हैं। भीष्म कृष्ण की स्तुति करते हैं।
- शिखण्डी को आगे करके अर्जुन द्वारा भीष्म को बाणों की शय्या पर सुला दिया गया।
- भीष्म को प्राण त्यागने के लिए उत्तरायण की प्रतीक्षा ।

7-द्रोण पर्व

- 8- उपपर्व, 202- अध्याय, 10000 श्लोक
- द्रोणाचार्य के सेनापतित्व में कौरवों तथा पाण्डवों के साथ 5 दिनों तक के भीषण तथा अन्यायपूर्ण युद्ध का वर्णन है।
- युद्ध में क्रमशः संशप्तकों, अभिमन्यु, जयद्रथ, घटोत्कच, तथा द्रोणाचार्य का वध होता है।
- अभिमन्यु की मृत्यु पर व्यास युधिष्ठिर के दुःख को कम करने के लिए 16 राजाओं का चरित सुनाते हैं।
- द्रोण का वध छलपूर्वक होने से उनका पुत्र अश्वत्थामा कुपित होकर 'नारायणास्त्र' का प्रयोग करता है।
- द्रोणपर्व के पाठ और श्रवण का फल भी बताया गया है।

8- कर्णपर्व

- कौरव-सेना का अध्यक्ष कर्ण बनता है जो दो दिनों (16 वें 17वें) तक युद्ध करके मारा जाता है।
- कर्ण के अहम् की तुष्टि के लिए मद्रनरेश शल्य को उसका सारथि बनाया जाता है।
- कर्ण और शल्य का परस्पर रोचक वाग्युद्ध (वाणी युद्ध) होता है।

9 शल्य पर्व

- 2 उपपर्व (ह्रद पर्व, गदापर्व),65 अध्याय,3700 श्लोक
- इसमे महाभारत के अन्तिम दिन (18 वें दिन) के युद्ध का वर्णन है।
- शल्य कौरवों का सेनापति बना था।

द्रोणे च निहते कर्णे भीष्मे च विनिपातिते।
आशा बलवती राजन् शल्यो जेष्यति पाण्डवान् ॥

- शल्य का वध ।
- दुर्योधन का गदा युद्ध और ऊरुभङ्ग इस पर्व की मुख्य घटना है।
- इस पर्व के साथ युद्ध समाप्त हो जाता है।
- शल्य पर्व के आख्यानों में तीर्थों का माहात्म्य वर्णित है।

10 - सौप्तिक पर्व

- 1-उपपर्व (ऐषीक), 18 अध्याय , 810 श्लोक
- मुख्य कथा पाण्डवों की सोई हुई सेना पर आक्रमण करके द्रौपदी के पाँचों पुत्रों के मारे जाने की है।
- यह कुकर्म -**कृपाचार्य, कृतवर्मा और अश्वत्थामा** ने किया था।
- इस समाचार से दुर्योधन की सन्तोष पद मृत्यु होती है।
- पाण्डव अश्वत्थामा को पकड़ कर उसके सिर की मणि निकाल लेते हैं।

11- स्त्रीपर्व

- 3-उपपर्व (जलप्रदानिक, स्त्रीविलाप, श्राद्ध) 27 अध्याय, 820 श्लोक
- श्राद्ध उपपर्व में कुन्ती युधिष्ठिर को कर्ण के जन्म का वृत्तान्त सुनाकर उसका भी श्राद्ध करने को कहती हैं।
- इस घटना पर युधिष्ठिर स्त्री जाति को शाप देते हैं कि अब स्त्रियों के मन में रहस्य की कोई बात छिपी नहीं रहेगी।
- गान्धारी द्वारा कृष्ण के वंश के विनाश का शाप।

12-शान्ति पर्व

- 3 उपपर्व - (राजधर्मानुशासन, आपद्धर्म, मोक्षधर्म)
- 365 अध्याय,14725 श्लोक
- यह पर्व महाभारत में बाद में जोड़ा हुआ पर्व प्रतीत होता है।
- यह पर्व जय और भारत में नहीं था।
- यह महाभारत का सबसे बड़ा पर्व है।
- इसमें धार्मिक और दार्शनिक सामग्री सर्वाधिक हैं।
- राजधर्म, वर्णधर्म, आश्रमधर्म, दण्डनीति आपद्धर्म आदि की विवेचना हुई है।

- मोक्षधर्म के अन्तर्गत सृष्टि, जीव, आत्मा, कर्मज्ञान, पुरुषार्थ आदि का प्रतिपादन। इस प्रसंग में पराशरगीता - (अध्याय-290-98) हंसगीता - (अध्याय -299) आदि महत्वपूर्ण ग्रन्थ हैं।
- यह पर्व अपने आप में स्वतन्त्र पुराण जैसा है ।
- शरशय्या पर ही भीष्म के द्वारा युधिष्ठिर आदि को उपदेश दिया गया है।

13 - अनुशासन पर्व

- 2-उपपर्व 168 - अध्याय
- 10000 श्लोक मुख्य रूप से धर्मशास्त्रीय उपदेश।
- विषयवस्तु की दृष्टि से शान्तिपर्व के समान।
- प्रथम उपपर्व - दान धर्म (166 अध्याय)
- द्वितीय उपपर्व -'भीष्म का स्वर्गारोहण' (2अध्याय)
- ब्राह्मणों की महत्ता तथा उन्हें दान करने का वर्णन जैसा महाभारत में है वैसा अन्यत्र कहीं नहीं है।
- इस पर्व के 17वें अध्याय में ''शिवसहस्रनामस्तोत्र'' तथा 149 वें अध्याय में - **'विष्णुसहस्रनामस्तोत्र'** वर्णित है।

14- आश्वमेधिक पर्व

- 92 अध्याय, 4250 श्लोक
- व्यास के आदेश पर युधिष्ठिर अश्वमेध-यज्ञ करते हैं।
- अर्जुन द्वारा 1 वर्ष तक यज्ञाश्व की रक्षा होती है।
- 'अनुगीता' नामक उपपर्व में दर्शनशास्त्र की सामग्री है।
- दक्षिणभारतीय संस्करण में 21 अध्यायों का एक अतिरिक्त उपपर्व-वैष्णव धर्म है।

15 - आश्रमवासिक पर्व

- 3-उपपर्व 39- अध्याय 110 - श्लोक
- मुख्यवस्तु- धृतराष्ट्र के साथ गान्धारी, कुन्ती और विदुर का वन में आश्रम बनाकर निवास करना।
- धृतराष्ट्र के15 वर्षों तक युधिष्ठिर परामर्श दाता बने रहे। उसके बाद वनवास।

16- मौसल पर्व

- 304 श्लोक
- युधिष्ठिर के सिंहासनारोहण के 36 वर्ष बाद गांधारी का शाप सत्य होता है ।
- यादव वंश के लोग परस्पर युद्ध करके समाप्त हो जाते हैं।
- कृष्ण भी एक व्याध द्वारा भ्रमवश मारे जाते हैं।
- यदुवंश के विनाशक 'मूसल' के कारण ही इस पर्व का नाम मौसल है।

17 -महाप्रस्थानिक पर्व

- 3- अध्याय, 115- श्लोक
- पाण्डवों की हिमालय यात्रा का वर्णन ।
- हिमालय में क्रमशः द्रौपदी,सहदेव आदि गिरते जाते हैं और युधिष्ठिर उनके पतन का कारण बतालाते हैं।
- युधिष्ठिर पार्थिव शरीर से ही स्वर्ग जाते हैं।

18-स्वर्गारोहण पर्व

- 5- अध्याय 220 - श्लोक
- इसमें युधिष्ठिर के स्वर्ग पहुँचने तथा देवदूत के साथ नरक में जाकर अपने अनुजों के करुण क्रन्दन सुनने का वृत्तान्त ।
- आश्वासन पाकर दिव्य लोक जाकर कृष्ण अर्जुन आदि से मिलते हैं।
- अन्तिम अध्याय में महाभारत का माहात्म्य तथा उपदेश ।
- इसे महाभारत का सार- ''भारत-सावित्री'' कहते हैं।

महाभारत की प्रमुख टीकाएँ

- कुल 36 टीकाएँ प्राप्त होती है जिनमें मुख्य टीकाएँ निम्नलिखित हैं।

टीकाकार	टीका
1. देवबोध	ज्ञानदीपिका
2. वैशम्पायन	मोक्षधाम
3. विमलबोध	विषमश्लोकी
4. नारायणसर्वज्ञ	भारतार्थप्रकाश
5. चतुर्भुज मिश्र	भारतोपायप्रकाश
6. आनन्दपूर्ण	जयकौमुदी
7. अर्जुन मिश्र	भारत संग्रहदीपिका
8. वादिराज	लक्षाभरण
9. नीलकण्ठ चतुर्धर	भारतभावदीप

महाभारत के प्रमुख उपाख्यान

1. शकुन्तलोपाख्यान - आदिपर्व, अध्याय -68-74 तक।

2. मत्स्योपाख्यान - मत्स्य द्वारा प्रलय में मनु को बचाने की कथा।

3. रामोपाख्यान - वनपर्व 274-291 अध्याय। वाल्मीकिरामायण की कथा संक्षेप में।

4. शिवि उपाख्यान - वनपर्व अध्याय 292-299 तक। शिवि द्वारा अपने प्राण देकर भी शरणागत कपोत की बाज से रक्षा ।

5. सावित्री उपाख्यान - वनपर्व में पतिव्रत धर्म की पराकाष्ठा

6. नलोपाख्यान - वनपर्व अध्याय - 53 से 79 तक। राजानल दमयन्ती की प्रणय कथा। नैषधीयचरितम् का उपजीव्य ।

7. **अम्बोपाख्यान -**उद्योगपर्व में

8. हरिवंश पुराण - यादवों की विस्तारपूर्वक कथा

इसमें तीन पर्व -

(1) हरिवंशपर्व - श्रीकृष्ण के पूर्वजों का वर्णन।

(2) विष्णुपर्व - श्रीकृष्ण की लीलाओं का वर्णन।

(3) भविष्यपर्व - कलियुग के प्रभाव का वर्णन ।

महाभारत में अङ्गीरस

- महाभारत में **शान्त रस** की प्रधानता है।
- मोक्ष नामक पुरुषार्थ का अङ्गीत्वेन वर्णन है।

महाभारत आश्रित ग्रन्थ

महाकाव्य -				
किरातार्जुनीय	-	भारवि	-	बृहत्त्रयी
शिशुपालवध	-	माघ	-	बृहत्त्रयी
नैषधीयचरित	-	श्रीहर्ष	-	बृहत्त्रयी
भारतमञ्जरी	-	क्षेमेन्द्र		
नलाभ्युदय	-	वामनभट्ट बाण		
दूतघटोत्कच	-	भास		
मध्यमव्यायोग	-	भास		
बालचरित	-	भास		
ऊरुभङ्ग	-	भास		
पञ्चरात्र	-	भास		
दूतवाक्य	-	भास		
कर्णभार	-	भास		
अभिज्ञानशाकुन्तल	-	कालिदास		
वेणीसंहार	-	भट्टनारायण		
बालभारत	-	राजशेखर		
किरातार्जुनीयव्यायोग	-	वत्सराज		
चम्पूग्रन्थ				
नलचम्पू	-	त्रिविक्रमभट्ट		
भारतचम्पू	-	अनन्तभट्ट		
भारतचम्पू	-	राजचूड़ामणि दीक्षित		
पाञ्चालीस्वयंवरचम्पू	-	नारायण चम्पू		

महाभारत का अंश भगवद्गीता

- स्मार्त परम्परा में एकमात्र ग्रन्थ भगवद्गीता स्वीकृत है।
- यह भीष्मपर्व (अध्याय-25-42) में है।
- इसमें 18 अध्याय, 700श्लोक एवं अनुष्टुप् छन्द है।
- श्रीमद्भगवद्गीता संस्कृत भाषा की सर्वाधिक लोकप्रिय रचना है।
- दार्शनिक चिन्तन के तीन प्रस्थान हैं-
  श्रौतप्रस्थान, सौत्रप्रस्थान व स्मार्तप्रस्थान।
- गीता का अर्थ है - गायी गयी / कही गयी ।
- भीष्म पर्व के अनुसार -
  ''या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्माद्विनिःसृता।''
- उपनिषद् शब्द स्त्रीलिङ्ग है अतः गीता शब्द में स्त्रीलिङ्ग का प्रयोग।
- गीता में उपनिषत्सु शब्द का प्रयोग है। यह आदरार्थ प्रयोग है ।
- गीता का रचनाकाल महाभारत का प्रारम्भिक दिवस है।
- मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी को गीता जयन्ती मनाई जाती है ।
- गीता पर सर्वाधिक प्राचीन भाष्य **'शाङ्करभाष्य'** है।

गीता के अध्यायों के नाम

अध्याय नाम		श्लोक संख्या
1. अर्जुन विषाद योग	-	47
2. सांख्ययोग	-	72
3. कर्मयोग	-	43
4. ज्ञानकर्मसंन्यासयोग	-	42
5. कर्मसंन्यायोग	-	29
6. आत्मसंयमयोग	-	47
7. ज्ञानविज्ञानयोग	-	30
8. अक्षरब्रह्मयोग	-	28
9. राजविद्याराजगुह्ययोग	-	34
10. विभूतियोग	-	42
11. विश्वरूपदर्शनयोग	-	55
12. भक्तियोग	-	20
13. क्षेत्रक्षेत्रज्ञविभागयोग	-	34
14. गुणत्रयविभागयोग	-	27
15. पुरुषोत्तमयोग	-	20
16. दैवासुरसम्पद्विभागयोग	-	24
17. श्रद्धात्रयविभागयोग	-	28
18. मोक्षसंन्यासयोग	-	78
कुल श्लोक	-	**700**

महाभारत के प्रमुख पद्य

- धर्मे चार्थे च कामे च ....।
- प्रकाशलक्षणदेवा मनुष्याः कर्मलक्षणाः
- अहो सिद्धार्थता तेषां सन्तीह पाणयः।
  न पाणिलाभादधिको लाभ कश्चन विद्यते।।
- न नः समितिं गच्छेद् यश्च नो निर्वपेत कृषिम्।
- गुह्यं ब्रह्म तदितं ब्रवीमि, न हि मानुषात् श्रेष्ठतरं हि किञ्चित् ।
- यास्मिन् यथा वर्तते यो मनुष्यस्तस्मिंस्तथा वर्तित्व्यं स धर्मः ।
  मायाचारो मायया वर्तितव्यः साध्वाचारः साधुना प्रत्युपेयः ।।

- वृत्तं यत्नेन संरक्षेद् वित्तमेति च याति च ।
  अक्षीणो वित्ततः क्षीणो वृत्ततस्तु हतो हतः ।।
- सुलभाः पुरुषा राजन्, सततं प्रियवादिनः ।
  अप्रियस्य च पथ्यस्य, वक्ताश्रोता च दुर्लभः ।।
- अक्रोधेन जयेत् क्रोधम् असाधुं साधुना जयेत् ।
  जयेत् कदर्यं दानेन जयेत् सत्येन चानृतम् ।।
- न च शत्रुरवज्ञेयो दुर्बलोऽपि बलीयसा ।
  अल्पोऽपीहि दहत्यग्निर्विषमल्पं हिनस्ति च ।।
- अर्थः कामश्च स्वर्गश्च, हर्षः क्रोधं श्रुतं दमः
  अर्थादेतानि सर्वाणि, प्रवर्तन्ते नराधिप।।
- धनमाहुः परं धर्मं प्रतिष्ठितम्
  जीवन्ति धनिनो लोके, मृता ये त्वधना नराः।।
- राजा प्रजानां प्रथमं शरीरं प्रजाश्च राज्ञोऽप्रतिमं शरीरम् ।
  राज्ञा विहीना न भवन्ति देशा, देशैर्विहीना न नृपा भवन्ति ।
- बन्धुरात्मात्मनस्तस्य, येनैवात्माऽऽत्मनाजितः ।
  स एव नियतो बन्धुः स एव नियतो रिपुः ।।
- रथः शरीरं पुरुषस्य राजन् आत्मा नियन्तेन्द्रियाण्यस्य चाश्वाः ।
  तैरप्रमत्तः कुशली सदश्वैर्दान्तैः सुखं याति रथीव धीरः ।।
- शुश्रूषा श्रवणं चैव ग्रहणं धारणं तथा ।
  ऊहापोहोऽर्थविज्ञानं, तत्त्वज्ञानं च धीगुणाः।
- यस्मिन् सर्वं यतः सर्वं यः सर्वं सर्वतश्च यः
  यश्च सर्वमयो देवस्तस्मै सर्वात्मने नमः ।।
- उपदेशेन वर्तामि नानुशास्मीह कञ्चन
- यथा बीजं विना क्षेत्रमुप्तं भवति निष्फलम्।
  तथापुरुषकारेण विना दैवं न सिध्यति।।
- ''अहिंसा परमो धर्मः''
- चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः ।
- 'धर्म एव ततो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः।
- प्रज्ञा प्रतिष्ठा भूतानां प्रज्ञा लाभः परो मतः
  प्रज्ञा वै श्रेयसी लोके प्रज्ञा स्वर्गो मतः सताम्।।

कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य

- गान्धारी किसकी माँ थी - दुर्योधन की
- सुभद्रा किसकी बहन थी - कृष्ण की
- माद्री किसी माता थी - नकुल एवं सहदेव की।
- भीष्मस्य पितृकृतं नाम किम् - देवव्रतः।
- सैवलोऽस्ति -शकुनिः।
- द्रौणिः अस्ति - अश्वत्थामा।
- दासी पुत्रः कः - विदुरः।
- वैरोचनिः कः - बलिः।
- द्रोणाचार्यस्य वधं केन अकरोत् - धृष्टद्युम्नेन।
- बृहन्नला ....आतीत्। - अर्जुनः।

प्रमुख महाकाव्य

महाकवि भारवि का परिचय

- **पिता** – (i) श्रीधर, (ii) नारायणस्वामी (अवन्तिसुन्दरीकथा के अनुसार)
- **माता** – सुशीला
- **पत्नी** – रसिकवती या रसिका
- **पुत्र** – मनोरथ
- **मूल नाम** – दामोदर
- **गोत्र** – कुशिक
- **जन्म स्थान** – (i) दक्षिण भारत में नासिक प्रदेश के **'अचलपुर'** (एलिचपुर), (ii) धारानगरी (अवन्तिसुन्दरी कथा के अनुसार)
- **समय** – छठवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध/सातवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध

भारवि की वंशपरम्परा

नारायणस्वामी (श्रीधर) – (भारवि के पिता)
↓
भारवि – (दण्डी के प्रपितामह)
↓
मनोरथ – (दण्डी के पितामह)
↓
वीरदत्त-गौरी – (दण्डी के पिता-माता)
↓
दण्डी – (भारवि के प्रपौत्र)

- **सम्प्रदाय** – शैव
- **उपाधि** – 'आतपत्र भारवि'
- **''आधत्ते कनकमयातपत्रलक्ष्मीम्'' (किरात. 5.39)** इस श्लोक में **'कनकमय आतपत्र'** (सोने का छाता) की उपमा को अति सुन्दर मानकर आलोचकों ने कवि का नाम ही **'आतपत्र भारवि'** रख दिया।
- **आश्रयदाता** – 1. विष्णुवर्द्धन (पुलकेशिन द्वितीय के अनुज), 2. सिंहविष्णु (अवन्तिसुन्दरीकथा के अनुसार), 3. दुर्विनीत, 4. महेन्द्रविक्रम (सिंहविष्णु का पुत्र)
- राजा दुर्विनीत ने 'किरातार्जुनीयम्' के 15वें सर्ग पर संस्कृतटीका लिखी।
- 'भारवि' **दण्डी के प्रपितामह** हैं।
- भारवि की वाणी को **'प्रकृतिमधुरा'** कहा जाता है।
- भारवि महाकाव्यों में **'अलङ्कृतकाव्यशैली'** या **'रीतिशैली' के जन्मदाता हैं।** इनके काव्यमार्ग को **विचित्रमार्ग** कहते हैं।
- श्री एन. सी. चटर्जी भारवि को **'ट्रावनकोर' का निवासी** सिद्ध करते हैं।
- एक किंवदन्ती के अनुसार पिता द्वारा अपमानित भारवि उनके वध के लिए उद्यत हो गये, परन्तु पिता द्वारा उनके हित के लिए डाँटा गया, यह जानकर उन्हें बहुत पश्चात्ताप हुआ, और पिता ने छः माह तक ससुराल में सेवा करने का आदेश दिया।

- भारवि का जन्म 560 ई. के लगभग तथा रचनाकाल 580 ई. के लगभग अधिकांश आलोचकों ने माना है।
- भारवि **'अर्थगौरव'** के लिए प्रसिद्ध हैं।
- आचार्य मल्लिनाथ ने भारवि के 'किरातार्जुनीयम्' पर **'घण्टापथ'** नाम की टीका लिखी है।
- भारवि राजनीति के प्रकाण्ड पण्डित हैं।
- मल्लिनाथ, भारवि की कविता की उपमा **'नारिकेलफल'** से करते हैं– **'नारिकेलफलसम्मितं वचः'**
- दक्षिण के **'एहोल शिलालेख'** में भारवि का नाम उल्लिखित है।
- भारवि के किरातार्जुनीयम् को **'लक्ष्म्यन्त'** महाकाव्य, माघ के शिशुपालवधम् को **'श्र्यन्त'** महाकाव्य तथा श्रीहर्ष के नैषधीय चरितम् को **'आनन्दान्त'** महाकाव्य कहते हैं।

महाकवि 'भारवि' विषयक प्रशस्तियाँ

1. भारवेरर्थगौरवम्। **– उद्भट**
2. वृत्तच्छत्रस्य सा कापि वंशस्थस्य विचित्रता।
   प्रतिभा भारवेर्येन सच्छायेनाधिकीकृता।।
   – क्षेमेन्द्र - सुवृत्ततिलक
3. नारिकेलफलसम्मितं वचो भारवेः सपदि तद् विभज्यते।
   स्वादयन्तु रसगर्भनिर्भरं सारमस्य रसिका यथेप्सितम्।।
   – मल्लिनाथ
4. प्रदेशवृत्त्यापि महान्तमर्थं प्रदर्शयन्ती रसमादधाना।
   सा भारवेः सत्पथदीपिकेव एषा कृतिः कैरिव नोपजीव्या।।
   – कृष्णकवि
5. तादात्म्यं रसभावयोः भारविः स्पष्टमूचिवान्।।
   – शारदातनय
6. "प्रकृतिमधुरा भारविगिरः।" **– श्रीधरदास (सदुक्तिकर्णामृत)**
7. वंशस्थवृत्तेन धृतातपत्रो वृत्तेन संदर्शितराजवृत्तिः।
   अर्थप्रकर्षाहृतराजलक्ष्मीर्नृपायते भारविरात्तकीर्तिः।।
   – आचार्य कपिलदेव द्विवेदी
8. There is no doubt of the power of Bharvi in describption, his style at its best has a calm dignity which is certainly attractive, while he excels also in the observation and record of the beauties of nature and of maidens.
   हिन्दी अनुवाद – भारवि की वर्णन-शक्ति के विषय में सन्देह को अवसर नहीं है। उनकी शैली उत्कृष्टरूप में शान्त गौरवमयी है जो निश्चय ही आकर्षक है। वे प्रकृति और प्रमदाओं के सौन्दर्य, निरीक्षण और उन्हें चित्रित करने में सर्वश्रेष्ठ हैं।
   – प्रो. ए. बी. कीथ, संस्कृत साहित्य का इतिहास
9. स मेधावी कविर्विद्वान् भारविः प्रभवो गिराम्।
   अनुसाध्याकरोन्मैत्रीं नरेन्द्रे विष्णुवर्धने।।
   – ऐहोल शिलालेख - रविकीर्ति।
10. अर्थदीधितिसंवीता, सन्नीरजसुहासिनी।
    अज्ञोलूकनिरानन्दा, भा रवेरिव भारवेः।।
    – आचार्य कपिलदेव द्विवेदी

किरातार्जुनीयम्

- **लेखक** – भारवि
- **विधा** – महाकाव्य
- **सर्ग** – 18
- **प्रधानरस** – वीर
- **उपजीव्य** – महाभारत का वनपर्व
- **कथानक** – अर्जुन द्वारा भगवान् शिव की तपस्या से पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति।
- **प्रमुखपात्र** – अर्जुन, द्रौपदी, युधिष्ठिर, भीम, नकुल, सहदेव, श्रीकृष्ण, वनेचर, सुयोधन (दुर्योधन), इन्द्र, किरातवेशधारी शिव, व्यास, यक्ष आदि
- भारवि का प्रामाणिक जीवनवृत्त सर्वथा अप्राप्त है, कुछ किंवदन्तियाँ प्रचलित हैं।
- महाकवि दण्डी विरचित 'अवन्तिसुन्दरीकथा' के अनुसार भारवि का जीवनवृत्त निम्नलिखित है।
- भारवि चालुक्यवंशी सम्राट् पुलकेशिन द्वितीय के अनुज विष्णुवर्धन (615 ई0) के मित्र/सभापण्डित/राजकवि थे।
  स मेधावी कविर्विद्वान् भारविः प्रभवो गिराम्।
  अनुरुध्याकरोन्मैत्रीं नरेन्द्रे विष्णुवर्धने॥
- भारवि **कुशिक/कौशिक गोत्रीय** ब्राह्मण थे।
- दण्डी की रचना – **दशकुमारचरितम्।**
- भारवि का सम्बन्ध कोङ्कण के गङ्गवंशी नरेश दुर्विनीत और काञ्ची के पल्लववंशी नरेश सिंहविष्णु तथा उनके पुत्र महेन्द्रविक्रम के साथ भी था।
- सिंहविष्णु से मिलते समय कवि की अवस्था थी – **बीस वर्ष।**
- किरातार्जुनीयम् के 15वें सर्ग की संस्कृत टीका लिखी थी – **विद्वान् नरेश दुर्विनीत ने।**
- एक अन्य किंवदन्ती के अनुसार भारवि धारानगरी के निवासी थे।

भारवि के समय निर्धारण में प्रमुख स्रोत

- पुलकेशिन द्वितीय का एहोल शिलालेख।
- वामन और जयादित्य की काशिकावृत्ति।
- गुम्मरेड्डीपुर का पत्रलेख।
- महाकवि दण्डी की अवन्तिसुन्दरीकथा और उस पर आधारित 'अवन्तिसुन्दरीकथासार'।
- विष्णुवर्धन, सिंहविष्णु तथा दुर्विनीत की ऐतिहासिकता।
- भारवि का जन्मसमय – **560 ई0 के लगभग।**
- भारवि का रचनाकाल – **615 ई0 के लगभग।**
- भारवि का समय – **600 ई0 के आसपास (555 ई0 से 625 ई0 के मध्य) (छठी शती के उत्तरार्ध से सातवीं शती के पूर्वार्द्ध तक)**
- श्री एन0सी0 चटर्जी ने उन्हें **ट्रावनकोर** का निवासी बताया है।
- विद्वानों का मानना है कि महाकवि भारवि विष्णुवर्धन, सिंहविष्णु, महेन्द्रविक्रम एवं दुर्विनीत के आश्रय में रहने वाले एक **दाक्षिणात्य कवि** थे।

- महाकवि भारवि का जन्म – **नासिक के समीपवर्ती बरारप्रान्त के 'अचलपुर' (एलिचपुर) नामक ग्राम में।**
- भारवि **शैवदर्शन** के अनुयायी थे, उन्होंने किरातार्जुनीयम् के 18वें सर्ग में शिवस्तुति की है।
- भारवि किस कवि से प्रभावित थे – **कालिदास से**
- भारवि से कौन प्रभावित था – **महाकवि माघ**
- राजशेखर के अनुसार कालिदास एवं भर्तृमेण्ठ की भाँति भारवि की भी परीक्षा उज्जयिनी में ली गयी थी – **''श्रूयते चोज्जयिन्यां काव्यकारपरीक्षा''**
- **उत्फुल्लस्थलनलिनीवनादमुष्मात्.......कनकमयातप-त्रलक्ष्मीम् (5/39)** 'किरातार्जुनीयम्' के इस श्लोक की उपमा के कारण ही उन्हें '**आतपत्रभारवि**' की उपाधि मिली।

भारवि की रचना

- भारवि की रचना/कृति – **''किरातार्जुनीयमहाकाव्यम्'** **(एकमात्र कृति)**
- सर्ग – **18 (अठारह)**
- श्लोक – **1040 (कुछ विद्वानों के अनुसार-1030)**
- उपजीव्यग्रन्थ – **महाभारत का वनपर्व**
- नायक – **मध्यमपाण्डव अर्जुन (धीरोदात्त)**
- प्रतिनायक – **किरातवेशधारी शिव**
- नायक की प्रकृति – **धीरोदात्त**
- नायिका – **द्रौपदी**
- मुख्य/अङ्गी/प्रधानरस – **वीररस**
- गौण/अङ्गरस – **शृङ्गार आदि**
- रीति एवं गुण – **पाञ्चाली रीति एवं ओजगुण**
- किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग में वैदर्भी रीति
- अलङ्कार – **3 शब्दालङ्कार, 60 अर्थालङ्कार, 7 चित्राक्षर**
- भारवि की शैली – **पाण्डित्यप्रधान अलङ्कृतशैली**
- बृहत्त्रयी में प्रथमस्थान पर परिगणित महाकाव्य –
  1. भारवि का किरातार्जुनीयम् (सर्ग 18)
  2. माघ का शिशुपालवधम् (सर्ग 20)
  3. श्रीहर्ष का नैषधीयचरितम् (सर्ग 22)
- भारवि के किरातार्जुनीयम् का प्रारम्भ – '**श्री**' – शब्द से तथा प्रत्येक सर्ग के अन्तिम श्लोक में '**लक्ष्मी**' पद का प्रयोग हुआ है।
- भारवि के काव्य को कहा जाता है – **''लक्ष्मीपदाङ्क''**
- किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग में श्लोक/पद्य हैं – **46**
- किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग में छन्द – **वंशस्थ** (1-44 श्लोकों तक)
- 45वें श्लोक में (न समयपरिरक्षणं क्षमं ते....) – **पुष्पिताग्रा छन्द**
- अन्तिम 46वें श्लोक में (विधिसमयनियोगाद् दीप्तिसंहारजिह्मम्) – **मालिनी छन्द**
- अर्थगौरव के लिए प्रसिद्ध हैं – **भारवि** (भारवेरर्थगौरवम्)
- नायक अर्जुन और प्रतिनायक किरात (शिव) के नाम पर महाकाव्य का नाम पड़ा – **'किरातार्जुनीयम्'**
- श्रीकृष्णमाचारियर ने किरातार्जुनीयम् की कितनी टीकाओं का उल्लेख किया है – **34**
- किरातार्जुनीयम् की सर्वाधिक प्रसिद्ध, प्रामाणिक एवं सारवती टीका का नाम – **'घण्टापथ'** – **मल्लिनाथ**
- ''घण्टापथ'' का शाब्दिक अर्थ है – **राजमार्ग**
- किरात की अन्य टीकाओं में सर्वाधिक लोकप्रिय टीका है – **'शब्दार्थदीपिका'** – **श्री चित्रभानु** (केवल प्रथम तीन सर्गों पर)
- किरातार्जुनीयम् के प्रथम तीन सर्गों को कहा जाता है – **'पाषाणत्रय'**
- भारवि के आश्रयदाता दुर्विनीत ने संस्कृत टीका लिखी – **किरातार्जुनीयम् के 15वें सर्ग पर।**
- 'शब्दावतार' नाम से बृहत्कथा का संस्कृत रूपान्तरण किसने किया – **दुर्विनीत ने**
- किरातार्जुनीयम् का 15वाँ सर्ग प्रसिद्ध है – **चित्रकाव्य के लिए**
- भारवि का एकाक्षर श्लोक – (केवल नकार का प्रयोग)
  न नोननुन्नो नुन्नोनो नाना नानानना ननु।
  नुन्नोऽनुन्नो ननुन्नेनो नानेना नुन्ननुन्ननुत्॥
  (किरात० – 15/14)
- अर्थगौरव का क्या अर्थ है – अल्पशब्दों में प्रभूत अर्थ का सन्निवेश अर्थात् 'गागर में सागर भरना।'
- **''नारिकेलफलसम्मितं वचः''** मल्लिनाथ का यह कथन किसके लिए है – भारवि के लिए।
- **''प्रसन्नगम्भीरपदा सरस्वती''** यह वाक्य किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है – किरातार्जुनीयम् से
- **''स्फुटता न पदैरपाकृता न च न स्वीकृतमर्थगौरवम्''** यह वाक्य किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है – किरातार्जुनीयम् (2/27)
- किरातार्जुनीयम् का मुख्य कथानक है – अर्जुन द्वारा किरातवेशधारी भगवान् शङ्कर से पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति।
- अर्जुन पाशुपत अस्त्र के लिए भगवान् शङ्कर को प्रसन्न करने के लिए हिमालय (इन्द्रकील) पर्वत की यात्रा व्यास के कहने पर करते हैं।
- किरातार्जुनीयम् में 'किरात' से तात्पर्य है–**किरातवेषधारी शिव**
- 'किरातार्जुनीयम्' का मङ्गलाचरण है – **वस्तुनिर्देशात्मक**
- किरातार्जुनीयम् महाकाव्य का फल है – **नायक अर्जुन को किरातवेशधारी शिव से पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति।**
- युधिष्ठिर बारह वर्षों के वनवास के काल में अपने अनुजों और द्रौपदी के साथ कहाँ रहते थे – **द्वैतवन में।**

किरातार्जुनीयम् का नामकरण

- किरातश्च अर्जुनश्च किरातार्जुनौ **(द्वन्द्वसमास)** तौ अधिकृत्य कृतं काव्यम् इति किरातार्जुनीयम्।
- **किरातार्जुन** + '**छ**' ('अधिकृत्य कृते ग्रन्थे' के अर्थ में ''छ'' प्रत्यय)
- **'शिशुक्रन्दयमसभद्वन्द्वेन्द्रजननादिभ्यश्छः'** सूत्र से ''छ'' प्रत्यय।
- किरातार्जुन + छ (ईय) = किरातार्जुनीय। (**''आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम्''** से 'छ' के स्थान पर 'ईय' आदेश हो गया)

- ग्रन्थवाची शब्द सदा नपुंसकलिङ्ग में होते हैं, अतः – 'किरातार्जुनीयम्' पद बना।
- इस प्रकार नायक अर्जुन और प्रतिनायक (शिव) के नाम पर महाकाव्य का नाम '**किरातार्जुनीयम्**' पड़ा।

किरातार्जुनीयमहाकाव्य के पात्र

- अर्जुन (**नायक**), द्रौपदी (**नायिका**), किरातवेशधारी शिव (**प्रतिनायक**), श्रीकृष्ण, युधिष्ठिर, भीम, नकुल, सहदेव, वनेचर, दुर्योधन, कर्ण, भीष्म, परशुराम, यक्ष, द्रोण, इन्द्र, व्यास, मूक (शूकर) आदि प्रमुख पात्र हैं।

किरातार्जुनीयमहाकाव्य के टीकाकार आचार्य मल्लिनाथसूरि का जीवनचरित्र

- काश्यपगोत्रीय तेलगू ब्राह्मण – **मल्लिनाथ सूरि**
- मल्लिनाथ के पिता – **कार्दिन**
- मल्लिनाथ के दो पुत्र – **पेड्डुभट्ट तथा कुमारस्वामी**
- कुमारस्वामी की रचना– **प्रतापरुद्रयशोभूषण** (काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ)
- मल्लिनाथ की आनुवांशिक उपाधि – **कोलाचल**
- मल्लिनाथ की व्यक्तिगत उपाधि – **महामहोपाध्याय**
- मल्लिनाथ का समय – **14वीं शताब्दी का उत्तरार्ध**

मल्लिनाथ की सुप्रसिद्ध संस्कृत टीकायें

1. रघुवंशमहाकाव्यम् (कालिदास) – **सञ्जीवनी टीका**
2. कुमारसम्भवम् (कालिदास) – **सञ्जीवनी टीका**
3. मेघदूतम् (कालिदास) – **सञ्जीवनी टीका**
4. किरातार्जुनीयम् (भारवि) – **घण्टापथ टीका**
5. शिशुपालवधम् (माघ) – **सर्वङ्कषा टीका**
6. रावणवध (भट्टि) – **जीवातु टीका**
7. नैषधीयचरितम् (श्रीहर्ष) – **जीवातु टीका**

- इसके अतिरिक्त तार्किकरक्षा, नलोदयकाव्य, प्रशस्तपादभाष्य, और लघुशब्देन्दुशेखर पर भी मल्लिनाथ ने टीका लिखी है।
- इनका पूरा नाम– **महामहोपाध्याय कोलाचल मल्लिनाथसूरि**
- किरातार्जुनीयम् के दूसरे प्रसिद्ध टीकाकार– **चित्रभानु–''शब्दार्थदीपिका'' (त्रिसागरिका)** (प्रारम्भ के केवल तीन सर्गों पर)

किरातार्जुनीयम् की संक्षिप्त कथा

- किरातार्जुनीयम् में कौरवों पर विजय प्राप्ति के लिए अर्जुन का हिमालयपर्वत पर जाकर तपस्या करना, किरातवेशधारी शिव से युद्ध और प्रसन्न हुए भगवान् शिव से पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति का वर्णन है।
- **सर्ग – 1.** हस्तिनापुर भेजे गये वनेचर का द्वैतवन में आकर युधिष्ठिर से मिलना, दुर्योधन के शासन प्रबन्ध का वर्णन तथा युधिष्ठिर के लिए/द्रौपदी का उत्तेजनापूर्ण कथन।
- **सर्ग – 2.** युधिष्ठिर–भीम का संवाद, व्यास का आगमन।
- **सर्ग – 3.** युधिष्ठिर – व्यास संवाद, व्यास द्वारा अर्जुन को पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति के लिए हिमालय पर जाकर तपस्या करने का आदेश, अर्जुन का प्रस्थान।
- **सर्ग – 4.** शरद् ऋतु का वर्णन।
- **सर्ग – 5.** हिमालय पर्वत का वर्णन।
- **सर्ग – 6.** हिमालय पर अर्जुन की तपस्या, तपोविघ्न के लिए इन्द्र द्वारा अप्सराओं को भेजना।
- **सर्ग – 7.** इन्द्र द्वारा प्रेषित गन्धर्वों और अप्सराओं के आने और उनके विलासों का वर्णन
- **सर्ग – 8.** गन्धर्वों और अप्सराओं का उद्यानविहार और जलक्रीडा।
- **सर्ग – 9.** सायंकाल और चन्द्रोदयवर्णन, सुरतवर्णन तथा प्रभातवर्णन।
- **सर्ग – 10.** वर्षा आदि का वर्णन, अप्सराओं का चेष्टावर्णन तथा उनका प्रयत्न वैफल्य।
- **सर्ग – 11.** मुनिरूप में इन्द्र का आगमन, इन्द्र अर्जुन संवाद, इन्द्र का पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति के लिए अर्जुन को शिवाराधना करने का उपदेश।
- **सर्ग – 12.** अर्जुन की तपस्या, शूकर के रूप में मूक नामक दानव का अर्जुन वध के लिए आगमन, तथा किरातवेशधारी शिव का भी आगमन।
- **सर्ग – 13.** शूकररूपधारी मूकदानव पर शिव और अर्जुन के बाणों का प्रहार, उस वराह की मृत्यु, बाण के विषय में शिव के अनुचर और अर्जुन का विवाद।
- **सर्ग – 14.** सेना सहित शिव का आगमन और सेना के साथ अर्जुन का युद्ध।
- **सर्ग – 15.** चित्रयुद्ध वर्णन, (चित्रकाव्य)।
- **सर्ग – 16.** शिव और अर्जुन का अस्त्रयुद्ध।
- **सर्ग – 17.** शिव की सेना के साथ अर्जुन का युद्ध, शिव और अर्जुन का युद्ध।
- **सर्ग – 18.** शिव और अर्जुन का बाहुयुद्ध, शिव का वास्तविक रूप में प्रकट होना, इन्द्रादि का आगमन, अर्जुन को पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति, इन्द्रादि का अर्जुन को विविध अस्त्र देना, सफल मनोरथ अर्जुन का युधिष्ठिर के समीप पहुँचना।
- सम्भोग शृङ्गार का सुन्दर वर्णन है – **सर्ग 8 और 9 में।**
- युद्ध वर्णन में वीररस का वर्णन है – **सर्ग 13 से 17 तक।**
- उपमा अलङ्कार का सुन्दर प्रयोग है – **सर्ग 13 से 17 में।**
- प्रमुख वर्णनवैचित्र्य – सर्ग 4 में **शरद् वर्णन।**

– सर्ग 5 में **हिमालय वर्णन।**
– सर्ग 8 में **जलक्रीडा वर्णन।**
– सर्ग 9 में **सन्ध्या, चन्द्रोदय और सुरत वर्णन।**
– सर्ग 12 से 18 तक – **युद्ध वर्णन।**

- अर्थगौरव या अर्थगाम्भीर्य के लिए प्रशंसा की जाती है – **महाकवि भारवि की।**
- भारवि को कौन सा रस सर्वाधिक प्रिय है – **वीर और शृङ्गार रस**
- महाकाव्यों में रीतिशैली के जन्मदाता कवि हैं – **भारवि।**
- ग्रन्थ के आरम्भ में '**श्री**' शब्द तथा सर्गान्त श्लोकों में '**लक्ष्मी**' शब्द का प्रयोग किया गया है – **किरातार्जुनीयम् में।**

- किस कवि का काव्यसौन्दर्य 'नारिकेलफलसम्मितम्' माना गया है – **भारवि का।**
- भारवि की प्रशंसा में कही गयी सूक्तियाँ हैं –
  (1) ''भारवेरर्थगौरवम्''
  (2) ''भा रवेरिव भारवेः''
  (3) ''प्रकृतिमधुरा भारविगिरः''
  (4) ''नारिकेलफलसम्मितं वचः''
  (5) ''स्फुटता न पदैरपाकृता''
- केवल 'न' कार को लेकर सर्वप्रथम एकाक्षरी श्लोक लिखने वाले कवि हैं – **भारवि।**
- अपने काव्य में सर्वप्रथम चित्रालङ्कारों का प्रयोग करने वाले कवि हैं – **भारवि** (किरातार्जुनीयम्, सर्ग-15)
- भारवि ने विभिन्न सर्गों में 11 छन्दों का प्रयोग किया है और सर्गान्त श्लोकों में मालिनी और वसन्ततिलका प्रमुख हैं।
- भारवि द्वारा प्रयुक्त मुख्य छन्दों की संख्या है – **13**
- भारवि का अत्यन्त प्रिय छन्द है – **वंशस्थ तथा उपजाति।**
- क्षेमेन्द्र ने वंशस्थ छन्द के लिए प्रशंसा की है – **भारवि की।**
- संस्कृतसाहित्य में रीतिकाव्यपरम्परा के जन्मदाता हैं – **भारवि।**
- किरातार्जुनीयम् में दुर्योधन को किस नाम से वर्णित किया गया है – **सुयोधन।**
- 'राजनीतिपरक महाकाव्य' कहा गया है – **किरातार्जुनीयम् को**
- शिव और अर्जुन पर आधारित महाकाव्य है – **किरातार्जुनीयम्**
- किरातार्जुनीयम् में एकाक्षर श्लोकों की संख्या है – **7 (सप्त)**
- महाकवि भारवि की मित्रता थी – **चालुक्यवंशी राजा विष्णुवर्धन से**
- भारवि के तीन पुत्र थे, इनके मध्यम पुत्र मनोरथ के चार पुत्र थे, जिनमें एक पुत्र वीरदत्त था इन्हीं वीरदत्त और गौरी के पुत्र दण्डी हुए।
- महाकवि भारवि, दण्डी के प्रपितामह और दण्डी, भारवि के प्रपौत्र थे।
- भारवि **शैव** थे, जबकि **माघ वैष्णव** थे।
- दक्षिण के एहोल शिलालेख में कालिदास और भारवि का नामोल्लेख हुआ। इस शिलालेख का समय 634 ई० है – **''कविताश्रित-कालिदास-भारवि-कीर्तिः''।**
- गुम्मरेड्डीपुर के शिलालेखों से हमें पता चलता है कि राजा दुर्विनीत ने किरातार्जुनीयम् के 15वें सर्ग पर टीका लिखी थी। दुर्विनीत का समय 580 ई० के आसपास माना जाता है।
- भारवि के किरातार्जुनीयम् का उद्धरण जयादित्य की 'काशिकावृत्ति' में उपलब्ध होता है। मैक्समूलर 'काशिका' का समय 660 ई० मानते हैं।
- बाणभट्ट (सप्तम शताब्दी) अपने ''हर्षचरित'' में पूर्ववर्ती सभी कवियों का उल्लेख करते हैं, किन्तु उसमें भारवि का नामोल्लेख नहीं है।
- कीथमहोदय भारवि का समय 550 ई० मानते हैं।
- जैकोबी, मैक्डानल, बलदेव उपाध्याय, चन्द्रशेखर पाण्डेय इत्यादि विद्वानों ने भारवि का समय 600 ई० के लगभग मानते हैं।
- शिवजी अर्जुन की तपस्या की परीक्षा के लिए 'किरात' का वेश धारण करते हैं।
- किरातार्जुनीयम् में **मूक दानव** अर्जुन को मारने के लिए मायावी वाराह का रूप धारण करता है।
- महाकाव्यकारों में **कालिदास** और **अश्वघोष** के बाद **भारवि** का नाम लिया जाता है।
- भारवि व्याकरण, वेदान्त, न्याय, धर्म, राजनीति, कामशास्त्र, पुराण, इतिहास आदि के मूर्धन्य विद्वान् थे।
- उदात्त एवं सजीव वर्णन, कमनीय कल्पनाओं, अर्थगौरव, हृदयग्राही शब्दयोजना, कोमलकान्त पदावली, हृदयस्पर्शी एवं रोचक संवाद, अलङ्कारों का चमत्कारिक प्रयोग, कलात्मक काव्यशैली, मनोहर प्रकृतिचित्रण, रसपेशलता, सजीव चरित्रचित्रण इत्यादि महनीय गुणों ने भारवि को महाकवियों में अत्यन्त उच्चस्थान पर प्रतिष्ठित किया है।
- भारवि राजनीतिशास्त्र और नीतिशास्त्र के प्रकाण्ड पण्डित थे।
- किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में वनेचर की स्वामिभक्ति, सत्यवादिता, निश्छलता, विनम्रता, साहस, स्पष्टवादिता आदि गुणों का चित्रण है।
- द्रौपदी की मानसिकपीड़ा, व्याकुलता, प्रतिकार की तीव्रभावना का वर्णन है।
- अर्जुन की वीरता, भ्रातृभक्ति, कर्तव्यनिष्ठा का वर्णन है।
- भीम की वीरता, नीतिज्ञता, असहिष्णुता का वर्णन है।
- युधिष्ठिर की नीतिज्ञता, शान्तिप्रियता, धर्मपरायणता इत्यादि का वर्णन है।
- किरातार्जुनीयम् प्रथमसर्ग के प्रारम्भ में वनेचर की उक्तियों का तथा उत्तरार्ध में द्रौपदी की उक्तियों का चित्रण है।
- सम्पूर्ण प्रथमसर्ग युधिष्ठिर को सम्बोधित करके लिखा गया है।
- भारवि का संस्कृतसाहित्य में **'अलङ्कृतकाव्यशैली'** तथा **'विचित्रमार्ग के जनक'** के रूप में विशिष्ट स्थान है।
- विचित्रमार्ग की विशेषता यह है कि इसमें कथानक बहुत कम होता है और वर्णन अधिक।
- भारवि की अलंकृतकाव्यशैली में पाण्डित्यप्रदर्शन और अलङ्कार सन्निवेश को प्रधानता दी गयी है, इसमें कलापक्ष की प्रधानता तथा भावपक्ष (हृदयपक्ष) की अप्रधानता का वर्णन है।
- कालिदास के प्रमुख छन्द 6 हैं, भारवि के 13 और माघ के 16 माने गये हैं।
- भारवि ने **वंशस्थ छन्द** का सर्वाधिक प्रयोग किया है, इसके अतिरिक्त इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, द्रुतविलम्बित, प्रमिताक्षरा, प्रहर्षिणी, स्वागता, पुष्पिताग्रा, आदि का प्रयोग मिलता है।
- भारवि **वीररस** के सिद्धहस्त कवि हैं।
- किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में युधिष्ठिर के मुख से किसी उक्ति (कथन) को नहीं कहलाया गया है।
- महाकवि भारवि की **एकमात्र रचना 'किरातार्जुनीय'** का उपजीव्य महाभारत के वनपर्व की एक घटना है।
- किरातश्च अर्जुनश्च (द्वन्द्व) = किरातार्जुन + 'छ' प्रत्यय लगकर 'किरातार्जुनीय' शब्द बना है। ग्रन्थवाची होने पर नपुंसकलिङ्ग में 'किरातार्जुनीयम्' बना।

➢ इसमें अर्जुन का हिमालय पर्वत पर जाकर तपस्या करने व किरातवेषधारी भगवान् शिव से युद्ध करके उन्हें प्रसन्न कर **'पाशुपत अस्त्र'** प्राप्त करने की कथा है।
➢ 'किरात' में कुल **18 सर्ग और 1040 श्लोक** हैं।
➢ 'किरातार्जुनीय' में **कुल 25 छन्दों और मुख्यतः 13 छन्दों का** प्रयोग हुआ है।
➢ भारवि का **अत्यन्त प्रिय छन्द वंशस्थ** है। तत्पश्चात् उन्होंने **उपजाति** का ज्यादा प्रयोग किया है। 4 सर्गों में वंशस्थ, 3 सर्गों में उपजाति प्रयुक्त है।
➢ भारवि ने 3 शब्दालंकार, 60 अर्थालंकार और 7 चित्राक्षर अलंकारों का प्रयोग किया है। सर्वाधिक उपमा अलंकार प्रयुक्त है।
➢ भारवि ने 'किरात' के **15वें सर्ग में** युद्ध प्रसङ्ग में **चित्रालंकारों** का प्रयोग किया है।
➢ किरातार्जुनीय में **'वीर रस' मुख्य रस** है तथा 'शृंगार' गौण रस है।
➢ किरात में **'पाञ्चाली रीति'** और 'प्रसाद गुण' है, किन्तु वैदर्भीरीति का भी प्रयोग बाहुल्य है।
➢ किरात का **नायक 'अर्जुन'** (कहीं-कहीं युधिष्ठिर प्राप्त होता है), **प्रतिनायक किरातवेषधारी 'शिव'** तथा **नायिका 'द्रौपदी'** हैं।
➢ 'किरात' के 18वें सर्ग में शिव की अत्यन्त भावुक स्तुति की गई है।
➢ भारवि का प्रसिद्ध **एकाक्षर श्लोक** (न नोननुन्नो....) 15वें सर्ग में मिलता है।
➢ भारवि ने मङ्गलाचरण में **'श्री' शब्द** तथा सर्गान्त श्लोकों में **'लक्ष्मी'** शब्द का प्रयोग किया है।
➢ क्षेमेन्द्र ने भारवि के वंशस्थ वृत्त की प्रशंसा की है और वंशस्थ को राजनीतिक चर्चा के लिए सर्वाधिक उपयुक्त माना है।
➢ काव्य का आरम्भ **'द्वैतवन'** से होता है जहाँ महाराज युधिष्ठिर द्यूतक्रीड़ा में दुर्योधन से हारकर **'तेरह वर्ष'** का वनवास काट रहे होते हैं।
➢ युधिष्ठिर द्वारा नियुक्त ब्रह्मचारी वेष वाला गुप्तचर वनेचर लौटकर आता है और दुर्योधन के राज्य की शासन प्रणाली का वर्णन करता है।
➢ द्रौपदी इस समाचार से अत्यधिक क्रुद्ध हुयी और युधिष्ठिर को युद्ध के लिए प्रोत्साहित करती है।
➢ द्वितीय सर्ग में महर्षि व्यास आते हैं और अर्जुन को पाशुपत अस्त्र प्राप्त करने की सलाह देते हैं।
➢ अर्जुन तपस्या हेतु **इन्द्रकील** (हिमालय) पर जाते हैं।
➢ किरातार्जुनीय के प्रारम्भिक तीन सर्ग विशेष कठिन हैं अतः उन्हें **'पाषाण-त्रय'** के नाम से जाना जाता है।
➢ अर्जुन को **18वें सर्ग में पाशुपत अस्त्र प्राप्त** होता है।
➢ प्रथमसर्ग के अन्तिम दो श्लोकों में क्रमशः पुष्पिताग्रा और 'मालिनी' छन्दों का प्रयोग हुआ है। प्रथमसर्ग का अन्तिम श्लोक **'विधिसमयनियोगात् ....'** है।
➢ **'प्रसन्नगम्भीरपदा सरस्वती'** भारवि की भाषा तथा शैली का द्योतक महनीय मन्त्र है।
➢ भारवि के किरात के **'प्रथमसर्ग' में कुल 46 श्लोक** हैं।

किरातार्जुनीयम् (प्रथमसर्ग)

➢ 'किरातार्जुनीयम्' में **'वस्तुनिर्देशात्मक मङ्गलाचरण'** किया गया है।
➢ दुर्योधन के प्रजाविषयक व्यवहार को जानने के लिए युधिष्ठिर ने वनेचर को नियुक्त किया था।
➢ युधिष्ठिर को प्रणाम करके उसने शत्रु द्वारा जीती गयी पृथ्वी का वर्णन किया। ऐसा करते हुए किरात का मन खिन्न नहीं हुआ।
➢ शत्रुओं के नाश के लिए यत्न करने वाले युधिष्ठिर की आज्ञा पाकर वह एकान्त में अपनी बात कहता है।
➢ वनेचर कहता है कि सेवकों द्वारा गुप्तचर रूपी नेत्र वाले 'स्वामी' को धोखा नहीं दिया जाना चाहिए।
➢ जो स्वामी को उचित सलाह न दे वह बुरा मित्र है और जो स्वामी हितैषी मित्र की न सुने वह बुरा स्वामी है।
➢ राजाओं का चरित्र स्वभाव से ही कठिनाई से जानने योग्य होता है। वनेचर जो कुछ जान पाया वह युधिष्ठिर का प्रभाव है।
➢ दुर्योधन अब 'जुएँ' में जीती गई पृथ्वी को 'नीति' से जीतना चाहता है।
➢ युधिष्ठिर को जीतने के लिए दुर्योधन अपने गुणों से यश का विस्तार करता है।
➢ दुर्योधन अपने छः शत्रुओं - काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य पर विजय प्राप्त कर लिया।
➢ दुर्योधन सेवकों से मित्र जैसा, मित्रों से भाइयों जैसा और भाई-बन्धुओं को शासक मानकर व्यवहार करता है।
➢ दुर्योधन का मधुर वचन दान के बिना नहीं होता, दान आदर-सत्कार को छोड़कर नहीं होता और विशेष आदर गुणों के अनुराग के बिना नहीं होता।
➢ जितेन्द्रिय दुर्योधन 'अपना कर्तव्य मानकर धर्म-विप्लव' को दण्ड से रोकता है अन्य कारण से नहीं।
➢ राजाओं के उपहारस्वरूप प्राप्त हाथियों के मदजल से दुर्योधन का आँगन गीलेपन को प्राप्त है।
➢ कुरुदेश के निवासी कृषि के लिए वर्षा जल पर निर्भर नहीं रहते। कुरुप्रदेश की कृषि अदेवमातृक है।
➢ दुर्योधन के 'कुबेर' सदृश गुणों से द्रवित पृथ्वी स्वयं धनरूपी दुग्ध देती है।
➢ दुर्योधन के धनुर्धर लोग मानरूपी धन वाले, धन से सम्मानित और युद्ध में यश पाने वाले हैं।
➢ महीपाल लोग दुर्योधन के गुणों में अनुराग के कारण उसके आदेश को 'माला' की भाँति शिरोधार्य करते हैं।
➢ दुर्योधन ने दुःशासन को 'युवराज' नियुक्त किया है।
➢ वनेचर प्रथमसर्ग के 25वें श्लोक तक का वक्ता है और उसके चले जाने पर युधिष्ठिर द्रौपदी के आवास में प्रवेश करते हैं।
➢ 'बुरी मनोव्यथाएँ' द्रौपदी को बोलने के लिए उद्यत करती हैं।
➢ द्रौपदी कहती है युधिष्ठिर ने मदस्रावी हाथी के समान पृथ्वी को माला की तरह अपने हाथ से त्याग दिया।
➢ सफल क्रोध वालों के वश में प्राणी स्वयं हो जाता है।
➢ **वृकोदर (भीम)** धूलधूसरित होकर पैदल ही पर्वतों में घूमता है।
➢ इन्द्र के समान पराक्रमी अर्जुन ने 'उत्तरकुरुदेश' को जीतकर

प्रचुर धन युधिष्ठिर को दिया था, वह अब **'वल्कल वस्त्र'** संग्रह करता है।

- नकुल और सहदेव का शरीर वन में सोने के कारण कठोर हो गया है और दोनों जुड़वे हाथियों के समान हैं।
- युधिष्ठिर कुशवाली भूमि पर सोकर शृगाली (सियारिनियों) के शब्दों से निद्रा का परित्याग करते हैं।

किरातार्जुनीयम्-सूक्तियाँ

- हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः। (1/4)
- न हि प्रियं प्रवक्तुमिच्छन्ति मृषा हितैषिणः। (1/2)
- सदानुकूलेषु हि कुर्वते रतिं नृपेष्वमात्येषु च सर्वसम्पदः। (1/5)
- स किं सखा साधु न शास्ति योऽधिपं हितान्न यः संशृणुते स किं प्रभुः(1/5)
- वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः। (1/8)
- निरत्ययं साम न दानवर्जितम्। (1/12)
- नभूरि दानं विरहय्य सत्क्रियाम्। (1/12)
- गुणानुरोधेन विना न सत्क्रिया। (1/12)
- अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता। (1/23)
- तथापि वक्तुं व्यवसाययन्ति मां, निरस्तनारीसमया दुराधयः।।(1/28)
- व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवं भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः।।(1/30)
- अबन्ध्यकोपस्य विहन्तुरापदां भवन्ति वश्याः स्वयमेव देहिनः।(1/33)
- अमर्षशून्येन जनस्य जन्तुना न जातहार्देन न विद्विषादरः।। (1/33)
- विचित्ररूपाः खलु चित्तवृत्तयः। (1/37)
- परैरपर्य्यासितवीर्य्यसम्पदां पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम्।(1/41)
- व्रजन्ति शत्रूनवधूय निःस्पृहाः शमेन सिद्धिं मुनयो न भूभृतः।(1/42)
- निराश्रया हन्त हता मनस्विता। (1/43)
- अरिषु हि विजयार्थिनः क्षितीशाः विदधति सोपधि सन्धिदूषणानि।(1/45)

महाकवि माघ का परिचय

- शिशुपालवध-नामक महाकाव्य के रचयिता महाकवि माघ हैं। इन्हें विद्वानों ने श्रेष्ठ महाकाव्य का प्रणेता माना है-

काव्येषु माघः

- भारवि के द्वारा प्रवर्तित विचित्र-मार्ग को माघ ने बहुत ऊँचाई पर पहुँचाया तथा भारवि से आगे बढ़ने का सफल प्रयास किया।
- माघ के **पितामह सुप्रभदेव** थे जो राजा वर्मलात (या श्रीवर्मल) के सर्वाधिकारी अर्थात् दीवान थे। वे पुण्यात्मा, अनासक्त तथा सात्त्विक वृत्ति के पुरुष थे-

सर्वाधिकारी सुकृताधिकारी श्रीवर्मलाख्यस्य बभूव राज्ञः।
असक्तदृष्टिर्विरजाः सदैव देवोऽपरः सुप्रभदेवनामा।।

- सुप्रभदेव के पुत्र का नाम 'दत्तक' था जो अत्यन्त उदार, क्षमाशील, कोमल स्वभाव के एवं धर्मपरायण थे।
- इन्हें लोग 'सर्वाश्रय' भी कहते थे क्योंकि सबकी सहायता के लिए वे तत्पर रहते थे।इन्हीं दत्तक के पुत्र महाकवि माघ थे।
- माघ सूर्य-पूजक थे।
- माघ की मृत्यु 'पादशोथ'-रोग से हुई।

निवासस्थान

- माघ का निवासस्थान श्रीमाल या भिन्नमाल नामक नगर में था।यह नगर अभी माउंटआबू से 40 मील पूर्व जोधपुर प्रमण्डल (राजस्थान) में अवस्थित है।यह नगर उस समय गुर्जर राज्य की राजधानी के रूप में प्रसिद्ध था
- श्रीमाल (भीनमाल) संस्कृत विद्या का महान् केन्द्र था, अनेक विद्याएँ यहाँ पढ़ायी जाती थीं।
- वर्मलात नामक राजा इसी नगर में रहते थे। माघ के पितामह उनके प्रधानमन्त्री थे। माघ का परिवार बहुत धनाढ्य था जगत्स्वामी सूर्य के मन्दिर के ये लोग उपासक थे। माघ अनेक शास्त्रों के विद्वान् थे, राजाश्रित होने के कारण अनेक शास्त्रों के अध्ययन की सुविधा इन्हें प्राप्त थी।

माघ का समय

- माघ को 675 ई. के अनन्तर माना जा सकता है। अधिकतर विद्वान् 700 ई. के आसपास ही माघ को स्वीकार करने के पक्षधर हैं।

शिशुपालवध महाकाव्य का परिचय

- यह महाकवि माघ की एकमात्र कृति 20 सर्गों के महाकाव्य के रूप में है।
- इसमें 1645 पद्य हैं, पन्द्रहवें सर्ग में 34प्रक्षिप्त श्लोक हैं जिनकी व्याख्या मल्लिनाथ ने नहीं की है। पाँच पद्य कविवंश वर्णन के हैं उन्हें मिलाकर माघ की रचना 1650 पद्यों की है।

शिशुपालवध की कथा

- **सर्ग 1**- देवर्षि नारद का द्वारका में आगमन,श्रीकृष्ण द्वारा उनका सत्कार, नारद द्वारा शिशुपाल के पूर्वजन्मों तथा उसके अत्याचारों का वर्णन, शिशुपाल को मारने के लिए प्रेरित करना।

शिशुपालवध

- **सर्ग 2**- श्रीकृष्ण, बलराम और उद्धव की मन्त्रणा,बलराम का शिशुपाल पर आक्रमण का प्रस्ताव किन्तु उद्धव का नीतिपूर्ण प्रस्ताव कि इस विषय में शीघ्रता न करके युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में सेना-सहित भाग लें।
- **सर्ग 3**- द्वारका से श्रीकृष्ण का इन्द्रप्रस्थ के लिए प्रस्थान। नगरी, सेना और समुद्र का वर्णन।
- **सर्ग 4**- रैवतक पर्वत का वर्णन।
- **सर्ग 5**- रैवतक पर सैन्य-शिविर की स्थापना।
- **सर्ग 6**- छह ऋतुओं का द्रुतविलम्बित छन्द में 'यमक' का निवेश करते हुए वर्णन।
- **सर्ग 7**- वन-विहार-वर्णन
- **सर्ग 8**- जलक्रीडा-रात्रि-विहार का वर्णन।
- **सर्ग 9**- सन्ध्या, चन्द्रोदय तथा शृङ्गार-विधान का वर्णन।
- **सर्ग 10**- पान-गोष्ठी एवं रात्रि-विहार का वर्णन।
- **सर्ग 11**- प्रभात-वर्णन।

- **सर्ग 12**- श्रीकृष्ण का पुनः प्रस्थान तथा यमुना नदी का वर्णन।
- **सर्ग 13**- श्रीकृष्ण और पाण्डवों का मिलना, नगर-प्रवेश तथा दर्शक नारियों की चेष्टाओं का, अश्वघोष तथा कालिदास से प्रतिस्पर्धा करते हुये वर्णन।
- **सर्ग 14**- युधिष्ठिर द्वारा राजसूय यज्ञ का प्रस्ताव, श्रीकृष्ण की पूजा तथा भीष्म-द्वारा उनकी स्तुति।
- **सर्ग 15**- शिशुपाल का कोप और उनके पक्ष के राजाओं का युद्ध के लिए सन्नद्ध होना।
- **सर्ग 16**- शिशुपाल के दूत का श्रीकृष्ण के समक्ष उभयार्थक शब्दों का प्रयोग, सात्यकि का उत्तर,दूत का पुनः शिशुपाल के पराक्रम का वर्णन करना।
- **सर्ग 17**- श्रीकृष्ण के पक्ष के राजाओं का कोप, सेना की प्रस्तुति तथा प्रस्थान।
- **सर्ग 18**- सेनाओं के घोर युद्ध का वर्णन
- **सर्ग 19**- चित्रालङ्कार से पूर्ण पद्यों के द्वारा व्यूह-रचना एवं विचित्र युद्ध का वर्णन।
- **सर्ग 20** -श्रीकृष्ण और शिशुपाल का शस्त्र-युद्ध, दिव्यास्त्र– युद्ध तथा वाग्युद्ध, शिशुपाल के शब्दों से कुपित कृष्ण द्वारा सुदर्शनचक्र से शिशुपाल का शिरश्छेदन , शिशुपाल के तेज का विजयी कृष्ण में प्रवेश।

शिशुपालवध के महत्त्वपूर्ण बिन्दु

- यह कथानक महाभारत के सभापर्व (अध्याय 35-43) से लिया गया है, जिसमें युधिष्ठिर के यज्ञ में शिशुपाल के मारे जाने की कथा है।
- श्रीमद्भागवत पुराण के दशम स्कन्ध (अध्याय 71-75) में भी शिशुपाल की कथा प्रायः वैसी ही है, जैसी इस महाकाव्य में वर्णित है इसलिए बहुत से विद्वान् भागवतपुराण को ही इस महाकाव्य का उपजीव्य (स्रोत) बताते हैं।
- विद्वानों के बीच एक लोकोक्ति है- **काव्येषु माघः कवि-कालिदासः।** अर्थात् कवि की दृष्टि से कालिदास श्रेष्ठ हैं किन्तु काव्य (महाकाव्य) के लेखन में माघ उत्कृष्ट हैं
- अलङ्कारवादी महाकवियों में भी माघ अग्रणी हैं क्योंकि प्रौढ़ पाण्डित्य के साथ कथानक को विचित्र मार्ग पर ले जाने की क्षमता इनमें सर्वाधिक है।
- कृष्ण के द्वारा शिशुपाल के मारे जाने का कथानक इतिहास-प्रसिद्ध है, यह कथा महाभारत और भागवतपुराण पर आश्रित है।
- इसके नायक कृष्ण हैं जो यदुपति तथा विष्णु के अवतार (जगन्निवासः) हैं।
- महाकाव्य का **प्रधानरस वीर** है, अन्य रसों में शृंगार,हास्य, अद्भुत, भयानक इत्यादि का स्वाभाविक रूप से निवेश हुआ है।
- इसके सर्ग छन्दों के नियम का पालन करते हैं पूरा सर्ग एक छन्द में हो और सर्गान्त में एक दो पद्य दूसरे छन्दों में हों।
- प्रथम सर्ग में वंशस्थ,द्वितीय सर्ग में अनुष्टुप्, तृतीय सर्ग में उपजाति छन्द है।
- पंचम सर्ग में वसन्ततिलका है तो षष्ठसर्ग द्रुतविलम्बित छन्द का है, सबके अन्त में छन्द परिवर्तित होते रहें हैं।
- चतुर्थ सर्ग में अनेक छन्दों का प्रयोग है।
- माघ ने शिशुपालवध के 19वें सर्ग में एकाक्षर,द्व्यक्षर, सर्वतोभद्र, मुरजबन्ध, प्रतिलोमयमक (33-34), गोमूत्रिकाबन्ध, समुद्गयमक (58), अर्धप्रतिलोम-यमक (88) तथा चक्रबन्ध (120) जैसा श्रमसाध्य चित्रकाव्यों का प्रयोग किया है।
- युद्ध का वर्णन माघ ने कई सर्गों में किया है। 19वाँ सर्ग तो चित्रकाव्य के रूप में विचित्र युद्ध का भ्रम देता ही है 20वें सर्ग में दोनों पक्षों के नेताओं द्वारा विविध दिव्यास्त्रों का प्रयोग होता है। शिशुपाल के अस्त्रों को कृष्ण काटते जाते हैं।
- षष्ठसर्ग का षड्ऋतुवर्णन तथा एकादश सर्ग का प्रभातवर्णन अधिक आवर्जक है।
- माघ के पाण्डित्य और कवित्व के विषय में कई प्रशस्तियाँ विख्यात हैं। इनके शब्द भाण्डागार के विषय में कहा गया है-**नवसर्गगते माघे नव शब्दो न जायते (विद्यते)** अर्थात् माघ काव्य में नौ सर्ग समाप्त कर लेने पर संस्कृत में कोई नया शब्द जानने को रह ही नहीं जाता।
- माघ ने धातुरूपों के प्रयोग स्वाभाविक रूप से किये हैं। जैसे- अचूचुरत् (1/16), विरेजिरे (1/21), अभ्युपेयुषी (1/24), न्यधायिषाताम्(1/13), अपूपुजत्(1/14), निवेशयामासिथ (1/34), उपाजिहीथाः (1/37), अकारि तथा अशिश्रियत् (1/46) , भूतकाल में समुच्चयार्थक लोट् लकार का प्रयोग (1/51) अनुचकम्पिरे (1/61), दुःखाकरोति (2/11) इत्यादि।
- माघ की एक अन्य प्रशस्ति है- **माघे मेघे गतं वयः।** अर्थात् शिशुपाल महाकाव्य के अध्ययन में और मेघदूत का आनन्द लेने में सारी आयु बीत गयी।
- **माघे सन्ति त्रयो गुणाः-** माघ-विषयक प्रशस्तियों में यह सर्वाधिक प्रसिद्ध है। इसमें एकसाथ कालिदास,भारवि और दण्डी (या श्रीहर्ष) के साथ माघ की महत्ता का निरूपण किया गया है।
- **उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्।**
दण्डिनः पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयो गुणाः॥
अर्थात् महाकवि कालिदास की विशिष्टता उपमा के कारण है तो माघ में **तीनों गुणों** का समन्वित प्रयोग प्रमुख वैशिष्ट्य है।
- माघ की सामान्य उपमाओं में यह बहुत प्रसिद्ध है,जिसके कारण उन्हें '**घण्टामाघ**' का विरुद प्राप्त हुआ है-
उदयति विततोर्ध्व - रश्मि - रज्जा
वहिमरुचौ हिमधाम्नि याति चास्तम्।
वहति गिरिरयं विलम्बि-घण्टा-
द्वय-परिवारित-वारणेन्द्र-लीलाम्॥ (4/20)
- राजनीति की तुलना शब्दविद्या से की गयी है- **शब्दविद्येव नो भाति राजनीतिरपस्पशा (2/112)**

प्रथम सर्ग के प्रमुख कथन एवं सूक्तियां

कवि द्वारका के राजप्रासाद में स्थित श्रीकृष्ण द्वारा नारदमुनि को देखने की बात कर रहे हैं-

श्रियः पतिः श्रीमति शासितुं जगज्जगन्निवासो वसुदेवसद्मनि। वसन् ददर्शावतरन्तमम्बराद्धिरण्यगर्भाङ्गभुवं मुनिं हरिः॥1॥

अनुवाद- लक्ष्मी के पति, संसार के आधारस्वरूप, दुष्टदमन तथा शिष्टरक्षण से संसार का शासन करने के लिए शोभायुक्त वसुदेव-भवन में श्रीकृष्ण रूप से निवास करते हुए हरि ने आकाशमार्ग से उतरते हुए ब्रह्मा के मानसपुत्र महर्षि नारद को देखा।।1।।

रणद्भिराघट्टनया नभस्वतः,
पृथग्विभिन्नश्रुतिमण्डलैः स्वरैः।
स्फुटीभवद्ग्रामविशेषमूर्च्छनाम-
वेक्षमाणं महतीं मुहुर्मुहुः॥10॥

वायु के आघात से स्पष्ट ध्वनि करते हुए एवं व्यस्थित स्वर समूह वाले

इन सप्तस्वरों से स्पष्ट होने वाले ग्राम तथा मूर्छनावाली महती नामक वीणा को बार-बार देखते हुए (उन्हें नारद इस प्रकार समझा)।।10।।

भगवान् श्रीकृष्ण का कथन

गृहानुपैतुं प्रणयादभीप्सवो
भवन्ति नापुण्यकृतां मनीषिणः॥14॥

क्योंकि, महात्मा लोग पुण्य न करने वाले के घर प्रेम से जाने के लिए इच्छुक नहीं होते।।14।।

शरीरभाजां भवदीयदर्शनं
व्यनक्ति कालत्रितयेऽपि योग्यताम्॥26॥

आने वाले शुभ का हेतु है; पहले आचरण किये हुए शुभ कर्मों से सम्पादित है।।26।।

सदोपयोगेऽपि गुरुस्त्वमक्षयो
निधिः श्रुतीनां धनसम्पदामिव॥28॥

आप धन-सम्पत्ति के समान वेदों के सदा उपयोग किये जाने पर भी क्षीण न होने वाले महान् निधि बनाये गये हैं।।28।।

गिरोऽथवा श्रेयसि केन तृप्यते॥29॥

अथवा (क्योंकि) कल्याण के विषय में कौन तृप्त होता है। अर्थात् कोई तृप्त नहीं होता? नारद जी का कथन

बहिर्विकारं प्रकृतेः पृथग्विदुः
पुरातनं त्वां पुरुषं पुराविदः॥33॥

उदासीन, महत् आदि प्रकृतिविकारों से पृथक् रहने वाला पुराण पुरुषपदवाच्य विज्ञानधनरूप में- जानते हैं।।33।।

हृतेऽपि भारे महतस्त्रपाभरा-
दुवाह दुःखेन भृशानतं शिरः॥57॥

यमराज का भैंसा (वाहन) बोझ दूर किये जाने पर भी महा लज्जाभार से अत्यन्त अवनत मस्तक को दुःख से वहन करता रहा।।57।।

सदाभिमानैकधना हि मानिनः॥67॥

क्योंकि मानी जन सदा मान मात्र धनवाले होते हैं।।67।।

रसंशयं सम्प्रति तेजसा रविः॥70॥

वह किरणों से पर्वतों को आक्रान्त करने वाला मानो सूर्य है।।70।।

सतीव योषित् प्रकृतिः सुनिश्चला
पुमांसमभ्येति भवान्तरेष्वपि॥72॥

पतिव्रता स्त्री के समान अतिस्थिर प्रकृति दूसरे जन्मों में भी स्वपुरुष को प्राप्त करती है।।72।।

विपादनीया हि सतामसाधवः॥73॥

क्योंकि दुराचार के कारण परिपक्व आपत्तिवाले दुष्टजन सज्जनों द्वारा मारे जाने योग्य होते हैं।।73।।

ओमित्युक्तवतोऽथशार्ङ्गिण इति व्याहृत्य वाचं नभ-
स्तस्मिन्नुत्पतिते पुरः सुरमुनाविन्दोः श्रियं बिभ्रति।
शत्रूणामनिशं विनाशपिशुनः क्रुद्धस्य चैद्यं प्रति
व्योम्नीव भ्रकुटिच्छलेन वदने केतुश्चकारास्पदम्॥75॥

अनुवाद- उन महर्षि नारद के इस प्रकार (इन्द्र का सन्देश) वचन कहकर आकाश में प्रस्थित होने पर तथा सामने चन्द्रमा की शोभा को धारण करने पर 'आपका वचन मुझे स्वीकार है' ऐसा कहने वाले तथा शिशुपाल के प्रति क्रुद्ध हुए श्रीकृष्ण के आकाश के समान मुख पर, सदैव शत्रु-विनाश के सूचक केतु ने (उत्पाद-विशेष ने) भ्रुकुटि के बहाने से स्थान ग्रहण किया।।75।।

गृहानुपैतुं प्रणयादभीप्सवो भवन्ति नापुण्यकृतां मनीषिणः महात्मा लोग अपुण्यात्माओं के घर प्रेम से आना नहीं चाहते। (1/14)

श्रेयसि केन तृप्यते (1/29) मंगलमय कार्य में कौन तृप्ति हो सकता है?

सदाभिमानैकधना हि मानिनः (1/67) मानी (मनस्वी) लोगों का एक मात्र धन स्वाभिमान ही होता है

शिशुपालवध की टीकायें

- शिशुपालवध पर अनेक टीकाएँ हैं जिनमें वल्लभदेव कृत' सन्देहविषौषधि', मल्लिनाथ-कृत 'सर्वाङ्कषा', भरतमल्लिक-कृत 'सुबोधा' तथा दिनकरमिश्र -कृत 'सुबोधिनी' मुख्य हैं हिन्दी साहित्य सम्मलेन, प्रयाग से राम प्रताप त्रिपाठी का एवं चौखम्बा विद्याभवन से हरगोविन्द शास्त्री का हिन्दी-अनुवाद पूरे ग्रन्थ पर प्रकाशित है।

नैषधीयचरितम्

महाकवि श्रीहर्ष का परिचय

- **नाम** - श्रीहर्ष
- **पिता** - श्रीहीर
- **माता** - मामल्लदेवी
- **श्रीहर्षं कविराजराजिमुकुटालङ्कारहीरः सुतम्**
  श्रीहीरः सुषुवे जितेन्द्रियं मामल्लदेवी च यम्। (1/145)
- **समय-** 12वीं शताब्दी के मध्य से 12वीं शताब्दी के उत्तरार्ध के बीच (सम्भावित)
  आश्रयदाता- जयचन्द्र
  उपाधि-1.नवभारती 2. कविपण्डित (राजा गोविन्दचन्द्र द्वारा)
  उपासक- शिव, विष्णु, सरस्वती
  प्रिय छन्द- उपजाति
- श्रीहीर काशी के राजा गहरवारवंशी विजयचन्द्र की राज्यसभा के प्रधान पण्डित थे।
- श्रीहीर को विजयचन्द्र की राज्यसभा में मिथिला के प्रसिद्ध पण्डित श्री उदयनाचार्य ने शास्त्रार्थ में पराजित किया था।
- श्रीहीर पुत्र श्रीहर्ष ने उदयनाचार्य को पराजित करने का वचन अपने पिता (श्रीहीर) को उनके मरते समय दिया था।
- श्रीहर्ष ने 'चिन्तामणि' मन्त्र का एक वर्ष पर्यन्त जप किया था।
- त्रिपुरादेवी के वरदान से श्रीहर्ष **अत्यन्त** उत्कृष्ट विद्वान् हो गये।
- जयचन्द्र की प्रार्थना स्वीकार कर श्रीहर्ष ने नैषधीयचरितम् महाकाव्य की रचना की।
- नैषधीयचरित महाकाव्य की दोष रहित प्रामाणिकता के लिए श्रीहर्ष कश्मीर गये थे।
- महाकवि श्रीहर्ष नदी तट पर बैठकर रुद्र मन्त्र का जप किये थे।
- हरिहर कवि को भी श्रीहर्ष का वंशज माना जाता है।
- श्रीहर्ष के निवास स्थान के सम्बन्ध में विद्वान् मतैक्य नहीं हैं।
- कुछ विद्वान् कन्नौज का, कुछ वाराणसी का, कुछ बंगाल का एवं अन्य कश्मीर का निवासी बतलाते हैं। **''ताम्बूलद्वयमासनं च लभते यः कान्यकुब्जेश्वरात्।''** (नैषध. 22/15)
- कविवर राजशेखर सूरि ने महाकवि श्रीहर्ष की सौ से अधिक रचनायें होने का उल्लेख किया है -
  ''खण्डनादिग्रन्थान् परश्शतान् जग्रन्थ।''
- नैषधीयचरित में नैषध के अतिरिक्त 8 ग्रन्थों का उल्लेख किया गया है।
- महाकवि श्रीहर्ष ने अपने नैषधीयचरित में अपनी रचनाओं के साथ-साथ प्रत्येक सर्गान्त श्लोक में अपने माता व पिता का भी उल्लेख किया है। श्रीहर्षं कविराजराजिमुकुटालङ्कारहीरः सुतम् श्रीहीरः सुषुवे जितेन्द्रियं मामल्लदेवी च यम्।।
- श्रीहर्ष के शताधिक ग्रन्थों के नाम का कोई प्रबल प्रमाण उपलब्ध नहीं हैं।
- ये 10 रचनायें अविवादित व प्रमाणित हैं-
  1. नैषधीयचरित 2. स्थैर्यविचारप्रकरण 3. विजय-प्रशस्ति 4. खण्डनखण्डखाद्य 5. गौडोर्वीशकुल-प्रशस्ति 6. अर्णववर्णन 7. छिन्दप्रशस्ति 8. शिवशक्तिसिद्ध 9. नवसाहसाङ्कचरितचम्पू 10. ईश्वराभिसन्धि
- इनमें से नैषधीयचरित व खण्डनखण्डखाद्य के अलावा शेष 8 ग्रन्थ अनुपलब्ध हैं।
- श्रीहर्ष की काव्य शैली प्रसादगुणों से युक्त वैदर्भी शैली है।
- गुण में प्रमुखतः माधुर्य और ओज की प्रचुरता है।
- महाकाव्य में एक स्थल पर श्लेष अलंकार का इतना सुन्दर चित्रण किया है कि, अन्य कवि इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा करते हैं।
  देवः पतिर्विदुषि नैषधराजगत्या
  निर्णीयते न किमु न व्रियते भवत्या।
  नायं नलः खलु तवातिमहानलाभो
  यद्येनमुज्झसि वरः कतरः पुनस्ते ॥ (नैषध 13/33)
- हर्ष ने उपर्युक्त श्लोक के पाँच अर्थ बताये हैं-
  1. इन्द्रपक्ष में 2. अग्नि पक्ष में 3. यम पक्ष में 4. वरुण पक्ष में 5. नल पक्ष में
- नैषधीयचरित में 9 निधियों का उल्लेख है-
  महापद्म, पद्म, शंख, मकर, कच्छप, मुकुन्द, कुन्द, नील व खर्व

नैषधीयचरितम् का परिचय

- **लेखक** - श्रीहर्ष
- **काव्यविधा** - महाकाव्य
- **कुल सर्ग** - 22 (बाईस)
- **नायक** - नल (धीरोदात्त)
- **नायिका** - दमयन्ती
- **प्रतिनायक -** 4 नल के रूप में क्रमशः अग्नि, वरुण, इन्द्र व यम।
- **अङ्गीरस/प्रधानरस** -शृङ्गार
- **अन्य रस-**वीर, हास्य, करुण, रौद्र एवम् अद्भुत आदि।
- **गुण -** माधुर्य, ओज, प्रसाद (प्रायः सभी काव्य गुण पाये जाते हैं)
- **रीति** - मुख्यतः वैदर्भी
- **अलङ्कार** - अनुप्रास (मुख्य रूप से)
- **अन्य अलङ्कार** - अतिशयोक्ति आदि।
- **छन्द -** कुल उन्नीस 19 छन्दों का प्रयोग है जिनमें उपजाति, वसन्ततिलका, अनुष्टुप्, वंशस्थ तथा शिखरिणी प्रमुख हैं। (उपजाति सर्वाधिक 7 सर्गों में है।)

प्रमुख उक्तियाँ

- **''काव्यं नवं नैषधम्''** - चाण्डु पण्डित
- **''नैषधं विद्वदौषधम्''**
- **'उदिते नैषधे काव्ये क्व माघः क्व च भारविः'**
- **नैषधे पदलालित्यम्** अथवा
- **''उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्।**
  नैषधे पदलालित्यम् माघे सन्ति त्रयो गुणाः।।''

- **उपजीव्य** - महाभारत (वनपर्व)
- **अन्य स्रोत** - शतपथ-ब्राह्मण, कथासारित्सागर, कुमारपालप्रतिबोध, लिङ्गपुराण, वायुपुराण, हरिवंश-पुराण, ब्रह्माण्ड-पुराण आदि।
- **कुल श्लोक -** 2804 (लगभग)
- **नोट** - प्रत्येक सर्ग के अन्त के परिचयात्मक सभी श्लोक शार्दूलविक्रीडित छन्द में हैं।
- बृहत्त्रयी का **सबसे बड़ा ग्रन्थ** नैषधीयचरितम् ही है।
- महाभारत के वनपर्व में **'नलोपाख्यान'** उनतीस अध्यायों (58-78) में है।
- नलोपाख्यान की सरल छोटी कथा 'नैषधीयचरित' में बहुत थोड़ी ही ली गयी है।
- नलोपाख्यान एक उपदेश कथा है, जबकि नैषधीयचरितम् एक सरस एवं मनोरम महाकाव्य है।
- नलोपाख्यान के आदि के छः सर्गों की घटना को श्रीहर्ष ने विशाल 22 (बाईस) सर्गों में नैषधीयचरितम् नामक ग्रन्थ में उल्लिखित किया है।

नैषधीयचरितम् का मङ्गलाचरण

निपीय यस्य क्षितिरक्षिणः कथां तथाद्रियन्ते न बुधाः सुधामपि।
नलः सितच्छत्रितकीर्ति मण्डलः स राशिरासीन्महसां महोज्ज्वलः॥

भावार्थ- अपने विस्तृत कीर्तिमण्डल को श्वेत छत्र के समान धारण करने वाले तेजपुञ्ज स्वरूप पृथ्वी रक्षक जिस सूर्य की कथा का पूर्णतया पान करके देवगण जैसे चन्द्रमा का आदर नहीं करते वैसे ही वह राजा नल थे। जिनकी कथा का पान करके विद्वान् लोग अमृत का भी वैसा आदर नहीं करते थे। अर्थात् राजा नल का भी कीर्तिमण्डल सूर्य के समान था। जो उत्सवों में देदीप्यमान होता था। (1/1)

- 'नैषधीयचरितम्' का प्रारम्भ श्रीहर्ष ने नल रूपी कथा वस्तु को संकेत करते हुए **वस्तुनिर्देशात्मक मङ्गलाचरण** से किया है। मङ्गलाचरण **वंशस्थ छन्द** में है। वस्तुतः प्रथम सर्ग के एक से लेकर **एक सौ बयालिस** (1-142) श्लोकों तक वंशस्थ छन्द का ही प्रयोग किया है। (जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ) सम्पूर्ण मङ्गलाचरण के चरण में संसृष्टि अलंकार है।

नैषधीयचरितम् की टीका एवं टीकाकार

टीका	टीकाकार
नैषधीयप्रकाश टीका	नारायण
नैषधदीपिका	चाण्डुपण्डित (प्राचीन टीकाकार)
साहित्यविद्याधरी	विद्याधर
दीपिका	नरहरि
तिलक	चारित्रवर्धन
जीवातु	मल्लिनाथ
सुखावबोध	जिनराज

अन्य टीकाकार - आनन्दराजानक, ईशानदेव, उदयनाचार्य, गोपीनाथ, भगीरथ, आदि।

नैषधीयचरित की सर्गवार कथा

प्रथम सर्ग - इस सर्ग में निषध देशाधिपति महाराज नल के शौर्य, गुण, प्रताप एवम् उत्कर्ष का वर्णन किया गया है।

- राजा नल का विदर्भनरेश भीम की पुत्री दमयन्ती के प्रति कामार्त होना एवं उपवन में जाना इसी सर्ग में है।
- उपवन में राजा, हंस पक्षी को पकड़ते हैं और उसकी करुण वाणी सुनकर उसे छोड़ देते हैं।

द्वितीय सर्ग -

- हंस के हर्षोल्लास से यह सर्ग आरम्भ होता है।
- हंस अपने परिवार से मिलकर पुनः कृतज्ञता प्रकट करने नल के पास उपवन में जाता है।
- राजा नल, हंस से दमयन्ती के पास कुण्डिनपुर जाने के लिए आग्रह करते हैं।
- हंस कुण्डिनपुर पहुँचकर उपवन में सखियों के साथ विहार कर रही दमयन्ती के पास रुक जाता है।

तृतीय सर्ग -

- दमयन्ती, हंस को पकड़ना चाहती है और इसी प्रयास में वह हंस के पीछे-पीछे सघन वन में पहुँच जाती है।
- वहाँ एकान्त पाकर हंस राजा नल के अलौकिक गुणों का एवम् अनुपम सौन्दर्य का वर्णन करता है।
- दमयन्ती, राजा नल के प्रति अपनी आसक्ति प्रकाशित करती हैं।
- हंस पुनः राजा नल के पास लौट आता है और सफलता की सूचना देता है।

चतुर्थ सर्ग -इसमें दमयन्ती की वियोगावस्था का वर्णन है।

- दमयन्ती, राजा नल से मिलने की इच्छा प्रकट करती हैं और विकल होने लगती हैं।
- विदर्भ नरेश भीमसेन अपनी पुत्री दमयन्ती की यह विचित्र दशा देखकर स्वयंवर का निश्चय करते हैं।

पञ्चम सर्ग -

- पञ्चम सर्ग का प्रारम्भ देवलोक में महर्षि नारद द्वारा इन्द्र की सभा में दमयन्ती की विलक्षण सुन्दरता का वर्णन करते हुए होता है।
- इन्द्र, वरुण, अग्नि, एवं यम देवताओं के साथ पृथ्वीलोक में प्रस्थान करते हैं।
- मार्ग में जाते हुए नल का अनुपमेय सौन्दर्य देखकर देवताओं को ईर्ष्या होती है।
- देवता, राजा नल को दमयन्ती के पास जाने के लिए कहते हैं एवं दमयन्ती, 'इन्द्र, वरुण, अग्नि व यम' में से किसी को वरण करें ऐसा दमयन्ती से कहने की याचना करते हैं।
- राजा नल ऐसा करने के लिए तैयार हो जाते हैं और इन्द्र द्वारा इन्हें अदृश्य होने की शक्ति प्रदान हो जाती है।

षष्ठ सर्ग -

- राजा नल अदृश्य रूप में दमयन्ती के राजप्रासाद में पहुँचते हैं।
- देवों की दूतियाँ नल के पहुँचने के पहले से ही किसी एक देवता को वरण करने का आग्रह कर रही थीं
- दमयन्ती उन्हें मना कर देती है। यह देखकर नल अत्यधिक प्रसन्न होते हैं।

सप्तम सर्ग -

- राजा नल दमयन्ती के सौन्दर्य का अवलोकन एवं स्वयं को प्रकट कर देने का भी निश्चय कर लेते हैं।
- इस सर्ग में दमयन्ती के नखशिख का स्वरूप भी वर्णित है।

अष्टम सर्ग -

- राजा नल अपने स्वरूप को प्रकट कर, स्वयं को देवदूत बताकर, देवताओं में से किसी एक देवता का वरण करने को कहते हैं।

नवम सर्ग -

- इस सर्ग में नल एवं दमयन्ती में परस्पर वार्तालाप होता है।
- दमयन्ती राजा नल का ही वरण करने को कहती हैं।
- नल, दमयन्ती को उसकी स्वयंवर सभा में आने की स्वीकृति देकर वापस लौट आते हैं।

दशम सर्ग -

- स्वयंवर के कार्यक्रम से यह सर्ग प्रारम्भ होता है
- चारों दिशाओं से आये राजाओं से पृथ्वी के ठसाठस भर जाने का वर्णन है।
- इन्द्रादि चारों देवता भी नल रूप में स्वयंवर में उपस्थित होते हैं।
- विष्णु, देव, अप्सरायें आदि भी स्वयंवर में दर्शनार्थ होते हैं।
- विष्णु राजाओं के वर्णन के लिए सरस्वती को भेजते हैं।

एकादश सर्ग -

- सरस्वती द्वारा राजाओं के वर्णन से यह सर्ग प्रारम्भ होता है।
- नल के प्रति आसक्ति से दमयन्ती स्वयंवर सभा में बैठे सभी राजाओं को क्रमशः छोड़ते हुए आगे बढ़ती जाती हैं।

द्वादश सर्ग -

- इस सर्ग में भी अन्यान्य अवशिष्ट राजाओं के स्वयंवर में सम्मिलित होकर दमयन्ती द्वारा उपेक्षित होने का वर्णन है।
- सरस्वती विभिन्न देशों के नरेशों का एक-एक करके वर्णन करने के उपरान्त अन्त में नल के समीप पहुँचती है।
- दमयन्ती पाँच राजा को नल के समान देखकर आश्चर्य-चकित हो जाती है।

त्रयोदश सर्ग -

- राजा नल के वेश में विद्यमान पाँचों नलों का श्लेष शब्दों का प्रयोग करके वर्णन सरस्वती द्वारा किया जाता है और दमयन्ती आश्चर्य एवं संशय में पड़ जाती हैं।
- दमयन्ती देवताओं और राजा नल में अन्तर न कर सकने के कारण क्षुब्ध एवं दुःखी हो जाती है।

चतुर्दश सर्ग -

- दमयन्ती, देवताओं का मानसिक पूजन करती हैं जिससे देवता प्रसन्न होकर श्लेष शब्दों को समझने की शक्ति प्रदान करते हैं।
- दमयन्ती अपने विवेक से राजा नल को पुष्प माला पहनाकर वरण कर लेती हैं।
- तदुपरान्त सरस्वती व सभी देवता आशीर्वाद देते हैं।

पञ्चदश सर्ग -

- स्वयंवर में दमयन्ती द्वारा नल का वरण करने के उपरान्त भीमसेन विवाह की तैयारी में लग जाते हैं और नल को आमन्त्रित करते हैं।

षोडश सर्ग -

- राजा भीम बारात का पर्याप्त स्वागत सत्कार करते हैं।
- राजा नल वहाँ छः दिन निवास करके पुनः अपनी राजधानी की ओर प्रस्थान करते हैं।
- राजधानी में नल का जनता द्वारा स्वागत किया जाता है।

सप्तदश सर्ग -

- स्वर्ग को प्रस्थान करते हुए देवताओं की कलि/कल्कि से भेंट हो जाती है।
- कलि/कल्कि देवताओं से बतलाता है कि वह दमयन्ती के स्वयंवर में जा रहा है।
- कलि को देवता बताते हैं कि दमयन्ती, नल को वरण कर चुकी है तो वह राजा नल को राज्यच्युत होने और दमयन्ती से वियुक्त होने का शाप दे देता है।
- द्वापर के साथ कलि निषध देश में गया और उपवन में **बिभीतक** वृक्ष का आश्रय लेकर कई वर्षों तक दमयन्ती तथा नल में दोषान्वेषण किया किन्तु कोई दोष नहीं पाया।

अष्टादश सर्ग -

- यह सर्ग प्रमोदोद्यान के वर्णन से प्रारम्भ होता है।
- कामशास्त्र के मर्मज्ञ नल, एवं नवोढ़ा दमयन्ती की काम क्रीड़ा का वर्णन है।

एकोनविंश सर्ग -

- उषा काल से दूरारूढ़ सूर्य का क्रमिक वर्णन है।
- दमयन्ती द्वारा बन्दीगण को उपहार दिया जाता है।
- तदनन्तर आकाशगंगा में स्नान कर लौटे हुए नल, दमयन्ती के पास आते हैं।

विंश सर्ग -

- नल राजभवन में प्रवेश करते हैं, जहाँ दमयन्ती द्वारा उनका स्वागत होता है।
- दमयन्ती को स्वर्ण कमल देकर, प्रातः कालीन कृत्य के लिए उससे आज्ञा माँगते हैं।
- दमयन्ती व्यथित एवं रुष्ट होकर अपनी सखी के घर चली जाती है।
- दमयन्ती के लौटने पर नल उसकी सखी 'कला' की सहायता से उसका ध्यान भंग करना चाहते हैं और उससे विविध प्रकार के सम्भोगों का स्मरण दिलाते हैं।
- मध्याह्न की सूचना से नल स्नानादि के लिए उठ जाते हैं।

एकविंश सर्ग -

- यह सर्ग नल के चारुचरित वर्णन से प्रारम्भ होता है।

- अर्थ एवं मोक्ष पुरुषार्थों का विस्तृत चित्रण हुआ है।
- चकवी के विरह को दूर करने के लिए सूर्य से प्रार्थना करने के बहाने सन्ध्योपासन के लिए नल नदी तट पर चले जाते हैं।

द्वाविंश सर्ग -

- इसके उपरान्त ग्रन्थ की प्रशस्ति तथा संक्षिप्त परिचय के साथ इस महाकाव्य का उपसंहार होता है।

नैषधीयचरितमहाकाव्यम्

प्रथमः सर्गः

निपीय यस्य क्षितिरक्षिणः कथां
तथाद्रियन्ते न बुधास्सुधामपि।
नलस्सितच्छत्रितकीर्तिमण्डलः
स राशिरासीन्महसां महोज्ज्वलः॥1॥

हिन्दी-अनुवाद- क्षितिरक्षिणः = पृथ्वीपालक, **यस्य** = जिस राजा नल की, **कथाम्** = कथा को [अर्थात् जीवनवृत्त को], **निपीय** = भली-भाँति आस्वादनकर, **बुधाः** = उस राजा नल से अथवा उसके जीवनवृत्त से भली-भाँति परिचित विद्वज्जन अथवा देवगण, **सुधामपि** = अमृत का भी, **तथा** = उतना [जितना कि इस राजा नल की कथा का], **न आद्रियन्ते** = आदर नहीं करते हैं [अर्थात् राजा नल की कथा का अमृत से भी अधिक आदर करते हैं।]। **सितच्छत्रितकीर्तिमण्डलः** = अपने यशःसमूह को श्वेतच्छत्र बनाये हुये, **महसां राशिः इव** = तेज समूह की राशि अर्थात् सूर्य के सदृश, **महोज्ज्वलः** = उत्सवों से देदीप्यमान अथवा महान् तेजस्वी, **स नलः** = वह राजा नल, **आसीत्** = था।

चतुर्दशत्वं कृतवान् कुतः स्वयं
न वेद्मि विद्यासु चतुर्दशस्वयम्॥4॥

[प्रत्येक विद्या को] **चतस्रः** = चार प्रकार की, **दशाः** = अवस्थायें, **प्रणयन्** = करते हुये, **स्वयम्** = अपने आप ही, **चतुर्दशत्वम्** = चतुर्दशता को, **कुतः** = कहाँ से अथवा कैसे, **कृतवान्** = कर दिया, **इति** = यह, **न वेद्मि** = [मैं] नहीं जानता हूँ।

प्रतीपभूपालमृगीदृशां दृशः॥11॥

प्रतीपभूपालमृगीदृशाम् = शत्रु राजाओं की मृगी सदृश नेत्रों वाली सुन्दरियों [उनकी पत्नियों] के, **दृशः** = नेत्रों को, न तत्यजुः = नहीं छोड़ा। **नूनम्** = (मैं ऐसा) मानता हूँ। तात्पर्य यह है कि राजा नल द्वारा जिनके पतियों का हनन किया जा चुका था। ऐसे शत्रुराजाओं की स्त्रियाँ निरन्तर रुदन किया करती थीं।

त्यजन्त्यसूञ्शर्म च मानिनो वरं त्यजन्ति न त्वेकमयाचितव्रतम्॥50॥

मानी पुरुष प्राण एवं सुख के त्याग की अपेक्षा न माँगने सम्बन्धी नियम को न त्यागना ही अधिक श्रेष्ठ समझा करते हैं। तात्पर्य यह है कि वे प्राणों तथा अपने सुखों का उत्सर्ग सरलतापूर्वक कर सकते हैं किन्तु किसी से याचना न करने सम्बन्धी नियम को कभी भी छोड़ना पसन्द नहीं करते हैं।

क्व भोगमाप्नोति न भाग्यभाग्जनः?॥

क्व = कहाँ, **भोगम्** = सुख अथवा सुख सम्बन्धी साधनों से प्राप्त किये जाने वाले भोग को, **न आप्नोति** = नहीं प्राप्त कर लिया करता है? अर्थात् भाग्यशाली पुरुष सभी स्थानों पर आवश्यक भोगों की प्राप्ति कर ही लिया करते हैं।

नृपः पतङ्गं समधत्त पाणिना॥124॥

हिन्दी अनुवाद- अयं नृपः = इस राजा नल ने, **स्वयम्** = अपने आप ही, **कपटेन** = छल से, **बलिध्वंसिविडम्बिनीम्** = राजा बलि के दर्प को नाश करने वाले अथवा राजा बलि का ध्वंस करने वाले वामनावतार विष्णु की मूर्ति का अनुकरण करने वाले, **वामनीम्** = छोटे से, **मूर्तिम्** = स्वरूप को, **विधाय** = बनाकर, **मौनिना** = शब्द रहित- चुपचाप, **चरणेन** = (दबे) पैर से, **उपेत्तपार्श्वः** = पास जाकर, **पाणिना** = (अपने) हाथ से, **पतङ्गम्** = पक्षी (हंस) को, **समधत्त** = पकड़ लिया।

धिगस्तु तृष्णातरलं भवन्मनः समीक्ष्य पक्षान्मम हेमजन्मनः।

हिन्दी अनुवाद- मम = मेरे, **हेमजन्मनः** = स्वर्ण से उत्पन्न, **पक्षान्** = पंखों को, **समीक्ष्य** = देखकर, **तृष्णातरलम्** = लोभ से चंचल, **भवन्मनः** = आपके मन को, **धिक् अस्तु** = धिक्कार है।

फलेन मूलेन च वारिभूरुहां मुनेरिवेत्थं मम यस्य वृत्तयः।

यस्य मम = जिस मेरी, मुनेः **इव** = मुनि के समान, **वारिभूरुहाम्** = कमलों के [मुनि पक्ष में- जल में उत्पन्न होने वाले कमल आदि तथा पृथ्वी पर उत्पन्न होने वाले आम्र आदि वृक्षों के], **फलेन मूलेन च** = फल तथा मूल (मृणाल, कन्द आदि) से, **इत्थम्** = इस प्रकार, **वृत्तयः** = जीविका होती है।

तस्मिन् अपि = उसको भी, **दण्डधारिणा** = दण्ड धारण करने वाले, **त्वया पत्या** = तुम्हारे जैसे स्वामी से, **अद्य** = इस समय, **धरणी** = पृथ्वी, **कथं न** = क्यों नहीं, **ह्रणीयते** = लज्जित होती है?

मदेकपुत्रा जननी जरातुरा नवप्रसूतिर्वरटा तपस्विनी।
गतिस्तयोरेष जनस्तमर्दयन्नहो विधे! त्वां करुणा रुणद्धि नो॥135॥

हिन्दी-अनुवाद- अहो! = हाय, **जननी** = [मेरी] माता, **मदेकपुत्रा** = मैं ही हूँ एकमात्र पुत्र जिसका ऐसी है [तथा], **जरातुराः** = वृद्धावस्था से पीड़ित है। **तपस्विनी** = पतिव्रता अथवा दीन अथवा बेचारी, **वरटा** = मेरी पत्नी, **नवप्रसूतिः** = नव प्रसववाली [अर्थात् उसके शीघ्र ही बच्चा होने वाला है]। (**अथवा-वरटा** = मेरी पत्नी, **नवप्रसूतिः** = शीघ्र ही सन्तान उत्पन्न करने वाली है अतएव **तपस्विनी** = शोचनीय है)। एषजनः

= यह व्यक्ति अर्थात् मैं ही, **तयोर्गतिः** = उन दोनों [माता और पत्नी] का सहारा हूँ [उन दोनों की जीवन-रक्षा के निमित्त मैं ही एकमात्र सहारा हूँ], **तम्** = [ऐसे] उस (मुझ) को, **अर्दयन्** = सताते हुये- पीड़ित करते हुये, **हे विधे!** = हे विधाता! **त्वाम्** = आपको, **करुणा** = दया, **न रुणद्धि** = [क्यों] नहीं रोकती है।

नैषधीयचरित की प्रमुख सूक्तियाँ

1. अदृष्टमप्यर्थमदृष्टवभवात्करोति सुप्तिर्जनदर्शनातिथिम्
भावार्थ- चित्रदर्शन के बाद दमयन्ती के द्वारा नल को स्वप्न में देखे जाने का वर्णन किया गया है- **(1/39)**
''कभी प्रत्यक्ष दर्शन न किये गये पदार्थ को भी स्वप्न मनुष्यों की दृष्टि का अतिथि बना देता है अर्थात् दिखा देता है।''

2. त्यजन्त्यसञ्शर्म च मानिनो वरं त्यजन्ति न त्वेकमयाचितव्रतम्।
भावार्थ- यह सूक्ति राजा नल के विषय में कही गयी है कि ''स्वाभिमानी लोग प्राण और सुख भले ही त्याग देते हैं किन्तु माँगते नहीं हैं। यह उनका व्रत होता है।'' **(1/50)**

3. स्मरः स रत्यामनिरुद्धमेव यत्सृजत्ययं सर्गनिसर्ग ईदृशः।
भावार्थ- यह सूक्ति राजा नल के विषय में कही गयी है कि- ''प्रकृति का स्वभाव ही ऐसा है कि अनुराग होने पर कामदेव चञ्चलता को जन्म देता है।'' **(1/54)**

4. क्व भोगमाप्नोति न भाग्यभाग्जनः (1/102)
भावार्थ- नल के लिए (कामपीड़ित होने पर), वन में भी तरंगों के वादन, कोयलों तथा भौरों के संगीत एवं मयूर के नृत्य आदि सुख के सभी साधन (संगीत, नृत्य, वाद्य आदि), उपलब्ध हैं। ''क्योंकि भाग्यशाली पुरुष को भोग कहाँ नहीं प्राप्त होता है?''

5. विगर्हितं धर्मधनैर्निबर्हणं विशिष्य विश्वासजुषां द्विषामपि।
भावार्थ- हंस, राजा नल की निन्दा करते हुए कहता है कि - हे राजन! मेरा वध करने से आपको प्राणिवध के साथ विश्वास - घात का भी पाप लगेगा ''क्योंकि विश्वास युक्त शत्रुओं का भी वध धर्माचार्यों के द्वारा विशेष रूप से निन्दनीय कहा गया है। **(1/131)**

6. नृपः पतङ्गं समधत्त पाणिना ।
भावार्थ- राजा नल ने स्वयं कपट से नारायण की तरह अपने शरीर को छोटा करके शब्द रहित चरण से हंस के पास जाकर हंस (पक्षी) को हाथ से पकड़ लिया।

7. सरोरूहं तस्य दृशैव तर्जितम्, जिताः स्मितेनैव विधोरपि श्रियः।
''कुतः परं भव्यमहो महोयसी, तदाननस्योपमितौ दरिद्रता।।''
भावार्थ- नल के नेत्र के द्वारा कमल और मुस्कुराहट के द्वारा चन्द्रमा की शोभा जीत ली गई है। ''नल से अधिक सुन्दर वस्तु क्या हो सकती है, आश्चर्य है कि नल के मुख की उपमा में बहुत दरिद्रता हो गई है' **(1/24)**

रघुवंशम् का परिचय

- **रचयिता-** महाकवि कालिदास
- **नायक-** दिलीप, रघु, अज, दशरथ, रामादि अनेक रघुवंशी राजागण (सभीनायक धीरोदात्त प्रकृति के) मुख्यरूप से 'राम' धीरोदात्त नायक।
- **काव्यविधा-** 'महाकाव्य'
- **रचनाकाल-** ई. पू. प्रथम शताब्दी से चतुर्थ शताब्दी के मध्य (विद्वानों में मतभेद)
- **सर्ग-** 19 सर्ग

सर्ग क्र.	सर्गों के नाम	श्लोक संख्या
01.	वशिष्ठ आश्रम अभिगमन	95
02.	नन्दिनी वरदान	75
03.	रघुराज्याभिषेक	70
04.	रघुदिग्विजय	88
05.	स्वयंवर-अभिगमन	76
06.	स्वयंवर-वर्णन	86
07.	अज-पाणिग्रहण	71
08.	अजविलाप	95
09.	मृगयावर्णन	82
10.	रामावतार	86
11.	सीता-विवाहवर्णन	93
12.	रावण-वध	104
13.	दण्डका-प्रत्यागमन	79
14.	सीता-परित्याग	87
15.	श्रीराम-स्वर्गारोहण	103
16.	कुमुद्वती-परिणय	88
17.	अतिथि-वर्णन	81
18.	वंशानुक्रम	53
19.	अग्निवर्ण शृङ्गार	57
कुल सर्ग - 19		**कुल श्लोक -1569**

- सर्वाधिक श्लोकों वाला सर्ग - 12वाँ, श्लोक = 104
- न्यूनतम श्लोकों वाला सर्ग - 18वाँ, श्लोक = 53

रस

- रघुवंश वीररस प्रधान काव्य है।
- वीररस के चार भेद- 1. धर्मवीर 2. युद्धवीर 3. दानवीर 4. दयावीर
- रघुवंश में चारों वीर रसों का वर्णन है।
- रघुवंश के अन्तिम सर्ग में मुक्तरूप से शृङ्गार का वर्णन।
- 'करुणरस' के उद्भावन में रघुवंश का 'अजविलाप' अत्यन्त द्रावक है।
- 'वीररस' के प्रयोग में कालिदास पौराणिक 'अनुष्टुप् छन्द' का प्रयोग करते हैं। (रघु की दिग्विजय, राम-रावण युद्ध)
- कालिदास का प्रिय रस **शृङ्गार** है।

अलंकार-योजना

- रघुवंश में शब्दालंकारों में अनुप्रास का सर्वाधिक प्रयोग।
- यमक का सामान्य प्रयोग।
- अर्थालंकारों में सर्वाधिक उपमा का प्रयोग।
- उत्प्रेक्षा, दृष्टान्त, स्वभावोक्ति, निदर्शना, अर्थान्तरन्यास आदि अलंकारों का सन्निवेश।

शैली

- वैदर्भी रीति का प्रयोग।
- रघुवंश में आकर्षक चरित्र-चित्रण विशद एवं रुचिर वर्णन, प्रौढ़प्रतिभा, सुन्दर रसव्यञ्जना, सरल अलंकृत शैली का मणिकाञ्चन संयोग।

कथानक का मूल स्रोत

- रघुवंश का मूलस्रोत- मुख्यतः वाल्मीकि रामायण
- अनुश्रुतियों एवं पौराणिक तथा अन्य स्रोत- पद्मपुराण, वायु पुराण, विष्णुपुराण
- रघुवंश में रघुवंशीय राजाओं की वंशावली वाल्मीकि रामायण से भिन्न है।

प्रमुख वर्णन

- रघुवंश के 19 सर्गों में दिलीप से लेकर अग्निवर्ण तक रघुवंश के 29 राजाओं का वर्णन। मनु और इक्ष्वाकु सहित कुल 31 राजाओं का वर्णन।
- प्रथम दो सर्ग में दिलीप का वर्णन।
- तीसरे, चौथे और पाँचवें के आधे भाग में रघु का वर्णन।
- पाँचवें के बचे हुए आधे भाग तथा छठें, सातवें और आठवें सर्ग में अज का वर्णन।
- नवम सर्ग में दशरथ का वर्णन।
- दशम से पन्द्रहवें सर्ग तक रामचरित वर्णित है।
- सोलहवें सर्ग में कुश तथा सत्रहवें में कुश पुत्र अतिथि का वर्णन है।
- अठारहवें में निषध तथा नल एवं नभ आदि 21 राजाओं का वर्णन।
- उन्नीसवें सर्ग में अतिविलासी राजा अग्निवर्ण के दुःखद अवसान के साथ ग्रन्थ समाप्त होता है।

रघुवंश में वर्णित राजाओं का क्रम

दिलीप → रघु → अज → दशरथ

दशरथ: राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न

राम: कुश, लव

अतिथि → निषध → नल → नभ →

पुण्डरीक → क्षेमधन्वा → देवानीक

देवानीक: पुत्री, अहीनगु (अहीनय)

पारियात्र → शील

→ उन्नाभ → शङ्खण → व्युषिताश्व → विश्वसह →

हिरण्यनाभ → कौशल्य (सोमसुत) → पुत्र → पौष्य →

ध्रुवसन्धि → सुदर्शन → अग्निवर्ण

(अन्तिम रघुवंशीय राजा जहाँ तक रघुवंश में वर्णन प्राप्त होता है)

प्रमुख चरित्र

राजा दिलीप-

- रघुवंश महाकाव्य के प्रथम उन्नायक के रूप में वर्णित हैं।
- वैवश्वत मनु के शुद्ध वंश से अधिक श्रेष्ठतर चरित्र वाला घोषित किया गया है।
- वायु भी दिलीप के शासन के अनुसार अनुगमन करता था-

यस्मिन् महीं शासति वाणिनीनां
निद्रां विहारार्धपथे गतानाम्।
वातोऽपि नास्त्रंसयदंशुकानि
को लम्बयेदाहरणाय हस्तम्॥ (रघु. 6/75)

राजा रघु

- रघु के व्यक्तित्त्व की महत्ता इसी से द्योतित होती है क्योंकि उन्हीं के नाम पर सूर्यवंश का नाम रघुवंश पड़ा।
- रघु का चरित्र रघुवंशियों का आदर्श है।
- रघु को रघुवंशम् का केन्द्रीय नायक माना जा सकता है।
- रघु का प्रताप और सूर्य का तेज दोनों एक समय में ही सारी दिशाओं में व्याप्त हो गये-

'प्रतापस्तस्य भानोश्च युगपद्व्यानशे दिशः।' (रघु. 04/15)

राजा अज

- अज के चरित्र में शील और शौर्य की शृङ्गारिक पीठिका प्रदर्शित है।
- रघुवंश महाकाव्य के **'धीरललित'** नायक हैं।
- चक्रवर्ती सम्राट् रघु के प्रतापी पुत्र।
- रानी इन्दुमती के प्रेमी पति।

राजा दशरथ

- दशरथ के व्यक्तित्त्व का विकास वाल्मीकि रामायण के आधार पर वर्णित है।
- दशरथ दिग्विजयी सम्राट् रघु के नाती हैं।
- राजा अज के प्रतापी पुत्र हैं।
- दशरथ मानो पृथ्वी पर अवतीर्ण इन्द्र ही हुए थे-

उपगतो विनिनीषुरिव
प्रजा हरिहयोऽरिहयोगविचक्षणः॥ (रघु. 09/18)

राजा राम

- महाकवि कालिदास राम को विष्णु का अवतार मानते हैं।
- वस्तुतः रघुवंश के वास्तविक नायक राम ही हैं।
- महाकवि ने राम का अपनी काव्य साधना द्वारा सर्वोत्तम चरित्रांकन किया है।
- सर्वाधिक सर्गों में राम का चरित्र दर्शाया गया है।
- रघु और राम के महान् चरित्र का तुलनात्मक अध्ययन करते हुए महाकवि ने रघु को महाकाव्य का प्रधान नायक माना है तभी तो महाकाव्य का नाम रघुवंश पड़ा।
- अन्य आचार्यों ने राम को ही इस महाकाव्य का नायक माना है और कहा कि रघु से लेकर राम तक जो कथा है वह राम कथा को विस्तार देने के लिए है।
- राम राजा बनने की बात सुनकर रोने लगते हैं और वनगमन की आज्ञा पाकर प्रसन्न होते हैं-

पित्रा दत्तां रुदन् रामः प्राङ्महीं प्रत्यपद्यत।
पश्चाद्वनाय गच्छेति तदाज्ञां मुदितोऽग्रहीत्॥
(रघु. 12/07)

शत्रुघ्न

उपनायक

- अयोध्या नरेश दशरथ के और रानी सुमित्रा के सबसे छोटे पुत्र।
- लवणासुर नामक राक्षस से पीड़ितों की रक्षा करने के लिये वर्णित।
- शत्रुघ्न ने यमुना तट पर मथुरा नगरी बसायी थी।

कुश

- श्रीरामचन्द्र एवं सीता के ज्येष्ठ पुत्र, लव के बड़े भाई।
- राम के बाद शासनारूढ़ होते हैं।
- नागराज की पुत्री कुमुद्वती से विवाह।
- कुशावती नगरी के संस्थापक।
- प्रथम बार रामायण का गान करने वाले कुश एवं लव

अतिथि

- कुशपुत्र अतिथि शूरवीर एवं जितेन्द्रिय राजा हैं।
- राम के पौत्र तथा कुश एवं कुमुद्वती के पुत्र।

अग्निवर्ण

- रघुवंशी राजा सुदर्शन का पुत्र।
- अग्निवर्ण रघुवंश का विलासी नायक है।
- महाराज सुदर्शन ने सब शत्रुओं को जीत कर पृथ्वी को निष्कंटक बनाकर अग्निवर्ण को राजा बनाया।
- वह गवाक्षों पर पैर लटका कर दर्शन देता था ऐसा वर्णन है।
- रघु के प्रतापी वंश के अन्तोन्मुख होने का कारण।

रघुवंशम् की नारी पात्र

रानी सुदक्षिणा

- मगधराज पुत्री सुदक्षिणा राजा दिलीप की उदारचारिता, शीलवती, रूपवती पत्नी हैं।
  'तयोर्जगृहतुः पादान् राजा राज्ञी च मागधी।' (रघु. 01/57)

इन्दुमती

- कवि ने इन्दुमती को आदर्श गृहिणी कहा है-
  गृहिणी सचिवः सखी मिथः
  प्रियशिष्या ललिते कलाविधौ।
  करुणाविमुखेन मृत्युना
  हरता त्वां वद किं न मे हृतम्॥ (रघु. 08/67)
- सम्राट् रघु की पुत्रवधू एवं अज की प्रिया पत्नी।

सीता

- रघुवंश में सीता का जीवन राम के लिए समर्पित है।
- राम के साथ रमण करती हुई सीता राजलक्ष्मी के समान प्रतीत होती थी-
  उपस्थितश्चारु वपुस्तदीयम्
  कृत्वोपभोगोत्सुकयेव लक्ष्म्या। (रघु. 14/24)
- मिथिला नरेश जनक की पुत्री, अयोध्या नरेश दशरथ की पुत्र वधू।

कैकेयी

- राजा दशरथ की प्रिय पत्नी।
- कवि ने उन्हे अतिक्रोधशीला चण्डी की उपाधि से विभूषित किया।
- दशरथ से वरदान के रूप में राम के लिए 14 वर्ष का वनवास एवं भरत के लिए राजगद्दी माँगा।

महर्षियों का चरित्र

- **महर्षि वशिष्ठ-** ब्रह्मतेज एवं ब्रह्मज्ञान की साक्षात् मूर्ति हैं।
  पुरुषायुषजीविन्यो निरातङ्का निरीतयः।
  यन्मदीयाः प्रजास्तस्य हेतुस्त्वद्ब्रह्मवर्चसम्॥ (रघु. 01/63)
- **महर्षि कौत्स-** चौदह विद्याओं के अध्येता महर्षि वरतन्तु के शिष्य कौत्स गुरु आज्ञा का पालन करते हुए 14 करोड़ मुद्रा दक्षिणा स्वरूप लेने रघु के पास गये।

प्रतिनायक का चरित्र

इन्द्र

- प्रतिनायक के रूप में चित्रण।
- इन्द्र की पत्नी का नाम-''शची''।
- पुत्र का नाम-''जयन्त''।
- स्वर्ग का शासक, और देवेन्द्र नाम वाला।
- सारथी का नाम-''मातलि''
  मातलिस्तस्य माहेन्द्रम् -----। (रघु. 12/86)
- रथ में एक हजार घोड़े।
- इनके घोड़े का रंग हरे तथा पीले भी कहीं-कहीं उल्लेख मिलता है।
- हाथी का नाम-''ऐरावत''
- शस्त्र का नाम-''वज्र'
- 100 अश्वमेध यज्ञ करने के कारण-''शतक्रतु''

रावण

- रावण इस महाकाव्य का प्रतिनायक है।
- लंका का अधिपति तथा पुलस्त्य मुनि का नाती।
- इन्द्र और रावण ऐसे प्रतिनायक का कवि ने पूर्ण विकास नहीं दिखाया।

लवणासुर

- शत्रुघ्न का प्रतिद्वन्द्वी
- कुम्भीनसी का पुत्र।
- मधूपन्न नामक लवण नगरी का राजा।
- बहुत अत्याचारी राक्षस
- लवणासुर भी महाकाव्य का प्रतिनायक माना जा सकता है।

पशु चरित्र

नन्दिनी

- कामधेनु की पुत्री नन्दिनी का जीवन्त चित्रण रघुवंश के द्वितीय सर्ग में
- महर्षि वशिष्ठ की दुग्धशीला होमधेनु। (हवन धेनु)
- रंग नवीन पल्लव तथा संध्या के समान श्वेत युक्त लाल

'तदन्तरे सा विरराज धेनुः
दिनक्षपामध्यगतेव सन्ध्या॥' (रघु. 02/20)

सिंह/कुम्भोदर

- रघुवंश महाकाव्य का दूसरा मानवेतर पात्र।
- शंकर के गण निकुम्भ का मित्र।
- इसका नाम कुम्भोदर है।

'कुम्भोदरं नाम निकुम्भमित्रम्।' (रघु. 02/35)

- भगवान् शंकर का अनुचर-

'अवेहि मां किङ्करमष्टमूर्तेः---।' (रघु. 02/35)

अन्य पात्र

कुमुदनाग

- अस्त्र ज्ञाता की उपाधि से विभूषित।
- अपनी बहन कुमुद्वती का विवाह कुश से कराता है।

गन्धर्वराज

- स्वयंवर के लिए विदर्भ नगरी जाते समय नर्मदा के तट पर सेना सहित पड़ाव डाल देता है।
- प्रिय दर्शन नामक गन्धर्वराज का पुत्र प्रियंवद नामक गन्धर्व राजकुमार।
- मतङ्ग ऋषि के श्राप से हाथी का शरीर धारण किया था।

मतङ्गशापादवलेपमूलादवाप्तवानस्मि मतङ्गजत्वम्।
अवेहि गन्धर्वपतेस्तनूजं प्रियंवदं मां प्रियदर्शनस्य॥
(रघु. 05/53)

रघुवंश के प्रमुख संवाद

- दिलीप-वशिष्ठ-संवाद - प्रथमसर्ग
- दिलीप-सिंह-संवाद - द्वितीय सर्ग
- इन्द्र-रघु संवाद - तृतीय सर्ग
- कौत्स-रघु संवाद - पञ्चम सर्ग
- राम-परशुराम-संवाद - एकादश सर्ग
- सीता-लक्ष्मण संवाद - चतुर्दश सर्ग
- कुश-नायिका रूप अयोध्या - षोडश सर्ग (स्वप्न संवाद)

सर्गानुसार वर्णन

मङ्गलाचरण

वागार्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये।
जगतः पितरौ वन्दे पार्वती परमेश्वरौ॥ (रघु. 01/01)

- रघुवंश महाकाव्य का शुभारम्भ पार्वती और शिव के नमस्कारात्मक मङ्गलाचरण से हुआ है।
- ग्रन्थारम्भ में कवि ने मङ्गलाचरण के माध्यम से शब्दार्थरूप शिव और पार्वती की वन्दना की है।
- वाक् और अर्थ के प्रतीक स्वयं पार्वती एवं शङ्कर हैं, क्योंकि वे जगत् के माता-पिता हैं।
- 'व' शब्द अमरत्व का द्योतक है।
- मगण के दोनों अक्षर की देवता पृथ्वी हैं जो रचयिता को अक्षय कीर्ति प्रदान करती है।
- अनुष्टुप् छन्द है।
- वाक् = वाणी
- अर्थ = लक्ष्मी
- इ = शक्ति (शैव दर्शन के अनुसार)

द्वितीय सर्ग

- राजा दिलीप द्वारा कामधेनु की पुत्री नन्दिनी की सेवा का वर्णन है।
- नन्दिनी राजा दिलीप द्वारा की गयी 21 (इक्कीस) दिनों की सेवा से प्रसन्न होती है और उनकी परीक्षा भी लेती हैं।
- कुम्भोदर सिंह का वर्णन।
- दिलीप परीक्षा में सफल होते हैं, नन्दिनी उन्हें पुत्र प्राप्ति का आशीर्वाद देती हैं।

निष्कर्ष

- रघुवंश की कथा का अन्त पतनाभिलाषी राजा के विलासी चरित्र से होता है।
- आरम्भ जिस तरह से उदात्त और महान् चरित्र वाले राजा दिलीप से हुआ, वहीं उसका अन्त अत्यन्त ही कारुणिक है।
- अग्निवर्ण जैसे विलासी चरित्र का दुःखद अन्त कराकर कवि ने यह तथ्यात्मक आदर्श प्रकट किया है कि-

1- चरित्र की उदात्तता एवं महानता के कारण रघु और राम ने सूर्यवंश को महत्ता प्रदान की।
2- उसी वंश में विलासी कामी नृप अग्निवर्ण ने अपनी दुश्चरित्रता के कारण सूर्यवंश को भ्रष्ट किया और उसका भी अत्यन्त दुःखद अन्त हुआ।

- कवि का मूल उद्देश्य रघु और राम के उदात्त चरित्र का वर्णन करना था।

रघुवंशम् की सूक्तियाँ

रघुवंशम् (द्वितीय सर्ग)

*** अथ प्रजानामधिपः प्रभाते**
जायाप्रतिग्राहितगन्धमाल्याम्।
वनाय पीतप्रतिबद्धवत्सां
यशोधनो धेनुमृषेर्मुमोच॥1/1॥

अर्थ- उसके बाद प्रातः काल में 'कीर्तिधन वाले' प्रजा के स्वामी (राजा दिलीप) ने पत्नी (सुदक्षिणा) द्वारा समर्पित किये गये गन्ध और माला से युक्त, दूध पी लेने के बाद बाँध दिये गये बछड़े वाली, ऋषि वशिष्ठ की गाय (नन्दिनी) को वन में चरने के लिये छोड़ दिया।

*** तस्याः खुरन्यासपवित्रपांसुम्-**
अपांसुलानां धुरि कीर्तनीया।
मार्गं मनुष्येश्वरधर्मपत्नी,
श्रुतेरिवार्थं स्मृतिरन्ववगच्छत् ॥2/2॥

अर्थ- पतिव्रताओं में अग्रगण्य (आगे गिनी जाने वाली) राजा दिलीप की धर्मपत्नी सुदक्षिणा ने उस नन्दिनी के खुरों के रखने

से पवित्र हुए धूलि मार्ग का उसी तरह अनुसरण किया जिस प्रकार स्मृति (मनुस्मृति आदि) वेदार्थ का अनुगमन करती हैं।

* **छायेव तां भूपतिरन्वगच्छत् ॥2/6॥**

अर्थ- राजा दिलीप ने नन्दिनी के रुकने पर स्वयं रुककर, चलने पर चल कर, बैठने पर बैठ कर, जल पीने पर जल पी कर छाया की तरह उसका (नन्दिनी का) अनुसरण किया।

* **पुरस्कृता वर्त्मनि पार्थिवेन प्रत्युद्गता पार्थिवधर्मपत्न्या । तदन्तरे सा विरराज धेनुर्दिनक्षपामध्यगतेव संध्या**

अर्थ- मार्ग में राजा दिलीप से आगे की हुई और राजा की धर्मपत्नी (सुदक्षिणा) के द्वारा अगवानी की गई वह गाय उन दोनों (राजा और रानी) के बीच दिन और रात के मध्य वर्तमान सन्ध्या के समान सुशोभित हुई। ॥2/20॥

* **अलं महीपाल! तव श्रमेण प्रयुक्तमप्यस्त्रमितो वृथा स्यात् ।**

अर्थ- हे पृथ्वी का पालन करने वाले राजन्! आपका परिश्रम करना व्यर्थ है, ॥2/34॥

* **स त्वं निवर्तस्व विहाय लज्जां गुरोर्भवान्दर्शितशिष्यभक्तिः । ॥2/40॥**

अर्थ- वह आप लज्जा को छोड़कर लौट जाइये। आपने गुरु के प्रति शिष्य के योग्य भक्ति दिखला दी है।

* **सत्वं मदीयेन शरीरवृत्तिं देहेन निर्वर्तयितुं प्रसीद ।**

अर्थ- वह तुम मेरे शरीर से अपने शरीर के जीवन को सम्पादित करने के लिए प्रसन्न होओ। ॥2/45॥

अल्पस्य हेतोर्बहु हातुमिच्छन्-
विचारमूढः प्रतिभासि मे त्वम्।

अर्थ- इन सबको थोड़े के लिये अधिक छोड़ने की इच्छा करने वाले आप मुझे विचारशून्य मालूम पड़ते हैं।

* **ऋद्धं हि राज्यं पदमैन्द्रमाहुः ॥2/50॥**

अर्थ- क्योंकि (विद्वान् लोग) समृद्धिशाली राज्य को भूतल के सम्बन्ध से भिन्न इन्द्र का पद कहते हैं।

* **शिलोच्चयोऽपि क्षितिपालमुच्चैः**
प्रीत्या तमेवार्थमभाषतेव ॥2/51॥

अर्थ- गुफा में पहुँची हुई इसकी प्रतिध्वनि द्वारा पर्वत भी प्रेम से मानो उसी बात को राजा से जोर से कहने लगा।

न केवलानां पयसां प्रसूतिमवेहि मां कामदुघां प्रसन्नाम्

अर्थ- मुझको केवल दूध देने का कारण मत समझो (बल्कि प्रसन्न होने पर कामनाओं को पूर्ण करने वाली (जानो)। ॥2/63॥

मार्गं स्वेनेव पूर्णेन मनोरथेन

अर्थ- प्रस्तुत श्लोक में राजा और रानी के द्वारा तय किये गये मार्ग का वर्णन है अर्थात् ऐसा प्रतीत होता था कि रथ पर चढ़कर नहीं गये अपने सफलीभूत मनोरथ पर चढ़ कर गये।

* '**प्रतिबध्नाति हि श्रेयः पूज्यपूजाव्यतिक्रमः**'(रघु. 01/79) पूज्यों की पूजा का उल्लङ्घन करना कल्याण को रोकता है।
* '**स्ववीर्यगुप्ता हि मनोः प्रसूतिः**' मनु के वंश में उत्पन्न राजा लोग अपने ही पराक्रम से आत्मरक्षा कर लेते थे। (रघु. 02/04)
* '**भक्त्योपपन्नेषु हि तद्विधानां प्रसादचिह्नानि पुरः फलानि।**' प्रेमी व्यक्तियों के प्रसन्नता के चिह्न निःसन्देह फल के कारण होते हैं। (रघु. 02/22)

➢ ''**न पादपोन्मूलनशक्तिरंहः शिलोच्चये मूर्च्छति मारुतस्य।**'' सिंह, राजा दिलीप से कहता है कि- वृक्ष को उखाड़ने वाली शक्ति रखने वाले वायु का वेग पर्वत के विषय में व्यर्थ होता है। (रघु. 02/34)

➢ ''**शस्त्रेण रक्ष्यं यदशक्यरक्षं, न तद्यशः शस्त्रभृतां क्षिणोति॥**'' सिंह, दिलीप से कहता है कि- रक्षा करने के योग्य वस्तु शस्त्र से नहीं बचायी जा सकती, वह नष्ट होती हुई भी शस्त्रधारियों की कीर्ति को दूषित नहीं कर सकती। (रघु. 02/40)

➢ '**स्थातुं नियोक्तुर्न हि शक्यमग्रे, विनाश्य रक्ष्यं स्वयमक्षतेन।**' राजा दिलीप, सिंह से कहते हैं कि- रक्षा करने योग्य वस्तु का नाश करके स्वयं बिना नष्ट हुए, नौकर स्वामी के आगे उपस्थित होने के लिए समर्थ नहीं हो सकता। (रघु. 02/56)

➢ '**एकान्तविध्वंसिषु मद्विधानां पिण्डेष्वनास्था खलु भौतिकेषु।**' राजा दिलीप, सिंह से कहते हैं कि- लोगों के अवश्य नष्ट होने वाले पृथ्वी-जल-तेज-वायु-आकाश इन पाँच महाभूतों से बने शरीर में अपेक्षा नहीं रहती है।(रघु. 02/57)

➢ '**सम्बन्धमाभाषणपूर्वमाहुः।**' राजा दिलीप सिंह से कहते हैं कि- दो व्यक्तियों में बातचीत आरम्भ हो जाय तो उसी से उनका रिश्ता जुड़ जाता है। अर्थात् सम्बन्ध को बातचीत के द्वारा उत्पन्न हुआ कहते हैं। (रघु. 02/58)

रघुवंश पर टीकाएँ-

रघुवंश महाकाव्य की व्यापकता का पता इसी से लगाया जा सकता है कि-

➢ रघुवंश की 40 टीकाएँ प्राप्त हैं।

- मल्लिनाथ की टीका सर्वाधिक प्रमाणित मानी जाती है। उन्होने इसके प्रत्येक शब्द की व्याख्या की है।

प्रमुख टीकाकार एवं टीकाएँ

बल्लभदेव-
- रघुवंश महाकाव्य के सबसे प्राचीन टीकाकार।
- टीका का नाम- रघुवंशपञ्जिका
- पाण्डुलिपि के उपलब्ध, अप्रकाशित
- समय-दशमशती

दक्षिणावर्तनाथ-
- टीका का नाम- 'रघुवंशदीपिका'
- पाण्डुलिपि में अत्यधिक त्रुटि होने से अप्रकाशित
- समय-13वीं शती।

मल्लिनाथ-
- संस्कृत साहित्य के समर्थ टीकाकार।
- टीका का नाम-'सञ्जीवनी'।
- समय-15वीं शती।

अरुणगिरिनाथ-
- रघुवंश के तीसरे टीकाकार
- टीका का नाम- 'प्रकाशिका'
- समय- 15वीं शती।

नारायण पण्डित-
- अरुण गिरिनाथ का अनुवर्तन किया।
- टीका का नाम- 'पदार्थदीपिका'
- समय- (वि.स. 1506/1555)

चरित्रवर्धन-
- टीका का नाम- 'शिशुहितैषिणी'

समय- 15वीं शती

रघुवंश के अन्य टीकाकार
- जिन समुद्रसूरि, हेमाद्रि, रत्नचन्द्र, सुमालिविजय, ह्दरिदास मित्र, कृष्णभट्ट, जनार्दन और नल विजयराम प्रमुख हैं।

महत्वपूर्णतथ्य
- रघुवंश ध्वनि काव्य है यह ध्वनि काव्य का ज्वलन्त रूप है।
- रघुवंश में 19 सर्गों में रघुवंशी राजाओं का चरित्र गान किया गया है।
- रघुवंश चरित्रप्रधान काव्य है।
- लोकप्रियता की दृष्टि से रघुवंश कालिदास की कृतियों में श्रेष्ठ है।
- यह एक पौराणिक काव्य है जिसकी कथा इतिहास, पुराण, रामायण तथा महाभारत से ली गयी है।
- इतनी व्यापक और विराट् कथा के आयोजन के फलस्वरूप ही आचार्यों ने कालिदास को 'रघुकार' की उपाधि दी।

कुमारसम्भवम् प्रथमसर्ग

- 'कुमारसम्भवम्' महाकाव्य कालिदास की प्रारम्भिक रचना है।
- इसमें कवि शिव-पार्वती विवाह, कुमार कार्तिकेय के जन्म, तथा उनके द्वारा तारकासुर के वध की कथा वर्णित है।
- इस महाकाव्य में **17 सर्ग** हैं।
- किन्तु प्रथम 8 सर्गों को ही कालिदास की रचना माना जाता है।
- 'विवरण टीका' के लेखक- नारायण पण्डित ने कहा कुमारसम्भव काव्य का लक्ष्य पार्वती द्वारा शिव के चित्त का आकर्षण मात्र था।
- काव्यशास्त्रीय आचार्यों ने प्रथम आठ सर्गों से ही उद्धरण दिये हैं।
- मल्लिनाथ की संजीवनी टीका वस्तुतः आठ सर्गों तक ही है।
- मल्लिनाथ के पूर्ववर्ती अरुणगिरिनाथ ने भी आठ सर्गों तक ही टीका लिखी है।
- भाषा, भाव की दृष्टि से परवर्ती सर्ग मौलिक सर्गों की अपेक्षा हीनतर है।
- केवल सीताराम नामक कवि ने संजीवनी नाम से उन सर्गों की व्याख्या की है।
  (सर्वप्रथम टीका सम्पूर्ण काव्य पर 17 सर्ग तक)
- 'कुमारसम्भवम्' में 'सम्भव' शब्द सम्भावना की ही ध्वनि देता है।
- वास्तविक जन्म को प्रकाशित नहीं करता है।

कुमारसम्भवम् - महाकाव्य का परिचय

- **प्रणेता-** महाकवि कालिदास की प्रारम्भिक रचना।
- **नायक-** कुमारसम्भव के नायक शिव दिव्य कोटि के हैं।
- **प्रतिनायक**- तारकासुर
- **सर्ग संख्या-** 17 सर्ग (मूल रूप से 8 सर्ग)
- **उपजीव्य-** शिवपुराण, रामायण, महाभारत।

रस

- कुमारसम्भवम् का अङ्गी रस **शृङ्गार** है।
- शिवपार्वती के असाधारण प्रेम और प्रणय लीलाओं का चित्रण इस काव्य में होने से सम्पूर्ण काव्य शृङ्गार मय है।

तं यथात्मसदृशं वरं वधूरन्वरज्यत वरस्तथैव ताम्।
सागरादनपगा हि जाह्नवी सोऽपि तन्मुखरसैकवृत्तिभाक्।।
(कुमार. 08/16)

- चतुर्थ सर्ग में रति के करुण विलाप में आद्यन्त करुण रस छाया हुआ है।

गत एव न ते निवर्तते स सखा दीप इवानिलाहतः।
अहमस्य दशेव पश्य माम विषह्यव्यसनेन धूमिताम्।।
(कुमार. 4/30)

- समाधिस्थ शिव की मूर्ति एवं पार्वती की तपस्या वर्णन में शान्त रस की छटा दिखती है।
- अंग रस के रूप में हास्य रस भी इस महाकाव्य में विन्यस्त है।

छन्द

- कालिदास को छोटे छन्द अधिक प्रिय थे।
- बड़े छन्दों का प्रयोग सर्गान्त में किया गया है।
- छोटे छन्दों में भी उपजाति और अनुष्टुप् अतिप्रिय छन्द हैं।

➢ कुमारसम्भव में सर्वाधिक उपजाति छन्द का प्रयोग हुआ है।

कुमारसम्भवम् के सर्गों का नाम एवं श्लोक संख्या

सर्गसंख्या	सर्ग का नाम	सर्ग में श्लोक संख्या
प्रथम सर्ग	उमोत्पत्ति (उमा उत्पत्ति)	60
द्वितीय सर्ग	ब्रह्मसाक्षात्कार	64
तृतीय सर्ग	मदन दहन	76
चतुर्थ सर्ग	रति विलाप	46
पञ्चम सर्ग	तपः फल उदय	86
षष्ठ सर्ग	उमाप्रदान	95
सप्तम सर्ग	उमा परिणय	95
अष्टम सर्ग	उमासुरतवर्णन सीताराम कवि उमा परिणय (मल्लिनाथ)	91
नवम सर्ग	कैलाश गमन	52
दशम सर्ग	कुमार उत्पत्ति	60
एकादश सर्ग	कुमार उत्पत्ति	50
द्वादश सर्ग	कुमार सेनापतिवर्णन	60
त्रयोदश सर्ग	कुमार सेनापति अभिषेक	51
चतुर्दश सर्ग	देवसेना प्रयाण	51
पञ्चदश सर्ग	देवसेना प्रयाण (सुरासुरसैन्य संघट्ट)	53
षोडश सर्ग	देवसेना प्रयाण (सुरासुरसैन्य संग्रामवर्णन)	51
सप्तदश सर्ग	तारकासुर वध	55
		कुल=1096

सर्गानुसार कथावस्तु

सर्ग-1

- ➢ हिमालय का भव्य वर्णन
- ➢ हिमालय-मैना विवाह
- ➢ पार्वती का जन्म और सौन्दर्य
- ➢ नारद द्वारा शिव-पार्वती विवाह की चर्चा।
- ➢ पार्वती द्वारा शिव की आराधना।

महाकाव्य का वैशिष्ट्य

- ➢ महाकाव्य का नामकरण कथानक पर आधारित है-
- ➢ 'कुमारस्य सम्भवः जन्म यस्मिन् काव्ये तत् कुमारसम्भवम्'
- ➢ महाकाव्य के अधिकांश लक्षण कुमारसम्भव में मिलते हैं जो कि विभिन्न आचार्यों द्वारा बताये गये हैं।
- ➢ ''विकारहेतौ सति विक्रियन्ते येषां न चेतांसि त एव धीराः।'' काव्य महादेव को वास्तविक धीर कहा गया है।

कुमारसम्भवम्

☞ 'कुमारसम्भव' महाकाव्य किस कवि ने लिखा है–
कालिदास

☞ कुमारसम्भवमहाकाव्ये कति सर्गाः सन्ति–सप्तदश

☞ कुमारसम्भवमहाकाव्यस्य कस्मिन् सर्गे हिमालयवर्णनमस्ति–
प्रथमे सर्गे

☞ कस्मिन् काव्ये आदौ हिमालयस्य वर्णनं भवति–
कुमारसम्भवे

☞ 'शिव-पार्वत्योः' चर्चा कस्मिन् ग्रन्थे दृश्यते– कुमारसम्भवे

☞ कुमारसम्भवमहाकाव्ये कुमारः वर्तते– **कार्तिकेयस्य**

☞ 'कुमारसम्भव' में किस राक्षस का वध वर्णित है–**तारकासुर**

☞ 'एको हि दोषो गुणसन्निपाते निमज्जतीन्दोः किरणेष्विवाङ्कः' इति सूक्तिः अस्मिन् काव्ये उपलभ्यते– **कुमारसम्भवे**

☞ ''शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्'' कस्मिन् काव्ये प्रोक्तम् ?
कुमारसम्भवे

☞ ''अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयो नाम नगाधिराजः'' यह पंक्ति कहाँ प्राप्त होती है– **कुमारसम्भवम् में**

☞ क्षुद्रेऽपि नूनं शरणं प्रपन्ने ममत्वमुच्चैः शिरसां सतीव यह सूक्ति कहाँ प्राप्त होती है – **कुमारसम्भव में**

☞ 'क्लेशः फलेन हि पुनर्नवतां विधत्ते' इयं पंक्ति अस्ति–
कुमारसम्भवस्य

☞ ''स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः'' उक्ति है–
कुमारसम्भवम् की

☞ 'न धर्मवृद्धेषु वयः समीक्ष्यते' – इस उक्ति के रचयिता कौन हैं–**कालिदास**

☞ 'प्रियेषु सौभाग्यफला हि चारुता' – इस उक्ति के रचयिता कौन हैं– **कालिदास**

☞ 'मनोरथानामगतिर्न विद्यते' - कस्येदं वाक्यम्–
पार्वत्याः

☞ कुमारसम्भवं महाकाव्यस्य प्रारम्भः कीदृगविधेन मङ्गलाचरणेन अस्ति– **वस्तुनिर्देशात्मकेन**

प्रमुख खण्डकाव्य

मेघदूत का परिचय

- **लेखक** – कालिदास
- **विधा** – खण्डकाव्य/गीतिकाव्य
- **दो भागों में** – (i) पूर्वमेघ (ii) उत्तरमेघ
- **प्रधानरस** – विप्रलम्भशृङ्गार
- **छन्द** – मन्दाक्रान्ता
- **मेघदूतम् की रीति** – वैदर्भी रीति
- **उपजीव्य** – कथानक ब्रह्मवैवर्तपुराण से एवं दूत की कल्पना वाल्मीकीयरामायण से
- **नायक** – यक्ष (हेममाली) ब्रह्मवैवर्तपुराण के अनुसार
- **नायिका** – यक्षिणी (विशालाक्षी)
- **कथानक** – दूतकाव्य के रूप में एक 'गीतिकाव्य' है, जिसमें एक यक्ष का विरह वर्णित है।
- 50 से अधिक संस्कृत टीकायें।
- मल्लिनाथ की **(सञ्जीवनी टीका)**
- जर्मन विद्वान् **मैक्समूलर ने मेघदूतम् का जर्मन भाषा में पद्यानुवाद** और **श्वेट्ज ने जर्मनभाषा में गद्यानुवाद** किया है।
- **आर्थर राइडर और एच. जी रूक** ने अंग्रेजी में मेघदूतम् का पद्यानुवाद किया है।
- हिन्दीभाषा में मेघदूतम् के **6 पद्यानुवाद** हो चुके हैं।
- क्षेमेन्द्र ने कालिदास के मन्दाक्रान्ता छन्द की प्रशंसा की–**'सुवशा कालिदासस्य मन्दाक्रान्ता विराजते' –सुवृत्ततिलक**
- मेघदूत में उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक आदि अलङ्कारों का सुन्दर प्रयोग है।
- डॉ. कीथ ने मेघदूत को **Elegy (शोकगीत)** कहा है।
- भारतीय मत में मेघदूत शोकगीत या करुणगीत न होकर **विरहगीत** या **विप्रलम्भगीत** है।
- **प्रमुखपात्र**–यक्ष (हेममाली), यक्षिणी (विशालाक्षी), मेघ (बादल), कुबेर (यक्षाधिपति)
- संस्कृत के गीतिकाव्यों का आदिमग्रन्थ महाकवि कालिदास का मेघदूत है।
- दक्षिणावर्तनाथ और मल्लिनाथ ने मेघदूत लिखने में रामायण से प्रेरणा मानी है।
- यक्ष को अलकाधीश्वर कुबेर ने जो शाप दिया उसका आधार पद्मपुराण है।
- वहाँ के योगिनी नामक आषाढ़-कृष्ण-एकादशी-महात्म्य-प्रसंग में यह कथा संक्षेप में है।
- 'ब्रह्मवैवर्तपुराण' को भी मेघदूत का उपजीव्य माना जाता है।
- मेघदूत में 115 पद्य हैं। यह दो भागों पूर्वमेघ और उत्तरमेघ में विभक्त है।
- पूर्वमेघ में 63 और उत्तरमेघ में 52 पद्य हैं।
- मल्लिनाथ ने 121 पद्य स्वीकार किए हैं किन्तु 6 श्लोकों को प्रक्षिप्त माना है।
- मेघदूत का **मुख्य रस विप्रलम्भ शृङ्गार** है।
- पूरे मेघदूत में **मन्दाक्रान्ता छन्द** प्रयुक्त है।
- यक्षों के अधिपति कुबेर हैं। उन्होंने अपने कार्य में प्रमाद करने के कारण किसी अपने अनुचर 'यक्ष' को शाप दे दिया।
- यद्यपि कालिदास ने मेघदूत में कहीं भी इस यक्ष का नाम नहीं लिया परन्तु ब्रह्मवैवर्तपुराण में इस **यक्ष का नाम हेममाली तथा यक्षिणी का नाम विशालाक्षी** मिलता है।
- यक्ष अपनी पत्नी में आसक्ति के कारण अपने कार्य में प्रमाद करता है इसलिए कुबेर ने एक वर्ष तक अपनी पत्नी से वियुक्त रहने का शाप दिया।
- शाप के कारण नष्ट महिमा वाला **यक्ष रामगिरि में** रहता है।
- मेघदूत के आरम्भ में यक्ष अपने शापावधि के 8 माह काट चुका है और चार माह शेष हैं।
- मेघदूत का नायक **यक्ष धीरललित नायक** है। **यक्षिणी स्वकीया एवं पद्मिनी नायिका** है।
- मेघदूत में **प्रसाद एवं माधुर्य गुण** की प्रधानता है और **वैदर्भीरीति** प्रयुक्त है।
- **मेघः एव दूतः यस्मिन् काव्ये तत् 'मेघदूतम्'।** इस प्रकार 'मेघदूतम्' पद में बहुव्रीहि समास प्राप्त है।
- यक्षों के अधिपति **कुबेर की राजधानी 'अलका'** है। इसकी स्थिति हिमालय पर्वत शृंखला के कैलाश नामक शिखर पर बतलायी गयी है।
- **रामगिरि पर्वत** की स्थिति मल्लिनाथ तथा वल्लभ ने **चित्रकूट** मानी है जो बुन्देलखण्ड में है।
- प्रो. विल्सन ने नागपुर से कुछ दूरी पर स्थित रामटेक का प्राचीन नाम रामगिरि माना है।
- रामगिरि सीताजी के स्नान से पवित्र जल वाला तथा घने छायादार वृक्षों से युक्त है।
- आषाढ़ के पहले ही दिन यक्ष पर्वतों से क्रीड़ा करने वाले गजों के तुल्य 'मेघ' को देखता है।
- कश्चित् पद ब्रह्म का वाचक (कः = ब्रह्म, चित् = ब्रह्म) है इस प्रकार दो बार श्रवण होने से मङ्गलाचरण हो जाता है।
- मेघदूत का मङ्गलाचरण **वस्तुनिर्देशात्मक मङ्गलाचरण है।**
- प्रिया के वियोग के कारण दुर्बल यक्ष की कलाई से स्वर्णनिर्मित कङ्गन के गिरने से वह रिक्त कलाई वाला हो गया है।
- अपनी कुशलवार्ता अपनी प्रिया तक पहुँचाने के लिए, अपने निवेदन से पूर्व यक्ष कुटज (गिरिमल्लिका) के पुष्पों से मेघ को अर्घ्य देता है।
- धुआँ, अग्नि, जल एवं वायु से बने जड़ मेघ से भी वह कामार्तता के कारण सन्देश ले जाने का निवेदन करता है।
- यक्ष, मेघ को विश्वविदित् **पुष्कर और आवर्तक वंश** में उत्पन्न बताता है।
- यक्ष, मेघ को **इन्द्र का प्रमुख व्यक्ति** और स्वेच्छानुसार आकृति धारण करने में समर्थ बताता है।
- मेघ को सन्तप्तों का एकमात्र शरण बताता है और उसे सन्देश

लेकर अलका भेजना चाहता है। अलका के बाहरी उद्यान में स्थित भगवान् शिव के मस्तक पर सुशोभित चन्द्र की चाँदनी से वहाँ के महल धवल हैं।

- चातक (पपीहा) मेघ के बायीं ओर शब्द कर रहा है।
- गर्भाधान उत्सवकाल के परिचय से आकाश में बगुलियाँ पंक्तिबद्ध होकर मेघ का सेवन करती हैं।
- यक्ष को विश्वास है कि वियोग के दिनों की गणना में एकाग्रचित्त यक्षिणी को मेघ अवश्य देखेगा।
- यक्ष मेघ की भाभी (भ्रातृजाया) 'यक्षिणी' को कहता है।
- मानसरोवर जाने को उत्सुक तथा मार्ग में भूख मिटाने के लिए चोंच में मृणाल लिए हुए राजहंस मेघ के साथी होंगे।
- श्रीरामचन्द्र के चरणचिन्हों से युक्त रामगिरि से मेघ विदाई लेता है।
- मेघ 'उत्तरदिशा' की ओर मुख करके अपनी यात्रा का आरम्भ करता है।
- दिङ्नागाचार्य वसुबन्धु के शिष्य थे।
- मल्लिनाथ ने 'दिङ्नाग' को कालिदास का प्रतिद्वन्द्वी माना है। जिन पर कालिदास ने व्यङ्ग्य किया है।
- रामगिरि आश्रम 'गीले स्थल बेतों' से युक्त है।
- इन्द्रधनुष से युक्त श्यामल मेघ की उपमा गोपवेषधारी भगवान् श्रीकृष्ण से की गयी है।
- मेघ की यात्रा में सर्वप्रथम माल प्रदेश पड़ता है।
- थोड़ा पश्चिम में पड़ने वाले माल प्रदेश में वर्षा कर वहाँ की भूमि को सुगन्धित करता हुआ मेघ पुनः उत्तर की ओर चल देता है।
- मेघ ने आम्रकूट पर्वत की दावाग्नि पहले बुझाई थी इसलिए मित्रता के कारण आम्रकूट मेघ को सिर पर (चोटी)धारण करेगा।
- मेघ की यात्रा का **पहला पर्वत आम्रकूट** है। प्रो. विल्सन आधुनिक अमरकण्टक, जो नर्मदा का उद्गम है उसको ही आम्रकूट मानते हैं।
- आम्रकूट पके हुए आम्र से युक्त आम्र वृक्षों वाला पर्वत है।
- मेघ द्वारा चोटी पर आसीन हो जाने के कारण आम्रकूट पर्वत पृथ्वी के स्तन के समान शोभा प्राप्त करता है। जो देव-दम्पत्तियों द्वारा दर्शनीय है।
- आम्रकूट पर्वत के कुञ्ज वनवासियों की स्त्रियों द्वारा उपभुक्त हैं।
- मेघ के मार्ग में **पहली नदी रेवा (नर्मदा)** मिलती है जो विन्ध्य पर्वत की तलहटी में हाथी के शरीर पर बने चित्र के समान फैली है।
- नर्मदा का जल हाथियों के मदों से सुगन्धित तथा जामुन के कुञ्जों से अवरुद्ध है।
- सिद्ध जनों की स्त्रियाँ मेघ के कम्पन से भयभीत होकर अपने प्रेमियों का आलिङ्गन करेगी।
- रेवा को पार कर मेघ दशार्ण देश पहुँचता है जिसे विल्सन ने आधुनिक छत्तीसगढ़ माना है। यह एक प्राचीन जनपद है। इसकी राजधानी 'विदिशा' थी।
- दशार्ण को **'दशदुर्गों का प्रदेश'** कहा जाता है।
- विदिशा वेत्रवती नदी के तट पर स्थित है।
- वेत्रवती नदी की उपमा भ्रूभङ्गयुक्त नायिका से की गई है।
- आजकल भोपाल से 26 मील पर स्थित मालवा के 'भिलसा' नामक स्थान को ही विदिशा माना जाता है।
- विदिशा में मेघ 'नीचैः' नामक पर्वत पर ठहरता है। यह पर्वत वेश्याओं द्वारा प्रयुक्त सुगन्धित पदार्थों से युक्त गुफाओं वाला है।
- मेघ का मार्ग उज्जयिनी जाते हुए कुछ टेढ़ा होगा परन्तु तब भी यक्ष उसे वहाँ जाने का निवेदन करता है।
- यक्ष का मानना है कि यदि उज्जयिनी की स्त्रियों की चञ्चल कटाक्षों के साथ मेघ ने क्रीड़ा नहीं किया तो वह ठगा गया।
- उज्जयिनी जाते हुए मेघ मार्ग में निर्विन्ध्या नदी से मिलता है जो पक्षियों की पंक्ति रूपी करधनी वाली है।
- निर्विन्ध्या अपनी भँवर रूपी नाभि दिखाती है और उसके द्वारा दिखाया गया विभ्रम ही प्रथम प्रणयवचन है।
- यक्ष कहता है निर्विन्ध्या को पार कर मेघ सिन्धु नदी के समीप पहुँचेगा जो मेघ के विरह में कृश हो गयी है और मेघ को वह उपाय करना चाहिए जिससे वह दुर्बलता त्याग दे।
- 'अवन्ती' में वृद्धजन वत्सराज उदयन की कथा कहा करते हैं।
- उज्जयिनी को **देदीप्यमान स्वर्ग का टुकड़ा** कहा गया है। उज्जयिनी को विशाला भी कहा जाता है।
- वायु को 'शिप्रा नदी' के चाटुकार प्रेमी के रूप में चित्रित किया गया है। इसी नदी के तट पर उज्जयिनी है।
- उज्जयिनी के बाजार को अत्यन्त वैभवशाली बताया गया है।
- उज्जयिनी में उदयन ने **महाराज 'प्रद्योत' की पुत्री वासवदत्ता** का अपहरण किया था।
- उज्जयिनी में प्रद्योत का स्वर्णमय ताल वृक्षों का वन था जिसे प्रद्योत के ही इन्द्र प्रदत्त **'नलगिरि' नामक हाथी** ने नष्ट कर दिया था।
- अलकापुरी के घोड़े पत्तों के समान श्याम वर्ण के हैं और वहाँ के योद्धागण रावण के तलवार से किये गये घावों के निशान को ही आभूषण मानते हैं।
- महाकाल के उद्यान गन्धवती नदी की वायु से कम्पित होते हैं।
- यक्ष महाकाल मंदिर पहुँचे मेघ को शाम के समय तक रुक कर शिव की सन्ध्या पूजन के समय नगाड़े का कार्य करने के लिए कहता है।
- मेघ के सायंकालीन जपाकुसुम के समान लाल रंग की कान्ति से ऐसा प्रतीत होता है जैसे उसने भगवान् शिव की गजासुर के गीले चर्म को धारण करने की इच्छा पूरी कर दी।
- मेघ उज्जयिनी के महल की छतों पर रात्रि व्यतीत करता है।
- उज्जयिनी के पश्चात् मेघ के मार्ग में गम्भीरा नदी आती है।
- **ज्ञातास्वादो विवृतजघनां को विहातुं समर्थः**। प्रसिद्ध सूक्ति गम्भीरा नदी के वर्णन में आती है।

- यक्ष जल को 'गम्भीरा' का वस्त्र, किनारों को नितम्ब तथा बेंत की शाखाओं को उसका हाथ बताता है।
- जङ्गल के गूलरों को पकाने वाली वायु देवगिरि के मार्ग में बहती है।
- **देवगिरि** में निवास करने वाले **स्वामी कार्तिकेय** हैं। जिनका वाहन मयूर है। इनको **स्कन्द भगवान्** भी कहा जाता है।
- महाराजरन्तिदेव का यशरूप **चर्मण्वती (चम्बल)** नदी है।
- चर्मण्वती नदी पार करके मेघ 'दशपुर' की स्त्रियों के उत्सुकता का विषय बनेगा।
- दशपुर से बढ़ते हुए मेघ ब्रह्मवर्त प्रदेश होता हुआ महाभारत की युद्धभूमि कुरुक्षेत्र पहुँचेगा।
- बलराम महाभारत के युद्ध से विमुख रहे। उनकी पत्नी रेवती के आँखों की उपमा सरस्वती नदी से की गयी है। लाङ्गली बलराम का नाम है।
- सरस्वती नदी के जल का सेवन करके अंदर से पवित्र मेघ वर्ण मात्र से श्याम रह जायेगा। बलराम ने भी इसका जलपान किया था।
- कुरुक्षेत्र के आगे कनखल पर्वत के समीप पार्वती जी का उपहास करती सी गङ्गा नदी बहती है।
- गङ्गा का नाम 'जह्नुकन्या' प्रयुक्त है।
- कनखल हरिद्वार का समीपवर्ती माना जाता है।
- कनखल में मेघ की छाया गङ्गा में पड़ने पर प्रयाग के अतिरिक्त वहाँ भी सङ्गम (गङ्गा + यमुना) प्रतीत होगा।
- हिमालय पर मेघ शिव जी के बैल द्वारा उछाले गये कीचड़ की तुल्य शोभा को प्राप्त करेगा।
- हिमालय पर मेघ 'शरभों' को ओलों की वृष्टि से नष्ट-भ्रष्ट कर देता है।
- हिमालय के किसी शिलातल पर भगवान् शिव के चरणों की सिद्ध जन पूजा करते हैं मेघ भी उनकी परिक्रमा करता है।
- हिमालय पर मेघ के मृदङ्ग जैसी आवाज से शिव का सङ्गीत पूर्ण हो जायेगा।
- हिमालय पर्वत पर क्रौञ्चरन्ध्र भगवान् परशुराम के पराक्रम का प्रमाण है।
- इसी रन्ध्र से हंस मानसरोवर जाते हैं।
- क्रौञ्चरन्ध्र से गुजरता हुआ मेघ राजा बलि को बाँधने के लिए उठाये गये विष्णु के पैर की तरह प्रतीत होगा।
- क्रौञ्चरन्ध्र का दूसरा नाम हंसद्वार है।
- क्रौञ्चरन्ध्र पार करके मेघ हिमालय का अतिथि बनेगा।
- हिमालय पर भ्रमण करती हुई पार्वती जी के लिए मेघ सीढ़ी का कार्य करता है।
- कैलाश पर देवस्त्रियाँ कङ्कणों के अग्रभाग से मेघ को फौव्वारा बना डालेंगी।
- हिमालय पर चीड़ वृक्षों के तनों की रगड़ से लगी आग को मेघ बुझाता है।

उत्तरमेघ

- उत्तरमेघ के प्रथम श्लोक में अलकानगरी की तुलना मेघ के साथ की गयी है।
- मेघ की बिजली की तुलना अलकापुर की स्त्रियों से, इन्द्रधनुष की तुलना सुंदर चित्रों से, मेघ के गर्जन की तुलना अलका में बजाये जाने वाले मृदङ्गों से, जलधारण की मणिजटित फर्शों से तथा मेघ की ऊँचाई की तुलना गगनचुम्बी शिखरों से की गयी है।
- अलका में सदैव छः ऋतुएँ वर्तमान रहती हैं।
- अलका की स्त्रियाँ क्रीड़ा के लिए हाथों में कमल लिए रहती है, बालों में कुन्दपुष्प का तथा मुख पर लोध्रपुष्प का रज लगाये रहती हैं।
- वे जूड़ों में कुरबक का तथा कानों में सुन्दर शिरीष पुष्प लगाकर और माँग में कदम्ब पुष्प सजाती हैं।
- अलका में नित्य फूल खिलते हैं और रात्रियाँ सदैव चाँदनीयुक्त रहती हैं।
- अलका में यक्ष सदैव ही युवावस्था को प्राप्त रहते हैं वहाँ अन्य अवस्थाएँ नहीं हैं।
- कुबेर को रावण का भाई माना जाता है इन्हीं का पुष्पक विमान रावण के पास था।
- कल्पवृक्ष से रतिफल नामक मद्य प्राप्त होता है जिसका सेवन 'यक्षगण' मृदङ्ग आदि के ध्वनि के साथ करते हैं।
- आकाशगङ्गा (मन्दाकिनी) के जल से शीतल तथा किनारे पर मन्दार के वृक्षों से प्राप्त छाया में यक्ष कन्यायें स्वर्णिम बालुका में मणि छिपाने का खेल खेलती है।
- चन्द्रमा की किरणों से पिघलाई गयी झालरों में लटकी चन्द्रकान्त मणि स्त्रियों के सुरतजन्य थकावट को दूर करती है।
- अलका के बाह्य उद्यान का नाम **'वैभ्राज'** है।
- कामदेव भगवान् शङ्कर के डर से अपने भौरों की डोरी वाले धनुष का प्रयोग नहीं करता। स्त्रियों के चितवन से काम चलाता है।
- अलका में अलंकरण की समस्त सामग्री एकमात्र कल्पवृक्ष प्रदान करता है।
- यक्ष का घर **कुबेर के घर से उत्तर दिशा में** स्थित है।
- यक्ष के घर में इन्द्रधनुष के सदृश रंग-बिरंगा फाटक लगा है।
- यक्ष के घर के समीप उसकी पत्नी द्वारा दत्तक पुत्र की तरह पाला गया पुष्पगुच्छ से युक्त मन्दारवृक्ष है।
- रावण की तलवार का नाम 'चन्द्रहास' है।
- यक्ष के घर में मरकतमणि की शिलाओं से निर्मित सीढ़ी वाली बावली है।
- यहाँ के हंस वर्षाकाल में भी मानसरोवर नहीं जाते।
- उस बावली के किनारे पर नीलम नामक मणियों से बने शिखरवाला क्रीड़ाशैल है। इस पर सुन्दर केले की बाड़ है।
- क्रीडाशैल पर रक्त अशोक और मौलसिरी (वकुल) नाम के दो वृक्ष हैं।

- ➢ क्रीडा शैल पर माधवीलता का कुंज है।
- ➢ अशोक यक्षिणी के 'बायें पैर' और बकुल 'मुख की मदिरा' के अभिलाषी हैं।
- ➢ दोनों वृक्षों के मध्य में मरकत मणि की वेदी है।
- ➢ शैल पर ही स्फटिक के पटरे वाली सोने की वासयष्टि (अड्डा) है जहाँ मोर सायंकाल में बैठता है।
- ➢ यह मयूर यक्षिणी की तालियों और कंकणों द्वारा नचाया गया है।
- ➢ यक्ष के द्वार के दोनों तरफ **शंख और पद्म का चित्र** बना है।
- ➢ 'मेघ' अलकापुरी में यक्ष के घर में बने क्रीड़ा शैल पर बैठता है और जुगनुओं की पंक्ति की सदृश मन्द प्रकाश यक्ष के घर में डालता है।
- ➢ यक्ष 'यक्षिणी' को युवतियों की रचना के विषय में ब्रह्मा की प्रथम कृति बताता है।
- ➢ यक्ष के घर पर पिंजड़े में **मैना** पाली गयी है।
- ➢ यक्ष मेघ से कहता है वह यक्षिणी को देवपूजा करते अथवा यक्ष का चित्र बनाते या मैना से बात करते देखेगा।
- ➢ यक्षिणी वीणा बजाते हुए गीत गाने का प्रयत्न करती है।
- ➢ यक्षिणी देहली के पुष्पों को भूमि पर रखकर विरह के दिनों की गणना करती है।
- ➢ यक्षिणी विरह के दिनों में भूमि पर ही सोती है।
- ➢ यक्ष मेघ से खिड़की पर बैठकर यक्षिणी को देखने के लिए कहता है।
- ➢ मेघ के पहुँचने पर यक्षिणी की बायीं आँख फड़कती है।
- ➢ मेघ अपने जल बिन्दुओं से शीतल बने वायु से यक्षिणी को जगाता है।
- ➢ यक्ष के शाप का अंत हरिबोधिनी या देवोत्थान एकादशी के दिन होता है।
- ➢ उसी दिन भगवान् विष्णु अपनी शेष शय्या से उठेंगे।
- ➢ यक्ष मेघ को पहचान चिह्न के रूप में यक्षिणी के साथ घटित एक घटना को बताता है।
- ➢ अंतिम श्लोक में यक्ष मेघ के लिये यह कामना करता है कि उसका उसकी पत्नी 'बिजली' के साथ कभी वियोग न हो।
- ➢ मेघदूत पर 50 से अधिक टीकाएं लिखी जा चुकी हैं।

मेघदूत की प्रमुख सूक्तियाँ (पूर्वमेघ)

1. कामार्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु। 5॥
भावार्थ – काम से व्याकुल (जन) चेतन एवं अचेतन के विषय में स्वभाव से ही दीन हो जाते हैं।

2. याच्त्रा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा॥ 6॥
भावार्थ – अधिक गुण वाले व्यक्ति से की गई याचना फलवती न होने पर भी उत्तम है, नीच व्यक्ति से फलीभूत हुयी याचना भी अच्छी नहीं है।

- यहाँ अधिक गुण वाला 'मेघ' है।

3. आशाबन्धः कुसुमसदृशं प्रायशो ह्यङ्गनानाम्
सद्यः पाति प्रणयि हृदयं विप्रयोगे रुणद्धि॥ 9॥
भावार्थ – आशा का बन्धन ही प्रेम से ओत-प्रोत, पुष्प सदृश कोमल तथा वियोग से शीघ्र टूटने वाले अबलाओं के हृदय को प्रायः रोके रहता है।

4. न क्षुद्रोऽपि प्रथमसुकृतापेक्षया संश्रयाय,
प्राप्ते मित्रे भवति विमुखः किं पुनर्यस्तथोच्चैः॥ 17॥
भावार्थ – नीच व्यक्ति भी पहले किये गये उपकार के कारण मित्र से विमुख नहीं होता फिर जो महान् है वह कैसे (विमुख होगा)?

- आम्रकूट के मित्र मेघ के आम्रकूट पर्वत पर अतिथि रूप में पहुँचने पर। यह सूक्ति कही गयी है।

5. रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय॥ 20॥
भावार्थ – सभी रिक्त पदार्थ हल्के तथा पूर्णता गौरव के लिए होती है।

6. स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु॥ 29॥
भावार्थ – स्त्रियों का प्रिय के प्रति विलास प्रारम्भिक प्रार्थना वाक्य होता है।

- मेघ के प्रति निर्विन्ध्या द्वारा दिखाये गये विभ्रम के संदर्भ में।

7. ज्ञातास्वादो विवृतजघनां को विहातुं समर्थः॥ 45॥
भावार्थ – रस का अनुभव किया हुआ कौन-सा पुरुष जंघा प्रदेश को प्रकट करने वाली स्त्री का परित्याग करने में समर्थ होगा।

- ज्ञातास्वाद से मेघ का और विवृतजघना से गम्भीरा का संकेत।

8. आपन्नार्तिप्रशमनफलाः सम्पदो ह्युत्तमानाम्॥ 57॥
भावार्थ – श्रेष्ठ जनों की सम्पत्तियाँ आर्त्तजनों के कष्टों को दूर कर देने वाली होती है।

- हिमालय की दावाग्नि को मेघ बुझाता है अतः उसे 'उत्तम' कहा गया है।

9. के वा न स्युः परिभवपदं निष्फलारम्भयत्नाः॥ 58॥
भावार्थ – निष्फल कर्म में प्रयत्न करने वाले कौन से व्यक्ति तिरस्कार के पात्र नहीं होते (अर्थात् अवश्य होते हैं)

- मेघ पर आक्रमणरूपी निष्फल प्रयास करने वाले 'शरभों' के संदर्भ में।

उत्तरमेघ की सूक्तियाँ

1. सूर्यापाये न खलु कमलं पुष्यति स्वामभिख्याम्॥ 20॥
भावार्थ – सूर्य के अस्त हो जाने पर कमल निश्चित रूप से अपनी शोभा को धारण नहीं करता।

2. प्रायः सर्वो भवति करुणावृत्तिरार्द्रान्तरात्मा॥ 35॥
भावार्थ – प्रायः सभी कोमल हृदय वाले व्यक्ति दयालु स्वभाव वाले होते हैं।

3. कान्तोदन्तः सुहृदुपगतः सङ्गमात्किञ्चिदूनः॥ 40॥
भावार्थ – मित्र से लिया गया प्रियतम का संदेश स्त्रियों के लिए मिलने से कुछ ही कम होता है।

4. नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण॥ 49॥
भावार्थ – सुखः-दुःख की दशा पहिए की धार (तीलियों) के समान ऊपर-नीचे होती रहती है।

5. प्रत्युक्तं हि प्रणयिषु सतामीप्सितार्थक्रियैव॥ 54॥

भावार्थ – प्रेमी याचकों के अभीष्ट प्रयोजन को सिद्ध करना ही सज्जनों का उत्तर होता है।

मेघदूतम् (व्याख्या 1-10 श्लोक)

कश्चित्कान्ताविरहगुरुणा स्वाधिकारात्प्रमत्तः
शापेनास्तङ्गमितमहिमा वर्षभोग्येण भर्तुः।
यक्षश्चक्रे जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु
स्निग्धच्छायातरुषु वसतिं रामगिर्याश्रमेषु॥1॥

अन्वय - स्वाधिकारात् प्रमत्तः कान्ताविरहगुरुणा वर्षभोग्येण भर्तुः शापेन अस्तङ्गमितमहिमा कश्चित् यक्षः जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु स्निग्धच्छायातरुषु रामगिर्याश्रमेषु वसतिं चक्रे।

शब्द	अर्थ
स्वाधिकारात्	अपने कर्त्तव्य पालन में
प्रमत्तः	असावधान
कान्ताविरहगुरुणा	प्रिया के वियोग से दुःसह एक वर्ष पर्यन्त भोगे जाने वाले
भर्त्तुः	स्वामी-कुबेर के
शापेन	शाप से
अस्तङ्गमितमहिमा	जिसकी महिमा नष्ट हो चुकी है,
कश्चित्	कोई
यक्षः	यक्ष
जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु	जनक की पुत्री सीता जी के स्नान से पवित्र जल वाले
स्निग्धच्छायातरुषु	घने छायादार वृक्षों से युक्त
रामगिर्याश्रमेषु	रामगिरि नामक पर्वत के आश्रमों में
वसतिम्	निवास
चक्रे	किया

अनुवाद- अपने कार्य से असावधान, प्रिया के विरह से दुःसह, एक वर्ष तक भोगने वाले, स्वामी के शाप से नष्ट महिमा वाला, कोई यक्ष जनक की पुत्री के स्नान से पवित्र जल वाले, घने छाया वाले वृक्षों से युक्त, रामगिरि (पर्वत) के आश्रमों में निवास करता था।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

समास

- **स्वाधिकारात् -** अधिक्रियते अस्मिन् इति स्वस्य अधिकारः स्वाधिकारः तस्मात् (षष्ठी तत्पुरुष समास अथवा कर्मधारय समास)
- **अस्तङ्गमितमहिमा -** अस्तं गमितः महिमा यस्य सः (बहुव्रीहि समास)
- **स्निग्धच्छायातरुषु -** छायाप्रधानाः तरवः छायातरवः, स्निग्धाः छायातरवः येषु तेषु - (बहुव्रीहि समास)
- **रामगिर्याश्रमेषु -** रामगिरेः आश्रमेषु रामगिर्याश्रमेषु - षष्ठी तत्पुरुष
- **वर्षभोग्येण -** भोक्तुं योग्यः भोग्यः, वर्षभोग्यस्तेन तत्पुरुष समास
- **जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु -** जनकस्य तनयायाः सीतायाः स्नानैः अवगाहनैः पुण्यानि पवित्राणि उदकानि जलानि येषु तेषु - (बहुव्रीहि समास)
- **कान्ताविरहगुरुणा -** कान्तायाः प्रियायाः विरहः वियोगः तेन गुरुणा - तृतीया तत्पुरुष

कारक -

- **स्वाधिकारात् -** 'जुगुप्साविरामप्रमादार्थानामुपसंख्यानम्' वार्तिक से पञ्चमी का प्रयोग
- **वर्षभोग्येण -** कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे से तृतीया (वर्ष भोग्यः)
- **शापेन -** हेतौ सूत्र से तृतीया।
- **प्रमत्तः -** 'जुगुप्साविरामप्रमादार्थानामुपसंख्यानम्' से पंचमी

प्रत्यय -

- **अधिकारः** - अधि + कृ + घञ्
- **प्रमत्तः** - प्र + मद् + क्त
- **भर्तुः** - भृ + तृच्
- **शापेन** - शप् + घञ्
- **गमित** - गम् + णिच् + क्तः
- **महिमा** - महत् + इमनिच्
- **वसतिम्** - वस् + अति
- **चक्रे -** कृ + लिट् प्रथम पुरुष, एकवचन, आत्मनेपद
- **रस -** मेघदूतम् में **विप्रलम्भ शृंगार** का प्रयोग किया गया है। विप्रलम्भ शृङ्गार के भी चार भेद होते हैं-

1. पूर्वराज 2. मान 3. प्रवास - भावी, भवन्, भूत 4. करुण

इसमें भवन नामक प्रवास का उल्लेख है।

- **छन्द -** सम्पूर्ण मेघदूतम् में **मन्दाक्रान्ता छन्द** का प्रयोग हुआ है।
- **लक्षण -** 'मन्दाक्रान्ता जलधिषड्गैर्म्भौ न तौ ताद् गुरू चेत्' अर्थात् इस छन्द में प्रत्येक पाद में 17 अक्षर होते हैं। वे मगण, भगण, नगण, दो तगण और दो गुरु इस क्रम में होते हैं। चौथे, दसवें और सत्रहवें अक्षर पर यति होती है।
- **अलङ्कार -** इस श्लोक में शाप के प्रति ''स्वाधिकारात्प्रमत्तः'' की हेतुता होने से पदार्थ हेतुक **काव्यलिङ्ग अलङ्कार** है।
- 'कान्ताविरहगुरुणा' यहाँ कान्ता पद का प्रयोग कवि की इस बात का सूचक है कि यक्ष को अपनी पत्नी से विशेष प्रेम था, क्योंकि जो भाव कान्ता पद से व्यक्त होता है वह पत्नी या भार्या से नहीं। यहाँ कान्ता पद का प्रयोग साभिप्राय है, इसलिए **परिकरालङ्कार** है। क्योंकि जहाँ विशेष्य साभिप्राय हो वहाँ परिकर अलङ्कार होता है।
- **लक्षण - ''विशेषणैर्यत् साकूतैरुक्तिः परिकरश्च सः''**
- **विशेष -** ग्रन्थ के निर्विघ्नतापूर्वक समाप्ति के लिए ग्रन्थ के आरम्भ में मङ्गलाचरण किया जाता है। मङ्गलाचरण के तीन भेद हैं-
- **''आशीर्नमस्क्रिया वस्तुनिर्देशो वाऽपि तन्मुखम्''**

1. आशीर्वादात्मक 2. नमस्क्रियात्मक 3. वस्तुनिर्देशात्मक

यहाँ वस्तुनिर्देशात्मक मङ्गलाचरण है।

➢ काव्य के आरम्भ में 'क' वर्ण का प्रयोग हुआ है, 'क' शब्द वायु, ब्रह्मा और सूर्य का वाचक है अतः देवता वाचक शब्द का प्रयोग होने से मङ्गल का ही अनुष्ठान किया गया है।

श्लोक से पूछे जा सकने वाले सम्भावित प्रश्न -

➢ इस श्लोक में कौन सा मङ्गलाचरण है? **वस्तुनिर्देशात्मक**
➢ इसमें कौन सा छन्द प्रयोग किया गया है? **मन्दाक्रान्ता**
➢ यक्ष को कितने दिनों का शाप मिला था? - **एक साल**
➢ यक्ष को किसने शाप दिया था? - **यक्षों के स्वामी कुबेर**
➢ यक्ष को शाप देने का क्या कारण था? **- अपने कार्य से असावधानी के कारण**
➢ 'कश्चित्' शब्द किसके लिए आया है? - **यक्ष के लिए**
➢ रामगिरि आश्रम किसके स्नान करने से पवित्र हो गया था? **- जनकतनया सीता के**
➢ यक्ष को शाप देने की तिथि क्या थी? **- देवोत्थान एकादशी**
➢ चक्रे शब्द किस लकार और वचन में है बताइये? **- कृ लिट् लकार, प्रथम पु. एक.**

श्लोक - 2

तस्मिन्नद्रौ कतिचिदबलाविप्रयुक्तः स कामी
नीत्वा मासान् कनकवलयभ्रंशरिक्तप्रकोष्ठः।
आषाढस्य प्रथमदिवसे मेघमाश्लिष्टसानुं
वप्रक्रीडापरिणतगजप्रेक्षणीयं ददर्श॥2

अन्वय - तस्मिन् अद्रौ अबलाविप्रयुक्तः कनकवलयभ्रंशरिक्तप्रकोष्ठः कामी स कतिचित् मासान् नीत्वा आषाढस्य प्रथमदिवसे आश्लिष्टसानुम् वप्रकीडापरिणतगजप्रेक्षणीयम् मेघम् ददर्श।

शब्द	अर्थ
तस्मिन्	उस
अद्रौ	पर्वत पर
अबलाविप्रयुक्तः	प्रियतमा से वियुक्त
कनकवलयभ्रंशरिक्त प्रकोष्ठः	स्वर्ण कङ्कण के गिरने से शून्य कलाई वाले
कामी	कामुक
सः	उस यक्ष ने
कतिचित्	कुछ
मासान्	महीनों को
नीत्वा	बिताकर
आषाढस्य	आषाढ मास के
प्रथमदिवसे	प्रथम दिन
आश्लिष्टसानुम्	पर्वत की चोटी से सटे हुए
वप्रक्रीडापरिणतगजप्रेक्षणीयम्	टीले की मिट्टी के उड़ाखने में तिरछा दन्तप्रहार करने वाले हाथी के समान दर्शनीय
मेघम्	मेघ को
ददर्श	देखा।

अनुवाद - उस (रामगिरि) पर्वत पर प्रिया से वियुक्त स्वर्ण कङ्कण के गिरने से शून्य कलाई वाले कामुक उस यक्ष ने कुछ वर्ष बिताकर आषाढ़ के प्रथम दिन पर्वत की चोटी से सटे हुए वप्रक्रीड़ा करने में तिरछा दन्त प्रहार करने वाले हाथी के सदृश दर्शनीय मेघ को देखा।

समास

➢ **अबलाविप्रयुक्तः -** अबलया विप्रयुक्तः - तृतीया तत्पुरुष अथवा अविद्यमानं बलं यस्याः सा अबला **- बहुव्रीहि समास**
➢ कनकवलयभ्रंशरिक्तप्रकोष्ठः - कनकस्य वलयस्य भ्रंशेन रिक्तः प्रकोष्ठः यस्य सः **बहुव्रीहि समास**
➢ **कामी -** कामः अस्य अस्ति इति कामी
➢ **प्रथम दिवसे -** प्रथमेदिवसे प्रथमदिवसे - **कर्मधारय**
➢ **आश्लिष्टसानुम् -** आश्लिष्टं सानु येन तम् - **(बहुव्रीहि समास)**
➢ **वप्रक्रीडापरिणतगजप्रेक्षणीयम् -** वप्रक्रीडासु परिणतः तत्पुरुष स चासौ गजः **(कर्मधारय तत्पुरुष)**
➢ तमिव प्रेक्षणीयम् **(उपमित तत्पुरुष)** अथवा वप्रक्रीडापरिणत गज इव प्रेक्षणीयः तम् - **(कर्मधारयसमास)**

प्रत्यय

➢ **विप्रयुक्तः** - वि + प्र + युज् + क्त (वि+प्र+युज् +क्त)
➢ **कामी** - कम् + घञ् = कामः अथवा कामः अस्य अस्तीति काम + इनि = कामिन् (कामी)
➢ **कतिचित्** - कति + चित्
➢ **नीत्वा** - नी + क्त्वा
➢ **आश्लिष्टः** - आङ् + श्लिष् + क्त
➢ **आधान** - आ + धा + ल्युट्
➢ **प्रेक्षणीयम्** - प्र + ईक्ष् + अनीयर्

धातुरूप -

➢ **ददर्श -** दृश् + लिट्। प्रथम पुरुष, एकवचन (परस्मैपद)
➢ **कतिचित् -** कति शब्द नित्य बहुवचनान्त है। इसमें चित् अव्यय का योग हुआ है।
➢ **अलङ्कार -** गजप्रेक्षणीयम् में उपमा वाचक शब्द ''इव'' लुप्त है अतः यहाँ लुप्तोपमा अलङ्कार है।

श्लोक से बनने वाले सम्भावित प्रश्न

➢ यक्ष कितने माह पर्वत पर व्यतीत कर चुका था? - **आठ माह**
➢ यक्ष ने पर्वत चोटी से किसे देखा? **- मेघ को**
➢ किस माह में यक्ष ने मेघ को सर्वप्रथम देखा? **- आषाढ माह के प्रथम दिन**
➢ यक्ष किस कारण अत्यन्त दुर्बल हो गया था? **अपनी प्रिया के विरह से**
➢ यक्ष ने अपने हाथ में क्या पहन रखा था? **स्वर्ण कङ्कण**
➢ यक्ष की कलाई किसके गिरने से सूनी हो गयी थी? **- स्वर्ण कङ्कण।**

श्लोक - 3

तस्य स्थित्वा कथमपि पुरः कौतुकाधानहेतो
रन्तर्वाष्पश्चिरमनुचरो राजराजस्य दध्यौ।
मेघालोके भवति सुखिनोऽप्यन्यथावृत्ति चेतः
कण्ठाश्लेषप्रणयिनि जने किं पुनर्दूरसंस्थे॥3॥

अन्वय - राजराजस्य अनुचरः अन्तर्वाष्पः कौतुकाधानहेतोः तस्य पुरः कथम् अपि स्थित्वा चिरं दध्यौ मेघालोके सुखिनः अपि चेतः अन्यथावृत्ति भवति कण्ठाश्लेषप्रणयिनि जने दूरसंस्थे किम् पुनः?

शब्द	अर्थ
राजराजस्य	यक्षराज कुबेर का
अनुचरः	आँखो में आँसुओं को भीतर ही भीतर रोककर
कौतुकाधानहेतोः	उत्कण्ठा उत्पन्न करने वाले
तस्य	उस मेघ के
पुरः	सामने
कथमपि	किसी प्रकार, बड़े प्रयत्न से
स्थित्वा	खड़े होकर
चिरम्	बहुत समय तक
दध्यौ	सोचा
मेघालोके	मेघ के दिखाई देने पर
सुखिनः	सुखी व्यक्ति का
अपि	भी
चेतः	चित्त
अन्यथावृत्ति	दूसरे ही प्रकार के व्यवहार वाला
भवति	हो जाता है
कण्ठाश्लेषप्रणयिनि जने	आलिङ्गन की इच्छा वाले व्यक्ति से
किम् पुनः	फिर कहना ही क्या है?
दूरसंस्थे	दूर रहने पर

अनुवाद - यक्षों के राजा कुबेर का सेवक आखों के अन्दर ही अन्दर आँसुओं को रोके हुए, उत्कण्ठा को उत्पन्न करने वाले उस मेघ के सामने किसी प्रकार ठहर कर देर तक सोचता रहा। मेघ के दर्शन होने पर सुखी व्यक्ति का भी चित्त दूसरे प्रकार की वृत्ति वाला (चञ्चल) हो जाता है, फिर कण्ठ के आलिङ्गन के इच्छुकजन प्रिया के दूर स्थित होने पर तो कहना ही क्या।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

समास -

- **राजराजस्य -** राज्ञां राजा राजराजः - **(षष्ठी तत्पुरुष)**
- **अन्तर्वाष्पः -** अन्तः स्तम्भितं वाष्पं **(मध्यमपद लोपी)** यस्य सः **(बहुव्रीहि)**
- **कौतुकाधानहेतोः -** कौतुकस्य आधानं तस्य हेतोः **(षष्ठी तत्पुरुष)**
- **मेघालोके -** मेघस्य आलोकः, तस्मिन् **(षष्ठी तत्पुरुष)**
- **अन्यथावृत्ति -** अन्यथा वृत्तिः यस्य सः **(बहुव्रीहि)**
- **कण्ठाश्लेषप्रणयिनि -** कण्ठस्य आश्लेषः तस्य प्रणयी, तस्मिन् **(षष्ठी तत्पुरुष)**

प्रत्यय

- **अनुचर** - अनु + चर् + अच्
- **कौतुक** - कुतुक + अण्
- **आधानम्** - आङ् + धा + ल्युट्
- **स्थित्वा** - स्था + क्त्वा
- **पुरः, चिरम्** - अव्यय पद हैं दोनों
- **सुखिनः** - सुख + इनि
- **आश्लेष** - आङ् + श्लिष् + घञ् (भावे)
- **प्रणयी** - प्रणय + इनि
- **संस्था -** सम् + स्था + आङ्

धातुरूप

- **दध्यौ -** ध्यै + लिट् प्रथम पुरुष, एकवचन
- **अलङ्कार -** इस श्लोक में उत्तरार्द्ध से पूर्वार्द्ध स्थित चिन्तारूप पदार्थ का समर्थन होने से अर्थान्तरन्यास अलङ्कार और उत्तरार्द्ध में 'किं पुनर्दूरसंस्थे' में अर्थापत्ति अलङ्कार है। इस प्रकार अर्थान्तरन्यास और अर्थापत्ति के निरपेक्ष से स्थित होने के कारण **संसृष्टि अलङ्कार** है।

सम्भावितप्रश्न

- राजराजस्य शब्द किसके लिए आया है? - **कुबेर के लिए**
- 'जने' शब्द यहाँ किसके लिए आया है? - **(प्रिया) यक्षणी के लिए**
- अपने आँसुओं को कौन अन्दर ही अन्दर रोके रहता है?- **यक्ष**
- 'दध्यौ' शब्द का धातु, लकार और वचन बताइये? **ध्यै + लिट् लकार** , प्रथमपुरुष, एकवचन
- मेघ को देखकर चित्त कैसा हो जाता है? - **चञ्चल**
- 'कि पुनर्दूरसंस्थे' में कौन सा अलङ्कार है? - **अर्थापत्ति**
- मेघालोके में कौन सा समास है? - **षष्ठी तत्पुरुष**

श्लोक - 4

प्रत्यासन्ने नभसि दयिताजीवितालम्बनार्थी
जीमूतेन स्वकुशलमयीं हारयिष्यन् प्रवृत्तिम्।
स प्रत्यग्रैः कुटजकुसुमैः कल्पितार्घाय तस्मै
प्रीतः प्रीतिप्रमुखवचनं स्वागतं व्याजहार॥4

अन्वय - नभसि प्रत्यासन्ने दयिताजीवितालम्बनार्थी सः जीमूतेन स्वकुशलमयीं प्रवृत्तिं हारयिष्यन् प्रत्यग्रैः कुटजकुसुमैः कल्पिताघाय तस्मै प्रीत प्रीतिप्रमुखवचनम् स्वागतम् व्याजहार।

शब्द	अर्थ
नभसि	श्रावण मास के
प्रत्यासन्ने	सन्निकट आने पर
दयिताजीवितालम्बनार्थी	प्रिया के जीवन धारण के इच्छुक
सः	उस यक्ष ने
जीमूतेन	मेघ द्वारा

स्वकुशलमयीम्	अपने कुशल से पूर्ण
हारयिष्यन्	भेजने की इच्छा से
प्रत्यग्रैः	तत्काल तोड़े गये (ताजे)
कुटजकुसमैः	कुटज (पर्वतीय चमेली) के पुष्पों से
कल्पितार्घाय	अर्घ्य सामग्री तैयार करके
प्रीतः	प्रेमपूर्वक
प्रीतिप्रमुखवचनम्	प्रणय भरे शब्दों से
स्वागतम् व्याजहार	स्वागत कहा

अनुवाद - श्रावण मास के निकट आने पर प्रिया के जीवन को सहारा देने के इच्छुक उस (यक्ष) ने मेघ द्वारा अपने कुशलमय समाचार को भेजने की इच्छा से तत्काल तोड़े गये ताजे कुटज के पुष्पों से अर्घ्य सामग्री तैयार करके उस मेघ के लिए प्रसन्नतापूर्वक प्रणय भरे वचनों से स्वागत कहा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

समास -

- **दयिताजीवितालम्बनार्थी -** दयितायाः जीवितम् - **(षष्ठी तत्पुरुष)** दयिताजीवितम् तस्य आलम्बनम् - दयिताजीवितालम्बनार्थी - **(षष्ठी तत्पुरुष समास)**
- **जीमूतेन -** जीवनस्य उदकस्य मूतः पटबन्धः जीमूतः तेन **(तृतीया तत्पुरुषसमास)**
- **स्वकुशलमयीं -** स्वस्य कुशलम् **(षष्ठी तत्पुरुष)**
- **प्रत्यग्रैः -** अग्रं प्रति गतः प्रत्यग्रः तैः **(बहुव्रीहि)**
- **कल्पितार्घाय -** कल्पितोऽर्घो यस्मै तस्मै **(बहुव्रीहिसमास)**
- **प्रीतिप्रमुखवचनम् -** प्रीतिः प्रमुखं येषां येषु वा तानि **(बहुव्रीहि समास)** तानि वचनानि यस्मिन् कर्मणि तत् **(बहुव्रीहिसमास)**
- **स्वागतम्** - सुशोभनम् आगतं तत् **(नित्यकर्मधारय)**

प्रत्यय -

- **प्रत्यासन्ने -** प्रति + आ + सद् + क्त
- **दयिताजीवितालम्बनार्थी -** जीव + क्त , आङ् + लबि + ल्युट् दयिताजीवितालम्बन + णिनि (इन्)
- **स्वकुशलमयीम् -** स्वकुशल + मयट् +ङीप्
- **हारयिष्यन् -** हृ + णिच् = हारि + इट् + स्य + शतृ
- **प्रीतः -** प्रीञ् + क्त
- **प्रीति -** प्रीञ् + क्तिन्
- **स्वागतम् -** सु + आ + गम् + क्त
- **व्याजहार -** वि + आङ् + हृञ् + लिट्
- **प्रवृत्तिम् -** प्र + वृत् + क्तिन्

कारक

- **कुटजकुसुमैः -** अर्घ्य क्रिया के अत्यन्त उपकारक होने से 'साधकतमं करणम्' इससे करण संज्ञा होकर कर्तृकरणयोस्तृतीया सूत्र से तृतीया विभक्ति हुई।
- **नभसि -** नभस् (नपुंसकलिङ्ग, सप्तमी एकवचन)
- **अलङ्कार -** इस श्लोक में प्री, प्र, व , त की असकृत् होने से **वृत्त्यनुप्रास** शब्दालङ्कार है।

सम्भावितप्रश्न

- यक्ष ने किससे अर्घ्य सामग्री तैयार की? - **कुटज के पुष्पों से**
- जीमूतेन शब्द किसके लिए आया है? - **मेघ के लिए**
- स्वागतम् शब्द में प्रकृति प्रत्यय बताइये? **सु + आ + गम् + क्त**
- 'प्रीतिप्रमुखवचनम्' शब्द में कौन सा समास है? **बहुव्रीहि**
- 'नभसि' शब्द से किस महीने का बोध होता है? - **श्रावण माह का**
- नभसि शब्द का लिङ्ग और वचन बताइये? **नभस् शब्द - सप्तमी एकवचनम्**

श्लोक - 5

धूमज्योतिः सलिलमरुतां सन्निपातः क्व मेघः
संदेशार्थाः क्व पटुकरणैः प्राणिभिः प्रापणीयाः।
इत्यौत्सुक्यादपरिणयन्गुह्यकस्तं ययाचे
कामार्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु॥5

अन्वय - धूमज्योतिः सलिलमरुतां सन्निपातः मेघः क्व? पटुकरणैः प्राणिभिः प्रापणीयाः संदेशार्थाः क्व? इति औत्सुक्यात् अपरिगणयन् गुह्यकः तं ययाचे, हि कामार्ताः चेतनाचेतनेषु प्रकृतिकृपणाः।

शब्द	अर्थ
धूमज्योतिः सलिलमरुताम्	धुआँ, अग्नि, जल व वायु का
सन्निपातः	(संघटन) मिश्रण
मेघः	बादल
क्व	कहाँ?
पटुकरणैः	समर्थ इन्द्रियों वाले
प्राणिभिः	प्राणियों के द्वारा
प्रापणीयाः	पहुचाने योग्य
सन्देशार्थाः	संदेशवाक्य
इति	इस बाद को
औत्सुक्यात्	उत्कण्ठा के कारण
अपरिगणयन्	विचार न करते हुए
गुह्यकः	यक्ष ने
तम्	उस मेघ से
ययाचे	याचना की
हि	क्योंकि
कामार्ताः	काम से पीड़ित प्राणी
चेतनाचेतनेषु	जड़ और चेतन पदार्थों के विषय में
प्रकृतिकृपणाः	स्वभाव से दीन, विवेकशून्य

अनुवाद - धूम, अग्नि, जल और वायु का मिश्रण मेघ कहाँ? और समर्थ इन्द्रियों वाले प्राणियों द्वारा भेजे जाने योग्य सन्देश रूपी वस्तु कहाँ? इसका उत्कण्ठा के कारण विचार नहीं किया, क्योंकि काम पीड़ित चेतन और जड़ के विषय में स्वभाव से दीन होते हैं।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

समास -

- **धूमज्योतिःसलिलमरुतां -** धूमश्च ज्योतिश्च सलिलं च मरुच्च धूमज्योतिः सलिलमरुतः **(इतरेतर द्वन्द्वसमास)**
- **पटुकरणैः -** पटूनि करणानि येषां तैः **(बहुव्रीहि)**
- **संदेशार्थाः -** संदेशाः ते एव अर्थाः **(कर्मधारय)**
- **औत्सुक्यात् -** उत्सुकस्य भावः औत्सुक्यं तस्मात् कारणात् **(बहुव्रीहि)**
- **अपरिगणयन् -** न परिगणयन् इति अपरिगणयन् **(नञ् तत्पुरुष समास)**
- **कामार्ता -** कामेन आर्ता **(तृतीया तत्पुरुष)**
- **चेतनाचेतनेषु -** चेतनाश्च अचेतनाश्च तेषु **(द्वन्द्व समास)**
- **प्रकृतिकृपणाः -** प्रकृत्या कृपणाः **(तृतीया तत्पुरुष समास)**

प्रत्यय -

- **सन्निपातः** - सम्+नि+पत्+घञ्
- **पटुकरणैः** - पटु+डुकृञ्+ल्युट्
- **सन्देशः** - सम्+दिश्+घञ्
- **प्राणिभिः** - प्राण+इनि
- **प्रापणीयाः** - प्र+आप्+णिच्+अनीयर्
- **औत्सुक्यात्** - उत्सुक+ष्यञ्
- **अपरिगणयन्** - नञ्+परि+गण्+शतृ
- **गुह्यकः** - गुह्+ण्वुल्

धातुरूप-

- **ययाचे -** याच् + लिट् प्रथम पुरुष, एकवचन
- **अलङ्कार -** यहाँ मेघ तो अचेतन है किन्तु सन्देश पूर्ण इन्द्रिय से सम्पन्न व्यक्ति ही ले जाने योग्य होता है। इस प्रकार दो विपरीत पदार्थों का कथन होने के कारण **विषमालङ्कार** हुआ।

  इस श्लोक के चतुर्थ चरण के सामान्य से तृतीय चरण के विशेष कथन का समर्थन किया गया है, इसलिए अर्थान्तरन्यास अलङ्कार है।

सम्भावित प्रश्न

- मेघ कितने तत्त्वों के मिश्रण से बना है? **4 (चार तत्त्वों से)**
- मेघ के निर्माण में प्रयुक्त होने वाले तत्त्वों के नाम लिखिए? **धूआँ, अग्नि, जल, वायु**
- जड़ और चेतन के विषय में स्वभाव से कौन दीन होता है? **कामपीड़ित**
- सन्निपात शब्द का क्या अर्थ है? - **मिश्रण (संघटन)**
- 'ययाचे' शब्द का लकार और वचन लिखिए? **याच्** लिट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन
- 'गुह्यकः' शब्द किसके लिए आया है? **यक्ष के लिए**
- पटुकरणैः शब्द में कौन समास है? **पटूनि करणानि येषां तैः** (बहुव्रीहि)

श्लोक- 6

जातं वंशे भुवनविदिते पुष्करावर्तकानां
जानामि त्वां प्रकृतिपुरुषं कामरूपं मघोनः।
तेनार्थित्वं त्वयि विधिवशाद् दूरबन्धुर्गतोऽहं
याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा॥6

अन्वय - त्वाम् भुवनविदिते पुष्करावर्तकानां वंशे जातं मघोनः कामरूपं प्रकृतिपुरुषं जानामि। तेन विधिवशात् दूरबन्धुः अहं त्वयि अर्थित्वं गतः। अधिगुणे याच्ञा मोघा वरं अधमे लब्धकामा न।

शब्द	अर्थ
त्वाम्	तुमको
भुवनविदिते	लोकप्रसिद्ध
पुष्करावर्तकानाम्	पुष्कर और आवर्तक नाम के
वंशे	कुल में
जातम्	उत्पन्न हुए
कामरूपम्	अपनी इच्छानुसार शरीर को धारण करने वाले
मघोनः	इन्द्र का
प्रकृतिपुरुषम्	प्रधान पुरुष के रूप में
जानामि	जानता हूँ
तेन	इस कारण से
विधिवशात्	भाग्यवश
दूरबन्धुः	अपनी प्रियतमा से वियुक्त
अहम्	मैं
त्वयि	तुमसे
अर्थित्वं गतः	अधिक गुण वाले व्यक्ति से
याच्ञा	याचना
मोघा	निष्फल
अपि	भी
वरम्	अच्छी
अधमे	नीच व्यक्ति के विषय में
लब्धकामाऽपि	सफल होती हुई
न वरम्	अच्छी नहीं

अनुवाद - (हे मेघ मैं) तुमको संसार में प्रसिद्ध पुष्कर और आवर्तक मेघों के वंशो में उत्पन्न इन्द्र का इच्छानुसार रूप धारण करने वाला प्रधान पुरुष जानता हूँ। इसलिए दैवयोग से दूर स्थित बन्धु वाला मैं तुम्हारे विषय में याचकत्व को प्राप्त हुआ हूँ। अधिक गुण वाले से की गयी याचना निष्फल होने पर भी अच्छी है, परन्तु (निर्गुण) नीच से की गयी याचना सफल कामना वाली भी अच्छी नहीं।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

समास -

- **भुवनविदिते -** भुवनेषु विदिते (सप्तमी तत्पुरुष समास)
- **पुष्करावर्तकानाम् -** पुष्कराश्च आवर्तकाश्च, तेषाम् (द्वन्द्व समास)
- **कामरूपम् -** कामं रूपं कामेन रूपं वा यस्य तम् (बहुव्रीहि)
- **प्रकृतिपुरुषम् -** प्रकृतिश्चासौ पुरुषश्च (कर्मधारय)

- **दूरबन्धुः -** दूरे बन्धुः यस्य सः (बहुव्रीहि)
- **विधिवशात् -** विधेः वशः, तस्मात् (बहुव्रीहिसमास)
- **लब्धकामा -** लब्धः कामः यया सा (बहुव्रीहि समास)

प्रत्यय -

- **विदिते -** विद् + क्त
- **जातम् -** जन् + क्त
- **बन्धुः -** बन्ध् + उ
- **अर्थित्वम् -** अर्थ + णिनि - अर्थिन् + त्व
- **गतः -** गम् + क्त
- **याच्ञा -** याच् + नङ् (श्चुत्व) + टाप् (अ)
- **मोघा -** मुह् + घञ् (अ)

धातुरूप-

- **जानामि -** ज्ञा + लट् लकार उत्तमपुरुष, एकवचन
- **अलङ्कार -** ''याच्ञा मोघा लब्धकामा'' यहाँ सामान्य अर्थ से विशेष अर्थ का समर्थन होने के कारण **अर्थान्तरन्यास** अलंकार है।

सम्भावित प्रश्न

- इच्छानुसार रूप धारण करने वाला कौन है? **मेघ**
- यक्ष मेघ को किसका प्रधान सेवक मानता है? **इन्द्र का**
- यक्ष मेघ को किस कुल में उत्पन्न हुआ बताता है? **पुष्कर और आवर्तक कुल में**
- अधिक गुण वाले से की गयी निष्फल कामना भी किस प्रकार की है? - **श्रेष्ठ (या अच्छी)**
- 'दूरबन्धुः' शब्द किसके लिए आया है? - **यक्ष के लिए**
- भुवनविदिते में कौन सा समास है? - **भुवनेषु विदिते (सप्तमी तत्पुरुष)**
- इस श्लोक में कौन सा अलङ्कार है? - **अर्थान्तरन्यास**

श्लोक - 7

सन्तप्तानां त्वमसि शरणं तत्पयोद प्रियायाः
संदेशं मे हर धनपतिक्रोधविश्लेषितस्य।
गन्तव्या ते वसतिरलका नाम यक्षेश्वराणां
बाह्योद्यानस्थितहरशिरश्चन्द्रिका धौतहर्म्या॥7

अन्वय - पयोद! त्वं सन्तप्तानां शरणम् असि तत् धनपति क्रोधविश्लेषितस्य मे सन्देशं प्रियायाः हर, ते बाह्योद्यानस्थित-हरशिरश्चन्द्रिका धौतहर्म्या अलका नाम यक्षेश्वराणां वसतिः गन्तव्या।

शब्द	अर्थ
पयोद	हे मेघ
त्वम्	तुम
सन्तप्तानाम्	ताप से तपे हुओं का
शरणम्	रक्षक
धनपतिक्रोध-	कुबेर के क्रोध से-
विश्लेषितस्य	(प्रिया से) वियुक्त किये गये
सन्देशम्	संदेश को
प्रियायाः हर	प्रिया के पास ले जाओ

बाह्योद्यानस्थितहर-
शिरश्चन्द्रिकाधौतहर्म्या जिसके महल, बाहर के उद्यान में रहने वाले भगवान् शिव के मस्तक पर स्थित चन्द्रिका से धुले रहते हैं यक्षेश्वराणाम् श्रेष्ठ यक्षों की या कुबेर की वसतिः निवासस्थान (नगरी)गन्तव्या जाने योग्य है!

अनुवाद - (हे) मेघ! तुम (विरह) पीड़ितों के रक्षक हो, इसलिए कुबेर के क्रोध से वियुक्त हुए मेरे सन्देश को प्रिया के पास ले जाओ। तुम्हे बाहर के उद्यान में विद्यमान शिव के सिर पर स्थित चाँदनी से उज्ज्वल महलों से युक्त अलका नाम वाली यक्षों के स्वामी कुबेर की नगरी जाना है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

समास -

- **धनपतिक्रोधविश्लेषितस्य -** धनस्य पतिः (षष्ठीतत्पुरुष) धनपतेः क्रोधः (षष्ठी तत्पुरुष) तेन विश्लेषितस्य (तृतीया तत्पुरुष)
- **बाह्योद्यानस्थितहरशिरश्चन्द्रिकाधौतहर्म्या -** बाह्ये उद्याने स्थितस्य हरस्य शिरसि (बहुव्रीहि) अथवा चन्द्रिका तया धौतानि हर्म्याणि यस्यां सा तथोक्ता (बहुव्रीहि) बाह्यं च तत् उद्यानम् (कर्मधारय)
- **यक्षेश्वराणां -** यक्षाणां यक्षेषु वा ईश्वराः यक्षेश्वराः (षष्ठी व सप्तमी तत्पुरुष) अथवा यक्षाश्च ते ईश्वराश्च यक्षेश्वराः (कर्मधारय)

प्रत्यय

- **पयोद** - पयस् + दा + क
- **सन्तप्तानाम्** - सम् + तप् + क्त
- **विश्लेषित** - वि + श्लि + णिच् + क्त
- **प्रियायाः** - प्रीञ् + क + टाप्
- **अलका** - अल् + क्वुन् + टाप्
- **नाम** - यह प्रकाश्य सूचक अव्यय है।
- **गन्तव्या** - गम् + तव्य
- **हर** - हृञ् लोट् मध्यमपुरुष, एकवचन
- **वसति** - वस् + अति

विशेष -

- **अलका** यह कुबेर की राजधानी है।
- कैलाश पर बसी मानी जाती है।
- इसको वसुन्धरा, वसुस्थली, प्रभा भी कहते हैं।
- **अलति भूषयति इति अलका**
- **बाह्योद्यान -**
- इसका नाम **चित्ररथ** अथवा **वैभ्राज** बतलाया गया है।
- अलका में ही कुबेर का रम्य उद्यान है।
- **अलङ्कार -** हे पयोद! इस सार्थक विशेष्य से **परिकरालङ्कार** है।

सम्भावित प्रश्न

- कुबेर की नगरी कौन सी है? **अलका**
- शिव के सिर की चाँदनी से कहाँ के महल अत्यन्त उज्ज्वल हैं? - **अलका नगरी के**
- विरह पीड़ितों का रक्षक किसे कहा गया है? - **मेघ को**
- पयोद शब्द किसके लिए आया है? **मेघ के लिए**
- अलका शब्द में प्रकृति प्रत्यय बताइये? - **अलति भूषयति इति अलका - अल् + क्वुन् + टाप्**
- 'यक्षेश्वराणां' में कौन समास है? यक्षाणां यक्षेषु वा ईश्वराः यक्षेश्वराः (षष्ठी व सप्तमी तत्पुरुष)
  अथवा
  यक्षाश्च ते ईश्वराश्च यक्षेश्वराः (कर्मधारय)

श्लोक - 8

त्वामारूढं पवनपदवीमुद्गृहीतालकान्ताः
प्रेक्षिष्यन्ते पथिकवनिताः प्रत्ययादाश्वसत्यः।
कः सन्नद्धे विरहविधुरां त्वय्युपेक्षेत जायां
न स्यादन्योऽप्यहमिव जनो यः पराधीनवृत्तिः॥8

अन्वय - पवनपदवीम् आरूढं त्वां पथिकवनिताः प्रत्ययात् आश्वसत्यः उद्गृहीतालकान्ताः प्रेक्षिष्यन्ते। त्वयि सन्नद्धे विरहविधुरां जायां कः उपेक्षेत? अन्य अपि यः जनः अहम् इव पराधीनवृत्तिः न स्यात्।

शब्द	अर्थ
पवनपदवीम्	वायु मार्ग में, आकाश में
आरूढम्	चढ़े हुए
त्वाम्	तुमको
पथिकवनिता	परदेश गये हुए व्यक्तियों की स्त्रियाँ
प्रत्ययात्	(पति के शीघ्र आगमन के) विश्वास से
आश्वसत्यः	आश्वस्त होकर
उद्गृहीतालकान्ताः	अपने घुँघराले बालों के अग्रभाग को ऊपर पकड़े हुए
प्रेक्षिष्यन्ते	(उत्कण्ठा से) देखेंगी
त्वयि	तुम्हारे
सन्नद्धे	उमड़ने पर
विरह विधुराम्	विरह से व्याकुल
जायाम्	कान्ता की
उपेक्षेत	उपेक्षा करेगा
अन्य	दूसरा
अहमिव	मेरी तरह
पराधीनवृत्तिः	दूसरों के अधीन जीविका वाला
न स्यात्	न हो तो।

- **अनुवाद-** वायु मार्ग में चढ़े हुए तुमको परदेश गये हुए व्यक्तियों की स्त्रियाँ पति के शीघ्र आगमन के विश्वास से आश्वस्त होकर बालों के अग्रभाग को ऊपर पकड़े हुए उत्कण्ठा से देखेंगी। (क्योंकि) तुम्हारे उमड़ने पर विरह से व्याकुल पत्नी की कौन उपेक्षा करेगा, जो मेरे समान दूसरों के अधीन आजीविका वाला न हो।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

समास -

- **पवनपदवीम् -** पवनस्य पदवीम् (षष्ठी तत्पुरुष)
- **उद्गृहीतालकान्ताः -** अलकानाम् अन्ताः (षष्ठी तत्पुरुष) उद्गृहीतालकाऽन्ता याभिस्ताः (बहुव्रीहि)
- पथिकवनिताः - पथिकानाम् वनिताः (षष्ठी तत्पुरुष)
- विरहविधुराम् - विरहेण विधुरा (तृतीया तत्पुरुष)
- विधुरा - विगता धूः अस्या इति विधुरा (बहुव्रीहि)
- पराधीनवृत्तिः - परस्मिन् अधीना वृत्तिः यस्य सः (बहुव्रीहि)

प्रत्यय -

- पवनपदवीम् - पुनातीति पवनः पू+ल्युट्
- आरूढम् - आङ्+रुह्+क्त
- पथिकवनिता - पथिन्+ष्कन्
- प्रत्ययात् - प्रति+इ+अच्
- आश्वसत्यः - आङ्+श्वस्+शतृ (ङीप् , स्त्रीत्व की विवक्षा में)
- प्रेक्षिष्यन्ते - प्र+ईक्ष्+लृटलकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन
- सन्नद्धः - सम्+नह्+क्त
- जायां - जन्+यक्+टाप्
- विरहः - वि+रह्+अच्

धातुरूप -

- स्यात् - अस् विधिलिङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन
- उपेक्षेत - उप + ईक्ष् + विधिलिङ्, प्रथम पुरुष, एकवचन

कारक -

- प्रत्ययात् - 'विभाषा गुणेऽस्त्रियाम्' सूत्र से हेतु में पञ्चमी हुई।
- **अलङ्कार -** इस श्लोक में पकार, तकार और दकार की बार-बार आवृत्ति होने से वृत्त्युनुप्रास नामक शब्दालङ्कार है।

(2) सामान्य से विशेष का समर्थन होने के कारण अर्थान्तरन्यास अलङ्कार है।

सम्भावित प्रश्न

- पराधीनवृत्ति वाला कौन है? **यक्ष**
- पथिकवनिताः शब्द में कौन सा समास है? **पथिकानाम् वनिताः (षष्ठीतत्पुरुष)**
- 'प्रत्ययात्' शब्द में प्रकृति प्रत्यय बताइये? **प्रति+इ+अच्**
- इस श्लोक में कौन सा अलङ्कार है? **अर्थान्तरन्यास**

श्लोक -9

मन्दं मन्दं नुदति पवनश्चानुकूलो यथा त्वां
वामश्चायं नदति मधुरं चातकस्ते सगन्धः।
गर्भाधानक्षणपरिचयान्नूनमाबद्धमालाः
सेविष्यन्ते नयनसुभगं खे भवन्तं बलाकाः॥9

अन्वय - अनुकूलः पवनः त्वां मन्दं मन्दं यथा नुदति, अयं सगन्धः ते वामः चातकः मधुरं नदति। गर्भाधानक्षणपरिचयात् खे आबद्धमालाः बलाकाः नयनसुभगं भवन्तम् नूनं सेविष्यन्ते।

शब्द	अर्थ
अनुकूलः	मृदु गति से पीछे-पीछे चलने वाला
पवनः	वायु
मन्दं मन्दम्	बहुत धीरे, मन्थर गति से
यथा त्वां	तुम्हारे समान ही
नुदति	प्रेरित कर रहा है
सगन्धः	गर्व सहित
ते	तुम्हारे
वामः	बाईं ओर स्थित (वामभागस्थ)
चातकः	पपीहा पक्षी
मधुरं नदति	मधुर शब्द कर रहा है
गर्भाधानक्षणपरिचयात्	गर्भाधान के आनन्द से परिचित होने के कारण
खे	आकाश में
आबद्धमालाः	पंक्ति में बँधी हुई
बलाकाः	बगुलियाँ
नयनसुभगम्	नयनों को सुन्दर लगने वाले
भवन्तम्	तुम्हारा
नूनम्	निश्चय ही
सेविष्यन्ते	आश्रय लेगीं (सेवन करेंगी)

अनुवाद - और जैसे कि अनुकूल वायु तुम्हें धीरे धीरे प्रेरित कर रहा है तथा गर्व से भरा यह पपीहा तुम्हारे वाम भाग में स्थित होकर मधुर शब्द कर रहा है। निश्चय ही गर्भ धारण करने वाली बगुलियाँ नेत्रों को सुन्दर लगने वाले आपकी आकाश में सेवा करेंगी।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

समास -

- **गर्भाधानक्षणपरिचयात् -** गर्भस्य आधानम् (षष्ठी तत्पुरुष)
  तदेव क्षणः (कर्मधारय समास)
  तस्मिन् परिचयः (सप्तमी तत्पुरुष)
  अथवा
- गर्भाधाने क्षमः समर्थः परिचयः संगमो यस्य तम् (बहुव्रीहि समास)
- **आबद्धमालाः –** आबद्धा माला याभिः ताः (बहुव्रीहि समास)
- **नयनसुभगम् -** नयनयोः सुभगः (षष्ठी तत्पुरुष)

प्रत्यय -

- **आधान -** आ+धा+ल्युट्
- **आबद्ध -** आ+बन्ध्+क्त
- **बलाका -** बल+अक्+अच्+टाप्

धातुरूप -

- नुदति=नुद्, लट्लकार , प्रथम पुरुष, एकवचन
- नदति - णद् लट्लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन
- सेविष्यन्ते - सेव् लट्लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन
- **अलङ्कार -** इस श्लोक में मकार, नकार, दकार, तथा तकार की असकृत् आवृत्ति होने से अनुप्रास अलङ्कार है।

सम्भावित प्रश्न

- मेघ के बायें भाग में कौन स्थित है? **चातक (पपीहा)**
- 'नयनसुभगम्' में कौन सा समास है-**षष्ठीतत्पुरुष/ नयनयोः सुभगः**
- बलाका शब्द में प्रकृति प्रत्यय बताइये? **बल+अक्+अच्+टाप्**
- सेविष्यन्ते का धातु और वचन बताइये? **सेव + लट् लकार, प्रथम पुरुष बहुवचन**

श्लोक - 10

तां चावश्यं दिवसगणनातत्परामेकपत्नी
मव्यापन्नामविहतगतिर्द्रक्ष्यसि भ्रातृजायाम्।
आशाबन्धः कुसुमसदृशं प्रायशो ह्यङ्गनानाम्
सद्यःपाति प्रणयि हृदयं विप्रयोगे रुणद्धि॥10

अन्वय - अविहतगतिः दिवसगणनातत्पराम् एकपत्नीं तां भ्रातृजायां च अव्यापन्नाम् अवश्यं द्रक्ष्यसि, हि आशाबन्धः अङ्गनानां कुसुमसदृशं विप्रयोगे सद्यः पाति प्रणयि हृदयं प्रायशः रुणद्धि।

शब्द	अर्थ
अविहतगतिः	बेरोक टोक गति वाला
दिवसगणनातत्पराम्	दिनों की गणना में लगी हुई
एकपत्नीम्	पतिव्रता
भ्रातृजायां	भाभी को
अव्यापन्नाम्	जीवित (आने की आशा से)
अवश्यं	निश्चित हि
द्रक्ष्यसि	देखोगे
आशाबन्धः	आशा का बन्धन
अङ्गनानाम्	महिलाओं का
कुसुमसदृशं	फूल के समान कोमल
विप्रयोगे	वियोग में
सद्यःपाति	शीघ्र नष्ट हो जाने वाला
प्रणयि हृदयं	प्रेमी हृदय को
प्रायशः	प्रायः
रुणद्धि	रोके रखता है।

अनुवाद - (हे मेघ) अबाध गति वाले तुम दिन गिनने में लगी हुई उस पतिव्रता भाभी को अवश्य ही जीवित देखोगे। (क्योंकि) आशा का बन्धन फूल के समान शीघ्र कुम्हलाने वाले स्त्रियों के प्रेमी हृदय को वियोग में प्रायः थामे रहता है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

समास-

- दिवसगणनातत्पराम् - दिवसानां गणना (षष्ठी तत्पुरुष) तस्यां तत्परा ताम् (षष्ठी तत्पुरुष)
- अव्यापन्नाम् - न व्यापन्ना (नञ् तत्पुरुष समास)
- एकपत्नीम् - एकः पतिः यस्याः सा एकपत्नी (बहुव्रीहि) एका चाऽसौ पत्नी ताम् एकपत्नी (कर्मधारय)
- भ्रातृजायां - भ्रातुः जाया भ्रातृजाया (षष्ठी तत्पुरुष)

- अविहतगतिः - अविहता गतिः यस्य सः (बहुव्रीहि) अथवा न विहता गतिः यस्य सः (बहुव्रीहि)
- आशाबन्धः - आशा एव बन्धः (कर्मधारय समास) आशायाः बन्धः (षष्ठी तत्पुरुष)
- कुसुमसदृशम् - कुसुमेन सदृशम् (तृतीया तत्पुरुष)
- सद्यःपाति - सद्यः पततीति तच्छीलं (उपपद तत्पुरुष)

प्रत्यय

- गणना - गण+णिच्+युच्+टाप्
- गतिः - गम्+क्तिन्
- विहतः - वि+हन्+क्त
- बन्धः - बन्ध+घञ्
- प्रायशः - प्राय+शस्
- अङ्गना - अङ्ग+नङ्+टाप्
- सद्यःपाति - सद्यस्+पत्+णिनि
- विप्रयोगे - वि+प्र+युज्+घञ्

धातुरूप -

- द्रक्ष्यसि - दृश्+लृट्लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन
- रुणद्धि - रुध् लट्लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन
- **अलङ्कार -** इस श्लोक की तृतीय पंक्ति में प्रयुक्त आशाबन्ध में रूपक अलङ्कार है।
- कुसुमेन तुल्यम् इति कुसुमसदृशम् इस पद में लुप्तोपमा अलङ्कार है।
- उत्तरार्द्ध में सामान्य से विशेष का समर्थन होने के कारण अर्थान्तरन्यास अलङ्कार भी है।

सम्भावित प्रश्न -

- भ्रातृजाया शब्द किसके लिए आया है? **मेघ की पत्नी लिए**
- अविहतगति वाला कौन है? मेघ
- गणना शब्द में प्रकृति प्रत्यय बताइये? गण् + णिच् + युच् + टाप्

मेघदूतम् में वर्णित मेघमार्ग

रामगिरि-मालदेश-आम्रकूट-विन्ध्य-नर्मदा-दशार्ण-विदिशा-वेत्रवती-नीचै-उज्जयिनी-निर्विन्ध्या-अवन्ति-सिन्धु-शिप्रा-गन्धवती-गम्भीरा-देवगिरि-चर्मण्वती-दशपुर-कुरुक्षेत्र-सरस्वती-कनखल-हिमालय-गंगा-क्रौञ्च-कैलास-मानसरोवर-अलकापुरी।

मेघदूतम् में वर्णित नदियाँ क्रमानुसार-

रेखा-वेत्रवती-निर्विन्ध्या-सिन्धु-शिप्रा-गन्धवती-गम्भीरा-चर्मण्वती-सरस्वती-(गंगा)जाह्नवी-यमुना-मानसरोवर।

मेघदूतम् में वर्णित पर्वत क्रमानुसार-

रामगिरि-आम्रकूट-विन्ध्य-नीचगिरि-देवगिरि-हिमालय-क्रौञ्चपर्वत-कैलास।

मेघदूतम् में वर्णित नगर क्रमानुसार-

मालदेश-दशार्ण-विदिशा-उज्जयिनी-विशाला-अवन्ति-दशपुर-ब्रह्मावर्त-कुरुक्षेत्र-कनखल-अलका।

नीतिशतकम्

महाकवि भर्तृहरि का परिचय

- विक्रमसंवत् के प्रवर्तक विक्रमादित्य के बड़े भाई।
- **पत्नी** – पिङ्गला
- **गुरु** – (i) गोरखनाथ (ii) वसुरात (बौद्धमत में)
- **भाई (अनुज)** – विक्रमादित्य
- **पिता** – गन्धर्वसेन (मालवदेश के राजा)
- ईत्सिंग के कथन के आधार पर **भर्तृहरि को बौद्ध** कहा जाता है।
- भर्तृहरि **वेदान्तोक्त ब्रह्म के उपासक** थे।
- **भर्तृहरि का समय** – (i) 57 ई. पू. अथवा (ii) 575 से 650 ई.
- **भर्तृहरि की शैली/रीति एवं गुण** – वैदर्भीरीति, प्रसाद और माधुर्यगुण
- **मुक्तक काव्य के प्रथमकवि** – भर्तृहरि
- **भर्तृहरि के प्रिय छन्द** – शार्दूलविक्रीडित, शिखरिणी
- मृत्यु 650 ई. (चीनी यात्री ईत्सिंग के अनुसार)
- **रचनायें– (i) वाक्यपदीयम्** (व्याकरणग्रन्थ), (ii) **नीतिशतकम्** (मुक्तककाव्य) 111 श्लोक, (iii) **शृङ्गारशतकम्** (मुक्तककाव्य) 103 श्लोक, (iv) **वैराग्यशतकम्** (मुक्तककाव्य) 111 श्लोक

नीतिशतकम् का परिचय

- **लेखक** – भर्तृहरि
- **विधा** – मुक्तककाव्य
- **कुलश्लोक** – 111
- **कुलपद्धतियाँ** – 10 (मङ्गलाचरण सहित 11पद्धतियाँ)

1. अज्ञपद्धति (मूर्खनिन्दापद्धति) **2.** विद्वत्पद्धति
3. मानशौर्यपद्धति **4.** अर्थपद्धति
5. दुर्जनपद्धति **6.** सुजनपद्धति
7. परोपकारपद्धति **8.** धैर्यपद्धति
9. दैवपद्धति **10.** कर्मपद्धति

- मुक्तक का लक्षण–"**पूर्वापरनिरपेक्षेणापि हि येन रसचर्वणा क्रियते तदेव मुक्तकम्।**"
  इसप्रकार अर्थप्रकाशन के लिए एक दूसरे की अपेक्षा न रखने वाले स्वतन्त्र पद्य (श्लोक) मुक्तक कहे जाते हैं।
- नीतिशतक में वर्ण्य विषय को ग्यारह पद्धतियों में समाहित किया गया है।
- भर्तृहरि ने नीतिशतक में ब्रह्म की स्तुति के पश्चात् 'मूर्ख-निन्दा' से ग्रन्थ का आरम्भ किया है।
- नीतिशतक में भर्तृहरि की शैली प्रसादगुण से युक्त और मुहावरेदार है।
- नीतिशतक के मङ्गलाचरण में अनन्त, ज्ञानमय स्वानुभवमात्र से जानने योग्य, ज्योतिस्वरूप **ब्रह्म को नमस्कार** किया गया है।
- नीतिशतक का **मङ्गलाचरण नमस्कारात्मक** है।
- मङ्गलाचरण **(दिक्कालाद्यनवच्छिन्नानन्तचिन्मात्रमूर्तये)** में **अनुष्टुप्** छन्द प्रयुक्त है।

- विद्वानों के ईर्ष्याग्रस्त होने तथा राजाओं के राजमद से चूर होने के कारण और शेष लोगों के अज्ञानता के कारण भर्तृहरि का ज्ञान उनके शरीर में ही जीर्ण हो गया।
- अज्ञानी को प्रसन्न किया जा सकता है, विद्वान् को आसानी से प्रसन्न किया जा सकता है, परन्तु अल्पज्ञानी को ब्रह्मा भी प्रसन्न नहीं कर सकते।
- घड़ियाल के मुख से मणि निकाली जा सकती है, समुद्र पार किया जा सकता है, सर्प को पुष्प सदृश सिर पे धारण किया जा सकता है परन्तु दुराग्रही मूर्ख को नहीं समझाया जा सकता।
- बालू से तेल, मृगतृष्णा से जल, खरगोश के सिर पर सींग प्राप्त हो सकती है, परन्तु दुराग्रही मूर्ख को प्रसन्न नहीं किया जा सकता।
- विधाता ने मूर्खों के लिए एकमात्र 'मौन' को ही आभूषण बनाया है।
- पंडितों के सम्पर्क में आने पर अल्पज्ञ का दुराभिमान दूर हो जाता है।
- मनुष्य की घृणास्पद हड्डी को चबाता हुआ कुत्ता सामने खड़े देवराज से हड्डी छीने जाने का संदेह करता है।
- गङ्गा स्वर्ग से शिव के मस्तक को, शिव के सिर से हिमालय को, हिमालय से पृथ्वी को और पृथ्वी से समुद्र को प्राप्त हुई। इस प्रकार विवेकभ्रष्ट व्यक्ति का पतन सैकड़ों प्रकार से होता है।
- अग्नि जल से, सूर्यताप छाते से, हाथी अंकुश से, बैल व गधे दण्ड से नियन्त्रित किये जा सकते हैं। मूर्खता की कोई औषधि (उपाय) नहीं है।
- साहित्य, सङ्गीत एवं कला से विहीन व्यक्ति साक्षात् पशु के समान है।
- विद्या, तप, दान, ज्ञान, शील, गुण और धर्म से विहीन व्यक्ति पृथ्वी के भार स्वरूप हैं और मनुष्य रूप में पशु हैं।
- मूर्खों के साथ इन्द्र के भवन में रहने की अपेक्षा वनचरों के साथ वन में रहना श्रेष्ठ है।
- सत्कवियों के अवमानना से राजा की मूर्खता प्रकट होती है।
- विद्यारूपी धन वाले विद्वान् की तुलना कभी राजा के साथ नहीं हो सकती।
- ब्रह्मा हंस के कमलवन में निवास के सुख को नष्ट कर सकता है, परन्तु उसके नीर-क्षीर विवेक को नष्ट नहीं कर सकता।
- 'वाणी' (विद्या) रूपी आभूषण कभी नष्ट नहीं होता और यही सर्वश्रेष्ठ आभूषण है।
- विद्या ही परदेश गमन पर सर्वश्रेष्ठ धन सिद्ध होती है। यह गुरुओं की भी 'गुरु' है।
- राजागण विद्या की पूजा करते हैं धन की नहीं।
- क्षमा के होने पर कवच की, क्रोध के रहते शत्रु की, बन्धुजनों के रहते अग्नि की, अच्छे मित्र के रहते औषधि की, विद्या के रहते धन की, लज्जा के रहते आभूषण की तथा कवित्व रहने पर राज्य की कोई आवश्यकता नहीं होती।
- बुद्धि की जड़ता को सत्संगति हरती है।
- सत्सङ्गति कीर्ति को सभी दिशाओं में फैलाती है।
- सत्सङ्गति मनुष्य का सब प्रकार से हित करती है।
- तेजहीन होने पर भी आत्मसम्मानी सिंह सूखी घास नहीं खाता।
- कुत्ता अपने स्वामी के सामने भोजन के लिए दीनता प्रकट करता है परन्तु गजराज सैकड़ों अनुनय पर खाता है।
- उसका जन्म धन्य है जिसके जन्म से वंश का अभ्युदय हो।
- आयु निश्चय ही तेजस्विता का हेतु नहीं है।
- 'धन' के समक्ष सभी गुण तिनके के समान हो जाते हैं।
- धनवान् ही सभी गुणों वाला माना जाता है क्योंकि सभी गुण धन में ही शोभा पाते हैं।
- धन की तीन गतियाँ मानी गयी हैं – (i) दान (ii) भोग, और (iii) नाश। जो न दान देता है ओर न ही उपभोग करता है उसके धन का नाश होता है।
- वेश्या की भाँति 'राजनीति' नाना रूपों वाली है।
- राजा को पृथ्वी रूपी गाय को दुहने के लिए प्रजारूपी बछड़े का पालन करना चाहिए। तभी पृथ्वी कल्पतरु की भाँति फलती है।
- दुर्जन व्यक्ति 'विद्या' से युक्त होने पर भी भयंकर होता है।
- 'अपकीर्ति' के रहते मृत्यु की आवश्यकता नहीं होती।
- सेवा धर्म परम कठिन है और यह योगियों के लिए भी दुर्बोध है।
- सज्जनों की मैत्री दिन के उत्तरार्द्ध की तरह और दुर्जनों की पूर्वार्द्ध की तरह होती है।
- शिकारी मृग का, मछुआरा मछली का, दुर्जन सत्पुरुषों के अकारण शत्रु होते हैं।
- विपत्ति में धैर्य, समृद्धि में क्षमा, युद्ध में पराक्रम, सभा में वाक्पटुता तथा कीर्ति और वेदशास्त्र में रुचि आदि गुण महापुरुषों में स्वाभाविक होते हैं।
- सज्जनों के लिए तलवार की धार पर चलने जैसे कठिन सेवा व्रत स्वाभाविक होते हैं।
- अच्छे आचरण वाला पुत्र, पति का हित चाहने वाली पत्नी, विपत्ति तथा सुख में समान व्यवहार करने वाला मित्र पुण्यवानों को प्राप्त होते हैं।
- सच्चा मित्र दूसरे मित्र को पाप कर्म से दूर करता है, हितकारी कार्यों में लगाता है तथा छिपाने योग्य बातों को छिपाता है।
- मनुष्य की तीन कोटियाँ हैं – नीच, मध्यम तथा उत्तम।
- नीच विघ्न के भय से कार्य आरम्भ नहीं करते, मध्यम आरम्भ करते हैं परन्तु विघ्न आने पर छोड़ देते हैं परन्तु उत्तम व्यक्ति विघ्नों के आने पर भी कार्य को पूरा करते हैं।
- मनस्वी कार्यार्थी सुख-दुःख की परवाह नहीं करते।
- 'धैर्यवान् पुरुष' न्यायोचित मार्ग से एक कदम भी विचलित नहीं होते।
- धैर्यशाली पुरुष इस सम्पूर्ण त्रिलोक को जीत लेता है।
- सभी आभूषणों का कारण शील (सदाचार) है और यही सर्वोत्कृष्ट आभूषण है।
- भाग्य ही एकमात्र आश्रय है, पौरुष को धिक्कार है।
- 'भाग्य' ही सबसे बलवान है।
- अत्यंत शीघ्रता में किये गये कार्यों का परिणाम मृत्युपर्यन्त शूल की भाँति हृदय को जलाने वाला होता है।

➢ पहले की गई तपस्या से संचित भाग्य ही निश्चित ही यथोचित समय पर फल देते हैं। रूप, कुल, शील, विद्या, सेवा आदि नहीं।

नीतिशतकम् की महत्त्वपूर्ण सूक्तियाँ

1. विभूषणं मौनमपण्डितानाम् (1.7)
2. विवेकभ्रष्टानां भवति विनिपातः शतमुखः। (1.10)
3. मूर्खस्य नास्त्यौषधम् (1.11)
4. साहित्यसङ्गीतकलाविहीनः साक्षात् पशुः पुच्छविषाणहीनः (1.12)
5. वाग्भूषणं भूषणम् (1.19)
6. विद्याविहीनः पशुः (1.20)
7. सत्सङ्गतिः कथय किं न करोति पुंसाम् (1.22)
8. प्रारब्धमुत्तमजना न परित्यजन्ति (1.27)
9. न खलु वयस्तेजसो हेतुः (1.38)
10. सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ते (1.41)
11. वाराङ्गनेव नृपनीतिरनेकरूपा – (वसन्ततिलका) (38)
12. सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः (1.58)
13. स्वभाव एवैष परोपकारिणाम् (1.71)
14. न निश्चितार्थाद् विरमन्ति धीराः (1.81)
15. मनस्वी कार्यार्थी न गणयति दुःखं न च सुखम् (शिखरिणी) (1.82)
16. शीलं परं भूषणम् (1.83)
17. न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः (वसन्ततिलका) (1.84)
18. विधिरहो बलवानिति मे मतिः (1.92)
19. ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रह्मापि नरं न रञ्जयति (1.3)
20. न तु प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्तमाराधयेत् (4)
21. यदा किञ्चित् किञ्चित् बुधजनसकाशादवगतं तदा मूर्खोऽस्मीति ज्वर इव मदो मे व्यपगतः। (8)
22. न हि गणयति क्षुद्रो जन्तुः परिग्रहफल्गुताम् (9)
23. धिक् तां च तं च मदनं च इमां च मां च।
24. सर्वः कृच्छ्रगतोऽपि वाञ्छति जनः सत्त्वानुरूपं फलम्। (22)
25. तत्तेजस्वी पुरुषः परकृतनिकृतिं कथं सहते (29)
26. नानाफलं फलति कल्पलतेव भूमिः। (वसन्ततिलका) (37)
27. यं यं पश्यसि तस्य तस्य पुरतो मा ब्रूहि दीनं वचः। (शार्दूलविक्रीडित)
28. मणिना भूषितः सर्पः किमसौ न भयङ्करः (अनुष्टुप्) (42)
29. छायेव मैत्री खलसज्जनानाम् (उपजाति) (41)
30. सतां केनोद्दिष्टं विषममसिधाराव्रतमिदम् (शिखरिणी) (57)
31. विभाति कायः करुणापराणां परोपकारेण न तु चन्दनेन। (उपजाति)
32. ये निघ्नन्ति निरर्थकं परहितं ते के न जानीमहे (शार्दूलविक्रीडित)
33. निजहृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः। (मालिनी) (70)
34. प्रायो गच्छति यत्र भाग्यरहितस्तत्रैव यान्त्यापदः। (शार्दूलविक्रीडित) 84)
35. यत्पूर्वं विधिना ललाटलिखितं तन्मार्जितुं कः क्षमः। (शार्दूलविक्रीडित)
36. भाग्यानि पूर्वतपसा खलु सञ्चितानि, काले फलन्ति पुरुषस्य यथैव वृक्षाः। (वसन्ततिलका) (97)
37. आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः। (अनुष्टुप्)

नीतिशतकम्

मङ्गलाचरण

दिक्कालाद्यनवच्छिन्नानन्तचिन्मात्रमूर्तये।
स्वानुभूत्येकमानाय नमः शान्ताय तेजसे॥1॥

अन्वय - दिक्कालाद्यनवच्छिन्नानन्तचिन्मात्रमूर्तये, स्वानुभूत्येकमानाय शान्ताय तेजसे नमः।

शब्द	अर्थ
दिक्	प्राच्यादि दिशायें
काल	भूत, वर्तमान व भविष्य काल
आदि	इत्यादि
अनवच्छिन्न	मापा नहीं जा सकता ऐसे
अनन्त	अन्तरहित
चिन्मात्रमूर्तये	चैतन्यरूप विग्रह वाले
स्वानुभूत्येकमानाय	अपने अनुभव मात्र से ज्ञात होने वाले को
शान्ताय	कल्याणकारक को
तेजसे	ज्योति स्वरूप वाले को
नमः	नमस्कार

अनुवाद - दिशा और काल आदि द्वारा अपरिमेय, अनन्त तथा ज्ञानमय स्वरूप वाले, केवल निजी अनुभव द्वारा जानने योग्य, एवं ज्योतिः स्वरूप ब्रह्म को नमस्कार है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

सन्धि-
➢ दिक्कालादि - दिक्काल + आदि (दीर्घ सन्धि)
➢ अनवच्छिन्नानन्त - अनवच्छिन्न + अनन्त (दीर्घ सन्धि)
➢ दिक्कालाद्यनवच्छिन्नानन्त - दिक्कालादि + अनवच्छिन्नानन्त (यण् सन्धि)
➢ चिन्मात्र - चित् + मात्र (अनुनासिकसन्धि)
➢ स्वानुभूतिः - स्व + अनुभूतिः (दीर्घसन्धि)
➢ अनुभूत्येकमानाय - अनुभूति + एकमानाय (यण्सन्धि)

समास -
➢ **दिक्कालाद्यनवच्छिन्न -** दिशश्च कालाश्च इति दिक्कालाः (द्वन्द्व समास)
➢ दिक्कालौ आदी येषां ते, दिक्कालादयः (बहुव्रीहिः)
➢ दिक्कालादिभिः अनवच्छिन्नं, दिक्कालाद्यनवच्छिन्नम् (तृतीया तत्पुरुष)
➢ स्वानुभूत्येकमानाय - स्वस्य अनुभूतिः, (षष्ठी तत्पुरुष) स्वानुभूतिः एव एकं मानं यस्य तत् (बहुव्रीहि समास)

प्रत्यय -
➢ मूर्तिः - मूर्च्छ + क्तिन्
➢ अनुभूतिः - अनु + भू + क्तिन्
➢ मानाय - मान् + ल्युट्
➢ शान्ताय - शम् + क्त
➢ चिन्मात्रम् - चिद् + मात्रच्
➢ अलङ्कार - इस श्लोक में स्वभावोक्ति अलङ्कार है।

कारक -

➢ तेजसे नमः - 'नमः स्वस्तिस्वाहास्वधालंवषड्योगाच्च' सूत्र से चतुर्थी हुई।

➢ छन्द - इसमें अनुष्टुप् छन्द है।

छन्द का लक्षण -

श्लोके षष्ठं गुरुज्ञेयं सर्वत्र लघु पञ्चमम्।
द्विचतुः पादयोर्ह्रस्वं सप्तमं दीर्घमन्ययोः॥

अनुष्टुप् के प्रत्येक चरण में 8 अक्षर होते हैं। इसमें षष्ठ अक्षर सदा गुरु होता है और पञ्चम अक्षर सदा लघु। द्वितीय और चतुर्थ चरण में सप्तम अक्षर लघु होता है और प्रथम तथा तृतीय चरण में गुरु होता है। अन्य अक्षर लघु या गुरु हो सकते हैं।

सम्भावित प्रश्न -

➢ इस श्लोक में किस प्रकार का मंगलाचरण है? - **नमस्कारात्मक**

➢ मंगलाचरण में किस देवता की स्तुति की गयी है? - **(ज्योतिः स्वरूप) ब्रह्म की**

➢ इस श्लोक में कौन-सा छन्द है? - **अनुष्टुप्**

➢ 'चिन्मात्रम्' शब्द में किस प्रत्यय का प्रयोग हुआ है? - **मात्रच् प्रत्यय**

➢ 'स्वानुभूत्येकमानाय' में समास बताइये?
(एकं मानम् एकमानम्) **कर्मधारय** अथवा
(स्वानुभूतिः एकमानम् मुख्यप्रमाणं यस्य तत्) **बहुव्रीहि समास**

श्लोक -2

बोद्धारो मत्सरग्रस्ताः प्रभवः स्मयदूषिताः।
अबोधोपहताश्चान्ये जीर्णमङ्गे सुभाषितम्॥2

अन्वय - बोद्धारः मत्सरग्रस्ताः, प्रभवः स्मयदूषिताः।अन्ये च अबोधोपहताः, सुभाषितम् अङ्गे जीर्णम्।

शब्द	अर्थ
बोद्धारः	समझने वाले, शिक्षित लोग
मत्सरग्रस्ताः	ईर्ष्या से जकड़े हुए (द्वेष से भरे)
प्रभवः	स्वामी या समर्थ लोग
स्यमयदूषिताः	गर्व से विकृत (घमण्ड से चूर)
अन्ये	दूसरे लोग
च	और
अबोधोपहताः	अज्ञान से नष्ट
सुभाषितम्	सुन्दर वचन
अङ्गे	कहने वाले के मुख में ही
जीर्णम्	जीर्ण हो रहा है

अनुवाद - विशेषज्ञ पण्डितगण द्वेष से ग्रस्त हैं और नृपवर्ग गर्व से चूर हैं। दूसरे लोग तो अज्ञान के मारे हुए हैं। अतः बेचारा सुभाषित मेरे शरीर के भीतर ही बूढ़ा हो गया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

सन्धि -

➢ अबोधोपहताः - अबोध + उपहताः (गुणसन्धि)
चान्ये - च + अन्ये (दीर्घ सन्धि)

समास -

➢ मत्सरग्रस्ताः - मत्सरेण ग्रस्ता (तृतीया तत्पुरुष)

➢ स्मयदूषिताः - स्मयेन दूषिताः (तृतीया तत्पुरुष)

➢ अबोधः - न बोधः अबोधः (नञ् तत्पुरुष)

➢ अबोधोपहताः - अबोधेन उपहताः (तृतीया तत्पुरुष)

प्रत्यय -

➢ बोद्धारः - बुध + तृच्
➢ ग्रस्ताः - ग्रस् + क्त
➢ दूषिताः - दूष् + णिच् + क्त
➢ उपहताः - उप + हन् + क्त
➢ जीर्णः - जृ + क्त
➢ सुभाषितम् - सु + भाष् + क्त

छन्द - इस श्लोक में अनुष्टुप् छन्द है।

सम्भावित प्रश्न -

➢ पण्डित जन या विद्वान् लोग किससे ग्रस्त हैं? - **द्वेष से**

➢ राजा लोग (नृपवर्ग) किससे ग्रसित हैं?- **अहङ्कार (गर्व से)**

➢ 'मत्सरग्रस्ताः' में कौन-सा समास है? मत्सरेण ग्रस्ताः (तृतीया तत्पुरुष समास)

➢ 'बोद्धारः' शब्द में प्रकृति प्रत्यय बताइये?- **बुध+तृच्**

➢ 'प्रभवः' शब्द का क्या अर्थ है? - **स्वामी या समर्थ लोग**

➢ 'अबोधोपहताश्चान्ये' इसमें 'अन्ये' शब्द किसके लिए आया है?
- **सामान्य जनों के लिए (जो अज्ञानी है)**

➢ 'सुभाषितम्' शब्द में प्रकृति प्रत्यय बताइये? **सु+भाष्+क्त**

➢ 'उपहता' शब्द में कौन-सी धातु है? **उप+हन्+क्त**

➢ 'अबोधः' शब्द में कौन-सा समास है?
(न बोधः अबोधः) **नञ् तत्पुरुषसमास**

श्लोक - 3

अज्ञः सुखमाराध्यः सुखतरमाराध्यते विशेषज्ञः।
ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रह्मापि नरं न रञ्जयति॥3

अन्वय - अज्ञः सुखम् आराध्यः विशेषज्ञः सुखतरम् आराध्यते ज्ञानलवदुर्विदग्धं नरं ब्रह्मा अपि न रञ्जयति।

शब्द	अर्थ
अज्ञः	न जानने वाला व्यक्ति (मूर्ख)
सुखम्	आसानी से
आराध्यः	प्रसन्न या सन्तुष्ट करने योग्य
विशेषज्ञः	विशेष रूप से जानने वाला
सुखतरम्	और अधिक आसानी से
आराध्यते	सन्तुष्ट किया जा सकता है
ब्रह्मा अपि	ब्रह्मा भी
ज्ञानलवदुर्विदग्धम्	अल्पज्ञान से गर्वित
नरम्	मनुष्य को
न रञ्जयति	प्रसन्न नहीं कर सकता

अनुवाद - अज्ञानी मनुष्य आसानी से प्रसन्न किया जा सकता है, विशेषज्ञ तो और भी आसानी से प्रसन्न किया जा सकता है। लेकिन रञ्च ज्ञान के कारण गर्वित मूढजन को ब्रह्मा भी प्रसन्न नहीं कर सकते।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

सन्धि

- ब्रह्मापि - ब्रह्मा+अपि (दीर्घसन्धि)

समास

- अज्ञः - न ज्ञः अज्ञः (नञ् तत्पुरुष)
- विशेषज्ञः - विशेषं जानातीति (उपपद तत्पुरुष)
- ज्ञानलवदुर्विदग्धं - ज्ञानस्य लवः (षष्ठी तत्पुरुष)
- ज्ञानलवेन दुर्विदग्धं (तृतीया तत्पुरुष)

प्रत्यय -

- अज्ञः - ज्ञा+क
- आराध्यः - आ+राध्+ण्यत्
- विशेषज्ञः - विशेष+ज्ञा+क
- दग्धः - दह्+क्त
- ब्रह्मा - बृंह्+मन्
- नरम् - नृ+अच्
- सुखतरम् - सुख+तरप्
- रञ्जयति - रञ्ज्+णिच्+लट् प्रथम पुरुष, एक.

अलङ्कार - इस श्लोक में रंजन का सम्बन्ध होने पर भी असम्बन्ध बताया गया है, इसलिए अतिशयोक्ति अलङ्कार है।

छन्द - इसमें **आर्या** छन्द का प्रयोग किया गया है।

लक्षण -

यस्याः पादे प्रथमे द्वादशमात्रास्तथा तृतीयेऽपि।
अष्टादश द्वितीये चतुर्थके पञ्चदश साऽऽर्या॥

जिसके प्रथम तथा तृतीय चरण में बारह-बारह मात्रायें हों द्वितीय चरण में अट्ठारह तथा चतुर्थ चरण में पन्द्रह मात्रायें हों, वह आर्या छन्द है।

सम्भावित प्रश्न -

- किसे आसानी से प्रसन्न किया जा सकता है? - **अज्ञानी को**
- अत्यन्त शीघ्र किसे प्रसन्न किया जा सकता है? - **पण्डित को (विशेषज्ञ को)**
- किस प्रकार के मनुष्यों को ब्रह्मा भी नहीं प्रसन्न कर सकते ? - **अल्प ज्ञान के कारण गर्वित मनुष्यों को**
- थोड़े से ज्ञान से अहंकारी जनों को कौन नहीं प्रसन्न कर सकता है? - **ब्रह्मा भी**
- 'ब्रह्मापि' में कौन सन्धि है? - (ब्रह्मा+अपि) **दीर्घ सन्धि**
- 'विशेषज्ञः' में कौन समास है? - (विशेषं जानातीति) **उपपद तत्पुरुष समास**
- 'आराध्यः' मे प्रकृति प्रत्यय बताइये? **आ+राध्+ण्यत्**
- इस श्लोक में कौन-सा छन्द है?- **आर्या**

श्लोक - 4

प्रसह्य मणिमुद्धरेन्मकरवक्त्रदंष्ट्रान्तरा
त्समुद्रमपि संतरेत्प्रचलदूर्मिमालाकुलम्।
भुजङ्गमपि कोपितं शिरसि पुष्पवद्धारये
न्न तु प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्तमाराधयेत्॥4

अन्वय - मकरवक्त्रदंष्ट्रान्तरात् प्रसह्य मणिम् उद्धरेत् प्रचलदूर्मिमालाकुलम् समुद्रम् अपि संतरेत्।कोपितम् भुजङ्गमपि शिरसि पुष्पवत् धारयेत् तु प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्तम् न आराधयेत्।

शब्द	अर्थ
मकरवक्त्रदंष्ट्रान्तरात्	मगर के मुख में स्थित दाढ़ो के बीच से
मणिम्	रत्न को
प्रसह्य	बलपूर्वक
उद्धरेत्	निकाल ले
प्रचलत् ऊर्मिमालाकुलम्	चञ्चल लहरों द्वारा विक्षुब्ध
समुद्रम् अपि	समुद्र को भी
सन्तरेत्	पार कर ले
कोपितम्	क्रुद्ध
भुजङ्गम् अपि	सर्प को भी
पुष्पवत्	फूल की तरह
शिरसि	शिर पर
धारयेत्	धारण कर ले
प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्तम्	हठी मूर्ख व्यक्ति के मन को
न आराधयेत्	सन्तुष्ट करने की चेष्टा न करें।

अनुवाद - कोई चाहे तो मगर के मुँह में हाथ डालकर उसके दाँतो के बीच से मणि को जबर्दस्ती खींचकर निकाल सकता है, लहराती तरंगो से उमड़ते समुद्र को हाथों से तैर कर पार कर सकता है, अपने सिर पर क्रोध से जलते हुए साँप को पुष्पमाला की तरह धारण कर सकता है, परन्तु जिद्दी मूर्ख के मन को कोई प्रसन्न नहीं कर सकता।

व्याकरणात्मक टिप्पणी -

सन्धि -

ऊर्मिमालाऽऽकुलम् - ऊर्मिमाला+आकुलम् (दीर्घसन्धि)
पुष्पवद्धारयेत् - पुष्पवत्+धारयेत् (जश्त्वसन्धि)

समास -

मकरवक्त्रम् - मकरस्य वक्त्रम् (षष्ठी तत्पुरुष) मकरवक्त्रदंष्ट्रानाम् अन्तरं मकरवक्त्रदंष्ट्रान्तरं (षष्ठी तत्पु0) प्रचलदूर्मिमालाकुलम् - प्रचलन्त्यः ताः ऊर्मयः च प्रचलदूर्मयः (कर्मधारय), प्रचलदूर्मीनां मालाः प्रचलदूर्मिमालाः (षष्ठीतत्पुरुष) ताभिः मालाभिः आकुलम् (तृतीया तत्पुरुष)

प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्तम् - प्रतिनिविष्टः च असौ मूर्खजनः प्रतिनिविष्टमूर्खजनः (कर्मधारय), प्रतिनिविष्टमूर्खजनस्य चित्तम् (षष्ठी तत्पुरुष)

प्रत्यय -

वक्त्र - वच्+त्र
दंष्ट्रा - दंश्+ष्ट्रन्+टाप्
प्रसह्य - प्र+सह् ल्यप्
भुजङ्ग - भुज+गम्+खच्
कोपितम् - कुप्+क्त
पुष्पवत् - पुष्प+वतुप्
प्रतिनिविष्ट - प्रति+नि+विश्+क्त

आराधयेत् - आ + राध् + तिप् (विधिलिङ् प्रथम पु., एक.)

अलङ्कार - इस श्लोक में मणि निकालने आदि का असम्बन्ध होने पर भी सम्बन्ध दिखाया गया है, अतः अतिशयोक्ति अलङ्कार है।

छन्द - इसमें पृथ्वी छन्द का प्रयोग किया गया है।

लक्षण - ''जसौ जसयलावसुग्रहयतिश्च पृथ्वी गुरुः।'' इसके प्रत्येक चरण में 17 अक्षर होते हैं।

प्रत्येक चरण में जगण, सगण, जगण, सगण, यगण, एक लघुवर्ण तथा एक गुरु वर्ण हो उसे पृथ्वी कहते हैं।

सम्भावित प्रश्न -

- किसके मन को प्रसन्न नहीं किया जा सकता? - **मूर्खों के मन को**
- इस श्लोक में कौन-सा अलङ्कार है? - **अतिशयोक्ति**
- प्रतिनिविष्ट में प्रकृति प्रत्यय बताइये? - **प्रति+नि+विश्+क्त**
- इस श्लोक में कौन-सा छन्द है? - **पृथ्वी**
- भुजङ्ग शब्द में कौन-सा प्रत्यय है? - **खच् प्रत्यय**
- पुष्प के समान किसे सिर पर धारण किया जा सकता है? **क्रुद्ध साँप को**
- आराधयेत् में कौन-सा लकार है? **विधिलिङ्**

श्लोक - 5

लभेत सिकतासु तैलमपि यत्नतः पीडयन्
पिबेच्च मृगतृष्णिकासु सलिलं पिपासार्दितः।
कदाचिदपि पर्यटञ्छशविषाणमासादयेत्
न तु प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्तमाराधयेत्॥5

अन्वय - यत्नतः पीडयन् सिकतासु अपि तैलम् लभेत पिपासार्दितः मृगतृष्णिकासु सलिलम् पिबेत् पर्यटन् कदाचित् शशविषाणम् अपि आसादयेत् प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्तम् तु न आराधयेत्।

शब्द	अर्थ
यत्नतः	प्रयत्न या उपाय से
पीडयन्	दबाता हुआ
सिकतासु अपि	बालू के कणों में भी
तैलम्	तेल को
लभेत	पा लें
पिपासार्दितः	प्यास से सताया हुआ
मृगतृष्णिकासु	मृगमरीचिकाओं में
सलिलम्	पानी को
पिबेत्	पी लें
पर्यटन्	घूमता हुआ
कदाचित्	कभी भी
शशविषाणम्	खरगोश के सींग को
आसादयेत्	पा लें
प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्तम्-दुराग्रही	मूर्ख के चित्त को

न आराधयेत् सन्तुष्ट करने की चेष्टा न करें।

अनुवाद - मनुष्य परिश्रम करके बालू से भी तेल निकाल सकता है। प्यास से पीड़ित होकर मृगमरीचिका में भी पानी पी सकता है, कभी इधर-उधर घूमते हुए खरगोश के सींग को भी प्राप्त कर सकता है, किन्तु दुराग्रही मूर्खों के मन को प्रसन्न करने के लिए कभी भी यत्न नहीं करना चाहिए क्योंकि वे कभी भी प्रसन्न नहीं हो सकते।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

सन्धि -

पिबेच्च - पिबेत्+च (व्यञ्जन सन्धि)
पिपासार्दितः - पिपासा+अर्दितः (दीर्घसन्धि)
पर्यटञ्छशविषाणम् - पर्यटन्+शशविषाणम् (व्यञ्जन)

समास

मृगतृष्णिकासु - मृगाणां तृष्णा मृगतृष्णा (षष्ठी तत्पुरुष)
शशविषाणम् - शशस्य विषाणम् **(षष्ठी तत्पुरुष)**
पिपासार्दितः - पिपासया अर्दितः **(तृतीया तत्पुरुष)**

प्रत्यय -

यत्नतः	- यत्न	+ तसिल्	
पीडयन्	- पीड्	+ णिच्	+ शतृ
तैलम्	- तिल	+ अण्	
पिपासा	- पा	+ सन्	+ अ + टाप्
अर्दितः	- अर्द्	+ क्त	
पर्यटन्	- परि	+ अट्	+ शतृ

छन्द- इस श्लोक में पृथ्वी छन्द का प्रयोग किया गया है।

अलङ्कार- इस श्लोक में अतिशयोक्ति अलङ्कार है।

सम्भावित प्रश्न-

- मृगतृष्णिकासु शब्द में समास बताइये ?
  मृगाणां तृष्णा मृगतृष्णा (षष्ठी तत्पुरुष)
  मृगाणां तृष्णा अस्याम् **(बहुव्रीहि समास)**
- किसके मन को प्रसन्न करना असम्भव है? **मूर्खों के मन को**
- इस श्लोक में कौन-सा छन्द है? **पृथ्वी**
- इस श्लोक में कौन-सा अलङ्कार है? - **अतिशयोक्ति**
- अर्दितः शब्द में कौन-सा प्रत्यय है? - **अर्द्+क्त (प्रत्यय)**

श्लोक - 6

व्यालं बालमृणालतन्तुभिरसौ रोद्धुं समुज्जृम्भते
भेत्तुं वज्रमणिं शिरीषकुसुमप्रान्तेन सन्नह्यते।
माधुर्यं मधुबिन्दुना रचयितुं क्षाराम्बुधेरीहते
मूर्खान्यः प्रतिनेतुमिच्छति बलात्सूक्तैः सुधास्यन्दिभिः॥6

अन्वय - यः मूर्खान् बलात् सुधास्यन्दिभिः सूक्तैः प्रतिनेतुम् इच्छति असौ बालमृणालतन्तुभिः व्यालं रोद्धुं सन्नह्यते मधुबिन्दुना क्षाराम्बुधेः माधुर्यं रचयितुम् ईहते।

शब्द	अर्थ
यः	जो
बलात्	बलपूर्वक (हठपूर्वक)
सुधास्यन्दिभिः	अमृत टपकाने वाले
सूक्तैः	सुन्दर वचनों से
प्रतिनेतुम्	बहलाने या मनोरञ्जन करने के लिए
बालमृणालतन्तुभिः	कोमल कमलनाल के सूत्रों से
व्यालम्	मतवाला हाथी

रोद्धुम्	रोकने या बाँधने के लिए
समुज्जृम्भते	अभ्यास करता है
शिरीषकुसुमप्रान्तेन	कोमल शिरीष फूल के छोर से
वज्रमणिम्	हीरे को
भेत्तुम्	काटने का
सन्नह्यते	प्रयास करता है
मधुबिन्दुना	मधु की बूँद से
क्षाराम्बुधेः	खारे समुद्र के
माधुर्यम्	मिठास को
रचयितुम्	बनाना
ईहते	चाहता है

अनुवाद - जो अपनी अमृतवर्षिणी सूक्तियों द्वारा मूर्खों को बलात् प्रसन्न करना चाहता है, वह कोमल कमल नाल के तन्तु से मदमत्त हाथी को बाँधना चाहता है, शिरीष पुष्प के किनारे से वज्रमणि हीरे को काटना चाहता है और खारे समुद्र को दो-एक बूँद मधु डालकर मीठा बनाने की चेष्टा करता है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

सन्धि -

तन्तुभिरसौ - तन्तुभिः+असौ (विसर्ग सन्धि)

क्षाराम्बुधेरीहते- क्षार+अम्बुधेः (दीर्घ सन्धि) + ईहते (विसर्ग सन्धि)

समास -

सुधास्यन्दिभिः - सुधां स्यन्दन्ते तच्छीलानि सुधास्यन्दीनि तैः (तृतीया तत्पुरुष)

सूक्तैः - शोभनानि उक्तानि इति सूक्तानि (प्रादि तत्पुरुषसमास)

बालमृणालतन्तुभिः - बालं च तत् मृणालम् (कर्मधारय) तस्य तन्तवः तैः (षष्ठी तत्पुरुष)

शिरीषकुसुमप्रान्तेन - शिरीषकुसुमस्य प्रान्तः शिरीषकुसुमप्रान्तः तेन (तृतीया तत्पुरुष) शिरीषस्य कुसुमम् (षष्ठी तत्पुरुष) शिरीषं चेदं कुसुमम् (कर्मधारय समास)

मधुबिन्दुना - मधुनः बिन्दुः (षष्ठी तत्पुरुष)

क्षाराम्बुधेः - क्षारः चासौ अम्बुधिः (कर्मधारय)

प्रत्यय

सुधास्यन्दिभिः	- सुधा+स्यन्द्+णिनि+भिस्
प्रतिनेतुम्	- प्रति+नी+तुमुन्
रोद्धुम्	- रुध्+तुमुन्
रचयितुम्	- रच्+तुमुन्
माधुर्य	- मधुर+ष्यञ्

कारक -

बलात् - हेतौ से पञ्चमी

छन्द - शार्दूलविक्रीडित

अलङ्कार - मालानिदर्शन

लक्षण - 'सूर्याश्वैर्मसजस्तताः सगुरवः शार्दूलविक्रीडितम्'

इसके प्रत्येक चरण में 19 अक्षर होते हैं। तथा प्रत्येक चरण में क्रमशः मगण, सगण, जगण, सगण, तगण, तगण तथा एक गुरु वर्ण आयें उसे शार्दूलविक्रीडित कहते हैं। (12 तथा 7 अक्षरों पर यति)

- 'प्रतिनेतुम्' शब्द में प्रकृति प्रत्यय बताइये? - **प्रति+नी+तुमुन्**
- 'व्यालम्' शब्द का क्या अर्थ है? - **मतवाला हाथी**
- 'वज्रमणिम्' शब्द में समास बताइये? - **वज्रः मणिः (कर्मधारय समास)**
- इस श्लोक में कौन-सा छन्द है? - **शार्दूलविक्रीडित**

श्लोक - 7

स्वायत्तमेकान्तहितं विधात्रा विनिर्मितं छादनमज्ञतायाः।
विशेषतः सर्वविदां समाजे विभूषणं मौनमपण्डितानाम्॥7

अन्वय- विधात्रा अपण्डितानां स्वायत्तम् एकान्तहितं मौनम् अज्ञतायाः छादनं विनिर्मितम्। सर्वविदां समाजे विशेषतः विभूषणं भवति।

शब्द	अर्थ
विधात्रा	ब्रह्मा ने
अपण्डितानाम्	मूर्खों का
स्वायत्तम्	अपने अधीन
एकान्तहितम्	अत्यन्त हितकारी
मौनम्	मौन को
अज्ञतायाः	मूर्खता का
छादनम्	आवरण
विनिर्मितम्	बनाया है
सर्वविदाम्	सब कुछ जानने वाले
समाजे	समाज में
विशेषतः	अधिक करके
विभूषणम्	आभूषण

अनुवाद - विधाता ने मूर्खों के अपने हाथ में रहने वाले और अत्यन्त हितकारी मौन को मूर्खता को छिपाने का आवरण बनाया है, जो विद्वानों की सभा में विशेष रूप से आभूषण हो जाता है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

समास -

अपण्डितानाम् - नः पण्डिताः अपण्डिताः (नञ् तत्पुरुष समास)

स्वायत्तम् - स्वस्य आयत्तम् (षष्ठी तत्पुरुष)

एकान्तहितम् - एकः एव अन्तो यस्य (बहुव्रीहिसमास), एकान्तं हितम् इति एकान्तहितम् (सुप्सुपासमास)

सर्वविदाम् - सर्वं विदन्तीति सर्वविदः (नित्यसमास)

प्रत्यय -

विधात्रा	- वि	+ धा	+ तृच्
छादनम्	- छद्	+ णि	+ ल्युट्
विनिर्मितम्	- वि	+ निर्	+ मा + क्त
विभूषणम्	- वि	+ भूष्	+ ल्युट्
सर्वविदाम्	- सर्व	+ विद्	+ क्विप्
विशेषः	- वि	+ शिष्	+ घञ्
समाजे	- सम्	+ अज्	+ घञ्
मौनम्	- मुनि	+ अण्	
हितम्	- धा	+ क्त	
विशेषतः	- विशेष	+ तसिल्	

छन्द - उपजाति छन्द है

सम्भावित प्रश्न -

- विद्वानों की सभा में मूर्खों के लिए किसे आभूषण सदृश कहा गया है? - **मौन को**
- विधाता शब्द में कौन-सा प्रत्यय है? - **वि+धा+तृच्**
- छादनम् शब्द का प्रकृति प्रत्यय बताइये? - **छद्+णिच्+ल्युट्**
- पण्डित शब्द में कौन-सा प्रत्यय है? **- इतच्**
- मूर्खों के लिए किसे आवरण के समान बताया गया है? **मौन को**
- एकान्तहितम् शब्द में कौन समास है?
  एकान्तं हितम् इति एकान्तहितम् -**सुप्सुपासमास**
- इस श्लोक में कौन-सा छन्द है? - **उपजाति**

श्लोक - 8

यदा किञ्चिज्ज्ञोऽहं गज इव मदान्धः समभवं
तदा सर्वज्ञोऽस्मीत्यभवदवलिप्तं मम मनः।
यदा किञ्चित्किञ्चिद् बुधजनसकाशादवगतं
तदा मूर्खोऽस्मीति ज्वर इव मदो मे व्यपगतः॥8

अन्वय - यदा अहम् किञ्चिज्ज्ञः गज इव मदान्धः समभवम् तदा सर्वज्ञः अस्मि इति मम मनः अवलिप्तम् यदा बुधजनसकाशात् किञ्चित् किञ्चित् अवगतम् तदा मूर्खः अस्मि इति मे मदः ज्वर इव व्यपगतः।

शब्द	अर्थ
यदा	जब
अहम्	मैं
किञ्चिज्ज्ञः	थोड़ा-सा जानने वाला
गज इव	हाथी की तरह
मदान्धः	मद से अंधा
समभवम्	हो गया था
तदा	तब
सर्वज्ञः	सब कुछ जानने वाला
अस्मि	हूँ
इति	इस प्रकार
मम	मेरा
मनः	मन
अवलिप्तम्	गर्व से युक्त
बुधजनसकाशात्	विद्वानों की संगति से
किञ्चित् किञ्चित्	थोड़ा-थोड़ा
अवगतम्	सीखा
मदः	घमण्ड
ज्वर इव	ज्वर की तरह
व्यपगतः	दूर हो गया

अनुवाद - जब मैं अल्पज्ञ होकर भी मतवाले हाथी के जैसा मदान्ध हो गया तब यह समझकर कि मैं सर्वज्ञ हूँ - सब कुछ जानता हूँ, मेरा मन आकाश पर चढ़ गया। जब मैं पण्डितों की संगति से थोड़ा-थोड़ा जानने लगा तब मैं अपने को मूर्ख समझने लगा और तब मेरा गर्व ज्वर के जैसा धीरे-धीरे हटने लगा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

सन्धि -

मदान्धः - मद+अन्धः (दीर्घसन्धि)
सर्वज्ञोऽस्मि- सर्वज्ञः+अस्मि (विसर्गसन्धि)
ज्वर इव - ज्वरः+इव (विसर्ग सन्धि)

समास -

किञ्चिज्ज्ञः - किञ्चित् जानाति इति किञ्चिज्ज्ञः (नित्यसमास)
सर्वज्ञः - सर्वं जानाति इति सर्वज्ञः (नित्यसमास)
सर्वेषां ज्ञः सर्वज्ञः (षष्ठी तत्पुरुष)
मदान्धः - मदेन अन्धः (तृतीयातत्पुरुष)
बुधजनसकाशात् - बुध एव जनः (मयूरव्यंसकादि)
तस्य सकाशम् (षष्ठी तत्पुरुष)
बुधाः च ते जनाः बुधजनाः तेषां सकाशात् (षष्ठीतत्पुरुष)

प्रत्यय -

किञ्चिज्ज्ञः - ज्ञा+क
सर्वज्ञः - सर्व+ज्ञा+क
अवलिप्तम् - अव+लिप्+क्त
अवगतम् - अव+गम्+क्त
व्यपगतः - वि+अप्+गम्+क्त

छन्द - इस श्लोक में शिखरिणी छन्द है।

लक्षण - रसै रुद्रैश्छिन्ना यमनसभला गः शिखरिणी।
इसके प्रत्येक चरण में 17 अक्षर होते हैं। 6 तथा 11 अक्षरों पर यति होती है। क्रमशः यगण, मगण, नगण, सगण, भगण, एक लघु तथा एक गुरु वर्ण होता है।

सम्भावित प्रश्न -

- 'मदान्धः' शब्द में सन्धि एवं समास बताइये?
  मद+अन्धः **(दीर्घ सन्धि)**
  मदेन अन्धः **(तृतीया तत्पुरुष)**
- 'सर्वज्ञ' शब्द में समास बताइये?
  सर्वं जानातीति सर्वज्ञः **(नित्यसमास)** अथवा
  सर्वेषां ज्ञः सर्वज्ञः **(षष्ठी तत्पुरुष)**
- व्यपगतः शब्द में प्रकृति प्रत्यय बताइये? **वि+अप्+गम्+क्त**
- इस श्लोक में कौन-सा छन्द है? **शिखरिणी**

श्लोक -9

कृमिकुलचितं लालाक्लिन्नं विगन्धि जुगुप्सितं
निरुपमरसप्रीत्या खादन्खरास्थि निरामिषम्।
सुरपतिमपि श्वा पार्श्वस्थं विलोक्य न शङ्कते
न हि गणयति क्षुद्रो जन्तुः परिग्रहफल्गुताम्॥9॥

अन्वय- श्वा कृमिकुलचितम् लालाक्लिन्नम् विगन्धि जुगुप्सितम् निरामिषम् खरास्थि निरुपमरसप्रीत्या खादन् पार्श्वस्थम् सुरपतिम् अपि विलोक्य न शङ्कते। क्षुद्रः जन्तुः परिग्रहफल्गुताम् न गणयति।

शब्द	अर्थ
श्वा	कुत्ता
कृमिकुलचितम्	कीड़ों से भरी हुई
लालाक्लिन्नम्	लार से भीगी
विगन्धि	दुर्गन्ध से युक्त
जुगुप्सितम्	निन्दित
निरामिषम्	मांसरहित
खरास्थि	गदहे की हड्डी
निरुपमरसप्रीत्या	अनुपम रस के प्रेम से
खादन्	खाता हुआ
पार्श्वस्थम्	पास में खड़े हुए को
सुरपति	इन्द्र
विलोक्य	देखकर
न शङ्कते	लज्जा नहीं करता है
क्षुद्रो जन्तुः	नीचप्राणी
परिग्रहफल्गुताम्	स्वीकृत की गयी वस्तु की तुच्छता को
न गणयति	विचार नहीं करता

अनुवाद - कुत्ता कीड़ों से भरी, लार से भीगी, दुर्गन्धमय, हेय निर्मांस, गदहे की हड्डी को बड़े चाव से चबाता हुआ अपने पास खड़े हुए इन्द्र को भी देख कर नहीं लजाता, परवाह नहीं करता। नीच, अपनाई हुई वस्तु की तुच्छता की परवाह नहीं करता - स्वगृहीत वस्तु की क्षुद्रता पर ध्यान नहीं देता।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

समास -

कृमिकुलचितम् - कृमीणां कुलानि (षष्ठी तत्पुरुष) तैः चितम् (तृतीया तत्पुरुष)

लालाक्लिन्नम् - लालया क्लिन्नम् (तृतीया तत्पुरुष)

विगन्धि - विगतः गन्धः यस्य तत् (बहुव्रीहि)

निरामिषम् - निर्गतम् आमिषं यस्मात् (बहुव्रीहि)

खरास्थि - खरस्य अस्थि (षष्ठी तत्पुरुष)

निरुपमरसप्रीत्या - निः नास्ति उपमा यस्य स निरुपमः (प्रादिबहुव्रीहि समास) निरुपमः (कर्मधारय समास) निरुपमरसे प्रीतिः (सप्तमी तत्पुरुष)

सुरपतिम् - सुराणां पतिः सुरपतिः (षष्ठी तत्पुरुष)

परिग्रहफल्गुताम् - परिग्रहस्य फल्गुता (षष्ठी तत्पुरुष)

प्रत्यय -

श्वा - श्वि+कनिन्
चितम् - चि+क्त
क्लिन्नम् - क्लिद्+क्त
जुगुप्सितम् - जु+गुप्+क्त
पार्श्वस्थम् - पार्श्व+स्था+क
विलोक्य - वि+लुकि+ल्यप्
खादन् - खाद्+शतृ
छन्द - हरिणी

लक्षण - ''नसमरसलागः षड्वेदैर्हयैर्हरिणी मता'' हरिणी के प्रत्येक चरण में नगण, सगण, मगण, रगण, सगण, लघु तथा गुरु होते हैं। छठे, दसवें तथा अन्त में विराम होता है।

अलङ्कार - इस श्लोक में अप्रस्तुतप्रशंसा एवम् अन्तिम चरण में अर्थान्तरन्यास अलङ्कार है। इनके एक साथ होने से इसमें सङ्कर अलङ्कार भी है।

सम्भावित प्रश्न -

- अपनाई गई वस्तु की तुच्छता पर कौन ध्यान नहीं देता? **नीच व्यक्ति**
- सुरपति शब्द किसके लिए आया है? - **इन्द्र के लिए**
- निरामिष शब्द का क्या अर्थ है? - **मांसरहित**
- विगन्धि शब्द में समास बताइये? विगतः गन्धः यस्य तत् **(बहुव्रीहिसमास)**
- विलोक्य में कौन-सा प्रत्यय प्रयुक्त हुआ है? **वि + लुकि + ल्यप्**
- इस श्लोक में कौन-सा छन्द है? **हरिणी**

श्लोक - 10

शिरः शार्वं स्वर्गात्पशुपतिशिरस्तः क्षितिधरम्
महीध्रादुत्तुङ्गादवनिमवनेश्चापि जलधिम्।
अधोऽधो गङ्गेयं पदमुपगता स्तोकमथवा
विवेकभ्रष्टानां भवति विनिपातः शतमुखः॥10

अन्वय - इयम् गङ्गा स्वर्गात् शार्वम् शिरः पशुपतिशिरस्तः क्षितिधरम् उत्तुंगात् महीध्रात् अवनिम् अवनेः च अपि जलधिम् अधोऽधः स्तोकम् पदम् उपगता अथवा विवेकभ्रष्टानाम् विनिपातः शतमुखः भवति।

शब्द	अर्थ
इयम्	यह
गङ्गा	गङ्गा
स्वर्गात्	स्वर्ग से
शार्वम्	शिव जी के
शिरः	शिर पर
पशुपतिशिरस्तः	शिव जी के मस्तक से
क्षितिधरम्	हिमालय पर्वत पर
उत्तुङ्गात्	ऊँचे
महीध्रात्	पर्वत से
अवनिम्	पृथ्वी को
अवनेः	पृथ्वी से
जलधिम्	समुद्र को
अधोऽधः	नीचे नीचे
स्तोकम्	तुच्छ
पदम्	पद को
उपगता	पहुँचकर
अथवा	क्योंकि
विवेकभ्रष्टानाम्	भ्रष्ट विचार वालों का
शतमुखः	सैकड़ों प्रकार से
विनिपातः	पतन
भवति	होता है

अनुवाद - गङ्गा स्वर्ग से शिव के मस्तक पर गिरीं। शिव के मस्तक से हिमालय पहाड़ पर, हिमालय से पृथ्वी पर और पृथ्वी पर से गिरकर समुद्र में जा मिलीं। इस तरह यह नीचे से नीचे गिरती गई।

(वास्तव में बात यह है कि) जिनका विवेक भ्रष्ट हो गया है उनका पतन सैकड़ों प्रकार से होता है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

सन्धि -

महीध्रादुत्तुङ्गात् - महीध्रात्+उत्तुङ्गात्+अवनिम् (व्यञ्जन सन्धि)
अवनेश्च - अवनेः+च (विसर्ग सन्धि)
चापि - च+अपि (दीर्घ सन्धि)
अधोऽधः - अधः+अधः (विसर्गसन्धि, पूर्वरूपसन्धि)
गङ्गेयम् - गङ्गा+इयम् (गुणसन्धि)

समास -

शार्वम् - शर्वस्य इदम् (षष्ठी तत्पुरुष)
पशुपतिशिरस्तः - पशूनाम् पतिः पशुपतिः (षष्ठी तत्पुरुष)
पशुपतेः शिरः पशुपतिशिरः (षष्ठी तत्पुरुष)
क्षितिधरम् - क्षितेः धरः क्षितिधरः (षष्ठी तत्पुरुष)
विवेकभ्रष्टानाम् - विवेकात् भ्रष्टाः विवेकभ्रष्टाः (पञ्चमी तत्पुरुष)
भ्रष्टः विवेकः येषां ते भ्रष्टविवेकाः वा विवेकभ्रष्टाः (बहुव्रीहि समास)
शतमुखः - शतं मुखानि यस्य सः (बहुव्रीहि समास)

प्रत्यय -

गङ्गा	- गम्+गन्+टाप्
क्षितिधरः	- धृ+अच्
जलधिः	- जल+धा+कि
उपगता	- उप+गम्+क्त
भ्रष्टः	- भ्रंश्+क्त
विवेकः	- वि+विच्+घञ्
शिरस्तः	- शिरः+तसिल्
विनिपातः	- वि+नि+पत्+घञ्
शार्वम्	- शर्व+अण्

छन्द - शिखरिणी

अलङ्कार - इस श्लोक में पर्याय और अर्थान्तरन्यास अलङ्कार है।

सम्भावितप्रश्न -

- गङ्गा सर्वप्रथम स्वर्ग से कहाँ गिरी? -**शिव के मस्तक पर**
- समुद्र में मिलने से पहले गङ्गा कहाँ गिरी थी? **पृथ्वी पर**
- गङ्गा के अवतरित होने का सही क्रम है -
  स्वर्ग - शिव के मस्तक पर - हिमालय - पृथ्वी - समुद्र
- विवेक भ्रष्ट मनुष्यों का पतन कितने प्रकार से होता है? - **सैकड़ों प्रकार से**
- 'गङ्गेयम्' शब्द में कौन-सी सन्धि है? - गङ्गा+इयम् **(गुणसन्धि)**
- 'शतमुखः' में कौन-सा समास है? - शतं मुखानि यस्य सः **(बहुव्रीहि समास)**
- इस श्लोक में कौन-सा छन्द है? - **शिखरिणी**
- 'पशुपति' शब्द किसके लिए आया है? - **शिव के लिए**

नोट- परीक्षार्थी इसी प्रकार सभी श्लोकों के नोट्स बनायें।

प्रमुख गद्यकाव्य

महाकवि बाणभट्ट का परिचय

बाणभट्ट का वंशवृक्ष

वत्स
।
कुबेर
(कर्मकाण्डी श्रुतिशास्त्र सम्पन्न ब्राह्मण)
।
पाशुपत
।
अर्थपति (इनके 11 पुत्र हुए)
।
चित्रभानु
।
बाणभट्ट
।
भूषणभट्ट (पुलिन्दभट्ट, पुलिनभट्ट)

- **निवास** – शोण (सोन) नदी के पास 'प्रीतिकूट' नामक ग्राम। (वर्तमान में शाहाबाद, आरा, बिहार।)
- **राज्याश्रय** – सम्राट् हर्ष के सभापण्डित
- **पितामह** – अर्थपति
- **पिता** – चित्रभानु
- **माता** – राजदेवी
- **गुरु -** भर्वु या भर्त्सु
- **पत्नी** – कवि मयूरभट्ट की बहन
- **पुत्र** - भूषणभट्ट (पुलिन या पुलिन्दभट्ट)
- **बहन** – मालती
- **बाण के दो भाई** – चित्रसेन और मित्रसेन
- बाण ने स्वयं हर्षचरितम् के प्रथम दो उच्छ्वासों तथा कादम्बरी की प्रस्तावना के पद्यों में अपना परिचय दिया है।
- **वंश/गोत्र** – वात्स्यायन / वत्स वंश (ब्राह्मण)
- **उपासक** – शिव (शैव)
- **बाण की रीति** – पाञ्चाली
- बाल्यावस्था में ही बाण की माता का स्वर्गवास।
- 14 वर्ष की आयु में बाण के पिता का भी स्वर्गवास।
- राजा हर्ष ने इन्हें **''महानयं भुजङ्गः''** (बहुत चरित्रभ्रष्ट) कहा।
- **हर्ष का राज्याभिषेक** अक्टूबर 606 ई. में हुआ, और उनकी मृत्यु 648 ई. में हुई।
- **ह्वेनसांग** ने 629 से 645 ई. तक भारत भ्रमण किया था और वह हर्ष के निकट सम्पर्क में भी आया था।
- **बाण का समय** – सातवीं शताब्दी ई. का पूर्वार्द्ध
- **बाणभट्ट का विवाह** महाकवि मयूर भट्ट (सूर्यशतकम्) की बहन से हुआ था।

➢ **बाण की रचनायें**– 1. कादम्बरी (कथा), 2. हर्षचरितम् (आख्यायिका), 3. चण्डीशतकम् (मुक्तक), 4.मुकुटताडितक (नाटक), 5. पार्वतीपरिणय (नाटक)

➢ हर्षवर्धन के चचेरे भाई कृष्ण के निमन्त्रण पर बाणभट्ट हर्ष के राजदरबार में पहुँचे।

➢ **उपाधियाँ/कथन**

उपाधि/कथन		वक्ता
वश्यवाणी कविचक्रवर्ती	–	हर्षवर्धन
बाणस्तु पञ्चाननः	–	श्रीचन्द्रदेव
पञ्चबाणस्तु बाणः	–	जयदेव
कविताकामिनीकौतुक	–	जयदेव
गद्यसम्राट्	–	बलदेव उपाध्याय
वाणी बाणो बभूव	–	गोवर्धनाचार्य
कवितातरुगहनविहरणमयूरः	–	वामनभट्टबाण
कविताकाननकेसरी	–	चन्द्रदेव
तुरङ्गबाण	–	आलोचक
बाणः कवीनामिह चक्रवर्ती	–	सोड्ढल
महानयं भुजङ्गः	–	हर्षवर्धन
गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति	–	आलोचक
बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्	–	समालोचक
भट्टबाणस्य भारतीम्	–	गङ्गादेवी
वाणी बाणस्य मधुरशीलस्य	–	धर्मदास

➢ **हर्ष के दरबार में दो अन्य विद्वान्**– (i) मातङ्गदिवाकर, (ii) मयूरभट्ट

महाकवि बाणभट्ट विषयक प्रशस्तियाँ

1. युक्तं कादम्बरीं श्रुत्वा कवयो मौनमाश्रिताः।
   बाणध्वनावनध्यायो भवतीति स्मृतिर्यतः।।
   सोमेश्वर – कीर्तिकौमुदी
2. रुचिरस्वरवर्णपदा रसभाववती जगन्मनो हरति।
   सा किं तरुणी? **नहि नहि वाणी बाणस्य मधुरशीलस्य।।**
   – विदग्धमुखमण्डन - धर्मदास
3. जाता शिखण्डिनी प्राक् यथा शिखण्डी तथावगच्छामि।
   प्रागल्भ्यमधिकमाप्तुं **वाणी बाणो बभूव ह**।।
   – गोवर्धनाचार्य
4. श्लेषे केचन शब्दगुम्फविषये केचिद्रसे चापरे-
   ऽलंकारे कतिचित्सदर्थविषये चान्ये कथावर्णने।
   आः सर्वत्र गभीरधीरकविताविन्ध्याटवी चातुरी-
   सञ्चारी कविकुम्भिकुम्भभिदुरो **बाणस्तु पञ्चाननः।।**
   – चन्द्रदेव
5. **बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्।** **– अज्ञात**
6. वागीश्वरं हन्त भजेऽभिनन्दमर्थेश्वरं वाक्पतिराजमीडे।
   रसेश्वरं स्तौमि च कालिदासं **बाणं तु सर्वेश्वरमानतोऽस्मि।।**
   – सोड्ढल (उदयसुन्दरी)
7. हृदि लग्नेन बाणेन यन्मन्दोऽपि पदक्रमः।
   भवेत्कविकुरङ्गाणां चापलं तत्र कारणम्।। **– त्रिलोचन**
8. शश्वद्बाणद्वितीयेन नमदाकारधारिणा।
   धनुषेव गुणाढ्येन निःशेषो रञ्जितो जनः।। **– त्रिविक्रमभट्ट।**
9. यस्याश्चौरः चिकुरनिकुरः कर्णपूरो मयूरः।
   भासो हासः कविकुलगुरुः कालिदासो विलासः।।
   हर्षो हर्षः हृदयवसतिः **पञ्चबाणस्तु बाणः।**
   केषां नैषा कथय कविताकामिनी कौतुकाय।।
   – जयदेव - प्रसन्नराघव
10. केवलोऽपि स्फुरन् बाणः करोति विमदान् कवीन्।
    किं पुनः क्लृप्तसन्धानः पुलिन्ध्रकृतसन्निधिः।।
    – धनपाल - तिलकमञ्जरी
11. वाणीपाणिपरामृष्टवीणानिक्वाणहारिणीम्।
    भावयन्ति कथं वान्ये भट्टबाणस्य भारतीम्।। **– गङ्गादेवी**
12. सुबन्धुर्बाणभट्टश्च कविराज इति त्रयः।
    वक्रोक्तिमार्गनिपुणाश्चतुर्थो विद्यते न वा।।
    – कविराज - राघवपाण्डवीय
13. दण्डिन्युपस्थिते सद्यः कवीनां कम्पितं मनः।
    प्रविष्टे त्वन्तरे बाणे कण्ठे वागेव रुध्यते।। **– हरिहर**
14. कादम्बरीसहोदर्या सुधया वै बुधे हृदि।
    हर्षाख्यायिकया ख्यातिं बाणोऽब्धिरिव लब्धवान्।।
    – धनपाल (तिलकमञ्जरी)
15. शब्दार्थयोः समो गुम्फः पाञ्चालीरीतिरुच्यते।
    शिलाभट्टारिका वाचि बाणोक्तिषु च सा यदि।।
    – भोज - सरस्वतीकण्ठाभरण
16. प्रतिकविभेदनबाणः **कवितातरुगहनविहरणमयूरः।**
    सहृदयलोकसुबन्धुर्जयति श्रीभट्टबाणकविराजः– **वामनभट्टबाण**
17. बाणस्य हर्षचरिते निशितामुदीक्ष्य।
    शक्तिं न केऽत्र कवितास्त्रमदं त्यजन्ति।। **– सोड्ढल**
18. सहर्षचरितारब्धादद्भुतकादम्बरी कथा।
    बाणस्य गण्यनार्येव स्वच्छन्दा भ्रमति क्षितौ।। **– राजशेखर**
19. परिशीलितैव सरसं कविराजैर्बहुभिरत्र वाग्देवी।
    बाणेन तु वैजात्यात्कथयति नामैव वाणीति।।
    – विश्वेश्वर पाण्डेय
20. कादम्बरीरसभरेण समस्त एव।
    मत्तो न किञ्चिदपि चेतयते जनोऽयम्।। **– भूषणभट्ट**
21. कादम्बरीरसज्ञानामाहारोऽपि न रोचते। **– अज्ञात**
22. नृत्यति यद्रसनायां वेधोन्मुखलासिका वाणी।
    – पार्वतीपरिणय
23. द्विजेन तेनाक्षतकण्ठकौण्ठ्यया महामनोमोहमलीमसान्धया।
    अलब्धवैदग्ध्यविलासमुग्धया धिया निबद्धेयमतिद्वयी कथा।।
    – कादम्बरी कथामुख
24. ''यादृग् गद्यविधौ बाणः पद्यबन्धेऽपि तादृशः'' **– भोजराज**

कादम्बरी

- **लेखक** – बाणभट्ट
- **काव्यविधा** – कथा
- **दो खण्ड** – (i) पूर्वार्द्ध (ii) उत्तरार्द्ध
- **प्रधानरस** – शृङ्गाररस
- **उपजीव्य** – गुणाढ्य की 'बृहत्कथा'
- **नायक** – चन्द्रापीड (शूद्रक)
- **नायिका** – कादम्बरी
- **सहनायक** – वैशम्पायन (पुण्डरीक)
- **सहनायिका** – महाश्वेता
- **वैशिष्ट्य** – तीन जन्मों की कथा
- **प्रमुखपात्र** – चन्द्रापीड, कादम्बरी, पुण्डरीक, महाश्वेता, शूद्रक, तारापीड, विलासवती, शुकनास, मनोरमा, वैशम्पायन, इन्द्रायुध (घोड़ा), पत्रलेखा (दासी), जाबालि, हारीत, चाण्डालकन्या, शबर, कपिञ्जल, शुक, हंस, चित्ररथ
- कादम्बरी उत्तरार्ध की रचना बाण के पुत्र **भूषणभट्ट** (भूषणबाण/पुलिन्द/पुलिनभट्ट/पुलिन्ध्र) ने की।
- **कादम्बरी की रीति** – पाञ्चाली
- **कादम्बरी में अलङ्कार** – विरोधाभास, श्लेष, परिसंख्या, अनुप्रास, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा।
- **कादम्बरी के प्रमुखवर्णन–**
  शूद्रकवर्णन, शुकवर्णन, चाण्डालकन्यावर्णन, विन्ध्याटवीवर्णन, शबरसैन्यवर्णन, शाल्मलीवृक्षवर्णन जाबाल्याश्रमवर्णन, जाबालिवर्णन, उज्जयिनीवर्णन, तारापीडवर्णन, इन्द्रायुधवर्णन, अच्छोदसरोवरवर्णन, महाश्वेतावर्णन, कादम्बरीवर्णन आदि।

कादम्बरी का मङ्गलाचरण

रजोजुषे जन्मनि सत्त्ववृत्तये
स्थितौ प्रजानां प्रलये तमःस्पृशे।
अजाय सर्गस्थितिनाशहेतवे
त्रयीमयाय त्रिगुणात्मने नमः॥ 1 ॥

भावार्थ- प्रजाओं की सृष्टि करने में रजोगुण का सेवन करने वाले, पालन करने में सत्त्वगुण को धारण करने वाले, नाश करने में तमोगुण का स्पर्श करने वाले, सृष्टि, स्थिति तथा प्रलय के कारणभूत वेदों के स्वरूप तथा तीनों गुणों (सत्त्व, रज और तम) से युक्त ब्रह्म को नमस्कार है।

☆ 'कादम्बरी' में नमस्कारात्मक मङ्गलाचरण का प्रयोग है।
☆ प्रस्तुत पद्य में निराकार ब्रह्म की स्तुति की गयी है।
☆ अनुप्रास एवं यथासंख्या अलङ्कार का प्रयोग है।
☆ बाणभट्ट ने कादम्बरी के मङ्गलाचरण के रूप में 20 पद्यों में कविवंश-वर्णन, सज्जन-प्रशंसा, दुर्जन-निन्दा आदि का वर्णन किया है।
☆ मङ्गलाचरण रूपी बीसों पद्यों में वंशस्थ छन्द का प्रयोग किया गया है।
☆ मङ्गलाचरण के द्वितीय पद्य में भगवान् शङ्कर के चरणधूलियों की वन्दना की गयी है।
☆ तीसरे श्लोक में बाणभट्ट ने अपने गुरु 'भर्वु' (भत्सु) को नमस्कार किया है।
☆ पाँचवे श्लोक में दुर्जनों की निन्दा है।
☆ छठे और सातवें पद्य में दुर्जन और सज्जन में अन्तर स्पष्ट किया है।
☆ आठवें तथा नौवें श्लोक में कथा-प्रशंसा है।
☆ दसवें से उन्नीसवें श्लोक तक कविवंश-वर्णन है।
☆ बीसवें श्लोक में कादम्बरी कथा की प्रशंसा है।

- **कादम्बरी में तीन जन्मों का नाम**

चन्द्रापीड	वैशम्पायन	पत्रलेखा	इन्द्रायुध	चाण्डालकन्या
1.चन्द्रमा	पुण्डरीक	रोहिणी	कपिञ्जल	लक्ष्मी
2.चन्द्रापीड	वैशम्पायन	पत्रलेखा	इन्द्रायुध	-
3.शूद्रक	शुक	-	कपिञ्जल	चाण्डालकन्या

- कादम्बरी की कथा एक जन्म से सम्बद्ध न होकर चन्द्रापीड और पुण्डरीक के तीन जन्मों से सम्बन्ध रखती है।
- कादम्बरी के दो भाग हैं– पूर्वार्द्ध व उत्तरार्द्ध।
- 'कादम्बरी' का नायक चन्द्रापीड धीरोदात्त नायक है।
- 'कादम्बरी' की नायिका कादम्बरी विवाह से पूर्व **'परकीया मुग्धा नायिका'** है, किन्तु विवाह के बाद **'स्वकीया मध्या नायिका'** है।
- कादम्बरी का प्रमुख रस **'शृङ्गार'** तथा गुण **'माधुर्य'** है।
- कादम्बरी में **पाञ्चाली रीति** की बहुलता है। **'शब्दार्थयोः समोगुम्फः पाञ्चाली रीतिरुच्यते॥'**
- 'कथासरित्सागर' के 'उनसठवें तरङ्ग' मकरन्दिका-वृत्तान्त का अवलम्बन लेकर बाण ने कादम्बरी-कथा की रचना की।
- कादम्बरी का शाब्दिक अर्थ **'मदिरा'** है।
- कादम्बरी के उत्तरार्द्ध में भूषणभट्ट ने कहा – **कादम्बरी रसभरेण समस्त एव, मत्तो न किञ्चिदपि चेतयतो जनोऽयम्॥**
- कादम्बरी के मङ्गलाचरण में त्रिगुण-स्वरूप अजन्मा परमब्रह्म को नमस्कार किया गया है।
- यह ब्रह्म प्राणियों के प्रादुर्भाव में रजोगुण युक्त, स्थितिकाल में सात्विक गुणवाला तथा प्रलयकाल में तमोगुण वाला होता है।
- कादम्बरी का मङ्गलाचरण **नमस्कारात्मक** है।
- कादम्बरी के मङ्गलाचरण में **वंशस्थ छन्द** है।
- कादम्बरी के द्वितीय श्लोक में भगवान् शिव की चरण धूलियों की स्तुति की गयी है।
- चतुर्थ श्लोक में बाण ने अपने गुरु **भर्वु (भत्सु)** के चरणों की वन्दना की।
- बाण ने दो श्लोकों (8, 9) में कादम्बरी कथा की प्रशंसा की है।

- कादम्बरी की रचना में बाण को गुणाढ्य की **बृहत्कथा** तथा सुबन्धु की **वासवदत्ता** से प्रेरणा मिली है, और इन्हें पीछे छोड़ना बाण का लक्ष्य रहा है। इसीलिए बाणभट्ट ने कादम्बरी को **अतिद्वयी** (अर्थात् वासवदत्ता और बृहत्कथा का अतिक्रमण करने वाली) कथा कहा है।
- कादम्बरी कथा का आरम्भ राजा शूद्रक के प्रभाव और उनकी **राजधानी 'विदिशा'** के वैभव वर्णन से होता है।
- शूद्रक के दरबार में एक 'चाण्डालकन्या' 'वैशम्पायन' नामक शुक को लेकर आती है।
- यह तोता मनुष्य की बोली बोलता है और राजा की प्रशंसा में एक आर्या छन्द (दाहिना पैर उठाकर) पढ़ता है –
  स्तनयुगमश्रुस्नातं समीपतरवर्तिहृदयशोकाग्नेः।
  चरति विमुक्ताहारं व्रतमिव भवतो रिपुस्त्रीणाम्॥
- यही शुक राजा शूद्रक के सामने अपने जन्म, 'हारीत' के द्वारा महर्षि जाबालि के आश्रम में पहुँचने का वृत्तान्त बताता है।
- मुनि जाबालि उज्जयिनी नरेश तारापीड के पुत्र चन्द्रापीड तथा उसके मित्र मन्त्री शुकनास के पुत्र वैशम्पायन की कथा का वर्णन करते हैं।
- शुक का जन्म 'विन्ध्याटवी' में एक विशाल शाल्मली के वृक्ष पर हुआ था।
- उज्जयिनी मालवा की राजधानी है।
- तारापीड की पत्नी **'विलासवती'** और शुकनास की पत्नी का नाम **'मनोरमा'** है।
- चन्द्रापीड के तीन जन्म क्रमशः **चन्द्रमा, चन्द्रापीड और शूद्रक** हैं।
- पुण्डरीक के तीन जन्म क्रमशः **पुण्डरीक, वैशम्पायन और शुक हैं।**
- चन्द्रापीड की सेविका (ताम्बूलवाहिनी) पत्रलेखा पूर्व जन्म में रोहिणी रहती है।
- चन्द्रापीड का घोड़ा इन्द्रायुध पूर्व जन्म में पुण्डरीक का मित्र 'कपिञ्जल' रहता है।
- चाण्डालकन्या पूर्व जन्म में पुण्डरीक की माता लक्ष्मी रहती है।
- दिग्विजय के लिए निकले चन्द्रापीड किन्नर मिथुन का पीछा करते **'अच्छोद सरोवर'** पहुँच जाता है।
- अच्छोद सरोवर पर तप करती हुई **'महाश्वेता'** गन्धर्वराज **हंस और गौरी की पुत्री** है।
- पुण्डरीक के कान पर लगी पारिजात की कुसुम-मञ्जरी से महाश्वेता आकर्षित होती है।
- तरलिका महाश्वेता की सहचरी है।
- गन्धर्वराज **चित्ररथ और मदिरा की पुत्री कादम्बरी** है।
- केयूरक कादम्बरी का अनुचर (वीणावाहक) है।
- **पुण्डरीक महर्षि श्वेतकेतु और लक्ष्मी का पुत्र** है।
- पुण्डरीक ने चन्द्रमा को वियोगाग्नि में तड़पने और चन्द्रमा पुण्डरीक को साथ-साथ दुःख भोगने का शाप दिया था।
- पत्रलेखा कुलूताधिपति की पुत्री है।
- कादम्बरी की सहचरी मदलेखा है।
- इन्द्रायुध अश्व का सजीव वर्णन करने के कारण बाण को **'तुरङ्गबाण'** कहा जाता है।

कादम्बरी कथामुख

- शूद्रकः कः आसीत् – **शूद्रकः राजा आसीत्**
- शूद्रकस्य राजधानी का आसीत् –**शूद्रकस्य राजधानी विदिशाभिधाना नगरी आसीत्।**
- चाण्डाल-कन्यका कुतः आगता?-
  चाण्डाल-कन्यका दक्षिणमार्गात् आगता।
- वैशम्पायनः कः आसीत्? **वैशम्पायनः शुकः आसीत्**
- नरपतेः पुरः पञ्जरं निधाय को अपससार?–**नरपतेः पुरः पञ्जरं निधाय चाण्डालकन्यका अपससार।**
- शुको वैशम्पायनः कामार्या पपाठ?-
  शुको वैशम्पायनः–
  स्तनयुगमश्रुस्नातं समीपतरवर्ति हृदयशोकाग्नेः चरति विमुक्ताहारं व्रततमिव भवतो रिपुस्त्रीणाम् ॥
- विमुक्ताहारं किं व्रतमिव चरति?–**विमुक्ताहारं शूद्रकस्य रिपुस्त्रीणां स्तनयुगं व्रतमिव चरित।**
- शूद्रकस्य राजधानी कया नद्या परिगता आसीत्।
  वेत्रवत्या।
- शूद्रकस्य प्रधान अमात्यः कः आसीत्?-
  कुमारपालितः।
- पञ्जरस्थं शुकमादाय शूद्रकस्य समीपं का आगता–
  चाण्डाल-कन्या।
- दण्डकारण्यः कुत्र आसीत्?- **विन्ध्याट्व्याम्।**
- जीर्णः शाल्मलीवृक्षः कुत्र आसीत्?–**पम्पाभिधानस्य सरसः पश्चिमे तीरे आसीत्।**
- चन्द्रापीडस्य बालमित्रं कः आसीत्? -**वैशम्पायनः**
- शुकनासः कस्य मन्त्री आसीत्?- **राज्ञः तारापीडस्य**
- चाण्डालकन्या का आसीत्- **पुण्डरीकस्य माता**
- चन्द्रापीडः कस्य अवतारः आसीत्? – **चन्द्रस्य**
- कस्मिन् वृक्षे वैशम्पायनः शुकः अवसत्?– **शाल्मलीवृक्षे।**
- चन्द्रापीडस्य माता पितरौ कौ आस्ताम्?–**माता विलासवती पिता च तारापीडः**
- कादम्बरी का आसीत्?- **चित्ररथ गन्धर्वराजस्य पुत्री आसीत्।**
- पम्पाभिधानस्य सरसः नातिदूरवर्तिनि तपोवने कः– मुनिः प्रतिवसति स्म?–**जाबालिः नाम मुनिः प्रतिवसति स्म।**
- कादम्बरी कस्मिन् अनुरक्ता आसीत्?– **चन्द्रापीडे।**
- कादम्बर्याः माता-पितरौ कौ आस्ताम्?– **मदिरा चित्ररथः।**
- महाश्वेता कस्मिन् अनुरक्ता आसीत्?– **पुण्डरीके**
- महाश्वेतायाः माता-पितरौ कौ आस्ताम्?- **माता गौरी पिता च हंसः**
- राजा शूद्रकस्य इष्टदेवः कः आसीत्?- **पशुपतिः भगवान् शङ्करः आसीत्।**

- 'कमलयोनिरिव विमानीकृतराजहंसमण्डलः' एतद्-विशेषणं कस्य कृते प्रयुक्तः- **शूद्रकस्य कृते**
- भगवतः नारायणस्य अनुकरणं कः करोति-**शूद्रकः**
- अचिरमृदित महिषासुर रुधिररक्तं चरणमिव कात्यायनीम् यह विशेषण वाक्य किसके लिए प्रयुक्त है?- **चाण्डालकन्या के लिए**
- प्रथमे वयसि कः सुखमतिचिरमुवास- **शूद्रकः**
- 'विदितसकलशास्त्रार्थः राजनीतिप्रयोगकुशलः' एतद् विशेषणं कस्य कृते प्रयुक्तः है?– **वैशम्पायनस्य कृते**
- "त्रिभुवन प्रसवभूमिरिव विस्तीर्णा" का नगरी अस्ति?– **विदिशा**
- 'विन्ध्य वनभूमिरिव वेत्रलतावती' यह किसके लिए कहा गया है– **प्रतीहारी।**
- 'हर इव जितमन्मथः' कः अस्ति?– **शूद्रकः।**
- प्रतिहारी कां प्रावेशयत्?- **चाण्डालकन्यकाम्।**
- विदिशा नगरी कया नद्या परिगता आसीत्?-**वेत्रवत्या।**
- "अरण्यकमलिनी इव मातङ्गकुलदूषिता" का आसीत्?– **चाण्डालकन्या**
- कर्ता महाश्चर्याणाम्, आदर्शः सर्वशास्त्राणां कः आसीत्?- **वैशम्पायनः।**
- विदित सकलशास्त्रार्थः राजनीतिप्रयोगकुशलः कः आसीत्?- **वैशम्पायनः**
- शूद्रकस्य प्रधानामात्यः कः आसीत्?- **कुमारपालितः**
- हारीतः कस्यः पुत्रः आसीत्?–**महर्षेः जाबालेः पुत्रः आसीत्।**
- मातङ्गः कः आसीत्? -**शबर सेनापतिः आसीत्।**
- उज्जयिनी कुत्र अस्ति?- **उज्जायिनी अवन्तिदेशे अस्ति।**
- कः कृतजयशब्द राजानम् उदिद्श्य आर्यां छन्दः पपाठ?– **वैशम्पायनो शुकः कृतजयशब्द राजानम् उद्दिश्य आर्यां छन्दः पपाठ।**
- केषां धर्मः अनाथपरिपालनम् अस्ति-**अनाथपरिपालनं तपस्विसदृशानां जनानां धर्मः अस्ति।**
- कस्य अवतारः इन्द्रायुधः आसीत्?– **कपिञ्जलस्य अवतारः इन्द्रायुधः आसीत् ।**
- शुकः कोलाहलध्वनिम् आकर्ण्य कुत्र अविशत् ?- **शुकः कोलाहलध्वनिम् आकर्ण्य स्वपितुः पक्षपुटान्तरम् अविशत् ।**
- पत्रलेखा का आसीत्?– **चन्द्रपत्नी रोहिण्याः अवतारः पत्रलेखा चन्द्रापीडस्य च ताम्बूलकरंकवाहिनी आसीत्।**
- कादम्बरी कथामुखे मङ्गलाचरणे कस्य स्तुतिः– **त्रिगुणात्मक ब्रह्मणः**
- अकारणाविष्कृतवैरदारुणात्.........कस्य भयं न जायते?– **असज्जनात्**
- स्फुरत्कलालाप-विलास-कोमला करोति......कस्य प्रशंसायाः उद्धृता– **कथाप्रशंसायाः**
- कुबेरस्य पुत्रः कः?- **अर्थपति।**

सूक्तियाँ

- **अनाथपरिपालनं हि धर्मोऽस्मद्विधानाम्।**
  अनाथों का पालन ही हमारे जैसे- मुनियों का धर्म है।
- **सकल भूतलरत्नभूतः, वैशम्पायनो नाम शुकोऽयम् आत्मीयः क्रियताम्–**
  चाण्डाल कन्या राजा शूद्रक से तोते का परिचय देते हुए कहती है– महाराज यह तो सम्पूर्ण शास्त्रों का ज्ञाता, राजनीति में कुशल, पुराण, इतिहास तथा कथा में निपुण और पृथ्वी का एक रत्न है।
- **चरित विमुक्ताहारं व्रतमिव भवतो रिपुस्त्रीणाम्** –
  वैशम्पायन नामक शुक ने अपना दाहिना पैर उठाते हुए 'जय' शब्द का उच्चारण करके राजा को आर्या छन्द सुनाया–
  आपके शत्रुओं की स्त्रियों के स्तनों का जोड़ा या मोतियों के हार को छोड़कर ऐसा लगता है, जैसे कोई तपस्वी भोजन का त्याग करके तप कर रहा हो।
- **देव! महतीयं कथा यदि कौतुकम् आकर्ण्यताम्**
  वैशम्पायन अपनी कहानी सुनाता है–
  हे देव! मेरी यह कथा बहुत लम्बी है। इसके सुनाने में बहुत समय लगेगा किन्तु यदि आपको मेरे विषय में उत्सुकता है तो सुनिऐ मैं सुनाता हूँ।
- **अनाराधित प्रसन्नेन कुसुमशरेण भगवता ते वरः दत्तः। कस्योक्ति?**
  पत्रलेखा बिना आराधना के ही प्रसन्न मन वाले कामदेव ने तुम्हे वरदान दिया है।
- **बलवान् जननी स्नेहः?**
  चन्द्रापीड का कथन माता का स्नेह बलवान् होता है।
- **'अहो मानुषीषु पक्षपातः प्रजापतेः'**
  कादम्बरी का कथन पत्रलेखा को देखकर एक मनुष्य के प्रति किये गये ब्रह्मा के पक्षपात के विषय में सोचने लगी।

- **'बहुभाषिणः न श्रद्दधाति लोकः'**
  चन्द्रापीड का कथन- बहुत बोलने वालों पर लोग श्रद्धा नहीं रखते।
- **गरीयसी गुरोः आज्ञा।**
  चन्द्रापीड का कथन- गुरुजनों (बड़ो) की आज्ञा महान् होती है।
- **बलवती हि भवितव्यता। होनहार बलवान् है।**
  कपिञ्जल के मुख से उच्चरित श्वेतकेतु का कथन है।

अम्बिकादत्तव्यास का परिचय

- **पितामह** – पं राजाराम
- **पिता** – दुर्गादत्त
- **चाचा/दादा** – देवीदत्त
- **पुत्र** – पं. राधाकुमारव्यास
- **गोत्र** – पराशरगोत्रीय यजुर्वेदी/त्रिप्रवर/भीडावंश
- **जन्मस्थान** – राज्य - राजस्थान, जिला - जयपुर, ग्राम - रावत जी का धूला, मुहल्ला - सिलावटी
- **जन्मसमय** – चैत्र शुक्लपक्ष अष्टमी सं. 1915 (1858 ई.)
- **मृत्यु** – मार्ग शीर्ष (अगहन) कृष्णपक्ष त्रयोदशी सोमवार सं. 1957 (सन् 1900 ई.)
- **कर्मस्थली** – काशी में अध्ययन - अध्यापन
- **कुल रचनाएं** – लगभग 78
- **संस्कृत रचनायें**– शिवराजविजय (उपन्यास) सामवतम् (नाटक) (22 वर्ष की अवस्था में) रत्नाष्टक, कथाकुसुमम्
- **हिन्दी रचनाए** – बिहारी-विहार (कुण्डलिनी छन्द में)
- **पत्रिका** –'पीयूष-प्रवाह' का सम्पादन
- **उपाधियाँ**– 1. सुकवि (भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, काशी कवितावर्धिनी सभा)
  2. घटिकाशतक (ब्रह्मामृतवर्षिणी सभा)
  3. शतावधान
  4. भारतरत्न (काशी की 'महासभा')
  5. अभिनवबाण/आधुनिकबाण
  6. भारतभूषण
  7. महाकवि
- प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास के प्रणेता अम्बिकादत्तव्यास।
- 'बिहारी-विहार' में व्यास जी ने अपना संक्षिप्त जीवन-परिचय लिखा है।
- लगभग 12 वर्ष की अवस्था में व्यास जी ने धर्मसभा की परीक्षा में पुरस्कार प्राप्त किया था।
- बिहार में **'संस्कृत-सञ्जीवनी-समाज'** की स्थापना।
- व्यास जी ने 10 वर्ष की अवस्था से ही काव्य रचना आरम्भ कर दी थी।
- व्यास जी ने **'शिवराजविजय'** 1870 ई. में लिखा जो काशी से 1901 ई. में उनकी मृत्यु के बाद प्रकाशित हुआ।
- गवर्नमेण्ट संस्कृत-कॉलेज पटना में प्राध्यापक।
- वक्ता और साहित्यस्रष्टा के साथ ही चित्रकारिता, अश्वारोहण संगीत और शतरंज में भी व्यास जी विशेष रुचि रखते थे।
- सितार, हारमोनियम, जलतरङ्ग और मृदङ्ग इनके प्रिय वाद्य थे।
- व्यास जी हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी और बंगला भाषा के ज्ञाता थे।
- न्याय, व्याकरण, वेदान्त और दर्शन में इनकी अच्छी गति थी।
- एक घड़ी (24 मिनट) में 100 श्लोकों की रचना करने से व्यास जी को **'घटिकाशतक'** की उपाधि दी गयी थी।
- सौ प्रश्नों को एक साथ ही सुनकर उन सभी प्रश्नों का उत्तर उसी क्रम में देने की अद्भुतक्षमता होने से उन्हें **'शतावधान'** की उपाधि दी गयी थी।
- **बयालीस वर्ष की अवस्था** में ही व्यास जी संवत् 1957 (1900 ई.) में अपने पीछे एक नववर्षीयपुत्र, एक कन्या और विधवा पत्नी को असहाय छोड़कर पञ्चतत्व को प्राप्त हो गये।
- **लेखक** – अम्बिकादत्तव्यास
- **विधा** – ऐतिहासिक उपन्यास
- **विभाजन** – तीन विराम, 12 निःश्वास।
- **प्रधानरस** – वीर
- **उपजीव्य** – इतिहासप्रसिद्ध
- **नायक** – शिवाजी
- **कथानक** – शिवाजी का जीवनचरित।
- **प्रमुखपात्र** – शिवाजी, गौरसिंह, श्यामसिंह, ब्रह्मचारी गुरु, योगिराज, अफजलखान, शाइस्ताखान, रघुवीरसिंह, यवनयुवक यशवन्तसिंह, औरंगजेब, रसनारी (रोशनआरा)
- 'शिवराजविजयम्' **1870 ई०** में लिखा गया था, जो काशी से **1901 ई. में प्रकाशित** हुआ।
- संस्कृतवाङ्मय का **प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास 'शिवराजविजय' है।**
- शिवराजविजय की सम्पूर्ण कथा 3 विरामों और 12 निःश्वासों में विभक्त है।
- शिवराजविजय में दो समान्तर धाराएँ स्वतन्त्र रूप से प्रवाहित होती हैं – एक के नायक शिवाजी हैं तो दूसरी के नायक रघुवीर सिंह हैं।
- शिवराजविजय **'वीर रस' प्रधान काव्य** है। **'विरोधाभास'** व्यास जी का प्रिय अलङ्कार है। शिवराजविजय में पाञ्चालीरीति प्रयुक्त है।

- व्यासजी ने 'शिवराजविजय' में मुगलकालीन समाज का सुन्दर चित्रण किया है।

कथानक एवं पात्र-चित्रण

- शिवाजी के काल में दो-दो कोस पर आश्रम बने हुए थे, जो मुसलमानों की गतिविधियों पर नजर रखते थे।
- बीजापुर-दरबार ने शिवाजी से युद्ध के लिए अफजल खाँ को भेजा। उस समय शिवाजी 'प्रतापदुर्ग' में थे।
- अफजल खाँ ने 'भीमा नदी' के तट पर शिविर डाल दिया।
- बीजापुर के शासक 'सन्धि' के धोखे से शिवाजी को पकड़ना चाहते थे।
- एक यवन गुप्तचर जो बीजापुर दरबार का पत्र ले जा रहा था, उसने मार्ग में एक ब्राह्मण कन्या का अपहरण किया।
- एक भालू के आ जाने से वह यवन युवक उस कन्या को छोड़कर 'शाल्मली' वृक्ष पर चढ़ गया।
- ब्रह्मचारी गुरु के शिष्य 'गौरसिंह' और श्यामसिंह द्वारा वह कन्या बचा ली गई।
- यवन गुप्तचर 'गौर सिंह' द्वारा मारा गया तथा बीजापुर का गुप्त संदेश उसके वस्त्रों में से गौरसिंह को प्राप्त हुआ।
- गुप्त संदेश को जानकर शिवाजी ने स्वयं अफजल खाँ को छलने की योजना बनायी।
- बीजापुर से सन्धि प्रस्ताव लेकर भेजे गये 'पं. गोपीनाथ' द्वारा प्रतापदुर्ग की तलहटी में अफजल खाँ से मिलने का शिवाजी ने प्रबन्ध किया।
- गौर सिंह 'गायक' के वेश में अफजल खाँ के शिविर में जाकर सम्पूर्ण भेद निकाल लाया।
- शिवाजी कपड़ों के अन्दर कवच और हाथों में 'बाघनख' नामक हथियार पहन कर अफजल खाँ से मिलने गये।
- आलिंगन के समय शिवाजी ने अफजल खाँ के कन्धों और गर्दन को फाड़कर मार डाला।
- गौर सिंह द्वारा जिस ब्राह्मण कन्या की रक्षा की गयी थी, उसके संरक्षक एक वृद्ध ब्राह्मण थे।
- वह कन्या गौर सिंह और श्याम सिंह की **बहन सौवर्णी** है और वृद्ध ब्राह्मण उनके **पुरोहित 'देवशर्मा'** हैं।
- ब्रह्मचारी गुरु के अनुरोध पर गौर सिंह ने अपना वृत्तान्त सुनाया।
- वे तीनों (गौर सिंह, श्याम सिंह, सौवर्णी) उदयपुर के जागीरदार **'खड़गसिंह'** के पुत्र-पुत्री थे।
- माता-पिता की मृत्यु के बाद तीनों बहिन भाई पुरोहित की संरक्षता में रहते थे।
- शिकार पर गये हुए वे लुटेरों द्वारा पकड़े गये वहाँ से वे भाग कर हनुमान मंदिर अध्यक्ष की सहायता से भीमा नदी के किनारे शिवाजी से मिले और ब्रह्मचारी गुरु के आश्रम में रहने लगे।
- 'शाइस्ता खाँ' पूना पर अधिकार करके शिवाजी के महल में रहने लगता है।
- शिवाजी ने 'सिंह दुर्ग' से अपना एक संदेश 'रघुवीर सिंह' द्वारा 'तोरण दुर्ग' के अध्यक्ष के पास भेजा।
- रघुवीर सिंह तोरण दुर्ग के अध्यक्ष की आज्ञा से 'हनुमान मंदिर' में ठहरा।
- देवशर्मा 'सौवर्णी' को लेकर उसी हनुमान मन्दिर में रहने लगे थे। जहाँ वाटिका में रघुवीर सिंह सौवर्णी को देखता है।
- शिवाजी के आदेश पर रघुवीर सिंह शाइस्ता खाँ के साथ होने वाले युद्ध का भविष्य पूछने के लिए देवशर्मा के पास गया।
- देवशर्मा ने सौवर्णी द्वारा उसे एक मोदक खिलाकर गले में एक 'माला' डलवाई।
- देवशर्मा ने यवनों के साथ युद्ध में विजय तथा आर्यों के साथ पराजय यह भविष्य बताया।
- शिवाजी ने पंडित के वेश में 'माल्यश्रीक' के साथ शाइस्ता खाँ के निवास पूना जाकर निरीक्षण किया।
- सन्देह होने पर चाँद खाँ ने उनका पीछा किया शिवाजी ने उसका वध कर दिया।
- शिवाजी ने यशवन्त सिंह को पूना से दूर रहने की प्रार्थना कर 'बारात' के बहाने पूना में प्रवेश किया।
- चाँद खाँ और शाइस्ता खाँ के पुत्र रघुवीर सिंह द्वारा मारे गये।
- शाइस्ता खाँ घायल उंगली के साथ भाग गया।
- रघुवीर सिंह ने औरंगजेब की पुत्री 'रोशन आरा' को गिरफ्तार कर लिया।
- ब्रह्मचारी गुरु ने गौरसिंह से अपने पुत्र 'वीरेन्द्र सिंह' का वृत्तान्त बताया।
- सौवर्णी ने क्रूरसिंह द्वारा किये जाने वाले अपमान की बात रघुवीर सिंह से बतायी।
- रोशनआरा शिवाजी के प्रति अपना प्रेम प्रकट करती है। शिवाजी ने पिता द्वारा उसे दिये जाने पर ही स्वीकार करने की बात कही।
- 'जयसिंह' के आक्रमण करने पर शिवाजी मुगलों की कुछ शर्तें मानकर सन्धि करने पर विवश हुए। और उन्हें रोशनआरा और मुअज्जम को वापस करना पड़ा।
- बीजापुर किले पर आक्रमण करके रघुवीर सिंह की सहायता से शिवाजी ने विजय प्राप्त की। और रहमत खाँ को पकड़ लिया गया।
- रहमत खाँ और क्रूरसिंह द्वारा राजद्रोही बताये जाने पर शिवाजी

ने रघुवीर सिंह को निष्कासित कर दिया।
- रघुवीर सिंह **'राधास्वामी'** का वेश धारण कर शिवाजी का उपकार करता रहा।
- सौवर्णी का अपहरण की इच्छा रखने वाले क्रूरसिंह का रघुवीर सिंह (राधास्वामी) ने वध कर दिया।
- जयसिंह की सन्धि के अनुसार शिवाजी औरंगजेब के राजदरबार दिल्ली में उपस्थित हुए।
- मार्ग में राधास्वामी (राघवस्वामी, रघुवीर सिंह) के रोकने पर भी वे नहीं माने।
- औरंगजेब ने शिवाजी को नजरबंद करवा दिया। परन्तु 'रघुवीर सिंह' के सहायता से वे भागने में सफल हो गये।
- रघुवीर सिंह को 'मण्डलेश्वर' पद प्रदान किया गया तथा 'सौवर्णी' के साथ उसका विवाह हो गया।
- शिवाजी **सतारा नगर को राजधानी** बनाकर रहने लगे और धीरे-धीरे पूरे महाराष्ट्र पर अधिकार कर लिया।
- औरंगजेब द्वारा प्रेषित सेनापति 'मोहम्मद खाँ' भगा दिया गया।

शिवराजविजय का प्रथम निःश्वास

- शिवराजविजय का मङ्गलाचरण **''विष्णोर्माया भगवती यया सम्मोहितं जगत्''** से होता है जो 'भागवतपुराण' के दशम स्कन्ध से लिया गया है।
- मङ्गलाचरण में विष्णु की माया को ऐश्वर्यशालिनी बताया गया है, जिसने सम्पूर्ण जगत् को मोह में डाल रखा है।
- दूसरी पंक्ति में कहा गया है कि दुष्ट हिंसक अपने पाप से मारा गया और सज्जन समत्व भाव के कारण बच गये।
- शिवराजविजय का आरम्भ प्रातःकाल एवं सूर्य भगवान के वर्णन से होता है।
- देर से सोकर उठे गौरसिंह को पुष्प चुनने से 'श्यामबटु' रोकता है और बताता है कि उसने गुरु (ब्रह्मचारी) के सन्ध्योपासना की समस्त सामग्री पहुँचा दी है।
- 'शिवराजविजय' का मंगलाचरण **'नमस्कारात्मक'** और **वस्तु निर्देशात्मक** है।
- गौर सिंह केले के पत्ते को तिनकों से जोड़कर उसी में पुष्प तोड़ना आरम्भ करता है।
- गौरबटु लगभग सोलह वर्ष का है उसका साथी (भाई) श्यामबटु भी उसी का समवयस्क है।
- उनकी कुटिया केले के वन से घिरे होने के कारण कुञ्ज के जैसी प्रतीत होती है।
- कुटीर के **चारों ओर पुष्पवाटिका** थी तथा **पूर्व दिशा** में एक तालाब है।
- कुटिया के **'दक्षिण' में झरनों तथा सुंदर कन्दराओं से** युक्त एक **पर्वतखण्ड** विद्यमान है।
- **सात वर्षीय कन्या** को सांत्वना प्रदान करते हुए गौरबटु ने रात्रि के तीन पहर व्यतीत कर दिये जिसे उसने यवन युवक से बचाया था।
- कुटिया के दक्षिण में स्थित पर्वत की कन्दरा में एक महामुनि समाधिरत थे जिनकी ग्राम-प्रधान और ग्रामीण पूजा किया करते थे।
- उन महामुनि को कोई **कपिल** कोई **लोमश** और कोई **जैगीषव्य** और कोई **मार्कण्डेय** समझता था।
- उन महामुनि (योगिराज) को सर्वप्रथम उन दो ब्राह्मण बालकों (गौर, श्याम) के द्वारा शिखर से नीचे उतरते देखा गया।
- योगिराज आश्रम में आकर काष्ठासन पर उदयाचल पर सूर्य के समान आसीन हुए।
- ब्रह्मचारी गुरु ने जैसे ही कुछ बोलना चाहा तभी उस बालिका का करुण क्रन्दन सुनाई पड़ा।
- योगिराज के उस कन्या के सम्बन्ध में पूछने पर 'श्यामबटु' को उसे शान्त करने का आदेश देकर ब्रह्मचारी गुरु ने बोलना आरम्भ किया।
- सर्वप्रथम उस कन्या का करुण क्रन्दन सुनकर 'ब्रह्मचारी' ने पता लगाने हेतु अपने शिष्यों को भेजा था।
- यवन युवक उस कन्या को माता के हाथ से छीनकर भागा था, उसने बालिका को 'छूरा' दिखाकर शान्त करना चाहा।
- अचानक भालू के आ जाने से यवन युवक शाल्मली वृक्ष पर चढ़ गया और कन्या घुणाक्षरन्याय से पलाश वृक्षों के झुरमुट में प्रवेश कर आश्रम की तरफ आयी।
- योगिराज के 'विक्रमराज्य' में ऐसा उपद्रव कहने पर ब्रह्मचारी गुरु ने बताया कि विक्रमादित्य के राज्य को बीते तो **'सत्रह सौ वर्ष'** हो गये।
- ब्रह्मचारी गुरु ने बताया कि आज वेद फाड़कर मार्गों में बिखेरे जाते हैं, 'धर्मशास्त्रों' को उछालकर 'आग' में झोंका जाता है। पुराणों को पीस कर पानी में फेंका जाता है, भाष्य नष्ट करके भाड में झोंके जाते हैं।
- योगिराज विक्रमादित्य द्वारा 'शकों' को जीते जाने को कल की ही बात बताते हैं।
- ब्रह्मचारी गुरु योगिराज से बताते हैं कि 'भगवन्' आपने जिन पुरुषों को देखा था अब उनकी 'पचासवीं' पीढ़ी के पुरुष भी दिखाई नहीं पड़ते।
- योगिराज बताते हैं कि वे **'युधिष्ठिर' के समय समाधि** लगाकर 'विक्रमादित्य' के समय में तथा विक्रमादित्य के समय समाधि लगाकर इस दुराचारमय समय में उठे।

➢ ब्रह्मचारी गुरु ने बताया कि 'महमूद गजनवी' ने भारत को बारह **(12) बार लूटा** और सैकड़ों ऊँटों पर रत्नों को लाद कर अपने देश ले गया।
➢ उसने गुजरात देश में स्थित 'सोमनाथ' को भी धूल में मिला दिया।
➢ सोमनाथ की किवाड़ें वैदूर्य (मूंगा), पद्मराग हीरे, मोतियों से बनी थी।
➢ सोमनाथ में लटकने वाला महाघण्टा **दो सौ मन सोने की जंजीर** में लटकता था।
➢ महादेव की मूर्ति पर गदा उठाने पर पुजारियों ने उसे 'दो करोड़ स्वर्ण मुद्राएं' देकर छुड़ाना चाहा परन्तु उसने यह कह कर कि **'वह मूर्ति बेचता नहीं किन्तु तोड़ता है।'** उसने मूर्ति को तोड़ दिया।
➢ गदा के प्रहार से अनेक 'अरब पद्म मुद्रा' के मूल्य के रत्न बिखरे, उनको लेकर ऊंटों की पीठ पर लाद कर 'सिन्धु' नदी उतर कर महमूद गजनवी 'गजनी' वापस चला गया।
➢ सं. 1087 में **'गोर देश' निवासी 'शहाबुद्दीन'** नामक यवन पहले गजनी देश पर फिर भारत पर आक्रमण किया। और 1250 में दिल्ली को अश्वारोहियों से घेर लिया।
➢ उसने वाराणसी में भी हड्डियों के अनेक पहाड़ बना दिये। वाराणसी तक उसने अकण्टक राज्य किया।
➢ **शहाबुद्दीन (गोरी)** ने ही मुख्यतः **भारत में यवन-शासन का बीजारोपण** किया और उसी ने **'कुतुबुद्दीन'** नामक गुलाम को **दिल्ली का प्रथम सम्राट** बनाया।
➢ केवल अकबर यद्यपि भारतवर्ष का गूढ शत्रु था तथापि वह शान्तप्रिय और विद्वानों का आदर करने वाला था।
➢ औरंगजेब ने **'आलमगीर'** उपाधि धारण किया।
➢ औरंगजेब ने 'शाइस्ता खाँ' को दक्षिण के शासक के रूप में भेजा।
➢ शिवाजी पूना नगर के निकट **'सिंहदुर्ग'** में रह रहे थे। (विजयपुर = बीजापुर)
➢ **'या कार्य सिद्ध होगा या शरीर नष्ट होगा'** यह शिवाजी की प्रतिज्ञा थी।
➢ योगिराज ने **'वीर शिवाजी' विजयी हों और आप के मनोरथ सिद्ध हों'** आशीर्वाद दिया।
➢ दूसरे प्रश्न के रूप में 'कब देखूँगा उसे पूछने पर' योगिराज ने विवाह के समय देखोगे' ऐसा उत्तर दिया।
➢ गौरसिंह 'अफजल' के तीन घोड़ों और घुडसवारों को मारकर पाँच ब्राह्मणों को छुड़ाकर ले आया।
➢ गौरसिंह ने देखा कि गृहवाटिका के केलों के झुरमुट में दो या तीन पेड़ अधिक काँप रहे थे।
➢ गौर सिंह ने कुटीर की 'बल्ली' में तलवार छिपा रखी थी।
➢ छिपा हुआ यवनयुवक सिर पर नीले वस्त्र, हरित वर्ण का कञ्चुक और श्याम (नीले) वस्त्र कटितट तक बाँधे था।
➢ उस यवन युवक की **उम्र लगभग 20 वर्ष** थी।
➢ श्यामबटु' तलवार लेकर उसी कुटी के द्वार पर 'कन्या' के रक्षणार्थ खड़ा हुआ जिसमें वह थी।
➢ गौरसिंह ने यवन युवक को मारकर उसके कपड़ों में से एक पत्र निकालकर गणों सहित कुटिया में प्रवेश किया।

शिवराजविजय के कुछ महत्त्वपूर्ण पदों की व्याकरणात्मक टिप्पणी-

लट्लकार
* **चकर्ति-** √कृ + यङ् + (लुक्) +लट् प्र.पु.एकवचन
* **बर्भति-** √भृञ् + यङ् + (लुक्) +लट् प्र.पु.एकवचन
* **जर्हति-** √हृञ् + यङ् + (लुक्) +लट् प्र.पु.एकवचन
* **भर्ज्यन्ते-** √भृज् (भर्जने) +यक् +लट् (भावे)
* **भिद्यन्ते-** √भिद् + यक् + लट् (भावे)
* **चिकीर्षसि-** √कृ + सन् + लट् + म.पु.एकवचन
लिट्लकार
* **निश्चक्राम-** निर् + √क्रमु (पादविक्षेप)- लिट्
* **आरेभे-** आ + √रम्भ् + लिट् प्रथमपुरुष एकवचन
* **इयेष-** √इष् + लिट् + तिप् प्रथम पुरुष एकवचन
* **अप्ससार-** अप् + √सृ + लिट् प्रथम पुरुष एकवचन
* **उपाजगाम-** उप + आङ् + √गम् + लिट् प्रथम पुरुष एकवचन
* **जगाद-** √गद् + लिट् + प्रथम पुरुष एकवचन
* **अवतस्थे-** अव + √स्था + लिट् प्रथमपुरुष एकवचन (आत्मने.)
* **धूलीकार-** धूलि + च्वि + √कृ + लिट्
लुङ्लकार
* **अनैषीः-** √नी + लुङ् + मध्यम पुरुष एकवचन
* **अदर्शि-** √दृश् + लुङ् + प्रथमपुरुष एकवचन
* **भैषीः-** √भी + लुङ् + मध्यमपुरुष एकवचन
* **कार्षीः-** √कृ + लुङ् + मध्यमपुरुष एकवचन
* **अरोदीः-** √रुद् + लुङ् + मध्यमपुरुष एकवचन
* **उदस्थाम्-** उत् + √स्था + लुङ् + उत्तमपुरुष एकवचन
* **व्ययाजिषत्-** वि + √यज् + कर्मणि + लुङ् + प्रथमपुरुष एकव.
* **अलुलुण्ठत्-** √लुठि स्तेये, चुरादि + णिजन्तात् + लुङ् प्र.पु.एक.
* **मा स्प्राक्षीः-** √स्पृश् + लुङ् म.पु.एक. माङ् के योग में अट् का आगम नहीं हुआ।
* **अकार्षुः-** √कृ + लुङ् + प्रथमपुरुष बहुवचन
* **उदतूतुलत्-** उत् + अतुतुलत् + √तुल् + लुङ् + प्र.पु.एकवचन
* **अश्रौषम्-** √श्रु + लुङ् + उत्तमपुरुष एक वचन
लङ्लकार
* **आरभत-** आङ् + √रभ् + लङ् + प्रथमपुरुष एकवचन
* **प्राविशत्-** प्र + √विश् + लङ् + प्रथमपुरुष एकवचन

प्रश्नोत्तर

- शिवराजविजयस्य रचनाकारः कः?**अम्बिकादत्तव्यासः**
- ''शिवराजविजयः'' इति उपन्यासात्मकं गद्यकाव्यं विरचितम्?–**अम्बिकादत्तेन**
- संस्कृतसाहित्ये प्रथमैतिहासिकोपन्यासस्य सौभाग्यं कः प्राप्तवान् ? –**शिवराजविजयः**
- ''शिवराजविजयः'' ग्रन्थः एकः -**उपन्यास**
- शिवराजविजयस्य मङ्गलाचरणमुद्धृतं वर्तते? **श्रीमद्भागवतपुराणात् उद्धृतमस्ति**
- शिवराजविजयः कस्मिन् विभक्तं वर्तते?–**निःश्वासेषु**
- शिवराजविजये कति निःश्वासाः विद्यन्ते?–**द्वादश**
- शिवराजविजयस्य प्रत्येकविरामेषु कति निःश्वासाः वर्तन्ते?– **चत्वारः**
- शिवराजविजयः इति रचनायाः नायकः अस्ति? **महाराष्ट्रकेसरी शिवाजी**
- शिवराजविजय इति गद्यकाव्यस्य आरम्भः भवति? **सूर्योदयवर्णनेन**
- शिवराजविजयं कीदृशं काव्यम्- **गद्यम्**
- शिवराजविजये का रीतिः? **पाञ्चाली**
- अम्बिकादत्तस्य अन्यासु संस्कृतरचनासु सम्मिलितोऽस्ति? **सामवतं-नाटकम्**
- सोमनाथतीर्थः केन पराजितोऽभवत् ? **महमूदनेन**
- सोमनाथतीर्थस्य देवता अस्ति? **महादेवः**
- महमूदगजनवी सिन्धुनदीम् उत्तीर्य कं स्वराजधानीं निर्मितवान्? – **गजनीम्**
- शिवराजविजये कान्यकुब्जस्य नृपः आसीत् ? **जयचन्द्रः**
- शिवराजविजये शिवाजी विहाय कस्य चरित्र-चित्रणं वर्तते?– गौरसिंहस्य
- शिवराजविजये कुत्रत्या घटना वर्णिता?–**महाराष्ट्रस्य**
- शिवराजविजये कीदृशीचेतनायाः प्रकाशः वर्तते? **राष्ट्रीयचेतनायाः**
- योगिराजेन प्रथमः समाधिः कदा स्वीकृतम्? **विक्रमादित्यस्य काले**

कथा साहित्य

पञ्चतन्त्र

विष्णुशर्मा का परिचय

नाम- विष्णुशर्मा

समय- लगभग 300 ई.पू.

(कथामुख में विष्णुशर्मा को शकलशास्त्रपारंगत छात्रों में अतिप्रिय एवं 80 वर्ष का वृद्ध व्यक्ति बताया गया है।)

*कुछ विद्वान् चाणक्य को ही विष्णुशर्मा मानते हैं, कुछ चाणक्य के पुत्र के रूप में विष्णुशर्मा को स्वीकार करते हैं। अन्य कुछ विद्वान् विष्णुशर्मा को इन सबसे अलग मानते हैं।

पञ्चतन्त्र का परिचय

लेखक - विष्णुशर्मा

काव्यविधा - नीतिकथा

विभाजन - 5 (पाँच) तन्त्रों में

उपजीव्य - ऋग्वेद, छान्दोग्य उपनिषद्

मुख्य कथाएँ - 6

उपकथाएँ - 69

कुल कथाएँ -75

श्लोक - 1103

तन्त्र	तन्त्रनाम	उपकथाएँ	श्लोकसंख्या	कथा
प्रथम	मित्रभेद	22	461	शेर और बैल की कथा
द्वितीय	मित्रसंप्राप्ति	6	199	काक,कूर्म,मृग, चूहे की मित्रता
तृतीय	काकोलूकीय	16	255	कौए एवं उल्लू की कथा
चतुर्थ	लब्धप्रणाश	11	80	बन्दर और मगर की कथा
पञ्चम	अपरीक्षितकारक	14	98	ब्राह्मणी एवं नेवले की कथा
	(मुख्यकथा)	6	10	(भूमिका)
योग-		**75**	**1103**	

शैली- सरस एवं सरल

गुण- प्रसाद और माधुर्य

पञ्चतन्त्र के संस्करण

पञ्चतन्त्र की आठ वाचनाएँ (संस्करण) उपलब्ध हैं।

1. **तन्त्राख्यायिका-** इस संस्करण को डॉ. हर्टल ने प्रकाशित किया था जिसमें इसे प्राचीनतम उपलब्ध वाचना कहा गया है। इसका समय 300 ई. के आस-पास है।
   राजनीति की शिक्षा के लिए इसकी रचना हुई थी अतः इसमें राजनीतिशास्त्र के प्राचीन ग्रन्थों से गद्य-पद्य के लम्बे उद्धरण मिलते हैं।

* इस वाचना की दो प्रतियाँ कश्मीर से शारदा लिपि में प्राप्त हुई।

2. **सरलपञ्चतन्त्र-** इसका सम्पादन किसी जैन विद्वान् ने किया था।

* इसका समय 1100ई. के लगभग है।
* यही पञ्चतन्त्र भारत में सर्वाधिक प्रचलित है।
* डॉ. ब्यूलर और कीलहार्न ने इसको परिष्कृत करके प्रकाशित कराया।

3. **पूर्णभद्रकृत पञ्चतन्त्र-** इस ग्रन्थ की रचना पूर्णभद्र नामक जैनसाधु ने 1199 ई. में की थी।

* इसे 'पञ्चाख्यानक' भी कहते हैं।
* पूर्व वाचना से अधिक परिष्कृत होने के कारण इसे 'अलङ्कृतवाचना' कहा गया है।
* जैन साधु मेघविजय ने 1660 ई. में कहानियों को चुनकर एक नया संस्करण बनाया जिसे 'पञ्चाख्यानोद्वार' कहते हैं।

4. **दक्षिणभारतीय पञ्चतन्त्र-**
   यह कम से कम पाँच संस्करणों में उपलब्ध है।

* इसमें कथाएँ संक्षिप्त कर दी गयी हैं।
* एजर्टन के अनुसार इसमें मूलग्रन्थ का 3/4 गद्य और 2/3 पद्य सुरक्षित है।
* यह 600ई. के बाद का है।

5. **नेपाली पञ्चतन्त्र-** इसके तीन संस्करण हस्तलेखों में मिले हैं-

(1) केवल पद्यात्मक
(2) गद्य-पद्यात्मक (ये (1,2) दोनों संस्कृत भाषा में)
(3) नेवारी भाषा में कहानियों के साथ संस्कृत पद्यात्मक

* इसकी पाण्डुलिपि 1484ई. की है।

6. **हितोपदेश-** इसका सम्पादन नारायण पण्डित ने किया है।

* यह पञ्चतन्त्र का बहुत लोकप्रिय तथा संक्षिप्त संस्करण है।
* यह चार भागों में विभक्त है।
* इसके सम्पादन में पञ्चतन्त्र के अतिरिक्त अन्य ग्रन्थ से भी सहायता की गयी है।

7. **उत्तर-पश्चिमी संस्करण-** गुणाढ्य के बृहत्कथा में इसी संस्करण का प्रयोग किया गया है।

* अब यह क्षेमेन्द्रकृत बृहत्कथामञ्जरी और सोमदेव कृत कथासरित्सागर में सुरक्षित है।
* इस संस्करण का कोई विशेष महत्त्व नहीं है।

8. **पहलवी संस्करण-** विदेशी भाषा में अनूदित यह प्रथम संस्करण है।

* खुसरो अनोशेरवाँ (6वीं शताब्दी) के शासनकाल में हकीम बुर्जोई ने इसका पहलवी रूपान्तर किया था।
* यह अनुवाद अब नष्ट हो चुका है।
  किन्तु इसी का अनुवाद सीरियाई, अरबी भाषा में हुआ। तत्पश्चात् यूरोपीय भाषाओं में रूपान्तरित होकर दूसरे देशों में पहुँचा।

पञ्चतन्त्र का मङ्गलाचरण

ब्रह्मा रुद्रः कुमारो हरिवरुणयमा वह्निरिन्द्रः कुबेर-
श्चन्द्रादित्यौ सरस्वत्युदधियुग- नगा वायुरुर्वी भुजङ्गाः।
सिद्धा नद्योऽश्विनौ श्रीर्दितिरदितिसुता मातरश्चण्डिकाद्या
वेदास्तीर्थानि यज्ञा गणवसुमुनयः पान्तु नित्यं ग्रहाश्च॥1

भावार्थ- ब्रह्म, शिव, स्वामिकार्तिकेय, विष्णु, यम, अग्नि, इन्द्र, कुबेर, चन्द्र, सूर्य, सरस्वती, समुद्र, चारों युग, पर्वत, वायु, पृथ्वी, वासुकि आदि सर्प, कपिलादि सभी सिद्ध, नदियाँ, दोनों अश्विनी कुमार, लक्ष्मी, दिति, अदिति एवं उनके पुत्र देवता, चण्डिकादि माताएँ, ऋक्, यजुः, साम और अथर्व ये चारों वेद, प्रयाग आदि तीर्थ, अश्वमेधादि यज्ञ, प्रथमादि गण, आठों वसु, व्यास आदि मुनि, सूर्य आदि ग्रह नित्य हम लोगों की रक्षा करें।

मनवे, वाचस्पतये, शुक्राय पराशराय ससुताय।
चाणक्याय च विदुषे नमोऽस्तु नयशास्त्रकर्तृभ्यः॥2

भावार्थ- मनु, बृहस्पति, शुक्र, पुत्र व्यास सहित पराशरमुनि, विद्वान् चाणक्य आदि, नीतिशास्त्र को बनाने वाले आचार्यों को नमस्कार है।

* पञ्चतन्त्र के मङ्गलाचरण का प्रथम श्लोक आशीर्वादात्मक तथा द्वितीय श्लोक नमस्कारात्मक है।
* प्रथम श्लोक में अनेक देवी-देवताओं तथा द्वितीय श्लोक में अनेक आचार्यों की स्तुति है।
* मङ्गलाचरण के प्रथम पद्य में स्रग्धरा छन्द एवं द्वितीय पद्य में आर्या छन्द का प्रयोग किया गया है।

पञ्चतन्त्र में वर्णित विषय

* पञ्चतन्त्र के माध्यम से बालकों को नैतिक, धार्मिक एवं व्यावहारिक शिक्षा प्रदान किया गया है।
* रचनाकार ने सीखनें का माध्यम पशु-पक्षियों को बनाया है।
* इन कथाओं में दैनिक वाग्व्यवहार, करणीय-अकरणीय उपदेश, कर्त्तव्य-पालन, मित्ररक्षा, वचनपालन इत्यादि गुणों का वर्णन है तथा छल-कपट, अहङ्कार, अन्तःपुर के छल-छद्मपूर्ण व्यवहार एवं स्त्रियों की चरित्रहीनता आदि दोषों का भी वर्णन है।

* इसमें नैतिक एवं उपदेशात्मक शिक्षा का वर्णन पद्यों में किया गया है तथा कथाभाग का वर्णन गद्य में किया गया है।

पञ्चतन्त्र का संक्षिप्त कथासार

* पञ्चतन्त्र पाँच तन्त्रों में निबद्ध ग्रन्थ है। ये पाँच तन्त्र इस प्रकार हैं- **1.मित्रभेद 2.मित्रसम्प्राप्ति**

3. काक-उलूकीय 4.लब्धप्रणाश 5.अपरीक्षित कारक

* पञ्चतन्त्र में कथा से पूर्व दस श्लोकों के माध्यम से भूमिका भाग वर्णित है।

पञ्चतन्त्र का कथानक

कथामुख या भूमिका-

* मित्रभेद की प्रधान कथा के पूर्व- शास्त्रज्ञान से शून्य, विवेकहीन एवं दुर्व्यसनों से युक्त अपने मूर्ख पुत्रों से दुःखी महिलारोप्य के राजा अमरशक्ति की कथा है। राजा अपने पुत्रों को विष्णुशर्मा को सौंप देते हैं।
* विष्णुशर्मा प्रतिज्ञा लेते हैं कि वे राजा के तीनों मूर्खपुत्रों को छः महीने में राजनीति एवं नीतिशास्त्र में पारङ्गत बना देंगे।

1.मित्रभेद-

* इस तन्त्र में एक मुख्यकथा तथा 22 उपकथाएँ हैं।
* मुख्य कथा में पिङ्गलक नामक शेर (राजा) तथा संजीवक नामक बैल घनिष्ट मित्र थे।
* करटक एवं दमनक (दोनों मन्त्री) नामक सियारों ने उनमें फूट पैदा कर दिये और सिंह द्वारा बैल की हत्या करवा दी।
* अपने रक्तरञ्जित पञ्जों को देखकर सिंह को पश्चात्ताप होता है तब दमनक शृगाल अनेक युक्तियों से सिंह को सान्त्वना देता है और प्रधानमन्त्री पद पर बना रहता है।
* मित्रों के मध्य भेद उत्पन्न करना ही इस तन्त्र का मुख्य उद्देश्य है।

2. मित्रसम्प्राप्ति-

* इस तन्त्र में एक मुख्य कथा तथा सात उपकथाएँ हैं। मुख्य कथा इस प्रकार है-
* चित्रग्रीव नामक कबूतरों का राजा अपने दल सहित शिकारी के जाल में फँस जाता है।
* चित्रग्रीव पूरे समूह के साथ जाल लेकर उड़ जाता है अपने मित्र हिरण्यक नामक चूहे से सबका बन्धन कटवाता है।
* लघुपतनक नामक कौआ की चूहे एवं उसके पुराने मित्र मन्थरक नामक कछुए के साथ मित्रता होती है। हिरण्यक चूहा उसे अपना पहला घर छोड़ने का कारण बताता है।
* चित्राङ्ग नामक मृग, चूहे का चौथा मित्र बन जाता है। एक दिन वह मृग जाल में फँस जाता है और अपने मित्रों द्वारा मुक्त कराया जाता है।
* अन्त में मित्र का माहात्म्य बतलाकर तन्त्र समाप्त होता है।

3. काक-उलूकीय-

* इस ग्रन्थ में एक मुख्य कथा एवं 17 उपकथाएँ हैं। इसमें विग्रह (युद्ध) तथा सन्धि का वर्णन है।
* इसमें मुख्य कथा के अन्तर्गत- कौवों के राजा मेघवर्ण एवं उल्लुओं के राजा अरिमर्दन की कथा है।
* रात्रि के समय में उलूकराज चोंच मार-मारकर कौवों को मार डालता था।
* इससे त्रस्त होकर स्थिरजीवी नामक कौवे का मन्त्री एक उपाय अपने राजा को बताता है।
* वह स्थिरजीवी नामक कौआ बुद्धिपूर्वक उलूकराज से मित्रता करता है।
* वह कौआ उलूकराज के बगल ही अपना घोंसला बनाता है और बाद में उसमें आग लगाकर उल्लू शत्रुओं का नाश कर देता है।
* इसके बाद मेघवर्ण नामक कौवों का राजा अपने मन्त्री को पुरस्कार देकर निश्चिन्त होकर रहने लगा।

4. लब्धप्रणाश-

* इसमें एक मुख्य कथा एवं ग्यारह उपकथाएँ हैं।
* इसमें मुख्य कथा के रूप में कराल-मुख नामक मगर एवं रक्तमुख नामक वानर की कथा है।
* बन्दर प्रतिदिन मगर को जम्बूफल (जामुन) देता था।
* मगर उन जामुनों को स्वयं भी खाता और घर ले जाकर अपनी पत्नी को भी खिलाता।
* मगर की पत्नी बन्दर का दिल खाना चाहती है।
* मगर के साथ जा रहा बन्दर बीच रास्ते से यह कहकर लौट आता है कि 'मेरा दिल तो पेड़ पर छूट गया है।'
* इस प्रकार बन्दर की जान बच जाती है और मगर उसका मुँह देखता रह जाता है।
* मूर्खता के कारण हाथ में आयी हुई वस्तु भी निकल जाती है।
* अन्त में पुरुषार्थजन्य लक्ष्मी का माहात्म्य बतलाकर तन्त्र समाप्त हो जाता है।

5. अपरीक्षितकारक-

* इस पाँचवें तन्त्र के अन्तर्गत एक मुख्यकथा तथा 14 उपकथाएँ हैं।
* इसमें मुख्य रूप से भली-भाँति विचारपूर्वक सुपरीक्षित कार्य करने की नीति पर बल दिया गया है।
  मुख्य कथा का सार इस प्रकार है-
* एक ब्राह्मणी और एक नेवले की घनिष्ठ मित्रता होती है।
* नेवला ब्राह्मणी के बच्चे की सर्प से रक्षा करता है।
* एक ब्राह्मणी ने उस नेवले की यह समझकर हत्या कर दी कि नेवले ने उसके बच्चे को मार डाला।

* बाद में ब्राह्मणी अपने किये पर पश्चात्ताप करती है। अतः यह कथन सार्थक हुआ-

'बिना विचारे जो करे सो पाछे पछताय'

पञ्चतन्त्र का अन्तिम श्लोक

मन्त्रे, तीर्थे, द्विजे, देवे, दैवज्ञे, भेषजे, गुरौ।
यादृशी भावना यस्य, सिद्धिर्भवति तादृशी॥5/98॥

भावार्थ- मन्त्र में, तीर्थ में, ब्राह्मण में, देवता में, ज्योतिषी में, औषधि में, तथा गुरु में जिसकी जैसी भावना (श्रद्धा) होती है, उसको उनसे वैसा ही फल मिलता है और उसको वैसी ही सिद्धि भी होती है। अतः इन सबमें पूर्ण श्रद्धा ही कल्याण करने वाली है।

पञ्चतन्त्र की प्रमुख सूक्तियाँ

1. **कोऽर्थः पुत्रेण जातेन यो न विद्वान्न भक्तिमान्। (कथामुख/6)**

भावार्थ– इसी प्रकार उस पुत्र से क्या लाभ जो न विद्वान् हो और न ही माता-पिता गुरु एवं इष्ट देवों में प्रेम करने वाला हो।

2. **अनन्तपारं किल शब्दशास्त्रं स्वल्पं तथाऽऽयुबहवश्च विघ्नाः। (कथामुख/9)**

भावार्थ– शब्दशास्त्र (व्याकरण) का निश्चित कहीं अन्त नहीं है।

3. **जायन्ते विरला लोके जलदा इव सज्जनाः–(1/30)**

भावार्थ– उपकारी सज्जन तो कोई विरले ही होते हैं।

4. **पण्डितोऽपि वरं शत्रुर्न मूर्खो हितकारकः– (1/450)**

भावार्थ– कहा भी है यदि विद्वान् अपना शत्रु भी हो तो अच्छा, किन्तु मूर्ख हितकारी भी हो तो वह ठीक नहीं है।

5. **मूर्खाणां पण्डिता द्वेष्या निर्धनानां महाधनाः। 1/(449)**

भावार्थ– इसी प्रकार मूर्खों के लिए विद्वान् धनहीनों के लिए धनी निन्दा के पात्र हैं।

6. **नानाशास्त्रविचक्षणं च पुरुषं निन्दन्ति मूर्खाः सदा।**

भावार्थ– मूर्ख लोग विविध शास्त्रों के विशेषज्ञ पुरुष की निन्दा सदा करते रहते हैं। **(1/448)**

7. **न तत्र विद्यते दिव्यं किं पुनर्यत्र देवताः।(1/437)**

भावार्थ– जहाँ देवता साक्षी हों तो क्या पूछने की बात है?

8. **मन्त्रे तीर्थे द्विजे देवे दैवज्ञे भेषजे गुरौ।**

यादृशी भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी।(5/98)

भावार्थ– मन्त्र साधना में तीर्थयात्रा में तीर्थस्थान एवं ब्राह्मणों की सेवा आदि में देवताओं के विषय में भविष्यवक्ता ज्योतिषियों में औषधियों में तथा गुरु में जिस व्यक्ति की जैसी श्रद्धा होती है उसके अनुसार ही उसको फल भी मिलता है।

9. **सर्वनाशे समुत्पन्ने अर्द्धं त्यजति पण्डितः। (5/41)**

भावार्थ– सर्वनाश की स्थिति उत्पन्न होने पर समझदार व्यक्ति आधा भाग छोड़कर शेष भाग को अपना लेता है।

10. **उत्सवे व्यसने प्राप्ते दुर्भिक्षे शत्रुसंकटे।**

राजद्वारे श्मशाने च यस्तिष्ठति सबान्धवः। (5/40)

भावार्थ– उत्सव के समय आपत्तिकाल में दुर्भिक्ष पड़ने पर शत्रुओं से घिर जाने पर, राजसभा में और श्मशान में जो साथ रहता है, वही बन्धु होता है।

11. **अपि शास्त्रेषु कुशला लोकाचारविवर्जिताः**

सर्वे ते हास्यतां यान्ति यथा ते मूर्खपण्डिताः। (5/38)

भावार्थ– शास्त्रों में कुशल रहने पर भी लोकव्यवहार से अनभिज्ञ व्यक्ति उसी प्रकार उपहास के पात्र होते हैं जैसे वे लोकव्यवहार से हीन मूर्ख पण्डित बने थे।

12. **अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्।**

उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्। (5/38)

भावार्थ– यह अपना है और यह पराया है इस प्रकार का विचार संकुचित भावना के व्यक्ति करते हैं। उदार व्यक्तियों के लिए समस्त संसार ही अपना परिवार है।

13. **अतिलोभो न कर्त्तव्यो लोभं नैव परित्यजेत्। (5/2)**

भावार्थ– अधिक लालच नहीं करना चाहिए और सर्वदा लालच का त्याग भी नहीं करना चाहिए।

14. **सम्पत्तौ च विपत्तौ च महतामेकरूपता। (2/7)**

भावार्थ– सम्पत्ति और विपत्ति के समय महान् पुरुष समान भाव से रहते हैं।

15. **विद्वत्त्वं च नृपत्त्वं च नैव तुल्यं कदाचन।**

स्वदेशे पुज्यते राजा विद्वान्सर्वत्र पूज्यते॥ (2/58)

भावार्थ— विद्वत्ता और राजत्व कभी भी समान नहीं हो सकते क्योंकि राजा अपने ही देश में आदर पाता है परन्तु विद्वान् का सब जगह सत्कार होता है।

16. अतितृष्णा न कर्त्तव्या तृष्णां नैव परित्यजेत्। (2/80)

भावार्थ— तृष्णा अधिक नहीं करनी चाहिए और तृष्णा को सर्वथा छोड़ना भी नहीं चाहिए।

17. आयुःकर्म च वित्तं च विद्या निधनमेव च

पञ्चैतानि हि सृज्यन्ते गर्भस्थस्यैव देहिनः। (2/84)

भावार्थ— आयु, काम, धन, विद्या और मृत्यु ये पाँच गर्भ में स्थित ही प्राणी के निश्चित कर दिये जाते हैं।

18. महाजनस्य सम्पर्कः कस्य नोन्नतिकारकः। (3/60)

भावार्थ— यदि उत्तम पुरुष का आश्रय मिले तो करना ही क्या कहा भी गया है बड़े पुरुष का संसर्ग किसकी उन्नति का कारण नहीं होता।

19. बुभुक्षितः किं न करोति पापं क्षीणा जना निश्करुणा भवन्ति।

भावार्थ— भूखा मनुष्य कौन सा पाप नहीं करता (भूख मिटाने के लिए सब ही पाप करने को उद्यत हो जाता है) दरिद्र पुरुष निर्दयी होते हैं। **(4/16)**

20. एकेनापि सुधीरेण सोत्साहेन रणं प्रति। (4/42)

भावार्थ— एक भी पुरुष के धैर्यशाली और उत्साही होने पर सारी सेना युद्ध में उत्साहित हो जाती है।

21. न स्वल्पस्य कृते भूरि नाशयेन्मतिमान्नरः। (1/19)

भावार्थ- बुद्धिमान् मनुष्य को चाहिए कि थोड़े के लिए अपने विशेष लाभ को नष्ट न करें।

22. अरक्षितं तिष्ठति दैवरक्षितं, सुरक्षितं दैवहतं विनश्यति।

भावार्थ- अनाथ प्राणी भी जिसका कोई भी रक्षक नहीं है, भयङ्कर वन में भी आनन्द से जीवन व्यतीत कर सकता है। **(1/20)**

23. पुत्रीति जाता महतीह चिन्ता। (1/222)

भावार्थ- पुत्री के जन्मते ही बड़ी भारी चिन्ता हो जाती है।

24. यस्य बुद्धिर्बलं तस्य। (1/237)

भावार्थ- जिस पुरुष के पास बुद्धि है, वही बलवान् है।

25. यस्मिन्कुले यः पुरुषः प्रधानः स सर्वयत्नैः परिरक्षणीयः।

भावार्थ- जिस कुल में जो पुरुष प्रधान है उसकी तो पूरे प्रयत्न से ही रक्षा करनी चाहिए। **(1/314)**

26. त्याज्यं न धैर्यं विधुरेऽपि काले। (1/345)

भावार्थ- घोर विपत्तिकाल में भी मनुष्य को धैर्य का परित्याग नहीं करना चाहिए।

27. यो न वेत्ति गुणान्यस्य न तं सेवेत पण्डितः। (1/381)

भावार्थ- जो मालिक नौकर के गुणों को न समझे, उस भृत्य को उसकी सेवा और नौकरी छोड़ देनी चाहिए।

28. त्यजदेकं कुलस्याऽर्थे। (1/386)

भावार्थ- यदि किसी एक बुरे और दुष्ट को छोड़ने से बहुतों की भलाई और हित होता हो तो उस एक को छोड़ देना चाहिए।

29. उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मी। (1/135)

भावार्थ- उद्योगी (कर्मनिष्ठ) पुरुष के पास ही लक्ष्मी आती हैं।

30. मातृवत् परदाराणि परद्रव्याणि लोष्ठवत्। (1/435)

भावार्थ- जो धर्मात्मा और धर्मबुद्धि हैं वे पराई स्त्री को माता की तरह और पराये धन को मिट्टी के ढेले की तरह समझते हैं।

31.उपायं चिन्तयेत्प्राज्ञस्तथापायं च चिन्तयेत्।1/439

भावार्थ- बुद्धिमान् मनुष्य को चाहिए कि- उपाय सोचने के साथ ही साथ, अपाय (हानि) की भी पहले से ही चिन्ता कर लें।

महत्त्वपूर्ण तथ्य-

* आरम्भिक जीवन में भाषा-शैली की शिक्षा के साथ व्यवहार कुशलता की शिक्षा पाने के लिए पञ्चतन्त्र जैसा ग्रन्थ विश्व-साहित्य में नहीं हैं।
* पञ्चतन्त्र के 250 संस्करण विश्व की 50 भाषाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। इनमें तीन चौथाई भाषाएँ विदेशी हैं।
* पञ्चतन्त्र में नीतिकथाओं का संकलन है, इनका उद्देश्य मनुष्य को आदर्शवादी और लोकव्यवहारवादी बनाना है।
* पञ्चतन्त्र को सम्पूर्ण अर्थशास्त्र का सार भी कहा गया है।
* कथा के पात्र मनुष्य न होकर जीव-जन्तु या पशु-पक्षी हैं अतः ये कथाएँ धर्म, जाति, व्यक्ति, राष्ट्र और सभी प्रकार की संकीर्णताओं से ऊपर उठकर मानवमात्र की सम्पत्ति हो गयी हैं। यही कारण है कि-
* Great short stories of the world* नामक आधुनिक कहानी संग्रह में पञ्चतन्त्र की कहानियों को प्रमुख स्थान प्राप्त हुआ है।
* बाइबिल के बाद पञ्चतन्त्र का ही संसार में सर्वाधिक प्रचार है।

पञ्चतन्त्र के प्रमुख अनुवाद

1. सबसे महत्त्वपूर्ण हकीम बुर्जोई का अनुवाद है जो पहलवी भाषा में है। किन्तु अब प्राप्त नहीं है।
2. बुड ने पञ्चतन्त्र का पहलवी भाषा से सीरियन भाषा में अनुवाद किया।
3. अब्दुल्ला इब्नल मोवफ्फा ने पञ्चतन्त्र का अरबी अनुवाद किया। अरबी अनुवाद का नाम 'कलिलह-दिमनह' है। इसी अरबी संस्करण से ही पश्चिमी संस्करण निकले हैं।

अन्य अनुवाद

1. **सिमियन कृत-** ग्रीक (यूनानी) अनुवाद
2. **गियुलियो नूति कृत-** इटालियन अनुवाद
   ग्रीक अनुवाद से ही 2 लैटिन, 1 जर्मन एवं कई स्लाव भाषा में अनुवाद हुए।
3. **रब्बी जोइल कृत-** अरबी से हिब्रू अनुवाद
4. **जान ऑफ केपुआ कृत-** लैटिन अनुवाद
5. **एन्थानियस फान फर कृत-** जर्मन अनुवाद
   इससे डैनिश, आइसलैण्डिक और डच अनुवाद हुए।
6. **सर टामस नार्थ कृत-** अंग्रेजी अनुवाद
7. **अबुल-मआली नसरल्ला-** अरबी अनुवाद
8. **अनवारि सुहेली कृत-** फारसी अनुवाद
   इसी से तुर्की, फ्रेंच, डच, हंगारियन, जर्मन और मलय भाषाओं में अनुवाद हुए।

हितोपदेशः

- हितोपदेश के लेखक– **नारायण पण्डित**
- नारायण पण्डित बंगाल के राजा ''धवलचन्द्र'' के आश्रित कवि थे, तथा राजा के आदेश पर ही इन्होनें यह हितोपदेश सङ्कलित किया-
  इसका साक्षात् प्रमाण स्वयं ही उनके द्वारा रचित हितोपदेश के अन्तिम श्लोक में प्राप्त होता है-

श्रीमान् धवलचन्द्रोऽसौ
जीयान्माण्डलिको रिपून् ।
येनायं संग्रहो यत्ना
ल्लेखयित्वा प्रचारितः ॥

- हितोपदेश **14वीं** शताब्दी की रचना है।
- हितोपदेश **4 परिच्छेदों** में विभाजित है। इसमें **43** कथाएँ हैं, **4 मुख्य + 39 उपकथाएँ** हैं।
- इस तरह कुल **43 कथाएँ** हैं। **4 कथाएँ** प्रत्येक भाग की मुख्य कथाएँ हैं।
- हितोपदेश में **25 कथाएँ** पञ्चतन्त्र से ली गयी है।
- पञ्चतन्त्र को छोड़ दे तो केवल **17** कहानियाँ नई हैं।
- हितोपदेश का आधारग्रन्थ पञ्चतन्त्र है, ग्रन्थ के आरम्भ में ही इसका सुस्पष्ट उल्लेख मिलता है।
  ''पञ्चतन्त्रात् तथाऽन्यस्माद् ग्रन्थादाकृष्य लिख्यते''
- नारायण पण्डित द्वारा पञ्चतन्त्र के अतिरिक्त अन्य ग्रन्थों से भी सुभाषित पद्य ग्रहण किया गया हैं, जिनमें से **''कामन्दकीय नीतिसार''** प्रमुख है।
- प्रस्ताविका में पाटलिपुत्र के राजा सुदर्शन के **4 मूढ़** पुत्रों को ''विष्णु शर्मा'' द्वारा नीतिशिक्षा देने की कथा है।
- इसमें **4 परिच्छेद** क्रमशः इस प्रकार है–
  1. मित्रलाभः 2. सुहृद्भेदः 3. विग्रहः 4. सन्धिः

क्र.सं.	परिच्छेदनाम	मुख्यकथा	उपकथा	श्लोक सं.
1.	मित्रलाभः	काक, कूर्म, मृग व चूहे की मित्रता	8	212
2.	सुहृद्भेदः	शेर व बैल की मित्रता तुड़वाने की कथा	9	184
3.	विग्रहः	हंस व मोरों के युद्ध की कथा		149
4.	सन्धिः	हंस व मोरों राजाओं में सन्धि की कथा	12	134
	प्रस्ताविका	राजा सुदर्शन के मूर्ख पुत्रों की कथा	1	47
				726

- हितोपदेश में **726** पद्य हैं।
- इसकी भाषाशैली सरल, सुबोध एवं उपेदशात्मक तथा प्रेरणाप्रद है।
- इसमें संस्कृतनिष्ठ गद्य तथा पद्य का मिश्रित रूप से प्रयोग किया गया है।
- प्रत्येक खण्ड के अन्त में शिव से अनुग्रह की कामना करने वाले आशीर्वादात्मक वचन प्राप्त होते हैं।
- पशु-पक्षियों के साधारण कहानियों द्वारा इसमें व्यावहारिक जीवन के आदर्श एवं सिद्धान्त प्रस्तुत किये गये हैं।
- इसके प्रस्ताविका में मंगलाचरण के रूप में भगवान् शङ्कर के कृपा-प्रसाद की कामना की गयी है।

सिद्धिः साध्ये सतामस्तु प्रसादात्तस्य धूर्जटेः ।
जाह्नवी फेनलेखेव यन्मूर्ध्नि शशिनः कला ॥

अर्थ– जिसके मस्तक पर गङ्गा के फेन की रेखा की भाँति (पतली एवं श्वेत) चन्द्रमा की कला (विराजमान) है, उस भगवान् शिव की कृपा से सज्जनों के अभीष्ट कार्य में सफलता हो।

मङ्गलाचरण

अजरामरवत् प्राज्ञो विद्यामर्थं च चिन्तयेत् ।
गृहीत इव केशेषु मृत्युना धर्ममाचरेत् ॥3॥

अर्थ- बुद्धिमान् व्यक्ति अजर-अमर की भाँति विद्या धनसञ्चय का विचार करें। (किन्तु) मृत्यु ने बाल पकड़ रखे हैं, इस प्रकार (सोचकर) धर्म-सञ्चय करें।

विद्या ददाति विनयं विनयाद् याति पात्रताम् ।
पात्रत्वाद् धनमाप्नोति धनाद् धर्मस्तः सुखम् ॥6॥

अर्थ- विद्या (मनुष्य को) विनय प्रदान करती है, विनय से योग्यता मिलती है, योग्यता से धन प्राप्त होता है, धन से धर्म-कार्य होते हैं और इसके बाद (मनुष्य) सुख प्राप्त करता है।

विद्या शस्त्रस्य शास्त्रस्य द्वे विद्ये प्रतिपत्तये।
आद्या हास्याय वृद्धत्वे द्वितीयाद्रियते सदा ॥7॥

अर्थ- शस्त्र-विद्या और शास्त्र-विद्या, ये दोनों विद्यायें (मनुष्य की) उन्नति के लिए हैं। (इनमें से) पहली (अर्थात् शस्त्र-विद्या) बुढ़ापे में उपहास करती है किन्तु दूसरी (अर्थात् शास्त्र विद्या) सदैव आदर प्राप्त कराती है।

अनेकसंशयोच्छेदि परोक्षार्थस्य दर्शकम् ।
सर्वस्य लोचनं शास्त्रं यस्य नास्त्यन्ध एव सः ॥10॥

अर्थ- अनेक शङ्काओं को दूर करने वाला, गुप्त अर्थ को दिखलाने वाला, सभी का नेत्र, शास्त्र जिसके पास नहीं है, वह अन्धा ही है (अर्थात् भौतिक नेत्र होते हुए भी शास्त्रज्ञान से रहित जन अन्धा ही है)।

वरमेको गुणी पुत्रो न च मूर्खशतान्यपि ।
एकश्चन्द्रस्तमो हन्ति न च तारागणा अपि च ॥18॥

अर्थ- सौ मूर्ख पुत्रों की अपेक्षा गुणवान् पुत्र अकेला भी अच्छा है। एक ही चन्द्रमा (रात के) अन्धकार को दूर करता है किन्तु सभी तारे मिलकर भी (उसे) नहीं (दूर कर पाते)।

अनभ्यासे विषं विद्या अजीर्णे भोजनं विषम् ।
विषं सभा दरिद्रस्य वृद्धस्य तरुणी विषम् ॥23॥

अर्थ- अभ्यास न करने से विद्या, अपच में भोजन, दरिद्र के लिए सभा और बुड्ढे मनुष्य की युवती (पत्नी) विषतुल्य हैं।

आहारनिद्राभयमैथुनञ्च
सामान्यमेतत्पशुभिर्नराणाम् ।
धर्मो हि तेषामधिको विशेषो
धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः ॥25॥

अर्थ- भोजन, नींद, भय और स्त्रीसम्भोग- ये मनुष्यों और पशुओं में एक समान होते हैं। धर्म ही मनुष्यों का एक अतिरिक्त विभेदक तत्त्व है (अन्यथा) धर्म से रहित मनुष्य भी पशुओं के ही समान हैं अर्थात् फिर उन दोनों में कोई अन्तर नहीं है।

धर्मार्थकाममोक्षाणां यस्यैकोऽपि न विद्यते ।
अजागलस्तनस्येव तस्य जन्म निरर्थकम् ॥

अर्थ- जिस व्यक्ति के पास धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष में से एक भी नहीं है उसका जन्म लेना बकरी के गले की लटकती हुई झिल्ली के समान व्यर्थ है।

आयुः कर्म च वित्तं च विद्या निधनमेव च ।
पञ्चैतान्यपि सृज्यन्ते गर्भस्थस्यैव देहिनः ॥27॥

अर्थ- आयु, भाग्य, धन, विद्या और मृत्यु-ये पाँचों ही (उसी समय) बना दी जाती हैं (अर्थात् निश्चित कर दी जाती है) जबकि प्राणी गर्भ में ही रहता है।

यथा ह्येकेन चक्रेण न रथस्य गतिर्भवेत् ।
तथा पुरुषकारेण विना दैवं न सिद्ध्यति ॥ 29॥

अर्थ- जैसे अकेले (केवल एक) पहिए से रथ नहीं चल सकता, उसी प्रकार पौरुष के बिना भाग्य भी सिद्ध नहीं होता। (अर्थात् भाग्य तभी साथ देता है जब स्वयं प्रयत्नशील रहा जाए)।

उद्यमेन हि सिद्ध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः ।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः ॥36॥

अर्थ- कार्य प्रयत्न करने से सफल (पूर्ण) होते हैं। न कि केवल सोचने या इच्छा करने मात्र से। सोए हुए सिंह के मुँह में पशु स्वयमेव नहीं प्रवेश कर जाते हैं।

माता शत्रुः पिता वैरी येन बालो न पाठितः ।
न शोभते सभामध्ये हंसमध्ये बको यथा ॥38॥

अर्थ- जिसने बालक को पढ़ाया नहीं, वह माता शत्रु है और पिता (भी) शत्रु है। वह बालक भी (विद्वानों की) सभा में उसी प्रकार सुशोभित नहीं होता जैसे हंसों के बीच बगुला।

''कीटोऽपि सुमनःसङ्गादारोहति सतां शिरः ।
अश्मापि याति देवत्वं महद्भिः सुप्रतिष्ठितः ॥ 45॥

अर्थ- फूल के साथ कीड़ा भी सज्जनों के सिर पर चढ़ जाता है। महानुभावों के द्वारा सुप्रतिष्ठित होकर पत्थर भी देवता बन जाता है।

''काव्यशास्त्रविनोदेन कालो गच्छति धीमताम् ।
व्यसनेन च मूर्खाणां निद्रया कलहेन वा

अर्थ- ''बुद्धिमानों का समय काव्यशास्त्रादि-विनोद से बीतता है और मूर्खों का (समय) जुआ आदि दुर्व्यसन, नींद अथवा झगड़ा फसाद से (बीतता) है।

अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1-4) अंक

1. महाकवि कालिदास का परिचय

- **पत्नी** – विद्योत्तमा
- **श्वसुर** – शारदानन्द
- **मित्र** – लङ्का के राजा कुमारदास
- **समय** – ईसापूर्व प्रथम शताब्दी
- **जन्मस्थान** – उज्जयिनी (काश्मीरी/बंगाली)
- **आश्रयदाता** – चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य
- **जाति/गोत्र** – ब्राह्मण
- **रचनायें कालक्रम की दृष्टि से**– 1. ऋतुसंहार (गीतिकाव्य), 2. कुमारसम्भवम् (महाकाव्य), 3. मालविकाग्निमित्रम् (नाटक), 4. विक्रमोर्वशीयम् (त्रोटक), 5. मेघदूतम् (खण्डकाव्य), 6. रघुवंशम् (महाकाव्य), 7. अभिज्ञानशाकुन्तलम् (नाटक)
- **उपासक** – शिव के
- **प्रिय छन्द** – उपजाति/अनुष्टुप्
- **प्रिय अलङ्कार** – उपमा
- **कालिदास की रीति एवं गुण** – वैदर्भी रीति एवं प्रसादगुण
- **कालिदास का प्रिय रस** – शृङ्गार रस
- **कालिदास की अन्य कृतियाँ**–(i) कालीस्तोत्र, (ii) गङ्गाष्टक, (iii) ज्योतिर्विदाभरण, (iv) राक्षसकाव्य, (v)श्रुतबोध

कालिदासीय जीवन के कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य

- काली देवी की उपासना से विद्या की प्राप्ति।
- विद्याप्राप्ति के बाद कालिदास का कथन–
  'अनावृतकपाटं द्वारं देहि' (दरवाजा खोलो)
- इसके उत्तर में पत्नी विद्योत्तमा का कथन–
  'अस्ति कश्चित् वाग्विशेषः' (लगता है कोई विद्वान् है)
- **'अस्ति' से कुमारसम्भवम्** – ''अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा...."
- **'कश्चित्' से मेघदूतम्** – ''कश्चित् कान्ता विरहगुरुणा...."
- **'वाग्' से रघुवंशम्** – ''वागर्थाविव सम्पृक्तौ....."
- **विक्रमादित्य की सभा में 9 रत्न** थे, जिसमें से एक कालिदास भी थे–

धन्वन्तरि-क्षपणकामरसिंह -शङ्कु-
वेतालभट्ट-घटकर्पर-कालिदासाः।
ख्यातो वराहमिहिरो नृपतेः सभायां
रत्नानि वै वररुचिर्नव विक्रमस्य॥

(ज्योतिर्विदाभरण 22-10)

- एक किंवदन्ती के अनुसार धारा के राजा भोज के प्रधानकवि कालिदास थे।
- एक किंवदन्ती के अनुसार कालिदास का अन्तिम समय लंका के महाराज कुमारदास के यहाँ बीता, वहाँ धन के लोभ में एक वेश्या ने उनकी **हत्या करा दी**।
- कालिदास ने वेद, दर्शन, उपनिषद्, रामायण, महाभारत, गीता, पुराण, आयुर्वेद, धनुर्वेद, सङ्गीतशास्त्र, ज्योतिष, व्याकरण, छन्दःशास्त्र, काव्यशास्त्र आदि का गम्भीर अध्ययन किया था।
- बाद में राजकवियों को 'कालिदास' कहने की परम्परा चल पड़ी। **राजशेखर** ने ऐसे तीन कालिदासों का उल्लेख किया है–

एकोऽपि जीयते हन्त कालिदासो न केनचित्।
शृङ्गारे ललितोद्गारे कालिदासत्रयी किमु॥

- **कालिदास की उपाधियाँ**–(i) दीपशिखा कालिदास (ii) रघुकार (iii) कविकुलगुरु (iv) कविताकामिनीविलास (v) उपमासम्राट्
- महाकवि कालिदास ने मालविकाग्निमित्र की प्रस्तावना में **''प्रथितयशसां भाससौमिल्ल....."** के द्वारा भास, सौमिल्ल आदि अपने पूर्ववर्ती कवियों को सादर स्मरण किया है।

कालिदास की प्रशस्तियाँ

1. निर्गतासु न वा कस्य कालिदासस्य सूक्तिषु।
   प्रीतिर्मधुरसान्द्रासु मञ्जरीष्विव जायते।
   – बाणभट्ट-हर्षचरित
2. साकूतमधुरकोमलविलासिनीकण्ठकूजितप्राये।
   शिक्षासमयेऽपि मुदे रतलीला-कालिदासोक्ती।।
   – गोवर्धनाचार्य-आर्यासप्तशती–35
3. कविकुलगुरुः कालिदासो विलासः – **जयदेव-प्रसन्नराघवम्**
4. लिप्ता मधुद्रवेणासन् यस्य निर्विषया गिरः।
   तेनेदं वर्त्म वैदर्भं कालिदासेन शोधितम्।।
   – दण्डी-अवन्तिसुन्दरीकथा
5. अस्पृष्टदोषा नलिनीव दृष्टा, हारावलीव ग्रथिता गुणौघैः।
   प्रियाङ्कपालीव प्रकामहृद्या, न कालिदासादपरस्य वाणी।।
   – श्रीकृष्ण
6. ख्यातः कृतीसोऽपि च कालिदासः, शुद्धा सुधा स्वादुमती च यस्य।
   वाणीमिषाच्चन्द्रमरीचिगोत्रसिन्धोः परं पारमवाप कीर्तिः।।
   – सोड्ढल (उदयसुन्दरी कथा)
   अमृतेनेव संसिक्ताश्चन्दनेनैव चर्चिताः।
   चन्द्रांशुभिरिवोद्घृष्टाः कालिदासस्य सूक्तयः।।
   – जयन्त-न्यायमञ्जरी
7. एकोऽपि जीयते हन्त कालिदासो न केनचित्।
   शृङ्गारे ललितोद्गारे कालिदासत्रयी किमु।।
   –राजशेखर-सूक्तिमुक्तावली
8. वैदर्भी कविता स्वयं वृतवती श्रीकालिदासं वरम्। **–अज्ञात**
9. पुष्पेषु चम्पा नगरीषु काञ्ची, नदीषु गङ्गा नृवरेषु रामः।
   नारीषु रम्भा पुरुषेषु विष्णुः, काव्येषु माघः कविकालिदासः।।
   – घटखर्पर

10. महिषं दधि सशर्करं पयः कालिदासकविता नवं वयः।
शारदेन्दुरबला च कोमला स्वर्गशेषमुपभुञ्जते जनः।।
– आचार्य उद्भट

11. काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या 'शकुन्तला'।
तत्रापि च चतुर्थोऽङ्कः तत्र श्लोकचतुष्टयम्।। **– अज्ञात**

12. Wouldst thou the young year
blossoms and the fruits of its decline
And all by which the soul is charmed
enraptured, fearted, fed.
Wouldst thou the earth and heaven
itseff in one sole name combine?
I name the, O' Shakuntala
And all atonce is said. – **(Goethe)**

(संस्कृत-अनुवाद)

13. वासन्तं कुसुमं फलञ्च युगपद्, ग्रीष्मस्य सर्वं च यद्
यच्चान्यन्मनसो रसायनमतः सन्तर्पणं मोहनम्।
एकीभूतमभूतपूर्वमथवा स्वर्लोकभूलोकयोः
ऐश्वर्यं यदि वाञ्छसि प्रियसखे! शाकुन्तलं सेव्यताम्।।
– (जर्मन कवि गेटे का अनुवाद) **वी. वी. मिराशी**

14. अस्मिन्निति विचित्रकविपरम्परावाहिनि-संसारे–
कालिदासप्रभृतयो द्वित्राः पञ्चषा वा महाकवय इति गण्यन्ते।
– आचार्य आनन्दवर्धन

15. वैदर्भीरीतिसन्दर्भे कालिदासो विशिष्यते। **– अज्ञात**

16. उपमा कालिदासस्य **– उद्भट**

17. कालिदासस्य सर्वस्वमभिज्ञानशाकुन्तलम्।
तत्रापि च चतुर्थोऽङ्कः यत्र याति शकुन्तला।। **– अज्ञात**

18. श्रीकालिदासकविवर्य-सरस्वतीयं
किं वर्णयाम्यतितरां रसवाहिनीति।
यत् कालिका भगवती शुचिभावयोगाद्
यस्यामहो मुहुरनुग्रहमादधाति।। **– विठोबा अण्णा**

19. पुरा कवीनां गणना-प्रसङ्गे
कनिष्ठिकाधिष्ठित कालिदासः।
अद्यापि तत्तुल्यकवेरभावा-
दनामिका सार्थवती बभूव।। **– मल्लिनाथ**

20. रसभार-भारोद्भिन्नां भारतीममरादृते।
श्रीमतः कालिदासस्य विज्ञातुं कः क्षमः पुमान् **– स्थिरदेव**

21. स विजयतां रविकीर्तिः कविताश्रितकालिदासभारविकीर्तिः।।
– एहोल शिलालेख

22. कालिदासगिरां सारं कालिदासः सरस्वती।
चतुर्मुखोऽथवा साक्षाद् विदुर्नान्ये तु मादृशाः।। **– मल्लिनाथ**

23. सुवशा कालिदासस्य मन्दाक्रान्ता प्रवल्गाति।
– क्षेमेन्द्र (सुवृत्ततिलक)

24. भासयत्यपि भासादौ कविवर्गे जगत्त्रयम्।
के न यान्ति निबन्धारः कालिदासस्य दासताम्।। **–अज्ञात**

25. ``Kalidas may be considered as the brightest star in the firmament of indian artificial poetry"
– Prof. Lassen

26. कवयः कालिदासाद्याः कवयो वयमप्यमी।
पर्वते परमाणौ च पदार्थत्वं प्रतिष्ठितम्।। **– अज्ञात**

27. वाल्मीकिमिव सभासं यशःशरीरेण सर्वदा सन्तम्।
रसवद्वचनविकासं नमत कविं कालिदासं तम्।। **– अज्ञात**

28. कविरचलः कविरभिनन्दश्च कालिदासश्च।
अन्ये कवयः कपयश्चापलमात्रं परं दधाति।। **– अज्ञात**

29. कवयः कवयः कवयोऽपि च कालिदासाद्याः।
दृषदो भवन्ति दृषदाश्चिन्तामणयोऽपि हा दृषदः।। **– अज्ञात**

30. मेघे माघे गतं वयः। **– मल्लिनाथ**

31. कालिदासादीनामिव यशः। **– मम्मट**

32. धन्वन्तरिक्षपणकाऽमरसिंहशंकु-बेतालभट्ट घटकर्परकालिदासाः।
– ज्योतिर्विदाभरण

33. महाकविकालिदासं वन्दे वाग्देवतागुरुम्।
यज्ज्ञाने विश्वमाभाति दर्पणे प्रतिबिम्बितम्।। **– हलायुध**

34. क इह रघुकारे न रमते। **– आलोचक**

अभिज्ञानशाकुन्तलम् का परिचय

➢ **लेखक** – कालिदास
➢ **विधा** – नाटक
➢ **अङ्क** – 7 (सात)
➢ **प्रधानरस** – शृङ्गार (सम्भोगशृङ्गार)
➢ **कथानक** – राजा दुष्यन्त एवं शकुन्तला का परस्पर प्रेम, विरह एवं मिलन का वर्णन है।
➢ **प्रमुखपात्र** – दुष्यन्त (नायक), शकुन्तला (नायिका) कण्व, अनसूया, प्रियंवदा, माढव्य (विदूषक), गौतमी, शार्ङ्गरव, शारद्वत, हंसपदिका, वसुमती, मातलि, सानुमती, सर्वदमन (भरत), मारीच ऋषि, अदिति (दाक्षायणी), दुर्वासा, मेनका
➢ शाकुन्तलम् का उपजीव्य/आधारग्रन्थ है – **1. महाभारत के आदिपर्व का शकुन्तलोपाख्यान (68-74 अध्यायों में), 2. पद्मपुराण के स्वर्गखण्ड में भी यह कथा मिलती है।**
➢ अभि0 शाकुन्तलम् नाटक की रीति – **वैदर्भी रीति**
➢ वैदर्भीरीतिसन्दर्भे विशिष्यते – **कालिदासः**
➢ कालिदास के काव्यों में किस वृत्ति का विशेष प्रयोग है–**कैशिकी**
➢ कालिदास का प्रिय अलङ्कार – **उपमा** (उपमा कालिदासस्य)।
➢ अभि0शाकु0 के प्रथम अङ्क का नाम – **आश्रम प्रवेश**
➢ द्वितीय अङ्क का नाम – **आश्रम निवेश**
➢ तृतीय अङ्क का नाम – **मिलन अङ्क**

- चतुर्थ अङ्क का नाम – **विदा अङ्क**
- पञ्चम अङ्क का नाम – **प्रत्याख्यान अङ्क**
- षष्ठ अङ्क का नाम – **पश्चात्ताप अङ्क।**
- सप्तम अङ्क का नाम – **पुनर्मिलन अङ्क।**
- शाकुन्तलम् के **चतुर्थ अङ्क** में करुणरस का प्रयोग है।
- शकुन्तला का हस्तिनापुर (पतिगृह) गमन **चतुर्थ अङ्क में** वर्णित है।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् का नायक – **दुष्यन्त**
- दुष्यन्त **धीरोदात्त** कोटि का नायक है।
- राजा दुष्यन्त कहाँ का राजा है – **हस्तिनापुर**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् की नायिका – **शकुन्तला**
- शकुन्तला किस कोटि की नायिका है – **मुग्धा**
- शकुन्तला है – **शकुन्तभिः पक्षिभिः लालिता पालिता इति शकुन्तला**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् का मङ्गलाचरण है – **आशीर्वादात्मक**
- अभि० शाकुन्तलम् के मङ्गलाचरण में छन्द है – **स्रग्धरा**
- ''या सृष्टिः स्रष्टुराद्या....." इत्यादि श्लोक कहाँ का है – **अभि०शाकु० नाटक का मङ्गलाचरण**
- अभि०शाकु० के मङ्गलाचरण में किसकी स्तुति की गयी है – **अष्टमूर्ति शिव की**
- **''तत्रापि च चतुर्थोऽङ्कः''** से सम्बन्धित नाटक – **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**
- **''तत्र श्लोकश्चतुष्टयम्''** किससे सम्बन्धित है – **अभि० शाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क से**
- ''काव्येषु नाटकं रम्यम्'' इस वाक्य में किस नाटक का संकेत है – **अभिज्ञानशाकुन्तलम् का**
- दुष्यन्त का विनोदप्रिय मित्र – **माढव्य**
- अभि० शाकुन्तलम् का विदूषक – **माढव्य**
- शकुन्तला की दोनों सखियाँ – **1. अनसूया. 2. प्रियंवदा।**
- शकुन्तला के माता और पिता– **मेनका और ऋषि विश्वामित्र**
- शकुन्तला के पालक (धर्मपिता) पिता – **महर्षि कण्व**
- महर्षि कण्व के दो प्रमुख शिष्य – **शार्ङ्गरव और शारद्वत**
- दुष्यन्त और शकुन्तला का विवाह हुआ – **गान्धर्व विवाह**
- शकुन्तला को किसने शाप दिया – **ऋषि दुर्वासा ने**
- शकुन्तला को शाप का कारण – **अतिथि रूप में पधारे दुर्वासा ऋषि का तिरस्कार**
- शकुन्तला के शाप को जानने वाली – **प्रियंवदा और अनसूया**
- शकुन्तला को शाप मिला– **अभि०शाकु० के चतुर्थ अङ्क में**
- अभि०शा० में शाप की कल्पना का कारण – **प्रेम के आदर्शस्वरूप की स्थापना**
- शाप का प्रभाव किस अङ्क में दिखायी पड़ता है – **अभि०शा० के पञ्चम अङ्क में**
- राजा दुष्यन्त के पश्चात्ताप का वर्णन – **षष्ठ अङ्क में**
- राजा दुष्यन्त और शकुन्तला का पुनर्मिलन होता है – **अभि०शा० के सप्तम अङ्क में**
- हेमकूट पर्वत पर आश्रम है – **महर्षि मारीच का।**
- दुष्यन्त और शकुन्तला का पुनर्मिलन – **हेमकूट पर्वत के मारीच आश्रम में।**
- शकुन्तला की मुद्रिका प्राप्त होती है– **धीवर मीनपालक को**
- दुष्यन्त और शकुन्तला के पुत्र का नाम– **सर्वदमन (भरत)**
- अभि० शा० का प्रारम्भ होता है – **नान्दीपाठ से (या सृष्टिः स्रष्टुराद्या)**
- अभि०शा० का समापन होता है – **भरत वाक्य से (प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः....)।**
- कालिदास का सर्वस्वभूतग्रन्थ है – **अभिज्ञानशाकुन्तलम्। ''कालिदासस्य सर्वस्वमभिज्ञानशाकुन्तलम्।''**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के विषय में **पाश्चात्त्य विद्वान् गेटे** का कथन – Wouldst thou the young year's blossoms and the fruits of its decline, and all by which the soul is charmed, enraptured adapted, fed wouldst thou the earth and heaven it self in one name combined? I name the o shakuntala? And all at once is said.

संस्कृतरूपान्तरण

वासन्तं कुसुमं फलञ्च युगपद् ग्रीष्मस्य सर्वं च यद्,
यच्चान्यन्मनसो रसायनमतः सन्तर्पणं मोहनम्।
एकीभूतमभूतपूर्वमथवा स्वर्लोकभूलोकयोः,
ऐश्वर्यं यदि वाञ्छसि प्रियसखे! शाकुन्तलं सेव्यताम्॥

- कालिदास का विश्वप्रसिद्ध नाटक है – **अभिज्ञानशाकुन्तलम्।**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के सर्वप्रथम अंग्रेजी अनुवादक – **विलियम जोन्स**
- विलियम जोन्स ने **The last things** की भूमिका में कालिदास को **'भारत का शेक्सपियर'** कहा।
- **महाकवि गेटे** ने अपने सुप्रसिद्ध नाट्यकाव्य **'फाडस्ट'** में कालिदास के अभिज्ञानशाकुन्तलम् और नायिका शकुन्तला की भूरि-भूरि प्रशंसा की।
- कालिदास द्वारा विरचित तीन नाटक हैं – **1. मालविकाग्निमित्रम्** (प्रथमनाटक), **2. विक्रमोर्वशीयम्** (द्वितीय नाटक), **3. अभिज्ञानशाकुन्तलम्** (अन्तिम तथा सर्वश्रेष्ठ नाटक)
- कण्व द्वारा पोषित, मेनका और विश्वामित्र की पुत्री – **शकुन्तला**
- कालिदास के सभी नाटक हैं – **सुखान्त।**
- कालिदास की नाट्यकला का सर्वश्रेष्ठ निदर्शन है – **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**

- अभिज्ञानशाकुन्तलम् कथाविन्यास, चरित्र चित्रण, संवाद योजना, भाषा – शैली, अलंकार–योजना, रसयोजना, प्रकृतिचित्रण, सभी दृष्टियों से **सर्वश्रेष्ठ नाटक** है।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् में लगभग **196 पद्य** हैं।
- महाकवि कालिदास **रसमयी शैली** के आचार्य हैं।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् में भारतीय संस्कृति की महत्त्वपूर्ण तीन विशेषताओं – **त्याग, तपस्या, और तपोवन** का अच्छा चित्रण किया गया है।
- भरतमुनि के अनुसार नाटक का लक्षण – **''त्रैलोकस्यास्य सर्वस्य नाट्यं भावानुकीर्तनम्।''**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क का प्रारम्भ होता है – **विष्कम्भक से।**
- अनसूया और प्रियंवदा के पुष्पावचयन से प्रारम्भ होता है – **अभिज्ञानशाकुन्तलम् का चतुर्थ अङ्क।**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में वर्णन है – **शकुन्तला की विदाई का।**
- अन्तः प्रकृति और बाह्य प्रकृति का सुन्दर चित्रण किया गया है – **अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में।**
- दुष्यन्त और शकुन्तला की प्रणयगाथा वर्णित है – **अभिज्ञानशाकुन्तलम् में।**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् में लगभग **180 उपमाओं का प्रयोग** किया गया है।
- शकुन्तला **हेमकूट पर्वत पर महर्षि मारीच के आश्रम में** अपनी माता मेनका के साथ वियोग के दिन गुजारती है।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् में दुष्यन्त और शकुन्तला के प्रेम, वियोग और पुनर्मिलन का वर्णन है।
- इस नाटक की कथावस्तु राजा दुष्यन्त के द्वारा शकुन्तला को दिये गये अभिज्ञान (अँगूठी) के आस पास चक्कर लगाती है।
- राजा दुष्यन्त मृग का पीछा करते हुए किस आश्रम में प्रवेश करता है – **महर्षि कण्व के।**
- तीर्थयात्रा पर गए हुए कण्व ऋषि की अनुपस्थिति में ही राजा दुष्यन्त और शकुन्तला का गान्धर्व विवाह आश्रम में ही सम्पन्न हो जाता है।
- शकुन्तला को महर्षि कण्व किसके साथ पतिगृह (हस्तिनापुर) भेजते हैं – **शार्ङ्गरव, शारद्वत और गौतमी।**
- हस्तिनापुर जाते समय शकुन्तला की अगूँठी कहाँ गिर जाती है – **शचीतीर्थ में।**
- दुष्यन्त, शकुन्तला को पहचानने से क्यों इन्कार कर देता है – **दुर्वासा के शापवशात्।**
- शकुन्तला कण्व ऋषि के आश्रम के बाद किस आश्रम में निवास करती है – **ऋषि मारीच के आश्रम में।**
- बालक सर्वदमन (भरत) और शकुन्तला से दुष्यन्त की भेंट कहाँ होती है – **हेमकूटपर्वत स्थित ऋषि मारीच के आश्रम में।**
- महर्षि कण्व का आश्रम था – **मालिनी नदी के तट पर।**
- दुष्यन्त ने जब आश्रम में प्रवेश किया तब महर्षि कण्व कहाँ गए हुए थे – **सोमतीर्थ।**
- शकुन्तला को शाप देने वाले ऋषि थे – **दुर्वासा**
- मारीच ऋषि रहते थे – **हेमकूट पर स्थित आश्रम में**
- दुष्यन्त की कौन रानी संगीत का अभ्यास कर रही थी – **हंसपदिका**
- राजा दुष्यन्त की दो रानियाँ – **वसुमती और हंसपदिका**
- राजा दुष्यन्त किस रानी को अधिक प्यार करता है– **वसुमती**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् में किस गुण की प्रधानता है – **प्रसाद गुण**
- कालिदास के नाटकों का प्रतिपाद्य विषय है – **प्रसाद गुण**
- कालिदास के नाटकों का प्रतिपाद्य रस है – **शृङ्गार**
- नाट्यशास्त्र में नान्दी का अर्थ है – **मङ्गलाचरण**
- नाटकों में भरतवाक्य का प्रयोग होता है – **अन्त में**
- शकुन्तला का पालन पोषण हुआ था– **कण्व के आश्रम में**
- शकुन्तला पति के चिन्तन में कहाँ बैठी थी– **कुटिया में**
- राजा की मनःस्थिति जानने के लिए मेनका ने अपनी किस सखी को भेजा था– **सानुमती**
- जर्मनविद्वान् गेटे द्वारा प्रशंसित नाटक है – **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**
- शापनिवृत्ति के लिए ऋषि दुर्वासा से अनुनय विनय करने वाली सखी है– **प्रियंवदा**
- शकुन्तला की अमङ्गलशान्ति के लिए कण्व कहाँ गए थे – **सोमतीर्थ**
- शकुन्तला ने किस तीर्थ में जलवन्दना की थी – **शचीतीर्थ**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् का सर्वश्रेष्ठ अङ्क है – **चतुर्थ**
- वह महिला तपस्विनी जिसके साथ शकुन्तला हस्तिनापुर जाती है – **गौतमी**
- अग्निगर्भा शमी के समान है – **शकुन्तला**
- दुष्यन्त शकुन्तला की वैवाहिक विधि है – **गान्धर्व**
- हस्तिनापुर से शकुन्तला को मारीच आश्रम ले जाने वाली है – **एक दिव्य ज्योति (मेनका)**
- दुष्यन्त को देवासुर संग्राम की सूचना देने वाला है – **इन्द्र का सारथि मातलि**
- वह स्थान जहाँ स्वर्ग से लौटते समय दुष्यन्त रुकता है – **मारीच ऋषि का आश्रम**
- **'अपराजिता रक्षाकरण्डक'** से सम्बद्ध है – **सर्वदमन (भरत)**
- कालिदास के तीनों नाटकों में प्रधानता है – **शृङ्गार रस की।**
- शाकुन्तलम् का प्रारम्भ तथा अन्त होता है – **सम्भोग शृङ्गार से**
- **'राजन् आश्रममृगोऽयं न हन्तव्यो न हन्तव्यः'** किसने कहा – **तपस्वी वैखानस ने**

➤ भ्रमर से भयभीत शकुन्तला की रक्षा कौन करता है – **राजा दुष्यन्त**

➤ 'शकुन्तला ऋषि विश्वामित्र एवं मेनका की कन्या हैं' – यह बात राजा दुष्यन्त को किसने बताया – **अनसूया ने**

➤ हस्तिनापुर से महारानी का सन्देश लेकर कण्व के आश्रम में राजा दुष्यन्त के पास कौन जाता है – **करभक नाम का एक सेवक**

➤ शाकुन्तलम् के किस अङ्क में राजा दुष्यन्त विदूषक माढव्य को आश्रम से हस्तिनापुर वापस भेज देता है– **द्वितीय अङ्क में**

➤ शकुन्तला को राजा दुष्यन्त के लिए एक प्रेमपत्र लिखने की सलाह कौन देती है – **प्रियंवदा**

➤ शकुन्तला, सखियों के आग्रह से नलिनी पत्र पर नाखूनों से राजा को प्रेमपत्र लिखती है।

तव न जाने हृदयं मम पुनः कामो दिवाऽपि रात्रावपि।
निर्घृण तपति बलीयस्त्वयि वृत्तमनोरथाया अङ्गानि॥

अभि०शा० 3-13।

➤ शकुन्तला की अस्वस्थता का समाचार पाकर शान्तिजल लिए हुए कौन आती है – **आर्या गौतमी**

➤ नाटक में दुर्वासा ऋषि का आगमन किस अङ्क में होता है – **चतुर्थ अङ्क में**

➤ ऋषि कण्व को आकाशवाणी द्वारा मालूम होता है कि शकुन्तला का दुष्यन्त के साथ गान्धर्व विवाह हो गया है, तथा वह आपन्नसत्त्वा (गर्भिणी) है।

दुष्यन्तेनाहितं तेजो दधानां भूतये भुवः।
अवेहि तनयां ब्रह्मन् अग्निगर्भां शमीमिव॥

अभि०शा० 4/4

अभिज्ञानशाकुन्तलम् के मार्मिक प्रसङ्ग

प्रथम अङ्क – भ्रमर वृत्तान्त और शकुन्तला की सखियों से राजा का वार्तालाप।

द्वितीय अङ्क – शकुन्तला के सौन्दर्य का वर्णन।

तृतीय अङ्क – दुष्यन्त और शकुन्तला के विरह दुःख का वर्णन और दोनों के मिलन का वर्णन।

चतुर्थ अङ्क – शकुन्तला की विदाई।

पंचम अङ्क – राजा दुष्यन्त और शार्ङ्गरव का विवाद।

षष्ठ अङ्क – राजा के शोक का वर्णन।

सप्तम अङ्क – पुत्र सर्वदमन का दर्शन और शकुन्तला से मिलन का वर्णन।

अभिज्ञानशाकुन्तलम् का मङ्गलाचरण

या सृष्टिः स्त्रष्टुराद्या, वहति विधिहुतं या हविर्या च होत्री,
ये द्वे कालं विधत्तः श्रुति विषयगुणा या स्थिता व्याप्य विश्वम्।
यामाहुः सर्वबीजप्रकृतिरिति यया प्राणिनः प्राणवन्तः,
प्रत्यक्षाभिः प्रपन्नस्तनुभिरवतु वस्ताभिरष्टाभिरीशः॥ 1/1 ॥

भावार्थ- जो विधाता की सर्वप्रथम सृष्टि है अर्थात् जलरूप मूर्ति, जो विधिपूर्वक की गयी हवन के हवि को देवताओं के पास ले जाती है अर्थात् अग्निरूप मूर्ति, जो यज्ञकर्ता है अर्थात् यजमान रूपमूर्ति, जो दो समय का निर्माण करतीं हैं,अर्थात् सूर्य और चन्द्ररूप मूर्तियाँ, शब्द जिसका गुण है और जो विश्व में व्याप्त होकर विद्यमान है अर्थात् आकाश रूप मूर्ति, जिसको विद्वान् समस्त बीजों का कारण कहते हैं, अर्थात् पृथ्वीरूपमूर्ति और जिससे सभी प्राणी जीवित रहते हैं अर्थात् वायुरूप मूर्ति, उन प्रत्यक्ष आठ मूर्तियों से युक्त भगवान् शिव आप लोगों की रक्षा करें।

☆ प्रस्तुत पद्य में अष्टमूर्ति भगवान् शिव की स्तुति की गयी है।

☆ आशीर्वादात्मक मङ्गलाचरण का प्रयोग है।

☆ समासोक्ति के माध्यम से कथानक का सङ्केत होने से पत्रावली नान्दी भी है।

☆ उपर्युक्त श्लोक में स्रग्धरा छन्द तथा अनुप्रास एवं समासोक्ति अलङ्कार है।

अभिज्ञानशाकुन्तलम् का भरतवाक्य

प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः
सरस्वती श्रुतमहतां महीयताम्।
ममापि च क्षपयतु नीललोहितः
पुनर्भवं परिगतशक्तिरात्मभूः॥ 7/35 ॥

भावार्थ- राजा लोग प्रजा के हित के कार्यों में लगे रहें। चारों वेदों से शोभायमान भगवती श्री सरस्वती जगत् में पूजा को प्राप्त हों, अर्थात् वैदिक साहित्य, वेदमार्ग तथा चक्र सहित स्वयंभू भगवान् शङ्कर मेरे पुनर्जन्म का नाश करें। अर्थात् भगवान् शाम्ब शिव की कृपा से मेरा जन्म-मरण रूप यह संसार बन्धन सदा के लिए छूट जाए।

☆ यह उत्तरार्धगत अन्तिम उक्ति महाकवि कालिदास की स्वयं अपनी प्रार्थना है।

☆ इस भरतवाक्य में लोक-कल्याण के लिए भगवान् शिव से प्रार्थना की गयी है।

☆ इस पद्य में रुचिरा या अतिरुचिरा छन्द है।

अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाम का प्रयोजन

1. अभिज्ञायते अनेन इति अभिज्ञानम् अभि+ज्ञा+ल्युट् = अभिज्ञान अर्थात् जिसके द्वारा पहचाना जाता है।
यहाँ पर अभिज्ञान से भाव है- दुष्यन्त के द्वारा पहचान के लिए शकुन्तला को दी गयी अँगूठी।
शकुन्तलाम् अधिकृत्य कृतं नाटकं शाकुन्तलम्।
शकुन्तला+अण्, ('अधिकृत्य कृते ग्रन्थे' सूत्र से अण् प्रत्यय) अर्थात् शकुन्तला विषयक नाटक।
अभिज्ञानप्रधानं शाकुन्तलम् इति अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(मध्यमपदलोपी समास)
शकुन्तला प्रधान नाटक, जिसमें अभिज्ञान (अँगूठी) मुख्य रूप से वर्णित है।

2. अभिज्ञानसहितं शाकुन्तलम् इति अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(मध्यमपदलोपी समास)
अभिज्ञान(अँगूठी) के वर्णन से युक्त शकुन्तला-विषयक नाटक।

अभिज्ञानशाकुन्तलम् के नाटकीय पात्रों का परिचय

पुरुष पात्र

क्र.	नाम	परिचय
1.	सूत्रधार	नाटक का आरम्भ करने वाला प्रधान नट और रंगमञ्च का अध्यक्ष।
2.	दुष्यन्त	नाटक का नायक, हस्तिनापुर का राजा।
3.	सूत	दुष्यन्त का सारथि।
4.	सेनापति भद्रसेन	दुष्यन्त का सेनापति।
5.	विदूषक माढव्य	दुष्यन्त का अन्तरङ्ग मित्र और हास्यकारी।
6.	महर्षिकण्व (काश्यप)	आश्रम के कुलपति, शकुन्तला के पालक और धर्मपिता।
7.	मारीच (कश्यप)	एक महर्षि, देवों और राक्षसों के पिता, एक प्रजापति।
8.	भरत (सर्वदमन)	राजा दुष्यन्त और शकुन्तला का पुत्र।
9.	सोमरात	दुष्यन्त का पुरोहित।
10.	मातलि	इन्द्र का सारथि।
11.	वैखानस, हारीत, नारद गौतम, शाङ्र्गरव,शारद्वत	सभी कण्व के शिष्य, आश्रम के तपस्वी
12.	रैवतक (दौवारिक)	राजा का भृत्य, द्वारपाल।
13.	करभक	राजा के पास राजमाता का सन्देश पहुँचाने वाला सेवक।
14.	कञ्चुकी (वातायन)	रनिवास की देखभाल करने वाला एक वृद्ध ब्राह्मण।
15.	वैतालिक	स्तुतिपाठक (भाट, चारण)।
16.	श्याल	राजा का साला, नगर रक्षाधिकारी (कोतवाल)।
17.	धीवर (मीनपालक)	मछली पकड़ने वाला।
18.	सूचक	पुलिस के दो सिपाही।
19.	जानुक	
20.	गालव	ऋषि मारीच का शिष्य।
21.	पिशुन	दुष्यन्त का मन्त्री

स्त्रीपात्र

क्र.	नाम	परिचय
22.	नटी	सूत्रधार की पत्नी।
23.	शकुन्तला	नाटक की नायिका, कण्व की धर्मपुत्री, दुष्यन्त की पत्नी, मेनका और विश्वामित्र से उत्पन्न एक क्षत्रिय कन्या।
24.	अनसूया	शकुन्तला की अत्यन्त प्रिय और अंतरंग सखी।
25.	प्रियंवदा	
26.	गौतमी	कण्व के आश्रम की अध्यक्षा, एक वृद्धा तापसी।
27.	अदिति (दाक्षायणी)	महर्षि मारीच की पत्नी।
28.	सानुमती	मेनका की सखी, एक अप्सरा।
29.	परभृतिका	राजा की सेविका, उद्यानपालिका।
30.	मधुकरिका	
31.	चतुरिका	राजा की सेविका।
32.	वेत्रवती (प्रतीहारी)	राजा की द्वारपालिका।
33.	यवनी	राजा की एक सेविका।
34.	तापसी (सुव्रता)	मारीच के आश्रम की एक तपस्विनी।

अन्य पात्र

- **मघवा (इन्द्र)** – देवताओं के राजा, दुष्यन्त के मित्र।
- **इन्द्राणी** – इन्द्र की पत्नी।
- **जयन्त** – इन्द्र का पुत्र।
- **कौशिक (विश्वामित्र)** – शकुन्तला के जन्मदाता पिता।
- **मेनका** – शकुन्तला की माता, एक अप्सरा।
- **दुर्वासा** – एक ऋषि, शकुन्तला को शाप देने वाले।

नोट – नाटक में इन पात्रों का केवल नामोल्लेख मात्र हुआ है।

- 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में पुरुवंशी (चन्द्रवंशी) राजा दुष्यन्त तथा विश्वामित्र और मेनका की पुत्री शकुन्तला का प्रेम, वियोग, पुनर्मिलन वर्णित है।
- शाकुन्तलम् की कथा महाभारत के आदिपर्व तथा पद्मपुराण के स्वर्गखण्ड में वर्णित है।
- शाकुन्तलम् का **नायक 'दुष्यन्त'** 'हस्तिनापुर' का राजा है और धीरोदात्त नायक के गुणों से युक्त है।

- 'शाकुन्तलम्' की **नायिका शकुन्तला** महर्षि कण्व (काश्यप) के आश्रम में पली है। 'मुग्धा' नायिका है।
- 'शाकुन्तलम्' का **प्रमुख 'रस' शृंगार है।** चतुर्थ अङ्क में **करुण** रस है।
- शाकुन्तलम् में **24 छन्दों** का प्रयोग हुआ है। सर्वाधिक प्रयुक्त छन्द आर्या (39) है। तत्पश्चात् वसन्ततिलका (30) है।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् में कुल **196 श्लोक** है। सर्वाधिक (35) श्लोक सप्तम अङ्क में हैं।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् में **वैदर्भी रीति** और **माधुर्य गुण** प्रयुक्त है।
- शाकुन्तलम् में साधारणतया **गद्य के लिए शौरसेनी** और पद्यों के लिए **महाराष्ट्री प्राकृत** का प्रयोग हुआ है।
- षष्ठ अङ्क में दोनों सिपाही और धीवर मागधी बोलते हैं।
- शाकुन्तलम् में सर्वाधिक उपमा और 'अर्थान्तरन्यास' अलङ्कारों का प्रयोग है।
- दुष्यन्त की शकुन्तला से पूर्व अन्य दो रानियाँ हंसपदिका और वसुमती हैं।
- शकुन्तला की अनसूया और प्रियंवदा नामक दो सखियाँ हैं।
- दुष्यन्त और शकुन्तला का **पुत्र सर्वदमन (भरत)** है।
- शाकुन्तलम् का **विदूषक 'माढव्य'** दुष्यन्त का मित्र है। पहली बार द्वितीय अङ्क में मंच पर आता है।
- दुष्यन्त का **सेनापति 'भद्रसेन'** और **पुरोहित 'सोमरात'** है।
- इन्द्र का सारथी **'मातलि'** और दुष्यन्त का सारथी **'सूत'** है।
- **'करभक'** नामक दूत द्वितीय अङ्क में दुष्यन्त की माता का सन्देश लेकर आता है।
- शकुन्तला, परित्याग के बाद देवों और राक्षसों के पिता, प्रजापति **'मारीच' (कश्यप)** के आश्रम में रहती है।
- वैखानस, शार्ङ्गरव, शारद्वत, गौतम, नारद, हारीत आदि महर्षि कण्व के शिष्य हैं।
- ऋषि मारीच का एकमात्र शिष्य जो शकुन्तला-दुष्यन्त के मिलन की सूचना कण्व को देने हेतु सातवें अङ्क में भेजा जाता है उसका नाम **'गालव'** है।
- षष्ठ अङ्क में धीवर को पकड़ने वाले **दो सिपाही सूचक व जानुक** हैं और राजा का साला एवं नगर रक्षाधिकारी **श्याल** है।
- राजा का **कञ्चुकी 'वातायन'** है वह षष्ठ अङ्क में 'वसन्तोत्सव' की तैयारी में लगी दो उद्यानपालिकाओं **'परभृतिका'** व **'मधुकरिका'** को ऐसा करने से रोकता है।
- **वेत्रवती** राजा की द्वारपालिका है। **यवनी** एक अन्य सेविका है।
- **अदिति** (दाक्षायणी) मारीच की पत्नी तथा **गौतमी** कण्व के आश्रम की 'एक वृद्धा तापसी' है। गौतमी भी शार्ङ्गरव और शारद्वत के साथ शकुन्तला को छोड़ने हस्तिनापुर जाती है।
- मारीच के आश्रम में सर्वदमन (भरत) के साथ रहने वाली तापसी **'सुव्रता'** थी।
- **'सानुमती'** शकुन्तला की माता मेनका की सखी है जो षष्ठ अङ्क में राजा और विदूषक की बात अदृश्य रूप से सुनती है।
- इन्द्र का पुत्र **जयन्त** तथा पत्नी **इन्द्राणी** (पौलोमी/शची) है।
- सुलभकोप ऋषि दुर्वासा, अत्रि और अनसूया के पुत्र हैं वे चतुर्थ अङ्क के आरम्भ में शकुन्तला को शाप देते हैं।
- महर्षि कण्व का आश्रम **'मालिनी नदी'** के तट पर विश्वामित्र का आश्रम गौतमी नदी के तट पर तथा 'मारीच' का आश्रम **'हेमकूट पर्वत'** पर था।
- दुर्वासा के शाप का असर पञ्चम अङ्क में दिखाई पड़ता है। यह नाटकीयता की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ अङ्क है।
- शकुन्तला ने **'शचीतीर्थ'** जो गङ्गा के तट पर स्थित है, में जलवन्दना की, जहाँ उसकी अँगूठी गिरती है।
- तृतीय अङ्क में 'प्रियंवदा' कमल-पत्र पर 'नाखून' से प्रेम-पत्र लिखने की सलाह शकुन्तला को देती है जिसे वह फूलों में छिपाकर देवता के प्रसाद के बहाने राजा के पास पहुँचाने को कहती है।
- नाटक का आरम्भ **'ग्रीष्म ऋतु'** वर्णन तथा राजा दुष्यन्त द्वारा आश्रम मृग का पीछा करते हुए होता है।
- राजा पञ्चम अङ्क में हंसपदिका के सङ्गीत की प्रशंसा करता है तथा षष्ठ अङ्क में शकुन्तला तथा उसकी सखियों का चित्र बनाता है।
- दुष्यन्त षष्ठ अङ्क में **'धनमित्र'** नामक व्यापारी की मृत्यु पर उसकी सारी सम्पत्ति उसके गर्भस्थ पुत्र को दे देता है।
- दुष्यन्त के लिए इन्द्र अपना आधा सिंहासन छोड़ देते हैं तथा **राजा को मन्दारमाला** पहनाते हैं।
- राजा द्वारा तिरस्कृत शकुन्तला को प्रसव तक अपने घर में रखने को **'सोमरात'** तैयार होते हैं।
- अष्टमूर्ति शिव की उपासना शाकुन्तलम् के नान्दी में की गई है, यह **मङ्गलाचरण आशीर्वादात्मक** है।
- शाकुन्तल के मङ्गलाचरण में **स्रग्धरा छन्द** है, जिसके प्रत्येक चरण में **21 वर्ण** होते हैं। यह **पत्रावली नान्दी** है।
- जब तक विद्वान् सन्तुष्ट न हो जाय सूत्रधार अभिनय-कौशल को सफल नहीं समझता। वह ग्रीष्म ऋतु पर नटी से गीत सुनाने को कहता है।
- नटी आरम्भ में दो छन्द गाती है एक आर्या –> **(सुभगसलिल.......)** दूसरा उद्गाथा –> **(ईषदीषच्चुम्बितानि.....)**
- सूत प्रथम अङ्क के आरम्भ में धनुष पर बाण चढ़ाये राजा की उपमा 'शिव' से देता है।
- प्रथम अङ्क में वैखानस राजा को चक्रवर्ती पुत्र प्राप्त करने का आशीर्वाद देता है।
- समिधा लाने जाता हुआ 'वैखानस' राजा को बताता है कि शकुन्तला के 'प्रतिकूल भाग्य की शान्ति' के लिए कण्व शकुन्तला पर अतिथि सत्कार का भार सौंप कर **'सोमतीर्थ'** गये हुए हैं।
- आश्रम से सरोवर का मार्ग वल्कलों के अग्रभाग से टपकते जल से रेखांकित है।
- राजा आश्रम में प्रवेश से पूर्व अपने आभूषण और धनुष सारथि (सूत) को देकर सादे वेष में प्रवेश करता है।

- आश्रम-प्रवेश के समय राजा की **'दाहिनी' भुजा फड़कती** है जो सुन्दर स्त्री की प्राप्ति का सूचक है।
- आश्रम-प्रवेश पर राजा वाटिका की दाहिनी ओर वृक्षों का सेंचन kqâ jne(प्रियंवदा आदि) बालिकाओं को देखता है।
- प्रियंवदा कहती है कि शकुन्तला के समीप रहने पर 'बकुल' (मौलश्री) का वृक्ष लता से युक्त लगता है।
- नवमालिका लता आम के वृक्ष से लिपटी है जिसका **'वनज्योत्स्ना'** नाम शकुन्तला ने रखा है।
- प्रियंवदा 'सप्तपर्ण वृक्ष' की वेदी पर राजा को बैठने हेतु कहती है।
- अनसूया द्वारा परिचय पूँछने पर राजा अपने को पुरुवंशी राजा द्वारा नियुक्त धर्माधिकारी बताता है।
- शकुन्तला के जन्म का वृत्तान्त अनसूया राजा को बताती है।
- कौशिक (विश्वामित्र) गौतमी नदी के किनारे तपस्या कर रहे थे।
- प्रियंवदा दो वृक्षों के सेंचन का ऋण बताकर शकुन्तला को रोकती है राजा अपनी अङ्गूठी देकर शकुन्तला को ऋण मुक्त करना चाहता है।
- द्वितीय अङ्क का आरम्भ खिन्न विदूषक के प्रवेश के साथ होता है जो राजा के 'मृगया' के व्यसन से दुःखी है।
- द्वितीय अङ्क में सेनापति और विदूषक 'मृगया' (शिकार) के गुण-दोष की चर्चा करते हैं।
- दुष्यन्त, शकुन्तला के प्रति अपने प्रेम को विदूषक से कहता है और कहीं यह अन्तःपुर में न बता दे इसलिए उस बात को हँसी में कही 'बात' कहता है।
- करभक सन्देश लाता है कि चौथे दिन महारानी (दुष्यन्त की माता) के व्रत (जीवित्पुत्रिका/जिउतियाव्रत) का 'पारण' है।
- राजा अपने स्थान पर 'विदूषक' को भेज देता है।
- तृतीय अङ्क का आरम्भ 'शिष्य' के प्रवेश से होती है जो शकुन्तला के अस्वस्थ होने की खबर प्रियंवदा से प्राप्त होने का अभिनय करता है।
- तृतीय अङ्क का आरम्भ 'विष्कम्भक' से होता है।
- तृतीय अङ्क में दुष्यन्त के शकुन्तला के समीप उपस्थित होने पर दोनों सखियाँ मृग-शावक को उसकी माँ से मिलाने के बहाने से हट जाती हैं।
- दुष्यन्त तृतीय अङ्क में **शकुन्तला से गान्धर्व विवाह** करता है। यह विवाह केवल क्षत्रियों के लिए ही स्वीकृत था।
- गौतमी दोनों सखियों के साथ शकुन्तला का स्वास्थ्य जानने आती है।
- चतुर्थ अङ्क का आरम्भ पुष्प चुनती हुई दो सखियों (प्रियंवदा, अनसूया) के प्रवेश के साथ होता है।
- अनसूया, शकुन्तला के 'भाग्यदेवता' के पूजन के लिए अधिक फूल तोड़ने को कहती है।
- शाप देकर जाते हुए **दुर्वासा को मनाने प्रियंवदा** जाती है।
- शकुन्तला कुटिया के द्वार पर बाएँ हाथ पर मुँह रखे चित्रलिखित सी बैठी है।
- शाप का वृत्तान्त केवल अनसूया और प्रियंवदा को ज्ञात रहता है।
- चौथे अङ्क का आरम्भ भी **शुद्ध विष्कम्भक** के साथ होता है।
- विष्कम्भक के पश्चात् सोकर उठे 'शिष्य' का प्रवेश मंच पर होता है। जो काश्यप के आदेशानुसार 'कितनी रात शेष है' यह जानने के लिए बाहर आता है।
- 'शकुन्तला सुखपूर्वक सोई कि नहीं' यह जानने के लिए गयी हुई प्रियंवदा यह समाचार लाती है कि 'कण्व' ने शकुन्तला के विवाह को अनुमति दे दी है।
- शकुन्तला 'गर्भिणी' है यह समाचार कण्व को **'अशरीरधारी छन्दोमयी'** वाणी ने यज्ञशाला में प्रविष्ट होने पर दिया।
- इस घटना को प्रियंवदा, अनसूया से बताती है।
- अनसूया शकुन्तला की विदाई हेतु नारियल के डिब्बे में बकुल (मौलश्री) की माला, केसर आदि आम की डाल पर लटका कर रखती है।
- अनसूया शकुन्तला की विदाई के अवसर पर गोरोचन, तीर्थों की मिट्टी, दूब के अग्रभाग आदि वस्तुएँ इकट्ठा करती है।
- स्वस्तिवाचन के समय तीन तापसियाँ शकुन्तला को आशीर्वाद देती हैं।
- पहली तापसी **'महादेवी'** शब्द प्राप्त करने, दूसरी **'वीर पुत्र'** को प्राप्त करने का और तीसरी **'पति से अधिक सम्मान'** प्राप्त करने का आशीर्वाद देती है।
- दो ऋषि कुमार जिनके नाम **नारद** व **गौतम** हैं, वे वृक्षों द्वारा प्रदत्त वस्त्र-आभूषण आदि शकुन्तला के लिए लाते हैं।
- दोनों सखियाँ चित्रकारी से प्राप्त ज्ञान के आधार पर शकुन्तला का शृङ्गार करती हैं।
- पूरे नाटक में **महर्षि कण्व केवल चौथे अङ्क** में दिखाई पड़ते हैं। वे स्नान के उपरान्त **'यास्यत्यद्य शकुन्तलेति'**...... श्लोक के साथ मंच पर प्रविष्ट होते हैं।
- चतुर्थ अङ्क के **22 श्लोकों में 14 श्लोक महर्षि कण्व** ने कहे हैं। चौथे अङ्क के प्रसिद्ध चार श्लोक भी महर्षि कण्व द्वारा कहे गये हैं।
- **ययाति** चंद्रवंश के संस्थापक राजाओं में थे जिनकी **देवयानी** और **शर्मिष्ठा** नाम की दो पत्नियाँ थीं।
- **देवयानी** दानवों के गुरु **शुक्राचार्य की पुत्री** और ययाति की विवाहिता पत्नी थी।
- दानवों के राजा **'वृषपर्वा' की पुत्री शर्मिष्ठा** देवयानी की सेविका के रूप में आयी थी। ययाति ने उससे गान्धर्व विवाह कर लिया।
- ययाति के 5 पुत्रों में **शर्मिष्ठा का पुत्र 'पुरु'** भी था जिसने शुक्राचार्य के शाप से वृद्ध हुए ययाति की वृद्धावस्था अपने ऊपर ले लिया था।
- अग्निवेदी की परिक्रमा करते हुए कण्व ने ऋग्वैदिक छन्द 'त्रिष्टुप्' में शकुन्तला को आशीर्वाद दिया।
- 'त्रिष्टुप्' के प्रत्येक चरण में 11 वर्ण होते हैं, 4 या 5 वर्ण पर यति होती है।
- वृक्षों के प्रथम 'पुष्पोद्‌गम' के समय शकुन्तला आश्रम में उत्सव मनाया करती थी।

- 'वृक्षों से' कण्व द्वारा शकुन्तला के जाने हेतु आज्ञा माँगने पर वे 'कोयल' की आवाज में आज्ञा प्रदान करते हैं।
- वृक्षों ने शकुन्तला को कोयल की आवाज में जाने की आज्ञा दे दी है। इस बात की कण्व अपरवक्त्र छन्द में पुष्टि करते हैं।
- आकाशवाणी के द्वारा शकुन्तला यात्रा की जो मङ्गल कामना की गई है वह **शाकुन्तलम् का 'मध्यनान्दी'** है।
- जाती हुई शकुन्तला अपनी **लता-बहिन 'वनज्योत्स्ना'** से गले मिलकर विदाई लेती है। जो 'आम्रवृक्ष' से लिपटी है। और इसे धरोहर के रूप में सखियों के हाथ में देती है।
- शकुन्तला कण्व से गर्भ के कारण शिथिल हरिणी के कुशलपूर्वक सन्तानोत्पत्ति का समाचार अपने पास भेजने को कहती है।
- कुशाग्रों से विंधे मुखवाले जिस मृग के मुख पर शकुन्तला ने इंगुदी (हिंगोट) का तेल लगाया था तथा साँवा के चावल से पाला था वह शकुन्तला के जाते समय उसका वस्त्र खींचता है। वह उसे पिता कण्व को सौंपती है।
- शकुन्तला के साथ सरोवर के तट तक आये कण्व क्षीरवृक्ष (पीपल) के नीचे बैठ कर दुष्यंत को भेजने हेतु संदेश देते हैं।
- कमल के पत्ते की ओट में बैठे सहचर (चकवा) को न देख पाने के कारण चकवी रोती (चिल्लाती) है।
- शकुन्तला द्वारा पहले पूजा के रूप में डाले गये 'नीवार' अब कुटी के द्वार पर उगे हैं जो कण्व को उसकी याद दिलायेंगे।
- **''अपराजिता रक्षाकरण्डक''** सिंह शावक के साथ खेलते सर्वदमन के हाथ पर बंधा है जो बालक के माता-पिता के अतिरिक्त अन्य के छूने पर सर्प बनकर डस लेता है।
- षष्ठ अङ्क में इन्द्र-सारथि मातलि राजा में क्रोध या वीरता को जगाने के लिए विदूषक पर आक्रमण करता है।
- मातलि विदूषक पर आक्रमण करके उसे **'मेघप्रतिच्छन्द'** नामक महल के ऊपरी मंजिल पर ले जाता है।
- राजा उस पर आक्रमण हेतु 'यवनी' नामक परिचारिका से धनुष माँगता है।
- मातलि राजा के समक्ष प्रकट होकर राजा को देवासुर संग्राम में इन्द्र के सहायतार्थ चलने हेतु निवेदन करता है।
- **कालनेमि का वंशज 'दुर्जेय'** ने इन्द्र पर आक्रमण किया जिसे केवल दुष्यन्त मार सकता है।
- राजा दुष्यन्त के **मंत्री 'पिशुन'** हैं जिन पर वह देवासुर संग्राम में जाते हुए राज्यभार सौंपता है। विदूषक से यह बात उन्हें बताने के लिए कहता है।
- **हेमकूट किन्नरों का पर्वत** है जहाँ प्रजापति 'मारीच' रहते हैं।
- जब मातलि 'राजा' के आगमन की सूचना (मारीच को) देने जाता है तब राजा अशोक वृक्ष के नीचे बैठता है।
- 'जातकर्म' 16 संस्कारों में चौथा है। जिस अवसर पर सर्वदमन के हाथ पर **'अपराजिता'** नामक रक्षासूत्र बाँधा गया था।
- मारीच **'वत्स, चिरंजीव पृथिवीं पालय'** आशीर्वाद राजा को देते हैं तथा दुर्वासा - शाप का वृत्तान्त दोनों को बताते हैं।
- अदृश्य तेजोमयी मूर्ति के रूप में मेनका 'अप्सरास्तीर्थ' से शकुन्तला को लेकर दाक्षायणी (मारीच-पत्नी) के पास गयी।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक का भरतवाक्य (अन्तिम श्लोक) (प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय) **'रुचिरा' छन्द** में है। जिसके प्रत्येक चरण में 13 वर्ण, 4, 9 पर यति होती है।
- जीवों को बलात् वश में कर लेने के कारण भरत का नाम 'सर्वदमन' था।
- पञ्चम अङ्क में अङ्गूठी के शचीतीर्थ में जलतर्पण के समय गिरने की बात का पता सर्वप्रथम 'गौतमी' के मुख से पता चलता है।

राजा दुष्यन्त

परिचयः –

- अभिज्ञानशाकुन्तलम् का धीरोदात्त नायक

महासत्त्वोऽतिगम्भीरः क्षमावानविकत्थनः।
स्थिरो निगूढाहङ्कारो धीरोदात्तो दृढव्रतः॥

(दशरूपक – द्वितीयप्रकाश)

अर्थात् वह (राजा दुष्यन्त) स्थिर स्वभाववाला, क्षमाशील, अतिगम्भीर, महाबली, अहङ्कारशून्य, दृढनिश्चयी, स्वयं प्रशंसा न करने वाला, मधुरभाषी, एवं ललित कलाओं का मर्मज्ञ है।

- शकुन्तला का प्रेमी/पति।
- पुरुवंशी (चन्द्रवंशी) एक क्षत्रिय राजा (राजर्षि)।
- हस्तिनापुर के सम्राट्।
- विदूषक (माधव्य) के मित्र।
- हंसपदिका और वसुमती नामक रानियों के आदर्शपति।
- सर्वदमन (भरत) के पिता।

चारित्रिक विशेषतायें

- आदर्श प्रेमी।
- सुन्दर एवं गम्भीर आकृति।
- आदर्श राजा/उत्तम शासक
- विनयशील नैतिक एवं धर्मपरायण।
- आखेट (मृगया) प्रेमी।
- कलाप्रेमी/कुशलचित्रकार/संगीतप्रेमी
- आकर्षक व्यक्तित्व एवं सौन्दर्यशाली।
- वीरयोद्धा/पराक्रमी/शूरवीर।
- वात्सल्यप्रेमी एवं गुणग्राही।
- मधुरभाषी एवं उदार।
- सहृदय तथा संयमी।
- आदर्श पिता।
- मातृभक्त तथा आज्ञाकारीपुत्र।
- चरित्रवान् नायक।
- लोकोत्तर आदर्शचरित्र

दुष्यन्त के महत्त्वपूर्ण गुण एवं कार्य

- दानवों के वधार्थ इन्द्र उसे स्वर्ग में बुलाता है। **(अङ्क-6)**
- उसके शारीरिक गठन एवं सौन्दर्य से सभी प्रभावित होते हैं, वह सुन्दर एवं युवा है।

- धनुष की टंकार से ही यज्ञ में विघ्न करने वाले राक्षसों को भगा देता है।
- प्रियंवदा उसके मधुरभाषण की प्रशंसा करती है। **(अङ्क-1)**
- जब तक यह निश्चित नहीं हो जाता है कि शकुन्तला क्षत्रिय कन्या है, तब तक वह अपने विवाह का विचार प्रकट नहीं करता है।
- शकुन्तला की प्रेमावस्था देखकर वह उसके पाणिग्रहण और रक्षा की स्वीकृति देता है। **(अङ्क-3)**
- वह रुग्ण शकुन्तला को धूप में जाने से रोकता है, और उसकी सेवा-शुश्रूषा करता है।
- माता की आज्ञा पाते ही ऋषियों के यज्ञरक्षा रूपी कार्य की विवशता के कारण मित्र विदूषक को तत्काल माता के पास भेजता है। **(अङ्क-2)**
- रानी हंसपदिका के संगीत को सुनकर मन्त्रमुग्ध हो जाता है। **(अङ्क-5)**
- शकुन्तला तथा उसकी सखियों का चित्र बनाता है। **(अङ्क-6)**
- ऋषियों के प्रति बहुत आदरभाव है, उनके कहनें से वह मृग पर बाण नहीं चलाता है।
- विनीत वेष में आश्रम में प्रवेश करता है। **(अङ्क-1)**
- यज्ञरक्षा हेतु ऋषियों की प्रार्थना सादर स्वीकार करता है।
- शार्ङ्गरव के आक्षेपों का उत्तर शान्तिपूर्वक देता है। **(अङ्क-5)**
- मारीच ऋषि के दर्शनार्थ उनके आश्रम जाता है। **(अङ्क-7)**
- वह धनमित्र नामक व्यापारी की मृत्यु पर शोक प्रकट करता है। उसके गर्भस्थ पुत्र को उसका धन दिलाता है। **(अङ्क-6)**
- प्रजा की रक्षा को परमधर्म समझता है।
- दुःखियों का दुःख दूर करने को सदा उद्यत रहता है।
- परस्त्री की ओर देखना पाप समझता है – **''अनिर्वर्णनीयं परकलत्रम्''** **(अङ्क-5)**
- सन्तानहीनता का उसे बहुत दुःख है।
- प्रजा के लिए घोषणा करता है कि बन्धुहीनों का वह बन्धु है। **''येन येन वियुज्यन्ते प्रजाः स्निग्धेन बन्धुना''**
- शाप के कारण शकुन्तला को न पहचानने पर वह अपने पूर्णसंयम का परिचय देता है। **(अङ्क-5)**
- सर्वदमन (भरत) को देखकर वात्सल्य का भाव जाग उठता है। **(अङ्क-7)**
- वह शिकार खेलता हुआ कण्व ऋषि के आश्रम में प्रवेश करता है। **(अङ्क-1)**
- राजा, मृगया को व्यसन नहीं अपितु शारीरिक स्वास्थ्य एवं मनोविनोद का साधन मानता है, इससे शरीर हल्का फुल्का एवं फुर्तीला रहता है। **(अङ्क-2)**
- राजा द्वारा निर्मित शकुन्तला के चित्र को देखकर विदूषक और सानुमती मन्त्रमुग्ध हो जाते हैं। **(अङ्क 6)**
- राजा दुष्यन्त के सौन्दर्य एवं व्यक्तित्त्व से सखियों सहित शकुन्तला प्रभावित होती है।
- दाक्षायणी (अदिति) भी दुष्यन्त के व्यक्तित्त्व की प्रशंसा करती हैं। **(अङ्क-7)**
- दुष्यन्त की वीरता से प्रभावित होकर इन्द्र अपना आधा इन्द्रासन छोड़ देते हैं, तथा उन्हें मन्दारमाला पहनाते हैं।
- इस प्रकार राजा दुष्यन्त कर्त्तव्यपरायण, प्रजाप्रेमी, पराक्रमी, विनीत और अविकत्थन है।

शकुन्तला

परिचय –

- अभिज्ञानशाकुन्तलम् की नायिका।
- विश्वामित्र और अप्सरा मेनका की पुत्री।
- महर्षिकण्व की धर्मपुत्री, (पालिता पुत्री)।
- नाट्यशास्त्रीय दृष्टि से मुग्धा नायिका।
- **''शकुन्तैः परिवारिता परिपालिता वा।''** पक्षियों से आवृत या कुछ समय तक पक्षियों द्वारा परिपालित होनें के कारण 'शकुन्तला' यह सार्थक नाम पड़ा।
- मालिनी नदी के तट पर स्थित कण्वाश्रम में निवास।
- राजा द्वारा परित्यक्ता होनें के बाद मारीच आश्रम में निवास।
- राजादुष्यन्त की प्रेमिका/तृतीयपत्नी।
- सर्वदमन (भरत) की माँ।
- अनसूया एवं प्रियंवदा की प्रियसखी।

चारित्रिक विशेषतायें

1. अपूर्वसुन्दरी	7. स्वाभिमानिनी
2. प्रकृतिप्रिया	8. कार्यकुशला
3. आदर्शप्रेमिका	9. आदर्शपुत्री
4. आश्रमप्रेमी	10. मधुरभाषिणी
5. पतिव्रता पत्नी/आदर्शनारी	11. सच्ची सखी
6. सुशीला एवं लज्जावती	12. अन्तर्मन की सहजता

शकुन्तला के चारित्रिक गुण एवं कार्य

- शकुन्तला नैसर्गिक सौन्दर्य की प्रतिमूर्ति है –
- **इदं किलाव्याजमनोहरं वपुः......** **(1-18)**
- **इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी....** **(1-17)**
- **सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यम्....** **(1-20)**
- **अधरः किसलयरागः......** **(1-21)**
- **मानुषीषु कथं वा स्यात्......** **(1-26)**
- **अनाघ्रातं पुष्पं.........** **(2-10)**
- **चित्रे निवेश्य......** **(2-9)**
- शकुन्तला का पालन पोषण कण्व आश्रम में हुआ है, अतः उसमें स्वाभाविक सरलता, सुशीलता एवं मुग्धता है।
- राजा दुष्यन्त को देखते ही उसके हृदय में कामभाव जागृत होता है, परन्तु वह उसे व्यक्त नहीं करती – **किं नु खलु इमं जनं प्रेक्ष्य....। (अङ्क-1)**

- जब राजा दुष्यन्त उसकी प्रशंसा करता है, तो वह लज्जा से सिर नीचा कर लेती है। '**शकुन्तला अधोमुखी तिष्ठति**'। (अङ्क-1)
- प्रकृति से घनिष्ट प्रेम है। वह वृक्षों, वनस्पतियों और मृगादि से सहोदरों जैसा स्नेह करती है – **''अस्ति मे सोदरस्नेहोऽयेतेषु''** **(अङ्क-1)**
- आश्रम के वृक्षों को जल देकर ही वह जलपान करती है, प्रियमण्डना होने पर भी वृक्षों के फूल, पत्तें नहीं तोड़ती – **''पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलम्.....।'' (अङ्क-4/9)**
- वह पतिव्रता है, विवाहोपरान्त पति के चिन्तन में ही व्याकुल और अन्यमनस्क है – **विचिन्तयन्ती यमनन्यमानसा।(4/1)**
- आश्रम से विदाई के समय वृक्षों और मृगादि से भी विदा लेती है। वनज्योत्स्ना से गले मिलती है, आश्रमीय मृगों को स्नेह करती है। **''सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम्।'' (अङ्क-4/9)।**
- राम द्वारा परित्यक्त सीता यथा वाल्मीकि आश्रम में निवास करती हैं, वैसे ही राजा दुष्यन्त द्वारा परित्याग कर दिये जाने पर मारीच ऋषि के आश्रम में वह तपस्विनी के समान जीवन यापन करती रही, वह अपने आपको ही दोष देती है, राजा को नहीं।
- अपने पूज्यजनों का विशेष आदर करती है, राजा से अपने पैर नहीं दबवाती है। **(अङ्क-3)**
- शार्ङ्गरव के डाँटने पर उसे प्रत्युत्तर नहीं देती है। **(अङ्क-5)**
- ऋषि कण्व एवं आश्रमीय ऋषियों के प्रति उसकी अगाध श्रद्धा है, सखियों के प्रति उसका **निश्छल प्रेम है।**
- राजा के प्रति आसक्ति के कारण उसकी मनःस्थिति उद्विग्न हो जाती है, परन्तु अपनी मुँहबोली-सखियों से भी बताने में उसे **संकोच** होता है।
- वह अपनी सखियों के कहने पर राजा को एक प्रेमपत्र लिखती है – **तव न जाने हृदयं**......... **(अङ्क-3/13)**
- आश्रम के बाहर जाने पर कण्व शकुन्तला के ऊपर ही **अतिथिसत्कार का भार** सौंपते हैं।
- आश्रम से उसका विशेष लगाव है, आश्रमीय चोटिल मृग को वह इङ्गुदी का तेल लगाती है, उसे श्यामाक चावल की मुट्ठियाँ भर-भर कर खिलाती है।

  यस्य त्वया व्रणविरोपणमिङ्गुदीनाम्.......**(अङ्क 4-14)**
- शकुन्तला गर्भमन्थरा मृगवधू के सुखप्रसव का समाचार भेजने के लिए पिता कण्व से कहती है। **(अङ्क-4)।**

महर्षि कण्व

परिचय –

- आश्रम के कुलपति।
- शार्ङ्गरव, शारद्वत, नारद, हारीत, वैखानस आदि के गुरु।
- शकुन्तला के पालक पिता।
- 'काश्यप' नाम से नाटक में वर्णित।
- श्रौतविधि से अग्निहोत्र करने वाले एक ऋषि/साधक/तपस्वी।

चारित्रिक विशेषतायें

1. त्रिकालज्ञ नैष्ठिक ब्रह्मचारी।
2. तपस्वी एवं साधक
3. अत्यन्त दयालु, स्नेही एवं धार्मिक।
4. लौकिकव्यवहार में निपुण/लोकाचारज्ञाता/लौकिकज्ञ।
5. आध्यात्मिक प्रभावशाली व्यक्तित्त्व/सिद्धपुरुष।
6. वात्सल्यपूर्ण आदर्श पिता।
7. भविष्यवक्ता।
8. सहृदयता।

महर्षिकण्व के चारित्रिक गुण एवं कार्य

- कण्व का तपोबल असाधारण है, वे वर्तमान, भूत और भविष्य को जानने वाले हैं। **''तपःप्रभावात् प्रत्यक्षं सर्वमेव तत्रभवतः'' (अङ्क-7)**
- कण्व को ज्ञात है कि शकुन्तला पर विपत्ति आएगी, अतः उसके निवारणार्थ वे सोमतीर्थ जाते हैं। **''दैवमस्या प्रतिकूलं शमयितुं सोमतीर्थं गतः'' (अङ्क-1)**
- आकाशवाणी द्वारा कण्व को ज्ञात होता है कि दुष्यन्त का तेज (वीर्य) शकुन्तला के गर्भ में पल रहा है, वे इन दोनों के इस गान्धर्वविवाह से सहर्ष सहमत होते हैं। **''दुष्यन्तेनाहितं तेजो......'' (अङ्क-4/4)**
- उनके तपःप्रभाव के कारण शकुन्तला की विदाई के समय वृक्ष आभूषण और रेशमी वस्त्र आदि देते हैं – **''क्षौमं केनचिदिन्दुपाण्डुतरुणा....।'' (अङ्क-4/5)**
- शकुन्तला के प्रति उनका प्रेम निःस्वार्थ है, उसकी विदाई के समय वे सगे माता-पिता के समान व्याकुल होते हैं – **''यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं......।'' (अङ्क 4/6) ''शममेष्यति मम शोकः......।'' (अङ्क 4-21)**
- ऋषि होते हुए भी लौकिकव्यवहार को अच्छी तरह जानते हैं। **''वनौकसोऽपि सन्तो लौकिकज्ञा वयम्।''** (अङ्क-4)
- ससुराल जाती हुई पुत्री शकुन्तला को सुन्दर उपदेश देते हैं– **''शुश्रूषस्व गुरून् कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीजने।'' (अङ्क 4-18)**
- कण्व द्वारा शार्ङ्गरव के माध्यम से राजा दुष्यन्त को दिया गया सन्देश उनके लौकिकज्ञान की पराकाष्ठा को सूचित करता है – **''अस्मान् साधु विचिन्त्य संयमधनान्।'' (अङ्क 4-17)**
- वे शकुन्तला के साथ अनसूया और प्रियंवदा को हस्तिनापुर नहीं भेजते, क्योंकि उन दोनों का भी विवाह करना है। विवाहिता के साथ कुमारी कन्याओं को भेजना अनुचित समझते हैं।
- कण्व शकुन्तला से कहते हैं कि राजा दुष्यन्त के पास पहुँचने पर वहाँ के कार्यों में व्यस्त होकर तुम मेरे विरह दुःख को भूल जाओगी – **''मम विरहजां न त्वं वत्से शुचं गणयिष्यसि'' (अङ्क 4-19)**
- वे कन्या को विदा करके तनावमुक्त जीवन का अनुभव करते हैं – **''अर्थो हि कन्या परकीय एव।'' (अङ्क 4-22)**

➤ कण्व अपने धर्म, तपस्या, यज्ञ आदि के अनुष्ठान में लगे रहते हैं, और विभिन्न तीर्थस्थानों की यात्रा करते हैं।
➤ अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में ही कण्व का प्रवेश होता है, किन्तु सम्पूर्ण नाटक में उनका प्रभाव परिलक्षित होता है।
➤ अभिज्ञानशाकुन्तलम् चतुर्थ अङ्क के कुल 22 श्लोकों में से 14 प्रसिद्ध श्लोक महर्षि कण्व (काश्यप) के द्वारा कहे गए हैं–

- यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं.............. **(4-6)**

(चार प्रसिद्ध श्लोकों में से एक)

- ययातेरिव शर्मिष्ठा भर्तुर्बहुमता भव...... **(4-7)**
- अमी वेदिं परितः क्लृप्तधिष्ण्याः। **(4-8)**
- पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलम्। **(4-9)**

(चार प्रसिद्ध श्लोकों में से एक)

- अनुमतगमना शकुन्तला। **(4-10)**
- सङ्कल्पितं प्रथममेव मया तवार्थे। **(4-13)**
- यस्य त्वया व्रणविरोपणमिङ्गुदीनाम्। **(4-14)**
- उत्पक्ष्मणोर्नयनयोरूपरुद्धवृत्तिम्। **(4-15)**
- अस्मान् साधु विचिन्त्य संयमधनान्। **(4-17)**

(चार प्रसिद्ध श्लोकों में से एक)

- शुश्रूषस्व गुरून् कुरु प्रियसखीवृत्तिं....। **(4-18)**

(चार प्रसिद्ध श्लोकों में से एक)

- अभिजनवतो भर्तुः श्लाघ्ये स्थिता गृहिणीपदे। **(4-19)**
- भूत्वा चिराय चतुरन्तमहीसपत्नी। **(4-20)**
- शममेष्यति मम शोकः कथं नु वत्से.....। **(4-21)**
- अर्थो हि कन्या परकीय एव। **(4-22)**

➤ अभिज्ञानशाकुन्तलम् चतुर्थ अङ्क के **प्रसिद्ध चारों श्लोक महर्षि कण्व** (काश्यप) द्वारा कहे गये हैं।
➤ अनसूया, प्रियंवदा एवं शकुन्तला तीनों कण्व को **तात** (पिता) कहकर पुकारती हैं।

अनसूया एवं प्रियंवदा

परिचय –

➤ अनसूया और प्रियंवदा दोनों शकुन्तला की प्रिय सखियाँ।
➤ कण्वाश्रम में शकुन्तला के साथ निवास।

दोनों सखियों की चारित्रिक विशेषतायें

- सुन्दररूप एवं समान आयु।
- तपोवन-निवासिनी।
- सामान्य व्यवहारज्ञान से परिचित।
- कामशास्त्र से परिचित।
- आदर्श–सखियाँ।
- शकुन्तला की हितैषिणी।
- सौन्दर्यशालिनी।
- लोकव्यवहारज्ञाता।
- अतिथिसत्कार-निपुणा।
- परिहास/विनोदप्रिया।
- तर्कशीला।
- प्रकृतिप्रेमिका।
- आश्रमप्रिया।
- पारस्परिक स्नेह एवं आत्मीयता।

चारित्रिक गुण एवं कार्य

➤ दोनों सखियाँ शकुन्तला की समवयस्का हैं, और सौन्दर्य में लगभग उसके समान ही हैं – **''अहो समवयोरूपरमणीयं भवतीनां सौहार्दम्।''** (अङ्क-1)
➤ राजा दुष्यन्त तीनों सखियों के परस्पर सौहार्दभाव, समान अवस्था एवं सौन्दर्य की प्रशंसा करता है – **''अहो मधुरमासां दर्शनम्''** (अङ्क-1)
➤ दोनों सखियाँ शकुन्तला के व्यक्तित्त्व की प्रतिच्छाया सी प्रतीत होती हैं, इनकों पृथक् कर शकुन्तला के अस्तित्व एवं व्यक्तित्व की कल्पना कठिन है।
➤ यदि शकुन्तला आश्रमाकाश की चन्द्रलेखा है, तो सखीद्वय तदनुगामी विशाखानक्षत्र **''किमत्र चित्रं यदि विशाखे शशाङ्करेखामनुवर्तेते।''** (अङ्क-3)
➤ प्रथम अङ्क से लेकर चतुर्थ अङ्क तक शकुन्तला के साथ दोनों सखियाँ उपस्थित रहती हैं।
➤ अनसूया एवं प्रियंवदा – ये दोनों पात्र महाकवि कालिदास की नाट्यप्रतिभा की निजी कल्पना से प्रादुर्भूत हैं।
➤ सौन्दर्य में शकुन्तला सबसे अधिक सुन्दर है, परन्तु आयु में अनसूया सबसे बड़ी ज्ञात होती है।
➤ सखियों में परस्पर घनिष्ट प्रेम है, तीनों ही एक दूसरे को सदा सुखी देखना चाहती हैं।
➤ दोनों सखियों का नाम सार्थक है। अनसूया **(न असूया इति अनसूया)** सभी के प्रति ईर्ष्या द्वेषादि से सर्वथा रहित है, तथा प्रियंवदा **(प्रियं वदति इति प्रियंवदा)** सदा प्रिय मधुर बोलने वाली है।
➤ सुख दुःख–दोनों में सदा शकुन्तला के साथ रहती हैं, और सर्वदा उसका हितचिन्तन करती हैं।
➤ तृतीय अङ्क में शकुन्तला को अस्वस्थ देखकर राजा दुष्यन्त से मिलाने का प्रयास करती हैं।
➤ दोनों सखियाँ कर्मठ, कार्यदक्ष और बुद्धिमती हैं, दोनों आश्रम के वृक्षों को उत्साहपूर्वक सींचती हैं।
➤ चतुर्थ अङ्क में शकुन्तला की विदाई के समय दोनों उसका शृङ्गार करती हैं।
➤ तृतीय अङ्क में अपनी बुद्धिमत्ता से राजा दुष्यन्त से यह वचन लेती हैं कि वह शकुन्तला को सदा सुखी रखेगा – **''परिग्रहबहुत्वेऽपि......सखी च युवयोरियम्।''** (अङ्क 3/17)
➤ दोनों सखियाँ शिष्ट, विनीत, मधुरभाषिणी और वाक्चतुर हैं, प्रथम अङ्क में राजा से मिलने पर अनसूया उनका परिचय पूछती है – **''कतम आर्येण राजर्षिवंशोऽलंक्रियते।''** (अङ्क-1)
➤ शकुन्तला के प्रति दुर्वासा के भीषण शाप को सुनकर दोनों का हृदय विदीर्ण हो जाता है, शापनिवृत्ति के लिए पूरा प्रयास करती हैं, तथा अपनी प्रियसखी शकुन्तला को कुछ भी नहीं बताती हैं।

➤ दोनों सखियाँ शकुन्तला से निःस्वार्थ प्रेम करती हैं, उसे सब प्रकार से सुखी और प्रसन्न रखना चाहती हैं। शकुन्तला जब कामज्वर से ग्रस्त होती है, तब कमलनाल, कमलपत्र और चन्दनादि के लेप से उसका उपचार करतीं हैं।
➤ दोनों सखियों के लिए शकुन्तला का संयोग जितना मधुर है, उतना ही वियोग दुःखदायी।
➤ राजा दुष्यन्त उनके आतिथ्यसत्कार, लोकव्यवहार, एवं मधुरभाषण से प्रसन्न होता है– **''भवतीनां सुनृतयैव गिरा कृतमातिथ्यम्।''** (अङ्क-1)
➤ अनसूया स्वभाव से वाग्विदग्ध, व्यवहारकुशल एवं प्रौढ है, राजा दुष्यन्त जब आश्रम में प्रवेश करता है, तो अनसूया ही उससे वार्तालाप प्रारम्भ करती है – **''आर्य, न खलु किमप्यत्याहितम् इयं नौ प्रियसखी मधुकरेणाभिभूयमाना कातरीभूता।''** (अङ्क-1)
➤ अनसूया राजा दुष्यन्त से उनका परिचय पूछती है, और अपनी सखी शकुन्तला के जन्म एवं माता-पिता के विषय में राजा से बताती है – **''श्रृणोत्वार्य अस्ति कोऽपि कौशिक इति गोत्रनामधेयो महाप्रभावो राजर्षिः।''** (अङ्क-1)
➤ प्रियंवदा, अनसूया की अपेक्षा अधिक विनोदप्रिया एवं चपल है। शकुन्तला जब अनसूया से अपने वल्कलों को ढीला करने को कहती है तो प्रियंवदा परिहास करती है कि मुझे उलाहना न देकर पयोधरविस्तारी अपने यौवन को उलाहना दो–**''अत्र पयोधरविस्तारयितृ आत्मनो यौवनमुपालभस्व।''** (अङ्क-1)
➤ शकुन्तला द्वारा वनज्योत्सना और आम्रवृक्ष की युगलजोड़ी को स्नेहदृष्टि से देखने पर प्रियंवदा मजाक करती है कि तुम भी इसी तरह अपने अनुकूल वर को प्राप्त करने की सोच रही हो–**''यथा वनज्योत्स्नाऽनुरूपेण पादपेन सङ्गता..... अहमप्यात्मनोऽनुरूपं वरं लभेयेति।''** (अङ्क-1)
➤ अनसूया में प्रियंवदा की अपेक्षा धैर्य तथा गाम्भीर्य अधिक है। दुर्वासा के शाप को सुनकर जब प्रियंवदा सहसा घबड़ा जाती है– **''हा धिक्, हा धिक् अप्रियमेव संवृत्तम्''** किन्तु अनसूया उसे धैर्यपूर्वक दुर्वासा को मनाने के लिए कहती है – **''गच्छ, पादयोः प्रणम्य निवर्तयैनम्।''** (अङ्क-4)
➤ प्रियंवदा चपलतावश इस दारुण शापवृत्तान्त को शकुन्तला से कहीं बता न दें इसके लिए अनसूया उसको मना करती है – **''प्रियंवदे! द्वयोरेव नौ मुख एष वृत्तान्तस्तिष्ठतु''**।
➤ प्रियंवदा के मन में यह शंका उठती है कि पिता कण्व गान्धर्वविवाह के वृत्तान्त को सुनकर न जाने क्या सोचेगें–**''तात इदानीमिमं वृत्तान्तं श्रुत्वा न जाने किं प्रतिपत्स्यत इति''** (अङ्क-4) तो अनसूया अपने विवेक बुद्धि का परिचय देती हुई कहती है कि–**''यथाऽहं पश्यामि तथा तस्यानुमतं भवेत्। गुणवते कन्यका प्रतिपादनीया इत्ययं तावत् प्रथमः संकल्पः।''**
➤ अनसूया शकुन्तला के भविष्य के प्रति चिन्तित रहती है, वह किसी भी विषय पर सम्यक् उहापोह और विचार-विमर्श करती है। वह चिन्तित है कि राजा दुष्यन्त अपने नगर हस्तिनापुर पहुँचने के बाद शकुन्तला के साथ किये गये गान्धर्व विवाह को स्मरण करेगा या नहीं – **''अद्य स राजर्षिः इतोगतं वृत्तान्तं स्मरति वा न वेति।''** (अङ्क-4)
➤ प्रियंवदा निःशङ्क और निश्चिन्त स्वभाव वाली है। उसे पूरा विश्वास है कि सुन्दर आकृति वाला दुष्यन्त गुणरहित नहीं हो सकता–**''न तादृशा आकृतिविशेषा गुणविरोधिनो भवन्ति''** (अङ्क-4)
➤ अनसूया भविष्य के प्रति सचेष्ट और व्यावहारिक बुद्धिवाली है। तृतीय अङ्क में वह राजा से यह वचन लेती है कि अनेक रानियों के बीच शकुन्तला की उपेक्षा न करें। **''वयस्य बहुवल्लभाः राजानः श्रूयन्ते''।** राजा उनकी प्रियसखी शकुन्तला को गौरवपूर्ण स्थान देने का आश्वासन देता है।
➤ शकुन्तला की विदाई के अवसर पर उसे सजाने के लिए अनसूया आम की डाल पर नारियल के डिब्बे में केसरमालिका को रखे रहती है।
➤ अनसूया, प्रियंवदा की अपेक्षा तात कण्व के अधिक निकट है, वह पिता के स्वभाव तथा विचारों को ठीक से जानती है, तात कण्व भी शकुन्तला की विदाई के अवसर पर अनसूया को ही बारम्बार सम्बोधित करते हैं।
➤ प्रियंवदा प्रणयव्यापार के स्वरूप को अच्छी प्रकार जानती है। शकुन्तला और दुष्यन्त के प्रेम में वह सूत्रधार का कार्य करती है। तृतीय अङ्क में शकुन्तला की अस्वस्थता के मूल कारण को प्रियंवदा ठीक से समझती है और उसके उपाय के रूप में शकुन्तला को मदनलेख (प्रेमपत्र) लिखने की प्रेरणा भी प्रियंवदा देती है, और उस प्रेमपत्र को फूलों में छिपाकर देवता के प्रसाद के बहाने राजा तक पहुँचाने का कार्य भी उसी के द्वारा सम्पन्न होता है।
➤ अनसूया अतिथि सत्कार करने में निपुण है, राजा दुष्यन्त के आश्रम आने पर वह शकुन्तला से कहती है–**''हला शकुन्तले, गच्छोटजम्। फलमिश्रमर्घमुपहर।''**
➤ श्राप को सुनकर प्रियंवदा दुर्वासा के समीप जाकर शकुन्तला की मङ्गलकामना हेतु क्षमायाचना करती है। (अङ्क-4)
➤ अनसूया विचारशील और मितभाषिणी है, वह हँसी, मजाक की बातों में विशेष भाग नहीं लेती। वह सशङ्कवृत्ति की है, सहसा किसी बात पर विश्वास नहीं करती। जबकि प्रियंवदा शीघ्र विश्वास करने वाली, परिहासप्रिया एवं वाक्पटु है।
➤ अनसूया भविष्य के सुख की विशेष चिन्ता करती है, प्रियंवदा वर्तमान को विशेष महत्त्व देती है।
➤ अनसूया अधिक व्यवहारिक, धीर और परिपक्व बुद्धि की है जबकि प्रियंवदा भावुक एवं चञ्चल है।

विदूषक (माधव्य)

परिचय –
➤ राजा दुष्यन्त का अन्तरङ्ग मित्र।
➤ हास्यरस का एक पात्र।
➤ 'माधव्य' नामक एक ब्राह्मण।

चारित्रिक विशेषतायें

- भोजनपटु।
- डरपोक एवं अकर्मण्य।
- राजा का परमप्रिय मित्र एवं परामर्शदाता।
- भीरु एवं सरल स्वभाव।

विदूषक का लक्षण

कुसुमवसन्ताद्यभिधः कर्मवपुर्वेषभाषाद्यैः।
हास्यकरः कलहरतिर्विदूषकः स्यात् स्वकर्मज्ञः।

विदूषक स्वामिभक्त, मनोविनोद में निपुण, कुपित नायिकाओं को मनाने वाला, एवं सच्चरित्र होता है। वह अपने ऊँटपटाँग कार्यों, विकृत अङ्गों तथा वेषभूषादि के द्वारा हास्य का वातावरण प्रस्तुत करता है। वह नायक का विश्वासपात्र तथा उसके प्रणय सम्बन्धी क्रियाकलापों में सहायता पहुँचाता है।

विदूषक (माधव्य) के गुण एवं कार्य

- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के विदूषक (माढव्य) का सर्वप्रथम दर्शन द्वितीय अङ्क में होता है।
- विदूषक माधव्य भोजनप्रिय एवं पेटू है। राजा दुष्यन्त शकुन्तला के प्रणयव्यापार में उनसे सहायता करने के लिए कहता है तो वह ''**किं मोदकखण्डिकायाम्**'' कहकर अपनी पेटपूजा पटुता का परिचय देता है।
- इसी प्रकार षष्ठ अङ्क में राजादुष्यन्त शकुन्तला के वियोग में अँगूठी से उपालम्भ देते हैं किन्तु विदूषक को वहाँ भी बुभुक्षा पीड़ित करती है– ''**कथं बुभुक्षया खादितव्योऽस्मि**'' (अङ्क-6)
- वह स्वभाव से अत्यन्त भीरु एवं डरपोक है। शकुन्तला के दर्शन हेतु वह भी उत्सुक था, पर जब वह राक्षसों का वृत्तान्त सुनता है, तब डर जाता है। (अङ्क-2)
- राजा के मृगयाव्यसन के कारण उसको विश्राम का तनिक भी अवसर प्राप्त नहीं होता है, इससे वह अत्यन्त दुःखी है– '**एतस्य मृगयाशीलस्य राज्ञो वयस्यभावेन निर्विण्णोऽस्मि।**'' (अङ्क-2)
- विदूषक अपने प्रत्येक क्रियाकलाप एवं भावभङ्गिमा से सभी को हँसाता है। जब राजा दुष्यन्त के सामने एक ही साथ ऋषियों की यज्ञरक्षा तथा माता की आज्ञा से राजधानी लौटने के दो कार्य उपस्थित होते हैं, तो विदूषक राजा से कहता है कि – ''**त्रिशङ्कुरिवान्तरा तिष्ठ।**'' (अङ्क-2)
- विदूषक यत्र तत्र अपनी मन्दबुद्धिता का भी परिचय देता है, परन्तु वैसे बहुत चतुर है। षष्ठ अङ्क में राजा के द्वारा आम्रमञ्जरी को मदनबाण कहने पर वह काष्ठदण्ड लेकर मारने दौड़ता है। उसकी मूर्खता पर खिन्न राजा भी हँस पड़ता है।
- विदूषक सरलहृदय का व्यक्ति है, राजा को सन्देह हुआ कि यह राजधानी में जाकर कहीं हमारे प्रणयप्रसङ्ग की चर्चा हमारी रानियों से न कर दे, अतः राजा दुष्यन्त ने उससे कहा कि वे सब मजाक की बातें हैं।
  ''**परिहासविजल्पितं सखे न परमार्थेन गृह्यतां वचः**'' (अङ्क-2)
- विदूषक राजा की इस बात को सच मान लेता है और रानियों से इसकी कोई चर्चा नहीं करता है।
- रानी वसुमती के आने पर वह शकुन्तला का चित्र लेकर भाग जाता है, और राजा को वसुमती के क्रोध से बचाता है।
- पञ्चम अङ्क के प्रारम्भ में रूठी रानी हंसपदिका को मनाने के लिए राजा विदूषक को ही भेजता है।
- षष्ठ अङ्क में इन्द्र का सारथि मातलि विदूषक को पीटता है जिससे राजा का क्रोध प्रस्फुटित होता है। तभी राजा दानवों के वधार्थ स्वर्ग को जाता है।
- वह राजा को समय-समय पर सान्त्वना देता है, उसका मनोरञ्जन करता है, और उचित परामर्श भी देता है। (अङ्क-6)

गौतमी

- **परिचय** – ऋषि कण्व की धर्मभगिनी
- कण्वाश्रम की सर्वाधिक वृद्धा तपस्विनी/वरिष्ठ महिला
- आश्रम की व्यवस्थापिका/अध्यक्षा

चारित्रिक विशेषताएँ –

- सम्मानित महिला
- वरिष्ठ तपस्विनी
- बुद्धिमती
- व्यवहारकुशल एवं लोकव्यवहार की ज्ञाता
- अभिभाविका
- अतीव सरल एवं निच्छल व्यक्तित्त्व
- ममतामयी एवं वात्सल्य की प्रतिमूर्ति

चारित्रिक गुण एवं कार्य

- महर्षि कण्व का गौतमी के प्रति सम्मानभाव है, इसीलिए शकुन्तला के साथ उसे हस्तिनापुर तक भेजा जाता है।
- गौतमी में अवस्थानुरूप गाम्भीर्य, सहिष्णुता एवं विवेकशीलता दृष्टिगोचर होती है, राजदरबार में दुष्यन्त जब शकुन्तला के साथ अपने सम्बन्ध को अस्वीकार कर देता है, तब वह शकुन्तला का घूँघट हटाकर स्वयं उसे अपने सम्बन्ध को प्रमाणित करने का आदेश देती है।
- गुरुजनों तथा बन्धु-बान्धवों से पूछे बिना दुष्यन्त एवं शकुन्तला के प्रेम सम्बन्धों को वह अनुचित मानती है।
- शकुन्तला के प्रति उसका हृदय माँ की वात्सल्यमयी ममता से ओतप्रोत है। वह उसे पुत्रीवत् स्नेह करती है। राजा दुष्यन्त द्वारा अस्वीकार कर दिये जाने पर शकुन्तला जब शार्ङ्गरव आदि के पीछे-पीछे आने लगती है तो उस समय गौतमी का वात्सल्यभाव जाग उठता है – **वत्स शार्ङ्गरव, अनुगच्छतीयं खलु नः करुणपरिदेविनी शकुन्तला........किं वा मे पुत्रिका करोतु।'' (अङ्क 5)**
- कण्व के आश्रम में गौतमी अभिभावक की महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है, तापसकन्याओं की देखरेख का उत्तरदायित्व उसी का है।
- प्रथम अङ्क में प्रियंवदा के परिहास से परेशान हुई शकुन्तला गौतमी से शिकायत करने को कहती है –

इयम् असम्बद्धप्रलापिनी....गौतम्यै निवेदयिष्यामि (अङ्क-1)
- शकुन्तला की अस्वस्थता का समाचार सुनकर गौतमी शान्तिजल लेकर उसके ऊपर छिड़कती है और वात्सल्यभाव से पूछती है–
'जाते, लघुसन्तापानि तेऽङ्गानि' (अङ्क-3)
- शकुन्तला की विदाई में विलम्ब होता देख गौतमी महर्षिकण्व से भी वापस लौट जाने का निवेदन करती है –
जाते, परिहीयते गमनवेला....निवर्ततां भवान्। (अङ्क-4)
- कण्व द्वारा शकुन्तला को उपदेश दिये जाने पर गौतमी उसे ठीक से स्मरण करने को कहती है –
जाते, एतत् खलु सर्वमवधारय। (अङ्क-4)
- गौतमी शकुन्तला को सर्वदा, **'वत्से'**, **'जाते'**, **'पुत्रि'** आदि यही सम्बोधन करती है इससे शकुन्तला के प्रति उसका अगाध स्नेह स्वयं व्यक्त होता है।
- शकुन्तला को छोटी-छोटी व्यवहार और शिष्टाचार की बातें भी गौतमी बताती हैं, विदाई के समय कण्व ऋषि के आने पर शकुन्तला को प्रणाम करने को कहती है।
''आचारं तावत् प्रतिपद्यस्व'' (अङ्क-4)
- कण्व द्वारा पुत्री शकुन्तला के लिए चक्रवर्ती पुत्र प्राप्त करने का आशीर्वाद सुनकर गौतमी अत्यन्त प्रसन्न होकर कहती है – यह तो केवल आशीर्वाद नहीं, अपितु वरदान है।
भगवन्, वरः खल्वेषः, नाशीः (अङ्क-4)
- आश्रम की संरक्षिका, व्यवस्थापिका, अध्यक्षा या वरिष्ठ तपस्विनी के रूप में गौतमी का सम्मान सभी आश्रमवासी करते हैं। शकुन्तला को हस्तिनापुर ले जाने के लिए शार्ङ्गरव आदि को गौतमी ही आदेश देती है –
'गौतमि, आदिश्यन्तां शार्ङ्गरवमिश्राः शकुन्तलानयनाय' (अङ्क-4)

शार्ङ्गरव और शारद्वत

- **परिचय** – शार्ङ्गरव और शारद्वत दोनों कण्व ऋषि के शिष्य।

चारित्रिक गुण एवं कार्य
- कण्व ऋषि इनके नाम के साथ आदरसूचक 'मिश्र' शब्द का प्रयोग करते हैं –
'आदिश्यन्तां शार्ङ्गरवमिश्राः' (अङ्क-4)
'क्व ते शार्ङ्गरवमिश्राः' (अङ्क-4)
- दोनों परिपक्व आयु वाले तथा विद्यानिष्णात हैं।
- गुरु कण्व का इन दोनों के ऊपर अटूट विश्वास है, तभी तो उनकी देखरेख में शकुन्तला को पतिगृह (हस्तिनापुर) भेजते हैं।
- राजा दुष्यन्त इन दोनों के गरिमामय व्यक्तित्व को देखकर उन्हें गुरु समान कहता है –
''गुरुशिष्ये गुरुसमे'' – (अङ्क-6)
- शास्त्रज्ञान के साथ ही साथ इन दोनों ऋषियों में लौकिकज्ञान भी विद्यमान है।
- शकुन्तला की विदाई के समय मार्ग में सरोवर को देखकर शार्ङ्गरव महर्षि कण्व से लौट जाने को कहता है –
''भगवन् ओदकान्तं स्निग्धो जनोऽनुगन्तव्य इति श्रूयते। तदिदं सरस्तीरम्.......।'' (अङ्क-4)
- दोनों ऋषियों को आश्रम के जीवन से प्रेम है और नगर जीवन से घृणा।
- हस्तिनापुर नगर में प्रवेश करते समय एक ओर जहाँ शार्ङ्गरव राजभवन को अग्नि की लपटों से घिरा हुआ समझता है –
'जनाकीर्णं मन्ये हुतवहपरीतं गृहमिव' (अङ्क-5)
- वहीं दूसरी ओर शारद्वत नगर के भोगासक्त लोगों को उसी प्रकार समझता है, जिस प्रकार स्नात व्यक्ति तैलासिक्त को, पवित्र व्यक्ति अपवित्र को, प्रबुद्ध व्यक्ति सोये हुए को, और स्वच्छन्दचारी व्यक्ति बन्धनयुक्त को समझता है –
''अभ्यक्तमिव स्नातः शुचिरशुचिमिव'' (अङ्क-5/11)
- इन दोनों में शार्ङ्गरव अधिक आयु का है, ऋषि कण्व को उस पर अधिक विश्वास है, अतः राजा दुष्यन्त के लिए **(अस्मान् साधु विचिन्त्य संयमधनान्----अङ्क-4.17)** रूपी संदेश उसी को देते हैं। शार्ङ्गरव ही शकुन्तला के साथ हस्तिनापुर जाने वाले दल का नेता है, जबकि ऋषि शारद्वत उससे छोटा और शान्तस्वभाव का है।
- शार्ङ्गरव, शारद्वत की अपेक्षा अधिक वाक्पटु एवं लौकिक व्यवहार का ज्ञाता है, जबकि शारद्वत मितभाषी है। उसके विचार दार्शनिक हैं, उसमें दूसरों के प्रति सहानुभूति है।
- शार्ङ्गरव बहुत बोलने वाला, क्रोधी, असहिष्णु, कठोर और अशान्त प्रकृति का है। वह अपने नाम को चरितार्थ करता है, क्योंकि शार्ङ्गरव का शाब्दिक अर्थ है – **'धनुष के समान शब्द करने वाला।'** राजा दुष्यन्त जब शकुन्तला को नहीं पहचानता और विवाह को अस्वीकार कर देता है, तो वह उसे शठ, अधार्मिक और ऐश्वर्योन्मत्त आदि कहकर फटकारता है –
''मूर्च्छन्त्यमी विकाराः प्रायेणैश्वर्यप्रमत्तेषु।'' (अङ्क-5/18)
- शार्ङ्गरव अत्यन्त निर्भय एवं स्पष्टवादी है। दुष्यन्त जब अपने आपको शकुन्तला का पति नहीं मानता, तो शार्ङ्गरव उसे चोर तक कहता है – **''पात्रीकृतो दस्युरिवासि येन'' अङ्क-(5/20)**
- शारद्वत मितभाषी, अक्रोधी, सहिष्णु तथा शान्त प्रकृति का है, जब राजा दुष्यन्त और शार्ङ्गरव का विवाद उग्र रूप धारण करता है, तब वही उसे शान्त करता है –
''शार्ङ्गरव, विरम त्वमिदानीम्'' (अङ्क-5)
- शारद्वत राजा दुष्यन्त से अन्ततः कहता है कि शकुन्तला तुम्हारी पत्नी है, तुम इसे रखो या छोड़ो, हम लोग जाते हैं –
''तदेषा भवतः कान्ता, त्यज वैनां गृहाण वा'' (अङ्क-5)
- शार्ङ्गरव व्यवहारकुशल नहीं है, वह राजा से झगड़े को बढ़ाता है, जबकि शारद्वत अत्यन्त व्यवहारिक है वह झगड़े को निपटाता है। शारद्वत के कारण ही विवाद शान्त हुआ।
- दुष्यन्त के अपमानजनक व्यवहार से दुखी शकुन्तला जब रोने लगती है, तब शार्ङ्गरव उसे डाँटता है –
''अतः परीक्ष्य कर्त्तव्यं विशेषात् सङ्गतं रहः'' (अङ्क-5/24)
- जब दरबार में शकुन्तला को छोड़कर गौतमी सहित दोनों शिष्य आश्रम लौटने लगते हैं, तब शकुन्तला भी उनके पीछे-पीछे लौटने लगती है, तभी शार्ङ्गरव पुनः शकुन्तला को कठोर शब्दों में डाँटता है– **''किं पुरोभागे, स्वातन्त्र्यमवलम्बसे'' (अङ्क-5)**

अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में प्रयुक्त छन्द एवं अलङ्कार

क्र.	श्लोक (वक्ता)	छन्दः	अलङ्कारः
1.	**विचिन्तयन्ती यमनन्यमानसा.......।** (ऋषि दुर्वासा) (4-1) नेपथ्य से	**वंशस्थ** (प्रत्येक चरण में 12 वर्ण)	● काव्यलिङ्ग, उपमा, और श्लेष अलङ्कार।
2.	**यात्येकतोऽस्तशिखरं पतिरोषधीनाम्.......। (4-2)** (कण्व का शिष्य)	**वसन्ततिलका** (प्रत्येक पाद में 14 वर्ण)	● समासोक्ति, तुल्ययोगिता, यथासंख्य और उत्प्रेक्षा अलंकार।
3.	**अन्तर्हिते शशिनि सैव कुमुद्वती मे।** (4-3) (कण्व का शिष्य)	**वसन्ततिलका** (प्रत्येक पाद में 14 वर्ण)	● समासोक्ति काव्यलिङ्ग, और अर्थान्तरन्यास अलङ्कार ● नाटक में ये तीसरा **पताकास्थानक** है।
	कर्कन्धूनामुपरि तुहिनं रञ्जयत्यग्रसन्ध्या.......। (बँगला संस्करण में प्राप्त प्रक्षिप्त श्लोक)	**मन्दाक्रान्ता** (प्रत्येक पाद में 17 वर्ण)	● स्वभावोक्ति अलङ्कार।
	पादन्यासं क्षितिधरगुरोर्मूर्ध्नि कृत्वा सुमेरोः......। (बँगला संस्करण में प्राप्त प्रक्षिप्त श्लोक)	**मन्दाक्रान्ता** (प्रत्येक पाद में 17 वर्ण)	● समासोक्ति, अर्थान्तरन्यास और श्लेष अलङ्कार।
4.	**दुष्यन्तेनाहितं तेजो दधानां भूतये भुवः.....।** (4-4) (छन्दोमयी आकाशवाणी)	**अनुष्टुप् या श्लोकवृत्त** (प्रत्येक पाद में 8 वर्ण)	● उपमा अलंकार ● इस श्लोक में मार्ग नामक गर्भसन्धि का अङ्ग है।
5.	**क्षौमं केनचिदिन्दुपाण्डु तरुणा माङ्गल्यमाविष्कृतम्......।** (4-5) (कण्व का शिष्य)	**शार्दूलविक्रीडितम्** (प्रत्येक पाद में 19 वर्ण)	उपमालङ्कार।
6.	**यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया......।** (4-6) (महर्षि कण्व)	**शार्दूलविक्रीडितम्** (प्रत्येक पाद में 19 वर्ण)	● व्यतिरेक अलङ्कार। ● **प्रसिद्ध चार श्लोकों में से एक।**
7.	**ययातेरिव शर्मिष्ठा भर्तुर्बहुमता भव।** (4-7) (महर्षि कण्व)	**अनुष्टुप्** (प्रत्येक पाद में 8 वर्ण)	● उपमा अलङ्कार। ● इस श्लोक में क्रम नामक गर्भसन्धि का अङ्ग तथा आशीः नामक नाटकीय अलङ्कार है।
8.	**अमी वेदिं परितः क्लृप्तधिष्ण्याः।** (4-8) (महर्षि कण्व)	**त्रिष्टुप् (वैदिक छन्द)** (प्रत्येक पाद में 11 वर्ण)	● परिकर अलङ्कार।
9.	**पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं युष्मास्वपीतेषु या......। (4-9)** (महर्षि कण्व)	**शार्दूलविक्रीडितम्** (प्रत्येक पाद में 19 वर्ण)	● समासोक्ति, और काव्यलिङ्ग अलङ्कार। ● **प्रसिद्ध चार श्लोकों में से एक।**
10.	**अनुमतगमना शकुन्तला......।** (4-10) (महर्षि कण्व)	**अपरवक्त्रछन्दः** (प्रथम और तृतीय चरण में 11 वर्ण द्वितीय और चतुर्थचरण में 12 वर्ण)	● परिणाम अलङ्कार।
11.	**रम्यान्तरः कमलिनीहरितैः सरोभिः।** (4-11) (देवताओं की आकाशवाणी)	**वसन्ततिलका** (प्रत्येक पाद में 14 वर्ण)	● परिकर, तुल्योगिता, काव्यलिङ्ग और हेतु अलङ्कार।
12.	**उद्गलितदर्भकवला मृग्यः......।** (प्रियंवदा) (4-12)	**आर्या** (प्रथम पाद में 12 वर्ण)	● उत्प्रेक्षा और समासोक्ति अलङ्कार।

13.	**सङ्कल्पितं प्रथममेव मया तवार्थे....।** (4-13) (काश्यप/कण्व)	**वसन्ततिलका** (प्रत्येक पाद में 14 वर्ण)	● समासोक्ति, तुल्ययोगिता सम और काव्यलिङ्ग, अलङ्कार।
14.	**यस्य त्वया व्रणविरोपणमिङ्गुदीनाम्** (4-14) (काश्यप/कण्व)	**वसन्ततिलका** (प्रत्येक पाद में 14 वर्ण)	● स्वभावोक्ति अलङ्कार।
15.	**उत्पक्ष्मणोर्नयनयोरूपरुद्धवृत्तिम्....।** (4-15) (काश्यप/कण्व)	**वसन्ततिलका।** (प्रत्येक पाद में 14 वर्ण)	● काव्यलिङ्ग अलङ्कार।
16.	**एषापि प्रियेण विना गमयति....।** (4-16) **(अनसूया)**	**आर्या** (प्रथम पाद में 12 वर्ण)	● अर्थान्तरन्यास अलङ्कार।
17.	**अस्मान् साधु विचिन्त्य संयमधनानुच्चैः कुलं चात्मनः....।** (4-17) (काश्यप/कण्व)	**शार्दूलविक्रीडितम्** (प्रत्येक पाद में 19 वर्ण)	● अप्रस्तुतप्रशंसा अलङ्कार। ● **प्रसिद्ध चार श्लोकों में से एक।**
18.	**शुश्रूषस्व गुरून् कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीजने....।** (4-18) (काश्यप/कण्व)	**शार्दूलविक्रीडितम्।** (प्रत्येक पाद में 19 वर्ण)	● रूपक, हेतु, और अर्थान्तरन्यास अलङ्कार। ● इस श्लोकों में 'उपदिष्ट' नामक नाटकीय लक्षण है। **प्रसिद्ध चार श्लोकों में से एक।**
19.	**अभिजनवतो भर्तुः श्लाघ्ये स्थिता गृहिणीपदे......।** (4-19) (काश्यप/कण्व)	**हरिणी** (प्रत्येक पाद में 17 वर्ण)	● उपमा, समुच्चय और काव्यलिङ्ग अलङ्कार। ● कुछ लोग "अस्मान् साधु...." के स्थान पर इसे प्रसिद्ध चार श्लोकों में गिनते हैं।
20.	**भूत्वा चिराय चतुरन्तमहीसपत्नी।** (4-20) (काश्यप/कण्व)	**वसन्ततिलका** (प्रत्येक पाद में 14 वर्ण)	● मालादीपक अलङ्कार। ● कुछ लोग "पातुं न प्रथमं....." के स्थान पर इसे भी चार प्रसिद्ध श्लोकों में गिनते हैं।
21.	**शममेष्यति मम शोकः कथं नु.....।** (4-21) (काश्यप/कण्व)	**आर्या जातिः**	काव्यलिङ्ग अलङ्कार।
22.	**अर्थो हि कन्या परकीय एव....।** (4-22) (काश्यप/कण्व)	**इन्द्रवज्रा** (प्रत्येक पाद में 11 वर्ण)	उत्प्रेक्षा अलङ्कार।

- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चारों प्रसिद्ध श्लोक महर्षि कण्व ने कहे हैं।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में कुल 22 श्लोक हैं, जिसमें 14 श्लोक महर्षि कण्व के द्वारा बोले गए हैं।
- चतुर्थ अङ्क में **"उद्गलितदर्भकवला मृग्यः"** (4.12) इस श्लोक को प्रियंवदा तथा **"एषापि प्रियेण विना गमयति रजनी"** (4.16) इस एक श्लोक को अनसूया बोलती है।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के केवल चतुर्थ अङ्क में महर्षि कण्व का दर्शन होता है।
- चतुर्थ अङ्क के बाद अनसूया और प्रियंवदा का वर्णन नहीं मिलता है।

अभिज्ञानशाकुन्तलम् के महत्त्वपूर्ण संवाद/कथन/सूक्तियाँ

क्र. कथन	भावार्थ	वक्ता
01. आत्मनो नगरं प्रविश्यान्तःपुर समागत इतोगतं वृत्तान्तं स्मरति वा न वेति।	राजा अपने नगर में प्रवेश करके और अन्तःपुर की स्त्रियों से मिलकर यहाँ की बातों को याद करेगा अथवा नहीं।	**अनसूया**
02. न तादृशा आकृतिविशेषा गुणविरोधिनो भवन्ति।	उसप्रकार की सुन्दर आकृतियाँ गुणों से रहित नहीं होती हैं।	**प्रियंवदा**

क्र.	कथन	भावार्थ	वक्ता
03.	**गुणवते कन्यका प्रतिपादनीयेत्ययं तावत् प्रथमः संकल्पः।**	गुणवान् व्यक्ति को कन्या देनी चाहिए, यह (माता-पिता का) प्रथम संकल्प होता है।	**अनसूया**
04.	**ननु सख्याः शकुन्तलायाः सौभाग्यदेवताऽर्चनीया**	सखि शकुन्तला के सौभाग्यदेवता (पति) की भी तो पूजा करनी है	**अनसूया**
05.	**सखि, अतिथीनामिव निवेदितम्**	सखी! किसी अतिथि की सी यह आवाज है।	**अनसूया**
06.	**ननूटजसन्निहिता शकुन्तला।**	शकुन्तला तो कुटी पर उपस्थित है ही।	**प्रियंवदा**
07.	**अद्य पुनर्हृदयेनासंनिहिता।**	किन्तु आज वह हृदय से अनुपस्थित है। अर्थात् आज उसका मन कहीं और है।	**अनसूया**
08.	**विचिन्तयन्ती यमनन्यमानसा तपोधनं वेत्सि न मामुपस्थितम् (4.1)**	एकाग्रचित्त से जिसका चिन्तन करती हुई तू उपस्थित हुए मुझ तपस्वी को नही देख रही हो।	**दुर्वासा (नेपथ्ये)**
	स्मरिष्यति त्वां न स बोधितोऽपि सन् कथां प्रमत्तः प्रथमं कृतामिव॥ (4.1)	वह तेरे स्मरण दिलाने पर भी तुझको स्मरण नहीं करेगा, जैसे उन्मत्त व्यक्ति पहले कही बात को स्मरण नहीं करता है।	**दुर्वासा (नेपथ्ये)**
09.	**हा धिक्, हा धिक्। अप्रियमेव संवृत्तं कस्मिन्नपि पूजार्हेऽपराद्धा शून्यहृदया शकुन्तला।**	हाय हाय धिक्कार है। अनर्थ हो गया। किसी पूजनीय व्यक्ति के प्रति शून्य हृदयवाली शकुन्तला ने कुछ अपराध कर दिया है।	**प्रियंवदा**
10.	**न खलु यस्मिन् कस्मिन्नपि। एष दुर्वासाः** जिस किसी साधारण व्यक्ति के प्रति नहीं। ये **सुलभकोपो महर्षिः**	**प्रियंवदा** तो शीघ्र कुपित हो जाने वाले महर्षि दुर्वासा हैं।	
11.	**कोऽन्यो हुतवहाद् दग्धुं प्रभवति।**	अग्नि के अतिरिक्त और कौन जला सकता है।	**अनसूया**
12.	**सखि, प्रकृतिवक्रः स कस्यानुनयं प्रतिगृह्णाति**	सखी! स्वभाव से टेढ़े वे महर्षि दुर्वासा किसकी प्रार्थना को स्वीकार करते हैं।	**प्रियंवदा**
13.	**भगवन्, प्रथम इति प्रेक्ष्याविज्ञाततपः प्रभावस्य दुहितृजनस्य भगवतैकोऽपराधो मर्षयितव्य इति।**	भगवन्! आपके तप के प्रभाव को न जानने वाली आपकी पुत्रीजन शकुन्तला का यह पहला अपराध है– यह समझकर आपके द्वारा उसका यह एक अपराध क्षमा कर दिया जाना चाहिए।	**प्रियंवदा**
14.	**न मे वचनमन्यथा भवितुमर्हति।**	मेरा वचन असत्य नहीं हो सकता।	**प्रियंवदा** (दुर्वासा)
15.	**अभिज्ञानाभरणदर्शनेन शापो निवर्तिष्यत इति मन्त्रयमाण एवान्तर्हितः।**	'पहचान के आभूषण को दिखाने से मेरा शाप समाप्त हो जाएगा'–यहकथन को बताती है। कहते कहते ही वे अदृश्य हो गए।	**प्रियंवदा** (दुर्वासा)
16.	**अस्ति तेन राजर्षिणा संप्रस्थितेन स्वनामधेयाङ्कितमङ्गुलीयकं स्मरणीयमिति स्वयं पिनद्धम्**	उस राजर्षि के द्वारा अपने नाम से अङ्कित अँगूठी स्मृति-चिह्न के रूप में शकुन्तला की अंगुली में स्वयं पहनायी गयी थी	**अनसूया**
17.	**वामहस्तोपहितवदनाऽऽलिखितेव प्रियसखी**	बायें हाथ पर मुँह रखी हुई प्रियसखी शकुन्तला चित्रित सी बैठी हुई है।	**प्रियंवदा**
18.	**भर्तृगतया चिन्तयात्मानमपि नैषा विभावयति। किं पुनरागन्तुकम्।**	पति के ध्यान में मग्न होने के कारण उसे अपने आपकी सुध नहीं है, फिर अतिथि की बात ही क्या है?	**प्रियंवदा**
19.	**प्रियंवदे, द्वयोरेव नौ मुख एव वृत्तान्तस्तिष्ठतु**	प्रियंवदा, यह समाचार हम दोनों के मुख तक ही सीमित रहे।	**अनसूया**
20.	**रक्षितव्या खलु प्रकृतिपेलवा प्रियसखी।**	स्वभाव से ही कोमल प्रियसखी शकुन्तला की रक्षा करनी चाहिए। (अन्यथा यह समाचार सुनकर उसे बहुत आघात पहुँचेगा)	**अनसूया**
21.	**को नामोष्णोदकेन नवमालिकां सिञ्चति**	भला कौन नवमालिका (चमेली) को गर्मजल से सींचेगा।	**प्रियंवदा**

सूक्ति	अर्थ	वक्ता
22. तेजोद्वयस्य युगपद् व्यसनोदयाभ्यां लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु।	यह संसार दो तेजों चन्द्रमा और सूर्य के एक साथ अस्त एवं उदित होने से अपनी दशाओं के परिवर्तित होने के विषय में मानो नियंत्रित अर्थात् शिक्षित किया जा रहा है।	कण्व का शिष्य
23. इष्टप्रवासजनितान्यबलाजनस्य दुःखानि नूनमतिमात्र दुःसहानि (4.3)	निश्चय ही स्त्रियों को अपने इष्टजन (प्रियतमों) के प्रवास से उत्पन्न दुःख अत्यन्त असह्य होते हैं।	कण्व का शिष्य
24. तेन राज्ञा शकुन्तलायामनार्यमाचरितम्।	राजा ने शकुन्तला के साथ अशिष्ट व्यवहार किया है।	अनसूया
25. काम इदानीं सकामो भवतु येनासत्यसन्धे जने शुद्धहृदया सखी पदं कारिता।	कामदेव की अब इच्छा पूर्ण हो, जिसने असत्यप्रतिज्ञ व्यक्ति (दुष्यन्त) के प्रति शुद्ध हृदयवाली सखी शकुन्तला का प्रेम कराया है।	अनसूया
26. दुःखशीले तपस्विजने कोऽभ्यर्थ्यताम्। ननु सखीगामी दोष इति।	कष्ट सहन करने वाले तपस्वियों में से किससे प्रार्थना करें। हमारी सखी पर दोष आयेगा।	अनसूया
45. वत्से, इतः सद्योहुताग्नीन् प्रदक्षिणीकुरुष्व	पुत्री! अभी हवन की गयी अग्नि की इधर से प्रदक्षिणा करो।	महर्षि कण्व
46. भगवन्! वरः खल्वेषः नाशीः।	भगवन्! यह तो वरदान है, केवल आशीर्वाद नही।	गौतमी
47. भो भोः संनिहितास्तपोवनतरवः! सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम्	हे समीपस्थ तपोवन के वृक्षों! वही यह शकुन्तला पति के घर जा रही है, आप सभी लोग अनुमति दें।	महर्षि कण्व
48. अनुमतगमना शकुन्तला तरुभिरियं वनवासबन्धुभिः। (4.10)	वृक्षों ने इस शकुन्तला को पतिगृह जाने की अनुमति दे दी है।	महर्षि कण्व
49. शान्तानुकूलपवनश्च शिवश्च पन्थाः।	इस शकुन्तला का मार्ग शान्त और अनुकूल वायु वाला एवं कल्याण करने वाला हो।	आकाश भाषित
50. उद्गलितदर्भकवला मृग्यः परित्यक्तनर्तना मयूराः। (4.12)	मृगियों ने कुश के ग्रास को उगल दिया है, मोरों ने नाचना छोड़ दिया है	प्रियंवदा
51. अपसृतपाण्डुपत्रा मुञ्चन्त्यश्रूणीव लताः। (4.12)	लतायें पीले पत्तों को गिराकर मानों आँसुओं को छोड़ रही हैं।	प्रियंवदा
52. तात, लताभगिनीं वनज्योत्स्नां तावदामन्त्रयिष्ये।	हे पिताजी! मैं अपनी लता-बहिन वनज्योत्स्ना से विदाई ले लूँ।	शकुन्तला
53. अद्यप्रभृति दूरपरिवर्तिनी ते खलु भविष्यामि	आज से मैं तुमसे दूर हो जाऊँगी।	शकुन्तला
54. अस्यामहं त्वयि च सम्प्रति वीतचिन्तः।	अब मैं इस वनज्योत्स्ना और तुम्हारे विषय में निश्चिन्त हो गया हूँ।	महर्षि कण्व
55. हला एषा द्वयोर्युवयोर्हस्ते निक्षेपः	सखियों, इस लता को तुम दोनों के ही हाथ में सौंप रही हूँ।	शकुन्तला
56. अयं जनः कस्य हस्ते समर्पितः।	इस जन (हम दोनों) को किसके हाथ में सौंप रही हो।	दोनों सखियाँ
57. को नु खल्वेष निवसने मे सज्जते?	यह कौन मेरे वस्त्र से लिपट रहा है।	शकुन्तला
58. सोऽयं न पुत्रकृतकः पदवीं मृगस्ते	पुत्रवत् पाला गया यह मृग तेरा मार्ग नहीं छोड़ रहा है।	महर्षि कण्व
59. वत्स किं सहवासपरित्यागिनीं मामनुसरसि।	पुत्र, साथ छोड़कर जाने वाली मुझ (शकुन्तला) के पीछे-पीछे क्यों आ रहे हो।	शकुन्तला

60. वाष्पं कुरु स्थिरतया विरतानुबन्धम् (4.15)	अश्रुप्रवाह को धैर्यपूर्वक रोको।	महर्षि कण्व
61. मार्गे पदानि खलु ते विषमी भवन्ति।	इस ऊबड़-खाबड़ भूमि में तुम्हारे पैर लड़खड़ा रहे हैं।	महर्षि कण्व
62. भगवन्, ओदकान्तं स्निग्धो जनोऽनुगन्तव्य इति श्रूयते।	भगवन्, यात्रा के समय प्रियव्यक्ति का जलाशय तक अनुगमन करना चाहिए–ऐसा सुना जाता है।	शार्ङ्गरव
63. गुर्वपि विरहदुःखमाशाबन्धः साहयति। (4.16)	आशा का बन्धन असहय वियोग के दुःख को भी सहन करा देता है।	अनसूया
64. अस्मान् साधु विचिन्त्य संयमधनानुच्चैः कुलं चात्मनः।.... (4.17)	संयम रूपी धन वाले हम लोगों को तथा अपने ऊँचे कुल को ध्यान में रखते हुए आप कोई व्यवहार करें।	महर्षि कण्व
65. भाग्यायत्तमतः परं न खलु तद्वाच्यं वधूबन्धुभिः (4.17)	इसके आगे तो भाग्य के अधीन है, वह हम वधू के सम्बन्धियों को नहीं कहना चाहिए।	महर्षि कण्व
66. वनौकसोऽपि सन्तो लौकिकज्ञा वयम्	वनवासी होते हुए भी हम लोग लोक व्यवहार को जानने वाले हैं।	महर्षि कण्व
67. न खलु धीमतां कश्चिदविषयो नाम	वस्तुतः विद्वानों को कुछ भी अज्ञात नहीं है।	शार्ङ्गरव
68. शुश्रूषस्व गुरून् कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीजने। (4.18)	गुरुजनों = बड़ों की सेवा करना, सपत्नियों के साथ प्रियसखी जैसा व्यवहार करना।	महर्षि कण्व
69. यान्त्येवं गृहिणीपदं युवतयो वामाः कुलस्याधयः। (4.18)	इस प्रकार आचरण करने वाली युवतियाँ गृहलक्ष्मी के पद को प्राप्त कर लेती हैं, और इसके प्रतिकूल आचरण करने वाली युवतियाँ कुल के लिए आधि बन जाती हैं।	महर्षि कण्व
70. वत्से, इमे अपि प्रदेये। न युक्तमनयोः तत्र गन्तुम्।	पुत्री इन दोनों का भी विवाह करना है, इनका वहाँ जाना उचित नहीं है।	महर्षि कण्व
71. मम विरहजां न त्वं वत्से शुचं गणयिष्यसि। (4.19)	मेरे विरह से उत्पन्न शोक को शीघ्र ही भूल जाओगी।	महर्षि कण्व
72. तात, कदा नु भूयस्तपोवनं प्रेक्षिष्ये?	पिताजी मैं फिर कब तपोवन को देखूँगी? अर्थात् आप मुझे कब बुलायेंगे।	शकुन्तला
73. अतिस्नेहः पापशङ्की	अत्यधिक प्रेम पाप (अनिष्ट) की आशङ्का करता है।	दोनों सखियाँ
74. भूत्वा चिराय चतुरन्तमहीसपत्नी.... शान्ते करिष्यसि पदं पुनराश्रमेऽस्मिन्। (4.20)	बहुत दिनों तक चारों समुद्रों तक फैली हुई पृथ्वी की सपत्नी अर्थात् राजा की पटरानी होकर अपने पति दुष्यन्त के साथ आश्रम आओगी।	महर्षि कण्व
75. शममेष्यति मम शोकः कथं नु वत्से त्वया रचितपूर्वम् (4.21)	नीवार को देखते हुए मेरा शोक अब कैसे शान्त हो सकेगा।	महर्षि कण्व
76. गच्छ! शिवास्ते पन्थानः सन्तु।	जाओ! तुम्हारा मार्ग मंगलमय हो।	महर्षि कण्व
77. तात! शकुन्तलाविरहितं शून्यमिव तपोवनं कथं प्रविशावः।	पिताजी, शकुन्तला से रहित इस सूने तपोवन में हम कैसे प्रवेश करें।	अनसूया एवं प्रियंवदा दोनों सखियाँ
78. हन्त भोः! शकुन्तलां पतिकुलं विसृज्य लब्धमिदानीं स्वास्थ्यम्।	अहा! शकुन्तला को ससुराल भेजकर अब मुझे मानसिक शान्ति प्राप्त हुई।	महर्षि कण्व
79. अर्थो हि कन्या परकीय एव। (4.22)	कन्या वस्तुतः दूसरे का ही धन है।	महर्षि कण्व
80. जातो ममायं विशदः प्रकामं प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा (4.22)	मेरा यह हृदय उसी प्रकार अत्यन्त प्रसन्न हो रहा है, जिस प्रकार धरोहर को लौटाने पर धरोहर रखने वाले व्यक्ति का मन प्रसन्न होता है।	महर्षि कण्व

❑❑

उत्तररामचरितम् (अंक1-3)

महाकवि भवभूति का परिचय

- **पितामह** – भट्टगोपाल
- **पिता** – नीलकण्ठ
- **माता** – जतुकर्णी (जातुकर्णी)
- **भवभूति का मूलनाम** – श्रीकण्ठ या भट्टश्रीकण्ठ
- **गुरु** – (i) ज्ञाननिधि (ii) कुमारिलभट्ट
- **भवभूति का दार्शनिक नाम** – उदुम्बर/उम्बिकाचार्य/उम्बेक
- **जन्मस्थान** – दक्षिणभारत में पद्मपुर नगर
- **उपाधि** – (i) पदवाक्यप्रमाणज्ञ, पद = व्याकरण, वाक्य = मीमांसा, प्रमाण = न्याय (ii) वश्यवाक्, (iii) परिणतप्रज्ञ, (iv) शिखरिणीकवि
- **वंश/गोत्र** – काश्यप
- **जाति** – कृष्णयजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखापाठी ब्राह्मण
- **आश्रयदाता** – कान्यकुब्जनरेश यशोवर्मा
- **समय**– 650 ई. से 750 ई. के बीच (सातवीं शताब्दी का उत्तरार्ध)
- **रचनायें** – 1. मालतीमाधवम् (प्रकरण)
  2. महावीरचरितम् (नाटक)
  3. उत्तररामचरितम् (नाटक)
- **भवभूति की रीति** – गौडी
  (उत्तररामचरितम् में गौड़ी और वैदर्भी का समन्वय)
- **भवभूति का प्रियरस** – करुण
- **भवभूति के प्रियछन्द** – अनुष्टुप् और शिखरिणी
- **उपासक** – शिव के
- उत्तररामचरितम् में भवभूति अपने आपको **'परिणतप्रज्ञ'** कहते हैं।
- महावीरचरितम् में भवभूति अपने आपको **'वश्यवाक्'** कहते हैं।
- भवभूति के नाटकों में **'अभिधावृत्ति'** मुख्य है।
- भवभूति की कृतियों में **'ओजगुण'** अधिक है।
- **क्षेमेन्द्र ने 'सुवृत्ततिलक'** में भवभूति के शिखरिणी की प्रशंसा में उसे **'निरर्गलतरङ्गिणी'** कहा है –
  भवभूतेः शिखरिणी निरर्गलतरङ्गिणी।
  रुचिरा घनसन्दर्भे या मयूरीव नृत्यति॥ (सु. 3.33)
- भवभूति के तीनों नाटकों में **विदूषक का सर्वथा अभाव** है।

महाकवि भवभूति विषयक प्रशस्तियाँ

☞ कवयः कालिदासाद्याः भवभूतिर्महाकविः।
– अज्ञात समालोचक

नाटके भवभूतिर्वा वयं वा वयमेव वा।

☞ उत्तरे रामचरिते भवभूतिर्विशिष्यते। **– विक्रमार्क**

☞ कारुण्यं भवभूतिरेव तनुते। **– अज्ञात**

☞ बभूव वाल्मीकभवः कविः पुरा ततः प्रपेदे भुवि भर्तृमेण्ठताम्।
स्थितः पुनर्योभवभूतिरेखया स वर्तते सम्प्रति राजशेखरः।।
– राजशेखर - बालरामायण

☞ भवभूतेर्शिखरिणी निरर्गलतरङ्गिणी।
रुचिरा घनसन्दर्भे या मयूरीव नृत्यति।।
– क्षेमेन्द्र - सुवृत्ततिलक

☞ भवभूतेः सम्बन्धाद्भूधरभूरेव भारती भाति।
एतत्कृतकारुण्ये किमन्यथा रोदिति ग्रावा।।
– गोवर्धनाचार्य - आर्यासप्तशती।

☞ स्पष्टभावरसा चित्रैः पादन्यासैः प्रवर्तिता।
नाटकेषु नटस्त्रीव भारती भवभूतिना।।
– धनपाल - तिलकमञ्जरी

☞ सुकविद्वितयं मन्ये निखिलेऽपि महीतले।
भवभूतिः शुकश्चायं वाल्मीकिस्त्रितयोऽनयोः।।
– भोज - भोजप्रबन्ध

☞ रत्नावली पूर्वकमन्यदास्तामसीमभोगस्य वचोमयस्य।
पयोधरस्येव हिमाद्रिजायाः परं विभूषा भवभूतिरेव।।
– जल्हण - सूक्तिमुक्तावली

☞ भवभूतिमनादृत्य निर्वाणमतिना मया।
मुरारिपदचिन्तायामिदमाधीयते मनः।।
– जल्हण - सूक्तिमुक्तावली।

☞ मान्यो जगत्यां भवभूतिरार्या सारस्वते वर्त्मनि सार्थवाहः।
वाचं पताकामित्रस्य दृष्ट्वा जनः कवीनामनुपृष्ठमेति।।
– उदयसुन्दरीचम्पू

☞ भवभूतिजलधिनिर्गतकाव्यामृतरसकणा इव स्फुरन्ति।
यस्य विशेषा अद्यापि विकटेषु कथानिवेशेषु।।
– गौडवहो - वाक्पतिराज

☞ जडानामपि चैतन्यं भवभूतेरभूद् गिरा।
ग्रावाप्यरोदीत् पार्वत्याः हसतः स्म स्तनावपि।। **– अज्ञात**

☞ अन्तर्मोदं कमपि भवभूतिर्वितनुते।। **– सदुक्तिकर्णामृत**

☞ भव्यां यदि विभूतित्वं तात कामयसे तदा।
भवभूतिपदे चित्तमविलम्बं निवेशय।। **– अज्ञात।**

☞ भवभूतेर्विच्छित्तिव्यभिचारमुचो गिरां गुम्फाः।
विधिनापि दुर्निवारं तेषां खलु भावभूतत्वम्।।
– विश्वेश्वर पाण्डेय

☞ भवभूतेः कवीन्द्रस्य वाणी कामदुधामता।
ब्रह्मानन्दसहोदर्या या तनोति मुदं सदा।।**–कपिलदेव द्विवेदी**

☞ साऽम्बा पुनातु भवभूतिपवित्रमूर्तिः। **– भवभूति**

☞ भवभूतिर्नाम कविर्निसर्गसौहृदेन भरतेषु वर्तमानः।
– मालतीमाधवस्य प्रस्तावना

☞ कविर्वाक्पतिराजश्रीभवभूत्यादिसेवितः।
जितो ययौ यशोवर्मा तद्गुणस्तुतिवन्दिताम्।।
– कल्हण राजतरङ्गिणी

☞ तपस्वीं कां गतोऽवस्थामिति स्मराननाविव।
गिरिजायाः स्तनौवन्दे भवभूतिसिताननौ।।**– भवभूति**

उत्तररामचरितम् का परिचय

- **लेखक** – भवभूति
- **विधा** – नाटक
- **अङ्क** – 7 (सात)
- **प्रधानरस** – करुण
- **उपजीव्य** (i) वाल्मीकीयरामायण उत्तरकाण्ड (सर्ग 42-97 तक) (ii) पद्मपुराण (पातालखण्ड 1-68 तक)
- **विशेषतायें**– (1) सप्तम अङ्क में **गर्भनाटक** की योजना
  (2) प्रथम अङ्क में **चित्रवीथी** की योजना
  (3) **विदूषक रहित** नाटक
  (4) तृतीय अङ्क में **छायाङ्क** की योजना
- **प्रमुखपात्र** – राम (नायक), सीता (नायिका), गोदावरी, भागीरथी, तमसा, मुरला, वासन्ती (वनदेवता), पृथ्वी, आत्रेयी, वशिष्ठ, कौशल्या, मुनिबालक सौधातकि, गुप्तचरदुर्मुख, लव, कुश, चन्द्रकेतु, वाल्मीकि, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, अष्टावक्र, दण्डायन, सुमन्त्र, अरुन्धती, जनक, कञ्चुकी आदि।
- अनुष्टुप् (84 श्लोक), शिखरिणी (30), वसन्ततिलका (26), शार्दूलविक्रीडित (25) आदि।
- उत्तररामचरितम् में भवभूति ने **38 अलङ्कारों का प्रयोग** किया है; और प्रयोग की दृष्टि से उन्हें–उपमा, उत्प्रेक्षा, काव्यलिङ्ग, रूपक, अर्थान्तरन्यास अत्यन्त **प्रिय अलङ्कार** माने जाते हैं।
- इसमें **7 (सात) अङ्कों में** रामायण के उत्तरकाण्ड की कथा वर्णित है।
- राम के वन-प्रत्यागमन के बाद राजगद्दी पाने से लेकर सीता-मिलन तक की सम्पूर्ण कथाएँ कुछ कल्पना-प्रसूत घटनाओं के साथ दिखाई गई हैं। यह **भवभूति का सर्वश्रेष्ठ नाटक** है।
- सप्तम अंक में **'गर्भाङ्क' की कल्पना** है।
- पद्मपुराण में वर्णित रामकथा से उत्तररामचरित की कथा का अधिक साम्य है।
- उत्तररामचरित में **कुल पात्रों की संख्या 30** है। इनके अतिरिक्त 6 पात्रों का उल्लेख मात्र है।
- भवभूति ने उत्तररामचरित में **19 छन्दों का प्रयोग** किया है।
- उत्तररामचरित में **कुल श्लोकों की संख्या 256** है।
- **अनुष्टुप् के पश्चात् शिखरिणी छन्द** का सर्वाधिक प्रयोग हुआ है। मङ्गलाचरण में अनुष्टुप् छन्द है।
- भवभूति ने उत्तररामचरित में केवल **'शौरसेनी प्राकृत'** का प्रयोग किया है।
- नाटक का आरम्भ **'चित्रदर्शन'** से होता है।
- प्रथम अङ्क में राम के राज्याभिषेक से उत्पन्न प्रतिक्रिया का निरीक्षण करके **'दुर्मुख'** आता है।
- मङ्गलाचरण में प्राचीन कवियों वाल्मीकि आदि को लक्ष्य करके प्रार्थना की गई है।
- 'उत्तररामचरितम्' में **'नमस्कारात्मक' मङ्गलाचरण** किया गया है।
- महाराज **दशरथ की पुत्री शान्ता** के पति ऋष्यशृङ्ग ने बारह वर्ष चलने वाला यज्ञ प्रारम्भ किया है इसकी सूचना प्रथम अङ्क में प्राप्त होती है।
- महर्षि वशिष्ठ का संदेश लेकर **अष्टावक्र** आते हैं। वे 'कहोड़' के पुत्र हैं।
- लक्ष्मण द्वारा सीता के मनोविनोदार्थ लाये गये चित्रवीथी में सीता के अग्निशुद्धि तक की कथा चित्रित है।
- लक्ष्मण की पत्नी का नाम **'उर्मिला'** है।
- चित्रवीथी बनाने वाले **चित्रकार का नाम अर्जुन** है।
- **सौधातकि** और **दण्डायन** वाल्मीकि के दो शिष्य हैं।
- लक्ष्मण के पुत्र का नाम **'चन्द्रकेतु'** है।
- **शम्बूक** एक शूद्र तपस्वी है।
- चन्द्रकेतु के वृद्ध सारथि **'सुमन्त्र'** हैं।
- **वासन्ती** वनदेवता है और सीता की प्रियसखी है।
- **आत्रेयी** एक तपस्विनी ब्रह्मचारिणी है।
- **तमसा** और **मुरला** दो नदी अधिष्ठात्री देवियाँ हैं।
- महर्षि **वशिष्ठ की पत्नी 'अरुन्धती'** हैं तथा **महर्षि अगस्त्य की पत्नी 'लोपामुद्रा'** हैं।
- द्वितीय अङ्क में राम 'शम्बूक वध' करते हैं।
- पञ्चवटी के पास स्थित गोदावरी नदी से राम के जीवन के प्रति सावधान रहने की प्रार्थना 'लोपामुद्रा' द्वारा 'मुरला' के माध्यम से की गई है।
- प्रसवपीड़ा से पीड़ित होकर सीता ने स्वयं को गङ्गा के प्रवाह में डाल दिया और वहीं उनके दोनों पुत्र उत्पन्न हुए।
- देवी गङ्गा ने दोनों बालकों को महर्षि वाल्मीकि को समर्पित किए।
- तृतीय अङ्क में कुश और लव के '12वीं वर्षगाँठ' की चर्चा है।
- 'गङ्गा' ने सीता को आदेश दिया कि वे अपने हाथों से तोड़े गये पुष्पों से अपने पुराण आदिश्वसुर सूर्य की पूजा करें।
- 'गङ्गा' के प्रभाव से सीता को वन देवता भी नहीं देख पाते।
- तृतीय अङ्क के आरम्भ में सीता 'गोदावरी' के जल से निकलती हैं।
- गोदावरी से निकलती सीता करुणा की मूर्ति एवं शरीरधारिणी विरहव्यथा सी प्रतीत होती हैं।
- अदृश्य सीता के साथ तमसा रहती है और वह सीता को देख सकती है।
- तृतीय अङ्क का आरम्भ **'विष्कम्भक'** से होता है।
- 'वासन्ती' सीता-त्याग के लिए राम की भर्त्सना करती है।
- राम तृतीय अङ्क में 'अश्वमेध' यज्ञ की सूचना देते हैं और सीता की स्वर्ण प्रतिमा को उन्होंने पत्नी के स्थान पर रखा है।
- तृतीय अङ्क का आरम्भ तमसा-मुरला नामक दो नदियों के वार्तालाप से होता है।
- उत्तररामचरित में **'38 अलङ्कारों'** का प्रयोग है सर्वाधिक प्रयोग **'उपमा' (74 बार)** का है।
- चतुर्थ अङ्क का आरम्भ दण्डायन और सौधातकि के वार्तालाप से होता है।

- तृतीय अङ्क में श्लोकों की संख्या **'48'** है।
- चतुर्थ अङ्क में कौशल्या के पूछने पर 'लव' अपने को वाल्मीकि का पुत्र बताता है।
- 'रामकथा' के अभिनय के लिए वाल्मीकि ने इस कथा को कुश के संरक्षण में भरतमुनि के पास भेजा।
- चतुर्थ अङ्क में लव यज्ञ का घोड़ा पकड़ता है।
- पञ्चम अङ्क में लव **'जृम्भक अस्त्र'** का प्रयोग करता है।
- लव राम के शौर्य को कुछ नहीं समझता और उन पर आक्षेप करता है।
- षष्ठ अङ्क में **लव और चन्द्रकेतु में** दिव्य अस्त्रों से **घोर युद्ध** होता है।
- चन्द्रकेतु के 'आग्नेय अस्त्र' की प्रतीकार स्वरूप लव 'वारुण' अस्त्र छोड़ता है।
- सप्तम अङ्क में वाल्मीकि की कृति का 'अप्सराओं' द्वारा अभिनय किया गया है।
- 'उत्तररामचरितम्' का **भरतवाक्य शार्दूलविक्रीडित छन्द** में है।
- उत्तररामचरितम् में **करुणरस प्रधान** है।इसमें वैदर्भी एवं गौडीरीति का प्रयोग है।
- 'उत्तररामचरितम्' सुखान्त नाटक है।
- तृतीय अङ्क में सीता द्वारा पाले गये हाथी, मयूर और कदम्ब की चर्चा आती है।
- मयूर 'कदम्ब' के वृक्ष पर बैठकर मधुर स्वर करता है।
- प्रथम अङ्क में राम ने लोकानुरञ्जन के लिए सीता तक को त्याग देने की बात कही है।

  ''स्नेहं दयां च सौख्यं च यदि वा जानकीमपि।
  आराधनाय लोकस्य मुञ्चतो नास्ति मे व्यथा॥''
  (1/12)
- प्रथम अङ्क में राम अष्टावक्र से यह प्रसिद्ध श्लोक कहते हैं।

  ''लौकिकानां हि साधूनामर्थं वागनुवर्तते।
  ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति॥'' (1/10)
- तृतीय अङ्क का आरम्भ राम के करुण रस के उद्घोष के साथ होता है। जिसे मुरला कहती है–

  अनिर्भिन्नो गभीरत्वादन्तर्गूढघनव्यथः।
  पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः॥ (3/1)
- तृतीय अङ्क में सर्वाधिक **अनुष्टुप् (11) छन्द** का प्रयोग हुआ है। 7 **'वसन्ततिलका'** वृत्त प्रयुक्त है।
- तृतीय अङ्क का अन्त भी करुण रस के उद्घोष से होता है जिसे तमसा कहती है –

'एको रसः करुण एव निमित्तभेदाद्। (वसन्ततिलका) (3/47)

- लवणासुर के वध के लिए **'शत्रुघ्न'** जाते हैं।
- मूल कथा में अश्वमेधीय अश्व का रक्षक **भरतपुत्र 'पुष्कल'** है, उत्तररामचरित में **लक्ष्मण पुत्र चन्द्रकेतु** है।
- सप्तम अङ्क में गङ्गा और पृथ्वी सीता के चरित्र की पवित्रता की घोषणा करती हैं।
- कवियों ने **'कारुण्यं भवभूतिरेव तनुते'** कहकर भवभूति का यशोगान किया है।
- भवभूति ने चौथे अङ्क में समांस या अमांस मधुपर्क का प्रसंग उठाया है।
- पञ्चवटी में राम का **'शयन-शिलातल'** कदली वन के मध्य में विद्यमान था।
- वासन्ती केवल लक्ष्मण का कुशलक्षेम पूछती है।
- वासन्ती राम को जटायु द्वारा तोड़ा गया काले लोहे का बना रावण का रथ दिखाती है।

उत्तररामचरितम् का मङ्गलाचरण

इदं कविभ्यः पूर्वेभ्यो नमोवाकं प्रशास्महे।
विन्देम देवतां वाचममृतामात्मनः कलाम्॥ 1/1 ॥

भावार्थ- हम अपने पुरातन (वाल्मीकि आदि) कवियों को प्रणाम कर ''ब्रह्मा की अंशभूत सनातनी देवी वाणी (सरस्वती) को प्राप्त करें'', यह कामना करते हैं।

(अर्थात् पहले के वाल्मीकि आदि कवियों को प्रणाम कर हम यह कामना करते हैं कि ब्रह्मा की अंशभूत सनातनी सरस्वती को प्राप्त करें।)

- ☆ उपर्युक्त मङ्गलाचरण में वाणी देवी को नमस्कार किया गया है।
- ☆ नमस्कारात्मक नान्दी प्रयुक्त है।
- ☆ प्रस्तुत श्लोक में 12 पद हैं। अतः द्वादशपदा नान्दी है।
- ☆ अनुप्रास एवं श्लेष अलङ्कार है तथा अनुष्टुप् (पत्थ्यावक्त्र) छन्द का प्रयोग है।
- ☆ शुद्ध नान्दी का प्रयोग हुआ है।

उत्तररामचरितम् का भरतवाक्य

पाप्मभ्यश्च पुनाति वर्धयति च श्रेयांसि सेयं कथा
मङ्गल्या च मनोहरा च जगतो मातेव गङ्गेव च।
तामेतां परिभावयन्त्वभिनयैर्विन्यस्तरूपां बुधाः
शब्दब्रह्मविदः कवेः परिणतां प्राज्ञस्य वाणीमिमाम्॥ 7/21॥

भावार्थ- संसार की माता और गङ्गा की तरह कल्याण करने वाली तथा मनोहर प्रसिद्ध यह रामायण की कथा पापों से पवित्र करती है और कल्याण को बढ़ाती है। विद्वान् लोग अभिनय के द्वारा शब्दब्रह्म को चाहने वाले इस बुद्धिमान् कवि की नाटक के रूप में परिणत ऐसी ही उत्तररामचरितस्वरूप वाणी का विचार करें।

- ☆ इस माङ्गलिक पद्य में संसार के कल्याण के लिए नाटकीय पात्रों की ओर से शुभकामना है।
- ☆ यहाँ उपमा के चारों भेद होने से पूर्णोपमा अलङ्कार है।
- ☆ 'प्रशस्ति' नामक निर्वहण सन्धि का अङ्ग है।
- ☆ शार्दूलविक्रीडित छन्द का प्रयोग हुआ है।

'उत्तररामचरित' नाम की सार्थकता

रामस्य चरितम् इति रामचरितम् **(षष्ठी तत्पुरुष)**

1.उत्तरं च तत् रामचरितम् इति उत्तररामचरितम् **(कर्मधारय समास)**

उत्तररामचरित अधिकृत्य कृतं नाटकं इति उत्तररामचरितम्।
'अधिकृत्य कृते ग्रन्थे' सूत्र से अण् प्रत्यय हुआ-
उत्तररामचरित+अण् (अ)
'लुबाख्यायिभ्यो बहुलम्' वार्तिक से 'अ' का लोप होकर 'उत्तररामचरितम्' बना।
अर्थात् जिसमें राम के जीवन के उत्तरार्द्ध की घटनाओं का वर्णन है, ऐसा नाटक।
2. उत्तरं रामचरितं यस्मिन् तत् **(बहुव्रीहि समास)**
अर्थात् जिसमें उत्तरकालीन रामचरित का वर्णन है।

'उत्तररामचरितम्' की प्रमुख सूक्तियाँ एवं कथनों का विवरण

1. **अपिग्रावा रोदित्यपि दलति वज्रस्य हृदयम्।** (1/28)
भावार्थ – निर्जन जनस्थान (दण्डकारण्य) में आपके चरितों से पत्थर भी रो पड़े थे और वज्र का भी हृदय फट गया था।
- **वक्ता** – लक्ष्मण, अङ्क - प्रथम (चित्रदर्शन)
श्रोता – राम एवं सीता।
छन्द – शिखरिणी। अतिशयोक्ति अलङ्कार

2. **एते हि हृदयमर्मच्छिदः संसारभावाः।**
भावार्थ - ये सांसारिक भाव हृदय के मर्मस्थल को भेदन करने वाले हैं।
- **प्रथम अङ्क** – राम का सीता से कथन

3. **इयं गेहे लक्ष्मीरियममृतवर्तिर्नयनयोः।** (1/38)
भावार्थ - यह (सीता) घर में लक्ष्मी है, यह नेत्रों के लिए अमृत की शलाका है।
- प्रथम अङ्क में राम का कथन
शिखरिणी छन्द और रूपक अलङ्कार।

4. **''दुर्जनोऽसुखमुत्पादयति''**
भावार्थ – दुर्जन दुःख उत्पन्न करता है।
प्रथम अङ्क – सीता का कथन, राम और लक्ष्मण के समक्ष।

5. **तीर्थोदकं च वह्निश्च नान्यतः शुद्धिमर्हतः।** (1/13)
भावार्थ – तीर्थ, जल और अग्नि, ये अन्य पदार्थों से शुद्धि के योग्य नहीं हैं।
- राम का कथन है। सीता के परिपेक्ष्य में। सीता और लक्ष्मण के सम्मुख प्रथम अङ्क। अनुष्टुप् छन्द। प्रतिवस्तूपमा, दृष्टान्त अलंकार।

6. **नैसर्गिकी सुरभिणः कुसुमस्य सिद्धा**
मूर्ध्नि स्थितिर्न चरणैरवताडनानि॥ (1/14)
भावार्थ – सुगन्धित फूल का सिर पर रखा जाना स्वभावसिद्ध है, न कि पैरों से कुचला जाना।
- **प्रथम अङ्क** – राम का कथन। सीता को लक्ष्य करके। सीता और लक्ष्मण के सम्मुख।
दृष्टान्त अलङ्कार, वसन्ततिलका वृत्त।

7. **सतां केनापि कार्येण लोकस्याराधनं व्रतम्।** (1/41)
भावार्थ – चाहे जो भी हो, जनता को प्रसन्न रखना सज्जनों का कर्त्तव्य है।
- राम का कथन। दुर्मुख के सम्मुख। अनुष्टुप् छन्द। प्रथम अङ्क

8. **सन्तापकारिणो बन्धुजनविप्रयोगा भवन्ति।**
भावार्थ – बन्धुजनों का वियोग दुःखदायी होता है।
- सीता का कथन (प्रथम अङ्क) राम, लक्ष्मण के सम्मुख।

9. **ते हि नो दिवसा गताः।**
भावार्थ – हमारे वे दिन बीत गये। अनुष्टुप् छन्द।
- राम का कथन, लक्ष्मण व सीता के सम्मुख (प्रथम अङ्क)

10. **''सतां सद्भिः सङ्गः कथमपि हि पुण्येन भवति॥** (2/1)
भावार्थ– सज्जनों का सज्जनों से मिलन बड़े पुण्य से होता है।
- द्वितीय अङ्क (प्रथम श्लोक)
वन देवता का कथन, तापसी से। शिखरिणी वृत्त, अर्थान्तरन्यास अलङ्कार

11. **वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि**
लोकोत्तराणां चेतांसि को हि विज्ञातुमर्हति। (2/7)
भावार्थ – वज्र से भी कठोर और फूल से भी कोमल महापुरुषों के चित्त को कौन जान सकता है।
- द्वितीय अङ्क , वासन्ती का कथन आत्रेयी से।
अनुष्टुप् छन्द। विषम, अप्रस्तुतप्रशंसा अर्थापत्ति अलङ्कार।

12. **अनिर्भिन्नो गभीरत्वादन्तर्गूढघनव्यथः।**
पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः॥ (3/1)
भावार्थ– गम्भीरता के कारण अप्रकट एवं अन्दर छिपी हुई घोर वेदना से युक्त राम का करुण रस (शोक) पुटपाक के तुल्य है।
- तृतीय अङ्क (प्रथम श्लोक)।
मुरला का कथन तमसा से। लोपामुद्रा का सन्देश।
अनुष्टुप् छन्द, उपमा अलङ्कार

13. **वीचीवातैः.............प्रेरितैस्तर्पयेति॥** (3/2)
भावार्थ – जल कणों से शीतल, पद्म-पराग की सुगन्ध को लाने वाली, धीरे-धीरे चलने वाली, तरङ्ग-वायुओं से रामचन्द्र की प्रत्येक मूर्च्छा के समय चेतना प्रदान करना।
मुरला द्वारा कहा गया लोपामुद्रा का संदेश 'गोदावरी' के लिए। तमसा के सम्मुख। शालिनी छन्द, समुच्चय अलङ्कार।

14. **उचितमेव दाक्षिण्यं स्नेहस्य। संजीवनोपायस्तु मौलिक एव रामभद्रस्याद्य सन्निहितः।** (अङ्क-3)
भावार्थ – स्नेह की उदारता उचित ही है। किन्तु रामचन्द्र को होश में लाने का मौलिक उपाय (सीता) आज समीप ही विद्यमान है।
- तमसा का कथन मुरला से

15. **ईदृशानां विपाकोऽपि जायते परमाद्भुतः।**
यत्रोपकरणीभावमायात्येवंविधो जनः॥ (3/3)

भावार्थ – ऐसे व्यक्तियों (सीता और राम जैसों) की दुरवस्था भी आश्चर्यजनक होती है, जिसमें ऐसे (पृथ्वी और गङ्गा जैसे) लोग सहायक होते हैं।

- **मुरला का कथन** – तमसा से।

अनुष्टुप् वृत्त, काव्यलिङ्ग अलंकार

16.अव्यग्रस्य पुनरस्य शोकमात्रद्वितीयस्य पञ्चवटीप्रवेशो महाननर्थ इति। (अङ्क 3)

भावार्थ – इस समय कार्यों में अव्यस्त और केवल शोकरूपी साथी से युक्त राम का पञ्चवटी में प्रवेश बहुत अनिष्टकारी है।

- मुरला का तमसा से कथन, राम के प्रति।

17. न त्वामवनिपृष्ठवर्तिनीमस्मत्प्रभावाद् वनदेवता अपि द्रक्ष्यन्ति किमुत मर्त्याः? (अङ्क-3)

भावार्थ – भूतल पर विद्यमान तुमको मेरे प्रभाव से वनदेवता भी नहीं देख सकेंगे, साधारण मनुष्यों की बात ही क्या।

- तमसा मुरला से भागीरथी द्वारा सीता से कही गयी बात को बताती है।

18.करुणस्य मूर्तिरथवा शरीरिणी विरहव्यथेव वनमेति जानकी। (3/4)

भावार्थ – सीता करुण रस की साक्षात् मूर्ति अथवा शरीरधारिणी 'वियोगव्यथा' के तुल्य वन (पञ्चवटी) में आ रही हैं।

- गोदावरी से निकलती हुयी सीता को देखकर तमसा का मुरला से कथन।

मञ्जुभाषिणी वृत्त, उत्प्रेक्षा अलङ्कार।

19. किसलयमिव..........केतकीगर्भपत्रम्। (3/5)

भावार्थ – हृदयरूपी कमल को सुखाने वाला, कठोर और चिरस्थायी शोक सीता के शरीर को उसी प्रकार मलिन बना रहा है, जैसे शरत्कालीन धूप केतकी के फूल के अंदर के पत्ते को।

मालिनी छन्द। उपमा, रूपक अलङ्कार।

- मुरला का तमसा से कथन, सीता के विषय में।

20. अपरिस्फुटनिक्वाणे कुतस्त्येऽपि त्वमीदृशी। स्तनयित्नोर्मयूरीव चकितोत्कण्ठितं स्थिता॥ (3/7)

भावार्थ – मेघ की अस्पष्ट ध्वनि पर मोरनी के तुल्य तुम कहीं से आये हुए अस्पष्ट शब्द को सुनकर इस प्रकार आश्चर्ययुक्त और उत्कण्ठित हो गई हो।

- तमसा का सीता से कथन।

अनुष्टुप् वृत्त, उपमा अलङ्कार

21.यत्र द्रुमा अपि.........गिरेस्तटानि॥ (3/18)

भावार्थ – जहाँ वृक्ष इत्यादि मेरे बन्धु थे, जहाँ प्रिया के साथ बहुत समय रहा, यह वही आश्रमस्थान है।

वसन्ततिलका छन्द। अर्थापत्ति अलंकार।

- राम का कथन नेपथ्य से।

22.अहमेवैतस्य हृदयं जानामि, ममैषः। (अङ्क-3)

भावार्थ – मैं ही इनके हृदय को जानती हूँ और ये मेरे हृदय को।

- सीता का कथन तमसा से।

23.निष्कारणपरित्यागिनोऽप्येतस्य दर्शनेनैवंविधेन कीदृशी मे हृदयावस्था। (अङ्क-3)

भाव – अकारण परित्याग करने वाले भी इनके इस प्रकार के दर्शन से मेरे हृदय की कैसी अवस्था हो रही है।

- सीता का कथन तमसा से।

24. श्लोक–तटस्थं नैराश्यादपि च कलुषं विप्रियवशात् वियोगे दीर्घेऽस्मिञ्झटिति घटनात्स्तम्भितमिव प्रसन्नं सौजन्याद्दयितकरुणैर्गाढकरुणं द्रवीभूतं प्रेम्णा तव हृदयमस्मिन्क्षण इव। (3/13)

भावार्थ – इस समय तुम्हारा हृदय निराशा से उदासीन-सा और अप्रिय कार्य के कारण खिन्न-सा, इस लम्बे विरहकाल में सहसा मिलन के कारण निश्चेष्ट-सा, सज्जनता से प्रसन्न-सा, प्रिय की करुणा से शोकातुर सा और प्रेम से द्रवीभूत सा हो रहा है।

शिखरिणी वृत्त, उत्प्रेक्षा अलंकार।

- तमसा का कथन सीता से।

25. प्रत्ययेन निष्कारणपरित्यागशल्यितोऽपि बहुमतो मम जन्मलाभः। (अङ्क-3)

भाव – अकारण परित्याग रूपी शल्य से विध कर भी मेरा संसार में जन्म लेना मेरे लिए श्लाघनीय है।

- सीता का कथन तमसा से।

26. अन्तःकरणतत्त्वस्य दम्पत्योः स्नेहसंश्रयात्। आनन्दग्रन्थिरेकोऽयमपत्यमिति पठ्यते॥ (3/17)

भावार्थ – पति और पत्नी के हृदयरूपी तत्व के प्रेम का आश्रय होने के कारण 'सन्तान' यह अनुपम सुख की गाँठ कही जाती है। अनुष्टुप् छन्द।

- तमसा का कथन सीता से है।

27.ईदृशो जीवलोकस्य परिणामः संवृतः।

भाव – संसार का यही (दुःखद) परिणाम हुआ।

- सीता का कथन वासन्ती को सम्बोधित करके।

28.स्नपयति हृदयेशं स्नेहनिष्यन्दिनी ते धवलमधुरमुग्धा दुग्धकुल्येव दृष्टिः। (3/23)

भावार्थ – श्वेत, मधुर एवं मनोहर तुम्हारी दृष्टि दूध की नहर की तरह अपने हृदयेश्वर को स्नान कराती है।

उपमा, उत्प्रेक्षा अलंकार, मालिनी छन्द।

- तमसा का कथन सीता से।

29.पुनरिदमयं देवो रामः स्वयं वनमागतः। (3/24)

भावार्थ – ये महाराज राम फिर स्वयं इस वन में आए हैं। – हरिणी छन्द

- वासन्ती का कथन राम के सम्मुख वन की वस्तुओं से।

30.पूजार्हः सर्वस्यार्यपुत्रो विशेषतो मम प्रियसख्याः। (अङ्क-3)

भावार्थ – आर्यपुत्र सभी के पूजनीय हैं विशेष रूप से मेरी प्रियसखी (वासन्ती) के।

- **सीता का कथन** – वासन्ती को सम्बोधित करके।

31. त्वं जीवितं............किमतः परेण। (3/26)
- वासन्ती का कथन राम से। राम द्वारा सीता से पहले कही बातें।
- वसन्ततिलका छन्द। आक्षेप अलंकार दशरूपक में यह श्लोक वाक्केलि के उदाहरणस्वरूप दिया गया है।

32. अयि कठोर! .... मन्यसे। (3/27)
- वासन्ती का कथन राम से। द्रुतविलम्बित छन्द, उपमा अलङ्कार।

33.यैवं प्रलपन्तं प्रलापयसि। (अङ्क-3)

भावार्थ – जो इस प्रकार विलाप करते हुए (राम) को और रूला रही है।
- सीता का कथन वासन्ती से।

34. पूरोत्पीडे तटाकस्य परीवाहः प्रतिक्रिया।
शोकक्षोभे च हृदयं प्रलापैरेव धार्यते। (3/29)

भावार्थ – तालाब में जल-प्रवाह की अधिकता होने पर जल को बाहर निकालना ही उसका एकमात्र प्रतीकार है। शोकजन्य क्षोभ में हृदय विलाप के द्वारा ही बचाया जाता है।
अनुष्टुप् छन्द, दृष्टान्त अलंकार।
- तमसा का कथन सीता से।

35. प्रियाशोको जीवं कुसुममिव घर्मो ग्लपयति। (3/30)

भाव – जिस प्रकार धूप फूल को उसी प्रकार प्रिया का शोक जीवन को सुखाता है। शिखरिणी वृत्त। उपमा अलङ्कार।
- तमसा का कथन सीता से राम के प्रति।

36. ''किमिति किलैषा मंस्यत एष परित्याग एषोऽभिषङ्ग इति।'' (अङ्क-3)

भावार्थ – यह (तमसा) क्या सोचेंगी – यह परित्याग और यह आसक्ति?
- सीता का कथन।

37. एकोरसः करुण एव निमित्तभेदाद्। (3/46)

भावार्थ – एक करुण रस ही है जो कारण-भेद से भिन्न होकर पृथक्-पृथक् परिणामों को प्राप्त कराता सा प्रतीत होता है। वसन्ततिलका छन्द। उपमा (पूरे श्लोक में)
- तमसा का कथन सीता से।
- तृतीय अङ्क के अन्त में गङ्गा, पृथ्वी, वाल्मीकि और वशिष्ठ की प्रार्थना की गयी है।

मृच्छकटिकम्

महाकवि शूद्रक का परिचय

- **वास्तविक नाम-** शिमुक या सिमुक।
- **समय-** प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व।
- **आयु-** 100 वर्ष 10 दिन।
- शूद्रक ने स्वेच्छा से आत्मदाह किया था।
- महापराक्रमी, सुन्दर आकृति वाले एवं ब्राह्मणों में श्रेष्ठ थे।

''द्विजमुख्यतमः कविर्बभूव प्रथितः शूद्रक इत्यगाधसत्त्वः।''
- शूद्रक ऋग्वेद, सामवेद आदि वेदों के ज्ञाता, गणित, संगीत तथा हस्तिविद्या में निपुण थे।
- महाकवि शूद्रक शिव-पार्वती के भक्त थे।
- शूद्रक ने शिव के प्रताप से दिव्य दृष्टि पाकर, पुत्र को राजसिंहासन देकर, महामहिमशाली अश्वमेघ यज्ञ भी किया था।
- 'मृच्छकटिकम्' शूद्रक की एक मात्र रचना है।
- शूद्रक प्रथम नाटककार हैं, जिन्होंने तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था को ही अपनी लेखनी का आधार बनाया।
- **रीति-** वैदर्भी

मृच्छकटिकम् का परिचय

- **लेखक** - शूद्रक
- **विधा** - प्रकरण
- **अङ्क** - 10(दस)
- **प्रधान/अङ्गी रस-** शृङ्गार
- **गौण/अङ्ग रस** - हास्य, करुण, भय तथा अद्‌भुत।
- **उपजीव्य-** भासकृत दरिद्रचारुदत्त
- डॉ. कान्तानाथ शास्त्री तेलंग के अनुसार 'गुणाढ्य' की बृहत्कथा में वर्णित 'गोपालदारक तथा आर्यक के विद्रोह की कथा।'
- **कुल श्लोक संख्या-** 380 (तीन सौ अस्सी)
- **नायक-** चारुदत्त (धीरप्रशान्त)
- **नायिका-** 1. कुलजा- धूता
  2. वेश्या (गणिका)- वसन्तसेना (प्रगल्भा नायिका)
- **प्रतिनायक-** शकार (संस्थानक)
- **अन्य पात्र-** आर्यक, शर्विलक, विट, सूत्रधार, नटी, रदनिका, मदनिका, धूता, चन्दनक, संवाहक, रोहसेन आदि।
- **पात्र संख्या-** 24 पुरुष और 8 स्त्रीपात्र हैं। सूत्रधार और नटी को छोड़ने पर 30 पात्र स्वीकृत हैं।
- मञ्च पर न आने वाले पात्र- जूर्णवृद्ध, पालक,रेभिल,सिद्ध।

मृच्छकटिकम् में अङ्कवार श्लोक

अङ्क	नाम	श्लोक
प्रथम	अलङ्कारन्यास	58
द्वितीय	द्यूतकर संवाहक	20
तृतीय	सन्धिच्छेद	30
चतुर्थ	मदनिका शर्विलक	33
पञ्चम	दुर्दिन	52
षष्ठ	प्रवहण विपर्यय	27
सप्तम	आर्यकापहरण	9
अष्टम	वसन्तसेना मोटन	47
नवम	न्यायालय (व्यवहार)	43
दशम	संहार (उपसंहार)	61
	योग-	380

मृच्छकटिक- एक तथ्यात्मक अध्ययन
- चारुदत्त धीरप्रशान्त कोटि का नायक है।
- चारुदत्त उज्जयिनी का गरीब ब्राह्मण है।
- वह जन्मना ब्राह्मण और कर्मणा सार्थवाह (व्यापारी) है।
- वसन्तसेना उज्जयिनी की ही एक प्रसिद्ध गणिका है।

- मृच्छकटिकम् नामक प्रकरण में चारुदत्त और वसन्तसेना के पारस्परिक प्रेम का वर्णन है।
- धूता, चारुदत्त की विवाहिता पत्नी है।
- चारुदत्त और धूता के बच्चे का नाम रोहसेन है।
- मैत्रेय इस प्रकरण का विदूषक है। वह जाति से ब्राह्मण तथा चारुदत्त का परम मित्र है।
- शकार, राजा पालक का साला है तथा वसन्तसेना से एकतरफा प्रेम करता है।
- शर्विलक, चौर्यकर्म में निपुण एक ब्राह्मण है, जो वसन्तसेना की क्रीतदासी 'मदनिका' का प्रेमी है।
- चारुदत्त का पूर्वभृत्य संवाहक है जो जुए में सब कुछ हारकर बौद्धभिक्षु बन जाता है।
- सूत्रधार के साग्रह अनुरोध, सिद्धान्न भोजन और प्रचुर दक्षिणा के प्रलोभन पर भी मैत्रेय (विदूषक) उसके घर भोजन करने से इनकार कर देता है।
- चारुदत्त के मित्र जूर्णवृद्ध द्वारा भेजा हुआ शाल मैत्रेय लेकर आता है।
- मैत्रेय अत्यन्त डरपोक है इसलिए मातृबलि देने चौराहे पर रदनिका (चारुदत्त की दासी) के साथ जाता है।
- विट और चेट के साथ शकार द्वारा पीछा किये जाने पर वसन्तसेना, चारुदत्त के घर में छिपती है।
- रात के अँधेरे में शकार, रदनिका को वसन्तसेना समझकर पकड़ लेता है, इस पर मैत्रेय शकार को मारने दौड़ता है।
- वसन्तसेना अपना आभूषण चारुदत्त के घर में रख देती है और बताती है कि वह **'कामदेवायतन उद्यान'** में चारुदत्त को देखकर उसके प्रति अनुरक्त हो गयी थी।
- संवाहक पाटलिपुत्र से आकर उज्जयिनी में चारुदत्त का सेवक बन जाता है।
- चारुदत्त के दरिद्र हो जाने पर संवाहक जुआरी हो जाता है।
- जुए में सर्वस्व हारने पर, चारुदत्त का पुराना नौकर जानकर वसन्तसेना, संवाहक को छुड़ा लेती है।
- वसन्तसेना के हाथी का नाम **'खुण्डमोटक'** है।
  यः सः आर्यायाः खुण्डमोटको नाम दुष्टहस्ती।
- चारुदत्त को रेभिल का संगीत अत्यन्त पसन्द है।
- शर्विलक, चारुदत्त के घर में सेंध काटकर वसन्तसेना के रखे हुए गहने चुरा लेता है और अपनी प्रेयसी मदनिका को गुलामी की जंजीर से छुड़ाता है।
- धूता अपने पति चारुदत्त को चोरी के कलङ्क से बचाने के लिए अपना 'रत्नावली' नामक आभूषण वसन्तसेना के पास भेजती है।
- वसन्तसेना अपनी माँ के कहने पर भी शकार के पास जाने से मना करती है।
- राजा पालक द्वारा आर्यक को बंदी बनाया जाता है।
- अपने मित्र के बंदी बनाए जाने पर शर्विलक मदनिका को रेभिल के घर पहुँचाकर स्वयं आर्यक को छुड़ाने जाता है।
- वसन्तसेना, धूता के आभूषण को मैत्रेय द्वारा वापस कर देती है।
- वसन्तसेना शाम को चारुदत्त के घर जाती है और वर्षा के कारण रात वहीं बिताती है।
- चारुदत्त **'पुष्पकरण्डक'** नामक बगीचे में जाता है और वसन्तसेना को वहीं बुलवाता है।
- चारुदत्त का पुत्र 'रोहसेन' सोने की गाड़ी के लिए रोता है, इस पर वसन्तसेना अपना आभूषण गाड़ी बनवाने के लिए दे देती है।
- आर्यक, राजा पालक के कैद से भाग जाता है।
- भूलवश वसन्तसेना शकार की गाड़ी में बैठ जाती है।
- बैलगाड़ी उद्यान में पहुँचने पर वसन्तसेना शकार के प्रणय प्रार्थना को ठुकरा देती है, जिससे क्रुद्ध होकर शकार उसका गला दबा देता है।
- वसन्तसेना के मूर्च्छित होने से मृत समझकर शकार भाग जाता है और चारुदत्त के विरुद्ध हत्या का आरोप लगाकर न्यायालय में मुकदमा करता है।
- बौद्धभिक्षु संवाहक वसन्तसेना की रक्षा करता है।
- चारुदत्त पर अभियोग चलता है और विदूषक के बगल से वसन्तसेना का आभूषण मिलने पर चारुदत्त को फाँसी का दण्ड मिलता है।
- फाँसी के वक्त ही भिक्षु वसन्तसेना के साथ वध्यस्थल पर जाता है, शकार भाग खड़ा होता है।
- पालक को मारकर आर्यक राजा बनता है और झूठे अभियोग चलाने के कारण शकार को फाँसी होती है किन्तु चारुदत्त उसे माँफ कर देता है।
- चारुदत्त को राज्य मिलता है और वसन्तसेना को वधू का सम्मानित पद।
- भरतवाक्य के साथ प्रकरण समाप्त होता है।
- मृच्छकटिकम् का अर्थ है - 'मिट्टी की गाड़ी।'
- मृच्छकटिकम् में सात प्राकृतों (शौरसेनी, अवन्तिका, प्राच्या, मागधी, शकारी, चाण्डाली, और ढक्की) का प्रयोग है।
- मृच्छकटिकम् के 30 पात्रों में केवल 6 पात्र ही संस्कृत बोलते हैं।
- संस्कृत बोलने वाले पात्र-चारुदत्त, आर्यक, शर्विलक, विट, सूत्रधार, अधिकरणिक।
- यह प्रगतिवादी एवं समाजवादी रूपक है। इसमें शोषित, दलित एवं उपेक्षित वर्ग का सहानुभूतिपूर्ण चित्रण है।
- जुआ खेलने वालों का प्रमुख- सभिक।
- इसमें वैदर्भी रीति अपनायी गयी है, कहीं-कहीं गौडी रीति का भी आश्रय लिया गया है।
- निम्न कोटि के पात्रों की संख्या अधिक है।
- शकार की बहन राजा पालक की रखैल है।
- मृच्छकटिकम् की कथा आदर्शवादी न होकर यथार्थवादी है।
- प्राकृतों में देशी शब्दों की प्रधानता है।
- **चोरों के देवता**- कार्तिकेय- (**नमो वरदाय कुमार कार्तिकेयाय**)
- **चोरों के गुरु**- कनकशक्ति, ब्रह्मण्यदेव, देवव्रत तथा भास्करनन्दी। (**नमः कनकशक्तये ब्रह्मणदेवाय देवव्रताय नमो भास्करनन्दिने**)

- शर्विलक के गुरु- योगाचार्य। (**नमो योगाचार्याय यस्याहं प्रथमः शिष्यः**)
- योगरोचना- ऐसा द्रव्य जिसको लगाने से चोर आदि को कोई देख नहीं सकता।

मृच्छकटिकम्- अङ्कवार प्रमुख घटनाएँ

प्रथम अङ्क

- चारुदत्त की दरिद्रता का मार्मिक चित्रण।
- विट और चेट सहित शकार के द्वारा वसन्तसेना का पीछा करना।
- अन्धकार का लाभ उठाकर वसन्तसेना का चारुदत्त के घर में छिपना तथा अपने आभूषणों को न्यास (धरोहर) के रूप में चारुदत्त के घर में छोड़ना।

द्वितीय अङ्क

- चारुदत्त के पूर्व सेवक संवाहक का द्यूत में ऋणी होकर वसन्तसेना के पास आना तथा वसन्तसेना द्वारा उसे ऋणमुक्त कराना।
- जुआरी संवाहक का बौद्धभिक्षु बन जाना।
- वसन्तसेना के मत्त हाथी का संवाहक पर आक्रमण करना,सेवक द्वारा संवाहक की रक्षा करना तथा पुरस्कार के रूप में चारुदत्त अपनी बहुमूल्य चादर सेवक को देना।

तृतीय अङ्क

- चारुदत्त के घर में सेंध मारकर शर्विलक द्वारा वसन्तसेना के आभूषणों को चुराना।
- चोरी हुए आभूषणों के बदले में चारुदत्त की पत्नी धूता द्वारा अपनी बहुमूल्य 'रत्नमाला' का दिया जाना।

चतुर्थ अङ्क

- शर्विलक द्वारा चोरी के आभूषण से अपनी प्रेयसी मदनिका को वसन्तसेना के घर से मुक्त कराना तथा वधू के रूप में स्वीकार करना।
- शर्विलक द्वारा अपने बन्दी मित्र आर्यक को छुड़ाने के निमित्त जाना।
- रत्नमाला लेकर गये विदूषक द्वारा वसन्तसेना के विशाल भवन का अवलोकन।

पञ्चम अङ्क

- वसन्तसेना का चारुदत्त के घर में रात बिताना।
- वर्षाकाल का भव्य वर्णन।

षष्ठ अङ्क

- चारुदत्त के पुत्र रोहसेन का सोने की गाड़ी के लिए जिद करना जबकि दासी रदनिका मिट्टी की गाड़ी (मृत +शकटिका) देती है।
- इस दृश्य पर वसन्तसेना का मिट्टी की गाड़ी को आभूषणों से भरना।
- वसन्तसेना की गाड़ी भ्रमवश बदल जाना।
- चन्दनक सिपाही द्वारा बन्दी आर्यक को अभयदान।

सप्तम अङ्क

- आर्यक का चारुदत्त के पास पुष्पकरण्डक उद्यान में जाना और चारुदत्त द्वारा आर्यक के बन्धन को कटवाना।

अष्टम अङ्क

- पुष्पकरण्डक उद्यान में शकार द्वारा वसन्तसेना का गला घोंटना।
- वसन्तसेना को मृत समझकर शकार द्वारा चारुदत्त पर झूठा अभियोग चलाने के लिए न्यायालय जाना।
- बौद्धभिक्षु संवाहक द्वारा वसन्तसेना को उपचार हेतु बौद्ध विहार में ले जाना।

नवम अङ्क

- शकार द्वारा अपने पक्ष में निर्णय देने के लिए न्यायाधीश को धमकी।
- वसन्तसेना का चारुदत्त के घर जाने सम्बन्धित वसन्तसेना की माता की गवाही।
- वसन्तसेना का आभूषण विदूषक के पास से मिलना और चारुदत्त को फाँसी की सजा।

दशम अङ्क

- पालक को मारकर आर्यक का राजा बनना।
- चारुदत्त को फाँसी से मुक्ति।
- वसन्तसेना को वधू पद प्राप्त होना।

मृच्छकटिकम् में अलङ्कार एवं छन्द योजना

- मृच्छकटिकम् में स्वाभाविक रूप से अलङ्कारों का प्रयोग है। उपमा,रूपक,उत्प्रेक्षा के साथ-साथ काव्यलिङ्ग,विशेषोक्ति और समासोक्ति अलङ्कारों का विशेष रूप से वर्णन है।
- महाकवि शूद्रक ने पूरे मृच्छकटिक में 21 (इक्कीस) प्रकार के छन्दों का प्रयोग किया है।
- सर्वाधिक प्रयुक्त छन्दों में वसन्ततिलका, शार्दूलविक्रीडित और उपजाति मुख्य हैं।

रत्नावली

पादाग्रस्थितया मुहुः स्तनभरेणानीतया नम्रतां
शम्भोः सस्पृहलोचनत्रयपथं यान्त्या तदाराधने।
ह्रीमत्या शिरसीहितः सपुलकस्वेदोद्गमोत्कम्पया
विश्लिष्यन्कुसुमाञ्जलिर्गिरिजया क्षिप्तोऽन्तरे पातु वः ॥1॥

श्लोकानुवाद - सती के देह- त्याग के उपरान्त हिमालय पर घोर तपस्या करने वाले शिव की आराधना में, बार-बार चरणों की उँगलियों के सहारे खड़ी होने वाली, स्तनों के भार से (बार-बार) झुकती हुई (कल्याण करने वाले) शम्भु के अनुरागयुक्त तीनों नेत्रों का विषय होने वाली (अतएव) रोमाञ्च, स्वेद और कम्पन से युक्त होने के कारण लज्जित होने वाली पार्वती के द्वारा (शिव के) शिर पर (समर्पित करने के लिए) चाही गयी (किन्तु पार्वती की घबड़ाहट के कारण) फेंकी गयी (अतएव शिव के

शिर पर न पहुँच सकने के कारण उमा और शिव के) के बीच में बिखरती हुई पुष्पाञ्जली तुम्हारी (सामाजिकों की रक्षा करें)।
* यहाँ पर पुष्पाञ्जलि के बिखरने में 'स्तनभरेण' से लेकर 'ह्रीमत्या' तक के पद कारणरूप में उपन्यस्त है अतः काव्यलिंग अलंकार है जिसका लक्षण है ''हेतोर्वाक्यपदार्थत्वे काव्यलिङ्गमुदाहृतम्' पद्य में शार्दूलविक्रीडित छन्द है। पद्यारम्भ में प्रयुक्त मगण का फल श्रीवृद्धि है। प्रसाद गुण एवं वैदर्भी रीति है।
* पद्य के द्वारा आशीर्वादात्मक तथा वस्तुनिर्देशात्मक दोनों ही प्रकार का मंगलाचरण प्रस्तुत किया गया है।

अपि च -

औत्सुक्येन कृतत्वरा सहभुवा व्यावर्तमाना ह्रिया
तैस्तैर्बन्धुवधूजनस्य वचनैर्नीताभिमुख्यं पुनः।
दृष्ट्वाग्रे वरमात्तसाध्वसरसा गौरी नवे संगमे
संरोहत्पुलका हरेण हसता श्लिष्टा शिवायास्तु वः॥1/2॥

श्लोकानुवाद- और भी- (विवाहोत्तरकालीन) प्रथम समागम में (पति समागम की) उत्सुकता के कारण शीघ्रता करने वाली (नवपरिणीता होने कारण) स्वाभाविक लज्जा के कारण (पति से न मिलकर) लौटती हुई, बान्धव - स्त्रियों (अर्थात् भाभी एवं सखियों) के कालोचित वचनों द्वारा (शिव के) समक्ष उपस्थित करायी जाने वाली (तथा) अपने समक्ष वर (शिव) को देखकर रोमाञ्चित तथा भयभीत होने वाली एवं हँसते हुए शिव के द्वारा आलिङ्गित पार्वती आप लोगों को कल्याण देने वाली होवें।।2।।
* प्रस्तुत श्लोक में नवोढ़ा की स्वाभाविक चेष्टाओं का वर्णन होने से स्वभावोक्ति अलंकार है- ''स्वभावोक्तिस्तु डिम्भादेः स्वक्रियारूपवर्णनम्''।
* द्वितीय अंक में नायक उदयन से प्रथम मिलन होने पर नायिका सागरिका (रत्नावली) का भयभीत होना तथा उदयन द्वारा उसका आलिंगन करना भी इस पद्य के द्वारा सूचित होता है जिससे यहाँ मुद्रालंकार भी संगत होता है- ''सूच्यार्थसूचनं मुद्रा प्रकृतार्थपरैः पदैः''।
* यह नान्दी पद्य भी आशीर्वादात्मक एवं वस्तुनिर्देशात्मक मंगल प्रस्तुत करता है।
* शार्दूलविक्रीडित छन्द है।

अपि च -

क्रोधेद्धैर्दृष्टिपातैस्त्रिभिरूपशमिता वह्नयोऽमी त्रयोऽपि
त्रासार्ता ऋत्विजोऽधश्चपलगणहृतोष्णीषपट्टाः पतन्ति।
दक्षः स्तौत्यस्य पत्नी विलपति करुणं विद्रुतं चापि देवैः
शंसन्नित्यात्तहासो मखमथनविधौ पातु देव्यै शिवो वः

श्लोकानुवाद - ये तीनों अग्नियाँ (दक्षिण, गार्हपत्य और आवहनीय) मेरे क्रोध से जलते हुये तीनों नेत्रों के दृष्टि - पातों से शान्त कर दी गईं, (मेरे) चपल प्रमथ गणों के द्वारा छीने गये पगड़ी के वस्त्र वाले भय से त्रस्त ऋत्विक् गण नीचे गिर पड़े, दक्ष स्तुति करने लगे, उनकी (दक्ष की) पत्नी करुण विलाप करने लगी और देवगण भाग गये। इस प्रकार देवी पार्वती से (दक्ष के) यज्ञ-विध्वंस के विषय में कहते हुए अट्टहास करने वाले शिव आप लोगों की रक्षा करने लगें। **॥1/3॥**
* इस नान्दी में अनुप्रासालङ्कार तथा स्रग्धरा छन्द है। लक्षण है- ''म्रभ्नैर्यानां त्रयेण त्रिमुनियतियुता स्रग्धरा कीर्तितेयम्''।
* वासवदत्ता के क्रोध, सागरिका का विलाप तथा चतुर्थ अंक में वर्णित अग्निकाण्ड की घटना का भी सङ्केत मिलता है अतः यहाँ (वस्तुनिर्देशात्मक-मंगलाचरण) है।

अपि च -

जितमुडुपतिना नमः सुरेभ्यो द्विजवृषभाः निरुपद्रवा भवन्तु।
भवतु च पृथिवी समृद्धसस्या प्रतपतु च चन्द्रवपुर्नरेन्द्रचन्द्रः

श्लोकानुवाद - चन्द्रमा उत्कर्ष को प्राप्त हुआ। देवताओं को नमस्कार है। (ब्राह्मण-श्रेष्ठ) बाधाओं से रहित हों। वसुमती शस्य सम्पन्न हो। राजाओं में श्रेष्ठ (श्रीहर्ष) चन्द्रमा की भाँति (आह्लादक) शरीर धारण कर प्रताप को प्राप्त करें। ।।1/4।।
* प्रस्तुत नान्दी पद्य में उपमाऽलङ्कार तथा पुष्पिताग्रा छन्द है। छन्द लक्षण है- ''अयुजि न युगरेफतो यकारो युजि च नजौ जरगाश्च पुष्पिताग्रा''।
* समासगा उपमालङ्कार है।
* यहाँ वस्तुनिर्देशात्मक मंगलाचरण है- ''चन्द्र-विजय'' से
* चतुर्थ अङ्क में वर्णित रूमण्वान् की विजय है।

उर्वीमुद्दामसस्यां जनयतु विसृजन् वासवो वृष्टिमिष्टा-
मिष्टैस्त्रैविष्टपानां विदधतु विधिवत्प्रीणनं विप्रमुख्याः।
आकल्पान्तं च भूयात्समुपचितसुखः सङ्गमः सज्जनानां
निःशेषं यान्तु शान्तिं पिशुनजनगिरो दुर्जया वज्रलेपाः

श्लोकानुवाद– अभीष्ट वर्षा करते हुए इन्द्र पृथ्वी को सस्य-सम्पन्न बनायें। श्रेष्ठ ब्राह्मण-यज्ञों से देवताओं को विधिवत् तृप्त करें। आनन्द को बढ़ाने वाला सज्जनों का समागम प्रलयकाल तक होता रहे और वज्रलेप के समान दुष्ट व्यक्तियों की दुर्जयवाणी पूर्णरूपेण शान्ति को प्राप्त करें।।22।।
* यह भरतवाक्य है। नाटकों के अन्त में आशीर्वाद के रूप में जो श्लोक पढ़ा जाता है, उसे भरतवाक्य कहते हैं। यह भरतमुनि के सम्मान में पढ़ा जाता है यह नान्दी निर्वहण (उपसंहृति) सन्धि का अंग होता है।।।4/22।।

* स्रग्धरा छन्द है तथा आशीः नामक नाट्याङ्ग है।
* हर्षवर्धन का राज्यकाल 606ई- से 648 ई- तक सर्वमान्य है ।
* पाण्डुरंग वामन काणे ने हर्षचरित के अपने संस्करण की भूमिका में सुझाया है कि हर्ष का जन्म 590ई- में हुआ था।
* ह्वेनसांग ने हर्षवर्धन के राज्यकाल में ही 629 ई- से 641 ई - तक भारत का भ्रमण किया था, हर्ष की राज्य सभा में भी बहुत दिनों तक रहा था।
* हर्षवर्धन के पिता प्रभाकरवर्धन थे जिन्हें बाण ने **'हूण हरिण केसरी'** कहा है।
* अवन्तीवर्मा के साथ मिलकर उन्होनें 582ई- में हूणों को परास्त किया था।
* हर्ष की प्रवृत्ति बौद्धधर्म की है।
* प्रभाकर वर्धन के तीन अपत्यों में हर्ष द्वितीय हैं, इनसे बड़े राज्यवर्धन को गौडनरेश ने छल से मार दिया था।
* हर्षवर्धन की तीन रचनायें हैं– प्रियदर्शिका, रत्नावली, नागानन्द।
* नागानन्द पाँच (5) अङ्कों का नाटक है इसका प्रचार बौद्धों के बीच अधिक है इसमें बोधिसत्त्व- रूप राजा की कथा है।
* हर्ष ने दो बौद्ध स्तोत्र भी लिखे थे -

  1 - सुप्रभातस्तोत्र 2- अष्टमहाचैत्यस्तोत्र
* श्रीहर्षो निपुणः कविः परिषदप्येषा गुणग्राहिणी (प्रियदर्शिका 1-3, रत्नावली 1-5)
* **प्रियदर्शिका-** 4 - अंक नाटिका

  नायक- वत्सनरेश उदयन

  नायिका - आराण्यिका (प्रियदर्शिका) प्रेमकथा

  वासवदत्ता की आराण्यिका मौसेरी बहन है।
* **रत्नावली-** 4 अंक नाटिका

  नायक - उदयन (धीरललित)

  नायिका- सिंहल देश की राजकुमारी रत्नावली (सागरिका)
* वासवदत्ता की सागरिका ममेरी बहन है।
* राजा उदयन के प्रसाद में रत्नावली समुद्रदुर्घटना से बचकर आती है अतः उसे सागरिका कहा जाता है।
* नागानन्द 5- अंक का नाटक है।
*इसमें मुख्यतः विद्याधर - राजकुमार जीमूतवाहन के द्वारा अपनी बलि देकर शंखचूड नामक सर्प की रक्षा गरुड़ से करने का वर्णन है - नायक -बौद्ध , शृङ्गार–रस
* रत्नावली के प्रथम अंक में वसन्तोत्सव का रम्य वर्णन है।

रत्नावली के अङ्कों के नाम एवं श्लोक संख्या-

अङ्क श्लोक संख्या अङ्क का नाम-

* 1-25 - मदनमहोत्सव 2-21 - कदलीगृह

  3-19 - संकेत 4-22 - ऐन्द्रजालिक

  सम्पूर्ण श्लोक (87)
* रत्नावली नाटिका का उपजीव्य ग्रन्थ माना जाता है- **बृहत्कथा को**
* बृहत्कथा के रचनाकार हैं - **गुणाढ्य**
* हर्षवर्धन का राज्यकाल है- **606ई- से 648 ई- तक**
* हर्षवर्धन के बडे भाई का नाम है - **राज्यवर्धन**
* राजवर्धन को छल से मार दिया था - **गौडनरेश ने**
* रत्नावली नायिका की कोटि है - **मुग्धा**
* रत्नावली पुत्री है- **सिंहलेश्वर की**
* सिंहलेश्वर का नाम है - **विक्रमबाहु**
* विक्रमबाहु का मन्त्री था- **वसुभूति**
* रत्नावली नाटिका का हृदय माना जाता है-**तृतीय अंक (संकेत)**
* ऐन्द्रजालिक क्रिया -कलाप है - **चतुर्थ अंक में**
* रत्नावली नाटिका का प्रारम्भ हुआ है- **नान्दीपाठ से**
* रत्नावली नाटिका का अन्त हुआ है - **भरतवाक्य से**
* वासवदत्ता की सेविका के रूप में रखा गया था-**सागरिका को**
* रत्नावली के पिता ने विदा होते समय दिया था- **रत्नमाला**
* रत्नावली को यौगन्धरायण के पास ले गया था - **व्यापारी**
* सागर से मिलने के कारण रत्नावली का नाम यौगन्धरायण ने रखा था - **सागरिका**
* वसन्तोत्सव मनाया जाता है - **कौशाम्बी में**
* वासवदत्ता कामदेव की पूजा सम्पन्न करती है -**मकरन्द उद्यान में**
* सागरिका की मदनावस्था का वर्णन है - **द्वितीय अंक में**
* उदयन के प्रति अनुरुक्त सागरिका उदयन का चित्र बनाती है- **कदलीगृह में**
* सागरिका का चित्र बनाती है - **सुसंगता**
* सागरिका और सुसङ्गता के मध्य में वार्तालाप को दुहराती है - **सारिका**
* राजा और सागरिका का मिलन सुसङ्गता कराती है- **कदलीगृह में (2अंक)**
* सिंहल देश की राजकुमारी है - **रत्नावली**
* सागरिका वेषधारण करती है - **वासवदत्ता का**

* सुसंगता वेष धारण करती है - **काञ्चनमाला का**
* वासवदत्ता की चेटी का नाम है - **काञ्चनमाला**
* सागरिका और उदयन को मिलाने की योजना बनाते हैं - **विदूषक और सुसङ्गता**
* विदूषक और सुसङ्गता की योजना को वासवदत्ता जान लेती है - **काञ्चनमाला द्वारा**
* सागरिका और उदयन को मिलाने की योजना की - **मकरन्द उद्यान में।**
* सागरिका, वासवदत्ता का वेष धारण करके जाती है - **मकरन्द उद्यान में**
* नाराज वासवदत्ता विदूषक को बंधवाती है- **लतापाश से**
* सागरिका को वासवदत्ता कारावास में डलवाती है - **चतुर्थ अंक में**
* सागरिका 'रत्नमाला' ब्राह्मण को दान देने के लिए सौंपती है - **सुसङ्गता को**
* सुसङ्गता रत्नमाला देती है - **विदूषक को**
* विन्ध्य - दुर्ग में स्थित कोसलाधिपति को युद्ध में मारकर कोशल देश जीतता है - **रुमण्वान्**
* रुमण्वान् उदयन का था - **सेनापति**
* रुमण्वान् कोशल देश जीतता है - **चतुर्थ अंक में**
* ऐन्द्रजालिक आया था - **उज्जयिनी से**
* सागरिका की रक्षा करने की प्रार्थना वासवदत्ता करती है- **उदयन से**
* आग में घुसकर सागरिका को उठाकर लाता है - **उदयन**
* वासवदत्ता के मामा की पुत्री थी- **रत्नावली**
* रत्नावली का विदूषक है - **वसन्तक**
* रत्नावली के हृदय में उदयन के प्रति प्रथमानुराग का आरोपण होता है - **कामदेव पूजनविधि के समय**
* रत्नावली नाटिका का प्रधान रस है - **शृंगार**
* वासवदत्ता पुत्री है- **प्रद्योत की**
* रत्नावली नाटिका में कुल छन्दों का प्रयोग हुआ है- **13**
* रत्नावली नाटिका में सर्वाधिक प्रयुक्त छन्द है- **शार्दूलविक्रीडित**
* 'पादाग्रस्थितया मुहुः स्तनभरेणानीतया नम्रतां' यह है - **मङ्गलाचरण (1/1)**
* रत्नावली के मङ्गलाचरण में अलंकार है - **काव्यलिङ्ग**
* रत्नावली के मङ्गलाचरण में छन्द है - **शार्दूलविक्रीडित**
* रत्नावली के मङ्गलाचरण में वर्णन किया गया है - **शिव और पार्वती का**
* 'उर्वीमुद्दामसस्यां जनयतु विसृजन्' रत्नावली नाटिका का है- **भरतवाक्य (4/22)**

रत्नावली - प्रमुख सूक्तियां

1. **सूत्रधारः-**
   मद्भाग्योपचयादयं समुदितः सर्वो गुणानां गणः॥
   तो फिर कहना ही क्या- जब कि मेरे भाग्य की वृद्धि से गुणों का यह सम्पूर्ण समूह एकत्रित होकर उपस्थित है। (1/5)
2. **सूत्रधारः-**
   द्वीपादन्यस्मादपि मध्यादपि जलनिधेर्दिशोऽप्यन्तात्। (1/6)
   अनुकूल भाग्य दूसरे द्वीप से जलनिधि के बीच से तथा दिशाओं के अन्तिम छोर से भी इष्ट वस्तु को मिला देती है।
3. **सूत्रधारः-**
   आनीय झटिति घटयति विधिरभिमतमभिमुखीभूतः।
   भाग्य दूसरे द्वीप से जलनिधि के बीच से तथा दिशाओं के अन्तिम छोर से भी इष्ट वस्तु को शीघ्र लाकर मिला देता है। ।।1/6।।
4. **कष्टोऽयं खलु भृत्यभावः। (प्रथम अङ्क)**

यौगन्धरायण- सचमुच दासता निश्चय ही कष्टप्रद होती है।

5. **न कमलाकरमुज्झित्वा राजहंस्यन्यत्राभिरमते-**

सुसङ्गता- राजहंसी (उच्च जाति की हंसिनी) कमल वन को छोड़कर अन्यत्र रमण नहीं करती (अर्थात्) महान गुण और कुलवाली सागरिका अपने अनुरूप वत्सराज उदयन की ही अभिलाषा कर सकती है। (अङ्क-2)

6. **विदूषक- राजा से**
   भोः किमेतैर्वक्रभणितैः।
   यह टेढ़ी बातों से क्या लाभ?

विदूषक राजा से कहता है- (जोर से हँसकर) अरे इन टेढ़ी बातों से क्या (लाभ)? सीधे ही क्यों नहीं कहते कि- मुझको ही न पा सकने वाली (किसी अत्यन्त रूपवती के द्वारा यह कहा गया है) (अङ्क-2)

7. **विदूषक- सागरिका को देखकर**
   ईदृशं रूपं मनुष्य लोके न पुनर्दृश्यते।

आश्चर्य है! - ऐसा रूप मनुष्यलोक में तो दृष्टिगोचर नहीं होता है।

8. **विदूषक- रानी काञ्चनमाला से -**
   आत्मा किल दुःखमालिख्यत इति।
   अपना चित्र बड़ी कठिनता से बनाया जा सकता है।

9. विदूषक- राजा से -

भोः! एषा खलु त्वयाऽपूर्वा श्रीः समासादिता। (अङ्क-2)

निश्चय ही तुम्हारे द्वारा यह अपूर्व लक्ष्मी प्राप्त की गयी है (अर्थात् इस अद्वितीय सुन्दरी के कर ग्रहण से काम की पूर्णता के साथ-साथ अर्थ की भी प्राप्ति कर रहे हो।)

10. राजा- सागरिका से -

अयि प्रसीद। न खलु सखीजने युक्त एवं कोपानुबन्धः।

अरी प्रसन्न हो जाओ। सखीजनों पर इस प्रकार निरन्तर कोप ठीक नहीं है। (2 अङ्क)

11. काञ्चनमाला-

भर्त्रि, घुणाक्षरमपि कदापि सम्भवत्येव। (अङ्क-2)

स्वामिनी! कभी-कभी घुणाक्षर (किसी लकड़ी में घुन लग जाने से अपने आप अक्षर बन जाता है, बनाया नहीं जाता है।) न्याय भी सम्भव है।

(हो सकता है लड़की बनायी गयी हो, बन गयी हो सागरिका)

12. राजा- विदूषक से - (2/21)

कोपश्च प्रकटीकृतो दयितया मुक्तश्च न प्रश्रयः।

इस प्रकार- प्रियतमा ने क्रोध भी प्रकट कर दिया और विनय का भी परित्याग नहीं किया।

13. सागरिका - सुसङ्गता से-

'कस्मात्परिहासशीलतयेमं जनं लघुं करोषि' (अङ्क-2)

सुसङ्गता- (लज्जा के साथ) सखि (तुम अपनी) परिहास की आदत से इस जन को (अर्थात् राजा) क्यों लघु बना रही हो।

14. राजा -

मनश्चलं प्रकृत्यैव दुर्लक्ष्यं च तथापि मे। (3/2)

यद्यपि मन स्वभावतः चञ्चल तथा दुर्लक्ष्य (अभेद्य या अदृश्य) होता है तो भी कामदेव ने मेरे, ऐसे मन को समस्त तीक्ष्ण बाणों से एक साथ कैसे वेध दिया?

15. विदूषक- राजा से

'दिष्ट्या वर्धसे त्वं समीहिताभ्याधिकया कार्यसिद्ध्या'

अभिलषित से भी अधिक कार्य में सफलता की प्राप्ति के कारण तुम भाग्य से बढ़ रहे हो अर्थात् बड़े भाग्यशाली हो।(अङ्क-3)

16. राजा- विदूषक से-

रमयतितरां संकेतस्था तथापि हि कामिनी ॥9॥

(नायक के द्वारा) यत्नपूर्वक पकड़ी जाने पर भी बार-बार यही कहती है कि (छोड़िए) मैं जा रही हूँ- फिर भी वह अपने प्रेम-प्रदर्शन के अभाव में भी (नायक) को अत्यन्त आनन्द प्रदान करती है।

17. राजा - उदयन

तीव्रः स्मरसन्तापो न तथादौ बाधते यथाऽऽसन्ने।

तीव्र काम-व्यथा, जितना (प्रिय-मिलन के) समीप होने पर कष्ट देती है, उतना पहले (प्रथम दर्शन होने पर) नहीं सताती। (3/10)

18. राजा- उदयन-

तपति प्रावृषि नितरामभ्यर्णजलागमो दिवसः।

वर्षा ऋृतु में आसन्न वृष्टि वाला दिन अत्यन्त ताप प्रदान करता है। (3/10)

19. काञ्चनमाला - वासवदत्ता से

किं पुनः साहसिकानां पुरूषाणां न संभाव्यते।

(एक ओर होकर) स्वामिनी ! ऐसा ही बात है और फिर साहसिक पुरुषों के लिए क्या सम्भव नहीं है?

20. राजा- सागरिका (वासवदत्ता) से

दर्पः स्यादमृतेन चेदिह तदप्येवास्ति बिम्बाधरे।

यदि इसे (चन्द्रमा) को अमृत का गर्व है, तो वह (सुधा) भी (तुम्हारे) इस बिम्बाफल तुल्य अधर में है। (3/13)

21. राजा (उदयन) विदूषक से-

प्रकृष्टस्य प्रेम्णः स्खलितमविषह्यं हि भवति॥।।3/15।।

क्योंकि- प्रकृष्ट प्रेम थोड़ी भी त्रुटि के कारण भयानक हो जाता है। (अर्थात् परकीया प्रेम को) सहन न करने वाली वह प्रिया वासवदत्ता निश्चित ही प्राण त्याग देगी; क्योंकि प्रकृष्ट प्रेम थोड़ी भी त्रुटि के कारण भयानक हो जाता है?

22. राजा- विदूषक से

सखे, इयमनभ्रा वृष्टिः।

यह बिना बादलों की वृष्टि (अचानक होने वाला कार्य) है।

विदूषक- भोः एवं न्विदं यद्यकालवातावली भूत्वा नायाति देवी वासवदत्ता। ॥3अङ्क॥

अरे, ऐसा ही है, यदि असमय की आँधी बनकर देवी वासवदत्ता न आ जाँय तो।

23. राजा- वासवदत्ता से

दुरवगाहा गतिर्दैवस्य (4 अङ्क)

धैर्य धारण करो, धैर्य धारण करो। दैव की गति दुरवगाहा है। (नहीं जानी जा सकती है)।

वसुभूतिः-देव किमिदमकारणमेव पतङ्गवृत्तिः क्रियते।(4 अङ्क)

देव! अकारण ही यह पतङ्गवृत्ति क्यों की जा रही है?

24. राजा-

विरहहुतभुजाऽहं यो न दग्धः प्रियायाः (4/16)

जो मैं प्रिया (सागरिका) के प्रलयानल के समान प्रदीप्त विरह रूपी अग्नि में नहीं जल सका, उसका तू क्या कर लेगी?

25. यौगन्धरायण -

ईदृशमत्यन्तमाननीयेष्वपि निरनुरोधवृत्ति स्वामिभक्तिव्रतम्। (4 अङ्क)

यह स्वामिभक्ति का व्रत ही ऐसा है जिसमें अत्यन्त माननीय जनों के प्रति भी रूक्ष व्यवहार करना पड़ता है।

26. भरतवाक्य-

निःशेषं यान्तु शान्तिं पिशुनजनगिरो दुर्जयो वज्रलेपाः
खलों के वज्रलेप के समान (कष्ट प्रदान करने वाले) दुर्जय वचन पूर्ण रूप से शान्त हो जायँ।।।4/22।।

27. वसुभूति-

ग्राम्यो यथाऽहं कृतः।
आश्चर्य है कि, द्वार पर स्थित महान कौतूहल के कारण ग्रामीण जैसा बना दिया गया। ।।4/12।।

28. विदूषक-

तत्कस्मादत्रारण्यरुदितं करोषि
अरे उठो! महारानी तो चली गई फिर क्यों यहाँ अरण्य-रोदन कर रहे हो। (3 अङ्क)

30. राजा- (उदयन)

प्रिया प्रायेणास्ते हृदयनिहितातङ्कविधुरा। (3/4)
इस प्रकार मेरी प्रिया (सागरिका) प्रायः हृदय में स्थित भय से विकल रहती है।

31. विदूषकः-

एष खलु गुर्वनुरागोत्क्षिप्तहृदयः संध्यावधूदत्तसंकेत इवास्तगिरिशिखरकाननमनुसरति भगवान्सहस्ररश्मिः।
अत्यधिक अनुराग के कारण उत्क्षिप्त हृदयवाला तथा सहस्र किरणों वाला यह भगवान् सूर्य, मानो जिसे संध्या रूपी वधू ने संकेत दिया हो, अस्ताचल के शिखर देश में स्थित कानन का अनुसरण कर रहा है। (3 अङ्क)

32. राजा-

धन्यानां श्रवणपथातिथित्वमेति (2/8)
दुःसह काम व्यथा को सहती हुई कामिनी के द्वारा सखियों के समक्ष जो कुछ (गुप्त) सम्भाषण किया गया है, वह शिशु तोता और मैना के द्वारा पुनः उच्चरित होकर भाग्यवानों के कानों का विषय बनता है।

33. अचिन्त्यो हि मणिमन्त्रौषधीनां प्रभावः।

राजा-विदूषक से- अर्थ- मित्र, (इसमें) क्या सन्देह ? क्योंकि मणि,मन्त्र और औषधियों का प्रभाव अचिन्तनीय हुआ करता है।

पात्र-परिचय

नायक –उदयन वत्स देश का राजा

विदूषक –वसन्तक

यौगन्धरायण –उदयन का प्रधानमन्त्री

विजयवर्मा– उदयन के प्रधान-सेनापति रुमण्वान् का भानजा

वाभ्रव्य – उदयन का कञ्चुकी

वसुभूति – सिंहल देश का मन्त्री

ऐन्द्रजालिक– उज्जयिनी का निवासी जादूगर

नायिका – रत्नावली (सागरिका) विक्रमबाहु की पुत्री

वासवदत्ता– उदयन की राजमहिषी

काञ्चनमाला–वासवदत्ता की सेविका

सुसंगता – परिचारिका, सागरिका की सखी

वसुन्धरा – द्वारपालिका (प्रतिहारी)अरण्य-रोदन कर रहे हो।

रत्नावली प्रश्नोत्तरी

- रत्नावलीनाटकस्य कर्ता कः?
  (A) हर्षवर्धनः (B) श्रीहर्षः
  (C) भासः (D) बाणः
- रत्नावल्याः रूपकप्रकारः अस्ति?
  (A) नाटक (B) महाकाव्य
  (C) नाटिका (D) खण्डकाव्य
- रत्नावल्यां वत्सराजः कीदृशो नायकः?
  (A) धीरप्रशान्तः **(B) धीरोद्धतः**
  (C) धीरललितः (D) धीरोदात्तः
- नाटिकाऽस्ति-
  (A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (B) मृच्छकटिकम्
  (C) रत्नावली (D) वेणीसंहारम्
- 'सागरिका' नायिका अस्ति-
  (A) मृच्छकटिके (B) कादम्बर्याम्
  (C) रत्नावल्याम् (D) शिवराजविजये
- रत्नावली कस्य देशस्य राजकन्या वर्तते-
  (A) मगधः (B) अवन्ती
  (C) विदर्भः **(D) सिंहलः**
- रत्नावल्यां प्रधानरसः कः?
  (A) वीररसः (B) रौद्ररसः
  (C) शान्तरसः **(D) शृंगाररसः**
- रत्नावली कस्य उपरूपकप्रभेदस्य उदाहरणं भवति-
  (A) त्रोटकस्य (B) सट्टकस्य
  (C) भाणिकायाः **(D) नाटिकायाः**
- रत्नावलीति नाटिकायाः स्वरूपं वर्तते-
  (A) नाटकप्रकरणयोः मिश्रितं स्वरूपम्
  (B) भाणडिमयोः मिश्रितं स्वरूपम्
  (C) प्रकरणसमवकारयोः मिश्रितं स्वरूपम्
  (D) सट्टकहल्लीसकयोः मिश्रितं स्वरूपम्

♦ सागरिका कस्मिन् ग्रन्थे अस्ति-
(A) प्रतिज्ञायौगन्धरायणे (B) मृच्छकटिके
(C) रत्नावल्याम् (D) मुद्राराक्षसे

♦ वसन्तकः अस्ति-
(A) रत्नावल्याम् (B) मृच्छकटिके
(C) उत्तररामचरिते (D) अभिज्ञानशाकुन्तले

♦ रत्नावल्याम् उदयनस्य कञ्चुकी कः?
(A) बाभ्रव्यः (B) यौगन्धरायणः
(C) वसन्तकः (D) विक्रमबाहुः

♦ रत्नावलीनाटिकायाः प्रथमाङ्कस्य नाम किम्?
(A) संकेतः (B) कदलीगृहः
(C) मदनमहोत्सवः (D) ऐन्द्रजालिकम्

♦ मदनमहोत्सवस्य वर्णनं कस्मिन् ग्रन्थे उपलभ्यते?
(A) उत्तररामचरिते **(B) अभिज्ञानशाकुन्तले**
(C) रत्नावल्याम् (D) मृच्छकटिके

♦ 'यातोऽस्मि पद्मनयने समयो ममैषः' रत्नावल्याः संवाद-श्लोकेन कः सम्बोध्यते?
(A) महाराज्ञी **(B) विदूषकः**
(C) उदयनः (D) सागरिका

♦ "आनीय झटिति घटयति विधिरभिमतमभिमुखीभूतः" उक्तिरियं रत्नावल्यां वर्तते-
(A) यौगन्धरायणस्य (B) उदयनस्य
(C)सूत्रधारस्य (D) रत्नावल्याः

♦ लीलावधूतपद्मा कथयन्ती पक्षपातमधिकं नः।
मानसमुपैति केयं चित्रगता राजहंसीव।।
इयमुक्तिः कामुद्दिश्य कथिता?
(A) शकुन्तलाम् (B) महाश्वेताम्
(C) द्रौपदीम् **(D) सागरिकाम्**

♦ रत्नावल्यां कस्याः नगर्याः दृश्यं वर्तते?
(A) कौशाम्ब्याः (B) उज्जयिन्याः
(C) श्रीलंकायाः (D) श्रावस्त्याः

♦ रत्नावल्याः मङ्गलाचरणस्य प्रथमे श्लोके कस्य स्तुतिः प्राप्यते?
(A) विष्णोः (B) ब्रह्मणः
(C) शिवस्य (D) गणेशस्य

♦ 'सिद्धेर्भ्रान्तिर्नास्ति सत्यं तथापि स्वेच्छाचारी भीत एवास्मि भर्तुः।' इत्युक्तिः रत्नावल्यां केन सम्बद्धा?
(A) उदयनेन (B) वसन्तकेन
(C)बाभ्रव्येण **(D) यौगन्धरायणेन**

♦ रत्नावल्याः अपरं नाम-
(A) वासवदत्ता **(B) सागरिका**
(C)कर्पूरमञ्जरी (D) शकुन्तला

♦ रत्नावली कस्य राज्ञो दुहिताऽऽसीत् ?
(A) दृढवर्मणः (B) कलिङ्गराजस्य
(C)सिंहलेश्वरस्य (D) मत्स्यराजस्य

♦ रत्नावल्यां नायकः कः -
(A) चारुदत्तः (B) दुष्यन्तः
(C)दुर्योधनः **(D) उदयनः**

♦ वासवदत्तया कुसुमायुधस्य पूजा कुत्र सम्पादिता-
(A) बकुलपादपतले **(B) रक्ताशोकपादपतले**
(C)सहकारवृक्षतले (D) दाडिमवृक्षतले

♦ रत्नावल्यां द्वितीयाङ्कस्य नाम-
(A) मदनमहोत्सवः **(B) कदलीगृहः**
(C) संकेतः (D) ऐन्द्रजालिकम्

प्रतिमानाटकम्

मङ्गलाचरण

सीताभवः पातु सुमन्त्रतुष्टः सुग्रीवरामः सहलक्ष्मणश्च।
यो रावणार्यप्रतिमश्च देव्या विभीषणात्मा भरतोऽनुसर्गम्।1।

भावार्थ- वे भगवान् राम सदैव हमारी अथवा आपकी रक्षा करें जो सीता को सुख देने वाले, सुमन्त्र (सारथि और अच्छी मन्त्रणा) से संतुष्ट, सुग्रीव (सुन्दर ग्रीवा वाले, वानरराज के मित्र) तथा अभिराम (सुन्दर) हैं, और जिनके साथ लक्ष्मण हैं,सीताहरण के कारण जिन्हें रावण का शत्रु बनना पड़ा, जो वीरता में अद्वितीय और विभीषण (शत्रुओं के लिए भयंकर) स्वरूप हैं तथा जो सदा संसार का पालन एवं रक्षा करते हैं।

* इस मङ्गलाचरण में भगवान् राम (विष्णु) की स्तुति की गयी है।
* इसमें आशीर्वाद तथा मुद्रालङ्कार के प्रयोग से कथावस्तु का भी निर्देश है, अतः पत्रावली नान्दी है।
* इसमें आठ पदों वाली नान्दी का प्रयोग है।
* उपर्युक्त पद्य में परिकर अलङ्कार एवं उपजाति छन्द है।

प्रतिमानाटकम् की संक्षिप्त कथावस्तु

प्रथम अङ्क

* राम के अभिषेक के समय नाटक का प्रारम्भ होता है।
* अकस्मात् अभिषेक के बाजे बंद हो जाते हैं तथा सीता सशंकित हो जाती हैं।
* राम को अभिषेक से उठना पड़ता है तथा वन जाने की आज्ञा मिलती है।

* राम, वन जाने से पूर्व सीता से मिलते हैं।
* सीता और लक्ष्मण को साथ लेकर राम वन की ओर प्रस्थान करते हैं।

द्वितीय अङ्क

* दशरथ अपने पुत्रों एवं पुत्रवधू के वियोग में विलाप करते हैं।
* अयोध्या के सभी जीवधारी राम के वनगमन से क्षुब्ध हैं।
* कौशल्या आदि रानियाँ महाराज दशरथ को सान्त्वना दिलाती हैं।
* दशरथ, सुमन्त्र से रामादि का समाचार पूँछते हैं।
* शोक से व्याकुल महाराज दशरथ की मृत्यु हो जाती है।

तृतीय अङ्क

* भरत, सुमन्त्र के साथ अपने ननिहाल से अयोध्या आते हैं।
* भरत रास्ते में अयोध्या के निकट एक प्रतिमागृह में दशरथ तथा उनसे पूर्ववर्ती राजाओं की प्रतिमा का अवलोकन करते हैं।
* पुजारी द्वारा भरत को ज्ञात होता है कि महाराज दशरथ की मृत्यु हो चुकी है।
* भरत वहीं मूर्च्छित हो जाते हैं तथा होश में आने पर समस्त घटनाओं को पुजारी से पूँछते हैं।
* घटनाओं को सुनकर भरत अपनी माता कैकेयी की भर्त्सना करते हैं।
* भरत बहुत दुःखी होते हैं तथा राम को लौटाने के लिए सारथि सुमन्त्र के साथ अयोध्या से दण्डकारण्य को प्रस्थान करते हैं।

चतुर्थ अङ्क

* भरत, राम आदि से मिलते हैं और स्वयं को निर्दोष बताते हैं।
* भरत, राम को लौटाना चाहते हैं लेकिन राम, पिता की आज्ञा बताकर मना कर देते हैं तत्पश्चात् भरत भी वहाँ से लौटने को तैयार नहीं होते।
* भरत इस शर्त पर अयोध्या जाने को तैयार होते हैं कि 14 वर्षों के पश्चात् राम, राज्यभार को स्वीकार कर लेंगे।
* राम की चरणपादुका लेकर भरत अयोध्या लौट आते हैं।

पञ्चम अङ्क

* इस अङ्क में संन्यासी वेशधारी रावण का प्रवेश होता है।
* राम, रावण को आसन पर बैठाते हैं और उससे अपने पिता दशरथ के श्राद्ध के विषय में बात करते हैं।
* रावण, राम को बताता है कि श्राद्ध कर्म में काञ्चन-पार्श्व नाम के मृग की भी आवश्यकता पड़ती है।
* राम, काञ्चन-पार्श्व मृग को लाने के लिए बाहर निकलते हैं तथा मौलिक रूप में आकर रावण, सीता का हरण कर लेता है।
* सीता का विलाप सुनकर जटायु सीता को बचाने के लिए जाता है।

षष्ठ अङ्क

* सीता को छुड़ाने के लिए जटायु, रावण से युद्ध करता है और रावण द्वारा मार दिया जाता है।
* सुमन्त्र द्वारा भरत को सूचना मिलती है कि सीता का हरण हो गया।
* भरत अपनी माता कैकेयी को उलाहना देते हैं तथा कैकेयी अपने दोष का परिहार सुनाती हैं।
* श्रवणकुमार के पिता का शाप का वृत्तान्त, सुमन्त्र के मुख से सुनकर भरत अपनी माता से क्षमा माँगते हैं।
* रावण से युद्ध के लिए भरत और सुमन्त्र तैयारी करते हैं।

सप्तम अङ्क

* इस अङ्क में सूचना मिलती है कि राम, रावण को मारकर विभीषण को लङ्कापति बनाकर, सीता को साथ लेकर फिर से तपोवन में आ गये हैं।
* भरत अपनी माताओं के साथ राम से मिलने जाते हैं।
* सभी भाइयों की उपस्थिति में राम का राज्याभिषेक होता है और सब पुष्पक विमान से वापस अयोध्या लौटते हैं।
* भरतवाक्य के साथ नाटक समाप्त।

प्रतिमानाटकम् का भरतवाक्य

यथा रामश्च जानक्या बन्धुभिश्च समागतः।
तथा लक्ष्म्या समायुक्तो राजा भूमिं प्रशास्तु नः। (7/15)

भावार्थ- जिस प्रकार राम का सीता और बन्धुओं से सम्मिलन हुआ है, उसी प्रकार राज्यलक्ष्मी से युक्त हुए हमारे महाराज इस भूमि का पालन करें।

* प्रस्तुत भरतवाक्य में लोककल्याणार्थ की कामना की गयी है।
* इसमें अनुष्टुप् छन्द एवं दृष्टान्त अलङ्कार है।

प्रतिमानाटकम् के प्रमुख पात्रों का चरित्र-चित्रण

राम–

* राम इस नाटक के नायक हैं।
* वे धीरोदात्त गुणों से सम्पन्न हैं।
* राम अनात्मश्लाघी एवं क्षमाशील हैं, कैकेयी द्वारा उन्हें वनवास मिला है पर उन्हें उनके प्रति किञ्चितमात्र भी क्रोध नहीं आता है।
* राम आज्ञाकारी तथा दृढ़व्रती भी हैं।
* राम पितृभक्त, मातृभक्त तथा मातृ-प्रेमी हैं।
* सचमुच राम में देवोचित गुण हैं, इन गुण के कारण राम, देव बन गये हैं।

सीता–

* सीता इस नाटक की नायिका हैं।
* वे राम की अनुरूप सहधर्मचारिणी हैं।
* दोनों में अत्यन्त साम्य है जैसाकि पति-पत्नी में होना चाहिए।
* सीता दण्डकारण्य के सभी पशु-पक्षियों एवं पेड़-पौधों से प्रेम करती हैं।
* अतिथि सत्कार में सीता अत्यन्त निपुण हैं।
* सीता, राम की अर्धाङ्गिनी हैं, सीता के बिना राम अपूर्ण हैं।

लक्ष्मण–

* लक्ष्मण इस नाटक के प्रमुख पात्र हैं जो नायक राम के आस-पास ही रहते हैं।
* लक्ष्मण अत्यन्त क्रोधी स्वभाव के हैं। जब उन्हें कैकेयी के षड्यन्त्र का पता चलता है तो स्त्रीजाति के समूल विनाश के लिए उद्यत हो जाते हैं।
* लक्ष्मण भातृ-प्रेम के अवतार हैं और राम के उपासक हैं।

भरत–

* भरत भी इस नाटक के उत्कृष्ट पात्रों में हैं।
* भरत का चरित्र अत्युज्ज्वल है।
* वे अन्याय से प्राप्त राज्य को ठुकरा देते हैं और अपनी माता को फटकारते भी हैं।
* भरत का चरित्र निश्कलंक है। वे राम के चरणपादुका को आसनस्थ करके अयोध्यावासियों की सेवा करते हैं।
* अतः भरत राम के परम भक्त हैं एवं आदर्शों में राम से उच्च हैं।

दशरथ–

* दशरथ रामादि चारों भाइयों के पिता हैं। पुत्र उनके प्राण हैं।
* वे अयोध्या के नरेश एवं परमस्नेही पिता भी हैं।
* पुत्र के वियोग में वे विह्वल होकर प्राण त्याग देते हैं।
* राम को राजा बनाने की उनकी अभिलाषा अपूर्ण रह जाती है।
* निराशा को हृदयस्थ किये हुए वे संसार से विदा हो जाते हैं।

सुमन्त्र–

* सुमन्त्र इक्ष्वाकु कुल के वृद्ध सारथि हैं।
* वे अत्यन्त धीर, गम्भीर, बुद्धिमान् एवं निष्ठावान् हैं, इसलिए नाटक में उनकी महत्ता बढ़ जाती है।
* इक्ष्वाकु वंश पर एक के बाद एक विपत्ति आने से अपनी लम्बी आयु को ही दोषी ठहराते हैं।

अन्य पात्र–

* अन्य पात्रों में कौशल्या, शत्रुघ्न, रावण आदि हैं।

प्रतिमानाटकम् का परिचय

लेखक	- महाकवि भास
काव्यविधा	- नाटक
विभाजन	- 7 (सात) अङ्कों में
उपजीव्य	- रामायण
श्लोक संख्या	- 157
अङ्क	**श्लोक संख्या**
प्रथम	31
द्वितीय	21
तृतीय	24
चतुर्थ	28
पञ्चम	22
षष्ठ	16
सप्तम	15
योग	**157**
नायक	- राम
नायिका	- सीता
प्रतिनायक	- रावण
कञ्चुकी	- बालाकि
प्रतीहारी	- विजया
प्रधान/अङ्गीरस	- करुण रस

नोट- म.टी. गणपतिशास्त्री 'धर्मवीररस' को अङ्गीरस मानते हैं।

अन्य रस - वीर, शृङ्गार, अद्भुत आदि
अलङ्कार - उपमा, स्वभावोक्ति
प्रमुख छन्द - अनुष्टुप्
रीति- वैदर्भी

प्रतिमानाटकम् की सूक्तियाँ

* **सर्वशोभनीयं सुरूपं नाम (अङ्क-1)**
भावार्थ- प्रथम अङ्क में अवदातिका नाम की सीता की सखी कहती है कि 'सुन्दर रूप पर सभी चीजें अच्छी लगती हैं।'

* **स्वः पुत्रः कुरुते पितुर्यदि वचः कस्तत्र भोः! विस्मयः।1/5।**
भावार्थ- प्रथम अङ्क में राम कहते हैं 'यदि पुत्र अपने पिता की आज्ञा का पालन करता है तो इसमें आश्चर्य की कौन सी बात है।'

* **अल्पं तुल्यशीलानि द्वन्द्वानि सृज्यन्ते। (अङ्क-1)**
भावार्थ- प्रथम अङ्क में राम कहते है कि, 'विधाता एक जैसे बहुत कम बनाता है।'

* **शरीरेऽरिः प्रहरति हृदये स्वजनस्तथा। (1/12)**
भावार्थ- प्रथम अङ्क में राम कहते हैं कि, ''शत्रु शरीर पर वार करता है परन्तु स्वजन हृदय पर।''

* **अनुचरति शशाङ्कं राहुदोषेऽपि तारा पतति च वनवृक्षे याति भूमिं लता च। त्यजति न च करेणुः पङ्कलग्नं गजेन्द्रं व्रजतु चरतु धर्मं भर्तृनाथा हि नार्यः (1/25)**

भावार्थ- प्रथम अङ्क में लक्ष्मण कहते हैं कि, राहु के ग्रसित होने पर भी रोहिणी चन्द्रमा के पीछे चलती है। पेड़ के गिरने पर उसके साथ की लता भी साथ ही गिर पड़ती है। कीचड़ में फँसे हुए हाथी को हथिनी कभी नहीं छोड़ती इसलिए इन्हें भी अपने साथ वन चलने दें और स्त्रीधर्म का पालन करने दें। क्योंकि स्त्रियों का पति ही सब कुछ होता है उसका साथ नहीं छूटना चाहिए।

* **निर्दोषदृश्या हि भवन्ति नार्यो यज्ञे विवाहे व्यसने वने च। (1/29)**

भावार्थ- प्रथम अङ्क में राम, नगरवासियों से कहते हैं कि, 'यज्ञ, विवाह, आपत्ति तथा संकट के अवसर पर स्त्रियों के दर्शन में कोई पाप नहीं होता।'

* **पिपासार्तोऽनुधावामि क्षीणतोयां नदीमिव। (3/10)**

भावार्थ- तृतीय अङ्क में भरत कहते हैं कि, 'मैं अयोध्या की ओर उसी प्रकार जा रहा हूँ जिस प्रकार प्यासा व्यक्ति सूखी नदी की ओर भागता है।'

* **हस्तस्पर्शे हि मातॄणामजलस्य जलाञ्जलिः। (3/12)**

भावार्थ- तृतीय अङ्क में पुजारी, भरत से कहता है कि, 'पुत्र के लिए माताओं के हाथ का स्पर्श प्यासे के लिए जल के समान है।'

* **गङ्गायमुनायोर्मध्ये कुनदीव प्रवेशिता। (3/16)**

भावार्थ- तृतीय अङ्क में भरत अपनी माता कैकेयी से कहते है कि, 'मेरी माता (कौशल्या) और माता (सुमित्रा) के बीच खड़ी हुई तुम अच्छी नहीं लग रही हो जैसे गङ्गा और यमुना के बीच में क्षुद्र नदी।'

* **गोपहीना यथा गावो विलयं यान्त्यपालिताः एवं नृपतिहीना हि विलयं यान्ति वै प्रजाः। (3/23)**

भावार्थ- तृतीय अङ्क में सुमन्त्र, भरत से कहते हैं कि, 'जैसे ग्वाल के बिना गायें रक्षा न होने से नष्ट हो जाती है, उसी प्रकार राजा के बिना प्रजा का नाश हो रहा है।'

* **किं ब्रह्मघ्नानामपि परेण निवेदनं क्रियते। (अङ्क-4)**

भावार्थ- चतुर्थ अङ्क में भरत कहते हैं कि, 'क्या ब्रह्महत्या करने वालों की भी सूचना दूसरे देते हैं अर्थात् नहीं।'

* **अलमिदानीं व्रणे प्रहर्तुम्। (अङ्क-4)**

भावार्थ- चतुर्थ अङ्क में भरत, राम से कहते हैं कि, 'घाव पर नमक मत छिड़किये।'

* **पुरुषाणां मातृदोषो न दोषः। (4/21)**

भावार्थ- भरत कहते हैं कि, 'सुपुरुष! माता का अपराध पुत्र पर न लगाना चाहिए।'

* **राज्यं नाम मुहूर्तमपि नोपेक्षणीयम्। (अङ्क-4)**

भावार्थ- राम, भरत, से चतुर्थ अङ्क में कहते हैं कि, 'हे वत्स! राज्य की क्षणभर भी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।'

* **छायां परिहृत्य शरीरं न लङ्घयामि। वाचानुवृत्तिः खल्वतिथिसत्काराः। (अङ्क-5)**

भावार्थ- पञ्चम अङ्क में रावण, राम से कहता है कि, 'जब छाया (स्त्री) को ही मैं छोड़ चुका फिर शरीर (पुरुष) को कैसे सेवा करने दूँ। प्रेमपूर्वक सम्भाषण ही अतिथिसत्कार है।'

* **धिग् भोः स्वर्गं भीतदेवैर्निविष्टं धन्या भूमिर्वर्तते यत्र सीता। (5/17)**

भावार्थ- पञ्चम अङ्क में हरण करते समय रावण, सीता से कहता है कि, 'धिक्कार है कायर देवों से भरे स्वर्ग को, धन्य है यह पृथ्वी जिसमें सीता रहती है।'

* **न व्याघ्रं मृगशिशवः प्रघर्षयन्ति।5/10**

भावार्थ- रावण पञ्चम अङ्क में सीता से कहता है कि, राम और लक्ष्मण जैसे कायरों को पुकारने से क्या लाभ? कहीं मृग के बच्चे शेर का भी कुछ बिगाड़ सकते हैं?'

* **तिर्यग्योनयोऽप्युपकृतमवगच्छन्ति। अङ्क-6**

भावार्थ- षष्ठ अङ्क में सुमन्त्र, भरत से कहते हैं कि, 'तिर्यग्जाति (पशु-पक्षी) भी कृतज्ञ होते हैं।'

प्रतिमानाटकम् का पात्र-परिचय

पुरुष-पात्र	
सूत्रधार	- प्रमुख नट, मञ्च का अध्यक्ष
राजा	- अयोध्या नरेश दशरथ
राम	- नाटक के नायक, दशरथ के ज्येष्ठ पुत्र
लक्ष्मण	- सुमित्रा+दशरथ के पुत्र
भरत	- कैकेयी+दशरथ के पुत्र
शत्रुघ्न	- सुमित्रा+दशरथ के पुत्र
सुमन्त्र	- वृद्ध सारथि
रावण	- प्रतिनायक, लङ्कापति
कञ्चुकी	- अन्तःपुर का वृद्ध ब्राह्मण
देवकुलिक	- प्रतिमागृह का सफाईकर्मी
वृद्ध तापसी	- रावण और जटायु के युद्ध को देखने वाले
तापस	- दण्डकारण्य का एक तपस्वी
नन्दिलक	- आश्रम का सेवक
भट	- अधिकारी

स्त्री-पात्र	
नटी	- सूत्रधार की पत्नी
सीता	- राम की पत्नी, नायिका

कौशल्या - राम की माता
सुमित्रा - लक्ष्मण और शत्रुघ्न की माता
कैकेयी - भरत की माता
अवदातिका- सीता की सखी
चेटी - सीता की सेविका
प्रतीहारी - द्वारपालिका, विजया
नन्दिनी - कैकेयी की परिचारिका

प्रतिमानाटकम् नाम की सार्थकता

नाटक के तृतीय अङ्क में महाराज दशरथ की मृत्यु के पश्चात् ननिहाल से लौटते हुए भरत ने मार्ग में अयोध्या के समीप 'देवकुल' नामक प्रतिमागृह में अपने दिवंगत पूर्वज के साथ जब महाराज दशरथ की भी प्रतिमा देखी तो उन्हें उनकी मृत्यु का पता चला। इसी तृतीय अङ्क की घटना के आधार पर ही इस नाटक का नाम प्रतिमानाटक रखा गया है।

महत्त्वपूर्ण तथ्य

* प्रतिमानाटक में विदूषक का अभाव है।
* अभिषेकनाटक में पूरी कथा के सन्निवेश न होने से असन्तुष्ट होकर भास ने प्रतिमानाटक की रचना की।
* भास के 13 रूपकों में प्रतिमानाटक सबसे बड़ा है।
* प्रतिमानाटक का हस्तलेख मलयालम लिपि में प्राप्त हुआ था।
* प्रतिमानाटक के द्वितीय एवं सप्तम अङ्क में मिश्र विष्कम्भक का प्रयोग है।
* तृतीय एवं चतुर्थ अङ्क में प्रवेशक का प्रयोग है।
* षष्ठ अङ्क में शुद्ध विष्कम्भक का प्रयोग है।

चम्पूकाव्य- संक्षिप्त परिचय

चम्पूकाव्य की परिभाषा व यौगिकार्थ-

'चम्पू' शब्द चुरादिगणीय **'चपि'** धातु से **'उन्'** (उणादि प्रत्यय) करके **'ऊङ्'** आदेश पर बनता है । अतः-

''चम्पयति अर्थात् सहैव गमयति प्रयोजयति गद्यपद्ये इति चम्पूः।''

अर्थात् जिस रचना में गद्य -पद्य का समान प्रयोग किया जाता है वह चम्पू कहलाता है।

हरिदास भट्टाचार्य चम्पू शब्द की निरुक्ति करते हैं-

''चमत्कृत्य पुनाति, सहृदयान् विस्मयीकृत्य प्रसादयति, इति चम्पूः।''

* इसके अनुसार चम्पूकाव्य में 'शब्द' चमत्कार युक्त तथा 'अर्थ ' प्रसाद गुण युक्त होना चाहिए ।
* चम्पूकाव्य में वर्णन हेतु का तथा भावपूर्ण या अर्थगौरव वाले भाग के लिए पद्य का प्रयोग होता है।
* चम्पू का सर्वप्रथम शास्त्रीय लक्षण काव्यादर्श में दण्डी द्वारा इस प्रकार किया गया-

''गद्यपद्यमयी काचिच्चम्पूरित्यभिधीयते।''

आचार्य विश्वनाथ साहित्यदर्पण में उपर्युक्त लक्षण निम्न शब्दों में लिखते हैं-

''गद्यपद्यमयं काव्यं चम्पूरित्यभिधीयते ।''

* चम्पूकाव्य की विशेषता प्रकट करते हुए भोज ने रामायणचम्पू में कहा कि, जिस तरह वाद्य के मिश्रण से गीत आनन्ददायक हो जाते हैं।
* उसी प्रकार पद्य के समावेश से गद्य सुन्दर व आह्लादक हो जाता है-

''गद्यानुबन्धरसमिश्रितपद्यसुक्तिर्हृद्या
हि वाद्यकलया कलितेव गीतिः।
तस्माद् दधातु कविमार्गजुषां सुखाय,
चम्पू- प्रबन्धरचनां रसना मदीय ॥''

चम्पूकाव्य - उत्पत्ति एवं विकास -

* चम्पूकाव्य के बीज हमें वेदों में सर्वप्रथम प्राप्त होते हैं।
* कृष्णयजुर्वेद, अथर्ववेद, उपनिषद् ग्रन्थ तथा ब्राह्मणग्रन्थों में गद्य-पद्य मिश्रित शैली का बहुत प्रयोग हुआ है।
* ऐतरेय ब्राह्मण का हरिश्चन्द्रोपाख्यान चम्पूकाव्य का सुन्दर निदर्शन है।
* यहाँ मुख्यकथा गद्य में तथा उपदेशात्मक भाग पद्य में वर्णित है।
* वैदिक साहित्य के बाद महाभारत, भागवत पुराण और विष्णुपुराण में भी गद्य -पद्य का मिश्रण प्राप्त है।
* इसके बाद अवदानशतक, जातकमाला आदि बौद्ध साहित्य में 'चम्पूकाव्य' का दर्शन होता है।
* अद्यावधि पर्यन्त प्राप्त साहित्य के आधार पर 'चम्पूकाव्य का प्रवर्तक नलचम्पूकार त्रिविक्रमभट्ट को कहा जा सकता है।
* 10वीं शताब्दी का नलचम्पू ही आज संस्कृत साहित्यप्रथम का प्रथम चम्पूकाव्य है।

त्रिविक्रमभट्ट का परिचय

व्यक्तित्व

पितामह - श्रीधर (शाण्डिल्यगौत्रीय ब्राह्मण)
पिता - नेमादित्य अथवा देवादित्य।
आश्रयदाता - राष्ट्रकूटवंशी का पूर्वार्द्ध। (915ई.)
उपाधि - त्रिविक्रमभट्ट ने नलचम्पू में प्रातः वर्णन प्रसङ्ग में रात्रि के अन्धकार व प्रातःकाल के प्रकाश की तुलना क्रमशः यमुना और गंगा के जल से की, इस कारण आलोचकों ने इन्हें ''यामुन त्रिविक्रम'' की उपाधि प्रदान की । पद्य यथा-

''उदयगिरिगतायां प्राक्प्रभापाण्डुताया-
मनुसरति निशीथे शृङ्गमस्ताचलस्य।
जयति किमपि तेजः साम्प्रतं व्योममध्ये,
सलिलमिव विभिन्नं जाह्नवं यामुनं च॥''

किम्वदन्ती- जनश्रुति है कि त्रिविक्रम के पिता नेमादित्य उद्भट विद्वान् थे तथा किसी राजसभा में पण्डित थे। एक बार पिता प्रवास पर थे, उसी समय एक विरोधी पण्डित ने राजसभा में नेमादित्य से शास्त्रार्थ करने को कहा। नेमादित्य को बुलाने राजपुरुषों को भेजा गया किन्तु घर पर पुत्र त्रिविक्रम थे। त्रिविक्रम मन्दबुद्धि थे अतः शास्त्रार्थ करने में असमर्थ करने पिता के आगमन तक अतुल्य पाण्डित्य का वरदान प्राप्त किया तथा विरोधी पण्डित को हराया। बाद में त्रिविक्रम ने वरदान का लाभ उठाने हेतु नलचम्पू की रचना प्रारम्भ की, किन्तु अभी 7 उच्छ्वास ही लिख पाये थे कि पिता का आगमन हो गया साथ ही वरदान की अवधि भी खत्म हो गयी और इस नलचम्पू की कथा अपूर्ण ही रह गयी ।

कृतित्व

त्रिविक्रमभट्ट की दो रचनाएँ प्राप्त होती हैं-

1. नलचम्पू।
2. मदालसाचम्पू।

नलचम्पू- ''एक परिचय''

उपजीव्य- महाभारत का वनपर्व ।

विभाग - नलचम्पू 7 उच्छ्वासों में विभक्त है।

कथानक - नल और दमयन्ती की प्रेमकथा का सुन्दर वर्णन है। किन्तु ग्रन्थ अपूर्ण है, क्योंकि दोनों के विवाह का इसमें वर्णन नहीं मिलता अपितु देवताओं के सन्देश को पहुँचाने दमयन्ती के महल जाने प्रेमासक्त होने का ही वर्णन प्राप्त होता है।

शैली- श्लेष-प्रधान-शैली होते हुए भी शुबोधता इनकी अपनी विशेषता है। सभंग श्लेष के प्रयोग में कवि त्रिविक्रम सिद्धहस्त हैं।

काव्यगुण- प्रसाद नव माधुर्य का आकर्षक प्रयोग।

रसपरिपाक- शृङ्गार प्रधान रस। कलापक्ष के कारण भावपक्ष निर्बल हो गया।

विविध तथ्य

* त्रिविक्रम की द्वितीय रचना मदालसाचम्पू मार्कण्डेयपुराणोक्त आख्यान पर आश्रित है तथा अप्रसिद्ध है।
* नलचम्पू के **''जाड्यपात्रं त्रिविक्रमः,'' ''मन्दधीः'', जानाति हि पुनः सम्यक्- कविरेव कवेः श्रमः** इत्यादि प्रयोग से ज्ञात होता है कि, त्रिविक्रमभट्ट ने निरन्तर अभ्यास व परिश्रम से विद्वता प्राप्त की थी।
* नलचम्पू के प्रत्येक उच्छ्वास के अन्तिम पद्य में ''हरिचरणसरोजाङ्क'' पद का प्रयोग किया है अतः इस काव्य को 'हरिचरणसरोजाङ्ककाव्य' भी कहा जाता है।
* मदालसाचम्पू में एक पुराणाख्यान सम्बद्ध प्रेमकथा वर्णित है। वहाँ राजा कुवलयाश्व व मदालसा की प्रणयकथा चित्रित है।

अन्य चम्पूकाव्य एवं रचनाकार

1 **जीवन्धरचम्पू** - जैनकवि हरिश्चन्द्र
2 **यशस्तिलकचम्पू** - सोमदेवसूरि
3 **रामायणचम्पू** - धारानरेश भोजदेव
4 **उदयसुन्दरी कथा** - कवि सोड्ढल
5 **भारतचम्पू** - अनन्तभट्ट
6 **आनन्दवृन्दावनचम्पू** - कवि कर्णपूर
7 **वरदाम्बिकापरिणयचम्पू** - तिरुमलाम्बा
8 **वेंकटाध्वरी के चार चम्पूकाव्य**

1 विश्वगुणादर्शचम्पू 2 उत्तरचम्पू
3 वरदाभ्युदयचम्पू 4 श्रीनिवासविलासचम्पू।

नलचम्पू की प्रमुख सूक्तियाँ

प्रथम उच्छ्वास

अगाधान्तः परिस्पन्दं विबुधानन्दमन्दिरम्। (1/3)

व्याख्या - वाणीपक्ष- हृदय में महान् अर्थ के कारण चमत्कार उत्पन्न करने वाले विद्वानों एवं देवों आनन्द का निकेतन, विभिन्न रसों (शृङ्गारादि) की विशिष्टता से समृद्ध सरस्वती के प्रवाहित होने वाले प्रवाह को मैं (त्रिविक्रमभट्ट) प्रणाम करता हूँ।

सरस्वतीनदीपक्ष- अथाह गहराई के बीच तरङ्गित होने वाले, देवताओं के आनन्द का घर, पृथ्वी के भीतर प्रगल्भतापूर्वक बहते हुए सरस्वती नदी की धारा को मैं (त्रिविक्रमभट्ट) प्रणाम करता हूँ।

काचोऽप्युच्चैर्मणीयते। (1/8)

व्याख्या - काव्यपक्ष- सुभाषितरत्नों के उत्पत्ति स्थान (रोहण) उन विद्वद्वृन्द को मैं (त्रिविक्रमभट्ट) प्रणाम करता हूँ कि जिनके बीच पड़ा हुआ अधम काव्य भी उत्कृष्ट हो जाता है।

रत्नपक्ष- प्रशंसार्ह रत्नों के आरोहणस्थान विपश्चिद्वृन्द को मैं (त्रिविक्रमभट्ट) प्रणाम करता हूँ कि जिनके बीच पड़ा हुआ निम्नकोटि

का काँच भी उच्च कोटि की मणि की तरह प्रतीत होता है।

करोति कस्य नाह्लादं कथा कान्तेव भारती ।(1/13)

व्याख्या- महाभारतपक्ष- कुन्तीपुत्र कर्ण की मृत्यु होने पर (युद्ध में वीरगति को प्राप्त कर लेने पर) आश्चर्य के कारण चंचल बने कृष्ण, अर्जुन तथा धृतराष्ट्र आदि जिसमें इधर-उधर भ्रमण करते रहे, ऐसी वह कान्ता के समान महाभारत की कथा किसे आह्लादित नहीं करती? अर्थात् सभी के लिए आनन्ददायिनी होती है। **कान्तापक्ष-** कटाक्षादि विलास से चंचल तथा कानों तक फैले हुए नीली कनीनिकाओं एवं सफेद भाग-समन्वित नेत्रों वाली कान्ता किसे आह्लादित नहीं करती अर्थात् सभी को आह्लादित करती ही है।

सर्वसहाः सूरयः।(1/15)

व्याख्या- कवि त्रिविक्रम भट्ट कहते हैं कि महाकवियों कि काव्यकथा एवम् आख्यानों के रस से समसामयिक विद्वानों के कान तथा हृदय दूध से भरे घड़े की तरह हो परिपूर्ण चूके हैं। ऐसी स्थिति में वर्णनीय ज्ञान से शून्य बुद्धि वाले हमारे जैसे व्यक्तियों की तुच्छ वाणी कहाँ स्थान पा सकेगी? अथवा निराश होने की आवश्यकता नहीं, क्योंकि विद्वान् सब कुछ सहन कर लेते हैं जिससे कि वे समादर करते हैं।

नैको रसः कवे (1/16)

व्याख्या- कवि त्रिविक्रम भट्ट के जैसे काव्यकर्ता को श्लिष्ट काव्यनिर्माण में ही रसानुभूति होती है। विशेष रूप से सभङ्गश्लेष में कवि की वाणी कठिन हो जाती है फिर भी उससे उद्विग्न नहीं होना चाहिए, क्योंकि कवि के लिए केवल एक ही रस एक ही अभिरुचि नहीं होती है।

वेत्ति विश्वम्भरा भारं गिरीणां गरिमाश्रयम्।(1/18)

व्याख्या- जौहरी ही रत्नों का पारखी होता है। जिसे जिस विषय की जानकारी नहीं होगी वह उस विषय के ज्ञाता का न तो वर्णन ही कर पायेगा, न तो उसके महत्त्व को ही ख्यापित कर पायेगा। गुणवानों के गुणों का वर्णन गुणसम्पन्न लोग ही कर सकते हैं अथवा गुणी ही गुणवानों के गुणों तथा गुणग्रहण करने वाले के महत्त्व को ख्यापित कर सकते हैं, क्योंकि सम्पूर्ण विश्व को धारण करने वाली पृथ्वी ही पर्वतों के गरिमामूलक भार को जानती है।

महनीयाः महानुभावाः भवन्ति।

व्याख्या- शिकार खेलने के पश्चात् राजा नल विश्रामार्थ एक सरस तथा सीधे साल वृक्ष के नीचे आ पहुँचते हैं तथा विश्राम करने लगते हैं। उसी वृक्ष के नीचे एक थका हुआ पथिक भी आता है, जो कि राजा को देखकर सहज ही अनुमान लगा लेता हैं कि यह निश्चय ही कोई चक्रवर्ती सम्राट् हैं। अतएव वह कह उठता है कि ऐसे लोग वास्तव में पूजनीय एवं प्रभावशाली होते हैं।

सौख्यस्यायतनं भवन्ति रसिकाः कन्दर्पशस्त्रं स्त्रियः।

व्याख्या- घर को बसाने तथा अनिर्वचनीय सुख को प्रदान करने में स्त्रियाँ सर्वत्र सबसे आगे रहा करती हैं इन्हीं को आधार बनाकर कामदेव सम्पूर्ण संसार पर विजयी बना रहता है। स्त्रियों को शस्त्र बनाकर कामदेव सर्वत्र शक्तिशाली बना रहता है। स्त्रीरूपी शस्त्र के आगे देव, दानव तथा मानव सभी नतमस्तक ही रहते हैं बड़े से बड़े तपस्वियों को भी कामदेव स्त्रियों को शस्त्र बनाकर परास्त कर डाला। ये ही स्त्रियाँ सुखों का आगार होती हैं तथा इनसे ही संसार पल्लवित तथा पुष्पित एवं फलवान् होता रहता है। अतएव कवि पथिक के मुख से कहलवाता है कि संभोगलीला की उत्पत्तिभूमि रसिक स्त्रियाँ ऐश्वर्यों का आगार तथा कामदेव का बाण हुआ करती हैं। (1/55)

युवजनोन्मादिनी यौवनश्रीः।(1/57)

व्याख्या- पथिक राजा नल से भीमपुत्री दमयन्ती के अनिन्द्य सौन्दर्यगुण का वर्णन करते हुए कहता है कि उस राजपुत्री दमयन्ती की सुन्दरता को देखते हुए आँखें थकती ही नहीं हैं। समस्त शुभ लक्षणों से युक्त राजकुमारी दमयन्ती का सर्वथा प्रशंसार्ह सौन्दर्यगुण है। उसकी अभिनव यौवनलक्ष्मी युवकों को उन्मत्त (पागल) बना देने वाली कामदेव की विजयपताका है। उस नायिका के सौन्दर्य को देखते ही सभी युवक उन्मत्त हो मन ही मन उसे अपना हृदय दे डालते हैं।

वे उसके सौन्दर्यश्री से प्रभावित हो कामाभिभूत हो उसे पा लेना चाहते हैं क्योंकि उसकी यौवनश्री युवकों को उन्मत्त कर देने वाली कामदेव की वैजयन्ती है।

ते धन्या न्यपतन्येषां कन्दर्पसदृशे दृशः।

व्याख्या- राजा नल से पथिक कहता है कि किसी उत्तरदिशा के राजा के प्रशंसार्ह सौन्दर्य का वर्णन करते हुए उस पथिक के मुख से सुना, जो कि उसकी जानकारी दमयन्ती को दे रहा था ।वह दमयन्ती से कह रहा था कि वे आँखे धन्य हैं, जो उस कामदेव के समान मुस्कुराते हुए मुख वाले तथा यज्ञस्तम्भ के समान लम्बी भुजाओं वाले युवक को देखी हों कामदेव के समान सर्वाङ्गसुन्दर शरीर वाले उस युवक पर दृष्टियाँ पड़ते ही धन्य हो जाती हैं तथा वे उस कामदेव सरीखे युवक के सौन्दर्य का पान कर लेना चाहती हैं ताकि वे धन्य हो जायँ। (1/59)

कान्तेत्युन्नतचेतसोऽपि कुरुते नाम्नैव निम्नं मनः।

व्याख्या- राजा नल से दमयन्ती की सुन्दरता का वर्णन कर पथिक के चुप हो जाने पर राजा नल अधीर हो उठता है तथा चिन्तन करने लग जाता है कि वह देश स्त्रीरत्नों का विशाल सागर है तथा यह पथिक भी यथार्थवक्ता है। ब्रह्मा की सृष्टिसम्बन्धी व्यापार भी आश्चर्य जनक रचनाओं से परिपूर्ण है। अतएव अद्‌भुत रचनाओं से परिपूर्ण विधाता की सृष्टि में कुछ भी सम्भव है। फिर भी उस सुन्दरी के बारे में केवल श्रवणमात्र से ही मेरा उच्च मनोबल निरन्तर गिरता ही जा रहा है, जबकि मैंने उसके सौन्दर्यवैभव को अपनी आँखो से देखा नहीं है। इससे तो यही सिद्ध होता है कि वह सुन्दरी विधाता की अभूतपूर्व रचना है, जिससे कि मुझ जैसे उच्च मनोबल वाले व्यक्ति का भी मनोबल निम्न कोटि का हो चला है। अब ऐसा लग रहा है कि कब उसके दर्शन हो जाते। (1/61)

नलचम्पू प्रश्नोत्तरी

- नलचम्पूकारः कोऽस्ति? **त्रिविक्रमभट्टः**
- गद्य-पद्य मिश्रित काव्य को कहते हैं– **चम्पूः**
- गद्यपद्यमयं काव्यम्– **चम्पूरित्यभिधीयते**
- संस्कृतस्य प्रथमः चम्पूग्रन्थः कः? **नलचम्पूः**
- नलचम्पू कथा के नायक हैं– **नल**
- 'नलचम्पू' कथा की नायिका है– **दमयन्ती**
- सभङ्गश्लेष का सर्वाधिक प्रयोग किस ग्रन्थ में हुआ है? **नलचम्पू में**
- नलचम्पू के मङ्गलाचरण में किस देवता की स्तुति है? **शिव-पार्वती की**
- नलचम्पू कितने उच्छ्वासों में वर्णित है– **सात**
- नलचम्पू की कथावस्तु का आधार है– **वनपर्व**
- त्रिविक्रमभट्ट की रचना है– **मदालसाचम्पू**
- राजा नल के महामन्त्री का नाम– **श्रुतिशील**
- 'करोति कस्य नाह्लादं कथा कान्तेव भारती' सूक्ति किस ग्रन्थ से उद्धृत है? **नलचम्पू ग्रन्थ से**
- ''किं कवेस्तेन काव्येन किं काण्डेन धनुष्मतः परस्य हृदये लग्नं न घूर्णयति यच्छिरः'' यह पद्य वाक्य उद्‌धृत है। – **नलचम्पू से**
- 'परस्य हृदये लग्नं न घूर्णयति यच्छिरः' पंक्ति ग्रहण की गयी है? **नलचम्पू से**
- 'सर्वं सहाः सूरयः' कस्मात् ग्रन्थात् उक्तम्– **नलचम्पूः**
- 'दृश्यते न च यत्र स्त्री नवापीनपयोधरा' – श्लोकांश किस ग्रन्थ से है?– **नलचम्पूः**
- नलचम्पू के 'आर्यावर्तवर्णनम्' में मुख्य रूप से किन अलङ्कारों का प्रयोग हुआ है–**श्लेष - उपमा - परिसंख्या**
- 'अनूचानः' कः? **साङ्गवेदाध्येता**

महाकाव्य/ खण्डकाव्य

काव्य

- काव्य शब्द संस्कृत भाषा में बहुत प्राचीन है जिसे कवि के कर्म के रूप में जाना जाता है-
  'कवेः कर्म काव्यम् ' (कवि +ण्यत्)
- 'कवि' शब्द 'कु' अथवा 'कव् ' धातु (भ्वादिगण आत्मनेपदी - कवते) से बना है। जिसका अर्थ है-
  ध्वनि करना, विवरण देना, चित्रण करना।
- महाकाव्य साहित्यविधा का उद्‌भव वैदिकसूक्तों से ही मिलता है जैसे - स्तुतिपरक नाराशंसियाँ, दान- स्तुतियाँ, संवादसूक्त आदि द्वारा।
- रामायण और महाभारत जैसे आर्षकाव्य महाकाव्यसाहित्य विधा के भास्कर हैं जिन्होंने परवर्ती काव्यों को विषयवस्तु शैली, भाषा शैली, वर्णनविधि आदि की उपजीव्यता दी।
- वाल्मीकि से कालिदास की रचना तक आने में काव्यकला को कई शताब्दियाँ लगी।
- रामायण, महाभारत के बाद कालिदास की उत्पत्ति तक जो महाकाव्य लिखे गये थे वे केवल नाम मात्र ही शेष हैं।
  इस काल के कुछ ग्रन्थों के नाम निम्नलिखित हैं –
  जाम्बवतीजय या **पातालविजय** (पाणिनि -450 ई॰पू॰)
- 18 सर्गों में श्रीकृष्ण द्वारा पाताल जाकर जाम्बवती के विजय और परिणय की कथा वर्णित है।
- राजशेखर के नाम से जल्हण की सूक्तिमुक्तावली (1247) में उद्धृत-**नमः पाणिनये तस्मै यस्मादाविरभूदिह।**
  आदौ व्याकरणं काव्यमनु जाम्बवतीजयम्॥
- वररुचि (350ई॰पू॰) ने **'स्वर्गारोहण'** नामक काव्य बनाया था।
  जिसे पतञ्जलि ने - **वाररुचं काव्यम्** कहा है।
  समुद्रगुप्त के 'कृष्णचरित' काव्य में इसका उल्लेख है।
- महाभाष्यकार पतञ्जलि -150 ई॰पू॰ में 'महानन्द -काव्य' की रचना की थी।
- समुद्रगुप्त ने कृष्णचरित में इसकी चर्चा की है।
- इसके बाद महाकवि कालिदास का युग प्रारम्भ होता है।
- मनोहारिणी शैली के प्रवर्तक कालिदास।
- इसी शृंखला में महाकवि भारवि, माघ और श्रीहर्ष का नाम उल्लेखनीय है।

काव्य के प्रकार

- काव्य के मुख्यतः दो भेद होते हैं- **श्रव्य और दृश्य**
  काव्य का वर्गीकरण

श्रव्य काव्य-

(1) पद्य	- 1. महाकाव्य - रघुवंशम् कुमारसम्भवम् आदि 2. खण्डकाव्य - मेघदूतम् आदि 3. मुक्तककाव्य - नीतिशतकम् आदि
(2) चम्पू	- नलचम्पू आदि
(3) कथा	- कादम्बरी आदि
(4) आख्यायिका	- हर्षचरितम् आदि

दृश्य काव्य		**रूपक - 10**
1. नाटक	-	अभिज्ञानशाकुन्तलम्
2. प्रकरण	-	मृच्छकटिकम्
3. भाण	-	लीलामधुकरम्
4. प्रहसन	-	धूर्तचरितम्
5. डिम	-	त्रिपुरदाह
6. व्यायोग	-	सौगन्धिकाहरणम्
7. समवकार	-	समुद्रमन्थन
8. वीथी	-	मालविका
9. अङ्क	-	शर्मिष्ठा ययाति
10. ईहामृग	-	कुसुमशेखरविजय

उपरूपक -18

1. नाटिका	2. त्रोटक	3. गोष्ठी
4. सट्टक	5. नाट्यरासक	6. प्रस्थानक
7. उल्लास्य	8. काव्य	9. प्रेंखण
10. रासक	11. संलापक	12. श्रीगदित
13. शिल्पक	14. विलासिका	15. दुर्मल्लिका
16. हल्लीश	17. प्रकरणिका	18. भाणिका

2.3 महाकाव्य

- महाकाव्य को सर्वप्रथम आचार्य **भामह** ने परिभाषित किया।
- भामह के बाद **आचार्य दण्डी** ने काव्यादर्श में महाकाव्य का लक्षण प्रस्तुत किया।
- 'अग्निपुराण' में भी महाकाव्य के लक्षण प्राप्त होते हैं।
- महाकाव्य के विषय में विस्तृत वर्णन **विश्वनाथ** ने साहित्यदर्पण में किया।

आचार्य विश्वनाथ के अनुसार महाकाव्य का लक्षण -

- महाकाव्य सर्गों में विभक्त होता है।
- महाकाव्य का नायक देवता, कुलीन क्षत्रिय, धीरोदात्त आदि गुणों से युक्त हो सकता है अथवा एक वंशज अनेक कुलीन राजा भी नायक हो सकते हैं।

सर्गबन्धो महाकाव्यं तत्रैको नायकः सुरः।
सद्वंशः क्षत्रियो वापि धीरोदात्त गुणान्वितः॥
एकवंशभवा भूपाः कुलजा बहवोऽपि वा।

- शृङ्गार वीर और शान्त रस में से कोई एक प्रधान रस होता है और अन्य रस उसके सहायक।
- इसमें सभी नाटक संधियाँ होती हैं।

शृङ्गारवीरशान्तानामेकोऽङ्गीरस इष्यते।
अङ्गानि सर्वेऽपि रसाः सर्वे नाटकसन्धयः।

- महाकाव्य का कथानक ऐतिहासिक अथवा किसी सज्जन व्यक्ति से सम्बद्ध होता है।
- धर्मार्थकाममोक्ष का वर्णन होता है तथा इनमें से किसी एक फल की प्राप्ति का वर्णन होता है।

इतिहासोद्भवं वृत्तमन्यद् वा सज्जनाश्रयम्।
चत्वारस्तस्य वर्गाः स्युस्तेष्वेकं च फलं भवेद्॥

- प्रारम्भ में तीन प्रकार के मङ्गलाचरणों में से एक होता है नमस्कारात्मक, वस्तुनिर्देशात्मक अथवा आशीर्वादात्मक में से एक।
- कहीं कहीं पर दुर्जन निन्दा या सज्जन प्रशंसा भी होती है।
- प्रत्येक सर्ग में एक ही छन्दोबद्ध पद्य होते हैं। सर्गान्त में छन्द परिवर्तन होता है।
- सर्ग संख्या 8 से अधिक होनी चाहिए अथवा न्यूनतम 8 होनी चाहिए।
- सर्ग न बहुत छोटे न बहुत बड़े होने चाहिए।
- कहीं कहीं विविध छन्दों से युक्त सर्ग भी होते हैं।
- महाकाव्य में सन्ध्या, सूर्योदय, चन्द्रोदय, वन विहार, नगर, मार्ग, जलक्रीड़ा, वन, सागर, संयोग, वियोग, अन्धकार दिन, प्रातः, शिकार, पर्वत, ऋतु, ऋषि, युद्ध, विजय विवाह, पुत्र जन्मोत्सव आदि विषयों का अवसरानुकूल वर्णन होना चाहिए।
- महाकाव्य का नामकरण वर्णनीय चरित्र के नाम से या कवि के नाम से अथवा किसी दूसरे के नाम से होना चाहिए।
- सर्ग का नाम सर्ग में वर्णनीय कथा के नाम से होना चाहिए।
- लक्ष्य ग्रन्थों को ध्यान में रखकर ये लक्षण बने हैं।

महाकाव्यों का शैलीगत विकास

- संस्कृत महाकाव्यों का विकास दो पृथक् मार्गों से हुआ है - 1.सुकुमारमार्ग 2. विचित्रमार्ग

(1) सुकुमार मार्ग

- आरम्भ में महाकाव्य सुकुमार मार्गी थे।
- सुकुमारमार्ग को **रसमयी पद्धति** भी कहते हैं।
- प्रसादगुणपूर्ण शैली में निरूपित मार्ग।
- वाल्मीकि, व्यास, कालिदास, अश्वघोष आदि कवियों की यही पद्धति है।

- रस और ध्वनि को काव्य की आत्मा मानकर अलंकारों का समुचित प्रयोग होता है।

(2) विचित्रमार्ग

- विचित्रमार्ग के रूप में पाण्डित्यपूर्ण शैली संस्कृत महाकाव्यों में मिलती है।
- शास्त्रीय वैदुष्यपूर्ण भाषा से युक्त महाकाव्य को अलंकार पद्धति या **विचित्रमार्ग** कहा गया।
- इस मार्ग में आनुषङ्गिक वर्णनों की प्रधानता।
- कविगण द्वारा वैदुष्य (विद्वता) का प्रदर्शन।
- विचित्रमार्ग के प्रवर्तक **भारवि** थे।
- भारवि का अनुसरण माघ ने किया।
- दोनों महाकवियों ने मूलकथा को बीच में छोड़कर प्रसक्तानुप्रसक्त वर्णनों में अपने को बाँध लिया।
- इस मार्ग में भाषा और विषय दोनों क्षेत्रों में विशेषता रहती है।
- इस पद्धति में चित्रकाव्य तक कवि पहुँच जाते हैं।
- श्लेषालंकार के प्रयोग से यह शैली दुरुह हो जाती है।
- ओज गुण को प्रमुख स्थान दिया।
- विचित्रमार्गी कवि कथानक की चिन्ता नहीं करते। भारवि ने अल्प कथानक को वर्णनों से भरकर 18 सर्गों का महाकाव्य बना दिया।
- जबकि सुकुमारमार्गी कालिदास ने रघुवंश के 19 सर्गों में अनेक पीढ़ियों के बड़े कथानक को समेट दिया।
- बाद के कवियों के लिए **वाल्मीकि की रसमयी पद्धति** तथा **भारवि की अलंकृत पद्धति** विद्यमान थी।
- बाद के कवियों ने अपनी रुचि के अनुसार दोनों में से एक को अपनाया।
- श्रीहर्ष ने दोनों के समन्वय का सफल प्रयास किया।

2.4 नाट्य साहित्य

- साहित्य के सभी प्रकारों में रूपक या नाट्य श्रेष्ठ माना गया है। इसकी रचना को कवित्व की अन्तिम सीमा कहा जाता है- **'नाटकान्तं कवित्वम्।'**
- रूपक में गद्य-पद्य दोनों का मिश्रण तो रहता ही है, इसे सुनने के अतिरिक्त देखा जाता है। श्रव्य की अपेक्षा 'दृश्य' का अधिक सघन प्रभाव होता है।
- भरत ने नाट्यशास्त्र (6/31) में कहा है कि इस नाट्य-संसार में सब कुछ रसमय होता है, रस के बिना यहाँ कुछ भी प्रवृत्त नहीं होता- **'न हि रसादृते कश्चिदप्यर्थः प्रवर्तते।'** कोई व्यक्ति किसी भी रुचि का क्यों न हो, उसे अपना अनुकूल विषय नाट्य-जगत् में अवश्य मिल जायेगा। इसीलिए कालिदास ने इसकी प्रशंसा में कहा है-

नाट्यं भिन्नरुचेर्जनस्य बहुधाप्येकं समाराधनम्।

(मालविकाग्निमित्रम्- 1/4)

- काव्य को संस्कृत काव्यशास्त्रियों ने दृश्य और श्रव्य के रूप में दो वर्गों में रखा है। दृश्यकाव्य के दो भेद हैं- रूपक तथा उपरूपक। रूपक दस तथा उपरूपक अठारह प्रकार के होते हैं। रूपकों का एक प्रमुख भेद 'नाटक' है जो अपने अर्थ का विस्तार करके सामान्यतः आधुनिक भारतीय भाषाओं में नाट्यमात्र या दृश्यकाव्य मात्र (Drama) का अर्थ देता है।
- धनञ्जय ने नाट्य,रूप और रूपक-इन तीन शब्दों के प्रयोग के हेतुओं का निरूपण किया है जो वस्तुतः एकार्थक हैं।
- विविध पात्रों की अवस्थाओं का चतुर्विध अभिनय (आङ्गिक,वाचिक,सात्त्विक तथा आहार्य) के द्वारा जब नट अनुकरण करता है तो इसे **'नाट्य'** कहते हैं।

नाटक

- नाटक का कथानक प्रसिद्ध (इतिहास या पुराण में निर्दिष्ट) होता है, उसका नायक विख्यात वंश में उत्पन्न राजर्षि या राजा रहता है, उसे धीरोदात्त श्रेणी का होना चाहिए। कभी-कभी वीर रस या शृङ्गार रस के अनुरूप वह धीरोद्धत या धीरललित भी हो सकता है किन्तु धीरप्रशान्त नहीं। श्रीकृष्ण जैसे दिव्यादिव्य नायक भी होते हैं।
- नाटक का मुख्य रस शृङ्गार या वीर होता है **(एक एव भवेदङ्गी शृङ्गारो वीर एव वा)**। अन्य सभी रसों का यथावसर प्रयोग किया जाता है।
- नाटक में पाँच से लेकर दस अङ्क तक रखे जाते हैं। उसमें कथानक का स्वाभाविक विकास दिखाने के लिए पाँच अर्थप्रकृतियाँ (बीज, बिन्दु, पताका, प्रकरी और कार्य), पाँच अवस्थाएँ (आरम्भ, यत्न, प्राप्त्याशा, नियताप्ति और फलागम) तथा इनके योग से होने वाली पाँच सन्धियाँ (मुख, प्रतिमुख, गर्भ, विमर्श और निर्वहण) यथासाध्य रखी जाती हैं।
- जिस नाटक में इन सब के प्रयोग के साथ दस अङ्क हों उसे 'महानाटक' कहते हैं। **बालरामायण, हनुमन्नाटक** आदि महानाटक हैं।
- नाटक की अन्तिम सन्धि में 'अद्भुत रस' का प्रयोग हो इससे रोचकता आती है **(कार्यो निर्वहणेऽद्भुतः)**
- नाटक की रचना गोपुच्छाग्रवत् होनी चाहिए अर्थात् आरम्भ और अन्त सूक्ष्म(पतला) हो, मध्यभाग स्थूल (दीर्घ) हो।
- क्रमशः कार्यों का संक्षिप्त उपसंहार होना चाहिए। नाटक को काव्यमात्र में श्रेष्ठ कहा गया है-

'काव्येषु नाटकं रम्यम्, नाटकान्तं कवित्वम्।'

- भास, कालिदास, भवभूति शूद्रक आदि के नाटक संस्कृत-जगत् में विख्यात हैं।

प्रकरण

- इसका कथानक कविकल्पित होता है। प्रायः लोककथाओं से कथानक लेकर इसकी रचना की जाती है।
- इसका नायक धीरप्रशान्त कोटि का मन्त्री, ब्राह्मण या वणिक् में से कोई एक होता है **(अमात्य-विप्र-वणिजामेकं कुर्याच्च नायकम्** -दशरूपक 3/39)। मृच्छकटिक में ब्राह्मण, मालतीमाधव में अमात्य तथा पुष्पदूतिका में वैश्य नायक है। इसमें नायिका दो प्रकार की होती है-कुलीना और वेश्या (गणिका)। किसी प्रकरण में कोई एक ही नायिका रहती है, (जैसे-मालतीमाधव में) तो किसी में दोनों प्रकार की नायिकाएं होती है (जैसे- मृच्छकटिक में)।
- धूर्त,जुआरी,विट,चेट आदि अनेक पात्रों से युक्त प्रकरण **'संकीर्ण'** कहलाता है। नाट्यदर्पण (2/68) में नायिका के आधार पर प्रकरण के इक्कीस भेद कहे गये हैं। रस की दृष्टि से इसमें शृङ्गाररस प्रधान होता है।

3.भाण

- इसमें कोई अत्यन्त चतुर तथा बुद्धिमान् विट अपने या दूसरे के अनुभव के आधार पर धूर्त के चरित का वर्णन करता है। यह एक अङ्क तथा एक ही पात्र का रूपक है। वह पात्र विट ही रहता है जो आकाशभाषित के रूप में स्वयं प्रश्न-उत्तर (उक्ति-प्रत्युक्ति) का प्रयोग करता है।
- इसमें मुख और निर्वहण सन्धियाँ रहती हैं, अन्य सन्धियाँ नहीं।

प्रहसन

- यह हास्यरस-प्रधान रूपक होता है, जिसमें कथानक कल्पित रहता है। इसमें धर्म का पाखण्ड करने वाले (जैन-बौद्ध) साधुओं, केवल जाति से ब्राह्मण कहलाने वाले धूर्तों एवं सेवक-सेविकाओं का चरित्र दिखाया जाता है।
- प्रहसन में वेशभूषा तथा भाषा की विकृति से भी हास्योत्पादन होता है। भाण के समान इसमें भी दो सन्धियों (मुख एवं निर्वहण) एवं 10 लास्याङ्गों का प्रयोग होता है। विश्वनाथ ने इसमें एक या दो अङ्क माने हैं।
- प्रहसन के तीन भेद होते हैं-शुद्ध, विकृत और संकीर्ण।

डिम

- इसका कथानक प्रसिद्ध होता है। नाट्य की कैशिकी वृत्ति वर्जित है, शेष तीनों वृत्तियाँ (भारती, सात्त्वती, आरभटी) प्रयुक्त होती हैं।
- इसमें नायक देवता, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस आदि होते हैं जो मानवेतर हैं, भूत, प्रेत, पिशाच आदि पात्रों का भी इसमें समावेश होता है। उद्धत कोटि के 16 पात्र इसमें रहते हैं। इसका प्रधान रस रौद्र होता है। माया, इन्द्रजाल, युद्ध,भगदड़ आदि के दृश्यों से यह भरा होता है।
- विमर्श सन्धि का प्रयोग नहीं होता। इसमें चार अङ्क रहते हैं।
- भरत ने **'त्रिपुरदाह'** नामक डिम का उल्लेख किया है।

व्यायोग

- इसका कथानक इतिहास-प्रसिद्ध होता है जो किसी विख्यात उद्धत व्यक्ति (भीम, दुर्योधन आदि) पर आश्रित रहता है।
- इसमें गर्भ एवं विमर्श नामक सन्धियाँ नहीं होती हैं। रसों की दीप्ति डिम के समान होती है।
- इसकी कथावस्तु एक दिन की घटनाओं से सम्बद्ध होती है।
- इसमें एक ही अंक रहता है तथा पुरुष-पात्रों की संख्या अधिक होती है।भास का **'मध्यमव्यायोग'** इसका मुख्य उदाहरण है।

समवकार

- इसका इतिवृत्त इतिहास-पुराण में प्रसिद्ध होता है जिसमें देवताओं और दैत्यों की कथा होती है। कैशिकी को छोड़कर अन्य वृत्तियाँ एवं विमर्श को छोड़कर अन्य सन्धियाँ होती हैं। इसमें तीन अङ्क रहते हैं जिनमें तीन बार कपट, तीन बार धर्म-अर्थ-काम का शृङ्गार एवं तीन बार पात्रों में भगदड़ दिखायी जाती है।
- इसके पात्र देवता और दानव होते हैं जिनकी संख्या 12 होती है, सभी वीररस से भरे रहते हैं और सब को पृथक्-पृथक् फल मिलता है।
- 'बिन्दु' नामक अर्थप्रकृति एवं 'प्रवेशक' नामक अर्थोपक्षेपक का इसमें प्रयोग नहीं किया जाता।
- नाट्यशास्त्र में **'समुद्रमन्थन'** नामक समवकार के अभिनय का उल्लेख है। भास के 'पञ्चरात्र' में भी कुछ लक्षण मिलते हैं।

वीथी

- यह शृङ्गाररस-युत्त एकाङ्की रूपक है। इसके कई लक्षण भाण के समान हैं। जैसे-केवल दो सन्धियाँ (मुख और निर्वहण) होना, शृङ्गाररस का सूच्य होना।

अङ्क

- इसे संशय-निवारणार्थ **'उत्सृष्टिकाङ्क'** भी कहते हैं क्योंकि रूपकों के खण्ड भी 'अङ्क' होते हैं। इस रूपक-भेद में कथानक इतिहास-प्रसिद्ध होता है, किन्तु कवि उसमें यथेष्ट परिवर्तन भी करता है। भाण के समान सन्धि (मुख और निर्वहण) भारती वृत्ति भाग तथा अङ्क केवल एक होते हैं।
- इसके नायक और अन्य पात्र साधारण होते हैं। इसमें करुणरस की प्रधानता होती है। अतः स्त्रियों का रोदन होना चाहिए।
- पात्रों में वाग्युद्ध एवं जय-पराजय की योजना होती है।
- कुछ आचार्यों ने इसमें एक से लेकर तीन अङ्कों तक का विधान किया है।

ईहामृग

➢ इसका कथानक प्रख्यात और कल्पित का मिश्रित रूप होता है। इसमें चार अङ्क तथा तीन सन्धियाँ होती हैं(गर्भ और विमर्श सन्धियाँ नहीं होती)

उपरूपक

➢ विश्वनाथ ने 18 उपरूपकों का यह क्रम रखा है-

1. नाटिका 2. त्रोटक 3. गोष्ठी 4. सट्टक 5. नाट्यरासक 6. प्रस्थानक 7. उल्लास्य 8. काव्य 9.प्रेंखण 10.रासक 11. संलापक 12.श्रीगदित 13. शिल्पक 14.विलासिका 15. दुर्मल्लिका 16. प्रकरणिका 17. हल्लीश और 18. भाणिका

नाटिका

➢ नाटिका में चार अङ्क होते हैं।

➢ स्त्री-पात्रों का बाहुल्य एवं शृङ्गाररस की प्रधानता इसकी विशिष्टता है।

➢ इसका नायक धीरललित श्रेणी का कोई प्रसिद्ध राजा होता है।

➢ शृङ्गाररस के कारण कैशिकी वृत्ति एवं तदनुकूल गीत,नृत्य, वाद्य, हास्य आदि इसमें दिखाये जाते हैं।

➢ इसमें दो नायिकाएँ होती हैं-देवी (बड़ी रानी) तथा मुग्धा कन्या।

➢ उदयन को नायक बनाकर हर्ष ने **'प्रियदर्शिका'** और **'रत्नावली'** नामक नाटिकाओं की रचना द्वारा इस विधा का प्रयोग किया है।

सट्टक

➢ सट्टक भी नाटिका के समान होता है।

➢ इसमें सम्पूर्ण पाठ प्राकृत में होता है।

➢ प्रवेशक-विष्कम्भक का प्रयोग नहीं किया जाता है।

➢ अद्भुत रस का प्राचुर्य होता है।

➢ अङ्कों को 'जवनिकान्तर' कहते हैं।

➢ राजशेखर की **'कर्पूरमञ्जरी'** सट्टक है।

त्रोटक

➢ तोटक या त्रोटक में सात,आठ, नव या पाँच अङ्क रहते हैं।

➢ प्रधानरस शृङ्गार होता है।

➢ कालिदास का **'विक्रमोर्वशीयम्'** त्रोटक है।

नाट्योत्पत्ति

➢ संस्कृत दृश्यकाव्य का उद्भव कब और किस प्रकार से हुआ, इस प्रश्न का निश्चित समाधान करना कठिन है। फिर भी कुछ सिद्धान्तों का परिचय तो दिया ही जा सकता है।

भरत का मत

➢ नाट्य विज्ञान पर सर्वप्रथम ग्रन्थ 'नाट्यशास्त्र' ही है जिसका काल 100 ई॰ पू॰ से 300 ई॰ के बीच माना जाता है।

➢ भरत का मत 'नाट्यशास्त्र' में मिलता है कि सभी देवताओं ने मिलकर ब्रह्मा जी से प्रार्थना की कि हमें ऐसे मनोरंजन का साधन प्रदान करें जो दृश्य और श्रव्य दोनों हो और जिसे सभी वर्णों के लोग ग्रहण कर सकें, ब्रह्मा ने इस प्रार्थना पर चारों वेदों से सार भाग लेकर 'नाट्यवेद' के रूप में पञ्चम वेद का निर्माण किया (**नाट्यवेदं ततश्चक्रे चतुर्वेदाङ्गसम्भवम्** 1/16) उन्होंने ऋग्वेद से पाठ्य (संवाद,कथनोपकथन), सामवेद से संगीत, यजुर्वेद से अभिनय और अथर्ववेद से रस-तत्त्व लेकर 'नाट्यवेद' की रचना की।

संवाद-सूक्तों से नाट्य की उत्पत्ति

➢ मैक्समूलर, सिल्वाँलेवी,फॉन श्रोएदर, हर्टल आदि यूरोपीय विद्वानों ने यह सिद्धान्त दिया कि ऋग्वेद के कतिपय संवाद-सूक्त ही नाटकों के प्राचीनतम रूप हैं।

➢ इन संवाद-सूक्तों में इन्द्र- मरुत् संवाद(ऋ0 1/165,170), अगस्त्य-लोपामुद्रा संवाद (ऋ0 1/179), विश्वामित्र-नदी संवाद (3/33), वसिष्ठ-सुदास संवाद (ऋ0 7/83), यम-यमी संवाद (ऋ0 10/10), इन्द्र-इन्द्राणी-वृषाकपि संवाद (ऋ 10/86), पुरूरवा-उर्वशी संवाद(10/95) तथा सरमा-पणि संवाद(10/108) प्रमुख है।

यूनानी रूपकों से उत्पत्ति

➢ वेबर तथा विन्डिश ने संस्कृत रूपकों का उद्भव यूनानी रूपकों से सिद्ध किया है।

➢ जर्मनी के ही विद्वान् पिशेल ने इस मत का प्रबल खण्डन किया है।

पुत्तलिका-नृत्य-सिद्धान्त

➢ प्रो. पिशेल ने यह विचार दिया है कि प्राचीन भारत में कठपुतलियों का नृत्य दिखाया जाता था। उसे ही सजीव रूप देने के लिए मानवों को मंच पर प्रस्तुत करके नाटकों का अभिनय प्रारम्भ हुआ।

मृतात्म-श्राद्ध-सिद्धान्त (वीर-पूजा)

➢ डॉ. रिजवे ने यह मत रखा था कि अपने मृत पूर्वजों के प्रति श्रद्धा प्रदर्शित करने के लिए जिस प्रकार यूनानी दुःखान्त रूपकों का उद्भव हुआ था, उसी प्रकार भारत में भी अपने दिवंगत वीर पुरुषों के प्रति आदर-भाव दिखाने के लिए नाटक अभिनीत होते थे।

➢ रामलीला और कृष्णलीला इसी प्रवृत्ति के पोषक दृष्टान्त हैं।

उत्सव-सिद्धान्त

➢ यूरोप के कुछ विद्वानों ने अपने यहाँ होने वाले मे-पोल-नृत्य को संस्कृत रूपकों का भी प्रथम रूप कहा है।

छाया-नाटक-सिद्धान्त

➢ जर्मन विद्वान् ल्यूडर्स तथा स्टेन कोनो का मत है कि छाया -नाटकों में जो छाया-चित्रों का प्रदर्शन होता है, वही संस्कृत रूपकों के मूल रूप रहे होंगे।

संस्कृत नाट्य की विशिष्टताएँ-

➢ भारतीय रूपक मनोरंजन-प्रधान या आनन्दपरक होते हैं।

➢ भरत ने इसकी व्याख्या की कि दुःखी, श्रान्त, शोकाकुल एवं तपःखिन्न लोगों को सही समय पर विश्रान्ति प्रदान करने वाला यह 'नाट्य' है-

दुःखार्तानां श्रमार्तानां शोकार्तानां तपस्विनाम्।
विश्रान्तिजननं काले नाट्यमेतद् भविष्यति।।
(ना.शा. 1/114)

- संस्कृत रूपकों में 'दुःखान्त' की व्यवस्था नहीं है।
- यहाँ दस प्रकार के रूपक और अठारह प्रकार के उपरूपक होते हैं।
- इनमें 'नाटक' बहुत लोकप्रिय हैं।
- प्रकरण,प्रहसन,भाण,नाटिका, सट्टक आदि भी बहुत संख्या में लिखे गये हैं। इस प्रकार संस्कृत दृश्य काव्य का क्षेत्र व्यापक है।
- नाट्य-भेदों में कथानक प्रसिद्ध या कल्पित भी होता है।
- संस्कृत रूपकों में कथानक का विकास कुछ सिद्धान्तों पर आश्रित होता है। कथानक को अर्थप्रकृतियों, अवस्थाओं और सन्धियों में विभक्त किया जाता है।
- पात्रों की व्यवस्था भी रूपकों के विभाजन का आधार है। मुख्य पात्र नायक और नायिका हैं। जिनके भेदोपभेद माने गये हैं। नायकों को धीरोदात्त, धीरोद्धत, धीरप्रशान्त और धीरललित के रूप में चार प्रकार का माना गया है।
- संस्कृत रूपकों का पारस्परिक भेद रस प्रयोग के कारण भी है। नाटकों में शृङ्गार, वीर या शान्त-रस को मुख्य (अङ्गी) रस के रूप में रखा जाता है
- भवभूति ने करुणरस को प्रधान स्थान दिया है, अन्य सभी रसों का यथोचित निवेश होता है।
- नाट्यशास्त्रियों ने जीवन की कुछ क्रियाओं का मञ्चन की दृष्टि से वर्जन किया है। अनुचित, असभ्य और अशुभ दृश्य मञ्च पर नहीं दिखाये जाते। जैसे-युद्ध, मृत्यु, निद्रा, सम्भोग, शाप, चुम्बन, भोजन आदि।
- भाषा प्रयोग का विधान संस्कृत रूपकों की महत्त्वपूर्ण विशिष्टता है। भरत ने ही विधान किया था कि उच्च और मध्य वर्ग के पात्रों की भाषा संस्कृत होगी। प्राकृत में भी क्षेत्रीय प्रभेदों के विधान की दृष्टि से सामान्यतः महाराष्ट्री ,शौरसेनी, मागधी और अर्धमागधी प्राकृतों का प्रयोग किया गया है।
- रूपक भी धर्म के उपकरणों का यथेष्ट उपयोग करते हैं जैसे नान्दी या प्रस्तावना में देवस्तुति और भरतवाक्य में आशीर्वाद देना।
- पाश्चात्त्य नाट्य-विज्ञान में स्वीकृत अन्वितित्रय संस्कृत रूपकों में मान्य नहीं है।
- संस्कृत रूपकों में रसोद्भावन की दृष्टि से उचित स्थानों पर पद्य-प्रयोग किया जाता है।
- कथनोपकथन का मुख्य रूप तो गद्य ही रहता है किन्तु कुछ आवश्यक स्थलों में रोचकता, प्रकृति-वर्णन, नीति-शिक्षा, सुभाषित, विस्तृत घटनाओं का संक्षेपण आदि उद्देश्यों से पद्यों का भी प्रयोग होता है।
- विदूषक का प्रयोग संस्कृत रूपकों में हास्य-व्यंग्य के निवेश के लिए तो होता ही है,वह कथानक का भी एक अङ्ग होता है। वह कथा-प्रवाह को आगे बढ़ाता है।
- शुद्ध हास्य की दृष्टि से 'प्रहसन' और 'भाण' नामक रूपक-भेद संस्कृत में होते हैं जिसमें समाज की विसंगतियों पर व्यंग्य होता है।
- संस्कृतभाषा के रूपकों के प्रारम्भ में प्रस्तावना होती है। जिसमें कवि-परिचय के साथ नाटक के अभिनय के अवसर का भी संकेत रहता है।
- नान्दीपाठ से नाटक का प्रारम्भ एवं भरतवाक्य से समाप्ति, अङ्कों की योजना, बीच-बीच में विष्कम्भक, प्रवेशक आदि देना ये सब रचना-प्रक्रिया के मुख्य अङ्ग हैं।
- बीच में मञ्च से पात्रों का निर्गम,प्रवेश,स्वागत-भाषण, जनान्तिक भाषण आदि संकेत नाटकों के अभिनय और मञ्चन को सुविधायुक्त कर देते हैं।

2.5 गद्य साहित्य

- 'गद्य' शब्द गद्-धातु (व्यक्तायां वाचि) से यत् प्रत्यय लगकर बना है जिसका अर्थ है मानव की अभिव्यक्ति की मौलिक प्रक्रिया।
- दण्डी ने काव्यादर्श में 'गद्यकाव्य' की परिभाषा देकर इसे आख्यायिका और कथा के रूप में विभाजित किया है।
  'अपादः पदसन्तानो गद्यमाख्यायिका कथा।' (1/23)
- गद्यकाव्य इतना कठिन और विरल हो गया कि आठवीं शताब्दी ई0 में एक उक्ति चल पड़ी-**'गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति'** अर्थात् गद्यकाव्य लिखना कवियों की कड़ी परीक्षा है।
- गद्य का प्रथम रूप हमें यजुर्वेद की संहिताओं में मिलता है।
- यजुर्वेद की परिभाषा ही दी गयी है- **'अनियताक्षरावसानं यजुः'** तथा **'गद्यात्मकं यजुः।'**
- कृष्ण-यजुर्वेद की तैत्तिरीय, काठक और मैत्रायणी संहिताएँ अधिकांशतः गद्यात्मक हैं।
- ब्राह्मण और आरण्यक (जो पूर्णतः गद्य में ही हैं) पतञ्जलि का महाभाष्य, शबरस्वामी का शाबरभाष्य (मीमांसा-दर्शन पर),शंकराचार्य का शारीरकभाष्य (ब्रह्मसूत्र पर) इत्यादि उत्कृष्ट शास्त्रीय गद्य के रूप हैं।
- आचार्य शंकर की गद्यशैली प्रसन्न-गम्भीर है,इसका परिमाण भी प्रचुर है क्योंकि दस उपनिषदों, गीता तथा ब्रह्मसूत्र पर उन्होंने भाष्य लिखे हैं।
- साहित्यिक गद्य के प्रयोग का अनुमान कात्यायन और पतञ्जलि के द्वारा दी गयी सूचनाओं से होता है।
- पतञ्जलि ने तो तीन आख्यायिकाओं के नाम भी दिये हैं- **वासवदत्ता, सुमनोत्तरा** तथा **भैमरथी**।
- साहित्यिक गद्य का स्पष्ट उदाहरण अभिलेखों में प्राप्त होता है। इस दृष्टि से रुद्रदामन का गिरिनार अभिलेख 150ई0) तथा हरिषेणकृत समुद्रगुप्त-प्रशस्ति (प्रयाग स्तम्भलेख 360 ई0) विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।
- समुद्रगुप्त की विजय-यात्राओं और व्यक्तिगत गुणों का वर्णन प्रयाग-प्रशस्ति में हुआ है। इस प्रशस्ति के लेखक हरिषेण हैं।

- साहित्यिक गद्य का विकासशील रूप **दण्डी, सुबन्धु** या **बाण** की रचनाओं में प्राप्त होता है।

गद्यकाव्य के भेद

- संस्कृत गद्यकाव्य के दो मुख्य भेद माने गये हैं-कथा और आख्यायिका
- आख्यायिका ऐतिहासिक विषयों पर एवं कथा पूर्णतः काल्पनिक विषयों पर आश्रित होती है।
- बाणभट्ट की गद्य-रचनाओं में 'हर्षचरित' आख्यायिका तथा 'कादम्बरी' कथा के रूप में प्रसिद्ध हुई।
- कथा में कथावस्तु कविकल्पित होती है।
- आख्यायिका में ऐतिहासिक होती है।
- कथा के आरम्भ में पद्यों के द्वारा सज्जनों की प्रशंसा, दुष्टों की निन्दा तथा कवि के वंश का वर्णन होता है।
- कथा का विभाजन नहीं होता, आख्यायिका उच्छ्वासों या निःश्वासों में विभक्त होती है।
- उच्छ्वासों के आरम्भ में भावी घटना का परोक्ष निर्देश करने वाले पद्य भी होते हैं।
- कथा में मुख्य कथानक को लाने के लिए दूसरी कथा से आरम्भ किया जाता है।
- आख्यायिका में कवि अपना वृत्तान्त देकर मुख्य कथा को आरम्भ करता है। इन दोनों में समानता के तथ्य भी बहुत हैं। जैसे- 1. दोनों की रचना संस्कृत गद्य में होती है। 2. गद्य की शैली दोनों में समान रहती है। 3. रसों और भावों का समान रूप से प्रयोग होता है। 4. नगर,वन,सरोवर,राजा,राजसभा,मृगया प्रेम आदि का समान रूप से वर्णन दोनों में होता है

गद्य के प्रकार

समास के प्रयोग तथा वृत्तभाग के निवेश की दृष्टि से गद्य के चार प्रकार माने गये हैं-

1. मुक्तक 2. वृत्तगन्धि 3. उत्कलिकाप्राय 4. चूर्णक

- समास से रहित गद्य-रचना को मुक्तक कहते हैं।
- जहाँ गद्य में छन्द के अंश आ जाएँ उसे वृत्तगन्धि कहते हैं।
- लम्बे समासों से युक्त गद्य उत्कलिकाप्राय कहलाता है तथा अल्प समासों से युक्त गद्य को चूर्णक कहा जाता है।

भारतीयदर्शनसार

लेखक
सर्वज्ञभूषण

संस्कृतगङ्गा, दारागञ्ज, प्रयाग
संरचना प्रकाशन, इलाहाबाद

भारतीयदर्शनसार

लेखक	सर्वज्ञभूषण
ISBN	978-93-84999-72-8
प्रकाशक	संरचना प्रकाशन 30, थार्नहिल रोड, सिविल लाइंस, इलाहाबाद - 211001 संस्कृतगङ्गा 63/59, मोरी, दारागंज, इलाहाबाद - 211006

संस्करण	वर्ष 2017
मूल्य	` **250/-** (दो सौ पचास रुपये मात्र)
वितरक	1. संस्कृतगङ्गा, 59, मोरी, दारागंज, इलाहाबाद - 211006 मो.- 7800138404 2. राजू पुस्तक केन्द्र अल्लापुर, इलाहाबाद 3. राका प्रकाशन, 25ए, महात्मा गाँधी मार्ग, काफी हाउस के पास, सिविल लाइंस, इलाहाबाद - 211001 मो.- 9453460552
मुद्रक	एकेडमी प्रेस, दारागंज, इलाहाबाद

प्राग्वाचिक

प्रिय संस्कृतबन्धो ! नमः संस्कृताय।

इस पुस्तक में भारतीय दर्शन से सम्बद्ध आस्तिक एवं नास्तिक दर्शन से जुड़े सभी प्रमुख दार्शनिक प्रस्थानों का सार प्रस्तुत किया गया है छः आस्तिक दर्शनों में सांख्य,योग,न्याय,वैशेषिक,वेदान्त,मीमांसा के प्रसिद्ध प्रकरणग्रन्थों को इस पुस्तक का विषय बनाया गया है।

यथा- सांख्यदर्शन का प्रतिनिधित्व ईश्वरकृष्ण की **सांख्यकारिका**,योगदर्शन में पतञ्जलि का **योगसूत्र**,न्यायदर्शन का प्रतिनिधित्व केशवमिश्र की **तर्कभाषा**, वैशेषिकदर्शन का प्रतिनिधित्व अन्नम्भट्ट का **तर्कसंग्रह**,वेदान्तदर्शन का प्रतिनिधित्व योगीन्द्र सदानन्द का **वेदान्तसार** तथा मीमांसादर्शन का प्रतिनिधित्व करने वाले लौगाक्षिभास्कर के **अर्थसंग्रह** नामक ग्रन्थ को इस पुस्तक का विषय बनाया गया है,वैसे तो पुस्तकीय दुकानों में अनेक दार्शनिक ग्रन्थ प्राप्त होते हैं किन्तु दर्शन का सारतत्त्व प्रस्तुत करने वाली यह प्रथम पुस्तक होगी। जैसे-वेदान्त का सार वेदान्तसार नामक ग्रन्थ में बताया गया है, उसी तरह सांख्य आदि आस्तिक दर्शन तथा चार्वाक आदि नास्तिक दर्शनों का सार इस 'भारतीयदर्शनसार' नामक पुस्तक में बताने का प्रयास किया गया है।

दार्शनिक गूढ़ विषयों को तालिका के माध्यम से सरल करने का प्रयास किया गया है। पुस्तक लेखन में बिन्दुवार शैली अपनायी गयी है, जिससे विद्यार्थियों को दार्शनिक विषयों का शीघ्र एवं सहज बोध हो सके। विशेषकर प्रतियोगी छात्रों को ध्यान में रखकर इस पुस्तक का लेखन किया गया है। अनावश्यक विस्तार से बचा गया है, ताकि ''**भारतीयदर्शनसार**'' इस नाम की सार्थकता बनी रहे।

इस पुस्तक के लेखन में जिन मित्रों का परोक्ष अपरोक्ष सहयोग,समर्थन एवं उत्साह मिलता रहा उनमें सत्यप्रकाश,अम्बिकेश,सुमन,वीरेन्द्र, साधना,केदारनाथ,योगेश,देवमूरत, राकेश,गोपेश,पवन,अम्बर आदि का नाम उल्लेखनीय है।

इस पुस्तक के लेखन में गुरुजनों की विशेष कृपा रही जिनमें सूक्ष्मशरीर से सदैव साथ रहने वाले एवं मेरा सतत मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद प्रदान करने वाले श्री अनन्त प्रसाद त्रिपाठी (शास्त्री जी,गहनौआ रीवा मध्यप्रदेश) एवं स्थूल शरीर से प्रो. ललित कुमार त्रिपाठी (गङ्गानाथ झा परिसर रा.सं.संस्थान इलाहाबाद) का सदैव आशीर्वाद प्राप्त होता रहा है। साथ ही मेरे माता-पिता का शुभाशीष,एवं भाइयों का सहयोग मिला।

- भवदीय

सर्वज्ञभूषण

विषयानुक्रम

❑❑

1. भारतीय दर्शन की भूमिका

- दर्शन शब्द 'दृश्' धातु से 'ल्युट्' प्रत्यय करने से निष्पन्न होता है। दर्शन शब्द का अर्थ है- 'जिसके द्वारा किसी वस्तु को देखा या समझा जाय।'
- भारतीय दर्शन की दो शाखाएँ हैं - आस्तिक तथा नास्तिक। जो दर्शन वेदों को प्रमाण रूप में स्वीकार करते हैं, उन्हें **आस्तिक** दर्शन कहते हैं, जिनमें सांख्य-योग, न्याय -वैशेषिक, पूर्वमीमांसा एवं उत्तरमीमांसा (वेदान्त) की गणना होती है।
- जो दर्शन वेदों को प्रमाण रूप में स्वीकार नहीं करते हैं उन्हें **'नास्तिक दर्शन'** कहते हैं, जिनमें चार्वाक, बौद्ध, जैन प्रमुख रूप से हैं।
- सांख्य- योग, न्याय- वैशेषिक, पूर्वमीमांसा- उत्तरमीमांसा इन्हें 'षड्दर्शन' भी कहते हैं।

भरतीयदर्शन

आस्तिकदर्शन
(सांख्य ,योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा, वेदान्त)

नास्तिकदर्शन
(चार्वाक,बौद्ध,जैन)

दर्शन	**-**	**प्रवर्तक आचार्य**
सांख्य	-	कपिल
योग	-	पतञ्जलि
न्याय	-	गौतम
वैशेषिक	-	कणाद
पूर्वमीमांसा	-	जैमिनि
उत्तरमीमांसा (वेदान्त)	-	बादरायण
चार्वाक	-	बृहस्पति/चार्वाक
बौद्ध	-	महात्मा गौतम बुद्ध
जैन	-	ऋषभदेव/महावीर स्वामी

- नास्तिकदर्शन को वेद विरोधी दर्शन भी कहा जाता है -**'नास्तिको वेदनिन्दकः'**
- चार्वाकदर्शन भौतिकवादी दर्शन है, जिसे **लोकायत** नाम से भी जाना जाता है।
- सांख्य एवं योग एक दूसरे के पूरक दर्शन हैं। सांख्य ईश्वर की सत्ता नहीं मानता जबकि योग ईश्वर की सत्ता मानता है। इसीलिए सांख्य को **'निरीश्वर सांख्य'** तथा योग को **'सेश्वर सांख्य'** भी कहते हैं।

दर्शन	ग्रन्थ	अध्याय	सूत्र	प्रमाण	पदार्थ (तत्त्व)	प्रमुख सिद्धान्त/वाद
सांख्य	सांख्यसूत्र	6	537	तीन प्रमाण	25	सत्कार्यवाद परिणामवाद
योग	योगसूत्र	4पाद	195	तीन प्रमाण	26	सत्कार्यवाद सेश्वरवाद
न्याय	न्यायसूत्र	5	60-70	चार प्रमाण	16	असत्कार्यवाद पिठरपाकवाद
वैशेषिक	वैशेषिकसूत्र	10	370	दो प्रमाण	7	परमाणुवाद पीलुपाकवाद
पूर्वमीमांसा	मीमांसासूत्र	12	2644	6 प्रमाण		अपूर्ववाद
उत्तरमीमांसा (वेदान्त)	ब्रह्मसूत्र	4	555	6 प्रमाण	2	विवर्तवाद मायावाद

- बौद्धदर्शन के चार सम्प्रदायों का उल्लेख प्राप्त होता है वैभाषिक,सौत्रान्तिक, विज्ञानवादी, शून्यवादी।
- नागार्जुन बौद्धदर्शन के प्राचीन आचार्य हैं।
- जैनदर्शन के प्राचीन आचार्य - उमास्वाति हैं।
- अकलंकदेव, विद्यानन्द, प्रभासचन्द्र, हेमचन्द्रसूरि, मल्लिषेण आदि जैनदर्शन के प्रमुख आचार्य हैं
- न्यायदर्शन के प्रवर्तक आचार्य गौतम हैं। न्यायदर्शन को 'तर्कप्रधानदर्शन' भी कहते हैं।
- न्यायदर्शन में आगम प्रमाण के द्वारा ईश्वर की सिद्धि की गई है।
- सर्वदर्शनसंग्रह में वैशेषिक दर्शन को **'औलूक्य दर्शन'** कहा गया है।
- पूर्वमीमांसादर्शन के प्रणेता आचार्य जैमिनि हैं।
- पूर्वमीमांसादर्शन वेद को स्वतन्त्र एवं स्वतः प्रमाण के रूप में स्वीकार करता है।

❑❑

2. सांख्यकारिका

- सांख्यदर्शन सबसे प्राचीन दर्शन है।
- सम् उपसर्गपूर्वक √ख्या प्रकथने धातु से अङ् प्रत्यय करने के बाद 'टाप्' प्रत्यय करने से 'संख्या' शब्द बनता है। पुनः संख्या पद से ''तस्येदम्'' सूत्र द्वारा 'अण्' प्रत्यय करने पर ''सांख्य'' पद निष्पन्न होता है, जिसका अर्थ है 'गणना से सम्बन्धित' अथवा 'गणना से जानने योग्य', क्योंकि सांख्यदर्शन में तत्त्वों की गणना अर्थात् संख्या को अत्यधिक महत्त्व दिया गया है।
- सांख्यदर्शन के प्राचीन आचार्य **कपिलमुनि** हैं।
- सांख्यदर्शन में 25 तत्त्वों की चर्चा है।
- सांख्यदर्शन के अनुसार मुख्यरूप से दो तत्त्व नित्य हैं - पुरुष तथा प्रकृति।
- सांख्यदर्शन के प्रमुख आचार्य- कपिल, आसुरि, पञ्चशिख, विन्ध्यवासी, जैगीषव्य, वार्षगण्य, ईश्वरकृष्ण आदि हैं
- सांख्यदर्शन के प्रमुखग्रन्थ- सांख्यसूत्र, षष्टितन्त्र, राजवार्तिक, एपिकसांख्य, अर्वाचीन सांख्यसूत्र आदि हैं।
- सांख्यसूत्र की प्रमुख टीकाएँ- अनिरुद्धवृत्तिसार, सांख्यवृत्तिसार,सांख्यप्रवचनभाष्य, लघुसांख्यवृत्ति, तत्त्वसमास अथवा समाससूत्र हैं।
- **'सांख्यकारिका'** सांख्यदर्शन का प्रकरणग्रन्थ है जिसके लेखक **ईश्वरकृष्ण** हैं।
- ईश्वरकृष्ण के गुरु **'पञ्चशिख'** माने जाते हैं।
- पञ्चशिख के गुरु- **'आसुरि'** माने जाते हैं।
- सांख्यकारिका में **सत्तर कारिकायें** हैं जो **आर्या छन्द** में निबद्ध हैं।
- सांख्यकारिका का अपरनाम- सांख्यसप्तति, हिरण्यसप्तति अथवा सुवर्णसप्तति है।
- सांख्यकारिका की टीकाएँ - गौडपादभाष्य, माठरवृत्ति, जयमङ्गला, युक्तिदीपिका, सांख्यतत्त्वकौमुदी आदि हैं।
- सत्कार्यवाद सांख्यदर्शन का प्रमुख सिद्धान्त है जो छान्दोग्योपनिषद् में भी प्राप्त होता है।
- सांख्यदर्शन के दो प्रमुख सिद्धान्त हैं - सत्कार्यवाद एवं पुरुषबहुत्व।
- सांख्यशास्त्र के अनुसार त्रिविध दुःख हैं - आध्यात्मिक, आधिभौतिक,आधिदैविक

दुःखत्रय

- आध्यात्मिक दुःख- काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, भय, विषाद आदि से होने वाला दुःख।
- आधिभौतिक दुःख- मनुष्य, पशु, सर्प आदि से होने वाला दुःख।

- आधिदैविक दुःख- यक्ष, राक्षस , भूत, प्रेत आदि से होने वाला दुःख।
- शारीरिक- वात, पित्त, कफ आदि से उत्पन्न दुःख।
- मानसिक- काम, क्रोध आदि से उत्पन्न दुःख।
- 'ऐकान्तिक' शब्द का अर्थ है - दुःख का अनिवार्य रूप से नष्ट हो जाना।
- 'आत्यन्तिक' शब्द का अर्थ है - जो दुःख नष्ट हुआ है उसका फिर से उत्पन्न न होना।
- लौकिक उपायों से दुःखत्रय की सार्वकालिक निवृत्ति नहीं होती।
- वात, पित्त, कफ त्रिदोष की विषमता से शारीरिक दुःख उत्पन्न होता है।
- काम, क्रोध, लोभ, मोह, भय, ईर्ष्या, विषाद आदि द्वारा विषयों की अप्राप्ति से उत्पन्न दुःख मानसिक दुःख हैं।
- मनुष्य, पशु, मृग, पक्षी, सर्प आदि से उत्पन्न होने वाला दुःख आधिभौतिक दुःख है।
- यक्ष, राक्षस, विनायक, ग्रह इत्यादि के दुष्ट प्रभाव से होने वाला दुःख 'आधिदैविक दुःख' है।
- वैदिक उपाय भी लौकिक उपायों के समान दुःखत्रय की ऐकान्तिक एवं आत्यन्तिक निवृत्ति में असमर्थ हैं।
- व्यक्त, अव्यक्त और पुरुष के ज्ञान से दुःख की निवृत्ति अधिक उत्तम होती है।
- सांख्यशास्त्र चार प्रकार से तत्त्वों का विभाजन करता है-
  (i) प्रकृति (ii) प्रकृति-विकृति (iii) केवल विकृति (iv) न प्रकृति न विकृति।
- **प्रकृति** की संख्या है- एक (मूलप्रकृति)। इसे प्रधान या अव्यक्त भी कहा जाता है।
- **प्रकृति एवं विकृति** की संख्या सात है- 'प्रकृतिविकृतयः सप्त' (का0-3) जो महत् , अहङ्कार तथा पञ्चतन्मात्राएँ हैं। इन्हें **कारण एवं कार्य** नाम से भी जाना जाता है।
- केवल **विकृति** अर्थात् कार्य की संख्या सोलह है। 'षोडशकस्तु विकारः' (का0-3) पञ्चज्ञानेन्द्रियाँ,पञ्चकर्मेन्द्रियाँ, मन,पञ्चमहाभूत। इन्हें **कार्य** नाम से भी जाना जाता है।
  * पाँचज्ञानेन्द्रियाँ - श्रोत्र , नेत्र, घ्राण, त्वक्, रसना
  * पाँचकर्मेन्द्रियाँ - वाक्, पाणि, पाद, पायु, उपस्थ।
  * पाँचतन्मात्रा - शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध
  * पाँचमहाभूत - आकाश, वायु, तेज , जल, पृथिवी
- सांख्य में पुरुष को न प्रकृति (कारण) तथा न विकृति (कार्य) कहा गया है- **न प्रकृतिः न विकृतिः पुरुषः** (का0-3)
- सत्त्व,रजस्,तमस् की साम्यावस्था का नाम प्रकृति है 'सत्त्वरजस्तमसां साम्यावस्था प्रकृतिः'

पुरुष

मूलप्रकृति
|
महत् (बुद्धि)
|
अहङ्कार
|
पञ्चतन्मात्रा +एकादश इन्द्रिय
|
पञ्चमहाभूत
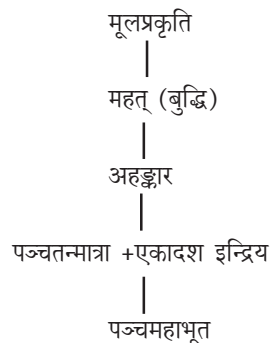
सांख्य के अनुसार प्रमाण

- 'दृष्टमनुमानमाप्तवचनं' (का0-4) इस कथन से सांख्य तीन प्रमाण मानता है -
  (i) दृष्ट (प्रत्यक्ष), (ii) अनुमान तथा (iii) आप्तवचन।
- सांख्य को तीन ही प्रमाण अभीष्ट हैं (का0-4) 'त्रिविधं प्रमाणमिष्टम्'। इन्हीं तीन प्रमाणों के ज्ञान से ही प्रमेयों का ज्ञान होता है- **'प्रमेयसिद्धिः प्रमाणाद्धि'**

अन्य आचार्यों द्वारा स्वीकृत प्रमाण

- चार्वाक केवल प्रत्यक्ष को प्रमाण के रूप में मानता है।
- बौद्ध-दर्शन - दो प्रमाण मानता है- (प्रत्यक्ष, अनुमान)
- सांख्य-योग - तीन प्रमाण मानता है- (प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द)
- न्याय- वैशेषिक - चार प्रमाण मानता है- (प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द)
- प्रभाकर मीमांसक - पाँच प्रमाण मानते हैं- (प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द ,अर्थापत्ति)
- भाट्ट मीमांसक- छः प्रमाण मानते है- (प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द,अर्थापत्ति, अभाव)
- पौराणिक- आठ प्रमाण (प्रत्यक्ष, अनुमान,उपमान, शब्द,अर्थापत्ति,अभाव, सम्भव,ऐतिह्य)
- **'प्रतिविषयाध्यवसायो दृष्टम्'** (का0-5) प्रत्यक्ष प्रमाण का लक्षण है। विषय से सम्बद्ध इन्द्रिय पर आश्रित बुद्धि-व्यापार या ज्ञान को प्रत्यक्ष प्रमाण कहते हैं।
- **'तल्लिङ्गलिङ्गिपूर्वकम् अनुमानम्'** (का0-05) यह अनुमान प्रमाण का लक्षण है। लिङ्ग और लिङ्गी के ज्ञान से जो उत्पन्न होता है उसे अनुमान प्रमाण कहते हैं।
- सर्वप्रथम अनुमान के दो भेद होते हैं - वीतानुमान, अवीतानुमान
- वीतानुमान के दो भेद- पूर्ववत्, सामान्यतोदृष्ट।
- अवीतानुमान का एक भेद - शेषवत्।
- इस प्रकार पूर्ववत्, शेषवत् ,सामान्यतोदृष्ट के भेद से अनुमान प्रमाण के तीन भेद हैं।
- 'आप्तश्रुतिराप्तवचनम्' (का0-05) अर्थात् आप्त पुरुष की उक्ति ही शब्द प्रमाण है।
- शब्दप्रमाण को **आगमप्रमाण** या **आप्तप्रमाण** भी कहा जाता है।
- जो जिस रूप में है उसको उसी रूप में कहना आप्तवचन तथा उपदेश करने वाले को आप्तपुरुष कहते हैं।
- सामान्यविषयों का ज्ञान प्रत्यक्ष प्रमाण से होता है।
- इन्द्रियों से दिखाई न देने वाले अर्थात् परोक्ष पदार्थों का ज्ञान अनुमान प्रमाण से होता है।
- मूलप्रकृति आदि का ज्ञान सामान्यतोदृष्ट नामक अनुमान प्रमाण से होता है।
- सांख्य के अनुसार वस्तुओं का प्रत्यक्ष आठ रूपों से नहीं होता है -
  (i) अत्यधिक दूर होने से (ii) अत्यधिक समीप होने से,
  (iii) इन्द्रियों के नाश (iv) मन की अस्थिरता से,
  (v) सूक्ष्म होने से (vi) बीच में किसी रुकावट के आ जाने से,
  (vii) समान वस्तु में मिल जाने से (viii) अपने कारण से उत्पन्न होने से।

  अतिदूरात् सामीप्यादिन्द्रियघातान्मनोऽनवस्थानात्।
  सौक्ष्म्याद् व्यवधानादभिभवात् समानाभिहाराच्च॥ (का0-07)
- प्रकृति की उपलब्धि नहीं होती है - सूक्ष्म होने के कारण।
- अभाव के कारण नहीं अपितु सूक्ष्मता के कारण प्रकृति की उपलब्धि नहीं होती है 'सौक्ष्म्यात्तदनुपलब्धिर्नाभावात्' (का0-08)

- ➢ प्रकृति की उपलब्धि उसके कार्य से होती है, महत् आदि कार्य प्रकृति के समान एवं असमान दोनों होते हैं **'महदादि तच्च कार्यं प्रकृतिसरूपं विरूपं च'** (का0-8)
- ➢ सत्कार्यवाद सांख्यदर्शन का प्रमुख सिद्धान्त है 'सतः सत् जायते'
- ➢ सांख्य की दृष्टि में सत्कार्यवाद है- असदकरणादुपादानग्रहणात् सर्वसम्भवाभावात्। शक्तस्य शक्यकरणात् कारणभावाच्च सत्कार्यम्।। (का-09)
- ➢ सत्कार्यवाद सिद्धान्त में पाँच हेतु हैं-
  (i) असदकरणाद् (ii) उपादानग्रहणात् (iii) सर्वसम्भवाभावात्
  (iv) शक्तस्य शक्यकरणात् (v) कारणभावात्
- ➢ सत्कार्यवाद सिद्धान्त के अनुसार - कार्य हमेशा अपने कारण रूप में विद्यमान रहता है।
- ➢ सांख्यशास्त्र के अनुसार न तो किसी वस्तु की उत्पत्ति होती है और न ही विनाश होता है।
- ➢ कार्य की उत्पत्ति का अर्थ है अव्यक्त से व्यक्त होना तथा विनाश का अर्थ है व्यक्त से अव्यक्त होना।
- ➢ मूलप्रकृति से उत्पन्न होते हैं- महद् आदि कार्य, महद् आदि कार्यों को 'व्यक्त' कहते हैं।
- ➢ प्रकृति है- त्रिगुणात्मिका, प्रधान, प्रसवधर्मिणी, अव्यक्त, जड तथा अचेतन।

अव्यक्त तथा व्यक्त पदार्थों का सादृश्य एवं वैषम्य का निरूपण

व्यक्त	अव्यक्त (प्रकृति)
हेतुमान्	अहेतुमान्
अनित्य	नित्य
अव्यापी	व्यापी
सक्रिय	निष्क्रिय
अनेक	एक
मूलकारण पर आश्रित	अनाश्रित
लिङ्गसहित	लिङ्गरहित
अवयवयुक्त	निरवयव
परतन्त्र	स्वतन्त्र

हेतुमदनित्यमव्यापि सक्रियमनेकमाश्रितं लिङ्गम्।
सावयवं परतन्त्रं व्यक्तं विपरीतमव्यक्तम्। (का0-10)

- ➢ महत् तत्त्व से लेकर आकाश आदि स्थूलपर्यन्त सभी पदार्थों को व्यक्त कहा जाता है।
- ➢ प्रत्यक्ष प्रमाण के विषय होते हैं- व्यक्त
- ➢ हेतुमत्- हेतु अर्थात् कारण जिसका होता है उसे हेतुमत् कहते हैं।
- ➢ अव्यक्त अर्थात् प्रकृति नित्य है क्योंकि वह किसी का कार्य नहीं होती है।
- ➢ सांख्यमत में अनित्य का अर्थ है- सूक्ष्म रूप से अपने कारण में रहने वाला।
- ➢ सांख्य में पुरुषबहुत्व के सिद्धान्त को मान्यता प्रदान की गई है।
- ➢ सारे व्यक्त पदार्थ अपने-अपने कारण पर आश्रित होते हैं।
- ➢ व्यक्त तथा अव्यक्त का साम्य एवं पुरुष से उसके वैषम्य का निरूपण-

त्रिगुणमविवेकि विषयः सामान्यमचेतनं प्रसवधर्मि।
व्यक्तं तथा प्रधानं, तद्विपरीतस्तथा च पुमान्।। (का.-11)

व्यक्त तथा अव्यक्त	पुरुष
त्रिगुणात्मक	गुण से रहित (त्रिगुणातीत)
अविवेकी	विवेकी
विषयी	अविषयी
सामान्य	असामान्य
अचेतन	चेतन
प्रसवधर्मी	अप्रसवधर्मी

- 'व्यक्तं तथा प्रधानं, तद्विपरीतस्तथा च पुमान्' (का0-11) इस कारिका में व्यक्त तथा अव्यक्त के साधर्म्य एवं पुरुष का उससे वैधर्म्य का निरूपण किया गया है।

सांख्य के त्रिविध गुण

- सांख्यानुसार तीन गुण हैं- सत्त्व, रजस् तथा तमस्। (का0-13)
- सत्त्व, रजस्, तमस् का स्वरूप है- सुख, दुःख, मोह। **प्रीत्यप्रीति-विषादात्मकाः।** (का0-12) प्रीति का अर्थ - सुख, अप्रीति का अर्थ है- दुःख तथा विषाद का अर्थ है- मोह।
- तीनों गुणों के क्रमशः कार्य हैं- प्रकाश, प्रवर्तन, नियमन। **प्रकाश- प्रवृत्तिनियमार्थाः।** (का0-12) जिसका अर्थ है- प्रकाश करना, प्रवृत्त करना, नियमन करना।
- तीनों गुणों के स्वभाव हैं- एक दूसरे को दबाना, आश्रय बनना, उद्भव या आविर्भाव **''अन्योन्याभिभवाश्रयजननमिथुनवृत्तयश्च''** (का0-12)
- सत्त्व, रजस् तथा तमस् क्रमशः शान्त, घोर और मोह वृत्ति वाले हैं।

गुण	स्वरूप	कार्य/प्रयोजन	स्वभाव
सत्त्वगुण	प्रीति (सुखात्मक)	प्रकाश करना	एक दूसरे को दबाना
रजोगुण	अप्रीति (दुःखात्मक)	प्रवर्तन करना	आश्रय बनना
तमोगुण	विषाद (मोहात्मक)	नियमन करना	उद्भव या आविर्भाव करना

तीनों गुणों की विशेषताएँ-

- **'सत्त्वं लघु प्रकाशकम्'** (का0-13) सत्त्व गुण हल्का होता है अतः प्रकाशक होता है।
- **'उपष्टम्भकं चलं च रजः'** (का0-13) रजोगुण चञ्चल होता है अतः उत्तेजक होता है।
- **'गुरु वरणकमेव तमः'** तमो गुण भारी होता है अतएव अवरोधक होता है।

सत्त्व गुण	हल्का	प्रकाशक
रजो गुण	चञ्चल (प्रवृत्तिशील)	उत्तेजक
तमो गुण	भारी	अवरोधक

- तीनों गुण अर्थात् सत्त्व, रजस् तथा तमस् विरोधी स्वभाव वाले होते हुए भी **'प्रदीपवच्चार्थतो वृतिः'** (का0-13) अर्थात् दीपक के समान व्यवहार करने वाले हैं।
- सत्त्वगुण के प्रभावी होने पर व्यक्ति स्वयं को हल्का, सुखी एवं आनन्दित अनुभव करता है।
- रजोगुण के प्रभावी होने पर व्यक्ति में चंचलता एवं गतिशीलता की अनुभूति होती है।
- तमोगुण के प्रभावी होने पर किसी भी काम को करने की इच्छा न होना, शरीर में आलस्य होना, सोने आदि में प्रवृत्त होना, होता है।
- सत्त्वगुण एवं तमोगुण दोनों गुण निष्क्रिय होते हैं रजोगुण ही उन्हें क्रियाशील बनाता है।
- सत्त्व आदि तीनों गुणों के कारण अविवेकित्व इत्यादि धर्मों की सत्ता सिद्ध होती है।
- कार्य का कारण गुणों के स्वभाव से युक्त होने से मूलप्रकृति (अव्यक्त) की सत्ता सिद्ध होती है।
- अव्यक्त अर्थात् मूलप्रकृति की सत्ता सिद्ध करने वाले पाँच हेतु-

  (i) भेदानां परिमाणात् (ii) समन्वयात् (iii) शक्तितः प्रवृत्तेः

  (iv) कारणकार्यविभागात्, (v) वैश्वरूपस्य अविभागात्। (का0-15)

  अव्यक्त (प्रकृति) की सत्ता की सिद्धि

  1. भेदानां परिमाणात् (कार्यों के सीमित परिमाण से)
  2. समन्वयात् (भिन्नपदार्थों में स्थित अनुरूपता)
  3. शक्तितः प्रवृत्तेः (शक्ति के अनुसार प्रवृत्ति)
  4. कारणकार्यविभागात् (कारण और कार्य का विभाग प्राप्त होने से)
  5. वैश्वरूपस्य (सभी रूपों के एक रूप हो जाने से)
- 'भेदानां' से तात्पर्य महत् से लेकर भूमि पर्यन्त सभी कार्यों से है।
- अव्यक्त अपने तीनों गुणों के स्वरूप तीनों के स्वरूप से तीनों के मिश्रित रूप से, एक-एक गुण के आश्रय से उत्पन्न भेद या वैशिष्ट्य के कारण, परिणाम से जल के समान प्रवृत्त होता रहता है-

  'परिणामतः सलिलवत् प्रतिगुणाश्रयविशेषात्।' (का0-16)
- सृष्टि का मूल कारण अव्यक्त है जिसमें सत्त्व, रजस् तथा तमस् विद्यमान रहते हैं इन्हीं गुणों के सहयोग से मूलप्रकृति निरन्तर क्रियाशील रहती है।
- ज्ञ अर्थात् पुरुष की सत्ता सिद्ध करने वाले पाँच हेतु- संघातपरार्थत्वात्, त्रिगुणादिविपर्ययात्, अधिष्ठानात्, भोक्तृभावात्, कैवल्यार्थं प्रवृत्तेः। (का.-17)

  पुरुष की सत्ता सिद्धि

  संघातपरार्थत्वात् त्रिगुणादिविपर्ययादधिष्ठानात्
पुरुषोऽस्ति भोक्तृभावात् कैवल्यार्थं प्रवृत्तेश्च॥ का. 17॥

1. संघातपरार्थत्वात् (संघातों का दूसरों के लिए होना)
2. त्रिगुणादिविपर्ययात् (त्रिगुणादि से विपरीत स्वभाव वाला होने से)
3. अधिष्ठानात् (त्रिगुण समूह का अधिष्ठाता होने से)
4. भोक्तृभावात् (भोग्य एवं भोक्ताभाव से)
5. कैवल्यार्थं प्रवृत्तेः (मोक्ष के लिए प्रवृत्ति देखे जाने से)

- सांख्य का पुरुष सभी शरीरों का अधिष्ठाता है।
- सांख्य का पुरुष त्रिगुणरहित होने से सबसे भिन्न है।
- पुरुषबहुत्व का सिद्धान्त सांख्य का सिद्धान्त है।
- पुरुषबहुत्व की सत्ता सिद्ध करने वाले तीन हेतु हैं-
  (i) जननमरणकरणानां (ii) अयुगपत्प्रवृत्तेः (iii) त्रैगुण्यविपर्ययात्
- जन्म, मरण तथा इन्द्रियों की व्यवस्था होने से और एक साथ प्रवृत्ति का अभाव होने से तथा तीन गुणों के भेद के कारण पुरुष बहुत्व की सत्ता सिद्ध होती है।
- जननमरणकरणानाम् में करण से अभिप्राय तीन अन्तःकरण (मन, बुद्धि, अहंकार) तथा पाँचज्ञानेन्द्रियों एवं पाँच कर्मेन्द्रियों से है।
- पुरुष के चेतन, निर्गुण, विशेष, अविषय, विवेकी एवं अप्रसवधर्मी होने के कारण साक्षित्व, कैवल्य, माध्यस्थ्य, द्रष्टृत्व एवं अकर्तृत्व (का0-19) आदि धर्मों की सिद्धि भी होती हैं।

पुरुष के धर्म
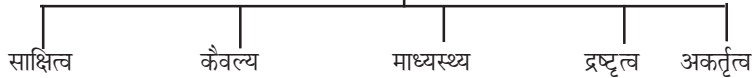
साक्षित्व | कैवल्य | माध्यस्थ्य | द्रष्टृत्व | अकर्तृत्व

- पुरुष के संयोग से जड़ प्रकृति चेतन के समान प्रतीत होती है।
- पुरुष गुणरहित एवं अपरिणामी होने के कारण वस्तुतः कर्ता नहीं होता बल्कि उसमें कर्तापन की प्रतीति भ्रान्तिमात्र है।
- सांख्य की सृष्टि 'पङ्ग्वन्धवत्' अर्थात् लगड़ा और अन्धा के समान है। (का0-21)
- पुरुष के द्वारा प्रधान (प्रकृति) का दर्शन तथा प्रकृति (प्रधान) के द्वारा कैवल्य की प्राप्ति के लिए पुरुष और प्रकृति का संयोग अन्धे और लगड़े के समान होता है जिससे सृष्टिप्रक्रिया सम्पन्न होती है।
- पुरुष और प्रकृति के संयोग का प्रमुख रूप से दो प्रयोजन है-
  1. प्रकृति का दर्शन 2. पुरुष को कैवल्य की प्राप्ति।

प्रकृति एवं पुरुष के संयोग का प्रयोजन

प्रदर्शन (प्रकृति लिए) | कैवल्यार्थ (पुरुष के लिए)

- महत् की उत्पत्ति मूलप्रकृति से होती है।
- अहंकार की उत्पत्ति महत् से होती है।
- सोलह पदार्थों का समूह अर्थात् पञ्च ज्ञानेन्द्रियाँ, पञ्च कर्मेन्द्रियाँ, पञ्च तन्मात्रा तथा मन की उत्पत्ति अहंकार से होती है।
- पञ्चमहाभूतों की उत्पत्ति पाँच तन्मात्राओं से होती है।
- महत् को बुद्धि, प्रत्यय, महान् एवं उपलब्धि आदि नामों से भी जाना जाता है।
- सत्त्वगुण प्रधान अहंकार से पञ्चज्ञानेन्द्रियाँ, पञ्चकर्मेन्द्रियाँ, तथा मन की उत्पत्ति होती है।
- तमोगुण प्रधान अहंकार से पञ्च तन्मात्राओं की उत्पत्ति होती है।

सांख्य की सृष्टि प्रक्रिया (का0-22)

मूल प्रकृति
|
महत् या बुद्धि
|
अहङ्कार

सात्विक अहंकार से → पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ+पाँच कर्मेन्द्रियाँ+मन

तामसिक अहंकार से → पाँच तन्मात्रा → पाँच महाभूत
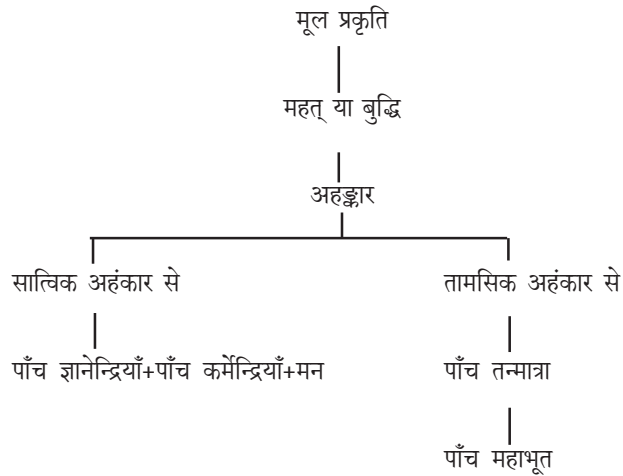
- पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ हैं- श्रोत्र, त्वक्, चक्षु, रसना, घ्राण।
- पाँच कर्मेन्द्रियाँ हैं- वाक्, पाणि, पाद, पायु, उपस्थ।
- पाँच तन्मात्रा हैं- शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध।
- पाँच महाभूत हैं- आकाश, वायु,तेज, जल, पृथिवी।

पाँच महाभूतों की उत्पत्ति क्रम

1. पाँच तन्मात्रा	**2. महाभूत**
शब्द	आकाश
शब्द+स्पर्श	वायु
शब्द+स्पर्श+रूप	अग्नि
शब्द +स्पर्श+रूप+रस	जल
शब्द+स्पर्श+रूप+रस+गन्ध	पृथिवी

- बुद्धि का लक्षण है- 'अध्यवसायो बुद्धिः धर्मः' अर्थात् निश्चयात्मक अथवा निश्चय करने वाला तत्त्व बुद्धि है। (का0-23)
- बुद्धि के आठ गुण- धर्म,अधर्म,ज्ञान,अज्ञान,वैराग्य,राग,ऐश्वर्य,अनैश्वर्य।
- बुद्धि के चार सात्त्विक गुण- धर्म, ज्ञान, वैराग्य, ऐश्वर्य।
- बुद्धि के चार तामसिक गुण- अधर्म,अज्ञान, राग, अनैश्वर्य।
- व्यक्ति को 'अभ्युदय' एवं निःश्रेयस् की प्राप्ति कराने वाला कारण धर्म है।
- त्रिगुणात्मिका 'प्रकृति' एवं निर्गुण, तेजोरूप 'पुरुष' का विवेक भेदपूर्वक साक्षात्कार ही सांख्यदर्शन की भाषा में ज्ञान कहलाता है।
- आसक्ति का अभाव वैराग्य है।
- अणिमा, लघिमा, गरिमा, महिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, वशित्व एवं ईशित्व इन आठ सिद्धियों की प्राप्ति ही ऐश्वर्य है।

बुद्धि के धर्म (गुण)

सत्त्व अंश	तामसिक अंश
(धर्म, ज्ञान, वैराग्य, ऐश्वर्य)	(अधर्म, अज्ञान, राग, अनैश्वर्य)

- अहङ्कार- ''अभिमानोऽहंकारः''अर्थात् 'मैं' इस प्रकार के अभिमान को अहंकार कहते हैं।
- अहंकार से दो प्रकार के कार्य होते हैं-
  1. ग्यारह इन्द्रियों का समूह
  2. पञ्चतन्मात्राओं का समूह।
- ग्यारह इन्द्रियों का समूह वैकृत नामक सात्त्विक अहंकार से तथा पञ्चतन्मात्राओं का समूह भूतादि नामक तामस अहङ्कार से उत्पन्न होते हैं। (का0-24)

अहंकार

सात्विक अहंकार — पञ्चज्ञानेन्द्रियाँ+पञ्चकर्मेन्द्रियाँ+ मन

तामसिक अहंकार — पञ्चतन्मात्रा

- इन्द्रियाँ दो प्रकार की होती हैं- अन्तः इन्द्रिय, बाह्य इन्द्रिय
- ज्ञान कराने वाली इन्द्रिय को ज्ञानेन्द्रिय कहा जाता है इसे 'बुद्धीन्द्रिय'भी कहते हैं।
- रूप, रस और गन्धादि विषयों को बुद्धिपूर्वक आलोचन, पर्यालोचन आदि करके जो ज्ञान में साधक अथवा करण होती हैं वे बुद्धीन्द्रिय अथवा ज्ञानेन्द्रिय कहलाती हैं।
- ज्ञान के साधक इन्द्रिय को ज्ञानेन्द्रिय तथा कर्म के साधक इन्द्रिय को कर्मेन्द्रिय कहा जाता है।
- मन को उभयेन्द्रिय कहा गया है क्योंकि यह ज्ञानेन्द्रिय तथा कर्मेन्द्रिय दोनों के साथ समान रूप से कार्य करता है।
- एकादश इन्द्रियों के बीज मन, संकल्प करने वाला तथा समान धर्मभाव के कारण दोनों प्रकार का होता है। **'उभयात्मकमत्र मनः संकल्पकमिन्द्रियं च'** (का0-27)
- पाँच ज्ञानेन्द्रियों का व्यापार शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध आदि विषयों का प्रकाशन मात्र माना जाता है **'रूपादिषु पञ्चानामालोचनमात्रमिष्यते वृत्तिः'** (का0-28)
- पाँच कर्मेन्द्रियों का व्यापार बोलना, ग्रहण करना, चलना, त्यागकरना, और आनन्द का अनुभव कराना माना जाता है **'वचनादानविहरणोत्सर्गानन्दाश्च'** (का0-28)
- नाम, जाति, गुण, क्रिया आदि विशेषताओं का संकल्प-विकल्प करना मन का कार्य है।
- यह वस्तु त्यागने योग्य है अथवा ग्रहण करने योग्य इसका निश्चय बुद्धि करती है।

पाँच ज्ञानेन्द्रियों के कार्य	
ज्ञानेन्द्रिय	**कार्य**
श्रोत्र (कान)	शब्द
त्वक् (त्वचा)	स्पर्श
चक्षु (आँख)	रूप
रसना (जीभ)	रस
घ्राण (नाक)	गन्ध

पाँच कर्मेन्द्रियों के कार्य

कर्मेन्द्रिय	**कार्य**
वाक् (वाणी)	बोलना (भाषण)
पाणि (हाथ)	लेना (ग्रहण)
पाद (पैर)	चलना (गमनागमन)
पायु (गुदा)	त्याग करना (मलत्याग)
उपस्थ (जननेन्द्रिय)	आनन्द प्रदान करना

पाँच वायु की स्थिति

वायु	**स्थिति** (का0-29)
प्राण	नासिका, हृदय, नाभि, पैर का अँगूठा
अपान	गले की घुंडी, पीठ, पैर, गुदा, जननेन्द्रिय
समान	हृदय, नाभि, शरीर के जोड़
उदान	हृदय, कण्ठ, तालु, सिर- भौहों के बीच
व्यान	सम्पूर्ण शरीर में त्वचा

- करण तेरह प्रकार के हैं 'करणं त्रयोदशविधम्'।
- तेरह प्रकार के करण हैं- एकादश इन्द्रिय, बुद्धि, अहंकार (का0-32)
- करण के कार्य हैं- आहरण, धारण तथा प्रकाश
- वाक् इत्यादि कर्मेन्द्रियाँ अपने-अपने विषय का आहरण या ग्रहण करती हैं।
- बुद्धि, अहंकार और मन अपने प्राण इत्यादि व्यापार के द्वारा देह को धारण करती है।
- ज्ञानेन्द्रियाँ शब्द, स्पर्श इत्यादि को प्रकाशित करती हैं।

तेरह करण

पञ्चकर्मेन्द्रियाँ (वाक्, पाणि, पाद, पायु, उपस्थ)

तीन अन्तःकरण (मन, बुद्धि, अहंकार)

पञ्चज्ञानेन्द्रियाँ- (श्रोत्र, त्वक्, चक्षु, रसना, घ्राण)

- त्रयोदशकरण को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है-

  1. आभ्यन्तरकरण- बुद्धि, अहंकार,मन
  2. बाह्यकरण- पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच कर्मेन्द्रियाँ।

करण के दो भेद

आभ्यन्तरकरण	बाह्यकरण
मन, बुद्धि, अहंकार,	पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ पाँच कर्मेन्द्रियाँ

- अन्तःकरण तीन प्रकार के है- **'अन्तःकरणं त्रिविधम्'** (का0-33) बुद्धि, अहंकार, मन।
- अन्तःकरण को प्रस्तुत करने वाले बाह्यकरण दस हैं। पञ्चज्ञानेन्द्रिय+पञ्चकर्मेन्द्रियाँ
- वर्तमान विषयक होते हैं- बाह्य करण
- अन्तःकरण को **आभ्यन्तर करण** भी कहते हैं।
- ज्ञानेन्द्रियाँ बाहर स्थित अपने-अपने विषयों के सम्पर्क में आकर उन्हें प्रकाशित करके उनकी सूचना अन्तः करण को प्रदान करती हैं।
- बाह्यकरण केवल वर्तमानकाल के विषयों में प्रभावी होते हैं इसलिए इसे 'साम्प्रत्कालम्' कहा गया है।
- आभ्यन्तर अर्थात् अन्तःकरण भूत, भविष्य और वर्तमान तीनों कालों में प्रभावी होते हैं।
- 'स्वालक्षण्यं वृत्तिस्त्रयस्य' में त्रयस्य पद से अभिप्राय मन बुद्धि अहंकार से है।
- अन्तः करण में दो प्रकार की शक्तियों को माना जाता है- ज्ञानशक्ति तथा क्रियाशक्ति।
- बुद्धि, मन, अहंकार ज्ञानशक्ति का तथा प्राणादि क्रियाशक्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं।
- तीन प्रकार के अन्तः करण तथा एक प्रकार का बाह्य करण होने से करण के चार भेद भी माने गये हैं।
- प्रत्यक्ष दिखाई देने वाले पदार्थ के सम्बन्ध में चार प्रकार के करणों की प्रवृत्ति कभी एक साथ और कभी क्रमशः कही गयी हैं।
- परोक्ष पदार्थों के ज्ञान के सम्बन्ध में केवल मन, बुद्धि, अहंकार ये तीन अन्तः करण का व्यापार प्रत्यक्षपूर्वक एक साथ और क्रमपूर्वक होता है।

तीन अन्तः करण के कार्य

अन्तः करण	कार्य
बुद्धि	निश्चय
अहंकार	अभिमान
मन	संकल्प

- दस बाह्यकरणों में पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ स्थूल और सूक्ष्म दो विषयों में प्रवृत्त होती हैं।
- कर्मेन्द्रियों में वाक् इन्द्रिय शब्द के विषय में प्रवृत्त होती हैं शेष चारों ही शब्द स्पर्श इत्यादि पाँचों विषयों में प्रवृत्त होती हैं।

- तीनों अन्तः करण प्रधान हैं क्योंकि मन एवं अहंकार के साथ बुद्धि सभी विषयों में व्याप्त होती है।
- बाह्य इन्द्रियाँ द्वार या साधनमात्र हैं, मन तथा अहंकार से युक्त बुद्धि साधनवती या प्रधान है।
- करण पुरुष के सम्पूर्ण प्रयोजन को प्रकाशित करके बुद्धि को समर्पित कर देते हैं।
- सभी ज्ञानेन्द्रियों, मन और अहंकार का लक्ष्य बुद्धि होता है।
- समस्त विषयों के सम्बन्ध में होने वाले पुरुष के भोग को बुद्धि ही सम्पादित करती है।
- प्रकृति एवं पुरुष के सूक्ष्म भेद को प्रकट करती है- बुद्धि। **'प्रधानपुरुषान्तरं सूक्ष्मम्'- बुद्धिः।** (का0-37)
- सांख्य के अनुसार दुःख की हमेशा के लिए निवृत्ति ही मोक्ष अथवा कैवल्य है।
- पञ्चतन्मात्रा अर्थात् शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध ये सूक्ष्म विषय हैं।
- पञ्चतन्मात्राओं से पञ्चमहाभूत की उत्पत्ति होती है।
- आकाश आदि पञ्चमहाभूत विशेष अर्थात् स्थूल कहे जाते हैं, ये सुखात्मक, दुःखात्मक और मोहात्मक होते हैं।
- शान्त घोर और मूढ होते हैं-पञ्चमहाभूत
- सूक्ष्म अर्थात् इन्द्रियों द्वारा जिनका प्रत्यक्ष नहीं किया जाता वे अविशेष हैं।
- सूक्ष्मशरीर, माता-पिता से उत्पन्न स्थूलशरीर, पञ्चमहाभूत ये तीन स्थूल विषय होते हैं।
- नित्य होता है- सूक्ष्मशरीर।
- अनित्य होता है- माता-पिता से उत्पन्न स्थूलशरीर।
- सूक्ष्मशरीर की गति सर्वत्र होती है।
- प्रलयकाल में सूक्ष्मशरीर भी अपने कारण में समाहित हो जाता है।
- सूक्ष्मशरीर को लिङ्गशरीर भी कहते हैं।
- सांख्य का **सूक्ष्मशरीर 18 तत्त्वों** से निर्मित होता है। (का0-40) पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच कर्मेन्द्रियाँ, पाँच तन्मात्राएँ, महत्, अहंकार, मन ये सूक्ष्मशरीर के 18 अवयव हैं।
- सूक्ष्मशरीर होता है- सृष्टि के आरम्भ में उत्पन्न, सभी जगह गति करने में सक्षम, प्रलयकाल तक स्थायीरूप से रहने वाला, भोगरहित, भावों से युक्त, महत् से लेकर सूक्ष्मतन्मात्रापर्यन्त, 18 तत्त्वों से निर्मित।
- सूक्ष्मशरीर ही संसरण या गमनागमन करता है।
- सूक्ष्मशरीर का आधार **छः कोषों** से निर्मित स्थूलशरीर होता है।
- 18 तत्त्वों से निर्मित सूक्ष्मशरीर केवल तन्मात्रारूप में स्थित रहता है।
- सूक्ष्मशरीर निरूपभोग अर्थात् भोगरहित होता है।
- सूक्ष्मशरीर को लिङ्गशरीर भी कहते हैं- पुरुष की सत्ता का द्योतक होने के कारण।
- लिङ्ग का लक्षण है- 'लिंग्यते अनेन इति लिङ्गम्' अथवा 'लीनं गमयति इति लिङ्गम्'

सूक्ष्मशरीर के 18 अवयव

- महत् (बुद्धि) 1
- अहंकार 2
- मन 3
- पञ्चज्ञानेन्द्रियाँ 3+5=8
- पञ्चकर्मेन्द्रियाँ 8+5=13
- पञ्चतन्मात्राएँ 13+5=18
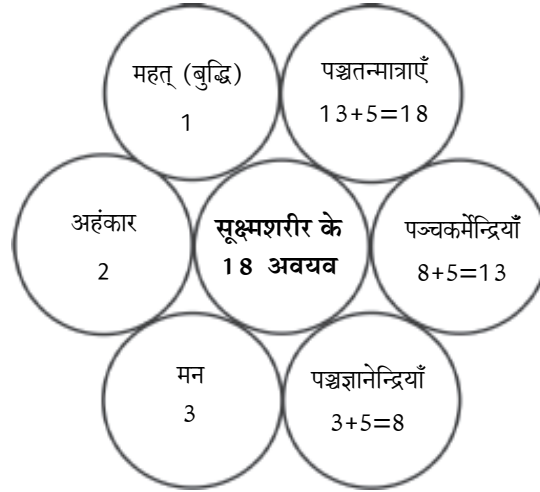
- अविशेष अर्थात् पञ्चतन्मात्राओं के बिना लिङ्गशरीर निराश्रय नहीं रह सकता।
- सूक्ष्मशरीर के द्वारा स्थूलशरीर के माध्यम से जो भी कार्य सम्पन्न किए जाते हैं उन सबका मुख्य प्रयोजन पुरुष के भोग एवं अपवर्ग को सम्पादित करना है।
- प्रकृति अर्थात् स्वभाव से ही सिद्ध सांसिद्धिक तथा 'वैकृतिक' धर्म, अधर्म इत्यादि भाव 'करण' अर्थात् निमित्तरूप बुद्धि के आश्रित रहते हैं। (का0-43)
- कलल अर्थात् जरायु से परिवेष्टित रजोमिश्रितवीर्य इत्यादि भाव कार्य अर्थात् नैमित्तिक शरीर के आश्रित रहते हैं।
- रजस् और वीर्य के मिश्रण को '**कलल**' कहा जाता है।
- धर्म से ऊर्ध्व लोक में गति होती है '**धर्मेण गमनमूर्ध्वम्**' (का0-44)
- अधर्म से अधोलोक में गति होती हैं- '**गमनमधस्ताद् भवत्यधर्मेण**' (का0-44)
- सांख्य में ज्ञान से मोक्ष होता है '**ज्ञानेन चापवर्गः**' (का0-44)
- अज्ञान से बन्धन की प्राप्ति होती है '**विपर्ययादिष्यते बन्धः**' (का0-44)
- धर्म से अभिप्राय यम, नियम आदि अष्टाङ्गयोग, अभ्युदय एवं निःश्रेयस् के साधक यज्ञ, दान, आदि अनुष्ठान सभी श्रेष्ठकर्मों से है।
- लोक हैं- ऊर्ध्वलोक, अधोलोक
- ऊर्ध्वलोकों की संख्या सात है- भूः, भुवः, स्वः, महः, जनः, तपः, सत्यलोक
- अधोलोक की संख्या भी सात है- अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल, महातल, पाताल।
- विवेकख्याति सम्भव है- सांख्यशास्त्र द्वारा।

भावों के फल

धर्म	अधर्म	ज्ञान	अज्ञान
ऊर्ध्वलोक की प्राप्ति	अधोलोक की प्राप्ति	मोक्ष की प्राप्ति	बन्धन की प्राप्ति

- वैराग्य से प्रकृतिलय होता है **'वैराग्यात् प्रकृतिलयः'** (का0-45)
- रजोमय राग से संसरण होता है **'संसारो भवति राजसाद्रागात्'** (का0-45)
- ऐश्वर्य से इच्छा की सफलता होती है **'ऐश्वर्यादविघातः'** (का0-45)
- ऐश्वर्य के अभाव से इच्छा की सफलता का हनन होता है **'विपर्ययात् तद्विपर्यासः'** (का0-45)

बुद्धि में स्थित भावों के कार्य

वैराग्य	राग	ऐश्वर्य	अनैश्वर्य
प्रकृतिलय में आवागमन	संसार का पूरा होना	इच्छाओं का होना	इच्छाओं का पूरा न होना

सृष्टि के भेद

- सांख्य के अनुसार सृष्टि दो प्रकार की होती है- भौतिक एवं बौद्धिक।
- बुद्धि के चार प्रमुख परिणाम हैं- विपर्यय, अशक्ति, तुष्टि, सिद्धि। इन्हें प्रत्ययसर्ग या **बुद्धिसर्ग** कहते हैं।
- प्रत्ययसर्ग के कुल **पचास भेद** हैं। (का0-46-47)
- विपर्यय के **पाँच भेद**- तम, मोह, महामोह, तामिस्र, अन्धतामिस्र।
- अशक्ति की संख्या **अट्ठाइस** है; जिसमें सत्रह प्रकार के बुद्धि के दोष तथा एकादश इन्द्रियों के वध। (का0-28)
- वाधिर्य, कुष्ठता, अन्धत्वी, जडता, अजिघ्रता,मूकता, कैवल्य, पंगुत्व, कौण्ड्य, उदावर्त, मन्दता, असुवर्णा, अनिला, मनोज्ञा, अदृष्टि, अपरा, सुपरा, असुनेत्रा, वसुनाडिका, अनुत्तमाम्भसिका, अप्रतार, असुतार, अतारतार, असदामुदित, अरम्यक्, अप्रमोद, अमुदित, आमोदमान- ये 28 अशक्तियाँ हैं।
- तुष्टि के नौ भेद- 1. प्रकृति, 2. उपादान, 3. काल, 4. भाग, 5. पार, 6. सुपार, 7. पारापार, 8. अनुत्तमाम्भस्, 9. उत्तमाम्भस्। (का0-47)

- आठ प्रकार की सिद्धियाँ-1-3त्रिदुःख विनाश, 4.अध्ययन,5.ऊह, 6.शब्द, 7.सुहृत्प्राप्ति, 8.दान।
- बुद्धि के उपघातों के साथ ग्यारह इन्द्रियों की विकलता अशक्ति कहलाती है।
- नौ तुष्टि और सिद्धियों के विपर्ययभाव से बुद्धि के सत्रह उपघात होते हैं।
- विपर्यय, अशक्ति, तुष्टि अंकुशरूप में सिद्धि की बाधक होती हैं।
- पुरुष का भोग-अपवर्ग रूप प्रयोजन ही पुरुषार्थ है।
- बौद्धिक परिणाम के बिना तन्मात्र परिणाम सम्भव नहीं है।
- तन्मात्रपरिणाम के बिना बौद्धिक परिणाम भी सम्भव नहीं है।
- देवसृष्टि के आठ प्रकार होते हैं - 1. ब्राह्म, 2. प्राजापत्य, 3. ऐन्द्र, 4. पैत्र, 5. गान्धर्व, 6. यक्ष, 7. राक्षस, 8. पैशाच
- तिर्यक् सृष्टि के पाँच भेद होते हैं-
  1. पशु, 2. पक्षी,3. मृग 4. सरीसृप, 5. स्थावर।
- मनुष्यसृष्टि एक प्रकार की होती है।

भौतिक सृष्टि

देवसृष्टि	तिर्यक् सृष्टि	मनुष्यसृष्टि
(8प्रकार)	(5 प्रकार)	(1 प्रकार)
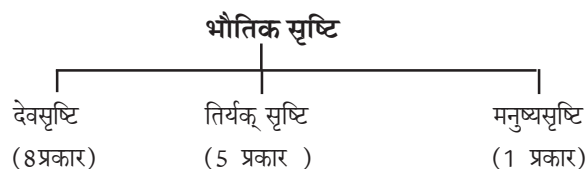
इसप्रकार **भौतिक सृष्टि चौदह प्रकार** की होती है।

- ब्रह्म से लेकर तृणपर्यन्त भौतिक सृष्टि में ऊपर के लोक में सत्त्वगुण की प्रधानता, अधोलोक अर्थात् नीचे के लोक में तमोगुण की प्रधानता मध्यलोक में रजोगुण की प्रधानता है।

लोक	गुण	सृष्टि
ऊर्ध्व	सत्त्वगुण	देवसृष्टि
अधः	तमोगुण	तिर्यक् सृष्टि
मध्य	रजोगुण	मानुषी सृष्टि

- चेतन पुरुष शरीर के निवृत्त होने तक जरा मरण से उत्पन्न दुःख भोगता है।
  'जरामरणकृतं दुःखं प्राप्नोति चेतनः पुरुषः' (का0-55)
- प्रकृति द्वारा प्रत्येक पुरुष के मोक्ष के लिये किया गया कार्य, महत् आदि से लेकर आकाश आदि महाभूतों की यह सृष्टि अपने लिए की गई सी प्रतीत होते हुए भी पुरुष के लिए ही है।

  'प्रतिपुरुषविमोक्षार्थं स्वार्थ इव परार्थ आरम्भः' (का0-56)

- पुरुष के मोक्ष के लिए अचेतन प्रकृति स्वतः प्रवृत्त होती है इसके लिए सांख्य गाय एवं बछड़े का उदाहरण देता है।
- जैसे बछड़े के पोषण के लिए अचेतन दूध माता के स्तनों में प्रवृत होता है उसीप्रकार पुरुष को मोक्ष दिलाने के लिए अचेतन मूलप्रकृति की प्रवृत्ति होती है **'पुरुषविमोक्षनिमित्तं तथा प्रवृत्तिः प्रधानस्य'** (का0-57)
- जिसप्रकार संसार में स्वेच्छा की पूर्ति के लिए लोग कार्यों में प्रवृत्त होते हैं ठीक उसीप्रकार प्रकृति भी पुरुष के लिए प्रवृत्त होती है- **'पुरुषस्य विमोक्षार्थं प्रवर्तते तद्वदव्यक्तम्'** (का0-58)
- जैसे नृत्यांगना नाट्यशाला में स्थित दर्शकों को नृत्य दिखाकर नृत्य से निवृत्त हो जाती है- **रङ्गस्य दर्शयित्वा निवर्तते नर्तकी यथा पुरुषस्य नृत्यात् तथाऽऽत्मानं प्रकाश्य विनिवर्तते प्रकृतिः॥** (का0-59)
- गुणवती एवं उपकारिणी प्रकृति निर्गुण होते हुए पुरुष के भोग एवं अपवर्ग रूप प्रयोजन को अनेक प्रकार के उपायों द्वारा बिना किसी स्वार्थभाव से सम्पादित करती है।
- प्रकृति से अधिक लज्जालु और कोई नहीं है, 'जो पुरुष ने मुझे देख लिया', ऐसा ज्ञान हो जाने पर पुनः पुरुष की दृष्टि में नहीं आती-

  प्रकृतेः सुकुमारतरं न किञ्चिदस्तीति मे मतिर्भवति।
  या दृष्टाऽस्मीति पुनर्न दर्शनमुपैति पुरुषस्य॥ (का0-61)
- वस्तुतः न तो किसी पुरुष का बन्धन होता है और न ही मोक्ष और न संसरण 'तस्मान्न बध्यतेऽद्धा न मुच्यते नापि संसरति कश्चित्' (का0-62)
- अनेक आश्रयों वाली प्रकृति ही संसरण करती है उसी का बन्धन एवं मोक्ष होता है- 'संसरति बध्यते मुच्यते च नानाश्रया प्रकृतिः' (का0-62)
- प्रकृति स्वयं को अपने सात रूपों धर्म, अधर्म, अज्ञान, वैराग्य, राग, ऐश्वर्य, अनैश्वर्य के द्वारा अपने को बाँधती है- **'रूपैः सप्तभिरेव तु बध्नात्यात्मानमात्मना प्रकृतिः'**(का0-63)
- पुरुषार्थ की सिद्धि के लिए प्रकृति एक रूप ज्ञान द्वारा स्वयं को मुक्त करती है- **'पुरुषार्थं प्रति विमोचयत्येकरूपेण'** (का0-63)
- बन्धन एवं मोक्ष पुरुष का नहीं अपितु सूक्ष्मशरीर के रूप में प्रकृति का होता है।
- प्रकृति अपने ज्ञान नामक भाव से पुरुष के लिए स्वयं को निवृत्त करती है।

  प्रकृति
  - **बन्धन** (सात रूपों द्वारा यथा- धर्म,अधर्म,अज्ञान, वैराग्य, राग, ऐश्वर्य, अनैश्वर्य)
  - **मोक्ष** (एक रूप द्वारा यथा ज्ञान)
- पच्चीस तत्त्वों के लगातार चिन्तनपूर्वक अभ्यास से तीन प्रकार की अनुभूति होती है न अस्मि, न मे, न अहम् 'तत्त्वाभ्यासान्नास्मि न मे नाहमित्यपरिशेषम्' (का0-64) अर्थात् न मैं क्रियावान् हूँ, न भोक्तृत्व हूँ, न कर्त्ता हूँ।

- निष्क्रिय पुरुष विवेकज्ञान रूप सामर्थ्य से धर्म अधर्म आदि सात रूपों से रहित, तथा अपने सम्बन्ध से भोग और विवेकज्ञान इत्यादि परिणाम न उत्पन्न करने वाली प्रकृति को द्रष्टा के समान देखता है।
- भोग एवं विवेक ज्ञान सम्पन्न होते हैं- प्रकृति के द्वारा।
- तत्त्वों के निरन्तर अभ्यास से उत्पन्न विवेकज्ञान होने पर प्रकृति उस ज्ञान के प्रति अपने भोग एवं अपवर्ग दोनों प्रकार के प्रसव बन्द कर देती है।
- चेतन पुरुष के द्वारा प्रकृति को मैने देख लिया ऐसा विचार कर उदासीन हो जाता है।
- प्रकृति के द्वारा उसने (पुरुष) मुझे देख लिया यह सोचकर व्यापार शून्य हो जाता है।
- इसप्रकार का संयोग होने पर भी सृष्टि प्रकृति व्यापार का कोई प्रयोजन नहीं रह जाता।
- सृष्टि का प्रयोजन है पुरुष के भोगापवर्ग की सिद्धि जो प्रकृति द्वारा सम्पन्न की जाती है।
- मुख्य प्रयोजन अपवर्ग तथा गौण प्रयोजन भोग है।
- पुरुष को विवेकज्ञान होना ही अपवर्ग है।
- आत्मज्ञान की प्राप्ति से, धर्म अधर्म आदि सृष्टि के कारण में न रहने पर पूर्वजन्म के संस्कारों के कारण कुम्हार के चाक के घूमने के समान शरीर धारण किये रहता है- **'तिष्ठति संस्कारवशाच्चक्रभ्रमिवद् धृतशरीरः'** (का0-67)
- शरीर पात होने पर, भोग एवं अपवर्ग दोनों पुरुषार्थों के पूर्व से सिद्ध रहने के कारण प्रकृति के निवृत्त हो जाने पर पुरुष ऐकान्तिक और आत्यन्तिक मुक्ति प्राप्त कर लेता है।
- ऐकान्तिक और आत्यन्तिक दुःख की निवृत्ति ही कैवल्य है।

❑❑

3. योगदर्शन

- योगदर्शन के प्रणेता **महर्षि पतञ्जलि** हैं।
- योग शब्द युज् + घञ् से बना है जिसका अर्थ है- समाधि।
- 'योगसूत्र' के लेखक **महर्षि पतञ्जलि** हैं।
- योगदर्शन का आधार योगसूत्र है।
- योग को **'सेश्वरसांख्य'** कहा जाता है क्योंकि यह ईश्वरतत्त्व को मानता है।
- योगसूत्र पर व्यास ने एक भाष्य लिखा है जिसे **योगभाष्य** कहा जाता है।
- **योगसूत्र में चार पाद हैं-**

समाधिपाद	साधनपाद	विभूतिपाद	कैवल्यपाद
51 +	55 +	55	+ 34= 195 सूत्र

1. समाधिपाद में- योग तथा समाधि के स्वरूप तथा भेदों का वर्णन।
2. साधनपाद में - योगप्राप्ति के साधन तथा अष्टाङ्गयोगाङ्गों का वर्णन।
3. विभूतिपाद में- योग से प्राप्त सिद्धियों का वर्णन।
4. कैवल्यपाद में- मोक्ष का वर्णन है।

- योगदर्शन में पदार्थों (तत्त्वों) की संख्या 26 है।
- योगदर्शन पर लिखा गया प्राचीन एवं सर्वप्रथम भाष्य व्यास कृत **व्यासभाष्य** है।
- वाचस्पतिमिश्र ने योगसूत्र पर **'तत्त्ववैशारदी'** नाम की टीका लिखी है।
- योगसूत्र तीन प्रमाण मानता है।

प्रमाण

प्रत्यक्ष | अनुमान | आगम (शब्द)

- विज्ञानभिक्षु ने योगसूत्र पर **योगवार्तिक** नामक टीका लिखी है।
- व्यासभाष्य में योग के भेद हैं-

  1. वितर्कानुगत 2. विचारानुगत 3. आनन्दानुगत 4. अस्मितानुगत

  * **वितर्कानुगत-** जिसमें ध्येय विषय के स्थूल रूप का सम्प्रज्ञान होता है।
  * **विचारानुगत -** जिसमें ध्येय विषय के सूक्ष्म रूप का सम्प्रज्ञान होता है।
  * **आनन्दानुगत -** जिसमें ध्यानकारिणी बुद्धि से स्वतः स्फूर्त आनन्द का सम्प्रज्ञान होता है।

* **अस्मितानुगत** - जिसमें बुद्धि और पुरुष की प्रतीयमान एकाकारता से प्रकट होने वाले उभय-स्वरूप विवेक का सम्प्रज्ञान होता है।

- योगदर्शन का पहला सूत्र **'अथ योगानुशासनम्'** है।
- 'अथ योगानुशासनम्' सूत्र में 'अथ' पद का अर्थ है- अधिकार-वाचक।
  'अथ इति अयम् शब्दः = अधिकारार्थः'
- योग का लक्षण है-योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः (1/2)
  चित्त की वृत्तियों के निरोध को ही योग कहते हैं।
- 'योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः' सूत्र से चित्त पद से अभिप्राय अन्तःकरण (मन, बुद्धि और अहङ्कार) से है।
- चित्त की पाँच भूमियों या अवस्थाओं का उल्लेख प्राप्त होता है।

चित्तभूमियाँ (पाँच)

क्षिप्त	मूढ	विक्षिप्त	एकाग्र	निरुद्ध
रजोगुण	तमोगुण	सत्वगुण का आधिक्य	सात्विक	राजस्+तामस्+ सत्व का निरोध
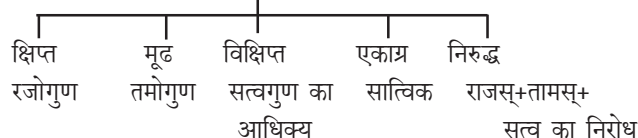
- चित्तवृत्तियाँ भी पाँच प्रकार की होती हैं- प्रमाणविपर्ययविकल्पनिद्रास्मृतयः (1/6)

चित्तवृत्तियाँ - (5)

प्रमाण	विपर्यय	विकल्प	निद्रा	स्मृति

- प्रमाण नामक वृत्ति के भेद हैं- तीन
  1. प्रत्यक्ष 2. अनुमान 3. आगम (शब्द)
  'प्रत्यक्षानुमानागमाः प्रमाणानि' (1/7)
- **विपर्यय-विपर्ययो मिथ्याज्ञानमतद्रूपप्रतिष्ठम्** (1/8)
  ज्ञेय वस्तु से भिन्न अर्थ में प्रतिष्ठित मिथ्याज्ञान विपर्यय कहा जाता है।
- विपर्यय का अर्थ है- मिथ्याज्ञान अथवा अविद्या
  विपर्यय या अविद्या के पाँच पर्व/क्लेश/अङ्ग भी बताये गये हैं।
- **पञ्चक्लेश-अविद्याऽस्मितारागद्वेषाभिनिवेशाः पञ्च क्लेशाः।**
  1. अविद्या 2. अस्मिता 3. राग 4. द्वेष 5. अभिनिवेश
- **विकल्प** - **शब्दज्ञानानुपाती वस्तुशून्यो विकल्पः** (1/9)
  शब्द से उत्पन्न जो ज्ञान, उसके पीछे, चलने का जिसका स्वभाव हो और जो वस्तु की सत्ता की अपेक्षा रखता हो, इसप्रकार का ज्ञान 'विकल्प' कहलाता है।

- **निद्रा-अभावप्रत्ययालम्बना वृत्तिर्निद्रा (1/10)**
  जाग्रत तथा स्वप्नावस्था की वृत्तियों के अभाव के कारणभूत तमोगुण को विषय बनाने वाली वृत्ति निद्रा कही जाती है।
- **स्मृति- अनुभूतविषयासम्प्रमोषः स्मृतिः**। (1/11)
  अनुभव किये हुऐ विषय का फिर चित्त में तन्मात्र विषयक- ज्ञान होना 'स्मृति' कहलाता है।
- पाँचो वृत्तियों के निरोध का उपाय है-अभ्यास और वैराग्य
  अभ्यास- अभ्यासवैराग्याभ्यां तन्निरोधः॥ (1/12)
  स्थिति के निमित्त प्रयत्न करना ही अभ्यास है।
- **'दृष्टानुश्रविकविषयवितृष्णस्य वशीकारसंज्ञा वैराग्यम्'** (1/15)
  ऐहिक और पारलौकिक विषयों से निःस्पृह चित्त का 'वशीकार संज्ञा' नामक अपर वैराग्य होता है।

वैराग्य
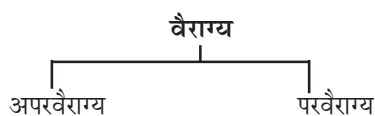
अपरवैराग्य | परवैराग्य

- **तत्परं पुरुषख्यातेर्गुणवैतृष्ण्यम्** (1/16)
- पुरुष की ख्याति के कारण गुणों के प्रति जो उपेक्षाबुद्धि होती है, वही परवैराग्य है।
- समाधि दो प्रकार की है- सम्प्रज्ञात और असम्प्रज्ञात
- **वितर्कविचारानन्दा स्मितानुगमात्सम्प्रज्ञातः** (1/17)
  वितर्क, विचार, आनन्द और अस्मिता का अनुगम होने से सम्प्रज्ञातसमाधि होती है।
- **असम्प्रज्ञात का लक्षण**- विरामप्रत्ययाभ्यासपूर्वः संस्कारशेषोऽन्यः (1/18)
  सभी वृत्तियों के अस्त हो जाने पर चित्त का निरोध संस्कारमात्र शेष निरोध-असम्प्रज्ञात समाधि है।
- असम्प्रज्ञात समाधि के दो प्रकार हैं -
  (1) उपायप्रत्यय (2) भवप्रत्यय
- असम्प्रज्ञात समाधि को 'निर्बीज समाधि' भी कहते हैं।
- 'भवप्रत्यय' असम्प्रज्ञातसमाधि विदेहों तथा प्रकृतिलीनों की होती है।
  'भवप्रत्ययो विदेहप्रकृतिलयानाम्' (1/19)
- ईश्वरप्रणिधान से भी असम्प्रज्ञात समाधि सम्पाद्य होती है। **'ईश्वरप्रणिधानाद्वा'** (1/23)
- ईश्वर की भक्ति विशेष से असम्प्रज्ञातसमाधि और कैवल्य की सिद्धि निकटतम हो जाती है।
- **ईश्वर का लक्षण - क्लेशकर्मविपाकाशयैरपरामृष्टः पुरुषविशेष ईश्वरः।** (1/24)
  'ईश्वर' - क्लेश, कर्म, विपाक और आशय वासनाओं के परामर्श से रहित एक

विशेष प्रकार का पुरुष है।

- 'सर्वज्ञता का बीज अपनी पराकाष्ठा को प्राप्त होता है' - **तत्र निरतिशयं सर्वज्ञबीजम्** (1/25)
- 'प्रणवः' किसका वाचक है ?- ईश्वर का
- क्लेशः - अविद्यादि पाँचों क्लेश

  कर्म- कर्मसंस्कार धर्माधर्मरूप

  विपाकः- कर्मफलानि, कर्म से मिलने वाले फल जाति, आयु और भोगरूप फल।

  आशय- चित्ते आ समन्तात् शेते इति वासना संस्कारः आशयः। चित्त में सब ओर से ग्रथित रहने के कारण इन वासना संस्कारों को 'आशय' कहते हैं।

  अपरामृष्टः - असंस्पृष्ट नाममात्र के भी सम्बन्ध अर्थात् सम्पर्क से रहित।
- ईश्वर का अभिधायक शब्द है- ओंकार
- ओंकार जप के पश्चात् करना चाहिए- योगसाधना
- योगसाधना के पश्चात् करना चाहिए- जप
- जप और योग की सिद्धि से साक्षात्कार होता है- परमात्मा का
- **चित्त के विक्षेप-**व्याधि, स्त्यान, संशय, प्रमाद, आलस्य, अविरति, भ्रान्तिदर्शन, अलब्धभूमिकत्व और अनवस्थिततत्व। ये ही विघ्न भी है।

  व्याधिस्त्यानसंशयप्रमादाऽऽलस्याऽविरतिभ्रान्तिदर्शनाऽलब्ध-भूमिकत्वाऽनवस्थितत्वानि चित्तविक्षेपास्तेऽन्तरायाः(1/30)
- ये नव विघ्न ही चित्त के विक्षेप हैं।
- दुःख, दौर्मनस्य, अङ्गकम्पन, श्वास और प्रश्वास ये साथी हैं- विक्षेपों के

  दुःखदौर्मनस्याङ्गमेजयत्वश्वासप्रश्वासा विक्षेपसहभुवः। (1/31)

  उन (विघ्नों) को दूर करने के लिये किसी एक तत्व का अभ्यास करना चाहिए।

  तत्प्रतिषेधार्थमेकतत्त्वाभ्यासः (1/32)
- प्राणों का रेचक पूरक तथा कुम्भक करने से भी चित्त प्रसन्न होता है।

  'प्रच्छर्दनविधारणाभ्यां वा प्राणस्य' (1/34)

  उरस्थ वायु को नाक के नथुनों से विशिष्ट प्रयत्न के द्वारा निकालना प्रच्छर्दन है। 'विधारण' प्राणायाम पूरक और कुम्भक है।
- श्रेष्ठमणि के समान क्षीणवृत्तियों वाले तथा ग्रहीता, ग्रहण और ग्राह्य विषयों में स्थित होने वाले चित्त का उनके आकार को ग्रहण कर लेना समापत्ति है।

  'क्षीणवृत्तेरभिजातस्येव मणेर्ग्रहीतृग्रहणग्राह्येषु तत्स्थतदञ्जनता समापत्तिः' (1/41)
- समापत्ति + (सम् + आङ् + पद् + क्तिन्) से बना है।

  समापत्ति - सम्यक् प्रकार से सब ओर से हो जाना।
- समापत्तियाँ चार हैं-

  1. सवितर्का 2. निर्वितर्का 3. सविचारा 4. निर्विचारा

- सवितर्का, निर्वितर्का, सविचारा, निर्विचारा ये चारों समापत्तियाँ ही सबीज समाधियाँ हैं। **'ता एव सबीजः समाधिः' (1/46)**
- ऋतम्भरा प्रज्ञा तथा तज्जन्य संस्कार सबका निरोध हो जाने से निर्बीज समाधि सिद्ध होती है। **'तस्यापि निरोधे सर्वनिरोधान्निर्बीजः समाधिः' (1/51)**
- तपस्या स्वाध्याय और ईश्वरप्रणिधान क्रियायोग हैं। **'तपः स्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि क्रियायोगः (2/1)**

क्रियायोग

1. तप 2. स्वाध्याय 3.ईश्वरप्रणिधान

- 1. चित्त की प्रसन्नता को बाधित न करने वाली स्थिति **तप** है।
  2. शास्त्रों के द्वारा ओङ्कार इत्यादि पवित्र मन्त्रों का जप करना **स्वाध्याय** है।
  3. सभी क्रियाओं को परम गुरू ईश्वर में अर्पित करना या उन कर्मों के फलों का संन्यास **ईश्वरप्रणिधान** है।
- अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष, और अभिनिवेश ये पाँच क्लेश होते हैं। **अविद्याऽस्मितारागद्वेषाभिनिवेशाः पञ्च क्लेशाः।** (2/3)
  भाष्यकार के अनुसार पाँच क्लेशों का अर्थ है-पाँच प्रकार के विपर्यय या मिथ्याज्ञान।
- प्रसुप्त, तनु, विच्छिन्न और उदार इन चारों अवस्थाओं में रहने वाले 'अस्मिता' इत्यादि चारों परवर्ती क्लेशों की प्रसवभूमि अविद्या है।
  अविद्या क्षेत्रमुत्तरेषां प्रसुप्ततनुविच्छिन्नोदाराणाम्। (2/4)
- अनित्य, अपवित्र, दुःखमय और अनात्मपदार्थों में क्रमशः नित्य, पवित्र, सुखमय और आत्मा का ज्ञान होना अविद्या है।
  'अनित्याऽशुचिदुःखानात्मसु नित्यशुचिसुखात्मख्यातिरविद्या।' (2/5)
  अनित्य पदार्थ में नित्यपदार्थ का ज्ञान अविद्या है जैसे-पृथ्वी नित्य या स्थायी है। चन्द्रमा और तारों सहित द्युलोक नित्य है।
  'अविद्या' शब्द में 'नञ्' तत्पुरुष समास = न विद्येति अविद्या।
- दृकशक्ति पुरुष और दर्शनशक्ति बुद्धि की प्रतीयमान एकात्मता अस्मिता नामक क्लेश है। **'दृग्दर्शनशक्त्योरेकात्मतेवास्मिता'** (2/6)
  सुख के अनुभविता को सुखानुभव की स्मृतिपूर्वक सुख या सुख के साधनभूत पदार्थ के प्रति जो चाह लालच या लोलुपता होती है वह राग नामक क्लेश है।
- इसका लक्षण - **'सुखानुशयी रागः'** (2/7)
  सुखस्य अनुशयी इति सुखानुशयी

- दुःख के अनुभविता को दुःखानुभव की स्मृतिपूर्वक दुःख या दुःख के साधनभूत पदार्थ के प्रति जो प्रतिहिंसा, मन्यु, मारने की इच्छा या क्रोध होता है, वह द्वेष है।
  'दुःखानुशयी द्वेषः' (2/8)
  अनुशयी - अनु +शीङ् +णिनिः = अनुशयी
- संस्काररूप से स्थिर, विद्वानों में भी उसीप्रकार से वर्तमान क्लेश अभिनिवेश है।
  स्वरसवाही विदुषोऽपि तथारूढोऽभिनिवेशः (2/9)
  अभिनिवेश नामक क्लेश स्वभावतः वर्तमान में रहने वाला उत्पन्न मात्र हुए कीट को भी प्रत्यक्ष, अनुमान और आगम प्रमाणों के द्वारा अज्ञेय, आत्मनाश की कल्पनारूप मरण का भय है।
- स्वस्य रसः इति स्वरसः तं वोढुं शीलमस्येति स्वरसवाही स्वरस + वह + णिनिः
- अपने मौलिक रूप को सदा अक्षुण्ण रखने वाला या संस्कार से सदैव वर्तमान रहने वाला। **'स्वरसवाही स्वरसेन संस्कारमात्रेण वहतीति स्वरसवाही'**
- अभिनिवेशः मरणभयम् - मरने का डर ही अभिनिवेश है।
- पाँच क्लेशों की वृत्तियाँ क्रियायोग से हल्की तथा विवेकख्याति के द्वारा नष्ट की जाने योग्य होती है। **''ध्यानहेयास्तद्वृत्तयः''** (2/11)
- क्लेशरूपी मूल के रहने पर जन्म, आयु और भोग रूपी कर्माशय के फल प्राप्त होते हैं। **सति मूले तद्विपाको जात्यायुर्भोगाः** (2/13)
- भविष्यकालिक दुःख ही 'हेय' है। **हेयं दुःखमनागतम्** (2/16)
  द्रष्टा और दृश्य का संयोग हेय का हेतु है। **द्रष्टृदृश्ययोः संयोगो हेयहेतुः।** (2/17)
- अविद्या के मिट जाने से संयोग का नाश हो जाना 'हान' है वही पुरुष का 'कैवल्य' है।
  तद्भावात्संयोगाभावो हानं तद्दृशेः कैवल्यम्। (2/25)
- मिथ्याज्ञानशून्य विवेकख्याति ही हान का उपाय है। **विवेकख्यातिरविप्लवा हानोपायः (2/26)**
- विवेकख्याति योगी की उत्कृष्ट स्तरवाली प्रज्ञा सात प्रकार की होती है। **तस्य सप्तधा प्रान्तभूमिः प्रज्ञा** (2/27)
- योग के अङ्गों का अनुष्ठान करने से, अशुद्धि का क्षय हो जाने पर विवेकख्याति के उदय तक ज्ञान का प्रकाश होता जाता है।
  योगाङ्गानुष्ठानादशुद्धिक्षये ज्ञानदीप्तिराविवेकख्यातेः। 2/28
- **अष्टाङ्गयोग-** यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि ये आठ योग के अङ्ग हैं।
  यमनियमाऽऽसनप्राणायामप्रत्याहारधारणाध्यानसमाधयोऽष्टावङ्गानि (2/29)

- **यमाः** - अहिंसादयः पञ्च, अहिंसा इत्यादि पाँच यम हैं।
  अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहाः यमाः (2/30)
  अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह ये पाँच यम कहे जाते हैं।
- अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह में से प्रथम अहिंसा को बताते हैं।
- **अहिंसा-** सब प्रकार से सदैव सब प्राणियों को पीड़ा न पहुचाना अहिंसा है।
  'तत्राहिंसा सर्वथा सर्वदा सर्वभूतानामनभिद्रोहः।'
  सत्य- जैसा देखा गया या अनुमित किया गया या सुना गया हो उसके सम्बन्ध में वैसी ही वाणी और वैसा ही मन रखना 'सत्य' है। **'सत्यं यथार्थे वाङ्मनसे'**
- **अस्तेय-** शास्त्राज्ञा के विपरीत दूसरों का द्रव्य ग्रहण करना 'स्तेय' है।
  स्तेयमशास्त्रपूर्वकं द्रव्याणां परतः स्वीकरणम्।
  इसप्रकार की इच्छा का अभाव रूप स्तेयाभाव 'अस्तेय' है।
  तत्प्रतिषेधः पुनरस्पृहारूपमस्तेयमिति।
- **ब्रह्मचर्य-** गुप्तेन्द्रिय अर्थात् जननेन्द्रिय का निग्रह 'ब्रह्मचर्य' है।
  'ब्रह्मचर्य गुप्तेन्द्रियस्योपस्थस्य संयमः।'
- **अपरिग्रह-** विषयों की प्राप्ति रक्षा और तद्विषयक आसक्ति तथा हिंसादि दोषों के कारण उन विषयों को स्वीकार न करना 'अपरिग्रह' है।
  विषयाणामर्जनरक्षणक्षयसङ्गहिंसादोषदर्शनादस्वीकरणमपरिग्रह इत्येते यमाः।
- जाति, देश, काल और आचार परम्परा से सीमित न होते हुए ये यम सार्वभौम **'महाव्रत'** कहे जाते हैं।
  'जातिदेशकालसमयानवच्छिनाः सार्वभौमा महाव्रतम्' (2/31)
- **नियम -** शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वरप्रणिधान नियम कहे जाते हैं।
  शौचसन्तोषतपःस्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि नियमाः (2/32)
- **ईश्वरप्रणिधन-** गुरू या ईश्वर के प्रति सभी कर्मों का अर्पण करना ईश्वरप्रणिधान है।
  ईश्वरप्रणिधानं तस्मिन् परमगुरौ सर्वकर्मार्पणम्।
- अहिंसा के प्रतिष्ठित हो जाने पर उस योगी के पास प्राणियों का पारस्परिक वैरभाव छूट जाता है। **अहिंसाप्रतिष्ठायां तत्सन्निधौ वैरत्यागः।** (2/35)
- **सत्यप्रतिष्ठायां क्रियाफलाश्रयत्वम्** (2/36)
  सत्य के प्रतिष्ठित वितर्कशून्यतया स्थिर हो जाने पर उस साधक में शुभाशुभ क्रियाओं और उनके फलों की आश्रयता आ जाती है।
- अस्तेय के प्रतिष्ठित हो जाने पर सभी रत्नों की उपस्थिति होती है।
  अस्तेयप्रतिष्ठायां सर्वरत्नोपस्थानम् ' (2/37)

- ब्रह्मचर्य के प्रतिष्ठित हो जाने पर सामर्थ्य लाभ होता है।
  ब्रह्मचर्यप्रतिष्ठायां वीर्यलाभः (2/38)
- अपरिग्रह के स्थित होने पर भूत, वर्तमान और भविष्य के जन्मों तथा अनेक प्रकार का सम्यग्ज्ञान होता है।
  अपरिग्रहस्थैर्ये जन्मकथन्तासम्बोधः (2/39)
- शौच के स्थिर होने से अपने अङ्गों के प्रति घृणा और अन्य प्राणी के अङ्गों से संसर्गाभाव होता है।
  शौचात् स्वाङ्गजुगुप्सा परैरसंसर्गः (2/40)
- बुद्धिशुद्धि से मन की प्रसन्नता एकाग्रता इन्द्रियों पर विजय और आत्मसाक्षात्कार की योग्यता आती है।
  सत्त्वशुद्धिसौमनस्यैकाग्र्येन्द्रियजयात्मदर्शनयोग्यत्वानि च (2/41)
- सन्तोष के स्थित होने से निरतिशय सुख की प्राप्ति होती है।
  सन्तोषादनुत्तमसुखलाभः (2/42)
- स्वाध्याय के स्थिर होने से इष्ट देवताओं का सम्पर्क होता है।
  स्वाध्यायादिष्टदेवतासम्प्रयोगः (2/44)
- ईश्वरप्रणिधान स्थित होने से समाधि की सिद्धि होती है।
  समाधिसिद्धिरीश्वरप्रणिधानात् (2/45)
- जो शारीरिक स्थिति स्थायी और सुखद हो, वह आसन है।
  स्थिरसुखमासनम् (2/46)
  यथा-पद्मासनं, वीरासनं, भद्रासनं, स्वस्तिकासन, दण्डासनं, सोपाश्रयं, पर्यङ्कं, क्रौञ्चनिषदनं, हस्तिनिषदनमुष्ट्रनिषदनं समसंस्थानं स्थिरसुखं, यथासुखं आदि इसीप्रकार के और भी स्थिर सुख आसन होते हैं।
  आस्यते अनेन इति करणे ल्युट् (आस्+ ल्युट्) आसनम् = बैठने का प्रकार
- स्थिरञ्च तत् सुखञ्चेति स्थिरसुखम् = निश्चल तथा सुखकारी।
  आसनसिद्धि होने पर शीतोष्णादि द्वन्द्वों से बाधा नहीं होती। **ततो द्वन्द्वानभिघातः।** (2/48)
- उस आसनजय के होने पर श्वास और प्रश्वास की गति को रोकना प्राणायाम है।
  'तस्मिन् सति श्वासप्रश्वासयोर्गतिविच्छेदः प्राणायामः' (2/49)
- शरीर के बाहर होने वाला रेचक, भीतर होने वाला पूरक तथा बाहर और भीतर रुकने वाला कुम्भक त्रिविध प्राणायाम देश, समय और संख्या के द्वारा परीक्षित होता हुआ दीर्घ और सूक्ष्म होता है।

बाह्याभ्यन्तरस्तम्भवृत्तिर्देशकालसंख्याभिः परिदृष्टो दीर्घसूक्ष्मः। (2/50)

- उस प्राणायाम की सिद्धि से प्रकाश पर पड़ा हुआ पर्दा क्षीण होता है।
  'ततः क्षीयते प्रकाशावरणम्' (2/52)
- धारणाओं में मन की क्षमता होती है। **धारणासु च योग्यता मनसः** (2/53)
- प्राणायामाभ्यासादेव 'प्रच्छर्दनविधारणाभ्यां वा प्राणस्य' इति वचनात्।
- अपने अर्थात् इन्द्रियों के विषयों के साथ सन्निकर्ष न होने पर इन्द्रियों का चित्त के स्वरूप का अनुसरण सा कर लेना प्रत्याहार है।
  स्वविषयासम्प्रयोगे चित्तस्वरूपानुकार इवेन्द्रियाणां प्रत्याहारः (2/54)
- उस प्रत्याहार से इन्द्रियों की प्रबल वशवर्तिता होती है।
  ततः परमा वश्यतेन्द्रियाणाम् (2/55)
- चित्त के सात्विक वृत्ति को किसी बाहरी या भीतरी प्रदेश में लगाना ही धारणा है।
  देशबन्धश्चित्तस्य धारणा (3/1)
- धारणा वाले विषय में, ध्येयरूप आलम्बन वाले ध्येय पर ही केन्द्रित तथा अन्य ज्ञानों से अस्पृष्ट ज्ञान की अविच्छिन्न तथा अभिन्न धारा ही 'ध्यान' है।
  तत्र प्रत्ययैकतानता ध्यानम् (3/2)
- ध्येय अर्थमात्र को निर्भासित करने वाला अपने (ज्ञानात्मक) रूप से भी रहित-सा ध्यान ही समाधि है। **तदेवार्थमात्रनिर्भासं स्वरूपशून्यमिव समाधिः** (3/3)
  योग के लिये जिन समाधियों की उपयोगिता होती है, वे क्रमशः ये हैं।
  1. योगाङ्गरूपिणी की प्रस्तुतसूत्रोक्तसमाधि
  2. सम्प्रज्ञातसमाधि
  3. असम्प्रज्ञातसमाधि
- **संयम-** ये धारणा, ध्यान और समाधि-तीनों एकत्र अर्थात् एक ही आलम्बनगत होने पर संयम कहे जाते हैं। **त्रयमेकत्र संयमः (3/4)**
  अन्तरङ्ग साधन - यमादि साधनों की अपेक्षा वे धारणा, ध्यान और समाधि सम्प्रज्ञात समाधि के लिये अन्तरङ्ग माने जाते हैं। **त्रयमन्तरङ्गं पूर्वेभ्यः (3/7)**
  संयम भी निर्बीजसमाधि के लिये बहिरङ्ग ही है। **तदपि बहिरङ्गं निर्बीजस्य** (3/8)
- धारणा, ध्यान, समाधि इन तीनों को 'संयम' कहा गया है।
- तीनों परिणामों में संयम करने से योगी को अतीत तथा अनागत का साक्षात्कार होता है। **परिणामत्रयसंयमादतीतानागतज्ञानम् (3/16)**
  संस्कारों में संयम करने के फलस्वरूप प्राप्त साक्षात्कार से पूर्वजन्मों का ज्ञान होता है। **संस्कारसाक्षात्कारणात्पूर्णजातिज्ञानम् (3/18)**
- सूर्य में किये गये संयम में समस्त भुवनों का ज्ञान होता है।
  भुवनज्ञानं सूर्ये संयमाद् (3/26)

- बुद्धि और पुरुष के अन्यत्व की ख्याति में ही प्रतिष्ठित चित्त वाले योगी को सभी पदार्थों का स्वामित्व तथा सर्वज्ञत्व सिद्ध होता है।
  सत्त्वपुरुषान्यताख्यातिमात्रस्य सर्वभावाधिष्ठातृत्वं सर्वज्ञातृत्वञ्च (3/49)
- विशोका नाम की सिद्धि है जिसको प्राप्त करके योगी सर्वज्ञ,दग्धक्लेशबन्धन और स्वामी होकर विचरण करता है।
- बुद्धिसत्व और पुरुष की शुद्धि के समान हो जाने पर कैवल्य होता है।
  सत्त्वपुरुषयोः शुद्धिसाम्ये कैवल्यमिति (3/55)
- सिद्धियाँ जन्म, औषधि मन्त्र, तप और समाधि से उत्पन्न होती है।
  जन्मौषधिमन्त्रतपः समाधिजाः सिद्धयः। (4/1)
- अन्यदेहधारणरूपा सिद्धि देवादिनिकायों में जन्म से होती हैं।
- आसुर लोको में औषधियों से अर्थात् रसायन इत्यादि से इसप्रकार की सिद्धि होती है।
- मन्त्रों से आकाश में उड़ना और अणिमादि सिद्धियों की प्राप्ति होती है।
- तप से सङ्कल्प की सिद्धि होती है, जिससे यथेच्छारूप वाला होकर जहाँ तहाँ स्वेच्छा से पहुँचने वाला होता है।
- निर्मीयमाण शरीर में निर्मित होने वाले निर्माण चित्त अस्मिता से ही निर्मित होते हैं।
  'निर्माणचित्तान्यस्मितामात्रात्' (4/4)
- चित्त के कारणभूत अस्मितामात्र को लेकर वह योगी निर्माणचित्तों को तैयार कर देता है। निर्माणकाय चित्तयुक्त हो जाते हैं।
- पाँच प्रकार के चित्त -जन्म, ओषधि, मन्त्र, तपस्या और समाधि में से समाधिसम्पन्न चित्त कर्मक्लेश की वासना से रहित होता है। **तत्र ध्यानजमनाशयम् (4/6)**
- पञ्चविधं निर्माणचित्तम् -
  जन्मौषधिमन्त्रतपः समाधिजाः सिद्धय इति।
  पाँच प्रकार के निर्माणचित्त हुए क्योंकि जन्म, औषधि, मन्त्र, तपस्या और समाधि इन पाँच से ऐसी सिद्धियाँ उत्पन्न होती है।
- कारण (अविद्या) फल (पुरुषार्थ) आश्रय (चित्त) और आलम्बन (विषय) के द्वारा ही उपचित होने के कारण, इन चारों का अभाव होने पर उन वासनाओं का अभाव हो जाता है।
  हेतुफलाश्रयालम्बनैः सङ्गृहीतत्वादेषामभावे तदभावः (4/11)
  हेतु का वर्णन इसप्रकार है - धर्म से सुख और अधर्म से दुःख होता है सुख से राग और दुःख से द्वेष होता है और उस रागद्वेष से प्रयत्न होता है।
- द्रष्टा (पुरुष) और दृश्य (विषयी) से अभिसम्बद्ध सभी विषयों वाला होता है
  द्रष्टृदृश्योपरक्तं चित्तं सर्वार्थम् (4/23)
- चित्त से विविक्त (पुरुष) का साक्षात्कार कर लेने वाले की, आत्मभाव की भावना निवृत्त हो जाती है। **विशेषदर्शिन आत्मभावभावनाविनिवृत्तिः** (4/25)

- योगी का चित्त विवेकमार्गी एवं कैवल्य फलोन्मुख होता है।
  तदा विवेकनिम्नं कैवल्यप्राग्भारं चित्तम् (4/26)
- विवेकख्याति में भी वीतराग (योगी) को सर्वथा विवेकख्याति होने से धर्ममेध समाधि होती है। **'प्रसंख्यानेऽप्यकुसीदस्य सर्वथा विवेकख्यातेर्धर्ममेधः समाधिः।'** (4/29)
- धर्ममेध समाधि से क्लेश और कर्म की निवृत्ति हो जाती है
  ततः क्लेशकर्मनिवृत्तिः (4/30)
  उस समस्त आवरणमलों से रहित ज्ञान के अनन्त हो जाने से श्रेय स्वल्प हो जाता है।
  तदा सर्वावरणमलापेतस्य ज्ञानस्यानन्त्याज्ज्ञेयमल्पम् (4/31)
- धर्ममेध के उदित होने से चित्तरूप सत्वादि तीनों गुणों के परिणाम के क्रम की समाप्ति हो जाती है। **'ततः कृतार्थानां परिणामक्रमसमाप्तिर्गुणानाम्' (4/32)**
- 'क्रम' क्षणप्रतियोगिक तथा परिणाम के पर्यवसान से ज्ञायमान होता है।
  क्षणप्रतियोगी परिणामापरान्तनिर्ग्राह्यः क्रमः (4/33)
  गुणों के अधिकार (परिणाम) के क्रम की समाप्ति हो जाने पर कैवल्य प्राप्त होता है। उस कैवल्य का स्वरूप निश्चित किया जा रहा है -
  'गुणाधिकारक्रमसमाप्तौ कैवल्यमुक्तम्। तत्स्वरूपमवधार्यते।'
- भोगापवर्गरूपी पुरुषार्थ से रहित सत्त्वादि तीनों गुणो का अव्यक्त में प्रविलीन हो जाना कैवल्य है या चित्तशक्ति का अपने रूप में प्रतिष्ठित हो जाना ही कैवल्य है।
- **'पुरुषार्थशून्यानां गुणानां प्रतिप्रसवः कैवल्यं स्वरूपप्रतिष्ठा वा चितिशक्तिरिति।' (4/34)**

❑❑

4. तर्कभाषा (न्यायदर्शन)

भूमिका-

- 'न्याय' शब्द की व्युत्पत्ति- '' **नीयते विवक्षितार्थः अनेन इति न्यायः** '' अर्थात् जिस साधन से हम अपने विवक्षित (ज्ञेय) तत्त्व के पास पहुँच जाये या उसे जान पाये,वही साधन न्याय है।
- वात्स्यायन के अनुसार न्याय शब्द का अर्थ है- प्रमाणों से अर्थ की परीक्षा करना - **प्रमाणैरर्थपरीक्षणं न्यायः** (न्यायभाषा)
- न्यायशास्त्र को तर्कशास्त्र,प्रमाणशास्त्र,हेतुविद्या,वाद-विवाद तथा आन्वीक्षिकी अर्थात् समीक्षात्मक परीक्षण भी कहा जाता है।
- न्यायदर्शन के प्रणेता **गौतम मुनि** हैं। इनको **अक्षपाद** नाम से भी जाना जाता है।
- न्यायदर्शन वस्तुवादी दर्शन है। यह अनुभव के आधार पर दर्शनशास्त्र के विवेच्य तत्त्वों की व्याख्या करता है।
- न्यायदर्शन का मुख्य विषय प्रमाणों के स्वरूप का विवेचन है।
- न्यायशास्त्र का लक्ष्य है- दुःखनिवृत्ति करना अर्थात् मोक्षप्राप्ति।
- न्यायशास्त्र के अनुसार यह जगत् 'सत्य' है।
- **न्यायदर्शन के प्रसिद्ध आचार्य-**
  न्यायदर्शन का लगभग दो हजार वर्षों का इतिहास है। चतुर्थ शताब्दी ई॰पू॰ से लेकर आज तक।
- न्यायशास्त्र दो धाराओं में विभक्त है- (i) प्राचीनन्याय (ii) नव्यन्याय

1. आचार्य गौतम- (न्यायसूत्रकार)

- आचार्य गौतम न्यायदर्शन के प्रर्वतक आचार्य हैं।
- ये मिथिला के निवासी थे।
- इनका समय 200 ई॰पू॰ है।
- इन्होने न्यायदर्शन पर 'न्यायसूत्र' नामक ग्रन्थ लिखा है।
- न्यायसूत्र में पाँच अध्याय हैं और प्रत्येक अध्याय में दो आह्निक हैं। इसप्रकार कुल 10 आह्निक हैं।

2. आचार्य वात्स्यायन-(भाष्यकार)

- इनका समय 400 ई॰ है। ये मिथिला निवासी थे।

- इन्होंने न्यायसूत्र पर **'न्यायभाष्य'** नामक विस्तृत भाष्य लिखा है।

3. उद्योतकर- (वार्तिककार)

इनका समय ६००ई॰ है। ये काश्मीर के निवासी थे।

- इन्होंने न्यायभाष्य पर न्यायवार्तिक लिखा है।

4. वाचस्पति मिश्र- (तात्पर्याचार्य)

- इनका समय ९०० ई0 है। यह भी मिथिला के निवासी थे।
- इनके गुरु का नाम त्रिलोचन था।
- इन्होने न्यायवार्तिक पर **'न्यायवार्तिकतात्पर्यटीका'** लिखी।
- इन्होंने **'न्यायसूची'** निबन्ध नामक लघुकायग्रन्थ न्यायसूत्रों की रक्षा के लिए लिखा।
- वाचस्पति मिश्र **'सांख्यतत्त्वकौमुदी'** तथा **'योगतत्त्ववैशारदी'** नामक टीकाग्रन्थों में सांख्ययोग की विशद व्याख्या करते हैं।
- **'न्यायकणिका'** तथा **'तत्त्वबिन्दु'** मीमांसा शास्त्र से सम्बन्धित ग्रन्थ हैं।
- ब्रह्मसूत्र शारीरकभाष्य पर लिखी गयी इनकी **'भामतीटीका'** अद्वैत वेदान्त का अत्यन्त प्रामाणिक ग्रन्थ है।
- अलौकिक पाण्डित्य के कारण इनको **'सर्वतन्त्रस्वतन्त्र'** कहा जाता है।
- न्यायजगत् में ये **तात्पर्याचार्य** के नाम से विख्यात हैं।
- इनका बौद्धदर्शन सम्बन्धी ज्ञान भी उच्चकोटि का था।
- वैशेषिक को छोड़कर पञ्चदर्शनों पर इनकी टीकाएँ प्राप्त होती है।

5. जयन्तभट्ट-

- इनका समय भी ९०० ई0 है।
- इन्होंने **'न्यायमञ्जरी'** नामक ग्रन्थ लिखा है।
- न्यायमञ्जरी न्यायसम्प्रदाय का एक मौलिक शोधग्रन्थ है।

6. भासर्वज्ञ-

- इनका समय भी ९०० ई0 है।
- ये काश्मीर के निवासी थे।
- इनकी रचना **'न्यायसार'** न्यायसूत्र पर निर्भर एक प्रकरणग्रन्थ है।
- इन्होंने अपने ग्रन्थ न्यायसार पर **'न्यायभूषण'** नामक अत्यन्त विशालकाय टीका लिखी है।

7. उदयनाचार्य-

- इनका समय दसवीं शताब्दी (1000 ई0) है। ये मिथिला निवासी थे।
- तात्पर्याटीका पर इन्होंने **'परिशुद्धि'** नामक टीका लिखी है।
- प्रशस्तपादभाष्य पर **'किरणावली'** नामक टीका लिखी है।
- इन्होंने दो मौलिक ग्रन्थ लिखे हैं
  - * आत्मतत्त्वविवेक (बौद्धधिक्कार)
  - * न्यायकुसुमाञ्जलि

8. गंगेश उपाध्याय-(नव्यनैयायिक)

- इनका समय 13वीं शताब्दी है। ये भी मिथिला निवासी थे।
- इनको **नव्यन्याय का जनक** कहा जाता है।
- इनकी प्रसिद्ध कृति **'तत्त्वचिन्तामणि'** है। इसको **'प्रमाणतत्त्वचिन्तामणि'** या **'चिन्तामणि'** भी कहते हैं।

तत्वचिन्तामणि की टीकायें	
टीका	**टीकाकार**
प्रभा	यज्ञपति उपाध्याय
आलोक	जयदेवमिश्र पक्षधरमिश्र
दीधिति	रघुनाथ शिरोमणि
मूलगादाधरी	गदाधर भट्टाचार्य

9. रघुनाथ शिरोमणि-

- समय-16वीं शताब्दी।
- इनका प्रसिद्ध ग्रन्थ 'दीधिति' है। जो तत्त्वचिन्तामणि की टीका है।

दीधिति की टीकाएँ	
टीका	**टीकाकार**
रहस्य	मथुरानाथ
जागदीशी	जगदीश भट्टाचार्य
गादाधरी	गदाधर भट्टाचार्य

10. मथुरानाथ-

- समय 16वीं शताब्दी।
- ये रघुनाथ शिरोमणि के शिष्य थे।
- इन्होंने आलोक, चिन्तामणि और दीधिति पर **'गूढार्थप्रकाशिनी रहस्य'** नाम की टीकाएँ लिखी हैं।

11.जगदीश भट्टाचार्य-

- इनका समय 17वीं शताब्दी।
- इन्होंने दीधिति पर **'जागदीशी'** टीका लिखी है।
- शब्दशक्ति पर **'शब्दशक्तिप्रकाशिका'** निबन्ध लिखा है।

12. गदाधरभट्टाचार्य-

- इनका समय भी 17 वीं शताब्दी है।
- इन्होंने दीधिति पर **'गादाधरी'** नामक व्याख्या लिखी है।

- उदयन के 'आत्मविवेक' और तत्त्वचिन्तामणि पर '**मूलगादाधरी**' टीका लिखी है।
- इन्होंने 52 मौलिक ग्रन्थ लिखे हैं, जिनमें '**व्युत्पत्तिवाद**' तथा '**शक्तिवाद**' प्रसिद्ध हैं।
- **न्याय- वैशेषिक के महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ-** वरदराज(1250 ई0) की **तार्किकरक्षा**, केशवमिश्र (1300) की **तर्कभाषा**,विश्वनाथ (1700ई0) का **भाषापरिच्छेद** और **सिद्धान्तमुक्तावली** तथा अन्नम्भट्ट (1700 ई0) का **तर्कसंग्रह** आदि प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं।

न्यायशास्त्र की दो धाराएँ

प्राचीनन्याय (गौतम) पदार्थमीमांसा
- आचार्य गौतम
- वात्स्यायन
- उद्योतकर
- वाचस्पति मिश्र
- जयन्तभट्ट
- भासर्वज्ञ
- उदयनाचार्य

नव्यन्याय (गंगेश) प्रमाणमीमांसा
- मिथिलाशाखा
  - वर्धमानोपाध्याय
  - वासुदेव मिश्र
  - पक्षधर
- नवद्वीप (बंगाल) शाखा
  - पक्षधर मिश्र (जयदेव)
  - रघुनाथ शिरोमणि
  - मथुरानाथ
  - जगदीश भट्टाचार्य
  - गदाधर भट्टाचार्य
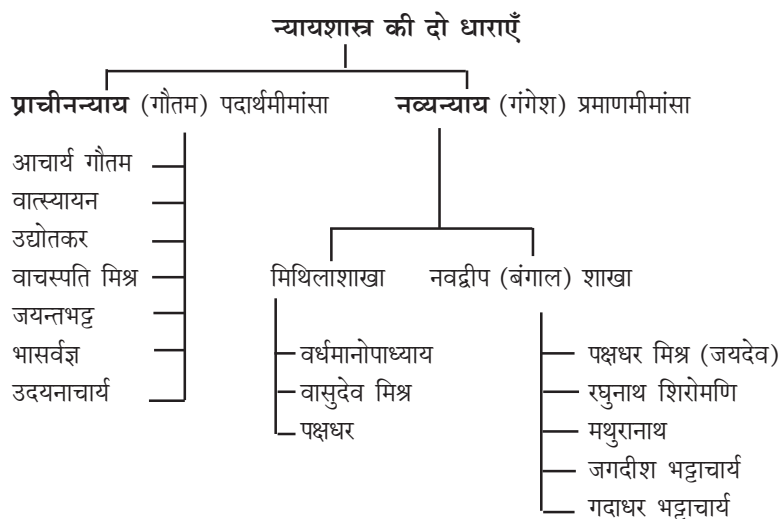
प्राचीनन्याय का महत्त्वपूर्ण साहित्य

न्यायभाष्य	वात्स्यायन	300 ई0
न्यायवार्तिक	उद्योतकर	635 ई0
न्यायवार्तिक-तात्पर्यटीका	वाचस्पति मिश्र	840 ई0
न्यायवार्तिक-तात्पर्यपरिशुद्धि	उदयनाचार्य	984 ई0
न्यायमञ्जरी	जयन्तभट्ट	1000 ई0
न्यायनिबन्धप्रकाश	वर्धमान	1225 ई0
न्यायालङ्कार	श्रीकण्ठ	-
न्यायसूत्रोद्धार	वाचस्पतिमिश्र 2	1450 ई0
न्यायरहस्य	रामभद्र	1630 ई0
न्यायसिद्धान्तमाला	जयराम	1700 ई0
न्यायसूत्रवृत्ति	विश्वनाथ	1634 ई0
न्यायसंक्षेप	गोविन्दखन्ना	1640 ई0

केशवमिश्र का परिचय

- केशवमिश्र ने अपने समय तथा स्थान के विषय में कुछ भी नहीं लिखा है।
- सुन्दरलाल गोस्वामी के अनुसार केशवमिश्र मिथिला के **सरिसव** गाँव के निवासी थे तथा अभिनव वाचस्पति के प्रपौत्र थे।
- केशवमिश्र का समय 1000 ई॰ से 1400 ई॰ के मध्य निश्चित किया जा सकता है। लगभग 1300 ई0 के आसपास।
- केशवमिश्र अपने समय के मिथिला के श्रेष्ठ नैयायिकों में अन्यतम हैं।
- इन्होंने '**तर्कभाषा**' नामक प्रकरणग्रन्थ की रचना की है। इसके अतिरिक्त '**अलङ्कारशेखर**' भी केशवमिश्र के नाम से जाना जाता है।

तर्कभाषा का परिचय

- तर्कभाषा के लेखक **केशवमिश्र** हैं।
- तर्कभाषा न्यायदर्शन का एक प्रकरणग्रन्थ है।
- इस समस्त ग्रन्थ की रूपरेखा न्याय के आधार पर बनायी गयी है।
- इसमें न्याय को मुख्यधारा बनाकर सम्मिलित रूप से न्याय-वैशेषिक सम्प्रदाय के मन्तव्यों का निरूपण किया गया है।
- तर्कभाषा में मुख्यरूप से न्याय के 16 पदार्थों का वर्णन किया गया है साथ ही वैशेषिक के 7 पदार्थ , 9 द्रव्य, 24 गुणों का भी विस्तार से विवेचन किया गया है।
- इसके अतिरिक्त वैशेषिक के विशिष्ट मन्तव्यों,जैसे- द्वित्वोत्पत्ति की प्रक्रिया, पाकजोत्पत्ति,विभागज विभाग इनका भी तर्कभाषा में उल्लेख है।
- यह ग्रन्थ तुलनात्मक और आलोचनात्मक भी है, इसे उच्चकोटि का शोधग्रन्थ कहा जा सकता है।
- केशवमिश्र की तर्कभाषा न्याय-वैशेषिक सम्प्रदाय का एक अद्वितीय ग्रन्थ है। यह न्यायवैशेषिक का प्रवेशद्वार है तथा भारतीयदर्शन का प्रदीप है।
- तर्कभाषा की सबसे प्राचीन टीका चिन्नभट्ट (14वीं शताब्दी) की '**तर्कभाषा प्रकाशिका**' है।
- तर्कभाषा पर लगभग 14 टीकायें लिखी गयी हैं।

तर्कभाषा की टीकाएँ	
उज्ज्वला	गोपीनाथ
तत्त्वप्रबोधिनी	गणेशदीक्षित
तर्ककौमुदी	दिनकरभट्ट
तर्कभाषा प्रकाश	गोवर्धन मिश्र
तर्कभाषा प्रकाश	अखण्डानन्द सरस्वती

तर्कभाषा प्रकाशिका	चिन्नम्भट्ट
तर्कभाषा प्रकाशिका	गौरीकान्त
तर्कभाषा प्रकाशिका	बलभद्र
तर्कभाषा प्रकाशिका	वागीशभट्ट
तर्कभाषा सारमञ्जरी	माधवदेव
न्यायप्रदीप	विश्वकर्मा
न्यायसंग्रह	रामलिङ्ग
परिभाषादर्पण	भास्करभट्ट

तर्कभाषा का प्रतिपाद्य विषय-

''बालोऽपि यो न्यायनये प्रवेशम्, अल्पेन वाञ्छन्त्यलसः श्रुतेन।
संक्षिप्तयुक्त्यन्विततर्कभाषा, प्रकाश्यते तस्य कृते मयैषा।।''

➢ जो आलसी बालक भी थोड़े से अध्ययन के द्वारा न्याय के सिद्धान्तों में प्रवेश करना चाहता है,उसके लिए संक्षिप्त युक्तियों से युक्त यह तर्कभाषा मेरे द्वारा प्रकाशित की जा रही है।

➢ तर्कभाषा का प्रयोजन अल्प अध्ययन से ही न्याय के सिद्धान्तों का परिचय कराना तथा विवेकपूर्ण बोध कराना।

''तर्क्यन्ते प्रतिपाद्यन्ते इति तर्काः प्रमाणादयः षोडशपदार्थाः''

इसप्रकार 'तर्क' शब्द का अर्थ प्रमाण आदि षोडश पदार्थ किया गया है।

➢ प्रमाणादि षोडश पदार्थों की व्याख्या करने के कारण इस ग्रन्थ का नाम तर्कभाषा है- **'तर्क्यन्ते प्रतिपाद्यन्ते इति तर्काः (प्रमाणदयः षोडशपदार्थाः) ते भाष्यन्ते अनया इति तर्कभाषा'।**

➢ **षोडश पदार्थ-** प्रमाण-प्रमेय-संशय-प्रयोजन-दृष्टान्त-सिद्धान्त-अवयव-तर्क-निर्णय-वाद-जल्प-वितण्डा-हेत्वाभास-छल-जाति-निग्रहस्थान' ये सोलह पदार्थ हैं।

1. प्रमाण- 'प्रमाकरणं प्रमाणम्' प्रमा का करण प्रमाण है।

2. प्रमेय- जो प्रमा का विषय है वही प्रमेय है।

3. संशय- ''एकस्मिन् धर्मिणि विरुद्धनानार्थावमर्शः संशयः''
एक धर्मी में परस्पर विरुद्ध अनेक धर्मो के अवमर्श (बोध) को संशय कहते हैं। एक ही वस्तु के बारे में परस्पर विरोधी या परस्पर भिन्न विशेषताओं का एक साथ ज्ञान संशय है।

4. प्रयोजन- ''येन प्रयुक्तः प्रवर्तते तत् प्रयोजनम्''
जिससे प्रयुक्त (प्रेरित) होकर मनुष्य किसी कार्य में प्रयुक्त होता है वही, 'प्रयोजन' है। प्रयोजन शब्द की व्युत्पत्ति- 'प्रयुज्यते प्रवर्त्यते अनेन तत् प्रयोजनम्।'
प्रयोजन का अर्थ है- प्रर्वतक।

5. दृष्टान्त- ''वादिप्रतिवादिनोः संप्रतिपत्तिविषयोऽर्थो दृष्टान्तः''
वादी और प्रतिवादी दोनों की सहमति के विषयभूत अर्थ को 'दृष्टान्त' कहते हैं।
दृष्टान्त के दो भेद हैं- साधर्म्य तथा वैधर्म्य।

6. सिद्धान्त -'' प्रामाणिकत्वेनाभ्युपगतोऽर्थः सिद्धान्तः''
जो अर्थ प्रामाणिक रूप से स्वीकृत होता है,उसे सिद्धान्त कहते हैं।
सिद्धान्त के चार भेद हैं -

सिद्धान्त

(i)	(ii)	(iii)	(iv)
सर्वतन्त्र सिद्धान्त	प्रतितन्त्र सिद्धान्त	अधिकरण सिद्धान्त	अभ्युपगम सिद्धान्त
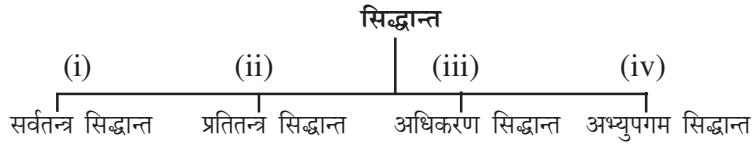
7. अवयव- ''अनुमानवाक्यस्यैकदेशा अवयवाः''
अनुमान वाक्य के एकदेश (अंश) को अवयव कहते हैं।

8. तर्क- '' तर्कोऽनिष्टप्रसङ्गः''
अनिष्ट का प्रसङ्ग (प्राप्ति) होने लगना 'तर्क' है।

9. निर्णय- ''निर्णयोऽवधारणज्ञानम्''
निश्चयात्मक ज्ञान को ही 'निर्णय' कहते हैं।

10.वाद- ''तत्त्वबुभुत्सोः कथा वादः''
तत्त्वज्ञान के इच्छुक वादी-प्रतिवादी की प्रश्नोत्तररूप कथा को 'वाद' कहते हैं।

11. जल्प- ''उभयसाधनवती विजिगीषुकथा जल्पः''
जिस कथा (विचार) में वादी-प्रतिवादी दोनों अपने-अपने पक्षों का साधन, विजय की कामना से करते हैं, उस कथा को 'जल्प' कहते हैं।

- कथा वह वाक्य समूह है जो अनेक वक्ताओं के पूर्वपक्ष और उत्तरपक्ष का प्रतिपादन करता है।
- वाद,जल्प, वितण्डा ये तीन प्रकार की कथाएँ होती हैं

12. वितण्डा- ''स एव स्वपक्षज्ञस्थापनहीनो वितण्डा''
वह (जल्पकथा) ही जब अपने पक्ष की स्थापना से रहित होकर चलती है, उसे वितण्डा कहते हैं।

13. हेत्वाभास- ''तेऽपि कतिपयहेतुरूपयोगाद्धेतुवदाभासमाना हेत्वाभासाः''
असद् हेतु को हेत्वाभास कहते हैं। जो कुछ हेतु रूपों के योग से हेतु के समान आभासित होते हैं 'हेत्वाभास' कहे जाते हैं।

14. छल–'' अभिप्रायान्तरेण प्रयुक्तस्य शब्दस्यार्थान्तरं परिकल्प्य दूषणाभिधानं छलम्''
अन्य अभिप्राय से प्रयुक्त शब्द का अर्थ मानकर दोष दिखलाना 'छल' है।

15.जाति- '' असदुत्तरं जातिः'' अयुक्त या अनुचित उत्तर 'जाति' है।

16. निग्रहस्थान- ''पराजयहेतुः निग्रहस्थानम्''
पराजय (हार) प्राप्त होने में जो निमित्त (कारण) होता है, उसे निग्रहस्थान कहते हैं।

पदार्थ (16)

1.प्रमाण 2.प्रमेय 3.संशय 4.प्रयोजन 5.दृष्टान्त 6.सिद्धान्त
7.अवयव 8. तर्क 9. निर्णय 10. वाद 11. जल्प 12. वितण्डा
13. हेत्वाभास 14.छल 15. जाति 16. निग्रहस्थान

प्रमाण- 'प्रमाकरणं प्रमाणम्' प्रमा का करण प्रमाण है।
प्रमा- 'यथार्थानुभवः प्रमा' यथार्थ अनुभव 'प्रमा' है।
करण- 'साधकतमं करणम्' साधकतम को करण कहते हैं।
कारण का लक्षण- 'यस्य कार्यात् पूर्वभावो नियतोऽनन्यथासिद्धश्च तत्कारणम्' अर्थात् जिसकी सत्ता कार्य से पूर्व निश्चित हो और जो अन्यथासिद्ध (अनावश्यक) न हो उसे कारण कहते हैं। जैसे - तन्तु,वेमा आदि 'पट' के कारण हैं।

- **कारण के तीन प्रकार-** समवायि, असमवायि,निमित्त
- **समवायि कारण-** ''यत्समवेतं कार्यमुत्पद्यते तत्समवायिकारणम्''
जिसमें समवाय सम्बन्ध से कार्य उत्पन्न होता है वह समवायिकारण है जैसे- तन्तु पट का समवायिकारण है।
- **असमवायिकारण-** '' यत्समवायिकारणप्रत्यासन्नमवधृतसामर्थ्यं तदसमवायिकारणम्'' जो समवायि कारण में रहता हो और कार्योत्पादन करने में जिसका सामर्थ्य निश्चित हो वह असमवायिकारण है। जैसे-तन्तुसंयोग पट का असमवायि कारण है।
- **निमित्तकारण-** 'यन्न समवायिकारणं, नाप्यसमवायिकारणम्, अथ च कारणं तन्निमित्तकारणम्' जो न समवायि है और न असमवायि है फिर भी कारण है, उसे निमित्तकारण कहते है। जैसे- वेमा पट का निमित्तकारण है।

कारण (पट के प्रति)

समवायि (तन्तु) | असमवायि (तन्तुसंयोग) | निमित्त (तुरी, वेमा)

प्रमाण - प्रमाण चार प्रकार के होते हैं- 'प्रत्यक्षानुमानोपमानशब्दाः प्रमाणानि'।
प्रत्यक्ष प्रमाण- ''साक्षात्कारिप्रमाकरणं प्रत्यक्षम्''
साक्षात्कारिणी प्रमा के करण को प्रत्यक्ष प्रमाण कहते हैं।

- साक्षात्कारिणी प्रमा दो प्रकार की होती है-(i) सविकल्पक (ii) निर्विकल्पक

➢ साक्षात्कारिणी प्रमा का करण तीन प्रकार का होता है-
(i) कभी इन्द्रिय (ii) कभी इन्द्रिय और अर्थ का सन्निकर्ष (iii) कभी ज्ञान

षोढा सन्निकर्ष-

सन्निकर्ष	इन्द्रिय	विषय
संयोग सन्निकर्ष	चक्षु	घट
संयुक्त समवाय सन्निकर्ष	चक्षु	घटरूप
संयुक्तसमवेत समवाय सन्निकर्ष	चक्षु	घटरूपत्व जाति
समवाय सन्निकर्ष	श्रोत्र	शब्द
समवेत समवाय सन्निकर्ष	श्रोत्र	शब्दत्व
विशेषण- विशेष्यभाव सन्निकर्ष	श्रोत्र	भूतले घटाभाव

अनुमान प्रमाण-'लिङ्गपरामर्शोऽनुमानम्'
लिङ्ग परामर्श को ही अनुमान कहते हैं।

➢ जिससे अनुमिति की जाती है उसे अनुमान कहते हैं। लिङ्ग परामर्श से अनुमिति की जाती है अतः लिङ्गपरामर्श अनुमान है।
लिङ्ग परामर्श- धूमादि का ज्ञान। अग्नि का ज्ञान अनुमिति है और धूमादि का ज्ञान उस अनुमिति का कारण है।
लिङ्ग- 'व्याप्तिबलेनार्थगमकं लिङ्गम्'
व्याप्ति के आधार पर (बल पर) अर्थ का जो बोधक होता है, उसे लिङ्ग कहते हैं। जैसे - 'धूम' अग्नि का लिङ्ग है।

➢ **व्याप्तिः - साहचर्यनियमो व्याप्तिः'** साहचर्य (साथ-साथ रहना) नियम को व्याप्ति कहते हैं। जैसे ''यत्र यत्र धूमः,तत्र तत्र वह्निः'' जहाँ-जहाँ धुआँ है। वहाँ-वहाँ अग्नि है।
परामर्श- 'तस्य तृतीयं ज्ञानं परामर्शः'
उसके (लिङ्ग) के तृतीय ज्ञान को परामर्श कहते हैं।

➢ **अनुमान प्रमाण के प्रकार-** 'तच्चानुमानं द्विविधम् स्वार्थं परार्थं चेति' वह अनुमान दो प्रकार का है- (i) स्वार्थानुमान (ii) परार्थानुमान
(i) **स्वार्थानुमान- '' स्वार्थं स्वप्रतिपत्तिहेतुः ''** अपने ज्ञान (प्रतिपत्ति) का निमित्त स्वार्थानुमान है।
जैसे- कोई व्यक्ति स्वयं ही पाकशाला में धूम और अग्नि को साथ देखकर उनके साहचर्य का निश्चय करके,पर्वत के समीप जाकर धूम रेखा को देखता है तो उसका संस्कार उद्‌बुद्ध हो जाता है और वह 'जहाँ धूम होता है वहाँ अग्नि होती है' इस व्याप्ति का स्मरण करता है तदन्तर यहाँ भी धूम है यह परामर्श करता है उस (लिङ्गपरामर्श) से 'यहाँ पर्वत में भी अग्नि है' इसप्रकार स्वयं ही समझ लेता है। यही स्वार्थानुमान है।

(ii) **परार्थानुमान -**

''यत्तु कश्चित् स्वयं धूमादग्निमनुमाय परं बोधयितुं पञ्चावयवमनुमानवाक्यं प्रयुङ्क्ते तत् परार्थानुमानम्''

जब कोई व्यक्ति स्वयं धूम से अग्नि का अनुमान करके दूसरे को उसका बोध कराने के लिए पाँच अवयव वाले अनुमान वाक्य का प्रयोग करता है, वह परार्थानुमान है। परार्थानुमान के पाँच अवयव हैं-

1. प्रतिज्ञा- पर्वतोऽग्निमान्

2. हेतु- धूमवत्त्वात्

'' तृतीयान्तं पञ्चम्यन्तं वा लिङ्गप्रतिपादकं वचनं हेतुः''

लिङ्ग को बताने वाला तृतीयान्त अथवा पञ्चम्यन्त वाक्य हेतु है।

- हेतु तीन प्रकार का है-1. अन्वयव्यतिरेकी, 2. केवलान्वयी, 3.केवल व्यतिरेकी
- अन्वय और व्यतिरेकी व्याप्ति से युक्त हेतु अन्वयव्यतिरेकी है।

''स चान्वयव्यतिरेकी, अन्वयेन व्यतिरेकेण च व्याप्तिमत्वात्''

- जहाँ-जहाँ धूमवत्व होता है, वहाँ-वहाँ अग्निमत्व होता है- जैसे महानस में यह अन्वयव्याप्ति है।

यत्र-यत्र धूमवत्वं तत्राग्निमत्वं यथा महानसे इत्यन्वयव्याप्तिः'

- जहाँ अग्नि नहीं होती वहाँ धुँआ भी नहीं होता जैसे- जलाशय में। यह व्यतिरेक व्याप्ति है। **'यत्राग्निर्नास्ति तत्र धूमोऽपि नास्ति यथा - महाह्रदे'**
- केवल व्यतिरेक व्याप्ति से युक्त हेतु केवल व्यतिरेकी कहलाता है। यथा- **'जीवच्छरीरं सात्मकं प्राणादिमत्वात्'** जीवित शरीर सात्मक है क्योंकि वह प्राण से युक्त है।
- केवल अन्वयव्याप्ति से युक्त हेतु केवलान्वयी कहलाता है। यथा- शब्दोऽभिधेयः प्रमेयत्वात्। शब्द अभिधेय है प्रमेय होने से

हेतु

अन्वयव्यतिरेकी | केवलान्वयी | केवलव्यतिरेकी

3. उदाहरण- यो यो धूमवान् स सोऽग्निमान्, यथा- महानसः।

4. उपनय- तथा चायम्।

5. निगमन- तस्मात् तथा।

उपमान प्रमाण- ''अतिदेशवाक्यार्थस्मरणसहकृतं गोसादृश्य विशिष्टपिण्डज्ञानमुपमानम्''।

अतिदेश वाक्य (जैसी गाय वैसी नीलगाय) के अर्थ का स्मरण करने के साथ 'गौ की समानता से युक्त पिण्ड (आकृति)का ज्ञान ही 'उपमान प्रमाण' है। जैसे- **'यथा गौस्तथा गवयः'** जैसी गाय वैसे ही नीलगाय

उपमिति- संज्ञासंज्ञिसम्बन्धप्रतीतिरुपमितिः' अर्थात् सञ्ज्ञा और सञ्ज्ञी के सम्बन्ध की प्रतीति उपमिति है।

शब्दप्रमाण- 'आप्तवाक्यं शब्दः' आप्त का वाक्य शब्द प्रमाण है।

आप्त- यथाभूत का अर्थ ही उपदेश करने वाला पुरुष 'आप्त' कहलाता है।

वाक्य- 'वाक्यं त्वाकांक्षायोग्यतासन्निधिमतां पदानां समूहः'

आकांक्षा- योग्यता और सन्निधि से युक्त पदसमूह वाक्य है।

आकांक्षा का अर्थ है- एक पद का दूसरे के बिना अन्वय बोध न करा सकना।

योग्यता का अर्थ है- पदार्थों के पारस्परिक सम्बन्ध में बाधा न होना

सन्निधि का अर्थ है- पदों का अविलम्ब से उच्चारण किया जाना

पद- पदं च वर्णसमूहः - वर्णों का समूह पद है। समूह का अभिप्राय है एक ज्ञान का विषय होना।

नन्वर्थापत्तिः पृथक् प्रमाणमस्ति- अर्थापत्ति को मीमांसक पृथक् प्रमाण मानते हैं किन्तु नैयायिक इसका अन्तर्भाव अनुमान प्रमाण में करते हैं।

अर्थापत्ति -'अनुपपद्यमानार्थदर्शनात् तदुपपादकीभूतार्थान्तराकल्पना अर्थापत्तिः' अनुपपद्यमान अर्थ को जानकर उसके उपपादक अर्थ की कल्पना अर्थापत्ति है।

अभाव - 'अभाव' को भी पृथक् प्रमाण मानते हैं अभाव का ज्ञान जिस प्रमाण से होता है उसे अभाव प्रमाण कहते हैं। जैसे- 'भूतले घटो नास्ति'।

प्रमाण्यवाद

प्रामाण्य का अर्थ 'ज्ञान का सत्य होना' है और अप्रमाण्य का अर्थ 'ज्ञान का असत्य होना' है।

1. बौद्धमत	प्रामाण्य	स्वतः
	अप्रामाण्य	परतः
2. जैनमत	प्रामाण्य और अप्रामाण्य	परतः (उत्पत्ति)
	प्रामाण्य और अप्रामाण्य	स्वतः (ज्ञाप्ति)
3. सांख्यमत	प्रामाण्य और अप्रामाण्य	स्वतः
4. मीमांसामत	प्रामाण्य	स्वतः
	अप्रामाण्य	परतः
5. न्यायवैशेषिक मत	प्रामाण्य और अप्रामाण्य	परतः

- **प्रमेय-** प्रमा का विषय प्रमेय होता है। जिसके 'ज्ञान' से निःश्रेयस् (मोक्ष) की प्राप्ति में सहायता प्राप्त होती है।
- प्रमेय बारह हैं।

प्रमेय (12)

1.आत्मा 2.शरीर 3.इन्द्रिय 4.अर्थ 5.बुद्धि 6.मन 7.प्रवृत्ति

8. दोष 9.प्रेत्यभाव 10फल 11 दुःख 12. अपवर्ग
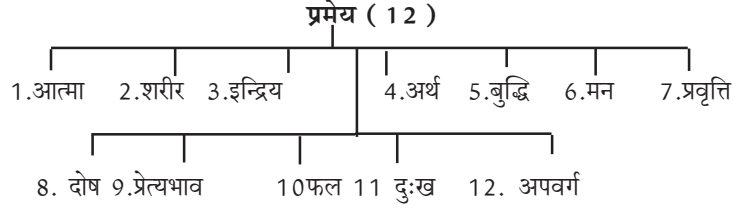
1. आत्मा- 'तत्रात्मत्वसामान्यवानात्मा' आत्मत्व जाति (सामान्य) जिसमें रहती है वह आत्मा है।

- आत्मा देह, इन्द्रिय से भिन्न है, प्रत्येक शरीर में पृथक्-पृथक् है, विभु और नित्य है।
- उस आत्मा का मानस प्रत्यक्ष होता है 'स च मानसप्रत्यक्षः'

2. **शरीर-** 'तस्य भोगायतनमन्त्यावयवि शरीरम्' उस '(आत्मा) के भोग आयतन (आश्रय) अन्त्य अवयवी शरीर है।

- भोग का अर्थ है-सुख दुःख में से किसी एक का प्रत्यक्ष अनुभव।
- 'चेष्टाश्रयो वा शरीरम्' अथवा चेष्टा का आश्रय शरीर है।
- हित की प्राप्ति तथा अहित के परिहार के लिए की जाने वाली क्रिया चेष्टा है।

3. इन्द्रिय- 'शरीरसंयुक्तं ज्ञानकरणमतीन्द्रियम् इन्द्रियम्' शरीर से संयुक्त अतीन्द्रिय का ज्ञान करण 'इन्द्रिय' है।

- **'इन्द्रियाणि षट्-** 'घ्राणरसनाचक्षुस्त्वक्श्रोत्रमनांसि' घ्राण,रसना, चक्षु,त्वक्,श्रोत्र,मन,ये छः इन्द्रियाँ हैं।

ज्ञानेन्द्रिय

1.घ्राण 2.रसना 3.चक्षु 4.त्वक् 5.श्रोत्र 6.मन
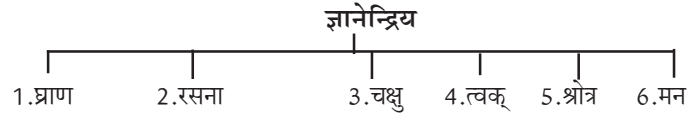
घ्राण- 'गन्धोपलब्धिसाधनमिन्द्रियं घ्राणम्' गन्ध की उपलब्धि का साधन इन्द्रिय घ्राण है। यह नासिका के अग्रभाग में रहती है।

रसना- 'रसोपलब्धिसाधनमिन्द्रियं रसनम्' रस की उपलब्धि का साधन इन्द्रिय रसना है यह जिह्वा के अग्रभाग में रहती है।

चक्षु-'रूपोपलब्धिसाधनमिन्द्रियं चक्षुः' रूप की उपलब्धि का साधन इन्द्रिय चक्षु है। यह नेत्र की काली पुतली में रहती है।

त्वक्- 'स्पर्शोपलब्धिसाधनमिन्द्रियं त्वक्' स्पर्श उपलब्धि का साधन इन्द्रिय त्वक् है। यह सारे शरीर में रहती है।

श्रोत्र- 'शब्दोपलब्धिसाधनमिन्द्रियं श्रोत्रम्' शब्द की उपलब्धि का साधन इन्द्रिय श्रोत्र है। कर्ण के छिद्र में विद्यमान रहती है।

मनस् 'सुखाद्युपलब्धिसाधनमिन्द्रियं मनः' सुख आदि की उपलब्धि का

साधन इन्द्रिय मन है। हृदय के भीतर रहता है।

इन्द्रिय	स्थान
घ्राण इन्द्रिय	नासिका के अग्रभाग में
रसनेन्द्रिय	जिह्वा के अग्रभाग में
चक्षुरिन्द्रिय	नेत्र की काली पुतली में
त्वक् इन्द्रिय	सारे शरीर में
श्रोत्रेन्द्रिय	कर्ण के छिद्र में
मनस् इन्द्रिय	हृदय के भीतर में

अर्थ- ''अर्थाः षड्पदार्थाः'' अर्थ के अन्तर्गत छः पदार्थ आते हैं-

अर्थ नामक प्रमेय के अन्तर्गत गृहीत छः पदार्थ-द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय।

द्रव्य- 'समवायिकारणं द्रव्यम् गुणाश्रयो वा' जो समवायिकारण है अथवा गुण का आश्रय है वह द्रव्य है।

➢ **नौ द्रव्य- 'पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशकालदिगात्ममनांसि नवैव'**
पृथिवी,जल,तेज,वायु,आकाश,काल,दिक्,आत्मा,मन- ये नौ द्रव्य हैं।

➢ **1. पृथिवी- 'पृथिवीत्वसामान्यवती पृथिवी'** नौ द्रव्यों में पृथिवीत्व जाति वाली पृथिवी कहलाती है।

➢ **2. जल- 'अप्त्वसामान्ययुक्ता आपः'** जलत्व जाति से युक्त जल है।
जल रसनेन्द्रिय, शरीर, नदी, हिम, ओला के रूप में है।

➢ **3. तेज- 'तेजस्त्वसामान्यवत् तेजः'** तेजस्त्व सामान्य से युक्त तेज है।
तेज ग्यारह गुणों वाला होता है।

* नित्य तथा अनित्य के भेद से तेज दो प्रकार का होता है।
* अनित्य तेज चार प्रकार का होता है- उदभूतरूपस्पर्श, अनुद्भूतरूपस्पर्श, अनुद्भूतरूपमुद्भूतस्पर्श, उद्भुतरूपमनुद्भूतस्पर्श

➢ **4 वायु-** 'वायुत्वाभिसम्बन्धवान् वायुः' वायुत्व के समवाय सम्बन्ध वाला वायु है।

* वायु नौ गुणों वाला है- स्पर्श, संख्या, परिमाण, पृथक्त्व,संयोग, विभाग,परत्व अपरत्व,तथा वेग।

➢ **5. आकाश-** 'शब्दगुणकमाकाशम्' जिसमें शब्द गुण रहता है उसे आकाश कहते हैं।

* आकाश छः गुणों से युक्त है- शब्द,संख्या,परिमाण,पृथक्त्व,संयोग,विभाग।
* आकाश एक, नित्य और व्यापक है और उसका अनुमापक शब्द है।

➢ **6. काल- 'कालोऽपि दिग्विपरीतपरत्वापरत्वानुमेयः'** दिशा से भिन्न परत्व अपरत्व द्वारा काल का अनुमान किया जाता है।

* काल पाँच गुणों से युक्त होता है - संख्या, परिमाण, पृथक्त्व, संयोग, विभाग।

* काल एक, नित्य तथा विभु है।
- **7. दिक्-** 'दिग् एका नित्या विभ्वी च' दिशा एक, नित्य तथा विभु है।

* संख्या, परिमाण,पृथक्त्व,संयोग,विभाग,नामक,पाँच गुणों वाला है।
- **8. आत्मा- 'आत्मत्वाभिसम्बन्धवान् आत्मा'** आत्मत्व के समवाय सम्बन्ध वाला आत्मा है।
- **9. मन- 'मनस्त्वाभिसम्बन्धवन्मनः'** मनस्त्व जाति के समवाय सम्बन्ध वाला मन है। मन आठ गुणों वाला है- संख्या, परिमाण,पृथक्त्व, संयोग, विभाग, परत्व, अपरत्व संस्कार।
- **गुण- 'सामान्यमान् असमवायिकारणं अस्पन्दात्मा गुणः'** सामान्य से युक्त, असमवायिकारण वाला, कर्मस्वरूप न होने वाले को गुण कहते हैं।

* गुण द्रव्य के आश्रित रहते हैं।
* गुणों की संख्या 24 है-रूप,रस,गन्ध,स्पर्श,संख्या,परिमाण,पृथक्त्व,संयोग, विभाग, परत्व, अपरत्व,गुरुत्व, द्रवत्व, स्नेह, शब्द, बुद्धि, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, धर्म, अधर्म, संस्कार।

1. **रूप-** 'रूपं चक्षुर्मात्रग्राह्यो विशेषगुणः' जो चक्षु से ग्रहण होता है वह रूप नामक गुण है।
2. **रस-**'रसो रसनेन्द्रियग्राह्यो विशेषगुणः' जो रसनेन्द्रिय द्वारा ग्रहण किया जाय वह रस है।
3. **गन्ध-** 'गन्धो घ्राणग्राह्यो विशेषगुणः पृथिवीमात्रवृत्तिः' जिसे घ्राणेन्द्रिय द्वारा ग्रहण किया जाय वह गन्ध नामक गुण है। सुगन्ध तथा दुर्गन्ध के भेद से गन्ध दो प्रकार का है।
4. **स्पर्श-** 'स्पर्शस्त्वगिन्द्रियमात्रग्राह्यो विशेषगुणः' जो त्वक् इन्द्रिय द्वारा ग्रहण करने योग्य है वह स्पर्श नामक गुण है।

- स्पर्श के तीन भेद - शीत,उष्ण,अनुष्णाशीत।
- जल में शीत स्पर्श, तेज में उष्ण स्पर्श, पृथिवी और वायु में अनुष्णाशीत स्पर्श रहता है।

5. **संख्या-** 'संख्या एकत्वादिव्यवहारहेतुः सामान्यगुणः' जो एकत्व आदि व्यवहार का निमित्त होता है वह संख्या नामक विशेष गुण है।
6. **परिमाण-** 'परिमाणं मानव्यवहारासाधारणं कारणम्' माप के व्यवहार का असाधारण कारण परिमाण है।

- परिमाण चार प्रकार का होता है- अणु,महद्,दीर्घ,ह्रस्व।

7. **पृथक्त्व -** 'पृथक्त्वं पृथग्व्यवहारासाधारणं कारणम्' **पृथक्त्व** के व्यवहार का असाधारण कारण पृथक्त्व है। पृथक्त्व दो प्रकार का है- एकपृथक्त्व, द्विपृथक्त्व।
8. **संयोग-** 'संयोगः संयुक्तव्यवहारहेतुर्गुणः' जो संयुक्त व्यवहार का निमित्त गुण होता है

उसे संयोग नामक गुण कहते हैं। संयोग तीन प्रकार का है- अन्यतरकर्मज, उभयकर्मज, संयोगज।

9. **विभाग-**'विभागोऽपि विभक्तप्रत्ययहेतुः' विभक्त प्रतीति का कारण विभाग है। विभाग भी तीन प्रकार का होता है- अन्यतरकर्मज, उभयकर्मज, विभागज।

10. **परत्व तथा अपरत्व-** 'परत्वापरत्वे परापरव्यवहारासाधारणकारणे' पर तथा अपर व्यवहार का असाधारण कारण परत्व तथा अपरत्व है। परत्व तथा अपरत्व दो प्रकार का होता है- दिक्कृत तथा कालकृत।

11. **गुरुत्व-** 'गुरुत्वमाद्यपतनासमवायिकारणम्' प्रथमपतन का असमवायिकारण गुरुत्व है। गुरुत्व पृथिवी तथा जल में रहता है। संयोग, वेग, प्रयत्न के अभाव में गुरुत्व के कारण पतन होता है।

12. **द्रवत्व-**'द्रवत्वमाद्यस्यन्दनासमवायिकारणम्' प्रथम स्पन्दन का असमवायिकारण द्रवत्व है। द्रवत्व-भूमि, तेज और जल में रहता है।

13. **स्नेह-** 'स्नेहश्चिक्कणता जलमात्रवृत्तिः' चिकनापन ही स्नेह है।स्नेह केवल जल में रहता है।

14. **शब्द-** 'शब्दः श्रोत्रग्राह्यो गुणः' जिसका श्रोत्र के द्वारा ग्रहण किया जाता है उसे शब्द नामक गुण कहते है। शब्द आकाश का विशेष गुण है।

15. **बुद्धि-** 'अर्थप्रकाशो बुद्धिः' अर्थ का प्रकाशन बुद्धि है। ईश्वर की बुद्धि नित्य होती है जबकि अन्य की बुद्धि अनित्य होती है।

16. **सुख-** 'प्रीतिः सुखम्'। 'तच्च सर्वात्मनामनुकूलवेदनीयम्' प्रीति को सुख कहते हैं।सुख का समस्त आत्माओं के द्वारा प्रतिकूल रूप में अनुभव किया जाता है।

17. **दुःख-** 'पीडा दुःखम् '। 'तच्च सर्वात्मनां प्रतिकूलवेदनीयम्' पीड़ा का नाम दुःख है। दुःख का समस्त आत्माओं के द्वारा प्रतिकूल रूप में अनुभव किया जाता है।

18. **इच्छा-** 'राग इच्छा' राग को इच्छा कहते हैं।

19. **द्वेष-** 'क्रोधो द्वेषः' क्रोध को द्वेष कहते हैं।

20. **प्रयत्न-** 'उत्साहः प्रयत्नः' उत्साह को प्रयत्न कहा गया है।

21. बुद्धि आदि छः गुणो का मानस प्रत्यक्ष होता है।

22-23. **धर्म तथा अधर्म-** 'धर्माऽधर्मौ सुखदुःखयोरसाधारणकारणे' सुख तथा दुःख के असाधारण कारण धर्म तथा अधर्म हैं।

24. **संस्कार-** 'संस्कारव्यवहाराऽसाधारणं कारणं संस्कारः' संस्कार सम्बन्धी व्यवहार का असाधारण कारण संस्कार है। संस्कार तीन प्रकार का होता है- वेग, भावना तथा स्थितिस्थापक।

द्रव्य (9)

पृथिवी | जल | तेज | वायु | आकाश | काल | दिक् | आत्मा | मन

गुण (24)

रूप रस गन्ध स्पर्श संख्या परिमाण पृथक्त्व संयोग विभाग

परत्व अपरत्व गुरुत्व द्रवत्व स्नेह शब्द बुद्धि सुख दुःख

इच्छा द्वेष प्रयत्न धर्म अधर्म संस्कार
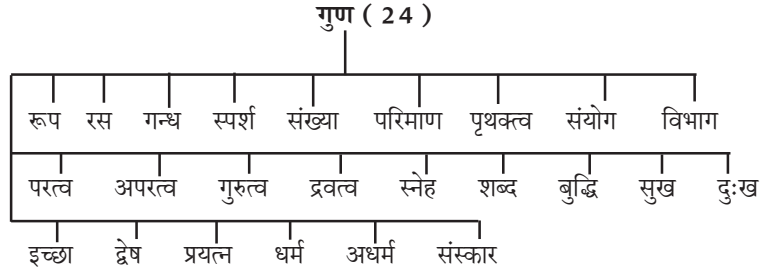
कर्म- 'चलनात्मकं कर्म' कर्म का स्वरूप है क्रिया (चलना,हिलना,गति)

कर्म के पाँच भेद- उत्क्षेपण, अपक्षेपण,आकुञ्चन,प्रसारण,गमन।

- ऊर्ध्वगति उत्क्षेपण,अधोगमन को अपक्षेपण,सिकुड़ना को आकुञ्चन, फैलना को प्रसारण, प्रस्थान करना को गमन कहते हैं।

सामान्य- 'अनुवृत्तिप्रत्ययहेतुः सामान्यम्' समानाकारक प्रतीति का हेतु सामान्य (जाति) है।

विशेष- 'विशेषो नित्यो नित्यद्रव्यवृत्तिः' विशेष नित्य है। यह नित्य द्रव्यों में रहता है।

समवाय- 'अयुतसिद्धः सम्बन्धः समवायः' अयुतसिद्धों (पदार्थों) का सम्बन्ध समवाय है।

अभाव-द्रव्य आदि छः पदार्थों से भिन्न जो पदार्थ है वह अभाव नाम का सातवाँ पदार्थ है।

अभाव दो प्रकार का है- संसर्गाभाव तथा अन्योन्याभाव।

- संसर्गाभाव के तीन भेद हैं - प्रागभाव,प्रध्वंसाभाव तथा अत्यन्ताभाव।

प्रागभाव- 'उत्पत्तेः प्राक् कारणे कार्यस्याभावः प्रागभावः' उत्पत्ति से पूर्व जो कारण में कार्य का अभाव होता है। जैसे- तन्तुषु पटाभावः स चानादिरुत्पत्तेरभावात् अर्थात् तन्तुओं में पट का अभाव प्रागभाव है।

- **प्रध्वंसाभाव- 'उत्पन्नस्य कारणेऽभावः प्रध्वंसाभावः'** उत्पन्न का जो उसके कारण में अभाव होता है उसे प्रध्वंसाभाव कहते हैं।
  जैसे - भग्ने घटे कपालमालायां घटाभावः अर्थात् घट के टूट जाने पर कपालों में घट का अभाव हो जाता है।
- **अत्यन्ताभाव-** 'त्रैकालिकोऽभावोऽत्यन्ताभावः'तीनों कालों में रहने वाला त्रैकालिक अभाव अत्यन्ताभाव है। जैसे- 'वायौ रूपाभावः' वायु में रूप का अभाव
- **अन्योन्याभाव-** 'अन्योन्याभावस्तु तादात्म्यप्रतियोगिताकोऽभावः' अन्योन्याभाव वह अभाव है जिसका प्रतियोगी तादात्म्य अभेद होता है। अथवा जिसका प्रतियोगी तादात्म्य सम्बन्ध से युक्त होता है। जैसे- 'घटः पटः न भवति' अर्थात् घट पट नहीं है।

अभाव
- संसर्गाभाव
  - प्रागभाव
  - प्रध्वंसाभाव
  - अत्यन्ताभाव
- अन्योन्याभाव
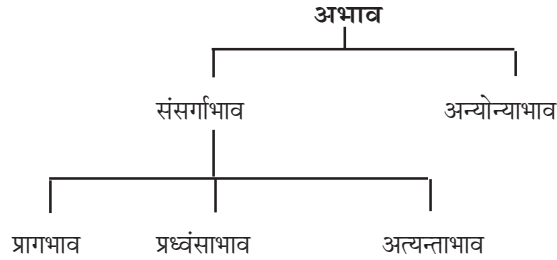
- **5. बुद्धि-** 'अर्थप्रकाशो बुद्धिः' अर्थ का ज्ञान बुद्धि है।
  बुद्धि के दो भेद- अनुभव तथा स्मरण।
- अनुभव दो प्रकार का होता है- यथार्थ अनुभव, अयथार्थ अनुभव
- **यथार्थ अनुभव-** 'यथार्थोऽविसंवादी' अर्थ के विपरीत न होने वाला यथार्थ अनुभव है।
- **अयथार्थ अनुभव-** 'अयथार्थस्तु अर्थव्यभिचारी,अप्रमाणजः' अयथार्थ अनुभव अर्थ का अनुसरण नहीं करता क्योंकि वह प्रमाण से उत्पन्न नहीं होता।
- अयथार्थ अनुभव तीन प्रकार का है- संशय,तर्क, विपर्यय।
- **संशय- 'एकस्मिन् धर्मिणि विरुद्धनानार्थविमर्शः संशयः'** एक धर्मी में अनेक विरुद्ध धर्मों का ज्ञान संशय है।
- संशय तीन प्रकार का है- विशेष का दर्शन न होने पर 1. समान धर्म के दर्शन से उत्पन्न 2. विरुद्धार्थप्रतिपादक वचनों से उत्पन्न 3. असाधारण धर्म के दर्शन से उत्पन्न।
- **तर्क-** 'तर्कोऽनिष्टप्रसङ्गः' अनिष्ट की प्राप्ति होने लगना तर्क है।
- **विपर्यय- 'विपर्ययस्तु अतस्मिंस्तद्ग्रहः'**अन्य वस्तु में उस वस्तु का ज्ञान विपर्यय अर्थात् भ्रम है। जैसे- **'शुक्तिकादौ रजतारोपः इदं रजतम्'** रजत से भिन्न सीपी आदि में रजत का भान होना विपर्यय है।
- **स्मरण -** स्मरण दो प्रकार का होता है - यथार्थ स्मरण तथा अयथार्थ स्मरण

बुद्धि
- अनुभव
  - यथार्थानुभव
  - अयथार्थानुभव
    - संशय
    - विपर्यय
    - तर्क
- स्मरण
  - यथार्थ स्मरण
  - अयथार्थ स्मरण
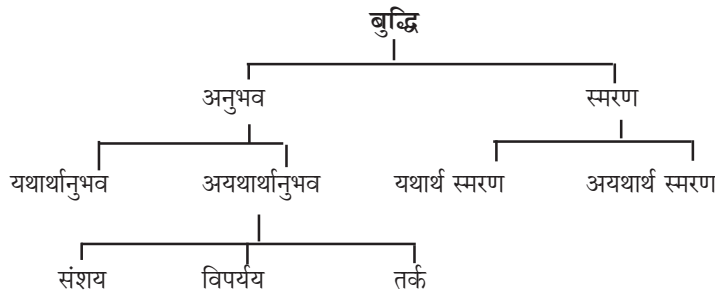
6. मन- 'अन्तरिन्द्रियं मनः' आन्तरिक इन्द्रिय (अन्तःकरण) मन है।

7.प्रवृत्ति- 'प्रवृत्तिः धर्माऽधर्ममयी वागादिक्रिया' धर्म- अधर्म का जनक वाणी आदि का कर्म ही प्रवृत्ति है।

8. दोष- 'दोषा रागद्वेष मोहाः' राग (इच्छा), द्वेष (मन्यु या क्रोध), मोह (मिथ्याज्ञान या विपर्यय) दोष हैं।

9. प्रेत्यभाव- 'पुनरुत्पत्तिः प्रेत्यभावः' पुनः उत्पन्न होना प्रेत्यभाव है।

10. फल- 'फलं पुनर्भोगः सुखदुःखान्यतरसाक्षात्कारः' सुख अथवा दुःख में से किसी एक के अनुभव रूप भोग को फल कहते हैं।

11. दुःख- ' पीडा दःुखम्' पीड़ा को दुःख कहते हैं यह जीवात्मा का विशेष गुण है जिसकी उत्पत्ति पाप (अधर्म) से होती है।

12. अपवर्ग- 'मोक्षोऽपवर्गः' मोक्ष को अपवर्ग कहते हैं।

- मोक्ष का अर्थ है - इक्कीस प्रकार के दुःखों की आत्यन्तिक निवृत्ति।
- दुःखों के इक्कीस भेद - शरीर,षट्इन्द्रिय,षट्विषय,षट्ज्ञान (बुद्धि) सुख,दुःख।

अवयव- 'अनुमानवाक्यस्यैकदेशा अवयवाः' अनुमान वाक्य के अंश अवयव कहलाते हैं।

इनके पाँच भेद हैं- प्रतिज्ञा, हेतु,उदाहरण,उपनय,निगमन

अवयव (5)

1 प्रतिज्ञा
2 हेतु
3 उदाहरण
4 उपनय
5 निगमन
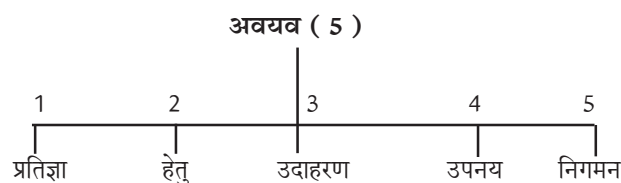
हेत्वाभास

- असद् हेतु को हेत्वाभास कहते हैं,जो हेतु नहीं होता किन्तु हेतु के समान भासित होता है। हेत्वाभास शब्द के दो अर्थ हैं- 1. हेतु का दोष 2. दुष्ट हेतु

1. हेतु का दोष- 'आभासते इत्याभासः हेतोराभासः हेत्वाभासः'
जिसके ज्ञान से अनुमिति के कारण अथवा साक्षात् अनुमिति ही प्रतिबन्ध हो जाता है, वह हेत्वाभास या हेतुदोष कहलाता है।

2. दुष्ट हेतु- 'हेतुवद् आभासते इति हेत्वाभासः' जो हेतु के समान भासित होता है वस्तुतः दोष युक्त होने के कारण हेतु नहीं होता है हेत्वाभास कहलाता है।

- हेतु के पाँच रूप- पक्षसत्त्व, सपक्षसत्त्व, विपक्षव्यावृत्तत्व, अबाधितविषयत्व,असत्प्रतिपक्षत्व
- **'उक्तानां पक्षधर्मत्वादिरूपाणां मध्ये येन केनापि रूपेणहीना अहेतवः'**
अर्थात् पक्षधर्मता पक्षसत्त्व आदि हेतु के पाँच रूपों में से किसी एक रूप से भी रहित हेतु अहेतु है।

- हेत्वाभास की संख्या पाँच है- असिद्ध, विरुद्ध, अनैकान्तिक, प्रकरणसम, कालात्ययापदिष्ट।
- **1. असिद्ध हेत्वाभास- 'लिङ्गत्वेनानिश्चितोहेतुरसिद्धः'** लिङ्ग के रूप में निश्चित न होने वाला हेतु असिद्ध हेत्वाभास।
- असिद्ध हेत्वाभास के तीन भेद- आश्रयासिद्ध,स्वरूपासिद्ध,व्याप्यत्त्वासिद्ध
- **आश्रयासिद्ध हेत्वाभास- 'यस्य हेतोराश्रयो नावगम्यते स आश्रयासिद्धः'** जिस हेतु के आश्रय का ही अभाव होता है उसे आश्रयासिद्ध हेत्वाभास कहते हैं। जैसे- गगनारविन्दं सुरभि,अरविन्दत्वात् सरोजारविन्दवत्।
- **स्वरूपासिद्ध हेत्त्वाभास- 'यो हेतुराश्रये नावगम्यते'** जो हेतु आश्रय में सिद्ध नहीं होता है उसे स्वरूपासिद्ध हेत्त्वाभास कहते हैं।
  जैसे- 'अनित्यः शब्दः चाक्षुषत्त्वात् घटवत्।'
- **व्याप्यत्त्वासिद्ध- 'यत्र हेतोर्व्याप्तिर्नावगम्यते'** जहाँ हेतु में व्याप्ति सिद्ध नहीं होती है वह व्याप्यत्त्वासिद्ध हेत्वाभास होता है।
  व्याप्यत्त्वासिद्ध दो का प्रकार है एक साध्य के साथ सहचर न रहने वाला तथा दूसरा उपाधियुक्त साध्य से सम्बन्ध रखने वाला। जैसे- शब्दः क्षणिकः सत्त्वात् तथा क्रत्त्वन्तवर्तिनी हिंसा अधर्मसाधनं, हिंसात्त्वात् क्रतुबाह्यहिंसावत्।

असिद्ध हेत्वाभास के तीन भेद

आश्रयासिद्ध	स्वरूपासिद्ध	व्याप्यत्त्वासिद्ध
(गगनारविन्दम् सुरभि, अरविन्दत्वात् सरोजारविन्दवत्)	(अनित्यः शब्दः, चाक्षुषत्त्वात् घटवत्)	(शब्दः क्षणिकः सत्त्वात् क्रत्त्वन्तवर्तिनी हिंसा अधर्मसाधनं, हिंसात्त्वात् क्रतुबाह्यहिंसावत्)

2. विरुद्ध हेत्वाभास- 'साध्यविपर्ययव्याप्तो हेतुर्विरुद्धः' साध्य के अभाव से व्याप्त हेतु विरुद्ध हेत्वाभास कहलाता है।
जैसे- **'शब्दो नित्यः कृतकत्वादात्मवत्'**

3. अनैकान्तिक हेत्वाभास - 'सव्यभिचारोऽनैकान्तिकः' सव्यभिचार हेतु अनैकान्तिक हेत्वाभास है।

- अनैकान्तिक हेत्वाभास के दो भेद- 1. साधारण अनैकान्तिक 2. असाधारण अनैकान्तिक
- **साधारण अनैकान्तिक-** 'पक्षसपक्षविपक्षवृत्तिः साधारणः' पक्ष,सपक्ष तथा विपक्ष में रहने वाला साधारण अनैकान्तिक है। जैसे- शब्दो नित्यः प्रमेयत्त्वात् व्योमवत्।
- **आसाधारण अनैकान्तिक- 'सपक्षाद् विपक्षाद् व्यावृत्तो यः पक्ष एव वर्तते सोऽसाधारणानैकान्तिकः'** जो सपक्ष तथा विपक्ष में नहीं रहता केवल पक्ष में ही रहता है वह असाधारण अनैकान्तिक है।
  जैसे- भूर्नित्या गन्धवत्त्वात्।

अनैकान्तिक हेत्वाभास के दो भेद

साधारण अनैकान्तिक (शब्दो नित्यः प्रमेयत्त्वात् व्योमवत्)

असाधारण अनैकान्तिक (भूर्नित्या गन्धवत्त्वात्)

- **4. प्रकरणसम हेत्वाभास - 'यस्य हेतोः साध्यविपरीतसाधकं हेत्वन्तरं विद्यते'** जिस हेतु के साध्य के विपरीत अर्थ का दूसरा हेतु विद्यमान होता है वह प्रकरणसम हेत्वाभास हैं। जैसे- **शब्दोऽनित्यो नित्यधर्मरहितत्त्वात्।**
- प्रकरणसम हेत्वाभास को सत्प्रतिपक्ष भी कहते हैं।
- **5. बाधितविषय या कालात्ययापदिष्ट-** 'प्रमाणान्तरावधृतसाध्याभावो हेतुर्बाधितविषयः कालात्ययापदिष्ट' अथवा प्रत्यक्षादिप्रमाणेन पक्षे 'साध्याभावः परिच्छिन्नः स कालात्ययापदिष्टः' प्रत्यक्षादि प्रमाण के द्वारा पक्ष में जिस हेतु के साध्य का अभाव निश्चित कर लिया जाता है वह 'कालात्ययापदिष्ट' है इसे 'बाधितविषय' भी कहा जाता है।
  जैसे- **अग्निरनुष्णः कृतकत्त्वाज्जलवत्।**

हेत्वाभास के पाँच भेद

1. असिद्ध हेत्वाभास — आश्रयासिद्ध, स्वरूपासिद्ध, व्याप्यत्वासिद्ध
2. विरुद्ध हेत्वाभास
3. अनैकान्तिक हेत्वाभास
4. प्रकरणसम हेत्वाभास
5. बाधितविषय या कालात्ययापदिष्ट हेत्वाभास — साधारण, असाधारण

❑❑
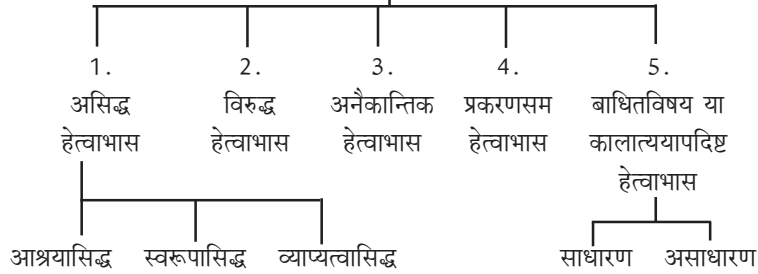
4. तर्कसंग्रह

अन्नम्भट्ट कृत तर्कसंग्रह

- न्यायदर्शन का समानतन्त्र वैशेषिक दर्शन है।
- वैशेषिक दर्शन के प्रवर्तक **महर्षि कणाद** हैं इन्हें काश्यप, उलूक, पैलुक एवं औलूकाय भी कहा जाता है।
- इस दर्शन का वैशेषिकदर्शन नाम इसलिए पड़ा क्योंकि यह 'विशेष' नामक पदार्थ को मानता है। इस दर्शन को **काणाद, काश्यपीय, औलूक्य एवं पैलुकदर्शन** के नाम से भी जानते हैं। विशिष्यते सर्वतः व्यवच्छिद्यते येन सः विशेषः।
  (1) विशेषाभ्याम् (चतुर्थी द्विव0) व्यवच्छेदकाभ्यां साधर्म्यवैधर्म्याभ्यां प्रभवति इति वैशेषिकम्
  (2) विशेषाभ्याम् (तृतीया द्विव0) व्यवहरति इति वैशेषिकं दर्शनम्।
- तर्कसंग्रहकार अन्नम्भट्ट कणाद को आदर पूर्वक स्मरण करते हैं -
  ''**काणादन्यायमतयोर्बालव्युत्पत्तिसिद्धये**''
- पद्मपुराण में भी कणाद का उल्लेख है - ''**कणादेन तु सम्प्रोक्तं शास्त्रं वैशेषिकं महत्**''
- अन्यत्र भी इनका उल्लेख प्राप्त होता है- ''**काणादं पाणिनीयं च सर्वशास्त्रोपकारकम्**''
- **माधवाचार्य** ने अपने **सर्वदर्शनसंग्रह** में वैशेषिकदर्शन के लिए 'औलूक्यदर्शन' शब्द का ही प्रयोग किया है।
- कणादविरचित '**वैशेषिकसूत्र**' में **370 सूत्र** एवं **दस अध्याय** हैं। प्रत्येक अध्याय में दो -दो आह्निक हैं, इसप्रकार कुल 20 आह्निक हैं।
- वैशेषिकदर्शन **न्याय से पूर्ववर्ती** माना जाता है।
- इस दर्शन का प्रमुख लक्ष्य धर्म की व्याख्या करना है ''अथातो धर्मं व्याख्यास्यामः'' इस दर्शन में धर्म की एक विशेष परिभाषा की गयी है- ''यतोऽभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः स धर्मः '' अर्थात् जिससे इहलौकिक व पारलौकिक सुख की प्राप्ति हो, वही धर्म है।
- वैशेषिकदर्शन की मान्यता है कि अन्यान्य पदार्थों में पाया जाने वाला समान गुण उसका सामान्य कहलाता है, तथा वह विशिष्ट सत्ता जो एक वस्तु को अन्य वस्तुओं

से पृथक् करे विशेष कहलाती है, वस्तुतः पदार्थों का अन्तिम अवशिष्ट अंश ही उसका विशेष है। ' अन्त्यावशेषः विशेषः'

- वैशेषिकों का विशेष सिद्धान्त है-परमाणुकारणवाद।

वैशेषिक दर्शन के प्रमुख आचार्य

1. कणाद- इनके जीवन के सम्बन्ध में कुछ विशेष जानकारी उपलब्ध नहीं है फिर भी कुछ ग्रन्थों में इनके विषय में निम्न तथ्य प्राप्त होते हैं-

- वायुपुराण में इन्हें प्रभासनिवासी सोमशर्मा का शिष्य और शिव का अवतार बताया गया है।
- किरणावली में उदयनाचार्य ने इन्हें कश्यप मुनि का पुत्र बताया है। त्रिकाण्डकोश में इनके अन्य नाम 'काश्यप' का उल्लेख है।
- पृथ्वी पर गिरे हुए कणों अर्थात् दानों के द्वारा अपना जीवन यापन करने के कारण इन्हें 'कणाद' (कण+ आद) कहा जाता है।
- ''कणान् अत्ति इति कणादः'' इसीकारण इन्हें 'कणभुक्', 'कणभक्ष' तथा 'कणव्रत' भी कहा जाता है।
- **समय** -कुछ विद्वान् इनका समय 150 ईसापूर्व तथा कुछ 400 ईसापूर्व मानते हैं।

2. प्रशस्तपाद- महर्षि कणाद के वैशेषिकसूत्रों के क्रम को अपने अनुसार क्रमबद्ध करके एक स्वतन्त्र ग्रन्थ की रचना की, जिसका नाम ''**पदार्थधर्मसंग्रह**'' रखा।
प्रणम्यहेतुमीश्वरं मुनिं कणादमन्वतः।
प्रवक्ष्यते महादेयः पदार्थधर्मसंग्रहः।। (प्रशस्तपादभाष्य)

- यही '**पदार्थधर्मसंग्रह**' आज '**वैशेषिकभाष्य**' एवं '**प्रशस्तपादभाष्य**' के नाम से प्रसिद्ध है।
- इसे उपलब्ध वैशेषिक भाष्यसाहित्य में प्रथम एवं प्रामाणिक भाष्य कहा जा सकता है।
- इसकी मौलिक शैली के कारण कुछ विद्वान् इसे वैशेषिक सूत्रों का भाष्य न मानकर इसे स्वतन्त्र एवं मौलिकग्रन्थ मानते हैं।
- इसे वैशेषिक दर्शन का प्रवेशद्वार माना जाता है।
- प्रशस्तपाद के समय के विषय में विद्वानों में मतभेद है,कुछ लोग चतुर्थ शताब्दी तथा कुछ विद्वान् पाँचवीं शताब्दी में इनका समय मानते हैं।

प्रशस्तपादभाष्य के टीका ग्रन्थ

टीका	टीकाकार	समय
* व्योमवती (व्योमशिव / व्योमकेशी)	व्योमशिवाचार्य	980 ई0
* किरणावली	उदयनाचार्य	984 ई0
* न्यायकन्दली	श्रीधराचार्य	991 ई0

* लीलावती	श्रीवत्साचार्य	1025 ई0
* सूक्ति	श्रीजगदीशतर्कालङ्कार	1590 ई0
* सेतु	आचार्य पद्मनाभमिश्र	16वीं शताब्दी उत्तरार्ध
* भाष्यनिकष	आचार्य कोलाचल मल्लिनाथ	1850 ई0
* कणादरहस्य	आचार्य शङ्कर मिश्र	

3. शिवादित्य मिश्र - इनके तीन ग्रन्थ प्रसिद्ध हैं-

(1) सप्तपदार्थी (2) लक्षणमाला (3) हेतुखण्डन

समय- 975 ई0 से 1025 ई0 के मध्य।

4. वल्लभाचार्य - मिथिला के निवासी।
- समय 12 वीं शताब्दी।
- ग्रन्थ- न्यायलीलावती।

न्यायलीलावती की टीकायें

टीका	टीकाकार	समय
* न्यायलीलावती-प्रकाश	पं0वर्धमानोपाध्याय	1250 ई0
* न्यायलीलावती-विवेक	पक्षधर मिश्र	1275 ई0
* न्यायलीलावती-कण्ठाभरण	शङ्कर मिश्र	1450 ई0
* न्यायलीलावती-वर्धमानेन्दु	अभिनव वाचस्पति	1450 ई0
* न्यायलीलावती-विभूति	रघुनाथ शिरोमणि	1547 ई0
* न्यायलीलावती-रहस्य	मथुरानाथ तर्कवागीश	1580 ई0
* न्यायलीलावती-प्रकाश	श्रीरामकृष्णभट्टाचार्य	1570 ई0

अन्नम्भट्ट का परिचय

- अन्नम्भट्ट सोमयाजी तिरुमलाचार्य के पुत्र थे।
- इनका जन्म आन्ध्रप्रदेश के गरिकापाद नामक स्थान पर हुआ था।
- ये तैलङ्ग ब्राह्मण थे।
- समय - 17 वीं शताब्दी
- अग्रज का नाम रामकृष्णभट्ट
- आज भी कृष्णा नदी के तट पर चित्तूर के समीप के रावपुर गाँव में अन्नम्भट्टगोत्रीय ऋग्वेदीय ब्राह्मण रहते हैं।
- कुछ विद्वान् अन्नम्भट्ट को कर्नाटकदेशीय भी मानते हैं।
- ऐसी मान्यता है कि अन्नम्भट्ट ने काशी में अध्ययन किया था इससे सम्बद्ध एक मुहावरा संस्कृतजगत् में प्रसिद्ध है कि-**'काशीगमनमात्रेण नान्नम्भट्टायते द्विजः'** अर्थात् काशी में जाने मात्र से ही कोई अन्नम्भट्ट नहीं बन जाता। इस कथन से उनके

वैदुष्य तथा विलक्षण प्रतिभा का सङ्केत मिलता है।

- अन्नम्भट्ट न्याय एवं वैशेषिक के साथ-साथ वेदान्त एवं व्याकरणशास्त्र के भी प्रकाण्डपण्डित थे।

रचनायें -

- तर्कसंग्रह (न्याय वैशेषिक का प्रकरण ग्रन्थ)
- दीपिका टीका (तर्कसंग्रह के ऊपर लिखी गयी टीका)
- जयदेव के तत्त्वचिन्तामण्यालोक ग्रन्थ पर 'सिद्धाञ्जन' टीका
- ब्रह्मसूत्र पर 'मिताक्षरा' टीका
- उदयनाचार्य विरचित न्यायपरिशिष्ट पर 'प्रकाश' टीका
- तन्त्रवार्तिक पर 'सुबोधिनी सुधासार' टीका
- अष्टाध्यायी पर 'मिताक्षरा' टीका
- कात्यायन के शुक्लयजुर्वेदप्रातिशाख्य पर भाष्य।

तर्कसंग्रह का परिचय

- तर्क्यन्ते प्रतिपाद्यन्ते इति तर्काः। 'तर्काणां संग्रहः इति तर्कसंग्रहः' इस ग्रन्थ में द्रव्यादि सप्त पदार्थों का प्रमाणपूर्वक संग्रह किया गया है, अतः इसे तर्कसंग्रह कहा गया है।
- जिसके द्वारा प्रमेय पदार्थों का ज्ञान प्राप्त किया जाय, वह तर्क अथवा प्रमाण ही तर्कसंग्रह है - 'तर्क्यते अनेन इति तर्कः प्रमाणम्।'
- तर्कसंग्रह के मंगलाचरण में ही अन्नम्भट्ट ने कहा है कि- **''बालानां सुखबोधाय क्रियते तर्कसंग्रहः''** अर्थात् बच्चों के समझाने के लिए, वैशेषिकदर्शन में सहज रूप से प्रवेश कराने के लिए इस विषय के जिज्ञासु बालबुद्धि लोगों के लिए इस ग्रन्थ का प्रणयन किया जा रहा है।
- अन्नम्भट्ट विरचित तर्कसंग्रह न्यायवैशेषिक दर्शन का प्रवेशद्वार है
- दार्शनिक दृष्टि से **तर्कसंग्रह वैशेषिक-प्रधान प्रकरणग्रन्थ है।**
- यह ग्रन्थ न्याय-वैशेषिक विचारधारा की गीता है अन्नम्भट्ट की यह कृति **'बालगादाधरी'** कहलाती है।

तर्कसंग्रह की कुछ प्रसिद्ध टीकायें

1. तर्कदीपिका	-	अन्नम्भट्ट
2. तर्कसंग्रह चन्द्रिका	-	मुकुन्दभट्ट गाडगिल
3. सिद्धान्तचन्द्रोदय	-	कृष्णधूर्जटि दीक्षित
4. तर्कसंग्रह टीका	-	श्री अनन्त नारायण
5. तर्कसंग्रह टीका	-	गौरीकान्त
6. तर्कसंग्रह टीका	-	रमानाथ
7. तर्कसंग्रह टीका	-	विश्वनाथ

8. तर्कसंग्रह तत्त्वप्रकाश (नीलकण्ठी)-		नीलकण्ठ
9. तर्कसंग्रह तरंगिणी	-	विन्ध्येश्वरी प्रसाद
10. तर्कसंग्रह वाक्यार्थ	-	मध्वगोविन्द हरबल
11. तर्कसंग्रह व्याख्या	-	मुरारि
12. निरुक्ति	-	जगन्नाथ शास्त्री
13. न्यायचन्द्रिका	-	केशवभट्ट
14. न्यायबोधिनी	-	गोवर्धन
15. न्यायबोधिनी	-	रत्ननाथ शुक्ल
16. न्यायार्थलघुबोधिनी	-	गोवर्धन रंगाचार्य
17. पदकृत्य	-	चन्द्रजसिंह (बुध सिंह)
18. बालप्रबोधिनी	-	रामनारायण
19. भाष्यवृत्ति	-	मेरुशास्त्री
20. तर्कचन्द्रिका या प्रभा	-	वैद्यनाथ गाडगिल
21. हनुमती	-	व्यासपुत्र हनुमान्
22. भास्करोदया	-	लक्ष्मी नृसिंह
23. तर्कसंग्रह टिप्पणी	-	पट्टाभिराम

तर्कसंग्रह का मङ्गलाचरण

निधाय हृदि विश्वेशं विधाय गुरुवन्दनम्।
बालानां सुखबोधाय क्रियते तर्कसंग्रहः।।

- विश्व के स्वामी अर्थात् भगवान् शिव को हृदय में रखकर तथा गुरु की वन्दना करके बालकों को सुखपूर्वक ज्ञान कराने के लिए मेरे अन्नम्भट्ट के द्वारा तर्कसंग्रह की रचना की जा रही है।
- 'ग्रन्थस्य निर्विघ्नपरिसमाप्त्यर्थम् यह मङ्गलाचरण किया गया।
- इसमें भगवान् शिव तथा गुरु की वन्दना होने से नमस्कारात्मक मङ्गलाचरण के साथ-साथ वस्तुनिर्देश भी किया गया है।
- इस मङ्गलाचरण में चार प्रकार के अनुबन्धों का भी निर्देश किया गया है, क्योंकि 'सम्बन्धश्चाधिकारी च विषयश्च प्रयोजनम्। विनानुबन्धं ग्रन्थादौ मङ्गलं नैव शस्यते।।

तर्कसंग्रह के अनुबन्ध चतुष्टय

(1) **अधिकारी-** बाल अर्थात् जिसने न्यायशास्त्र का अध्ययन नहीं किया है
(2) **विषय-** तर्क अर्थात सप्तपदार्थों का संक्षिप्त स्वरूपकथन
(3) **सम्बन्ध-** प्रतिपाद्य प्रतिपादकभाव अर्थात् प्रतिपाद्य पदार्थ तथा प्रतिपादक ग्रन्थ तर्कसंग्रह।
(4) **प्रयोजन-** सुखबोधाय अर्थात् सफलतापूर्वक ज्ञान की प्राप्ति

वैशेषिक दर्शन के सात पदार्थ

सप्त पदार्थ- द्रव्य-गुण- कर्म-सामान्य -विशेष- समवाय- अभावाः सप्त पदार्थाः पद+ अर्थः = पदार्थः। पदस्य अर्थः = पदार्थः। इसप्रकार कोई भी इन्द्रियग्राह्य विषय जिसे कोई नाम दिया जा सके पदार्थ कहलाता है।

- पदार्थ से अभिप्राय है- न्यायवैशेषिक दर्शन द्वारा स्वीकृत संसार के मूलभूत घटक जिनके आधार पर समस्त संसार के स्वरूप एवं स्वभाव की व्याख्या की जा सकती है।
- इसप्रकार दार्शनिक परम्परा में अद्वैतवेदान्त एकत्ववादी है तो सांख्य द्वैतवादी तो न्यायवैशेषिक सात मूल तत्त्वों को मानने के कारण बहुत्ववादी।
- अन्नम्भट्ट ने तर्कसंग्रह दीपिका टीका में पदार्थ का लक्षण दिया है पदस्यार्थः पदार्थः इति व्युत्पत्त्या अभिधेयत्वं पदार्थसामान्यलक्षणम् यहाँ 'अभिधेय' से तात्पर्य है - जिसका नाम दिया सके। संसार में ऐसी कोई वस्तु या पद नहीं है जिसका कोई नाम न दिया जा सके।
- शिवादित्य 'सप्तपदार्थी ' नामक ग्रन्थ में कहते हैं- ''प्रमितिविषयाः पदार्थाः '' अर्थात् जो कुछ भी ज्ञान का विषय हो सकता है, वह पदार्थ है।

तर्कसंग्रह में अन्नम्भट्ट ने सात पदार्थ बतायें है-

1. द्रव्य (Substance) 2. गुण (Quality) 3. कर्म (Action)
4. सामान्य (Universal) 5. विशेष (Particularity)
6. समवाय (Inherence) 7. अभाव (Non-existence)

- महर्षि कणाद एवं वैशेषिकसूत्रों के भाष्यकार प्रशस्तपाद ने प्रारम्भ में वैशेषिक दर्शन के छः पदार्थों का उल्लेख किया है।
- बाद में शिवादित्य, श्रीधर, उदयनाचार्य, व्योमशिव, अन्नम्भट्ट आदि परवर्ती वैशेषिकाचार्यों ने एक सातवें पदार्थ अभाव को भी जोड़ा।
- वैशेषिकदर्शन के समानतन्त्र न्यायदर्शन में तार्किक प्रक्रिया की दृष्टि से 16 पदार्थ बताये गये हैं। यथा- प्रमाण, प्रमेय, संशय, प्रयोजन, दृष्टान्त, सिद्धान्त, अवयव, तर्क, निर्णय, वाद, जल्प, वितण्डा, हेत्वाभास, छल, जाति तथा निग्रहस्थान। न्यायदर्शन के इन सोलहों पदार्थों को वैशेषिक के सात पदार्थों में अन्तर्भूत माना जाता है।

वैशेषिक दर्शन का प्रथम पदार्थ- द्रव्य

- **द्रव्य –** तर्कसंग्रह में द्रव्य का कोई लक्षण नहीं किया गया है किन्तु अन्नम्भट्ट ने तर्कसंग्रह की दीपिका टीका में द्रव्य का लक्षण करते हैं- **''द्रव्यत्वजातिमत्त्वं गुणवत्त्वं वा द्रव्यसामान्यलक्षणम्''** द्रव्य, द्रव्यत्वजाति से युक्त तथा गुणवान् होता है।
- तर्कसंग्रह की 'पदकृत्य' टीका में द्रव्य को 'कार्यमात्र समवायिकारण' कहा गया है- **''द्रव्यत्वं जातिमत्त्वं समवायिकारणत्वं वा द्रव्यसामान्यलक्षणम्''**
- वैशेषिक सूत्र में महर्षि कणाद ने द्रव्य को क्रिया गुण से युक्त एवं समवायिकारण कहा है।

''**क्रियागुणवत्समवायिकारणमिति द्रव्यलक्षणम्**'' (वैशेषिकसूत्र- 1.1.15)

- इसप्रकार द्रव्य की कुल चार परिभाषायें की जा सकती हैं- **1. क्रियावद् द्रव्यम् -** अर्थात् द्रव्य कर्मों का आश्रय है। **2. गुणवद् द्रव्यम् -** अर्थात् गुण का आश्रय द्रव्य है। **3. द्रव्यत्वजातिमत्त्वं द्रव्यम्-**अर्थात् द्रव्यत्व जाति से युक्त द्रव्य है। **4. समवायिकारणं द्रव्यम् -** अर्थात् द्रव्य समवायिकारण है।
- दर्शनाचार्यों की दृष्टि में प्रथम तीन लक्षण सदोष तथा अन्तिम निर्दुष्ट लक्षण है।
- केवल द्रव्य ही समवायिकारण होता है, अन्य पदार्थ नहीं।
- सामान्यतः गुण एवं कर्म का आश्रय द्रव्य माना जाता है।

वैशेषिक दर्शन के नौ द्रव्य

- ''**तत्र द्रव्याणि पृथिव्यप्ततेजोवाय्वाकाशकालदिगात्ममनांसि नवैव**'' उन सात पदार्थों में जो प्रथम पदार्थ द्रव्य है, वे नौ ही होते हैं- 1.पृथिवी 2. अप् (जल) 3. तेज 4. वायु 5. आकाश 6. काल 7. दिक् (दिशा) 8. आत्मा 9. मन।
- इन गुणों में प्रथम पाँच गुण भौतिक पदार्थ हैं। दिक् एवं काल अर्धभौतिक द्रव्य हैं। आत्मा और मन नितान्त अभौतिक पदार्थ हैं।
- सभी नौ द्रव्यों में पृथिवी, अप्, तेज, वायु और मन ये ऐसे द्रव्य है जिनमें गुण और क्रिया दोनों रहते हैं, शेष चार द्रव्य केवल गुणवान् हैं।
- प्रभाकर मीमांसक भी वैशेषिक की भाँति इन्हीं नौ द्रव्यों को मानते हैं।
- कुमारिलभट्ट ने द्रव्यों की संख्या 11 मानी है, इसी क्रम में कुमारिलभट्ट ने 'तम' नामक दशम द्रव्य की कल्पना की।
- वैशेषिक दर्शन का मुख्य लक्ष्य बाह्यार्थवाद की स्थापना है। इसीलिए बाह्य जगत् के पदार्थों में सर्वप्रथम द्रव्य को मानना आवश्यक है।

नौ द्रव्यों में प्रथम द्रव्य- पृथिवी

- (i) **पृथिवी** ''गन्धवती पृथिवी '' गन्धवती पृथिवी है

पृथिवी ''गन्धवती पृथिवी''

द्विविधा

नित्या (परमाणुरूपा) | अनित्या (कार्यरूपा)

पुनः सा पृथिवी त्रिविधा

शरीर (हम लोगों का पार्थिव शरीर) | इन्द्रिय (गन्धग्राहक घ्राणेन्द्रिय) | विषय (मिट्टी, पाषाण आदि)
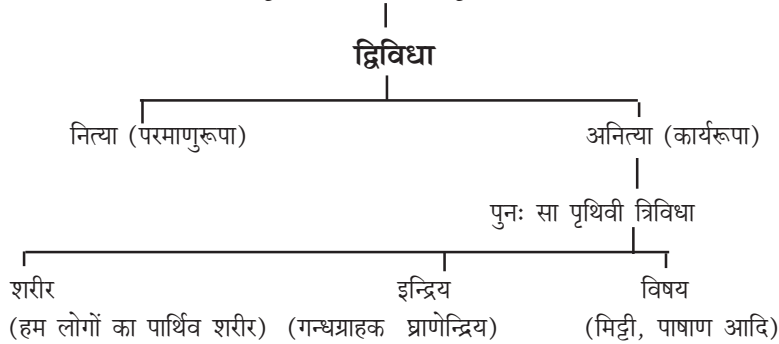
पृथिवी द्रव्य के विषय में कुछ स्मरणीय तथ्य-

- गन्ध पृथिवी का असाधारण धर्म है।
- गन्ध पृथिवी के अतिरिक्त अन्यत्र नहीं प्राप्त होता।
- अन्य द्रव्यों में गन्ध- प्रतीति औपाधिक होती है।

नौ द्रव्यों में परिगणित द्वितीय द्रव्य-अप् (जल)

(ii) **अप् (जल) ''शीतस्पर्शवत्य आपः''**

शीत स्पर्श से युक्त जल है।

आपः (जल)

नित्य (परमाणुरूप)

अनित्य (कार्यरूप)

शरीर (वरुणलोक में)

इन्द्रिय (रसग्राहक जिह्वेन्द्रिय)

विषय (सरित्समुद्र आदि)
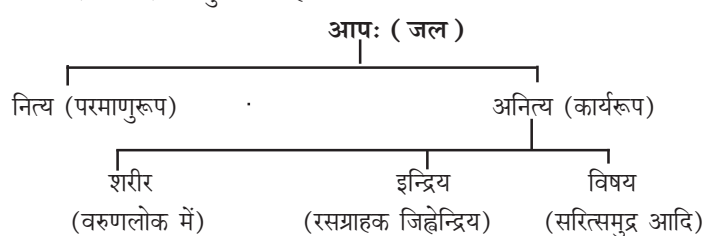
नौ द्रव्यों में परिगणित तृतीय द्रव्य - तेज

(ii) **तेज- उष्णस्पर्शवत्तेजः**

उष्ण (गर्म) स्पर्श वाला तेज है।

तेज

नित्य (परमाणुरूप)

अनित्य (कार्यरूप)

शरीर (आदित्यलोक में)

इन्दिय (कृष्णताराग्रवर्ति)

विषय

भौम (प्रत्यक्ष अग्नि)

दिव्य (विद्युतीय, आकाशीय और जलीय अग्नि)

औदर्य (उदरणी अग्नि)

आकरज (सुवर्ण आदि का तेज)
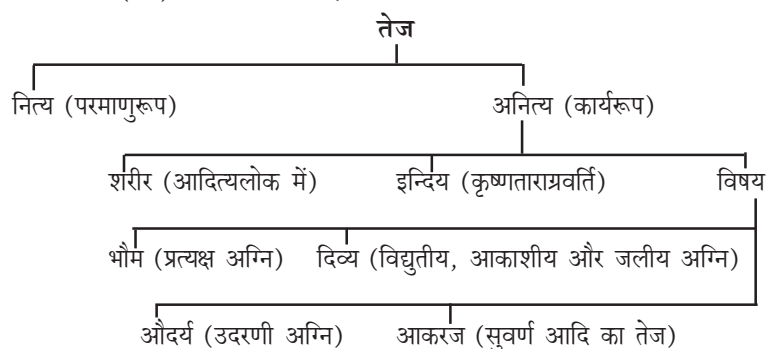
(iv) **नौ द्रव्यों में परिगणित चतुर्थ द्रव्य - वायु**

वायु- 'रूपरहितस्पर्शवान् वायुः'

रूप से रहित और स्पर्शयुक्त वायु है।

वायु

- नित्य (परमाणुरूप)
- अनित्य (कार्यरूप)
  - शरीर (वायुलोक में)
  - इन्द्रिय (सर्वशरीरवर्ति त्वक्)
  - विषय
    - वृक्षादिकम्पन हेतु
    - शरीरान्तः संचारी प्राणवायु
      - उपाधिभेद से वायु के भेद
        - प्राणवायु (हृदय में)
        - अपानवायु (गुदा में)
        - व्यानवायु (सम्पूर्ण शरीर में)
        - उदानवायु (कण्ठ में)
        - समानवायु (नाभि में)
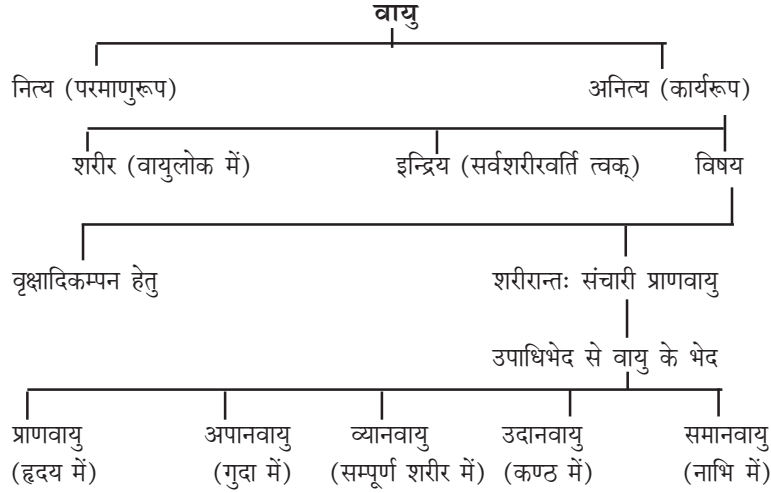
(v) नौ द्रव्यों में परिगणित पञ्चम द्रव्य- आकाश

आकाश-शब्दगुणकमाकाशम्- शब्द गुण से युक्त आकाश है। और वह विभु , नित्य और एक है।

आकाश (शब्दगुण सम्पन्न)

- एक
- नित्य
- विभु

➢ शब्द केवल आकाश का ही गुण है, अन्य किसी पदार्थ का नहीं, क्योंकि रूप, रस आदि तो अन्य पदार्थों में भी रहते हैं, किन्तु शब्द आकाश के अतिरिक्त अन्यत्र नहीं रहता है।

➢ आकाश का समस्त मूर्त पदार्थों से सम्बन्ध होने के कारण यह विभु है।

➢ आकाश का कभी विनाश न होने से यह नित्य है।

➢ आकाश की संख्या केवल एक मानी गयी है, इससे अधिक अथवा कम नहीं।

➢ सांख्यदर्शन में आकाश को शब्दतन्मात्रा से उत्पन्न महाभूत की संज्ञा प्रदान की गयी है।

➢ भाट्टमीमांसक शब्द और आकाश दोनों को स्वतन्त्र द्रव्य मानते हुए आकाश को प्रत्यक्ष मानते हैं, जबकि वैशेषिक इसे अनुमेय कहते हैं।

➢ वेदान्त ने आकाश को ब्रह्म स्वरूप माना है।

➢ जैनदर्शन का मत है कि संसार के सभी प्राणियों धर्म, अधर्म, काल, द्रव्य एवं समस्त पुद्गलों को स्थान देने वाला, आकाश वस्तुतः द्रव्य की श्रेणी में आता है।

➢ महर्षि कणाद की मान्यता है कि शब्द केवल आकाश का गुण है, क्योंकि वह अन्य किसी द्रव्य का गुण हो ही नहीं सकता है।

(vi) **नौ द्रव्यों में परिगणित छठवाँ द्रव्य-काल**

- **काल-** अतीतादिव्यवहारहेतुः कालः
- अतीतादि व्यवहार का हेतु काल है, वह भी विभु नित्य और एक है।

काल

सत् द्रव्य | नित्य | विभु | एक
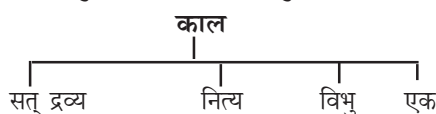
- उत्पत्ति स्थिति विनाश का हेतु उपाधित्रय से युक्त

काल द्रव्य के विषय में कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य

- तर्कसंग्रह की दीपिका टीका में अन्नम्भट्ट ने काल को सबका आधार और सभी कार्यों के प्रति निमित्तकारण माना है- ''**सर्वाधारः कालः सर्वकार्यनिमित्तकारणञ्च**''
- काल के विषय में विश्वनाथ कहते हैं कि 'समस्त जन्य वस्तुओं का जनक और सम्पूर्ण विश्व का आश्रय ही काल है।'
- शैव शाक्त और आगम 'काल' को ईश्वर की सम्पृक्त शक्ति कहकर परिभाषित करते हैं।
- न्यायदर्शन काल की अतीत और अनागत सत्ता को मान्यता प्रदान करता है, वर्तमान को नहीं।

(vii) **नौ द्रव्यों में परिगणित सातवाँ द्रव्य-दिक्**

- **दिक् (दिशा)- 'प्राच्यादिव्यवहारहेतुर्दिक्'**

प्राची आदि व्यवहार का कारण ही .दिक् है और वह एक, सर्वव्यापक एवं नित्य है।

दिक् के विषय में कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य-

- दिशा को अन्नम्भट्ट ने एक, सर्वव्यापक एवं नित्य कहा है जबकि प्रशस्तपाद दिक् के दस औपाधिक भेदों का विवरण इस प्रकार देते हैं-

	दिशा	अपरनाम	देवता
1.	पूर्व दिशा	माहेन्द्री	इन्द्र
2.	पश्चिम दिशा	वारुणी	वरुण
3.	उत्तर दिशा	कौबेरी	कुबेर
4.	दक्षिण दिशा	याम्या	यम
5.	उत्तर-पूर्व का कोण	ऐशानी	ईशान
6.	उत्तर- पश्चिम का कोण	वायव्या	वायु
7.	दक्षिण-पश्चिम का कोण	नैर्ऋति	नैर्ऋत
8.	दक्षिण-पूर्व दिशा का कोण	आग्नेयी	अग्नि
9.	ऊर्ध्व (ऊपर) दिशा	ब्राह्मी	ब्रह्म
10.	नीचे की दिशा	नागी	नाग

- उदयाचल के तरफ की दिशा **प्राची अर्थात् पूरब** कहलाती है, अस्ताचल के निकट की ओर **प्रतीची अर्थात् पश्चिम** दिशा है। मेरु पर्वत की ओर **उदीची** अर्थात् **उत्तर** दिशा है तथा उसके विपरीत दिशा में **अवाची अर्थात् दक्षिण** दिशा कहलाती है।
- औपाधिक दस दिशाओं के अलावा पद्मनाभ मिश्र एवं शिवादित्य आदि वैशेषिक दर्शन के कुछ आचार्यों ने प्राची और अवाची दिशाओं के मध्य **रौडी** नामक ग्यारहवीं दिशा को भी मान्यता प्रदान की है जिसके देवता **रुद्र** माने गये हैं।
- वैशेषिक दर्शन **दिक् को अनुमान का विषय** स्वीकार करता है।
- अन्नम्भट्ट अपनी दीपिका टीका में कहते हैं कि-विशिष्ट समय एवं किसी विशेष प्रदेश में उत्पन्न होने के कारण प्रत्येक कार्य के प्रति दिक् और काल निमित्तकारण होता है।
- **'गुणाश्रयो द्रव्यम्'** इस सिद्धान्त के अनुसार दिशा में भी काल के समान ही संख्या, परिमाण, पृथक्त्व, संयोग, और विभाग-इन पाँच गुणों की परिकल्पना की गयी है।
- तर्कसंग्रह में आकाश, काल और दिक्- इन तीनों द्रव्यों को एक, सर्वव्यापक और नित्य बताया गया है, किन्तु इनमें कुछ भेद भी हैं।
- शब्द आकाश का विशेष गुण है जबकि दिक् का कोई विशेष गुण नहीं है।
- आकाश शब्द का समवायिकारण है जबकि दिक् किसी का समवायिकारण नहीं है।
- आकाश का सम्बन्ध भूतों से होता है, जबकि दिक् का सम्बन्ध मन से।
- आकाश की स्वतन्त्र सत्ता होती है, जबकि दिक् प्रमाता के अनुभव पर आधारित है।

(viii) **नौ द्रव्यों में परिगणित आठवाँ द्रव्य- आत्मा**

आत्मा- ''ज्ञानाधिकरणमात्मा'' ज्ञान का अधिकरण आत्मा है।

जीवात्मा और परमात्मा भेद से वह दो प्रकार का होता है।

आत्मा

परमात्मा: ईश्वर, सर्वज्ञ, एक

जीवात्मा: प्रत्येक शरीर में भिन्न (अनेक), विभु (सर्वव्यापक), नित्य
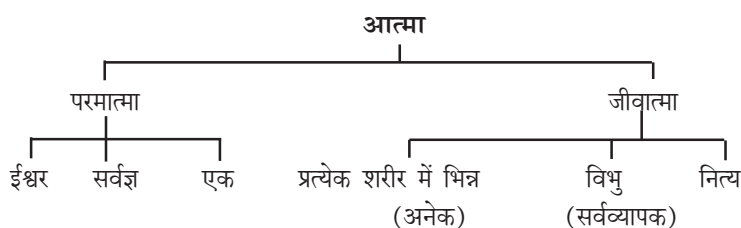
आत्मा के विषय में कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य

- प्रत्येक शरीर के भिन्न होने के कारण आत्मा को अनेक मानना भी उचित है, कभी विनष्ट न होने के कारण इसे नित्य भी कहा गया है। सर्वत्र विद्यमान होने के कारण इस आत्मा को सर्वव्यापक भी कहा गया है।
- परमात्मा नित्य ज्ञान का अधिकरण होता है, जबकि जीवात्मा में अनित्य ज्ञान विद्यमान रहता है।

- जीवात्मा शरीर में विद्यमान होने से शरीर को धारण करने वाला है, जबकि परमात्मा शरीर के विना भी स्थित रहता है।
- जीवात्माओं में कुछ मुक्त एवं बद्ध होते हैं, जबकि परमात्मा नित्य मुक्त होता है।
- जीवात्मा में अधर्म, मिथ्याज्ञान और प्रमाद आदि विद्यमान रहते हैं, जबकि परमात्मा में अणिमा आदि ऐश्वर्य रहते हैं।
- चार्वाक को छोड़कर सम्पूर्ण भारतीय दर्शन परम्परा आत्मा के अस्तित्व को स्वीकार करती है।

(xi) **नौ द्रव्यों में परिगणित अन्तिम द्रव्य-मन**

मन- सुखाद्युपलब्धिसाधनमिन्द्रियं मनः

सुख आदि की उपलब्धि का साधन इन्द्रिय ही मन है और वह प्रत्येक आत्मा के साथ नियम से रहने के कारण अनन्त, परमाणुरूप एवं नित्य है।

मन

अनन्त | परमाणुरूप | नित्य

मन द्रव्य के विषय में कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य

- वैशेषिकदर्शन की नौ द्रव्य परम्परा में मन की **अन्तिम द्रव्य** के रूप में गणना की गयी है। इसे **अन्तरिन्द्रिय** भी कहते हैं।
- विद्वानों ने मन का निर्वचन ''**मन्यते ज्ञायते अनेन इति मनः**'' किया है।
- दीपिका टीका में अन्नम्भट्ट ने कहा है- 'स्पर्शरहितत्वे सति क्रियात्त्वम्' अर्थात् जो स्पर्शरहित रहते हुए भी क्रियावान् रहता है, उसे 'मन' कहते हैं।
- अन्नम्भट्ट प्रत्येक शरीर के साथ आत्मा की भिन्न स्थिति स्वीकार करते हैं मन को भी प्रत्येक आत्मा के साथ नियतरूप से अलग-अलग स्वीकार करते हैं।
- अन्नम्भट्ट आत्मा और मन दोनों को नित्य मानते हुए भी इसके संयोग को नित्य नहीं मानते हैं।
- मन के परमाणुरूप होने के कारण ही उसकी नित्यता सम्भव होती है।

2. वैशेषिक दर्शन का द्वितीय पदार्थ -गुण

- **गुण का लक्षण** -वैशेषिक सूत्र में गुण का लक्षण इसप्रकार है-

  ''**द्रव्याश्रय्यगुणवान् संयोगविभागेष्वकारणमनपेक्ष इति गुणलक्षणम्** ''

  अर्थात् - जो द्रव्य में आश्रित हो, गुणरहित हो और संयोग तथा विभाग के प्रति स्वतन्त्रकारण न हो वह गुण है।
- तर्कसंग्रह की दीपिका टीका में अन्नम्भट्ट गुण की दो परिभाषायें करते हैं-

  (क) '**गुणत्वजातिमान्**' अर्थात् गुणत्वजाति से जो युक्त है वह गुण है।

  (ख) '**द्रव्यकर्मभिन्नत्वे सति सामान्यवान्**' अर्थात् द्रव्य और कर्म से भिन्न होते हुए जो सामान्य (गुणत्व जाति) का आश्रय हो, वह गुण है।

- वैशेषिक के अनुसार 'सामान्य' केवल तीन पदार्थों में रहता है- द्रव्य, गुण तथा कर्म।
- कणाद ने सत्रह प्रकार के गुणों का उल्लेख किया है; बाद में प्रशस्तपाद ने इसमें सात और गुणों को जोड़कर इसकी संख्या 24 तक पहुँचायी। ये हैं- गुरुत्व, द्रवत्व, स्नेह, संस्कार, धर्म, अधर्म तथा शब्द।

गुणों का विभाजन

- प्रशस्तपाद ने चौबीस गुणों का वर्गीकरण मूर्त, अमूर्त, एवं मूर्तामूर्तगुण (उभयगुण) के रूप में किया है।
- **मूर्तगुण-** रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, परत्व, अपरत्व, गुरुत्व द्रवत्व, स्नेह, वेग एवं स्थितिस्थापक (संस्कार)।
- **अमूर्तगुण-** बुद्धि, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, धर्म- अधर्म, शब्द, भावना (संस्कार)।
- **मूर्तामूर्त गुण (उभयगुण)-** संख्या, परिमाण, पृथक्त्व, संयोग एवं विभाग।

गुणों का दूसरे प्रकार का विभाजन

- **विशेष एवं सामान्य गुण -** विशेष से तात्पर्य उन गुणों से है , जो एक समय में एक ही द्रव्य में रहते हैं इसलिए विशेष गुण द्रव्यों के भेदक गुण होते हैं।
- सामान्य गुण वे हैं जो एक साथ दो या उससे अधिक द्रव्यों में रहते हैं।
- **विशेषगुण-** रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, स्नेह द्रवत्व (सांसिद्धिक), बुद्धि, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, धर्म, अधर्म, शब्द, भावना (संस्कार)
- **सामान्य गुण-** संख्या, परिमाण, पृथक्त्व, संयोग, विभाग, परत्व, अपरत्व, गुरुत्व, द्रवत्व (नैमित्तिक) वेग (संस्कार)

गुणों का अन्य प्रकार का विभाजन-

- **द्वीन्द्रियग्राह्यगुण-** संख्या, परिमाण, पृथक्त्व, संयोग, विभाग, परत्व, अपरत्व, द्रवत्व, स्नेह, तथा, वेग (स्थितिस्थापक)।
- **बाह्येन्द्रिय ग्राह्यगुण-** रूप,रस, गन्ध, स्पर्श, तथा शब्द
- **अतीन्द्रिय गुण-** गुरुत्व, धर्म, अधर्म, तथा भावना।
- **अन्तरिन्द्रिय गुण-** बुद्धि, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, तथा प्रयत्न।

गुण पदार्थ की विशेषतायें

- गुण 'गुणत्व' जाति से युक्त होते हैं।
- गुण सदा द्रव्यों में ही आश्रित होते हैं।
- गुण में गुण नहीं रहते।
- गुण में क्रिया भी नहीं पायी जाती।
- गुण संयोग और विभाग का साक्षात् कारण नहीं है।
- गुण अपने कार्य का असमवायिकारण है।

- गुण एक ऐसा धर्म है जो द्रव्य में समवाय सम्बन्ध से रहता है।

अन्य शास्त्रों की दृष्टि में गुण

- लौकिक व्यवहार में सामान्य रूप से शील, विनम्रता, दयालुता, परोपकारिता आदि को गुण कहा जाता है।
- व्याकरणशास्त्र में **'अदेङ्गुणः'** से "अ,ए, ओ" को गुण कहा जाता है।
- सांख्यदर्शन में प्रकृति के घटकतत्व **सत्त्व, रजस् और तमस्** को गुण कहा जाता है।
- काव्यशास्त्र में **ओज, प्रसाद एवं माधुर्य** को गुण कहा गया है।
- राजनीतिशास्त्र में सन्धि, विग्रह, यान, आसन, द्वैधीभाव एवं संश्रय इन छहों को **नीतिविषयक गुण** कहा गया है।
- **गुण की परिभाषा वैशेषिक दर्शन के अनुसार-** गुणत्व जाति से युक्त, द्रव्य एवं कर्म से अलग होते हुए, सामान्य धर्म से युक्त पदार्थ ही गुण है। **"गुणत्वजातिमान् द्रव्यकर्मभिन्नत्वे सति सामान्यवान् "** (दीपिका टीका)

वैशेषिकदर्शन के चौबीस गुणों में परिगणित प्रथम गुण-रूप

- **1. रूप- "चक्षुर्मात्रग्राह्यो गुणो रूपम् "**

  नेत्र मात्र से ग्रहण किया जाने वाला गुण रूप है।

  रूप के प्रकार - रूप गुण के सात प्रकार हैं-

  शुक्ल-नील-पीत- रक्त-हरित-कपिश-चित्रभेदात् सप्तविधम् '

  रूप गुण के सात प्रकार

  - (1) शुक्ल (श्वेत)
  - (2) नील (नीला)
  - (3) पीत (पीला)
  - (4) रक्त (लाल)
  - (5) हरित (हरा)
  - (6) कपिश (भूरा)
  - (7) चित्र (चितकबरा)

- **रूप गुण किन द्रव्यों में रहता है -** "पृथिवी-जल-तेज-वृत्तिः"

  यह रूप गुण पृथिवी, जल तथा तेज में रहता है।"
- पृथिवी में सातों प्रकार के रूप रहते हैं - 'पृथिव्यां सप्तविधम्'
- जल में अभास्वर = (नहीं चमकने वाला) शुक्ल रहता है। **'अभास्वरशुक्लं जले'**
- तेज द्रव्य में भास्वर = (चमकने वाला) शुक्ल होता है। **"भास्वरशुक्लं तेजसि"**

रूप गुण की द्रव्यों में स्थिति

पृथिवी में (सातों प्रकार के रूप) | जल में (अभास्वर शुक्ल) | तेज में (भास्वर शुक्ल)
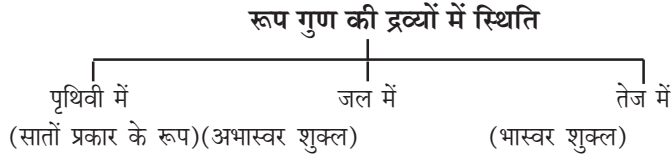
रूप गुण की विशेषतायें -

(1) यह रूप नामक गुण पृथिवी जल एवं तेज में रहता है किसी अन्य द्रव्य में नहीं।
(2) इसका ज्ञान केवल चक्षुरिन्द्रिय के द्वारा होता है। अतः यह चक्षु का सहकारी है।
(3) रूप गुण पृथिवी, जल और तेज के प्रत्यक्ष में कारण होता है।
(4) पार्थिव वस्तुओं का रूप पाकज होता है, जल और तेज में रूप अपाकज होता है।
(5) पाकज होने के कारण पार्थिव रूप अनित्य होता है, जल और तेज के परमाणुओं का रूप अपाकज होने के कारण अनित्य होता है।
(6) रूप गुण द्रव्य में व्याप्यवृत्ति होकर रहता है।

2. द्वितीय गुण - रस

- **रस** - ''रसनाग्राह्यो गुणो रसः'' रसनेन्द्रिय के द्वारा ग्रहण किया जाने वाला गुण रस है।
- **रस के प्रकार-** 'रस' नामक गुण छह प्रकार का होता है।
  ''मधुराम्ललवणकटुकषायतिक्तभेदात् षड्विधः''

रस (छह प्रकार)

1.मधुर 2.अम्ल 3.लवण 4.कटु 5.कषाय 6.तिक्त

- **रस की द्रव्यों में स्थिति -** यह रस नामक गुण पृथिवी तथा जल नामक द्रव्यों में रहता है।
- पृथिवी में छः प्रकार के रस होते हैं, जल में केवल मधुर रस ही होता है ''पृथिवीजलवृत्तिः। तत्र पृथिव्यां षड्विधः। जले मधुर एव''

रस की स्थिति

पृथिवी में (छहों प्रकार का रस) | जल में (केवल मधुर)
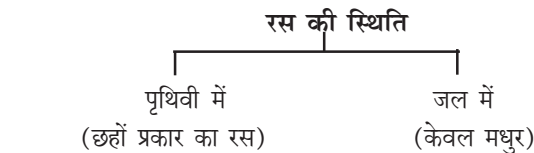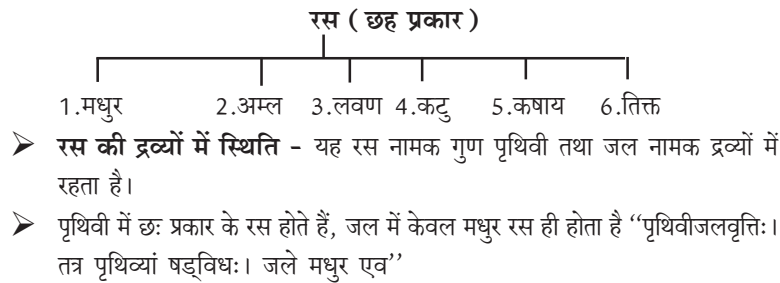
रस नामक गुण की विशेषतायें

(1) यह 'रस' नामक विशेष गुण पृथिवी एवं जल में रहता है, किसी अन्य द्रव्य में नहीं।
(2) इसका ज्ञान केवल रसना के द्वारा होता है।
(3) यह रसना का सहकारी है।
(4) यह 'रस' द्रव्य में व्याप्यवृत्ति होकर रहता है।

(5) यह रस गुण स्वप्रत्यक्ष में कारण होता है।
(6) जल का रस मधुर होता है।
(7) रस केवल पार्थिव वस्तुओं में पाया जाता है।
(8) पार्थिव वस्तुओं का रस पाकज और जल का रस अपाकज होता है।
(9) केवल जल परमाणु का रस नित्य है, शेष अनित्य।

3. तृतीय गुण- गन्ध

गन्ध - घ्राणग्राह्यो गुणो गन्धः
घ्राणेन्द्रिय (नासिका) से ग्रहण किया जाने वाला गुण गन्ध है।
गन्ध गुण के प्रकार - यह गन्ध गुण दो प्रकार का है-
(1) सुरभि (सुगन्ध) (2) असुरभि (दुर्गन्ध) ''स च द्विविधः सुरभिरसुरभिश्च।''

गन्ध

सुरभि (सुगन्ध) | असुरभि (दुर्गन्ध)

गन्ध गुण की स्थिति- यह गन्ध गुण केवल पृथिवी में ही रहता है- ''पृथिवीमात्रवृत्तिः''
गन्ध गुण की विशेषतायें- (1) यह गन्ध नामक विशेष गुण केवल पृथिवी में ही रहता है किसी अन्य द्रव्य में नहीं।
(2) इसका ज्ञान केवल घ्राणेन्द्रिय के द्वारा होता है।
(3) यह घ्राणेन्द्रिय का सहकारी है।
(4) यह गन्ध गुण पार्थिव द्रव्यों में व्याप्यवृत्ति होकर रहता है।
(5) यह स्वप्रत्यक्ष में कारण होता है।
(6) इसके दो भेद है- सुरभि (खुशबू) एवं असुरभि (बदबू)
(7) पाकज होने के कारण यह अनित्य है।
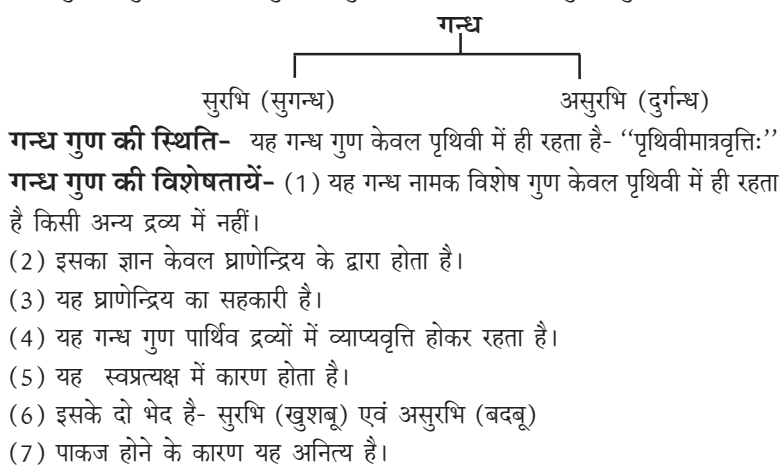
4. स्पर्शः- 'त्वगिन्द्रियमात्रग्राह्यो गुणः स्पर्शः'
त्वगिन्द्रिय मात्र (त्वचा) से ग्रहण किया जाने वाला गुण स्पर्श है।

स्पर्श गुण के भेद- वह तीन प्रकार का है-
(1) शीत (ठण्डा) (2) उष्ण (गर्म) (3) अनुष्णातीत (न गर्म न ठण्डा)
'स च त्रिविधः- शीत-उष्ण-अनुष्णातीतभेदात्'

स्पर्श (तीन प्रकार)

शीत | उष्ण | अनुष्णातीत
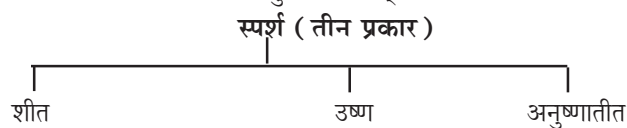
➢ **स्पर्श की स्थिति -** पृथिवी, जल, तेज,वायु,में यह स्पर्श गुण रहता है-
'पृथिव्यप्तेजोवायुवृत्तिः'

- जल में शीत स्पर्श, तेज में उष्णस्पर्श तथा पृथिवी एवं वायु में अनुष्णाशीत स्पर्श होता है।

स्पर्श गुण की द्रव्यों में स्थिति

पृथिवी	जल	तेज	वायु
(अनुष्णाशीत)	(शीत स्पर्श)	(उष्ण स्पर्श)	(अनुष्णाशीत)
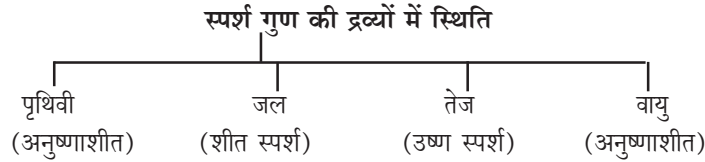
- पृथिवी का स्पर्श पाकज और वायु का स्पर्श अपाकज होता है।
- जल,तेज और वायु के परमाणुओं का स्पर्श नित्य होता है पार्थिव परमाणुओं का स्पर्श पाकज होने के कारण अनित्य होता है।
- पृथिवी में रूप,रस,गन्ध और स्पर्श- ये चारों गुण पाक द्वारा उत्पन्न होते हैं, अतः अनित्य हैं। ये 'पाकज' कहलाते हैं।
- पृथिवी से भिन्न द्रव्यों में ये सभी गुण 'अपाकज' हैं और नित्य तथा अनित्य दोनों प्रकार के होते हैं।
- ये नित्यपदार्थों में नित्य तथा अनित्य पदार्थों में अनित्य हैं।
- न्यायदर्शन इस क्रिया को **'पिठरपाक'** तथा वैशेषिक दर्शन इसे **'पीलुपाक'** कहता है। 'पीलु' पद का अर्थ है- परमाणु।
- इस दृष्टि से 'पीलुपाक' का अर्थ हुआ- 'परमाणुओं का पाक।' 'पिठर' का अर्थ है- पिण्ड। इसलिए पाकरूप यह क्रिया सम्पूर्ण घटरूप पिण्ड में होती है, उसके परमाणुओं में नहीं।

5. संख्या- 'एकत्वादिव्यवहारहेतुः सङ्ख्या'

- एक, दो, तीन आदि व्यवहार (प्रयोग) के कारण को संख्या कहते हैं।

  संख्या गुण की द्रव्यों में स्थिति- संख्या नामक गुण सभी नौ द्रव्यों में रहता है। **'सा नवद्रव्यवृत्तिः'**
- एक से लेकर परार्ध तक इसकी सीमा है।
- एकत्व नित्य और अनित्य दोनों प्रकार का होता है।
- वह संख्या नित्य द्रव्य में नित्य तथा अनित्य द्रव्य में अनित्य है, जबकि द्वित्वादि संख्या सर्वत्र ही अनित्य है।

6. परिमाणम्- 'मानव्यवहाराऽसाधारणकारणं परिमाणम्'

मान (माप) व्यवहार के असाधारण कारण को परिमाण कहते हैं।

परिमाण के प्रकार - यह चार प्रकार का है-

(1) अणु (2) महत् (3) दीर्घ (4) ह्रस्व

- अणु परिमाण को ही 'परिमाण्डल्य' भी कहा जाता है।

परिमाण गुण की द्रव्यों में स्थिति- यह परिमाण नामक गुण सभी नौ द्रव्यों में रहता है। 'नवद्रव्यवृत्तिः'

परिमाण
- अणु
- महत्
- दीर्घ
- ह्रस्व
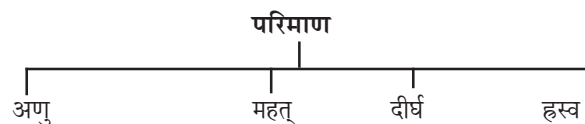
7. **पृथक्त्व-** 'पृथग्व्यवहारकारणं पृथक्त्वम्'- पृथक् (अलग) व्यवहार के कारण को पृथक्त्व कहते हैं।

पृथक्त्व गुण की द्रव्यों में स्थिति- यह पृथक्त्व गुण सब द्रव्यों में रहता है- 'सर्वद्रव्यवृत्तिः'

8. **संयोगः-** 'संयुक्तव्यवहारहेतुः संयोगः' संयुक्त व्यवहार का कारण ही संयोग नामक गुण है।

संयोग नामक गुण की द्रव्यों में स्थिति- यह सभी द्रव्यों में पाया जाता है। 'सर्वद्रव्यवृत्तिः'

9. **विभागः-** 'संयोगनाशको गुणो विभागः' संयोग का नाशक गुण विभाग है

विभाग गुण की स्थिति- वह सारे द्रव्यों में रहता है- 'सर्वद्रव्यवृत्तिः'

10,11. **परत्व एवं अपरत्व-** 'पराऽपरव्यवहाराऽसाधारणकारणे परत्वाऽपरत्वे' पर (दूर) तथा अपर (निकट) इस व्यवहार के असाधारण कारण को क्रमशः परत्व एवं अपरत्व कहते हैं।

परत्व एवं अपरत्व गुण के भेद- वे दो प्रकार के हैं- (1) दिक्कृत (2) कालकृत

- दूरस्थ में दिक्कृत परत्व तथा समीपस्थ में दिक्कृत अपरत्व है।
- इसीप्रकार ज्येष्ठ में कालकृत परत्व तथा कनिष्ठ में कालकृत अपरत्व है।

परत्व एवं अपरत्व गुणों की द्रव्यों में स्थिति- इन दोनों गुणों की स्थिति पृथिवी,जल,तेज,वायु तथा मन में विद्यमान रहती है।

12. **गुरुत्वम्-** 'आद्यपतनासमवायिकारणं गुरुत्वम्' प्रथम पतन का असमवायिकारण गुरुत्व है।

गुरुत्व गुण की द्रव्यों में स्थिति-

- यह पृथिवी तथा जल में रहता है- 'पृथिवीजलवृत्तिः'
- विज्ञान में न्यूटन का गुरुत्वाकर्षण सिद्धान्त वैशेषिक के इसी गुरुत्व गुण का परिष्कृत रूप है।

13. **द्रवत्वम् —** 'आद्यस्यन्दनासमवायिकारणं द्रवत्वम्' प्रथम स्यन्दन (बहना) का असमवायिकारण ही द्रवत्व है।

- **द्रवत्व गुण के प्रकार-** द्रवत्व गुण दो प्रकार का होता है- (1) सांसिद्धिक

(2)नैमित्तिक

द्रवत्व गुण की द्रव्यों में स्थिति- द्रवत्व गुण, पृथिवी, जल और तेज में रहता है। 'पृथिव्यप्तेजोवृत्तिः'

- सांसिद्धिक द्रवत्व जल में तथा नैमित्तिक द्रवत्व पृथिवी एवं तेज में होता है।
- घी आदि पृथिवी में अग्नि के संयोग से द्रवत्व होता है।
- सुवर्ण आदि तेज में भी अग्नि के संयोग से द्रवत्व उत्पन्न होता है।

14. स्नेहः- 'चूर्णादिपिण्डीभावहेतुर्गुणः स्नेहः' चूर्णादि को पिण्ड बना देने वाले गुण को स्नेह कहते हैं।

स्नेह गुण की द्रव्यों में स्थिति- स्नेह गुण केवल जल में रहता है- 'जलमात्रवृत्तिः'

15. शब्दः- श्रोत्रग्राह्यो गुणः शब्दः श्रोत्रेन्द्रिय से ग्रहण किया जाने वाला गुण शब्द है-

शब्द गुण के प्रकार- शब्द गुण दो प्रकार का है- (1) ध्वन्यात्मक (2)वर्णात्मक

- भेरी आदि में ध्वन्यात्मक शब्द है। संस्कृतभाषादि रूप वर्णात्मक शब्द है।

शब्द
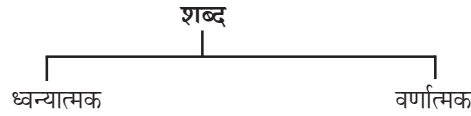
ध्वन्यात्मक	वर्णात्मक
(भेरी, बाँसुरी आदि से उत्पन्न शब्द)	(संस्कृत, पालि आदि भाषाओं के शब्द)

- **शब्द गुण की द्रव्यों में स्थिति-** यह शब्द गुण केवल आकाश में रहता है- 'आकाशमात्रवृत्तिः'
- **शब्द गुण के विषय में स्मरणीय बिन्दु-** वैशेषिकदर्शन मात्र में ही शब्द को गुण माना गया है; अन्यत्र न्याय, सांख्य, योग, वेदान्त तथा मीमांसा में शब्द को प्रमाण के रूप में ही माना गया है। केवल वैशेषिक दर्शन शब्द को प्रमाण नहीं मानता।
- कणाद ने इसको प्रमाण न मानने के पीछे यही तर्क दिया है कि शाब्दबोध से उत्पन्न ज्ञान अनुमान के ही अन्तर्गत आ जाता है।

16. बुद्धिः- 'सर्वव्यवहारहेतुर्गुणो बुद्धिर्ज्ञानम्' सब प्रकार के व्यवहार का हेतु बुद्धि या ज्ञान नामक गुण है।

- **बुद्धि गुण के प्रकार –** वह बुद्धि दो प्रकार की है- (1) स्मृति (2) अनुभव

बुद्धि गुण के विषय में स्मरणीय तथ्य-

बुद्धि आत्मा का विशेष गुण है। यह विषय मात्र के प्रत्यक्ष में कारण है। इसका समवायिकारण आत्मा है। इसका असमवायिकारण है आत्ममनःसंयोग। निमित्तकारण है त्वङ्मनःसंयोग। साधारणकारण है- काल, अदृष्ट, ईश्वरेच्छा, ईश्वरज्ञान और प्रयत्न। यह बुद्धि जीवात्मा में अनित्य और परमात्मा में नित्य होती है।

स्मृति-'संस्कारमात्रजन्यं ज्ञानं स्मृतिः' संस्कारमात्र से उत्पन्न ज्ञान स्मृति है।

स्मृति दो प्रकार की होती है- (1) यथार्थस्मृति (2) अयथार्थस्मृति

(1) **यथार्थस्मृति-** प्रमाजन्या यथार्था-प्रमा से उत्पन्न होने वाली स्मृति यथार्थ है।

(2) **अयथार्थस्मृति-** अप्रमाजन्या अयथार्था- अप्रमा से उत्पन्न होने वाली स्मृति अयथार्थ है।

➢ **अनुभव**- **तद्भिन्नं ज्ञानमनुभवः** उस स्मृति से भिन्न ज्ञान अनुभव है।

➢ अनुभव के दो प्रकार हैं- (1)यथार्थ अनुभव (2) अयथार्थ अनुभव

(1) **यथार्थ अनुभव-** 'तद्वति तत्प्रकारकोऽनुभवो यथार्थः' जो वस्तु जिस रूप में हो, उसका उसी रूप में अनुभव यथार्थ है। जैसे- चाँदी में 'यह चाँदी है' ऐसा ज्ञान। (रजते इदं रजतम् इदं ज्ञानम्)

➢ यही यथार्थ अनुभव प्रमा (प्रामाणिक ज्ञान) कहलाता है।

➢ यथार्थानुभव के चार प्रकार - प्रत्यक्ष, अनुमिति, उपमिति तथा शाब्द।

➢ यथार्थानुभव के करण भी चार प्रकार के हैं- प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, तथा शब्द।

नोट- प्रमाणों का विवेचन यथावसर आगे किया जाएगा।

(2) **अयथार्थ अनुभव-** तदभाववति तत्प्रकारकोऽनुभवोऽयथार्थः
जो वस्तु जिस रूप में न हो, उसे उस रूप में समझना अयथार्थ है। जैसे-
'शुक्तौ इदं रजतम्' इति ज्ञानम्। (सीपी में यह रजत है, ऐसा ज्ञान)

➢ यही अयथार्थज्ञान अप्रमा (अप्रामाणिक ज्ञान) कहलाता है।

अयथार्थ अनुभव के प्रकार- अयथार्थ अनुभव तीन प्रकार का है- (1) संशय (2)विपर्यय (3)तर्क

(1) **संशय-** 'एकस्मिनि धर्मिणि विरुद्धनानाधर्मवैशिष्ट्यावगाहि ज्ञानं संशयः'
एक धर्मी में विरोधी नाना धर्मों की विशिष्टता से सम्बद्ध ज्ञान संशय है। यथा- स्थाणुर्वा पुरुषो वा इति (यह स्थाणु है या पुरुष)

(2) **विपर्यय-** मिथ्याज्ञानं विपर्ययः मिथ्याज्ञान विपर्यय है।
यथा- शुक्तौ इदं रजतम् (सीपी में यह रजत है ऐसा ज्ञान)

(3) **तर्क**- 'व्याप्याऽऽरोपेण व्यापकारोपस्तर्कः' व्याप्य के आरोप से व्यापक का आरोप तर्क है। यथा- यदा वह्निर्न स्यात् तर्हि धूमोऽपि न स्यात्। (जब अग्नि नहीं होती तो धुआँ भी नहीं होता)

बुद्धि/ज्ञान
- स्मृति
  - यथार्थ
  - अयथार्थ
- अनुभव
  - यथार्थ
    - प्रत्यक्ष
    - अनुमिति
    - उपमिति
    - शाब्द
  - अयथार्थ
    - संशय
    - विपर्यय
    - तर्क
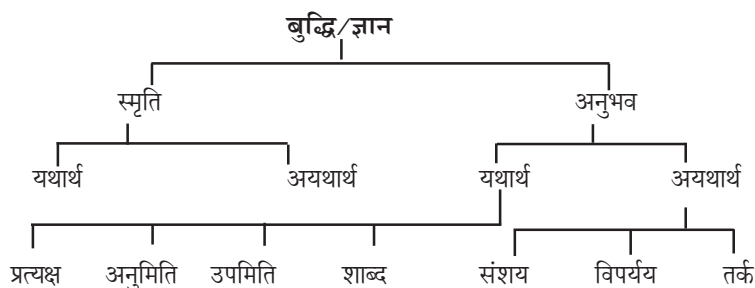
17. सुख - 'सर्वेषामनुकूलवेदनीयं सुखम्' - सबके अनुकूल प्रतीति सुख है।

18. दुःख – 'सर्वेषां प्रतिकूलवेदनीयं दुःखम्' - सबके प्रतिकूल प्रतीति दुःख है।

19. इच्छा- 'इच्छा कामः' - काम इच्छा है।

20. द्वेष- 'क्रोधो द्वेषः' – क्रोध द्वेष है।

21. प्रयत्न – 'कृतिः प्रयत्नः' – कृति प्रयत्न है।

22. धर्म- 'विहितकर्मजन्यो धर्मः' – विहित कर्मों से उत्पन्न धर्म है।

23. अधर्म- निषिद्धकर्मजन्यः तु अधर्मः-निषिद्ध कर्मों से उत्पन्न अधर्म है।

- बुद्धि, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, धर्म एवं अधर्म – ये आत्मा के आठ विशेष गुण हैं।
- बुद्धि इच्छा एवं प्रयत्न दो प्रकार के हैं – नित्य और अनित्य। नित्य ईश्वर के, अनित्य जीव के। शेष सुख, दुःख, द्वेष, धर्म, अधर्म ये पाँच विशेष गुण जीवमात्र में रहने के कारण अनित्य हैं।

24. **संस्कार –** संस्कार गुण तीन प्रकार के होते हैं- वेग, भावना तथा स्थितिस्थापक। 'संस्कारस्त्रिविधः वेगो भावना स्थितिस्थापकश्च'

(1) **वेग –** द्वितीयादिपतनासमवायिकारणं वेगः (पदकृत्य टीका) इसे पतन का असमवायिकारण भी कहा जाता है। वेग क्रिया का हेतु है। यह पृथिवी आदि चार द्रव्य (पृथिवी, जल, तेज, वायु) तथा मन में रहता है।

(2) **भावना –** अनुभवजन्या स्मृतिहेतुर्भावना
यह अनुभव से उत्पन्न होती है तथा स्मृति की हेतु है। यह मूलतः ज्ञान के पश्चात् उत्पन्न होने वाला गुण है, जो पूर्वगृहीत ज्ञान की स्मृति कराती है। यह केवल आत्मा में रहती है। 'आत्ममात्रवृत्तिः'

(3) **स्थितिस्थापक-** 'अन्यथाकृतस्य पुनस्तदवस्थाऽऽपादकः स्थितिस्थापकः' अन्यथा की हुई को पुनः उसी अवस्था में ला देने वाला स्थितिस्थापक है, यह कटादि पृथिवी में रहता है। यह वह शक्ति है जो पदार्थ को अपने पूर्वरूप में ले आती है।

वैशेषिकदर्शन का तृतीय पदार्थ

- **कर्म-** चलनात्मकं कर्म
  चलनात्मक क्रिया को कर्म कहते हैं।
  कर्म के पाँच प्रकार - उत्क्षेपण- अवक्षेपण- आकुञ्चन-प्रसारण-गमनानि पञ्च कर्माणि

1. उत्क्षेपण- ऊर्ध्वदेशसंयोगहेतुः उत्क्षेपणम्
ऊर्ध्वदेश में संयोग का हेतु ही उत्क्षेपण नामक कर्म है

- किसी वस्तु अथवा पदार्थ का ऊपर की ओर उछालना उत्क्षेपण कर्म है।
- जब हम गेंद को आकाश की ओर फेंकते हैं तो इस कर्म द्वारा गेंद का संयोग ऊपर के

प्रदेश से होता है। यही कर्म उत्क्षेपण कर्म है।

2. **अपक्षेपण-** अधोदेशसंयोगहेतुः अपक्षेपणम्

- अधोदेश में संयोग का कारण अपक्षेपण नामक कर्म है।
  अर्थात् किसी वस्तु या पदार्थ को नीचे गिराना। जब हम किसी मकान की छत से गेंद को नीचे की ओर फेंकेगे तो इससे गेंद का नीचे के प्रदेश से संयोग होगा जो अपक्षेपण कर्म की श्रेणी में आएगा।

3. **आकुञ्चन-** 'शरीरसन्निकृष्टसंयोगहेतुः आकुञ्चनम्'

- अपने शरीर के सन्निकृष्ट देश में संयोग का हेतु आकुञ्चन है।
- जब कछुआ अपने अङ्गों को किसी डर के कारण अपने शरीर में सिकोड़ता है अथवा हवा से फूले हुए गुब्बारे से हवा निकालने पर जब वह सिकुड़ता है, अर्थात् जिसके द्वारा वस्तु के अवयव सामान्य अवस्था में एक-दूसरे के निकट आ जाते हैं। जैसे- हाथ-पैर मोड़ना आदि आकुञ्चन कार्य के अन्तर्गत आएगा।
- वक्रत्वसम्पादकं कर्म आकुञ्चनम् -(तर्कसंग्रहदीपिका)

4. **प्रसारण-** 'विप्रकृष्टसंयोगहेतुः प्रसारणम्'

- अपने शरीर से दूरवर्ती (विप्रकृष्ट) संयोग का कारण ही प्रसारण है।
- योग, व्यायाम आदि करते समय जब हम अपने हाथ पैर चारों ओर फैलाते हैं तो इस स्थिति में हमारे शरीर के अवयव एक दूसरे से दूर हो जाते है- यही प्रसारण कर्म है।
- 'ऋजुतासम्पादकं प्रसारणम्' - (तर्कसंग्रहदीपिका)

5. **गमन - 'अन्यत् सर्वं गमनम्'**

- उक्त चारों कर्मों के अतिरिक्त सारे कार्य 'गमन' के अन्तर्गत आते हैं। जैसे- चलना, भ्रमणकरना आदि।
- कर्म किन- किन द्रव्यों में रहता है- ये सभी पाँचों कर्म पृथिवी, जल,तेज, वायु तथा मन में विद्यमान रहते हैं- **''पृथिव्यादिचतुष्टयमनोमात्रवृत्तिः''**

पाँचों कर्मों का शाब्दिक अर्थ

1. **उत्क्षेपण-** ऊपर की ओर उछालना जैसे- गेंद को आकाश की ओर फेंकना।
2. **अवक्षेपण-** नीचे की ओर गिराना। जैसे- छत से नीचे की ओर गेंद फेंकना।
3. **आकुञ्चन-** सिकोड़ना- जैसे- कछुआ का अपने अङ्गों को सिकोड़ना।
4. **प्रसारण-** फैलाना- जैसे- हाथ -पैर फैलाना, वस्त्र फैलाना आदि।
5. **गमन-** चलना, भ्रमण करना- जैसे- चलना फिरना टहलना।

कर्म				
उत्क्षेपणम् (ऊपर की ओर उछालना)	अवक्षेपणम् (नीचे की ओर गिराना)	आकुञ्चन (सिकोड़ना)	प्रसारण (फैलाना)	गमन (चलना)
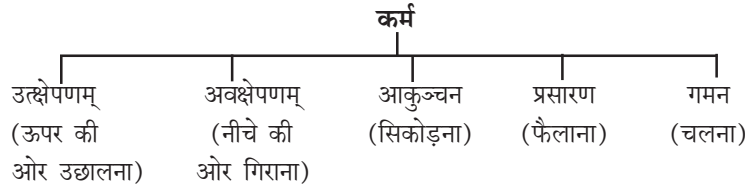
कर्म नामक पदार्थ के विषय में कुछ स्मरणीय तथ्य

तर्कसंग्रह की दीपिका टीका में अन्नम्भट्ट ने कर्म की दो परिभाषायें दी हैं-

कर्म - संयोगभिन्नत्वे सति संयोगासमवायिकारणं कर्म (तर्कसंग्रह दीपिका)

संयोग से भिन्न होने पर भी संयोग का असमवायिकारण होना कार्य है। कर्मत्वजातिमद् (तर्कसंग्रह दीपिका)= कर्म कर्मत्वजाति से युक्त होता है।

- कर्म द्रव्य में समवेत रहता है।
- कर्म संयोग एवं विभाग का साक्षात् कारण होता है।
- कर्म कर्मत्वजातिमान् होता है।
- कर्म द्रव्यों में स्थित विभिन्न परिवर्तनों का कारण होता है।
- कर्म अनित्य होता है अर्थात् इसकी सत्ता एक सीमित समयान्तराल तक होती है।
- यह सभी द्रव्यों में नहीं पाया जाता है। केवल- पृथिवी, जल, तेज, वायु और मन में कर्म की स्थिति बतायी गयी है।
- कर्म से निश्चित द्रव्यों का निर्माण नहीं होता।
- कर्म निर्गुण होता है।
- न्यायवैशेषिक के अनुसार द्रव्य और गुण दोनों नित्य है, जबकि कर्म नित्य न होकर क्षणिक होता है।
- प्रशस्तपाद ने गुरुत्व, द्रवत्व, भावना और संयोग इत्यादि प्रमुख उपाधियों के कारण कर्म की स्थिति को माना है।

विभिन्न शास्त्रों की दृष्टि में कर्म

- व्याकरणशास्त्र में ''कर्तुरीप्सिततमं कर्म'' से कर्ता को ईप्सिततम की कर्मसंज्ञा कही गयी है।
- मीमांसा दर्शनशास्त्र में नित्य, नैमित्तिक और काम्य- इन तीन को कर्म कहा गया है।
- श्रीमद्भगवद्गीता में-सात्त्विक कर्म, राजसिक कर्म, तामसिक कर्म- बताये गये हैं। (गीता 18.7)
- वेदान्तशास्त्र में सञ्चित एवं प्रारब्ध दो कर्म माने गये हैं।

वैशेषिक दर्शन का चतुर्थ पदार्थ

4. सामान्य

- **सामान्य**- नित्यम् एकम् अनेकानुगतं सामान्यम्

- 'सामान्य' नामक पदार्थ नित्य है तथा एक एवं अनेक में रहता है।
- इसकी स्थिति द्रव्य, गुण एवं कर्म में देखी जाती है- द्रव्यगुणकर्मवृत्तिः
- **सामान्य के प्रकार-** इसके दो प्रकार है- पर और अपर
- **परसामान्य-** परमधिकदेशवृत्ति (दीपिका टीका) पर सामान्य अधिक देश में रहने वाला होता है। पर सामान्य सत्ता है। 'परं सत्ता'
- **अपर सामान्य-** अपरं न्यूनदेशवृत्ति (दीपिका टीका)
  अपर सामान्य कम देश में रहता है। द्रव्यत्व आदि अपर सामान्य हैं। 'अपरं द्रव्यत्वादि'

सामान्य

स्थिति
द्रव्य गुण कर्म

भेद
परसामान्य (सत्ता) अधिकदेश में
अपर सामान्य (द्रव्यत्वादि) न्यूनदेश में
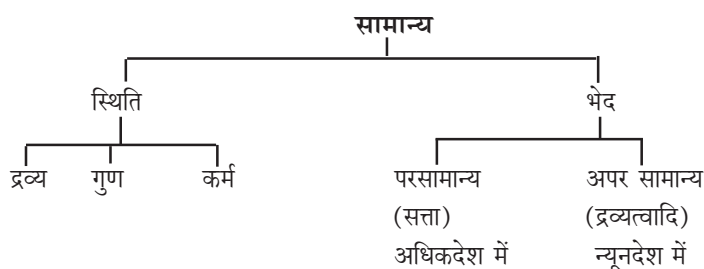
सामान्य पदार्थ के विषय में कुछ स्मरणीय तथ्य

- न्यायवैशेषिक में सामान्य अथवा जाति वह पदार्थ है, जिसके कारण एक ही प्रकार की विभिन्न वस्तु अथवा प्राणियों में समानता की प्रतीति होती है। जैसे मनुष्य में मनुष्यत्व, गो में गोत्व, घट में घटत्व आदि।
- यह सामान्य वस्तु या प्राणी में समवाय सम्बन्ध से विद्यमान रहता है। इसी को जाति, सत्ता एवं भाव भी कहा जाता है।
- सामान्य नित्य होता है।
- यह अनेक में विद्यमान रहता है, एक में इसकी स्थिति सम्भव नहीं है।
- इसकी स्थिति पदार्थों मे समवाय सम्बन्ध से बनी रहती है।
- यह केवल द्रव्य, गुण और कर्म में ही समवेत रूप से रहता है शेष में नहीं।
- इसके दो भेद हैं (1) पर सामान्य (2) अपर सामान्य
- पर सामान्य अधिक देश में रहता है। अपर सामान्य एक देश में विद्यमान रहता है।

वैशेषिक दर्शन का पाँचवा पदार्थ विशेष

- **विशेष-** 'नित्यद्रव्यवृत्तयो व्यावर्तका विशेषाः'
- नित्य द्रव्य में रहने वाले व्यावर्तक विशेष हैं।
- विशेष पदार्थ के प्रकार- 'नित्यद्रव्यवृत्तयो विशेषास्त्वनन्ता एव' अर्थात् नित्यद्रव्यवृत्ति वाले विशेष नामक पदार्थ तो अनन्त ही हैं।

विशेष पदार्थ किन द्रव्यों में रहता है- यह विशेष नित्यद्रव्यों में रहता है। ये नित्यद्रव्य हैं-

पृथिवी, जल, तेज, वायु के परमाणु तथा आकाश, काल, दिक् आत्मा और मन।

''पृथिव्यादि चतुष्टयस्य परमाणव आकाशादिपञ्चकस्य नित्यद्रव्याणि'' (तत्त्वदीपिका)

विशेष नामक पदार्थ के विषय में स्मरणीय तथ्य

- इस विशेष पदार्थ के विवेचन के कारण ही इस दर्शन का नाम **वैशेषिक** पड़ा। यह इस दर्शन की **मौलिक कल्पना** है।
- **विशेष का अर्थ है-**विश्लेषक अर्थात् भेदक धर्म। सभी नित्य द्रव्यों में एक भेदक धर्म माना गया है, जिसके कारण उनमें भेद की प्रतीति हुआ करती है, वही वैशेषिक का विशेष नामक पदार्थ है।
- 'विशेष' पदार्थ व्यक्ति की पृथकता को दर्शाता है। सामान्य पदार्थ समष्टिगत होता है, 'विशेष' नामक पदार्थ व्यक्तिगत होता है।
- वैशेषिकों का मानना है कि नित्यद्रव्यों की परस्पर भिन्नता सिद्ध करने के लिए ही 'विशेष' पदार्थ की आवश्यकता है। अनित्यद्रव्यों की पारस्परिक भिन्नता के लिए 'विशेष' पदार्थ की कोई आवश्यकता नहीं है,परन्तु नित्यद्रव्यों विशेषतः परमाणुओं में पारस्परिक भिन्नता का निर्धारण किसी बाह्य आधार पर सम्भव नहीं है, इसलिए इन नित्यद्रव्यों में एक-एक विशेष की सत्ता मानी जाती है।
- अन्नम्भट्ट इस विशेष पदार्थ को नित्यद्रव्य में रहने वाला तथा अनन्त मानते हैं। प्रत्येक नित्यद्रव्य में पृथक्-पृथक् पाये जाने के कारण विशेष अनन्त हैं।
- **प्रशस्तपाद के अनुसार-** अन्त में रहने वाले ही अन्त्य कहे जाते हैं तथा अपने आश्रयद्रव्य को अन्य सभी वस्तुओं से पृथक् करने के कारण ये 'विशेष' कहलाते हैं।

  ''अन्तेषु भवा अन्त्याः स्वाश्रयविशेषकत्वाद् विशेषाः'' (प्रशस्तपादभाष्य)
- विशेष पदार्थ द्रव्य,गुण,कर्म एवं सामान्य से भिन्न पदार्थ हैं क्योंकि ये केवल नित्यद्रव्य में ही समवेत होकर रहते हैं **''विशेषास्तु नित्यद्रव्यसमवेताः** (सप्तपदार्थी)।
- रघुनाथ शिरोमणि आदि कुछ आधुनिक नैयायिक 'विशेष' पदार्थ को नहीं मानते हैं।
- कुमारिलभट्ट, प्रभाकर,बौद्ध,वेदान्ती आदि विशेष पदार्थ को अस्वीकार करते हुए इसका खण्डन करते हैं।
- राधाकृष्णन कहते हैं कि इस विशेष पदार्थ की केवल काल्पनिक सत्ता है, वास्तविक नहीं।
- विशेष पदार्थ की कुछ अन्य परिभाषायें-
  - स्वतो व्यावर्तकत्वम् (जो स्व से स्व को पृथक् करे)
  - जातिरहितत्वे सति नित्यद्रव्यमात्रवृत्तिः
  - एकमात्रसमवेतत्वे सति सामान्यशून्यः

● अत्यन्तव्यावृत्तिः

इन सभी परिभाषाओं का आशय है कि एक नित्य पदार्थ को दूसरे पदार्थ से पृथक् करने के लिए 'विशेष' को भी पदार्थ मानना आवश्यक है।

➢ कणाद ने वैशेषिकसूत्र में 'विशेष' पदार्थ के विषय में कहा है-
''अन्यत्रान्त्येभ्यो विशेषेभ्यः'' (1.2.6)

6. वैशेषिक दर्शन का छठवाँ पदार्थ समवाय

समवाय- नित्यसम्बन्धः समवायः

नित्यसम्बन्ध को समवाय कहते हैं।

समवाय के प्रकार- समवाय तो एक ही होता है- **समवायस्त्वेक एव स्थिति-** यह समवाय पदार्थ अयुतसिद्ध पदार्थों में रहता है। 'अयुतसिद्धवृत्तिः'

अयुतसिद्ध क्या है- ययोर्द्वयोर्मध्ये एकमविनश्यदपराश्रितमेवावतिष्ठते तावयुतसिद्धौ

➢ जिन दो पदार्थों में एक अविनश्यदवस्था वाला दूसरे पर आश्रित हो, वे दोनों अयुतसिद्ध कहे जाते हैं।

अयुतसिद्ध के उदाहरण-

➢ अयुतसिद्ध के पाँच उदाहरण दिये जाते हैं-
- **अवयव एवं अवयवी-** जैसे कपाल (अवयव) घट (अवयवी)
- **गुण एवं गुणी-** जैसे घट (गुणी) घटरूप (गुण)
- **क्रिया एवं क्रियावान् –** क्रिया क्रियावान् के बिना नहीं हो सकती। यहाँ क्रियावान् समवायी है तथा उसमें समवेत रहती है।
- **जाति और व्यक्ति-** जैसे घटत्व जाति सदैव घटव्यक्ति में अविनश्यद् रहती है।
- **नित्यद्रव्य विशेष-** नित्यद्रव्यों में विशेष नामक पदार्थ रहता है अतः विशेष एवं नित्यद्रव्य दोनों अयुतसिद्ध हैं।

समवाय (नित्यसम्बन्ध)

अयुतसिद्धवृत्ति

अवयव- अवयवी	गुण-गुणी	क्रिया-क्रियावान्	जाति-व्यक्ति	विशेष-नित्यद्रव्य
(तन्तु-पट)	(पटरूप-पट)	(चलना-पुरुष)	(मनुष्यत्व-मनुष्य)	(विशेष-आकाशादि)

समवाय पदार्थ के सम्बन्ध में कुछ स्मरणीय तथ्य

➢ दो अयुतसिद्ध पदार्थों में रहने वाले नित्यसम्बन्ध को समवाय कहा गया है।

➢ जिन दो पदार्थों की स्थिति स्वतन्त्र रूप से अलग-अलग बनी रह सकती है, वे दोनों पदार्थ युतसिद्ध कहलायेंगे। जैसे- पुस्तक और लेखनी। इसके विपरीत जो दो पदार्थ पृथक् सिद्ध न हो सके, वे अयुतसिद्ध कहे जायेंगे। जैसे-तन्तु और पट। कपाल और

घट आदि।

- समवाय को संक्षेपतः ऐसे भी परिभाषित किया जा सकता है-
  ''समवाय दो या दो से अधिक अयुतसिद्ध पदार्थों के बीच विद्यमान, संयोग से भिन्न एक नित्य सम्बन्ध है। जो कारणवाद पर आधारित होकर अपने सम्बन्धियों में स्वरूप सम्बन्ध से विद्यमान रहता है, जिसका हम केवल अनुमान कर सकते हैं।''
- संयोग सम्बन्ध केवल दो द्रव्यों के बीच ही होता है 'द्रव्यद्रव्ययोरेव संयोगः' जबकि समवाय सम्बन्ध द्रव्यों के साथ-साथ उनसे भिन्न पदार्थों में भी सम्भव हैं।
- डॉ. धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री के अनुसार -'यदि द्रव्य,गुण आदि प्रथम पाँच पदार्थ न्यायवैशेषिक रूप ढाँचे के लिए ईटों के समान हैं तो समवाय पदार्थ उन ईटों को जोड़ने वाले गारे की भाँति है।
- यह **समवाय नित्य सम्बन्ध** है। यहाँ नित्य से तात्पर्य है कि यह कार्य की उत्पत्ति के बिना उत्पन्न नहीं होता तथा कार्य के नाश के बिना नष्ट नहीं होता।
- इसप्रकार संक्षेप में समवाय को कह सकते हैं कि-
  - ☆ समवाय नित्य सम्बन्ध है, और संयोग सम्बन्ध से भिन्न है।
  - ☆ समवाय एक है
  - ☆ समवाय दो या उससे अधिक अयुतसिद्ध पदार्थों के मध्य रहने वाला सम्बन्ध है
  - ☆ समवाय द्रव्यादि से भी भिन्न एक पृथक् पदार्थ है।
  - ☆ समवाय स्वयं कहीं समवेत होकर नहीं रहता, अपितु अपने सम्बन्धियों में स्वरूप सम्बन्ध से ही रहता है।

7. वैशेषिक दर्शन का सातवाँ पदार्थ अभाव

- वैशेषिक दर्शन के प्रारम्भ में अभाव नामक पदार्थ का उल्लेख नहीं प्राप्त होता है। कणाद ने छः भावपदार्थों का ही विवरण दिया है।
- प्रशस्तपाद ने भी छः पदार्थों की चर्चा की है।
- उदयनाचार्य, श्रीधर, शिवादित्य आदि परवर्ती वैशेषिकाचार्यों ने अभाव नामक सातवें पदार्थ का परिगणन किया।
- प्राचीन आचार्यों ने अभाव का उल्लेख नहीं किया था, अतः इसका लक्षण भी नहीं किया। अन्नम्भट्ट ने भी इसका लक्षण न करके सीधे चार भेद बताते हैं।
- कुछ वैशेषिकाचार्यों की दृष्टि में अभाव की परिभाषा 'न भावः इति अभावः' इस व्युत्पत्ति के अनुसार वस्तु या प्राणी के भाव का न होना ही 'अभाव' कहलाता है। **'भावभिन्नः पदार्थः अभावः'**
- दार्शनिक दृष्टि से ''किसी वस्तु का किसी विशेषकाल में किसी विशेष स्थान में अनुपस्थिति अभाव है।''

- प्रतियोगिज्ञानाधीनोऽभावः (सप्तपदार्थी)
  आचार्य शिवादित्य ने अपने 'सप्तपदार्थी' नामक ग्रन्थ में अभाव को अपने प्रतियोगी ज्ञान के अधीन स्वीकार किया है।
- 'द्रव्यादिषट्कान्योन्याभावः'-(न्यायसिद्धान्तमुक्तावली)
  आचार्य विश्वनाथ अपने ग्रन्थ न्यायसिद्धान्तमुक्तावली में द्रव्य, गुण, कर्मादि छः पदार्थों के अन्योन्याभाव को ही अभाव कहते हैं।
- नञर्थप्रत्ययविषयोऽभावः(लक्षणावली)
  उदयनाचार्य अपनी कृति लक्षणावली में अभाव को नञर्थक ज्ञान का विषय मानते हैं।
- **प्रतियोगिज्ञानाधीनज्ञानविषयत्वम् अभावत्वम्-**
  प्रतियोगिज्ञान के अधीन जो ज्ञान का विषय है, उसे अभाव कहते हैं।
- **यस्याभावः स प्रतियोगी-**अर्थात् जिसका अभाव कहा जा रहा है, वही प्रतियोगी होता है। जैसे 'भूतले घटाभावः' इस कथन में अभाव का प्रतियोगी घट ही है। जिस तरह घटाभाव का प्रतियोगी घट ही होता है उसी तरह पटाभाव का प्रतियोगी पट होगा।

अभाव के भेद

अभाव के चार भेद हैं-

अभाव

प्रागभाव,	प्रध्वंसाभाव,	अत्यन्ताभाव,	अन्योन्याभाव
उत्पत्ति के पूर्व होने वाला अभाव जैसे- घटोत्पत्ति पूर्व घट का अभाव	विनाश के बाद किसी वस्तु का अभाव-प्रध्वंसाभाव जैसे-घट के विनाश के बाद घट का अभाव	दो वस्तुओं के सम्बन्धों तीनों कालों में होने वाला कालों में होने वाला अभाव-अन्त्यन्ताभाव	दो वस्तुओं की परस्पर भिन्नता- अन्योन्याभाव जैसे - घट में पट का अभाव
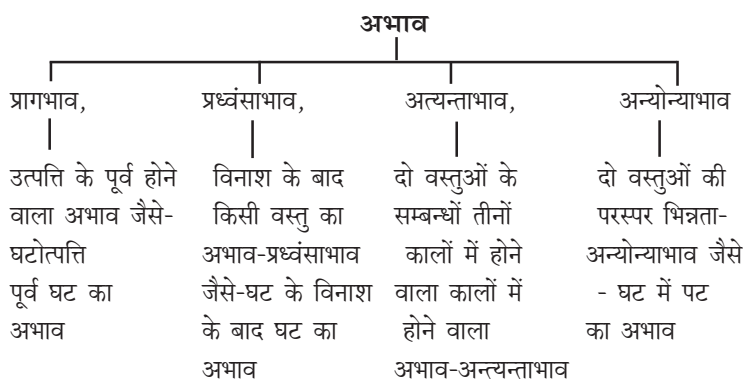
1. **प्रागभाव-** अनादिः सान्तः प्रागभावः। उत्पत्तेः पूर्वं कार्यस्य।
   प्रागभाव अनादि एवं सान्त होता है। उत्पत्ति के पूर्व कार्य का प्रागभाव होता है।
2. **प्रध्वंसाभाव -** सादिरनन्तः प्रध्वंसः। उत्पत्त्यनन्तरं कार्यस्य। जिसका आदि हो अन्त न हो, वह प्रध्वंसाभाव है उत्पत्ति के अनन्तर कार्य का प्रध्वंसाभाव होता है।

- यह अभाव कार्य के नष्ट होने के बाद जन्म लेता है - विनाशानन्तरं कार्यस्य। किन्तु इसका अन्त कभी नहीं होता, इसलिए यह अनन्त है।

3. अत्यन्ताभाव-

- त्रैकालिकसंसर्गावच्छिन्नप्रतियोगिताकोऽत्यन्ताभावः
- त्रैकालिक= भूत,भविष्य,वर्तमान- तीनों कालों में होने वाले और संसर्ग से युक्त प्रतियोगिता जिसमें है, उस अभाव को अत्यन्ताभाव कहा जाता है। जैसे-भूतले घटो नास्ति। यहाँ पर भूतल में घट का अत्यन्ताभाव है।
- **अनादिरनन्तोऽत्यन्ताभावः,** यथा-भूतले घटो नास्ति।
  यहाँ भूतल में संयोग सम्बन्ध से घट का अभाव है। घटाभाव का प्रतियोगी घट है। अभाव भूतल में है। अतः भूतल घटाभाव का अनुयोगी है। अत्यन्ताभाव को प्रकट करता है।
- प्राचीन नैयायिक **'वायौ रूपाभावः'** अर्थात् वायु में रूप के अभाव को अत्यन्ताभाव कहते हैं। क्योंकि वायु में रूप का भाव, न है,न कभी था, न कभी होगा। वायु में यह अभाव नित्य एवं शाश्वत है। इसप्रकार यह त्रैकालिक अत्यन्ताभाव है।

4. अन्योन्याभाव- तादात्म्यसम्बन्धावच्छिन्नप्रतियोगिताकोऽन्योन्याभावः। यथा - घटः पटः न इति

- तादात्म्य सम्बन्ध से युक्त प्रतियोगिता वाले अभाव को अन्योन्याभाव कहा जाता है। यथा- घट पट नहीं है और पट घट नहीं है।
- अन्योन्याभाव का तात्पर्य है दो वस्तुओं की पारस्परिक भिन्नता। अर्थात् एक दूसरे में एक दूसरे का अभाव अन्योन्याभाव है।
- अत्यन्ताभाव संसर्गावच्छिन्न प्रतियोगिता का अभाव होता है जब कि अन्योन्याभाव तादात्म्यप्रतियोगिता का अभाव होता है।

प्रमाण विवेचन

- आचार्य अन्नम्भट्ट तर्कसंग्रह के द्वितीय पदार्थ गुण के विवेचन प्रसङ्ग में 24 गुणों का विवेचन करते हैं। इसी सन्दर्भ में बुद्धि नामक सोलहवें गुण के विवेचन प्रसङ्ग में बुद्धि के दो भेद – स्मृति और अनुभव बताते हैं। अनुभव – यथार्थ और अयथार्थ भेद से दो प्रकार का होता है। यथार्थानुभव के चार भेद – प्रत्यक्ष, अनुमिति, उपमिति और शाब्द। इनके प्रत्यक्ष, अनुमान उपमान और शब्द ये चार करण बताये गये हैं, यही चार प्रमाण हैं। जिनका विवेचन यहाँ किया जा रहा है।

बुद्धि/ज्ञान

- स्मृति
- अनुभव
  - यथार्थ
    - प्रत्यक्ष (प्रत्यक्ष)
    - अनुमिति (अनुमान)
    - उपमिति (उपमान)
    - शाब्द (शब्द) - करण
  - अयथार्थ
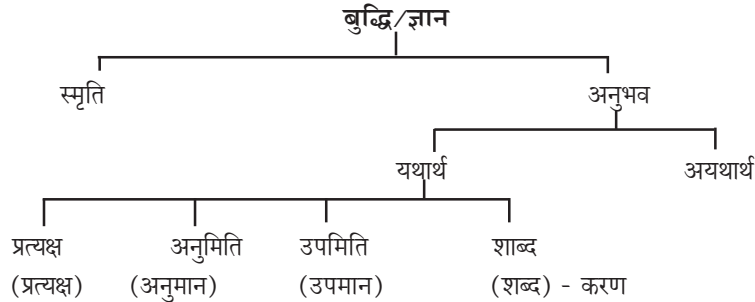
भारतीय दर्शन में प्रमाण विचार

1. चार्वाकदर्शन (1) - प्रत्यक्ष
2. जैनदर्शन (2) - प्रत्यक्ष एवं परोक्ष
3. बौद्धदर्शन (2) -प्रत्यक्ष एवं अनुमान
4. वैशेषिकदर्शन (2) - प्रत्यक्ष एवं अनुमान
5. सांख्य एवं योगदर्शन (3) - प्रत्यक्ष, अनुमान एवं आप्तवचन (शब्द)
6. न्यायदर्शन (4) - प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान तथा शब्द प्रमाण
7. प्रभाकरमीमांसक (5) - प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द और अर्थापत्ति
8. भाट्टमीमांसक (6) - प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, अर्थापत्ति, अनुपलब्धि (अभाव) प्रमाण। वेदान्त दर्शन भी इन्हीं प्रमाणों को स्वीकार करता है।
9. पौराणिक (8) – प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, अर्थापत्ति, अनुपलब्धि, सम्भव, ऐतिह्य।
10. शून्यवादी बौद्ध उपर्युक्त सभी प्रमाणों को स्वीकार नहीं करते हैं।
11. प्रशस्तपाद ने उपमान एवं शब्द प्रमाण के स्थान पर क्रमशः स्मृति तथा आर्षज्ञान को मानते हैं।

प्रमाण-

- प्रमायाः करणं प्रमाणम् (दीपिका टीका) प्रमा के करण अर्थात् असाधारणकारण को प्रमाण कहा है।
- 'प्रमीयते अनेन इति प्रमाणम्' (विद्वत्गण)
- उपलब्धिसाधनानि प्रमाणानि (वात्स्यायन)
  उपलब्धि अर्थात् ज्ञान के साधन को प्रमाण माना है।
- **करण- असाधारणं कारणं करणम्**
  असाधारण कारण करण है।
- **कारण-** कार्यनियतपूर्ववृत्ति कारणम् - कार्य के पूर्व नियतरूप से रहने वाला कारण है।
- **कार्य-** कार्यं प्रागभावप्रतियोगि - प्रागभाव का प्रतियोगी कार्य है।
- कारण के प्रकार – कारण तीन प्रकार का है –
  (1) समवायिकारण (2) असमवायिकारण (3) निमित्तकारण

कारण

समवायि	असमवायि	निमित्त
(तन्तवः पटस्य)	(तन्तुसंयोगः पटस्य)	(तुरीवेमादिकं पटस्य)
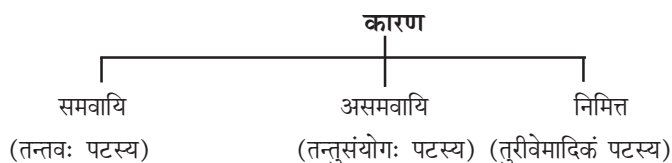
'कारणं त्रिविधम् – समवाय्यसमवायिनिमित्तभेदात्'

- **(1) समवायिकारण** - 'यत्समवेतं कार्यमुत्पद्यते तत्समवायिकारणम्' जिसमें समवाय सम्बन्ध से कार्य उत्पन्न होता है, वह समवायिकारण है।

  जैसे – पट का समवायिकारण तन्तु। अपने रूप का पट।

  (2) असमवायिकारण – 'कार्येण कारणेन वा सहैकस्मिन्नर्थे समवेतत्वे सति यत्कारणं तद् असमवायिकारणम्'

  यथा (i) तन्तुसंयोगः पटस्य (ii) तन्तुरूपं पटरूपस्य

  कार्य अथवा कारण के साथ एक पदार्थ में समवेत होने पर जो कारण है, वह असमवायिकारण है। यथा – पट का तन्तु संयोग तथा पटरूप का तन्तुरूप असमवायिकारण है।

  (3) निमित्तकारण – 'तदुभयभिन्नं कारणं निमित्तकारणम्'

  समवायि एवं असमयवायि दोनों कारणों से भिन्न निमित्तकारण है। जैसे- पट का तुरी, वेमा आदि।

- इन तीनों (समवायि, असमवायि, निमित्त) कारणों में जो असाधारण कारण है वही करण है।

प्रत्यक्षप्रमाणम्

1. प्रत्यक्षप्रमाणम् –

- **'प्रत्यक्षज्ञानकरणं प्रत्यक्षम्'** - प्रत्यक्षज्ञान का करण प्रत्यक्ष है।
- 'इन्द्रियार्थसन्निकर्षजन्यं ज्ञानं प्रत्यक्षम्' – इन्द्रिय तथा पदार्थ के सन्निकर्ष अर्थात् संयोग से उत्पन्न होने वाला ज्ञान प्रत्यक्ष है।
- 'प्रतिगतम् अक्षं प्रत्यक्षम्' – यह प्रत्यक्ष की व्युत्पत्ति है।

  प्रत्यक्ष प्रमाण के दो भेद हैं – (1) निर्विकल्पक (2) सविकल्पक

प्रत्यक्ष प्रमाण

निर्विकल्पक | सविकल्पक

(1) **निर्विकल्पक –** 'निष्प्रकारकं ज्ञानं निर्विकल्पकम' निष्प्रकारक ज्ञान निर्विकल्पक है। यथा – किञ्चिद् इदम् इति (यह कुछ है)

(2) **सविकल्पकम् –** 'सप्रकारकं ज्ञानं सविकल्पकम्।' सप्रकारकज्ञान सविकल्पक है।

यथा- डित्थोऽयम्, ब्राह्मणोऽयम्, श्यामोऽयम्।

(यह डित्थ है) (यह ब्राह्मण है) (यह श्याम है)

इन्द्रियार्थ सन्निकर्ष – प्रत्यक्षज्ञानहेतुरिन्द्रियार्थसन्निकर्षः षड्विधः

प्रत्यक्षज्ञान का हेतु इन्द्रिय एवं पदार्थ का सन्निकर्ष छः प्रकार का होता है

(i) संयोग (ii) संयुक्तसमवाय (iii) संयुक्तसमवेत समवाय

(iv) समवाय (v) समवेतसमवाय (vi) विशेषण विशेष्यभाव

(1) **संयोगसन्निकर्ष –** 'चक्षुषा घटप्रत्यक्षजनने संयोगः सन्निकर्षः' - चक्षु के द्वारा घट के प्रत्यक्ष ज्ञान में संयोग सन्निकर्ष होता है।

(2) **संयुक्तसमवायसन्निकर्ष –** 'घटरूपप्रत्यक्षजनने संयुक्तसमवायः सन्निकर्षः' घट के रूप के प्रत्यक्षज्ञान में संयुक्तसमवाय सन्निकर्ष होता है, क्योंकि चक्षु से संयुक्त घट में रूप समवाय सम्बन्ध से रहता है।

(3) **संयुक्तसमवेतसमवाय सन्निकर्ष –** 'रूपत्वसामान्यप्रत्यक्षे संयुक्तसमवेतसमवायः सन्निकर्षः' - रूपत्वजाति के प्रत्यक्ष में संयुक्तसमवेतसमवाय सन्निकर्ष होता है, क्योंकि चक्षु से संयुक्त घट में रूप समवाय सम्बन्ध से तथा रूप में रूपत्व समवाय सम्बन्ध से रहता है।

(4) **समवायसन्निकर्ष –** 'श्रोत्रेण शब्दसाक्षात्कारे समवायः सन्निकर्षः' - श्रोत्र (कर्ण) के द्वारा शब्द साक्षात्कार में समवायसन्निकर्ष होता है।

➢ कर्णविवर में विद्यमान आकाश ही श्रोत्र है।

➢ शब्द आकाश का गुण है तथा गुण एवं गुणी में समवाय सम्बन्ध होता है।

(5) **समवेतसमवायसन्निकर्ष –** 'शब्दत्वसाक्षात्कारे समवेतसमवायः सन्निकर्षः' शब्द जाति के प्रत्यक्ष में समवेतसमवायसन्निकर्ष होता है, क्योंकि शब्द में शब्दत्व समवायसम्बन्ध से रहता है।

(6) **विशेषणविशेष्यभाव सन्निकर्ष –** 'अभावप्रत्यक्षे विशेषणविशेष्यभावः सन्निकर्षः' - अभाव के प्रत्यक्ष में विशेषणविशेष्यभाव सन्निकर्ष होता है। क्योंकि 'भूतल घटाभाव वाला है' इस प्रकार के ज्ञान में चक्षु से संयुक्त भूतल में घटाभाव विशेषण है।

➢ इसप्रकार छः सन्निकर्षों से उत्पन्न ज्ञान प्रत्यक्ष है, उसका करण इन्द्रिय है, अतः इन्द्रिय ही प्रत्यक्ष प्रमाण है, यह सिद्ध होता है। 'तस्मात् इन्द्रियं प्रत्यक्षप्रमाणमिति सिद्धम्'

	इन्द्रिय	पदार्थ	सन्निकर्ष
1.	चक्षु	घट	संयोग
2.	चक्षु	घटरूप	संयुक्तसमवाय
3.	चक्षु	घटरूपत्व	संयुक्तसमवेतसमवाय
4.	श्रोत्र	शब्द	समवाय
5.	श्रोत्र	शब्दत्व	समवेतसमवाय
6.	चक्षु	घटाभाव (विशेषण) भूतल (विशेष्य)	विशेषण विशेष्यभाव

अनुमानप्रमाण

- **अनुमान –**'अनुमितिकरणम् अनुमानम्' - अनुमिति का करण अनुमान है।
- **अनुमिति –** 'परामर्शजन्यं ज्ञानम् अनुमितिः' – परामर्श से उत्पन्न होने वाला ज्ञान अनुमिति है।
- **परामर्श –** 'व्याप्तिविशिष्टपक्षधर्मताज्ञानं परामर्शः' – व्याप्ति से विशिष्ट पक्षधर्मताज्ञान को परामर्श कहते हैं।यथा – 'वह्निव्याप्यधूमवान् अयं पर्वतः' – यह ज्ञान परामर्श है वह्निव्याप्य यह पर्वत धूमवान् है। इसी परामर्श से उत्पन्न 'पर्वतो वह्निमान्' यह ज्ञान अनुमिति है।

व्याप्ति –

- 'यत्र यत्र धूमः तत्र तत्र अग्निः' इति साहचर्यनियमो व्याप्तिः - 'जहाँ जहाँ धूम है वहाँ वहाँ अग्नि है' – यह साहचर्यनियम व्याप्ति है।

पक्षधर्मता –

- 'व्याप्यस्य पर्वतादिवृत्तित्वं पक्षधर्मता'- व्याप्य का पर्वतादि में रहना पक्षधर्मता है।

  अनुमान- (1) स्वार्थानुमान (2) परार्थानुमान

1. **स्वार्थानुमान -** 'स्वार्थं स्वानुमितिहेतुः' – स्वार्थानुमान अपने अनुमिति ज्ञान का हेतु है।

- जैसे – कोई स्वयं ही बार-बार देखकर 'जहाँ जहाँ धुआँ है वहाँ वहाँ अग्नि है' इसप्रकार रसोईघर आदि में व्याप्ति को ग्रहण करके पर्वत के समीप जाकर उसमें अग्नि का सन्देह होने पर पर्वत में धूम को देखता हुआ 'जहाँ जहाँ धुआँ वहाँ वहाँ अग्नि' इस व्याप्ति का स्मरण करता है। तत्पश्चात् 'यह पर्वत अग्नि से व्याप्त धुएँ वाला है' यह ज्ञान उत्पन्न होता है। यही लिङ्गपरामर्श कहलाता है। इससे पर्वत वह्निमान् है, यह अनुमितिज्ञान उत्पन्न होता है। यही स्वार्थानुमान है।
- इसप्रकार द्विविध अनुमान में जो अनुमान अपने ज्ञान के लिए किया जाय, वह स्वार्थानुमान है – स्वस्य अर्थः प्रयोजनं यस्मात् तत् स्वार्थम्। 'स्वार्थं स्वप्रतिपत्तिहेतुः स्वानुमितिहेतुर्वा'

2. **परार्थानुमान -** 'यत्तु स्वयं धूमादग्निमनुमाय परं प्रति बोधयितुं पञ्चावयववाक्यं प्रयुज्यते तत्परार्थानुमानम्'

   जो स्वयं धूम से अग्नि का अनुमान करके दूसरें को समझाने के लिए पञ्चावयववाक्य का प्रयोग किया जाता है, वह परार्थानुमान है।

पञ्चावयव वाक्यों की प्रक्रिया

- प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय तथा निगमन – ये पाँच अवयव हैं।

1. **प्रतिज्ञा –** पर्वतो वह्निमान् (पर्वत वह्निमान् है)

2. **हेतु -** धूमवत्त्वात् (क्योंकि वह धूमवान् है)
3. **उदाहरण –** यो यो धूमवान् स स वह्निमान् यथा- महानसः (जो जो धूमवान् होता है, वह वह वह्निमान् होता है, जैसे – रसोईघर)
4. **उपनय –** तथा चायम् – (उसीप्रकार यह है)
5. **निगमन –** तस्मात् तथा इति (अतः इसमें भी वैसी ही अग्नि है)

- इस प्रकार पञ्चावयव वाक्य के द्वारा प्रतिपादित लिङ्ग से दूसरा व्यक्ति भी पर्वत पर अग्नि का अनुमान कर लेता है।
- स्वार्थानुमिति तथा परार्थानुमिति में लिङ्गपरामर्श ही करण है, इसलिए लिङ्गपरामर्श अनुमान है। **'तस्मात् लिङ्गपरामर्शोऽनुमानम्'**

लिङ्ग के प्रकार

लिङ्ग तीन प्रकार के हैं – (i) अन्वयव्यतिरेकी (ii) केवलान्वयी (iii) केवलव्यतिरेकी

(i) **अन्वयव्यतिरेकी –** 'अन्वयेन व्यतिरेकेण च व्याप्तिमद् अन्वयव्यतिरेकि' अन्वय एवं व्यतिरेक से व्याप्तिमान् अन्वयव्यतिरेकी होता है।

- यथा – वह्नौ साध्ये धूमवत्त्वम् =वह्नि के साध्य होने पर धूमवत्त्व लिङ्ग।
- यत्र धूमः तत्र अग्निः यथा-महानसः = जहाँ धुआँ होता है, वहाँ आग होती है। जैसे – रसोईघर। यह अन्वयव्याप्ति है।
- यत्र वह्निर्नास्ति तत्र धूमोऽपि नास्ति, यथा-ह्रदः = जहाँ आग नहीं होती वहाँ धुआँ नहीं होता, जैसे – सरोवर। यह व्यतिरेक व्याप्ति है।

(ïi) **केवलान्वयी –** 'अन्वयमात्रव्याप्तिकं केवलान्वयि' – अन्वयमात्र व्याप्ति वाला लिङ्ग केवलान्वयी है। यथा - घटोऽभिधेयः प्रमेयत्वात् पटवत् जैसे – घट अभिधेय है क्योंकि वह प्रमेय है। यथा – पट।

यहाँ प्रमेयत्व तथा अभिधेयत्व की व्यतिरेक व्याप्ति नहीं है, क्योंकि सभी कुछ प्रमेय और अभिधेय है।

(i) **केवलव्यतिरेकी** – 'व्यतिरेकमात्रव्याप्तिकं केवलव्यतिरेकि' – व्यतिरेक मात्र व्याप्ति वाला लिङ्ग केवलव्यतिरेकी है।

- यथा – पृथिवीतरेभ्यो भिद्यते गन्धवत्त्वात् यदितरेभ्यो न भिद्यते न तद् गन्धवत् यथा – जलम्।

  जैसे- पृथिवी इतर से भिन्न है, क्योंकि गन्धवती है, जो इतर से भिन्न नहीं है वह गन्धवती नहीं है, जैसे – जल।
- यह पृथिवी वैसी (गन्धरहित) नहीं है इसलिए उसके समान नहीं है यहाँ जो गन्धवान् है, वह इतर पदार्थों से भिन्न है। इसका अन्वय दृष्टान्त नहीं है क्योंकि पृथिवी मात्र ही पक्ष है।
- **पक्ष –** 'सन्दिग्धसाध्यवान् पक्षः'

जहाँ साध्य सन्दिग्ध रूप से पाया जाये, उसे पक्ष कहा जाता है। यथा- धूमवत्त्वे हेतौ पर्वतः। जैसे- धूमवत्त्व हेतु में पर्वत।

- **सपक्ष-** 'निश्चितसाध्यवान् सपक्षः।'

  निश्चित साध्य वाला सपक्ष होता है। यथा- रसोईघर।

- **विपक्ष-** 'निश्चितसाध्याऽभाववान् विपक्षः।'

  निश्चित साध्य का अभाव वाला विपक्ष होता है।

जैसे- महासरोवर

- पक्ष - सन्दिग्धसाध्यवान् (पर्वतः)
- सपक्ष - निश्चितसाध्यवान् (महानसः)
- विपक्ष - निश्चितसाध्य- अभाववान् (महाह्रदः)

हेत्वाभास

- हेतोः आभासाः = हेतु के दोष
- हेतुवद् आभासन्ते इति हेत्वाभासः = हेतु की तरह प्रतीत होना। दुष्ट हेतु या दोषयुक्त हेतु। इसप्रकार जो हेतु के समान भासित होता है किन्तु हेतु नहीं हो, वह हेत्वाभास कहलाता है।

हेत्वाभास के पाँच प्रकार-

1.सव्यभिचार 2. विरुद्ध 3. सत्प्रतिपक्ष 4. असिद्ध 5. बाधित

'सव्यभिचारि-विरुद्ध-सत्प्रतिपक्ष-असिद्ध- बाधिताः पञ्च हेत्वाभासाः'

हेत्वाभास

सव्यभिचार (अनैकान्तिक) | विरुद्ध | सत्प्रतिपक्ष | असिद्ध | बाधित

असिद्ध: आश्रयासिद्ध | स्वरूपासिद्ध | व्याप्यत्वासिद्ध

सव्यभिचार: साधारण | असाधारण | अनुपसंहारी

- सव्यभिचारी अनैकान्तिक है। यह तीन प्रकार का है-

  (i) साधारण (ii) असाधारण (i) अनुपसंहारी

  (i) **साधारण अनैकान्तिक हेत्वाभास-** साध्य- अभाववद्वृत्तिः साधारणोऽनैकान्तिकः

- साध्य के अभाव में रहने वाला साधारण अनैकान्तिक है।

- जैसे- पर्वतो वह्निमान् प्रमेयत्वात् इति।
- पर्वत वह्निमान् है, क्योंकि वह प्रमेय है।
  प्रमेयत्व वह्नि के अभाव वाले सरोवर में रहता है।
  (ii) **असाधारण अनैकान्तिक हेत्वाभास-** 'सर्वसपक्षविपक्षव्यावृत्तः पक्षमात्रवृत्तिरसाधारणः'
- जो सपक्ष एवं विपक्ष में न रहकर केवल पक्ष में रहे, वह असाधारण है।
  यथा- शब्दो नित्यः शब्दत्वात् इति।
  जैसे- शब्द नित्य है, क्योंकि वह शब्द है। शब्द सारे नित्य एवं अनित्य में न रहकर केवल शब्द में रहता है
  (iii) **अनुपसंहारी अनैकान्तिक हेत्वाभास-**
  'अन्वयव्यतिरेकदृष्टान्तरहितोऽनुपसंहारी'
- अन्वय एवं व्यतिरेक दृष्टान्त से रहित हेत्वाभास अनुपसंहारी होता है।
  यथा- सर्वम् अनित्यं प्रमेयत्वात् इति। सब अनित्य है प्रमेयत्व के कारण। यहाँ 'सर्वं' पक्ष है इसलिए दृष्टान्त नहीं है।
- तर्कभाषा में अनैकान्तिक(सव्यभिचारी) हेत्वाभास के दो ही भेद कहे गये हैं साधारण एवं असाधारण।

2. विरुद्ध हेत्वाभास-

'साध्याभावव्याप्तो हेतुर्विरुद्धः' साध्य के अभाव से व्याप्त हेतु विरुद्ध है।
यथा- शब्दो नित्यः कृतकत्वात् इति
जैसे- शब्द नित्य है कार्य होने के कारण यहाँ कृतकत्व नित्यत्व का अभाव अनित्यत्व से व्याप्त है।

3. सत्प्रतिपक्ष हेत्वाभास-

- 'यस्य साध्य-अभावसाधकं हेत्वन्तरं विद्यते स सत्प्रतिपक्षः'
  जिस हेतु के साध्य के अभाव को सिद्ध करने वाला अन्य हेतु है, वह सत्प्रतिपक्ष है।
- यथा- शब्दो नित्यः श्रावणत्वाच्छब्दवत्।
  - ☆ शब्द नित्य है। श्रावणत्व के कारण शब्द के समान।
  - ☆ शब्दो अनित्यः कार्यत्वाद् घटवत् इति।
  - ☆ शब्द अनित्य है, कार्य होने के कारण, घट के समान।

4. असिद्ध हेत्वाभास

- असिद्ध हेत्वाभास तीन प्रकार का होता है-
  (i) आश्रयासिद्ध (ii) स्वरूपासिद्ध (iii) व्याप्यत्वासिद्ध
- 'स्वयम् असिद्धः कथं परान् साधयति' अर्थात् जहाँ हेतु की पक्ष में विद्यमानता निश्चित नहीं होती वहाँ असिद्ध हेत्वाभास होता है।

(i) **आश्रयासिद्ध हेत्वाभास-** जिस हेतु का आश्रय(पक्ष) प्रमाणसिद्ध न हो, वह आश्रयासिद्ध है- **'यस्य हेतोः आश्रयो नावगम्यते स आश्रयासिद्धः'**
यथा- गगनारविन्दं सुरभि अरविन्दत्वात्
आकाशकमल सुगन्धित होता है, क्योंकि वह कमल है, सरोवर में उत्पन्न कमल की तरह। यहाँ साध्य सुरभित्व का आश्रय गगनारविन्द की सत्ता ही नहीं है।
(ii) **स्वरूपासिद्ध हेत्वाभास-** स्वरूपासिद्ध वह हेत्वाभास है जिसके पक्ष में हेतु का अभाव होता है। जैसे- **'शब्दो गुणः चाक्षुषत्वात् रूपवत्।'** शब्द गुण है, दिखाई पड़ने के कारण, रूप के समान।

- यहाँ 'चाक्षुषत्व' शब्द में नहीं है क्योंकि शब्द श्रवण से ग्राह्य है।

(iii) व्याप्यत्वासिद्ध हेत्वाभास- 'सोपाधिको हेतुर्व्याप्यत्वासिद्धः' उपाधियुक्त हेतु व्याप्यत्वासिद्ध होता है।

- यथा- 'पर्वतो धूमवान् वह्निमत्त्वात्'
  पर्वत धूमवान् है, वह्नियुक्त होने के कारण।
  सोपाधिक होने से वह्निमत्त्व व्याप्यत्वासिद्ध है।
- **उपाधि-** 'साध्यव्यापकत्वे सति साधन-अव्यापकत्वम् उपाधिः'
  साध्य के व्यापक होने पर साधन की अव्यापकता उपाधि है।

5. बाधित हेत्वाभास

- 'यस्य साध्याभावः प्रमाणान्तरेण निश्चितः सः बाधितः।'
  जिस हेतु के साध्य का अभाव किसी अन्य प्रमाण से निश्चित होता है वह बाधित हेत्वाभास है।
- यथा- वह्निरनुष्णो द्रव्यत्वात् इति।
  अग्नि शीतल है, द्रव्य होने के कारण।
  यहाँ 'अनुष्णत्व' (शीतलता) साध्य है उसका अभाव उष्णत्व स्पार्शनप्रत्यक्ष से ज्ञात होता है। इसलिए इसमें बाधित हेत्वाभास है।

उपमानप्रमाण

- **उपमान-** 'उपमितिकरणम् उपमानम्'
  उपमिति का करण उपमान है।
- **उपमिति-** 'संज्ञासंज्ञिसम्बन्धज्ञानम् उपमितिः'
  संज्ञा तथा संज्ञी के सम्बन्धज्ञान को उपमिति कहते हैं। उसका करण सादृश्यज्ञान है।
- **अवान्तरव्यापार-** 'अतिदेशवाक्यार्थस्मरणम् अवान्तरव्यापारः'
  प्रामाणिक व्यक्ति के कहे हुए वाक्यार्थ का स्मरण अवान्तर व्यापार है।
- **उपमिति की प्रक्रिया-** जैसे कोई गवय शब्द के अर्थ को बिना जानता हुआ किसी

जंगली पुरुष से गाय के सदृश गवय होता है (गो सदृशो गवयः) यह सुनकर वन में जाता हुआ वाक्य के अर्थ को स्मरण करते हुए गो सदृश पिण्ड को देखता है। तदनन्तर यह गवय शब्द से वाच्य है। यह उपमिति उत्पन्न होती है।

शब्दप्रमाण

- **शब्द-** 'आप्तवाक्यं शब्दः' आप्तपुरुषों का वाक्य शब्द प्रमाण है।
- **आप्त-** 'आप्तस्तु यथार्थवक्ता' आप्त तो यथार्थवक्ता है।
  वाक्य- 'वाक्यं पदसमूहः' वाक्य पदों का समूह है।
  जैसे- गाम् आनय (गाय लाओ)
- वाक्य से प्राप्त होने वाला अर्थ ही शाब्दबोध अथवा वाक्यार्थज्ञान कहलाता है।
  पद- 'शक्तं पदम्' शक्त अर्थात् शक्तियुक्त (सामर्थ्यवान्) पद है।
- **शक्ति-** 'अस्मात् पदात् अयमर्थो बोद्धव्यः इति ईश्वरसङ्केतः शक्तिः'
  इस पद से यह अर्थ जानना चाहिए- इस प्रकार का ईश्वरसङ्केत ही शक्ति है।
- 'अर्थस्मृत्यनुकूलः पदपदार्थसम्बन्धः शक्तिः'(दीपिका टीका)

वाक्यार्थज्ञान के हेतु-

- आकांक्षा, योग्यता और सन्निधि- वाक्यार्थ ज्ञान के प्रति हेतु है।

आकांक्षा-

- 'पदस्य पदान्तरव्यतिरेकप्रयुक्तान्वयाननुभावकत्वम् आकाङ्क्षा'
  एक पद का दूसरे अर्थ के बिना प्रयुक्त होने पर शाब्दबोध करवाने की असमर्थता आकाङ्क्षा है।
- **योग्यता-** 'अर्थाबाधो योग्यता'
  अर्थ का बाधारहित होना योग्यता है।
- **सन्निधि-** 'पदानाम् अविलम्बेन उच्चारणं सन्निधिः'
  पदों का बिना विलम्ब के उच्चारण सन्निधि है।
- इसप्रकार आकांक्षा, योग्यता, सन्निधि से रहित वाक्य प्रमाण नहीं है। यथा- गौः, अश्वः, पुरुषः, हस्ती- यह प्रमाण नहीं हैं, क्योंकि इसमें आकांक्षा का अभाव है।
- 'अग्निना सिञ्चेत्' इति न प्रमाणम्। क्योंकि इसमें योग्यता का अभाव है।
- एक-एक प्रहर में कहे गये 'गाम् आनय' इत्यादि पद प्रमाण नहीं हैं, क्योंकि इनमें सान्निध्य नहीं है।

वाक्य के दो प्रकार- तर्कसंग्रह के अनुसार वाक्य के दो प्रकार हैं- वैदिक और लौकिक

(i) **वैदिक वाक्य-** 'वैदिकमीश्वरोक्तत्वात् सर्वमेव प्रमाणम्'
ईश्वर वचन होने के कारण सारे वैदिक वाक्य प्रमाण हैं।

(ii) **लौकिक वाक्य-** लौकिक वाक्य तो आप्तकथित प्रमाण हैं, अन्य प्रमाण नहीं हैं।

'लौकिकं तु आप्तोक्तं प्रमाणम् अन्यद् अप्रमाणम्'

शाब्दज्ञान- वाक्यार्थज्ञानं शाब्दज्ञानम्।

वाक्य के अर्थों का ज्ञान ही शाब्दज्ञान है, उसका करण शब्द है।

भारतीय दर्शन का ख्यातिवाद

1. विज्ञानवादी बौद्ध – आत्मख्याति (विज्ञानख्यातिवाद)
2. शून्यवादी बौद्ध- असत्ख्याति (शून्यताख्यातिवाद)
3. प्राभाकरमीमांसक- अख्यातिवाद
4. कुमारिलभट्ट - विपरीतख्यातिवाद
5. नैयायिक – अन्यथाख्यातिवाद
6. वेदान्ती – अनिर्वचनीयख्यातिवाद (अध्यास)
7. प्राचीनसांख्य और रामानुज का- सत्ख्यातिवाद
8. उत्तरसांख्य और जैनमत का – सदसत्ख्यातिवाद

❑❑

6. वेदान्तसार

वेदान्त दर्शन की भूमिका

- वेदान्त वेद के सिद्धान्त हैं। वेद के चार भाग हैं- मन्त्र, ब्राह्मण, आरण्यक, और उपनिषद्।
- सर्वप्रथम वेदान्त का प्रयोग उपनिषद् के अर्थ में हुआ।उपनिषद् वेद के अन्तिम भाग हैं, इसलिए उनको वेदान्त कहा जाता है।
- उपनिषद् को **अध्यात्मविद्या** या **ब्रह्मविद्या** भी कहते हैं।
- वेद के अन्तिम भाग होने से इसे वेदान्त भी कहा जाता है।
- **'वेदान्तो नाम उपनिषद्प्रमाणम्'** परिभाषा के अनुसार उपनिषदों को प्रमाणरूप में मानकर चलने वाला शास्त्र वेदान्तदर्शन माना गया है।
- इसे सर्वप्रथम व्यवस्थितरूप देने का श्रेय **आचार्य बादरायण** को जाता है। जिन्होंने ब्रह्मसूत्र नामक ग्रन्थ की संरचना की। विद्वानों ने इन्हें **वेदान्तदर्शन का संस्थापक** अथवा प्रणेता आचार्य भी कहा है।
- विद्वानों ने इनका समय 400 ई॰पू॰ के लगभग निर्धारित किया है।
- महर्षि बदर का वंशज होने के कारण इन्हें बादरायण नाम से जाना जाता है।

ब्रह्मसूत्र

- बादरायण वेदान्तदर्शन के प्रसिद्ध ग्रन्थ ब्रह्मसूत्र की रचना की। इसमें 4 अध्याय, 16 पाद, 192 अधिकरण तथा 555 सूत्र हैं।
- ब्रह्मसूत्र को उत्तरमीमांसा, बादरायणसूत्र, ब्रह्ममीमांसा, वेदान्तसूत्र, व्याससूत्र तथा शारीरकसूत्र के नाम से भी जाना जाता है।
- इस ग्रन्थ में बृहदारण्यक, छान्दोग्य, कौषीतकि, ऐतरेय, मुण्डक, प्रश्न, श्वेताश्वतर आदि उपनिषद् ग्रन्थों में प्राप्त वाक्यों पर विचार किया गया है।

ब्रह्मसूत्र का वर्ण्य विषय

- ब्रह्मसूत्र के प्रथम अध्याय में स्पष्ट, अस्पष्ट एवं संदिग्ध श्रुतियों का ब्रह्म में समन्वय किया गया है।
- द्वितीय अध्याय में अन्य दार्शनिक मतों का दोष प्रदर्शन करके युक्तिपूर्वक वेदान्तमत की स्थापना की गई है।
- तृतीय अध्याय में जीव और ब्रह्म का लक्षण करते हुए उसे मुक्ति का बहिरङ्ग एवं अन्तरङ्ग साधन बताया गया है।

- चतुर्थ अध्याय में जीवन्मुक्ति, जीव की उत्क्रान्ति तथा सगुण -निर्गुण उपासना का दिग्दर्शन कराया गया है।

ब्रह्मसूत्र के विभिन्न भाष्य

भाष्यकार	भाष्य
शङ्कराचार्य	शारीरकभाष्य
रामानुजाचार्य	श्रीभाष्य
मध्वाचार्य	पूर्णप्रज्ञभाष्य
भास्कराचार्य	भास्करभाष्य
निम्बार्काचार्य	वेदान्तपारिजातभाष्य
श्रीकण्ठ	शैवभाष्य
वल्लभाचार्य	अणुभाष्य
विज्ञानभिक्षु	विज्ञानामृतभाष्य
आचार्य बलदेव	गोविन्दभाष्य

- **गौडपाद –** अद्वैतवेदान्त का प्रथम प्रवर्तक एवं प्रधान आचार्य गौडपाद को माना गया है।
- विद्वानों ने इन्हें ईसापूर्व द्वितीय शताब्दी के पूर्वभाग में स्थित माना है।
- गौडपाद ने माण्डूक्योपनिषद् पर प्रसिद्ध कृति **'माण्डूक्यकारिका'** की रचना की।
- आचार्य गौडपाद अद्वैतवाद के प्रमुख आचार्य थे। अपनी कारिकाओं में उन्होंने जिन सिद्धान्तों को बीजरूप में प्रदर्शित किया, उन्हीं को आचार्य शङ्कर ने अपने ग्रन्थों में सरसशैली में प्रतिपादित किया।
- आचार्य गौडपाद के शिष्य तथा शङ्कराचार्य के गुरु आचार्य गोविन्दपाद थे, शङ्कराचार्य की जीवनी से इनका नर्मदातट निवासी होना सिद्ध होता है। ये अपने समय के उद्भट विद्वान् थे।

आचार्य शङ्कर

- शङ्कराचार्य **अद्वैतवाद के प्रवर्तक** आचार्य माने जाते हैं।
- अद्वैतमत को **शाङ्करमत** या **शाङ्करदर्शन** भी कहते हैं।
- ब्रह्मसूत्र पर उपलब्ध भाष्यों में सर्वाधिक प्राचीन शाङ्करभाष्य (शारीरिक भाष्य) माना जाता है।
- शङ्कराचार्य का जन्म केरल प्रदेश की पूर्णा नदी के तटवर्ती ग्राम कलाडी में वैशाख शुक्ल **5** को **788** ई॰ में हुआ। इनके पिता का नाम **शिवगुरु** और माता का नाम **सुभद्रा** मिलता है।
- भगवान् शङ्कर की आराधना से पुत्र प्राप्ति होने के कारण इनका नाम शङ्कर रखा गया। बालक शङ्कर बाल्यावस्था से ही अद्भुत प्रतिभा एवं स्मरण शक्ति के धनी थे अतः सात वर्ष की आयु तक इन्होंने वेद, वेदान्त और वेदाङ्गों का विधिवत् अध्ययन कर

लिया।

- शङ्कराचार्य के नाम से लगभग 272 ग्रन्थ लिखे गये बताए जाते हैं, किन्तु यह कहना कठिन है कि वे सभी आद्य शङ्कराचार्य द्वारा लिखे गये हैं।
- आचार्य शङ्कर ने **'ब्रह्मसत्यं जगन्मिथ्या'** एतदर्थ उन्होंने मायावाद की स्थापना की इसे विद्वानों ने अमोघमन्त्र बताया।
- शङ्कराचार्य के अनुसार सम्पूर्ण दृश्यमान जगत् ब्रह्म का विवर्तमात्र है-
  जैसे हमें रज्जु में सर्प की भ्रान्ति हो जाती है, ठीक उसीप्रकार ब्रह्म तत्त्व में ही हमें जगत् की भ्रान्ति हो रही है। उन्होंने आत्मा को स्वतः सिद्ध माना।
- शंकर के परवर्ती वेदान्तदर्शन के आचार्यों की परम्परा अत्यन्त विशाल रही है। हम उनका संक्षेप में उल्लेख कर रहे हैं-
- **पद्मपादाचार्य**- शङ्कराचार्य के प्रथम शिष्य पद्मपादाचार्य थे। इनका पूर्वनाम **सइन्दन** था। दक्षिण के चोल प्रदेश मे इनका जन्म हुआ। पद्मपाद नाम इन्हें शङ्कराचार्य ने दिया। ये गुरु के परमभक्त एवं आज्ञापालक थे।
- **आचार्य मण्डनमिश्र-** इनका अन्य नाम सुरेश्वराचार्य भी था।ये रेवा नदी के तटवर्ती प्राचीन माहिष्मती के निवासी थे। मण्डन मिश्र अपने समय के मगध प्रदेश के सबसे बड़े विद्वान् और पूर्व मीमांसक थे।
- **आचार्य वाचस्पति मिश्र-** इनका जन्मस्थान मिथिला माना जाता है। इनके ग्रन्थों से प्रतीत होता है कि ये अपने विषय के धुरन्धर विद्वान् तथा अद्वैतमत के प्रमुख आचार्य थे। विद्वानों ने इनका समय आठवीं शताब्दी के अन्त से लेकर नवम शती का प्रारम्भ माना है।इसके बाद के प्रायः सभी आचार्यों ने इनके वाक्यों को प्रमाणरूप में स्वीकार किया है। वाचस्पति मिश्र ने शाङ्करभाष्य पर **भामती टीका** का प्रणयन किया।
- **आचार्य सदानन्दयोगीन्द्र** ने अद्वैतवेदान्त पर अत्यन्त सरलशैली में **वेदान्तसार** नामक प्रकरणग्रन्थ की रचना की। इनका स्थितिकाल विद्वानों ने **सोलहवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध** निर्धारित किया है। यह सम्पूर्ण वेदान्तसिद्धान्तों का परिचायक ग्रन्थ है।
- **वेदान्तपरिभाषा** नामक उत्कृष्ट एवं अद्वैतसिद्धान्त के लिये अत्यन्त उपयोगी प्रकरणग्रन्थ की रचना **आचार्य धर्मराज अध्वरीन्द्र** ने की। इनका जन्मसमय 17 वीं शताब्दी का आरम्भ माना गया है।
- शङ्कराचार्य के शिष्य सुरेश्वराचार्य के **नैष्कर्म्यसिद्धि** नामक ग्रन्थ से केवल इतना ज्ञात होता है कि आचार्य गौडपाद गोडप्रदेश के निवासी थे।
- वेदान्तदर्शन विशेषरूप से अद्वैतवेदान्त एकमात्र ब्रह्म को ही सत्य, नित्य और सर्वोपरि तत्त्व के रूप में मानता है।
- इसीकारण से वेदान्तदर्शन का प्रारम्भ ब्रह्मजिज्ञासा से होता है। 'अथातो ब्रह्मजिज्ञासा' (ब्रह्मसूत्र 1.1)
- ब्रह्म शब्द 'बृह् वृद्धौ' वृद्धि के अर्थ मे प्रयुक्त 'बृह्' धातु से मनिन् प्रत्यय करके 'ब्रह्म' शब्द

निष्पन्न हुआ हैं अर्थात् महान् ,व्यापक,निरवधिक,निरतिशय महत्त्व से युक्त तत्त्व ही ब्रह्म है।

- 'बृंहणाद् ब्रह्म' इस व्युत्पत्ति के अनुसार देश, काल तथा वस्तु आदि से अपरिछिन्न नित्य तत्त्व ही ब्रह्म है।

वेदान्तसार का मङ्गलाचरण

- वेदान्तसार के मङ्गलाचरण में ब्रह्म की वन्दना की गयी है।

  अखण्डं सच्चिदानन्दमवाङ्मनसगोचरम्।
  आत्मानमखिलाधारमाश्रयेऽभीष्टसिद्धये॥

- ग्रन्थ की निर्विघ्नसमाप्ति या त्रिविध दुःख की आत्यन्तिक निवृत्ति के लिये सत्य ज्ञान एवं आनन्द स्वरूप, मन वाणी तथा इन्द्रियों के अविषय, सम्पूर्ण स्थावरजङ्गम रूप प्रपञ्च के आधारस्वरूप, अखण्ड परमात्मा का अभीष्ट (मनोरथ) की सिद्धि के लिये आश्रय ग्रहण करता हूँ।
- किसी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व मंगलाचरण करने की भारतीय परम्परा रही है। आचार्य सदानन्द ने वेदान्तदर्शन के प्रकरणग्रन्थ वेदान्तसार की निर्विघ्नसमाप्ति के लिये सच्चिदानन्द, अवाङ्मनसगोचर,सम्पूर्णसृष्टि के आधार स्वरूप, अखण्ड परमपिता परमात्मा की वन्दना की है।
- वेदान्तदर्शन एकमात्र परमब्रह्म की सत्ता को स्वीकार करता है साथ ही आत्मा एवं ब्रह्म की एकता का भी प्रतिपादन करता है।
- यहाँ आत्मा के चार विशेषणों का प्रयोग किया गया है (i) अखण्डम् (ii) सच्चिदानन्दम् (iii) अवाङ्मनसगोचरम् (iv) अखिलाधारम्
- 'सच्चिदानन्दम्'- वेदान्तग्रन्थों में ब्रह्म के लिए इस विशेषण का प्रयोग किया गया है जो ब्रह्म भी तीन विशेषताओं की ओर संकेत करता है - सत्, चित्, और आनन्द।
- मङ्गलाचरण में अपने आराध्य देवता के स्मरण के पश्चात् आचार्य सदानन्द ने अपने गुरु अद्वयानन्द को नमन किया है -

  अर्थतोऽप्यद्वयानन्दानतीतद्वैतभानतः।
  गुरूनाराध्य वेदान्तसारं वक्ष्ये यथामति॥

  जिनकी द्वैतभावना दूर हो गई है, यथार्थरूप से भी अखण्ड आनन्दस्वरूप अद्वयानन्द नामक गुरु की आराधना करके मैं (सदानन्द अपनी) बुद्धि के अनुसार वेदान्तसार को कहूँगा।

- उपनिषद् को प्रमाण मानकर चलने वाला शास्त्र वेदान्त कहा गया है।

  और ब्रह्मसूत्र शारीरकसूत्र आदि उनके उपकारक ग्रन्थ है।

  'वेदान्तो नामोपनिषत्प्रमाणं तदुपकारीणि शारीरकसूत्रादीनि च।'

वेदान्तशास्त्र

उपनिषद्	ब्रह्मसूत्र (शारीरकसूत्र)
प्रमाणस्वरूप	उपकारक (व्याख्या ग्रन्थ)

- वेदान्तशास्त्र में चार अनुबन्ध हैं - अधिकारी, विषय, सम्बन्ध और प्रयोजन।
  'तत्रानुबन्धो नामाधिकारिविषयसम्बन्धप्रयोजनानि '
- **वेदान्त का प्रथम अनुबन्ध अधिकारी**- अधिकारी तो वह जिज्ञासु प्रमाता है, जिसने वेद- वेदाङ्गों का विधिपूर्वक अध्ययन करके समस्त वेदान्त के अर्थ को सामान्यरूप से जान लिया है तथा इस जन्म में अथवा अन्य जन्मों में कामनाओं को पूर्ण करने वाले काम्यकर्म तथा शास्त्रों द्वारा निषेध किये गये कर्मों को छोड़ने के साथ-साथ नित्य, नैमित्तिक, प्रायश्चित्त और उपासना कर्मों के अनुष्ठान से सम्पूर्णपापों से मुक्त, अत्यधिक निर्मल अन्तःकरण वाला जो साधन चतुष्टयसम्पन्न है, ऐसा प्रमाता पुरुष (इस ब्रह्मविद्या) वेदान्त का अधिकारी है।
- अधिकारी तु विधिवदधीतवेदवेदाङ्गत्वेनापाततोऽधिगताखिलवेदार्थोऽस्मिन् जन्मनि जन्मान्तरे वा काम्यनिषिद्धवर्जनपुरस्सरं नित्यनैमित्तिकप्रायश्चित्तोपासनानुष्ठानेन निर्गतनिखिलकल्मषतया नितान्तनिर्मलस्वान्तः साधनचतुष्टयसम्पन्नः प्रमाता।
  अधिकारी के निरूपणान्तर्गत ही काम्यादि कर्मों का वर्णन किया गया है-
- **1.** स्वर्ग आदि कामनाओं के साधनस्वरूप ज्योतिष्टोमयाग आदि काम्यकर्म हैं
  काम्यानि स्वर्गादीष्टसाधनानि ज्योतिष्टोमादीनि।
- **2.** नरकादि अनिष्टस्थानों की प्राप्ति के साधनभूत ब्राह्मणहत्या, गोहत्या आदि निषिद्धकर्म है। **निषिद्धानि नरकाद्यनिष्टसाधनानि ब्राह्मणहननादीनि।**

  3. जिसके न करने से भविष्य में दुःख की सम्भावना हो, ऐसे सन्ध्यावन्दन आदि नित्यकर्म हैं।

  'नित्यान्यकरणे प्रत्यवायसाधनानि सन्ध्यावन्दनादीनि'

  4. पुत्र जन्मादि के अवसर पर किये जाने वाले जातेष्टि यज्ञ आदि नैमित्तिक कर्म है **नैमित्तिकानि पुत्रजन्माद्यनुबन्धीनि जातेष्ट्यादीनि।**

  5. पाप के क्षय करने के लिये साधन बनने वाले चान्द्रायण आदि व्रत प्रायश्चित्त कर्म हैं। **प्रायश्चित्तानि पापक्षयसाधनानि चान्द्रायणादीनि।**

  6. सगुणब्रह्म को विषय बनाने वाला मानसिक व्यापार ध्यान ही जिनका स्वरूप है उन शाण्डिल्यविद्या आदि को उपासनाकर्म कहते हैं।

  उपासनानि सगुणब्रह्मविषयमानसव्यापाररूपाणि शाण्डिल्यविद्यादीनि।
- नित्य नैमित्तिक और प्रायश्चित्त कर्मों का परम प्रयोजन- बुद्धि की शुद्धि एवं उपासना रूप कर्मों का मुख्य प्रयोजन -चित्त की एकाग्रता है।
- नित्य नैमित्तिक प्रायश्चित्त कर्मों का गौण प्रयोजन- पितृलोक प्राप्ति तथा उपासना का

गौण प्रयोजन - सत्यलोक (देवलोक की प्राप्ति)।

कर्म

- करने योग्य कर्म
  - नित्य (सन्ध्यावन्दनादि)
  - नैमित्तिक (जातेष्टि आदि)
  - प्रायश्चित्त (चान्द्रायणव्रतादि)
  - उपासना (सगुणोपासना)
  - काम्य (ज्योतिष्टोमादि)
- न करने योग्य कर्म
  - निषिद्ध (गोहत्यादि)

➢ **साधनचतुष्टय -** (i) नित्य एवं अनित्य वस्तुविवेक, (ii) इहलौकिक एवं पारलौकिक फल को भोगने के प्रति वैराग्य, (iii) शम, दम, उपरति, तितिक्षा, समाधान और श्रद्धा आदि छः प्रकार की सम्पत्ति तथा (iv) मोक्षप्राप्ति के प्रति इच्छा- ये चार साधन हैं।

साधनानि नित्यानित्यवस्तुविवेकेहामुत्रार्थफलभोगविरागशमादिषट्कसम्पत्तिमुमुक्षुत्वानि

➢ इनमें एकमात्र ब्रह्म ही नित्य वस्तु है उसके अतिरिक्त अन्य सभी कुछ अनित्य है इसप्रकार समझना ही **नित्य-अनित्य-वस्तुविवेक** है।

➢ इस लोक की माला, चन्दन, सुन्दरी आदि भोग विलास विषयक सामग्री कर्म द्वारा उत्पन्न होने के कारण अनित्य के समान है। इसीप्रकार पारलौकिक स्वर्ग आदि विषयभोगों के कर्मजन्य होने से अनित्य होने के कारण उनके प्रति भी नितान्त वैराग्यभाव ही **'इहामुत्रार्थफलभोग विराग'** है।

➢ ऐहिकानां स्रक्चन्दनवनितादिविषयभोगानां कर्मजन्यतयाऽनित्यत्व-वदामुष्मिकाणामप्यमृतादिविषयभोगानामनित्यतया तेभ्यो नितरां विरतिरिहा मुत्रार्थफलभोगविरागः

साधनचतुष्टय

1. **नित्यानित्यवस्तुविवेक-** नित्य अनित्य वस्तु का विवेक।
2. **इहामुत्रार्थफलभोगविराग-** इस लोक एवं परलोक विषयक भोगने के प्रति वैराग्यभाव।
3. **शमादिषट्कसम्पत्ति-** शम, दम, उपरति, तितिक्षा, समाधान और श्रद्धा इन छः प्रकार की सम्पत्ति से सम्पन्न होना
4. **मुमुक्षुत्व-** मोक्ष की प्रबल इच्छा का होना।

शमादिषट्कसम्पत्ति

शमादयस्तु शमदमोपरतितितिक्षासमाधानश्रद्धाख्याः।

➢ **1. शम-** श्रवण मनन और निदिध्यासन को छोड़कर उनसे भिन्न विषयों से मन को हटा लेने को शम कहते हैं।

शमस्तावच्छ्रवणादिव्यतिरिक्तविषयेभ्यो मनसो निग्रहः।

- **2. दम-** श्रोत्रादि बाह्य इन्द्रियों को श्रवणादि के अतिरिक्त विषयों से हटाने को दम कहते हैं। **'दमो बाह्येन्द्रियाणां तद्व्यतिरिक्तविषयेभ्यो निवर्तनम्'**
- **3. उपरति-** अन्तरिन्द्रिय मन और श्रोत्रादि बाह्य इन्द्रियों को अपने-अपने विषय से निवृत्त कर लेने पर श्रवण आदि के अतिरिक्त विषयों से इनका उपरत हो जाना अर्थात् फिर से विषयों की ओर प्रवृत्त होने का उत्साह न रह जाने से स्थिर हो जाना उपरति है। **निवर्तितानामेतेषां तद्व्यतिरिक्तविषयेभ्य उपरमणमुपरतिः अथवा विहितानां कर्मणां विधिना परित्यागः।**
- अथवा सन्ध्यावन्दन अग्निहोत्र आदि अवश्य करणीय वेदविहित कर्मों का श्रुति और स्मृति में बताई गई विधि से परित्याग कर देना अर्थात् संन्यास ग्रहण कर लेना ही उपरति है।

4. तितिक्षा- शीत-उष्ण, मान -अपमान, लाभ -हानि, जय- पराजय, निन्दा-स्तुति, हर्ष-शोक आदि द्वन्द्वों को सहन करना तितिक्षा है।

'तितिक्षा शीतोष्णादिद्वन्द्वसहिष्णुता'

- **5. समाधान-** निगृहीत चित्त का श्रवणादि में तथा श्रवणादि के अनुकूल गुरुशुश्रूषा, वेदान्तग्रन्थों का सम्पादन और उनकी रक्षा करना आदि विषयों में स्थिर हो जाना समाधान है। **'निगृहीतस्य मनसः श्रवणादौ तदनुगुणविषये च समाधिः समाधानम्'**
- **6. श्रद्धा -** गुरू द्वारा उपदिष्ट वेदान्त के वाक्यों में विश्वास श्रद्धा है।

  गुरूपदिष्टवेदान्तवाक्येषु विश्वासः श्रद्धा।
- **मुमुक्षुत्व -** मोक्ष की इच्छा ही मुमुक्षुत्व है। **मुमुक्षुत्वम् मोक्षेच्छा**

  एवम्भूतः प्रमाताधिकारी। इसप्रकार की विशेषताओं से युक्त हुआ प्रमाता अधिकारी है।

शमादिषट्कसम्पत्ति

शम | दम | उपरति | तितिक्षा | समाधान | श्रद्धा

- **वेदान्त का द्वितीय अनुबन्ध- विषय** वेदान्त का प्रतिपाद्य विषय -जीव और ब्रह्म की एकता है। विषयो जीवब्रह्मैक्यं शुद्धचैतन्यं प्रमेयं तत्रैव वेदान्तानां तात्पर्यात्।
- शुद्धचैतन्य प्रमा का विषय है, क्योंकि समस्त वेदान्तवाक्यों का अभिप्राय उसी शुद्धचैतन्य के प्रतिपादन में निहित है।
- **वेदान्त का तृतीय अनुबन्ध-सम्बन्ध**

  ज्ञान के विषय उन जीव और ब्रह्म का ऐक्य एवं उनका प्रतिपादन करने वाले उपनिषद्रूप प्रमाणवाक्यों का परस्पर बोध्य-बोधकभाव सम्बन्ध है।

सम्बन्धस्तु तदैक्यप्रमेयस्य तत्प्रतिपादकोपनिषत्प्रमाणस्य च बोध्यबोधकभावः।

- **वेदान्त का चतुर्थ अनुबन्ध-प्रयोजन** चतुर्थ अनुबन्ध उस जीव एवं ब्रह्म के ऐक्यविषयक ज्ञान के साथ अज्ञान की निवृत्तिपूर्वक अपने स्वरूप का परिचय होने से चरम आनन्द की प्राप्ति ही मुख्य प्रयोजन है।

  * प्रयोजनं तु तदैक्यप्रमेयगताज्ञाननिवृत्तिः स्वस्वरूपानन्दावाप्तिश्च।

  * ''तरति शोकमात्मवित्'' इत्यादि श्रुतेः ''ब्रह्मविद् ब्रह्मैव भवति '' इत्यादि श्रुतेश्च। ''आत्मज्ञानी शोक से तर जाता है'' इत्यादि तथा ''ब्रह्मज्ञानी ब्रह्म ही हो जाता है'' इत्यादि श्रुति का कथन प्रमाण है।

अनुबन्ध चतुष्टय

अधिकारी | विषय | सम्बन्ध | प्रयोजन

- **अध्यारोप -** रस्सी में सर्प के आरोप के समान, वस्तु में अवस्तु का आरोप ही अध्यारोप है। **'असर्पभूतायां रज्जौ सर्पारोपवद्वस्तुन्यवस्त्वारोपोऽध्यारोपः'**
- **वस्तु और अवस्तु-** सच्चिदानन्द, अनन्त और अद्वैत ब्रह्म वस्तु है तथा अज्ञान आदि से लेकर सम्पूर्ण जडप्रपञ्च अवस्तु है।

  वस्तु सच्चिदानन्दानन्ताद्वयं ब्रह्म अज्ञानादिसकलजडसमूहोऽवस्तु।
- वेदान्तदर्शन के अनुसार ब्रह्म ही एकमात्र वस्तु है तथा शेष सम्पूर्ण चराचरप्रपञ्च को अवस्तु बताया गया है।
- जिसप्रकार वस्तु (रस्सी) में अवस्तु (सर्प) का आरोप ही अध्यारोप है, उसी प्रकार वस्तु (बह्म) में अवस्तु (जगत्) का आरोप ही अध्यारोप है।
- **अज्ञान-** अज्ञान तो सत् और असत् दोनों से विलक्षण होने से अनिर्वचनीय,त्रिगुणात्मक, ज्ञान का विरोधी तथा भाव रूप से 'यत्किञ्चित्' ऐसा कहते हैं।

  अज्ञानं तु सदसद्भ्यामनिर्वचनीयं त्रिगुणात्मकं ज्ञानविरोधि भावरूपं यत्किञ्चिदिति।
- **अज्ञान के भेद-** अज्ञान के दो भेद हैं - समष्टि और व्यष्टि
- **समष्टि -** यह अज्ञान समष्टि के अभिप्राय से एक है और व्यष्टि के अभिप्राय से अनेक कहा जाता है। जैसे- समष्टि (समूह) के अभिप्राय से यह वन है इसप्रकार एकत्व का कथन किया जाता है, या जल बिन्दुओं की समष्टि के अभिप्राय से यह जलाशय है, इसप्रकार एकत्व का कथन किया जाता है।
- 'समष्टि' शब्द का प्रयोग यहाँ समुदाय, समूह या संघात अर्थ की अभिव्यक्ति के लिये हुआ है।
- **व्यष्टि-** यह एक का सूचक है। व्यष्टि का अभिप्राय वृक्ष है। इसीप्रकार एक जीव में स्थित अज्ञान का कथन उसके व्यष्टिरूप को प्रकट करता है।

इदमज्ञानं समष्टिव्यष्टाभिप्रायेणैकमनेकमिति च व्यवह्रियते। तथाहि वृक्षाणां समष्ट्यभिप्रायेण वनमित्येकत्वव्यपदेशो यथा वा जलानां समष्ट्यभिप्रायेण जलाशय इति।

- समष्टि - सम् + ✓अश् (व्याप्तौ संघाते च) +क्तिन् = सभी को व्याप्त करने वाला।
- व्यष्टि - वि + ✓अश् (व्याप्तौ संघाते च) + क्तिन् = सीमित स्थान में रहने वाला।
- वेदान्तदर्शन में समष्टि का अर्थ 'माया' तथा व्यष्टि के लिए 'अविद्या' शब्द का प्रयोग किया गया है।

''**सत्त्वशुद्ध्यविशुद्धिभ्यां मायाविद्ये च ते मते** '' (पञ्चदशी 1/16)

- अज्ञान की यह समष्टि (माया) उत्कृष्ट (ईश्वर) उपाधि होने के कारण विशुद्धसत्त्व प्रधान से युक्त होती है। इससे उपहित हुआ चैतन्य समस्त अज्ञानराशि का प्रकाशक होने से सर्वज्ञता, सर्वेश्वरता, सर्वनियामकता आदि गुणों से युक्त, अव्यक्त, अन्तर्यामी, जगत् का कारण और ईश्वर कहा जाता है। ''यः सर्वज्ञः सर्ववित् '' इति श्रुतेः। 'जो सर्वज्ञाता सर्ववित् है' इत्यादि श्रुति प्रमाण है।
- वेदान्त के सृष्टिक्रम में ब्रह्म के पश्चात् ईश्वर का स्थान है। ईश्वर को जगत् का कारण होने से कारण शरीर, आनन्द की प्रचुरता के कारण आनन्दमयकोष, सभी कुछ विलीन होने के कारण सुषुप्ति एवं लयस्थान कहा गया है।
- इयं व्यष्टिर्निकृष्टोपाधितया मलिनसत्त्वप्रधाना।एतदुपहित चैतन्यमल्पज्ञत्वानीश्वरत्वादि गुणकं प्राज्ञ इत्युच्यत एकाज्ञानावभासकत्वात्।
- व्यष्टि निकृष्ट उपाधि से युक्त होने के कारण मलिनसत्त्वप्रधान होती है। इस उपाधि से युक्त चैतन्य अल्पज्ञता एवं अशक्तता आदि गुणों वाला होने से, व्यष्टिगत एक ही अज्ञान का प्रकाशक होने के कारण 'प्राज्ञ' कहा गया है।
- इस (जीव) की व्यष्टिरूप उपाधि, अहङ्कार आदि का कारणरूप होने से कारण शरीर तथा आनन्द की प्रचुरता एवं चैतन्य को कोश के समान ढक लेने के कारण आनन्दमयकोश।

शरीर	**अभिमानी**	**कोष**	**अवस्था**
स्थूल	समष्टि - वैश्वानर व्यष्टि - विश्व	अन्नमय मनोमय	जाग्रत
सूक्ष्म	समष्टि - सूत्रात्मा व्यष्टि - तैजस्	प्राणमय विज्ञानमय	स्वप्न
कारण	समष्टि - ईश्वर व्यष्टि - प्राज्ञ	आनन्दमय	सुषुप्ति

- सबका उपरम (विलयन) होने से सुषुप्ति एवं स्थूल तथा सूक्ष्मशरीर आदि प्रपञ्च के विलय की अधिकता होने के कारण 'लयस्थान' भी कहलाती है।

- समष्टिरूप अज्ञान से उपहित चैतन्य की 'ईश्वर' संज्ञा है।
- व्यष्टिरूप अज्ञानों से उपहित चैतन्य की जीव अथवा 'प्राज्ञ' संज्ञा है।
- प्राज्ञ को ही सर्वेश्वर, सर्वज्ञ, अन्तर्यामी, सभी जीवों की उत्पत्ति एवं प्रलय के स्थान का कारण बताया गया है।
  ''एष सर्वेश्वरः, एषः सर्वज्ञः एषः अन्तर्यामि, एष योनिः सर्वस्य प्रभवाप्ययौ हि भूतानाम्।''
- समष्टिव्यष्टिगत इन दोनों अज्ञानों एवं इनकी उपाधियों से युक्त ईश्वर और प्राज्ञ दोनों चैतन्यों का आधार उपाधिरहित शुद्धचैतन्य है।
- वही 'तुरीय' इस नाम से भी कहा जाता है। अद्वैतब्रह्म को ही चतुर्थ मानते है।

1. कारणशरीर

समष्टि (ईश्वर)   व्यष्टि (प्राज्ञ)

2. सूक्ष्मशरीर

समष्टि (सूत्रात्मा/हिरण्यगर्भ /गर्भ)   व्यष्टि (तैजस्)

3. स्थूलशरीर

समष्टि (वैश्वानर, विराट्)   व्यष्टि (विश्व)

अज्ञान की शक्ति -

- अज्ञान की दो शक्तियाँ हैं - आवरण और विक्षेप।
  अस्याज्ञानस्यावरणविक्षेपनामकमस्तिशक्तिद्वयम्।
- प्रमाता के सच्चिदानन्द स्वरूप को जो शक्ति ढक देती है, वह आवरण शक्ति है।
- सम्पूर्ण नामरूपात्मक जगत् को उत्पन्न करने वाली शक्ति है - विक्षेप शक्ति।
- तमोगुण प्रधान होती है- विक्षेप शक्ति।
- वेदान्त की दृष्टि में आत्मा का बन्धन अथवा मोक्ष सम्भव नहीं है यह तो केवल आभासमात्र है। रस्सी में सर्प के समान अथवा सीप में चाँदी के समान।
  हस्तामलक नामक ग्रन्थ में आयी हुई कारिका -
  ''घनच्छन्नदृष्टिर्घनच्छन्नमर्कं यथा मन्यते निष्प्रभं चातिमूढः।
  तथा बद्धवद्भाति यो मूढदृष्टेः स नित्योपलब्धिस्वरूपोऽहमात्मा।।''
  जिस प्रकार मेघ से ढका हुआ दृष्टि वाला मूर्ख व्यक्ति, बादल से ढके हुए सूर्य को प्रकाशरहित मानता है उसीप्रकार मूढ सामान्य दृष्टि वालों को आत्मा (जन्म - मरणादि बन्धनों से) बँधा हुआ सा प्रतीत होता है।

अज्ञान माया की शक्ति

- आवरण (सत्य को आवृत करना)
- विक्षेप (सत् में असत् की उद्भावना)

आवरण एवं विक्षेप नामक दो महत्त्वपूर्ण शक्तियों से युक्त अज्ञान से उपहित चैतन्य सूक्ष्मशरीर से लेकर ब्रह्माण्डपर्यन्त दृश्यमान सम्पूर्ण जगत् प्रपञ्च का उपादान और निमित्त दोनों है।

- शक्तिद्वयवदज्ञानोपहितं चैतन्यं स्वप्रधानतया निमित्तं स्वोपाधिप्रधानतयोपादानं च भवति।यथा-लूता तन्तुकार्यं प्रति स्वप्रधानतया निमित्तं स्वशरीरप्रधानतयोपादानं च भवति।
- जिसप्रकार मकड़ी अपने जाला निर्माणरूप कार्य के प्रति अपने शरीर के चैतन्य की प्रधानता के कारण निमित्तकारण है तथा अपने शरीर से निकलने वाले लारवे की प्रधानता की दृष्टि से उपादानकारण भी है।
- उसीप्रकार अज्ञान से उपहित आत्मा अपने चैतन्य की प्रधानता होने से दृश्यमान सांसारिक प्रपञ्च का निमित्तकारण तथा अज्ञान की प्रधानता के समय उपादान कारण होता है।
- अज्ञानोपहित चैतन्य के लिए वेदान्त में ईश्वर, चैतन्य एवं आत्मा आदि अनेक शब्दों का प्रयोग मिलता है।
- लूता मकड़ी का नाम है। मकड़ी की विशेषता यह है कि अपने द्वारा निर्मित जाले मे अन्य किसी बाह्य उपादान का सहयोग नहीं लेती है।

सूक्ष्मशरीर (17 अवयव)

पञ्चज्ञानेन्द्रियाँ		पञ्चकर्मेन्द्रियाँ		बुद्धि		मन		पञ्चवायु
5	+	5	+	1	+	1	+	5 = 17
चक्षु		वाक्						प्राण
श्रोत्र		पाणि						अपान
त्वक्		पाद						व्यान
घ्राण		पायु						उदान
रसना		उपस्थ						समान

अपञ्चीकृत सूक्ष्मशरीर (सात्त्विक अंशों से ज्ञानेन्द्रियों की उत्पत्ति)

आकाश	वायु	अग्नि	जल	पृथिवी
श्रोत्र	त्वक्	चक्षु	रसना	घ्राण
शब्द	स्पर्श	रूप	रस	गन्ध

मकड़ी लूता
- उपादान कारण (स्वशरीरप्रधानतया)
- निमित्त कारण - (चैतन्यस्वप्रधानतया)

- तमोगुण की प्रधानता वाली विक्षेपशक्ति से युक्त अज्ञान से उपहित चैतन्य से सर्वप्रथम आकाश से वायु, वायु से अग्नि, अग्नि से जल, और जल से पृथ्वी उत्पन्न होती है।
- तमःप्रधानविक्षेपशक्तिमदज्ञानोपहितचैतन्यादाकाश आकाशाद्वायुर्वायोरग्निरग्नेऽपोद्भ्यः पृथिवी चोत्पद्यते।

सूक्ष्मशरीर -

- पञ्चीकृत महाभूतों से स्थूलशरीर उत्पन्न होते हैं।
  लिङ्ग्यते ज्ञाप्यते प्रत्यगात्मसद्भावः एभिरिति लिङ्गानि,
- सूक्ष्मशरीर को लिङ्गशरीर भी कहते हैं 'लिङ्गानि च तानि शरीराणि इति लिङ्गशरीराणि'।
- सूक्ष्मशरीर में **सत्रह अवयव** होते हैं।
  सूक्ष्मशरीराणि सप्तदशावयवानि लिङ्गशरीराणि। अवयवास्तु ज्ञानेन्द्रियपञ्चकं बुद्धिमनसी कर्मेन्द्रियपञ्चकं वायुपञ्चकं चेति।
  पञ्चज्ञानेन्द्रियाँ +बुद्धि +मन +पञ्चकर्मेन्द्रियाँ + पञ्चवायु ही सूक्ष्मशरीर के सत्रह अवयव हैं।
- श्रोत्र,त्वक्, चक्षुः, जिह्वा, घ्राण=**पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ** है, यह आकाशादि सूक्ष्मभूतों के सात्त्विक अशों से क्रमशः अलग-अलग उत्पन्न होते हैं।
- **बुद्धि-** निश्चय करने वाली अन्तःकरण की वृत्ति ही बुद्धि है।
  बुद्धिर्नाम निश्चयात्मिकान्तः करणवृत्तिः।
- **मन-** संकल्प - विकल्प करने वाली अन्तःकरण की वृत्ति मन है।
  मनो नाम संकल्पविकल्पात्मिकान्तःकरणवृत्तिः।
- इन दोनों में ही चित्त और अहङ्कार का अन्तर्भाव हो जाता है ये सभी वस्तु आकाशादि में स्थित सात्त्विक अंशों के मिश्रित अंशों से उत्पन्न होते हैं।
- पञ्चज्ञानेन्द्रियों सहित यह बुद्धि ही **विज्ञानमयकोश** कहलाती है।
- पञ्चज्ञानेन्द्रियाँ, बुद्धि एवं मन ये सात अपञ्चीकृत पञ्चभूतों के सात्त्विक अंशों से उत्पत्र होते हैं।
- पञ्चज्ञानेन्द्रियों के साथ मन के मिलने पर '**मनोमयकोश**' का निर्माण होता है। इन्हें आत्मा को ढँकने के कारण **कोशसंज्ञा** भी कहते हैं।
- पञ्चदशीकार ने भी सूक्ष्मशरीर को सत्रह अवयव से युक्त बताया है।
  बुद्धिः कर्मेन्द्रियप्राणपञ्चकैर्मनसा धिया।
  शरीरं सप्तदशभिः सूक्ष्मं तल्लिङ्गमुच्यते॥
  कुछ विद्वान् चित्त और अहङ्कार को भी परिभाषित करते हैं-
- **चित्त-** अनुसंधानात्मिकान्तकरणवृत्तिः चित्तम्।
- **अहङ्कार-** अभिमानात्मिकान्तःकरणवृत्तिरहङ्कारः।

अपञ्चीकृत सूक्ष्मभूत

आकाश | वायु | अग्नि | जल | पृथिवी

रजोगुण प्रधान अशों से क्रमशः

वाक् | पाणि | पाद | पायु | उपस्थ

पञ्चवायु

प्राण	अपान	व्यान	समान	उदान
नासिकाग्रवर्ती	गुदा उपस्थवर्ती	सम्पूर्णशरीरस्थ	उदरस्थ	कण्ठस्थ
श्वास	मलमूत्र निस्सारण	रक्तसंचरण	पाचनमृत्यु के समय	निस्सरण
ऊर्ध्वगमनशील	अधोगमनशील	सर्वत्रगमनशील	अधोगमनशील	ऊर्ध्वगमनशील
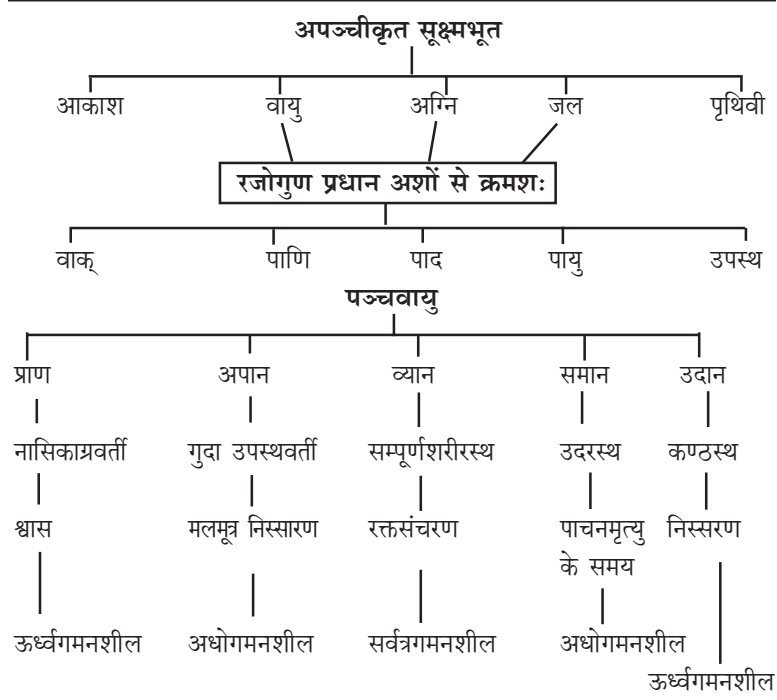
पञ्चकोश

1. अन्नमयकोश 2. प्राणमयकोश 3. मनोमयकोश 4. विज्ञानमयकोश
5. आनन्दमयकोश

- कारण शरीर के निर्माण में विज्ञानमय, मनोमय तथा प्राणमय इन कोषत्रय की महती भूमिका रहती है।

कारणशरीर

विज्ञानमयकोश	मनोमयकोश	प्राणमयकोश
(बुद्धि +पञ्चज्ञानेन्द्रियाँ)	(मन+पञ्चज्ञानेन्द्रियाँ)	(पञ्चकर्मेन्द्रियाँ +पञ्चप्राण)
कर्तृरूप	करणरूप	कार्यरूप
ज्ञानशक्तिसम्पन्न	इच्छाशक्तिसम्पन्न	क्रियाशक्तिसम्पन्न
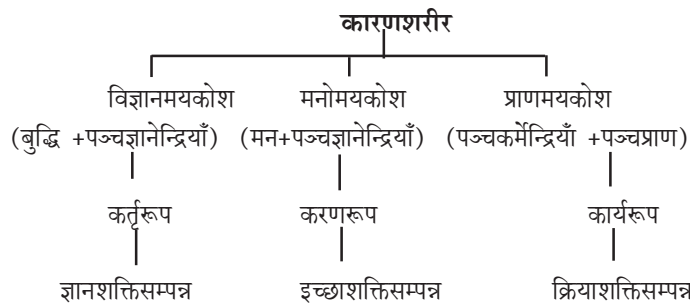
- एतेषु कोशेषु मध्ये विज्ञानमयो ज्ञानशक्तिमान् कर्तृरूपः ---- ज्ञानशक्ति से युक्त विज्ञानमयकोश कर्तारूप है।
- इच्छाशक्ति से युक्त मनोमयकोश करणरूप है। मनोमय इच्छाशक्तिमान् करणरूपः।

- क्रियाशक्ति से युक्त प्राणमयकोश कार्यरूप है। प्राणमयः क्रियाशक्तिमान् कार्यरूपः
- ये तीनों कोश मिलकर सूक्ष्मशरीर कहे जाते हैं। **एतत्कोशत्रयं मिलितं सत्सूक्ष्मशरीरमित्युच्यते।**
- समष्टि से उपहित चैतन्य सर्वत्र व्याप्त होने से तथा ज्ञान, इच्छा एवं क्रियाशक्ति से सम्पन्न होने के कारण क्रमशः सूत्रात्मा,हिरण्यगर्भ और प्राण कहा जाता है।
- व्यष्टिरूप उपाधि से युक्त यह चैतन्य, तेजोयुक्त अन्तःकरण उपाधि से युक्त होने से तैजस् होता है।

पञ्चीकरण - ''द्विधा विधाय चैकैकं चतुर्धा प्रथमं पुनः।
स्वस्वेतरद्वितीयांशैर्योजनात्पञ्चपञ्च ते।।

- पञ्चीकृत (महाभूतों) को ही **स्थूलभूत** कहते हैं।
सर्वप्रथम प्रत्येक सूक्ष्मभूत को समान दो भागों में विभाजित करके, तत्पश्चात् प्रथम पाँच में से प्रत्येक को चार भागों में विभक्त करके, अपने अपने अंश को छोड़कर अन्य भूतों के अर्धांश के साथ जोड़ने से वे पाँच सूक्ष्मभूत स्थूलभूत हो जाते हैं।

पञ्चीकरण प्रक्रिया

	आकाश 1/2	वायु 1/2	अग्नि 1/2	जल 1/2	पृथिवी 1/2
1/8	वायु	आकाश	आकाश	आकाश	आकाश
1/8	अग्नि	अग्नि	वायु	वायु	वायु
1/8	जल	जल	जल	अग्नि	अग्नि
1/8	पृथिवी	पृथिवी	पृथिवी	पृथिवी	जल

पञ्चीकृत पञ्चमहाभूत

- 'छान्दोग्योपनिषद्' (6.3.3) में सर्वप्रथम अग्नि की उत्पत्ति कही गई है तथा उसके बाद अग्नि से जल एवं जल से पृथिवी की उत्पत्ति का कथन करके, उनके त्रिवृत्करण द्वारा स्थूलसृष्टि की उत्पत्ति बतायी गयी है।
- त्रिवृत्करण के अनुसार अग्नि, जल और पृथिवी इन तीनों को सर्वप्रथम दो बराबर भागों में विभाजित किया जाता है। पुनः प्रथम तीन अर्धांशों को फिर से दो भागों में विभाजित करके उनका एक-एक भाग पूर्व के अर्धांश में जोड़ दिया जाता है। जिससे त्रिवृत् भूत का निर्माण होता है।
- पञ्चीकृत महाभूतों में भूः, भुवः, स्वः, महः, जनः, तपः, सत्यम् इत्यादि नाम वाले ऊपर-ऊपर विद्यमान लोकों की और अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल, महातल और पाताल नामक अधोवर्ती भुवनों की, ब्रह्माण्ड की तथा उसमें विद्यमान चार प्रकार के स्थूलशरीरों की एवं उनके योग्य अन्नपान आदि की उत्पत्ति होती है।
- स्थूलशरीर चार प्रकार का होता है- 1. जरायुज 2. अण्डज 3. उद्भिज 4. स्वेदज

- जरायु से उत्पन्न होने वाले मनुष्य पशु आदि जरायुज नामक स्थूल शरीर हैं।
- अण्डों से उत्पन्न होने वाले- पक्षी, सर्प आदि अण्डज हैं।
- पृथ्वी को भेदकर उत्पन्न होने वाले- लता, वृक्ष आदि उद्भिज्ज हैं, तथा पसीने से पैदा होने वाले जू, मच्छर आदि स्वेदज नामक स्थूलशरीर हैं।
- चतुर्विधसकलस्थूलशरीरमेकानेकबुद्धिविषयतया वनवज्जलाशयवद्वा समष्टिर्वृक्षवज्जलवद्वा व्यष्टिरपि भवति।

स्थूलशरीर
- जरायुज - (मनुष्य, पशु आदि)
- अण्डज - (पक्षी, सर्प आदि)
- उद्भिज - (तृण, वृक्ष आदि)
- स्वेदज - (यूका , मच्छर आदि)

स्थूलशरीरों की

समष्टि — व्यष्टि

वैश्वानर (विराट्) —— अभेद (अधिष्ठातृ देवता) —— (अभेद विश्व)

	इन्द्रियाँ	देवता	विषय	
1. पञ्च ज्ञानेन्द्रियाँ -	**इन्द्रियाँ**	**देवता**	**विषय**	
	1.श्रोत्र -	दिक् -	शब्द	ग्रहण करना
	2. त्वक् -	वायु -	स्पर्श	
	3. चक्षु -	सूर्य -	रूप	
	4.रसना -	वरुण -	रस	
	5.घ्राण -	अश्विन् -	गन्ध	
2. पञ्चकर्मेन्द्रियाँ	**-इन्द्रिय**	**देवता**	**विषय**	
	1.वाक्	अग्नि	बोलना	क्रियायें सम्पादित करना
	2.पाणि	इन्द्र	आदान प्रदान	
	3.पाद	उपेन्द्र	चलना	
	4.पायु	यम	विसर्जन	
	5.उपस्थ	प्रजापति	आनन्द	
3. अन्तरिन्द्रियाँ -	**इन्द्रिय**	**देवता**	**विषय**	
	1.मन	चन्द्र	संकल्प- विकल्प	
	2.बुद्धि	ब्रह्म	निश्चय	करना
	3.अहङ्कार	शिव	गर्व	
	4.चित्त	विष्णु	स्मरण	

- कारणशरीर, समष्टि एवं व्यष्टि की दृष्टि से जिसमें स्थित चैतन्य ईश्वर एवं प्राज्ञ कहलाता है।
- सूक्ष्मशरीर, समष्टि एवं व्यष्टि की दृष्टि से जिसमें स्थित चैतन्य क्रमशः हिरण्यगर्भ (सूत्रात्मा) या तैजस् कहा जाता है।
- स्थूलशरीर, जिसमें स्थित चैतन्य समष्टि एवं व्यष्टि से क्रमशः वैश्वानर (विराट्) एवं विश्व कहलाता है।
- महाप्रपञ्च तथा उससे उपहित चैतन्य से अभिन्न होकर परमशुद्ध चैतन्य 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म' इस महावाक्य का वाच्यार्थ होता है तथा वही अलग- अलग होने की स्थिति में लक्ष्यार्थ भी होता है।
- जिस प्रकार एक लोहे के गोले को अग्नि में डालने पर वह तपकर लाल हो जाता है तथा उससे जलने पर मैं लोहे से जल गया इसप्रकार कहा जाता है जबकि शक्ति लोहे में न होकर अग्नि में होती है।

अपवाद - अपवादो नाम रज्जुविवर्तस्य सर्पस्य रज्जुमात्रत्ववद्वस्तु विवर्तस्यावस्तुनोऽज्ञानादेः प्रपञ्चस्य वस्तुमात्रत्वम्।

- रस्सी में भ्रान्तिवश प्रतीत होने वाले सर्प की पुनः रस्सीमात्र के रूप में प्रतीति के समान ब्रह्मरूप वस्तु में मिथ्याप्रतीति के कारण अवस्तुरूप अज्ञानादिप्रपञ्च में, पुनः ब्रह्मरूप सत्यवस्तु का भान होना ही वस्तुतः अपवाद है।

''सतत्त्वतोऽन्यथाप्रथा विकार इत्युदीरितः।
अतत्त्वतोऽन्यथाप्रथा विवर्त इत्युदीरितः॥

- अपने मूलरूप का परित्याग करके अन्यरूप को ग्रहण करना ही विकार कहा गया है अपने रूप को बिना छोडे अन्य वस्तु की मिथ्याप्रतीति विवर्त कहलाता है।
- जैसे - दूध का दही के रूप में परिवर्तित होना 'विकार' है, क्योंकि दही बनने के बाद उसे पुनः दूध के रूप में बनाना असम्भव है। अपने रूप का त्याग करके ही दूध दही बनता है। इसी प्रक्रिया को विकार या परिणाम भी कहा जाता है।
- **सुख - दुःखरूप** भोग का स्थान रूप ये उत्पन्न हुए सभी चार प्रकार के स्थूलशरीर, भोग्यरूप अन्न पान आदि इसके आयतनभूत भूः, भुवः, स्वः आदि चौदहलोक एवं उन भुवनों का आधारभूत ब्रह्माण्ड यह सब अपने कारण रूप पञ्चीकृत महाभूतों में (विलीन) हो जाता है।

एतद्भोगायतनं चतुर्विधसकलस्थूलशरीरजातं रूपद् भोग्यरूपान्नपानादि-कमेतदायतनभूतभूरादिचतुर्दशभुवनान्येतदायतनभूतं ब्रह्माण्डं चैतत्सर्वमेतेषां कारणरूपं पञ्चीकृतभूतमात्रं भवति।

तत्त्वमसि महावाक्यार्थ-

- अज्ञान आदि व्यष्टि इसकी उपाधि अल्पज्ञत्व आदि विशेषताओं से युक्त चैतन्य (अर्थात् जीव) इसकी उपाधि से रहित शुद्धचैतन्य ये तीनों (एक साथ) तप्तलोहपिण्ड के समान अभिन्न प्रतीत होने के कारण 'त्वम्' पद के वाच्यार्थ होते हैं।

- इस उपाधि से युक्त आधारभूत अनुपहित आनन्दरूप तुरीयचैतन्य 'त्वम्'पद का लक्ष्यार्थ होता हैं।
- अनुपहित शुद्धचैतन्य 'तत्' एवं 'त्वम्' इन दोनों पदों का लक्ष्यार्थ है इसीलिए 'तत्' एवं 'त्वम्' ये दोनों पद यहाँ लक्षण है तथा शुद्धचैतन्य लक्ष्य है।
- 'तत्त्वमसि' (वह तू है) इत्यादि वाक्य तीन सम्बन्धों से अखण्ड अर्थ का बोध कराने वाला होता है।
- समानाधिकरण्य, विशेषणविशेष्यभाव एवं लक्ष्यलक्षणभाव ये तीन सम्बन्ध होते हैं।
- **चार महावाक्यों** की विशेषचर्चा वेदान्तदर्शन में की गई है-

महावाक्य	उपनिषद्	वेद
1. प्रज्ञानं ब्रह्म	ऐतरेयोपनिषद् -5	ऋग्वेद
2. तत्त्वमसि	छान्दोग्योपनिषद् -6.8.	सामवेद
3. अहं ब्रह्मास्मि	बृहदारण्यकोपनिषद् 1.4.10	यजुर्वेद
4. अयमात्मा ब्रह्म	माण्डूक्योपनिषद् -2	अथर्ववेद

- महावाक्यों का वर्ण्यविषय ब्रह्म के स्वरूप एवं अद्वैत का प्रतिपादन करना है।
- 'तत्त्वमसि' महावाक्य वस्तुतः उपदेशवाक्य है। जो एक गुरू द्वारा अधिकारी प्रमाता को उपदेश रूप में दिया जाता है 'तत्त्वमसि' - यह ब्रह्म और जीव की एकता बताता है।
- यहाँ लक्ष्यलक्षणसम्बन्ध को '**भागलक्षणा**' भी कहा गया है।

सम्बन्धत्रयम्

पदों में समानाधिकरण्य | पदों के अर्थों में विशेषण विशेष्यभाव | आन्तरिक गुणों के कारण लक्ष्यलक्षणभाव

लक्षणा

जहत् (गंगायां घोषः) | अजहत् (शोणो धावति) | जहदजहल्लक्षणा (तत्त्वमसि)

- 'अहं ब्रह्मास्मि' **अनुभववाक्य** है। 'तत्त्वमसि' **उपदेशवाक्य** है।
- 'अहं ब्रह्मास्मि' में ब्रह्माकाराकारिचित्तवृत्ति तथा तद्गत चिदाभास दोनों की आवश्यकता होती है'ब्रह्मास्मीत्यखण्डाकाराकारिता चित्तवृत्तिरुदेति।'
- वेदान्त की दृष्टि में अधिकारी को गुरु अध्यारोप एवं अपवादन्याय से 'तत्त्वमसि' महावाक्य के तत् एवं त्वम् पदों के अर्थों को भली प्रकार समझाकर उसके बाद अखण्ड अर्थ का बोध कराता है। जिसके परिणामस्वरूप उसके हृदय में अखण्ड आकार से आकारित इस प्रकार की चित्तवृत्ति का उदय होता है कि मैं ही नित्य, शुद्ध,बुद्ध, मुक्त,

सत्यस्वभाव, परमानद स्वरूप, अनन्त एवं अद्वैतब्रह्म हूँ।

- जीव और ब्रह्म का यह अखण्डार्थवाक्य का बोध कराता है।

लक्षणा-

1. जहद्लक्षणा 2. अजहल्लक्षणा 3.जहदजहल्लक्षणा

1. **जहद्लक्षणा-** इसे लक्षणलक्षणा भी कहते हैं। जो अपने मूल अर्थ को त्याग दें और दूसरा अर्थ ग्रहण करें।
2. **अजहल्लक्षणा-** जो अपने अर्थ को न छोड़े वह उपादान लक्षणा या अजहल्लक्षणा होती है।
3. **जहदजहल्लक्षणा-** जो अपने मूल अर्थ को त्याग दें और एक अंश का बोध कराये वह जहदजहल्लक्षणा है। इसे **भागलक्षणा** भी कहते हैं।

- तत्त्वमसि वाक्य का बोध जहदजहल्लक्षणा या भागलक्षणा से होता है।

षड्लिङ्ग

1.उपक्रम 2.उपसंहार 3.अभ्यास 4.अपूर्वता 5.फल 6.अर्थवाद
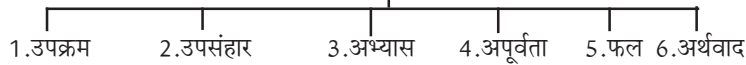
आत्मदर्शन के उपाय

श्रवण मनन निदिध्यासन समाधि- अनुष्ठान
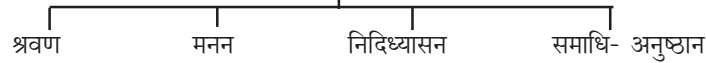
- श्रवण मनन, निदिध्यासनसमाध्यनुष्ठानस्यापेक्षितत्वात्तेऽपि प्रदश्र्यन्ते।
इस प्रकार अपने ही स्वरूप 'चैतन्य' के साक्षात्कार होने तक श्रवण, मनन, निदिध्यासन, समाधि आदि अनुष्ठानों के अपेक्षित होने के कारण वे भी प्रदर्शित किए जा रहे हैं।
- **श्रवण-**'श्रवणं नाम षड्विधलिङ्गैशेषवेदान्तानामद्वितीये वस्तुनि तात्पर्यावधारणम्। सम्पूर्ण वेदान्तसूत्रों का, अद्वितीयवस्तु ब्रह्म में ही तात्पर्य है, यह निश्चय करना ही वस्तुतः श्रवण है।
- **षड्लिङ्ग-**लिङ्गानि तूपक्रमोपसंहाराभ्यासापूर्वताफलार्थवादोपपत्त्याख्यानि। उपक्रम, उपसंहार, अभ्यास, अपूर्वता, फल, अर्थवाद तथा उपपत्ति नामक ये छः लिङ्ग हैं।
- **उपक्रम एवं उपसंहार-** तत्र प्रकरणप्रतिपाद्यस्यार्थस्य तदाद्यन्तयोरुपपादनमुपक्रमोपसंहारौ। छः लिङ्गों में प्रकरण में प्रतिपादन योग्य पदार्थ का उसके प्रारम्भ एवं अन्त में प्रतिपादन करना क्रमशः उपक्रम एवं उपसंहार है।
- **अभ्यास-**प्रकरणप्रतिपाद्यस्य वस्तुनस्तन्मध्ये पौन्यः पुन्येन प्रतिपादनमभ्यासः। प्रकरण में प्रतिपादित वस्तु का बीच-बीच में बार-बार प्रतिपादन करना ही **अभ्यास** है।
- **अपूर्वता** - प्रकरणप्रतिपाद्यस्याद्वितीयवस्तुनः प्रमाणान्तराविषयी करणमपूर्वता। प्रकरण में प्रतिपादित अद्वितीय वस्तु को अन्य प्रमाणों से अगम्य वर्णित करना **'अपूर्वता'** है।
- **फल-** फलं तु प्रकरणप्रतिपाद्यस्यात्मज्ञानस्य तदनुष्ठानस्य वा तत्र तत्र श्रूयमाणं प्रयोजनम्।

प्रकरण में प्रतिपादित करने योग्य आत्मज्ञान अथवा उसके अनुष्ठान के प्रसंग में श्रूयमाण प्रयोजन ही फल है।

- **अर्थवाद-** प्रकरणप्रतिपाद्यस्य तत्र तत्र प्रशंसनमर्थवादः।
  प्रकरण में प्रतिपादित करने योग्य अद्वितीय वस्तु परमब्रह्म की जहाँ-जहाँ अवसर प्राप्त होने पर की गई प्रशंसा को अर्थवाद कहा गया है।
- **उपपत्ति-** प्रकरणप्रतिपाद्यार्थसाधने तत्र तत्र श्रूयमाणायुक्तिरुपपत्तिः
  प्रकरण में प्रतिपादनयोग्य अद्वितीय वस्तु परमब्रह्म को प्रमाणित सिद्ध करने के लिये यत्र-तत्र जो तर्क एवं युक्तियाँ प्रस्तुत की जाती है। उसे ही उपपत्ति कहा गया है।
- **मनन -** मननं तु श्रुतस्याद्वितीयवस्तुनो वेदान्तानुगुणयुक्तिभिरनवरतमनुचिन्तनम्।
  वेदान्त में प्रतिपादित अनुकूल युक्तियों के माध्यम से अद्वितीयतत्त्व ब्रह्म का निरन्तर चिन्तन करना ही 'मनन' कहलाता है।
- **निदिध्यासन -** विजातीयदेहादिप्रत्ययरहिताद्वितीयवस्तुसजातीयप्रत्ययप्रवाहो।
  शरीर से लेकर बुद्धिपर्यन्त भिन्न - भिन्न सभी जड़ पदार्थों में भिन्नता की भावना का परित्याग करके, सभी को एकमात्र ब्रह्म मानकर, विश्वास करना ही निदिध्यासन है।

ब्रह्म का साक्षात्कार होने तक अपेक्षित अनुष्ठान

- **श्रवण**- षड्लिङ्गयुक्त वेदान्तवाक्यों का अद्वितीय वस्तु में तात्पर्य।
- **मनन** - षड्लिङ्गयुक्त वेदान्तवाक्यों को समझकर निरन्तर ब्रह्म चिन्तन।
- **निदिध्यासन** - एकमात्र ब्रह्म में विश्वास

- **समाधि -** समाधि दो प्रकार की होती है। 1. सविकल्पक समाधि 2. निर्विकल्पक समाधि
  समाधिर्द्विविधः सविकल्पको निर्विकल्पकश्चेति।
- तत्र सविकल्पको नाम ज्ञातृज्ञानादिविकल्पलयानपेक्षयाद्वितीयवस्तूनि तदाकाराकारितायाश्चित्तवृत्तेरवस्थानम्।
- **सविकल्पक समाधि -** इस समाधि में ज्ञाता एवं ज्ञेय के भेद का लोप न होकर केवल अद्वितीयवस्तु के आकार से आकारित चित्तवृत्ति की स्थिति ही सविकल्पक समाधि है।
- जिसमें समाधि होने के बाद भी उसे अपने आपका और दूसरे का भी भान न हो वह सविकल्पक समाधि है। जैसे -मिट्टी का हाथी।
  ज्ञाता - जो जानना चाहता है अर्थात् जिज्ञासु।
  ज्ञेय - ब्रह्म या जिसको जानना चाहते हैं।
  ज्ञान - विषय (ब्रह्म) को पाने का मार्ग ज्ञान है।

त्रिपुटी
- ध्याता, ज्ञाता
- ध्यान, ज्ञान
- ध्येय, ज्ञेय

प्राणायाम

1. रेचक　2. पूरक　3. कुम्भक

समाधि के विघ्न

- 1. लय (निद्रा आना)
- 2. विक्षेप (अन्यवस्तु का आलम्बन)
- 3. कषाय (राग, द्वेष से चित्त का जड़ होना)
- 4. रसास्वादन (समाधि से प्राप्त आनन्द का अनुभव)

जीवन्मुक्ति का स्वरूप

1. अखण्ड ब्रह्मज्ञान।
2. अज्ञान दूर होकर ब्रह्म साक्षात्कार।
3. सञ्चित क्रियमाणादि कर्म, संशय, विपरीत ज्ञान का विनाश।
4. कर्तृत्व, भोक्तृत्व आदि बन्धनमुक्त तथा ब्रह्म के स्वरूप में स्थित होना।

- **निर्विकल्पक समाधि -** जिसमें अपने आपका और वर्षा, तूफान किसी भी वस्तु का ज्ञान न रहें वह निर्विकल्पक समाधि है।
- निर्विकल्पकस्तु ज्ञातृज्ञानादिविकल्पलयापेक्षयाद्वितीयवस्तुनि-तदाकाराकारितयाश्चित्तवृत्तिरतितरामेकीभावेनावस्थानम्
- **समाधि के आठ अङ्ग-** 'यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि इसके आठ अङ्ग है। अस्याङ्गानि - यमनियमासनप्राणायामप्रत्याहारधारणाध्यानसमाधयः।

निर्विकल्पक समाधि

1	2	3	4	5	6	7	8
यम	नियम	आसन	प्राणायाम	प्रत्याहार	धारणा	ध्यान	समाधि
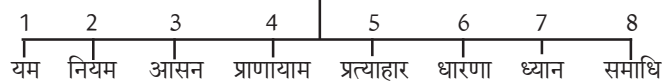
- **1.यम-** अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह ये पाँच यम हैं। अहिंसा सत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमाः।
- **2. नियम-** शौच, सन्तोष, तप,स्वाध्याय एवं ईश्वर की आराधना ये पाँच नियम हैं। शौचसन्तोषतपःस्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि नियमाः।
- **3.आसन-** हाथ, पैर आदि की स्थिति विशेष के बोधक पद्म एवं स्वस्तिक आदि आसन हैं। करचरणादिसंस्थानविशेषलक्षणानि पद्मस्वस्तिकादीन्यासनानि।
- **4.प्राणायम-** रेचक, पूरक, कुम्भक लक्षणों से युक्त प्राण को नियन्त्रित करने का उपाय ही प्राणायाम है।
  रेचकपूरककुम्भकलक्षणाः प्राणनिग्रहोपायाः प्राणायामाः

- **5.प्रत्याहार-** अपने- अपने विषयों से इन्द्रियों को निवृत्त कर लेना 'प्रत्याहार' है। इन्द्रियाणां स्वस्वविषयेभ्यः प्रत्याहरणं प्रत्याहारः।
- **6.धारणा-** अद्वितीयवस्तु (ब्रह्म) में अन्तरिन्द्रियों (मन, बुद्धि एवं चित्त) को नियोजित करना 'धारणा' है।

  अद्वितीयवस्तुन्यन्तरिन्द्रियधारणं धारणा।
- **7.ध्यान-** अन्तरिन्द्रियों मन एवं बुद्धि आदि को रुक-रुककर उस अद्वितीयवस्तु ब्रह्म में प्रवृत्त करना ही ध्यान है।

  तत्राद्वितीयवस्तुनि विज्झिद्य विच्छिद्यान्तरिन्द्रियवृत्तिप्रवाहो ध्यानम्।
- **निर्विकल्पक समाधि के विघ्न -** निर्विकल्पक समाधि में चार विघ्न माने गये है। लय, विक्षेप, कषाय और रसास्वाद नामक चार विघ्न होते है।

  लयविक्षेपकषायरसास्वादलक्षणाश्चत्वारो विघ्नाः सम्भवन्ति।

(i) लय- सविकल्पक से निर्विकल्पक समाधि में जाते समय कहीं नींद न आ जाय वह समाधि का लय नामक विघ्न है। लयावस्था में जाना।
लयस्तावदखण्डवस्त्वनवलम्बनेन चित्तवृत्तेर्निद्रा।

(ii) विक्षेप - जिस पर हम ध्यान लगाना चाहते हैं, उस पर ध्यान लगाने पर किसी और वस्तुओं पर भी हमारा मन चला जाय वह विक्षेप नामक विघ्न है। चित्तवृत्तेरन्यावलम्बनं विक्षेपः।

(iii) कषाय - जिस ब्रह्म पर हम ध्यान लगायें और उसी समय राग आदि का भाव आ जाय या क्रोध पीड़ा होना आदि ये सब कषाय विघ्न हैं।
लयविक्षेपभावेऽपि चित्तवृत्ते रागादिवासनयास्तब्धीभावादखण्डवस्त्वनवलम्बनं कषायः।

(iv) रसास्वाद - सविकल्पक समाधि में जब हम ब्रह्म का साक्षात्कार करते हैं। उसी के साथ - साथ हमें और भी आनन्द की प्राप्ति होती है उसी में निर्विकल्पक समाधि मानकर सन्तुष्ट हो जाना ही रसास्वाद नामक विघ्न है।
अखण्डवस्त्वनवलम्बनेनापि चित्तवृत्तेः सविकल्पकानन्दास्वादनं रसास्वादः।

- चार प्रकार के विघ्नों से पूर्णतयारहित चित्त, जब वायुरहित प्रदेश में स्थित दीपक के समान अचल होकर अखण्ड चैतन्यमात्र में स्थित रहता है। तब निर्विकल्पकसमाधि होती है, ऐसा कहा जाता है।

  विघ्नचतुष्टयेन विरहितं चित्तं निर्वातदीपवदचलं ----

  जीवन्मुक्ति - जीवन्मुक्ति का लक्षण है-

  ''भिद्यते हृदयग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्वसंशयाः।
  क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन्दृष्टे परावरे।।'' (मुण्डकोपनिषद्)
- समस्त बन्धनों से रहित हो जाने से केवल ब्रह्म में ही तत्पर रहने वाले ब्रह्मनिष्ठ को ही जीवन्मुक्त कहते हैं।

  ''अखिलबाधरहितो ब्रह्मनिष्ठः '' मुण्डकोपनिषद्

  उपदेशसाहस्त्री में जीवन्मुक्ति का लक्षण -
- सुषुप्तवज्जाग्रति यो न पश्यति, द्वयं य पश्यन्नपि चाद्वयत्वतः।
  तथा च कुर्वन्नपि निष्क्रियश्च यः, स आत्मविन्नान्य इतीह निश्चयः।।

सुषुप्ति के समान जो जाग्रत अवस्था में भी हर जगह अद्वैत को ही देखता है। द्वैत को देखता हुआ भी उसमें विद्यमान अद्वैत का ही दर्शन करता है तथा जो कर्म करते हुए भी निष्क्रिय है। वही इस लोक में आत्मज्ञानी है। अन्य कोई नहीं,यह निश्चित है।

कर्म – कर्म तीन प्रकार के हैं।

1. सञ्चित कर्म 2. क्रियमाण कर्म 3. प्रारब्ध कर्म

- अनादिकाल में किए गए कर्म जिनका फल अभी तक प्राप्त नहीं हुआ है,**सञ्चितकर्म** कहलाते हैं।
- मन, वाणी एवं कर्म द्वारा वर्तमान जन्म में किए जा रहे कर्म - क्रियमाण कर्मों की श्रेणी में आते है। क्रियापूर्ण होने के बाद ये **सञ्चितकर्म** हो जाते हैं।
- चिरकाल के सञ्चित कर्म, जब फलोन्मुख होकर शुभ अथवा अशुभ फल प्रदान करने में तत्पर रहते हैं तब वे ही प्रारब्धकर्म कहलाते हैं।

प्रारब्धकर्म भी तीन प्रकार का होता है।

1. स्वेच्छाकृत 2. परेच्छाकृत 3. अनिच्छाकृत

- स्वेच्छा, अनिच्छा अथवा परेच्छारूप प्रारब्ध कर्मों द्वारा प्राप्त कराए गए, सुख एवं दुःखरूप फलों का अनुभव करते हुए, प्रारब्धकर्मों की समाप्ति के बाद आनन्दस्वरूप आन्तरिक आत्मारूप के बाद परमब्रह्म में प्राणों के लीन होने पर सृष्टि के कारण अज्ञान तथा उसके कार्यरूप संस्कारों के पूर्णतया नष्ट होने के बाद उसे सभी प्रकार के भेदों का आभास होना बन्द हो जाता है।
- इस अवस्था में जीवन्मुक्त का शरीर पात हो जाता है तथा परमकैवल्य एकमात्र आनन्दरूप में स्थित हुआ वह अखण्ड ब्रह्मरूप में ही स्थित हो जाता है।

कर्म (समाधि युक्त)

सञ्चित कर्म | क्रियमाणकर्म | प्रारब्ध कर्म

(प्रारब्ध कर्म →) स्वेच्छाकृत | परेच्छाकृत | अनिच्छाकृत
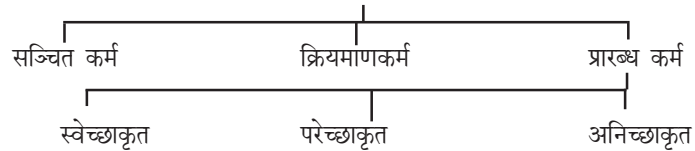
- प्रातिभासिक, व्यावहारिक एवं पारमार्थिक इन तीन प्रकार की सत्ताओं में से यहाँ जगत् की व्यावहारिक तथा प्रातिभासिक सत्ता को स्वीकार किया गया है।
- वेदान्त में एकमात्र ब्रह्म की पारमार्थिक सत्ता स्वीकार की गई है।
- ब्रह्म जब शुद्धसत्त्वप्रधान अज्ञान से आवृत्त होता है तो इसी को ईश्वर कहा जाता है। यही अव्यक्त अन्तर्यामी संसार का कारण रूप होने से कारणशरीर कहलाता है।
- सूक्ष्म एवं स्थूलशरीरों का कारणशरीर लयस्थान भी होता है।
- स्थूल एवं सूक्ष्म जगत्प्रपञ्च का लयस्थान होने के कारण इसी कारणशरीर को सुषुप्ति भी कहा गया है।
- प्रलय की अवस्था में भी कारणशरीर की स्थिति बनी रहती है।

❑❑

7. अर्थसंग्रह

- मीमांसादर्शन के प्रवर्तक **महर्षि जैमिनि** हैं।
- मीमांसा शब्द 'मान्' धातु से 'जिज्ञासा' अर्थ में 'सन्' प्रत्यय लगकर बना है।
  मीमांसा = ✓मान् + सन् = पूजित विचार या पूजित जिज्ञासा
  मीमांसा = वेदवाक्यविचार प्राचीन मनीषियों ने वेदवाक्यों का विचार करने वाले इस मीमांसा को 'वाक्यशास्त्र' भी कहा है।
- वेद के दो विभाग हैं - मन्त्र और ब्राह्मण **'मन्त्रब्राह्मणयोर्वेदनामधेयम्।'** मन्त्रब्राह्मणात्मको वेदः।।
- मन्त्र भाग प्रायः छन्दोमय हैं और ब्राह्मणभाग गद्यात्मक हैं। मन्त्रभाग में प्रायः देवताओं की स्तुति आदि विषय प्रतिपादित किये गये हैं। वेद के दूसरे भाग ब्राह्मण में उन देवताओं को उद्देश्य कर यज्ञयागादि के विविध अङ्गों का विस्तृत वर्णन-मिलता है। ब्राह्मणों का मुख्य विषय है- विधि।
- मीमांसकों के अनुसार-श्रुति का तात्पर्य केवल विधि से है।
- विधि का अर्थ है- यज्ञ तथा उसके अङ्गों-उपाङ्गो के अनुष्ठान का उपदेश।
- मीमांसक हमारे प्रथम दार्शनिक हैं और मीमांसा प्रथम दर्शन।
- मीमांसादर्शन यज्ञ से सम्बन्धित कर्मकाण्ड पर आधारित है। इसका मुख्य उद्देश्य वैदिक कर्मकाण्ड के स्वरूप का निरूपण करने का वैदिक विधि-निषेधों का अर्थ तथा उनमें परस्पर संगति बैठाने का है।
- बादरायणकृत ब्रह्मप्रतिपादक वेदविभाग से अलग बताने के लिये इस दर्शन को **पूर्वमीमांसा** कहा जाने लगा। इसे **कर्ममीमांसा,** तथा **धर्ममीमांसा** भी कहा जाता है।
- मीमांसाशास्त्र को **'तन्त्र'** शब्द से भी जाना जाता है।
- जैमिनिसूत्र 12 अध्यायों में विभक्त है अतः इसे **'द्वादशलक्षणी'** भी कहते हैं। इसके अतिरिक्त चार अध्याय वाला संकर्षकाण्ड भी है। जिसमें कुल 436 सूत्र हैं। यहाँ लक्षण का अर्थ 'अध्याय' समझना चाहिये।
- रामानुज ने ब्रह्मसूत्र के अपने श्रीभाष्य में मीमांसादर्शन को **'षोडशाध्यायी'** कहा है, क्योंकि वे चार अध्याय वाले संकर्षकाण्ड को जैमिनि के मीमांसा दर्शन के अन्तर्गत ही मानते हैं।

- इस प्रकार लगभग 2745 सूत्रों को बारह अध्यायों में विभक्तकर पूर्वमीमांसा की रचना की गयी। प्रत्येक अध्याय में अनेक पाद हैं

द्वादश अध्यायों के नाम

1. धर्मप्रमाणम्	2. धर्माधर्मभेदौ
3.शेषशेषिभावः	4. क्रत्वर्थपुरुषार्थभेदेन प्रयुक्तिविशेषः
5. श्रुत्यर्थपाठनादिक्रमभेदः	6. अधिकारविशेषः
7. सामान्यातिदेशः	8. विशेषातिदेशः
9. ऊहः	10. बाधः
11. तन्त्रम्	12. प्रसङ्गः

- इन्हीं से सम्बन्धित माधवाचार्य ने यह दो कारिका लिखी है।

धर्मो द्वादशलक्षण्या व्युत्पाद्यस्तत्र लक्षणैः।।
प्रमाणभेदशेषत्वप्रयुक्तिक्रमसंज्ञकः।।
अधिकारोऽतिदेशश्च सामान्येन विशेषतः।
ऊहो बाधश्च तन्त्रं च प्रसङ्गश्चोदिताः क्रमात्।।

- इसप्रकार द्वादश अध्यायों में वर्णित जो भिन्न-2 पदार्थ हैं, वे ही अर्थ हैं। उन अर्थों के संक्षिप्त लक्षणों को प्रस्तुत ग्रन्थ में संग्रहित किया गया है। इसलिये इस ग्रन्थ का नाम 'अर्थसंग्रह' है।

मीमांसासूत्र के प्राचीन टीकाकार (व्याख्याता)

उपवर्ष- उपवर्ष, पाणिनि के गुरु वर्ष का भाई था, ऐसी सामान्य धारणा है। इन्होंने मीमांसासूत्रों पर एक वृत्ति लिखी है। इसका संकेत कथासरित्सागर के एक कथांश से मिलता है।

- **शबरस्वामी-** जैमिनिसूत्रों पर शबरस्वामी कृत विशदभाष्य है, जो **'शाबरभाष्य'** के नाम से प्रसिद्ध है। यह भाष्य शाङ्करभाष्य और पतञ्जलि के महाभाष्य की तरह ही महत्त्वपूर्ण भाष्य है।

  * जैमिनि सूत्रों को सुव्यवस्थित करने का श्रेय 'शबरस्वामी' को ही है इनका असली नाम 'आदित्यदेव' था। कहा जाता है कि जैनों के उत्पीड़न के भय से इन्होंने वनवासी शबर का वेश धारण कर लिया था, इसीलिये उन्हें शबरस्वामी कहा जाता है।

- **प्रभाकरमत और भाट्टमत =** शाबरभाष्य के पश्चात् मीमांसाशास्त्र की विचारधारा में कुछ-कुछ महत्त्वपूर्ण विषयों के विषय में दो अन्योन्य भिन्न मतों का प्रचलन प्रारम्भ हुआ। उनमें से एक मत 'प्रभाकरमत' के नाम से और दूसरा कुमारिलमत के नाम से प्रसिद्ध हुआ। प्रभाकर को 'गुरुजी' की संज्ञा उनके प्रसिद्ध शिष्य शालिकनाथ के द्वारा दी जाने के कारण प्रभाकर का मत 'प्रभाकरमत' या 'गुरुमत' के नाम से प्रसिद्ध है।
- मीमांसाजगत् में कुमारिलस्वामी 'भट्ट' के उपपद से प्रसिद्ध होने के कारण उनके मत को 'भाट्टमत' कहा जाने लगा।

- प्रभाकर ने शाबरभाष्य पर दो टीकायें लिखीं हैं।
  1. बृहती 2. लघ्वी या विवरण

शाबरभाष्य की टीका

बृहती | लघ्वी विवरण

- प्रभाकर के शिष्य शालिकनाथ ने प्रभाकरगुरु विरचित बृहती पर 'ऋजुविमला' टीका की रचना की है।
- शालिकनाथ ने प्रभाकरमतानुसार ही मीमांसा पर 'प्रकरण पञ्चिका' नामक एक स्वतन्त्रग्रन्थ की भी रचना की है।
- **कुमारिलभट्ट** - कुछ लोग इन्हें प्रयाग निवासी, दूसरे मत के अनुसार इन्हें दक्षिण भारत का निवासी और तीसरे के मतानुसार इन्हें मिथिला प्रदेश का निवासी कहा जाता है।
- कुछ विद्वान् कुमारिल को बौद्ध मानते थे, बाद में श्रोत्रिय ब्राह्मण होकर प्रसिद्ध मीमांसक हो गये। इनके वैदुष्य से प्रभावित होकर अनेक मीमांसा के व्याख्याकारों ने इनके मत का समादर कर इन्हें इति 'भट्टपादाः' कहकर इनके प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त की है।
- कुमारिलभट्ट का समय लगभग 7000 ईसवी सन् माना जाता है।
- इनके प्रथम ग्रन्थ का नाम '**श्लोकवार्तिक**' है। यह शाबरभाष्य के प्रथम अध्याय के प्रथम पाद की टीका है। इस पाद का नाम '**तर्कपाद**' है।
- दूसरे ग्रन्थ का नाम **तन्त्रवार्तिक** है। शाबरभाष्य के प्रथम अध्याय के अवशिष्ट तीन पाद, द्वितीय अध्याय एवं तृतीय अध्याय की गद्यात्मक टीका इसमें की गई है।
- शेष नौ अध्यायों की संक्षिप्त टीका तीसरे ग्रन्थ में '**टुप्टीका**' नाम से की गई है।
- श्लोकवार्तिक पर **पार्थसारथि मिश्र** कृत '**न्यायरत्नाकर**' नामक टीका लिखी गयी।
- 'तन्त्रवार्तिक' पर **सोमेश्वरभट्ट** कृत '**न्यायसुधा**' अथवा '**राणक**' नाम की सुप्रसिद्ध टीका है।
- **न्यायरत्नमाला-** यह भी स्वतन्त्रग्रन्थ है। इस पर प्रख्यात वेदान्ती रामानुजाचार्य ने राणकरत्न नामक व्याख्या लिखी है।
- **मण्डनमिश्र-** यह कुमारिलभट्ट के बहुसंख्यक शिष्यों में से विशेष प्रतिभासम्पन्न माने जाते हैं। ये मिथिला निवासी थे। इनकी मीमांसा पर लिखी प्रसिद्ध रचनायें-
  1. **विधिविवेक-** इसमें विधि पर विचार किया गया है।
  2. **भावनाविवेक-** इसमें आर्थीभावना की विवेचना की गई है।
  3. **विभ्रमविवेक-** इसमें ख्यातियों का विद्वत्तापूर्ण विवेचन है।
  4. **मीमांसासूत्रानुक्रमणी-** इसमें जैमिनि प्रणीत सूत्रों की श्लोकबद्ध संक्षिप्त व्याख्या की गई है।

कुमारिल की टीका (शाबरभाष्य पर)

श्लोकवार्त्तिक तन्त्रवार्तिक टुप्टीका

* माधवाचार्य द्वारा रचित **'जैमिनीयन्यायमाला'** नामक ग्रन्थ है।
* जयन्तभट्टकृत- **'न्यायमञ्जरी'** मीमांसा का प्रतिष्ठित ग्रन्थ है। इसका समय नवम शतक का उत्तरार्ध माना है।

भाट्ट समुदाय के प्रमुख आचार्य एवं उनकी कृतियाँ

सूचरित मिश्र	-	काशिका (श्लोकवार्तिक की व्याख्या)
सोमेश्वरभट्ट	-	न्यायसुधा (तन्त्रवार्तिक की व्याख्या)
रामकृष्णभट्ट	-	'युक्तिस्नेहपूरणी' (शास्त्रदीपिका की व्याख्या)
सोमनाथ	-	'मयूखमालिका' (शास्त्रदीपिका की व्याख्या)
अनन्तदेव	-	भाट्टालङ्कार मीमांसान्यायप्रकाश की व्याख्या'स्मृतिकौस्तुभ'
वेंकटदीक्षित	-	वार्त्तिकाभरण (टुप्टीका की व्याख्या)
जीवदेव	-	भाट्टभास्कर
शम्भुभट्ट	-	प्रभावली (भाट्टदीपिका की टीका)
नारायणतीर्थ मुनि	-	भट्टभाषाप्रकाश
नारायण केरलीय	-	मानमेययोदय
शङ्करभट्ट	-	मीमांसाबालप्रकाश, विधिरसायनदूषण
अन्नम्भट्ट		सुबोधिनी (तन्त्रवार्तिक की टीका) न्यायसुधा की व्याख्या
रामेश्वरसूरि	-	सुबोधिनी (द्वादशलक्षणी की टीका)
आपदेव	-	मीमांसान्यायप्रकाश (अपरनाम आपोदेवी)

अर्थसंग्रहकार- लौगाक्षिभास्कर का परिचय

- अर्थसंग्रह के रचनाकार / लेखक लौगाक्षिभास्कर हैं।
- आपोदेवी का सार ग्रहणकार **अर्थसंग्रह** नामक प्रकरणग्रन्थ की रचना करने वाले ग्रन्थकार का नाम 'भास्कर' था। जैसा कि अर्थसंग्रह के अन्तिम श्लोक में प्राप्त होता है-

बालानां सुखबोधाय भास्करेण सुमेधसा।
रचितोऽयं समासेन जैमिनीयार्थसंग्रहः॥

- लौगाक्षि इनके कुल (वंश) का नाम था और **भास्कर** स्वयं का नाम था।
- कीथ के अनुसार इनके पिता का नाम **मुद्गल** और पितामह का नाम **रुद्र** था।
- लौगाक्षिभास्कर का समय **16 वीं शताब्दी का उत्तरार्ध** माना जाता है।
- लौगाक्षिभास्कर वासुदेव और रमा के उपासक थे।
- लौगाक्षिभास्कर की दो रचनायें प्राप्त होती है-

(1) **तर्ककौमुदी** (2) **अर्थसंग्रह**

अर्थसंग्रह का मङ्गलाचरण

वासुदेवं रमाकान्तं नत्वा लौगाक्षिभास्करः।
कुरुते जैमिनिनये प्रवेशायार्थसंग्रहम्।।

- लौगाक्षिभास्कर ने लक्ष्मीकान्त विष्णु को नमस्कार करके जिज्ञासुओं को जैमिनि प्रणीत मीमांसादर्शन में प्रवेश कराने के लिये अर्थसंग्रह नामक ग्रन्थ की रचना करते हैं।
- मङ्गलाचरण में लौगाक्षिभास्कर ने रमाकान्त और वासुदेव इन दो नामों से विष्णु की वन्दना की है।
- जैमिनि के ग्रन्थ पूर्वमीमांसा में **'अथातो धर्मजिज्ञासा'** यह प्रथमसूत्र है।
- 'अथातो धर्मजिज्ञासा' इस सूत्र में 'अथ' शब्द वेदाध्ययन की 'अनन्तरता' या आनन्तर्य का वाचक है।
- 'अतः' शब्द वेदाध्ययन की 'दृष्टार्थता' का बोधक है।
- **धर्म- यागादिरेव धर्मः** यागादिक ही धर्म है।
- **धर्मलक्षण-** लौगाक्षिभास्करानुसार धर्म का लक्षण है-

  'वेदप्रतिपाद्यः प्रयोजनवदर्थो धर्मः'

  जो वेद द्वारा प्रतिपादित हो, प्रयोजनवाला हो, और अर्थ हो उसी को धर्म कहा जाता है।
- **आपदेवी के अनुसार धर्मलक्षण-** 'वेदेन प्रयोजनमुद्दिश्य विधीयमानोऽर्थो धर्मः' यथा- यागादिः
- **जैमिनिकृत धर्मलक्षण-** 'चोदनालक्षणोऽर्थो धर्मः' अर्थात् प्रेरणादायी विधिवाक्य द्वारा जो प्रतिपादितहोता है, वह है - धर्म।
- यह जैमिनि का दूसरा सूत्र है।
- 'चोदना' शब्द - सम्पूर्ण वेद का वाचक है। 'चोदना' का अर्थ 'विधि' होता है।
- **भावना**- उत्पत्तिशील की उत्पत्ति में कारणभूत जो उत्पादयिता का मानसिक व्यापार विशेष होता है, उसे 'भावना' कहा जाता है। भावना नाम भवितुभर्वनानुकूलो भावयितुर्व्यापारविशेषः।

  भावना, भविता, भवन, भावयिता ये समस्त शब्द 'भू' धातु से निष्पन्न हैं।
- 'भाव्यते अनया इति भावना' अर्थात् जिसके द्वारा होने के लिये प्रेरित किया जाये उसे 'भावना' कहते हैं।
- 'भावयति इति भावयिता' जो होने के लिए प्रेरित करता है वह 'भावयिता' है। 'भाव्यते इति भविता' जिसे होने के लिए प्रेरित किया जाय वह 'भविता' है।
- **भावना के प्रकार-** यह भावना दो प्रकार की होती है। (1) शाब्दीभावना (2) आर्थीभावना

  (1) **शाब्दीभावना-** पुरुषप्रवृत्यनुकूलो भावयितुर्व्यापारविशेषः शाब्दीभावना।

  प्रयोज्य पुरुष के प्रवृत्ति के अनुकूल प्रयोजक के व्यापार विशेष को शाब्दीभावना कहते हैं।
- शाब्दीभावना का बोध 'लिङ्' अंश से होता है।
- शाब्दीभावना लौकिकवाक्य में प्रयोजक पुरुषनिष्ठ व्यापार विशेष है, किन्तु वैदिकवाक्य में प्रयोजक पुरुष के अभाव के कारण यह भावना लिङादिशब्दनिष्ठ ही होती है। शब्दनिष्ठ होने के कारण शाब्दीभावना कही जाती है।

- **शाब्दीभावनाया अंशत्रयम् -** सा च भावनांशत्रयमपेक्षते। साध्यं-साधनमितिकर्तव्यताञ्च।
- शाब्दीभावना में तीन अंश होते हैं -

  (1) साध्य (2) साधन (3) इतिकर्तव्यता

  इन अंशो का स्वरूप इसप्रकार है-

  * किं साधयेत् - क्या किया जाय?
  * केन भावयेत् - किससे किया जाय?
  * कथं भावयेत् - कैसे किया जाय?

  आर्थीभावनालक्षणम् - प्रयोजनेच्छाजनितक्रियाविषयव्यापार आर्थीभावना।
- स्वर्गादि प्रयोजन को लक्ष्य करके याग आदि क्रिया को सम्पादित करने का पुरुष में जो मानसिक व्यापार उत्पन्न होता है, उसे आर्थीभावना कहा जाता है।
- आर्थीभावना आख्यातत्व अंश से कही जाती है, क्योंकि व्यापारक्रिया का वाचक 'आख्यात सामान्य' ही होता है।
- उक्त लक्षण में 'प्रयोजन' का अर्थ फल है।

  अर्थ्यते प्रार्थ्यते पुरुषैरिति अर्थः फलम्। तत्प्रयोजकत्वाद् भावना आर्थी। यद् वा अर्थ्यते फलं येनेत्यर्थः पुरुषः तद्गतत्वादार्थी (सारविवेचिनी) आर्थीभावनाया अंशत्रयम्

  (1) साध्य (2) साधन (3) इतिकर्तव्यता

भावना

शाब्दीभावना — लिङ्
- साध्य — किं साधयेत्
- साधन — केनं भावयेत्
- इतिकर्तव्यता — कथं भावयेत्

आर्थीभावना — आख्यात
- साध्य — किं साधयेत्
- साधन — केन भावयेत्
- इतिकर्तव्यता — कथं भावयेत्

यजेत

- यज् — याग — धात्वर्थ
- आख्यातत्व — आर्थीभावना
- लिङ्त्व — शाब्दीभावना

आर्थीभावना, शाब्दीभावना — प्रत्यय

'यजेत' के अन्तर्गत 'लिङ्त्व'

शाब्दीभावना

- किं भावयेत् (यागकरणकस्वर्गकर्मक प्रवृत्तिरूपां आर्थीभावनां भावयेत्)
- केन भावयेत् (लिङ्गादिज्ञानेन भावयेत्)
- कथं भावयेत् (कर्मप्राशस्त्यविशिष्टेन लिङादिज्ञानेन भावयेत्)
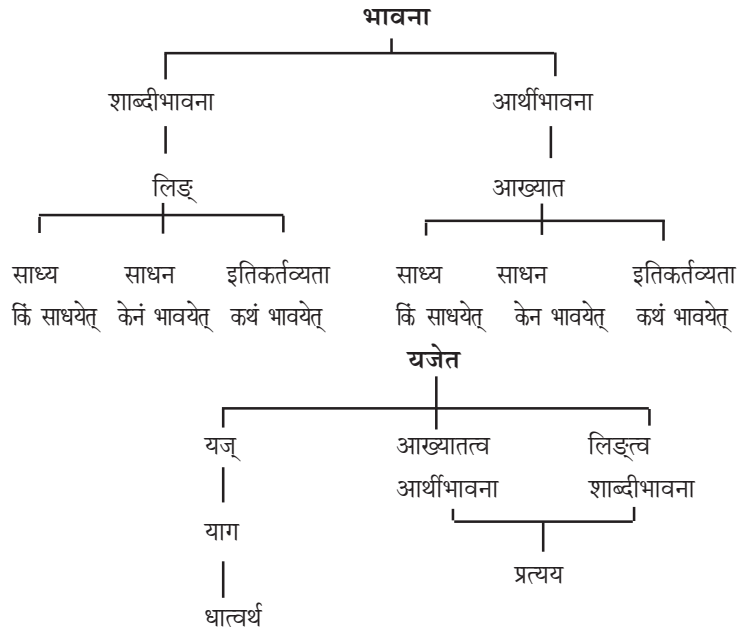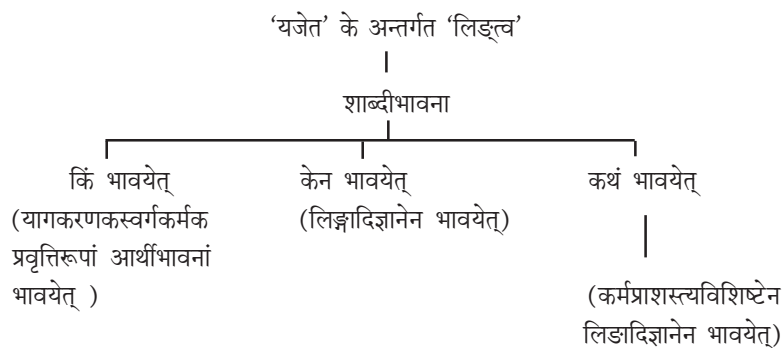
वेदलक्षणविचारः

वेदलक्षण- अपौरुषेयं वाक्यं वेदः

अपौरुषेय वाक्य को वेद कहते हैं।

स च विधि-मन्त्र-नामधेय-निषेधार्थवाद-भेदात्पञ्चविधः

वेद के पाँच भेद हैं- विधि, मन्त्र, नामधेय, निषेध और अर्थवाद।

वेद

विधि | मन्त्र | नामधेय | निषेध | अर्थवाद

➢ **विधि- तत्राज्ञातार्थज्ञापको वेदभागो विधिः।**

अज्ञात अर्थ को ज्ञापित अथवा प्रकाशित कराने वाले वेदभाग को 'विधि' कहा जाता है।

➢ विधि अन्य प्रमाणों से अप्राप्त जिसप्रकार के अर्थ का विधान करती है। उसप्रकार के सप्रयोजन अर्थ के विधान से ही (वह विधि) सार्थक है।

➢ उदा0 - 'अग्निहोत्रं जुहुयात् स्वर्गकामः' यह एक विधिवाक्य है।

अग्निहोत्र होम से स्वर्ग की भावना (प्राप्ति)करें।

2. गुणविधि का लक्षण- यत्र कर्म मानान्तरेण प्राप्तं तत्र तदुद्देशेन गुणमात्रं विधत्ते। यथा- 'दध्ना जुहोति'

➢ जहाँ पर कर्म यागादि दूसरे प्रमाण से प्राप्त हों, वहाँ पर विधि उस कर्म को उद्दिष्ट करके गुणमन्त्र का विधान करती है। जैसे- दध्ना जुहोति।

दधि के द्वारा होम करें। यह अर्थ बोध होता है।

3. विशिष्ट विधि का लक्षण- यत्र तूभयप्राप्तं तत्र विशिष्टं विधत्ते। यथा - सोमेन यजेत।

➢ लेकिन जहाँ पर प्रमाणान्तर से दोनों कर्म और गुण अप्राप्त रहते हैं वहाँ पर विधि द्वारा दोनों का विधान होता है अर्थात् गुण विशिष्ट कर्म का विधान होता है।

➢ 'सोमेन यजेत' यहाँ पर अप्रमाणान्तर सोम और याग के अप्राप्त होने के कारण विधि

सोमविशिष्टयाग का विधान करती है।

- सोमपद में मत्वर्थलक्षणा से सोमवान् याग से इष्ट (स्वर्ग) का सम्पादन करें।

विधि का प्रथम विभाजन

विधि

विधि या उत्पत्तिविधि	गुणविधि	विशिष्टविधि
उदा0 (अग्निहोत्रं जुहुयात्स्वर्गकामः)	दध्ना जुहोति	सोमेन यजेत

विधि का द्वितीय विभाजन

विधि

उत्पत्तिविधि	विनियोगविधि	अधिकारविधि	प्रयोगविधि
(अग्निहोत्रं जुहोति)	(दध्ना जुहोति)	(यजेत स्वर्गकामः)	(दर्शपूर्णमासाभ्यां स्वर्गकामो यजेत)

विधि का तृतीय विभाजन

विधि

अपूर्वविधि	नियमविधि	परिसंख्याविधि
(यजेत् स्वर्गकामः)	व्रीहिनवहन्ति	पञ्च पञ्चनखाः भक्ष्याः
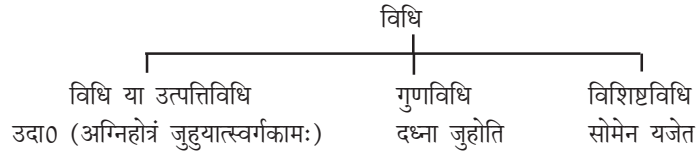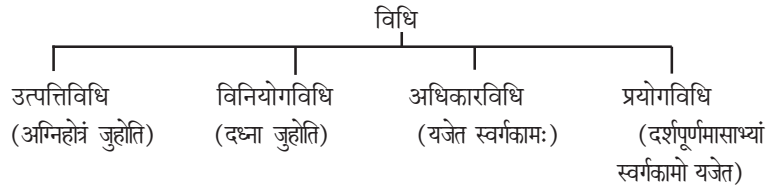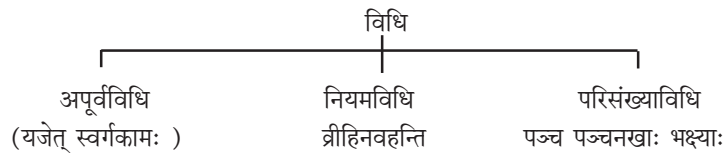
विधियों का दूसरा विभाजन

विधि चार प्रकार की होती है।

- **1. उत्पत्ति विधि** 'तत्र कर्मस्वरूपमात्रबोधको विधिरुत्पत्तिविधिः' (यागादि) कर्म के स्वरूप मात्र का बोधक विधि 'उत्पत्तिविधि' होता है। उदा0- अग्निहोत्रं जुहोति।
  याग का लक्षण- 'उद्दिश्य देवतां द्रव्यत्यागो यागोऽभिधीयते।'
- **विनियोग विधि-** 'अङ्गप्रधानसम्बन्धबोधको विधिर्विनियोगविधिः'
  अङ्गों के साथ सम्बन्ध बोधक विधि को विनियोगविधि कहते हैं। उदा0- दध्ना जुहोति
- 'दध्ना जुहोति' का अर्थ 'दध्ना होमं भावयेत् ' अर्थात् दधि के द्वारा होम का सम्पादन होता है।
- जिस विधि द्वारा अंग (गौण,शेष) और प्रधान (मुख्य,शेषी) के उपकारकोपकार्यरूपी सम्बन्ध का ज्ञान होता है, उसे विनियोग विधि कहते हैं।

विनियोगविधि के षट् सहकारी भूत प्रमाण

- श्रुति
  - विधात्री
    - लिङ्गात्मिका
      - यजेत जुहयात्
  - अभिधात्री
    - व्रीह्यादि
      - (1) व्रीहिन् अवहन्ति
      - (2) व्रीहिन् प्रोक्षति
  - विनियोक्त्री
    - (1) विभक्तिरूपा -व्रीहिभिर्यजेत्
    - (2) एकाभिधानरूपा - पशुना
    - (3) एकपदरूपा - यजेत
- लिङ्ग
- वाक्य
- प्रकरण
- स्थान
- समाख्या।
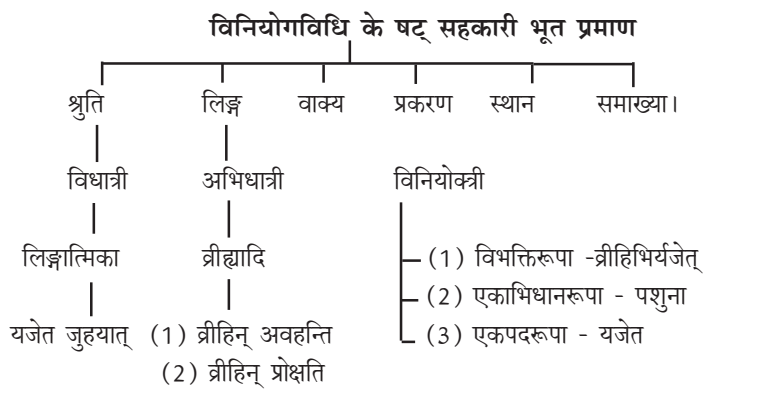
- **1 श्रुति-** तत्र निरपेक्षो रवः श्रुतिः। सा च त्रिविधा-विधात्री, अभिधात्री, विनियोक्त्री। तत्र आद्या लिङ्गाद्यात्मिका। द्वितीया व्रीह्यादिश्रुतिः। यस्य च शब्दस्य श्रवणादेव सम्बन्धः प्रतीयते सा विनियोक्त्री।
- प्रमाणान्तर की अपेक्षा न रखने वाला रव (शब्द) श्रुति है। वह श्रुति तीन प्रकार की होती है। विधात्री, अभिधात्री और विनियोक्त्री। उनमें से पहली श्रुति लिङ्गात्मिका। दूसरी श्रुति व्रीह्यादि है।
- जिस शब्द के सुनने मात्र से ही सम्बन्ध का ज्ञान होता है वह विनियोक्त्री श्रुति है।
- श्रुति का सामान्य लक्षण है 'शब्द'।
- विनियोक्त्री श्रुति के तीन भेद है। विभक्तिरूपा, एकाभिधानरूपा, एकपदरूपा।
- **विधात्री-** विधि या विधान करने वाली 'विधात्री' श्रुति कही जाती है। यह लिङ्गादिस्वरूप की ही होती है।

  यथा- 'यजेत', 'जुहुयात्' इसमें 'लिङ्' आदि प्रत्यय का श्रवण होने से यह विधात्री श्रुति है।
- 'यः प्रत्ययो विधायको लिङादिः, स एव विधात्री श्रुतिरित्यभिधीयते इत्यर्थः।' अभिधात्री अर्थात् अभिधान करने वाली अभिधात्री श्रुति होती है।
- अभिधया स्वार्थ्यं प्रतिपादयति इति सा अभिधात्री।

  इस श्रुति में पदार्थ के उच्चारण द्वारा अपेक्षित वस्तु का बोध होता है।

  उदा0- व्रीहिन् अवहन्ति, व्रीहीन् प्रोक्षति इत्यादि में 'व्रीहि' का अभिधान किया गया है।
- **विनियोक्त्री श्रुति-** जिस शब्द के श्रवण मात्र से ही सम्बन्ध का ज्ञान होता है वह विनियोक्त्री श्रुति होती है।
- यस्य च शब्दस्य श्रवणादेव सम्बन्धः प्रतीयते सा विनियोक्त्री सा = सः (शब्दः), स शब्दो विनियोक्त्री श्रुतिरित्यर्थः।

- विनियोक्त्री श्रुतिस्त्रिधा- विनियोक्त्री श्रुति तीन प्रकार की होती है।
  (1) विभक्तिरूपा (2) एकाभिधानरूपा पशुना (3) एकपदरूपा यजेत व्रीहिभिर्यजेत
- **लिङ्ग का लक्षण-** शब्दसामर्थ्यं लिङ्गम्। शब्दसामर्थ्य को लिङ्ग कहते हैं।
- तन्त्रवार्तिक के अनुसार- 'समस्त शब्दों में होने वाले सामर्थ्य को लिङ्ग कहते हैं।
- सामर्थ्य शब्द का अर्थ 'रूढि' है।
- 'यौगिक शब्द समाख्यातो रूढ्यात्मकलिङ्गशब्दस्य भिन्नत्वात्' रूढि की सामर्थ्य (शक्ति) है, इसीलिए समाख्या से इसका भेद है, क्योंकि यौगिकशब्द समाख्या से रूढ्यात्मक लिङ्ग शब्द से भिन्न होता है।
- इसीलिये 'बर्हिर्देसदनं दामि- इस मन्त्र का कुशल-वनाङ्गत्व सिद्ध होता है, उलपादिलवानागत्व नहीं, क्योंकि बर्हिर्दामि' इस लिङ्ग से कुशलवन रूप अर्थ को प्रकाशित करने में समर्थ है।
- इसीप्रकार अन्य स्थलों पर भी लिङ्ग से विनियोग समझना चाहिये।
- सामर्थ्य दो प्रकार का होता है। 1.शब्दगत सामर्थ्य 2.अर्थगत सामर्थ्य
  सामर्थ्यं द्विविधं शब्दगतमर्थगतं चेति
- शब्दगत सामर्थ्य को ही लिङ्ग कहा गया है। तन्त्रवार्तिककार कुमारिलभट्ट के अनुसार-

  'सामर्थ्यं सर्वशब्दानां लिङ्गमित्यभिधीयते'

  अर्थात् सभी शब्दों में स्थित सामर्थ्य को लिङ्ग कहते हैं।
- सामर्थ्य का अपर नाम 'शक्ति' है।

  वाक्य- 'समभिव्याहारो वाक्यम्'

  समभिव्याहार (सहोच्चारण) को वाक्य कहते हैं।

  साध्यत्वादि वाचक द्वितीया आदि विभक्तियों का अभाव होने पर भी शेष (अङ्ग) एवं शेषि (अङ्गी) का बोध कराने वाले पदों के सहोच्चारण को वस्तुतः वाक्य कहा जाता है।

  'यस्य पर्णमयी जुहूर्भवति न स पापं श्लोकं श्रृणोति' जिस व्यक्ति की 'जुहू' पलाश काष्ठ निर्मित होती है वह अपना अपयश नहीं सुनता है।

  इस वाक्य में 'पर्णता' और 'जुहू' का एक साथ उच्चारण है इस हेतु में 'पर्णता' जुहू का अंग है।
- प्रकृतियाग जहाँ समस्त अङ्गों का उपदेश हो उसे 'प्रकृतियाग' कहते हैं।
  'यत्र समग्राङ्गोपदेशः सा प्रकृतिः',
- उदा0- 'दर्शपूर्णमासादि' प्रकृतियाग है क्योंकि दर्शपूर्णमासादि के प्रकरण में उनके समस्त अङ्गों अर्थात् धर्मों का पाठ किया जाता है, उनकी कर्तव्यता के सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की आकांक्षा शेष नहीं रहती।
- विकृतियाग इसके विपरीत जिस याग के विषय में समस्त अङ्गों का पाठ प्राप्त नहीं होता है, उसे '-विकृतियाग' कहते हैं।

उदा0 शौर्य, श्येन, ऐन्द्राग्र इत्यादि याग विकृतियाग है।

- **प्रकरण का लक्षण-** उभयाकाङ्क्षा प्रकरणम्।
  दों वाक्यों की परस्पर आकांक्षा को प्रकरण कहते हैं।
  उदा0- प्रयाजादि में 'समिधो यजति' इत्यादि वाक्य में फलविशेष के निर्दिष्ट न होने के कारण 'समिद्यागेन भावयेत्' इसप्रकार के बोध के बाद 'किम् भावयेत्' यह उपकार्य (फल) की आकांक्षा होती है।
- दर्शपूर्णमास वाक्य में भी 'दर्शपूर्णमासाभ्यां स्वर्गं भावयेत्' इसप्रकार के बोध के बाद 'कथं भावयेत्' यह उपकारक (साधन) की आकांक्षा होती है।
- इसप्रकार उभयाकाङ्क्षा से प्रयाजादि का दर्शपूर्णमासाङ्गत्व सिद्ध होता है।**प्रकरण के भेद-** प्रकरण दो प्रकार का होता है।
  'तच्च प्रकरणं द्विविधम्।' महाप्रकरणमवान्तरप्रकरणञ्चेति
  (1) महाप्रकरण (2) अवान्तरप्रकरण
- **महाप्रकरण-** तत्र मुख्यभावनासम्बन्धिप्रकरणं महाप्रकरणं न च प्रयाजादीनां दर्शपूर्णमासाङ्गत्वम्।
  मुख्य अर्थात् फलभावना से सम्बन्धित प्रकरण को महाप्रकरण कहते हैं। उससे ही प्रयाजादि का दर्शपूर्णमासाङ्गत्व सिद्ध होता है।
- महाप्रकारण की प्रवृत्ति केवल प्रकृतियागों में ही सम्भव है क्योंकि उभयाकांक्षा केवल प्रकृतियागों में ही होती है।
- विकृतियाग में उभयाकांक्षा का सर्वथा अभाव रहता है।
- **अवान्तर प्रकरण का लक्षण-** अङ्गभावनासम्बन्धिप्रकरणमवान्तरप्रकरणम्।
  अङ्गभावना सम्बन्धि प्रकरण अवान्तर प्रकरण है, इसमें उभयाकांक्षा और अङ्गभावना सम्बन्धित दोनों का होना आवश्यक होता है।
- यह (अवान्तर प्रकरण) संदंश (दो के मध्य में पाठ) से ही जाना जाता है।
  सन्दंश का लक्षण- एकाङ्गानुवादेन विधीयमानयोरङ्गयोरन्तराले विहितत्व सन्दंशः।
- एक अङ्ग के अनुवाद से विधीयमान दो अङ्गों के बीच में किया जाने वाला विधान सन्दंश होता है। जैसे- अभिक्रमण में।
- सन्दंश शब्द का अर्थ चिमटा या संडसी होता है।
- टीका में इसका अर्थ संक्षेप में इस प्रकार दिया गया - प्रयाजानुवादेन विहित- तदङ्गमध्ये विहितत्वं सन्दंशः।
- 'दर्श एवं पूर्णमास' प्रधानयाग है।
- प्रयाज पाँच क्रियाओं का समूह है- वे क्रियाएँ है-
  1. समिधो यजति 2. तनूनपातं यजति 3. इडो यजति
  4. बहिर्यजति 5. स्वाहाकारं यजति
- **स्थान का लक्षण-** देशसामान्यं स्थानम्। तद् द्विविधम्।
  देश की समानता स्थान है। वह दो प्रकार की है।

(1) पाठसादेश्य (2) अनुष्ठान सादेश्य

- स्थान और क्रम ये दोनों समानार्थी हैं।
- पाठसादेश्य भी दो प्रकार का होता है- (1) यथासंख्यपाठ और (2) सन्निधि पाठ उदाहरणार्थ - अभिषेचनीय याग एवं देवनादि धर्मों का पाठ समानदेश (स्थान) में पाया जाता है अतः वहाँ प्रमाण की प्रवृत्ति प्राप्त होती है।
- स्थान और क्रम दोनों एक ही अर्थ के वाचक हैं।
- सादेश्य, सदेशत्व, समानदेशत्व, देशसामान्य - ये सभी समानार्थक शब्द के द्योतक हैं।
- **समाख्या का लक्षण-** समाख्या यौगिकः शब्दः।
  सा च द्विविधा। वैदिकी लौकिकी च।
- समाख्या नाम का अन्तिम प्रमाण है। समाख्या यह एक यौगिक शब्द है।
- यह दो प्रकार का होता है। वैदिकी और लौकिकी
- लक्षण में प्रयुक्त यौगिक शब्द का अर्थ- शब्द के घटकावयवों द्वारा व्यक्त किया हुआ अर्थ वही यौगिक शब्द है।
- उदाहरण- 'पाचक' इस शब्द में 'पच्' धातु और अक (ण्वुल्), कर्तृवाचक प्रत्यय- ये दो 'पाचक' शब्द के घटकावयव हैं।
- **पाचक शब्द का अर्थ-** पकाने वाला। इसीलिये पाचक एक यौगिक शब्द है।
- **यौगिक शब्द-** जिस शब्द से केवल अवयवार्थ का ही बोध हो उसे 'यौगिक शब्द' कहा जाता है।
- **वैदिकी समाख्या-** जो वेद में पठित होते हैं अर्थात् साक्षात् वेद के अङ्ग होते हैं ऐसे यौगिक शब्दों को वैदिकी समाख्या कहते हैं।
  उदा0- 'होतृचमस'= होता का चमस (चम्मच)
  (वह पात्र जिससे वह सोमरस का पान करता है।)
- **लौकिकी समाख्या-** याज्ञिकों द्वारा कल्पित वैदिकतर यौगिक शब्द लौकिकी समाख्या कहे जाते हैं।
  उदा0- आध्वर्यवण् - अध्वर्यु का कर्म
  यह उदाहरण याज्ञिकों द्वारा कल्पित है। केवल इस भेद मात्र से इस समाख्या को लौकिकी समाख्या कहा जाता है।

3. प्रयोगविधि- प्रयोगप्राशुभावबोधको विधिः प्रयोगविधिः।

- जिस विधिवाक्य से प्रयोग को शीघ्र करने का बोध होता है उसे प्रयोगविधि कहते हैं।
- 'अङ्गानां क्रमबोधको विधिः प्रयोगविधिः'
  अङ्गों के क्रम का बोध कराने वाली विधि को प्रयोगविधि कहते हैं। वह प्रयोगविधि

अङ्गवाक्यों के साथ एक वाक्यता होने पर भी प्रयोगविधि ही है। उदा0- दध्ना जुहोति।

- 'प्राशुभाव' का अर्थ है- विलम्ब न करना (त्वरा)
- प्राशुभाव = प्रकर्षेण शीघ्रता को व्यक्त करता है।
- **क्रम का लक्षण-** तत्र क्रमो नाम विततिविशेषः। पौर्वापर्यरूपो वा।
- विस्तार विशेष क्रम है अथवा वह पूर्वापरभाव रूप होता है।

प्रयोगविधि के छह प्रमाण

श्रुति, अर्थ, पाठ, स्थान, मुख्य और प्रवृत्ति- प्रयोगविधि के यह छः प्रमाण हैं।
यही क्रम के निर्णायक प्रमाण माने गये हैं-

- **1. श्रुति का लक्षण -** तत्र क्रमपरवचनं श्रुतिः। तच्च द्विविधम् केवलक्रमपरं तद् विशिष्टपदार्थपरं चेति।

  उन छह प्रमाणों में क्रमबोधक वाक्य श्रुति है। वह दो प्रकार की है 1. केवलक्रमबोधक और 2. तद्विशिष्ट(क्रमविशिष्ट) पदार्थ बोधक।
- 'वेदं कृत्वा वेदिं करोति' यह केवलक्रमबोधक है' क्योंकि वेदिनिर्माण आदि अन्य वचनों से प्राप्त है।
- वेद (कुशमुष्टि) एवं वेदी की रचना का विधान दूसरे विधि वाक्यों से हो जाता है,यहाँ केवल क्रम का विधान क्त्वा प्रत्यय से हुआ है।
- 'वषट्कर्तुः प्रथमभक्षः' (अर्थात् वषट्कर्ता प्रथम भक्षण करें) यह क्रम विशिष्ट पदार्थबोधक है क्योंकि एकवाक्यता के भंग होने के भय से भक्षण को अनुवाद द्वारा क्रम मात्र का विधान करना असम्भव है।
- **2. अर्थक्रम का लक्षण-** 'यत्र प्रयोजनवशेन क्रमनिर्णयः सोऽर्थक्रमः।'

  यथा- 'अग्निहोत्रं जुहोति' और 'यवागूं पचति'
- जहाँ क्रम का निर्णय प्रयोजन के आधार पर होता है,उसे अर्थक्रम कहते हैं।
- यहाँ अर्थ शब्द प्रयोजन का वाचक है।

  अर्थक्रम का उदाहरण 'अग्निहोत्रं जुहोति' और 'यवागूं पचति' विधिवाक्य है।
- **3. पाठक्रम का लक्षण**- पदार्थबोधकवाक्यानां यः क्रमः स पाठक्रमः।

  पदार्थबोधकवाक्यों का जो क्रम है वह 'पाठक्रम' है। उससे पदार्थों का क्रम जाना जाता है।

  वह पाठ दो प्रकार का होता है-(i) मन्त्रपाठ (ii) ब्राह्मणपाठ
- **मन्त्रपाठ-** आग्नेय एवं अग्नीषोमीय यागों का जो क्रम इनके याज्यानुवाक्या वाक्यों के पाठ से निश्चित होता है वह मन्त्रपाठ से ही होता है।
- **ब्राह्मणपाठ-** ब्राह्मण वाक्य अनुष्ठान से बाहर रहकर ही 'यह करना चाहिए' इसप्रकार का ज्ञान कराकर कृतार्थ हो जाता है किन्तु मन्त्र अनुष्ठानकाल में प्रयुक्त होते हैं क्योंकि अनुष्ठान का क्रम स्मरणक्रम के अधीन होता है।
- 'समिधो यजति तनूनपातं यजति' इसप्रकार के पाठ से प्रयाजों का जो क्रम है वह

ब्राह्मणपाठक्रम से है।

- **4. स्थान लक्षण-** स्थानं नामोपस्थितिः।
  उपस्थिति को स्थान कहते हैं। स्थान का अर्थ है- उपस्थित होना या प्राप्त होना।
- किसी विशिष्ट स्थान पर कोई विशिष्ट पदार्थ कर्तव्यत्वेन उपस्थित प्राप्त होने पर, वह उसी स्थान पर अनुष्ठित हो ,इसप्रकार जो क्रम निश्चित किया जाता है वह क्रम, स्थान प्रमाण के आधार पर निश्चित किया जाता है। इसलिए, इसप्रकार से निश्चित किये गये क्रम को स्थानक्रम कहते हैं।
- **मुख्यक्रम का लक्षण-** 'प्रधानक्रमेण योऽङ्गानां क्रमः आश्रीयते स मुख्यः क्रमः।
  प्रधान के क्रम के अनुसार अङ्गों का जो क्रम है,वह मुख्यक्रम है।
  मुख्यक्रम के आधार पर ही प्रयाज से बचे हुए घृत से पहले आग्नेय हवि का तत्पश्चात् ऐन्द्रदधि का अभिषेक किया जाता है। आग्नेय और ऐन्द्र दोनों दर्शयाग के दो प्रमुख याग हैं।
- मुख्यक्रम पाठक्रम से दुर्बल होता है, क्योंकि अन्य प्रमाण से प्रधानक्रम को उपलब्धि होने के बाद प्रधानक्रमज्ञान से मुख्यक्रम का ज्ञान देने के कारण मुख्यक्रम की प्रतिपत्ति विलम्ब से होती है।
- **'प्रवृत्ति क्रम का लक्षण-** सहप्रयुज्यमानेषु प्रधानेषु संनिपातनामङ्गानामवृत्त्यानुष्ठाने कर्तव्ये हि द्वितीयादिपदार्थानां प्रथमानुष्ठितक्रमाद्यः क्रमः स प्रवृत्तिक्रमः।यथा- प्राजापत्यपश्वङ्गेषु।
- जब कोई प्रधान क्रिया अपने अङ्गों के अनुष्ठान के ही साथ-साथ अनुष्ठित की जाती है और उसके सन्निपत्योपकारक अङ्गों की आवृत्ति से अनुष्ठान करणीय होता है, तब प्रथम अनुष्ठित क्रिया के बाद द्वितीयादि पदार्थों के अनुष्ठान से जो क्रम बनता है,वही प्रवृत्तिक्रम कहा जाता है।
- प्राजापत्य नामक पशुयागों की अङ्गभूत क्रियाओं के क्रम का निश्चय प्रवृत्तिक्रम से ही होता है।

अधिकारविधि- कर्मजन्यफलस्वाम्यबोधको विधिरधिकारविधिः
कर्मजन्य फल की स्वाम्यबोधक विधि अधिकारविधि है।

- कर्मजन्यफलस्वाम्य का अर्थ है- कर्मजन्यफलभोक्तृता
- दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि अधिकारविधि यागादि कर्मों से उत्पन्न फल भोक्ता की योग्यताओं अथवा क्षमताओं का निर्धारण करती है।
- कर्म तीन प्रकार के होते हैं- 1. नित्य 2. नैमित्तिक 3. काम्य
- जिसके न करने पर कोई हानि अथवा पातक हो, करने पर कोई विशेष लाभ न हो वह नित्यकर्म होता है- जैसे-स्नान,शौच,सन्ध्योपासन आदि।
- काम्यकर्म में अधिकारविधि का उदाहरण है- यजेत स्वर्गकामः।
- यह विधि स्वर्ग को उद्देश्य करके याग का विधान करती हुई स्वर्गकाम व्यक्ति को

यागजन्य स्वर्गरूपफल का अधिकारी बताती है।

- पूर्व में वेद के पाँच विभाग- विधि,मन्त्र,नामधेय,निषेध और अर्थवाद का उल्लेख किया गया है- उनमें से मन्त्र दूसरा विभाग है।
- **मन्त्र-** प्रयोगसमवेतार्थस्मारका मन्त्राः।
  प्रयोग से सम्बन्धित प्रयोजन के स्मारक मन्त्र हैं। यागानुष्ठान द्रव्य, देवता,क्रिया आदि अनेक पदार्थों द्वारा सम्पन्न होता है।
- **नियमविधि का लक्षण-**नाना-साधनसाध्यक्रियायामेकसाधन-प्राप्तावप्राप्तस्यापरसाधनस्य प्रापको विधिर्नियमविधिः
- अनेक साधनों या कारणों से साध्य क्रिया में एक साधन प्राप्त होने पर अन्य साधन की प्रापकविधि नियमविधि कहलाती है।
  जैसा कि कहा गया है पदार्थ के अत्यन्त अप्राप्त रहने पर उसका विधान करने वाली विधि अपूर्वविधि कही जाती है।
- **'विधिरत्यन्तमप्राप्तौ नियमः पाक्षिके सति।'**
  पदार्थ की पाक्षिक (अप्राप्ति) होने पर पक्ष में अप्राप्त की प्रापक विधि नियमविधि है और दोनों (पदार्थों) के एक साथ प्राप्त होने पर एक की निवृत्ति का बोध कराने वाली विधि परिसंख्याविधि इस नाम से जानी जाती है।
- **परिसंख्या विधि– 'तत्र चान्यत्र च प्राप्तौ परिसंख्येति गीयते'**
- कुमारिल के अनुसार अपूर्वविधि का लक्षण- **'विधिरत्यन्तमप्राप्तौ'**
- लौगाक्षिभास्कर ने अपूर्वविधि की व्याख्या इस प्रकार की है-
- **अपूर्वविधि - प्रमाणान्तरेणाप्राप्तस्यप्रापकोविधिरपूर्वविधिः**
  इसका भाव है- जिस पदार्थ का ज्ञान किसी अन्य प्रमाण से नहीं होता उस पदार्थ का विधान करने वाली विधि अपूर्वविधि है। उदाहरण- **यजेत स्वर्गकामः।**
- स्वर्ग के साधनभूत याग का ज्ञान किसी अन्य प्रत्यक्षादि प्रमाण से न होकर केवल 'यजेत स्वर्गकामः' इसी विधि वाक्य से होता है।
- इसी अपूर्वविधि को केवलविधि या उत्पत्तिविधि भी कहते हैं।
  कुमारिल ने नियमविधि का लक्षण किया है- **'नियमः पाक्षिके सति'**
- लौगाक्षिभास्कर के अनुसार - 'पक्षेऽप्राप्तस्य प्रापको विधिर्नियमविधिः'
  उदाहरण- 'व्रीहीनवहन्ति' यह विधिवाक्य है। इसका अर्थ है- 'धान कूटे जायें'
- **परिसंख्या विधि का लक्षण -** (लौगाक्षिभास्कर के अनुसार)
  1. उभयोश्च युगपत्प्राप्ताविरतव्यावृत्तिपरो विधिः परिसंख्याविधिः 'पञ्च पञ्चनखा भक्ष्या' इति।
  2. कुमारिल के अनुसार ''तत्र चान्यत्र च प्राप्तो परिसंख्येति गीयते ''
- जहाँ दो पदार्थों की एक साथ प्राप्ति हो रही है। वहीं एक का निषेध करने वाला वाक्य परिसंख्याविधि माना जाता है।

जैसे -पञ्च पञ्चनखा भक्ष्या ब्रह्मक्षत्रेण राघव।
शशकः शल्लकी गोधा खड्गी कूर्मोऽथ पञ्चमः।। (किष्किन्धाकाण्ड-17/39)

- पाँच नाखूनों वाले प्राणियों और शशकादि पाँच से भिन्न पाँच नाखूनों वाले प्राणियों का भक्षण एक साथ प्राप्त हो रहा है। सामान्यरूप से दोनों का निषेध नहीं करते।
- उक्तविधि वाक्य में 'पञ्चनखाः' का विशेषण पञ्च शशकादि पाँच नखों के अतिरिक्त अन्य पञ्चनखों के भक्षण से पुरुष को निवृत्त करता है।
- परिसंख्या को निषेध न मानकर विधि ही माना गया है।

परिसंख्या विधि के भेद -

- सा च द्विविधा - श्रौती लाक्षणिकी चेति। वह दो प्रकार की होती है - श्रौती और लाक्षणिकी
- परिसंख्या विधि का मूल तात्पर्य - निवृत्ति में पर्यवसित होता है। यह निवृत्ति दो प्रकार से होती है।

  प्रथम विधिवाक्य में श्रुत किसी पद के माध्यम से -
  जैसे - 'अत्र ह्येवावपन्ति' यह श्रौती परिसंख्या है।
- द्वितीय जब निवृत्तिपरक पद विधिवाक्य में श्रुत नहीं होता अपितु लक्षण द्वारा उसकी कल्पना करनी पड़ती है तो उस परिसंख्या को लाक्षणिकी परिसंख्या कहा जाता है। जैसे -पञ्च पञ्चनखाः भक्ष्याः।

लाक्षणिकी परिसंख्या के तीन दोष -

श्रुतहानि, अश्रुतकल्पना और प्राप्तबाध ये तीन दोष हैं।

श्रुतार्थस्य परित्यागादश्रुतार्थप्रकल्पनात्।
प्राप्तस्य बाधादित्येवं परिसंख्या विदूषणा।

परिसंख्या के तीन दोष

पञ्चनखभक्षण	अपञ्चनखभक्ष	अपञ्चनखभक्षण निवृत्ति
श्रुत	अश्रुत	अश्रुत
(रागतः) प्राप्त	(रागतः) प्राप्त	अप्राप्त
श्रुतहानि	प्राप्तबाध	अश्रुतकल्पना
शब्दनिष्ठ	अर्थनिष्ठ	शब्दनिष्ठ
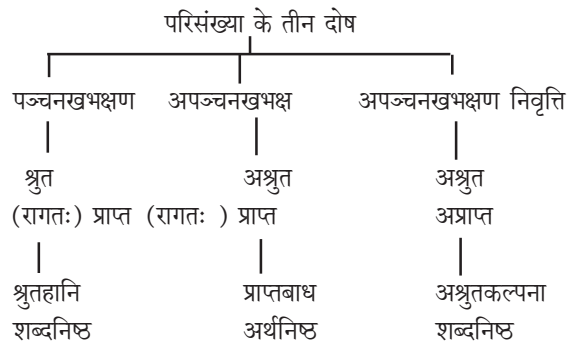
- यह कहा भी गया है श्रुत अर्थ के परित्याग, अश्रुत अर्थ की प्रकल्पना और (रागतः) प्राप्त अर्थ की बाधा से परिसंख्या तीन दोषों से युक्त होती है।
- **प्रथम दोष-**

  श्रुत पञ्चपञ्चनख भक्षण के परित्याग से

दूसरा दोष-

अश्रुत अपञ्चपञ्चनखभक्षणनिवृत्ति की कल्पना करने से -

- **तीसरा दोष-** (रागतः) प्राप्त अपञ्चनखभक्षण के बाध से

इन तीनों दोषों में दो दोष - शब्दनिष्ठ हैं।

प्राप्तबाध दोष - अर्थनिष्ठ है।

- **नामधेय मीमांसा**

नामधेयानां च विधेयार्थपरिच्छेदकतयार्थवत्त्वम्। तथा हि - उद्भिदा यजेत पशुकामः।

- नामधेय नाम अर्थात् संज्ञा को कहते हैं मीमांसादर्शन की पारिभाषिक शब्दावली में इसका अर्थ है-'किसी यज्ञ का नाम।'

नामधेय विधेय का अर्थ है - क्रियामात्र का बोध कराना।

- नामधेयों की सार्थकता इसी में है कि वे विधेय क्रिया को उसके सजातीय एवं विजातीय अर्थों की निवृत्तिपूर्वक निश्चित करें।

उदाहरण 'उद्भिदा यजेत पशुकामः' यह एक विधिवाक्य है जिसका अर्थ है - पशुकामव्यक्ति उद्भिद् से याग करें।

नामधेय के चार कारण-

- नामधेयत्वं च निमित्तचतुष्टयात् - मत्वर्थलक्षणाभयाद्, वाक्यभेदभयात्, तत्प्रख्यशास्त्रात्, तद्व्यपदेशाच्चेति।
- चार कारणों से नामधेयत्व होता है (1) मत्वर्थलक्षणा के भय से (2) वाक्यभेद के भय से (3) तत्प्रख्यशास्त्र से (4) तद्व्यपदेश से।
- पूर्व में वेद के पाँच विभागों में - विधि, मन्त्र, नामधेय, निषेध और अर्थवाद का उल्लेख किया गया है।

उन पाँच विभागों में से यहाँ चौथे विभाग निषेध को बताया जा रहा है -

(4) निषेध मीमांसा - पुरुषस्य निवर्तकं वाक्यं निषेधः।

पुरुष के निवर्त्तक वाक्य को निषेध कहते है, क्योंकि अनर्थ की कारणभूत क्रिया के निवृत्तिजनक होने के कारण ही निषेधवाक्य सप्रयोजन होते है।

- मीमांसादर्शन में निषेध वाक्य वे कहे जाते हैं जो पुरुष को किसी क्रिया को करने से विमुख करते हैं।

उदाहरण- न कलञ्जं भक्षयेत्। यह निषेधवाक्य है।

1. विधेः- प्रयोजनवदर्थविधानेनार्थवत्त्वम्
2. मन्त्रस्य- प्रयोगसमवेतार्थस्मारकत्वेनार्थवत्त्वम्
3. नामधेयस्य- विधेयार्थपरिच्छेदकतयार्थवत्त्वम्
4. निषेधस्य- अनर्थहेतुक्रियानिवृत्तिजनकत्वेनार्थवत्त्वम्
5. अर्थवादस्य- विधेयार्थस्तावकतयार्थवत्त्वम्

वेद के पाँच विभागों में से अर्थवाद का निरूपण किया जा रहा है-

- **(5) अर्थवाद मीमांसा** - प्राशस्त्यनिन्दान्यतरपरं वाक्यमर्थवादः

प्रशंसा अथवा निन्दापरक वाक्य को अर्थवाद कहते हैं।

- विधेय पदार्थ की प्रशंसा और निषेध्य पदार्थ की निन्दा करता हुआ अर्थवाद प्रवृत्ति-निवृत्ति में सहायक होता है।
- यह अभिधा द्वारा सम्पन्न न होकर लक्षणा द्वारा होता है।
  उदाहरण- **वायुर्वै क्षेपिष्ठा देवता -** इस अर्थवाद वाक्य का प्रयोजन वायु सबसे अधिक शीघ्रगामी देवता है यह वाच्यार्थ में नहीं है।
- अर्थवाद वाक्य भी वेद का एक भाग है। सम्पूर्ण वेद का तात्पर्य धर्म में निहित है। वे सभी यागादि क्रिया के प्रतिपादक हैं। अतः अर्थवाद का भी प्रयोजन यागादि परक ही होना चाहिये।
  अर्थवाद के दो भेद - (1) विधिशेष (2) निषेधशेष

अर्थवाद

विधिशेष	निषेधशेष
1. वायव्यं श्वेतमालभेतभूतिकामः।	वर्हिषि रजतं न देयम्।

2. वायुर्वै क्षेपिष्ठा देवता। (मन्त्र)सोऽरोदीद् यदरोदीत् तद् रुद्रस्य रुद्रत्वम् (मन्त्र)

अर्थवाद के पुनर्त्रिधा भेद

गुणवाद	अनुवाद	भूतार्थवाद
आदित्यो यूपः	अग्निर्हिमस्य भेषजम्	इन्द्रोवृत्राय वज्रमुदयच्छत्।
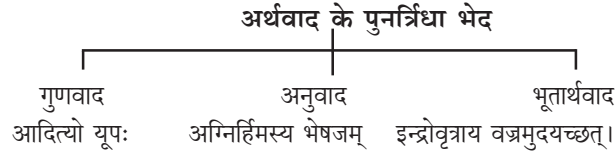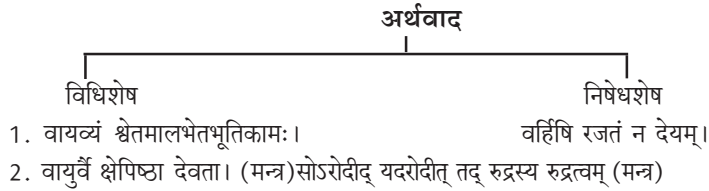
अर्थवाद का लक्षण

पुरुषस्य	प्रवर्तकं	वाक्यं	विधिः
पुरुषस्य	निवर्तकं	वाक्यं	निषेधः
प्राशस्त्यनिन्दा	न्यतरपरं	वाक्यं	अर्थवादः

अर्थवाद पुनः तीन प्रकार का बताया गया है-

विरोधे गुणवादः स्यादनुवादोऽवधारिते।
भूतार्थवादस्तद्धानादर्थवादस्त्रिधा मतः॥

(1) गुणवाद (2) अनुवाद (3) भूतार्थवाद

* विरोध होने पर **गुणवाद**
* ज्ञान होने पर **अनुवाद**
* उन दोनों (विरोध, और ज्ञान) का अभाव होने पर - **भूतार्थवाद**

(1) **गुणवाद-** प्रमाणान्तर से विरोध होने पर जो अर्थवाद होता है, उसे गुणवाद कहते है-

प्रमाणान्तरविरोधे सत्यर्थवादोगुणवादः। यथा - आदित्यो यूपः

(2) **अनुवाद-** अन्य प्रमाण द्वारा ज्ञात अर्थ का बोधक अर्थवाद अनुवाद होता है।
प्रमाणान्तरावगतार्थबोधकोऽर्थवादोऽनुवादः।

उदाहरण - **अग्निर्हिमस्य भेषजम्।**

(3) **भूतार्थवाद-** प्रमाणान्तर विरोध और प्रमाणान्तरप्राप्ति से अप्राप्त अर्थ का बोधक अर्थवाद भूतार्थवाद होता है।

- **प्रमाणान्तरविरोधतत्प्राप्तिरहितार्थबोधकोऽर्थवादो भूतार्थवादः।**

उदाहरण - इन्द्रो वृत्राय वज्रमुदयच्छत्।

❑❑

८. श्रीमद्भगवद्गीता

- महर्षिवेदव्यास द्वारा विरचित महाभारत के भीष्मपर्व में वर्णित श्रीमद्भगवद्गीता सर्वाधिक लोकप्रिय भारतीय सनातनधर्म का ग्रन्थरत्न है।
- विश्व में सर्वाधिक टीकाओं से युक्त होने का गौरव गीता को ही प्राप्त है।

गीता में वर्णित शंख

पाञ्चजन्यं हृषीकेशो देवदत्तं धनञ्जयः।
पौण्ड्रं दध्मौ महाशङ्खं भीमकर्मा वृकोदरः।। 1/15
अनन्तविजयं राजा कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः।
नकुलः सहदेवश्च सुघोषमणिपुष्पकौ।। 1/16

देवता		शंख
श्रीकृष्ण	-	पाञ्चजन्य
अर्जुन	-	देवदत्त
भीम	-	पौण्ड्र
युधिष्ठिर	-	अनन्तविजय
नकुल	-	सुघोष
सहदेव	-	मणिपुष्पक

गीता के श्लोक संख्या

अध्याय नाम	-	श्लोकसंख्या
1. अर्जुनविषादयोग	-	47
2. सांख्ययोग	-	72
3. कर्मयोग	-	43
4. ज्ञानकर्मसंन्यासयोग	-	42
5. कर्मसंन्यासयोग	-	29
6. आत्मसंयमयोग	-	47
7. ज्ञानविज्ञानयोग	-	30
8. अक्षरब्रह्मयोग	-	28
9. राजविद्याराजगुह्ययोग	-	34

10. विभूतियोग	-	42
11. विश्वरूपदर्शनयोग	-	55
12. भक्तियोग	-	20
13. क्षेत्रक्षेत्रज्ञविभागयोग	-	34
14. गुणत्रय विभागयोग	-	27
15. पुरुषोत्तमयोग	-	20
16. देवासुरसम्पत्विभागयोग	-	24
17. श्रद्धात्रयविभागयोग	-	28
18. मोक्षसंन्यासयोग	-	78
कुल श्लोक	**-**	**700**

- सबसे बड़ा अध्याय - 18, मोक्षसंन्यासयोग (78 श्लोक)
- सबसे छोटा अध्याय - 12वाँ और 15 वाँ (20-20 श्लोक)

श्रीमद्भगवद्गीता के कुछ प्रमुख पात्रों का परिचय -

धृतराष्ट्र	-	दुर्योधन आदि कौरवों के पिता
संजय-		दिव्यदृष्टि प्राप्त धृतराष्ट्र के मन्त्री
धृष्टद्युम्न	-	पाण्डवों के सेनापति, द्रौपदी के भाई, द्रुपद के पुत्र
भीम	-	पाण्डवों में द्वितीय पाण्डव, कुन्तीपुत्र
अर्जुन	-	श्रीकृष्ण के सखा, पाण्डवों में तृतीय पाण्डव, कुन्तीपुत्र
युधिष्ठिर	-	पाण्डवों में प्रथम पाण्डव, कुन्तीपुत्र, धर्मराज के अवतार
नकुल	-	पाण्डवों में चतुर्थ पाण्डव,माद्री के पुत्र
सहदेव	-	पाण्डवों में अन्तिम पाण्डव, माद्री के पुत्र
द्रुपद	-	द्रौपदी के पिता,
धृष्टकेतु	-	पाण्डव पक्ष के वीर योद्धा
चेकितान	-	पाण्डव पक्ष के वीर योद्धा
काशिराज	-	पाण्डव पक्ष के वीर योद्धा
पुरुजित्	-	पाण्डव पक्ष के वीर योद्धा
कुन्तिभोज	-	पाण्डव पक्ष के प्रमुख योद्धा
अभिमन्यु	-	अर्जुन और सुभद्रा के पुत्र
पितामह भीष्म	-	कौरव पक्ष के प्रथम सेनापति, 10 दिन तक सेनापति रहे।
द्रोणाचार्य	-	कौरवों और पाण्डवों के गुरु, कौरवों के द्वितीय सेनापति,05 दिन तक सेनापति।
कर्ण	-	कौरवों के तीसरे सेनापति, 2 दिन तक सेनापति रहे।
कृपाचार्य	-	कौरवों के प्रमुख योद्धा, सप्त चिरजीवियों में एक
अश्वत्थामा	-	द्रोणाचार्य के पुत्र, कौरव पक्ष के प्रमुख योद्धा
विकर्ण	-	कौरवों पक्ष का प्रमुख योद्धा (दुर्योधन का भाई)

भूरिश्रवा	-	कौरव पक्ष का प्रमुख योद्धा
श्रीकृष्ण	-	भगवान् विष्णु के अवतार, अर्जुन को गीता का उपदेश देने वाले
राजा विराट	-	पाण्डव पक्ष के प्रमुख योद्धा, अज्ञातवाश में पाण्डव यहीं रहे थे।
दुर्योधन	-	धृतराष्ट्र के पुत्र, 100 पुत्रों में सबसे बड़ा

गीता में वर्णित चतुर्विध भक्त

अर्थार्थी | **आर्त** | **जिज्ञासु** | **ज्ञानी**

- चतुर्विधा भजन्ते मां जनाः सुकृतिनोऽर्जुन।
  आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञानी च भरतर्षभ।। 7-16
  तेषां ज्ञानी नित्ययुक्त एकभक्तिर्विशिष्यते।
  प्रियो हि ज्ञानिनोऽत्यर्थमहं स च मम प्रियः।। 7-17
  हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ अर्जुन! उत्तम कर्म करने वाले अर्थार्थी, आर्त, जिज्ञासु, और ज्ञानी - ऐसे चार प्रकार के भक्तजन मुझको भजते हैं।
  उनमें नित्य मुझमें एकीभाव से स्थित अनन्य प्रेमभक्ति ज्ञानी भक्त अति उत्तम हैं, क्योंकि मुझको तत्त्व से जानने वाले ज्ञानी को मैं अत्यन्त प्रिय हूँ और वह ज्ञानी मुझे अत्यन्त प्रिय है
- गीता में श्रीकृष्ण अपने अवतार का कारण बताते हैं-
  * यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
    अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।। 4-7
  * परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
    धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे।। 4-8

  हे भारत! जब जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है, तब तब ही मैं अपने रूप को रचता हूँ अर्थात् साकार रूप से लोगों के सम्मुख प्रकट होता हूँ।
  साधु पुरुषों का उद्धार करने के लिए पापकर्म करने वाले का विनाश करने के लिए और धर्म की अच्छी तरह स्थापना करने के लिए मैं युग युग में प्रकट हुआ करता हूँ।

भगवान् के अवतार के हेतु

- धर्म की स्थापना के लिए
- साधुपुरुषों की रक्षा के लिए
- पापकर्म करने वालों को मारने के लिए
- धर्म की वृद्धि के लिए
- अधर्म की हानि के लिए

गीता में अर्जुन के लिए सम्बोधन

अर्जुन, गुडाकेश, पार्थ, परन्तप, भारत, कुन्तीपुत्र, पृथापुत्र, धनञ्जय, महाबाहो निष्पाप, कुरुश्रेष्ठ, सव्यसाचिन्, किरीटी, पाण्डव, कुरुनन्दन आदि।

गीता में श्रीकष्ण के लिए सम्बोधन

हृषीकेश, कृष्ण, मधुसूदन, जनार्दन, माधव, श्रीभगवान्, अरिसूदन, गोविन्द, केशव, जगत्स्वामी, पुरुषोत्तम, अनन्त, देवेश, जगन्निवास, सच्चिदानन्दघन, आदिदेव, सनातनपुरुष, विश्वरूप, सहस्रबाहो, कमलनेत्र, परमेश्वर, महायोगेश्वर, देवदेव, अच्युत, केशिनिषूदन, योगेश्वर।

गीता में वर्णित आत्मा की विषेशतायें

- गीता के अनुसार आत्मा अच्छेद्य, अदाह्य अक्लेद्य, अशोष्य, नित्य, सर्वव्यापी, अचल, स्थिर, सनातन, अव्यक्त, अचिन्त्य, विकाररहित, अबध्य है।

अव्यक्तोऽयमचिन्त्योऽयमविकार्योऽयमुच्यते
तस्मादेवं विदित्वैनं नानुशोचितुमर्हसि। 2/25
अच्छेद्योऽयमदाह्योऽयमक्लेद्योऽशोष्य एव च
नित्यः सर्वगतः स्थाणुरचलोऽयं सनातनः॥ 2/24
तस्मात्सर्वाणि भूतानि न त्वं शोचितुमर्हसि।
देही नित्यमवध्योऽयं देहे सर्वस्य भारत॥ 2/30

गीता में वर्णित प्रमुख योग-कर्मयोग, ज्ञानयोग, भक्तियोग

कर्मयोग- हे अर्जुन ! तेरा कर्म करने का अधिकार है, उसके फलों में कभी नहीं। इसलिए तू कर्मों के फल का हेतु मत हो तथा तेरी कर्म न करने में भी आसक्ति न हो।

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा तेसङ्गोऽस्त्वकर्मणि॥ (2/47)

- योग मार्ग में स्थित होकर कर्मों को करना चाहिए। **योगस्थः कुरु कर्माणि....।**
- गीता में समत्व को योग कहा गया है। **'समत्वं योग उच्यते'** (2/48)
- समत्वरूप योग ही कर्मों में कुशलता है अर्थात् कर्मबन्धन से छूटने का उपाय है।
  योगः कर्मसु कौशलम् (2/50)
- गीता के अनुसार योगियों की निष्ठा कर्मयोग से होती है। **कर्मयोगेन योगिनाम्** (3/3)
- 'जो मनुष्य इन्द्रियों को वश में करके अनासक्त हुआ समस्त इन्द्रियों द्वारा कर्मयोग का आचरण करता है, वही श्रेष्ठ है।' **कर्मेन्द्रियैः कर्मयोगमसक्तः स विशिष्यते** (3/7)
- गीता में श्रीकृष्ण यह बताते हैं कि कर्म न करने की अपेक्षा कर्म करना अत्यन्त श्रेष्ठ है। **नियतं कुरु कर्म त्वं कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः** (3/8)

भक्तियोग-

- ईश्वर के प्रति अनन्यभाव से समर्पित होना ही भक्तियोग है।
- जो भक्तजन परमेश्वर का निरन्तर चिन्तन करते हैं उनका योगक्षेम स्वयं भगवान् अपने

ऊपर ले लेते हैं।

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्॥ (9/22)

- भक्तिपूर्वक जो कुछ भी सामग्री भगवान् को अर्पण की जाती है वह भगवान् उसी रूप में स्वीकार करते हैं।

पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति (9/26)

- गीता में श्रीकृष्ण यह कहते हैं कि जो मनुष्य मेरे लिए कर्म करता है, मेरा परायण है, मेरा भक्त है, आसक्तिरहित वह अनन्यभक्ति से युक्त पुरुष मुझको ही प्राप्त होता है।

मत्कर्मकृन्मत्परमो मद्भक्तः सङ्गवर्जितः।
निर्वैरः सर्वभूतेषु यः स मामेति पाण्डव॥ (11/55)

- गीता में श्रीकृष्ण यह बताते हैं कि जो सम्पूर्ण कर्तव्यकर्मों को मुझमें त्यागकर एक मुझ सर्वशक्तिमान् परमेश्वर की शरण में आ जाता है उसे मैं सम्पूर्ण पापों से मुक्त कर देता हूँ।

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः॥ (18/66)

स्थिरबुद्धि पुरुष के लक्षण

- दुःख में उद्विग्न न होना।
- सुख में अत्यधिक हर्षित न होना।
- राग, भय, क्रोध से मुक्त।

गीता के अनुसार अष्ट प्रकृति

पृथ्वी जल अग्नि वायु आकाश मन बुद्धि अहंकार

स्थिरप्रज्ञ का वर्णन श्रीमद्भगवद्गीता में -

गीता में श्रीकृष्ण यह बताते हैं कि जिस समय मनुष्य अपने मन में सभी कामनाओं को मिटाकर आत्मा में सन्तुष्ट रहता है, उस काल में वह स्थितप्रज्ञ कहा जाता है।

प्रजहाति यदा कामान्सर्वान्पार्थ मनोगतान्।
आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते॥ (2/55)

- दुःख होने पर जो उद्वेग नहीं करता और अत्यधिक सुख में सर्वथा निःस्पृह है तथा जिसके मन से राग, भय, और क्रोध नष्ट हो गये हैं, ऐसा मुनि स्थिरबुद्धि कहा जाता है। **वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते (2/56)**
- गीता में अष्ट प्रकृति का वर्णन - पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, मन, बुद्धि और अहंकार ये अष्ट प्रकार से विभाजित प्रकृति है।

भूमिरापोऽनलो वायुः खं मनो बुद्धिरेव च।
अहङ्कार इतीयं मे भिन्ना प्रकृतिरष्टधा॥ (7/4)

- श्रीमद्भगवद्गीता को **गीतोपनिषद्** भी कहा जाता है।

गीता में भगवान् श्रीकृष्ण की विभूतियाँ -

जल में	- रस ''रसोऽहमप्सु कौन्तेय'' (7.8)
चन्द्र सूर्य में	- प्रकाश ''प्रभास्मि शशिसूर्ययोः'' (7.8)
वेदों मे	- ओंकार ''प्रणवः सर्ववेदेषु'' (7.8)
आकाश में	- शब्द ''शब्दः खे'' (7.8)
पुरुषों में	- पुरुषत्व '' पौरुषं नृषु'' (7.8)
पृथ्वी में	- गन्ध ''पुण्यो गन्धः पृथिव्यां च'' (7.8)
अग्नि में	- तेज ''तेजश्चास्मि विभावसौ'' (7.8)
तपस्वियों में	- तप ''तपश्चास्मि तपस्विषु'' (7.9)
सम्पूर्णभूतों में	- जीवन ''जीवनं सर्वभूतेषु'' (7.9)
बुद्धिमानों में	- बुद्धि ''बुद्धिर्बुद्धिमतामस्मि'' (7.10)
तेजस्वियों में	- तेज ''तेजस्तेजस्विनामहम् '' (7.10)
अदितिपुत्रों में	- विष्णु ''आदित्यानामहं विष्णुः '' (10.21)
ज्योतियों में	- किरणों वाला सूर्य ''ज्योतिषां रविरंशुमान् '' (10.21)
नक्षत्रों में अधिपति	- चन्द्रमा ''नक्षत्राणामहं शशी'' (10.21)
वेदों में	- सामवेद ''वेदानां सामवेदोऽस्मि'' (10.22)
देवों में	- इन्द्र ''देवानामस्मि वासवः '' (10.22)
इन्द्रियों में	- मन '' इन्द्रियाणां मनश्चास्मि'' (10.22)
एकादश रुद्रों में	- शंकर '' रुद्राणां शङ्करश्चास्मि'' (10.23)
यक्ष तथा राक्षसों में	- कुबेर ''वित्तेशो यक्षरक्षसाम् '' (10.23)
आठ वस्तुओं में	- अग्नि ''वसूनां पावकश्चास्मि '' (10.23)
पर्वतों में	- सुमेरु ''मेरुः शिखरिणामहम् '' (10.23)
पुरोहितों में	- बृहस्पति ''पुरोधसां च मुख्यं मां विद्धि पार्थ बृहस्पतिम् '' (10.24)
सेनापतियों में	- स्कन्द ''सेनानीनामहं स्कन्दः'' (10.24)
जलाशय में	- समुद्र '' सरसामस्मि सागरः'' (10.24)
महर्षियों में	- भृगु '' महर्षीणां भृगुरहम्'' (10.25)
शब्दों में	- (अक्षर) ओंकार ''गिरामस्म्येकमक्षरम्'' (10.25)
यज्ञों में	- जपयज्ञ ''यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि'' (10.25)
स्थिर रहने वालों में	- पहाड़ ''स्थावराणां हिमालयः '' (10.25)
वृक्षों में	- पीपल ''अश्वत्थः सर्ववृक्षाणाम् '' (10.26)
देवर्षियों में	- नारद '' देवर्षीणां च नारदः '' (10.26)
सिद्धों में	- कपिल '' सिद्धानां कपिलो मुनिः '' (10.26)

गन्धर्वों में	-	चित्ररथ “ गन्धर्वाणां चित्ररथः ” (10.26)
अश्वों में	-	उच्चैःश्रवा “उच्चैःश्रवसमश्वानां विद्धि माममृतोद्भवम्” (10.27)
हाथियों में	-	ऐरावत “ ऐरावतं गजेन्द्राणाम्”
मनुष्यों में	-	राजा “ नराणां च नराधिपम् ” (10.27)
शस्त्रों में	-	वज्र “ आयुधानामहं वज्रम्” (10.28)
गौओं में	-	कामधेनु “ धेनुनामस्मि कामधुक् ” (10.28)
सर्पों में	-	वासुकि “ सर्पाणामस्मि वासुकिः ” (10.28)
सन्तानोत्पत्ति में	-	कामदेव “ प्रजनश्चास्मि कन्दर्पः ” (10.28)
नागों में	-	शेषनाग “अनन्तश्चास्मि नागानाम् ” (10.29)
जलचरों में	-	वरुण “ वरुणो यादसामहम् ” (10.29)
पितरों में	-	अर्यमा “ पितृणामर्यमा चास्मि ” (10.29)
शासन करने वालों में	-	यमराज “ यमः संयमतामहम् ” (10.29)
दैत्यों में	-	प्रह्लाद “ प्रह्लादश्चास्मि दैत्यानाम् (10.30)
पशुओं में	-	सिंह “मृगाणां च मृगेन्द्रोऽहम् ” (10.30)
पक्षियों में	-	गरुड़ “ वैनतेयश्च पक्षिणाम् ” (10.30)
गणना करने वालों में	-	समय “ कालः कलयतामहम् ” (10.30)
पवित्र करने वालों में	-	वायु “ पवनः पवतामस्मि ” (10.31)
शस्त्रधारियों में	-	श्रीराम “ रामः शस्त्रभृतामहम् ” (10.31)
मछलियों में	-	मगर “ झषाणां मकरश्चास्मि ” (10.31)
नदियों में	-	भागीरथी गंगा “ स्रोतसामस्मि जाह्नवी ” (10.31)
विद्याओं में	-	अध्यात्मविद्या “ अध्यात्मविद्या विद्यानाम्” (10.32)
तर्क में	-	वाद “ वादः प्रवदतामहम् ” (10.32)
अक्षरों में	-	अकार “ अक्षराणामकारोऽस्मि ” (10.33)
समासों में	-	द्वन्द्व “ द्वन्द्वः सामासिकस्य च ” (10.33)
नाश करने वालों में	-	मृत्यु “ मृत्युः सर्वहरश्चाहम् ” (10.34)
स्त्रियों में	-	“कीर्ति, श्री, वाक्,स्मृति, धृति, क्षमा, कीर्तिः श्रीर्वाक्चनारीणां स्मृतिर्मेधा धृतिः क्षमा ” (10.34)
श्रुतियों में	-	बृहत्साम “ बृहत्साम तथा साम्नां ” (10.35)
छन्दों में	-	गायत्री “ गायत्री छन्दसामहम् ” (10.35)
महीनों में	-	मार्गशीर्ष “ मासानां मार्गशीर्षोऽहम् (10.35)
ऋतुओं में	-	वसन्त “ ऋतूनां कुसुमाकरः ” (10.35)
छल करने वालों में	-	जूआ “ द्यूतं छलयतामस्मि” (10.36)
प्रभावशाली पुरुषों का	-	प्रभाव “ तेजस्तेजस्विनामहम् ” (10.36)
जीतने वालों का	-	विजय “ जयोऽस्मि ” (10.36)

निश्चय करने वालों का	-	निश्चय ''व्यवसायोऽस्मि'' (10.36)
सात्त्विक पुरुषों का	-	सात्त्विक भाव ''सत्त्वं सत्त्ववतामहम्'' (10.36)
वृष्णिवंशियों में	-	वासुदेव ''वृष्णीनां वासुदेवोऽस्मि'' (10.37)
पाण्डवों में	-	धनञ्जय ''पाण्डवानां धनञ्जयः'' (10.37)
मुनियों में	-	वेदव्यास ''मुनीनामप्यहं व्यासः'' (10.37)
कवियों में	-	शुक्राचार्य ''कवीनामुशना कविः'' (10.37)
दमन करने वालों का	-	दण्ड ''दण्डो दमयतामस्मि'' (10.38)
जीतने की इच्छा वालों की	-	नीति ''नीतिरस्मि जिगीषताम्'' (10.38)
गुप्त रखने योग्य भावों का (रक्षक)	-	मौन ''मौनं चैवास्मि गुह्यानां'' (10.38)
ज्ञानवानों का	-	तत्त्वज्ञान ''ज्ञानं ज्ञानवतामहम्'' (10.38)

गीता में वर्णित दैवीय गुण -

- गीता में श्रीकृष्ण यह बताते हैं कि दैवीय प्रकृति के आश्रित महात्मा मुझको सब भूतों का कारण जानकर अनन्य मन से निरन्तर भजते हैं।

महात्मानस्तु मां पार्थ दैवीं प्रकृतिमाश्रिताः।
भजन्त्यनन्यमनसो ज्ञात्वा भूतादिमव्ययम्।। (9/13)

- गीता में श्रीकृष्ण दैवी सम्पत्तियों का स्वरूप वर्णन करते हुए कहते हैं कि भय का सर्वथा अभाव, अन्तःकरण की शुद्धता, तत्त्वज्ञान के लिए ध्यान में स्थिति सर्वस्व समर्पण, इन्द्रियों का भली प्रकार दमन ये सब दैवी गुण हैं

अभयं सत्त्वसंशुद्धिर्ज्ञानयोगव्यवस्थितिः।
दानं दमश्च यज्ञश्च स्वाध्यायस्तप आर्जवम्।। (16/1)

- मन, वाणी, शरीर से किसी को कष्ट न देना यथार्थ और प्रियभाषण, अहंकार करने वाले पर भी क्रोध न करना, किसी की भी निन्दा न करना, सभी प्राणियों में दया- ये सब दैवी सम्पत्तियाँ हैं।

अहिंसा सत्यमक्रोधस्त्यागः शान्तिरपैशुनम्।
दया भूतेष्वलोलुप्त्वं मार्दवं ह्रीरचापलम्।। (16/2)

गीता में वर्णित दैवी गुण

● अभय ● सत्त्वसंशुद्धि ● ज्ञानयोगव्यवस्थिति ● दान ● इन्द्रियों का दमन
● गुरुजनों की पूजा ● अग्निहोत्र करना ● स्वाध्याय करना ● अहिंसा
● सत्यभाषण ● क्रोध न करना ● अन्तः करण की शुद्धि ● निन्दा से दूर रहना
● बिना कारण दया करना ● तेज ● क्षमा ● धैर्य ● बाहर की शुद्धि

(गीता - 16/1-3)

गीता में वर्णित आसुरी सम्पदा

● दम्भ ● दर्प ● अभिमान ● क्रोध ● कठोरता ● अज्ञान

● असत्यभाषण ● अपवित्रता ● भ्रमित चित्त वाला ● विषय भोगों में अत्यन्त आसक्त

(गीता - 16 - 4,7,10,15,16)

➢ श्रीकृष्ण बताते है कि दम्भ, घमण्ड, अभिमान, क्रोध, कठोरता, अज्ञान ये आसुरी सम्पदा को लेकर उत्पन्न हुए पुरुष के लक्षण हैं।

दम्भो दर्पोऽभिमानश्च क्रोधः पारुष्यमेव च।
अज्ञानं चाभिजातस्य पार्थ सम्पदमासुरीम्।। (16/4)

➢ आसुर स्वभाव वाले मनुष्य प्रवृत्ति और निवृत्ति दोनों को नहीं जानते। इसलिए उनमें न तो बाहर भीतर की शुद्धि है, न श्रेष्ठ आचरण है और न सत्यभाषण ही है।

प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च जना न विदुरासुराः।
न शौचं नापि चाचारो न सत्यं तेषु विद्यते।। (16/7)

गीता में अर्जुन द्वारा पूछे गये कुछ प्रमुख प्रश्न -

➢ गीता के प्रारम्भ मे अर्जुन भगवान् श्रीकृष्ण से पूछते हैं कि हे मधुसूदन! मैं किस प्रकार भीष्मपितामह और द्रोणाचार्य के विरुद्ध लड़ूँगा? क्योंकि वे दोनों पूजनीय हैं?

कथं भीष्ममहं सङ्ख्ये द्रोणं च मधुसूदन।
इषुभिः प्रति योत्स्यामि पूजार्हावरिसूदन।। (2/4)

➢ अर्जुन श्रीकृष्ण से कहते हैं जिस प्रकार एक गुरु अपने शिष्य का सभी प्रकार से कल्याण करता है उसी प्रकार मैं आपका शिष्य हूँ अतः मेरे लिए जो कल्याण का साधन हो वह कहिये।

यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे।
शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम्।। (2/7)

➢ श्रीकृष्ण से पूछते हुए अर्जुन कहते हैं कि यदि कर्म की अपेक्षा ज्ञान श्रेष्ठ है तो आप मुझे कर्म में क्यों लगाते हो?

ज्यायसी चेत्कर्मणस्ते मता बुद्धिर्जनार्दन।
तत्किं कर्मणि घोरे मां नियोजयसि केशव।। (5/1)

➢ अर्जुन श्रीकृष्ण से ब्रह्म, अध्यात्म, क्रम के विषय में प्रश्न पूछते हुये कहते हैं कि ब्रह्म क्या है? अध्यात्म क्या है? कर्म क्या है?

किं तद्ब्रह्म किमध्यात्मं किं कर्म पुरुषोत्तम।
अधिभूतं च किं प्रोक्तमधिदैवं किमुच्यते (8/1)

➢ अर्जुन अगुण परमेश्वर और निराकार ब्रह्म दोनों प्रकार के उपासकों के विषय में प्रश्न करते हुए पूछते हैं कि दोनों में अति उत्तम योगवेत्ता कौन हैं?

एवं सततयुक्ता ये भक्तास्त्वां पर्युपासते।
ये चाप्यक्षरमव्यक्तं तेषां के योगवित्तमाः।। (12/1)

- अर्जुन श्रीकृष्ण से प्रश्न करते हुए पूछते हैं कि जो मनुष्य शास्त्रविधि को त्यागकर देवताओं का पूजन करते हैं, उनकी कौन सी गति होती है? सात्विकी अथवा राजसी अथवा तामसी?

ये शास्त्रविधिमुत्सृज्य यजन्ते श्रद्धयान्विताः।
तेषां निष्ठा तु का कृष्ण सत्त्वमाहो रजस्तमः।। (17/1)

गीता के अनुसार ईश्वर का निवास -

- श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि सभी प्राणियों के हृदय में जो रहता है वही ईश्वर है-

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति (18/61)

गीता के अनुसार ज्ञान और अज्ञान का स्वरूप-

- अध्यात्म ज्ञान में नित्यस्थिति और तत्वज्ञान के अर्थरूप परमात्मा को ही देखता यह सब ज्ञान है और जो इससे विपरीत है वह अज्ञान है।

अध्यात्मज्ञाननित्यत्वं तत्त्वज्ञानार्थदर्शनम्।
एतज्ज्ञानमिति प्रोक्तमज्ञानं यदतोऽन्यथा।। (13/11)

श्रीमद्भगवद्गीता का माहात्म्य

- **गीताशास्त्रमिदं पुण्यं यः पठेत्प्रयतः पुमान्।**
  विष्णोः पदमवाप्नोति भयशोकादिवर्जितः।।
- **गीताध्ययनशीलस्य प्राणायामपरस्य च।**
  नैव सन्ति हि पापानि पूर्वजन्मकृतानि च।।
- **मलनिर्मोचनं पुंसां जलस्नानं दिने दिने।**
  सकृद् गीताम्भसि स्नानं संसारमलनाशनम्।।
- **भारतामृतसर्वस्वं विष्णोर्वक्त्राद्विनिःसृतम्।**
  गीतागङ्गोदकं पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते।।
- **एकं शास्त्रं देवकीपुत्रगीतमेको देवो देवकीपुत्र एव।**
  एको मन्त्रस्तस्य नामानि यानि कर्माण्येकं तस्य देवस्य सेवा।।

गीता में चार वर्णों का वर्णन

- गीता में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन चार वर्णों का वर्णन स्पष्ट रूप से मिलता है।

चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः।
तस्य कर्तारमपि मां विद्ध्यकर्तारमव्ययम्।। (4/13)

1.ब्राह्मण 2.क्षत्रिय 3.वैश्य 4.शूद्र

ब्राह्मणक्षत्रियविंशा शूद्राणां च परन्तप।
कर्माणि प्रविभक्तानि स्वभावप्रभवैर्गुणैः।। (18/41)

गीता में वर्णित भगवान् श्रीकृष्ण की शक्तियाँ

- गीता में भगवान् की पाँच शक्तियों का वर्णन हुआ है-

आद्या गुणमयी दैवी तथान्या दिव्यचिन्मयी।
योगमायेति च प्रोक्ता गीतायां पञ्च शक्तयः॥

- **पञ्च शक्तियाँ**

  मूल प्रकृति - (9/7)
  दिव्य चिन्मयशक्ति - (4/6)
  योगमाया शक्ति - (7/25)
  दैवी शक्ति - (9/13)
  गुणमयी माया - (3/27,29)

गीता में विश्वरूप-दर्शन-

- गीता के एकादश अध्याय में अर्जुन के प्रार्थना पर भगवान् श्रीकृष्ण अपना विराट् स्वरूप अर्जुन को दिखलाते हैं।

  मया प्रसन्नेन तवार्जुनेदं रूपं परं दर्शितमात्मयोगात्।
  तेजोमयं विश्वमनन्तमाद्यं यन्मे त्वदन्येन न दृष्टपूर्वम्। (11/47)

गीता में कहे गये श्लोकों की संख्या-

श्रीकृष्ण भगवान् के द्वारा कहे गये श्लोक	-	574
अर्जुन के द्वारा कहे गये श्लोक	-	84
संजय के द्वारा कहे गये श्लोक	-	41
धृतराष्ट्र के द्वारा कहे गये श्लोक	-	1
योग	**-**	**700**

- **गीता में प्रयुक्त मुख्य छन्द-** गीता में चार छन्दों का प्रयोग मुख्य रूप से किया गया है।

  1. अनुष्टुप् 2. बृहती 3. त्रिष्टुप् 4. जगती

- **गीता में अनुबन्ध चतुष्टय-**

  1. **विषय-** गीता में कर्मयोग, ज्ञानयोग, ध्यानयोग, भक्तियोग आदि विषय हैं।
  2. **प्रयोजन-** जीव मात्र का कल्याण करना ही इस ग्रन्थ का प्रमुख प्रयोजन है।
  3. **अधिकारी-** अपना कल्याण चाहने वाले मनुष्य गीता को पढ़ने के अधिकारी हैं। किसी भी देश में रहने वाला, किसी वेश को धारण करने वाला, किसी सम्प्रदाय को मानने वाला, किसी वर्ण आश्रम में रहने वाला, किसी भी अवस्था वाला इस दिव्य वेद सार स्वरूप गीता को पढ़ने का और मुक्ति पाने का अधिकारी है।
  4. **सम्बन्ध-** गीता के विषय और गीता में परस्पर प्रतिपाद्य-प्रतिपादक का सम्बन्ध है। जीव का कल्याण किस प्रकार हो - यह प्रतिपाद्य विषय है और कल्याण की युक्तियाँ बताने वाली होने से गीता स्वयं प्रतिपादक है।

श्रीमद्भगवद्गीता की प्रमुख सूक्तियाँ

1. **क्लैब्यं मा स्म गमः (2/3)**
   भावार्थ- नपुंसकता को मत प्राप्त हो।
2. **शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम्। (2/7)**
   मैं आपका शिष्य हूँ इसलिए आपके शरण आये हुए मुझको शिक्षा दीजिए।
3. **गतासूनगतासूंश्च नानुशोचन्ति पण्डिताः। (2/11)**
   भावार्थ- जिनके प्राण चले गये हैं, उनके लिए और जिनके प्राण नहीं गये हैं उनके लिए पण्डित जन शोक नहीं करते।
4. **आगमापायिनोऽनित्यास्तांस्तितिक्षस्व भारत। (2/14)**
   भावार्थ- उत्पत्ति और विनाश दोनों अनित्य हैं इसलिए हे भारत! उनको सहन कर।
5. **समदुःखसुखं धीरं सोऽमृतत्वाय कल्पते (2/15)**
   भावार्थ- सुख दुःख को समान समझने वाला धीर मोक्ष के योग्य होता है।
6. **नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः। (2/16)**
   भावार्थ- असत् वस्तु की सत्ता नहीं है और सत् का अभाव नहीं है।
7. **अन्तवन्त इमे देहा। (2/18)**
   भावार्थ- ये सब शरीर नाशवान् है।
8. **नायं हन्ति न हन्यते। (2/19)**
   भावार्थ- यह आत्मा वास्तव में न तो किसी को मारता है और न किसी के द्वारा मारा जाता है।
9. **न हन्यते हन्यमाने शरीरे (2/20)**
   भावार्थ-शरीर के माने जाने पर भी (यह आत्मा) नहीं मारा जाता।
10. **वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।**
    तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही। (2/22)
    भावार्थ- जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्यागकर दूसने नये वस्त्रों को ग्रहण करता है, वैसे ही जीवात्मा पुराने शरीरों को त्यागकर दूसरे नये शरीरों को प्राप्त होता है।
11. **नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।**
    न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः॥ (2/23)
    भावार्थ- इस आत्मा को शस्त्र नहीं काट सकते, इसको आग नहीं जला सकती, इसको जल नहीं गला सकता और वायु नहीं सुखा सकता।
12. **नित्यः सर्वगतः स्थाणुरचलोऽयं सनातनः।(2/24)**
    भावार्थ- यह आत्मा नित्य सर्वव्यापी, अचल स्थिर रहने वाला और सनातन है।

13. जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः। (2/27)

(क्योंकि) जन्मे हुए की मृत्यु निश्चित है।

14. सुखदुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ।
ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि॥ (2/38)

जय-पराजय, लाभ हानि और सुख-दुःख को समान समझकर उसके बाद युद्ध के लिए तैयार हो जा, इस प्रकार युद्ध करने से तू पाप को नहीं प्राप्त होगा।

15. स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात्। (2/40)

भावार्थ- इस कर्मयोग रूप धर्म का थोड़ा-सा भी साधन जन्म मृत्यु रूप महान् भय से रक्षा कर लेता है।

16. कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन। (2/47)

भावार्थ- तेरा कर्म करने में ही अधिकार है (उसके) फलों में कभी नहीं।

17. समत्त्वं योग उच्यते। (2/48)

भावार्थ- समत्व ही योग कहलाता है।

18. बुद्धिनाशात् प्रणश्यति। (2/63)

भावार्थ- बुद्धि का नाश हो जाने से पुरुष अपनी स्थिति से गिर जाता है।

19. प्रसादे सर्वदुःखानां हानिरस्योपजायते। (2/65)

भावार्थ- अन्तःकरण की प्रसन्नता होने पर इसके सम्पूर्ण दुःखों का अभाव हो जाता है।

20. अशान्तस्य कुतः सुखम् (2/66)

भावार्थ- शान्तिरहित मनुष्य को सुख कैसे मिल सकता है?

21. या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी। (2/69)

भावार्थ- सम्पूर्ण प्राणियों के लिए जो रात्रि के समान है, उस नित्य ज्ञानस्वरूप परमानन्द की प्राप्ति में स्थितप्रज्ञ योगी जागता है।

22. स शान्तिमाप्नोति न कामकामी। (2/70)

भावार्थ- वही पुरुष परम शान्ति को प्राप्त होता है, भोगों को चाहने वाला नहीं।

23. निर्ममो निरहङ्कारः स शान्तिमधिगच्छति। (2/71)

भावार्थ- ममतारहित, अहंकाररहित जो है वही शान्ति को प्राप्त होता है।

24. तदेकं वद निश्चित्य येन श्रेयोऽहमाप्नुयाम्। (3/2)

भावार्थ- उस एक बात को निश्चित करके कहिये, जिससे मैं कल्याण को प्राप्त हो जाऊँ।

25. न हि कश्चित् क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत्। (3/5)

भावार्थ- निःसन्देह कोई भी (मनुष्य) किसी भी काल में क्षणमात्र भी बिना कर्म किए नहीं रहता।

26. यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबन्धनः। (3/9)

भावार्थ- यज्ञ के निमित्त किये जाने वाले कर्मों से अतिरिक्त दूसरे कर्मों में (लगा हुआ ही) यह मनुष्य समुदाय कर्मों से बँधता है।

27. परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ। (3/11)

भावार्थ- एक दूसरे को उन्नत करते हुए (तुम लोग) परम कल्याण को प्राप्त हो जाओगे।

28. भुञ्जते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात्। (3/13)

भावार्थ- जो पापी लोग अपना शरीर पोषण करने के लिए ही अन्न पकाते हैं, वे तो पाप को ही खाते हैं।

29. अन्नाद्भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसम्भवः।
यज्ञाद्भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्मसमुद्भवः॥ (3/14)

भावार्थ- सम्पूर्ण प्राणी अन्न से उत्पन्न होते हैं, अन्न की उत्पत्ति वृष्टि से होती है, वृष्टि यज्ञ से होती है और यज्ञ, विहित कर्मों से उत्पन्न होने वाला है।

30. एवं प्रवर्तितं चक्रं नानुवर्तयतीह यः।
अघायुरिन्द्रियारामो मोघं पार्थ स जीवति। (3/16)

भावार्थ- हे पार्थ! जो पुरुष इस लोक में इस प्रकार परम्परा से प्रचलित सृष्टि चक्र के अनुकूल नहीं बरतता अर्थात् अपने कर्तव्य का पालन नहीं करता, वह इन्द्रियों के द्वारा भोगों में रमण करने वाला पापायु व्यर्थ ही जीता है।

31. नैव तस्य कृतेनार्थे नाकृतेनेह कश्चन। (3/18)

भावार्थ- उस महापुरुष का इस विश्व में न तो कर्म करने से कोई प्रयोजन रहता है और न कर्मों के न करने से।

32. तस्मादसक्तः सततं कार्यं कर्म समाचर। (3/19)

भावार्थ- इसलिए तू निरन्तर आसक्ति से रहित होकर सदा कर्तव्य कर्म को भलीभाँति करता रह।

33. यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते॥ (3/21)

भावार्थ- श्रेष्ठ पुरुष जो-जो आचरण करता है, अन्य पुरुष भी वैसा-वैसा ही आचरण करते हैं, वह जो कुछ प्रमाणित कर देता है समस्त मनुष्य समुदाय उसी के अनुसार बरतने लग जाता है।

34. अहङ्कारविमूढात्मा कर्ताहमिति मन्यते। (3/27)

भावार्थ- जिसका अन्तः करण अहंकार से मोहित हो रहा है ऐसा अज्ञानी मैं कर्ता हूँ ऐसा मानता है।

35. तत्त्ववित्तु महाबाहो गुणकर्मविभागयोः।
गुणा गुणेषु वर्तन्त इति मत्वा न सज्जते॥ (3/28)
भावार्थ- परन्तु हे महाबाहो! गुणविभाग और कर्मविभाग के तत्त्व को जानने वाला ज्ञानयोगी सम्पूर्ण गुण ही गुणों में बरत रहे है। ऐसा समझकर (उनमें) आसक्त नहीं होता।

36. स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः॥ (3/35)
भावार्थ- अपने धर्म में मरना भी कल्याणकारक है और दूसरे का धर्म भय को देने वाला है।

37. जहि शत्रुं महाबाहो कामरूपं दुरासदम्। (3/43)
भावार्थ- हे महाबाहो! (अर्जुन) तू इस कामरूप दुर्जय शत्रु को मार डाल।

38. यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥ (4/7)
भावार्थ- हे भारत! जब-जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है, तब-तब ही मैं अपने रूप को रचता हूँ अर्थात् साकाररूप से लोगों के सम्मुख प्रकट होता हूँ।

39. परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे॥ (4/8)
भावार्थ- साधु पुरुषों का उद्धार करने के लिए पापकर्म करने वालों का विनाश करने के लिए और धर्म की अच्छी तरह से स्थापना करने के लिए मैं युग-युग में प्रकट हुआ करता हूँ।

40. जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं (4/9)
भावार्थ- (हे अर्जुन) मेरे जन्म और कर्म दिव्य अर्थात् निर्मल और अलौकिक हैं।

41. ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्। (4/11)
भावार्थ- जो भक्त मुझे जिस प्रकार भजते हैं, मैं भी उनको उसी प्रकार भजता हूँ।

42. चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः। (4/13)
भावार्थ- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन चार वर्णों का समूह, गुण और कर्मों के विभागपूर्वक मेरे द्वारा रचा गया है।

43. गहना कर्मणो गतिः (4/17)
भावार्थ- क्योंकि कर्म की गति गहन है।

44. यज्ञायाचरतः कर्म समग्रं प्रविलीयते। (4/23)
भावार्थ- यज्ञ सम्पादन के लिए कर्म करने वाले मनुष्य के सम्पूर्ण कर्म भलीभाँति विलीन हो जाते हैं।

45. ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्।
बह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्मसमाधिना॥ (4/24)

भावार्थ- जिस यज्ञ में अर्पण अर्थात् स्रुवा आदि भी ब्रह्म है और हवन किये जाने योग्य द्रव्य भी ब्रह्म है तथा ब्रह्मरूप कर्त्ता के द्वारा ब्रह्मरूप अग्नि में आहुति देना रूप क्रिया भी ब्रह्म है - उस ब्रह्मकर्म में स्थित रहने वाले योगी द्वारा प्राप्त किये जाने योग्य फल भी ब्रह्म ही है।

46. **यज्ञशिष्टामृतभुजो यान्ति ब्रह्म सनातनम्॥ (4/31)**

भावार्थ- यज्ञ से बचे हुए अमृत का अनुभव करने वाले योगीजन सनातन परब्रह्म परमात्मा को प्राप्त होते हैं।

47. **सर्वं कर्माखिलं पार्थ ज्ञाने परिसमाप्यते॥ (4/33)**

भावार्थ- हे अर्जुन! यावन्मात्र सम्पूर्ण कर्म ज्ञान में समाप्त हो जाते हैं।

48. **तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया।**

उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः॥ (4/34)

भावार्थ- उस ज्ञान को तू तत्त्वदर्शी ज्ञानियों के पास जाकर समझ, उनको भली-भाँति दण्डवत् प्रणाम करने से, उनकी सेवा करने से और कपट छोड़कर सरलतापूर्वक प्रश्न करने से वे परमात्मतत्त्व को भली-भाँति जानने वाले ज्ञानी महात्मा तुझे उस तत्त्वज्ञान का उपदेश करेंगे।

49. **यज्ज्ञात्वा न पुनर्मोहम्। (4/35)**

भावार्थ- जिसको जानकर फिर मोह नहीं होगा।

50. **श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानं। (4/39)**

भावार्थ- श्रद्धावान् मनुष्य ज्ञान को प्राप्त होता है।

51. **संशयात्मा विनश्यति। (4/40)**

भावार्थ- संशययुक्त मनुष्य परमार्थ से अवश्य भ्रष्ट हो जाता है।

52. **कर्मयोगो विशिष्यते। (5/2)**

भावार्थ- कर्मयोग (साधन में सुगम होने से) श्रेष्ठ है।

53. **निर्द्वन्द्वो हि महाबाहो सुखं बन्धात्प्रमुच्यते। (5/3)**

भावार्थ- क्योंकि राग द्वेषादि द्वन्द्वों से रहित (पुरुष) सुखपूर्वक संसारबन्धन से मुक्त हो जाता है।

54. **फले सक्तो निबध्यते। (5/12)**

भावार्थ- फल में आसक्त होकर बँधता है।

55. **इहैव तैर्जितः सर्गो येषां साम्ये स्थितं मनः। (5/19)**

भावार्थ- जिनका मन समभाव में स्थित है, उनके द्वारा इस जीवित अवस्था में ही सम्पूर्ण संसार जीत लिया गया है।

56. **ब्रह्मविद्ब्रह्मणि स्थितः। (5/20)**

भावार्थ- ब्रह्मवेत्ता पुरुष सच्चिदानन्दघन परब्रह्म परमात्मा में स्थित है।

59. ये हि संस्पर्शजा भोगा दुःखयोनय एव ते।
आद्यन्तवन्तः कौन्तेय न तेषु रमते बुधः। (5/22)

भावार्थ- जो ये इन्द्रिय तथा विषयों के संयोग से उत्पन्न होने वाले सब भोग हैं, वे यद्यपि विषयी पुरुषों को सुखरूप भासते हैं तो भी निःसन्देह दुःख के ही हेतु हैं और आदि अन्त वाले अर्थात् अनित्य हैं। इसलिए हे अर्जुन बुद्धिमान् विवेकी पुरुष उनमें नहीं रमता।

58. भोक्तारं यज्ञतपसां सर्वलोकमहेश्वरम्।
सुहृदं सर्वभूतानां ज्ञात्वा मां शान्तिमृच्छति॥ (5/29)

भावार्थ- मुझको सब यज्ञ और तपों का भोगने वाला, सम्पूर्ण लोकों के ईश्वरों का भी ईश्वर तथा सम्पूर्ण भूतप्राणियों का सुहृद् अर्थात् स्वार्थरहित दयालु और प्रेमी, ऐसा तत्त्व से जानकर शान्ति को प्राप्त होता है।

59. न ह्यसन्न्यस्तसङ्कल्पो योगी भवति कश्चन (6/2)

भावार्थ- क्योंकि संकल्पों का त्याग न करने वाला कोई भी पुरुष योगी नहीं होता।

60. आरुरुक्षोर्मुनेर्योगं कर्म कारणमुच्यते। (6/3)

भावार्थ- योग में आरूढ़ होने की इच्छा वाले मननशील पुरुष के लिए निष्काम भाव से कर्म करना ही हेतु कहा जाता है।

61. आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः। (6/5)

आप ही तो अपने मित्र हैं और आप ही अपने शत्रु हैं।

62. समबुद्धिर्विशिष्यते। (6/9)

भावार्थ- समान भाव रखने वाला अत्यन्त श्रेष्ठ है।

63. युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु।
युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा॥ (6/17)

भावार्थ- दुःखों का नाश करने वाला योग यथा योग्य आहार विहार करने वाले का, कर्मों में यथा योग्य चेष्टा करने वाले का और यथायोग्य तथा सोने जगने वाले का ही सिद्ध होता है।

64. तं विद्याद्दुःखसंयोगवियोगं योगसञ्ज्ञितम्। (6/23)

भावार्थ- दुःखरूप संसार के संयोग से रहित है (तथा) जिसका नाम योग है उसको जानना चाहिए।

65. यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति।
तस्याहं न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति॥ (6/30)

भावार्थ- जो पुरुष सम्पूर्ण भूतों में सब के आत्मरूप मुझ वासुदेव को ही व्यापक देखता है और सम्पूर्ण भूतों को मुझ वासुदेव के अन्तर्गत देखता है उसके लिए मैं अदृश्य नहीं होता और वह मेरे लिए अदृश्य नहीं होता।

66. अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते। (6/35)

भावार्थ- परन्तु हे कुन्तीपुत्र अर्जुन! (यह मन) अभ्यास और वैराग्य से वश में होता है।

67. न हि कल्याणकृत्कश्चिद्दुर्गतिं तात गच्छति। (6/40)

भावार्थ- हे प्यारे! आत्मोद्धार के लिए अर्थात् भगवत्प्राप्ति के लिए कर्म करने वाला कोई भी मनुष्य दुर्गति को प्राप्त नहीं होता।

68. मत्तः परतरं नान्यत्किञ्चिदस्ति। (7/7)

भावार्थ- मुझसे भिन्न दूसरा कोई भी परम (कारण) नहीं है।

69. मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते। (7/14)

भावार्थ- जो पुरुष मुझको ही निरन्तर भजते हैं वे इस माया का उल्लंघन कर जाते हैं अर्थात् संसार से तर जाते हैं।

70. वासुदेवः सर्वम्। (7/19)

भावार्थ- सब कुछ वासुदेव ही है।

71. मद्भक्ता यान्ति मामपि। (7/23)

भावार्थ- मेरे भक्त (चाहे जैसे ही भजें, अन्त मे वे) मुझको ही प्राप्त होते हैं।

72. मामनुस्मर युध्य च। (8/7)

भावार्थ- मेरा स्मरण कर और युद्ध भी कर।

73. दुःखालयमशाश्वतम्। (8/15)

भावार्थ- दुःखों के घर (एवं) क्षणभंगुर

74. मामुपेत्य तु कौन्तेय पुनर्जन्म न विद्यते। (8/16)

भावार्थ- हे कुन्ती पुत्र! मुझको प्राप्त होकर पुनर्जन्म नहीं होता।

75. भूतग्रामः स एवायं भूत्वा भूत्वा प्रालीयते। (8/19)

भावार्थ- वही यह भूत समुदाय उत्पन्न हो होकर लीन होता है।

76. यं प्राप्य न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम। (8/21)

भावार्थ- जिस सनातन अव्यक्त भाव को प्राप्त होकर मनुष्य वापस नहीं आते, वह मेरा परम धाम है।

77. क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति। (9/21)

भावार्थ- पुण्य क्षीण होने पर मृत्युलोक को प्राप्त होते हैं।

78. गतागतं कामकामा लभन्ते। (9/21)

भावार्थ- भोगों की कामना वाले पुरुष बार-बार आवागमन को प्राप्त होते हैं अर्थात् पुण्य के प्रभाव से स्वर्ग में जाते हैं और पुण्य क्षीण होने पर मृत्युलोक में आते हैं।

79. योगक्षेमं वहाम्यहम्। (9/22)

भावार्थ- योगक्षेम मैं स्वयं प्राप्त कर देता हूँ।

८०. पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति।
तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः॥ (9/26)
भावार्थ- जो मेरे लिए प्रेम से पत्र, पुष्प, फल, जल आदि अर्पण करता है, उस शुद्ध बुद्धि निष्काम प्रेमी भक्त का प्रेमपूर्वक अर्पण किया हुआ वह (पत्र-पुष्पादि) मैं खाता हूँ।

८१. यत्करोषि यदश्नासि यज्जुहोषि ददासि यत्।
यत्तपस्यसि कौन्तेय तत्कुरुष्व मदर्पणम्॥ (9/27)
भावार्थ- हे अर्जुन! तू जो कर्म करता है, जो खाता है, जो हवन करता है, जो दान दान देता है, जो तप करता है, वह सब मुझे अर्पण कर।

८२. कौन्तेय प्रति जानीहि न मे भक्तः प्रणश्यति।(9/31)
भावार्थ- हे अर्जुन! तू निश्चयपूर्वक सत्य जान कि मेरा भक्त नष्ट नहीं होता।

८३. अनित्यमसुखं लोकमिमं प्राप्य भजस्व माम्। (9/33)
भावार्थ- क्षणभंगुर और सुखरहित इस मनुष्य शरीर को प्राप्त होकर निरन्तर मेरा ही भजन कर।

८४. मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु। (9/34)
भावार्थ- मुझमें मन वाला हो, मेरा भक्त बन, मेरा पूजन करने वाला हो, मुझको प्रणाम कर।

८५. यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि। (10/25)
भावार्थ- सब प्रकार के यज्ञों में (मैं) जप यज्ञ हूँ।

८६. अध्यात्मविद्या विद्यानाम्। (10/32)
भावार्थ- विद्याओं में अध्यात्मविद्या अर्थात् ब्रह्मविद्या हूँ।

८७. निमित्तमात्रं भव सव्यसाचिन्। (11/33)
भावार्थ- हे सव्यसाचिन! तू तो केवल निमित्तमात्र बन जा।

८८. न त्वत्समोऽस्त्यभ्यधिकः कुतोऽन्यो। (11/43)
भावार्थ- आपके समान भी दूसरा कोई नहीं है, फिर अधिक तो कैसे हो सकता है?

८९. ते प्राप्नुवन्ति मामेव सर्वभूतहिते रताः। (12/4)
भावार्थ- वे सम्पूर्ण भूतों के हित में रत और सबमें समान भाव वाले योगी मुझको ही प्राप्त होते हैं।

९०. त्यागाच्छान्तिरनन्तरम्। (12/12)
भावार्थ- त्याग से तत्काल ही परम शान्ति होती है।

९१. जन्ममृत्युजराव्याधिदुःखदोषानुदर्शनम्। (13/8)
भावार्थ- जन्म, मृत्यु, जरा और रोग आदि में दुःख और दोषों का बार-बार विचार करना।

92. ज्योतिषामपि तज्ज्योतिः। (13/17)

भावार्थ- वह परब्रह्म ज्योतियों का भी ज्योति है।

93. पुरुषः प्रकृतिस्थो हि भुङ्क्ते प्रकृतिजान्गुणान्। (13/21)

भावार्थ- प्रकृति में स्थित ही पुरुष प्रकृति से उत्पन्न त्रिगुणात्मक पदार्थों को भोगता है।

94. देहेऽस्मिन्पुरुषः परः। (13/22)

भावार्थ- इस देह में स्थित यह आत्मा वास्तव में परमात्मा ही है।

95. न हिनस्त्यात्मनात्मानं ततो याति परां गतिम्। (13/28)

भावार्थ- क्योंकि जो अपने द्वारा अपने को नष्ट नहीं करता इससे वह परम गति को प्राप्त होता है।

96. शरीरस्थोऽपि कौन्तेय न करोति न लिप्यते। (13/31)

भावार्थ- हे अर्जुन! शरीर में स्थित होने पर भी न कुछ करता है और न लिप्त ही होता है।

97. ऊर्ध्वं गच्छन्ति सत्वस्था मध्ये तिष्ठन्ति राजसाः।
जघन्यगुणवृत्तिस्था अधो गच्छन्ति तामसाः॥ (14/18)

भावार्थ- सत्त्वगुण में स्थित पुरुष स्वर्गादि उच्च लोकों को जाते हैं, राजस पुरुष मध्य में अर्थात् मनुष्यलोक में रहते हैं और तमोगुण के कार्यरूप निद्रा, प्रमाद और आलस्य में स्थित तामस पुरुष अधोगति को अर्थात् कीट, पशु आदि नीच योनियों को तथा नरकों को प्राप्त होते हैं।

98. उर्ध्वमूलमधः शाखामश्वत्थं प्राहुरव्ययम्। (15/1)

भावार्थ- आदिपुरुष परमेश्वर रूप मूलवाले और ब्रह्मारूप मुख्य शाखा वाले संसाररूप पीपल के वृक्ष को अविनाशी कहते हैं।

99. न तद्भासयते सूर्यो न शशाङ्को न पावकः।
यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम॥ (15/6)

भावार्थ- जिस परमपद को प्राप्त होकर मनुष्य लौटकर संसार में नहीं आते, उस (स्वयं प्रकाश परमपद को) न सूर्य प्रकाशित कर सकता है न चन्द्रमा और न अग्नि, वही मेरा परम धाम है।

100. ममैवांशो जीवलोके। (15/7)

भावार्थ- इस देह में (जीवात्मा) मेरा ही अंश है।

101. विमूढा नानुपश्यन्ति पश्यन्ति ज्ञानचक्षुषः। (15/10)

भावार्थ- अज्ञानी जन नहीं जानते, (केवल) ज्ञानरूप नेत्रों वाले तत्त्व से जानते हैं।

102. सर्वस्य चाहं हृदि सन्निविष्टः। (15/15)

भावार्थ- मैं ही सब प्राणियों के हृदय में अन्तर्यामी रूप से स्थित हूँ।

103. **दैवी सम्पद्विमोक्षाय निबन्धायासुरी मता। (16/5)**

भावार्थ- दैवी सम्पदा मुक्ति के लिए और आसुरी सम्पदा बाँधने के लिए मानी गयी है।

104. **कामोपभोगपरमा एतावदिति निश्चिताः। (16/11)**

भावार्थ- विषय भोगों के भोगने में तत्पर रहने वाले 'इतना ही सुख' है इस प्रकार मानने वाले होते हैं।

105. **तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ। (16/24)**

भावार्थ- इससे तेरे लिए कर्तव्य और अकर्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण है।

106. **श्रद्धामयोऽयं पुरुषो यो यच्छ्रद्धः स एव सः। (17/3)**

भावार्थ-यह पुरुष श्रद्धामय है, इसलिए जो पुरुष जैसी श्रद्धावाला है, वह स्वयं भी वही है।

107. **यस्तु कर्मफलत्यागी स त्यागीत्यभिधीयते। (18/11)**

भावार्थ- जो कर्मफल का त्यागी है वही त्यागी है, यह कहा जाता है।

108. **यत्तदग्रे विषमिव परिणामेऽमृतोपमम्। (18/37)**

भावार्थ- जो आरम्भ काल में विष के तुल्य प्रतीत होता है, परन्तु परिणाम में अमृत के तुल्य है।

109. **स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धिं लभते नरः। (18/45)**

भावार्थ- अपने-अपने स्वभाविक कर्मों में तत्परता से लगा हुआ मनुष्य भगवत्प्राप्ति रूप परमसिद्धि को प्राप्त हो जाता है।

110. **स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दति मानवः। (18/46)**

भावार्थ- अपने स्वाभाविक कर्मों द्वारा उस परमेश्वर की पूजा करके मनुष्य परम सिद्धि को प्राप्त हो जाता है।

111. **सर्वारम्भा हि दोषेण धूमेनाग्निरिवावृताः। (18/48)**

भावार्थ- सभी कर्म धूएँ से अग्नि की भाँति दोष से युक्त हैं।

112. **मच्चित्तः सर्वदुर्गाणि मत्प्रसादात्तरिष्यसि। (18/58)**

भावार्थ- मुझमें चित्त वाला होकर तू मेरी कृपा से समस्त संकटों को पार कर जायेगा।

113. **प्रकृतिस्त्वां नियोक्ष्यति। (18/59)**

भावार्थ- स्वभाव तुझे जबरदस्ती युद्ध में लगा देगा।

114. **ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशोऽर्जुन तिष्ठति।**
भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया।। (15/61)

भावार्थ- हे अर्जुन! शरीररूप यन्त्र में आरूढ़ हुए सम्पूर्ण प्राणियों को अन्तर्यामी परमेश्वर अपनी माया से भ्रमण कराता हुआ सब प्राणियों के हृदय में स्थित है।

115. तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत।(18/62)

भावार्थ- हे भारत! सब प्रकार से उस परमेश्वर की ही शरण में जा।

116. सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।

अहं त्वां सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः॥ (18/66)

भावार्थ- सम्पूर्ण धर्मों को अर्थात् सम्पर्ण कर्तव्य कर्मों को त्यागकर एक मुझ सर्वशक्तिमान् सर्वाधार परमेश्वर की ही शरण में आ जा मैं तुझे सम्पूर्ण पापों से मुक्त कर दूँगा, शोक मत कर।

117. नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा। (18/73)

भावार्थ- (मेरा) मोह नष्ट हो गया (और) मैंने स्मृति प्राप्त कर ली है।

118. करिष्ये वचनं तव। (18/73)

भावार्थ- आपकी आज्ञा का पालन करूँगा।

119. यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।

तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम॥ (18/78)

भावार्थ- जहाँ योगेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण हैं, जहाँ गाण्डीव-धनुषधारी अर्जुन हैं, वहीं पर श्री, विजय, विभूति और अचल नीति है, ऐसा मेरा मत है।

❑❑

८. चार्वाक दर्शन

- चार्वाक दर्शन के आदि प्रवर्तक **'बृहस्पति'** को माना गया है।
- चार्वाक दर्शन को **'बार्हस्पत्य सूत्र'** तथा **'बार्हस्पत्य दर्शन'** भी कहते हैं।
- सामान्य लोगों की तरह आचरण करने के कारण चार्वाकों को **'लोकायत'** या **'लोकायतिक'** भी कहा जाता है।
- खाओ (चर्व् = भोजन करना), पीओ, मौज उड़ाओ - इस सिद्धान्त के कारण भी 'चार्वाक' संज्ञा मानी जाती है।
- बृहस्पति के शिष्य 'चार्वाक' द्वारा प्रचारित होने के कारण भी **'चार्वाक'** नाम माना जाता है।
- गुणरत्न के अनुसार पुण्य, पापादि परोक्ष को न मानने के कारण (चट कर जाने से) 'चार्वाक' नाम पड़ा।
- चारु+वाक् अर्थात् चारु=सुन्दर तथा वाक् = वाणी (उपदेशक) होने के कारण भी 'चार्वाक' कहा जाता है।
- लोकायत दर्शन को ही **'बाह्यदर्शन'** भी कहते हैं।
- चार्वाक ग्रन्थों में 'बार्हस्पत्य-सूत्र' ही इस दर्शन का सर्वस्व है।
- पतञ्जलि के समय में भागुरी नामक टीकाग्रन्थ विद्यमान था।
- भट्टजयराशि विरचित 'तत्त्वोप्लवसिंह' में चार्वाक के तथ्यों का प्रतिपादन है।
- 'तत्त्वोप्लव सिंह' तर्कबहुल ग्रन्थ है, इसका समय 10 वीं शताब्दी के आस-पास माना जाता है।
- चार्वाक दर्शन केवल **'प्रत्यक्ष प्रमाण'** को ही मानता है।
- श्रुति (वेद) को प्रमाण न मानने वाले दर्शनों को **'अवैदिकदर्शन'** कहा गया है।
- अवैदिक दर्शनों में **सबसे प्राचीन दर्शन** 'चार्वाक दर्शन' ही है।
- चार्वाक दर्शन **'नास्तिक दर्शन'** है।
- चार्वाकों के अनुसार 'शरीर ही आत्मा है और मरण ही मुक्ति।'
- चार्वाक ने 'काम' को ही मानव जीवन का पुरुषार्थ माना है।
- चार्वाक दर्शन को मानने वाले शुद्ध बुद्धिवाद पर आस्था रखते थे।
- दूसरे पक्ष का खण्डन ही चार्वाकों का मुख्य ध्येय था।
- लोकायतिक प्राचीनकाल के **'वैतण्डिक'** थे। अपने तर्कों को छोड़कर ये लोग किसी भी शास्त्र को प्रमाण नही मानते थे।

- रामायण में रामचन्द्र ने भरत से इन लोकायतिकों की निन्दा की है।
- 'विनयपिटक' में भगवान् बुद्ध ने भिक्षुओं को लोकायत शास्त्र सीखने या सिखाने का स्पष्ट निषेध किया है।
- 'सद्धर्मपुण्डरीक' में बोधिसत्त्व को इस शास्त्र को पढ़ने तथा पढ़ाने का स्पष्ट निषेध मिलता है।
- कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र में बृहस्पति के मत का निर्देश किया है।
- इनके अनुसार प्रमेय की सिद्धि **प्रत्यक्ष प्रमाण** से ही हो सकती है।
- हमारी इन्द्रियों के द्वारा प्रत्यक्षीकृत जगत् ही सत् है।
- स्पर्शेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, चक्षुरिन्द्रिय तथा श्रोत्रेन्द्रिय इन्हीं पाँच प्रकार के प्रत्यक्षों के द्वारा अनुभूत वस्तु प्रमाणभूत मानी जाती है।
- चार्वाक दर्शन 'अनुमान' को प्रमाण नहीं मानता है।
- चार्वाकों के अनुसार लोकव्यवहार के लिए 'सम्भावना' की आवश्यकता होती है 'निश्चय' की नहीं।
- 'सम्भावना' के आधार पर जगत् का समस्त अनुमान तथा व्यवहार चलता है ऐसा चार्वाक मानते हैं।
- चार्वाकों का मानना है कि सुख का कारण न तो धर्म है और न अधर्म। मनुष्य स्वभाव से सुखी अथवा दुःखी होता है।
- चार्वाक का सिद्धान्त **'स्वभाववाद'** के नाम से दार्शनिक जगत् में विख्यात है।
- चार्वाक जगत् की उत्पत्ति तथा विनाश का मूल कारण 'स्वभाव' को ही मानते हैं।
- इनके अनुसार वस्तु-स्वभाव जगत् की विचित्रता का कारण है। अन्य कुछ भी नहीं।
- चार्वाक लोग कार्य-कारणभाव को मानने के लिए तैयार नहीं होते। विना वस्तु के ही वस्तु के सद्भाव-अकस्मात् भूति - को अंगीकार करते हैं।
- चार्वाक 'शब्द' को भी प्रमाण नहीं मानते।
- चार्वाकों के अनुसार आप्त पुरुषों के वाक्यों की सत्यता में विश्वास करना एकदम निःसार है।
- उनके अनुसार अदृष्टलोक के अश्रुतपूर्व पदार्थों का वर्णन मनोरञ्जक कहानी से बढ़कर और सत्यता नहीं रखता।
- चार्वाकों के अनुसार यज्ञों में तुर्फरी, जर्भरी, पफरीका इत्यादि अनर्थक शब्दों का प्रयोग तथा माँस भक्षण के विधानों से वेद बनाने वाले धूर्त, भण्ड तथा निशाचर थे।
- चार्वाकों ने वैदिक ऋषियों तथा उसमें वर्णित श्रौत विधियों को पानी पी पी कर कोसा है।
- चार्वाकों के अनुसार संसार के **चार तत्त्व** ही होते हैं – पृथिवी, जल, तेज, तथा वायु। ये चार पदार्थ ही अपनी आणविक अवस्था में जगत् के मूल कारण हैं। बाह्य जगत्, इन्द्रियाँ तथा भौतिक शरीर इन्हीं चार मूलभूतों से उत्पन्न होते हैं।
- जगत् के किसी चेतन अन्तर्यामी की सत्ता न मानने से यह विश्व चार्वाकों की दृष्टि में अकस्मात् सम्मिलित होने वाले भूतचतुष्टय का संग्रह मात्र है।

- चार्वाकों का मानना है इस शरीर के अतिरिक्त आत्मा नामक अन्य कोई पदार्थ है ही नहीं। चैतन्य आत्मा का धर्म है, पर इस चैतन्य का सम्बन्ध शरीर से होने के कारण शरीर को ही आत्मा मानने के लिए बाध्य होना पड़ता है।
- चार्वाकों के अनुसार चैतन्य तथा शरीर का सम्बन्ध तीन प्रकार से पुष्ट किया जा सकता है-

1. नैयायिक पद्धति से- अन्नपान के उपयोग से शरीर में प्रकृष्ट चेतना का उदय होता है, उसके न होने से चेतना का ह्रास हो जाता है।
2. अनुभव से- 'मैं स्थूल हूँ', 'मैं कृश हूँ', 'मैं श्रान्त हूँ', 'मैं प्रसन्न हूँ' इन अनुभवों का ज्ञान हमें जगत् में प्राप्त होता है। इन सबका सम्बन्ध चैतन्य के साथ शरीर में निष्पन्न होता है।
3. वैद्यकशास्त्र के प्रमाण से - वर्षाकाल में दही में बहुत ही जल्द छोटे-छोटे कीड़े रेंगते दिखाई पड़ते हैं। चैतन्य का भौतिक पदार्थ के साथ सम्बन्ध सत्य प्रतीत होता है।

- **'चैतन्यविशिष्टः कायः पुरुषः'** बृहस्पति का यह सूत्र युक्तियुक्त है। इसे ही चार्वाकों का 'भूतचैतन्यवाद' कहते हैं।
- चार्वाकों के अनुसार भूतों में चैतन्य की उत्पत्ति किन्हीं पदार्थों को एक विशेष प्रकार या मात्रा में सम्मिलित करने से अवस्थाविशेष में नये धर्म का उदय अपने आप हो जाता है।
- चार्वाकों के अनुसार भूत की एक विशेष ढंग या परिणाम में समष्टि होने पर चैतन्य की उत्पत्ति स्वयं सिद्ध हो जाती है।
- चार्वाक उदाहरण देते हैं कि जिस प्रकार पान, खैर, चूना तथा सुपारी में अलग-अलग ललाई दिखाई नहीं पड़ती, किन्तु एक विशिष्ट मात्रा में इनके संयोग होने से पान खाने वाले के मुँह में ललाई उत्पन्न हो जाती है, इसप्रकार चैतन्य के उदय की घटना बतायी जाती है।
- चैतन्य की उत्पत्ति और विनाश के साधन तथा आधार होने के कारण शरीर को ही चार्वाक लोग आत्मा मानते हैं।
- चार्वाक लोग एक-देशीय श्रुति तथा अनुभव के आधार पर इन्द्रियों को, कुछ लोग प्राण को और अन्य लोग मन को आत्मा मानते थे।
- स्वभाव से ही जगत् के लय की समस्या हल कर देने से चार्वाकों के लिए ईश्वर मानने की जरूरत ही नहीं होती।
- चार्वाक दार्शनिक आदिम तथा अन्तिम पुरुषार्थों के अस्तित्व में विश्वास नहीं करते।
- चार्वाक लोग स्वर्ग को स्वीकार नहीं करते। जब स्वर्ग नामक सुख प्रधान ही लोक है, तब उसके शरीर को तरह-तरह का क्लेश देकर तपस्या करना तथा द्रव्य का व्यय उठा कर यज्ञानुष्ठान करना एकदम व्यर्थ है।
- चार्वाकों ने वैदिक धर्म की कड़ी आलोचना की है।
- चार्वाकों के अनुसार किसी कपोलकल्पित पारलौकिक सुख की प्राप्ति के लिए जीव विशेष की हत्या कर योग-साधना करना पहले दर्जे की मूर्खता है।

- चार्वाक कहते हैं यदि श्राद्ध करने से मरे हुए जन्तुओं की तृप्ति होती, तो तेल डालने से बुझे हुए दीपक की शिखा भी बढ़ती। अतः मृतक की तृप्ति के लिए श्राद्ध करने की कल्पना नितान्त निराधार है।
- चार्वाक लोग वेद-विधानों को कपोलकल्पना सिद्ध करने के लिए बड़े-बड़े लौकिक दृष्टान्त उपस्थित करते हैं। वे धर्म तथा अधर्म में न तो विश्वास करते है और न पाप-पुण्य के फल को अङ्गीकार करते हैं।
- चार्वाकों के अनुसार प्रत्येक क्लेश का निकेतन यही भोगायतन शरीर है। इस शरीर के पतन के साथ ही दुःखों की आत्यन्तिक निवृत्ति सिद्ध हो जाती है।
- चार्वाक लोग- **मरणमेवापवर्गः** (बृ.सू.) मरण को अपवर्ग मानते हैं।
- चार्वाकों के अनुसार काम ही प्रधान पुरुषार्थ है और तत्-सहायक होने से अर्थ भी। प्राणिमात्र के लिए जीवन का उद्देश्य होना चाहिए ऐहिक सुख की प्राप्ति।
- चार्वाकों का यह कथन सर्वत्र प्रसिद्ध है कि जब तक जीएँ, सुखपूर्वक जीएँ। अपने पास द्रव्य न होने पर ऋण लेकर घृत पीएँ, ऋण लौटाने की व्यर्थ चिन्ता न करें क्योंकि शरीर के भस्म हो जाने पर भला जीव का पुनरागमन कहाँ होता है?
  यावज्जीवेत् सुखं जीवेत् ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत्।
  भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः॥
- चार्वाकों के अनुसार खाओ, पीओ, मौज उड़ाओ-यही जीवन का आत्यन्तिक लक्ष्य है। दुःख से मिश्रित होने से सुख त्याज्य नहीं है? विशुद्ध सुख की सत्ता जगत् में नही है।

चार्वाकों के अनुसार

- जिस प्रकार मछली खानेवाला कण्टक-युक्त मछलियों को ग्रहण कर ग्राह्यांश को ले लेता है और अन्य अंश को छोड़ देता है उसी प्रकार सुखार्थी दुःख से मिश्रित सुख को ग्रहण करता है और उपादेय भाग को लेकर ही तृप्ति-लाभ करता है।
- चार्वाकों का मानना है कि 'विषय के संगम से उत्पन्न सुख,दुःख के साथ होने से त्याज्य है' -यह मूर्खों का विचार है।
- चार्वाकों के अनुसार जीवन भोगविलास के साथ सुख की प्राप्ति में बिताना चाहिए। स्वर्ग-नरक तो इसी जगत् में विद्यमान है।
- सांसारिक सुखवाद चार्वाकों के अनुसार प्राणिमात्र का प्रधान लक्ष्य है।
  * विभिन्न ग्रन्थों में बृहस्पति के सूत्र ही चार्वाकों के सिद्धान्त रूप में प्राप्त होते हैं जिनका हम बिन्दुवार अध्ययन करेंगे।

चार्वाकों के प्रमुख सिद्धान्त (बृहस्पति के सूत्रानुसार)

1. **'अथातः तत्त्वं व्याख्यास्यामः।** अब हम इस मत के तत्त्वों को निरूपित करेंगे।
2. **'पृथिव्यापस्तेजोवायुरिति तत्त्वानि।'** ये चार तत्त्व हैं- पृथ्वी, जल, तेज, वायु।
3. **'तत्समुदाये शरीरेन्द्रियविषयसंज्ञा'** इन्हीं भूतों के संगठित स्वरूप को शरीर, इन्द्रिय तथा विषय यह संज्ञा दी गयी है।

4. **'तेभ्यश्चैतन्यम्'** चैतन्य की उत्पत्ति इन्ही भूतों के संगठन से होती है।
5. **'किण्वादिभ्यो मदशक्तिवद् विज्ञानम्'** जिस प्रकार किण्वन प्रक्रिया से अन्नों के संगठन से माठक शक्ति उत्पन्न होती है उसीप्रकार इन भूतों के संगठन से विज्ञान (चैतन्य) उत्पन्न होता है।
6. **'भूतान्येव चेतयन्ते'** भूतों द्वारा ही चैतन्य को उत्पन्न किया जाता है।
7. **'चैतन्यविशिष्टः कायः पुरुषः'** चैतन्य से युक्त स्थूल शरीर ही 'आत्मा' है।
8. **'जलबुद्बुद्वज्जीवाः'** जल के ऊपर जिस प्रकार बुलबुले दिखाई पड़ते हैं और शीघ्र ही स्वयमेव नष्ट हो जाते हैं, जीव भी उसी प्रकार हैं।
9. **'परलोकिनोऽभावात् परलोकाभावः'** परलोक में रहने वाले कोई नहीं होते वास्तव में परलोक का अभाव है।
10. **'मरणमेवापवर्गः'** मृत्यु होना ही मोक्ष है।
11. **'धूर्तप्रलापस्त्रयी स्वर्गोत्पादकत्वेन विशेषाभावात्'** स्वर्ग सुख की इच्छा करना धूर्तों के प्रलापजन्य सुख से अलग नही है, अतः स्वर्ग सुख को निरूपित करने वाले तीनों 'वेद' धूर्तों के प्रलाप ही हैं।
12. **'अर्थकामौ पुरुषार्थौ'** दो पुरुषार्थ अर्थ और काम ही हैं।
13. **'दण्डनीतिरेव विद्या, अत्र वार्ता अन्तर्भवति।** एक मात्र विद्या राजनीति ही है। उसी में कृषिशास्त्र भी सम्मिलित है।
14 **'प्रत्यक्षमेव प्रमाणम्'** एक मात्र प्रमाण 'प्रत्यक्ष' ही है।
15. **'लौकिको मार्गोऽनुसर्तव्यः'** सामान्य लोगों के मार्ग का अनुसरण करना चाहिए

चार्वाक (लोकायत/बाह्य)

- प्रमेय
  - पृथ्वी
  - जल
  - वायु
  - तेज
  - → शरीर चैतन्य
- प्रमाण
  - प्रत्यक्ष
    - चक्षुरेन्द्रिय प्रत्यक्ष
    - घ्राणेन्द्रिय प्रत्यक्ष
    - श्रोत्रेन्द्रिय प्रत्यक्ष
    - रसनेन्द्रिय प्रत्यक्ष
    - स्पर्शेन्द्रिय प्रत्यक्ष

❑❑
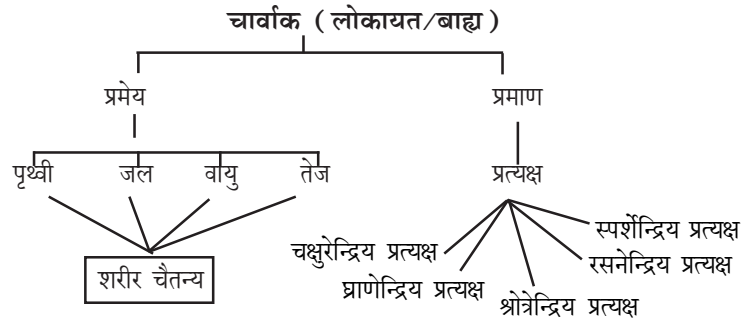
हम 7 साथ हैं

1. किरातार्जुनीयम् 2. नीतिशतकम् 3. मेघदूतम् 4. अभिज्ञानशाकुन्तलम्
5. उत्तररामचरितम् 6. शुकनासोपदेश 7. शिवराजविजय

TGT संस्कृत मूलपाठ

॥ यत् सारभूतं तदुपासनीयम् ॥

सप्तगङ्गम्

सम्पादक

सर्वज्ञभूषण

संस्कृतगङ्गा

दारागञ्ज, प्रयागराज

ISBN–978-81-952032-0-8

☞ **प्रकाशक**

संस्कृतगङ्गा (पञ्जीकृत)
59, मोरी, दारागञ्ज, प्रयागराज 211006
(कोतवाली दारागञ्ज के आगे, गङ्गाकिनारे, संकटमोचन छोटे हनुमान् मन्दिर के पास)
कार्यालय - **8004545095, 8004545096**
email-Sanskritganga@gmail.com
बेवसाइट - www.Sanskritganga.org

☞ **मुख्यवितरक**

राजू पुस्तक केन्द्र
अल्लापुर, प्रयागराज (उत्तर प्रदेश)
मो० 9453460552

☞ प्रथमसंस्करण - फरवरी 2021, बसन्तपञ्चमी, सरस्वती पूजन

☞ तृतीय - संशोधित एवं परिवर्धित संस्करण - 21 जून 2021,
अन्ताराष्ट्रिय योगदिवस

☞ **मूल्य –** **151** /= (एक सौ इक्यावन रुपये मात्र)

समर्पणम्

पूज्य पिताजी

श्री यादवेन्द्रप्रसाद मिश्र

शिवपुर (डोड़िया), बरगढ़, चित्रकूट (उत्तर प्रदेश)

- जिन्होंने मुझे जीवन के सभी बड़े निर्णय स्वयं से लेने को कहा।
- जिन्होंने न तो कभी डाँटा, न ही मारा, उनका मौन ही हम लोगों की सजा थी।
- जिनकी सीख वाणी से नहीं स्वयं के आचरण से होती थी।
- जिन्होंने अपने सभी चारों पुत्रों का बाह्य अनुशासन मेरी माँ के हाथ में दिया था, आन्तरिक अनुशासन के नियन्ता स्वयं उनका चरित्र था।

संस्कृतगङ्गा उवाच

सप्तार्णवा सप्तकुलाचलाश्च सप्तर्षयो द्वीपवनानि सप्त ।
भूरादिकृत्वा भुवनानि सप्त कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम् ॥

प्रिय! संस्कृतमित्राणि

नमः संस्कृताय!

* प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (TGT) संस्कृत के पाठ्यक्रम में निर्धारित सातों साहित्यिक ग्रन्थों (**किरातार्जुनीयम्** प्रथमसर्ग, **मेघदूतम्**, **नीतिशतकम्**, **अभिज्ञानशाकुन्तलम्** चतुर्थ अङ्क, **उत्तररामचरितम्** तृतीय अङ्क, **कादम्बरी शुकनासोपदेश**, **शिवराजविजय** प्रथम निःश्वास) के सङ्कलन के साथ-साथ **संस्कृतव्याकरण प्रवेशिका-बाबूराम सक्सेना** के आधार पर शब्दरूप, धातुरूप, संस्कृतसंख्याओं एवं प्रमुख छन्दों का परिचय भी संकलन इस **सप्तगङ्गम्** नामक पुस्तक में किया गया है।

* इस पुस्तक का नामकरण अव्ययीभाव समास के अन्तर्गत आये 'नदीभिश्च' सूत्र के आधार पर **'सप्तगङ्गम्'** (सप्तानां गङ्गानां समाहारः) किया गया है। मानों TGT संस्कृत के पाठ्यक्रम में निर्धारित सातों साहित्यिक रचनाओं को गङ्गा सदृश शीतल एवं पावन मानकर अपने कैरियर रूपी नैय्या को पार लगाने की आशा की गयी है।

* जिस प्रकार सभी नदियाँ गंगा में मिलकर अन्ततोगत्वा गंगा ही हो जाती हैं, उसी प्रकार इस **'सप्तगङ्गम्'** नामक पुस्तक में सातों साहित्यिक रचनायें एक ही पुस्तक में समाहित हो गयी हैं।

* इस पुस्तक के द्वारा **TGT** के परीक्षार्थियों को वाचन (पारायण) करने में आसानी होगी, वाचन करने के लिए छात्रों को सात अलग-अलग ग्रन्थ पढ़ने पड़ते थे। शब्दरूप, धातुरूप पढ़ने के लिए अन्यान्य ग्रन्थों का सहारा लेना पड़ता था, इस पुस्तक में केवल मूलपाठ होने से, पुस्तक का आकार छोटा है, जिससे इसको कहीं भी ले जाने ले आने में सुविधा होगी।

'आवृत्तिः सर्वशास्त्राणां बोधादपि गरीयसी', **'यत्सारभूतं तदुपासनीयम् '**, **'शतेन जायते कण्ठःसहस्त्रेण स्मृतिर्भवेत्'** इत्यादि सूक्तियों से वाचन की महत्ता सिद्ध होती है, इसीलिए सप्तगङ्गम् TGT परीक्षार्थियों के लिए वाचन के द्वारा कल्याण करेगी - ऐसा विश्वास है

* TGT संस्कृत पाठ्यक्रम में निर्धारित सभी ग्रन्थों का मूलपाठ एक ही ग्रन्थ में मिल जाने से यह पुस्तक प्रतियोगी साथियों के लिए **" All in One"** कही जा सकती है।

* पुस्तक में अक्षर की साइज बड़ी रखी गयी है, जिससे वाचन करने में कोई असुविधा न हो। इस पुस्तक के बार-बार वाचन करने से सूक्ति, पात्रों के कथन, छन्दज्ञान, एवं कथानक से सम्बद्ध प्रश्नों के उत्तर देने मे आसानी होगी।

* TGT पाठ्यक्रम में निर्धारित सभी ग्रन्थ एक ही स्थान पर प्राप्त होने से वाचन शीघ्र हो जाएगा। किरातार्जुनीयम्, नीतिशतकम्, मेघदूतम्, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, उत्तररामचरितम् इन पद्यात्मक ग्रन्थों में लगभग **360 श्लोक** प्राप्त होते हैं, तथा शुकनासोपदेश एवं शिवराजविजय में गद्य प्राप्त होता है। सातों साहित्यिक ग्रन्थ तथा शब्दरूप, धातुरूप आदि का वाचन अधिकतम **5 घण्टों** में किया जा सकता है।

* **'सप्तगङ्गम्'** नामक इस पुस्तक में मूलपाठ का सम्पादन प्रसिद्ध सभी टीकाकारों के मूलपाठ का स्वाध्याय करके किया गया है, अतः जो पाठ शास्त्रसम्मत, अर्थसम्मत, विद्वत्सम्मत तथा कविसम्मत था उसी पाठ को इसमें स्वीकृत किया गया है। जिन व्याख्याकारों की सहायता से इस मूलपाठ को मूर्तरूप दिया गया है उनकी सूची सन्दर्भ ग्रन्थ के रूप में पुस्तक के अन्त में दी गयी है, उन सभी आदरणीय विद्वानों के प्रति संस्कृतगङ्गा कृतज्ञता व्यक्त करती है।

* **'सप्तगङ्गम्'** को गङ्गा की तरह शुद्ध, शीतल और पावन बनाने के लिए प्रूफ संशोधन एवं सम्पादकीय कार्यों में मेरे सहयोगी रहे **शुभम ममगाई** (देहरादून) एवं **ब्रह्मा जी द्विवेदी** (हनुमना रीवा) का विशेष आभार, जिन्होंने मेरे परिश्रम एवं समय को कम करके इस गुरुतर कार्य के लिए अपना समय देते रहे। अपने इन दोनों मित्रों को हृदय से साधुवाद।

* इस **'सप्तगङ्गम्'** रूपी गङ्गा को संस्कृतधरा में लाने के लिए अनेक भागीरथों को तपस्या करनी पड़ी जिनमें से मुख्य रूप से प्रभाशंकर मिश्र, गौरवकुमार पाण्डेय, विनीत कुमार द्विवेदी, नीलोत्पलनाथ त्रिपाठी, D.K. सर, शिवम चतुर्वेदी, शंकरदत्त त्रिपाठी, कमलेश यादव, राजकुमार गुप्ता, यशवन्त यादव, सचिन राजोरिया, सौरभ चौबे, अरुणकुमार पाण्डेय 'निर्मोही सर', सुमन सिंह, ओमप्रकाश शुक्ल, कृष्णकुमार आदि का विशेष योगदान रहा है।

* **'सप्तगङ्गम्'** के कवरपेज की कल्पना अम्बिकेश प्रताप सिंह ने की इसका अक्षरसंयोजन सन्दीप एवं नितिन जी के द्वारा तथा मुद्रणकार्य राजकुमार गुप्ता (राजू पुस्तक केन्द्र) के सत्प्रयासों से सम्भव हो पाया, सभी सम्मानित जनों को कोटिशः धन्यवाद।

दिनाङ्क- 21 जून, 2021

अन्ताराष्ट्रिय योगविस

सम्पादक

सर्वज्ञभूषण

संस्कृतगङ्गा दारागञ्ज, प्रयागराज

TGT संस्कृत पाठ्यक्रम

संस्कृतसाहित्य–गद्य, पद्य एवं नाटक–अधोलिखित ग्रन्थों के निर्धारित अंशों के आधार पर शब्दार्थ, सूक्तियाँ, हिन्दी रूपान्तर, अन्वय, सुभाषित, शब्दों की व्याकरणात्मक टिप्पणी, पात्रों का चरित्र-चित्रण तथा ग्रन्थकर्ता का परिचय–इनसे सम्बद्ध बहुविकल्पीय प्रश्न परीक्षा में प्रष्टव्य होंगे।

- कादम्बरी (शुकनासोपदेश)
- शिवराजविजयम् (प्रथम नि:श्वास)
- किरातार्जुनीयम् (प्रथमसर्ग)
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (चतुर्थ अङ्क)
- उत्तररामचरितम् (तृतीय अङ्क)
- मेघदूतम् (सम्पूर्ण)
- नीतिशतकम् (सम्पूर्ण)

व्याकरण– डॉ० बाबूराम सक्सेना कृत ''संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका'' के आधार पर संज्ञाप्रकरण, सन्धि, समास, कारक, प्रत्याहारों का ज्ञान एवं प्रत्ययों का सामान्य परिचय।

शब्दरूप– अकारान्त, इकारान्त, उकारान्त, ऋकारान्त पुंलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग एवं नपुंसकलिङ्ग शब्दों का रूप।

सर्वनामरूप– सर्व, यत्, तद्, किम्, युष्मद्, अस्मद्, इदम्, अदस् सर्वनामों के रूप।

धातुरूप– भू, गम्, पठ्, पा, भी, श्रु, लभ्, हन्, दुह्, दा, दिव्, जन्, तुद्, प्रच्छ्, ब्रू तथा चुर् धातुओं के लट्, लोट्, ऌट्, लङ् और विधिलिङ् इन पाँचों लकारों में रूप।

संस्कृतसंख्या– एक से सौ तक की संख्याओं के संस्कृत-शब्दों का ज्ञान। पूरणी संख्याओं का ज्ञान

अनुवाद एवं निबन्ध–हिन्दी वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद। संस्कृत में पत्रलेखन एवं निबन्ध, संस्कृत सूक्तियों का ज्ञान, वाच्यपरिवर्तन, अशुद्धि परिमार्जन।

प्रशिक्षणात्मक-संस्कृत– संस्कृत प्रशिक्षण की दृष्टि से व्याकरण, अनुवाद, गद्य, पद्य आदि की पाठन विधियों का सामान्य परिचय।

संस्कृतसाहित्य का इतिहास– संस्कृत कवियों का सामान्य परिचय, प्रसिद्ध रचनायें एवं रचनाकार

विषयसूची

1. किरातार्जुनीयम् (प्रथमसर्ग)

श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीं
प्रजासु वृत्तिं यमयुङ्क्त वेदितुम्।
स वर्णिलिङ्गी विदितः समाययौ
युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचरः॥1॥

कृतप्रणामस्य महीं महीभुजे
जितां सपत्नेन निवेदयिष्यतः।
न विव्यथे तस्य मनो न हि प्रियं
प्रवक्तुमिच्छन्ति मृषा हितैषिणः॥2॥

द्विषां विघाताय विधातुमिच्छतो
रहस्यनुज्ञामधिगम्य भूभृतः।
स सौष्ठवौदार्यविशेषशालिनीं
विनिश्चितार्थामिति वाचमाददे॥3॥

क्रियासु युक्तैर्नृप! चारचक्षुषो
न वञ्चनीयाः प्रभवोऽनुजीविभिः।
अतोऽर्हसि क्षन्तुमसाधु साधु वा
हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः॥4॥

स किंसखा साधु न शास्ति योऽधिपं
हितान्न यः संशृणुते स किम्प्रभुः।
सदानुऽकूलेषु हि कुर्वते रतिं
नृपेष्वमात्येषु च सर्वसम्पदः॥5॥

निसर्गदुर्बोधमबोधविक्लवाः
क्व भूपतीनां चरितं क्व जन्तवः?
तवानुभावोऽयमवेदि यन्मया
निगूढतत्त्वं नयवर्त्म विद्विषाम्॥6॥

विशङ्कमानो भवतः पराभवं
नृपासनस्थोऽपि वनाधिवासिनः।
दुरोदरच्छद्मजितां समीहते
नयेन जेतुं जगतीं सुयोधनः॥7॥

तथापि जिह्मः स भवज्जिगीषया
तनोति शुभ्रं गुणसम्पदा यशः।
समुन्नयन्भूतिमनार्यसङ्गमाद्
वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः॥8॥

कृतारिषड्वर्गजयेन मानवीम्
अगम्यरूपां पदवीं प्रपित्सुना।
विभज्य नक्तन्दिवमस्ततन्द्रिणा
वितन्यते तेन नयेन पौरुषम्॥9॥

सखीनिव प्रीतियुजोऽनुजीविनः
समानमानान्सुहृदश्च बन्धुभिः।
स सन्ततं दर्शयते गतस्मयः
कृताधिपत्यामिव साधु बन्धुताम्॥10॥

असक्तमाराधयतो यथायथं
विभज्य भक्त्या समपक्षपातया।
गुणानुरागादिव सख्यमीयिवान्
न बाधतेऽस्य त्रिगणः परस्परम्॥11॥

निरत्ययं साम न दानवर्जितं
न भूरिदानं विरहय्य सत्क्रियाम्।
प्रवर्तते तस्य विशेषशालिनी
गुणानुरोधेन विना न सत्क्रिया॥12॥

वसूनि वाञ्छन्न वशी न मन्युना
स्वधर्म इत्येव निवृत्तकारणः।
गुरूपदिष्टेन रिपौ सुतेऽपि वा
निहन्ति दण्डेन स धर्मविप्लवम्॥13॥

विधाय रक्षान्परितः परेतरान्
अशङ्किताकारमुपैति शङ्कितः।
क्रियाऽपवर्गेष्वनुजीविसात्कृताः
कृतज्ञतामस्य वदन्ति सम्पदः॥14॥

अनारतं तेन पदेषु लम्भिता
विभज्य सम्यग्विनियोगसत्क्रियाः।
फलन्त्युपायाः परिबृंहितायती-
रुपेत्य सङ्घर्षमिवार्थसम्पदः॥15॥

अनेकराजन्यरथाश्वसंकुलं
तदीयमास्थाननिकेतनाजिरम्।
नयत्ययुग्मच्छदगन्धिरार्द्रतां
भृशं नृपोपायनदन्तिनां मदः॥16॥

सुखेन लभ्या दधतः कृषीवलै-
रकृष्टपच्या इव सस्यसम्पदः।
वितन्वति क्षेममदेवमातृका-
श्चिराय तस्मिन्कुरवश्चकासति॥17॥

उदारकीर्तेरुदयं दयावतः
प्रशान्तबाधं दिशतोऽभिरक्षया।
स्वयं प्रदुग्धेऽस्य गुणैरुपस्नुता
वसूपमानस्य वसूनि मेदिनी॥18॥

महौजसो मानधना धनार्चिता
धनुर्भृतः संयति लब्धकीर्तयः।
नसंहतास्तस्य नभिन्नवृत्तयः
प्रियाणि वाञ्छन्त्यसुभिः समीहितुम्
॥19॥

महीभृतां सच्चरितैश्चरैः क्रियाः
स वेद निःशेषमशेषितक्रियः।
महोदयैस्तस्य हितानुबन्धिभिः
प्रतीयते धातुरिवेहितं फलैः॥20॥

न तेन सज्यं क्वचिदुद्यतं धनुः
कृतं न वा कोपविजिह्ममाननम्।
गुणानुरागेण शिरोभिरुह्यते
नराधिपैर्माल्यमिवास्य शासनम्॥21॥

स यौवराज्ये नवयौवनोद्धतं
निधाय दुःशासनमिद्धशासनः।
मखेष्वखिन्नोऽनुमतः पुरोधसा
धिनोति हव्येन हिरण्यरेतसम्॥22॥

प्रलीनभूपालमपि स्थिरायति
प्रशासदावारिधि मण्डलं भुवः।
स चिन्तयत्येव भियस्त्वदेष्यती-
रहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता॥23॥

कथाप्रसङ्गेन जनैरुदाहृताद्
अनुस्मृताखण्डलसूनुविक्रमः।
तवाभिधानाद् व्यथते नताननः
स दुःसहान्मन्त्रपदादिवोरगः॥24॥

तदाशु कर्तुं त्वयि जिह्ममुद्यते
विधीयतां तत्र विधेयमुत्तरम्।
परप्रणीतानि वचांसि चिन्वतां
प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः॥25॥

इतीरयित्वा गिरमात्तसत्क्रिये
गतेऽथ पत्यौ वनसन्निवासिनाम्।
प्रविश्य कृष्णासदनं महीभुजा
तदाचचक्षेऽनुजसन्निधौ वचः॥26॥

निशम्य सिद्धिं द्विषतामपाकृती-
स्ततस्ततस्त्या विनियन्तुमक्षमा।
नृपस्य मन्युव्यवसायदीपिनी–
रुदाजहार द्रुपदात्मजा गिरः॥27॥

भवादृशेषु प्रमदाजनोदितं
भवत्यधिक्षेप इवानुशासनम्।
तथापि वक्तुं व्यवसाययन्ति मां
निरस्तनारीसमया दुराधयः॥28॥

अखण्डमाखण्डलतुल्यधामभि-
श्चिरं धृता भूपतिभिः स्ववंशजैः।
त्वयात्महस्तेन मही मदच्युता
मतङ्गजेन स्रगिवापवर्जिता॥29॥

व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवं
भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः।
प्रविश्य हि घ्नन्ति शठास्तथाविधान्
असंवृताङ्गान्निशिता इवेषवः॥30॥

गुणानुरक्तामनुरक्तसाधनः
कुलाभिमानी कुलजां नराधिपः।
परैस्त्वदन्यः क इवापहारयेत्
मनोरमामात्मवधूमिव श्रियम्॥31॥

भवन्तमेतर्हि मनस्विगर्हिते
विवर्त्तमानं नरदेव! वर्त्मनि।
कथं न मन्युर्ज्वलयत्युदीरितः
शमीतरुं शुष्कमिवाग्निरुच्छिखः॥32॥

अबन्ध्यकोपस्य विहन्तुरापदां
भवन्ति वश्याः स्वयमेव देहिनः।
अमर्षशून्येन जनस्य जन्तुना
न जातहार्देन न विद्विषादरः॥33॥

परिभ्रमँल्लोहितचन्दनोचितः
पदातिरन्तर्गिरि रेणुरूषितः।
महारथः सत्यधनस्य मानसं
दुनोति नो कच्चिदयं वृकोदरः॥34॥

विजित्य यः प्राज्यमयच्छदुत्तरान्
कुरूनकुप्यं वसु वासवोपमः।
स वल्कवासांसि तवाधुनाहरन्
करोति मन्युं न कथं धनञ्जयः॥35॥

वनान्तशय्याकठिनीकृताकृती
कचाचितौ विष्वगिवागजौ गजौ।
कथं त्वमेतौ धृतिसंयमौ यमौ
विलोकयन्नुत्सहसे न बाधितुम्॥36॥

इमामहं वेद न तावकीं धियं
विचित्ररूपाः खलु चित्तवृत्तयः।
विचिन्तयन्त्या भवदापदं परां
रुजन्ति चेतः प्रसभं ममाधयः॥37॥

पुराधिरूढः शयनं महाधनं
विबोध्यसे यः स्तुतिगीतिमङ्गलैः।
अदभ्रदर्भामधिशय्य स स्थलीं
जहासि निद्रामशिवैः शिवारुतैः॥38॥

पुरोपनीतं नृप! रामणीयकं
द्विजातिशेषेण यदेतदन्धसा।
तदद्य ते वन्यफलाशिनः परं
परैति कार्श्यं यशसा समं वपुः॥39॥

अनारतं यौ मणिपीठशायिनौ
अरञ्जयद्राजशिरः स्रजां रजः।
निषीदतस्तौ चरणौ वनेषु ते
मृगद्विजालूनशिखेषु बर्हिषाम्॥40॥

द्विषन्निमित्ता यदियं दशा ततः
समूलमुन्मूलयतीव मे मनः।
परैरपर्य्यासितवीर्य्यसम्पदां
पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम्॥41॥

विहाय शान्तिं नृप! धाम तत्पुनः
प्रसीद सन्धेहि वधाय विद्विषाम्।
व्रजन्ति शत्रूनवधूय निःस्पृहाः
शमेन सिद्धिं मुनयो न भूभृतः॥42॥

पुरःसरा धामवतां यशोधनाः
सुदुःसहं प्राप्य निकारमीदृशम्।
भवादृशाश्चेदधिकुर्वते रतिं
निराश्रया हन्त! हता मनस्विता॥43॥

अथ क्षमामेव निरस्तविक्रम-
श्चिराय पर्य्येषि सुखस्य साधनम्।
विहाय लक्ष्मीपतिलक्ष्मकार्मुकम्
जटाधरः सञ्जुहुधीह पावकम्॥44॥

न समयपरिरक्षणं क्षमं ते
निकृतिपरेषु परेषु भूरिधाम्नः।
अरिषु हि विजयार्थिनः क्षितीशा
विदधति सोपधि सन्धिदूषणानि॥45॥

विधिसमयनियोगाद्दीप्तिसंहारजिह्मं
शिथिलवसुमगाधे मग्नमापत्पयोधौ।
रिपुतिमिरमुदस्योदीयमानं दिनादौ
दिनकृतमिव लक्ष्मीस्त्वां समभ्येतु भूयः
॥46॥

॥ इति भारविकृतौ किरातार्जुनीये महाकाव्ये प्रथमः सर्गः॥

नोट- सम्पूर्ण किरातार्जुनीयम् (प्रथमसर्ग) में **वंशस्थ** छन्द है, 45 वें श्लोक में **पुष्पिताग्रा** एवं 46वें श्लोक में **मालिनी** छन्द है।

2. नीतिशतकम्

मंगलाचरण

दिक्कालाद्यनवच्छिन्नानन्तचिन्मात्रमूर्त्तये।
स्वानुभूत्येकमानाय नमः शान्ताय तेजसे॥1॥ (अनुष्टुप्)

1. अथ मूर्खपद्धतिः

बोद्धारो मत्सरग्रस्ताः प्रभवः स्मयदूषिताः।
अबोधोपहताश्चान्ये जीर्णमङ्गे सुभाषितम् ॥2॥ (अनुष्टुप्)

अज्ञः सुखमाराध्यः सुखतरमाराध्यते विशेषज्ञः।
ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रह्मापि नरं न रञ्जयति॥3॥ (आर्या)

प्रसह्य मणिमुद्धरेन्मकरवक्त्रदंष्ट्रान्तरात्
समुद्रमपि संतरेत्प्रचलदूर्मिमालाकुलम् ।
भुजङ्गमपि कोपितं शिरसि पुष्पवद्धारयेत्
न तु प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्तमाराधयेत् ॥4॥ (पृथ्वी)

लभेत सिकतासु तैलमपि यत्नतः पीडयन्
पिबेच्च मृगतृष्णिकासु सलिलं पिपासार्दितः।
कदाचिदपि पर्यटञ्छशविषाणमासादयेत्
न तु प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्तमाराधयेत् ॥5॥ (पृथ्वी)

व्यालं बालमृणालतन्तुभिरसौ रोद्धुं समुज्जृम्भते
छेत्तुं वज्रमणिं शिरीषकुसुमप्रान्तेन सन्नह्यते।
माधुर्यं मधुबिन्दुना रचयितुं क्षाराम्बुधेरीहते
मूर्खान्यः प्रतिनेतुमिच्छति बलात्सूक्तैः सुधास्यन्दिभिः॥6॥
(शार्दूलविक्रीडित)

स्वायत्तमेकान्तहितं विधात्रा
विनिर्मितं छादनमज्ञतायाः।
विशेषतः सर्वविदां समाजे
विभूषणं मौनमपण्डितानाम् ॥7॥ (उपजाति)

यदा किञ्चिज्ज्ञोऽहं द्विप इव मदान्धः समभवं
तदा सर्वज्ञोऽस्मीत्यभवदवलिप्तं मम मनः।
यदा किञ्चित्किञ्चिद् बुधजनसकाशादवगतं
तदा मूर्खोऽस्मीति ज्वर इव मदो मे व्यपगतः॥8॥ (शिखरिणी)

कृमिकुलचितं लालाक्लिन्नं विगन्धि जुगुप्सितं
निरुपमरसप्रीत्या खादन्खरास्थि निरामिषम् ।
सुरपतिमपि श्वा पार्श्वस्थं विलोक्य न शङ्कते
न हि गणयति क्षुद्रो जन्तुः परिग्रहफल्गुताम् ॥9॥ (हरिणी)

शिरः शार्वं स्वर्गात्पशुपतिशिरस्तः क्षितिधरं
महीध्रादुत्तुङ्गादवनिमवनेश्चापि जलधिम् ।
अधोऽधो गङ्गेयं पदमुपगता स्तोकमथवा
विवेकभ्रष्टानां भवति विनिपातः शतमुखः ॥10॥ (शिखरिणी)

शक्यो वारयितुं जलेन हुतभुक् छत्रेण सूर्यातपो
नागेन्द्रो निशिताङ्कुशेन समदो दण्डेन गोगर्दभौ।
व्याधिर्भेषजसंग्रहैश्च विविधैर्मन्त्रप्रयोगैर्विषं
सर्वस्यौषधमस्ति शास्त्रविहितं मूर्खस्य नास्त्यौषधम् ॥11॥

(शार्दूलविक्रीडित)

2. विद्वत्पद्धतिः

शास्त्रोपस्कृतशब्दसुन्दरगिरः शिष्यप्रदेयागमा
विख्याताः कवयो वसन्ति विषये यस्य प्रभोर्निर्धनाः।
तज्जाड्यं वसुधाधिपस्य सुधियस्त्वर्थं विनापीश्वराः
कुत्स्याः स्युः कुपरीक्षका हि मणयो यैरर्घतः पातिताः॥12॥

(शार्दूलविक्रीडित)

हर्तुर्याति न गोचरं किमपि शं पुष्णाति यत्सर्वदा-
प्यर्थिभ्यः प्रतिपाद्यमानमनिशं प्राप्नोति वृद्धिं पराम्।
कल्पान्तेष्वपि न प्रयाति निधनं विद्याख्यमन्तर्धनं
येषां तान्प्रति मानमुज्झत नृपाः! कस्तैः सह स्पर्धते ॥13॥

(शार्दूलविक्रीडित)

अधिगतपरमार्थान्पण्डितान्मावमंस्था-
स्तृणमिव लघुलक्ष्मीर्नैव तान्संरुणद्धि।
अभिनवमदलेखाश्यामगण्डस्थलानां
न भवति बिसतन्तुर्वारणं वारणानाम् ॥14॥ (मालिनी)

अम्भोजिनीवनविहारविलासमेव
हंसस्य हन्ति नितरां कुपितो विधाता।
न त्वस्य दुग्धजलभेदविधौ प्रसिद्धां
वैदग्ध्यकीर्त्तिमपहर्तुमसौ समर्थः॥15॥ (वसन्ततिलका)

केयूराणि न भूषयन्ति पुरुषं, हारा न चन्द्रोज्ज्वला
न स्नानं न विलेपनं न कुसुमं नालंकृता मूर्धजाः।
वाण्येका समलंकरोति पुरुषं या संस्कृता धार्यते
क्षीयन्ते खलु भूषणानि सततं वाग्भूषणं भूषणम् ॥16॥ (शार्दूल.)

विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तं धनं
विद्या भोगकरी यशः सुखकरी विद्या गुरूणां गुरुः।
विद्या बन्धुजनो विदेशगमने विद्या परा देवता
विद्या राजसु पूज्यते, नहि धनं विद्याविहीनः पशुः॥17॥(शार्दूल.)

क्षान्तिश्चेत्कवचेन किं किमरिभिः क्रोधोऽस्ति चेद्देहिनां
ज्ञातिश्चेदनलेन किं यदि सुहृद्दिव्यौषधैः किं फलम्।
किं सर्पैर्यदि दुर्जनाः किमु धनैर्विद्यानवद्या यदि
व्रीडा चेत्किमु भूषणैः सुकविता यद्यस्ति राज्येन किम्॥18॥ (शार्दूल.)

दाक्षिण्यं स्वजने दया परिजने शाठ्यं सदा दुर्जने
प्रीतिः साधुजने नयो नृपजने विद्वज्जने चार्जवम्।
शौर्यं शत्रुजने क्षमा गुरुजने कान्ताजने धृष्टता
ये चैवं पुरुषाः कलासु कुशलास्तेष्वेव लोकस्थितिः॥19॥ (शार्दूल.)

जाड्यं धियो हरति सिञ्चति वाचि सत्यं
मानोन्नतिं दिशति पापमपाकरोति।
चेतः प्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्तिं
सत्सङ्गतिः कथय किं न करोति पुंसाम् ॥20॥ (वसन्ततिलका)

जयन्ति ते सुकृतिनो रससिद्धाः कवीश्वराः।
नास्ति येषां यशःकाये जरामरणजं भयम् ॥21॥ (अनुष्टुप्)

3. मानशौर्य्यपद्धतिः

क्षुत्क्षामोऽपि जराकृशोऽपि शिथिलप्राणोऽपि कष्टां दशाम्
आपन्नोऽपि विपन्नदीधितिरपि प्राणेषु नश्यत्स्वपि।
मत्तेभेन्द्रविभिन्नकुम्भपिशितग्रासैकबद्धस्पृहः
किं जीर्णं तृणमत्ति मानमहतामग्रेसरः केसरी॥22॥ (शार्दूल.)

स्वल्पस्नायुवसावसेकमलिनं निर्मांसमप्यस्थिकं
श्वा लब्ध्वा परितोषमेति न तु तत्तस्य क्षुधाशान्तये।
सिंहो जम्बुकमङ्कमागतमपि त्यक्त्वा निहन्ति द्विपं
सर्वः कृच्छ्रगतोऽपि वाञ्छति जनः सत्त्वानुरूपं फलम् ॥23॥ (शार्दूल.)

लाङ्गूलचालनमधश्चरणावपातं
भूमौ निपत्य वदनोदरदर्शनं च।
श्वा पिण्डदस्य कुरुते गजपुङ्गवस्तु
धीरं विलोकयति चाटुशतैश्च भुङ्क्ते ॥24॥ (वसन्ततिलका)

परिवर्तिनि संसारे मृतः को वा न जायते।
स जातो येन जातेन याति वंशः समुन्नतिम् ॥25॥ (अनुष्टुप्)

कुसुमस्तबकस्येव द्वयी वृत्तिर्मनस्विनः।
मूर्ध्नि वा सर्वलोकस्य शीर्यते वन एव वा॥26॥ (अनुष्टुप्)

सन्त्यन्येऽपि बृहस्पतिप्रभृतयः संभाविताः पञ्चषा-
स्तान्प्रत्येष विशेषविक्रमरुची राहुर्न वैरायते।
द्वावेव ग्रसते दिवाकरनिशाप्राणेश्वरौ भास्वरौ
भ्रातः! पर्वणि पश्य दानवपतिः शीर्षावशेषाकृतिः ॥27॥ (शार्दूलविक्रीडित)

वहति भुवनश्रेणिं शेषः फणाफलकस्थितां
कमठपतिना मध्येपृष्ठं सदा स च धार्यते।
तमपि कुरुते क्रोडाधीनं पयोधिरनादरात्
अहह! महतां निःसीमानश्चरित्रविभूतयः ॥28॥ (हरिणी)

वरं पक्षच्छेदः समदमघवन्मुक्तकुलिश-
प्रहारैरुद्गच्छद्बहुलदहनोद्गारगुरुभिः।
तुषाराद्रेः सूनोरहह! पितरि क्लेशविवशे
न चासौ संपातः पयसि पयसां पत्युरुचितः ॥29॥ (शिखरिणी)

यदचेतनोऽपि पादैः स्पृष्टः प्रज्वलति सवितुरिनकान्तः।
तत्तेजस्वी पुरुषः परकृतनिकृतिं कथं सहते ॥30॥ (आर्या)

सिंहः शिशुरपि निपतति मदमलिनकपोलभित्तिषु गजेषु।
प्रकृतिरियं सत्त्ववतां न खलु वयस्तेजसो हेतुः॥31॥ (आर्या)

4. अर्थपद्धतिः

जातिर्यातु रसातलं गुणगणस्तत्राप्यधो गच्छता–
च्छीलं शैलतटात्पतत्वभिजनः संदह्यतां वह्निना।
शौर्ये वैरिणि वज्रमाशु निपतत्वर्थोऽस्तु नः केवलं
येनैकेन विना गुणास्तृणलवप्रायाः समस्ता इमे ॥32॥ (शार्दूलविक्रीडित)

यस्यास्ति वित्तं स नरः कुलीनः
स पण्डितः स श्रुतवान्गुणज्ञः।
स एव वक्ता स च दर्शनीयः
सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ति ॥33॥ (उपजाति)

दौर्मन्त्र्यान्नृपतिर्विनश्यति यतिः संगात्सुतो लालनाद्
विप्रोऽनध्ययनात्कुलं कुतनयाच्छीलं खलोपासनात्।
ह्रीर्मद्यादनवेक्षणादपि कृषिः स्नेहः प्रवासाश्रयान्
मैत्री चाप्रणयात्समृद्धिरनयात्त्यागप्रमादाद्धनम् ॥34॥ (शार्दूलविक्रीडित)

दानं भोगो नाशस्तिस्रो गतयो भवन्ति वित्तस्य।
यो न ददाति न भुङ्क्ते तस्य तृतीया गतिर्भवति ॥35॥ (आर्या)

मणिः शाणोल्लीढः समरविजयी हेतिदलितो
मदक्षीणो नागः शरदि सरितः श्यानपुलिनाः।
कलाशेषश्चन्द्रः सुरतमृदिता बालवनिता
तनिम्ना शोभन्ते गलितविभवाश्चार्थिषु नराः ॥36॥ (शिखरिणी)

परिक्षीणः कश्चित्स्पृहयति यवानां प्रसृतये
स पश्चात्सम्पूर्णः कलयति धरित्रीं तृणसमाम् ।
अतश्चानैकान्त्याद् गुरुलघुतयार्थेषु धनिनाम्
अवस्था वस्तूनि प्रथयति च संकोचयति च ॥37॥ (शिखरिणी)

राजन्! दुधुक्षसि यदि क्षितिधेनुमेनां
तेनाद्य वत्समिव लोकममुं पुषाण।
तस्मिंश्च सम्यगनिशं परिपोष्यमाणे
नानाफलं फलति कल्पलतेव भूमिः ॥38॥ (वसन्ततिलका)

सत्यानृता च परुषा प्रियवादिनी च
हिंस्रा दयालुरपि चार्थपरा वदान्या।
नित्यव्यया प्रचुरनित्यधनागमा च
वाराङ्गनेव नृपनीतिरनेकरूपा ॥39॥ (वसन्ततिलका)

आज्ञा कीर्तिः पालनं ब्राह्मणानां
दानं भोगो मित्रसंरक्षणं च।
येषामेते षड्गुणा न प्रवृत्ताः
कोऽर्थस्तेषां पार्थिवोपाश्रयेण ॥40॥ (शालिनी)

यद्धात्रा निजभालपट्टलिखितं स्तोकं महद्वा धनं
तत्प्राप्नोति मरुस्थलेऽपि नितरां मेरौ च नातोऽधिकम्।
तद्धीरो भव वित्तवत्सु कृपणां वृत्तिं वृथा मा कृथाः
कूपे पश्य पयोनिधावपि घटो गृह्णाति तुल्यं जलम् ॥41॥ (शार्दूलविक्रीडित)

5. दुर्जनपद्धतिः

अकरुणत्वमकारणविग्रहः परधने परयोषिति च स्पृहा।
सुजनबन्धुजनेष्वसहिष्णुता प्रकृतिसिद्धमिदं हि दुरात्मनाम् ॥42॥ (द्रुतविलम्बित)

दुर्जनः परिहर्तव्यो विद्ययालंकृतोऽपि सन् ।
मणिना भूषितः सर्पः किमसौ न भयङ्करः ॥43॥ (अनुष्टुप्)

जाड्यं ह्रीमति गण्यते व्रतरुचौ दम्भः शुचौ कैतवं
शूरे निर्घृणता मुनौ विमतिता दैन्यं प्रियालापिनि।
तेजस्विन्यवलिप्तता मुखरता वक्तर्यशक्तिः स्थिरे
तत्को नाम गुणो भवेत्स गुणिनां यो दुर्जनैर्नाङ्कितः॥44॥ (शार्दूलविक्रीडित)

लोभश्चेदगुणेन किं पिशुनता यद्यस्ति किं पातकैः
सत्यं चेत्तपसा च किं शुचि मनो यद्यस्ति तीर्थेन किम्।
सौजन्यं यदि किं गुणैः सुमहिमा यद्यस्ति किं मण्डनैः
सद्विद्या यदि किं धनैरपयशो यद्यस्ति किं मृत्युना॥45॥ (शार्दूल.)

शशी दिवसधूसरो गलितयौवना कामिनी
सरो विगतवारिजं मुखमनक्षरं स्वाकृतेः।
प्रभुर्धनपरायणः सततदुर्गतः सज्जनो
नृपाङ्गणगतः खलो मनसि सप्त शल्यानि मे ॥46॥ (पृथ्वी)

न कश्चिच्चण्डकोपानामात्मीयो नाम भूभुजाम् ।
होतारमपि जुह्वानं स्पृष्टो दहति पावकः ॥47॥ (अनुष्टुप्)

मौनान्मूकः प्रवचनपटुर्वातुलो जल्पको वा
धृष्टः पार्श्वे भवति च वसन्दूरतोऽप्यप्रगल्भः।
क्षान्त्या भीरुर्यदि न सहते प्रायशो नाभिजातः
सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः ॥48॥ (मन्दाक्रान्ता)

उद्भासिताखिलखलस्य विशृङ्खलस्य
प्राग्जातविस्तृतनिजाधमकर्मवृत्तेः।
दैवादवाप्तविभवस्य गुणद्विषोऽस्य
नीचस्य गोचरगतैः सुखमास्यते कैः ॥49॥ (वसन्ततिलका)

आरम्भगुर्वी क्षयिणी क्रमेण
लघ्वी पुरा वृद्धिमती च पश्चात् ।
दिनस्य पूर्वार्धपरार्धभिन्ना
छायेव मैत्री खलसज्जनानाम् ॥50॥ (उपजाति)

मृगमीनसज्जनानां तृणजलसंतोषविहितवृत्तीनाम्।
लुब्धकधीवरपिशुना निष्कारणवैरिणो जगति ॥51॥ (आर्या)

6. सुजनपद्धतिः

वाञ्छा सज्जनसङ्गतौ परगुणे प्रीतिर्गुरौ नम्रता
विद्यायां व्यसनं स्वयोषिति रतिर्लोकापवादाद्भयम्।
भक्तिः शूलिनि शक्तिरात्मदमने संसर्गमुक्तिः खले
येष्वेते निवसन्ति निर्मलगुणास्तेभ्यो महद्भ्यो नमः॥52॥
(शार्दूलविक्रीडित)

विपदि धैर्यमथाभ्युदये क्षमा
सदसि वाक्पटुता युधि विक्रमः।
यशसि चाभिरुचिर्व्यसनं श्रुतौ
प्रकृतिसिद्धमिदं हि महात्मनाम् ॥53॥ (द्रुतविलम्बित)

करे श्लाघ्यस्त्यागः शिरसि गुरुपादप्रणयिता
मुखे सत्या वाणी विजयि भुजयोर्वीर्यमतुलम् ।
हृदि स्वच्छा वृत्तिः श्रुतमधिगतं च श्रवणयो-
र्विनाप्यैश्वर्येण प्रकृतिमहतां मण्डनमिदम् ॥54॥ (शिखरिणी)

प्राणाघातान्निवृत्तिः परधनहरणे संयमः सत्यवाक्यं
काले शक्त्या प्रदानं युवतिजनकथामूकभावः परेषाम्।
तृष्णास्रोतोविभङ्गो गुरुषु च विनयः सर्वभूतानुकम्पा
सामान्यः सर्वशास्त्रेष्वनुपहतविधिः श्रेयसामेष पन्थाः॥55॥ (स्रग्धरा)

संपत्सु महतां चित्तं भवत्युत्पलकोमलम् ।
आपत्सु च महाशैलशिलासंघातकर्कशम् ॥56॥ (अनुष्टुप्)

प्रदानं प्रच्छन्नं गृहमुपगते सम्भ्रमविधिः,
प्रियं कृत्वा मौनं सदसि कथनं चाप्युपकृतेः।
अनुत्सेको लक्ष्म्यां निरभिभवसाराः परकथाः,
सतां केनोद्दिष्टं विषममसिधाराव्रतमिदम् ॥57॥ (शिखरिणी)

प्रिया न्याय्या वृत्तिर्मलिनमसुभङ्गेऽप्यसुकरं
त्वसन्तो नाभ्यर्थ्याः सुहृदपि न याच्यः कृशधनः।
विपद्युच्चैर्धैर्यं पदमनुविधेयं च महतां
सतां केनोद्दिष्टं विषममसिधाराव्रतमिदम् ॥58॥ (शिखरिणी)

संतप्तायसि संस्थितस्य पयसो नामापि न ज्ञायते
मुक्ताकारतया तदेव नलिनीपत्रस्थितं राजते।
स्वात्यां सागरशुक्तिमध्यपतितं तन्मौक्तिकं जायते
प्रायेणाधममध्यमोत्तमगुणः संसर्गतो जायते॥59॥ (शार्दूलविक्रीडित)

यः प्रीणयेत्सुचरितैः पितरं स पुत्रो
यद्भर्तुरेव हितमिच्छति तत्कलत्रम् ।
तन्मित्रमापदि सुखे च समक्रियं यद्
एतत्त्रयं जगति पुण्यकृतो लभन्ते॥60॥ (वसन्ततिलका)

नम्रत्वेनोन्नमन्तः परगुणकथनैः स्वान्गुणान्ख्यापयन्तः
स्वार्थान्संपादयन्तो विततपृथुतरारम्भयत्नाः परार्थे।
क्षान्त्यैवाक्षेपरूक्षाक्षरमुखरमुखान्दुर्जनान्दूषयन्तः
सन्तः साश्चर्यचर्या जगति बहुमताः कस्य नाभ्यर्चनीयाः ॥61॥ (स्रग्धरा)

7. परोपकारपद्धतिः

भवन्ति नम्रास्तरवः फलोद्गमैर्नवाम्बुभिर्दूरविलम्बिनो घनाः।
अनुद्धताः सत्पुरुषाः समृद्धिभिः स्वभाव एवैष परोपकारिणाम् ॥62॥ (वंशस्थ)

श्रोत्रं श्रुतेनैव न कुण्डलेन दानेन पाणिर्न तु कङ्कणेन।
विभाति कायः करुणापराणां परोपकारैर्न तु चन्दनेन ॥63॥ (उपजाति)

पद्माकरं दिनकरो विकचीकरोति
चन्द्रो विकासयति कैरवचक्रवालम्।
नाभ्यर्थितो जलधरोऽपि जलं ददाति
सन्तः स्वयं परहिते विहिताभियोगाः ॥64॥ (वसन्ततिलका)

एते सत्पुरुषाः परार्थघटकाः स्वार्थं परित्यज्य ये
सामान्यास्तु परार्थमुद्यमभृतः स्वार्थाविरोधेन ये।
तेऽमी मानुषराक्षसाः परहितं स्वार्थाय निघ्नन्ति ये
ये तु घ्नन्ति निरर्थकं परहितं ते के न जानीमहे ॥65॥
(शार्दूलविक्रीडित)

पापान्निवारयति योजयते हिताय
गुह्यं निगूहति गुणान्प्रकटीकरोति।
आपद्गतं च न जहाति ददाति काले
सन्मित्रलक्षणमिदं प्रवदन्ति सन्तः ॥66॥ (वसन्ततिलका)

क्षीरेणात्मगतोदकाय हि गुणा दत्ताः पुरा तेऽखिलाः
क्षीरोत्तापमवेक्ष्य तेन पयसा स्वात्मा कृशानौ हुतः।
गन्तुं पावकमुन्मनस्तदभवद् दृष्ट्वा तु मित्रापदं
युक्तं तेन जलेन शाम्यति सतां मैत्री पुनस्त्वीदृशी ॥67॥ (शार्दूल.)

इतः स्वपिति केशवः कुलमितस्तदीयद्विषाम्
इतश्च शरणार्थिनां शिखरिणां गणाः शेरते।
इतोऽपि वडवानलः सह समस्तसंवर्तकैः
अहो! विततमूर्जितं भरसहं च सिन्धोर्वपुः ॥68॥ (पृथ्वी)

जातः कूर्मः स एकः पृथुभुवनभरायार्पितं येन पृष्ठं
श्लाघ्यं जन्म ध्रुवस्य भ्रमति नियमितं यत्र तेजस्विचक्रम्।
संजातव्यर्थपक्षाः परहितकरणे नोपरिष्टान्न चाधो
ब्रह्माण्डोदुम्बरान्तर्मशकवदपरे जन्तवो जातनष्टाः॥69॥ (स्रग्धरा)

तृष्णां छिन्धि भज क्षमां जहि मदं पापे रतिं मा कृथाः
सत्यं ब्रूह्यनुयाहि साधुपदवीं सेवस्व विद्वज्जनम्।
मान्यान्मानय विद्विषोऽप्यनुनय प्रख्यापय प्रश्रयं
कीर्तिं पालय दुःखिते कुरु दयामेतत्सतां लक्षणम् ॥70॥ (शार्दूलविक्रीडित)

मनसि वचसि काये पुण्यपीयूषपूर्णा-
स्त्रिभुवनमुपकारश्रेणिभिः प्रीणयन्तः।
परगुणपरमाणून्पर्वतीकृत्य नित्यं
निजहृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः ॥71॥ (मालिनी)

८. धैर्यपद्धतिः

रत्नैर्महार्हैस्तुतुषुर्न देवा न भेजिरे भीमविषेण भीतिम्।
सुधां विना न प्रययुर्विरामं न निश्चितार्थाद्विरमन्ति धीराः॥72॥ (उपजाति)

प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः
प्रारभ्य विघ्नविहता विरमन्ति मध्याः।
विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः
प्रारब्धमुत्तमजना न परित्यजन्ति ॥73॥ (वसन्ततिलका)

क्वचित्पृथ्वीशय्यः क्वचिदपि च पर्यङ्कशयनः
क्वचिच्छाकाहारः क्वचिदपि च शाल्योदनरुचिः।
क्वचित्कन्थाधारी क्वचिदपि च दिव्याम्बरधरो
मनस्वी कार्यार्थी न गणयति दुःखं न च सुखम् ॥74॥ (शिखरिणी)

निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु
लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम् ।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा
न्याय्यात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः ॥75॥ (वसन्ततिलका)

कान्ताकटाक्षविशिखा न लुनन्ति यस्य
चित्तं न निर्दहति कोपकृशानुतापः।
कर्षन्ति भूरि विषयाश्च न लोभपाशै-
र्लोकत्रयं जयति कृत्स्नमिदं स धीरः ॥76॥ (वसन्ततिलका)

कदर्थितस्यापि हि धैर्यवृत्ते-
र्न शक्यते धैर्यगुणः प्रमार्ष्टुम् ।
अधोमुखस्यापि कृतस्य वह्ने-
र्नाधः शिखा याति कदाचिदेव ॥77॥ (उपजाति)

वरं शृङ्गोत्संगाद् गुरुशिखरिणः क्वापि विषमे
पतित्वायं कायः कठिनदृषदन्ते विगलितः।
वरं न्यस्तो हस्तः फणिपतिमुखे तीक्ष्णदशने
वरं वह्नौ पातस्तदपि न कृतः शीलविलयः ॥78॥ (शिखरिणी)

वह्निस्तस्य जलायते जलनिधिः कुल्यायते तत्क्षणा-
न्मेरुः स्वल्पशिलायते मृगपतिः सद्यः कुरङ्गायते।
व्यालो माल्यगुणायते विषरसः पीयूषवर्षायते
यस्याङ्गेऽखिललोकवल्लभतमं शीलं समुन्मीलति ॥79॥ (शार्दूलविक्रीडित)

छिन्नोऽपि रोहति तरुः क्षीणोऽप्युपचीयते पुनश्चन्द्रः।
इति विमृशन्तः सन्तः संतप्यन्ते न विप्लुता लोके ॥80॥ (आर्या)

ऐश्वर्यस्य विभूषणं सुजनता शौर्यस्य वाक्संयमो
ज्ञानस्योपशमः श्रुतस्य विनयो वित्तस्य पात्रे व्ययः।
अक्रोधस्तपसः क्षमा प्रभवितुर्धर्मस्य निर्व्याजता
सर्वेषामपि सर्वकारणमिदं शीलं परं भूषणम्॥81॥ (शार्दूलविक्रीडित)

९. दैवपद्धतिः (भाग्यपद्धतिः)

नेता यस्य बृहस्पतिः प्रहरणं वज्रं सुराः सैनिकाः
स्वर्गो दुर्गमनुग्रहः खलु हरेरैरावतो वारणः।
इत्यैश्वर्यबलान्वितोऽपि बलभिद्भग्नः परैः संगरे
तद्व्यक्तं ननु दैवमेव शरणं धिग्धिग्वृथा पौरुषम् ॥82॥ (शार्दूल.)

भग्नाशस्य करण्डपिण्डिततनोर्म्लानेन्द्रियस्य क्षुधा
कृत्वाखुर्विवरं स्वयं निपतितो नक्तं मुखे भोगिनः।
तृप्तस्तत्पिशितेन सत्वरमसौ तेनैव यातः पथा
स्वस्थास्तिष्ठत दैवमेव हि परं वृद्धौ क्षये कारणम् ॥83॥ (शार्दूलविक्रीडित)

यथा कन्दुकपातेनोत्पतत्यार्यः पतन्नपि।
तथा त्वनार्यः पतति मृत्पिण्डपतनं यथा ॥84॥ (अनुष्टुप्)

खल्वाटो दिवसेश्वरस्य किरणैः संतापिते मस्तके
वाञ्छन्देशमनातपं द्रुतगतिस्तालस्य मूलं गतः।
तत्राप्यस्य महाफलेन पतता भग्नं सशब्दं शिरः
प्रायो गच्छति यत्र भाग्यरहितस्तत्रैव यान्त्यापदः॥85॥ (शार्दूलविक्रीडित)

गजभुजङ्गविहङ्गमबन्धनं शशिदिवाकरयोर्ग्रहपीडनम्।
मतिमतां च विलोक्य दरिद्रतां विधिरहो बलवानिति मे मतिः॥86॥ (द्रुतविलम्बित)

सृजति तावदशेषगुणाकरं पुरुषरत्नमलंकरणं भुवः।
तदपि तत्क्षणभङ्गि करोति चेदहह कष्टमपण्डितता विधेः ॥87॥ (द्रुतविलम्बित)

अयममृतनिधानं नायकोऽप्योषधीनां
शतभिषगनुयातः शम्भुमूर्ध्नोऽवतंसः।
विरहयति न चैनं राजयक्ष्मा शशाङ्कं
हतविधि परिपाकः केन वा लङ्घनीयः ॥88॥ (मालिनी)

प्रियसख! विपद्दण्डाघातप्रपातपरम्परा-
परिचयचले चिन्ताचक्रे निधाय विधिः खलः।
मृदमिव बलात्पिण्डीकृत्य प्रगल्भकुलालवद्
भ्रमयति मनो नो जानीमः किमत्र विधास्यति ॥89॥ (हरिणी)

विरम विरमायासादस्माद्दुरध्यवसायतो
विपदि महतां धैर्यध्वंसं यदीक्षितुमीहसे।
अयि! जडविधे! कल्पापायेऽप्यपेतनिजक्रमाः
कुलशिखरिणः क्षुद्रा नैते न वा जलराशयः ॥90॥ (हरिणी)

दैवेन प्रभुणा स्वयं जगति यद्यस्य प्रमाणीकृतं
तत्तस्योपनमेन्मनागपि महान्नैवाश्रयः कारणम् ।
सर्वाशापरिपूरके जलधरे वर्षत्यपि प्रत्यहं
सूक्ष्मा एव पतन्ति चातकमुखे द्वित्राः पयोबिन्दवः॥91॥ (शार्दूलविक्रीडित)

10. कर्मपद्धतिः

नमस्यामो देवान्ननु हतविधेस्तेऽपि वशगा
विधिर्वन्द्यः सोऽपि प्रतिनियतकर्मैकफलदः।
फलं कर्मायत्तं यदि किममरैः किं च विधिना
नमस्तत्कर्मभ्यो विधिरपि न येभ्यः प्रभवति ॥92॥ (शिखरिणी)

ब्रह्मा येन कुलालवन्नियमितो ब्रह्माण्डभाण्डोदरे
विष्णुर्येन दशावतारगहने क्षिप्तो महासंकटे।
रुद्रो येन कपालपाणिपुटके भिक्षाटनं कारितः
सूर्यो भ्राम्यति नित्यमेव गगने तस्मै नमः कर्मणे ॥९३॥ (शार्दूलविक्रीडित)

या साधूंश्च खलान्करोति विदुषो मूर्खान्हितान्द्वेषिणः
प्रत्यक्षं कुरुते परोक्षममृतं हालाहलं तत्क्षणात् ।
तामाराधय सत्क्रियां भगवतीं भोक्तुं फलं वाञ्छितं
हे साधो! व्यसनैर्गुणेषु विपुलेष्वास्थां वृथा मा कृथाः ॥९४॥ (शार्दूल.)

शुभ्रं सद्म सविभ्रमा युवतयः श्वेतातपत्रोज्ज्वला
लक्ष्मीरित्यनुभूयते चिरमनुस्यूते शुभे कर्मणि।
विच्छिन्ने नितरामनङ्गकलहक्रीडात्रुटत्तन्तुकं
मुक्ताजालमिव प्रयाति झटिति भ्रश्यद्दिशो दृश्यताम् ॥९५॥ (शार्दूल.)

गुणवदगुणवद्वा कुर्वता कार्यजातं
परिणतिरवधार्या यत्नतः पण्डितेन।
अतिरभसकृतानां कर्मणामाविपत्ते-
र्भवति हृदयदाही शल्यतुल्यो विपाकः ॥९६॥ (मालिनी)

स्थाल्यां वैदूर्यमय्यां पचति तिलकणांश्चन्दनैरिन्धनौघैः
सौवर्णैर्लाङ्गलाग्रैर्विलिखति वसुधामर्कतूलस्य हेतोः।
कृत्वा कर्पूरखण्डान् वृतिमिह कुरुते कोद्रवाणां समन्तात्
प्राप्येमां कर्मभूमिं न चरति मनुजो यस्तपो मन्दभाग्यः॥९७॥ (स्रग्धरा)

नैवाकृतिः फलति नैव कुलं न शीलं
विद्यापि नैव न च यत्नकृतापि सेवा।
भाग्यानि पूर्वतपसा खलु सञ्चितानि
काले फलन्ति पुरुषस्य यथैव वृक्षाः ॥९८॥ (वसन्ततिलका)

मज्जत्वम्भसि यातु मेरुशिखरं शत्रूञ्जयत्वाहवे
वाणिज्यं कृषिसेवने च सकला विद्याः कलाः शिक्षताम्।
आकाशं विपुलं प्रयातु खगवत्कृत्वा प्रयत्नं परं
नाभाव्यं भवतीह कर्मवशतो भाव्यस्य नाशः कुतः ॥९९॥ (शार्दूलविक्रीडित)

भीमं वनं भवति तस्य पुरं प्रधानं
सर्वो जनः स्वजनतामुपयाति तस्य ।
कृत्स्ना च भूर्भवति सन्निधिरत्नपूर्णा
यस्यास्ति पूर्वसुकृतं विपुलं नरस्य ॥100॥ (वसन्ततिलका)

वने रणे शत्रुजलाग्निमध्ये
महार्णवे पर्वतमस्तके वा।
सुप्तं प्रमत्तं विषमस्थितं वा
रक्षन्ति पुण्यानि पुराकृतानि ॥101॥ (उपजाति)

परिशिष्ट

आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महारिपुः।
नास्त्युद्यमसमो बन्धुः कृत्वा यं नावसीदति ॥1॥ (अनुष्टुप्)

एकेनापि हि शूरेण पादाक्रान्तं महीतलम् ।
क्रियते भास्करेणेव स्फारस्फुरिततेजसा ॥2॥ (अनुष्टुप्)

को न याति वशं लोके मुखे पिण्डेन पूरितः।
मृदङ्गो मुखलेपेन करोति मधुरध्वनिम् ॥3॥ (अनुष्टुप्)

यदि नाम दैवगत्या जगदसरोजं कदाचिदपि जातम्।
अवकरनिकरं विकिरति तत्किं कृकवाकुरिव हंसः॥4॥ (आर्या)

एको देवः केशवो वा शिवो वा
ह्येकं मित्रं भूपतिर्वा यतिर्वा।
एको वासः पत्तने वा वने वा
एका नारी सुन्दरी वा दरी वा ॥5॥ (शालिनी)

परिचरितव्याः सन्तः यद्यपि कथयन्ति नो सदुपदेशम्।
यास्त्वेषां स्वैरकथास्ता एव भवन्ति शास्त्राणि ॥6॥ (आर्या)

वचो हि सत्यं परमं विभूषणं लज्जाङ्गनायाः कृशता कटौ च।
द्विजस्य विद्यैव पुनस्तथा क्षमा शीलं हि सर्वस्य नरस्य भूषणम्॥7॥ (उपजाति)

अग्राह्यं हृदयं यथैव वदनं यद्दर्पणान्तर्गतं
भावः पर्वतसूक्ष्ममार्गविषमः स्त्रीणां न विज्ञायते।
चित्तं पुष्करपत्रतोयतरलं विद्वद्भिराशंसितं
नारी नाम विषांकुरैरिव लता दोषैः समं वर्धिता॥8॥ (शार्दूलविक्रीडित)

क्षुद्राः सन्ति सहस्रशः स्वभरणव्यापारमात्रोद्यताः
स्वार्थो यस्य परार्थ एव स पुमानेकः सतामग्रणीः।
दुष्पूरोदरपूरणाय पिबति स्रोतः पतिं वाडवो
जीमूतस्तु निदाघसंभृतजगत्संतापविच्छित्तये॥9॥ (शार्दूल.)

किं कूर्मस्य भरव्यथा न वपुषि क्ष्मां न क्षिपत्येष यत्
किं वा नास्ति परिश्रमो दिनपतेरास्ते न यन्निश्चलः।
किन्त्वङ्गीकृतमुत्सृजन्स्वमनसा श्लाघ्यो जनो लज्जते
निर्वाहः प्रतिपन्नवस्तुषु सतामेतद्धि गोत्रव्रतम्॥10॥ (शार्दूलविक्रीडित)

येषां न विद्या न तपो न दानं
ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।
ते मर्त्यलोके भुवि भारभूता
मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति ॥11॥ (उपजाति)

वरं पर्वतदुर्गेषु भ्रान्तं वनचरैः सह।
न मूर्खजनसंपर्कः सुरेन्द्रभवनेष्वपि ॥12॥ (अनुष्टुप्)

सूनुः सच्चरितः सती प्रियतमा स्वामी प्रसादोन्मुखः
स्निग्धं मित्रमवञ्चकः परिजनो निष्क्लेशलेशं मनः।
आकारो रुचिरः, स्थिरश्च विभवो विद्यावदातं मुखं
तुष्टे विष्टपहारिणीष्टदहरौ संप्राप्यते देहिना ॥13॥ (शार्दूलविक्रीडित)

तानीन्द्रियाणि सकलानि तदेव कर्म
सा बुद्धिरप्रतिहता वचनं तदेव ।
अर्थोष्मणा विरहितः पुरुषः स एव
त्वन्यः क्षणेन भवतीति विचित्रमेतत् ॥14॥ (वसन्ततिलका)

त्वमेव चातकाधारोऽसीति केषां न गोचरः।
किमम्भोदवरास्माकं कार्पण्योक्तिं प्रतीक्षसे ॥15॥ (अनुष्टुप्)

रे रे चातक! सावधानमनसा मित्र! क्षणं श्रूयताम्
अम्भोदा बहवो हि सन्ति गगने सर्वेऽपि नैतादृशाः।
केचिद्वृष्टिभिरार्द्रयन्ति वसुधां गर्जन्ति केचिद्वृथा
यं यं पश्यसि तस्य तस्य पुरतो मा ब्रूहि दीनं वचः॥16॥ (शार्दूलविक्रीडित)

किं तेन हेमगिरिणा रजताद्रिणा वा
यत्राश्रिताश्च तरवस्तरवस्त एव।
मन्यामहे मलयमेव यदाश्रयेण
कङ्कोलनिम्बकुटजा अपि चन्दनाः स्युः ॥17॥ (वसन्ततिलका)

पातितोऽपि कराघातैरुत्पतत्येव कन्दुकः।
प्रायेण साधुवृत्तानामस्थायिन्यो विपत्तयः॥18॥ (अनुष्टुप्)

कर्मायत्तं फलं पुंसां बुद्धिः कर्मानुसारिणी।
तथापि सुधिया भाव्यं सुविचार्यैव कुर्वता ॥19॥ (अनुष्टुप्)

पत्रं नैव यदा करीरविटपे दोषो वसन्तस्य किं
नोलूकोऽप्यवलोकते यदि दिवा सूर्यस्य किं दूषणम्।
धारा नैव पतन्ति चातकमुखे मेघस्य किं दूषणम्
यत्पूर्वं विधिना ललाटलिखितं तन्मार्जितुं कः क्षमः?॥20॥ (शार्दूल.)

यां चिन्तयामि सततं मयि सा विरक्ता
साप्यन्यमिच्छति जनं स जनोऽन्यसक्तः
अस्मत्कृते च परिशुष्यति काचिदन्या
धिक्तां च तं च मदनं च इमां च मां च ॥21॥ (वसन्ततिलका)

॥ इति भर्तृहरि-विरचितं नीतिशतकं सम्पूर्णम् ॥

3. मेघदूतम् [पूर्वमेघः]

कश्चित्कान्ताविरहगुरुणा स्वाधिकारात्प्रमत्तः
शापेनास्तङ्गमितमहिमा वर्षभोग्येण भर्तुः।
यक्षश्चक्रे जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु
स्निग्धच्छायातरुषु वसतिं रामगिर्याश्रमेषु॥1॥

तस्मिन्नद्रौ कतिचिदबलाविप्रयुक्तः स कामी
नीत्वा मासान्कनकवलयभ्रंशरिक्तप्रकोष्ठः।
आषाढस्य प्रथमदिवसे मेघमाश्लिष्टसानुं
वप्रक्रीडापरिणतगजप्रेक्षणीयं ददर्श॥2॥

तस्य स्थित्वा कथमपि पुरः कौतुकाधानहेतो-
रन्तर्बाष्पश्चिरमनुचरो राजराजस्य दध्यौ।
मेघालोके भवति सुखिनोऽप्यन्यथावृत्तिचेतः
कण्ठाश्लेषप्रणयिनि जने किं पुनर्दूरसंस्थे॥3॥

प्रत्यासन्ने नभसि दयिताजीवितालम्बनार्थी
जीमूतेन स्वकुशलमयीं हारयिष्यन् प्रवृत्तिम्।
स प्रत्यग्रैः कुटजकुसुमैः कल्पितार्घाय तस्मै
प्रीतः प्रीतिप्रमुखवचनं स्वागतं व्याजहार॥4॥

धूमज्योतिःसलिलमरुतां सन्निपातः क्व मेघः
सन्देशार्थाः क्व पटुकरणैः प्राणिभिः प्रापणीयाः।
इत्यौत्सुक्यादपरिगणयन्गुह्यकस्तं ययाचे
कामार्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु॥5॥

जातं वंशे भुवनविदिते पुष्करावर्तकानां
जानामि त्वां प्रकृतिपुरुषं कामरूपं मघोनः।
तेनार्थित्वं त्वयि विधिवशाद् दूरबन्धुर्गतोऽहं
याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा॥6॥

सन्तप्तानां त्वमसि शरणं तत्पयोद! प्रियायाः
सन्देशं मे हर धनपतिक्रोधविश्लेषितस्य।
गन्तव्या ते वसतिरलका नाम यक्षेश्वराणां
बाह्योद्यानस्थितहरशिरश्चन्द्रिकाधौतहर्म्या॥7॥

त्वामारूढं पवनपदवीमुद्गृहीतालकान्ताः
प्रेक्षिष्यन्ते पथिकवनिताः प्रत्ययादाश्वसत्यः।
कः सन्नद्धे विरहविधुरां त्वय्युपेक्षेत जायां
न स्यादन्योऽप्यहमिव जनो यः पराधीनवृत्तिः॥8॥

तां चावश्यं दिवसगणनातत्परामेकपत्नी-
मव्यापन्नामविहतगतिर्द्रक्ष्यसि भ्रातृजायाम्।
आशाबन्धः कुसुमसदृशं प्रायशो ह्यङ्गनानां
सद्यःपाति प्रणयि हृदयं विप्रयोगे रुणद्धि॥9॥

मन्दं मन्दं नुदति पवनश्चानुकूलो यथा त्वां
वामश्चायं नदति मधुरं चातकस्ते सगन्धः।
गर्भाधानक्षणपरिचयान्नूनमाबद्धमालाः
सेविष्यन्ते नयनसुभगं खे भवन्तं बलाकाः॥10॥

कर्तुं यच्च प्रभवति महीमुच्छिलीन्ध्रामबन्ध्यां
तच्छ्रुत्वा ते श्रवणसुभगं गर्जितं मानसोत्काः।
आ कैलासाद्बिसकिसलयच्छेदपाथेयवन्तः
सम्पत्स्यन्ते नभसि भवतो राजहंसाः सहायाः॥11॥

आपृच्छस्व प्रियसखममुं तुङ्गमालिङ्ग्य शैलं
वन्द्यैः पुंसां रघुपतिपदैरङ्कितं मेखलासु।
काले काले भवति भवतो यस्य संयोगमेत्य
स्नेहव्यक्तिश्चिरविरहजं मुञ्चतो बाष्पमुष्णम् ॥12॥

मार्गं तावच्छृणु कथयतस्त्वत्प्रयाणानुरूपं
सन्देशं मे तदनु जलद श्रोष्यसि श्रोत्रपेयम्।
खिन्नः खिन्नः शिखरिषु पदं न्यस्य गन्तासि यत्र
क्षीणः क्षीणः परिलघु पयः स्रोतसां चोपभुज्य॥13॥

अद्रेः शृङ्गं हरति पवनः किंस्विदित्युन्मुखीभि-
र्दृष्टोत्साहश्चकितचकितं मुग्धसिद्धाङ्गनाभिः।
स्थानादस्मात्सरसनिचुलादुत्पतोदङ्मुखः खं
दिङ्नागानां पथि परिहरन् स्थूलहस्तावलेपान्।14॥

रत्नच्छायाव्यतिकर इव प्रेक्ष्यमेतत्पुरस्ताद्-
वल्मीकाग्रात्प्रभवति धनुष्खण्डमाखण्डलस्य।
येन श्यामं वपुरतितरां कान्तिमापत्स्यते ते
बर्हेणेव स्फुरितरुचिना गोपवेशस्य विष्णोः॥15॥

त्वय्यायत्तं कृषिफलमिति भ्रूविलासानभिज्ञैः
प्रीतिस्निग्धैर्जनपदवधूलोचनैः पीयमानः।
सद्यः सीरोत्कषणसुरभिक्षेत्रमारुह्य मालं
किञ्चित्पश्चाद् व्रज लघुगतिर्भूय एवोत्तरेण॥16॥

त्वामासारप्रशमितवनोपप्लवं साधु मूर्ध्ना
वक्ष्यत्यध्वश्रमपरिगतं सानुमानाम्रकूटः।
न क्षुद्रोऽपि प्रथमसुकृतापेक्षया संश्रयाय
प्राप्ते मित्रे भवति विमुखः किं पुनर्यस्तथोच्चैः॥17॥

छन्नोपान्तः परिणतफलद्योतिभिः काननाम्रै-
स्त्वय्यारूढे शिखरमचलः स्निग्धवेणीसवर्णे।
नूनं यास्यत्यमरमिथुनप्रेक्षणीयामवस्थां
मध्ये श्यामः स्तन इव भुवः शेषविस्तारपाण्डुः॥18॥

स्थित्वा तस्मिन्वनचरवधूभुक्तकुञ्जे मुहूर्तं
तोयोत्सर्गद्रुततरगतिस्तत्परं वर्त्म तीर्णः।
रेवां द्रक्ष्यस्युपलविषमे विन्ध्यपादे विशीर्णां
भक्तिच्छेदैरिव विरचितां भूतिमङ्गे गजस्य॥19॥

तस्यास्तिक्तैर्वनगजमदैर्वासितं वान्तवृष्टि-
र्जम्बूकुञ्जप्रतिहतरयं तोयमादाय गच्छेः।
अन्तःसारं घन! तुलयितुं नानिलः शक्ष्यति त्वां
रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय॥20॥

नीपं दृष्ट्वा हरितकपिशं केसरैरर्धरूढै-
राविर्भूतप्रथममुकुलाः कन्दलीश्चानुकच्छम्।
जग्ध्वारण्येष्वधिकसुरभिं गन्धमाघ्राय चोर्व्याः
सारङ्गास्ते जललवमुचः सूचयिष्यन्ति मार्गम् ॥21॥

अम्भोबिन्दुग्रहणचतुरांश्चातकान् वीक्षमाणाः
श्रेणीभूताः परिगणनया निर्दिशन्तो बलाकाः।
त्वामासाद्य स्तनितसमये मानयिष्यन्ति सिद्धाः
सोत्कम्पानि प्रियसहचरीसम्भ्रमालिङ्गितानि ॥22॥

उत्पश्यामि द्रुतमपि सखे! मत्प्रियार्थं यियासोः
कालक्षेपं ककुभसुरभौ पर्वते पर्वते ते।
शुक्लापाङ्गैः सजलनयनैः स्वागतीकृत्य केकाः
प्रत्युद्यातः कथमपि भवान् गन्तुमाशु व्यवस्येत् ॥23॥

पाण्डुच्छायोपवनवृतयः केतकैः सूचिभिन्नै—
र्नीडारम्भैर्गृहबलिभुजामाकुलग्रामचैत्याः।
त्वय्यासन्ने परिणतफलश्यामजम्बूवनान्ताः
संपत्स्यन्ते कतिपयदिनस्थायिहंसा दशार्णाः॥24॥

तेषां दिक्षु प्रथितविदिशालक्षणां राजधानीं
गत्वा सद्यः फलमविकलं कामुकत्वस्य लब्धा।
तीरोपान्तस्तनितसुभगं पास्यसि स्वादु यस्मात्
सभ्रूभङ्गं मुखमिव पयो वेत्रवत्याश्चलोर्मि॥25॥

नीचैराख्यं गिरिमधिवसेस्तत्र विश्रामहेतो-
स्त्वत्संपर्कात्पुलकितमिव प्रौढपुष्पैः कदम्बैः।
यः पण्यस्त्रीरतिपरिमलोद्गारिभिर्नागराणाम्
उद्दामानि प्रथयति शिलावेश्मभिर्यौवनानि॥ 26॥

विश्रान्तः सन्व्रज वननदीतीरजातानि सिञ्च-
न्नुद्यानानां नवजलकणैर्यूथिकाजालकानि।
गण्डस्वेदापनयनरुजाक्लान्तकर्णोत्पलानां
छायादानात्क्षणपरिचितः पुष्पलावीमुखानाम् ॥27॥

वक्रः पन्था यदपि भवतः प्रस्थितस्योत्तराशां
सौधोत्सङ्गप्रणयविमुखो मा स्म भूरुज्जयिन्याः।
विद्युद्दामस्फुरितचकितैस्तत्र पौराङ्गनानां
लोलापाङ्गैर्यदि न रमसे लोचनैर्वञ्चितोऽसि ॥28॥

वीचिक्षोभस्तनितविहगश्रेणिकाञ्चीगुणायाः
संसर्पन्त्याः स्खलितसुभगं दर्शितावर्तनाभेः।
निर्विन्ध्यायाः पथि भव रसाभ्यन्तरः सन्निपत्य
स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु ॥29॥

वेणीभूतप्रतनुसलिलासावतीतस्य सिन्धुः
पाण्डुच्छाया तटरुहतरुभ्रंशिभिर्जीर्णपर्णैः
सौभाग्यं ते सुभग विरहावस्थया व्यञ्जयन्ती
कार्श्यं येन त्यजति विधिना स त्वयैवोपपाद्यः॥30॥

प्राप्यावन्तीनुदयनकथाकोविदग्रामवृद्धान्
पूर्वोद्दिष्टामनुसर पुरीं श्रीविशालां विशालाम्।
स्वल्पीभूते सुचरितफले स्वर्गिणां गां गतानां
शेषैः पुण्यैर्हृतमिव दिवः कान्तिमत्खण्डमेकम्॥31॥

दीर्घीकुर्वन् पटु मदकलं कूजितं सारसानां
प्रत्यूषेषु स्फुटितकमलामोदमैत्रीकषायः।
यत्र स्त्रीणां हरति सुरतग्लानिमङ्गानुकूलः
शिप्रावातः प्रियतम इव प्रार्थनाचाटुकारः ॥32॥

हारांस्तारांस्तरलगुटिकान्कोटिशः शङ्खशुक्तीः
शष्पश्यामान्मरकतमणीनुन्मयूखप्ररोहान्।
दृष्ट्वा यस्यां विपणिरचितान् विद्रुमाणां च भङ्गान्
संलक्ष्यन्ते सलिलनिधयस्तोयमात्रावशेषाः ॥33॥

प्रद्योतस्य प्रियदुहितरं वत्सराजोऽत्र जह्रे
हैमं तालद्रुमवनमभूदत्र तस्यैव राज्ञः।
अत्रोद्भ्रान्तः किल नलगिरिः स्तम्भमुत्पाट्य दर्पा-
दित्यागन्तून् रमयति जनो यत्र बन्धूनभिज्ञः ॥34॥

पत्रश्यामा दिनकरहयस्पर्धिनो यत्र वाहाः
शैलोदग्रास्त्वमिव करिणो वृष्टिमन्तः प्रभेदात्।
योधाग्रण्यः प्रतिदशमुखं संयुगे तस्थिवांसः
प्रत्यादिष्टाभरणरुचयश्चन्द्रहासव्रणाङ्कैः॥35॥

जालोद्गीर्णैरुपचितवपुः केशसंस्कारधूपै-
र्बन्धुप्रीत्या भवनशिखिभिर्दत्तनृत्योपहारः।
हर्म्येष्वस्याः कुसुमसुरभिष्वध्वखेदं नयेथाः
लक्ष्मीं पश्यँल्ललितवनितापादरागाङ्कितेषु ॥36॥

भर्तुः कण्ठच्छविरिति गणैः सादरं वीक्ष्यमाणः
पुण्यं यायास्त्रिभुवनगुरोर्धाम चण्डीश्वरस्य।
धूतोद्यानं कुवलयरजोगन्धिभिर्गन्धवत्या-
स्तोयक्रीडानिरतयुवतिस्नानतिक्तैर्मरुद्भिः ॥37॥

अप्यन्यस्मिञ्जलधर! महाकालमासाद्य काले
स्थातव्यं ते नयनविषयं यावदत्येति भानुः।
कुर्वन् सन्ध्याबलिपटहतां शूलिनः श्लाघनीयाम्
आमन्द्राणां फलमविकलं लप्स्यसे गर्जितानाम् ॥38॥

पादन्यासैः क्वणितरशनास्तत्र लीलावधूतै
रत्नच्छायाखचितबलिभिश्चामरैः क्लान्तहस्ताः।
वेश्यास्त्वत्तो नखपदसुखान् प्राप्य वर्षाग्रबिन्दून्
आमोक्ष्यन्ते त्वयि मधुकरश्रेणिदीर्घान्कटाक्षान्॥39॥

पश्चादुच्चैर्भुजतरुवनं मण्डलेनाभिलीनः
सान्ध्यं तेजः प्रतिनवजपापुष्परक्तं दधानः।
नृत्यारम्भे हर पशुपतेरार्द्रनागाजिनेच्छां
शान्तोद्वेगस्तिमितनयनं दृष्टभक्तिर्भवान्या ॥40॥

गच्छन्तीनां रमणवसतिं योषितां तत्र नक्तं
रुद्धालोके नरपतिपथे सूचिभेद्यैस्तमोभिः।
सौदामन्या कनकनिकषस्निग्धया दर्शयोर्वीं
तोयोत्सर्गस्तनितमुखरो मा स्म भूर्विक्लवास्ताः॥41॥

तां कस्याञ्चिद्भवनवलभौ सुप्तपारावतायां
नीत्वा रात्रिं चिरविलसनात्खिन्नविद्युत्कलत्रः।
दृष्टे सूर्ये पुनरपि भवान् वाहयेदध्वशेषं
मन्दायन्ते न खलु सुहृदामभ्युपेतार्थकृत्याः ॥42॥

तस्मिन् काले नयनसलिलं योषितां खण्डितानां
शान्तिं नेयं प्रणयिभिरतो वर्त्म भानोस्त्यजाशु।
प्रालेयास्त्रं कमलवदनात्सोऽपि हर्तुं नलिन्याः
प्रत्यावृत्तस्त्वयि कररुधि स्यादनल्पाभ्यसूयः ॥43॥

गम्भीरायाः पयसि सरितश्चेतसीव प्रसन्ने
छायात्माऽपि प्रकृतिसुभगो लप्स्यते ते प्रवेशम्।
तस्मादस्याः कुमुदविशदान्यर्हसि त्वं न धैर्यान्
मोघीकर्तुं चटुलशफरोद्वर्तनप्रेक्षितानि॥44॥

तस्याः किञ्चित्करधृतमिव प्राप्तवानीरशाखं
हृत्वा नीलं सलिलवसनं मुक्तरोधोनितम्बम्।
प्रस्थानं ते कथमपि सखे लम्बमानस्य भावि
ज्ञातास्वादो विवृतजघनां को विहातुं समर्थः॥45॥

त्वन्निष्यन्दोच्छ्वसितवसुधागन्धसम्पर्करम्यः
स्त्रोतोरन्ध्रध्वनितसुभगं दन्तिभिः पीयमानः।
नीचैर्वास्यत्युपजिगमिषोर्देवपूर्वं गिरिं ते
शीतो वायुः परिणमयिता काननोदुम्बराणाम् ॥46॥

तत्र स्कन्दं नियतवसतिं पुष्पमेघीकृतात्मा
पुष्पासारैः स्नपयतु भवान्व्योमगङ्गाजलार्द्रैः।
रक्षाहेतोर्नवशशिभृता वासवीनां चमूनाम्
अत्यादित्यं हुतवहमुखे संभृतं तद्धि तेजः॥47॥

ज्योतिर्लेखावलयि गलितं यस्य बर्हं भवानी
पुत्रप्रेम्णा कुवलयदलप्रापि कर्णे करोति।
धौतापाङ्गं हरशशिरुचा पावकेस्तं मयूरं
पश्चादद्रिग्रहणगुरुभिर्गर्जितैर्नर्तयेथाः॥48॥

आराध्यैनं शरवणभवं देवमुल्लङ्घिताध्वा
सिद्धद्वन्द्वैर्जलकणभयाद्वीणिभिर्मुक्तमार्गः।
व्यालम्बेथाः सुरभितनयालम्भजां मानयिष्यन्
स्त्रोतोमूर्त्या भुवि परिणतां रन्तिदेवस्य कीर्तिम् ॥49॥

त्वय्यादातुं जलमवनते शार्ङ्गिणो वर्णचौरे
तस्याः सिन्धोः पृथुमपि तनुं दूरभावात्प्रवाहम्।
प्रेक्षिष्यन्ते गगनगतयो नूनमावर्ज्य दृष्टी-
रेकं मुक्तागुणमिव भुवः स्थूलमध्येन्द्रनीलम् ॥50॥

तामुत्तीर्य व्रज परिचितभ्रूलताविभ्रमाणां
पक्ष्मोत्क्षेपादुपरिविलसत्कृष्णसारप्रभाणाम्।
कुन्दक्षेपानुगमधुकरश्रीमुषामात्मबिम्बं
पात्रीकुर्वन्दशपुरवधूनेत्रकौतूहलानाम्॥51॥

ब्रह्मावर्तं जनपदमथच्छायया गाहमानः
क्षेत्रं क्षत्रप्रधनपिशुनं कौरवं तद्भजेथाः।
राजन्यानां शितशरशतैर्यत्र गाण्डीवधन्वा
धारापातैस्त्वमिव कमलान्यभ्यवर्षन्मुखानि॥52॥

हित्वा हालामभिमतरसां रेवतीलोचनाङ्कां
बन्धुप्रीत्या समरविमुखो लाङ्गली याः सिषेवे।
कृत्वा तासामभिगममपां सौम्य! सारस्वतीनाम्
अन्तः शुद्धस्त्वमपि भविता वर्णमात्रेण कृष्णः॥53॥

तस्माद्गच्छेरनुकनखलं शैलराजावतीर्णां
जह्नोः कन्यां सगरतनयस्वर्गसोपानपङ्क्तिम्।
गौरीवक्त्रभ्रुकुटिरचनां या विहस्येव फेनैः
शम्भोः केशग्रहणमकरोदिन्दुलग्नोर्मिहस्ता ॥54॥

तस्याः पातुं सुरगज इव व्योम्नि पश्चार्धलम्बी
त्वं चेदच्छस्फटिकविशदं तर्कयेस्तिर्यगम्भः।
संसर्पन्त्या सपदि भवतः स्त्रोतसिच्छाययाऽसौ
स्यादस्थानोपगतयमुनासङ्गमेवाऽभिरामा॥55॥

आसीनानां सुरभितशिलं नाभिगन्धैर्मृगाणां
तस्या एव प्रभवमचलं प्राप्य गौरं तुषारैः।
वक्ष्यस्यध्वश्रमविनयने तस्य शृङ्गे निषण्णः
शोभां शुभ्रत्रिनयनवृषोत्खातपङ्कोपमेयाम् ॥56॥

तं चेद्वायौ सरति सरलस्कन्धसङ्घट्टजन्मा
बाधेतोल्काक्षपितचमरीबालभारो दवाग्निः।
अर्हस्येनं शमयितुमलं वारिधारासहस्रै–
रापन्नार्तिप्रशमनफलाः सम्पदो ह्युत्तमानाम् ॥57॥

ये संरम्भोत्पतनरभसाः स्वाङ्गभङ्गाय तस्मिन्
मुक्ताध्वानं सपदि शरभा लङ्घयेयुर्भवन्तम्।
तान्कुर्वीथास्तुमुलकरकावृष्टिपातावकीर्णान्
के वा न स्युः परिभवपदं निष्फलारम्भयत्नाः॥58॥

तत्र व्यक्तं दृषदि चरणन्यासमर्धेन्दुमौलेः
शश्वत्सिद्धैरुपचितबलिं भक्तिनम्रः परीयाः।
यस्मिन् दृष्टे करणविगमादूर्ध्वमुद्धूतपापाः
कल्पिष्यन्ते स्थिरगणपदप्राप्तये श्रद्दधानाः ॥59॥

शब्दायन्ते मधुरमनिलैः कीचकाः पूर्यमाणाः
संसक्ताभिस्त्रिपुरविजयो गीयते किन्नरीभिः।
निर्ह्रादस्ते मुरज इव चेत्कन्दरेषु ध्वनिः स्यात्
सङ्गीतार्थो ननु पशुपतेस्तत्र भावी समग्रः॥60॥

प्रालेयाद्रेरुपतटमतिक्रम्य तांस्तान्विशेषान्
हंसद्वारं भृगुपतियशोवर्त्म यत्क्रौञ्चरन्ध्रम् ।
तेनोदीचीं दिशमनुसरेस्तिर्यगायामशोभी
श्यामः पादो बलिनियमनाभ्युद्यतस्येव विष्णोः॥61॥

गत्वा चोर्ध्वं दशमुखभुजोच्छ्वासितप्रस्थसन्धेः
कैलासस्य त्रिदशवनितादर्पणस्यातिथिः स्याः।
शृङ्गोच्छ्रायैः कुमुदविशदैर्यो वितत्य स्थितः खं
राशीभूतः प्रतिदिनमिव त्र्यम्बकस्याट्टहासः॥62॥

उत्पश्यामि त्वयि तटगते स्निग्धभिन्नाञ्जनाभे
सद्यः कृत्तद्विरददशनच्छेदगौरस्य तस्य।
शोभामद्रेः स्तिमितनयनप्रेक्षणीयां भवित्रीम्-
अंसन्यस्ते सति हलभृतो मेचके वाससीव॥63॥

हित्वा तस्मिन् भुजगवलयं शम्भुना दत्तहस्ता
क्रीडाशैले यदि च विचरेत् पादचारेण गौरी।
भङ्गीभक्त्या विरचितवपुः स्तम्भितान्तर्जलौघः
सोपानत्वं कुरु मणितटारोहणायाग्रयायी।64॥

तत्रावश्यं वलयकुलिशोद्घट्टनोद्गीर्णतोयं
नेष्यन्ति त्वां सुरयुवतयो यन्त्रधारागृहत्वम्।
ताभ्यो मोक्षस्तव यदि सखे घर्मलब्धस्य न स्यात्
क्रीडालोलाः श्रवणपरुषैर्गर्जितैर्भाययेस्ताः ॥65॥

हेमाम्भोजप्रसवि सलिलं मानसस्याददानः
कुर्वन्कामं क्षणमुखपटप्रीतिमैरावतस्य।
धुन्वन्कल्पद्रुमकिसलयान्यंशुकानीव वातै-
र्नानाचेष्टैर्जलद! ललितैर्निर्विशेस्तं नगेन्द्रम् ॥66॥

तस्योत्सङ्गे प्रणयिन इव स्रस्तगङ्गादुकूलां
न त्वं दृष्ट्वा न पुनरलकां ज्ञास्यसे कामचारिन्।
या वः काले वहति सलिलोद्गारमुच्चैर्विमाना
मुक्ताजालग्रथितमलकं कामिनीवाभ्रवृन्दम् ॥67॥

उत्तरमेघः

विद्युत्वन्तं ललितवनिताः सेन्द्रचापं सचित्राः
सङ्गीताय प्रहतमुरजाः स्निग्धगम्भीरघोषम्।
अन्तस्तोयं मणिमयभुवस्तुङ्गमभ्रंलिहाग्राः
प्रासादास्त्वां तुलयितुमलं यत्र तैस्तैर्विशेषैः।1॥

हस्ते लीलाकमलमलके बालकुन्दानुविद्धं
नीता लोध्रप्रसवरजसा पाण्डुतामानने श्रीः।
चूडापाशे नवकुरबकं चारु कर्णे शिरीषं
सीमन्ते च त्वदुपगमजं यत्र नीपं वधूनाम्॥2॥

यत्रोन्मत्तभ्रमरमुखराः पादपा नित्यपुष्पाः
हंसश्रेणीरचितरशना नित्यपद्मा नलिन्यः।
केकोत्कण्ठा भवनशिखिनो नित्यभास्वत्कलापा
नित्यज्योत्स्नाः प्रतिहततमोवृत्तिरम्याः प्रदोषाः॥3॥

आनन्दोत्थं नयनसलिलं यत्र नान्यैर्निमित्तै-
र्नान्यस्तापः कुसुमशरजादिष्टसंयोगसाध्यात्।
नाप्यन्यस्मात्प्रणयकलहाद्विप्रयोगोपपत्ति-
र्वित्तेशानां न च खलु वयो यौवनादन्यदस्ति॥4॥

यस्यां यक्षाः सितमणिमयान्येत्य हर्म्यस्थलानि
ज्योतिश्छायाकुसुमरचितान्युत्तमस्त्रीसहायाः
आसेवन्ते मधु रतिफलं कल्पवृक्षप्रसूतं
त्वद्गम्भीरध्वनिषु शनकैः पुष्करेष्वाहतेषु॥5॥

मन्दाकिन्याः सलिलशिशिरैः सेव्यमाना मरुद्भि-
र्मन्दाराणामनुतटरुहां छायया वारितोष्णाः।
अन्वेष्टव्यैः कनकसिकतामुष्टिनिक्षेपगूढैः
सङ्क्रीडन्ते मणिभिरमरप्रार्थिता यत्र कन्याः॥6॥

नीवीबन्धोच्छ्वसितशिथिलं यत्र बिम्बाधराणां
क्षौमं रागादनिभृतकरेष्वाक्षिपत्सु प्रियेषु।
अर्चिस्तुङ्गानभिमुखमपि प्राप्य रत्नप्रदीपान्
ह्रीमूढानां भवति विफलप्रेरणा चूर्णमुष्टिः॥7॥

नेत्रा नीताः सततगतिना यद्विमानाग्रभूमी-
रालेख्यानां स्वजलकणिकादोषमुत्पाद्य सद्यः।
शङ्कास्पृष्टा इव जलमुचस्त्वादृशा जालमार्गै-
र्धूमोद्गारानुकृतिनिपुणा जर्जरा निष्पतन्ति॥8॥

यत्र स्त्रीणां प्रियतमभुजालिङ्गनोच्छ्वासितानाम्
अङ्गग्लानिं सुरतजनितां तन्तुजालावलम्बाः।
त्वत्संरोधापगमविशदैश्चन्द्रपादैर्निशीथे
व्यालुम्पन्ति स्फुटजललवस्यन्दिनश्चन्द्रकान्ताः॥9॥

अक्षय्यान्तर्भवननिधयः प्रत्यहं रक्तकण्ठै-
रुद्गायद्भिर्धनपतियशः किन्नरैर्यत्र सार्धम्।
वैभ्राजाख्यं विबुधवनितावारमुख्यासहायाः
बद्धालापा बहिरुपवनं कामिनो निर्विशन्ति॥10॥

गत्युत्कम्पादलकपतितैर्यत्र मन्दारपुष्पैः
पत्रच्छेदैः कनककमलैः कर्णविभ्रंशिभिश्च।
मुक्ताजालैः स्तनपरिसरच्छिन्नसूत्रैश्च हारै-
र्नैशो मार्गः सवितुरुदये सूच्यते कामिनीनाम् ॥11॥

वासश्चित्रं मधु नयनयोर्विभ्रमादेशदक्षं
पुष्पोद्भेदं सह किसलयैर्भूषणानां विकल्पान्।
लाक्षारागं चरणकमलन्यासयोग्यं च यस्याम्
एकः सूते सकलमबलामण्डनं कल्पवृक्षः॥12॥

पत्रश्यामा दिनकरहयस्पर्धिनो यत्र वाहाः
शैलोदग्रास्त्वमिव करिणो वृष्टिमन्तः प्रभेदात्।
योधाग्रण्यः प्रतिदशमुखं संयुगे तस्थिवांसः
प्रत्यादिष्टाभरणरुचयश्चन्द्रहासव्रणाङ्कैः॥13॥

मत्वा देवं धनपतिसखं यत्र साक्षाद्वसन्तं
प्रायश्चापं न वहति भयान्मन्मथः षट्पदज्यम्।
सभ्रूभङ्गप्रहितनयनैः कामिलक्ष्येष्वमोघै-
स्तस्यारम्भश्चतुरवनिताविभ्रमैरेव सिद्धः॥14॥

तत्रागारं धनपतिगृहानुत्तरेणास्मदीयं
दूराल्लक्ष्यं सुरपतिधनुश्चारुणा तोरणेन।
यस्योपान्ते कृतकतनयः कान्तया वर्धितो मे
हस्तप्राप्यस्तबकनमितो बालमन्दारवृक्षः ॥15॥

वापी चास्मिन् मरकतशिलाबद्धसोपानमार्गा
हैमैश्छन्ना विकचकमलैः स्निग्धवैदूर्यनालैः।
यस्यास्तोये कृतवसतयो मानसं सन्निकृष्टं
नाध्यास्यन्ति व्यपगतशुचस्त्वामपि प्रेक्ष्य हंसाः॥16॥

तस्यास्तीरे रचितशिखरः पेशलैरिन्द्रनीलैः
क्रीडाशैलः कनककदलीवेष्टनप्रेक्षणीयः।
मद्गेहिन्या प्रिय इति सखे चेतसा कातरेण
प्रेक्ष्योपान्तस्फुरिततडितं त्वां तमेव स्मरामि ॥17॥

रक्ताशोकश्चलकिसलयः केसरश्चात्र कान्तः
प्रत्यासन्नौ कुरबकवृतेर्माधवीमण्डपस्य।
एकः सख्यास्तव सह मया वामपादाभिलाषी
काङ्क्षत्यन्यो वदनमदिरां दोहदच्छद्मनास्याः ॥18॥

तन्मध्ये च स्फटिकफलका काञ्चनी वासयष्टि-
र्मूले बद्धा मणिभिरनतिप्रौढवंशप्रकाशैः।
तालैः शिञ्जावलयसुभगैर्नर्तितः कान्तया मे
यामध्यास्ते दिवसविगमे नीलकण्ठः सुहृद् वः॥19॥

एभिः साधो! हृदयनिहितैर्लक्षणैर्लक्षयेथा
द्वारोपान्ते लिखितवपुषौ शङ्खपद्मौ च दृष्ट्वा।
क्षामच्छायं भवनमधुना मद्वियोगेन नूनं
सूर्यापाये न खलु कमलं पुष्यति स्वामभिख्याम्॥20॥

गत्वा सद्यः कलभतनुतां शीघ्रसम्पातहेतोः
क्रीडाशैले प्रथमकथिते रम्यसानौ निषण्णः।
अर्हस्यन्तर्भवनपतितां कर्तुमल्पाल्पभासं
खद्योतालीविलसितनिभां विद्युदुन्मेषदृष्टिम्॥21॥

तन्वी श्यामा शिखरिदशना पक्वबिम्बाधरोष्ठी
मध्ये क्षामा चकितहरिणी प्रेक्षणा निम्ननाभिः।
श्रोणीभारादलसगमना स्तोकनम्रा स्तनाभ्यां
या तत्र स्याद्युवतिविषये सृष्टिराद्येव धातुः॥22॥

तां जानीथाः परिमितकथां जीवितं मे द्वितीयं
दूरीभूते मयि सहचरे चक्रवाकीमिवैकाम्।
गाढोत्कण्ठां गुरुषु दिवसेष्वेषु गच्छत्सु बालां
जातां मन्ये शिशिरमथितां पद्मिनीं वाऽन्यरूपाम्॥23॥

नूनं तस्याः प्रबलरुदितोच्छूननेत्रं प्रियाया
निःश्वासानामशिशिरतया भिन्नवर्णाधरोष्ठम्।
हस्तन्यस्तं मुखमसकलव्यक्ति लम्बालकत्वात्
इन्दोर्दैन्यं त्वदनुसरणक्लिष्टकान्तेर्बिभर्ति॥24॥

आलोके ते निपतति पुरा सा बलिव्याकुला वा
मत्सादृश्यं विरहतनु वा भावगम्यं लिखन्ती।
पृच्छन्ती वा मधुरवचनां सारिकां पञ्जरस्थां
कच्चिद्भर्तुः स्मरसि रसिके ! त्वं हि तस्य प्रियेति॥25॥

उत्सङ्गे वा मलिनवसने सौम्य! निक्षिप्य वीणां
मद्गोत्राङ्कं विरचितपदं गेयमुद्गातुकामा।
तन्त्रीमार्द्रां नयनसलिलैः सारयित्वा कथञ्चिद्
भूयो भूयः स्वयमपि कृतां मूर्च्छनां विस्मरन्ती॥26॥

शेषान्मासान् विरहदिवसस्थापितस्यावधेर्वा
विन्यस्यन्ती भुवि गणनया देहलीदत्तपुष्पैः।
मत्सङ्गं वा हृदयनिहितारम्भमास्वादयन्ती
प्रायेणैते रमणविरहेष्वङ्गनानां विनोदाः॥27॥

सव्यापारामहनि न तथा पीडियेन्मद्वियोगः
शङ्के रात्रौ गुरुतरशुचं निर्विनोदां सखीं ते।
मत्सन्देशैः सुखयितुमलं पश्य साध्वीं निशीथे
तामुन्निद्रामवनिशयनां सौधवातायनस्थः॥28॥

आधिक्षामां विरहशयने सन्निषण्णैकपार्श्वां
प्राचीमूले तनुमिव कलामात्रशेषा हिमांशोः।
नीता रात्रिः क्षण इव मया सार्धमिच्छारतैर्या
तामेवोष्णैर्विरहमहतीमश्रुभिर्यापयन्तीम् ॥29॥

पादानिन्दोरमृतशिशिराञ्जालमार्गप्रविष्टान्
पूर्वप्रीत्या गतमभिमुखं संनिवृत्तं तथैव।
चक्षुः खेदात्सलिलगुरुभिः पक्ष्मभिश्छादयन्तीं
साभ्रेऽह्नीव स्थलकमलिनीं न प्रबुद्धां न सुप्ताम् ॥30॥

निःश्वासेनाधरकिसलयक्लेशिना विक्षिपन्तीं
शुद्धस्नानात्परुषमलकं नूनमागण्डलम्बम्।
मत्सम्भोगः कथमुपनयेत्स्वप्नजोऽपीति निद्राम्
आकङ्क्षन्तीं नयनसलिलोत्पीडरुद्धावकाशाम्॥31॥

आद्ये बद्धा विरहदिवसे या शिखा दाम हित्वा
शापस्यान्ते विगलितशुचा तां मयोद्वेष्टनीयाम्।
स्पर्शक्लिष्टामयमितनखेनासकृत्सारयन्तीं
गण्डाभोगात्कठिनविषमामेकवेणीं करेण॥32॥

सा संन्यस्ताभरणमबला पेशलं धारयन्ती
शय्योत्सङ्गे निहितमसकृद् दुःखदुःखेन गात्रम्।
त्वामप्यस्त्रं नवजलमयं मोचयिष्यत्यवश्यं
प्रायः सर्वो भवति करुणावृत्तिरार्द्रान्तरात्मा॥33॥

जाने सख्यास्तव मयि मनः संभृतस्नेहमस्मात्
इत्थम्भूतां प्रथमविरहे तामहं तर्कयामि।
वाचालं मां न खलु सुभगंमन्यभावः करोति
प्रत्यक्षं ते निखिलमचिराद् भ्रातरुक्तं मया यत्॥34।

रुद्धापाङ्गप्रसरमलकैरञ्जनस्नेहशून्यं
प्रत्यादेशादपि च मधुनो विस्मृतभ्रूविलासम्।
त्वय्यासन्ने नयनमुपरिस्पन्दि शङ्के मृगाक्ष्या
मीनक्षोभाच्चलकुवलयश्रीतुलामेष्यतीति॥35॥

वामश्चास्याः कररुहपदैर्मुच्यमानो मदीयै-
र्मुक्ताजालं चिरपरिचितं त्याजितो दैवगत्या।
सम्भोगान्ते मम समुचितो हस्तसंवाहनानां
यास्यत्यूरुः सरसकदलीस्तम्भगौरश्चलत्वम् ॥36॥

तस्मिन् काले जलद यदि सा लब्धनिद्रासुखा स्याद्
अन्वास्यैनां स्तनितविमुखो याममात्रं सहस्व।
मा भूदस्याः प्रणयिनि मयि स्वप्नलब्धे कथञ्चित्
सद्यः कण्ठच्युतभुजलताग्रन्थि गाढोपगूढम् ॥37॥

तामुत्थाप्य स्वजलकणिकाशीतलेनानिलेन
प्रत्याश्वस्तां सममभिनवैर्जालकैर्मालतीनाम्।
विद्युद्गर्भः स्तिमितनयनां त्वत्सनाथे गवाक्षे
वक्तुं धीरः स्तनितवचनैर्मानिनीं प्रक्रमेथाः॥38॥

भर्तुर्मित्रं प्रियमविधवे! विद्धि मामम्बुवाहं
तत्संदेशैर्हृदयनिहितैरागतं त्वत्समीपम् ।
यो वृन्दानि त्वरयति पथि श्राम्यतां प्रोषितानां
मन्द्रस्निग्धैर्ध्वनिभिरबलावेणिमोक्षोत्सुकानि॥39॥

इत्याख्याते पवनतनयं मैथलीवोन्मुखी सा
त्वामुत्कण्ठोच्छ्वसितहृदया वीक्ष्य सम्भाव्य चैवम्।
श्रोष्यत्यस्मात्परमवहिता सौम्य!सीमन्तिनीनां
कान्तोदन्तः सुहृदुपनतः संगमात् किञ्चिदूनः॥40॥

तामायुष्मन्मम च वचनादात्मनश्चोपकर्तुं
ब्रूया एवं तव सहचरो रामगिर्याश्रमस्थः।
अव्यापन्नः कुशलमबले पृच्छति त्वां वियुक्तः
पूर्वाभाष्यं सुलभविपदां प्राणिनामेतदेव॥41॥

अङ्गेनाङ्गं प्रतनु तनुना गाढतप्तेन तप्तं
सास्रेणाश्रुद्रुतमविरतोत्कण्ठमुत्कण्ठितेन।
उष्णोच्छ्वासं समधिकतरोच्छ्वासिना दूरवर्ती
संकल्पैस्तैर्विशति विधिना वैरिणा रुद्धमार्गः ॥42॥

शब्दाख्येयं यदपि किल ते यः सखीनां पुरस्तात्
कर्णे लोलः कथयितुमभूदाननस्पर्शलोभात् ।
सोऽतिक्रान्तः श्रवणविषयं लोचनाभ्यामदृश्य–
स्त्वामुत्कण्ठाविरचितपदं मन्मुखेनेदमाह॥43॥

श्यामास्वङ्गं चकितहरिणीप्रेक्षणे दृष्टिपातं
वक्त्रच्छायां शशिनि शिखिनां बर्हभारेषु केशान्।
उत्पश्यामि प्रतनुषु नदीवीचिषु भ्रूविलासान्
हन्तैकस्मिन् क्वचिदपि न ते चण्डि!सादृश्यमस्ति॥44॥

त्वामालिख्य प्रणयकुपितां धातुरागैः शिलायाम्
आत्मानं ते चरणपतितं यावदिच्छामि कर्तुम् ।
अस्रैस्तावन्मुहुरुपचितैर्दृष्टिरालुप्यते मे
क्रूरस्तस्मिन्नपि न सहते सङ्गमं नौ कृतान्तः ॥45॥

मामाकाशप्रणिहितभुजं निर्दयाश्लेषहेतो-
र्लब्धायास्ते कथमपि मया स्वप्नसन्दर्शनेषु।
पश्यन्तीनां न खलु बहुशो न स्थलीदेवतानां
मुक्तास्थूलास्तरुकिसलयेष्वश्रुलेशाः पतन्ति॥46॥

भित्त्वा सद्यः किसलयपुटान्देवदारुद्रुमाणां
ये तत्क्षीरस्रुतिसुरभयो दक्षिणेन प्रवृत्ताः।
आलिङ्ग्यन्ते गुणवति! मया तै तुषाराद्रिवाताः
पूर्वं स्पृष्टं यदि किल भवेदङ्गमेभिस्तवेति ॥47॥

सङ्क्षिप्येत क्षण इव कथं दीर्घयामा त्रियामा
सर्वावस्थास्वहरपि कथं मन्दमन्दातपं स्यात् ।
इत्थं चेतश्चटुलनयने दुर्लभप्रार्थनं मे
गाढोष्माभिः कृतमशरणं त्वद्वियोगव्यथाभिः॥48॥

नन्वात्मानं बहुविगणयन्नात्मनैवावलम्बे
तत्कल्याणि! त्वमपि नितरां मा गमः कातरत्वम्।
कस्यात्यन्तं सुखमुपनतं दुःखमेकान्ततो वा
नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण॥49॥

शापान्तो मे भुजगशयनादुत्थिते शार्ङ्गपाणौ
शेषान्मासान्गमयचतुरो लोचने मीलयित्वा।
पश्चादावां विरहगुणितं तं तमात्माभिलाषं
निर्वेक्ष्यावः परिणतशरच्चन्द्रिकासु क्षपासु ॥50॥

भूयश्चाह त्वमपि शयने कण्ठलग्ना पुरा मे
निद्रां गत्वा किमपि रुदती सस्वरं विप्रबुद्धा।
सान्तर्हासं कथितमसकृत्पृच्छतश्च त्वया मे
दृष्टः स्वप्ने कितव रमयन् कामपि त्वं मयेति॥51॥

एतस्मान्मां कुशलिनमभिज्ञानदानाद्विदित्वा
मा कौलीनादसितनयने मय्यविश्वासिनी भूः।
स्नेहानाहुः किमपि विरहे ध्वंसिनस्ते त्वभोगाद्
इष्टे वस्तुन्युपचितरसाः प्रेमराशीभवन्ति॥52॥

आश्वास्यैवं प्रथमविरहोदग्रशोकां सखीं ते
शैलादाशु त्रिनयनवृषोत्खातकूटान्निवृत्तः।
साभिज्ञानप्रहितकुशलैस्तद्वचोभिर्ममापि
प्रातः कुन्दप्रसवशिथिलं जीवितं धारयेथाः॥53॥

कच्चित्सौम्य ! व्यवसितमिदं बन्धुकृत्यं त्वया मे
प्रत्यादेशान्न खलु भवतो धीरतां कल्पयामि।
निःशब्दोऽपि प्रदिशसि जलं याचितश्चातकेभ्यः
प्रत्युक्तं हि प्रणयिषु सतामीप्सितार्थक्रियैव॥54॥

एतत्कृत्वा प्रियमनुचितप्रार्थनावर्तिनो मे
सौहार्दाद्वा विधुर इति वा मय्यनुक्रोशबुद्ध्या।
इष्टान् देशान् जलद ! विचर प्रावृषा संभृतश्री-
र्मा भूदेवं क्षणमपि च ते विद्युता विप्रयोगः॥55॥

॥ इति कालिदास-विरचितं मेघदूतं सम्पूर्णम् ॥

नोट- सम्पूर्ण मेघदूत में मन्दाक्रान्ता छन्द है।

4. अभिज्ञानशाकुन्तलम् (चतुर्थ अङ्क)

अभिज्ञानशाकुन्तलम् का मङ्गलाचरण

या सृष्टिः स्त्रष्टुराद्या वहति विधिहुतं या हविर्या च होत्री
ये द्वे कालं विधत्तः श्रुतिविषयगुणा या स्थिता व्याप्य विश्वम्।
यामाहुः सर्वबीजप्रकृतिरिति यया प्राणिनः प्राणवन्तः
प्रत्यक्षाभिः प्रपन्नस्तनुभिरवतु वस्ताभिरष्टाभिरीशः॥1॥ (स्रग्धरा)

हिन्दी - जो विधाता की सर्वप्रथम सृष्टि है (अर्थात् जलरूप मूर्ति), जो विधिपूर्वक हवन की गई हवि को (देवताओं के पास) ले जाती है (अर्थात् अग्निरूप मूर्ति), जो होता है (अर्थात् यजमानरूप मूर्ति),जो दो समय का निर्माण करती है (अर्थात् जो दिन और रात्रि को बनाती हैं सूर्य और चन्द्ररूपी मूर्तियाँ), शब्द जिसका गुण है और जो विश्व में व्याप्त होकर विद्यमान है (अर्थात् आकाशरूप मूर्ति), जिसको (विद्वान्) समस्त बीजों का कारण कहते हैं (अर्थात् पृथ्वी रूप मूर्ति) और जिससे सभी प्राणी जीवित रहते हैं (अर्थात् वायुरूप मूर्ति), उन प्रत्यक्ष आठ मूर्तियों से युक्त ईश्वर (शिव) आप लोगों की रक्षा करें ।।1।।

चतुर्थोऽङ्कः

(ततः प्रविशतः कुसुमावचयं नाट्यन्त्यौ सख्यौ।)

1. **अनसूया** - हला प्रियंवदे! यद्यपि गान्धर्वेण विधिना निर्वृत्तकल्याणा शकुन्तलाऽनुरूपभर्तृगामिनी संवृत्तेति निर्वृतं मे हृदयम्, तथाप्येतावच्चिन्तनीयम्।
2. **प्रियंवदा** - कथमिव?
3. **अनसूया** - अद्य स राजर्षिरिष्टिं परिसमाप्यर्षिभिर्विसर्जित आत्मनो नगरं प्रविश्यान्तःपुरसमागत इतोगतं वृत्तान्तं स्मरति वा न वेति।
4. **प्रियंवदा** - विस्रब्धा भव। न तादृशा आकृतिविशेषा गुणविरोधिनो भवन्ति। तात इदानीमिमं वृत्तान्तं श्रुत्वा न जाने किं प्रतिपत्स्यत इति।
5. **अनसूया** - यथाऽहं पश्यामि, तथा तस्यानुमतं भवेत्।
6. **प्रियंवदा** - कथमिव?
7. **अनसूया** - गुणवते कन्यका प्रतिपादनीयेत्ययं तावत् प्रथमः संकल्पः। तं यदि दैवमेव सम्पादयति नन्वप्रयासेन कृतार्थो गुरुजनः।
8. **प्रियंवदा** - (पुष्पभाजनं विलोक्य) सखि, अवचितानि बलिकर्मपर्याप्तानि कुसुमानि।

9. **अनसूया** - ननु सख्याः शकुन्तलायाः सौभाग्यदेवताऽर्चनीया।
10. **प्रियंवदा** - युज्यते।

(इति तदेव कर्माभिनयतः।)

(नेपथ्ये)

11. अयमहं भोः।
12. **अनसूया** - (कर्णं दत्त्वा) सखि, अतिथीनामिव निवेदितम्।
13. **प्रियंवदा** - ननूटजसंनिहिता शकुन्तला।
14. **अनसूया** - अद्य पुनर्हृदयेनासंनिहिता। अलमेतावद्भिः कुसुमैः।

(इति प्रस्थिते)

(नेपथ्ये)

15. आः, अतिथिपरिभाविनि!

विचिन्तयन्ती यमनन्यमानसा
तपोधनं वेत्सि न मामुपस्थितम् ।
स्मरिष्यति त्वां न स बोधितोऽपि सन्
कथां प्रमत्तः प्रथमं कृतामिव ॥1॥ (वंशस्थ)

16. **प्रियंवदा** - हा धिक्, हा धिक्। अप्रियमेव संवृत्तम्।

कस्मिन्नपि पूजार्हेऽपराद्धा शून्यहृदया शकुन्तला। (पुरोऽवलोक्य) न खलु यस्मिन् कस्मिन्नपि। एष दुर्वासाः सुलभकोपो महर्षिः। तथा शप्त्वा वेगबलोत्फुल्लया दुर्वारया गत्या प्रतिनिवृत्तः।

17. **अनसूया** - कोऽन्यो हुतवहाद् दग्धुं प्रभवति। गच्छ,पादयोः प्रणम्य निवर्तयैनं यावदहमर्घोदकमुपकल्पयामि।
18. **प्रियंवदा** - तथा।

(इति निष्क्रान्ता)

19. **अनसूया** - (पदान्तरे स्खलितं निरूप्य) अहो, आवेगस्खलितया गत्या प्रभ्रष्टं ममाग्रहस्तात् पुष्पभाजनम्।

(इति पुष्पोच्चयं रूपयति।)

(प्रविश्य)

20. **प्रियंवदा** - सखि, प्रकृतिवक्रः स कस्यानुनयं प्रतिगृह्णाति। किमपि पुनः सानुक्रोशः कृतः।

21. अनसूया - (सस्मितम्) तस्मिन् बह्वेतदपि। कथय।

22. प्रियंवदा - यदा निवर्तितुं नेच्छति तदा विज्ञापितो मया। भगवन्, प्रथम इति प्रेक्ष्याविज्ञाततपःप्रभावस्य दुहितृजनस्य भगवतैकोऽपराधो मर्षयितव्य इति।

23. अनसूया - ततस्ततः।

24. प्रियंवदा - ततो न मे वचनमन्यथाभवितुमर्हति, किं त्वभिज्ञानाभरणदर्शनेन शापो निवर्तिष्यत इति मन्त्रयमाण एवान्तर्हितः।

25. अनसूया - शक्यमिदानीमाश्वसितुम्। अस्ति तेन राजर्षिणा संप्रस्थितेन स्वनामधेयाङ्कितमङ्गुलीयकं स्मरणीयमिति स्वयं पिनद्धम्। तस्मिन् स्वाधीनोपाया शकुन्तला भविष्यति।

26. प्रियंवदा - सखि, एहि। देवकार्यं तावद् निर्वर्तयावः।

(इति परिक्रामतः)

27. प्रियंवदा - (विलोक्य) अनसूये, पश्य तावत्। वामहस्तोपहितवदनाऽऽलिखितेव प्रियसखी। भर्तृगतया चिन्तयात्मानमपि नैषा विभावयति। किं पुनरागन्तुकम्।

28. अनसूया - प्रियंवदे, द्वयोरेव नौ मुख एष वृत्तान्तस्तिष्ठतु। रक्षितव्या खलु प्रकृतिपेलवा प्रियसखी।

29. प्रियंवदा - को नामोष्णोदकेन नवमालिकां सिञ्चति।

(इत्युभे निष्क्रान्ते।)

विष्कम्भकः।

(ततः प्रविशति सुप्तोत्थितः शिष्यः।)

30. (क) शिष्यः- वेलोपलक्षणार्थमादिष्टोऽस्मि तत्रभवता प्रवासादुपावृत्तेन काश्यपेन। प्रकाशं निर्गतस्तावदवलोकयामि कियदवशिष्टं रजन्या इति। (परिक्रम्यावलोक्य च) हन्त, प्रभातम्। तथाहि -

यात्येकतोऽस्तशिखरं पतिरोषधीनाम्
आविष्कृतोऽरुणपुरः सर एकतोऽर्कः।
तेजोद्वयस्य युगपद्व्यसनोदयाभ्यां
लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु ॥2॥ (वसन्ततिलका)

30. (ख) अपि च -

अन्तर्हिते शशिनि सैव कुमुद्वती मे
दृष्टिं न नन्दयति संस्मरणीयशोभा।
इष्टप्रवासजनितान्यबलाजनस्य
दुःखानि नूनमतिमात्रसुदुःसहानि ॥3॥ (वसन्ततिलका)

(प्रविश्यापटीक्षेपेण)

31. अनसूया - यद्यपि नाम विषयपराङ्मुखस्य जनस्यैतन्न विदितं तथापि तेन राज्ञा शकुन्तलायामनार्यमाचरितम्।

32. शिष्यः - यावदुपस्थितां होमवेलां गुरवे निवेदयामि।

(इति निष्क्रान्तः।)

33. अनसूया- प्रतिबुद्धाऽपि किं करिष्यामि। न मे उचितेष्वपि निजकरणीयेषु हस्तपादं प्रसरति। काम इदानीं सकामो भवतु, येनासत्यसन्धे जने शुद्धहृदया सखी पदं कारिता । अथवा दुर्वाससः शाप एष विकारयति। अन्यथा कथं स राजर्षिस्तादृशानि मन्त्रयित्वैतावतः कालस्य लेखमात्रमपि न विसृजति। तदितोऽभिज्ञानमङ्गुलीयकं तस्य विसृजावः। दुःखशीले तपस्विजने कोऽभ्यर्थ्यताम्। ननु सखीगामी दोष इति व्यसिताऽपि न पारयामि प्रवासप्रतिनिवृत्तस्य तातकाश्यपस्य दुष्यन्तपरिणीतामापन्नसत्त्वां शकुन्तलां निवेदयितुम्। इत्थंगतेऽस्माभिः किं करणीयम्।

(प्रविश्य)

34. प्रियंवदा - (सहर्षम्) सखि, त्वरस्व त्वरस्व शकुन्तलायाः प्रस्थानकौतुकं निर्वर्तयितुम्।

35. अनसूया - सखि, कथमेतत्।

36. प्रियंवदा - शृणु । इदानीं सुखशयितप्रच्छिका शकुन्तलासकाशं गताऽस्मि।

37. अनसूया - ततस्ततः।

38. प्रियंवदा - तावदेनां लज्जावनतमुखीं परिष्वज्य तातकाश्यपेनैवमभिनन्दितम्। दिष्ट्या धूमाकुलितदृष्टेरपि यजमानस्य पावक एवाहुतिः पतिता। वत्से,सुशिष्यपरिदत्ता विद्येवाशोचनीयासि संवृत्ता। अद्यैव ऋषिरक्षितां त्वां भर्तुः सकाशं विसर्जयामीति।

39. अनसूया - अथ केन सूचितस्तातकाश्यपस्य वृत्तान्तः।

40. प्रियंवदा - अग्निशरणं प्रविष्टस्य शरीरं विना छन्दोमय्या वाण्या।

41. अनसूया - (सविस्मयम्) कथमिव।

42. प्रियंवदा - (संस्कृतमाश्रित्य)

दुष्यन्तेनाहितं तेजो दधानां भूतये भुवः।
अवेहि तनयां ब्रह्मन्नग्निगर्भां शमीमिव ॥4॥ (अनुष्टुप्)

43. अनसूया - (प्रियंवदामाश्लिष्य) सखि, प्रियं मे। किन्त्वद्यैव शकुन्तला नीयत इत्युत्कण्ठासाधारणं परितोषमनुभवामि।

44. प्रियंवदा - सखि, आवां तावदुत्कण्ठां विनोदयिष्यावः। सा तपस्विनी निर्वृता भवतु।

45. अनसूया - तेन ह्येतस्मिश्चूतशाखावलम्बिते नारिकेलसमुद्गक एतन्निमित्तमेव कालान्तरक्षमा निक्षिप्ता मया केसरमालिका। तदिमां हस्तसंनिहितां कुरु। यावदहमपि तस्यै गोरोचनां, तीर्थमृत्तिकां, दूर्वाकिसलयानीति मङ्गलसमालम्भनानि विरचयामि।

46. प्रियंवदा - तथा क्रियताम्।

(अनसूया निष्क्रान्ता। प्रियंवदा नाट्येन सुमनसो गृह्णाति।)

(नेपथ्ये)

47. गौतमि, आदिश्यन्तां शार्ङ्गरवमिश्राः शकुन्तलानयनाय।

48. प्रियंवदा - (कर्णं दत्त्वा) अनसूये, त्वरस्व त्वरस्व। एते खलु हस्तिनापुरगामिन ऋषयः शब्दाय्यन्ते।

(प्रविश्य समालम्भनहस्ता)

49. अनसूया - सखि, एहि। गच्छावः

(इति परिक्रामतः)

50. प्रियंवदा - (विलोक्य) एषा सूर्योदय एव शिखामज्जिता प्रतीष्टनीवारहस्ताभिः स्वस्तिवाचनिकाभिस्तापसीभिरभिनन्द्यमाना शकुन्तला तिष्ठति। उपसर्पाव एनाम्। (इत्युपसर्पतः)

(ततः प्रविशति यथोद्दिष्टव्यापारा आसनस्था शकुन्तला)

51. तापसीनामन्यतमा - (शकुन्तलां प्रति) जाते, भर्तुर्बहुमानसूचकं महादेवीशब्दं लभस्व।

52. द्वितीया - वत्से, वीरप्रसविनी भव।

53. तृतीया - वत्से, भर्तुर्बहुमता भव।

(इत्याशिषो दत्त्वा गौतमीवर्जं निष्क्रान्ताः)

54. सख्यौ - (उपसृत्य) सखि, सुखमज्जनं ते भवतु।

55. शकुन्तला - स्वागतं मे सख्योः। इतो निषीदतम्।

56. उभे - (मङ्गलपात्राण्यादाय, उपविश्य) हला, सज्जा भव। यावत्ते

मङ्गलसमालम्भनं विरचयावः।

57. शकुन्तला - इदमपि बहु मन्तव्यम्। दुर्लभमिदानीं मे सखीमण्डनं भविष्यति।
(इति बाष्पं विसृजति)

58. उभे - सखि, उचितं न ते मङ्गलकाले रोदितुम्।
(इत्यश्रूणि प्रमृज्य नाट्येन प्रसाधयतः।)

59. प्रियंवदा - आभरणोचितं रूपमाश्रमसुलभैः प्रसाधनैर्विप्रकार्यते।
(प्रविश्योपायनहस्तावृषिकुमारकौ)

60. उभौ - इदमलंकरणम्। अलंक्रियतामत्रभवती।
(सर्वा विलोक्य विस्मिताः)

61. गौतमी - वत्स नारद, कुत एतत्।

62. प्रथमः - तातकाश्यपप्रभावात्।

63. गौतमी - किं मानसी सिद्धिः।

64. द्वितीयः - न खलु। श्रूयताम्। तत्रभवता वयमाज्ञप्ताः
शकुन्तलाहेतोर्वनस्पतिभ्यः कुसुमान्याहरतेति। तत इदानीम्-

क्षौमं केनचिदिन्दुपाण्डु तरुणा माङ्गल्यमाविष्कृतं
निष्ठ्यूतश्चरणोपरागसुभगो लाक्षारसः केनचित् ।
अन्येभ्यो वनदेवताकरतलैरापर्वभागोत्थितै -
र्दत्तान्याभरणानि नः किसलयोद्भेदप्रतिद्वन्द्विभिः ॥5॥ (शार्दूल.)

65. प्रियंवदा - (शकुन्तलां विलोक्य) हला, अनयाऽभ्युपपत्त्या सूचिता ते भर्तुर्गेहेऽनुभवितव्या राजलक्ष्मीः।
(शकुन्तला व्रीडां रूपयति।)

66. प्रथमः - गौतम, एह्येहि। अभिषेकोत्तीर्णाय काश्यपाय वनस्पतिसेवां निवेदयावः।

67. द्वितीयः - तथा। (इति निष्क्रान्तौ।)

68. सख्यौ - अये, अनुपयुक्तभूषणोऽयं जनः। चित्रकर्मपरिचयेनाङ्गेषु त आभरणविनियोगं कुर्वः।

69. शकुन्तला - जाने वां नैपुणम्।
(उभे नाट्येनालंकुरुतः।)
(ततः प्रविशति स्नानोत्तीर्णः काश्यपः)

70. काश्यपः -

यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया
कण्ठः स्तम्भितबाष्पवृत्तिकलुषश्चिन्ताजडं दर्शनम्।
वैक्लव्यं मम तावदीदृशमिदं स्नेहादरण्यौकसः
पीड्यन्ते गृहिणः कथं नु तनयाविश्लेषदुःखैर्नवैः ॥6॥ (शार्दूल.)

(इति परिक्रामति।)

71. सख्यौ - हला शकुन्तले, अवसितमण्डनाऽसि। परिधत्स्व साम्प्रतं क्षौमयुगलम्।

(शकुन्तलोत्थाय परिधत्ते।)

72. गौतमी - जाते, एष त आनन्दपरिवाहिणा चक्षुषा परिष्वजमान इव गुरुरुपस्थितः। आचारं तावत् प्रतिपद्यस्व।

73. शकुन्तला - (सव्रीडम्) तात, वन्दे।

74. काश्यपः - वत्से, -

ययातेरिव शर्मिष्ठा भर्तुर्बहुमता भव।
सुतं त्वमपि सम्राजं सेव पूरुमवाप्नुहि ॥7॥ (अनुष्टुप्)

75. गौतमी - भगवन्, वरः खल्वेषः। नाशीः।

76. काश्यपः - वत्से, इतः सद्योहुतानग्नीन् प्रदक्षिणीकुरुष्व।

(सर्वे परिक्रामन्ति।)

77. काश्यपः - (ऋक्छन्दसाऽऽशास्ते।) वत्से,

अमी वेदिं परितः क्लृप्तधिष्ण्याः
समिद्वन्तः प्रान्तसंस्तीर्णदर्भाः।
अपघ्नन्तो दुरितं हव्यगन्धै -
र्वैतानास्त्वां वह्नयः पावयन्तु ॥8॥ (वैदिक-त्रिष्टुप्)

प्रतिष्ठस्वेदानीम्। (सदृष्टिक्षेपम्) क्व ते शार्ङ्गरवमिश्राः।

(प्रविश्य)

78. शिष्यः - भगवन्, इमे स्मः।

79. काश्यपः - भगिन्यास्ते मार्गमादेशय।

80. शार्ङ्गरवः - इत इतो भवती। (सर्वे परिक्रामन्ति।)

81 काश्यपः (क). भो भोः संनिहितास्तपोवनतरवः।

पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं युष्मास्वपीतेषु या
नादत्ते प्रियमण्डनाऽपि भवतां स्नेहेन या पल्लवम् ।
आद्ये वः कुसुमप्रसूतिसमये यस्या भवत्युत्सवः
सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम् ॥9॥ (शार्दूल.)
(कोकिलरवं सूचयित्वा।)

81. (ख). अनुमतगमना शकुन्तला
तरुभिरियं वनवासबन्धुभिः।
परभृतविरुतं कलं यथा
प्रतिवचनीकृतमेभिरीदृशम् ॥10॥ (अपरवक्त्र)
(आकाशे)

82. रम्यान्तरः कमलिनीहरितैः सरोभि-
श्छायाद्रुमैर्नियमितार्कमयूखतापः।
भूयात् कुशेशयरजोमृदुरेणुरस्याः
शान्तानुकूलपवनश्च शिवश्च पन्थाः ॥11॥ (वसन्ततिलका)
(सर्वे सविस्मयमाकर्णयन्ति।)

83. गौतमी - जाते, ज्ञातिजनस्निग्धाभिरनुज्ञातगमनाऽसि तपोवनदेवताभिः। प्रणम भगवतीः।

84. शकुन्तला- (सप्रणामं परिक्रम्य। जनान्तिकम्) हला प्रियंवदे, आर्यपुत्रदर्शनोत्सुकाया अप्याश्रमपदं परित्यजन्त्या दुःखेन मे चरणौ पुरतः प्रवर्तेते।

85. प्रियंवदा - न केवलं तपोवनविरहकातरा सख्येव। त्वयोपस्थितवियोगस्य तपोवनस्यापि तावत् समवस्था दृश्यते।

उद्गलितदर्भकवला मृग्यः परित्यक्तनर्तना मयूराः।
अपसृतपाण्डुपत्रा मुञ्चन्त्यश्रूणीव लताः ॥12॥ (आर्या)

86. शकुन्तला - (स्मृत्वा) तात, लताभगिनीं वनज्योत्स्नां तावदामन्त्रयिष्ये।

87. काश्यपः - अवैमि ते तस्यां सोदर्यास्नेहम्। इयं तावद् दक्षिणेन।

88. शकुन्तला - (उपेत्य लतामालिङ्ग्य) वनज्योत्स्ने, चूतसंगताऽपि मां प्रत्यालिङ्गेतोगताभिः शाखाबाहुभिः। अद्यप्रभृति दूरपरिवर्तिनी ते खलु भविष्यामि।

89. काश्यपः -

संकल्पितं प्रथममेव मया तवार्थे
भर्तारमात्मसदृशं सुकृतैर्गता त्वम् ।
चूतेन संश्रितवती नवमालिकेयम्
अस्यामहं त्वयि च सम्प्रति वीतचिन्तः॥13॥ (वसन्ततिलका)

इतः पन्थानं प्रतिपद्यस्व।

90. **शकुन्तला** - (सख्यौ प्रति) हला, एषा द्वयोर्युवयोर्हस्ते निक्षेपः।

91. **सख्यौ** - अयं जनः कस्य हस्ते समर्पितः।
(इति बाष्पं विहरतः।)

92. **काश्यपः** - अनसूये, अलं रुदित्वा। ननु भवतीभ्यामेव स्थिरीकर्तव्या शकुन्तला।
(सर्वे परिक्रामन्ति।)

93. **शकुन्तला** - तात, एषोटजपर्यन्तचारिणी गर्भमन्थरा मृगवधूर्यदाऽनघप्रसवा भवति, तदा मह्यं कमपि प्रियनिवेदयितृकं विसर्जयिष्यथ।

94. **काश्यपः** - नेदं विस्मरिष्यामः।

95. **शकुन्तला** - (गतिभङ्गं रूपयित्वा) को नु खल्वेष निवसने मे सज्जते।
(इति परावर्तते।)

96. **काश्यपः** - वत्से,

यस्य त्वया व्रणविरोपणमिङ्गुदीनां
तैलं न्यषिच्यत मुखे कुशसूचिविद्धे।
श्यामाकमुष्टिपरिवर्धितको जहाति
सोऽयं न पुत्रकृतकः पदवीं मृगस्ते ॥14॥ (वसन्ततिलका)

97. **शकुन्तला** - वत्स, किं सहवासपरित्यागिनीं मामनुसरसि। अचिरप्रसूतया जनन्या विना वर्धित एव। इदानीमपि मया विरहितं त्वां तातश्चिन्तयिष्यति। निवर्तस्व तावत्।
(इति रुदती प्रस्थिता)

98. **काश्यपः** -

उत्पक्ष्मणोर्नयनयोरुपरुद्धवृत्तिं
बाष्पं कुरु स्थिरतया विरतानुबन्धम् ।
अस्मिन्नलक्षितनतोन्नतभूमिभागे
मार्गे पदानि खलु ते विषमीभवन्ति ॥15॥ (वसन्ततिलका)

99. **शार्ङ्गरवः** - भगवन् ओदकान्तं स्निग्धो जनोऽनुगन्तव्य इति श्रूयते। तदिदं सरस्तीरम्। अत्र संदिश्य प्रतिगन्तुमर्हति।

100. **काश्यपः** - तेन हीमां क्षीरवृक्षच्छायामाश्रयामः।
(सर्वे परिक्रम्य स्थिताः।)

101. **काश्यपः** - (आत्मगतम्) किं नु खलु तत्रभवतो दुष्यन्तस्य युक्तरूपमस्माभिः संदेष्टव्यम्।

(इति चिन्तयति।)

102. **शकुन्तला -** (जनान्तिकम्) हला, पश्य। नलिनीपत्रान्तरितमपि सहचरमपश्यन्त्यातुरा चक्रवाक्यारटति, दुष्करमहं करोमीति।

103. **अनसूया -** सखि, मैवं मन्त्रयस्व।

एषापि प्रियेण विना गमयति रजनीं विषाददीर्घतराम्।
गुर्वपि विरहदुःखमाशाबन्धः साहयति ॥16॥ (आर्या)

104. **काश्यपः -** शार्ङ्गरव, इति त्वया मद्वचनात् स राजा शकुन्तलां पुरस्कृत्य वक्तव्यः।

105. **शार्ङ्गरवः -** आज्ञापयतु भवान्

106. **काश्यपः -**

अस्मान् साधु विचिन्त्य संयमधनानुच्चैः कुलं चात्मन-
स्त्वय्यस्याः कथमप्यबान्धवकृतां स्नेहप्रवृत्तिं च ताम्।
सामान्यप्रतिपत्तिपूर्वकमियं दारेषु दृश्या त्वया
भाग्यायत्तमतः परं न खलु तद् वाच्यं वधूबन्धुभिः ॥17॥ (शार्दूल.)

107. **शार्ङ्गरवः -** गृहीतः सन्देशः।

108. **काश्यपः -** वत्से, त्वमिदानीमनुशासनीयाऽसि।
वनौकसोऽपि सन्तो लौकिकज्ञा वयम्।

109. **शार्ङ्गरवः -** न खलु धीमतां कश्चिदविषयो नाम।

110. **काश्यपः -** सा त्वमितः पतिकुलं प्राप्य -

शुश्रूषस्व गुरून् कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीजने
भर्तुर्विप्रकृताऽपि रोषणतया मा स्म प्रतीपं गमः।
भूयिष्ठं भव दक्षिणा परिजने भाग्येष्वनुत्सेकिनी
यान्त्येवं गृहिणीपदं युवतयो वामाः कुलस्याधयः ॥18॥ (शार्दूल.)

कथं वा गौतमी मन्यते।

111. **गौतमी -** एतावान् वधूजनस्योपदेशः। जाते, एतत् खलु सर्वमवधारय।

112. **काश्यपः -** वत्से, परिष्वजस्व मां सखीजनं च।

113. **शकुन्तला -** तात, इत एव किं प्रियंवदाऽनसूये सख्यौ निवर्तिष्येते।

114. **काश्यपः -** वत्से, इमे अपि प्रदेये। न युक्तमनयोस्तत्र गन्तुम्। त्वया सह गौतमी यास्यति।

115. **शकुन्तला -** (पितरमाश्लिष्य) कथमिदानीं तातस्याङ्कात् परिभ्रष्टा

मलयतटोन्मूलिता चन्दनलतेव देशान्तरे जीवितं धारयिष्यामि।

116. **काश्यपः-** वत्से, किमेवं कातराऽसि।

अभिजनवतो भर्तुः श्लाघ्ये स्थिता गृहिणीपदे
विभवगुरुभिः कृत्यैस्तस्य प्रतिक्षणमाकुला।
तनयमचिरात् प्राचीवार्कं प्रसूय च पावनं
मम विरहजां न त्वं वत्से शुचं गणयिष्यसि ॥19॥ (हरिणी)

(शकुन्तला पितुः पादयोः पतति।)

117. **काश्यपः -** यदिच्छामि ते तदस्तु।

118. **शकुन्तला -** (सख्यावुपेत्य) हला, द्वे अपि मां सममेव परिष्वजेथाम्।

119. **सख्यौ** - (तथा कृत्वा) सखि, यदि नाम स राजा प्रत्यभिज्ञानमन्थरो भवेत्, ततस्तस्मा इदमात्मनामधेयाङ्कितमङ्गुलीयकं दर्शय।

120. **शकुन्तला -** अनेन सन्देहेन वामाकम्पिताऽस्मि।

121. **सख्यौ** - मा भैषीः। अतिस्नेहः पापशंकी।

122. **शार्ङ्गरवः -** युगान्तरमारूढः सविता। त्वरतामत्रभवती।

123. **शकुन्तला -** (आश्रमाभिमुखी स्थित्वा) तात, कदा नु भूयस्तपोवनं प्रेक्षिष्ये।

124. **काश्यपः -** श्रूयताम् -

भूत्वा चिराय चतुरन्तमहीसपत्नी
दौष्यन्तिमप्रतिरथं तनयं निवेश्य।
भर्त्रा तदर्पितकुटुम्बभरेण सार्धं
शान्ते करिष्यसि पदं पुनराश्रमेऽस्मिन् ॥20॥ (वसन्ततिलका)

125. **गौतमी-** जाते, परिहीयते गमनवेला। निवर्तय पितरम्। अथवा चिरेणापि पुनः पुनरेषैवं मन्त्रयिष्यते। निवर्ततां भवान्।

126. **काश्यपः-** वत्से, उपरुध्यते तपोऽनुष्ठानम्।

127. **शकुन्तला -** (भूयः पितरमाश्लिष्य) तपश्चरणपीडितं तातशरीरम् । तन्माऽतिमात्रं मम कृत उत्कण्ठस्व।

128. **काश्यपः -** (सनिःश्वासम्)

शममेष्यति मम शोकः कथं नु वत्से त्वया रचितपूर्वम्।
उटजद्वारविरूढं नीवारबलिं विलोकयतः ॥21॥ (आर्या)

गच्छ। शिवास्ते पन्थानः सन्तु।

(निष्क्रान्ता शकुन्तला सहयायिनश्च।)

129. सख्यौ - (शकुन्तलां विलोक्य) हा धिक्, हा धिक्। अन्तर्हिता शकुन्तला वनराज्या।

130. काश्यपः - (सनिःश्वासम्) अनसूये, गतवती वां सहचारिणी। निगृह्य शोकमनुगच्छतं मां प्रस्थितम्।

131. उभे - तात, शकुन्तलाविरहितं शून्यमिव तपोवनं कथं प्रविशावः।

132. काश्यपः - स्नेहप्रवृत्तिरेवंदर्शिनी। (सविमर्शं परिक्रम्य) हन्त भोः, शकुन्तलां पतिकुलं विसृज्य लब्धमिदानीं स्वास्थ्यम्।

कुतः-

अर्थो हि कन्या परकीय एव
तामद्य संप्रेष्य परिग्रहीतुः।
जातो ममायं विशदः प्रकामं
प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा ॥22॥ (इन्द्रवज्रा)

(इति निष्क्रान्ताः सर्वे।)

अभिज्ञानशाकुन्तलम् का भरतवाक्य

प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः
सरस्वती श्रुतमहतां महीयताम्।
ममापि च क्षपयतु नीललोहितः
पुनर्भवं परिगतशक्तिरात्मभूः ॥7/35॥ (रुचिरा)

राजा - (अन्तिम आशीर्वादात्मक वाक्य) राजा प्रजा के हित के लिए प्रयत्नशील हों। ज्ञान-गरिष्ठ कवियों की वाणी (कृति) का पूर्ण सत्कार हो। सर्वशक्तिमान् स्वयंभू शिव मेरे पुनर्जन्म को निवृत्त कर दें ॥35॥

इति कालिदास- विरचितम् अभिज्ञानशाकुन्तलस्य चतुर्थोऽङ्कः।

5. उत्तररामचरितम् (तृतीय अङ्क)

उत्तररामचरितम् का मङ्गलाचरण

इदं कविभ्यः पूर्वेभ्यो नमोवाकं प्रशास्महे।
विन्देम देवतां वाचममृतामात्मनः कलाम्॥1॥ (अनुष्टुप्)

हिन्दी अर्थ- हम अपने पूर्ववर्ती कवियों (वाल्मीकि आदि) को नमस्कार करके 'परमात्मा की कलास्वरूप अमर वाणी-देवता (वाग्देवता) को प्राप्त करें' यह प्रार्थना करते हैं।।1।।

उत्तररामचरित का भरतवाक्य

पाप्मभ्यश्च पुनाति वर्धयति च श्रेयांसि सेयं कथा
मङ्गल्या च मनोहरा च जगतो मातेव गङ्गेव च।
तामेतां परिभावयन्त्वभिनयैर्विन्यस्तरूपां बुधाः
शब्दब्रह्मविदः कवेः परिणतां प्राज्ञस्य वाणीमिमाम्॥7/21॥ (शार्दूल.)

राम- माता और गंगा के तुल्य संसार का कल्याण करने वाली तथा मनोहर यह सुप्रसिद्ध (रामायण की) कथा पापों से पवित्र करती है और कल्याण की वृद्धि करती है। शब्दब्रह्म के वेत्ता (अर्थात् ब्रह्म-साक्षात्कार करने वाले), विद्वान् कवि भवभूति के द्वारा रूपान्तरित (अर्थात् इस नाटक के रूप में प्रस्तुत) तथा अभिनयों के द्वारा (नाटकीय) रूप को प्राप्त कराई गई इस वाणी पर विद्वान् लोग विचार करें।।21।।

तृतीयोऽङ्कः

(ततः प्रविशति नदीद्वयम्)

1. **एका-** सखि मुरले, किमसि संभ्रान्तेव?

2. **(क) मुरला-** सखि तमसे, प्रेषितास्मि भगवतोऽगस्त्यस्य पत्न्या लोपामुद्रया सरिद्वरां गोदावरीमभिधातुम्। जानास्येव यथा वधूपरित्यागात्प्रभृति-

अनिर्भिन्नो गभीरत्वादन्तर्गूढघनव्यथः।
पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः॥1॥ (अनुष्टुप्)

2 (ख) मुरला तेन च तथाविधेष्टजनकष्टविनिपातजन्मना प्रकृष्टतां गतेन दीर्घशोकसंतानेन संप्रत्यतितरां परिक्षीणो रामभद्रः। तमवलोक्य कम्पितमिव कुसुमसमबन्धनं मे हृदयम्। अधुना च प्रतिनिवर्तमानेन रामभद्रेण नियतमेव पञ्चवटीवने

वधूसहनिवासविस्रम्भसाक्षिणः प्रदेशा द्रष्टव्याः। तत्र च निसर्गधीरस्याप्येवंविधायामवस्थायामतिगम्भीराभोगशोकक्षोभसंवेगात्पदे पदे महाप्रमादानि शोकस्थानानि शङ्कनीयानि रामभद्रस्य। तद्भगवति गोदावरि, त्वया तत्रभवत्या सावधानया भवितव्यम्।

वीचीवातैः शीकरक्षोदशीतै-
राकर्षद्भिः पद्मकिञ्जल्कगन्धान्।
मोहे मोहे रामभद्रस्य जीवं
स्वैरं स्वैरं प्रेरितैस्तर्पयेति॥2॥ (शालिनी)

3. **तमसा-** उचितमेव दाक्षिण्यं स्नेहस्य। संजीवनोपायस्तु मौलिक एव रामभद्रस्याद्य सन्निहितः।

4. **मुरला-** कथमिव?

5. **तमसा-** तत्सर्वं श्रूयताम्- पुरा किल वाल्मीकि-तपोवनोपकण्ठात्परित्यज्य निवृत्ते सति लक्ष्मणे सीता देवी प्राप्तप्रसववेदनमतिदुःखसंवेगादात्मानं गङ्गाप्रवाहे निक्षिप्तवती। तदैव तत्र दारकद्वयं च प्रसूता। भगवतीभ्यां पृथ्वीभागीरथीभ्यामभ्युपपन्ना रसातलं च नीता। स्तन्यत्यागात्परेण दारकद्वयं च तस्य प्राचेतसस्य महर्षेर्गङ्गादेव्या समर्पितं स्वयम्।

6. **मुरला-** (सविस्मयम्)

ईदृशानां विपाकोऽपि जायते परमाद्भुतः।
यत्रोपकरणीभावमायात्येवंविधो जनः॥3॥ (अनुष्टुप्)

7. **तमसा-**इदानीं तु शम्बूकवृत्तान्तेनानेन संभावितजनस्थानागमनं रामभद्रं सरयूमुखादुपश्रुत्य भगवती भागीरथी यदेव भगवत्या लोपामुद्रया स्नेहादाशङ्कितं तदेवाभिशङ्क्य सीतासमेता केनचिदिव गृहाचारव्यपदेशेन गोदावरीमुपागता।

8. **मुरला-** सुष्ठु चिन्तितं भगवत्या भागीरथ्या। राजधानीस्थितस्यास्य खलु तैश्च तैश्च जगतामाभ्युदयिकैः कार्यैर्व्यापृतस्य रामभद्रस्य नियताश्चित्तविक्षेपाः। अव्यग्रस्य पुनरस्य शोकमात्रद्वितीयस्य पञ्चवटीप्रवेशो महाननर्थ इति। तत्कथं सीतया रामभद्रोऽयमाश्वासनीयः स्यात्?

9. **तमसा-** उक्तमत्र भगवत्या भागीरथ्या 'वत्से देवयजनसंभवे सीते, अद्य खल्वायुष्मतोः कुशलवयोर्द्वादशस्य जन्मवत्सरस्य संख्यामङ्गलग्रन्थिरभिवर्तते। तदात्मनः पुराणश्वशुरमेतावतो मानवस्य राजर्षिवंशस्य प्रसवितारं सवितारमपहतपाप्मानं देवं स्वहस्तावचितैः पुष्पैरुपतिष्ठस्व। न त्वामवनिपृष्ठवर्तिनीमस्मत्प्रभावाद् वनदेवता अपि द्रक्ष्यन्ति किमुत मर्त्याः?' इति। अहमप्याज्ञापिता 'तमसे, त्वयि प्रकृष्टप्रेमैव वधूर्जानकी, अतस्त्वमेवास्याः प्रत्यनन्तरीभव' इति। साहमधुना यथादिष्टमनुतिष्ठामि।

10. मुरला- अहमप्येतं वृत्तान्तं भगवत्यै लोपामुद्रायै निवेदयामि। रामभद्रोऽप्यागत एवेति तर्कयामि।

11. तमसा-तदियं गोदावरीह्रदान्निर्गत्य-

परिपाण्डुदुर्बलकपोलसुन्दरं
दधती विलोलकबरीकमाननम्।
करुणस्य मूर्तिरथवा शरीरिणी
विरहव्यथेव वनमेति जानकी॥4॥ (मञ्जुभाषिणी)

12. मुरला- इयं हि सा-

किसलयमिव मुग्धं बन्धनाद् विप्रलूनं
हृदयकमलशोषी दारुणो दीर्घशोकः।
ग्लपयति परिपाण्डु क्षाममस्याः शरीरं
शरदिज इव घर्मः केतकीगर्भपत्रम्॥5॥ (मालिनी)

(इति परिक्रम्य निष्क्रान्ते) **इति शुद्धविष्कम्भकः।**

13. (नेपथ्ये) जात जात!

(ततः प्रविशति पुष्पावचयव्यग्रा सकरुणौत्सुक्यमाकर्णयन्ती सीता)

14. सीता- अहो, जानामि प्रियसखी वासन्ती व्याहरतीति।

15. (पुनर्नेपथ्ये)

सीतादेव्या स्वकरकलितैः सल्लकीपल्लवाग्रै–
रग्रे लोलः करिकलभको यः पुरा वर्धितोऽभूत्।

16. सीता- किं तस्य?

17. (पुनर्नेपथ्ये)

वध्वा सार्धं पयसि विहरन्सोऽयमन्येन दर्पाद्
उद्दामेन द्विरदपतिना संनिपत्याभियुक्तः॥6॥ (मन्दाक्रान्ता)

18. सीता- (ससंभ्रमं कतिचित्पदानि गत्वा) आर्यपुत्र, परित्रायस्व परित्रायस्व मम तं पुत्रकम्। (विचिन्त्य) हा धिक् हा धिक् तान्येव चिरपरिचितान्यक्षराणि पञ्चवटीदर्शनेन मां मन्दभागिनीमनुबध्नन्ति। हा आर्यपुत्र!

(इति मूर्च्छति)

(प्रविश्य)

19. तमसा- समाश्वसिहि समाश्वसिहि।

20. (नेपथ्ये) विमानराज, अत्रैव स्थीयताम्।

21.सीता- (समाश्वस्य, ससाध्वसोल्लासम्)

अहो,जलभरभरितमेघमन्थरस्तनितगम्भीरमांसलः कुतोन्वेष भारतीनिर्घोषो भ्रियमाणकर्णविवरां मामपि मन्दभागिनीं झटित्युत्सुकयति।

22. तमसा- (सस्मितास्रम्) अयि वत्से,

अपरिस्फुटनिक्वाणे कुतस्त्येऽपि त्वमीदृशी।
स्तनयित्नोर्मयूरीव चकितोत्कण्ठितं स्थिता॥7॥ (अनुष्टुप्)

23. सीता- भगवति, किं भणस्यपरिस्फुटेति? स्वरसंयोगेन प्रत्यभिजानामि नन्वार्यपुत्रेणैवैतद् व्याहृतम्।

24. तमसा- श्रूयते तपस्यतः किल शूद्रस्य दण्डधारणार्थमैक्ष्वाको राजा दण्डकारण्यमागत इति।

25. सीता- दिष्ट्या अपरिहीनधर्मः खलु स राजा।

26. (नेपथ्ये)

यत्र द्रुमा अपि मृगा अपि बन्धवो मे
यानि प्रियासहचरश्चिरमध्यवात्सम्।
एतानि तानि बहुकन्दरनिर्झराणि
गोदावरीपरिसरस्य गिरेस्तटानि॥8॥ (वसन्ततिलका)

27. सीता- (दृष्ट्वा) दिष्ट्या कथं प्रभातचन्द्र-मण्डलापाण्डुरपरिक्षामदुर्बलेनाकारेण निजसौम्यगम्भीरानुभावमात्रप्रत्यभिज्ञेय एवार्यपुत्रो भवति। भगवति तमसे, धारय माम्।

(इति तमसामाश्लिष्य मूर्च्छति)

28. तमसा- वत्से, समाश्वसिहि समाश्वसिहि।

(नेपथ्ये)

29. अनेन पञ्चवटीदर्शनेन-

अन्तर्लीनस्य दुःखाग्नेरद्योद्दामं ज्वलिष्यतः।
उत्पीड इव धूमस्य मोहः प्रागावृणोति माम् ॥9॥ (अनुष्टुप्)

हा प्रिये जानकि!

30. तमसा- (स्वगतम्) इदं तावदाशङ्कितं गुरुजनेन।

31. सीता- (समाश्वस्य) हा कथमेतत्?

(पुनर्नेपथ्ये)

32. हा देवि दण्डकारण्यवासप्रियसखि विदेहराजपुत्रि!

(इति मूर्च्छति)

33. सीता- हा धिक् हा धिक्, मां मन्दभागिनीं व्याहृत्यामीलितनेत्रनीलोत्पलो मूर्च्छित एव। हा, कथं धरणीपृष्ठे निरुद्धनिःश्वासनिःसहं विपर्यस्तः? भगवति तमसे, परित्रायस्व परित्रायस्व, जीवयार्यपुत्रम्।

(इति पादयोः पतति)

34. तमसा-

त्वमेव ननु कल्याणि! संजीवय जगत्पतिम्।
प्रियस्पर्शो हि पाणिस्ते तत्रैष निरतो जनः॥10॥ (अनुष्टुप्)

35. सीता- यद् भवतु तद् भवतु। यथा भगवत्याज्ञापयति।

(इति ससंभ्रमं निष्क्रान्ता।)

(ततः प्रविशति भूम्यां निपतितः सास्रया सीतया स्पृश्यमानः साह्लादोच्छ्वासो रामः)

36. सीता- (किंचित्सहर्षम्) जाने पुनः प्रत्यागतमिव जीवितं त्रैलोक्यस्य।

37 (क). रामः- हन्त भोः, किमेतत्?

आश्च्योतनं नु हरिचन्दनपल्लवानां
निष्पीडितेन्दुकरकन्दलजो नु सेकः।
आतप्तजीवितपुनःपरितर्पणोऽयं
संजीवनौषधिरसो हृदि नु प्रसक्तः॥11॥ (वसन्ततिलका)

37 (ख). अपि च-

स्पर्शः पुरा परिचितो नियतं स एव
संजीवनश्च मनसः परितोषणश्च।
संतापजां सपदि यः परिहृत्य मूर्च्छाम्
आनन्दनेन जडतां पुनरातनोति॥12॥ (वसन्ततिलका)

38. सीता- (ससाध्वसकरुणमुपसृत्य) एतावदेवेदानीं मम बहुतरम्।

39. रामः - (उपविश्य) न खलु वत्सलया देव्याऽभ्युपपन्नोऽस्मि?

40. सीता- हा धिक् हा धिक्, किमित्यार्यपुत्रो मां मार्गिष्यते?

41. रामः - भवतु, पश्यामि।

42. सीता- भगवति तमसे, अपसराव तावत्। मां प्रेक्ष्यानभ्यनुज्ञातेन संनिधानेन राजाधिकं कोपिष्यति।

43. तमसा- अयि वत्से, भागीरथीप्रसादाद् वनदेवतानामप्यदृश्यासि संवृत्ता।

44. सीता- अस्ति खल्वेतत्?

45. रामः- हा, प्रिये जानकि!

46. सीता- (ससाध्वसगद्गदम्) आर्यपुत्र, असदृशं खल्वेतदस्य वृत्तान्तस्य। (सास्रम्) भगवति, किमिति वज्रमयी जन्मान्तरेष्वपि पुनरप्यसंभावितदुर्लभदर्शनस्य मामेव मन्दभागिनीमुद्दिश्यैवं वत्सलस्यैवंवादिनः आर्यपुत्रस्योपरि निरनुक्रोशा भविष्यामि? अहमेवैतस्य हृदयं जानामि, ममैषः।

47. रामः- (सर्वतोऽवलोक्य सनिर्वेदम्) हा, न किञ्चिदत्र।

48. सीता- भगवति, निष्कारणपरित्यागिनोऽप्येतस्य दर्शनेनैवंविधेन कीदृशी मे हृदयावस्था।

49. तमसा- जानामि वत्से, जानामि,

तटस्थं नैराश्यादपि च कलुषं विप्रियवशाद्-
वियोगे दीर्घेऽस्मिञ्झटिति घटनात्स्तम्भितमिव।
प्रसन्नं सौजन्याद्दयितकरुणैर्गाढकरुणं
द्रवीभूतं प्रेम्णा तव हृदयमस्मिन्क्षण इव॥13॥ (शिखरिणी)

50. रामः- देवि,

प्रसाद इव मूर्तस्ते स्पर्शः स्नेहार्द्रशीतलः।
अद्याप्यानन्दयति मां त्वं पुनः क्वासि नन्दिनि! ॥14॥ (अनुष्टुप्)

51. सीता- एते खलु तेऽगाधमानसदर्शितस्नेहसंभारा आनन्दनिष्यन्दिनः सुधामया आर्यपुत्रस्योल्लापाः। जाने प्रत्ययेन निष्कारणपरित्यागशल्यितोऽपि बहुमतो मम जन्मलाभः।

52. रामः- अथवा कुतः प्रियतमा? नूनं संकल्पाभ्यासपाटवोपादान एष भ्रमो रामभद्रस्य।

(नेपथ्ये)

53. अहो, महान्प्रमादः प्रमादः। ('सीतादेव्या स्वकरकलितैः' इत्यर्धं पठ्यते।)

54. रामः- (सकरुणौत्सुक्यम्) किं तस्य?

(पुनर्नेपथ्ये)

55. ('वध्वा सार्धं' इत्युत्तरार्धं पठ्यते।)

56. सीता- क इदानीमभियुज्यते?

57. रामः- क्वासौ दुरात्मा यः प्रियायाः पुत्रं वधूद्वितीयमभिभवति?

(इत्युत्तिष्ठति)

(प्रविश्य)

58. वासन्ती- (संभ्रान्ता) देव, त्वर्यताम् ।

59. सीता- हा कथं मे प्रियसखी वासन्ती?

60. रामः- कथं देव्याः प्रियसखी वासन्ती?

61. वासन्ती- देव, त्वर्यतां त्वर्यताम्। इतो जटायुशिखरस्य दक्षिणेन सीतातीर्थेन गोदावरीमवतीर्य संभावयतु देव्याः पुत्रकं देवः।

62. सीता- हा तात जटायो, शून्यं त्वया विनेदं जनस्थानम्।

63. रामः- अहह, हृदयमर्मच्छिदः खल्वमी कथोद्घाताः।

64. वासन्ती- इत इतो देवः।

65. सीता- भगवति, सत्यमेव वनदेवतापि मां न पश्यति।

66. तमसा- अयि वत्से, सर्वदेवताभ्यः प्रकृष्टतममैश्वर्यं मन्दाकिन्याः। तत्किमिति विशङ्कसे?

67. सीता- ततोऽनुसरावः।

(इति परिक्रामति।)

68. रामः- भगवति गोदावरि, नमस्ते।

69. वासन्ती- (निरूप्य) देव, मोदस्व विजयिना वधूद्वितीयेन देव्याः पुत्रकेण।

70. रामः- विजयतामायुष्मान्।

71. सीता- अहो, ईदृशो मे पुत्रकः संवृत्तः।

72. रामः- हा देवि, दिष्ट्या वर्धसे।

येनोद्गच्छद्बिसकिसलयस्निग्धदन्ताङ्कुरेण
व्याकृष्टस्ते सुतनु! लवलीपल्लवः कर्णमूलात्।
सोऽयं पुत्रस्तव मदमुचां वारणानां विजेता
यत्कल्याणं वयसि तरुणे भाजनं तस्य जातः॥15॥ (मन्दाक्रान्ता)

73. सीता- अवियुक्त इदानीं दीर्घायुरनया सौम्यदर्शनया भवतु।

74. रामः- सखि वासन्ति, पश्य पश्य। कान्तानुवृत्तिचातुर्यमपि शिक्षितं वत्सेन।

लीलोत्खातमृणालकाण्डकवलच्छेदेषु संपादिताः।
पुष्यत्पुष्करवासितस्य पयसो गण्डूषसंक्रान्तयः।
सेकः शीकरिणा करेण विहितः कामं विरामे पुन-
र्यत्स्नेहादनरालनालनलिनीपत्रातपत्रं धृतम्॥16॥ (शार्दूलविक्रीडित)

75. सीता-भगवति तमसे, अयं तावदीदृशो जातः। तौ पुनर्न जानाम्येतावता कालेन कुशलवौ कीदृशौ संवृत्ताविति।

76. तमसा- यादृशोऽयं तादृशौ तावपि।

77. सीता- ईदृश्यस्मि मन्दभागिनी यस्या न केवलमार्यपुत्रविरहः पुत्रविरहोऽपि।

78. तमसा-भवितव्यतेयमीदृशी।

79.सीता- किंवा मया प्रसूतया येनैतादृशं मम पुत्रकयोरीषद्विरलधवल-दशनकुड्मलोज्ज्वलमनुबद्ध–मुग्धकाकलीविहसितं नित्योज्ज्वलं मुखपुण्डरीकयुगलं न परिचुम्बितमार्यपुत्रेण?

80. तमसा- अस्तु देवताप्रसादात्।

81. सीता- भगवति तमसे, एतेनापत्यसंस्मरणेनोच्छ्वसितप्रस्नुतस्तनी इदानीं वत्सयोः पितुः संनिधानेन क्षणमात्रं संसारिणी संवृत्तास्मि।

82. तमसा- किमत्रोच्यते? **प्रसवः खलु प्रकर्षपर्यन्तः स्नेहस्य।** परं चैतदन्योन्यसंश्लेषणं पित्रोः।

अन्तःकरणतत्त्वस्य दम्पत्योः स्नेहसंश्रयात्।
आनन्दग्रन्थिरेकोऽयमपत्यमिति पठ्यते॥17॥ (अनुष्टुप्)

83. वासन्ती- इतोऽपि देवः पश्यतु।

अनुदिवसमवर्धयत्प्रिया ते
यमचिरनिर्गतमुग्धलोलबर्हम्।
मणिमुकुट इवोच्छिखः कदम्बे
नदति स एष वधूसखः शिखण्डी॥18॥ (पुष्पिताग्रा)

84. सीता- (सकौतुकस्नेहास्रम्) एष सः।

85. रामः- मोदस्व वत्स, वयमद्य वर्धामहे।

86. सीता- एवं भवतु।

87. (क) रामः-

भ्रमिषु कृतपुटान्तर्मण्डलावृत्तिचक्षुः
प्रचलितचटुलभ्रूताण्डवैर्मण्डयन्त्या।
करकिसलयतालैर्मुग्धया नर्त्यमानं
सुतमिव मनसा त्वां वत्सलेन स्मरामि॥19॥ (मालिनी)

87. (ख)- हन्त, तिर्यञ्चोऽपि परिचयमनुरुन्धन्ते।

कतिपयकुसुमोद्गमः कदम्बः
प्रियतमया परिवर्धितोऽयमासीत्।

88. सीता- (सास्रम्) सुष्ठु प्रत्यभिज्ञातमार्यपुत्रेण।

89. रामः- स्मरति गिरिमयूर एष देव्याः
स्वजन इवात्र यतः प्रमोदमेति॥20॥ (पुष्पिताग्रा)

90. वासन्ती- अत्र तावदासनपरिग्रहं करोतु देवः। एतत्तु देवस्याश्रमम्।
(राम उपविशति।)

91. वासन्ती-

नीरन्ध्रबालकदलीवनमध्यवर्ति
कान्तासखस्य शयनीयशिलातलं ते।
अत्र स्थिता तृणमदाद् वनगोचरेभ्यः
सीता ततो हरिणकैर्न विमुच्यते स्म॥21॥ (वसन्ततिलका)

92. रामः- इदं तावदशक्यमेव द्रष्टुम्।
(इत्यन्यतो रुदन्नुपविशति।)

93. सीता- सखि वासन्ति, किं त्वया कृतमार्यपुत्रस्य मम चैतद्दर्शयन्त्या? हा धिक् हा धिक्! स एवार्यपुत्रः। तदेव पञ्चवटीवनम्। सैव प्रियसखी वासन्ती। त एव विविधिविस्रम्भसाक्षिणो गोदावरीकाननोद्देशाः। त एव जातनिर्विशेषा मृगपक्षिणः पादपाश्च। मम पुनर्मन्दभाग्याया दृश्यमानमपि सर्वमेवेतन्नास्ति। ईदृशो जीवलोकस्य परिणामः संवृत्तः।

94. वासन्ती- सखि सीते, कथं न पश्यसि रामभद्रस्यावस्थाम्?

नवकुवलयस्निग्धैरङ्गैर्ददन्नयनोत्सवं
सततमपि नः स्वेच्छादृश्यो नवो नव एव सः।
विकलकरणः पाण्डुच्छायः शुचा परिदुर्बलः
कथमपि स इत्युन्नेतव्यस्तथापि दृशोः प्रियः॥22॥ (हरिणी)

95. सीता- सखि, पश्यामि।
96. तमसा- पश्य प्रियं भूयः।
97. सीता- हा दैव, एष मया विना अहमप्येतेन विनेति केन संभावितमासीत्। तन्मुहूर्तमात्रं जन्मान्तरादपि दुर्लभलब्धदर्शनं वाष्पसलिलान्तरेषु पश्यामि तावद् वत्सलमार्यपुत्रम्।

(इति पश्यन्ती स्थिता।)

98. तमसा- (परिष्वज्य, सास्रम्)

विलुलितमतिपूरैर्बाष्पमानन्दशोक-
प्रभवमवसृजन्ती पक्ष्मलोत्तानदीर्घा।
स्नपयति हृदयेशं स्नेहनिष्यन्दिनी ते
धवलमधुरमुग्धा दुग्धकुल्येव दृष्टिः॥23॥ (मालिनी)

99. वासन्ती-

ददतु तरवः पुष्पैरर्घ्यं फलैश्च मधुश्च्युतः
स्फुटितकमलामोदप्रायाः प्रवान्तु वनानिलाः।
कलमविरलं रज्यत्कण्ठाः क्वणन्तु शकुन्तयः
पुनरिदमयं देवो रामः स्वयं वनमागतः॥24॥ (हरिणी)

100. रामः- एहि सखि वासन्ति, नन्वितः स्थीयताम्।
101. वासन्ती- (उपविश्य सास्रम्) महाराज, अपि कुशलं कुमारलक्ष्मणस्य?
102. रामः- (अनाकर्णनमभिनीय)

करकमलवितीर्णैरम्बुनीवारशष्पै-
स्तरुशकुनिकुरङ्गान्मैथिली यानपुष्यत्।
भवति मम विकारस्तेषु दृष्टेषु कोऽपि
द्रव इव हृदयस्य प्रस्त्रवोद्भेदयोग्यः॥25॥ (मालिनी)

103. वासन्ती- महाराज, ननु पृच्छामि अपि कुशलं कुमारलक्ष्मणस्येति।
104. रामः- (आत्मगतम्) अये, महाराजेति निष्प्रणयमामन्त्रणपदम्। सौमित्रिमात्रके वाष्पस्खलिताक्षरः कुशलप्रश्नः। तथा मन्ये विदितसीतावृत्तान्तेयमिति। (प्रकाशम्) आः, कुशलं कुमारलक्ष्मणस्य।
105. वासन्ती- (रोदिति) अयि देव, किं परं दारुणः खल्वसि।

106. सीता- सखि वासन्ति, किं त्वमेवंवादिनी भवसि? पूजार्हः सर्वस्यार्यपुत्रो विशेषतो मम प्रियसख्याः।

107. वासन्ती-

त्वं जीवितं त्वमसि मे हृदयं द्वितीयं
त्वं कौमुदी नयनयोरमृतं त्वमङ्गे।
इत्यादिभिः प्रियशतैरनुरुध्य मुग्धां
तामेव शान्तमथवा किमतः परेण॥26॥ (वसन्ततिलका)

(इति मुह्यति)

108. तमसा- स्थाने वाक्यनिवृत्तिर्मोहश्च।
109. रामः- सखि, समाश्वसिहि समाश्वसिहि।
110. वासन्ती- (समाश्वस्य) तत्किमिदमकार्यमनुष्ठितं देवेन?
111. सीता- सखि वासन्ति, विरम विरम।
112. रामः- लोको न मृष्यतीति।
113. वासन्ती- कस्य हेतोः।
114. रामः- स एव जानाति किमपि।
115. तमसा- चिरादुपालम्भः।
116. वासन्ती-

अयि कठोर! यशः किल ते प्रियं
किमयशो ननु घोरमतः परम्।
किमभवद् विपिने हरिणीदृशः
कथय नाथ! कथं बत मन्यसे?॥27॥ (द्रुतविलम्बित)

117. सीता- सखि वासन्ति, त्वमेव दारुणा कठोरा च। यैवं प्रलपन्तं प्रलापयसि।
118. तमसा- प्रणय एवं व्याहरति शोकश्च।
119. रामः- सखि, किमत्र मन्तव्यम्?

त्रस्तैकहायनकुरङ्गविलोलदृष्टे–
स्तस्याः परिस्फुरितगर्भभरालसायाः।
ज्योत्स्नामयीव मृदुबालमृणालकल्पा
क्रव्याद्भिरङ्गलतिका नियतं विलुप्ता॥28॥ (वसन्ततिलका)

120. सीता- आर्यपुत्र, ध्रियेएषा ध्रिये।
121. रामः- हा प्रिये जानकि, क्वासि?

122. सीता- हा धिक् हा धिक्, अन्य इवार्यपुत्रः प्रमुक्तकण्ठं प्ररुदितो भवति।

123. (क) तमसा- वत्से, साम्प्रतिकमेवैतत्। कर्तव्यानि खलु दुःखितैर्दुःखनिर्वापणानि।

पूरोत्पीडे तटाकस्य परीवाहः प्रतिक्रिया।
शोकक्षोभे च हृदयं प्रलापैरेव धार्यते॥29॥ (अनुष्टुप्)

123. (ख) विशेषतो रामभद्रस्य बहुप्रकारकष्टो जीवलोकः।

इदं विश्वं पाल्यं विधिवदभियुक्तेन मनसा
प्रियाशोको जीवं कुसुममिव घर्मो ग्लपयति।
स्वयं कृत्वा त्यागं विलपनविनोदोऽप्यसुलभ-
स्तदद्याप्युच्छ्वासो भवति ननु लाभो हि रुदितम्॥30॥ (शिखरिणी)

124. (क) रामः- कष्टं भोः, कष्टम्।

दलति हृदयं शोकोद्वेगाद्द्विधा तु न भिद्यते
वहति विकलः कायो मोहं न मुञ्चति चेतनाम्।
ज्वलयति तनूमन्तर्दाहः करोति न भस्मसात्
प्रहरति विधिर्मर्मच्छेदी न कृन्तति जीवितम्॥31॥ (हरिणी)

124. (ख) रामः- हे भगवन्तः पौरजानपदाः,

न किल भवतां देव्याः स्थानं गृहेऽभिमतं तत-
स्तृणमिव वने शून्ये त्यक्ता न चाप्यनुशोचिता।
चिरपरिचितास्ते ते भावास्तथा द्रवयन्ति माम्-
इदमशरणैरद्यास्माभिः प्रसीदत रुद्यते॥32॥ (हरिणी)

125. वासन्ती- (स्वगतम्) अतिगभीरमापूरणं मन्युभारस्य। (प्रकाशम्) देव, अतिक्रान्ते धैर्यमवलम्ब्यताम्।

126. रामः- किमुच्यते धैर्यमिति?

देव्या शून्यस्य जगतो द्वादशः परिवत्सरः।
प्रनष्टमिव नामापि न च रामो न जीवति॥33॥ (अनुष्टुप्)

127. सीता- अपहरामि च मोहितेव एतैरार्यपुत्रस्य प्रियवचनैः।

128. तमसा- एवमेव वत्से,

नैताः प्रियतमा वाचः स्नेहार्द्राः शोकदारुणाः।
एतास्ता मधुनो धाराः श्च्योतन्ति सविषास्त्वयि॥34॥ (अनुष्टुप्)

129. **रामः-** अयि वासन्ति, मया खलु-

यथा तिरश्चीनमलातशल्यं
प्रत्युप्तमन्तः सविषश्च दन्तः।
तथैव तीव्रो हृदि शोकशङ्कु-
मर्माणि कृन्तन्नपि किं न सोढः॥35॥ (उपजाति)

130. **सीता-** एवमपि मन्दभागिन्यहं या पुनरायासकारिणी आर्यपुत्रस्य।

131. **रामः-** एवमतिगूढस्तम्भितान्तःकरणस्यापि मम संस्तुतवस्तुदर्शनादद्यायमावेगः। तथा हि-

वेलोल्लोलक्षुभितकरुणोज्जृम्भणस्तम्भनार्थं
यो यो यत्नः कथमपि समाधीयते तं तमन्तः
भित्त्वा भित्त्वा प्रसरति बलात्कोऽपि चेतोविकार-
स्तोयस्येवाप्रतिहतरयः सैकतं सेतुमोघः॥36॥ (मन्दाक्रान्ता)

132. **सीता-** आर्यपुत्रस्यैतेन दुर्वारदारुणारम्भेण दुःखसंयोगेन परिमुषितनिजदुःखं प्रमुक्तजीवितं मे हृदयं स्फुटति।

133. **वासन्ती-** (स्वगतम्) कष्टमत्यासक्तो देवः। तदाक्षिपामि तावत्। (प्रकाशम्) चिरपरिचितानिदानीं जनस्थानभागानवलोकनेन मानयतु देवः।

134. **रामः-** एवमस्तु। (इत्युत्थाय परिक्रामति)।

135. **सीता-** संदीपन एव दुःखस्य प्रियसख्या विनोदनोपाय इति तर्कयामि।

136. **वासन्ती-** देव देव,

अस्मिन्नेव लतागृहे त्वमभवस्तन्मार्गदत्तेक्षणः
सा हंसैः कृतकौतुका चिरमभूद् गोदावरीसैकते।
आयान्त्या परिदुर्मनायितमिव त्वां वीक्ष्य बद्धस्तया
कातर्यादरविन्दकुड्मलनिभो मुग्धः प्रणामाञ्जलिः॥37॥ (शार्दूल.)

137. **सीता-** दारुणासि वासन्ति, दारुणासि या एतैर्हृदयमर्मोद्घाटितशल्यसंघट्टनैः पुनः पुनरपि मां मन्दभागिनीमार्यपुत्रं च स्मरयसि।

138. रामः- अयि चण्डि जानकि, इतस्ततो दृश्यस इव, नानुकम्पसे।

हा हा देवि! स्फुटति हृदयं ध्वंसते देहबन्धः
शून्यं मन्ये जगदविरलज्वालमन्तर्ज्वलामि।
सीदन्नन्धे तमसि विधुरो मज्जतीवान्तरात्मा
विष्वङ्मोहः स्थगयति कथं मन्दभाग्यः करोमि ॥38॥ (मन्दाक्रान्ता)

(इति मूर्च्छति)

139. सीता- हा धिक् हा धिक्, पुनरपि मूढ आर्यपुत्रः।

140. वासन्ती- देव, समाश्वसिहि समाश्वसिहि।

141. सीता- आर्यपुत्र, मां मन्दभागिनीमुद्दिश्यसकल जीवलोकमाङ्गलिकजन्मलाभस्य ते वारं वारं संशयितजीवितदारुणो दशापरिणाम इति हा हतास्मि।

(इति मूर्च्छति।)

142. तमसा- वत्से, समाश्वसिहि समाश्वसिहि। पुनस्ते पाणिस्पर्शो रामभद्रस्य जीवनोपायः।

143. वासन्ती- कथमद्यापि नोच्छ्वसिति? हा प्रियसखि सीते, क्वासि? सम्भावयात्मनो जीवितेश्वरम्।

(सीता ससम्भ्रममुपसृत्य हृदि ललाटे च स्पृशति)

144. वासन्ती- दिष्ट्या प्रत्यापन्नचेतनो रामभद्रः।

145. रामः-

आलिम्पन्नमृतमयैरिव प्रलेपै-
रन्तर्वा बहिरपि वा शरीरधातून्।
संस्पर्शः पुनरपि जीवयन्नकस्माद्-
आनन्दादपरमिवादधाति मोहम्॥39॥ (प्रहर्षिणी)

(सानन्दं निमीलिताक्ष एव) सखि वासन्ति, दिष्ट्या वर्धसे।

146. वासन्ती- देव, कथमिव?

147. रामः- सखि, किमन्यत्? पुनरपि प्राप्ता जानकी।

148. वासन्ती- अयि देव रामभद्र, क्व सा?

149. रामः- (स्पर्शसुखमभिनीय) पश्य नन्वियं पुरत एव।

150. वासन्ती- अयि देव रामभद्र, किमिति मर्मच्छेददारुणैरतिप्रलापैः प्रियसखीविपत्तिदुःखदग्धामपि मां पुनर्मन्दभाग्यां दहसि?

151. **सीता-** अपसर्तुमिच्छामि। एष पुनः चिरप्रणयसंभारसौम्यशीतलेन आर्यपुत्रस्पर्शेन दीर्घदारुणमपि झटिति संतापमुल्लाघयता वज्रलेपोपनद्ध इव पर्यस्तव्यापार आसञ्जित इव मेऽग्रहस्तः।

152. **रामः-** सखि, कुतः प्रलापः?

गृहीतो यः पूर्वं परिणयविधौ कङ्कणधरः
सुधासूतेः पादैरमृतशिशिरैर्यः परिचितः।

153. **सीता-** आर्यपुत्र, स एवेदानीमसि त्वम्।

154. **रामः-**

स एवायं तस्यास्तदितरकरौपम्यसुभगो
मया लब्धः पाणिर्ललितलवलीकन्दलनिभः ॥40॥ (शिखरिणी)

(इति गृह्णाति)

155. **सीता-** हा धिक् हा धिक्, आर्यपुत्रस्पर्शमोहितायाः प्रमादो मे संवृत्तः।

156. **रामः-** सखि वासन्ति, आनन्दमीलितः प्रियास्पर्शसाध्वसेन परवानस्मि। तत्त्वमपि धारय माम्।

157. **वासन्ती-** कष्टमुन्माद एव।

(सीता संभ्रमं हस्तमाक्षिप्यापसर्पति)

158. **रामः-** हा धिक्, प्रमादः,-

करपल्लवः स तस्याः सहसैव जडो जडात्परिभ्रष्टः।
परिकम्पिनः प्रकम्पी करान्मम स्विद्यतः स्विद्यन् ॥41॥ (आर्या)

159. **सीता-** हा धिक् हा धिक्, अद्याप्यनुबद्धबहुघूर्णमानवेदनं न संस्थापयाम्यात्मानम्।

160. **तमसा-** (सस्नेहकौतुकस्मितं निर्वर्ण्य)

सस्वेदरोमाञ्चितकम्पिताङ्गी
जाता प्रियस्पर्शसुखेन वत्सा।
मरुन्नवाम्भःपरिधूतसिक्ता
कदम्बयष्टिः स्फुटकोरकेव॥42॥ (उपजाति)

161. सीता- (स्वगतम्) अवशेनैतेनात्मना लज्जापितास्मि भगवत्या तमसया। किमिति किलैषा मंस्यत एष परित्याग एषोऽभिषङ्ग इति।

162. रामः- (सर्वतोऽवलोक्य) हा, कथं नास्त्येव? नन्वकरुणे वैदेहि!

163. सीता- अकरुणास्मि यैवंविधं त्वां पश्यन्त्येव जीवामि।

164. रामः- क्वासि प्रिये, देवि, प्रसीद प्रसीद। न मामेवंविधं परित्यक्तुमर्हसि।

165. सीता- अयि आर्यपुत्र, विप्रतीपमिव।

166. वासन्ती- देव, प्रसीद प्रसीद। स्वेनैव लोकोत्तरेण धैर्येण संस्तम्भयातिभूमिं गतमात्मानम्। कुत्र मे प्रियसखी?

167. रामः- व्यक्तं नास्त्येव। कथमन्यथा वासन्त्यपि तां न पश्येत्? अपि खलु स्वप्न एष स्यात्? न चास्मि सुप्तः। कुतो रामस्य निद्रा? सर्वथापि स एवैष भगवाननेकवारपरिकल्पितो विप्रलम्भः पुनः पुनरनुबध्नाति माम्।

168. सीता- मयैव दारुणया विप्रलब्ध आर्यपुत्रः।

169. वासन्ती- देव, पश्य पश्य-

पौलस्त्यस्य जटायुषा विघटितः कार्ष्णायसोऽयं रथ-
स्ते चैते पुरतः पिशाचवदनाः कङ्कालशेषाः खराः।
खड्गच्छिन्नजटायुपक्षतिरितः सीतां चलन्तीं वह-
न्नन्तर्व्यापृतविद्युदम्बुद इव द्यामभ्युदस्थादरिः ॥43॥ (शार्दूलविक्रीडित)

170. सीता- (सभयम्) आर्यपुत्र, तातो व्यापाद्यते। तस्मात्परित्रायस्व परित्रायस्व। अहमप्यपह्रिये।

171. रामः- (सवेगमुत्थाय) आः पाप तातप्राणसीतापहारिन् लङ्कापते, क्व यास्यसि?

172. वासन्ती- अयि देव राक्षसकुलप्रलयधूमकेतो, किमद्यापि ते मन्युविषयः?

173. सीता- अहो, उद्भ्रान्तास्मि।

174. रामः- अन्य एवायमधुना विपर्ययो वर्तते।

उपायानां भावादविरतविनोदव्यतिकरै-
र्विमर्दैर्वीराणां जगति जनितात्यद्भुतरसः।
वियोगो मुग्धाक्ष्याः स खलु रिपुघातावधिरभू-
त्कटुस्तूष्णीं सह्यो निरवधिरयं तु प्रविलयः॥44॥ (शिखरिणी)

175. सीता- निरवधिरिति हा हतास्मि मन्दभागिनी।

176. रामः- कष्टं भोः,

व्यर्थं यत्र कपीन्द्रसख्यमपि मे, वीर्यं हरीणां वृथा,
प्रज्ञा जाम्बवतो न यत्र, न गतिः पुत्रस्य वायोरपि।
मार्गं यत्र न विश्वकर्मतनयः कर्तुं नलोऽपि क्षमः
सौमित्रेरपि पत्रिणामविषये तत्र प्रिये! क्वासि मे ॥45॥ (शार्दूलविक्रीडित)

177. सीता- बहुमानितास्मि पूर्वविरहे।

178. रामः-सखि वासन्ति, दुःखायैव सुहृदामिदानीं रामदर्शनम्। कियच्चिरं त्वां रोदयिष्यामि। तदनुजानीहि मां गमनाय।

179. सीता-(सोद्वेगमोहं तमसामाश्लिष्य) हा भगवति तमसे, गच्छतीदानीमार्यपुत्रः। किं करोमि?

(इति मूर्च्छति)

180. तमसा-वत्से जानकि, समाश्वसिहि समाश्वसिहि। विधिस्तवानुकूलो भविष्यति। तदायुष्मतोः कुशलवयोर्वर्षर्द्धिमङ्गलानि संपादयितुं भागीरथीपदान्तिकमेव गच्छावः।

181. सीता-भगवति, प्रसीद। क्षणमात्रमपि दुर्लभदर्शनं जनं पश्यामि।

182. रामः- अस्ति चेदानीमश्वमेधसहधर्मचारिणी मे।

183. सीता-(साक्षेपम्) आर्यपुत्र, का?

184. वासन्ती-परिणीतमपि किम्?

185. रामः- नहि नहि, हिरण्मयी सीताप्रतिकृतिः।

186. सीता- (सोच्छ्वासास्रम्) आर्यपुत्र, इदानीमसि त्वम्। अहो, उत्खातितमिदानीं मे परित्यागशल्यमार्यपुत्रेण।

187. रामः- तत्रापि तावद्बाष्पदिग्धं चक्षुर्विनोदयामि।

188. सीता- धन्या खलु सा यैवमार्यपुत्रेण बहु मन्यते। यैवमार्यपुत्रं विनोदयन्त्याशाबन्धनं खलु जाता जीवलोकस्य।

189. तमसा - (सस्मितस्नेहार्द्रं परिष्वज्य) अयि वत्से, एवमात्मा स्तूयते।

190. सीता - (सलज्जम्) परिहसितास्मि भगवत्या।

191. वासन्ती- महानयं व्यतिकरोऽस्माकं प्रसादः। गमनं प्रति यथा कार्यहानिर्न भवति तथा कार्यम्।

192. रामः- तथास्तु।

193.सीता- प्रतिकूलेदानीं मे वासन्ती संवृत्ता।

194. **तमसा-** वत्से, एहि गच्छावः।

195. **सीता-** एवं कुर्वः।

196. **तमसा-** कथं वा गम्यते? यस्यास्तव-

प्रत्युप्तस्येव दयिते तृष्णादीर्घस्य चक्षुषः।
मर्मच्छेदोपमैर्यत्नैः संनिकर्षो निरुध्यते॥46॥ (अनुष्टुप्)

197. **सीता-** नमः सुकृतपुण्यजनदर्शनीयाभ्यामार्यपुत्रचरणकमलाभ्याम्।
(इति मूर्च्छति)

198. **तमसा-** वत्से, समाश्वसिहि।

199. **सीता-** (आश्वस्य) कियच्चिरं वा मेघान्तरेण पूर्णचन्द्रदर्शनम्?

200. **तमसा-** अहो संविधानकम्-

एको रसः करुण एव निमित्तभेदाद्
भिन्नः पृथक्पृथगिव श्रयते विवर्तान्।
आवर्तबुद्बुदतरङ्गमयान्विकारान्
अम्भो यथा, सलिलमेव हि तत्समस्तम्॥47॥ (वसन्ततिलका)

201. **रामः-** अयि विमानराज, इत इतः।
(सर्वे उत्तिष्ठन्ति।)

202. **तमसावासन्त्यौ-** (सीतारामौ प्रति)

अवनिरमरसिन्धुः सार्धमस्मद्विधाभिः
स च कुलपतिराद्यश्छन्दसां यः प्रयोक्ता।
स च मुनिरनुयातारुन्धतीको वसिष्ठ-
स्तव वितरतु भद्रं भूयसे मङ्गलाय॥48॥ (मालिनी)

(इति निष्क्रान्ताः सर्वे।)

इति श्रीभवभूतिविरचित उत्तररामचरिते छायानाम तृतीयोऽङ्कः

6. कादम्बरी शुकनासोपदेश

कादम्बरी का मङ्गलाचरण

रजोजुषे जन्मनि सत्त्ववृत्तये स्थितौ प्रजानां प्रलये तमःस्पृशे।
अजाय सर्गस्थितिनाशहेतवे त्रयीमयाय त्रिगुणात्मने नमः॥1॥

जयन्ति बाणासुरमौलिलालिता दशास्यचूडामणिचक्रचुम्बिनः ।
सुरासुराधीशशिखान्तशायिनो भवच्छिदस्त्र्यम्बकपादपांसवः ॥2॥

जयत्युपेन्द्रः स चकार दूरतो बिभित्सया यः क्षणलब्धलक्ष्यया।
दृशैव कोपारुणया रिपोरुरः स्वयं भयाद्भिन्नमिवास्त्रपाटलम् ॥3॥

नमामि भर्वोश्चरणाम्बुजद्वयं सशेखरैर्मौखरिभिः कृतार्च्चनम् ।
समस्त-सामन्त-किरीट-वेदिकाविटङ्क-पीठोल्लुठितारुणाङ्गुलिः ॥4॥

अकारणाविष्कृतवैरदारुणाद् असज्जनात् कस्य भयं न जायते।
विषं महाहेरिव यस्य दुर्वचः सुदुःसहं सन्निहितं सदा मुखे ॥5॥

कटुक्वणन्तो मलदायकाः खलास्तुदन्त्यलं बन्धनशृंखला इव ।
मनस्तु साधुध्वनिभिः पदे पदे हरन्ति सन्तो मणिनूपुरा इव ॥6॥

सुभाषितं हारि विशत्यधो गलान्न दुर्जनस्यार्करिपोरिवामृतम् ॥
तदेव धत्ते हृदयेन सज्जनो हरिर्महारत्नमिवातिनिर्मलम् ॥7॥

स्फुरत्कलालाप-विलास-कोमला करोति रागं हृदि कौतुकाधिकम् ।
रसेन शय्यां स्वयमभ्युपागता कथा जनस्याभिनवा वधूरिव ॥8॥

हरन्ति कं नोज्ज्वलदीपकोपमैर्नवैः पदार्थैरुपपादिताः कथाः ।
निरन्तरश्लेषघनाः सुजातयो महास्त्रजश्चम्पक-कुड्मलैरिव ॥9॥

बभूव वात्स्यायनवंशसम्भवो द्विजो जगद्गीतगुणोऽग्रणीः सताम् ।
अनेकगुप्तार्चितपाद-पङ्कजः कुबेरनामांश इव स्वयम्भुवः ॥10॥

उवास यस्य श्रुतिशान्तकल्मषे सदा पुरोडाशपवित्रिताधरे ।
सरस्वती सोमकषायितोदरे समस्त-शास्त्र-स्मृति-बन्धुरे मुखे ॥11॥

जगुर्गृहेऽभ्यस्तसमस्तवाङ्मयैः ससारिकैः पञ्जरवर्त्तिभिः शुकैः।
निगृह्यमाणा वटवः पदे पदे यजूंषि सामानि च यस्य शङ्किताः ॥12॥

हिरण्यगर्भो भुवनाण्डकादिव क्षपाकरः क्षीरमहार्णवादिव ।
अभूत् सुपर्णो विनतोदरादिव द्विजन्मनामर्थपतिः पतिस्ततः ॥13॥

विवृण्वतो यस्य विसारि वाङ्मयं दिने दिने शिष्यगणा नवाः नवाः ।
उषस्सु लग्नाः श्रवणेऽधिकां श्रियं प्रचक्रिरे चन्दनपल्लवा इव ॥14॥

विधान-सम्पादितदान-शोभितैः स्फुरन्महावीर-सनाथमूर्त्तिभिः ।
मखैरसंख्यैरजयत् सुरालयं सुखेन यो यूपकरैर्गजैरिव ॥15॥

स चित्रभानुं तनयं महात्मनां सुतोत्तमानां श्रुतिशास्त्रशालिनाम् ।
अवाप मध्ये स्फटिकोपलामलं क्रमेण कैलाशमिव क्षमाभृताम् ॥16॥

महात्मनो यस्य सुदूरनिर्गताः कलङ्कमुक्तेन्दुकलामलत्विषः।
द्विषन्मनः प्राविविशुः कृतान्तरा गुणा नृसिंहस्य नखाङ्कुशा इव ॥17॥

दिशामलीकालक-भङ्गतां गतस्त्रयीवधूकर्णतमालपल्लवः ।
चकार यस्याध्वरधूमसञ्चयो मलीमसः शुक्लतरं निजं यशः ॥18॥

सरस्वती-पाणि-सरोज-सम्पुट-प्रमृष्ट-होमश्रमशीकराम्भसः ।
यशोंऽशुशुक्लीकृतसप्तविष्टपात् ततः सुतो बाण इति व्यजायत ॥19॥

द्विजेन तेनाक्षतकण्ठकौण्ठ्यया महामनोमोहमलीमसान्धया ।
अलब्धवैदग्ध्यविलासमुग्धया धिया निबद्धेयमतिद्वयी कथा ॥20॥

(1)

एवं समतिक्रामत्सु केषुचित् दिवसेषु राजा चन्द्रापीडस्य यौवराज्याभिषेकं चिकीर्षुः प्रतीहारानुपकरणसंभारसंग्रहार्थमादिदेश। समुपस्थितयौवराज्याभिषेकं च तं कदाचिद्दर्शनार्थमागतमारूढविनयमपि विनीततरमिच्छञ्शुकनासः सविस्तरमुवाच 'तात ! चन्द्रापीड ! विदित-वेदितव्यस्याधीतसर्वशास्त्रस्य ते नाल्पमप्युपदेष्टव्यमस्ति। केवलं च निसर्गत एवाभानुभेद्यमरत्नालोकोच्छेद्यमप्रदीपप्रभापनेयमतिगहनं तमो यौवनप्रभवम्। अपरिणामोपशमो दारुणो लक्ष्मीमदः।

(2)

कष्टमनञ्जनवर्तिसाध्यमपरमैश्वर्यतिमिरान्धत्वम्। अशिशिरोपचारहार्योऽतितीव्रो दर्पदाहज्वरोष्मा। सततममूलमन्त्रगम्यो विषमो विषयविषास्वादमोहः। नित्यमस्नानशौचबाध्यो बलवान् रागमलावलेपः। अजस्रमक्षपावसानप्रबोधा घोरा च राज्यसुखसन्निपातनिद्रा भवतीति विस्तरेणाभिधीयसे। गर्भेश्वरत्वमभिनवयौवनत्वमप्रतिमरूपत्वममानुष-शक्तित्वञ्चेति महतीयं खल्वनर्थपरम्परा सर्वा। अविनयाना-मेकैकमप्येषामायतनं किमुत समवायः।

(3)

यौवनारम्भे च प्रायः शास्त्रजलप्रक्षालननिर्मलापि कालुष्यमुपयाति बुद्धिः। अनुज्झितधवलतापि सरागैव भवति यूनां दृष्टिः। अपहरति च वात्येव शुष्कपत्रं समुद्भूतरजोभ्रान्तिरतिदूरमात्मेच्छया यौवनसमये पुरुषं प्रकृतिः। इन्द्रियहरिणहारिणी च सततदुरन्तेयमुपभोगमृगतृष्णिका। नवयौवनकषायितात्मनश्च सलिलानीव तान्येव विषयस्वरूपाण्या-स्वाद्यमानानि मधुरतराण्यापतन्ति मनसः। नाशयति च दिङ्मोह इवोन्मार्गप्रवर्तकः पुरुषमत्यासङ्गो विषयेषु।

(4)

भवादृशा एव भवन्ति भाजनान्युपदेशानाम्। अपगतमले हि मनसि स्फटिकमणाविव रजनिकरगभस्तयो विशन्ति सुखेनोपदेशगुणाः। गुरुवचनममलमपि सलिलमिव महदुपजनयति श्रवणस्थितं शूलमभव्यस्य। इतरस्य तु करिण इव शङ्खाभरणमाननशोभासमुदयमधिकतरमुपजनयति। हरत्यतिमलिनमन्धकारमिव दोषजातं प्रदोषसमयनिशाकर इव। गुरूपदेशः प्रशमहेतुर्वयः परिणाम इव पलितरूपेण शिरसिजजालममलीकुर्वन्गुणरूपेण तदेव परिणमयति।

(5)

अयमेव चानास्वादितविषयरसस्य ते काल उपदेशस्य। कुसुमशरशरप्रहारजर्जरिते हि हृदि जलमिव गलत्युपदिष्टम् अकारणं च भवति दुष्प्रकृतेरन्वयः श्रुतं वाविनयस्य। चन्दनप्रभवो न दहति किमनलः? किं वा प्रशमहेतुनापि न प्रचण्डतरीभवति वडवानलो वारिणा? गुरूपदेशश्च नाम पुरुषाणामखिलमल- प्रक्षालनक्षममजलं स्नानम्, अनुपजातपलितादि-वैरूप्यमजरं वृद्धत्वम्, अनारोपितमेदोदोषं गुरूकरणम्, असुवर्णविरचनमग्राम्यं कर्णाभरणम्, अतीतज्योतिरालोकः, नोद्वेगकरः प्रजागरः।

(6)

विशेषेण राज्ञाम्। विरला हि तेषामुपदेष्टारः। प्रतिशब्दक इव राजवचनमनुगच्छति जनो भयात्। उद्दामदर्पाश्च पृथुस्थगितश्रवण–विवराश्चोपदिश्यमानमपि ते न शृण्वन्ति। शृण्वन्तोऽपि च गजनिमीलितेनावधीरयन्तः खेदयन्ति हितोपदेशदायिनो गुरून्। अहंकारदाहज्वरमूर्च्छान्धकारिता विह्वला हि राजप्रकृतिः, अलीकाभिमानोन्मादकारीणि धनानि, राज्यविषविकारतन्द्राप्रदा राजलक्ष्मीः।

(7)

आलोकयतु तावत्कल्याणाभिनिवेशो लक्ष्मीमेव प्रथमम्। इयं हि खड्गमण्डलोत्पलवनविभ्रमभ्रमरी लक्ष्मीः क्षीरसागरात् पारिजातपल्लवेभ्यो रागम्, इन्दुशकलादेकान्तवक्रताम्, उच्चैःश्रवसश्चञ्चलताम्, कालकूटान्मोहनशक्तिम्, मदिराया मदम्, कौस्तुभमणेर्नैष्ठुर्यम्, इत्येतानि सहवासपरिचयवशाद्विरहविनोदचिह्नानि गृहीत्वैवोद्गता। न ह्येवंविधमपरिचितमिह जगति किंचिदस्ति यथेयमनार्या। लब्धापि खलु दुःखेन परिपाल्यते। दृढगुणपाशसन्दाननिस्पन्दीकृतापि नश्यति।

(8)

उद्दामदर्पभटसहस्रोल्लासितासिलतापञ्जरविधृताप्यपक्रामति। मदजलदुर्दिनान्धकारगजघटितघनघटापरिपालितापि प्रपलायते। न परिचयं रक्षति। नाभिजनमीक्षते। न रूपमालोकयते। न कुलक्रममनुवर्तते। न शीलं पश्यति। न वैदग्ध्यं गणयति। न श्रुतमाकर्णयति। न धर्ममनुरुध्यते। न त्यागमाद्रियते। न विशेषज्ञतां विचारयति। नाचारं पालयति। न सत्यमनुबुध्यते। न लक्षणं प्रमाणीकरोति। गन्धर्वनगरलेखेव पश्यत एव नश्यति।

(9)

अद्याप्यारूढमन्दरपरिवर्तावर्तभ्रान्तिजनितसंस्कारेव परिभ्रमति। कमलिनीसंचरणव्यतिकरलग्न-नलिननालकण्टकेव न क्वचिदपि निर्भरमाबध्नाति पदम्। अतिप्रयत्नविधृतापि परमेश्वरगृहेषु विविधगन्धगजगण्डमधुपानमत्तेव परिस्खलति। पारुष्य-मिवोपशिक्षितुमसिधारासु निवसति। विश्वरूपत्वमिव ग्रहीतुमाश्रिता नारायणमूर्त्तिम्। अप्रत्ययबहुला च दिवसान्तकमलमिव समुपचितमूलदण्डकोशमण्डलमपि मुञ्चति भूभुजम्। लतेव विटपकानध्यारोहति।

(10)

गङ्गेव वसुजनन्यपि तरङ्गबुद्बुदचञ्चला। दिवसकरगतिरिव प्रकटितविविधसंक्रान्तिः। पातालगुहेव तमोबहुला। हिडिम्बेव भीमसाहसैकाहार्यहृदया। प्रावृडिवाचिरद्युतिकारिणी। दुष्टपिशाचीव दर्शितानेकपुरुषोच्छ्राया स्वल्पसत्त्वमुन्मत्तीकरोति। सरस्वतीपरिगृहीतमीर्ष्ययेव नालिङ्गति। जनं गुणवन्तमपवित्रमिव न स्पृशति। उदारसत्त्वममङ्गलमिव न बहुमन्यते। सुजनमनिमित्तमिव न पश्यति। अभिजातमहिमिव लङ्घयति। शूरं कण्टकमिव परिहरति। दातारं दुःस्वप्नमिव न स्मरति। विनीतं पातकिनमिव नोपसर्पति। मनस्विनमुन्मत्तमिवोपहसति।

(11)

परस्परविरुद्धञ्चेन्द्रजालमिव दर्शयन्ती प्रकटयति जगति निजं चरितम्। तथाहि सततमूष्माणमुपजनयन्त्यपि जाड्यमुपजनयति। उन्नतिमादधानापि नीचस्वभावतामाविष्करोति। तोयराशिसम्भवापि तृष्णां संवर्धयति। ईश्वरतां दधानाप्यशिवप्रकृतित्वमातनोति। बलोपचयमाह-रन्त्यपि लाघिमानमापादयति। अमृतसहोदरापि कटुविपाका। विग्रहवत्यप्यप्रत्यक्षदर्शना। पुरुषोत्तमरतापि खलजनप्रिया। रेणुमयीव स्वच्छमपि कलुषीकरोति।

(12)

यथा यथा चेयं चपला दीप्यते तथा तथा दीपशिखेव कज्जलमलिनमेव कर्म केवलमुद्वमति। तथाहि, इयं संवर्धनवारिधारा तृष्णाविषवल्लीनाम्, व्याधगीतिरिन्द्रियमृगाणाम् परामर्शधूमलेखा

सच्चरितचित्राणाम्, विभ्रमशय्या मोहदीर्घनिद्राणाम्, निवासजीर्णवलभी धनमदपिशाचिकानाम्, तिमिरोद्गतिः शास्त्रदृष्टीनाम्, पुरःपताका सर्वाविनयानाम्, उत्पत्तिनिम्नगा क्रोधावेगग्राहाणाम्, आपानभूमिर्विषयमधूनाम्, संगीतशाला भ्रूविकारनाट्यानाम्, आवासदरी दोषाशीविषाणाम्, उत्सारणवेत्रलता सत्पुरुषव्यवहाराणाम्, अकालप्रावृड् गुणकलहंसकानाम् विसर्पणभूमिर्लोकापवादविस्फोटकानाम्, प्रस्तावना कपटनाटकस्य, कदलिका कामकरिणः, वध्यशाला साधुभावस्य, राहुजिह्वा धर्मेन्दुमण्डलस्य।

13

न हि तं पश्यामि यो ह्यपरिचितयानया न निर्भरमुपगूढः, यो वा न विप्रलब्धः। नियतमियमालेख्यगतापि चलति, पुस्तमय्यपीन्द्रजालमाचरति, उत्कीर्णापि विप्रलभते, श्रुताप्यभिसन्धत्ते, चिन्तितापि वञ्चयति।

14

एवंविधयापि चानया दुराचारया कथमपि दैववशेन परिगृहीता विक्लवा भवन्ति राजानः, सर्वाविनयाधिष्ठानतां च गच्छन्ति। तथाहि अभिषेकसमय एव चैतेषां मङ्गलकलशजलैरिव प्रक्षाल्यते दाक्षिण्यम्। अग्निकार्यधूमेनेव मलिनीक्रियते हृदयम्, पुरोहितकुशाग्रसम्मार्जनी–भिरिवापह्रियते क्षान्तिः, उष्णीषपट्टबन्धेनेवाच्छाद्यते जरागमनस्मरणम्, आतपत्रमण्डलेनेवापसार्यते परलोकदर्शनम्, चामरपवनैरिवापह्रियते सत्यवादिता, वेत्रदण्डैरिवोत्सार्यन्ते गुणाः, जयशब्दकलकलरवैरिव तिरस्क्रियन्ते साधुवादाः, ध्वजपटपल्लवैरिव परामृश्यते यशः।

15

तथाहि केचिच्छ्रमवशशिथिलशकुनिगलपुटचपलाभिः खद्योतोन्मेषमुहूर्तमनोहराभिर्मनस्विजनगर्हिताभिः संपद्भिः प्रलोभ्यमाना धनलवलाभावलेपविस्मृतजन्मानोऽनेकदोषोपचितेन दोषासृजेव रागावेशेन बाध्यमानाः, विविधविषयग्रासलालसैः पञ्चभिरप्यनेकसहस्र-संख्यैरिवेन्द्रियैरायास्यमानाः, प्रकृतिचञ्चलतया लब्धप्रसरेणैकेनापि शतसहस्रतामिवोपगतेन मनसाऽऽकुलीक्रियमाणा विह्वलतामुपयान्ति।

16

ग्रहैरिव गृह्यन्ते, भूतैरिवाभिभूयन्ते, मन्त्रैरिवावेश्यन्ते,

सत्त्वैरिवावष्टभ्यन्ते, वायुनेव विडम्ब्यन्ते, पिशाचैरिव ग्रस्यन्ते, मदनशरैर्मर्माहता इव मुखभङ्गसहस्राणि कुर्वते, धनोष्मणा पच्यमाना इव विचेष्टन्ते, गाढप्रहाराहता इवाङ्गानि न धारयन्ति, कुलीरा इव तिर्यक्परिभ्रमन्ति, अधर्मभग्नगतयः पङ्गव इव परेण संचार्यन्ते मृषावादविपाकसञ्जातमुखरोगा इवातिकृच्छ्रेण जल्पन्ति।

17

सप्तच्छदतरव इव कुसुमरजोविकारैः पार्श्ववर्तिनां शिरःशूलमुत्पादयन्ति, आसन्नमृत्यव इव बन्धुजनमपि नाभिजानन्ति, उत्कुपितलोचना इव तेजस्विनो नेक्षन्ते, कालदष्टा इव महामन्त्रैरपि न प्रतिबुध्यन्ते, जातुषाभरणानीव सोष्माणं न सहन्ते, दुष्टवारणा इव महामानस्तम्भनिश्चलीकृता न गृह्णन्त्युपदेशम्, तृष्णाविषमूर्च्छिताः कनकमयमिव सर्वं पश्यन्ति, इषव इव पानवर्धिततैक्ष्ण्याः परप्रेरिता विनाशयन्ति, दूरस्थितान्यपि फलानीव दण्डविक्षेपैर्महाकुलानि शातयन्ति।

18

अकालकुसुमप्रसवा इव मनोहराकृतयोऽपि लोकविनाश-हेतवः, श्मशानाग्नय इवातिरौद्रभूतयः, तैमिरिका इवादूरदर्शिनः, उपसृष्टा इव क्षुद्राधिष्ठितभवनाः, श्रूयमाणा अपि प्रेतपटहा इवोद्वेजयन्ति, चिन्त्यमाना अपि महापातकाध्यवसाया इवोपद्रवमुपजनयन्ति। अनुदिवसमापूर्यमाणाः पापेनेवाध्मातमूर्तयो भवन्ति, तदवस्थाश्च व्यसनशतसख्यतामुपगता वल्मीकतृणाग्रावस्थिता जलबिन्दव इव पतितमप्यात्मानं नावगच्छन्ति।

19

अपरे तु स्वार्थनिष्पादनपरैर्धनपिशितग्रासगृध्रै-रास्थाननलिनीधूर्तबकैर्द्यूतं विनोद इति, परदाराभिगमनं वैदग्ध्यमिति, मृगयां श्रम इति, पानं विलास इति, प्रमत्ततां शौर्यमिति, स्वदारपरित्यागमव्यसनितेति, गुरुवचनावधीरणमपरप्रणेयत्वमिति, अजितभृत्यतां सुखोपसेव्यत्वमिति, नृत्यगीतवाद्यवेश्याभिसक्तिं रसिकतेति, महापराधावकर्णनं महानुभावतेति, पराभवसहत्वं क्षमेति।

20

स्वच्छन्दतां प्रभुत्वमिति, देवावमाननं, महासत्त्वतेति, बन्दिजनख्यातिं यश इति, तरलतामुत्साह इति, अविशेषज्ञतामपक्षपातित्वमिति दोषानपि गुणपक्षमध्यारोपयद्भिरन्तः स्वयमपि विहसद्भिः

प्रतारणकुशलैर्धूर्तैरमानुषलोकोचिताभिः स्तुतिभिः प्रतार्यमाणा वित्तमदमत्तचित्ता निश्चेतनतया तथैवेत्यात्मन्यारोपितालीकाभिमाना मर्त्यधर्माणोऽपि दिव्यांशावतीर्णमिव सदैवतमिवाति-मानुषमात्मानमुत्प्रेक्षमाणाः प्रारब्धदिव्योचितचेष्टानुभावाः सर्वजनस्योपहास्यतामुपयान्ति। आत्मविडम्बनां चानुजीविना जनेन क्रियमाणामभिनन्दन्ति।

(21)

मनसा देवताध्यारोपणविप्रतारणादसद्भूत-सम्भावनोपहताश्चान्तः प्रविष्टापरभुजद्वयमिवात्मबाहुयुगलं सम्भावयन्ति। त्वगन्तरिततृतीयलोचनं स्वललाटमाशङ्कन्ते। दर्शनप्रदानमप्यनुग्रहं गणयन्ति। दृष्टिपातमप्युपकारपक्षे स्थापयन्ति। सम्भाषणमपि संविभागमध्ये कुर्वन्ति। आज्ञामपि वरप्रदानं मन्यन्ते। स्पर्शमपि पावनमाकलयन्ति।

(22)

मिथ्यामाहात्म्यगर्वनिर्भराश्च न प्रणमन्ति देवताभ्यः, न पूजयन्ति द्विजातीन्, न मानयन्ति मान्यान्, नार्चयन्त्यर्चनीयान्, नाभिवादयन्त्याभिवादनार्हान्, नाभ्युत्तिष्ठन्ति गुरून्। अनर्थकायासान्तरितविषयोपभोगसुखमित्युपहसन्ति विद्वज्जनम्, जरावैक्लव्यप्रलपितमिति पश्यन्ति वृद्धोपदेशम्, आत्मप्रज्ञापरिभव इत्यसूयन्ति सचिवोपदेशाय, कुप्यन्ति हितवादिने।

(23)

सर्वथा तमभिनन्दन्ति, तमालपन्ति, तं पार्श्वे कुर्वन्ति, तं संवर्धयन्ति, तेन सह सुखमवतिष्ठन्ते, तस्मै ददति, तं मित्रतामुपजनयन्ति, तस्य वचनं शृण्वन्ति, तत्र वर्षन्ति, तं बहु मन्यन्ते, तमाप्ततामापादयन्ति, योऽहर्निशमनवरतमुपरचिताञ्जलिरधिदैवतमिव विगतान्यकर्तव्यः स्तौति, यो वा माहात्म्यमुद्भावयति।

(24)

किं वा तेषां साम्प्रतं येषामतिनृशंसप्रायोपदेशनिर्घृणं कौटिल्यशास्त्रं प्रमाणम्, अभिचारक्रियाक्रूरैकप्रकृतयः पुरोधसो गुरवः, पराभिसन्धानपरा मन्त्रिण उपदेष्टारः, नरपतिसहस्रभुक्तोज्झितायां लक्ष्म्यामासक्तिः, मारणात्मकेषु शास्त्रेष्वभियोगः, सहजप्रेमार्द्रहृदयानुरक्ता भ्रातर उच्छेद्याः।

(25)

तदेवं प्रायातिकुटिलकष्टचेष्टासहस्रदारुणे राज्यतन्त्रेऽस्मिन्महामोह-कारिणि च यौवने, कुमार! तथा प्रयतेथा यथा नोपहस्यसे जनैः, न निन्द्यसे साधुभिः, न धिक्क्रियसे गुरुभिः, नोपालभ्यसे सुहृद्भिः, न शोच्यसे विद्वद्भिः। यथा च न प्रकाश्यसे विटैः, न प्रहस्यसे कुशलैः, नास्वाद्यसे भुजङ्गैः, नावलुप्यसे सेवकवृकैः, न वञ्च्यसे धूर्तैः, न प्रलोभ्यसे वनिताभिः, न विडम्ब्यसे लक्ष्म्या, न नर्त्यसे मदेन, नोन्मत्तीक्रियसे मदनेन, नाक्षिप्यसे विषयैः, नावकृष्यसे रागेण, नापह्रियसे सुखेन।

(26)

कामं भवान्प्रकृत्यैव धीरः, पित्रा च महता प्रयत्नेन समारोपितसंस्कारः, तरलहृदयमप्रतिबुद्धं च मदयन्ति धनानि, तथापि भवद्गुणसन्तोषो मामेवं मुखरीकृतवान्। इदमेव च पुनः पुनरभिधीयसे। विद्वांसमपि सचेतनमपि महासत्त्वमप्यभिजातमपि धीरमपि प्रयत्नवन्तमपि पुरुषमियं दुर्विनीता खलीकरोति लक्ष्मीरिति। सर्वथा कल्याणैः पित्रा क्रियमाणमनुभवतु भवान्नवयौवराज्याभिषेकमङ्गलम्। कुलक्रमागतामुद्वह पूर्वपुरुषैरूढां धुरम्। अवनमय द्विषतां शिरांसि। उन्नमय स्वबन्धुवर्गम्।

(27)

अभिषेकानन्तरं च प्रारब्धदिग्विजयः परिभ्रमन्विजितामपि तव पित्रा सप्तद्वीपभूषणां पुनर्विजयस्व वसुन्धराम्। अयं च ते कालः प्रतापमारोपयितुम्। आरूढप्रतापो हि राजा त्रैलोक्यदर्शीव सिद्धादेशो भवति इत्येतावदभिधायोपशशाम। उपशान्तवचसि शुकनासे चन्द्रापीडस्ताभिरुपदेशवाग्भिः प्रक्षालित इव, उन्मीलित इव, स्वच्छीकृत इव, निर्मृष्ट इव, अभिषिक्त इव, अभिलिप्त इव, अलङ्कृत इव, पवित्रीकृत इव, उद्भासित इव, प्रीतहृदयो मुहूर्तं स्थित्वा स्वभवनमाजगाम।

इति बाणभट्ट-विरचित-कादम्बरी-शुकनासोपदेशः सम्पूर्णः

7. शिवराजविजयः

ऐतिहासिक उपन्यासः

प्रथमो विरामः

1

''**विष्णोर्माया भगवती यया सम्मोहितं जगत् ।**'' (भागवतम् 10/1/25)
''**हिंस्त्रः स्वपापेन विहिंसितः खलः साधुः समत्वेन भयाद् विमुच्यते।**''
(भागवतम् 10/7/31)

2

''**अरुण एष प्रकाशः पूर्वस्यां भगवतो मरीचिमालिनः। एष भगवान् मणिराकाशमण्डलस्य, चक्रवर्ती खेचर-चक्रस्य, कुण्डलमाखण्डलादिशः, दीपको ब्रह्माण्डभाण्डस्य, प्रेयान् पुण्डरीकपटलस्य, शोकविमोकः कोकलोकस्य, अवलम्बो रोलम्बकदम्बस्य, सूत्रधारः सर्वव्यवहारस्य, इनश्च दिनस्य। अयमेव अहोरात्रं जनयति, अयमेव वत्सरं द्वादशसु भागेषु विभनक्ति, अयमेव कारणं षण्णामृतूनाम्, एष एवाङ्गीकरोति उत्तरं दक्षिणं चायनम्, एनेनैव सम्पादिता युगभेदाः, एनेनैव कृताः कल्पभेदाः, एनमेवाऽऽश्रित्य भवति परमेष्ठिनः परार्द्धसङ्ख्या, असावेव चर्कर्ति बर्भर्ति जर्हर्ति च जगत् , वेदा एतस्यैव वन्दिनः, गायत्री अमुमेव गायति, ब्रह्मनिष्ठा ब्राह्मणा अमुमेवाहरहरुपतिष्ठन्ते। धन्य एष कुलमूलं श्रीरामचन्द्रस्य, प्रणम्य एष विश्वेषामि'' ति उदेष्यन्तं भास्वन्तं प्रणमन् निजपर्णकुटीरात् निश्चक्राम कश्चित् गुरुसेवनपटुर्विप्रबटुः।**

3

''**अहो! चिररात्राय सुप्तोऽहम्, स्वप्नजालपरतन्त्रेणैव महान् पुण्यमयः समयोऽतिवाहितः, सन्ध्योपासन-समयोऽयमस्मद्गुरुचरणानाम्, तत् सपदि अवचिनोमि कुसुमानि'' इति चिन्तयन् कदलीदलमेकमाकुञ्च्य, तृणशकलैः सन्धाय, पुटकं विधाय, पुष्पावचयं कर्त्तुमारेभे।**

4

बटुरसौ आकृत्या सुन्दरः, वर्णेन गौरः, जटाभिर्ब्रह्मचारी, वयसा षोडशवर्षदेशीयः, कम्बुकण्ठः, आयतललाटः, सुबाहुर्विशाललोचनश्चाऽऽसीत्।

5

कदलीदलकुञ्जायितस्य एतत्कुटीरस्य समन्तात् पुष्पवाटिका, पूर्वतः परम-पवित्र-पानीयं परस्सहस्त्र-पुण्डरीक-पटल-परिलसितं पतत्रिकुल-कूजित-पूजितं पयः पूरितं सर आसीत्। दक्षिणतश्चैको निर्झरझर्झर-ध्वनि-ध्वनित-दिगन्तरः फल-पटलाऽऽस्वाद-चपलित-चञ्चुपतङ्गकुलाऽऽक्रमणाधिक-विनत-शाख-शाखि-समूह-व्याप्तः सुन्दरकन्दरः पर्वतखण्ड आसीत्।

6

यावदेष ब्रह्मचारी बटुरलिपुञ्जमुद्धूय कुसुमकोरकानवचिनोति; तावत् तस्यैव सतीर्थ्योऽपरस्तत्समानवयाः कस्तूरिका-रेणु-रूषित इव श्यामः, चन्दन-चर्चित-भालः, कर्पूरागुरु-क्षोदच्छुरित-वक्षो-बाहु-दण्डः, सुगन्ध-पटलैरुन्निद्रयन्निव निद्रा-मन्थराणि कोरकनिकुरम्बकान्तराल-सुप्तानि मिलिन्द-वृन्दानि झटिति समुपसृत्य निवारयन् गौरबटुमेवमवादीत् -

7

''अलं भो अलम् ! मयैव पूर्वमवचितानि कुसुमानि, त्वं तु चिरं रात्रावजागरीरिति क्षिप्रं नोत्थापितः, गुरुचरणा अत्र तडागतटे सन्ध्यामुपासते, संस्थापिता मया निखिला सामग्री तेषां समीपे। यां च सप्तवर्षकल्पाम्, यावनत्रासेन निःशब्दं रुदतीम् , परमसुन्दरीम् , कलित-मानव-देहामिव सरस्वतीं सान्त्वयन् मरन्दमधुरा अपः पाययन्, कन्दखण्डानि भोजयन्, त्वं त्रियामाया यामत्रयमनैषीः; सेयमधुना स्वपिति, उद्बुद्ध्य च पुनस्तथैव रोदिष्यति, तत् परिमार्गणीयान्येतस्याः पितरौ गृहं च-''

इति संश्रुत्य उष्णं निःश्वस्य यावत् सोऽपि किञ्चिद् वक्तुमियेष तावदकस्मात् पर्वतशिखरे निपपात उभयोर्दृष्टिः।

8

तस्मिन् पर्वते आसीदेको महान् कन्दरः। तस्मिन्नेव महामुनिरेकः समाधौ तिष्ठति स्म। कदा स समाधिमङ्गीकृतवानिति कोऽपि न वेत्ति। ग्रामणी-ग्रामीण-ग्रामाः समागत्य मध्ये मध्ये तं पूजयन्ति प्रणमन्ति स्तुवन्ति च। तं केचित् कपिल इति, अपरे लोमश इति, इतरे जैगीषव्य इति, अन्ये च मार्कण्डेय इति विश्वसन्ति स्म। स एवायमधुना शिखरादवतरन् ब्रह्मचारि-बटुभ्यामदर्शि।

9

''अहो! प्रबुद्धो मुनिः! प्रबुद्धो मुनिः! इत एवाऽऽगच्छति, इत एवाऽऽगच्छति, सत्कार्योऽयम् सत्कार्योऽयम्'' इति तौ सम्भ्रान्तौ बभूवतुः।

अथ समापित-सन्ध्यावन्दनादिक्रिये समायाते गुरौ, तदाज्ञया नित्यनियम-सम्पादनाय प्रयाते गौरबटौ, छात्रगण-सहकारेण प्रस्तुतासु च स्वागतसामग्रीषु, ''इत आगम्यतां सनाथ्यतामेष आश्रमः'' इति सप्रणाममभिगम्य वदत्सु निखिलेषु, योगिराज आगत्य तन्निर्दिष्टकाष्ठपीठं भास्वानिवोदयगिरिमारुरोह, उपाविशच्च।

10

तस्मिन् पूज्यमाने, ''योगिराडुत्थित'' इति ''आयात'' इति च आकर्ण्य कर्णपरम्परया बहवो जनाः परितः स्थिताः। सुघटितं शरीरम्, सान्द्रां जटाम्, विशालान्यङ्गानि, अङ्गारप्रतिमे नयने, मधुरां गम्भीरां च वाचं वर्णयन्तश्चकिता इव सञ्जाताः।

11

अथ योगिराजं सम्पूज्य यावदीहितं किमपि आलपितुम्, तावत् कुटीराद् अश्रूयत तस्या एव बालिकायाः सकरुणरोदनम्।

ततः ''किमिति? कुत इति? केयमिति? कथमिति?'' पृच्छापरवशे योगिराजे ब्रह्मचारिगुरुणा बालिकां सान्त्वयितुं श्यामबटुमादिश्य कथितम्-

12

''भगवन्! श्रूयतां यदि कुतूहलम्। ह्यः सम्पादित-सायन्तन-कृत्ये, अत्रैव कुशाऽऽस्तरणमधिष्ठिते मयि, परितः समासीनेषु छात्रवर्गेषु, धीर-समीर-स्पर्शेन मन्दमन्दमान्दोल्यमानासु व्रततिषु, समुदिते यामिनीकामिनी-चन्दनबिन्दौ इव इन्दौ, कौमुदी-कपटेन सुधाधारामिव

वर्षति गगने, अस्मन्नीतिवार्तां शुश्रूषुषु इव मौनमाकलयत्सु पतग-कुलेषु, कैरव-विकाश-हर्ष-प्रकाश-मुखरेषु चञ्चरीकेषु, अस्पष्टाक्षरम्, कम्पमान-निःश्वासम्, श्लथत्कण्ठम्, घर्घरितस्वनम्, चीत्कारमात्रम्, दीनतामयम्, अत्यवधानश्रव्यत्वादनुमितदविष्ठतं क्रन्दनमश्रौषम्।''

(13)

तत्क्षणमेव च ''कुत इदम्? किमिदमिति दृश्यतां ज्ञायताम्'' इत्यादिश्य छात्रेषु विसृष्टेषु, क्षणानन्तरं छात्रेणैकेन भयभीता सवेगमत्युष्णं दीर्घं निःश्वसती, मृगीव व्याघ्राऽऽघ्राता, अश्रुप्रवाहैः स्नाता, सवेपथुः कन्यकैका अङ्के निधाय समानीता। चिरान्वेषणेनापि च तस्याः सहचरी सहचरो वा न प्राप्तः। तां च चन्द्रकलयेव निर्मिताम्, नवनीतेनेव रचिताम्, मृणालगौरीम्, कुन्दकोरकाग्रदतीं सक्षोभं रुदतीमवलोक्याऽस्माभिरपि न पारितं निरोद्धुं नयनबाष्पाणि।

(14)

अथ ''कन्यके! मा भैषीः, पुत्रि! त्वां मातुः समीपे प्रापयिष्यामः, दुहितः! खेदं मा वह, भगवति! भुङ्क्ष्व किञ्चित् , पिब पयः, एते तव भ्रातरः, यत् कथयिष्यसि तदेव करिष्यामः, मा स्म रोदनैः प्राणान् संशयपदवीमारोपयः, मा स्म कोमलमिदं शरीरं शोकज्वालावलीढं कार्षीः'' इति सहस्त्रधा बोधनेन कथमपि सम्बुद्धा किञ्चिद् दुग्धं पीतवती। ततश्च मया क्रोडे उपवेश्य, ''बालिके! कथय क्व ते पितरौ? कथमेतस्मिन्नाश्रमप्रान्ते समायाता? किं ते कष्टम् ? कथमरोदीः? किं वाञ्छसि? किं कुर्मः?'' इति पृष्टा मुग्धतया अपरिकलित-वाक्पाटवा, भयेन विशिथिलवचनविन्यासा, लज्जया अतिमन्दस्वरा, शोकेन रुद्धकण्ठा, चकितचकितेव कथं कथमपि अबोधयदस्मान् यद्-

''एषा अस्मिन्नेदीयस्येव ग्रामे वसतः कस्यापि ब्राह्मणस्य तनयाऽस्ति।''

(15)

एनां च सुदरीमाकलय्य कोऽपि यवनतनयो नदीतटान्मातुर्हस्तादाच्छिद्य क्रन्दन्तीं नीत्वाऽपससार। ततः कञ्चिदध्वानमतिक्रम्य यावदसिधेनुकां सन्दर्श्य बिभीषिकयाऽस्याः क्रन्दन-

कोलाहलं शमयितुमियेष, तावदकस्मात् कोऽपि काल-कम्बल इव भल्लूको वनान्तादुपाजगाम। दृष्ट्वैव यवन-तनयोऽसौ तत्रैव त्यक्त्वा कन्यकामिमां शाल्मलितरुमेकमारुरोह। विप्रतनया चेयं पलाश-पलाशि-श्रेण्यां प्रविश्य घुणाक्षरन्यायेन इत एव समायाता यावद् भयेन पुना रोदितुमारब्धवती, तावदस्मच्छात्रेणैवाऽऽनीते''ति।

(16)

तदाकर्ण्य कोपज्वालाज्वलित इव योगी प्रोवाच– ''विक्रमराज्येऽपि कथमेष पातकमयो दुराचाराणामुपद्रवः?''

ततः स उवाच– ''महात्मन्! क्वाधुना विक्रमराज्यम्? वीरविक्रमस्य तु भारतभुवं विरहय्य गतस्य वर्षाणां सप्तदश-शतकानि व्यतीतानि। क्वाधुना मन्दिरे मन्दिरे जयजयध्वनिः? क्व सम्प्रति तीर्थे तीर्थे घण्टानादः? क्वाद्यापि मठे मठे वेदघोषः? अद्य हि वेदा विच्छिद्य वीथीषु विक्षिप्यन्ते, धर्मशास्त्राण्युद्धूय धूमध्वजेषु ध्मायन्ते, पुराणानि पिष्ट्वा पानीयेषु पात्यन्ते, भाष्याणि भ्रंशयित्वा भ्राष्ट्रेषु भर्ज्यन्ते; ''क्वचिन्मन्दिराणि भिद्यन्ते, क्वचित् तुलसीवनानि छिद्यन्ते, क्वचिद् दारा अपह्रियन्ते, क्वचिद् धनानि लुण्ठ्यन्ते, क्वचिदार्त्तनादाः, क्वचिद् रुधिरधाराः, क्वचिदग्निदाहः, क्वचिद् गृहनिपातः'' इत्येव श्रूयतेऽवलोक्यते च परितः।

(17)

तदाकर्ण्य दुःखितश्चकितश्च योगिराडुवाच- ''कथमेतत्? ह्य एव पर्वतीयाञ्छकान् विनिर्जित्य महता जयघोषेण स्वराजधानीमायातः श्रीमानादित्य-पदलाञ्छनो वीरविक्रमः। अद्यापि तद्विजयपताका मम चक्षुषोरग्रत इव समुद्धूयन्ते, अधुनापि तेषां पटहगोमुखादीनां निनादः कर्णशष्कुलीं पूरयतीव, तत् कथमद्य वर्षाणां सप्तदश-शतकानि व्यतीतानि'' इति?

(18)

ततः सर्वेषु स्तब्धेषु चकितेषु च ब्रह्मचारिगुरुणा प्रणम्य कथितम्- ''भगवन्! बद्ध-सिद्धासनैर्निरुद्ध-निश्वासैः प्रबोधितकुण्डलिनीकै-र्विजितदशेन्द्रियैरनाहत-नाद-तन्तुमवलम्ब्याऽऽज्ञाचक्रं संस्पृश्य, चन्द्रमण्डलं भित्त्वा, तेजःपुञ्जमविगणय्य, सहस्त्रदलकमलस्यान्तः प्रविश्य, परमात्मानं

साक्षात्कृत्य, तत्रैव रममाणैर्मृत्युञ्जयैरानन्दमात्रस्वरूपैर्ध्यानावस्थितैर्भवादृशैर्न ज्ञायते कालवेगः। तस्मिन् समये भवता ये पुरुषा अवलोकिताः तेषां पञ्चाशत्तमोऽपि पुरुषो नावलोक्यते। अद्य न तानि स्रोतांसि नदीनाम्, न सा संस्था नगराणाम्, न सा आकृतिर्गिरीणाम्, न सा सान्द्रता विपिनानाम्। किमधिकं कथयामो भारतवर्षमधुना अन्यादृशमेव सम्पन्नमस्ति''।

(19)

इदमाकर्ण्य किञ्चित् स्मित्वेव परितोऽवलोक्य च योगी जगाद—

''सत्यं न लक्षितो मया समयवेगः। यौधिष्ठिरे समये कलितसमाधिरहं वैक्रमसमये उदस्थाम्। पुनश्च वैक्रम-समये समाधिमाकलय्य अस्मिन् दुराचारमये समयेऽहमुत्थितोऽस्मि। अहं पुनर्गत्वा समाधिमेव कलयिष्यामि, किन्तु तावत् सङ्क्षिप्य कथ्यतां का दशा भारतवर्षस्येति''-

(20)

तत् संश्रुत्य भारतवर्षीय-दशा-संस्मरण-सञ्जात-शोको हृदयस्थ-प्रसादसम्भारोद्गिरण-श्रमेणेवातिमन्थरेण स्वरेण ''मा स्म धर्मध्वंसन-घोषणैर्योगिराजस्य धैर्यमवधीरय'' इति कण्ठं रुन्धतो बाष्पानविगणय्य, नेत्रे प्रमृज्य, उष्णं निःश्वस्य, कातराभ्यामिव नयनाभ्यां परितोऽवलोक्य ब्रह्मचारिगुरुः प्रवक्तुमारभत-

''भगवन् ! दम्भोलिघटितेयं रसना, या दारुण-दानवोदन्तोदीरणैर्न दीर्य्यते, लोहसारमयं हृदयम्, यत् संस्मृत्य यावनान् परस्सहस्रान् दुराचारान् शतधा न भिद्यते, भस्मसाच्च न भवति। धिगस्मान्, येऽद्यापि जीवामः, श्वसिमः, विचरामः, आत्मन आर्य्यवंश्यांश्चाऽभिमन्यामहे''।

(21)

उपक्रममममुमाकर्ण्य अवलोक्य च मुनेर्विमनायमानं हरिद्राद्रवक्षालितमिव वदनम्, निपतद्वारिबिन्दुनी नयने, अञ्चितरोमकञ्चुकं शरीरम्, कम्पमानमधरम्, भज्यमानं च स्वरम् अवागच्छत् ''सकलानर्थमयः, सकल-वञ्चनामयः, सकलपापमयः, सकलोपद्रवमयश्चायं वृत्तान्तः'' इति, ''अत एव तत्स्मरणमात्रेणापि खिद्यत एष हृदये, तन्नाहमेनं निरर्थं जिग्लापयिषामि, न वा चिखेदयिषामि'' इति च विचिन्त्य-

''मुने! विलक्षणोऽयं भगवान् सकल-कला-कलाप-कलनः

सकल-कालनः करालः कालः। स एव कदाचित् पयः-पूर-पूरितान्यकूपारतलानि मरूकरोति। सिंह-व्याघ्र-भल्लूक-गण्डक-फेरु-शश-सहस्त्र-व्याप्तान्यरण्यानि जनपदीकरोति, मन्दिर-प्रासाद-हर्म्य-शृङ्गाटक-चत्वरोद्यान-तडाग-गोष्ठमयानि नगराणि च काननीकरोति। निरीक्ष्यतां कदाचिदस्मिन्नेव भारते वर्षे यायजूकै राजसूयादियज्ञा व्ययाजिषत, कदाचिदिहैव वर्ष-वाताऽऽतप-हिम-सहानि तपांसि अतापिषत। सम्प्रति तु म्लेच्छैर्गावो हन्यन्ते, वेदा विदीर्य्यन्ते, स्मृतयः समृद्यन्ते, मन्दिराणि मन्दुरीक्रियन्ते, सत्यः पात्यन्ते, सन्तश्च सन्ताप्यन्ते। सर्वमेतन्माहात्म्यं तस्यैव महाकालस्येति कथं धीरधौरेयोऽपि धैर्यं विधुरयसि? शान्तिमाकलय्यातिसङ्क्षेपेण कथय यवनराज्यवृत्तान्तम्। न जाने किमित्यनावश्यकमपि शुश्रूषते मे हृदयम्''- इति कथयित्वा तूष्णीमवतस्थे।

22

अथ स मुनिः- ''भगवन्! धैर्येण प्रसादेन प्रतापेन तेजसा वीर्येण विक्रमेण शान्त्या श्रिया सौख्येन धर्मेण विद्यया च सममेव परलोकं सनाथितवति तत्रभवति वीरविक्रमादित्ये, शनैः शनैः पारस्परिकविरोध-विशिथिलीकृतस्नेहबन्धनेषु राजसु, भामिनी-भ्रूभङ्ग-भूरिभाव-प्रभाव-पराभूत-वैभवेषु भटेषु, स्वार्थ-चिन्ता-सन्तान-वितानैकतानेष्वमात्यवर्गेषु, प्रशंसामात्रप्रियेषु प्रभुषु, ''इन्द्रस्त्वं वरुणस्त्वं कुबेरस्त्वम्'' इति वर्णनामात्रसक्तेषु बुधजनेषु कश्चन गजिनी-स्थाननिवासी महामदो यवनः ससेनः प्राविशद् भारते वर्षे। स च प्रजा विलुण्ठ्य, मन्दिराणि निपात्य, प्रतिमा विभिद्य, परश्शतान् जनांश्च दासीकृत्य, शतश उष्ट्रेषु रत्नान्यारोप्य स्वदेशमनैषीत्।

23

एवं स ज्ञातास्वादः पौनःपुन्येन द्वादशवारमागत्य भारतमलुलुण्ठत्। तस्मिन्नेव च स्वसंरम्भे एकदा गुर्जरदेश चूडायितं सोमनाथतीर्थमपि धूलीचकार। अद्य तु तत्तीर्थस्य नामापि केनापि न स्मर्यते; परं तत्समये तु लोकोत्तरं तस्य वैभवमासीत्। तत्र हि महार्ह-वैदूर्यपद्मराग-माणिक्य-मुक्ताफलादि-जटितानि कपाटानि, स्तम्भान्, गृहावग्रहणीः, भित्तीः, वलभीः, विटङ्कानि च निर्मथ्य, रत्ननिचयमादाय, शतद्वय-मणसुवर्ण-

शृङ्खलावलम्बिनीं चञ्चच्चाकचक्य-चकितीकृतावलोचक-लोचन-निचयां महाघण्टां प्रसह्य सङ्गृह्य महादेवमूर्तावपि गदामुदतूतुलत्।

(24)

अथ "वीर! गृहीतमखिलं वित्तम्, पराजिता आर्य्यसेनाः, बन्दीकृता वयम्, सञ्चितममलं यशः, इतोऽपि न शाम्यति ते क्रोधश्चेदस्मांस्ताडय मारय छिन्धि भिन्धि पातय मज्जय खण्डय, कर्तय ज्वलय; किन्तु त्यजेमामकिञ्चित्करीं जडां महादेवप्रतिमाम्। यद्येवं न स्वीकरोषि तद् गृहाणास्मत्तोऽन्यदपि सुवर्णकोटिद्वयम्, त्रायस्व, मैनां भगवन्मूर्तिं स्प्राक्षीः" इति साम्रेडं कथयत्सु रुदत्सु पतत्सु विलुण्ठत्सु प्रणमत्सु च पूजकवर्गेषु; "नाहं मूर्तीर्विक्रीणामि किन्तु भिनद्मि" इति सङ्गर्ज्य जनतायाः हाहाकार-कलकलमाकर्णयन् घोरगदया मूर्तिमतुत्रुटत्। गदापातसमकालमेव चानेकार्बुदपद्ममुद्रामूल्यानि रत्नानि मूर्तिमध्यादुच्छलितानि परितोऽवाकीर्यन्त। स च दग्धमुखः तानि रत्नानि मूर्तिखण्डानि च क्रमेलकपृष्ठेष्वारोप्य सिन्धुनदमुत्तीर्य स्वकीयां विजयध्वजिनीं गजिनीं नाम राजधानीं प्राविशत्।

(25)

अथ कालक्रमेण सप्ताशीत्युत्तरसहस्रतमे (1087) वैक्रमाब्दे सशोकं सकष्टं च प्राणांस्त्यक्तवति महामदे, गोरदेशवासी कश्चित् शहाबुद्दीन नामा प्रथमं गजिनीदेशमाक्रम्य, महामदकुलं धर्मराजलोकाध्वन्यध्वनीनं विधाय, सर्वाः प्रजाश्च पशुमारं मारयित्वा, तद्रुधिरार्द्रमृदा गोरदेशे बहून गृहान् निर्माय चतुरङ्गिण्याऽनीकिन्या भारतवर्षं प्रविश्य, शीतलशोणितानप्यसयन् पञ्चाशदुत्तर-द्वादश-शतमितेऽब्दे (1250) दिल्लीमश्वयाम्बभूव।

(26)

ततो दिल्लीश्वरं पृथ्वीराजं कान्यकुब्जेश्वरं जयचन्द्रं च पारस्परिकविरोध-ज्वर-ग्रस्तं विस्मृत-राजनीतिं भारतवर्ष-दुर्भाग्यायमाणमाकलय्यानायासेनोभावपि विशस्य, वाराणसीपर्यन्तमखण्डमण्डलमकण्टकमकीटकिट्टं महारत्नमिव महाराज्यमङ्गीचकार। तेन वाराणस्यामपि बहवोऽस्थिगिरयः प्रचिताः,

रिङ्गत्तरङ्ग-भङ्गा गङ्गाऽपि शोणित-शोणा शोणीकृता, परस्सहस्त्राणि च देवमन्दिराणि भूमिसात्कृतानि।

स एव प्राधान्येन भारते यावनराज्याङ्कुराऽऽरोपकोऽभूत्। तस्यैव च कश्चित् क्रीतदासः कुतुबुद्दीननामा प्रथमभारतसम्राट् सञ्जातः।

27

तमारभ्याद्यावधि राक्षसा एव राज्यमकार्षुः। दानवा एव च दीनानदीदलन् । अभूत् केवलम् अकबरशाह-नामा यद्यपि गूढशत्रुर्भारतवर्षस्य, तथापि शान्तिप्रियो विद्वत्प्रियश्च। अस्यैव प्रपौत्रो मूर्तिमदिव कलियुगं, गृहीतविग्रह इव चाधर्मः, आलमगीरोपाधिधारी अवरङ्गजीवः सम्प्रति दिल्लीवल्लभतां कलङ्कयति। अस्यैव पताकाः केकयेषु मत्स्येषु मगधेषु अङ्गेषु बङ्गेषु कलिङ्गेषु च दोधूयन्ते, केवलं दक्षिणदेशेऽधुनाऽप्यस्य परिपूर्णो नाधिकारः संवृत्तः।

28

दक्षिणदेशो हि पर्वतबहुलोऽस्ति, अरण्यानीसङ्कुलश्चास्तीति चिरोद्योगेनापि नायमशकन्महाराष्ट्रकेसरिणो हस्तयितुम्। साम्प्रतमस्यैवाऽऽत्मीयो दक्षिणदेश-शासकत्वेन "शास्तिखान" नामा प्रेष्यत इति श्रूयते। महाराष्ट्रदेशरत्नम्, यवन-शोणित-पिपासाऽऽकुलकृपाणः, वीरतासीमन्तिनी-सीमन्त-सुन्दर-सान्द्र-सिन्दूर-दान-देदीप्यमानदोर्दण्डः, मुकुट-मणिर्महाराष्ट्राणाम्, भूषणं भटानाम्, निधिर्नीतीनाम्, कुलभवनं कौशलानाम्, पारावारः परमोत्साहानाम्, कश्चन प्रातः-स्मरणीयः, स्वधर्माऽऽग्रह-ग्रह-ग्रहिलः, शिव इव धृतावतारः शिववीरश्चास्मिन् पुण्यनगरान्नेदीयस्येव सिंहदुर्गे ससेनो निवसति। विजयपुराधीश्वरेण साम्प्रतमस्य प्रवृद्धं वैरम्। "कार्यं वा साधयेयं देहं वा पातयेयम्!" इत्यस्य सारगर्भा महती प्रतिज्ञा। सतीनाम्, सताम्, त्रैवर्णिकस्य आर्यकुलस्य धर्मस्य भारतवर्षस्य च आशा-सन्तान-वितानस्यायमेवाऽऽश्रयः। इयमेव वर्तमाना दशा भारतवर्षस्य। किमधिकं विनिवेदयामो योग-बलावगत-सकल-गोप्यतम-वृत्तान्तेषु योगिराजेषु" इति कथयित्वा विरराम।

(29)

तदाकर्ण्य विविध-भाव-भङ्ग-भासुर-वदनो योगिराजो मुनिराजं तत्सहचरांश्च निपुणं निरीक्ष्य, तेषामपि शिववीरान्तरङ्गतामङ्गीकृत्य, मुनिवेषव्याजेन स्वधर्मरक्षाव्रतिनश्चोररीकृत्य "विजयतां शिववीरः, सिद्ध्यन्तु भवतां मनोरथाः" इति मन्दं व्याहार्षीत् ।

(30)

अथ "किमपि पिपृच्छिषामी" ति शनैरभिधाय बद्धकरसम्पुटे सोत्कण्ठे जटिलमुनौ "अवगतम्, यवनयुद्धे विजय एव, दैवादापद्ग्रस्तोऽपि च सखिसाहाय्येनाऽऽत्मानमुद्धरिष्यति" इति समभाणीत्। मुनिश्च 'गृहीतमि' त्युदीर्य, पुनः किञ्चिद् विचार्य्येव स्मृत्वेव च, दीर्घमुष्णं निःश्वस्य, रोरुध्यमानैरपि किञ्चिदुद्गतैर्बाष्पबिन्दुभिराकुलनयनो "भगवन्! प्रायो दुर्लभो युष्मादृक्षाणां साक्षात्कार इत्यपराऽपि पृच्छाऽऽच्छादयति माम्" इति न्यवेदीत्। स च "आम्! ऊरीकृतम्, जीवति सः, सुखेनैवाऽऽस्ते" इत्युदतीतरत्। अथ "तं कदा द्रक्ष्यामि" इति पुनः पृष्टवति "तद्विवाहसमये द्रक्ष्यसि" इत्यभिधाय, बहूनि सान्त्वनावचनानि च गम्भीरस्वरेणोक्त्वा, सपदि उपत्यकाम्, गण्डशैलान् अधित्यकां चाऽऽरुह्य पुनस्तस्मिन्नेव पर्वतकन्दरे तपस्तप्तुं जगाम।

(31)

ततः शनैः शनैर्निर्यातेष्वपरिचितजनेषु, संवृत्ते च निर्मक्षिके, मुनिर्गौरबटुमाहूय, विजयपुराधीशाऽऽज्ञया शिववीरेण सह योद्धुं ससेनं प्रस्थितस्य अफ़जलखानस्य विषये यावत् किमपि प्रष्टुमियेष, तावत् पादचारध्वनिमिव कस्याप्यश्रौषीत्। तमवधार्याऽन्यमनस्के इव मुनौ गौरबटुरपि तेनैव ध्वनिना कर्णयोराकृष्ट इव समुत्थाय, निपुणं परितो निरीक्ष्य, पर्य्यट्य, 'कोऽयम्?' इति च साम्रेडं व्याहृत्य, कमप्यनवलोक्य, पुनर्निवृत्य, 'मन्ये मार्जारः कोऽपि' इति मन्दं गुरवे निवेद्य, पुनस्तथैवोपविवेश। मुनिश्च 'मा स्म कश्चिदितरः श्रौषीत्' इति सशङ्कः क्षणं विरम्य पुनरुपन्यस्तुमारेभे-

(32)

''वत्स गौरसिंह! अहमत्यन्तं तुष्यामि त्वयि, यत् त्वमेकाकी अफ़जलखानस्य त्रीनश्वान् तेन दासीकृतान् पञ्च ब्राह्मणतनयांश्च मोचयित्वा आनीतवानसीति। कथं न भवेरीदृशः? कुलमेवेदृशं राजपुत्रदेशीयक्षत्रियाणाम्''। तावत् पुनरश्रूयत मर्मरः पादक्षेपश्च। ततो विरम्य, मुनिः स्वयमुत्थाय, प्रोच्चं शिलापीठमेकमारुह्य, निपुणतया परितः पश्यन्नपि कारणं किमपि नावलोकयामास चरणाक्षेपशब्दस्य। अतः पुनरेकतानेन निपुणं निरीक्षमाणेन गौरसिंहेन दृष्टं यत् कुटीर-निकटस्थ-निष्कुटक-कदलीकूटे द्वित्रास्तरवोऽतितरां कम्पन्ते इति।

(33)

तदेव संशयस्थानमित्यङ्गुल्या निर्दिश्य, कुटीर-वलीके गोपयित्वा स्थापितानामसीनामेकमाकृष्य, रिक्तहस्तेनैव मुनिना पृष्ठतोऽनुगम्यमानः कपोल-तल-विलम्बमानान् चक्षुश्चुम्बिनः कुटिल-कचान् वामकराङ्गुलिभिरपसारयन्, मुनिवेषोऽपि किञ्चित् कोप-कषायितनयनः, करकम्पितकृपाकृपण-कृपाणो महादेवमारिराधयिषुस्तपस्विवेषोऽर्जुन इव शान्तवीररसद्वयस्नातः सपदि समागतवान् तन्निकटे, अपश्यच्च लताप्रतान-वितान-वेष्टित-रम्भा-स्तम्भ-त्रितयस्य मध्ये नीलवस्त्र-खण्ड-वेष्टित-मूर्द्धानं हरितकञ्चुकं श्याम-वसनानद्ध-कटितट-कर्बुराधोवसनम्, काकासनेनोपविष्टम्, रम्भालवाल-लग्नाधोमुख-खड्गत्सरुन्यस्त-विपर्यस्त-हस्त-युगलम्, लशुनगन्धिभिर्निश्वासैः कदली-किसलयानि मलिनयन्तम्, नवाङ्कुरित-श्मश्रु-श्रेणि-च्छलेन कन्यकापहरण-पङ्क-कलङ्ककलङ्किताननम्, विंशतिवर्ष-कल्पं यवनयुवकम्। ततः परस्परं चाक्षुषे सम्पन्ने दृष्टोऽहमिति निश्चित्य, उत्प्लुत्य, कोशात् कृपाणमाकृष्य युयुत्सुः सोऽपि सम्मुखमवतस्थे। ततस्तयोरेवं सञ्जाताः परस्परमालापाः।

(34)

गौरसिंहः- **कुतो रे यवन-कुल-कलङ्क!**

यवनयुवकः- **आः! वयमपि कुत इति प्राष्टव्याः? भारतीयकन्दरिकन्दरेष्वपि वयं विचरामः, शृङ्ग-लाङ्गूल विहीनानां हिन्दुपदव्यवहार्याणां च युष्मादृक्षाणां पशूनामाखेटक्रीडया रमामहे।**

गौरसिंहः- (सक्रोधं विहस्य) **वयमपि तु स्वाङ्कागतसत्त्ववृत्तयः शिवस्य गणा अत्रैव निवसामः, तत् सुप्रभातमद्य, स्वयमेव त्वं दीर्घ-दाव-दहने पतङ्गायितोऽसि।**

यवनयुवकः- **अरे रे वाचाल! ह्यो रात्रौ युष्मत्कुटीरे रुदतीं समायातां ब्राह्मण-तनयां सपदि प्रयच्छथ, तत् कदाचिद् दयया जीवतोऽपि त्यजेयम्, अन्यथा मदसिभुजङ्गिन्या दंष्टाः क्षणात् कथावशेषाः संवत्स्र्यथ।**

35

कलकलमेतमाकर्ण्य श्यामबटुरपि कन्यासमीपादुत्थाय दृष्ट्वा च हन्तुमेतं यवनवराकं पर्य्याप्तोऽयं गौरसिंह इति मा स्म गमदन्योऽपि कश्चित् कन्यकामपजिहीर्षुरिति वलीकादेकं विकटखड्गमाकृष्य त्सरौ गृहीत्वा कन्यकां रक्षन्, तदध्युषित-कुटीर-निकट एव तस्थौ।

गौरसिंहस्तु 'कुटीरान्तः कन्यकाऽस्ति, सा च यवन-वध-व्यसनिनि मयि जीवति न शक्या द्रष्टुमपि, किं नाम स्प्रष्टुम् ? तद् यावत् तव कवोष्ण-शोणित-तृषित एष चन्द्रहासो न चलति, तावत् कूर्द्दनं वा उत्फालं वा यच्चिकीर्षसि तद् विधेहि' इत्युक्त्वा व्यालीढमर्य्यादया सज्जः समतिष्ठत।

36

ततो गौरसिंहः दक्षिणान् वामांश्च परश्शतान् कृपाणमार्गानङ्गीकृतवतः, दिनकर-कर-स्पर्श-चतुर्गुणीकृत-चाकचक्यैः चञ्चच्चन्द्रहास-चमत्कारैश्चक्षूंषि मुष्णतः, यवन-युवक-हतकस्य, केनाप्यनुपलक्षितोद्योगः, अकस्मादेव स्वासिना कलित-क्लेद-सञ्जात-स्वेदजल-जालं विशिथिल-कच-कुल-मालं भग्न-भ्रू-भयानक-भालं शिरश्चिच्छेद।

37

अथ मुनिरपि दाडिम-कुसुमास्तरणाच्छन्नायामिव गाढ-रुधिर-दिग्धायां ज्वलदङ्गार-चितायां चितायामिव वसुधायां शयानं वियुज्यमान-भारतभुवमालिङ्गन्तमिव निर्जीवीभवदङ्गबन्ध-चालनपरं शोणित-सङ्घात-व्याजेनान्तः-स्थित-रजोराशिमिवोद्गिरन्तं कलित-सायन्तन-घनाऽऽडम्बर-विभ्रमं सतत-ताम्रचूडभक्षण-पातकेनेव ताम्रीकृतं छिन्न-कन्धरं यवनहतकमवलोक्य सहर्षं ससाधुवादं सरोमोद्गमं च गौरसिंहमाश्लिष्य, भ्रूभङ्गमात्राऽऽज्ञप्तेन भृत्येन मृतककञ्चुककटिबन्धोष्णीषादिक-मन्विष्याऽऽनीतं पत्रमेकमादाय सगणः स्वकुटीरं प्रविवेश।

इति अम्बिकादत्तव्यास-विरचित-शिवराजविजयः सम्पूर्णः

8. शब्दरूप

1. अकारान्त पुँल्लिङ्ग बालक (बालक)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	बालकः	बालकौ	बालकाः
द्वितीया	बालकम्	बालकौ	बालकान्
तृतीया	बालकेन	बालकाभ्याम्	बालकैः
चतुर्थी	बालकाय	बालकाभ्याम्	बालकेभ्यः
पञ्चमी	बालकात् /बालकाद्	बालकाभ्याम्	बालकेभ्यः
षष्ठी	बालकस्य	बालकयोः	बालकानाम्
सप्तमी	बालके	बालकयोः	बालकेषु
सम्बोधन	हे बालक!	हे बालकौ!	हे बालकाः!

अन्य अकारान्त पुंलिङ्ग शब्द

राम,कृष्ण, वृक्ष, कोविद (विद्वान्), सिंह (शेर), नृप, चन्द्र, चिकित्सक (डॉक्टर), नाग (साँप), छात्र, अश्व, वैद्य (डॉक्टर), जनक (पिता), नर, वानर, मधुप (भौंरा), सुत (पुत्र), पुत्र, सुर, खग (पक्षी), कर (हाथ), मूषक, अर्चक (पुजारी), तस्कर (चोर), नायक (हीरो), मातुल, काण (काना), गर्दभ (गदहा), गायक (गाने वाला), गज, कृपण (कंजूस), याचक (भिक्षुक), चालक (ड्राइवर), सर्प, विप्र (ब्राह्मण), इन्द्र, कूप, नारिकेल (नारियल), गणेश, तडाग, केशव (कृष्ण), मयूर आदि अनेक अकारान्त पुंलिङ्ग शब्दों के रूप 'बालक' की तरह चलेंगे।

तादृश (उसकी तरह)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	तादृशः	तादृशौ	तादृशाः
द्वितीया	तादृशम्	तादृशौ	तादृशान्
तृतीया	तादृशेन	तादृशाभ्याम्	तादृशैः
चतुर्थी	तादृशाय	तादृशाभ्याम्	तादृशेभ्यः
पञ्चमी	तादृशात् /तादृशाद्	तादृशाभ्याम्	तादृशेभ्यः
षष्ठी	तादृशस्य	तादृशयोः	तादृशानाम्
सप्तमी	तादृशे	तादृशयोः	तादृशेषु
सम्बोधन	हे तादृश!	हे तादृशौ!	हे तादृशाः!

नोट- यही शब्द इसी अर्थ में (तादृश्) शकारान्त भी है, उनके रूप व्यञ्जनान्त संज्ञाओं में मिलेंगे।

2. आकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्द

(क) विश्वपा (संसार का रक्षक)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	विश्वपाः	विश्वपौ	विश्वपाः
द्वितीया	विश्वपाम्	विश्वपौ	विश्वपः
तृतीया	विश्वपा	विश्वपाभ्याम्	विश्वपाभिः
चतुर्थी	विश्वपे	विश्वपाभ्याम्	विश्वपाभ्यः
पञ्चमी	विश्वपः	विश्वपाभ्याम्	विश्वपाभ्यः
षष्ठी	विश्वपः	विश्वपोः	विश्वपाम्
सप्तमी	विश्वपि	विश्वपोः	विश्वपासु
सम्बोधन	हे विश्वपाः!	हे विश्वपौ!	हे विश्वपाः!

नोट- गोपा (गाय का रक्षक), शंखध्मा (शंख बजाने वाला), सोमपा (सोमरस पीने वाला), धूम्रपा (धुआँ पीने वाला), बलदा (बल देने वाला या इन्द्र) तथा और भी दूसरे आकारान्त धातुओं से निकले हुए समस्त पुँल्लिङ्ग संज्ञा शब्दों के रूप विश्वपा के समान होते हैं। अन्य आकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्दों के रूप 'हाहा' (गन्धर्वविशेष) की भाँति चलते है, जैसे-

(ख) हाहा (गन्धर्व)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	हाहाः	हाहौ	हाहाः
द्वितीया	हाहाम्	हाहौ	हाहान्
तृतीया	हाहा	हाहाभ्याम्	हाहाभिः
चतुर्थी	हाहै	हाहाभ्याम्	हाहाभ्यः
पञ्चमी	हाहाः	हाहाभ्याम्	हाहाभ्यः
षष्ठी	हाहाः	हाहौः	हाहाम्
सप्तमी	हाहे	हाहौः	हाहासु
सम्बोधन	हे हाहाः!	हे हाहौ!	हे हाहाः!

3. इकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्द

(क) कवि (कवि)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	कविः	कवी	कवयः
द्वितीया	कविम्	कवी	कवीन्
तृतीया	कविना	कविभ्याम्	कविभिः
चतुर्थी	कवये	कविभ्याम्	कविभ्यः
पञ्चमी	कवेः	कविभ्याम्	कविभ्यः
षष्ठी	कवेः	कव्योः	कवीनाम्
सप्तमी	कवौ	कव्योः	कविषु
सम्बोधन	हे कवे!	हे कवी!	हे कवयः!

अन्य इकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्द

अग्नि (आग), मणि (मणि), अरि (शत्रु), अहि (साँप), यति (संन्यासी), अतिथि (मेहमान), कपि (वानर), राशि (ढेर), उदधि (समुद्र), ध्वनि (आवाज), सभापति (सभाध्यक्ष), गिरि (पहाड़), पशुपति (शिव), परिधि (एक रेखा), नृपति (राजा), पाणिनि (वैयाकरण), आधि (मानसिक कष्ट), मारुति (हनुमान्), सन्धि (मेल), अवधि (सीमा), रमापति (विष्णु), सारथि (ड्राइवर), प्रणिधि (प्रार्थना), विधि (तरीका), उपाधि (उपाधि), रश्मि (किरण), समाधि (समाधि), निधि (खजाना), अद्रि (पर्वत), पाणि (हाथ), बलि (राजा बलि), अवि (भेंड) आदि।

नोट- इसीप्रकार सभी इकारान्त पुंलिङ्ग शब्दों के रूप 'कवि' के समान बना लीजिए।

(ख) पति (स्वामी, मालिक)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पतिः	पती	पतयः
द्वितीया	पतिम्	पती	पतीन्
तृतीया	पत्या	पतिभ्याम्	पतिभिः
चतुर्थी	पत्ये	पतिभ्याम्	पतिभ्यः
पञ्चमी	पत्युः	पतिभ्याम्	पतिभ्यः
षष्ठी	पत्युः	पत्योः	पतीनाम्
सप्तमी	पत्यौ	पत्योः	पतिषु
सम्बोधन	हे पते!	हे पती!	हे पतयः!

नोट- जब पति शब्द किसी शब्द के साथ समास के अन्त में आता है तो उसके रूप कवि के ही समान होते हैं, जैसे- भूपति, महीपति, रमापति आदि।

(ग) भूपति (राजा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	भूपतिः	भूपती	भूपतयः
द्वितीया	भूपतिम्	भूपती	भूपतीन्
तृतीया	भूपतिना	भूपतिभ्याम्	भूपतिभिः
चतुर्थी	भूपतये	भूपतिभ्याम्	भूपतिभ्यः
पञ्चमी	भूपतेः	भूपतिभ्याम्	भूपतिभ्यः
षष्ठी	भूपतेः	भूपत्योः	भूपतीनाम्
सप्तमी	भूपतौ	भूपत्योः	भूपतिषु
सम्बोधन	हे भूपते!	हे भूपती!	हे भूपतयः!

नोट- इसी प्रकार महीपति, गृहपति, नरपति, लोकपति, अधिपति, सुरपति, गजपति, गणपति (गणेश), जगत्पति, बृहस्पति, पृथ्वीपति इत्यादि शब्दों के रूप 'भूपति' के समान अथवा कवि शब्द की भाँति चलेंगे।

(घ) सखि (मित्र)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सखा	सखायौ	सखायः
द्वितीया	सखायम्	सखायौ	सखीन्
तृतीया	सख्या	सखिभ्याम्	सखिभिः
चतुर्थी	सख्ये	सखिभ्याम्	सखिभ्यः
पञ्चमी	सख्युः	सखिभ्याम्	सखिभ्यः
षष्ठी	सख्युः	सख्योः	सखीनाम्
सप्तमी	सख्यौ	सख्योः	सखिषु
सम्बोधन	हे सखे!	हे सखायौ!	हे सखायः!

4. ईकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्द

(क) प्रधी (अच्छा ध्यान करने वाला)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	प्रधीः	प्रध्यौ	प्रध्यः
द्वितीया	प्रध्यम्	प्रध्यौ	प्रध्यः
तृतीया	प्रध्या	प्रधीभ्याम्	प्रधीभिः
चतुर्थी	प्रध्ये	प्रधीभ्याम्	प्रधीभ्यः
पञ्चमी	प्रध्यः	प्रधीभ्याम्	प्रधीभ्यः
षष्ठी	प्रध्यः	प्रध्योः	प्रध्याम्
सप्तमी	प्रध्यि	प्रध्योः	प्रधीषु
सम्बोधन	हे प्रधीः!	हे प्रध्यौ!	हे प्रध्यः!

नोट- उन्नी, ग्रामणी, सेनानी शब्दों के रूप भी प्रधी के समान होते हैं, केवल सप्तमी के एकवचन में उन्न्याम्, ग्रामण्याम्, सेनान्याम् ऐसे रूप हो जाते हैं।

(ख) सुधी (पण्डित, विद्वान्)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सुधीः	सुधियौ	सुधियः
द्वितीया	सुधियम्	सुधियौ	सुधियः
तृतीया	सुधिया	सुधीभ्याम्	सुधीभिः
चतुर्थी	सुधिये	सुधीभ्याम्	सुधीभ्यः
पञ्चमी	सुधियः	सुधीभ्याम्	सुधीभ्यः
षष्ठी	सुधियः	सुधियोः	सुधियाम्
सप्तमी	सुधियि	सुधियोः	सुधीषु
सम्बोधन	हे सुधीः!	हे सुधियौ!	हे सुधियः!

नोट- शुष्की, पक्वी, सुश्री, शुद्धधी, परमधी के रूप भी सुधी के समान होते हैं।

(ग) सखी (सखायम् इच्छति इति)सखा को चाहने वाला

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सखा	सखायौ	सखायः
द्वितीया	सखायम्	सखायौ	सख्यः
तृतीया	सख्या	सखीभ्याम्	सखीभिः
चतुर्थी	सख्ये	सखीभ्याम्	सखीभ्यः
पञ्चमी	सख्युः	सखीभ्याम्	सखीभ्यः
षष्ठी	सख्युः	सख्योः	सख्याम्
सप्तमी	सख्यि	सख्योः	सखीषु
सम्बोधन	हे सखीः!	हे सखायौ!	हे सखायः!

5. उकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्द

भानु (सूर्य)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	भानुः	भानू	भानवः
द्वितीया	भानुम्	भानू	भानून्
तृतीया	भानुना	भानुभ्याम्	भानुभिः
चतुर्थी	भानवे	भानुभ्याम्	भानुभ्यः
पञ्चमी	भानोः	भानुभ्याम्	भानुभ्यः
षष्ठी	भानोः	भान्वोः	भानूनाम्
सप्तमी	भानौ	भान्वोः	भानुषु
सम्बोधन	हे भानो!	हे भानू!	हे भानवः!

अन्य उकारान्त पुंलिङ्ग शब्द

विष्णु, रिपु, गुरु, शिशु, कृशानु (आग), प्रभु (स्वामी), विधु (चन्द्रमा), बाहु (भुजा), पांशु (धूलि), वायु (हवा), पशु (पशु), तरु (वृक्ष), इषु (गन्ना) आदि।

नोट- इसी प्रकार सभी उकारान्त पुंलिङ्ग शब्दों के रूप 'भानु' की तरह चलेंगे।

6. ऊकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्द

स्वयम्भू (ब्रह्मा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	स्वयम्भूः	स्वयम्भुवौ	स्वयम्भुवः
द्वितीया	स्वयम्भुवम्	स्वयम्भुवौ	स्वयम्भुवः
तृतीया	स्वयम्भुवा	स्वयम्भूभ्याम्	स्वयम्भूभिः
चतुर्थी	स्वयम्भुवे	स्वयम्भूभ्याम्	स्वयम्भूभ्यः
पञ्चमी	स्वयम्भुवः	स्वयम्भूभ्याम्	स्वयम्भूभ्यः
षष्ठी	स्वयम्भुवः	स्वयम्भुवोः	स्वयम्भुवाम्
सप्तमी	स्वयम्भुवि	स्वयम्भुवोः	स्वयम्भूषु
सम्बोधन	हे स्वयम्भूः!	हे स्वयम्भुवौ!	हे स्वयम्भुवः!

नोट- इसी प्रकार सुभ्रू (सुन्दर भौं वाला), स्वभू (स्वयं पैदा हुआ), प्रतिभू (जमानतदार) के रूप इसी प्रकार होते हैं, किन्तु वर्षाभू, करभू तथा पुनर्भू के रूप प्रधी के भाँति चलते हैं।

7. ऋकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्द

(क) पितृ (पिता)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पिता	पितरौ	पितरः
द्वितीया	पितरम्	पितरौ	पितॄन्
तृतीया	पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभिः
चतुर्थी	पित्रे	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
पञ्चमी	पितुः	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
षष्ठी	पितुः	पित्रोः	पितॄणाम्
सप्तमी	पितरि	पित्रोः	पितृषु
सम्बोधन	हे पितः!	हे पितरौ!	हे पितरः!

नोट- भातृ (भाई) देवृ (देवर) जामातृ (दामाद) इत्यदि सम्बन्ध-सूचक ऋकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्दों के रूप 'पितृ के समान चलते हैं।

(ख) नृ (मनुष्य)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	ना	नरौ	नरः
द्वितीया	नरम्	नरौ	नॄन्
तृतीया	न्रा	नृभ्याम्	नृभिः
चतुर्थी	न्रे	नृभ्याम्	नृभ्यः
पञ्चमी	नुः	नृभ्याम्	नृभ्यः
षष्ठी	नुः	न्रोः	नृणाम् / नॄणाम्
सप्तमी	नरि	न्रोः	नृषु
सम्बोधन	हे नः!	हे नरौ !	हे नरः!

(ग) दातृ (देने वाला)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	दाता	दातारौ	दातारः
द्वितीया	दातारम्	दातारौ	दातॄन्
तृतीया	दात्रा	दातृभ्याम्	दातृभिः
चतुर्थी	दात्रे	दातृभ्याम्	दातृभ्यः
पञ्चमी	दातुः	दातृभ्याम्	दातृभ्यः
षष्ठी	दातुः	दात्रोः	दातॄणाम्
सप्तमी	दातरि	दात्रोः	दातृषु
सम्बोधन	हे दातः!	हे दातारौ!	हे दातारः!

अन्य ऋकारान्त पुंलिङ्ग शब्द

नोट- इसी प्रकार धातृ (ब्रह्मा), कर्तृ (करने वाला), गन्तृ (जाने वाला), नप्तृ (पोता) नेतृ (नेता), नेष्टृ (नष्टा), वक्तृ (वक्ता), होतृ (होता), प्रष्टृ (प्रष्टा), रक्षितृ (रक्षिता), श्रोतृ (श्रोता), नप्तृ (नप्ता), सवितृ (सविता), क्रेतृ (खरीदने वाला), पठितृ (पढ़ाने वाला), ज्ञातृ, भर्तृ, रचयितृ (रचना करने वाला), स्मर्तृ (स्मरण करने वाला), जेतृ (जीतने वाला), भोक्तृ (भोग करने वाला), प्रशास्तृ (प्रशासक), वष्टृ (विश्वकर्मा) आदि रूप दातृ के समान चलते हैं।

8. अकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द

फल (फल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	फलम्	फले	फलानि
द्वितीया	फलम्	फले	फलानि
तृतीया	फलेन	फलाभ्याम्	फलैः
चतुर्थी	फलाय	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
पञ्चमी	फलात्/फलाद्	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
षष्ठी	फलस्य	फलयोः	फलानाम्
सप्तमी	फले	फलयोः	फलेषु
सम्बोधन	हे फल!	हे फले!	हे फलानि!

अन्य अकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द

मित्रम्, पापम्, उपनेत्रम्, उद्यानम्, उदकम्, रत्नम्, मुखम्, क्रीडनकम्, कमलम्, जलजम्, वचनम्, पात्रम्, गृहम्, कार्यम्, कुसुमम्, मौनम्, द्वारम्, फलकम्, चरणम्, उदरम्, पुस्तकम्, सोपानम्, समाचारपत्रम्, तैलम्, पृष्ठम्, वस्त्रम्, मन्दिरम्, अक्षरम्, धनम्, नयनम्, कारयानम्, जलम्, अरण्यम्, ज्ञानम्, सुखम्, व्यजनम्, दुग्धम्, अमृतम्, दुःखम्, चित्रम्, तिलकम्, आसनम् आदि।

नोट- उपर्युक्त शब्दों के रूप 'फल' की तरह बनाइये।

9. इकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द

(क) वारि (पानी)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वारि	वारिणी	वारीणि
द्वितीया	वारि	वारिणी	वारीणि
तृतीया	वारिणा	वारिभ्याम्	वारिभिः
चतुर्थी	वारिणे	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
पञ्चमी	वारिणः	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
षष्ठी	वारिणः	वारिणोः	वारीणाम्
सप्तमी	वारिणि	वारिणोः	वारिषु
सम्बोधन	हे वारि/हे वारे!	हे वारिणी!	हे वारीणि!

(ख) दधि (दही)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	दधि	दधिनी	दधीनि
द्वितीया	दधि	दधिनी	दधीनि
तृतीया	दध्ना	दधिभ्याम्	दधिभिः
चतुर्थी	दध्ने	दधिभ्याम्	दधिभ्यः
पञ्चमी	दध्नः	दधिभ्याम्	दधिभ्यः
षष्ठी	दध्नः	दध्नोः	दध्नाम्
सप्तमी	दध्नि/ दधनि	दध्नोः	दधिषु
सम्बोधन	हे दधे/ हे दधि!	हे दधिनी!	हे दधीनि!

(ग) अक्षि (आँख)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अक्षि	अक्षिणी	अक्षीणि
द्वितीया	अक्षि	अक्षिणी	अक्षीणि
तृतीया	अक्ष्णा	अक्षिभ्याम्	अक्षिभिः
चतुर्थी	अक्ष्णे	अक्षिभ्याम्	अक्षिभ्यः
पञ्चमी	अक्ष्णः	अक्षिभ्याम्	अक्षिभ्यः
षष्ठी	अक्ष्णः	अक्ष्णोः	अक्ष्णाम्
सप्तमी	अक्ष्णि/ अक्षणि	अक्ष्णोः	अक्षिषु
सम्बोधन	हे अक्षि/ हे अक्षे!	हे अक्षिणी!	हे अक्षीणि!

(घ) शुचि (पवित्र)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	शुचि	शुचिनी	शुचीनि
द्वितीया	शुचि	शुचिनी	शुचीनि
तृतीया	शुचिना	शुचिभ्याम्	शुचिभिः
चतुर्थी	शुचये, शुचिने	शुचिभ्याम्	शुचिभ्यः
पञ्चमी	शुचेः, शुचिनः	शुचिभ्याम्	शुचिभ्यः
षष्ठी	शुचेः, शुचिनः	शुच्योः, शुचिनोः	शुचीनाम्
सप्तमी	शुचौ, शुचिनि	शुच्योः, शुचिनोः	शुचिषु
सम्बोधन	हे शुचि, हे शुचे!	हे शुचिनी!	हे शुचीनि!

10. उकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द

(क) वस्तु (समान)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वस्तु	वस्तुनी	वस्तूनि
द्वितीया	वस्तु	वस्तुनी	वस्तूनि
तृतीया	वस्तुना	वस्तुभ्याम्	वस्तुभिः
चतुर्थी	वस्तुने	वस्तुभ्याम्	वस्तुभ्यः
पञ्चमी	वस्तुनः	वस्तुभ्याम्	वस्तुभ्यः
षष्ठी	वस्तुनः	वस्तुनोः	वस्तूनाम्
सप्तमी	वस्तुनि	वस्तुनोः	वस्तुषु
सम्बोधन	हे वस्तो, हे वस्तु!	हे वस्तुनी!	हे वस्तूनि!

नोट- इसी प्रकार दारु (काठ), जानु (घुटना), जतु (लाख), जत्रु (कंधों की संधि), तालु, मधु (शहद), सानु (पर्वत की चोटी) इत्यादि शब्दों के रूप वस्तु के समान होते हैं।

(ख) बहु (बहुत)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	बहु	बहुनी	बहूनि
द्वितीया	बहु	बहुनी	बहूनि
तृतीया	बहुना	बहुभ्याम्	बहुभिः
चतुर्थी	बहवे/बहुने	बहुभ्याम्	बहुभ्यः
पञ्चमी	बहोः/बहुनः	बहुभ्याम्	बहुभ्यः
षष्ठी	बहोः/बहुनः	बह्वोः/बहुनोः	बहूनाम्
सप्तमी	बहौ/बहुनि	बह्वोः/बहुनोः	बहुषु
सम्बोधन	हे बहो/हे बहु!	हे बहुनी!	हे बहूनि!

नोट- इसी प्रकार मृदु, कटु, लघु, पटु इत्यादि के रूप होते हैं।

11. ऋकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द

कर्तृ (करने वाला)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	कर्तृ	कर्तृणी	कर्तॄणि
द्वितीया	कर्तृ	कर्तृणी	कर्तॄणि
तृतीया	कर्त्रा/कर्तृणा	कर्तृभ्याम्	कर्तृभिः
चतुर्थी	कर्त्रे/कर्तृणे	कर्तृभ्याम्	कर्तृभ्यः
पञ्चमी	कर्तुः/कर्तृणः	कर्तृभ्याम्	कर्तृभ्यः
षष्ठी	कर्तुः/कर्तृणः	कर्त्रोः/कर्तृणोः	कर्तॄणाम्
सप्तमी	कर्तरि/कर्तृणि	कर्त्रोः/कर्तृणोः	कर्तृषु
सम्बोधन	हे कर्तृ!/हे कर्तः!	हे कर्तृणी!	हे कर्तॄणि!

नोट- इसी प्रकार धातृ, नेतृ इत्यादि के भी रूप होते हैं।

12. आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

विद्या (विद्या)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	विद्या	विद्ये	विद्याः
द्वितीया	विद्याम्	विद्ये	विद्याः
तृतीया	विद्यया	विद्याभ्याम्	विद्याभिः
चतुर्थी	विद्यायै	विद्याभ्याम्	विद्याभ्यः
पञ्चमी	विद्यायाः	विद्याभ्याम्	विद्याभ्यः
षष्ठी	विद्यायाः	विद्ययोः	विद्यानाम्
सप्तमी	विद्यायाम्	विद्ययोः	विद्यासु
सम्बोधन	हे विद्ये!	हे विद्ये!	हे विद्याः!

नोट- इसी प्रकार बालिका, लता, रमा (लक्ष्मी), बाला (स्त्री), निशा (रात), कन्या, ललना (स्त्री), भार्या (पत्नी), बडवा (घोड़ी), राधा, सुमित्रा, तारा, कौशल्या, कला इत्यादि आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप विद्या के समान होते हैं।

13. इकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

रुचि (इच्छा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	रुचिः	रुची	रुचयः
द्वितीया	रुचिम्	रुची	रुचीः
तृतीया	रुच्या	रुचिभ्याम्	रुचिभिः
चतुर्थी	रुच्यै/रुचये	रुचिभ्याम्	रुचिभ्यः
पञ्चमी	रुच्याः/रुचेः	रुचिभ्याम्	रुचिभ्यः
षष्ठी	रुच्याः/रुचेः	रुच्योः	रुचीनाम्
सप्तमी	रुच्याम् /रुचौ	रुच्योः	रुचिषु
सम्बोधन	हे रुचे!	हे रुची!	हे रुचयः!

नोट- इसी प्रकार धूलि (धूल), मति, बुद्धि गति, शुद्धि, भक्ति, शक्ति, श्रुति, स्मृति, शान्ति, नीति, रीति, जाति, रात्रि, पंक्ति, गीति इत्यादि सभी इकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप रुचि के समान होते हैं।

14. ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

(क) नदी (नदी)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वितीया	नदीम्	नद्यौ	नदीः
तृतीया	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
चतुर्थी	नद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
पञ्चमी	नद्याः	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
षष्ठी	नद्याः	नद्योः	नदीनाम्
सप्तमी	नद्याम्	नद्योः	नदीषु
सम्बोधन	हे नदि!	हे नद्यौ!	हे नद्यः!

(ख) लक्ष्मी (लक्ष्मी)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	लक्ष्मीः	लक्ष्म्यौ	लक्ष्म्यः
द्वितीया	लक्ष्मीम्	लक्ष्म्यौ	लक्ष्मीः
तृतीया	लक्ष्म्या	लक्ष्मीभ्याम्	लक्ष्मीभिः
चतुर्थी	लक्ष्म्यै	लक्ष्मीभ्याम्	लक्ष्मीभ्यः
पञ्चमी	लक्ष्म्याः	लक्ष्मीभ्याम्	लक्ष्मीभ्यः
षष्ठी	लक्ष्म्याः	लक्ष्म्योः	लक्ष्मीणाम्
सप्तमी	लक्ष्म्याम्	लक्ष्म्योः	लक्ष्मीषु
सम्बोधन	हे लक्ष्मि!	हे लक्ष्म्यौ!	हे लक्ष्म्यः!

(ग) स्त्री (स्त्री)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	स्त्री	स्त्रियौ	स्त्रियः
द्वितीया	स्त्रियम् / स्त्रीम्	स्त्रियौ	स्त्रियः/स्त्रीः
तृतीया	स्त्रिया	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभिः
चतुर्थी	स्त्रियै	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभ्यः
पञ्चमी	स्त्रियाः	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभ्यः
षष्ठी	स्त्रियाः	स्त्रियोः	स्त्रीणाम्
सप्तमी	स्त्रियाम्	स्त्रियोः	स्त्रीषु
सम्बोधन	हे स्त्रि!	हे स्त्रियौ!	हे स्त्रियः!

(घ) श्री (लक्ष्मी)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	श्रीः	श्रियौ	श्रियः
द्वितीया	श्रियम्	श्रियौ	श्रियः
तृतीया	श्रिया	श्रीभ्याम्	श्रीभिः
चतुर्थी	श्रियै, श्रिये	श्रीभ्याम्	श्रीभ्यः
पञ्चमी	श्रियाः, श्रियः	श्रीभ्याम्	श्रीभ्यः
षष्ठी	श्रियाः, श्रियः	श्रियोः	श्रीणाम्, श्रियाम्
सप्तमी	श्रियाम्, श्रियि	श्रियोः	श्रीषु
सम्बोधन	हे श्रीः!	हे श्रियौ!	हे श्रियः!

नोट- इसी प्रकार भी (डर), ह्री (लज्जा), धी (बुद्धि), सुश्री इत्यादि शब्दों के रूप श्री के समान होते हैं।

15. उकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

धेनु (गाय)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	धेनुः	धेनू	धेनवः
द्वितीया	धेनुम्	धेनू	धेनूः
तृतीया	धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभिः
चतुर्थी	धेन्वै, धेनवे	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
पञ्चमी	धेन्वाः, धेनोः	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
षष्ठी	धेन्वाः, धेनोः	धेन्वोः	धेनूनाम्
सप्तमी	धेन्वाम्, धेनौ	धेन्वोः	धेनुषु
सम्बोधन	हे धेनो!	हे धेनू!	हे धेनवः!

16. ऊकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

(क) वधू (बहू)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वधूः	वध्वौ	वध्वः
द्वितीया	वधूम्	वध्वौ	वधूः
तृतीया	वध्वा	वधूभ्याम्	वधूभिः
चतुर्थी	वध्वै	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
पञ्चमी	वध्वाः	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
षष्ठी	वध्वाः	वध्वोः	वधूनाम्
सप्तमी	वध्वाम्	वध्वोः	वधूषु
सम्बोधन	हे वधु!	हे वध्वौ!	हे वध्वः!

नोट- इसी प्रकार चमू (सेना), रज्जू (रस्सी), श्वश्रू (सास), कर्कन्धू (बेर) इत्यादि सभी ऊकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप वधू के समान होते हैं।

(ख) भू (पृथ्वी)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	भूः	भुवौ	भुवः
द्वितीया	भुवम्	भुवौ	भुवः
तृतीया	भुवा	भूभ्याम्	भूभिः
चतुर्थी	भुवै, भुवे	भूभ्याम्	भूभ्यः
पञ्चमी	भुवाः, भुवः	भूभ्याम्	भूभ्यः
षष्ठी	भुवाः, भुवः	भुवोः	भुवाम्, भूनाम्
सप्तमी	भुवाम्, भुवि	भुवोः	भूषु
सम्बोधन	हे भूः!	हे भुवौ!	हे भुवः!

नोट- भ्रू, (भौं) के रूप इसी प्रकार होते हैं।

(ग) सुभ्रू (सुन्दर भौं वाली स्त्री)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सुभ्रूः	सुभ्रुवौ	सुभ्रुवः
द्वितीया	सुभ्रुवम्	सुभ्रुवौ	सुभ्रुवः
तृतीया	सुभ्रुवा	सुभ्रूभ्याम्	सुभ्रूभिः
चतुर्थी	सुभ्रुवे	सुभ्रूभ्याम्	सुभ्रूभ्यः
पञ्चमी	सुभ्रुवः	सुभ्रूभ्याम्	सुभ्रूभ्यः
षष्ठी	सुभ्रुवः	सुभ्रुवोः	सुभ्रुवाम्
सप्तमी	सुभ्रुवि	सुभ्रुवोः	सुभ्रूषु
सम्बोधन	हे सुभ्रूः!	हे सुभ्रुवौ!	हे सुभ्रुवः!

17. ऋकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

(क) मातृ (माता)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	माता	मातरौ	मातरः
द्वितीया	मातरम्	मातरौ	मातॄः
तृतीया	मात्रा	मातृभ्याम्	मातृभिः
चतुर्थी	मात्रे	मातृभ्याम्	मातृभ्यः
पञ्चमी	मातुः	मातृभ्याम्	मातृभ्यः
षष्ठी	मातुः	मात्रोः	मातॄणाम्
सप्तमी	मातरि	मात्रोः	मातृषु
सम्बोधन	हे मातः!	हे मातरौ!	हे मातरः!

नोट- यातृ (देवरानी), दुहितृ (लड़की) के रूप मातृ के समान होते हैं।

(ख) स्वसृ (बहिन)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	स्वसा	स्वसारौ	स्वसारः
द्वितीया	स्वसारम्	स्वसारौ	स्वसॄः
तृतीया	स्वस्रा	स्वसृभ्याम्	स्वसृभिः
चतुर्थी	स्वस्रे	स्वसृभ्याम्	स्वसृभ्यः
पञ्चमी	स्वसुः	स्वसृभ्याम्	स्वसृभ्यः
षष्ठी	स्वसुः	स्वस्रोः	स्वसॄणाम्
सप्तमी	स्वसरि	स्वस्रोः	स्वसृषु
सम्बोधन	हे स्वसः!	हे स्वसारौ!	हे स्वसारः!

नोट- ऐकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के तथा ओकारान्त स्त्रीलिङ्ग गो आदि शब्दों के रूप पुँल्लिङ्ग के समान होते हैं। औकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप भी पुँल्लिङ्ग के समान होते हैं।

9. सर्वनामरूप

(1) सर्व (सब)

पुँल्लिङ्ग			
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सर्वः	सर्वौ	सर्वे
द्वितीया	सर्वम्	सर्वौ	सर्वान्
तृतीया	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः
चतुर्थी	सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
पञ्चमी	सर्वस्मात्/द्	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
षष्ठी	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्
सप्तमी	सर्वस्मिन्	सर्वयोः	सर्वेषु

नपुंसकलिङ्ग			
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
द्वितीया	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
तृतीया	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः
चतुर्थी	सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
पञ्चमी	सर्वस्मात्/द्	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
षष्ठी	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्
सप्तमी	सर्वस्मिन्	सर्वयोः	सर्वेषु

स्त्रीलिङ्ग			
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सर्वा	सर्वे	सर्वाः
द्वितीया	सर्वाम्	सर्वे	सर्वाः
तृतीया	सर्वया	सर्वाभ्याम्	सर्वाभिः
चतुर्थी	सर्वस्यै	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः
पञ्चमी	सर्वस्याः	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः
षष्ठी	सर्वस्याः	सर्वयोः	सर्वासाम्
सप्तमी	सर्वस्याम्	सर्वयोः	सर्वासु

(2) अस्मद् (मैं, हम)

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम् /मा	आवाम् /नौ	अस्मान् /नः
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यम् /मे	आवाभ्याम् /नौ	अस्मभ्यम् /नः
पञ्चमी	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
षष्ठी	मम /मे	आवयोः/नौ	अस्माकम् /नः
सप्तमी	मयि	आवयोः	अस्मासु

(3) युष्मद् (तुम)

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम् /त्वा	युवाम् /वाम्	युष्मान् /वः
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
चतुर्थी	तुभ्यम् /ते	युवाभ्याम् /वाम्	युष्मभ्यम् /वः
पञ्चमी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
षष्ठी	तव /ते	युवयोः/वाम्	युष्माकम् /वः
सप्तमी	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

नोट- अस्मद् और **युष्मद्** शब्दों के रूप तीनों लिङ्गों में इसी प्रकार चलेंगे। इनका सम्बोधन रूप नहीं होता।

(4) इदम् (यह)

पुँल्लिङ्ग			
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	अयम्	इमौ	इमे
द्वितीया	इमम्/एनम्	इमौ/एनौ	इमान्/एनान्
तृतीया	अनेन/एनेन	आभ्याम्	एभिः
चतुर्थी	अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः
पञ्चमी	अस्मात्/द्	आभ्याम्	एभ्यः
षष्ठी	अस्य	अनयोः/एनयोः	एषाम्
सप्तमी	अस्मिन्	अनयोः/एनयोः	एषु
	नपुंसकलिङ्ग		
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	इदम्	इमे	इमानि
द्वितीया	इदम् /एनत्	इमे/एने	इमानि/एनानि
तृतीया	अनेन/एनेन	आभ्याम्	एभिः
चतुर्थी	अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः
पञ्चमी	अस्मात् /द्	आभ्याम्	एभ्यः
षष्ठी	अस्य	अनयोः/एनयोः	एषाम्
सप्तमी	अस्मिन्	अनयोः/एनयोः	एषु
	स्त्रीलिङ्ग		
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	इयम्	इमे	इमाः
द्वितीया	इमाम् /एनाम्	इमे/एने	इमाः/एनाः
तृतीया	अनया/एनया	आभ्याम्	आभिः
चतुर्थी	अस्यै	आभ्याम्	आभ्यः
पञ्चमी	अस्याः	आभ्याम्	आभ्यः
षष्ठी	अस्याः	अनयोः/एनयोः	आसाम्
सप्तमी	अस्याम्	अनयोः/एनयोः	आसु

(5) एतद् (यह)

पुँल्लिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	एषः	एतौ	एते
द्वितीया	एतम् /एनम्	एतौ/एनौ	एतान्/एनान्
तृतीया	एतेन/एनेन	एताभ्याम्	एतैः
चतुर्थी	एतस्मै	एताभ्याम्	एतेभ्यः
पञ्चमी	एतस्मात् /द्	एताभ्याम्	एतेभ्यः
षष्ठी	एतस्य	एतयोः/एनयोः	एतेषाम्
सप्तमी	एतस्मिन्	एतयोः/एनयोः	एतेषु

नपुंसकलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	एतत् /द्	एते	एतानि
द्वितीया	एतत् /द् ,एनत् /द्	एते/एने	एतानि/एनानि
तृतीया	एतेन/एनेन	एताभ्याम्	एतैः
चतुर्थी	एतस्मै	एताभ्याम्	एतेभ्यः
पञ्चमी	एतस्मात् /द्	एताभ्याम्	एतेभ्यः
षष्ठी	एतस्य	एतयोः/एनयोः	एतेषाम्
सप्तमी	एतस्मिन्	एतयोः/एनयोः	एतेषु

स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	एषा	एते	एताः
द्वितीया	एताम्/एनाम्	एते/एने	एताः/एनाः
तृतीया	एतया/एनया	एताभ्याम्	एताभिः
चतुर्थी	एतस्यै	एताभ्याम्	एताभ्यः
पञ्चमी	एतस्याः	एताभ्याम्	एताभ्यः
षष्ठी	एतस्याः	एतयोः/एनयोः	एतासाम्
सप्तमी	एतस्याम्	एतयोः/एनयोः	एतासु

(6) तद् (वह)

पुँल्लिङ्ग			
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सः	तौ	ते
द्वितीया	तम्	तौ	तान्
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पञ्चमी	तस्मात्/तस्माद्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु
नपुंसकलिङ्ग			
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	तत् /तद्	ते	तानि
द्वितीया	तत् /तद्	ते	तानि
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पञ्चमी	तस्मात्/तस्माद्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु
स्त्रीलिङ्ग			
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सा	ते	ताः
द्वितीया	ताम्	ते	ताः
तृतीया	तया	ताभ्याम्	ताभिः
चतुर्थी	तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः
पञ्चमी	तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः
षष्ठी	तस्याः	तयोः	तासाम्
सप्तमी	तस्याम्	तयोः	तासु

(7) अदस् (वह)

पुँल्लिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	असौ	अमू	अमी
द्वितीया	अमुम्	अमू	अमून्
तृतीया	अमुना	अमूभ्याम्	अमीभिः
चतुर्थी	अमुष्मै	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
पञ्चमी	अमुष्मात् /अमुष्माद्	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
षष्ठी	अमुष्य	अमुयोः	अमीषाम्
सप्तमी	अमुष्मिन्	अमुयोः	अमीषु

नपुंसकलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अदः	अमू	अमूनि
द्वितीया	अदः	अमू	अमूनि
तृतीया	अमुना	अमूभ्याम्	अमीभिः
चतुर्थी	अमुष्मै	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
पञ्चमी	अमुष्मात् /अमुष्माद्	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
षष्ठी	अमुष्य	अमुयोः	अमीषाम्
सप्तमी	अमुष्मिन्	अमुयोः	अमीषु

स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	असौ	अमू	अमूः
द्वितीया	अमूम्	अमू	अमूः
तृतीया	अमुया	अमूभ्याम्	अमूभिः
चतुर्थी	अमुष्यै	अमूभ्याम्	अमूभ्यः
पञ्चमी	अमुष्याः	अमूभ्याम्	अमूभ्यः
षष्ठी	अमुष्याः	अमुयोः	अमूषाम्
सप्तमी	अमुष्याम्	अमुयोः	अमूषु

(8) यद् (जो)

पुँल्लिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	यः	यौ	ये
द्वितीया	यम्	यौ	यान्
तृतीया	येन	याभ्याम्	यैः
चतुर्थी	यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः
पञ्चमी	यस्मात् /यस्माद्	याभ्याम्	येभ्यः
षष्ठी	यस्य	ययोः	येषाम्
सप्तमी	यस्मिन्	ययोः	येषु

नपुंसकलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	यत् /यद्	ये	यानि
द्वितीया	यत् /यद्	ये	यानि
तृतीया	येन	याभ्याम्	यैः
चतुर्थी	यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः
पञ्चमी	यस्मात् /यस्माद्	याभ्याम्	येभ्यः
षष्ठी	यस्य	ययोः	येषाम्
सप्तमी	यस्मिन्	ययोः	येषु

स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	या	ये	याः
द्वितीया	याम्	ये	याः
तृतीया	यया	याभ्याम्	याभिः
चतुर्थी	यस्यै	याभ्याम्	याभ्यः
पञ्चमी	यस्याः	याभ्याम्	याभ्यः
षष्ठी	यस्याः	ययोः	यासाम्
सप्तमी	यस्याम्	ययोः	यासु

(9) किम् (कौन)

पुँल्लिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	कः	कौ	के
द्वितीया	कम्	कौ	कान्
तृतीया	केन	काभ्याम्	कैः
चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः
पञ्चमी	कस्मात् /कस्माद्	काभ्याम्	केभ्यः
षष्ठी	कस्य	कयोः	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयोः	केषु

नपुंसकलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	किम्	के	कानि
द्वितीया	किम्	के	कानि
तृतीया	केन	काभ्याम्	कैः
चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः
पञ्चमी	कस्मात् /कस्माद्	काभ्याम्	केभ्यः
षष्ठी	कस्य	कयोः	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयोः	केषु

स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	का	के	काः
द्वितीया	काम्	के	काः
तृतीया	कया	काभ्याम्	काभिः
चतुर्थी	कस्यै	काभ्याम्	काभ्यः
पञ्चमी	कस्याः	काभ्याम्	काभ्यः
षष्ठी	कस्याः	कयोः	कासाम्
सप्तमी	कस्याम्	कयोः	कासु

10. संख्यावाचक शब्द

एक-(एक)			
	पुँल्लिङ्ग	**नपुंसकलिङ्ग**	**स्त्रीलिङ्ग**
	एकवचन	**एकवचन**	**एकवचन**
प्रथमा	एकः	एकम्	एका
द्वितीया	एकम्	एकम्	एकाम्
तृतीया	एकेन	एकेन	एकया
चतुर्थी	एकस्मै	एकस्मै	एकस्यै
पञ्चमी	एकस्मात्/द्	एकस्मात्/द्	एकस्याः
षष्ठी	एकस्य	एकस्य	एकस्याः
सप्तमी	एकस्मिन्	एकस्मिन्	एकस्याम्

द्वि-दो			
	पुँल्लिङ्ग	**नपुंसकलिङ्ग**	**स्त्रीलिङ्ग**
	द्विवचन	**द्विवचन**	**द्विवचन**
प्रथमा	द्वौ	द्वे	द्वे
द्वितीया	द्वौ	द्वे	द्वे
तृतीया	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
चतुर्थी	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
पञ्चमी	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
षष्ठी	द्वयोः	द्वयोः	द्वयोः
सप्तमी	द्वयोः	द्वयोः	द्वयोः

त्रि-तीन			
	पुँल्लिङ्ग	**नपुंसकलिङ्ग**	**स्त्रीलिङ्ग**
	बहुवचन	**बहुवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	त्रयः	त्रीणि	तिस्रः
द्वितीया	त्रीन्	त्रीणि	तिस्रः
तृतीया	त्रिभिः	त्रिभिः	तिसृभिः
चतुर्थी	त्रिभ्यः	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः
पञ्चमी	त्रिभ्यः	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः
षष्ठी	त्रयाणाम्	त्रयाणाम्	तिसृणाम्
सप्तमी	त्रिषु	त्रिषु	तिसृषु

चतुर्-चार			
	पुँल्लिङ्ग	**नपुंसकलिङ्ग**	**स्त्रीलिङ्ग**
	बहुवचन	**बहुवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	चत्वारः	चत्वारि	चतस्रः
द्वितीया	चतुरः	चत्वारि	चतस्रः
तृतीया	चतुर्भिः	चतुर्भिः	चतसृभिः
चतुर्थी	चतुर्भ्यः	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः
पञ्चमी	चतुर्भ्यः	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः
षष्ठी	चतुर्णाम्/चतुण्र्णाम्	चतुर्णाम्/चतुण्र्णाम्	चतसृणाम्
सप्तमी	चतुर्षु	चतुर्षु	चतसृषु

	पञ्चन् -पाँच	**षष्**-छः	**सप्तन्**-सात
	बहुवचन	**बहुवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	पञ्च	षट्	सप्त
द्वितीया	पञ्च	षट्	सप्त
तृतीया	पञ्चभिः	षड्भिः	सप्तभिः
चतुर्थी	पञ्चभ्यः	षड्भ्यः	सप्तभ्यः
पञ्चमी	पञ्चभ्यः	षड्भ्यः	सप्तभ्यः
षष्ठी	पञ्चानाम्	षण्णाम्	सप्तानाम्
सप्तमी	पञ्चसु	षट्त्सु/षट्सु	सप्तसु

	अष्टन्-आठ	**नवन्**- नव	**दशन्** - दस
	बहुवचन	**बहुवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	अष्टौ/अष्ट	नव	दश
द्वितीया	अष्टौ/अष्ट	नव	दश
तृतीया	अष्टाभिः/अष्टभिः	नवभिः	दशभिः
चतुर्थी	अष्टाभ्यः/अष्टभ्यः	नवभ्यः	दशभ्यः
पञ्चमी	अष्टाभ्यः/अष्टभ्यः	नवभ्यः	दशभ्यः
षष्ठी	अष्टानाम्	नवानाम्	दशानाम्
सप्तमी	अष्टासु/अष्टसु	नवसु	दशसु

कति शब्द के रूप बहुवचन में- प्रथमा कति **द्वितीया** कति **तृतीया** कतिभिः **चतुर्थी** कतिभ्यः **पञ्चमी** कतिभ्यः **षष्ठी** कतीनाम् **सप्तमी** कतिषु

नोट- पञ्चन्, षष्, सप्तन्, अष्टन्, नवन्, दशन् इनके रूप पुँल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग, नपुंसकलिङ्ग-तीनों लिङ्गों में एक समान लेंगे।

10. धातुरूप

1. भू (होना) 'भू' सत्तायाम्

भ्वादिगण, परस्मैपदी , अकर्मक

1. लट्लकार (वर्तमानकाल)			
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	भवति	भवतः	भवन्ति
मध्यम पुरुष	भवसि	भवथः	भवथ
उत्तम पुरुष	भवामि	भवावः	भवामः
	2. लृट्लकार (भविष्यकाल)		
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
मध्यम पुरुष	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उत्तम पुरुष	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः
	3. लोट्लकार (आज्ञा)		
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	भवतु/भवतात्	भवताम्	भवन्तु
मध्यम पुरुष	भव/भवतात्	भवतम्	भवत
उत्तम पुरुष	भवानि	भवाव	भवाम
	4. विधिलिङ्लकार (प्रार्थना, निवेदन)		
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	भवेत्	भवेताम्	भवेयुः
मध्यम पुरुष	भवेः	भवेतम्	भवेत
उत्तम पुरुष	भवेयम्	भवेव	भवेम
	5. लङ्लकार (भूतकाल)		
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	अभवत्	अभवताम्	अभवन्
मध्यम पुरुष	अभवः	अभवतम्	अभवत
उत्तम पुरुष	अभवम्	अभवाव	अभवाम

2. गम् (जाना) 'गम्लृँ' गतौ
भ्वादिगण, परस्मैपदी , सकर्मक

1. लट्लकार (वर्तमानकाल)			
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गच्छति	गच्छतः	गच्छन्ति
मध्यम पुरुष	गच्छसि	गच्छथः	गच्छथ
उत्तम पुरुष	गच्छामि	गच्छावः	गच्छामः
	2. लृट्लकार (भविष्यकाल)		
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गमिष्यति	गमिष्यतः	गमिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	गमिष्यसि	गमिष्यथः	गमिष्यथ
उत्तम पुरुष	गमिष्यामि	गमिष्यावः	गमिष्यामः
	3. लोट्लकार (आज्ञा)		
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गच्छतु/गच्छतात्	गच्छताम्	गच्छन्तु
मध्यम पुरुष	गच्छ/गच्छतात्	गच्छतम्	गच्छत
उत्तम पुरुष	गच्छानि	गच्छाव	गच्छाम
	4. विधिलिङ्लकार (प्रार्थना, निवेदन)		
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गच्छेत्	गच्छेताम्	गच्छेयुः
मध्यम पुरुष	गच्छेः	गच्छेतम्	गच्छेत
उत्तम पुरुष	गच्छेयम्	गच्छेव	गच्छेम
	5. लङ्लकार (भूतकाल)		
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अगच्छत्	अगच्छताम्	अगच्छन्
मध्यम पुरुष	अगच्छः	अगच्छतम्	अगच्छत
उत्तम पुरुष	अगच्छम्	अगच्छाव	अगच्छाम

3. पठ् (पढ़ना) 'पठँ' व्यक्तायां वाचि
भ्वादिगण, परस्मैपदी , सकर्मक

1. लट्लकार (वर्तमानकाल)			
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	पठति	पठतः	पठन्ति
मध्यम पुरुष	पठसि	पठथः	पठथ
उत्तम पुरुष	पठामि	पठावः	पठामः
	2. लृट्लकार (भविष्यकाल)		
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	पठिष्यसि	पठिष्यथः	पठिष्यथ
उत्तम पुरुष	पठिष्यामि	पठिष्यावः	पठिष्यामः
	3. लोट्लकार (आज्ञा)		
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	पठतु/पठतात्	पठताम्	पठन्तु
मध्यम पुरुष	पठ/पठतात्	पठतम्	पठत
उत्तम पुरुष	पठानि	पठाव	पठाम
	4. विधिलिङ्लकार (प्रार्थना, निवेदन)		
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	पठेत्	पठेताम्	पठेयुः
मध्यम पुरुष	पठेः	पठेतम्	पठेत
उत्तम पुरुष	पठेयम्	पठेव	पठेम
	5. लङ्लकार (भूतकाल)		
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	अपठत्	अपठताम्	अपठन्
मध्यम पुरुष	अपठः	अपठतम्	अपठत
उत्तम पुरुष	अपठम्	अपठाव	अपठाम

4. पा (पीना) 'पा' पाने
भ्वादिगण, परस्मैपदी , सकर्मक

1. लट्लकार (वर्तमानकाल)			
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	पिबति	पिबतः	पिबन्ति
मध्यम पुरुष	पिबसि	पिबथः	पिबथ
उत्तम पुरुष	पिबामि	पिबावः	पिबामः
	2. लृट्लकार (भविष्यकाल)		
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	पास्यति	पास्यतः	पास्यन्ति
मध्यम पुरुष	पास्यसि	पास्यथः	पास्यथ
उत्तम पुरुष	पास्यामि	पास्यावः	पास्यामः
	3. लोट्लकार (आज्ञा)		
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	पिबतु/पिबतात्	पिबताम्	पिबन्तु
मध्यम पुरुष	पिब/पिबतात्	पिबतम्	पिबत
उत्तम पुरुष	पिबानि	पिबाव	पिबाम
	4. विधिलिङ्लकार (प्रार्थना, निवेदन)		
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	पिबेत्	पिबेताम्	पिबेयुः
मध्यम पुरुष	पिबेः	पिबेतम्	पिबेत
उत्तम पुरुष	पिबेयम्	पिबेव	पिबेम
	5. लङ्लकार (भूतकाल)		
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	अपिबत्	अपिबताम्	अपिबन्
मध्यम पुरुष	अपिबः	अपिबतम्	अपिबत
उत्तम पुरुष	अपिबम्	अपिबाव	अपिबाम

5. भी (डरना) 'ञिभी' भये
जुहोत्यादिगण, परस्मैपदी , अकर्मक

1. लट्लकार (वर्तमानकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	बिभेति	बिभितः/बिभीतः	बिभ्यति
मध्यम पुरुष	बिभेषि	बिभिथः/बिभीथः	बिभिथ/बिभीथ
उत्तम पुरुष	बिभेमि	बिभिवः/बिभीवः	बिभिमः/बिभीमः

2. लृट्लकार (भविष्यकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भेष्यति	भेष्यतः	भेष्यन्ति
मध्यम पुरुष	भेष्यसि	भेष्यथः	भेष्यथ
उत्तम पुरुष	भेष्यामि	भेष्यावः	भेष्यामः

3. लोट्लकार (आज्ञा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	बिभेतु/बिभितात् बिभीतात्	बिभिताम् /बिभीताम्	बिभ्यतु
मध्यम पुरुष	बिभिहि/बिभीहि बिभितात् /बिभीतात्	बिभितम् /बिभीतम्	बिभित/बिभीत
उत्तम पुरुष	बिभयानि	बिभयाव	बिभयाम

4. विधिलिङ्लकार (प्रार्थना, निवेदन)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	बिभियात्/बिभीयात्	बिभियाताम्/बिभीयाताम्	बिभियुः/बिभीयुः
मध्यम पुरुष	बिभियाः/बिभीयाः	बिभियातम्/बिभीयातम्	बिभियात/बिभीयात
उत्तम पुरुष	बिभियाम् /बिभीयाम्	बिभियाव/बिभीयाव	बिभियाम/बिभीयाम

5. लङ्लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अबिभेत्	अबिभिताम् /अबिभीताम्	अबिभयुः
मध्यम पुरुष	अबिभेः	अबिभितम्/अबिभीतम्	अबिभित/अबिभीत
उत्तम पुरुष	अबिभयम्	अबिभिव/अबिभीव	अबिभिम/अबिभीम

6. श्रु (सुनना) 'श्रु' श्रवणे
भ्वादिगण, परस्मैपदी , सकर्मक

1. लट्लकार (वर्तमानकाल)			
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	शृणोति	शृणुतः	शृण्वन्ति
मध्यम पुरुष	शृणोषि	शृणुथः	शृणुथ
उत्तम पुरुष	शृणोमि	शृणुवः/शृण्वः	शृणुमः/शृण्मः
	2. लृट्लकार (भविष्यकाल)		
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	श्रोष्यति	श्रोष्यतः	श्रोष्यन्ति
मध्यम पुरुष	श्रोष्यसि	श्रोष्यथः	श्रोष्यथ
उत्तम पुरुष	श्रोष्यामि	श्रोष्यावः	श्रोष्यामः
	3. लोट्लकार (आज्ञा)		
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	शृणोतु/शृणुतात्	शृणुताम्	शृण्वन्तु
मध्यम पुरुष	शृणु /शृणुतात्	शृणुतम्	शृणुत
उत्तम पुरुष	शृणवानि	शृणवाव	शृणवाम
	4. विधिलिङ्लकार (प्रार्थना, निवेदन)		
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	शृणुयात्	शृणुयाताम्	शृणुयुः
मध्यम पुरुष	शृणुयाः	शृणुयातम्	शृणुयात
उत्तम पुरुष	शृणुयाम्	शृणुयाव	शृणुयाम
	5. लङ्लकार (भूतकाल)		
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	अशृणोत्	अशृणुताम्	अशृण्वन्
मध्यम पुरुष	अशृणोः	अशृणुतम्	अशृणुत
उत्तम पुरुष	अशृणवम्	अशृणुव/अशृण्व	अशृणुम/अशृण्म

7. लभ् (पाना) 'डुलभँष्' प्राप्तौ
भ्वादिगण, आत्मनेपदी , सकर्मक

	1. लट्लकार (वर्तमानकाल)		
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	लभते	लभेते	लभन्ते
मध्यम पुरुष	लभसे	लभेथे	लभध्वे
उत्तम पुरुष	लभे	लभावहे	लभामहे
	2. लृट्लकार (भविष्यकाल)		
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	लप्स्यते	लप्स्येते	लप्स्यन्ते
मध्यम पुरुष	लप्स्यसे	लप्स्येथे	लप्स्यध्वे
उत्तम पुरुष	लप्स्ये	लप्स्यावहे	लप्स्यामहे
	3. लोट्लकार (आज्ञा)		
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	लभताम्	लभेताम्	लभन्ताम्
मध्यम पुरुष	लभस्व	लभेथाम्	लभध्वम्
उत्तम पुरुष	लभै	लभावहै	लभामहै
	4. विधिलिङ्लकार (प्रार्थना, निवेदन)		
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	लभेत	लभेयाताम्	लभेरन्
मध्यम पुरुष	लभेथाः	लभेयाथाम्	लभेध्वम्
उत्तम पुरुष	लभेय	लभेवहि	लभेमहि
	5. लङ्लकार (भूतकाल)		
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	अलभत	अलभेताम्	अलभन्त
मध्यम पुरुष	अलभथाः	अलभेथाम्	अलभध्वम्
उत्तम पुरुष	अलभे	अलभावहि	अलभामहि

8. हन् (मारना) 'हनँ' हिंसायाम्
अदादिगण, परस्मैपदी ,सकर्मक

1. लट्लकार (वर्तमानकाल)			
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	हन्ति	हतः	घ्नन्ति
मध्यम पुरुष	हंसि	हथः	हथ
उत्तम पुरुष	हन्मि	हन्वः	हन्मः
2. लृट्लकार (भविष्यकाल)			
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	हनिष्यति	हनिष्यतः	हनिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	हनिष्यसि	हनिष्यथः	हनिष्यथ
उत्तम पुरुष	हनिष्यामि	हनिष्यावः	हनिष्यामः
3. लोट्लकार (आज्ञा)			
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	हन्तु/हतात्	हताम्	घ्नन्तु
मध्यम पुरुष	जहि/हतात्	हतम्	हत
उत्तम पुरुष	हनानि	हनाव	हनाम
4. विधिलिङ्लकार (प्रार्थना, निवेदन)			
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	हन्यात्	हन्याताम्	हन्युः
मध्यम पुरुष	हन्याः	हन्यातम्	हन्यात
उत्तम पुरुष	हन्याम्	हन्याव	हन्याम
5. लङ्लकार (भूतकाल)			
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	अहन्	अहताम्	अघ्नन्
मध्यम पुरुष	अहन्	अहतम्	अहत
उत्तम पुरुष	अहनम्	अहन्व	अहन्म

9- (क) दुह् (दुहना) 'दुहँ' प्रपूरणे

अदादिगण, उभयपदी , द्विकर्मक (परस्मैपद)

1. लट्लकार (वर्तमानकाल)			
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	दोग्धि	दुग्धः	दुहन्ति
मध्यम पुरुष	धोक्षि	दुग्धः	दुग्ध
उत्तम पुरुष	दोह्मि	दुह्वः	दुह्मः
	2. लृट्लकार (भविष्यकाल)		
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	धोक्ष्यति	धोक्ष्यतः	धोक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	धोक्ष्यसि	धोक्ष्यथः	धोक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	धोक्ष्यामि	धोक्ष्यावः	धोक्ष्यामः
	3. लोट्लकार (आज्ञा)		
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	दोग्धु/दुग्धात्	दुग्धाम्	दुहन्तु
मध्यम पुरुष	दुग्धि/दुग्धात्	दुग्धम्	दुग्ध
उत्तम पुरुष	दोहानि	दोहाव	दोहाम
	4. विधिलिङ्लकार (प्रार्थना, निवेदन)		
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	दुह्यात्	दुह्याताम्	दुह्युः
मध्यम पुरुष	दुह्याः	दुह्यातम्	दुह्यात
उत्तम पुरुष	दुह्याम्	दुह्याव	दुह्याम
	5. लङ्लकार (भूतकाल)		
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	अधोक् /अधोग्	अदुग्धाम्	अदुहन्
मध्यम पुरुष	अधोक् /अधोग्	अदुग्धम्	अदुग्ध
उत्तम पुरुष	अदोहम्	अदुह्व	अदुह्म

9- (ख) दुह् (दुहना) 'दुहँ' प्रपूरणे
अदादिगण, उभयपदी, द्विकर्मक (आत्मनेपद)

1. लट्लकार (वर्तमानकाल)			
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	दुग्धे	दुहाते	दुहते
मध्यम पुरुष	धुक्षे	दुहाथे	धुग्ध्वे
उत्तम पुरुष	दुहे	दुह्वहे	दुह्महे
2. लृट्लकार (भविष्यकाल)			
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	धोक्ष्यते	धोक्ष्येते	धोक्ष्यन्ते
मध्यम पुरुष	धोक्ष्यसे	धोक्ष्येथे	धोक्ष्यध्वे
उत्तम पुरुष	धोक्ष्ये	धोक्ष्यावहे	धोक्ष्यामहे
3. लोट्लकार (आज्ञा)			
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	दुग्धाम्	दुहाताम्	दुहताम्
मध्यम पुरुष	धुक्ष्व	दुहाथाम्	धुग्ध्वम्
उत्तम पुरुष	दोहै	दोहावहै	दोहामहै
4. विधिलिङ् (प्रार्थना, निवेदन)			
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	दुहीत	दुहीयाताम्	दुहीरन्
मध्यम पुरुष	दुहीथाः	दुहीयाथाम्	दुहीध्वम्
उत्तम पुरुष	दुहीय	दुहीवहि	दुहीमहि
5. लङ्लकार (भूतकाल)			
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	अदुग्ध	अदुहाताम्	अदुहत
मध्यम पुरुष	अदुग्धाः	अदुहाथाम्	अधुग्ध्वम्
उत्तम पुरुष	अदुहि	अदुह्वहि	अदुह्महि

10- (क) दा (देना) 'डुदाञ्' दाने

जुहोत्यादिगण, उभयपदी , सकर्मक

1. लट्लकार (वर्तमानकाल)			
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	ददाति	दत्तः	ददति
मध्यम पुरुष	ददासि	दत्थः	दत्थ
उत्तम पुरुष	ददामि	दद्वः	दद्मः
	2. लृट्लकार (भविष्यकाल)		
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	दास्यति	दास्यतः	दास्यन्ति
मध्यम पुरुष	दास्यसि	दास्यथः	दास्यथ
उत्तम पुरुष	दास्यामि	दास्यावः	दास्यामः
	3. लोट्लकार (आज्ञा)		
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	ददातु/दत्तात्	दत्ताम्	ददतु
मध्यम पुरुष	देहि/दत्तात्	दत्तम्	दत्त
उत्तम पुरुष	ददानि	ददाव	ददाम
	4. विधिलिङ्लकार (प्रार्थना, निवेदन)		
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	दद्यात्	दद्याताम्	दद्युः
मध्यम पुरुष	दद्याः	दद्यातम्	दद्यात
उत्तम पुरुष	दद्याम्	दद्याव	दद्याम
	5. लङ्लकार (भूतकाल)		
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	अददात्	अदत्ताम्	अददुः
मध्यम पुरुष	अददाः	अदत्तम्	अदत्त
उत्तम पुरुष	अददाम्	अदद्व	अदद्म

10- (ख) दा (देना) 'डुदाञ्' दाने
जुहोत्यादिगण, उभयपदी, सकर्मक (आत्मनेपद)

1. लट्लकार (वर्तमानकाल)			
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	दत्ते	ददाते	ददते
मध्यम पुरुष	दत्से	ददाथे	दद्ध्वे
उत्तम पुरुष	ददे	दद्वहे	दद्महे
2. लृट्लकार (भविष्यकाल)			
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	दास्यते	दास्येते	दास्यन्ते
मध्यम पुरुष	दास्यसे	दास्येथे	दास्यध्वे
उत्तम पुरुष	दास्ये	दास्यावहे	दास्यामहे
3. लोट्लकार (आज्ञा)			
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	दत्ताम्	ददाताम्	ददताम्
मध्यम पुरुष	दत्स्व	ददाथाम्	दद्ध्वम्
उत्तम पुरुष	ददै	ददावहै	ददामहै
4. विधिलिङ् (प्रार्थना, निवेदन)			
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	ददीत	ददीयाताम्	ददीरन्
मध्यम पुरुष	ददीथाः	ददीयाथाम्	ददीध्वम्
उत्तम पुरुष	ददीय	ददीवहि	ददीमहि
5. लङ्लकार (भूतकाल)			
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	अदत्त	अददाताम्	अददत
मध्यम पुरुष	अदत्थाः	अददाथाम्	अदद्ध्वम्
उत्तम पुरुष	अददि	अदद्वहि	अदद्महि

11. प्रच्छ् (पूँछना) 'प्रच्छँ' ज्ञीप्सायाम्
तुदादिगण, परस्मैपदी , द्विकर्मक

1. लट्लकार (वर्तमानकाल)			
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पृच्छति	पृच्छतः	पृच्छन्ति
मध्यम पुरुष	पृच्छसि	पृच्छथः	पृच्छथ
उत्तम पुरुष	पृच्छामि	पृच्छावः	पृच्छामः
	2. लृट्लकार (भविष्यकाल)		
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	प्रक्ष्यति	प्रक्ष्यतः	प्रक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	प्रक्ष्यसि	प्रक्ष्यथः	प्रक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	प्रक्ष्यामि	प्रक्ष्यावः	प्रक्ष्यामः
	3. लोट्लकार (आज्ञा)		
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पृच्छतु/पृच्छतात्	पृच्छताम्	पृच्छन्तु
मध्यम पुरुष	पृच्छ/पृच्छतात्	पृच्छतम्	पृच्छत
उत्तम पुरुष	पृच्छानि	पृच्छाव	पृच्छाम
	4. विधिलिङ्लकार (प्रार्थना, निवेदन)		
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पृच्छेत्	पृच्छेताम्	पृच्छेयुः
मध्यम पुरुष	पृच्छेः	पृच्छेतम्	पृच्छेत
उत्तम पुरुष	पृच्छेयम्	पृच्छेव	पृच्छेम
	5. लङ्लकार (भूतकाल)		
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपृच्छत्	अपृच्छताम्	अपृच्छन्
मध्यम पुरुष	अपृच्छः	अपृच्छतम्	अपृच्छत
उत्तम पुरुष	अपृच्छम्	अपृच्छाव	अपृच्छाम

12. दिव् (स्वप्न, जुआ खेलना, चमकना आदि)

'दिवुँ' क्रीडाविजिगीषाव्यवहारद्युतिस्तुतिमोदमदस्वप्नकान्तिगतिषु
दिवादिगण, परस्मैपदी , सकर्मक

1. लट्लकार (वर्तमानकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	दीव्यति	दीव्यतः	दीव्यन्ति
मध्यम पुरुष	दीव्यसि	दीव्यथः	दीव्यथ
उत्तम पुरुष	दीव्यामि	दीव्यावः	दीव्यामः

2. लृट्लकार (भविष्यकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	देविष्यति	देविष्यतः	देविष्यन्ति
मध्यम पुरुष	देविष्यसि	देविष्यथः	देविष्यथ
उत्तम पुरुष	देविष्यामि	देविष्यावः	देविष्यामः

3. लोट्लकार (आज्ञा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	दीव्यतु/दीव्यतात्	दीव्यताम्	दीव्यन्तु
मध्यम पुरुष	दीव्य/दीव्यतात्	दीव्यतम्	दीव्यत
उत्तम पुरुष	दीव्यानि	दीव्याव	दीव्याम

4. विधिलिङ्लकार (प्रार्थना, निवेदन)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	दीव्येत्	दीव्येताम्	दीव्येयुः
मध्यम पुरुष	दीव्येः	दीव्येतम्	दीव्येत
उत्तम पुरुष	दीव्येयम्	दीव्येव	दीव्येम

5. लङ्लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अदीव्यत्	अदीव्यताम्	अदीव्यन्
मध्यम पुरुष	अदीव्यः	अदीव्यतम्	अदीव्यत
उत्तम पुरुष	अदीव्यम्	अदीव्याव	अदीव्याम

13- (क) तुद् (दुःख देना, पीड़ा पहुँचाना) 'तुदँ' तुदादिगण, उभयपदी , सकर्मक (परस्मैपद)

1. लट्लकार (वर्तमानकाल)			
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तुदति	तुदतः	तुदन्ति
मध्यम पुरुष	तुदसि	तुदथः	तुदथ
उत्तम पुरुष	तुदामि	तुदावः	तुदामः
	2. लृट्लकार (भविष्यकाल)		
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तोत्स्यति	तोत्स्यतः	तोत्स्यन्ति
मध्यम पुरुष	तोत्स्यसि	तोत्स्यथः	तोत्स्यथ
उत्तम पुरुष	तोत्स्यामि	तोत्स्यावः	तोत्स्यामः
	3. लोट्लकार (आज्ञा)		
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तुदतु/तुदतात्	तुदताम्	तुदन्तु
मध्यम पुरुष	तुद/तुदतात्	तुदतम्	तुदत
उत्तम पुरुष	तुदानि	तुदाव	तुदाम
	4. विधिलिङ्लकार (प्रार्थना, निवेदन)		
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तुदेत्	तुदेताम्	तुदेयुः
मध्यम पुरुष	तुदेः	तुदेतम्	तुदेत
उत्तम पुरुष	तुदेयम्	तुदेव	तुदेम
	5. लङ्लकार (भूतकाल)		
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अतुदत्	अतुदताम्	अतुदन्
मध्यम पुरुष	अतुदः	अतुदतम्	अतुदत
उत्तम पुरुष	अतुदम्	अतुदाव	अतुदाम

13-(ख) तुद् (दुःख देना, पीड़ा पहुँचाना) **'तुदँ' व्यथने तुदादिगण, उभयपदी, सकर्मक** (आत्मनेपद)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
1. लट्लकार (वर्तमानकाल)			
प्रथम पुरुष	तुदते	तुदेते	तुदन्ते
मध्यम पुरुष	तुदसे	तुदेथे	तुदध्वे
उत्तम पुरुष	तुदे	तुदावहे	तुदामहे
2. लृट्लकार (भविष्यकाल)	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	तोत्स्यते	तोत्स्येते	तोत्स्यन्ते
मध्यम पुरुष	तोत्स्यसे	तोत्स्येथे	तोत्स्यध्वे
उत्तम पुरुष	तोत्स्ये	तोत्स्यावहे	तोत्स्यामहे
3. लोट्लकार (आज्ञा)	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	तुदताम्	तुदेताम्	तुदन्ताम्
मध्यम पुरुष	तुदस्व	तुदेथाम्	तुदध्वम्
उत्तम पुरुष	तुदै	तुदावहै	तुदामहै
4. विधिलिङ् (प्रार्थना, निवेदन)	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	तुदेत	तुदेयाताम्	तुदेरन्
मध्यम पुरुष	तुदेथाः	तुदेयाथाम्	तुदेध्वम्
उत्तम पुरुष	तुदेय	तुदेवहि	तुदेमहि
5. लङ्लकार (भूतकाल)	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	अतुदत	अतुदेताम्	अतुदन्त
मध्यम पुरुष	अतुदथाः	अतुदेथाम्	अतुदध्वम्
उत्तम पुरुष	अतुदे	अतुदावहि	अतुदामहि

14-(क) चुर् (चोरी करना) 'चुरँ' स्तेये
चुरादिगण, उभयपदी , सकर्मक (परस्मैपद)

1. लट्लकार (वर्तमानकाल)			
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	चोरयति	चोरयतः	चोरयन्ति
मध्यम पुरुष	चोरयसि	चोरयथः	चोरयथ
उत्तम पुरुष	चोरयामि	चोरयावः	चोरयामः
	2. लृट्लकार (भविष्यकाल)		
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	चोरयिष्यति	चोरयिष्यतः	चोरयिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	चोरयिष्यसि	चोरयिष्यथः	चोरयिष्यथ
उत्तम पुरुष	चोरयिष्यामि	चोरयिष्यावः	चोरयिष्यामः
	3. लोट्लकार (आज्ञा)		
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	चोरयतु/चोरयतात्	चोरयताम्	चोरयन्तु
मध्यम पुरुष	चोरय/चोरयतात्	चोरयतम्	चोरयत
उत्तम पुरुष	चोरयाणि	चोरयाव	चोरयाम
	4. विधिलिङ्लकार (प्रार्थना, निवेदन)		
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	चोरयेत्	चोरयेताम्	चोरयेयुः
मध्यम पुरुष	चोरयेः	चोरयेतम्	चोरयेत
उत्तम पुरुष	चोरयेयम्	चोरयेव	चोरयेम
	5. लङ्लकार (भूतकाल)		
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	अचोरयत्	अचोरयताम्	अचोरयन्
मध्यम पुरुष	अचोरयः	अचोरयतम्	अचोरयत
उत्तम पुरुष	अचोरयम्	अचोरयाव	अचोरयाम

14- (ख) चुर् (चोरी करना) 'चुरँ' स्तेये
चुरादिगण, उभयपदी, सकर्मक (आत्मनेपद)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
1. लट्लकार (वर्तमानकाल)			
प्रथम पुरुष	चोरयते	चोरयेते	चोरयन्ते
मध्यम पुरुष	चोरयसे	चोरयेथे	चोरयध्वे
उत्तम पुरुष	चोरये	चोरयावहे	चोरयामहे
2. लृट्लकार (भविष्यकाल)			
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	चोरयिष्यते	चोरयिष्येते	चोरयिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	चोरयिष्यसे	चोरयिष्येथे	चोरयिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	चोरयिष्ये	चोरयिष्यावहे	चोरयिष्यामहे
3. लोट्लकार (आज्ञा)			
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	चोरयताम्	चोरयेताम्	चोरयन्ताम्
मध्यम पुरुष	चोरयस्व	चोरयेथाम्	चोरयध्वम्
उत्तम पुरुष	चोरयै	चोरयावहै	चोरयामहै
4. विधिलिङ् (प्रार्थना, निवेदन)			
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	चोरयेत	चोरयेयाताम्	चोरयेरन्
मध्यम पुरुष	चोरयेथाः	चोरयेयाथाम्	चोरयेध्वम्
उत्तम पुरुष	चोरयेय	चोरयेवहि	चोरयेमहि
5. लङ्लकार (भूतकाल)			
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	अचोरयत	अचोरयेताम्	अचोरयन्त
मध्यम पुरुष	अचोरयथाः	अचोरयेथाम्	अचोरयध्वम्
उत्तम पुरुष	अचोरये	अचोरयावहि	अचोरयामहि

15-(क) ब्रू (बोलना) 'ब्रूञ्' व्यक्तायां वाचि
अदादिगण, उभयपदी , द्विकर्मक (परस्मैपद)

1. लट्लकार (वर्तमानकाल)			
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ब्रवीति/आह	ब्रूतः/आहतुः	ब्रुवन्ति/आहुः
मध्यम पुरुष	ब्रवीषि/आत्थ	ब्रूथः/आहथुः	ब्रूथ
उत्तम पुरुष	ब्रवीमि	ब्रूवः	ब्रूमः
	2. लृट्लकार (भविष्यकाल)		
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	वक्ष्यति	वक्ष्यतः	वक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	वक्ष्यसि	वक्ष्यथः	वक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	वक्ष्यामि	वक्ष्यावः	वक्ष्यामः
	3. लोट्लकार (आज्ञा)		
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ब्रवीतु/ब्रूतात्	ब्रूताम्	ब्रुवन्तु
मध्यम पुरुष	ब्रूहि/ब्रूतात्	ब्रूतम्	ब्रूत
उत्तम पुरुष	ब्रवाणि	ब्रवाव	ब्रवाम
	4. विधिलिङ्लकार (प्रार्थना, निवेदन)		
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ब्रूयात्	ब्रूयाताम्	ब्रूयुः
मध्यम पुरुष	ब्रूयाः	ब्रूयातम्	ब्रूयात
उत्तम पुरुष	ब्रूयाम्	ब्रूयाव	ब्रूयाम
	5. लङ्लकार (भूतकाल)		
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अब्रवीत्	अब्रूताम्	अब्रुवन्
मध्यम पुरुष	अब्रवीः	अब्रूतम्	अब्रूत
उत्तम पुरुष	अब्रवम्	अब्रूव	अब्रूम

15- (ख) ब्रू (बोलना) 'ब्रूञ्' व्यक्तायां वाचि
अदादिगण, उभयपदी, द्विकर्मक (आत्मनेपद)

1. लट्लकार (वर्तमानकाल)

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	ब्रूते	ब्रुवाते	ब्रुवते
मध्यम पुरुष	ब्रूषे	ब्रुवाथे	ब्रूध्वे
उत्तम पुरुष	ब्रुवे	ब्रूवहे	ब्रूमहे

2. लृट्लकार (भविष्यकाल)

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	वक्ष्यते	वक्ष्येते	वक्ष्यन्ते
मध्यम पुरुष	वक्ष्यसे	वक्ष्येथे	वक्ष्यध्वे
उत्तम पुरुष	वक्ष्ये	वक्ष्यावहे	वक्ष्यामहे

3. लोट्लकार (आज्ञा)

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	ब्रूताम्	ब्रुवाताम्	ब्रुवताम्
मध्यम पुरुष	ब्रूष्व	ब्रुवाथाम्	ब्रूध्वम्
उत्तम पुरुष	ब्रवै	ब्रवावहै	ब्रवामहै

4. विधिलिङ् (प्रार्थना, निवेदन)

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	ब्रुवीत	ब्रुवीयाताम्	ब्रुवीरन्
मध्यम पुरुष	ब्रुवीथाः	ब्रुवीयाथाम्	ब्रुवीध्वम्
उत्तम पुरुष	ब्रुवीय	ब्रुवीवहि	ब्रुवीमहि

5. लङ्लकार (भूतकाल)

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	अब्रूत	अब्रुवाताम्	अब्रुवत
मध्यम पुरुष	अब्रूथाः	अब्रुवाथाम्	अब्रूध्वम्
उत्तम पुरुष	अब्रुवि	अब्रूवहि	अब्रूमहि

16. जन् (उत्पन्न होना, पैदा होना) 'जनीँ' प्रादुर्भावे
दिवादिगण , आत्मनेपदी , अकर्मक

1. लट्लकार (वर्तमानकाल)			
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	जायते	जायेते	जायन्ते
मध्यम पुरुष	जायसे	जायेथे	जायध्वे
उत्तम पुरुष	जाये	जायावहे	जायामहे
	2. लृट्लकार (भविष्यकाल)		
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	जनिष्यते	जनिष्येते	जनिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	जनिष्यसे	जनिष्येथे	जनिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	जनिष्ये	जनिष्यावहे	जनिष्यामहे
	3. लोट्लकार (आज्ञा)		
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	जायताम्	जायेताम्	जायन्ताम्
मध्यम पुरुष	जायस्व	जायेथाम्	जायध्वम्
उत्तम पुरुष	जायै	जायावहै	जायामहै
	4. विधिलिङ्लकार (प्रार्थना, निवेदन)		
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	जायेत	जायेयाताम्	जायेरन्
मध्यम पुरुष	जायेथाः	जायेयाथाम्	जायेध्वम्
उत्तम पुरुष	जायेय	जायेवहि	जायेमहि
	5. लङ्लकार (भूतकाल)		
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	अजायत	अजायेताम्	अजायन्त
मध्यम पुरुष	अजायथाः	अजायेथाम्	अजायध्वम्
उत्तम पुरुष	अजाये	अजायावहि	अजायामहि

11. संस्कृत संख्या

1 एकः, एकम् ,एका
2 द्वौ ,द्वे, द्वे
3 त्रयः ,त्रीणि ,तिस्रः
4 चत्वारः, चत्वारि ,चतस्रः
5 पञ्च
6 षट्
7 सप्त
8 अष्ट/अष्टौ
9 नव
10 **दश**

11 एकादश
12 द्वादश
13 त्रयोदश
14 चतुर्दश
15 पञ्चदश
16 षोडश
17 सप्तदश
18 अष्टादश
19 नवदश/एकोनविंशतिः/ऊनविंशतिः/एकान्नविंशतिः
20 **विंशतिः**

21 एकविंशतिः
22 द्वाविंशतिः
23 त्रयोविंशतिः
24 चतुर्विंशतिः
25 पञ्चविंशतिः
26 षड्विंशतिः
27 सप्तविंशतिः
28 अष्टाविंशतिः
29 नवविंशतिः
एकोनत्रिंशत् / ऊनत्रिंशत्/ एकान्नत्रिंशत्

30 **त्रिंशत्**

31 एकत्रिंशत्
32 द्वात्रिंशत्
33 त्रयस्त्रिंशत्
34 चतुस्त्रिंशत्
35 पञ्चत्रिंशत्
36 षट्त्रिंशत्
37 सप्तत्रिंशत्
38 अष्टात्रिंशत्
39 नवत्रिंशत् / एकोनचत्वारिंशत्/ ऊनचत्वारिंशत्/एकान्नचत्वारिंशत्
40 **चत्वारिंशत्**

41 एकचत्वारिंशत्
42 द्विचत्वारिंशत् , द्वाचत्वारिंशत्
43 त्रिचत्वारिंशत् , त्रयश्चत्वारिंशत्
44 चतुश्चत्वारिंशत्
45 पञ्चचत्वारिंशत्
46 षट्चत्वारिंशत्
47 सप्तचत्वारिंशत्
48 अष्टचत्वारिंशत्, अष्टाचत्वारिंशत्
49 नवचत्वारिंशत्/ एकोनपञ्चाशत्/ ऊनपञ्चाशत्/एकान्नपञ्चाशत्
50 **पञ्चाशत्**

51 एकपञ्चाशत्
52 द्विपञ्चाशत् , द्वापञ्चाशत्
53 त्रिपञ्चाशत् , त्रयःपञ्चाशत्
54 चतुःपञ्चाशत्
55 पञ्चपञ्चाशत्
56 षट्पञ्चाशत्
57 सप्तपञ्चाशत्
58 अष्टपञ्चाशत्, अष्टापञ्चाशत्

59 नवपञ्चाशत् / एकोनषष्टिः/
ऊनषष्टिः/एकान्नषष्टिः
60 षष्टिः
61 एकषष्टिः
62 द्विषष्टिः, द्वाषष्टिः
63 त्रिषष्टिः , त्रयःषष्टिः
64 चतुःषष्टिः
65 पञ्चषष्टिः
66 षट्षष्टिः
67 सप्तषष्टिः
68 अष्टषष्टिः/ अष्टाषष्टिः
69 नवषष्टिः/ एकोनसप्ततिः/
ऊनसप्ततिः/एकान्नसप्ततिः
70 सप्ततिः
71 एकसप्ततिः
72 द्विसप्ततिः , द्वासप्ततिः
73 त्रिसप्ततिः , त्रयःसप्ततिः
74 चतुःसप्ततिः
75 पञ्चसप्ततिः
76 षट्सप्ततिः
77 सप्तसप्ततिः
78 अष्टसप्ततिः, अष्टासप्ततिः
79 नवसप्ततिः, एकोनाशीतिः/
ऊनाशीतिः/एकान्नाशीतिः
80 अशीतिः
81 एकाशीतिः
82 द्व्यशीतिः
83 त्र्यशीतिः
84 चतुरशीतिः
85 पञ्चाशीतिः
86 षडशीतिः
87 सप्ताशीतिः
88 अष्टाशीतिः
89 नवाशीतिः , एकोननवतिः/
ऊननवतिः/एकान्ननवतिः
90 नवतिः
91 एकनवतिः
92 द्विनवतिः, द्वानवतिः
93 त्रिनवतिः, त्रयोनवतिः
94 चतुर्नवतिः
95 पञ्चनवतिः
96 षण्णवतिः
97 सप्तनवतिः
98 अष्टनवतिः , अष्टानवतिः
99 नववतिः , एकोनशतम्
100. शतम्

एक हजार-	सहस्त्रम्
दस हजार-	अयुतम्
एक लाख -	लक्षम्
दस लाख -	नियुतम्, प्रयुतम्।
एक करोड़-	कोटिः
दस करोड़-	दशकोटिः
एक अरब -	अर्बुदम्
दस अरब -	दशार्बुदम्
एक खरब -	खर्वम्
दस खरब -	दशखर्वम्
एक नील -	नीलम्
दस नील -	दशनीलम्
एक पद्म -	पद्मम्
दशपद्म -	दशपद्मम्
एक शंख -	शंखम्
दस शंख -	दशशंखम्
महाशंख -	महाशंखम्
101 =	एकाधिकं शतम्
102 =	द्व्यधिकं शतम्

103	=	त्र्यधिकं शतम्	400	=	चतुःशती
104	=	चतुरधिकं शतम्	500	=	पञ्चशती
105	=	पञ्चाधिकं शतम् आदि।	600	=	षट्शती
200	=	द्विशती/शतद्वयम्	700	=	सप्तशती आदि।
300	=	त्रिशती/शतत्रयम्			

- त्रि (3) से लेकर अष्टादशन् (18) तक सभी शब्दों के रूप केवल बहुवचन में चलते हैं।
- ''**विंशत्यादिरानवतेः**'' एकोनविंशतिः (19) से नवनवतिः (99) तक सभी शब्द एकवचनान्त स्त्रीलिङ्ग हैं। इनके रूप हमेशा एकवचन में ही चलेंगे।
- इकारान्त विंशति, षष्टि, सप्तति, अशीति, नवति – जिन पदों के अन्त में ये पद आयें उनके रूप 'मति' के समान चलेंगे।
- तकारान्त त्रिंशत्, चत्वारिंशत्, पञ्चाशत् आदि शब्दों के रूप 'सरित्' के समान चलेंगे।
- शतम्, सहस्रम्, अयुतम्, लक्षम्, नियुतम्, प्रयुतम् आदि शब्द सदा एकवचनान्त नपुंसकलिङ्ग में होते हैं। इनके रूप 'फल' की तरह चलेंगे।
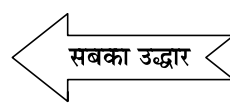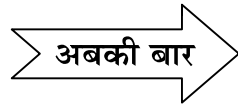
501.	एकाधिकपञ्चशतम्/एकाधिकं पञ्चशतम् एकोत्तरपञ्चशतम्/एकोत्तरं पञ्चशतम्
502.	द्व्यधिकपञ्चशतम्/द्व्यधिकं पञ्चशतम् द्व्युत्तरपञ्चशतम्/द्व्युत्तरं पञ्चशतम्
503.	त्र्यधिकपञ्चशतम्/त्र्यधिकं पञ्चशतम् त्र्युत्तरपञ्चशतम्/त्र्युत्तरं पञ्चशतम्
504.	चतुरधिकपञ्चशतम्/चतुरधिकं पञ्चशतम् चतुरुत्तरपञ्चशतम्/चतुरुत्तरं पञ्चशतम्
505.	पञ्चाधिकपञ्चशतम्/पञ्चाधिकं पञ्चशतम् पञ्चोत्तरपञ्चशतम्/पञ्चोत्तरं पञ्चशतम्
506.	षडधिकपञ्चशतम् /षडधिकं पञ्चशतम् षडुत्तरपञ्चशतम्/षडुत्तरं पञ्चशतम्
507.	सप्ताधिकपञ्चशतम्/सप्ताधिकं पञ्चशतम् सप्तोत्तरपञ्चशतम्/सप्तोत्तरं पञ्चशतम्
508.	अष्टाधिकपञ्चशतम्/अष्टाधिकं पञ्चशतम् अष्टोत्तरपञ्चशतम्/अष्टोत्तरं पञ्चशतम्
509.	नवाधिकपञ्चशतम्/नवाधिकं पञ्चशतम् नवोत्तरपञ्चशतम्/नवोत्तरं पञ्चशतम्
510.	दशाधिकपञ्चशतम्/दशाधिकं पञ्चशतम् दशोत्तरपञ्चशतम्/दशोत्तरं पञ्चशतम्
517.	सप्तदशाधिकपञ्चशतम्/सप्तदशाधिकं पञ्चशतम् सप्तदशोत्तरपञ्चशतम्/सप्तदशोत्तरं पञ्चशतम्
625.	पञ्चविंशत्यधिकषट्शतम्/पञ्चविंशत्यधिकं षट्शतम् पञ्चविंशत्युत्तरषट्शतम्/पञ्चविंशत्युत्तरं षट्शतम्

637. सप्तत्रिंशदधिकषट्शतम्/सप्तत्रिंशदधिकं षट्शतम्
सप्तत्रिंशदुत्तरषट्शतम्/सप्तत्रिंशदुत्तरं षट्शतम्

646. षट्चत्वारिंशदधिकषट्शतम्/षट्चत्वारिंशदधिकं षट्शतम्
षट्चत्वारिंशदुत्तरषट्शतम्/षट्चत्वारिंशदुत्तरं षट्शतम्

655. पञ्चपञ्चाशदधिकषट्शतम्/पञ्चपञ्चाशदधिकं षट्शतम्
पञ्चपञ्चाशदुत्तरषट्शतम्/पञ्चपञ्चाशदुत्तरं षट्शतम्

666. षट्षष्ट्यधिकषट्शतम्/षट्षष्ट्यधिकं षट्शतम्
षट्षष्ट्युत्तरषट्शतम्/षट्षष्ट्युत्तरं षट्शतम्

673. त्रिसप्तत्यधिकषट्शतम्/त्रिसप्तत्यधिकं षट्शतम्
त्रिसप्तत्युत्तरषट्शतम्/त्रिसप्तत्युत्तरं षट्शतम्

684. चतुरशीत्यधिकषट्शतम्/चतुरशीत्यधिकं षट्शतम्
चतुरशीत्युत्तरषट्शतम्/चतुरशीत्युत्तरं षट्शतम्

695. पञ्चनवत्यधिकषट्शतम्/पञ्चनवत्यधिकं षट्शतम्
पञ्चनवत्युत्तरषट्शतम्/पञ्चनवत्युत्तरं षट्शतम्

1325. पञ्चविंशत्यधिकत्रयोदशशतम् या
पञ्चविंशत्यधिकत्रिशताधिकसहस्रम्

1928. अष्टविंशत्यधिकैकोनविंशतिशतम् या
अष्टाविंशत्यधिकनवशताधिकसहस्रम्

1939. एकोनचत्वारिंशदधिकनवशताधिकसहस्रम्
एकोनचत्वारिंशदधिकैकोनविंशतिशतम्

59637. सप्तत्रिंशदधिकषट्शताधिकनवसहस्राधिकपञ्चायुतम्

विशेष्य-विशेषण/क्रमवाचिका/पूरणी संख्या

संख्याशब्दाः	पुँल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
1.	प्रथमः	प्रथमा	प्रथमम्
2.	द्वितीयः	द्वितीया	द्वितीयम्
3.	तृतीयः	तृतीया	तृतीयम्
4.	चतुर्थः	चतुर्थी	चतुर्थम्
	तुरीयः	तुरीया	तुरीयम्
	तुर्यः	तुर्या	तुर्यम्
5.	पञ्चमः	पञ्चमी	पञ्चमम्
6.	षष्ठः	षष्ठी	षष्ठम्
7.	सप्तमः	सप्तमी	सप्तमम्
8.	अष्टमः	अष्टमी	अष्टमम्
9.	नवमः	नवमी	नवमम्
10.	दशमः	दशमी	दशमम्
11.	एकादशः	एकादशी	एकादशम्
12.	द्वादशः	द्वादशी	द्वादशम्
13.	त्रयोदशः	त्रयोदशी	त्रयोदशम्
14.	चतुर्दशः	चतुर्दशी	चतुर्दशम्
15.	पञ्चदशः	पञ्चदशी	पञ्चदशम्
16.	षोडशः	षोडशी	षोडशम्
17.	सप्तदशः	सप्तदशी	सप्तदशम्
18.	अष्टादशः	अष्टादशी	अष्टादशम्
19.	नवदशः	नवदशी	नवदशम्
	एकोनविंशः	एकोनविंशी	एकोनविंशम्
	एकान्नविंशः	एकान्नविंशी	एकान्नविंशम्
	ऊनविंशः	ऊनविंशी	ऊनविंशम्
20.	विंशः	विंशी	विंशम्
	विंशतितमः	विंशतितमी	विंशतितमम्
21.	एकविंशः	एकविंशी	एकविंशम्
	एकविंशतितमः	एकविंशतितमी	एकविंशतितमम्
22.	द्वाविंशः	द्वाविंशी	द्वाविंशम्
	द्वाविंशतितमः	द्वाविंशतितमी	द्वाविंशतितमम्
23.	त्रयोविंशः	त्रयोविंशी	त्रयोविंशम्
	त्रयोविंशतितमः	त्रयोविंशतितमी	त्रयोविंशतितमम्
24.	चतुर्विंशः	चतुर्विंशी	चतुर्विंशम्
	चतुर्विंशतितमः	चतुर्विंशतितमी	चतुर्विंशतितमम्
25.	पञ्चविंशः	पञ्चविंशी	पञ्चविंशम्
	पञ्चविंशतितमः	पञ्चविंशतितमी	पञ्चविंशतितमम्

संख्याशब्दाः	पुँल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
26.	षड्विंशः	षड्विंशी	षड्विंशम्
	षड्विंशतितमः	षड्विंशतितमी	षड्विंशतितमम्
27.	सप्तविंशः	सप्तविंशी	सप्तविंशम्
	सप्तविंशतितमः	सप्तविंशतितमी	सप्तविंशतितमम्
28.	अष्टाविंशः	अष्टाविंशी	अष्टाविंशम्
	अष्टाविंशतितमः	अष्टाविंशतितमी	अष्टाविंशतितमम्
29.	नवविंशः	नवविंशी	नवविंशम्
	नवविंशतितमः	नवविंशतितमी	नवविंशतितमम्
	एकोनत्रिंशः	एकोनत्रिंशी	एकोनत्रिंशम्
	एकोनत्रिंशत्तमः	एकोनत्रिंशत्तमी	एकोनत्रिंशत्तमम्
	ऊनत्रिंशः	ऊनत्रिंशी	ऊनत्रिंशम्
	ऊनत्रिंशत्तमः	ऊनत्रिंशत्तमी	ऊनत्रिंशत्तमम्
	एकान्नत्रिंशः	एकान्नत्रिंशी	एकान्नत्रिंशम्
	एकान्नत्रिंशत्तमः	एकान्नत्रिंशत्तमी	एकान्नत्रिंशतितमम्
30.	त्रिंशः	त्रिंशी	त्रिंशम्
	त्रिंशत्तमः	त्रिंशत्तमी	त्रिंशत्तमम्
31.	एकत्रिंशः	एकत्रिंशी	एकत्रिंशम्
	एकत्रिंशत्तमः	एकत्रिंशत्तमी	एकत्रिंशत्तमम्
32.	द्वात्रिंशः	द्वात्रिंशी	द्वात्रिंशम्
	द्वात्रिंशत्तमः	द्वात्रिंशत्तमी	द्वात्रिंशत्तमम्
33.	त्रयस्त्रिंशः	त्रयस्त्रिंशी	त्रयस्त्रिंशम्
	त्रयस्त्रिंशत्तमः	त्रयस्त्रिंशत्तमी	त्रयस्त्रिंशत्तमम्
34.	चतुस्त्रिंशः	चतुस्त्रिंशी	चतुस्त्रिंशम्
	चतुस्त्रिंशत्तमः	चतुस्त्रिंशत्तमी	चतुस्त्रिंशत्तमम्
35.	पञ्चत्रिंशः	पञ्चत्रिंशी	पञ्चत्रिंशम्
	पञ्चत्रिंशत्तमः	पञ्चत्रिंशत्तमी	पञ्चत्रिंशत्तमम्
36.	षट्त्रिंशः	षट्त्रिंशी	षट्त्रिंशम्
	षट्त्रिंशत्तमः	षट्त्रिंशत्तमी	षट्त्रिंशत्तमम्
37.	सप्तत्रिंशः	सप्तत्रिंशी	सप्तत्रिंशम्
	सप्तत्रिंशत्तमः	सप्तत्रिंशत्तमी	सप्तत्रिंशत्तमम्
38.	अष्टात्रिंशः	अष्टात्रिंशी	अष्टात्रिंशम्
	अष्टात्रिंशत्तमः	अष्टात्रिंशत्तमी	अष्टात्रिंशत्तमम्
39.	नवत्रिंशः	नवत्रिंशी	नवत्रिंशम्
	नवत्रिंशत्तमः	नवत्रिंशत्तमी	नवत्रिंशत्तमम्
	एकोनचत्वारिंशः	एकोनचत्वारिंशी	एकोनचत्वारिंशम्
	एकोनचत्वारिंशत्तमः	एकोनचत्वारिंशत्तमी	एकोनचत्वारिंशत्तमम्
	ऊनचत्वारिंशः	ऊनचत्वारिंशी	ऊनचत्वारिंशम्

संख्याशब्दाः	पुँल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
	ऊनचत्वारिंशत्तमः	ऊनचत्वारिंशत्तमी	ऊनचत्वारिंशत्तमम्
	एकान्नचत्वारिंशः	एकान्नचत्वारिंशी	एकान्नचत्वारिंशम्
	एकान्नचत्वा-रिंशत्तमः	एकान्नचत्वा-रिंशत्तमी	एकान्नचत्वा-रिंशत्तमम्
40.	चत्वारिंशः	चत्वारिंशी	चत्वारिंशम्
	चत्वारिंशत्तमः	चत्वारिंशत्तमी	चत्वारिंशत्तमम्
41.	एकचत्वारिंशः	एकचत्वारिंशी	एकचत्वारिंशम्
	एकचत्वारिंशत्तमः	एकचत्वारिंशत्तमी	एकचत्वारिंशत्तमम्
42.	द्वाचत्वारिंशः	द्वाचत्वारिंशी	द्वाचत्वारिंशम्
	द्वाचत्वारिंशत्तमः	द्वाचत्वारिंशत्तमी	द्वाचत्वारिंशत्तमम्
	द्विचत्वारिंशः	द्विचत्वारिंशी	द्विचत्वारिंशम्
	द्विचत्वारिंशत्तमः	द्विचत्वारिंशत्तमी	द्विचत्वारिंशत्तमम्
43.	त्रयश्चत्वारिंशः	त्रयश्चत्वारिंशी	त्रयश्चत्वारिंशम्
	त्रयश्चत्वारिंशत्तमः	त्रयश्चत्वारिंशत्तमी	त्रयश्चत्वारिंशत्तमम्
	त्रिचत्वारिंशः	त्रिचत्वारिंशी	त्रिचत्वारिंशम्
	त्रिचत्वारिंशत्तमः	त्रिचत्वारिंशत्तमी	त्रिचत्वारिंशत्तमम्
44.	चतुश्चत्वारिंशः	चतुश्चत्वारिंशी	चतुश्चत्वारिंशम्
	चतुश्चत्वारिंशत्तमः	चतुश्चत्वारिंशत्तमी	चतुश्चत्वारिंशत्तमम्
45.	पञ्चचत्वारिंशः	पञ्चचत्वारिंशी	पञ्चचत्वारिंशम्
	पञ्चचत्वारिंशत्तमः	पञ्चचत्वारिंशत्तमी	पञ्चचत्वारिंशत्तमम्
46.	षट्चत्वारिंशः	षट्चत्वारिंशी	षट्चत्वारिंशम्
	षट्चत्वारिंशत्तमः	षट्चत्वारिंशत्तमी	षट्चत्वारिंशत्तमम्
47.	सप्तचत्वारिंशः	सप्तचत्वारिंशी	सप्तचत्वारिंशम्
	सप्तचत्वारिंशत्तमः	सप्तचत्वारिंशत्तमी	सप्तचत्वारिंशत्तमम्
48.	अष्टाचत्वारिंशः	अष्टाचत्वारिंशी	अष्टाचत्वारिंशम्
	अष्टाचत्वारिंशत्तमः	अष्टाचत्वारिंशत्तमी	अष्टाचत्वारिंशत्तमम्
49.	नवचत्वारिंशः	नवचत्वारिंशी	नवचत्वारिंशम्
	नवचत्वारिंशत्तमः	नवचत्वारिंशत्तमी	नवचत्वारिंशत्तमम्
	एकोनपञ्चाशः	एकोनपञ्चाशी	एकोन्नपञ्चाशम्
	एकोनपञ्चाशत्तमः	एकोनपञ्चाशत्तमी	एकोन्नपञ्चाशत्तमम्
	ऊनपञ्चाशः	ऊनपञ्चाशी	ऊनपञ्चाशम्
	ऊनपञ्चाशत्तमः	ऊनपञ्चाशत्तमी	ऊनपञ्चाशत्तमम्
	एकान्नपञ्चाशः	एकान्नपञ्चाशी	एकान्नपञ्चाशम्
	एकान्नपञ्चाशत्तमः	एकान्नपञ्चाशत्तमी	एकान्नपञ्चाशत्तमम्

संख्याशब्दाः	पुँल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
50.	पञ्चाशः	पञ्चाशी	पञ्चाशम्
	पञ्चाशत्तमः	पञ्चाशत्तमी	पञ्चाशत्तमम्
51.	एकपञ्चाशः	एकपञ्चाशी	एकपञ्चाशम्
	एकपञ्चाशत्तमः	एकपञ्चाशत्तमी	एकपञ्चाशत्तमम्
52.	द्वापञ्चाशः	द्वापञ्चाशी	द्वापञ्चाशम्
	द्वापञ्चाशत्तमः	द्वापञ्चाशत्तमी	द्वापञ्चाशत्तमम्
53.	त्रयःपञ्चाशः	त्रयःपञ्चाशी	त्रयःपञ्चाशम्
	त्रयःपञ्चाशत्तमः	त्रयःपञ्चाशत्तमी	त्रयःपञ्चाशत्तमम्
54.	चतुःपञ्चाशः	चतुःपञ्चाशी	चतुःपञ्चाशम्
	चतुःपञ्चाशत्तमः	चतुःपञ्चाशत्तमी	चतुःपञ्चाशत्तमम्
55.	पञ्चपञ्चाशः	पञ्चपञ्चाशी	पञ्चपञ्चाशम्
	पञ्चपञ्चाशत्तमः	पञ्चपञ्चाशत्तमी	पञ्चपञ्चाशत्तमम्
56.	षट्पञ्चाशः	षट्पञ्चाशी	षट्पञ्चाशम्
	षट्पञ्चाशत्तमः	षटपञ्चाशत्तमी	षट्पञ्चाशत्तमम्
57.	सप्तपञ्चाशः	सप्तपञ्चाशी	सप्तपञ्चाशम्
	सप्तपञ्चाशत्तमः	सप्तपञ्चाशत्तमी	सप्तपञ्चाशत्तमम्
58.	अष्टपञ्चाशः	अष्टपञ्चाशी	अष्टपञ्चाशम्
	अष्टपञ्चाशत्तमः	अष्टपञ्चाशत्तमी	अष्टपञ्चाशत्तमम्
59.	नवपञ्चाशः	नवपञ्चाशी	नवपञ्चाशम्
	नवपञ्चाशत्तमः	नवपञ्चाशत्तमी	नवपञ्चाशत्तमम्
	एकोनषष्टः	एकोनषष्टी	एकोनषष्टम्
	एकोनषष्टितमः	एकोनषष्टितमी	एकोनषष्टितमम्
	ऊनषष्टः	ऊनषष्टी	ऊनषष्टम्
	ऊनषष्टितमः	ऊनषष्टितमी	ऊनषष्टितमम्
	एकान्नषष्टितमः	एकान्नषष्टितमी	एकान्नषष्टितमम्
	एकान्नषष्टिः	एकान्नषष्टी	एकान्नषष्टम्
60.	षष्टितमः	षष्टितमी	षष्टितमम्
61.	एकषष्टः	एकषष्टी	एकषष्टम्
	एकषष्टितमः	एकषष्टितमी	एकषष्टतमम्
62.	द्वाषष्टः	द्वाषष्टी	द्वाषष्टम्
	द्वाषष्टितमः	द्वाषष्टितमी	द्वाषष्टितमम्
	द्विषष्टः	द्विषष्टी	द्विषष्टम्

संख्याशब्दाः	पुँल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
	द्विषष्टितमः	द्विषष्टितमी	द्विषष्टितमम्
63.	त्रयष्षष्टः	त्रयष्षष्टी	त्रयष्षष्टम्
	त्रयष्षष्टितमः	त्रयष्षष्टितमी	त्रयष्षष्टितमम्
	त्रिषष्टः	त्रिषष्टी	त्रिषष्टम्
	त्रिषष्टितमः	त्रिषष्टितमी	त्रिषष्टितमम्
64.	चतुष्षष्टः	चतुष्षष्टी	चतुष्षष्टम्
	चतुष्षष्टितमः	चतुष्षष्टितमी	चतुष्षष्टितमम्
65.	पञ्चषष्टः	पञ्चषष्टी	पञ्चषष्टम्
	पञ्चषष्टितमः	पञ्चषष्टितमी	पञ्चषष्टितमम्
66.	षट्षष्टः	षट्षष्टी	षट्षष्टम्
	षट्षष्टितमः	षट्षष्टितमी	षट्षष्टितमम्
67.	सप्तषष्टः	सप्तषष्टी	सप्तषष्टम्
	सप्तषष्टितमः	सप्तषष्टितमी	सप्तषष्टितमम्
68.	अष्टाषष्टः	अष्टाषष्टी	अष्टाषष्टम्
	अष्टषष्टितमः	अष्टषष्टितमी	अष्टषष्टितमम्
69.	नवषष्टः	नवषष्टी	नवषष्टम्
	नवषष्टितमः	नवषष्टितमी	नवषष्टितमम्
	एकोनसप्ततः	एकोनसप्तती	एकोनसप्ततम्
	एकोनसप्ततितमः	एकोनसप्ततितमी	एकोनसप्ततितमम्
	ऊनसप्ततः	ऊनसप्तती	ऊनसप्ततम्
	ऊनसप्ततितमः	ऊनसप्ततितमी	ऊनसप्ततितमम्
	एकान्नसप्ततः	एकान्नसप्तती	एकान्नसप्ततम्
	एकान्नसप्ततितमः	एकान्नसप्ततितमी	एकान्नसप्ततितमम्
70.	सप्ततः	सप्तती	सप्ततम्
	सप्ततितमः	सप्ततितमी	सप्ततितमम्
71.	एकसप्ततः	एकसप्तती	एकसप्ततम्
	एकसप्ततितमः	एकसप्ततितमी	एकसप्ततितमम्
72.	द्वासप्ततः	द्वासप्तती	द्वासप्ततम्
	द्वासप्ततितमः	द्वासप्ततितमी	द्वासप्ततितमम्
	द्विसप्ततः	द्विसप्तती	द्विसप्ततम्
	द्विसप्ततितमः	द्विसप्ततितमी	द्विसप्ततितमम्
73.	त्रयस्सप्ततः	त्रयस्सप्तती	त्रयस्सप्ततमम्
	त्रयस्सप्ततितमः	त्रयस्सप्ततितमी	त्रयस्सप्ततितमम्
	त्रिसप्ततः	त्रिसप्तती	त्रिसप्ततम्
	त्रिसप्ततितमः	त्रिसप्ततितमी	त्रिसप्ततितमम्
74.	चतुस्सप्ततः	चतुस्सप्तती	चतुस्सप्ततम्
	चतुस्सप्ततितमः	चतुस्सप्ततितमी	चतुस्सप्ततितमम्
75.	पञ्चसप्ततः	पञ्चसप्तती	पञ्चसप्ततम्
	पञ्चसप्ततितमः	पञ्चसप्ततितमी	पञ्चसप्ततितमम्

संख्याशब्दाः	पुँल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
76.	षट्सप्ततः	षट्सप्तती	षट्सप्ततम्
	षट्सप्ततितमः	षट्सप्ततितमी	षट्सप्ततितमम्
77.	सप्तसप्ततः	सप्तसप्तती	सप्तसप्ततम्
	सप्तसप्ततितमः	सप्तसप्ततितमी	सप्तसप्ततितमम्
78.	अष्टासप्ततः	अष्टासप्तती	अष्टासप्ततम्
	अष्टासप्ततितमः	अष्टासप्ततितमी	अष्टासप्ततितमम्
	अष्टसप्ततः	अष्टसप्तती	अष्टसप्ततम्
	अष्टसप्ततितमः	अष्टसप्ततितमी	अष्टसप्ततितमम्
79.	नवसप्ततः	नवसप्तती	नवसप्ततम्
	नवसप्ततितमः	नवसप्ततितमी	नवसप्ततितमम्
	एकोनाशीतः	एकोनाशीती	एकोनाशीतम्
	ऊनाशीतः	ऊनाशीती	ऊनाशीतम्
	ऊनाशीतितमः	ऊनाशीतितमी	ऊनाशीतितमम्
	एकान्नाशीतः	एकान्नाशीती	एकान्नाशीतम्
	एकान्नाशीतितमः	एकान्नाशीतितमी	एकान्नाशीतितमम्
80.	अशीतितमः	अशीतितमी	अशीतितमम्
81.	एकाशीतः	एकाशीती	एकाशीतम्
	एकाशीतितमः	एकाशीतितमी	एकाशीतितमम्
82.	द्व्यशीतः	द्व्यशीती	द्व्यशीतम्
	द्व्यशीतितमः	द्व्यशीतितमी	द्व्यशीतितमम्
83.	त्र्यशीतः	त्र्यशीती	त्र्यशीतम्
	त्र्यशीतितमः	त्र्यशीतितमी	त्र्यशीतितमम्
84.	चतुरशीतः	चतुरशीती	चतुरशीतम्
	चतुरशीतितमः	चतुरशीतितमी	चतुरशीतितमम्
85.	पञ्चाशीतः	पञ्चाशीती	पञ्चाशीतम्
	पञ्चाशीतितमः	पञ्चाशीतितमी	पञ्चाशीतितमम्
86.	षडशीतः	षडशीती	षडशीतम्
	षडशीतितमः	षडशीतितमी	षडशीतितमम्
87.	सप्ताशीतः	सप्ताशीती	सप्ताशीतम्
	सप्ताशीतितमः	सप्ताशीतितमी	सप्ताशीतितमम्
88.	अष्टाशीतः	अष्टाशीती	अष्टाशीतम्
	अष्टाशीतितमः	अष्टाशीतितमी	अष्टाशीतितमम्
89.	नवाशीतः	नवाशीती	नवाशीतम्
	नवाशीतितमः	नवाशीतितमी	नवाशीतितमम्
	एकोननवतः	एकोननवती	एकोननवतम्
	एकोननवतितमः	एकोननवतितमी	एकोननवतितमम्
	ऊननवतः	ऊननवती	ऊननवतम्
	ऊननवतितमः	ऊननवतितमी	ऊननवतितमम्
	एकान्ननवतः	एकान्ननवती	एकान्ननवतम्

संख्याशब्दाः	पुँल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
	एकान्ननवतितमः	एकान्ननवतितमी	एकान्ननवतितमम्
90.	नवतितमः	नवतितमी	नवतितमम्
91.	एकनवतः	एकनवती	एकनवतम्
	एकनवतितमः	एकनवतितमी	एकनवतितमम्
92.	द्वानवतः	द्वानवती	द्वानवतम्
	द्वानवतितमः	द्वानवतितमी	द्वानवतितमम्
	द्विनवतः	द्विनवती	द्विनवतम्
	द्विनवतितमः	द्विनवतितमी	द्विनवतितमम्
93.	त्रयोनवतः	त्रयोनवती	त्रयोनवतम्
	त्रयोनवतितमः	त्रयोनवतितमी	त्रयोनवतितमम्
	त्रिनवतः	त्रिनवती	त्रिनवतम्
	त्रिनवतितमः	त्रिनवतितमी	त्रिनवतितमम्
94.	चतुर्नवतः	चतुर्नवती	चतुर्नवतम्
	चतुर्नवतितमः	चतुर्नवतितमी	चतुर्नवतितमम्
95.	पञ्चनवतः	पञ्चनवती	पञ्चनवतम्
	पञ्चनवतितमः	पञ्चनवतितमी	पञ्चनवतितमम्
96.	षण्णवतः	षण्णवती	षण्णवतम्
	षण्णवतितमः	षण्णवतितमी	षण्णवतितमम्
97.	सप्तनवतः	सप्तनवती	सप्तनवतम्
	सप्तनवतितमः	सप्तनवतितमी	सप्तनवतितमम्
98.	अष्टानवतः	अष्टानवती	अष्टानवतम्
	अष्टानवतितमः	अष्टानवतितमी	अष्टानवतितमम्
	अष्टनवतः	अष्टनवती	अष्टनवतम्
	अष्टनवतितमः	अष्टनवतितमी	अष्टनवतितमम्
99.	नवनवतः	नवनवती	नवनवतम्
	नवनवतितमः	नवनवतितमी	नवनवतितमम्
100.	शततमः	शततमी	शततमम्
200.	द्विशततमः	द्विशततमी	द्विशततमम्
300.	त्रिशततमः	त्रिशततमी	त्रिशततमम्
400.	चतुश्शततमः	चतुश्शततमी	चतुश्शततमम्
500.	पञ्चशततमः	पञ्चशततमी	पञ्चशततमम्
1000.	सहस्रतमः	सहस्रतमी	सहस्रतमम्
10,000.	अयुततमः	अयुततमी	अयुततमम्
10,0000.	लक्षतमः	लक्षतमी	लक्षतमम्
10,00000.	प्रयुततमः	प्रयुततमी	प्रयुततमम्
10,000000	कोटितमः	कोटितमी	कोटितमम्

12. प्रमुख छन्दों का परिचय

- छन्दशास्त्र को वेदपुरुष का पाद (चरण) माना जाता है- ''**छन्दः पादौ तु वेदस्य**'' (पाणिनीयशिक्षा-4)
- छन्दशास्त्र का प्राचीन नाम छन्दोविचिति, छन्दोऽनुशासन, छन्दोविवृति, छन्दोमान आदि भी है।
- प्रथम छन्दशास्त्रकार आचार्य पिङ्गल के नाम पर इस शास्त्र को '**पिङ्गलशास्त्र**' भी कहा जाता है।
- आचार्य पिङ्गल को **छन्दशास्त्र का प्रणेता** या प्रवर्तक माना जाता है।
- पिङ्गलाचार्य ने छन्दशास्त्र पर '**छन्दःसूत्र**' नामक ग्रन्थ लिखा जिसमें 8 अध्याय एवं 308 सूत्र हैं।
- षड्गुरुशिष्य ने '**सर्वानुक्रमणी**' की टीका में आचार्य पिङ्गल को **पाणिनि का अनुज** कहा है, इससे इनका **समय 600** ईसापूर्व माना जा सकता है।
- विदेशी विद्वान् '**छन्दःसूत्र**' का **समय 200 ईसा पूर्व** मानते हैं।

छन्द का लक्षण-(i) चित्ताह्लादकं छन्दः (ii) छन्दयति आह्लादयति इति छन्दः
(iii) छन्दांसि छादनात् (निरुक्त)

प्रमुख वैदिक छन्द

क्र.	छन्द	वर्ण	पाद
1.	गायत्री	24	तीन
2.	उष्णिक्	28	तीन
3.	अनुष्टुप्	32	चार
4.	बृहती	36	चार
5.	पंङ्क्ति	40	पाँच
6.	त्रिष्टुप्	44	चार
7.	जगती	48	चार

- ये सातों छन्द '**सप्तछन्दांसि**' नाम से जाने जाते हैं। इन छन्दों की अक्षर संख्या क्रम से चार-चार बढ़ती जाती है।
- याद करने की ट्रिक- ''**गाउअबृपंत्रिज**''
  अर्थात्- **गा** = गायत्री, **उ** = उष्णिक्, **अ** = अनुष्टुप्, **बृ** = बृहती, **पं** = पंङ्क्ति, **त्रि** = त्रिष्टुप्, **ज** = जगती आदि।

प्रमुख लौकिक छन्द

संस्कृत काव्यों में मुख्य रूप से अनुष्टुप् (श्लोक), उपजाति, वंशस्थ, द्रुतविलम्बित, शालिनी, वसन्ततिलका, मालिनी, हरिणी, शिखरिणी, मन्दाक्रान्ता, शार्दूलविक्रीडित, स्रग्धरा तथा आर्या छन्द हैं।

- **अनुष्टुप्** सबसे छोटा (8×4 = 32 वर्ण) छन्द है तथा **स्रग्धरा** सबसे बड़ा छन्द (21×4 = 84 वर्ण) है।
- वाल्मीकिरामायण में 13 छन्दों का, महाभारत में 18 छन्दों का, श्रीमद्भागवतमहापुराण में 25 छन्दों का प्रयोग हुआ है। परवर्ती काव्यों में 50 छन्दों तक का प्रयोग हुआ है।

छन्दशास्त्र के प्रमुख ग्रन्थ

ग्रन्थ	ग्रन्थकार	ग्रन्थ	ग्रन्थकार
✰ छन्दःसूत्र	आचार्य पिङ्गल	✰ जयदेवच्छन्द	जयदेव
✰ छन्दोऽनुशासन	जयकीर्ति	✰ वृत्तरत्नाकर	केदारभट्ट
✰ सुवृत्ततिलक	क्षेमेन्द्र	✰ श्रुतबोध	कालिदास
✰ छन्दोऽनुशासन	हेमचन्द्र	✰ छन्दोमञ्जरी	गङ्गादास
✰ पिङ्गलनाग छन्दोविचिति भाष्य	यादव प्रकाश	✰ वाणीभूषण	दामोदर मिश्र
✰ वृत्तमुक्तावली	श्रीकृष्णभट्ट	✰ वृत्तमौक्तिक	चन्द्रशेखर भट्ट
✰ वृत्तरत्नावली	वेङ्कटेश	✰ वाग्वल्लभ	दुःखभञ्जन कवि

- पिङ्गल के **'छन्दःसूत्र'** पर भट्ट हलायुध ने **'मृतसञ्जीवनी'** टीका लिखी।
- **'जानाश्रयी छन्दोविचिति'** नामक सूत्रात्मक ग्रन्थ 600 ई. के आसपास लिखा गया।
- भरतमुनि के नाट्यशास्त्र के दो अध्यायों (15 तथा 16) में एवम् अग्निपुराण के आठ अध्यायों (328 से 335 तक) में भी छन्दों का विवरण दिया गया है।
- **'पिङ्गलसूत्र'** की **'यादवप्रकाश'** नामक टीका के अनुसार छन्दशास्त्र भगवान् शङ्कर से देवराज इन्द्र को, इन्द्र से दुश्च्यवन को, दुश्च्यवन से बृहस्पति को, बृहस्पति से माण्डव्य को, माण्डव्य से सैतव को, सैतव से यास्क को, और यास्क से पिङ्गल को प्राप्त हुआ।

पद्य या छन्द के प्रकार

- **पद्य के दो भेद होते हैं-**(i) वृत्तम् (वर्णिक छन्द) (ii) जाति (मात्रिक छन्द)

(i) वृत्तम्- ✰ **''अक्षरैर्गणना यत्र तद् वृत्तम् इति कथ्यते।''** (वृत्तमञ्जरी)

✰ **''वृत्तम् अक्षरसंख्यातम्''** (छन्दोमञ्जरी)

जिस पद्य में अक्षरों की गणना की जाती है वे वृत्त कहे जाते हैं। जैसे- अनुष्टुप् , वंशस्थ, इन्द्रवज्रा, मालिनी आदि।

(ii) जाति- ✫ **''मात्राभिर्गणना यत्र सा जातिरभिधीयते''**

✫ **''जातिर्मात्रा कृता भवेत्''** (छन्दोमञ्जरी)

जिस पद्य में मात्रा की गिनती की जाती है, वे 'जाति छन्द' कहे जाते हैं। जैसे- आर्या छन्द जाति छन्द है। इसके प्रथम और तृतीय पाद में 12 मात्रायें, दूसरे पाद में 18 मात्रा, चतुर्थ पाद में 15 मात्रायें होती हैं।

वृत्तछन्द के प्रकार

➢ **वृत्तछन्द तीन प्रकार का होता है-**(i) समवृत्त (ii) अर्धसमवृत्त (iii) विषमवृत्त

(i) समवृत्त- जिस छन्द के चारों पादों में लक्षण समान रूपेण घटित होता है वह समवृत्त छन्द होगा।

जैसे- इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, वंशस्थ, मालिनी, शिखरिणी आदि समवृत्त हैं।

अङ्घ्रयो यस्य चत्वारस्तुल्यलक्षणलक्षिताः।
तच्छन्दःशास्त्रतत्त्वज्ञाः समं वृत्तं प्रचक्षते॥ (वृत्तरत्नाकर)

(ii) अर्धसमवृत्त- यदि छन्द का प्रथमपाद, तृतीयपाद के समान तथा द्वितीयपाद, चतुर्थपाद के समान होवे तो वह वृत्त **'अर्धसमवृत्त'** कहा जाएगा। जैसे- वियोगिनी अर्धसमवृत्त है।

प्रथमाङ्घ्रिसमो यस्य तृतीयश्चरणो भवेत्।
द्वितीयस्तुर्यवद् वृत्तं तदर्धसममुच्यते॥ (वृत्तरत्नाकर)

(iii) विषमवृत्त- यदि किसी छन्द के चारों चरण अलग-अलग लक्षण से युक्त होंगे तो वह विषमवृत्त कहा जाएगा। अर्थात् चारों चरणों में अक्षरसंख्या अलग-अलग होगी। जैसे- हरिणी, पुष्पिताग्रा आदि।

''भिन्नचिह्नचतुष्पादं विषमं परिकीर्तितम्'' (छन्दोमञ्जरी)

पद्यम् (छन्द)

- वृत्तम् (वर्णिकम्)
  - समवृत्त
  - अर्धसमवृत्त
  - विषमवृत्त
- जातिः (मात्रिक)
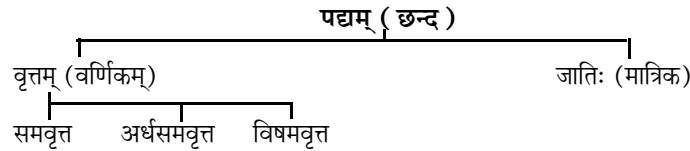
यति (विराम)- छन्द का गान करते समय किसी निश्चित स्थान पर जिह्वा का विश्रामस्थल यति या विराम कहा जाता है। इसे यति, विरति, विराम, विच्छेद इत्यादि नामों से भी जाना जाता है। **''यतिर्जिह्वेष्टविश्रान्तिः''**

यतिस्थान- छन्द में किन वर्णों में यति होगी, वह छन्द का यतिस्थान कहा जाता है। यतिस्थान को छन्दलक्षण में अब्धि, रस, सूर्य, अश्व, रुद्र आदि शब्दों से सङ्केतित किया जाता है।

जैसे- शार्दूलविक्रीडित छन्द के लक्षण में-

''सूर्याश्वैर्मसजास्तताः सगुरवः शार्दूलविक्रीडितम्''

यहाँ सूर्य और अश्व इन दो शब्दों से यतिस्थान को निर्देशित किया गया है। सूर्य द्वादश और अश्व सात प्रसिद्ध हैं अतः 12वें एवं 7वें अक्षर में यति होगी।

- जिन छन्दों के लक्षण में यतिस्थान का निर्देश नहीं होता वहाँ पादान्त में या श्लोक के आधे में यति माननी चाहिए। ''**यतिः सर्वत्र पादान्ते श्लोकार्धे तु विशेषतः**''

छन्द में यतिस्थान बोधक शब्दों की सूची

संख्या		संख्याबोधक शब्द	संख्या	संख्याबोधक शब्द
1. एक	-	ईश्वर, चन्द्र	2. दो	- नेत्र, पक्ष
3. तीन	-	गुण, अग्नि	4. चार	- वेद, समुद्र (अब्धि)
5. पाँच	-	भूत, बाण	6. छह	- रस, शास्त्र
7. सात	-	अश्व, मुनि (ऋषि)	8. आठ	- वसु, नाग
9. नव	-	ग्रह, रन्ध्र	10.दश	-दिशा, दोष
11.ग्यारह	-	रुद्र, ईश	12.बारह	- सूर्य (आदित्य)

अर्थात् छन्दों के लक्षण में यति या विराम किन वर्णों में होगा, इसको चन्द्र, सूर्य, अश्व, रथ, मुनि, रुद्र, रस आदि शब्दों से बताया जाता है।

जैसे- शिखरिणी छन्द के लक्षण में- ''**रसैः रुद्रैश्छिन्ना यमनसभलागः शिखरिणी**'' अर्थात् रस 6 प्रसिद्ध हैं और रुद्र 11 होते हैं तो शिखरिणी छन्द को पढ़ते समय छठवें और 11वें अक्षर में यति (विराम) लेना है।

छन्दशास्त्र में लघु एवं गुरु वर्ण

- व्याकरणशास्त्र में ह्रस्व और दीर्घ वर्णों के स्थान पर छन्दशास्त्र में **लघु** एव **गुरु** शब्दों का प्रयोग होता है।
- लघु वर्ण एक मात्रा का परिचायक है; जैसे— अ इ उ क च आदि। इसका सांकेतिक रूप खड़ी पाई (।) बताया गया है। व्यञ्जन वर्ण (हलन्त वर्ण) अर्थात् आधे अक्षर छन्दशास्त्र में नहीं गिने जाते हैं।
- गुरु वर्ण दो या दो से अधिक मात्रा का परिचायक है; जैसे- आ, ई, ऊ, का, चा, टा, पा आदि। इसका सांकेतिक रूप अंग्रेजी के (ऽ) वर्ण की तरह होता है।

लघु = ।, गुरु = ऽ

- छन्दोमञ्जरी में लघु एवं गुरुवर्ण के बारे में कहा गया है कि-

वक्ररेखा गुरोश्चिह्नं सरला च लघोस्तथा।
गुरुरेको गकारस्तु लकारो लघुरेककः॥

छन्दशास्त्र में गुरु वर्ण विचार

सानुस्वारैश्च दीर्घश्च विसर्गी च गुरुर्भवेत्।
वर्णः संयोगपूर्वश्च तथा पादान्तगोऽपि वा।।

अर्थात्-

(i) सानुस्वारैः - अनुस्वार युक्त वर्ण गुरु होता है। जैसे 'संयम' में 'सं' वर्ण छन्दशास्त्र में गुरु माना जाएगा।

(ii) दीर्घश्च- दीर्घ वर्ण भी छन्दशास्त्र में गुरु माने जाते हैं। जैसे 'रामः' में 'रा' दीर्घ है अतः गुरुवर्ण होगा।

(iii) विसर्ग- विसर्गयुक्त वर्ण गुरु माने जाते हैं। जैसे- 'श्यामः' में 'मः' गुरु वर्ण गिना जाएगा।

(iv) वर्णः संयोगपूर्वश्च- संयुक्तवर्णों के पूर्ववर्ण गुरु माना जाता है। जैसे- कृष्ण में 'ष्ण' इस संयुक्तवर्ण का पूर्ववर्ती वर्ण 'कृ' छन्दशास्त्र में गुरु माना जाएगा।

(v) पादान्तगोऽपि वा - पादान्त में स्थित लघु वर्ण भी विकल्प से गुरु माना जाता है। अर्थात् छन्द के लक्षण के अनुसार यदि पादान्त में लघु वर्ण चाहिए तो लघु; गुरु वर्ण की आवश्यकता हो तो गुरु होगा।

➢ इसप्रकार, अनुस्वार सहित, विसर्ग सहित, दीर्घ, संयुक्तवर्णों के पूर्व में स्थित वर्ण, एवं पादान्त वर्णों को गुरु एवं इनके अलावा शेष सभी वर्ण छन्दशास्त्र में लघु वर्ण माने जाते हैं।

ऽ - गुरु वर्ण का चिह्न, । - लघु वर्ण का चिह्न

➢ छन्दों के लक्षण में गुरु वर्ण का बोध कराने के लिए **'गकार'** एवं लघु वर्णों का बोध कराने के लिए **'लकार'** कहा जाता है। जैसे-

(i) इन्द्रवज्रा छन्द के लक्षण में- **''स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः''** यहाँ 'गः' का अर्थ गुरु वर्ण है।

(ii) **''रसैः रुद्रैश्छिन्ना यमनसभलागः शिखरिणी''** यहाँ 'ला गः' का क्रमशः अर्थ होगा- लघु एवं गुरु करना चाहिए।

गणों की संख्या

➢ छन्दशास्त्र में तीन-तीन वर्णों के आठ वर्णिक गण होते हैं-

जैसे- 1.यगण,2.मगण, 3. तगण, 4. रगण, 5.जगण, 6.भगण, 7.नगण,8. सगण।

➢ चार-चार मात्राओं के **पाँच मात्रिक गण** होते हैं।

(i) सर्वगुरु - ऽऽ (ii) सर्वलघु - ।।।। (iii) आदिगुरु - ऽ।।

(iv) मध्यगुरु - ।ऽ। (v) अन्तगुरु - ।।ऽ

➢ इसप्रकार 8 वर्णिकगण तथा 5 मात्रिक गणों को मिलाकर **कुल 13 गण छन्दशास्त्र में माने जाते हैं।**

आठ वर्णिक गण

सूत्र- ''यमाताराजभानसलगा''– इस सूत्र में प्रत्येक अक्षर एक-एक गण का प्रतिनिधित्व करता है, और लघु एवं गुरु वर्णों की व्यवस्था भी बताता है। जैसे 'य' अक्षर यगण का बोध कराता है और 'यमाता' यह तीन अक्षरों के यगण में लघु गुरु वर्ण को भी सूचित करता है। अर्थात् यमाता = ।ऽऽ = यगण।

गणनाम	गणबोधक शब्द	लघु गुरु चिह्न	गणनाम	गणबोधक शब्द	लघु गुरु चिह्न
1. यगण	यमाता	।ऽऽ	**2. मगण**	मातारा	ऽऽऽ
3. तगण	ताराज	ऽऽ।	**4. रगण**	राजभा	ऽ।ऽ
5. जगण	जभान	।ऽ।	**6. भगण**	भानस	ऽ।।
7. नगण	नसल	।।।	**8. सगण**	सलगा	।।ऽ

➢ गण व्यवस्था जानने के लिए एक श्लोक और भी जानना चाहिए-

आदिमध्यावसानेषु भजसा यान्ति गौरवम्।
यरता लाघवं यान्ति मनौ तु गुरुलाघवम्॥

भजसा	=	भगण	जगण	सगण
यरता	=	यगण	रगण	तगण
मनौ	=	मगण	नगण	

➢ आदि मध्य और अन्त में क्रमशः गुरु वर्ण आए तो '**भजसा**'।
➢ आदि मध्य और अन्त में क्रमशः लघु वर्ण आये तो- '**यरता**' कहा जाए।
➢ '**मनौ**' में मगण के तीनों वर्ण गुरु एव नगण में तीनों लघुवर्ण होंगे।

भजसा	=	भगण	ऽ।।	आदिगुरु
		जगण	।ऽ।	मध्यगुरु
		सगण	।।ऽ	अन्तगुरु

यरता	=	यगण	।ऽऽ	आदिलघु
		रगण	ऽ।ऽ	मध्यलघु
		तगण	ऽऽ।	अन्तलघु

मनौ	=	मगण	ऽऽऽ	सर्वगुरु
		नगण	।।।	सर्वलघु

➢ गणव्यवस्था के लिए एक श्लोक और भी बहुत प्रसिद्ध है-

मस्त्रिगुरुश्त्रिलघुश्च नकारो
भादिगुरुः पुनरादिलघुर्यः।
जो गुरुमध्यगतो रलमध्यः
सोऽन्तगुरुः कथितोऽन्तलघुस्तः॥ (छन्दोमञ्जरी)

1. मस्त्रिगुरुः	=	मगण	ऽऽऽ	त्रिगुरु
2. त्रिलघुश्चनकारो	=	नगण	।।।	त्रिलघु
3. भादिगुरुः	=	भगण	ऽ।।	आदिगुरु
4. आदिलघुर्यः	=	यगण	।ऽऽ	आदिलघु
5. जो गुरुमध्यगतः	=	जगण	।ऽ।	मध्यगुरु
6. रलमध्यः	=	रगण	ऽ।ऽ	मध्यलघु
7. सोऽन्तगुरुः	=	सगण	।।ऽ	अन्तगुरु
8. अन्तलघुस्तः	=	तगण	ऽऽ।	अन्तलघु

आठ गणों का संक्षिप्त परिचय

	गणनाम	स्वरूप	देवता	फल
1.	मगण	ऽऽऽ	पृथ्वी	लक्ष्मी
2.	यगण	।ऽऽ	जल	वृद्धि
3.	रगण	ऽ।ऽ	अग्नि	विनाश
4.	सगण	।।ऽ	वायु	देशाटन
5.	तगण	ऽऽ।	व्योम	धनापहरण
6.	जगण	।ऽ।	सूर्य	रोग
7.	भगण	ऽ।।	शशि	यश
8.	नगण	।।।	स्वर्ग	सुख

1. अनुष्टुप्

परिचय- अनुष्टुप् के प्रत्येक चरण में आठ अक्षर होते हैं, चारों चरणों में कुल मिलाकर $8 \times 4 = 32$ वर्ण होते हैं।

छन्द लक्षण– श्लोके षष्ठं गुरुज्ञेयं सर्वत्र लघु पञ्चमम्।
द्विचतुष्पादयोः ह्रस्वं सप्तमं दीर्घमन्ययोः॥

लक्षणार्थ- जिस छन्द के चारों चरणों में पाँचवाँ वर्ण लघु (ह्रस्व), छठवाँ अक्षर गुरु (दीर्घ) हो, पहले और तीसरे चरण में सातवाँ वर्ण दीर्घ (गुरु), तथा दूसरे एवं चौथे चरण में सातवाँ अक्षर ह्रस्व (लघु) हो, उस छन्द को अनुष्टुप् कहते हैं। अनुष्टुप् को ही पद्य या श्लोक भी कहते हैं।

➢ संक्षेप में अनुष्टुप् छन्द को इस तालिका से भी समझ सकते हैं-

वर्ण ↓	प्रथम चरण	द्वितीय चरण	तृतीय चरण	चतुर्थ चरण
पाँचवाँ वर्ण	। (लघु)	। (लघु)	। (लघु)	। (लघु)
छठवाँ वर्ण	ऽ (गुरु)	ऽ (गुरु)	ऽ (गुरु)	ऽ (गुरु)
सातवाँ वर्ण	ऽ (गुरु)	। (लघु)	ऽ (गुरु)	। (लघु)

➢ अनुष्टुप् छन्द के प्रत्येक चरण (पाद) में कुल आठ वर्ण होते हैं; पाँचवें, छठवें और सातवें अक्षर के लिए लघु और गुरु का निर्देश किया गया है, शेष अक्षरों के लिए कोई भी नियम नहीं है। चाहे वो लघु रहे या गुरु।

अनुष्टुप् छन्द का उदाहरण

(i) **प्रथम चरण-** माता शत्रुः पिता वैरी **द्वितीय चरण -** येन बालो न पाठितः।
। ऽ ऽ । ऽ ।
तृतीय चरण - न शोभते सभामध्ये **चतुर्थ चरण -** हंसमध्ये बको यथा।।
। ऽ ऽ । ऽ ।

(ii) **प्रथम चरण-**अधमाः धनमिच्छन्ति **द्वितीय चरण-** धनं मानं च मध्यमाः।
। ऽ ऽ । ऽ ।
चतुर्थ चरण- उत्तमाः मानमिच्छन्ति **तृतीय चरण-** मानो हि महतां धनम्।।
। ऽ ऽ । ऽ ।

स्पष्टीकरण- इस छन्द के प्रत्येक चरण में पाँचवाँ अक्षर लघु, छठवाँ अक्षर गुरु, एवं प्रथम-तृतीय चरण में सातवाँ अक्षर दीर्घ एवं द्वितीय चतुर्थ चरण में सातवाँ अक्षर ह्रस्व (लघु) है अतः यह अनुष्टुप् छन्द है। प्रत्येक चरण में आठ वर्ण हैं, चरणान्त में यति (विराम) है।

अन्य उदाहरण

(1) आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः।
(2) तवास्मि गीतरागेण हारिणा प्रसभं हृतः।

2. इन्द्रवज्रा

परिचय- इन्द्रवज्रा छन्द के प्रत्येक चरण में ग्यारह अक्षर होते हैं, इसप्रकार चारों चरणों में कुल मिलाकर 11×4 = 44 अक्षर होंगे।

छन्द लक्षण— ''स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः''

शब्दार्थ– **स्यात्** = होवे, **इन्द्रवज्रा** = इन्द्रवज्रा, **यदि** = यदि, **तौ** = तगण तगण (दो तगण) **जगौ** = जगण गुरु, **गः** = गुरु

लक्षणार्थ- इसप्रकार जिस छन्द के प्रत्येक चरण में दो तगण, एक जगण तथा दो गुरु वर्ण आयें, उसे 'इन्द्रवज्रा' छन्द कहते हैं।

इन्द्रवज्रा =	तगण	तगण	जगण	गुरु गुरु = 11 अक्षर
	ऽऽ।	ऽऽ।	।ऽ।	ऽ ऽ

उदाहरण

अर्थो हि कन्या परकीय एव तामद्य संप्रेष्य परिग्रहीतुः

ऽऽ। (तगण) ऽऽ। (तगण) ।ऽ। (जगण) ऽऽ (गुरु गुरु) ऽऽ। (तगण) ऽऽ। (तगण) ।ऽ। (जगण) ऽऽ (गुरु गुरु)

जातो ममायं विशदः प्रकामं प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा

ऽऽ। (तगण) ऽऽ। (तगण) ।ऽ। (जगण) ऽऽ (गुरु गुरु) ऽऽ। (तगण) ऽऽ। (तगण) ।ऽ। (जगण) ऽऽ (गुरु गुरु)

स्पष्टीकरण- इस छन्द के प्रत्येक चरण में तगण तगण जगण और दो गुरु वर्ण आये हैं अतः इसमें इन्द्रवज्रा छन्द है। इसके प्रत्येक चरण में 11 वर्ण हैं; और पादान्त में यति (विराम) है।

विशेष- जब छन्द के लक्षण में यति (विराम) के लिए कोई निर्देश न हो तो नियमानुसार पादान्त या श्लोकार्ध में यति माननी चाहिए-

''यतिः सर्वत्र पादान्ते श्लोकार्धे तु विशेषतः''

इसलिए जिस किसी भी छन्द के लक्षण में यति (विराम) का कोई स्पष्ट निर्देश नहीं है; उन छन्दों में पादान्त में यति माननी चाहिए। जैसे- इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, वसन्ततिलका, वंशस्थ आदि छन्दों में पादान्त में यति होगी; क्योंकि इन छन्दों के लक्षण में यतिस्थल या विरामस्थल का कोई निर्देश नहीं है।

अन्य उदाहरण

(1) **जीवन्तु मे शत्रुगणाः सदैव** (2) **आहार निद्रा भय मैथुनानि**

(3) **शास्त्रेषु निष्ठा सहजश्च बोधः**

3. उपेन्द्रवज्रा

परिचय- उपेन्द्रवज्रा के प्रत्येक चरण में 11 अक्षर होते हैं, इसप्रकार चारों चरणों में कुल 11×4 = 44 अक्षर होते हैं।

छन्द लक्षण- ''उपेन्द्रवज्रा जतजास्ततो गौ'' (वृत्तरत्नाकर)

शब्दार्थ - उपेन्द्रवज्रा = उपेन्द्रवज्रा, **जतजाः** = जगण तगण जगण, **ततः** = तदनन्तर, **गौ** = गुरु गुरु (दो गुरु)

लक्षणार्थ- जिस छन्द के प्रत्येक चरण में जगण, तगण, जगण तथा दो गुरुवर्ण आये, उसे उपेन्द्रवज्रा कहते हैं। पादान्त (चरणान्त) में यति या विराम होगा।

विशेष- इन्द्रवज्रा छन्द का यदि प्रथमवर्ण लघु कर दिया जाय तो, वही उपेन्द्रवज्रा छन्द हो जाता है। इसीलिए '**छन्दोमञ्जरी**' में इसका लक्षण लिखा है- "**उपेन्द्रवज्रा प्रथमे लघौ सा**"

उपेन्द्रवज्रा = जगण तगण जगण गुरु गुरु = 11 वर्ण

।ऽ। ऽऽ। ।ऽ। ऽ ऽ

उदाहरणम्

त्वमेव माता च पिता त्वमेव

।ऽ। ऽऽ। ।ऽ। ऽऽ

जगण तगण जगण गुरु गुरु

त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव

।ऽ। ऽऽ। ।ऽ। ऽऽ

जगण तगण जगण गुरु गुरु

त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव

।ऽ। ऽऽ। ।ऽ। ऽऽ

जगण तगण जगण गुरु गुरु

त्वमेव सर्वं मम देव देव

।ऽ। ऽऽ। ।ऽ। ऽऽ

जगण तगण जगण गुरु गुरु

स्पष्टीकरण- इस छन्द के प्रत्येक चरण में जगण, तगण, जगण एवं दो गुरु वर्ण आये हैं, अतः इसमें उपेन्द्रवज्रा छन्द है; इसके प्रत्येक चरण में 11 अक्षर हैं और पादान्त में यति है।

ध्यान दें- पादान्त में लघु वर्ण भी विकल्प से गुरु माना जाता है अतएव यहाँ पादान्त वर्ण ह्रस्व (लघु) होते हुए भी गुरु वर्ण गिना गया है।

सानुस्वारो विसर्गान्तो दीर्घो युक्तपरश्च यः।

वा पादान्ते त्वसौ वक्रो ज्ञेयोऽन्यो मातृक ऋजुः॥

छन्दशास्त्र में अनुस्वार युक्त वर्ण, विसर्गयुक्त वर्ण, दीर्घवर्ण, तथा संयुक्तवर्णों से पूर्वस्थित ह्रस्व वर्ण भी गुरु (दीर्घ) माने जाते हैं। पादान्त में स्थित ह्रस्व (लघु) वर्ण विकल्प से दीर्घ (गुरु) माने जाते हैं। इनके अलावा सभी वर्ण ह्रस्व अर्थात् लघु गिने जायेंगे।

अन्य उदाहरण

(1) परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः

(2) सुखस्य दुःखस्य न कोऽपि दाता

(3) रजः प्रशान्तं सहिमोऽद्य वायुः

4. उपजाति

परिचय- उपजाति छन्द के भी प्रत्येक चरण में 11 वर्ण होते हैं। इसप्रकार चारों चरणों में कुल 11×4 = 44 वर्ण होते हैं।

छन्द लक्षण-

अनन्तरोदीरितलक्ष्मभाजौ, पादौ यदीयावुपजातयस्ताः। (वृत्तरत्नाकर 3/30)

शब्दार्थ- जिस छन्द के दो चरण ठीक पूर्व बताये गए (इन्द्रवज्रा तथा उपेन्द्रवज्रा के) लक्षण से युक्त हों, उसे उपजाति छन्द कहते हैं। अर्थात् इन्द्रवज्रा तथा उपेन्द्रवज्रा के मिश्रण को उपजाति कहते हैं।

➢ अन्यत्र उपजाति छन्द का लक्षण इसप्रकार प्राप्त होता है-

उपेन्द्रवज्राचरणः प्रयाति यत्रेन्द्रवज्रा चरणेन योगम्।
छन्दोविदस्तामुपजातिमाहुः भवन्ति भेदाः बहवस्तदीयाः॥

लक्षणार्थ- जब उपेन्द्रवज्रा का कोई चरण इन्द्रवज्रा छन्द के किसी चरण से संयुक्त होता है, तब छन्दोविद् विद्वान् उसे उपजाति छन्द कहते हैं; इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा के मिश्रण से 14 प्रकार का उपजाति छन्द हो सकता है। (**इ** = इन्द्रवज्रा, **उ** = उपेन्द्रवज्रा)

(1) उ इ इ इ (2) इ उ इ इ (3) उ उ इ इ (4) इ इ उ इ (5) उ इ उ इ (6) इ उ उ इ (7) उ उ उ इ (8) इ इ इ उ (9) उ इ इ उ (10) इ उ इ उ (11) उ उ इ उ (12) इ इ उ उ (13) उ इ उ उ (14) इ उ उ उ

उदाहरण

न चौरहार्यं न च राजहार्यम् - **(उपेन्द्रवज्रा)** न भ्रातृभाज्यं न च भारकारि - **(उपेन्द्रवज्रा)**
व्यये कृते वर्धत एव नित्यम् - **(उपेन्द्रवज्रा)** विद्याधनं सर्वधनप्रधानम् - **(इन्द्रवज्रा)**

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त उदाहरण में तीन चरण उपेन्द्रवज्रा के तथा चतुर्थ चरण इन्द्रवज्रा का है। इसप्रकार उपेन्द्रवज्रा और इन्द्रवज्रा छन्द के इस मिश्रण को उपजाति छन्द कहेंगे। यहाँ प्रत्येक पाद में 11 वर्ण हैं तथा पादान्त में यति है।

ध्यान दें- व्यञ्जन वर्ण (हलन्त वर्ण) अर्थात् आधे अक्षर छन्दशास्त्र में नहीं गिने जाते हैं।

अन्य उदाहरण

(1) दानेन भूतानि वशीभवन्ति

(2) वने रणे शत्रुजलाग्निमध्ये

(3) कर्पूरगौरं करुणावतारम्

5. वंशस्थ

परिचय- वंशस्थ छन्द के प्रत्येक चरण में 12 अक्षर होते हैं, इसप्रकार चारों चरणों में कुल 12×4 = 48 अक्षर होते हैं।

छन्द लक्षण

"**जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ**" (वृत्तरत्नाकर 3/46)

शब्दार्थ–जतौ = जगण (।ऽ।) तगण (ऽऽ।), **जरौ** = जगण (।ऽ।) रगण (ऽ।ऽ)
तु = तो, **वंशस्थम्** = वंशस्थ छन्द, **उदीरितम्** = कहा जाता है।

लक्षणार्थ- अर्थात् जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः जगण तगण जगण रगण आयें तो उसे वंशस्थ छन्द कहा जाता है। चरणान्त में यति होती है।

वंशस्थ = जगण तगण जगण रगण = 12 अक्षर
।ऽ। ऽऽ। ।ऽ। ऽ।ऽ

उदाहरण

रजोजुषे जन्मनि सत्त्ववृत्तये स्थितौ प्रजानां प्रलये तमःस्पृशे

।ऽ। ऽऽ। ।ऽ। ऽ।ऽ ।ऽ। ऽऽ। ।ऽ। ऽ।ऽ
जगण तगण जगण रगण जगण तगण जगण रगण

अजाय सर्गस्थितिनाशहेतवे त्रयीमयाय त्रिगुणात्मने नमः

।ऽ। ऽऽ। ।ऽ। ऽ।ऽ ।ऽ। ऽऽ। ।ऽ। ऽ।ऽ
जगण तगण जगण रगण जगण तगण जगण रगण

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त छन्द के प्रत्येक चरण में जगण (।ऽ।) तगण (ऽऽ।) जगण (।ऽ।) रगण (ऽ।ऽ) का क्रमशः प्रयोग है अतः इसमें वंशस्थ छन्द है। प्रत्येक चरण में 12 अक्षर हैं और चरणान्त (पादान्त) में यति है।

अन्य उदाहरण

(1) मनीषिणः सन्ति न ते हितैषिणः

(2) श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीम्

(3) श्रियःपतिः श्रीमति शासितुं जगत्

6. मालिनी

परिचय- मालिनी छन्द के प्रत्येक चरण में 15 वर्ण होते हैं इसप्रकार चारों चरणों में कुल 15×4 = 60 वर्ण होंगे।

छन्द लक्षण- **''ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः''**

शब्दार्थ- ननमयय= नगण (।।।) नगण (।।।) मगण (ऽऽऽ) यगण (।ऽऽ) यगण (।ऽऽ), **युतेयम्** = युता + इयम् = से युक्त यह छन्द, **मालिनी** = मालिनी है।, **भोगिलोकैः** = अष्ट भोगी (नाग) और सप्त लोक प्रसिद्ध हैं, अतः आठवें और सातवें अक्षर में यति होगी। अर्थात् जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः नगण, नगण, मगण, यगण तथा यगण आयें तो वह मालिनी छन्द होगा।

➢ भोगी (नाग) 8 प्रसिद्ध हैं, लोक 7 प्रसिद्ध हैं अतः मालिनी छन्द के 8 वें और 7 वें अक्षर पर यति होगी।

मालिनी- नगण नगण मगण यगण यगण = 15 वर्ण

।।। ।।। ऽऽऽ ।ऽऽ ।ऽऽ

उदाहरण

सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यम्। मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति

। । । ।। ।ऽ ऽ ऽ ।ऽ ऽ । ऽ ऽ   । । । । । । ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ

नगण नगण मगण यगण यगण   नगण नगण मगण यगण यगण

इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्॥

। । । । । । ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ   । । । । । । ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ

नगण नगण मगण यगण यगण   नगण नगण मगण यगण यगण

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त छन्द के प्रत्येक चरण में नगण, नगण, मगण, यगण, यगण (ननमयय) आये हैं। प्रत्येक चरण में 15 वर्ण हैं, तथा आठवें और सातवें अक्षर में यति है, अतः इसमें मालिनी छन्द है।

अन्य उदाहरण

(1) अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहम्--------।

(2) न खलु न खलु बाणः सन्निपात्योऽयमस्मिन्---।

(3) मनसि वचसि काये पुण्यपीयूषपूर्णाः--------।

7. शिखरिणी

परिचय- शिखरिणी छन्द के प्रत्येक चरण में 17 वर्ण होते हैं, इसप्रकार चारों चरणों में कुल 17×4 = 68 वर्ण होते हैं।

छन्द लक्षण-''रसैः रुद्रैश्छिन्ना यमनसभलागः शिखरिणी''

शब्दार्थ- यमनसभ = यगण (।ऽऽ) मगण (ऽऽऽ) नगण (।।।) सगण (।।ऽ) भगण (ऽ।।), **लागः** = लघु (।) गुरु (ऽ), **शिखरिणी** = शिखरिणी छन्द होता है। **रसैः** =रस 6 प्रसिद्ध हैं, **रुद्रैः** = लोक में 11 रुद्र प्रसिद्ध हैं।

लक्षणार्थ- जिस छन्द के प्रत्येक चरण में **यगण, मगण, नगण, सगण, भगण** एक **लघु** एवं एक **गुरु** वर्ण आयें तो शिखरिणी छन्द होगा।

➢ छन्दलक्षण में **'रसैः'** और **'रुद्रैः'** शब्द से यति का निर्देश किया गया है। लोक में कटु मधुर आदि षड् रस प्रसिद्ध हैं तथा 11 रुद्र माने जाते हैं अतः शिखरिणी छन्द के छठवें और ग्यारहवें अक्षर में यति होगी।

शिखरिणी = 17 वर्ण

यगण	मगण	नगण	सगण	भगण	लघु	गुरु
।ऽऽ	ऽऽऽ	।।।	।।ऽ	ऽ।।	।	ऽ

उदाहरण

समृद्धं सौभाग्यं सकलवसुधात्याः किमपितन्।

। ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ । । । । । ऽ ऽ । । । ऽ
यगण मगण नगण सगण भगण लघु गुरु

महैश्वर्यं लीलाजनितजगतः खण्डपरशोः

। ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ । । । । । ऽ ऽ । । । ऽ
यगण मगण नगण सगण भगण लघु गुरु

श्रुतीनां सर्वस्वं सुकृतमथ मूर्तं सुमनसां

। ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ । । । । । ऽ ऽ । । । ऽ
यगण मगण नगण सगण भगण लघु गुरु

सुधासौन्दर्यं ते सलिलमशिवं नः शमयतु।।

। ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ । । । । । ऽ ऽ । । । ऽ
यगण मगण नगण सगण भगण लघु गुरु

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त छन्द के प्रत्येक चरण में यगण मगण नगण सगण भगण लघु एवं गुरु **(यमनसभलागः)** वर्ण आये हैं तथा 6 वें और 11 वें अक्षर में यति है अतः इसमें शिखरिणी छन्द है।

अन्य उदाहरण

(1) यदा किञ्चिदज्ञोऽहं गज इव मदान्धः समभवम्।

(2) क्वचित् पृथ्वीशय्यः क्वचिदपि च पर्यङ्कशयनः।

(3) न मन्त्रं नो यन्त्रं तदपि च न जाने स्तुतिमहो।

मन्दाक्रान्ता

परिचय- मन्दाक्रान्ता के प्रत्येक चरण में 17 वर्ण होते हैं। इसप्रकार चारों चरणों में कुल मिलाकर 17×4 = 68 वर्ण होंगे।

छन्द लक्षण- **''मन्दाक्रान्ता जलधिषडगैर्म्भौ नतौ ताद् गुरू चेत्''**

शब्दार्थ- म्भौ = मगण (ऽऽऽ) भगण (ऽ।।), **नतौ** = नगण (।।।) तगण (ऽऽ।) **ताद्** = तगण (ऽऽ।), **गुरू** = गुरु (ऽ) गुरु (ऽ), **चेत्** = यदि आये तो, **मन्दाक्रान्ता** = मन्दाक्रान्ता, **जलधि** = समुद्र चार होते हैं, **षड्** =छह, **अगैः**= अग (पर्वत) 7 होते हैं। इसलिए 4, 6, 7 वर्णों पर यति होगी।

लक्षणार्थ- अर्थात् जिस छन्द के प्रत्येक चरण में मगण (ऽऽऽ), भगण (ऽ।।), नगण (।।।), तगण (ऽऽ।), तगण (ऽऽ।), गुरु (ऽ), गुरु (ऽ) वर्ण आयें तो मन्द्राक्रान्ता छन्द होगा। इस छन्द में चौथे, छठवें, और सातवें अक्षर पर यति होती है।

मन्दाक्रान्ता = 17 वर्ण

मगण	भगण	नगण	तगण	तगण	गुरु	गुरु
ऽऽऽ	ऽ।।	।।।	ऽऽ।	ऽऽ।	ऽ	ऽ

उदाहरण

(i) कश्चित् कान्ता विरहगुरुणा स्वाधिकारात् प्रमत्तः

ऽ ऽ ऽ | ऽ । । | । । । | ऽ ऽ । | ऽ ऽ । | ऽ | ऽ

मगण भगण नगण तगण तगण गुरु गुरु

शापेनास्तङ्गमितमहिमा वर्षभोग्येण भर्तुः।

ऽ ऽ ऽ | ऽ । । | । । । | ऽ ऽ । | ऽ ऽ । | ऽ | ऽ

मगण भगण नगण तगण तगण गुरु गुरु

यक्षश्चक्रे जनकतनया स्नानपुण्योदकेषु

ऽ ऽ ऽ | ऽ । । | । । । | ऽ ऽ । | ऽ ऽ । | ऽ | ऽ

मगण भगण नगण तगण तगण गुरु गुरु

स्निग्धच्छाया तरुषुवसतिं रामगिर्याश्रमेषु।।

ऽ ऽ ऽ | ऽ । । | । । । | ऽ ऽ । | ऽ ऽ । | ऽ | ऽ

मगण भगण नगण तगण तगण गुरु गुरु

(ii) शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशम्

ऽ ऽ ऽ | ऽ । । | । । । | ऽ ऽ । | ऽ ऽ । | ऽ | ऽ

मगण भगण नगण तगण तगण गुरु गुरु

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त उदाहरणों में मगण, भगण, नगण, तगण, तगण, गुरु, गुरु (म्भौ नतौ ताद् गुरू) वर्ण आयें हैं तथा जलधि (4), षड् (6), अग = पर्वत (7) इन वर्णों पर यति (विराम) है अतः यहाँ मन्दाक्रान्ता छन्द है। प्रत्येक चरण में 17 वर्ण हैं।

अन्य उदाहरण

(1) विद्यातीर्थे जगति विबुधाः साधवः सत्यतीर्थे-----।
(2) नन्वात्मानं बहु विगणयन्नात्मनैवावलम्बे-----।
(3) नैतच्चित्रं यदमुदधिश्यामसीमां धरित्रीम्--------।

9. शार्दूलविक्रीडितम्

परिचय- शार्दूलविक्रीडित के प्रत्येक चरण में 19 वर्ण होते हैं; इस प्रकार चारों चरणों में कुल मिलाकर 19×4 = 76 वर्ण होंगे।

छन्द लक्षण-''सूर्याश्वैर्मसजास्ततताः सगुरवः शार्दूलविक्रीडितम्''(वृत्तरत्नाकर 3/100)

शब्दार्थ- मसजास्तताः = मगण (ऽऽऽ), सगण (।।ऽ), जगण (।ऽ।), सगण (।।ऽ), तगण (ऽऽ।), तगण (ऽऽ।), **सगुरवः** = ऽ,**शार्दूलविक्रीडितम्** = शार्दूलविक्रीडित छन्द, **सूर्याश्वैः** = सूर्य (12) अश्व (7)

लक्षणार्थ- जब किसी छन्द के प्रत्येक चरण में मगण सगण जगण सगण तगण तगण एवं एक गुरु वर्ण आये तो शार्दूलविक्रीडित छन्द होगा। सूर्य = आदित्य (12), अश्व (7) प्रसिद्ध हैं । अतः 12वें और 7वें अक्षर पर यति होती है।

शार्दूलविक्रीडितम् = 19 वर्ण

मगण सगण जगण सगण तगण तगण गुरु
ऽऽऽ ।।ऽ ।ऽऽ ।।ऽ ऽऽ। ऽऽ। ऽ

उदाहरण

(i) **यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया**
ऽ ऽ ऽ । । ऽ । ऽ । । । ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ
मगण सगण जगण सगण तगण तगण गुरु

कण्ठः स्तम्भित वाष्पवृत्तिकलुषः चिन्ताजडं दर्शनम्
ऽ ऽ ऽ । । ऽ । ऽ । । । ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ
मगण सगण जगण सगण तगण तगण गुरु

वैक्लव्यं मम तावदीदृशमिदं स्नेहादरण्यौकसः
ऽ ऽ ऽ । । ऽ । ऽ । । । ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ
मगण सगण जगण सगण तगण तगण गुरु

पीड्यन्ते गृहिणः कथं नु तनयाविश्लेषदुःखैर्नवैः।।
ऽ ऽ ऽ । । ऽ । ऽ । । । ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ
मगण सगण जगण सगण तगण तगण गुरु

(ii) ''पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं युष्माष्वपीतेषु या''

ऽ ऽ ऽ । । ऽ । ऽ । । । ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ
मगण सगण जगण सगण तगण तगण गुरु

(iii) '' कार्या सैकतलीनहंसमिथुना स्रोतोवहा मालिनी''

ऽ ऽ ऽ । । ऽ । ऽ । । । ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ
मगण सगण जगण सगण तगण तगण गुरु

(iv) या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता।

ऽ ऽ ऽ । । ऽ । ऽ । । । ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ
मगण सगण जगण सगण तगण तगण गुरु

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त उदाहरणों के प्रत्येक चरण में मगण सगण जगण सगण तगण तगण गुरु वर्ण आयें हैं अतः इसमें शार्दूलविक्रीडित छन्द है। प्रत्येक चरण में 19 वर्ण हैं तथा 12 वें और सातवें अक्षर में यति है।

अन्य उदाहरण

(1) शुक्लां ब्रह्मविचारसारपरमामाद्यां जगद्व्यापिनीं----।
(2) यत्पूर्वं विधिना ललाटलिखितं तन्मार्जितुं कः क्षमः।
(3) विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तं धनम्----

10. स्रग्धरा

परिचय– स्रग्धरा के प्रत्येक चरण में 21 वर्ण होते हैं, इस प्रकार चारों में कुल मिलाकर 21× 4 = 84 वर्ण होंगे

छन्द लक्षण–म्रभ्नैर्यानां त्रयेण त्रिमुनियतियुता स्रग्धरा कीर्तितेयम् (वृत्तरत्नाकर3/104)

शब्दार्थ- म्रभ्नैः = मगण रगण, भगण, नगण, यानां त्रयेण = तीन यगण त्रिमुनियतियुता =तीन बार सातवें अक्षर पर यति वाला (जहाँ मुनियों -ऋषियों की सात संख्या अभिप्रेत है) इयं कीर्तिता = यह स्रग्धरा नाम छन्द कहलाता है।

लक्षणार्थ- जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः मगण, मगण (ऽ ऽ ऽ) रगण (ऽ । ऽ), भगण (ऽ । ।) तीन यगण (। ऽ ऽ) वर्ण हों तथा तीन बार सातवें अक्षर पर यति हो उसे स्रग्धरा छन्द कहते हैं।

स्रग्धरा - स्रग्धरा = 21 वर्ण

मगण	रगण	भगण	नगण	यगण	यगण	यगण
(ऽ ऽ ऽ)	(ऽ । ऽ)	(ऽ । ।)	(। । ।)	(। ऽ ऽ)	(। ऽ ऽ)	(। ऽ ऽ)

उदाहरण

या सृष्टिः स्रष्टुराद्या वहति विधिहुतं या हविर्या च होत्री

ऽ ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ । । । । । । ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ
मगण रगण भगण नगण यगण यगण यगण

13. प्रसिद्ध रचनाएँ एवं रचनाकार

काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ

ग्रन्थ	ग्रन्थकार	अनुमानित समय
1. नाट्यशास्त्र	आचार्य भरत	ई.पू. द्वितीय शताब्दी
2. काव्यालङ्कार	भामह	500 ई.
3. काव्यादर्श	दण्डी	सातवीं शताब्दी
4. काव्यालङ्कारसारसंग्रह	उद्भट	अष्टमशताब्दी का उत्तरार्द्ध
5. काव्यालङ्कार सूत्र	वामन	800-850 ई. लगभग
6. काव्यालङ्कार	रुद्रट	नवम शताब्दी का पूर्वार्द्ध
7. ध्वन्यालोक	आनन्दवर्धन	नवम शताब्दी का उत्तरार्द्ध
8. काव्यमीमांसा	राजशेखर	दशम शताब्दी
9. अभिधावृत्तमात्रिका	मुकुलभट्ट	दशम शताब्दी का पूर्वार्द्ध
10. काव्यकौतुक	भट्टतौत	दशम शताब्दी का मध्य
11. दशरूपक	धनञ्जय और धनिक	दशम शताब्दी का उत्तरार्द्ध
12. (i) अभिनवभारती ('नाट्यशास्त्र' की टीका)	अभिनवगुप्त	एकादश शताब्दी
(ii) ध्वन्यालोकलोचन ('ध्वन्यालोक' की टीका)	अभिनवगुप्त	
(ii) 'काव्यकौतुकविवरण ('काव्यकौतुक' का विवरण)	अभिनवगुप्त	
13. वक्रोक्तिजीवितम्	कुन्तक	एकादश शताब्दी का पूर्वार्द्ध
14. व्यक्तिविवेक	महिमभट्ट	एकादश शताब्दी का मध्य
15. (i) सरस्वतीकण्ठाभरण	भोजराज	एकादशशताब्दी 1050 ई. लगभग
(ii) शृङ्गारप्रकाश	भोजराज	
16. (i) औचित्यविचारचर्चा	क्षेमेन्द्र	एकादशशताब्दी का उत्तरार्द्ध
(ii) कविकण्ठाभरण	क्षेमेन्द्र	
17. नाटकलक्षणरत्नकोष	सागरनन्दी	एकादश शताब्दी
18. काव्यप्रकाश	मम्मट	1050 ई. (एकादश श. का उ.)
19. अलङ्कारसर्वस्व	रुय्यक	द्वादशशताब्दी
20. वाग्भटालङ्कार	वाग्भट्ट	बारहवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध

ग्रन्थ	ग्रन्थकार	अनुमानित समय
21. काव्यानुशासन	हेमचन्द्र	बारहवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध
22. नाट्यदर्पण	रामचन्द्र गुणचन्द्र	बारहवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध
23. भावप्रकाशन	शारदातनय	तेरहवीं शताब्दी
24. चन्द्रालोक	पीयूषवर्ष जयदेव	तेरहवीं शताब्दी का मध्यभाग
25. साहित्यदर्पण	विश्वनाथ कविराज	14वीं शताब्दी
26. एकावली	विद्याधर	1285 ई. से 1325 ई. के मध्य
27. (i) कुवलयानन्द	अप्पयदीक्षित	षोडशशताब्दी
(ii) चित्रमीमांसा	अप्पयदीक्षित	
(iii) वृत्तवार्तिक	अप्पयदीक्षित	
28. रसगङ्गाधर	पण्डितराज जगन्नाथ	17वीं शताब्दी का मध्यभाग

संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख महाकाव्य

महाकाव्य	सर्ग	लेखक
1. कुमारसम्भवम्	17 (अन्यमत 8)	कालिदास
2. रघुवंशम्	19	कालिदास
3. बुद्धचरितम्	28	अश्वघोष
4. सौन्दरनन्द	18	अश्वघोष
5. किरातार्जुनीयम्	18	भारवि
6. शिशुपालवधम्	20	माघ
7. नैषधीयचरितम्	22	श्रीहर्ष
8. भट्टिकाव्य (रावणवधम्)	22	भट्टि
9. जानकीहरणम्	20 से 25 सर्ग (प्राप्त 10-15 सर्ग)	कुमारदास
10. हरविजयम्	50 सर्ग	रत्नाकर (सबसे बड़ा महाकाव्य)
11. धर्मशर्माभ्युदय	21 सर्ग	हरिश्चन्द्र
12. राघवपाण्डवीयम्	13 सर्ग	कविराज (माधवभट्ट)

कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ

रचना	लेखक
1. जाम्बवतीविजयम् (पातालविजयम्)	पाणिनि
2. स्वर्गारोहणम्	कात्यायन (वररुचि)
3. महानन्दकाव्य	पतञ्जलि
4. प्रयागप्रशस्ति	हरिषेण
5. सेतुबन्ध	प्रवरसेन

रचना	लेखक
6. हयग्रीववध	भर्तृमेण्ठ
7. गउडवहो	वाक्पति
8. रामचरित	अभिनन्द
9. नवसाहसाङ्कचरित	पद्मगुप्त
10. पारिजातहरणम्	कविकर्णपूर
11. नरनारायणानन्द	वस्तुपाल
12. रघुनाथचरित	वामनभट्टबाण
13. सेतुकाव्य	मातृगुप्त
14. कादम्बरीसार	अभिनन्द (काश्मीरी कवि)
15. रामायणमञ्जरी	क्षेमेन्द्र (काश्मीरी)
16. भारतमञ्जरी	क्षेमेन्द्र (काश्मीरी कवि)
17. विक्रमाङ्कदेवचरित	बिल्हण (काश्मीरी)
18. श्रीकण्ठचरितम्	मंखक (काश्मीरी)
19. राजतरङ्गिणी	कल्हण (काश्मीरी)
20. जातकमाला	आर्यशूर (बौद्ध कवि)
21. गुरुगोविन्दसिंह महाकाव्यम्	डॉ. सत्यव्रतशास्त्री
22. सीताचरितम्	डॉ. रेवाप्रसाद द्विवेदी
23. जानकीजीवनम्	डॉ. अभिराज राजेन्द्र मिश्र

संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख नाट्यग्रन्थ

ग्रन्थ	अङ्क	लेखक
1. प्रतिज्ञायौगन्धरायण	4	भास
2. स्वप्नवासवदत्तम्	6	भास
3. ऊरुभङ्गम्	एकाङ्की	भास
4. दूतवाक्यम्	एकाङ्की	भास
5. पञ्चरात्रम्	3	भास
6. बालचरितम्	5	भास
7. दूतघटोत्कचम्	एकाङ्की	भास

ग्रन्थ	अङ्क	लेखक
8. कर्णभारम्	एकाङ्की	भास
9. मध्यमव्यायोगः	एकाङ्की	भास
10. प्रतिमानाटकम्	7	भास
11. अभिषेकनाटकम्	6	भास
12. अविमारकम्	6	भास
13. चारुदत्तम्	4	भास
14. मृच्छकटिकम् (प्रकरण)	10	शूद्रक (शिमुक)
15. मालविकाग्निमित्रम्	5	कालिदास
16. विक्रमोर्वशीयम् (त्रोटक)	5	कालिदास
17. अभिज्ञानशाकुन्तलम्	7	कालिदास
18. मुद्राराक्षसम्	7	विशाखदत्त
19. प्रियदर्शिका (नाटिका)	4	हर्ष (हर्षवर्धन)
20. रत्नावली (नाटिका)	4	हर्ष (हर्षवर्धन)
21. नागानन्द	5	हर्ष (हर्षवर्धन)
22. वेणीसंहारम्	6	भट्टनारायण
23. मालतीमाधवम् (प्रकरण)	10	भवभूति
24. महावीरचरितम्	7	भवभूति
25. उत्तररामचरितम्	7	भवभूति
26. शारिपुत्रप्रकरण् (प्रकरण)	9	अश्वघोष
27. अनर्घराघवम्	7	मुरारि
28. बालरामायणम् (महानाटक)	10	राजशेखर
29. बालभारत (प्रचण्डपाण्डव)	2	राजशेखर
30. विद्धशालभञ्जिका (नाटिका)	4	राजशेखर
31. कर्पूरमञ्जरी (सट्टक)	4	राजशेखर
32. कुन्दमाला	6	दिङ्नाग
33. प्रबोधचन्द्रोदय	6	कृष्ण मिश्र
34. प्रसन्नराघवम्	7	जयदेव

14. सन्दर्भग्रन्थ सूची

(इन टीकाकारों के मूलपाठ से सप्तगङ्गम् का समीक्षात्मक मूलपाठ स्वीकृत)

1. किरातार्जुनीयम्-भारवि

1. डॉ. रामसेवक दुबे 2.प्रो. 'अभिराज' राजेन्द्र मिश्र 3.डॉ. उमेशचन्द्र पाण्डेय 4.डॉ. सुधाकर मालवीय5. आचार्य श्रीनिवास शर्मा 6. डॉ. नर्मदेश्वर कुमार त्रिपाठी 7.डॉ. बलवान सिंह यादव 8.डॉ. आचार्य धुरन्धर पाण्डेय 9.श्री बदरीनारायण मिश्र।

2. नीतिशतकम्-भर्तृहरि

1.श्री तारिणीश झा 2.राजेश्वर प्रसाद मिश्र 3.डॉ. बलवान सिंह यादव 4.डॉ. राजेश्वर शास्त्री मुसलगाँवकर 5. डॉ. प्रद्युम्न द्विवेदी 6. जनार्दन शास्त्री पाण्डेय 7.डॉ. नरेश झा 8.श्रीमदनन्तरामशास्त्री 9.श्रीमती शोभा सत्यदेव।

3. मेघदूतम् -कालिदास

1.डॉ. दयाशंकर शास्त्री 2. श्री तारिणीश झा 3.डॉ. आर. बी. शास्त्री 4.पं. थानेशचन्द्र उप्रेती 5. डॉ. बलवान सिंह यादव 6.डॉ. विजेन्द्र कुमार शर्मा 7.आचार्य शेषराजशर्मा।

4. अभिज्ञानशाकुन्तलम्-कालिदास

1.डॉ. कपिलदेव द्विवेदी 2.डॉ. तारिणीश झा 3. डॉ. शिवशंकर गुप्ता 4. दयाशंकर तिवारी 5. डॉ. पी. वी. पराशर 6.डॉ. सुधाकर मालवीय 7.डॉ. उमेश चन्द्र पाण्डेय 8.प्रो. बालशास्त्री 9.डॉ. जमुना पाठक।

5. उत्तररामचरितम्-भवभूति

1.डॉ. कपिलदेव द्विवेदी 2.डॉ. रामअवध पाण्डेय 3.आनन्दस्वरूप 4. डॉ. रमाकान्त त्रिपाठी 5.डॉ. रामलालयदुपाल सिंह 6.डॉ. रमाशंकर त्रिपाठी 7.डॉ. शिवबालक द्विवेदी 8.डॉ. रामाधार शर्मा।

6. कादम्बरी-शुकनासोपदेश-बाणभट्ट

1. डॉ. राजेश्वरप्रसाद मिश्र 2. माणिक्यलाल शास्त्री/सन्तोष कुमार शर्मा 3. आचार्य मोहनदेवपन्त 4. पं. परमेश्वरदीन पाण्डेय 5.रामपाल शास्त्री 6. डॉ. महेश कुमार श्रीवास्तव 7. डॉ. श्रीमती सुदेश नारङ्ग 8.प्रो. जयशंकर लाल त्रिपाठी 9. प्रो. कृष्णमोहन शास्त्री 10. श्री तारिणीश झा।

7. शिवराजविजय-अम्बिकादत्तव्यास

1.डॉ. रमाशङ्कर मिश्र 2.डॉ. देवनारायण मिश्र 3. डॉ. विजयशङ्कर चौबे 4. डॉ. गायत्री शुक्ला 5.श्री रामजी पाण्डेय 6.आचार्य शिवप्रसाद द्विवेदी 7.डॉ. चन्द्रिकालाल श्रीवास्तव।

जूनियर एडेड भर्ती-2021

संस्कृत

जय जूनियर

लेखक
सर्वज्ञभूषण

सम्पादक
शुभम ममगाई

- **प्रकाशक**
  संस्कृतगङ्गा (पञ्जीकृत)
  59, मोरी, दारागञ्ज, प्रयागराज
  (कोतवाली दारागञ्ज के आगे, गङ्गाकिनारे संकटमोचन छोटे हनुमान् मन्दिर के पास), Mb. : 9839852033
  email-Sanskritganga@gmail.com
  www.sanskritganga.org
- **प्रकाशन-सहयोग**
  युनिवर्सल बुक
  1519 अल्लापुर, प्रयागराज
  ☎: 0532-2503638
- मुख्यवितरक
  राजू पुस्तक केन्द्र
  अल्लापुर, प्रयागराज (उत्तर प्रदेश)
  मो० 9453460552
- पुस्तकें डाक द्वारा भी आर्डर कर सकते हैं–
  Mob. : 8004545095
  8004545096
- **अक्षर विन्यास- नितिन कुमार, संदीप कुमार, विनय साह**

- **प्रथम संस्करण –** मार्च 2021 महाशिवरात्रि
- **मूल्य –** रु **125/-** (एक सौ पच्चीस रुपये मात्र)

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

जूनियर एडेड भर्ती परीक्षा

संस्कृत पाठ्यक्रम

1. संस्कृत भाषा एवं साहित्य के इतिहास की जानकारी
2. व्याकरण
3. अपठित गद्यांश/पद्यांश
4. प्रमुख लेखकों / कवियों का सामान्य परिचय एवं उनकी कृतियाँ

संस्कृतगङ्गा उवाच

''जय जूनियर''

प्रिय- संस्कृतमित्राणि !

नमः संस्कृताय !

- ''**जय जूनियर**'' नामक यह पुस्तक '**जूनियर एडेड भर्ती परीक्षा**' में जो लोग 'संस्कृत भाषा' का चुनाव करेंगे उनके लिए अत्युपयोगी होगी।
- संस्कृतभाषा का इतिहास, संस्कृत साहित्य की सामान्य जानकारी, व्याकरण में सन्धि, समास, कारक, प्रत्यय आदि के साथ संस्कृत कवियों एवं लेखकों का परिचय एवं उनकी कृतियों का भी सामान्य परिचय इस पुस्तक में दिया गया है।
- अपठित गद्यांश एवं पद्यांश को इस पुस्तक में शामिल नहीं किया गया है, इसके लिए आप **संस्कृतगंगा का यू-ट्यूब चैनल** देख सकते हैं, वहाँ परीक्षोपयोगी गद्यांश एवं पद्यांश प्रत्येक शाम को 7:00 बजे पढ़ाया जा रहा है।
- आपकी परीक्षा 18 अप्रैल 2021 को है, इसलिए बचे हुए इस एक माह में आपको इस ''**जय जूनियर**'' नामक पुस्तक को अवश्य पढ़ लेना चाहिए, इससे आपको परीक्षा पास करने में आसानी होगी- ऐसा मेरा विश्वास है।
- जो लोग व्यवस्थित रूप से 'जूनियर एडेड भर्ती' की **सभी वीडियो** एवं **ई-नोट्स** प्राप्त करना चाहते हैं वे लोग '**Sanskrit Ganga**' **App** को डाउनलोड करके उसका लाभ ले सकते हैं। किसी भी प्रकार की परेशानी होने पर दिये गए नम्बरों पर सुबह 9:00 बजे से शाम 5:00 बजे के बीच संस्कृतगंगा कार्यालय से सम्पर्क कर सकते हैं।
  मोबाइल नं.– 7800138404, 9839852033
- इस जूनियर परीक्षा के लिए ऑनलाइन पढ़ाने में **अरुण कुमार पाण्डेय 'निर्मोही सर', सुमन मैम, शिवम चतुर्वेदी** का विशेष योगदान रहा, कामना करता हूँ कि संस्कृत जगत् का विशेष आशीर्वाद इन्हें मिले, इनकी सभी मनोकामनायें पूर्ण हों।
- इस 'जय जूनियर' नामक पुस्तक के सम्पादन में **शुभम ममगाई** जी का विशेष योगदान रहा जो हमारे टाइपिस्ट **संदीप, नितिन** एवं **विनय** जी को क्षण भर भी चैन से बैठने नहीं देते; पुस्तक को शीघ्रातिशीघ्र आप तक पहुँचाने के लिए रात-दिन एक करके अथक परिश्रम किया; ईश्वर संस्कृतजगत् में ऐसे शुभ कार्य करने वाले और शुभम को पैदा करते रहें- यही कामना है।
- पुस्तक के नामकरण एवं कवर पेज की वैचारिक कल्पना **अम्बिकेश प्रताप सिंह** ने की, अपनी कम्प्यूटर कला से उसको सजाने का कार्य **ब्रह्मानन्द मिश्र** ने किया, अहर्निश परिश्रम करके अक्षर संयोजन का कार्य **संदीप, नितिन** एवं **विनय** जी ब्रह्मा, विष्णु, महेश इन त्रिदेवों की तरह संस्कृतजगत् पर कृपा करते रहते हैं। मुद्रण कार्य करके पुस्तक के अधिकृत विक्रेता के रूप में राजू पुस्तक केन्द्र के स्वामी **राजकुमार गुप्ता** का परिश्रम प्रशंसनीय है। अपने इन सभी साथियों का हृदय से आभार।
- पुस्तक को लिखने एवं प्रूफ आदि कार्यों में हो सकता है कुछ त्रुटि रह गयी हो तो उसके लिए क्षमाप्रार्थी हूँ, समय कम होने के कारण सभी कार्य जल्दबाजी में हुए हैं इसलिए सम्भव है कि कुछ कमियाँ रह गयी हों। मुझे विश्वास है उदारमन से आप उसे क्षमा करेंगे।

भवदीय

सर्वज्ञभूषण

संस्कृतगङ्गा

दारागञ्ज, प्रयागराज

दिनाङ्क - 11 मार्च, 2021, महाशिवरात्रि।

विषय-सूची

❑❑

1. संस्कृत भाषा का इतिहास

भाषा की उत्पत्ति

- 'भाषा की उत्पत्ति' यह विषय अत्यन्त उलझा हुआ है। इस विषय पर विद्वानों ने जो विचार प्रस्तुत किये हैं, वे अपूर्ण और अनिर्णयात्मक हैं।
- भाषा उत्पत्ति के लिए दो बातें अनिवार्य हैं-
  1. वाग्यन्त्र से ध्वनन या वर्णोच्चारण की क्षमता प्राप्त करना।
  2. उच्चरित ध्वनि का, अर्थ के साथ सम्बन्ध स्थापित करने का प्रारम्भ।
- प्रथम बात प्रायः सभी पशु-पक्षियों एवं अन्य जीवों में प्राप्त होती है।
- पशु- पक्षियों में स्पष्ट उच्चारण या व्यक्त वाक् का अभाव है, अतः वे स्पष्ट रूप से बोलनें में असमर्थ हैं।
- मनुष्य को बोलने की क्षमता जन्म से प्राप्त है, अतः वह जन्म से वाग्यन्त्र या वागिन्द्रिय का प्रयोग करता है।
- दूसरी बात में शब्द और अर्थ के सम्बन्ध जानने की जिज्ञासा ही मुख्य विषय है।
- भाषा-उत्पत्ति विषयक समस्त सिद्धान्त अनुमान पर आश्रित हैं एवं विज्ञान अनुमान पर आश्रित न होकर तथ्यों पर निर्भर होता है।
- यह दर्शन, मानव-विज्ञान या समाज-विज्ञान का विषय होने के कारण भाषा-विज्ञान इस दिशा में अपनी असमर्थता प्रकट करता है।
- सामान्य लोकप्रियता का विषय होने से इसके प्रस्तावित सिद्धान्तों का वर्णन किया जा रहा है-

1. दिव्योत्पत्ति-सिद्धान्त

- यह सबसे प्राचीन मत है। इसके अनुसार- जिस प्रकार परमात्मा ने मानव- सृष्टि की, उसी प्रकार मानव के लिए एक परिष्कृत भाषा भी दी।
- दैवीय शक्ति ही इस सिद्धान्त का मूल है। उसी दैवी शक्ति ने ही सृष्टि के प्रारम्भ में ही वेदों का ज्ञान दिया, जिससे मानव अपना क्रिया-कलाप चला सका।
- वेदों, उपनिषदों तथा अनेक दर्शन ग्रन्थों में यह बात प्रमाणित है कि ईश्वर से ही वेदों की उत्पत्ति हुई।

समीक्षा- इस सिद्धान्त पर निम्न आपत्तियाँ की गयी हैं।

1. यह सिद्धान्त तर्क या विज्ञान संगत नहीं है, केवल आस्था पर निर्भर है।
2. यदि भाषा ईश्वर-प्रदत्त होती तो सृष्टि में भाषा भेद नहीं होता।
3. जर्मन् विद्वान् **हेर्डेर** ने लिखा है कि "यदि भाषा ईश्वरकृत होती तो यह अधिक सुव्यवस्थित और तर्कसंगत होगी, अधिकांश भाषाएं अव्यवस्थित और त्रुटिपूर्ण हैं।"

2. सङ्केत-सिद्धान्त

- इसे **निर्णयवाद**, **निर्णयसिद्धान्त** तथा **स्वीकारवाद** आदि अनेक नामों से जाना जाता है।
- इस सिद्धान्त के प्रवर्तक 18वीं शताब्दी के फ्रेंच विद्वान् **'रूसो'** हैं।
- इनके अनुसार 'व्यक्ति प्रारम्भ में सङ्केतों के माध्यम से अपना अभिप्राय व्यक्त करता था तथा बाद में सामूहिक रूप से वस्तुओं की संज्ञा दी गयी।'
- इसे **'सामाजिक-समझौता'** कहा जा सकता है।

समीक्षा- इस सिद्धान्त की कुछ न्यूनताएं हैं-

1. बिना भाषा के सभा का आयोजन और विचार-विनिमय कैसे हुआ?
2. सङ्केत शब्दों के निर्माण के लिए क्या आधार था? किसी व्यक्ति का सुझाव मान लिया गया या फिर सबके अलग-अलग मत थे?
3. यदि भाषा के बिना सभा का आयोजन, सङ्केत निर्माण एवं सङ्केतों की सामाजिक सम्पुष्टि हो सकती है, तो भाषा की क्या आवश्यकता रह जाती है।

अतः यह सिद्धान्त मान्य नहीं है।

3. रणन-सिद्धान्त

- इस सिद्धान्त को **धातु-सिद्धान्त, अनुकरण-सिद्धान्त, अनुरणनमूलकतावाद, अनुरणात्मक-अनुकरण, डिंग-डांगवाद** आदि नामों से निर्दिष्ट किया गया है।
- इस सिद्धान्त के मूल प्रवर्तक **'प्लेटो'** थे तथा इसको **'हेस'** और **'मैक्समूलर'** ने व्यवस्थित किया।
- इस मत के अनुसार 'प्रकृति में एक सामान्य नियम है किसी वस्तु पर चोट मारने पर एक विशेष ध्वनि होती है। यह ध्वनि ही उसकी विशेषता है। इसी ध्वनि को रणन कहा जाता है।

समीक्षा-

1. इस सिद्धान्त में इतने दोष थे कि बाद में मैक्समूलर ने इसे छोड़ दिया।

2. इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि किस वस्तु से मस्तिष्क में कौन-सी ध्वनि झंकृत हुई।

3. यह सिद्धान्त शब्द और अर्थ में रहस्यात्मक स्वाभाविक सम्बन्ध मानता है। शब्द और अर्थ का साङ्केतिक सम्बन्ध है न कि स्वाभाविक यह मत अस्वीकृत होने पर भी रोचकता के लिए प्रचलित है।

4. ध्वन्यनुकरण-सिद्धान्त

- इस सिद्धान्त के अन्य नाम भी हैं, जैसे- **अनुकरण-सिद्धान्त, ध्वन्यात्मकानुकरण-सिद्धान्त, अनुकरणमूलकतावाद, शब्दानुकरणवाद, भों-भों-वाद** आदि।
- कुत्ते की ध्वनि को अंग्रेजी में BOW-WOW कहते हैं, अतः हिन्दी में यह **भों-भों-वाद** हुआ।
- इस सिद्धान्त का अभिमत है कि प्राकृतिक वस्तुओं,पशु-पक्षियों आदि की ध्वनि के अनुकरण पर विभिन्न वस्तुओं के नाम रखे जाते हैं। जो वस्तु जैसी ध्वनि करती है, उसका वैसा ही नाम पड़ता है। जैसे-काँव-काँव से काक या कौआ, कू-कू से कोयल, झर-झर से झरना आदि।

समीक्षा-

1. विश्व की भाषाओं में ध्वन्यनुकरण वाले शब्दों की संख्या एक प्रतिशत भी नहीं है। अतः यह भाषोत्पत्ति सम्बन्धी उचित समाधान नहीं है।

2. **प्रो0 रेनन** की आपत्ति है, यदि मनुष्य पक्षियों जैसे तुच्छ जीवों के शब्दों का अनुकरण करके भाषा बना सकता है, तो वह पशु-पक्षियों से निकृष्ट सिद्ध होता है।

3. कुछ भाषाओं में ध्वन्यनुकरण-शब्द हैं ही नहीं। जैसे- उत्तरी अमेरिका की **'अथवस्कन'** भाषा।

आंशिक रूप से स्वीकार्य होते हुए भी यह मत सम्पूर्ण रूप से स्वीकार नहीं हैं।

5. आवेग-सिद्धान्त

- इस सिद्धान्त को **'मनोभावाभिव्यक्तिवाद, मनोरागव्यञ्जक शब्दमूलकतावाद, पूह-पूह सिद्धान्त, मनोभावाभि-व्यञ्जकतावाद** आदि के नाम से जाना जाता है।
- इसके अनुसार आरम्भ में मनुष्य भाव प्रधान था और प्रसन्नता, दुःख, विस्मय, घृणा आदि के भाववश उसके मुख से ओ, छि, धिक्, आह आदि शब्द सहज ही निकले। धीरे-धीरे इन्हीं से भाषा का विकास हुआ।

समीक्षा- इसको माननें में निम्न कठिनाइयाँ हैं-

1. ये शब्द विचारपूर्वक प्रयुक्त नहीं होते हैं बल्कि आवेग की तीव्रता में अनायास निकल पड़ते हैं।

2. भिन्न-भिन्न भाषाओं में ऐसे शब्द एक रूप में नहीं मिलते यदि स्वभावतः निकलते तो सभी मनुष्यों में लगभग एक समान होते।

3. भाषा में आवेग शब्दों की संख्या 40-50 से अधिक नहीं होगी इन शब्दों से पूरी भाषा पर प्रकाश नहीं पड़ता। अतः इनको पूर्णतः भाषा का अंग नहीं माना जा सकता।

यह भी समस्या को समाप्त करनें में असमर्थ है।

6. श्रम-ध्वनि-सिद्धान्त

- इसे **यो-हे-हो-वाद, श्रम-परिहरणमूलकतावाद** भी कहा जाता है। इनके प्रतिपादक **'न्वायर' (न्वारे)** नामक भाषाशास्त्री हैं।
- इनके अनुसार 'परिश्रम का कार्य करते समय साँस तेजी से बाहर-भीतर आने-जाने,साथ-साथ स्वरतन्त्रियों को विभिन्न रूपों में कम्पित होने एवं तदनुकूल ध्वनियाँ उच्चरित होने से कार्य करने वाले को राहत मिलती है।
- उदाहरणार्थ कपड़ा धोते समय धोबी 'हियो' या 'छियो' कहता है और मजदूर आदि 'हो-हो, हूँ-हूँ कहते हैं।

समीक्षा-

1. यह मत भाषा की उत्पत्ति के लिए सर्वथा असन्तोष जनक है।

2. शारीरिक परिश्रम जन्य ये शब्द निरर्थक हैं। भाषा की उत्पत्ति के लिए सार्थक शब्दों की आवश्यकता है।

3. अर्थहीन शब्दों से भाषा की उत्पत्ति नहीं हो सकती। यह मत सबसे निकृष्ट और अग्राह्य है।

7. इंगित-सिद्धान्त

- इस सिद्धान्त के प्रवर्तन का श्रेय पालिनेशियन भाषा विद्वान् डॉ. **'राये'** को है। **डार्विन** भी इसके समर्थक हैं।
- **प्रो. रिचर्ड** इसे 'मौखिक इंगित सिद्धान्त' कहते हैं।
- इस मत के अनुसार 'प्रारम्भ में मानव ने अपनी आङ्गिक चेष्टाओं का ही वाणी के द्वारा अनुकरण किया और भाषा बनी। जैसे- पानी पीने के समय मुँह से 'पा' जैसी ध्वनि हुई, अतः 'पा' का अर्थ 'पीना' हुआ।

समीक्षा-

1. अपने अनुकरण पर शब्द-रचना हास्यास्पद है। दूसरे के अनुकरण पर शब्द रचना मान्य हो सकती है।

2. हाथ, पैर, ओष्ठ आदि के आधार पर शब्द- रचना की कल्पना निर्मूल है।

3. इंगित- सिद्धान्त पर बने शब्दों की संख्या भाषा में बहुत कम है। यह सिद्धान्त भी सारहीन है।

8. सम्पर्क- सिद्धान्त

- इस मत के प्रतिपादक **जी. रेवेज़ हैं,** जो मनोविज्ञान के विद्वान् थे।
- इनके मतानुसार 'मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, उसमें पारस्परिक

सम्पर्क की प्रवृत्ति जन्मसिद्ध है। प्रारम्भ में भूख आदि की अभिव्यक्ति के लिए मौखिक और साङ्केतिक अभिव्यक्ति का सहारा लिया होगा, उनसे जो ध्वनियाँ निकली वे धीरे-धीरे भाषा बनी।'

समीक्षा-

1. प्रो0 रेवेज़ का यह सिद्धान्त बालमनोविज्ञान, जीव-मनोविज्ञान और आदिम प्राणि-मनोविज्ञान पर आश्रित है एवं तर्कसंगत भी है।
2. कुछ अन्य भाषाशास्त्री भी इस मत को अमान्य नहीं करते किन्तु भाषोत्पत्ति के प्रश्न को अनिर्णीत मानते हैं।

9. सङ्गीत-सिद्धान्त

- इसको **प्रेम-सिद्धान्त, सिंग-सांग थ्योरी,** WOO-WOO थियरी भी कहा जाता है।
- डार्विन, स्पेन्सर एवं येस्पर्सन ने इसे कुछ रूपों में माना था।
- इनके सिद्धान्त के अनुसार, 'मानव के सङ्गीत से भाषा की उत्पत्ति हुई।'

समीक्षा-

1. गुनगुनाने से भाषा की उत्पत्ति होना केवल अनुमान पर आश्रित है, इसका कोई प्रमाण नहीं है।
2. प्रारम्भिक व्यक्ति गुनगुनाता था, इसका भी कोई पुष्ट आधार नहीं है।
   अतः यह सिद्धान्त भी अस्वीकार्य है।

10. प्रतीक-सिद्धान्त

- इस सिद्धान्त में माना जाता है कि 'संयोग से किसी शब्द का किसी अर्थ से सम्बन्ध हो जाता है, और वह शब्द उस अर्थ का प्रतीक हो जाता है।'
- भाषा-विज्ञान में ऐसे शब्दों को 'नर्सरी-शब्द' कहते हैं जैसे- माता, पिता, बाबा आदि।

समीक्षा-

1. प्रतीक सिद्धान्त मूलतः भाषा के प्रारम्भिक शब्दों की व्याख्या करता है। भाषा में 'नर्सरी-शब्द' आये, ये भी सत्य है।
2. यह स्थूल शब्दों की उत्पत्ति बता सकता है, सूक्ष्म अर्थ के बोधक शब्दों की उत्पत्ति बताने में असमर्थ है।

11. समन्वय-सिद्धान्त

- इस सिद्धान्त के प्रवर्तक प्रसिद्ध भाषाशास्त्री **'हेनरी स्वीट'** हैं।
- उन्होंने नये सिद्धान्त की अपेक्षा सर्वसिद्धान्त - संकलन को अधिक उपयुक्त समझा है।
- उनके अनुसार 'यदि सभी सिद्धान्तों में से आवश्यक तत्त्व को एकत्रित कर लिया जाय तो भाषा की उत्पत्ति सम्बन्धी समस्याओं का निराकरण हो सकता है।'

समीक्षा-

1. भाषा की उत्पत्ति समझाने के लिए अन्य कोई एकमत शुद्ध न होने से सबका समन्वय उपयुक्त माना गया।
2. यह सिद्धान्त सामान्यतया निर्विरोध रूप से स्वीकार किया जाता है।

12. प्रतिभा-सिद्धान्त

- प्रतिभा- सिद्धान्त के संस्थापक आचार्य **भर्तृहरि** हैं।
- 'वाक्यपदीय' में भर्तृहरि नें प्रतिभा को विश्व की आत्मा माना है और उसे सर्वशक्ति- सम्पन्न बताया है।
- इस प्रकार भाषा की उत्पत्ति मनुष्य के प्रतिभाओं से हुई है।
- भर्तृहरि, पूर्व-जन्म के संस्कारों को भी भाषोत्पत्ति का कारण मानते हैं।

समीक्षा

1. मनुष्यों में कोई मौलिक उद्भावना या शक्ति नहीं थी। अतः भाषोत्पत्ति सम्बन्धी 'समन्वय-सिद्धान्त'ही सर्वथा उत्कृष्ट है।

संस्कृत भाषा का उद्भव एवं विकास

- संस्कृत भाषा भारत- यूरोपीय अथवा भारत- जर्मनीय परिवार की प्रमुख भाषाओं में है।
- संस्कृत के मूल स्रोत के सम्बन्ध में चाहे जो भी कल्पनाएं की जायें, किन्तु इसके भाषायी इतिहास का प्रारम्भ इसके प्राचीनतम रूप 'ऋग्वेद' से ही मानना होगा।
- 'अवेस्ता' और 'हित्ती', भाषाओं के दो ऐसे रूप हैं जो कि ऋग्वेद से काफी बाद के होने पर भी वैदिक भाषा के प्राग्वैदिक रूपों की झाँकी प्रस्तुत कर सकते हैं।
- संस्कृत आर्यों की भाषा थी और आर्य का मूल निवास भारत ही है। इस बात को पश्चिमी देश नहीं मानते हैं क्योंकि पूरे विश्व को सभ्य और शिक्षित करने के ठेकेदार सिर्फ मिस्र, यूनान आदि देश ही हो सकते हैं।
- भारोपीय भाषाविज्ञानी संस्कृत के उस मूल रूप की स्थिति एशिया या यूरोप में चाहे जहाँ मानने की बात कहें, किन्तु संस्कृत से भाषा के जिस रूप का बोध होता है उसका जन्म एवं पोषण भारत की इसी भूमि पर हुआ था, इसमें कोई सन्देह नहीं।
- सौभाग्य की बात है कि संस्कृत विश्व की एक ऐसी पुरातन भाषा है, जिसके साहित्य भण्डार में विश्व की प्राचीनतम लिखित सामग्री प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है, जिसकी साहित्यिक भागीरथी का प्रवाह कई हजार वर्षों से निरवच्छिन्न रूप में प्रवाहमान रहा है यद्यपि उसके भाषिक विकास की प्रक्रिया अवश्य ही आज से लगभग ढाई हजार वर्ष पूर्व एक बिन्दु पर आकर स्थिर-सी हो गयी थी।

- ऋग्वैदिक काल के उपरान्त हमें इसके विकास के विभिन्न स्तरों के रूप अपेक्षाकृत अधिक स्पष्ट रूप में दृष्टिगोचर होने लगते हैं।
- ऋग्वेद तथा अथर्ववेद के मन्त्रों की भाषा संहिताओं तथा ब्राह्मण ग्रन्थों की भाषा, ब्राह्मणों तथा सूत्रों एवं उपनिषदों की भाषा, उपनिषदों तथा महाकाव्यों की भाषा की पारस्परिक तुलना करने पर स्पष्ट हो जाता है कि संस्कृत में, एक जीवित भाषा में कालक्रम से होने वाले परिवर्तनों के समान, उल्लेख्य परिवर्तन घटित हो रहे थे।
- संस्कृत भाषा के विकास स्तर को तीन-स्तरों पर देखा जा सकता है।

  1. वैदिक   2. उत्तरवैदिक   3. लौकिक
- वैदिक के अन्तर्गत संहिताओं तथा ब्राह्मण- ग्रन्थों की भाषा को,उत्तरवैदिक में आरण्यकों, उपनिषदों एवं सूत्र साहित्यों की भाषा को रखा जा सकता है।
- इसके बाद की साहित्यिक एवं शास्त्रीय भाषा को लौकिक के अन्तर्गत रखा जा सकता है।
- लौकिक साहित्य ग्रन्थ 'रामायण' है। रामायण काल से लेकर वर्तमान समय तक संस्कृत का विकास हो रहा है। इस प्रकार संस्कृत भाषा रूपी गङ्गा को वैदिक काल से लेकर वर्तमानकाल तक पहुँचने में अनेक मार्गों का अनुसरण करना पड़ा है।

भारोपीय परिवार

भारतीय यूरोपीय (भारोपीय) से मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषाओं की सामान्य रूपरेखा-

विश्व भाषाओं के पारिवारिक वर्गीकरण के अनुसार 18 भेद माने गये हैं! इन 18 भाषाओं को चार भूखण्डों में बाँटा गया है।

(क) यूरेशिया (यूरोप-एशिया)

(ख) अफ्रीका

(ग) प्रशान्त महासागरीय भूखण्ड

(घ) अमेरिका भूखण्ड

यूरेशिया भूखण्ड के अन्तर्गत ही भारोपीय परिवार की गणना की जाती है।

विश्व के भाषा परिवारों में भारोपीय परिवार का सबसे अधिक महत्त्व। इसके मुख्य कारण निम्न हैं -

- **प्रयोगाधिक्य -** इस परिवार की भाषाओं के बोलने वालों की संख्या सबसे अधिक है।
- **भौगोलिक व्यापकता -** प्रायः सारे विश्व में इस परिवार की भाषाएं बोली जाती हैं।
- **सांस्कृतिक उत्कर्ष -** इस परिवार के लोग सभ्यता और संस्कृति में विश्व में सबसे अग्रणी हैं।
- **भाषावैज्ञानिक उत्कर्ष -** भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र के अभ्युदय का सर्वाधिक श्रेय इसी परिवार को है। संस्कृत, अंग्रेजी, जर्मन और फ्रेंच में सर्वाधिक भाषाशास्त्रीय चिन्तन हुआ।
- **तुलनात्मक भाषाविज्ञान का जन्मदाता -** भारोपीय परिवार की विभिन्न भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन से ही तुलनात्मक भाषाविज्ञान का जन्म हुआ है।
- **भारोपीय परिवार के विभिन्न नाम**

  भारोपीय परिवार के विभिन्न नाम समय-समय पर सुझाए गए हैं। जिनमें प्रमुख चार नाम है-

  1 इण्डो जर्मनिक या भारत जार्मनिक परिवार

  2 आर्य परिवार

  3 भारोपीय परिवार - यह नाम अत्यन्त प्रचलित हुआ, अतः इसे ही अपनाया गया। यह नाम सर्वप्रथम फ्रेंच विद्वानों ने दिया।

4 भारत हित्ती परिवार-

- **भारोपीय परिवार की शाखाएँ -**
- भारोपीय शब्द भारत + यूरोपीय का मूल रूप है।
- यह Indo-European अनुवाद है।
- इस परिवार में भारतवर्ष से लेकर यूरोप तक फैली हुई भाषाओं का संग्रह है।
- इस परिवार में दस शाखाएँ हैं -

  1. भारत-ईरानी (आर्य) (Aryan, Indo- Iranian)
  2. बाल्टो स्लाविक (Balto-Slavic,Letto-Slavic)
  3. आर्मीनी (Armenian)
  4. अल्बानी (Albanian, Illyraian)
  5. ग्रीक (Greek, Hellenic)
  6. केल्टिक (Keltic)
  7. जर्मानिक (ट्यूटानिक) (Germanic, Teutonic)
  8. इटालिक (Italic)
  9. हिटाइट (Hiltite)
  10. तोखारी (To khorian)
- **केन्टुम् और शतम् (सतम्) वर्ग**
- भारोपीय परिवार की भाषाओं को ध्वनि के आधार पर दो भागों में विभक्त किया जाता है-

1. केन्टुम् 2. शतम्

- इस विभाजन का श्रेय **प्रो. अस्कोली** को है।
- सभी भारोपीय भाषाओं को दो भागों में विभक्त किया गया है
- प्रथम चार परिवार शतम् वर्ग में आते हैं और शेष छः परिवार 'केन्टुम्' वर्ग में

➢ 'सौ' के लिए मूल भारोपीय भाषा का शब्द क्मतोम् (Kmtom) माना जाता है।

मूल भारोपीय शब्द - Kmtom (क्मतोम् = शतम्)

शतम् (सतम्) वर्ग	केन्टुम् वर्ग
संस्कृत - शतम्	लैटिन - केन्टुम्
अवेस्ता - सतम्	ग्रीक - हेकटोन
फारसी - सद	केल्टिक - केत्
हिन्दी - सौ	तोखारी - कन्ध
रुसी - स्तो (Sto)	गाथिक - हुन्ड
लिथुआनियन - (स्जिम्तास)	जर्मन - हुन्डर्ट
	फ्रेंच - सं
	इटालियन - केन्तो

➢ भारोपीय परिवार-विभाजन

भारोपीय-परिवार को केन्टुम् और शतम् वर्ग के आधार पर निम्न प्रकार से बाँटा गया है-

शतम् वर्ग	केन्टुम् वर्ग
1. भारत-ईरानी	5. ग्रीक
2. बाल्टो स्लाविक	6. केल्टिक
3. आर्मीनी	7. जार्मनिक
4. अल्बानी	8. इटालिक
	9. हिटाइट
	10. तोखारी

भारोपीय परिवार की विशेषताएँ -

➢ रचना की दृष्टि से भारोपीय परिवार श्लिष्ट योगात्मक है।

➢ इस परिवार की मूल भाषाएँ संस्कृत, ग्रीक, लैटिन आदि संयोगात्मक थीं, परन्तु इनसे विकसित आधुनिक भाषाएँ हिन्दी, अंग्रेजी आदि वियोगात्मक हो गई।

➢ भारोपीय भाषाओं की धातुएँ प्रायः एकाक्षर थीं।

➢ इन भाषाओं में (संस्कृत में) प्रत्यय दो प्रकार के थे-

1. कृत् - जो सीधे धातु से जोड़े जाते थे। इन्हें Primary Suffixes कहते हैं। जैस - भू + त = भूत

2. तद्धित - ये शब्दो से जुड़ते हैं। जैसे - भूत + इक = भौतिक इन्हें Secondary Suffixes कहते हैं।

➢ शब्द या धातु से पद बनाने के लिए दो प्रकार से प्रत्यय लगते थे -

(क) सुप् - (Case-imdicating Suffixes)(शब्दों से)

(ख) तिङ्- (Verbal Suffixes) (धातुओं से)

➢ पदों का ही वाक्य में प्रयोग होता था।

➢ पदों को समस्त कर बृहत् पद बनाने की प्रवृत्ति मूल भारोपीय भाषा में थी। वह भारोपीय परिवार में भी रही।

➢ मूल भारोपीय भाषा में उदात्त स्वर के कारण स्वर भेद (गुण, वृद्धि, दीर्घ) होता था।

➢ भारोपीय भाषाओं में मूल प्रत्ययों का लोप हो गया और स्वर परिवर्तन से ही अर्थ-परिवर्तन का काम लिया जाने लगा। अंग्रेजी धातुओं में - Drink - Drank - Drunk, संस्कृत में देव > दैव, विधि > वैध, कुमार > कौमार

➢ भारोपीय भाषा में प्रत्ययों की अधिकता है। मूल भाषा से पृथक् होकर अनेक भाषाएँ विकसित हुईं।

➢ विश्व भाषा परिवारों में भारोपीय भाषा-परिवार का सबसे अधिक महत्त्व है। भारोपीय परिवार में भी आर्य परिवार या आर्य शाखा का सर्वाधिक महत्त्व है।

शतम् वर्ग

1.भारत ईरानी (आर्य) 2.बाल्टो स्लाविक 3.आर्मीनी 4. अल्बानी

1 आर्य या भारत ईरानी शाखा

➢ **प्राचीनतम साहित्य -** विश्व का प्राचीनतम ग्रन्थ 'ऋग्वेद' अपने शुद्ध और प्राचीनतम रूप में संस्कृत में उपलब्ध है।

➢ समस्त वैदिक साहित्य इसी शाखा में प्राप्त है।

➢ पारसियों का धर्मग्रन्थ अवेस्ता इसी शाखा में प्राप्त है।

➢ **प्राचीन वर्णमाला एवं ध्वनियाँ -** मूल भारोपीय भाषा की प्राचीन ध्वनियों के निर्धारण में संस्कृत और अवेस्ता का असाधारण योगदान है।

➢ **प्राचीन संस्कृति एवं सभ्यता -** विश्व की प्राचीनतम संस्कृति और सभ्यता का सर्वांगीण इतिहास संस्कृत और अवेस्ता भाषा के साहित्य से प्राप्त होता है।

➢ **भाषाशास्त्रीय देन -** भाषाशास्त्र को ध्वनिविज्ञान, पद विज्ञान (व्याकरण), अर्थविज्ञान का मौलिक आधार संस्कृत से ही प्राप्त होता है।

भारतीय आर्यभाषाएँ

कालविभाजन

भारतीय आर्यभाषाओं को काल की दृष्टि से तीन भागों में बाँटा गया है-

1. प्राचीन भारतीय आर्यभाषाएँ - 2500ई. पू. से 500ई. पू. तक

2. मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाएँ - 500ई.पू. से 1000ई. तक

3. आधुनिक भारतीय आर्यभाषाएँ - 1000 ई. से वर्तमान समय तक

प्राचीन भारतीय आर्यभाषाएँ

➢ विकास क्रम के अनुसार प्राचीन भारतीय आर्यभाषाओं को दो भागों में बाँटा गया है-

1. वैदिक संस्कृत 2. लौकिक संस्कृत

वैदिक संस्कृत -

- ➢ वैदिक संस्कृत को ही 'वैदिक', 'वैदिकी', 'छन्दस्' तथा 'छान्दस' आदि नामों से भी जाना जाता है।
- ➢ प्राचीनतम रूप ऋग्वेद में मिलता है।
- ➢ अन्य वेदों का समय इसके बाद ही माना जाता है।
- ➢ समस्त प्राचीनतम संस्कृत वाङ्मय वैदिक संस्कृत में मिलता है
- ➢ वैदिक भाषा की पद रचना शिलष्ट योगात्मक थी।
- ➢ धातुरूपों में लेट् लकार का प्रयोग होता था।
- ➢ वेद में संगीतात्मक स्वर की प्रधानता थी।

लौकिक संस्कृत

- ➢ संस्कृत का सबसे प्राचीन एवं आदिकाव्य वाल्मीकिरामायण 500 ई.पू. का है।
- ➢ महाभारत, पुराण, काव्य, नाटक आदि ग्रन्थ 500 ई.पू. से आज तक अविच्छिन्न एवं अविहत गति से अपना गौरव स्थापित किये हुए हैं।
- ➢ यास्क, पतञ्जलि, कात्यायन, भास, कालिदास आदि के लेखों से यह स्वतः सिद्ध होता है कि ईसा पूर्व तक संस्कृत लोक व्यवहार की भाषा थी।
- ➢ संस्कृत में ही समस्त प्राचीनज्ञान, विज्ञान, कला, पुराण, काव्य, नाटक आदि है।
- ➢ संस्कृत ने न केवल भारतीय भाषाओं को अनुप्राणित किया अपितु विश्व भाषाओं मुख्यतया भारोपीय भाषाओं को भी प्रभावित किया।

मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाएँ

➢ मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाओं को तीन भागों में बाँटा गया है -

1.प्राचीन प्राकृत या पालि (500 ई. पू. से 100 ई. तक)

2.मध्यकालीन प्राकृत (100 ई. से 500 ई. तक)

3.परकालीन प्राकृत या अपभ्रंश (500 ई. से 1000ई. तक)

आधुनिक भारतीय आर्यभाषाएँ -

1. पश्चिमी हिन्दी - इसकी पाँच प्रमुख बोलियाँ हैं-

1. खड़ी बोली 2. ब्रजभाषा 3. बाँगरु 4. कन्नौजी 5. बुन्देली

2. राजस्थानी -

- ➢ इसका विकास शौरसेनी के नागर अपभ्रंश से हुआ है।
- ➢ पिंगल के अनुकरण पर राजस्थानी में **डिंगल** काव्य की रचना हुई। इसकी चार प्रमुख बोलियाँ हैं - मारवाड़ी, जयपुरी, मालवी, मेवाती।

3. गुजराती -

4. मराठी - 4 बोलियाँ मुख्य हैं- देशी, कोंकणी, नागपुरी, बरारी

5. बिहारी - 3 प्रमुख भाषाएँ हैं- भोजपुरी, मैथिली, मगही

6. बंगाली **7. उड़िया** **8. असमी**

9. पूर्वी हिन्दी -इसकी तीन बोलियाँ हैं।अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी

10. लहँदा (लहँदी) - लहँदा का अर्थ है पश्चिमी। इसकी चार प्रमुख बोलियाँ हैं-

➢ केन्द्रीय बोली, दक्षिणी (मुलतानी), उत्तरपूर्वी (पोठवारी), उत्तरपश्चिमी (धन्नी)

11. सिन्धी -

➢ इसकी पाँच बोलियाँ हैं- विचौली, सिरैकी, लाड़ी, थरेली, कच्छी

12. पंजाबी

13. पहाड़ी - इसके तीन भाषा वर्ग हैं-

- ➢ पश्चिमी (30 बोलियाँ)
- ➢ मध्य (दो 1. गढ़वाली 2. कुमायूँनी)
- ➢ पूर्वी (नेपाली) यह नेपाल की राजभाषा है।

मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाएँ

➢ प्राचीन प्राकृत या पालि (500 ई.पू. से 100 ई. तक)

प्राचीन प्राकृत या पालि (प्रथम प्राकृत)

- ➢ तृतीय शताब्दी ई.पू. से प्रथम शती ई. तक के शिलालेख इसके अन्तर्गत आते हैं।
- ➢ पालि बौद्धग्रन्थ - महावंश, जातक आदि कथाएँ, प्राचीन जैनसूत्रों की भाषा, प्रारम्भिक नाटकों की भाषा प्राकृत रही है।
- ➢ प्राचीन प्राकृत को प्रथम प्राकृत भी कहते हैं।

प्राकृत की उत्पत्ति संस्कृत से - प्रकृति का अर्थ है-मूलभाषा संस्कृत, उससे उत्पन्न भाषा प्राकृत है।

- ➢ प्राकृत भाषा के सभी प्राचीन वैयाकरणों ने प्राकृत की उत्पत्ति संस्कृत से मानी है।
- ➢ प्रकृतिः संस्कृतं तत्र भवं तत आगतं वा प्राकृतम् (हेमचन्द्र)
- ➢ प्रकृतिः संस्कृतं तत्र भवं प्राकृतमुच्यते (प्राकृतसर्वस्व)
- ➢ प्रकृतिः संस्कृतं तत्र भवत्वात् प्राकृतं स्मृतम् (प्राकृत चन्द्रिका)
- ➢ प्राकृतस्य तु स्वयमेव संस्कृतं योनिः (प्राकृत संजीवनी)
- ➢ नाट्यशास्त्रकार भरतमुनि ने यह कहा है कि संस्कृत भाषा के शब्दों का ही विकृत एवं परिवर्तित रूप प्राकृत भाषा है।

पालि की व्युत्पत्ति -

- ➢ डा. मैक्स वेलेसन ने पाटलि (पाटलिपुत्र) से पालि की उत्पत्ति मानी है। पाटलि > पाडलि > पालि
- ➢ भिक्षु जगदीश काश्यप ने परियाय (बुद्धोपदेश) शब्द से पालि की उत्पत्ति मानी है।
  परियाय > पलियाय > पालियाय > पालि
- ➢ अमरकोश के टीकाकार भानुजी दीक्षित ने 'पालरक्षणे' से पालि शब्द माना है। पाल् + इ = पालि
- ➢ आचार्य बुद्धघोष और आचार्य धम्पपाल ने छठी शती ई. ने

पालि शब्द का प्रयोग बुद्धवचन या मूल त्रिपिटक के लिये किया है। उससे यह शब्द 'पालि' भाषा के लिए आया है।
- अभिधानप्पदीपिका ने पा धातु से पालि शब्द माना है पा - पालेति रक्खतीति पालि, जो रक्षा करती है या पालन करती है।

पालि की प्रमुख विशेषताएँ
- पालि में वैदिक संस्कृत की 5 स्वर ध्वनियाँ लुप्त हो गई - ऋ, ॠ, ऌ, ऐ, औ।
- पालि में वैदिक संस्कृत के 5 व्यंजन लुप्त हो गए- श, ष, (:) विसर्ग, जिह्वामूलीय, उपध्मानीय
- पालि मे दो नए स्वर आयें - ह्रस्व एँ, ह्रस्व ओ।
- संस्कृत के ऐ > ए, औ > ओ हो गए।
- ड, ढ को ळ, ळह्।
- संधियों में केवल तीन संधियाँ हैं-

1. स्वर सन्धि 2. व्यंजन सन्धि 3. निग्गहीत (अनुस्वार) सन्धि
- पालि में हलन्त शब्द नही हैं। केवल अजन्त ही हैं।
- पालि में द्विवचन नहीं होता है।
- शब्दरूपों में चतुर्थी और षष्ठी के रूप समान होते हैं।
- स्त्री प्रत्यय सात हैं - आ, ई, इनी, नी, आनी, ऊ, ति।
- पालि में 500 से अधिक धातुएँ हैं, 9 गण हैं। अदादिगण और जुहोत्यादिगण नहीं है।
- पालि में लेट् लकार के रूप भी मिलते हैं - हनासि, दहासि
- आत्मनेपद का प्रयोग प्रायः लुप्त हो गया। परस्मैपद शेष रहा
- पालि में तद्भव शब्दों का आधिक्य है। तत्सम और देशज शब्द कम है।

शिलालेखी प्राकृत
- प्राचीन प्राकृत में अशोक के शिलालेखों की प्राकृत भी आती है, अतः इसे **शिलालेखी प्राकृत** भी कहते हैं।
- शिलालेखी प्राकृत को ही अशोकन प्राकृत, लाट प्राकृत भी कहते हैं।

मध्यकालीन प्राकृत (द्वितीय प्राकृत)
- मध्यकालीन प्राकृत को **'साहित्यिक प्राकृत'** भी कहते हैं।
- सर्वप्रथम भरतमुनि ने प्राकृत भाषाओं के विषय में विचार किया है। उनके मतानुसार 7 मुख्य प्राकृत है और 7 गौण
- **मुख्य प्राकृत -** मागधी, अवन्तिजा, प्राच्या, शौरसेनी, अर्धमागधी, बाहलीक, दाक्षिणात्य (महाराष्ट्री)
- **गौण प्राकृत -** शाबरी, आभीरी, चाण्डाली, सचरी, द्राविड़ी, उद्स्ता, वनेचरी
- प्राचीन प्राकृत वैयाकरण वररुचि ने चार प्राकृत मानी हैं- शौरसेनी, महाराष्ट्री, मागधी, पैशाची। मागधी के दो रूप हो गये (1) मागधी (2) अर्धमागधी

1- शौरसेनी
- इसका क्षेत्र शूरसेन (मथुरा के आस-पास) प्रदेश था।
- इसका विकास पालि कालीन स्थानीय भाषा से हुआ।
- मध्यदेश की भाषा थी।
- नाटकों में सर्वाधिक प्रयोग हुआ।
- स्त्रियों आदि का वार्तालाप शौरसेनी प्राकृत में ही होता था।
- शौरसेनी से वर्तमान **हिन्दी का विकास** हुआ
- राजशेखर कृत **कर्पूरमंजरी का समस्त गद्य भाग शौरसेनी प्राकृत** में है।
- भास, कालिदास आदि के **नाटकों में गद्य शौरसेनी** में ही है।

2 - महाराष्ट्री
- मूलस्थान महाराष्ट्र है। इससे ही **मराठी भाषा का विकास** हुआ।
- प्राकृत में सर्वाधिक साहित्य महाराष्ट्री में है।
- दण्डी ने काव्यादर्श में महाराष्ट्री को सर्वश्रेष्ठ प्राकृत माना है।
- प्राकृत नाटकों में **पद्यरचना महाराष्ट्री** में है।
- महाराष्ट्री प्राकृत के प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं - राजा हाल कृत गाहा सत्तसई (गाथा सप्तशती), प्रवरसेन कृत रावणवहो (सेतुबन्धः), वाक्पति कृत गउडवहो (गौडवधः), जयवल्लभ कृत - वज्जालग्ग, हेमचन्द्राचार्य कृत 'कुमारपालचरित'
- कर्पूरमञ्जरी के पद्य महाराष्ट्री में है।
- भरतमुनि ने दाक्षिणात्य प्राकृत से महाराष्ट्री का निर्देश किया है।

3- मागधी
- यह मगध की भाषा थी।
- प्राचीनतम रूप अश्वघोष के नाटकों में मिलता है।
- लंका में पालि को मागधी कहते हैं।
- कालिदास के नाटकों में तथा शूद्रक के मृच्छकटिक में मागधी का प्रयोग मिलता है।
- भरत के नाट्यशास्त्र के अनुसार अन्तःपुर के नौकर, अश्वपालक आदि की भाषा मागधी थी।
- इसके तीन प्रकार मिलते हैं -

1. शकारी 2. चाण्डाली 3. शाबरी
- मागधी से ही भोजपुरी, मैथिली, बंगला, उड़िया, असमी विकसित हुई।

4- अर्धमागधी
- अर्धमागधी का क्षेत्र मागधी और शौरसेनी के मध्य में है।
- यह कोसल के समीपवर्ती क्षेत्र की भाषा थी।
- इसमें मागधी के गुण अधिक है और साथ ही शौरसेनी के भी, अतः इसे अर्धमागधी कहा जाता है।
- मागधी को **ऋषिभाषा** या **आर्यभाषा** भी कहते हैं।

- भगवान् महावीर के सभी धर्मोपदेश इसी भाषा में हैं।
- अधिकांश **जैन साहित्य** इसी भाषा में है।
- इसमें गद्य और पद्य दोनों प्रकार का साहित्य है।
- आचार्य विश्वनाथ ने साहित्यदर्पण में इसे चेट, राजपुत्र एवं सेठों की भाषा बताया है।
- इसका प्राचीनतम प्रयोग **अश्वघोष के नाटकों में** मिलता है।
- **मुद्राराक्षस और प्रबोधचन्द्रोदय में** अर्धमागधी का प्रयोग हुआ है।
- इससे **पूर्वी हिन्दी का विकास** हुआ है।

5 - पैशाची

- इसका क्षेत्र पश्चिमोत्तर भारत एवं अफगानिस्तान का क्षेत्र था।
- पैशाची को **पैशाचिकी, भूतभाषा, भूतभाषित** आदि भी कहते हैं।
- गुणाढ्य की प्रसिद्ध रचना 'बृहत्कथा' पैशाची प्राकृत में ही है।
- वर्तमान समय में इसका साहित्य **'नगण्य'** है।
- इसका विकसित रूप **'लहँदा' भाषा** है।
- हेमचन्द्र कृत-कुमारपालित और काव्यानुशासन में तथा हम्मीरमदमर्दन नाटक में इसका प्रयोग मिलता है।
- राक्षस, पिशाच, निम्नकोटि के पात्र लोहार आदि इसी भाषा का प्रयोग करते थे। (रक्षः पिशाचनीचेषु पैशाची द्वितयं भवेत्)

प्राकृत भाषाओं की सामान्य विशेषताएं -

- प्राकृत श्लिष्ट योगात्मक भाषा है।
- शब्दरूपों और धातुरूपों की संख्या प्राकृत में कम हो गई।
- शब्दरूप केवल तीन या चार प्रकार के रह गए।
- धातु के रूप भी प्रायः एक या दो प्रकार से चलने लगे।
- प्राकृत भाषा संयोगात्मक से वियोगात्मक की ओर अग्रसर हुई।
- प्राकृत भाषा में आत्मनेपद का अभाव हो गया।
- तद्भव शब्दों की संख्या प्राकृत में अधिक है। तत्सम शब्दों की कम।

अपभ्रंश (परकालीन प्राकृत, तृतीय प्राकृत)

- अपभ्रंश शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग आचार्य व्याडि और पतञ्जलि ने किया है। भर्तृहरि, भामह, दण्डी आदि ने भी अपभ्रंश का उल्लेख किया है।
- अपभ्रंश के सबसे प्राचीन उदाहरण भरतमुनि के नाट्यशास्त्र में मिलते हैं।
- दण्डी के समय से इसका प्रयोग प्रारम्भ हो गया था।
- अपभ्रंश साहित्य की प्रमुख रचनाएँ निम्न हैं-
  हरिषेण कृत - पउमचरिउ
  पुष्पदन्त कृत - महापुराण और जसहर चरिउ
  विद्यापति कृत - कीर्तिलता
  अद्दहमाण कृत - सन्देश-रासक
- अपभ्रंश को देशीभाषा, देसी, अपभ्रष्ट, अवहट्ट भी कहते हैं।
- मार्कण्डेय ने प्राकृत सर्वस्व में तीन अपभ्रंश माने हैं- नागर, उपनागर, ब्राचड।
- नागर गुजरात की अपभ्रंश, ब्राचड सिन्धु की, उपनागर दोनों के मध्य की मानी जाती है।
- सामान्यतया सभी भाषाशास्त्री विद्वानों का मत है कि पाँच प्राकृतों से ही अपभ्रंश का विकास हुआ है।

❑❑

2. संस्कृत- साहित्य के इतिहास की जानकारी

संस्कृत साहित्य समीक्षा के प्रमुख सिद्धान्त

- काव्यशास्त्र का ही एक नाम **'साहित्यशास्त्र'** है आधुनिक युग में अन्य सब नामों की अपेक्षा यह नाम अधिक प्रचलित है।
- राजशेखर ने तो इसे 'साहित्यविद्या' नाम से अभिहित किया है।
- साहित्यशास्त्र का प्रमुख तत्त्व 'आत्मतत्त्व' है। प्राचीन आचार्य इसी आत्मतत्त्व के चिन्तन में सक्रिय रहे हैं और अपने-अपनें चिन्तन के आधार पर अलग-अलग रूपों में अवलोकन करते रहे। इसप्रकार विभिन्न आचार्यों द्वारा काव्य के विभिन्न तत्त्वों का काव्यात्म रूप में दर्शन के कारण छः सम्प्रदायों अथवा सिद्धान्तों का जन्म हुआ। इसप्रकार साहित्यशास्त्र के मुख्यतः छः सिद्धान्त/ सम्प्रदाय बन गये-

1. रस सम्प्रदाय	2. अलङ्कार सम्प्रदाय
3. रीति सम्प्रदाय	4. वक्रोक्ति सम्प्रदाय
5. ध्वनि सम्प्रदाय	6. औचित्य सम्प्रदाय

1. रस-सम्प्रदाय - आचार्य भरत

- इस सम्प्रदाय के प्रथम आचार्य **'भरत'** माने जाते हैं।
- राजशेखर, **नन्दिकेश्वर** को रस का मूल व्याख्याता मानते हैं। किन्तु उनका कोई ग्रन्थ उपलब्ध नहीं है।
- आचार्य भरत की दृष्टि में साहित्य रचना के लिए रस इतना महत्त्वपूर्ण है कि उसके बिना कोई अर्थ ही नहीं प्रवृत्त होता।
- विभाव, अनुभाव और व्यभिचारी भाव ही रस के निष्पादक होते हैं-

नहि रसादृते कश्चिदर्थः प्रवर्तते।
विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः॥

यह रससूत्र ही रससिद्धान्त का प्राणभूत है।

- भरत के रस-सिद्धान्त के इस सूत्र में 'संयोग' और 'निष्पत्ति' शब्दों की व्याख्या में बड़ा मतभेद है। जिसके परिणामस्वरूप अनेक सिद्धान्तों का जन्म हुआ।
- भट्टलोल्लट, शङ्कुक, भट्टनायक और अभिनवगुप्त ही भरत के रससूत्र के प्रमुख व्याख्याकार हैं।
- भट्टलोल्लट का मत **'उत्पत्तिवाद'** है।
- श्रीशङ्कुक का मत **'अनुमितिवाद'** है।
- भट्टनायक का मत **'भुक्तिवाद'** है।
- अभिनवगुप्त का मत **'अभिव्यक्तिवाद'** के नाम से प्रसिद्ध है।
- आचार्य मम्मट भी अभिनवगुप्त के 'अभिव्यक्तिवाद' का समर्थन करते हैं।
- काव्याश्रित रस के सम्बन्ध में प्रथम बार व्याख्या 'अग्निपुराण' में हुई।
- आचार्य भरत आठ रसों को ही स्वीकार करते हैं।
  'अष्टौ नाट्ये रसाः स्मृताः।'
- भरतमुनि ने नाट्यशास्त्र के छठे अध्याय में रस तथा सातवें अध्याय में स्थायीभावों का विस्तार से वर्णन किया है, वही रस सिद्धान्त का आधार है।

प्रवर्तक- आचार्य भरत
समर्थक- शारदातनय, शिङ्गभूपाल, भानुदत्त, रूपगोस्वामी, भोजराज, विश्वनाथ, राजशेखर, केशवमिश्र आदि।

2. अलङ्कार-सम्प्रदाय - आचार्य भामह

- रस सम्प्रदाय के बाद दूसरा स्थान अलङ्कार सम्प्रदाय का आता है।
- आचार्य **'भामह'** इस सम्प्रदाय के प्रवर्तक माने जाते हैं।
- अलङ्कार सम्प्रदाय के अनुयायी भी रस की सत्ता मानते हैं, किन्तु उसे प्रधानता नहीं देते।
- उनके मत में काव्य का प्राणभूत जीवनाधायक तत्त्व अलङ्कार ही है।
  'रसवद्दर्शितस्पष्टश्रृङ्गारादिरसं यथा।'-
  भामह (काव्यालङ्कार 3/6)
- अलङ्कार सम्प्रदायवादी, काव्य में अलङ्कारों को ही प्रधान मानते हैं और इसका अन्तर्भाव रसवदलङ्कारों में करते हैं।
- रसवत् प्रेय, ऊर्जस्विन् और समाहित, चार प्रकार के रसवदलङ्कार माने जाते हैं।
- भामह के अतिरिक्त दण्डी भी इन रसवदलङ्कारों के भीतर ही रस का अन्तर्भाव करते हैं।
  'मधुरे रसवद्वाचि वस्तुन्यपि रसस्थितिः।' दण्डी (काव्यादर्श 1/51)
- इस सिद्धान्त की भी व्याख्या अग्निपुराण में मिलती है।
- जयदेव के अनुसार, अलङ्कारविहीन काव्य की कल्पना वैसी ही है जैसे 'उष्णताविहीन अग्नि की कल्पना।'
- सर्वप्रथम भरत ने चार अलङ्कारों (उपमा, रूपक,दीपक, यमक) का उल्लेख किया है।
- अग्निपुराणकार ने 23 अलङ्कारों को स्वीकार किया है।
- भामह ने 38 अलङ्कारों का विवेचन किया है।

- उद्भट 41 अलङ्कार मानते हैं।
- रुद्रट ने 68 अलङ्कारों का निरूपण किया है।
- भोज ने 72 अलङ्कारों को स्वीकार किया है।
- मम्मट 67 अलङ्कारों का उल्लेख करते हैं। 6 शब्दालङ्कार और 61 अर्थालङ्कार।
- रुय्यक और विश्वनाथ ने 78 अलङ्कारों को स्वीकार किया है।
- जयदेव अपने चन्द्रालोक में 100 अलङ्कार मानते हैं।
- अप्पयदीक्षित ने 'कुवलयानन्द' में 120 अलङ्कारों का विवेचन किया है।

समर्थक- इस सम्प्रदाय के समर्थकों में दण्डी, उद्भट, रुद्रट, जयदेव, अप्पयदीक्षित, पण्डितराज जगन्नाथ, तथा विश्वेश्वर पाण्डेय आदि प्रमुख हैं।

3. रीति सम्प्रदाय '- आचार्य वामन

- कालक्रम में अलङ्कार- सम्प्रदाय के बाद रीति-सम्प्रदाय का स्थान आता है।
- रीति सम्प्रदाय के संस्थापक **आचार्य वामन हैं।**
- वामन ने काव्य में अलङ्कार की प्रधानता के स्थान पर रीति की प्रधानता का प्रतिपादन किया है- **'रीतिरात्मा काव्यस्य'**
- यह आचार्य वामन का सिद्धान्त है, इसीलिए उन्हें रीति-सम्प्रदाय का प्रवर्तक माना जाता है।
- इन्होंने 'रीति' को इस प्रकार बताया है- **'विशिष्टपदरचना रीतिः।'** अर्थात् विशिष्ट पद रचना का नाम 'रीति' है।
- वाक्य में आये 'विशिष्ट' शब्द की व्याख्या- **'विशेषो गुणात्मा'** है।
- इस प्रकार काव्य में माधुर्यादि गुणों का समावेश ही उसकी विशेषता है और यह विशेषता ही 'रीति' है।
- इस सिद्धान्त में 'गुण' और 'रीति' का अत्यन्त घनिष्ठ सम्बन्ध है, इसलिए 'रीति- सम्प्रदाय' को **'गुण-सम्प्रदाय'** के नाम से भी जाना जाता है।
- वामन ने निम्न दो सूत्रों के माध्यम से गुण और अलङ्कार का भेद स्पष्ट किया है, तथा अलङ्कार की अपेक्षा गुण को अधिक महत्त्व दिया है।

सूत्र-1 **'काव्यशोभायाः कर्तारो धर्माः गुणाः।'**
(काव्यालङ्कार सूत्र - 3.2.1)

2. **'तदतिशयहेतवस्त्वलङ्काराः।'** (काव्यालङ्कार सूत्र-3.1.2)

- गुण काव्यशोभा के उत्पादक होते हैं तथा अलङ्कार केवल उस शोभा के अभिवर्धक होते हैं।
- अतः काव्य में अलङ्कारों की अपेक्षा गुणों का स्थान अधिक महत्त्वपूर्ण है।
- राजशेखर ने रीति का सर्वप्रथम अधिकारी **'सुवर्णनाभ'** को बताया है, किन्तु 'सुवर्णनाभ' कौन थे? उनकी रचना कौन सी है? इसके बारे में कुछ पता नहीं है।
- 'रीति' का व्यापक अर्थ लेने पर वेदों में भी रीति की झलक दिखलाई देती है।
- रीति का शास्त्रीय विवेचन भरत के 'नाट्यशास्त्र' से प्रारम्भ होता है।
- रीति के चार भेद स्वीकार किये गये हैं- वैदर्भी, गौडी, पाञ्चाली और लाटी।
- रीति एक रचना शैली है जिसके अन्तर्गत रस, गुण, अलङ्कार आदि समाविष्ट हैं।

4. वक्रोक्ति सम्प्रदाय - आचार्य कुन्तक

- कालक्रमानुसार रीति के बाद वक्रोक्ति- सम्प्रदाय आता है।
- वक्रोक्ति सम्प्रदाय के संस्थापक वक्रोक्तिजीवितकार आचार्य **'कुन्तक'** माने जाते हैं।
- आचार्य कुन्तक ने काव्य में रीति की प्रधानता को समाप्त कर 'वक्रोक्ति' की प्रधानता को स्थापित किया।
- यद्यपि काव्य में 'वक्रोक्ति' की महत्ता भामह ने भी स्वीकार किया है-

सैषा सर्वैव वक्रोक्तिरनयार्थो विभाव्यते।
यत्नोऽस्यां कविना कार्यः कोऽलङ्कारोऽनया विना॥
(भामह- काव्यालङ्कार- 2/85)

- दण्डी ने काव्य में 'वक्रोक्ति' का महत्त्व इस प्रकार वर्णित किया है-

'भिन्नं द्विधा स्वभावोक्तिर्वक्रोक्तिश्चेति वाङ्मयम्'
(काव्यादर्श- 2/363)

- आचार्य वामन ने भी काव्य में 'वक्रोक्ति' का स्थान माना है- **'सादृश्याल्लक्षणा वक्रोक्तिः'** (काव्यालङ्कार सूत्र- 4.3.8)
- तथापि इन आचार्यों के मत से 'वक्रोक्ति' सामान्य अलङ्कार आदिरूप ही है।
- आचार्य कुन्तक ने वक्रोक्ति को जो गौरव प्रदान किया है, वह गौरव इन आचार्यों ने नहीं दिया है।
- इसलिए 'कुन्तक' ही इस सम्प्रदाय के संस्थापक माने जाते हैं।
- आचार्य कुन्तक ने इस सिद्धान्त के ऊपर भी 'वक्रोक्तिजीवित' नामक विशाल एवं महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ की रचना की है।
- आचार्य कुन्तक ने 'रीति-सम्प्रदाय' को भी परिमार्जित करके अपने यहाँ स्थान दिया है।
- वामन की वैदर्भी आदि रीतियाँ देश भेद के आधार पर मानी जाती थीं, किन्तु कुन्तक ने उनका आधार देश को न मानकर रचनाशैली को माना है और उनके 'रीति' के स्थान पर मार्ग शब्द का प्रयोग किया है।
- आचार्य कुन्तक, वामन की 'वैदर्भी' रीति को 'सुकुमारमार्ग', गौडी रीति को 'विचित्रमार्ग' तथा पाञ्चाली रीति को 'मध्यम मार्ग' कहते हैं।

- कुन्तक के अनुसार वक्रोक्ति छः प्रकार के हैं-
  1. वर्ण- विन्यास वक्रता 2. पदपूर्वार्द्ध वक्रता
  3. पदोत्तरार्द्ध वक्रता 4. वाक्य वक्रता
  5. प्रकरण वक्रता 6. प्रबन्ध वक्रता
- अतः उक्ति वैचित्र्य के आधार पर कुन्तक का यह 'वक्रोक्ति सिद्धान्त', अलङ्कार सिद्धान्त की ही एक शाखा है।

5. ध्वनि- सम्प्रदाय - आचार्य आनन्दवर्धन

- वक्रोक्ति सम्प्रदाय के बाद ध्वनि- सम्प्रदाय का उदय हुआ।
- इस सम्प्रदाय के संस्थापक आचार्य **'आनन्दवर्धन'** माने जाते हैं।
- आनन्दवर्धन के मत में 'काव्य की आत्मा ध्वनि है'-
  'काव्यस्यात्मा ध्वनिरति बुधैर्यः समाम्नातपूर्वः।'
- सभी सम्प्रदायों में ध्वनि- सम्प्रदाय सबसे प्रबल एवं महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त रहा है।
- विद्वानों के अत्यन्त विरोध पर भी ध्वनि- सिद्धान्त वैसे ही प्रफुल्लित रहा है।
- **ध्वनि-** सिद्धान्त के विरोधी समूह में वैयाकरण, साहित्यिक, वेदान्ती, मीमांसक आदि प्रमुख हैं।
- आचार्य मम्मट ने विरोधियों का खण्डन करके ध्वनि- सिद्धान्त की पुनः स्थापना की, इसीलिए मम्मट को **'ध्वनिप्रतिष्ठापक परमाचार्य'** कहा जाता है।
- आनन्दवर्धन ने आत्मा का अर्थ, 'तत्त्व' किया है और तत्त्व का अर्थ है, 'जिसके स्वरूप का कभी बाध न हो'
- काव्य का वह आत्म स्थानीय अर्थ 'प्रतीयमान' कहलाता है। यही प्रतीयमान अर्थ काव्य की आत्मा है।
- इनके अनुसार प्रतीयमान अर्थ वह है जो अङ्गना के प्रसिद्ध अवयवों से भिन्न लावण्य के समान महाकवियों की वाणी में वाच्यार्थ से भिन्न भाषित होता है। सहृदयी जनों को यही अर्थ आनन्दित करता है-

  प्रतीयमानं पुनरन्यदेव वस्त्वस्ति वाणीषु महाकवीनाम्।
  यत्तत्प्रसिद्धावयवातिरिक्तं विभाति लावण्यमिवाङ्गनासु॥
  (ध्वन्यालोक-1/4)
- यही प्रतीयमान अर्थ ध्वन्यर्थ या व्यङ्ग्यार्थ है जो तीन प्रकार से होता है-
  1. रसादि रूप में 2. अलङ्कार रूप में 3. वस्तु रूप में
  'एवं वस्त्वलङ्काररसभेदेन त्रिधा ध्वनिः'
- इसमें वस्तुध्वनि और अलङ्कारध्वनि की अपेक्षा रसध्वनि श्रेष्ठ है और यही काव्य की आत्मा है।
- आनन्दवर्धन के अनुयायी अभिनवगुप्त भी रसध्वनि को काव्य की आत्मा स्वीकारते हैं। **'सर्वत्र रसध्वनेरेवात्मभावः।'**

समर्थक- इस सिद्धान्त के समर्थक रुय्यक, मम्मट, अभिनवगुप्त और पण्डितराज जगन्नाथ हैं।

6. औचित्य- सम्प्रदाय - आचार्य क्षेमेन्द्र

- औचित्य सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य **क्षेमेन्द्र** माने जाते हैं। उन्होंने औचित्य को काव्य का **जीवितत्त्व** कहा है-
  'औचित्यं रससिद्धस्य स्थिरं काव्यस्य जीवितम्।'
- इसी आधार पर क्षेमेन्द्र को औचित्य सम्प्रदाय का प्रवर्तक माना जाता है किन्तु उनके पहले भी इस पर विचार हो चुका था।
- सर्वप्रथम भरत के ' नाट्यशास्त्र' में औचित्य की चर्चा की गयी है।
- भरत के पश्चात् भामह ने औचित्य को काव्य का सबसे बड़ा गुण बताया है।
- दण्डी ने भी गुण, दोष के विधान में औचित्य और अनौचित्य को कारण स्वीकार किया है।
- रुद्रट ने अनौचित्य को सर्वाधिक महत्त्व दिया है। उनके अनुसार रस का उन्मेष, परमरहस्य औचित्य है और अनौचित्य ही रसभङ्ग का प्रधान कारण है।
  'अनौचित्यादृते नान्यद् रसभङ्गस्य कारणम्।'
- महिमभट्ट ने काव्य में औचित्य को अनिवार्य तत्त्व बताया है।
- आचार्य क्षेमेन्द्र औचित्य को परिभाषित करते हुए कहते हैं, ''जो वस्तु जिसके अनुरूप होती है उसे 'उचित' कहते हैं और उचित का जो भाव है, वह औचित्य कहलाता है''-

  उचितं प्राहुराचार्याः सदृशं किल यस्य यत्।
  उचितस्य च यो भावस्तदौचित्यं प्रचक्षते॥
  (औचित्यविचारचर्चा, 7)
- यह औचित्य ही रस का जीवितभूत है, उसका प्राण है और काव्य में चमत्कारी तत्त्व हैं।
  'औचित्यं रससिद्धस्य स्थिरं काव्यस्य जीवितम्।'
  (औचित्यविचारचर्चा)
- क्षेमेन्द्र के अनुसार - अलङ्कारों में अलङ्कारत्व तभी होता है जबकि उनका विन्यास उचित स्थान पर होता है और गुणों में गुणत्व तभी होता है जबकि औचित्य से च्युत नहीं होते हैं-

  उचितस्थानविन्यासादलङ्कृतिरलङ्कृतिः।
  औचित्यादच्युता नित्यं भवन्त्येव गुणा गुणाः॥
  (औचित्यविचारचर्चा)
- क्षेमेन्द्र ने- 'औचित्यविचारचर्चा' में औचित्य के सत्ताइस (27) भेदों का निरूपण किया है, किन्तु काव्य के प्रत्येक अङ्गों में औचित्य के व्याप्त होने के कारण उसके अनेक भेद हो सकते हैं।

काव्य

- काव्य शब्द संस्कृत भाषा में बहुत प्राचीन है जिसे कवि के कर्म के रूप में जाना जाता है-
  'कवेः कर्म काव्यम् ' (कवि +ण्यत्)
- 'कवि' शब्द 'कु' अथवा 'कव् ' धातु (भ्वादिगण आत्मनेपदी - कवते) से बना है। जिसका अर्थ है-
  ध्वनि करना, विवरण देना, चित्रण करना।
- महाकाव्य साहित्यविधा का उद्‌भव वैदिकसूक्तों से ही मिलता है जैसे - स्तुतिपरक नाराशंसियाँ, दान- स्तुतियाँ, संवादसूक्त आदि द्वारा।
- रामायण और महाभारत जैसे आर्षकाव्य महाकाव्यसाहित्य विधा के भास्कर हैं जिन्होंने परवर्ती काव्यों को विषयवस्तु शैली, भाषा शैली, वर्णनविधि आदि की उपजीव्यता दी।
- वाल्मीकि से कालिदास की रचना तक आने में काव्यकला को कई शताब्दियाँ लगी।
- रामायण, महाभारत के बाद कालिदास की उत्पत्ति तक जो महाकाव्य लिखे गये थे वे केवल नाम मात्र ही शेष हैं।
  इस काल के कुछ ग्रन्थों के नाम निम्नलिखित हैं–
  जाम्बवतीजय या **पातालविजय** (पाणिनि -450 ई॰पू॰)
- 18 सर्गों में श्रीकृष्ण द्वारा पाताल जाकर जाम्बवती के विजय और परिणय की कथा वर्णित है।
- राजशेखर के नाम से जल्हण की सूक्तिमुक्तावली (1247) में उद्‌धृत-**नमः पाणिनये तस्मै यस्मादाविरभूदिह।**
  आदौ व्याकरणं काव्यमनु जाम्बवतीजयम्॥
- वररुचि (350ई॰पू॰) ने **'स्वर्गारोहण'** नामक काव्य बनाया था।
  जिसे पतञ्जलि ने - **वाररुचं काव्यम्** कहा है।
  समुद्रगुप्त के 'कृष्णचरित' काव्य में इसका उल्लेख है।
- महाभाष्यकार पतञ्जलि -150 ई॰पू॰ में 'महानन्द -काव्य' की रचना की थी।
- समुद्रगुप्त ने कृष्णचरित में इसकी चर्चा की है।
- इसके बाद महाकवि कालिदास का युग प्रारम्भ होता है।
- मनोहारिणी शैली के प्रवर्तक कालिदास।
- इसी शृंखला में महाकवि भारवि, माघ और श्रीहर्ष का नाम उल्लेखनीय है।

काव्य के प्रकार

- काव्य के मुख्यतः दो भेद होते हैं- **श्रव्य और दृश्य**
  काव्य का वर्गीकरण

श्रव्य-

(1) पद्य	-	1. महाकाव्य - रघुवंशम् आदि
		2. खण्डकाव्य - मेघदूतम् आदि
		3. मुक्तककाव्य - नीतिशतकम् आदि
(2) चम्पू	-	नलचम्पू आदि
(3) कथा	-	कादम्बरी आदि
(4) आख्यायिका	-	हर्षचरितम् आदि

दृश्य

रूपक - 10

1. नाटक	-	अभिज्ञानशाकुन्तलम्
2. प्रकरण	-	मृच्छकटिकम्
3. भाण	-	लीलामधुकरम्
4. प्रहसन	-	धूर्तचरितम्
5. डिम	-	त्रिपुरदाह
6. व्यायोग	-	सौगन्धिकाहरणम्
7. समवकार	-	समुद्रमन्थन
8. वीथी	-	मालविका
9. अङ्क	-	शर्मिष्ठा ययाति
10. ईहामृग	-	कुसुमशेखरविजय

उपरूपक -18

1. नाटिका	2. त्रोटक	3. गोष्ठी
4. सट्टक	5. नाट्यरासक	6. प्रस्थानक
7. उल्लास्य	8. काव्य	9. प्रेंखण
10. रासक	11. संलापक	12. श्रीगदित
13. शिल्पक	14. विलासिका	15. दुर्मल्लिका
16. हल्लीश	17. प्रकरणिका	18. भाणिका

महाकाव्य

- महाकाव्य को सर्वप्रथम आचार्य **भामह** ने परिभाषित किया।
- भामह के बाद **आचार्य दण्डी** ने काव्यादर्श में महाकाव्य का लक्षण प्रस्तुत किया।
- 'अग्निपुराण' में भी महाकाव्य के लक्षण प्राप्त होते हैं।
- महाकाव्य के विषय में विस्तृत वर्णन **विश्वनाथ** ने साहित्यदर्पण में किया।

आचार्य विश्वनाथ के अनुसार महाकाव्य का लक्षण -

- महाकाव्य सर्गों में विभक्त होता है।
- महाकाव्य का नायक देवता, कुलीन क्षत्रिय, धीरोदात्त आदि गुणों से युक्त हो सकता है अथवा एक वंशज अनेक कुलीन राजा भी नायक हो सकते हैं।
  सर्गबन्धो महाकाव्यं तत्रैको नायकः सुरः।
  सद्वंशः क्षत्रियो वापि धीरोदात्त गुणान्वितः॥
  एकवंशभवा भूपाः कुलजा बहवोऽपि वा।

- शृङ्गार वीर और शान्त रस में से कोई एक प्रधान रस होता है और अन्य रस उसके सहायक।
- इसमें सभी नाटक संधियाँ होती हैं।

शृङ्गारवीरशान्तानामेकोऽङ्गीरस इष्यते।
अङ्गानि सर्वेऽपि रसाः सर्वे नाटकसन्धयः।

- महाकाव्य का कथानक ऐतिहासिक अथवा किसी सज्जन व्यक्ति से सम्बद्ध होता है।
- धर्मार्थकाममोक्ष का वर्णन होता है तथा इनमें से किसी एक फल की प्राप्ति का वर्णन होता है।

इतिहासोद्भवं वृत्तमन्यद् वा सज्जनाश्रयम्।
चत्वारस्तस्य वर्गाः स्युस्तेष्वेकं च फलं भवेद्॥

- प्रारम्भ में तीन प्रकार के मङ्गलाचरणों में से एक होता है नमस्कारात्मक, वस्तुनिर्देशात्मक अथवा आशीर्वादात्मक में से एक।
- कहीं कहीं पर दुर्जन निन्दा या सज्जन प्रशंसा भी होती है।
- प्रत्येक सर्ग में एक ही छन्दोबद्ध पद्य होते हैं। सर्गान्त में छन्द परिवर्तन होता है।
- सर्ग संख्या 8 से अधिक होनी चाहिए अथवा न्यूनतम 8 होनी चाहिए।
- सर्ग न बहुत छोटे न बहुत बड़े होने चाहिए।
- कहीं कहीं विविध छन्दों से युक्त सर्ग भी होते हैं।
- महाकाव्य में सन्ध्या, सूर्योदय, चन्द्रोदय, वन विहार, नगर, मार्ग, जलक्रीड़ा, वन, सागर, संयोग, वियोग, अन्धकार दिन, प्रातः, शिकार, पर्वत, ऋतु, ऋषि, युद्ध, विजय विवाह, पुत्र जन्मोत्सव आदि विषयों का अवसरानुकूल वर्णन होना चाहिए।
- महाकाव्य का नामकरण वर्णनीय चरित्र के नाम से या कवि के नाम से अथवा किसी दूसरे के नाम से होना चाहिए।
- सर्ग का नाम सर्ग में वर्णनीय कथा के नाम से होना चाहिए।
- लक्ष्य ग्रन्थों को ध्यान में रखकर ये लक्षण बने हैं।

महाकाव्यों का शैलीगत विकास

- संस्कृत महाकाव्यों का विकास दो पृथक् मार्गों से हुआ है - 1.सुकुमारमार्ग 2. विचित्रमार्ग

(1) सुकुमार मार्ग

- आरम्भ में महाकाव्य सुकुमार मार्गी थे।
- सुकुमारमार्ग को **रसमयी पद्धति** भी कहते हैं।
- प्रसादगुणपूर्ण शैली में निरूपित मार्ग।
- वाल्मीकि, व्यास, कालिदास, अश्वघोष आदि कवियों की यही पद्धति है।
- रस और ध्वनि को काव्य की आत्मा मानकर अलंकारों का समुचित प्रयोग होता है।

(2) विचित्रमार्ग

- विचित्रमार्ग के रूप में पाण्डित्यपूर्ण शैली संस्कृत महाकाव्यों में मिलती है।
- शास्त्रीय वैदुष्यपूर्ण भाषा से युक्त महाकाव्य को अलंकार पद्धति या **विचित्रमार्ग** कहा गया।
- इस मार्ग में आनुषङ्गिक वर्णनों की प्रधानता।
- कविगण द्वारा वैदुष्य (विद्वता) का प्रदर्शन।
- विचित्रमार्ग के प्रवर्तक **भारवि** थे।
- भारवि का अनुसरण माघ ने किया।
- दोनों महाकवियों ने मूलकथा को बीच में छोड़कर प्रसक्तानुप्रसक्त वर्णनों में अपने को बाँध लिया।
- इस मार्ग में भाषा और विषय दोनों क्षेत्रों में विशेषता रहती है।
- इस पद्धति में चित्रकाव्य तक कवि पहुँच जाते हैं।
- श्लेषालंकार के प्रयोग से यह शैली दुरुह हो जाती है।
- ओज गुण को प्रमुख स्थान दिया।
- विचित्रमार्गी कवि कथानक की चिन्ता नहीं करते। भारवि ने अल्प कथानक को वर्णनों से भरकर 18 सर्गों का महाकाव्य बना दिया।
- जबकि सुकुमारमार्गी कालिदास ने रघुवंश के 19 सर्गों में अनेक पीढ़ियों के बड़े कथानक को समेट दिया।
- बाद के कवियों के लिए **वाल्मीकि की रसमयी पद्धति** तथा **भारवि की अलंकृत पद्धति** विद्यमान थी।
- बाद के कवियों ने अपनी रुचि के अनुसार दोनों में से एक को अपनाया।
- श्रीहर्ष ने दोनों के समन्वय का सफल प्रयास किया।

नाट्य साहित्य

- साहित्य के सभी प्रकारों में रूपक या नाट्य श्रेष्ठ माना गया है। इसकी रचना को कवित्व की अन्तिम सीमा कहा जाता है- **'नाटकान्तं कवित्वम्।'**
- रूपक में गद्य-पद्य दोनों का मिश्रण तो रहता ही है, इसे सुनने के अतिरिक्त देखा जाता है। श्रव्य की अपेक्षा 'दृश्य' का अधिक सघन प्रभाव होता है।
- भरत ने नाट्यशास्त्र (6/31) में कहा है कि इस नाट्य-संसार में सब कुछ रसमय होता है, रस के बिना यहाँ कुछ भी प्रवृत्त नहीं होता- **'न हि रसादृते कश्चिदप्यर्थः प्रवर्तते।'** कोई व्यक्ति किसी भी रुचि का क्यों न हो, उसे अपना अनुकूल विषय नाट्य-जगत् में अवश्य मिल जायेगा। इसीलिए कालिदास ने इसकी प्रशंसा में कहा है-

नाट्यं भिन्नरुचेर्जनस्य बहुधाप्येकं समाराधनम्।
(मालविकाग्निमित्रम्- 1/4)

- काव्य को संस्कृत काव्यशास्त्रियों ने दृश्य और श्रव्य के रूप में दो वर्गों में रखा है। दृश्यकाव्य के दो भेद हैं- रूपक तथा उपरूपक। रूपक दस तथा उपरूपक अठारह प्रकार के होते हैं। रूपकों का एक प्रमुख भेद 'नाटक' है जो अपने अर्थ का विस्तार करके सामान्यतः आधुनिक भारतीय भाषाओं में नाट्यमात्र या दृश्यकाव्य मात्र (Drama) का अर्थ देता है।
- धनञ्जय ने नाट्य,रूप और रूपक-इन तीन शब्दों के प्रयोग के हेतुओं का निरूपण किया है जो वस्तुतः एकार्थक हैं।
- विविध पात्रों की अवस्थाओं का चतुर्विध अभिनय (आङ्गिक,वाचिक,सात्त्विक तथा आहार्य) के द्वारा जब नट अनुकरण करता है तो इसे **'नाट्य'** कहते हैं।

नाटक

- नाटक का कथानक प्रसिद्ध (इतिहास या पुराण में निर्दिष्ट) होता है, उसका नायक विख्यात वंश में उत्पन्न राजर्षि या राजा रहता है, उसे धीरोदात्त श्रेणी का होना चाहिए। कभी-कभी वीर रस या शृङ्गार रस के अनुरूप वह धीरोद्धत या धीरललित भी हो सकता है किन्तु धीरप्रशान्त नहीं। श्रीकृष्ण जैसे दिव्यादिव्य नायक भी होते हैं।
- नाटक का मुख्य रस शृङ्गार या वीर होता है **(एक एव भवेदङ्गी शृङ्गारो वीर एव वा)**। अन्य सभी रसों का यथावसर प्रयोग किया जाता है।
- नाटक में पाँच से लेकर दस अङ्क तक रखे जाते हैं। उसमें कथानक का स्वाभाविक विकास दिखाने के लिए पाँच अर्थप्रकृतियाँ (बीज, बिन्दु, पताका, प्रकरी और कार्य), पाँच अवस्थाएँ (आरम्भ, यत्न, प्राप्त्याशा, नियताप्ति और फलागम) तथा इनके योग से होने वाली पाँच सन्धियाँ (मुख, प्रतिमुख, गर्भ, विमर्श और निर्वहण) यथासाध्य रखी जाती हैं।
- जिस नाटक में इन सब के प्रयोग के साथ दस अङ्क हों उसे 'महानाटक' कहते हैं। **बालरामायण, हनुमन्नाटक** आदि महानाटक हैं।
- नाटक की अन्तिम सन्धि में 'अद्भुत रस' का प्रयोग हो इससे रोचकता आती है **(कार्यो निर्वहणेऽद्भुतः)**
- नाटक की रचना गोपुच्छाग्रवत् होनी चाहिए अर्थात् आरम्भ और अन्त सूक्ष्म(पतला) हो, मध्यभाग स्थूल (दीर्घ) हो।
- क्रमशः कार्यों का संक्षिप्त उपसंहार होना चाहिए। नाटक को काव्यमात्र में श्रेष्ठ कहा गया है-

  'काव्येषु नाटकं रम्यम्, नाटकान्तं कवित्वम्।'
- भास, कालिदास, भवभूति शूद्रक आदि के नाटक संस्कृत-जगत् में विख्यात हैं।

प्रकरण

- इसका कथानक कविकल्पित होता है। प्रायः लोककथाओं से कथानक लेकर इसकी रचना की जाती है।
- इसका नायक धीरप्रशान्त कोटि का मन्त्री, ब्राह्मण या वणिक् में से कोई एक होता है **(अमात्य-विप्र-वणिजामेकं कुर्याच्च नायकम्** -दशरूपक 3/39)। मृच्छकटिक में ब्राह्मण, मालतीमाधव में अमात्य तथा पुष्पदूतिका में वैश्य नायक है। इसमें नायिका दो प्रकार की होती है-कुलीना और वेश्या (गणिका)। किसी प्रकरण में कोई एक ही नायिका रहती है, (जैसे-मालतीमाधव में) तो किसी में दोनों प्रकार की नायिकाएं होती है (जैसे- मृच्छकटिक में)।
- धूर्त,जुआरी,विट,चेट आदि अनेक पात्रों से युक्त प्रकरण **'संकीर्ण'** कहलाता है। नाट्यदर्पण (2/68) में नायिका के आधार पर प्रकरण के इक्कीस भेद कहे गये हैं। रस की दृष्टि से इसमें शृङ्गाररस प्रधान होता है।

3.भाण

- इसमें कोई अत्यन्त चतुर तथा बुद्धिमान् विट अपने या दूसरे के अनुभव के आधार पर धूर्त के चरित का वर्णन करता है। यह एक अङ्क तथा एक ही पात्र का रूपक है। वह पात्र विट ही रहता है जो आकाशभाषित के रूप में स्वयं प्रश्न-उत्तर (उक्ति-प्रत्युक्ति) का प्रयोग करता है।
- इसमें मुख और निर्वहण सन्धियाँ रहती हैं, अन्य सन्धियाँ नहीं।

प्रहसन

- यह हास्यरस-प्रधान रूपक होता है, जिसमें कथानक कल्पित रहता है। इसमें धर्म का पाखण्ड करने वाले (जैन-बौद्ध) साधुओं, केवल जाति से ब्राह्मण कहलाने वाले धूर्तों एवं सेवक-सेविकाओं का चरित्र दिखाया जाता है।
- प्रहसन में वेशभूषा तथा भाषा की विकृति से भी हास्योत्पादन होता है। भाण के समान इसमें भी दो सन्धियों (मुख एवं निर्वहण) एवं 10 लास्याङ्गों का प्रयोग होता है। विश्वनाथ ने इसमें एक या दो अङ्क माने हैं।
- प्रहसन के तीन भेद होते हैं-शुद्ध, विकृत और संकीर्ण।

डिम

- इसका कथानक प्रसिद्ध होता है। नाट्य की कैशिकी वृत्ति वर्जित है, शेष तीनों वृत्तियाँ (भारती, सात्त्वती, आरभटी) प्रयुक्त होती हैं।
- इसमें नायक देवता, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस आदि होते हैं जो मानवेतर हैं, भूत, प्रेत, पिशाच आदि पात्रों का भी इसमें समावेश होता है। उद्धत कोटि के 16 पात्र इसमें रहते हैं। इसका प्रधान रस रौद्र होता है। माया, इन्द्रजाल, युद्ध,भगदड़ आदि के दृश्यों से यह भरा होता है।

- विमर्श सन्धि का प्रयोग नहीं होता। इसमें चार अङ्क रहते हैं।
- भरत ने **'त्रिपुरदाह'** नामक डिम का उल्लेख किया है।

व्यायोग

- इसका कथानक इतिहास-प्रसिद्ध होता है जो किसी विख्यात उद्धत व्यक्ति (भीम, दुर्योधन आदि) पर आश्रित रहता है।
- इसमें गर्भ एवं विमर्श नामक सन्धियाँ नहीं होती हैं। रसों की दीप्ति डिम के समान होती है।
- इसकी कथावस्तु एक दिन की घटनाओं से सम्बद्ध होती है।
- इसमें एक ही अंक रहता है तथा पुरुष-पात्रों की संख्या अधिक होती है।भास का **'मध्यमव्यायोग'** इसका मुख्य उदाहरण है।

समवकार

- इसका इतिवृत्त इतिहास-पुराण में प्रसिद्ध होता है जिसमें देवताओं और दैत्यों की कथा होती है। कैशिकी को छोड़कर अन्य वृत्तियाँ एवं विमर्श को छोड़कर अन्य सन्धियाँ होती हैं। इसमें तीन अङ्क रहते हैं जिनमें तीन बार कपट, तीन बार धर्म-अर्थ-काम का शृङ्गार एवं तीन बार पात्रों में भगदड़ दिखायी जाती है।
- इसके पात्र देवता और दानव होते हैं जिनकी संख्या 12 होती है, सभी वीररस से भरे रहते हैं और सब को पृथक्-पृथक् फल मिलता है।
- 'बिन्दु' नामक अर्थप्रकृति एवं 'प्रवेशक' नामक अर्थोपक्षेपक का इसमें प्रयोग नहीं किया जाता।
- नाट्यशास्त्र में **'समुद्रमन्थन'** नामक समवकार के अभिनय का उल्लेख है। भास के 'पञ्चरात्र' में भी कुछ लक्षण मिलते हैं।

वीथी

- यह शृङ्गाररस-युक्त एकाङ्की रूपक है। इसके कई लक्षण भाण के समान हैं। जैसे-केवल दो सन्धियाँ (मुख और निर्वहण) होना, शृङ्गाररस का सूच्य होना।

अङ्क

- इसे संशय-निवारणार्थ **'उत्सृष्टिकाङ्क'** भी कहते हैं क्योंकि रूपकों के खण्ड भी 'अङ्क' होते हैं। इस रूपक-भेद में कथानक इतिहास-प्रसिद्ध होता है, किन्तु कवि उसमें यथेष्ट परिवर्तन भी करता है। भाण के समान सन्धि (मुख और निर्वहण) भारती वृत्ति भाग तथा अङ्क केवल एक होते हैं।
- इसके नायक और अन्य पात्र साधारण होते हैं। इसमें करुणरस की प्रधानता होती है। अतः स्त्रियों का रोदन होना चाहिए।
- पात्रों में वाग्युद्ध एवं जय-पराजय की योजना होती है।
- कुछ आचार्यों ने इसमें एक से लेकर तीन अङ्कों तक का विधान किया है।

ईहामृग

- इसका कथानक प्रख्यात और कल्पित का मिश्रित रूप होता है। इसमें चार अङ्क तथा तीन सन्धियाँ होती हैं(गर्भ और विमर्श सन्धियाँ नहीं होती)

उपरूपक

- विश्वनाथ ने 18 उपरूपकों का यह क्रम रखा है-
  1. नाटिका 2. त्रोटक 3. गोष्ठी 4. सट्टक 5. नाट्यरासक 6. प्रस्थानक 7. उल्लास्य 8. काव्य 9.प्रेंखण 10.रासक 11. संलापक 12.श्रीगदित 13. शिल्पक 14.विलासिका 15. दुर्मल्लिका 16. प्रकरणिका 17. हल्लीश और 18. भाणिका

नाटिका

- नाटिका में चार अङ्क होते हैं।
- स्त्री-पात्रों का बाहुल्य एवं शृङ्गाररस की प्रधानता इसकी विशिष्टता है।
- इसका नायक धीरललित श्रेणी का कोई प्रसिद्ध राजा होता है।
- शृङ्गाररस के कारण कैशिकी वृत्ति एवं तदनुकूल गीत,नृत्य, वाद्य, हास्य आदि इसमें दिखाये जाते हैं।
- इसमें दो नायिकाएँ होती हैं-देवी (बड़ी रानी) तथा मुग्धा कन्या।
- उदयन को नायक बनाकर हर्ष ने **'प्रियदर्शिका'** और **'रत्नावली'** नामक नाटिकाओं की रचना द्वारा इस विधा का प्रयोग किया है।

सट्टक

- सट्टक भी नाटिका के समान होता है।
- इसमें सम्पूर्ण पाठ प्राकृत में होता है।
- प्रवेशक-विष्कम्भक का प्रयोग नहीं किया जाता है।
- अद्भुत रस का प्राचुर्य होता है।
- अङ्कों को 'जवनिकान्तर' कहते हैं।
- राजशेखर की **'कर्पूरमञ्जरी'** सट्टक है।

त्रोटक

- तोटक या त्रोटक में सात,आठ, नव या पाँच अङ्क रहते हैं।
- प्रधानरस शृङ्गार होता है।
- कालिदास का **'विक्रमोर्वशीयम्'** त्रोटक है।

नाट्योत्पत्ति

- संस्कृत दृश्यकाव्य का उद्भव कब और किस प्रकार से हुआ, इस प्रश्न का निश्चित समाधान करना कठिन है। फिर भी कुछ सिद्धान्तों का परिचय तो दिया ही जा सकता है।

भरत का मत

- नाट्य विज्ञान पर सर्वप्रथम ग्रन्थ 'नाट्यशास्त्र' ही है जिसका काल 100 ई॰ पू॰ से 300 ई॰ के बीच माना जाता है।
- भरत का मत 'नाट्यशास्त्र' में मिलता है कि सभी देवताओं ने

मिलकर ब्रह्मा जी से प्रार्थना की कि हमें ऐसे मनोरंजन का साधन प्रदान करें जो दृश्य और श्रव्य दोनों हो और जिसे सभी वर्णों के लोग ग्रहण कर सकें, ब्रह्मा ने इस प्रार्थना पर चारों वेदों से सार भाग लेकर 'नाट्यवेद' के रूप में पञ्चम वेद का निर्माण किया (**नाट्यवेदं ततश्चक्रे चतुर्वेदाङ्गसम्भवम्** 1/16) उन्होंने ऋग्वेद से पाठ्य (संवाद,कथनोपकथन), सामवेद से संगीत, यजुर्वेद से अभिनय और अथर्ववेद से रस-तत्त्व लेकर 'नाट्यवेद' की रचना की।

संवाद-सूक्तों से नाट्य की उत्पत्ति

- मैक्समूलर, सिल्वाँलेवी,फॉन श्रोएदर, हर्टल आदि यूरोपीय विद्वानों ने यह सिद्धान्त दिया कि ऋग्वेद के कतिपय संवाद-सूक्त ही नाटकों के प्राचीनतम रूप हैं।
- इन संवाद-सूक्तों में इन्द्र- मरुत् संवाद(ऋ० 1/165,170), अगस्त्य-लोपामुद्रा संवाद (ऋ० 1/179), विश्वामित्र-नदी संवाद (3/33), वसिष्ठ-सुदास संवाद (ऋ० 7/83), यम-यमी संवाद (ऋ० 10/10), इन्द्र-इन्द्राणी-वृषाकपि संवाद (ऋ 10/86), पुरूरवा-उर्वशी संवाद(10/95) तथा सरमा-पणि संवाद(10/108) प्रमुख है।

यूनानी रूपकों से उत्पत्ति

- वेबर तथा विन्डिश ने संस्कृत रूपकों का उद्भव यूनानी रूपकों से सिद्ध किया है।
- जर्मनी के ही विद्वान् पिशेल ने इस मत का प्रबल खण्डन किया है।

पुत्तलिका-नृत्य-सिद्धान्त

- प्रो. पिशेल ने यह विचार दिया है कि प्राचीन भारत में कठपुतलियों का नृत्य दिखाया जाता था। उसे ही सजीव रूप देने के लिए मानवों को मंच पर प्रस्तुत करके नाटकों का अभिनय प्रारम्भ हुआ।

मृतात्म-श्राद्ध-सिद्धान्त (वीर-पूजा)

- डॉ. रिजवे ने यह मत रखा था कि अपने मृत पूर्वजों के प्रति श्रद्धा प्रदर्शित करने के लिए जिस प्रकार यूनानी दुःखान्त रूपकों का उद्भव हुआ था, उसी प्रकार भारत में भी अपने दिवंगत वीर पुरुषों के प्रति आदर-भाव दिखाने के लिए नाटक अभिनीत होते थे।
- रामलीला और कृष्णलीला इसी प्रवृत्ति के पोषक दृष्टान्त हैं।

उत्सव-सिद्धान्त

- यूरोप के कुछ विद्वानों ने अपने यहाँ होने वाले मे-पोल-नृत्य को संस्कृत रूपकों का भी प्रथम रूप कहा है।

छाया-नाटक-सिद्धान्त

- जर्मन विद्वान् ल्यूडर्स तथा स्टेन कोनो का मत है कि छाया - नाटकों में जो छाया-चित्रों का प्रदर्शन होता है, वही संस्कृत रूपकों के मूल रूप रहे होंगे।

संस्कृत नाट्य की विशिष्टताएँ-

- भारतीय रूपक मनोरंजन-प्रधान या आनन्दपरक होते हैं।
- भरत ने इसकी व्याख्या की कि दुःखी, श्रान्त, शोकाकुल एवं तपःखिन्न लोगों को सही समय पर विश्रान्ति प्रदान करने वाला यह 'नाट्य' है-

दुःखार्तानां श्रमार्तानां शोकार्तानां तपस्विनाम्।
विश्रान्तिजननं काले नाट्यमेतद् भविष्यति॥

(ना.शा. 1/114)

- संस्कृत रूपकों में 'दुःखान्त' की व्यवस्था नहीं है।
- यहाँ दस प्रकार के रूपक और अठारह प्रकार के उपरूपक होते हैं।
- इनमें 'नाटक' बहुत लोकप्रिय हैं।
- प्रकरण,प्रहसन,भाण,नाटिका, सट्टक आदि भी बहुत संख्या में लिखे गये हैं। इस प्रकार संस्कृत दृश्य काव्य का क्षेत्र व्यापक है।
- नाट्य-भेदों में कथानक प्रसिद्ध या कल्पित भी होता है।
- संस्कृत रूपकों में कथानक का विकास कुछ सिद्धान्तों पर आश्रित होता है। कथानक को अर्थप्रकृतियों, अवस्थाओं और सन्धियों में विभक्त किया जाता है।
- पात्रों की व्यवस्था भी रूपकों के विभाजन का आधार है। मुख्य पात्र नायक और नायिका हैं। जिनके भेदोपभेद माने गये हैं। नायकों को धीरोदात्त, धीरोद्धत, धीरप्रशान्त और धीरललित के रूप में चार प्रकार का माना गया है।
- संस्कृत रूपकों का पारस्परिक भेद रस प्रयोग के कारण भी है। नाटकों में शृङ्गार, वीर या शान्त-रस को मुख्य (अङ्गी) रस के रूप में रखा जाता है
- भवभूति ने करुणरस को प्रधान स्थान दिया है, अन्य सभी रसों का यथोचित निवेश होता है।
- नाट्यशास्त्रियों ने जीवन की कुछ क्रियाओं का मञ्चन की दृष्टि से वर्जन किया है। अनुचित, असभ्य और अशुभ दृश्य मञ्च पर नहीं दिखाये जाते। जैसे-युद्ध, मृत्यु, निद्रा, सम्भोग, शाप, चुम्बन, भोजन आदि।
- भाषा प्रयोग का विधान संस्कृत रूपकों की महत्त्वपूर्ण विशिष्टता है। भरत ने ही विधान किया था कि उच्च और मध्य वर्ग के पात्रों की भाषा संस्कृत होगी। प्राकृत में भी क्षेत्रीय प्रभेदों के विधान की दृष्टि से सामान्यतः महाराष्ट्री ,शौरसेनी, मागधी और अर्धमागधी प्राकृतों का प्रयोग किया गया है।
- रूपक भी धर्म के उपकरणों का यथेष्ट उपयोग करते हैं जैसे नान्दी या प्रस्तावना में देवस्तुति और भरतवाक्य में आशीर्वाद देना।

- पाश्चात्य नाट्य-विज्ञान में स्वीकृत अन्वितित्रय संस्कृत रूपकों में मान्य नहीं है।
- संस्कृत रूपकों में रसोद्भावन की दृष्टि से उचित स्थानों पर पद्य-प्रयोग किया जाता है।
- कथनोपकथन का मुख्य रूप तो गद्य ही रहता है किन्तु कुछ आवश्यक स्थलों में रोचकता, प्रकृति-वर्णन, नीति-शिक्षा, सुभाषित, विस्तृत घटनाओं का संक्षेपण आदि उद्देश्यों से पद्यों का भी प्रयोग होता है।
- विदूषक का प्रयोग संस्कृत रूपकों में हास्य-व्यंग्य के निवेश के लिए तो होता ही है,वह कथानक का भी एक अङ्ग होता है। वह कथा-प्रवाह को आगे बढ़ाता है।
- शुद्ध हास्य की दृष्टि से 'प्रहसन' और 'भाण' नामक रूपक-भेद संस्कृत में होते हैं जिसमें समाज की विसंगतियों पर व्यंग्य होता है।
- संस्कृतभाषा के रूपकों के प्रारम्भ में प्रस्तावना होती है। जिसमें कवि-परिचय के साथ नाटक के अभिनय के अवसर का भी संकेत रहता है।
- नान्दीपाठ से नाटक का प्रारम्भ एवं भरतवाक्य से समाप्ति, अङ्कों की योजना, बीच-बीच में विष्कम्भक, प्रवेशक आदि देना ये सब रचना-प्रक्रिया के मुख्य अङ्ग हैं।
- बीच में मञ्च से पात्रों का निर्गम,प्रवेश,स्वागत-भाषण, जनान्तिक भाषण आदि संकेत नाटकों के अभिनय और मञ्चन को सुविधायुक्त कर देते हैं।

गद्य साहित्य

- 'गद्य' शब्द गद्-धातु (व्यक्तायां वाचि) से यत् प्रत्यय लगकर बना है जिसका अर्थ है मानव की अभिव्यक्ति की मौलिक प्रक्रिया।
- दण्डी ने काव्यादर्श में 'गद्यकाव्य' की परिभाषा देकर इसे आख्यायिका और कथा के रूप में विभाजित किया है। **'अपादः पदसन्तानो गद्यमाख्यायिका कथा।'** (1/23)
- गद्यकाव्य इतना कठिन और विरल हो गया कि आठवीं शताब्दी ई0 में एक उक्ति चल पड़ी-**'गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति'** अर्थात् गद्यकाव्य लिखना कवियों की कड़ी परीक्षा है।
- गद्य का प्रथम रूप हमें यजुर्वेद की संहिताओं में मिलता है।
- यजुर्वेद की परिभाषा ही दी गयी है- **'अनियताक्षरावसानं यजुः'** तथा **'गद्यात्मकं यजुः।'**
- कृष्ण-यजुर्वेद की तैत्तिरीय, काठक और मैत्रायणी संहिताएँ अधिकांशतः गद्यात्मक हैं।
- ब्राह्मण और आरण्यक (जो पूर्णतः गद्य में ही हैं) पतञ्जलि का महाभाष्य, शबरस्वामी का शाबरभाष्य (मीमांसा-दर्शन पर),शंकराचार्य का शारीरकभाष्य (ब्रह्मसूत्र पर) इत्यादि उत्कृष्ट शास्त्रीय गद्य के रूप हैं।
- आचार्य शंकर की गद्यशैली प्रसन्न-गम्भीर है,इसका परिमाण भी प्रचुर है क्योंकि दस उपनिषदों, गीता तथा ब्रह्मसूत्र पर उन्होंने भाष्य लिखे हैं।
- साहित्यिक गद्य के प्रयोग का अनुमान कात्यायन और पतञ्जलि के द्वारा दी गयी सूचनाओं से होता है।
- पतञ्जलि ने तो तीन आख्यायिकाओं के नाम भी दिये हैं- **वासवदत्ता, सुमनोत्तरा** तथा **भैमरथी**।
- साहित्यिक गद्य का स्पष्ट उदाहरण अभिलेखों में प्राप्त होता है। इस दृष्टि से रुद्रदामन का गिरिनार अभिलेख 150ई0) तथा हरिषेणकृत समुद्रगुप्त-प्रशस्ति (प्रयाग स्तम्भलेख 360 ई0) विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।
- समुद्रगुप्त की विजय-यात्राओं और व्यक्तिगत गुणों का वर्णन प्रयाग-प्रशस्ति में हुआ है। इस प्रशस्ति के लेखक हरिषेण हैं।
- साहित्यिक गद्य का विकासशील रूप **दण्डी, सुबन्धु** या **बाण** की रचनाओं में प्राप्त होता है।

गद्यकाव्य के भेद

- संस्कृत गद्यकाव्य के दो मुख्य भेद माने गये हैं-कथा और आख्यायिका
- आख्यायिका ऐतिहासिक विषयों पर एवं कथा पूर्णतः काल्पनिक विषयों पर आश्रित होती है।
- बाणभट्ट की गद्य-रचनाओं में 'हर्षचरित' आख्यायिका तथा 'कादम्बरी' कथा के रूप में प्रसिद्ध हुई।
- कथा में कथावस्तु कविकल्पित होती है।
- आख्यायिका में ऐतिहासिक होती है।
- कथा के आरम्भ में पद्यों के द्वारा सज्जनों की प्रशंसा, दुष्टों की निन्दा तथा कवि के वंश का वर्णन होता है।
- कथा का विभाजन नहीं होता, आख्यायिका उच्छ्वासों या निःश्वासों में विभक्त होती है।
- उच्छ्वासों के आरम्भ में भावी घटना का परोक्ष निर्देश करने वाले पद्य भी होते हैं।
- कथा में मुख्य कथानक को लाने के लिए दूसरी कथा से आरम्भ किया जाता है।
- आख्यायिका में कवि अपना वृत्तान्त देकर मुख्य कथा को आरम्भ करता है। इन दोनों में समानता के तथ्य भी बहुत हैं। जैसे- 1. दोनों की रचना संस्कृत गद्य में होती है। 2. गद्य की शैली दोनों में समान रहती है। 3. रसों और भावों का समान रूप से प्रयोग होता है। 4. नगर,वन,सरोवर,राजा,राजसभा,मृगया

प्रेम आदि का समान रूप से वर्णन दोनों में होता है

गद्य के प्रकार

समास के प्रयोग तथा वृत्तभाग के निवेश की दृष्टि से गद्य के चार प्रकार माने गये हैं-

1. मुक्तक 2. वृत्तगन्धि
3. उत्कलिकाप्राय 4. चूर्णक

- समास से रहित गद्य-रचना को मुक्तक कहते हैं।
- जहाँ गद्य में छन्द के अंश आ जाएँ उसे वृत्तगन्धि कहते हैं।
- लम्बे समासों से युक्त गद्य उत्कलिकाप्राय कहलाता है तथा अल्प समासों से युक्त गद्य को चूर्णक कहा जाता है।

गीतिकाव्य

- गीतिकाव्य का उद्गम ऋग्वेद की ऋचाओं से माना जाता है।
- अग्नि, इन्द्र, विष्णु आदि देवों के प्रति ऋषियों द्वारा स्तुतियाँ वेदों में ही की गयी हैं।
- इन्द्र के प्रति एक ऋचा में कहा गया है-

तुञ्जे- तुञ्जे य उत्तरे, स्तोमा इन्द्रस्य वज्रिणः।
न विन्धे अस्य सुष्टुतिम्॥ (ऋ0 1.7.7)
(अर्थात् विविध वस्तुओं का दान करने वाले अन्य देवों के लिए जो स्तोत्र है, मैं इन्द्र की स्तुति के लिए उपयुक्त स्तोत्र नहीं मानता)

- प्रजापति की स्तुति में हिरण्यगर्भ सूक्त (ऋ0 -10.12.1) उत्कृष्ट गीतिकाव्य है जिसके प्रत्येक मन्त्र के अन्त में आया है- **'कस्मै देवाय हविषा विधेम।'**
- इन्द्र के कई स्तोत्रों में उनके वीरकर्मों का वर्णन है जिससे ओजस्विता का संचार होता है जैसे-

यः पृथिवीं व्यथमानामदृंहद्,
यः पर्वतान् प्रकुपिताँ अरम्णात्।
यो अन्तरिक्षं विममे वरीयो,
यो द्यामस्तम्नात्स जनास इन्द्रः। (ऋ0- 2.12.2)

- ऋग्वेद में ही प्रभात काल की देवी उषा का वर्णन उसके सौन्दर्यपक्ष को विशेष रूप से अङ्कित करके किया गया है। **'जायेव पत्य उशती सुवासा उषा हस्रेव नि रिणीते अप्सः।'** (ऋ0-1.124.7)
- इसीप्रकार अथर्ववेद में भूमि की स्तुति में गीतिकाव्य का विन्यास है।
- पृथ्वी देवी के प्रति कृतज्ञता की अभिव्यक्ति 63 मन्त्रों में अथर्वा ऋषि ने की है।
- सामवेद का सङ्गीत पक्ष गीतिकाव्य के अनन्यगुण को विशेष रूप से धारण करता है।
- इसलिए वैदिक युग ही संस्कृत गीतिकाव्य के उद्भव के लिए ठोस धरातल देता है।
- रामायण का उदय गीतिकाव्य के रूप में ही हुआ है। इसमें विरह-वर्णन, देवस्तुति आदि गीतितत्त्व को ही स्पष्ट करता है।
- महाभारत में प्राप्त होने वाली स्तुतियाँ भी गीतिकाव्य के रूप में स्वीकृत हैं।
- गीता के 11 वें अध्याय में भगवान् श्रीकृष्ण का विराट् रूप वर्णन प्रकृष्टस्तोत्र काव्य है।
- भागवतपुराण, विष्णु तथा नारदपुराणादि में उपास्य देवों की स्तुतियाँ मिलती हैं।
- अध्यात्म रामायण में राम की ब्रह्म के रूप में स्तुति वर्णित है।
- लौकिक साहित्य में कालिदास से गीतिकाव्य का प्रारम्भ होता है। अतः कालिदास **संस्कृत गीतिकाव्य के प्रवर्तक हैं**।
- **गीतिकाव्य के दो भेद हैं-**

1. शृङ्गारिक गीतिकाव्य
2. आध्यात्मिक या नैतिक गीतिकाव्य

1. शृङ्गारिक गीतिकाव्य

- शृङ्गार मूलक संस्कृत गीतिकाव्यों का वर्ण्य विषय जीवन का भौतिक सुख है जिसमें स्त्रियों के सौन्दर्य, हाव-भाव, विलास आदि का वर्णन करते हुए उनके प्रति पुरुष के आकर्षण का चित्रण हुआ है।
- कुछ प्रमुख गीतिकाव्यों का परिचय यहाँ दिया जा रहा है-

1. ऋतुसंहार

- ऋतुसंहार संस्कृत वाङ्मय का प्रथम गीतिकाव्य है।
- यह कालिदास की प्रामाणिक रचना के रूप में छः सर्गों में निबद्ध है, जिसमें ग्रीष्म से वसन्त तक के छहों ऋतुओं का शृङ्गारिक वर्णन है।
- इसमें 144 पद्य हैं।

2. मेघदूत

2. मेघदूत कालिदास की प्रौढ़ एवं परिष्कृत गीति रचना है।

- यह **मन्दाक्रान्ता छन्द** में रचित एवं **दो खण्डों** में विभाजित है।
- टीकाकार मल्लिनाथ ने मेघदूत के **121** पद्यों की व्याख्या की है, किन्तु 6 श्लोक को प्रक्षिप्त मानकर **115** श्लोकों को प्रामाणिक माना है।
- इसमें यक्ष- यक्षिणी की प्रणय कथा का वर्णन है।

3. गाथा-सप्तशती

- यह **'हालकवि'** द्वारा रचित, **सात सौ मुक्तक पद्यों** की प्राकृत रचना है।
- इसका प्राकृत नाम- **'गाहासत्तसई'** है।

4. भर्तृहरि के शतकत्रय

- **भर्तृहरि** ने तीन शतकों की रचना की है जो गीतिकाव्य के अन्तर्गत वर्णित हैं-

1. नीतिशतक- (111 पद्य)
2. शृङ्गारशतक- (103 पद्य)
3. वैराग्यशतक- (111 पद्य)

5. अमरुकशतक

- इसके रचयिता **'अमरुक'** हैं। यह मुक्तक काव्य है।
- इसके पद्यों की संख्या 90 से 115 तक मिलती है।

6. भल्लट शतक

- यह अन्योक्ति पूर्ण नीतिमूलक पद्यों का संग्रह है।
- यह कश्मीरी कवि **'भल्लट'** की रचना है।

7. गीतगोविन्द

- **'गीतगोविन्द'** संस्कृतभाषा का श्रेष्ठ गीतिकाव्य है।
- इसके रचनाकार **'जयदेव'** हैं।
- इसमें 12 सर्ग तथा 24 प्रबन्ध हैं।

8. भामिनीविलास

- यह पण्डितराज जगन्नाथ के स्फुट पद्यों का संग्रह है।
- यह चार भागों (विलासों) में विभक्त है।

2. स्तोत्रकाव्य या धार्मिक गीतिकाव्य

- स्तोत्रकाव्य में भक्ति तथा वैराग्य दोनों विषयों का ग्रहण होता है।
- कुछ प्रमुख स्तोत्रकाव्य निम्नलिखित हैं-

1. पुष्पदन्त का शिवमहिम्न स्तोत्र

- मुख्यतः शिखरिणी छन्द में रचित शिव की महिमा का वर्णन है।

2. मयूरभट्ट का सूर्यशतक

- स्रग्धरा छन्द का प्रथम स्तोत्रकाव्य है।
- 100 पद्यों में सूर्य महिमा वर्णित है।

3. बाणभट्ट का चण्डीशतक

- इसमें भगवती दुर्गा की स्तुति है।
- इसमें भी स्रग्धरा छन्द के 100 पद्य हैं।

अन्य स्तोत्र ग्रन्थ

आनन्दलहरी, मुकुन्दमाला, वरदराजस्तव, नारायणीय, मूकपञ्चशती, सौन्दर्यलहरी, शिवताण्डवस्तोत्र आदि।

2.7 संग्रह-ग्रन्थ

संस्कृत साहित्य के इतिहास में हमें दो प्रकार के संग्रह ग्रन्थों का वर्णन प्राप्त होता है-

संग्रह-ग्रन्थ
- सुभाषित या सूक्ति-संग्रह
- कथा-संग्रह
  - लोककथा
  - नीतिकथा

उद्भव और विकास

- कथा का बीज वैदिक वाङ्मय में विस्तृत रूप से मिलता है।
- पुरूरवा-उर्वशी, सरमा-पणि आदि संवाद सूक्तों में तात्कालिक कथाओं को संवादों में प्रस्तुत किया गया है।
- 'बृहद्देवता' में अनेक देवताओं की कथाएं हैं।
- उपनिषदों में भी जीव- जन्तुओं की कथाएं कुछ विशिष्ट उद्देश्य से दी गयी हैं। जैसे- दो हंसों के वार्तालाप ।
- महाभारत तथा पुराण- साहित्य तो कथाओं का अक्षय- कोश है।
- बौद्ध जातक कथाएं पालि साहित्य में प्रसिद्ध हैं।
- जैनों ने भी अपने कथा साहित्य का पर्याप्त विकास किया था।
- हरिषेण का **'बृहत्कथाकोश'** जैन सिद्धान्त का प्रतिपादन करता है।
- इसप्रकार कथा का सम्पूर्ण विकास ईसापूर्व में ही हो चुका था।

लोक कथाएँ

- संस्कृत का दुर्भाग्य है कि लोक कथाएँ मुख्यतः पैशाची भाषा में लिखित **'गुणाढ्य'** की **बृहत्कथा** (बड्डकहा) पर आश्रित हैं।'

बृहत्कथा

- लोक कथाओं का प्राचीनतम संग्रह 'गुणाढ्य' की बृहत्कथा में किया गया था।
- बृहत्कथा की भूमिका से पता चलता है कि पहले इसमें सात लाख श्लोक थे किन्तु बाद में केवल एक लाख ही बचे।
- वर्तमान समय में बृहत्कथा उपलब्ध नहीं है।
- महाभारत की भाँति बृहत्कथा भी उपजीव्य ग्रन्थ है।
- बृहत्कथा के उपजीवी ग्रन्थ निम्नलिखित हैं-

1. बृहत्कथाश्लोकसंग्रह

- नेपाल के **बुधस्वामी** इसके लेखक हैं।
- बृहत्कथा की नेपाली वाचना का एकमात्र प्रतिनिधि ग्रन्थ यही है।
- इसके 28 सर्गों में 4539 श्लोक हैं किन्तु यह ग्रन्थ अपूर्ण है।

2. बृहत्कथामञ्जरी

- यह **क्षेमेन्द्र** कृत ग्रन्थ है, जो बृहत्कथा का ही संक्षिप्त रूप है, इसमें कथाओं का संग्रह है।
- इसमें 19 अध्याय और 7500 श्लोक हैं।

3. कथासरित्सागर

- इसकी रचना **सोमदेव** ने किया है। यह ग्रन्थ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और विश्वविख्यात है।
- 'यथा नाम तथा गुण' के अनुसार यह वस्तुतः कथाओं का समुद्र है।
- यह 18 लम्भकों तथा 124 तरङ्गों में विभाजित है।
- इसमें 21388 (लगभग बाइस हजार) श्लोक हैं।

4. वेतालपञ्चविंशति

- इसमें भी कथाओं का संकलन है। वेताल और विक्रम से सम्बद्ध 25 शिक्षाप्रद एवं रोचक कथाओं का संग्रह है।

- पञ्चतन्त्र के समान यह भी विश्वसाहित्य बन गया है।
- हिन्दी में इसे **वैतालपचीसी** कहते हैं।

5. सिंहासनद्वात्रिंशिका

- इसे **'द्वात्रिंशत्पुत्तलिका'** या **'विक्रमचरित'** भी कहा गया है।
- इसमें बत्तीस कथाओं के माध्यम से विक्रमादित्य के गुणों का वर्णन किया गया है।
- दक्षिण भारतीय इसे **'विक्रमार्कचरित'** के नाम से जानते हैं।

6. शुकसप्तति

- यह सत्तर कथाओं का रोचक संग्रह- ग्रन्थ है।
- यह भी विश्व- साहित्य में गणनीय है।

अन्य कथा-संग्रह ग्रन्थ

शिवदास- **कथार्णव** (35 कथाएं)
विद्यापति- **पुरुष-परीक्षा** (44 कथाएं)
श्रीवीर- **कथा-कौतुक**
बल्लालसेन- **भोजप्रबन्ध**

नीतिकथाएँ

- नीतिकथाएं हमें नैतिक उपदेश देती हैं।
- इन कथाओं का उपयोग मनुष्य के व्यक्तित्व को सुधारने के लिए किया जाता है।
- भारतीय नीतिकथाएँ विश्वभर में अपना स्थान बना चुकी हैं।

1. पञ्चतन्त्र

- यह **विष्णुशर्मा** द्वारा रचित नीतिकथाओं का संग्रह है।
- मूल रूप से यह विलुप्त है।
- इसे अर्थशास्त्र का सार भी कहा जाता है।
- वर्तमान पञ्चतन्त्र में कुल 75 कथाओं का संकलन है, पद्यों की संख्या प्रायः 1100 है।
- पञ्चतन्त्र का मुख्य भाग गद्यात्मक है।
- यह भी विश्व साहित्य की श्रेणी में आता है। इसके 250 संस्करण विश्व की 50 भाषाओं में प्रकाशित हो चुके हैं।

2. हितोपदेश

- पञ्चतन्त्र पर आश्रित नीतिकथाओं में 'हितोपदेश' सर्वाधिक प्रचलित एवं महत्त्वपूर्ण है।
- इसकी रचना **नारायण पण्डित** ने की।
- हितोपदेश चार भागों में विभक्त है, इसमें 39 कथाएं हैं।
- प्रत्येक भाग की एक मुख्य कथा को जोड़ने पर कुल 43 कथाएं हैं।
- इसके पद्यों की संख्या 726 है।

अन्यनीति कथाएँ

बौद्ध तथा जैन कवियों ने अनेक नीतिकथाएं संस्कृत में लिखी हैं जिनमें-

आर्यशूर - **जातकमाला** (34जातक कथाएँ)
सिद्धर्षि (जैन)- **उपमितिभवप्रपञ्चकथा**
हेमविजयगणि- **कथारत्नाकर** (256 कथाएँ)

2. सुभाषित-संग्रह या सूक्ति-संग्रह

- चमत्कारी संस्कृत के सूक्तियों के लेखन एवं संग्रह का प्रयास प्राचीनकाल से होता रहा है।
- इन संग्रहों में मुक्तक पद्यों तथा प्रबन्ध-काव्यों के रमणीय पद्यों का भी संकलन बहुधा मूलकवि के नाम के साथ हुआ है।
- कुछ सूक्ति संग्रहों का परिचय यहाँ दिया जा रहा है-

1. कवीन्द्रवचनसमुच्चय

- यह कवि **'विद्याकर'** की कृति है। इसे **'सुभाषितरत्नकोष'** भी कहा जाता है।
- यह संस्कृत का प्राचीनतम सूक्ति-संग्रह है।
- इस संग्रह का विभाजन 50 व्रज्याओं में है।

2. सदुक्तिकर्णामृत

- यह **'श्रीधरदास'** की रचना है। यह संग्रह पाँच प्रवाहों में विभक्त है।
- पुनः **'प्रवाह'** वीचियों में विभक्त है। प्रत्येक वीचि में पाँच-पाँच पद्य हैं।
- पूरे संग्रह में 476 वीचियाँ एवं 2380 पद्य हैं।

3. सूक्तिमुक्तावली

- यह **'जल्हण'** द्वारा सङ्कलित है। इसे **'सुभाषितमुक्तावली'** भी कहते हैं।
- इसमें 133 खण्डों में विभाजित 2790 पद्य सङ्कलित हैं।

4. शार्ङ्गधर पद्धति

- यह **'शार्ङ्गधर'** कवि की कृति है। यह भाग स्वतन्त्र रूप में प्रयाग से प्रकाशित है।
- इसमें 163 परिच्छेद तथा 6300 पद्य थे किन्तु प्रकाशित संस्करण में परिच्छेद उतने ही हैं। केवल पद्य 4689 हो गये।

5. सुभाषितावली

- इसके सङ्कलनकर्ता **'वल्लभदेव'** हैं।
- इस सूक्ति संग्रह में 101 पद्धतियों में 3527 पद्य सङ्कलित हैं।

6. पद्यावली- रूपगोस्वामी (386 पद्य)
7. सूक्तिमुक्तावली- सोमप्रभाचार्य
8. सुभाषित-नीवी- वेदान्त देशिक
9. सुभाषितरत्न-सन्दोह- अमितगति
10. सुभाषित- सुधानिधि तथा **पुरुषार्थसुधानिधि-** सायणाचार्य

- सूक्ति ग्रन्थों में **'सुभाषितरत्नभाण्डागार'** सबसे बड़ा है। इसमें 10000 (दस हजार) से अधिक पद्य हैं।

काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ एवं ग्रन्थकार

ग्रन्थ	ग्रन्थकार	काल
1. नाट्यशास्त्र	आचार्य भरत	ई.पू. द्वितीय शताब्दी
2. काव्यालङ्कार	भामह	500 ई.
3. काव्यादर्श	दण्डी	सातवीं शताब्दी
4. काव्यालङ्कारसारसंग्रह	उद्भट	अष्टमशताब्दी का उत्तरार्द्ध
5. काव्यालङ्कार सूत्र	वामन	800-850 ई. लगभग
6. काव्यालङ्कार	रुद्रट	नवम शताब्दी का पूर्वार्द्ध
7. ध्वन्यालोक	आनन्दवर्धन	नवम शताब्दी का उत्तरार्द्ध
8. काव्यमीमांसा	राजशेखर	दशम शताब्दी
9. अभिधावृत्तमात्रिका	मुकुलभट्ट	दशम शताब्दी का पूर्वार्द्ध
10. काव्यकौतुक	भट्टतौत	दशम शताब्दी का मध्य
11. दशरूपक	धनञ्जय और धनिक	दशम शताब्दी का उत्तरार्द्ध
12. (i) अभिनवभारती ('नाट्यशास्त्र' की टीका)	अभिनवगुप्त	एकादश शताब्दी
(ii) ध्वन्यालोकलोचन ('ध्वन्यालोक' की टीका)	अभिनवगुप्त	
(ii) 'काव्यकौतुकविवरण ('काव्यकौतुक' का विवरण)	अभिनवगुप्त	
13. वक्रोक्तिजीवितम्	कुन्तक	एकादश शताब्दी का पूर्वार्द्ध
14. व्यक्तिविवेक	महिमभट्ट	एकादश शताब्दी का मध्य
15. (i) सरस्वतीकण्ठाभरण	भोजराज	एकादशशताब्दी 1050 ई. लगभग
(ii) शृङ्गारप्रकाश	भोजराज	
16. (i) औचित्यविचारचर्चा	क्षेमेन्द्र	एकादशशताब्दी का उत्तरार्द्ध
(ii) कविकण्ठाभरण	क्षेमेन्द्र	
17. नाटकलक्षणरत्नकोष	सागरनन्दी	एकादश शताब्दी
18. काव्यप्रकाश	मम्मट	1050 ई. (एकादश शताब्दी का उत्तरार्द्ध)
19. अलङ्कारसर्वस्व	रुय्यक	द्वादशशताब्दी
20. वाग्भटालङ्कार	वाग्भट्ट	बारहवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध
21. काव्यानुशासन	हेमचन्द्र	बारहवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध
22. नाट्यदर्पण	रामचन्द्र गुणचन्द्र	बारहवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध
23. भावप्रकाशन	शारदातनय	तेरहवीं शताब्दी
24. चन्द्रालोक	पीयूषवर्ष जयदेव	तेरहवीं शताब्दी का मध्यभाग
25. साहित्यदर्पण	विश्वनाथ कविराज	14वीं शताब्दी
26. एकावली	विद्याधर	1285 ई. से 1325 ई. के मध्य
27. (i) कुवलयानन्द	अप्पयदीक्षित	षोडशशताब्दी
(ii) चित्रमीमांसा	अप्पयदीक्षित	
(iii) वृत्तवार्तिक	अप्पयदीक्षित	
28. रसगङ्गाधर	पण्डितराज जगन्नाथ	17वीं शताब्दी का मध्यभाग

1. कुमारसम्भवम्	कालिदास	17 (अन्यमत 8)
2. रघुवंशम्	19	कालिदास
3. बुद्धचरितम्	28	अश्वघोष
4. सौन्दरनन्द	18	अश्वघोष
5. किरातार्जुनीयम्	18	भारवि
6. शिशुपालवधम्	20	माघ
7. नैषधीयचरितम्	22	श्रीहर्ष
8. भट्टिकाव्य (रावणवधम्)	22	भट्टि
9. जानकीहरणम्	20 से 25 सर्ग (प्राप्त 10-15 सर्ग)	कुमारदास
10. हरविजयम्	50 सर्ग	रत्नाकर (सबसे बड़ा महाकाव्य)
11. धर्मशर्माभ्युदय	21 सर्ग	हरिश्चन्द्र
12. राघवपाण्डवीयम्	13 सर्ग (माधवभट्ट)	कविराज

कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ

रचना	लेखक
1. जाम्बवतीविजयम् (पातालविजयम्)	पाणिनि
2. स्वर्गारोहणम्	कात्यायन (वररुचि)
3. महानन्दकाव्य	पतञ्जलि
4. प्रयागप्रशस्ति	हरिषेण
5. सेतुबन्ध	प्रवरसेन
6. हयग्रीववध	भर्तृमेण्ठ
7. गउडवहो	वाक्पति
8. रामचरित	अभिनन्द

9. **नवसाहसाङ्कचरित** — पद्मगुप्त
10. **पारिजातहरणम्** — कविकर्णपूर
11. **नरनारायणानन्द** — वस्तुपाल
12. **रघुनाथचरित** — वामनभट्टबाण
13. **सेतुकाव्य** — मातृगुप्त
14. **कादम्बरीसार** — अभिनन्द (काश्मीरी कवि)
15. **रामायणमञ्जरी** — क्षेमेन्द्र (काश्मीरी)
16. **भारतमञ्जरी** — क्षेमेन्द्र (काश्मीरी कवि)
17. **विक्रमाङ्कदेवचरित** — बिल्हण (काश्मीरी)
18. **श्रीकण्ठचरितम्** — मंखक (काश्मीरी)
19. **राजतरङ्गिणी** — कल्हण (काश्मीरी)
20. **जातकमाला** — आर्यशूर (बौद्ध कवि)
21. **गुरुगोविन्दसिंह महाकाव्यम्** — डॉ. सत्यव्रतशास्त्री
22. **सीताचरितम्** — डॉ. रेवाप्रसाद द्विवेदी
23. **जानकीजीवनम्** — डॉ. अभिराज राजेन्द्र मिश्र

संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख नाट्यग्रन्थ

ग्रन्थ	अङ्क	लेखक
1. **प्रतिज्ञायौगन्धरायण**	4	भास
2. **स्वप्नवासवदत्तम्**	6	भास
3. **ऊरुभङ्गम्**	एकाङ्की	भास
4. **दूतवाक्यम्**	एकाङ्की	भास
5. **पञ्चरात्रम्**	3	भास
6. **बालचरितम्**	5	भास
7. **दूतघटोत्कचम्**	एकाङ्की	भास
8. **कर्णभारम्**	एकाङ्की	भास
9. **मध्यमव्यायोगः**	एकाङ्की	भास
10. **प्रतिमानाटकम्**	7	भास
11. **अभिषेकनाटकम्**	6	भास
12. **अविमारकम्**	6	भास
13. **चारुदत्तम्**	4	भास
14. **मृच्छकटिकम्** (प्रकरण)	10	शूद्रक (शिमुक)
15. **मालविकाग्निमित्रम्**	5	कालिदास
16. **विक्रमोर्वशीयम्** (त्रोटक)	5	कालिदास
17. **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**	7	कालिदास
18. **मुद्राराक्षसम्**	7	विशाखदत्त
19. **प्रियदर्शिका** (नाटिका)	4	हर्ष (हर्षवर्धन)
20. **रत्नावली** (नाटिका)	4	हर्ष (हर्षवर्धन)
21. **नागानन्द**	5	हर्ष (हर्षवर्धन)
22. **वेणीसंहारम्**	6	भट्टनारायण
23. **मालतीमाधवम्** (प्रकरण)	10	भवभूति
24. **महावीरचरितम्**	7	भवभूति
25. **उत्तररामचरितम्**	7	भवभूति
26. **शारिपुत्रप्रकरण्** (प्रकरण)	9	अश्वघोष
27. **अनर्घराघवम्**	7	मुरारि
28. **बालरामायणम्** (महानाटक)	10	राजशेखर
29. **बालभारत** (प्रचण्डपाण्डव)	2	राजशेखर
30. **विद्धशालभञ्जिका** (नाटिका)	4	राजशेखर
31. **कर्पूरमञ्जरी** (सट्टक)	4	राजशेखर
32. **कुन्दमाला**	6	दिङ्नाग
33. **प्रबोधचन्द्रोदय**	6	कृष्णमिश्र
34. **प्रसन्नराघवम्**	7	जयदेव

कुछ अन्य नाट्यग्रन्थ

नाट्यग्रन्थ	लेखक
1. **आश्चर्यचूडामणि**	शक्तिभद्र
2. **रामाभ्युदय**	यशोवर्मा
3. **महानाटक**	हनुमान्
4. **हनुमन्नाटक**	दामोदर मिश्र
5. **रुक्मिणीहरणम्**	वत्सराज
6. **त्रिपुरदाह**	वत्सराज
7. **समुद्रमन्थन**	वत्सराज
8. **सौगन्धिकाहरणम्**	विश्वनाथ
9. **सामवतम्**	अम्बिकादत्तव्यास
10. **दूताङ्गद (छायानाटक)**	सुभट
11. **सुभद्रापरिणय (छायानाटक)**	व्यासरामदेव
12. **पार्वतीपरिणय**	बाणभट्ट

संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख गद्यकाव्य

गद्यरचना	लेखक
1. **दशकुमारचरितम्**	दण्डी
2. **अवन्तिसुन्दरीकथा**	दण्डी
3. **वासवदत्ता** (कथा)	सुबन्धु
4. **कादम्बरी** (कथा)	बाणभट्ट
5. **हर्षचरितम्** (आख्यायिका)	बाणभट्ट
6. **मुकुटताडितक**	बाणभट्ट

7. **मन्दारमञ्जरी**	विश्वेश्वर पाण्डेय
8. **शिवराजविजयम्** (**ऐतिहासिक उपन्यास**)	अम्बिकादत्तव्यास
9. **प्रबन्धमञ्जरी**	हृषीकेश भट्टाचार्य
10. **कथापञ्चकम्**	पण्डिता क्षमाराव
11. **ग्रामज्योतिः**	पण्डिता क्षमाराव
12. **कथामुक्तावलिः**	पण्डिता क्षमाराव
13. **कौमुदीकथाकल्लोलिनी**	डॉ. रामशरणत्रिपाठी
14. **तिलकमञ्जरी**	धनपाल
15. **गद्यचिन्तामणि**	वादीभसिंह
16. **वेमभूपालचरितम्**	वामनभट्ट बाण
17. **द्वासुपर्णा**	डॉ. रामजी उपाध्याय
18. **गद्यरामायणम्**	वरददेशिक
19. **गाँधीचरितम्**	चारुदेवशास्त्री
20. **रामचरितम्**	देवविजयगणी

संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख गीतिकाव्य

गीतिकाव्यम्	लेखक
1. **ऋतुसंहारम्**	कालिदास
2. **मेघदूतम्**	कालिदास
3. **नीतिशतकम्**	भर्तृहरि
4. **शृङ्गारशतकम्**	भर्तृहरि
5. **वैराग्यशतकम्**	भर्तृहरि
6. **अमरुशतकम्**	अमरुक
7. **गीतगोविन्दम्**	जयदेव
8. **गङ्गालहरी/पीयूषलहरी**	पण्डितराज जगन्नाथ
9. **अमृतलहरी**	पण्डितराज जगन्नाथ
10. **सुधालहरी**	पण्डितराज जगन्नाथ
11. **लक्ष्मीलहरी**	पण्डितराज जगन्नाथ
12. **करुणालहरी**	पण्डितराज जगन्नाथ
13. **आसफविलास**	पण्डितराज जगन्नाथ
14. **जगदाभरणम्**	पण्डितराज जगन्नाथ
15. **प्राणाभरणम्**	पण्डितराज जगन्नाथ
16. **यमुनावर्णनम्**	पण्डितराज जगन्नाथ
17. **भामिनीविलास** (गीतिकाव्य)	पण्डितराज जगन्नाथ
18. **गाथासप्तशती**	हाल
19. **चौरपञ्चाशिका**	बिल्हण
20. **आर्यासप्तशती**	गोवर्धनाचार्य
21. **चाणक्यशतकम्**	चाणक्य
22. **घटकर्परकाव्यम्**	घटकर्पर
23. **नीतिसार**	घटकर्पर
24. **चण्डीशतकम्**	बाणभट्ट
25. **सूर्यशतकम्**	मयूरभट्ट
26. **भल्लटशतकम्**	भल्लट
27. **वक्रोक्तिपञ्चाशिका**	रत्नाकर
28. **देवीशतकम्**	आनन्दवर्धन
29. **कुट्टिनीमतम्**	दामोदरगुप्त
30. **बल्लालशतकम्**	बल्लाल
31. **चारुचर्या**	क्षेमेन्द्र
32. **सेव्यसेवकोपदेश**	क्षेमेन्द्र
33. **समयमातृका**	क्षेमेन्द्र
34. **कथाविलास**	क्षेमेन्द्र
35. **दर्पदलन**	क्षेमेन्द्र
36. **पवनदूत**	धोयी
37. **नेमिदूतम्**	विक्रमकवि
38. **शुकसन्देश**	लक्ष्मीदास
39. **भृङ्गसन्देश**	वासुदेव
40. **हंसदूतम्**	रूपगोस्वामी
41. **चन्द्रदूतम्**	विमलकीर्ति

संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख स्तोत्रकाव्यम्

1. **शिवताण्डवस्तोत्रम्**	रावण
2. **सौन्दर्यलहरी**	शङ्कराचार्य
3. **चर्पटपञ्जरिकास्तोत्रम्**	शङ्कराचार्य
4. **श्रीकृष्णाष्टकम्**	शङ्कराचार्य
5. **आनन्दलहरी**	शङ्कराचार्य
6. **शिवमहिम्नस्तोत्रम्**	पुष्पदन्त
7. **आलबन्दारस्तोत्रम्**	यामुनाचार्य (आलबन्दार)
8. **गङ्गास्तव**	जयदेव
9. **कृष्णकर्णामृतम्**	बिल्वमङ्गल (कृष्णालीलाशुक)
10. **वरदराजस्तव**	अप्पयदीक्षित
11. **नारायणीयम्**	नारायणभट्ट
12. **आनन्दमन्दाकिनी**	मधुसूदन सरस्वती
13. **गन्धर्वप्रार्थनाष्टकम्**	रूपगोस्वामी

सुभाषितग्रन्थाः

सुभाषितग्रन्थाः	ग्रन्थकारः
1. **कवीन्द्रवचनसमुच्चयः**	विद्याकरपण्डितः
2. **सदुक्तिकर्णामृतम्** (सूक्तिकर्णामृतम्)	श्रीधरदास
3. **सूक्तिमुक्तावली**	सिद्धचन्द्रमणि

(सुभाषितमुक्तावली)

4. **सूक्तिरत्नाकरः**	सिद्धचन्द्रमणि
5. **सुभाषित सुधानिधि**	सायण
6. **शार्ङ्गधरपद्धति**	शार्ङ्गधर
7. **सुभाषितरत्नभाण्डागार**	शिवदत्त एवं नारायणराम आचार्य
8. **सूक्तिमुक्तावली**	डॉ. नरेन्द्रदेव शास्त्री
9. **संस्कृतसूक्तिरत्नाकर**	डॉ. रामजी उपाध्याय

ऐतिहासिक काव्य

ऐतिहासिक काव्य	लेखक
1. **बुद्धचरितम्**	अश्वघोष
2. **हर्षचरितम्**	बाणभट्ट
3. **गउडवहो** (गौडवधः)	वाक्पतिराज
4. **नवसाहसाङ्कचरितम्**	पद्मगुप्त (परिमल)
5. **विक्रमाङ्कदेवचरितम्**	बिल्हण
6. **राजतरङ्गिणी**	महाकवि कल्हण
7. **सोमपालविजयम्**	जल्हण
8. **प्रबन्धकोष**	राजशेखर
9. **वेमभूपालचरितम्**	वामनभट्ट बाण

कथासाहित्यम्

कथाग्रन्थः	लेखकः
1. **पञ्चतन्त्रम्**	विष्णुशर्मा
2. **हितोपदेश**	नारायणपण्डित
3. **बृहत्कथा**	गुणाढ्य
4. **बृहत्कथाश्लोकसंग्रह**	बुधस्वामी
5. **बृहत्कथामञ्जरी**	क्षेमेन्द्र
6. **कथासरित्सागर**	सोमदेव
7. **वेतालपञ्चविंशतिका**	शिवदास एवं जम्भलदत्त
8. **सिंहासनद्वात्रिंशिका**	लेखक का नाम अज्ञात
द्वात्रिंशत्पुत्तलिका	
विक्रमचरित	
विक्रमार्कचरित	
9. **शुकसप्ततिः**	अज्ञात
10. **पुरुषपरीक्षा**	विद्यापति
11. **भोजप्रबन्ध**	बल्लालसेन
12. **जातकमाला**	आर्यशूर
13. **प्रबन्धकोष**	राजशेखर
14. **उदयसुन्दरीकथा**	सोड्ढल

चम्पूकाव्य

चम्पूकाव्य	लेखक
1. **नलचम्पू** (दमयन्तीकथा)	त्रिविक्रमभट्ट
2. **मदालसाचम्पू**	त्रिविक्रमभट्ट
3. **जीवन्धरचम्पू**	हरिश्चन्द्र
4. **यशस्तिलकचम्पू**	सोमदेवसूरि
5. **रामायणचम्पू**	राजाभोज (भोजराज)
6. **भागवतचम्पू**	अभिनवकालिदास
7. **भारतचम्पू**	अनन्तभट्ट
8. **वरदाम्बिकापरिणयचम्पू**	रानी तिरुमलाम्बा
9. **भरतेश्वराभ्युदयचम्पू**	पं. आशाधरसूरि
10. **रुक्मिणीपरिणयचम्पू**	अमलाचार्य (अम्मल)
11. **आनन्दवृन्दावनचम्पू**	कवि कर्णपूर

संस्कृत पत्र-पत्रिकायें

1. साप्ताहिक-पत्रिका

- **भवितव्यम्** (नागपुर)
- **संस्कृतम्** (अयोध्या)
- **गाण्डीवम्** (वाराणसी)
- **पण्डितपत्रिका** (काशी)

2. पाक्षिक-पत्रिका

- **भारतवाणी** (पूना)
- **शारदा** (पूना)
- **संस्कृतसाकेत** (अयोध्या)

3. मासिक-पत्रिका

- **संस्कृतमञ्जूषा** (कलकत्ता)
- **सूर्योदय** (काशी)
- **आनन्दकल्पतरु** (कोयम्बटूर)
- **गुरुकुलपत्रिका** (गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार)
- **जयतु संस्कृतम्** (काठमाण्डू)
- **दिव्यज्योतिः** (शिमला)
- **बालसंस्कृतम्** (मुम्बई)
- **भारती** (जयपुर)
- **भारतीयविद्या** (मुम्बई)

- **मालवमयूर** (मन्दसौर)
- **संस्कृतरत्नाकर** (दिल्ली)
- **सरस्वतीसौरभम्** (बड़ौदा)
- **संस्कृतसञ्जीवनम्** (पटना)
- **साहित्यवाटिका** (दिल्ली)
- **भारतोदयः** (हरिद्वार)
- **सम्भाषणसन्देशः** (बङ्गलोर)
- **चन्दमामा** (बङ्गलोर)

4. त्रैमासिक-पत्रिका

- **सङ्गमनी** (प्रयाग)
- **सरस्वतीसुषमा** (सम्पूर्णानन्द सं. वि. वि. वाराणसी)
- **सागरिका** (सागर वि. वि. सागर म.प्र.)
- **विश्वसंस्कृतम्** (होशियारपुर)
- **उशती** (गङ्गानाथ झा, प्रयाग)
- **महाराजसंस्कृतपत्रिका** (मैसूर)

5. षाण्मासिक-पत्रिका

- **पुराणम्** (वाराणसी)
- **संस्कृत प्रतिभा** (नई दिल्ली)
- **विद्वत्कला** (ज्वालापुर, हरिद्वार)

6. वार्षिक-पत्रिका

- **अमृतवाणी** (बङ्गलोर)
- **संस्कृतगङ्गा** (प्रयाग)

संस्कृत कवियों के माता-पिता

कवि	पिता माता	अन्य
1. बाणभट्ट	चित्रभानु–राजदेवी	पितामह-**अर्थपति**
2. भवभूति	नीलकण्ठ–जतुकर्णी (जातुकर्णी)	(पितामह–**भट्टगोपाल**)
3. भारवि	श्रीधर (नारायणस्वामी)-सुशीला	
4. माघ	दत्तक (सर्वाश्रय)-ब्राह्मी	(पितामह–**सुप्रभदेव**)
5. श्रीहर्ष	श्रीहीर–मामल्लदेवी	
6. विशाखदत्त	पृथु (भास्करदत्त)	(पितामह–**वटेश्वरदत्त**)
7. हर्षवर्धन	प्रभाकरवर्धन–यशोवती	(बड़े भाई–**राज्यवर्धन,** बहन – **राज्यश्री**)
8. राजशेखर	दर्दुक (दुहिक) शीलवती	**अकालजलद** (पितामह)
9. अम्बिकादत्तव्यास	दुर्गादत्त	पितामह - श्रीराजाराम
10. जयदेव (गीतगोविन्दकार)	भोजदेव–रामादेवी (राधादेवी)	
11. पण्डितराजजगन्नाथ	पेरुभट्ट–लक्ष्मीदेवी	
12. कल्हण	चम्पक	
13. त्रिविक्रमभट्ट	देवादित्य (नेमादित्य)	पितामह-**श्रीधर**
14. पाणिनि	पणिन्–दाक्षी	
15. कात्यायन (वररुचि)	–	पितामह-**याज्ञवल्क्य**
16. मम्मट	जैयट	भाई-**कैय्यट (उव्वट)**
17. विश्वनाथ	चन्द्रशेखर	
18. भर्तृहरि	गन्धर्वसेन	
19. अश्वघोष	सुवर्णाक्षी (माता)	
20. पतञ्जलि	गोणिका (माता)	
21. कालिदास	शारदानन्द (श्वसुर, विद्योत्तमा के पिता)	
22. मुरारि	श्रीवर्धमानभट्ट/तन्तुमती	
23. भट्टोजिदीक्षित	लक्ष्मीधर	

24. वरदराज	दुर्गातनय	
25. रत्नाकर	अमृतभानु	
26. जयदेव (प्रसन्नराघवकार)	महादेव–सुमित्रा	
27. विश्वेश्वर पाण्डेय	लक्ष्मीधर पाण्डेय	
28. पण्डिता क्षमाराव	श्री शङ्करपाण्डुरङ्ग	
29. दण्डी (भारवि के प्रपौत्र)	वीरदत्त–गौरी	प्रपितामह–**भारवि**
30. वेदव्यास	सत्यवती	

कवियों की उपाधियाँ/उपनाम

क्र.सं.	कवि	उपाधि/उपनाम/कविविषयक कथन
1.	**वाल्मीकि**	आदिकवि
2.	**कृष्णद्वैपायन**	व्यास या वेदव्यास
3.	**कालिदास**	(i) दीपशिखा (ii) रघुकार (iii) कविकुलगुरु (iv) कविताकामिनी विलास (v) उपमासम्राट्
4.	**अम्बिकादत्तव्यास**	(i) घटिकाशतक (ii) सुकवि (iii) शतावधान (iv) अभिनवबाण (v) भारतरत्न
5.	**बाणभट्ट**	(i) पञ्चबाणस्तु बाणः (ii) बाणस्तु पञ्चाननः (iii) कविताकानन केसरी (iv) वश्यवाणीचक्रवर्ती (v) गद्यसम्राट् (vi) वाणी बाणो बभूव (vii) कविताकामिनीकौतुक (viii) तुरङ्गबाण (ix) गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति (x) बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम् (xi) बाणःकवीनामिह चक्रवर्ती (xii) महानयं भुजङ्गः (xiii) सर्वेश्वर
6.	**जयदेव (प्रसन्नराघव एवं 'चन्द्रालोक' के लेखक)**	(i) पीयूषवर्ष (ii) कवीन्द्र (iii) वाणी का विलास (iv) असमरसनिष्यन्दमधुर
7.	**मल्लिनाथ**	(i) कोलाचल (ii) महामहोपाध्याय
8.	**त्रिविक्रमभट्ट**	यमुनात्रिविक्रम
9.	**विश्वनाथ**	(i) सन्धिविग्राहक, (ii) अष्टादशभाषा वारविलासिनी (iii) कविराज (iv) कवि सूक्ति रत्नाकर
10.	**जगन्नाथ**	पण्डितराज
11.	**भारवि**	(i) आतपत्र (ii) दामोदर (उपनाम) (iii) चक्रकवि
12.	**माघ**	(i) घण्टामाघ (ii) सर्वाश्रय
13.	**भवभूति**	(i) श्रीकण्ठ (भट्टश्रीकण्ठ) (ii) पदवाक्यप्रमाणज्ञ (iii) श्रीकण्ठपदलाञ्छनः (iv) उम्बेक/उदम्बर (v) वश्यवाक् (vi) शिखरिणीकवि (vii) परिणतप्रज्ञ
14.	**भट्टनारायण**	(i) भट्ट (ii) मृगराज (iii) कवि मृगेन्द्र/कवीन्द्र
15.	**मम्मट**	(i) वाग्देवतावतार (ii) राजानक (iii) ध्वनिप्रस्थापनपरमाचार्य
16.	**आनन्दवर्धन**	(i) राजानक (ii) ध्वनिप्रतिष्ठापकाचार्य (iii) सहृदय शिरोमणि
17.	**कुन्तक**	'राजानक' (यह उपाधि काश्मीरी विद्वानों को सम्मानार्थ मिलती थी)
18.	**महिमभट्ट**	'राजानक'
19.	**रुय्यक**	'राजानक'
20.	**क्षेमेन्द्र**	(i) जनकवि (ii) सकलमनीषिशिष्य
21.	**भास**	(i) कविताकामिनी हास (ii) भासो हासः (iii) अग्निमित्र (ज्वलनमित्र)

क्र.सं.	कवि	उपाधि/उपनाम/कविविषयक कथन
22.	**अश्वघोष**	(i) आर्यभदन्त (ii) बौद्धभिक्षु
23.	**मुरारि**	(i) बालवाल्मीकि (ii) महाकवि (iii) इन्दु
24.	**बिल्हण**	विद्यापति
25.	**हेमचन्द्र**	कलिकालसर्वज्ञ
26.	**अभिनवगुप्त**	(i) लोचनकार (ii) परम- माहेश्वराचार्य
27.	**कणाद**	(i) उलूक (ii) कणभुक्
28.	**कात्यायन**	वररुचि
29.	**गौतम**	अक्षपाद
30.	**दयानन्द सरस्वती**	स्वामी
31.	**भट्टि**	
32.	**मातृचेट**	बौद्धकवि
33.	**यामुनाचार्य**	आलवन्दार
34.	**राजशेखर**	(i) यायावर (ii) कविराज (iii) बालकवि
35.	**वाचस्पतिमिश्र**	(i) सर्वतन्त्रस्वतन्त्र (ii) तात्पर्याचार्य
36.	**वात्स्यायन**	मल्लनाग
37.	**विद्यापति**	(i) षट्तर्कषण्मुख (ii) वादिराज सूरि (iii) मैथिलकोकिल
38.	**विद्यारण्यमुनि**	माधवाचार्य
39.	**क्षमाराव**	पण्डिता
40.	**पतञ्जलि**	शेषनाग, फणिभृत, नागनाथ, भगवान्, तीर्थदर्शी
41.	**प्रभाकर मिश्र**	(i) गौडमीमांसक (ii) गुरु
42.	**माधवभट्ट**	(i) कविराज (ii) सूरि (iii) पण्डित
43.	**हर्षवर्धन**	(i) राजा (ii) कवीन्द्र (iii) गीर्हर्ष (iv) कविता का हर्ष (v) अनङ्ग
44.	**जयदेव (गीतगोविन्दकार)**	कविराजराज
45.	**श्रीहर्ष**	कविताकामिनी का हर्ष
46.	**आनन्दराय मखी**	वेदकवि
47.	**रत्नाकर**	(i) कांस्यताल, (ii) वागीश्वर
48.	**शेषाचलपति**	आन्ध्रपाणिनि
49.	**आर्यभट्ट**	अश्मकाचार्य
50.	**मङ्खु**	कर्णिकार
51.	**शाकटायन**	आदिशाब्दिक
52.	**पद्मगुप्त**	परिमल कालिदास
53.	**द्वादशाविद्यापति**	वदिराज सूरि
54.	**प्रसन्नराघवकार जयदेव**	पीयूषवर्ष
55.	**दिंगनागाचार्य**	तर्कपुंगव
56.	**मुकुलभट्ट**	(i) साहित्यमुरारि (ii) पदवाक्य-प्रमाण-पारावारपारीण
57.	**ब्रह्मगुप्त**	गणकचक्रचूडामणि
58.	**श्रीनिवासदीक्षित**	(i) रत्नखेट (ii) षड्भाषाचतुर

क्र.सं.	कवि	उपाधि/उपनाम/कविविषयक कथन
59.	**सोमदेव सूरि**	(i) कविकुलराजकुञ्जर (ii) तार्किक चक्रवर्ती
60.	**धनपाल**	सरस्वती
61.	**वस्तुपाल**	लघुभोजराज
62.	**शान्तिसूरि**	वादिवेताल
63.	**हृषिकेशभट्टाचार्य**	अभिनवबाण

कवियों का निवासस्थान (जन्मस्थान)

कवि	निवासस्थान (जन्मस्थान)
1. कालिदास	उज्जयिनी (काश्मीर/बंगाल)
2. बाणभट्ट	'प्रीतिकूट' (शोणनदी के पश्चिमी तट पर आधुनिक–'शाहाबाद')
3. भारवि	अचलपुर (दाक्षिणात्य/धारानगरी)
4. अम्बिकादत्त व्यास	जयपुर राजस्थान, ग्राम-रावतजी का धुला (अध्ययन–काशी में)
5. कल्हण	काश्मीर
6. पाणिनि	शालातुर ग्राम (अटक)
7. पतञ्जलि	गोनर्द (गोण्डा)
8. दण्डी	दक्षिण में विदर्भ (महाराष्ट्र)
9. भवभूति	पद्मपुर (दक्षिणभारत)
10. अश्वघोष	साकेत (अयोध्या)
11. माघ	श्री भिन्नमाल 'भीनमाल' राजस्थान (आबूपर्वत तथा लूनानदी के बीच स्थित)
12. श्रीहर्ष	कन्नौज
13. भट्टि	बल्लभी
14. कुमारदास	श्रीलङ्का
15. शूद्रक	दाक्षिणात्य
16. हर्ष	स्थाणीश्वर (थानेश्वर)
17. भट्टनारायण	कान्यकुब्ज (कन्नौज)
18. राजशेखर	महाराष्ट्र (विदर्भ)
19. जयदेव (प्रसन्नराघवकार)	विदर्भप्रान्त-कुण्डिननगर
20. सुबन्धु	काश्मीर
21. पण्डितराज जगन्नाथ	आन्ध्रप्रदेश (तैलंग)
22. कात्यायन	दाक्षिणात्य
23. आनन्दवर्धन	काश्मीर
24. मम्मट	काश्मीर
25. अभिनवगुप्त	काश्मीर
26. भर्तृहरि	मालवा
27. क्षेमेन्द्र	काश्मीर
28. महिमभट्ट	काश्मीर
29. वाचस्पतिमिश्र	मिथिला (बिहार)
30. विश्वनाथ कविराज	उत्कल (उड़ीसा)

कवि	निवासस्थान (जन्मस्थान)
31. त्रिविक्रमभट्ट	मान्यखेट ग्राम (हैदराबाद)
32. रत्नाकर	काश्मीर
33. विश्वेश्वर पाण्डेय	अल्मोडा जिला ग्राम–पटिया
34. अमरुक	काश्मीर
35. गीतगोविन्दकार जयदेव	बंगाल के केन्दुबिल्व नामक ग्राम।
36. सोमदेव (कथासरित्सागर)	काश्मीर

संस्कृत के प्रमुख कवियों, नायकों, तथा ऋषियों का गोत्र एवं वंश

कवि/राजा	गोत्र/वंश/जाति	कवि/राजा	गोत्र/वंश/जाति
1. बाणभट्ट	वत्स/वात्स्यायन	**12. दुष्यन्त**	पुरुवंशी (चन्द्रवंशी)
2. भवभूति	काश्यप	**13. राम**	सूर्यवंश/इक्ष्वाकुवंश/रघुवंश
3. भारवि	कुशिक	**14. दुर्योधन**	कुरुवंशी/चन्द्रवंशी
4. कालिदास	ब्राह्मण जाति	**15. शिवाजी**	मराठा वंश
5. अम्बिकादत्त व्यास	पराशरगोत्रीय यजुर्वेदी ब्राह्मण त्रिप्रवर 'भीडा' वंश	**16. कुतुबुद्दीन**	गुलामवंश
6. विश्वेश्वर पाण्डेय	भारद्वाजगोत्र	**17. औरङ्गजेब**	मुगलवंश
7. मुरारि	मौद्गल्यगोत्र	**18. सिंहविष्णु**	पल्लववंश
8. भट्टनारायण	सारस्वत ब्राह्मण	**19. नरसिंहवर्मन्**	पल्लववंश
9. राजशेखर	यायावर क्षत्रियवंश	**20. विष्णुवर्धन**	चालुक्यवंश
10. पण्डितराजजगन्नाथ	तैलङ्गब्राह्मण	**21. दुर्विनीत**	गङ्गवंश
11. विश्वामित्र	कौशिक	**22. यशोवर्मा**	चन्देलवंश

कवियों का सम्प्रदाय

कवि	सम्प्रदाय	कवि	सम्प्रदाय
1. कालिदास	शैव	**8. कल्हण**	शैव
2. भवभूति	शैव	**9. अभिनवगुप्त**	शैव
3. भारवि	शैव	**10. भट्टनारायण**	वैष्णव (साथ में शिवभक्त भी)
4. माघ	वैष्णव	**11. रूपगोस्वामी**	वैष्णव
5. भर्तृहरि	शैव, ब्रह्म के उपासक	**12. विश्वनाथकविराज**	वैष्णव
6. बाणभट्ट	शैव	**13. राजशेखर**	शैव
7. अम्बिकादत्तव्यास	वैष्णव (शैव)	**14. जयदेव (गीतगोविन्दकार)**	वैष्णव

संस्कृत कवियों का राज्याश्रय

राजकवि	राजा
1. कालिदास	विक्रमादित्य
2. बाणभट्ट	सम्राट् हर्षवर्धन
3. भारवि	पुलकेशिन द्वितीय के अनुज विष्णुवर्धन

राजकवि	राजा
4. भवभूति	यशोवर्मा
5. दण्डी	नरसिंह वर्मन प्रथम, पल्लवनरेश सिंहविष्णु
6. 'परिमलकालिदास' या पद्मगुप्त	राजा मुञ्ज और सिन्धुराज (नवसाहसाङ्क)
7. रविकीर्ति	पुलकेशिन द्वितीय
8. उद्भट	काश्मीरनरेश जयादित्य
9. वामन	काश्मीर नरेश जयादित्य के मन्त्री
10. आनन्दवर्धन	काश्मीर नरेश अवन्तिवर्मा
11. राजशेखर	कन्नौज के शासक महेन्द्रपाल और महीपाल
12. धनञ्जय	मालव के परमारवंशी राजा मुञ्ज (वाक्पतिराज)
13. क्षेमेन्द्र	कश्मीर नरेश अनन्तराज
14. नारायण पण्डित	धवलचन्द्र (बंगाल के कोई राजा)
15. श्रीहर्ष (नैषधकार)	कन्नौज नरेश जयचन्द्र
16. अश्वघोष	कनिष्क
17. वाक्पतिराज	यशोवर्मा
18. भट्टि	वल्लभी के राजा श्रीधरसेन
19. रत्नाकर	राजा चिप्पट जयापीड
20. कविराज (माधवभट्ट)	जयन्तपुरी के कदम्बराजा कामदेव
21. कृष्णमिश्र	चन्देलराजा कीर्तिवर्मा
22. जयदेव (गीतगोविन्दकार)	बंगाल के राजा लक्ष्मणसेन
23. पण्डितराजजगन्नाथ	शाहजहाँ
24. विष्णुशर्मा (पञ्चतन्त्र)	महिलारोप्य के राजा अमरसिंह
25. नारायण पण्डित (हितोपदेश)	बंगाल के राजा धवलचन्द्र
26. सोमदेव (कथा सरित्सागर)	काश्मीरी राजा अनन्त
27. हरिषेण	समुद्रगुप्त

कवियों के प्रिय रस

कवि	प्रिय रस	कवि	प्रिय रस
1. कालिदास	शृङ्गार रस	**5. बाणभट्ट**	शृङ्गाररस
2. भवभूति	करुण रस	**6. श्रीहर्ष**	शृङ्गाररस
3. भारवि	वीररस, शृङ्गाररस	**7. भास**	शृङ्गार और वीररस
4. माघ	वीररस	**8. अमरुक**	शृङ्गाररस
		9. जयदेव	शृङ्गाररस

कवियों के प्रिय छन्द

कवि	प्रिय छन्द	अतिप्रिय छन्दों की संख्या
1. वाल्मीकि	अनुष्टुप् (श्लोक)	–
2. व्यास	अनुष्टुप्	–
3. कालिदास	आर्या, अनुष्टुप्, उपजाति, मन्दाक्रान्ता	06
4. अश्वघोष	अनुष्टुप्, उपजाति	–
5. भारवि	वंशस्थ, उपजाति	12
6. माघ	वंशस्थ, अनुष्टुप्	16
7. श्रीहर्ष	उपजाति छन्द	19
8. भट्टि	अनुष्टुप्, उपजाति	–
9. भास	अनुष्टुप्, वसन्ततिलका	कुल 24 छन्दों का प्रयोग
10. विशाखदत्त	शार्दूलविक्रीडित, शिखरिणी, स्रग्धरा	–
11. हर्षवर्धन	शार्दूलविक्रीडित, स्रग्धरा, अनुष्टुप्, आर्या	–
12. भट्टनारायण	अनुष्टुप्, वसन्ततिलका, शार्दूलविक्रीडित	–
13. भवभूति	अनुष्टुप्, शिखरिणी	–
14. राजशेखर	शार्दूलविक्रीडितम्	–
15. कृष्णमिश्र	वसन्ततिलका, शार्दूलविक्रीडितम्	–
16. जयदेव	वसन्ततिलका	–
17. अमरुक	शार्दूलविक्रीडितम्	–
18. भर्तृहरि	शार्दूलविक्रीडितम्	

कवियों के प्रिय अलङ्कार

कवि	प्रिय अलङ्कार
1. कालिदास	उपमा
2. भारवि	चित्रालङ्कार, अर्थालङ्कार
3. माघ	उपमा, उत्प्रेक्षा, अर्थान्तरन्यास, चित्रालङ्कार
4. श्रीहर्ष	उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति, श्लेष, अनुप्रास, यमक
5. अश्वघोष	उपमा, रूपक, अनुप्रास
6. भवभूति	उपमा, उत्प्रेक्षा, काव्यलिङ्ग, रूपक
7. रत्नाकर	उत्प्रेक्षा अलङ्कार
8. विशाखदत्त	उपमा, रूपक, श्लेष
9. हर्षवर्धन	उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक
10. भट्टनारायण	उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा
11. सुबन्धु	श्लेष, विरोधाभास, परिसंख्या, उत्प्रेक्षा।
12. बाणभट्ट	विरोधाभास, श्लेष, परिसंख्या, उत्प्रेक्षा, उपमा, रूपक
13. अम्बिकादत्तव्यास	विरोधाभास

कवियों की प्रिय शैली रीति एवं गुण

कवि	रीति एवं गुण
1. भारवि	रीतिवादी या अलङ्कृत काव्यशैली के जन्मदाता
2. माघ	प्रसाद, माधुर्य एवं ओजगुणों का समन्वय
3. श्रीहर्ष	वैदर्भी एवं गौडीरीति, प्रसाद एवं ओजगुण
4. कालिदास	वैदर्भी, प्रसादगुण
5. बाणभट्ट	पाञ्चाली, ओज, माधुर्य, प्रसाद
6. दण्डी	वैदर्भीरीति, प्रसाद और माधुर्यगुण।
7. अम्बिकादत्तव्यास	वैदर्भी और गौडी रीति का समन्वय।
8. सुबन्धु	गौडीरीति, ओजगुण (श्लेष अलंकार का प्रयोग)
9. भवभूति	गौडी एवं वैदर्भी रीति (i) मालतीमाधवम् और महावीरचरितम् में–गौडी रीति, ओजगुण (ii) उत्तररामचरितम् में–गौडी एवं वैदर्भी रीति, प्रसाद गुण
10. शूद्रक	वैदर्भीरीति एवं प्रसादगुण (कहीं कहीं 'गौडी रीति' भी)
11. अश्वघोष	वैदर्भीरीति, प्रसादगुण
12. भास	वैदर्भी रीति, प्रसाद, माधुर्य
13. मुरारि	गौडीरीति–ओजगुण
14. भट्टि	व्याकरणमूलक काव्यशैली की एक नवीन विधा के जन्मदाता।
15. कुमारदास	वैदर्भीरीति, प्रसाद और माधुर्यगुण।
16. रत्नाकर	रीतिवादी कवि
17. विशाखदत्त	वैदर्भीरीति, प्रसाद और माधुर्यगुण
18. हर्षवर्धन	वैदर्भीरीति, प्रसाद और माधुर्य गुण
19. भट्टनारायण	गौडीरीति एवं ओजगुण
20. राजशेखर	गौडीरीति (यत्र तत्र पाञ्चाली भी)
21. दिङ्नाग (धीरनाग, वीरनाग)	वैदर्भीरीति, प्रसाद और माधुर्यगुण
22. पण्डिता क्षमाराव	वैदर्भीरीति, प्रसाद और माधुर्यगुण।
23. भर्तृहरि	वैदर्भीरीति, प्रसाद और माधुर्यगुण
24. अमरुक	वैदर्भीरीति, प्रसाद और माधुर्यगुण
25. विष्णुशर्मा (पञ्चतन्त्र)	वैदर्भीरीति, प्रसाद और माधुर्यगुण

संस्कृतकवियों की प्रसिद्धि का कारण

कवि	कविप्रसिद्धि
1. कालिदास	(i) उपमा (ii) वैदर्भीरीति
2. भारवि	(i) अर्थगौरव, (ii) अलङ्कृतकाव्यशैली के जनक
3. दण्डी	पदलालित्य
4. माघ	उपमा, अर्थगौरव, पदलालित्य तीनों के लिए
5. भवभूति	करुणरस के प्रयोक्ता
6. अम्बिकादत्तव्यास	ऐतिहासिक उपन्यास के प्रणेता
7. बाणभट्ट	(i) अलङ्कार एवं समास बहुल रचना (ii) कादम्बरी में तीन जन्मों की कथा (ii) पाञ्चाली रीति,
8. त्रिविक्रमभट्ट	(i) श्लेष अलङ्कार के प्रचुर प्रयोक्ता (ii) चम्पूकाव्य के आद्यप्रणेता
9. सुबन्धु	श्लेष प्रधानशैली के प्रयोक्ता

संस्कृत-कवयित्री

कवयित्री	ग्रन्थ	कालक्रम
1. विज्जिका	स्फुटपद्य	850 ई.
2. गङ्गादेवी	मथुराविजयम्	14वीं शताब्दी
3. अवन्ति सुन्दरी (राजशेखर की पत्नी)	देशीशब्दकोष	10वीं शताब्दी
4. तिरुमलाम्बा (राजा अच्युतराय की रानी)	वरदम्बिकापरिणयचम्पू	16वीं शताब्दी
5. रामभद्राम्बा	रघुनाथाभ्युदय	17वीं शताब्दी
6. पण्डिता क्षमाराव	कथामुक्तावली	1890-1954
7. पुष्पा दीक्षित	अष्टाध्यायी सहजबोध (व्याकरणग्रन्थ)	इक्कीसवीं शताब्दी
8. मधुरवाणी	रामकथा	1590 ई.
9. सुभद्रा	स्फुटपद्य	–
10. विकटनितम्बा	स्फुटपद्य	–
11. शीला भट्टारिका	स्फुटपद्य	–
12. देवकुमारिका	स्फुटपद्य	–

अन्य स्त्री लेखिकायें

राजम्मा, सुन्दरावली, ज्ञानसुन्दरी आदि।

संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख लेखकों का अनुमानित कालक्रम

लेखक	प्रमुख ग्रन्थ	अनुमानित काल
1. आचार्य लगध	**वेदाङ्गज्योतिष**	1400 ई.पू. से 800 ई.पू.
2. यास्क	**निरुक्त**	800 ई. पू.
3. आचार्य पिङ्गल	**छन्दःसूत्रम्**	800 ई.पू. से 700 ई.पू.
4. कपिल	**सांख्यसूत्र**	700 ई.पू.
5. जैमिनि	**मीमांसासूत्र**	600 ई.पू.
6. कणाद	**वैशेषिकसूत्र**	500 ई.पू.
7. चरक	**चरकसंहिता**	500 ई.पू.–200 ई.पू.
8. सुश्रुत	**सुश्रुतसंहिता**	500 ई.पू.
9. वाल्मीकि	**वाल्मीकीयरामायणम्**	500 ई.पू.
10. पाणिनि	**अष्टाध्यायी**	500 ई.पू.
11. महर्षिव्यास (कृष्णद्वैपायन)	**महाभारत एवं 18 पुराण**	400 ई.पू.
12. कौटिल्य (चाणक्य)	**अर्थशास्त्र**	400 ई.पू.
13. बादरायण	**ब्रह्मसूत्र**	300 ई.पू.
14. कात्यायन (वररुचि)	**अष्टाध्यायी पर वार्तिक**	300 ई.पू.
15. पतञ्जलि	**महाभाष्य, योगसूत्र**	185 ई.पू.

लेखक	प्रमुख ग्रन्थ	अनुमानित काल
16. भरतमुनि	नाट्यशास्त्रम्	100 ई.पू. से 300 ई.
17. भास	स्वप्नवासवदत्तम् आदि 13 नाटक	100 ई. पू. से 200 ई. के मध्य
18. मनु	मनुस्मृति	200 ई.पू. से 200 ई. के बीच
19. कालिदास	रघुवंशम्, अभिज्ञानशाकुन्तलम् आदि	ई.पू. प्रथम शताब्दी
20. अश्वघोष	बुद्धचरितम्, सौन्दरानन्द	प्रथम शताब्दी ई.
21. गुणाढ्य	बृहत्कथा	प्रथमशताब्दी ई.
22. शालिवाहन (हाल)	गाहा सतसई (गाथासप्तशती)	प्रथम या द्वितीय शताब्दी ई.
23. वात्स्यायन	न्यायसूत्रभाष्य	द्वितीयशताब्दी ई.
24. शर्ववर्मा	कातन्त्रव्याकरण	द्वितीयशताब्दी ई.
25. शबरस्वामी	शाबरभाष्य	द्वितीयशताब्दी ई.
26. विष्णुशर्मा	पञ्चतन्त्र	दूसरी शताब्दी से छठी शताब्दी के बीच
27. अमरसिंह	नामलिङ्गानुशासनम् (अमरकोष)	तीसरी शताब्दी का पूर्वार्द्ध
28. वात्स्यायन	कामसूत्रम्	तीसरी शताब्दी ई.
29. आर्यशूर	जातकमाला	तीसरी–चौथी शताब्दी ई.
30. शूद्रक	मृच्छकटिकम्	तीसरी–चौथी शताब्दी ई.
31. ईश्वरकृष्ण	सांख्यकारिका	चौथी शताब्दी ई.
32. विशाखदत्त	मुद्राराक्षसम्	पाँचवीं छठी शताब्दी ई.
33. कुमारदास	जानकीहरणम्	छठी शताब्दी ई.
34. भारवि	किरातार्जुनीयम्	छठी शताब्दी ई. (560 ई.–615 ई. के बीच)
35. दण्डी	दशकुमारचरितम्	छठी शताब्दी ई.
36. भर्तृहरि	वाक्यपदीयम्	छठी शताब्दी ई.
37. भट्टि	रावणवध/भट्टिकाव्य	500 ई. से 650 ई. के बीच
38. भामह	काव्यालङ्कार	छठी शताब्दी
39. माघ	शिशुपालवधम्	सातवीं शताब्दी ई. (675 ई.)
40. आदि शङ्कराचार्य	शाङ्करभाष्य, सौन्दर्यलहरी	सातवीं शताब्दी ई.
41. बाणभट्ट	कादम्बरी, हर्षचरितम्	सातवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध
42. मयूरभट्ट	सूर्यशतकम्	सातवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध
43. सुबन्धु	वासवदत्ता	सातवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध
44. हर्ष	प्रियदर्शिका, रत्नावली, नागानन्द	सातवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध
45. भवभूति	महावीरचरितम्, उत्तररामचरितम्	सातवीं शताब्दी के आसपास
46. अमरुकवि (अमरुक)	अमरुकशतकम्	सातवीं शताब्दी
47. वाक्पतिराज	गौडवहो	750 ई. के आसपास
48. भट्टनारायण	वेणीसंहारम्	सातवीं आठवीं शताब्दी
49. दामोदरभट्ट	कुट्टनीमतम्	आठवीं शताब्दी ई.
50. मुरारि	अनर्घराघवम्	आठवीं शताब्दी का उत्तरार्ध
51. वामन	काव्यालङ्कारसूत्र	आठवीं शताब्दी

लेखक	प्रमुख ग्रन्थ	अनुमानित काल
52. आनन्दवर्धन	**ध्वन्यालोक**	850 ई.
53. वाचस्पतिमिश्र	**भामतीटीका, तत्त्वकौमुदी (सांख्य)**	नवीं शताब्दी
54. दामोदरमिश्र	**हनुमन्नाटक**	नवी शताब्दी ई.
55. रत्नाकर	**हरविजयम्**	नवीं शताब्दी
56. राजशेखर	**काव्यमीमांसा**	नवीं शताब्दी का उत्तरार्ध
57. जयन्तभट्ट	**न्यायमञ्जरी**	दसवीं शताब्दी ई.
58. धनपाल	**तिलकमञ्जरी**	दसवीं शताब्दी
59. त्रिविक्रमभट्ट	**नलचम्पू, मदालसाचम्पू**	दसवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध
60. कुन्तक	**वक्रोक्तिजीवितम्**	ग्यारहवीं शताब्दी
61. महिमभट्ट	**व्यक्तिविवेक**	ग्यारहवीं शताब्दी
62. क्षेमेन्द्र	**औचित्यविचारचर्चा, रामायणमञ्जरी**	ग्यारहवीं शताब्दी
63. कृष्णमित्र	**प्रबोधचन्द्रोदय**	ग्यारहवीं शताब्दी
64. सोमदेव	**कथासरित्सागर**	ग्यारहवीं शताब्दी
65. रामानुज	**श्रीभाष्य**	ग्यारहवीं शताब्दी
66. बिल्हण	**विक्रमाङ्कदेवचरितम्**	ग्यारहवीं शताब्दी का उत्तरार्ध
67. भोज	**रामायणचम्पू**	ग्यारहवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध
68. केशवमिश्र	**तर्कभाषा**	बारहवीं शताब्दी ई.
69. भास्कराचार्य	**लीलावती, बीजगणित**	बारहवीं शताब्दी
70. मम्मट	**काव्यप्रकाश**	बारहवीं शताब्दी (ग्यारहवीं शताब्दी का उत्तरार्ध)
71. कल्हण	**राजतरङ्गिणी**	बारहवीं शताब्दी
72. मंखक	**श्रीकण्ठचरितम्**	बारहवीं शताब्दी
73. श्रीहर्ष	**नैषधीयचरितम्**	बारहवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध
74. गोवर्धनाचार्य	**आर्यासप्तशती**	बारहवीं शताब्दी
75. जयदेव	**गीतगोविन्दम्**	बारहवीं शताब्दी
76. विज्ञानभिक्षु	**सांख्यप्रवचनभाष्यम्**	तेरहवीं शताब्दी
77. गङ्गेशोपाध्याय	**तत्त्वचिन्तामणि**	तेरहवीं शताब्दी
78. मध्वाचार्य	**पूर्णप्रज्ञभाष्यम्**	तेरहवीं शताब्दी
79. शार्ङ्गधर	**शार्ङ्गधरसंहिता**	तेरहवीं शताब्दी
80. गङ्गादास	**छन्दोमञ्जरी**	तेरहवीं शताब्दी से पन्द्रहवीं शताब्दी के मध्य
81. विद्यापति	**पुरुषपरीक्षा**	चौदहवीं शताब्दी ई.
82. नारायणपण्डित	**हितोपदेश**	चौदहवीं शताब्दी
83. विश्वनाथ	**साहित्यदर्पण**	चौदहवीं शताब्दी
84. अनन्तभट्ट	**भारतचम्पू**	पन्द्रहवीं शताब्दी
85. वल्लभाचार्य	**अणुभाष्यम्**	1479 ई. 1544 ई.

लेखक	प्रमुख ग्रन्थ	अनुमानित काल
86. बल्लालसेन	**भोजप्रबन्धम्**	सोलहवीं शताब्दी
87. तिरुमलाम्बा	**वरदम्बिकापरिणयचम्पू**	सोलहवीं शताब्दी
88. भट्टोजिदीक्षित	**सिद्धान्तकौमुदी**	सोलहवीं शताब्दी
89. अन्नंभट्ट	**तर्कसंग्रह**	सत्रहवीं शताब्दी
90. कौण्डभट्ट	**वैयाकरणभूषणसार**	सत्रहवीं शताब्दी
91. नागेशभट्ट	**वैयाकरणसिद्धान्तलघुमञ्जूषा**	सत्रहवीं शताब्दी
92. सदानन्द	**वेदान्तसार**	सत्रहवीं शताब्दी
93. पण्डितराज जगन्नाथ	**रसगङ्गाधर, गङ्गालहरी**	सत्रहवीं शताब्दी (1600–1660 ई.)
94. अम्बिकादत्तव्यास	**शिवराजविजयम्**	1858–1900 ई.
95. पण्डिता क्षमाराव	**कथामुक्तावली**	1890–1954 ई.
96. पुष्पादीक्षिता	**अग्निशिखा**	इक्कीसवीं शताब्दी
97. रेवाप्रसाद द्विवेदी	**सीताचरितम्**	इक्कीसवीं शताब्दी
98. अभिराजराजेन्द्र मिश्र	**जानकीजीवनम्**	इक्कीसवीं शताब्दी
99. राधावल्लभ त्रिपाठी	**लहरीदशकम्, गीतवीवरम्**	इक्कीसवीं शताब्दी
100. ललितकुमार त्रिपाठी	**गङ्गालहरी (सम्पादनम्)**	इक्कीसवीं शताब्दी

संस्कृतसाहित्य के प्रमुख दम्पती, प्रेमी-प्रेमिका एवं उनकी सन्तानें

पति/प्रेमी	पत्नी/प्रेमिका	पुत्र/पुत्री
1. अगस्त्य	लोपामुद्रा	
2. वशिष्ठ	अरुन्धती	
3. विश्वामित्र	मेनका	शकुन्तला
4. मारीच	अदिति (दाक्षायणी)	इन्द्र
5. ययाति	शर्मिष्ठा, देवयानी	पुरु
6. अत्रि	अनसूया	दुर्वासा
7. इन्द्र	इन्द्राणी/शची/पौलोमी	जयन्त
8. ऋष्यशृङ्ग	शान्ता	
9. दुष्यन्त	शकुन्तला, हंसपदिका, वसुमती	भरत (सर्वदमन)
10. कालिदास	विद्योत्तमा	–
11. भर्तृहरि	पिङ्गला	–
12. भारवि	रसिकवती/रसिका	मनोरथ
13. पण्डितराजजगन्नाथ	(i) लवङ्गी (यवनी प्रेमिका) (ii) भामिनी (पत्नी)	
14. राम	सीता	कुश-लव
15. लक्ष्मण	उर्मिला	चन्द्रकेतु
16. भरत	माण्डवी	पुष्कल
17. शत्रुघ्न	श्रुतिकीर्ति	
18. नल	दमयन्ती	
19. पुरूरवा	उर्वशी	
20. चारुदत्त	धूता/वसन्तसेना	रोहसेन
21. नन्द	सुन्दरी	
22. अविमारक	कुरङ्गी	
23. भीम	हिडिम्बा	घटोत्कच
24. पञ्चपाण्डव	द्रौपदी	
25. अर्जुन	सुभद्रा	अभिमन्यु
26. धृतराष्ट्र	गान्धारी	दुर्योधन
27. पाण्डु	कुन्ती/माद्री	पञ्चपाण्डव
28. कृष्ण	रुक्मिणी/सत्यभामा	प्रद्युम्न
29. शर्विलक	मदनिका	
30. अग्निमित्र	मालविका	
31. उदयन	रत्नावली (सागरिका)	
32. उदयन	वासवदत्ता	
33. माधव	मालती	
34. मकरन्द	मदयन्तिका	
35. तारापीड	विलासवती	चन्द्रापीड
36. चन्द्रापीड	कादम्बरी	
37. पुण्डरीक	महाश्वेता	
38. हंस	गौरी	महाश्वेता
39. चित्ररथ	मदिरा	कादम्बरी
40. श्वेतकेतु	लक्ष्मी	पुण्डरीक

पति/प्रेमी	पत्नी/प्रेमिका	पुत्र/पुत्री
41. हेममाली (यक्ष)	विशालाक्षी (यक्षिणी)	
42. कवि जयदेव (गीतगोविन्दकार)	पद्मावती	
43. राजा दिलीप	सुदक्षिणा	रघु
44. अज	इन्दुमती	दशरथ
45. कामदेव	रति	
46. शिव	पार्वती	गणेश, कार्तिकेय
47. विष्णु	लक्ष्मी	
48. अभिमन्यु	उत्तरा	परीक्षित
49. हिमालय	मैना	पार्वती
50. शुकनास	मनोरमा	वैशम्पायन
51. राजशेखर	अवन्तिसुन्दरी	
52. दुर्योधन	भानुमती	
53. गौतम	अहल्या	शतानन्द
54. याज्ञवल्क्य	मैत्रेयी	

संस्कृतवाङ्मय में गुरु-शिष्य-परम्परा

शिष्य	गुरु
1. जनक	याज्ञवल्क्य, शतानन्द (पुरोहित)
2. भर्तृहरि	गोरखनाथ/वसुरात (बौद्धमत में)
3. भवभूति	ज्ञाननिधि
4. वरदराज	भट्टोजिदीक्षित
5. भट्टोजिदीक्षित	शेषकृष्ण
6. तुलसीदास	नरहर्यानन्द
7. राम	वशिष्ठ, विश्वामित्र, अगस्त्य
8. श्रीकृष्ण	सान्दीपनी
9. चन्द्रगुप्त	चाणक्य
10. देवताओं के	बृहस्पति
11. असुरों के	शुक्राचार्य
12. लव, कुश, सौधातकि, दण्डायन	वाल्मीकि
13. दुष्यन्त	सोमरात (पुरोहित)
14. पाणिनि	वर्ष (उपवर्ष)
15. मंखक	रुय्यक
16. दाराशिकोह	पण्डितराज जगन्नाथ (संस्कृतशिक्षक)
17. बाणभट्ट	भर्वु
18. शिवाजी	समर्थगुरुरामदास, कोण्डदेव
19. कनिष्क	अश्वघोष
20. अम्बिकादत्तव्यास	विश्वक्सेन
21. अर्जुन (पञ्चपाण्डव)	द्रोणाचार्य
22. शङ्कराचार्य	आचार्य गौडपाद
23. महेन्द्रपाल	राजशेखर
24. अभिनवगुप्त	भट्टतौत
25. प्रतिहारेन्दुराज	मुकुलभट्ट
26. एकलव्य	द्रोणाचार्य
27. शार्ङ्गरव, शारद्वत	कण्व
28. गालव	मारीच
29. कर्ण	परशुराम
30. भीष्मपितामह	परशुराम
31. दुर्योधनादि (कौरवों के)	द्रोणाचार्य
32. चन्द्रापीड	शुकनाश (उपदेष्टा)
33. जैमिनि	पराशर
34. पराशर	व्यास
35. मण्डनमिश्र	कुमारिलभट्ट
36. उम्बेक (भवभूति)	कुमारिलभट्ट
37. प्रभाकरमिश्र	कुमारिलभट्ट
38. शालिकनाथ	प्रभाकरमिश्र
39. आसुरि	कपिलमुनि
40. पञ्चशिख	आसुरि
41. हस्तामलक	शङ्कराचार्य
42. योगीन्द्र सदानन्द	अद्वयानन्द
43. अरस्तू	प्लेटो
44. प्लेटो	सुकरात
45. सिकन्दर	अरस्तू
46. नागेशभट्ट	हरिदीक्षित

संस्कृतवाङ्मय में वर्णित राजा और राजधानी

राजा	राजधानी	राजा	राजधानी
1. शूद्रक	विदिशा ('वेत्रवती' नदी के किनारे)	**2. तारापीड**	उज्जयिनी
3. दुष्यन्त	हस्तिनापुर	**4. राम**	अयोध्या (सरयूनदी के किनारे)
5. रावण	लङ्का ('समुद्र' तट पर)	**6. नल**	निषधदेश
7. कृष्ण	द्वारिका (समुद्र के किनारे)	**8. शिवाजी**	सतारा/रायगढ़
9. दुर्योधन (सुयोधन)	हस्तिनापुर	**10. युधिष्ठिर**	इन्द्रप्रस्थ/हस्तिनापुर
11. पुरु	हस्तिनापुर	**12. प्रद्योत**	उज्जयिनी
13. कुबेर	अलकापुरी	**14. उदयन**	कौशाम्बी/उज्जयिनी
15. भर्तृहरि	धारानगरी	**16. विक्रमादित्य**	उज्जयिनी
17. दुर्विनीत	कोंकण	**18. राजाभोज**	धारानगरी
19. हर्षवर्धन	थाणेश्वर	**20. जयचन्द्र**	कन्नौज
21. पृथ्वीराज	दिल्ली	**22. महमूदगजनवी**	गजनी
23. मुहम्मद गोरी	गोरदेश	**24. औरङ्गजेब**	दिल्ली
25. रन्तिदेव	दशपुर		

संस्कृत में वर्णित कुछ प्रसिद्ध आश्रम एवं नगर

आश्रम/नगर	नदी/पर्वत	आश्रम/नगर	नदी/पर्वत
1. कण्व आश्रम	मालिनी नदी	**8. जाबालि आश्रम**	पम्पासरोवर
2. विश्वामित्र आश्रम	गौतमी नदी	**9. महाश्वेता आश्रम**	अच्छोदसरोवर
3. वाल्मीकि आश्रम	गङ्गानदी/तमसानदी	**10. विदिशा**	वेत्रवती (बेतवा)
4. भारद्वाज आश्रम	प्रयाग का सङ्गमतट	**11. उज्जयिनी**	क्षिप्रा नदी
5. अगस्त्य आश्रम	गोदावरी/दण्डकवन	**12. शचीतीर्थ (अप्सरातीर्थ)**	गङ्गा नदी
6. मारीच आश्रम	हेमकूटपर्वत	**13. अयोध्या**	सरयू नदी
7. यक्ष का निवास	रामगिरिपर्वत (चित्रकूट)	**14. हरिद्वार (कनखल)**	गङ्गा नदी

संस्कृत ग्रन्थों का मङ्गलाचरण

रचना	मङ्गलाचरण/(छन्द)	देवता	प्रकार
1. रघुवंशम्	**वागर्थाविव सम्पृक्तौ......।** (अनुष्टुप्)	शिव-पार्वती	नमस्कारात्मक
2. अभिज्ञानशाकुन्तलम्	**या सृष्टिः स्त्रष्टुराद्या.....।** (स्रग्धरा)	अष्टमूर्तिशिव	आशीर्वादात्मक
3. किरातार्जुनीयम्	**श्रियः कुरुणामधिपस्य पालनीम्** (वंशस्थ)	लक्ष्मी	वस्तुनिर्देशात्मक
4. शिशुपालवधम्	**श्रियः पतिः श्रीमति शासितुं जगत्...।** (वंशस्थ)	लक्ष्मी	वस्तुनिर्देशात्मक
5. नैषधीयचरितम्	**निपीय यस्य (वंशस्थ)**	–	वस्तुनिर्देशात्मक
6. मेघदूतम्	**कश्चित् कान्ता विरह गुरुणा....**(मन्दाक्रान्ता)	–	वस्तुनिर्देशात्मक
7. उत्तररामचरितम्	**इदं कविभ्यः पूर्वेभ्यो नमो वाकं प्रशास्महे** (अनुष्टुप्)	पूर्ववर्ती वाल्मीकि आदिकवि वाल्मीकि	नमस्कारात्मक
8. शिवराजविजयम्	**विष्णोर्माया भगवती..... (भा.)**	विष्णु	नमस्कारात्मक तथा वस्तुनिर्देशात्मक
9. कादम्बरी कथा	**रजोजुषे जन्मनि सत्त्ववृत्तये....।** (वंशस्थ)	ब्रह्म, विष्णु, शिव रूपी परब्रह्म की	नमस्कारात्मक
10. नीतिशतकम्	**दिक्कालाद्यनवच्छिन्ना.....।** (अनुष्टुप्)	परब्रह्म की	नमस्कारात्मक

संस्कृतग्रन्थों की श्लोकसंख्या

रचना	कुल श्लोक संख्या
1. मेघदूतम्	पूर्वमेघ 67 उत्तरमेघ 54 = 121 इसमें 6 श्लोक प्रक्षिप्त। कुल = 63 + 52 = 115 श्लोक (मल्लिनाथ के अनुसार)
2. उत्तररामचरितम्	लगभग 256 (तृतीय अङ्क में – 48)
3. अभिज्ञानशाकुन्तलम्	लगभग 196 (चतुर्थ अङ्क में– 22)
4. किरातार्जुनीयम्	लगभग 1030 (कुछ विद्वानों के अनुसार– 1040) (प्रथमसर्ग में–46)
5. नीतिशतकम्	लगभग 111 (11 पद्धतियाँ)
6. शृङ्गारशतकम्	लगभग 103
7. वैराग्यशतकम्	लगभग–111
8. रघुवंशम्	लगभग 1569
9. वाल्मीकीयरामायणम् (चतुर्विंशतिसाहस्त्रीसंहिता)	लगभग–24000, (7 काण्ड, 500 सर्ग)
10. महाभारतम् (शतसाहस्त्रीसंहिता)	लगभग – एक लाख श्लोक, 18 पर्व
11. शिशुपालवधम्	लगभग 1650 (प्रथम सर्ग में – 75)
12. नैषधीयचरितम्	लगभग 2830 (प्रथम सर्ग में–145)
13. मृच्छकटिकम्	लगभग–380 (दश अङ्क)
14. गीता	लगभग–700, 18 अध्याय
15. भट्टिकाव्यम् (रावणवध)–भट्टि	लगभग–1624 श्लोक, 22 सर्ग
16. हरविजयम् (रत्नाकर)	4321 श्लोक, 50 सर्ग
17. राघवपाण्डवीय-कविराज	668 श्लोक, 13 सर्ग
18. भास के तेरह नाटक	1092 श्लोक
19. मालविकाग्निमित्रम्	96 श्लोक, 5 अङ्क
20. अनर्घराघवम्	567 श्लोक, 7 अङ्क
21. बालरामायणम्	741 पद्य, 10 अङ्क
22. ऋतुसंहारम्	144 श्लोक, 6 सर्ग

संस्कृतग्रन्थों के उपजीव्यग्रन्थ

रचना	उपजीव्यग्रन्थ
1. रघुवंशम् (कालिदास)	वाल्मीकीयरामायण एवं पद्मपुराण
2. मेघदूतम् (कालिदास)	ब्रह्मवैवर्तपुराण से कथानक तथा वाल्मीकि रामायण से दूत की कल्पना
3. किरातार्जुनीयम् (भारवि)	महाभारत का वनपर्व
4. **शिशुपालवधम्** (माघ)	(i) महाभारत का सभापर्व (सर्ग 33 से 45 तक) (ii) श्रीमद्भागवतपुराण (10 वाँ स्कन्ध, 74वाँ अध्याय)
5. नैषधीयचरितम् (श्रीहर्ष)	महाभारत के वनपर्व का नलोपाख्यान
6. अभिज्ञानशाकुन्तलम् (कालिदास)	(i) महाभारत आदिपर्व का शकुन्तलोपाख्यान (अध्याय 67 से 74 तक) (ii) पद्मपुराण
7. उत्तररामचरितम् (भवभूति)	वाल्मीकीयरामायण का उत्तरकाण्ड (सर्ग 42 से 97 तक)
8. वेणीसंहारम् (भट्टनारायण)	महाभारत का सभापर्व
9. मृच्छकटिकम् (शूद्रक)	भासकृत 'चारुदत्तम्' नाटक
10. कादम्बरी (बाणभट्ट)	गुणाढ्य की 'बृहत्कथा' (सुमनस् वृत्तान्त)
11. शिवराजविजयम् (अम्बिकादत्त व्यास)	इतिहासप्रसिद्ध कथानक
12. बुद्धचरितम् (अश्वघोष)	'ललितविस्तर' बौद्धग्रन्थ, इतिहासप्रसिद्ध

रचना	उपजीव्यग्रन्थ
13. **कुमारसम्भवम्** (कालिदास)	श्रीमद्भागवतमहापुराण
14. **सौन्दरानन्द** (अश्वघोष)	इतिहासप्रसिद्ध
15. **स्वप्नवासवदत्तम्** (भास)	इतिहासप्रसिद्ध उदयनविषयक लोककथायें
16. **प्रतिमानाटकम्** (भास)	वाल्मीकीयरामायण (अयोध्याकाण्ड से रावणवध तक)
17. **अभिषेकनाटकम्** (भास)	वाल्मीकीयरामायणम्
18. **पञ्चरात्रम्** (भास)	महाभारतम्
19. **मध्यमव्यायोग** (भास)	महाभारतम्
20. **कर्णभारम्** (भास)	महाभारतम्
21. **दूतघटोत्कचम्** (भास)	महाभारतम्
22. **बालचरितम्** (भास)	महाभारतम्
23. **उरुभङ्ग** (भास)	महाभारतम्
24. **प्रतिज्ञायौगन्धरायण** (भास)	उदयनकथाश्रित
25. **मालविकाग्निमित्रम्** (कालिदास)	इतिहासप्रसिद्ध
26. **विक्रमोर्वशीयम्** (कालिदास)	ऋग्वेद एवं महाभारतम्
27. **रत्नावली** (हर्ष)	उदयनकथाश्रित/कविकल्पित इतिहासप्रसिद्ध
28. **महावीरचरितम्** (भवभूति)	वाल्मीकिरामायण
29. **प्रसन्नराघवम्** (जयदेव)	वाल्मीकिरामायण
30. **नलचम्पू** (त्रिविक्रमभट्ट)	महाभारत
31. **मुद्राराक्षस** (विशाखदत्त)	इतिहासप्रसिद्ध, विष्णुपुराण
32. **प्रियदर्शिका** (हर्ष)	कविकल्पनाप्रसूत
33. **मालतीमाधवम्** (भवभूति)	कविकल्पनाप्रसूत
34. **अनर्घराघवम्** (मुरारि)	वाल्मीकिरामायणम्
35. **प्रबोधचन्द्रोदय** (कृष्णमिश्र)	कविकल्पनाप्रसूत
36. **हर्षचरितम्** (बाण)	इतिहास प्रसिद्ध
37. **ऋतुसंहारम्** (कालिदास)	कविकल्पित
38. **भट्टिकाव्य/रावणवध** (भट्टि)	वाल्मीकिरामायण
39. **जानकीहरणम्** (कुमारदास)	वाल्मीकि रामायण
40. **हरविजयम्** (रत्नाकर)	शिशुपालवध का प्रभाव
41. **शारिपुत्रप्रकरणम्** (अश्वघोष)	इतिहासप्रसिद्ध

संस्कृतग्रन्थों में नायक-नायिका

रचना	नायक	नायिका
1. **स्वप्नवासवदत्तम्**	उदयन (धीरललित)	वासवदत्ता/पद्मावती
2. **मृच्छकटिकम्**	चारुदत्त (धीरप्रशान्त)	वसन्तसेना/धूता
3. **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**	दुष्यन्त (धीरोदात्त)	शकुन्तला
4. **कुमारसम्भवम्**	शिव	पार्वती
5. **उत्तररामचरितम्**	राम (धीरोदात्त)	सीता
6. **किरातार्जुनीयम्**	अर्जुन (नायक, धीरोदात्त) किरात (शिव, सहनायक) दुर्योधन (प्रतिनायक)	द्रौपदी
7. **मेघदूतम्**	यक्ष (हेममाली)	यक्षिणी (विशालाक्षी)
8. **शिशुपालवधम्**	श्रीकृष्ण (धीरोदात्त)	सत्यभामा/रुक्मिणी

रचना	नायक	नायिका
9. नैषधीयचरितम्	नल (धीरोदात्त)	दमयन्ती
10. रत्नावली (नाटिका)	उदयन (धीरललित)	रत्नावली (सागरिका)
11. कादम्बरी कथा	चन्द्रापीड (नायक, धीरोदात्त)	कादम्बरी
	वैशम्पायन (सहनायक)	महाश्वेता (सहनायिका)
12. दशकुमारचरितम्	राजहंस (दस राजकुमार)	विलासवती
	राजवाहन	अवन्तिसुन्दरी
13. वेणीसंहारम्	भीम (धीरोद्धत)	द्रौपदी
14. मालविकाग्निमित्रम्	अग्निमित्र (धीरोदात्त, कुछ विद्वानों के मत में धीरललित)	मालविका
15. विक्रमोर्वशीयम् (त्रोटक)	पुरूरवा (विक्रम)	उर्वशी
16. मुद्राराक्षसम्	चाणक्य और चन्द्रगुप्त	नायिका का अभाव
17. प्रियदर्शिका	राजा उदयन (धीरललित)	आरण्यिका (प्रियदर्शिका)
18. नागानन्द	जीमूतवाहन	मलयवती
19. मालतीमाधवम् (प्रकरण)	(i) माधव (ii) मकरन्द	(i) मालती (ii) मदयन्तिका
20. महावीरचरितम्	राम (धीरोदात्त)	सीता
21. बुद्धचरितम्	भगवान् बुद्ध	–
22. हर्षचरितम्	हर्षवर्धन	–
23. रघुवंशम्	श्रीराम (रघु)	सीता
24. कर्पूरमञ्जरी	चन्द्रपाल	कर्पूरमञ्जरी
25. प्रसन्नराघवम्	श्रीराम	सीता
26. प्रबोधचन्द्रोदय	प्रबोधचन्द्र	
27. ऊरुभङ्गम्	दुर्योधन/भीम	–

संस्कृत-ग्रन्थों में अङ्गी रस

रचना	प्रधान/मुख्य/अङ्गीरस	रचना	प्रधान/मुख्य/अङ्गीरस
1. अभिज्ञानशाकुन्तलम्	शृङ्गार	**2. मेघदूतम्**	विप्रलम्भशृङ्गार
3. उत्तररामचरितम्	करुणरस	**4. किरातार्जुनीयम्**	वीररस
5. नैषधीयचरितम्	शृङ्गार	**6. शिशुपालवधम्**	वीरस
7. रघुवंशम्	वीररस	**8. बुद्धचरितम्**	शान्तरस
9. मृच्छकटिकम्	शृङ्गाररस	**10. कुमारसम्भवम्**	शृङ्गाररस
11. शिवराजविजयम्	वीररस	**12. स्वप्नवासवदत्तम्**	शृङ्गाररस
13. मालतीमाधवम् (प्रकरण)	शृङ्गाररस	**14. महावीरचरितम् (नाटक)**	वीररस
15. मालविकाग्निमित्रम्	शृङ्गाररस	**16. विक्रमोर्वशीयम्**	शृङ्गाररस
17. मुद्राराक्षसम्	वीररस	**18. प्रियदर्शिका**	शृङ्गाररस
19. रत्नावली	शृङ्गाररस	**20. नागानन्द**	शान्तरस/वीररस
21. वेणीसंहारम्	वीररस	**22. कुन्दमाला**	करुणरस
23. प्रबोधचन्द्रोदय	शान्तरस	**24. शृङ्गारशतकम्**	शृङ्गाररस
25. गीतगोविन्दम्	शृङ्गाररस	**26. रावणवध (भट्टिकाव्यम्)**	वीररस
27. जानकीहरणम्	शृङ्गाररस	**28. कर्पूरमञ्जरी**	शृङ्गाररस
29. शारिपुत्रप्रकरणम्	शान्तरस	**30. अनर्घराघवम्**	शृङ्गाररस
31. रामायणम्	करुणरस	**32. महाभारतम्**	शान्तरस

संस्कृत-ग्रन्थों में प्रयुक्त छन्द

ग्रन्थ	ग्रन्थों में प्रयुक्त प्रमुख छन्द
1. किरातार्जुनीयम् (प्रथम सर्ग)	वंशस्थ, 45वें में पुष्पिताग्रा, अन्तिम 46वें में–मालिनी (कुल प्रयुक्त छन्द–22)
2. शिशुपालवधम्	वंशस्थ, अनुष्टुप्, उपजाति (कुल प्रयुक्त छन्द – 25)
3. नैषधीयचरितम्	उपजाति (कुल प्रयुक्त छन्द–19)
4. मेघदूतम्	मन्दाक्रान्ता (सम्पूर्ण ग्रन्थ में)
5. रघुवंशम्	उपजाति, अनुष्टुप्
6. अभिज्ञानशाकुन्तलम्	आर्या, वसन्ततिलका, अनुष्टुप् (कुल प्रयुक्त छन्द–24)
7. मृच्छकटिकम्	अनुष्टुप् (कुलप्रयुक्त छन्द–21)
8. उत्तररामचरितम्	अनुष्टुप् शिखरिणी (कुल प्रयुक्त छन्द 19)
9. बुद्धचरितम्	अनुष्टुप्, उपजाति
10. भट्टिकाव्यम् (रावणवधम्)	अनुष्टुप्, उपजाति, आर्या, और पुष्पिताग्रा आदि अनेक छन्द
11. मुद्राराक्षसम्	शार्दूलविक्रीडित, स्रग्धरा, शिखरिणी
12. वेणीसंहारम्	अनुष्टुप् (62), वसन्ततिलका (38) शार्दूलविक्रीडित (34) (कुलप्रयुक्त छन्द–18)
13. बालरामायणम्	शार्दूलविक्रीडित और स्रग्धरा।
14. प्रसन्नराघवम्	वसन्ततिलका, अनुष्टुप्, शार्दूलविक्रीडित, शिखरिणी।
15. अमरुकशतकम्	शार्दूलविक्रीडितम्
16. कुमारसम्भवम्	अनुष्टुप्
17. सौन्दरानन्द	अनुष्टुप्
18. जानकीहरणम्	अनुष्टुप्
19. हरविजय	शार्दूलविक्रीडित, मन्दाक्रान्ता

संस्कृत ग्रन्थों का विभाजन

ग्रन्थ-ग्रन्थकार	विभाजन
1. काव्यप्रकाश (मम्मट)	दश उल्लास, 142 कारिकायें, 604 उदाहरण।
2. साहित्य दर्पण (विश्वनाथ)	दश परिच्छेद
3. रसगङ्गाधर (जगन्नाथ)	चार आनन
4. दशरूपक (धनञ्जय)	चार प्रकाश
5. काव्यादर्श (दण्डी)	तीन परिच्छेद, 660 पद्य
6. शिवराजविजयम् (अम्बिकादत्तव्यास)	तीन विराम, 12 निःश्वास
7. महाकाव्य	सर्गों में विभक्त (8 से अधिक सर्ग)
8. नाटक	अङ्कों में विभक्त (5 अङ्क या इससे अधिक)
9. मेघदूतम् (कालिदास)	दो खण्डों में–पूर्वमेघ, उत्तरमेघ
10. कादम्बरी कथा (बाणभट्ट)	दो भागों में–पूर्वभाग, उत्तरभाग
11. आख्यायिका	उच्छ्वासों में (हर्षचरितम् में 8 उच्छ्वास)
12. वक्रोक्तिजीवितम् (कुन्तक)	चार उन्मेष
13. वाल्मीकीयरामायणम् (वाल्मीकि)	7 काण्ड, 600 सर्ग, 24,000 श्लोक
14. महाभारतम् (वेदव्यासः)	18 पर्व, 1 लाख श्लोक
15. श्रीमद्भागवतपुराण (वेदव्यासः)	12 स्कन्ध, 18000 श्लोक
16. गीता (वेदव्यासः)	18 अध्याय, 700 श्लोक
17. व्यक्तिविवेक (महिमभट्ट)	तीन विमर्श
18. सरस्वतीकण्ठाभरण (भोजराज)	पाँच परिच्छेद

ग्रन्थ-ग्रन्थकार	विभाजन
19. शृङ्गारप्रकाश (भोजराज)	36 प्रकाश
20. कविकण्ठाभरण (क्षेमेन्द्र)	पाँच अध्याय 55 कारिकायें।
21. अभिधावृत्तिमात्रिका (मुकुलभट्ट)	15 कारिकायें
22. ध्वन्यालोक (आनन्दवर्धन)	4 उद्योत
23. काव्यालङ्कारसारसंग्रह (उद्भट)	6 वर्गों में
24. काव्यालङ्कार (रुद्रट)	16 अध्याय, 714 आर्यायें
25. काव्यालङ्कारसूत्र (वामन)	5 अधिकरण
26. काव्यालङ्कार (भामह)	6 परिच्छेद
27. काव्यमीमांसा (राजशेखर)	18 अध्याय
28. चन्द्रालोक (जयदेव)	10 मयूख
29. राजतरङ्गिणी (कल्हण)	8 तरङ्ग
30. ऋतुसंहार (कालिदास)	6 सर्ग, 144 श्लोक
31. नाट्यशास्त्र (भरत)	36 अध्याय
32. कथासरित्सागर (सोमदेव)	18 लम्बक, 124 तरङ्ग, 22000 पद्य।
33. हितोपदेश (नारायणपण्डित)	चार परिच्छेद, 43 कहानियाँ
34. पञ्चतन्त्र (विष्णुशर्मा)	पाँच तन्त्र, पाँच मुख्य कथायें, 1003 श्लोक, 75 उपकथायें।
35. कर्पूरमञ्जरी (राजशेखर)	4 जवनिका

संस्कृत ग्रन्थों में प्रमुख वर्णन

वर्णन	ग्रन्थ	वर्णन	ग्रन्थ
1. अच्छोदसरोवर	कादम्बरी	**5. इन्द्रकीलपर्वत**	किरातार्जुनीयम् सर्ग-5
2. पम्पासरोवर	कादम्बरी	**6. शरद्वर्णन**	किरातार्जुनीयम् सर्ग 4
3. शाल्मलीवृक्ष	कादम्बरी	**7. षड्ऋतु वर्णन**	(i) शिशुपालवधम् सर्ग-6
4. रैवतकपर्वत	शिशुपालवधम्-सर्ग 4		(ii) ऋतुसंहारम्

संस्कृतग्रन्थों के अपरनाम

मुख्यग्रन्थ	अपरनाम	मुख्यग्रन्थ	अपरनाम
1. किरातार्जुनीयम्	लक्ष्मीपदाङ्कमहाकाव्यम्	**4. नलचम्पू**	दमयन्तीकथा
2. शिशुपालवधम्	श्र्यङ्कमहाकाव्यम् (‘श्री’ पदाङ्कमहाकाव्य)	**5. अष्टाध्यायी**	अष्टक
3. नैषधीयचरितम्	आनन्दपदाङ्कमहाकाव्यम्		

संस्कृतवाङ्मय की दशत्रयी

1. बृहत्त्रयी

ग्रन्थ	कवि
1. किरातार्जुनीयम्	भारवि
2. शिशुपालवधम्	माघ
3. नैषधीयचरितम्	श्रीहर्ष

2. लघुत्रयी

ग्रन्थ	कवि
1. रघुवंशम्	कालिदासः
2. कुमारसम्भवम्	कालिदासः
3. मेघदूतम्	कालिदासः

3. गद्यबृहत्त्रयी **4. उपजीव्यग्रन्थत्रयी**

कवि	ग्रन्थ	ग्रन्थः	कविः
1. सुबन्धु	वासवदत्ता	1. रामायणम्	वाल्मीकिः
2. बाणभट्ट	कादम्बरी	2 महाभारतम्	वेदव्यासः
3. दण्डी	दशकुमारचरितम्	3. भागवतपुराणम्	वेदव्यासः

5. पुरुषार्थत्रयी	**6. पाषाणत्रयी**	**7. गुणत्रयी**
1. धर्म	1. किरातार्जुनीयम् का प्रथम सर्ग	1. सत्त्वगुणः
2. अर्थ	2. किरातार्जुनीयम् का द्वितीय सर्ग	2. रजोगुणः
3. काम	3 किरातार्जुनीयम् का तृतीय सर्ग	3. तमोगुणः

8. मुनित्रयी

मुनिः	**व्याकरणग्रन्थः**	**साहित्यिकग्रन्थः**	**9. प्रस्थानत्रयी**	**10. वेदत्रयी**
1. पाणिनिः	अष्टाध्यायी	जाम्बवतीजयम्/पातालविजयम्	1. ब्रह्मसूत्र	1. ऋग्वेद
2. कात्यायनः	वार्तिकम्	स्वर्गारोहणम्	2. उपनिषद्	2. यजुर्वेद
3. पतञ्जलिः	महाभाष्यम्	महानन्दकाव्यम्	3. गीता	3. सामवेद

यज्ञ	**यज्ञकर्ता**	**वीणा**	**स्वामी**	**ग्रन्थ**
वाजपेय	महाकवि (भवभूति के पूर्वज)	महती	नारद	शिशुपालवधम्
राजसूय	युधिष्ठिर	कच्छपी	सरस्वती	–
पुत्रेष्टि	दशरथ	घोषवती	वासवदत्ता	स्वप्नवासवदत्तम्
अश्वमेध	राम			
गवालम्भ	राजा रन्तिदेव			

काव्यशास्त्रीय छः सम्प्रदाय

सम्प्रदाय	**प्रवर्तक और प्रमुख आचार्य**
1. रससम्प्रदाय	**भरत (प्रवर्तक)** भोजराज, भट्टनायक, विश्वनाथ, राजशेखर, केशवमिश्र, शारदातनय
2. अलङ्कारसम्प्रदाय	**भामह** (प्रवर्तक), दण्डी, उद्भट, प्रतिहारेन्दुराज रुद्रट, जयदेव, अप्पयदीक्षित।
3. रीतिसम्प्रदाय	**वामन** (प्रवर्तक)
4. ध्वनिसम्प्रदाय	**आनन्दवर्धन** (प्रवर्तक), रुय्यक, मम्मट, अभिनवगुप्त, जगन्नाथ
5. वक्रोक्तिसम्प्रदाय	**कुन्तक** (प्रवर्तक)
6. औचित्यसम्प्रदाय	**क्षेमेन्द्र** (प्रवर्तक)
चमत्कार सम्प्रदाय	कुछ आधुनिक काव्यशास्त्री

काव्यलक्षण–तालिका

ग्रन्थ	**ग्रन्थकार**	**काव्यलक्षण**
1. काव्यप्रकाश	**आचार्य मम्मट**	तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि–(का.प्र. प्रथमोल्लास)
2. साहित्यदर्पण	**आचार्य विश्वनाथ**	वाक्यं रसात्मकं काव्यम्
3. रसगङ्गाधर	**पण्डितराज जगन्नाथ**	रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्
4. काव्यालङ्कार	**भामह**	शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्
5. वक्रोक्तिजीवितम्	**कुन्तक**	वक्रोक्तिः काव्यजीवितम्
6. काव्यालङ्कार सूत्र	**वामन**	रीतिरात्मा काव्यस्य

ग्रन्थ	ग्रन्थकार	काव्यलक्षण
7. ध्वन्यालोक	**आनन्दवर्धन**	काव्यस्यात्मा ध्वनिः
8. काव्यादर्श	**दण्डी**	शरीरं तावदिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली
9. औचित्यविचारचर्चा	**क्षेमेन्द्र**	औचित्यं रससिद्धस्य स्थिरं काव्यस्य जीवितम्
10. अग्निपुराण	**व्यास**	संक्षेपाद्वाक्यमिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली/काव्यं स्फुरदलङ्कारं गुणवद् दोषवर्जितम्।।
11. शृङ्गारप्रकाश	**भोज**	अदोषं गुणवद्काव्यमलङ्कारैरलङ्कृतम् रसान्वितं कविः कुर्वन् कीर्तिं प्रीतिं च विन्दति।।

काव्यशास्त्र में अलङ्कारों की संख्या

ग्रन्थ–ग्रन्थकार	अलङ्कारों की संख्या	ग्रन्थ–ग्रन्थकार	अलङ्कारों की संख्या
1. नाट्यशास्त्र–भरत	उपमा, रूपक, दीपक और यमक कुल चार अलङ्कार		
2. अग्निपुराण	09 शब्दालङ्कार +	08 अर्थालङ्कार +	06 उभयालङ्कार = 23 अलङ्कार
3. विष्णुधर्मोत्तर पुराण	18 अलङ्कार		
4. काव्यालङ्कार–भामह	38 अलङ्कार		
5. काव्यादर्श–दण्डी	37 अलङ्कार		
6. काव्यालङ्कारसारसंग्रह–उद्भट	41 अलङ्कार		
7. काव्यालङ्कार–रुद्रट	68 अलङ्कार		
8. सरस्वतीकण्ठाभरण–भोजराज	24 शब्दालङ्कार +	24 अर्थालङ्कार +	24 उभयालङ्कार = 72 अलङ्कार
9. काव्यप्रकाश – मम्मट	06 शब्दालङ्कार +	61 अर्थालङ्कार = 67 अलङ्कार	
10. अलङ्कारसर्वस्व – रुय्यक	78 अलङ्कार		
11. साहित्यदर्पण–विश्वनाथ	78 अलङ्कार		
12. चन्द्रालोक–जयदेव	100 अलङ्कार		
13. कुवलयानन्द–अप्पयदीक्षित	120 अलङ्कार		

साहित्यशास्त्र में रसों की संख्या

रस	स्थायीभाव	वर्ण	देवता	रस	स्थायीभाव	वर्ण	देवता
1. शृङ्गार	**रति**	श्याम	विष्णु	**2. वीररस**	**उत्साह**	सुवर्णवत्	महेन्द्र
3. वीभत्सरस	**जुगुप्सा**	नील	महाकाल	**4. रौद्ररस**	**क्रोध**	रक्त	रुद्र
5. हास्यरस	**हास**	शुक्ल	प्रमथ	**6. अद्भुतरस**	**विस्मय**	पीत	गन्धर्व
7. भयानक रस	**भय**	कृष्ण	महाकाल	**8. करुणरस**	**शोक**	कपोत	यम
9. शान्तरस	**निर्वेद/शम**	कुन्दपुष्पवत्	श्रीनारायण				

- आचार्य भरत और धनञ्जय के अनुसार नाटक में आठरस माने गये हैं–**''अष्टौ नाट्ये रसाः स्मृताः''–(नाट्यशास्त्र)**
- अभिनव गुप्त एवं आचार्य मम्मट आदि ने 'शान्तरस' को नवम रस के रूप में स्वीकार किया है। **''शान्तोऽपि नवमो रसः''**
- **रुद्रट** ने **'प्रेयान्'** नामक दसवें रस की उद्भावना की है।
- **रूपगोस्वामी** ने **'भक्तिरस'** को प्रधानरस माना है।
- **विश्वनाथ** नवरस के अतिरिक्त **'वात्सल्य'** नामक रस को भी स्वीकार करते हैं।
- **भवभूति** ने **'करुणरस'** को ही एकमात्र मूलरस मानते हैं–**''एको रसः करुण एव''**

आचार्य भरत प्रतिपादित रससूत्र

- आचार्य भरत द्वारा 'नाट्यशास्त्र' में प्रतिपादित रससूत्र– **''विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः''** अर्थात् विभाव, अनुभाव और व्यभिचारिभाव के संयोग से 'रस' की निष्पत्ति होती है।

आचार्य भरत प्रतिपादित 'रससूत्र' के व्याख्याकार

व्याख्याकार	समय	मत	दर्शन
1. भट्टलोल्लट	नवमशताब्दी	उत्पत्तिवाद (उत्पाद्य-उत्पादक)	मीमांसा
2. शङ्कुक	नवमशताब्दी	अनुमितिवाद (अनुमाप्य-अनुमापक)	न्याय
3. भट्टनायक	11वीं शताब्दी	भुक्तिवाद (भोज्य-भोजक)	सांख्य
4. अभिनवगुप्त	11वीं शताब्दी	अभिव्यक्तिवाद (व्यङ्ग्य-व्यञ्जक)	शैव/वेदान्त

शंखों के नाम

देव	शंख
1. श्रीकृष्ण	पाञ्चजन्य
2. युधिष्ठिर	अनन्तविजय
3. भीम	पौण्ड्र
4. अर्जुन	देवदत्त
5. नकुल	सुघोष
6. सहदेव	मणिपुष्पक

नायकों की कोटियाँ

धीरोदात्त – राम, कृष्ण, अर्जुन, चन्द्रापीड, दुष्यन्त, शिवाजी।

धीरोद्धत – भीम, परशुराम, दुर्योधन आदि।

धीरललित – यक्ष, उदयन आदि।

धीरप्रशान्त – चारुदत्त आदि।

नायिकाओं की कोटियाँ

स्वकीया प्रौढा – सीता, द्रौपदी

स्वकीया मध्या – यक्षिणी

स्वकीया मुग्धा – शकुन्तला, कादम्बरी, महाश्वेता

संस्कृत-रूपकों के दशभेद

रूपक	अङ्क-संख्या	उदाहरणम्
1. नाटक	5 से 10 अङ्क	अभिज्ञानशाकुन्तलम्, स्वप्नवासवदत्तम्, उत्तररामचरितम्
2. प्रकरण	10 अङ्क	मृच्छकटिकम्, मालतीमाधवम्, शारिपुत्रप्रकरण पुष्पभूषित
3. भाण	1 अङ्क	लीलामधुकरम्, शृङ्गारशेखर, मर्कटमदलिका, धूर्तसमागम
4. व्यायोग	1 अङ्क	सौगन्धिकाहरणम्, जामदग्न्यजय
5. समवकार	3 अङ्क	समुद्रमन्थनम् (12 नायक), नवग्रहचरितम्
6. डिम	4 अङ्क	त्रिपुरदाह (16 नायक)
7. ईहामृग	4 अङ्क /1 अङ्क	कुसुमशेखरविजयम्
8. अङ्क (उत्सृष्टिकाङ्क)	1 अङ्क	शर्मिष्ठा-ययातिः
9. वीथी	1 अङ्क	मालविका
10. प्रहसन	1 अङ्क	कन्दर्पकेलिः/धूर्तचरितम्
• नाटिका	4 अङ्क	रत्नावली, प्रियदर्शिका
• सट्टक	4 अङ्क	कर्पूरमञ्जरी

संस्कृतनाटकों में विदूषक

नाटक	विदूषक	नाटक	विदूषक
1. अभिज्ञानशाकुन्तलम् (कालिदास)	माढव्य/माधव्य	**6. स्वप्नवासवदत्तम् (भास)**	वसन्तक
2. विक्रमोर्वशीयम् (कालिदास)	माणवक	**7. मालतीमाधवम् (भवभूति)**	विदूषक का अभाव
3. मालविकाग्निमित्रम् (कालिदास)	गौतम	**8. महावीरचरितम् (भवभूति)**	विदूषक का अभाव
4. मृच्छकटिकम् (शूद्रक)	मैत्रेय	**9. उत्तररामचरितम् (भवभूति)**	विदूषक का अभाव
5. रत्नावली (श्रीहर्ष)	वसन्तक	**10. मुद्राराक्षसम् (विशाखदत्त)**	विदूषक का अभाव

संस्कृत नाटकों में कञ्चुकी

नाटक	कञ्चुकी का नाम	नाटक	कञ्चुकी का नाम
1. प्रतिज्ञायौगन्धरायण	बादरायण	**5. उत्तररामचरितम्**	गृष्टि
2. दूतवाक्यम्	बादरायण	**6. रत्नावली**	बाभ्रव्य
3. स्वप्नवासवदत्तम्	बादरायण	**7. वेणीसंहारम्**	जयन्धर (युधिष्ठिर का)
4. अभिज्ञानशाकुन्तलम्	वातायन		विनयन्धर (दुर्योधन का)

नाटकीय पञ्चीकरण

पञ्च अर्थप्रकृतियाँ	पञ्च कार्यावस्थायें	पञ्च सन्धियाँ	पञ्च अर्थोपक्षेपक	पञ्चनाटककार
1. बीज	1. आरम्भ	1. मुखसन्धि	1. विष्कम्भक	1. भास
2. बिन्दु	2. यत्न	2. प्रतिमुखसन्धि	2. चूलिका	2. कालिदास
3. पताका	3. प्राप्त्याशा	3. गर्भसन्धि	3. अङ्कास्य	3. शूद्रक
4. प्रकरी	4. नियताप्ति	4. अवमर्श/विमर्शसन्धि	4. अङ्कावतार	4. विशाखदत्त
5. कार्य	5. फलागम	5. उपसंहृति/निर्वहणसन्धि	5. प्रवेशक	5. भवभूति

अभिज्ञानशाकुन्तलम् के अङ्कों के नाम

अङ्क	अङ्क का नाम	श्लोकसंख्या
प्रथम	**आश्रम प्रवेश**	34
द्वितीय	**आश्रमनिवेश**	18
तृतीय	**मिलन**	24
चतुर्थ	**विदा**	22
पञ्चम	**प्रत्याख्यान**	31
षष्ठ	**पश्चात्ताप**	32
सप्तम	**पुनर्मिलन**	35
	योग =	**196**

उत्तररामचरितम् के अङ्कों के नाम

अङ्क	अङ्क का नाम	श्लोकसंख्या
प्रथम	**चित्रदर्शन**	51
द्वितीय	**पञ्चवटीप्रवेश**	30
तृतीय	**छाया**	48
चतुर्थ	**कौशल्याजनकयोग**	29
पञ्चम	**कुमारविक्रम**	35
षष्ठ	**कुमारप्रत्यभिज्ञान**	42
सप्तम	**सम्मेलन**	21
	योग =	**256**

मृच्छकटिकम् के अङ्कों के नाम

अङ्क	अङ्क का नाम	श्लोक संख्या
प्रथम	**अलङ्कारन्यास**	58
द्वितीय	**द्यूतकरसंवाहक**	20
तृतीय	**सन्धिच्छेद**	30
चतुर्थ	**मदनिकाशर्विलक**	33
पञ्चम	**दुर्दिन**	52
षष्ठ	**प्रवहणविपर्यय**	27
सप्तम	**आर्यकापहरण**	09
अष्टम	**वसन्तसेनामोटन**	47
नवम	**व्यवहार** (न्यायालय)	43
दशम	**संहार** (उपसंहार)	61
	योग =	**380**

रत्नावली के अङ्कों के नाम

अङ्क	अङ्क का नाम	श्लोकसंख्या
प्रथम अङ्क	**मदनमहोत्सव**	26
द्वितीय अङ्क	**कदलीगृहम्**	21
तृतीय अङ्क	**सङ्केतक**	19
चतुर्थ अङ्क	**ऐन्द्रजालिक**	20
		86

छन्दों में वर्णों की संख्या

छन्द	वर्णों की संख्या	छन्द	वर्णों की संख्या
अनुष्टुप्	08 × 4 = 32	तोटक (त्रोटक)	12 × 4 = 48
इन्द्रवज्रा	11 × 4 = 44	भुजङ्गप्रयात	12 × 4 = 48
उपेन्द्रवज्रा	11 × 4 = 44	प्रहर्षिणी, अतिरुचिरा	13 × 4 = 52
उपजाति	11 × 4 = 44	वसन्ततिलका	14 × 4 = 56
रथोद्धता	11 × 4 = 44	मालिनी	15 × 4 = 60
शालिनी	11 × 4 = 44	पञ्चचामर	16 × 4 = 64
स्वागता	11 × 4 = 44	शिखरिणी, हरिणी, पृथ्वी, मन्दाक्रान्ता	17 × 4 = 68
वंशस्थ	12 × 4 = 48	शार्दूलविक्रीडित	19 × 4 = 76
द्रुतविलम्बित	12 × 4 = 48	स्रग्धरा	21 × 4 = 84

संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख ग्रन्थों के विषय में विशेष कथन

रामायण - रम्या रामायणी कथा
श्रीमद्भागवत - विद्यावतां भागवते परीक्षा
काव्यप्रकाश - काव्यप्रकाशस्य कृता गृहे-गृहे,
टीकास्तथाप्येषः तथैव दुर्गमः

अभिज्ञानशाकुन्तलम्

1.कालिदासस्य सर्वस्वमभिज्ञानशाकुन्तलम्।
2. काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला।

उत्तररामचरितम्- उत्तररामचरिते भवभूतिर्विशिष्यते
मेघदूत - मेघे माघे गतं वयः

किरातार्जुनीयम्

''वृत्तछत्रस्य सा काऽपि वंशस्थास्य विचित्रता।
प्रतिभा भारवेर्येन सच्छायेनाधिकीकृता।''

नैषधीयचरितम्

1. '' नैषधं विद्वदौषधम् ''
2. ''तावद् भा भारवेर्भाति यावन्माघस्य नोदयः।
उदिते नैषधे काव्ये क्व माघः क्व च भारविः।।''
3. ''नैषधे पदलालित्यम् ''

रावणवध (भट्टिकाव्य)

1. ''अष्टाध्यायी जगन्माताऽमरकोशो जगत्पिता।
भट्टिकाव्यं गणेशश्चत्रयीयं सुखदास्तु वः।।''
2. व्याकृत्या कोश- छन्दोभ्यालङ्कृत्या रसेन च।
पञ्चकेनान्वितं काव्यं भट्टिकाव्यं विराजते।।

जानकीहरणम्

जानकीहरणं कर्तुं रघुवंशे स्थिते सति।
कविः कुमारदासश्च रावणश्च यदि क्षमः।।

हरविजयम्

हरविजय-महाकवेः प्रतिज्ञां, शृणुत कृत्तप्रणयो मम प्रबन्धे।
अपि शिशुरकविः कविः प्रभावाद् भवित कविश्च महाकविः क्रमेण।।

सेतुबन्धमहाकाव्यम्

''महाराष्ट्राश्रयां भाषां प्राकृष्टं प्रकृतं विदुः।
सागरः सूक्तिरत्नानां सेतुबन्धादि यन्मयम्।।''

गाथासप्तशती

अविनाशिनमग्राम्यमकरोत्सातवाहनः।
विशुद्धजातिभिः कोषं रत्नैरिव सुभाषितैः।।

अमरुकशतक

''अमरुककवेरेकः श्लोकः प्रबन्धशतायते।''

वासवदत्ता

कवीनामगलद् दर्पो नूनं वासवदत्तया।
शक्त्येव पाण्डुपुत्राणां गतया कर्णगोचरम्।।

कादम्बरी

1. 'कादम्बरीरसज्ञानामाहारोऽपि न रोचते।'
2. कादम्बरी रसभरेण समस्त एव। मत्तो न किञ्चिदपि चेतयते जनोऽयम्।।
3. 'धिया निबद्धेयमतिद्वयी कथा।'

संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख ग्रन्थों के अपरनाम

ग्रन्थ का नाम	अपरनाम
1. ऋग्वेद	दशतयी
2. शुक्ल यजुर्वेद	माध्यन्दिन संहिता, वाजसनेयी संहिता
सामवेद	उद्‌गातृ-वेद
अथर्ववेद	ब्रह्मवेद
ताण्ड्य ब्राह्मण	महाब्राह्मण, पंचविश, प्रौढ़
छान्दोग्य ब्राह्मण	उपनिषद् ब्राह्मण
छान्दोग्योपनिषद्	तण्डिनाम् उपनिषद्
केनोपनिषद्	तवल्कारोपनिषद्
शांखायन आरण्यक	कौषीतकि आरण्यक
आरण्यक	रहस्यग्रन्थ
ऋक् प्रातिशाख्य	पार्षद् (परिषद् सूत्र)
निरुक्त	शब्दव्युत्पत्तिशास्त्र, निर्वचन शास्त्र
ज्योतिष	प्रत्यक्षशास्त्र, कालविधानशास्त्र
हिरण्यकेशी गृह्यसूत्र	सत्याषाढ़ गृह्यसूत्र
कातन्त्रसूत्र	कालापव्याकरण
व्याकरण	शब्दशास्त्र
लघुपाराशरी	उडुदायप्रदीप
काठक गृह्यसूत्र	लौगाक्षि गृह्यसूत्र
बृहत्संहिता	वाराही संहिता
वेदान्तसूत्र	चतुर्लक्षणी
मीमांसासूत्र	द्वादशलक्षणी
ब्रह्मसूत्र	शारीरकसूत्र
ब्रह्मपुराण	आदिपुराण
अग्निपुराण	विश्वकोष
नारद पुराण	बृहन्नारदीय पुराण
श्रीमद्भागवत पुराण	दशलक्षणी पुराण
वायुपुराण	शिवपुराण
रामायण	चतुर्विंशतिसाहस्रीसंहिता, आदिमहाकाव्य आर्यभट्टाकाव्य
भुशुण्डिरामायण	महारामायण
योगवाशिष्ठ	आर्षरामायण
महाभारत	शतसाहस्रीसंहिता
सेतुबन्धमहाकाव्य	सूक्तिरत्नाकर
जाम्बवतीजय	पातालविजय
रावणवध	भट्टिकाव्य
काव्यशास्त्र	साहित्यविद्या
नाट्यशास्त्र	षट्साहस्री संहिता
कुमारपालितचरित	द्वयाश्रयमहाकाव्य
नैषधीयचरितम्	शास्त्रकाव्य, श्रयंक
प्रबन्धकोश	चतुर्विंशतिप्रबन्ध
नलचम्पू	हरचरणसरोजाङ्क
हनुमन्नाटक	महानाटक
गीतगोविन्द	शृंगारमहाकाव्य, संगीतरूपक,
संस्कृतमहाकोश	पीटर्सबर्ग कोश

संस्कृत में सर्वप्रथम/सर्वप्राचीन/सर्वश्रेष्ठ

प्राचीनतम वेद	ऋग्वेद
प्राचीनतम पुराण	ब्रह्मपुराण
स्मृतिग्रन्थों में प्राचीनतम	मनुस्मृति
प्राकृत काव्यों में प्राचीनतम	सेतुबन्ध
आर्य भाषाओं में प्राचीनतम	वैदिक संस्कृत
लोककथा प्राचीनतम संग्रह	बृहत्कथा
शिक्षा के प्राचीनतम ग्रन्थ	प्रातिशाख्य
भाषाशास्त्र का प्राचीनतम ग्रन्थ	निरुक्त
मनुस्मृति के प्राचीनतम टीकाकार	मेधातिथि
वेदाङ्ग के प्राचीनतम ग्रन्थ	कल्पसूत्र
अमरुकशतक के प्राचीनतम टीकाकार	अर्जुनवर्मदेव
सर्वश्रेष्ठ कर्म	यज्ञ
सर्वश्रेष्ठ वेदभाष्यकर्ता	आचार्य सायण
सर्वश्रेष्ठ गद्यकार	बाणभट्ट
सर्वश्रेष्ठ वैयाकरण	महर्षि पाणिनि
सर्वश्रेष्ठ नाटककार	कालिदास
सर्वश्रेष्ठ प्रतीकात्मक नाटक	प्रबोधचन्द्रोदय
सर्वश्रेष्ठ तान्त्रिक ग्रन्थ	तन्त्रालोक
संस्कृत के सर्वश्रेष्ठ कवि	कालिदास
कश्मीरी लेखकों में सर्वश्रेष्ठ	अभिनवगुप्त
शाकुन्तल का सर्वश्रेष्ठ अङ्क	चतुर्थ
रससूत्र के सर्वश्रेष्ठ भाष्यकार	अभिनवगुप्त
शङ्करभट्ट के अनुसार सर्वश्रेष्ठ निबन्धकार	विज्ञानेश्वर
संस्कृत साहित्य के सर्वश्रेष्ठ कवि	कालिदास
राजशेखर के मत में सर्वश्रेष्ठ नाटक	स्वप्नवासवदत्तम्
शृङ्गाररस के सर्वश्रेष्ठ कवि	कालिदास
करुणरस के सर्वश्रेष्ठ कवि	भवभूति

संस्कृत गद्यसाहित्य की सर्वोकृष्ट रचना	कादम्बरी
ब्राह्मण ग्रन्थों में सर्वश्रेष्ठ देवता	प्रजापति
केरलीय राजाओं में सर्वश्रेष्ठ	रामवर्मा
सर्वप्रथम नाटककार	भास
मीमांसा के सर्वप्रथम भाष्यकार	शबर
चम्पू ग्रन्थों में सर्वप्रथम	नलचम्पू
कालिदास की प्रथम कृति	ऋतुसंहार
प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास (संस्कृत)	शिवराजविजय
सुभाषित संग्रह का प्रथम ग्रन्थ	गाथासप्तशती
प्रथम ऐतिहासिक काव्य	नवसाहसाङ्कचरित
समुपलब्ध प्रथम गद्यकार	दण्डी
प्रथम लौकिक खण्डकाव्य	मेघदूतम्
प्रथम बौद्ध नाटककार	अश्वघोष
संस्कृत का प्रथम महाकाव्य	जाम्बवतीविजय
अद्वैत के प्रथम आचार्य	गौडपादाचार्य
प्रस्थानत्रयी के प्रथम भाष्यकार	शङ्कराचार्य
बाणभट्ट की प्रथम रचना	हर्षचरितम्
काव्यप्रकाश की प्रथम टीका	संकेत (माणिक्यचन्द्र कृत)
जैनधर्म के प्रथम तीर्थंकर	ऋषभदेव
प्राकृत का प्रथम गीतिकाव्य	गाथासप्तशती
संस्कृत की प्रथम नाटिका	रत्नावली
कलापक्ष के प्रथम आचार्य	भारवि
उपलब्ध प्रथम प्रतीक नाटक	प्रबोधचन्द्रोदय
पुराणों में प्रथम	ब्रह्मपुराण
महाभारत के प्राचीन टीकाकार	देवबोध
भाषाविज्ञान के प्राचीन पण्डित	यास्क
सबसे प्राचीन धर्मसूत्र	गौतमधर्मसूत्र
सबसे प्राचीन शुल्बसूत्र	बोधायनशुल्बसूत्र
अथर्ववेद का प्राचीन नाम	अथर्वाङ्गिरस
काव्यशास्त्र का उपलब्ध सबसे प्राचीन ग्रन्थ	नाट्यशास्त्र
ज्योतिष का उपलब्ध प्राचीन ग्रन्थ	वेदाङ्गज्योतिष
उपजीव्यों में प्रमुख	रामायण, महाभारत
पाञ्चरात्र संहिताओं में प्रमुख	अर्हिबुध्न्यसंहिता
नास्तिक दर्शनों में सर्वप्राचीन	चार्वाक दर्शन
नीतिकथा साहित्य का सर्वप्राचीन ग्रन्थ	पञ्चतन्त्र
व्याकरण दर्शन का सर्वोत्तम ग्रन्थ	वाक्यपदीय
स्मृति ग्रन्थों में सर्वाधिक प्रसिद्ध	मनुस्मृति
वैष्णवपुराणों में सर्वप्रसिद्ध	श्रीमद्भागवतपुराण
काव्यों में सर्वाधिक रमणीय	नाटक
जैन पुराणों में सर्वाधिक प्रसिद्ध	आदिपुराण
सामवेद की लोकप्रिय शाखा	कौथुम शाखा
अथर्ववेद की लोकप्रिय शाखा	शौनक शाखा
दक्षिण भारत का लोकप्रिय स्तोत्र	नारायणीय स्तोत्र
संस्कृत का बृहत्तम महाकाव्य	हरविजय (50 सर्ग)
चम्पू काव्यों में बृहत्तम	वृन्दावनचम्पू
विश्वसाहित्य का बृहत्तम ग्रन्थ	महाभारत
अष्टविकृति पाठों में सबसे कठिन	घनपाठ
सबसे बड़ा शुल्बसूत्र	बोधायन
वेद व्याख्याकारों में अग्रगण्य	सायणाचार्य
ऐतिहासिक काव्यों में अग्रणी	राजतरंगिणी
सर्वाधिक विशाल पुराण	स्कन्दपुराण
सर्वाधिक बृहद् उपनिषद्	बृहदारण्यकोपनिषद्
ब्राह्मणग्रन्थों में सबसे छोटा	दैवत ब्राह्मण
सबसे छोटा उपनिषद्	माण्डूक्योपनिषद्
सबसे छोटा पुराण	मार्कण्डेय पुराण
अर्वाचीनतम ब्राह्मण ग्रन्थ	गोपथ ब्राह्मण
अर्वाचीन वेद	अथर्ववेद
आदिकाव्य	रामायण
ललित कलाओं के आदि आचार्य	भरतमुनि
ज्यामिति के आदि ग्रन्थ	शुल्बसूत्र

संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख ग्रन्थांश

श्रीमद्भगवद्गीता - **महाभारत** (भीष्मपर्व -अध्याय - 25-42)

हरिवंशपुराण - **महाभारत** (महाभारत का खिलपर्व / हरिवंशपर्व)

रासपञ्चाध्यायी - **भागवतमहापुराण** (दशमस्कन्ध)

दुर्गासप्तशती - **मार्कण्डेयपुराण** (अध्याय-81-93)

हंसगीता - **विष्णुधर्मोत्तरपुराण** (तृतीयखण्ड- अध्याय 227-342)

अध्यात्म-रामायण - **ब्रह्माण्ड पुराण** (उत्तरखण्ड का एक भाग)

पराशर-गीता - **महाभारत** (शान्तिपर्व-अध्याय-290-98)

विष्णुसहस्रनामस्तोत्र - **महाभारत** (अनुशासन पर्व- अध्याय-149)

शिवसहस्रनामस्तोत्र - **महाभारत** (अनुशासनपर्व- अध्याय-17)

हंस-गीता - **महाभारत** (शान्तिपर्व -अध्याय-299)

शकुन्तलोपाख्यान - **महाभारत** (आदिपर्व - अध्याय-68-74)

नलोपाख्यान - **महाभारत** (वनपर्व-अध्याय-53-79)

रामोपाख्यान - **महाभारत** (वनपर्व- अध्याय-274-91)

सावित्र्युपाख्यान - **महाभारत** (वनपर्व-अध्याय -292-99)

शङ्करगीता - **विष्णुधर्मोत्तरपुराण** (प्रथमखण्ड, अध्याय-52-65)

संस्कृत के प्रमुख ग्रन्थों की विशेष संज्ञा

ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद	-	**वेदत्रयी**
किरातार्जुनीयम् , शिशुपालवधम् , नैषधीयचरितम्	-	**संस्कृत साहित्य के बृहत्त्रयी**
ध्वन्यालोक, काव्यप्रकाश, रसगङ्गाधर	-	**काव्यशास्त्र के बृहत्त्रयी**
चरकसंहिता, सुश्रुतसंहिता, अष्टांगहृदय	-	**आयुर्वेद के बृहत्त्रयी**
कुमारसम्भवम् , रघुवंशम् ,मेघदूतम्	-	**संस्कृत साहित्य के लघुत्रयी**
उपनिषद् , गीता, ब्रह्मसूत्र	-	**प्रस्थानत्रयी**
पाणिनि, पतञ्जलि, कात्यायन	-	**व्याकरण के मुनित्रय**
वेदव्यास, पराशर, शुकदेव	-	**पुराणों के मुनित्रय**
शृंगारशतक, नीतिशतक, वैराग्यशतक	-	**शतकत्रय**
किरातार्जुनीय महाकाव्य के प्रथम तीन सर्ग	-	**पाषाणत्रय**
पञ्चास्तिकायसार, समयसार, प्रवचनसार	-	**जैन सम्प्रदाय के नाटकत्रयी**
विनयपिटक, सुत्तपिटक, अभिधम्मपिटक	-	**बौद्धदर्शन के त्रिपिटक**
खण्डनखण्डखाद्य, तत्त्वदीपिका, अद्वैतसिद्धि	-	**वेदान्तदर्शन के कठिनत्रयी**
उपनिषद् , गीता, ब्रह्मसूत्र, भागवत	-	**प्रस्थान चतुष्टयी**
गीता, विष्णुसहस्रनाम, अनुगीता, भीष्मस्तवराज, गजेन्द्रमोक्ष	-	**महाभारत के पञ्चरत्न**

प्रमुख ग्रन्थांशों की विशेष संज्ञा

शुक्लयजुर्वेद का 40वाँ अध्याय	-	**ईशावास्योपनिषद्**
तैत्तिरीयारण्यक का दशम प्रपाठक	-	**महानारायणोपनिषद्**
शतपथ ब्राह्मण के अन्तिम 6 अध्याय	-	**बृहदारण्यकोपनिषद्**
आपस्तम्बधर्मसूत्र का 8वाँ पटल	-	**अध्यात्मपटल**
गीता का 18वाँ अध्याय	-	**एकाध्यायीगीता**
किरातार्जुनीयम् का 15वाँ सर्ग	-	**चित्रकाव्य**

कवियों की स्वकाव्य विषयोक्त गर्वोक्तियाँ

प्रत्यक्षरश्लेषमयप्रबन्ध	-	**सुबन्धु अपने काव्य वासवदत्ता के विषय में** (सातवीं शताब्दी पूर्वार्द्ध)
लक्ष्मीपतेश्चरितकीर्तनमात्रचारु	-	**माघ अपने काव्य के विषय में** (सातवीं शताब्दी ई0)
शृङ्गारामृतशीतगुः	-	**श्रीहर्ष नैषधीयचरित के विषय में** (सातवीं शताब्दी पूर्वार्द्ध)
कविकुलादृष्टाध्वपान्थः	-	**श्रीहर्ष ने अपने काव्य शिशुपालवध को माना** (12 वी. शताब्दी ई0)
चन्द्रार्धचूडचरिताश्रयचारु	-	**रत्नाकर अपने काव्य को** (बारहवीं शताब्दी ई0)
सन्दर्भशुद्धिं गिरां जानीते जयदेव एव	-	**जयदेव ने गीतगोविन्द के विषय में।** (बारहवीं शताब्दी ई0)

आनन्दवर्धन - आनन्दवर्धनः कस्य नासीदानन्दवर्धनः। (राजशेखर)

कालिदास - 1. कनिष्ठिकाधिष्ठित कालिदासः।
2. न कालिदासादपरस्य वाणी। (श्रीकृष्णकवेः)
3. काव्येषु माघः कविकालिदासः। (घटखर्परस्य)

गुणाढ्य - शश्वद् बाणद्वितीयेन नमदाकारधारिणा।
धनुषेव गुणाढ्येन निःशेषो रञ्जितो जनः।। (त्रिविक्रमभट्टस्य)

दण्डी - दण्डिप्रबन्धाश्च त्रिषु लोकेषु विश्रुताः। (राजशेखरस्य)

पाणिनिः - नमः पाणिनये तस्मै यस्मादाविरभूदिह।
आदौ व्याकरणं काव्यमनु जाम्बवतीजयम्।। (राजशेखरस्य)

बाणभट्ट - 1. वाणी बाणो बभूवेति। (गोवर्धनस्य)
2. बाणः कवीनामिह चक्रवर्ती (तत्रैव)
3. वाणी बाणस्य मधुरशीलस्य (धर्मदासस्य)
4. बाणस्तु पञ्चाननः। (श्रीचन्द्रदेवस्य)
5. यादृग् गद्यविधौ बाणः पद्यबन्धे च तादृशः। (भोजराजस्य)
6. भट्टबाणस्य भारतीम्। (कस्यापि)

❑❑

3. व्याकरण

वर्णविचार-स्वर व्यञ्जन

संस्कृत- सम् + कृ + क्त (सुट् का आगम)

'संस्कृत' शब्द का अर्थ है- शुद्ध, परिष्कृत, परिमार्जित, परिनिष्ठित। अतः संस्कृत भाषा का अर्थ है- शुद्ध एवं परिमार्जित भाषा।

व्याकरण- वि + आङ् + √कृ + ल्युट्

'व्याक्रियन्ते व्युत्पाद्यन्ते अनेन इति व्याकरणम्' जिसके माध्यम से शब्दों की व्युत्पत्ति या निष्पत्ति बतायी जाय, वह व्याकरण है। व्याकरण 'शब्दशास्त्र' या 'पदशास्त्र' है।

त्रिमुनि- संस्कृत व्याकरण के त्रिमुनि हैं-

1. पाणिनि 2. कात्यायन/वररुचि 3. पतञ्जलि

अष्टाध्यायी- व्याकरणशास्त्र का महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है- अष्टाध्यायी जो महर्षि पाणिनि की रचना है।

- अष्टाध्यायी में 8 अध्याय, प्रत्येक अध्याय में 4-4 पाद हैं, तो कुल मिलाकर 8×4 = 32 पाद हैं, तथा 3978 अर्थात् लगभग 4000 सूत्र हैं। इसीलिए पाणिनि को **'सूत्रकार'** कहा गया है।
- अष्टाध्यायी का प्रथम सूत्र- 'वृद्धिरादैच् (1.1.1) तथा अन्तिम सूत्र 'अ अ' (8.4.67) है।
- महर्षि कात्यायन या वररुचि ने अष्टाध्यायी के सूत्रों पर वार्तिक लिखा, इसीलिए इन्हें **'वार्तिककार'** कहते हैं।
- महर्षि पतञ्जलि ने अष्टाध्यायी के 4000 सूत्रों पर एक विस्तृत भाष्य लिखा; जिसे **'महाभाष्य'** कहते हैं। इसीलिए व्याकरण शास्त्र के **'भाष्यकार'** के रूप में पतञ्जलि प्रसिद्ध हैं। महाभाष्य में कुल 84 'आह्निक' हैं।
- भट्टोजिदीक्षित ने सूत्रों पर वृत्ति लिखी इसीलिए इन्हें **'वृत्तिकार'** के नाम से जानते हैं। 'सिद्धान्तकौमुदी' इनकी प्रसिद्ध रचना है।

वर्ण विचार

- **वर्ण अथवा अक्षर-** हम मुख से जिन ध्वनियों का उच्चारण करते हैं, उन्हें 'वर्ण' अथवा 'अक्षर' कहते हैं। वैसे तो 'न क्षरति इति अक्षरः' ऐसा 'अक्षर' शब्द का व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ है। अर्थात् जिनका क्षरण या विनाश न हो वे अक्षर हैं, जैसे- अ, इ, उ, क्, ख्, ग् आदि, परन्तु सामान्यतया 'वर्ण' या 'अक्षर' समानार्थी समझे जाते हैं। वर्ण दो प्रकार के होते हैं- (i) स्वर और (ii) व्यञ्जन

स्वर (अच्)

स्वर - 'स्वयं राजन्ते इति स्वराः' -

स्वर वे ध्वनियाँ हैं, जिनके उच्चारण के लिए किसी अन्य वर्ण की आवश्यकता नहीं होती। जैसे- 'अ' के उच्चारण में किसी अन्य स्वर या व्यञ्जन वर्णों की सहायता नहीं लेनी पड़ती इसीलिए 'अ' स्वर है। इसप्रकार अ, इ, उ, ऋ, ऌ, ए, ओ, ऐ, औ- ये सभी स्वर हैं।

1. स्वरों की संख्या- संस्कृत व्याकरणशास्त्र में स्वरों की संख्या 09 मानी गयी है।

जैसे- अ, इ, उ, ऋ, ऌ, ए, ओ, ऐ, औ। ये सभी स्वर 'अच्' प्रत्याहार के अन्तर्गत परिगणित हैं इसीलिए स्वरों को 'अच्' भी कहा जाता है।

2. मूल स्वर- मूल स्वर 05 हैं। अ, इ, उ, ऋ, ऌ ये पाँच मूलस्वर कहे जाते हैं।

3. संयुक्त स्वर- ए, ओ, ऐ, औ - ये चार संयुक्त या मिश्रित स्वर कहे जाते हैं।

जैसे- अ + इ = ए
अ + उ = ओ
अ + ए = ऐ
अ + ओ = औ

नोट- ऊकालोऽज्झ्रस्वदीर्घप्लुतः (1.2.27) सूत्र से एकमात्रिक, द्विमात्रिक तथा त्रिमात्रिक स्वरों की क्रमशः ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत संज्ञा होती है।

स्वरों के भेद- स्वरों के मुख्यतया तीन भेद हैं-

1. ह्रस्व स्वर- जिन स्वरों के उच्चारण में एक मात्रा का समय लगे, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं-

जैसे- अ, इ, उ, ऋ, ऌ ये सभी ह्रस्व स्वर हैं।

2. दीर्घ स्वर- जिन स्वरों के उच्चारण में दो मात्रा का समय लगे, वे दीर्घस्वर कहे जाते हैं-

जैसे- आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ओ, ऐ, औ।

3. प्लुत स्वर- जिन स्वरों के उच्चारण में दो मात्रा से अधिक अर्थात् तीन मात्रा का समय लगे इन्हें प्लुतस्वर कहते हैं। प्लुतस्वरों की पहचान के लिए '३' यह चिह्न लगाया जाता है।

जैसे- अ-३, इ-३, उ-३ आदि।
'ओ३म्'- यह स्वर त्रैमात्रिक है, जिसका प्रयोग प्रायः वेदों में होता है। यहाँ 'ओ' प्लुतस्वर है।

- अ इ उ ऋ प्रत्येक वर्ण के 18 भेद होते हैं।
- ऌ, ए, ओ ऐ औ के 12 भेद होते हैं।
- ऋ एवं ऌ के कुल 30 भेद होते हैं।

वर्णों का उच्चारण काल

एकमात्रो भवेत् ह्रस्वो द्विमात्रो दीर्घ उच्यते।
त्रिमात्रस्तु प्लुतो ज्ञेयो व्यञ्जनं चार्धमात्रिकम्॥

अर्थात्- ह्रस्व स्वर की एकमात्रा, दीर्घस्वर की दो मात्रा एवं प्लुत स्वरों को त्रिमात्रिक समझना चाहिए। व्यञ्जन वर्णों की आधी मात्रा जाननी चाहिए।

एकमात्रिक स्वर- अ, इ, उ, ऋ, ऌ (ह्रस्व स्वर)।
द्विमात्रिक स्वर- आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ओ, ऐ, औ (दीर्घ स्वर)
त्रिमात्रिक स्वर- अ-३, इ-३, उ-३, ऋ-३ आदि। (प्लुत स्वर)
अर्द्धमात्रिक वर्ण- क् ख् ग् घ् ङ् च् छ् ज् (सभी व्यञ्जनवर्ण)।

मात्राकाल- पलक झपकने के समय को एकमात्राकाल कहते हैं।

व्यञ्जन (हल् वर्ण)

व्यञ्जन- 'अन्वग् भवति व्यञ्जनम्'
व्यञ्जन वे वर्ण हैं, जो स्वतन्त्र रूप से न बोले जा सकें; अर्थात् जिनका उच्चारण स्वर की सहायता के बिना नहीं हो सकता।

जैसे- क् + अ = क
ख् + अ = ख
ग् + अ = ग आदि।

- व्याकरण में जो शुद्ध व्यञ्जन वर्ण होंगे उन्हें हलन्त के साथ ही लिखा जाता है। जैसे- क् च् ट् त् प् आदि। इसीलिए इन्हें अर्धमात्रिक वर्ण कहा गया है। **'व्यञ्जनं चार्धमात्रिकम्'।**
- सभी व्यञ्जन वर्ण 'हल्' प्रत्याहार में समाहित होते हैं अतः व्यञ्जनों को **'हल्'** भी कहते हैं। कुल **व्यञ्जन वर्ण 33** माने गये हैं। जो कि माहेश्वर सूत्रों के 'हयवरट्' से लेकर 'हल्' तक 10 सूत्रों में कहे गये हैं।

व्यञ्जन के प्रकार- मुख्यरूप से व्यञ्जन के तीन प्रकार होते, हैं; जो माहेश्वरसूत्रों में गिने गये हैं।
1. स्पर्श व्यञ्जन 2. अन्तःस्थ व्यञ्जन 3. ऊष्म व्यञ्जन।
चतुर्थ प्रकार है 4. संयुक्त व्यञ्जन (जो माहेश्वर सूत्रों में परिगणित नहीं है)

(i) स्पर्श व्यञ्जन- जिन वर्णों के उच्चारण में मुख के विभिन्न अवयवों (भागों) - कण्ठ, तालु, मूर्धा आदि का स्पर्श होता है; उन्हें स्पर्श व्यञ्जन कहते हैं। इसकी संख्या 25 होती है- क से लेकर म तक के वर्ण स्पर्श व्यञ्जन हैं। ये वर्ण कण्ठ, तालु, मूर्धा, दन्त आदि स्थानों को स्पर्श करने के बाद उच्चरित होते हैं इसीलिए **'स्पर्श'** हैं।

'कादयो मावसानाः स्पर्शाः'
क वर्ग- क् ख् ग् घ् ङ्
च वर्ग- च् छ् ज् झ् ञ्
ट वर्ग- ट् ठ् ड् ढ् ण्
त वर्ग- त् थ् द् ध् न्
प वर्ग- प् फ् ब् भ् म्

वर्ग- इनमें से 5-5 वर्णों के जो समूह बने हैं, इन समूहों का नाम है- वर्ग। ये वर्ग उच्चारणस्थान के आधार पर बने हैं।

जैसे- (i) क् ख् ग् घ् ङ् ये पाँच व्यञ्जन कण्ठ से बोले जाते हैं, अतः इन सबका एक वर्ग बनाया गया जिसका नाम रखा गया **'कवर्ग'**। कण्ठ से उच्चरित होने के कारण इन्हें **'कण्ठ्यवर्ण'** भी कहते हैं।
इसीप्रकार (ii) च् छ् ज् झ् ञ् ये पाँच व्यञ्जन तालु से बोले जाने के कारण **'तालव्यवर्ण'** कहे जाते हैं, इस वर्ग का नाम है- **'चवर्ग'**।
(iii) ट् ठ् ड् ढ् ण् - मूर्धा से उच्चारण होने के कारण **'मूर्धन्यवर्ण'** हैं। इस वर्ग का नाम है- **'टवर्ग'**।
(iv) त् थ् द् ध् न् - दन्त से उच्चारण होने के कारण **'दन्त्यवर्ण'** हैं। इस वर्ग को **'तवर्ग'** कहते हैं।
(v) प् फ् ब् भ् म् - ये पाँच व्यञ्जन ओष्ठ से बोले जाते हैं, अतः ये **'ओष्ठ्यवर्ण'** कहे जाते हैं, इस वर्ग का नाम **'पवर्ग'** है।
इसप्रकार कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग, पवर्ग कुल **पाँच वर्ग** होते हैं, तथा प्रत्येक वर्ग के अन्तर्गत 5-5 वर्ण आते हैं अतः 5×5 = **25 वर्ण** वर्गाक्षर या वर्गीय व्यञ्जन, या स्पर्श व्यञ्जन कहे जाते हैं।

उदित् - 'कु चु टु तु पु एते उदितः'। इन्ही पाँच वर्गों का लघुनाम या दूसरा नाम कु चु टु तु पु भी है। इनमें 'उ' की इत् संज्ञा होती है, अतः ये उदित् कहलाते हैं।
संस्कृत व्याकरण में जब भी 'कु' कहा जाएगा तो उस का अर्थ होगा- कवर्ग अर्थात् क् ख् ग् घ् ङ्।
'चु' का मतलब चवर्ग अर्थात् - च् छ् ज् झ् ञ्।
'टु' का अर्थ होगा टवर्ग अर्थात् ट् ठ् ड् ढ् ण्
'तु' का अर्थ है- तवर्ग अर्थात् - त् थ् द् ध् न्।
'पु' का अर्थ है- पवर्ग अर्थात् - प् फ् ब् भ् म्।

जैसे-
(i) 'कुहोश्चुः' सूत्र में 'कु' का अर्थ 'कवर्ग' है और 'चु' का अर्थ चवर्ग है।
(ii) 'चुटू' सूत्र में 'चु' का अर्थ चवर्ग है और 'टु' का अर्थ टवर्ग है।

व्यञ्जन (33 वर्ण)

स्पर्श

कवर्ग- क् ख् ग् घ् ङ्
चवर्ग- च् छ् ज् झ् ञ्
टवर्ग- ट् ठ् ड् ढ् ण्
तवर्ग- त् थ् द् ध् न्
पवर्ग- प् फ् ब् भ् म्

कादयो मावसानाः स्पर्शाः

अन्तःस्थ (यण्)

य् व् र् ल्

यणोऽन्तस्थाः

ऊष्म (शल्)

श् ष् स् ह्

शल ऊष्माणः

संयुक्त व्यञ्जन

क् + ष् + अ = क्ष
त् + र् + अ = त्र
ज् + ञ् + अ = ज्ञ

(ii) अन्तःस्थ व्यञ्जन- 'यणोऽन्तःस्थाः' यण् प्रत्याहार के अन्तर्गत आने वाले य् व् र् ल् ये चार वर्ण अन्तःस्थ व्यञ्जन कहे जाते हैं। इन्हीं वर्णों को **'अर्धस्वर'** भी कहा जाता है।

(iii) ऊष्म व्यञ्जन- 'शल ऊष्माणः' शल् प्रत्याहार के अन्तर्गत परिगणित श् ष् स् ह् ये चार वर्ण ऊष्म व्यञ्जन कहे जाते हैं।

(iv) मिश्रित या संयुक्त व्यञ्जन- दो व्यञ्जन वर्णों के मेल से जो वर्ण बनते हैं उन्हें संयुक्त या मिश्रित व्यञ्जन कहते हैं।

जैसे- क् + ष् + अ = क्ष
त् + र् + अ = त्र
ज् + ञ् + अ = ज्ञ

अयोगवाह- वर्णमातृका (वर्णमाला) में पढे हुए वर्णों के अतिरिक्त चार वर्ण और भी हैं-

(i) अनुस्वार (ii) विसर्ग (iii) जिह्वामूलीय (iv) उपध्मानीय

- वर्णमाला तथा माहेश्वरसूत्रों में न पढे जाने के कारण ये अयोगवाह कहलाते हैं।

***अनुस्वार तथा विसर्ग-** ''अं अः इत्यचः परावनुस्वारविसर्गौ'' अं और अः ये अच् के बाद आने पर क्रमशः अनुस्वार और विसर्ग कहलाते हैं।

- बालकं रामं श्यामं आदि में मकार के बाद अकार के ऊपर जो बिन्दु (ं) है उसका नाम अनुस्वार है। इसका उच्चारणस्थान 'नासिका' है। **''नासिकाऽनुस्वारस्य''**
- रामः श्यामः ग्रामः आदि में मकारोत्तर अकार के बाद जो दो बिन्दु (ः) है, उसी को विसर्ग (ः) कहते हैं।
- विसर्ग का उच्चारणस्थान 'कण्ठ' है- **''अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः।''**

*** जिह्वामूलीय-**''ᳵक, ᳵख इति कखाभ्यां प्रागर्धविसर्गसदृशो जिह्वामूलीयः''

ᳵक, ᳵख के पहले जो आधे विसर्ग ᳵ के समान लिखा जाता है, उसे जिह्वामूलीय वर्ण कहते हैं।

यथा- बालक ᳵक्रीडति। बालक ᳵखेलति।

- इसका उच्चारण कण्ठ के भी नीचे 'जिह्वामूल' से होता है।- **''जिह्वामूलीयस्य जिह्वामूलम्''**
- ''कुप्वोः ᳵक ᳵपौ च'' सूत्र से विसर्ग ही विकल्प से जिह्वामूलीय बन जाता है, नहीं तो विसर्ग भी रह सकता है।

***उपध्मानीय-** ''ᳵप ᳵफ इति पफाभ्यां प्रागर्धविसर्गसदृश उपध्मानीयः''

- ᳵप ᳵफ के पहले जो आधे (ᳵ) विसर्ग के समान लिखा जाता है, उसे 'उपध्मानीय वर्ण' कहते हैं। जैसे- वृक्ष ᳵपतति। वृक्ष ᳵफलति। इसका उच्चारणस्थान ओष्ठ है। **''उपूपध्मानीयानाम् ओष्ठौ''**
- ''कुप्वोः ᳵक ᳵपौ च'' सूत्र से विसर्ग ही विकल्प से उपध्मानीय बन जाता है।

*** कार और इफ प्रत्यय-** ''वर्णात्कारः'' संस्कृत व्याकरण में वर्णों में 'कार' प्रत्यय लगाकर बोलना चाहिए।

यथा- अ + कार = अकार

क + कार = ककार, ख से खकार, ग से गकार आदि।

'र' में 'इफ' प्रत्यय (र + इफ) लगाकर 'रेफ' कहना चाहिए।

*** आनुपूर्वी या पदों का अन्तक्रम-** किसी भी शब्द में वर्ण जिस क्रम से व्यवस्थित रहते हैं; उस क्रम का नाम आनुपूर्वी होता है। जैसे 'बालक' शब्द में छह वर्ण हैं- ब् आ ल् अ क् अ।

'राम' शब्द में चार वर्ण हैं- र् आ म् अ।

- 'बालक' और 'राम' के अन्त में अकार है अतः ये अकारान्त शब्द हैं।
- इसीप्रकार हरि, कवि, रवि, ऋषि, कपि आदि इकारान्त हैं।
- भानु, गुरु, शिशु आदि उकारान्त शब्द हैं।
- पितृ, भ्रातृ, मातृ, जामातृ आदि ऋकारान्त शब्द हैं।
- राजन्, आत्मन् आदि नकारान्त हैं, मनस्, पयस्, यशस् आदि सकारान्त शब्द हैं, सरित्, जगत् आदि तकारान्त शब्द हैं।

वर्ण
- स्वर
  - ह्रस्व: अ, इ, उ, ऋ, ऌ
  - दीर्घ: आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ओ, ऐ, औ
  - प्लुत: अ-३, उ-३, ऋ-३ आदि।
- व्यञ्जन
  - स्पर्श: क से म तक 25 वर्ण
  - अन्तःस्थ: यण् य् व् र् ल् 4 वर्ण
  - ऊष्म: शल् श् ष् स् ह् 4 वर्ण
  - मिश्रित/संयुक्त: क्ष त्र ज्ञ आदि

माहेश्वर सूत्र

महर्षि पाणिनि ने संस्कृत का व्याकरण बनाने की इच्छा से घोर तप करके भगवान् महेश्वर (शिव) को प्रसन्न किया। प्रसन्न होकर शिव ने नृत्य के साथ जो डमरू वादन किया उसी से महर्षि पाणिनि को ये 14 सूत्र सुनायी पड़े। भगवान् महेश्वर के डमरू से उत्पन्न होने के कारण इन्हें **''माहेश्वर सूत्र''** कहा जाता है।

नृत्तावसाने नटराजराजो ननाद ढक्कां नवपञ्चवारम्।
उद्धर्तुकामः सनकादिसिद्धान् एतद्विमर्शे शिवसूत्रजालम्॥

नटराजराज भगवान् शिव ने नृत्य के अवसान में सनकादि सिद्धों के उद्धार की कामना से चौदह बार डमरू बजाया जिसमें 14 शिवसूत्रों का ताना बाना निहित था।

- अइउण् ऋऌक् आदि ये चौदह सूत्र हैं इसलिए इन्हें **''चतुर्दशसूत्र''** कहते हैं।
- इन्हीं सूत्रों से प्रत्याहार बनाये जाते हैं, अतः इन्हें **''प्रत्याहारसूत्र''** भी कहते हैं।
- भगवान् शिव के डमरू से निकलकर पाणिनि को प्राप्त हुए हैं, अतः इन्हें **''शिवसूत्र''** या **''माहेश्वरसूत्र''** भी कहते हैं।
- इन सूत्रों में संस्कृत वर्णमाला है अतः इन्हें **''वर्णसमाम्नायसूत्र''** भी कहते हैं।

चतुर्दश माहेश्वर सूत्र

1. अइउण्	**2. ऋऌक्**	**3. एओङ्**	**4. ऐऔच्**
5. हयवरट्	**6. लण्**	**7. ञमङणनम्**	
8. झभञ्	**9. घढधष्**	**10. जबगडदश्**	
11. खफछठथचटतव्		**12. कपय्**	
13. शषसर्		**14. हल्**	

माहेश्वरसूत्रों के विषय में ज्ञातव्य तथ्य–

- माहेश्वरसूत्रों में सबसे पहिले स्वर हैं; उसके बाद अन्तःस्थ वर्ण य् व् र् ल् हैं। उसके बाद वर्गों के पञ्चम वर्ण, फिर चतुर्थ वर्ण, तदनन्तर तृतीयवर्ण फिर द्वितीय वर्ण तब प्रथमवर्ण, सबसे अन्त में श् ष् स् ह् ये चार ऊष्म वर्ण गिने गये हैं।
- इन चतुर्दशसूत्रों के अन्त में जो ण् क् ङ् च् आदि व्यञ्जन वर्ण हलन्त हैं उनका नाम 'इत्' है। **''एषाम् अन्त्याः इतः''**
- इन इत्संज्ञक वर्णों का लोप हो जाता है। कुल 14 इत्संज्ञक वर्ण होते हैं। 'लण्' सूत्र का अकार भी इत्संज्ञक होने से इत्संज्ञक वर्ण 15 भी कहे जा सकते हैं। **''लण्मध्ये तु इत्संज्ञकः''** इत् को 'अनुबन्ध' भी कहा जाता है। अर्थात् 'अनुबन्ध' और 'इत्' पर्यायवाची हैं।
- प्रत्याहार बनाने में इत्संज्ञकवर्णों का प्रयोग किया जाता है किन्तु प्रत्याहार के अन्तर्गत वर्णों की गिनती में इन इत्संज्ञक वर्णों को नहीं गिना जाता है।
  जैसे- 'अच्' प्रत्याहार ''अइउण् ऋऌक् एओङ् ऐऔच्'' इन चार सूत्रों से बना है। यहाँ अइउण् के 'अ' से लेकर ऐऔच् के 'च्' के बीच आने वाले सभी वर्ण ''अच्'' प्रत्याहार में गिने जायेंगे किन्तु ''ण् क् ङ् और च्'' ये चार इत्संज्ञक वर्ण 'अच्' प्रत्याहार में नही गिने जायेंगे।
  अतः 'अच्' के अन्तर्गत- ''अ, इ, उ, ऋ, ऌ, ए, ओ, ऐ, औ'' ये 9 वर्ण आते हैं। जिसमें इत्संज्ञक वर्ण नहीं गिने गये हैं।
- माहेश्वरसूत्रों के पाँचवे सूत्र 'हयवरट्' में 'ह' वर्ण गिना गया है तथा चौदहवें सूत्र 'हल्' में भी 'ह' वर्ण गिना गया है। अतः माहेश्वरसूत्रों में हकार की दो बार गणना की गयी है।

- माहेश्वरसूत्रों में हकार का दो बार ग्रहण क्यों? 'अट्' और 'शल्' प्रत्याहार में 'ह' वर्ण को शामिल करने के लिए तथा 'अर्हेण' और 'अधुक्षत' आदि प्रयोगों की सिद्धि के लिए।
- माहेश्वरसूत्रों में 'ण्' इत्संज्ञक वर्ण दो बार आया है- एक बार अइउण् में दूसरी बार लण् में।

इत्संज्ञा करने वाला सूत्र-

➢ **हलन्त्यम् -** (1.3.3) उपदेशावस्था में जो अन्तिम हल् होता है, उसकी इत्संज्ञा होती है।

इत्संज्ञक वर्णों का लोप करने वाला सूत्र-

तस्य लोपः - जिस वर्ण की इत्संज्ञा होती है, उसका लोप हो जाता है। इसीलिए 'अइउण्' में जो 'ण्' है ऋऌक् में जो 'क्' है इनकी ''हलन्त्यम्'' सूत्र से इत्संज्ञा होकर ''तस्य लोपः'' सूत्र से लोप हो जाता है। अतएव प्रत्याहार वर्णों की गिनती में इन इत्संज्ञक वर्णों की गिनती नहीं की जाती।

उपदेश क्या है- ''उपदेश आद्योच्चारणम्''

पाणिनि कात्यायन एवं पतञ्जलि ने जिसका प्रथम उच्चारण या प्रथम पाठ किया, उसे व्याकरणशास्त्र में 'उपदेश' कहा जाता है। यहाँ 'अइउण् ऋऌक् आदि चौदह सूत्रों को महर्षि पाणिनि ने महेश्वर के डमरू की ध्वनि को प्रथम बार उच्चारण किया अतः ये 14 सूत्र भी 'उपदेश' कहलाये।

- भू आदि धातु, अइउण् आदि सूत्र, उणादि सूत्र, वार्तिक, लिङ्गानुशासन, आगम, प्रत्यय, और आदेश, ये उपदेश माने जाते हैं। कहा भी गया है-

  धातु-सूत्र-गणोणादि-वाक्यलिङ्गानुशासनम्।
  आगम-प्रत्ययादेशा उपदेशाः प्रकीर्तिताः॥

प्रत्याहार संज्ञा

- **प्रति + आङ् + हृ + घञ् = प्रत्याहारः**
- 'प्रत्याहार' शब्द का अर्थ है- संक्षेपीकरण।
- ''प्रत्याह्रियन्ते संक्षिप्यन्ते वर्णाः यत्र स प्रत्याहारः''
- जिनकी सहायता से कम से कम शब्दों में अधिकतम बात कही जा सके, उन्हें प्रत्याहार कहते हैं।

प्रत्याहार संज्ञा विधायक सूत्र- ''आदिरन्त्येन सहेता''

अन्त्य इत् वर्ण के साथ जो आदि वर्ण वह मध्यगामी सभी वर्णों का बोधक होता हुआ स्वयं का भी बोध कराता है। जैसे- अण् प्रत्याहार 'अइउण्' सूत्र के 'अ' से लेकर इत्संज्ञक वर्ण 'ण्' से मिलकर बना है जिसमें अ इ उ ये तीन वर्ण आते हैं।

- इसीप्रकार 'इक्' प्रत्याहार अइउण्, ऋऌक् इन दो सूत्रों से बना है। यहाँ इ से लेकर क् के बीच के सभी वर्ण इ उ ऋ ऌ इक् प्रत्याहार में गिने जाते हैं।

प्रत्याहारों की संख्या- संस्कृत व्याकरण में कुल **42 प्रत्याहार** हैं। कुछ विद्वान् 'रँ' और 'ञम्' प्रत्याहार भी मानते हैं अतः इनके अनुसार प्रत्याहार 43 अथवा 44 हो जाते हैं।

प्रत्याहारों के विषय में कुछ विशेष जानकारी

- 'अच्' प्रत्याहार में समस्त 9 स्वरवर्ण आते हैं, ये अइउण् से ऐऔच् तक के चार सूत्रों से बना है। इसीलिए स्वरों को **''अच्''** भी कहा जाता है।
- 'हल्' प्रत्याहार में समस्त 33 व्यञ्जन वर्ण आते हैं, जो हयवरट् से लेकर हल् तक के 10 सूत्रों से बना है। इसीलिए व्यञ्जनों को **''हल्''** भी कहा जाता है।
- 'झष्' प्रत्याहार में वर्गों के चौथे वर्ण (झ् भ् घ् ढ् ध्) आते हैं जो झभञ् और घढधष् इन दो सूत्रों से बना है।
- 'जश्' प्रत्याहार में वर्गों के तीसरे वर्ण (ज् ब् ग् ड् द्) आते हैं, जो 'जबगडदश्' सूत्र से बना है।
- 'चय्' प्रत्याहार में वर्गों के प्रथम वर्ण (च् ट् त् क् प्) आते हैं।
- 'शल्' प्रत्याहार में चारों ऊष्मवर्ण (श् ष् स् ह्) आते हैं। जो शषसर् और हल् इन दो सूत्रों से बना है।
- 'यण्' प्रत्याहार में चारों अन्तःस्थ वर्ण (य् व् र् ल्) आते हैं। जो हयवरट् और लण् इन दो सूत्रों से बना है।
- अइउण् ऋऌक् एओङ् ऐऔच् आदि 14 सूत्रों के अन्त में जो ण् क् ङ् च् आदि हल् वर्ण लगे हुए हैं; इनका प्रयोजन प्रत्याहार बनाना है। जैसा कि कहा गया है, **''णादयोऽणाद्यर्थाः--''**

माहेश्वर सूत्रों के इत्संज्ञक वर्णों से मिलकर बनने वाले 42 प्रत्याहार

सूत्र	इत्संज्ञकवर्ण	प्रत्याहार	प्रत्याहारों की संख्या
1. अइउण्	इसके 'ण्' से एक प्रत्याहार	अण्	1
2. ऋऌक्	इसके 'क्' से तीन प्रत्याहार	अक् इक् उक्	3
3. एओङ्	इसके 'ङ्' से एक प्रत्याहार	एङ्	1
4. ऐऔच्	इसके 'च्' से चार प्रत्याहार	अच् इच् एच् ऐच्	4
5. हयवरट्	इसके 'ट्' से एक प्रत्याहार	अट्	1
6. लण्	इसके 'ण्' से तीन प्रत्याहार	अण् इण् यण्	3
7. ञमङणनम्	इसके 'म्' से तीन प्रत्याहार	अम् यम् ङम्	3
8. झभञ्	इसके 'ञ्' से एक प्रत्याहार	यञ्	1
9. घढधष्	इसके 'ष्' से दो प्रत्याहार	भष् झष्	2
10. जबगडदश्	इसके 'श्' से छह प्रत्याहार	अश् हश् वश् जश् झश् बश्	6
11. खफछठथचटतव्	इसके 'व्' से एक प्रत्याहार	छव्	1
12. कपय्	इसके 'य्' से पाँच प्रत्याहार	यय् मय् झय् खय् चय्	5
13. शषसर्	इसके 'र्' से पाँच प्रत्याहार	यर् झर् खर् चर् शर्	5
14. हल्	इसके 'ल्' से छह प्रत्याहार	अल् हल् वल् रल् झल् शल्	6
			कुल-42

संस्कृतव्याकरण के 42 प्रत्याहार

क्र.	प्रत्याहारः	वर्णाः	कुलवर्णाः	सूत्रों में प्रत्याहार का प्रयोग
01.	**अण्**	अ, इ, उ	03 वर्ण	**उरण्** रपरः (1.1.51)
02.	**अक्**	अ, इ, उ,ऋ, ऌ	05 वर्ण	**अकः** सवर्णे दीर्घः (6.1.101)
03.	**अच्**	अ,इ,उ,ऋ,ऌ,ए,ओ,ऐ,औ **(सम्पूर्ण स्वरवर्ण)**	09 वर्ण	**अचो**ऽन्त्यादि टि (1.1.64)
04.	**अट्**	अ,इ,उ,ऋ,ऌ,ए,ओ,ऐ,औ, ह,य,व,र	13 वर्ण	शश्छो**ऽटि** (8.4.63)
05.	**अण्**	अ,इ,उ,ऋ,ऌ,ए,ओ,ऐ,औ, ह,य,व,र,ल	14 वर्ण	**अणु**दित्सवर्णस्य चाऽप्रत्ययः (1.1.69)
06.	**अम्**	अ,इ,उ,ऋ,ऌ,ए,ओ,ऐ,औ, ह,य,व,र,ल,ञ,म,ङ,ण,न	19 वर्ण	पुमः खय्य**म्**परे (8.3.6)
07.	**अश्**	अ,इ,उ,ऋ,ऌ,ए,ओ,ऐ,औ, ह,य,व,र,ल,ञ,म,ङ,ण,न, झ,भ,घ,ढ,ध,ज,ब,ग,ड,द	29 वर्ण	''भो भगो-अघो-अपूर्वस्य योऽशि'' (8.3.17)

क्र.	प्रत्याहारः	वर्णाः	कुलवर्णाः	सूत्रों में प्रत्याहार का प्रयोग
08.	**अल्**	अ,इ,उ,ऋ,ऌ,ए,ओ,ऐ,औ, ह,य,व,र,ल ञ,म,ङ,ण,न,झ,भ, घ,ढ,ध,ज,ब,ग,ड,द,ख,फ,छ,ठ, थ,च,ट,त,क,प,श,ष,स (ह) **(सम्पूर्ण वर्णमाला)**	42 वर्ण	**अलो**ऽन्त्यात्पूर्व उपधा (1.1.65)
09.	**इक्**	इ,उ,ऋ,ऌ	04 वर्ण	**इको** गुणवृद्धी (1.1.3)
10.	**इच्**	इ,उ,ऋ,ऌ,ए,ओ,ऐ,औ	08 वर्ण	**इच** एकाचोऽम्प्रत्ययवच्च (6.3.68)
11.	**इण्**	इ,उ,ऋ,ऌ,ए,ओ,ऐ,औ, ह,य,व,र,ल	13 वर्ण	**इण्**कोः (8.3.57)
12.	**उक्**	उ,ऋ,ऌ	03 वर्ण	**उगि**तश्च (4.1.6)
13.	**एङ्**	ए,ओ **(गुणसंज्ञकवर्ण)**	02 वर्ण	**एङि** पररूपम् (6.1.94)
14.	**एच्**	ए,ओ,ऐ,औ	04 वर्ण	**एचो**ऽयवायावः (6.1.78)
15.	**ऐच्**	ऐ,औ **(वृद्धिसंज्ञकवर्ण)**	02 वर्ण	वृद्धिरा**दैच्** (1.1.1)
16.	**हश्**	ह,य,व,र,ल,ञ,म,ङ,ण,न, झ,भ,घ,ढ,ध,ज,ब,ग,ड,द	20 वर्ण	**हशि** च (6.1.114)
17.	**हल्**	ह,य,व,र,ल,ञ,म,ङ,ण,न, झ,भ,घ,ढ, ध,ज,ब,ग,ड,द, ख,फ,छ,ठ,थ,च,ट, त,क, प,श,ष,स, (ह) **(सम्पूर्ण व्यञ्जनवर्ण)**	33 वर्ण	**हलो**ऽनन्तराः संयोगः (1.1.7)
18.	**यण्**	य,व,र,ल, **(अन्तःस्थवर्ण)**	04 वर्ण	इको **यण**चि (6.1.77)
19.	**यम्**	य,व,र,ल,ञ,म,ङ,ण,न	09 वर्ण	हलो **यमां** यमि लोपः (8.4.64)
20.	**यञ्**	य,व,र,ल,ञ,म,ङ,ण,न,झ,भ	11 वर्ण	अतो दीर्घो **यञि** (7.3.101)
21.	**यय्**	य,व,र,ल,ञ,म,ङ,ण,न,झ, भ,घ,ढ,ध,ज,ब,ग,ड,द,ख, फ,छ,ठ,थ,च,ट,त,क,प	29 वर्ण	अनुस्वारस्य **ययि** परसवर्णः (8.4.58)
22.	**यर्**	य,व,र,ल,ञ,म,ङ,ण,न,झ, भ,घ,ढ,ध,ज,ब,ग,ड,द,ख, फ,छ,ठ,थ,च,ट,त,क,प,श,ष,स	32 वर्ण	**यरो**ऽनुनासिकेऽनुनासिको वा (8.4.45)
23.	**वश्**	व,र,ल,ञ,म,ङ,ण,न,झ,भ, घ,ढ,ध,ज,ब,ग,ड,द	18 वर्ण	नेड् **वशि** कृति (7.2.8)
24.	**वल्**	व,र,ल,ञ,म,ङ,ण,न,झ,भ, घ,ढ,ध,ज,ब,ग,ड,द,ख,फ,छ, ठ,थ,च,ट,त,क,प,श,ष,स,ह	32 वर्ण	लोपो व्यो**र्वलि** (6.1.66)

क्र.	प्रत्याहारः	वर्णाः	कुलवर्णाः	सूत्रों में प्रत्याहार का प्रयोग
25.	रल्	र,ल,ञ,म,ङ,ण,न,झ,भ,घ,ढ,ध,ज,ब,ग,ड,द,ख,फ,छ,ठ,थ,च,ट,त,क,प,श,ष,स,ह	31 वर्ण	"**रलो** व्युपधाद्धलादेः सँश्च" (1.2.26)
26.	मय्	म,ङ,ण,न,झ,भ,घ,ढ,ध,ज,ब,ग,ड,द,ख,फ,छ,ठ,थ,च,ट,त,क,प	24 वर्ण	**मय** उञो वो वा (8.3.33)
27.	ङम्	ङ,ण,न	03 वर्ण	**ङमो** ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम् (8.3.32)
28.	झष्	झ,भ,घ,ढ,ध **(वर्गों के चतुर्थ वर्ण)**	05 वर्ण	एकाचो बशो भष् (8.2.37) **झष**न्तस्य स्ध्वोः
29.	झश्	झ,भ,घ,ढ,ध,ज,ब,ग,ड,द	10 वर्ण	झलां जश् **झशि (** 8.4.53)
30.	झय्	झ,भ,घ,ढ,ध,ज,ब,ग,ड,द,ख,फ,छ,ठ,थ,च,ट,त,क,प	20 वर्ण	**झयो** होऽन्यतरस्याम् (8.4.62)
31.	झर्	झ,भ,ध,ढ,ध,ज,ब,ग,ड,द,ख,फ,छ,ठ,थ,च,ट,त,क,प,श,ष,स,	23 वर्ण	**झरो** झरि सवर्णे (8.4.65)
32.	झल्	झ,भ,घ,ढ,ध,ज,ब,ग,ड,द,ख,फ,छ,ठ,थ,च,ट,त,क,प,श,ष,स,ह	24 वर्ण	**झलो** झलि (8.2.26)
33.	भष्	भ,घ,ढ,ध	04 वर्ण	एकाचो बशो **भष्** झषन्तस्य स्ध्वोः (8.2.37)
34.	जश्	ज,ब,ग,ड,द **(वर्गों के तृतीय अक्षर)**	05 वर्ण	झलां **जशो**ऽन्ते (8.2.39)
35.	बश्	ब,ग,ड,द	04 वर्ण	एकाचो **बशो** भष् झषन्तस्य स्ध्वोः (8.2.37)
36.	खय्	ख,फ,छ,ठ,थ,च,ट,त,क,प **(वर्गों के द्वितीय एवं प्रथम वर्ण)**	10 वर्ण	पुमः **खय्य**म्परे (8.3.6)
37.	खर्	ख,फ,छ,ठ,थ,च,ट,त,क,प,श,ष,स	13 वर्ण	**खरि** च (8.4.54)
38.	छव्	छ,ठ,थ,च,ट,त	06 वर्ण	नश्**छव्य**प्रशान् (8.3.7)
39.	चय्	च,ट,त,क,प **(वर्गों के प्रथम अक्षर)**	05 वर्ण	**चयोः द्वितीयाः शरि (** 8.4.47) पौष्करशादेः वार्तिक-
40.	चर्	च,ट,त,क,प,श,ष,स	08 वर्ण	अभ्यासे **चर्च (** 8.4.54)
41.	शर्	श,ष,स	03 वर्ण	वा **शरि (** 8.3.36)
42.	शल्	श,ष,स,ह **(ऊष्मवर्ण)**	04 वर्ण	"**शल** इगुपधादनिटः क्सः" (3.1.45)
*	रँ	र,ल	02 वर्ण	उरण् **रपरः** (1.1.51)
*	अम्	ञ,म,ङ,ण,न **(वर्गों के पञ्चमवर्ण)**	05 वर्ण	**अमन्ताड्डः** (उणादि.1.114)

वर्णों का उच्चारण स्थान

उच्चारणस्थान- मुख के जिस भाग से जिस वर्ण का उच्चारण किया जाता है, वही उस वर्ण का उच्चारण स्थान कहा जाता है।

क्र.	सूत्रम्	उच्चारित वर्ण (वर्णों के नाम)	उच्चारण स्थान
1.	**अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः**	अ, आ (18 प्रकार) कु = कवर्ग = क् ख् ग् घ् ङ् ह् और विसर्ग (ः) (कण्ठ्य वर्ण)	कण्ठ
2.	**इचुयशानां तालु**	इ, ई (18 प्रकार) चु अर्थात् चवर्ग = च् छ् ज् झ् ञ् य् और श् (तालव्य वर्ण)	तालु
3.	**ऋटुरषाणां मूर्धा**	ऋ, ॠ (18 प्रकार) टु अर्थात् टवर्ग = ट् ठ् ड् ढ् ण् र् और ष् (मूर्धन्यवर्ण)	मूर्धा
4.	**ऌतुलसानां दन्ताः**	ऌ (12 प्रकार) तु अर्थात् तवर्ग = त् थ् द् ध् न् ल् और स् (दन्त्यवर्ण)	दन्त
5.	**उपूपध्मानीयानाम् ओष्ठौ**	उ ऊ (18 प्रकार) पु अर्थात् पवर्ग = प् फ् ब् भ् म् उपध्मानीय ᳵप ᳵफ (ओष्ठ्य वर्ण)	ओष्ठौ
6.	**ञमङणनानां नासिका च**	ञ् म् ङ् ण् न् (अनुनासिक वर्ण)	नासिका भी
7.	**एदैतोः कण्ठतालु**	ए, ऐ (कण्ठतालव्य वर्ण)	कण्ठतालु
8.	**ओदौतोः कण्ठोष्ठम्**	ओ, औ (कण्ठोष्ठ्य वर्ण)	कण्ठ ओष्ठ
9.	**वकारस्य दन्तोष्ठम्**	व (दन्तोष्ठ्य वर्ण)	दन्तोष्ठ
10.	**जिह्वामूलीयस्य जिह्वामूलम्**	ᳵक ᳵख (जिह्वामूलीय वर्ण)	जिह्वामूलम्
11.	**नासिकाऽनुस्वारस्य**	(ं) अनुस्वार (नासिक्य वर्ण)	नासिका

➢ उच्चारणस्थान और प्रयत्न को अष्टाध्यायी सूत्रों में नहीं बताया गया है अपितु पाणिनीय शिक्षा आदि ग्रन्थों में उच्चारणस्थान आठ प्रकार के माने गये हैं-

अष्टौ स्थानानि वर्णानाम् उरः कण्ठः शिरस्तथा।
जिह्वामूलं च दन्ताश्च नासिकोष्ठौ च तालु च॥ (पाणिनीय शिक्षा -13)

वर्णों के उरः, कण्ठ, मूर्धा, जिह्वामूल, दन्त, नासिका, ओष्ठ और तालु ये आठ उच्चारण स्थान हैं।

❑❑

उच्चारणस्थान तालिका

उच्चारणस्थान	वर्ण
कण्ठ	अ, आ क् ख् ग् घ् ङ् ह् विसर्ग (:)
तालु	इ ई च् छ् ज् झ् ञ् य् श्
मूर्धा	ऋ ॠ ट् ठ् ड् ढ् ण् र् ष्
दन्त	ऌ त् थ् द् ध् न् ल् स्
ओष्ठ	उ ऊ प् फ् ब् भ् म् ᳲप ᳲफ
नासिका	(ं) अनुस्वार
कण्ठ तालु	ए ऐ
कण्ठ ओष्ठ	ओ औ
दन्त ओष्ठ	व्
कण्ठ+नासिका	ङ्
तालु+नासिका	ञ्
मूर्धा+नासिका	ण्
दन्त+नासिका	न्
ओष्ठ+नासिका	म्
जिह्वामूलीय	ᳲक ᳲख

वर्णों का आभ्यन्तर एवं बाह्य प्रयत्न

प्रयत्न- वर्णों के उच्चारण करने की चेष्टा को प्रयत्न कहते हैं। प्रयत्न दो प्रकार का होता है-

(i) आभ्यन्तर प्रयत्न (ii) बाह्य प्रयत्न

''यत्नो द्विधा आभ्यन्तरो बाह्यश्च''

(i) आभ्यन्तर प्रयत्न- 'आभ्यन्तर' का अर्थ है भीतर/आभ्यन्तर प्रयत्न से तात्पर्य उस चेष्टा से है, जो वर्णों के उच्चारण के पूर्व मुख के अन्दर होती है।

आभ्यन्तर प्रयत्न पाँच प्रकार का होता है-

1. **स्पृष्ट-** इस आभ्यन्तर प्रयत्न में जिह्वा-कण्ठ, तालु, मूर्धा, दन्त आदि उच्चारण स्थानों को स्पर्श करती है, इसलिए इन्हें **'स्पर्श वर्ण'** कहते हैं। इसमें क से म तक के **25 वर्ण** आते हैं। **''स्पृष्टं प्रयत्नं स्पर्शानाम्''**
2. **ईषत् स्पृष्ट-** ईषत् का अर्थ है- थोडा स्पृष्ट का अर्थ है- छुआ गया।
   इस प्रयत्न में जिह्वा उच्चारण स्थान को थोडा स्पर्श करती है। इसमें य् व् र् ल् (यण्) अन्तःस्थ वर्ण आते हैं। **''ईषत्स्पृष्टम् अन्तःस्थानाम्''**
3. **विवृत-** विवृत का अर्थ है- खुला हुआ। इनके उच्चारण में मुँह खोलना पड़ता है। यह प्रयत्न स्वरों का है। **''विवृतं स्वराणाम्''**

जैसे- अ, इ, उ, ऋ, ऌ ए ओ ऐ औ सभी स्वर विवृत हैं।

4. **ईषत् विवृत-** ईषत् का अर्थ है- थोडा विवृत का अर्थ है- खुला हुआ। इसमें जिह्वा को कम उठाना पडता है। शल् अर्थात् श् ष् स् ह् इन चार ऊष्म वर्णों का प्रयत्न ईषत्विवृत होता है।

''ईषत्विवृतम् ऊष्मणाम्''

5. **संवृत-** संवृत का अर्थ है- ढका हुआ या बन्द। इसमें वायु का मार्ग बन्द रहता है। प्रयोग करने अर्थात् उच्चारणावस्था में ह्रस्व 'अ' का प्रयत्न संवृत होता है।

''ह्रस्वस्य अवर्णस्य प्रयोगे संवृतम्''

किन्तु शास्त्रीय (साधनिका या प्रयोगसिद्धि) अवस्था में 'अ का प्रयत्न अन्य स्वरों की भाँति विवृत ही होता है-

''प्रक्रियादशायां तु विवृतमेव''

आभ्यन्तर प्रयत्न तालिका

स्पृष्ट	ईषत्स्पृष्ट	ईषत्विवृत	विवृत	संवृत
(क से म तक) क् ख् ग् घ् ङ् च् छ् ज् झ् ञ् ट् ठ् ड् ढ् ण् त् थ् द् ध् न् प् फ् ब् भ् म्	अन्तःस्थ वर्ण (यण्) य् व् र् ल्	ऊष्म वर्ण (शल्) श् ष् स् ह्	अच् अ इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ	अ

बाह्य प्रयत्न- मुख से जब वर्ण बाहर निकलने लगते हैं उस समय उच्चारण की जो चेष्टा होती है, उसे बाह्य प्रयत्न कहते हैं। बाह्य प्रयत्न 11 प्रकार का होता है- **''बाह्यप्रयत्नस्तु एकादशधा''**

1. विवार 2. संवार 3. श्वास 4. नाद 5. घोष 6. अघोष 7. अल्पप्राण 8. महाप्राण 9. उदात्त 10. अनुदात्त 11. स्वरित।

विवार श्वास अघोष- खर् प्रत्याहार (ख् फ् छ् ठ् थ् च् ट् त् क् प् श् ष् स्) के अन्तर्गत आने वाले वर्णों का बाह्यप्रयत्न विवार, श्वास और अघोष होगा। **''खरो विवाराः श्वासा अघोषाश्च''**

विवार श्वास अघोष

खर्
ख् फ् छ् ठ् थ् च् ट् त् क् प् श् ष् स्

संवार नाद घोष- हश् प्रत्याहार (ह् य् व् र् ल् ञ् म् ङ् ण् न् झ् भ् घ् ढ् ध् ज् ब् ग् ड् द्) के अन्तर्गत आने वाले सभी व्यञ्जनवर्णों का बाह्यप्रयत्न संवार नाद घोष होगा। - **''हशः संवारा नादा घोषाश्च''** इसे संक्षेप में ''संनाघो हशः'' भी कह सकते हैं।

संवार नाद घोष

हश्
ह् य् व् र् ल् ञ् म् ङ् ण् न् झ् भ् घ् ढ् ध् ज् ब् ग् ड् द्

अल्पप्राण- अल्प का अर्थ है- थोड़ा। 'प्राण' का अर्थ होता है- वायु। जिस वर्ण से बोलने के लिए भीतर से कम वायु फेंकना पड़े उसे 'अल्पप्राण' कहते हैं।

- वर्गों के प्रथम, तृतीय और पञ्चम वर्ण और यण् (य् व् र् ल्) का बाह्यप्रयत्न अल्पप्राण होगा।

''वर्गाणां प्रथम-तृतीय-पञ्चमा यणश्च अल्पप्राणाः''

अल्पप्राण वर्ण
कवर्ग - क ग ङ
चवर्ग - च ज ञ
टवर्ग - ट ड ण
तवर्ग - त द न
पवर्ग - प ब म
यण् - य व र ल

- इसप्रकार 19 व्यञ्जनवर्णों का बाह्यप्रयत्न अल्पप्राण होगा।

महाप्राण-
महा का अर्थ है- अधिक या ज्यादा, प्राण का अर्थ हुआ-वायु। जिस वर्ण को बोलने के लिए भीतर से अधिक वायु फेंकना पड़े उसे महाप्राण कहते हैं।
महाप्राण- वर्गों के द्वितीय, चतुर्थ और शल् (श् ष् स् ह्) वर्णों का बाह्यप्रयत्न महाप्राण होगा।

''वर्गाणां द्वितीय-चतुर्थौ शलश्च-महाप्राणाः''

महाप्राण वर्ण
कवर्ग - ख घ
चवर्ग - छ झ
टवर्ग - ठ ढ
तवर्ग - थ ध
पवर्ग - फ भ
शल् - श ष स ह

इस प्रकार कुल 14 व्यञ्जनवर्णों का बाह्यप्रयत्न महाप्राण होगा।
ध्यान दें- किसी भी वर्ण का चार बाह्यप्रयत्न होगा। यदि वर्ण हश् प्रत्याहार का हैं तो संवार नाद घोष के साथ-साथ अल्पप्राण और महाप्राण में से कोई एक होगा और यदि वर्ण खर् प्रत्याहार का है तो विवार श्वास अघोष के साथ-साथ अल्पप्राण और महाप्राण में से कोई एक होगा। जैसे-
ह- संवार नाद घोष महाप्राण **ख-** विवार श्वास अघोष महाप्राण
य- संवार नाद घोष अल्पप्राण **क-** विवार श्वास अघोष अल्पप्राण
उदात्त- उच्चैरुदात्तः (1.2.29) मुख के भीतर जो कण्ठ तालु आदि उच्चारण स्थान हैं उनमें ऊर्ध्व भाग से बोले जाने वाले अच् (स्वर) की उदात्त संज्ञा होगी।
अनुदात्त- नीचैरनुदात्तः (1.2.30) कण्ठ तालु आदि उच्चारणस्थानों के निम्न (अधोभाग) भाग से उच्चरित अच् (स्वर) की अनुदात्त संज्ञा होती है।
स्वरित- समाहारः स्वरितः (1.2.31) जहाँ उदात्त और अनुदात्त दोनों का समाहार होता है, उस अच् (स्वर) की स्वरित संज्ञा होगी।
- उदात्त अनुदात्त और स्वरित प्रयत्न केवल स्वरों के होते हैं।
- उदात्त अनुदात्त और स्वरित को समझने के लिए वैदिकग्रन्थों में विशेष चिह्नों का प्रयोग किया गया है-
- अनुदात्त अक्षर के नीचे पड़ी लाइन, स्वरित के ऊपर खड़ी लाइन होती है जबकि उदात्त के लिए कोई चिह्न नहीं होता।

जैसे- **स नः॑ पि॒तेव॑ सू॒नवे, अग्ने॑ सूपाय॒नो भ॑व।**
(ऋग्वेद 1.1.9)

बाह्यप्रयत्न बोधक तालिका

विवार श्वास अघोष	संवार नाद घोष	अल्पप्राण	महाप्राण	उदात्त अनुदात्त स्वरित
खर्	**हश्**	**वर्गों के प्रथम तृतीय और पञ्चम वर्ण और यण्**	**वर्गों के द्वितीय चतुर्थ वर्ण और शल्**	अ इ उ
क ख	ग घ ङ	क ग ङ	ख घ	ऋ ऌ
च छ	ज झ ञ	च ज ञ	छ झ	ए ओ
ट ठ	ड ढ ण	ट ड ण	ठ ढ	ऐ औ
त थ	द ध न	त द न	थ ध	
प फ	ब भ म	प ब म	फ भ	
श ष स	ह य व र ल	य व र ल	श ष स ह	

❑❑❑

व्याकरणशास्त्र की प्रमुख संज्ञायें एवं परिभाषायें

1. वृद्धि संज्ञा

सूत्र- वृद्धिरादैच् (1.1.1)

पदच्छेद- वृद्धिः आत् ऐच्

(आ) (ऐ, औ)

सूत्रार्थ- आ, ऐ, औ- इन तीन वर्णों की **वृद्धिसंज्ञा** होती है। जैसे- त्यागः में **आ**, सदैव में **ऐ**, महौषधि में **औ** वृद्धिसंज्ञक वर्ण हैं।

2. गुण संज्ञा

सूत्र- अदेङ् गुणः (1.1.2)

पदच्छेद- अत् एङ् गुणः

(अ) (ए ओ)

सूत्रार्थ- अ, ए, ओ- इन तीन वर्णों की **गुणसंज्ञा** होती है।

उदाहरण- रमेशः में 'ए', सूर्योदयः में 'ओ', महर्षि में 'अ' (र्) गुणसंज्ञक वर्ण हैं।

3. संयोग संज्ञा

सूत्र- हलोऽनन्तराः संयोगः (1.1.7)

पदच्छेद- हलः अनन्तराः संयोगः

सूत्रार्थ- ऐसे दो या दो से अधिक व्यञ्जन जिनके बीच में कोई स्वर न आया हो, उसे **संयोग** कहते हैं।

उदाहरण- (i) पुष्प में ष् + प् का संयोग है।
(ii) अग्नि में ग् + न् का संयोग है।
(iii) राष्ट्र में ष् + ट् + र् का संयोग है।
(iv) बुद्धि में द् + ध् का संयोग है।

4. अनुनासिक संज्ञा

सूत्र- मुखनासिकावचनोऽनुनासिकः (1.1.8)

पदच्छेद- मुख-नासिका-वचनः अनुनासिकः

सूत्रार्थ- जो वर्ण मुख तथा नासिका दोनों की सहायता से बोले जाते हों, उसकी **अनुनासिक संज्ञा** होती है।

उदाहरण- अँ, ङ्, ञ्, ण्, न्, म् आदि वर्ण अनुनासिक हैं।

नोट- जो वर्ण नासिका के साथ नहीं बोले जाते वे अननुनासिक या निरनुनासिक कहे जाते हैं। जैसे- क, ख, ग, घ, च, छ, ज आदि।

5. सवर्णसंज्ञा

सूत्र- ''तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम्'' (1.1.9)

पदच्छेद- तुल्य-आस्य-प्रयत्नं सवर्णम्

सूत्रार्थ- जिन दो या दो से अधिक वर्णों के कण्ठ तालु आदि उच्चारणस्थान तथा आभ्यन्तरप्रयत्न दोनों समान हों, वे परस्पर सवर्णी (सवर्णसंज्ञक) होते हैं।

उदाहरण- अ-आ, इ-ई, उ-ऊ आदि परस्पर सवर्णी हैं।

रमा + अपि = रमापि। मुनि + ईशः = मुनीशः

भानु + उदयः = भानूदयः पितृ + ऋणम् = पितॄणम्

- उच्चारणस्थान और प्रयत्न का साम्य होने पर भी स्वर और व्यञ्जन की परस्पर सवर्णसंज्ञा नहीं होती है- ''नाज्झलौ''

यथा- दण्ड हस्तः, दधि शीतम्।

- **''ऋलृवर्णयोः मिथः सावर्ण्यं वाच्यम्''** इस वार्तिक से ऋ और लृ वर्ण आपस में सवर्णी हैं।

6. प्रगृह्य संज्ञा

सूत्र- ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम् (1.1.11)

पदच्छेद- ईत् ऊत् एत् द्विवचनं प्रगृह्यम्

सूत्रार्थ- द्विवचनान्त ई ऊ ए की **प्रगृह्यसंज्ञा** होती है।

उदाहरण- (i) हरी एतौ (ii) विष्णू इमौ (iii) गङ्गे अमू (iv) अग्नी इति (v) वायू इति (vi) माले इति (vii) पचेते इति

7. 'घ' संज्ञा

सूत्र- तरप्तमपौ घः (1.1.21)

पदच्छेद- तरप् - तमपौ घः

सूत्रार्थ- तरप् और तमप् - ये दो प्रत्यय **'घ' संज्ञक** होते हैं।

उदाहरण- कुमारितरा, कुमारितमा

8. निष्ठा संज्ञा

सूत्र- क्तक्तवतू निष्ठा (1.1.25)

पदच्छेद- क्त - क्तवतू निष्ठा

सूत्रार्थ- क्त तथा क्तवतु दोनों प्रत्ययों की **निष्ठा संज्ञा** होती है।

उदाहरण- भुक्तः, भुक्तवान्, पठितः, पठितवान् आदि।

9. सर्वनामसंज्ञा

सूत्र- सर्वादीनि सर्वनामानि (1.1.26)

पदच्छेद- सर्व-आदीनि सर्वनामानि

सूत्रार्थ- सर्व, विश्व, यत् , तद्, एतत्, इदम्, अदस्, अस्मद्, युष्मद् आदि शब्दों की **सर्वनामसंज्ञा** होती है।

10. अव्यय संज्ञा

सूत्र- स्वरादिनिपातमव्ययम् (1.1.36)
पदच्छेद- स्वरादि-निपातम् अव्ययम्
सूत्रार्थ- स्वरादिगण में पठित शब्दों की तथा निपात शब्दों की अव्यय संज्ञा होती है।
उदाहरण- स्वरादि- स्वर्, प्रातर् इत्यादि
निपात- च, वा, ह इत्यादि

- क्त्वा, ल्यप्, तुमुन् प्रत्ययान्त पद भी अव्ययसंज्ञक होते हैं- **यथा-** पठित्वा, प्रपठ्य, पठितुम् आदि।
- कुछ तद्धित प्रत्ययान्त शब्दों की भी अव्ययसंज्ञा होती है। जैसे- ततः, तत्र, तदा, विना आदि।
- अव्ययीभाव समास की अव्ययसंज्ञा होती है। जैसे- अधिहरि, अध्यात्मम्, उपगङ्गम्, यथाशक्ति आदि।

11. विभाषा संज्ञा

सूत्र- न वेति विभाषा (1.1.43)
पदच्छेद- न वा इति विभाषा
सूत्रार्थ- न का अर्थ है- निषेध। 'वा' का अर्थ है- विकल्प। निषेध तथा विकल्प इन दो अर्थों की **विभाषा संज्ञा** होती है।

12. सम्प्रसारण संज्ञा

सूत्र- इग्यणः सम्प्रसारणम् (1.1.44)
पदच्छेद- इक् यणः सम्प्रसारणम्
सूत्रार्थ- यण् के स्थान पर होने वाले इक् की **सम्प्रसारण संज्ञा** होती है।

यण् -	य्	व्	र्	ल्
इक् -	इ	उ	ऋ	ऌ

उदाहरण- (i) यज् + क्त = इष्टः
(ii) वप् + क्त = उप्तः

13. टि संज्ञा

सूत्र- अचोऽन्त्यादि टि (1.1.63)

पदच्छेद- अचः अन्त्य आदि टि

सूत्रार्थ- अचों के मध्य में जो अन्तिम अच् होता है, वह आदि में हो जिसके उस वर्णसमुदाय की **टि संज्ञा** होती है।

व्याख्या- किसी शब्द में जो अन्तिम स्वर होगा वही टिसंज्ञक वर्ण होगा, उस अन्तिम स्वर के बाद जो व्यञ्जन वर्ण होंगे वे भी टिसंज्ञक होंगे।
जैसे-
(i) मनस् = म् अ न् अ स्
यहाँ अन्तिम स्वर है 'नकार' में विद्यमान अ । 'अ' के बाद 'स्' व्यञ्जन वर्ण भी टिसंज्ञा में गिना जाएगा अतः 'मनस्' में **'अस्'** की टिसंज्ञा होगी।
(ii) राजन् में **'अन्'** इस वर्णसमुदाय की टिसंज्ञा होगी।
(iii) 'राम' में **'अ'** टिसंज्ञक वर्ण है। क्योंकि यहाँ अन्तिम स्वर अकार के बाद कोई व्यञ्जन वर्ण नहीं है।
(iv) 'दधि' में **'इ'** टिसंज्ञक वर्ण है।

नोट-
(i) अन्तिम स्वर तथा उसके बाद आने वाले स्वर रहित व्यञ्जन वर्ण टिसंज्ञक होंगे। जैसे- 'आत्मन्' में अन्।
(ii) यदि अन्तिम स्वर के बाद व्यञ्जन वर्ण नहीं होगा तो केवल शब्द का अन्तिम स्वर ही टिसंज्ञक होगा। जैसे- दधि में टिसंज्ञक वर्ण हैं- **'इ'**।

14. उपधा संज्ञा

सूत्र- अलोऽन्त्यात् पूर्व उपधा (1.1.64)
पदच्छेद- अलः अन्त्यात् पूर्वः उपधा
सूत्रार्थ- अन्तिम वर्ण से पूर्व में रहने वाले वर्ण की **उपधा संज्ञा** होती है।
व्याख्या- किसी शब्द या धातु में जो अन्त्य वर्ण होगा, उसके ठीक पहले वाले वर्ण की उपधा संज्ञा होती है।
जैसे-
(i) राम- र् आ म् अ - यहाँ अन्तिम वर्ण है 'अ' तो अकार के ठीक पहले वाले वर्ण 'म्' की उपधा संज्ञा होगी।
(ii) 'गम्' में अन्तिम वर्ण मकार के पूर्व 'अकार' की उपधा संज्ञा होगी।
(iii) इसीप्रकार भिद् में 'इ' की, मुच् में 'उ' की, वृध् में 'ऋ' की उपधा संज्ञा होगी।

नोट- Second Last वर्ण उपधासंज्ञक होगा। वह वर्ण स्वर भी हो सकता है और व्यञ्जन भी।

15. नदी संज्ञा

सूत्र- यू स्त्र्याख्यौ नदी (1.4.3)
पदच्छेद- यू स्त्री आख्यौ नदी
सूत्रार्थ- 'यू' = (ई + ऊ) का अर्थ है ईकारान्त और ऊकारान्त

- **'स्त्र्याख्यौ'** का अर्थ है- नित्य स्त्रीलिङ्ग शब्द

इसप्रकार ईकारान्त तथा ऊकारान्त नित्यस्त्रीलिङ्ग शब्दों की नदी संज्ञा होती है।

उदाहरण- नदी, गौरी, वधू आदि नदीसंज्ञक पद हैं।

16. घि संज्ञा

सूत्र- शेषो घ्यसखि (1.4.7)

पदच्छेद- शेषः घि असखि

सूत्रार्थ- जिनकी नदी संज्ञा नहीं है, ऐसे ह्रस्व इकारान्त और ह्रस्व उकारान्त शब्दों की **घि संज्ञा** होती है। 'सखि' शब्द को छोड़कर।

उदाहरण- हरिः, भानुः, वारि, मधु आदि घिसंज्ञक हैं।

नोट- (i) 'पति' शब्द समास होने पर ही घिसंज्ञक होता है- जैसे- भूपतिः, सीतापतिः आदि। **'पतिः समास एव'**

17. पद संज्ञा

सूत्र- सुप्तिङन्तं पदम् (1.4.14)

पदच्छेद- सुप् तिङ् अन्तम् पदम्

सूत्रार्थ- सुबन्त (सुप् अन्त वाला) तथा तिङन्त (तिङ् अन्त वाला) शब्द की **पद संज्ञा** होती है।

व्याख्या-

(i) प्रातिपदिकों में प्रथमा से सप्तमी तक सु औ जस् आदि सुप् विभक्तियाँ लगाकर जो रामः, रामौ, रामाः आदि शब्दरूप बनते हैं, वे **सुबन्त पद** कहलाते हैं।

(ii) धातुओं से विभिन्न लकारों में तिप् तस् झि तथा त आताम् झ आदि 18 तिङ् प्रत्यय लगाकर जो पठति पठतः पठन्ति आदि धातुरूप बनते हैं, वे **तिङन्त पद** कहलाते हैं।

नोट- पद दो प्रकार के होते हैं-

(i) सुबन्त पद (शब्दरूप) रामः, हरिः, गुरुः आदि।

(ii) तिङन्त पद (धातुरूप) पठति, लभते, जानाति आदि।

18. संहिता संज्ञा

सूत्र- परः सन्निकर्षः संहिता (1.4.108)

पदच्छेद- परः सन्निकर्षः संहिता

सूत्रार्थ- वर्णों के अत्यधिक सामीप्य की **संहिता संज्ञा** होती है।

उदाहरण- मधु + अरिः = मध्वरिः (उ + अ)
रमा + ईशः = रमेशः (आ + ई)

19. सत् संज्ञा

सूत्र- तौ सत् (3.2.127)

सूत्रार्थ- शतृ एवं शानच् - इनकी **सत् संज्ञा** होती है।

20. प्रातिपदिक संज्ञा

सूत्र- अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम् (1.2.45)

पदच्छेद- अर्थवत् अधातुः अप्रत्ययः प्रातिपदिकम्

सूत्रार्थ- धातुरहित, प्रत्ययान्तरहित सार्थक शब्दस्वरूप की प्रातिपदिक संज्ञा होती है।

उदाहरण- राम, कृष्ण, लता आदि।

नोट- कृत्तद्धितसमासाश्च (1.2.46) कृत् प्रत्ययान्त, तद्धितप्रत्ययान्त तथा समास भी प्रातिपदिक संज्ञक होते हैं।

जैसे- कारकः (कृत्), शालीयः (तद्धित), राजपुरुषः (समास) आदि।

21. प्रत्ययसंज्ञा

प्रत्यय- धातु और प्रातिपदिक (शब्द) के बाद जो जुड़ते हैं, उनकी प्रत्यय संज्ञा होती है।

यथा-

(i) भवति में 'भू' धातु है 'तिप्' प्रत्यय है।

(ii) पाठकः में पठ् धातु है 'ण्वुल्' प्रत्यय है।

(iii) रामस्य में राम प्रातिपदिक है 'ङस्' प्रत्यय है।

➢ धातु के अन्त में लगने वाले प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं-

1. **कृत् प्रत्यय -** क्त, क्तवतु, तुमुन् आदि।

2. **तिङ् प्रत्यय -** तिप्, तस्, झि आदि 18 प्रत्यय।

➢ प्रातिपदिक (शब्दों) से लगने वाले प्रत्यय हैं-

1. **सुप् प्रत्यय -** सु औ जस् आदि 21 प्रत्यय।

2. **स्त्रीप्रत्यय -** टाप्, ङीप्, ङीष् आदि।

3. **तद्धितप्रत्यय -** मतुप्, अण्, इनि आदि।

कृत् प्रत्यय- कृत् प्रत्यय धातु के अन्त में लगते हैं, और वे दो प्रकार के शब्द बनाते हैं।

1. अव्यय- क्त्वा, ल्यप्, तुमुन् आदि।

2. विशेषण- तव्यत्, अनीयर्, यत्, ण्यत्, क्यप्, शतृ, शानच्, क्त, क्तवतु आदि।

उदाहरण- पठ् + क्त = पठितः, पठ् + अनीयर् = पठनीयम्

तिङ् प्रत्यय- दसों लकारों के प्रत्ययों को तिङ्प्रत्यय कहा जाता है। ये दो प्रकार के हैं- परस्मैपदी और आत्मनेपदी।

परस्मैपदी तिङ् प्रत्यय- (9)

प्रथम पुरुष	तिप्	तस्	झि
मध्यम पुरुष	सिप्	थस्	थ
उत्तम पुरुष	मिप्	वस्	मस्

आत्मनेपदी तिङ् प्रत्यय- (9)

प्रथम पुरुष	त	आताम्	झ
मध्यम पुरुष	थास्	आथाम्	ध्वम्
उत्तम पुरुष	इट्	वहि	महिङ्

➢ इस प्रकार ये 18 प्रत्यय तिङ् कहलाते हैं। तिप् के 'ति' से लेकर महिङ् के 'ङ्' तक 'तिङ्' कहा गया।

सुप् प्रत्यय- सुप् प्रत्यय प्रातिपदिक से जुड़कर पद बनाते हैं। जैसे- 'राम' प्रातिपदिक से 'सु' लगेगा तो 'रामः' यह पद बनेगा।

➢ सुप् प्रत्यय 21 होते हैं।

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सु	औ	जस्
द्वितीया	अम्	औट्	शस्
तृतीया	टा	भ्याम्	भिस्
चतुर्थी	ङे	भ्याम्	भ्यस्
पञ्चमी	ङसि	भ्याम्	भ्यस्
षष्ठी	ङस्	ओस्	आम्
सप्तमी	ङि	ओस्	सुप्

स्त्रीप्रत्यय- पुंलिङ्ग शब्द को स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए जिन प्रत्ययों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें स्त्रीप्रत्यय कहा जाता है।

जैसे- टाप्, डाप्, चाप्, ङीप्, ङीष्, ङीन्, ऊङ्, ति आदि।

उदाहरण-

अज + टाप् = अजा
छात्र + टाप् = छात्रा
राजन् + ङीप् = राज्ञी
कुमार + ङीप् = कुमारी
नर्तक + ङीष् = नर्तकी
गौर + ङीष् = गौरी
नृ + ङीन् = नारी
युवन् + ति = युवतिः आदि।

तद्धित प्रत्यय- शब्द के अन्त में लगने वाले प्रत्यय तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

यथा- मतुप्, इनि, त्व, तल्, ष्यञ्, तसिल् आदि।

उदाहरण- बुद्धि + मतुप् = बुद्धिमत् (बुद्धिमान्)
महत् + त्व = महत्त्वम्

22. स्थानी और आदेश

किसी वर्ण को या शब्द को हटाकर जब उसकी जगह, कोई दूसरा वर्ण या शब्द आकर बैठ जाता है, तब जिसे हटाया जाता है, उसे **'स्थानी'** कहते हैं।

➢ जो स्थानी की जगह आकर बैठ जाता है, उसे आदेश कहते हैं। व्याकरणशास्त्र में आदेश को शत्रु के समान कहा गया है- **''शत्रुवदादेशः''**

जैसे- प्रति + एकः = प्रत्येकः

यहाँ 'इ' को हटाकर उसके स्थान पर 'य्' बैठ गया है, अतः 'इ' स्थानी है तथा 'य्' आदेश है।

23. निमित्त

एक वर्ण को हटाकर उसकी जगह दूसरे वर्ण का आदेश जिसके कारण होता है, उसे **निमित्त** कहा जाता है।

जैसे- प्रति + एकः = प्रत्येकः में 'इ' स्थानी के स्थान पर 'य्' आदेश 'ए' स्वर (अच्) के कारण हुआ है अतः 'ए' निमित्त है।

24. आगम

जो वर्ण किसी वर्ण को हटाये बिना आकर बैठ जाता है, तो उसे हम **'आगम'** कहते हैं। **''मित्रवदागमः''** अर्थात् मित्र की तरह आगमन आगम कहा जाता है। "सम् + सुट् + कृ + क्त" = **संस्कृत** यहाँ सुट् का आगम हुआ है।

25. उपसर्ग संज्ञा

सूत्र- "उपसर्गाः क्रियायोगे" (1.4.59)

सूत्रार्थ- प्रादि जब किसी क्रिया के साथ लगते हैं तब इनकी उपसर्ग संज्ञा होती है।

➢ उपसर्गों की संख्या 22 है-

प्र परा अप सम् अनु अव निस् निर् दुस् दुर् वि आङ् नि अधि अपि अति सु उत् अभि प्रति परि उप।

26. कारक

कारक- कृ + ण्वुल् = कारकम् अर्थात् क्रियां करोति इति कारकम्।

➢ जिनका क्रिया के साथ सीधा सम्बन्ध होता है, या जो क्रिया की सिद्धि में सहायक होते हैं, उन्हें **'कारक'** कहा जाता है। **''क्रियाजनकत्वं कारकत्वम्''**, **''क्रियान्वयित्वं कारकत्वम्''**

➢ कारक छः होते हैं- 1. कर्ता 2. कर्म 3. करण 4. सम्प्रदान 5. अपादान 6. अधिकरण।

कर्ता कर्म च करणं सम्प्रदानं तथैव च।
अपादानाधिकरणे इत्याहुः कारकाणि षट्॥

➢ संस्कृत व्याकरण में सम्बन्ध और सम्बोधन को कारक नहीं माना जाता।

27. विभक्तियाँ

विभक्ति- जिसके द्वारा कारकों और संख्याओं को विभक्त किया जाता है, उसे विभक्ति कहते हैं। इसीलिए सुप् और तिङ् को भी विभक्ति कहते हैं।

➢ संस्कृत व्याकरण में **विभक्तियाँ सात** होती हैं-

1. प्रथमा 2. द्वितीया 3. तृतीया 4. चतुर्थी 5. पञ्चमी 6. षष्ठी 7. सप्तमी

➢ सम्बोधन में प्रथमा विभक्ति होती है।

28. पुरुष

संस्कृत में तीन पुरुष होते हैं-

1. प्रथमपुरुष या अन्य पुरुष- उत्तम पुरुष के अहं, आवां, वयम् और मध्यम पुरुष के त्वम्, युवां, यूयम् इन छह शब्दों को छोड़कर संस्कृत वाङ्मय के सभी कर्तृपद प्रथम पुरुष के अन्तर्गत गिने जाते हैं।

यथा- भवान् , भवती, बालकः, बालिका, सः, सा, नरः, वानरः, पिता, पुत्रः, इत्यादि।

और इन सभी कर्तृ पदों के साथ प्रथम पुरुष की क्रिया 'पठति, पठतः, पठन्ति' आदि क्रियाओं का ही प्रयोग होता है।

2. मध्यम पुरुष- जिससे बात कही जाय, वह मध्यम पुरुष है। इसमें 'त्वम्, युवाम्, यूयम्' कर्तृपद आते हैं। इनके साथ मध्यमपुरुष की क्रिया क्रमशः **त्वम्** के साथ पठसि **युवां** के साथ पठथः तथा **यूयं** के साथ पठथ का प्रयोग होगा।

3. उत्तम पुरुष- जो बात को कहता है; वह उत्तम पुरुष है। इसके अन्तर्गत 'अहं, आवाम्, वयम्' कर्तृपद आते हैं। इनके साथ उत्तम पुरुष की क्रिया क्रमशः **अहं** के साथ 'पठामि' **आवां** के साथ पठावः **वयं** के साथ 'पठामः' का प्रयोग होता है।

29. वचन

'वचन' का अर्थ होता है- संख्या।

संस्कृत में तीन वचन होते हैं-

1. **एकवचन-** एक वस्तु या एक व्यक्ति का बोध कराने के लिए एकवचन का प्रयोग होता है, जैसे- बालकः, हरिः, गुरुः, विद्यालयः आदि।
2. **द्विवचन-** दो व्यक्तियों या दो वस्तुओं के लिए द्विवचन का प्रयोग होता है। जैसे- बालकौ, हरी, गुरू, विद्यालयौ, पुस्तके आदि।
3. **बहुवचन-** तीन या तीन से अधिक व्यक्तियों या वस्तुओं का बोध कराने के लिए बहुवचन का प्रयोग किया जाता है। **''बहुषु बहुवचनम्''**

जैसे- बालकाः, हरयः, गुरवः, विद्यालयाः, पुस्तकानि आदि।

30. लिङ्ग

➢ 'लिङ्ग' शब्द का अर्थ है- चिह्न, लक्षण या पहचान।

संस्कृत में तीन लिङ्ग होते हैं-

1. पुंलिङ्ग- जिससे पुरुष जाति का बोध होता है।

जैसे- छात्रः, बालकः, मुनिः, विद्यालयः, काकः, व्याघ्रः आदि।

2. स्त्रीलिङ्ग- जिससे स्त्रीजाति का बोध होता है।

जैसे- छात्रा, बालिका, गौरी, नदी आदि।

3. नपुंसकलिङ्ग- जिससे न पुरुष जाति का बोध हो और न स्त्री जाति का बोध हो, उसे नपुंसकलिङ्ग कहते हैं।

जैसे- फलम्, जलम्, गृहम्, पुष्पम्, नेत्रम्, वारि, दधि, मधु आदि।

31. लकार

संस्कृत में दस लकार होते हैं-

1. **लट्लकार -** (वर्तमान काल) वर्तमान काल को सूचित करने के लिए लट्लकार का प्रयोग होता है।
2. **लिट्लकार-** (अनद्यतन परोक्षभूतकाल) परोक्षभूतकाल अर्थात् बहुत प्राचीनकाल को सूचित करने के लिए लिट्लकार की क्रिया का प्रयोग होता है।
3. **लुट्लकार-** (अनद्यतन भविष्यत् काल) आज के पश्चात् भविष्यकाल को सूचित करने के लिए लुट्लकार का प्रयोग होता है।
4. **लृट् -** (सामान्य भविष्यत् काल)
5. **लेट्लकार -** (संशय अर्थ में) लेट्लकार का प्रयोग वेदों में होता है, लौकिक संस्कृत में नहीं।
6. **लोट्लकार -** (प्रेरणा तथा आज्ञा अर्थ में)
7. **लङ्लकार -** (अनद्यतन भूतकाल) अब से पहले के भूतकाल को सूचित करने के लिए लङ् लकार का प्रयोग किया जाता है।
8. **लिङ् लकार-** इसके दो भेद हैं-

(i) विधिलिङ् - (विधि, निमन्त्रण, आमन्त्रण, सम्प्रश्न, प्रार्थना, चाहिए अर्थ में)

(ii) आशीर्लिङ् - (आशीर्वाद अर्थ में)

9. **लुङ्लकार -** (सामान्यभूत) सामान्यभूतकाल को सूचित करने के लिए।
10. **लृङ्लकार-** (हेतु हेतुमद्भाव भूत) जहाँ एक क्रिया का कारण दूसरी क्रिया हो।

32. धातुसंज्ञा

सूत्र- भूवादयो धातवः (1.3.1)
क्रियावाचक भू आदि की धातुसंज्ञा होती है। ये सभी धातुयें पाणिनीय धातुपाठ में दी गयी हैं। इनकी संख्या 1970 अर्थात् लगभग 2000 है।

➢ धातुओं के तीन प्रकार से रूप चलते हैं-
(i) परस्मैपदी √पठ्- पठति, पठतः, पठन्ति आदि।
(ii) आत्मनेपदी √लभ- लभते, लभेते, लभन्ते आदि।
(iii) उभयपदी √ज्ञा- जानाति, जानीतः, जानन्ति जानीते, जानाते, जानते।

33. गण (धातुओं के विभाग)

संस्कृत में दस गण होते हैं। संस्कृत व्याकरणशास्त्र में लगभग 2000 धातुयें हैं; प्रत्येक धातु किसी न किसी गण में ही परिगणित है।

गण	धातुयें
1. भ्वादिगण	1035 धातुयें
2. अदादिगण	72 धातुयें
3. जुहोत्यादिगण	24 धातुयें
4. दिवादिगण	140 धातुयें
5. स्वादिगण	35 धातुयें
6. तुदादिगण	157 धातुयें
7. रुधादिगण	25 धातुयें
8. तनादिगण	10 धातुयें
9. क्र्यादिगण	61 धातुयें
10. चुरादिगण	411 धातुयें
कुल धातुयें –	**1970**

भ्वाद्यदादि जुहोत्यादिर्दिवादिः स्वादिरेव च।
तुदादिश्च रुधादिश्च तनादिक्रीचुरादयः॥

➢ **भ्वादिगण की प्रमुख धातुएँ-** भू (होना), हस् (हँसना), पठ् (पढ़ना), रक्ष् (रक्षा करना), वद् (बोलना), पच् (पकाना), नम् (झुकना), गम् (जाना), दृश् (देखना), सद् (बैठना), स्था (रुकना), पा (पीना), घ्रा (सूँघना), स्मृ (स्मरण करना), जि (जीतना), श्रु (सुनना), वस् (रहना), सेव् (सेवा करना), लभ (पाना), वृध् (बढ़ना), मुद् (प्रसन्न होना), सह् (सहन करना), याच् (माँगना), नी (ले जाना) आदि।

➢ **अदादिगण की प्रमुख धातुएँ-** अद् (खाना), अस् (होना), ब्रू (कहना), दुह् (दुहना), रुद् (रोना), स्वप् (सोना), हन् (मारना), इ (जाना), आस् (बैठना), शी (सोना) आदि।

➢ **जुहोत्यादिगण की प्रमुख धातुएँ-** हु (हवन करना), भी (डरना), दा (देना), धा (धारण), करना आदि।

➢ **दिवादिगण की प्रमुख धातुएँ-** दिव् (चमकना), नृत् (नाचना), नश् (नष्ट होना), भ्रम् (घूमना), युध् (लड़ना), जन् (उत्पन्न होना) आदि।

➢ **स्वादिगण की प्रमुख धातुएँ-** सु (स्नान करना या रस निकालना), आप् (पाना), शक् (सकना) आदि।

➢ **तुदादिगण की प्रमुख धातुएँ-** तुद् (दुःख देना), इष् (चाहना), स्पृश् (छूना), प्रच्छ् (पूँछना), लिख् (लिखना), मृ (मरना), मुच् (छोड़ना) आदि।

➢ **रुधादिगण की प्रमुख धातुएँ-** रुध् (ढकना, रोकना), भुज् (पालन करना, भोजन करना), आदि।

➢ **तनादिगण की प्रमुख धातुएँ-** तन् (फैलाना), कृ (करना) आदि।

➢ **क्र्यादिगण की प्रमुख धातुएँ-** क्री (मोल लेना), ग्रह (पकड़ना), ज्ञा (जानना) आदि।

➢ **चुरादिगण की प्रमुख धातुएँ-** चुर् (चुराना), चिन्त् (सोचना), कथ् (कहना), भक्ष् (खाना) आदि।

सन्धिः

- सम् + √धा + कि = सन्धिः (पुँल्लिङ्ग)
- 'सन्धि' शब्द का अर्थ है- मेल या योग अर्थात् मिलना।
- **''वर्णानां परस्परं विकृतिमत् सन्धानं सन्धिः''** अर्थात् वर्णों का आपस में विकारसहित मिलना 'सन्धि' कहलाता है। 'विकृति' का मतलब है- वर्णपरिवर्तन।
- इसप्रकार दो वर्णों के मेल से जो विकार (परिवर्तन) उत्पन्न होता है, उसे 'सन्धि' कहते हैं।

जैसे-

(i) रमा + ईशः = रमेशः
(ii) रम् आ ईशः (आ + ई का मेल)
(iii) रम् ए शः (आ + ई = 'ए' हो गया)
(iv) रमेशः (गुण सन्धि)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त उदाहरण में रमा के 'मा' में विद्यमान 'आ' तथा ईशः का 'ई' मिलकर 'ए' (वर्णपरिवर्तन) हो गया।
यह वर्णविकार या वर्णपरिवर्तन ही सन्धि है।

- **संहिता-** 'सन्धि' के लिए अनिवार्य तत्त्व है- संहिता।

सूत्र - ''परः सन्निकर्षः संहिता''
अर्थात् दो वर्णों का अत्यन्त सन्निकट हो जाना ही 'संहिता' है।

- 'संहिता' के विषय में व्याकरणशास्त्र में एक नियम प्रसिद्ध है कि-

संहितैकपदे नित्या नित्या धातूपसर्गयोः।
नित्या समासे वाक्ये तु सा विवक्षामपेक्षते॥

(i) संहिता (सन्धि) एक पद में नित्य होती है।
जैसे-
नै + अकः = नायकः
पौ + अकः = पावकः
भो + अनम् = भवनम्

(ii) उपसर्ग और धातु में संहिता नित्य (अनिवार्य) होती है-
जैसे-
नि + अवसत् = न्यवसत्
प्र + ऋच्छति = प्रार्च्छति
अधि + आगच्छति = अध्यागच्छति

(iii) सामासिक पदों में संहिता अनिवार्य (नित्य) होगी-
जैसे-
देवस्य आलयः (सामासिक विग्रह)
देव + आलयः = देवालयः
कृष्णस्य अस्त्रम् (सामासिक विग्रह)
कृष्ण + अस्त्रम् = कृष्णास्त्रम्

(iv) वाक्य में संहिता (सन्धि) विवक्षाधीन होती है अर्थात् आपकी इच्छा के अधीन है कि आप चाहें तो सन्धि करें या चाहें तो न करें-
जैसे-

☆ रामः गच्छति वनम्। (सन्धि नहीं हुई)
रामो गच्छति वनम्। (सन्धि कार्य हुआ)

☆ अत्र कः अस्ति। (सन्धि नहीं हुई)
अत्र कोऽस्ति (सन्धि हुई)

☆ द्वाविंशे एव वर्षे इन्दुमती अधिजगाम स्वर्गम्। (सन्धि नहीं हुई)

- **सन्धि विच्छेद-** सन्धि युक्त वर्णों को अलग-अलग करना ही सन्धि विच्छेद है।

सन्धि = मिलना **विच्छेद** = अलग करना।
जैसे- गणेशः का सन्धिविच्छेद होगा = गण + ईशः।
'विद्यार्थी' का विच्छेद होगा = विद्या + अर्थी।

- **सन्धि में क्या होगा-----?**

1. दो वर्णों के स्थान पर एक नया वर्ण हो जाता है-
जैसे-
रवि + ईशः = रवीशः (इ+ई=ई)
सुर + इन्द्रः = सुरेन्द्रः (अ+इ=ए)
सदा + एव = सदैव (आ+ए=ऐ)

एकः पूर्वपरयोः (6.1.84) पूर्व और पर दोनों वर्णों के स्थान पर एक आदेश होगा।

2. दो वर्णों के निकट आने से केवल पूर्व वर्ण में ही विकार (परिवर्तन) होता है।
जैसे-
इति + आदिः = इत्यादिः (इ के स्थान पर य्)
मधु + अरिः = मध्वरिः (उ के स्थान पर व्)
ने + अनम् = नयनम् (ए के स्थान पर अय्)

'एकस्थाने एकादेशः' - एक के स्थान पर एक आदेश होगा।

3. दो वर्णों में से किसी वर्ण का लोप हो जाता है-
जैसे- रामः आगच्छति = राम आगच्छति (विसर्ग का लोप)
दोषो अस्ति = दोषोऽस्ति (अकार का लोप)

4. दो वर्णों में से किसी एक वर्ण का द्वित्व हो जाना।
जैसे- एकस्मिन् + अवसरे = एकस्मिन्नवसरे

5. कभी कभी दोनों वर्णों में साथ-साथ परिवर्तन होगा–
जैसे- तत् + शिवः = तच्छिवः
वाक् + हरिः = वाग्घरिः
यहाँ 'त् + श्' वर्णों में सन्धि हुई तो त् को 'च्' तथा श् को 'छ्' हो गया।

6. कभी कभी दोनों वर्णों के बीच कोई तीसरा वर्ण चला आएगा–
जैसे- वृक्ष + छाया = वृक्षच्छाया
यहाँ 'क्ष' एव 'छ' के बीच 'च्' के रूप में एक नया वर्ण आ गया।

सन्धि के प्रकार

सन्धि तीन प्रकार की होती है-

(1) स्वर सन्धि (अच् सन्धि)

- स्वर + स्वर = स्वरसन्धि
- जब दो स्वरों के निकट आने से जो परिवर्तन (विकार) होता है उसे स्वर सन्धि कहते हैं।
- संक्षेप में स्वर के स्थान पर होने वाले आदेश को ही स्वर सन्धि कहेंगे।

(i) इति + अलम् = **इत्यलम्** (इ+अ)
(ii) कवि + इन्द्रः = **कवीन्द्रः** (इ+इ)
(iii) नर + ईशः = **नरेशः** (अ+ई)
(iv) तव + एव = **तवैव** (अ +ए)
(v) पो + इत्रम् = **पवित्रम्** (ओ+इ)

- अर्थात् स्वर वर्ण का स्वर वर्ण के साथ मेल स्वर सन्धि है।
- स्वर सन्धि को **अच् सन्धि** भी कहा जाता है; क्योंकि 'अच्' प्रत्याहार के अन्तर्गत ही सभी स्वर आते हैं।

(2) व्यञ्जन सन्धि (हल् सन्धि)

- व्यञ्जन + स्वर = व्यञ्जन सन्धि
  व्यञ्जन + व्यञ्जन = व्यञ्जन सन्धि
- व्यञ्जन के बाद स्वर या व्यञ्जन वर्णों के आने पर जो विकार (परिवर्तन) उत्पन्न होगा, उसे व्यञ्जन सन्धि कहते हैं।
- संक्षेप में व्यञ्जन (हल्) के स्थान पर होने वाले आदेश को ही व्यञ्जन सन्धि कहेंगे।

जैसे- वाक् + ईशः = **वागीशः** (हल् + अच् = क् + ई)
जगत् + ईशः = **जगदीशः** (हल् + अच् = त् + ई)
तत् + लयः = **तल्लयः** (हल् + हल् = त् + ल्)
सत् + जनः = **सज्जनः** (हल् + हल् = त् + ज्)
स्पष्ट है कि उपर्युक्त उदाहरणों में व्यञ्जन के बाद स्वर तथा व्यञ्जन के बाद व्यञ्जन वर्ण आये हैं; अतः यहाँ व्यञ्जन सन्धि है।

(3) विसर्ग सन्धि

ः + स्वर = विसर्ग सन्धि।
ः + व्यञ्जन = विसर्ग सन्धि।

- जब विसर्ग के बाद कोई स्वर या व्यञ्जन वर्ण आये तो विसर्ग के स्थान पर जो विकार (परिवर्तन) होगा, वह विसर्ग सन्धि कही जायेगी। विसर्ग के बाद विसर्ग नहीं आएगा क्योंकि विसर्ग से किसी शब्द का प्रारम्भ नहीं होता।
- संक्षेप में ऐसा कह सकते हैं कि- विसर्ग के स्थान पर होने वाले आदेश को ही विसर्ग सन्धि कहेंगे।

जैसे-
बालकः + गच्छति = **बालको गच्छति।** (ः + व्यञ्जन)
नमः + करोति = **नमस्करोति** (ः + व्यञ्जन)
अलिः + अयम् = **अलिरयम्** (ः + स्वर)
यहाँ विसर्ग के बाद स्वर या व्यञ्जन आ रहा है अतः विसर्ग सन्धि है।

1. स्वर सन्धि (अच् सन्धि) -

- पूर्व तथा पर स्वरों के मिलने से जो परिवर्तन होता है, उसे स्वरसन्धि कहेंगे। जैसे-

हिम + आलयः = हिमालयः (अ + आ)
उप + इन्द्रः = उपेन्द्रः (अ + इ)
स्पष्टीकरण- यहाँ पूर्व वर्ण है हिम के 'म' में विद्यमान - 'अ' तथा पर वर्ण है आलयः का 'आ'।
इसीप्रकार दूसरे उदाहरण में - उप के प में विद्यमान 'अ' पूर्ववर्ण है तथा इन्द्रः का 'इ' परवर्ण है। अतः यहाँ स्वर सन्धि हो रही है।

स्वरसन्धि के प्रमुख भेद

1. दीर्घ सन्धि-

सूत्र- अकः सवर्णे दीर्घः (6.1.101)
सूत्र विश्लेषण-
अकः - 'अक्' एक प्रत्याहार है जिसमें पाँच वर्ण आते हैं- अ इ उ ऋ ऌ इसी प्रत्याहार से इनके दीर्घ वर्णों (आ ई ऊ ॠ) का भी बोध होगा।
सवर्णे - सवर्ण अक् (अ इ उ ऋ ऌ) आने पर।
दीर्घः - दीर्घ आदेश (आ ई ऊ ॠ) हो जाता है।
'ऌ' वर्ण का दीर्घ नहीं होता अतः उसका सवर्णी 'ॠ' हो जाता है।
संक्षेप में- अक् + अक् = दीर्घ

अकः (पूर्व वर्ण)	सवर्णे (पर वर्ण)	दीर्घः (आदेश वर्ण)
अ आ	अ आ	आ
इ ई	इ ई	ई
उ ऊ	उ ऊ	ऊ
ऋ ॠ	ऋ ॠ	ॠ

- दीर्घ सन्धि में केवल पाँच वर्णों (अ, इ, उ, ऋ ऌ) में ही सन्धि कार्य होगा।
- ह्रस्व और दीर्घ स्वरों का मिलना चार प्रकार से हो सकता है-
  (i) अ + अ = आ। जैसे- अद्य + अपि = **अद्यापि**
  (ii) आ + आ = आ। जैसे- विद्या + आलयः = **विद्यालयः**
  (iii) अ + आ = आ। जैसे- हिम + आलयः = **हिमालयः**
  (iv) आ + अ = आ। जैसे- विद्या + अर्थी = **विद्यार्थी**
  इसीप्रकार इ, उ, ऋ, ऌ में भी चार प्रकार से दीर्घ सन्धि हो सकती है।

दीर्घ सन्धि के उदाहरण

1. हिम + आलयः (सन्धि विच्छेद)
हिम् अ + आलयः (वर्ण विच्छेद)
हिम् आ लयः (दो वर्णों के स्थान पर दीर्घ 'आ' आदेश)
हिमालयः (सन्धियुक्त पद)

- उपर्युक्त उदाहरण में 'हिम' के म में विद्यमान 'अ' आलयः के 'आ' से मिलकर दीर्घ 'आ' हो गया।

2. पुस्तक + आलयः (अ + आ = आ)
पुस्तक् अ + आलयः
पुस्तक् आ लयः
= पुस्तकालयः

3. रवि + इन्द्रः (इ + इ = ई)
रव् इ + इन्द्रः
रव् ई न्द्रः
= रवीन्द्रः

4. भानु + उदयः (उ + उ = ऊ)
भान् उ + उदयः
भान् ऊ दयः
= भानूदयः

5. मातृ + ऋणम् (ऋ + ऋ = ॠ)
मात् ऋ + ऋणम्
मात् ॠ णम्
मातॄणम्

अ + अ = आ

वाचन + आलयः = **वाचनालयः** देव + आलयः = **देवालयः**
शस्त्र + आगारः = **शस्त्रागारः** विद्या + आलयः = **विद्यालयः**

इ + इ = ई

कपि + ईशः = **कपीशः** इति + इव = **इतीव**
गौरी + ईशः = **गौरीशः** नदी + ईशः = **नदीशः**
मुनि + इन्द्रः = **मुनीन्द्रः** परि + ईक्षा = **परीक्षा**
श्री + ईशः = **श्रीशः** हरि + ईशः = **हरीशः**
मही + इन्द्रः = **महीन्द्रः** भूमि + ईशः = **भूमीशः**
गिरि + ईशः = **गिरीशः** पृथ्वी + ईशः = **पृथ्वीशः**

उ + उ = ऊ

वधू + उत्सवः = **वधूत्सवः** सु + उक्तिः = **सूक्तिः**
लघु + ऊर्मिः = **लघूर्मिः** भू + ऊर्ध्वम् = **भूर्ध्वम्**
विधु + उदयः = **विधूदयः** विष्णु + उदयः = **विष्णूदयः**
गुरु + उपदेशः = **गुरूपदेशः** गुरु + उत्साहः = **गुरूत्साहः**
साधु + उक्तम् = **साधूक्तम्** साधु + उदयः = **साधूदयः**
भू + ऊर्जा = **भूर्जा** वधू + उल्लासः = **वधूल्लासः**

ऋ + ऋ = ॠ

मातृ + ऋणम् = **मातॄणम्** मातृ + ऋकारः = **मातॄकारः**
पितृ + ऋणम् = **पितॄणम्** पितृ + ऋषभः = **पितॄषभः**
होतृ + ऋकारः = **होतॄकारः** मातृ + ऋद्धिः = **मातॄद्धिः**
होतृ + ऌकारः = **होतॄकारः** कृ + ऋकारः = **कॄकारः**

2. गुण सन्धि

सूत्र- आद्गुणः (6.1.87)
सूत्रार्थ- अ या आ के बाद ह्रस्व या दीर्घ इ, उ, ऋ, ऌ, आयें तो दोनों के स्थान पर क्रमशः ए, ओ, अर्, अल् हो जाता है।
संक्षेप में कहें तो - आत् + अचि = गुण

पूर्ववर्ण + परवर्ण = सन्धिवर्ण
(i) अ/आ + इ/ई = ए
(ii) अ/आ + उ/ऊ = ओ
(iii) अ/आ + ऋ/ॠ = अर्
(iv) अ/आ + ऌ = अल्

गुण सन्धि के उदाहरण

1. उप + इन्द्रः (सन्धि विच्छेद)
उप् अ + इन्द्रः (वर्ण विच्छेद)
उप् ए न्द्रः (अ + इ = ए)
उपेन्द्रः (गुणसन्धि)

2. हित + उपदेशः
हित् अ + उपदेशः
हित् ओ पदेशः
हितोपदेशः

3. देव + ऋषिः
देव् अ + ऋषिः
देव् अर् षिः (अ + ऋ = अर्)
देवर्षिः

4. तव + ऌकारः
तव् अ + ऌकारः
तव् अल् कारः
तवल्कारः

गुणसन्धि के कुछ प्रसिद्ध उदाहरण

अ + इ = ए

सुर + ईशः = **सुरेशः** | कमल + ईशः = **कमलेशः**
राजा + इन्द्रः = **राजेन्द्रः** | गङ्गा + ईशः = **गङ्गेशः**
रमा + ईशः = **रमेशः** | दिन + ईशः = **दिनेशः**
गण + ईशः = **गणेशः** | महा + ईश्वरः = **महेश्वरः**
महा + इन्द्रः = **महेन्द्रः** | न + इयम् = **नेयम्**
उमा + ईशः = **उमेशः** | अम्बिका + ईशः = **अम्बिकेशः**

अ + उ = ओ

महा + उत्सवः = **महोत्सवः** | गङ्गा + उदयः = **गङ्गोदयः**
पीन + ऊरुः = **पीनोरुः** | जल + ऊर्मिः = **जलोर्मिः**
गङ्गा + ऊर्मिः = **गङ्गोर्मिः** | नर + उत्तमः = **नरोत्तमः**
सूर्य + उदयः = **सूर्योदयः** | पर + उपदेशः = **परोपदेशः**
सूर्य + ऊष्मा = **सूर्योष्मा** | नील + उत्पलम् = **नीलोत्पलम्**

अ + ऋ = अर्

महा + ऋषिः = **महर्षिः** | सप्त + ऋषिः = **सप्तर्षिः**
ग्रीष्म + ऋतुः = **ग्रीष्मर्तुः** | हेमन्त + ऋतुः = **हेमन्तर्तुः**
वसन्त + ऋतुः = **वसन्तर्तुः** | शीत + ऋतुः = **शीतर्तुः**
वर्षा + ऋतुः = **वर्षर्तुः** | वेद + ऋचः = **वेदर्चः**

अ + ऌ = अल्

तव + ऌकारः = **तवल्कारः** मम + ऌकारः = **ममल्कारः**

शंका 1- अ के बाद इ आने पर 'ए' ही क्यों होता है?

समाधान

(i) क्योंकि 'अदेङ् गुणः' सूत्र से ''अ, ए, ओ'' ये तीन वर्ण ही गुणसंज्ञक हैं इसलिए -

(ii) अ का उच्चारणस्थान है- कण्ठ
इ का उच्चारणस्थान है- तालु

इसीलिए अ+इ=ए हुआ क्योंकि 'ए' का उच्चारणस्थान है- कण्ठतालु
''एदैतोः कण्ठतालु''

शंका 2- अ के बाद उ आने पर 'ओ' ही क्यों होता है--?

समाधान- चूँकि गुणसंज्ञक वर्ण तीन ही होते हैं- अ, ए, ओ। गुणसन्धि में गुणवर्ण ही होंगे। इसका भी जवाब पहले जैसा ही है।
अ का उच्चारणस्थान है- कण्ठ
उ का उच्चारणस्थान है- ओष्ठ
इसीलिए अ+उ=ओ होगा क्योंकि 'ओ' का उच्चारणस्थान हैं- कण्ठोष्ठ। **'ओदौतोः कण्ठोष्ठम्'**

- इसीप्रकार अ+ऋ के बाद अ होगा। 'अ' गुण वर्ण है। परन्तु एक सूत्र है **''उरण् रपरः''** जो कहता है कि यदि ऋ या ऌ के स्थान पर अ, इ, उ आदेश होगा तो रेफ या लकार के साथ होगा। अतः यहाँ जो अ+ऋ के स्थान पर 'अ' आदेश है पर रेफ के साथ मिलकर 'अर्' हो जाएगा।

इसीप्रकार अ+ऌ = अल् हो आएगा।

3. वृद्धि सन्धि

सूत्र- वृद्धिरेचि (6.1.88)

परिभाषा- जब अ या आ के बाद ए या ऐ आये तो = **ऐ** और ओ या औ वर्ण के आने पर = **औ** हो जाता है।

संक्षेप में -
आत् + एचि = वृद्धि
अ/आ + ए/ऐ = ऐ
अ/आ + ओ/औ = औ

- ''वृद्धिरादैच्'' सूत्र से वृद्धिसंज्ञक तीन वर्ण बताये गये हैं- आ, ऐ, औ। अतः वृद्धि सन्धि में पूर्व और पर दोनों वर्णों के मिलने से वृद्धि (आ, ऐ, औ) वर्ण ही होंगे।

वृद्धि सन्धि का सूत्र है- वृद्धिरेचि। इस सूत्र का अर्थ करने के लिए 'आद्गुणः' से 'आत्' पद ले लेंगे।
तो अर्थ होगा- **आत् + एचि = वृद्धिः।**

अ/आ + ए ओ ऐ औ = ऐ औ

वृद्धि सन्धि के उदाहरण -

अ/आ + ए/ऐ = ऐ

(i) सदा + एव (सन्धि विच्छेद)
(ii) सद् आ + एव (वर्ण विच्छेद)
(iii) सद् ऐ व (आ + ए = ऐ)
(iv) **सदैव** (सन्धियुक्त पद)

अ आ + ओ औ = औ

(i) जल + ओघः (सन्धि विच्छेद)

(ii) जल् अ + ओघः

(iii) जल् औ घः (अ + ओ = औ)

(iv) **जलौघः** (सन्धि पद)

वृद्धि सन्धि के कुछ प्रसिद्ध उदाहरण

अ आ + ए ऐ = ऐ

न + एवम् = **नैवम्** अद्य + एव = **अद्यैव**

या + एवम् = **यैवम्** अत्र + एव = **अत्रैव**

लता + एषा = **लतैषा** एक + एकम् = **एकैकम्**

देव + ऐश्वर्यम् = **देवैश्वर्यम्** तथा + एव = **तथैव**

मत + ऐक्यम् = **मतैक्यम्** तदा + एव = **तदैव**

धन + एषणा = **धनैषणा** मम + एव = **ममैव**

पञ्च + एते = **पञ्चैते** न + एतत् = **नैतत्**

विद्या + ऐश्वर्यम् = **विद्यैश्वर्यम्** तत्र + एव = **तत्रैव**

अ आ + ओ औ = औ

वन + औषधिः = **वनौषधिः** परम + औषधिः = **परमौषधिः**

देव + औदार्यम् = **देवौदार्यम्** महा + ओजस्वी + **महौजस्वी**

महा + औषधिः = **महौषधिः** गङ्गा + ओघः = **गङ्गौघः**

वन + ओकसः = **वनौकसः** उष्ण + ओदनम् = **उष्णौदनम्**

पुष्प + ओकः = **पुष्पौकः** कृष्ण + औत्कण्ठ्यम् = **कृष्णौत्कण्ठ्यम्**

कन्या + ओदनम् = **कन्यौदनम्** यमुना + ओघः = **यमुनौघः**

4. यण् सन्धि

सूत्र- इको यणचि (6.1.77)

इस सूत्र में तीनों पद प्रत्याहार हैं-

इक् = इ उ ऋ ऌ

यण् = य् व् र् ल्

अच् = अ इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ

सूत्रार्थ- यदि ह्रस्व या दीर्घ इ, उ, ऋ, ऌ इक् के बाद कोई भी असमान अच् (स्वर) आये तो इ के स्थान पर य्, उ के स्थान पर व्, ऋ के स्थान पर 'र्', 'ऌ' के स्थान पर 'ल्' हो जाता है।

संक्षेप में कहें तो-

इक् + अच् = यण्

इ/ई + स्वर = य्
उ/ऊ + स्वर = व्
ऋ/ॠ + स्वर = र्
ऌ + स्वर = ल्

नोट- ध्यान रहे पूर्व और पर दोनों वर्णों के स्थान पर एकादेश नहीं होगा केवल इक् (इ उ ऋ ऌ) के स्थान पर क्रमशः यण् (य् व् र् ल्) होगा।

यण् सन्धि के उदाहरण

इ ई + अच् = य्

(1) इति + आदिः (सन्धि विच्छेद)
इत् इ + आदिः (वर्ण विच्छेद)
इत् य् + आदिः (इ + अच् = य्)
इत्यादिः (सन्धियुक्त पद)

(2) मधु + अरिः
मध् उ + अरिः
मध् व् अरिः
मध्वरिः

(3) पितृ + आदेशः
पित् ऋ + आदेशः
पित् र् आदेशः
पित्रादेशः

(4) ऌ + आकृतिः
ल् + आकृतिः
लाकृतिः

(5) घस्ऌ + आदेशः = **घस्लादेशः**

(6) ऌ + आदेशः = **लादेशः**

(7) ऌ + आकारः = **लाकारः**

यण् सन्धि के कुछ प्रसिद्ध उदाहरण

इ/ई के स्थान पर 'य्'

यदि + अपि = **यद्यपि** अति + अधिकम् = **अत्यधिकम्**

सुधी + उपास्यः = **सुध्युपास्यः** अति + अन्तम् = **अत्यन्तम्**

नदी + ऊर्मिः = **नद्यूर्मिः** अति + आचारः = **अत्याचारः**

अभि + उदयः = **अभ्युदयः** अति + उत्तमः = **अत्युत्तमः**

उ/ऊ के स्थान पर 'व्'

सु + आगतम् = **स्वागतम्** अनु + अयः = **अन्वयः**

वधू + आदेशः = **वध्वादेशः** गुरु + आदेशः = **गुर्वादेशः**

ऋ / ॠ के स्थान पर र्

धातृ + अंशः = **धात्रंशः** मातृ + आज्ञा = **मात्राज्ञा**

पितृ + आज्ञा = **पित्राज्ञा** मातृ + उपदेशः = **मात्रुपदेशः**

5. अयादि सन्धि (अयवायाव सन्धि)

सूत्र- 'एचोऽयवायावः' (6.1.78)

सूत्र विश्लेषण- 'एचः' यह प्रत्याहार है, जिसमें ए, ओ, ऐ, औ- ये चार वर्ण आते हैं।

- अय् अव् आय् आव् - ये चार आदेश वर्ण हैं।
- इसप्रकार ए ओ ऐ औ (एच्) के बाद कोई स्वर वर्ण (अच्) आयें तो 'ए' के स्थान पर **'अय्'** ओ के स्थान पर **'अव्'** 'ऐ' के स्थान पर **'आय्'** औ के स्थान पर **'आव्'** होगा।

संक्षेप में- **एच् + अचि = अयवायावः**

ए + अच् = अय्
ओ + अच् = अव्
ऐ + अच् = आय्
औ + अच् = आव्

ध्यान दें- ए + अच् दोनों के स्थान पर 'अय्' आदेश नहीं हो रहा है; केवल 'ए' के स्थान पर 'अय्' होगा।

अयादि सन्धि के उदाहरण-

ए + अच् = अय्

1.चे + अनम् (सन्धिविच्छेद)
च् ए + अनम् (वर्ण विच्छेद)
च् अय् अनम् (ए के स्थान पर 'अय्')
चयनम् (सन्धियुक्त पद)

2. ने + अनम् = **नयनम्** कवे + ए = **कवये**
3. शे + अनम् = **शयनम्** शे + आनः = **शयानः**
4. हरे + ए = **हरये** हरे + इह = **हरयिह**
5. मुने + ए = **मुनये** क्रे + अनम् = **क्रयणम्**

ओ + अच् = अव्

1. पवनः
सन्धिविच्छेद- पो + अनः
वर्णविच्छेद- प् ओ + अनः
'ओ' के स्थान पर 'अव्' - प् अव् + अनः
सन्धियुक्त पद = पवनः

2. भो + अनम् = **भवनम्** गो + ईश्वरः = **गवीश्वरः**
3. साधो + ए = **साधवे** गो + ईशः = **गवीशः**
4. श्रो + अनम् = **श्रवणम्** वटो + ऋक्षः = **वटवृक्षः**
5. लो + अनम् = **लवणम्** स्तो + अनम् = **स्तवनम्**
6. गुरो + ए = **गुरवे** गो + इच्छा = **गविच्छा**
7. भो + अति = **भवति** गो + उदयः = **गवुदयः**
8. गो + एषणा = **गवेषणा** श्रो + अनः = **श्रवणः**
9. पो + इत्रम् = **पवित्रम्** लो + इत्रम् = **लवित्रम्**

ऐ + अच् = आय्

1. (i) सन्धि विच्छेद = नै + अकः
(ii) वर्ण विच्छेद = न् ऐ + अकः
(iii) 'ऐ' के स्थान पर 'आय्' = न् आय् अकः
(iv) सन्धियुक्त पद = **नायकः**

2. गै + इका = **गायिका** नै + इका = **नायिका**
3. शै + अकः = **शायकः** श्रियै + उत्सुकः = **श्रियायुत्सुकः**
4. दै + अकः = **दायकः** गै + अति = **गायति**
5. गै + अनम् = **गायनम्** गै + अन्ति = **गायन्ति**
6. गै + अकः = **गायकः** ग्लै + अति = **ग्लायति**

औ + अच् = आव्

1. पौ + अकः सन्धिविच्छेद
प् औ + अकः वर्णविच्छेद
प् आव् + अकः औ के स्थान पर 'आव्' आदेश
पावकः सन्धियुक्त पद

2. एतौ + अपि = **एतावपि** अग्नौ + इह = **अग्नाविह**
3. द्वौ + एव = **द्वावेव** उभौ + एतौ = **उभावेतौ**
4. बालकौ + अपि = **बालकावपि** तौ + अपि = **तावपि**
5. पौ + अनः = **पावनः** द्वौ + अपि = **द्वावपि**
6. भौ + उकः = **भावुकः** तौ + अत्र = **तावत्र**
7. नौ + इकः = **नाविकः** करौ + एतौ = **करावेतौ**

6.पूर्वरूप सन्धि

सूत्र- एङः पदान्तादति (6.1.109)

सूत्र विश्लेषण- एङ् = ए, ओ (यह एक प्रत्याहार है)
पदान्तात् = पद के अन्त में
अति = ह्रस्व 'अ' के आने पर

परिभाषा- जब पदान्त ए या ओ के बाद ह्रस्व 'अ' आये तो 'अ' को पूर्वरूप हो जाता है।

पूर्वरूप- अपने रूप को छोड़कर पूर्व वर्ण जैसा हो जाना- पूर्वरूप है। अर्थात् 'अ' वर्ण ए या ओ में जाकर मिल जायेगा,

और ह्रस्व 'अ' की जगह अवग्रह (ऽ) का चिह्न लग जाता है।

संक्षेप में - पदान्त एङ् + अ = पूर्वरूप

ए ओ + अ = ऽ

पूर्वरूप सन्धि के उदाहरण

हरे + अव (सन्धिविच्छेद)

हर् ए + अव (वर्ण विच्छेद)

हर् ए + ऽव ('अ' जाकर पूर्ववर्ण 'ए' में मिल गया)

हरेऽव (सन्धियुक्त पद)

विष्णो + अव (सन्धिविच्छेद)

विष्ण् ओ + अव (वर्ण विच्छेद)

विष्ण् ओ ऽ व ('अ' जाकर पूर्ववर्ण 'ओ' मे मिल गया)

विष्णोऽव (सन्धियुक्त पद)

ए + अ = ऽ

रमे + अत्र = **रमेऽत्र** ते + अद्य = **तेऽद्य**

वने + अत्र = **वनेऽत्र** बालके + अपि = **बालकेऽपि**

ओ + अ = ऽ

को + अपि = **कोऽपि** नमो + अस्तु = **नमोऽस्तु**

बालको + अपि = **बालकोऽपि** को + अयम् = **कोऽयम्**

को + अवादीत् = **कोऽवादीत्** प्रभो + अहम् = **प्रभोऽहम्**

बालो + अवदत् = **बालोऽवदत्** गुरो + अत्र = **गुरोऽत्र**

7. पररूप सन्धि

सूत्र- एङि पररूपम् (6.1.94)

परिभाषा- अकारान्त उपसर्ग के बाद ए या ओ (एङ्) से प्रारम्भ होने वाली धातुओं के आने पर पररूप हो जाता है।

पररूप- पर (बाद) वाले वर्ण के समान हो जाना ही पररूप है।

पूर्ववर्ण	परवर्ण	सन्धियुक्तवर्ण
अवर्णान्त उपसर्ग +	ए ओ से प्रारम्भ होने वाले धातुरूप	पररूप (ए, ओ के समान रूप)

पररूप सन्धि के उदाहरण

(1) प्र + एजते (सन्धि विच्छेद)

प्र् अ + एजते (वर्ण विच्छेद)

प्र् अ + एजते (परवर्ण 'ए' में 'अ' मिल गया)

प्रेजते

(2) उप + ओषति (सन्धि विच्छेद)

उप् अ + ओषति (वर्ण विच्छेद)

उप् अ + ओषति ('अ' जाकर परवर्ण 'ओ' में मिल गया)

उपोषति (सन्धियुक्त पद)

(3) प्र + ओषति = **प्रोषति** (4) अव + एहि = **अवेहि**

8. प्रकृतिभाव सन्धि

सूत्र- प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम् (5.1.125)

सूत्रार्थ- प्लुत और प्रगृह्य वर्णों को प्रकृतिभाव होता है, यदि बाद में स्वर वर्ण आयें तो।

प्रकृतिभाव- प्रकृतिभाव का अर्थ है- कोई भी सन्धि न होना अर्थात् ज्यों का त्यों रहना।

संक्षेप में- प्लुत/प्रगृह्य + अच् = प्रकृतिभाव

उदाहरण- हरी + एतौ = **हरी एतौ**

विष्णू + इमौ = **विष्णू इमौ**

गङ्गे + अमू = **गङ्गे अमू**

पचेते + इमौ = **पचेते इमौ**

भानू + एतौ = **भानू एतौ**

आगच्छ कृष्ण३ अत्र गौश्चरति

इ + इन्द्रः = **इ इन्द्रः**

अहो + ईशाः = **अहो ईशाः**

विशेष- दीर्घ ईकारान्त ऊकारान्त, एकारान्त द्विवचन की प्रगृह्य संज्ञा होती है। अतः **हरी, विष्णू, गङ्गे** की प्रगृह्यसंज्ञा है। प्रगृह्यसंज्ञा होने के कारण यहाँ प्रकृतिभाव हुआ।

नहीं तो हरी +एतौ = हर्येतौ बन जाता यण् सन्धि से।

स्वरसन्धि तालिका

सन्धि का नाम	सन्धिसूत्र	सूत्रार्थ	उदाहरण
1. यण् सन्धि	इको यणचि	**इक् + अच् = यण्**	
		इ/ई + अच् (असमान) =य्	यदि + अपि = यद्यपि
		उ/ऊ + अच् (असमान) = व्	मधु + अरिः = मध्वरिः
		ऋ ॠ + अच् (असमान) = र्	पितृ + आदेशः = पित्रादेशः
		ऌ + अच् (असमान) = ल्	ऌ + आकृतिः = लाकृतिः
2. अयादि सन्धि	एचोऽयवायावः	**एच् + अच् = अयवायाव**	
		ए + अच् = अय्	ने + अनम् = नयनम्
		ओ + अच् = अव्	पो + अनः = पवनः
		ऐ + अच् = आय्	नै + अकः = नायकः
		औ + अच् = आव्	पौ + अकः = पावकः
3. गुण सन्धि	आद्गुणः	**आत् + अच् = गुण**	
		अ/आ + इ/ई = ए	रमा + ईशः = रमेशः
		अ/आ + उ/ऊ = ओ	हित + उपदेशः = हितोपदेशः
		अ/आ + ऋ/ॠ = अर्	देव + ऋषिः = देवर्षिः
		अ/आ + ऌ = अल्	तव + ऌकारः = तवल्कारः
4. वृद्धि सन्धि	वृद्धिरेचि	**आत् + एच् = वृद्धि**	
		अ/आ + ए/ऐ = ऐ	सदा + एव = सदैव महा + ऐश्वर्यम् = महैश्वर्यम्
		अ/आ + ओ/औ = औ	जल + ओघः = जलौघः महा + औषधिः = महौषधिः
5. दीर्घ सन्धि	अकः सवर्णे दीर्घः	**अक् + अक् = दीर्घः**	
		अ/आ + अ/आ = आ	हिम + आलयः = हिमालयः
		इ/ई + इ/ई = ई	रवि + इन्द्रः = रवीन्द्रः
		उ/ऊ + उ/ऊ = ऊ	भानु + उदयः = भानूदयः
		ऋ ॠ + ऋ/ॠ = ॠ	मातृ + ऋणम् = मातॄणम्
6. पूर्वरूप सन्धि	एङः पदान्तादति	**एङ् + अ = पूर्वरूप**	
		ए + अ = (ऽ) पूर्वरूप	हरे + अव = हरेऽव
		ओ + अ = (ऽ) पूर्वरूप	विष्णो + अव = विष्णोऽव
7. पररूप सन्धि	एङि पररूपम्	**अवर्णान्त उपसर्ग + एङादिधातु = पररूप**	प्र + एजते = प्रेजते
		प्र, उप + ए, ओ धातु = पररूप	उप + ओषति = उपोषति
8. प्रकृतिभाव	प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम्	प्लुत/प्रगृह्य + अच् = प्रकृतिभाव	हरी + एतौ = हरी एतौ विष्णू + इमौ = विष्णू इमौ गङ्गे + अमू = गङ्गे अमू

स्वरसन्धि के कुछ अपवाद सूत्र/वार्तिक

(1) अक्षादूहिन्यामुपसंख्यानम् (वा.) 'अक्ष' शब्द के बाद 'ऊहिनी' शब्द के आने पर पूर्व और पर दोनों के (अ+ऊ) स्थान पर वृद्धिसंज्ञक 'औ' वर्ण आदेश होता है।

अक्ष + ऊहिनी

अक्ष् अ + ऊहिनी

अक्ष् औ हिनी

अक्षौहिणी

नोट- पूर्वपदात्संज्ञायामगः (8.4.3) सूत्र से 'नकार' के स्थान पर 'णकार' आदेश होकर 'अक्षौहिणी' प्रयोग सिद्ध हो जाता है।

- अक्षौहिणी सेना होती है, जिसमें 21870 रथ, 21870 हाथी, 65610 घोड़े और 109350 पैदल सैनिक होते हैं।

(2) प्रादूहोढोढ्येषैष्येषु (वा.) - 'प्र' उपसर्ग के बाद ऊहः, ऊढः, ऊढिः, एषः, और एष्यः पद आयें तो पूर्व और पर दोनों के स्थान पर वृद्धिसंज्ञक वर्ण आदेश होते हैं।

(i) प्र + ऊहः

प्र् अ + ऊहः

प्र् औ हः

प्रौहः (उत्तम अर्थ करने वाला)

(ii) प्र + ऊढः

प्र् अ + ऊढः

प्र औ ढः

प्रौढः (परिपक्व)

(iii) प्र + ऊढिः

प्र् अ + ऊढिः

प्र् औ ढिः

प्रौढिः (परिपक्वता, प्रौढता)

उपर्युक्त उदाहरणों में गुण सन्धि हो रही थी, किन्तु यहाँ गुण को बाधकर वृद्धिसन्धि हो रही है।

(iv) प्र + एषः

प्र् अ + एषः

प्र् ऐ षः

प्रैषः (प्रेरणा)

(v) प्र + एष्यः

प्र् अ + एष्यः

प्र् ऐ ष्यः

प्रैष्यः (प्रेरणीय/सेवक आदि)

नोट- इन दोनों उदाहरणों में वृद्धि सन्धि तो हो रही थी किन्तु ''एङि पररूपम्'' सूत्र से पररूप भी प्राप्त हो रहा था। यदि पररूप हो जाता तो प्रेषः, प्रेष्यः ऐसे अशुद्ध रूप बन जाते।

(3) ऋते च तृतीयासमासे (वा.) - यदि पूर्व में अवर्ण हो और बाद में 'ऋत' शब्द हो और दोनों शब्दों में तृतीया तत्पुरुष समास हुआ हो तो पूर्व और पर दोनों वर्णों के स्थान पर वृद्धिसंज्ञक वर्ण हो जाता है।

सुखेन ऋतः = **सुखार्तः** (तृतीया तत्पुरुष समास)

सुख + ऋतः = **सुखार्तः** (सुख से युक्त) - वृद्धिसन्धि

दुःख + ऋतः = **दुःखार्तः** (दुःख से युक्त) - वृद्धिसन्धि

कष्ट + ऋतः = **कष्टार्तः** (कष्ट से युक्त) - वृद्धिसन्धि

किन्तु परमश्चासौ ऋतः = परमर्तः यहाँ वृद्धि नहीं हुई क्योंकि यहाँ तृतीया तत्पुरुष समास नहीं, बल्कि कर्मधारय समास है।

परम + ऋतः = परमर्तः (गुण सन्धि)

4. प्रवत्सतरकम्बलवसनार्णदशानामृणे (वार्तिक)- प्र, वत्सतर, कम्बल, वसन, ऋण तथा दश- इन छह शब्दों के बाद यदि 'ऋण' शब्द आये तो पूर्व और पर दोनों के स्थान पर वृद्धिसंज्ञक वर्ण हो जाता है।

(i) प्र + ऋणम्

प्र् अ + ऋणम्

प्र आर् णम्

प्रार्णम् (अधिक ऋण)

(ii) वत्सतर + ऋणम् = **वत्सतरार्णम्** (बछड़े के लिए ऋण)

(iii) कम्बल + ऋणम् = **कम्बलार्णम्** (कम्बल के लिए ऋण)

(iv) वसन + ऋणम् = **वसनार्णम्** (वस्त्र के लिए ऋण)

(v) ऋण + ऋणम् = **ऋणार्णम्** (ऋण चुकाने के लिए ऋण)

(vi) दश + ऋणम् = **दशार्णम्** (दस प्रकार के जल वाला देश)

5. उपसर्गादृति धातौ- अवर्णान्त उपसर्ग के बाद 'ऋ' से प्रारम्भ होने वाली धातु हो तो पूर्व और पर के स्थान पर वृद्धिसंज्ञक एक आदेश होता है।

जैसे-

प्र + ऋच्छति = **प्रार्च्छति**

उप + ऋच्छति = **उपार्च्छति**

प्र + ऋणोति = **प्रार्णोति**

प्र + ऋञ्जते = **प्रार्ञ्जते**

(6) शकन्ध्वादिषु पररूपं वाच्यम् (वार्तिक)- शकन्धु आदि गण में टिसंज्ञक पूर्व और पर वर्णों के स्थान पर पररूप सन्धि होती है।

जैसे-

(i) शक + अन्धुः = **शकन्धुः** (शक नामक देश का कूप)

(ii) कर्क + अन्धुः = **कर्कन्धुः** (कर्क नामक राजा का कूप)

(iii) मनस् + ईषा = **मनीषा** (बुद्धि)

(iv) मार्त + अण्डः = **मार्तण्डः** (सूर्य)

(v) पतत् + अञ्जलिः = **पतञ्जलिः** (पतञ्जलि)

(7) स्वादीरेरिणोः (वार्तिक)- जब 'स्व' शब्द के बाद 'ईर' और 'ईरिन्' आदि शब्द आयें तो 'स्व' के अकार 'ईर्' और 'ईरिन्' के ईकार के स्थान में ''ऐ'' वृद्धि हो जाता है।

जैसे-

स्व + ईरः = **स्वैरः** (स्वेच्छाचारी)

स्व + ईरिणी = **स्वैरिणी** (स्वेच्छाचारिणी)

स्व + ईरम् = **स्वैरम्** (स्वेच्छाचारिता)

स्व + ईरी = **स्वैरी** (स्वेच्छाचारी)

व्यञ्जन (हल्) सन्धि

व्यञ्जन सन्धि- व्यञ्जन के बाद स्वर या व्यञ्जन आने पर जो विकार होता है, उसे व्यञ्जन सन्धि कहते हैं।
जैसे-

(i) वाक् + ईशः = वागीशः (व्यञ्जन + स्वर)

(ii) सत् + चित् = सच्चित् (व्यञ्जन + व्यञ्जन)

स्पष्टीकरण- यहाँ प्रथम उदाहरण में 'क्' व्यञ्जन के बाद 'ई' स्वर है तथा दूसरे उदाहरण में 'त्' व्यञ्जन के बाद 'च्' व्यञ्जन है। इससे स्पष्ट होता है कि व्यञ्जन वर्णों के बाद स्वर आये चाहे व्यञ्जन दोनों ही स्थितियों में व्यञ्जन सन्धि होगी।

1. श्चुत्व सन्धि

सूत्र- स्तोः श्चुना श्चुः

सूत्र विश्लेषण-

स्तु - सकार तवर्ग = स् त् थ् द् ध् न्

श्चु - शकार चवर्ग = श् च् छ् ज् झ् ञ्

सूत्रार्थ- सकार या तवर्ग (त् थ् द् ध् न्) के पहले या बाद में शकार या चवर्ग (च् छ् ज् झ् ञ्) का योग होने पर स् के स्थान पर श् तथा तवर्ग के स्थान पर चवर्ग हो जाता है।

स्थानी	आदेश	योग
स्	श्	श् या
त्	च्	चवर्ग का
थ्	छ्	योग पहले हो
द्	ज्	या बाद में।
ध्	झ्	
न्	ञ्	

उदाहरण-

रामस् + शेते = **रामश्शेते**

स्पष्टीकरण- इस उदाहरण में 'रामस्' में विद्यमान सकार के स्थान पर शकार हो गया; क्योंकि 'शेते' में शकार आ रहा था इसलिए।

ध्यान दें- इस सूत्र में सकार के बाद शकार आये ऐसा नहीं कहा गया है; अपितु योग होने पर कहा गया है। 'योग' का अर्थ है- 'मिलना'। तात्पर्य यह हुआ कि- 'स्तु' (सकार तवर्ग) पहले हो श्चु बाद में हो या श्चु (शकार चवर्ग) पहले हो 'स्तु' बाद में हो, बदलेगा 'स्तु' ही। जैसे-

(i) सत् + चित् = **सच्चित्**

(ii) याच् + ना = **याच्ञा**

- उपर्युक्त उदाहरण में 'सत्' के त् का 'चित्' के 'च्' से योग होने पर 'सत्' के 'त्' के स्थान पर 'च्' होकर 'सच्चित्' बन गया।
- दूसरे उदाहरण में 'याच्' के 'च्' का 'ना' के 'न्' से योग होने पर 'न्' के स्थान पर चवर्ग का 'ञ्' हो गया। जबकि 'ना' परवर्ण है तब भी।
- इससे सिद्ध हुआ कि सकार और तवर्ग चाहे पूर्व में हो चाहे पर में उनके स्थान पर ही शकार या चवर्ग आदेश के रूप में होंगे।

अवश्य देखें- श्चुत्व सन्धि में हमेशा-

स् के स्थान पर **श्**
त् के स्थान पर **च्**
थ् के स्थान पर **छ्**
द् के स्थान पर **ज्**
ध् के स्थान पर **झ्**
न् के स्थान पर **ञ्** होगा।

स्तु (सकार तवर्ग) स्थानी हैं, श्चु (शकार चवर्ग) आदेश हैं।

अन्य उदाहरण- सद् + जनः = **सज्जनः**
कस् + चित् = **कश्चित्**
शार्ङ्गिन् + जयः = **शार्ङ्गिञ्जयः**
बृहद् + झरः = **बृहज्झरः**
दुस् + चरित्रः = **दुश्चरित्रः**
उद् + ज्वलः = **उज्ज्वलः**
उत् + चारणम् = **उच्चारणम्**

2. ष्टुत्व सन्धि

सूत्र- 'ष्टुना ष्टुः' (8.4.41)

सूत्रार्थ- स्तु (सकार तवर्ग) के स्थान पर 'ष्टु' (षकार टवर्ग) होता है, 'ष्टु' के योग में।

स्तु = सकार तवर्ग- स् त् थ् द् ध् न्

ष्टु = षकार टवर्ग- ष् ट् ठ् ड् ढ् ण्

अर्थात् सकार या तवर्ग के पहले या बाद में षकार या टवर्ग (ट् ठ् ड् ढ् ण्) का योग होने पर स् को ष् तथा तवर्ग को टवर्ग हो जाता है।

स्थानी	आदेश	योग
स्	ष्	षकार या
त्	ट्	टवर्ग का योग
थ्	ठ्	होने पर
द्	ड्	
ध्	ढ्	
न्	ण्	

ध्यान रहे- सकार तवर्ग के पहले या सकार तवर्ग के बाद में षकार टवर्ग होने पर **स्** के स्थान पर **'ष्'**।

'त्' के स्थान पर **'ट्'**। **'थ्'** के स्थान पर **'ठ्'**।

'द्' के स्थान पर **'ड्'**। **'ध्'** के स्थान पर **'ढ्'**।

'न्' के स्थान पर **'ण्'** होता है।

उदाहरण-

1. तत् + टीका
   तट् + टीका (त् के स्थान पर ट्)
   तट्टीका
2. रामस् + षष्ठः
   रामष् + षष्ठः (स् के स्थान पर ष्)
   रामष्षष्ठः
3. उद् + डयनम्
   उड् + डयनम् (द् के स्थान पर ड्)
   उड्डयनम्
4. कृष् + नः
   कृष् + णः (न् के स्थान पर ण्)
   कृष्णः
5. दुष् + तः
   दुष् + टः (त् के स्थान पर ट्)
   दुष्टः
6. चक्रिन् + ढौकसे
   चक्रिण् + ढौकसे (न् के स्थान पर ण्)
   चक्रिण्ढौकसे
7. विष् + नुः
   विष् + णुः (न् के स्थान पर ण्)
   विष्णुः
8. पेष् + ता
   पेष् + टा (त् के स्थान पर ट्)
   पेष्टा

3.1 जश्त्व सन्धि

सूत्र- झलां जशोऽन्ते (8.2.39)

सूत्रविवरण- पदान्त झल् के स्थान पर 'जश् ' आदेश होता है।

➢ 'झल्' एक प्रत्याहार है जिसमें - वर्णों के पहले, दूसरे, तीसरे, चौथे और ऊष्म वर्ण आते हैं-

झल् = झ भ घ ढ ध
ज ब ग ड द
ख फ छ ठ थ
च ट त क प
श ष स ह

जश् = ज ब ग ड द (वर्गों के तीसरे अक्षर)

स्थानी (झल्)	आदेश (जश्)
(i) च् छ् ज् झ् श्	ज्
(ii) प् फ् ब् भ्	ब्
(iii) क् ख् ग् घ् ह्	ग्
(iv) ट् ठ् ड् ढ् ष्	ड्
(v) त् थ् द् ध् स्	द्

ध्यान रहे- झल् प्रत्याहार के बाद अच् हो, या हल् हो, या कोई वर्ण हो या न हो तो भी जश् होगा।

नोट- जश्त्व सन्धि दो प्रकार की होती है-

(i) पदान्त जश्त्व सन्धि

(ii) अपदान्त जश्त्व सन्धि

उदाहरण-

1. अच् + अन्तः
   अज् + अन्तः
   अजन्तः
2. वाक् + ईशः
   वाग् + ईशः
   वागीशः

3. षट् + आननः
षड् + आननः
षडाननः

4. दिक् + अम्बरः
दिग् + अम्बरः
दिगम्बरः

5. एतत् + मुरारिः
एतद् + मुरारिः
एतद् मुरारिः

6. सुप् + ईशः
सुब् + ईशः
सुबीशः

7. जगत् + ईशः
जगद् + ईशः
जगदीशः

8. वाक् + अत्र
वाग् + अत्र
वागत्र

9. दिक् + गजः
दिग् + गजः
दिग्गजः

10. चित् + आनन्दः
चिद् + आनन्दः
चिदानन्दः

11. सुप् + अन्तः
सुब् + अन्तः
सुबन्तः

12. कृत् + अन्तः
कृद् + अन्तः
कृदन्तः

13. तिप् + अन्तः
तिब् + अन्तः
तिबन्तः

14. अप् + जम्
अब् + जम्
अब्जम्

15. महत् + दानम्
महद् + दानम्
महद्दानम्

3.2 अपदान्त जश्त्व सन्धि

सूत्र- झलां जश् झशि (8.4.53)

सूत्रविश्लेषण- झलाम् - झल् वर्णों के स्थान पर

जश् - जश् वर्ण होते हैं

झशि - झश् वर्णों के (बाद) में आने पर

सूत्रार्थ- झल् वर्णों के बाद झश् वर्णों के आने पर झल् के स्थान पर जश् होगा।

(i) 'झल्' एक प्रत्याहार है, जिसमें वर्गों के 1,2,3,4 और श् ष् स् ह् आते हैं।

झल् = झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द
ख फ छ ठ थ च ट त क प
श ष स ह

(ii) 'जश्' एक प्रत्याहार है, जिसमें वर्गों के तीसरे वर्ण आते हैं

जश् = ज ब ग ड द।

(iii) 'झश्' भी एक प्रत्याहार है जिसमें वर्गों के तीसरे और चौथे वर्ण आते हैं।

झश् = झ भ घ ढ ध
ज ब ग ड द

स्थानी (झल्)	आदेश (जश्)
क् ख् ग् घ् ह्	ग्
च् छ् ज् झ् श्	ज्
ट् ठ् ड् ढ् ष्	ड्
त् थ् द् ध् स्	द्
प् फ् ब् भ्	ब्

ध्यान दें- 'स्थानेऽन्तरतमः' की सहायता से उच्चारणस्थान की साम्यता को लेकर ज् ब् ग् ड् द् (जश्) आदेश होता है।

उदाहरण-

(1) क्रुध् + धः
क्रुद् + धः
क्रुद्धः

(2) शुध् + धः
शुद् + धः
शुद्धः

(3) युध् + धः
युद् + धः
युद्धः

(4) लभ् + धः
लब् + धः
लब्धः

(5) दुह् + धम्
दुग् + धम्
दुग्धम्

(6) वृध् + धिः
वृद् + धिः
वृद्धिः

(7) रुणध् + धिः
रुणद् + धिः
रुणद्धिः

(8) बोध् + धा
बोद् + धा
बोद्धा

4. चर्त्व सन्धि

सूत्र- खरि च (8.4.55)

सूत्रार्थ- यदि झल् के बाद खर् आये तो झल् के स्थान पर 'चर्' होगा।

➢ 'झल्' एक प्रत्याहार है जिसमें वर्गों के प्रथम, द्वितीय, तृतीय चतुर्थ, एवं श ष स ह वर्ण आते हैं।

➢ **झल्** = झ् भ् घ् ढ् ध्
ज् ब् ग् ड् द्
ख् फ् छ् ठ् थ्
च् ट् त् क् प्
श् ष् स् ह

➢ 'खर्' एक प्रत्याहार है जिसमें वर्गों के प्रथम, द्वितीय वर्ण और श् ष् स् आते हैं।

खर् = ख् फ् छ् ठ् थ्
च् ट् त् क् प्
श् ष् स्

➢ 'खरि च' सूत्र का सम्पूर्ण अर्थ करने के लिए 'झलाम्' और 'चर्' की अनुवृत्ति आती है।

स्थानी (झल्)	**आदेश (चर्)**	**साम्य (उच्चारण स्थान)**	**परवर्ण (खर्)**
क् ख् ग् घ्	क्	कण्ठ	ख् फ् छ्
च् छ् ज् झ्	च्	तालु	ठ् थ् च्
ट् ठ् ड् ढ्	ट्	मूर्धा	ट् त् क्
त् थ् द् ध्	त्	दन्त	प् श् ष्
प् फ् ब् भ्	प्	ओष्ठ	स्

➢ श् ष् स् के स्थान पर श् ष् स् आदेश होगा

उदाहरण-

(1) सद् + कारः → सत् + कारः → **सत्कारः**

(2) सद् + पात्रम् → सत् + पात्रम् → **सत्पात्रम्**

(3) दिग् + पालः → दिक् + पालः → **दिक्पालः**

(4) भेद् + तुम् → भेत् तुम् → **भेत्तुम्**

(5) छेद् + तव्यम् → छेत् + तव्यम् → **छेत्तव्यम्**

(6) लिभ् + सा → लिप् + सा → **लिप्सा**

5. अनुस्वार सन्धि

सूत्र- मोऽनुस्वारः (8.3.23)

सूत्रार्थ- पदान्त 'म्' के बाद कोई भी व्यञ्जन (हल्) आये तो 'म्' के स्थान पर अनुस्वार (ं) हो जाता है।

पूर्ववर्ण	**परवर्ण**	**सन्धिवर्ण**
पदान्त मकार	हल्	ं अनुस्वार

उदाहरण-

(i) हरिम् + वन्दे = **हरिं वन्दे**

(ii) त्वम् + करोषि = **त्वं करोषि**

(iii) रामम् + भजामि = **रामं भजामि**

(iv) जलम् + वहति = **जलं वहति**

(v) धनम् + यच्छ = **धनं यच्छ**

(vi) दुःखम् + सहते = **दुःखं सहते**

6. तोर्लि सन्धि

सूत्र- तोर्लि (8.4.60)

सूत्रविश्लेषण- तोः - तवर्ग के बाद
लि - ल् वर्ण हो तो

➢ **परसवर्ण -** परसवर्ण 'ल्' हो जाता है।

➢ 'अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः' से 'परसवर्ण' की अनुवृत्ति।

सूत्रार्थ- यदि तवर्ग (त् थ् द् ध् न्) के बाद 'ल्' वर्ण आये तो तवर्ग के स्थान पर 'ल्' हो जाता है।

पूर्ववर्ण	**परवर्ण**	**सन्धिवर्ण**
त् थ् द् ध् न्	ल्	ल्

उदाहरण-

(i) उद् + लिखितम् → उल् + लिखितम् → **उल्लिखितम्**

(ii) तद् + लीनः → तल् + लीनः → **तल्लीनः**

(iii) उद् + लेखः → उल् + लेखः → **उल्लेखः**

(iv) विद्वान् + लिखति → विद्वाल्ँ + लिखति → **विद्वाँल्लिखति**

(v) तद् + लयः → तल् + लयः → **तल्लयः**

(vi) महान् + लाभः → महाल्ँ + लाभः → **महाँल्लाभः**

(vii) विपद् + लीनः → विपल् + लीनः → **विपल्लीनः**

(viii) जगद् + लीयते → जगल् + लीयते → **जगल्लीयते**

(ix) यद् + लक्षणम्
यल् + लक्षणम्
यल्लक्षणम्

(x) विद्युद् + लेखा
विद्युल् + लेखा
विद्युल्लेखा

(xi) धनवान् + लुनीते
धनवालँ लुनीते
धनवाँल्लुनीते

7. परसवर्ण सन्धि

सूत्र- अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः (8.4.58)
सूत्रविश्लेषण-
अनुस्वारस्य- अनुस्वार (ं) के स्थान पर
परसवर्णः - परसवर्ण होता है।
ययि - 'यय्' प्रत्याहार का वर्ण बाद में आये तो।
सूत्रार्थ- अपदान्त अनुस्वार के बाद यदि यय् प्रत्याहार का कोई भी व्यञ्जन आये तो अनुस्वार को परसवर्ण हो जाता है।

- **परसवर्ण-** परस्य सवर्णः परसवर्णः। परसवर्ण का अर्थ है- पर = (बाद) में जो वर्ण हैं उसके सवर्णियों में से आदेश होना।
- अर्थात् अनुस्वार के बाद किसी भी वर्ग का कोई भी व्यञ्जन आने पर अनुस्वार के स्थान पर उस वर्ग का पञ्चम वर्ण हो जाता है।

यय् - 'यय्' एक प्रत्याहार है जिसमें श् ष् स् ह् को छोडकर सभी व्यञ्जन वर्ण आते हैं।

यय् =
य् व् र् ल्
ञ् म् ङ् ण् न्
झ् भ् घ् ढ् ध्
ज् ब् ग् ड् द्
ख् फ् छ् ठ् थ्
च् ट् त् क् प्।

पूर्ववर्ण (अनुस्वार)	परवर्ण (यय्)	सन्धिवर्ण (परसवर्ण)
अनुस्वार (ं)	क् ख् ग् घ् ङ्	ङ्
अनुस्वार (ं)	च् छ् ज् झ् ञ्	ञ्
अनुस्वार (ं)	ट् ठ् ड् ढ् ण्	ण्
अनुस्वार (ं)	त् थ् द् ध् न्	न्
अनुस्वार (ं)	प् फ् ब् भ् म्	म्

उदाहरण-

(1) गं + गा = **गङ्गा/गङ्गा**
(2) शं + खः = **शङ्खः/शङ्खः**
(3) अं + कः = **अङ्कः/अङ्कः**
(4) अं + कितः = **अङ्कितः**
(5) लं + घनम् = **लङ्घनम् / लङ्घनम्**
(6) अं + चितः = **अञ्चितः**
(7) मं + चः = **मञ्चः**
(8) झं + झा = **झञ्झा**
(9) खं + जः = **खञ्जः**
(10) लां + छनम् = **लाञ्छनम्**
(11) कुं + ठितः = **कुण्ठितः**
(12) घं + टा = **घण्टा**
(13) मुं + डा = **मुण्डा**
(14) दं + डः = **दण्डः**
(15) खं + ड = **खण्डः**
(16) शां + त = **शान्तः**
(17) मं + दः = **मन्दः**
(18) बं + धनम् = **बन्धनम्**
(19) मं + थनम् = **मन्थनम्**
(20) नं + दति = **नन्दति**
(21) कं + पनम् = **कम्पनम्**
(22) गुं + फितः = **गुम्फितः**
(23) लं + बः = **लम्बः**
(24) स्तं + भः = **स्तम्भः**
(25) पं + पा = **पम्पा**

- **विशेष-** अनुस्वार तभी अनुस्वार रह सकता है, जब उसके बाद य् व् र् ल् या श् ष् स् ह् हों। जैसे-

संयमः, संवारः, संरम्भः, संलापः, संयोगः, संशयः, संसारः, संहारः आदि।

- **वा पदान्तस्य-** पदान्त अनुस्वार के स्थान पर परसवर्ण विकल्प से होता है, यय् प्रत्याहार के वर्ण बाद में आयें तो।

अर्थात् पदान्त अनुस्वार में यह नियम वैकल्पिक है। जैसे-

(i) कार्यं करोति = **कार्यं करोति / कार्यङ्करोति।**

(ii) किं करोषि = **किं करोषि / किङ्करोषि**

(iii) किं चित् = **किंचित् / किञ्चित्**

(iv) कथं चलसि = **कथं चलसि / कथञ्चलसि।**

(v) त्वं करोषि = **त्वं करोषि / त्वङ्करोषि**

8. अनुनासिक सन्धि

सूत्र- यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा (8.4.45)

सूत्र विश्लेषण- यरः = पदान्त यर् के स्थान पर

अनुनासिके = अनुनासिक वर्ण बाद में आये तो

अनुनासिकः = अनुनासिक वर्ण होगा।

वा = विकल्प से।

सूत्रार्थ- अनुनासिक वर्ण यदि बाद में आयें तो पदान्त यर् वर्णों के स्थान पर विकल्प से अनुनासिक आदेश होता है।

➢ **अनुनासिक होने का अर्थ है-** उसी वर्ग का पञ्चमाक्षर हो जाना

यर् - यर् एक प्रत्याहार है जिसमें ह को छोड़कर सभी व्यञ्जन (हल्) वर्ण आते हैं।

पूर्ववर्ण पदान्त यर्	परवर्ण अनुनासिक वर्ण	सन्धिवर्ण अनुनासिक
क् ख् ग् घ् ङ्	ङ् ञ् ण् न् म्	ङ्
च् छ् ज् झ् ञ्	में से कोई भी	ञ्
ट् ठ् ड् ढ् ण्	अनुनासिक वर्ण	ण्
त् थ् द् ध् न्	बाद में आये	न्
प् फ् ब् भ् म्		म्

जैसे-

(i) प्राक् + मुखः
प्राङ् + मुखः
प्राङ्मुखः

(ii) षट् + मासाः
षण् + मासाः
षण्मासाः

(iii) षट् + मुखः
षण् + मुखः
षण्मुखः

(iv) सद् + मतिः
सन् + मतिः
सन्मतिः

(v) दिक् + नागः
दिङ् + नागः
दिङ्नागः

(vi) जगत् + नाथः
जगन् + नाथः
जगन्नाथः

(vii) तत् + मित्रम्
तन् + मित्रम्
तन्मित्रम्

(viii) एतद् + मुरारिः
एतन् + मुरारिः
एतन्मुरारिः

ध्यान रहे- यह सन्धि वैकल्पिक है, सन्धि न होने पर जो सन्धि विच्छेद है, वही रूप रहेगा।

प्रत्यये भाषायां नित्यम् - (वार्तिक)

अनुनासिक वर्णों से प्रारम्भ होने वाले प्रत्ययों के बाद में आने पर पदान्त यर् के स्थान पर नित्य से अनुनासिक होता है।

(i) तत् + मात्रम्
तन् मात्रम्
= तन्मात्रम्

(ii) चित् + मयम्
चिन् + मयम्
= चिन्मयम्

(iii) वाक् + मयम्
वाङ् मयम्
= वाङ्मयम्

व्यञ्जन सन्धि तालिका

सन्धि का नाम	सन्धिसूत्र	सूत्रार्थ	उदाहरण
1.श्चुत्वसन्धि	स्तोः श्चुना श्चुः	स् तवर्ग + श् चवर्ग = श् चवर्ग	रामस् + चिनोति = रामश्चिनोति सत् + चित् = सच्चित्
2.ष्टुत्व सन्धि	ष्टुना ष्टुः	स् तवर्ग + ष् टवर्ग = ष् टवर्ग	रामस् + षष्ठः = रामष्षष्ठः रामस् + टीकते = रामष्टीकते तत् + टीका = तट्टीका
3.जश्त्व सन्धि	झलां जशोऽन्ते	झल् को जश् आदेश	जगत् + ईशः = जगदीशः षट् + आननः = षडाननः
4. चर्त्व सन्धि	खरि च	झल् + खर् = चर्	छेद् + ता = छेत्ता लिभ् + सा = लिप्सा
5.अनुस्वार सन्धि	मोऽनुस्वारः	पदान्त म् + हल् = अनुस्वार (ं)	हरिम् + वन्दे = हरिं वन्दे त्वम् करोषि = त्वं करोषि
6.तोर्लि सन्धि	तोर्लि	तवर्ग + ल् = ल्	उद् + लेख = उल्लेखः तद् + लीनः = तल्लीनः
7.परसवर्ण सन्धि	अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः	अनुस्वार + यय् = परसवर्ण (पञ्चमाक्षर)	गं + गा = गङ्गा मं + चः = मञ्चः
8.अनुनासिकसन्धि	यरोऽनुनासिकेऽनु-नासिको वा	यर् + अनुनासिक = अनुनासिक	जगत् + नाथः = जगन्नाथः दिक् + नागः = दिङ्नागः

विसर्ग सन्धि

विसर्ग सन्धि- विसर्ग के बाद स्वर या व्यञ्जन वर्णों के आने पर विसर्ग (ः) में जो विकार या परिवर्तन होता है, उसे **विसर्ग सन्धि** कहते हैं।

जैसे- मनः + रथः = मनोरथः

➢ विसर्ग हमेशा किसी न किसी स्वर के बाद ही आता है। जैसे- 'रामः' में 'अ' के बाद, हरिः में 'इ' के बाद, गुरुः में 'उ' के बाद विसर्ग आया है।

➢ विसर्ग सन्धि में विसर्ग से पहले आने वाले स्वर तथा विसर्ग के बाद आने वाले स्वर और व्यञ्जन दोनों का ही ध्यान रखा जाता है।

1. सत्व सन्धि

विसर्जनीयस्य सः (8.3.34) - यदि विसर्ग के आगे कोई खर् प्रत्याहार का वर्ण आये तो विसर्ग के स्थान पर 'स्' हो जाता है।

विसर्ग (ः) + खर् = स्

खर् - खर् एक प्रत्याहार है जिसमें वर्गों के प्रथम, द्वितीय अक्षर और श ष स आते हैं। खर् में कुल 13 वर्ण आते हैं।

खर् = क ख, च छ, ट ठ, त थ, प फ, श ष स।

ध्यान रखें-

इस नियम को समझने के लिए निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना आवश्यक है-

(i) यदि विसर्ग के बाद च् या छ् आये तो ''विसर्जनीयस्य सः'' सूत्र से विसर्ग के स्थान पर 'स्' होता है और इस 'स्' को ''स्तोः श्चुना श्चुः'' सूत्र से 'श्' हो जाता है।

जैसे-

☆ रामः + चलति
रामस् + चलति
रामश्चलति

☆ निः + छलम्
निस् + छलम्
निश्छलम्

☆ निः + चलम्
निस् + चलम्
निश्चलम्

☆ गौः + चरति
गौस् + चरति
गौश्चरति

☆ कः + चित्
कस् + चित्
कश्चित्

☆ बालः + चलति
बालस् + चलति
बालश्चलति

☆ निः + चयः
निस् + चयः
निश्चयः

☆ पूर्णः + चन्द्रः
पूर्णस् + चन्द्रः
पूर्णश्चन्द्रः

☆ हरिः + छलति
हरिस् + छलति
हरिश्छलति

☆ हरिः + चलति
हरिस् + चलति
हरिश्चलति

(ii) यदि विसर्ग के बाद ट् या ठ् हो तो **''विसर्जनीयस्य सः''** सूत्र से विसर्ग के स्थान पर 'स्' होता है, और उस 'स्' को ''ष्टुना ष्टुः'' सूत्र से 'ष्' हो जाता है—

जैसे-

☆ रामः + टीकते
रामस् + टीकते
रामष्टीकते।

☆ धनुः + टङ्कारः
धनुस् + टङ्कारः
धनुष्टङ्कारः

☆ रामः + ठकारः
रामस् + ठकारः
रामष्ठकारः

(iii) यदि विसर्ग के बाद त् और थ् आये तो **''विसर्जनीयस्य सः''** सूत्र से विसर्ग के स्थान पर 'स्' हो जाता है और वह 'स्' जैसा का तैसा रहता है अर्थात् 'स्' ही रहता है। जैसे-

☆ हरिः + त्राता — **हरिस्त्राता**
☆ विष्णुः + तत्र — **विष्णुस्तत्र**
☆ बालः + तिष्ठति — **बालस्तिष्ठति**
☆ विष्णुः + त्रायते — **विष्णुस्त्रायते**
☆ इतः + ततः — **इतस्ततः**
☆ कृतः + तथा — **कृतस्तथा**
☆ गजाः + तिष्ठन्ति — **गजास्तिष्ठन्ति**
☆ विष्णुः + त्राता — **विष्णुस्त्राता**
☆ बालकः + थुडति — **बालकस्थुडति**
☆ मनः + तापः — **मनस्तापः**
☆ नमः + ते — **नमस्ते**

(iv) यदि विसर्ग के बाद क् या ख् आये तो विसर्ग के स्थान पर विसर्ग ही रहता है अथवा **''कुप्वोः ≍क ≍पौ च''** (8.3.37) सूत्र से विकल्प से जिह्वामूलीय हो जाता है।
विसर्ग को 'स्' नहीं होता है जैसे-

☆ बालकः क्रीडति अथवा बालक≍ क्रीडति।

☆ बालकः खेलति अथवा बालक≍ खेलति।

नोट-

☆ जिह्वामूलीय वर्णों को कण्ठ के भी नीचे जिह्वामूल से बोला जाता है।

☆ जिह्वामूलीय को आधे विसर्ग≍ के समान लिखा जाता है।

(v) यदि विसर्ग के बाद प या फ आये तो विसर्ग के स्थान पर विसर्ग ही रहता है अथवा **''कुप्वोः ᳲक ᳲपौ च''** (8.3.37) सूत्र से विसर्ग के स्थान पर उपध्मानीय होता है। विसर्ग को 'स्' नहीं होता। जैसे-

वृक्षः पतति = वृक्षᳲ पतति।

वृक्षः फलति = वृक्षᳲ फलति।

नोट-

☆ उपध्मानीय वर्ण का उच्चारण 'ओष्ठ' से होता है।

☆ उपध्मानीय को भी आधे विसर्ग ᳲ के समान लिखा जाता है।

(vi) यदि विसर्ग के बाद शर् (श् ष् स्) आये तो **''वा शरि''** (8.3.36) सूत्र से विसर्ग को विसर्ग ही रहता है अथवा विसर्ग के स्थान पर 'स्' होकर परवर्ण श् ष् स् की तरह हो जाता है। जैसे-

☆ हरिः + शेते　☆ रामः + षष्ठः
हरिस् + शेते　रामस् + षष्ठः
हरिश्शेते　**रामष्षष्ठः/रामःषष्ठः (विकल्प से)**
हरिःशेते (विकल्प से)

☆ निः + सन्देहम्　☆ वायुः + सरति
निस् + सन्देहम्　वायुस् + सरति
निस्सन्देहम्　**वायुस्सरति**
निःसन्देहम् (विकल्प से) **वायुःसरति** (विकल्प से)

☆ बालकः + शयानः
बालकस् शयानः
बालकश्शयानः
बालकः शयानः (विकल्प से)

☆ मुनिः + शेते - मुनिस् + शेते = मुनिश्शेते

☆ कृष्णः + सर्पः - कृष्णस् + सर्पः = कृष्णस्सर्पः

2. रुत्व सन्धि

सूत्र - ससजुषो रुः (8.2.66)

☆ पदान्त सकार और 'सजुष्' के षकार के स्थान पर 'रु' आदेश होता है।

☆ 'रु' में 'उ' की इत्संज्ञा होकर लोप हो जाता है 'र्' शेष बचता है।

☆ जब 'रु' (र्) के ठीक पहले ह्रस्व 'अ' न हो और रु (र्) के ठीक बाद में खर् न हो, तो यह 'र्', 'र्' ही रहता है। इसे ही 'रुत्वसन्धि' कहते हैं।

☆ कविस् + अयम्　☆ हरेस् + इदम्
कवि रु + अयम्　हरे रु + इदम्
कवि र् अयम्　हरे र् + इदम्
कविरयम्　**हरेरिदम्**

☆ गौस् + अयम्　☆ प्रातस् + अहम्
गौ रु + अयम्　प्रात रु + अहम्
गौ र् + अयम्　प्रात र् + अहम्
गौरयम्　**प्रातरहम्**

☆ पाशैस् + बद्धः　☆ पितुस् + आज्ञा
पाशै रु + बद्धः　पितु रु + आज्ञा
पाशै र् + बद्धः　पितु र् + आज्ञा
पाशैर्बद्धः　**पितुराज्ञा**

☆ निस् + धनम्　☆ ऋषिस् + वदति
नि रु + धनम्　ऋषि रु + वदति
नि र् + धनम्　ऋषि र्+ वदति
निर्धनम्　**ऋषिर्वदति**

☆ मातुस् + आज्ञा　☆ भानोस् + अयम्
मातु रु + आज्ञा　भानो रु + अयम्
मातु र् आज्ञा　भानो र् अयम्
मातुराज्ञा　**भानोरयम्**

☆ मुनिस् आगच्छति　☆ हरिस् + जयति
मुनि रु आगच्छति　हरि रु + जयति
मुनि र् आगच्छति　हरि र्+ जयति
मुनिरागच्छति　**हरिर्जयति**

☆ कैस् + उक्तम्　☆ साधुस् + गच्छति
कै रु + उक्तम्　साधु रु + गच्छति
कै र्+ उक्तम्　साधु र् + गच्छति
कैरुक्तम्　**साधुर्गच्छति**

☆ भानुस् + उदेति　☆ हरिस् + अवदत्
भानु रु + उदेति　हरि रु + अवदत्
भानु र् + उदेति　हरि र् + अवदत्
भानुरुदेति　**हरिरवदत्**

☆ लक्ष्मीस् + इयम्　☆ पितुस् + इच्छा
लक्ष्मी रु + इयम्　पितु रु + इच्छा
लक्ष्मी र् + इयम्　पितु र् + इच्छा
लक्ष्मीरियम्　**पितुरिच्छा**

☆ गुरोस् + भाषणम्

गुरो रु + भाषणम्

गुरो र् + भाषणम्

गुरोर्भाषणम्

अन्य उदाहरण-

☆ कविस् + आगच्छति = **कविरागच्छति**

☆ मुनिस् + इव = **मुनिरिव**

☆ निस् + दयः = **निर्दयः**

☆ पतिस् + उवाच = **पतिरुवाच**

☆ हरेस् + जन्म = **हरेर्जन्म**

☆ गुरोस् + आगमनम् = **गुरोरागमनम्**

☆ मुनिस् + गच्छति = **मुनिर्गच्छति**

☆ भानुस् + उदेति = **भानुरुदेति**

☆ प्रातस् + एव = **प्रातरेव**

☆ मातृस् + आदेशः = **मातृरादेशः**

3. उत्व सन्धि

अतो रोरप्लुतादप्लुते (6.1.13)

यदि 'रु' के ठीक पहले 'ह्रस्व अ' हो और 'रु' के ठीक बाद में पुनः 'ह्रस्व अ' हो, तो ऐसे दो ह्रस्व अ के बीच बैठे 'रु' (र्) को 'उ' हो जाता है। इसे ही **उत्व सन्धि** कहते हैं।

➢ ध्यान रहे कि 'रु' के स्थान पर 'उ' नही होता, किन्तु उकार की इत्संज्ञा होकर लोप होने पर शेष बचे 'र्' के स्थान पर ही 'उ' होता है। सूत्र में 'रु' के कथन का यह तात्पर्य है कि 'रुँ' के 'र्' को ही उत्व हो, अन्य 'र्' को नहीं।

जैसे-

☆ शिवस् + अर्च्यः

शिव रु + अर्च्यः ('ससजुषो रुः' से 'रु')

शिव र् + अर्च्यः ('रु' के 'उ' का लोप)

शिव उ + अर्च्यः (अतो रोरप्लुतादप्लुते से 'उ')

शिवो + अर्च्यः (आद् गुणः से अ+उ = ओ गुण)

शिवोऽर्च्यः (''एङः पदान्तादति'' से पूर्वरूप)

☆ देवस् + अपि (पदान्त सकार)

देव रु + अपि ('ससजुषो रुः' से स् को 'रु' आदेश)

देव र्+ अपि ('रु' के 'उ' का लोप, 'र्' शेष)

देव उ + अपि (अतो रोरप्लुतादप्लुते से 'र्' को 'उ')

देवो + अपि (आद्गुणः से 'ओ' गुण)

देवोऽपि (''एङः पदान्तादति'' सूत्र से पूर्वरूप)

☆ शिवस् + अत्र = **शिवोऽत्र**

☆ सस् + अहम् = **सोऽहम्**

☆ सस् + अपि = **सोऽपि**

☆ रामस् + अयम् = **रामोऽयम्**

☆ रामस् + अवदत् = **रामोऽवदत्**

☆ देवस् + अधुना = **देवोऽधुना**

☆ कस् + अयम् = **कोऽयम्**

☆ सस् + अयम् = **सोऽयम्**

☆ रामस् + अस्ति = **रामोऽस्ति**

☆ सस् + अवदत् = **सोऽवदत्**

''हशि च'' (6.1.114) - यदि 'रु' (र्) के पूर्व ह्रस्व 'अ' हो और बाद में हश् प्रत्याहार के वर्ण आयें तो रु (र्) के स्थान पर 'उ' हो जाता है फिर अ+उ में गुण सन्धि हो जाती है। यह भी उत्व सन्धि है।

➢ हश् प्रत्याहार में वर्णो के तीसरे, चौथे और पाँचवे वर्ण तथा य व र ल ह वर्ण आते हैं।

जैसे-

☆ शिवस् + वन्द्यः (पदान्त सकार)

शिव रु + वन्द्यः (''ससजुषो रुः'' से 'रु' आदेश)

शिव र् + वन्द्यः ('रु' के 'उ' का लोप 'र्' शेष)

शिव उ + वन्द्यः (''हशि च'' से 'र्' के स्थान पर 'उ' आदेश)

शिवो + वन्द्यः (अ + उ = ओ गुण हुआ)

शिवो वन्द्यः (उत्व सन्धि)

☆ मनस् + रथः

मन रु + रथः

मन र् + रथः

मन उ + रथः

मनो + रथः

मनोरथः

☆ रामस् + नमति = **रामो नमति**

☆ रामस् + हसति = **रामो हसति**

☆ मृगस् + धावति = **मृगो धावति**

☆ मेघस् + गर्जति = **मेघो गर्जति**

☆ सरस् + वरः = **सरोवरः**

☆ पयस् + धरः = **पयोधरः**

☆ रामस् + जयति = **रामो जयति**

☆ बालकस् + हसति = **बालको हसति**

☆ वीरस् + गच्छति = **वीरो गच्छति**

☆ पुरुषस् + वदति = **पुरुषो वदति**

☆ अधस् + गतिः = **अधोगतिः**

☆ यशस् + दा = **यशोदा**

☆ मनस् + भावः = **मनोभावः**

4. रलोप सन्धि

सूत्र- रो रि (8.3.14)

सूत्रार्थ- 'र्' के बाद 'र्' आये तो पूर्व 'र्' का लोप होता है।

जैसे-

☆ बालकास् + रमन्ते (पदान्त सकार)

बालका रु + रमन्ते ('ससजुषो रुः' से 'स्' के स्थान पर रु')

बालका र् + रमन्ते (''रो रि'' से पूर्व रेफ का लोप)

बालका रमन्ते (र लोप सन्धि)

☆ गौस् + रम्भते (पदान्त सकार)

गौरु + रम्भते (ससजुषो रुः)

गौर् + रम्भते (रो रि)

गौ रम्भते (र लोप सन्धि)

सूत्र- ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः (6.3.111)

'ढ् ' या 'र्' का लोप हुआ हो तो उससे पूर्ववर्ती अण् (अ इ उ) को दीर्घ हो जाता है। जैसे-

☆ लिढ् + ढः = लीढः

☆ पुनर् + रमते = पुनारमते

☆ हरिर् + रम्यः = हरी रम्यः

☆ शम्भुर् + राजते = शम्भू राजते

☆ गुरुर् + रुष्टः = गुरू रुष्टः

☆ निर् + रोगः = नीरोगः

☆ निर् + रसः = नीरसः

☆ अन्तर् + राष्ट्रियः = अन्ताराष्ट्रियः

5. रेफ को विसर्ग

सूत्र- खरवसानयोर्विसर्जनीयः (8.3.15) -

सूत्रार्थ- पदान्त रेफ (र्) के स्थान पर विसर्ग आदेश होता है यदि खर् प्रत्याहार के वर्ण बाद में आयें तो अथवा अवसान (विराम) हो तो-

र् + खर् = विसर्ग (:)

र् + ----- = विसर्ग (:)

➢ 'खर्' एक प्रत्याहार है जिसमें - क ख, च छ, ट ठ, त थ, प फ, तथा श ष स आते हैं।

➢ **अवसान में पदान्त 'र्' को विसर्ग-**

☆ पुनर् = पुनः

☆ शनैर् = शनैः

☆ उच्चैर् = उच्चैः

☆ नीचैर् = नीचैः

➢ **'खर्' बाद में आये तो पदान्त 'र्' को विसर्ग-**

☆ रामर् + खादति = रामः खादति

पुनर् + पृच्छति = पुनः पृच्छति

☆ रामस् + करोति (पदान्त स्)

राम रु + करोति (ससजुषो रुः)

राम र् + करोति (रु को 'र्')

रामः + करोति ('र्' को विसर्ग)

☆ वृक्षर् + फलति = वृक्षः फलति

☆ गुरु र् + पाठयति = गुरुः पाठयति

❑❑

समास

➢ **समासः -** सम् √अस् + घञ् = समासः

➢ **'अनेकपदानाम् एकपदीभवनं समासः'** अर्थात् अनेकपदों का एकपद हो जाना 'समास' कहलाता है।

➢ **'समसनं समासः'** अर्थात् संक्षेपीकरण को समास कहते हैं। 'समास' का अर्थ है- संक्षिप्त। जब दो या दो से अधिक पद परस्पर मिलकर नया शब्द बनाते हैं; तो उनके बीच की विभक्तियाँ लुप्त हो जाती हैं, और बना हुआ शब्द 'समास' कहलाता है।

विभक्तिर्लुप्यते यत्र तदर्थस्तु प्रतीयते।
पदानां चैकपद्यं च समासः सोऽभिधीयते॥

अर्थात् जहाँ विभक्तियों का लोप हो जाता है, परन्तु उनका अर्थ प्रतीत होता रहता है, और अनेक पद मिलकर एकपद बन जाता है, उसे 'समास' कहते हैं।

जैसे- दशरथस्य पुत्रः = **दशरथपुत्रः**

पीतम् अम्बरं यस्य सः = **पीताम्बरः**

➢ **विग्रह- ''वृत्त्यर्थावबोधकं वाक्यं विग्रहः''** समासवृत्ति के अर्थ का बोध कराने के लिए जो वाक्य होता है, उसे 'विग्रह' कहते हैं।

जैसे- 'पीताम्बरः' इस सामासिक पद का अर्थ बताने के लिए ''पीतम् अम्बरं यस्य सः'' यह जो वाक्य है यही विग्रह कहा जाता है।

समास विग्रह- विग्रह दो प्रकार का होता है-

(i) लौकिक विग्रह (ii) अलौकिक विग्रह

(i) लौकिक विग्रह- लोक के समझने लायक विग्रह को 'लौकिक विग्रह' कहते हैं।

जैसे- 'दशरथपुत्रः' इस सामासिक पद का लौकिक विग्रह होगा- दशरथस्य पुत्रः।

(ii) अलौकिक विग्रह- जो व्याकरणशास्त्र की प्रक्रिया दर्शाने हेतु अर्थात् शास्त्रीय प्रक्रिया के लिए विग्रह होता है, उसे 'अलौकिक विग्रह' कहते हैं।

जैसे- 'दशरथ ङस् पुत्र सु' यह ''दशरथपुत्रः'' इस सामासिक पद का अलौकिक विग्रह होगा।

समस्त पद या **सामासिक पद-** समास होने पर जो शब्द बनता है, उसे 'समस्तपद' या 'सामासिक पद' कहते हैं।

जैसे- अधिगोपम्, चन्द्रशेखरः, त्रिभुवनम्, रामकृष्णौ आदि ये समस्तपद या सामासिकपद कहें जायेंगे।

समास के भेद

'लघुसिद्धान्तकौमुदी' के लेखक वरदराज ने समास के पाँच प्रकार बताये हैं- **'समासः पञ्चधा'**। किन्तु माध्यमिक शिक्षा परिषद् की पाठ्यपुस्तकों में **समास के छह भेद** बताये गये हैं; अतः आप सभी UP-TET के परीक्षार्थियों के लिए समास के छह भेद ही मानना चाहिए।

समास के प्रमुख रूप से छह भेद हैं-

1. अव्ययीभाव समास
2. तत्पुरुष समास
3. कर्मधारय समास
4. द्विगु समास
5. द्वन्द्व समास
6. बहुव्रीहि समास

नोट- भट्टोजिदीक्षित सिद्धान्तकौमुदी में तत्पुरुष का भेद कर्मधारय और कर्मधारय का भेद द्विगु समास को बताते हैं अतः इनके अनुसार समास चार प्रकार का ही होता है।

1. अव्ययीभाव समास

अव्ययीभाव- 'पूर्वपदार्थप्रधानोऽव्ययीभावः' अर्थात् जिस समास में पूर्वपद का अर्थ प्रधान/मुख्य हो, उसे 'अव्ययीभाव' समास कहते हैं। इस समास में पूर्वपद प्रायः अव्यय होता है।

ध्यान दें- समास में सामान्यतया दो पद होते हैं। इनमें पहले आने वाला पद 'पूर्वपद' और उसके बाद आनेवाला पद 'उत्तरपद' होता है। 'उत्तर' पद का एक अर्थ 'बाद में' या 'बाद वाला' भी है।

जैसे-

समास	पूर्वपद	उत्तरपद
उपनदम्	उप	नदम्

विशेष ध्यान रखें- अव्ययीभाव समास होने पर सामासिक पद अव्यय बन जाता है, तथा नपुंसकलिङ्ग एकवचन में प्रयोग किया जाता है।

'अनव्ययम् अव्ययः सम्पद्यते इति अव्ययीभावः' अर्थात् जो शब्द समास होने के पूर्व तो अव्यय न हो, किन्तु समास होने पर 'अव्यय' हो जाय, वही अव्ययीभाव समास है।

जैसे- शक्तिम् अनतिक्रम्य = यथाशक्ति।

यहाँ 'शक्ति' शब्द अव्यय नहीं है किन्तु 'यथा' इस अव्यय के साथ

समास होने के कारण 'यथाशक्ति' यह पूरा पद अव्यय हो गया; और नपुंसकलिङ्ग एकवचन में प्रयुक्त है।

अव्ययीभाव समास करने वाला सूत्र-

''अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि-व्यृद्धि-अर्थाभाव-अत्यय-असम्प्रति-शब्दप्रादुर्भाव-पश्चात्-यथा-आनुपूर्व्य-यौगपद्य-सादृश्य-सम्पत्ति-साकल्य-अन्तवचनेषु'' (2.1.6)

सूत्र का अर्थ- विभक्ति, समीप, समृद्धि, व्यृद्धि (वृद्धि का अभाव), अर्थाभाव, अत्यय (नष्ट होना), असम्प्रति (अब युक्त न होना), शब्दप्रादुर्भाव (शब्द और सादृश्य), पश्चात्, यथा, आनुपूर्व्य (क्रमशः), यौगपद्य (एक साथ होना), सादृश्य (समान), सम्पत्ति, साकल्य (सम्पूर्णता) और अन्त (समाप्ति) अर्थों में विद्यमान अव्यय का समर्थ सुबन्त पदों के साथ नित्य से समास होता है।

अव्ययीभाव समास के उदाहरण-

1. 'विभक्ति' के अर्थ में विद्यमान अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त (पद) के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

समास विग्रह		समस्त पद (अर्थ सहित)
हरौ इति	=	**अधिहरि** (हरि में)
आत्मनि इति	=	**अध्यात्मम्** (आत्मा में)
गोपि इति	=	**अधिगोपम्** (गोप में)

यहाँ 'अधि' अव्यय सप्तमी विभक्ति के अर्थ में है।

2. 'समीप' अर्थ में विद्यमान 'उप' आदि अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

समास विग्रह		सामासिक पद (अर्थ सहित)
गङ्गायाः समीपम्	=	**उपगङ्गम्** (गङ्गा नदी के समीप)
नगरस्य समीपम्	=	**उपनगरम्** (नगर के समीप)
कृष्णस्य समीपम्	=	**उपकृष्णम्** (कृष्ण के समीप)
कूलस्य समीपम्	=	**उपकूलम्** (किनारे के समीप)
तटस्य समीपम्	=	**उपतटम्** (तट के समीप)

उपर्युक्त उदाहरणों में 'उप' यह अव्यय समीप अर्थ में है। जिसका गङ्गा आदि समर्थ सुबन्त पदों के साथ अव्ययीभाव समास हुआ है। समास होने के बाद उपगङ्गम्, उपनगरम् आदि पूरा पद अव्यय हो जाता है।

3. 'समृद्धि' के अर्थ में अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

समास विग्रह		समस्त पद (अर्थसहित)
मद्राणां समृद्धिः	=	**सुमद्रम्** (मद्रदेशवासियों की समृद्धि)
भिक्षाणां समृद्धिः	=	**सुभिक्षम्** (भिक्षाटन की समृद्धि)

4. व्यृद्धि (दुर्गति या वृद्धि का अभाव) के अर्थ में विद्यमान अव्यय पदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

यवनानां व्यृद्धिः	=	**दुर्यवनम्** (यवनों की दुर्गति)
भिक्षाणां व्यृद्धिः	=	**दुर्भिक्षम्** (भिक्षा का न मिलना)
शकानां व्यृद्धिः	=	**दुःशकम्** (शकों की दुर्गति)
राक्षसाणां व्यृद्धिः	=	**दुर्राक्षसम्** (राक्षसों की अवनति)

5. 'अर्थाभाव' के अर्थ में विद्यमान अव्यय पदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

मक्षिकाणाम् अभावः	=	**निर्मक्षिकम्** (मक्खियों का अभाव)
प्राणानाम् अभावः	=	**निष्प्राणम्** (प्राणों का अभाव)
विघ्नानाम् अभावः	=	**निर्विघ्नम्** (विघ्नों का अभाव)
मशकानाम् अभावः	=	**निर्मशकम्** (मच्छरों का अभाव)
जनानाम् अभावः	=	**निर्जनम्** (मनुष्यों का अभाव)
दोषाणाम् अभावः	=	**निर्दोषम्** (दोषों का अभाव)

उपर्युक्त उदाहरणों में 'निर्' आदि अव्ययपदों का 'मक्षिका' आदि समर्थ सुबन्तों के साथ अव्ययीभाव समास हुआ है। यहाँ 'निर्' अव्यय का अर्थ है- अर्थाभाव।

6. अत्यय (ध्वंस या नाश) के अर्थ में विद्यमान अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

हिमस्य अत्ययः	=	**अतिहिमम्** (हिम का नाश)
रोगस्य अत्ययः	=	**अतिरोगम्** (रोग का नाश)
शीतस्य अत्ययः	=	**अतिशीतम्** (शीतलता का नाश)

उपर्युक्त उदाहरणों में 'अति' इस अव्यय पद का अर्थ है- अत्यय (नाश) अतः 'अति' इस अव्यय पद के साथ 'हिम' आदि समर्थ सुबन्तों का अव्ययीभाव समास हुआ है।

7. असम्प्रति (अनौचित्य) के अर्थ में विद्यमान अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

समास विग्रह		सामासिक पद (अर्थ सहित)
निद्रा सम्प्रति न युज्यते	=	**अतिनिद्रम्** (इस समय नींद उचित नहीं)
स्वप्नः सम्प्रति न युज्यते	=	**अतिस्वप्नम्** (इस समय स्वप्न उचित नहीं)
कम्बलं सम्प्रति न युज्यते	=	**अतिकम्बलम्** (इस समय कम्बल उचित नहीं)

उपर्युक्त उदाहरणों में 'अति' यह अव्यय असम्प्रति अर्थ में है, जिसका 'निद्रा' आदि समर्थ पदों के साथ अव्ययीभाव समास हुआ है।

8. शब्दप्रादुर्भाव (शब्द का प्रकाश) के अर्थ में विद्यमान अव्यय पदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

हरिशब्दस्य प्रकाशः = **इतिहरि** ('हरि' शब्द का प्रकट होना)
विष्णुशब्दस्य प्रकाशः = **इतिविष्णु** ('विष्णु' शब्द का प्रकट होना)
पाणिनिशब्दस्य प्रकाशः = **इतिपाणिनि** ('पाणिनि' शब्द का प्रकट होना)
ज्ञानशब्दस्य प्रकाशः = **इतिज्ञानम्** ('ज्ञान' शब्द का प्रकट होना)

9. 'पश्चात्' (पीछे) के अर्थ में विद्यमान अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

विष्णोः पश्चात् = **अनुविष्णु** (विष्णु के पीछे)
रामस्य पश्चात् = **अनुरामम्** (राम के पीछे)
रथस्य पश्चात् = **अनुरथम्** (रथ के पीछे)
शिष्यस्य पश्चात् = **अनुशिष्यम्** (शिष्य के पीछे)
गोपालस्य पश्चात् = **अनुगोपालम्** (गोपाल के पीछे)

10. 'यथा' के अर्थ में विद्यमान अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। 'यथा' के चार अर्थ होते हैं-
(क) योग्यता अथवा लायक या अनुकूलता
(ख) वीप्सा अथवा दुहराया जाना
(ग) पदार्थानतिवृत्ति अथवा पदार्थों की सीमा के बाहर नहीं जाना
(घ) सादृश्य अथवा समानता

(क) योग्यता-
रूपस्य योग्यम् = **अनुरूपम्** (रूप के योग्य)
गुणस्य योग्यम् = **अनुगुणम्** (गुण के योग्य)

(ख) वीप्सा-
अक्षम् अक्षम् प्रति = **प्रत्यक्षम्** (प्रत्यक्ष)
एकम् एकं प्रति = **प्रत्येकम्** (प्रत्येक)
गृहं गृहं प्रति = **प्रतिगृहम्** (घर-घर)
दिनं दिनं प्रति = **प्रतिदिनम्** (प्रतिदिन)
अर्थम् अर्थं प्रति = **प्रत्यर्थम्** (प्रत्येक अर्थ)
जनं जनं प्रति = **प्रतिजनम्** (प्रत्येक जन)
छात्रं छात्रं प्रति = **प्रतिच्छात्रम्** (प्रत्येक छात्र)
दिशं दिशं प्रति = **प्रतिदिशम्** (प्रत्येक दिशा)

(ग) पदार्थानतिवृत्ति-
शक्तिम् अनतिक्रम्य = **यथाशक्ति** (शक्ति के अनुसार)
बलम् अनतिक्रम्य = **यथाबलम्** (बल के अनुसार)
समयम् अनतिक्रम्य = **यथासमयम्** (समय के अनुसार)
बुद्धिम् अनतिक्रम्य = **यथाबुद्धि** (बुद्धि के अनुसार)
ज्ञानम् अनतिक्रम्य = **यथाज्ञानम्** (ज्ञान के अनुसार)

(घ) सादृश्य-
हरेः सादृश्यम् = **सहरि** (हरि की समानता)
रूपस्य सादृश्यम् = **सरूपम्** (रूप की समानता)

11. आनुपूर्व्य (क्रम) के अर्थ में विद्यमान अव्यय पदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

ज्येष्ठस्य आनुपूर्व्येण = **अनुज्येष्ठम्** (ज्येष्ठ के क्रम से)
वर्णस्य आनुपूर्व्येण = **अनुवर्णम्** (वर्ण के क्रमानुसार)

12. यौगपद्य (साथ होना) के अर्थ में विद्यमान अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

चक्रेण युगपत् = **सचक्रम्** (चक्र के साथ)
हर्षेण युगपत् = **सहर्षम्** (हर्ष के साथ)

13. सादृश्य (जैसा) के अर्थ में विद्यमान अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव होता है। जैसे-

सदृशः सख्या = **ससखि** (मित्र के जैसा)
सदृशः वर्णेन = **सवर्णम्** (वर्ण के समान)

14. सम्पत्ति के अर्थ में विद्यमान अव्ययपदों का समर्थसुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

क्षत्राणां सम्पत्तिः = **सक्षत्रम्** (राजाओं की सम्पत्ति)

15. साकल्य (सम्पूर्णता) के अर्थ में विद्यमान अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

तृणम् अपि अपरित्यज्य = **सतृणम्** (तिनके को भी छोड़े बिना सब खाता है)

16. अन्तवचन (तक) के अर्थ में अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

अग्निग्रन्थपर्यन्तम् = **साग्नि** (अग्नि ग्रन्थ की समाप्ति तक पढ़ता है)
बालकाण्डपर्यन्तम् = **सबालकाण्डम्** (बालकाण्ड तक)

- **आङ्मर्यादाभिविध्योः** अर्थात् मर्यादा और अभिविधि (तक) के अर्थ में 'आङ्' अव्यय पद का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

आ मरणात् = **आमरणम्** (मरने तक)
आ जीवनात् = **आजीवनम्** (जीवन भर)

- **नदीभिश्च** (2.1.20) नदी वाची शब्दों के साथ संख्यावाची शब्दों का समास होता है, और वह अव्ययीभाव समास कहलाता है। जैसे-

पञ्चानां गङ्गानां समाहारः = **पञ्चगङ्गम्** (पाँच गङ्गाओं का समाहार)
द्वयोः यमुनयोः समाहारः = **द्वियमुनम्** (दो यमुनाओं का समाहार)
सप्तानां नर्मदानां समाहारः = **सप्तनर्मदम्**
उपर्युक्त उदाहरणों में 'पञ्च' आदि संख्यावाची पदों का गङ्गा आदि नदीवाचक पदों के साथ अव्ययीभाव समास हुआ है।

➢ **अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्यः (5.4.107)**
अव्ययीभाव समास में शरद् आदि शब्दों से समासान्त 'टच्' प्रत्यय होता है। 'टच्' प्रत्यय में 'ट्' और 'च्' का लोप हो जाता है केवल 'अ' शेष बचता है। जैसे-
शरदः समीपम् = **उपशरदम्** (शरद् के समीप)
विपाशं विपाशं प्रति = **प्रतिविपाशम्** (विपाशा नदी के सम्मुख)

➢ **अनश्च (5.4.108)** - जिस अव्ययीभाव समास के अन्त में 'अन्' होता है, वह अन्नन्त अव्ययीभाव है। उससे समासान्त 'टच्' प्रत्यय होता है। जैसे-
राज्ञः समीपम् = **उपराजम्** (राजा के समीप)

➢ **नपुंसकादन्यतरस्याम् (5.4.109)** - 'अन्' अन्तवाला जो नपुंसकलिङ्ग शब्द है, उस अव्ययीभाव समास के अन्त में विकल्प से 'टच्' प्रत्यय होता है। जैसे-
चर्मणः समीपम् = **उपचर्मम्** (चर्म के समीप) 'टच्'प्रत्यय हुआ
चर्मणः समीपम् = **उपचर्म** (चर्म के समीप) 'टच्' नहीं हुआ।

तत्पुरुष समास

तत्पुरुष- 'प्रायेण उत्तरपदार्थप्रधानः तत्पुरुषः'
अर्थात् जिस समास में उत्तरपद का अर्थ प्रधान होता है, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं।
जैसे- 'गङ्गाजलम् आनय'। यहाँ 'आनय' इस क्रिया पद के साथ 'जलम्' का ही साक्षात् सम्बन्ध है। अतः 'जल' इस उत्तरपद का अर्थ ही प्रधान होने के कारण यहाँ तत्पुरुषसमास है।

तत्पुरुष समास के भेद

तत्पुरुष समास के मुख्यतः दो भेद होते हैं- 1. समानाधिकरण तत्पुरुष 2. व्यधिकरण तत्पुरुष

1. समानाधिकरण तत्पुरुष- समानाधिकरण को 'समविभक्तिक' भी कह सकते हैं। इस तत्पुरुष समास के पूर्वपद एवं उत्तरपद दोनों में समान विभक्ति (प्रथमा) लगी रहती है। समान अधिकरण (विभक्ति) वाला तत्पुरुष कर्मधारय समास होता है- **''तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः''**

2. व्यधिकरण तत्पुरुष- जिस तत्पुरुष समास में पूर्वपद तथा उत्तरपद दोनों में अलग-अलग विभक्तियाँ लगी हों, वह व्यधिकरण तत्पुरुष होता है। वि = विषय और 'अधिकरण' = विभक्ति वाले तत्पुरुष को व्यधिकरण तत्पुरुष कहते हैं। पूर्वपद में जो विभक्तियाँ लगी होती हैं, उनके आधार पर ही तत्पुरुष के प्रमुख भेद किये जाते हैं। जैसे यदि पूर्वपद में द्वितीया विभक्ति हो तो द्वितीया तत्पुरुष, यदि पूर्व पद में तृतीया विभक्ति लगी हो तो तृतीया तत्पुरुष आदि। इसप्रकार **व्यधिकरण तत्पुरुष के छह भेद किये गये हैं-**
1. द्वितीया तत्पुरुष 2. तृतीया तत्पुरुष 3. चतुर्थी तत्पुरुष
4. पञ्चमी तत्पुरुष 5. षष्ठी तत्पुरुष 6. सप्तमी तत्पुरुष।

तत्पुरुष समास के उपभेद

समानाधिकरण तथा व्यधिकरण समास के अतिरिक्त तत्पुरुष के अन्य उपभेद भी इसप्रकार हैं-
(i) नञ् तत्पुरुष समास - अनश्वः, अब्राह्मणः, अनिच्छा आदि।
(ii) प्रादि तत्पुरुष समास - कुपुरुषः, प्राचार्यः आदि।
(iii) उपपद तत्पुरुष समास - कुम्भकारः, धर्मज्ञः आदि।
(iv) अलुक् तत्पुरुष समास - युधिष्ठिरः, सरसिजम्, अभ्यासादागतः आदि।

द्वितीया तत्पुरुष समास

जिस तत्पुरुष समास का पूर्वपद द्वितीया विभक्ति में हो, ऐसे द्वितीयान्त सुबन्त पद का 'श्रित' आदि शब्दों के साथ द्वितीया तत्पुरुष समास होता है।

सूत्र- ''द्वितीया श्रित-अतीत-पतित-गत-अत्यस्त-प्राप्त-आपन्नैः'' (2.1.24)

समास विग्रह	सामासिक पद (अर्थ सहित)
कृष्णं श्रितः	**कृष्णश्रितः** (कृष्ण का आश्रय लिया हुआ)
शरणम् आगतः	**शरणागतः** (शरण में आया हुआ)
लोकम् अतीतः	**लोकातीतः** (लोक से परे)
भयम् आपन्नः	**भयापन्नः** (भय को प्राप्त)
रामम् आश्रितः	**रामाश्रितः** (राम के आश्रित)
सुखं प्राप्तः	**सुखप्राप्तः** (सुख को प्राप्त हुआ)
अश्वम् आरूढः	**अश्वारूढः** (घोड़े पर आरूढ़)
स्वर्गं गतः	**स्वर्गगतः** (स्वर्ग को गया हुआ)
दुःखम् अतीतः	**दुःखातीतः** (दुःख को पार किया हुआ)

कूपं पतितः **कूपपतितः** (कुयें में गिरा हुआ)
ग्रामं गतः **ग्रामगतः** (गाँव को गया हुआ)
जीवनं प्राप्तः **जीवनप्राप्तः** (जीवन को प्राप्त किया हुआ)
सुखम् आपन्नः **सुखापन्नः** (सुख को पाया हुआ)

तृतीया तत्पुरुष समास

जिस तत्पुरुष समास का पूर्वपद तृतीया विभक्ति में हो, ऐसे तृतीयान्त सुबन्त पद का तत्कृत (उसके द्वारा किये गए) गुणवाचक शब्द के साथ तथा 'अर्थ' शब्द के साथ तृतीया तत्पुरुष समास होता है।

सूत्र- ''तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन'' (2.1.30)
जैसे-

शङ्कुलया खण्डः = **शङ्कुलाखण्डः**
(सरौते से किया गया टुकड़ा)
धान्येन अर्थः = **धान्यार्थः** (अन्न से प्रयोजन)
दानेन अर्थः = **दानार्थः** (दान से प्रयोजन)

➢ तृतीयान्त सुबन्त पदों का 'पूर्व' आदि शब्दों के साथ तृतीया तत्पुरुष समास होता है।

सूत्र- ''पूर्व-सदृश-समोनार्थ-कलह-निपुण-मिश्र-श्लक्ष्णैः'' (2.1.30)

समास विग्रह		सामासिक पद (अर्थ सहित)
मासेन पूर्वः	=	**मासपूर्वः** (महीने से पहले)
पित्रा सदृशः	=	**पितृसदृशः** (पिता के समान)
मात्रा सदृशः	=	**मातृसदृशः** (माता के समान)
भ्रात्रा समः	=	**भ्रातृसमः** (भाई के बराबर)
माषेण ऊनम्	=	**माषोणम्** (मासा भर कम)
ज्ञानेन हीनः	=	**ज्ञानहीनः** (ज्ञान से हीन)
नेत्राभ्यां हीनः	=	**नेत्रहीनः** (नेत्रों से रहित)
वाचा कलहः	=	**वाक्कलहः** (बातचीत से झगड़ा)
आचारेण निपुणः	=	**आचारनिपुणः** (आचार में निपुण)
गुडेन मिश्रः	=	**गुडमिश्रः** (गुड़ से मिला हुआ)
आचारेण श्लक्ष्णः	=	**आचारश्लक्ष्णः** (आचरण में सहज)
घृतेन पक्वम्	=	**घृतपक्वम्** (घी से पकाया हुआ)
पादेन खञ्जः	=	**पादखञ्जः** (पैर से लँगड़ा)

➢ कर्ता और करणकारक में तृतीयान्त पद का कृदन्त के साथ तृतीया तत्पुरुष समास होता है- **''कर्तृकरणे कृता बहुलम्''** (2.1.32)

जैसे-

हरिणा त्रातः = **हरित्रातः** (हरि के द्वारा रक्षित)
नखैः भिन्नः = **नखभिन्नः** (नखों से फाड़ा गया)
नखैः निर्भिन्नः = **नखनिर्भिन्नः** (नखों से फाड़ा गया)
धर्मेण रक्षितः = **धर्मरक्षितः** (धर्म से रक्षित)
बाणेन विद्धः = **बाणविद्धः** (बाण से घायल)

चतुर्थी तत्पुरुष समास

जिस तत्पुरुष समास में पूर्वपद चतुर्थी विभक्ति में हो तथा चतुर्थ्यन्त पदों का अर्थ, बलि, हित, सुख, रक्षित आदि पदों के साथ समास होता है। उसे चतुर्थी तत्पुरुष समास कहते हैं।

''चतुर्थी तदर्थार्थबलिहितसुखरक्षितैः'' (2.1.36)
जैसे-

समास विग्रह		सामासिक पद (अर्थ सहित)
यूपाय दारु	=	**यूपदारु** (यज्ञ के खम्भे के लिए लकड़ी)
कुम्भाय मृत्तिका	=	**कुम्भमृत्तिका** (घड़े के लिए मिट्टी)
भूतेभ्यः बलिः	=	**भूतबलिः** (जीव के लिए बलि)
गोभ्यः हितम्	=	**गोहितम्** (गाय के लिए हितकारी)
ब्राह्मणाय हितम्	=	**ब्राह्मणहितम्** (ब्राह्मण के लिए हितकर)
गोभ्यः सुखम्	=	**गोसुखम्** (गाय के लिए सुखकारी)
गोभ्यः रक्षितम्	=	**गोरक्षितम्** (गाय के लिए रक्षित)
धनाय कामना	=	**धनकामना** (धन के लिए इच्छा)

विशेष नियम- अर्थ शब्द के साथ चतुर्थी का नित्यसमास होता है, और अर्थ शब्दान्त शब्द का लिङ्ग विशेष्य के अनुसार होता है-
जैसे-

पुँल्लिङ्ग - द्विजाय अयम् = **द्विजार्थः सूपः**
(ब्राह्मण के लिए दाल)
स्त्रीलिङ्ग - द्विजाय इयम् = **द्विजार्था यवागूः**
(ब्राह्मण के लिए लप्सी)
नपुंसकलिङ्ग - द्विजाय इदम् = **द्विजार्थं पयः**
(ब्राह्मण के लिए दूध)

धनाय इदम् = **धनार्थम्** (धन के लिए)
सुखाय इदम् = **सुखार्थम्** (सुख के लिए)
रक्षाय इदम् = **रक्षार्थम्** (रक्षा के लिए)

पञ्चमी तत्पुरुष समास

जिस तत्पुरुष समास का पूर्वपद पञ्चमी विभक्ति में हो, ऐसे पञ्चम्यन्त पदों का भय आदि शब्दों के साथ पञ्चमी तत्पुरुष समास होता है। **''पञ्चमी भयेन''** (2.1.37)
जैसे-

समास विग्रह		सामासिक पद (अर्थ सहित)
चोरात् भयम्	=	**चोरभयम्** (चोर से डरा हुआ)
व्याघ्रात् भयम्	=	**व्याघ्रभयम्** (बाघ से डरा हुआ)
सिंहात् भीतः	=	**सिंहभीतः** (सिंह से भय)
वृकात् भीतिः	=	**वृकभीतिः** (भेड़िये से भय)

सर्पात् भीः = **सर्पभीः** (सर्प से डर)
राज्ञः भयम् = **राजभयम्** (राजा से डर)

➢ पञ्चम्यन्त शब्दों का 'अपेत, अपोढ, मुक्त, पतित' आदि पदों के साथ पञ्चमी तत्पुरुष समास होता है। जैसे -

समासविग्रह		सामासिक पद (अर्थ सहित)
सुखात् अपेतः	=	**सुखापेतः** (सुख से रहित)
कल्पनायाः अपोढः	=	**कल्पनापोढः** (कल्पना से शून्य)
बन्धनात् मुक्तः	=	**बन्धनमुक्तः** (बन्धन से मुक्त)
मार्गात् भ्रष्टः	=	**मार्गभ्रष्टः** (मार्ग से भ्रष्ट हुआ)
अश्वात् पतितः	=	**अश्वपतितः** (घोड़े से गिरा हुआ)
वृक्षात् पतितः	=	**वृक्षपतितः** (वृक्ष से गिरा हुआ)
स्वर्गात् पतितः	=	**स्वर्गपतितः** (स्वर्ग से पतित)

षष्ठी तत्पुरुष समास

जिस तत्पुरुष समास का पूर्वपद षष्ठी विभक्ति में हो, ऐसे षष्ठ्यन्त पदों का समर्थ सुबन्त के साथ षष्ठी तत्पुरुष समास होता है।

सूत्र- ''षष्ठी'' (2.2.8)

जैसे-

समासविग्रह		सामासिक पद (अर्थ सहित)
नराणां पतिः	=	**नरपतिः** (मनुष्यों का स्वामी)
विद्यायाः आलयः	=	**विद्यालयः** (विद्या का घर)
हिमस्य आलयः	=	**हिमालयः** (हिम का घर)
राज्ञः सेवकः	=	**राजसेवकः** (राजा का सेवक)
राज्ञः पुरुषः	=	**राजपुरुषः** (राजा का पुरुष)
राज्ञः कुमारः	=	**राजकुमारः** (राजा का कुमार)
राज्ञः पुत्रः	=	**राजपुत्रः** (राजा का पुत्र)
राज्ञः माता	=	**राजमाता** (राजा की माता)
दशरथस्य पुत्रः	=	**दशरथपुत्रः** (दशरथ का पुत्र)
देवस्य पूजा	=	**देवपूजा** (देव की पूजा)
रामस्य अनुजः	=	**रामानुजः** (राम का भाई)
कृष्णस्य सखा	=	**कृष्णसखः** (कृष्ण का सखा)
नन्दस्य नन्दनः	=	**नन्दनन्दनः** (नन्द का नन्दन)
ईश्वरस्य भक्तः	=	**ईश्वरभक्तः** (ईश्वर का भक्त)
गङ्गायाः जलम्	=	**गङ्गाजलम्** (गङ्गा का जल)
देवस्य मन्दिरम्	=	**देवमन्दिरम्** (देवों का मन्दिर)
राष्ट्रस्य पतिः	=	**राष्ट्रपतिः** (राष्ट्र का स्वामी)
प्रजायाः पतिः	=	**प्रजापतिः** (प्रजा का स्वामी)
सीतायाः पतिः	=	**सीतापतिः** (सीता का पति)
पशूनां पतिः	=	**पशुपतिः** (पशुओं का स्वामी)
पाठस्य शाला	=	**पाठशाला** (पठन का घर)
देवानां भाषा	=	**देवभाषा** (देवों की भाषा)
काल्याः दासः	=	**कालिदासः** (काली का दास)

सप्तमी तत्पुरुष

सूत्र - ''सप्तमी शौण्डैः''

जिस तत्पुरुष समास का पूर्वपद सप्तमी विभक्ति में हो, ऐसे सप्तम्यन्त सुबन्तों का शौण्डादिगण में पठित शब्दों के साथ सप्तमी तत्पुरुष समास होता है। जैसे-

समास विग्रह		सामासिकपद (अर्थ सहित)
अक्षेषु शौण्डः	=	**अक्षशौण्डः** (पासों में चतुर)
कार्ये कुशलः	=	**कार्यकुशलः** (कार्य में कुशल)
रणे कुशलः	=	**रणकुशलः** (रण में कुशल)
मुनिषु श्रेष्ठः	=	**मुनिश्रेष्ठः** (मुनियों में श्रेष्ठ)
पुरुषेषु उत्तमः	=	**पुरुषोत्तमः** (पुरुषों में श्रेष्ठ)
गुरौ भक्तिः	=	**गुरुभक्तिः** (गुरु में भक्ति)
युद्धे निपुणः	=	**युद्धनिपुणः** (युद्ध में निपुण)
नरेषु उत्तमः	=	**नरोत्तमः** (नरों में श्रेष्ठ)
विद्यायां प्रवीणः	=	**विद्याप्रवीणः** (विद्या में कुशल)

तत्पुरुष समास के उपभेद

(i) नञ् तत्पुरुष समास

सूत्र- ''नञ्'' (2.2.6) 'नञ्' इस अव्यय का समर्थ सुबन्त के साथ नञ् तत्पुरुष समास होता है। अर्थात् जिस समास का पूर्वपद 'नञ्' हो तथा उत्तरपद कोई संज्ञा या विशेषण हो तो वहाँ नञ् समास होगा।

➢ 'नञ्' के बाद यदि व्यञ्जन वर्ण आते हैं तो 'नञ्' के स्थान पर 'अ' और यदि 'नञ्' के बाद स्वरवर्ण आये तो 'नञ्' के स्थान पर 'अन्' हो जाता है। जैसे-

न स्वस्थः = **अस्वस्थः** (बीमार)
न अश्वः = **अनश्वः** (घोड़ा नहीं)

नञ् समास के उदाहरण

समास विग्रह		सामासिक पद (अर्थ सहित)
न कृतम्	=	**अकृतम्** (जो किया न हो)
न इच्छा	=	**अनिच्छा** (इच्छा न हो)
न आगतम्	=	**अनागतम्** (जो आया न हो)
न गजः	=	**अगजः** (जो गज न हो)
न उक्तः	=	**अनुक्तः** (जो उक्त न हो)
न मोघः	=	**अमोघः** (अव्यर्थ)
न सिद्धः	=	**असिद्धः** (असफल)
न ब्राह्मणः	=	**अब्राह्मणः** (अब्राह्मण)
न ईश्वरः	=	**अनीश्वरः** (जो ईश्वर न हो)

न अर्थः = **अनर्थः** (अनर्थ)
न उचितः = **अनुचितः** (जो उचित नहीं)

(ii) गति समास या प्रादि तत्पुरुष समास

जिस तत्पुरुष समास के पूर्वपद में कु आदि शब्द, ऊरी आदि गतिसंज्ञक शब्द, प्र आदि शब्द आयें तो इनका समर्थ सुबन्तों के साथ नित्य समास होता है, ऐसे समास को **गति तत्पुरुष** या **प्रादि तत्पुरुष** समास कहते हैं। जैसे-

कुत्सितः पुत्रः = **कुपुत्रः** (बुरा पुत्र)
सुन्दरः देशः = **सुदेशः** (सुन्दर देश)
कुत्सितः पुरुषः = **कुपुरुषः** (निन्दित पुरुष)
कुत्सितः राजा = **कुराजा** (बुरा राजा)
प्रगतः आचार्यः = **प्राचार्यः** (श्रेष्ठ आचार्य)
विरुद्धः पक्षः = **विपक्षः** (जो पक्ष में न हो)
शोभनः पुरुषः = **सुपुरुषः** (सुन्दर पुरुष)
प्रकृष्टो वीरः = **प्रवीरः** (प्रकृष्ट वीर)
ऊरी कृत्वा = **ऊरीकृत्य** (स्वीकार करके)
अशुक्लं शुक्लं कृत्वा = **शुक्लीकृत्य** (सफेद करके)
पटत् पटत् इति कृत्वा = **पटपटाकृत्य** (पटत् पटत् इसप्रकार शब्द करके)

(iii) उपपद तत्पुरुष समास

कृदन्त सुबन्तों के साथ उपपदों का समास ही उपपदसमास कहलाता है। इस समास में पूर्वपद उपपद तथा उत्तरपद कृत् प्रत्ययान्त समर्थ पद होता है। अर्थात् उपपद सुबन्त का तिङ् रहित धातु के साथ समास होता है। जैसे-

कुम्भं करोति इति = **कुम्भकारः** (कुम्हार)
धर्मं जानाति इति = **धर्मज्ञः** (जो धर्म जानता है)
सामं गायति इति = **सामगः** (जो सामवेद को जानता है)
आसने तिष्ठति इति= **आसनस्थः** (जो आसन पर बैठता है)
धनं ददाति इति = **धनदः** (जो धन देता है)
भारं हरति इति = **भारहारः** (भार ढोने वाला, कुली)
दिनं करोति इति = **दिनकरः** (सूर्य)
शं करोति इति = **शङ्करः** (महादेव)
भिक्षां चरति इति = **भिक्षाचरः** (भिखारी)
निशायां चरति इति = **निशाचरः** (रात्रि में विचरण करने वाला, राक्षस)
उरसा गच्छति इति = **उरगः** (छाती के बल चलने वाला, साँप)
विहायसा गच्छति इति = **विहगः** (आकाशमार्ग से चलने वाला, पक्षी)
पङ्के जायते इति = **पङ्कजः** (कमल)
मर्म जानाति इति = **मर्मज्ञः** (मर्म को जानने वाला)
कम्बलं ददाति इति = **कम्बलदः** (कम्बल देने वाला)
प्रभां करोति इति = **प्रभाकरः** (सूर्य)

(iv) अलुक् तत्पुरुष समास

- 'अलुक्' का अर्थ है न लुक् अर्थात् 'लोप' का न होना। जिस समास में विभक्ति का लोप नहीं होता उसे अलुक् समास कहते हैं।
- सामान्यतया समास में सामासिक पदों की विभक्ति का लोप हुआ करता है, किन्तु कुछ शब्दों में समास होने पर भी विभक्ति का लोप (लुक्) नहीं होता, उसे 'अलुक्' तत्पुरुष समास कहते हैं।

अलुक् तत्पुरुष समास के उदाहरण

समासविग्रह		सामासिक पद (अर्थ सहित)
आत्मने पदम्	=	**आत्मनेपदम्** (अपने लिए पद)
परस्मै पदम्	=	**परस्मैपदम्** (दूसरे के लिए पद)
युधि स्थिरः	=	**युधिष्ठिरः** (युद्ध में स्थिर)
कृच्छ्रात् आगतः	=	**कृच्छ्रादागतः** (कठिनाई से आया हुआ)
अभ्यासात् आगतः	=	**अभ्यासादागतः** (अभ्यास से आया हुआ)
सरसि जातम्	=	**सरसिजम्** (तालाब में उत्पन्न)
खे चरति	=	**खेचरः** (आकाश में विचरण करने वाला पक्षी)
वाचः पतिः	=	**वाचस्पतिः** (बृहस्पति)
शरदि जायते	=	**शरदिजः** (शरद् में होने वाला)
प्रावृषि जायते	=	**प्रावृषिजः** (बरसात में होने वाला)
देवानां प्रियः	=	**देवानाम्प्रियः** (मूर्ख)

कर्मधारय समास

तत्पुरुष समास के समानाधिकरण भेद को कर्मधारय समास कहते हैं। अर्थात् समान अधिकरण (विभक्ति) वाला तत्पुरुष, कर्मधारय होता है।

''तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः'' (1.2.42)

तात्पर्य यह है कि पूर्वपद एवं उत्तरपद, दोनों में समान विभक्ति (प्रथमा) लगी रहती है। जैसे- कृष्णः सर्पः = कृष्णसर्पः

- कर्मधारय अथवा समानाधिकरण तत्पुरुष में पूर्वपद विशेषण एवं उत्तरपद विशेष्य होता है। कहीं कहीं दोनों पद विशेष्य होते हैं।

सूत्र- ''विशेषणं विशेष्येण बहुलम्'' (2.1.57) अर्थात् समान विभक्ति वाले विशेषण का विशेष्य के साथ बहुलता से समास होता है।

कर्मधारय समास के भेद

कर्मधारय समास के कुछ प्रमुख भेद निम्नवत् हैं-

(i) विशेषण पूर्वपद कर्मधारय

कर्मधारय समास में यदि प्रथम पद विशेषण तथा द्वितीय पद विशेष्य होता है, तो उसे विशेषण पूर्वपद कर्मधारय कहते हैं। यथा-

समास विग्रह		सामासिक पद (अर्थ सहित)
कृष्णः सर्पः	=	**कृष्णसर्पः** (काला साँप)
महान् चासौ देवः	=	**महादेवः** (महादेव)
महान् चासौ राजा	=	**महाराजः** (महान् राजा)
महान् चासौ आत्मा	=	**महात्मा** (महान् आत्मा)
श्रेष्ठः पुरुषः	=	**श्रेष्ठपुरुषः** (श्रेष्ठ पुरुष)
महान् चासौ पुरुषः	=	**महापुरुषः** (महान् पुरुष)
महान् चासौ ऋषिः	=	**महर्षिः** (महान् ऋषि)
महान् कविः	=	**महाकविः** (महान् कवि)
महान् चासौ रथी	=	**महारथी** (महान् रथी)
महत् काव्यम्	=	**महाकाव्यम्** (महान् काव्य)
श्वेतं च तत् वस्त्रम्	=	**श्वेतवस्त्रम्** (सफेद वस्त्र)
श्वेतः च असौ अश्वः	=	**श्वेताश्वः** (सफेद घोड़ा)
सुन्दरः च असौ बालकः	=	**सुन्दरबालकः** (सुन्दर बालक)
मधुरं च तत्फलम्	=	**मधुरफलम्** (मधुरफल)
नीलः आकाशः	=	**नीलाकाशः** (नीला आकाश)
रक्तं च तत् उत्पलम्	=	**रक्तोत्पलम्** (लाल कमल)
गौरः बालकः	=	**गौरबालकः** (गोरा बालक)
नीलम् उत्पलम्	=	**नीलोत्पलम्** (नीला कमल)
नीलं कमलम्	=	**नीलकमलम्** (नीलकमल)
प्रियः सखा	=	**प्रियसखः** (प्रिय मित्र)
महती नदी	=	**महानदी** (बड़ी नदी)

(ii) उपमानपूर्वपद कर्मधारय

''उपमानानि सामान्यवचनैः'' (2.1.55) - जब उपमानवाचक शब्द का सामान्यवाचक शब्द के साथ समास होता है, तो उसे उपमानपूर्वपद कर्मधारय कहते हैं।

समासविग्रह		सामासिक पद (अर्थसहित)
घन इव श्यामः	=	**घनश्यामः** (घनश्याम)
विद्युत् इव चञ्चला	=	**विद्युच्चञ्चला** (बिजली सी चञ्चल)
नवनीतम् इव कोमलम्	=	**नवनीतकोमलम्** (नवनीत के समान कोमल)
चन्द्रः इव उज्ज्वलः	=	**चन्द्रोज्ज्वलः** (चन्द्रमा सा उज्ज्वल)
चन्द्रः इव मुखम्	=	**चन्द्रमुखम्** (चन्द्रमा के समान मुख)
नरः शार्दूल इव	=	**नरशार्दूलः** (नरों में चीते के समान)
पुरुषः सिंह इव	=	**पुरुषसिंहः** (सिंह के समान पुरुष)
नरः सिंह इव	=	**नरसिंहः** (मनुष्य सिंह के समान)
चन्द्र इव आह्लादकः	=	**चन्द्राह्लादकः** (चन्द्र के समान कोमल)
कमलम् इव कोमलम्	=	**कमलकोमलम्** (कमल के समान कोमल)
पुरुषः व्याघ्र इव	=	**पुरुषव्याघ्रः** (व्याघ्र के समान पुरुष)
दुग्धम् इव धवलम्	=	**दुग्धधवलम्** (दूध के समान सफेद)
नीरदः इव श्यामः	=	**नीरदश्यामः** (बादल के समान काला)

(iii) रूपक कर्मधारय

उपमान और उपमेय के एकरूप होने से, उपमान उपमेय पद के समास को रूपक कर्मधारय समास कहते हैं। जैसे-

समासविग्रह		सामासिक पद (अर्थ सहित)
शोक एव अग्निः	=	**शोकाग्निः** (शोकरूपी अग्नि)
विद्या एव धनम्	=	**विद्याधनम्** (विद्यारूपी धन)
मुखमेव कमलम्	=	**मुखकमलम्** (मुखरूपी कमल)
परीक्षा एव पयोधिः	=	**परीक्षापयोधिः** (परीक्षारूपी सागर)

(iv) उभयपद विशेषण कर्मधारय

इस समास में पूर्वपद और उत्तरपद दोनों विशेषण होते हैं। जैसे-

समासविग्रह		सामासिकपद (अर्थ सहित)
पीतः चासौ कृष्णः	=	**पीतकृष्णः** (पीला और काला)
श्वेतः चासौ कृष्णः	=	**श्वेतकृष्णः** (श्वेत और काला)
चरं च अचरं च	=	**चराचरम्** (चराचर)
पूर्वं सुप्तः पश्चात् उत्थितः	=	**सुप्तोत्थितः** (पहले सोया फिर उठा)
कृतं च अकृतं च	=	**कृताकृतम्** (किया हुआ और न किया हुआ)
शीतं च उष्णम्	=	**शीतोष्णम्** (ठण्डा-गरम)
रक्तश्च पीतश्च	=	**रक्तपीतः** (लाल-पीला)

नोट - परवल्लिङ्गं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः (2.426)
द्वन्द्व और तत्पुरुष का लिङ्ग उस समास के बाद वाले पद के समान होता है।

द्विगु समास

''संख्यापूर्वो द्विगुः'' (2.1.52) - अर्थात् जिस समास में पूर्वपद संख्यावाचक हो, वह द्विगु समास कहलाता है। यह कर्मधारय समास का उपभेद है, पर अपने प्रकृति वैशिष्ट्य के कारण स्वतन्त्र समास के रूप में स्वीकृत है।

द्विगु समास के उदाहरण-

समास विग्रह	सामासिकपद (अर्थ सहित)
पञ्चानां गवां समाहारः	= **पञ्चगवम्** (पाँच गायों का समूह)
पञ्चानां वटानां समाहारः	= **पञ्चवटी** (पाँच वटों/वृक्षों का समूह)
पञ्चानां पात्राणां समाहारः	= **पञ्चपात्रम्** (पाँच पात्रों का समूह)
पञ्चानाम् अमृतानां समाहारः	= **पञ्चामृतम्** (पाँच अमृतों का समूह)
पञ्चानां दिनानां समाहारः	= **पञ्चदिनम्** (पाँच दिनों का समूह)
त्रयाणां लोकानां समाहारः	= **त्रिलोकी** (तीन लोकों का समाहार)
त्रयाणां भुवनानां समाहारः	= **त्रिभुवनम्** (तीनों भुवनों का समाहार)
चतुर्णां फलानां समाहारः	= **चतुर्फलम्** (चार फलों का समाहार)
अष्टानाम् अध्यायानां समाहारः	= **अष्टाध्यायी** (आठ अध्यायों का समाहार)
त्रयाणां फलानां समाहारः	= **त्रिफला** (तीन फलों का समाहार)
शतानाम् अब्दानां समाहारः	= **शताब्दी** (सौ वर्षों का समूह)
चतुर्णां भुजानां समाहारः	= **चतुर्भुजम्** (चार भुजाओं का समूह)
तिसृणां वेणीनां समाहारः	= **त्रिवेणी** (तीन वेणियों का समूह)
चतुर्णां युगानां समाहारः	= **चतुर्युगम्** (चार युगों का समूह)
सप्तानां शतानां समाहारः	= **सप्तशती** (सात सैकड़ों का समूह)
सप्तानाम् अह्नाम् समाहारः	= **सप्ताहः** (सात अह्नों/दिनों का समाहार)
नवानां रात्रीणां समाहारः	= **नवरात्रम्** (नव रात्रियों का समूह)

द्वन्द्व समास

''उभयपदार्थप्रधानः द्वन्द्वः'' अर्थात् जिस समास में उभयपद (दोनों पद) या सभी पदों की प्रधानता होती है, उसे द्वन्द्वसमास कहते हैं। जैसे- रामश्च कृष्णश्च = **रामकृष्णौ**
यहाँ 'राम' और 'कृष्ण' दोनों पद प्रधान हैं, अतः इसमें द्वन्द्वसमास है।

द्वन्द्व समास के भेद- द्वन्द्व समास के मुख्यतः दो ही भेद होते हैं किन्तु एकशेष को शामिल करके इसके कुल तीन भेद हो जाते हैं-

(i) इतरेतर द्वन्द्व- जब समास में प्रयुक्त होने वाले शब्द के अर्थ अपनी-अपनी प्रधानता अलग-अलग प्रदर्शित करते हैं, उसे इतरेतर द्वन्द्व कहते हैं। इसका लिङ्ग निर्धारण उत्तरपद के अनुसार होता है।
जैसे- 'रामश्च लक्ष्मणश्च = रामलक्ष्मणौ' - यहाँ राम तथा लक्ष्मण का अलग-अलग अस्तित्व है। अतः यहाँ 'रामलक्ष्मणौ' में इतरेतर द्वन्द्व समास है।

(ii) समाहार द्वन्द्व- जिस द्वन्द्व समास में आये हुए पद अपना अर्थ बतलाने के साथ-साथ समूह या समाहार अर्थ का भी बोध कराते हैं, उसे 'समाहार द्वन्द्व' कहते हैं। यह समास नित्य नपुंसकलिङ्ग में होता है।
यथा- पाणिपादम् = पाणी च पादौ च तेषां समाहारः (हाथ और पैर का समूह)

(iii) एकशेष द्वन्द्व- जिस द्वन्द्व समास में दो या दो से अधिक पदों में से केवल एक पद शेष रहता है, उसे 'एकशेष द्वन्द्व' कहते हैं। जैसे- दुहिता च दुहिता च = दुहितरौ।

➢ यदि समास में पुँल्लिङ्ग तथा स्त्रीलिङ्ग दोनों प्रकार के शब्द हों तो पुँल्लिङ्ग शब्द ही शेष बचेगा। जैसे-

माता च पिता च = **पितरौ**
मयूरी च मयूरः च = **मयूरौ**

द्वन्द्व समास करने वाला सूत्र

''चार्थे द्वन्द्वः'' (2.2.29) इस सूत्र से 'च' (और) के अर्थ में विद्यमान अनेक सुबन्तों का द्वन्द्व समास होता है।

इतरेतर द्वन्द्व समास के उदाहरण

सीता च रामश्च	=	**सीतारामौ** (सीता और राम)
रामः च कृष्णः च	=	**रामकृष्णौ** (राम और कृष्ण)
देवश्च असुरश्च	=	**देवासुरौ** (देवता और असुर)
धर्मश्च अर्थश्च	=	**धर्मार्थौ** (धर्म और अर्थ)
कृष्णश्च अर्जुनश्च	=	**कृष्णार्जुनौ** (कृष्ण और अर्जुन)
वाणी च विनायकश्च	=	**वाणीविनायकौ** (वाणी और विनायक)
पार्वती च परमेश्वरश्च	=	**पार्वतीपरमेश्वरौ** (पार्वती और परमेश्वर महादेव)

सूर्यश्च चन्द्रश्च = **सूर्यचन्द्रौ** (सूर्य और चन्द्र)
शिवश्च केशवश्च = **शिवकेशवौ** (शिव और केशव)
रामश्च लक्ष्मणश्च = **रामलक्ष्मणौ** (राम और लक्ष्मण)
भीमश्च अर्जुनश्च = **भीमार्जुनौ** (भीम और अर्जुन)
सज्जनश्च दुर्जनश्च = **सज्जनदुर्जनौ** (सज्जन और दुर्जन)
ईशश्च कृष्णश्च = **ईशकृष्णौ** (ईश और कृष्ण)
पिता च पुत्रश्च = **पितापुत्रौ** (पिता और पुत्र)
हरिश्च हरश्च = **हरिहरौ** (हरि और हर)
बालश्च वृद्धश्च = **बालवृद्धौ** (बालक और वृद्ध)
नरश्च नारी च = **नरनार्यौ** (नर और नारी)
जाया च पतिश्च = **जायापती/जम्पती/दम्पती** (पति और पत्नी)

नोट- इतरेतर द्वन्द्व समास में दो या दो से अधिक पदों का योग होता है। दो पदों के लिए द्विवचन और दो से अधिक पदों का समास होने पर बहुवचन का प्रयोग होता है। लिङ्ग अन्तिम पद के समान प्रयोग किया जाता है। जैसे-

☆ हरिश्च हरश्च गुरुश्च = **हरिहरगुरवः**
☆ रामश्च भरतश्च लक्ष्मणश्च शत्रुघ्नश्च = **रामभरतलक्ष्मणशत्रुघ्नाः**

यहाँ दो से अधिक पदों का समास हुआ है, अतः बहुवचन का प्रयोग हुआ है।

समाहार द्वन्द्व के उदाहरण

समास विग्रह		सामासिकपद (अर्थ सहित)
पाणी च पादौ च तेषां समाहारः	=	**पाणिपादम्** (हाथ और पैर का समूह)
रथिकः च अश्वारोही च	=	**रथिकाश्वारोहम्** (रथी और घुड़सवार)
भेरी च पटहश्च	=	**भेरीपटहम्** (भेरी और पटह का समूह)
अहिश्च नकुलश्च	=	**अहिनकुलम्** (साँप और नेवला)
अहश्च रात्रिश्च	=	**अहोरात्रम्** (रात और दिन)
रथाश्च अश्वाश्च तेषां समाहारः	=	**रथाश्वम्** (रथ और घोड़े)
संज्ञा च परिभाषा च अनयोः समाहारः	=	**संज्ञापरिभाषम्** (संज्ञा और परिभाषा का समूह)

नोट- जिस समास में अनेक पदों के समूह का बोध होता है, उसे समाहार द्वन्द्व कहते हैं। समाहार द्वन्द्व में समास के बाद **नपुंसकलिङ्ग एकवचन** का प्रयोग होता है।

एकशेष द्वन्द्व समास के उदाहरण

समास विग्रह		सामासिक पद (अर्थ सहित)
माता च पिता च	=	**पितरौ** (माता और पिता)
पुत्रश्च पुत्री च	=	**पुत्रौ** (पुत्र और पुत्री)
रामश्च रामश्च	=	**रामौ** (दो राम)
हंसश्च हंसी च	=	**हंसौ** (हंस और हंसी)
युवा च युवती च	=	**युवानौ** (युवक और युवती)
दुहिता च दुहिता च	=	**दुहितरौ** (दो पुत्रियाँ)
मयूरी च मयूरः च	=	**मयूरौ** (मयूरी और मयूर)
भ्राता च स्वसा च	=	**भ्रातरौ** (भाई और बहन)
श्वश्रूः च श्वसुरश्च	=	**श्वसुरौ** (सास और ससुर)

द्वन्द्व समास के अन्य उदाहरण

(i) एकः च दश च = **एकादश**
(ii) द्वौ च दश च = **द्वादश**
(iii) त्रयः च दश च = **त्रयोदश**
(iv) अष्टौ च दश च = **अष्टादश** इत्यादि में भी द्वन्द्व समास है।

बहुव्रीहि समास

''अन्यपदार्थप्रधानो बहुव्रीहिः'' अर्थात् जिस समास में सामासिक पदों से भिन्न किसी अन्य पद का अर्थ प्रधान होता है, उसे 'बहुव्रीहि' समास कहते हैं। अर्थात् बहुव्रीहि में जितने भी पद होते हैं वे सभी मिलकर किसी दूसरे पद के विशेषण होते हैं।

जैसे- लम्बम् उदरं यस्य सः = **लम्बोदरः**।

यहाँ लम्बम् उदरं दोनों विशेषण विशेष्य तो है लेकिन वे किसी अन्य पद 'गणेश' की विशेषता बता रहे हैं। अतः यहाँ बहुव्रीहि समास है।

बहुव्रीहि समास विधायक सूत्र- अनेकमन्यपदार्थे (2.2.24)

अन्य पद के अर्थ में वर्तमान अनेक प्रथमान्त पदों का विकल्प से बहुव्रीहि समास होता है।

बहुव्रीहि समास के भेद-

(क) समानाधिकरण बहुव्रीहि- इसके दोनों पदों में समान विभक्ति होती है।

समास विग्रह		सामासिक पद (अर्थ सहित)
पीतम् अम्बरं यस्य सः	=	**पीताम्बरः** (श्रीकृष्ण) पीले वस्त्र वाला
लम्बम् उदरं यस्य सः	=	**लम्बोदरः** (गणेश) लम्बा है उदर जिसका
नीलः कण्ठः यस्य सः	=	**नीलकण्ठः** (शिव) नीला है कण्ठ जिसका

श्वेतम् अम्बरं यस्य सः = **श्वेताम्बरः** (साधु) सफेद है वस्त्र जिसका
दाम उदरं यस्य सः = **दामोदरः** (श्रीकृष्ण) रस्सी है उदर पर जिसके
जितानि इन्द्रियाणि येन सः = **जितेन्द्रियः** (मुनि) जीत ली है इन्द्रियाँ जिसने
शुक्लम् अम्बरं यस्याः सा = **शुक्लाम्बरा** (सरस्वती)
दश आननानि यस्य सः = **दशाननः** (रावण)
चत्वारि आननानि यस्य सः = **चतुराननः** (ब्रह्मा)
दिक् अम्बरं यस्य सः = **दिगम्बरः** (शिव)
प्राप्तम् उदकं यं सः = **प्राप्तोदकः**(जल जिसे प्राप्त है।)
महान् आशयः यस्य सः = **महाशयः** (सभ्य व्यक्ति)
यशः एव धनं यस्य सः = **यशोधनः** (राजा) यश ही है धन जिसका
लब्धा प्रतिष्ठा येन सः = **लब्धप्रतिष्ठः** (विद्वान्)
नीलम् अम्बरं यस्य सः = **नीलाम्बरः** (बलराम)
दिव्यम् अम्बरं यस्य सः = **दिव्याम्बरः** (दिव्य हैं वस्त्र जिसका, वह)
पञ्च आननानि यस्य सः = **पञ्चाननः** (शिव)
नीलं कण्ठं यस्य सः = **नीलकण्ठः** (शिव)
गज इव आननं यस्य सः = **गजाननः** (गणेश)
कमलम् आसनं यस्य सः = **कमलासनः** (ब्रह्मा)
लम्बौ कर्णौ यस्य सः = **लम्बकर्णः** (लम्बे हैं कान जिसके, वह)

(ख) व्यधिकरण बहुव्रीहि

इसके दोनों पद अलग-अलग विभक्तियों में होते हैं। जैसे-

चक्रं पाणौ यस्य सः = **चक्रपाणिः** (विष्णु)
वीणा पाणौ यस्याः सा = **वीणापाणिः** (सरस्वती)
धनुः पाणौ यस्य सः = **धनुष्पाणिः** (श्रीराम)
चन्द्रः शेखरे यस्य सः = **चन्द्रशेखरः** (शिव)
पीयूषं पाणौ यस्य सः = **पीयूषपाणिः** (वैद्य)
मृगस्य नयने इव नयने यस्याः सा = **मृगनयनी** (स्त्री) (मृग के नयनों के समान हैं नयन जिसके)
शूलं पाणौ यस्य सः = **शूलपाणिः** (शूल है हाथ में जिसके, वह)
शीतिः कण्ठे यस्य सः = **शीतिकण्ठः** (शिव) (नीलिमा है जिसके कण्ठ में, वह)
चन्द्रस्य कान्तिः इव कान्तिः यस्य सः = **चन्द्रकान्तिः** (चन्द्र की कान्ति के समान कान्ति है जिसकी, वह)
गदा पाणौ यस्य सः = **गदापाणिः** (विष्णु)

(ग) व्यतिहार बहुव्रीहि

युद्ध लड़ाई आदि का ज्ञान कराने वाले सप्तम्यन्त तथा तृतीयान्त पदों में जो समास होता है, उसे व्यतिहार बहुव्रीहि कहते हैं। यथा-

☆ केशेषु केशेषु गृहीत्वा इदं युद्धं प्रवृत्तम् = **केशाकेशि** (बालों को पकड़कर प्रारम्भ होने वाला युद्ध)
☆ हस्ताभ्यां हस्ताभ्यां प्रवृत्तं युद्धम् = **हस्ताहस्ति** (हाथों से प्रवृत्त हुआ युद्ध)
☆ दण्डैश्च दण्डैश्च प्रहृत्य इदं युद्धं प्रवृत्तम् = **दण्डादण्डि** (परस्पर लाठियों से मार-मार कर युद्ध में प्रवृत्त हुआ)
☆ मुष्टिभिश्च मुष्टिभिश्च प्रहृत्य इदं युद्धं प्रवृत्तम् = **मुष्टामुष्टि** (परस्पर मुक्कों से मार-मार कर यह लड़ाई लड़ी गयी)

(घ) तुल्य योग बहुव्रीहि

जब बहुव्रीहि समास में साथ अर्थ वाले 'सह' का समास होता है, तब तुल्ययोग बहुव्रीहि समास होता है। 'सह' को विकल्प से 'स' हो जाता है। जैसे-

अर्जुनेन सह = **सार्जुनः** (अर्जुन के साथ)
राधिकया सह इति = **सराधिकः** (कृष्ण) राधिका के साथ
भार्यया सह = **सभार्यः** (स्त्री सहित)
कलाभिः समम् = **सकलम्** (कलाओं से युक्त)
सीतया सह = **ससीतः** (राम, सीता के साथ)
पुत्रेण सह = **सपुत्रः** (पुत्र के साथ)
परिवारेण सह = **सपरिवारः** (परिवार के साथ)
अनुजेन सह = **सानुजः** (अनुज के साथ)

बहुव्रीहि समास के कुछ अन्य उदाहरण-

☆ द्वौ वा त्रयो वा = **द्वित्राः** (दो या तीन)
☆ त्रयः वा चत्वारो वा = **त्रिचतुराः** (तीन-चार)
☆ पञ्च वा षट् वा = **पञ्चषाः** (पाँच या छह)
☆ युवतिः जाया यस्य सः = **युवजानिः** (जिसकी स्त्री युवती है, वह)
☆ सीता जाया यस्य सः = **सीताजानिः** (जिसकी स्त्री सीता है, वह राम)
☆ पठितुं कामं यस्य सः = **पठितुकामः** (पढ़ने की इच्छा वाला)
☆ अविद्यमानो पुत्रः यस्य सः = **अपुत्रः** (नहीं है पुत्र जिसके, वह)
☆ चित्रा गावो यस्य सः = **चित्रगुः** (चितकबरी गायों वाला व्यक्ति)

❑❑

कारक तथा विभक्ति

- **कृ + ण्वुल् = कारक**
- **'क्रियां करोति इति कारकम्'** क्रिया को करने वाला कारक है।
- **'क्रियाजनकत्वं कारकत्वम्'** क्रिया का जो जनक होता है, वह कारक है।
- **'क्रियान्वयित्वं कारकत्वम्'** क्रिया के साथ जिसका सीधा सम्बन्ध (अन्वय) होता है, उसे कारक कहते हैं।

जैसे- वन से आकर राम ने सीता के लिए लंका में रावण को बाण से मारा था।

वनात् आगत्य रामः सीतायै लङ्कायां रावणं बाणेन जघान।

स्पष्टीकरण-

(i) इस वाक्य में 'मारना' क्रिया को सम्पादित करने वाला 'राम' है, अतः 'राम' कर्ताकारक है।

(ii) क्रिया का प्रभाव जिस पर पड़ता है वह कर्म है। 'मारना' क्रिया का प्रभाव 'रावण' पर पड़ता है, अतः 'रावण' कर्म है।

(iii) क्रिया के सम्पन्न करने में अत्यधिक सहायक 'करण' कहलाता है, यहाँ 'मारने' की क्रिया में अत्यधिक सहायक 'बाण' है अतः 'बाण' करण कारक है।

(iv) सीता के लिए रावण मारा गया, अतः 'सीता' सम्प्रदान है।

(v) 'वन' अपादान कारक है।

(vi) मारने की क्रिया लंका में पूर्ण हुई थी, अतः लंका अधिकरण कारक है।

इसप्रकार इस वाक्य में 'राम, सीता, रावण, वन, बाण, लंका' इन सभी शब्दों का 'मारना' (जघान) क्रिया से सम्बन्ध है, अतः उपर्युक्त ये सभी शब्द कारक हैं।

कारकों की संख्या

कारक छह हैं- **1. कर्ता 2. कर्म 3. करण 4. सम्प्रदान 5. अपादान 6. अधिकरण**

कर्ता कर्म च करणं सम्प्रदानं तथैव च।
अपादानाधिकरणे इत्याहुः कारकाणि षट्॥

- जिनका क्रिया के साथ सीधा सम्बन्ध नहीं होता या जो क्रिया की सिद्धि में सहायक नहीं होते, उन्हें कारक नहीं कहा जा सकता। इसीलिए सम्बन्ध और सम्बोधन कारक नहीं माने जाते क्योंकि क्रिया के साथ इनका साक्षात् सम्बन्ध नहीं होता।

कारक चिह्न

विभक्ति	कारक	चिह्न
प्रथमा/तृतीया	कर्ता	ने
द्वितीया	कर्म	को
तृतीया	करण	से/द्वारा
चतुर्थी	सम्प्रदान	के लिए
पञ्चमी	अपादान	से (अलग होना)
षष्ठी	सम्बन्ध	का, के, की, रा, रे, री
सप्तमी	अधिकरण	में, पै, पर
प्रथमा	सम्बोधन	हे, भो, अरे

प्रथमा विभक्ति

1. स्वतन्त्रः कर्ता- क्रिया करने में जिसकी स्वतन्त्रता मानी जाय, वही कर्ता होता है। यह सूत्र 'कर्तृसंज्ञा' करने वाला संज्ञा सूत्र है। जैसे- मोहनः पठति। यहाँ 'मोहन' पठन क्रिया करने में स्वातन्त्र्येण विवक्षित है, अतः 'मोहन' कर्ता है।

- वाक्य में कर्ता की स्थिति के अनुसार संस्कृत में वाक्य तीन प्रकार के होते हैं-

(क) कर्तृवाच्य- मोहनः पुस्तकं पठति। - यहाँ कर्ता की प्रधानता होती है, और कर्ता में प्रथमा विभक्ति होती है।

(ख) कर्मवाच्य- मोहनेन पुस्तकं पठ्यते। यहाँ 'कर्म' की प्रधानता होती है और कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है।

(ग) भाववाच्य- रामेण भूयते। यहाँ भाव (क्रिया) की प्रधानता होती है, और कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है।

2. प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा

प्रातिपदिकार्थ मात्र में, लिङ्गमात्र के आधिक्य में, परिमाण मात्र के आधिक्य में तथा वचनमात्र के आधिक्य में प्रथमा विभक्ति होती है।

- किसी प्रातिपदिक के उच्चारण से स्वार्थ, द्रव्य, लिङ्ग, संख्या और कारक- इन पाँचों में, जिसका ज्ञान निश्चित रूप से हो, उसे प्रातिपदिकार्थ कहते हैं।

उदाहरण- उच्चैः, नीचैः, कृष्णः, श्रीः, ज्ञानम्।

लिङ्गमात्राधिक्ये प्रथमा- जिन शब्दों के लिङ्ग निश्चित नहीं हैं, उन शब्दों से लिङ्गमात्राधिक्य में प्रथमा विभक्ति होती है।
जैसे- **तटः** (पुंलिङ्ग), **तटी** (स्त्रीलिङ्ग), **तटम्** (नपुंसकलिङ्ग)
परिमाणमात्राधिक्ये प्रथमा- परिमाण (वजन, माप, तौल) मात्रा का बोध कराने के लिए प्रथमा विभक्ति होती है। जैसे- **द्रोणो व्रीहिः।**
वचनमात्रे प्रथमा- वचन अर्थात् संख्यामात्र का बोध कराने के लिए प्रथमा विभक्ति का प्रयोग होता है। यथा- **एकः, द्वौ, बहवः।**
3. सम्बोधने च - सम्बोधन में प्रथमा विभक्ति होती है- जैसे- **हे राम! अत्र आगच्छ!** यहाँ हे राम! में सम्बोधन होने से प्रथमा विभक्ति प्रयुक्त है।
4. उक्ते कर्तरि प्रथमा- कर्तृवाच्य में जहाँ कर्ता उक्त या 'कहा गया' रहता है, उसमें प्रथमा विभक्ति होती है। जैसे- रामः गृहं गच्छति।
➢ यहाँ 'राम' कर्तृवाच्य का कर्ता है जो कि उक्त है अतः 'रामः' में प्रथमा विभक्ति है।
इसप्रकार प्रातिपदिकार्थमात्र में, लिङ्गमात्र में, परिमाणमात्र में, वचनमात्र में, सम्बोधन में, उक्त कर्ता में प्रथमा विभक्ति होगी।

द्वितीया विभक्ति (कर्मकारक)

1. कर्तुरीप्सिततमं कर्म- कर्ता अपनी क्रिया के द्वारा जिसे विशेष रूप से प्राप्त करना चाहता है उसकी कर्मसंज्ञा होती है। जैसे- **रामः लेखन्या पत्रं लिखति।**
यहाँ 'राम' रूपी कर्ता अपनी लेखन रूपी क्रिया से सबसे ज्यादा 'पत्र' लिखना चाह रहा है अतः 'पत्र' यहाँ कर्म होगा।
2. कर्मणि द्वितीया- कर्म में द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे-
1. रामः **गृहं** गच्छति।
2. छात्रः **विद्यालयं** गच्छति।
3. अहं **जलं** पिबामि।
4. बालकाः **फलानि** खादन्ति।
5. सः **नगरं** गच्छति।
6. भक्तः **हरिं** भजति।

उपर्युक्त वाक्यों में 'गृह, विद्यालय, जल, फल, नगर, हरि' इन सभी की कर्मसंज्ञा है, अतः सभी पदों में कर्म होने के कारण 'कर्मणि द्वितीया' से **द्वितीया विभक्ति** हुई है।
3. अकथितं च- अपादान, सम्प्रदान, करण आदि कारकों के द्वारा अविवक्षित कारक कर्मसंज्ञक होता है। दुह् आदि (बारह) एवं नी आदि (चार) कुल 16 धातुओं के कर्म से जिसका सम्बन्ध होता है, वह अकथित कहा जाता है।
सोलह द्विकर्मक धातुयें- दुह्, याच्, पच्, दण्ड्, रुध्, प्रच्छ्, चि, ब्रू, शास्, जि, मथ्, मुष् -12
नी, हृ, कृष्, वह् = 4 ये सोलह द्विकर्मक धातुयें हैं।
इन सोलह धातुओं एवं इनके समानार्थक धातुओं के योग में अपादान, सम्प्रदान, करण आदि कारकों की कर्मसंज्ञा होती है, और उनमें द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है।

द्विकर्मक धातुओं के योग में अपादान आदि का कर्म होना

	धातु	प्रयोग	अर्थ
1.	**दुह्** (दुहना)	ग्वालः धेनुं दुग्धं दोग्धि।	ग्वाला गाय से दूध दुहता है।
2.	**याच्** (माँगना)	हरिः बलिं वसुधां याचते।	हरि बलि से पृथ्वी माँगते हैं।
		सः नृपं क्षमां याचते।	वह राजा से क्षमा माँगता है।
3.	**पच्** (पकाना)	माता तण्डुलान् ओदनं पचति।	माता चावलों से भात पकाती है।
4.	**दण्ड्** (दण्ड देना)	राजा चौरं शतं दण्डयति।	राजा चोर से 100 रुपये दण्ड लेता है।
5.	**रुध्** (रोकना)	राजा शत्रून् दुर्गं रुणद्धि।	राजा शत्रुओं को किले में रोकता है।
6.	**प्रच्छ्** (पूछना)	गुरुः शिष्यं प्रश्नं पृच्छति।	गुरु शिष्य से प्रश्न पूछता है।
7.	**चि** (चुनना)	बालकः वृक्षं फलानि अवचिनोति।	बालक वृक्ष से फल चुनता है।
8.	**ब्रू** (बोलना)	गुरुः शिष्यं धर्मं ब्रूते।	गुरु शिष्य से धर्म बताता है।
9.	**शास्** (उपदेश देना)	गुरुः शिष्यं धर्मं शास्ति।	गुरु शिष्य को धर्म का उपदेश देता है।
10.	**जि** (जीतना)	सः देवदत्तं शतं जयति।	वह देवदत्त से सौ रुपये जीतता है।
11.	**मथ्** (मथना)	सुधां क्षीरनिधिं मथ्नाति।	अमृत के लिए समुद्र को मथता है।
12.	**मुष्** (चुराना)	यज्ञदत्तं शतं मुष्णाति।	यज्ञदत्त से सौ रुपये चुराता है।

13. **नी** (ले जाना)	कृषकः धेनुं ग्रामं नयति।	किसान गाय को गाँव ले जाता है।
14. **हृ** (हरना)	कृषकः धेनुं ग्रामं हरति।	किसान गाय को गाँव ले जाता है।
15. **कृष्** (खींचना)	कृषकः धेनुं ग्रामं कर्षति।	किसान गाय को गाँव तक खींचकर ले जाता है।
16. **वह्** (ले जाना)	कृषकः धेनुं ग्रामं वहति।	किसान गाय को ग्राम तक वहन करता है।

4. अधिशीङ्स्थासां कर्म- (1.4.46) **शी** (सोना), **स्था** (ठहरना), **आस्** (बैठना) - इन तीन धातुओं के पहले यदि 'अधि' उपसर्ग जुड़ा हो तो इनके आधार की कर्मसंज्ञा होती है, और कर्म में द्वितीया विभक्ति होगी। जैसे-

1. राजा **सिंहासनम्** अधितिष्ठति। (राजा सिंहासन पर बैठता है)
2. हरिः **वैकुण्ठम्** अध्यास्ते। (हरि वैकुण्ठ में बैठते हैं)
3. शिष्यः **आसनम्** अधितिष्ठति। (शिष्य आसन पर बैठता है)
4. मुनिः **शिलाम्** अधिशेते। (मुनि शिला पर सोते हैं)
5. सः **पर्यङ्कम्** अधिशेते (वह पलंग पर सोता है)

उपर्युक्त वाक्यों में सिंहासन, वैकुण्ठ, आसन, शिला, पर्यङ्क ये सभी आधार हैं। यहाँ सभी क्रिया पदों में 'अधि' उपसर्ग के साथ शीङ्, स्था, आस्, धातुओं का प्रयोग है। अतः आधार की कर्मसंज्ञा होकर द्वितीया विभक्ति हो गयी।

5. अभिनिविशश्च- (1.4.47) 'अभि' और 'नि' इसी क्रम से ये दोनों ही उपसर्ग यदि 'विश्' धातु के पूर्व में आयें तो आधार की कर्मसंज्ञा हो जाती है। कर्म में द्वितीया विभक्ति होगी।

जैसे- **सन्तः सन्मार्गम् अभिनिविशते।**
(सज्जन सन्मार्ग में प्रवेश करते हैं)

➢ यहाँ 'अभिनिविशते' में 'अभि' एवं 'नि' उपसर्ग के साथ 'विश्' धातु का प्रयोग हुआ है अतः 'सन्मार्गम्' इस आधार की कर्मसंज्ञा होकर द्वितीया विभक्ति हो गयी है।

6. उपान्वध्याङ्वसः - (1.4.48) उप, अनु, अधि या आङ् इनमें से कोई उपसर्ग यदि वस् धातु के पूर्व में आये तो आधार की कर्मसंज्ञा होकर द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होगा।

जैसे- राजा **नगरम्** उपवसति। (राजा नगर में रहता है)
राजा **नगरम्** अनुवसति।
राजा **नगरम्** अधिवसति।
राजा **नगरम्** आवसति।

➢ यहाँ 'वस्' धातु के पूर्व उप, अनु, अधि एवं आङ् उपसर्ग का प्रयोग हुआ है अतः आधार 'नगर' की कर्मसंज्ञा हो गयी और उसमें द्वितीया विभक्ति का प्रयोग हुआ है।

7. अन्तराऽन्तरेण युक्ते- (2.3.4) 'अन्तरा' (मध्य में) और 'अन्तरेण' (बिना) इन अव्ययों के योग में द्वितीया विभक्ति होती है।

(i) अन्तरा **ग्रामं** नदी प्रवहति। (दो गाँवों के बीच नदी बहती है)
(ii) **संस्कृतम्** अन्तरेण न किमपि जानामि। (संस्कृत के सिवाय और कुछ नहीं जानता)

8. अभितः - परितः - समया - निकषा - हा - प्रति-योगेऽपि-

अभितः (दोनों ओर या आस पास) **परितः** (चारों ओर) **समया** (समीप) **निकषा** (निकट) **हा** (शोक) **प्रति** (ओर) इन शब्दों के योग में द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे-

(i) **ग्रामम्** अभितः वनम् अस्ति। (गाँव के आस-पास वन है)
(ii) **आश्रमम्** अभितः वृक्षाः सन्ति। (आश्रम के दोनों ओर वृक्ष हैं)
(iii) **विद्यालयं** परितः वृक्षाः सन्ति। (विद्यालय के चारों ओर वृक्ष हैं)
(iv) **ग्रामं** परितः उपवनानि सन्ति। (गाँव के चारों ओर उपवन हैं)
(v) **लङ्कां** समया सागरः अस्ति। (लङ्का के समीप सागर है)
(vi) **लङ्कां** निकषा हनिष्यति (लङ्का के समीप मारेगा)
(vii) हा **कृष्णाभक्तम्** (कृष्ण के अभक्त के लिए खेद है)
(viii) **बुभुक्षितं** न प्रतिभाति किञ्चित् (भूखे को कुछ भी अच्छा नहीं लगता)
(ix) छात्रः **गुरुं** प्रति श्रद्धधाति। (छात्र की गुरु के प्रति श्रद्धा है)
(x) सः **नगरं** प्रति गच्छति। (वह नगर की ओर जाता है)

9. उभसर्वतसोः कार्या धिगुपर्यादिषु त्रिषु। द्वितीयाऽऽम्रेडितान्तेषु ततोऽन्यत्रापि दृश्यते।।

उभयतः, सर्वतः, धिक्, उपर्युपरि, अध्यधि, अधोऽधः पदों के योग होने पर द्वितीया विभक्ति होगी। जैसे-

(i) उभयतः **नदीं** वृक्षाः सन्ति। (नदी के दोनों ओर वृक्ष हैं)
(ii) मार्गम् **उभयतः** वृक्षाः सन्ति। (मार्ग के दोनों ओर पेड़ हैं)
(iii) नगरं **सर्वतः** प्राकारः अस्ति। (नगर के चारों ओर परकोटा है)
(iv) धिक् **कृष्णाभक्तम्।** (कृष्ण के अभक्त को धिक्कार है)
(v) उपर्युपरि **लोकं** हरिः। (इस लोक के ठीक ऊपर हरि हैं)
(vi) अध्यधि **लोकं** हरिः। (हरि लोक के पास हैं)
(vii) अधोऽधः **लोकं** हरिः। (पाताल लोक के ठीक नीचे हरि हैं)

10. कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे (2.3.5)

➢ यदि किसी काल में कोई क्रिया लगातार हो तो ऐसे कालवाची पद में द्वितीया विभक्ति होगी।
➢ इसी तरह यदि अध्व (मार्ग की दूरी) में कोई वस्तु लगातार हो तो उस अध्ववाचक = मार्गवाचक शब्दों में द्वितीया विभक्ति

होती है। जैसे-

(i) मार्गवाचक- **छात्रः क्रोशम् अधीते**
(छात्र कोश भर लगातार पढ़ता है)

(ii) मार्गवाचक- **क्रोशं गिरिः वर्तते।** (कोश भर विस्तृत पर्वत है)

(iii) मार्गवाचक- **क्रोशं कुटिला नदी** (कोश भर नदी टेढ़ी है)

(iv) कालवाचक-**सः मासम् अधीते रामायणम्** (वह महीने भर रामायण पढ़ता है)

(v) कालवाचक - **सः सप्ताहं पठिष्यति** (वह सप्ताह भर पढ़ता है)

(vi) कालवाचक- **छात्रः मासम् अधीते**
(छात्र महीने भर लगातार पढ़ता है)

तृतीया विभक्ति (करण कारक)

1. साधकतमं करणम् - क्रिया की सिद्धि में जो सबसे अधिक उपकारक होता है, उसे करण कहते हैं।

'क्रियासिद्धौ प्रकृष्टोपकारकं करणसंज्ञं स्यात्'।

यथा- सः हस्तेन मिष्टान्नं वितरति।

यहाँ- मिष्टान्न वितरण रूपी कार्य को करने में हाथ सबसे अधिक सहायक है, अतः 'हाथ' करण है।

2. कर्तृकरणयोस्तृतीया (2.3.18) - अनुक्त कर्ता अर्थात् (कर्मवाच्य और भाववाच्य के कर्ता) और करण में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे-

(i) सः **कुठारेण** वृक्षं छिनत्ति। (वह कुल्हाड़ी से वृक्ष को काटता है) - करण में तृतीया

(ii) **रामेण** बालिः हतः (राम के द्वारा बाली मारा गया) - कर्ता में तृतीया

(iii) बालकः **दण्डेन** सर्पं हन्ति। (बालक डण्डे से साँप को मारता है) - करण में तृतीया

(iv) त्वं **कलमेन** पत्रं लिख। (तू कलम से पत्र लिख) - करण में तृतीया

(v) मोहनः **दात्रेण** लुनाति। (मोहन हसियें से काटता है) - करण में तृतीया

(vi) **रामेण बाणेन** हतो बाली। (राम के बाण द्वारा बाली मारा गया) - कर्ता (रामेण) और करण (बाणेन) दोनों में तृतीया।

3. सहयुक्तेऽप्रधाने (2.3.19) -

सह, साकम्, सार्धम्, समम् आदि सहार्थक शब्दों के योग में अप्रधान में तृतीया विभक्ति होती है।

जैसे-

(i) पुत्रेण सह आगतः पिता। (पुत्र के साथ पिता आया)

(ii) पिता पुत्रेण सह मेरठनगरं गतः (पिता पुत्र के साथ मेरठनगर को गया)

(iii) रामः जानक्या साकं गच्छति। (राम जानकी के साथ जाते हैं)

(iv) मोहनः गुरुणा सार्धं विद्यालयं गच्छति। (मोहन गुरु के साथ विद्यालय जाता है।)

(v) लक्ष्मणेन समं रामः गच्छति। (लक्ष्मण के साथ राम जाते हैं)

4. येनाङ्गविकारः - (2.3.20) शरीर के जिस अङ्ग के विकार से शरीरधारी का विकार समझा जाय, उस अङ्गवाचक शब्द में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे-

(i) अक्ष्णा काणः (आँख से काना)

(ii) हस्तेन लुञ्जः (हाथ से लुञ्जा)

(iii) शिरसा खल्वाटः (शिर से गंजा)

(iv) कर्णाभ्यां बधिरः (कानों से बहरा)

(v) पादेन खञ्जः (पैर से लँगड़ा)

(vi) पृष्ठेन कुब्जः (पीठ से कुबड़ा)

यहाँ 'आँख से' काना दिखायी पड़ रहा है, इसलिए 'अक्ष्णा' में तृतीया विभक्ति हुई। इसीप्रकार 'हाथ से' लुंजा है अतः 'हस्तेन' इस अङ्गवाची पद में तृतीया विभक्ति हुई।

5. पृथग्विनानानाभिस्तृतीयान्यतरस्याम् -

- पृथक्, विना, नाना शब्दों के योग में तृतीया विभक्ति का प्रयोग विकल्प से होता है। तृतीया न हो तो पञ्चमी अथवा द्वितीया विभक्ति होती है।
- 'नाना' शब्द अनेकार्थक है लेकिन यहाँ 'विना' के अर्थ में प्रयुक्त है।

जैसे-

(i) **जलेन** विना न जीवति कमलम्।
(जल के विना कमल जीवित नहीं रहता)

(ii) **ग्रामं** पृथक् या **ग्रामेण** पृथक् या **ग्रामात्** पृथक्
(गाँव से अलग)

(iii) **रामं** विना या **रामेण** विना या **रामात्** विना (राम के विना)

(iv) नाना **रामेण** या नाना **रामात्** या नाना **रामम्**
(राम के विना)

चतुर्थी विभक्ति (सम्प्रदान कारक)

1. कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम् (1.4.32) - कर्ता दान कर्म के द्वारा जिसे अभिप्रेत करता है; अर्थात् कर्ता जिसे कुछ देता है, या जिसके लिए कुछ करता है, वह 'सम्प्रदान' कहलाता है।

सम्प्रदान- 'सम्यक् प्रदीयते अस्मै तत् सम्प्रदानम्' (जिसे कुछ दिया जाय, परन्तु उस वस्तु को वापस न लिया जाय, वह सम्प्रदान होता है)

2. चतुर्थी सम्प्रदाने (2.3.13) - सम्प्रदान में चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे-

(i) राजा **ब्राह्मणाय** गां ददाति। (राजा ब्राह्मण को गाय देता है)
(ii) माता **बालकाय** फलं ददाति। (माता बालक को फल देती है)
(iii) **उपाध्यायाय** गां ददाति (उपाध्याय के लिए गाय देता है)
(iv) **ब्राह्मणाय** भूमिं ददाति। (ब्राह्मण को भूमि देता है)

➢ काले मोटे अक्षरों में लिखे गये शब्द सम्प्रदान कारक हैं, जिसमें चतुर्थी विभक्ति लगी है।

3. रुच्यर्थानां प्रीयमाणः (1.4.33)

रुच् (अच्छा लगना, पसन्द आना) तथा इसी अर्थ की अन्य धातुओं के प्रयोग में जो प्रीयमाण अर्थात् जो प्रसन्न होता है, या जिसको पसन्द होता है उस कारक की सम्प्रदान संज्ञा होती है, और उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे-

(i) **हरये** रोचते भक्तिः। (हरि को भक्ति अच्छी लगती है)
(ii) **सुरेशाय** दुग्धं रोचते। (सुरेश को दूध अच्छा लगता है)
(iii) **मह्यं** मोदकं रोचते। (मुझे लड्डू पसन्द है)
(iv) **मह्यम्** ओदनं रोचते। (मुझे भात अच्छा लगता है)

यहाँ 'हरि' को भक्ति पसन्द है, सुरेश को दूध पसन्द है, मुझे लड्डू पसन्द है, मुझे ओदन (भात) पसन्द है, तो जिसे पसन्द है वो प्रीयमाण है, और जो प्रीयमाण है उसी की सम्प्रदानसंज्ञा होगी, और सम्प्रदान में चतुर्थी विभक्ति होगी, इसीलिए "हरये, सुरेशाय, मह्यम्" में चतुर्थी विभक्ति लगी है।

4. "क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः" (1.4.37)

क्रुध् (क्रोध करना), द्रुह् (द्रोह करना), ईर्ष्य् (ईर्ष्या करना), असूय् (जलन करना) इन धातुओं तथा इन्हीं अर्थों की अन्य धातुओं के प्रयोग में भी जिसके प्रति क्रोध किया जाता है उसकी **सम्प्रदान संज्ञा** होती है, और उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे-

(i) पिता **पुत्राय** क्रुध्यति। (पिता पुत्र पर क्रोध करता है)
(ii) दुष्टाः **सज्जनाय** द्रुह्यन्ति (दुष्ट सज्जनों से द्रोह करते हैं)
(iii) कंसः **कृष्णाय** ईर्ष्यति (कंस कृष्ण से ईर्ष्या करता है)
(iv) दैत्याः **देवेभ्यः** असूयन्ति (दैत्य देवों से जलते हैं)
(v) तनुश्रीदत्ता **नानापाटेकराय** क्रुध्यति (तनुश्रीदत्ता नानापाटेकर पर क्रोध करती है)
(vi) रावणः **रामाय** असूयति (रावण राम से द्वेष करता है)

यहाँ पिता अपने पुत्र पर क्रोध करता है, इसलिए जिस पर क्रोध किया जाय उसकी सम्प्रदानसंज्ञा होती है और उसमें चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग होता है इसीलिए 'पुत्राय' में चतुर्थी विभक्ति लगी है।

5. स्पृहेरीप्सितः (1.4.36)

स्पृह् (चाहना) धातु के प्रयोग में जिस वस्तु की चाह, इच्छा या अभीप्सा होती है उसकी सम्प्रदानसंज्ञा होती है और उसमें चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे-

(i) सा **पुरुषेभ्यः** स्पृहयति। (वह पुरुषों को चाहती है)
(ii) रमा **पुष्पेभ्यः** स्पृहयति (रमा फूलों की चाह करती है)
(iii) बालिकाः **फलेभ्यः** स्पृहयन्ति (लड़कियाँ फलों की चाह करती हैं)
(iv) अहं **संस्कृताय** स्पृहयामि (मैं संस्कृत चाहता हूँ)

6. "नमः स्वस्ति स्वाहा स्वधाऽलंवषट्योगाच्च" (2.3.16)

नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलं, वषट् - इन शब्दों के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है; यथा-

(i) **गणेशाय** नमः (गणेश के लिए नमस्कार है)
(ii) **शिवाय** नमः (शिव को नमस्कार है)
(iii) **देवेभ्यः** नमः (देवताओं को नमस्कार है)
(iv) **विष्णवे** नमः (विष्णु को नमस्कार है)
(v) **तुभ्यम्** स्वस्ति (तुम्हारा कल्याण हो)
(vi) **बालकाय** स्वस्ति (बालक का कल्याण हो)
(vii) **इन्द्राय** स्वाहा (इन्द्र के लिए स्वाहा)
(viii) **अग्नये** स्वाहा (अग्नि के लिए स्वाहा)
(ix) **पितृभ्यः** स्वधा (पितरों को स्वधा)
(x) **दैत्येभ्यः** हरिः अलम् (दैत्यों के लिए हरि पर्याप्त हैं)

पञ्चमी विभक्ति (अपादान कारक)

1. ध्रुवमपायेऽपादानम् (1.4.24)

अपाय (अलग होना) अर्थ में जो ध्रुव हो, जिससे कोई वस्तु अलग हो रही हो, उसे 'अपादान' कहते हैं। जैसे-

वृक्षात् पत्रं पतति। (वृक्ष से पत्ता गिरता है)

इस वाक्य में पत्ता 'वृक्ष' से अलग हो रहा है अतः वृक्ष 'अपादान' है।

2. अपादाने पञ्चमी (2.3.28)

अपादान में पञ्चमी विभक्ति होती है। जैसे-

(i) सः **ग्रामात्** गच्छति। (वह गाँव से जाता है)

(ii) **वृक्षात्** पत्राणि पतन्ति (वृक्ष से पत्ते गिरते हैं)

(iii) महेशः **आसनात्** उत्तिष्ठति (महेश आसन से उठता है)

(iv) गङ्गा **हिमालयात्** प्रभवति। (गंगा हिमालय से निकलती है)

(v) बालकः **सोपानात्** पतति (बालक सीढ़ी से गिरता है)

(vi) सर्वे **विमानात्** अवतरन्ति (सभी विमान से उतरते हैं)

3. जुगुप्सा-विराम-प्रमादार्थानामुपसंख्यानम् (वा.)

वार्तिकार्थ- जुगुप्सा (घृणा, निन्दा), विराम (रुकना), प्रमाद (आलस्य) इन अर्थ वाली धातुओं के प्रयोग में जिससे जुगुप्सा, विराम अथवा प्रमाद किया जाय, उसकी अपादान संज्ञा होती है, और उसमें पञ्चमी विभक्ति होगी। जैसे-

(i) **पापात्** जुगुप्सते। (पाप से घृणा करता है)

(ii) सः **कार्यात्** विरमति (वह कार्य से रुकता है)

(iii) सः **पठनात्** प्रमाद्यति। (वह पढ़ने से प्रमाद करता है)

(iv) सः **धर्मात्** प्रमाद्यति। (वह धर्म से प्रमाद करता है)

(v) **स्वाध्यायात्** मा प्रमदः (स्वाध्याय से प्रमाद मत कर)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वाक्यों में जुगुप्सा, विराम और प्रमाद अर्थ वाली धातुओं का प्रयोग है तथा पाप, कार्य, पठन, धैर्य और स्वाध्याय से जुगुप्सा, विराम या प्रमाद किया जा रहा है इसलिए इनकी अपादान संज्ञा होकर पञ्चमी विभक्ति हो गयी है।

4. भीत्रार्थानां भयहेतुः (1.4.25)

सूत्रार्थ- भय (डर) अर्थवाली और त्राण (रक्षा) अर्थवाली धातुओं के योग में जिससे भय हो या जिससे रक्षा की जाय, उसकी अपादान संज्ञा होती है। जैसे-

(i) **चोरात्** बिभेति (चोर से डरता है)

(ii) वृकः **सिंहात्** बिभेति (भेड़िया सिंह से डरता है)

(iii) शिशुः **सर्पात्** बिभेति (बच्चा साँप से डरता है)

(iv) पिता पुत्रं **सिंहात्** रक्षति (पिता पुत्र की सिंह से रक्षा करता है)

(v) माता पुत्रम् **अग्नेः** रक्षति (माता पुत्र की आग से रक्षा करती है)

(vi) **पापात्** त्रायते (पाप से रक्षा करता है)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त उदाहरणों में भयार्थक 'भी' (बिभेति) धातु तथा त्राणार्थक 'रक्ष्' (रक्षति) धातु का प्रयोग है, तथा चोर, सिंह, सर्प, अग्नि, पाप आदि से डर या रक्षा हो रही है, इसीलिए इनमें अपादानसंज्ञा होकर पञ्चमी विभक्ति का प्रयोग हुआ है।

5. आख्यातोपयोगे (1.4.29)

जिससे नियमपूर्वक विद्या पढ़ी जाय या कुछ सीखा जाय ऐसे व्याख्याता/प्रवक्ता/शिक्षक/पढ़ाने वाले की अपादान संज्ञा होगी, और अपादान में पञ्चमी विभक्ति होगी। जैसे-

(i) **उपाध्यायात्** अधीते। (उपाध्याय से पढ़ता है)

(ii) छात्रः **गुरोः** अधीते (छात्र गुरु जी से पढ़ता है)

(iii) रविः **शिक्षकात्** सङ्गीतं शिक्षते (रवि शिक्षक से संगीत सीखता है)

(iv) बालकः **अध्यापकात्** संस्कृतं पठति (बालक अध्यापक से संस्कृत पढ़ता है)

(v) वटुः **गुरोः** कर्मकाण्डं जानाति। (वटु गुरु से कर्मकाण्ड जानता है)

6. "अन्यारादितरर्तेदिक्शब्दाञ्चूत्तरपदाजाहियुक्ते" (2.3.29)

अन्य, भिन्न, इतर, ऋते, पूर्व, प्राक्, प्रत्यक्, बहिः, आरभ्य, प्रभृति आदि शब्दों के योग में पञ्चमी विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे-

(i) अन्यः कृष्णात् (कृष्ण से भिन्न)

(ii) भिन्नः कृष्णात् (कृष्ण से भिन्न)

(iii) इतरः कृष्णात् (कृष्ण से भिन्न)

(iv) ऋते कृष्णात् (कृष्ण के विना)

(v) पूर्वो ग्रामात् (गाँव से पूर्व)

(vi) प्राक् ग्रामात् (गाँव से पूर्व)

(vii) प्रत्यक् ग्रामात् (गाँव के बाद)

(viii) भवात् प्रभृति हरिः सेव्यः। (जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त हरि सेव्य हैं)

(ix) ग्रामाद् बहिः उद्यानम् अस्ति। (गाँव के बाहर बगीचा है)

षष्ठी विभक्ति (सम्बन्ध)

1. षष्ठी शेषे (2.3.50) - कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, अधिकरण कारकों में तथा प्रातिपदिकार्थ में विभक्तियों का विधान कर चुके हैं। इसके अतिरिक्त जो बच गया हो, वही 'शेष' है। इसप्रकार कारक और प्रातिपदिकार्थ से अतिरिक्त स्व-स्वामिभाव, जन्यजनकभाव, कार्यकारणभाव आदि सम्बन्ध शेष है। उस शेष की विवक्षा में षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे-

(i) राज्ञः पुरुषः (राजा का पुरुष)

(ii) गङ्गायाः जलम् (गङ्गा का जल)

(iii) दशरथस्य पुत्रः (दशरथ का पुत्र)

(iv) पाञ्चालानां भूमिः (पाञ्चालों की भूमि)

2. षष्ठी हेतुप्रयोगे (2.3.36)

सूत्रार्थ- यदि किसी वस्तु की हेतुता (कारणता) प्रकट करनी हो, और 'हेतु' शब्द का साक्षात् प्रयोग हो तो उस वस्तु या कारण तथा 'हेतु' शब्द - दोनों में षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे-

(i) छात्रः **अध्ययनस्य हेतोः** प्रयागे वसति।
(छात्र अध्ययन के लिए प्रयाग में रहता है)

(ii) सः **धनस्य हेतोः** सेवते। (वह धन के हेतु सेवा करता है)

(iii) सः **अन्नस्य हेतोः** वसति। (वह अन्न के कारण रहता है)

(iv) सुमना **गृहस्य हेतोः** यतते। (सुमन घर के लिए प्रयास कर रही है)

स्पष्टीकरण- यहाँ कोई छात्र 'अध्ययन के लिए' प्रयाग में रहता है, अतः उसके रहने का कारण 'अध्ययन' है इसलिए अध्ययन में षष्ठी विभक्ति हुई और वाक्य में 'हेतु' शब्द का प्रयोग हुआ है अतः 'हेतु' में भी षष्ठी विभक्ति का प्रयोग हुआ है।

3. क्तस्य च वर्तमाने (2.3.67) - वर्तमान अर्थ में होने वाले 'क्त' प्रत्ययान्त शब्दों के योग में षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे-

(i) **राज्ञां** पूजितः विद्वान् (वह विद्वान्, जो राजाओं द्वारा पूजा जाता है)

(ii) **सर्वेषाम्** आदृतः गुरुः (वह गुरु, जिसका सब आदर करते हैं)

(iii) **राज्ञां** मतः बुद्धः पूजितः वा (राजा मानते हैं, जानते हैं अथवा पूजते हैं)

4. षष्ठी चानादरे (2.3.38) - अनादर अर्थ प्रकट करने के लिए षष्ठी और सप्तमी दोनों विभक्ति का प्रयोग होता है। यथा-

(i) बालकानां चन्दनः दुष्टः (बालकों में चन्दन दुष्ट है)

(ii) खगानां काकः धूर्तः (पक्षियों में कौआ धूर्त होता है)

(iii) पशूनां शृगालः मूर्खः (पशुओं में गीदड़ मूर्ख होता है)

(iv) रुदतः पुत्रस्य पिता वनं गतः (रोते हुए पुत्र को छोड़कर पिता वन चला गया)

(v) रुदति पुत्रे सः प्रव्राजीत् (पुत्र के रोते रहने पर भी उसे छोड़कर संन्यास ले लिया)

सप्तमी विभक्ति (अधिकरण कारक)

1. आधारोऽधिकरणम् (1.4.45) - आधार को **'अधिकरण'** कहते हैं। अधिकरण उसे कहते हैं, जो कर्ता और कर्म का आधार होता है।

आधार के भेद

आधार तीन प्रकार का होता है-

(i) औपश्लेषिक आधार - कटे आस्ते।

(ii) वैषयिक आधार - मोक्षे इच्छा अस्ति।

(iii) अभिव्यापक आधार - तिलेषु तैलम्, पयसि घृतम्, सर्वस्मिन् आत्मा अस्ति।

2. सप्तम्यधिकरणे च (2.3.36) - अधिकरण में सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे-

(i) वयं **गेहे** वसामः (हम घर में रहते हैं)

(ii) **गङ्गायां** निर्मलं जलम् अस्ति। (गङ्गा में निर्मल जल है)

(iii) **क्षेत्रेषु** अन्नम् उत्पद्यते (खेतों में अन्न उत्पन्न होता है)

(iv) **वनेषु** सिंहाः वसन्ति (वनों में सिंह रहते हैं)

3. 'कुशल' तथा 'निपुण' शब्दों के योग में सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे-

(i) सः **शास्त्रे** कुशलः अस्ति (वह शास्त्र में कुशल है)

(ii) विद्वान् **वेदेषु** निपुणः अस्ति (विद्वान् वेदों में निपुण हैं)

4. साध्वसाधुप्रयोगे च (वा.)

'साधु' और 'असाधु' शब्दों के प्रयोग में सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे-

(i) कृष्णः **मातरि** साधुः (कृष्ण माता के विषय में साधु हैं)

(ii) कृष्णः **मातुले** असाधुः। (कृष्ण मामा के विषय में असाधु हैं)

➢ यहाँ साधु शब्द के प्रयोग होने से 'मातरि' में सप्तमी तथा 'असाधु' शब्द के प्रयोग होने से 'मातुले' में सप्तमी विभक्ति का प्रयोग हुआ है।

5. यतश्च निर्धारणम् (2.3.41) - निर्धारण में समुदाय वाचक शब्द से षष्ठी या सप्तमी विभक्ति होती है।

➢ यदि किन्हीं वस्तुओं या व्यक्तियों के समुदाय में से किसी एक वस्तु या व्यक्ति को किसी विशेषता के आधार पर सबसे उत्कृष्ट या निकृष्ट बताया जाय तो वही 'निर्धारण' कहलाता है।

अथवा

निर्धारण- जाति, गुण, क्रिया या संज्ञा के द्वारा किसी समुदाय से उसके एकदेश का उत्कर्ष या अपकर्ष बताने के लिए अलग निर्देश करना 'निर्धारण' कहलाता है।

उदाहरण-

(i) **कविषु** कालिदासः श्रेष्ठः। (कवियों में कालिदास श्रेष्ठ हैं)
कवीनां कालिदासः श्रेष्ठः।

(ii) **नदीषु** गङ्गा पवित्रतमा। (नदियों में सबसे पवित्र गङ्गा हैं)
नदीनां गङ्गा पवित्रतमा।

(iii) **बालकेषु** रविः श्रेष्ठः। (बालकों में रवि सबसे अच्छा हैं)
बालकानां रविः श्रेष्ठः।

(iv) **पर्वतानां** हिमालयः उच्चतमः।
पर्वतेषु हिमालयः उच्चतमः। (पर्वतों में हिमालय सबसे ऊँचा हैं)

(v) **नृणां** ब्राह्मणः श्रेष्ठः (मनुष्यों में ब्राह्मण श्रेष्ठ हैं)
नृषु ब्राह्मणः श्रेष्ठः

(vi) **गवां** कृष्णा बहुक्षीरा
गोषु कृष्णा बहुक्षीरा (गायों में काली गाय बहुत दूध देती है)

(vii) **गच्छतां** धावन् शीघ्रः।
गच्छत्सु धावन् शीघ्रः (चलने वालों में दौड़ने वाला शीघ्र पहुँचता है)

❑❑

प्रत्यय

प्रत्यय- प्रति + √अय् + अच् अर्थात् जो वर्णसमूह किसी धातु या शब्द के अन्त में जुड़कर नए अर्थ की प्रतीति कराते हैं, उस वर्णसमूह को प्रत्यय कहते हैं।

➢ मुख्य रूप से प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं-

1. कृत् प्रत्यय 2. तद्धित प्रत्यय

➢ धातु के अन्त में लगने वाले प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं-

(i) कृत् प्रत्यय- क्त्वा, ल्यप्, तुमुन्, तव्यत्, अनीयर् आदि।

(ii) तिङ् प्रत्यय- तिप्, तस्, झि आदि 18 प्रत्यय।

➢ शब्दों से लगने वाले प्रत्यय हैं-

(i) सुप् प्रत्यय- सु औ जस् आदि 21 प्रत्यय।

(ii) स्त्रीप्रत्यय- टाप्, ङीप्, ङीष्, ङीन् आदि।

(iii) तद्धित प्रत्यय- मतुप्, अण्, इनि आदि।

➢ कृत् प्रत्यय (कृदन्त)

कृत् प्रत्यय धातुओं से जोड़े जाते हैं, और इनसे बने पद को 'कृदन्त' कहते हैं। कृत् प्रत्ययों से तीन प्रकार के शब्द निर्मित होते हैं- अव्यय, विशेषण और संज्ञा।

1. क्त्वा प्रत्यय

जब एक ही कर्ता द्वारा एक कार्य की समाप्ति के बाद दूसरी क्रिया की जाती है, तो समाप्ति क्रिया में क्त्वा प्रत्यय का प्रयोग होता है। इस प्रत्यय से बने हुए शब्द को पूर्वकालिक क्रिया कहते हैं।

जैसे- छात्रः पठित्वा गृहं गच्छति। (छात्र पढ़कर घर जाता है)

इस वाक्य में 'छात्र' रूपी कर्ता दो क्रियायें करता है- (i) पढ़ता है (ii) घर जाता है। इन दो क्रियाओं में पढ़ने की क्रिया पूर्वकाल में हुई अतः यह पूर्वकालिक क्रिया होगी जिसमें 'क्त्वा' प्रत्यय लगकर 'पठित्वा' रूप बना है। अतः 'क्त्वा' पूर्वकालिक कृदन्त है।

➢ 'क्त्वा' प्रत्यय के 'क्' की ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र से इत्संज्ञा होकर लोप हो जाता है केवल 'त्वा' शेष रहता है। कुछ धातुओं में 'इट्' का आगम होता है तो 'इत्वा' लगता है।

जैसे- बालकः पठित्वा गृहं गच्छति।

यहाँ 'पठ्' धातु में 'इट्' का आगम होकर 'क्त्वा' प्रत्यय लगा है, इसीलिए 'पठित्वा' बना है।

धातु + प्रत्यय		क्त्वा-प्रत्ययान्त रूप
1. कृ + क्त्वा	=	**कृत्वा** (करके)
2. दा + क्त्वा	=	**दत्त्वा** (देकर)
3. पा + क्त्वा	=	**पीत्वा** (पीकर)
4. गम् + क्त्वा	=	**गत्वा** (जाकर)
5. हस् + क्त्वा	=	**हसित्वा** (हँसकर)
6. जि + क्त्वा	=	**जित्वा** (जीतकर)
7. स्था + क्त्वा	=	**स्थित्वा** (ठहरकर)
8. श्रु + क्त्वा	=	**श्रुत्वा** (सुनकर)
9. ज्ञा + क्त्वा	=	**ज्ञात्वा** (जानकर)
10. पत् + क्त्वा	=	**पतित्वा** (गिरकर)
11. स्ना + क्त्वा	=	**स्नात्वा** (स्नानकर)
12. दृश् + क्त्वा	=	**दृष्ट्वा** (देखकर) Imp.
13. पठ् + क्त्वा	=	**पठित्वा** (पढ़कर)
14. लभ् + क्त्वा	=	**लब्ध्वा** (प्राप्तकर) Imp.
15. भू + क्त्वा	=	**भूत्वा** (होकर)
16. त्यज् + क्त्वा	=	**त्यक्त्वा** (त्यागकर)
17. कथ् + क्त्वा	=	**कथयित्वा** (कहकर)
18. क्री + क्त्वा	=	**क्रीत्वा** (खरीदकर)
19. खेल + क्त्वा	=	**खेलित्वा** (खेलकर)
20. नी + क्त्वा	=	**नीत्वा** (लेकर)
21. प्रच्छ् + क्त्वा	=	**पृष्ट्वा** (पूँछकर) Imp.
22. ग्रह् + क्त्वा	=	**गृहीत्वा** (लेना)

2. ल्यप् प्रत्यय

➢ जब धातु से पहले कोई उपसर्ग होता है तो 'क्त्वा' प्रत्यय के स्थान पर 'ल्यप्' आदेश हो जाता है।

➢ 'ल्यप्' में 'ल्' और 'प्' की इत्संज्ञा होकर लोप हो जाता है, केवल 'य' शेष बचता है। **''लशक्वतद्धिते''** सूत्र से 'ल्' की तथा **''हलन्त्यम्''** सूत्र से 'प्' की इत्संज्ञा।

➢ 'क्त्वा' और 'ल्यप्' प्रत्ययों से बनने वाले शब्द अव्यय होते हैं और दोनों प्रत्यय 'पूर्वकालिक कृदन्त' है।

➢ **समासेऽनञ्पूर्वे क्त्वो ल्यप्** (7.1.37) सूत्र से 'ल्यप्' प्रत्यय का विधान होता है।

➢ 'ल्यप्' प्रत्ययान्त पदों का भी वही अर्थ है जो 'क्त्वा' प्रत्यय का है। **जैसे-** अनुभूय (अनुभव करके), आगम्य (आकर), प्रणम्य (प्रणाम करके) आदि।

(i) छात्रः **आगत्य** पठति (छात्र आकर पढ़ता है)

(ii) मनुष्यः सर्वं **विस्मृत्य** सुखी भवति (मनुष्य सब कुछ भूलकर सुखी होता है)

उपसर्ग + धातु + प्रत्यय = प्रत्ययान्त रूप (अर्थसहित)

उपसर्ग + धातु + प्रत्यय		प्रत्ययान्त रूप (अर्थसहित)
1. अनु + भू + ल्यप्	=	**अनुभूय** (अनुभव करके)
2. आङ् + गम् + ल्यप्	=	**आगम्य/आगत्य** (आकर)
3. वि + नी + ल्यप्	=	**विनीय** (लेकर)
4. आङ् + प्रच्छ् + ल्यप्	=	**आपृच्छ्य** (पूँछकर)
5. प्र + कृ + ल्यप्	=	**प्रकृत्य** (करके)
6. प्र + आप् + ल्यप्	=	**प्राप्य** (प्राप्तकर)
7. वि + चि + ल्यप्	=	**विचित्य** (चुनकर)
8. वि + रम् + ल्यप्	=	**विरम्य/विरत्य** (रुककर)
9. प्र + नम् + ल्यप्	=	**प्रणत्य/प्रणम्य** (प्रणाम करके)
10. उत् + तृ + ल्यप्	=	**उत्तीर्य** (तैरकर, पारकर)
11. आ + दा + ल्यप्	=	**आदाय** (लेकर)
12. उप + गम् + ल्यप्	=	**उपगम्य** (समीप जाकर)
13. वि + हा + ल्यप्	=	**विहाय** (छोड़कर)
14. नि + पा + ल्यप्	=	**निपीय** (पानकर)
15. वि + स्मृ + ल्यप्	=	**विस्मृत्य** (भूलकर)
16. अव + तृ + ल्यप्	=	**अवतीर्य** (उतरकर)
17. सम् + श्रु + ल्यप्	=	**संश्रुत्य** (सुनकर)
18. आ + नी + ल्यप्	=	**आनीय** (लाकर)
19. प्र + स्था + ल्यप्	=	**प्रस्थाय** (चलकर)
20. उत् + लिख् + ल्यप्	=	**उल्लिख्य** (ऊपर लिखकर)
21. वि + ज्ञा + ल्यप्	=	**विज्ञाय** (अच्छी तरह से जानकर)
22. सम् + भू + ल्यप्	=	**सम्भूय** (मिलकर, इकट्ठा होकर)
23. प्र + पठ् + ल्यप्	=	**प्रपठ्य** (पढ़कर)
24. आङ् + पा + ल्यप्	=	**आपीय** (पूरी तरह से पीकर)
25. अनु + श्रु + ल्यप्	=	**अनुश्रूय** (सुन-सुनकर)
26. उप + कृ + ल्यप्	=	**उपकृत्य** (उपकार करके)
27. प्र + कुप् + ल्यप्	=	**प्रकुप्य** (अत्यधिक क्रोधित होकर)
28. अव + मुच् + ल्यप्	=	**अवमुच्य** (छोड़कर)
29. उप + भुज् + ल्यप्	=	**उपभुज्य** (खाकर)
30. सम् + दृश् + ल्यप्	=	**सन्दृश्य** (अच्छी तरह से देखकर)
31. उप + लभ् + ल्यप्	=	**उपलभ्य** (प्राप्त करके)

3. तुमुन् प्रत्यय

➢ **तुमुन्ण्वुलौ क्रियायां क्रियार्थायाम्** (3.3.10) इस सूत्र से 'तुमुन्' प्रत्यय का विधान किया जाता है।

➢ 'के लिए' यह अर्थ बताना हो तो धातुओं से 'तुमुन्' प्रत्यय लगाया जाता है। जैसे- **पठितुम्** (पढ़ने के लिए) **गन्तुम्** (जाने के लिए), **क्रेतुम्** (खरीदने के लिए) आदि।

➢ इसीलिए 'तुमुन्' प्रत्यय को **'हेतु कृदन्त'** कहते हैं अर्थात् धातु के अर्थ के साथ 'के लिए' जोड़ देने पर तुमुनन्त पदों का अर्थ निकल आता है। जैसे- 'पठ्' धातु का अर्थ है- पढ़ना। इसमें 'तुमुन्' जोड़ने से बनेगा- **पठितुम्**, जिसका अर्थ है- पढ़ने के लिए।

➢ 'तुमुन् ' प्रत्यय से बने शब्द अव्यय होते हैं, अतः इनके रूप नहीं चलते।

➢ कर्ता जिस कार्य के निमित्त कोई क्रिया करता है उसे निमित्तार्थक क्रिया कहते हैं, निमित्तार्थक क्रिया में ही 'तुमुन्' प्रत्यय लगाया जाता है।

जैसे- **बालकः पठितुं विद्यालयं गच्छति।** (बालक पढ़ने के लिए विद्यालय जाता है)

➢ यहाँ बालक रूपी कर्ता पढ़ने के निमित्त विद्यालय जाता है; अतः निमित्तार्थक क्रिया 'पठ्' में तुमुन् प्रत्यय लगकर 'पठितुम्' बना। बालक की गमन क्रिया पढ़ने के निमित्त हो रही है।

➢ 'तुमुन्' प्रत्यय में नकार की 'हलन्त्यम्' से और उकार की ''उपदेशेऽजनुनासिक इत्'' से इत्संज्ञा होकर लोप होने पर 'तुम्' शेष रहता है।

तुमुन् प्रत्ययान्त पदों की सूची

धातु + प्रत्यय	=	तुमुनन्त पद (अर्थ सहित)
1. भू + तुमुन्	=	**भवितुम्** (होने के लिए)
2. पा + तुमुन्	=	**पातुम्** (पीने के लिए)
3. पठ् + तुमुन्	=	**पठितुम्** (पढ़ने के लिए)
4. गम् + तुमुन्	=	**गन्तुम्** (जाने के लिए)
5. स्था + तुमुन्	=	**स्थातुम्** (बैठने के लिए)
6. दृश् + तुमुन्	=	**द्रष्टुम्** (देखने के लिए) Imp.
7. दा + तुमुन्	=	**दातुम्** (देने के लिए)
8. लभ् + तुमुन्	=	**लब्धुम्** (पाने के लिए) Imp.
9. ज्ञा + तुमुन्	=	**ज्ञातुम्** (जानने के लिए)
10. हन् + तुमुन्	=	**हन्तुम्** (मारने के लिए)
11. कृ + तुमुन्	=	**कर्तुम्** (करने के लिए) Imp.
12. जि + तुमुन्	=	**जेतुम्** (जीतने के लिए) Imp.
13. श्रु + तुमुन्	=	**श्रोतुम्** (सुनने के लिए)
14. प्रच्छ् + तुमुन्	=	**प्रष्टुम्** (पूँछने के लिए) Imp.
15. त्यज् + तुमुन्	=	**त्यक्तुम्** (छोड़ने के लिए)
16. स्ना + तुमुन्	=	**स्नातुम्** (नहाने के लिए)
17. गै (गा) + तुमुन्	=	**गातुम्** (गाने के लिए)
18. खाद् + तुमुन्	=	**खादितुम्** (खाने के लिए)
19. क्रीड् + तुमुन्	=	**क्रीडितुम्** (खेलने के लिए)

20. वन्द् + तुमुन् = **वन्दितुम्** (वन्दना करने के लिए)
21. भुज् + तुमुन् = **भोक्तुम्** (खाने के लिए)
22. शीङ् + तुमुन् = **शयितुम्** (सोने के लिए)
23. वच् + तुमुन् = **वक्तुम्** (बोलने के लिए)
24. ग्रह् + तुमुन् = **ग्रहीतुम्** (लेने के लिए)
25. अस् + तुमुन् = **भवितुम्** (होने के लिए)
26. क्षिप् + तुमुन् = **क्षेप्तुम्** (फेंकने के लिए)
27. क्री + तुमुन् = **क्रेतुम्** (खरीदने के लिए)
28. चि + तुमुन् = **चेतुम्** (चुनने के लिए)
29. कुप् + तुमुन् = **कोपितुम्** (क्रोध करने के लिए)
30. मुच् = तुमुन् = **मोक्तुम्** (छोड़ने के लिए)

4. यत् प्रत्यय

- **''अचो यत्''** (3.1.97) सूत्र से 'यत्' प्रत्यय का विधान किया जाता है। अर्थात् अच् (स्वर) वर्ण जिन धातुओं के अन्त में होते हैं, उनसे 'यत्' प्रत्यय होता है।
- 'चाहिए' या 'योग्य' अर्थ को बताने वाले 'यत्' प्रत्यय के 'त्' की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा होकर लोप होने पर केवल 'य' शेष बचता है।
- 'यत्' प्रत्यय जुड़ने के बाद धातु के स्वर को गुण हो जाता है।

	नपुंसकलिङ्ग	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
चि + यत्	= **चेयम्** (चयन करने योग्य)	**चेयः**	चेया
पा + यत्	= **पेयम्** (पीने योग्य)	**पेयः**	पेया
नी + यत्	= **नेयम्** (ले जाने योग्य)	**नेयः**	नेया
जि + यत्	= **जेयम्** (जीतने योग्य)	**जेयः**	जेया
श्रु + यत्	= **श्रव्यम्** (सुनने योग्य)	**श्रव्यः**	श्रव्या
दा + यत्	= **देयम्** (देने योग्य)	**देयः**	देया
गै + यत्	= **गेयम्** (गाने योग्य)	**गेयः**	गेया
भू + यत्	= **भव्यम्** (होने योग्य)	**भव्यः**	भव्या
भी + यत्	= **भेयम्** (डरने योग्य)	**भेयः**	भेया
लभ् + यत्	= **लभ्यम्** (प्राप्त करने योग्य)	**लभ्यः**	लभ्या
शक् + यत्	= **शक्यम्** (होने योग्य)	**शक्यः**	शक्या
हन् + यत्	= **वध्यम्** (वधयोग्य)	**वध्यः**	वध्या

- **पोरदुपधात् (3.1.98) -** इस सूत्र से पवर्ग अन्त में हो अथवा ह्स्व अकार उपधा में हो, ऐसी धातुओं से 'यत्' प्रत्यय होता है जैसे- लभ् + यत् = **लभ्यम्**
  शप् + यत् = **शप्यम्**

5. क्तिन् प्रत्यय

- **स्त्रियां क्तिन्** (3.3.94) सूत्र से भाव अर्थ में स्त्रीत्व की विवक्षा होने पर धातु से 'क्तिन्' प्रत्यय होता है।
- 'क्तिन्' में ककार और नकार की इत्संज्ञा होकर लोप हो जाता है केवल 'ति' शेष बचता है। ''लशक्वतद्धिते'' से 'क्' की तथा ''हलन्त्यम्'' से 'न्' की इत्संज्ञा होती है।
- 'क्तिन्' प्रत्यय से बने शब्द सदैव स्त्रीलिङ्ग में होंगे।

जैसे- कृतिः, गतिः, भूतिः, धृतिः आदि।

उदाहरण-

(1) कृ + क्तिन् = **कृतिः**
(2) नी + क्तिन् = **नीतिः**
(3) गम् + क्तिन् = **गतिः**
(4) धृ + क्तिन् = **धृतिः**
(5) भू + क्तिन् = **भूतिः**
(6) नम् + क्तिन् = **नतिः**
(7) स्तु + क्तिन् = **स्तुतिः**
(8) श्रु + क्तिन् = **श्रुतिः**
(9) स्मृ + क्तिन् = **स्मृतिः**
(10) दृश् + क्तिन् = **दृष्टिः**
(11) मन् + क्तिन् = **मतिः**
(12) भज् + क्तिन् = **भक्तिः**
(13) बुध् + क्तिन् = **बुद्धिः**
(14) मुच् + क्तिन् = **मुक्तिः**
(15) शम् + क्तिन् = **शान्तिः**
(16) गै + क्तिन् = **गीतिः**
(17) पुष् + क्तिन् = **पुष्टिः**

6. ल्युट् प्रत्यय

- **''नपुंसके भावे क्तः''** (3.3.114) **''ल्युट् च''** (3.3.115) सूत्र से भाववाचक अर्थ में नपुंसकत्व में 'ल्युट्' प्रत्यय लगता है।
- ल्युट् प्रत्यय से बने शब्द नपुंसकलिङ्ग में ही होते हैं।

जैसे- पठनम्, लेखनम्, दानम्, लेखनम् आदि।

- 'ल्युट्' प्रत्यय के 'ल्' और 'ट्' की इत्संज्ञा होकर लोप हो जाता है, 'यु' शेष रहता है। तथा 'यु' को ''युवोरनाकौ'' सूत्र से 'अन' आदेश हो जाता है।

उदाहरण-

1. लिख् + ल्युट् = **लेखनम्**
2. दा + ल्युट् = **दानम्**
3. अर्च् + ल्युट् = **अर्चनम्**
4. कथ् + ल्युट् = **कथनम्**
5. पठ् + ल्युट् = **पठनम्**
6. ज्ञा + ल्युट् = **ज्ञानम्**
7. कृ + ल्युट् = **करणम्**
8. नी + ल्युट् = **नयनम्**

9. ग्रह् + ल्युट् = **ग्रहणम्**
10. गम् + ल्युट् = **गमनम्**
11. भू + ल्युट् = **भवनम्**
12. दृश् + ल्युट् = **दर्शनम्**
13. हन् + ल्युट् = **हननम्**
14. अधि + इङ् + ल्युट् = **अध्ययनम्**
15. श्रु + ल्युट् = **श्रवणम्**
16. स्मृ + ल्युट् = **स्मरणम्**
17. हृ + ल्युट् = **हरणम्**
18. कथ् + ल्युट् = **कथनम्**
19. शीङ् + ल्युट् = **शयनम्**
20. चि + ल्युट् = **चयनम्**
21. यच् + ल्युट् = **याचनम्**

7. तव्यत् और अनीयर् प्रत्यय

- ''**तव्यत्तव्यानीयरः**'' (3.1.96) सूत्र से धातु के बाद तव्यत् और अनीयर् प्रत्यय होते हैं।
- तव्यत् के त् का लोप होकर 'तव्य' एवं 'अनीयर्' प्रत्यय के 'र्' का लोप होकर 'अनीय' शेष बचता है।
- तव्यत् और अनीयर् प्रत्ययों का प्रयोग 'चाहिए' या 'योग्यता' अर्थ में होता है।

जैसे-पठितव्यम् (पढ़ना चाहिए)
पठनीयम् (पढ़ना चाहिए)

- इन प्रत्ययों का प्रयोग कर्मवाच्य और भाववाच्य में होता है; कर्तृवाच्य में नहीं।

जैसे- मया पठनीयम्।
मया पठितव्यम्।

'अनीयर्' प्रत्यय के उदाहरण

	धातु प्रत्यय		नपुंसकलिङ्ग		पुंलिङ्ग		स्त्रीलिङ्ग
1.	कथ् + अनीयर्	=	कथनीयम्	-	कथनीयः	-	कथनीया
2.	भू + अनीयर्	=	भवनीयम्	-	भवनीयः	-	भवनीया
3.	दृश् + अनीयर्	=	दर्शनीयम्	-	दर्शनीयः	-	दर्शनीया
4.	पठ् + अनीयर्	=	पठनीयम्	-	पठनीयः	-	पठनीया
5.	पा + अनीयर्	=	पानीयम्	-	पानीयः	-	पानीया
6.	कृ + अनीयर्	=	करणीयम्	-	करणीयः	-	करणीया
7.	गम् + अनीयर्	=	गमनीयम्	-	गमनीयः	-	गमनीया
8.	रम् + अनीयर्	=	रमणीयम्	-	रमणीयः	-	रमणीया
9.	हस् + अनीयर्	=	हसनीयम्	-	हसनीयः	-	हसनीया
10.	घ्रा + अनीयर्	=	घ्राणीयम्	-	घ्राणीयः	-	घ्राणीया
11.	स्था + अनीयर्	=	स्थानीयम्	-	स्थानीयः	-	स्थानीया
12.	वच् + अनीयर्	=	वचनीयम्	-	वचनीयः	-	वचनीया
13.	लिख् + अनीयर्	=	लेखनीयम्	-	लेखनीयः	-	लेखनीया
14.	श्रु + अनीयर्	=	श्रवणीयम्	-	श्रवणीयः	-	श्रवणीया
15	दा + अनीयर्	=	दानीयम्	-	दानीयः	-	दानीया

तव्यत् प्रत्यय के उदाहरण

	धातु प्रत्यय		नपुंसकलिङ्ग		पुंलिङ्ग		स्त्रीलिङ्ग
1.	कृ + तव्यत्	=	कर्तव्यम्	-	कर्तव्यः	-	कर्तव्या
2.	गम् + तव्यत्	=	गन्तव्यम्	-	गन्तव्यः	-	गन्तव्या
3.	पच् + तव्यत्	=	पक्तव्यम्	-	पक्तव्यः	-	पक्तव्या
4.	दृश् + तव्यत्	=	द्रष्टव्यम्	-	द्रष्टव्यः	-	द्रष्टव्या
5.	प्रच्छ् + तव्यत्	=	प्रष्टव्यम्	-	प्रष्टव्यः	-	प्रष्टव्या
6.	भू + तव्यत्	=	भवितव्यम्	-	भवितव्यः	-	भवितव्या

	धातु प्रत्यय		नपुंसकलिङ्ग		पुंलिङ्ग		स्त्रीलिङ्ग
7.	स्था + तव्यत्	=	स्थातव्यम्	-	स्थातव्यः	-	स्थातव्या
8.	रुद् + तव्यत्	=	रोदितव्यम्	-	रोदितव्यः	-	रोदितव्या
9.	नृत् + तव्यत्	=	नर्तितव्यम्	-	नर्तितव्यः	-	नर्तितव्या
10.	पठ् + तव्यत्	=	पठितव्यम्	-	पठितव्यः	-	पठितव्या
11.	लिख् + तव्यत्	=	लेखितव्यम्	-	लेखितव्यः	-	लेखितव्या
12.	स्मृ + तव्यत्	=	स्मर्तव्यम्	-	स्मर्तव्यः	-	स्मर्तव्या
13.	श्रु + तव्यत्	=	श्रोतव्यम्	-	श्रोतव्यः	-	श्रोतव्या
14.	जि + तव्यत्	=	जेतव्यम्	-	जेतव्यः	-	जेतव्या
15.	दा + तव्यत्	=	दातव्यम्	-	दातव्यः	-	दातव्या
16.	पा + तव्यत्	=	पातव्यम्	-	पातव्यः	-	पातव्या
17.	ज्ञा + तव्यत्	=	ज्ञातव्यम्	-	ज्ञातव्यः	-	ज्ञातव्या

8. क्त और क्तवतु प्रत्यय

- क्तक्तवतू निष्ठा (1.1.26)- क्त और क्तवतु प्रत्यय निष्ठासंज्ञक होते हैं।
- निष्ठा (3.2.102)- सूत्र से क्त और क्तवतु प्रत्यय भूतकाल अर्थ में सभी धातुओं से लगाये जाते हैं।
- 'क्त' प्रत्यय में 'क्' की इत्संज्ञा होकर लोप हो जाता है केवल 'त' शेष बचता है। यह प्रत्यय भाववाच्य एवं कर्मवाच्य में प्रयुक्त होता है।
- क्त और क्तवतु प्रत्ययों से बने पदों का रूप तीनों लिङ्गों में होता है-

जैसे- **पठितः** (पुं.) **पठिता** (स्त्री.) **पठितम्** (नपु.) - क्त प्रत्ययान्तपद

पठितवान् (पु.) **पठितवती** (स्त्री.) **पठितवत्** (नपुं.) - क्तवतु प्रत्ययान्तपद

'क्त' प्रत्ययान्त पदों की सूची

	धातु प्रत्यय		पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
1.	गम् + क्त	=	गतः	गता	गतम्
2.	कृ + क्त	=	कृतः	कृता	कृतम्
3.	पठ् + क्त	=	पठितः	पठिता	पठितम्
4.	प्रच्छ् + क्त	=	पृष्टः	पृष्टा	पृष्टम्
5.	लिख् + क्त	=	लिखितः	लिखिता	लिखितम्
6.	कथ् + क्त	=	कथितः	कथिता	कथितम्
7.	कम्प् + क्त	=	कम्पितः	कम्पिता	कम्पितम्
8.	चिन्त् + क्त	=	चिन्तितः	चिन्तिता	चिन्तितम्
9.	जि + क्त	=	जितः	जिता	जितम्
10.	पूज् + क्त	=	पूजितः	पूजिता	पूजितम्
11.	विद् + क्त	=	विदितः	विदिता	विदितम्
12.	नश् + क्त	=	नष्टः	नष्टा	नष्टम्
13.	शक् + क्त	=	शक्तः	शक्ता	शक्तम्
14.	शिक्ष् + क्त	=	शिक्षितः	शिक्षिता	शिक्षितम्
15.	भू + क्त	=	भूतः	भूता	भूतम्

धातु प्रत्यय		पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
16. शोभ् + क्त	=	शोभितः	शोभिता	शोभितम्
17. प्रविश् + क्त	=	प्रविष्टः	प्रविष्टा	प्रविष्टम्
18. भाष् + क्त	=	भाषितः	भाषिता	भाषितम्
19. मिल् + क्त	=	मिलितः	मिलिता	मिलितम्
20. पा + क्त	=	पीतः	पीता	पीतम्
21. अधि + इङ् + क्त	=	अधीतः	अधीता	अधीतम्
21. आङ् + हु + क्त	=	आहूतः	आहूता	आहूतम्
22. ज्वल् + क्त	=	ज्वलितः	ज्वलिता	ज्वलितम्
23. जीव् + क्त	=	जीवितः	जीविता	जीवितम्
24. रुच् + क्त	=	रुचितः	रुचिता	रुचितम्

क्तवतु प्रत्ययान्त पदों की सूची

धातु प्रत्यय		पुँल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
1. कृ + क्तवतु	=	कृतवान्	कृतवती	कृतवत्
2. गम् + (जाना)	=	गतवान्	गतवती	गतवत्
3. श्रु (सुनना)	=	श्रुतवान्	श्रुतवती	श्रुतवत्
4. पूज् (पूजा करना)	=	पूजितवान्	पूजितवती	पूजितवत्
5. लिख् (लिखना)	=	लिखितवान्	लिखितवती	लिखितवत्
6. ज्ञा (जानना)	=	ज्ञातवान्	ज्ञातवती	ज्ञातवत्
7. अर्च् (पूजा करना)	=	अर्चितवान्	अर्चितवती	अर्चितवत्
8. आ दिश् (आज्ञा देना)	=	आदिष्टवान्	आदिष्टवती	आदिष्टवत्
9. आप् (प्राप्त करना)	=	आप्तवान्	आप्तवती	आप्तवत्
10. आ + रुह् (चढ़ना)	=	आरूढवान्	आरूढवती	आरूढवत्
11. उप् + विश् (बैठना)	=	उपविष्टवान्	उपविष्टवती	उपविष्टवत्
12. कथ् (कहना)	=	कथितवान्	कथितवती	कथितवत्
13. क्री (खरीदना)	=	क्रीतवान्	क्रीतवती	क्रीतवत्
14. पत् (गिरना)	=	पतितवान्	पतितवती	पतितवत्
15. त्यज् (त्यागना)	=	त्यक्तवान्	त्यक्तवती	त्यक्तवत्
16. लभ् (प्राप्त करना)	=	लब्धवान्	लब्धवती	लब्धवत्
17. सृज् (सृष्टि करना)	=	सृष्टवान्	सृष्टवती	सृष्टवत्
18. ग्रह् (ग्रहण करना)	=	गृहीतवान्	गृहीतवती	गृहीतवत्
19. पा (पीना)	=	पीतवान्	पीतवती	पीतवत्
20. भू (होना)	=	भूतवान्	भूतवती	भूतवत्
21. स्ना (स्नान करना)	=	स्नातवान्	स्नातवती	स्नातवत्

9. णमुल् प्रत्यय

- **''आभीक्ष्ण्ये णमुल् च''** (3.4.22) सूत्र से समान कर्ता वाले दो धातुओं से पूर्वकालिक धातु से 'णमुल्' प्रत्यय होता है; बार-बार होना अर्थ द्योतित होने पर।
- यदि किसी क्रिया का बार-बार लगातार (आभीक्ष्ण्य) अर्थ में प्रयोग करना होता है तो वहाँ 'णमुल्' प्रत्यय जोड़ा जाता है। 'णमुल्' में 'अम्' शेष रहता है।
- णमुल् प्रत्यय से बने शब्द अव्यय होते हैं, इनके रूप नहीं चलते।

'णमुल्' प्रत्ययान्त पदों की सूची

(1) तड् + णमुल् = ताडं ताडम् (मार मारकर)
(2) दा + णमुल् = दायं दायम् (दे-देकर)
(3) पा + णमुल् = पायं पायम् (पी-पीकर)
(4) गम् + णमुल् = गामं गामम् (जा-जाकर)
(5) वृ + णमुल् = वारं वारम् (बार-बार)
(6) छिद् + णमुल् = छेदं छेदम् (छेद-छेदकर)
(7) नम् + णमुल् = नामं नामम् (झुक-झुककर)
(8) पठ् + णमुल् = पाठं पाठम् (पढ़-पढ़कर)
(9) रुद् + णमुल् = रोदं रोदम् (रो-रोकर)
(10) भिद् + णमुल् = भेदं भेदम् (फोड़-फोड़कर)
(11) पच् + णमुल् = पाचं पाचम् (पका पकाकर)
(12) दृश् + णमुल् = दर्शं दर्शम् (बार बार देखकर)
(13) नश् + णमुल् = नाशं नाशम् (नष्ट कर करके)
(14) लभ् + णमुल् = लाभं लाभम् (बार बार प्राप्त करके)
(15) ग्रह् + णमुल् = ग्राहं ग्राहम् (बार बार पकडकर)

10. शतृ प्रत्यय और शानच् प्रत्यय

- **लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे (3.2.124)** सूत्र से शतृ और शानच् प्रत्ययों का विधान होता है।
- शतृ और शानच् - दोनों प्रत्यय वर्तमानकालिक कृदन्त के अन्तर्गत गिने जाते हैं।
- **''तौ सत्''** सूत्र से शतृ और शानच् - दोनों प्रत्ययों की 'सत् संज्ञा' होती है।
- 'लगातार कार्य का होना' इस अर्थ को बताने के लिए इन दोनों प्रत्ययों का प्रयोग होता है।
- शतृ प्रत्यय में 'अत्' और 'शानच्' में 'आन' शेष बचता है।
- परस्मैपदी धातुओं से 'शतृ' एवं आत्मनेपदी धातुओं से 'शानच्' प्रत्यय का विधान किया जाता है। किन्तु उभयपदी धातुओं से दोनों प्रत्यय होते हैं।
- 'शतृ' और 'शानच्' प्रत्ययान्त शब्दों के रूप तीनों लिङ्गों और सातों विभक्तियों में चलते हैं-

(i) पठ् + शतृ = **पठन्** (पुं.), **पठन्ती** (स्त्री.), **पठत्** (नपु.)
(ii) कम्प् + शानच् = **कम्पमानः** (पु.), **कम्पमाना** (स्त्री.), **कम्पमानम्** (नपु.)

- ये प्रत्यय कर्ता के विशेषण के रूप में प्रयुक्त होते हैं।

जैसे- **पठन् बालकः गच्छति।** (पढ़ता हुआ बालक जाता है)
भाषमाणः शिक्षकः लिखति। (बोलता हुआ शिक्षक लिखता है)

शतृ प्रत्ययान्त शब्दों की सूची

	धातु (अर्थ सहित)	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
1.	पठ् (पढ़ना)	पठन्	पठन्ती	पठत्
2.	लिख् (लिखना)	लिखन्	लिखन्ती	लिखत्
3.	क्रीड् (खेलना)	क्रीडन्	क्रीडन्ती	क्रीडत्
4.	कृ (करना)	कुर्वन्	कुर्वती	कुर्वत्
5.	धाव् (दौड़ना)	धावन्	धावन्ती	धावत्
6.	श्रु (सुनना)	शृण्वन्	शृण्वती	शृण्वत्
7.	आप् (पाना)	आप्नुवन्	आप्नुवती	आप्नुवत्
8.	गम् (जाना)	गच्छन्	गच्छन्ती	गच्छत्
9.	गर्ज् (गरजना)	गर्जन्	गर्जन्ती	गर्जत्
10.	दृश् (देखना)	पश्यन्	पश्यन्ती	पश्यत्
11.	कथ् (कहना)	कथयन्	कथयन्ती	कथयत्

12.	अर्च् (पूजना)	अर्चन्	अर्चन्ती	अर्चत्
13.	क्री (खरीदना)	क्रीणन्	क्रीणती	क्रीणत्
14.	गै (गाना)	गायन्	गायन्ती	गायत्
15.	छिद् (काटना)	छिन्दन्	छिन्दन्ती	छिन्दत्
16.	शक् (सकना)	शक्नुवन्	शक्नुवन्ती	शक्नुवत्
17.	स्वप् (सोना)	स्वपन्	स्वपन्ती	स्वपत्
18.	स्मृ (स्मरण करना)	स्मरन्	स्मरन्ती	स्मरत्
19.	हृ (हरण करना)	हरन्	हरन्ती	हरत्
20.	हस् (हँसना)	हसन्	हसन्ती	हसत्
21.	अस् (होना)	सन्	सती	सत्
22.	खाद् (खाना)	खादन्	खादन्ती	खादत्
23.	चल् (चलना)	चलन्	चलन्ती	चलत्
24.	ज्ञा (जानना)	जानन्	जानती	जानत्
25.	भू (होना)	भवन्	भवन्ती	भवत्
26.	कथ् (कहना)	कथयन्	कथयन्ती	कथयत्

शानच् प्रत्ययान्त पदों की सूची

	धातु (अर्थ सहित)	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
1.	भाष्	भाषमाणः	भाषमाणा	भाषमाणम्
2.	एध्	एधमानः	एधमाना	एधमानम्
3.	कृ	कुर्वाणः	कुर्वाणा	कुर्वाणम्
4.	यज्	यजमानः	यजमाना	यजमानम्
5.	लभ्	लभमानः	लभमाना	लभमानम्
6.	याच्	याचमानः	याचमाना	याचमानम्
7.	नी	नयमानः	नयमाना	नयमानम्
8.	वृध्	वर्धमानः	वर्धमाना	वर्धमानम्
9.	वृत् (होना)	वर्तमानः	वर्तमाना	वर्तमानम्
10.	शी (सोना)	शयानः	शयाना	शयानम्
11.	कम्प् (काँपना)	कम्पमानः	कम्पमाना	कम्पमानम्
12.	आस् (बैठना)	आसीनः	आसीना	आसीनम्
13.	जन् (पैदा होना)	जायमानः	जायमाना	जायमानम्
14.	त्वर् (जल्दी करना)	त्वरमाणः	त्वरमाणा	त्वरमाणम्
15.	सेव् (सेवा करना)	सेवमानः	सेवमाना	सेवमानम्
16.	सह् (सहन करना)	सहमानः	सहमाना	सहमानम्
17.	कथ् (कहना)	कथयमाणः	कथयमाणा	कथयमाणम्

तद्धितप्रत्यय

तद्धितप्रत्यय- संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण एवम् अव्ययपदों से जोड़े जाने वाले प्रत्यय तद्धित प्रत्यय हैं। तद्धितप्रत्यय के योग से बने शब्द '**तद्धितान्त**' कहे जाते हैं।

1. मतुप् प्रत्यय

(i) तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप् (5.2.94) सूत्र से 'वह इसका है' 'वह इसमें है' - इन अर्थों में 'मतुप्' प्रत्यय होता है।

(ii) 'मतुँप्' के पकार एवं उकार का योग होकर 'मत्' शेष बचता है।

(iii) 'मतुँप्' प्रत्ययान्त पद विशेषण होते हैं अतः विशेष्य के अनुसार इनका लिङ्ग, वचन और विभक्ति निर्धारित होती है।

मतुप् प्रत्ययान्त पदों की सूची

1. गो + मतुप् = **गोमत् (गोमान्)** गौ वाला
2. मति + मतुप् = **मतिमत् (मतिमान्)** बुद्धि वाला
3. श्री + मतुप् = **श्रीमत् (श्रीमान्)** श्री से युक्त
4. धी + मतुप् = **धीमत् (धीमान्)** बुद्धि वाला
5. आयुस् + मतुप् = **आयुष्मत् (आयुष्मान्)** दीर्घायु

(1) मतुप् (मत्) का 'म' बदलकर 'व' हो जाता है, यदि अकारान्त या आकारान्त हो; जैसे-

(i) बल + मतुप् = **बलवत्** (बलवान्)
(ii) विद्या + मतुप् = **विद्यावत्** (विद्यावान्)
(iii) धन + मतुप् = **धनवत्** (धनवान्)
(iv) दया + मतुप् = **दयावत्** (दयावान्)
(v) गुण + मतुप् = **गुणवत्** (गुणवान्)
(vi) भग + मतुप् = **भगवत्** (भगवान्)

(2) ऐसा शब्द, जिसके अन्तिम स्वर के पहले 'म्' हो-
लक्ष्मी + मतुप् = लक्ष्मीवान्

(3) ऐसा शब्द, जिसके अन्तिम व्यञ्जन के पहले 'अ' या 'आ' हो। जैसे-
यशस् + मतुप् = **यशस्वत्** (यशस्वान्)
भास् + मतुप् = **भास्वत्** (भास्वान्)

(4) जिस शब्द के अन्त में वर्गों के प्रथम चार वर्णों में से कोई हो। जैसे-
विद्युत् + मतुप् = **विद्युत्वत्** (विद्युत्वान्)
सुहृद् + मतुप् = **सुहृद्वत्** (सुहृद्वान्)

मतुप् प्रत्ययान्त पदों की सूची

शब्द + प्रत्यय	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
1. धन् + मतुप् =	धनवान्	धनवती	धनवत्
2. रूप + मतुप् =	रूपवान्	रूपवती	रूपवत्
3. बल + मतुप् =	बलवान्	बलवती	बलवत्
4. गुण + मतुप् =	गुणवान्	गुणवती	गुणवत्
5. रस + मतुप् =	रसवान्	रसवती	रसवत्
6. धी + मतुप् =	धीमान्	धीमती	धीमत्
7. श्री + मतुप् =	श्रीमान्	श्रीमती	श्रीमत्

2. इनि प्रत्यय

(1) **अत इनिठनौ (5.2.115)** अर्थात् अकारान्त शब्दों से 'इनि' और 'ठन्' प्रत्यय होते हैं।

(2) 'इनि' प्रत्यय के अन्त में विद्यमान 'इ' का लोप हो जाता है अतः केवल 'इन्' शेष बचता है।

(3) यह प्रत्यय भी 'वाला' अर्थ में प्रयुक्त होता है। जैसे-
धन + इनि = धनिन् (धनी) = धन वाला।

इनि (इन्) प्रत्ययान्त पदों की सूची

1.	चक्र + इनि	=	चक्रिन् /चक्री
2.	धन + इनि	=	धनिन् / धनी
3.	बल + इनि	=	बलिन् / बली
4.	दुःख + इनि	=	दुःखिन् / दुःखी
5.	गुण + इनि	=	गुणिन् / गुणी
6.	कर + इनि	=	करिन् / करी
7.	हस्त + इनि	=	हस्तिन् / हस्ती
8.	दण्ड + इनि	=	दण्डिन् / दण्डी
9.	शिखा + इनि	=	शिखिन् / शिखी
10.	सुख + इनि	=	सुखिन् / सुखी
11.	कर्म + इनि	=	कर्मिन् / कर्मी
12.	प्रणय + इनि	=	प्रणयिन् / प्रणयी
13.	माला + इनि	=	मालिन् / माली
14.	दोष + इनि	=	दोषिन् / दोषी
15.	ज्ञान + इनि	=	ज्ञानिन् / ज्ञानी
16.	दान + इनि	=	दानिन् / दानी
17.	माया + इनि	=	मायिन् / मायी

3. त्व और तल् प्रत्यय

(1) "तस्य भावस्त्वतलौ" (5.1.119) सूत्र से किसी शब्द को भाववाचक संज्ञा बनाने के लिए उस शब्द में 'त्व' अथवा 'तल्' (ता) प्रत्यय जोड़ देते हैं।

(2) 'त्व' से अन्त होने वाले शब्द सदा नपुंसकलिङ्ग में होते हैं और 'तल्' से अन्त होने वाले शब्द स्त्रीलिङ्ग में होते हैं।

(3) 'ग्रामजनबन्धुभ्यस्तल्' (4.2.43) सूत्र से तल् प्रत्यय होता है। जैसे- ग्रामता, बन्धुता, जनता आदि।

(4) गजता, सहायता आदि में भी तल् प्रत्यय है।

'त्व' और तल् प्रत्ययान्त पदों की सूची

	शब्द	'त्व' प्रत्ययान्त पद	'तल्' प्रत्ययान्त पद
1.	कुशल	कुशलत्वम्	कुशलता
2.	गुरु	गुरुत्वम्	गुरुता
3.	मित्र	मित्रत्वम्	मित्रता
4.	देव	देवत्वम्	देवता
5.	सुन्दर	सुन्दरत्वम्	सुन्दरता
6.	मनुष्य	मनुष्यत्वम्	मनुष्यता
7.	शिशु	शिशुत्वम्	शिशुता
8.	पशु	पशुत्वम्	पशुता
9.	मूर्ख	मूर्खत्वम्	मूर्खता
10.	दुर्जन	दुर्जनत्वम्	दुर्जनता
11.	महत्	महत्त्वम्	महत्ता

4. ठक् प्रत्यय

(1) 'ठक्' प्रत्यय का प्रयोग भाववाचक संज्ञा बनाने के लिए होता है। शब्द के साथ जुड़ने पर 'ठक्' के 'ठ्' के स्थान पर 'इक' आदेश होता है।

(2) शब्द के प्रथम स्वर में वृद्धि हो जाती है; जैसे- 'अ' को 'आ', 'इ' को 'ऐ', 'उ' को 'औ' हो जाता है। अर्थात् आदि अच् की वृद्धि होती है।

ठक् (इक) प्रत्ययान्त पदों की सूची

1. धर्म + ठक् (इक) = धार्मिकः
2. अस्ति + ठक् (इक) = आस्तिकः
3. सप्ताह + ठक् (इक) = साप्ताहिकः
4. संस्कृति + ठक् (इक) = सांस्कृतिकः
5. अश्व + ठक् (इक) = आश्विकः
6. साहित्य + ठक् (इक) = साहित्यिकः
7. लोक + ठक् (इक) = लौकिकः
8. दिन + ठक् (इक) = दैनिकः

स्त्रीप्रत्यय

पुंलिङ्ग शब्दों को स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए जिन प्रत्ययों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें **'स्त्रीप्रत्यय'** कहा जाता है।
जैसे- टाप्, चाप्, डाप्, ङीप्, ङीष्, ङीन्, ऊङ्, ति आदि।

(1) टाप् प्रत्यय

(i) अजाद्यतष्टाप् (4.1.4) सूत्र से अजादिगण में गिने गये शब्दों को और अकारान्त पुंलिङ्ग शब्दों को स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए 'टाप्' प्रत्यय लगाया जाता है।

(ii) 'टाप्' प्रत्यय के 'ट्' और 'प्' का लोप होकर केवल 'आ' बचता है। अतः 'टाप्' प्रत्ययान्त शब्द आकारान्त स्त्रीलिङ्ग कहलाते हैं।

(iii) 'टाप्' प्रत्यय से बने शब्दों के रूप 'रमा' की भाँति चलते हैं। जैसे-

अज + टाप् = **अजा**
चटक + टाप् = **चटका**
सुत + टाप् = **सुता**
शूद्र + टाप् = **शूद्रा**
कनिष्ठ + टाप् = **कनिष्ठा**
प्रथम + टाप् = **प्रथमा**
बाल + टाप् = **बाला**
अश्व + टाप् = **अश्वा**
क्षत्रिय + टाप् = **क्षत्रिया**
अनुकूल + टाप् = **अनुकूला**
सुनयन + टाप् = **सुनयना**
अचल + टाप् = **अचला**
कुशल + टाप् = **कुशला**

नोट- 'टाप्' प्रत्यय जोड़ते समय यदि शब्द के अन्त में 'क' हो, और 'क' से पूर्व 'अ' हो तो.....'अ' के स्थान पर 'इ' हो जाता है। जैसे-

कारक + टाप् = **कारिका**
नाटक + टाप् = **नाटिका**
बालक + टाप् = **बालिका**
अध्यापक + टाप् = **अध्यापिका**
गायक + टाप् = **गायिका**

(2) ङीष् प्रत्यय

(i) **'षिद्गौरादिभ्यश्च' (4.1.41)** सूत्र से 'ङीष्' प्रत्यय का विधान किया जाता है।

(ii) जिन प्रत्ययों में 'षकार' का लोप हुआ हो, ऐसे प्रत्ययों से बने हुए शब्दों से तथा गौरादिगण के शब्दों से स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए 'ङीष्' प्रत्यय का प्रयोग होता है।

(iii) 'ङीष्' में 'ङ्' की और 'ष्' की इत्संज्ञा होकर लोप हो जाता है, केवल 'ई' शेष बचता है। इसीलिए ङीष् प्रत्ययान्त पद ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग पद कहलाते हैं।

(iv) ङीष् प्रत्ययान्त पदों का रूप 'नदी' की तरह चलता है।

जैसे-

नर्तक + ङीष् = **नर्तकी**

गौर + ङीष् = **गौरी**

नट + ङीष् = **नटी**

मातामह + ङीष् = **मातामही**

चन्द्रमुख + ङीष् = **चन्द्रमुखी**

मनुष्य + ङीष् = **मनुषी**

शिखण्ड + ङीष् = **शिखण्डी**

तट + ङीष् = **तटी**

शूद्र + ङीष् = **शूद्री**

(3) ङीप् प्रत्यय

(i) 'ङीप्' प्रत्यय के 'ङ्' और 'प्' का लोप होकर 'ई' शेष बचता है।

(ii) ङीप् प्रत्ययान्त पद ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग कहलाते हैं, इनका रूप भी 'नदी' की तरह चलता है।

(iii) ''टिड्ढाणञ् ....'' ''वयसि प्रथमे'' ''द्विगोः'' आदि सूत्रों से 'ङीप्' प्रत्यय का विधान होता है।

जैसे-

नद + ङीप् = **नदी**

देव + ङीप् = **देवी**

तरुण + ङीप् = **तरुणी**

गार्ग्य + ङीप् = **गार्गी**

कुमार + ङीप् = **कुमारी**

किशोर + ङीप् = **किशोरी**

त्रिलोक + ङीप् = **त्रिलोकी**

अष्टाध्याय + ङीप् = **अष्टाध्यायी**

पञ्चवट + ङीप् = **पञ्चवटी**

त्रिपाद + ङीप् = **त्रिपादी**

(4) ङीन् प्रत्यय

(i) 'ङीन्' प्रत्यय का भी 'ङ्' और 'न्' का लोप होकर 'ई' शेष बचता है।

(ii) इस प्रत्यय से बने रूप भी ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग होते हैं, अतः इनका रूप भी 'नदी' की तरह चलेगा।

(iii) **''शार्ङ्गरवाद्यञो ङीन्''** एवं **''नृनरयोर्वृद्धिश्च''** से 'ङीन्' प्रत्यय का विधान होता है।

जैसे-

ब्राह्मण + ङीन् = **ब्राह्मणी**

शार्ङ्गरव + ङीन् = **शार्ङ्गरवी**

नृ + ङीन् = **नारी**

नर + ङीन् = **नारी**

❑❑

वाच्य

➢ वाक्य के कहने की विधि को संस्कृत में वाच्य कहते हैं। वाच्य तीन प्रकार के होते हैं-

1. कर्तृवाच्य 2. कर्मवाच्य 3. भाववाच्य

1. कर्तृवाच्य- जिस वाक्य में कर्ता प्रधान हो उसे कर्तृवाच्य कहते हैं।

कर्तृवाच्य के वाक्यों में-

(i) कर्ता में प्रथमा विभक्ति होती है

(ii) कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है

(iii) क्रिया का पुरुष तथा वचन कर्ता के अनुसार होता है।

जैसे-

	कर्ता	**कर्म**	**क्रिया।**
(i)	सीता	गृहं	गच्छति।
(ii)	अहं	रामायणं	पठामि।

उपर्युक्त दोनों वाक्यों के कर्ता में प्रथमाविभक्ति, कर्म में द्वितीया विभक्ति तथा क्रिया कर्ता के अनुसार प्रयुक्त है।

2. कर्मवाच्य- कर्मवाच्य के वाक्यों में कर्म की प्रधानता होती है, अतः-

(i) कर्म में प्रथमा विभक्ति होती है।

(ii) कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है।

(iii) क्रिया का पुरुष तथा वचन कर्म के अनुसार होता है।

	कर्ता	**कर्म**	**क्रिया**
जैसे-	बालकेन	पुस्तकं	पठ्यते।
	त्वया	विद्यालयः	गम्यते।
	मया	पत्रं	लिख्यते।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वाक्यों के कर्ता में तृतीया विभक्ति, कर्म में प्रथमा विभक्ति तथा क्रिया कर्म के अनुसार प्रयुक्त है।

अतः सभी वाक्य कर्मवाच्य के उदाहरण हैं।

3. भाववाच्य- 'भाव' का अर्थ है- क्रिया। जिस वाक्य में भाव (क्रिया) की प्रधानता होती है, उसे भाववाच्य कहते हैं।

भाववाच्य में -

(i) कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है।

(ii) क्रिया हमेशा प्रथमपुरुष एकवचन की प्रयुक्त होगी।

(iii) अकर्मक (कर्म रहित) धातुओं से ही भाववाच्य होगा।

(iv) भाववाच्य में कर्म का अभाव होता है।

जैसे-

	कर्ता	**क्रिया**
(i)	मया	हस्यते।
(ii)	त्वया	स्थीयते।
(iii)	ईश्वरेण	भूयते।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त उदाहरणों में कर्ता में तृतीया विभक्ति तथा अकर्मक क्रिया प्रथमपुरुष एकवचन की प्रयुक्त है। कर्म पद का अभाव है।

वाच्य के सन्दर्भ में कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य

➢ वाक्य में जो प्रधान होता है, उसमें प्रथमा विभक्ति आती है कर्तृवाच्य के वाक्यों में कर्ता प्रधान होता है, अतः इसके कर्ता में प्रथमा विभक्ति आती है। इसीप्रकार कर्मवाच्य के वाक्यों में कर्मप्रधान होता है, अतः इसके कर्म में प्रथमा विभक्ति आती है।

➢ सकर्मक (कर्म सहित) धातुओं के रूप दो वाच्यों में होते हैं- (i) कर्तृवाच्य और (ii) कर्मवाच्य

➢ अकर्मक (कर्म रहित) धातुओं के रूप भी दो वाच्यों में होते हैं- (i) कर्तृवाच्य (ii) भाववाच्य

➢ सकर्मक एवं अकर्मक दोनों प्रकार की धातुओं से- कर्तृवाच्य
सकर्मक धातुओं से - कर्मवाच्य
अकर्मक धातुओं से - भाववाच्य

➢ कर्मवाच्य और भाववाच्य में सार्वधातुक लकारों (लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ्) में धातु और प्रत्यय के बीच 'यक्' लग जाता है। 'यक्' का 'य' शेष रहता है। धातु का रूप सदा आत्मनेपद में ही चलता है।

जैसे- पठ्यते, लिख्यते, हस्यते, नीयते, पीयते आदि।

कर्ता पदों की सूची

कर्तृवाच्य कर्ता	कर्मवाच्य कर्ता/भाववाच्य कर्ता
भवान्	भवता
भवती	भवत्या
त्वम्	त्वया
अहम्	मया
सः	तेन
सा	तया
कः	केन
का	कया

कर्तृवाच्य कर्ता	कर्मवाच्य कर्ता/भाववाच्य कर्ता
एषः	एतेन
एषा	एतया
यः	येन
या	यया
सर्वः	सर्वेण
सर्वा	सर्वया
अयम्	अनेन
इयम्	अनया
रामः	रामेण
बालकः	बालकेन
हरिः	हरिणा
मुनिः	मुनिना
पिता	पित्रा
माता	मात्रा
रमा	रमया
लता	लतया
नदी	नद्या
लक्ष्मीः	लक्ष्म्या
गुरुः	गुरुणा
साधुः	साधुना
मतिः	मत्या
युवतिः	युवत्या
मित्रम्	मित्रेण
फलम्	फलेन
वारि	वारिणा

कर्मवाच्य/भाववाच्य के अनुसार प्रमुख धातुरूप

भू धातु (अकर्मक, अनिट्, परस्मैपद)

1. लट् लकार

भूयते	भूयेते	भूयन्ते
भूयसे	भूयेथे	भूयध्वे
भूये	भूयावहे	भूयामहे

2. विधिलिङ् लकार

भूयेत	भूयेयाताम्	भूयेरन्
भूयेथाः	भूयाथाम्	भूयध्वम्
भूयेय	भूयेवहि	भूयेमहि।

3. लोट् लकार

भूयताम्	भूयेताम्	भूयन्ताम्
भूयस्व	भूयेथाम्	भूयध्वम्
भूयै	भूयावहै	भूयामहै।

4. लङ् लकार

अभूयत	अभूयेताम्	अभूयन्त
अभूयथाः	अभूयेथाम्	अभूयध्वम्
अभूये	अभूयावहि	अभूयामहि।

5. लृट् लकार

भविष्यते	भविष्येते	भविष्यन्ते
भविष्यसे	भविष्येथे	भविष्यध्वे
भविष्ये	भविष्यावहे	भविष्यामहे

गम् धातु (सकर्मक, अनिट्, परस्मैपद, भ्वादिगण)

लट् लकार

गम्यते	गम्येते	गम्यन्ते
गम्यसे	गम्येथे	गम्यध्वे
गम्ये	गम्यावहे	गम्यामहे

वद् धातु (सकर्मक,सेट्,परस्मैपद,भ्वादिगण)

उद्यते	उद्येते	उद्यन्ते
उद्यसे	उद्येथे	उद्यध्वे
उद्ये	उद्यावहे	उद्यामहे

पठ् धातु (सकर्मक,सेट्,परस्मैपद,भ्वादिगण)

पठ्यते	पठ्येते	पठ्यन्ते
पठ्यसे	पठ्येथे	पठ्यध्वे
पठ्ये	पठ्यावहे	पठ्यामहे

कृ धातु लट् लकार

क्रियते	क्रियेते	क्रियन्ते
क्रियसे	क्रियेथे	क्रियध्वे
क्रिये	क्रियावहे	क्रियामहे

याच् धातु (सकर्मक,सेट्,उभयपदी,भ्वादिगण)

याच्यते	याच्येते	याच्यन्ते
याच्यसे	याच्येथे	याच्यध्वे
याच्ये	याच्यावहे	याच्यामहे

पच् धातु (सकर्मक, अनिट्, उभयपदी, भ्वादिगण)

पच्यते	पच्येते	पच्यन्ते
पच्यसे	पच्येथे	पच्यध्वे
पच्ये	पच्यावहे	पच्यामहे

रुच् धातु (अकर्मक, सेट्, आत्मनेपद, भ्वादिगण)

रुच्यते	रुच्येते	रुच्यन्ते
रुच्यसे	रुच्येथे	रुच्यध्वे
रुच्ये	रुच्यावहे	रुच्यामहे

रम् धातु (अकर्मक, अनिट्, आत्मनेपद, भ्वादिगण)

रम्यते	रम्येते	रम्यन्ते
रम्यसे	रम्येथे	रम्यध्वे
रम्ये	रम्यावहे	रम्यामहे

यज् धातु (सकर्मक,अनिट्,उभयपदी,भ्वादिगण)

इज्यते	इज्येते	इज्यन्ते
इज्यसे	इज्येथे	इज्यध्वे
इज्ये	इज्यावहे	इज्यामहे

वह् धातु (सकर्मक,अनिट्,उभयपदी,भ्वादिगण)

उह्यते	उह्येते	उह्यन्ते
उह्यसे	उह्येथे	उह्यध्वे
उह्ये	उह्यावहे	उह्यामहे

श्रु धातु (सकर्मक,अनिट्,परस्मैपद,भ्वादिगण)

श्रूयते	श्रूयेते	श्रूयन्ते
श्रूयसे	श्रूयेथे	श्रूयध्वे
श्रूये	श्रूयावहे	श्रूयामहे

तुद् धातु (सकर्मक,अनिट्,उभयपदी,तुदादिगण)

तुद्यते	तुद्येते	तुद्यन्ते
तुद्यसे	तुद्येथे	तुद्यध्वे
तुद्ये	तुद्यावहे	तुद्यामहे

भुज् धातु (अकर्मक,अनिट्,परस्मैपद,तुदादिगण)

भुज्यते	भुज्येते	भुज्यन्ते
भुज्यसे	भुज्येथे	भुज्यध्वे
भुज्ये	भुज्यावहे	भुज्यामहे

हन् धातु (सकर्मक,अनिट्,परस्मैपद,अदादिगण)

हन्यते	हन्येते	हन्यन्ते
हन्यसे	हन्येथे	हन्यध्वे
हन्ये	हन्यावहे	हन्यामहे

हस् धातु (अकर्मक,सेट्,परस्मैपद,भ्वादिगण)

हस्यते	हस्येते	हस्यन्ते
हस्यसे	हस्येथे	हस्यध्वे
हस्ये	हस्यावहे	हस्यामहे

क्रीड् धातु (अकर्मक,सेट्,परस्मैपद,भ्वादिगण)

क्रीड्यते	क्रीड्येते	क्रीड्यन्ते
क्रीड्यसे	क्रीड्येथे	क्रीड्यध्वे
क्रीड्ये	क्रीड्यावहे	क्रीड्यामहे

स्था धातु

स्थीयते	स्थीयेते	स्थीयन्ते
स्थीयसे	स्थीयेथे	स्थीयध्वे
स्थीये	स्थीयावहे	स्थीयामहे

आस् धातु (अकर्मक,सेट्,आत्मनेपद,अदादिगण)

आस्यते	आस्येते	आस्यन्ते
आस्यसे	आस्येथे	आस्यध्वे
आस्ये	आस्यावहे	आस्यामहे

जीव् धातु (अकर्मक,सेट्,परस्मैपद,भ्वादिगण)

जीव्यते	जीव्येते	जीव्यन्ते
जीव्यसे	जीव्येथे	जीव्यध्वे
जीव्ये	जीव्यावहे	जीव्यामहे

धातु/अर्थ	कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य/ भाववाच्य	कर्मवाच्य/ भाववाच्य प्रयोग	कर्तृवाच्य प्रयोग
भू (होना)	भवति	भूयते	ईश्वरेण भूयते	ईश्वरः अस्ति।
भी (डरना)	बिभेति	भीयते	शिशुभिः मूषकेभ्यः भीयते	शिशवः मूषकेभ्यः बिभ्यति।
शी (सोना)	शेते	शय्यते	पथिकैः मार्गे शय्यते	पथिकाः मार्गे शेरते।
याच् (माँगना)	याचति	याच्यते	याचकैः भैक्ष्यं याच्यते	याचकाः भैक्ष्यं याचन्ते।
अद् (खाना)	अत्ति	अद्यते	तेन मिष्ठानं अद्यते	सः मिष्ठान्नं अत्ति।
वद् (बोलना)	वदति	उद्यते	आचार्येण सत्यम् उद्यते	आचार्यः सत्यं वदति।
ज्ञा (जानना)	जानाति	ज्ञायते	तेन श्लोकः न ज्ञायते	सः श्लोकं न जानाति।
खन् (खोदना)	खनति	खन्यते	श्रमिकेण भूमिः खन्यते	श्रमिकः भूमिं खनति।
वप् (बोना)	वपति	उप्यते	कृषकेण बीजानि उप्यन्ते	कृषकः बीजानि वपति।
स्था (ठहरना)	तिष्ठति	स्थीयते	मुनिना कुटीरे स्थीयते	मुनिः कुटीरे तिष्ठति।
कथ् (कहना)	कथयति	कथ्यते	ऋषिणा रामकथा कथ्यते	ऋषिः रामकथां कथयति।
दुह् (दोहना)	दोग्धि	दुह्यते	तेन गौः पयः दुह्यते	सः गां पयः दोग्धि।

धातु/अर्थ	कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य/ भाववाच्य	कर्मवाच्य/ भाववाच्य प्रयोग	कर्तृवाच्य प्रयोग
नी (ले जाना)	नयति	नीयते	भृत्येन भारः नीयते	भृत्यः भारं नयति।
गम् (जाना)	गच्छति	गम्यते	पुत्रेण ग्रामः गम्यते	पुत्रः ग्रामं गच्छति।
भक्ष् (खाना)	भक्षयति	भक्ष्यते	मया फलानि भक्ष्यन्ते	अहं फलानि भक्षयामि।
हन् (मारना)	हन्ति	हन्यते	राज्ञा सिंहः हन्यते	राजा सिंहं हन्ति।
पा (पीना)	पिबति	पीयते	शिशुना दुग्धं पीयते	शिशुः दुग्धं पिबति।
अस् (होना)	अस्ति	भूयते	तेन कुत्रापि न भूयते	सः कुत्रापि न भवति।
श्रु (सुनना)	शृणोति	श्रूयते	बालकेन कथा श्रूयते	बालकः कथां शृणोति।
सेव् (सेवा करना)	सेवते	सेव्यते	प्रजाभिः राजा सेव्यते	प्रजाः राजानं सेवन्ते।
चि (चुनना)	चिनोति	चीयते	मालाकारेण पुष्पाणि चीयन्ते	मालाकारः पुष्पाणि चिनोति।
हु (हवन करना)	जुहोति	हूयते	यतिभिः अग्नौ हूयते	यतयः अग्नौ जुह्वति।
स्वप् (सोना)	स्वपिति	सुप्यते	चालकेन मार्गे सुप्यते	चालकः मार्गे स्वपिति।
मन्थ् (मथना)	मथ्नाति	मथ्यते	मात्रा दधि मथ्यते	माता दधि मथ्नाति।
पूज् (पूजा करना)	पूजयति	पूज्यते	यत्र नार्यः पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः	यत्र नारीः पूजयन्ति रमन्ते तत्र देवताः।
कृ (करना)	करोति	क्रियते	ऋषिभिः शुभकर्माणि क्रियन्ते	ऋषयः शुभकर्माणि कुर्वन्ति।
धृ (धारण करना)	धारयति	धार्यते	शिष्येण वस्त्रं धार्यते	शिष्यः वस्त्रं धरति
गण् (गिनना)	गणयति	गण्यते	छात्रेण शतं गण्यते	छात्रः शतं गणयति।
लिख् (लिखना)	लिखति	लिख्यते	छात्रेण पत्रं लिख्यते	छात्रः पत्रं लिखति।
स्मृ (याद करना)	स्मरति	स्मर्यते	मया ईश्वरः स्मर्यते	अहं ईश्वरं स्मरामि।
दृश् (देखना)	पश्यति	दृश्यते	बालकेन चित्रं दृश्यते	बालकः चित्रं पश्यति।
प्रच्छ् (पूछना)	पृच्छति	पृच्छ्यते	अध्यापकेन प्रश्नः पृच्छ्यते	अध्यापकः प्रश्नं पृच्छति।
वस् (रहना)	वसति	उष्यते	बालकैः उद्याने उष्यते	बालकाः उद्याने वसन्ति।

कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य में प्रयोग

- कर्तृवाच्य के कर्त्ता में प्रथमा विभक्ति तथा कर्मवाच्य के कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है।
- कर्तृवाच्य के कर्म में द्वितीया विभक्ति तथा कर्मवाच्य के कर्म में प्रथमा विभक्ति हो जाती है।
- कर्मवाच्य में क्रिया का पुरुष और वचन कर्म के पुरुष और वचन के अनुसार हो जाता है।

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
अहं शिक्षां लभे	मया शिक्षा लभ्यते
सः पुस्तकं पठति	तेन पुस्तकं पठ्यते
सः ईश्वरं स्मरति	तेन ईश्वरः स्मर्यते
छात्राः प्रश्नं पृच्छन्ति	छात्रैः प्रश्नः पृच्छ्यते
गायकः गीतानि गायति	गायकेन गीतानि गीयन्ते
शिशुः दुग्धं पिबति	शिशुना दुग्धं पीयते
सः सत्यं वदति	तेन सत्यम् उद्यते
अहं पुस्तकं पश्यामि	मया पुस्तकं दृश्यते
माता ओदनं पचति	मात्रा ओदनं पच्यते
वयं युद्धं कुर्मः	अस्माभिः युद्धं क्रियते

कर्मवाच्य से कर्तृवाच्य में प्रयोग

- कर्मवाच्य में कर्ता की तृतीया विभक्ति कर्तृवाच्य के कर्ता में प्रथमा विभक्ति हो जाती है।
- कर्मवाच्य में कर्म के स्थान पर प्रयुक्त प्रथमा विभक्ति कर्तृवाच्य में द्वितीया विभक्ति हो जाती है।
- क्रिया के पुरुष और वचन कर्त्ता के अनुसार हो जाते हैं।
- कर्मवाच्य में प्रयुक्त क्त के स्थान पर कर्तृवाच्य में क्तवतु प्रत्यय हो जाता है।
- कर्मवाच्य में प्रयुक्त तव्यत् प्रत्यय के स्थान पर कर्तृवाच्य में विधिलिङ् का प्रयोग कर दिया जाता है।

वाच्य परिवर्तन अभ्यास

कर्मवाच्य	कर्तृवाच्य
अध्यापकेन पाठः पठ्यते	अध्यापकः पाठं पठति
अस्माभिः सिंहः दृश्यते	वयं सिंहं पश्यामः
सैनिकैः युद्धं क्रियते	सैनिकाः युद्धं कुर्वन्ति
रमेशेन ईश्वरः स्मर्यते	रमेशः ईश्वरं स्मरति
बालकेन पत्रं लिख्यते	बालकः पत्रं लिखति
गायकेन गीतं गीयते	गायकः गीतं गायति
नृपेण सिंहः हन्यते	नृपः सिंहं हन्ति
स्वामिना कथा कथ्यते	स्वामी कथां कथयति
तेन ग्रामः गम्यते	सः ग्रामं गच्छति
सेनया युद्धः जीयते	सेना युद्धं जयति
तेन कथा श्रूयते	सः कथां शृणोति
मया चन्द्रः दृश्यते	अहं चन्द्रं पश्यामि
गुरुभिः किं न ज्ञायते	गुरवः किं न जानन्ति
मया लोभः त्यजते	अहं लोभं त्यजामि
वृक्षैः फलानि दीयन्ते	वृक्षाः फलानि ददति

कर्तृवाच्य से भाववाच्य में प्रयोग

भाववाच्य के कर्त्ता में तृतीया विभक्ति होती है और क्रिया सदा प्रथम पुरुष एकवचन में होती है। उदाहरण-

कर्तृवाच्य	भाववाच्य
छात्रः क्रीडति	छात्रेण क्रीड्यते
बालकाः तिष्ठन्ति	बालकैः स्थीयते
सिंहः गर्जति	सिंहेन गर्ज्यते
अहं पठामि	मया पठ्यते
ईश्वरः अस्ति	ईश्वरेण भूयते
अश्वाः धावन्ति	अश्वैः धाव्यते
कन्याः लिखन्ति	कन्याभिः लिख्यते
अहं गच्छामि	मया गम्यते
त्वं खादसि	त्वया खाद्यते
लता वर्धते	लतया वर्ध्यते
युवां हसथः	युवाभ्यां हस्यते
पुष्पाणि विकसन्ति	पुष्पैः विकस्यते
गुरुः तिष्ठति	गुरुणा स्थीयते
वयं हसामः	अस्माभिः हस्यते
त्वं पठसि	त्वया पठ्यते

भाववाच्य	कर्तृवाच्य
हरिणा वैकुण्ठे उष्यते	हरिः वैकुण्ठे वसति
अस्माभिः विद्यालये स्थीयते	वयं विद्यालये तिष्ठामः
मयूरैः नृत्यते	मयूराः नृत्यन्ति
मया नैव रुद्यते	अहं नैव रोदिमि
तेन गृहे सुप्यते	सः गृहे स्वपिति

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
रामः वेदं पठति	रामेण वेदः पठ्यते।
बालकः चन्द्रं पश्यति	बालकेन चन्द्रः दृश्यते।
बालकः गीतां पठति	बालकेन गीता पठ्यते।
रामः पत्रं लिखति	रामेण पत्रं लिख्यते।
सुरेशः ग्रामं गच्छति	सुरेशेन ग्रामः गम्यते।
सः आपणं गच्छति	तेन आपणः गम्यते।
सः गीतं गायति	तेन गीतं गीयते।
सः रघुवंशं पठति	तेन रघुवंशं पठ्यते।
कृष्णः जलं पिबति	कृष्णेन जलं पीयते।
बालकः मोहनं पश्यति	बालकेन मोहनः दृश्यते।
बालिका पुस्तकं पठति	बालिकया पुस्तकं पठ्यते।
रजकः गर्दभं ताडयति	रजकेन गर्दभः ताड्यते।
कृषकः जलं पिबति	कृषकेण जलं पीयते।
सः दुग्धं पिबति	तेन दुग्धं पीयते।
कविः काव्यं करोति	कविना काव्यं क्रियते।
सा विद्यालयं गच्छति	तया विद्यालयः गम्यते।
माता ओदनं पचति	मात्रा ओदनं पच्यते।
रामः तीव्रं हसति	रामेण तीव्रं हस्यते।
भक्तः ज्ञानं प्राप्नोति	भक्तेन ज्ञानं प्राप्यते।
रामः धनं ददाति	रामेण धनं दीयते।
सः ईश्वरं स्मरति	तेन ईश्वरः स्मर्यते।
सः सत्यं वदति	तेन सत्यम् उद्यते।
सः कथां शृणोति	तेन कथा श्रूयते।
वृक्षाः फलानि ददति	वृक्षैः फलानि दीयन्ते।
सैनिकाः युद्धं कुर्वन्ति	सैनिकैः युद्धं क्रियते।
छात्राः पत्रं लिखन्ति	छात्रैः पत्रं लिख्यते।
तौ प्रयागं गच्छतः	ताभ्याम् प्रयागः गम्यते।
छात्राः पुस्तकानि नयन्ति	छात्रैः पुस्तकानि नीयन्ते।
तौ गृहं गच्छतः	ताभ्याम् गृहं गम्यते।
कृषकाः जलं पिबन्ति	कृषकैः जलं पीयते।
ते पुस्तकानि पठन्ति	तैः पुस्तकानि पठ्यन्ते।

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
बालकौ गीतं गायतः	बालकाभ्यां गीतं गीयते।
भक्तौ ईश्वरं स्मरतः	भक्ताभ्याम् ईश्वरः स्मर्यते।
तौ पुस्तकं पठतः	ताभ्याम् पुस्तकं पठ्यते।
त्वं गृहं गच्छसि	त्वया गृहं गम्यते।
त्वं पत्रं लिखसि	त्वया पत्रं लिख्यते।
त्वं किं लिखसि	त्वया किं लिख्यते।
यूवां पुस्तकं पठथः	युवाभ्याम् पुस्तकं पठ्यते।
त्वं कुत्र गच्छसि	त्वया कुत्र गम्यते।
त्वं ईश्वरं पश्यसि	त्वया ईश्वरः दृश्यते।
त्वं प्रश्नं पृच्छसि	त्वया प्रश्नः पृच्छ्यते।
युवां गृहं गच्छथः	युवाभ्यां गृहं गम्यते।
युवां प्रश्नानि पृच्छथः	युवाभ्यां प्रश्नानि पृच्छयन्ते।
युवां बालकौ पश्यथः	युवाभ्यां बालकौ दृश्येते।
यूयं पुस्तकानि पठथ	युष्माभिः पुस्तकानि पठ्यन्ते।
यूयं गीतानि गायथ	युष्माभिः गीतानि गीयन्ते।
अहं पुस्तकं पठामि	मया पुस्तकं पठ्यते।
अहं दुग्धं पिबामि	मया दुग्धं पीयते।
अहं पुस्तकं लिखामि	मया पुस्तकं लिख्यते।
अहं त्वां पश्यामि	मया त्वं दृश्यसे।
अहं जलं पिबामि	मया जलं पीयते।
अहं पत्रं लिखामि	मया पत्रं लिख्यते।
आवां गृहं गच्छावः	आवाभ्यां गृहं गम्यते।
आवां पुस्तकानि पठावः	आवाभ्यां पुस्तकानि पठ्यन्ते
आवां जलं पिबावः	आवाभ्यां जलं पीयते
वयं पत्रं लिखामः	अस्माभिः पत्रं लिख्यते
वयं नगरं गच्छामः	अस्माभिः नगरं गम्यते
वयं विद्यालयं गच्छामः	अस्माभिः विद्यालयः गम्यते
वयं बालकं पश्यामः	अस्माभिः बालकः दृश्यते।
रामः वेदं पठिष्यति	रामेण वेदः पठिष्यते
बालकः चन्द्रं द्रक्ष्यति	बालकेन चन्द्रः द्रक्ष्यते।
रमेशः पत्रं पठिष्यति	रमेशेन पत्रं पठिष्यते।
सीता काव्यं करिष्यति	सीतया काव्यं करिष्यते।
सः ग्रन्थं पठिष्यति	तेन ग्रन्थः पठिष्यते।
मोहनः दुग्धं पास्यति	मोहनेन दुग्धं पास्यते
मुनिः रामायणं कथयिष्यति	मुनिना रामायणं कथयिष्यते
छात्रः विद्यालयं गमिष्यति	छात्रेण विद्यालयः गंस्यते
राधा नृत्यं करिष्यति	राधया नृत्यं करिष्यते
शिशुः दुग्धं पास्यति	शिशुना दुग्धं पास्यते।
सः त्वां द्रक्ष्यति	तेन त्वं द्रक्ष्यसे

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
सः आपणं गमिष्यति	तेन आपणः गम्यते
तौ दुग्धं पास्यतः	ताभ्याम् दुग्धं पास्यते
तौ कार्याणि करिष्यतः	ताभ्याम् कार्याणि करिष्यन्ते
तौ वनं गमिष्यतः	ताभ्याम् वनं गंस्यते
ते पत्राणि पठिष्यन्ति	तैः पत्राणि पठिष्यन्ते
ते फलानि नेष्यन्ति	तैः फलानि नेष्यन्ते
ते कथां कथयिष्यन्ति	तैः कथा कथयिष्यते।

कर्तृवाच्य	भाववाच्य
सः हसति	तेन हस्यते
त्वं पठसि	त्वया पठ्यते
अहं गच्छामि	मया गम्यते
वयं हसामः	अस्माभिः हस्यते
ते हसन्ति	तैः हस्यते
रामः गच्छति	रामेण गम्यते
सीता गच्छति	सीतया गम्यते
पिता गच्छति	पित्रा गम्यते
अहं वदामि	मया उद्यते
यूयं पठथ	युष्माभिः पठ्यते
अहं हसामि	मया हस्यते
सा लिखति	तया लिख्यते
सः तिष्ठति	तेन स्थीयते
त्वं हससि	त्वया हस्यते
त्वं खादसि	त्वया खाद्यते
सः क्रीडति	तेन क्रीड्यते
रामः हसति	रामेण हस्यते
अहं तिष्ठामि	मया स्थीयते
श्यामः गच्छति	श्यामेन गम्यते
छात्रः क्रीडति	छात्रेण क्रीड्यते
बालकाः तिष्ठन्ति	बालकैः स्थीयते
ईश्वरः अस्ति	ईश्वरेण भूयते
गुरुः तिष्ठति	गुरुणा स्थीयते
मयूराः नृत्यन्ति	मयूरैः नृत्यते

❑❑

उपसर्ग एवं अव्यय

उपसर्ग

- **उप** उपसर्ग पूर्वक √**'सृज्'** धातु से **घञ्** प्रत्यय करने पर ''उपसर्ग'' शब्द निर्मित होता है। जिसका अर्थ है- 'जो समीप रखे जाय'
- **''उपसृज्यन्ते धातूनां समीपे क्रियन्ते इति उपसर्गाः''** अर्थात् जो धातुओं के समीप रखे जाते हैं, वे उपसर्ग कहलाते हैं।
- पाणिनि कहते हैं **''प्रादयः उपसर्गाः क्रियायोगे''** (1.4.59) अर्थात् क्रिया के योग में 'प्र' आदि उपसर्गसंज्ञक होते हैं।

यथा- प्रभवति, पराभवति, अपहरति, निरीक्षते आदि।

- जो किसी भी 'धातु' अथवा शब्द के पहले जुड़कर अर्थ को बदल देता है, उसे 'उपसर्ग' कहा जाता है। जैसे- हार = माला, या पराजय किन्तु इसमें 'प्र' उपसर्ग जुड़कर इसके अर्थ को परिवर्तित कर देता है- **प्रहारः** (चोट, आघात), **आहारः** (भोजन), **संहारः** (विनाश), **विहारः** (भ्रमण), **परिहारः** (त्याग)।

उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते।
प्रहाराहार-संहार-विहार-परिहारवत्॥

- उपसर्ग सहित धातुओं के प्रयोग से भाषा परिष्कृत, सुन्दर और चमत्कृत लगती है।
- उपसर्ग हमेशा **धातुओं या शब्दों के पूर्व** ही जोड़े जाते हैं। उपसर्ग भी अव्यय पद ही हैं।

धातु के साथ उपसर्गों के जुड़ने से तीन परिवर्तन होते हैं-

(i) क्रिया का अर्थ बिल्कुल बदल जाता है अर्थात् मुख्यार्थ को बाधकर नवीन अर्थ का बोध कराता है। जैसे- विजयते = जीतता है (वि उपसर्ग जि धातु), पराजयते = हारता है (परा उपसर्ग जि धातु), उपकार - अपकारः। आहारः - प्रहारः आदि।

(ii) क्रिया के अर्थ में विशिष्टता आ जाती है। जैसे- गच्छति-अनुगच्छति, आप्नोति - प्राप्नोति आदि।

(iii) क्रिया के अर्थ में कोई परिवर्तन नहीं होता। जैसे- वसति-निवसति, उच्यते-प्रोच्यते, वसति-अधिवसति आदि।

- यही बात इस श्लोक में इसप्रकार से कही गयी है-

धात्वर्थं बाधते कश्चित् कश्चित् तमनुवर्तते।
विशिनष्टि तमेवार्थमुपसर्गगतिस्त्रिधा॥

- उपसर्गों के योग से कहीं कहीं अकर्मक भी सकर्मक हो जाती है। जैसे भू (भवति) धातु अकर्मक है किन्तु 'अनु' उपसर्ग के साथ 'अनुभवति' सकर्मक क्रिया हो जाती है। जैसे- सः सुखम् अनुभवति। माता दुःखम् अनुभवति। आदि।

उपसर्गों की संख्या- संस्कृत व्याकरण में कुल **22 (बाइस)** उपसर्ग हैं। जिनका अर्थसहित प्रयोग अधोलिखित तालिका में देखा जा सकता है-

1. प्र 2. परा 3. अप 4. सम् 5. अनु 6. अव 7. निस् 8. निर् 9. दुस् 10. दुर् 11. वि 12. आङ् 13. नि 14. अधि 15. अपि 16. अति 17. सु 18. उत् 19. अभि 20. प्रति 21. परि 22. उप

उपसर्गयुक्त शब्द

क्रम	उपसर्ग	अर्थ	उपसर्गयुक्त शब्द
1.	**प्र**	विशेष रूप से, उत्कर्ष, अधिक	प्रचारः, प्रसारः, प्रहारः, प्रकारः, प्रख्यातम्।
2.	**परा**	पीछे, विपरीत, अनादर, नाश	पराक्रमः, परामर्शः, पराजयः, पराकाष्ठा।
3.	**अप**	दूर, विरोध, लघुता	अपमानः, अपकारः, अपयशः, अपशब्दः, अपकर्षः।
4.	**सम्**	साथ, अच्छा, अच्छी तरह से पूर्ण	संकल्पः, संसर्गः, सम्मोहः, संग्रहः।
5.	**अनु**	पीछे, साथ-साथ, योग्य, अनुकूल	अनुजः, अनुचरः, अनुभवः, अनुनयः।
6.	**अव**	नीचे, दूर, अनादर, हीनता, पतन	अवगुणः, अवनतिः, अवलोकनम्, अवतारः।
7.	**निस्**	वियोग, बिना, बाहर	निस्सारः, निश्शंकः, निस्तत्त्वम्, निश्चयः।
8.	**निर्**	निषेध, रहित, बाहर, बिना, निकलना	निरपराधः, निर्गच्छति, निरक्षरः, निर्दयः।
9.	**दुस्**	कठिन, बुरा	दुस्तरः, दुष्करः, दुस्साहसः।
10.	**दुर्**	बुरा, कठिनता, दुष्टता, निन्दा	दुराचारः, दुराग्रहः, दुर्गतिः, दुरात्मा।

क्रम	उपसर्ग	अर्थ	उपसर्गयुक्त शब्द
11.	**वि**	विशेषता, अलग, बिना	विकारः, विवादः, विज्ञानम्, विदेशः, विरोधः।
12.	**आङ् (आ)**	तक, कम, स्वीकृति	आहारः, आरम्भः, आचारः, आग्रहः, आगमनम्।
13.	**नि**	नीचे, निषेध, समूह, निश्चित	निबन्धः, नियुक्तः, निषेधः, निवारणम्।
14.	**अधि**	ऊपर, श्रेष्ठ, प्रधान	अधिकम्, अध्यात्मम्, अध्यक्षः, अधिभारः, अधिकृतः।
15.	**अति**	बहुत, अधिक, बाहर	अत्याचारः, अतिशयः, अत्युत्तमम्, अत्यन्तम्, अतिरिक्तम्।
16.	**सु**	सुन्दर, अच्छा, अत्यधिक	स्वागतम् , सुवेषः, सुस्वरः, सूक्तिः, सुपुत्रः।
17.	**उत्**	ऊपर, श्रेष्ठ, विपरीत	उत्पत्तिः, उत्तरम्, उत्तमः, उन्नतिः, उद्धारः।
18.	**अभि**	सामने, ओर, ऊपर, पास, तरफ	अभ्यागतः, अभियानम्, अभिमुखम्, अभिमानः।
19.	**प्रति**	ओर, तरफ, पीछे, विपरीत	प्रतिकूलम्, प्रत्युत्तरम्, प्रतिध्वनिः, प्रतिपन्नः, प्रतिकारः।
20.	**परि**	चारों ओर, और भी, आस-पास	परिश्रमः, परिवादः, परिचयः, परिजनः।
21.	उप	निकट, समीप, शक्ति	उपकारः, उपदेशः, उपाधिः, उपेन्द्रः, उपद्रवः।
22.	अपि	निकट	अपिधानः, अपिगीर्णः।

उपसर्गयुक्त क्रियायों का वाक्य में प्रयोग

क्र०	उपसर्ग	धातु (अर्थसहित)	उपसर्ग सहित धातुरूप	प्रयोग
1.	उत्	√अय् (जाना)	**उदयति** (उगना)	सूर्यः उदयति
2.	प्र	√अर्थ् (माँगना)	**प्रार्थयते** (प्रार्थना करना)	भक्तः भगवन्तं प्रार्थयते।
3.	अभि	√अस् (फेंकना)	**अभ्यसति** (अभ्यास करना)	छात्रः पाठम् अभ्यसति।
4.	प्र	√आप् (प्राप्त करना)	**प्राप्नोति** (प्राप्त करना)	छात्रः अध्यापकात् ज्ञानं प्राप्नोति
5.	अव	√इ (जाना)	**अवेहि** (जानना)	अवेहि मां किङ्करमष्टमूर्तेः।
6.	प्रति	√ईक्ष् (देखना)	**प्रतीक्षते** (इन्तजार करना)	न हि प्रतीक्षते कालः।
7.	अनु	√कृ (करना)	**अनुकरोति** (नकल करना)	बालः मातरम् अनुकरोति।
8.	अव	√क्षिप् (फेंकना)	**अवक्षिपति** (निन्दा करना)	दुष्टः सज्जनम् अवक्षिपति।
9.	आङ्	√गम् (जाना)	**आगच्छति** (आना)	अहं विद्यालयात् आगच्छामि।
10.	अनु	√गम् (जाना)	**अनुगच्छति** (पीछे पीछे चलना)	दिलीपः नन्दिनीम् अनुगच्छति
11.	उप	√चर् (चरना)	**उपचरति** (सेवा करना)	वैद्यः रोगिणं उपचरति।
12.	सम्	√चि (चुनना)	**सञ्चिनोति** (संग्रह करना)	धनिकः धनं सञ्चिनोति।
13.	निर्	√दिश् (देना, सौंपना)	**निर्दिशति** (निर्देश देना)	माता अङ्गुल्या निर्दिशति।
14.	वि	√धा (धारण करना)	**विदधीत** (करना)	सहसा विदधीत न क्रियाम्।
15.	नि	√मन्त्र (मन्त्रणा करना)	**निमन्त्रयति** (निमन्त्रण देना)	मित्रं मां निमन्त्रयति।
16.	अप	√लप् (बोलना)	**अपलपति** (मुकरना)	सः अपलपति।
17.	अव	√सद् (बैठना)	**अवसीदति** (दुःखित होना)	उद्यमं कृत्वा न अवसीदति जनः।
18.	अधि	√स्था (रुकना)	**अधितिष्ठति** (बैठना)	राजा सिंहासनम् अधितिष्ठति।
19.	अति	√वह (बहना)	**अतिवहति** (बिताना)	सः सुखेन कालम् अत्यवहत्।
20.	निस्	√क्रम् (चलना, जाना)	**निष्क्रामति** (निकलना)	इति निष्क्रान्ताः सर्वे।

महत्त्वपूर्ण उपसर्गयुक्त क्रियायें

उपसर्ग	उपसर्ग युक्त क्रियायें
प्र	प्रभवति, प्रसरति , प्राप्नोति, प्रददाति।
परा	पराभवति, पराजयते, पलायते आदि।
अप	अपहरति, अपनयति, अपकरोति, अपेहि, अपेक्षते, अपलपति।
सम्	संक्षिपति, सञ्चिनोति, संगृह्णाति, सन्तपति, सन्तरति, संहरति।
अनु	अनुभवति, अनुतिष्ठति, अनुकरोति, अनुगच्छति, अनुवदति।
अव	अवरोहति, अवतरति, अवजानाति, अवक्षिपति, अवगच्छति।
निस्	निश्चिनोति, निष्क्रामति।
निर्	निरीक्षते, निरस्यति, निर्दिशति।
दुस्	दुष्करोति, दुश्चरति।
दुर्	दुर्गच्छति, दुर्वक्ति।
वि	विचरति, विलपति, वितरति, व्याप्नोति, विदधति, विरमति।
आङ्	आरोहति, आगच्छति, आददाति, आक्षिपति, आचरति, आनयति।
नि	निषीदति, निगृह्णाति, निमन्त्रयति, नियन्त्रयति, निवर्तते।
अधि	अधिगच्छति, अधिक्षिपति, अध्यास्ते, अधितिष्ठति।
अपि	अपिधत्ते, अपिनह्यति।
अति	अतिशेते, अतिरिच्यते, अत्येति, अतिक्रामति, अतिवहति।
सु	सुचरति, सुकरोति, सुनयति।
उत्	उत्पतति, उत्तिष्ठति, उत्तरति, उदयति, उदेति, उत्क्षिपति।
अभि	अभिमन्यते, अभिजानाति, अभिधत्ते।
प्रति	प्रतिवदति, प्रतीक्षते, प्रतिजानाति, प्रतिवसति।
परि	परिवर्तते, परिचिनोति, परीक्षते।
उप	उपदिशति, उपतिष्ठते, उपक्रमते, उपासते, उपैति, उपकरोति, उपचरति।

अव्यय

सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्वासु च विभक्तिषु।
वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम्॥

- जो शब्द तीनों लिङ्गों, सभी विभक्तियों तथा तीनों वचनों में समान रहते हैं; वे 'अव्यय' कहलाते हैं।
- **'न व्ययम् इति अव्ययम्'** अर्थात् जो व्यय (खर्च, घट-बढ, यानी परिवर्तन) को प्राप्त नहीं होता अर्थात् हमेशा ज्यों का त्यों यथावत् स्थिति में रहता है वह अव्यय (अविकारी) पद कहा जाता है।
- अव्यय पदों का रूप नहीं चलता।
  जैसे- यथा, तत्र, अत्र, किम्, कुत्र, कदा आदि।
- **''स्वरादिनिपातमव्ययम्''** (1.1.37) सूत्र से स्वर् आदि शब्द तथा निपातशब्द अव्यय संज्ञक होते हैं।

जैसे- स्वः, अन्तः, प्रातः, पुनः, उच्चैः, नीचैः, शनैः, ऋते, पृथक्, अद्य, ईषत्, आदि।

- **तद्धितश्चासर्वविभक्तिः, कृन्मेजन्तः, क्त्वातोसुन्कसुनः** आदि सूत्रों से कुछ तद्धित प्रत्ययान्त एवं कुछ कृदन्त प्रत्ययान्त शब्दों की अव्यय संज्ञा होती है।

जैसे-

(i) **कृदन्त प्रत्यय जो अव्यय बनाते हैं-** क्त्वा, ल्यप्, तुमुन्, तोसुन्, कसुन् आदि प्रत्ययों से बने पद अव्यय संज्ञक होते हैं- गत्वा, आगत्य, पठितुम् आदि पद अव्यय पद हैं।

(ii) तद्धित प्रत्यय तसिल् , त्रल् , थाल् , धा, शस् प्रत्ययों से भी अव्यय पद बनते हैं। जैसे-
सर्वतः, अत्र, तत्र, सर्वथा, एकधा, द्विधा, अनेकशः, अक्षरशः, शब्दशः आदि

➢ **अव्ययीभावश्च (1.1.41)** अव्ययीभाव समास भी अव्यय होता है। जैसे- यथाशक्ति, उपगङ्गम्, यथानिर्देशम्, यथोचितम् आदि।

मुख्यतः अव्यय चार प्रकार के हैं-

(i) **उपसर्ग-** प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव आदि 22 उपसर्ग।

(ii) **क्रियाविशेषण-** अद्य, अत्र, अधुना, अभितः, किल आदि।

(iii) **समुच्चय बोधक-** च, इति, तथापि, तु, वा आदि।

(iv) **मनोविकार सूचक** (विस्मयबोधक)- अहा, अहो, हन्त, धिक्, अये, अरे, आदि।

प्रमुख अव्यय पदों का वाक्यों में प्रयोग

अव्यय पद	वाक्य प्रयोग
1. **सदा** (हमेशा)	रामः सदा सत्यं वदति।
2. **सर्वत्र** (सब जगह)	ईश्वरः सर्वत्र अस्ति।
3. **प्रतिदिनम्** (प्रतिदिन)	अहं प्रतिदिनं दुग्धं पिबामि
4. **यदा तदा** (जब-तब)	यदा कृष्णः आगच्छति तदा सुदामा गच्छति।
5. **अत्र** (यहाँ)	सः अत्र आगच्छति
6. **तत्र** (वहाँ)	सः तत्र गच्छति।
7. **श्वः** (आने वाला कल)	अहं श्वः विद्यालयं गमिष्यामि।
8. **कुत्र** (कहाँ)	बालकाः कुत्र निवसन्ति।
9. **एवम्** (ऐसा)	जनाः एवं कथयन्ति।
10. **कथं** (कैसे)	सा कथं लिखति।
11. **अद्यैव** (आज ही)	रामः अद्यैव गमिष्यति।
12. **प्रातः** (सवेरे)	प्रातः सूर्यः उदयति।
13. **यथाशक्ति** (शक्ति के अनुसार)	कृषकः यथाशक्ति दानं ददाति।
14. **अधः** (नीचे)	बालकः अधः पतति।
15. **एकदा** (एक बार)	एकदा बालकः तत्र गतवान्।
16. **स्वयमेव** (स्वयं ही)	सः स्वयमेव धनं दास्यति।
17. **विना** (बिना)	मोहनः लेखन्या विना कथं लिखति।
18. **सायम्** (सायंकाल)	चन्द्रः सायं उदयति।
19. **नमः** (नमस्कार)	गणेशाय नमः।
20. **नक्तम्** (रात्रि में)	सः नक्तं भोजनं न करोति।
21. **दिवा** (दिन में)	मोहनः दिवा न पठति।
22. **अधुना** (इस समय)	राजेन्द्रः अधुना न पठति।
23. **अचिरम्** (शीघ्र ही)	अचिरं सः गतवान्।
24. **उभयतः** (दोनों ओर)	विद्यालयम् उभयतः वृक्षाः सन्ति।

अव्यय शब्दों का संग्रह

अव्ययशब्द		हिन्दी
		अ
अकस्मात्	–	अचानक
अग्रतः	–	आगे
अग्रिमवर्षे	–	परसाल, अगले साल।
अग्रे	–	पहले, आगे
अचिरेण	–	शीघ्र, जल्दी
अचिरम्	–	शीघ्र
अचिराय	–	शीघ्र
अचिराद्	–	शीघ्र, जल्दी
अजस्रम्	–	निरन्तर/लगातार
अतएव	–	इसलिए
अतः	–	इसलिए
अतःपरम्	–	इसके बाद
अति	–	बहुत
अत्यन्तम्	–	बहुत
अतीव	–	बहुत ही
अत्र	–	यहाँ
अत्रापि	–	यहाँ भी
अत्रैव	–	यहाँ ही/यहीं
अथ	–	इसके बाद/तब/फिर / मङ्गल
अथवा	–	या, अथवा
अथ किम्	–	और क्या, तो क्या, हाँ
अद्य	–	आज
अद्यतनम्	–	आज का
अद्यत्वे	–	आजकल
अद्यपर्यन्तम्	–	आजतक

अव्ययशब्द		हिन्दी
अद्यप्रभृति	–	आज से लेकर
अद्यापि	–	आज भी
अद्यारभ्य	–	आज से
अद्यावधि	–	आज तक, अब तक
अधः	–	नीचे, नीचा
अर्धम्	–	आधा
अधस्तात्	–	नीचे
अधिकम्	–	अधिक, बहुत
अधिकतरम्	–	अधिकतर
अधुना	–	अब
अधुनापि	–	आज भी/अभी
अधुनैव	–	अभी
अन्तः	–	अन्दर, भीतर, बीच में
अन्ततः	–	आखिरकार, आखिर
अन्ततोगत्वा	–	आखिरकार, आखिर
अनन्तरम्	–	पीछे, बाद में
अन्तरा	–	बीच में
अन्यत्	–	दूसरा
अन्यच्च	–	और भी, और
अन्तिकम्	–	पास
अनारतम्	–	निरन्तर/लगातार
अनायासेन	–	बिना मेहनत के
अनवरतम्	–	निरन्तर/लगातार
अनिशम्	–	निरन्तर/लगातार
अनुमानतः	–	लगभग
अनेकम्	–	अनेक
अन्तर्बहिः	–	बाहर-भीतर
अन्यत्र	–	दूसरी जगह
अन्यथा	–	नहीं तो
अन्योन्यम्	–	परस्पर
अपरत्र	–	दूसरी जगह
अपरम्	–	और, दूसरा
अब्दे	–	परसाल, अगले साल
अपि	–	भी
अपितु	–	बल्कि, वरन्
अन्येद्युः	–	दूसरे दिन
अपरेद्युः	–	दूसरे दिन
अपेक्षया	–	अपेक्षा

अव्ययशब्द		हिन्दी
अभिमुखम्	–	तरफ
अभितः	–	दोनों ओर, पास
अये	–	हे (आदर सहित बुलाने में)
आरात्	–	दूर
अर्थम्	–	लिए
अरे	–	हे (अवज्ञापूर्वक बुलाने में)
अल्पम्	–	थोड़ा, कुछ, (मात्रा)
अल्पशः	–	थोड़ा-थोड़ा
अलम्	–	बस/काफी, रहने दो
अविलम्बम्	–	जल्दी, शीघ्र
अवश्यम्	–	जरूर/अवश्य/निश्चय ही
अर्वाक्	–	पहले
असकृत्	–	बार-बार
असत्यम्	–	असत्य
अस्तु	–	इसलिए, खैर, अच्छा, ठीक है
असाम्प्रतम्	–	अनुचित
अहा	–	उल्लास या हर्षसूचक, अहो, अहा

आ

आः	–	क्रोधसूचक
आगत्य/आगम्य	–	आकर के
आगामिदिनम्	–	आने वाला कल
आदि	–	बगैरह
आम्	–	हाँ (अङ्गीकारवाचक)
आश्चर्यम्	–	ओफ-हो
आशु	–	शीघ्र/त्वरित

इ

इत्थम्	–	इसप्रकार से, ऐसे
इति	–	समाप्ति सूचक शब्द
इतस्ततः	–	इधर-उधर, जहाँ-तहाँ
इतरेद्युः	–	दूसरे दिन
इतः	–	यहाँ से
इत्थमेव	–	यों ही
इदानीम्	–	अब/इससमय
इदानीमपि	–	आज भी
इयत्	–	इतना

अव्ययशब्द		हिन्दी
इव	–	तरह/सदृश, समान
इह	–	यहाँ/इस लोक में
		ई
ईषत्	–	थोड़ा, कुछ (मात्रा)
		उ
उच्चैः	–	ऊँचे/जोर से
उत्तरेद्युः	–	दूसरे दिन
उत	–	अथवा (विकल्पार्थवाचक)
उपरि	–	ऊपर
उपर्यधः	–	ऊपर- नीचे
उभयतः	–	दोनों ओर, दोनों तरफ
उभयेद्युः	–	दोनों दिन
ऊर्ध्वम्	–	ऊपर
		ऋ
ऋतम्	–	बिना, सत्य
ऋते	–	बिना, सिवाय
		ए
एकधा	–	एकप्रकार से
एकदा	–	एकबार, एक समय
एकैकम्	–	एक-एक करके
एकपदे	–	एक साथ, अचानक
एकत्र	–	इकट्ठा
एतर्हि	–	इसीसमय/अब
एव	–	ही
एवम्	–	इसतरह/और/तुल्य/हाँ
एवमस्तु	–	ऐसा ही हो।
एतावत्	–	इतना
एकैकशः	–	एक-एक करके
		ऐ
ऐषमे	–	इस वर्ष
		क
कच्चित्	–	क्या
कतिवारम्	–	कितनी बार
किञ्च	–	और
कुतः	–	कहाँ से, क्यों
कुत्र	–	कहाँ
कुतश्चन	–	कहीं से

अव्ययशब्द		हिन्दी
कुत्रापि	–	कहीं/कहीं पर/कहीं भी
कृते	–	के लिए, लिए
कृतम्	–	बस
कथम्	–	कैसे/क्यों
कथमपि	–	जैसे-तैसे, किसी प्रकार
कदा	–	कब/किस समय
कदापि	–	कभी भी, जब कभी
कदाचित्	–	कभी/शायद
कष्टम्	–	अफसोस
कुत्रचित्	–	कहीं
किञ्चित्	–	कुछ, थोड़ा
किञ्चिदपि	–	कुछ भी
किन्तु	–	लेकिन, मगर
कथञ्चित्	–	किसी तरह
कतिचित्	–	थोड़ा/कुछ (संख्या)
कतिपय	–	थोड़ा (संख्या)
कस्मात्	–	क्यों
कस्मात् स्थानात्	–	कहाँ से
कस्मिन् स्थाने	–	कहाँ
किम्	–	क्या/क्यों
कियत्	–	कितना
किमुत	–	और कितना
किमपि	–	कुछ (संख्या)
किं परिमाणम्	–	कितना
किं मात्रम्	–	कितना
किं भोः	–	क्यों हो
किमिति	–	क्यों
क्रमशः	–	लगातार
किल	–	सचमुच/निश्चय
केन प्रकारेण	–	कैसे
केवलम्	–	केवल,सिर्फ
क्व	–	कहाँ
क्वचित्	–	कहीं
कर्हि	–	कब
किमर्थम्	–	क्यों
कतिशः	–	एक बार में कितना, कितनी बार
खलु	–	निश्चय ही/जरूर
गतेद्युः	–	कल (बीता हुआ)

च

अव्ययशब्द		हिन्दी
च	–	और
चतुर्धा	–	चार प्रकार से
चिरम्	–	देर तक, देर में
चिराय	–	देर तक, देर में
चिरात्	–	देर तक
चिरेण	–	देर तक, देर में
चेत्	–	यदि/अगर

ज

अव्ययशब्द		हिन्दी
जातु	–	कभी भी
जातुचित्	–	कभी भी
जयतु जयतु	–	जय जय
झटिति	–	शीघ्र, जल्दी, झटपट

त

अव्ययशब्द		हिन्दी
ततः	–	फिर/तब/वहाँ से
ततः प्रभृति	–	तब से
ततः पर्यन्तम्	–	तब तक
तत्र	–	वहाँ/वहाँ पर
तत्रापि	–	वहाँ भी
तत्रैव	–	वहीं
तथा	–	उस तरह/वैसे
तथैव	–	उसी तरह/वैसे ही
तथापि	–	फिर भी, तो भी
तथाहि	–	जैसे कि, वैसे ही
तदा	–	तब
तदानीम्	–	तभी, उस समय, तब
तदारभ्य	–	तब से
तदा-तदा	–	तब-तब
तदापि	–	तब भी
तु	–	तो, किन्तु, लेकिन, मगर
तूष्णीम्	–	चुपचाप
तावत्	–	तब तक, उतना
तर्हि	–	तब, तो
तेन प्रकारेण	–	वैसे
तावन्मात्रम्	–	उतना

द

अव्ययशब्द		हिन्दी
दक्षिणतः	–	दाहिना
दिने दिने	–	प्रतिदिन
दिने	–	दिन में
दूरम्	–	दूर
दूरे	–	दूर
द्वारा	–	द्वारा, मारफत
दिवा	–	दिन में
दिशि-दिशि	–	चारों तरफ
दिष्ट्या	–	सौभाग्य से
द्राक्	–	शीघ्र/फौरन
द्रुतम्	–	शीघ्र, जल्दी
दैवात्	–	भाग्यवश
द्विधा	–	दो प्रकार से

ध

अव्ययशब्द		हिन्दी
धिक्-धिक्	–	धिक्कार है, छिः-छिः
ध्रुवम्	–	निश्चय ही/जरूर
धन्यम्-धन्यम्	–	शाबास-शाबास

न

अव्ययशब्द		हिन्दी
निकटे	–	समीप, नजदीक
न	–	नहीं, मत
न च	–	न कि
न तु	–	न कि
नमस्कारः	–	नमस्कार
नो	–	नहीं, मत
नहि	–	नहीं, मत
नमः	–	प्रणाम/नमस्कार
निकषा	–	समीप, नजदीक
नित्यम्	–	हमेशा/लगातार/ नित्य
निरन्तरम्	–	लगातार, निरन्तर
नीचैः	–	नीचा
निस्सन्देहम्	–	बेशक
निमित्तम्	–	हेतु
नितराम्	–	बिल्कुल
नोचेत्	–	नहीं तो

अव्ययशब्द		हिन्दी
नाना	–	अनेक
नक्तम्	–	रात को, रात में
		प
परन्तु	–	लेकिन, मगर
परम्	–	परन्तु
परश्वः	–	परसों (आने वाला)
परस्परम्	–	आपस में, परस्पर
पदे पदे	–	जगह-जगह
परह्यः	–	परसों (बीता हुआ)
परितः	–	चारों ओर
प्रत्यूषः	–	प्रातः काल
प्रतिकूलम्	–	विरुद्ध
प्रथमम्	–	पहले
पृष्ठदेशे	–	पीछे
प्राक्	–	पहले, पूर्वकाल में
प्रायशः	–	अक्सर
प्रायेण	–	अक्सर
प्रातः	–	प्रातःकाल
प्रायः	–	अक्सर
पश्चात्	–	बाद में/पीछे/फिर
परेद्युः	–	दूसरे दिन, आने वाला कल
पर्याप्तम्	–	काफी/यथेष्ट/ बस
प्रकामम्	–	काफी/यथेष्ट
प्रतिदिनम्	–	रोज/नित्य प्रतिदिन
प्रसह्य	–	जबरदस्ती
प्रत्युत्	–	बल्कि, वरन्
पायं-पायम्	–	पी-पीकर/पीते-पीते
पुनः	–	फिर
पुनश्च	–	फिर भी
पुनरपि	–	फिर भी
पुनः-पुनः	–	बार-बार
पुरः	–	सामने/आगे
पुरतः	–	सामने/आगे
पुरस्तात्	–	सामने/आगे
पुरा	–	पहले/प्राचीन काल में
पूर्वेद्युः	–	पहले दिन
पूर्वदिने	–	कल (बीता हुआ)
पूर्वम्	–	पहले, पूर्वकाल में
पृथक्	–	अलग, अलावा

अव्ययशब्द		हिन्दी
पृष्ठतः	–	पीछे
पार्श्वतः	–	बगल में/पास में
पार्श्वदेशे	–	बगल में
पर्याप्तम्	–	काफी
		ब
बलात्	–	जबरदस्ती से
बहिः	–	बाहर
बहु	–	अधिक
बहुधा	–	अक्सर, अधिकतर
बहुकालम्	–	देर में, देर तक
बहु	–	अधिक
बहुत्र	–	बहुत जगह
बाढम्	–	अच्छा/हाँ (अंगीकार सूचक), बहुत अच्छा
बारम्बारम्	–	बार-बार
बाहुल्येन	–	अधिकता से
		भ
भिन्नम्	–	अलग
भूयः	–	फिर/अधिक/बार-बार
भूयोऽपि	–	फिर भी
भूरि	–	बहुत
भृशम्	–	अधिक/बार-बार
भोः	–	हे (आदर सहित बुलाने में), अरे
		म
मङ्गलम्	–	मङ्गल
मध्ये	–	बीच में, भीतर, मध्य में
मनाक्	–	थोड़ा, कुछ (मात्रा)
मन्दम्	–	धीरे-धीरे
मा	–	मत, नहीं
मा स्म	–	रहने दो
मिथः	–	परस्पर/एकान्त में/ आपस में
मिथ्या	–	झूठ, असत्य
मुधा	–	बेकार में
मुहुर्मुहुः	–	बार-बार
मृषा	–	झूठा/बेकार/ असत्य
मौनम्	–	चुप
		य
यत्र	–	जहाँ/जहाँ पर

अव्ययशब्द		हिन्दी
यत्र-तत्र	–	जहाँ-तहाँ
यत्र-कुत्र	–	जहाँ-कहीं
यत्र कुत्रापि	–	जहाँ कहीं भी
यत्रापि	–	जहाँ भी
यत्रैव	–	जहाँ पर ही
यत्	–	कि/क्योंकि/जो
यतः	–	क्योंकि/जो/जहाँ से
यथार्थतः	–	सचमुच/वस्तुतः/ दर-असल
यथापूर्वम्	–	पूर्व के अनुसार/पहले की तरह
यथा-तथा	–	जिस प्रकार से/जैसे-तैसे करके/ जैसे-तैसे
यथाशक्ति	–	शक्ति के अनुसार
यथा	–	जैसे/जैसे कि/ ताकि/ समान
यथायथम्	–	यथायोग्य
यथायोग्यम्	–	यथायोग्य
यथेष्टम्	–	मनमाना
यथाकथञ्चित्	–	जैसे-तैसे
यत्किञ्चित्	–	जो कुछ
यद्यपि	–	हलाकि/यद्यपि
यदा	–	जब
यदापि	–	जब कभी
यदा कदाचित्	–	जब कभी
यदा-यदा	–	जब -जब
यदापर्यन्तम्	–	जब तक
यदि	–	अगर, यदि
यदैव	–	जब ही
यदा-कदा	–	कभी-कभी
यावत्	–	जब तक, जीतना
यस्मात्	–	क्योंकि/जहाँ से
यस्मिन् काले	–	जब
यस्मिन् स्थाने	–	जहाँ
यस्मात् स्थानात्	–	जहाँ से
युक्तम्	–	युक्त
युगपत्	–	एकसाथ
यथार्थम्	–	सत्य
येन केन प्रकारेण	–	किसी भी प्रकार
येन	–	जिससे
येन प्रकारेण	–	जैसे
रे रे	–	हे (अवज्ञा से बुलाने में)
रात्रौ	–	रात्रि में

व

अव्ययशब्द		हिन्दी
वस्तुतः	–	वास्तविक
व्यर्थम्	–	व्यर्थ
वृथा	–	व्यर्थ/बेकार में
वत्	–	समान
विना	–	बिना
विशेषतः	–	विशेष रूप से
विलम्बेन	–	देर से ,देर तक
विषये	–	बाबत
विपरीतम्	–	विरुद्ध
वरम्	–	श्रेष्ठ, बढ़िया, अच्छा
वा	–	अथवा
वामतः	–	बाँए, बायाँ

श

अव्ययशब्द		हिन्दी
शनैः	–	धीरे-धीरे
श्वः	–	कल (आने वाला)
शाश्वत्	–	निरन्तर, सदा, नित्य, लगातार
शीघ्रम्	–	जल्दी, शीघ्र
श्रावं श्रावम्	–	सुनते-सुनते, सुन-सुन कर।
शोभनम्	–	अच्छा

स

अव्ययशब्द		हिन्दी
स्वैरम्	–	स्वेच्छा से।
सततम्	–	लगातार।
सपदि	–	शीघ्र, तुरन्त।
सत्यम्	–	सत्य
समक्षम्	–	सामने
समानम्	–	समान
स्पष्टम्	–	स्पष्ट
स्फुटम्	–	स्पष्ट
स्तोकम्	–	थोड़ा, कुछ (मात्रा)
सद्यः	–	शीघ्र, तुरन्त
सम्प्रति	–	इसी समय, अब
साम्प्रतम्	–	इसी समय, अब, ठीक, युक्त
सकृत्	–	एक बार
स्थाने- स्थाने	–	जगह-जगह
स्थले-स्थले	–	जगह-जगह
स्तोकशः	–	थोड़ा-थोड़ा
सदा	–	हमेशा
संवत्सरे	–	अगले साल

अव्ययशब्द		हिन्दी
सर्वदा	–	हमेशा
सदैव	–	हमेशा
सायम्	–	शाम, सायंकाल
सर्वत्र	–	जब जगह
सर्वथा	–	सब तरह से, बिल्कुल
सविधे	–	समीप, नजदीक
समीपम्	–	पास, नजदीक
सम्बन्धे	–	बाबत
सम्भवतः	–	लगभग
सम्यक्	–	भली प्रकार से
सहसा	–	एक दम, अचानक
सह	–	साथ
साकम्	–	साथ
समम्	–	साथ
सार्धम्	–	साथ
सुष्ठु	–	ठीक, अच्छी तरह, अच्छा
साधु	–	ठीक, खूब, अच्छा
साधु-साधु	–	शाबाश (प्रशंसा सूचक), वाह-वाह
स्वस्ति	–	आशीर्वाद, कल्याण, कल्याण हो, मङ्गल
साक्षात्	–	प्रत्यक्ष, तुल्य।
समन्तात्	–	आसपास, चारों तरफ।
सपद्येव	–	तुरन्त, एकदम।

अव्ययशब्द		हिन्दी
स्वयम्	–	अपने आप, खुद, स्वयं
स्वतः	–	अपने आप।
सहितम्	–	साथ।
समकालम्	–	एक साथ
समन्ततः	–	चारों तरफ
समम्	–	साथ, बराबर-बराबर।
समया	–	निकट, समीप, नजदीक
समीचीनम्	–	ठीक, अच्छा
सम्मुखम्	–	सामने, तरफ
सर्वतः	–	चारों ओर/सभी ओर
स्मारं-स्मारम्	–	याद कर-करके, याद करते-करते।
सत्वरम्	–	शीघ्रता से, जल्दी-जल्दी, झटपट।
सुतराम्	–	बिलकुल

ह

अव्ययशब्द		हिन्दी
हठात्	–	जबरदस्ती
हि	–	इसलिए, निश्चय वाचक।
ह्यः	–	कल (बीता हुआ)।
हन्त	–	विषादसूचक, हर्ष सूचक, हा।
हा	–	शोक या पीड़ासूचक।
हा हा	–	शोक या परितापसूचक।
हुम्	–	क्रोध सूचक।
हे	–	हे, अरे
हेतौ	–	हेतु

शब्दरूप

1. अकारान्त पुँल्लिङ्ग बालक (बालक)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	बालकः	बालकौ	बालकाः
द्वितीया	बालकम्	बालकौ	बालकान्
तृतीया	बालकेन	बालकाभ्याम्	बालकैः
चतुर्थी	बालकाय	बालकाभ्याम्	बालकेभ्यः
पञ्चमी	बालकात् /बालकाद्	बालकाभ्याम्	बालकेभ्यः
षष्ठी	बालकस्य	बालकयोः	बालकानाम्
सप्तमी	बालके	बालकयोः	बालकेषु
सम्बोधन	हे बालक!	हे बालकौ!	हे बालकाः!

अन्य अकारान्त पुंलिङ्ग शब्द

राम,कृष्ण, वृक्ष, कोविद (विद्वान्), सिंह (शेर), नृप, चन्द्र, चिकित्सक (डॉक्टर), नाग (साँप), छात्र, अश्व, वैद्य (डॉक्टर), जनक (पिता), नर, वानर, मधुप (भौंरा), सुत (पुत्र), पुत्र, सुर, खग (पक्षी), कर (हाथ), मूषक, अर्चक (पुजारी), तस्कर (चोर), नायक (हीरो), मातुल, काण (काना), गर्दभ (गदहा), गायक (गाने वाला), गज, कृपण (कंजूस), याचक (भिक्षुक), चालक (ड्राइवर), सर्प, विप्र (ब्राह्मण), इन्द्र, कूप, नारिकेल (नारियल), गणेश, तडाग, केशव (कृष्ण), मयूर आदि अनेक अकारान्त पुंलिङ्ग शब्दों के रूप 'बालक' की तरह चलेंगे।

2. इकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्द

	कवि (कवि)		
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	कविः	कवी	कवयः
द्वितीया	कविम्	कवी	कवीन्
तृतीया	कविना	कविभ्याम्	कविभिः
चतुर्थी	कवये	कविभ्याम्	कविभ्यः
पञ्चमी	कवेः	कविभ्याम्	कविभ्यः
षष्ठी	कवेः	कव्योः	कवीनाम्
सप्तमी	कवौ	कव्योः	कविषु
सम्बोधन	हे कवे!	हे कवी!	हे कवयः!

अन्य इकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्द

अग्नि (आग), मणि (मणि), अरि (शत्रु), अहि (साँप), यति (संन्यासी), अतिथि (मेहमान), कपि (वानर), राशि (ढेर), उदधि (समुद्र), ध्वनि (आवाज), सभापति (सभाध्यक्ष), गिरि (पहाड़), पशुपति (शिव), परिधि (एक रेखा), नृपति (राजा), पाणिनि (वैयाकरण), आधि (मानसिक कष्ट), मारुति (हनुमान्), सन्धि (मेल), अवधि (सीमा), रमापति (विष्णु), सारथि (ड्राइवर), प्रणिधि (प्रार्थना), विधि (तरीका), उपाधि (उपाधि), रश्मि (किरण), समाधि (समाधि), निधि (खजाना), अद्रि (पर्वत), पाणि (हाथ), बलि (राजा बलि), अवि (भेंड) आदि।

नोट- इसीप्रकार सभी इकारान्त पुंलिङ्ग शब्दों के रूप 'कवि' के समान बना लीजिए।

3. उकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्द

भानु (सूर्य)			
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	भानुः	भानू	भानवः
द्वितीया	भानुम्	भानू	भानून्
तृतीया	भानुना	भानुभ्याम्	भानुभिः
चतुर्थी	भानवे	भानुभ्याम्	भानुभ्यः
पञ्चमी	भानोः	भानुभ्याम्	भानुभ्यः
षष्ठी	भानोः	भान्वोः	भानूनाम्
सप्तमी	भानौ	भान्वोः	भानुषु
सम्बोधन	हे भानो!	हे भानू!	हे भानवः!

अन्य उकारान्त पुंलिङ्ग शब्द

विष्णु, रिपु, गुरु, शिशु, कृशानु (आग), प्रभु (स्वामी), विधु (चन्द्रमा), बाहु (भुजा), पांशु (धूलि), वायु (हवा), पशु (पशु), तरु (वृक्ष), इषु (गन्ना) आदि।

नोट- इसी प्रकार सभी उकारान्त पुंलिङ्ग शब्दों के रूप 'भानु' की तरह चलेंगे।

4. ऋकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्द

पितृ (पिता)			
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पिता	पितरौ	पितरः
द्वितीया	पितरम्	पितरौ	पितॄन्
तृतीया	पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभिः
चतुर्थी	पित्रे	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
पञ्चमी	पितुः	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
षष्ठी	पितुः	पित्रोः	पितॄणाम्
सप्तमी	पितरि	पित्रोः	पितृषु
सम्बोधन	हे पितः!	हे पितरौ!	हे पितरः!

नोट- भ्रातृ (भाई) देवृ (देवर) जामातृ (दामाद) इत्यदि सम्बन्ध-सूचक ऋकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्दों के रूप 'पितृ के समान चलते हैं।

दातृ (देने वाला)			
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	दाता	दातारौ	दातारः
द्वितीया	दातारम्	दातारौ	दातॄन्
तृतीया	दात्रा	दातृभ्याम्	दातृभिः
चतुर्थी	दात्रे	दातृभ्याम्	दातृभ्यः
पञ्चमी	दातुः	दातृभ्याम्	दातृभ्यः
षष्ठी	दातुः	दात्रोः	दातॄणाम्
सप्तमी	दातरि	दात्रोः	दातृषु
सम्बोधन	हे दातः!	हे दातारौ!	हे दातारः!

अन्य ऋकारान्त पुंलिङ्ग शब्द

नोट- इसी प्रकार धातृ (ब्रह्मा), कर्तृ (करने वाला), गन्तृ (जाने वाला), नप्तृ (पोता) नेतृ (नेता), नेष्टृ (नष्टा), वक्तृ (वक्ता), होतृ (होता), प्रष्टृ (प्रष्टा), रक्षितृ (रक्षिता), श्रोतृ (श्रोता), नप्तृ (नप्ता), सवितृ (सविता), क्रेतृ (खरीदने वाला), पठितृ (पढ़ाने वाला), ज्ञातृ, भर्तृ, रचयितृ (रचना करने वाला), स्मर्तृ (स्मरण करने वाला), जेतृ (जीतने वाला), भोक्तृ (भोग करने वाला), प्रशास्तृ (प्रशासक), वष्टृ (विश्वकर्मा) आदि रूप दातृ के समान चलते हैं।

5. अकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द

फल (फल)			
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	फलम्	फले	फलानि
द्वितीया	फलम्	फले	फलानि
तृतीया	फलेन	फलाभ्याम्	फलैः
चतुर्थी	फलाय	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
पञ्चमी	फलात्/फलाद्	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
षष्ठी	फलस्य	फलयोः	फलानाम्
सप्तमी	फले	फलयोः	फलेषु
सम्बोधन	हे फल!	हे फले!	हे फलानि!

अन्य अकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द

मित्रम्, पापम्, उपनेत्रम्, उद्यानम्, उदकम्, रत्नम्, मुखम्, क्रीडनकम्, कमलम्, जलजम्, वचनम्, पात्रम्, गृहम्, कार्यम्, कुसुमम्, मौनम्, द्वारम्, फलकम्, चरणम्, उदरम्, पुस्तकम्, सोपानम्, समाचारपत्रम्, तैलम्, पृष्ठम्, वस्त्रम्, मन्दिरम्, अक्षरम्, धनम्, नयनम्, कारयानम्, जलम्, अरण्यम्, ज्ञानम्, सुखम्, व्यजनम्, दुग्धम्, अमृतम्, दुःखम्, चित्रम्, तिलकम्, आसनम् आदि।

नोट- उपर्युक्त शब्दों के रूप 'फल' की तरह बनाइये।

6. उकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द

वस्तु (समान)

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	वस्तु	वस्तुनी	वस्तूनि
द्वितीया	वस्तु	वस्तुनी	वस्तूनि
तृतीया	वस्तुना	वस्तुभ्याम्	वस्तुभिः
चतुर्थी	वस्तुने	वस्तुभ्याम्	वस्तुभ्यः
पञ्चमी	वस्तुनः	वस्तुभ्याम्	वस्तुभ्यः
षष्ठी	वस्तुनः	वस्तुनोः	वस्तूनाम्
सप्तमी	वस्तुनि	वस्तुनोः	वस्तुषु
सम्बोधन	हे वस्तो, हे वस्तु!	हे वस्तुनी!	हे वस्तूनि!

नोट- इसी प्रकार दारु (काठ), जानु (घुटना), जतु (लाख), जत्रु (कंधों की संधि), तालु, मधु (शहद), सानु (पर्वत की चोटी) इत्यादि शब्दों के रूप वस्तु के समान होते हैं।

7. ऋकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द

कर्तृ (करने वाला)

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	कर्तृ	कर्तृणी	कर्तॄणि
द्वितीया	कर्तृ	कर्तृणी	कर्तॄणि
तृतीया	कर्त्रा/कर्तृणा	कर्तृभ्याम्	कर्तृभिः
चतुर्थी	कर्त्रे/कर्तृणे	कर्तृभ्याम्	कर्तृभ्यः
पञ्चमी	कर्तुः/कर्तृणः	कर्तृभ्याम्	कर्तृभ्यः
षष्ठी	कर्तुः/कर्तृणः	कर्त्रोः/कर्तृणोः	कर्तॄणाम्
सप्तमी	कर्तरि/कर्तृणि	कर्त्रोः/कर्तृणोः	कर्तृषु
सम्बोधन	हे कर्तृ!/हे कर्तः!	हे कर्तृणी!	हे कर्तॄणि!

नोट- इसी प्रकार धातृ, नेतृ इत्यादि के भी रूप होते हैं।

8. आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

विद्या (विद्या)

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	विद्या	विद्ये	विद्याः
द्वितीया	विद्याम्	विद्ये	विद्याः
तृतीया	विद्यया	विद्याभ्याम्	विद्याभिः
चतुर्थी	विद्यायै	विद्याभ्याम्	विद्याभ्यः
पञ्चमी	विद्यायाः	विद्याभ्याम्	विद्याभ्यः
षष्ठी	विद्यायाः	विद्ययोः	विद्यानाम्
सप्तमी	विद्यायाम्	विद्ययोः	विद्यासु
सम्बोधन	हे विद्ये!	हे विद्ये!	हे विद्याः!

नोट- इसी प्रकार बालिका, लता, रमा (लक्ष्मी), बाला (स्त्री), निशा (रात), कन्या, ललना (स्त्री), भार्या (पत्नी), बडवा (घोड़ी), राधा, सुमित्रा, तारा, कौशल्या, कला इत्यादि आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप विद्या के समान होते हैं।

9. इकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

रुचि (इच्छा)

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	रुचिः	रुची	रुचयः
द्वितीया	रुचिम्	रुची	रुचीः
तृतीया	रुच्या	रुचिभ्याम्	रुचिभिः
चतुर्थी	रुच्यै/रुचये	रुचिभ्याम्	रुचिभ्यः
पञ्चमी	रुच्याः/रुचेः	रुचिभ्याम्	रुचिभ्यः
षष्ठी	रुच्याः/रुचेः	रुच्योः	रुचीनाम्
सप्तमी	रुच्याम् /रुचौ	रुच्योः	रुचिषु
सम्बोधन	हे रुचे!	हे रुची!	हे रुचयः!

नोट- इसी प्रकार धूलि (धूल), मति, बुद्धि गति, शुद्धि, भक्ति, शक्ति, श्रुति, स्मृति, शान्ति, नीति, रीति, जाति, रात्रि, पंक्ति, गीति इत्यादि सभी इकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप रुचि के समान होते हैं।

10. ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

नदी (नदी)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वितीया	नदीम्	नद्यौ	नदीः
तृतीया	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
चतुर्थी	नद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
पञ्चमी	नद्याः	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
षष्ठी	नद्याः	नद्योः	नदीनाम्
सप्तमी	नद्याम्	नद्योः	नदीषु
सम्बोधन	हे नदि!	हे नद्यौ!	हे नद्यः!

नोट- इसी प्रकार जननी, नगरी, गगरी इत्यादि ईकारान्त शब्दों के रूप चलते हैं।

11. उकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

धेनु (गाय)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	धेनुः	धेनू	धेनवः
द्वितीया	धेनुम्	धेनू	धेनूः
तृतीया	धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभिः
चतुर्थी	धेन्वै, धेनवे	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
पञ्चमी	धेन्वाः, धेनोः	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
षष्ठी	धेन्वाः, धेनोः	धेन्वोः	धेनूनाम्
सप्तमी	धेन्वाम्, धेनौ	धेन्वोः	धेनुषु
सम्बोधन	हे धेनो!	हे धेनू!	हे धेनवः!

12. ऊकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

वधू (बहू)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वधूः	वध्वौ	वध्वः
द्वितीया	वधूम्	वध्वौ	वधूः
तृतीया	वध्वा	वधूभ्याम्	वधूभिः
चतुर्थी	वध्वै	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
पञ्चमी	वध्वाः	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
षष्ठी	वध्वाः	वध्वोः	वधूनाम्
सप्तमी	वध्वाम्	वध्वोः	वधूषु
सम्बोधन	हे वधु!	हे वध्वौ!	हे वध्वः!

नोट- इसी प्रकार चमू (सेना), रज्जू (रस्सी), श्वश्रू (सास), कर्कन्धू (बेर) इत्यादि सभी ऊकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप वधू के समान होते हैं।

13. ऋकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

मातृ (माता)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	माता	मातरौ	मातरः
द्वितीया	मातरम्	मातरौ	मातॄः
तृतीया	मात्रा	मातृभ्याम्	मातृभिः
चतुर्थी	मात्रे	मातृभ्याम्	मातृभ्यः
पञ्चमी	मातुः	मातृभ्याम्	मातृभ्यः
षष्ठी	मातुः	मात्रोः	मातॄणाम्
सप्तमी	मातरि	मात्रोः	मातृषु
सम्बोधन	हे मातः!	हे मातरौ!	हे मातरः!

नोट- यातृ (देवरानी), दुहितृ (लड़की) के रूप मातृ के समान होते हैं।

स्वसृ (बहिन)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	स्वसा	स्वसारौ	स्वसारः
द्वितीया	स्वसारम्	स्वसारौ	स्वसॄः
तृतीया	स्वस्रा	स्वसृभ्याम्	स्वसृभिः
चतुर्थी	स्वस्रे	स्वसृभ्याम्	स्वसृभ्यः
पञ्चमी	स्वसुः	स्वसृभ्याम्	स्वसृभ्यः
षष्ठी	स्वसुः	स्वस्रोः	स्वसॄणाम्
सप्तमी	स्वसरि	स्वस्रोः	स्वसृषु
सम्बोधन	हे स्वसः!	हे स्वसारौ!	हे स्वसारः!
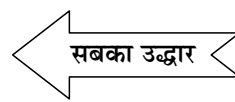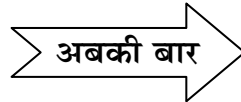
सर्वनामरूप

(1) एतद् (यह)

पुँल्लिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	एषः	एतौ	एते
द्वितीया	एतम् /एनम्	एतौ/एनौ	एतान्/एनान्
तृतीया	एतेन/एनेन	एताभ्याम्	एतैः
चतुर्थी	एतस्मै	एताभ्याम्	एतेभ्यः
पञ्चमी	एतस्मात् /द्	एताभ्याम्	एतेभ्यः
षष्ठी	एतस्य	एतयोः/एनयोः	एतेषाम्
सप्तमी	एतस्मिन्	एतयोः/एनयोः	एतेषु

नपुंसकलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	एतत् /द्	एते	एतानि
द्वितीया	एतत् /द् ,एनत् /द्	एते/एने	एतानि/एनानि
तृतीया	एतेन/एनेन	एताभ्याम्	एतैः
चतुर्थी	एतस्मै	एताभ्याम्	एतेभ्यः
पञ्चमी	एतस्मात् /द्	एताभ्याम्	एतेभ्यः
षष्ठी	एतस्य	एतयोः/एनयोः	एतेषाम्
सप्तमी	एतस्मिन्	एतयोः/एनयोः	एतेषु

स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	एषा	एते	एताः
द्वितीया	एताम्/एनाम्	एते/एने	एताः/एनाः
तृतीया	एतया/एनया	एताभ्याम्	एताभिः
चतुर्थी	एतस्यै	एताभ्याम्	एताभ्यः
पञ्चमी	एतस्याः	एताभ्याम्	एताभ्यः
षष्ठी	एतस्याः	एतयोः/एनयोः	एतासाम्
सप्तमी	एतस्याम्	एतयोः/एनयोः	एतासु

(2) तद् (वह)

पुँल्लिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सः	तौ	ते
द्वितीया	तम्	तौ	तान्
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पञ्चमी	तस्मात्/तस्माद्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

नपुंसकलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	तत् /तद्	ते	तानि
द्वितीया	तत् /तद्	ते	तानि
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पञ्चमी	तस्मात्/तस्माद्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सा	ते	ताः
द्वितीया	ताम्	ते	ताः
तृतीया	तया	ताभ्याम्	ताभिः
चतुर्थी	तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः
पञ्चमी	तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः
षष्ठी	तस्याः	तयोः	तासाम्
सप्तमी	तस्याम्	तयोः	तासु

(3) यद् (जो)

पुँल्लिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	यः	यौ	ये
द्वितीया	यम्	यौ	यान्
तृतीया	येन	याभ्याम्	यैः
चतुर्थी	यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः
पञ्चमी	यस्मात् /यस्माद्	याभ्याम्	येभ्यः
षष्ठी	यस्य	ययोः	येषाम्
सप्तमी	यस्मिन्	ययोः	येषु

नपुंसकलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	यत् /यद्	ये	यानि
द्वितीया	यत् /यद्	ये	यानि
तृतीया	येन	याभ्याम्	यैः
चतुर्थी	यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः
पञ्चमी	यस्मात् /यस्माद्	याभ्याम्	येभ्यः
षष्ठी	यस्य	ययोः	येषाम्
सप्तमी	यस्मिन्	ययोः	येषु

स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	या	ये	याः
द्वितीया	याम्	ये	याः
तृतीया	यया	याभ्याम्	याभिः
चतुर्थी	यस्यै	याभ्याम्	याभ्यः
पञ्चमी	यस्याः	याभ्याम्	याभ्यः
षष्ठी	यस्याः	ययोः	यासाम्
सप्तमी	यस्याम्	ययोः	यासु

(4) किम् (कौन)

	पुँल्लिङ्ग		
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	कः	कौ	के
द्वितीया	कम्	कौ	कान्
तृतीया	केन	काभ्याम्	कैः
चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः
पञ्चमी	कस्मात् /कस्माद्	काभ्याम्	केभ्यः
षष्ठी	कस्य	कयोः	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयोः	केषु
	नपुंसकलिङ्ग		
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	किम्	के	कानि
द्वितीया	किम्	के	कानि
तृतीया	केन	काभ्याम्	कैः
चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः
पञ्चमी	कस्मात् /कस्माद्	काभ्याम्	केभ्यः
षष्ठी	कस्य	कयोः	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयोः	केषु
	स्त्रीलिङ्ग		
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	का	के	काः
द्वितीया	काम्	के	काः
तृतीया	कया	काभ्याम्	काभिः
चतुर्थी	कस्यै	काभ्याम्	काभ्यः
पञ्चमी	कस्याः	काभ्याम्	काभ्यः
षष्ठी	कस्याः	कयोः	कासाम्
सप्तमी	कस्याम्	कयोः	कासु

	5. अस्मद् (मैं)			6. युष्मद् (तुम)		
1.	अहम्	आवाम्	वयम्	त्वम्	युवाम्	यूयम्
2.	माम् /मा	आवाम् /नौ	अस्मान् /नः	त्वाम् /त्वा	युवाम्/वाम्	युष्मान्/वः
3.	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
4.	मह्यम् /मे	आवाभ्याम् /नौ	अस्मभ्यम् /नः	तुभ्यम् /ते	युवाभ्याम्/ वाम्	युष्मभ्यम्/वः
5.	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
6.	मम/मे	आवयोः/नौ	अस्माकम् /नः	तव/ते	युवयोः/वाम्	युष्माकम्/वः
7.	मयि	आवयोः	अस्मासु	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

नोट- अस्मद् और युष्मद् शब्दों के रूप तीनों लिङ्गों में यही रूप चलेगा। इनका सम्बोधन रूप नहीं होता।

❑❑

धातुरूप

1. भू (होना) 'भू' सत्तायाम्
भ्वादिगण, परस्मैपदी , अकर्मक

1. लट्लकार (वर्तमानकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भवति	भवतः	भवन्ति
मध्यम पुरुष	भवसि	भवथः	भवथ
उत्तम पुरुष	भवामि	भवावः	भवामः

2. लृट्लकार (भविष्यकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
मध्यम पुरुष	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उत्तम पुरुष	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

3. लोट्लकार (आज्ञा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भवतु/भवतात्	भवताम्	भवन्तु
मध्यम पुरुष	भव/भवतात्	भवतम्	भवत
उत्तम पुरुष	भवानि	भवाव	भवाम

4. विधिलिङ्लकार (प्रार्थना, निवेदन)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भवेत्	भवेताम्	भवेयुः
मध्यम पुरुष	भवेः	भवेतम्	भवेत
उत्तम पुरुष	भवेयम्	भवेव	भवेम

5. लङ्लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अभवत्	अभवताम्	अभवन्
मध्यम पुरुष	अभवः	अभवतम्	अभवत
उत्तम पुरुष	अभवम्	अभवाव	अभवाम

2. गम् (जाना) 'गम्लृँ' गतौ

भ्वादिगण, परस्मैपदी , सकर्मक

1. लट्लकार (वर्तमानकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गच्छति	गच्छतः	गच्छन्ति
मध्यम पुरुष	गच्छसि	गच्छथः	गच्छथ
उत्तम पुरुष	गच्छामि	गच्छावः	गच्छामः

2. लृट्लकार (भविष्यकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गमिष्यति	गमिष्यतः	गमिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	गमिष्यसि	गमिष्यथः	गमिष्यथ
उत्तम पुरुष	गमिष्यामि	गमिष्यावः	गमिष्यामः

3. लोट्लकार (आज्ञा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गच्छतु/गच्छतात्	गच्छताम्	गच्छन्तु
मध्यम पुरुष	गच्छ/गच्छतात्	गच्छतम्	गच्छत
उत्तम पुरुष	गच्छानि	गच्छाव	गच्छाम

4. विधिलिङ्लकार (प्रार्थना, निवेदन)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गच्छेत्	गच्छेताम्	गच्छेयुः
मध्यम पुरुष	गच्छेः	गच्छेतम्	गच्छेत
उत्तम पुरुष	गच्छेयम्	गच्छेव	गच्छेम

5. लङ्लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अगच्छत्	अगच्छताम्	अगच्छन्
मध्यम पुरुष	अगच्छः	अगच्छतम्	अगच्छत
उत्तम पुरुष	अगच्छम्	अगच्छाव	अगच्छाम

3. पठ् (पढ़ना) 'पठँ' व्यक्तायां वाचि

भ्वादिगण, परस्मैपदी , सकर्मक

1. लट्लकार (वर्तमानकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठति	पठतः	पठन्ति
मध्यम पुरुष	पठसि	पठथः	पठथ
उत्तम पुरुष	पठामि	पठावः	पठामः

2. लृट्लकार (भविष्यकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	पठिष्यसि	पठिष्यथः	पठिष्यथ
उत्तम पुरुष	पठिष्यामि	पठिष्यावः	पठिष्यामः

3. लोट्लकार (आज्ञा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठतु/पठतात्	पठताम्	पठन्तु
मध्यम पुरुष	पठ/पठतात्	पठतम्	पठत
उत्तम पुरुष	पठानि	पठाव	पठाम

4. विधिलिङ्लकार (प्रार्थना, निवेदन)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठेत्	पठेताम्	पठेयुः
मध्यम पुरुष	पठेः	पठेतम्	पठेत
उत्तम पुरुष	पठेयम्	पठेव	पठेम

5. लङ्लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपठत्	अपठताम्	अपठन्
मध्यम पुरुष	अपठः	अपठतम्	अपठत
उत्तम पुरुष	अपठम्	अपठाव	अपठाम

4. पा (पीना) 'पा' पाने

भ्वादिगण, परस्मैपदी, सकर्मक

1. लट्लकार (वर्तमानकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पिबति	पिबतः	पिबन्ति
मध्यम पुरुष	पिबसि	पिबथः	पिबथ
उत्तम पुरुष	पिबामि	पिबावः	पिबामः

2. लृट्लकार (भविष्यकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पास्यति	पास्यतः	पास्यन्ति
मध्यम पुरुष	पास्यसि	पास्यथः	पास्यथ
उत्तम पुरुष	पास्यामि	पास्यावः	पास्यामः

3. लोट्लकार (आज्ञा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पिबतु/पिबतात्	पिबताम्	पिबन्तु
मध्यम पुरुष	पिब/पिबतात्	पिबतम्	पिबत
उत्तम पुरुष	पिबानि	पिबाव	पिबाम

4. विधिलिङ्लकार (प्रार्थना, निवेदन)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पिबेत्	पिबेताम्	पिबेयुः
मध्यम पुरुष	पिबेः	पिबेतम्	पिबेत
उत्तम पुरुष	पिबेयम्	पिबेव	पिबेम

5. लङ्लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपिबत्	अपिबताम्	अपिबन्
मध्यम पुरुष	अपिबः	अपिबतम्	अपिबत
उत्तम पुरुष	अपिबम्	अपिबाव	अपिबाम

5. लभ् (पाना) 'डुलभँष्' प्राप्तौ

भ्वादिगण, आत्मनेपदी , सकर्मक

1. लट्लकार (वर्तमानकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	लभते	लभेते	लभन्ते
मध्यम पुरुष	लभसे	लभेथे	लभध्वे
उत्तम पुरुष	लभे	लभावहे	लभामहे

2. लृट्लकार (भविष्यकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	लप्स्यते	लप्स्येते	लप्स्यन्ते
मध्यम पुरुष	लप्स्यसे	लप्स्येथे	लप्स्यध्वे
उत्तम पुरुष	लप्स्ये	लप्स्यावहे	लप्स्यामहे

3. लोट्लकार (आज्ञा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	लभताम्	लभेताम्	लभन्ताम्
मध्यम पुरुष	लभस्व	लभेथाम्	लभध्वम्
उत्तम पुरुष	लभै	लभावहै	लभामहै

4. विधिलिङ्लकार (प्रार्थना, निवेदन)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	लभेत	लभेयाताम्	लभेरन्
मध्यम पुरुष	लभेथाः	लभेयाथाम्	लभेध्वम्
उत्तम पुरुष	लभेय	लभेवहि	लभेमहि

5. लङ्लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अलभत	अलभेताम्	अलभन्त
मध्यम पुरुष	अलभथाः	अलभेथाम्	अलभध्वम्
उत्तम पुरुष	अलभे	अलभावहि	अलभामहि

6. दा (देना) 'डुदाञ्' दाने

जुहोत्यादिगण, उभयपदी , सकर्मक

1. लट्लकार (वर्तमानकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ददाति	दत्तः	ददति
मध्यम पुरुष	ददासि	दत्थः	दत्थ
उत्तम पुरुष	ददामि	दद्वः	दद्मः

2. लृट्लकार (भविष्यकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	दास्यति	दास्यतः	दास्यन्ति
मध्यम पुरुष	दास्यसि	दास्यथः	दास्यथ
उत्तम पुरुष	दास्यामि	दास्यावः	दास्यामः

3. लोट्लकार (आज्ञा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ददातु/दत्तात्	दत्ताम्	ददतु
मध्यम पुरुष	देहि/दत्तात्	दत्तम्	दत्त
उत्तम पुरुष	ददानि	ददाव	ददाम

4. विधिलिङ्लकार (प्रार्थना, निवेदन)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	दद्यात्	दद्याताम्	दद्युः
मध्यम पुरुष	दद्याः	दद्यातम्	दद्यात
उत्तम पुरुष	दद्याम्	दद्याव	दद्याम

5. लङ्लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अददात्	अदत्ताम्	अददुः
मध्यम पुरुष	अददाः	अदत्तम्	अदत्त
उत्तम पुरुष	अददाम्	अदद्व	अदद्म

7. प्रच्छ् (पूँछना) 'प्रच्छँ' ज्ञीप्सायाम्

तुदादिगण, परस्मैपदी , द्विकर्मक

1. लट्लकार (वर्तमानकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पृच्छति	पृच्छतः	पृच्छन्ति
मध्यम पुरुष	पृच्छसि	पृच्छथः	पृच्छथ
उत्तम पुरुष	पृच्छामि	पृच्छावः	पृच्छामः

2. लृट्लकार (भविष्यकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	प्रक्ष्यति	प्रक्ष्यतः	प्रक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	प्रक्ष्यसि	प्रक्ष्यथः	प्रक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	प्रक्ष्यामि	प्रक्ष्यावः	प्रक्ष्यामः

3. लोट्लकार (आज्ञा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पृच्छतु/पृच्छतात्	पृच्छताम्	पृच्छन्तु
मध्यम पुरुष	पृच्छ/पृच्छतात्	पृच्छतम्	पृच्छत
उत्तम पुरुष	पृच्छानि	पृच्छाव	पृच्छाम

4. विधिलिङ्लकार (प्रार्थना, निवेदन)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पृच्छेत्	पृच्छेताम्	पृच्छेयुः
मध्यम पुरुष	पृच्छेः	पृच्छेतम्	पृच्छेत
उत्तम पुरुष	पृच्छेयम्	पृच्छेव	पृच्छेम

5. लङ्लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपृच्छत्	अपृच्छताम्	अपृच्छन्
मध्यम पुरुष	अपृच्छः	अपृच्छतम्	अपृच्छत
उत्तम पुरुष	अपृच्छम्	अपृच्छाव	अपृच्छाम

8. चुर् (चोरी करना) 'चुरँ' स्तेये

चुरादिगण, उभयपदी , सकर्मक

1. लट्लकार (वर्तमानकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चोरयति	चोरयतः	चोरयन्ति
मध्यम पुरुष	चोरयसि	चोरयथः	चोरयथ
उत्तम पुरुष	चोरयामि	चोरयावः	चोरयामः

2. लृट्लकार (भविष्यकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चोरयिष्यति	चोरयिष्यतः	चोरयिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	चोरयिष्यसि	चोरयिष्यथः	चोरयिष्यथ
उत्तम पुरुष	चोरयिष्यामि	चोरयिष्यावः	चोरयिष्यामः

3. लोट्लकार (आज्ञा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चोरयतु/चोरयतात्	चोरयताम्	चोरयन्तु
मध्यम पुरुष	चोरय/चोरयतात्	चोरयतम्	चोरयत
उत्तम पुरुष	चोरयाणि	चोरयाव	चोरयाम

4. विधिलिङ्लकार (प्रार्थना, निवेदन)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चोरयेत्	चोरयेताम्	चोरयेयुः
मध्यम पुरुष	चोरयेः	चोरयेतम्	चोरयेत
उत्तम पुरुष	चोरयेयम्	चोरयेव	चोरयेम

5. लङ्लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अचोरयत्	अचोरयताम्	अचोरयन्
मध्यम पुरुष	अचोरयः	अचोरयतम्	अचोरयत
उत्तम पुरुष	अचोरयम्	अचोरयाव	अचोरयाम

संस्कृत संख्यायें

1	एकः, एकम् ,एका	41	एकचत्वारिंशत्	81	एकाशीतिः
2	द्वौ ,द्वे, द्वे	42	द्विचत्वारिंशत् , द्वाचत्वारिंशत्	82	द्व्यशीतिः
3	त्रयः ,त्रीणि ,तिस्रः	43	त्रिचत्वारिंशत् , त्रयश्चत्वारिंशत्	83	त्र्यशीतिः
4	चत्वारः, चत्वारि ,चतस्रः	44	चतुश्चत्वारिंशत्	84	चतुरशीतिः
5	पञ्च	45	पञ्चचत्वारिंशत्	85	पञ्चाशीतिः
6	षट्	46	षट्चत्वारिंशत्	86	षडशीतिः
7	सप्त	47	सप्तचत्वारिंशत्	87	सप्ताशीतिः
8	अष्ट/अष्टौ	48	अष्टचत्वारिंशत्, अष्टाचत्वारिंशत्	88	अष्टाशीतिः
9	नव	49	नवचत्वारिंशत्, एकोनपञ्चाशत्	89	नवाशीतिः , एकोननवतिः
10	**दश**	50	**पञ्चाशत्**	90	**नवतिः**
11	एकादश	51	एकपञ्चाशत्	91	एकनवतिः
12	द्वादश	52	द्विपञ्चाशत्, द्वापञ्चाशत्	92	द्विनवतिः, द्वानवतिः
13	त्रयोदश	53	त्रिपञ्चाशत्, त्रयःपञ्चाशत्	93	त्रिनवतिः, त्रयोनवतिः
14	चतुर्दश	54	चतुःपञ्चाशत्	94	चतुर्नवतिः
15	पञ्चदश	55	पञ्चपञ्चाशत्	95	पञ्चनवतिः
16	षोडश	56	षट्पञ्चाशत्	96	षण्णवतिः
17	सप्तदश	57	सप्तपञ्चाशत्	97	सप्तनवतिः
18	अष्टादश	58	अष्टपञ्चाशत्, अष्टापञ्चाशत्	98	अष्टनवतिः , अष्टानवतिः
19	नवदश	59	नवपञ्चाशत् , एकोनषष्टिः	99	नवनवतिः , एकोनशतम्
20	**विंशतिः**	60	**षष्टिः**	100.	**शतम्**
21	एकविंशतिः	61	एकषष्टिः	एक हजार	- सहस्रम्
22	द्वाविंशतिः	62	द्विषष्टिः, द्वाषष्टिः	दस हजार	- अयुतम् (दशसहस्रम्)
23	त्रयोविंशतिः	63	त्रिषष्टिः , त्रयःषष्टिः	एक लाख	- लक्षम्
24	चतुर्विंशतिः	64	चतुःषष्टिः	दस लाख	- नियुतम्,प्रयुतम्, दशलक्षम्
25	पञ्चविंशतिः	65	पञ्चषष्टिः	एक करोड़	- कोटिः
26	षड्विंशतिः	66	षट्षष्टिः	दस करोड़	- दशकोटिः
27	सप्तविंशतिः	67	सप्तषष्टिः	एक अरब	- अर्बुदम्
28	अष्टाविंशतिः	68	अष्टषष्टिः, अष्टाषष्टिः	दस अरब	- दशार्बुदम्
29	नवविंशतिः	69	नवषष्टिः , एकोनसप्ततिः	एक खरब	- खर्वम्
30	**त्रिंशत्**	70	**सप्ततिः**	दस खरब	- दशखर्वम्
31	एकत्रिंशत्	71	एकसप्ततिः	एक नील	- नीलम्
32	द्वात्रिंशत्	72	द्विसप्ततिः , द्वासप्ततिः	दस नील	- दशनीलम्
33	त्रयस्त्रिंशत्	73	त्रिसप्ततिः , त्रयःसप्ततिः	एक पद्म	- पद्मम्
34	चतुस्त्रिंशत्	74	चतुःसप्ततिः	दशपद्म	- दशपद्मम्
35	पञ्चत्रिंशत्	75	पञ्चसप्ततिः	एक शंख	- शंखम्
36	षट्त्रिंशत्	76	षट्सप्ततिः	दस शंख	- दशशंखम्
37	सप्तत्रिंशत्	77	सप्तसप्ततिः	महाशंख	- महाशंखम्
38	अष्टात्रिंशत्	78	अष्टसप्ततिः, अष्टासप्ततिः		
39	नवत्रिंशत् , एकोनचत्वारिंशत्	79	नवसप्ततिः, एकोनाशीतिः		
40	**चत्वारिंशत्**	80	**अशीतिः**		

संख्या सम्बन्धी कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य

- 101 = एकाधिकं शतम्
  102 = द्व्यधिकं शतम्
  103 = त्र्यधिकं शतम्
  104 = चतुरधिकं शतम्
  105 = पञ्चाधिकं शतम् आदि।

- 200 = द्विशती/शतद्वयम्/द्विशतम्
  300 = त्रिशती/शतत्रयम् / त्रिशतम्
  400 = चतुःशती / चतुःशतम्
  500 = पञ्चशती / पञ्चशतम्
  600 = षट्शती / षट्शतम्
  700 = सप्तशती / सप्तशतम्।

- त्रि (3) से लेकर अष्टादशन् (18) तक सभी शब्दों के रूप केवल बहुवचन में चलते हैं।
- "**विंशत्यादिरानवतेः**" एकोनविंशतिः (19) से नवनवतिः (99) तक सभी शब्द एकवचनान्त स्त्रीलिङ्ग हैं। इनके रूप हमेशा एकवचन में ही चलेंगे।
- इकारान्त विंशति, षष्टि, सप्तति, अशीति, नवति – जिन पदों के अन्त में ये पद आयें उनके रूप 'मति' के समान चलेंगे।
- तकारान्त त्रिंशत्, चत्वारिंशत्, पञ्चाशत् आदि शब्दों के रूप 'सरित्' के समान चलेंगे।
- शतम्, सहस्रम्, अयुतम्, लक्षम्, नियुतम्, प्रयुतम्, आदि शब्द सदा एकवचनान्त नपुंसकलिङ्ग में होते हैं। इनके रूप 'फल' की तरह चलेंगे।

4. प्रमुख लेखकों/कवियों का सामान्य परिचय एवं उनकी कृतियाँ

महाकवि कालिदास

- **पत्नी** – विद्योत्तमा
- **श्वसुर** – शारदानन्द
- **मित्र** – लङ्का के राजा कुमारदास
- **समय** – ईसापूर्व प्रथम शताब्दी
- **जन्मस्थान** – उज्जयिनी (काश्मीरी/बंगाली)
- **आश्रयदाता** – चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य
- **जाति/गोत्र** – ब्राह्मण
- **रचनायें कालक्रम की दृष्टि से** – 1. ऋतुसंहार (गीतिकाव्य) 2. कुमारसम्भवम् (महाकाव्य) 3. मालविकाग्निमित्रम् (नाटक) 4. विक्रमोर्वशीयम् (त्रोटक) 5. मेघदूतम् (खण्डकाव्य) 6. रघुवंशम् (महाकाव्य) 7. अभिज्ञानशाकुन्तलम् (नाटक)
- **उपासक** – शिव के
- **प्रिय छन्द** – उपजाति/अनुष्टुप्
- **प्रिय अलङ्कार** – उपमा
- **कालिदास की रीति एवं गुण** – वैदर्भी रीति एवं प्रसादगुण
- **कालिदास का प्रिय रस** – शृङ्गार रस
- **कालिदास की अन्य कृतियाँ**– (i) कालीस्तोत्र, (ii) गङ्गाष्टक, (iii) ज्योतिर्विदाभरण, (iv) राक्षसकाव्य, (v)श्रुतबोध

कालिदासीय जीवन के कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य

- काली देवी की उपासना से विद्या की प्राप्ति।
- विद्याप्राप्ति के बाद कालिदास का कथन–
  'अनावृतकपाटं द्वारं देहि' (दरवाजा खोलो)
- इसके उत्तर में पत्नी **विद्योत्तमा** का कथन–
  'अस्ति कश्चित् वाग्विशेषः' (लगता है कोई विद्वान् है)
- **'अस्ति' से कुमारसम्भवम्** – "अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा...."
- **'कश्चित्' से मेघदूतम्** – "कश्चित् कान्ता विरहगुरुणा...."
- **'वाग्' से रघुवंशम्** – "वागर्थाविव सम्पृक्तौ....."
- **विक्रमादित्य की सभा में 9 रत्न** थे, जिसमें से एक कालिदास भी थे–
  धन्वन्तरि-क्षपणकामरसिंह -शङ्कु-
  वेतालभट्ट-घटकर्पर-कालिदासाः।
  ख्यातो वराहमिहिरो नृपतेः सभायां
  रत्नानि वै वररुचिर्नव विक्रमस्य।।
  (ज्योतिर्विदाभरण 22-10)
- एक किंवदन्ती के अनुसार धारा के राजा भोज के प्रधानकवि कालिदास थे।
- एक किंवदन्ती के अनुसार कालिदास का अन्तिम समय लंका के महाराज कुमारदास के यहाँ बीता, वहाँ धन के लोभ में एक वेश्या ने उनकी **हत्या करा दी**।
- कालिदास ने वेद, दर्शन, उपनिषद्, रामायण, महाभारत, गीता, पुराण, आयुर्वेद, धनुर्वेद, सङ्गीतशास्त्र, ज्योतिष, व्याकरण, छन्दःशास्त्र, काव्यशास्त्र आदि का गम्भीर अध्ययन किया था।
- बाद में राजकवियों को 'कालिदास' कहने की परम्परा चल पड़ी। **राजशेखर** ने ऐसे तीन कालिदासों का उल्लेख किया है–
  एकोऽपि जीयते हन्त कालिदासो न केनचित्।
  शृङ्गारे ललितोद्गारे कालिदासत्रयी किमु।।
- **कालिदास की उपाधियाँ**–(i) दीपशिखा कालिदास (ii) रघुकार (iii) कविकुलगुरु (iv) कविताकामिनीविलास (v) उपमासम्राट्
- महाकवि कालिदास ने मालविकाग्निमित्र की प्रस्तावना में **"प्रथितयशसां भाससौमिल्ल....."** के द्वारा भास, सौमिल्ल आदि अपने पूर्ववर्ती कवियों को सादर स्मरण किया है।

अभिज्ञानशाकुन्तलम्

- **लेखक** – कालिदास
- **विधा** – नाटक
- **अङ्क** – 7 (सात)
- **प्रधानरस** – शृङ्गार (सम्भोगशृङ्गार)
- **कथानक** – राजा दुष्यन्त एवं शकुन्तला का परस्पर प्रेम, विरह एवं मिलन का वर्णन है।
- **प्रमुखपात्र** – दुष्यन्त (नायक), शकुन्तला (नायिका) कण्व, अनसूया, प्रियंवदा, माढव्य (विदूषक), गौतमी, शार्ङ्गरव, शारद्वत, हंसपदिका, वसुमती, मातलि, सानुमती, सर्वदमन (भरत), मारीच ऋषि, अदिति (दाक्षायणी), दुर्वासा, मेनका
- शाकुन्तलम् का उपजीव्य/आधारग्रन्थ है – **1. महाभारत**

के आदिपर्व का शकुन्तलोपाख्यान (68-74 अध्यायों में), 2. पद्मपुराण के स्वर्गखण्ड में भी यह कथा मिलती है।

- अभि0 शाकुन्तलम् नाटक की रीति – **वैदर्भी रीति**
- वैदर्भीरीतिसन्दर्भे विशिष्यते – **कालिदासः**
- कालिदास के काव्यों में किस वृत्ति का विशेष प्रयोग है– **कैशिकी**
- कालिदास का प्रिय अलङ्कार – **उपमा** (उपमा कालिदासस्य)।
- अभि0शाकु0 के प्रथम अङ्क का नाम – **आश्रम प्रवेश**
- द्वितीय अङ्क का नाम – **आश्रम निवेश**
- तृतीय अङ्क का नाम – **मिलन अङ्क**
- चतुर्थ अङ्क का नाम – **विदा अङ्क**
- पञ्चम अङ्क का नाम – **प्रत्याख्यान अङ्क**
- षष्ठ अङ्क का नाम – **पश्चात्ताप अङ्क।**
- सप्तम अङ्क का नाम – **पुनर्मिलन अङ्क।**
- शाकुन्तलम् के **चतुर्थ अङ्क** में करुणरस का प्रयोग है।
- शकुन्तला का हस्तिनापुर (पतिगृह) गमन **चतुर्थ अङ्क में** वर्णित है।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् का नायक – **दुष्यन्त**
- दुष्यन्त **धीरोदात्त** कोटि का नायक है।
- राजा दुष्यन्त कहाँ का राजा है – **हस्तिनापुर**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् की नायिका – **शकुन्तला**
- शकुन्तला किस कोटि की नायिका है – **मुग्धा**
- शकुन्तला है – **शकुन्तभिः पक्षिभिः लालिता पालिता इति शकुन्तला**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् का मङ्गलाचरण है – **आशीर्वादात्मक**
- अभि0 शाकुन्तलम् के मङ्गलाचरण में छन्द है – **स्रग्धरा**
- "या सृष्टिः स्रष्टुराद्या....." इत्यादि श्लोक कहाँ का है – **अभि0शाकु0 नाटक का मङ्गलाचरण**
- अभि0शाकु0 के मङ्गलाचरण में किसकी स्तुति की गयी है – **अष्टमूर्ति शिव की**
- **"तत्रापि च चतुर्थोऽङ्कः"** से सम्बन्धित नाटक – **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**
- **"तत्र श्लोकश्चतुष्टयम्"** किससे सम्बन्धित है – **अभि0 शाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क से**
- "काव्येषु नाटकं रम्यम्" इस वाक्य में किस नाटक का संकेत है – **अभिज्ञानशाकुन्तलम् का**
- दुष्यन्त का विनोदप्रिय मित्र – **माढव्य**
- अभि0 शाकुन्तलम् का विदूषक – **माढव्य**
- शकुन्तला की दोनों सखियाँ – **1. अनसूया. 2. प्रियंवदा।**
- शकुन्तला के माता और पिता– **मेनका और ऋषि विश्वामित्र**
- शकुन्तला के पालक (धर्मपिता) पिता – **महर्षि कण्व**
- महर्षि कण्व के दो प्रमुख शिष्य – **शार्ङ्गरव और शारद्वत**
- दुष्यन्त और शकुन्तला का विवाह हुआ – **गान्धर्व विवाह**
- शकुन्तला को किसने शाप दिया – **ऋषि दुर्वासा ने**
- शकुन्तला को शाप का कारण – **अतिथि रूप में पधारे दुर्वासा ऋषि का तिरस्कार**
- शकुन्तला के शाप को जानने वाली – **प्रियंवदा और अनसूया**
- शकुन्तला को शाप मिला– **अभि0शाकु0 के चतुर्थ अङ्क में**
- अभि0शा0 में शाप की कल्पना का कारण – **प्रेम के आदर्शस्वरूप की स्थापना**
- शाप का प्रभाव किस अङ्क में दिखायी पड़ता है – **अभि0शा0 के पञ्चम अङ्क में**
- राजा दुष्यन्त के पश्चात्ताप का वर्णन – **षष्ठ अङ्क में**
- राजा दुष्यन्त और शकुन्तला का पुनर्मिलन होता है – **अभि0शा0 के सप्तम अङ्क में**
- हेमकूट पर्वत में आश्रम है – **महर्षि मारीच का।**
- दुष्यन्त और शकुन्तला का पुनर्मिलन – **हेमकूट पर्वत के मारीच आश्रम में।**
- शकुन्तला की मुद्रिका प्राप्त होती है– **धीवर मीनपालक को**
- दुष्यन्त और शकुन्तला के पुत्र का नाम– **सर्वदमन (भरत)**
- अभि0 शा0 का प्रारम्भ होता है – **नान्दीपाठ से (या सृष्टिः स्रष्टुराद्या)**
- अभि0शा0 का समापन होता है – **भरत वाक्य से (प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः....)।**
- कालिदास का सर्वस्वभूतग्रन्थ है – **अभिज्ञानशाकुन्तलम्। "कालिदासस्य सर्वस्वमभिज्ञानशाकुन्तलम्।"**

मेघदूतम् (खण्डकाव्य/गीतिकाव्य)

- **लेखक** – कालिदास
- **विधा** – खण्डकाव्य/गीतिकाव्य
- **दो भागों में**–(i) पूर्वमेघ (ii) उत्तरमेघ
- **प्रधानरस** – विप्रलम्भशृङ्गार
- **छन्द** – मन्दाक्रान्ता
- **मेघदूतम् की रीति** – वैदर्भी रीति
- **उपजीव्य** – कथानक ब्रह्मवैवर्तपुराण से एवं दूत की कल्पना वाल्मीकीयरामायण से
- **नायक** – यक्ष (हेममाली) ब्रह्मवैवर्तपुराण के अनुसार
- **नायिका** – यक्षिणी (विशालाक्षी)
- **कथानक** – दूतकाव्य के रूप में एक 'गीतिकाव्य' है, जिसमें एक यक्ष का विरह वर्णित है।

- 50 से अधिक संस्कृत टीकायें।
- जर्मन विद्वान् **मैक्समूलर ने मेघदूतम् का जर्मन भाषा में पद्यानुवाद** और **श्वेट्ज ने जर्मनभाषा में गद्यानुवाद** किया है।
- **आर्थर राइडर और एच. जी रूक** ने अंग्रेजी में मेघदूतम् का पद्यानुवाद किया है।
- हिन्दीभाषा में मेघदूतम् के **6 पद्यानुवाद** हो चुके हैं।
- क्षेमेन्द्र ने कालिदास के मन्दाक्रान्ता छन्द की प्रशंसा की– **'सुवशा कालिदासस्य मन्दाक्रान्ता विराजते' – सुवृत्ततिलक**
- मेघदूत में उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक आदि अलङ्कारों का सुन्दर प्रयोग है।
- डॉ. कीथ ने मेघदूत को **Elegy (शोकगीत)** कहा है।
- भारतीय मत में मेघदूत शोकगीत या करुणगीत न होकर **विरहगीत** या **विप्रलम्भगीत** है।
- **प्रमुखपात्र**–यक्ष (हेममाली) यक्षिणी (विशालाक्षी) मेघ (बादल) कुबेर (यक्षाधिपति)
- संस्कृत के गीतिकाव्यों का आदिमग्रन्थ महाकवि कालिदास का मेघदूत है।
- दक्षिणावर्तनाथ और मल्लिनाथ ने मेघदूत लिखने में रामायण से प्रेरणा मानी है।
- यक्ष को अलकाधीश्वर कुबेर ने जो शाप दिया उसका आधार पद्मपुराण है।
- वहाँ के योगिनी नामक आषाढ़-कृष्ण-एकादशी-महात्म्य-प्रसंग में यह कथा संक्षेप में है।
- 'ब्रह्मवैवर्तपुराण' को भी मेघदूत का उपजीव्य माना जाता है।
- मेघदूत में 115 पद्य हैं। यह दो भागों पूर्वमेघ और उत्तरमेघ में विभक्त है।
- पूर्वमेघ में 63 और उत्तरमेघ में 52 पद्य हैं।
- मल्लिनाथ ने 121 पद्य स्वीकार किए हैं किन्तु 6 श्लोकों को प्रक्षिप्त माना है।
- मेघदूत का **मुख्य रस विप्रलम्भ श‍ृङ्गार** है।
- पूरे मेघदूत में **मन्दाक्रान्ता छन्द** प्रयुक्त है।
- यक्षों के अधिपति कुबेर हैं। उन्होंने अपने कार्य में प्रमाद करने के कारण किसी अपने अनुचर 'यक्ष' को शाप दे दिया।

रघुवंशम् (महाकाव्य)

- **रचयिता-** महाकवि कालिदास
- **नायक-** दिलीप, रघु, अज, दशरथ, रामादि अनेक रघुवंशी राजागण (सभीनायक धीरोदात्त प्रकृति के) मुख्यरूप से 'राम' धीरोदात्त नायक।
- **काव्यविधा-** 'महाकाव्य'
- **रचनाकाल-** ई. पू. प्रथम शताब्दी से चतुर्थ शताब्दी के मध्य (विद्वानों में मतभेद)
- **सर्ग-** 19 सर्ग

सर्ग क्र.	सर्गों के नाम	श्लोक संख्या
01.	वशिष्ठ आश्रम अभिगमन	95
02.	नन्दिनी वरदान	75
03.	रघुराज्याभिषेक	70
04.	रघुदिग्विजय	88
05.	स्वयंवर-अभिगमन	76
06.	स्वयंवर-वर्णन	86
07.	अज-पाणिग्रहण	71
08.	अजविलाप	95
09.	मृगयावर्णन	82
10.	रामावतार	86
11.	सीता-विवाहवर्णन	93
12.	रावण-वध	104
13.	दण्डका-प्रत्यागमन	79
14.	सीता-परित्याग	87
15.	श्रीराम-स्वर्गारोहण	103
16.	कुमुद्वती-परिणय	88
17.	अतिथि-वर्णन	81
18.	वंशानुक्रम	53
19.	अग्निवर्ण श‍ृङ्गार	57
कुल सर्ग - 19		**कुल श्लोक -1569**

रघुवंश के प्रमुख संवाद

- दिलीप-वशिष्ठ-संवाद - प्रथमसर्ग
- दिलीप-सिंह-संवाद - द्वितीय सर्ग
- इन्द्र-रघु संवाद - तृतीय सर्ग
- कौत्स-रघु संवाद - पञ्चम सर्ग
- राम-परशुराम-संवाद - एकादश सर्ग
- सीता-लक्ष्मण संवाद - चतुर्दश सर्ग
- कुश-नायिका रूप अयोध्या - षोडश सर्ग (स्वप्न संवाद)

कुमारसम्भवम्-(महाकाव्य)

- 'कुमारसम्भवम्' महाकाव्य कालिदास की प्रारम्भिक रचना है।
- इसमें कवि शिव-पार्वती विवाह, कुमार कार्तिकेय के जन्म, तथा उनके द्वारा तारकासुर के वध की कथा वर्णित है।
- इस महाकाव्य में **17 सर्ग** हैं।
- किन्तु प्रथम 8 सर्गों को ही कालिदास की रचना माना जाता है।
- 'विवरण टीका' के लेखक- नारायण पण्डित ने कहा कुमारसम्भव काव्य का लक्ष्य पार्वती द्वारा शिव के चित्त का आकर्षण मात्र था।
- काव्यशात्रीय आचार्यों ने प्रथम आठ सर्गों से ही उद्धरण दिये हैं।
- मल्लिनाथ की संजीवनी टीका वस्तुतः आठ सर्गों तक ही है।
- मल्लिनाथ के पूर्ववर्ती अरुणगिरिनाथ ने भी आठ सर्गों तक ही टीका लिखी है।
- भाषा, भाव की दृष्टि से परवर्ती सर्ग मौलिक सर्गों की अपेक्षा हीनतर है।
- केवल सीताराम नामक कवि ने संजीवनी नाम से उन सर्गों की व्याख्या की है।
  (सर्वप्रथम टीका सम्पूर्ण काव्य पर 17 सर्ग तक)
- 'कुमारसम्भवम्' में 'सम्भव' शब्द सम्भावना की ही ध्वनि देता है।
- वास्तविक जन्म को प्रकाशित नहीं करता है।

कुमारसम्भवम् - महाकाव्य का परिचय

- **प्रणेता-** महाकवि कालिदास की प्रारम्भिक रचना।
- **नायक-** कुमारसम्भव के नायक शिव दिव्य कोटि के हैं।
- **प्रतिनायक**- तारकासुर
- **सर्ग संख्या-** 17 सर्ग (मूल रूप से 8 सर्ग)
- **उपजीव्य-** शिवपुराण, रामायण, महाभारत।

रस

- कुमारसम्भवम् का अङ्गी रस **शृङ्गार** है।
- शिवपार्वती के असाधारण प्रेम और प्रणय लीलाओं का चित्रण इस काव्य में होने से सम्पूर्ण काव्य श्रृङ्गार मय है।

तं यथात्मसदृशं वरं वधूरन्वरज्यत वरस्तथैव ताम्।
सागरादनपगा हि जाह्नवी सोऽपि तन्मुखरसैकवृत्तिभाक्॥

(कुमार. 08/16)

- चतुर्थ सर्ग में रति के करुण विलाप में आद्यन्त करुण रस छाया हुआ है।

गत एव न ते निवर्तते स सखा दीप इवानिलाहतः।
अहमस्य दशेव पश्य माम विषह्यव्यसनेन धूमिताम्॥

(कुमार. 4/30)

- समाधिस्थ शिव की मूर्ति एवं पार्वती की तपस्या वर्णन में शान्त रस की छटा दिखती है।
- अंग रस के रूप में हास्य रस भी इस महाकाव्य में विन्यस्त है।

छन्द

- कालिदास को छोटे छन्द अधिक प्रिय थे।
- बड़े छन्दों का प्रयोग सर्गान्त में किया गया है।
- छोटे छन्दों में भी उपजाति और अनुष्टुप् अतिप्रिय छन्द हैं।
- कुमारसम्भव में सर्वाधिक उपजाति छन्द का प्रयोग हुआ है।

सर्गानुसार कथावस्तु

सर्ग-1
- हिमालय का भव्य वर्णन
- हिमालय-मैना विवाह
- पार्वती का जन्म और सौन्दर्य
- नारद द्वारा शिव-पार्वती विवाह की चर्चा।
- पार्वती द्वारा शिव की आराधना।

सर्ग-2
- तारकासुर से पीड़ित देवताओं के द्वारा ब्रह्मा की प्रार्थना।
- ब्रह्मा द्वारा उपाय कि शङ्कर-पार्वती पुत्र ही तारक-वध कर सकता है।

सर्ग-3
- देवगण शिव के चित्त में क्षोभ उत्पन्न करने के लिए कामदेव का उपयोग करते हैं।
- कामदेव द्वारा वसन्त ऋतु फैलाना शिव पर बाण चलाना।
- शिव द्वारा कामदेव को भस्मसात् करना।

सर्ग-4
- कामदेव की पत्नी रति का विलाप
- वियोगिनी छन्द का कवि द्वारा प्रयोग।

सर्ग-5
- महाकाव्य का श्रेष्ठ सर्ग।
- पार्वती की घोर तपस्या का वर्णन
- असाध्य शिव को तपस्या ही द्रवित करती है।
- शिव पार्वती का रमणीय संवाद।

सर्ग-6
- विवाहेच्छुक शिव का सन्देश लेकर सप्तर्षिगण हिमालय के पास जाते हैं।

सर्ग-7
- शिव की दर्शनीय वर यात्रा।
- पार्वती-परिणय।

सर्ग-8
- रथोद्धता छन्द में विवाह के अनन्तर शिव पार्वती दाम्पत्य जीवन। केलि विहार वर्णन।
- कुछ विद्वान् 8 सर्ग तक ही कालिदास की रचना मानते हैं।

सर्ग-9
- शिव-पार्वती का विहार यात्रा करते हुए कैलास पर्वत गमन।

सर्ग-10
- कार्तिकेय (कुमार, स्कन्द का गर्भ में आना।)

सर्ग- 11
- कुमार का जन्म तथा बाल्यावस्था वर्णन अर्जुन की चार पत्नी-

द्रौपदी, सुभद्रा, नागकन्या लूपी, चित्रांगदा

सर्ग-12

➢ कुमार का सेनापति बनना।

सर्ग-13

➢ कुमार का सैन्य संचालन कौशल वर्णन।

सर्ग-14

➢ देवसेना द्वारा आक्रमण हेतु प्रस्थान।

सर्ग-15

➢ देवासुर-सेनाओं का संघर्ष।

सर्ग-16

➢ युद्ध वर्णन

सर्ग-17

➢ कुमार द्वारा तारकासुर का वध।

भवभूति

➢ **पितामह** – भट्टगोपाल
➢ **पिता** – नीलकण्ठ
➢ **माता** – जतुकर्णी (जातुकर्णी)
➢ **भवभूति का मूलनाम** – श्रीकण्ठ या भट्टश्रीकण्ठ
➢ **गुरु** – (i) ज्ञाननिधि (ii) कुमारिलभट्ट
➢ **भवभूति का दार्शनिक नाम** – उदुम्बर/उम्बिकाचार्य/उम्बेक
➢ **जन्मस्थान** – दक्षिणभारत में पद्मपुर नगर
➢ **उपाधि** – (i) पदवाक्यप्रमाणज्ञ, पद = व्याकरण, वाक्य = मीमांसा, प्रमाण = न्याय
(ii) वश्यवाक्, (iii) परिणतप्रज्ञ, (iv) शिखरिणीकवि
➢ **वंश/गोत्र** – काश्यप
➢ **जाति** – कृष्णयजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखापाठी ब्राह्मण
➢ **आश्रयदाता** – कान्यकुब्जनरेश यशोवर्मा
➢ **समय**– 650 ई. से 750 ई. के बीच (सातवीं शताब्दी का उत्तरार्ध)
➢ **रचनायें** – 1. मालतीमाधवम् (प्रकरण)
2. महावीरचरितम् (नाटक)
3. उत्तररामचरितम् (नाटक)
➢ **भवभूति की रीति** – गौडी
(उत्तररामचरितम् में गौड़ी और वैदर्भी का समन्वय)
➢ **भवभूति का प्रियरस** – करुण
➢ **भवभूति के प्रियछन्द** – अनुष्टुप् और शिखरिणी
➢ **उपासक** – शिव के
➢ उत्तररामचरितम् में भवभूति अपने आपको **'परिणतप्रज्ञ'** कहते हैं।
➢ महावीरचरितम् में भवभूति अपने आपको **'वश्यवाक्'** कहते हैं।
➢ भवभूति के नाटकों में **'अभिधावृत्ति'** मुख्य है।
➢ भवभूति की कृतियों में **'ओजगुण'** अधिक है।
➢ **क्षेमेन्द्र ने 'सुवृत्ततिलक'** में भवभूति के शिखरिणी की प्रशंसा में उसे **'निरर्गलतरङ्गिणी'** कहा है –
भवभूतेः शिखरिणी निरर्गलतरङ्गिणी।
रुचिरा घनसन्दर्भे या मयूरीव नृत्यति।। (सु. 3.33)
➢ भवभूति के तीनों नाटकों में **विदूषक का सर्वथा अभाव** है।

उत्तररामचरितम्

➢ **लेखक** – भवभूति
➢ **विधा** – नाटक
➢ **अङ्क** – 7 (सात)
➢ **प्रधानरस** – करुण
➢ **उपजीव्य** (i) वाल्मीकीयरामायण उत्तरकाण्ड (सर्ग 42-97 तक) (ii) पद्मपुराण (पातालखण्ड 1-68 तक)
➢ **विशेषतायें**– (1) सप्तम अङ्क में **गर्भनाटक** की योजना
(2) प्रथम अङ्क में **चित्रवीथी** की योजना
(3) **विदूषक रहित** नाटक
(4) तृतीय अङ्क में **छायाङ्क** की योजना
➢ **प्रमुखपात्र** – राम (नायक), सीता (नायिका), गोदावरी, भागीरथी, तमसा, मुरला, वासन्ती (वनदेवता), पृथ्वी, आत्रेयी, वशिष्ठ, कौशल्या, मुनिबालक सौधातकि, गुप्तचरदुर्मुख, लव, कुश, चन्द्रकेतु, वाल्मीकि, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, अष्टावक्र, दण्डायन, सुमन्त्र, अरुन्धती, जनक, कञ्चुकी आदि।
➢ अनुष्टुप् (84 श्लोक), शिखरिणी (30) वसन्ततिलका (26) शार्दूलविक्रीडित (25) आदि।
➢ उत्तररामचरितम् में भवभूति ने **38 अलङ्कारों का प्रयोग** किया है; और प्रयोग की दृष्टि से उन्हें–उपमा, उत्प्रेक्षा, काव्यलिङ्ग, रूपक, अर्थान्तरन्यास अत्यन्त **प्रिय अलङ्कार** माने जाते हैं।
➢ इसमें **7 (सात) अङ्कों में** रामायण के उत्तरकाण्ड की कथा वर्णित है।
➢ राम के वन-प्रत्यागमन के बाद राजगद्दी पाने से लेकर सीता-मिलन तक की सम्पूर्ण कथाएँ कुछ कल्पना-प्रसूत घटनाओं के साथ दिखाई गई हैं। यह **भवभूति का सर्वश्रेष्ठ नाटक** है।
➢ सप्तम अंक में **'गर्भाङ्क' की कल्पना** है।
➢ पद्मपुराण में वर्णित रामकथा से उत्तररामचरित की कथा का अधिक साम्य है।
➢ उत्तररामचरित में **कुल पात्रों की संख्या 30** है। इनके

अतिरिक्त 6 पात्रों का उल्लेख मात्र है।

- भवभूति ने उत्तररामचरित में **19 छन्दों का प्रयोग** किया है।
- उत्तररामचरित में **कुल श्लोकों की संख्या 256** है।
- **अनुष्टुप् के पश्चात् शिखरिणी छन्द** का सर्वाधिक प्रयोग हुआ है। मङ्गलाचरण में अनुष्टुप् छन्द है।
- भवभूति ने उत्तररामचरित में केवल **'शौरसेनी प्राकृत'** का प्रयोग किया है।
- नाटक का आरम्भ **'चित्रदर्शन'** से होता है।

भर्तृहरि

- विक्रमसंवत् के प्रवर्तक विक्रमादित्य के बड़े भाई।
- **पत्नी** – पिङ्गला
- **गुरु** – (i) गोरखनाथ (ii) वसुरात (बौद्धमत में)
- **भाई (अनुज)** – विक्रमादित्य
- **पिता** – गन्धर्वसेन (मालवदेश के राजा)
- ईत्सिंग के कथन के आधार पर **भर्तृहरि को बौद्ध** कहा जाता है।
- भर्तृहरि **वेदान्तोक्त ब्रह्म के उपासक** थे।
- **भर्तृहरि का समय** – (i) 57 ई. पू. अथवा (ii) 575 से 650 ई.
- **भर्तृहरि की शैली/रीति एवं गुण** – वैदर्भीरीति, प्रसाद और माधुर्यगुण
- **मुक्तक काव्य के प्रथमकवि** – भर्तृहरि
- **भर्तृहरि के प्रिय छन्द** – शार्दूलविक्रीडित, शिखरिणी
- मृत्यु 650 ई. (चीनी यात्री इत्सिंग के अनुसार)
- **रचनायें**– **(i) वाक्यपदीयम्** (व्याकरणग्रन्थ), (ii) **नीतिशतकम्** (मुक्तककाव्य) 111 श्लोक, (iii) **शृङ्गारशतकम्** (मुक्तककाव्य) 103 श्लोक, (iv) **वैराग्यशतकम्** (मुक्तककाव्य) 111 श्लोक

नीतिशतकम्

- **लेखक** – भर्तृहरि
- **विधा** – मुक्तककाव्य
- **कुलश्लोक** – 111
- **कुलपद्धतियाँ** – 11 (मङ्गलाचरण सहित)
  1. अज्ञपद्धति (मूर्खनिन्दापद्धति)
  2. विद्वत्पद्धति
  3. मानशौर्यपद्धति
  4. अर्थपद्धति
  5. दुर्जनपद्धति
  6. सुजनपद्धति
  7. परोपकारपद्धति
  8. धैर्यपद्धति
  9. दैवपद्धति
  10. कर्मपद्धति
- मुक्तक का लक्षण–**''पूर्वापरनिरपेक्षेणापि हि येन रसचर्वणा क्रियते तदेव मुक्तकम्''**
  इसप्रकार अर्थप्रकाशन के लिए एक दूसरे की अपेक्षा न रखने वाले स्वतन्त्र पद्य (श्लोक) मुक्तक कहे जाते हैं।
- नीतिशतक में वर्ण्य विषय को ग्यारह पद्धतियों में समाहित किया गया है।
- भर्तृहरि ने नीतिशतक में ब्रह्म की स्तुति के पश्चात् 'मूर्ख-निन्दा' से ग्रन्थ का आरम्भ किया है।
- नीतिशतक में भर्तृहरि की शैली प्रसादगुण से युक्त और मुहावरेदार है।
- नीतिशतक के मङ्गलाचरण में अनन्त, ज्ञानमय स्वानुभवमात्र से जानने योग्य, ज्योतिस्वरूप **ब्रह्म को नमस्कार** किया गया है।
- नीतिशतक का **मङ्गलाचरण नमस्कारात्मक** है।
- मङ्गलाचरण **(दिक्कालाद्यनवच्छिन्नानन्तचिन्मात्रमूर्तये)** में **अनुष्टुप्** छन्द प्रयुक्त है।

बाणभट्ट

बाणभट्ट का वंशवृक्ष

वत्स
।
कुबेर
(कर्मकाण्डी श्रुतिशास्त्र सम्पन्न ब्राह्मण)
।
पाशुपत
।
अर्थपति (इनके 11 पुत्र हुए)
।
चित्रभानु
।
बाणभट्ट
।
भूषणभट्ट (पुलिन्दभट्ट, पुलिनभट्ट)

- **निवास** – शोण (सोन) नदी के पास 'प्रीतिकूट' नामक ग्राम। (वर्तमान में शाहाबाद, आरा, बिहार।)
- **राज्याश्रय** – सम्राट् हर्ष के सभापण्डित
- **पितामह** – अर्थपति
- **पिता** – चित्रभानु
- **माता** – राजदेवी
- **पत्नी** – कवि मयूरभट्ट की बहन
- **पुत्र** - भूषणभट्ट (पुलिन या पुलिन्दभट्ट)

- **बहन** – मालती
- **बाण के दो भाई** – चित्रसेन और मित्रसेन
- बाण ने स्वयं हर्षचरितम् के प्रथम तीन उच्छ्वासों तथा कादम्बरी की प्रस्तावना के पद्यों में अपना परिचय दिया है।
- **वंश/गोत्र** – वात्स्यायन / वत्स वंश (ब्राह्मण)
- **उपासक** – शिव (शैव)
- **बाण की रीति** – पाञ्चाली
- बाल्यावस्था में ही बाण की माता का स्वर्गवास।
- 14 वर्ष की आयु में बाण के पिता का भी स्वर्गवास।
- राजा हर्ष ने इन्हें ''**महानयं भुजङ्गः**'' (बहुत चरित्रभ्रष्ट) कहा।
- **हर्ष का राज्याभिषेक** अक्टूबर 606 ई. में हुआ, और उनकी मृत्यु 648 ई. में हुई।
- **ह्वेनसांग** ने 629 से 645 ई. तक भारत भ्रमण किया था और वह हर्ष के निकट सम्पर्क में भी आया था।
- **बाण का समय** – सातवीं शताब्दी ई. का पूर्वार्द्ध
- **बाणभट्ट का विवाह** महाकवि मयूर भट्ट (सूर्यशतकम्) की बहन से हुआ था।
- **बाण की रचनायें**– 1. कादम्बरी (कथा), 2. हर्षचरितम् (आख्यायिका), 3. चण्डीशतकम् (मुक्तक), 4.मुकुटताडितक (नाटक), 5. पार्वतीपरिणय (नाटक)
- हर्षवर्धन के चचेरे भाई कृष्ण के निमन्त्रण पर बाणभट्ट हर्ष के राजदरबार में पहुँचे।

कादम्बरी

- **लेखक** – बाणभट्ट
- **काव्यविधा** – कथा
- **दो खण्ड** – (i) पूर्वार्द्ध (ii) उत्तरार्द्ध
- **प्रधानरस** – शृङ्गाररस
- **उपजीव्य** – गुणाढ्य की 'बृहत्कथा'
- **नायक** – चन्द्रापीड (शूद्रक)
- **नायिका** – कादम्बरी
- **सहनायक** – वैशम्पायन (पुण्डरीक)
- **सहनायिका** – महाश्वेता
- **वैशिष्ट्य** – तीन जन्मों की कथा
- **प्रमुखपात्र** – चन्द्रापीड, कादम्बरी, पुण्डरीक, महाश्वेता, शूद्रक, तारापीड, विलासवती, शुकनास, मनोरमा, वैशम्पायन, इन्द्रायुध (घोड़ा) पत्रलेखा (दासी) जाबालि, हारीत, चाण्डालकन्या, शबर, कपिञ्जल, शुक, हंस, चित्ररथ
- कादम्बरी उत्तरार्ध की रचना बाण के पुत्र **भूषणभट्ट** (भूषणबाण/पुलिन्द/पुलिनभट्ट/पुलिन्ध्र) ने की।
- **कादम्बरी की रीति** – पाञ्चाली
- **कादम्बरी में अलङ्कार** – विरोधाभास, श्लेष, परिसंख्या, अनुप्रास, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा।
- **कादम्बरी के प्रमुखवर्णन–**
शूद्रकवर्णन, शुकवर्णन, चाण्डालकन्यावर्णन, विन्ध्याटवीवर्णन, शबरसैन्यवर्णन, शाल्मलीवृक्षवर्णन जाबाल्याश्रमवर्णन, जाबालिवर्णन, उज्जयिनीवर्णन, तारापीडवर्णन, इन्द्रायुधवर्णन, अच्छोदसरोवरवर्णन, महाश्वेतावर्णन, कादम्बरीवर्णन आदि।

हर्षचरितम्

लेखक - बाणभट्ट
काव्यविधा- आख्यायिका
उच्छ्वास- 8 (आठ)
उच्छ्वासों का नाम

उच्छ्वास-	**नाम**
प्रथम	वात्स्यायनवंश वर्णन
द्वितीय	राजदर्शन
तृतीय	राजवंश-वर्णन
चतुर्थ	चक्रवर्ति-जन्मवर्णन
पञ्चम	महाराज-मरण-वर्णन
षष्ठ	राजप्रतिज्ञा-वर्णन
सप्तम	छत्रलब्धि
अष्टम	विन्ध्याद्रिनिवेशन

उपजीव्य- ऐतिहासिक घटना
रीति- पाञ्चाली
शैली- उत्कृष्ट गद्य-शैली
प्रधान/अङ्गी रस- वीररस **अङ्ग रस-** करुण, शृङ्गार

हर्षचरितम्

- महाराज हर्षवर्धन का जीवन-परिचय होने के कारण इस आख्यायिका का नाम 'हर्षचरित' पड़ा।

अम्बिकादत्तव्यास

- **पितामह** – पं राजाराम
- **पिता** – दुर्गादत्त
- **चाचा/दादा** – देवीदत्त
- **पुत्र** – पं. राधाकुमारव्यास
- **गोत्र** – पराशरगोत्रीय यजुर्वेदी/त्रिप्रवर/भीडावंश
- **जन्मस्थान** – राज्य - राजस्थान, जिला - जयपुर, ग्राम - रावत जी का धूला, मुहल्ला - सिलावटी
- **जन्मसमय** – चैत्र शुक्लपक्ष अष्टमी सं. 1915 (1858 ई.)
- **मृत्यु** – मार्ग शीर्ष (अगहन) कृष्णपक्ष त्रयोदशी सोमवार सं. 1957 (सन् 1900 ई.)
- **कर्मस्थली** – काशी में अध्ययन - अध्यापन

- **कुल रचनाएं** – लगभग 78
- **संस्कृत रचनायें**– शिवराजविजयम् (उपन्यास) सामवतम् (नाटक) (22 वर्ष की अवस्था में) रत्नाष्टक, कथाकुसुमम्
- **हिन्दी रचनाएं**– बिहारी-विहार (कुण्डलिनी छन्द में)
- **पत्रिका**–'पीयूष-प्रवाह' का सम्पादन
- **उपाधियाँ**– 1. सुकवि (भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, काशी कवितावर्धिनी सभा)
  2. घटिकाशतक (ब्रह्मामृतवर्षिणी सभा)
  3. शतावधान
  4. भारतरत्न (काशी की 'महासभा')
  5. अभिनवबाण/आधुनिकबाण
  6. भारतभूषण
  7. महाकवि
- प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास के प्रणेता अम्बिकादत्तव्यास।
- 'बिहारी-विहार' में व्यास जी ने अपना संक्षिप्त जीवन-परिचय लिखा है।
- लगभग 12 वर्ष की अवस्था में व्यास जी ने धर्मसभा की परीक्षा में पुरस्कार प्राप्त किया था।
- बिहार में **'संस्कृत-सञ्जीवनी-समाज'** की स्थापना।
- व्यास जी ने 10 वर्ष की अवस्था से ही काव्य रचना आरम्भ कर दी थी।
- व्यास जी ने **'शिवराज-विजयम्'** 1870 ई. में लिखा जो काशी से 1901 ई. में उनकी मृत्यु के बाद प्रकाशित हुआ।
- गवर्नमेण्ट संस्कृत-कॉलेज पटना में प्राध्यापक।
- वक्ता और साहित्यस्रष्टा के साथ ही चित्रकारिता, अश्वारोहण संगीत और शतरंज में भी व्यास जी विशेष रुचि रखते थे।
- सितार, हारमोनियम, जलतरङ्ग और मृदङ्ग इनके प्रिय वाद्य थे।
- व्यास जी हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी और बंगला भाषा के ज्ञाता थे।
- न्याय, व्याकरण, वेदान्त और दर्शन में इनकी अच्छी गति थी।
- एक घड़ी (24 मिनट) में 100 श्लोकों की रचना करने से व्यास जी को **'घटिकाशतक'** की उपाधि दी गयी थी।
- सौ प्रश्नों को एक साथ ही सुनकर उन सभी प्रश्नों का उत्तर उसी क्रम में देने की अद्भुतक्षमता होने से उन्हें **'शतावधान'** की उपाधि दी गयी थी।
- **बयालीस वर्ष की अवस्था** में ही व्यास जी संवत् 1957 (1900 ई.) में अपने पीछे एक नववर्षीयपुत्र, एक कन्या और विधवा पत्नी को असहाय छोड़कर पञ्चतत्व को प्राप्त हो गये।

शिवराजविजय–ऐतिहासिक उपन्यास

- **लेखक** – अम्बिकादत्तव्यास
- **विधा** – ऐतिहासिक उपन्यास
- **विभाजन** – तीन विराम, 12 निःश्वास।
- **प्रधानरस** – वीर
- **उपजीव्य** – इतिहासप्रसिद्ध
- **नायक** – शिवाजी
- **कथानक** – शिवाजी का जीवनचरित।
- **प्रमुखपात्र** – शिवाजी, गौरसिंह, श्यामसिंह, ब्रह्मचारी गुरु, योगिराज, अफजलखान, शाइस्ताखान, रघुवीरसिंह, यवनयुवक यशवन्तसिंह, औरंगजेब, रसनारी (रोशनआरा)
- 'शिवराजविजय' **1870 ई0** में लिखा गया था, जो काशी से **1901 ई. में प्रकाशित** हुआ।
- संस्कृतवाङ्मय का **प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास 'शिवराजविजय' है।**
- शिवराजविजय की सम्पूर्ण कथा 3 विरामों और 12 निःश्वासों में विभक्त है।
- शिवराजविजय में दो समान्तर धाराएँ स्वतन्त्र रूप से प्रवाहित होती हैं – एक के नायक शिवाजी हैं तो दूसरी के नायक रघुवीर सिंह हैं।
- शिवराजविजय **'वीर रस' प्रधान काव्य** है। **'विरोधाभास'** व्यास जी का प्रिय अलङ्कार है। शिवराजविजय में पाञ्चालीरीति प्रयुक्त है।
- व्यासजी ने 'शिवराजविजय' में मुगलकालीन समाज का सुन्दर चित्रण किया है।

भारवि

- **पिता** – (i) श्रीधर, (ii) नारायणस्वामी (अवन्तिसुन्दरीकथा के अनुसार)
- **माता** – सुशीला
- **पत्नी** – रसिकवती या रसिका
- **पुत्र** – मनोरथ
- **मूल नाम** – दामोदर
- **गोत्र** – कुशिक
- **जन्म स्थान** – (i) दक्षिण भारत में नासिक प्रदेश के **'अचलपुर'** (एलिचपुर), (ii) धारानगरी (अवन्तिसुन्दरी कथा के अनुसार)
- **समय** – छठवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध/सातवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध

भारवि का वंशवृक्ष

भारवि
।
मनोरथ (पुत्र)
।
वीरदत्त - गौरी (पौत्र)
।
दण्डी (प्रपौत्र)

- **सम्प्रदाय** – शैव
- **उपाधि** – 'आतपत्र भारवि'
- **आधत्ते कनकमयातपत्रलक्ष्मीम्'' (किरात. 5.39)** इस श्लोक में **'कनकमय आतपत्र'** (सोने का छाता) की उपमा को अति सुन्दर मानकर आलोचकों ने कवि का नाम ही **'आतपत्र भारवि'** रख दिया।
- **आश्रयदाता** – 1. विष्णुवर्द्धन (पुलकेशिन द्वितीय के अनुज), 2. सिंहविष्णु (अवन्तिसुन्दरीकथा के अनुसार), 3. दुर्विनीत, 4. महेन्द्रविक्रम (सिंहविष्णु का पुत्र)
- राजा दुर्विनीत ने 'किरातार्जुनीयम्' के 15वें सर्ग पर संस्कृतटीका लिखी।
- 'भारवि' **दण्डी के प्रपितामह** हैं।
- भारवि की वाणी को **'प्रकृतिमधुरा'** कहा जाता है।
- भारवि महाकाव्यों में **'अलङ्कृतकाव्यशैली'** या **'रीतिशैली' के जन्मदाता हैं।** इनके काव्यमार्ग को **विचित्रमार्ग** कहते हैं।
- श्री एन. सी. चटर्जी भारवि को **'ट्रावनकोर' का निवासी** सिद्ध करते हैं।
- एक किंवदन्ती के अनुसार पिता द्वारा अपमानित भारवि उनके वध के लिए उद्यत हो गये, परन्तु पिता द्वारा उनके हित के लिए डाँटा गया, यह जानकर उन्हें बहुत पश्चात्ताप हुआ, और पिता ने छः माह तक ससुराल में सेवा करने का आदेश दिया।
- भारवि का जन्म 560 ई. के लगभग तथा रचनाकाल 580 ई. के लगभग अधिकांश आलोचकों ने माना है।
- भारवि **'अर्थगौरव'** के लिए प्रसिद्ध हैं।
- आचार्य मल्लिनाथ ने भारवि के 'किरातार्जुनीयम्' पर **'घण्टापथ'** नाम की टीका लिखी है।
- भारवि राजनीति के प्रकाण्ड पण्डित हैं।
- मल्लिनाथ, भारवि की कविता की उपमा **'नारिकेलफल'** से करते हैं– **'नारिकेलफलसम्मितं वचः'**
- दक्षिण के **'एहोल शिलालेख'** में भारवि का नाम उल्लिखित है।
- भारवि के किरातार्जुनीयम् को **'लक्ष्म्यन्त'** महाकाव्य, माघ के शिशुपालवधम् को **'श्र्यन्त'** महाकाव्य तथा श्रीहर्ष के नैषधीय चरितम् को **'आनन्दान्त'** महाकाव्य कहते हैं।
- भारवि का प्रामाणिक जीवनवृत्त सर्वथा अप्राप्त है, कुछ किंवदन्तियाँ प्रचलित हैं।
- महाकवि दण्डी विरचित 'अवन्तिसुन्दरीकथा' के अनुसार भारवि का जीवनवृत्त निम्नलिखित है।
- भारवि चालुक्यवंशी सम्राट् पुलकेशिन द्वितीय के अनुज विष्णुवर्धन (615 ई0) के मित्र/सभापण्डित/राजकवि थे।

स मेधावी कविर्विद्वान् भारविः प्रभवो गिराम्।
अनुरुध्याकरोन्मैत्रीं नरेन्द्रे विष्णुवर्धने॥

- भारवि का वास्तविक नाम – **दामोदर**
- माता का नाम – **सुशीला**
- पिता का नाम – **नारायण स्वामी (श्रीधर)**
- पत्नी का नाम – **रसिकवती या रसिका**
- उपाधि/उपनाम – **आतपत्र भारवि**
- महाकवि दण्डी के प्रपितामह – **भारवि**
- भारवि **कुशिक/कौशिक गोत्रीय** ब्राह्मण थे।

भारवि की वंशपरम्परा

नारायणस्वामी (श्रीधर) – (भारवि के पिता)
↓
भारवि – (दण्डी के प्रपितामह)
↓
मनोरथ – (दण्डी के पितामह)
↓
वीरदत्त-गौरी – (दण्डी के पिता-माता)
↓
दण्डी – (भारवि के प्रपौत्र)

- दण्डी की रचना – **दशकुमारचरितम्।**
- भारवि का सम्बन्ध कोङ्कण के गङ्गवंशी नरेश दुर्विनीत और काञ्ची के पल्लववंशी नरेश सिंहविष्णु तथा उनके पुत्र महेन्द्रविक्रम के साथ भी था।
- सिंहविष्णु से मिलते समय कवि की अवस्था थी – **बीस वर्ष।**
- किरातार्जुनीयम् के 15वें सर्ग की संस्कृत टीका लिखी थी – **विद्वान् नरेश दुर्विनीत ने।**
- एक अन्य किंवदन्ती के अनुसार भारवि धारानगरी के निवासी थे।

किरातार्जुनीयम्

- **लेखक** – भारवि
- **विधा** – महाकाव्य

- **सर्ग** – 18
- **प्रधानरस** – वीर
- **उपजीव्य** – महाभारत का वनपर्व
- **कथानक** – अर्जुन द्वारा भगवान् शिव की तपस्या से पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति।
- **प्रमुखपात्र** – अर्जुन, द्रौपदी, युधिष्ठिर, भीम, नकुल, सहदेव, श्रीकृष्ण, वनेचर, सुयोधन (दुर्योधन), इन्द्र, किरातवेशधारी शिव, व्यास, यक्ष आदि

महाकवि माघ

- शिशुपालवध-नामक महाकाव्य के रचयिता महाकवि माघ हैं। इन्हें विद्वानों ने श्रेष्ठ महाकाव्य का प्रणेता माना है-

काव्येषु माघः

- भारवि के द्वारा प्रवर्तित विचित्र-मार्ग को माघ ने बहुत ऊँचाई पर पहुँचाया तथा भारवि से आगे बढ़ने का सफल प्रयास किया।
- माघ के **पितामह सुप्रभदेव** थे जो राजा वर्मलात (या श्रीवर्मल) के सर्वाधिकारी अर्थात् दीवान थे। वे पुण्यात्मा, अनासक्त तथा सात्त्विक वृत्ति के पुरुष थे-

सर्वाधिकारी सुकृताधिकारी श्रीवर्मलाख्यस्य बभूव राज्ञः।
असक्तदृष्टिर्विरजाः सदैव देवोऽपरः सुप्रभदेवनामा॥

- सुप्रभदेव के पुत्र का नाम 'दत्तक' था जो अत्यन्त उदार, क्षमाशील, कोमल स्वभाव के एवं धर्मपरायण थे।
- इन्हें लोग 'सर्वाश्रय' भी कहते थे क्योंकि सबकी सहायता के लिए वे तत्पर रहते थे।इन्हीं दत्तक के पुत्र महाकवि माघ थे।
- माघ सूर्य-पूजक थे।
- माघ की मृत्यु 'पादशोथ'-रोग से हुई।

निवासस्थान

- माघ का निवासस्थान श्रीमाल या भिन्नमाल नामक नगर में था।यह नगर अभी माउंटआबू से 40 मील पूर्व जोधपुर प्रमण्डल (राजस्थान) में अवस्थित है।यह नगर उस समय गुर्जर राज्य की राजधानी के रूप में प्रसिद्ध था
- श्रीमाल (भीनमाल) संस्कृत विद्या का महान् केन्द्र था, अनेक विद्याएँ यहाँ पढ़ायी जाती थीं।
- वर्मलात नामक राजा इसी नगर में रहते थे। माघ के पितामह उनके प्रधानमन्त्री थे। माघ का परिवार बहुत धनाढ्य था जगत्स्वामी सूर्य के मन्दिर के ये लोग उपासक थे। माघ अनेक शास्त्रों के विद्वान् थे, राजाश्रित होने के कारण अनेक शास्त्रों के अध्ययन की सुविधा इन्हें प्राप्त थी।

माघ का समय

- माघ को 675 ई. के अनन्तर माना जा सकता है। अधिकतर विद्वान् 700 ई. के आसपास ही माघ को स्वीकार करने के पक्षधर हैं।

शिशुपालवधम् (महाकाव्य)

- यह महाकवि माघ की एकमात्र कृति 20 सर्गों के महाकाव्य के रूप में है।
- इसमें 1645 पद्य हैं, पन्द्रहवें सर्ग में 34प्रक्षिप्त श्लोक हैं जिनकी व्याख्या मल्लिनाथ ने नहीं की है। पाँच पद्य कविवंश वर्णन के हैं उन्हें मिलाकर माघ की रचना 1650 पद्यों की है।

शिशुपालवध की कथा

- **सर्ग 1**- देवर्षि नारद का द्वारका में आगमन,श्रीकृष्ण द्वारा उनका सत्कार, नारद द्वारा शिशुपाल के पूर्वजन्मों तथा उसके अत्याचारों का वर्णन, शिशुपाल को मारने के लिए प्रेरित करना।
- **सर्ग 2**- श्रीकृष्ण, बलराम और उद्धव की मन्त्रणा,बलराम का शिशुपाल पर आक्रमण का प्रस्ताव किन्तु उद्धव का नीतिपूर्ण प्रस्ताव कि इस विषय में शीघ्रता न करके युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में सेना-सहित भाग लें।
- **सर्ग 3**- द्वारका से श्रीकृष्ण का इन्द्रप्रस्थ के लिए प्रस्थान। नगरी, सेना और समुद्र का वर्णन।
- **सर्ग 4**- रैवतक पर्वत का वर्णन।
- **सर्ग 5**- रैवतक पर सैन्य-शिविर की स्थापना।
- **सर्ग 6**- छह ऋतुओं का द्रुतविलम्बित छन्द में 'यमक' का निवेश करते हुए वर्णन।
- **सर्ग 7**- वन-विहार-वर्णन
- **सर्ग 8**- जलक्रीडा-रात्रि-विहार का वर्णन।
- **सर्ग 9**- सन्ध्या, चन्द्रोदय तथा शृङ्गार-विधान का वर्णन।
- **सर्ग 10**- पान-गोष्ठी एवं रात्रि-विहार का वर्णन।
- **सर्ग 11**- प्रभात-वर्णन।
- **सर्ग 12**- श्रीकृष्ण का पुनः प्रस्थान तथा यमुना नदी का वर्णन।
- **सर्ग 13**- श्रीकृष्ण और पाण्डवों का मिलना, नगर-प्रवेश तथा दर्शक नारियों की चेष्टाओं का, अश्वघोष तथा कालिदास से प्रतिस्पर्धा करते हुये वर्णन।
- **सर्ग 14**- युधिष्ठिर द्वारा राजसूय यज्ञ का प्रस्ताव, श्रीकृष्ण की पूजा तथा भीष्म-द्वारा उनकी स्तुति।
- **सर्ग 15**- शिशुपाल का कोप और उनके पक्ष के राजाओं का युद्ध के लिए सन्नद्ध होना।
- **सर्ग 16**- शिशुपाल के दूत का श्रीकृष्ण के समक्ष उभयार्थक शब्दों का प्रयोग, सात्यकि का उत्तर,दूत का पुनः शिशुपाल के पराक्रम का वर्णन करना।
- **सर्ग 17**- श्रीकृष्ण के पक्ष के राजाओं का कोप, सेना की प्रस्तुति तथा प्रस्थान।
- **सर्ग 18**- सेनाओं के घोर युद्ध का वर्णन
- **सर्ग 19**- चित्रालङ्कार से पूर्ण पद्यों के द्वारा व्यूह-रचना एवं विचित्र युद्ध का वर्णन।
- **सर्ग 20** -श्रीकृष्ण और शिशुपाल का शस्त्र-युद्ध, दिव्यास्त्र युद्ध

तथा वाग्युद्ध, शिशुपाल के शब्दों से कुपित कृष्ण द्वारा सुदर्शनचक्र से शिशुपाल का शिरश्छेदन , शिशुपाल के तेज का विजयी कृष्ण में प्रवेश।

- यह कथानक महाभारत के सभापर्व (अध्याय 35-43) से लिया गया है, जिसमें युधिष्ठिर के यज्ञ में शिशुपाल के मारे जाने की कथा है।

महाकवि श्रीहर्ष

- **नाम** - श्रीहर्ष
- **पिता** - श्रीहीर
- **माता** - मामल्लदेवी
- **श्रीहर्षं कविराजराजिमुकुटालङ्कारहीरः सुतम्**
  श्रीहीरः सुषुवे जितेन्द्रियं मामल्लदेवी च यम्। 1/145
- **समय-** 12वीं शताब्दी के मध्य से 12वीं शताब्दी के उत्तरार्ध के बीच (सम्भावित)
  आश्रयदाता- जयचन्द्र
  उपाधि-1.नवभारती 2. कविपण्डित (राजा गोविन्दचन्द्र द्वारा)
  उपासक- शिव, विष्णु, सरस्वती
  प्रिय छन्द- उपजाति
- श्रीहीर काशी के राजा गहरवारवंशी विजयचन्द्र की राज्यसभा के प्रधान पण्डित थे।
- श्रीहीर को विजयचन्द्र की राज्यसभा में मिथिला के प्रसिद्ध पण्डित श्री उदयनाचार्य ने शास्त्रार्थ में पराजित किया था।
- श्रीहीर पुत्र श्रीहर्ष ने उदयनाचार्य को पराजित करने का वचन अपने पिता (श्रीहीर) को उनके मरते समय दिया था।
- श्रीहर्ष ने 'चिन्तामणि' मन्त्र का एक वर्ष पर्यन्त जप किया था।
- त्रिपुरादेवी के वरदान से श्रीहर्ष **अत्यन्त** उत्कृष्ट विद्वान् हो गये।
- जयचन्द्र की प्रार्थना स्वीकार कर श्रीहर्ष ने नैषधीयचरितम् महाकाव्य की रचना की।
- नैषधीयचरित महाकाव्य की दोष रहित प्रामाणिकता के लिए श्रीहर्ष कश्मीर गये थे।
- महाकवि श्रीहर्ष नदी तट पर बैठकर रुद्र मन्त्र का जप किये थे।
- हरिहर कवि को भी श्रीहर्ष का वंशज माना जाता है।
- श्रीहर्ष के निवास स्थान के सम्बन्ध में विद्वान् मतैक्य नहीं हैं।
- कुछ विद्वान् कन्नौज का, कुछ वाराणसी का, कुछ बंगाल का एवं अन्य कश्मीर का निवासी बतलाते हैं। **''ताम्बूलद्वयमासनं च लभते यः कान्यकुब्जेश्वरात्।''** (नैषध. 22/15)
- कविवर राजशेखर सूरि ने महाकवि श्रीहर्ष की सौ से अधिक रचनायें होने का उल्लेख किया है -
  ''खण्डनादिग्रन्थान् परश्शतान् जग्रन्थ।''
- नैषधीयचरित में नैषध के अतिरिक्त 8 ग्रन्थों का उल्लेख किया गया है।
- महाकवि श्रीहर्ष ने अपने नैषधीयचरित में अपनी रचनाओं के साथ-साथ प्रत्येक सर्गान्त श्लोक में अपने माता व पिता का भी उल्लेख किया है। श्रीहर्षं कविराजराजिमुकुटालङ्कारहीरः सुतम् श्रीहीरः सुषुवे जितेन्द्रियं मामल्लदेवी च यम्।।
- श्रीहर्ष के शताधिक ग्रन्थों के नाम का कोई प्रबल प्रमाण उपलब्ध नहीं हैं।
- ये 10 रचनायें अविवादित व प्रमाणित हैं-
  1. नैषधीयचरित 2. स्थैर्यविचारप्रकरण 3. विजय-प्रशस्ति 4. खण्डनखण्डखाद्य 5. गौडोर्वीशकुल-प्रशस्ति 6. अर्णववर्णन 7. छिन्दप्रशस्ति 8. शिवशक्तिसिद्ध 9. नवसाहसाङ्कचरितचम्पू 10. ईश्वराभिसन्धि
- इनमें से नैषधीयचरित व खण्डनखण्डखाद्य के अलावा शेष 8 ग्रन्थ अनुपलब्ध हैं।
- श्रीहर्ष की काव्य शैली प्रसादगुणों से युक्त वैदर्भी शैली है।
- गुण में प्रमुखतः माधुर्य और ओज की प्रचुरता है।
- महाकाव्य में एक स्थल पर श्लेष अलंकार का इतना सुन्दर चित्रण किया है कि, अन्य कवि इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा करते हैं।
  देवः पतिर्विदुषि नैषधराजगत्या
  निर्णीयते न किमु न ब्रियते भवत्या।
  नायं नलः खलु तवातिमहानलाभो
  यद्येनमुज्झसि वरः कतरः पुनस्ते ॥ नैषध 13/33
- हर्ष ने उपर्युक्त श्लोक के पाँच अर्थ बताये हैं-

1. इन्द्रपक्ष में 2. अग्नि पक्ष में 3. यम पक्ष में 4. वरुण पक्ष में 5. नल पक्ष में

- नैषधीयचरित में 9 निधियों का उल्लेख है-
  महापद्म, पद्म, शंख, मकर, कच्छप, मुकुन्द, कुन्द, नील व खर्व

नैषधीयचरितम्

- **लेखक -** श्रीहर्ष
- **काव्यविधा -** महाकाव्य
- **कुल सर्ग -** 22 (बाईस)
- **नायक -** नल (धीरोदात्त)
- **नायिका -** दमयन्ती
- **प्रतिनायक -** 4 नल के रूप में क्रमशः अग्नि, वरुण, इन्द्र व यम।
- **अङ्गीरस/प्रधानरस** -शृङ्गार
- **अन्य रस-**वीर, हास्य, करुण, रौद्र एवं अद्‌भुत आदि।
- **गुण -** माधुर्य, ओज, प्रसाद (प्रायः सभी काव्य गुण पाये जाते हैं)
- **रीति -** मुख्यतः वैदर्भी
- **अलङ्कार -** अनुप्रास (मुख्य रूप से)
- **अन्य अलङ्कार -** अतिशयोक्ति आदि।
- **छन्द -** कुल उन्नीस 19 छन्दों का प्रयोग है जिनमें उपजाति, वसन्ततिलका, अनुष्टुप्, वंशस्थ तथा शिखरिणी प्रमुख हैं। (उपजाति सर्वाधिक 7 सर्गों में है।)

नामकरण

➢ निषध देश के राजा (नल) का चरित वर्णित होने से इस ग्रन्थ का नाम 'नैषधीयचरितम्' रखा गया है।

महाकवि भास

➢ **कवि का नाम-** भास (प्रामाणिक जीवनपरिचय अज्ञात)
➢ **उपाधि-** धावक
➢ **गोत्र-** अगस्त्य गोत्र की हैमोदक शाखा में 'भाष' गोत्र है।
➢ **जन्म समय-** 100ई0पू0- 200ई0 के मध्य
➢ **उपासक-** वैष्णवधर्म
➢ **रीति-** वैदर्भी
➢ **गुण-** प्रसाद,माधुर्य एवं ओज तीनों का प्रयोग
➢ **रस-** मुख्यतया शृङ्गार एवं वीररस का प्रयोग।
➢ **शैली-** सरल भाषा का प्रयोग,अकृत्रिम शैली।
➢ **प्रिय अलंकार-** अनुप्रास,उपमा,स्वभावोक्ति,उत्प्रेक्षा, रूपक आदि
➢ **भास की कृतियाँ**
➢ त्रिरुवांकुर नगर निवासी **टी0गणपति शास्त्री** ने सन् - 1910-12 में **'भासनाटकचक्रम्'** नाम से भास के 13नाटकों का संग्रह **अनन्तशयन ग्रन्थमाला (त्रिवेन्द्रम्)** से प्रकाशित किया।
➢ कथावस्तु के आधार पर भास के 13 नाटकों को चार भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है।

➢ **कथावस्तु के आधार पर भास के नाटकों का वर्गीकरण**

रामायणमूलक	महाभारतमूलक	उदयनकथामूलक	कल्पनामूलक
1.अभिषेकनाटक	3.मध्यमव्यायोग	10.प्रतिज्ञायौगन्धरायण	12.अविमारक
2.प्रतिमानाटक	4.दूतवाक्यम्	11.स्वप्नवासवदत्तम्	13.दरिद्रचारुदत्त
	5.कर्णभार		
	6.दूतघटोत्कच		
	7.पञ्चरात्रम्		
	8.ऊरुभंग		
	9.बालचरित		

भास के रूपकों का संक्षिप्त परिचय

1. **अभिषेकनाटक-** यह **छः अङ्कों** का नाटक है। इसमें किष्किन्धाकाण्ड से लेकर लङ्काकाण्ड तक की सम्पूर्ण कथा संक्षेप में दी गयी है। अंत में रावण वध के पश्चात् राम के राज्याभिषेक का वर्णन है।
2. **प्रतिमानाटक-** इस नाटक में **सात अङ्क** हैं। इसमें भी राम के जीवन का वर्णन है।
3. **मध्यमव्यायोग-** यह **एक अङ्क** का व्यायोग नामक रूपक है। इसमें मध्यम पाण्डव भीम के द्वारा घटोत्कच के हाथ से एक ब्राह्मण पुत्र को बचाने का वर्णन है। भीम अपने पुत्र घटोत्कच को देखकर आनन्दित होते हैं और हिडिम्बा से उनका पुनर्मिलन होता है।
4. **दूतवाक्यम्-** यह **एकाङ्की** रूपक है। इसमें कृष्ण के दूत बनकर पाण्डवों का सन्धि प्रस्ताव लेकर दुर्योधन के पास जाने का वर्णन है।
5. **कर्णभार-** यह भी **एकाङ्की** है। इसमें कर्ण का,ब्राह्मण वेशधारी इन्द्र को कवच और कुण्डल दान में देने का वर्णन है।
6. **दूतघटोत्कच-** यह **एकाङ्की** नाटक है। अभिमन्यु की मृत्यु के बाद श्रीकृष्ण का घटोत्कच को दूत बनाकर धृतराष्ट्र के पास भेजना और दुर्योधन द्वारा उसका अपमान।
7. **पञ्चरात्र-** इस रूपक में **तीन अङ्क** हैं। यज्ञ की समाप्ति पर द्रोण ने दुर्योधन से दक्षिणा माँगी कि पाण्डवों को आधा राज्य दे दो। दुर्योधन शर्त लगाता है कि यदि पाँच रात के अन्दर पाण्डव मिल जाते हैं तो दे दूँगा। द्रोण के प्रयास से पाण्डव मिलते हैं और आधा राज्य प्राप्त करते हैं।
8. **ऊरुभङ्ग-** यह **एकाङ्की** नाटक है। द्रौपदी के अपमान के प्रतीकार स्वरूप भीम द्वारा दुर्योधन की जंघा को तोड़ करके उसको मारने का वर्णन है।
9. **बालचरित-** इस नाटक में **पाँच अङ्क** हैं। इसमें श्रीकृष्ण के जन्म से लेकर कंसवध तक की कथा वर्णित है।
10. **चारुदत्त-** इसमें **चार अङ्क** हैं। इसमें निर्धन ब्राह्मण चारुदत्त और वसन्तसेना नाम की वेश्या के प्रणय का वर्णन है। इसमें भरतवाक्य नहीं है और कथा अधूरी है।
11. **अविमारक-** इस नाटक में **छः अङ्क** हैं। इसमें राजकुमार अविमारक का राजा कुन्तिभोज की पुत्री कुरङ्गी के साथ प्रणय-विवाह का वर्णन है।
12. **प्रतिज्ञायौगन्धरायण-** इस नाटक में **चार अङ्क** हैं। उदयन के वासवदत्ता से प्रेम और विवाह का वर्णन है। यौगन्धरायण द्वारा उदयन को प्रद्योत के यहाँ से छुड़ाने और उसकी नीतिमत्ता का वर्णन है।
13. **स्वप्नवासवदत्तम्-** इसमें **छः अङ्क** हैं। यौगन्धरायण का वासवदत्ता के मरने के प्रवाद को फैलाकर उदयन का पद्मावती से विवाह कराना तथा उदयन के अपहृत राज्य को पुनः प्राप्त कराने का वर्णन है।

प्रतिमानाटकम्

लेखक- महाकवि भास
काव्यविधा- नाटक
विभाजन- 7 (सात) अङ्कों में
उपजीव्य- रामायण

श्लोक संख्या- 157

अङ्क	श्लोक संख्या
प्रथम	31
द्वितीय	21
तृतीय	24
चतुर्थ	28
पञ्चम	22
षष्ठ	16
सप्तम	15
योग	**157**

नायक- राम
नायिका- सीता
प्रतिनायक- रावण
कञ्चुकी- बालाकि
प्रतीहारी- विजया
प्रधान/अङ्गीरस- करुण रस
नोट- म.टी. गणपतिशास्त्री 'धर्मवीररस' को अङ्गीरस मानते हैं।
अन्य रस- वीर, शृङ्गार, अद्भुत आदि
अलङ्कार- उपमा, स्वभावोक्ति
प्रमुख छन्द- अनुष्टुप्
रीति- वैदर्भी

स्वप्नवासवदत्तम्

- **लेखक-** महाकवि भास
- **काव्यविधा-** नाटक
- **विभाजन-** 6 अङ्कों में
- **उपजीव्य-** ऐतिहासिक (गुणाढ्यकृत बृहत्कथा)
- **श्लोक संख्या-** 57
- **अङ्क श्लोक संख्या अङ्क श्लोक संख्या**

अङ्क	श्लोक संख्या	अङ्क	श्लोक संख्या
प्रथम	16	द्वितीय	00
तृतीय	00	चतुर्थ	09
पञ्चम	13	षष्ठ	19
		योग-	**57**

- **नायक-** उदयन
- **नायिका-** वासवदत्ता
- **विदूषक-** वसन्तक
- **कञ्चुकी-** बादरायण (उदयन का), रभ्य (महासेन प्रद्योत का)
- **प्रतिनायक-** आरुणि
- **प्रधान/अङ्की रस-** शृङ्गार रस
- **अन्य रस/गौण रस** वीर, करुण एवं अद्भुत रस
- **नायक कोटि-** धीरललित (दक्षिण नायक)
- **अलङ्कार-** उपमा के साथ-साथ रूपक और उत्प्रेक्षा।
- **गुण-** प्रसाद, माधुर्य और ओज का समन्वय।
- **रीति-** वैदर्भी
- **छन्द-** सर्वाधिक प्रयुक्त छन्दों में अनुष्टुप् (22) और वसन्ततिलका (11) मुख्य हैं।

विशाखदत्त

- **नाम-** विशाखदत्त
- **पिता का नाम-** भास्करदत्त
  (कुछ संस्करणों में इनके पिता का नाम 'पृथु' भी दिया गया है।)
- **पितामह-** बटेश्वरदत्त
- **निवासस्थान-** सम्भवतः बंगाल अथवा बिहार
- **उपासक-** शिव के
- **रीति-** वैदर्भी किन्तु उग्रता या भयङ्करता का वर्णन करने के लिए गौड़ी रीति का प्रयोग।
- **प्रिय छन्द-** अनुष्टुप्, वसन्ततिलका, शार्दूलविक्रीडित।
- **प्रिय अलङ्कार-** अर्थालङ्कार।
- **समय-** अधिकांश विद्वानों के अनुसार चतुर्थ शताब्दी।
- **आश्रयदाता-** तैलङ्ग महोदय के अनुसार 'अवन्तिवर्मा'।
- **रचनाएँ-** 1.मुद्राराक्षस 2.देवीचन्द्रगुप्त 3.अभिसारिकवञ्चितकम्
- 'मुद्राराक्षस' ही विशाखदत्त की एकमात्र प्रामाणिक रचना है।

मुद्राराक्षस

- **लेखक-** विशाखदत्त
- **काव्यविधा-** नाटक (ऐतिहासिक)
- **विभाजन-** 7 (सात) अङ्कों में
- **श्लोक संख्या-** 169

अङ्क	अङ्कों का नाम	श्लोक संख्या
प्रथम	मुद्रा-लाभ	27
द्वितीय	राक्षस-विचार	23
तृतीय	कृतक-कलह	33
चतुर्थ	राक्षस-उद्योग	22
पञ्चम	राक्षस-निकार	24
षष्ठ	राक्षस-निर्वेद	21
सप्तम	राक्षस-निग्रह	19
	योग-	169

गुण- ओज,माधुर्य तथा प्रसाद गुणों का समन्वय। मुद्राराक्षस में तीनों गुणों का सम्मिलित रूप से प्रयोग है।
अलङ्कार- उपमा, रूपक, समासोक्ति, उत्प्रेक्षा, श्लेष, अर्थान्तरन्यास अलङ्कारों की प्रधानता।
रीति- वैदर्भी के साथ-साथ गौड़ी रीति।
छन्द- सम्पूर्ण नाटक में 19 प्रकार के छन्दों का प्रयोग है।
- अनुष्टुप् तथा आर्या जैसे छोटे छन्द तथा वसन्ततिलका, शिखरिणी, शार्दूलविक्रीडित, स्रग्धरा जैसे बड़े छन्दों का भी प्रयोग है।

मुख्य/प्रधान/अङ्गी रस- वीररस।
उपजीव्य- विष्णुपुराण तथा श्रीमद्भागवतमहापुराण
- दशरूपककार धनञ्जय, मुद्राराक्षस का उपजीव्य 'बृहत्कथा' को मानते हैं।

नायक- चाणक्य (कौटिल्य, विष्णुगुप्त) कुछ विद्वान् चन्द्रगुप्त को नायक मानते हैं।
नायिका- कोई नायिका नहीं। (नायिका विहीन नाटक)
प्रतिनायक- राक्षस (सुबुद्धिशर्मा)
कञ्चुकी- 1.जाजलि (मलयकेतु का)
2.वैहीनर (चन्द्रगुप्त का)

मुद्राराक्षस का नामकरण

- मुद्राराक्षस का नामकरण इस नाटक के कथानक की एक महत्त्वपूर्ण घटना के आधार पर किया गया है और वह है- 'राक्षस की मुद्रा प्राप्ति'।
- चाणक्य, चन्द्रगुप्त के राज्य को चिरस्थायी बनाने के लिए राक्षस को उसका अमात्यपद ग्रहण करवाना चाहता है। अचानक ही अपने गुप्तचर निपुणक द्वारा चाणक्य को राक्षस के नाम से अङ्कित उसकी अँगूठी प्राप्त हो जाती है।
- यही अँगूठी (मुद्रा) राक्षस को वश में करने की यन्त्र बन जाती है।

महाकवि दण्डी

लेखक - दण्डी
समय - सप्तम शती का प्रारम्भिक काल
पितामह - मनोरथ **पिता** वीरदत्त
माता - गौरी
प्रपितामह - भारवि (अवन्तिसुन्दरी कथानुसार)
जन्मस्थल - अवन्तिसुन्दरी के अनुसार दण्डी के पूर्वज गुजरात राज्य के 'आनन्दपुर' के रहने वाले थे। बाद में एलिचपुर आकर रहने लगे। इसके बाद स्वयं काञ्ची में आकर बसे।
- संस्कृत गद्यकाव्य के इतिहास में गद्य के लेखक के रूप में दण्डी का नाम अमर है।
- एक प्रशस्ति में वाल्मीकि और व्यास के बाद तीसरा स्थान दण्डी को ही दिया गया।

जाते जगति वाल्मीकौ कविरित्यभिधाभवत्।
कवी दूती ततो व्यासे कवयस्त्वयि दण्डिनि॥

कृतित्व - दण्डी के नामतः निम्न ग्रन्थ प्रचलित ग्रन्थ है-
1. दशकुमारचरितम् 2. काव्यादर्श 3. अवन्तिसुन्दरीकथा 4. छन्दोविचिति 5. कलापरिच्छेद 6. द्विसन्धानकाव्य
- दण्डी की प्रशस्ति के रूप में '**दण्डिनः पदलालित्यम्**' अत्यधिक प्रसिद्ध आभाणक है।

दशकुमारचरितम्

विधा - कथा/आख्यायिका
(यद्यपि दशकुमारचरित में गद्य के दोनों लक्षण प्राप्त होते हैं किन्तु स्वयं दण्डी इसे कथा मानते हैं)
विभाजन - वर्तमान ग्रन्थ 3 भागों में उपलब्ध है।
(i) पूर्वपीठिका - पाँच उच्छ्वास
(ii) मूलग्रन्थ दशकुमारचरितम् - आठ उच्छ्वास
(iii) उत्तरपीठिका
उपजीव्य - मौलिक कल्पना, गुणाढ्य कृत बृहत्कथा।
प्रधानरस- अद्भुत रस
रीति - वैदर्भी
गुण - प्रसाद
मुख्य अलङ्कार - उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा
- दण्डी सुकुमार मार्ग के कवि हैं।
- दण्डी के बारे में कहा गया है- '**कविर्दण्डी कविर्दण्डी कविर्दण्डी न संशयः।**'

नायक - राजवाहन
नायिका - अवन्तिसुन्दरी
प्रतिनायक - मानसार
अन्य पात्र - राजहंस (राजा), वसुमती (रानी), धर्मपाल, पद्मोद्भव, सितवर्मा, उपहारवर्मा, अपहारवर्मा, सुमन्त्र, सुमित्र, कामपाल, सुश्रुत, रत्नोद्भव, सुमति, सत्यवर्मा, मित्रगुप्त, मन्त्रगुप्त, अर्थपाल, विश्रुत, पुष्पोद्भव, प्रमति, सोमदत्त
प्रमुख टीकाएं -
(i) भूषण टीका - शिवरामपण्डित
(ii) पदचन्द्रिका - कविन्द्राचार्य
(iii) लघुदीपिका - भानुचन्द्र

नोट- ये टीकाएं केवल मध्यभाग की हैं पूर्वपीठिका और उत्तरपीठिका की नहीं।
- मध्य भाग के सप्तम उच्छ्वास में ओष्ठ्य वर्णों का बिल्कुल प्रयोग नहीं है।

राजकुमारों के नाम - 1. राजवाहन 2. उपहारवर्मा 3. अपहार वर्मा 4. मित्रगुप्त 5. मन्त्रगुप्त 6. अर्थपाल 7. विश्रुत 8. पुष्पोद्भव 9. प्रमति 10. सोमदत्त

उच्छ्वास विवरण

पूर्वपीठिका (5 उच्छ्वास)

उच्छ्वास	वर्णन
प्रथम	पुष्पपुरी, राजहंस, वसुमती आदि का वर्णन।
द्वितीय	कुमारों की दिग्विजय यात्रा का वर्णन।
तृतीय	सोमदत्त का चारित्रिक वर्णन।
चतुर्थ	पुष्पोद्भव का चारित्रिक वर्णन।
पञ्चम	राजवाहन का चारित्रिक वर्णन प्रारम्भ (अवन्तिसुन्दरी से विवाह)

मूलग्रन्थ दशकुमारचरितम् (8 उच्छ्वास)

उच्छ्वास	नाम (वर्णन)
प्रथम	राजवाहन-चरित
द्वितीय	अपहारवर्मा-चरित

तृतीय	उपहारवर्मा-चरित
चतुर्थ	अर्थपाल-चरित
पञ्चम	प्रमति-चरित
षष्ठ	मित्रगुप्त-चरित
सप्तम	मन्त्रगुप्त-चरित
अष्ठम	विश्रुत-चरित

उत्तरपीठिका - 4-5 पृष्ठात्मक

- उत्तर भाग में विश्रुत चरित की समाप्ति और ग्रन्थ की समाप्ति।

विष्णुशर्मा

नाम- विष्णुशर्मा

समय- लगभग 300 ई.पू.

(कथामुख में विष्णुशर्मा को शकलशास्त्रपारंगत छात्रों में अतिप्रिय एवं 80 वर्ष का वृद्ध व्यक्ति बताया गया है।)

*कुछ विद्वान् चाणक्य को ही विष्णुशर्मा मानते हैं, कुछ चाणक्य के पुत्र के रूप में विष्णुशर्मा को स्वीकार करते हैं। अन्य कुछ विद्वान् विष्णुशर्मा को इन सबसे अलग मानते हैं।

पञ्चतन्त्र

लेखक- विष्णुशर्मा

काव्यविधा- नीतिकथा

विभाजन- 5 (पाँच) तन्त्रों में

उपजीव्य- ऋग्वेद, छान्दोग्य उपनिषद्

मुख्य कथाएँ- 6

उपकथाएँ- 69

कुल कथाएँ-75

श्लोक- 1103

तन्त्र	तन्त्रनाम	उपकथाएँ	श्लोकसंख्या	कथा
प्रथम	मित्रभेद	22	461	शेर और बैल की कथा
द्वितीय	मित्रसंप्राप्ति	6	199	काक,कूर्म,मृग, चूहे की मित्रता
तृतीय	काकोलूकीय	16	255	कौए एवं उल्लू की कथा
चतुर्थ	लब्धप्रणाश	11	80	बन्दर और मगर की कथा
पञ्चम	अपरीक्षितकारक	14	98	ब्राह्मणी एवं नेवले की कथा
	(मुख्यकथा)	6	10	(भूमिका)
योग-		**75**	**1103**	

शैली- सरस एवं सरल

गुण- प्रसाद और माधुर्य

महाकवि शूद्रक

- **वास्तविक नाम-** शिमुक या सिमुक।
- **समय-** प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व।
- **आयु-** 100 वर्ष 10 दिन।
- शूद्रक ने स्वेच्छा से आत्मदाह किया था।
- महापराक्रमी, सुन्दर आकृति वाले एवं ब्राह्मणों में श्रेष्ठ थे।

''द्विजमुख्यतमः कविर्बभूव प्रथितः शूद्रक इत्यगाधसत्त्वः।''

- शूद्रक ऋग्वेद, सामवेद आदि वेदों के ज्ञाता, गणित, संगीत तथा हस्तिविद्या में निपुण थे।
- महाकवि शूद्रक शिव-पार्वती के भक्त थे।
- शूद्रक ने शिव के प्रताप से दिव्य दृष्टि पाकर, पुत्र को राजसिंहासन देकर, महामहिमशाली अश्वमेघ यज्ञ भी किया था।
- 'मृच्छकटिकम्' शूद्रक की एक मात्र रचना है।
- शूद्रक प्रथम नाटककार हैं, जिन्होंने तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था को ही अपनी लेखनी का आधार बनाया।
- **रीति-** वैदर्भी

मृच्छकटिकम्

- **लेखक-** शूद्रक
- **विधा-** प्रकरण
- **अङ्क-** 10(दस)
- **प्रधान/अङ्गी रस-** शृङ्गार
- **गौण/अङ्ग रस-** हास्य, करुण, भय तथा अद्भुत।
- **उपजीव्य-** भासकृत दरिद्रचारुदत्त
- डॉ. कान्तानाथ शास्त्री तेलंग के अनुसार 'गुणाढ्य' की बृहत्कथा में वर्णित 'गोपालदारक तथा आर्यक के विद्रोह की कथा।'
- **कुल श्लोक संख्या-** 380 (तीन सौ अस्सी)
- **नायक-** चारुदत्त (धीरप्रशान्त)
- **नायिका-** 1. कुलजा- धूता
  2. वेश्या (गणिका)- वसन्तसेना (प्रगल्भा नायिका)
- **प्रतिनायक-** शकार (संस्थानक)
- **अन्य पात्र-** आर्यक, शर्विलक, विट, सूत्रधार, नटी, रदनिका, मदनिका, धूता, चन्दनक, संवाहक, रोहसेन आदि।
- **पात्र संख्या-** 24 पुरुष और 8 स्त्रीपात्र हैं। सूत्रधार और नटी को छोड़ने पर 30 पात्र स्वीकृत हैं।
- मञ्च पर न आने वाले पात्र- जूर्णवृद्ध, पालक,रेभिल,सिद्ध।

मृच्छकटिकम् में अङ्कवार श्लोक

अङ्क	नाम	श्लोक
प्रथम	अलङ्कारन्यास	58
द्वितीय	द्यूतकर संवाहक	20
तृतीय	सन्धिच्छेद	30
चतुर्थ	मदनिका शर्विलक	33
पञ्चम	दुर्दिन	52
षष्ठ	प्रवहण विपर्यय	27
सप्तम	आर्यकापहरण	9
अष्टम	वसन्तसेना मोटन	47
नवम	न्यायालय (व्यवहार)	43
दशम	संहार (उपसंहार)	61
	योग-	**380**

रामायण

- रामायण महर्षि वाल्मीकि की कृति है।
- इसमें सात काण्ड हैं-

काण्ड का नाम	**सर्ग संख्या**
1. बालकाण्ड	77सर्ग
2. अयोध्याकाण्ड	119 सर्ग
3. अरण्यकाण्ड	75 सर्ग
4. किष्किन्धाकाण्ड	67 सर्ग
5. सुन्दरकाण्ड	68 सर्ग
6. युद्धकाण्ड	128 सर्ग
7. उत्तरकाण्ड	111 सर्ग
कुलसर्ग	**645 सर्ग**

- इसमें 24000 श्लोक हैं, अतः इसे **चतुर्विंशति साहस्त्री संहिता** भी कहते हैं।
- रामायण में मुख्यतः **अनुष्टुप्** श्लोक (छन्द) हैं।
- गायत्री मन्त्र में 24 वर्ण होते हैं। अतः यह मान्यता है कि इसको आधार मानकर रामायण में **24,000 श्लोक** लिखे गये हैं।
- प्रत्येक 1000 श्लोकों के बाद गायत्री मन्त्र के नये वर्ण से नया श्लोक प्रारम्भ होता है।
- संस्कृत साहित्य में इतिहास संज्ञक दो ग्रन्थ प्राप्त होते हैं एक रामायण दूसरा महाभारत।
- रामायण तथा महाभारत दोनों महाकाव्य के रूप में प्रसिद्ध हैं।
- वाल्मीकिकृत रामायण **आदिकाव्य** है।
- यह संस्कृतवाङ्मय में प्राप्त रामकथाओं के अतिरिक्त संसार के अनेक रामकथाओं जैसे अध्यात्म रामायण,अद्भुत रामायण, कम्बरामायण आदि राम विषयक काव्यों का मूल उपजीव्य स्वीकार किया जा सकता है।
- राजशेखर ने काव्यमीमांसा में इतिहास के दो भेद किये हैं,

  1. परिक्रिया　　**2. पुराकल्प**
- परिक्रियात्मक इतिहास एक नायक से सम्बद्ध है, पुराकल्पात्मक इतिहास अनेक नायकों से सम्बद्ध होता है।
- इसप्रकार रामायण केवल एक नायक विषयक होने से परिक्रियात्मक इतिहास स्वीकार किया जा सकता है।
- महाभारत में अनेक नायक सम्बन्धित कथायें होने से उसे पुराकल्पात्मक इतिहास माना जाना चाहिए।
- वेदों के बाद सर्वप्रथम अनुष्टुप् वाणी का प्रवर्तन आदि काव्य रामायण में ही है।
- ऋषि वाल्मीकि के द्वारा विरचित होने के कारण इसे **आर्षकाव्य** भी कहा जाता है।
- वाल्मीकि ने नारदजी से राम का वृत्तान्त सुना जो रामायण के बालकाण्ड का प्रथम सर्ग है जिसे **मूल रामायण** भी कहा जाता है।
- वाल्मीकि राम के समकालीन थे, अतः उन्होंने राम के चरित्र को काव्यबद्ध किया।
- ब्रह्मा की आज्ञा से वाल्मीकि ऋषि ने रामायण को रचा।

न ते वागनृता काव्ये काचिदत्र भविष्यति।
कुरु रामकथां पुण्यां श्लोकबद्धां मनोरमाम्॥

रामायण पर आश्रित ग्रन्थ

रामायण ग्रन्थ

1.योग वासिष्ठ (वसिष्ठ रामायण) ।

2. अध्यात्म रामायण ।
3. कम्बरामायण - तमिल भाषा में ।
4. अद्भुत रामायण ।
5. अगस्त्य रामायण ।
6. रङ्गनाथ रामायण - तेलगु में ।
7. कृत्तिवास रामायण - बंगला भाषा में
8. रामचरितमानस (तुलसीकृत) - अवधीभाषा में ।

रामायण आधारित महाकाव्य

रघुवंशम् - कालिदास । रामचरित -कवि अभिनन्द ।
रावणवध - भट्टि कवि । सेतुबन्ध - प्रवरसेन।
जानकीहरण - कुमारदास । रामायणमंजरी -क्षेमेन्द्र।
रघुनाथाभ्युदय - वामनभट्ट बाण। राघवपाण्डवीय - माधवभट्ट ।
रामायणसार -रघुनाथ ।

रामायण आधारित रूपक ग्रन्थ

1.भास - प्रतिमानाटक 2. भास - अभिषेकनाटक
3. दिङ्नाग - कुन्दमाला 4. भवभूति - उत्तररामचरित
5. भवभूति - महावीरचरित 6. राजशेखर - बालरामायण
7. मुरारि - अनर्घराघव 8. जयदेव - प्रसन्नराघव
9. शक्तिभद्र - आश्चर्य चूड़ामणि 10. रामभद्र - जानकीपरिणय
11. महादेव - अद्भुत दर्पण
12. दामोदर मिश्र - हनुमन्नाटक (महानाटक)

रामायण आश्रित चम्पूग्रन्थ

1. रामायणचम्पू - भोज 2. उत्तरचम्पू - वेंकटाध्वरि
3. चम्पूराघव - अनन्ताचार्य 4. अमोघराघव - दिवाकर
5. रामचन्द्र चम्पू - विश्वनाथ सिंह

महाभारत

➢ महाभारत के लेखक का नाम व्यास (कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास)है।
➢ **पिता का नाम -** पराशर ऋषि।
➢ **माता का नाम -** सत्यवती।
➢ यमुनाद्वीप में जन्म के कारण वेद व्यास को- द्वैपायन कहा जाता है।
➢ शरीर से कृष्ण वर्ण होने के कारण- कृष्णमुनि कहा जाता है।
➢ वैदिक मन्त्रों को याज्ञिक उपयोग के लिए चार वेदों में विभक्त करने के कारण- वेदव्यास कहा जाता है।
'विव्यास वेदान् यस्मात् स तस्मात् व्यास इति स्मृतः'
➢ व्यास ने तीन वर्षों में महाभारत जैसे महान् ग्रन्थ की रचना की थी।

वंशावली -

वशिष्ठ
|
शक्ति
|
पराशर + सत्यवती
|
व्यास
|
शुकदेव

➢ **जन्म स्थान**- उत्तरापथ हिमालय
➢ भारतीय जनमानस की विश्वास परम्परा के आधार पर व्यास को कौरवों और पाण्डवों के समकालीन माना जाता है।
➢ वेदव्यास वेदों के विभाजन कर्त्ता, महाभारत, एवं भागवत पुराण सहित सभी अट्ठारह पुराणों के कर्त्ता के रूप में प्रसिद्ध हैं।
➢ भारतीय विश्वास में प्रत्येक द्वापर में आकर वेदव्यास वेदों का विभाजन करते हैं। अट्ठाईसवें व्यास का नाम 'कृष्ण द्वैपायन व्यास' है।
➢ पाश्चात्य विद्वानों के अनुसार 'व्यास' किसी का नाम न होकर प्रतीकात्मक कल्पना है।

व्यास का अन्य नाम-

1. बादरायण व्यास (बदरिकाश्रम में ज्ञान की साधना की थी।
2. पराशर्य (पराशर का पुत्र)

महाभारत का परिचय एवं महत्त्वपूर्ण तथ्य

➢ विश्व वाङ्मय में सर्वाधिक विशाल ग्रन्थ महाभारत है।
➢ महाभारत में एक लाख से अधिक श्लोक हैं।
➢ यह भारतीय जीवन शैली की समग्र और यथार्थ प्रस्तुति है।
➢ यह आकरग्रन्थ है, इसकी मान्यताएँ शाश्वत अर्थात् सार्वकालिक और सार्वदेशिक हैं।
➢ भारतीय परम्परा महर्षि व्यास की गणना सप्त चिरंजीवियों में करती है।
अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनुमांश्च विभीषणः।
कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरजीविनः॥
➢ महाभारत भारतीय संस्कृति और आचार परम्परा का सर्वोत्तम विश्वसनीय और आदर्श एवं महानतम ग्रन्थ है।
➢ महाभारत एक आर्षमहाकाव्य है।
➢ ऋषि प्रणीत काव्यों को आर्षमहाकाव्य कहा जाता है।

- को एक लाख श्लोक होने के कारण महाभारत **शतसाहस्त्री संहिता** भी कहा जाता है।
- महाभारत, वाल्मीकि रामायण से चार गुना विशाल है।
- महाभारत में लेखक ने अपने युग के समस्त उल्लेखनीय विषयों को उल्लिखित किया है-'**यन्न भारते तन्न भारते।**'
- भारतवर्ष के समस्त पक्ष महाभारत में निहित हैं-
  धर्मे चार्थे च कामे च मोक्षे च भरतर्षभ ।
  यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत् क्वचित् ॥
- अनेक आध्यात्मिक तथा भक्तिपूर्ण ग्रन्थ जैसे-**गीता, विष्णुसहस्रनाम, अनुगीता, गजेन्द्रमोक्ष, भीष्मस्तवराज** (पञ्चरत्न) महाभारत के ही भाग हैं।
- वैदिक धर्म और सिद्धान्तों का व्यावहारिक रूप हमें महाभारत में उपलब्ध होता है।
- महाभारत जीवित भारतीय संस्कृति का प्रकाश स्तम्भ है।

महाभारत का समय

- बालगंगाधर तिलक -ई.पू. 5000
- डॉ. वचनदेव कुमार -ई.पू. 3100 वर्ष
- विण्टरनित्स-ई.पू. चौथी शताब्दी से पहले।
- रामजी उपाध्याय ई.पू. 600 से 1200 के मध्य
- चन्द्रशेखर पाण्डेय एवं डॉ. नानूराम व्यास-320ई.पू. से 50 ई. के मध्य।

महाभारत का स्वरूप

- एक लाख से अधिक श्लोक हैं।
- 'शत-साहस्री-संहिता' भी कहते हैं।
- अट्ठारह पर्वों में विभक्त है।
- युधिष्ठिर इस ऐतिहासिक काव्य के नायक हैं।
- सबसे बड़ा पर्व शान्तिपर्व (14 हजार श्लोक)
- सबसे छोटा पर्व- महाप्रस्थानिक पर्व (1500 श्लोक) है।
- अट्ठारह पर्वों के अलावा अन्त में इसके परिशिष्ट के रूप में हरिवंश पर्व में कृष्ण जीवन चरित वर्णित है, इसे मिलाकर श्लोकों की संख्या एक लाख होती है।

महाभारत आश्रित ग्रन्थ

महाकाव्य -

किरातार्जुनीय	-	भारवि	-	बृहत्त्रयी
शिशुपालवध	-	माघ	-	बृहत्त्रयी
नैषधीयचरित	-	श्रीहर्ष	-	बृहत्त्रयी
भारतमञ्जरी	-	क्षेमेन्द्र		
नलाभ्युदय	-	वामनभट्ट बाण		
दूतघटोत्कच	-	भास		
मध्यमव्यायोग	-	भास		
बालचरित	-	भास		
ऊरुभङ्ग	-	भास		
पञ्चरात्र	-	भास		
दूतवाक्य	-	भास		
कर्णभार	-	भास		
अभिज्ञानशाकुन्तल	-	कालिदास		
वेणीसंहार	-	भट्टनारायण		
बालभारत	-	राजशेखर		
किरातार्जुनीयव्यायोग	-	वत्सराज		

चम्पूग्रन्थ

नलचम्पू	-	त्रिविक्रमभट्ट
भारतचम्पू	-	अनन्तभट्ट
भारतचम्पू	-	राजचूड़ामणि दीक्षित
पाञ्चालीस्वयंवरचम्पू	-	नारायण चम्पू

महाभारत का अंश भगवद्गीता

- स्मार्त परम्परा में एकमात्र ग्रन्थ भगवद्गीता स्वीकृत है।
- यह भीष्मपर्व (अध्याय-25-42) में है।
- इसमें 18 अध्याय, 700श्लोक एवं अनुष्टुप् छन्द है।

श्रीमद्भगवद्गीता

- श्रीमद्भगवद्गीता = श्रीमता भगवता गीतं या सा यह एक सार्वभौमिक ग्रन्थ है गीता मानव मात्र का धर्मशास्त्र है।
- गीता में उन सभी विषयों का समावेश है जो हमें पृथक् पृथक् शास्त्रों में प्राप्त होते हैं। अतएव महर्षि वेदव्यास ने कहा है-

  गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः।
  या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्माद्विनिःसृता॥

  'गीता सुगीता करने योग्य है अर्थात् श्रीगीता जी को भली भाँति पढ़कर अर्थ और भावसहित अन्तः करण में धारण कर लेना मुख्य कर्तव्य है, जो कि स्वयं पद्मनाभ भगवान् श्रीविष्णु के मुखारविन्द से निकली हुई है, फिर अन्य शास्त्रों के विस्तार से क्या प्रयोजन है।
- गीता को **उपनिषदों का सार** बताते हुए कहा गया है कि सभी उपनिषदें मानों गऊयें हैं और उनका दोहन करने वाले गोपालनन्दन श्रीकृष्ण हैं, अर्जुन बछड़े हैं और 'गीता' दूध रूपी अमृत है-

  सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपालनन्दनः।
  पार्थो वत्सः सुधीर्भोक्ता दुग्धं गीतामृतं महत्॥
- महर्षिवेदव्यास द्वारा विरचित महाभारत के भीष्मपर्व में वर्णित श्रीमद्भगवद्गीता सर्वाधिक लोकप्रिय भारतीय सनातनधर्म का ग्रन्थरत्न है।
- विश्व में सर्वाधिक टीकाओं से युक्त होने का गौरव गीता को ही प्राप्त है।
- श्रीमद्भगवद्गीता संस्कृत भाषा की सर्वाधिक लोकप्रिय रचना है।
- दार्शनिक चिन्तन के तीन प्रस्थान हैं-
  श्रौतप्रस्थान, सौत्रप्रस्थान व स्मार्तप्रस्थान।
- गीता का अर्थ है - गायी गयी / कही गयी ।
- भीष्म पर्व के अनुसार -
  ''या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्माद्विनिःसृता।''
- उपनिषद् शब्द स्त्रीलिङ्ग है अतः गीता शब्द में स्त्रीलिङ्ग का प्रयोग।
- गीता में उपनिषत्सु शब्द का प्रयोग है। यह आदरार्थ प्रयोग है ।
- गीता का रचनाकाल महाभारत का प्रारम्भिक दिवस है।
- मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी को गीता जयन्ती मनाई जाती है ।
- गीता पर सर्वाधिक प्राचीन भाष्य '**शाङ्करभाष्य**' है।

गीता में वर्णित शंख

पाञ्चजन्यं हृषीकेशो देवदत्तं धनञ्जयः।
पौण्ड्रं दध्मौ महाशङ्खं भीमकर्मा वृकोदरः।। 1/15
अनन्तविजयं राजा कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः।
नकुलः सहदेवश्च सुघोषमणिपुष्पकौ।। 1/16

देवता		शंख
श्रीकृष्ण	-	पाञ्चजन्य
अर्जुन	-	देवदत्त
भीम	-	पौण्ड्र
युधिष्ठिर	-	अनन्तविजय
नकुल	-	सुघोष
सहदेव	-	मणिपुष्पक

गीता के अध्याय एवं श्लोक संख्या

अध्याय नाम	-	श्लोकसंख्या
1. अर्जुनविषादयोग	-	47
2. सांख्ययोग	-	72
3. कर्मयोग	-	43
4. ज्ञानकर्मसंन्यासयोग	-	42
5. कर्मसंन्यासयोग	-	29
6. आत्मसंयमयोग	-	47
7. ज्ञानविज्ञानयोग	-	30
8. अक्षरब्रह्मयोग	-	28
9. राजविद्याराजगुह्ययोग	-	34
10. विभूतियोग	-	42
11. विश्वरूपदर्शनयोग	-	55
12. भक्तियोग	-	20
13. क्षेत्रक्षेत्रज्ञविभागयोग	-	34
14. गुणत्रय विभागयोग	-	27
15. पुरुषोत्तमयोग	-	20
16. दैवासुरसम्पद्विभागयोग	-	24
17. श्रद्धात्रयविभागयोग	-	28
18. मोक्षसंन्यासयोग	-	78
कुल श्लोक	**-**	**700**

- सबसे बड़ा अध्याय - 18, मोक्षसंन्यासयोग (78 श्लोक)
- सबसे छोटा अध्याय - 12और 15 वाँ (20-20 श्लोक)

श्रीमद्भगवद्गीता के प्रमुख पात्र एवं उनका परिचय-

धृतराष्ट्र - दुर्योधन आदि कौरवों के पिता
संजय - दिव्यदृष्टि प्राप्त धृतराष्ट्र के मन्त्री
धृष्टद्युम्न - पाण्डवों के सेनापति, द्रौपदी के भाई, द्रुपद के पुत्र
भीम - पाण्डवों में द्वितीय पाण्डव, कुन्तीपुत्र
अर्जुन - श्रीकृष्ण के सखा, पाण्डवों में तृतीय पाण्डव, कुन्तीपुत्र
युधिष्ठिर - पाण्डवों में प्रथम पाण्डव, कुन्तीपुत्र, धर्मराज के अवतार
नकुल - पाण्डवों में चतुर्थ पाण्डव,माद्री के पुत्र
सहदेव - पाण्डवों में अन्तिम पाण्डव, माद्री के पुत्र
द्रुपद - द्रौपदी के पिता
धृष्टकेतु - पाण्डव पक्ष के वीर योद्धा
चेकितान - पाण्डव पक्ष के वीर योद्धा
काशिराज - पाण्डव पक्ष के वीर योद्धा
पुरुजित् - पाण्डव पक्ष के वीर योद्धा
कुन्तिभोज - पाण्डव पक्ष के प्रमुख योद्धा
अभिमन्यु - अर्जुन और सुभद्रा के पुत्र
पितामह भीष्म - कौरव पक्ष के प्रथम सेनापति, 10 दिन तक सेनापति रहे।
द्रोणाचार्य - कौरवों और पाण्डवों के गुरु, कौरवों के द्वितीय सेनापति,05 दिन तक सेनापति।
कर्ण - कौरवों के तीसरे सेनापति, 2 दिन तक सेनापति रहे।
कृपाचार्य - कौरवों के प्रमुख योद्धा, सप्त चिरंजीवियों में एक
अश्वत्थामा - द्रोणाचार्य के पुत्र, कौरव पक्ष के प्रमुख योद्धा
विकर्ण - कौरव पक्ष का प्रमुख योद्धा (दुर्योधन का भाई)
भूरिश्रवा - कौरव पक्ष का प्रमुख योद्धा
श्रीकृष्ण - भगवान् विष्णु के अवतार, अर्जुन को गीता का उपदेश देने वाले
राजा विराट - पाण्डव पक्ष के प्रमुख योद्धा, अज्ञातवास में पाण्डव इन्हीं के यहाँ रहे थे।
दुर्योधन - धृतराष्ट्र के पुत्र, 100 पुत्रों में सबसे बड़ा

सर्वज्ञभूषण द्वारा सम्पादित एवं संस्कृतगंगा प्रकाशन से प्रकाशित पुस्तकों का विवरण

क्र. पुस्तक का नाम	पेज	मूल्य
1. **वस्तुनिष्ठ संस्कृत–साहित्यम्** (TGT, PGT, UGC, NET हेतु उपयोगी)	316	240
2. **वस्तुनिष्ठ संस्कृत–व्याकरणम्** (TGT, PGT, UGC-NET में उपयोगी)	312	240
3. **प्रतियोगितागंगा भाग-1** (TGT, PGT, UGC-NET में अत्यन्त उपयोगी)	448	350
4. **प्रतियोगितागंगा भाग-2** (TGT, PGT, UGC-NET में अत्यन्त उपयोगी)	576	425
5. **आख्यातास्मि** (UGC-NET संस्कृत कोड-25 हेतु उपयोगी)	272	180
6. **प्राख्याता** (UGC–NET संस्कृत कोड-25 हेतु उपयोगी)	320	240
7. **वैदिकवाङ्मय परीक्षा दृष्टि** UGC-NET एवं हायर Exam में उपयोगी)	232	145
8. **भारतीयदर्शनसार** (PGT/UGC-NET में उपयोगी)	160	135
9. **आचार्योऽहम्** (UGC-NET संस्कृत कोड- 73 हेतु उपयोगी)	164	125
10. **असिस्टेण्ट प्रोफेसर संस्कृत** (Higher Education GDC/GIC हेतु उपयोगी)	124	105
11. **SUPER-30 GK/GS** (असिस्टेण्ट प्रोफेसर एवं हायर एजुकेशन हेतु)	176	130
12. **प्रवक्तास्मि** (PGT प्रवक्ता संस्कृत हेतु उपयोगी)	200	125
13. **व्याख्यास्मि** (PGT प्रवक्ता संस्कृत हेतु उपयोगी)	316	240
14. **TGT प्रश्न!अस्मि** (TGT/ L. T. संस्कृत हेतु उपयोगी)	232	145
15. **प्रश्नमीमांसा संस्कृत** (TGT/LT हेतु उपयोगी)	296	140
16. **TGT व्याख्यात्मिका संस्कृत** (TGT/ L. T. में उपयोगी)	276	190
17. **मिशन L. T. संस्कृत** (L. T. एवं TGT हेतु उपयोगी)	400	325
18. **L. T. प्रश्नोत्तरी संस्कृत** (L. T. एवं TGT हेतु उपयोगी)	328	250
19. **गुरुमन्त्र** (UP-TET/Super TET संस्कृत हेतु उपयोगी)	120	120
20. **विजयीभव** (UP-TET संस्कृत हेतु उपयोगी)	196	145
21. **विजयपथ प्रैक्टिस सेट** (UP-TET संस्कृत हेतु उपयोगी)	196	130
22. **C-TET, शिक्षकोऽहम्** (C-TET हेतु उपयोगी)	216	140
23. **मिशन हरियाणा** (H-TET लेवल-2 TGT एवं लेवल-3 PGT हेतु उपयोगी)	300	240
24. **जय हो** (MP वर्ग- 1,2 हेतु उपयोगी)	324	260
25. **लक्ष्य झारखण्ड** (PGT संस्कृत झारखण्ड के लिए उपयोगी)	284	250
26. **TGT झारखण्ड संस्कृत**	252	250
27. **सम्भाषण शब्दकोश** (संस्कृत सम्भाषण हेतु उपयोगी)	208	110
28. **सप्तगङ्गम्** (TGT मूलपाठ)	152	151

MP-वर्ग-1,2

संस्कृत

जय हो!

प्रोफेशनल एक्जामिनेशन बोर्ड, भोपाल (म.प्र.)

MP-वर्ग-1,2

माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक शिक्षक पात्रता परीक्षा, 2018

संस्कृत

जय हो!

लेखक

सर्वज्ञभूषण

प्रकाशक

संस्कृतगङ्गा

59, मोरी, दारागञ्ज, प्रयागराज

मो. 8004545096, 7800138404

समास

➢ **समासः -** सम् √अस् + घञ् = समासः

➢ **'अनेकपदानाम् एकपदीभवनं समासः'** अर्थात् अनेकपदों का एकपद हो जाना 'समास' कहलाता है।

➢ **'समसनं समासः'** अर्थात् संक्षेपीकरण को समास कहते हैं। 'समास' का अर्थ है- संक्षिप्त। जब दो या दो से अधिक पद परस्पर मिलकर नया शब्द बनाते हैं; तो उनके बीच की विभक्तियाँ लुप्त हो जाती हैं, और बना हुआ शब्द 'समास' कहलाता है।

विभक्तिर्लुप्यते यत्र तदर्थस्तु प्रतीयते।
पदानां चैकपद्यं च समासः सोऽभिधीयते॥

अर्थात् जहाँ विभक्तियों का लोप हो जाता है, परन्तु उनका अर्थ प्रतीत होता रहता है, और अनेक पद मिलकर एकपद बन जाता है, उसे 'समास' कहते हैं।

जैसे- दशरथस्य पुत्रः = **दशरथपुत्रः**

पीतम् अम्बरं यस्य सः = **पीताम्बरः**

➢ **विग्रह- ''वृत्त्यर्थावबोधकं वाक्यं विग्रहः''** समासवृत्ति के अर्थ का बोध कराने के लिए जो वाक्य होता है, उसे 'विग्रह' कहते हैं।

जैसे- 'पीताम्बरः' इस सामासिक पद का अर्थ बताने के लिए ''पीतम् अम्बरं यस्य सः'' यह जो वाक्य है यही विग्रह कहा जाता है।

समास विग्रह- विग्रह दो प्रकार का होता है-

(i) लौकिक विग्रह (ii) अलौकिक विग्रह

(i) लौकिक विग्रह- लोक के समझने लायक विग्रह को 'लौकिक विग्रह' कहते हैं।

जैसे- 'दशरथपुत्रः' इस सामासिक पद का लौकिक विग्रह होगा- दशरथस्य पुत्रः।

(ii) अलौकिक विग्रह- जो व्याकरणशास्त्र की प्रक्रिया दर्शाने हेतु अर्थात् शास्त्रीय प्रक्रिया के लिए विग्रह होता है, उसे 'अलौकिक विग्रह' कहते हैं।

जैसे- 'दशरथ ङस् पुत्र सु' यह ''दशरथपुत्रः'' इस सामासिक पद का अलौकिक विग्रह होगा।

समस्त पद या **सामासिक पद-** समास होने पर जो शब्द बनता है, उसे 'समस्तपद' या 'सामासिक पद' कहते हैं।

जैसे- अधिगोपम्, चन्द्रशेखरः, त्रिभुवनम्, रामकृष्णौ आदि ये समस्तपद या सामासिकपद कहें जायेंगे।

समास के भेद

'लघुसिद्धान्तकौमुदी' के लेखक वरदराज ने समास के पाँच प्रकार बताये हैं- **'समासः पञ्चधा'**। किन्तु माध्यमिक शिक्षा परिषद् की पाठ्यपुस्तकों में **समास के छह भेद** बताये गये हैं; अतः आप सभी UP-TET के परीक्षार्थियों के लिए समास के छह भेद ही मानना चाहिए।

समास के प्रमुख रूप से छह भेद हैं-

1. अव्ययीभाव समास
2. तत्पुरुष समास
3. कर्मधारय समास
4. द्विगु समास
5. द्वन्द्व समास
6. बहुव्रीहि समास

नोट- भट्टोजिदीक्षित सिद्धान्तकौमुदी में तत्पुरुष का भेद कर्मधारय और कर्मधारय का भेद द्विगु समास को बताते हैं अतः इनके अनुसार समास चार प्रकार का ही होता है।

1. अव्ययीभाव समास

अव्ययीभाव- 'पूर्वपदार्थप्रधानोऽव्ययीभावः' अर्थात् जिस समास में पूर्वपद का अर्थ प्रधान/मुख्य हो, उसे 'अव्ययीभाव' समास कहते हैं। इस समास में पूर्वपद प्रायः अव्यय होता है।

ध्यान दें- समास में सामान्यतया दो पद होते हैं। इनमें पहले आने वाला पद 'पूर्वपद' और उसके बाद आनेवाला पद 'उत्तरपद' होता है। 'उत्तर' पद का एक अर्थ 'बाद में' या 'बाद वाला' भी है।

जैसे-

समास	पूर्वपद	उत्तरपद
उपनदम्	उप	नदम्

विशेष ध्यान रखें- अव्ययीभाव समास होने पर सामासिक पद अव्यय बन जाता है, तथा नपुंसकलिङ्ग एकवचन में प्रयोग किया जाता है।

'अनव्ययम् अव्ययः सम्पद्यते इति अव्ययीभावः' अर्थात् जो शब्द समास होने के पूर्व तो अव्यय न हो, किन्तु समास होने पर 'अव्यय' हो जाय, वही अव्ययीभाव समास है।

जैसे- शक्तिम् अनतिक्रम्य = यथाशक्ति।

यहाँ 'शक्ति' शब्द अव्यय नहीं है किन्तु 'यथा' इस अव्यय के साथ

समास होने के कारण 'यथाशक्ति' यह पूरा पद अव्यय हो गया; और नपुंसकलिङ्ग एकवचन में प्रयुक्त है।

अव्ययीभाव समास करने वाला सूत्र-

''अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि-व्यृद्धि-अर्थाभाव-अत्यय-असम्प्रति-शब्दप्रादुर्भाव-पश्चात्-यथा-आनुपूर्व्य-यौगपद्य-सादृश्य-सम्पत्ति-साकल्य-अन्तवचनेषु'' (2.1.6)

सूत्र का अर्थ- विभक्ति, समीप, समृद्धि, व्यृद्धि (वृद्धि का अभाव), अर्थाभाव, अत्यय (नष्ट होना), असम्प्रति (अब युक्त न होना), शब्दप्रादुर्भाव (शब्द और सादृश्य), पश्चात्, यथा, आनुपूर्व्य (क्रमशः), यौगपद्य (एक साथ होना), सादृश्य (समान), सम्पत्ति, साकल्य (सम्पूर्णता) और अन्त (समाप्ति) अर्थों में विद्यमान अव्यय का समर्थ सुबन्त पदों के साथ नित्य से समास होता है।

अव्ययीभाव समास के उदाहरण-

1. 'विभक्ति' के अर्थ में विद्यमान अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त (पद) के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

समास विग्रह		समस्त पद (अर्थ सहित)
हरौ इति	=	**अधिहरि** (हरि में)
आत्मनि इति	=	**अध्यात्मम्** (आत्मा में)
गोपि इति	=	**अधिगोपम्** (गोप में)

यहाँ 'अधि' अव्यय सप्तमी विभक्ति के अर्थ में है।

2. 'समीप' अर्थ में विद्यमान 'उप' आदि अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

समास विग्रह		सामासिक पद (अर्थ सहित)
गङ्गायाः समीपम्	=	**उपगङ्गम्** (गङ्गा नदी के समीप)
नगरस्य समीपम्	=	**उपनगरम्** (नगर के समीप)
कृष्णस्य समीपम्	=	**उपकृष्णम्** (कृष्ण के समीप)
कूलस्य समीपम्	=	**उपकूलम्** (किनारे के समीप)
तटस्य समीपम्	=	**उपतटम्** (तट के समीप)

उपर्युक्त उदाहरणों में 'उप' यह अव्यय समीप अर्थ में है। जिसका गङ्गा आदि समर्थ सुबन्त पदों के साथ अव्ययीभाव समास हुआ है। समास होने के बाद उपगङ्गम्, उपनगरम् आदि पूरा पद अव्यय हो जाता है।

3. 'समृद्धि' के अर्थ में अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

समास विग्रह		समस्त पद (अर्थसहित)
मद्राणां समृद्धिः	=	**सुमद्रम्** (मद्रदेशवासियों की समृद्धि)
भिक्षाणां समृद्धिः	=	**सुभिक्षम्** (भिक्षाटन की समृद्धि)

4. व्यृद्धि (दुर्गति या वृद्धि का अभाव) के अर्थ में विद्यमान अव्यय पदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

यवनानां व्यृद्धिः	=	**दुर्यवनम्** (यवनों की दुर्गति)
भिक्षाणां व्यृद्धिः	=	**दुर्भिक्षम्** (भिक्षा का न मिलना)
शकानां व्यृद्धिः	=	**दुःशकम्** (शकों की दुर्गति)
राक्षसाणां व्यृद्धिः	=	**दुर्राक्षसम्** (राक्षसों की अवनति)

5. 'अर्थाभाव' के अर्थ में विद्यमान अव्यय पदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

मक्षिकाणाम् अभावः	=	**निर्मक्षिकम्** (मक्खियों का अभाव)
प्राणानाम् अभावः	=	**निष्प्राणम्** (प्राणों का अभाव)
विघ्नानाम् अभावः	=	**निर्विघ्नम्** (विघ्नों का अभाव)
मशकानाम् अभावः	=	**निर्मशकम्** (मच्छरों का अभाव)
जनानाम् अभावः	=	**निर्जनम्** (मनुष्यों का अभाव)
दोषाणाम् अभावः	=	**निर्दोषम्** (दोषों का अभाव)

उपर्युक्त उदाहरणों में 'निर्' आदि अव्ययपदों का 'मक्षिका' आदि समर्थ सुबन्तों के साथ अव्ययीभाव समास हुआ है। यहाँ 'निर्' अव्यय का अर्थ है- अर्थाभाव।

6. अत्यय (ध्वंस या नाश) के अर्थ में विद्यमान अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

हिमस्य अत्ययः	=	**अतिहिमम्** (हिम का नाश)
रोगस्य अत्ययः	=	**अतिरोगम्** (रोग का नाश)
शीतस्य अत्ययः	=	**अतिशीतम्** (शीतलता का नाश)

उपर्युक्त उदाहरणों में 'अति' इस अव्यय पद का अर्थ है- अत्यय (नाश) अतः 'अति' इस अव्यय पद के साथ 'हिम' आदि समर्थ सुबन्तों का अव्ययीभाव समास हुआ है।

7. असम्प्रति (अनौचित्य) के अर्थ में विद्यमान अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

समास विग्रह		सामासिक पद (अर्थ सहित)
निद्रा सम्प्रति न युज्यते	=	**अतिनिद्रम्** (इस समय नींद उचित नहीं)
स्वप्नः सम्प्रति न युज्यते	=	**अतिस्वप्नम्** (इस समय स्वप्न उचित नहीं)
कम्बलं सम्प्रति न युज्यते	=	**अतिकम्बलम्** (इस समय कम्बल उचित नहीं)

उपर्युक्त उदाहरणों में 'अति' यह अव्यय असम्प्रति अर्थ में है, जिसका 'निद्रा' आदि समर्थ पदों के साथ अव्ययीभाव समास हुआ है।

8. शब्दप्रादुर्भाव (शब्द का प्रकाश) के अर्थ में विद्यमान अव्यय पदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

हरिशब्दस्य प्रकाशः = **इतिहरि** ('हरि' शब्द का प्रकट होना)
विष्णुशब्दस्य प्रकाशः = **इतिविष्णु** ('विष्णु' शब्द का प्रकट होना)
पाणिनिशब्दस्य प्रकाशः = **इतिपाणिनि** ('पाणिनि' शब्द का प्रकट होना)
ज्ञानशब्दस्य प्रकाशः = **इतिज्ञानम्** ('ज्ञान' शब्द का प्रकट होना)

9. 'पश्चात्' (पीछे) के अर्थ में विद्यमान अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

विष्णोः पश्चात् = **अनुविष्णु** (विष्णु के पीछे)
रामस्य पश्चात् = **अनुरामम्** (राम के पीछे)
रथस्य पश्चात् = **अनुरथम्** (रथ के पीछे)
शिष्यस्य पश्चात् = **अनुशिष्यम्** (शिष्य के पीछे)
गोपालस्य पश्चात् = **अनुगोपालम्** (गोपाल के पीछे)
कृष्णस्य पश्चात् = **अनुकृष्णम्**

10. 'यथा' के अर्थ में विद्यमान अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। 'यथा' के चार अर्थ होते हैं-
(क) योग्यता अथवा लायक या अनुकूलता
(ख) वीप्सा अथवा दुहराया जाना
(ग) पदार्थानतिवृत्ति अथवा पदार्थों की सीमा के बाहर नहीं जाना
(घ) सादृश्य अथवा समानता

(क) योग्यता-

रूपस्य योग्यम् = **अनुरूपम्** (रूप के योग्य)
गुणस्य योग्यम् = **अनुगुणम्** (गुण के योग्य)

(ख) वीप्सा-

अक्षम् अक्षम् प्रति = **प्रत्यक्षम्** (प्रत्यक्ष)
एकम् एकं प्रति = **प्रत्येकम्** (प्रत्येक)
गृहं गृहं प्रति = **प्रतिगृहम्** (घर-घर)
दिनं दिनं प्रति = **प्रतिदिनम्** (प्रतिदिन)
अर्थम् अर्थं प्रति = **प्रत्यर्थम्** (प्रत्येक अर्थ)
जनं जनं प्रति = **प्रतिजनम्** (प्रत्येक जन)
छात्रं छात्रं प्रति = **प्रतिच्छात्रम्** (प्रत्येक छात्र)
दिशं दिशं प्रति = **प्रतिदिशम्** (प्रत्येक दिशा)

(ग) पदार्थानतिवृत्ति-

शक्तिम् अनतिक्रम्य = **यथाशक्ति** (शक्ति के अनुसार)
बलम् अनतिक्रम्य = **यथाबलम्** (बल के अनुसार)
समयम् अनतिक्रम्य = **यथासमयम्** (समय के अनुसार)
बुद्धिम् अनतिक्रम्य = **यथाबुद्धि** (बुद्धि के अनुसार)
ज्ञानम् अनतिक्रम्य = **यथाज्ञानम्** (ज्ञान के अनुसार)

(घ) सादृश्य-

हरेः सादृश्यम् = **सहरि** (हरि की समानता)
रूपस्य सादृश्यम् = **सरूपम्** (रूप की समानता)

11. आनुपूर्व्य (क्रम) के अर्थ में विद्यमान अव्यय पदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

ज्येष्ठस्य आनुपूर्व्येण = **अनुज्येष्ठम्** (ज्येष्ठ के क्रम से)
वर्णस्य आनुपूर्व्येण = **अनुवर्णम्** (वर्ण के क्रमानुसार)

12. यौगपद्य (साथ होना) के अर्थ में विद्यमान अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

चक्रेण युगपत् = **सचक्रम्** (चक्र के साथ)
हर्षेण युगपत् = **सहर्षम्** (हर्ष के साथ)

13. सादृश्य (जैसा) के अर्थ में विद्यमान अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव होता है। जैसे-

सदृशः सख्या = **ससखि** (मित्र के जैसा)
सदृशः वर्णेन = **सवर्णम्** (वर्ण के समान)

14. सम्पत्ति के अर्थ में विद्यमान अव्ययपदों का समर्थसुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

क्षत्राणां सम्पत्तिः = **सक्षत्रम्** (राजाओं की सम्पत्ति)

15. साकल्य (सम्पूर्णता) के अर्थ में विद्यमान अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

तृणम् अपि अपरित्यज्य = **सतृणम्** (तिनके को भी छोड़े बिना सब खाता है)

16. अन्तवचन (तक) के अर्थ में अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

अग्निग्रन्थपर्यन्तम् = **साग्नि** (अग्नि ग्रन्थ की समाप्ति तक पढ़ता है)
बालकाण्डपर्यन्तम् = **सबालकाण्डम्** (बालकाण्ड तक)

- **आङ्मर्यादाभिविध्योः** अर्थात् मर्यादा और अभिविधि (तक) के अर्थ में 'आङ्' अव्यय पद का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

आ मरणात् = **आमरणम्** (मरने तक)
आ जीवनात् = **आजीवनम्** (जीवन भर)

- **नदीभिश्च** (2.1.20) नदी वाची शब्दों के साथ संख्यावाची शब्दों का समास होता है, और वह अव्ययीभाव समास कहलाता है। जैसे-

पञ्चानां गङ्गानां समाहारः = **पञ्चगङ्गम्** (पाँच गङ्गाओं का समाहार)
द्वयोः यमुनयोः समाहारः = **द्वियमुनम्** (दो यमुनाओं का समाहार)
सप्तानां नर्मदानां समाहारः = **सप्तनर्मदम्**
उपर्युक्त उदाहरणों में 'पञ्च' आदि संख्यावाची पदों का गङ्गा आदि नदीवाचक पदों के साथ अव्ययीभाव समास हुआ है।

➢ **अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्यः (5.4.107)**
अव्ययीभाव समास में शरद् आदि शब्दों से समासान्त 'टच्' प्रत्यय होता है। 'टच्' प्रत्यय में 'ट्' और 'च्' का लोप हो जाता है केवल 'अ' शेष बचता है। जैसे-
शरदः समीपम् = **उपशरदम्** (शरद् के समीप)
विपाशं विपाशं प्रति = **प्रतिविपाशम्** (विपाशा नदी के सम्मुख)

➢ **अनश्च (5.4.108)** - जिस अव्ययीभाव समास के अन्त में 'अन्' होता है, वह अन्नन्त अव्ययीभाव है। उससे समासान्त 'टच्' प्रत्यय होता है। जैसे-
राज्ञः समीपम् = **उपराजम्** (राजा के समीप)

➢ **नपुंसकादन्यतरस्याम् (5.4.109)** - 'अन्' अन्तवाला जो नपुंसकलिङ्ग शब्द है, उस अव्ययीभाव समास के अन्त में विकल्प से 'टच्' प्रत्यय होता है। जैसे-
चर्मणः समीपम् = **उपचर्मम्** (चर्म के समीप) 'टच्'प्रत्यय हुआ
चर्मणः समीपम् = **उपचर्म** (चर्म के समीप) 'टच्' नहीं हुआ।

2. तत्पुरुष समास

तत्पुरुष- 'प्रायेण उत्तरपदार्थप्रधानः तत्पुरुषः'
अर्थात् जिस समास में उत्तरपद का अर्थ प्रधान होता है, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं।
जैसे- 'गङ्गाजलम् आनय'। यहाँ 'आनय' इस क्रिया पद के साथ 'जलम्' का ही साक्षात् सम्बन्ध है। अतः 'जल' इस उत्तरपद का अर्थ ही प्रधान होने के कारण यहाँ तत्पुरुषसमास है।

तत्पुरुष समास के भेद

तत्पुरुष समास के मुख्यतः दो भेद होते हैं- 1. समानाधिकरण तत्पुरुष 2. व्यधिकरण तत्पुरुष

1. समानाधिकरण तत्पुरुष- समानाधिकरण को 'समविभक्तिक' भी कह सकते हैं। इस तत्पुरुष समास के पूर्वपद एवं उत्तरपद दोनों में समान विभक्ति (प्रथमा) लगी रहती है। समान अधिकरण (विभक्ति) वाला तत्पुरुष कर्मधारय समास होता है- **''तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः''**

2. व्यधिकरण तत्पुरुष- जिस तत्पुरुष समास में पूर्वपद तथा उत्तरपद दोनों में अलग-अलग विभक्तियाँ लगी हों, वह व्यधिकरण तत्पुरुष होता है। वि = विषय और 'अधिकरण' = विभक्ति वाले तत्पुरुष को व्यधिकरण तत्पुरुष कहते हैं। पूर्वपद में जो विभक्तियाँ लगी होती हैं, उनके आधार पर ही तत्पुरुष के प्रमुख भेद किये जाते हैं। जैसे यदि पूर्वपद में द्वितीया विभक्ति हो तो द्वितीया तत्पुरुष, यदि पूर्व पद में तृतीया विभक्ति लगी हो तो तृतीया तत्पुरुष आदि। इसप्रकार **व्यधिकरण तत्पुरुष के छह भेद किये गये हैं-**
1. द्वितीया तत्पुरुष 2. तृतीया तत्पुरुष 3. चतुर्थी तत्पुरुष
4. पञ्चमी तत्पुरुष 5. षष्ठी तत्पुरुष 6. सप्तमी तत्पुरुष।

तत्पुरुष समास के उपभेद

समानाधिकरण तथा व्यधिकरण समास के अतिरिक्त तत्पुरुष के अन्य उपभेद भी इसप्रकार हैं-
(i) नञ् तत्पुरुष समास - अनश्वः, अब्राह्मणः, अनिच्छा आदि।
(ii) प्रादि तत्पुरुष समास - कुपुरुषः, प्राचार्यः आदि।
(iii) उपपद तत्पुरुष समास - कुम्भकारः, धर्मज्ञः आदि।
(iv) अलुक् तत्पुरुष समास - युधिष्ठिरः, सरसिजम्, अभ्यासादागतः आदि।

द्वितीया तत्पुरुष समास

जिस तत्पुरुष समास का पूर्वपद द्वितीया विभक्ति में हो, ऐसे द्वितीयान्त सुबन्त पद का 'श्रित' आदि शब्दों के साथ द्वितीया तत्पुरुष समास होता है।

सूत्र- ''द्वितीया श्रित-अतीत-पतित-गत-अत्यस्त-प्राप्त-आपन्नैः'' (2.1.24)

समास विग्रह	सामासिक पद (अर्थ सहित)
कृष्णं श्रितः	**कृष्णश्रितः** (कृष्ण का आश्रय लिया हुआ)
शरणम् आगतः	**शरणागतः** (शरण में आया हुआ)
लोकम् अतीतः	**लोकातीतः** (लोक से परे)
भयम् आपन्नः	**भयापन्नः** (भय को प्राप्त)
रामम् आश्रितः	**रामाश्रितः** (राम के आश्रित)
सुखं प्राप्तः	**सुखप्राप्तः** (सुख को प्राप्त हुआ)
अश्वम् आरूढः	**अश्वारूढः** (घोड़े पर आरूढ़)
स्वर्गं गतः	**स्वर्गगतः** (स्वर्ग को गया हुआ)
दुःखम् अतीतः	**दुःखातीतः** (दुःख को पार किया हुआ)
दुःखापन्नः	**दुःखम् आपन्नः**
भयम् प्राप्तः	**भयप्राप्तः**

कूपं पतितः **कूपपतितः** (कुयें में गिरा हुआ)
ग्रामं गतः **ग्रामगतः** (गाँव को गया हुआ)
जीवनं प्राप्तः **जीवनप्राप्तः** (जीवन को प्राप्त किया हुआ)
सुखम् आपन्नः **सुखापन्नः** (सुख को पाया हुआ)

तृतीया तत्पुरुष समास

जिस तत्पुरुष समास का पूर्वपद तृतीया विभक्ति में हो, ऐसे तृतीयान्त सुबन्त पद का तत्कृत (उसके द्वारा किये गए) गुणवाचक शब्द के साथ तथा 'अर्थ' शब्द के साथ तृतीया तत्पुरुष समास होता है।

सूत्र- ''तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन'' (2.1.30)
जैसे-

शङ्कुलया खण्डः = **शङ्कुलाखण्डः** (सरौते से किया गया टुकड़ा)
धान्येन अर्थः = **धान्यार्थः** (अन्न से प्रयोजन)
दानेन अर्थः = **दानार्थः** (दान से प्रयोजन)

➢ तृतीयान्त सुबन्त पदों का 'पूर्व' आदि शब्दों के साथ तृतीया तत्पुरुष समास होता है।

सूत्र- ''पूर्व-सदृश-समोनार्थ-कलह-निपुण-मिश्र-श्लक्ष्णैः'' (2.1.30)

समास विग्रह	सामासिक पद (अर्थ सहित)
मासेन पूर्वः	= **मासपूर्वः** (महीने से पहले)
पित्रा सदृशः	= **पितृसदृशः** (पिता के समान)
मात्रा सदृशः	= **मातृसदृशः** (माता के समान)
भ्रात्रा समः	= **भ्रातृसमः** (भाई के बराबर)
माषेण ऊनम्	= **माषोणम्** (मासा भर कम)
ज्ञानेन हीनः	= **ज्ञानहीनः** (ज्ञान से हीन)
नेत्राभ्यां हीनः	= **नेत्रहीनः** (नेत्रों से रहित)
वाचा कलहः	= **वाक्कलहः** (बातचीत से झगड़ा)
आचारेण निपुणः	= **आचारनिपुणः** (आचार में निपुण)
गुडेन मिश्रः	= **गुडमिश्रः** (गुड़ से मिला हुआ)
आचारेण श्लक्ष्णः	= **आचारश्लक्ष्णः** (आचरण में सहज)
घृतेन पक्वम्	= **घृतपक्वम्** (घी से पकाया हुआ)
पादेन खञ्जः	= **पादखञ्जः** (पैर से लँगड़ा)

➢ कर्ता और करणकारक में तृतीयान्त पद का कृदन्त के साथ तृतीया तत्पुरुष समास होता है- **''कर्तृकरणे कृता बहुलम्'' (2.1.32)** जैसे-

अग्निदग्धः = **अग्निना दग्धः**
विद्याविहीनः = **विद्यया हीनः**
ज्ञानेन शून्यः = **ज्ञानशून्यः**
बाणेन हतः = **बाणहतः**
आचारकुशलः = **आचार कुशलः**
हरिणा त्रातः = **हरित्रातः** (हरि के द्वारा रक्षित)
नखैः भिन्नः = **नखभिन्नः** (नखों से फाड़ा गया)
नखैः निर्भिन्नः = **नखनिर्भिन्नः** (नखों से फाड़ा गया)
धर्मेण रक्षितः = **धर्मरक्षितः** (धर्म से रक्षित)
बाणेन विद्धः = **बाणविद्धः** (बाण से घायल)

चतुर्थी तत्पुरुष समास

जिस तत्पुरुष समास में पूर्वपद चतुर्थी विभक्ति में हो तथा चतुर्थ्यन्त पदों का अर्थ, बलि, हित, सुख, रक्षित आदि पदों के साथ समास होता है। उसे चतुर्थी तत्पुरुष समास कहते हैं।

''चतुर्थी तदर्थार्थबलिहितसुखरक्षितैः'' (2.1.36)
जैसे-

समास विग्रह	सामासिक पद (अर्थ सहित)
दीनदानम्	= **दीनाय दानम्**
लोकहितम्	= **लोकस्य हितम्**
यूपाय दारु	= **यूपदारु** (यज्ञ के खम्भे के लिए लकड़ी)
कुम्भाय मृत्तिका	= **कुम्भमृत्तिका** (घड़े के लिए मिट्टी)
भूतेभ्यः बलिः	= **भूतबलिः** (जीव के लिए बलि)
गोभ्यः हितम्	= **गोहितम्** (गाय के लिए हितकारी)
ब्राह्मणाय हितम्	= **ब्राह्मणहितम्** (ब्राह्मण के लिए हितकर)
गोभ्यः सुखम्	= **गोसुखम्** (गाय के लिए सुखकारी)
गोभ्यः रक्षितम्	= **गोरक्षितम्** (गाय के लिए रक्षित)
धनाय कामना	= **धनकामना** (धन के लिए इच्छा)

विशेष नियम- अर्थ शब्द के साथ चतुर्थी का नित्यसमास होता है, और अर्थ शब्दान्त शब्द का लिङ्ग विशेष्य के अनुसार होता है- जैसे-

पुँल्लिङ्ग - द्विजाय अयम् = **द्विजार्थः सूपः** (ब्राह्मण के लिए दाल)
स्त्रीलिङ्ग - द्विजाय इयम् = **द्विजार्था यवागूः** (ब्राह्मण के लिए लप्सी)
नपुंसकलिङ्ग - द्विजाय इदम् = **द्विजार्थं पयः** (ब्राह्मण के लिए दूध)

धनाय इदम् = **धनार्थम्** (धन के लिए)
सुखाय इदम् = **सुखार्थम्** (सुख के लिए)
रक्षाय इदम् = **रक्षार्थम्** (रक्षा के लिए)

पञ्चमी तत्पुरुष समास

जिस तत्पुरुष समास का पूर्वपद पञ्चमी विभक्ति में हो, ऐसे पञ्चम्यन्त पदों का भय आदि शब्दों के साथ पञ्चमी तत्पुरुष समास होता है। **''पञ्चमी भयेन'' (2.1.37)** जैसे-

समास विग्रह	सामासिक पद (अर्थ सहित)
भयप्राप्तः	= **भयम् प्राप्तः**
पापात् मुक्तः	= **पापमुक्तम्**
रोगात् मुक्तः	= **रोगमुक्तः**
चोरात् भयम्	= **चोरभयम्** (चोर से डरा हुआ)
व्याघ्रात् भयम्	= **व्याघ्रभयम्** (बाघ से डरा हुआ)
सिंहात् भीतः	= **सिंहभीतः** (सिंह से भय)

वृकात् भीतिः = **वृकभीतिः** (भेड़िये से भय)
सर्पात् भीः = **सर्पभीः** (सर्प से डर)
राज्ञः भयम् = **राजभयम्** (राजा से डर)

➢ पञ्चम्यन्त शब्दों का 'अपेत, अपोढ, मुक्त, पतित' आदि पदों के साथ पञ्चमी तत्पुरुष समास होता है। जैसे -

समासविग्रह		सामासिक पद (अर्थ सहित)
सुखात् अपेतः	=	**सुखापेतः** (सुख से रहित)
कल्पनायाः अपोढः	=	**कल्पनापोढः** (कल्पना से शून्य)
बन्धनात् मुक्तः	=	**बन्धनमुक्तः** (बन्धन से मुक्त)
मार्गात् भ्रष्टः	=	**मार्गभ्रष्टः** (मार्ग से भ्रष्ट हुआ)
अश्वात् पतितः	=	**अश्वपतितः** (घोड़े से गिरा हुआ)
वृक्षात् पतितः	=	**वृक्षपतितः** (वृक्ष से गिरा हुआ)
स्वर्गात् पतितः	=	**स्वर्गपतितः** (स्वर्ग से पतित)

षष्ठी तत्पुरुष समास

जिस तत्पुरुष समास का पूर्वपद षष्ठी विभक्ति में हो, ऐसे षष्ठ्यन्त पदों का समर्थ सुबन्त के साथ षष्ठी तत्पुरुष समास होता है।

सूत्र- ''षष्ठी'' (2.2.8) जैसे-

समासविग्रह		सामासिक पद (अर्थ सहित)
रामस्य भक्तः	=	**रामभक्तः**
कार्यस्य आलयः	=	**कार्यालयः**
परेषाम् उपकारः	=	**परोपकारः**
राष्ट्रस्य भक्तः	=	**राष्ट्रभक्तः**
नराणां पतिः	=	**नरपतिः** (मनुष्यों का स्वामी)
विद्यायाः आलयः	=	**विद्यालयः** (विद्या का घर)
हिमस्य आलयः	=	**हिमालयः** (हिम का घर)
राज्ञः सेवकः	=	**राजसेवकः** (राजा का सेवक)
राज्ञः पुरुषः	=	**राजपुरुषः** (राजा का पुरुष)
राज्ञः कुमारः	=	**राजकुमारः** (राजा का कुमार)
राज्ञः पुत्रः	=	**राजपुत्रः** (राजा का पुत्र)
राज्ञः माता	=	**राजमाता** (राजा की माता)
दशरथस्य पुत्रः	=	**दशरथपुत्रः** (दशरथ का पुत्र)
देवस्य पूजा	=	**देवपूजा** (देव की पूजा)
रामस्य अनुजः	=	**रामानुजः** (राम का भाई)
कृष्णस्य सखा	=	**कृष्णसखः** (कृष्ण का सखा)
नन्दस्य नन्दनः	=	**नन्दनन्दनः** (नन्द का नन्दन)
ईश्वरस्य भक्तः	=	**ईश्वरभक्तः** (ईश्वर का भक्त)
गङ्गायाः जलम्	=	**गङ्गाजलम्** (गङ्गा का जल)
देवस्य मन्दिरम्	=	**देवमन्दिरम्** (देवों का मन्दिर)
राष्ट्रस्य पतिः	=	**राष्ट्रपतिः** (राष्ट्र का स्वामी)
प्रजायाः पतिः	=	**प्रजापतिः** (प्रजा का स्वामी)
सीतायाः पतिः	=	**सीतापतिः** (सीता का पति)
पशूनां पतिः	=	**पशुपतिः** (पशुओं का स्वामी)
पाठस्य शाला	=	**पाठशाला** (पठन का घर)
देवानां भाषा	=	**देवभाषा** (देवों की भाषा)
काल्याः दासः	=	**कालिदासः** (काली का दास)

सप्तमी तत्पुरुष

सूत्र - **''सप्तमी शौण्डैः''**

जिस तत्पुरुष समास का पूर्वपद सप्तमी विभक्ति में हो, ऐसे सप्तम्यन्त सुबन्तों का शौण्डादिगण में पठित शब्दों के साथ सप्तमी तत्पुरुष समास होता है। जैसे-

समास विग्रह		सामासिकपद (अर्थ सहित)
अक्षेषु शौण्डः	=	**अक्षशौण्डः** (पासों में चतुर)
कार्ये कुशलः	=	**कार्यकुशलः** (कार्य में कुशल)
रणे कुशलः	=	**रणकुशलः** (रण में कुशल)
मुनिषु श्रेष्ठः	=	**मुनिश्रेष्ठः** (मुनियों में श्रेष्ठ)
पुरुषेषु उत्तमः	=	**पुरुषोत्तमः** (पुरुषों में श्रेष्ठ)
गुरौ भक्तिः	=	**गुरुभक्तिः** (गुरु में भक्ति)
युद्धे निपुणः	=	**युद्धनिपुणः** (युद्ध में निपुण)
नरेषु उत्तमः	=	**नरोत्तमः** (नरों में श्रेष्ठ)
विद्यायां प्रवीणः	=	**विद्याप्रवीणः** (विद्या में कुशल)
जलमग्नः	=	**जले मग्नः**
सभापण्डितः	=	**सभायां पण्डितः**
कार्यनिपुणः	=	**कार्ये निपुणः**
कार्यचतुरः	=	**कार्ये चतुरः**

तत्पुरुष समास के उपभेद

(i) नञ् तत्पुरुष समास

सूत्र- ''नञ्'' (2.2.6) 'नञ्' इस अव्यय का समर्थ सुबन्त के साथ नञ् तत्पुरुष समास होता है। अर्थात् जिस समास का पूर्वपद 'नञ्' हो तथा उत्तरपद कोई संज्ञा या विशेषण हो तो वहाँ नञ् समास होगा।

➢ 'नञ्' के बाद यदि व्यञ्जन वर्ण आते हैं तो 'नञ्' के स्थान पर 'अ' और यदि 'नञ्' के बाद स्वरवर्ण आये तो 'नञ्' के स्थान पर 'अन्' हो जाता है। जैसे-

न स्वस्थः = **अस्वस्थः** (बीमार)
न अश्वः = **अनश्वः** (घोड़ा नहीं)
न एकः = **अनेकः**

नञ् समास के उदाहरण

समास विग्रह		सामासिक पद (अर्थ सहित)
न लौकिकः	=	**अलौकिकः**
न कृतम्	=	**अकृतम्** (जो किया न हो)
न इच्छा	=	**अनिच्छा** (इच्छा न हो)
न आगतम्	=	**अनागतम्** (जो आया न हो)
न गजः	=	**अगजः** (जो गज न हो)
न उक्तः	=	**अनुक्तः** (जो उक्त न हो)
न मोघः	=	**अमोघः** (अव्यर्थ)
न सिद्धः	=	**असिद्धः** (असफल)
न सत्यम्	=	**असत्यम्**
न द्वितीयः	=	**अद्वितीयः**
न उपस्थितः	=	**अनुपस्थितः**
न आदरः	=	**अनादरः**
न ब्राह्मणः	=	**अब्राह्मणः** (अब्राह्मण)
न ईश्वरः	=	**अनीश्वरः** (जो ईश्वर न हो)

न अर्थः = **अनर्थः** (अनर्थ)
न उचितः = **अनुचितः** (जो उचित नहीं)

(ii) गति समास या प्रादि तत्पुरुष समास

जिस तत्पुरुष समास के पूर्वपद में कु आदि शब्द, ऊरी आदि गतिसंज्ञक शब्द, प्र आदि शब्द आयें तो इनका समर्थ सुबन्तों के साथ नित्य समास होता है, ऐसे समास को **गति तत्पुरुष** या **प्रादि तत्पुरुष** समास कहते हैं। जैसे-

कुत्सितः पुत्रः = **कुपुत्रः** (बुरा पुत्र)
सुन्दरः देशः = **सुदेशः** (सुन्दर देश)
कुत्सितः पुरुषः = **कुपुरुषः** (निन्दित पुरुष)
कुत्सितः राजा = **कुराजा** (बुरा राजा)
प्रगतः आचार्यः = **प्राचार्यः** (श्रेष्ठ आचार्य)
विरुद्धः पक्षः = **विपक्षः** (जो पक्ष में न हो)
शोभनः पुरुषः = **सुपुरुषः** (सुन्दर पुरुष)
प्रकृष्टो वीरः = **प्रवीरः** (प्रकृष्ट वीर)
ऊरी कृत्वा = **ऊरीकृत्य** (स्वीकार करके)
अशुक्लं शुक्लं कृत्वा = **शुक्लीकृत्य** (सफेद करके)
पटत् पटत् इति कृत्वा = **पटपटाकृत्य** (पटत् पटत् इसप्रकार शब्द करके)
प्रगतः पितामहः = **प्रपितामहः**

(iii) उपपद तत्पुरुष समास

कृदन्त सुबन्तों के साथ उपपदों का समास ही उपपदसमास कहलाता है। इस समास में पूर्वपद उपपद तथा उत्तरपद कृत् प्रत्ययान्त समर्थ पद होता है। अर्थात् उपपद सुबन्त का तिङ् रहित धातु के साथ समास होता है। जैसे-

कुम्भं करोति इति = **कुम्भकारः** (कुम्हार)
धर्मं जानाति इति = **धर्मज्ञः** (जो धर्म जानता है)
सामं गायति इति = **सामगः** (जो सामवेद को जानता है)
आसने तिष्ठति इति= **आसनस्थः** (जो आसन पर बैठता है)
धनं ददाति इति = **धनदः** (जो धन देता है)
भारं हरति इति = **भारहारः** (भार ढोने वाला, कुली)
दिनं करोति इति = **दिनकरः** (सूर्य)
शं करोति इति = **शङ्करः** (महादेव)
भिक्षां चरति इति = **भिक्षाचरः** (भिखारी)
निशायां चरति इति = **निशाचरः** (रात्रि में विचरण करने वाला, राक्षस)
उरसा गच्छति इति = **उरगः** (छाती के बल चलने वाला, साँप)
विहायसा गच्छति इति = **विहगः** (आकाशमार्ग से चलने वाला, पक्षी)
पङ्के जायते इति = **पङ्कजः** (कमल)
मर्म जानाति इति = **मर्मज्ञः** (मर्म को जानने वाला)
कम्बलं ददाति इति = **कम्बलदः** (कम्बल देने वाला)
प्रभां करोति इति = **प्रभाकरः** (सूर्य)

(iv) अलुक् तत्पुरुष समास

- 'अलुक्' का अर्थ है न लुक् अर्थात् 'लोप' का न होना। जिस समास में विभक्ति का लोप नहीं होता उसे अलुक् समास कहते हैं।
- सामान्यतया समास में सामासिक पदों की विभक्ति का लोप हुआ करता है, किन्तु कुछ शब्दों में समास होने पर भी विभक्ति का लोप (लुक्) नहीं होता, उसे 'अलुक्' तत्पुरुष समास कहते हैं।

अलुक् तत्पुरुष समास के उदाहरण

समासविग्रह		सामासिक पद (अर्थ सहित)
आत्मने पदम्	=	**आत्मनेपदम्** (अपने लिए पद)
परस्मै पदम्	=	**परस्मैपदम्** (दूसरे के लिए पद)
युधि स्थिरः	=	**युधिष्ठिरः** (युद्ध में स्थिर)
कृच्छ्रात् आगतः	=	**कृच्छ्रादागतः** (कठिनाई से आया हुआ)
अभ्यासात् आगतः	=	**अभ्यासादागतः** (अभ्यास से आया हुआ)
सरसि जातम्	=	**सरसिजम्** (तालाब में उत्पन्न)
खे चरति	=	**खेचरः** (आकाश में विचरण करने वाला पक्षी)
वाचः पतिः	=	**वाचस्पतिः** (बृहस्पति)
शरदि जायते	=	**शरदिजः** (शरद् में होने वाला)
प्रावृषि जायते	=	**प्रावृषिजः** (बरसात में होने वाला)
देवानां प्रियः	=	**देवानाम्प्रियः** (मूर्ख)

कर्मधारय समास

तत्पुरुष समास के समानाधिकरण भेद को कर्मधारय समास कहते हैं। अर्थात् समान अधिकरण (विभक्ति) वाला तत्पुरुष, कर्मधारय होता है।

''तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः'' (1.2.42) तात्पर्य यह है कि पूर्वपद एवं उत्तरपद, दोनों में समान विभक्ति (प्रथमा) लगी रहती है। जैसे- कृष्णः सर्पः = कृष्णसर्पः

- कर्मधारय अथवा समानाधिकरण तत्पुरुष में पूर्वपद विशेषण एवं उत्तरपद विशेष्य होता है। कहीं कहीं दोनों पद विशेष्य होते हैं।

सूत्र- ''विशेषणं विशेष्येण बहुलम्'' (2.1.57) अर्थात् समान विभक्ति वाले विशेषण का विशेष्य के साथ बहुलता से समास होता है।

कर्मधारय समास के भेद

कर्मधारय समास के कुछ प्रमुख भेद निम्नवत् हैं-

(i) विशेषण पूर्वपद कर्मधारय

कर्मधारय समास में यदि प्रथम पद विशेषण तथा द्वितीय पद विशेष्य होता है, तो उसे विशेषण पूर्वपद कर्मधारय कहते हैं। यथा-

समास विग्रह		सामासिक पद (अर्थ सहित)
कृष्णः सर्पः	=	**कृष्णसर्पः** (काला साँप)
महान् चासौ देवः	=	**महादेवः** (महादेव)
महान् चासौ राजा	=	**महाराजः** (महान् राजा)
महान् चासौ आत्मा	=	**महात्मा** (महान् आत्मा)
श्रेष्ठः पुरुषः	=	**श्रेष्ठपुरुषः** (श्रेष्ठ पुरुष)
महान् चासौ पुरुषः	=	**महापुरुषः** (महान् पुरुष)
महान् चासौ ऋषिः	=	**महर्षिः** (महान् ऋषि)
महान् कविः	=	**महाकविः** (महान् कवि)
महान् चासौ रथी	=	**महारथी** (महान् रथी)
महत् काव्यम्	=	**महाकाव्यम्** (महान् काव्य)
श्वेतं च तत् वस्त्रम्	=	**श्वेतवस्त्रम्** (सफेद वस्त्र)
श्वेतः च असौ अश्वः	=	**श्वेताश्वः** (सफेद घोड़ा)
सुन्दरः च असौ बालकः	=	**सुन्दरबालकः** (सुन्दर बालक)
मधुरं च तत्फलम्	=	**मधुरफलम्** (मधुरफल)
नीलः आकाशः	=	**नीलाकाशः** (नीला आकाश)
रक्तं च तत् उत्पलम्	=	**रक्तोत्पलम्** (लाल कमल)
गौरः बालकः	=	**गौरबालकः** (गोरा बालक)
नीलम् उत्पलम्	=	**नीलोत्पलम्** (नीला कमल)
नीलं कमलम्	=	**नीलकमलम्** (नीलकमल)
प्रियः सखा	=	**प्रियसखः** (प्रिय मित्र)
महती नदी	=	**महानदी** (बड़ी नदी)
कृष्णः च असौ सर्पः	=	**कृष्ण सर्पः**

(ii) उपमानपूर्वपद कर्मधारय

''उपमानानि सामान्यवचनैः'' (2.1.55) - जब उपमानवाचक शब्द का सामान्यवाचक शब्द के साथ समास होता है, तो उसे उपमानपूर्वपद कर्मधारय कहते हैं।

समासविग्रह		सामासिक पद (अर्थसहित)
घन इव श्यामः	=	**घनश्यामः** (घनश्याम)
विद्युत् इव चञ्चला	=	**विद्युच्चञ्चला** (बिजली सी चञ्चल)
नवनीतम् इव कोमलम्	=	**नवनीतकोमलम्** (नवनीत के समान कोमल)
चन्द्रः इव उज्ज्वलः	=	**चन्द्रोज्ज्वलः** (चन्द्रमा सा उज्ज्वल)
चन्द्रः इव मुखम्	=	**चन्द्रमुखम्** (चन्द्रमा के समान मुख)
नरः शार्दूल इव	=	**नरशार्दूलः** (नरों में चीते के समान)
पुरुषः सिंह इव	=	**पुरुषसिंहः** (सिंह के समान पुरुष)
नरः सिंह इव	=	**नरसिंहः** (मनुष्य सिंह के समान)
चन्द्र इव आह्लादकः	=	**चन्द्राह्लादकः** (चन्द्र के समान कोमल)
कमलम् इव कोमलम्	=	**कमलकोमलम्** (कमल के समान कोमल)
पुरुषः व्याघ्र इव	=	**पुरुषव्याघ्रः** (व्याघ्र के समान पुरुष)
दुग्धम् इव धवलम्	=	**दुग्धधवलम्** (दूध के समान सफेद)
नीरदः इव श्यामः	=	**नीरदश्यामः** (बादल के समान काला)

(iii) रूपक कर्मधारय

उपमान और उपमेय के एकरूप होने से, उपमान उपमेय पद के समास को रूपक कर्मधारय समास कहते हैं। जैसे-

समासविग्रह		सामासिक पद (अर्थ सहित)
शोक एव अग्निः	=	**शोकाग्निः** (शोकरूपी अग्नि)
विद्या एव धनम्	=	**विद्याधनम्** (विद्यारूपी धन)
मुखमेव कमलम्	=	**मुखकमलम्** (मुखरूपी कमल)
परीक्षा एव पयोधिः	=	**परीक्षापयोधिः**(परीक्षारूपी सागर)

(iv) उभयपद विशेषण कर्मधारय

इस समास में पूर्वपद और उत्तरपद दोनों विशेषण होते हैं। जैसे-

समासविग्रह		सामासिकपद (अर्थ सहित)
पीतः चासौ कृष्णः	=	**पीतकृष्णः** (पीला और काला)
श्वेतः चासौ कृष्णः	=	**श्वेतकृष्णः** (श्वेत और काला)
चरं च अचरं च	=	**चराचरम्** (चराचर)
पूर्वं सुप्तः पश्चात् उत्थितः	=	**सुप्तोत्थितः** (पहले सोया फिर उठा)
कृतं च अकृतं च	=	**कृताकृतम्** (किया हुआ और न किया हुआ)
शीतं च उष्णम्	=	**शीतोष्णम्** (ठण्डा-गरम)
रक्तश्च पीतश्च	=	**रक्तपीतः** (लाल-पीला)

नोट - परवल्लिङ्गं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः (2.426)

द्वन्द्व और तत्पुरुष का लिङ्ग उस समास के बाद वाले पद के समान होता है।

4. द्विगु समास

''संख्यापूर्वो द्विगुः'' (2.1.52) - अर्थात् जिस समास में पूर्वपद संख्यावाचक हो, वह द्विगु समास कहलाता है। यह कर्मधारय समास का उपभेद है, पर अपने प्रकृति वैशिष्ट्य के कारण स्वतन्त्र समास के रूप में स्वीकृत है।

द्विगु समास के उदाहरण-

समास विग्रह	सामासिकपद (अर्थ सहित)
पञ्चानां गवां समाहारः	= **पञ्चगवम्** (पाँच गायों का समूह)
पञ्चानां वटानां समाहारः	= **पञ्चवटी** (पाँच वटों/वृक्षों का समूह)
पञ्चानां पात्राणां समाहारः	= **पञ्चपात्रम्** (पाँच पात्रों का समूह)
पञ्चानाम् अमृतानां समाहारः	= **पञ्चामृतम्** (पाँच अमृतों का समूह)
पञ्चानां दिनानां समाहारः	= **पञ्चदिनम्** (पाँच दिनों का समूह)
त्रयाणां लोकानां समाहारः	= **त्रिलोकी** (तीन लोकों का समाहार)
त्रयाणां भुवनानां समाहारः	= **त्रिभुवनम्** (तीनों भुवनों का समाहार)
चतुर्णां फलानां समाहारः	= **चतुर्फलम्** (चार फलों का समाहार)
अष्टानाम् अध्यायानां समाहारः	= **अष्टाध्यायी** (आठ अध्यायों का समाहार)
त्रयाणां फलानां समाहारः	= **त्रिफला** (तीन फलों का समाहार)
शतानाम् अब्दानां समाहारः	= **शताब्दी** (सौ वर्षों का समूह)
चतुर्णां भुजानां समाहारः	= **चतुर्भुजम्** (चार भुजाओं का समूह)
तिसृणां वेणीनां समाहारः	= **त्रिवेणी** (तीन वेणियों का समूह)
चतुर्णां युगानां समाहारः	= **चतुर्युगम्** (चार युगों का समूह)
सप्तानां शतानां समाहारः	= **सप्तशती** (सात सैकड़ों का समूह)
सप्तानाम् अह्नाम् समाहारः	= **सप्ताहः** (सात अह्नों/दिनों का समाहार)
नवानां रात्रीणां समाहारः	= **नवरात्रम्** (नव रात्रियों का समूह)

5. द्वन्द्व समास

''उभयपदार्थप्रधानः द्वन्द्वः'' अर्थात् जिस समास में उभयपद (दोनों पद) या सभी पदों की प्रधानता होती है, उसे द्वन्द्वसमास कहते हैं। जैसे- रामश्च कृष्णश्च = **रामकृष्णौ**

यहाँ 'राम' और 'कृष्ण' दोनों पद प्रधान हैं, अतः इसमें द्वन्द्वसमास है।

द्वन्द्व समास के भेद- द्वन्द्व समास के मुख्यतः दो ही भेद होते हैं किन्तु एकशेष को शामिल करके इसके कुल तीन भेद हो जाते हैं-

(i) इतरेतर द्वन्द्व- जब समास में प्रयुक्त होने वाले शब्द के अर्थ अपनी-अपनी प्रधानता अलग-अलग प्रदर्शित करते हैं, उसे इतरेतर द्वन्द्व कहते हैं। इसका लिङ्ग निर्धारण उत्तरपद के अनुसार होता है।

जैसे- 'रामश्च लक्ष्मणश्च = रामलक्ष्मणौ' - यहाँ राम तथा लक्ष्मण का अलग-अलग अस्तित्व है। अतः यहाँ 'रामलक्ष्मणौ' में इतरेतर द्वन्द्व समास है।

(ii) समाहार द्वन्द्व- जिस द्वन्द्व समास में आये हुए पद अपना अर्थ बतलाने के साथ-साथ समूह या समाहार अर्थ का भी बोध कराते हैं, उसे 'समाहार द्वन्द्व' कहते हैं। यह समास नित्य नपुंसकलिङ्ग में होता है।

यथा- पाणिपादम् = पाणी च पादौ च तेषां समाहारः (हाथ और पैर का समूह)

(iii) एकशेष द्वन्द्व- जिस द्वन्द्व समास में दो या दो से अधिक पदों में से केवल एक पद शेष रहता है, उसे 'एकशेष द्वन्द्व' कहते हैं। जैसे- दुहिता च दुहिता च = दुहितरौ।

➤ यदि समास में पुँल्लिङ्ग तथा स्त्रीलिङ्ग दोनों प्रकार के शब्द हों तो पुँल्लिङ्ग शब्द ही शेष बचेगा। जैसे-

माता च पिता च = **पितरौ**

मयूरी च मयूरः च = **मयूरौ**

द्वन्द्व समास करने वाला सूत्र

''चार्थे द्वन्द्वः'' (2.2.29) इस सूत्र से 'च' (और) के अर्थ में विद्यमान अनेक सुबन्तों का द्वन्द्व समास होता है।

इतरेतर द्वन्द्व समास के उदाहरण

सीता च रामश्च	= **सीतारामौ** (सीता और राम)
रामः च कृष्णः च	= **रामकृष्णौ** (राम और कृष्ण)
देवश्च असुरश्च	= **देवासुरौ** (देवता और असुर)
धर्मश्च अर्थश्च	= **धर्मार्थौ** (धर्म और अर्थ)
कृष्णश्च अर्जुनश्च	= **कृष्णार्जुनौ** (कृष्ण और अर्जुन)
वाणी च विनायकश्च	= **वाणीविनायकौ** (वाणी और विनायक)
पार्वती च परमेश्वरश्च	= **पार्वतीपरमेश्वरौ** (पार्वती और परमेश्वर महादेव)
हेमन्तश्च शिशिरश्च वसन्तश्च	= **हेमन्तशिशिरवसन्ताः**

सूर्यश्च चन्द्रश्च = **सूर्यचन्द्रौ** (सूर्य और चन्द्र)
शिवश्च केशवश्च = **शिवकेशवौ** (शिव और केशव)
रामश्च लक्ष्मणश्च = **रामलक्ष्मणौ** (राम और लक्ष्मण)
भीमश्च अर्जुनश्च = **भीमार्जुनौ** (भीम और अर्जुन)
सज्जनश्च दुर्जनश्च = **सज्जनदुर्जनौ** (सज्जन और दुर्जन)
ईशश्च कृष्णश्च = **ईशकृष्णौ** (ईश और कृष्ण)
पिता च पुत्रश्च = **पितापुत्रौ** (पिता और पुत्र)
हरिश्च हरश्च = **हरिहरौ** (हरि और हर)
बालश्च वृद्धश्च = **बालवृद्धौ** (बालक और वृद्ध)
नरश्च नारी च = **नरनार्यौ** (नर और नारी)
जाया च पतिश्च = **जायापती/जम्पती/दम्पती** (पति और पत्नी)

नोट- इतरेतर द्वन्द्व समास में दो या दो से अधिक पदों का योग होता है। दो पदों के लिए द्विवचन और दो से अधिक पदों का समास होने पर बहुवचन का प्रयोग होता है। लिङ्ग अन्तिम पद के समान प्रयोग किया जाता है। जैसे-
☆ हरिश्च हरश्च गुरुश्च = **हरिहरगुरवः**
☆ रामश्च भरतश्च लक्ष्मणश्च शत्रुघ्नश्च = **रामभरतलक्ष्मणशत्रुघ्नाः**
यहाँ दो से अधिक पदों का समास हुआ है, अतः बहुवचन का प्रयोग हुआ है।

समाहार द्वन्द्व के उदाहरण

समास विग्रह — सामासिकपद (अर्थ सहित)

पाणी च पादौ च तेषां समाहारः = **पाणिपादम्** (हाथ और पैर का समूह)
रथिकः च अश्वारोही च = **रथिकाश्वारोहम्** (रथी और घुड़सवार)
भेरी च पटहश्च = **भेरीपटहम्** (भेरी और पटह का समूह)
अहिश्च नकुलश्च = **अहिनकुलम्** (साँप और नेवला)
अहश्च रात्रिश्च = **अहोरात्रम्** (रात और दिन)
रथाश्च अश्वाश्च तेषां समाहारः = **रथाश्वम्** (रथ और घोड़े)
संज्ञा च परिभाषा च अनयोः समाहारः = **संज्ञापरिभाषम्** (संज्ञा और परिभाषा का समूह)

नोट- जिस समास में अनेक पदों के समूह का बोध होता है, उसे समाहार द्वन्द्व कहते हैं। समाहार द्वन्द्व में समास के बाद **नपुंसकलिङ्ग एकवचन** का प्रयोग होता है।

एकशेष द्वन्द्व समास के उदाहरण

समास विग्रह — सामासिक पद (अर्थ सहित)

माता च पिता च = **पितरौ** (माता और पिता)
पुत्रश्च पुत्री च = **पुत्रौ** (पुत्र और पुत्री)
रामश्च रामश्च = **रामौ** (दो राम)
हंसश्च हंसी च = **हंसौ** (हंस और हंसी)
युवा च युवती च = **युवानौ** (युवक और युवती)
दुहिता च दुहिता च = **दुहितरौ** (दो पुत्रियाँ)
मयूरी च मयूरः च = **मयूरौ** (मयूरी और मयूर)
भ्राता च स्वसा च = **भ्रातरौ** (भाई और बहन)
श्वश्रूः च श्वसुरश्च = **श्वसुरौ** (सास और ससुर)

द्वन्द्व समास के अन्य उदाहरण

(i) एकः च दश च = **एकादश**
(ii) द्वौ च दश च = **द्वादश**
(iii) त्रयः च दश च = **त्रयोदश**
(iv) अष्टौ च दश च = **अष्टादश** इत्यादि में भी द्वन्द्व समास है।

6. बहुव्रीहि समास

''**अन्यपदार्थप्रधानो बहुव्रीहिः**'' अर्थात् जिस समास में सामासिक पदों से भिन्न किसी अन्य पद का अर्थ प्रधान होता है, उसे 'बहुव्रीहि' समास कहते हैं। अर्थात् बहुव्रीहि में जितने भी पद होते हैं वे सभी मिलकर किसी दूसरे पद के विशेषण होते हैं।
जैसे- लम्बम् उदरं यस्य सः = **लम्बोदरः**।
यहाँ लम्बम् उदरं दोनों विशेषण विशेष्य तो है लेकिन वे किसी अन्य पद 'गणेश' की विशेषता बता रहे हैं। अतः यहाँ बहुव्रीहि समास है।

बहुव्रीहि समास विधायक सूत्र- अनेकमन्यपदार्थे (2.2.24)
अन्य पद के अर्थ में वर्तमान अनेक प्रथमान्त पदों का विकल्प से बहुव्रीहि समास होता है।

बहुव्रीहि समास के भेद-

(क) समानाधिकरण बहुव्रीहि- इसके दोनों पदों में समान विभक्ति होती है।

समास विग्रह — सामासिक पद (अर्थ सहित)

पीतम् अम्बरं यस्य सः = **पीताम्बरः** (श्रीकृष्ण) पीले वस्त्र वाला
लम्बम् उदरं यस्य सः = **लम्बोदरः** (गणेश) लम्बा है उदर जिसका
नीलं कण्ठं यस्य सः = **नीलकण्ठः** (शिव) नीला है कण्ठ जिसका

सागरः मेखला यस्याः सा = **सागरमेखला**
श्वेतम् अम्बरं यस्य सः = **श्वेताम्बरः** (साधु) सफेद है वस्त्र जिसका
दाम उदरं यस्य सः = **दामोदरः** (श्रीकृष्ण) रस्सी है उदर पर जिसके
जितानि इन्द्रियाणि येन सः = **जितेन्द्रियः** (मुनि) जीत ली है इन्द्रियाँ जिसने
शुक्लम् अम्बरं यस्याः सा = **शुक्लाम्बरा** (सरस्वती)
दश आननानि यस्य सः = **दशाननः** (रावण)
चत्वारि आननानि यस्य सः = **चतुराननः** (ब्रह्मा)
दिक् अम्बरं यस्य सः = **दिगम्बरः** (शिव)
प्राप्तम् उदकं यं सः = **प्राप्तोदकः**(जल जिसे प्राप्त है।)
महान् आशयः यस्य सः = **महाशयः** (सभ्य व्यक्ति)
यशः एव धनं यस्य सः = **यशोधनः** (राजा) यश ही है धन जिसका
लब्धा प्रतिष्ठा येन सः = **लब्धप्रतिष्ठः** (विद्वान्)
नीलम् अम्बरं यस्य सः = **नीलाम्बरः** (बलराम)
दिव्यम् अम्बरं यस्य सः = **दिव्याम्बरः** (दिव्य हैं वस्त्र जिसका, वह)
पञ्च आननानि यस्य सः = **पञ्चाननः** (शिव)
नीलं कण्ठं यस्य सः = **नीलकण्ठः** (शिव)
गज इव आननं यस्य सः = **गजाननः** (गणेश)
कमलम् आसनं यस्य सः = **कमलासनः** (ब्रह्मा)
लम्बौ कर्णौ यस्य सः = **लम्बकर्णः** (लम्बे हैं कान जिसके, वह)

(ख) व्यधिकरण बहुव्रीहि

इसके दोनों पद अलग-अलग विभक्तियों में होते हैं। जैसे-

चक्रं पाणौ यस्य सः = **चक्रपाणिः** (विष्णु)
वीणा पाणौ यस्याः सा = **वीणापाणिः** (सरस्वती)
धनुः पाणौ यस्य सः = **धनुष्पाणिः** (श्रीराम)
चन्द्रः शेखरे यस्य सः = **चन्द्रशेखरः** (शिव)
पीयूषं पाणौ यस्य सः = **पीयूषपाणिः** (वैद्य)
मृगस्य नयने इव नयने यस्याः सा = **मृगनयनी** (स्त्री) (मृग के नयनों के समान हैं नयन जिसके)
शूलं पाणौ यस्य सः = **शूलपाणिः** (शूल है हाथ में जिसके, वह)
शीतिः कण्ठे यस्य सः = **शीतिकण्ठः** (शिव) (नीलिमा है जिसके कण्ठ में, वह)
चन्द्रस्य कान्तिः इव कान्तिः यस्य सः = **चन्द्रकान्तिः** (चन्द्र की कान्ति के समान कान्ति है जिसकी, वह)
गदा पाणौ यस्य सः = **गदापाणिः** (विष्णु)

(ग) व्यतिहार बहुव्रीहि

युद्ध लड़ाई आदि का ज्ञान कराने वाले सप्तम्यन्त तथा तृतीयान्त पदों में जो समास होता है, उसे व्यतिहार बहुव्रीहि कहते हैं। यथा-

☆ केशेषु केशेषु गृहीत्वा इदं युद्धं प्रवृत्तम् = **केशाकेशि** (बालों को पकड़कर प्रारम्भ होने वाला युद्ध)
☆ हस्ताभ्यां हस्ताभ्यां प्रवृत्तं युद्धम् = **हस्ताहस्ति** (हाथों से प्रवृत्त हुआ युद्ध)
☆ दण्डैश्च दण्डैश्च प्रहृत्य इदं युद्धं प्रवृत्तम् = **दण्डादण्डि** (परस्पर लाठियों से मार-मार कर युद्ध में प्रवृत्त हुआ)
☆ मुष्टिभिश्च मुष्टिभिश्च प्रहृत्य इदं युद्धं प्रवृत्तम् = **मुष्टामुष्टि** (परस्पर मुक्कों से मार-मार कर यह लड़ाई लड़ी गयी)

(घ) तुल्य योग बहुव्रीहि

जब बहुव्रीहि समास में साथ अर्थ वाले 'सह' का समास होता है, तब तुल्ययोग बहुव्रीहि समास होता है। 'सह' को विकल्प से 'स' हो जाता है। जैसे-

अर्जुनेन सह = **सार्जुनः** (अर्जुन के साथ)
राधिकया सह इति = **सराधिकः** (कृष्ण) राधिका के साथ
भार्यया सह = **सभार्यः** (स्त्री सहित)
कलाभिः समम् = **सकलम्** (कलाओं से युक्त)
सीतया सह = **ससीतः** (राम, सीता के साथ)
पुत्रेण सह = **सपुत्रः** (पुत्र के साथ)
परिवारेण सह = **सपरिवारः** (परिवार के साथ)
अनुजेन सह = **सानुजः** (अनुज के साथ)

बहुव्रीहि समास के कुछ अन्य उदाहरण-

☆ द्वौ वा त्रयो वा = **द्वित्राः** (दो या तीन)
☆ त्रयः वा चत्वारो वा = **त्रिचतुराः** (तीन-चार)
☆ पञ्च वा षट् वा = **पञ्चषाः** (पाँच या छह)
☆ युवतिः जाया यस्य सः = **युवजानिः** (जिसकी स्त्री युवती है, वह)
☆ सीता जाया यस्य सः = **सीताजानिः** (जिसकी स्त्री सीता है, वह राम)
☆ पठितुं कामं यस्य सः = **पठितुकामः** (पढ़ने की इच्छा वाला)
☆ अविद्यमानो पुत्रः यस्य सः = **अपुत्रः** (नहीं है पुत्र जिसके, वह)
☆ चित्रा गावो यस्य सः = **चित्रगुः** (चितकबरी गायों वाला व्यक्ति)

❑❑

कारक तथा विभक्ति

- **कृ + ण्वुल् = कारक**
- **'क्रियां करोति इति कारकम्'** क्रिया को करने वाला कारक है।
- **'क्रियाजनकत्वं कारकत्वम्'** क्रिया का जो जनक होता है, वह कारक है।
- **'क्रियान्वयित्वं कारकत्वम्'** क्रिया के साथ जिसका सीधा सम्बन्ध (अन्वय) होता है, उसे कारक कहते हैं।

जैसे- वन से आकर राम ने सीता के लिए लंका में रावण को बाण से मारा था।

वनात् आगत्य रामः सीतायै लङ्कायां रावणं बाणेन जघान।

स्पष्टीकरण-

(i) इस वाक्य में 'मारना' क्रिया को सम्पादित करने वाला 'राम' है, अतः 'राम' कर्ताकारक है।

(ii) क्रिया का प्रभाव जिस पर पड़ता है वह कर्म है। 'मारना' क्रिया का प्रभाव 'रावण' पर पड़ता है, अतः 'रावण' कर्म है।

(iii) क्रिया के सम्पन्न करने में अत्यधिक सहायक 'करण' कहलाता है, यहाँ 'मारने' की क्रिया में अत्यधिक सहायक 'बाण' है अतः 'बाण' करण कारक है।

(iv) सीता के लिए रावण मारा गया, अतः 'सीता' सम्प्रदान है।

(v) 'वन' अपादान कारक है।

(vi) मारने की क्रिया लंका में पूर्ण हुई थी, अतः लंका अधिकरण कारक है।

इसप्रकार इस वाक्य में 'राम, सीता, रावण, वन, बाण, लंका' इन सभी शब्दों का 'मारना' (जघान) क्रिया से सम्बन्ध है, अतः उपर्युक्त ये सभी शब्द कारक हैं।

कारकों की संख्या

कारक छह हैं- **1. कर्ता 2. कर्म 3. करण 4. सम्प्रदान 5. अपादान 6. अधिकरण**

कर्ता कर्म च करणं सम्प्रदानं तथैव च।
अपादानाधिकरणे इत्याहुः कारकाणि षट्॥

- जिनका क्रिया के साथ सीधा सम्बन्ध नहीं होता या जो क्रिया की सिद्धि में सहायक नहीं होते, उन्हें कारक नहीं कहा जा सकता। इसीलिए सम्बन्ध और सम्बोधन कारक नहीं माने जाते क्योंकि क्रिया के साथ इनका साक्षात् सम्बन्ध नहीं होता।

कारक चिह्न

विभक्ति	कारक	चिह्न
प्रथमा/तृतीया	कर्ता	ने
द्वितीया	कर्म	को
तृतीया	करण	से/द्वारा
चतुर्थी	सम्प्रदान	के लिए
पञ्चमी	अपादान	से (अलग होना)
षष्ठी	सम्बन्ध	का, के, की, रा, रे, री
सप्तमी	अधिकरण	में, पै, पर
प्रथमा	सम्बोधन	हे, भो, अरे

प्रथमा विभक्ति

1. स्वतन्त्रः कर्ता- क्रिया करने में जिसकी स्वतन्त्रता मानी जाय, वही कर्ता होता है। यह सूत्र 'कर्तृसंज्ञा' करने वाला संज्ञा सूत्र है। जैसे- मोहनः पठति। यहाँ 'मोहन' पठन क्रिया करने में स्वातन्त्र्येण विवक्षित है, अतः 'मोहन' कर्ता है। रामः पठति, श्यामः गच्छति, बालकः गच्छति, रमा नृत्यति, सीता गायति, दिनेशः गच्छति, बालकः पठति।

- वाक्य में कर्ता की स्थिति के अनुसार संस्कृत में वाक्य तीन प्रकार के होते हैं-

(क) कर्तृवाच्य- मोहनः पुस्तकं पठति। - यहाँ कर्ता की प्रधानता होती है, और कर्ता में प्रथमा विभक्ति होती है।

(ख) कर्मवाच्य- मोहनेन पुस्तकं पठ्यते। यहाँ 'कर्म' की प्रधानता होती है और कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है।

(ग) भाववाच्य- रामेण भूयते। यहाँ भाव (क्रिया) की प्रधानता होती है, और कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है।

2. प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा

प्रातिपदिकार्थ मात्र में, लिङ्गमात्र के आधिक्य में, परिमाण मात्र के आधिक्य में तथा वचनमात्र के आधिक्य में प्रथमा विभक्ति होती है।

- किसी प्रातिपदिक के उच्चारण से स्वार्थ, द्रव्य, लिङ्ग, संख्या और कारक- इन पाँचों में, जिसका ज्ञान निश्चित रूप से हो, उसे प्रातिपदिकार्थ कहते हैं।

उदाहरण- उच्चैः, नीचैः, कृष्णः, श्रीः, ज्ञानम्।

लिङ्गमात्राधिक्ये प्रथमा- जिन शब्दों के लिङ्ग निश्चित नहीं हैं, उन शब्दों से लिङ्गमात्राधिक्य में प्रथमा विभक्ति होती है।
जैसे- **तटः** (पुंलिङ्ग), **तटी** (स्त्रीलिङ्ग), **तटम्** (नपुंसकलिङ्ग)
परिमाणमात्राधिक्ये प्रथमा- परिमाण (वजन, माप, तौल) मात्रा का बोध कराने के लिए प्रथमा विभक्ति होती है। जैसे- **द्रोणो व्रीहिः।**
वचनमात्रे प्रथमा- वचन अर्थात् संख्यामात्र का बोध कराने के लिए प्रथमा विभक्ति का प्रयोग होता है। यथा- **एकः, द्वौ, बहवः।**
3. सम्बोधने च - सम्बोधन में प्रथमा विभक्ति होती है- जैसे- **हे राम! अत्र आगच्छ!** यहाँ हे राम! में सम्बोधन होने से प्रथमा विभक्ति प्रयुक्त है। हे बालिके!, भो राम! भवान् कुत्र गच्छति। हे मोहन! अत्र आगच्छ।
4. उक्ते कर्तरि प्रथमा- कर्तृवाच्य में जहाँ कर्ता उक्त या 'कहा गया' रहता है, उसमें प्रथमा विभक्ति होती है। जैसे- रामः गृहं गच्छति।
➢ यहाँ 'राम' कर्तृवाच्य का कर्ता है जो कि उक्त है अतः 'रामः' में प्रथमा विभक्ति है।
इसप्रकार प्रातिपदिकार्थमात्र में, लिङ्गमात्र में, परिमाणमात्र में, वचनमात्र में, सम्बोधन में, उक्त कर्ता में प्रथमा विभक्ति होगी।

द्वितीया विभक्ति (कर्मकारक)

1. कर्तुरीप्सिततमं कर्म- कर्ता अपनी क्रिया के द्वारा जिसे विशेष रूप से प्राप्त करना चाहता है उसकी कर्मसंज्ञा होती है। जैसे- **रामः लेखन्या पत्रं लिखति।**
यहाँ 'राम' रूपी कर्ता अपनी लेखन रूपी क्रिया से सबसे ज्यादा 'पत्र' लिखना चाह रहा है अतः 'पत्र' यहाँ कर्म होगा।
2. कर्मणि द्वितीया- कर्म में द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे-
रामः **गृहं** गच्छति, बालिका **पुस्तकं** पठति, सः **विद्यालयं** गच्छति, रामः **पुस्तकं** पठति, रामः **फलम्** खादति, राधा **मन्दिरं** गच्छति, महेशः **जलं** पिबति, रामः **विद्यालयं** गच्छति, रमेशः **जलं** पिबति, बालकः **पुस्तकं** पठति, बाला **ग्रामं** गच्छति, छात्रः **विद्यालयं** गच्छति, अहं **जलं** पिबामि, बालकाः **फलानि** खादन्ति, सः **नगरं** गच्छति, भक्तः **हरिं** भजति।
उपर्युक्त वाक्यों में 'गृह, विद्यालय, जल, फल, नगर, हरि' इन सभी की कर्मसंज्ञा है, अतः सभी पदों में कर्म होने के कारण 'कर्मणि द्वितीया' से **द्वितीया विभक्ति** हुई है।
3. अकथितं च- अपादान, सम्प्रदान, करण आदि कारकों के द्वारा अविवक्षित कारक कर्मसंज्ञक होता है। दुह् आदि (बारह) एवं नी आदि (चार) कुल 16 धातुओं के कर्म से जिसका सम्बन्ध होता है, वह अकथित कहा जाता है।
सोलह द्विकर्मक धातुयें- दुह्, याच्, पच्, दण्ड्, रुध्, प्रच्छ्, चि, ब्रू, शास्, जि, मथ्, मुष् -12
नी, हृ, कृष्, वह् = 4 ये सोलह द्विकर्मक धातुयें हैं।
इन सोलह धातुओं एवं इनके समानार्थक धातुओं के योग में अपादान, सम्प्रदान, करण आदि कारकों की कर्मसंज्ञा होती है, और उनमें द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है।

द्विकर्मक धातुओं के योग में अपादान आदि का कर्म होना

	धातु	प्रयोग	अर्थ
1.	**दुह्** (दुहना)	ग्वालः धेनुं दुग्धं दोग्धि।	ग्वाला गाय से दूध दुहता है।
2.	**याच्** (माँगना)	हरिः बलिं वसुधां याचते।	हरि बलि से पृथ्वी माँगते हैं।
		सः नृपं क्षमां याचते।	वह राजा से क्षमा माँगता है।
3.	**पच्** (पकाना)	माता तण्डुलान् ओदनं पचति।	माता चावलों से भात पकाती है।
4.	**दण्ड्** (दण्ड देना)	राजा चौरं शतं दण्डयति।	राजा चोर से 100 रुपये दण्ड लेता है।
5.	**रुध्** (रोकना)	राजा शत्रून् दुर्गं रुणद्धि।	राजा शत्रुओं को किले में रोकता है।
6.	**प्रच्छ्** (पूछना)	गुरुः शिष्यं प्रश्नं पृच्छति।	गुरु शिष्य से प्रश्न पूछता है।
7.	**चि** (चुनना)	बालकः वृक्षं फलानि अवचिनोति।	बालक वृक्ष से फल चुनता है।
8.	**ब्रू** (बोलना)	गुरुः शिष्यं धर्मं ब्रूते।	गुरु शिष्य से धर्म बताता है।
9.	**शास्** (उपदेश देना)	गुरुः शिष्यं धर्मं शास्ति।	गुरु शिष्य को धर्म का उपदेश देता है।
10.	**जि** (जीतना)	सः देवदत्तं शतं जयति।	वह देवदत्त से सौ रुपये जीतता है।
11.	**मथ्** (मथना)	सुधां क्षीरनिधिं मथ्नाति।	अमृत के लिए समुद्र को मथता है।
12.	**मुष्** (चुराना)	यज्ञदत्तं शतं मुष्णाति।	यज्ञदत्त से सौ रुपये चुराता है।

13. **नी** (ले जाना)	कृषकः धेनुं ग्रामं नयति।	किसान गाय को गाँव ले जाता है।
14. **हृ** (हरना)	कृषकः धेनुं ग्रामं हरति।	किसान गाय को गाँव ले जाता है।
15. **कृष्** (खींचना)	कृषकः धेनुं ग्रामं कर्षति।	किसान गाय को गाँव तक खींचकर ले जाता है।
16. **वह्** (ले जाना)	कृषकः धेनुं ग्रामं वहति।	किसान गाय को ग्राम तक वहन करता है।

4. अधिशीङ्स्थासां कर्म- (1.4.46) **शी** (सोना), **स्था** (ठहरना), **आस्** (बैठना) - इन तीन धातुओं के पहले यदि 'अधि' उपसर्ग जुड़ा हो तो इनके आधार की कर्मसंज्ञा होती है, और कर्म में द्वितीया विभक्ति होगी। जैसे-

1. राजा **सिंहासनम्** अधितिष्ठति। (राजा सिंहासन पर बैठता है)
2. हरिः **वैकुण्ठम्** अध्यास्ते। (हरि वैकुण्ठ में बैठते हैं)
3. शिष्यः **आसनम्** अधितिष्ठति। (शिष्य आसन पर बैठता है)
4. मुनिः **शिलाम्** अधिशेते। (मुनि शिला पर सोते हैं)
5. सः **पर्यङ्कम्** अधिशेते (वह पलंग पर सोता है)

उपर्युक्त वाक्यों में सिंहासन, वैकुण्ठ, आसन, शिला, पर्यङ्क ये सभी आधार हैं। यहाँ सभी क्रिया पदों में 'अधि' उपसर्ग के साथ शीङ्, स्था, आस्, धातुओं का प्रयोग है। अतः आधार की कर्मसंज्ञा होकर द्वितीया विभक्ति हो गयी।

5. अभिनिविशश्च- (1.4.47) 'अभि' और 'नि' इसी क्रम से ये दोनों ही उपसर्ग यदि 'विश्' धातु के पूर्व में आयें तो आधार की कर्मसंज्ञा हो जाती है। कर्म में द्वितीया विभक्ति होगी।

जैसे- **सन्तः सन्मार्गम् अभिनिविशते।**

(सज्जन सन्मार्ग में प्रवेश करते हैं)

- यहाँ 'अभिनिविशते' में 'अभि' एवं 'नि' उपसर्ग के साथ 'विश्' धातु का प्रयोग हुआ है अतः 'सन्मार्गम्' इस आधार की कर्मसंज्ञा होकर द्वितीया विभक्ति हो गयी है।

6. उपान्वध्याङ्वसः - (1.4.48) उप, अनु, अधि या आङ् इनमें से कोई उपसर्ग यदि वस् धातु के पूर्व में आये तो आधार की कर्मसंज्ञा होकर द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होगा।

जैसे- राजा **नगरम्** उपवसति। (राजा नगर में रहता है)

राजा **नगरम्** अनुवसति।

राजा **नगरम्** अधिवसति।

राजा **नगरम्** आवसति।

- यहाँ 'वस्' धातु के पूर्व उप, अनु, अधि एवं आङ् उपसर्ग का प्रयोग हुआ है अतः आधार 'नगर' की कर्मसंज्ञा हो गयी और उसमें द्वितीया विभक्ति का प्रयोग हुआ है।

7. अन्तराऽन्तरेण युक्ते- (2.3.4) 'अन्तरा' (मध्य में) और 'अन्तरेण' (बिना) इन अव्ययों के योग में द्वितीया विभक्ति होती है।

(i) अन्तरा **ग्रामं** नदी प्रवहति। (दो गाँवों के बीच नदी बहती है)
(ii) **संस्कृतम्** अन्तरेण न किमपि जानामि। (संस्कृत के सिवाय और कुछ नहीं जानता)

8. अभितः - परितः - समया - निकषा - हा - प्रति-योगेऽपि-

अभितः (दोनों ओर या आस पास) **परितः** (चारों ओर) **समया** (समीप) **निकषा** (निकट) **हा** (शोक) **प्रति** (ओर) इन शब्दों के योग में द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे-

(i) **ग्रामम्** अभितः वनम् अस्ति। (गाँव के आस-पास वन है)
(ii) **आश्रमम्** अभितः वृक्षाः सन्ति। (आश्रम के दोनों ओर वृक्ष हैं)
(iii) **विद्यालयं** परितः वृक्षाः सन्ति। (विद्यालय के चारों ओर वृक्ष हैं)
(iv) **ग्रामं** परितः उपवनानि सन्ति। (गाँव के चारों ओर उपवन हैं)
(v) **लङ्कां** समया सागरः अस्ति। (लङ्का के समीप सागर है)
(vi) **लङ्कां** निकषा हनिष्यति (लङ्का के समीप मारेगा)
(vii) हा **कृष्णाभक्तम्** (कृष्ण के अभक्त के लिए खेद है)
(viii) **बुभुक्षितं** न प्रतिभाति किञ्चित् (भूखे को कुछ भी अच्छा नहीं लगता)
(ix) छात्रः **गुरुं** प्रति श्रद्धधाति। (छात्र की गुरु के प्रति श्रद्धा है)
(x) सः **नगरं** प्रति गच्छति। (वह नगर की ओर जाता है)

नृपम् अभितः परिचारकाः सन्ति, उपवनं परितः जनाः भ्रमन्ति, नगरम समया निकष वा वनम् अस्ति, बालकः विद्यालयं प्रति गच्छति, जलविना मीनः न जीवति, वानरः वृक्षमारोहति, प्रथमः अमितः उभयतः भवनानि सन्ति, शशाङ्कः परितः तारा वर्तन्ते, चन्द्रमा परितः ताराः वर्तन्ते, सः पाटलिपुत्रं प्रतिगच्छति, धिक् ज्ञानहीनम्, ज्ञानं विना मानवः पशुवत अस्ति, अशिक्षतम् धिक्।

9. उभसर्वतसोः कार्या धिगुपर्यादिषु त्रिषु।
द्वितीयाऽऽम्रेडितान्तेषु ततोऽन्यत्रापि दृश्यते॥

उभयतः, सर्वतः, धिक्, उपर्युपरि, अध्यधि, अधोऽधः पदों के योग होने पर द्वितीया विभक्ति होगी। जैसे-

(i) उभयतः **नदीं** वृक्षाः सन्ति। (नदी के दोनों ओर वृक्ष हैं)
(ii) मार्गम् **उभयतः** वृक्षाः सन्ति। (मार्ग के दोनों ओर पेड़ हैं)
(iii) नगरं **सर्वतः** प्राकारः अस्ति। (नगर के चारों ओर परकोटा है)
(iv) धिक् **कृष्णाभक्तम्।** (कृष्ण के अभक्त को धिक्कार है)
(v) उपर्युपरि **लोकं** हरिः। (इस लोक के ठीक ऊपर हरि हैं)

(vi) अध्यधि **लोकं** हरिः। (हरि लोक के पास हैं)

(vii) अधोऽधः **लोकं** हरिः। (पाताल लोक के ठीक नीचे हरि हैं)

10. कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे (2.3.5)

- यदि किसी काल में कोई क्रिया लगातार हो तो ऐसे कालवाची पद में द्वितीया विभक्ति होगी।
- इसी तरह यदि अध्व (मार्ग की दूरी) में कोई वस्तु लगातार हो तो उस अध्ववाचक = मार्गवाचक शब्दों में द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे-

(i) मार्गवाचक- **छात्रः क्रोशम् अधीते** (छात्र कोश भर लगातार पढ़ता है)

(ii) मार्गवाचक- **क्रोशं गिरिः वर्तते।** (कोश भर विस्तृत पर्वत है)

(iii) मार्गवाचक- **क्रोशं कुटिला नदी** (कोश भर नदी टेढ़ी है)

(iv) कालवाचक-**सः मासम् अधीते रामायणम्** (वह महीने भर रामायण पढ़ता है)

(v) कालवाचक - **सः सप्ताहं पठिष्यति** (वह सप्ताह भर पढ़ता है)

(vi) कालवाचक- **छात्रः मासम् अधीते** (छात्र महीने भर लगातार पढ़ता है)

तृतीया विभक्ति (करण कारक)

1. साधकतमं करणम् - क्रिया की सिद्धि में जो सबसे अधिक उपकारक होता है, उसे करण कहते हैं।

'क्रियासिद्धौ प्रकृष्टोपकारकं करणसंज्ञं स्यात्'।

यथा- सः हस्तेन मिष्टान्नं वितरति।

यहाँ- मिष्टान्न वितरण रूपी कार्य को करने में हाथ सबसे अधिक सहायक है, अतः 'हाथ' करण है।

2. कर्तृकरणयोस्तृतीया (2.3.18) - अनुक्त कर्ता अर्थात् (कर्मवाच्य और भाववाच्य के कर्ता) और करण में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे-

(i) सः **कुठारेण** वृक्षं छिनत्ति। (वह कुल्हाड़ी से वृक्ष को काटता है) - करण में तृतीया

(ii) **रामेण** बालिः हतः (राम के द्वारा बाली मारा गया) - कर्ता में तृतीया

(iii) बालकः **दण्डेन** सर्पं हन्ति। (बालक डण्डे से सॉप को मारता है) - करण में तृतीया

(iv) त्वं **कलमेन** पत्रं लिख। (तू कलम से पत्र लिख) - करण में तृतीया

(v) मोहनः **दात्रेण** लुनाति। (मोहन हसियें से काटता है) - करण में तृतीया

(vi) **रामेण बाणेन** हतो बाली। (राम के बाण द्वारा बाली मारा गया) - कर्ता (रामेण) और करण (बाणेन) दोनों में तृतीया। कृष्णः यानेन गच्छति, मनोजः कन्दुकेन क्रीडति, मयङ्कः यानेन गच्छति, प्रज्ञा लेखन्या लिखति, रामः बाणेन रावणं हन्ति, शिक्षकः सुधाखण्डेन लिखति, बालकः वाहनेन गच्छति, गीता लेखन्या लिखति, छात्रः कन्दुकेन क्रीडति।

3. सहयुक्तेऽप्रधाने (2.3.19) -

सह, साकम्, सार्धम्, समम् आदि सहार्थक शब्दों के योग में अप्रधान में तृतीया विभक्ति होती है।

जैसे-

(i) पुत्रेण सह आगतः पिता। (पुत्र के साथ पिता आया)

(ii) पिता पुत्रेण सह मेरठनगरं गतः (पिता पुत्र के साथ मेरठनगर को गया)

(iii) रामः जानक्या साकं गच्छति। (राम जानकी के साथ जाते हैं)

(iv) मोहनः गुरुणा सार्धं विद्यालयं गच्छति। (मोहन गुरु के साथ विद्यालय जाता है।)

(v) लक्ष्मणेन समं रामः गच्छति। (लक्ष्मण के साथ राम जाते हैं) आशुतोषः मित्रेण सह गच्छति, सीता रामेण सह वनं गच्छति, अहं लतया सह गच्छामि, अलं विवादेन, विद्यया यशः प्राप्यते।

4. येनाङ्गविकारः - (2.3.20) शरीर के जिस अङ्ग के विकार से शरीरधारी का विकार समझा जाय, उस अङ्गवाचक शब्द में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे-

(i) अक्ष्णा काणः (आँख से काना)

(ii) हस्तेन लुञ्जः (हाथ से लुञ्जा)

(iii) शिरसा खल्वाटः (शिर से गंजा)

(iv) कर्णाभ्यां बधिरः (कानों से बहरा)

(v) पादेन खञ्जः (पैर से लँगड़ा)

(vi) पृष्ठेन कुब्जः (पीठ से कुबड़ा)

कर्णेन बधिरः, नेत्रेण काणः, श्रमेण सफलता भवति, जटाभिस्तपसः, कुर्चेन यवन।

यहाँ 'आँख से' काना दिखायी पड़ रहा है, इसलिए 'अक्ष्णा' में तृतीया विभक्ति हुई। इसीप्रकार 'हाथ से' लुंजा है अतः 'हस्तेन' इस अङ्गवाची पद में तृतीया विभक्ति हुई।

5. पृथग्विनानानाभिस्तृतीयान्यतरस्याम् -

- पृथक्, विना, नाना शब्दों के योग में तृतीया विभक्ति का प्रयोग विकल्प से होता है। तृतीया न हो तो पञ्चमी अथवा द्वितीया

विभक्ति होती है।

➢ 'नाना' शब्द अनेकार्थक है लेकिन यहाँ 'विना' के अर्थ में प्रयुक्त है। जैसे-

(i) **जलेन** विना न जीवति कमलम्।
(जल के विना कमल जीवित नहीं रहता)

(ii) **ग्रामं** पृथक् या **ग्रामेण** पृथक् या **ग्रामात्** पृथक्
(गाँव से अलग)

(iii) **रामं** विना या **रामेण** विना या **रामात्** विना (राम के विना)

(iv) नाना **रामेण** या नाना **रामात्** या नाना **रामम्**
(राम के विना)

शिक्षकैः सह छात्रा भोपालं गच्छन्ति, जलेन विना जीवनं नास्ति, अलं विवादेन, अलं कोलाहलेन, अध्यापकेन सह छात्राः गच्छन्ति, अलं श्रमेण, ज्ञानेन हीनः नरः न शोभते, विद्यया हीनः पुरुषः न पूज्यते।

चतुर्थी विभक्ति (सम्प्रदान कारक)

1. कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम् (1.4.32) -

कर्ता दान कर्म के द्वारा जिसे अभिप्रेत करता है; अर्थात् कर्ता जिसे कुछ देता है, या जिसके लिए कुछ करता है, वह 'सम्प्रदान' कहलाता है।

सम्प्रदान- 'सम्यक् प्रदीयते अस्मै तत् सम्प्रदानम्' (जिसे कुछ दिया जाय, परन्तु उस वस्तु को वापस न लिया जाय, वह सम्प्रदान होता है)

2. चतुर्थी सम्प्रदाने (2.3.13) -

सम्प्रदान में चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे-

(i) राजा **ब्राह्मणाय** गां ददाति। (राजा ब्राह्मण को गाय देता है)

(ii) माता **बालकाय** फलं ददाति। (माता बालक को फल देती है)

(iii) **उपाध्यायाय** गां ददाति (उपाध्याय के लिए गाय देता है)

(iv) **ब्राह्मणाय** भूमिं ददाति। (ब्राह्मण को भूमि देता है)

➢ काले मोटे अक्षरों में लिखे गये शब्द सम्प्रदान कारक हैं, जिसमें चतुर्थी विभक्ति लगी है। अन्य उदाहरण -
महेश मित्राय धनं ददाति, राजा ब्राह्मणाय धनं ददाति, रमेशः मित्राय धनं ददाति, मोहनः शिक्षायै विदेशं गच्छति, माता बालकाय दुग्धं ददाति, सः बालकाय दुग्धं ददाति, रमेशः अध्ययनाय विद्यालयं गच्छति, भिक्षुकाय शिक्षां ददाति, सः निर्धनाय भिक्षुकाय दानं ददाति।

3. रुच्यर्थानां प्रीयमाणः (1.4.33)

रुच् (अच्छा लगना, पसन्द आना) तथा इसी अर्थ की अन्य धातुओं के प्रयोग में जो प्रीयमाण अर्थात् जो प्रसन्न होता है, या जिसको पसन्द होता है उस कारक की सम्प्रदान संज्ञा होती है, और उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे-

(i) **हरये** रोचते भक्तिः। (हरि को भक्ति अच्छी लगती है)

(ii) **सुरेशाय** दुग्धं रोचते। (सुरेश को दूध अच्छा लगता है)

(iii) **मह्यं** मोदकं रोचते। (मुझे लड्डू पसन्द है)

(iv) **मह्यम्** ओदनं रोचते। (मुझे भात अच्छा लगता है)

यहाँ 'हरि' को भक्ति पसन्द है, सुरेश को दूध पसन्द है, मुझे लड्डू पसन्द है, मुझे ओदन (भात) पसन्द है, तो जिसे पसन्द है वो प्रीयमाण है, और जो प्रीयमाण है उसी की सम्प्रदानसंज्ञा होगी, और सम्प्रदान में चतुर्थी विभक्ति होगी, इसीलिए "हरये, सुरेशाय, मह्यम्" में चतुर्थी विभक्ति लगी है।

अन्य उदाहरण - कृष्णाय मोदकं रोचते, बालकाय मोदकं रोचते।

4. "क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः" (1.4.37)

क्रुध् (क्रोध करना), द्रुह् (द्रोह करना), ईर्ष्य् (ईर्ष्या करना), असूय् (जलन करना) इन धातुओं तथा इन्हीं अर्थों की अन्य धातुओं के प्रयोग में भी जिसके प्रति क्रोध किया जाता है उसकी **सम्प्रदान संज्ञा** होती है, और उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे-

(i) पिता **पुत्राय** क्रुध्यति। (पिता पुत्र पर क्रोध करता है)

(ii) दुष्टाः **सज्जनाय** द्रुह्यन्ति (दुष्ट सज्जनों से द्रोह करते हैं)

(iii) कंसः **कृष्णाय** ईर्ष्यति (कंस कृष्ण से ईर्ष्या करता है)

(iv) दैत्याः **देवेभ्यः** असूयन्ति (दैत्य देवों से जलते हैं)

(v) तनुश्रीदत्ता **नानापाटेकराय** क्रुध्यति (तनुश्रीदत्ता नानापाटेकर पर क्रोध करती है)

(vi) रावणः **रामाय** असूयति (रावण राम से द्वेष करता है)

यहाँ पिता अपने पुत्र पर क्रोध करता है, इसलिए जिस पर क्रोध किया जाय उसकी सम्प्रदानसंज्ञा होती है और उसमें चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग होता है इसीलिए 'पुत्राय' में चतुर्थी विभक्ति लगी है।

अन्य उदाहरण - परशुरामः लक्ष्मणाय कुध्यति, रमेशः सुरेशाय असूयति, प्रजाः नृपाय असूयन्ति, रामः मुर्खाय क्रुद्धति, शिक्षकः मुर्खाय क्रुध्यति।

5. स्पृहेरीप्सितः (1.4.36)

स्पृह् (चाहना) धातु के प्रयोग में जिस वस्तु की चाह, इच्छा या अभीप्सा होती है उसकी सम्प्रदानसंज्ञा होती है और उसमें चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे-

(i) सा **पुरुषेभ्यः** स्पृहयति। (वह पुरुषों को चाहती है)

(ii) रमा **पुष्पेभ्यः** स्पृहयति (रमा फूलों की चाह करती है)

(iii) बालिकाः **फलेभ्यः** स्पृहयन्ति (लड़कियाँ फलों की चाह करती हैं), माता पुत्राय स्पृहयति।

(iv) अहं **संस्कृताय** स्पृहयामि (मैं संस्कृत चाहता हूँ)

6. ''नमः स्वस्ति स्वाहा स्वधाऽलंवषट्योगाच्च'' (2.3.16)

नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलं, वषट् - इन शब्दों के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है; यथा-

(i) **गणेशाय** नमः (गणेश के लिए नमस्कार है)
(ii) **शिवाय** नमः (शिव को नमस्कार है)
(iii) **देवेभ्यः** नमः (देवताओं को नमस्कार है)
(iv) **विष्णवे** नमः (विष्णु को नमस्कार है)
(v) **तुभ्यम्** स्वस्ति (तुम्हारा कल्याण हो)
(vi) **बालकाय** स्वस्ति (बालक का कल्याण हो)
(vii) **इन्द्राय** स्वाहा (इन्द्र के लिए स्वाहा)
(viii) **अग्नये** स्वाहा (अग्नि के लिए स्वाहा)
(ix) **पितृभ्यः** स्वधा (पितरों को स्वधा)
(x) **दैत्येभ्यः** हरिः अलम् (दैत्यों के लिए हरि पर्याप्त हैं)

अन्य उदाहरण - गुरवे नमः, ईश्वराय नमः, बालकाय स्वस्ति, हरये नमः, प्रजाभ्यः स्वस्ति, भीमः दुर्योधनाय अलम्, सर्वेभ्य स्वस्ति, अर्जुनः कर्णाय अलम्, पित्रे स्वधा, सः निर्धनाय भिक्षुकाय दानं ददाति।

पञ्चमी विभक्ति (अपादान कारक)

1. ध्रुवमपायेऽपादानम् (1.4.24)

अपाय (अलग होना) अर्थ में जो ध्रुव हो, जिससे कोई वस्तु अलग हो रही हो, उसे 'अपादान' कहते हैं। जैसे-

वृक्षात् पत्रं पतति। (वृक्ष से पत्ता गिरता है)

इस वाक्य में पत्ता 'वृक्ष' से अलग हो रहा है अतः वृक्ष 'अपादान' है।

2. अपादाने पञ्चमी (2.3.28)

अपादान में पञ्चमी विभक्ति होती है। जैसे-

(i) सः **ग्रामात्** गच्छति। (वह गाँव से जाता है)
(ii) **वृक्षात्** पत्राणि पतन्ति (वृक्ष से पत्ते गिरते हैं)
(iii) महेशः **आसनात्** उत्तिष्ठति (महेश आसन से उठता है)
(iv) गङ्गा **हिमालयात्** प्रभवति। (गंगा हिमालय से निकलती है)
(v) बालकः **सोपानात्** पतति (बालक सीढ़ी से गिरता है)
(vi) सर्वे **विमानात्** अवतरन्ति (सभी विमान से उतरते हैं)

अन्य उदाहरण - नगरात वहिः वनं अस्ति, सैनिकः अश्वात् पतति, धनात् विना सुखं नास्ति, बालकः अश्वात् पतति।

3. जुगुप्सा-विराम-प्रमादार्थानामुपसंख्यानम् (वा.)

वार्तिकार्थ- जुगुप्सा (घृणा, निन्दा), विराम (रुकना), प्रमाद (आलस्य) इन अर्थ वाली धातुओं के प्रयोग में जिससे जुगुप्सा, विराम अथवा प्रमाद किया जाय, उसकी अपादान संज्ञा होती है, और उसमें पञ्चमी विभक्ति होगी। जैसे-

(i) **पापात्** जुगुप्सते। (पाप से घृणा करता है)
(ii) सः **कार्यात्** विरमति (वह कार्य से रुकता है)
(iii) सः **पठनात्** प्रमाद्यति। (वह पढ़ने से प्रमाद करता है)
(iv) सः **धर्मात्** प्रमाद्यति। (वह धर्म से प्रमाद करता है)
(v) **स्वाध्यायात्** मा प्रमदः (स्वाध्याय से प्रमाद मत कर)

अन्य उदाहरण - पापात् विरमति, चोराद विभेति, जपात् विरमति, विद्यालयः सप्तवादनात् आरभ्यते।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वाक्यों में जुगुप्सा, विराम और प्रमाद अर्थ वाली धातुओं का प्रयोग है तथा पाप, कार्य, पठन, धैर्य और स्वाध्याय से जुगुप्सा, विराम या प्रमाद किया जा रहा है इसलिए इनकी अपादान संज्ञा होकर पञ्चमी विभक्ति हो गयी है।

4. भीत्रार्थानां भयहेतुः (1.4.25)

सूत्रार्थ- भय (डर) अर्थवाली और त्राण (रक्षा) अर्थवाली धातुओं के योग में जिससे भय हो या जिससे रक्षा की जाय, उसकी अपादान संज्ञा होती है। जैसे-

(i) **चोरात्** बिभेति (चोर से डरता है)
(ii) वृकः **सिंहात्** बिभेति (भेड़िया सिंह से डरता है)
(iii) शिशुः **सर्पात्** बिभेति (बच्चा सॉप से डरता है)
(iv) पिता पुत्रं **सिंहात्** रक्षति (पिता पुत्र की सिंह से रक्षा करता है)
(v) माता पुत्रम् **अग्नेः** रक्षति (माता पुत्र की आग से रक्षा करती है)
(vi) **पापात्** त्रायते (पाप से रक्षा करता है)

अन्य उदाहरण - वनचरः सिंहात् विभेति, अधर्मी धर्मात् प्रमाद्यति, ईश्वरात परं न कोऽपि, ग्रामात् पूर्व तडागः अस्ति, निशायाः अनन्तरं दिनं भवति, ईश्वरात अधः सर्वः संसारः चलति, शिशोः किशोरः गुरुतरः भवति, चोरात् विभेति।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त उदाहरणों में भयार्थक 'भी' (बिभेति) धातु तथा त्राणार्थक 'रक्ष्' (रक्षति) धातु का प्रयोग है, तथा चोर, सिंह, सर्प, अग्नि, पाप आदि से डर या रक्षा हो रही है, इसीलिए इनमें अपादानसंज्ञा होकर पञ्चमी विभक्ति का प्रयोग हुआ है।

5. आख्यातोपयोगे (1.4.29)

जिससे नियमपूर्वक विद्या पढ़ी जाय या कुछ सीखा जाय ऐसे व्याख्याता/प्रवक्ता/शिक्षक/पढ़ाने वाले की अपादान संज्ञा होगी, और अपादान में पञ्चमी विभक्ति होगी। जैसे-

(i) **उपाध्यायात्** अधीते। (उपाध्याय से पढ़ता है)
(ii) छात्रः **गुरोः** अधीते (छात्र गुरु जी से पढ़ता है)

(iii) रविः **शिक्षकात्** सङ्गीतं शिक्षते (रवि शिक्षक से संगीत सीखता है)
(iv) बालकः **अध्यापकात्** संस्कृतं पठति (बालक अध्यापक से संस्कृत पढ़ता है)
(v) वटुः **गुरोः** कर्मकाण्डं जानाति। (वटु गुरु से कर्मकाण्ड जानता है)

6. "अन्यारादितरर्तेदिक्शब्दाञ्चूत्तरपदाजाहियुक्ते" (2.3.29)

अन्य, भिन्न, इतर, ऋते, पूर्व, प्राक्, प्रत्यक्, बहिः, आरभ्य, प्रभृति आदि शब्दों के योग में पञ्चमी विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे-
(i) अन्यः कृष्णात् (कृष्ण से भिन्न)
(ii) भिन्नः कृष्णात् (कृष्ण से भिन्न)
(iii) इतरः कृष्णात् (कृष्ण से भिन्न)
(iv) ऋते कृष्णात् (कृष्ण के विना)
(v) पूर्वो ग्रामात् (गाँव से पूर्व)
(vi) प्राक् ग्रामात् (गाँव से पूर्व)
(vii) प्रत्यक् ग्रामात् (गाँव के बाद)
(viii) भवात् प्रभृति हरिः सेव्यः। (जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त हरि सेव्य हैं)
(ix) ग्रामाद् बहिः उद्यानम् अस्ति। (गाँव के बाहर बगीचा है)
अन्य उदाहरण - ऋते ज्ञानात् न मुक्तिः, ग्रामस्य ग्रामात् वा अन्तिकम्।

षष्ठी विभक्ति (सम्बन्ध)

1. षष्ठी शेषे (2.3.50) - कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, अधिकरण कारकों में तथा प्रातिपदिकार्थ में विभक्तियों का विधान कर चुके हैं। इसके अतिरिक्त जो बच गया हो, वही 'शेष' है। इसप्रकार कारक और प्रातिपदिकार्थ से अतिरिक्त स्व-स्वामिभाव, जन्यजनकभाव, कार्यकारणभाव आदि सम्बन्ध शेष है। उस शेष की विवक्षा में षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे-
(i) राज्ञः पुरुषः (राजा का पुरुष)
(ii) गङ्गायाः जलम् (गङ्गा का जल)
(iii) दशरथस्य पुत्रः (दशरथ का पुत्र)
(iv) पाञ्चालानां भूमिः (पाञ्चालों की भूमि)
अन्य उदाहरण - रामः दशरथस्य पुत्रः अस्ति, सीतायाः पतिः रामः अस्ति, गणेशः शिवस्य पुत्रः, गुरुजनस्य अनादर मां कुरु, रामस्य पुत्रः लवः, कवीनां कालिदासः श्रेष्ठः अस्ति, मम पुरतः शिक्षकः पाठयति, भवनस्य पृष्ठतः सीता आगच्छति, शिवस्य वामतः पार्वती तिष्ठति, विद्यालयस्य दक्षिणतः देवालयः अस्ति।

2. षष्ठी हेतुप्रयोगे (2.3.36)

सूत्रार्थ- यदि किसी वस्तु की हेतुता (कारणता) प्रकट करनी हो, और 'हेतु' शब्द का साक्षात् प्रयोग हो तो उस वस्तु या कारण तथा 'हेतु' शब्द - दोनों में षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे-
(i) छात्रः **अध्ययनस्य हेतोः** प्रयागे वसति।
(छात्र अध्ययन के लिए प्रयाग में रहता है)
(ii) सः **धनस्य हेतोः** सेवते। (वह धन के हेतु सेवा करता है)
(iii) सः **अन्नस्य हेतोः** वसति। (वह अन्न के कारण रहता है)
(iv) सुमना **गृहस्य हेतोः** यतते। (सुमन घर के लिए प्रयास कर रही है)
स्पष्टीकरण- यहाँ कोई छात्र 'अध्ययन के लिए' प्रयाग में रहता है, अतः उसके रहने का कारण 'अध्ययन' है इसलिए अध्ययन में षष्ठी विभक्ति हुई और वाक्य में 'हेतु' शब्द का प्रयोग हुआ है अतः 'हेतु' में भी षष्ठी विभक्ति का प्रयोग हुआ है।
अन्य उदाहरण - पुस्तकं उत्पीठिकायाम् अस्ति, भिक्षुकः अन्नस्य हेतोः वसति, धनं कोषे अस्ति, नावः तडागे अस्ति, सम्प्रति शिक्षायाः महत्वम् अस्ति।

3. क्तस्य च वर्तमाने (2.3.67) - वर्तमान अर्थ में होने वाले 'क्त' प्रत्ययान्त शब्दों के योग में षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे-
(i) **राज्ञां** पूजितः विद्वान् (वह विद्वान्, जो राजाओं द्वारा पूजा जाता है)
(ii) **सर्वेषाम्** आदृतः गुरुः (वह गुरु, जिसका सब आदर करते हैं)
(iii) **राज्ञां** मतः बुद्धः पूजितः वा (राजा मानते हैं, जानते हैं अथवा पूजते हैं)

4. षष्ठी चानादरे (2.3.38) - अनादर अर्थ प्रकट करने के लिए षष्ठी और सप्तमी दोनों विभक्ति का प्रयोग होता है। यथा-
(i) बालकानां चन्दनः दुष्टः (बालकों में चन्दन दुष्ट है)
(ii) खगानां काकः धूर्तः (पक्षियों में कौआ धूर्त होता है)
(iii) पशूनां शृगालः मूर्खः (पशुओं में गीदड़ मूर्ख होता है)
(iv) रुदतः पुत्रस्य पिता वनं गतः (रोते हुए पुत्र को छोड़कर पिता वन चला गया)
(v) रुदति पुत्रे सः प्रव्राजीत् (पुत्र के रोते रहने पर भी उसे छोड़कर संन्यास ले लिया)
अन्य उदाहरण - इदं रमेशस्य पुस्तक अस्ति, विद्यालयः छात्राः क्रीडन्ति, सः नृपस्य सेवकः अस्ति।

सप्तमी विभक्ति (अधिकरण कारक)

1. आधारोऽधिकरणम् (1.4.45) - आधार को '**अधिकरण**' कहते हैं। अधिकरण उसे कहते हैं, जो कर्ता और कर्म का आधार होता है।

आधार के भेद

आधार तीन प्रकार का होता है-

(i) औपश्लेषिक आधार - कटे आस्ते।

(ii) वैषयिक आधार - मोक्षे इच्छा अस्ति।

(iii) अभिव्यापक आधार - तिलेषु तैलम्, पयसि घृतम्, सर्वस्मिन् आत्मा अस्ति।

2. सप्तम्यधिकरणे च (2.3.36) - अधिकरण में सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे-

(i) वयं **गेहे** वसामः (हम घर में रहते हैं)

(ii) **गङ्गायां** निर्मलं जलम् अस्ति। (गङ्गा में निर्मल जल है)

(iii) **क्षेत्रेषु** अन्नम् उत्पद्यते (खेतों में अन्न उत्पन्न होता है)

(iv) **वनेषु** सिंहाः वसन्ति (वनों में सिंह रहते हैं)

3. 'कुशल' तथा 'निपुण' शब्दों के योग में सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे-

(i) सः **शास्त्रे** कुशलः अस्ति (वह शास्त्र में कुशल है)

(ii) विद्वान् **वेदेषु** निपुणः अस्ति (विद्वान् वेदों में निपुण हैं)

पर्वते मृगाः सन्ति, ऋषिः आश्रमे निवसति, वृक्षेषु खगाः कूजन्ति, खगः वृक्षे निवसति, मीनः नद्याम् अस्ति, पाठशालायां पुस्तकालयः अस्ति।

4. साध्वसाधुप्रयोगे च (वा.)

'साधु' और 'असाधु' शब्दों के प्रयोग में सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे-

(i) कृष्णः **मातरि** साधुः (कृष्ण माता के विषय में साधु हैं)

(ii) कृष्णः **मातुले** असाधुः। (कृष्ण मामा के विषय में असाधु हैं)

➢ यहाँ साधु शब्द के प्रयोग होने से 'मातरि' में सप्तमी तथा 'असाधु' शब्द के प्रयोग होने से 'मातुले' में सप्तमी विभक्ति का प्रयोग हुआ है।

5. यतश्च निर्धारणम् (2.3.41) - निर्धारण में समुदाय वाचक शब्द से षष्ठी या सप्तमी विभक्ति होती है।

➢ यदि किन्हीं वस्तुओं या व्यक्तियों के समुदाय में से किसी एक वस्तु या व्यक्ति को किसी विशेषता के आधार पर सबसे उत्कृष्ट या निकृष्ट बताया जाय तो वही 'निर्धारण' कहलाता है।

अथवा

निर्धारण- जाति, गुण, क्रिया या संज्ञा के द्वारा किसी समुदाय से उसके एकदेश का उत्कर्ष या अपकर्ष बताने के लिए अलग निर्देश करना 'निर्धारण' कहलाता है।

उदाहरण-

(i) **कविषु** कालिदासः श्रेष्ठः। (कवियों में कालिदास श्रेष्ठ हैं)

कवीनां कालिदासः श्रेष्ठः।

(ii) **नदीषु** गङ्गा पवित्रतमा। (नदियों में सबसे पवित्र गङ्गा हैं)

नदीनां गङ्गा पवित्रतमा।

(iii) **बालकेषु** रविः श्रेष्ठः। (बालकों में रवि सबसे अच्छा हैं)

बालकानां रविः श्रेष्ठः।

(iv) **पर्वतानां** हिमालयः उच्चतमः।

पर्वतेषु हिमालयः उच्चतमः। (पर्वतों में हिमालय सबसे ऊँचा हैं)

(v) **नृणां** ब्राह्मणः श्रेष्ठः (मनुष्यों में ब्राह्मण श्रेष्ठ हैं)

नृषु ब्राह्मणः श्रेष्ठः

(vi) **गवां** कृष्णा बहुक्षीरा

गोषु कृष्णा बहुक्षीरा (गायों में काली गाय बहुत दूध देती है)

(vii) **गच्छतां** धावन् शीघ्रः।

गच्छत्सु धावन् शीघ्रः (चलने वालों में दौड़ने वाला शीघ्र पहुँचता है)

अन्य उदाहरण - सः क्रिकेटकीडायां कुशलः अस्ति, सः काव्य लेखने निपुणः अस्ति, सञ्जीवकपूरः पाककलाये प्रवीणम् अस्ति, माता पुत्रे स्नेहयति, असत्यवादिनि कोऽपि न विश्वसिति, धर्मे अनुरागे दृष्ट्वा मनः प्रसीदति, प्रेमे सति (भावे) सर्वं सुखदायकं भवति, नगरेषु भोपालपुरं गुरुतरं, पर्वतेषु हिमालयः उच्चतमः वर्तते, कृष्णः असादुः मातुले, धनं कोशे अस्ति, नदीनां गङ्गा श्रेष्ठतमा, नावः तडागे तरन्ति।

❑❑

प्रत्यय

प्रत्यय- प्रति + √अय् + अच् अर्थात् जो वर्णसमूह किसी धातु या शब्द के अन्त में जुड़कर नए अर्थ की प्रतीति कराते हैं, उस वर्णसमूह को प्रत्यय कहते हैं।

➢ मुख्य रूप से प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं-

1. कृत् प्रत्यय 2. तद्धित प्रत्यय

➢ धातु के अन्त में लगने वाले प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं-

(i) कृत् प्रत्यय- क्त्वा, ल्यप्, तुमुन्, तव्यत्, अनीयर् आदि।

(ii) तिङ् प्रत्यय- तिप्, तस्, झि आदि 18 प्रत्यय।

➢ शब्दों से लगने वाले प्रत्यय हैं-

(i) सुप् प्रत्यय- सु औ जस् आदि 21 प्रत्यय।

(ii) स्त्रीप्रत्यय- टाप्, ङीप्, ङीष्, ङीन् आदि।

(iii) तद्धित प्रत्यय- मतुप्, अण्, इनि आदि।

➢ कृत् प्रत्यय (कृदन्त)

कृत् प्रत्यय धातुओं से जोड़े जाते हैं, और इनसे बने पद को 'कृदन्त' कहते हैं। कृत् प्रत्ययों से तीन प्रकार के शब्द निर्मित होते हैं- अव्यय, विशेषण और संज्ञा।

1. क्त्वा प्रत्यय

जब एक ही कर्ता द्वारा एक कार्य की समाप्ति के बाद दूसरी क्रिया की जाती है, तो समाप्ति क्रिया में क्त्वा प्रत्यय का प्रयोग होता है। इस प्रत्यय से बने हुए शब्द को पूर्वकालिक क्रिया कहते हैं।

जैसे- छात्रः पठित्वा गृहं गच्छति। (छात्र पढ़कर घर जाता है) इस वाक्य में 'छात्र' रूपी कर्ता दो क्रियायें करता है- (i) पढ़ता है (ii) घर जाता है। इन दो क्रियाओं में पढ़ने की क्रिया पूर्वकाल में हुई अतः यह पूर्वकालिक क्रिया होगी जिसमें 'क्त्वा' प्रत्यय लगकर 'पठित्वा' रूप बना है। अतः 'क्त्वा' पूर्वकालिक कृदन्त है।

➢ 'क्त्वा' प्रत्यय के 'क्' की ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र से इत्संज्ञा होकर लोप हो जाता है केवल 'त्वा' शेष रहता है। कुछ धातुओं में 'इट्' का आगम होता है तो 'इत्वा' लगता है।

जैसे- बालकः पठित्वा गृहं गच्छति।

यहाँ 'पठ्' धातु में 'इट्' का आगम होकर 'क्त्वा' प्रत्यय लगा है, इसीलिए 'पठित्वा' बना है।

	धातु + प्रत्यय		क्त्वा-प्रत्ययान्त रूप
1.	कृ + क्त्वा	=	**कृत्वा** (करके)
2.	दा + क्त्वा	=	**दत्त्वा** (देकर)
3.	पा + क्त्वा	=	**पीत्वा** (पीकर)
4.	गम् + क्त्वा	=	**गत्वा** (जाकर)
5.	हस् + क्त्वा	=	**हसित्वा** (हँसकर)
6.	जि + क्त्वा	=	**जित्वा** (जीतकर)
7.	स्था + क्त्वा	=	**स्थित्वा** (ठहरकर)
8.	श्रु + क्त्वा	=	**श्रुत्वा** (सुनकर)
9.	ज्ञा + क्त्वा	=	**ज्ञात्वा** (जानकर)
10.	पत् + क्त्वा	=	**पतित्वा** (गिरकर)
11.	स्ना + क्त्वा	=	**स्नात्वा** (स्नानकर)
12.	दृश् + क्त्वा	=	**दृष्ट्वा** (देखकर) Imp.
13.	पठ् + क्त्वा	=	**पठित्वा** (पढ़कर)
14.	लभ् + क्त्वा	=	**लब्ध्वा** (प्राप्तकर) Imp.
15.	भू + क्त्वा	=	**भूत्वा** (होकर)
16.	त्यज् + क्त्वा	=	**त्यक्त्वा** (त्यागकर)
17.	कथ् + क्त्वा	=	**कथयित्वा** (कहकर)
18.	क्री + क्त्वा	=	**क्रीत्वा** (खरीदकर)
19.	खेल + क्त्वा	=	**खेलित्वा** (खेलकर)
20.	नी + क्त्वा	=	**नीत्वा** (लेकर)
21.	प्रच्छ् + क्त्वा	=	**पृष्ट्वा** (पूँछकर) Imp.
22.	ग्रह् + क्त्वा	=	**गृहीत्वा** (लेना)
23.	चल् + क्त्वा	=	**चलित्वा** (चलकर)
24.	लिख् + क्त्वा	=	लेखित्वा (लिखकर)
25.	क्रीड् + क्त्वा	=	क्रीडित्वा (खेलकर)

2. ल्यप् प्रत्यय

➢ जब धातु से पहले कोई उपसर्ग होता है तो 'क्त्वा' प्रत्यय के स्थान पर 'ल्यप्' आदेश हो जाता है।

➢ 'ल्यप्' में 'ल्' और 'प्' की इत्संज्ञा होकर लोप हो जाता है, केवल 'य' शेष बचता है। **''लशक्वतद्धिते''** सूत्र से 'ल्' की तथा **''हलन्त्यम्''** सूत्र से 'प्' की इत्संज्ञा।

➢ 'क्त्वा' और 'ल्यप्' प्रत्ययों से बनने वाले शब्द अव्यय होते हैं और दोनों प्रत्यय 'पूर्वकालिक कृदन्त' है।

➢ **समासेऽनञ्पूर्वे क्त्वो ल्यप्** (7.1.37) सूत्र से 'ल्यप्' प्रत्यय का विधान होता है।

➢ 'ल्यप्' प्रत्ययान्त पदों का भी वही अर्थ है जो 'क्त्वा' प्रत्यय का है। **जैसे-** अनुभूय (अनुभव करके), आगम्य (आकर), प्रणम्य (प्रणाम करके) आदि।

(i) छात्रः **आगत्य** पठति (छात्र आकर पढ़ता है)

(ii) मनुष्यः सर्वं **विस्मृत्य** सुखी भवति (मनुष्य सब कुछ भूलकर सुखी होता है)

उपसर्ग + धातु + प्रत्यय = प्रत्ययान्त रूप (अर्थसहित)

1. अनु + भू + ल्यप् = **अनुभूय** (अनुभव करके)
2. आङ् + गम् + ल्यप् = **आगम्य/आगत्य** (आकर)
3. वि + नी + ल्यप् = **विनीय** (लेकर)
4. आङ् + प्रच्छ् + ल्यप् = **आपृच्छ्य** (पूँछकर)
5. प्र + कृ + ल्यप् = **प्रकृत्य** (करके)
6. प्र + आप् + ल्यप् = **प्राप्य** (प्राप्तकर)
7. वि + चि + ल्यप् = **विचित्य** (चुनकर)
8. वि + रम् + ल्यप् = **विरम्य/विरत्य** (रुककर)
9. प्र + नम् + ल्यप् = **प्रणत्य/प्रणम्य** (प्रणाम करके)
10. उत् + तृ + ल्यप् = **उत्तीर्य** (तैरकर, पारकर)
11. आ + दा + ल्यप् = **आदाय** (लेकर)
12. उप + गम् + ल्यप् = **उपगम्य** (समीप जाकर)
13. वि + हा + ल्यप् = **विहाय** (छोड़कर)
14. नि + पा + ल्यप् = **निपीय** (पानकर)
15. वि + स्मृ + ल्यप् = **विस्मृत्य** (भूलकर)
16. अव + तृ + ल्यप् = **अवतीर्य** (उतरकर)
17. सम् + श्रु + ल्यप् = **संश्रुत्य** (सुनकर)
18. आ + नी + ल्यप् = **आनीय** (लाकर)
19. प्र + स्था + ल्यप् = **प्रस्थाय** (चलकर)
20. उत् + लिख् + ल्यप् = **उल्लिख्य** (ऊपर लिखकर)
21. वि + ज्ञा + ल्यप् = **विज्ञाय** (अच्छी तरह से जानकर)
22. सम् + भू + ल्यप् = **सम्भूय** (मिलकर, इकट्ठा होकर)
23. प्र + पठ् + ल्यप् = **प्रपठ्य** (पढ़कर)
24. आङ् + पा + ल्यप् = **आपीय** (पूरी तरह से पीकर)
25. अनु + श्रु + ल्यप् = **अनुश्रूय** (सुन-सुनकर)
26. उप + कृ + ल्यप् = **उपकृत्य** (उपकार करके)
27. प्र + कुप् + ल्यप् = **प्रकुप्य** (अत्यधिक क्रोधित होकर)
28. अव + मुच् + ल्यप् = **अवमुच्य** (छोड़कर)
29. उप + भुज् + ल्यप् = **उपभुज्य** (खाकर)
30. सम् + दृश् + ल्यप् = **सन्दृश्य** (अच्छी तरह से देखकर)
31. उप + लभ् + ल्यप् = **उपलभ्य** (प्राप्त करके)
32. सम् + पठ् + ल्यप् = **सम्पठ्य**
33. वि + लिख् + ल्यप् = **विलिख्य**
34. सम् + युज् + ल्यप् = **संयुज्य**
35. वि + हस + ल्यप् = **विहस्य**
36. वि + लिख् + ल्यप् = **विलिख्य**

3. तुमुन् प्रत्यय

- **तुमुन्ण्वुलौ क्रियायां क्रियार्थायाम्** (3.3.10) इस सूत्र से 'तुमुन्' प्रत्यय का विधान किया जाता है।
- 'के लिए' यह अर्थ बताना हो तो धातुओं से 'तुमुन्' प्रत्यय लगाया जाता है। जैसे- **पठितुम्** (पढ़ने के लिए) **गन्तुम्** (जाने के लिए), **क्रेतुम्** (खरीदने के लिए) आदि।
- इसीलिए 'तुमुन्' प्रत्यय को **'हेतु कृदन्त'** कहते हैं अर्थात् धातु के अर्थ के साथ 'के लिए' जोड़ देने पर तुमुनन्त पदों का अर्थ निकल आता है। जैसे- 'पठ्' धातु का अर्थ है- पढ़ना। इसमें 'तुमुन्' जोड़ने से बनेगा- **पठितुम्**, जिसका अर्थ है- पढ़ने के लिए।
- 'तुमुन् ' प्रत्यय से बने शब्द अव्यय होते हैं, अतः इनके रूप नहीं चलते।
- कर्ता जिस कार्य के निमित्त कोई क्रिया करता है उसे निमित्तार्थक क्रिया कहते हैं, निमित्तार्थक क्रिया में ही 'तुमुन्' प्रत्यय लगाया जाता है।

जैसे- **बालकः पठितुं विद्यालयं गच्छति।** (बालक पढ़ने के लिए विद्यालय जाता है)

- यहाँ बालक रूपी कर्ता पढ़ने के निमित्त विद्यालय जाता है; अतः निमित्तार्थक क्रिया 'पठ्' में तुमुन् प्रत्यय लगकर 'पठितुम्' बना। बालक की गमन क्रिया पढ़ने के निमित्त हो रही है।
- 'तुमुन्' प्रत्यय में नकार की 'हलन्त्यम्' से और उकार की ''उपदेशेऽजनुनासिक इत्'' से इत्संज्ञा होकर लोप होने पर 'तुम्' शेष रहता है।

तुमुन् प्रत्ययान्त पदों की सूची

धातु + प्रत्यय	=	तुमुनन्त पद (अर्थ सहित)
1. भू + तुमुन्	=	**भवितुम्** (होने के लिए)
2. पा + तुमुन्	=	**पातुम्** (पीने के लिए)
3. पठ् + तुमुन्	=	**पठितुम्** (पढ़ने के लिए)
4. गम् + तुमुन्	=	**गन्तुम्** (जाने के लिए)
5. स्था + तुमुन्	=	**स्थातुम्** (बैठने के लिए)
6. दृश् + तुमुन्	=	**द्रष्टुम्** (देखने के लिए) Imp.
7. दा + तुमुन्	=	**दातुम्** (देने के लिए)
8. लभ् + तुमुन्	=	**लब्धुम्** (पाने के लिए) Imp.
9. ज्ञा + तुमुन्	=	**ज्ञातुम्** (जानने के लिए)
10. हन् + तुमुन्	=	**हन्तुम्** (मारने के लिए)
11. कृ + तुमुन्	=	**कर्तुम्** (करने के लिए) Imp.
12. जि + तुमुन्	=	**जेतुम्** (जीतने के लिए) Imp.
13. श्रु + तुमुन्	=	**श्रोतुम्** (सुनने के लिए)
14. प्रच्छ् + तुमुन्	=	**प्रष्टुम्** (पूँछने के लिए) Imp.
15. त्यज् + तुमुन्	=	**त्यक्तुम्** (छोड़ने के लिए)
16. स्ना + तुमुन्	=	**स्नातुम्** (नहाने के लिए)
17. गै (गा) + तुमुन्	=	**गातुम्** (गाने के लिए)
18. खाद् + तुमुन्	=	**खादितुम्** (खाने के लिए)
19. क्रीड् + तुमुन्	=	**क्रीडितुम्** (खेलने के लिए)
20. वन्द् + तुमुन्	=	**वन्दितुम्** (वन्दना करने के लिए)
21. भुज् + तुमुन्	=	**भोक्तुम्** (खाने के लिए)
22. शीङ् + तुमुन्	=	**शयितुम्** (सोने के लिए)

23. वच् + तुमुन् = **वक्तुम्** (बोलने के लिए)
24. ग्रह् + तुमुन् = **ग्रहीतुम्** (लेने के लिए)
25. अस् + तुमुन् = **भवितुम्** (होने के लिए)
26. क्षिप् + तुमुन् = **क्षेप्तुम्** (फेंकने के लिए)
27. क्री + तुमुन् = **क्रेतुम्** (खरीदने के लिए)
28. चि + तुमुन् = **चेतुम्** (चुनने के लिए)
29. कुप् + तुमुन् = **कोपितुम्** (क्रोध करने के लिए)
30. मुच् + तुमुन् = **मोक्तुम्** (छोड़ने के लिए)
31. दा + तुमुन् = दातुम्
32. हस् + तुमुन् = हसितुम्
33. पत् + तुमुन् = पतितुम्
34. लिख् + तुमुन् = लेखितम्
35. वद् + तुमुन् = वक्तुम्

4. यत् प्रत्यय

- **''अचो यत्''** (3.1.97) सूत्र से 'यत्' प्रत्यय का विधान किया जाता है। अर्थात् अच् (स्वर) वर्ण जिन धातुओं के अन्त में होते हैं, उनसे 'यत्' प्रत्यय होता है।
- 'चाहिए' या 'योग्य' अर्थ को बताने वाले 'यत्' प्रत्यय के 'त्' की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा होकर लोप होने पर केवल 'य' शेष बचता है।
- 'यत्' प्रत्यय जुड़ने के बाद धातु के स्वर को गुण हो जाता है।

	नपुंसकलिङ्ग	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
चि + यत्	= **चेयम्** (चयन करने योग्य)	**चेयः**	चेया
पा + यत्	= **पेयम्** (पीने योग्य)	**पेयः**	पेया
नी + यत्	= **नेयम्** (ले जाने योग्य)	**नेयः**	नेया
जि + यत्	= **जेयम्** (जीतने योग्य)	**जेयः**	जेया
श्रु + यत्	= **श्रव्यम्** (सुनने योग्य)	**श्रव्यः**	श्रव्या
दा + यत्	= **देयम्** (देने योग्य)	**देयः**	देया
गै + यत्	= **गेयम्** (गाने योग्य)	**गेयः**	गेया
भू + यत्	= **भव्यम्** (होने योग्य)	**भव्यः**	भव्या
भी + यत्	= **भेयम्** (डरने योग्य)	**भेयः**	भेया
लभ् + यत्	= **लभ्यम्** (प्राप्त करने योग्य)	**लभ्यः**	लभ्या
शक् + यत्	= **शक्यम्** (होने योग्य)	**शक्यः**	शक्या
हन् + यत्	= **वध्यम्** (वधयोग्य)	**वध्यः**	वध्या

- **पोरदुपधात् (3.1.98)** - इस सूत्र से पवर्ग अन्त में हो अथवा ह्रस्व अकार उपधा में हो, ऐसी धातुओं से 'यत्' प्रत्यय होता है जैसे- लभ् + यत् = **लभ्यम्**
  शप् + यत् = **शप्यम्**

5. क्तिन् प्रत्यय

- **स्त्रियां क्तिन्** (3.3.94) सूत्र से भाव अर्थ में स्त्रीत्व की विवक्षा होने पर धातु से 'क्तिन्' प्रत्यय होता है।
- 'क्तिन्' में ककार और नकार की इत्संज्ञा होकर लोप हो जाता है केवल 'ति' शेष बचता है। ''लशक्वतद्धिते'' से 'क्' की तथा ''हलन्त्यम्'' से 'न्' की इत्संज्ञा होती है।
- 'क्तिन्' प्रत्यय से बने शब्द सदैव स्त्रीलिङ्ग में होंगे।

जैसे- कृतिः, गतिः, भूतिः, धृतिः आदि।

उदाहरण-

(1) कृ + क्तिन् = **कृतिः**
(2) नी + क्तिन् = **नीतिः**
(3) गम् + क्तिन् = **गतिः**
(4) धृ + क्तिन् = **धृतिः**
(5) भू + क्तिन् = **भूतिः**
(6) नम् + क्तिन् = **नतिः**
(7) स्तु + क्तिन् = **स्तुतिः**
(8) श्रु + क्तिन् = **श्रुतिः**
(9) स्मृ + क्तिन् = **स्मृतिः**
(10) दृश् + क्तिन् = **दृष्टिः**
(11) मन् + क्तिन् = **मतिः**
(12) भज् + क्तिन् = **भक्तिः**
(13) बुध् + क्तिन् = **बुद्धिः**
(14) मुच् + क्तिन् = **मुक्तिः**
(15) शम् + क्तिन् = **शान्तिः**
(16) गै + क्तिन् = **गीतिः**
(17) पुष् + क्तिन् = **पुष्टिः**

6. ल्युट् प्रत्यय

- **''नपुंसके भावे क्तः''** (3.3.114) **''ल्युट् च''** (3.3.115) सूत्र से भाववाचक अर्थ में नपुंसकत्व में 'ल्युट्' प्रत्यय लगता है।
- ल्युट् प्रत्यय से बने शब्द नपुंसलिङ्ग में ही होते हैं।

जैसे- पठनम्, लेखनम्, दानम्, लेखनम् आदि।

- 'ल्युट्' प्रत्यय के 'ल्' और 'ट्' की इत्संज्ञा होकर लोप हो जाता है, 'यु' शेष रहता है। तथा 'यु' को ''युवोरनाकौ'' सूत्र से 'अन' आदेश हो जाता है।

उदाहरण-

1. लिख् + ल्युट् = **लेखनम्**
2. दा + ल्युट् = **दानम्**
3. अर्च + ल्युट् = **अर्चनम्**
4. कथ् + ल्युट् = **कथनम्**
5. पठ् + ल्युट् = **पठनम्**
6. ज्ञा + ल्युट् = **ज्ञानम्**
7. कृ + ल्युट् = **करणम्**
8. नी + ल्युट् = **नयनम्**

9. ग्रह् + ल्युट् = **ग्रहणम्**
10. गम् + ल्युट् = **गमनम्**
11. भू + ल्युट् = **भवनम्**
12. दृश् + ल्युट् = **दर्शनम्**
13. हन् + ल्युट् = **हननम्**
14. अधि + इङ् + ल्युट् = **अध्ययनम्**
15. श्रु + ल्युट् = **श्रवणम्**
16. स्मृ + ल्युट् = **स्मरणम्**
17. हृ + ल्युट् = **हरणम्**
18. कथ् + ल्युट् = **कथनम्**
19. शीङ् + ल्युट् = **शयनम्**
20. चि + ल्युट् = **चयनम्**
21. यच् + ल्युट् = **याचनम्**

7. तव्यत् और अनीयर् प्रत्यय

- ''**तव्यत्तव्यानीयरः**'' (3.1.96) सूत्र से धातु के बाद तव्यत् और अनीयर् प्रत्यय होते हैं।
- तव्यत् के त् का लोप होकर 'तव्य' एवं 'अनीयर्' प्रत्यय के 'र्' का लोप होकर 'अनीय' शेष बचता है।
- तव्यत् और अनीयर् प्रत्ययों का प्रयोग 'चाहिए' या 'योग्यता' अर्थ में होता है।

जैसे-पठितव्यम् (पढ़ना चाहिए)
पठनीयम् (पढ़ना चाहिए)

- इन प्रत्ययों का प्रयोग कर्मवाच्य और भाववाच्य में होता है; कर्तृवाच्य में नहीं।

जैसे- मया पठनीयम्।
मया पठितव्यम्।

'अनीयर्' प्रत्यय के उदाहरण

	धातु प्रत्यय		नपुंसकलिङ्ग		पुलिङ्ग		स्त्रीलिङ्ग
1.	कथ् + अनीयर्	=	कथनीयम्	-	कथनीयः	-	कथनीया
2.	भू + अनीयर्	=	भवनीयम्	-	भवनीयः	-	भवनीया
3.	दृश् + अनीयर्	=	दर्शनीयम्	-	दर्शनीयः	-	दर्शनीया
4.	पठ् + अनीयर्	=	पठनीयम्	-	पठनीयः	-	पठनीया
5.	पा + अनीयर्	=	पानीयम्	-	पानीयः	-	पानीया
6.	कृ + अनीयर्	=	करणीयम्	-	करणीयः	-	करणीया
7.	गम् + अनीयर्	=	गमनीयम्	-	गमनीयः	-	गमनीया
8.	रम् + अनीयर्	=	रमणीयम्	-	रमणीयः	-	रमणीया
9.	हस् + अनीयर्	=	हसनीयम्	-	हसनीयः	-	हसनीया
10.	घ्रा + अनीयर्	=	घ्राणीयम्	-	घ्राणीयः	-	घ्राणीया
11.	स्था + अनीयर्	=	स्थानीयम्	-	स्थानीयः	-	स्थानीया
12.	वच् + अनीयर्	=	वचनीयम्	-	वचनीयः	-	वचनीया
13.	लिख् + अनीयर्	=	लेखनीयम्	-	लेखनीयः	-	लेखनीया
14.	श्रु + अनीयर्	=	श्रवणीयम्	-	श्रवणीयः	-	श्रवणीया
15.	दा + अनीयर्	=	दानीयम्	-	दानीयः	-	दानीया
16.	स्मृ + अनीयर्	=	स्मरणीयम्	-	स्मरणीयः	-	स्मरणीया
17.	खाद् + अनीयर्	=	खादनीयम्	-	खादनीयः	-	खादनीया

तव्यत् प्रत्यय के उदाहरण

	धातु प्रत्यय		नपुंसकलिङ्ग		पुलिङ्ग		स्त्रीलिङ्ग
1.	कृ + तव्यत्	=	कर्तव्यम्	-	कर्तव्यः	-	कर्तव्या
2.	गम् + तव्यत्	=	गन्तव्यम्	-	गन्तव्यः	-	गन्तव्या
3.	पच् + तव्यत्	=	पक्तव्यम्	-	पक्तव्यः	-	पक्तव्या
4.	दृश् + तव्यत्	=	द्रष्टव्यम्	-	द्रष्टव्यः	-	द्रष्टव्या
5.	प्रच्छ् + तव्यत्	=	प्रष्टव्यम्	-	प्रष्टव्यः	-	प्रष्टव्या
6.	भू + तव्यत्	=	भवितव्यम्	-	भवितव्यः	-	भवितव्या

	धातु प्रत्यय		नपुंसकलिङ्ग		पुलिङ्ग		स्त्रीलिङ्ग
7.	स्था + तव्यत्	=	स्थातव्यम्	-	स्थातव्यः	-	स्थातव्या
8.	रुद् + तव्यत्	=	रोदितव्यम्	-	रोदितव्यः	-	रोदितव्या
9.	नृत् + तव्यत्	=	नर्तितव्यम्	-	नर्तितव्यः	-	नर्तितव्या
10.	पठ् + तव्यत्	=	पठितव्यम्	-	पठितव्यः	-	पठितव्या
11.	लिख् + तव्यत्	=	लेखितव्यम्	-	लेखितव्यः	-	लेखितव्या
12.	स्मृ + तव्यत्	=	स्मर्तव्यम्	-	स्मर्तव्यः	-	स्मर्तव्या
13.	श्रु + तव्यत्	=	श्रोतव्यम्	-	श्रोतव्यः	-	श्रोतव्या
14.	जि + तव्यत्	=	जेतव्यम्	-	जेतव्यः	-	जेतव्या
15.	दा + तव्यत्	=	दातव्यम्	-	दातव्यः	-	दातव्या
16.	पा + तव्यत्	=	पातव्यम्	-	पातव्यः	-	पातव्या
17.	ज्ञा + तव्यत्	=	ज्ञातव्यम्	-	ज्ञातव्यः	-	ज्ञातव्या

8. क्त और क्तवतु प्रत्यय

- क्तक्तवतू निष्ठा (1.1.26)- क्त और क्तवतु प्रत्यय निष्ठासंज्ञक होते हैं।
- निष्ठा (3.2.102)- सूत्र से क्त और क्तवतु प्रत्यय भूतकाल अर्थ में सभी धातुओं से लगाये जाते हैं।
- 'क्त' प्रत्यय में 'क्' की इत्संज्ञा होकर लोप हो जाता है केवल 'त' शेष बचता है। यह प्रत्यय भाववाच्य एवं कर्मवाच्य में प्रयुक्त होता है।
- क्त और क्तवतु प्रत्ययों से बने पदों का रूप तीनों लिङ्गों में होता है-

जैसे- **पठितः** (पुं.) **पठिता** (स्त्री.) **पठितम्** (नपु.) - क्त प्रत्ययान्तपद

पठितवान् (पु.) **पठितवती** (स्त्री.) **पठितवत्** (नपुं.) - क्तवतु प्रत्ययान्तपद

'क्त' प्रत्ययान्त पदों की सूची

			पु.	स्त्री.	नपुं.
1.	गम् + क्त	=	गतः	गता	गतम्
2.	कृ + क्त	=	कृतः	कृता	कृतम्
3.	पठ् + क्त	=	पठितः	पठिता	पठितम्
4.	प्रच्छ् + क्त	=	पृष्टः	पृष्टा	पृष्टम्
5.	लिख् + क्त	=	लिखितः	लिखिता	लिखितम्
6.	कथ् + क्त	=	कथितः	कथिता	कथितम्
7.	कम्प् + क्त	=	कम्पितः	कम्पिता	कम्पितम्
8.	चिन्त् + क्त	=	चिन्तितः	चिन्तिता	चिन्तितम्
9.	जि + क्त	=	जितः	जिता	जितम्
10.	पूज् + क्त	=	पूजितः	पूजिता	पूजितम्
11.	विद् + क्त	=	विदितः	विदिता	विदितम्
12.	नश् + क्त	=	नष्टः	नष्टा	नष्टम्
13.	शक् + क्त	=	शक्तः	शक्ता	शक्तम्
14.	शिक्ष् + क्त	=	शिक्षितः	शिक्षिता	शिक्षितम्
15.	भू + क्त	=	भूतः	भूता	भूतम्
16.	हस् + क्त	=	हसितः	हसिता	हसितम्
17.	खाद् + क्त	=	खादितः	खादिता	खादितम्

18.	क्रीड् + क्त	=	क्रीडितः	क्रीडिता	क्रीडितम्
19.	पत् + क्त	=	पतितः	पतिता	पतितम्
20.	श्रु + क्त	=	श्रुतः	श्रुता	श्रुतम्
21.	शोभ् + क्त	=	शोभितः	शोभिता	शोभितम्
22.	प्रविश् + क्त	=	प्रविष्टः	प्रविष्टा	प्रविष्टम्
23.	भाष् + क्त	=	भाषितः	भाषिता	भाषितम्
24.	मिल् + क्त	=	मिलितः	मिलिता	मिलितम्
25.	पा + क्त	=	पीतः	पीता	पीतम्
26.	अधि + इङ् + क्त	=	अधीतः	अधीता	अधीतम्
27.	आङ् + हु + क्त	=	आहूतः	आहूता	आहूतम्
28.	ज्वल् + क्त	=	ज्वलितः	ज्वलिता	ज्वलितम्
29.	जीव् + क्त	=	जीवितः	जीविता	जीवितम्
30.	रुच् + क्त	=	रुचितः	रुचिता	रुचितम्
31.	वद् + क्त	=	वदितः	वदिता	वदितम्

क्तवतु प्रत्ययान्त पदों की सूची

			पुँल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
1.	कृ + क्तवतु	=	कृतवान्	कृतवती	कृतवत्
2.	गम् + (जाना)	=	गतवान्	गतवती	गतवत्
3.	श्रु (सुनना)	=	श्रुतवान्	श्रुतवती	श्रुतवत्
4.	पूज् (पूजा करना)	=	पूजितवान्	पूजितवती	पूजितवत्
5.	लिख् (लिखना)	=	लिखितवान्	लिखितवती	लिखितवत्
6.	ज्ञा (जानना)	=	ज्ञातवान्	ज्ञातवती	ज्ञातवत्
7.	अर्च् (पूजा करना)	=	अर्चितवान्	अर्चितवती	अर्चितवत्
8.	आ दिश् (आज्ञा देना)	=	आदिष्टवान्	आदिष्टवती	आदिष्टवत्
9.	आप् (प्राप्त करना)	=	आप्तवान्	आप्तवती	आप्तवत्
10.	आ + रुह् (चढ़ना)	=	आरूढवान्	आरूढवती	आरूढवत्
11.	उप् + विश् (बैठना)	=	उपविष्टवान्	उपविष्टवती	उपविष्टवत्
12.	कथ् (कहना)	=	कथितवान्	कथितवती	कथितवत्
13.	क्री (खरीदना)	=	क्रीतवान्	क्रीतवती	क्रीतवत्
14.	पत् (गिरना)	=	पतितवान्	पतितवती	पतितवत्
15.	त्यज् (त्यागना)	=	त्यक्तवान्	त्यक्तवती	त्यक्तवत्
16.	लभ् (प्राप्त करना)	=	लब्धवान्	लब्धवती	लब्धवत्
17.	सृज् (सृष्टि करना)	=	सृष्टवान्	सृष्टवती	सृष्टवत्
18.	ग्रह् (ग्रहण करना)	=	गृहीतवान्	गृहीतवती	गृहीतवत्
19.	पा (पीना)	=	पीतवान्	पीतवती	पीतवत्
20.	भू (होना)	=	भूतवान्	भूतवती	भूतवत्
21.	स्ना (स्नान करना)	=	स्नातवान्	स्नातवती	स्नातवत्
22.	पठ् + क्तवतु	=	पठितवान्	पठितवती	पठितवत्
23.	क्रीड + क्तवतु	=	क्रीडितवान्	क्रीडितवती	क्रीडितवत्
24.	हस् + क्तवतु	=	हसितवान्	हसितवती	हसितवत्
25.	खाद् + क्तवतु	=	खादितवान्	खादितवती	खादितवत्
26.	वद् + क्तवतु	=	वदितवान्	वदितवती	वदितवत्

9. णमुल् प्रत्यय

- **''आभीक्ष्ण्ये णमुल् च''** (3.4.22) सूत्र से समान कर्ता वाले दो धातुओं से पूर्वकालिक धातु से 'णमुल्' प्रत्यय होता है; बार-बार होना अर्थ द्योतित होने पर।
- यदि किसी क्रिया का बार-बार लगातार (आभीक्ष्ण्य) अर्थ में प्रयोग करना होता है तो वहाँ 'णमुल्' प्रत्यय जोड़ा जाता है। 'णमुल्' में 'अम्' शेष रहता है।
- णमुल् प्रत्यय से बने शब्द अव्यय होते हैं, इनके रूप नहीं चलते।

'णमुल्' प्रत्ययान्त पदों की सूची

(1)	तड् + णमुल्	=	ताडं ताडम् (मार मारकर)
(2)	दा + णमुल्	=	दायं दायम् (दे-देकर)
(3)	पा + णमुल्	=	पायं पायम् (पी-पीकर)
(4)	गम् + णमुल्	=	गामं गामम् (जा-जाकर)
(5)	वृ + णमुल्	=	वारं वारम् (बार-बार)
(6)	छिद् + णमुल्	=	छेदं छेदम् (छेद-छेदकर)
(7)	नम् + णमुल्	=	नामं नामम् (झुक-झुककर)
(8)	पठ् + णमुल्	=	पाठं पाठम् (पढ़-पढ़कर)
(9)	रुद् + णमुल्	=	रोदं रोदम् (रो-रोकर)
(10)	भिद् + णमुल्	=	भेदं भेदम् (फोड़-फोड़कर)
(11)	पच् + णमुल्	=	पाचं पाचम् (पका पकाकर)
(12)	दृश् + णमुल्	=	दर्शं दर्शम् (बार बार देखकर)
(13)	नश् + णमुल्	=	नाशं नाशम् (नष्ट कर करके)
(14)	लभ् + णमुल्	=	लाभं लाभम् (बार बार प्राप्त करके)
(15)	ग्रह् + णमुल्	=	ग्राहं ग्राहम् (बार बार पकडकर)
(16)	कृ + णमुल्	=	कारकः

10. शतृ प्रत्यय और शानच् प्रत्यय

- **लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे (3.2.124)** सूत्र से शतृ और शानच् प्रत्ययों का विधान होता है।
- शतृ और शानच् - दोनों प्रत्यय वर्तमानकालिक कृदन्त के अन्तर्गत गिने जाते हैं।
- **''तौ सत्''** सूत्र से शतृ और शानच् - दोनों प्रत्ययों की 'सत् संज्ञा' होती है।
- 'लगातार कार्य का होना' इस अर्थ को बताने के लिए इन दोनों प्रत्ययों का प्रयोग होता है।
- शतृ प्रत्यय में 'अत्' और 'शानच्' में 'आन' शेष बचता है।
- परस्मैपदी धातुओं से 'शतृ' एवं आत्मनेपदी धातुओं से 'शानच्' प्रत्यय का विधान किया जाता है। किन्तु उभयपदी धातुओं से दोनों प्रत्यय होते हैं।
- 'शतृ' और 'शानच्' प्रत्ययान्त शब्दों के रूप तीनों लिङ्गों और सातों विभक्तियों में चलते हैं-

(i) पठ् + शतृ = **पठन्** (पुं.), **पठन्ती** (स्त्री.), **पठत्** (नपु.)

(ii) कम्प् + शानच् = **कम्पमानः** (पु.), **कम्पमाना** (स्त्री.), **कम्पमानम्** (नपु.)

- ये प्रत्यय कर्ता के विशेषण के रूप में प्रयुक्त होते हैं।

जैसे- **पठन् बालकः गच्छति।** (पढ़ता हुआ बालक जाता है)
भाषमाणः शिक्षकः लिखति। (बोलता हुआ शिक्षक लिखता है)

शतृ प्रत्ययान्त शब्दों की सूची

	धातु (अर्थ सहित)	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
1.	पठ् (पढ़ना)	पठन्	पठन्ती	पठत्
2.	लिख् (लिखना)	लिखन्	लिखन्ती	लिखत्
3.	क्रीड् (खेलना)	क्रीडन्	क्रीडन्ती	क्रीडत्
4.	कृ (करना)	कुर्वन्	कुर्वती	कुर्वत्
5.	धाव् (दौड़ना)	धावन्	धावन्ती	धावत्
6.	श्रु (सुनना)	शृण्वन्	शृण्वती	शृण्वत्
7.	आप् (पाना)	आप्नुवन्	आप्नुवती	आप्नुवत्
8.	गम् (जाना)	गच्छन्	गच्छन्ती	गच्छत्
9.	गर्ज् (गरजना)	गर्जन्	गर्जन्ती	गर्जत्
10.	दृश् (देखना)	पश्यन्	पश्यन्ती	पश्यत्
11.	कथ् (कहना)	कथयन्	कथयन्ती	कथयत्

12. अर्च् (पूजना)	अर्चन्	अर्चन्ती	अर्चत्
13. क्री (खरीदना)	क्रीणन्	क्रीणती	क्रीणत्
14. गै (गाना)	गायन्	गायन्ती	गायत्
15. छिद् (काटना)	छिन्दन्	छिन्दन्ती	छिन्दत्
16. शक् (सकना)	शक्नुवन्	शक्नुवन्ती	शक्नुवत्
17. स्वप् (सोना)	स्वपन्	स्वपन्ती	स्वपत्
18. स्मृ (स्मरण करना)	स्मरन्	स्मरन्ती	स्मरत्
19. हृ (हरण करना)	हरन्	हरन्ती	हरत्
20. हस् (हँसना)	हसन्	हसन्ती	हसत्
21. अस् (होना)	सन्	सती	सत्
22. खाद् (खाना)	खादन्	खादन्ती	खादत्
23. चल् (चलना)	चलन्	चलन्ती	चलत्
24. ज्ञा (जानना)	जानन्	जानती	जानत्
25. भू (होना)	भवन्	भवन्ती	भवत्
26. कथ् (कहना)	कथयन्	कथयन्ती	कथयत्
27. वद् + शतृ	वदन्	वदन्ती	वदत्

शानच् प्रत्ययान्त पदों की सूची

धातु (अर्थ सहित)	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
1. भाष्	भाषमाणः	भाषमाणा	भाषमाणम्
2. एध्	एधमानः	एधमाना	एधमानम्
3. कृ	कुर्वाणः	कुर्वाणा	कुर्वाणम्
4. यज्	यजमानः	यजमाना	यजमानम्
5. लभ्	लभमानः	लभमाना	लभमानम्
6. याच्	याचमानः	याचमाना	याचमानम्
7. नी	नयमानः	नयमाना	नयमानम्
8. वृध्	वर्धमानः	वर्धमाना	वर्धमानम्
9. वृत् (होना)	वर्तमानः	वर्तमाना	वर्तमानम्
10. शी (सोना)	शयानः	शयाना	शयानम्
11. कम्प् (काँपना)	कम्पमानः	कम्पमाना	कम्पमानम्
12. आस् (बैठना)	आसीनः	आसीना	आसीनम्
13. जन् (पैदा होना)	जायमानः	जायमाना	जायमानम्
14. त्वर् (जल्दी करना)	त्वरमाणः	त्वरमाणा	त्वरमाणम्
15. सेव् (सेवा करना)	सेवमानः	सेवमाना	सेवमानम्
16. सह् (सहन करना)	सहमानः	सहमाना	सहमानम्
17. कथ् (कहना)	कथयमाणः	कथयमाणा	कथयमाणम्
18. मुद् + शानच्	मोदमानः	मोदमाना	मोदमानम्

तद्धितप्रत्यय

तद्धितप्रत्यय- संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण एवम् अव्ययपदों से जोड़े जाने वाले प्रत्यय तद्धित प्रत्यय हैं। तद्धितप्रत्यय के योग से बने शब्द '**तद्धितान्त**' कहे जाते हैं।

1. मतुप् प्रत्यय

(i) तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप् (5.2.94) सूत्र से 'वह इसका है' 'वह इसमें है' - इन अर्थों में 'मतुप्' प्रत्यय होता है।

(ii) 'मतुँप्' के पकार एवं उकार का योग होकर 'मत्' शेष बचता है।

(iii) 'मतुँप्' प्रत्ययान्त पद विशेषण होते हैं अतः विशेष्य के अनुसार इनका लिङ्ग, वचन और विभक्ति निर्धारित होती है।

मतुप् प्रत्ययान्त पदों की सूची

1. गो + मतुप् = **गोमत् (गोमान्)** गौ वाला
2. मति + मतुप् = **मतिमत् (मतिमान्)** बुद्धि वाला
3. श्री + मतुप् = **श्रीमत् (श्रीमान्)** श्री से युक्त
4. धी + मतुप् = **धीमत् (धीमान्)** बुद्धि वाला
5. आयुस् + मतुप् = **आयुष्मत् (आयुष्मान्)** दीर्घायु

(1) मतुप् (मत्) का 'म' बदलकर 'व' हो जाता है, यदि अकारान्त या आकारान्त हो; जैसे-

(i) बल + मतुप् = **बलवत्** (बलवान्)

(ii) विद्या + मतुप् = **विद्यावत्** (विद्यावान्)

(iii) धन + मतुप् = **धनवत्** (धनवान्)

(iv) दया + मतुप् = **दयावत्** (दयावान्)

(v) गुण + मतुप् = **गुणवत्** (गुणवान्)

(vi) भग + मतुप् = **भगवत्** (भगवान्)

(2) ऐसा शब्द, जिसके अन्तिम स्वर के पहले 'म्' हो-

लक्ष्मी + मतुप् = लक्ष्मीवान्

(3) ऐसा शब्द, जिसके अन्तिम व्यञ्जन के पहले 'अ' या 'आ' हो। जैसे-

यशस् + मतुप् = **यशस्वत्** (यशस्वान्)

भास् + मतुप् = **भास्वत्** (भास्वान्)

(4) जिस शब्द के अन्त में वर्गों के प्रथम चार वर्णों में से कोई हो। जैसे-

विद्युत् + मतुप् = **विद्युत्वत्** (विद्युत्वान्)

सुहृद् + मतुप् = **सुहृद्वत्** (सुहृद्वान्)

बुद्धि + मतुप् = **बुद्धिमान** (बुद्धिशाली)

शक्ति + मतुप् = **शक्तिमान्** (शक्तिशाली)

मतुप् प्रत्ययान्त पदों की सूची

शब्द + प्रत्यय	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
1. धन् + मतुप् =	धनवान्	धनवती	धनवत्
2. रूप + मतुप् =	रूपवान्	रूपवती	रूपवत्
3. बल + मतुप् =	बलवान्	बलवती	बलवत्
4. गुण + मतुप् =	गुणवान्	गुणवती	गुणवत्
5. रस + मतुप् =	रसवान्	रसवती	रसवत्
6. धी + मतुप् =	धीमान्	धीमती	धीमत्
7. श्री + मतुप् =	श्रीमान्	श्रीमती	श्रीमत्

2. अण् प्रत्यय

(1) शिव + अम् = शैवः

(2) विष्णु + अण् = वैष्णवः

3. इनि प्रत्यय

(1) **अत इनिठनौ (5.2.115)** अर्थात् अकारान्त शब्दों से 'इनि' और 'ठन्' प्रत्यय होते हैं।

(2) 'इनि' प्रत्यय के अन्त में विद्यमान 'इ' का लोप हो जाता है अतः केवल 'इन्' शेष बचता है।

(3) यह प्रत्यय भी 'वाला' अर्थ में प्रयुक्त होता है। जैसे- धन + इनि = धनिन् (धनी) = धन वाला।

इनि (इन्) प्रत्ययान्त पदों की सूची

1. च्रक + इनि	=	चक्रिन् /चक्री
2. धन + इनि	=	धनिन् / धनी
3. बल + इनि	=	बलिन् / बली
4. दुःख + इनि	=	दुःखिन् / दुःखी
5. गुण + इनि	=	गुणिन् / गुणी
6. कर + इनि	=	करिन् / करी
7. हस्त + इनि	=	हस्तिन् / हस्ती
8. दण्ड + इनि	=	दण्डिन् / दण्डी
9. शिखा + इनि	=	शिखिन् / शिखी
10. सुख + इनि	=	सुखिन् / सुखी
11. कर्म + इनि	=	कर्मिन् / कर्मी
12. प्रणय + इनि	=	प्रणयिन् / प्रणयी
13. माला + इनि	=	मालिन् / माली
14. दोष + इनि	=	दोषिन् / दोषी
15. ज्ञान + इनि	=	ज्ञानिन् / ज्ञानी
16. दान + इनि	=	दानिन् / दानी
17. माया + इनि	=	मायिन् / मायी

4. त्व और तल् प्रत्यय

(1) ''तस्य भावस्त्वतलौ'' (5.1.119) सूत्र से किसी शब्द को भाववाचक संज्ञा बनाने के लिए उस शब्द में 'त्व' अथवा 'तल्' (ता) प्रत्यय जोड़ देते हैं।

(2) 'त्व' से अन्त होने वाले शब्द सदा नपुंसकलिङ्ग में होते हैं और 'तल्' से अन्त होने वाले शब्द स्त्रीलिङ्ग में होते हैं।

(3) 'ग्रामजनबन्धुभ्यस्तल्' (4.2.43) सूत्र से तल् प्रत्यय होता है। जैसे- ग्रामता, बन्धुता, जनता आदि।

(4) गजता, सहायता आदि में भी तल् प्रत्यय है।

'त्व' और तल् प्रत्ययान्त पदों की सूची

	शब्द	'त्व' प्रत्ययान्त पद	'तल्' प्रत्ययान्त पद
1.	कुशल	कुशलत्वम्	कुशलता
2.	गुरु	गुरुत्वम्	गुरुता
3.	मित्र	मित्रत्वम्	मित्रता
4.	देव	देवत्वम्	देवता
5.	सुन्दर	सुन्दरत्वम्	सुन्दरता
6.	मनुष्य	मनुष्यत्वम्	मनुष्यता
7.	शिशु	शिशुत्वम्	शिशुता
8.	पशु	पशुत्वम्	पशुता
9.	मूर्ख	मूर्खत्वम्	मूर्खता
10.	दुर्जन	दुर्जनत्वम्	दुर्जनता
11.	महत्	महत्त्वम्	महत्ता
12.	लघु	लघुत्वम्	लघुता

5. ठक् प्रत्यय

(1) 'ठक्' प्रत्यय का प्रयोग भाववाचक संज्ञा बनाने के लिए होता है। शब्द के साथ जुड़ने पर 'ठक्' के 'ठ्' के स्थान पर 'इक' आदेश होता है।

(2) शब्द के प्रथम स्वर में वृद्धि हो जाती है; जैसे- 'अ' को 'आ', 'इ' को 'ऐ', 'उ' को 'औ' हो जाता है। अर्थात् आदि अच् की वृद्धि होती है।

ठक् (इक) प्रत्ययान्त पदों की सूची

1. धर्म + ठक् (इक) = धार्मिकः
2. अस्ति + ठक् (इक) = आस्तिकः
3. सप्ताह + ठक् (इक) = साप्ताहिकः
4. संस्कृति + ठक् (इक) = सांस्कृतिकः
5. अश्व + ठक् (इक) = आश्विकः
6. साहित्य + ठक् (इक) = साहित्यिकः
7. लोक + ठक् (इक) = लौकिकः
8. दिन + ठक् (इक) = दैनिकः
9. इतिहास + ठक् = ऐतिहासिकः
10. समाज + ठक् = सामाजिकः
11. दधि + ठक् = दधिकम्

स्त्रीप्रत्यय

पुंलिङ्ग शब्दों को स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए जिन प्रत्ययों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें **'स्त्रीप्रत्यय'** कहा जाता है।
जैसे- टाप्, चाप्, डाप्, ङीप्, ङीष्, ङीन्, ऊङ्, ति आदि।

(1) टाप् प्रत्यय

(i) अजाद्यतष्टाप् (4.1.4) सूत्र से अजादिगण में गिने गये शब्दों को और अकारान्त पुंलिङ्ग शब्दों को स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए 'टाप्' प्रत्यय लगाया जाता है।

(ii) 'टाप्' प्रत्यय के 'ट्' और 'प्' का लोप होकर केवल 'आ' बचता है। अतः 'टाप्' प्रत्ययान्त शब्द आकारान्त स्त्रीलिङ्ग कहलाते हैं।

(iii) 'टाप्' प्रत्यय से बने शब्दों के रूप 'रमा' की भाँति चलते हैं।

जैसे- शिक्षक + टाप् = **शिक्षिका**
अज + टाप् = **अजा**
चटक + टाप् = **चटका**
सुत + टाप् = **सुता**
शूद्र + टाप् = **शूद्रा**
कनिष्ठ + टाप् = **कनिष्ठा**
प्रथम + टाप् = **प्रथमा**
बाल + टाप् = **बाला**
अश्व + टाप् = **अश्वा**
क्षत्रिय + टाप् = **क्षत्रिया**
अनुकूल + टाप् = **अनुकूला**
सुनयन + टाप् = **सुनयना**
अचल + टाप् = **अचला**
कुशल + टाप् = **कुशला**
कोकिल + टाप् = **कोकिला**

नोट- 'टाप्' प्रत्यय जोड़ते समय यदि शब्द के अन्त में 'क' हो, और 'क' से पूर्व 'अ' हो तो.....'अ' के स्थान पर 'इ' हो जाता है।

जैसे-

कारक + टाप् = **कारिका**

नाटक + टाप् = **नाटिका**

बालक + टाप् = **बालिका**

अध्यापक + टाप् = **अध्यापिका**

गायक + टाप् = **गायिका**

(2) ङीष् प्रत्यय

(i) **'षिद्गौरादिभ्यश्च' (4.1.41)** सूत्र से 'ङीष्' प्रत्यय का विधान किया जाता है।

(ii) जिन प्रत्ययों में 'षकार' का लोप हुआ हो, ऐसे प्रत्ययों से बने हुए शब्दों से तथा गौरादिगण के शब्दों से स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए 'ङीष्' प्रत्यय का प्रयोग होता है।

(iii) 'ङीष्' में 'ङ्' की और 'ष्' की इत्संज्ञा होकर लोप हो जाता है, केवल 'ई' शेष बचता है। इसीलिए ङीष् प्रत्ययान्त पद ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग पद कहलाते हैं।

(iv) ङीष् प्रत्ययान्त पदों का रूप 'नदी' की तरह चलता है।

जैसे-

नर्तक + ङीष् = **नर्तकी**

गौर + ङीष् = **गौरी**

नट + ङीष् = **नटी**

मातामह + ङीष् = **मातामही**

चन्द्रमुख + ङीष् = **चन्द्रमुखी**

मनुष्य + ङीष् = **मनुषी**

शिखण्ड + ङीष् = **शिखण्डी**

तट + ङीष् = **तटी**

शूद्र + ङीष् = **शूद्री**

पटु + ङीष् = **पट्वी**

मानुष् + ङीष = **मानुषी**

महिष् + ङीष् = **महिषी**

मृदु + ङीष् = **मृद्वी**

(3) ङीप् प्रत्यय

(i) 'ङीप्' प्रत्यय के 'ङ्' और 'प्' का लोप होकर 'ई' शेष बचता है।

(ii) ङीप् प्रत्ययान्त पद ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग कहलाते हैं, इनका रूप भी 'नदी' की तरह चलता है।

(iii) "टिड्ढाणञ् ...." "वयसि प्रथमे" "द्विगोः" आदि सूत्रों से 'ङीप्' प्रत्यय का विधान होता है।

जैसे-

नद + ङीप् = **नदी**

देव + ङीप् = **देवी**

तरुण + ङीप् = **तरुणी**

गार्ग्य + ङीप् = **गार्गी**

कुमार + ङीप् = **कुमारी**

किशोर + ङीप् = **किशोरी**

त्रिलोक + ङीप् = **त्रिलोकी**

अष्टाध्याय + ङीप् = **अष्टाध्यायी**

पञ्चवट + ङीप् = **पञ्चवटी**

त्रिपाद + ङीप् = **त्रिपादी**

कर्तृ + ङीप् = **कर्त्री**

गुणिन् + ङीप् = **गुणिनी**

सुखकर + ङीप् = **सुखकरी**

भोगकर + ङीप् = **भोगकरी**

श्रीमत् + ङीप् = **श्रीमती**

भवत् + ङीप् = **भवती**

(4) ङीन् प्रत्यय

(i) 'ङीन्' प्रत्यय का भी 'ङ्' और 'न्' का लोप होकर 'ई' शेष बचता है।

(ii) इस प्रत्यय से बने रूप भी ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग होते हैं, अतः इनका रूप भी 'नदी' की तरह चलेगा।

(iii) **"शार्ङ्गरवाद्यञो ङीन्"** एवं **"नृनरयोर्वृद्धिश्च"** से 'ङीन्' प्रत्यय का विधान होता है।

जैसे-

ब्राह्मण + ङीन् = **ब्राह्मणी**

शार्ङ्गरव + ङीन् = **शार्ङ्गरवी**

नृ + ङीन् = **नारी**

नर + ङीन् = **नारी**

❑❑

स्नातकोत्तर प्रशिक्षित शिक्षक प्रतियोगिता परीक्षा - 2017

लक्ष्य झारखण्ड

प्रवक्ता (PGT)

संस्कृत

लेखक
सर्वज्ञभूषण

सम्पादक
मनीष शर्मा
योगेश मिश्र 'राधे राधे'

प्रकाशक
संस्कृतगङ्गा
59, मोरी, दारागंज, इलाहाबाद
मो. 9839852033
7800138404

प्रकाशन-सहयोग
युनिवर्सल बुक्स
1519, अल्लापुर, इलाहाबाद
☎: 0532-2503638
मो. 9453460552

* **प्रकाशक**

संस्कृतगङ्गा (पञ्जीकृत)
59, मोरी, दारागञ्ज, इलाहाबाद
(कोतवाली दारागञ्ज के आगे, गङ्गाकिनारे संकटमोचन छोटे हनुमान मन्दिर के पास), Mb. : 9839852033
email-Sanskritganga@gmail.com

* **प्रकाशन-सहयोग**

युनिवर्सल बुक
1519 अल्लापुर, इलाहाबाद
☎ : 0532-2503638

* मुख्यवितरक

राजू पुस्तक केन्द्र
अल्लापुर, इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश)
मो० 9453460552

* पुस्तकें डाक द्वारा भी आर्डर कर सकते हैं–

Mob. : 7800138404
9839852033

* **अक्षर संयोजक- पवन सिंह, मिथिलेश, केदारनाथ**

* **पृष्ठ विन्यास- कृष्णा कम्प्यूटर संस्थान,** मोरी, दारागंज

* प्रथम संस्करण – फरवरी - 2018

* **मूल्य – 250/-** (दो सौ पचास रुपये मात्र)

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

1. राजू पुस्तक भण्डार, अल्लापुर, इलाहाबाद
   सम्पर्क सूत्र : 0532-2503638, 9453460552
2. संस्कृतगङ्गा, दारागञ्ज, इलाहाबाद - 7800138404
3. गौरव बुक एजेन्सी, कैण्ट, वाराणसी
4. विजय मैग्जीन सेन्टर, बलरामपुर
5. जायसवाल बुक सेन्टर, हरदोई – 9415414569
6. शिवशंकर बुक स्टाल, जौनपुर
7. न्यू पूर्वांचल बुक स्टाल, जौनपुर – 9235743254
8. कृष्णा बुक डिपो बस्ती – 8182854095
9. मौर्या बुक डिपो, पाण्डेयपुर, वाराणसी– 9454735892
10. मनीष बुक स्टोर, गोरखपुर – 9415848788
11. द्विवेदी ब्रदर्स, गोरखपुर – 0551-344862
12. विद्यार्थी पुस्तक मन्दिर, गोरखपुर – 9838172713
13. रंजन मिश्रा, गोरखपुर (बस स्टैण्ड)
14. आशीर्वाद बुक डिपो, अमीनाबाद, लखनऊ
15. मालवीय पुस्तक केन्द्र, अमीनाबाद, लखनऊ – 9918681824
16. मॉडर्न मैग्जीन बुक शॉप, कपूरशाला, लखनऊ
17. साहू बुक स्टॉल, अलीगंज, लखनऊ – 9838640164
18. भूमि मार्केटिंग, लखनऊ – 9450520503
19. दुर्गा स्टोर, राजा की मण्डी, आगरा – 9927092063
20. महामाया पुस्तक केन्द्र, बिलासपुर – 09907418171
21. डायमण्ड बुक स्टाल, ज्वालापुर, हरिद्वार
22. कम्पटीशन बुक हाउस, सब्जी मण्डी रोड, बरेली – 9897529906
23. अजय गुप्ता बुक स्टोर, लखीमपुर – 809062054
24. शिवशंकर बुक स्टाल, रीवा – 9616355944
25. कृष्णा बुक एजेन्सी, वाराणसी – 9415820103
26. गर्ग बुक डिपो, जयपुर
27. अग्रवाल बुक सेन्टर, मुखर्जी नगर, नयी दिल्ली
28. चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी (सभी बुक स्टालों पर)
    मो. – 9839243286, 9415508311, 0532-2420414
29. विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक वाराणसी – 0542-2413741
30. मोतीलाल बनारसी दास, वाराणसी
31. केशवी बुक डिस्ट्रीब्यूटर्स, नयी दिल्ली – 93
32. महावीर बुक स्टाल, खजूरी बाजार, इन्दौर
33. हिन्दी बुक डिपो, मुरादाबाद – 94566888596
34. माँ बुक स्टेशनर्स, शहडोल छत्तीसगढ़ – 9406754644

दो शब्द

प्रिय संस्कृतबन्धो !

नमः संस्कृताय!

- मित्रों! "**स्नातकोत्तर प्रशिक्षित शिक्षक प्रतियोगिता परीक्षा-2017**" झारखण्ड प्रवक्ता के संस्कृत पाठ्यक्रम को ध्यान में रखकर "**लक्ष्य झारखण्ड**" नामक पुस्तक को तैयार किया गया है।
- मुझे विश्वास है कि इसमें प्रदत्त पाठ्यसामग्री आप सभी प्रतियोगियों के लिए वरदान साबित होगी, साथ ही झारखण्ड प्रवक्ता (PGT) के लिए **ONLINE SANSKRIT CLASS** भी संस्कृतगङ्गा दारागञ्ज प्रयाग की ओर से आपको निःशुल्क प्रदान की जा रही है। कृपया शीघ्र सम्पर्क करके लाभ उठायें। **सम्पर्क करें - 7800138404, 9839852033**
- इस पुस्तक को तैयार करने में जिन मित्रों का सहयोग मिला उन्हें हार्दिक धन्यवाद। विशेष रूप से **शफीना बेगम, गायत्री पाण्डेय, अमित मिश्र (बस्ती), देवमूरत, अम्बिकेश प्रताप सिंह, रामबिहारी दुबे, सत्यप्रकाश, योगेश मिश्र (मुनिजी), सुमन सिंह, कविता सिंह, केदारनाथ तिवारी, अमित सिंह (बाराबंकी), श्रीकृष्ण शुक्ल** (प्रवक्ता, बुण्डू, राँची) जी के प्रति संस्कृतजगत् कृतज्ञ है।
- इस पुस्तक को सँवारने तथा पृष्ठविन्यास हेतु स्नेही मित्र **ब्रह्मानन्द मिश्र** जी को सादर नमन। साथ ही मुद्रण कार्य में अथक परिश्रम करने वाले **पवन सिंह, मिथिलेश** एवं **केदारनाथ** जी को साधुवाद।

दिनाङ्क - 08.02.2018

आपका सखा
सर्वज्ञभूषण

विषय-क्रम

पाठ्यक्रम

प्रवक्ता झारखण्ड (संस्कृत)

विषय- संस्कृत भाषा और साहित्य

1. **संस्कृत भाषा का उद्भव और विकास** [भारतीय यूरोपीय (भारोपीय) से मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषाओं की सामान्य रूपरेखा]।
2. **संस्कृत साहित्य के इतिहास का साधारण ज्ञान,** साहित्य समीक्षा के प्रमुख सिद्धान्त। महाकाव्य, गद्यकाव्य, गीतिकाव्य और संग्रह-ग्रन्थ आदि साहित्यिक विधाओं का उद्भव और विकास।
3. **प्राचीन भारतीय संस्कृति और दर्शन** जिसमें वर्णाश्रम-व्यवस्था,संस्कार और प्रमुख दार्शनिक प्रवृत्तियों पर विशेष बल दिया जाय।
4. **निम्नलिखित कृतियों का सामान्य अध्ययन-**

क. कठोपनिषद्
ख. श्रीमद्भगवद्गीता
ग. बुद्धचरितम् (अश्वघोष)
घ. स्वप्नवासवदत्तम् (भास)
ङ. अभिज्ञानशाकुन्तलम् (कालिदास)
च. मेघदूतम् (कालिदास)
छ. रघुवंशम् (कालिदास)
ज. कुमारसम्भवम् (कालिदास)
झ. मृच्छकटिकम् (शूद्रक)
ञ. किरातार्जुनीयम् (भारवि)
ट. शिशुपालवधम् (माघ)
ठ. उत्तररामचरितम् (भवभूति)
ड. मुद्राराक्षसम् (विशाखदत्त)
ढ. नैषधीयचरितम् (श्रीहर्ष)
ण. राजतरङ्गिणी (कल्हण)
त. नीतिशतकम् (भर्तृहरि)
थ. कादम्बरी (बाणभट्ट)
द. हर्षचरितम् (बाणभट्ट)
ध. दशकुमारचरितम् (दण्डी)
न. प्रबोधचन्द्रोदय (कृष्णमिश्र)

5. **चुनी हुई निम्नलिखित पाठ्यसामग्री के मौलिक अध्ययन हेतु प्रामणिक पाठ्यग्रन्थ-** केवल इन्हीं ग्रन्थों से प्रश्न पूछे जायेंगे।
   1. कठोपनिषद् (प्रथम अध्याय-तृतीय वल्ली, श्लोक- 10 से 15 तक)
   2. श्रीमद्भगवद्गीता (द्वितीय अध्याय,श्लोक- 13 से 25 तक)
   3. बुद्धचरितम् (तृतीय सर्ग,श्लोक- 1 से 10 तक)
   4. स्वप्नवासवदत्तम् (षष्ठ अङ्क)
   5. अभिज्ञानशाकुन्तलम् (चतुर्थ अङ्क)
   6. मेघदूतम् (पूर्वमेघ, श्लोक-1 से 10 तक)
   7. किरातार्जुनीयम् (प्रथम सर्ग)
   8. उत्तररामचरितम् (तृतीय अङ्क)
   9. नीतिशतकम् (श्लोक-1 से 10 तक)
   10. कादम्बरी (शुकनासोपदेश)
   11. कौटिल्य अर्थशास्त्र (प्रथम अधिकरण-प्रथम प्रकरण- द्वितीय अध्याय, शीर्षक- '**विद्यासमुद्देशः आन्वीक्षिकीस्थापना**' सप्तम प्रकरण- 11वाँ अध्याय, शीर्षक- '**गूढपुरुषोत्पत्तिः**')

1. संस्कृत भाषा का उद्भव और विकास

भाषा की उत्पत्ति

- 'भाषा की उत्पत्ति' यह विषय अत्यन्त उलझा हुआ है। इस विषय पर विद्वानों ने जो विचार प्रस्तुत किये हैं, वे अपूर्ण और अनिर्णयात्मक हैं।
- भाषा उत्पत्ति के लिए दो बातें अनिवार्य हैं-

1. वाग्यन्त्र से ध्वनन या वर्णोच्चारण की क्षमता प्राप्त करना।
2. उच्चरित ध्वनि का, अर्थ के साथ सम्बन्ध स्थापित करने का प्रारम्भ।

- प्रथम बात प्रायः सभी पशु-पक्षियों एवं अन्य जीवों में प्राप्त होती है।
- पशु- पक्षियों में स्पष्ट उच्चारण या व्यक्त वाक् का अभाव है, अतः वे स्पष्ट रूप से बोलनें में असमर्थ हैं।
- मनुष्य को बोलने की क्षमता जन्म से प्राप्त है, अतः वह जन्म से वाग्यन्त्र या वागिन्द्रिय का प्रयोग करता है।
- दूसरी बात में शब्द और अर्थ के सम्बन्ध जानने की जिज्ञासा ही मुख्य विषय है।
- भाषा-उत्पत्ति विषयक समस्त सिद्धान्त अनुमान पर आश्रित हैं एवं विज्ञान अनुमान पर आश्रित न होकर तथ्यों पर निर्भर होता है।
- यह दर्शन, मानव-विज्ञान या समाज-विज्ञान का विषय होने के कारण भाषा-विज्ञान इस दिशा में अपनी असमर्थता प्रकट करता है।
- सामान्य लोकप्रियता का विषय होने से इसके प्रस्तावित सिद्धान्तों का वर्णन किया जा रहा है-

1. दिव्योत्पत्ति-सिद्धान्त

- यह सबसे प्राचीन मत है। इसके अनुसार- जिस प्रकार परमात्मा ने मानव- सृष्टि की, उसी प्रकार मानव के लिए एक परिष्कृत भाषा भी दी।
- दैवीय शक्ति ही इस सिद्धान्त का मूल है। उसी दैवी शक्ति ने ही सृष्टि के प्रारम्भ में ही वेदों का ज्ञान दिया, जिससे मानव अपना क्रिया-कलाप चला सका।
- वेदों, उपनिषदों तथा अनेक दर्शन ग्रन्थों में यह बात प्रमाणित है कि ईश्वर से ही वेदों की उत्पत्ति हुई।

समीक्षा- इस सिद्धान्त पर निम्न आपत्तियाँ की गयी हैं।

1. यह सिद्धान्त तर्क या विज्ञान संगत नहीं है, केवल आस्था पर निर्भर है।
2. यदि भाषा ईश्वर-प्रदत्त होती तो सृष्टि में भाषा भेद नहीं होता।
3. जर्मन् विद्वान् **हेर्डर** ने लिखा है कि ''यदि भाषा ईश्वरकृत होती तो यह अधिक सुव्यवस्थित और तर्कसंगत हागी, अधिकांश भाषाएं अव्यवस्थित और त्रुटिपूर्ण हैं।''

2. सङ्केत-सिद्धान्त

- इसे **निर्णयवाद**, **निर्णयसिद्धान्त** तथा **स्वीकारवाद** आदि अनेक नामों से जाना जाता है।
- इस सिद्धान्त के प्रवर्तक 18वीं शताब्दी के फ्रेंच विद्वान् **'रूसो'** हैं।
- इनके अनुसार 'व्यक्ति प्रारम्भ में सङ्केतों के माध्यम से अपना अभिप्राय व्यक्त करता था तथा बाद में सामूहिक रूप से वस्तुओं की संज्ञा दी गयी।'
- इसे **'सामाजिक-समझौता'** कहा जा सकता है।

समीक्षा- इस सिद्धान्त की कुछ न्यूनताएं हैं-

1. बिना भाषा के सभा का आयोजन और विचार-विनिमय कैसे हुआ?
2. सङ्केत शब्दों के निर्माण के लिए क्या आधार था? किसी व्यक्ति का सुझाव मान लिया गया या फिर सबके अलग-अलग मत थे?
3. यदि भाषा के बिना सभा का आयोजन, सङ्केत निर्माण एवं सङ्केतों की सामाजिक सम्पुष्टि हो सकती है, तो भाषा की क्या आवश्यकता रह जाती है।

अतः यह सिद्धान्त मान्य नहीं है।

3. रणन-सिद्धान्त

- इस सिद्धान्त को **धातु-सिद्धान्त, अनुकरण-सिद्धान्त, अनुरणनमूलकतावाद, अनुरणात्मक-अनुकरण, डिंग-डांगवाद** आदि नामों से निर्दिष्ट किया गया है।
- इस सिद्धान्त के मूल प्रवर्तक **'प्लेटो'** थे तथा इसको **'हेस'** और **'मैक्समूलर'** ने व्यवस्थित किया।
- इस मत के अनुसार 'प्रकृति में एक सामान्य नियम है किसी वस्तु पर चोट मारने पर एक विशेष ध्वनि होती है। यह ध्वनि ही उसकी विशेषता है। इसी ध्वनि को रणन कहा जाता है।

समीक्षा-

1. इस सिद्धान्त में इतने दोष थे कि बाद में मैक्समूलर ने इसे छोड़ दिया।
2. इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि किस वस्तु से मस्तिष्क में कौन-सी ध्वनि झंकृत हुई।

3. यह सिद्धान्त शब्द और अर्थ में रहस्यात्मक स्वाभाविक सम्बन्ध मानता है। शब्द और अर्थ का सांङ्केतिक सम्बन्ध है न कि स्वाभाविक यह मत अस्वीकृत होने पर भी रोचकता के लिए प्रचलित है।

4. ध्वन्यनुकरण-सिद्धान्त

➢ इस सिद्धान्त के अन्य नाम भी हैं, जैसे- **अनुकरण-सिद्धान्त, ध्वन्यात्मकानुकरण-सिद्धान्त, अनुकरणमूलकतावाद, शब्दानुकरणवाद, भों-भों-वाद** आदि।

➢ कुत्ते की ध्वनि को अंग्रेजी में BOW – WOW कहते हैं, अतः हिन्दी में यह **भों-भों-वाद** हुआ।

➢ इस सिद्धान्त का अभिमत है कि प्राकृतिक वस्तुओं,पशु-पक्षियों आदि की ध्वनि के अनुकरण पर विभिन्न वस्तुओं के नाम रखे जाते हैं। जो वस्तु जैसी ध्वनि करती है, उसका वैसा ही नाम पड़ता है। जैसे-काँव-काँव से काक या कौआ, कू-कू से कोयल, झर-झर से झरना आदि।

समीक्षा-

1. विश्व की भाषाओं में ध्वन्यनुकरण वाले शब्दों की संख्या एक प्रतिशत भी नहीं है। अतः यह भाषोत्पत्ति सम्बन्धी उचित समाधान नहीं है।
2. **प्रो० रेनन** की आपत्ति है, यदि मनुष्य पक्षियों जैसे तुच्छ जीवों के शब्दों का अनुकरण करके भाषा बना सकता है, तो वह पशु-पक्षियों से निकृष्ट सिद्ध होता है।
3. कुछ भाषाओं में ध्वन्यनुकरण-शब्द हैं ही नहीं। जैसे- उत्तरी अमेरिका की **'अथवस्कन'** भाषा।

   आंशिक रूप से स्वीकार्य होते हुए भी यह मत सम्पूर्ण रूप से स्वीकार नहीं हैं।

5. आवेग-सिद्धान्त

➢ इस सिद्धान्त को **'मनोभावाभिव्यक्तिवाद, मनोरागव्यञ्जक शब्दमूलकतावाद, पूह-पूह सिद्धान्त, मनोभावाभि-व्यञ्जकतावाद** आदि के नाम से जाना जाता है।

➢ इसके अनुसार आरम्भ में मनुष्य भाव प्रधान था और प्रसन्नता, दुःख, विस्मय, घृणा आदि के भाववश उसके मुख से ओ, छि, धिक्, आह आदि शब्द सहज ही निकले। धीरे-धीरे इन्हीं से भाषा का विकास हुआ।

समीक्षा- इसको माननें में निम्न कठिनाइयाँ हैं-

1. ये शब्द विचारपूर्वक प्रयुक्त नहीं होते हैं बल्कि आवेग की तीव्रता में अनायास निकल पड़ते हैं।
2. भिन्न-भिन्न भाषाओं में ऐसे शब्द एक रूप में नहीं मिलते यदि स्वभावतः निकलते तो सभी मनुष्यों में लगभग एक समान होते।
3. भाषा में आवेग शब्दों की संख्या 40-50 से अधिक नहीं होगी इन शब्दों से पूरी भाषा पर प्रकाश नहीं पड़ता। अतः इनको पूर्णतः भाषा का अंग नहीं माना जा सकता।

   यह भी समस्या को समाप्त करनें में असमर्थ है।

6. श्रम-ध्वनि-सिद्धान्त

➢ इसे **यो-हे-हो-वाद, श्रम-परिहरणमूलकतावाद** भी कहा जाता है। इनके प्रतिपादक **'न्वायर' (न्वारे)** नामक भाषाशास्त्री हैं।

➢ इनके अनुसार 'परिश्रम का कार्य करते समय साँस तेजी से बाहर-भीतर आने-जाने,साथ-साथ स्वरतन्त्रियों को विभिन्न रूपों में कम्पित होने एवं तदनुकूल ध्वनियाँ उच्चरित होने से कार्य करने वाले को राहत मिलती है।

➢ उदाहरणार्थ कपड़ा धोते समय धोबी 'हियो' या 'छियो' कहता है और मजदूर आदि 'हो-हो, हूँ-हूँ कहते हैं।

समीक्षा-

1. यह मत भाषा की उत्पत्ति के लिए सर्वथा असन्तोष जनक है।
2. शारीरिक परिश्रम जन्य ये शब्द निरर्थक हैं। भाषा की उत्पत्ति के लिए सार्थक शब्दों की आवश्यकता है।
3. अर्थहीन शब्दों से भाषा की उत्पत्ति नहीं हो सकती। यह मत सबसे निकृष्ट और अग्राह्य है।

7. इंगित-सिद्धान्त

➢ इस सिद्धान्त के प्रवर्तन का श्रेय पालिनेशियन भाषा विद्वान् डॉ. **'राये'** को है। **डार्विन** भी इसके समर्थक हैं।

➢ **प्रो. रिचर्ड** इसे 'मौखिक इंगित सिद्धान्त' कहते हैं।

➢ इस मत के अनुसार 'प्रारम्भ में मानव ने अपनी आङ्गिक चेष्टाओं का ही वाणी के द्वारा अनुकरण किया और भाषा बनी। जैसे- पानी पीने के समय मुँह से 'पा' जैसी ध्वनि हुई, अतः 'पा' का अर्थ 'पीना' हुआ।

समीक्षा-

1. अपने अनुकरण पर शब्द-रचना हास्यास्पद है। दूसरे के अनुकरण पर शब्द रचना मान्य हो सकती है।
2. हाथ, पैर, ओष्ठ आदि के आधार पर शब्द- रचना की कल्पना निर्मूल है।
3. इंगित- सिद्धान्त पर बने शब्दों की संख्या भाषा में बहुत कम है। यह सिद्धान्त भी सारहीन है।

8. सम्पर्क- सिद्धान्त

➢ इस मत के प्रतिपादक **जी. रेवेज़ हैं,** जो मनोविज्ञान के विद्वान् थे।

- इनके मतानुसार 'मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, उसमें पारस्परिक सम्पर्क की प्रवृत्ति जन्मसिद्ध है। प्रारम्भ में भूख आदि की अभिव्यक्ति के लिए मौखिक और साङ्केतिक अभिव्यक्ति का सहारा लिया होगा, उनसे जो ध्वनियाँ निकली वे धीरे-धीरे भाषा बनी।'

समीक्षा-

1. प्रो0 रेवेज़ का यह सिद्धान्त बालमनोविज्ञान, जीव-मनोविज्ञान और आदिम प्राणि-मनोविज्ञान पर आश्रित है एवं तर्कसंगत भी है।
2. कुछ अन्य भाषाशास्त्री भी इस मत को अमान्य नहीं करते किन्तु भाषोत्पत्ति के प्रश्न को अनिर्णीत मानते हैं।

9. सङ्गीत-सिद्धान्त

- इसको **प्रेम-सिद्धान्त, सिंग-सांग थ्योरी,** WOO-WOO थियरी भी कहा जाता है।
- डार्विन, स्पेन्सर एवं येस्पर्सन ने इसे कुछ रूपों में माना था।
- इनके सिद्धान्त के अनुसार, 'मानव के सङ्गीत से भाषा की उत्पत्ति हुई।'

समीक्षा-

1. गुनगुनाने से भाषा की उत्पत्ति होना केवल अनुमान पर आश्रित है, इसका कोई प्रमाण नहीं है।
2. प्रारम्भिक व्यक्ति गुनगुनाता था, इसका भी कोई पुष्ट आधार नहीं है।

   अतः यह सिद्धान्त भी अस्वीकार्य है।

10. प्रतीक-सिद्धान्त

- इस सिद्धान्त में माना जाता है कि 'संयोग से किसी शब्द का किसी अर्थ से सम्बन्ध हो जाता है, और वह शब्द उस अर्थ का प्रतीक हो जाता है।'
- भाषा-विज्ञान में ऐसे शब्दों को 'नर्सरी-शब्द' कहते हैं जैसे- माता, पिता, बाबा आदि।

समीक्षा-

1. प्रतीक सिद्धान्त मूलतः भाषा के प्रारम्भिक शब्दों की व्याख्या करता है। भाषा में 'नर्सरी-शब्द' आये, ये भी सत्य है।
2. यह स्थूल शब्दों की उत्पत्ति बता सकता है, सूक्ष्म अर्थ के बोधक शब्दों की उत्पत्ति बताने में असमर्थ है।

11. समन्वय-सिद्धान्त

- इस सिद्धान्त के प्रवर्तक प्रसिद्ध भाषाशास्त्री **'हेनरी स्वीट'** हैं।
- उन्होंने नये सिद्धान्त की अपेक्षा सर्वसिद्धान्त - संकलन को अधिक उपयुक्त समझा है।
- उनके अनुसार 'यदि सभी सिद्धान्तों में से आवश्यक तत्त्व को एकत्रित कर लिया जाय तो भाषा की उत्पत्ति सम्बन्धी समस्याओं का निराकरण हो सकता है।'

समीक्षा-

1. भाषा की उत्पत्ति समझाने के लिए अन्य कोई एकमत शुद्ध न होने से सबका समन्वय उपयुक्त माना गया।
2. यह सिद्धान्त सामान्यतया निर्विरोध रूप से स्वीकार किया जाता है।

12. प्रतिभा-सिद्धान्त

- प्रतिभा- सिद्धान्त के संस्थापक आचार्य **भर्तृहरि** हैं।
- 'वाक्यपदीय' में भर्तृहरि नें प्रतिभा को विश्व की आत्मा माना है और उसे सर्वशक्ति- सम्पन्न बताया है।
- इस प्रकार भाषा की उत्पत्ति मनुष्य के प्रतिभाओं से हुई है।
- भर्तृहरि, पूर्व-जन्म के संस्कारों को भी भाषोत्पत्ति का कारण मानते हैं।

समीक्षा

1. मनुष्यों में कोई मौलिक उद्भावना या शक्ति नहीं थी। अतः भाषोत्पत्ति सम्बन्धी 'समन्वय-सिद्धान्त'ही सर्वथा उत्कृष्ट है।

संस्कृत भाषा का उद्भव और विकास

- संस्कृत भाषा भारत- यूरोपीय अथवा भारत- जर्मनीय परिवार की प्रमुख भाषाओं में है।
- संस्कृत के मूल स्रोत के सम्बन्ध में चाहे जो भी कल्पनाएं की जायें, किन्तु इसके भाषायी इतिहास का प्रारम्भ इसके प्राचीनतम रूप 'ऋग्वेद' से ही मानना होगा।
- 'अवेस्ता' और 'हित्ती', भाषाओं के दो ऐसे रूप हैं जो कि ऋग्वेद से काफी बाद के होने पर भी वैदिक भाषा के प्राग्वैदिक रूपों की झाँकी प्रस्तुत कर सकते हैं।
- संस्कृत आर्यों की भाषा थी और आर्य का मूल निवास भारत ही है। इस बात को पश्चिमी देश नहीं मानते हैं क्योंकि पूरे विश्व को सभ्य और शिक्षित करने के ठेकेदार सिर्फ मिस्र, यूनान आदि देश ही हो सकते हैं।
- भारोपीय भाषाविज्ञानी संस्कृत के उस मूल रूप की स्थिति एशिया या यूरोप में चाहे जहाँ मानने की बात कहें, किन्तु संस्कृत से भाषा के जिस रूप का बोध होता है उसका जन्म एवं पोषण भारत की इसी भूमि पर हुआ था, इसमें कोई सन्देह नहीं।
- सौभाग्य की बात है कि संस्कृत विश्व की एक ऐसी पुरातन भाषा है, जिसके साहित्य भण्डार में विश्व की प्राचीनतम लिखित सामग्री प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है, जिसकी साहित्यिक भागीरथी का प्रवाह कई हजार वर्षो से निरवच्छिन्न रूप में प्रवाहमान रहा है यद्यपि उसके भाषिक विकास की प्रक्रिया

अवश्य ही आज से लगभग ढाई हजार वर्ष पूर्व एक बिन्दु पर आकर स्थिर-सी हो गयी थी।

- ऋग्वैदिक काल के उपरान्त हमें इसके विकास के विभिन्न स्तरों के रूप अपेक्षाकृत अधिक स्पष्ट रूप में दृष्टिगोचर होने लगते हैं।
- ऋग्वेद तथा अथर्ववेद के मन्त्रों की भाषा संहिताओं तथा ब्राह्मण ग्रन्थों की भाषा, ब्राह्मणों तथा सूत्रों एवं उपनिषदों की भाषा, उपनिषदों तथा महाकाव्यों की भाषा की पारस्परिक तुलना करने पर स्पष्ट हो जाता है कि संस्कृत में, एक जीवित भाषा में कालक्रम से होने वाले परिवर्तनों के समान, उल्लेख्य परिवर्तन घटित हो रहे थे।
- संस्कृत भाषा के विकास स्तर को तीन-स्तरों पर देखा जा सकता है।

  1. वैदिक 2. उत्तरवैदिक 3. लौकिक
- वैदिक के अन्तर्गत संहिताओं तथा ब्राह्मण- ग्रन्थों की भाषा को,उत्तरवैदिक में आरण्यकों, उपनिषदों एवं सूत्र साहित्यों की भाषा को रखा जा सकता है।
- इसके बाद की साहित्यिक एवं शास्त्रीय भाषा को लौकिक के अन्तर्गत रखा जा सकता है।
- लौकिक साहित्य ग्रन्थ 'रामायण' है। रामायण काल से लेकर वर्तमान समय तक संस्कृत का विकास हो रहा है। इस प्रकार संस्कृत भाषा रूपी गङ्गा को वैदिक काल से लेकर वर्तमानकाल तक पहुँचने में अनेक मार्गों का अनुसरण करना पड़ा है।

1.3 भारोपीय परिवार

भारतीय यूरोपीय (भारोपीय) से मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषाओं की सामान्य रूपरेखा-

विश्व भाषाओं के पारिवारिक वर्गीकरण के अनुसार 18 भेद माने गये हैं! इन 18 भाषाओं को चार भूखण्डों में बाँटा गया है।

(क) यूरेशिया (यूरोप-एशिया)
(ख) अफ्रीका
(ग) प्रशान्त महासागरीय भूखण्ड
(घ) अमेरिका भूखण्ड

यूरेशिया भूखण्ड के अन्तर्गत ही भारोपीय परिवार की गणना की जाती है।

विश्व के भाषा परिवारों में भारोपीय परिवार का सबसे अधिक महत्त्व। इसके मुख्य कारण निम्न हैं -

- **प्रयोगाधिक्य -** इस परिवार की भाषाओं के बोलने वालों की संख्या सबसे अधिक है।
- **भौगोलिक व्यापकता -** प्रायः सारे विश्व में इस परिवार की भाषाएं बोली जाती हैं।
- **सांस्कृतिक उत्कर्ष -** इस परिवार के लोग सभ्यता और संस्कृति में विश्व में सबसे अग्रणी हैं।
- **भाषावैज्ञानिक उत्कर्ष -** भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र के अभ्युदय का सर्वाधिक श्रेय इसी परिवार को है। संस्कृत, अंग्रेजी, जर्मन और फ्रेंच में सर्वाधिक भाषाशास्त्रीय चिन्तन हुआ।
- **तुलनात्मक भाषाविज्ञान का जन्मदाता -** भारोपीय परिवार की विभिन्न भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन से ही तुलनात्मक भाषाविज्ञान का जन्म हुआ है।
- **भारोपीय परिवार के विभिन्न नाम**

  भारोपीय परिवार के विभिन्न नाम समय-समय पर सुझाए गए हैं। जिनमें प्रमुख चार नाम है-

  1 इण्डो जर्मनिक या भारत जार्मनिक परिवार

  2 आर्य परिवार

  3 भारोपीय परिवार - यह नाम अत्यन्त प्रचलित हुआ, अतः इसे ही अपनाया गया। यह नाम सर्वप्रथम फ्रेंच विद्वानों ने दिया।

4 भारत हित्ती परिवार-

- **भारोपीय परिवार की शाखाएँ -**
- भारोपीय शब्द भारत + यूरोपीय का मूल रूप है।
- यह Indo-European अनुवाद है।
- इस परिवार में भारतवर्ष से लेकर यूरोप तक फैली हुई भाषाओं का संग्रह है।
- इस परिवार में दस शाखाएँ हैं -

1. भारत-ईरानी (आर्य) (Aryan, Indo- Iranian)
2. बाल्टो स्लाविक (Balto-Slavic,Letto-Slavic)
3. आर्मीनी (Armenian)
4. अल्बानी (Albanian, Illyraian)
5. ग्रीक (Greek, Hellenic)
6. केल्टिक (Keltic)
7. जर्मनिक (ट्यूटानिक) (Germanic, Teutonic)
8. इटालिक (Italic)
9. हिटाइट (Hiltite)
10. तोखारी (To khorian)

- **केन्टुम् और शतम् (सतम्) वर्ग**
- भारोपीय परिवार की भाषाओं को ध्वनि के आधार पर दो भागों में विभक्त किया जाता है-

1. केन्टुम् 2. शतम्

- इस विभाजन का श्रेय **प्रो. अस्कोली** को है।

- सभी भारोपीय भाषाओं को दो भागों में विभक्त किया गया है
- प्रथम चार परिवार शतम् वर्ग में आते हैं और शेष छः परिवार 'केन्टुम्' वर्ग में
- 'सौ' के लिए मूल भारोपीय भाषा का शब्द क्मतोम् (Kmtom) माना जाता है।

मूल भारोपीय शब्द - Kmtom **(क्मतोम् = शतम्)**

शतम् (सतम्) वर्ग	केन्टुम् वर्ग
संस्कृत - शतम्	लैटिन - केन्टुम्
अवेस्ता - सतम्	ग्रीक - हेकटोन
फारसी - सद	केल्टिक - केत्
हिन्दी - सौ	तोखारी - कन्ध
रुसी - स्तो (Sto)	गाथिक - हुन्ड
लिथुआनियन - (स्जिम्तास)	जर्मन - हुन्डर्ट
	फ्रेंच - सं
	इटालियन - केन्तो

- **भारोपीय परिवार-विभाजन**

भारोपीय-परिवार को केन्टुम् और शतम् वर्ग के आधार पर निम्न प्रकार से बाँटा गया है-

शतम् वर्ग	केन्टुम् वर्ग
1. भारत-ईरानी	5. ग्रीक
2. बाल्टो स्लाविक	6. केल्टिक
3. आर्मीनी	7. जार्मनिक
4. अल्बानी	8. इटालिक
	9. हिटाइट
	10. तोखारी

भारोपीय परिवार की विशेषताएँ -

- रचना की दृष्टि से भारोपीय परिवार श्लिष्ट योगात्मक है।
- इस परिवार की मूल भाषाएँ संस्कृत, ग्रीक, लैटिन आदि संयोगात्मक थीं, परन्तु इनसे विकसित आधुनिक भाषाएँ हिन्दी, अंग्रेजी आदि वियोगात्मक हो गई।
- भारोपीय भाषाओं की धातुएँ प्रायः एकाक्षर थीं।
- इन भाषाओं में (संस्कृत में) प्रत्यय दो प्रकार के थे-

1. **कृत् -** जो सीधे धातु से जोड़े जाते थे। इन्हें Primary Suffixes कहते हैं। जैस - भू + त = भूत
2. **तद्धित -** ये शब्दो से जुड़ते हैं। जैसे - भूत + इक = भौतिक इन्हें Secondary Suffixes कहते हैं।

- शब्द या धातु से पद बनाने के लिए दो प्रकार से प्रत्यय लगते थे -

(क) सुप् - (Case-imdicating Suffixes)(शब्दों से)

(ख) तिङ्- (Verbal Suffixes) (धातुओं से)

- पदों का ही वाक्य में प्रयोग होता था।
- पदों को समस्त कर बृहत् पद बनाने की प्रवृत्ति मूल भारोपीय भाषा में थी। वह भारोपीय परिवार में भी रही।
- मूल भारोपीय भाषा में उदात्त स्वर के कारण स्वर भेद (गुण, वृद्धि, दीर्घ) होता था।
- भारोपीय भाषाओं में मूल प्रत्ययों का लोप हो गया और स्वर परिवर्तन से ही अर्थ-परिवर्तन का काम लिया जाने लगा। अंग्रेजी धातुओं में - Drink - Drank - Drunk, संस्कृत में देव > दैव, विधि > वैध, कुमार > कौमार
- भारोपीय भाषा में प्रत्ययों की अधिकता है। मूल भाषा से पृथक् होकर अनेक भाषाएँ विकसित हुईं।
- विश्व भाषा परिवारों में भारोपीय भाषा-परिवार का सबसे अधिक महत्त्व है। भारोपीय परिवार में भी आर्य परिवार या आर्य शाखा का सर्वाधिक महत्त्व है।

शतम् वर्ग

1.भारत ईरानी (आर्य) 2.बाल्टो स्लाविक 3.आर्मीनी 4. अल्बानी

1 आर्य या भारत ईरानी शाखा

- **प्राचीनतम साहित्य -** विश्व का प्राचीनतम ग्रन्थ 'ऋग्वेद' अपने शुद्ध और प्राचीनतम रूप में संस्कृत में उपलब्ध है।
- समस्त वैदिक साहित्य इसी शाखा में प्राप्त है।
- पारसियों का धर्मग्रन्थ अवेस्ता इसी शाखा में प्राप्त है।
- **प्राचीन वर्णमाला एवं ध्वनियाँ -** मूल भारोपीय भाषा की प्राचीन ध्वनियों के निर्धारण में संस्कृत और अवेस्ता का असाधारण योगदान है।
- **प्राचीन संस्कृति एवं सभ्यता -** विश्व की प्राचीनतम संस्कृति और सभ्यता का सर्वांगीण इतिहास संस्कृत और अवेस्ता भाषा के साहित्य से प्राप्त होता है।
- **भाषाशास्त्रीय देन -** भाषाशास्त्र को ध्वनिविज्ञान, पद विज्ञान (व्याकरण), अर्थविज्ञान का मौलिक आधार संस्कृत से ही प्राप्त होता है।

भारतीय आर्यभाषाएँ

कालविभाजन

भारतीय आर्यभाषाओं को काल की दृष्टि से तीन भागों में बाँटा गया है-

1. **प्राचीन भारतीय आर्यभाषाएँ -** 2500ई. पू. से 500ई. पू. तक
2. **मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाएँ -** 500ई.पू. से 1000ई. तक

3. आधुनिक भारतीय आर्यभाषाएँ - 1000 ई. से वर्तमान समय तक

प्राचीन भारतीय आर्यभाषाएँ

➤ विकास क्रम के अनुसार प्राचीन भारतीय आर्यभाषाओं को दो भागों में बाँटा गया है-

1. वैदिक संस्कृत 2. लौकिक संस्कृत

वैदिक संस्कृत -

➤ वैदिक संस्कृत को ही 'वैदिक', 'वैदिकी', 'छन्दस्' तथा 'छान्दस' आदि नामों से भी जाना जाता है।

➤ प्राचीनतम रूप ऋग्वेद में मिलता है।

➤ अन्य वेदों का समय इसके बाद ही माना जाता है।

➤ समस्त प्राचीनतम संस्कृत वाङ्मय वैदिक संस्कृत में मिलता है

➤ वैदिक भाषा की पद रचना श्लिष्ट योगात्मक थी।

➤ धातुरूपों में लेट् लकार का प्रयोग होता था।

➤ वेद में संगीतात्मक स्वर की प्रधानता थी।

लौकिक संस्कृत

➤ संस्कृत का सबसे प्राचीन एवं आदिकाव्य वाल्मीकिरामायण 500 ई.पू. का है।

➤ महाभारत, पुराण, काव्य, नाटक आदि ग्रन्थ 500 ई.पू. से आज तक अविच्छिन्न एवं अविहत गति से अपना गौरव स्थापित किये हुए हैं।

➤ यास्क, पतञ्जलि, कात्यायन, भास, कालिदास आदि के लेखों से यह स्वतः सिद्ध होता है कि ईसा पूर्व तक संस्कृत लोक व्यवहार की भाषा थी।

➤ संस्कृत में ही समस्त प्राचीनज्ञान, विज्ञान, कला, पुराण, काव्य, नाटक आदि है।

➤ संस्कृत ने न केवल भारतीय भाषाओं को अनुप्राणित किया अपितु विश्व भाषाओं मुख्यतया भारोपीय भाषाओं को भी प्रभावित किया।

मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाएँ

➤ मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाओं को तीन भागों में बाँटा गया है -

1.प्राचीन प्राकृत या पालि (500 ई. पू. से 100 ई. तक)

2.मध्यकालीन प्राकृत (100 ई. से 500 ई. तक)

3.परकालीन प्राकृत या अपभ्रंश (500 ई. से 1000ई. तक)

आधुनिक भारतीय आर्यभाषाएँ -

1. पश्चिमी हिन्दी - इसकी पाँच प्रमुख बोलियाँ हैं-

1. खड़ी बोली 2. ब्रजभाषा 3. बाँगरु 4. कन्नौजी 5. बुन्देली

2. राजस्थानी -

➤ इसका विकास शौरसेनी के नागर अपभ्रंश से हुआ है।

➤ पिंगल के अनुकरण पर राजस्थानी में **डिंगल** काव्य की रचना हुई। इसकी चार प्रमुख बोलियाँ हैं - मारवाड़ी, जयपुरी, मालवी, मेवाती।

3. गुजराती -

4. मराठी - 4 बोलियाँ मुख्य है- देशी, कोंकणी नागपुरी, बरारी

5. बिहारी - 3 प्रमुख भाषाएँ हैं- भोजपुरी, मैथिली, मगही

6. बंगाली 7. उड़िया 8. असमी

9. पूर्वी हिन्दी -इसकी तीन बोलियाँ हैं।अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी

10. लहँदा (लहँदी) - लहँदा का अर्थ है पश्चिमी। इसकी चार प्रमुख बोलियाँ हैं-

➤ केन्द्रीय बोली, दक्षिणी (मुलतानी), उत्तरपूर्वी (पोठवारी), उत्तरपश्चिमी (धन्नी)

11. सिन्धी -

➤ इसकी पाँच बोलियाँ हैं- विचौली, सिरैकी, लाड़ी, थरेली, कच्छी

12. पंजाबी

13. पहाड़ी - इसके तीन भाषा वर्ग हैं-

➤ पश्चिमी (30 बोलियाँ)

➤ मध्य (दो 1. गढ़वाली 2. कुमायूँनी)

➤ पूर्वी (नेपाली) यह नेपाल की राजभाषा है।

मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाएँ

➤ प्राचीन प्राकृत या पालि (500 ई.पू. से 100 ई. तक)

प्राचीन प्राकृत या पालि (प्रथम प्राकृत)

➤ तृतीय शताब्दी ई.पू. से प्रथम शती ई. तक के शिलालेख इसके अन्तर्गत आते हैं।

➤ पालि बौद्धग्रन्थ - महावंश, जातक आदि कथाएँ, प्राचीन जैनसूत्रों की भाषा, प्रारम्भिक नाटकों की भाषा प्राकृत रही है।

➤ प्राचीन प्राकृत को प्रथम प्राकृत भी कहते हैं।

प्राकृत की उत्पत्ति संस्कृत से - प्रकृति का अर्थ है-मूलभाषा संस्कृत, उससे उत्पन्न भाषा प्राकृत है।

➤ प्राकृत भाषा के सभी प्राचीन वैयाकरणों ने प्राकृत की उत्पत्ति संस्कृत से मानी है।

➤ प्रकृतिः संस्कृतं तत्र भवं तत आगतं वा प्राकृतम् (हेमचन्द्र)

➤ प्रकृतिः संस्कृतं तत्र भवं प्राकृतमुच्यते (प्राकृतसर्वस्व)

➤ प्रकृतिः संस्कृतं तत्र भवत्वात् प्राकृतं स्मृतम् (प्राकृत चन्द्रिका)

➤ प्राकृतस्य तु स्वयमेव संस्कृतं योनिः (प्राकृत संजीवनी)

➤ नाट्यशास्त्रकार भरतमुनि ने यह कहा है कि संस्कृत भाषा के शब्दों का ही विकृत एवं परिवर्तित रूप प्राकृत भाषा है।

पालि की व्युत्पत्ति -

- डा. मैक्स वेलेसन ने पाटलि (पाटलिपुत्र) से पालि की उत्पत्ति मानी है। पाटलि > पाडलि > पालि
- भिक्षु जगदीश काश्यप ने परियाय (बुद्धोपदेश) शब्द से पालि की उत्पत्ति मानी है।
  परियाय > पलियाय > पालियाय > पालि
- अमरकोश के टीकाकार भानुजी दीक्षित ने 'पालरक्षणे' से पालि शब्द माना है। पाल् + इ = पालि
- आचार्य बुद्धघोष और आचार्य धम्पपाल ने छठी शती ई. ने पालि शब्द का प्रयोग बुद्धवचन या मूल त्रिपिटक के लिये किया है। उससे यह शब्द 'पालि' भाषा के लिए आया है।
- अभिधानप्पदीपिका ने पा धातु से पालि शब्द माना है पा - पालेति रक्खतीति पालि, जो रक्षा करती है या पालन करती है।

पालि की प्रमुख विशेषताएँ

- पालि में वैदिक संस्कृत की 5 स्वर ध्वनियाँ लुप्त हो गई - ऋ , ॠ , ऌ , ऐ, औ।
- पालि में वैदिक संस्कृत के 5 व्यंजन लुप्त हो गए- श, ष, (:) विसर्ग, जिह्वामूलीय, उपध्मानीय
- पालि मे दो नए स्वर आयें - ह्रस्व एँ, ह्रस्व ओ।
- संस्कृत के ऐ > ए, औ > ओ हो गए।
- ड, ढ को ळ, ळह्।
- संधियों में केवल तीन संधियाँ हैं-

1. स्वर सन्धि 2. व्यंजन सन्धि 3. निग्गहीत (अनुस्वार) सन्धि

- पालि में हलन्त शब्द नही हैं। केवल अजन्त ही हैं।
- पालि में द्विवचन नहीं होता है।
- शब्दरूपों में चतुर्थी और षष्ठी के रूप समान होते हैं।
- स्त्री प्रत्यय सात हैं - आ, ई, इनी, नी, आनी, ऊ, ति।
- पालि में 500 से अधिक धातुएँ हैं, 9 गण हैं। अदादिगण और जुहोत्यादि गण नहीं है।
- पालि में लेट् लकार के रूप भी मिलते हैं - हनासि, दहासि
- आत्मनेपद का प्रयोग प्रायः लुप्त हो गया। परस्मैपद शेष रहा
- पालि में तद्भव शब्दों का आधिक्य है। तत्सम और देशज शब्द कम है।

शिलालेखी प्राकृत

- प्राचीन प्राकृत में अशोक के शिलालेखों की प्राकृत भी आती है, अतः इसे **शिलालेखी प्राकृत** भी कहते है।
- शिलालेखी प्राकृत को ही अशोकन प्राकृत, लाट प्राकृत भी कहते हैं।

मध्यकालीन प्राकृत (द्वितीय प्राकृत)

- मध्यकालीन प्राकृत को '**साहित्यिक प्राकृत**' भी कहते हैं।
- सर्वप्रथम भरतमुनि ने प्राकृत भाषाओं के विषय में विचार किया है। उनके मतानुसार 7 मुख्य प्राकृत है और 7 गौण
- **मुख्य प्राकृत -** मागधी, अवन्तिजा, प्राच्या, शौरसेनी, अर्धमागधी, बाहलीक, दाक्षिणात्य (महाराष्ट्री)
- **गौण प्राकृत -** शाबरी, आभीरी, चाण्डाली, सचरी, द्राविड़ी, उद्स्ता, वनेचरी
- प्राचीन प्राकृत वैयाकरण वररुचि ने चार प्राकृत मानी हैं- शौरसेनी, महाराष्ट्री, मागधी, पैशाची। मागधी के दो रूप हो गये (1) मागधी (2) अर्धमागधी

1- शौरसेनी

- इसका क्षेत्र शूरसेन (मथुरा के आस-पास) प्रदेश था।
- इसका विकास पालि कालीन स्थानीय भाषा से हुआ।
- मध्यदेश की भाषा थी।
- नाटकों में सर्वाधिक प्रयोग हुआ।
- स्त्रियों आदि का वार्तालाप शौरसेनी प्राकृत में ही होता था।
- शौरसेनी से वर्तमान **हिन्दी का विकास** हुआ
- राजशेखर कृत **कर्पूरमंजरी का समस्त गद्य भाग शौरसेनी प्राकृत** में है।
- भास, कालिदास आदि के **नाटकों में गद्य शौरसेनी** में ही है।

2 - महाराष्ट्री

- मूलस्थान महाराष्ट्र है। इससे ही **मराठी भाषा का विकास** हुआ।
- प्राकृत में सर्वाधिक साहित्य महाराष्ट्री में है।
- दण्डी ने काव्यादर्श में महाराष्ट्री को सर्वश्रेष्ठ प्राकृत माना है।
- प्राकृत नाटकों में **पद्यरचना महाराष्ट्री** में है।
- महाराष्ट्री प्राकृत के प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं - राजा हाल कृत गाहा सत्तसई (गाथा सप्तशती), प्रवरसेन कृत रावणवहो (सेतुबन्धः), वाक्पति कृत गउडवहो (गौडवधः), जयवल्लभ कृत - वज्जालग्ग, हेमचन्द्राचार्य कृत 'कुमारपालचरित'
- कर्पूरमञ्जरी के पद्य महाराष्ट्री में है।
- भरतमुनि ने दाक्षिणात्य प्राकृत से महाराष्ट्री का निर्देश किया है।

3- मागधी

- यह मगध की भाषा थी।
- प्राचीनतम रूप अश्वघोष के नाटकों में मिलता है।
- लंका में पालि को मागधी कहते हैं।
- कालिदास के नाटकों में तथा शूद्रक के मृच्छकटिक में मागधी का प्रयोग मिलता है।

- भरत के नाट्यशास्त्र के अनुसार अन्तपुरः के नौकर, अश्वपालक आदि की भाषा मागधी थी।
- इसके तीन प्रकार मिलते हैं -

1. शकारी 2. चाण्डाली 3. शाबरी

- मागधी से ही भोजपुरी, मैथिली, बंगला, उड़िया, असमी विकसित हुई।

4- अर्धमागधी

- अर्धमागधी का क्षेत्र मागधी और शौरसेनी के मध्य में है।
- यह कोसल के समीपवर्ती क्षेत्र की भाषा थी।
- इसमें मागधी के गुण अधिक है और साथ ही शौरसेनी के भी, अतः इसे अर्धमागधी कहा जाता है।
- मागधी को **ऋषिभाषा** या **आर्यभाषा** भी कहते हैं।
- भगवान् महावीर के सभी धर्मोपदेश इसी भाषा में हैं।
- अधिकांश **जैन साहित्य** इसी भाषा में है।
- इसमें गद्य और पद्य दोनो प्रकार का साहित्य है।
- आचार्य विश्वनाथ ने साहित्यदर्पण में इसे चेट, राजपुत्र एवं सेठों की भाषा बताया है।
- इसका प्राचीनतम प्रयोग **अश्वघोष के नाटको में** मिलता है।
- **मुद्राराक्षस और प्रबोधचन्द्रोदय में** अर्धमागधी का प्रयोग हुआ है।
- इससे **पूर्वी हिन्दी का विकास** हुआ है।

5 - पैशाची

- इसका क्षेत्र पश्चिमोत्तर भारत एवं अफगानिस्तान का क्षेत्र था।
- पैशाची को **पैशाचिकी, भूतभाषा, भूतभाषित** आदि भी कहते हैं।
- गुणाढ्य की प्रसिद्ध रचना 'बृहत्कथा' पैशाची प्राकृत में ही है।
- वर्तमान समय में इसका साहित्य **'नगण्य'** है।
- इसका विकसित रूप **'लहँदा' भाषा** है।
- हेमचन्द्र कृत-कुमारपालित और काव्यानुशासन में तथा हम्मीरमदमर्दन नाटक में इसका प्रयोग मिलता है।
- राक्षस, पिशाच, निम्नकोटि के पात्र लोहार आदि इसी भाषा का प्रयोग करते थे। (रक्षः पिशाचनीचेषु पैशाची द्वितयं भवेत्)

प्राकृत भाषाओं की सामान्य विशेषताएं -

- प्राकृत श्लिष्ट योगात्मक भाषा है।
- शब्दरूपों और धातुरूपों की संख्या प्राकृत में कम हो गई।
- शब्दरूप केवल तीन या चार प्रकार के रह गए।
- धातु के रूप भी प्रायः एक या दो प्रकार से चलने लगे।
- प्राकृत भाषा संयोगात्मक से वियोगात्मक की ओर अग्रसर हुई।
- प्राकृत भाषा में आत्मनेपद का अभा2व हो गया।
- तद्भव शब्दों की संख्या प्राकृत में अधिक है। तत्सम शब्दों की कम।

अपभ्रंश (परकालीन प्राकृत, तृतीय प्राकृत)

- अपभ्रंश शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग आचार्य व्याडि और पतञ्जलि ने किया है। भर्तृहरि, भामह, दण्डी आदि ने भी अपभ्रंश का उल्लेख किया है।
- अपभ्रंश के सबसे प्राचीन उदाहरण भरतमुनि के नाट्यशास्त्र में मिलते हैं।
- दण्डी के समय से इसका प्रयोग प्रारम्भ हो गया था।
- अपभ्रंश साहित्य की प्रमुख रचनाएँ निम्न हैं-
  हरिषेण कृत - पउमचरिउ
  पुष्पदन्त कृत - महापुराण और जसहर चरिउ
  विद्यापति कृत - कीर्तिलता
  अद्दहमाण कृत - सन्देश-रासक
- अपभ्रंश को देशीभाषा, देसी, अपभ्रष्ट, अवहट्ट भी कहते हैं।
- मार्कण्डेय ने प्राकृत सर्वस्व में तीन अपभ्रंश माने हैं- नागर, उपनागर, ब्राचड।
- नागर गुजरात की अपभ्रंश, ब्राचड सिन्धु की, उपनागर दोनों के मध्य की मानी जाती है।
- सामान्यतया सभी भाषाशास्त्री विद्वानों का मत है कि पाँच प्राकृतों से ही अपभ्रंश का विकास हुआ है।

❑❑

2. संस्कृत- साहित्य के इतिहास का साधारण ज्ञान

2.1 साहित्य समीक्षा के प्रमुख सिद्धान्त

- काव्यशास्त्र का ही एक नाम **'साहित्यशास्त्र'** है आधुनिक युग में अन्य सब नामों की अपेक्षा यह नाम अधिक प्रचलित है।
- राजशेखर ने तो इसे 'साहित्यविद्या' नाम से अभिहित किया है।
- साहित्यशास्त्र का प्रमुख तत्त्व 'आत्मतत्त्व' है। प्राचीन आचार्य इसी आत्मतत्त्व के चिन्तन में सक्रिय रहे हैं और अपने-अपनें चिन्तन के आधार पर अलग-अलग रूपों में अवलोकन करते रहे। इसप्रकार विभिन्न आचार्यों द्वारा काव्य के विभिन्न तत्त्वों का काव्यात्म रूप में दर्शन के कारण छः सम्प्रदायों अथवा सिद्धान्तों का जन्म हुआ। इसप्रकार साहित्यशास्त्र के मुख्यतः छः सिद्धान्त/ सम्प्रदाय बन गये-

  1. रस सम्प्रदाय   2. अलङ्कार सम्प्रदाय
  3. रीति सम्प्रदाय   4. वक्रोक्ति सम्प्रदाय
  5. ध्वनि सम्प्रदाय   6. औचित्य सम्प्रदाय

1. रस-सम्प्रदाय - आचार्य भरत

- इस सम्प्रदाय के प्रथम आचार्य **'भरत'** माने जाते हैं।
- राजशेखर, **नन्दिकेश्वर** को रस का मूल व्याख्याता मानते हैं। किन्तु उनका कोई ग्रन्थ उपलब्ध नहीं है।
- आचार्य भरत की दृष्टि में साहित्य रचना के लिए रस इतना महत्त्वपूर्ण है कि उसके बिना कोई अर्थ ही नहीं प्रवृत्त होता।
- विभाव, अनुभाव और व्यभिचारी भाव ही रस के निष्पादक होते हैं-

  नहि रसादृते कश्चिदर्थः प्रवर्तते।
  विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः॥

  यह रससूत्र ही रससिद्धान्त का प्राणभूत है।
- भरत के रस-सिद्धान्त के इस सूत्र में 'संयोग' और 'निष्पत्ति' शब्दों की व्याख्या में बड़ा मतभेद है। जिसके परिणामस्वरूप अनेक सिद्धान्तों का जन्म हुआ।
- भट्टलोल्लट, शङ्कुक, भट्टनायक और अभिनवगुप्त ही भरत के रससूत्र के प्रमुख व्याख्याकार हैं।
- भट्टलोल्लट का मत **'उत्पत्तिवाद'** है।
- श्रीशङ्कुक का मत **'अनुमितिवाद'** है।
- भट्टनायक का मत **'भुक्तिवाद'** है।
- अभिनवगुप्त का मत **'अभिव्यक्तिवाद'** के नाम से प्रसिद्ध है।
- आचार्य मम्मट भी अभिनवगुप्त के 'अभिव्यक्तिवाद' का समर्थन करते हैं।
- काव्याश्रित रस के सम्बन्ध में प्रथम बार व्याख्या 'अग्निपुराण' में हुई।
- आचार्य भरत आठ रसों को ही स्वीकार करते हैं।

  'अष्टौ नाट्ये रसाः स्मृताः।'
- भरतमुनि ने नाट्यशास्त्र के छठे अध्याय में रस तथा सातवें अध्याय में स्थायीभावों का विस्तार से वर्णन किया है, वही रस सिद्धान्त का आधार है।

  प्रवर्तक- आचार्य भरत

  समर्थक- शारदातनय, शिङ्गभूपाल, भानुदत्त, रूपगोस्वामी, भोजराज, विश्वनाथ, राजशेखर, केशवमिश्र आदि।

2. अलङ्कार-सम्प्रदाय - आचार्य भामह

- रस सम्प्रदाय के बाद दूसरा स्थान अलङ्कार सम्प्रदाय का आता है।
- आचार्य **'भामह'** इस सम्प्रदाय के प्रवर्तक माने जाते हैं।
- अलङ्कार सम्प्रदाय के अनुयायी भी रस की सत्ता मानते हैं, किन्तु उसे प्रधानता नहीं देते।
- उनके मत में काव्य का प्राणभूत जीवनाधायक तत्त्व अलङ्कार ही है।

  'रसवद्दर्शितस्पष्टश्रृङ्गारादिरसं यथा।'-

  भामह (काव्यालङ्कार 3/6)
- अलङ्कार सम्प्रदायवादी, काव्य में अलङ्कारों को ही प्रधान मानते हैं और इसका अन्तर्भाव रसवदलङ्कारों में करते हैं।
- रसवत् प्रेय, ऊर्जस्विन् और समाहित, चार प्रकार के रसवदलङ्कार माने जाते हैं।
- भामह के अतिरिक्त दण्डी भी इन रसवदलङ्कारों के भीतर ही रस का अन्तर्भाव करते हैं।

  'मधुरे रसवद्वाचि वस्तुन्यपि रसस्थितिः।' दण्डी (काव्यादर्श 1/51)
- इस सिद्धान्त की भी व्याख्या अग्निपुराण में मिलती है।
- जयदेव के अनुसार, अलङ्कारविहीन काव्य की कल्पना वैसी ही है जैसे 'उष्णताविहीन अग्नि की कल्पना।'
- सर्वप्रथम भरत ने चार अलङ्कारों (उपमा, रूपक,दीपक, यमक) का उल्लेख किया है।
- अग्निपुराणकार ने 23 अलङ्कारों को स्वीकर किया है।
- भामह ने 38 अलङ्कारों का विवेचन किया है।
- उद्भट 41 अलङ्कार मानते हैं।
- रुद्रट ने 68 अलङ्कारों का निरूपण किया है।
- भोज ने 72 अलङ्कारों को स्वीकार किया है।

- मम्मट 67 अलङ्कारों का उल्लेख करते हैं। 6 शब्दालङ्कार और 61 अर्थालङ्कार।
- रुय्यक और विश्वनाथ ने 78 अलङ्कारों को स्वीकार किया है।
- जयदेव अपने चन्द्रालोक में 100 अलङ्कार मानते हैं।
- अप्पयदीक्षित ने 'कुवलयानन्द' में 120 अलङ्कारों का विवेचन किया है।

  समर्थक- इस सम्प्रदाय के समर्थकों में दण्डी, उद्भट, रुद्रट, जयदेव, अप्पयदीक्षित, पण्डितराज जगन्नाथ, तथा विश्वेश्वर पाण्डेय आदि प्रमुख हैं।

3. रीति सम्प्रदाय '- आचार्य वामन

- कालक्रम में अलङ्कार- सम्प्रदाय के बाद रीति-सम्प्रदाय का स्थान आता है।
- रीति सम्प्रदाय के संस्थापक **आचार्य वामन हैं।**
- वामन ने काव्य में अलङ्कार की प्रधानता के स्थान पर रीति की प्रधानता का प्रतिपादन किया है- **'रीतिरात्मा काव्यस्य'**
- यह आचार्य वामन का सिद्धान्त है, इसीलिए उन्हें रीति-सम्प्रदाय का प्रवर्तक माना जाता है।
- इन्होंने 'रीति' को इस प्रकार बताया है- **'विशिष्टपदरचना रीतिः।'** अर्थात् विशिष्ट पद रचना का नाम 'रीति' है।
- वाक्य में आये 'विशिष्ट' शब्द की व्याख्या- **'विशेषो गुणात्मा'** है।
- इस प्रकार काव्य में माधुर्यादि गुणों का समावेश ही उसकी विशेषता है और यह विशेषता ही 'रीति' है।
- इस सिद्धान्त में 'गुण' और 'रीति' का अत्यन्त घनिष्ठ सम्बन्ध है, इसलिए 'रीति- सम्प्रदाय' को **'गुण-सम्प्रदाय'** के नाम से भी जाना जाता है।
- वामन ने निम्न दो सूत्रों के माध्यम से गुण और अलङ्कार का भेद स्पष्ट किया है, तथा अलङ्कार की अपेक्षा गुण को अधिक महत्त्व दिया है।

  सूत्र-1 **'काव्यशोभायाः कर्तारो धर्माः गुणाः।'** (काव्यालङ्कार सूत्र - 3.2.1)

2. 'तदतिशयहेतवस्त्वलङ्काराः।' (काव्यालङ्कार सूत्र-3.1.2)

- गुण काव्यशोभा के उत्पादक होते हैं तथा अलङ्कार केवल उस शोभा के अभिवर्धक होते हैं।
- अतः काव्य में अलङ्कारों की अपेक्षा गुणों का स्थान अधिक महत्त्वपूर्ण है।
- राजशेखर ने रीति का सर्वप्रथम अधिकारी **'सुवर्णनाभ'** को बताया है, किन्तु 'सुवर्णनाभ' कौन थे? उनकी रचना कौन सी है? इसके बारे में कुछ पता नहीं है।
- 'रीति' का व्यापक अर्थ लेने पर वेदों में भी रीति की झलक दिखलाई देती है।
- रीति का शास्त्रीय विवेचन भरत के 'नाट्यशास्त्र' से प्रारम्भ होता है।
- रीति के चार भेद स्वीकार किये गये हैं- वैदर्भी, गौडी, पाञ्चाली और लाटी।
- रीति एक रचना शैली है जिसके अन्तर्गत रस, गुण, अलङ्कार आदि समाविष्ट हैं।

4. वक्रोक्ति सम्प्रदाय - आचार्य कुन्तक

- कालक्रमानुसार रीति के बाद वक्रोक्ति- सम्प्रदाय आता है।
- वक्रोक्ति सम्प्रदाय के संस्थापक वक्रोक्तिजीवितकार आचार्य **'कुन्तक'** माने जाते हैं।
- आचार्य कुन्तक ने काव्य में रीति की प्रधानता को समाप्त कर 'वक्रोक्ति' की प्रधानता को स्थापित किया।
- यद्यपि काव्य में 'वक्रोक्ति' की महत्ता भामह ने भी स्वीकार किया है-

  सैषा सर्वैव वक्रोक्तिरनयार्थो विभाव्यते।
  यत्नोऽस्यां कविना कार्यः कोऽलङ्कारोऽनया विना॥
  (भामह- काव्यालङ्कार- 2/85)

- दण्डी ने काव्य में 'वक्रोक्ति' का महत्त्व इस प्रकार वर्णित किया है-

  'भिन्नं द्विधा स्वभावोक्तिर्वक्रोक्तिश्चेति वाङ्मयम्'
  (काव्यादर्श- 2/363)

- आचार्य वामन ने भी काव्य में 'वक्रोक्ति' का स्थान माना है- **'सादृश्याल्लक्षणा वक्रोक्तिः'** (काव्यालङ्कार सूत्र- 4.3.8)
- तथापि इन आचार्यों के मत से 'वक्रोक्ति' सामान्य अलङ्कार आदिरूप ही है।
- आचार्य कुन्तक ने वक्रोक्ति को जो गौरव प्रदान किया है, वह गौरव इन आचार्यों ने नहीं दिया है।
- इसलिए 'कुन्तक' ही इस सम्प्रदाय के संस्थापक माने जाते हैं।
- आचार्य कुन्तक ने इस सिद्धान्त के ऊपर भी 'वक्रोक्तिजीवित' नामक विशाल एवं महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ की रचना की है।
- आचार्य कुन्तक ने 'रीति-सम्प्रदाय' को भी परिमार्जित करके अपने यहाँ स्थान दिया है।
- वामन की वैदर्भी आदि रीतियाँ देश भेद के आधार पर मानी जाती थीं, किन्तु कुन्तक ने उनका आधार देश को न मानकर रचनाशैली को माना है और उनके 'रीति' के स्थान पर मार्ग शब्द का प्रयोग किया है।
- आचार्य कुन्तक, वामन की 'वैदर्भी' रीति को 'सुकुमारमार्ग', गौडी रीति को 'विचित्रमार्ग' तथा पाञ्चाली रीति को 'मध्यम मार्ग' कहते हैं।
- कुन्तक के अनुसार वक्रोक्ति छः प्रकार के हैं-

1. वर्ण- विन्यास वक्रता 2. पदपूर्वार्द्ध वक्रता
3. पदोत्तरार्द्ध वक्रता 4. वाक्य वक्रता
5. प्रकरण वक्रता 6. प्रबन्ध वक्रता

➢ अतः उक्ति वैचित्र्य के आधार पर कुन्तक का यह 'वक्रोक्ति सिद्धान्त', अलङ्कार सिद्धान्त की ही एक शाखा है।

5. ध्वनि- सम्प्रदाय - आचार्य आनन्दवर्धन

➢ वक्रोक्ति सम्प्रदाय के बाद ध्वनि- सम्प्रदाय का उदय हुआ।

➢ इस सम्प्रदाय के संस्थापक आचार्य '**आनन्दवर्धन**' माने जाते हैं।

➢ आनन्दवर्धन के मत में 'काव्य की आत्मा ध्वनि है'-

'काव्यस्यात्मा ध्वनिरिति बुधैर्यः समाम्नातपूर्वः।'

➢ सभी सम्प्रदायों में ध्वनि- सम्प्रदाय सबसे प्रबल एवं महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त रहा है।

➢ विद्वानों के अत्यन्त विरोध पर भी ध्वनि- सिद्धान्त वैसे ही प्रफुल्लित रहा है।

➢ **ध्वनि-** सिद्धान्त के विरोधी समूह में वैयाकरण, साहित्यक, वेदान्ती, मीमांसक आदि प्रमुख हैं।

➢ आचार्य मम्मट ने विरोधियों का खण्डन करके ध्वनि- सिद्धान्त की पुनः स्थापना की, इसीलिए मम्मट को '**ध्वनिप्रतिष्ठापक परमाचार्य**' कहा जाता है।

➢ आनन्दवर्धन ने आत्मा का अर्थ, 'तत्त्व' किया है और तत्त्व का अर्थ है, 'जिसके स्वरूप का कभी बाध न हो'

➢ काव्य का वह आत्म स्थानीय अर्थ 'प्रतीयमान' कहलाता है। यही प्रतीयमान अर्थ काव्य की आत्मा है।

➢ इनके अनुसार प्रतीयमान अर्थ वह है जो अङ्गना के प्रसिद्ध अवयवों से भिन्न लावण्य के समान महाकवियों की वाणी में वाच्यार्थ से भिन्न भाषित होता है। सहृदयी जनों को यही अर्थ आनन्दित करता है-

प्रतीयमानं पुनरन्यदेव वस्त्वस्ति वाणीषु महाकवीनाम्।
यत्तत्प्रसिद्धावयवातिरिक्तं विभाति लावण्यमिवाङ्गनासु॥

(ध्वन्यालोक-1/4)

➢ यही प्रतीयमान अर्थ ध्वन्यर्थ या व्यङ्ग्यार्थ है जो तीन प्रकार से होता है-

1. रसादि रूप में 2. अलङ्कार रूप में 3. वस्तु रूप में

'एवं वस्त्वलङ्काररसभेदेन त्रिधा ध्वनिः'

➢ इसमें वस्तुध्वनि और अलङ्कारध्वनि की अपेक्षा रसध्वनि श्रेष्ठ है और यही काव्य की आत्मा है।

➢ आनन्दवर्धन के अनुयायी अभिनवगुप्त भी रसध्वनि को काव्य की आत्मा स्वीकारते हैं। '**सर्वत्र रसध्वनेरेवात्मभावः।**'

समर्थक- इस सिद्धान्त के समर्थक रुय्यक, मम्मट, अभिनवगुप्त और पण्डितराज जगन्नाथ हैं।

6. औचित्य- सम्प्रदाय - आचार्य क्षेमेन्द्र

➢ औचित्य सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य **क्षेमेन्द्र** माने जाते हैं। उन्होंने औचित्य को काव्य का **जीवितत्त्व** कहा है-

'औचित्यं रससिद्धस्य स्थिरं काव्यस्य जीवितम्।'

➢ इसी आधार पर क्षेमेन्द्र को औचित्य सम्प्रदाय का प्रवर्तक माना जाता है किन्तु उनके पहले भी इस पर विचार हो चुका था।

➢ सर्वप्रथम भरत के ' नाट्यशास्त्र' में औचित्य की चर्चा की गयी है।

➢ भरत के पश्चात् भामह ने औचित्य को काव्य का सबसे बड़ा गुण बताया है।

➢ दण्डी ने भी गुण, दोष के विधान में औचित्य और अनौचित्य को कारण स्वीकार किया है।

➢ रुद्रट ने अनौचित्य को सर्वाधिक महत्त्व दिया है। उनके अनुसार रस का उन्मेष, परमरहस्य औचित्य है और अनौचित्य ही रसभङ्ग का प्रधान कारण है।

'अनौचित्यादृते नान्यद् रसभङ्गस्य कारणम्।'

➢ महिमभट्ट ने काव्य में औचित्य को अनिवार्य तत्त्व बताया है।

➢ आचार्य क्षेमेन्द्र औचित्य को परिभाषित करते हुए कहते हैं, ''जो वस्तु जिसके अनुरूप होती है उसे 'उचित' कहते हैं और उचित का जो भाव है, वह औचित्य कहलाता है''-

उचितं प्राहुराचार्याः सदृशं किल यस्य यत्।
उचितस्य च यो भावस्तदौचित्यं प्रचक्षते॥

(औचित्यविचारचर्चा, 7)

➢ यह औचित्य ही रस का जीवितभूत है, उसका प्राण है और काव्य में चमत्कारी तत्त्व हैं।

'औचित्यं रससिद्धस्य स्थिरं काव्यस्य जीवितम्।'

(औचित्यविचारचर्चा)

➢ क्षेमेन्द्र के अनुसार - अलङ्कारों में अलङ्कारत्व तभी होता है जबकि उनका विन्यास उचित स्थान पर होता है और गुणों में गुणत्व तभी होता है जबकि औचित्य से च्युत नहीं होते हैं-

उचितस्थानविन्यासादलङ्कृतिरलङ्कृतिः।
औचित्यादच्युता नित्यं भवन्त्येव गुणा गुणाः॥

(औचित्यविचारचर्चा)

➢ क्षेमेन्द्र ने- 'औचित्यविचारचर्चा' में औचित्य के सत्ताइस (27) भेदों का निरूपण किया है, किन्तु काव्य के प्रत्येक अङ्गों में औचित्य के व्याप्त होने के कारण उसके अनेक भेद हो सकते हैं।

2.2 काव्य

- काव्य शब्द संस्कृत भाषा में बहुत प्राचीन है जिसे कवि के कर्म के रूप में जाना जाता हैं-
  'कवेः कर्म काव्यम् ' (कवि +ण्यत्)
- 'कवि' शब्द 'कु' अथवा 'कव् ' धातु (भ्वादिगण आत्मनेपदी - कवते) से बना है। जिसका अर्थ है-
  ध्वनि करना, विवरण देना, चित्रण करना।
- महाकाव्य साहित्यविधा का उद्भव वैदिकसूक्तों से ही मिलता है जैसे - स्तुतिपरक नाराशंसियाँ, दान- स्तुतियाँ, संवासूक्त आदि द्वारा।
- रामायण और महाभारत जैसे आर्षकाव्य महाकाव्यसाहित्य विधा के भास्कर हैं जिन्होंने परवर्ती काव्यों को विषयवस्तु शैली, भाषा शैली, वर्णनविधि आदि की उपजीव्यता दी।
- वाल्मीकि से कालिदास की रचना तक आने में काव्यकला को कई शताब्दियाँ लगी।
- रामायण, महाभारत के बाद कालिदास की उत्पत्ति तक जो महाकाव्य लिखे गये थे वे केवल नाम मात्र ही शेष हैं। इस काल के कुछ ग्रन्थों के नाम निम्नलिखित हैं
  जाम्बवतीजय या **पातालविजय** (पाणिनि -450 ई॰पू॰)
- 18 सर्गों में श्रीकृष्ण द्वारा पाताल जाकर जाम्बवती के विजय और परिणय की कथा वर्णित है।
- राजशेखर के नाम से जल्हण की सूक्तिमुक्तावली (1247) में उद्धृत-**नमः पाणिनये तस्मै यस्मादाविरभूदिह। आदौ व्याकरणं काव्यमनु जाम्बवतीजयम्॥**
- वररुचि (350ई॰पू॰) ने **'स्वर्गारोहण'** नामक काव्य बनाया था। जिसे पतञ्जलि ने - **वाररुचं काव्यम्** कहा है। समुद्रगुप्त के 'कृष्णचरित' काव्य में इसका उल्लेख है।
- महाभाष्यकार पतञ्जलि -150 ई॰पू॰ में 'महानन्द -काव्य' की रचना की थी।
- समुद्रगुप्त ने कृष्णचरित में इसकी चर्चा की है।
- इसके बाद महाकवि कालिदास का युग प्रारम्भ होता है।
- मनोहारिणी शैली के प्रवर्तक कालिदास।
- इसी शृंखला में महाकवि भारवि, माघ और श्रीहर्ष का नाम उल्लेखनीय है।

काव्य के प्रकार

- काव्य के मुख्यतः दो भेद होते हैं- **श्रव्य और दृश्य**
  काव्य का वर्गीकरण

श्रव्य-

(1) पद्य - 1. महाकाव्य - रघुवंशम् आदि
2. खण्डकाव्य - मेघदूतम् आदि
3. मुक्तककाव्य - नीतिशतकम् आदि

(2) चम्पू - नलचम्पू आदि

(3) कथा - कादम्बरी आदि

(4) आख्यायिका - हर्षचरितम् आदि

दृश्य

रूपक - 10

1. नाटक - अभिज्ञानशाकुन्तलम्
2. प्रकरण - मृच्छकटिकम्
3. भाण - लीलामधुकरम्
4. प्रहसन - धूर्तचरितम्
5. डिम - त्रिपुरदाह
6. व्यायोग - सौगन्धिकाहरणम्
7. समवकार - समुद्रमन्थन
8. वीथी - मालविका
9. अङ्क - शर्मिष्ठा ययाति
10. ईहामृग - कुसुमशेखरविजय

उपरूपक -18

1. नाटिका	2. त्रोटक	3. गोष्ठी
4. सट्टक	5. नाट्यरासक	6. प्रस्थानक
7. उल्लास्य	8. काव्य	9. प्रेंखण
10. रासक	11. संलापक	12. श्रीगदित
13. शिल्पक	14. विलासिका	15. दुर्मल्लिका
16. हल्लीश	17. प्रकरणिका	18. भाणिका

2.3 महाकाव्य

- महाकाव्य को सर्वप्रथम आचार्य **भामह** ने परिभाषित किया।
- भामह के बाद **आचार्य दण्डी** ने काव्यादर्श में महाकाव्य का लक्षण प्रस्तुत किया।
- 'अग्निपुराण' में भी महाकाव्य के लक्षण प्राप्त होते हैं।
- महाकाव्य के विषय में विस्तृत वर्णन **विश्वनाथ** ने साहित्यदर्पण में किया।

आचार्य विश्वनाथ के अनुसार महाकाव्य का लक्षण -

- महाकाव्य सर्गों में विभक्त होता है।
- महाकाव्य का नायक देवता, कुलीन क्षत्रिय, धीरोदात्त आदि गुणों से युक्त हो सकता है अथवा एक वंशज अनेक कुलीन राजा भी नायक हो सकते हैं।
  सर्गबन्धो महाकाव्यं तत्रैको नायकः सुरः।
  सद्वंशः क्षत्रियो वापि धीरोदात्त गुणान्वितः॥

एकवंशभवा भूपाः कुलजा बहवोऽपि वा।

- शृङ्गार वीर और शान्त रस में से कोई एक प्रधान रस होता है और अन्य रस उसके सहायक।
- इसमें सभी नाटक संधियाँ होती हैं।

शृङ्गारवीरशान्तानामेकोऽङ्गीरस इष्यते।
अङ्गानि सर्वेऽपि रसाः सर्वे नाटकसन्धयः।

- महाकाव्य का कथानक ऐतिहासिक अथवा किसी सज्जन व्यक्ति से सम्बद्ध होता है।
- धर्मार्थकाममोक्ष का वर्णन होता है तथा इनमें से किसी एक फल की प्राप्ति का वर्णन होता है।

इतिहासोद्भवं वृत्तमन्यद् वा सज्जनाश्रयम्।
चत्वारस्तस्य वर्गाः स्युस्तेष्वेकं च फलं भवेद्॥

- प्रारम्भ में तीन प्रकार के मङ्गलाचरणों में से एक होता है नमस्कारात्मक, वस्तुनिर्देशात्मक अथवा आशीर्वादात्मक में से एक।
- कहीं कहीं पर दुर्जन निन्दा या सज्जन प्रशंसा भी होती है।
- प्रत्येक सर्ग में एक ही छन्दोबद्ध पद्य होते हैं। सर्गान्त में छन्द परिवर्तन होता है।
- सर्ग संख्या 8 से अधिक होनी चाहिए अथवा न्यूनतम 8 होनी चाहिए।
- सर्ग न बहुत छोटे न बहुत बड़े होने चाहिए।
- कहीं कहीं विविध छन्दों से युक्त सर्ग भी होते हैं।
- महाकाव्य में सन्ध्या, सूर्योदय, चन्द्रोदय, वन विहार, नगर, मार्ग, जलक्रीड़ा, वन, सागर, संयोग, वियोग, अन्धकार दिन, प्रातः, शिकार, पर्वत, ऋतु, ऋषि, युद्ध, विजय विवाह, पुत्र जन्मोत्सव आदि विषयों का अवसरानुकूल वर्णन होना चाहिए।
- महाकाव्य का नामकरण वर्णनीय चरित्र के नाम से या कवि के नाम से अथवा किसी दूसरे के नाम से होना चाहिए।
- सर्ग का नाम सर्ग में वर्णनीय कथा के नाम से होना चाहिए।
- लक्ष्य ग्रन्थों को ध्यान में रखकर ये लक्षण बने हैं।

महाकाव्यों का शैलीगत विकास

- संस्कृत महाकाव्यों का विकास दो पृथक् मार्गों से हुआ है - 1.सुकुमारमार्ग 2. विचित्रमार्ग

(1) सुकुमार मार्ग

- आरम्भ में महाकाव्य सुकुमार मार्गी थे।
- सुकुमारमार्ग को **रसमयी पद्धति** भी कहते हैं।
- प्रसादगुणपूर्ण शैली में निरूपित मार्ग।
- वाल्मीकि, व्यास, कालिदास, अश्वघोष आदि कवियों की यही पद्धति है।
- रस और ध्वनि को काव्य की आत्मा मानकर अलंकारों का समुचित प्रयोग होता है।

(2) विचित्रमार्ग

- विचित्रमार्ग के रूप में पाण्डित्यपूर्ण शैली संस्कृत महाकाव्यों में मिलती है।
- शास्त्रीय वैदुष्यपूर्ण भाषा से युक्त महाकाव्य को अलंकार पद्धति या **विचित्रमार्ग** कहा गया।
- इस मार्ग में आनुषङ्गिक वर्णनों की प्रधानता।
- कविगण द्वारा वैदुष्य (विद्वता) का प्रदर्शन।
- विचित्रमार्ग के प्रवर्तक **भारवि** थे।
- भारवि का अनुसरण माघ ने किया।
- दोनों महाकवियों ने मूलकथा को बीच में छोड़कर प्रसक्तानुप्रसक्त वर्णनों में अपने को बाँध लिया।
- इस मार्ग में भाषा और विषय दोनों क्षेत्रों में विशेषता रहती है।
- इस पद्धति में चित्रकाव्य तक कवि पहुँच जाते हैं।
- श्लेषालंकार के प्रयोग से यह शैली दुरुह हो जाती है।
- ओज गुण को प्रमुख स्थान दिया।
- विचित्रमार्गी कवि कथानक की चिन्ता नहीं करते। भारवि ने अल्प कथानक को वर्णनों से भरकर 18 सर्गों का महाकाव्य बना दिया।
- जबकि सुकुमारमार्गी कालिदास ने रघुवंश के 19 सर्गों में अनेक पीढ़ियों के बड़े कथानक को समेट दिया।
- बाद के कवियों के लिए **वाल्मीकि की रसमयी पद्धति** तथा **भारवि की अलंकृत पद्धति** विद्यमान थी।
- बाद के कवियों ने अपनी रुचि के अनुसार दोनों में से एक को अपनाया।
- श्रीहर्ष ने दोनों के समन्वय का सफल प्रयास किया।

2.4 नाट्य साहित्य

- साहित्य के सभी प्रकारों में रूपक या नाट्य श्रेष्ठ माना गया है। इसकी रचना को कवित्व की अन्तिम सीमा कहा जाता है- **'नाटकान्तं कवित्वम्।'**
- रूपक में गद्य-पद्य दोनों का मिश्रण तो रहता ही है, इसे सुनने के अतिरिक्त देखा जाता है। श्रव्य की अपेक्षा 'दृश्य' का अधिक सघन प्रभाव होता है।
- भरत ने नाट्यशास्त्र (6/31) में कहा है कि इस नाट्य-संसार में सब कुछ रसमय होता है, रस के बिना यहाँ कुछ भी प्रवृत्त नहीं होता- **'न हि रसादृते कश्चिदप्यर्थः प्रवर्तते।'** कोई

व्यक्ति किसी भी रुचि का क्यों न हो, उसे अपना अनुकूल विषय नाट्य-जगत् में अवश्य मिल जायेगा। इसीलिए कालिदास ने इसकी प्रशंसा में कहा है-

नाट्यं भिन्नरुचेर्जनस्य बहुधाप्येकं समाराधनम्।

(मालविकाग्निमित्रम्- 1/4)

- काव्य को संस्कृत काव्यशास्त्रियों ने दृश्य और श्रव्य के रूप में दो वर्गों में रखा है। दृश्यकाव्य के दो भेद हैं- रूपक तथा उपरूपक। रूपक दस तथा उपरूपक अठारह प्रकार के होते हैं। रूपकों का एक प्रमुख भेद 'नाटक' है जो अपने अर्थ का विस्तार करके सामान्यतः आधुनिक भारतीय भाषाओं में नाट्यमात्र या दृश्यकाव्य मात्र (Drama) का अर्थ देता है।
- धनञ्जय ने नाट्य,रूप और रूपक-इन तीन शब्दों के प्रयोग के हेतुओं का निरूपण किया है जो वस्तुतः एकार्थक हैं।
- विविध पात्रों की अवस्थाओं का चतुर्विध अभिनय (आङ्गिक,वाचिक,सात्त्विक तथा आहार्य) के द्वारा जब नट अनुकरण करता है तो इसे **'नाट्य'** कहते हैं।

नाटक

- नाटक का कथानक प्रसिद्ध (इतिहास या पुराण में निर्दिष्ट) होता है, उसका नायक विख्यात वंश में उत्पन्न राजर्षि या राजा रहता है, उसे धीरोदात्त श्रेणी का होना चाहिए। कभी-कभी वीर रस या शृङ्गार रस के अनुरूप वह धीरोद्धत या धीरललित भी हो सकता है किन्तु धीरप्रशान्त नहीं। श्रीकृष्ण जैसे दिव्यादिव्य नायक भी होते हैं।
- नाटक का मुख्य रस शृङ्गार या वीर होता है **(एक एव भवेदङ्गी शृङ्गारो वीर एव वा)**। अन्य सभी रसों का यथावसर प्रयोग किया जाता है।
- नाटक में पाँच से लेकर दस अङ्क तक रखे जाते हैं। उसमें कथानक का स्वाभाविक विकास दिखाने के लिए पाँच अर्थप्रकृतियाँ (बीज, बिन्दु, पताका, प्रकरी और कार्य), पाँच अवस्थाएँ (आरम्भ, यत्न, प्राप्त्याशा, नियताप्ति और फलागम) तथा इनके योग से होने वाली पाँच सन्धियाँ (मुख, प्रतिमुख, गर्भ, विमर्श और निर्वहण) यथासाध्य रखी जाती हैं।
- जिस नाटक में इन सब के प्रयोग के साथ दस अङ्क हों उसे 'महानाटक' कहते हैं। **बालरामायण, हनुमन्नाटक** आदि महानाटक हैं।
- नाटक की अन्तिम सन्धि में 'अद्भुत रस' का प्रयोग हो इससे रोचकता आती है **(कार्यो निर्वहणेऽद्भुतः)**
- नाटक की रचना गोपुच्छाग्रवत् होनी चाहिए अर्थात् आरम्भ और अन्त सूक्ष्म(पतला) हो, मध्यभाग स्थूल (दीर्घ) हो।
- क्रमशः कार्यों का संक्षिप्त उपसंहार होना चाहिए। नाटक को काव्यमात्र में श्रेष्ठ कहा गया है-

  'काव्येषु नाटकं रम्यम, नाटकान्तं कवित्वम्।'
- भास, कालिदास, भवभूति शूद्रक आदि के नाटक संस्कृत-जगत् में विख्यात हैं।

प्रकरण

- इसका कथानक कविकल्पित होता है। प्रायः लोककथाओं से कथानक लेकर इसकी रचना की जाती है।
- इसका नायक धीरप्रशान्त कोटि का मन्त्री, ब्राह्मण या वणिक् में से कोई एक होता है **(अमात्य-विप्र-वणिजामेकं कुर्याच्च नायकम्** -दशरूपक 3/39)। मृच्छकटिक में ब्राह्मण, मालतीमाधव में अमात्य तथा पुष्पदूतिका में वैश्य नायक है। इसमें नायिका दो प्रकार की होती है-कुलीना और वेश्या (गणिका)। किसी प्रकरण में कोई एक ही नायिका रहती है, (जैसे-मालतीमाधव में) तो किसी में दोनों प्रकार की नायिकाएं होती है (जैसे- मृच्छकटिक में)।
- धूर्त,जुआरी,विट,चेट आदि अनेक पात्रों से युक्त प्रकरण **'संकीर्ण'** कहलाता है। नाट्यदर्पण (2/68) में नायिका के आधार पर प्रकरण के इक्कीस भेद कहे गये हैं। रस की दृष्टि से इसमें शृङ्गाररस प्रधान होता है।

3.भाण

- इसमें कोई अत्यन्त चतुर तथा बुद्धिमान् विट अपने या दूसरे के अनुभव के आधार पर धूर्त के चरित का वर्णन करता है। यह एक अङ्क तथा एक ही पात्र का रूपक है। वह पात्र विट ही रहता है जो आकाशभाषित के रूप में स्वयं प्रश्न-उत्तर (उक्ति-प्रत्युक्ति) का प्रयोग करता है।
- इसमें मुख और निर्वहण सन्धियाँ रहती हैं, अन्य सन्धियाँ नहीं।

प्रहसन

- यह हास्यरस-प्रधान रूपक होता है, जिसमें कथानक कल्पित रहता है। इसमें धर्म का पाखण्ड करने वाले (जैन-बौद्ध) साधुओं, केवल जाति से ब्राह्मण कहलाने वाले धूर्तों एवं सेवक-सेविकाओं का चरित्र दिखाया जाता है।
- प्रहसन में वेशभूषा तथा भाषा की विकृति से भी हास्योत्पादन होता है। भाण के समान इसमें भी दो सन्धियों (मुख एवं निर्वहण) एवं 10 लास्याङ्गों का प्रयोग होता है। विश्वनाथ ने इसमें एक या दो अङ्क माने हैं।
- प्रहसन के तीन भेद होते हैं-शुद्ध, विकृत और संकीर्ण।

डिम

- इसका कथानक प्रसिद्ध होता है। नाट्य की कैशिकी वृत्ति

वर्जित है, शेष तीनों वृत्तियाँ (भारती, सात्त्वती, आरभटी) प्रयुक्त होती हैं।

- इसमें नायक देवता, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस आदि होते हैं जो मानवेतर हैं, भूत, प्रेत, पिशाच आदि पात्रों का भी इसमें समावेश होता है। उद्धत कोटि के 16 पात्र इसमें रहते हैं। इसका प्रधान रस रौद्र होता है। माया, इन्द्रजाल, युद्ध,भगदड़ आदि के दृश्यों से यह भरा होता है।
- विमर्श सन्धि का प्रयोग नहीं होता। इसमें चार अङ्क रहते हैं।
- भरत ने '**त्रिपुरदाह**' नामक डिम का उल्लेख किया है।

व्यायोग

- इसका कथानक इतिहास-प्रसिद्ध होता है जो किसी विख्यात उद्धत व्यक्ति (भीम, दुर्योधन आदि) पर आश्रित रहता है।
- इसमें गर्भ एवं विमर्श नामक सन्धियाँ नहीं होती हैं। रसों की दीप्ति डिम के समान होती है।
- इसकी कथावस्तु एक दिन की घटनाओं से सम्बद्ध होती है।
- इसमें एक ही अंक रहता है तथा पुरुष-पात्रों की संख्या अधिक होती है।भास का '**मध्यमव्यायोग**' इसका मुख्य उदाहरण है।

समवकार

- इसका इतिवृत्त इतिहास-पुराण में प्रसिद्ध होता है जिसमें देवताओं और दैत्यों की कथा होती है। कैशिकी को छोड़कर अन्य वृत्तियाँ एवं विमर्श को छोड़कर अन्य सन्धियाँ होती हैं। इसमें तीन अङ्क रहते हैं जिनमें तीन बार कपट, तीन बार धर्म-अर्थ-काम का शृङ्गार एवं तीन बार पात्रों में भगदड़ दिखायी जाती है।
- इसके पात्र देवता और दानव होते हैं जिनकी संख्या 12 होती है, सभी वीररस से भरे रहते हैं और सब को पृथक्-पृथक् फल मिलता है।
- 'बिन्दु' नामक अर्थप्रकृति एवं 'प्रवेशक' नामक अर्थोपक्षेपक का इसमें प्रयोग नहीं किया जाता।
- नाट्यशास्त्र में '**समुद्रमन्थन**' नामक समवकार के अभिनय का उल्लेख है। भास के 'पञ्चरात्र' में भी कुछ लक्षण मिलते हैं।

वीथी

- यह शृङ्गाररस-युक्त काङ्क्षी रूपक है। इसके कई लक्षण भाण के समान हैं। जैसे-केवल दो सन्धियाँ (मुख और निर्वहण) होना, शृङ्गाररस का सूच्य होना।

अङ्क

- इसे संशय-निवारणार्थ '**उत्सृष्टिकाङ्क**' भी कहते हैं क्योंकि रूपकों के खण्ड भी 'अङ्क' होते हैं। इस रूपक-भेद में कथानक इतिहास-प्रसिद्ध होता है, किन्तु कवि उसमें यथेष्ट परिवर्तन भी करता है। भाण के समान सन्धि (मुख और निर्वहण) भारती वृत्ति भाग तथा अङ्क केवल एक होते हैं।
- इसके नायक और अन्य पात्र साधारण होते हैं। इसमें करुणरस की प्रधानता होती है। अतः स्त्रियों का रोदन होना चाहिए।
- पात्रों में वाग्युद्ध एवं जय-पराजय की योजना होती है।
- कुछ आचार्यों ने इसमें एक से लेकर तीन अङ्कों तक का विधान किया है।

ईहामृग

- इसका कथानक प्रख्यात और कल्पित का मिश्रित रूप होता है। इसमें चार अङ्क तथा तीन सन्धियाँ होती हैं(गर्भ और विमर्श सन्धियाँ नहीं होती)

उपरूपक

- विश्वनाथ ने 18 उपरूपकों का यह क्रम रखा है-
  1. नाटिका 2. त्रोटक 3. गोष्ठी 4. सट्टक 5. नाट्यरासक 6. प्रस्थानक 7. उल्लास्य 8. काव्य 9.प्रेंखण 10.रासक 11. संलापक 12.श्रीगदित 13. शिल्पक 14.विलासिका 15. दुर्मल्लिका 16. प्रकरणिका 17. हल्लीश और 18. भाणिका

नाटिका

- नाटिका में चार अङ्क होते हैं।
- स्त्री-पात्रों का बाहुल्य एवं शृङ्गाररस की प्रधानता इसकी विशिष्टता है।
- इसका नायक धीरललित श्रेणी का कोई प्रसिद्ध राजा होता है।
- शृङ्गाररस के कारण कैशिकी वृत्ति एवं तदनुकूल गीत,नृत्य, वाद्य, हास्य आदि इसमें दिखाये जाते हैं।
- इसमें दो नायिकाएँ होती हैं-देवी (बड़ी रानी) तथा मुग्धा कन्या।
- उदयन को नायक बनाकर हर्ष ने '**प्रियदर्शिका**' और '**रत्नावली**' नामक नाटिकाओं की रचना द्वारा इस विधा का प्रयोग किया है।

सट्टक

- सट्टक भी नाटिका के समान होता है।
- इसमें सम्पूर्ण पाठ प्राकृत में होता है।
- प्रवेशक-विष्कम्भक का प्रयोग नहीं किया जाता है।
- अद्भुत रस का प्राचुर्य होता है।
- अङ्कों को 'जवनिकान्तर' कहते हैं।
- राजशेखर की '**कर्पूरमञ्जरी**' सट्टक है।

त्रोटक

- तोटक या त्रोटक में सात,आठ, नव या पाँच अङ्क रहते हैं।
- प्रधानरस शृङ्गार होता है।

- कालिदास का **'विक्रमोर्वशीम्'** त्रोटक है।

नाट्योत्पत्ति

- संस्कृत दृश्यकाव्य का उद्भव कब और किस प्रकार से हुआ, इस प्रश्न का निश्चित समाधान करना कठिन है। फिर भी कुछ सिद्धान्तों का परिचय तो दिया ही जा सकता है।

भरत का मत

- नाट्य विज्ञान पर सर्वप्रथम ग्रन्थ 'नाट्यशास्त्र' ही है जिसका काल 100 ई॰ पू॰ से 300 ई॰ के बीच माना जाता है।
- भरत का मत 'नाट्यशास्त्र' में मिलता है कि सभी देवताओं ने मिलकर ब्रह्मा जी से प्रार्थना की कि हमें ऐसे मनोरंजन का साधन प्रदान करें जो दृश्य और श्रव्य दोनों हो और जिसे सभी वर्णों के लोग ग्रहण कर सकें, ब्रह्मा ने इस प्रार्थना पर चारों वेदों से सार भाग लेकर 'नाट्यवेद' के रूप में पञ्चम वेद का निर्माण किया (**नाट्यवेदं ततश्चक्रे चतुर्वेदाङ्गसम्भवम्** 1/16) उन्होंने ऋग्वेद से पाठ्य (संवाद,कथनोपकथन), सामवेद से संगीत, यजुर्वेद से अभिनय और अथर्ववेद से रस-तत्त्व लेकर 'नाट्यवेद' की रचना की।

संवाद-सूक्तों से नाट्य की उत्पत्ति

- मैक्समूलर, सिल्वाँलेवी,फॉन श्रोएदर, हर्टल आदि यूरोपीय विद्वानों ने यह सिद्धान्त दिया कि ऋग्वेद के कतिपय संवाद-सूक्त ही नाटकों के प्राचीनतम रूप हैं।
- इन संवाद-सूक्तों में इन्द्र- मरुत् संवाद(ऋ0 1/165,170), अगस्त्य-लोपामुद्रा संवाद (ऋ0 1/179), विश्वामित्र-नदी संवाद (3/33), वसिष्ठ-सुदास संवाद (ऋ0 7/83), यम-यमी संवाद (ऋ0 10/10), इन्द्र-इन्द्राणी-वृषाकपि संवाद (ऋ 10/86), पुरूरवा-उर्वशी संवाद(10/95) तथा सरमा-पणि संवाद(10/108) प्रमुख है।

यूनानी रूपकों से उत्पत्ति

- वेबर तथा विन्डिश ने संस्कृत रूपकों का उद्भव यूनानी रूपकों से सिद्ध किया है।
- जर्मनी के ही विद्वान् पिशेल ने इस मत का प्रबल खण्डन किया है।

पुत्तलिका-नृत्य-सिद्धान्त

- प्रो. पिशेल ने यह विचार दिया है कि प्राचीन भारत में कठपुतलियों का नृत्य दिखाया जाता था। उसे ही सजीव रूप देने के लिए मानवों को मंच पर प्रस्तुत करके नाटकों का अभिनय प्रारम्भ हुआ।

मृतात्म-श्राद्ध-सिद्धान्त (वीर-पूजा)

- डॉ. रिजवे ने यह मत रखा था कि अपने मृत पूर्वजों के प्रति श्रद्धा प्रदर्शित करने के लिए जिस प्रकार यूनानी दुःखान्त रूपकों का उद्भव हुआ था, उसी प्रकार भारत में भी अपने दिवंगत वीर पुरुषों के प्रति आदर-भाव दिखाने के लिए नाटक अभिनीत होते थे।
- रामलीला और कृष्णलीला इसी प्रवृत्ति के पोषक दृष्टान्त हैं।

उत्सव-सिद्धान्त

- यूरोप के कुछ विद्वानों ने अपने यहाँ होने वाले मे-पोल-नृत्य को संस्कृत रूपकों का भी प्रथम रूप कहा है।

छाया-नाटक-सिद्धान्त

- जर्मन विद्वान् ल्यूडर्स तथा स्टेन कोनो का मत है कि छाया -नाटकों में जो छाया-चित्रों का प्रदर्शन होता है, वही संस्कृत रूपकों के मूल रूप रहे होंगे।

संस्कृत नाट्य की विशिष्टताएँ-

- भारतीय रूपक मनोरंजन-प्रधान या आनन्दपरक होते हैं।
- भरत ने इसकी व्याख्या की कि दुःखी, श्रान्त, शोकाकुल एवं तपःखिन्न लोगों को सही समय पर विश्रान्ति प्रदान करने वाला यह 'नाट्य' है-

दुःखार्तानां श्रमार्तानां शोकार्तानां तपस्विनाम्।
विश्रान्तिजननं काले नाट्यमेतद् भविष्यति॥

(ना.शा. 1/114)

- संस्कृत रूपकों में 'दुःखान्त' की व्यवस्था नहीं है।
- यहाँ दस प्रकार के रूपक और अठारह प्रकार के उपरूपक होते हैं।
- इनमें 'नाटक' बहुत लोकप्रिय हैं।
- प्रकरण,प्रहसन,भाण,नाटिका, सट्टक आदि भी बहुत संख्या में लिखे गये हैं। इस प्रकार संस्कृत दृश्य काव्य का क्षेत्र व्यापक है।
- नाट्य-भेदों में कथानक प्रसिद्ध या कल्पित भी होता है।
- संस्कृत रूपकों में कथानक का विकास कुछ सिद्धान्तों पर आश्रित होता है। कथानक को अर्थप्रकृतियों, अवस्थाओं और सन्धियों में विभक्त किया जाता है।
- पात्रों की व्यवस्था भी रूपकों के विभाजन का आधार है। मुख्य पात्र नायक और नायिका हैं। जिनके भेदोपभेद माने गये हैं। नायकों को धीरोदात्त, धीरोद्धत, धीरप्रशान्त और धीरललित के रूप में चार प्रकार का माना गया है।
- संस्कृत रूपकों का पारस्परिक भेद रस प्रयोग के कारण भी है। नाटकों में शृङ्गार, वीर या शान्त-रस को मुख्य (अङ्गी) रस के रूप में रखा जाता है
- भवभूति ने करुणरस को प्रधान स्थान दिया है, अन्य सभी रसों का यथोचित निवेश होता है।

- नाट्यशास्त्रियों ने जीवन की कुछ क्रियाओं का मञ्चन की दृष्टि से वर्जन किया है। अनुचित, असभ्य और अशुभ दृश्य मञ्च पर नहीं दिखाये जाते। जैसे-युद्ध, मृत्यु, निद्रा, सम्भोग, शाप, चुम्बन, भोजन आदि।
- भाषा प्रयोग का विधान संस्कृत रूपकों की महत्त्वपूर्ण विशिष्टता है। भरत ने ही विधान किया था कि उच्च और मध्य वर्ग के पात्रों की भाषा संस्कृत होगी। प्राकृत में भी क्षेत्रीय प्रभेदों के विधान की दृष्टि से सामान्यतः महाराष्ट्री ,शौरसेनी, मागधी और अर्धमागधी प्राकृतों का प्रयोग किया गया है।
- रूपक भी धर्म के उपकरणों का यथेष्ट उपयोग करते हैं जैसे नान्दी या प्रस्तावना में देवस्तुति और भरतवाक्य में आशीर्वाद देना।
- पाश्चात्त्य नाट्य-विज्ञान में स्वीकृत अन्वितित्रय संस्कृत रूपकों में मान्य नहीं है।
- संस्कृत रूपकों में रसोद्भावन की दृष्टि से उचित स्थानों पर पद्य-प्रयोग किया जाता है।
- कथनोपकथन का मुख्य रूप तो गद्य ही रहता है किन्तु कुछ आवश्यक स्थलों में रोचकता, प्रकृति-वर्णन, नीति-शिक्षा, सुभाषित, विस्तृत घटनाओं का संक्षेपण आदि उद्देश्यों से पद्यों का भी प्रयोग होता है।
- विदूषक का प्रयोग संस्कृत रूपकों में हास्य-व्यंग्य के निवेश के लिए तो होता ही है,वह कथानक का भी एक अङ्ग होता है। वह कथा-प्रवाह को आगे बढ़ाता है।
- शुद्ध हास्य की दृष्टि से 'प्रहसन' और 'भाण' नामक रूपक-भेद संस्कृत में होते हैं जिसमें समाज की विसंगतियों पर व्यंग्य होता है।
- संस्कृतभाषा के रूपकों के प्रारम्भ में प्रस्तावना होती है। जिसमें कवि-परिचय के साथ नाटक के अभिनय के अवसर का भी संकेत रहता है।
- नान्दीपाठ से नाटक का प्रारम्भ एवं भरतवाक्य से समाप्ति, अङ्कों की योजना, बीच-बीच में विष्कम्भक, प्रवेशक आदि देना ये सब रचना-प्रक्रिया के मुख्य अङ्ग हैं।
- बीच में मञ्च से पात्रों का निर्गम,प्रवेश,स्वागत-भाषण, जनान्तिक भाषण आदि संकेत नाटकों के अभिनय और मञ्चन को सुविधायुक्त कर देते हैं।

2.5 गद्य साहित्य

- 'गद्य' शब्द गद्-धातु (व्यक्तायां वाचि) से यत् प्रत्यय लगकर बना है जिसका अर्थ है मानव की अभिव्यक्ति की मौलिक प्रक्रिया।
- दण्डी ने काव्यादर्श में 'गद्यकाव्य' की परिभाषा देकर इसे आख्यायिका और कथा के रूप में विभाजित किया है।
  'अपादः पदसन्तानो गद्यमाख्यायिका कथा।' (1/23)
- गद्यकाव्य इतना कठिन और विरल हो गया कि आठवीं शताब्दी ई0 में एक उक्ति चल पड़ी-**'गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति'** अर्थात् गद्यकाव्य लिखना कवियों की कड़ी परीक्षा है।
- गद्य का प्रथम रूप हमें यजुर्वेद की संहिताओं में मिलता है।
- यजुर्वेद की परिभाषा ही दी गयी है- **'अनियताक्षरावसानं यजुः'** तथा **'गद्यात्मकं यजुः।'**
- कृष्ण-यजुर्वेद की तैत्तिरीय, काठक और मैत्रायणी संहिताएँ अधिकांशतः गद्यात्मक हैं।
- ब्राह्मण और आरण्यक (जो पूर्णतः गद्य में ही हैं) पतञ्जलि का महाभाष्य, शबरस्वामी का शाबरभाष्य (मीमांसा-दर्शन पर),शंकराचार्य का शारीरकभाष्य (ब्रह्मसूत्र पर) इत्यादि उत्कृष्ट शास्त्रीय गद्य के रूप हैं।
- आचार्य शंकर की गद्यशैली प्रसन्न-गम्भीर है,इसका परिमाण भी प्रचुर है क्योंकि दस उपनिषदों, गीता तथा ब्रह्मसूत्र पर उन्होंने भाष्य लिखे हैं।
- साहित्यिक गद्य के प्रयोग का अनुमान कात्यायन और पतञ्जलि के द्वारा दी गयी सूचनाओं से होता है।
- पतञ्जलि ने तो तीन आख्यायिकाओं के नाम भी दिये हैं- **वासवदत्ता, सुमनोत्तरा** तथा **भैमरथी**।
- साहित्यिक गद्य का स्पष्ट उदाहरण अभिलेखों में प्राप्त होता है। इस दृष्टि से रुद्रदामन का गिरिनार अभिलेख 150ई0) तथा हरिषेणकृत समुद्रगुप्त-प्रशस्ति (प्रयाग स्तम्भलेख 360 ई0) विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।
- समुद्रगुप्त की विजय-यात्राओं और व्यक्तिगत गुणों का वर्णन प्रयाग-प्रशस्ति में हुआ है। इस प्रशस्ति के लेखक हरिषेण हैं।
- साहित्यिक गद्य का विकासशील रूप **दण्डी, सुबन्धु** या **बाण** की रचनाओं में प्राप्त होता है।

गद्यकाव्य के भेद

- संस्कृत गद्यकाव्य के दो मुख्य भेद माने गये हैं-कथा और आख्यायिका
- आख्यायिका ऐतिहासिक विषयों पर एवं कथा पूर्णतः काल्पनिक विषयों पर आश्रित होती है।
- बाणभट्ट की गद्य-रचनाओं में 'हर्षचरित' आख्यायिका तथा 'कादम्बरी' कथा के रूप में प्रसिद्ध हुई।
- कथा में कथावस्तु कविकल्पित होती है।
- आख्यायिका में ऐतिहासिक होती है।

- कथा के आरम्भ में पद्यों के द्वारा सज्जनों की प्रशंसा, दुष्टों की निन्दा तथा कवि के वंश का वर्णन होता है।
- कथा का विभाजन नहीं होता, आख्यायिका उच्छ्वासों या निःश्वासों में विभक्त होती है।
- उच्छ्वासों के आरम्भ में भावी घटना का परोक्ष निर्देश करने वाले पद्य भी होते हैं।
- कथा में मुख्य कथानक को लाने के लिए दूसरी कथा से आरम्भ किया जाता है।
- आख्यायिका में कवि अपना वृत्तान्त देकर मुख्य कथा को आरम्भ करता है। इन दोनों में समानता के तथ्य भी बहुत हैं। जैसे- 1. दोनों की रचना संस्कृत गद्य में होती है। 2. गद्य की शैली दोनों में समान रहती है। 3. रसों और भावों का समान रूप से प्रयोग होता है। 4. नगर,वन,सरोवर,राजा,राजसभा,मृगया प्रेम आदि का समान रूप से वर्णन दोनों में होता है

गद्य के प्रकार

समास के प्रयोग तथा वृत्तभाग के निवेश की दृष्टि से गद्य के चार प्रकार माने गये हैं-

1. मुक्तक 2. वृत्तगन्धि
3. उत्कलिकाप्राय 4. चूर्णक

- समास से रहित गद्य-रचना को मुक्तक कहते हैं।
- जहाँ गद्य में छन्द के अंश आ जाएँ उसे वृत्तगन्धि कहते हैं।
- लम्बे समासों से युक्त गद्य उत्कलिकाप्राय कहलाता है तथा अल्प समासों से युक्त गद्य को चूर्णक कहा जाता है।

2.6 गीतिकाव्य

- गीतिकाव्य का उद्‌गम ऋग्वेद की ऋचाओं से माना जाता है।
- अग्नि, इन्द्र, विष्णु आदि देवों के प्रति ऋषियों द्वारा स्तुतियाँ वेदों में ही की गयी हैं।
- इन्द्र के प्रति एक ऋचा में कहा गया है-

तुञ्जे- तुञ्जे य उत्तरे, स्तोमा इन्द्रस्य वज्रिणः।
न विन्धे अस्य सुष्टुतिम्॥ (ऋ0 1.7.7)
(अर्थात् विविध वस्तुओं का दान करने वाले अन्य देवों के लिए जो स्तोत्र है, मैं इन्द्र की स्तुति के लिए उपयुक्त स्तोत्र नहीं मानता)

- प्रजापति की स्तुति में हिरण्यगर्भ सूक्त (ऋ0 -10.12.1) उत्कृष्ट गीतिकाव्य है जिसके प्रत्येक मन्त्र के अन्त में आया है- **'कस्मै देवाय हविषा विधेम।'**
- इन्द्र के कई स्तोत्रों में उनके वीरकर्मों का वर्णन है जिससे ओजस्विता का संचार होता है जैसे-

यः पृथिवीं व्यथमानामदृंहद्,
यः पर्वतान् प्रकुपिताँ अरम्णात्।
यो अन्तरिक्षं विममे वरीयो,
यो द्यामस्तम्नात्स जनास इन्द्रः। (ऋ0- 2.12.2)

- ऋग्वेद में ही प्रभात काल की देवी उषा का वर्णन उसके सौन्दर्यपक्ष को विशेष रूप से अङ्कित करके किया गया है। **'जायेव पत्य उशती सुवासा उषा हस्रेव नि रिणीते अप्सः।'** (ऋ0-1.124.7)
- इसाप्रकार अथर्ववेद में भूमि की स्तुति में गीतिकाव्य का विन्यास है।
- पृथ्वी देवी के प्रति कृतज्ञता की अभिव्यक्ति 63 मन्त्रों में अथर्वा ऋषि ने की है।
- सामवेद का सङ्गीत पक्ष गीतिकाव्य के अनन्यगुण को विशेष रूप से धारण करता है।
- इसलिए वैदिक युग ही संस्कृत गीतिकाव्य के उद्भव के लिए ठोस धरातल देता है।
- रामायण का उदय गीतिकाव्य के रूप में ही हुआ है। इसमें विरह-वर्णन, देवस्तुति आदि गीतितत्त्व को ही स्पष्ट करता है।
- महाभारत में प्राप्त होने वाली स्तुतियाँ भी गीतिकाव्य के रूप में स्वीकृत हैं।
- गीता के 11 वें अध्याय में भगवान् श्रीकृष्ण का विराट् रूप वर्णन प्रकृष्टस्तोत्र काव्य है।
- भागवतपुराण, विष्णु तथा नारदपुराणादि में उपास्य देवों की स्तुतियाँ मिलती हैं।
- अध्यात्म रामायण में राम की ब्रह्म के रूप में स्तुति वर्णित है।
- लौकिक साहित्य में कालिदास से गीतिकाव्य का प्रारम्भ होता है। अतः कालिदास **संस्कृत गीतिकाव्य के प्रवर्तक** हैं।
- **गीतिकाव्य के दो भेद हैं-**

1. शृङ्गारिक गीतिकाव्य
2. आध्यात्मिक या नैतिक गीतिकाव्य

1. शृङ्गारिक गीतिकाव्य

- शृङ्गार मूलक संस्कृत गीतिकाव्यों का वर्ण्य विषय जीवन का भौतिक सुख है जिसमें स्त्रियों के सौन्दर्य, हाव-भाव, विलास आदि का वर्णन करते हुए उनके प्रति पुरुष के आकर्षण का चित्रण हुआ है।
- कुछ प्रमुख गीतिकाव्यों का परिचय यहाँ दिया जा रहा है-

1. ऋतुसंहार

- ऋतुसंहार संस्कृत वाङ्मय का प्रथम गीतिकाव्य है।
- यह कालिदास की प्रामाणिक रचना के रूप में छः सर्गों में निबद्ध है, जिसमें ग्रीष्म से वसन्त तक के छहों ऋतुओं का शृङ्गारिक वर्णन है।

- इसमें 144 पद्य हैं।

2. मेघदूत

2. मेघदूत कालिदास की प्रौढ़ एवं परिष्कृत गीति रचना है।

- यह **मन्दाक्रान्ता छन्द** में रचित एवं **दो खण्डों** में विभाजित है।
- टीकाकार मल्लिनाथ ने मेघदूत के 121 पद्यों की व्याख्या की है, किन्तु 6 श्लोक को प्रक्षिप्त मानकर 115 श्लोकों को प्रामाणिक माना है।
- इसमें यक्ष- यक्षिणी की प्रणय कथा का वर्णन है।

3. गाथा-सप्तशती

- यह **'हालकवि'** द्वारा रचित, **सात सौ मुक्तक पद्यों** की प्राकृत रचना है।
- इसका प्राकृत नाम- **'गाहासत्तसई'** है।

4. भर्तृहरि के शतकत्रय

- **भर्तृहरि** ने तीन शतकों की रचना की है जो गीतिकाव्य के अन्तर्गत वर्णित हैं-

1. नीतिशतक- (111 पद्य)
2. शृङ्गारशतक- (103 पद्य)
3. वैराग्यशतक- (111 पद्य)

5. अमरुकशतक

- इसके रचयिता **'अमरुक'** हैं। यह मुक्तक काव्य है।
- इसके पद्यों की संख्या 90 से 115 तक मिलती है।

6. भल्लट शतक

- यह अन्योक्ति पूर्ण नीतिमूलक पद्यों का संग्रह है।
- यह कश्मीरी कवि **'भल्लट'** की रचना है।

7. गीतगोविन्द

- **'गीतगोविन्द'** संस्कृतभाषा का श्रेष्ठ गीतिकाव्य है।
- इसके रचनाकार **'जयदेव'** हैं।
- इसमें 12 सर्ग तथा 24 प्रबन्ध हैं।

8. भामिनीविलास

- यह पण्डितराज जगन्नाथ के स्फुट पद्यों का संग्रह है।
- यह चार भागों (विलासों) में विभक्त है।

2. स्तोत्रकाव्य या धार्मिक गीतिकाव्य

- स्तोत्रकाव्य में भक्ति तथा वैराग्य दोनों विषयों का ग्रहण होता है।
- कुछ प्रमुख स्तोत्रकाव्य निम्नलिखित हैं-

1. पुष्पदन्त का शिवमहिम्न स्तोत्र

- मुख्यतः शिखरिणी छन्द में रचित शिव की महिमा का वर्णन है।

2. मयूरभट्ट का सूर्यशतक

- स्रग्धरा छन्द का प्रथम स्तोत्रकाव्य है।
- 100 पद्यों में सूर्य महिमा वर्णित है।

3. बाणभट्ट का चण्डीशतक

- इसमें भगवती दुर्गा की स्तुति है।
- इसमें भी स्रग्धरा छन्द के 100 पद्य हैं।

अन्य स्तोत्र ग्रन्थ

आनन्दलहरी, मुकुन्दमाला, वरदराजस्तव, नारायणीय, मूकपञ्चशती, सौन्दर्यलहरी, शिवताण्डवस्तोत्र आदि।

2.7 संग्रह-ग्रन्थ

संस्कृत साहित्य के इतिहास में हमें दो प्रकार के संग्रह ग्रन्थों का वर्णन प्राप्त होता है-

संग्रह-ग्रन्थ
- सुभाषित या सूक्ति-संग्रह
- कथा-संग्रह
  - लोककथा
  - नीतिकथा

उद्भव और विकास

- कथा का बीज वैदिक वाङ्मय में विस्तृत रूप से मिलता है।
- पुरुरवा-उर्वशी, सरमा-पणि आदि संवाद सूक्तों में तात्कालिक कथाओं को संवादों में प्रस्तुत किया गया है।
- 'बृहद्देवता' में अनेक देवताओं की कथाएं हैं।
- उपनिषदों में भी जीव- जन्तुओं की कथाएं कुछ विशिष्ट उद्देश्य से दी गयी हैं। जैसे- दो हंसों के वार्तालाप ।
- महाभारत तथा पुराण- साहित्य तो कथाओं का अक्षय- कोश है।
- बौद्ध जातक कथाएं पालि साहित्य में प्रसिद्ध हैं।
- जैनों ने भी अपने कथा साहित्य का पर्याप्त विकास किया था।
- हरिषेण का **'बृहत्कथाकोश'** जैन सिद्धान्त का प्रतिपादन करता है।
- इसप्रकार कथा का सम्पूर्ण विकास ईसापूर्व में ही हो चुका था।

लोक कथाएँ

- संस्कृत का दुर्भाग्य है कि लोक कथाएँ मुख्यतः पैशाची भाषा में लिखित **'गुणाढ्य'** की **बृहत्कथा** (बड्डकहा) पर आश्रित हैं।'

बृहत्कथा

- लोक कथाओं का प्राचीनतम संग्रह 'गुणाढ्य' की बृहत्कथा में किया गया था।
- बृहत्कथा की भूमिका से पता चलता है कि पहले इसमें सात लाख श्लोक थे किन्तु बाद में केवल एक लाख ही बचे।
- वर्तमान समय में बृहत्कथा उपलब्ध नहीं है।
- महाभारत की भाँति बृहत्कथा भी उपजीव्य ग्रन्थ है।

- बृहत्कथा के उपजीवी ग्रन्थ निम्नलिखित हैं-

1. **बृहत्कथाश्लोकसंग्रह**

- नेपाल के **बुधस्वामी** इसके लेखक हैं।
- बृहत्कथा की नेपाली वाचना का एकमात्र प्रतिनिधि ग्रन्थ यही है।
- इसके 28 सर्गों में 4539 श्लोक हैं किन्तु यह ग्रन्थ अपूर्ण है।

2. **बृहत्कथामञ्जरी**

- यह **क्षेमेन्द्र** कृत ग्रन्थ है, जो बृहत्कथा का ही संक्षिप्त रूप है, इसमें कथाओं का संग्रह है।
- इसमें 19 अध्याय और 7500 श्लोक हैं।

3. **कथासरित्सागर**

- इसकी रचना **सोमदेव** ने किया है। यह ग्रन्थ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और विश्वविख्यात है।
- 'यथा नाम तथा गुण' के अनुसार यह वस्तुतः कथाओं का समुद्र है।
- यह 18 लम्भकों तथा 124 तरङ्गों में विभाजित है।
- इसमें 21388 (लगभग बाइस हजार) श्लोक हैं।

4. **वेतालपञ्चविंशति**

- इसमें भी कथाओं का संकलन है। वेताल और विक्रम से सम्बद्ध 25 शिक्षाप्रद एवं रोचक कथाओं का संग्रह है।
- पञ्चतन्त्र के समान यह भी विश्वसाहित्य बन गया है।
- हिन्दी में इसे **वैतालपचीसी** कहते हैं।

5. **सिंहासनद्वात्रिंशिका**

- इसे '**द्वात्रिंशत्पुत्तलिका**' या '**विक्रमचरित**' भी कहा गया है।
- इसमें बत्तीस कथाओं के माध्यम से विक्रमादित्य के गुणों का वर्णन किया गया है।
- दक्षिण भारतीय इसे '**विक्रमार्कचरित**' के नाम से जानते हैं।

6. **शुकसप्तति**

- यह सत्तर कथाओं का रोचक संग्रह- ग्रन्थ है।
- यह भी विश्व- साहित्य में गणनीय है।

अन्य कथा-संग्रह ग्रन्थ

शिवदास- **कथार्णव** (35 कथाएं)
विद्यापति- **पुरुष-परीक्षा** (44 कथाएं)
श्रीवीर- **कथा-कौतुक**
बल्लालसेन- **भोजप्रबन्ध**

नीतिकथाएँ

- नीतिकथाएं हमें नैतिक उपदेश देती हैं।
- इन कथाओं का उपयोग मनुष्य के व्यक्तित्व को सुधारने के लिए किया जाता है।
- भारतीय नीतिकथाएँ विश्वभर में अपना स्थान बना चुकी हैं।

1. **पञ्चतन्त्र**

- यह **विष्णुशर्मा** द्वारा रचित नीतिकथाओं का संग्रह है।
- मूल रूप से यह विलुप्त है।
- इसे अर्थशास्त्र का सार भी कहा जाता है।
- वर्तमान पञ्चतन्त्र में कुल 75 कथाओं का संकलन है, पद्यों की संख्या प्रायः 1100 है।
- पञ्चतन्त्र का मुख्य भाग गद्यात्मक है।
- यह भी विश्व साहित्य की श्रेणी में आता है। इसके 250 संस्करण विश्व की 50 भाषाओं में प्रकाशित हो चुके हैं।

2. **हितोपदेश**

- पञ्चतन्त्र पर आश्रित नीतिकथाओं में 'हितोपदेश' सर्वाधिक प्रचलित एवं महत्त्वपूर्ण है।
- इसकी रचना **नारायण पण्डित** ने की।
- हितोपदेश चार भागों में विभक्त है, इसमें 39 कथाएं हैं।
- प्रत्येक भाग की एक मुख्य कथा को जोड़ने पर कुल 43 कथाएं हैं।
- इसके पद्यों की संख्या 726 है।

अन्यनीति कथाएँ

बौद्ध तथा जैन कवियों ने अनेक नीतिकथाएं संस्कृत में लिखी हैं जिनमें-
आर्यशूर - **जातकमाला** (34जातक कथाएँ)
सिद्धर्षि (जैन)- **उपमितिभवप्रपञ्चकथा**
हेमविजयगणि- **कथारत्नाकर** (256 कथाएँ)

2. **सुभाषित-संग्रह या सूक्ति-संग्रह**

- चमत्कारी संस्कृत के सूक्तियों के लेखन एवं संग्रह का प्रयास प्राचीनकाल से होता रहा है।
- इन संग्रहों में मुक्तक पद्यों तथा प्रबन्ध-काव्यों के रमणीय पद्यों का भी संकलन बहुधा मूलकवि के नाम के साथ हुआ है।
- कुछ सूक्ति संग्रहों का परिचय यहाँ दिया जा रहा है-

1. **कवीन्द्रवचनसमुच्चय**

- यह कवि '**विद्याकर**' की कृति है। इसे '**सुभाषितरत्नकोष**' भी कहा जाता है।
- यह संस्कृत का प्राचीनतम सूक्ति-संग्रह है।
- इस संग्रह का विभाजन 50 व्रज्याओं में है।

2. **सदुक्तिकर्णामृत**

- यह '**श्रीधरदास**' की रचना है। यह संग्रह पाँच प्रवाहों में विभक्त है।
- पुनः '**प्रवाह**' वीचियों में विभक्त है। प्रत्येक वीचि में पाँच-पाँच पद्य हैं।
- पूरे संग्रह में 476 वीचियाँ एवं 2380 पद्य हैं।

3. **सूक्तिमुक्तावली**

- यह '**जल्हण**' द्वारा सङ्कलित है। इसे '**सुभाषितमुक्तावली**' भी कहते हैं।

- इसमें 133 खण्डों में विभाजित 2790 पद्य सङ्कलित हैं।

4. शार्ङ्गधर पद्धति

- यह **'शार्ङ्गधर'** कवि की कृति है। यह भाग स्वतन्त्र रूप में प्रयाग से प्रकाशित है।
- इसमें 163 परिच्छेद तथा 6300 पद्य थे किन्तु प्रकाशित संस्करण में परिच्छेद उतने ही हैं। केवल पद्य 4689 हो गये।

5. सुभाषितावली

- इसके सङ्कलनकर्ता **'वल्लभदेव'** हैं।
- इस सूक्ति संग्रह में 101 पद्धतियों में 3527 पद्य सङ्कलित हैं।

6. पद्यावली- रूपगोस्वामी (386 पद्य)

7. सूक्तिमुक्तावली- सोमप्रभाचार्य

8. सुभाषित-नीवी- वेदान्त देशिक

9. सुभाषितरत्न-सन्दोह- अमितगति

10. सुभाषित- सुधानिधि तथा **पुरुषार्थसुधानिधि-** सायणाचार्य

- सूक्ति ग्रन्थों में **'सुभाषितरत्नभाण्डागार'** सबसे बड़ा है। इसमें 10000 (दस हजार) से अधिक पद्य हैं।

काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ एवं ग्रन्थकार

ग्रन्थ	ग्रन्थकार	काल
1. नाट्यशास्त्र	आचार्य भरत	ई.पू. द्वितीय शताब्दी
2. काव्यालङ्कार	भामह	500 ई.
3. काव्यादर्श	दण्डी	सातवीं शताब्दी
4. काव्यालङ्कारसारसंग्रह	उद्भट	अष्टमशताब्दी का उत्तरार्द्ध
5. काव्यालङ्कार सूत्र	वामन	800-850 ई. लगभग
6. काव्यालङ्कार	रुद्रट	नवम शताब्दी का पूर्वार्द्ध
7. ध्वन्यालोक	आनन्दवर्धन	नवम शताब्दी का उत्तरार्द्ध
8. काव्यमीमांसा	राजशेखर	दशम शताब्दी
9. अभिधावृत्तमात्रिका	मुकुलभट्ट	दशम शताब्दी का पूर्वार्द्ध
10. काव्यकौतुक	भट्टतौत	दशम शताब्दी का मध्य
11. दशरूपक	धनञ्जय और धनिक	दशम शताब्दी का उत्तरार्द्ध
12. (i) अभिनवभारती ('नाट्यशास्त्र' की टीका)	अभिनवगुप्त	एकादश शताब्दी
(ii) ध्वन्यालोकलोचन ('ध्वन्यालोक' की टीका)	अभिनवगुप्त	
(ii) 'काव्यकौतुकविवरण ('काव्यकौतुक' का विवरण)	अभिनवगुप्त	
13. वक्रोक्तिजीवितम्	कुन्तक	एकादश शताब्दी का पूर्वार्द्ध
14. व्यक्तिविवेक	महिमभट्ट	एकादश शताब्दी का मध्य
15. (i) सरस्वतीकण्ठाभरण	भोजराज	एकादशशताब्दी 1050 ई. लगभग
(ii) शृङ्गारप्रकाश	भोजराज	
16. (i) औचित्यविचारचर्चा	क्षेमेन्द्र	एकादशशताब्दी का उत्तरार्द्ध
(ii) कविकण्ठाभरण	क्षेमेन्द्र	
17. नाटकलक्षणरत्नकोष	सागरनन्दी	एकादश शताब्दी
18. काव्यप्रकाश	मम्मट	1050 ई. (एकादश शताब्दी का उत्तरार्द्ध)
19. अलङ्कारसर्वस्व	रुय्यक	द्वादशशताब्दी
20. वाग्भटालङ्कार	वाग्भट्ट	बारहवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध
21. काव्यानुशासन	हेमचन्द्र	बारहवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध
22. नाट्यदर्पण	रामचन्द्र गुणचन्द्र	बारहवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध
23. भावप्रकाशन	शारदातनय	तेरहवीं शताब्दी
24. चन्द्रालोक	पीयूषवर्ष जयदेव	तेरहवीं शताब्दी का मध्यभाग
25. साहित्यदर्पण	विश्वनाथ कविराज	14वीं शताब्दी
26. एकावली	विद्याधर	1285 ई. से 1325 ई. के मध्य
27. (i) कुवलयानन्द	अप्पयदीक्षित	षोडशशताब्दी
(ii) चित्रमीमांसा	अप्पयदीक्षित	
(iii) वृत्तवार्तिक	अप्पयदीक्षित	
28. रसगङ्गाधर	पण्डितराज जगन्नाथ	17वीं शताब्दी का मध्यभाग

1. कुमारसम्भवम्	कालिदास	17 (अन्यमत 8)
2. रघुवंशम्	19	कालिदास
3. बुद्धचरितम्	28	अश्वघोष
4. सौन्दरनन्द	18	अश्वघोष
5. किरातार्जुनीयम्	18	भारवि
6. शिशुपालवधम्	20	माघ

7. नैषधीयचरितम्	22	श्रीहर्ष
8. भट्टिकाव्य (रावणवधम्)	22	भट्टि
9. जानकीहरणम्	20 से 25 सर्ग (प्राप्त 10-15 सर्ग)	कुमारदास
10. हरविजयम्	50 सर्ग	रत्नाकर (सबसे बड़ा महाकाव्य)
11. धर्मशर्माभ्युदय	21 सर्ग	हरिश्चन्द्र
12. राघवपाण्डवीयम्	13 सर्ग (माधवभट्ट)	कविराज

कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ

रचना	लेखक
1. जाम्बवतीविजयम् (पातालविजयम्)	पाणिनि
2. स्वर्गारोहणम्	कात्यायन (वररुचि)
3. महानन्दकाव्य	पतञ्जलि
4. प्रयागप्रशस्ति	हरिषेण
5. सेतुबन्ध	प्रवरसेन
6. हयग्रीववध	भर्तृमेण्ठ
7. गउडवहो	वाक्पति
8. रामचरित	अभिनन्द
9. नवसाहसाङ्कचरित	पद्मगुप्त
10. पारिजातहरणम्	कविकर्णपूर
11. नरनारायणानन्द	वस्तुपाल
12. रघुनाथचरित	वामनभट्टबाण
13. सेतुकाव्य	मातृगुप्त
14. कादम्बरीसार	अभिनन्द (काश्मीरी कवि)
15. रामायणमञ्जरी	क्षेमेन्द्र (काश्मीरी)
16. भारतमञ्जरी	क्षेमेन्द्र (काश्मीरी कवि)
17. विक्रमाङ्कदेवचरित	बिल्हण (काश्मीरी)
18. श्रीकण्ठचरितम्	मंखक (काश्मीरी)
19. राजतरङ्गिणी	कल्हण (काश्मीरी)
20. जातकमाला	आर्यशूर (बौद्ध कवि)
21. गुरुगोविन्दसिंह महाकाव्यम्	डॉ. सत्यव्रतशास्त्री
22. सीताचरितम्	डॉ. रेवाप्रसाद द्विवेदी
23. जानकीजीवनम्	डॉ. अभिराज राजेन्द्र मिश्र

संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख नाट्यग्रन्थ

ग्रन्थ	अङ्क	लेखक
1. प्रतिज्ञायौगन्धरायण	4	भास
2. स्वप्नवासवदत्तम्	6	भास
3. ऊरुभङ्गम्	एकाङ्की	भास
4. दूतवाक्यम्	एकाङ्की	भास
5. पञ्चरात्रम्	3	भास
6. बालचरितम्	5	भास
7. दूतघटोत्कचम्	एकाङ्की	भास
8. कर्णभारम्	एकाङ्की	भास
9. मध्यमव्यायोगः	एकाङ्की	भास
10. प्रतिमानाटकम्	7	भास
11. अभिषेकनाटकम्	6	भास
12. अविमारकम्	6	भास
13. चारुदत्तम्	4	भास
14. मृच्छकटिकम् (प्रकरण)	10	शूद्रक (शिमुक)
15. मालविकाग्निमित्रम्	5	कालिदास
16. विक्रमोर्वशीयम् (त्रोटक)	5	कालिदास
17. अभिज्ञानशाकुन्तलम्	7	कालिदास
18. मुद्राराक्षसम्	7	विशाखदत्त
19. प्रियदर्शिका (नाटिका)	4	हर्ष (हर्षवर्धन)
20. रत्नावली (नाटिका)	4	हर्ष (हर्षवर्धन)
21. नागानन्द	5	हर्ष (हर्षवर्धन)
22. वेणीसंहारम्	6	भट्टनारायण
23. मालतीमाधवम् (प्रकरण)	10	भवभूति
24. महावीरचरितम्	7	भवभूति
25. उत्तररामचरितम्	7	भवभूति
26. शारिपुत्रप्रकरण् (प्रकरण)	9	अश्वघोष
27. अनर्घराघवम्	7	मुरारि
28. बालरामायणम् (महानाटक)	10	राजशेखर
29. बालभारत (प्रचण्डपाण्डव)	2	राजशेखर
30. विद्धशालभञ्जिका (नाटिका)	4	राजशेखर
31. कर्पूरमञ्जरी (सट्टक)	4	राजशेखर
32. कुन्दमाला	6	दिङ्नाग
33. प्रबोधचन्द्रोदय	6	कृष्णमिश्र
34. प्रसन्नराघवम्	7	जयदेव

कुछ अन्य नाट्यग्रन्थ

नाट्यग्रन्थ	लेखक
1. आश्चर्यचूडामणि	शक्तिभद्र
2. रामाभ्युदय	यशोवर्मा

3. महानाटक	हनुमान्
4. हनुमन्नाटक	दामोदर मिश्र
5. रुक्मिणीहरणम्	वत्सराज
6. त्रिपुरदाह	वत्सराज
7. समुद्रमन्थन	वत्सराज
8. सौगन्धिकाहरणम्	विश्वनाथ
9. सामवतम्	अम्बिकादत्तव्यास
10. दूताङ्गद (छायानाटक)	सुभट
11. सुभद्रापरिणय (छायानाटक)	व्यासरामदेव
12. पार्वतीपरिणय	बाणभट्ट

संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख गद्यकाव्य

गद्यरचना	लेखक
1. दशकुमारचरितम्	दण्डी
2. अवन्तिसुन्दरीकथा	दण्डी
3. वासवदत्ता (कथा)	सुबन्धु
4. कादम्बरी (कथा)	बाणभट्ट
5. हर्षचरितम् (आख्यायिका)	बाणभट्ट
6. मुकुटताडितक	बाणभट्ट
7. मन्दारमञ्जरी	विश्वेश्वर पाण्डेय
8. शिवराजविजयम्	अम्बिकादत्तव्यास
(ऐतिहासिक उपन्यास)	
9. प्रबन्धमञ्जरी	हृषीकेश भट्टाचार्य
10. कथापञ्चकम्	पण्डिता क्षमाराव
11. ग्रामज्योतिः	पण्डिता क्षमाराव
12. कथामुक्तावलिः	पण्डिता क्षमाराव
13. कौमुदीकथाकल्लोलिनी	डॉ. रामशरणत्रिपाठी
14. तिलकमञ्जरी	धनपाल
15. गद्यचिन्तामणि	वादीभसिंह
16. वेमभूपालचरितम्	वामनभट्ट बाण
17. द्वासुपर्णा	डॉ. रामजी उपाध्याय
18. गद्यरामायणम्	वरददेशिक
19. गाँधीचरितम्	चारुदेवशास्त्री
20. रामचरितम्	देवविजयगणी

संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख गीतिकाव्य

गीतिकाव्यम्	लेखक
1. ऋतुसंहारम्	कालिदास
2. मेघदूतम्	कालिदास
3. नीतिशतकम्	भर्तृहरि
4. शृङ्गारशतकम्	भर्तृहरि
5. वैराग्यशतकम्	भर्तृहरि
6. अमरुशतकम्	अमरुक
7. गीतगोविन्दम्	जयदेव
8. गङ्गालहरी/पीयूषलहरी	पण्डितराज जगन्नाथ
9. अमृतलहरी	पण्डितराज जगन्नाथ
10. सुधालहरी	पण्डितराज जगन्नाथ
11. लक्ष्मीलहरी	पण्डितराज जगन्नाथ
12. करुणालहरी	पण्डितराज जगन्नाथ
13. आसफविलास	पण्डितराज जगन्नाथ
14. जगदाभरणम्	पण्डितराज जगन्नाथ
15. प्राणाभरणम्	पण्डितराज जगन्नाथ
16. यमुनावर्णनम्	पण्डितराज जगन्नाथ
17. भामिनीविलास (गीतिकाव्य)	पण्डितराज जगन्नाथ
18. गाथासप्तशती	हाल
19. चौरपञ्चाशिका	बिल्हण
20. आर्यासप्तशती	गोवर्धनाचार्य
21. चाणक्यशतकम्	चाणक्य
22. घटकर्परकाव्यम्	घटकर्पर
23. नीतिसार	घटकर्पर
24. चण्डीशतकम्	बाणभट्ट
25. सूर्यशतकम्	मयूरभट्ट
26. भल्लटशतकम्	भल्लट
27. वक्रोक्तिपञ्चाशिका	रत्नाकर
28. देवीशतकम्	आनन्दवर्धन
29. कुट्टिनीमतम्	दामोदरगुप्त
30. बल्लालशतकम्	बल्लाल
31. चारुचर्या	क्षेमेन्द्र
32. सेव्यसेवकोपदेश	क्षेमेन्द्र
33. समयमातृका	क्षेमेन्द्र
34. कथाविलास	क्षेमेन्द्र
35. दर्पदलन	क्षेमेन्द्र
36. पवनदूत	धोयी
37. नेमिदूतम्	विक्रमकवि
38. शुकसन्देश	लक्ष्मीदास
39. भृङ्गसन्देश	वासुदेव
40. हंसदूतम्	रूपगोस्वामी
41. चन्द्रदूतम्	विमलकीर्ति

संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख स्तोत्रकाव्यम्

1. शिवताण्डवस्तोत्रम्	रावण
2. सौन्दर्यलहरी	शङ्कराचार्य

3. **चर्पटपञ्जरिकास्तोत्रम्** शङ्कराचार्य
4. **श्रीकृष्णाष्टकम्** शङ्कराचार्य
5. **आनन्दलहरी** शङ्कराचार्य
6. **शिवमहिम्नस्तोत्रम्** पुष्पदन्त
7. **आलबन्दारस्तोत्रम्** यामुनाचार्य (आलबन्दार)
8. **गङ्गास्तव** जयदेव
9. **कृष्णकर्णामृतम्** बिल्वमङ्गल (कृष्णालीलाशुक)
10. **वरदराजस्तव** अप्पयदीक्षित
11. **नारायणीयम्** नारायणभट्ट
12. **आनन्दमन्दाकिनी** मधुसूदन सरस्वती
13. **गन्धर्वप्रार्थनाष्टकम्** रूपगोस्वामी

सुभाषितग्रन्थाः

सुभाषितग्रन्थाः	ग्रन्थकारः
1. **कवीन्द्रवचनसमुच्चयः**	विद्याकरपण्डितः
2. **सदुक्तिकर्णामृतम्** (सूक्तिकर्णामृतम्)	श्रीधरदास
3. **सूक्तिमुक्तावली** (सुभाषितमुक्तावली)	सिद्धचन्द्रमणि
4. **सूक्तिरत्नाकरः**	सिद्धचन्द्रमणि
5. **सुभाषित सुधानिधि**	सायण
6. **शार्ङ्गधरपद्धति**	शार्ङ्गधर
7. **सुभाषितरत्नभाण्डागार**	शिवदत्त एवं नारायणराम आचार्य
8. **सूक्तिमुक्तावली**	डॉ. नरेन्द्रदेव शास्त्री
9. **संस्कृतसूक्तिरत्नाकर**	डॉ. रामजी उपाध्याय

ऐतिहासिक काव्य

ऐतिहासिक काव्य	लेखक
1. **बुद्धचरितम्**	अश्वघोष
2. **हर्षचरितम्**	बाणभट्ट
3. **गउडवहो** (गौडवधः)	वाक्पतिराज
4. **नवसाहसाङ्कचरितम्**	पद्मगुप्त (परिमल)
5. **विक्रमाङ्कदेवचरितम्**	बिल्हण
6. **राजतरङ्गिणी**	महाकवि कल्हण
7. **सोमपालविजयम्**	जल्हण
8. **प्रबन्धकोष**	राजशेखर
9. **वेमभूपालचरितम्**	वामनभट्ट बाण

कथासाहित्यम्

कथाग्रन्थः	लेखकः
1. **पञ्चतन्त्रम्**	विष्णुशर्मा
2. **हितोपदेश**	नारायणपण्डित
3. **बृहत्कथा**	गुणाढ्य
4. **बृहत्कथाश्लोकसंग्रह**	बुधस्वामी
5. **बृहत्कथामञ्जरी**	क्षेमेन्द्र
6. **कथासरित्सागर**	सोमदेव
7. **वेतालपञ्चविंशतिका**	शिवदास एवं जम्भलदत्त
8. **सिंहासनद्वात्रिंशिका** **द्वात्रिंशत्पुत्तलिका** **विक्रमचरित** **विक्रमार्कचरित**	लेखक का नाम अज्ञात
9. **शुकसप्ततिः**	अज्ञात
10. **पुरुषपरीक्षा**	विद्यापति
11. **भोजप्रबन्ध**	बल्लालसेन
12. **जातकमाला**	आर्यशूर
13. **प्रबन्धकोष**	राजशेखर
14. **उदयसुन्दरीकथा**	सोड्ढल

चम्पूकाव्य

चम्पूकाव्य	लेखक
1. **नलचम्पू** (दमयन्तीकथा)	त्रिविक्रमभट्ट
2. **मदालसाचम्पू**	त्रिविक्रमभट्ट
3. **जीवन्धरचम्पू**	हरिश्चन्द्र
4. **यशस्तिलकचम्पू**	सोमदेवसूरि
5. **रामायणचम्पू**	राजाभोज (भोजराज)
6. **भागवतचम्पू**	अभिनवकालिदास
7. **भारतचम्पू**	अनन्तभट्ट
8. **वरदाम्बिकापरिणयचम्पू**	रानी तिरुमलाम्बा
9. **भरतेश्वराभ्युदयचम्पू**	पं. आशाधरसूरि
10. **रुक्मिणीपरिणयचम्पू**	अमलाचार्य (अम्मल)

11. आनन्दवृन्दावनचम्पू कवि कर्णपूर

संस्कृत पत्र-पत्रिकायें

1. साप्ताहिक-पत्रिका

- **भवितव्यम्** (नागपुर)
- **संस्कृतम्** (अयोध्या)
- **गाण्डीवम्** (वाराणसी)
- **पण्डितपत्रिका** (काशी)

2. पाक्षिक-पत्रिका

- **भारतवाणी** (पूना)
- **शारदा** (पूना)
- **संस्कृतसाकेत** (अयोध्या)

3. मासिक-पत्रिका

- **संस्कृतमञ्जूषा** (कलकत्ता)
- **सूर्योदय** (काशी)
- **आनन्दकल्पतरु** (कोयम्बटूर)
- **गुरुकुलपत्रिका** (गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार)
- **जयतु संस्कृतम्** (काठमाण्डू)
- **दिव्यज्योतिः** (शिमला)
- **बालसंस्कृतम्** (मुम्बई)
- **भारती** (जयपुर)
- **भारतीयविद्या** (मुम्बई)
- **मालवमयूर** (मन्दसौर)
- **संस्कृतरत्नाकर** (दिल्ली)
- **सरस्वतीसौरभम्** (बड़ौदा)
- **संस्कृतसञ्जीवनम्** (पटना)
- **साहित्यवाटिका** (दिल्ली)
- **भारतोदयः** (हरिद्वार)
- **सम्भाषणसन्देशः** (बङ्गलोर)
- **चन्दमामा** (बङ्गलोर)

4. त्रैमासिक-पत्रिका

- **सङ्गमनी** (प्रयाग)
- **सरस्वतीसुषमा** (सम्पूर्णानन्द सं. वि. वि. वाराणसी)
- **सागरिका** (सागर वि. वि. सागर म.प्र.)
- **विश्वसंस्कृतम्** (होशियारपुर)
- **उशती** (गङ्गानाथ झा, प्रयाग)
- **महाराजसंस्कृतपत्रिका** (मैसूर)

5. षाण्मासिक-पत्रिका

- **पुराणम्** (वाराणसी)
- **संस्कृत प्रतिभा** (नई दिल्ली)
- **विद्वत्कला** (ज्वालापुर, हरिद्वार)

6. वार्षिक-पत्रिका

- **अमृतवाणी** (बङ्गलोर)
- **संस्कृतगङ्गा** (प्रयाग)

संस्कृत कवियों के माता-पिता

कवि	पिता माता	अन्य
1. बाणभट्ट	चित्रभानु–राजदेवी	पितामह-**अर्थपति**
2. भवभूति	नीलकण्ठ–जतुकर्णी (जातुकर्णी)	(पितामह–**भट्टगोपाल**)
3. भारवि	श्रीधर (नारायणस्वामी)-सुशीला	
4. माघ	दत्तक (सर्वाश्रय)-ब्राह्मी	(पितामह–**सुप्रभदेव**)
5. श्रीहर्ष	श्रीहीर–मामल्लदेवी	
6. विशाखदत्त	पृथु (भास्करदत्त)	(पितामह–**वटेश्वरदत्त**)
7. हर्षवर्धन	प्रभाकरवर्धन–यशोवती	(बड़े भाई–**राज्यवर्धन**, बहन – **राज्यश्री**)
8. राजशेखर	दर्दुक (दुहिक) शीलवती	**अकालजलद** (पितामह)
9. अम्बिकादत्तव्यास	दुर्गादत्त	पितामह - श्रीराजाराम
10. जयदेव (गीतगोविन्दकार)	भोजदेव–रामादेवी (राधादेवी)	
11. पण्डितराजजगन्नाथ	पेरुभट्ट–लक्ष्मीदेवी	

12. कल्हण	चम्पक	
13. त्रिविक्रमभट्ट	देवादित्य (नेमादित्य)	पितामह-**श्रीधर**
14. पाणिनि	पणिन्–दाक्षी	
15. कात्यायन (वररुचि)	–	पितामह-**याज्ञवल्क्य**
16. मम्मट	जैयट	भाई-**कैय्यट (उव्वट)**
17. विश्वनाथ	चन्द्रशेखर	
18. भर्तृहरि	गन्धर्वसेन	
19. अश्वघोष	सुवर्णाक्षी (माता)	
20. पतञ्जलि	गोणिका (माता)	
21. कालिदास	शारदानन्द (श्वसुर, विद्योत्तमा के पिता)	
22. मुरारि	श्रीवर्धमानभट्ट/तन्तुमती	
23. भट्टोजिदीक्षित	लक्ष्मीधर	
24. वरदराज	दुर्गातनय	
25. रत्नाकर	अमृतभानु	
26. जयदेव (प्रसन्नराघवकार)	महादेव–सुमित्रा	
27. विश्वेश्वर पाण्डेय	लक्ष्मीधर पाण्डेय	
28. पण्डिता क्षमाराव	श्री शङ्करपाण्डुरङ्ग	
29. दण्डी (भारवि के प्रपौत्र)	वीरदत्त–गौरी	प्रपितामह–**भारवि**
30. वेदव्यास	सत्यवती	

कवियों की उपाधियाँ/उपनाम

क्र.सं.	कवि	उपाधि/उपनाम/कविविषयक कथन
1.	**वाल्मीकि**	आदिकवि
2.	**कृष्णद्वैपायन**	व्यास या वेदव्यास
3.	**कालिदास**	(i) दीपशिखा (ii) रघुकार (iii) कविकुलगुरु (iv) कविताकामिनी विलास (v) उपमासम्राट्
4.	**अम्बिकादत्तव्यास**	(i) घटिकाशतक (ii) सुकवि (iii) शतावधान (iv) अभिनवबाण (v) भारतरत्न
5.	**बाणभट्ट**	(i) पञ्चबाणस्तु बाणः (ii) बाणस्तु पञ्चाननः (iii) कविताकानन केसरी (iv) वश्यवाणीचक्रवर्ती (v) गद्यसम्राट् (vi) वाणी बाणो बभूव (vii) कविताकामिनीकौतुक (viii) तुरङ्गबाण (ix) गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति (x) बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम् (xi) बाणःकवीनामिह चक्रवर्ती (xii) महानयं भुजङ्गः (xiii) सर्वेश्वर
6.	**जयदेव (प्रसन्नराघव एवं 'चन्द्रालोक' के लेखक)**	(i) पीयूषवर्ष (ii) कवीन्द्र (iii) वाणी का विलास (iv) असमरसनिष्यन्दमधुर
7.	**मल्लिनाथ**	(i) कोलाचल (ii) महामहोपाध्याय
8.	**त्रिविक्रमभट्ट**	यमुनात्रिविक्रम
9.	**विश्वनाथ**	(i) सन्धिविग्राहक, (ii) अष्टादशभाषा वारविलासिनी (iii) कविराज (iv) कवि सूक्ति

		रत्नाकर
10.	जगन्नाथ	पण्डितराज
11.	भारवि	(i) आतपत्र (ii) दामोदर (उपनाम) (iii) चक्रकवि

क्र.सं.	कवि	उपाधि/उपनाम/कविविषयक कथन
12.	माघ	(i) घण्टामाघ (ii) सर्वाश्रय
13.	भवभूति	(i) श्रीकण्ठ (भट्टश्रीकण्ठ) (ii) पदवाक्यप्रमाणज्ञ (iii) श्रीकण्ठपदलाञ्छनः (iv) उम्बेक/उदम्बर (v) वश्यवाक् (vi) शिखरिणीकवि (vii) परिणतप्रज्ञ
14.	भट्टनारायण	(i) भट्ट (ii) मृगराज (iii) कवि मृगेन्द्र/कवीन्द्र
15.	मम्मट	(i) वाग्देवतावतार (ii) राजानक (iii) ध्वनिप्रस्थापनपरमाचार्य
16.	आनन्दवर्धन	(i) राजानक (ii) ध्वनिप्रतिष्ठापकाचार्य (iii) सहृदय शिरोमणि
17.	कुन्तक	'राजानक' (यह उपाधि काश्मीरी विद्वानों को सम्मानार्थ मिलती थी)
18.	महिमभट्ट	'राजानक'
19.	रुय्यक	'राजानक'
20.	क्षेमेन्द्र	(i) जनकवि (ii) सकलमनीषिशिष्य
21.	भास	(i) कविताकामिनी हास (ii) भासो हासः (iii) अग्निमित्र (ज्वलनमित्र)
22.	अश्वघोष	(i) आर्यभदन्त (ii) बौद्धभिक्षु
23.	मुरारि	(i) बालवाल्मीकि (ii) महाकवि (iii) इन्दु
24.	बिल्हण	विद्यापति
25.	हेमचन्द्र	कलिकालसर्वज्ञ
26.	अभिनवगुप्त	(i) लोचनकार (ii) परम- माहेश्वराचार्य
27.	कणाद	(i) उलूक (ii) कणभुक्
28.	कात्यायन	वररुचि
29.	गौतम	अक्षपाद
30.	दयानन्द सरस्वती	स्वामी
31.	भट्टि	
32.	मातृचेट	बौद्धकवि
33.	यामुनाचार्य	आलवन्दार
34.	राजशेखर	(i) यायावर (ii) कविराज (iii) बालकवि
35.	वाचस्पतिमिश्र	(i) सर्वतन्त्रस्वतन्त्र (ii) तात्पर्याचार्य
36.	वात्स्यायन	मल्लनाग
37.	विद्यापति	(i) षट्तर्कषण्मुख (ii) वादिराज सूरि (iii) मैथिलकोकिल
38.	विद्यारण्यमुनि	माधवाचार्य
39.	क्षमाराव	पण्डिता
40.	पतञ्जलि	शेषनाग, फणिभृत, नागनाथ, भगवान्, तीर्थदर्शी
41.	प्रभाकर मिश्र	(i) गौडमीमांसक (ii) गुरु
42.	माधवभट्ट	(i) कविराज (ii) सूरि (iii) पण्डित
43.	हर्षवर्धन	(i) राजा (ii) कवीन्द्र (iii) गीर्हर्ष (iv) कविता का हर्ष (v) अनङ्ग
44.	जयदेव (गीतगोविन्दकार)	कविराजराज

क्र.सं.	कवि	उपाधि/उपनाम/कविविषयक कथन
45.	श्रीहर्ष	कविताकामिनी का हर्ष
46.	आनन्दराय मखी	वेदकवि
47.	रत्नाकर	(i) कांस्यताल, (ii) वागीश्वर
48.	शेषाचलपति	आन्ध्रपाणिनि
49.	आर्यभट्ट	अश्मकाचार्य
50.	मङ्ख	कर्णिकार
51.	शाकटायन	आदिशाब्दिक
52.	पद्मगुप्त	परिमल कालिदास
53.	द्वादशाविद्यापति	वदिराज सूरि
54.	प्रसन्नराघवकार जयदेव	पीयूषवर्ष
55.	दिंगनागाचार्य	तर्कपुंगव
56.	मुकुलभट्ट	(i) साहित्यमुरारि (ii) पदवाक्य-प्रमाण-पारावारपारीण
57.	ब्रह्मगुप्त	गणकचक्रचूडामणि
58.	श्रीनिवासदीक्षित	(i) रत्नखेट (ii) षड्भाषाचतुर
59.	सोमदेव सूरि	(i) कविकुलराजकुञ्जर (ii) तार्किक चक्रवर्ती
60.	धनपाल	सरस्वती
61.	वस्तुपाल	लघुभोजराज
62.	शान्तिसूरि	वादिवेताल
63.	हृषिकेशभट्टाचार्य	अभिनवबाण

कवियों का निवासस्थान (जन्मस्थान)

कवि	निवासस्थान (जन्मस्थान)
1. कालिदास	उज्जयिनी (काश्मीर/बंगाल)
2. बाणभट्ट	'प्रीतिकूट' (शोणनदी के पश्चिमी तट पर आधुनिक–'शाहाबाद')
3. भारवि	अचलपुर (दाक्षिणात्य/धारानगरी)
4. अम्बिकादत्त व्यास	जयपुर राजस्थान, ग्राम-रावतजी का धुला (अध्ययन–काशी में)
5. कल्हण	काश्मीर
6. पाणिनि	शालातुर ग्राम (अटक)
7. पतञ्जलि	गोनर्द (गोण्डा)
8. दण्डी	दक्षिण में विदर्भ (महाराष्ट्र)
9. भवभूति	पद्मपुर (दक्षिणभारत)
10. अश्वघोष	साकेत (अयोध्या)
11. माघ	श्री भिन्नमाल 'भीनमाल' राजस्थान (आबूपर्वत तथा लूनानदी के बीच स्थित)
12. श्रीहर्ष	कन्नौज
13. भट्टि	बल्लभी
14. कुमारदास	श्रीलङ्का
15. शूद्रक	दाक्षिणात्य
16. हर्ष	स्थाणीश्वर (थानेश्वर)

कवि	निवासस्थान (जन्मस्थान)
17. भट्टनारायण	कान्यकुब्ज (कन्नौज)
18. राजशेखर	महाराष्ट्र (विदर्भ)
19. जयदेव (प्रसन्नराघवकार)	विदर्भप्रान्त-कुण्डिननगर
20. सुबन्धु	काश्मीर
21. पण्डितराज जगन्नाथ	आन्ध्रप्रदेश (तैलंग)
22. कात्यायन	दाक्षिणात्य
23. आनन्दवर्धन	काश्मीर
24. मम्मट	काश्मीर
25. अभिनवगुप्त	काश्मीर
26. भर्तृहरि	मालवा
27. क्षेमेन्द्र	काश्मीर
28. महिमभट्ट	काश्मीर
29. वाचस्पतिमिश्र	मिथिला (बिहार)
30. विश्वनाथ कविराज	उत्कल (उड़ीसा)
31. त्रिविक्रमभट्ट	मान्यखेट ग्राम (हैदराबाद)
32. रत्नाकर	काश्मीर
33. विश्वेश्वर पाण्डेय	अल्मोडा जिला ग्राम–पटिया
34. अमरुक	काश्मीर
35. गीतगोविन्दकार जयदेव	बंगाल के केन्दुबिल्व नामक ग्राम।
36. सोमदेव (कथासरित्सागर)	काश्मीर

संस्कृत के प्रमुख कवियों, नायकों, तथा ऋषियों का गोत्र एवं वंश

कवि/राजा	गोत्र/वंश/जाति	कवि/राजा	गोत्र/वंश/जाति
1. बाणभट्ट	वत्स/वात्स्यायन	**12. दुष्यन्त**	पुरुवंशी (चन्द्रवंशी)
2. भवभूति	काश्यप	**13. राम**	सूर्यवंश/इक्ष्वाकुवंश/रघुवंश
3. भारवि	कुशिक	**14. दुर्योधन**	कुरुवंशी/चन्द्रवंशी
4. कालिदास	ब्राह्मण जाति	**15. शिवाजी**	मराठा वंश
5. अम्बिकादत्त व्यास	पराशरगोत्रीय यजुर्वेदी ब्राह्मण त्रिप्रवर 'भीडा' वंश	**16. कुतुबुद्दीन**	गुलामवंश
6. विश्वेश्वर पाण्डेय	भारद्वाजगोत्र	**17. औरङ्गजेब**	मुगलवंश
7. मुरारि	मौद्गल्यगोत्र	**18. सिंहविष्णु**	पल्लववंश
8. भट्टनारायण	सारस्वत ब्राह्मण	**19. नरसिंहवर्मन्**	पल्लववंश
9. राजशेखर	यायावर क्षत्रियवंश	**20. विष्णुवर्धन**	चालुक्यवंश
10. पण्डितराजजगन्नाथ	तैलङ्गब्राह्मण	**21. दुर्विनीत**	गङ्गवंश
11. विश्वामित्र	कौशिक	**22. यशोवर्मा**	चन्देलवंश

कवियों का सम्प्रदाय

कवि	सम्प्रदाय	कवि	सम्प्रदाय
1. कालिदास	शैव	8. कल्हण	शैव
2. भवभूति	शैव	9. अभिनवगुप्त	शैव
3. भारवि	शैव	10. भट्टनारायण	वैष्णव (साथ में शिवभक्त भी)
कवि	**सम्प्रदाय**	**कवि**	**सम्प्रदाय**
4. माघ	वैष्णव	11. रूपगोस्वामी	वैष्णव
5. भर्तृहरि	शैव, ब्रह्म के उपासक	12. विश्वनाथकविराज	वैष्णव
6. बाणभट्ट	शैव	13. राजशेखर	शैव
7. अम्बिकादत्तव्यास	वैष्णव (शैव)	14. जयदेव (गीतगोविन्दकार)	वैष्णव

संस्कृत कवियों का राज्याश्रय

राजकवि	राजा
1. कालिदास	विक्रमादित्य
2. बाणभट्ट	सम्राट् हर्षवर्धन
3. भारवि	पुलकेशिन द्वितीय के अनुज विष्णुवर्धन
4. भवभूति	यशोवर्मा
5. दण्डी	नरसिंह वर्मन प्रथम, पल्लवनरेश सिंहविष्णु
6. 'परिमलकालिदास' या पद्मगुप्त	राजा मुञ्ज और सिन्धुराज (नवसाहसाङ्क)
7. रविकीर्ति	पुलकेशिन द्वितीय
8. उद्भट	काश्मीरनरेश जयादित्य
9. वामन	काश्मीर नरेश जयादित्य के मन्त्री
10. आनन्दवर्धन	काश्मीर नरेश अवन्तिवर्मा
11. राजशेखर	कन्नौज के शासक महेन्द्रपाल और महीपाल
12. धनञ्जय	मालव के परमारवंशी राजा मुञ्ज (वाक्पतिराज)
13. क्षेमेन्द्र	कश्मीर नरेश अनन्तराज
14. नारायण पण्डित	धवलचन्द्र (बंगाल के कोई राजा)
15. श्रीहर्ष (नैषधकार)	कन्नौज नरेश जयचन्द्र
16. अश्वघोष	कनिष्क
17. वाक्पतिराज	यशोवर्मा
18. भट्टि	वल्लभी के राजा श्रीधरसेन
19. रत्नाकर	राजा चिप्पट जयापीड
20. कविराज (माधवभट्ट)	जयन्तपुरी के कदम्बराजा कामदेव
21. कृष्णमिश्र	चन्देलराजा कीर्तिवर्मा
22. जयदेव (गीतगोविन्दकार)	बंगाल के राजा लक्ष्मणसेन
23. पण्डितराजजगन्नाथ	शाहजहाँ
24. विष्णुशर्मा (पञ्चतन्त्र)	महिलारोप्य के राजा अमरसिंह
25. नारायण पण्डित (हितोपदेश)	बंगाल के राजा धवलचन्द्र
26. सोमदेव (कथा सरित्सागर)	काश्मीरी राजा अनन्त
27. हरिषेण	समुद्रगुप्त

कवियों के प्रिय रस

कवि	प्रिय रस	कवि	प्रिय रस
1. कालिदास	शृङ्गार रस	**5. बाणभट्ट**	शृङ्गाररस
2. भवभूति	करुण रस	**6. श्रीहर्ष**	शृङ्गाररस
3. भारवि	वीररस, शृङ्गाररस	**7. भास**	शृङ्गार और वीररस
4. माघ	वीररस	**8. अमरुक**	शृङ्गाररस
		9. जयदेव	शृङ्गाररस

कवियों के प्रिय छन्द

कवि	प्रिय छन्द	अतिप्रिय छन्दों की संख्या
1. वाल्मीकि	अनुष्टुप् (श्लोक)	–
2. व्यास	अनुष्टुप्	–
3. कालिदास	आर्या, अनुष्टुप्, उपजाति, मन्दाक्रान्ता	06
4. अश्वघोष	अनुष्टुप्, उपजाति	–
5. भारवि	वंशस्थ, उपजाति	12
6. माघ	वंशस्थ, अनुष्टुप्	16
7. श्रीहर्ष	उपजाति छन्द	19
8. भट्टि	अनुष्टुप्, उपजाति	–
9. भास	अनुष्टुप्, वसन्ततिलका	कुल 24 छन्दों का प्रयोग
10. विशाखदत्त	शार्दूलविक्रीडित, शिखरिणी, स्रग्धरा	–
11. हर्षवर्धन	शार्दूलविक्रीडित, स्रग्धरा, अनुष्टुप्, आर्या	–
12. भट्टनारायण	अनुष्टुप्, वसन्ततिलका, शार्दूलविक्रीडित	–
13. भवभूति	अनुष्टुप्, शिखरिणी	–
14. राजशेखर	शार्दूलविक्रीडितम्	–
15. कृष्णमिश्र	वसन्ततिलका, शार्दूलविक्रीडितम्	–
16. जयदेव	वसन्ततिलका	–
17. अमरुक	शार्दूलविक्रीडितम्	–
18. भर्तृहरि	शार्दूलविक्रीडितम्	

कवियों के प्रिय अलङ्कार

कवि	प्रिय अलङ्कार
1. कालिदास	उपमा
2. भारवि	चित्रालङ्कार, अर्थालङ्कार
3. माघ	उपमा, उत्प्रेक्षा, अर्थान्तरन्यास, चित्रालङ्कार
4. श्रीहर्ष	उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति, श्लेष, अनुप्रास, यमक
5. अश्वघोष	उपमा, रूपक, अनुप्रास
6. भवभूति	उपमा, उत्प्रेक्षा, काव्यलिङ्ग, रूपक

7. रत्नाकर	उत्प्रेक्षा अलङ्कार
8. विशाखदत्त	उपमा, रूपक, श्लेष
9. हर्षवर्धन	उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक
10. भट्टनारायण	उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा
11. सुबन्धु	श्लेष, विरोधाभास, परिसंख्या, उत्प्रेक्षा।
12. बाणभट्ट	विरोधाभास, श्लेष, परिसंख्या, उत्प्रेक्षा, उपमा, रूपक
13. अम्बिकादत्तव्यास	विरोधाभास

कवियों की प्रिय शैली रीति एवं गुण

कवि	रीति एवं गुण
1. भारवि	रीतिवादी या अलङ्कृत काव्यशैली के जन्मदाता
2. माघ	प्रसाद, माधुर्य एवं ओजगुणों का समन्वय
3. श्रीहर्ष	वैदर्भी एवं गौडीरीति, प्रसाद एवं ओजगुण
4. कालिदास	वैदर्भी, प्रसादगुण
5. बाणभट्ट	पाञ्चाली, ओज, माधुर्य, प्रसाद
6. दण्डी	वैदर्भीरीति, प्रसाद और माधुर्यगुण।
7. अम्बिकादत्तव्यास	वैदर्भी और गौडी रीति का समन्वय।
8. सुबन्धु	गौडीरीति, ओजगुण (श्लेष अलंकार का प्रयोग)
9. भवभूति	गौडी एवं वैदर्भी रीति (i) मालतीमाधवम् और महावीरचरितम् में–गौडी रीति, ओजगुण (ii) उत्तररामचरितम् में–गौडी एवं वैदर्भी रीति, प्रसाद गुण
10. शूद्रक	वैदर्भीरीति एवं प्रसादगुण (कहीं कहीं 'गौडी रीति' भी)
11. अश्वघोष	वैदर्भीरीति, प्रसादगुण
12. भास	वैदर्भी रीति, प्रसाद, माधुर्य
13. मुरारि	गौडीरीति–ओजगुण
14. भट्टि	व्याकरणमूलक काव्यशैली की एक नवीन विधा के जन्मदाता।
15. कुमारदास	वैदर्भीरीति, प्रसाद और माधुर्यगुण।
16. रत्नाकर	रीतिवादी कवि
17. विशाखदत्त	वैदर्भीरीति, प्रसाद और माधुर्यगुण
18. हर्षवर्धन	वैदर्भीरीति, प्रसाद और माधुर्य गुण
19. भट्टनारायण	गौडीरीति एवं ओजगुण
20. राजशेखर	गौडीरीति (यत्र तत्र पाञ्चाली भी)
21. दिङ्नाग (धीरनाग, वीरनाग)	वैदर्भीरीति, प्रसाद और माधुर्यगुण
22. पण्डिता क्षमाराव	वैदर्भीरीति, प्रसाद और माधुर्यगुण।
23. भर्तृहरि	वैदर्भीरीति, प्रसाद और माधुर्यगुण
24. अमरुक	वैदर्भीरीति, प्रसाद और माधुर्यगुण
25. विष्णुशर्मा (पञ्चतन्त्र)	वैदर्भीरीति, प्रसाद और माधुर्यगुण

संस्कृतकवियों की प्रसिद्धि का कारण

कवि	कविप्रसिद्धि
1. कालिदास	(i) उपमा (ii) वैदर्भीरीति

2. भारवि	(i) अर्थगौरव, (ii) अलङ्कृतकाव्यशैली के जनक
3. दण्डी	पदलालित्य
4. माघ	उपमा, अर्थगौरव, पदलालित्य तीनों के लिए
5. भवभूति	करुणरस के प्रयोक्ता
6. अम्बिकादत्तव्यास	ऐतिहासिक उपन्यास के प्रणेता
7. बाणभट्ट	(i) अलङ्कार एवं समास बहुल रचना (ii) कादम्बरी में तीन जन्मों की कथा (ii) पाञ्चाली रीति,
8. त्रिविक्रमभट्ट	(i) श्लेष अलङ्कार के प्रचुर प्रयोक्ता (ii) चम्पूकाव्य के आद्यप्रणेता
9. सुबन्धु	श्लेष प्रधानशैली के प्रयोक्ता

संस्कृत-कवयित्री

कवयित्री	ग्रन्थ	कालक्रम
1. विज्जिका	स्फुटपद्य	850 ई.
2. गङ्गादेवी	मथुराविजयम्	14वीं शताब्दी
3. अवन्ति सुन्दरी (राजशेखर की पत्नी)	देशीशब्दकोष	10वीं शताब्दी
4. तिरुमलाम्बा (राजा अच्युतराय की रानी)	वरदम्बिकापरिणयचम्पू	16वीं शताब्दी
5. रामभद्राम्बा	रघुनाथाभ्युदय	17वीं शताब्दी
6. पण्डिता क्षमाराव	कथामुक्तावली	1890-1954
7. पुष्पा दीक्षित	अष्टाध्यायी सहजबोध (व्याकरणग्रन्थ)	इक्कीसवीं शताब्दी
8. मधुरवाणी	रामकथा	1590 ई.
9. सुभद्रा	स्फुटपद्य	–
10. विकटनितम्बा	स्फुटपद्य	–
11. शीला भट्टारिका	स्फुटपद्य	–
12. देवकुमारिका	स्फुटपद्य	–

अन्य स्त्री लेखिकायें
राजम्मा, सुन्दरावली, ज्ञानसुन्दरी आदि।

संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख लेखकों का अनुमानित कालक्रम

लेखक	प्रमुख ग्रन्थ	अनुमानित काल
1. आचार्य लगध	**वेदाङ्गज्योतिष**	1400 ई.पू. से 800 ई.पू.
2. यास्क	**निरुक्त**	800 ई. पू.
3. आचार्य पिङ्गल	**छन्दःसूत्रम्**	800 ई.पू. से 700 ई.पू.
4. कपिल	**सांख्यसूत्र**	700 ई.पू.
5. जैमिनि	**मीमांसासूत्र**	600 ई.पू.
6. कणाद	**वैशेषिकसूत्र**	500 ई.पू.
7. चरक	**चरकसंहिता**	500 ई.पू.–200 ई.पू.
8. सुश्रुत	**सुश्रुतसंहिता**	500 ई.पू.
9. वाल्मीकि	**वाल्मीकीयरामायणम्**	500 ई.पू.
10. पाणिनि	**अष्टाध्यायी**	500 ई.पू.
11. महर्षिव्यास (कृष्णद्वैपायन)	**महाभारत एवं 18 पुराण**	400 ई.पू.

12. कौटिल्य (चाणक्य)	अर्थशास्त्र	400 ई.पू.
13. बादरायण	ब्रह्मसूत्र	300 ई.पू.
14. कात्यायन (वररुचि)	अष्टाध्यायी पर वार्तिक	300 ई.पू.
15. पतञ्जलि	महाभाष्य, योगसूत्र	185 ई.पू.
लेखक	**प्रमुख ग्रन्थ**	**अनुमानित काल**
16. भरतमुनि	नाट्यशास्त्रम्	100 ई.पू. से 300 ई.
17. भास	स्वप्नवासवदत्तम् आदि 13 नाटक	100 ई. पू. से 200 ई. के मध्य
18. मनु	मनुस्मृति	200 ई.पू. से 200 ई. के बीच
19. कालिदास	रघुवंशम्, अभिज्ञानशाकुन्तलम् आदि	ई.पू. प्रथम शताब्दी
20. अश्वघोष	बुद्धचरितम्, सौन्दरानन्द	प्रथम शताब्दी ई.
21. गुणाढ्य	बृहत्कथा	प्रथमशताब्दी ई.
22. शालिवाहन (हाल)	गाहा सतसई (गाथासप्तशती)	प्रथम या द्वितीय शताब्दी ई.
23. वात्स्यायन	न्यायसूत्रभाष्य	द्वितीयशताब्दी ई.
24. शर्ववर्मा	कातन्त्रव्याकरण	द्वितीयशताब्दी ई.
25. शबरस्वामी	शाबरभाष्य	द्वितीयशताब्दी ई.
26. विष्णुशर्मा	पञ्चतन्त्र	दूसरी शताब्दी से छठी शताब्दी के बीच
27. अमरसिंह	नामलिङ्गानुशासनम् (अमरकोष)	तीसरी शताब्दी का पूर्वार्द्ध
28. वात्स्यायन	कामसूत्रम्	तीसरी शताब्दी ई.
29. आर्यशूर	जातकमाला	तीसरी–चौथी शताब्दी ई.
30. शूद्रक	मृच्छकटिकम्	तीसरी–चौथी शताब्दी ई.
31. ईश्वरकृष्ण	सांख्यकारिका	चौथी शताब्दी ई.
32. विशाखदत्त	मुद्राराक्षसम्	पाँचवीं छठी शताब्दी ई.
33. कुमारदास	जानकीहरणम्	छठी शताब्दी ई.
34. भारवि	किरातार्जुनीयम्	छठी शताब्दी ई. (560 ई.–615 ई. के बीच)
35. दण्डी	दशकुमारचरितम्	छठी शताब्दी ई.
36. भर्तृहरि	वाक्यपदीयम्	छठी शताब्दी ई.
37. भट्टि	रावणवध/भट्टिकाव्य	500 ई. से 650 ई. के बीच
38. भामह	काव्यालङ्कार	छठी शताब्दी
39. माघ	शिशुपालवधम्	सातवीं शताब्दी ई. (675 ई.)
40. आदि शङ्कराचार्य	शाङ्करभाष्य, सौन्दर्यलहरी	सातवीं शताब्दी ई.
41. बाणभट्ट	कादम्बरी, हर्षचरितम्	सातवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध
42. मयूरभट्ट	सूर्यशतकम्	सातवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध
43. सुबन्धु	वासवदत्ता	सातवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध
44. हर्ष	प्रियदर्शिका, रत्नावली, नागानन्द	सातवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध
45. भवभूति	महावीरचरितम्, उत्तररामचरितम्	सातवीं शताब्दी के आसपास
46. अमरुकवि (अमरुक)	अमरुकशतकम्	सातवीं शताब्दी
47. वाक्पतिराज	गौडवहो	750 ई. के आसपास

48. भट्टनारायण	वेणीसंहारम्	सातवीं आठवीं शताब्दी
49. दामोदरभट्ट	कुट्टनीमतम्	आठवीं शताब्दी ई.
50. मुरारि	अनर्घराघवम्	आठवीं शताब्दी का उत्तरार्ध
51. वामन	काव्यालङ्कारसूत्र	आठवीं शताब्दी
लेखक	**प्रमुख ग्रन्थ**	**अनुमानित काल**
52. आनन्दवर्धन	ध्वन्यालोक	850 ई.
53. वाचस्पतिमिश्र	भामतीटीका, तत्त्वकौमुदी (सांख्य)	नवीं शताब्दी
54. दामोदरमिश्र	हनुमन्नाटक	नवी शताब्दी ई.
55. रत्नाकर	हरविजयम्	नवीं शताब्दी
56. राजशेखर	काव्यमीमांसा	नवीं शताब्दी का उत्तरार्ध
57. जयन्तभट्ट	न्यायमञ्जरी	दसवीं शताब्दी ई.
58. धनपाल	तिलकमञ्जरी	दसवीं शताब्दी
59. त्रिविक्रमभट्ट	नलचम्पू, मदालसाचम्पू	दसवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध
60. कुन्तक	वक्रोक्तिजीवितम्	ग्यारहवीं शताब्दी
61. महिमभट्ट	व्यक्तिविवेक	ग्यारहवीं शताब्दी
62. क्षेमेन्द्र	औचित्यविचारचर्चा, रामायणमञ्जरी	ग्यारहवीं शताब्दी
63. कृष्णमित्र	प्रबोधचन्द्रोदय	ग्यारहवीं शताब्दी
64. सोमदेव	कथासरित्सागर	ग्यारहवीं शताब्दी
65. रामानुज	श्रीभाष्य	ग्यारहवीं शताब्दी
66. बिल्हण	विक्रमाङ्कदेवचरितम्	ग्यारहवीं शताब्दी का उत्तरार्ध
67. भोज	रामायणचम्पू	ग्यारहवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध
68. केशवमिश्र	तर्कभाषा	बारहवीं शताब्दी ई.
69. भास्कराचार्य	लीलावती, बीजगणित	बारहवीं शताब्दी
70. मम्मट	काव्यप्रकाश	बारहवीं शताब्दी (ग्यारहवीं शताब्दी का उत्तरार्ध)
71. कल्हण	राजतरङ्गिणी	बारहवीं शताब्दी
72. मंखक	श्रीकण्ठचरितम्	बारहवीं शताब्दी
73. श्रीहर्ष	नैषधीयचरितम्	बारहवीं शताब्दी का उत्तराद्ध
74. गोवर्धनाचार्य	आर्यासप्तशती	बारहवीं शताब्दी
75. जयदेव	गीतगोविन्दम्	बारहवीं शताब्दी
76. विज्ञानभिक्षु	सांख्यप्रवचनभाष्यम्	तेरहवीं शताब्दी
77. गङ्गेशोपाध्याय	तत्त्वचिन्तामणि	तेरहवीं शताब्दी
78. मध्वाचार्य	पूर्णप्रज्ञभाष्यम्	तेरहवीं शताब्दी
79. शार्ङ्गधर	शार्ङ्गधरसंहिता	तेरहवीं शताब्दी
80. गङ्गादास	छन्दोमञ्जरी	तेरहवीं शताब्दी से पन्द्रहवीं शताब्दी के मध्य

81. विद्यापति	पुरुषपरीक्षा	चौदहवीं शताब्दी ई.
82. नारायणपण्डित	हितोपदेश	चौदहवीं शताब्दी
83. विश्वनाथ	साहित्यदर्पण	चौदहवीं शताब्दी
84. अनन्तभट्ट	भारतचम्पू	पन्द्रहवीं शताब्दी
85. वल्लभाचार्य	अणुभाष्यम्	1479 ई. 1544 ई.
लेखक	**प्रमुख ग्रन्थ**	**अनुमानित काल**
86. बल्लालसेन	भोजप्रबन्धम्	सोलहवीं शताब्दी
87. तिरुमलाम्बा	वरदम्बिकापरिणयचम्पू	सोलहवीं शताब्दी
88. भट्टोजिदीक्षित	सिद्धान्तकौमुदी	सोलहवीं शताब्दी
89. अन्नंभट्ट	तर्कसंग्रह	सत्रहवीं शताब्दी
90. कौण्डभट्ट	वैयाकरणभूषणसार	सत्रहवीं शताब्दी
91. नागेशभट्ट	वैयाकरणसिद्धान्तलघुमञ्जूषा	सत्रहवीं शताब्दी
92. सदानन्द	वेदान्तसार	सत्रहवीं शताब्दी
93. पण्डितराज जगन्नाथ	रसगङ्गाधर, गङ्गालहरी	सत्रहवीं शताब्दी (1600–1660 ई.)
94. अम्बिकादत्तव्यास	शिवराजविजयम्	1858–1900 ई.
95. पण्डिता क्षमाराव	कथामुक्तावली	1890–1954 ई.
96. पुष्पादीक्षिता	अग्निशिखा	इक्कीसवीं शताब्दी
97. रेवाप्रसाद द्विवेदी	सीताचरितम्	इक्कीसवीं शताब्दी
98. अभिराजराजेन्द्र मिश्र	जानकीजीवनम्	इक्कीसवीं शताब्दी
99. राधावल्लभ त्रिपाठी	लहरीदशकम्,	
गीतवीवरम्	इक्कीसवीं शताब्दी	
100. ललितकुमार त्रिपाठी	गाङ्गालहरी	
(सम्पादनम्)	इक्कीसवीं शताब्दी	

संस्कृतसाहित्य के प्रमुख दम्पती, प्रेमी-प्रेमिका एवं उनकी सन्तानें

पति/प्रेमी	पत्नी/प्रेमिका	पुत्र/पुत्री
पति/प्रेमी	पत्नी/प्रेमिका	पुत्र/पुत्री
1. अगस्त्य	लोपामुद्रा	
2. वशिष्ठ	अरुन्धती	
3. विश्वामित्र	मेनका	शकुन्तला
4. मारीच	अदिति (दाक्षायणी)	इन्द्र
5. ययाति	शर्मिष्ठा, देवयानी	पुरु
6. अत्रि	अनसूया	दुर्वासा
7. इन्द्र	इन्द्राणी/शची/पौलोमी	जयन्त
8. ऋष्यशृङ्ग	शान्ता	
9. दुष्यन्त	शकुन्तला, हंसपदिका,	भरत
	वसुमती	(सर्वदमन)
10. कालिदास	विद्योत्तमा	–
11. भर्तृहरि	पिङ्गला	–
12. भारवि	रसिकवती/रसिका	मनोरथ
13. पण्डितराजजगन्नाथ	(i) लवङ्गी (यवनी प्रेमिका) (ii) भामिनी (पत्नी)	
14. राम	सीता	कुश-लव
15. लक्ष्मण	उर्मिला	चन्द्रकेतु
16. भरत	माण्डवी	पुष्कल
17. शत्रुघ्न	श्रुतिकीर्ति	
18. नल	दमयन्ती	
19. पुरूरवा	उर्वशी	
20. चारुदत्त	धूता/वसन्तसेना	रोहसेन
21. नन्द	सुन्दरी	
22. अविमारक	कुरङ्गी	
23. भीम	हिडिम्बा	घटोत्कच
24. पञ्चपाण्डव	द्रौपदी	
25. अर्जुन	सुभद्रा	अभिमन्यु
26. धृतराष्ट्र	गान्धारी	दुर्योधन
27. पाण्डु	कुन्ती/माद्री	
पञ्चपाण्डव		

28. कृष्ण	रुक्मिणी/सत्यभामा	प्रद्युम्न
29. शर्विलक	मदनिका	
30. अग्निमित्र	मालविका	
31. उदयन	रत्नावली (सागरिका)	
32. उदयन	वासवदत्ता	
33. माधव	मालती	
34. मकरन्द	मदयन्तिका	
35. तारापीड	विलासवती	चन्द्रापीड
36. चन्द्रापीड	कादम्बरी	
37. पुण्डरीक	महाश्वेता	
38. हंस	गौरी	महाश्वेता
39. चित्ररथ	मदिरा	कादम्बरी
40. श्वेतकेतु	लक्ष्मी	पुण्डरीक

पति/प्रेमी	पत्नी/प्रेमिका	पुत्र/पुत्री
पति/प्रेमी	पत्नी/प्रेमिका	पुत्र/पुत्री
41. हेममाली (यक्ष)	विशालाक्षी (यक्षिणी)	
42. कवि जयदेव (गीतगोविन्दकार)	पद्मावती	
43. राजा दिलीप	सुदक्षिणा	रघु
44. अज	इन्दुमती	दशरथ
45. कामदेव	रति	
46. शिव	पार्वती	गणेश, कार्तिकेय
47. विष्णु	लक्ष्मी	
48. अभिमन्यु	उत्तरा	परीक्षित
49. हिमालय	मैना	पार्वती
50. शुकनास	मनोरमा	वैशम्पायन
51. राजशेखर	अवन्तिसुन्दरी	
52. दुर्योधन	भानुमती	
53. गौतम	अहल्या	शतानन्द
54. याज्ञवल्क्य	मैत्रेयी	

संस्कृतवाङ्मय में गुरु-शिष्य-परम्परा

शिष्य	गुरु
शिष्य	गुरु
1. जनक	याज्ञवल्क्य, शतानन्द (पुरोहित)
2. भर्तृहरि	गोरखनाथ/वसुरात (बौद्धमत में)
3. भवभूति	ज्ञाननिधि
4. वरदराज	भट्टोजिदीक्षित
5. भट्टोजिदीक्षित	शेषकृष्ण
6. तुलसीदास	नरहर्यानन्द
7. राम	वशिष्ठ, विश्वामित्र, अगस्त्य
8. श्रीकृष्ण	सान्दीपनी
9. चन्द्रगुप्त	चाणक्य
10. देवताओं के	बृहस्पति
11. असुरों के	शुक्राचार्य
12. लव, कुश, सौधातकि, दण्डायन	वाल्मीकि
13. दुष्यन्त	सोमरात (पुरोहित)
14. पाणिनि	वर्ष (उपवर्ष)
15. मंखक	रुय्यक
16. दाराशिकोह	पण्डितराज जगन्नाथ (संस्कृतशिक्षक)
17. बाणभट्ट	भर्वु
18. शिवाजी	समर्थगुरुरामदास, कोण्डदेव
19. कनिष्क	अश्वघोष
20. अम्बिकादत्तव्यास	विश्वक्सेन
21. अर्जुन (पञ्चपाण्डव)	द्रोणाचार्य
22. शङ्कराचार्य	आचार्य गौडपाद
23. महेन्द्रपाल	राजशेखर
24. अभिनवगुप्त	भट्टतौत
25. प्रतिहारेन्दुराज	मुकुलभट्ट
26. एकलव्य	द्रोणाचार्य
27. शार्ङ्गरव, शारद्वत	कण्व
28. गालव	मारीच
29. कर्ण	परशुराम
30. भीष्मपितामह	परशुराम
31. दुर्योधनादि (कौरवों के)	द्रोणाचार्य
32. चन्द्रापीड	शुकनाश (उपदेष्टा)
33. जैमिनि	पराशर
34. पराशर	व्यास

35. मण्डनमिश्र	कुमारिलभट्ट
36. उम्बेक (भवभूति)	कुमारिलभट्ट
37. प्रभाकरमिश्र	कुमारिलभट्ट
38. शालिकनाथ	प्रभाकरमिश्र
39. आसुरि	कपिलमुनि
40. पञ्चशिख	आसुरि
41. हस्तामलक	शङ्कराचार्य
42. योगीन्द्र सदानन्द	अद्वयानन्द
43. अरस्तू	प्लेटो
44. प्लेटो	सुकरात
45. सिकन्दर	अरस्तू
46. नागेशभट्ट	हरिदीक्षित

संस्कृतवाङ्मय में वर्णित राजा और राजधानी

राजा	राजधानी	राजा	राजधानी
1. शूद्रक	विदिशा ('वेत्रवती' नदी के किनारे)	**2. तारापीड**	उज्जयिनी
3. दुष्यन्त	हस्तिनापुर	**4. राम**	अयोध्या (सरयूनदी के किनारे)
5. रावण	लङ्का ('समुद्र' तट पर)	**6. नल**	निषधदेश
7. कृष्ण	द्वारिका (समुद्र के किनारे)	**8. शिवाजी**	सतारा/रायगढ़
9. दुर्योधन (सुयोधन)	हस्तिनापुर	**10. युधिष्ठिर**	इन्द्रप्रस्थ/हस्तिनापुर
11. पुरु	हस्तिनापुर	**12. प्रद्योत**	उज्जयिनी
13. कुबेर	अलकापुरी	**14. उदयन**	कौशाम्बी/उज्जयिनी
15. भर्तृहरि	धारानगरी	**16. विक्रमादित्य**	उज्जयिनी
17. दुर्विनीत	कोंकण	**18. राजाभोज**	धारानगरी
19. हर्षवर्धन	थाणेश्वर	**20. जयचन्द्र**	कन्नौज
21. पृथ्वीराज	दिल्ली	**22. महमूदगजनवी**	गजनी
23. मुहम्मद गोरी	गोरदेश	**24. औरङ्गजेब**	दिल्ली
25. रन्तिदेव	दशपुर		

संस्कृत में वर्णित कुछ प्रसिद्ध आश्रम एवं नगर

आश्रम/नगर	नदी/पर्वत	आश्रम/नगर	नदी/पर्वत
1. कण्व आश्रम	मालिनी नदी	**8. जाबालि आश्रम**	पम्पासरोवर
2. विश्वामित्र आश्रम	गौतमी नदी	**9. महाश्वेता आश्रम**	अच्छोदसरोवर
3. वाल्मीकि आश्रम	गङ्गानदी/तमसानदी	**10. विदिशा**	वेत्रवती (बेतवा)
4. भारद्वाज आश्रम	प्रयाग का सङ्गमतट	**11. उज्जयिनी**	क्षिप्रा नदी
5. अगस्त्य आश्रम	गोदावरी/दण्डकवन	**12. शचीतीर्थ (अप्सरातीर्थ)**	गङ्गा नदी
6. मारीच आश्रम	हेमकूटपर्वत	**13. अयोध्या**	सरयू नदी
7. यक्ष का निवास	रामगिरिपर्वत (चित्रकूट)	**14. हरिद्वार (कनखल)**	गङ्गा नदी

संस्कृत ग्रन्थों का मङ्गलाचरण

रचना	मङ्गलाचरण/(छन्द)	देवता	प्रकार
1. रघुवंशम्	**वागर्थाविव सम्पृक्तौ......।** (अनुष्टुप्)	शिव-पार्वती	नमस्कारात्मक

2. अभिज्ञानशाकुन्तलम्	या सृष्टिः स्रष्टुराद्या.....। (स्रग्धरा)	अष्टमूर्तिशिव	आशीर्वादात्मक
3. किरातार्जुनीयम्	श्रियः कुरुणामधिपस्य पालनीम् (वंशस्थ)	लक्ष्मी	वस्तुनिर्देशात्मक
4. शिशुपालवधम्	श्रियः पतिः श्रीमति शासितुं जगत्...। (वंशस्थ)	लक्ष्मी	वस्तुनिर्देशात्मक
5. नैषधीयचरितम्	निपीय यस्य (वंशस्थ)	–	वस्तुनिर्देशात्मक
6. मेघदूतम्	कश्चित् कान्ता विरह गुरुणा....(मन्दाक्रान्ता)	–	वस्तुनिर्देशात्मक
7. उत्तररामचरितम्	इदं कविभ्यः पूर्वेभ्यो नमो वाकं प्रशास्महे (अनुष्टुप्)	पूर्ववर्ती वाल्मीकि आदिकवि वाल्मीकि	नमस्कारात्मक
8. शिवराजविजयम्	विष्णोर्माया भगवती..... (भा.)	विष्णु	नमस्कारात्मक तथा वस्तुनिर्देशात्मक
9. कादम्बरी कथा	रजोजुषे जन्मनि सत्त्ववृत्तये....। (वंशस्थ)	ब्रह्म, विष्णु, शिव रूपी परब्रह्म की	नमस्कारात्मक
10. नीतिशतकम्	दिक्कालाद्यनवच्छिन्ना.....। (अनुष्टुप्)	परब्रह्म की	नमस्कारात्मक

संस्कृतग्रन्थों की श्लोकसंख्या

रचना	कुल श्लोक संख्या
1. मेघदूतम्	पूर्वमेघ 67 उत्तरमेघ 54 = 121 इसमें 6 श्लोक प्रक्षिप्त। कुल = 63 + 52 = 115 श्लोक (मल्लिनाथ के अनुसार)
2. उत्तररामचरितम्	लगभग 256 (तृतीय अङ्क में – 48)
3. अभिज्ञानशाकुन्तलम्	लगभग 196 (चतुर्थ अङ्क में– 22)
4. किरातार्जुनीयम्	लगभग 1030 (कुछ विद्वानों के अनुसार– 1040) (प्रथमसर्ग में–46)
5. नीतिशतकम्	लगभग 111 (11 पद्धतियाँ)
6. शृङ्गारशतकम्	लगभग 103
7. वैराग्यशतकम्	लगभग–111
8. रघुवंशम्	लगभग 1569
9. वाल्मीकीयरामायणम् (चतुर्विंशतिसाहस्त्रीसंहिता)	लगभग–24000, (7 काण्ड, 500 सर्ग)
10. महाभारतम् (शतसाहस्त्रीसंहिता)	लगभग – एक लाख श्लोक, 18 पर्व
11. शिशुपालवधम्	लगभग 1650 (प्रथम सर्ग में – 75)
12. नैषधीयचरितम्	लगभग 2830 (प्रथम सर्ग में–145)
13. मृच्छकटिकम्	लगभग–380 (दश अङ्क)
14. गीता	लगभग–700, 18 अध्याय
15. भट्टिकाव्यम् (रावणवध)–भट्टि	लगभग–1624 श्लोक, 22 सर्ग
16. हरविजयम् (रत्नाकर)	4321 श्लोक, 50 सर्ग
17. राघवपाण्डवीय-कविराज	668 श्लोक, 13 सर्ग
18. भास के तेरह नाटक	1092 श्लोक
19. मालविकाग्निमित्रम्	96 श्लोक, 5 अङ्क
20. अनर्घराघवम्	567 श्लोक, 7 अङ्क
21. बालरामायणम्	741 पद्य, 10 अङ्क
22. ऋतुसंहारम्	144 श्लोक, 6 सर्ग

संस्कृतग्रन्थों के उपजीव्यग्रन्थ

रचना	उपजीव्यग्रन्थ
1. रघुवंशम् (कालिदास)	वाल्मीकीयरामायण एवं पद्मपुराण

2. **मेघदूतम्** (कालिदास)	ब्रह्मवैवर्तपुराण से कथानक तथा वाल्मीकि रामायण से दूत की कल्पना
3. **किरातार्जुनीयम्** (भारवि)	महाभारत का वनपर्व
4. **शिशुपालवधम्** (माघ)	(i) महाभारत का सभापर्व (सर्ग 33 से 45 तक) (ii) श्रीमद्भागवतपुराण (10 वाँ स्कन्ध, 74वाँ अध्याय)
5. **नैषधीयचरितम्** (श्रीहर्ष)	महाभारत के वनपर्व का नलोपाख्यान
6. **अभिज्ञानशाकुन्तलम्** (कालिदास)	(i) महाभारत आदिपर्व का शकुन्तलोपाख्यान (अध्याय 67 से 74 तक) (ii) पद्मपुराण
7. **उत्तररामचरितम्** (भवभूति)	वाल्मीकीयरामायण का उत्तरकाण्ड (सर्ग 42 से 97 तक)
8. **वेणीसंहारम्** (भट्टनारायण)	महाभारत का सभापर्व
9. **मृच्छकटिकम्** (शूद्रक)	भासकृत 'चारुदत्तम्' नाटक
10. **कादम्बरी** (बाणभट्ट)	गुणाढ्य की 'बृहत्कथा' (सुमनस् वृत्तान्त)
11. **शिवराजविजयम्** (अम्बिकादत्त व्यास)	इतिहासप्रसिद्ध कथानक
12. **बुद्धचरितम्** (अश्वघोष)	'ललितविस्तर' बौद्धग्रन्थ, इतिहासप्रसिद्ध
रचना	**उपजीव्यग्रन्थ**
13. **कुमारसम्भवम्** (कालिदास)	श्रीमद्भागवतमहापुराण
14. **सौन्दरानन्द** (अश्वघोष)	इतिहासप्रसिद्ध
15. **स्वप्नवासवदत्तम्** (भास)	इतिहासप्रसिद्ध उदयनविषयक लोककथायें
16. **प्रतिमानाटकम्** (भास)	वाल्मीकीयरामायण (अयोध्याकाण्ड से रावणवध तक)
17. **अभिषेकनाटकम्** (भास)	वाल्मीकीयरामायणम्
18. **पञ्चरात्रम्** (भास)	महाभारतम्
19. **मध्यमव्यायोग** (भास)	महाभारतम्
20. **कर्णभारम्** (भास)	महाभारतम्
21. **दूतघटोत्कचम्** (भास)	महाभारतम्
22. **बालचरितम्** (भास)	महाभारतम्
23. **उरुभङ्ग** (भास)	महाभारतम्
24. **प्रतिज्ञायौगन्धरायण** (भास)	उदयनकथाश्रित
25. **मालविकाग्निमित्रम्** (कालिदास)	इतिहासप्रसिद्ध
26. **विक्रमोर्वशीयम्** (कालिदास)	ऋग्वेद एवं महाभारतम्
27. **रत्नावली** (हर्ष)	उदयनकथाश्रित/कविकल्पित इतिहासप्रसिद्ध
28. **महावीरचरितम्** (भवभूति)	वाल्मीकिरामायण
29. **प्रसन्नराघवम्** (जयदेव)	वाल्मीकिरामायण
30. **नलचम्पू** (त्रिविक्रमभट्ट)	महाभारत
31. **मुद्राराक्षस** (विशाखदत्त)	इतिहासप्रसिद्ध, विष्णुपुराण
32. **प्रियदर्शिका** (हर्ष)	कविकल्पनाप्रसूत
33. **मालतीमाधवम्** (भवभूति)	कविकल्पनाप्रसूत
34. **अनर्घराघवम्** (मुरारि) वाल्मीकिरामायणम्	
35. **प्रबोधचन्द्रोदय** (कृष्णमिश्र) कविकल्पनाप्रसूत	
36. **हर्षचरितम्** (बाण)	इतिहास प्रसिद्ध
37. **ऋतुसंहारम्** (कालिदास) कविकल्पित	
38. **भट्टिकाव्य/रावणवध** (भट्टि)	वाल्मीकिरामायण
39. **जानकीहरणम्** (कुमारदास)	वाल्मीकि रामायण
40. **हरविजयम्** (रत्नाकर)	शिशुपालवध का प्रभाव
41. **शारिपुत्रप्रकरणम्** (अश्वघोष)	इतिहासप्रसिद्ध

संस्कृतग्रन्थों में नायक-नायिका

रचना	नायक	नायिका
1. स्वप्नवासवदत्तम्	उदयन (धीरललित)	वासवदत्ता/पद्मावती
2. मृच्छकटिकम्	चारुदत्त (धीरप्रशान्त)	वसन्तसेना/धूता
3. अभिज्ञानशाकुन्तलम्	दुष्यन्त (धीरोदात्त)	शकुन्तला
4. कुमारसम्भवम्	शिव	पार्वती
5. उत्तररामचरितम्	राम (धीरोदात्त)	सीता
6. किरातार्जुनीयम्	अर्जुन (नायक, धीरोदात्त) किरात (शिव, सहनायक) दुर्योधन (प्रतिनायक)	द्रौपदी
7. मेघदूतम्	यक्ष (हेममाली)	यक्षिणी (विशालाक्षी)
8. शिशुपालवधम्	श्रीकृष्ण (धीरोदात्त)	सत्यभामा/रुक्मिणी

रचना	नायक	नायिका
9. नैषधीयचरितम्	नल (धीरोदात्त)	दमयन्ती
10. रत्नावली (नाटिका)	उदयन (धीरललित)	रत्नावली (सागरिका)
11. कादम्बरी कथा	चन्द्रापीड (नायक, धीरोदात्त) वैशम्पायन (सहनायक)	कादम्बरी महाश्वेता (सहनायिका)
12. दशकुमारचरितम्	राजहंस (दस राजकुमार) राजवाहन	विलासवती अवन्तिसुन्दरी
13. वेणीसंहारम्	भीम (धीरोद्धत)	द्रौपदी
14. मालविकाग्निमित्रम्	अग्निमित्र (धीरोदात्त, कुछ विद्वानों के मत में धीरललित)	मालविका
15. विक्रमोर्वशीयम् (त्रोटक)	पुरूरवा (विक्रम)	उर्वशी
16. मुद्राराक्षसम्	चाणक्य और चन्द्रगुप्त	नायिका का अभाव
17. प्रियदर्शिका	राजा उदयन (धीरललित)	आरण्यिका (प्रियदर्शिका)
18. नागानन्द	जीमूतवाहन	मलयवती
19. मालतीमाधवम् (प्रकरण)	(i) माधव (ii) मकरन्द	(i) मालती (ii) मदयन्तिका
20. महावीरचरितम्	राम (धीरोदात्त)	सीता
21. बुद्धचरितम्	भगवान् बुद्ध	–
22. हर्षचरितम्	हर्षवर्धन	–
23. रघुवंशम्	श्रीराम (रघु)	सीता
24. कर्पूरमञ्जरी	चन्द्रपाल	कर्पूरमञ्जरी
25. प्रसन्नराघवम्	श्रीराम	सीता
26. प्रबोधचन्द्रोदय	प्रबोधचन्द्र	
27. ऊरुभङ्गम्	दुर्योधन/भीम	–

संस्कृत-ग्रन्थों में अङ्गी रस

रचना	प्रधान/मुख्य/अङ्गीरस	रचना	प्रधान/मुख्य/अङ्गीरस
1. अभिज्ञानशाकुन्तलम्	शृङ्गार	**2. मेघदूतम्**	विप्रलम्भशृङ्गार
3. उत्तररामचरितम्	करुणरस	**4. किरातार्जुनीयम्**	वीररस

ग्रन्थ	रस	ग्रन्थ	रस
5. नैषधीयचरितम्	शृङ्गार	**6. शिशुपालवधम्**	वीरस
7. रघुवंशम्	वीररस	**8. बुद्धचरितम्**	शान्तरस
9. मृच्छकटिकम्	शृङ्गाररस	**10. कुमारसम्भवम्**	शृङ्गाररस
11. शिवराजविजयम्	वीररस	**12. स्वप्नवासवदत्तम्**	शृङ्गाररस
13. मालतीमाधवम् (प्रकरण)	शृङ्गाररस	**14. महावीरचरितम् (नाटक)**	वीररस
15. मालविकाग्निमित्रम्	शृङ्गाररस	**16. विक्रमोर्वशीयम्**	शृङ्गाररस
17. मुद्राराक्षसम्	वीररस	**18. प्रियदर्शिका**	शृङ्गाररस
19. रत्नावली	शृङ्गाररस	**20. नागानन्द**	शान्तरस/वीररस
21. वेणीसंहारम्	वीररस	**22. कुन्दमाला**	करुणरस
23. प्रबोधचन्द्रोदय	शान्तरस	**24. शृङ्गारशतकम्**	शृङ्गाररस
25. गीतगोविन्दम्	शृङ्गाररस	**26. रावणवध (भट्टिकाव्यम्)**	वीररस
27. जानकीहरणम्	शृङ्गाररस	**28. कर्पूरमञ्जरी**	शृङ्गाररस
29. शारिपुत्रप्रकरणम्	शान्तरस	**30. अनर्घराघवम्**	शृङ्गाररस
31. रामायणम्	करुणरस	**32. महाभारतम्**	शान्तरस

संस्कृत-ग्रन्थों में प्रयुक्त छन्द

ग्रन्थ	ग्रन्थों में प्रयुक्त प्रमुख छन्द
1. किरातार्जुनीयम् (प्रथम सर्ग)	वंशस्थ, 45वें में पुष्पिताग्रा, अन्तिम 46वें में–मालिनी (कुल प्रयुक्त छन्द–22)
2. शिशुपालवधम्	वंशस्थ, अनुष्टुप्, उपजाति (कुल प्रयुक्त छन्द – 25)
3. नैषधीयचरितम्	उपजाति (कुल प्रयुक्त छन्द–19)
4. मेघदूतम्	मन्दाक्रान्ता (सम्पूर्ण ग्रन्थ में)
5. रघुवंशम्	उपजाति, अनुष्टुप्
6. अभिज्ञानशाकुन्तलम्	आर्या, वसन्ततिलका, अनुष्टुप् (कुल प्रयुक्त छन्द–24)
7. मृच्छकटिकम्	अनुष्टुप् (कुलप्रयुक्त छन्द–21)
8. उत्तररामचरितम्	अनुष्टुप् शिखरिणी (कुल प्रयुक्त छन्द 19)
9. बुद्धचरितम्	अनुष्टुप्, उपजाति
10. भट्टिकाव्यम् (रावणवधम्)	अनुष्टुप्, उपजाति, आर्या, और पुष्पिताग्रा आदि अनेक छन्द
11. मुद्राराक्षसम्	शार्दूलविक्रीडित, स्रग्धरा, शिखरिणी
12. वेणीसंहारम्	अनुष्टुप् (62), वसन्ततिलका (38) शार्दूलविक्रीडित (34) (कुलप्रयुक्त छन्द–18)
13. बालरामायणम्	शार्दूलविक्रीडित और स्रग्धरा।
14. प्रसन्नराघवम्	वसन्ततिलका, अनुष्टुप्, शार्दूलविक्रीडित, शिखरिणी।
15. अमरुकशतकम्	शार्दूलविक्रीडितम्
16. कुमारसम्भवम्	अनुष्टुप्
17. सौन्दरानन्द	अनुष्टुप्
18. जानकीहरणम्	अनुष्टुप्
19. हरविजय	शार्दूलविक्रीडित, मन्दाक्रान्ता

संस्कृत ग्रन्थों का विभाजन

ग्रन्थ-ग्रन्थकार	विभाजन
1. काव्यप्रकाश (मम्मट)	दश उल्लास, 142 कारिकायें, 604 उदाहरण।
2. साहित्य दर्पण (विश्वनाथ)	दश परिच्छेद

3. रसगङ्गाधर (जगन्नाथ)	चार आनन
4. दशरूपक (धनञ्जय)	चार प्रकाश
5. काव्यादर्श (दण्डी)	तीन परिच्छेद, 660 पद्य
6. शिवराजविजयम् (अम्बिकादत्तव्यास)	तीन विराम, 12 निःश्वास
7. महाकाव्य	सर्गों में विभक्त (8 से अधिक सर्ग)
8. नाटक	अङ्को में विभक्त (5 अङ्क या इससे अधिक)
9. मेघदूतम् (कालिदास)	दो खण्डों में–पूर्वमेघ, उत्तरमेघ
10. कादम्बरी कथा (बाणभट्ट)	दो भागों में–पूर्वभाग, उत्तरभाग
11. आख्यायिका	उच्छ्वासों में (हर्षचरितम् में 8 उच्छ्वास)
12. वक्रोक्तिजीवितम् (कुन्तक)	चार उन्मेष
13. वाल्मीकीयरामायणम् (वाल्मीकि)	7 काण्ड, 600 सर्ग, 24,000 श्लोक
14. महाभारतम् (वेदव्यासः)	18 पर्व, 1 लाख श्लोक
15. श्रीमद्भागवतपुराण (वेदव्यासः)	12 स्कन्ध, 18000 श्लोक
16. गीता (वेदव्यासः)	18 अध्याय, 700 श्लोक
17. व्यक्तिविवेक (महिमभट्ट)	तीन विमर्श
18. सरस्वतीकण्ठाभरण (भोजराज)	पाँच परिच्छेद
19. शृङ्गारप्रकाश (भोजराज)	36 प्रकाश
20. कविकण्ठाभरण (क्षेमेन्द्र)	पाँच अध्याय 55 कारिकायें।
21. अभिधावृत्तिमात्रिका (मुकुलभट्ट)	15 कारिकायें
22. ध्वन्यालोक (आनन्दवर्धन)	4 उद्योत
23. काव्यालङ्कारसारसंग्रह (उद्भट)	6 वर्गों में
24. काव्यालङ्कार (रुद्रट)	16 अध्याय, 714 आर्यायें
25. काव्यालङ्कारसूत्र (वामन)	5 अधिकरण
26. काव्यालङ्कार (भामह)	6 परिच्छेद
27. काव्यमीमांसा (राजशेखर)	18 अध्याय
28. चन्द्रालोक (जयदेव)	10 मयूख
29. राजतरङ्गिणी (कल्हण)	8 तरङ्ग
30. ऋतुसंहार (कालिदास)	6 सर्ग, 144 श्लोक
31. नाट्यशास्त्र (भरत)	36 अध्याय
32. कथासरित्सागर (सोमदेव)	18 लम्बक, 124 तरङ्ग, 22000 पद्य।
33. हितोपदेश (नारायणपण्डित)	चार परिच्छेद, 43 कहानियाँ
34. पञ्चतन्त्र (विष्णुशर्मा)	पाँच तन्त्र, पाँच मुख्य कथायें, 1003 श्लोक, 75 उपकथायें।
35. कर्पूरमञ्जरी (राजशेखर)	4 जवनिका

संस्कृत ग्रन्थों में प्रमुख वर्णन

वर्णन	ग्रन्थ	वर्णन	ग्रन्थ
1. अच्छोदसरोवर	कादम्बरी	**5. इन्द्रकीलपर्वत**	किरातार्जुनीयम् सर्ग-5
2. पम्पासरोवर	कादम्बरी	**6. शरद्वर्णन**	किरातार्जुनीयम् सर्ग 4
3. शाल्मलीवृक्ष	कादम्बरी	**7. षड्ऋतु वर्णन**	(i) शिशुपालवधम् सर्ग-6
4. रैवतकपर्वत	शिशुपालवधम्-सर्ग 4		(ii) ऋतुसंहारम्

संस्कृतग्रन्थों के अपरनाम

मुख्यग्रन्थ	अपरनाम	मुख्यग्रन्थ	अपरनाम
1. किरातार्जुनीयम्	लक्ष्मीपदाङ्कमहाकाव्यम्	**4. नलचम्पू**	दमयन्तीकथा

2. शिशुपालवधम्	श्र्यङ्कमहाकाव्यम् ('श्री' पदाङ्कमहाकाव्य)	**5. अष्टाध्यायी**	अष्टक
3. नैषधीयचरितम्	आनन्दपदाङ्कमहाकाव्यम्		

संस्कृतवाङ्मय की दशत्रयी

1. बृहत्त्रयी

ग्रन्थ	**कवि**
1. किरातार्जुनीयम्	भारवि
2. शिशुपालवधम्	माघ
3. नैषधीयचरितम्	श्रीहर्ष

2. लघुत्रयी

ग्रन्थ	**कवि**
1. रघुवंशम्	कालिदासः
2. कुमारसम्भवम्	कालिदासः
3. मेघदूतम्	कालिदासः

3. गद्यबृहत्त्रयी

कवि	**ग्रन्थ**
1. सुबन्धु	वासवदत्ता
2. बाणभट्ट	कादम्बरी
3. दण्डी	दशकुमारचरितम्

4. उपजीव्यग्रन्थत्रयी

ग्रन्थः	**कविः**
1. रामायणम्	वाल्मीकिः
2 महाभारतम्	वेदव्यासः
3. भागवतपुराणम्	वेदव्यासः

5. पुरुषार्थत्रयी

1. धर्म
2. अर्थ
3. काम

6. पाषाणत्रयी

1. किरातार्जुनीयम् का प्रथम सर्ग
2. किरातार्जुनीयम् का द्वितीय सर्ग
3 किरातार्जुनीयम् का तृतीय सर्ग

7. गुणत्रयी

1. सत्त्वगुणः
2. रजोगुणः
3. तमोगुणः

8. मुनित्रयी

मुनिः	**व्याकरणग्रन्थः**	**साहित्यिकग्रन्थः**
1. पाणिनिः	अष्टाध्यायी	जाम्बवतीजयम्/पातालविजयम्
2. कात्यायनः	वार्तिकम्	स्वर्गारोहणम्
3. पतञ्जलिः	महाभाष्यम्	महानन्दकाव्यम्

9. प्रस्थानत्रयी

1. ब्रह्मसूत्र
2. उपनिषद्
3. गीता

10. वेदत्रयी

1. ऋग्वेद
2. यजुर्वेद
3. सामवेद

यज्ञ	**यज्ञकर्ता**
वाजपेय	महाकवि (भवभूति के पूर्वज)
राजसूय	युधिष्ठिर
पुत्रेष्टि	दशरथ
अश्वमेध	राम
गवालम्भ	राजा रन्तिदेव

वीणा	**स्वामी**	**ग्रन्थ**
महती	नारद	शिशुपालवधम्
कच्छपी	सरस्वती	–
घोषवती	वासवदत्ता	स्वप्नवासवदत्तम्

काव्यशास्त्रीय छः सम्प्रदाय

सम्प्रदाय	**प्रवर्तक और प्रमुख आचार्य**
1. रससम्प्रदाय	**भरत (प्रवर्तक)** भोजराज, भट्टनायक, विश्वनाथ, राजशेखर, केशवमिश्र, शारदातनय
2. अलङ्कारसम्प्रदाय	**भामह** (प्रवर्तक), दण्डी, उद्भट, प्रतिहारेन्दुराज रुद्रट, जयदेव, अप्पयदीक्षित।
3. रीतिसम्प्रदाय	**वामन** (प्रवर्तक)
4. ध्वनिसम्प्रदाय	**आनन्दवर्धन** (प्रवर्तक), रुय्यक, मम्मट, अभिनवगुप्त, जगन्नाथ
5. वक्रोक्तिसम्प्रदाय	**कुन्तक** (प्रवर्तक)
6. औचित्यसम्प्रदाय	**क्षेमेन्द्र** (प्रवर्तक)

चमत्कार सम्प्रदाय	कुछ आधुनिक काव्यशास्त्री

काव्यलक्षण–तालिका

ग्रन्थ	ग्रन्थकार	काव्यलक्षण
1. काव्यप्रकाश	आचार्य मम्मट	तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि–(का.प्र. प्रथमोल्लास)
2. साहित्यदर्पण	आचार्य विश्वनाथ	वाक्यं रसात्मकं काव्यम्
3. रसगङ्गाधर	पण्डितराज जगन्नाथ	रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्
4. काव्यालङ्कार	भामह	शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्
5. वक्रोक्तिजीवितम्	कुन्तक	वक्रोक्तिः काव्यजीवितम्
6. काव्यालङ्कार सूत्र	वामन	रीतिरात्मा काव्यस्य
7. ध्वन्यालोक	आनन्दवर्धन	काव्यस्यात्मा ध्वनिः
8. काव्यादर्श	दण्डी	शरीरं तावदिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली
9. औचित्यविचारचर्चा	क्षेमेन्द्र	औचित्यं रससिद्धस्य स्थिरं काव्यस्य जीवितम्
10. अग्निपुराण	व्यास	संक्षेपाद्वाक्यमिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली/काव्यं स्फुरदलङ्कारं गुणवद् दोषवर्जितम्।।
11. शृङ्गारप्रकाश	भोज	अदोषं गुणवद्काव्यमलङ्कारैरलङ्कृतम् रसान्वितं कविः कुर्वन् कीर्तिं प्रीतिं च विन्दति।।

काव्यशास्त्र में अलङ्कारों की संख्या

ग्रन्थ–ग्रन्थकार	अलङ्कारों की संख्या	ग्रन्थ–ग्रन्थकार	अलङ्कारों की संख्या
1. नाट्यशास्त्र–भरत	उपमा, रूपक, दीपक और यमक कुल चार अलङ्कार		
2. अग्निपुराण	09 शब्दालङ्कार +	08 अर्थालङ्कार +	06 उभयालङ्कार = 23 अलङ्कार
3. विष्णुधर्मोत्तर पुराण	18 अलङ्कार		
4. काव्यालङ्कार–भामह	38 अलङ्कार		
5. काव्यादर्श–दण्डी	37 अलङ्कार		
6. काव्यालङ्कारसारसंग्रह–उद्भट	41 अलङ्कार		
7. काव्यालङ्कार–रुद्रट	68 अलङ्कार		
8. सरस्वतीकण्ठाभरण–भोजराज	24 शब्दालङ्कार +	24 अर्थालङ्कार +	24 उभयालङ्कार = 72 अलङ्कार
9. काव्यप्रकाश – मम्मट	06 शब्दालङ्कार +	61 अर्थालङ्कार = 67 अलङ्कार	
10. अलङ्कारसर्वस्व – रुय्यक	78 अलङ्कार		
11. साहित्यदर्पण–विश्वनाथ	78 अलङ्कार		
12. चन्द्रालोक–जयदेव	100 अलङ्कार		
13. कुवलयानन्द–अप्पयदीक्षित	120 अलङ्कार		

साहित्यशास्त्र में रसों की संख्या

रस	स्थायीभाव	वर्ण	देवता
रस	स्थायीभाव	वर्ण	देवता
1. शृङ्गार	रति	श्याम	विष्णु
2. वीररस	उत्साह	सुवर्णवत्	महेन्द्र
3. वीभत्सरस	जुगुप्सा	नील	महाकाल
4. रौद्ररस	क्रोध	रक्त	रुद्र
5. हास्यरस	हास	शुक्ल	प्रमथ
6. अद्भुतरस	विस्मय	पीत	गन्धर्व
7. भयानक रस	भय	कृष्ण	महाकाल
8. करुणरस	शोक	कपोत	यम
9. शान्तरस	निर्वेद/शम	कुन्दपुष्पवत्	श्रीनारायण

- आचार्य भरत और धनञ्जय के अनुसार नाटक में आठरस माने गये हैं–**''अष्टौ नाट्ये रसाः स्मृताः''–(नाट्यशास्त्र)**
- अभिनव गुप्त एवं आचार्य मम्मट आदि ने 'शान्तरस' को नवम रस के रूप में स्वीकार किया है। **''शान्तोऽपि नवमो रसः''**
- **रुद्रट** ने **'प्रेयान्'** नामक दसवें रस की उद्‌भावना की है।
- **रूपगोस्वामी** ने **'भक्तिरस'** को प्रधानरस माना है।
- **विश्वनाथ** नवरस के अतिरिक्त **'वात्सल्य'** नामक रस को भी स्वीकार करते हैं।
- **भवभूति** ने **'करुणरस'** को ही एकमात्र मूलरस मानते हैं–**''एको रसः करुण एव''**

आचार्य भरत प्रतिपादित रससूत्र

- आचार्य भरत द्वारा 'नाट्यशास्त्र' में प्रतिपादित रससूत्र– **''विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः''** अर्थात् विभाव, अनुभाव और व्यभिचारिभाव के संयोग से 'रस' की निष्पत्ति होती है।

आचार्य भरत प्रतिपादित 'रससूत्र' के व्याख्याकार

व्याख्याकार / मत	समय / दर्शन
1. भट्टलोल्लट	नवमशताब्दी
उत्पत्तिवाद (उत्पाद्य-उत्पादक)	मीमांसा
2. शङ्कुक	नवमशताब्दी
अनुमितिवाद (अनुमाप्य-अनुमापक)	न्याय
3. भट्टनायक	11वीं शताब्दी
भुक्तिवाद (भोज्य-भोजक)	सांख्य
4. अभिनवगुप्त	11वीं शताब्दी
अभिव्यक्तिवाद (व्यङ्ग्य-व्यञ्जक)	शैव/वेदान्त

शंखों के नाम

देव	शंख
1. श्रीकृष्ण	पाञ्चजन्य
2. युधिष्ठिर	अनन्तविजय
3. भीम	पौण्ड्र
4. अर्जुन	देवदत्त
5. नकुल	सुघोष
6. सहदेव	मणिपुष्पक

नायकों की कोटियाँ

धीरोदात्त – राम, कृष्ण, अर्जुन, चन्द्रापीड, दुष्यन्त, शिवाजी।
धीरोद्धत – भीम, परशुराम, दुर्योधन आदि।
धीरललित – यक्ष, उदयन आदि।
धीरप्रशान्त – चारुदत्त आदि।

नायिकाओं की कोटियाँ

स्वकीया प्रौढा – सीता, द्रौपदी
स्वकीया मध्या – यक्षिणी
स्वकीया मुग्धा – शकुन्तला, कादम्बरी, महाश्वेता

संस्कृत-रूपकों के दशभेद

रूपक	अङ्क-संख्या	उदाहरणम्
1. नाटक	5 से 10 अङ्क	अभिज्ञानशाकुन्तलम्, स्वप्नवासवदत्तम्, उत्तररामचरितम्

2. प्रकरण	10 अङ्क	मृच्छकटिकम्, मालतीमाधवम्, शारिपुत्रप्रकरण पुष्पभूषित
3. भाण	1 अङ्क	लीलामधुकरम्, शृङ्गारशेखर, मर्कटमदलिका, धूर्तसमागम
4. व्यायोग	1 अङ्क	सौगन्धिकाहरणम्, जामदग्न्यजय
5. समवकार	3 अङ्क	समुद्रमन्थनम् (12 नायक), नवग्रहचरितम्
6. डिम	4 अङ्क	त्रिपुरदाह (16 नायक)
7. ईहामृग	4 अङ्क /1 अङ्क	कुसुमशेखरविजयम्
8. अङ्क (उत्सृष्टिकाङ्क)	1 अङ्क	शर्मिष्ठा-ययातिः
9. वीथी	1 अङ्क	मालविका
10. प्रहसन	1 अङ्क	कन्दर्पकेलिः/धूर्तचरितम्
● नाटिका	4 अङ्क	रत्नावली, प्रियदर्शिका
● सट्टक	4 अङ्क	कर्पूरमञ्जरी

संस्कृतनाटकों में विदूषक

नाटक	**विदूषक**
1. अभिज्ञानशाकुन्तलम् (कालिदास)	माढव्य/माधव्य
6. स्वप्नवासवदत्तम् (भास)	वसन्तक
2. विक्रमोर्वशीयम् (कालिदास)	माणवक
7. मालतीमाधवम् (भवभूति)	विदूषक का अभाव
3. मालविकाग्निमित्रम् (कालिदास)	गौतम
8. महावीरचरितम् (भवभूति)	विदूषक का अभाव
4. मृच्छकटिकम् (शूद्रक)	मैत्रेय
9. उत्तररामचरितम् (भवभूति)	विदूषक का अभाव
5. रत्नावली (श्रीहर्ष)	वसन्तक
10. मुद्राराक्षसम् (विशाखदत्त)	विदूषक का अभाव

नाटक **विदूषक**

संस्कृत नाटकों में कञ्चुकी

नाटक	**कञ्चुकी का नाम**
नाटक	**कञ्चुकी का नाम**
1. प्रतिज्ञायौगन्धरायण	बादरायण
5. उत्तररामचरितम्	गृष्टि
2. दूतवाक्यम्	बादरायण
6. रत्नावली	बाभ्रव्य
3. स्वप्नवासवदत्तम्	बादरायण
7. वेणीसंहारम्	जयन्धर (युधिष्ठिर का)
4. अभिज्ञानशाकुन्तलम्	वातायन
विनयन्धर (दुर्योधन का)	

नाटकीय पञ्चीकरण

पञ्च अर्थप्रकृतियाँ	**पञ्च कार्यावस्थायें**	**पञ्चा**
सन्धियाँ	**पञ्च अर्थोपक्षेपक**	
पञ्चनाटककार		
1. बीज	1. आरम्भ	1 .
मुखसन्धि	1. विष्कम्भक	1. भास
2. बिन्दु	2. यत्न	2 .
प्रतिमुखसन्धि	2. चूलिका	2 .
कालिदास		
3. पताका	3. प्राप्त्याशा	3 .
गर्भसन्धि	3. अङ्कास्य	3 .
शूद्रक		
4. प्रकरी	4. नियताप्ति	4 .
अवमर्श/विमर्शसन्धि	4. अङ्कावतार	4 .
विशाखदत्त		
5. कार्य	5. फलागम	5 .
उपसंहृति/निर्वहणसन्धि	5. प्रवेशक	5 .
भवभूति		

अभिज्ञानशाकुन्तलम् के अङ्कों के नाम

अङ्क	**अङ्क का नाम**	**श्लोकसंख्या**
प्रथम	**आश्रम प्रवेश**	34
द्वितीय	**आश्रमनिवेश**	18
तृतीय	**मिलन**	24
चतुर्थ	**विदा**	22
पञ्चम	**प्रत्याख्यान**	31

षष्ठ	पश्चात्ताप	32
सप्तम	पुनर्मिलन	35
	योग =	**196**

उत्तररामचरितम् के अङ्कों के नाम

अङ्क	अङ्क का नाम	श्लोकसंख्या
प्रथम	चित्रदर्शन	51
द्वितीय	पञ्चवटीप्रवेश	30
तृतीय	छाया	48
चतुर्थ	कौशल्याजनकयोग	29
पञ्चम	कुमारविक्रम	35
षष्ठ	कुमारप्रत्यभिज्ञान	42
सप्तम	सम्मेलन	21
	योग =	**256**

मृच्छकटिकम् के अङ्कों के नाम

अङ्क	अङ्क का नाम	श्लोक संख्या
प्रथम	अलङ्कारन्यास	58
द्वितीय	द्यूतकरसंवाहक	20
तृतीय	सन्धिच्छेद	30
चतुर्थ	मदनिकाशर्विलक	33
पञ्चम	दुर्दिन	52
षष्ठ	प्रवहणविपर्यय	27
सप्तम	आर्यकापहरण	09
अष्टम	वसन्तसेनामोटन	47
नवम	व्यवहार (न्यायालय)	43
दशम	संहार (उपसंहार)	61
	योग =	**380**

रत्नावली के अङ्कों के नाम

अङ्क	अङ्क का नाम	श्लोकसंख्या
प्रथम अङ्क	मदनमहोत्सव	26
द्वितीय अङ्क	कदलीगृहम्	21
तृतीय अङ्क	सङ्केतक	19
चतुर्थ अङ्क	ऐन्द्रजालिक	20
		86

छन्दों में वर्णों की संख्या

छन्द	वर्णों की संख्या
अनुष्टुप्	$08 \times 4 = 32$
इन्द्रवज्रा	$11 \times 4 = 44$
उपेन्द्रवज्रा	$11 \times 4 = 44$
उपजाति	$11 \times 4 = 44$
रथोद्धता	$11 \times 4 = 44$
शालिनी	$11 \times 4 = 44$
स्वागता	$11 \times 4 = 44$
वंशस्थ	$12 \times 4 = 48$
द्रुतविलम्बित	$12 \times 4 = 48$
छन्द	**वर्णों की संख्या**
तोटक (त्रोटक)	$12 \times 4 = 48$
भुजङ्गप्रयात	$12 \times 4 = 48$
प्रहर्षिणी, अतिरुचिरा	$13 \times 4 = 52$
वसन्ततिलका	$14 \times 4 = 56$
मालिनी	$15 \times 4 = 60$
पञ्चचामर	$16 \times 4 = 64$
शिखरिणी, हरिणी, पृथ्वी, मन्दाक्रान्ता	$17 \times 4 = 68$
शार्दूलविक्रीडित	$19 \times 4 = 76$

स्त्रग्धरा $21 \times 4 = 84$

संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख ग्रन्थों के विषय में विशेष कथन

रामायण - रम्या रामायणी कथा

श्रीमद्भागवत - विद्यावतां भागवते परीक्षा

काव्यप्रकाश - काव्यप्रकाशस्य कृता गृहे-गृहे, टीकास्तथाप्येषः तथैव दुर्गमः

अभिज्ञानशाकुन्तलम्

1.कालिदासस्य सर्वस्वमभिज्ञानशाकुन्तलम्।

2. काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला।

उत्तररामचरितम् - उत्तररामचरिते भवभूतिर्विशिष्यते

मेघदूत - मेघे माघे गतं वयः

किरातार्जुनीयम्

"वृत्तछत्रस्य सा काऽपि वंशस्थास्य विचित्रता।
प्रतिभा भारवेर्येन सच्छायेनाधिकीकृता।"

नैषधीयचरितम्

1. " नैषधं विद्वदौषधम् "

2. "तावद् भा भारवेर्भाति यावन्माघस्य नोदयः।
उदिते नैषधे काव्ये क्व माघः क्व च भारविः।।"

3. "नैषधे पदलालित्यम् "

रावणवध (भट्टिकाव्य)

1. "अष्टाध्यायी जगन्माताऽमरकोशो जगत्पिता।
भट्टिकाव्यं गणेशश्चत्रयीयं सुखदास्तु वः।।"

2. व्याकृत्या कोश- छन्दोभ्यालङ्कृत्या रसेन च।
पञ्चकेनान्वितं काव्यं भट्टिकाव्यं विराजते।।

जानकीहरणम्

जानकीहरणं कर्तुं रघुवंशे स्थिते सति।
कविः कुमारदासश्च रावणश्च यदि क्षमः।।

हरविजयम्

हरविजय-महाकवेः प्रतिज्ञां, शृणुत कृत्तप्रणयो मम प्रबन्धे।
अपि शिशुरकविः कविः प्रभावाद् भवित कविश्च महाकविः क्रमेण।।

सेतुबन्धमहाकाव्यम्

"महाराष्ट्राश्रयां भाषां प्राकृष्टं प्रकृतं विदुः।
सागरः सूक्तिरत्नानां सेतुबन्धादि यन्मयम्।।"

गाथासप्तशती

अविनाशिनमग्राम्यमकरोत्सातवाहनः।
विशुद्धजातिभिः कोषं रत्नैरिव सुभाषितैः।।

अमरुकशतक

"अमरुककवेरेकः श्लोकः प्रबन्धशतायते।"

वासवदत्ता

कवीनामगलद् दर्पो नूनं वासवदत्तया।
शक्त्येव पाण्डुपुत्राणां गतया कर्णगोचरम्।।

कादम्बरी

1. 'कादम्बरीरसज्ञानामाहारोऽपि न रोचते।'

2. कादम्बरी रसभरेण समस्त एव। मत्तो न किञ्चिदपि चेतयते जनोऽयम्।।

3. 'धिया निबद्धेयमतिद्वयी कथा।'

संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख ग्रन्थों के अपरनाम

ग्रन्थ का नाम	अपरनाम
1. ऋग्वेद	दशतयी
2. शुक्ल यजुर्वेद	माध्यन्दिन संहिता, वाजसनेयी संहिता
सामवेद	उद्गातृ-वेद
अथर्ववेद	ब्रह्मवेद
ताण्ड्य ब्राह्मण	महाब्राह्मण, पंचविश, प्रौढ़
छान्दोग्य ब्राह्मण	उपनिषद् ब्राह्मण
छान्दोग्योपनिषद्	तण्डिनाम् उपनिषद्
केनोपनिषद्	तवल्कारोपनिषद्
शांखायन आरण्यक	कौषीतकि आरण्यक
आरण्यक	रहस्यग्रन्थ
ऋक् प्रातिशाख्य	पार्षद् (परिषद् सूत्र)
निरुक्त	शब्दव्युत्पत्तिशास्त्र, निर्वचन शास्त्र
ज्योतिष	प्रत्यक्षशास्त्र, कालविधानशास्त्र
हिरण्यकेशी गृह्यसूत्र	सत्याषाढ़ गृह्यसूत्र
कातन्त्रसूत्र	कालापव्याकरण
व्याकरण	शब्दशास्त्र
लघुपाराशरी	उडुदायप्रदीप
काठक गृह्यसूत्र	लौगाक्षि गृह्यसूत्र
बृहत्संहिता	वाराही संहिता
वेदान्तसूत्र	चतुर्लक्षणी
मीमांसासूत्र	द्वादशलक्षणी
ब्रह्मसूत्र	शारीरकसूत्र

ग्रन्थ का नाम	अपरनाम
ब्रह्मपुराण	आदिपुराण
अग्निपुराण	विश्वकोष
नारद पुराण	बृहन्नारदीय पुराण
श्रीमद्भागवत पुराण	दशलक्षणी पुराण
वायुपुराण	शिवपुराण
रामायण	चतुर्विंशतिसाहस्रीसंहिता, आदिमहाकाव्य आर्यभट्टाकाव्य
भुशुण्डिरामायण	महारामायण
योगवाशिष्ठ	आर्षरामायण
महाभारत	शतसाहस्रीसंहिता
सेतुबन्धमहाकाव्य	सूक्तिरत्नाकर
जाम्बवतीजय	पातालविजय
रावणवध	भट्टिकाव्य
काव्यशास्त्र	साहित्यविद्या
नाट्यशास्त्र	षट्साहस्री संहिता
कुमारपालितचरित	द्वयाश्रयमहाकाव्य
नैषधीयचरितम्	शास्त्रकाव्य, श्रयंक
प्रबन्धकोश	चतुर्विंशतिप्रबन्ध
नलचम्पू	हरचरणसरोजाङ्क
हनुमन्नाटक	महानाटक
गीतगोविन्द	शृंगारमहाकाव्य, संगीतरूपक,
संस्कृतमहाकोश	पीटर्सबर्ग कोश

संस्कृत में सर्वप्रथम/सर्वप्राचीन/सर्वश्रेष्ठ

प्राचीनतम वेद	ऋग्वेद
प्राचीनतम पुराण	ब्रह्मपुराण
स्मृतिग्रन्थों में प्राचीनतम	मनुस्मृति
प्राकृत काव्यों में प्राचीनतम	सेतुबन्ध
आर्य भाषाओं में प्राचीनतम	वैदिक संस्कृत
लोककथा प्राचीनतम संग्रह	बृहत्कथा
शिक्षा के प्राचीनतम ग्रन्थ	प्रातिशाख्य
भाषाशास्त्र का प्राचीनतम ग्रन्थ	निरुक्त
मनुस्मृति के प्राचीनतम टीकाकार	मेधातिथि
वेदाङ्ग के प्राचीनतम ग्रन्थ	कल्पसूत्र
अमरुकशतक के प्राचीनतम टीकाकार	अर्जुनवर्मदेव
सर्वश्रेष्ठ कर्म	यज्ञ
सर्वश्रेष्ठ वेदभाष्यकर्ता	आचार्य सायण
सर्वश्रेष्ठ गद्यकार	बाणभट्ट
सर्वश्रेष्ठ वैयाकरण	महर्षि पाणिनि
सर्वश्रेष्ठ नाटककार	कालिदास
सर्वश्रेष्ठ प्रतीकात्मक नाटक	प्रबोधचन्द्रोदय
सर्वश्रेष्ठ तान्त्रिक ग्रन्थ	तन्त्रालोक
संस्कृत के सर्वश्रेष्ठ कवि	कालिदास
कश्मीरी लेखकों में सर्वश्रेष्ठ	अभिनवगुप्त
शाकुन्तल का सर्वश्रेष्ठ अङ्क	चतुर्थ
रससूत्र के सर्वश्रेष्ठ भाष्यकार	अभिनवगुप्त
शङ्करभट्ट के अनुसार सर्वश्रेष्ठ निबन्धकार	विज्ञानेश्वर
संस्कृत साहित्य के सर्वश्रेष्ठ कवि	कालिदास
राजशेखर के मत में सर्वश्रेष्ठ नाटक	स्वप्नवासवदत्तम्
शृङ्गाररस के सर्वश्रेष्ठ कवि	कालिदास
करुणरस के सर्वश्रेष्ठ कवि	भवभूति
संस्कृत गद्यसाहित्य की सर्वोकृष्ट रचना	कादम्बरी
ब्राह्मण ग्रन्थों में सर्वश्रेष्ठ देवता	प्रजापति
केरलीय राजाओं में सर्वश्रेष्ठ	रामवर्मा
सर्वप्रथम नाटककार	भास
मीमांसा के सर्वप्रथम भाष्यकार	शबर
चम्पू ग्रन्थों में सर्वप्रथम	नलचम्पू
कालिदास की प्रथम कृति	ऋतुसंहार
प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास (संस्कृत)	शिवराजविजय
सुभाषित संग्रह का प्रथम ग्रन्थ	गाथासप्तशती
प्रथम ऐतिहासिक काव्य	नवसाहसाङ्कचरित
समुपलब्ध प्रथम गद्यकार	दण्डी
प्रथम लौकिक खण्डकाव्य	मेघदूतम्
प्रथम बौद्ध नाटककार	अश्वघोष
संस्कृत का प्रथम महाकाव्य	जाम्बवतीविजय
अद्वैत के प्रथम आचार्य	गौडपादाचार्य
प्रस्थानत्रयी के प्रथम भाष्यकार	शङ्कराचार्य
बाणभट्ट की प्रथम रचना	हर्षचरितम्
काव्यप्रकाश की प्रथम टीका	संकेत (माणिक्यचन्द्र कृत)
जैनधर्म के प्रथम तीर्थंकर	ऋषभदेव
प्राकृत का प्रथम गीतिकाव्य	गाथासप्तशती
संस्कृत की प्रथम नाटिका	रत्नावली
कलापक्ष के प्रथम आचार्य	भारवि
उपलब्ध प्रथम प्रतीक नाटक	प्रबोधचन्द्रोदय
पुराणों में प्रथम	ब्रह्मपुराण
महाभारत के प्राचीन टीकाकार	देवबोध

भाषाविज्ञान के प्राचीन पण्डित	यास्क
सबसे प्राचीन धर्मसूत्र	गौतमधर्मसूत्र
सबसे प्राचीन शुल्बसूत्र	बोधायनशुल्बसूत्र
अथर्ववेद का प्राचीन नाम	अथर्वाङ्गिरस
काव्यशास्त्र का उपलब्ध सबसे प्राचीन ग्रन्थ	नाट्यशास्त्र
व्याकरण दर्शन का सर्वोत्तम ग्रन्थ	वाक्यपदीय
स्मृति ग्रन्थों में सर्वाधिक प्रसिद्ध	मनुस्मृति
वैष्णवपुराणों में सर्वप्रसिद्ध	श्रीमद्भागवतपुराण
काव्यों में सर्वाधिक रमणीय	नाटक
जैन पुराणों में सर्वाधिक प्रसिद्ध	आदिपुराण
सामवेद की लोकप्रिय शाखा	कौथुम शाखा
अथर्ववेद की लोकप्रिय शाखा	शौनक शाखा
दक्षिण भारत का लोकप्रिय स्तोत्र	नारायणीय स्तोत्र
संस्कृत का बृहत्तम महाकाव्य	हरविजय (50 सर्ग)
चम्पू काव्यों में बृहत्तम	वृन्दावनचम्पू
विश्वसाहित्य का बृहत्तम ग्रन्थ	महाभारत
अष्टविकृति पाठों में सबसे कठिन	घनपाठ
सबसे बड़ा शुल्बसूत्र	बोधायन
वेद व्याख्याकारों में अग्रगण्य	सायणाचार्य
ऐतिहासिक काव्यों में अग्रणी	राजतरंगिणी
सर्वाधिक विशाल पुराण	स्कन्दपुराण
सर्वाधिक बृहद् उपनिषद्	बृहदारण्यकोपनिषद्
ब्राह्मणग्रन्थों में सबसे छोटा	दैवत ब्राह्मण
सबसे छोटा उपनिषद्	माण्डूक्योपनिषद्
सबसे छोटा पुराण	मार्कण्डेय पुराण
अर्वाचीनतम ब्राह्मण ग्रन्थ	गोपथ ब्राह्मण
अर्वाचीन वेद	अथर्ववेद
आदिकाव्य	रामायण
ललित कलाओं के आदि आचार्य	भरतमुनि
ज्यामिति के आदि ग्रन्थ	शुल्बसूत्र
ज्योतिष का उपलब्ध प्राचीन ग्रन्थ	वेदाङ्गज्योतिष
उपजीव्यों में प्रमुख	रामायण, महाभारत
पाञ्चरात्र संहिताओं में प्रमुख	अर्हिबुध्न्यसंहिता
नास्तिक दर्शनों में सर्वप्राचीन	चार्वाक दर्शन
नीतिकथा साहित्य का सर्वप्राचीन ग्रन्थ	पञ्चतन्त्र

संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख ग्रन्थांश

श्रीमद्भगवद्गीता - **महाभारत**
(भीष्मपर्व -अध्याय - 25-42)

हरिवंशपुराण - **महाभारत**
(महाभारत का खिलपर्व / हरिवंशपर्व)

रासपञ्चाध्यायी - **भागवतमहापुराण** (दशमस्कन्ध)

दुर्गासप्तशती - **मार्कण्डेयपुराण** (अध्याय-81-93)

हंसगीता - **विष्णुधर्मोत्तरपुराण**

		(तृतीयखण्ड- अध्याय 227-342)
अध्यात्म-रामायण	-	**ब्रह्माण्ड पुराण** (उत्तरखण्ड का एक भाग)
पराशर-गीता	-	**महाभारत** (शान्तिपर्व-अध्याय-290-98)
विष्णुसहस्रनामस्तोत्र	-	**महाभारत** (अनुशासन पर्व- अध्याय-149)
शिवसहस्रनामस्तोत्र	-	**महाभारत** (अनुशासनपर्व- अध्याय-17)
हंस-गीता	-	**महाभारत** (शान्तिपर्व -अध्याय-299)
शकुन्तलोपाख्यान	-	**महाभारत** (आदिपर्व - अध्याय-68-74)
नलोपाख्यान	-	**महाभारत** (वनपर्व-अध्याय-53-79)
रामोपाख्यान	-	**महाभारत** (वनपर्व- अध्याय-274-91)
सावित्र्युपाख्यान	-	**महाभारत** (वनपर्व-अध्याय -292-99)
शङ्करगीता	-	**विष्णुधर्मोत्तरपुराण** (प्रथमखण्ड, अध्याय-52-65)

संस्कृत के प्रमुख ग्रन्थों की विशेष संज्ञा

ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद	-	**वेदत्रयी**
किरातार्जुनीयम् , शिशुपालवधम् , नैषधीयचरितम्	-	**संस्कृत साहित्य के बृहत्त्रयी**
ध्वन्यालोक, काव्यप्रकाश, रसगङ्गाधर	-	**काव्यशास्त्र के बृहत्त्रयी**

तैत्तिरीयारण्यक का दशम प्रपाठक - **महानारायणोपनिषद्**
शतपथ ब्राह्मण के अन्तिम 6 अध्याय - **बृहदारण्यकोपनिषद्**
आपस्तम्बधर्मसूत्र का 8वाँ पटल- **अध्यात्मपटल**
गीता का 18वाँ अध्याय - **एकाध्यायीगीता**
किरातार्जुनीयम् का 15वाँ सर्ग - **चित्रकाव्य**

कवियों की स्वकाव्य विषयोक्त गर्वोक्तियाँ

प्रत्यक्षरश्लेषमयप्रबन्ध - **सुबन्धु अपने काव्य वासवदत्ता के विषय में** (सातवीं शताब्दी पूर्वार्द्ध)
लक्ष्मीपतेश्चरितकीर्तनमात्रचारु - **माघ अपने काव्य के विषय में** (सातवीं शताब्दी ई0)
शृङ्गारामृतशीतगुः - **श्रीहर्ष नैषधीयचरित के विषय में** (सातवीं शताब्दी पूर्वार्द्ध)
कविकुलादृष्टाध्वपान्थः - **श्रीहर्ष ने अपने काव्य शिशुपालवध को माना** (12 वी. शताब्दी ई0)
चन्द्रार्धचूडचरिताश्रयचारु - **रत्नाकर अपने काव्य को** (बारहवीं शताब्दी ई0)
सन्दर्भशुद्धिं गिरां जानीते जयदेव एव - **जयदेव ने गीतगोविन्द के विषय में।** (बारहवीं शताब्दी ई0)

आनन्दवर्धन - आनन्दवर्धनः कस्य नासीदानन्दवर्धनः। (राजशेखर)

कालिदास - 1. कनिष्ठिकाधिष्ठित कालिदासः।
2. न कालिदासादपरस्य वाणी। (श्रीकृष्णकवेः)
3. काव्येषु माघः कविकालिदासः। (घटखर्परस्य)

गुणाढ्य - शश्वद् बाणद्वितीयेन नमदाकारधारिणा।
धनुषेव गुणाढ्येन निःशेषो रञ्जितो जनः।। (त्रिविक्रमभट्टस्य)

दण्डी - दण्डिप्रबन्धाश्च त्रिषु लोकेषु विश्रुताः। (राजशेखरस्य)

पाणिनिः - नमः पाणिनये तस्मै यस्मादाविरभूदिह। आदौ व्याकरणं काव्यमनु जाम्बवतीजयम्।। (राजशेखरस्य)

बाणभट्ट - 1. वाणी बाणो बभूवेति। (गोवर्धनस्य)
2. बाणः कवीनामिह चक्रवर्ती (तत्रैव)
3. वाणी बाणस्य मधुरशीलस्य (धर्मदासस्य)
4. बाणस्तु पञ्चाननः। (श्रीचन्द्रदेवस्य)
5. यादृग् गद्यविधौ बाणः पद्यबन्धे च तादृशः। (भोजराजस्य)
6. भट्टबाणस्य भारतीम्। (कस्यापि)

❑❑

3. प्राचीन भारतीय संस्कृति और दर्शन

3.1 भारतीय संस्कृति

- **अर्थ-** संस्कृत में संस्कृति शब्द 'सम्' उपसर्ग पूर्वक 'कृ' धातु से 'क्तिन्' प्रत्यय लगकर निष्पन्न हुआ है, जिसका अर्थ है- सँवारना, सजाना, परिष्कृत करना, अलङ्कृत करना, शुद्ध अथवा परिमार्जित करना।
- विशेष सन्दर्भ में इसका अन्य अर्थ भी है, जैसे- मन्त्रोच्चारण द्वारा परिमार्जित, प्रबोधित अथवा शिक्षित करना, सञ्चित अथवा इकट्ठा करना, सुन्दर एवं सम्पूर्ण सृजन।
- संस्कृति को किसी निश्चित परिभाषा में नहीं बाँधा जा सकता। उसकी अनुभूति कृति से प्रदर्शन से और उदाहरणों से होती है।
- हिन्दी भाषा में संस्कृति शब्द की व्युत्पत्ति अंग्रेजी के 'Culture' शब्द अथवा लैटिन के 'Culture' शब्द से हुई है,जिसका अर्थ है 'कर्षण' अथवा कृषि कर्म करना।
  इसी से Agriculture (कृषि), Fishiculture (मत्स्यकर्म), Horticulture (बागवानी) जैसे शब्दों का निर्माण हुआ है।
- उपर्युक्त अर्थों से एक बात स्पष्ट है कि परिमार्जन मनुष्य का अपना प्रयत्न है, एक आभ्यन्तर प्रयास है जो हमें प्रकृति द्वारा सहज प्राप्त नहीं हुआ है। वस्तुतः ये अर्थ हम लोगों में सौष्ठव एवं सत्कार के द्योतक हैं।

संस्कृति की परिभाषा

- **1. सत्यकेतु विद्यालङ्कार-** "मनुष्य अपनी बुद्धि का प्रयोग कर विचार और कर्म के क्षेत्र में जो सृजन करता है, उसको संस्कृति कहते है।"
- **2. श्रीचक्रवर्ती राजगोपालाचार्य-** "किसी भी जाति अथवा राष्ट्र के शिष्ट पुरुषों में विचार, वाणी एवं क्रिया का जो रूप व्याप्त रहता है, उसी का नाम संस्कृति है।"
- **3. उपाध्याय विद्यानन्दमुनि-** "संस्कृति, संस्कारों के पुञ्ज का नामान्तर है।"

भारतीय संस्कृति की विशेषताएँ

- डॉ. रामजी उपाध्याय ने भारतीय संस्कृति में सार्वजनिकता, सर्वांगणीयता, देवपरायणता, धर्मपरता, आश्रम-व्यवस्था, आध्यात्मिकता, कर्मफल, सर्वे सुखिनः सन्तु, निःसीमता, सनातनता, समृद्धिशालिता, श्रेष्ठों का आदर्श एवं तप प्रधानता जैसी तेरह विशेषताएं बतायी हैं।
- डॉ. बलदेव प्रसाद मिश्र ने भारतीय संस्कृति की विशेषताओं को इंगित करते हुए कहा है कि भारतीय संस्कृति किसी व्यक्ति या किसी एक ग्रन्थ पर आधारित न होकर चिरंतन विकास का परिणाम है।
- डॉ. सत्यकेतु विद्यालङ्कार का कहना है कि भारतीय संस्कृति भौतिकवादी न होकर अध्यात्म पर आधारित है।
- विश्ववन्द्य एवं सर्वग्राह्य भारतीय संस्कृति की इन विशेषताओं के बीच हिन्दू संस्कृति पर यदि दृष्टि डालें तो यह भी न्यूनाधिक परिवर्तन के बाद भी अपने मौलिक रूप में विद्यमान है।
- हिन्दू संस्कृति, मन्त्र, उपनिषद्, गीता-दर्शन आदि हिन्दू सम्प्रदाय के जीवन दर्शन का आधार है। इसमें वर्णित सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य का उपदेश आज भी भारतवासियों को कर्णप्रिय है।
- सभी दर्शन आध्यात्मिकता पर बल देते हैं। हिन्दुओं के प्रत्येक कार्य आत्मा एवं परमात्मा से सम्बद्ध दिखते हैं।
- आत्मा को अजर, अमर, शाश्वत एवं अविनाशी कहकर हमें आशावान् बनाया गया है-

  न जायते म्रियते वा कदाचित्
  नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।
  अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो
  न हन्यते हन्यमाने शरीरे॥
- ईश्वर के प्रति आस्था हिन्दुओं को धर्म-परायण बनाती है। पुरुषार्थ-चतुष्टय में भी मोक्ष के अतिरिक्त धर्म को प्रमुख स्थान प्राप्त है।

  'यतोऽभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः स धर्मः।'
- धर्म की स्थापना एवं अत्याचार दूर करने के लिए अवतारों की कल्पना की गयी है-

  यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
  अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥ (गीता 4.7)
- समाज को ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र इन चार वर्णों में सुनियोजित करने के लिए विभाजित किया गया था-

  ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत् बाहूः राजन्यः कृतः।

ऊरु तदस्य यद् वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत॥

(ऋ0 10.90.12)

- हिन्दुओं ने 'जीवेम शरदः शतम्,पश्येम शरदः शतम् ......' की इच्छा प्रारम्भ से ही की थी।
- आर्यों ने मानसिक एवं शारीरिक उन्नति के लिए मानव जीवन को संस्कारों से बाँध रखा था तथा माँ के गर्भ से लेकर शरीर के छोड़ने तक सोलह संस्कारों द्वारा शरीर एवं मन को सुसंस्कृत करने की व्यवस्था की गयी थी।
- आर्य परिवार संयुक्त परिवार के पक्षधर थे। यहाँ अतिथियों, गुरुओं तथा अन्य प्राणियों के प्रति आदर भावना थी।
- **'अतिथि देवो भव'** की उक्ति आर्यों के आतिथ्य सत्कार की भावना प्रदर्शित करता है।
- आर्यों ने सम्पूर्ण जगत् को परिवार के रूप में देखा था- (वसुधैव कुटुम्बकम्)

  'संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।' अथवा **'सह नाववतु, सह नौ भुनक्तु, सह वीर्यं करवावहै।'** **'तेजस्विनावधीतमस्तु। मा विद्विषावहै।'**
  जैसी पंक्तियाँ आर्यों के सहयोग की भावना प्रदर्शित करती हैं।
- विश्वकल्याण की भावना आर्यों में चरमोत्कर्ष पर थी-

  सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
  सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्॥
- हिन्दुओं ने मानव शरीर को परोपकार का साधन माना है- **'परोपकाराय सतां विभूतयः।'**
- हिन्दुओं की दृष्टि में शरीर के साथ प्रकृति भी हमारे लिए परोपकार हेतु ही है-

  परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः परोपकाराय वहन्ति नद्याः।
  परोपकाराय विभाति सूर्यः परोपकारार्थमिदं शरीरम्॥
- आर्यों की आध्यात्मिक प्रवृत्ति निष्कामभाव की प्रेरणा देती है-

  ईशा वास्यमिदं सर्वं यत् किञ्च जगत्यां जगत्।
  तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद् धनम्॥
- आर्य सदाचार के द्योतक थे। सदाचार भारतीयों की जीवन शैली है- **'आचारः परमो धर्मः।'**
- आर्यों के मर्यादित जीवन के लिए उपनिषदों में वर्णित है- **'सत्यं वद, धर्मं चर।'**

  इसप्रकार हमें भौतिक उन्नति के बीच आध्यात्मिक उत्कर्ष का समन्वय भारतीय संस्कृति में प्राप्त होता है।

निष्कर्ष-

- भारतीय संस्कृति का इतिहास अत्यन्त प्राचीन है। भारतीय संस्कृति के विकासक्रम का इतिहास सहस्रों वर्षों का है, जिसमें अनेक सामाजिक तत्त्वों का योग रहा है।
- वैदिक काल से भारतीय संस्कृति उन्नतशील रही है। अनेकानेक भारतीय सामाजिक संस्थाओं का विकास वैदिक युग में हो गया था।
- वर्णाश्रम, विवाह, सोलह संस्कार आदि ऐसी अनेक सामाजिक संस्थाओं का उद्भव ही नहीं विकास भी वैदिकोत्तर युग में हो गया था।

  अतः सामाजिक संस्थाओं में संस्कृति की प्राचीनता भी भारतीय संस्कृति की विशेषता रही है।

3.2 वर्ण व्यवस्था

- प्राचीन भारतीय चिन्तन में व्यक्ति को समुन्नत बनाने के लिए आश्रम व्यवस्था को स्वीकार किया गया।
- धर्मशास्त्रों और स्मृतियों में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र वर्णों का उनके उद्गम (मुख, बाहु आदि) एवं धार्मिक (सत्व, रजस् एवं तमस् पर आश्रित) प्रवृत्तियों के आधार पर, जो स्पष्ट विभाजन किया गया है-

  ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्मः कृतः।
  ऊरू तदस्य यद वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो ऽजायत॥
  (ऋ0 10.90.12)
- तदनुसार चारों वर्णों के कर्तव्य इस प्रकार हैं-

(1) ब्राह्मण- ब्राह्मण शब्द का प्रयोग वेदाध्ययनकर्त्ता, ब्रह्मज्ञानी तथा ब्रह्मपुत्र के लिए होता है। 'ब्रह्म' शब्द का सामान्य अर्थ है मन्त्र या प्रार्थना। इस प्रकार यज्ञ कार्यसंलग्न, सोमपायी, मनीषी को ब्राह्मण माना गया है। इसकी उत्पत्ति विराट् पुरुष के मुख से मानी गयी है। फलतः यह वर्णव्यवस्था में सर्वप्रथम परिगणित है।

ब्राह्मण के छः प्रधान कर्म- (मनुस्मृति के अनुसार)
अध्यापनमध्ययनं यजनं याजनं तथा।
दानं प्रतिग्रहं चैव ब्राह्मणानामकल्पयत्॥

1 अध्ययन 2 अध्यापन
3 यज्ञ करना 4 यज्ञ कराना
5 दान लेना 6 दान देना

- गीता में ब्राह्मण के 8 स्वाभाविक कर्म कहे गये हैं-

  शमो दमस्तपः शौचं क्षान्तिरार्जवमेव च।
  ज्ञानं विज्ञानमास्तिक्यं ब्रह्मकर्म स्वभावजम्॥ (18.42)
  1 शम 2 दम 3 तप 4 शौच (शुद्धि) 5 क्षमाभाव 6 आर्जव (सरलता) 7 ज्ञान-विज्ञान 8 आस्तिकता
- ब्राह्मण को **'भूसुर'** कहा जाता था।

(2) क्षत्रिय- क्षत्रिय का शाब्दिक अर्थ है- रक्षा करने वाला। ऋग्वेद में 'क्षत्रिय' के अतिरिक्त 'क्षत्र', 'राजा' और 'राजन्य' शब्दों का भी प्रयोग हुआ है।

- **क्षत्रिय कर्त्तव्य-** 1 प्रजा की रक्षा करना, 2 दान देना 3 यज्ञ करना 4 वेदाध्ययन करना 5 विषयों में आसक्त न होना

प्रजानां रक्षणं दानमेज्याध्ययनमेव च।
विषयेष्वप्रसक्तिश्च क्षत्रियस्य समासतः॥ (मनु0 1.8)

- **गीता में क्षत्रिय कर्त्तव्य-**

शौर्यं तेजो धृतिर्दाक्ष्यं युद्धे चाप्यपलायनम्।
दानमीश्वरभावश्च क्षात्रं कर्म स्वभावजम्॥ (18.43)

1 शौर्य 2 तेज 3 धैर्य 4 चातुर्य 5 युद्ध क्षेत्र से पलायन न करना 6 दान 7 ईश्वरभाव (स्वामिभाव)

(3) वैश्य- ऋग्वेद में 'विश्' शब्द का प्रयोग सामान्य तथा समूह अर्थ (जैसे- दैवीनां विशम् , मानुषीणां विशम्, दासीविशम्) में देखा जाता है।

केवल पुरुषसूक्त के वर्णव्यवस्था सूचक मन्त्र में 'वैश्य' का प्रयोग हुआ है। सम्भवतः व्यापारी वर्ग (वैश्य) समूह में रहता है, इसलिए 'विश्' शब्द से 'ष्यञ्' प्रत्यय के योग से वैश्य निष्पन्न हुआ।

- **वैश्य कर्त्तव्य-**

पशूनां रक्षणं दानमिज्याध्ययनमेव च।
वणिक्पथं कुसीदं च वैश्यस्य कृषिमेव च॥

1 पशुओं की रक्षा करना 2 दान देना 3 यज्ञ करना 4 वेदाध्ययन करना 5 व्यापार करना 6 ब्याज लेना 7 कृषि करना

- **गीता में वैश्य कर्म-**

''कृषिगौरक्ष्यवाणिज्यं वैश्यकर्म स्वभावजम्।
(गीता-18/44)

1. कृषि 2. गोरक्षा 3. वाणिज्य

- वैश्य को व्यापार से प्राप्त धन का एक निश्चित भाग राजा को 'कर' के रूप देना पड़ता था। मदिरा, मांस, लोहा और चमड़ा जैसी वस्तुओं का विक्रय निषिद्ध था परन्तु इनके बेंचने पर छठाँ भाग कर रूप में देना पड़ता था।
- समाज में व्यापारियों में मुख्यतः पाँच वर्ग थे-

1. स्थानीय वणिक् 2. कारवाँ 3. सामुद्रिक व्यापारी 4. उद्योग संलग्न 5. साधारण व्यापारी

- हेमचन्द्र ने आठ प्रकार के वैश्यों का उल्लेख किया है।

सत्यानृतं तु वाणिज्यं वणिज्या वणिजो वणिक्।
क्रयविक्रयिकः पण्याजीवाऽपाणिक् नैगमाः॥

(4) शूद्र- 'शूद्र' शब्द का अर्थ है- शोक करने वाला।

- ऋग्वेद में केवल एक बार यह शब्द प्रयुक्त हुआ है और वह भी वर्णव्यवस्था के विषय में।

शूद्र कर्त्तव्य- मनुस्मृति में शूद्र का एक मात्र कर्तव्य द्विज सेवा बताया गया। गीता में भी परिचर्या ही उसका स्वाभाविक कर्म उपदिष्ट है।

''एकमेव तु शूद्रस्य प्रभुः कर्म समादिशत्।
एतेषामेव वर्णानां शुश्रूषानसूयया॥'' (मनु0 1/61)
परिचर्यात्मकं कर्म शूद्रस्यापि स्वभावजम्॥ (गीता 18.44)

3.3 संस्कार

- व्यक्ति के पूर्वजन्म एवं वंशानुक्रम से प्राप्त दुर्गुणों को निकालकर उसमें सद्‌गुण स्थापन के प्रयत्न को वैदिक विचार धारा में संस्कार कहा गया है। **आचार्य चरक** के शब्दों में- **''संस्कारो हि गुणान्तराधानमुच्यते''** अर्थात् पहले से विद्यमान दुर्गुणों को हटाकर उनके स्थान पर सद्‌गुणों का आधान करना ही संस्कार है।
- प्रत्येक व्यक्ति समाज का एक महत्त्वपूर्ण अवयव है, समाज को उच्चतर अथवा निकृष्टतर बनाने में उसका विशिष्ट योगदान होता है। यही नहीं, कोई भी व्यक्ति कभी पूर्ण नहीं हो सकता, मानव जीवन निरन्तर प्रवाहमान है जिसमें ऊपर उठने तथा नीचे गिरने का अवसर सुलभ है। अतएव वैदिक मनीषियों ने मनुष्य को उसके जन्म के पूर्व से लेकर मृत्यु के बाद तक संस्कृत करते रहने की योजना बनायी ताकि उसके स्खलन की सम्भावना कम से कम रहे। प्रत्यक्ष में तो यह योजना व्यक्ति परक ही दृष्टगोचर होती है परन्तु इसका प्रमुख उद्देश्य है व्यक्ति के माध्यम से समाज और राष्ट्र को उन्नत बनाना।
- उपलब्ध साहित्य में संस्कारों की संख्या 10 से 40 तक देखी जा सकती है। हिरण्यकेशि तथा कौशिक गृह्यसूत्रों में संस्कारों की संख्या 10 मानी गयी है, खादिर, एवं जैमिनि में 11, कौषीतकि (शाङ्खायन), आपस्तम्ब और गोभिल गृह्यसूत्र में 12, आश्वलायन तथा मानव गृह्यसूत्रों में 13, पारस्कर गृह्यसूत्र एवं मनुस्मृति में 14। गौतम ने संस्कारों की संख्या 40 दी है। प्रायः सभी धर्मशास्त्रकार संस्कारों की संख्या 16 मानते हैं।

ग्रन्थ	**संस्कारों की संख्या**
हिरण्यकेशि तथा कौशिकग्रह्यसूत्र	10 (दस)
खादिर एवं जैमिनि गृह्यसूत्र	11 (ग्यारह)

कौषीतकि, आपस्तम्भ, गोभिल गृह्यसूत्र 12 (बारह)
आश्वलायन तथा मानवगृहयसूत्र 13 (तेरह)
पारस्कर एवं मनुस्मृति 14 (चौदह)
गौतम के अनुसार 40 (चालीस)

(1) गर्भाधान संस्कार- गर्भाधान का अर्थ- गर्भ का आधान, गर्भ स्थापित करना। जिस कर्म द्वारा गर्भ धारण किया जाय उसे गर्भाधान कहा जाता है- **''गर्भः सन्धार्यते येन कर्मणा तद् गर्भाधानमित्यनुगतार्थकर्मनामधेयम्।''** गर्भलम्भन ऋतुगमन तथा चतुर्थी कर्म इसके पर्याय हैं। याज्ञवल्क्यस्मृति में ऋतुस्नान के बाद चौथी रात्रि से 16वीं रात्रि तक गर्भधारण के लिए उपयुक्त अवधि मानी गयी है।

(2) पुंसवन संस्कार-

- आपस्तम्ब गृह्यसूत्र के अनुसार- गर्भ धारणोपरान्त पुत्र प्राप्ति हेतु यह संस्कार किया जाता था।
- गर्भ के तीसरे माह में 'पुंसवन संस्कार' मनाया जाता है।
- गृह्यसूत्र में इस संस्कार के लिए द्वितीय एवं तृतीय मास को उपयुक्त बताया गया है।

(पुरास्यन्दतइतिमासे द्वितीय तृतीय वा)

- पुत्र प्राप्ति के लिए चन्द्रमा का पुष्य देखें है नक्षत्र में रहना शुभ माना जाता है।
- वैदिक समाज की पुत्र-पुत्री विषयक भेदरहित मान्यताओं तथा वैदिक वाङ्मय में प्रयुक्त शब्दों के अर्थ निर्धारण की दृष्टियों को देखते हुए कहा जा सकता है कि ''पुंसवन'' संस्कार गर्भस्थ शिशु के शारीरिक स्वास्थ्य के लिए किया जाता था, न कि पुत्रलाभ के लिये।

(3) सीमन्तोन्नयन संस्कार- (तृतीय संस्कार)

- सीमन्तोन्नयन वह संस्कार है जिसमें माता-पिता का ध्यान गर्भस्थ शिशु के मानसिक विकास पर केन्द्रित हो।
- **''चतुर्थे गर्भमासे सीमन्तोन्नयनम्''** इसका समय चौथा महीना माना गया है।
- बौद्धायन गृह्यसूत्र में उल्लेख है कि यह संस्कार गर्भिणी स्त्री को सम्मान एवं सत्कार देने के लिए सम्पन्न होता है।
- इस संस्कार का प्रयोजन माता के लिए ऐश्वर्य एवं गर्भस्थ शिशु के लिए दीर्घायुष्य की कामना है।
- 'याज्ञवल्क्य-स्मृति' में इसका समय छठें अथवा आठवें मास होता है।

(4) जातकर्म संस्कार

- गहड़वाल नरेश जयचन्द्र द्वारा 'जातकर्म' के सम्पन्न कराये जाने का संकेत मिलता है।
- मनु के अनुसार नाभि छेदन के पहले जातकर्म संस्कार सम्पन्न कराया जाता था।
- सोना, घी, मधु का मन्त्रों से बच्चे का प्राशन कराया जाता था।
- शिशु का जन्मकाल ही इस संस्कार का समय है।
- सन्तान के जन्म के समय किये जाने वाले प्रमुख कर्म हैं-
  1 गर्भावरण जरायु को हटाकर बच्चे के मुख, नासिका आदि की सफाई।
  2 सिर पर घी का फाया (पिचु) रखना
  3 नाभिछेदन।

(5) नामकरण संस्कार-

- व्यक्तिगत, नाम से ही मनुष्य की ख्याति होती है।
- सायण 'तुरीय' शब्द की व्याख्या में कहते है कि नक्षत्रनाम, गुप्तनाम, व्यावहारिक नाम तथा यज्ञ करने के लिए रखा जाने वाला नाम (यथा-सोमयाजी) ऐसे चार नामों का प्रचलन था।
- मनु के अनुसार यह संस्कार जन्म से दशवें या बारहवें दिन करना चाहिये।
- विश्वरूप और कुल्लूक के अनुसार 11वें दिन।
- मेधातिथि के अनुसार 10वें दिन।
- बृहस्पति के अनुसार 10वें, 12वें, 13वें, 16वें, 19वें एवं 32वें दिन सम्पन्न करना चाहिए।
- मनुस्मृति के अनुसार ब्राह्मणों को मंगलसूचक, क्षत्रियों को बलसूचक, वैश्यों को धनसूचक एवं शूद्रों को निन्दा सूचक नाम से युक्त होना चाहिये।
- बौधायन गृह्यसूत्र में उल्लिखित है- **शर्मान्तं ब्राह्मणस्य, वर्मान्तं क्षत्रियस्य, गुप्तान्तं वैश्यस्य शूद्रस्य दासन्तमेव वा।**

(6) निष्क्रमण संस्कार- निष्क्रमण शब्द का अर्थ है- बाहर निकलना।

- जन्म से निश्चित अवधि के बाद जब सन्तान को पहली बार घर के बाहर निकाला जाता था तो वह निष्क्रमण कहलाता था।
- मनु के अनुसार यह संस्कार चौथे महीने में होना चाहिए।
  ''चतुर्थे मासि कर्तव्यं शिशोनिष्क्रमणं गृहात्।''

(7) अन्नप्राशन संस्कार-

- जीवन में सर्वप्रथम अन्न का अशन (भोजन) करना अन्नप्राशन कहलाता है।
- इसका समय छठवाँ महीना माना गया है।
  (षष्ठेऽन्नप्राशनं मासि यद्वेष्टं मंगलं कुले॥)

- शिशु के दांत निकलने पर प्रथम बार अन्न खिलाने को **'प्राशित्र'** कहा जाता था।
- दूध, दही, घी एवं पका हुआ चावल बच्चे के मुख से स्पर्श कराया जाता था।
- अन्नप्राशन में दूध में पकाया हुआ खीर खिलाया जाता है।

(8) चूड़ाकर्म-

- चूड़ाकरण, मुण्डन, केशवपन, क्षौर आदि इसके पर्याय हैं।
- इसमें शिखा को छोड़कर गर्भकाल से प्राप्त सारे केश मुड़वा दिये जाते हैं।
- मनु ने इस संस्कार को पहले या तीसरे वर्ष में करने को बताया-

चूडाकर्म द्विजातीनां सर्वेषामेव धर्मतः।
प्रथमोऽब्दे तृतीये वा कर्तव्यं श्रुतिचोदनात्॥ मनु0 2.35

- चरक संहिता में मुण्डन को पुष्टि, वृष्यता, आयु, स्वच्छता एवं सौन्दर्य का वर्धक माना गया है-

पौष्टिकं वृष्यमायुष्यं शुचिरूपं विराजनम्।
केशश्मश्रुनखादीनां कर्तनं सम्प्रसाधनम्॥

(9) कर्णवेध संस्कार-

- हिन्दू संस्कार में यह व्यवस्था वैदिक कालीन है।
- यह संस्कार सौन्दर्य एवं अलङ्करण हेतु सम्पन्न होता था।
- बृहस्पति के अनुसार यह संस्कार जन्म के 10वें, 12वें या 16वें मास में होता है।
- गर्ग ऋषि के अनुसार यह संस्कार 6वें, 7वें, 8वें या 12वें मास में होता है।
- सुश्रुत ने छठा या सातवाँ वर्ष इसके लिए श्रेयस्कर माना है।
- क्षत्रियों का कान स्वर्ण की सुई से, ब्राह्मण एवं वैश्य बालक का कान चाँदी की सूई तथा शूद्र बालक का कान लौह सूई से छेदा जाता था।

(10) विद्यारम्भ संस्कार-

- बालक जब शिक्षा ग्रहण करने योग्य हो जाता था तब विद्यारम्भ संस्कार कराया जाता था।
- संतान के जन्म के पाँचवे वर्ष एवं उपनयन से पूर्व यह संस्कार सम्पादित होता था।
- शुभ मुहूर्त में शिक्षक द्वारा पट्टी पर 'ओउम्' और 'स्वास्तिक' के साथ वर्णमाला लिखकर अक्षरारम्भ कराया जाता था।
- इसमें गणपति, सरस्वती तथा गृह देवता को पूजा जाता था।

(11) उपनयन संस्कार-

- उपनयन शब्द 'उप' उपसर्गक 'नी' धातु एवं 'ल्युट् प्रत्यय' से मिलकर बना है।
- उपनयन का अभिप्राय स्वाध्याय अथवा वेद के अध्ययन से है।
- गौतम एवं मनु के अनुसार ब्राह्मण बालक का गर्भ से 8वें वर्ष, क्षत्रिय का गर्भ से 11वें वर्ष में, वैश्य बालक का गर्भ से 12वें वर्ष में यज्ञोपवीत करना चाहिए।
- पतञ्जलि तथा पारस्कर के अनुसार बालक का उपनयन आठवें वर्ष में किया जाता है।
- मनु के अनुसार ब्राह्मण 'कपास' का, क्षत्रिय 'सन' का तथा वैश्य 'ऊन' का उपनयन धारण करता था।
- यदि निर्धारित उम्र सीमा में उपनयन नहीं होता है तो ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य का क्रमशः 16वें, 22वें एवं 24वें वर्ष के भीतर हो जाना चाहिए।
- उपनयन के अवसर पर निर्धारित वस्त्र आदि-

	अधोवस्त्र	उत्तरीय	मेखला	दण्ड	सावित्रि का उपदेश
ब्राह्मण	सन	मृगचर्म	मूंज/कुश	ढाक	गायत्री
क्षत्रिय	क्षोम	रुरुचर्म	धनुष की प्रत्यञ्चा।	अश्मन्तक बिल्व	त्रिष्टुप्
वैश्य	ऊन	बकरी/गाय/	मूर्वा/बल्व की मेखला	गूलर	जगती

- भिक्षा सर्वप्रथम माता से माँगनी चाहिए।
- जनेऊ के तीन सूत्र सत् , रज एवं तम तीनों गुणों के प्रतीक थे।
- ये धागे पितृऋण, ऋषि-ऋण एवं देव-ऋण का भी स्मरण कराते थे।
- दण्ड आत्म-रक्षार्थ था।
- उपनयन संस्कार से निर्लिप्त एवं निस्पृह जीवन के साथ शीक्षणिक दिशा निर्धारित होती थी।

12. वेदारम्भ संस्कार-

- उपनयन के बाद वैदिक अध्ययन-अध्ययन का प्रारम्भ करने के लिए वेदारम्भ संस्कार किया जाता था।
- वेदाध्ययन करने वाले ब्रह्मचारी के शास्त्रोक्त विधि संस्कार किया जाता था। बाँधकर हल्के वस्त्र को धारण जितेन्द्रिय होना चाहिए ।
- इस संस्कार काह उल्लेख मात्र व्यासस्मृति में है।

(13) केशान्त संस्कार-

- गृह्यसूत्र में इस संस्कार की गणना चूड़ाकरण संस्कार के साथ ही वर्णित है, क्योंकि इसका सम्बन्ध भी केशों से है।
- इस संस्कार में आचार्य को गौ दान में दिया जाता था, इसलिए इसे **गोदान-संस्कार** भी कहते हैं।

➢ गौतम एवं आश्वलायन ने चार वेदव्रतों का उल्लेख किया है-
1 महानाम्नी 2 महाव्रत 3 उपनिषद् 4 गोदान
इनमें प्रथम तीन विलुप्त हो गये है।
➢ ब्रह्मचारी के 16 वें वर्ष में यह संस्कार सम्पन्न होता था।

➢ मनु के अनुसार-

वर्ण	**केशान्त समय**
ब्राह्मण	गर्भ के 16वें वर्ष
क्षत्रिय	गर्भ के 22वें वर्ष
वैश्य	गर्भ के 24वें वर्ष
शूद्र	

(14) समावर्तन संस्कार-

➢ समावर्तन का अर्थ- "तत्र समावर्तनं नाम वेदाध्ययनान्तरे गुरुकुलाद् स्वगृहागमनम्" अर्थात् वेदाध्ययनोपरांत गुरुकुल से अपने घर को प्रत्यावर्तन का नाम समावर्तन है।
➢ इसे **स्नान संस्कार** भी कहते हैं।
➢ आठ कलशों के जल से स्नान करके तथा पवित्रता, यश, ऐश्वर्यादि के लिए देवताओं से प्रार्थना करता था।
➢ इसके बाद ब्रह्मचर्य के प्रतीक दण्ड, मेखला, मृगचर्म आदि का त्याग कर नवीन वस्त्र धारण करता था।
➢ इस संस्कार में गुरु शिष्य को दर्पण, जल पुष्पादि प्रदान करता था।
➢ यह संस्कार शैक्षणिक जीवन से व्यावहारिक जीवन में लौटने का प्रतीक था।
➢ यह संस्कार उपनयन का पूरक था।

(15) विवाह संस्कार-

➢ विवाह गृहस्थ जीवन की आधार शिला है।
➢ सभी संस्कारों में विवाह नामक संस्कार का सबसे अधिक महत्त्व है।
➢ गृहस्थ आश्रम में प्रवेश विवाह संस्कार से ही होता है।
➢ मनु इसे '**नित्यलोक यात्रा**' कहते हैं। **(एषोदिता लोकयात्रा नित्य स्त्रीपुंसयोः शुभाः)**
➢ तैत्तिरीय संहिता कहती है तीन ऋणों में दो पितृऋण एवं देवऋण को चुकाने के लिए विवाह आवश्यक है।
➢ पाणिनि ने पत्नी को साहचर्य करने वाला कहा है **(पत्युर्नो यज्ञसंयोगं)।**
➢ धर्म-सूत्रों एवं स्मृतियों में विवाह की आठ विधियों एवं गृह्यसूत्र में इनके विधि विधानों की विस्तृत चर्चा है।

विवाह के प्रकार-

➢ हिन्दू धर्मशास्त्रों में विवाह के आठ प्रकारों का उल्लेख मिलता है-
(i) ब्राह्म विवाह- यह विवाह सर्वोत्तम विवाह माना गया है।
➢ इसमें पिता कुलीन एवं सच्चरित्र वर को अपने घर स्वयं आमन्त्रित करता था तथा उसका स्वागत-सत्कार कर वस्त्राभूषणों से सुसज्जित कन्या को प्रदान करता था।
➢ यह विवाह बिना किसी दबाव के होता था।
➢ सोम और सूर्या का विवाह इसी कोटि में आता है।

(ii) दैव विवाह-

➢ इसमें कन्या का पिता पुरोहितों से यज्ञ करवाता था तथा जो पुरोहित विधिपूर्वक यज्ञ सम्पन्न करता था उसी के साथ विवाह सम्पन्न होता था।

(i) आर्ष विवाह-

➢ इसमें कन्या का पिता वर पक्ष से यज्ञादि क्रियाओं के लिए एक या दो जोड़ी गाय या बैल प्राप्त करता था।
➢ कुछ पाश्चात्य विचारकों ने इसे आसुर-विवाह का परिष्कृत रूप माना है।

(iv) प्राजापत्य विवाह-

➢ इस विवाह के अन्तर्गत वर कन्या के पिता के घर प्रार्थी रूप में जाता था और कन्या का पिता उसकी विधिपूर्वक पूजा करके 'तुम दोनों साथ-साथ धर्म का आचरण करो' इस आदेश के साथ वर को कन्या प्रदान कर देता था।
➢ हिन्दू समाज में प्रायः यह प्रथा अधिक प्रचलित हुयी।

(v) आसुर विवाह-

➢ जब कन्या पक्ष वर से धन ग्रहण कर अपनी कन्या प्रदान करे, तो इस को आसुर विवाह कहते हैं।
➢ महाभारत में स्वयं भीष्म ने इस विवाह प्रथा की निन्दा की है।
➢ धर्मशास्त्रों में इसे घृणित और निन्दनीय कहा गया है।

(vi) गान्धर्व विवाह-

➢ यह प्रणय विवाह था।
➢ कन्या माता-पिता की इच्छा के न होने पर भी परस्पर एक दूसरे के गुणों पर अनुरक्त होकर अपना विवाह कर लेते थे।
➢ संस्कृत महाकाव्यों में जैसे दुष्यन्त और शकुन्तला, उदयन-वासवदत्ता, पुरुरवा-उर्वशी, चन्द्रापीड-कादम्बरी तथा पुण्डरीक और महाश्वेता का प्रणय विख्यात है, जो गान्धर्व-विवाह के अन्तर्गत आता है।

(vii) राक्षस विवाह-

➢ बलप्रयोग द्वारा युद्ध के माध्यम से किसी कन्या का अपहरण कर विवाह करना राक्षस विवाह कहा गया है।
➢ महाभारत में इसे क्षात्र-धर्म कहा गया है।
➢ मनु ने भी 'राक्षसं क्षत्रियस्यैकम्' कहकर इसे क्षत्रियों के लिए प्रशंसनीय बताया।
➢ श्रीकृष्ण और रुक्मिणी का विवाह, पृथ्वीराज और संयोगिता

का विवाह इसी आधार पर हुआ था।

(viii) पैशाच विवाह-

➢ विवाह का निकृष्टतम प्रकार पैशाच विवाह है।

➢ **मनु के अनुसार-**
सुप्तां मत्तां प्रमत्तां वा रहो यत्रोपगच्छति।
सा पापिष्ठो विवाहानां पैशाचश्चाष्टमोऽधमः॥ 3.34

➢ सोती हुई, अचेत, पागल या मदिरापान की हुयी कन्या के साथ जब कामातुर होकर कोई बलात् विवाह करता है तो इसे पैशाच विवाह कहा जाता है।

➢ स्मृतियों ने इस विवाह की घोर भर्त्सना की है।

(16) अन्त्येष्टि संस्कार-

➢ यह संस्कार मृत व्यक्ति के परलोक में शांति की कामना के लिए सम्पन्न किया जाता था।

➢ इसके अर्न्तगत पार्थिव शारीर का दाह संस्कार होता था।

➢ स्त्रियों एवं बच्चों का श्मशान जाना वर्जित था।

➢ शवदाह के बाद अशौच की स्थिति होती थी, जो तेरहवें दिन पीपल में जल देने के बाद समाप्त होती थी।

3.4 आश्रम-व्यवस्था

मानव जीवन का सुव्यवस्थित विभाजन

➢ **'आङ्' पूर्वक 'श्रमु'** धातु में **घञ्** प्रत्यय के योग से **'आश्रम'** शब्द का उत्पत्ति हुआ है।
भूमिका- पुरुषार्थ चतुष्टय (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) की प्राप्ति, जीवन की समग्रता, जीवन का व्यवस्थित रूप एवं आध्यात्मिक उत्कर्ष की स्थापना आश्रम-व्यवस्था के बिना कठिन थी। अतएव वैदिक संस्था के रूप में आश्रम व्यवस्था की नियोजना जीवन चिंतन, तत्त्वों की गवेषणा, कर्त्तव्य-अकर्तव्य विवेचन के आधार को तैयार करने के लिए हुई।

➢ जीवन को सुनियोजित ढंग से परम उद्देश्य (मोक्ष) तक पहुँचा देना आश्रम व्यवस्था का प्रमुख कार्य था।

➢ सात्त्विकतापूर्ण जीवन के साथ कर्म में निष्ठा आती थी।

➢ चारों आश्रम का बँटवारा दीर्घायु होने का द्योतक है।

➢ प्रत्येक आश्रम के लिए 25 वर्षों के कार्यकाल का निर्धारण हुआ था।

➢ शास्त्रकारों ने चार आश्रमों का स्पष्ट उल्लेख किया है-

(1) ब्रह्मचर्य-आश्रम- इसका अर्थ- **''महानता में विचरण''** अर्थात् महान् होना।

➢ इस शब्द का व्यवहारिक अर्थ है,- उपस्थसंयम अर्थात् वीर्यरक्षा।
''ब्रह्मचर्यं गुप्तेन्द्रियस्योपस्थस्य संयमः'' (योगसूत्र 2-30)

➢ शतपथ ब्राह्मण के शब्दों में वीर्य ब्रह्मतेज है।

➢ आयुर्वेद की दृष्टि में भोजन का अन्तिम सारतत्त्व वीर्य होता है।

➢ आधुनिक वैज्ञानिकों के मत में साठ गुने खून के बराबर वीर्य होता है।

➢ यह आश्रम वेदाध्ययनकाल है।

➢ उपनयन संस्कार के माध्यम से ब्रह्मचर्याश्रम प्रारम्भ होता है।

ब्रह्मचारी का कर्तव्य-

➢ वेदाध्ययन, अग्नि का अभिषेक, शिक्षावृत्ति।

➢ मनु का कथन है कि अपनी कामनाओं को वश में रखना तथा अपनी क्रियाओं को धर्म समन्वित करना ब्रह्मचारी का श्रेष्ठ आचरण था।

➢ जो व्यक्ति बह्मचर्याश्रम समाप्त होने पर गृहस्थाश्रम में प्रवेश करते थे उन्हें **'उपकुर्वाण'** कहा जाता था।

(2) गृहस्थ-आश्रम- गृहस्थ शब्द का अर्थ है- पत्नी को प्राप्त करने वाला।

➢ ऋग्वेद में गृहस्थाश्रम स्वीकार करने का आदेश दिया गया है-
इहैव स्तं मा वि यौष्टं विश्व मायुर्व्यश्नुतम्।
क्रीडन्तो पुत्रैर्नप्तृभिर्मोदमानो स्वे गृहे॥
अर्थात् किसी से विरोध न करो, गृहस्थाश्रम में रहो, पूर्ण आयु प्राप्त करो, पुत्र-पौत्रों के साथ खेलते हुए आनन्दपूर्वक अपने घर में रहो और घर को आदर्श रूप बनाओ।

➢ गृहस्थाश्रम मानवजीवन की पूर्णता का आश्रम है।

➢ इस आश्रम में प्रयुक्त होने वाले मन्त्रों को गेहानुप्रवेशनीय कहा जाता था।

➢ इस आश्रम की महत्ता अन्य आश्रमों से ज्यादा बतायी गयी है।

➢ विवाह गृहस्थाश्रम के अन्तर्गत विहित प्रथम संस्कार था।

➢ गृहस्थाश्रम का त्याग कर संन्यास आश्रम में अनुगमन निन्दित था। ऐसे संन्यास को **'पापिष्ठा'** कहा गया है।

➢ गृहस्थों के लिए मनु ने दस धर्मों को बताया है- धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रिय-निग्रह, ज्ञान, विद्या, सत्य और क्रोध-त्याग।
धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्॥ (मनु0 6.92)
- मनु के चार प्रकार के गृहस्थ बताए हैं-
1 ज्ञाननिष्ठ 2 तपोनिष्ठ 3 स्वाध्यायनिष्ठ 4 कर्मनिष्ठ

➢ ज्ञाननिष्ठ गृहस्थ को मनु ने सर्वोच्च बताया है।

➢ प्रत्येक गृहपति के लिए पञ्चमहायज्ञ अनिवार्य था जो इस प्रकार है-

1 ब्रह्मयज्ञ 2 पितृयज्ञ 3 देवयज्ञ 4 भूतयज्ञ 5 नृयज्ञ

(3) वानप्रस्थ-आश्रम-

- वन में प्रस्थान **(वनमेव प्रस्थो, वनस्य वा प्रस्थ प्रदेशः। वन प्रदेश भवः)** अर्थात् पूर्व की स्थितियों को त्यागकर वन की ओर जाना वानप्रस्थ था।
- वानप्रस्थ के लिए तीन बातें अनिवार्य थीं-

1. वृद्धावस्था के आगमनोपरांत वन को प्रस्थान करें।
2. सांसारिक भोगों के प्रति वितृष्णा और धन सम्पत्ति के प्रति उदासीनता आ जाने पर वन को प्रस्थान करें।
3. गृहस्थी का दायित्व पुत्र या पौत्रद्वारा सम्भाल लिए जाने पर ही वन को प्रस्थान करें।

- महाभारत में उल्लेख है कि इस गृहस्थाश्रम के पश्चात् तीसरा उससे श्रेष्ठ आश्रम वानप्रस्थ है।
- दिन के छठें भाग अर्थात् तीसरे प्रहर में एक बार अन्न ग्रहण करे।
- वानप्रस्थी **'वैखानस'** या **'परिव्राजक'** भी कहलाते थे।

(4) संन्यास-आश्रम-

- वानप्रस्थ के बाद चौथा एवं अन्तिम आश्रम संन्यास था।
- मनुस्मृति के अनुसार-

  वनेषु विहृत्यैव तृतीयं भागमायुषः।
  चतुर्थमायुषो भाग त्यक्त्वा संगान्परिव्रजेत्॥
  अर्थात् अपनी आयु के तीसरे भाग को वन में अर्थात् वानप्रस्थाश्रम में व्यतीत करने के बाद संन्यासी बनना चाहिए।
- मोक्ष की प्राप्ति संन्यास आश्रम से ही मानी गयी है।
- शूद्र संन्यास आश्रम में प्रवेश नहीं ले सकते थे क्योंकि उनके लिए मात्र गृहस्थ आश्रम ही विहित था। विदुर अपवाद मात्र हैं।

3.5 पुरुषार्थ

पुरुष शब्द की व्युत्पत्ति है- पुरुष + अर्थ, **पूः = पुरं, शरीरं च। पुरि शेते इति पुरुषः।** अर्थात् जो इस पुर में (शरीर में) सोया हो, प्रवेश किया हो, शरीर में स्थापित हो, उस चैतन्यांश को 'पुरुष' कहते हैं। यहाँ पुरुष शब्द का अर्थ 'मनुष्य' अर्थात् नर-नारी है। **'अर्थ्यते प्राथ्र्यते सर्वैः इति अर्थः'** इस व्युत्पत्ति के अनुसार अभिलषित अर्थ को अर्थ कहते है। इस प्रकार **'पुरुषाणाम् अर्थः पुरुषार्थः'** अथवा **'पुरुषैः अर्थ्यते इति पुरुषार्थः'।**

-धर्म, अर्थ, काम- तीन करणीय (क्रिया द्वारा सम्पाद्य) हैं परन्तु मोक्ष में क्रिया का अभाव माना गया है। इसलिए मोक्ष छोड़कर विशेष रूप से समानधर्मी होने से त्रिवर्ग (धर्म, अर्थ, काम) की मान्यता है।

- **पुरुषार्थ के चार मेरुदण्ड हैं-**

  1. धर्म 2. अर्थ 3. काम 4. मोक्ष

(1) धर्म-

- **'धृञ्'** धारणे धातु में **मय्** प्रत्यय के योग से **धर्म** शब्द बना है।
- पुरुषार्थ चतुष्टय के रूप में धर्म वह तत्त्व है जो 'अर्थ' और 'काम' को मर्यादित करके लोक सुख (अभ्युदय) तथा मोक्षपरक परलोक सुख (निःश्रेयस्) की सिद्धि में सहायक हो।

धर्म का लक्षण-

- **''यतोऽभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः स धर्मः।''**

  \- महर्षि कणाद

  अर्थात् - यहाँ 'अभ्युदय' का तात्पर्य उतने ही 'अर्थ' तथा 'काम' के सेवन से है जितने के ग्रहण से शरीर यात्रा एवं मनस्तुष्टि का निर्वाह हो जाय परन्तु अर्थ-काम में आसक्ति न उत्पन्न हो।
- **''चोदनालक्षणोऽर्थो धर्मः।''**- (मीमांसासूत्र - जैमिनि) अर्थात् धर्म के प्रमाण और फल दोनों पर विचार करते हुए कहा गया है वेद लक्षण वाला अर्थ धर्म है।
- **मनु के अनुसार धर्म के चार आधार हैं-**

1. श्रुति (वेद) 2. स्मृति (धर्मशास्त्र) 3. सदाचार (शिष्टाचार)
4. आत्मतुष्टि, यही धर्म के लक्षण हैं-

   ''वेदोऽखिलो धर्ममूलं''

- **मनुस्मृति में धर्म के तीन भेद माने गये हैं-**

1 सामान्य धर्म 2 विशिष्ट धर्म 3 आपद् धर्म

- **सामान्य धर्म के दस भेद-** धृति, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रिय निग्रह, ज्ञान, विद्या, सत्य, अक्रोध।
- विशिष्ट धर्म के अर्न्तगत वर्णधर्म, आश्रम धर्म, वर्णाश्रम धर्म, गुणधर्म, नैमित्तिक धर्म है।
- आपत्कालीन परिस्थितियों में स्वीकार किये जा सकने वाले कर्म आपद् धर्म के अन्तर्गत आते हैं।

अर्थ- द्वितीय पुरुषार्थ का नाम अर्थ है।

- 'अर्थ्यन्ते प्रार्थ्यन्ते इत्यर्थाः, इस व्युत्पत्ति के अनुसार चक्षुरादि इन्द्रियों के विषयभूत रूप, रस, गन्ध शब्द, स्पर्श ही उनके अर्थ- काम्य पदार्थ हैं।
- न्यायभाष्यकार वात्स्यायन 'सुख-सुखहेतु' दुःख तथा दुःख हेतु को अर्थ स्वीकार करते हैं।
- **मनुष्याणां वृत्तिः अर्थः। मनुष्यवती भूमिरित्यर्थः।** - अर्थशास्त्र

  अर्थात् जो भी विचार और क्रियायें भौतिक जीवन से सम्बद्ध

हैं उन्हें अर्थ की संज्ञा से सम्बोधित किया जाता है।

- **अर्थ एव प्रधान इति कौटिल्यः। अर्थमूलौ हि धर्मकामौ।।** - अर्थशास्त्र अर्थात् कौटिल्य ने अर्थ को धर्म और काम का मूल माना है।
- **''न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यः''** - (कठोपनिषद्)
  अर्थात् व्यक्ति को ऐश्वर्य से सन्तुष्ट नहीं किया जा सकता।
- **अक्लेशेन शरीरस्य कुर्वीत धनसञ्चयम्।**
  सर्वान् परित्यजेदर्थान् स्वाध्यायस्य विरोधिनः।।

मनु0 3.17

अर्थात् अर्थोपार्जन के पाँच नियम है-

1. अर्थोपार्जन करते समय किसी प्राणी को कष्ट न देना।
2. अपने शरीर को कष्ट न देना।
3. अपने ही श्रम से प्राप्त करना।
4. किसी गर्हित साधन से न प्राप्त करना
5. उसका स्वाध्याय-पठन-पाठन में विघ्नोत्पादक न होना।

काम-

- तीसरे पुरुषार्थ का नाम काम है।
- 'काम' शब्द सामान्यतया हेयकृत्य के रूप में प्रयुक्त होता है।
- काम की व्युत्पत्ति- **''काम्यते इति कामः''** अर्थात् विषय एवं इन्द्रियों के सम्पर्क से उत्पन्न होने वाला मानसिक आनन्द ही मुख्यतया 'काम' कहलाता है। (कमु इच्छायाम् + घञ्)
- शास्त्र में काम के दो भाव बताये गये हैं- **''कामस्य द्वे भावे- रतिश्च प्रीतिश्च।''**
- कौटिल्य ने काम को अन्तिम श्रेणी में रखा है तथा धर्म एवं अर्थ को बाधा पहुँचाए बिना इसका पालन करने के लिए कहा है- **''धर्मार्थाविरोधेन कामं सेवेत्''।** (अर्थ0 17)
- जिस पुरुष की इन्द्रियाँ वश में होती हैं, उसी की बुद्धि स्थिर हो जाती है- **''वशे हि यस्येन्द्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता''** (गीता-2.61)
- क्रमानुसार इनका विनाश होने पर पुरुष अपनी स्थिति से गिर जाता है-
  चिन्तन - आसक्ति - कामना - क्रोध - मूढभाव - स्मृतिभ्रम - बुद्धि अर्थात् ज्ञान शक्ति का नाश
- **''विवेक सम्मत''**- वंश परम्परा को अविच्छिन्न रखने की दृष्टि से प्रयुक्त सहवास काम ही पुरुषार्थ है-
  ''धर्माविरुद्धो भूतेषु कामोऽस्मि भरतर्षभ।''- गीता 6.11
- पुरुष का स्त्री के प्रति तथा स्त्री का पुरुष के प्रति स्वाभाविक आकर्षण 'विशिष्ट काम' कहा गया है।
- **''स्त्रीषु जातो मनुष्याणां स्त्रीणां च पुरुषेषु वा।**
  परस्परकृतः स्नेहः काम इत्यभिधीयते।।

(शार्ङ्गधरपद्धति 1.6)

मोक्ष- मोक्ष शब्द **'मोक्ष् अवसाने'** धातु में **घञ्** प्रत्यय के योग से निष्पन्न है जिसका अर्थ है- छुटकारा।

- मनुष्य के पुरुषार्थ की अन्तिम परिणति अर्थात् चतुर्थ पुरुषार्थ मोक्ष है। इसे परमपुरुषार्थ भी कहा जाता है।
  'मुच्यते सर्वैर्दुःखबन्धनैः यत्र स मोक्षः'
- प्रमुख दर्शनों में मोक्ष का स्वरूप तथा उसकी प्राप्ति के साधन इस प्रकार हैं-

1. **न्याय-वैशेषिक -** अपवर्ग
   स्वरूप - सुखदुःखनिर्विशेष
   साधन - प्रमाणादि षोडश पदार्थों का तत्त्वज्ञान

2 सांख्य-योग - कैवल्य

स्वरूप - पुरुष का स्वरूपावस्थान

साधन - व्यक्ताव्यक्तज्ञविज्ञान (विवेकख्याति)

3. वेदान्त - मोक्ष

स्वरूप - सच्चिदानन्दात्मक

साधन - अविद्यानिवृत्ति

4. बौद्ध - निर्वाण

स्वरूप - ज्ञेयावरण एवं मोहावरण का विनाश

साधन - अष्टाङ्गिक मार्ग (सम्यक् दृष्टि, संकल्प, वाक्, कर्मान्त, आजीव, व्यायाम, स्मृति तथा समाधि)

5. जैन- कैवल्य

स्वरूप- सम्पूर्ण कर्मवियोग

साधन- त्रिरत्न (सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान तथा सम्यक् चरित्र)

- मनु के अनुसार - इन्द्रिय निरोध, रागद्वेषत्याग तथा प्राणिमात्र के प्रति अहिंसा के व्यवहार से मोक्ष सम्भव होता है।

  ''इन्द्रियाणां निरोधेन राग द्वेषक्षयेणं च।
  अहिंसया च भूता नाममृतत्वाय कल्पते॥

- गीता में मोक्ष के दो मार्ग प्रतिपादित हैं-

  1. ज्ञानयोग 2. कर्म योग

  जिसमें ज्ञानयोग की अपेक्षा कर्मयोग की प्रधानता स्वीकार की गयी है।

- जो व्यक्ति शुभाशुभ फलों को त्याग कर निष्काम भाव से कर्म करता है वह अभय पद (मोक्ष) को प्राप्त करता है।

  ''सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
  अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः॥

  (गीता 18.66)

3.6 भारतीय दर्शन

- 'दर्शन' शब्द **'दृश्'** धातु से **ल्युट्** प्रत्यय करने से निष्पन्न होता है। दर्शन शब्द का अर्थ है- 'जिसके द्वारा किसी वस्तु को देखा या समझा जाय।'
- भारतीय दर्शन की दो शाखाएँ हैं - **आस्तिक तथा नास्तिक।** जो दर्शन वेदों को प्रमाण रूप में स्वीकार करते हैं, उन्हें आस्तिक दर्शन कहते हैं, जिनमें सांख्य- योग, न्याय -वैशेषिक, पूर्वमीमांसा एवं उत्तरमीमांसा (वेदान्त) की गणना होती है।
- जो दर्शन वेदों को प्रमाण रूप में स्वीकार नहीं करते हैं उन्हें 'नास्तिक दर्शन' कहते हैं, जिनमें चार्वाक, बौद्ध, जैन प्रमुख रूप से हैं।
- सांख्य- योग, न्याय- वैशेषिक, पूर्वमीमांसा- उत्तरमीमांसा इन्हें 'षड्-दर्शन' भी कहते हैं।

भारतीयदर्शन

आस्तिकदर्शन

नास्तिकदर्शन (सांख्य ,योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा वेदान्त,) (चार्वाक,बौद्ध,जैन)

दर्शन	-	प्रवर्तक आचार्य
सांख्य	-	कपिल
योग	-	पतञ्जलि
न्याय	-	गौतम
वैशेषिक	-	कणाद
पूर्वमीमांसा	-	जैमिनि
उत्तरमीमांसा (वेदान्त)	-	बादरायण
चार्वाक	-	बृहस्पति/चार्वाक
बौद्ध	-	महात्मा गौतम बुद्ध
जैन	-	ऋषभदेव/महावीर स्वामी

- नास्तिकदर्शन को वेद विरोधी दर्शन भी कहा जाता है - **'नास्तिको वेदनिन्दकः'**
- चार्वाकदर्शन भौतिकवादी दर्शन है, जिसे **लोकायत** नाम से भी जाना जाता है।
- सांख्य एवं योग एक दूसरे के पूरक दर्शन हैं। सांख्य ईश्वर की सत्ता नहीं मानता जबकि योग ईश्वर की सत्ता मानता है। इसीलिए सांख्य को **'निरीश्वर सांख्य'** तथा योग को **'सेश्वर सांख्य'** भी कहते हैं।

दर्शन **ग्रन्थ** **अध्याय** **सूत्र**
प्रमाण **पदार्थ** **प्रमुखतत्त्व सिद्धान्त/**
वाद

सांख्य सांख्यसूत्र 6 537 तीन
प्रमाण 25 सत्कार्यवाद परिणामवाद
योग योगसूत्र 4 पाद 195
तीन प्रमाण 26 सत्कार्यवाद सेश्वरवाद
न्याय न्यायसूत्र 5 60-70
चार प्रमाण 16 असत्कार्यवाद
पिठरपाकवाद

वैशेषिक	वैशेषिकसूत्र	10	370	दो
प्रमाण	7	परमाणुवाद	पीलुपाकवाद	
पूर्वमीमांसा	मीमांसासूत्र	12	2644	6
प्रमाण		अपूर्ववाद		
उत्तरमीमांसा	ब्रह्मसूत्र	4	555	6
प्रमाण	2	विवर्तवाद (वेदान्त)		
मायावाद				

- बौद्धदर्शन के चार सम्प्रदायों का उल्लेख प्राप्त होता है वैभाषिक,सौत्रान्तिक, विज्ञानवादी, शून्यवादी।
- **नागार्जुन** बौद्धदर्शन के प्राचीन आचार्य हैं।
- जैनदर्शन के प्राचीन आचार्य - **उमास्वाति** हैं।
- अकलंकदेव, विद्यानन्द, प्रभासचन्द्र, हेमचन्द्रसूरि, मल्लिषेण जैन दर्शन के प्रमुख आचार्य हैं
- न्यायदर्शन के प्रवर्तक आचार्य गौतम हैं। न्यायदर्शन को **तर्कप्रधान दर्शन** भी कहते हैं।
- न्यायदर्शन में आगम प्रमाण के द्वारा ईश्वर की सिद्धि की गई है।
- सर्वदर्शनसंग्रह में वैशेषिक दर्शन को **'औलूक्य दर्शन'** कहा गया है।
- पूर्वमीमांसादर्शन के प्रणेता आचार्य जैमिनि हैं।
- पूर्वमीमांसा दर्शन वेद को स्वतन्त्र एवं स्वतः प्रमाण के रूप में स्वीकार करता है।

❑❑

4. निम्नलिखित कृतियों का सामान्य अध्ययन

4.1 कठोपनिषद्

- कठोपनिषद् उपनिषदों में बहुत प्रसिद्ध है। यह **यजुर्वेद** की **कठ शाखा** से सम्बंधित है।
- कठोनिषद् में कुल **2 अध्याय** हैं और प्रत्येक अध्याय में **तीन-तीन वल्लियाँ** हैं।

कठोपनिषद्

प्रथम अध्याय	**द्वितीय अध्याय**
प्रथम वल्ली -29	प्रथम वल्ली - 15
द्वितीय वल्ली-25	द्वितीय वल्ली- 15
तृतीय वल्ली- 17	तृतीय वल्ली- 18
कुल मन्त्र-71	**कुल मन्त्र-48**

- इसप्रकार कठोपनिषद् में लगभग 119(120) मन्त्र हैं।

कठोपनिषद् का तथ्यात्मक अध्ययन

- सर्वप्रथम यम नचिकेता की कथा का वर्णन तैत्तिरीय ब्राह्मण में मिलता है। पुनः कठोपनिषद् में यम नचिकेता की कथा है।
- इसके अतिरिक्त **नचिकेता का उपाख्यान** महाभारत के अनुशासन पर्व में भी आया है।
- **आत्मतत्त्व विवेचन** की दृष्टि से कठोपनिषद् अत्यन्त प्रसिद्ध है।
- कठोपनिषद् में **यज्ञ विद्या (अग्निविद्या)** का संक्षेप में वर्णन प्राप्त होता है।
- **प्रथम अध्याय-** प्रथम अध्याय में नचिकेता और यम के उपाख्यान द्वारा **आत्मा और ब्रह्म की व्याख्या** की गयी है।

प्रथम अध्याय के महत्वपूर्ण विषय-

कठोपनिषद् का शान्ति पाठ

- **ॐ सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै। तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै।**

ॐ = पूर्णब्रह्म-परमात्मन्	सह = साथ-साथ
नौ = हम दोनों की	अवतु = रक्षा करें
भुनक्तु = पालन करें	वीर्यम् = शक्ति

करवावहै = प्राप्त करें   अधीतम् = पढ़ी हुयी विद्या
तेजस्वि = तेजोमयी   अस्तु = हो
मा विद्विषावहै = हम दोनों परस्पर द्वेष न करें।

- गौतम वंशीय महर्षि अरुण के पुत्र उद्दालक ऋषि ने फल की कामना से **विश्वजित् नामक यज्ञ** किया।
- उद्दालक दक्षिणा में, व्यर्थ, और दुग्ध तथा प्रजनन शक्ति से हीन गायें दे रहे थे तो नचिकेता के मन में श्रद्धा बुद्धि उत्पन्न हुयी और उसने पिता से पूछा- ''आप मुझे किसको दान कर रहे हैं?'' दो तीन बार पूछने पर पिता ने क्रुद्ध होकर कहा ''तुझे मृत्यु को देता हूँ।'' पिता की आज्ञा से नचिकेता ने मृत्यु के समीप जाना सहर्ष स्वीकार कर लिया।
- नचिकेता यमलोक पहुँचा तो उस समय यमराज कहीं बाहर गये थे अतएव नचिकेता तीन दिन अन्न जल ग्रहण किये बिना ही यमराज की प्रतीक्षा करता रहा। जब यम लौटकर आये तो उन्होंने नचिकेता का सत्कार किया और तीन रात्रियों के बदले तीन वरदान मांगने को कहा।

प्रथम वर- (पितृ परितोष)

- नचिकेता ने प्रथम वर के रूप में पिता की प्रसन्नता माँगी-

**शान्तसङ्कल्पःसुमना यथा स्याद् वीतमन्युर्गौतमो माभि मृत्यो।
त्वत्प्रसृष्टं माभिवदेत्प्रतीत एतत्त्रयाणां प्रथमं वरं वृणे॥**

द्वितीय वर

- दूसरे वर के रूप में नचिकेता ने उस अग्निविद्या का ज्ञान माँगा जिसके द्वारा अत्यन्त सुख के लोक, स्वर्ग की प्राप्ति होती है और किसी प्रकार का भय नहीं रह जाता।

**स त्वमग्निँ स्वर्ग्यमध्येषि मृत्यो प्रब्रूहि त्वं श्रद्दधानाय मह्यम्।
स्वर्गलोका अमृतत्वं भजन्त एतद् द्वितीयेन वृणे वरेण॥**

- नचिकेता की विलक्षण प्रतिभा देखकर यम ने प्रसन्न होकर इस अग्नि विद्या को नचिकेता के नाम से ही प्रसिद्ध होने का वरदान दिया और अनेक रूपों वाली माला **सृङ्का** प्रदान की।

तृतीय वर

- तीसरे वर के रूप में नचिकेता ने मनुष्य की मृत्यु के बाद के आत्मास्तित्व के विषय में जिज्ञासा की।

**येयं प्रेते विचिकित्सा मनुष्येऽस्तीत्येके नायमस्तीति चैके।
एतद्विद्यामनुशिष्टस्त्वयाहं वराणमेष वरस्तृतीयः॥**

- नचिकेता के दृढ़ संकल्प और आत्म ज्ञान प्राप्ति के लिए योग्यता देखकर यम ने आत्मतत्त्व का उपदेश दिया।

द्वितीय वल्ली

- द्वितीय वल्ली में जीवात्मा और परमात्मा के स्वरूप का पृथक्-पृथक् वर्णन किया गया है।

श्रेय तथा प्रेय मार्ग-

- प्रेय मार्ग भौतिक सुख-समृद्धि का मार्ग है।
- श्रेय अर्थात् दुःखों से छूटकर नित्य आनन्दस्वरूप परब्रह्म पुरुषोत्तम को प्राप्त करने का मार्ग है।

**श्रेयश्च प्रेयश्च मनुष्यमेतस्तौ सम्परीत्य विविनक्ति धीरः।
श्रेयो हि धीरोऽभि प्रेयसो वृणीते प्रेयो मन्दो योगक्षेमाद् वृणीते॥**
1/2/2

आत्मा का स्वरूप

- यमराज आत्मा के शुद्ध स्वरूप और उसकी नित्यता का निरूपण नचिकेता से करते हैं।
- यह आत्मा अजन्मा, नित्य, सदा एकरस रहने वाला पुरातन है और कभी भी इसका नाश नहीं किया जा सकता।

''अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे।''

तृतीय वल्ली

- तृतीय वल्ली में परमात्मा को प्राप्त करने का साधन यम ने नचिकेता को बताया है।
- जीवात्मा शरीर, मन, बुद्धि तथा इन्द्रियों का पारस्परिक सम्बन्ध प्रदर्शित करने के लिए कठोपनिषद् में रथ रूपक को प्रस्तुत किया गया है।
- जीवात्मा - रथी   शरीर - रथ
  बुद्धि - सारथी   मन - लगाम
  इन्द्रियाँ - घोड़े   विषय - मार्ग
- **आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु।
  बुद्धिं तु सारथिं विद्धि मनः प्रग्रहमेव च॥** 1/3/3
  **इन्द्रियाणि हयानाहुर्विषयाँ स्तेषु गोचरान्।
  आत्मेन्द्रियमनोयुक्तं भोक्तेत्याहुर्मनीषिणः॥** 1/3/4
- यम नचिकेता को बताते हुये कहते हैं कि तुम जीवात्मा को रथ का स्वामी समझो और शरीर को रथ तथा बुद्धि को सारथि समझो और मन को लगाम समझो।
- यम नचिकेता से इन्द्रियों के विषय में बताते हुए कहते हैं कि -
  **इन्द्रियेभ्यः पर ह्यर्था अर्थेभ्यश्च परं मनः।
  मनसस्तु परा बुद्धिर्बुद्धेरात्मा महान् परः॥** 1/3/10
  (इन्द्रियाँ-विषय-मन-बुद्धि-आत्मा)
- इन्द्रियों से शब्दादि विषय बलवान् हैं शब्दादि विषयों से मन प्रबल है और मन से भी बुद्धि प्रबल है और बुद्धि से भी महान् आत्मा अत्यन्त श्रेष्ठ और बलवान् है।
- **आत्मा का साक्षात्कार-** आत्मा के साक्षात्कार की प्रक्रिया यह है कि स्थूल तत्त्व को उससे अधिक सूक्ष्म तत्त्व में उत्तरोत्तर विलीन करना पड़ता है।
- वाणी,मन बुद्धि, आत्मा
  यच्छेद्वाङ्मनसी प्राज्ञस्तद्यज्छेज्ज्ञान आत्मनि।

ज्ञानमात्मनि महति नियच्छेत्तद्यच्देच्छान्त आत्मनि॥
1/3/13

बुद्धिमान् साधक को चाहिये कि वाक् आदि समस्त इन्द्रियों को मन में निरुद्ध करें फिर उस मन को ज्ञानस्वरूप बुद्धि में विलीन करें।ज्ञानस्वरूप बुद्धि को महान आत्मा में विलीन करें और उस आत्मा को शान्त स्वरूप परमपुरुष परमात्मा में विलीन करें।

➢ यम मनुष्यों को उद्बोधित करते हुए कहते हैं कि आत्मज्ञान की ओर उन्मुख होने और श्रेष्ठ आचार्यों के उपदेश से ज्ञान प्राप्त करके ही इस परब्रह्म परमेश्वर को जाना जा सकता है।

उतिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।
क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया दुर्गं पथस्तत्कवयो वदन्ति॥
1/3/14

➢ हे मनुष्यों! उठो जागो और श्रेष्ठ महापुरुषों के पास जाकर उस परब्रह्म परमेश्वर को जान लो।

द्वितीय अध्याय : प्रथम वल्ली

➢ **नेह नानास्ति किञ्चन-** इस उपनिषद् का गम्भीर शंखनाद है।

'मनसौवेदमाप्तव्यं नेह नानास्ति किंचन।'
शुद्ध मन से ही यह परमात्मतत्त्व प्राप्त किये जाने योग्य है। इस जगत् में एक परमात्मा के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है।

➢ कठोपनिषद् के द्वितीय अध्याय में परब्रह्म परमात्मा का अदितिदेवी के रूप में वर्णन किया गया है।

➢ कठोपनिषद् में जीव शब्द परमात्मा के लिए आया है।

यं इमं मध्वदं वेद आत्मानं जीवमन्तिकात्।

द्वितीय वल्ली

➢ कठोपनिषद् के अनुसार मानव शरीर में एकादश (ग्यारह) द्वार हैं। 2 आँख, 2 कान, 2 नासिका छिद्र, एक मुख, ब्रह्मरन्ध्र, नाभि, गुदा, शिश्न (11 द्वार)

➢ यह 11 द्वारों वाला, मानव शरीर ही उस सर्वव्यापी अविनाशी, अजन्मा, नित्य, निर्विकार, एकरस , विशुद्ध ज्ञानस्वरूप परमेश्वर की नगरी है।

पुरमेकादशद्वारमजस्यावक्रचेतसः
अनुष्ठाय न शोचति विमुक्तश्च विमुच्यते॥ 2/2/1

➢ कठोपनिषद् के द्वितीय अध्याय के द्वितीय वल्ली में अग्नि का दृष्टान्त देकर उस परब्रह्म परमेश्वर की व्यापकता का वर्णन किया गया है।

➢ **अग्निर्यथैको भुवनं प्रविष्टो रूपं रूपं प्रतिरूपो बभूव।**
एकस्तथा सर्वभूतान्तरात्मा रूपं रूपं प्रतिरूपो बहिश्च॥
2/2/9

➢ जिस प्रकार समस्त ब्रह्माण्ड में प्रविष्ट एक ही अग्नि नाना रूपों में प्रकट होकर विभिन्न रूप धारण करती है उसी प्रकार समस्त प्राणियों के अन्तरात्मा परब्रह्म परमात्मा एक होते हुए भी नाना रूपों में प्रकट होते हैं।

तृतीय वल्ली

➢ कठोपनिषद् के द्वितीय अध्याय के तृतीय वल्ली में यह बताया गया है कि वह परमात्मा ही सब पर शासन करने वाला है और सब उसके नियन्त्रण में ही हो रहा है-

भयादस्याग्निस्तपति भयात् तपति सूर्यः।
भयादिन्द्रश्च वायुश्च मृत्युर्धावति पञ्चमः॥ 2/2/3

➢ उस परमेश्वर के भय से अग्नि तपता है, उसी के भय से सूर्य तपता है तथा उसी परमेश्वर के भय से इन्द्र, वायु और पाँचवें मृत्यु देवता अपने-अपने कामों में प्रवृत्त हो रहे हैं।

➢ तृतीय अध्याय में योग की सर्वोत्तम स्थिति बतलाते हुए योगियों की परमगति का वर्णन किया गया है।

➢ कठोपनिषद् में यम, नचिकेता को योग के विषय में बताते हुए कहते हैं कि **इन्द्रिय मन** और **बुद्धि** की स्थिर धारण का नाम योग है।

➢ कठोपनिषद् में **नाड़ियों की संख्या कुल एक सौ एक** बतायी गयी है, जिसमें सुषुम्णा प्रमुख है।

कठोपनिषद् - प्रथम अध्याय - तृतीय वल्ली का अध्ययन

इन्द्रियेभ्यः परा ह्यर्था अर्थेभ्यश्च परं मनः।
मनसस्तु परा बुद्धिर्बुद्धेरात्मा महान् परः॥ 1/3/10

शब्द	-	**अर्थ**
हि	-	क्योंकि
इन्द्रियेभ्यः	-	इन्द्रियों से
अर्थाः	-	शब्दादि विषय
पराः	-	बलवान् हैं
च	-	और
अर्थेभ्यः	-	शब्दादि विषयों से
मनः	-	मन
परम्	-	और मन से भी
बुद्धिः	-	बुद्धि
परा	-	बलवती है
बुद्धिः	-	बुद्धि से
महान् आत्मा	-	महान् आत्मा
परः	-	अत्यन्त श्रेष्ठ और बलवान् है।

अन्वय- इन्द्रियेभ्यः परा अर्थाः हि। अर्थेभ्यः च परं मनः। मनसः तु परा बुद्धिः बुद्धेः परः महान् आत्मा।

प्रसङ्ग- इस मन्त्र में यम, नचिकेता को यह बताते हैं कि स्वभाव से ही दुष्ट और बलवान् इन्द्रियों को उनके प्रिय और अभ्यस्त

असत् मार्ग से किस प्रकार हटाया जाए।

➢ **अनुवाद-** इन्द्रियों की अपेक्षा उनके विषय श्रेष्ठ है विषयों से मन उत्कृष्ट है मन से बुद्धि पर है और बुद्धि से भी महान् आत्मा है।

इन्द्रियाँ-विषय-मन-बुद्धि-आत्मा

व्याख्या- इस मन्त्र में यह बताया गया है कि इन्द्रियों से विषय बलवान् हैं। वे साधक की इन्द्रियों को बलपूर्वक अपनी ओर आकर्षित करते रहते हैं, अतः साधक को उचित है कि इन्द्रियों को विषयों से दूर रखें।विषयों से बलवान् मन है।यदि मन की विषयों में आसक्ति न रहे तो इन्द्रियाँ और विषय -ये दोनों साधक की कुछ भी हानि नहीं कर सकते। मन से भी बुद्धि बलवान् है, अतः बुद्धि के द्वारा विचार करके मन को राग द्वेष रहित बनाकर अपने वश में कर लेना चाहिए।बुद्धि से भी इन सब का स्वामी महान् आत्मा बलवान् है।उसकी आज्ञा मानने के लिए ये सभी बाध्य हैं। अतः मनुष्य को आत्मशक्ति का अनुभव करके उसके द्वारा बुद्धि आदि सबको नियन्त्रण में रखना चाहिए।

➢ **विशेष-** इन्द्रियों से उनके विषयों को इसलिए श्रेष्ठ कहा गया है क्योंकि वे उन्हें अपनी ओर खींच लेते हैं-

''विषिण्वन्ति बध्नन्ति स्वेन रूपेण निरूपणीयं कुर्वन्तीति विषयाः।

➢ इस मन्त्र में 'पर' शब्द का प्रयोग बलवान् के अर्थ मे हुआ है।

➢ इसमें महान् आत्मा में आया हुआ आत्मा शब्द भी जीवात्मा का वाचक है।

2. महत परमव्यक्तमव्यक्तात् पुरुषः परः।
पुरुषानपरं किञ्चित् सा काष्ठा सा परा गति॥1/3/11

शब्द	**अर्थ**
महतः	उस जीवात्मा से
परम्	बलवती है
अव्यक्तम्	भगवान् की अव्यक्त माया शक्ति
अव्यक्तात्	अव्यक्त माया से भी
परः	श्रेष्ठ है
पुरुषः	परमपुरुष
पुरुषात्	परमपुरुष भगवान् से
परम्	श्रेष्ठ और बलवान्
किञ्चत्	कुछ भी
न	नहीं हैं
सा काष्ठा	वही सबकी परम अवधि
सा परा गतिः	वही परम गति है।

अन्वय- महतः परम् अव्यक्तम् अव्यक्तात् परः पुरुषः। पुरुषात् परं किञ्चित् न। सा काष्ठा, सा परा गतिः।

प्रसङ्ग- इस मन्त्र में मन को भगवान् की तरफ लगाने का वर्णन करते हुए यम, नचिकेता से कहते हैं,

अनुवाद- महत्तत्व से अव्यक्त मूलप्रकृति पर है और अव्यक्त से भी पुरुष पर है।पुरुष से पर और कुछ भी नहीं है। वही परा काष्ठा है, वही परा (उत्कृष्ट) गति है।

व्याख्या - इस मन्त्र का तात्पर्य यह है कि इन्द्रियाँ, मन और बुद्धि इन सब पर आत्मा का अधिकार है, अतः यह स्वयं उनको वश में करके भगवान् की ओर बढ़ सकता है।परन्तु इस आत्मा से भी बलवान् एक और तत्त्व है, जिसका नाम अव्यक्त है। कोई उसे **प्रकृति** और **माया** भी कहते है। इसी से सब जीव समुदाय मोहित होकर उसके वश में हो रहा है। इसको हटाना जीव के अधिकार की बात नहीं है, अतः इससे भी बलवान् जो इसके स्वामी परम पुरुष परमेश्वर हैं - जो बल, क्रिया और ज्ञान आदि सभी शक्तियों की अन्तिम अवधि और परम आधार हैं- उन्हीं की शरण लेनी चाहिए।जब वे दया करके इस माया रूप परदे को स्वयं हटा लेंगे, तब उसी क्षण वहीं भगवान् की प्राप्ति हो जायेगी, क्योंकि वे तो सदा से ही सर्वत्र विद्यमान हैं।

विशेष - इस मन्त्र में अव्यक्त शब्द भगवान् की त्रिगुणमयी दैवी माया शक्ति के लिए प्रयुक्त हुआ है।

➢ यह अव्यक्त माया ही जीवात्मा और परमात्मा के बीच में परदा है, जिसके कारण जीव सर्वव्यापी अन्तर्यामी परमेश्वर को नित्य समीप होने पर भी नहीं देख पाता।

12. एष सर्वेषु भूतेषु गूढोत्मा न प्रकाशते।
दृश्यते त्वग्र्यया बुद्ध्या सूक्ष्मया सूक्ष्मदर्शिभिः॥ 1/3/12

शब्द	**अर्थ**
एषः आत्मा	यह सबका आत्मरूप परमपुरुष
सर्वेषु भूतेषु	समस्त प्राणियों में रहता हुआ भी
गूढः	माया के परदे में छिपा रहने के कारण
न प्रकाशते	सबके प्रत्यक्ष नहीं होता
तु सूक्ष्मदर्शिभिः	केवल सूक्ष्म तत्त्वों को समझने वाले पुरुषों द्वारा ही
सूक्ष्मया अग्र्यया	
बुद्ध्या	अति सूक्ष्म तीक्ष्ण बुद्धि से
दृश्यते	देखा जाता है।

अन्वय- सर्वेषु भूतेषु गूढोऽऽत्मा एषः न प्रकाशते। सूक्ष्मदर्शिभिः तु अग्र्य्या सूक्ष्मया बुद्ध्या दृश्यते।

अनुवाद- सम्पूर्ण भूतों में छिपा हुआ यह आत्मा प्रकाशमान नहीं होता।यह तो सूक्ष्मदर्शी पुरुषों द्वारा अपनी तीव्र और सूक्ष्मबुद्धि

से देखा जाता है।

व्याख्या- ये परब्रह्म पुरुषोत्तम भगवान् सबके अन्तर्यामी हैं, अतः सब प्राणियों के ह्रदय में विराजमान हैं, परन्तु अपनी माया के परदे में छिपे हुए हैं, इस कारण उनके जानने में नहीं आते। जिन्होंने भगवान् का आश्रय लेकर अपनी बुद्धि को तीक्ष्ण बना लिया है, वे सूक्ष्मदर्शी ही भगवान् की दया से सूक्ष्म बुद्धि के द्वारा उन्हें देख पाते हैं।

विशेष- गूढोत्मा- यह वैदिक या आर्ष प्रयोग है, पाणिनि मत से ठीक रूप नहीं है। पाणिनिकृत व्याकरण से गूढः आत्मा का सन्धि कृत रूप गूढ आत्मा होगा।विसर्ग का लोप हो जायेगा, फिर सवर्ण दीर्घसन्धि (गूढात्मा) नहीं होगा।

13. यच्छेद्वाङ्मनसी प्राज्ञस्तद्यच्छेज्ज्ञान आत्मनि।
ज्ञानमात्मनि महति नियच्छेत्तद्यच्छेच्छान्त आत्मनि॥

1/3/13

शब्द	अर्थ
प्राज्ञः	बुद्धिमान् साधक को चाहिये कि
वाक्	(वाक्) वाणी को
मनसी	मन में
यच्छेत्	निरुद्ध करे
तत्	उस मन को
ज्ञाने आत्मनि	ज्ञानस्वरूप बुद्धि में
यच्छेत्	विलीन करे
ज्ञानम्	ज्ञान स्वरूप बुद्धि को
महति आत्मनि	महान् आत्मा में
नियच्छेत्	विलीन करे
शान्ते आत्मनि	शान्तस्वरूप परमपुरुष परमात्मा में।

अनुवाद- विवेकी पुरुष वाक् इन्द्रिय का मन में उपसंहार करे, उसका प्रकाशस्वरूप बुद्धि में लय करे, बुद्धि को महतत्त्व में लीन करे और महतत्त्व को शान्त आत्मा में नियुक्त करे।

व्याख्या - बुद्धिमान् मनुष्य को उचित है कि वह पहले तो वाक् आदि इन्द्रियों को बाह्य विषयों से हटाकर मन में विलीन कर दे अर्थात् इनकी ऐसी स्थिति कर दे इनकी कोई भी क्रिया न हो- मन में विषयों की स्फुरणा न रहे। जब यह साधन भली-भाँति होने लगे, तब मन को ज्ञानस्वरूप बुद्धि में विलीन कर दें अर्थात् एकमात्र विज्ञानस्वरूप निश्चयात्मिका बुद्धि की वृत्ति के सिवा मन की भिन्न सत्ता न रहे, किसी प्रकार का अन्य कोई भी चिन्तन न रहे।जब यह तक दृढ़ अभ्यास हो जाय, तदन्तर उस ज्ञानरूप बुद्धि को भी जीवात्मा के शुद्ध स्वरूप में विलीन कर दें।अर्थात् ऐसी स्थिति में स्थित हो जाय, जहाँ एकमात्र आत्मतत्त्व के सिवा- अपने से भिन्न किसी भी वस्तु की सत्ता या स्मृति नहीं रह जाती।इसके पश्चात् अपने- आप को भी पूर्व निश्चय के अनुसार शान्त आत्मारूप परब्रह्म पुरुषोत्तम में विलीन कर दें।

विशेष-

➢ इस मन्त्र का तात्पर्य यह है कि विवेकी साधक पूर्वोक्त क्रम से स्थूल को सूक्ष्म में लय करते-करते अन्ततः सूक्ष्मतम निर्विशेष एवं समस्त प्रत्यय साक्षिभूत मुख्य आत्मा तक पहुँच जाता है।

14. उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।
क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया दुर्गं पथस्तत्कवयो वदन्ति॥

1/3/14

शब्द	अर्थ
उत्तिष्ठत	उठो (हे मनुष्यों)
जाग्रत	जागो (सावधान हो जाओ)
वरान् प्राप्य	श्रेष्ठ महापुरुषों को पाकर उनके पास जाकर
निबोधत	उस परब्रह्म परमेश्वर को जान लो (क्योंकि)
कवयः	त्रिकालज्ञ ज्ञानीजन
तत पथः	उस तत्वज्ञान के मार्ग को
क्षुरस्य	छूरे की
निशिता दुरत्यया	तीक्ष्ण की हुई दुस्तर
धारा (इव)	धार के सदृश
दुर्गम्	दुर्गम (अत्यन्त कठिन)
वदन्ति	बतलाते हैं

अन्वय- उत्तिष्ठत जाग्रत वरान् प्राप्य निबोधत। कवयः क्षुरस्य निशिता दुरत्यया धारा तत् पथः दुर्गं वदन्ति।

प्रसङ्ग- इस मन्त्र में श्रुति मनुष्यों को सावधान करती हुई कहती है। कि-

अनुवाद- (अरे अविद्याग्रस्त लोगों!) उठो, (अज्ञान -निद्रा से) जागो, और श्रेष्ठ पुरुषों के समीप जाकर ज्ञान प्राप्त करो। जिस प्रकार छुरे की धार तीक्ष्ण और दुस्तर होती है, तत्त्वज्ञानी लोग उस मार्ग को वैसा ही दुर्गम बतलाते हैं।

व्याख्या- हे मनुष्यों! तुम जन्म-जन्मान्तर से अज्ञान निद्रा में सो रहे हो। अब तुम्हें परामात्मा की दया से यह दुर्लभ मनुष्य-शरीर मिला है। इसे पाकर अब एक क्षण भी प्रमाद में मत खोओ।शीघ्र सावधान हो जाओ। श्रेष्ठ महापुरुषों के पास जाकर उनके उपदेश द्वारा अपने कल्याण का मार्ग और परमात्मा का रहस्य समझ लो। परमात्मा का तत्त्व बड़ा गहन है, उसके स्वरूप का ज्ञान उसकी प्राप्ति का मार्ग महापुरुषों की सहायता और परमात्मा की कृपा के बिना वैसे ही दुस्तर है, जिस प्रकार छूरे की तेज धार पर चलना।ऐसे दुस्तर मार्ग से सुगमता पूर्वक पार होने का सरल उपाय वे अनुभवी महापुरुष ही बता सकते हैं, जो स्वयं इसे पार कर चुके हैं।

**15. अशब्दमस्पर्शमरूपमव्ययं तथारसं नित्यमगन्धवच्च यत्।
अनाद्यनन्तं महतः परं ध्रुवं निचाय्य तन्मृत्युमुखात् प्रमुच्यते॥**
1/3/15

शब्द	अर्थ
यत्	जो
अशब्दम्	शब्दरहित
अस्पर्शम्	स्पर्शरहित
अरूपम्	रूपरहित
अरसम्	रस रहित
च	और
अगन्धवत्	बिना गन्धवाला है
तथा	तथा (जो)
अव्ययम्	अविनाशी
नित्यम्	नित्य
अनादि	अनादि
अनन्तम्	अनन्त (असीम)
महतः परम	महान् आत्मा से श्रेष्ठ
ध्रुवम्	सर्वथा सत्य तत्त्व है
तत्	उस परमात्मा को
निचाय्य	जानकर
मृत्युमुखात्	मृत्यु के मुख से
प्रमुच्यते	सदा के लिए छूट जाता है।

अन्वय- यत् अशब्दम् अस्पर्शम् अरूपम् अव्ययम् अरसं नित्यम् अगन्धवत् अनादि अनन्तं महतः परं तथा ध्रुवं च तत् निचाय्य मृत्युमुखात् प्रमुच्यते।

प्रसङ्ग- संसार चक्र या जन्म मरण परम्परा से नित्य मुक्ति का साधन होने से उसी की परम पुरुषार्थता का वर्णन यम, नचिकेता से करते हुए कहते हैं कि -

अनुवाद- जो अशब्द, अस्पर्श, अरूप, अव्यय तथा रसहीन नित्य और गन्धरहित है, जो अनादि अनन्त महत्तत्त्व से भी पर और ध्रुव है उस आत्मतत्व को जानकर पुरुष मृत्यु के मुख से छूट जाता है।

व्याख्या- इस मन्त्र में उस परब्रह्म परमात्मा की प्रकृति शब्द स्पर्श, रूप,रस और गन्ध से रहित बतलाकर यह दिखलाया गया है कि सांसारिक विषयों को ग्रहण करने वाली इन्द्रियों की वहाँ पहुँच नहीं है।वे नित्य, अविनाशी, अनादि और असीम हैं। जीवात्मा से भी श्रेष्ठ और सर्वथा सत्य हैं। उन्हें जानकर मनुष्य सदा के लिये जन्म-मरण से छूट जाता है।

कठोपनिषद् का बिन्दुवार अध्ययन

➢ उपनिषद् शब्द का अर्थ है- **आत्मविद्या**
➢ ज्ञानकाण्ड किनका विषय है - **उपनिषदों का**
➢ प्राचीन पद्योपनिषद् है - **कठोपनिषद्**
➢ उपनिषदों का प्रथम भाषान्तर फारसी भाषा में हुआ-**17वीं सदी में**
➢ जिसके द्वारा ब्रह्म की समीपता निश्चित रूप से प्राप्त हो, उसे कहते हैं - **उपनिषद्**
➢ भगवान् आद्य शङ्कराचार्य ने कितने उपनिषदों पर भाष्य लिखा - **10(दश)**
➢ उपनिषद् शब्द में धातु है - **सद्**
➢ उपनिषदः प्रतिपाद्यते - **ज्ञानकाण्डम्**
➢ उपनिषद् पुस्तकें आधारित हैं - **दर्शन पर**
➢ उपनिषदों की विषयवस्तु है - **दर्शन**
➢ प्रस्थानत्रयी में सम्मिलित है - **उपनिषद्**
➢ उपनिषदों में वर्णित है - **ब्रह्मविद्या**
➢ वेदों का अन्तिम भाग है- **उपनिषद्**
➢ वैदिक साहित्य का कौन- सा भाग वेदान्त के नाम से जाना जाता है - **उपनिषद्**
➢ उपनिषद् पद में प्रत्यय है - **क्विप्**
➢ नचिकेतोपाख्यान मिलता है - **कठोपनिषद् में**
➢ उपनिषदों का मुख्य प्रतिपाद्य है - **दार्शनिक विषय**
➢ भारतीय संस्कृति का आध्यात्मिक साहित्य है- **उपनिषद् साहित्य**
➢ नचिकेता को अग्नि विद्या का उपदेश दिया था - **यम ने**
➢ कठोपनिषद् के अनुसार महत् से पर (बलवान्) है- **अव्यक्तम्**
➢ नवकृत्वोपदेश करता है- **उद्दालक**
➢ रथरूपक का वर्णन है - **कठोपनिषद् में**
➢ कठोपनिषद् के अनुसार सारथि है - **बुद्धि**
➢ कृष्ण यजुर्वेद से सम्बद्ध है - **कठोपनिषद्**
➢ कौन से वर में यम ने नचिकेता को अग्नि विद्या दी - **द्वितीय वर में**
➢ यम नचिकेता संवाद मिलता है - **कठोपनिषद् में**
➢ कठोपनिषद् में नचिकेता के पिता ने यज्ञ किया था - **सर्वमेध**
➢ कठोपनिषद् में अध्यायों की संख्या है - **दो**
➢ कठोपनिषद् के अनुसार आत्मा प्राप्त होता है - **परमेश्वर के अनुग्रह द्वारा**
➢ कठोपनिषद् के अनुसार बुद्धिमान् व्यक्ति वरण करता है - **श्रेय का**
➢ कठोपनिषद् में सृङ्का का अर्थ है - **अकुत्सितकर्ममयीगति**
➢ कठ शाखा से सम्बन्धित उपनिषद् है - **कठोपनिषद्**
➢ नचिकेता के पिता ने नचिकेता को दान किया - **मृत्यु को**
➢ कठोपनिषद् के अनुसार प्राणों के सहित उत्पन्न होती है- **अदिति**
➢ मन से अधिक गति वाला है - **परमेश्वर**
➢ कठोपनिषद् के अनुसार नचिकेता को प्राप्त होता है - **तीन वर (वरं त्रयम्)**

- यम के द्वारा श्रेयप्रेय का विवेचन प्राप्त होता है - **कठोपनिषद् में**
- 'इन्द्रियेभ्यः परा ह्यर्था अर्थेभ्यश्च परं मनः' यह मन्त्र प्राप्त होता है - **कठोपनिषद् में**
- ''उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत'' यह मन्त्र मिलता है - **कठोपनिषद् में**
- नचिकेता को तीन वर प्राप्त हुये थे- **यम से**
- 'न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यः यह मन्त्रांश प्राप्त होता है - **कठोपनिषद् में**
- वाजश्रवा के पुत्र का नाम है - **नचिकेता**

मन्त्रों से सम्बन्धित पूछे जा सकने वाले प्रश्न-

मन्त्र

इन्द्रियेभ्यः परा ह्यर्था अर्थेभ्यश्च परं मनः।
मनसस्तु परा बुद्धिर्बुद्धेरात्मा महान् परः॥10॥

- इन्द्रियों की अपेक्षा श्रेष्ठ कौन है?- **विषय**
- विषयों से उत्कृष्ट क्या है - **मन**
- मन से बलवान् कौन है? - **बुद्धि**
- बुद्धि से श्रेष्ठ किसे कहा गया है - **आत्मा**
  क्रम- (इन्द्रिय-विषय-मन-बुद्धि-आत्मा)
- आत्मा से कम श्रेष्ठ किसे कहा गया है - **बुद्धि को**

11. महतः परमव्यक्तमव्यक्तात्पुरुषः परः।
पुरुषान्न परं किंचित्सा काष्ठा सा परा गतिः॥11॥

- महत्तत्व से पर (श्रेष्ठ) क्या है?- **अव्यक्त**
- अव्यक्त से श्रेष्ठ कौन है? - **पुरुष**
- सबसे श्रेष्ठ कौन है- **पुरुष**
- सबसे सूक्ष्म कौन है? - **पुरुष**
- सबसे महान् किसे कहा गया है? - **पुरुष को**
- पुरुष से उत्कृष्ट क्या है? - **कुछ भी नहीं**
- पुरुष से कम श्रेष्ठ किसे कहा गया है ? - **अव्यक्त को**

12. एष सर्वेषु भूतेषु गूढोत्मा न प्रकाशते।
दृश्यते त्वग्रयया बुद्धया सूक्ष्मया सूक्ष्मदर्शिभिः पुरुष॥ 12॥

- सम्पूर्ण भूतों में कौन छुपा हुआ है? - **आत्मा**
- आत्मा को कौन देख सकता है? - **सूक्ष्मदर्शी पुरुष**
- आत्मा किस बुद्धि से देखा जाता है? - **सूक्ष्मबुद्धि**
- आत्मा कहाँ छिपा रहता है? - **सम्पूर्ण भूतों में**
- सभी भूतों का साक्षी कौन है? - **आत्मा**

13. यच्छेद्वाङ्मनसी प्राज्ञस्तद्यच्छेज्ज्ञान आत्मनि।
ज्ञानमात्मनि महति नियच्छेत्तद्यच्छेच्छान्त आत्मनि॥13॥

- विवेकी पुरुष किसका उपसंहार करते हैं? - **वाणी का**
- वाणी का उपसंहार कहाँ किया जाता है? - **मन में**
- विवेकी पुरुषों के द्वारा मन को कहाँ लीन किया जाता है?- **बुद्धि में**
- बुद्धि कहाँ लीन होती है? - **महत्तत्त्व में**
- महत्तत्व में कौन - सा तत्त्व लीन हुआ रहता है?- **बुद्धि**
- महत्तत्त्व किसमें निवास करता है ? - **आत्मा में**

14. उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।
क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया
दुर्गं पथस्तत्यकवयो वदन्ति॥14॥

- 'उत्तिष्ठत जाग्रत' यह मन्त्र कहाँ पाया जाता है? - **कठोपनिषद् में**
- उपर्युक्त मन्त्र में किससे जागने की बात कही गयी है? - **अज्ञान निद्रा से**
- अज्ञानी लोगों को ज्ञान कैसे प्राप्त होता है? - **श्रेष्ठ पुरुषों द्वारा**
- सूक्ष्म बुद्धि कैसी होती है? - **छुरे की धार के समान दुस्तर**
- दुरत्यया किसे कहते है? - **जिसे कठिनता से किया जा सके**

15. अशब्दमस्पर्शमरूपमव्ययं
तथारसं नित्यमगन्धवच्च यत्।
अनाद्यनन्तं महतः परं ध्रुवं
निचाय्य तन्मृत्युमुखात्प्रमुच्यते॥ 15॥

- अशब्द, अस्पर्श, अरूप, अव्यय, रसहीन, नित्य, गन्धरहित, अनादि, अनन्त किसे कहा गया है? -**आत्मा को**
- किसका आदि और अन्त नहीं है? - **ब्रह्म का (आत्मा का)**
- पुरुष कैसे मुक्त हो सकता है?- **आत्मतत्त्व को जानकर**
- उपर्युक्त मन्त्र में आत्मा के कितने विशेषण आये हैं?- **एकादश (11)**
- आत्मतत्त्व को जानकर पुरुष किस स्थिति को प्राप्त होता है? - **मृत्यु के भय से मुक्त**
- महततत्त्व से श्रेष्ठ (पर) कौन है? - **आत्मा**

4.2 श्रीमद्भगवद्गीता

- श्रीमद्भगवद्गीता (श्रीमता भगवता गीतम् या सा) सर्वशास्त्रमयी सार्वभौमिक ग्रन्थ है।
- गीता मानव मात्र का धर्मशास्त्र है।
- गीता में उन सभी विषयों का समावेश है जो हमें पृथक् पृथक् शास्त्रों में प्राप्त होते हैं। अतएव महर्षि वेदव्यास ने कहा है

  गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः।
  या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्माद्विनिः सृता॥

  'गीता सुगीता करने योग्य है अर्थात् श्रीगीता जी को भली प्रकार पढ़कर अर्थ और भावसहित अन्तः करण में धारण कर

लेना मुख्य कर्तव्य है, जो कि स्वयं पद्मनाभ भगवान् श्रीविष्णु के मुखारबिन्द से निकली हुई है, फिर अन्य शास्त्रों के विस्तार से क्या प्रयोजन है।

- गीता को उपनिषदों का सार बताते हुए कहा गया है कि सभी उपनिषदें मानों गऊएं है और उनका दोहन करने वाले गोपालनन्दन श्रीकृष्ण हैं, अर्जुन बछड़े हैं और 'गीता' दूध रूपी अमृत है।

सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपालनन्दनः।
पार्थो वत्सः सुधीर्भोक्ता दुग्धं गीतामृतं महत्।।

- महर्षिवेदव्यास द्वारा विरचित महाभारत के भीष्मपर्व में वर्णित श्रीमद्भगवद्गीता सर्वाधिक लोकप्रिय भारतीय सनातनधर्म का ग्रन्थरत्न है।
- विश्व में सर्वाधिक टीकाओं से युक्त होने का गौरव गीता को ही प्राप्त है।

गीता में वर्णित शंख

पाञ्चजन्यं हृषीकेशो देवदत्तं धनञ्जयः।
पौण्ड्रं दध्मौ महाशङ्खं भीमकर्मा वृकोदरः।। 1/15
अनन्तविजयं राजा कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः।
नकुलः सहदेवश्च सुघोषमणिपुष्पकौ।। 1/16

देवता		**शंख**
श्रीकृष्ण	-	पाञ्चजन्य
अर्जुन	-	देवदत्त
भीम	-	पौण्ड्र
युधिष्ठिर	-	अनन्तविजय
नकुल	-	सुघोष
सहदेव	-	मणिपुष्पक

गीता के श्लोक संख्या

अध्याय नाम	-	श्लोकसंख्या
1. अर्जुनविषादयोग	-	47
2. सांख्ययोग	-	72
3. कर्मयोग	-	43
4. ज्ञानकर्मसंन्यासयोग	-	42
5. कर्मसंन्यासयोग	-	29
6. आत्मसंयमयोग	-	47
7. ज्ञानविज्ञानयोग	-	30
8. अक्षरब्रह्मयोग	-	28
9. राजविद्याराजगुह्ययोग	-	34
10. विभूतियोग	-	42
11. विश्वरूपदर्शनयोग	-	55
12. भक्तियोग	-	20
13. क्षेत्रक्षेत्रज्ञविभागयोग	-	34
14. गुणत्रय विभागयोग	-	27
15. पुरुषोत्तमयोग	-	20
16. दैवासुरसम्पद्विभागयोग	-	24
17. श्रद्धात्रयविभागयोग	-	28
18. मोक्षसंन्यासयोग	-	78

कुल श्लोक - 700

- सबसे बड़ा अध्याय - 18, मोक्षसंन्यासयोग (78 श्लोक)
- सबसे छोटा अध्याय - 12और 15 वाँ (20-20 श्लोक)

श्रीमद्भगवद्गीता के कुछ प्रमुख पात्र परिचय -

धृतराष्ट्र	-	दुर्योधन आदि कौरवों के पिता
संजय	-	दिव्यदृष्टि प्राप्त धृतराष्ट्र के मन्त्री
धृष्टद्युम्न	-	पाण्डवों के सेनापति, द्रौपदी के भाई, द्रुपद के पुत्र
भीम	-	पाण्डवों में द्वितीय पाण्डव, कुन्तीपुत्र
अर्जुन	-	श्रीकृष्ण के सखा, पाण्डवों में तृतीय पाण्डव, कुन्तीपुत्र
युधिष्ठिर	-	पाण्डवों में प्रथम पाण्डव, कुन्तीपुत्र, धर्मराज के अवतार
नकुल	-	पाण्डवों में चतुर्थ पाण्डव,माद्री के पुत्र
सहदेव	-	पाण्डवों में अन्तिम पाण्डव, माद्री के पुत्र
द्रुपद	-	द्रौपदी के पिता,
धृष्टकेतु	-	पाण्डव पक्ष के वीर योद्धा
चेकितान	-	पाण्डव पक्ष के वीर योद्धा
काशिराज	-	पाण्डव पक्ष के वीर योद्धा
पुरुजित्	-	पाण्डव पक्ष के वीर योद्धा
कुन्तिभोज	-	पाण्डव पक्ष के प्रमुख योद्धा
अभिमन्यु	-	अर्जुन और सुभद्रा के पुत्र
पितामह भीष्म	-	कौरव पक्ष के प्रथम सेनापति, 10 दिन तक सेनापति रहे।
द्रोणाचार्य	-	कौरवों और पाण्डवों के गुरु, कौरवों के द्वितीय सेनापति,05 दिन तक सेनापति।
कर्ण	-	कौरवों के तीसरे सेनापति, 2 दिन तक सेनापति रहे।
कृपाचार्य	-	कौरवों के प्रमुख योद्धा, सप्त चिरंजीवियों में एक
अश्वत्थामा	-	द्रोणाचार्य के पुत्र, कौरव पक्ष के प्रमुख योद्धा
विकर्ण	-	कौरव पक्ष का प्रमुख योद्धा (दुर्योधन का

भाई)

भूरिश्रवा - कौरव पक्ष का प्रमुख योद्धा

श्रीकृष्ण - भगवान् विष्णु के अवतार, अर्जुन को गीता का उपदेश देने वाले

राजा विराट - पाण्डव पक्ष के प्रमुख योद्धा, अज्ञातवास में पाण्डव यहीं रहे थे।

दुर्योधन - धृतराष्ट्र के पुत्र, 100 पुत्रों में सबसे बड़ा

गीता में वर्णित चतुर्विध भक्त

अर्थार्थी **आर्त**

जिज्ञासु **ज्ञानी**

➢ चतुर्विधा भजन्ते मां जनाः सुकृतिनोऽर्जुन।
आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञानी च भरतर्षभ।। (7-16)
तेषां ज्ञानी नित्ययुक्त एकभक्तिर्विशिष्यते।
प्रियो हि ज्ञानिनोऽत्यर्थमहं स च मम प्रियः।। (7-17)
हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ अर्जुन! उत्तम कर्म करने वाले अर्थार्थी, आर्त, जिज्ञासु, और ज्ञानी - ऐसे चार प्रकार के भक्तजन मुझको भजते हैं।उनमें नित्य मुझमें एकीभाव से स्थित अनन्य प्रेमभक्ति राजा ज्ञानी भक्त अति उत्तम हैं,क्योंकि मुझको तत्त्व से जानने वाले ज्ञानी को मैं अत्यन्त प्रिय हूँ और वह ज्ञानी मुझे अत्यन्त प्रिय है।

➢ गीता में श्रीकृष्ण अपने अवतार का कारण बताते हैं-

➢ **यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।**
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।। (4-7)

➢ **परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।**
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे।। (4-8)
हे भारत! जब जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है, तब तब ही मैं अपने रूप को रचता हूँ अर्थात् साकार रूप से लोगों के सम्मुख प्रकट होता हूँ।
साधु पुरुषों का उद्धार करने के लिए पापकर्म करने वाले का विनाश करने के लिए और धर्म की अच्छी तरह स्थापना करने के लिए मैं युग युग में प्रकट हुआ करता हूँ।

➢ **भगवान् के अवतार के हेतु**

- धर्म की स्थापना के लिए
- साधुपुरुषों की रक्षा के लिए
- पापकर्म करने वालों को मारने के लिए
- धर्म की वृद्धि के लिए
- अधर्म की हानि के लिए

➢ **गीता में अर्जुन के लिए सम्बोधन**
अर्जुन, गुडाकेश, पार्थ, परन्तप, भारत, कुन्तीपुत्र, पृथापुत्र, धनञ्जय, महाबाहो, निष्पाप, कुरुश्रेष्ठ, सव्यसाचिन्, किरीटी, पाण्डव, कुरुनन्दन आदि।

➢ **गीता में श्रीकृष्ण के लिए सम्बोधन**
हृषीकेश, कृष्ण, मधुसूदन, जनार्दन, माधव, श्रीभगवान्, अरिसूदन, गोविन्द, केशव, जगत्स्वामी, पुरुषोत्तम, अनन्त, देवेश, जगन्निवास, सच्चिदानन्दघन, आदिदेव, सनातनपुरुष, विश्वरूप, सहस्रबाहो, कमलनेत्र, परमेश्वर, महायोगेश्वर, देवदेव, अच्युत, केशिनिषूदन, योगेश्वर।

➢ **गीता में वर्णित आत्मा की विषेशताएंः-**
गीता के अनुसार आत्मा अच्छेद्य, अदाह्य, अक्लेद्य, अशोष्य, नित्य, सर्वव्यापी, अचल, स्थिर, सनातन, अव्यक्त, अचिन्त्य, विकाररहित, अबध्य है।
अव्यक्तोऽयमचिन्त्योऽयमविकार्योऽयमुच्यते - (2-25)
तस्मादेवं विदित्वैनं नानुशोचितुमर्हसि।
अच्छेद्योऽयमदाह्योऽयमक्लेद्योऽशोष्य एव च
नित्यः सर्वगतः स्थाणुरचलोऽयं सनातनः।। (2/24)
देही नित्यमवध्योऽयं देहे सर्वस्य भारत।
तस्मात्सर्वाणि भूतानि न त्वं शोचितुमर्हसि।। (2/30)

➢ **गीता में वर्णित प्रमुख योग-**कर्मयोग, ज्ञानयोग, भक्तियोग

➢ **कर्मयोग**- हे अर्जुन ! तेरा कर्म करने का अधिकार है, उसके फलों में कभी नहीं। इसलिए तू कर्मों के फल का हेतु मत हो तथा तेरी कर्म न करने में भी आसक्ति न हो।
कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा तेसङ्गोऽस्त्वकर्मणि।। (2/47)

➢ योग मार्ग में स्थित होकर कर्मों को करना चाहिए।
योगस्थः कुरु कर्माणि....।

➢ गीता में समत्व को योग कहा गया है। 'समत्वं योग उच्यते ' (2/48)

➢ समत्वरूप योग ही कर्मों में कुशलता है अर्थात् कर्मबन्धन से छूटने का उपाय है।
योगः कर्मसु कौशलम् (2/50)

➢ गीता के अनुसार योगियों की निष्ठा कर्मयोग से होती है।
कर्मयोगेन योगिनाम् (3/3)

➢ 'जो मनुष्य इन्द्रियों को वश में करके अनासक्त हुआ समस्त इन्द्रियों द्वारा कर्मयोग का आचरण करता है, वही श्रेष्ठ है।'
कर्मेन्द्रियैः कर्मयोगमसक्तः स विशिष्यते (3/7)

➢ गीता में श्रीकृष्ण यह बताते हैं कि कर्म न करने की अपेक्षा कर्म करना अत्यन्त श्रेष्ठ है। **नियतं कुरु कर्म त्वं कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः** (3/8)

➢ **भक्तियोग-**

➢ ईश्वर के प्रति अनन्यभाव से समर्पित होना ही भक्तियोग है।

- जो भक्तजन परमेश्वर का निरन्तर चिन्तन करते हैं उनका योगक्षेम स्वयं भगवान् अपने ऊपर ले लेते हैं।
  अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते
  तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्॥ (9/22)
- भक्तिपूर्वक जो कुछ भी सामग्री भगवान् को अर्पण की जाती है वह भगवान् उसी रूप में स्वीकार करते हैं।
  पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति (9/26)
- गीता में श्रीकृष्ण यह कहते हैं कि जो मनुष्य मेरे लिए कर्म करता है, मेरा परायण करता है, मेरा भक्त है, आसक्तिरहित वह अनन्यभक्ति से युक्त पुरुष मुझको ही प्राप्त होता है।
  मत्कर्मकृन्मत्परमो मद्भक्तः सङ्गवर्जितः।
  निर्वैरः सर्वभूतेषु यः स मामेति पाण्डव॥ (11/55)
- गीता में श्रीकृष्ण यह बताते हैं कि जो सम्पूर्ण कर्तव्यकर्मों को मुझमें त्यागकर एक मुझ सर्वशक्तिमान् परमेश्वर की शरण में आ जाता है उसे मैं सम्पूर्ण पापों से मुक्त कर देता हूँ।
  सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
  अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः॥ (18/66)
- **स्थिरबुद्धि पुरुष के लक्षण**
  - दुःख में उद्विग्न न होना।
  - सुख में अत्यधिक हर्षित न होना।
  - राग, भय, क्रोध से मुक्त।
- **गीता के अनुसार अष्ट प्रकृति**

  पृथ्वी जल अग्नि वायु
  आकाश मन बुद्धि अहंकार
- **श्रीमद्भगवद्गीता में स्थितप्रज्ञ का वर्णन -**
  गीता में श्रीकृष्ण यह बताते हैं कि जिस समय मनुष्य अपने मन में सभी कामनाओं को मिटाकर आत्मा में सन्तुष्ट रहता है, उस काल में वह स्थितप्रज्ञ कहा जाता है।
  प्रजहाति यदा कामान्सर्वान्पार्थ मनोगतान्।
  आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते॥ (2/55)
- दुःख होने पर जो उद्वेग नहीं करता और अत्यधिक सुख में सर्वथा निःस्पृह है तथा जिसके मन से राग, भय, और क्रोध नष्ट हो गये हैं, ऐसा मुनि स्थिरबुद्धि कहा जाता है। **वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते (2/56)**
- गीता में अष्ट प्रकृति का वर्णन - पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, मन, बुद्धि और अहंकार ये अष्ट प्रकार से विभाजित प्रकृति है।
  भूमिरापोऽनलो वायुः खं मनो बुद्धिरेव च।
  अहङ्कार इतीयं मे भिन्ना प्रकृतिरष्टधा॥ (7/4)
- श्रीमद्भगवद्गीता को **गीतोपनिषद्** भी कहा जाता है।
- **गीता में भगवान् श्रीकृष्ण की विभूतियाँ -**

जल में - **रस** "रसोऽहमप्सु कौन्तेय" (7.8)
चन्द्र सूर्य में - **प्रकाश** "प्रभास्मि शशिसूर्ययोः" (7.8)
वेदों मे - **ओंकार** "प्रणवः सर्ववेदेषु" (7.8)
आकाश में - **शब्द** "शब्दः खे" (7.8)
पुरुषों में - **पुरुषत्व** "पौरुषं नृषु" (7.8)
पृथ्वी में - **गन्ध** "पुण्यो गन्धः पृथिव्यां च" (7.8)
अग्नि में - **तेज** "तेजश्चास्मि विभावसौ" (7.8)
तपस्वियों में - **तप** "तपश्चास्मि तपस्विषु" (7.9)
सम्पूर्णभूतों में- **जीवन** "जीवनं सर्वभूतेषु" (7.9)
बुद्धिमानों में - **बुद्धि** "बुद्धिर्बुद्धिमतामस्मि" (7.10)
तेजस्वियों में - **तेज** "तेजस्तेजस्विनामहम् " (7.10)
अदितिपुत्रों में - **विष्णु** "आदित्यानामहं विष्णुः " (10.21)
ज्योतियों में - **किरणों वाला सूर्य** "ज्योतिषां रविरंशुमान् " (10.21)
नक्षत्रों में अधिपति- **चन्द्रमा** "नक्षत्राणामहं शशी" (10.21)
वेदों में - **सामवेद** "वेदानां सामवेदोऽस्मि" (10.22)
देवों में - **इन्द्र** "देवानामस्मि वासवः " (10.22)
इन्द्रियों में - **मन** "इन्द्रियाणां मनश्चास्मि" (10.22)
एकादश रुद्रों में- **शंकर** "रुद्राणां शङ्करश्चास्मि" (10.23)
यक्ष तथा राक्षसों में - **कुबेर** "वित्तेशो यक्षरक्षसाम् " (10.23)
आठ वस्तुओं में - **अग्नि** "वसूनां पावकश्चास्मि " (10.23)
पर्वतों में - **सुमेरु** " मेरुः शिखरिणामहम् " (10.23)
पुरोहितों में - **बृहस्पति** "पुरोधसां च मुख्यं मां विद्धि पार्थ बृहस्पतिम्" (10.24)
सेनापतियों में - **स्कन्द** "सेनानीनामहं स्कन्दः" (10.24)
जलाशय में - **समुद्र** "सरसामस्मि सागरः" (10.24)
महर्षियों में - **भृगु** "महर्षीणां भृगुरहम्" (10.25)
शब्दों में - (अक्षर) **ओंकार** "गिरामस्म्येकमक्षरम् " (10.25)
यज्ञों में - **जपयज्ञ** "यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि " (10.25)
स्थिर रहने वालों में- **पहाड़** "स्थावराणां हिमालयः" (10.25)
वृक्षों में - **पीपल** "अश्वत्थः सर्ववृक्षाणाम् " (10.26)
देवर्षियों में - **नारद** "देवर्षीणां च नारदः" (10.26)
सिद्धों में - **कपिल** "सिद्धानां कपिलो मुनिः" (10.26)
गन्धर्वों में - **चित्ररथ** "गन्धर्वाणां चित्ररथः" (10.26)
अश्वों में - **उच्चैःश्रवा** "उच्चैः श्रवसमश्वानां विद्धि माममृतोद्भवम्" (10.27)

हाथियों में - **ऐरावत** "ऐरावतं गजेन्द्राणाम्"
मनुष्यों में - **राजा** "नराणां च नराधिपम्" (10.27)
शस्त्रों में - **वज्र** "आयुधानामहं वज्रम्" (10.28)
गौओं में - **कामधेनु** "धेनुनामस्मि कामधुक्" (10.28)
सर्पों में - **वासुकि** "सर्पाणामस्मि वासुकिः" (10.28)
सन्तानोत्पत्ति में- **कामदेव** "प्रजनश्चास्मि कन्दर्पः" (10.28)
नागों में - **शेषनाग** "अनन्तश्चास्मि नागानाम्" (10.29)
जलचरों में - **वरुण** "वरुणो यादसामहम्" (10.29)
पितरों में - **अर्यमा** "पितृणामर्यमा चास्मि" (10.29)
शासन करने वालों में - **यमराज** "यमः संयमतामहम्" (10.29)
दैत्यों में - **प्रह्लाद** "प्रह्लादश्चास्मि दैत्यानाम्" (10.30)
पशुओं में - **सिंह** "मृगाणां च मृगेन्द्रोऽहम्" (10.30)
पक्षियों में - **गरुड़** "वैनतेयश्च पक्षिणाम्" (10.30)
गणना करने वालों में - **समय** "कालः कलयतामहम्" (10.30)
पवित्र करने वालों में - **वायु** "पवनः पवतामस्मि" (10.31)
शस्त्रधारियों में - **श्रीराम** "रामः शस्त्रभृतामहम्" (10.31)
मछलियों में - **मगर** "झषाणां मकरश्चास्मि" (10.31)
नदियों में - **भागीरथी गंगा** "स्रोतसामस्मि जाह्नवी" (10.31)
विद्याओं में -**अध्यात्मविद्या** "अध्यात्मविद्या विद्यानाम्" (10.32)
तर्क में - **वाद** "वादः प्रवदतामहम्" (10.32)
अक्षरों में - **अकार** "अक्षराणामकारोऽस्मि" (10.33)
समासों में - **द्वन्द्व** "द्वन्द्वः सामासिकस्य च" (10.33)
नाश करने वालों में - **मृत्यु** "मृत्युः सर्वहरश्चाहम्" (10.34)
स्त्रियों में - "**कीर्ति, श्री, वाक्,स्मृति, धृति, क्षमा,** कीर्तिः श्रीर्वाक्चनारीणां स्मृतिर्मेधा धृतिः क्षमा" (10.34)
श्रुतियों में - **बृहत्साम** "बृहत्साम तथा साम्नां" (10.35)
छन्दों में - **गायत्री** "गायत्री छन्दसामहम्" (10.35)
महीनों में - **मार्गशीर्ष** "मासानां मार्गशीर्षोऽहम्" (10.35)
ऋतुओं में - **वसन्त** "ऋतूनां कुसुमाकरः" (10.35)
छल करने वालों में - **जूआ** "द्यूतं छलयतामस्मि" (10.36)
प्रभावशाली पुरुषों का - **प्रभाव** "तेजस्तेजस्विनामहम्" (10.36)
जीतने वालों का - **विजय** "जयोऽस्मि" (10.36)
निश्चय करने वालों का - **निश्चय** "व्यवसायोऽस्मि" (10.36)
सात्त्विक पुरुषों का - **सात्त्विक भाव** "सत्त्वं सत्त्ववतामहम्" (10.36)
वृष्णिवंशियों में - **वासुदेव** "वृष्णीनां वासुदेवोऽस्मि" (10.37)
पाण्डवों में - **धनञ्जय** "पाण्डवानां धनञ्जयः" (10.37)
मुनियों में - **वेदव्यास** "मुनीनामप्यहं व्यासः" (10.37)
कवियों में - **शुक्राचार्य** "कवीनामुशना कविः" (10.37)
दमन करने वालों का - **दण्ड** "दण्डो दमयतामस्मि" (10.38)
जीतने की इच्छा वालों की - **नीति** "नीतिरस्मि जिगीषताम्" (10.38)
गुप्त रखने योग्य भावों का (रक्षक) - **मौन** "मौनं चैवास्मि गुह्यानां" (10.38)
ज्ञानवानों का - **तत्त्वज्ञान** "ज्ञानं ज्ञानवतामहम्" (10.38)

- **गीता में वर्णित दैवीय गुण** -
- गीता में श्रीकृष्ण यह बताते हैं कि दैवीय प्रकृति के आश्रित महात्मा मुझको सब भूतों का कारण जानकर अनन्य मन से निरन्तर भजते हैं।

महात्मानस्तु मां पार्थ दैवीं प्रकृतिमाश्रिताः।
भजन्त्यनन्यमनसो ज्ञात्वा भूतादिमव्ययम्॥ (9/13)

- गीता में श्रीकृष्ण दैवी सम्पत्तियों का स्वरूप वर्णन करते हुए कहते हैं कि भय का सर्वथा अभाव, अन्तःकरण की शुद्धता, तत्त्वज्ञान के लिए ध्यान में स्थिति सर्वस्व समर्पण, इन्द्रियों का भली प्रकार दमन ये सब दैवी गुण हैं।

अभयं सत्त्वसंशुद्धिर्ज्ञानयोगव्यवस्थितिः।
दानं दमश्च यज्ञश्च स्वाध्यायस्तप आर्जवम्॥(16/1)

- 'मन, वाणी, शरीर से किसी को कष्ट न देना यथार्थ और प्रियभाषण, अहंकार करने वाले पर भी क्रोध न करना, किसी की भी निन्दा न करना, सभी प्राणियों में दया- ये सब दैवी सम्पत्तियाँ हैं।

अहिंसा सत्यमक्रोधस्त्यागः शान्तिरपैशुनम्।
दया भूतेष्वलोलुप्त्वं मार्दवं ह्रीरचापलम्॥ (16/2)

- **गीता में वर्णित दैवी गुण**
  - अभय
  - सत्त्वसंशुद्धि
  - ज्ञानयोगव्यवस्थिति
  - दान
  - इन्द्रियों का दमन
  - गुरुजनों की पूजा
  - अग्निहोत्र करना
  - स्वाध्याय करना
  - अहिंसा
  - सत्यभाषण
  - क्रोध न करना
  - अन्तः करण की शुद्धि
  - निन्दा से दूर रहना
  - बिना कारण दया करना
  - तेज
  - क्षमा
  - धैर्य
  - बाहर की शुद्धि (गीता - 16/1,3)

➢ **गीता में वर्णित आसुरी सम्पदा**

- दम्भ
- दर्प
- अभिमान
- क्रोध
- कठोरता
- अज्ञान
- असत्यभाषण
- अपवित्रता
- भ्रमित चित्त वाला
- विषय भोगों में अत्यन्त आसक्त

(गीता-16/4,7,10,15,16)

➢ **गीता में वर्णित आसुरी सम्पदा प्राप्त पुरुषों के लक्षण-**

➢ श्रीकृष्ण बताते हैं कि दम्भ, घमण्ड, अभिमान, क्रोध, कठोरता, अज्ञान ये आसुरी सम्पदा को लेकर उत्पन्न हुए पुरुष के लक्षण हैं।

दम्भो दर्पोऽभिमानश्च क्रोधः पारुष्यमेव च।
अज्ञानं चाभिजातस्य पार्थ सम्पदमासुरीम्।। (16/4)

➢ आसुर स्वभाव वाले मनुष्य प्रवृत्ति और निवृत्ति दोनों को नहीं जानते। इसलिए उनमें न तो बाहर भीतर की शुद्धि है, न श्रेष्ठ आचरण है और न सत्यभाषण ही है।

प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च जना न विदुरासुराः।
न शौचं नापि चाचारो न सत्यं तेषु विद्यते।। (16/7)

➢ **गीता में अर्जुन द्वारा पूछे गये कुछ प्रमुख प्रश्न -**

➢ गीता के प्रारम्भ में अर्जुन भगवान् श्रीकृष्ण से पूछते हैं कि हे मधुसूदन! मैं किस प्रकार भीष्मपितामह और द्रोणाचार्य के विरुद्ध लड़ूँगा? क्योंकि वे दोनों पूजनीय हैं ?

कथं भीष्ममहं सङ्ख्ये द्रोणं च मधुसूदन।
इषुभिः प्रतियोत्स्यामि पूजार्हावरिसूदन।।

➢ अर्जुन श्रीकृष्ण से कहते हैं जिस प्रकार एक गुरु अपने शिष्य का सभी प्रकार से कल्याण करता है उसी प्रकार मैं आपका शिष्य हूँ अतः मेरे लिए जो कल्याण का साधन हो वह कहिये।

यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे।
शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम्।। (2/7)

➢ श्रीकृष्ण से पूछते हुए अर्जुन कहते हैं कि यदि कर्म की अपेक्षा ज्ञान श्रेष्ठ है तो आप मुझे कर्म में क्यों लगाते हो ?

ज्यायसी चेत्कर्मणस्ते मता बुद्धिर्जनार्दन।
तत्किं कर्मणि घोरे मां नियोजयसि केशव।। (5/1)

➢ अर्जुन श्रीकृष्ण से ब्रह्म, अध्यात्म, क्रम के विषय में प्रश्न पूछते हुये कहते हैं कि ब्रह्म क्या है? अध्यात्म क्या है? कर्म क्या है?

किं तद्ब्रह्म किमध्यात्मं किं कर्म पुरुषोत्तम।
अधिभूतं च किं प्रोक्तमधिदैवं किमुच्यते (8/1)

➢ अर्जुन अगुण परमेश्वर और निराकार ब्रह्म दोनों प्रकार के उपासकों के विषय में प्रश्न करते हुए पूछते हैं कि दोनों में अति उत्तम योगवेत्ता कौन हैं?

एवं सततयुक्ता ये भक्तास्त्वां पर्युपासते।
ये चाप्यक्षरमव्यक्तं तेषां के योगवित्तमाः।। (12/1)

➢ अर्जुन, श्रीकृष्ण से प्रश्न करते हुए पूछते हैं कि जो मनुष्य शास्त्रविधि को त्यागकर देवताओं का पूजन करते हैं, उनकी कौन-सी गति होती है? सात्विकी, राजसी अथवा तामसी?

ये शास्त्रविधिमुत्सृज्य यजन्ते श्रद्धयान्विताः।
तेषां निष्ठा तु का कृष्ण सत्त्वमाहो रजस्तमः।। (17/1)

➢ **गीता के अनुसार ईश्वर का निवास -**

➢ श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि सभी प्राणियों के हृदय में जो रहता है वही ईश्वर है-

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति (18/61)

➢ **गीता के अनुसार ज्ञान और अज्ञान का स्वरूप-**

➢ अध्यात्म ज्ञान में नित्यस्थिति और तत्वज्ञान के अर्थरूप परमात्मा को ही देखता यह सब ज्ञान है और जो इससे विपरीत है वह अज्ञान है।

अध्यात्मज्ञाननित्यत्वं तत्त्वज्ञानार्थदर्शनम्।
एतज्ज्ञानमिति प्रोक्तमज्ञानं यदतोऽन्यथा।। (13/11)

श्रीमदभगवद् गीता के माहात्म्य को बताने वाले कुछ प्रमुख श्लोक -

➢ **गीताशास्त्रमिदं पुण्यं यः पठेत्प्रयतः पुमान्।**
विष्णोः पदमवाप्नोति भयशोकादिवर्जितः।।

➢ **गीताध्ययनशीलस्य प्राणयामपरस्य च।**
नैव सन्ति हि पापानि पूर्वजन्मकृतानि च।।

➢ **मलनिर्मोचनं पुंसां जलस्नानं दिने दिने।**
सकृद् गीताम्भसि स्नानं संसारमलनाशनम्।।

➢ **भारतामृतसर्वस्वं विष्णोर्वत्राद्विनिः सृतम्।**
गीतागङ्गोदकं पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते।।

➢ **एकं शास्त्रं देवकीपुत्रगीतमेको देवो देवकीपुत्र एव।**
एको मन्त्रस्तस्य नामानि यानि कर्माण्येकं तस्य देवस्य सेवा।।

चार वर्णों का वर्णन

➢ गीता में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन चार वर्णों का वर्णन स्पष्ट रूप से मिलता है।

चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्म विभागशः।
तस्य कर्तारमपि मां विद्ध्यकर्तारमव्ययम्।। (4/13)

वर्ण

1.ब्राह्मण 2.क्षत्रिय 3.वैश्य 4.शूद्र

- ब्राह्मणक्षत्रियविंशा शूद्राणां च परन्तप।
  कर्माणि प्रविभक्तानि स्वभावप्रभवैर्गुणैः।। (18/41)
- गीता में भगवान् की पाँच शक्तियों का वर्णन हुआ है-
  आद्या गुणमयी दैवी तथान्या दिव्यचिन्मयी।
  योगमायेति च प्रोक्ता गीतायां पञ्च शक्तयः॥
- **पञ्च शक्तियाँ**
  मूल प्रकृति - (9/7)
  दिव्य चिन्मयशक्ति - (4/6)
  योगमाया शक्ति - (7/25)
  दैवी शक्ति - (9/13)
  गुणमयी माया - (3/27,29)

गीता में विश्वरूप-दर्शन-

- गीता के एकादश अध्याय में अर्जुन के प्रार्थना पर भगवान् श्रीकृष्ण अपना विराट स्वरूप अर्जुन को दिखलाते हैं।
- **मया प्रसन्नेन तवार्जुनेदं रूपं परं दर्शितमात्मयोगात्।**
  तेजोमयं विश्वमनन्तमाद्यं यन्मे त्वदन्येन न दृष्टपूर्वम्। (11/47)
- गीता में कहे गये श्लोकों की संख्या-
- श्रीकृष्ण भगवान् के द्वारा कहे गये श्लोक - 574
- अर्जुन के द्वारा कहे गये श्लोक - 84
- संजय के द्वारा कहे गये श्लोक - 41
- धृतराष्ट्र के द्वारा कहे गये श्लोक - 1

योग - 700

- **गीता में प्रयुक्त मुख्य छन्द-** गीता में चार छन्दों का प्रयोग मुख्य रूप से किया गया है।
  1. अनुष्टुप् 2. बृहती 3. त्रिष्टुप् 4. जगती
- **गीता में अनुबन्ध चतुष्टय-**

1. **विषय-** गीता में कर्मयोग, ज्ञानयोग, ध्यानयोग, भक्तियोग आदि विषय हैं।
2. **प्रयोजन-** जीव मात्र का कल्याण करना ही इस ग्रन्थ का प्रमुख प्रयोजन है।
3. **अधिकारी-** अपना कल्याण चाहने वाले मनुष्य गीता को पढ़ने के अधिकारी हैं। किसी भी देश में रहने वाला, किसी वेश को धारण करने वाला, किसी सम्प्रदाय को मानने वाला, किसी वर्ण आश्रम में रहने वाला, किसी भी अवस्था वाला इस दिव्य वेद सार स्वरूप गीता को पढ़ने का और मुक्ति पाने का अधिकारी है।
4. **सम्बन्ध-** गीता के विषय और गीता में परस्पर प्रतिपाद्य-प्रतिपादक का सम्बन्ध है। जीव का कल्याण किस प्रकार हो - यह प्रतिपाद्य विषय है और कल्याण की युक्तियाँ बताने वाली होने से गीता स्वयं प्रतिपादक है।

श्रीमद्भगवद्गीता अध्याय-2 सांख्ययोग

देहिनोऽस्मिन्यथा देहे कौमारं यौवनं जरा।
तथा देहान्तरप्राप्तिर्धीरस्तत्र न मुह्यति॥2/13॥

शब्द	-	**अर्थ**
यथा	-	जैसे
देहिनः	-	जीवात्मा की
अस्मिन्	-	इस
देहे	-	देह में
कौमारम्	-	बालकपन
यौवनम्	-	जवानी
जरा	-	वृद्धावस्था
तथा	-	वैसे ही
देहान्तरप्राप्तिः	-	अन्य शरीर की प्राप्ति होती है
तत्र	-	उस विषय में
धीरः	-	धीर पुरुष
न मुह्यति	-	मोहित नहीं होता

प्रसङ्ग- इस श्लोक में भगवान् श्रीकृष्ण अर्जुन को आत्मा के विषय में बताते हुये कहते हैं कि आत्मा नित्य है आत्मा के विषय में शोक करना उचित नहीं है-

अनुवाद- जैसे जीवात्मा की इस देह में बालकपन, जवानी और वृद्धावस्था होती है, वैसे ही अन्य शरीर की प्राप्ति होती है, उस विषय में धीर पुरुष मोहित नहीं होता।

सम्भावित प्रश्न-

- मनुष्य शरीर की कितनी अवस्थाए है?- **तीन**
  (1) बचपन (2) जवानी (3) वृद्धावस्था
- अन्य योनियों की प्राप्ति पर कौन मोहित नहीं होता?- **धीर पुरुष**

मात्रास्पर्शास्तु कौन्तेय शीतोष्णसुखदुःखदाः।
आगमापायिनोऽनित्यास्तांस्तितिक्षस्व भारत॥2/14॥

शब्द	**अर्थ**
कौन्तेय	हे कुन्तीपुत्र!
शीतोष्णसुखदुःखदाः	सर्दी-गर्मी और सुख-दुःख को देने वाले
मात्रास्पर्शाः	इन्द्रिय और विषयों के संयोग
तु	तो
आगमापायिनः	उत्पत्ति विनाशशील (और)
अनित्याः	अनित्य हैं

भारत	हे भारत!
तान्	उनको
तितिक्षस्व	सहन कर

प्रसङ्ग- इस श्लोक में भगवान् श्रीकृष्ण अर्जुन को बन्धु-बान्धवादि के साथ होने वाले संयोग-वियोगादि को अनित्य बताकर उनको सहन करने की आज्ञा देते हैं।

अनुवाद- हे कुन्तीपुत्र! सर्दी-गर्मी और सुख-दुःख को देने वाले इन्द्रिय और विषयों के संयोग तो उत्पत्ति, विनाशशील और अनित्य हैं, इसलिए हे भारत! उनको तू सहन कर।

सम्भावित प्रश्न-

- उपर्युक्त श्लोक में भारत किसे कहा गया है -**अर्जुन को**
- सुख दुःख और इन्द्रियों के संयोग को क्या बताया गया है? - **अनित्य**
- सुख दुःख आदि द्वन्द्वों को सहन करना क्या है।? **तितिक्षा**

यं हि न व्यथयन्त्येते पुरुषं पुरुषर्षभ।
समदुःखसुखं धीरं सोऽमृतत्वाय कल्पते॥2/15॥

शब्द	**अर्थ**
हि	क्योंकि
पुरुषर्षभ	हे पुरुष श्रेष्ठ!
समदुःखसुखम्	दुःख सुख को समान समझने वाले
यम्	जिस
धीरम्	धीर
पुरुषम्	पुरुष को
एते	ये (इन्द्रिय और विषयों के संयोग)
न व्यथयन्ति	व्याकुल नहीं करते
सः	वह
अमृतत्वाय	मोक्ष के
कल्पते	योग्य होता है।

प्रसङ्ग- इस श्लोक में भगवान् श्रीकृष्ण अर्जुन से धीर पुरुष के स्वरूप के विषय में कहते हैं कि-

अनुवाद - क्योंकि हे पुरुष श्रेष्ठ! दुःख-सुख को समान समझने वाले जिस धीर पुरुष को ये इन्द्रिय और विषयों के संयोग व्याकुल नहीं करते, वह मोक्ष के योग्य होता है।

सम्भावित प्रश्न -

- मोक्ष प्राप्त करने का अधिकारी कौन है? - **धीर पुरुष**
- 'पुरुषर्षभ' शब्द किसके लिए आया है?- **अर्जुन के लिए**
- 'समदुःखसुखं धीरम् सोऽमृतत्वाय कल्पते इस श्लोक का वक्ता कौन है? - **श्रीकृष्ण**
- सुख और दुःख को कौन पुरुष समान समझता है? - **धीर पुरुष**

नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः।
उभयोरपि दृष्टोऽन्तस्त्वनयोस्तत्त्वदर्शिभिः॥2/16॥

शब्द	**अर्थ**
असतः	असत् (वस्तु) की
भावः	सत्ता
न	नहीं
विद्यते	है
तु	और
सतः	सत् का
अभावः	अभाव
न	नहीं
विद्यते	है
अनयोः	इन
उभयोः	दोनों का
अपि	ही
अन्तः	तत्त्व
तत्त्वदर्शिभिः	तत्त्वज्ञानी पुरुषों द्वारा
दृष्टः	देखा गया है।

प्रसङ्ग- इस श्लोक में भगवान् श्रीकृष्ण अर्जुन को नित्य और अनित्य वस्तु के विवेचन की रीति बतलाते हुए दोनों के लक्षण कहते हैं-

अनुवाद- असत् वस्तु की तो सत्ता नहीं है और सत् का अभाव नहीं है। इस प्रकार इन दोनों का ही तत्त्व तत्वज्ञानी पुरुषों द्वारा देखा गया है।

सम्भावित प्रश्न

- किस वस्तु की सत्ता नहीं होती? - **असत् वस्तु की**
- किस वस्तु का कभी अभाव नहीं होता - **सत् वस्तु का**
- सत् और असत् दोनों के वास्तविक रूप से कौन जान पाता है? - **तत्त्वज्ञानी पुरुष**
- 'उभयोरपि दृष्टोऽन्तस्त्वननयोः' यहाँ 'उभयोरपि' शब्द किसके लिए आया है? - **सत् और असत् वस्तु के लिए**

अविनाशि तु तद्विद्धि येन सर्वमिदं ततम्।
विनाशमव्ययस्यास्य न कश्चित्कर्तुमर्हति॥2/17॥

शब्द	**अर्थ**	**शब्द**	**अर्थ**
अविनाशि	नाशरहित	तु	तो
तत्	उसको	विद्धि	जान
येन	जिससे	इदम्	यह सर्वम्
सम्पूर्ण	जगत्	ततम्	व्याप्त है
अस्य	इस	अव्ययस्य	अविनाशी का

विनाशम्	विनाश	कर्तुम्	करने में
कश्चित्	कोई भी		
न, अर्हति	समर्थ नहीं है।		

प्रसङ्ग- इस श्लोक में भगवान् श्रीकृष्ण अर्जुन को सत् और असत् वस्तु के स्वरूप का निराकरण करते हुए युद्ध करने की आज्ञा देते हैं-

अनुवाद - नाशरहित तो तू उसको जान, जिससे यह सम्पूर्ण जगत् (दृश्यवर्ग) व्याप्त है। इस अविनाशी का विनाश करने में कोई भी समर्थ नहीं है।

सम्भावित प्रश्न-

- अविनाशी किसे कहा गया है? - **आत्मा को**
- सम्पूर्ण चराचर जगत में कौन व्याप्त है?- **अविनाशी आत्मा**
- आत्मा का विनाश करने में कौन समर्थ है?- **कोई भी नहीं**

अन्तवन्त इमे देहा नित्यस्योक्ताः शरीरिणः
अनाशिनोऽप्रमेयस्य तस्माद्युध्यस्व भारत॥2/18॥

शब्द	अर्थ
अनाशिनः	नाशरहित
अप्रमेयस्य	अप्रमेय
नित्यस्य	नित्यस्वरूप
शरीरिणः	जीवात्मा के
इमे	ये सब
देहाः	शरीर
अन्तवन्तः	नाशवान्
उक्ताः	कहे गये हैं
तस्मात्	इस लिए
भारत	हे भरतवंशी अर्जुन!
युध्यस्व	युद्ध करो।

प्रसङ्ग- असत् वस्तु की सत्ता बतलाते हुए भगवान् श्रीकृष्ण कहते हैं-

अनुवाद- इस नाशरहित, अप्रमेय, नित्यस्वरूप जीवात्मा के ये सब शरीर नाशवान् कहे गये हैं। इसलिए हे भरतवंशी अर्जुन ! तू युद्ध कर।

सम्भावित प्रश्न-

- 'अन्तवन्त इमे देहा' वाक्य श्रीमद्भगवद्गीता के किस अध्याय से है? - **द्वितीय**
- श्रीमद्भगवद्गीता में मानव शरीर को क्या कहा गया है? - **नाशवान्**
- 'अन्तवन्त इमे देहा' सूक्ति के वक्ता कौन है? - **श्रीकृष्ण**
- इस श्लोक में जीवात्मा को किन-किन नामों से पुकारा गया है?- **नाशरहित, अप्रमेय और नित्य**

19. य एनं वेत्ति हन्तारं यश्चैनं मन्यते हतम्।
उभौ तौ न विजानीतो नायं हन्ति न हन्यते॥2/19॥

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
यः	जो	एनम्	इस आत्मा को
हन्तारम्	मारने वाला	वेत्ति	समझता है
च	तथा	यः	जो
एनम्	इसको	हतम्	मरा
मन्यते	मानता है	तौ	वे
उभौ	दोनों ही	न	नहीं
विजानीतः	जानते	अयम्	यह आत्मा
न	न (तो किसी को)	हन्ति	मारता है (और)
न	न (किसी के द्वारा)	हन्यते	मारा जाता है।

प्रसङ्ग - इस श्लोक में भगवान् श्रीकृष्ण अर्जुन को यह कहते हैं कि आत्मा को मरने या मारने वाला समझना ही अज्ञान है।

अनुवाद- जो इस आत्मा को मारने वाला समझता है तथा जो इसको मरा मानता है, वे दोनों ही नहीं जानते, क्यों कि यह आत्मा वास्तव में न तो किसी को मारता है और न किसी के द्वारा मारा जाता है।

सम्भावित प्रश्न-

- 'नायं हन्ति न हन्यते' कहाँ की सूक्ति है? - **श्रीमद्भगवद्गीता द्वितीय अध्याय की**
- आत्मा को वास्तव में कौन नहीं जानता है? - **जो इसे मरने वाला और मारने वाला जानता है**
- 'नायं हन्ति न हन्यते' शब्द का क्या अर्थ है? - **यह आत्मा न तो किसी को मारता है और और न किसी द्वारा मारा जाता है।**

न जायते म्रियते वा कदाचि न्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे॥2/20॥

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
अयम्	यह आत्मा	कदाचित्	किसी काल में भी
न	न (तो)	जायते	जन्मता है
वा	और	न	न
म्रियते	मरता (ही) है	वा	तथा
न	न (यह)	भूत्वा	उत्पन्न होकर
भूयः	फिर	भविता	होने वाला (ही) है
अयम्	यह	अजः	अजन्मा
नित्यः	नित्य	शाश्वतः	सनातन (और)

पुराणः	पुरातन (है)	शरीरे	शरीर के
हन्यमाने	मारे जाने पर भी (यह)		
न	नहीं		
हन्यते	मारा जाता।		

अनुवाद- यह आत्मा किसी काल में भी न तो जन्मता है और न मरता ही है तथा न यह उत्पन्न होकर फिर होने वाला ही है, क्योंकि यह अजन्मा, नित्य सनातन और पुरातन है, शरीर के मारे जाने पर भी यह नहीं मारा जाता।

सम्भावित प्रश्न-

➢ शरीर के मारे जाने पर कौन नहीं मारा जाता?- **आत्मा**

➢ आत्मा की क्या-क्या विशेषताएं हैं?**अजन्मा,नित्य सनातन,पुरातन**

वेदाविनाशिनं नित्यं य एनमजमव्ययम्।
कथं स पुरुषः पार्थ कं घातयति हन्ति कम्॥2/21॥

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
पार्थ	हे पृथा पुत्र अर्जुन!	यः	जो
पुरुषः	पुरुष	एनम्	इस आत्मा को
अविनाशिनम्	नाशरहित	नित्यम्	नित्य
अजम्	अजन्मा	अव्ययम्	अव्यय
वेद	जानता है	सः	वह (पुरुष)
कथम्	कैसे	कम्	किसको
घातयति	मरवाता है (और)	कथम्	कैसे
कम्	किसको	हन्ति	मारता है?

अनुवाद - हे पृथा पुत्र अर्जुन! जो पुरुष इस आत्मा को नाशरहित, नित्य, अजन्मा और अव्यय जानता है वह पुरुष कैसे किसको मरवाता है और कैसे किसको मारता है?

सम्भावित प्रश्न-

➢ नित्य किसे कहा गया है? - आत्मा को

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय
नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णा-
न्यन्यानि संयाति नवानि देही॥ 2/22॥

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
यथा	जैसे	नरः	मनुष्य
जीर्णानि	पुराने	वासांसि	वस्त्रों को
विहाय	त्यागकर	अपराणि	दूसरे
नवानि	नये (वस्त्रों को)	गृह्णाति	ग्रहण करता है
देही	जीवात्मा	जीर्णानि	पुराने
शरीराणि	शरीरों को	विहाय	त्यागकर
अन्यानि	दूसरे	नवानि	नये (शरीरों को)
संयाति	प्राप्त होता है।	तथा	वैसे ही

अनुवाद- जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्यागकर दूसरे नये वस्त्रों को ग्रहण करता है, वैसे ही जीवात्मा पुराने शरीरों को त्यागकर दूसरे नये शरीरों को प्राप्त होता है।

सम्भावित प्रश्न-

➢ 'देही' शब्द का क्या अर्थ है? - **जीवात्मा (शरीरधारी)**

➢ 'गृह्णाति' कहाँ का रूप है?-**लट्लकार प्रथम पुरुष एकवचन**

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः॥ 2/23॥

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
एनम्	इस आत्मा को	शस्त्राणि	शस्त्र
न	नहीं	छिन्दन्ति	काट सकते
एनम्	इसको	पावकः	आग
न	नहीं	दहति	जला सकती
एनम्	इसको	आपः	जल
न	नहीं	क्लेदयन्ति	गला सकता
च	और	मारुतः	वायु
न	नहीं	शोषयति	सुखा सकता।

अनुवाद- इस आत्मा को शस्त्र नहीं काट सकते, इसको आग नहीं जला सकती, इसको जल नहीं गला सकता और वायु नहीं सुखा सकता।

सम्भावित प्रश्न-

➢ इस आत्मा को कौन नहीं काट सकता? - **शस्त्र**

➢ आत्मा को कौन नहीं जला सकता? - **आग**

➢ आत्मा को कौन जला नहीं सकता? - **जल**

➢ वायु किसको नहीं सुखा सकता ? - आत्मा को

अच्छेद्योऽयमदाह्योऽयमक्लेद्योऽशोष्य एव च।
नित्यः सर्वगतः स्थाणुरचलोऽयं सनातनः॥ 2/24॥

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
अयम्	यह आत्मा	अच्छेद्याः	अच्छेद्य है,
अयम्	यह आत्मा	अदाह्यः	अदाह्य
अक्लेद्यः	अक्लेद्य	च	और
एव	निःसंदेह	अशोष्यः	अशोष्य है
अयम्	यह आत्मा	नित्यः	नित्य
सर्वगत	सर्वव्यापी	अचलः	अचल
स्थाणुः	स्थिर रहने वाला	सनातनः	सनातन है

अनुवाद- क्योंकि यह आत्मा अच्छेद्य है, यह आत्मा अदाह्य, अक्लेद्य और निःसन्देह अशोष्य है तथा यह आत्मा नित्य,

सर्वव्यापी, अचल, स्थिर रहने वाला और सनातन है।

- किसको छेदा नहीं जा सकता है? - **आत्मा को**
- नित्य, सर्वव्यापी, अचल, स्थिर कौन है?- **आत्मा**
- सनातन किसे कहा गया है? - **आत्मा को**

अव्यक्तोऽयमचिन्त्योऽमविकार्योऽयमुच्यते।
तस्मादेवं विदित्वैनं नानुशोचिमर्हसि॥2/25॥

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
अयम्	यह आत्मा	अव्यक्तः	अव्यक्त है
अयम्	यह आत्मा	अचिन्त्यः	अचिन्त्य है (और)
अयम्	यह आत्मा	अविकार्यः	विकाररहित
उच्यते	कहा जाता है।	तस्मात्	इससे (हे अर्जुन)
एवम्	उपर्युक्त प्रकार से	विदित्वां	जानकर
अनुशोचितुम्	शोक करने के	एनम्	इस आत्मा को

न अर्हसि योग्य नहीं है, अर्थात तुझे शोक करना उचित नहीं है।

अनुवाद- यह आत्मा अव्यक्त है, यह आत्मा अचिन्त्य है और यह आत्मा विकाररहित कहा जाता है। इससे हे अर्जुन! इस आत्मा को उपर्युक्त प्रकार से जानकर तू शोक करने योग्य नहीं है अर्थात् तुझे शोक करना उचित नहीं है।

सम्भावित प्रश्न -

- अव्यक्त, अचिन्त्य कौन है? - **आत्मा**
- विकाररहित किसे कहा गया है? - **आत्मा को**

श्रीमद्भगवद्गीता की प्रमुख सूक्तियाँ

1. क्लैब्यं मा स्म गमः (2/3)

भावार्थ- नपुंसकता को मत प्राप्त हो।

2. शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम् । (2/7)

मैं आपका शिष्य हूँ इसलिए आपके शरण हुए मुझको शिक्षा दीजिए।

3. गतासूनगतासूंश्च नानुशोचन्ति पण्डिताः। (2/11)

भावार्थ- जिनके प्राण चले गये हैं, उनके लिए और जिनके प्राण नहीं गये हैं उनके लिए पण्डित जन शोक नहीं करते।

4. आगमापायिनोऽनित्यास्तांस्तितिक्षस्व भारत। (2/14)

भावार्थ- उत्पत्ति और विनाश दोनों अनित्य हैं इसलिए हे भारत! उनको सहन कर।

5. समदुःखसुखं धीरं सोऽमृतत्वाय कल्पते (2/15)

भावार्थ- सुख दुःख को समान समझने वाला धीर मोक्ष के योग्य होता है।

6. नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः।(2/16)

भावार्थ- असत् वस्तु की सत्ता नहीं है और सत् का अभाव नहीं है।

7. अन्तवन्त इमे देहा।(2/18)

भावार्थ- ये सब शरीर नाशवान है।

8. नायं हन्ति न हन्यते।(2/19)

भावार्थ- यह आत्मा वास्तव में न तो किसी को मारता है और न किसी के द्वारा मारा जाता है।

9. न हन्यते हन्यमाने शरीरे (2/20)

भावार्थ-शरीर के माने जाने पर भी (यह आत्मा) नहीं मारा जाता।

10. वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही। (2/22)

भावार्थ- जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्यागकर दूसने नये वस्त्रों को ग्रहण करता है, वैसे ही जीवात्मा पुराने शरीरों को त्यागकर दूसरे नये शरीरों को प्राप्त होता है।

11. नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः॥ (2/23)

भावार्थ- इस आत्मा को शस्त्र नहीं काट सकते, इसको आग नहीं जला सकती, इसको जल नहीं गला सकता और वायु नहीं सुखा सकता।

12. नित्यः सर्वगतः स्थाणुरचलोऽयं सनातनः।(2/24)

भावार्थ- यह आत्मा नित्य सर्वव्यापी, अचल स्थिर रहने वाला और सनातन है।

13. जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः। (2/27)

(क्योंकि) जन्मे हुए की मृत्यु निश्चित है।

14. सुखदुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ।
ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि॥ (2/38)

जय-पराजय, लाभ हानि और सुख-दुःख को समान समझकर उसके बाद युद्ध के लिए तैयार हो जा, इस प्रकार युद्ध करने से तू पाप को नहीं प्राप्त होगा।

15. स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात्।(2/40)

भावार्थ- इस कर्मयोग रूप धर्म का थोड़ा-सा भी साधन जन्म मृत्यु रूप महान् भय से रक्षा कर लेता है।

16. कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।(2/47)

भावार्थ- तेरा कर्म करने में ही अधिकार है (उसके) फलों में कभी नहीं।

17. समत्त्वं योग उच्यते।(2/48)

भावार्थ- समत्व ही योग कहलाता है।

18. बुद्धिनाशात् प्रणश्यति।(2/63)

भावार्थ- बुद्धि का नाश हो जाने से पुरुष अपनी स्थिति से गिर जाता है।

19. प्रसादे सर्वदुःखानां हानिरस्योपजायते। (2/65)

भावार्थ- अन्तःकरण की प्रसन्नता होने पर इसके सम्पूर्ण दुःखों का अभाव हो जाता है।

20. अशान्तस्य कुतः सुखम् (2/66)
भावार्थ- शान्तिरहित मनुष्य को सुख कैसे मिल सकता है?
21. या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी।(2/69)
भावार्थ- सम्पूर्ण प्राणियों के लिए जो रात्रि के समान है, उस नित्य ज्ञानस्वरूप परमानन्द की प्राप्ति में स्थितप्रज्ञ योगी जागता है।
22. स शान्तिमाप्नोति न कामकामी।(2/70)
भावार्थ- वही पुरुष परम शान्ति को प्राप्त होता है, भोगों को चाहने वाला नहीं।
23. निर्ममो निरहङ्कार स शान्तिमधिगच्छति।(2/71)
भावार्थ- ममतारहित, अहंकाररहित जो है वही शान्ति को प्राप्त होता है।
24. तदेकं वद निश्चित्य येन श्रेयोऽहमाप्नुयाम्।(3/2)
भावार्थ- उस एक बात को निश्चित करके कहिये, जिससे मैं कल्याण को प्राप्त हो जाऊँ।
25. न हि कश्चित् क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत्।(3/5)
भावार्थ- निःसन्देह कोई भी (मनुष्य) किसी भी काल में क्षणमात्र भी बिना कर्म किए नहीं रहता।
26. यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबन्धनः। (3/9)
भावार्थ- यज्ञ के निमित्त किये जाने वाले कर्मों से अतिरिक्त दूसरे कर्मों में (लगा हुआ ही) यह मनुष्य समुदाय कर्मों से बँधता है।
27. परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ। (3/11)
भावार्थ- एक दूसरे को उन्नत करते हुए (तुम लोग) परम कल्याण को प्राप्त हो जाओगे।
28. भुञ्जते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात्।(3/13)
भावार्थ- जो पापी लोग अपना शरीर पोषण करने के लिए ही अन्न पकाते हैं, वे तो पाप को ही खाते हैं।
29. अन्नाद्भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसम्भवः।
यज्ञाद्भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्मसमुद्भवः॥ (3/14)
भावार्थ- सम्पूर्ण प्राणी अन्न से उत्पन्न होते हैं, अन्न की उत्पत्ति वृष्टि से होती है, वृष्टि यज्ञ से होती है और यज्ञ, विहित कर्मों से उत्पन्न होने वाला है।
30. एवं प्रवर्तितं चक्रं नानुवर्तयतीह यः।
अघायुरिन्द्रियारामो मोघं पार्थ स जीवति। (3/16)
भावार्थ- हे पार्थ! जो पुरुष इस लोक में इस प्रकार परम्परा से प्रचलित सृष्टि चक्र के अनुकूल नहीं बरतता अर्थात् अपने कर्तव्य का पालन नहीं करता, वह इन्द्रियों के द्वारा भोगों में रमण करने वाला पापायु व्यर्थ ही जीता है।
31. नैव तस्य कृतेनार्थे नाकृतेनेह कश्चन।(3/18)
भावार्थ- उस महापुरुष का इस विश्व में न तो कर्म करने से कोई प्रयोजन रहता है और न कर्मों के न करने से।
32. तस्मादसक्त सततं कार्यं कर्म समाचर।(3/19)
भावार्थ- इसलिए तू निरन्तर आसक्ति से रहित होकर सदा कर्तव्य कर्म को भलीभाँति करता रह।
33. यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते।।(3/21)
भावार्थ- श्रेष्ठ पुरुष जो-जो आचरण करता है, अन्य पुरुष भी वैसा-वैसा ही आचरण करते हैं, वह जो कुछ प्रमाणित कर देता है समस्त मनुष्य समुदाय उसी के अनुसार बरतने लग जाता है।
34.अहङ्कारविमूढात्मा कर्ताहमिति मन्यते।(3/27)
भावार्थ- जिसका अन्तः करण अहंकार से मोहित हो रहा है ऐसा अज्ञानी मैं कर्ता हूँ ऐसा मानता है।
35. तत्त्ववित्तु महाबाहो गुणकर्मविभागयोः।
गुणा गुणेषु वर्तन्त इति मत्वा न सज्जते।।(3/28)
भावार्थ- परन्तु हे महाबाहो! गुणविभाग और कर्मविभाग के तत्त्व को जानने वाला ज्ञानयोगी सम्पूर्ण गुण ही गुणों में बरत रहे है। ऐसा समझकर (उनमें) आसक्त नहीं होता।
36. स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः॥ (3/35)
भावार्थ- अपने धर्म में मरना भी कल्याणकारक है और दूसरे का धर्म भय को देने वाला है।
37. जहि शत्रुं महाबाहो कामरूपं दुरासदम्।(3/43)
भावार्थ- हे महाबाहो! (अर्जुन) तू इस कामरूप दुर्जय शत्रु को मार डाल।
38. यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।। (4/7)
भावार्थ- हे भारत! जब-जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है, तब-तब ही मैं अपने रूप को रचता हूँ अर्थात् साकाररूप से लोगों के सम्मुख प्रकट होता हूँ।
39. परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे।। (4/8)
भावार्थ- साधु पुरुषों का उद्धार करने के लिए पापकर्म करने वालों का विनाश करने के लिए और धर्म की अच्छी तरह से स्थापना करने के लिए मैं युग-युग में प्रकट हुआ करता हूँ।
40. जन्म कर्म च मे दिव्यम् (4/9)
भावार्थ- (हे अर्जुन) मेरे जन्म और कर्म दिव्य अर्थात् निर्मल और अलौकिक हैं।
41. ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्।(4/11)

भावार्थ- जो भक्त मुझे जिस प्रकार भजते हैं, मैं भी उनको उसी प्रकार भजता हूँ।

42. चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः।(4/13)

भावार्थ- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन चार वर्णों का समूह, गुण और कर्मों के विभागपूर्वक मेरे द्वारा रचा गया है।

43. गहना कर्मणो गतिः (4/17)

भावार्थ- क्योंकि कर्म की गति गहन है।

44. यज्ञायाचरतः कर्म समग्रं प्रविलीयते। (4/23)

भावार्थ- यज्ञ सम्पादन के लिए कर्म करने वाले मनुष्य के सम्पूर्ण कर्म भलीभाँति विलीन हो जाते हैं।

45. ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्।
ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्मसमाधिना।। (4/24)

भावार्थ- जिस यज्ञ में अर्पण अर्थात् स्रुवा आदि भी ब्रह्म है और हवन किये जाने योग्य द्रव्य भी ब्रह्म है तथा ब्रह्मरूप कर्त्ता के द्वारा ब्रह्मरूप अग्नि में आहुति देना रूप क्रिया भी ब्रह्म है - उस ब्रह्मकर्म में स्थित रहने वाले योगी द्वारा प्राप्त किये जाने योग्य फल भी ब्रह्म ही है।

46. यज्ञशिष्टामृतभुजो यान्ति ब्रह्म सनातनम्।(4/31)

भावार्थ- यज्ञ से बचे हुए अमृत का अनुभव करने वाले योगीजन सनातन परब्रह्म परमात्मा को प्राप्त होते हैं।

47. सर्वं कर्माखिलं पार्थ ज्ञाने परिसमाप्यते।(4/33)

भावार्थ- हे अर्जुन! यावन्मात्र सम्पूर्ण कर्म ज्ञान में समाप्त हो जाते हैं।

48. तद्विद्धि प्राणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया ।
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः।। (4/34)

भावार्थ- उस ज्ञान को तू तत्त्वदर्शी ज्ञानियों के पास जाकर समझ, उनको भली-भाँति दण्डवत् प्रणाम करने से, उनकी सेवा करने से और कपट छोड़कर सरलतापूर्वक प्रश्न करने से वे परमात्मतत्त्व को भली-भाँति जानने वाले ज्ञानी महात्मा तुझे उस तत्त्वज्ञान का उपदेश करेंगे।

49. यज्ज्ञात्वा न पुनर्मोहम्। (4/35)

भावार्थ- जिसको जानकर फिर मोह नहीं होगा।

50. श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानं।(4/39)

भावार्थ- श्रद्धावान् मनुष्य ज्ञान को प्राप्त होता है।

51. संशयात्मा विनश्यति।(4/40)

भावार्थ- संशययुक्त मनुष्य परमार्थ से अवश्य भ्रष्ट हो जाता है।

52. कर्मयोगो विशिष्यते।(5/2)

भावार्थ- कर्मयोग (साधन में सुगम होने से) श्रेष्ठ है।

53. निर्द्वन्द्वो हि महाबाहो सुखं बन्धात्प्रभच्यते। (5/3)

भावार्थ- क्यों कि राग द्वेषादि द्वन्द्वों से रहित (पुरुष) सुखपूर्वक संसारबन्धन से मुक्त हो जाता है।

54. फले सक्तो निबध्यते।(5/12)

भावार्थ- फल में आसक्त होकर बँधता है।

55. इहैव तैर्जितः सर्गो येषां साम्ये स्थितं मनः।(5/19)

भावार्थ- जिनका मन समभाव में स्थित है, उनके द्वारा इस जीवित अवस्था में ही सम्पूर्ण संसार जीत लिया गया है।

56. ब्रह्मविद्ब्रह्मणि स्थितः। (5/20)

भावार्थ- ब्रह्मवेत्ता पुरुष सच्चिदानन्दघन परब्रह्म परमात्मा में स्थित है।

59. ये हि संस्पर्शजा भोगा दुःखयोनय एव ते।
आद्यन्तवन्तः कौन्तेय न तेषु रमते बुधः।(5/22)

भावार्थ- जो ये इन्द्रिय तथा विषयों के संयोग से उत्पन्न होने वाले सब भोग हैं, वे यद्यपि विषयी पुरुषों को सुखरूप भासते हैं तो भी निःसन्देह दुःख के ही हेतु हैं और आदि अन्त वाले अर्थात् अनित्य हैं। इसलिए हे अर्जुन बुद्धिमान् विवेकी पुरुष उनमें नहीं रमता।

58. भोक्तारं यज्ञतपसां सर्वलोकमहेश्वरम्।
सुह्रदं सर्वभूतानां ज्ञात्वा मां शान्तिमृच्छति।। (5/29)

भावार्थ- मुझको सब यज्ञ और तपों का भोगने वाला, सम्पूर्ण लोकों के ईश्वरों का भी ईश्वर तथा सम्पूर्ण भूतप्राणियों का सुहृद् अर्थात् स्वार्थरहित दयालु और प्रेमी, ऐसा तत्त्व से जानकर शान्ति को प्राप्त होता है।

59. न ह्यसन्न्यस्तसङ्कल्पो योगी भवति कश्चन (6/2)

भावार्थ- क्योंकि संकल्पों का त्याग न करने वाला कोई भी पुरुष योगी नहीं होता।

60. आरुरुक्षोर्मुनेर्योगं कर्म कारणमुच्यते।(6/3)

भावार्थ- योग में आरूढ़ होने की इच्छा वाले मननशील पुरुष के लिए निष्काम भाव से कर्म करना ही हेतु कहा जाता है।

61. आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः। (6/5)

आप ही तो अपना मित्र हैं और आप ही अपना शत्रु हैं।

62. समबुद्धिर्विशिष्यते।(6/9)

भावार्थ- समान भाव रखने वाला अत्यन्त श्रेष्ठ है।

63. युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु।
युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा।। (6/17)

भावार्थ- दुःखों का नाश करने वाला योग यथा योग्य आहार विहार करने वाले का, कर्मों में यथा योग्य चेष्टा करने वाले का और यथायोग्य तथा सोने जगने वाले का ही सिद्ध होता है।

64. तं विद्याद्दुःखसंयोगवियोगं योगसञ्ज्ञितम्।(6/23)

भावार्थ- दुःखरूप संसार के संयोग से रहित है (तथा) जिसका नाम योग है उसको जानना चाहिए।

65. यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति।
तस्याहं न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति॥ (6/30)
भावार्थ- जो पुरुष सम्पूर्ण भूतों में सब के आत्मरूप मुझ वासुदेव को ही व्यापक देखता है और सम्पूर्ण भूतों को मुझ वासुदेव के अन्तर्गत देखता है उसके लिए मैं अदृश्य नहीं होता और वह मेरे लिए अदृश्य नहीं होता।

66. अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते।(6/35)
भावार्थ- परन्तु हे कुन्तीपुत्र अर्जुन! (यह मन) अभ्यास और वैराग्य से वश में होता है।

67. न हि कल्याणकृत्कश्चिद्दुर्गतिं तात गच्छति। (6/40)
भावार्थ- हे प्यारे! आत्मोद्धार के लिए अर्थात् भगवत्प्राप्ति के लिए कर्म करने वाला कोई भी मनुष्य दुर्गति को प्राप्त नहीं होता।

68. मत्तः परतरं नान्यत्किञ्चिदस्ति।(7/7)
भावार्थ- मुझसे भिन्न दूसरा कोई भी परम (कारण) नहीं है।

69. मामेव ये प्रपद्यन्ते मायायेतां तरन्ति ते। (7/14)
भावार्थ- जो पुरुष मुझको ही निरन्तर भजते हैं वे इस माया का उल्लंघन कर जाते हैं अर्थात् संसार से तर जाते हैं।

70. वासुदेवः सर्वम्। (7/19)
भावार्थ- सब कुछ वासुदेव ही है।

71. मद्भक्ता यान्ति मामपि। (7/23)
भावार्थ- मेरे भक्त (चाहे जैसे ही भजें, अन्त मे वे) मुझको ही प्राप्त होते हैं।

72. मामनुस्मर युध्य च। (8/7)
भावार्थ- मेरा स्मरण कर और युद्ध भी कर।

73. दुःखालयमशाश्वतम्।(8/15)
भावार्थ- दुःखों के घर (एवं) क्षणभंगुर

74. मामुपेत्य तु कौन्तेय पुनर्जन्म न विद्यते। (8/16)
भावार्थ- हे कुन्ती पुत्र! मुझको प्राप्त होकर पुनर्जन्म नहीं होता।

75. भूतग्रामः स एवायं भूत्वा प्रलीयते। (8/19)
भावार्थ- वही यह भूत समुदाय उत्पन्न हो होकर लीन होता है।

76. यं प्राप्य न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम। (8/21)
भावार्थ- जिस सनातन अव्यक्त भाव को प्राप्त होकर मनुष्य वापस नहीं आते, वह मेरा परम धाम है।

77. क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति।(9/21)
भावार्थ- पुण्य क्षीण होने पर मृत्युलोक को प्राप्त होते हैं।

78. गतागतं कामकामा लभन्ते।(9/21)
भावार्थ- भोगों की कामना वाले पुरुष बार-बार आवागमन को प्राप्त होते हैं अर्थात् पुण्य के प्रभाव से स्वर्ग में जाते हैं और पुण्य क्षीण होने पर मृत्युलोक में आते हैं।

79. योगक्षेमं वहाम्यहम्।(9/22)
भावार्थ- योगक्षेम मैं स्वयं प्राप्त कर देता हूँ।

80. पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति।
तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः॥ (9/26)
भावार्थ- जो मेरे लिए प्रेम से पत्र, पुष्प, फल, जल आदि अर्पण करता है, उस शुद्ध बुद्धि निष्काम प्रेमी भक्त का प्रेमपूर्वक अर्पण किया हुआ वह (पत्र-पुष्पादि) मैं खाता हूँ।

81. यत्करोषि यदश्नासि यज्जुहोषि ददासि यत्।
यत्तपस्यसि कौन्तेय तत्कुरुष्व मदर्पणम्॥ (9/27)
भावार्थ- हे अर्जुन! तू जो कर्म करता है, जो खाता है, जो हवन करता है, जो दान दान देता है, जो तप करता है, वह सब मुझे अर्पण कर ।

82. कौन्तेय प्रति जानीहि न मे भक्तः प्रणश्यति।(9/31)
भावार्थ- हे अर्जुन! तू निश्चयपूर्वक सत्य जान कि मेरा भक्त नष्ट नहीं होता।

83. अनित्यमसुखं लोकमिमं प्राप्य भजस्व माम्। (9/33)
भावार्थ- क्षणभंगुर और सुखरहित इस मनुष्य शरीर को प्राप्त होकर निरन्तर मेरा ही भजन कर।

84. मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु। (9/34)
भावार्थ- मुझमें मन वाला हो, मेरा भक्त बन, मेरा पूजन करने वाला हो, मुझको प्रणाम कर।

85. यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि।(10/25)
भावार्थ- सब प्रकार के यज्ञों में (मैं) जप यज्ञ हूँ।

86. अध्यात्मविद्या विद्यानाम्।(10/32)
भावार्थ- विद्याओं में अध्यात्मविद्या अर्थात् ब्रह्मविद्या हूँ।

87. निमित्तमात्रं भव सव्यसाचिन्।(11/33)
भावार्थ- हे सव्यसाचिन! तू तो केवल निमित्तमात्र बन जा।

88. न त्वत्समोऽस्त्यभ्यधिकः कुतोऽन्यो। (11/43)
भावार्थ- आपके समान भी दूसरा कोई नहीं है, फिर अधिक तो कैसे हो सकता है?

89. ते प्राप्नुवन्ति मामेव सर्वभूतहिते रताः। (12/4)
भावार्थ- वे सम्पूर्ण भूतों के हित में रत और सबमें समान भाव वाले योगी मुझको ही प्राप्त होते हैं।

90. त्यागाच्छान्तिरनन्तरम्। (12/12)
भावार्थ- त्याग से तत्काल ही परम शान्ति होती है।

91. जन्ममृत्युजराव्याधिदुःखदोषानुदर्शनम्।(13/8)
भावार्थ- जन्म, मृत्यु, जरा और रोग आदि में दुःख और दोषों का बार-बार विचार करना।

92. ज्योतिषामपि तज्ज्योतिः।(13/17)
भावार्थ- वह परब्रह्म ज्योतियों का भी ज्योति है।

93. पुरुषः प्रकृतिस्थो हि भुङ्क्ते प्रकृतिजान्गुणान्।(13/21)
भावार्थ- प्रकृति में स्थित ही पुरुष प्रकृति से उत्पन्न त्रिगुणात्मक पदार्थों को भोगता है।
94. देहेऽस्मिन्पुरुषः परः। (13/22)
भावार्थ- इस देह में स्थित यह आत्मा वास्तव में परमात्मा ही है।
95. न हिनस्त्यात्मानात्मानं ततो याति परां गतिम्।(13/28)
भावार्थ- क्योंकि जो अपने द्वारा अपने को नष्ट नहीं करता इससे वह परम गति को प्राप्त होता है।
96. शरीरस्थोऽपि कौन्तेय न करोति न लिप्यते।(13/31)
भावार्थ- हे अर्जुन! शरीर में स्थित होने पर भी न कुछ करता है और न लिप्त ही होता है।
97. ऊर्ध्वं गच्छन्ति सत्वस्था मध्ये तिष्ठन्ति राजसाः।
जघन्यगुणवृत्तिस्था अधो गच्छन्ति तामसाः॥ (14/18)
भावार्थ- सत्त्वगुण में स्थित पुरुष स्वर्गादि उच्च लोकों को जाते हैं, राजस पुरुष मध्य में अर्थात् मनुष्यलोक में रहते हैं और तमोगुण के कार्यरूप निद्रा, प्रमाद और आलस्य में स्थित तामस पुरुष अधोगति को अर्थात् कीट, पशु आदि नीच योनियों को तथा नरकों को प्राप्त होते हैं।
98. उर्ध्वमूलमधः शाखामश्वत्थं प्राहुरव्ययम्।(15/1)
भावार्थ- आदि पुरुष परमेश्वर रूप मूलवाले और ब्रह्मारूप मुख्य शाखा वाले संसाररूप पीपल के वृक्ष को अविनाशी कहते हैं।
99. न तद्भासयते सूर्यो न शशाङ्को न पावकः।
यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम।।(15/6)
भावार्थ- जिस परमपद को प्राप्त होकर मनुष्य लौटकर संसार में नहीं आते, उस (स्वयं प्रकाश परम पद को) न सूर्य प्रकाशित कर सकता है न चन्द्रमा और न अग्नि, वही मेरा परम धाम है।
100. ममैवांशो जीवलोके। (15/7)
भावार्थ- इस देह में (जीवात्मा) मेरा ही अंश है।
101. विमूढा नानुपश्यन्ति पश्यन्ति ज्ञानचक्षुषः। (15/10)
भावार्थ- अज्ञानी जन नहीं जानते, (केवल) ज्ञानरूप नेत्रों वाले तत्त्व से जानते हैं।
102. सर्वस्य चाहं हृदि सन्निविष्टः। (15/15)
भावार्थ- मैं ही सब प्राणियों के हृदय में अन्तर्यामी रूप से स्थित हूँ।
103. दैवी सम्पद्विमोक्षाय निबन्धायासुरी मता। (16/5)
भावार्थ- दैवी सम्पदा मुक्ति के लिए और आसुरी सम्पदा बाँधने के लिए मानी गयी है।
104. कामोपभोगपरमा एतावदिति निश्चिताः। (16/11)
भावार्थ- विषय भोगों के भोगने में तत्पर रहने वाले 'इतना ही सुख' है इस प्रकार मानने वाले होते हैं।
105. तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ। (16/24)
भावार्थ- इससे तेरे लिए कर्तव्य और अकर्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण है।
106. श्रद्धामयोऽयं पुरुषो यो यच्छ्रद्धः स एव सः। (17/3)
भावार्थ-यह पुरुष श्रद्धामय है, इसलिए जो पुरुष जैसी श्रद्धावाला है, वह स्वयं भी वही है।
107. यस्तु कर्मफलत्यागी स त्यागीत्यभिधीयते। (18/11)
भावार्थ- जो कर्मफल का त्यागी है वही त्यागी है, यह कहा जाता है।
108. यत्तदग्रे विषमिव परिणामेऽमृतोपमम्। (18/37)
भावार्थ- जो आरम्भ काल में विष के तुल्य प्रतीत होता है, परन्तु परिणाम में अमृत के तुल्य है।
109. स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धिं लभते नरः। (18/45)
भावार्थ- अपने-अपने स्वभाविक कर्मो में तत्परता से लगा हुआ मनुष्य भगवत्प्राप्ति रूप परम सिद्धि को प्राप्त हो जाता है।
110. स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दति मानवः। (18/46)
भावार्थ- अपने स्वभाविक कर्मों द्वारा उस परमेश्वर की पूजा करके मनुष्य परम सिद्धि को प्राप्त हो जाता है।
111. सर्वारम्भा हि दोषेण धूमेनाग्निरिवावृताः। (18/48)
भावार्थ- सभी कर्म धूएँ से अग्नि की भाँति दोष से युक्त हैं।
112. मच्चितः सर्वदुर्गाणि मत्प्रसादात्तरिष्यसि। (18/58)
भावार्थ- मुझमें चित्त वाला होकर तू मेरी कृपा से समस्त संकटों को पार कर जायेगा।
113. प्रकृतिस्त्वां नियोक्ष्यति।(18/59)
भावार्थ- स्वभाव तुझे जबरदस्ती युद्ध में लगा देगा।
114. ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशोऽर्जुन तिष्ठति।
भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया।। (15/61)
भावार्थ- हे अर्जुन! शरीररूप यन्त्र में आरूढ़ हुए सम्पूर्ण प्राणियों को अन्तर्यामी परमेश्वर अपनी माया से भ्रमण कराता हुआ सब प्राणियों के हृदय में स्थित है।
115. तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत।(18/62)
भावार्थ- हे भारत! सब प्रकार से उस परमेश्वर की ही शरण में जा।
116. सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वां सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः॥ (18/66)
भावार्थ- सम्पूर्ण धर्मो को अर्थात् सम्पर्ण कर्तव्य कर्मों को त्यागकर एक मुझ सर्वशक्तिमान् सर्वाधार परमेश्वर की ही शरण में आ जा मैं तुझे सम्पूर्ण पापों से मुक्त कर दूँगा, शोक मत कर।

117. नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा। (18/73)

भावार्थ- (मेरा) मोह नष्ट हो गया (और) मैंने स्मृति प्राप्त कर ली है।

118. करिष्ये वचनं तव। (18/73)

आपकी आज्ञा का पालन करूँगा।

119. यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम॥ (18/78)

जहाँ योगेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण हैं, जहाँ गाण्डीव-धनुषधारी अर्जुन हैं, वहीं पर श्री, विजय, विभूति और अचल नीति है, ऐसा मेरा मत है।

गीता बिन्दुवार अध्ययन

- ''भगवद्गीता'' किस ग्रन्थ का भाग है? - **महाभारतस्य**
- श्रीमद्भगवद्गीता में कितने अध्याय हैं– **अष्टादश**
- गीता महाभारत के किस पर्व में वर्णित है?- **भीष्मपर्व में**
- श्रीमद्भागवतस्य पदरत्नावलीटीका केन प्रणीता?- **विजयध्वजेन**
- श्रीमद्भगवद्गीता के द्वितीय अध्याय का नाम है- **सांख्ययोग**
- आत्मनः स्वरूपं भगवद्गीतायाः कस्मिन् अध्याये वर्णितम्?- **द्वितीयाध्याये**
- 'सांख्ययोग' इति कस्याध्यायस्य नाम-**द्वितीयस्य**
- 'भगवद्गीतायाः' तृतीयाध्यायस्य नाम किम्- **कर्मयोग**
- श्रीमद्भगवद्गीता के एकादश अध्याय का नाम है– **विश्वदर्शनयोग**
- गीता के अनुसार 'कर्मयोगी' को कर्म क्यों करना चाहिए- **लोकसंग्रह के लिए**
- गीतानुसारेण ''स्थितधीः.....उच्यते'' इत्यत्र रिक्तस्थानं पूरयतु - **मुनिः**
- ''नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः'' पंक्तिरियं कमुद्दिश्य उदीरितः - **आत्मानम्**
- 'प्रस्थानत्रयी' में किसकी गणना होती है? - **गीता की**
- 'श्रीमद्भगवद्गीता' में अर्जुन को कौन उपदेश देता है?- **कृष्ण**
- 'स्थितप्रज्ञस्य का भाषा' इति कः कम् अपृच्छत्- **अर्जुनः कृष्णम् अपृच्छत्**
- क्रोधाद् भवति - **सम्मोहः**
- 'योगः कर्मसु कौशलम्' यह वाक्य है- **भगवद्गीता में**
- 'कर्मफलभोक्ता' कः - **जीवः**
- 'भगवद्गीतायां' कः शिष्यः वर्तते-- **अर्जुनः**
- श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार निष्कामकर्म का अर्थ है- **अनासक्त होकर कर्म करना**
- गीता का स्वधर्म सिद्धान्त है - **कर्मसिद्धान्त**
- श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार मनुष्य का अधिकार है- **कर्म करने पर**
- ''नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः'' गीता का यह सिद्धान्त किस दर्शन से सम्बन्ध रखता है? -**सांख्यदर्शन से**
- श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार आत्मा किससे श्रेष्ठ है? **बुद्धि से**
- ''भक्ति से भगवान् की आराधना ही परम धर्म है'' यह वाक्य सम्बन्धित है - **गीतातात्पर्ये**
- 'भगवद्गीता' के द्वितीय अध्याय में योग का लक्षण है- - **कार्य में कुशलता**
- ज्ञान और कर्म से युक्त है - **गीता**
- 'कर्मण्येवाधिकारस्ते' श्लोकांश का आशय है- **तुम्हारा अधिकार (केवल) कर्म करने में ही है।**
- ''योगः कर्मसु कौशलम्'' अस्य श्लोकांशस्य प्रवक्ता-**श्रीकृष्णः**
- ''कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन''–इति केनोक्तम् **श्रीकृष्णः**
- ''स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते'' स्थितप्रज्ञः कः- **य आत्मन्येवात्मना तुष्टः**
- भगवद्गीतानुसारेण स्थितप्रज्ञः कः उच्यते? - **निष्कामकर्मयोगी**
- एतान्न हन्तुमिच्छामि घ्नतोऽपि ......। पूरयत - **मधूसूदन**
- कः पौण्ड्रं दध्मौ महाशंखम्– **वृकोदरः**
- 'कुतस्त्वा कश्मलमिदं विषमे समुपस्थितं' इति वचनं कस्य? **कृष्णस्य**
- व्यवसायात्मिका बुद्धिः कुत्र न विधीयते - **समाधौ**
- दूरेण ह्यवरं कर्म-कस्मात्– **बुद्धियोगात्**
- कृष्णेन वर्णितः ऊर्ध्वमूलत्वादिलक्षणःअश्वत्थो वृक्षः केन शस्त्रेण छेदनीयो भवन्ति?- **वैराग्यरूपेण**
- ''अन्तवन्त इमे देहाः'' का तात्पर्य है कि - **ये शरीर नाशवान् है।**
- 'श्रीमद्भगवद्गीता' में माया का कौन-सा गुण नहीं है? **असती**
- गीता में मूल प्रकृति के प्रकार हैं- **आठ**
- श्रीमद्भगवद्गीता में भीम के शंख का नाम है - **पौण्ड्र**
- ''तुम्हारा अधिकार कर्म पर है, फल की प्राप्ति पर नहीं'' यह निम्न में से किस ग्रन्थ में कहा गया है?- **गीता में**
- गुडाकेश कौन कहा जाता है? - **अर्जुनः**
- ''योगस्थः कुरु कर्माणि'' श्लोकांशे वर्णितम्- **अनासक्ततया कर्म**
- सम्मोहस्य कारणं किम्? - **क्रोधः**

- भगवद्गीतायां भक्तियोगः - **द्वादशः**
- 'समत्वं योग उच्यते' किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है?-**श्रीमद्भगवद्गीतायाः**
- श्रीमद्भगवद्गीतायाः 'विश्वरूपदर्शनयोगः' अस्ति– **एकादशेऽध्याये**
- श्रीमद्भगवद्गीतायाम् अर्जुनं प्रति .. उपदेशः वर्तते- **श्रीकृष्णस्य**
- ''नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
  न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः।।''
  प्रस्तुत श्लोक किस ग्रन्थ से लिया गया है? - **श्रीमद्भगवद्गीता**
- ''मा कर्मफलहेतुर्भूः'' उक्ति है - **भगवद्गीता**
- 'सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज' - **भगवद्गीतायाः**
- 'कर्मण्येवाधिकारस्ते' यह उक्ति किस ग्रन्थ की है- **गीता की**
- 'ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि भस्मसात् कुरुते तथा' इति कुत्र उक्तम्? - **गीतायाम्**
- ''यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः'' श्लोकांश श्रीमद्भगवद्गीता के किस अध्याय से सम्बद्ध है - **अष्टादश**
- ''स्वधर्मे निधनं श्रेयः'' इत्युक्तिः कतमेऽध्याये वर्तते? - **तृतीये**
- ''सर्वधर्मान् परित्यज्य'' यह कहाँ की उक्ति है?- **गीता की**
- ''मामेकं शरणं व्रज'' सूक्ति है - **गीता की**
- ''योगक्षेमं वहाम्यहम्'' पंक्तिः वर्तते- **श्रीमद्भगवद्गीतायाम्**
- ''योगक्षेमं वहाम्यहम्'' इति वाक्यं कस्मिन् अध्याये वर्तते?**नवमे**
- ''न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते'' कस्मिन् अध्याये वर्तते?**चतुर्थे**
- ''नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः'' पंक्ति ली गई है - **श्रीमद्भगवद्गीता से**
- ''वेदानां सामवेदोऽस्मि''-इस श्लोक वाला ग्रन्थ है -**गीता में**
- 'जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः' इति सूक्तिः अस्ति - **श्रीमद्भगवद्गीतायाः**
- ''सांख्ययोगौ पृथग्बालाः प्रवदन्ति न पण्डिताः'' इत्युक्तिः वर्तते - **श्रीमद्भगवद्गीतायाम्**
- 'बुद्धिनाशात्प्रणश्यति' किस ग्रन्थ का सन्दर्भ है– **गीता**
- 'श्रीमद्भगवद्गीता' इति ग्रन्थस्य उपरि कस्य टीका (व्याख्या) नास्ति– - **जवाहरलाल नेहरू**
- 'स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः' यह वचन किस ग्रन्थ का है– - **गीता**
- भगवद्गीता को अध्यायों के अन्त मे किस शास्त्र के नाम से जाना जाता है। - **योगशास्त्र**
- स्थितप्रज्ञस्य लक्षणं गीतायाः कस्मिन्नध्याये कृतमस्ति-**द्वितीये**
- भागवतटीकायाः टीका अतीव प्रसिद्धाऽस्ति - **श्रीधरीटीका**
- नलोपाख्यानं महाभारतस्य कस्मिन् पर्वणि वर्तते- **अरण्यपर्वणि**
- राजधर्मानुशासनं महाभारते कस्मिन् पर्वणि अस्ति- **शान्तिपर्वणि**
- श्रीमद्भगवद्गीतानुसारेण अव्यवसायिनां बुद्धयः कीदृश्यः भवन्ति- **बहुशाखाः अनन्ताश्च**

4.3 बुद्धचरितम्

महाकवि अश्वघोष का परिचय

- **नाम-** अश्वघोष
- **उपाधि-** आचार्य, भदन्त, महावादी, महावक्ता, महाकवि।
- **माता का नाम-** सुवर्णाक्षी।
- **जन्मस्थान-** साकेत (अयोध्या) उत्तर-प्रदेश।
- **समय-** प्रथम शताब्दी ईसवी
- **गुरु-** पुण्ययश।
- कहीं-कहीं पर 'पार्श्व' को इनका गुरु माना जाता है।
- **जाति-** ब्राह्मण।
- **धर्मावलम्बी-** बौद्ध (पूर्व में शैव)
- **दीक्षा-** हीनयान सम्प्रदाय में
- **आश्रयदाता-** सम्राट् कनिष्क
- कनिष्क, अश्वघोष के शिष्य भी थे।
- **जीवनकाल-** अस्सी (८०) वर्ष।
- अश्वघोष, कश्मीर में सम्पन्न 'चतुर्थ बौद्ध संगीति' के उपाध्यक्ष थे।
- **प्रिय छन्द-** अनुष्टुप्, उपजाति।
- **रीति-** वैदर्भी
- **रचनाएँ-** चार कृतियाँ ही प्रामाणिक हैं-

1. **बुद्धचरित-** (महाकाव्य,28सर्ग,संस्कृत में अधूरा ही प्राप्त)
2. **सौन्दरनन्द-** (महाकाव्य,18सर्ग,पूर्णतः संस्कृत में उपलब्ध)
3. **शारिपुत्रप्रकरण-** (रूपक,9अङ्क,अंशतः प्राप्त)
4. **राष्ट्रपालनाटक-** (गेय नाटक, चीनी भाषा में)

- **निवास स्थान-** पुरुषपुर (पेशावर)
- **प्रिय अलङ्कार-** उपमा

बुद्धचरितम् का परिचय

- **लेखक-** अश्वघोष
- **काव्यविधा-** महाकाव्य
- **विभाजन-** 28 सर्गों में
- **उपजीव्य-** ललितविस्तर/लङ्कावतारसूत्र नामक बौद्धग्रन्थ
- **श्लोक संख्या-** 2137
- **नोट-** यह श्लोक संख्या, बुद्धचरितम् के अनुवादक पं० रामचन्द्रदास शास्त्री जी द्वारा लिखित टीका से दिया गया है। कहीं-कहीं पर 2148 श्लोक भी मिलता है।

सर्ग	श्लोक संख्या	सर्ग का नाम
प्रथम	89	भगवत्प्रसूति
द्वितीय	56	अन्तःपुर विहार
तृतीय	65	संवेगोत्पत्ति
चतुर्थ	103	स्त्री-निवारण
पञ्चम	87	अभिनिष्क्रमण
षष्ठ	68	छन्दक निवर्तन
सप्तम	58	तपोवन प्रवेश
अष्टम	87	अन्तःपुर विलाप
नवम	82	कुमार अन्वेषण
दशम	41	बिम्बसार का आगमन
एकादश	73	कामनिन्दा
द्वादश	120	अराड-दर्शन
त्रयोदश	73	मारविजय
चतुर्दश	112	बुद्धत्व प्राप्ति
पञ्चदश	67	बुद्ध का काशी गमन
षोडश	95	शिष्यों को दीक्षादान
सप्तदश	43	शिष्यों की प्रव्रज्या
अष्टादश	85	अनाथपिण्डों की दीक्षा
एकोनविंशति	49	पितापुत्र समागम
विंशति	66	जेतवन स्वीकृति
एकविंशति	71	प्रव्रज्या स्रोत
द्वाविंशति	55	आम्रपाली के उपवन में
त्रयोविंशति	75	आयुनिर्णय
चतुर्विंशति	64	लिच्छवियों पर अनुकम्पा
पञ्चविंशति	81	निर्वाण मार्ग में
षड्विंशति	110	महापरिनिर्वाण
सप्तविंशति	84	निर्वाण प्रशंसा
अष्टाविंशति	78	धातु विभाजन
	कुल श्लोक-	**2137**

- **रीति-** वैदर्भी
- **गुण-** प्रसाद एवं माधुर्य।
- **छन्द-** उपजाति, अनुष्टुप्, इन्द्रवज्रा, वंशस्थ, शिखरिणी आदि।
- **अलङ्कार-** उपमा के साथ-साथ अनुप्रास, यमक, रूपक, उत्प्रेक्षा, अर्थान्तरन्यास, वक्रोक्ति तथा एकावली।
- **मुख्य/प्रधान/अङ्गी रस-** शान्तरस
- **गौण/अङ्गरस-** वात्सल्य, करुण, अद्भुत।
- **नायक-** भगवान् बुद्ध/गौतम (सिद्धार्थ)
- बुद्धचरित का संस्कृत अंश केवल 14वें सर्ग तक ही प्राप्त होता है।

- **बुद्धचरित का मङ्गलाचरण**

इक्ष्वाकुवंशार्णवसम्प्रभूतः
प्रेमाकरश्चन्द्र इव प्रजानाम्।
शाक्येषु साकल्यगुणाधिवासः
शुद्धोदनाख्यो नृपतिर्बभूव॥ 1/1

अनुवाद- इक्ष्वाकु वंश रूपी सागर में उत्पन्न, प्रजाजनों के लिए चन्द्रमा के समान, प्रेम की राशिभूत, सम्पूर्ण गुणों के निवासस्थान शुद्धोदन नामक राजा शाक्यवंश में हुए।

विशेष- जम्बूद्वीप के समस्त राजकुलों में शाक्यवंश ही दोषरहित है। अतः **वस्तुनिर्देशात्मक मङ्गलाचरण** है।

- इन्द्रवज्रा छन्द रूपक अलङ्कार
- **बुद्धचरितम् के कथानक का सारांश**

प्रथम सर्ग

- इक्ष्वाकु वंश में शाक्याधिपति **शुद्धोदन** नामक राजा हुए और उनकी पत्नी का नाम **माया** था।
- एक दिन रानी को स्वप्न में **सफेद हाथी** दिखाई देता है तथा रानी के गर्भिणी होने की सूचना मिलती है।
- लुम्बिनी नामक वन में एक विलक्षण बालक का जन्म होता है, पृथ्वी काँप उठती है, आकाश से कमलों की वर्षा होती है।
- ब्राह्मणों द्वारा राजा से बताया जाता है कि यह बालक कुलदीपक एवं शुभ का सूचक है।
- महर्षि असित ने राजा के पास आकर कुमार को देखा तथा राजा को भविष्य बताकर वायुमार्ग में विलीन हो गये।
- राजा शुद्धोदन ने पुत्रजन्म से प्रसन्न होकर एक लाख गायों का दान किया।
- राजा के दान से मानों कपिलवस्तु नगर, कुबेर का नगर बन गया।

द्वितीय सर्ग

- जितेन्द्रिय पुत्र के जन्म से राजा शुद्धोदन धन-धान्य, हाथी, घोड़ों से वृद्धि को प्राप्त हुए।
- इसी कारण बालक का नाम 'सर्वार्थसिद्ध' रखा गया।
- हर्षातिरेक के कारण रानी माया का स्वर्गवास हो गया।
- उचित समय पर बालक का उपनयनसंस्कार तथा विद्याध्ययन कराकर 'यशोधरा' से विवाह कराया गया।
- तत्पश्चात् 'यशोधरा' ने 'राहुल' नाम के पुत्र को जन्म दिया।

तृतीय सर्ग

- राजा शुद्धोदन ने सभी भोगादि की व्यवस्था राजमहल में

कराकर कुमार के बाहर जाने पर रोक लगा दिया।

- कुमार ने बाह्योद्यान की सुन्दरता देखने की इच्छा व्यक्त की, राजा के विशेष व्यवस्था से मार्ग पर निकलते समय अनेक सुन्दरियों ने अटारियों और गवाक्षों से कुमार के दर्शन किये।
- मार्ग में कुमार को एक रोगी, वृद्ध तथा शव का दर्शन होता है, तब वे महल को लौटना चाहते हैं, लेकिन सारथी उन्हें अत्यन्त रमणीय 'पद्मषण्ड' नामक वन में ले जाता है।

चतुर्थ सर्ग

- उद्यान में अनेक सुन्दरियाँ कुमार को घेर कर बैठ जाती हैं, तब 'उदायी' नामक शास्त्रज्ञ, नारी के रूप-सौन्दर्य एवं काम-कला का वर्णन करता है।
- कुमार के प्रभावित न होने पर 'उदायी' कुमार को स्त्री-सेवन के लिए उचित सलाह देता है और ऋषियों द्वारा सेवित काम का पौराणिक वृत्तान्त सुनाता है।
- कुमार गम्भीर स्वर में उदायी की बातों का सतर्क खण्डन करते हैं और अपने मन को सांसारिक दुःखों की निवृत्ति हेतु एकाग्र करते हैं।

पञ्चम सर्ग

- कुमार शान्ति पाने के लिए राजाज्ञा से मन्त्रिपुत्रों के साथ वन में जाते हैं।
- जुती हुई पृथ्वी तथा मृत कीड़ों को देखकर कुमार संसार की गति पर सम्यक् विचार करते हुए शोक में डूब जाते हैं।
- वन से आकर कुमार ने संन्यास धारण करने के लिए राजा से आज्ञा मांगी जिससे राजा अत्यन्त दुःखित होते हैं।
- राजा का सभी प्रयास असफल रहा, कुमार ने छन्दक नामक सेवक को जगाकर, कंथक घोड़े पर सवार होकर पिता, पुत्र, पत्नी तथा राजलक्ष्मी को छोड़कर रात्रि में ही नगर से निकल जाते हैं।
- नगर की ओर देखकर उन्होंने कहा -

'जननमरणयोरदृष्टपारो न पुरमहं कपिलाह्वयं प्रवेष्टा।'

षष्ठ सर्ग

- नगर से निकलकर, सूर्योदय होने पर कुमार भार्गव ऋषि के आश्रम पर उतरते हैं और छन्दक को घोड़ा लेकर वहीं से वापस जाने को कहते हैं।
- छन्दक, राजा एवं विमाता गौतमी तथा यशोधरा के भय से अकेले जाने को तैयार नहीं होता और कुमार को वापस ले जाने के लिए हाथ जोड़कर विनती करता है।
- कुमार उसे समझाकर, तलवार से अपने बाल और मुकुट काटकर फेंक देते हैं और कषाय वस्त्र धारण करके आश्रम में प्रवेश करते हैं।
- छन्दक रोता हुआ, दुःखी घोड़े के साथ नगर में वापस आ जाता है।

सप्तम सर्ग

- आश्रम में कुमार को 'तपस्या का प्रयोजन स्वर्गप्राप्ति' जानकर अंसतोष हुआ।
- संध्यावन्दन, हवन, भजन इत्यादि को छोड़कर वे मोक्षप्राप्ति के लिए आश्रम से निकल गये।
- रास्ते में किसी दिव्यरूप वाले ब्राह्मण ने उन्हें अराड ऋषि से सम्पर्क करने और लक्ष्य प्राप्त करने का आशीर्वाद दिया।

अष्टम सर्ग

- कपिलवस्तु की स्त्रियाँ विलाप करती हैं और छन्दक को ही कोसती हैं।
- यशोधरा की उलाहना सुनकर छन्दक, कुमार से जुड़ी समस्त घटनाओं का वर्णन करता है।
- राजा के शोक को देखकर मन्त्री, असित ऋषि के वचन का स्मरण दिलाकर धैर्य धारण करवाता है।
- तत्पश्चात् मन्त्री, पुरोहित के साथ कुमार को खोजने जाता है।

नवम सर्ग

- कुमार को खोजते हुए मन्त्री और पुरोहित भार्गव आश्रम में पहुँचते हैं।
- वहाँ सूचना पाकर वे अराड ऋषि के आश्रम की ओर जाते हैं, मार्ग में तेजपुंज कुमार को देखकर वहीं बैठते हैं।
- मन्त्री, राजा की आज्ञा से कुमार को लौटने के लिए प्रेरित करता है, किन्तु कुमार अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहते हैं।
- कुमार कहते हैं कि मैं अग्नि में प्रविष्ट हो जाऊँगा लेकिन वापस घर नहीं जाऊँगा।
- मन्त्री और पुरोहित निराश होकर वापस लौट आते हैं।

दशम सर्ग

- राजकुमार और बिम्बसार का मिलन होता है और बिम्बसार कुमार को भिक्षापात्र त्यागने तथा राज्यभोग करने का उपदेश देते हैं।
- गङ्गा पार करके वे मगधराज बिम्बसार से मिलने जाते हैं। राजा भी कुमार को भोग करने एवं त्रिवर्ग के लिए यत्न करने के लिए कहते हैं।
- कुमार, कैलाश पर्वत की भाँति अडिग रहे और मगधराज की बातों से विचलित नहीं हुए।

एकादश सर्ग

- बिम्बसार के भोग सम्बन्धी बातों का उत्तर देते हुए कुमार सांसारिक कामनाओं की निन्दा करते हैं।

- कुमार कहते हैं, प्राणी की भोग से कभी तृप्ति नहीं होती। नहुष और पुरूरवा आदि कभी तृप्त नहीं हुए।
- त्रिवर्ग नाशवान् है, सन्तुष्टिदायक नहीं।
- अन्ततः राजा बिम्बसार हाथ जोड़कर कुमार की अभीष्टसिद्धि के लिए प्रार्थना करते हैं।

द्वादश सर्ग

- राजकुमार, अराड ऋषि के आश्रम में जाते हैं तथा अराड ऋषि उनका स्वागत करते हैं।
- कुमार के आग्रह पर ऋषि अपने दर्शन से अवगत कराते हैं, लेकिन कुमार को सन्तुष्टि नहीं मिलती।
- कुमार ने ऋषि का आश्रम छोड़कर, नैरञ्जना नदी के तट पर छः वर्षों तक तपस्या किया।
- वहीं पर कुमार को क्षीण देखकर नन्दबाला ने उनको पायस खिलाया तथा कुमार निश्चय के साथ अश्वत्थ वृक्ष के जड़ में पर्यङ्कासन बाँधकर बैठ गये।

त्रयोदश सर्ग

- कामदेव आदि कुमार की तपस्या में विघ्न डालते हैं, कुमार और कामदेव का युद्ध होता है जिसमें काम पराजित होता है।
- मार उनके तप में अनेक प्रकार की बाँधाओं को भेजा किन्तु कुमार अडिग रहे।
- मार भी पराजित होता है तथा पुष्पवर्षा होती है।

चतुर्दश सर्ग

- अनेक बाँधाओं से पार होकर, धैर्यपूर्वक, परमतत्त्व जानने की इच्छा से ध्याननिपुण कुमार को बुद्धत्व की प्राप्ति हुई।
- इस परम दिव्य ज्ञान को प्राप्त करके वे मुनि बुद्ध हो गये।
- अंत में देवता से अनेक भिक्षापात्र प्राप्त होते हैं।
- बुद्ध पाँच भिक्षुओं का स्मरण करते हैं और काशी के लिए प्रस्थान करते हैं।

नोट- अश्वघोष रचित संस्कृत बुद्धचरित यहीं तक प्राप्त होता है। सम्पूर्ण ग्रन्थ चीनी एवं तिब्बती भाषा में अनूदित है। जिसके आधार पर ई० एच० जानस्टन ने बुद्धचरित को अंग्रेजी अनुवाद में प्रकाशित कराया। जबलपुर के पं० रामचन्द्रदास ने इसी अंग्रेजी में अनूदित बुद्धचरित को संस्कृत में रूपान्तरित किया है। अतः महाकाव्य की पूर्णता एवं कथानक की अखण्डता के लिए शेष सर्गों का संक्षिप्त वर्णन करना आवश्यक है।

पञ्चदश सर्ग

- मार्ग में एक भिक्षु के आग्रह पर वे अपना नाम, गुरु की महिमा, ज्ञान आदि को बताते हैं।
- गंगा और वरुणा नदियों से युक्त वे काशी नगरी पहुँचे वहाँ महानाम, अश्वजित्, कौण्डिन्य आदि मुनियों के आश्रम को देखा और वार्तालाप किये।
- उन्हीं मुनियों को ज्ञान के माध्यम से सन्तुष्ट करने पर देवता भी प्रसन्न हुए और पुष्प वर्षा करने लगे।

षोडश सर्ग

- सर्वप्रथम बुद्ध ने अश्वजित् नामक संयमी मुनि को दीक्षित किया तथा 54 अन्य लोगों को दीक्षित किया।
- शिष्यों को भ्रमण का आदेश देकर बुद्ध स्वयं 'गया' चले गये वहाँ से मगध गये और बिम्बसार से मिले।
- बिम्बसार ने बुद्ध द्वारा दिये गये धर्मदृष्टि को प्राप्त किया तथा मगधनिवासी भी मुनि दर्शन से कृतकृत्य हुए।

सप्तदश सर्ग

- बिम्बसार के निवेदन पर बुद्ध, वेणुवन-विहार में रहने लगे।
- वहाँ रहते हुए बुद्ध ने अनेक लोगों को दीक्षा दी और उन्हें शिष्य रूप में स्वीकार किया।
- शील, समाधि तथा प्रज्ञा से युक्त अपने तीन शिष्यों से युक्त वे बुद्ध तीनों लोकों में सुशोभित हुए।

अष्टादश सर्ग

- सूर्य वंश में उत्पन्न कोशल देश का राजा सुदत्त बुद्ध के पास जाता है और दीक्षा प्राप्त करता है।
- दीक्षा से अभिभूत तथा दानशील होने के कारण वह अपने नगर श्रावस्ती में बौद्ध विहार बनवाने की आज्ञा लेता है।
- श्रावस्ती के जेतवन नामक स्थान पर राजा सुदत्त बौद्ध मठ बनवाते हैं।

नवदश सर्ग

- ज्ञान के द्वारा अनेक शास्त्रज्ञ विद्वानों को जीतकर बुद्ध अपने पैतृक नगर कपिलवस्तु को गये।
- वहाँ पर पिता शुद्धोदन ने 'न' उनको 'मुनि' कह पाये और न ही 'पुत्र'।
- उन्होंने अपने पिता से कहा कि आप शोक न करें। पुत्रानन्द का त्यागकर, धर्मानन्द का अनुभव करें।
- अनेक राजाओं और राजकुमार ने बुद्ध को देखकर घर परिवार त्याग दिये।
- राजा शुद्धोदन भी राज्य को भाई के अधीन करके स्वयं राजर्षियों की भाँति जीने लगे।
- बुद्ध भिक्षा लेकर न्यग्रोध वन को चले गये।

विंशति सर्ग

- वहाँ से जाकर बुद्ध, राजा सुदत्त के नगर श्रावस्ती के जेतवन मठ में पहुँचे, जहाँ राजा ने उनका स्वागत किया।

- राज्य को नश्वर समझकर राजा सुदत्त भी श्रावस्ती के जेतवन में ही निवास करने लगे।
- बुद्ध अपनी माता को दीक्षा देने स्वर्ग में जाते हैं, तथा भिक्षा लेकर पुनः पृथ्वी पर आते हैं।

एकविंशति सर्ग

- पृथ्वी पर आकर बुद्ध ने ज्योतिष्क, जीवक, शूर, अजातशत्रु आदि को दीक्षा दिया।
- तत्पश्चात् उन्होंने अनेक यक्षों, राक्षसों, ब्राह्मणों, सेठों, ऋषियों सर्पों को सुगत धर्म में दीक्षित किया।
- बुद्ध की उन्नति देखकर देवदत्त क्रुद्ध हुआ और वह अनेक कुकृत्य करने लगा। अन्ततः श्रेष्ठ जनों से निन्दित होकर अधोलोक में जा गिरा।

द्वाविंशति सर्ग

- मगधराज के मन्त्री 'वर्षकार' ने एक किला बनवाया तथा उसके द्वार का नाम गौतमद्वार रखा।
- जिस घाट से वे गंगा पार किये उसका नाम 'गौतम तीर्थ' से प्रसिद्ध हुआ।
- वैशाली नगर जाकर बुद्ध ने आम्रपाली के उपवन में कुछ समय बिताया।
- आम्रपाली, नाम की वेश्या बुद्ध के पास आती है और दीक्षा प्राप्त करके अपनी वृत्ति को छोड़ देती है।
- बुद्ध भी आम्रपाली के कृत्य से अत्यन्त खुश होते हैं।

त्रयोविंशति सर्ग

- आम्रपाली के घर जाने पर समस्त लिच्छवी (जाति विशेष) बुद्ध के दर्शनार्थ आते हैं।
- सभी लिच्छवियों को उपदेश देकर वे मर्कट नामक सरोवर पर बैठते है।
- वहाँ कामदेव के आग्रह पर मुनि ने निर्वाण के लिए अपनी शरीर से आयु को खींचकर चित्त में समाधिस्थ किये और बोले कि मैं भवबन्धन देने वाली आयु से निकल चुका हूँ।

चतुर्विंशति सर्ग

- बुद्ध 'आनन्द' नामक शिष्य से बताते हैं कि अब उनकी आयु सिर्फ तीन महीने ही शेष है।
- आनन्द उदास होकर रोता है तब उन मुनि ने शरीर को नाशवान् बताया उसी समय बहुत से वैशाली नगर के लिच्छवी वहाँ इकट्ठा हुए और अपने जीवन को कृतार्थ किया।
- अन्त में लिच्छवियों को अपने घर जाने के लिए कहकर बुद्ध ने उत्तर की दिशा में प्रस्थान किया।

पञ्चविंशति सर्ग

- मुनि के निर्वाण के लिए जाने पर वैशाली नगरी अन्धकारयुक्त तथा शोभाहीन हो गई।
- उस दिन वहाँ के लोगों ने न तो भोजन पकाया और न ही खाया, पूरा दिन शोक में ही बीत गया।
- बुद्ध वहाँ से भोगवती नगरी में गये, वहाँ उन्होंने अनुचरों को सौगत(बौद्धधर्म) के बारे में बताया।
- बुद्ध वहाँ से पापापुरी गये वहाँ मल्लों ने उनका स्वागत किया, चुन्द के घर भोजन करके वे कुशीनगर चले गये।
- हिरण्यवती नदी में स्नान करके शालवृक्षों के बीच बने शय्या पर निर्वाण हेतु सोये।
- मल्ल समूह उनका दर्शन करके अपने घर आ गया।

षड्विंशति सर्ग

- तत्पश्चात् सुभद्र नामक एक त्रिदण्डी, मुनि के दर्शनार्थ जाता है। तथा पूर्वमत को त्यागकर बौद्धमत अपनाता है।
- बुद्ध आदेशानुसार वह त्रिदण्डी मुनि वहीं शरीर को त्यागकर निर्वाण प्राप्त करता है।
- इसी बीच अनिरुद्ध नामक शिष्य बुद्ध के निर्वाण से अत्यन्त दुखित होता है।
- इसप्रकार सभी शिष्यों को शोकमुक्ति के विषय में बताकर महात्मा बुद्ध क्रमशः प्रथम,द्वितीय, तृतीय और अन्तिम ध्यान में प्रविष्ट हुए।
- इस प्रकार वे सदा के लिए शान्त हो गये तथा सम्पूर्ण संसार मानो शोभारहित हो गया।

सप्तविंशति सर्ग

- निर्वाण के पश्चात् देवताओं ने अपने विमानों से मुख निकालकर आपस में बुद्ध के जीवनकाल की प्रशंसा की।
- मल्लों ने शव को कन्धों पर रखकर, हिरण्यवती नदी पार करके मुकुट चैत्य के नीचे चिता को सजाया।
- तीन बार तक अग्नि न जलने पर काश्यप नामक शिष्य आया तब मुनि को प्रणाम करने पर ही चिता स्वयं जल उठी।
- मुनि का अस्थिमात्र शेष बचा जिससे लोगों ने मुनि की अस्थि का पूजाभवन बनवाया।

अष्टाविंशति सर्ग

- कुछ समय बाद मल्लों से पूजित, उस अस्थि को लेने के लिए पड़ोसी सात राजाओं के दूत वहाँ आये किन्तु मल्लों ने अस्थि देने से इनकार कर दिया।
- राजाओं को सूचना मिलने पर वे क्रुद्ध हुए और युद्ध के लिए उद्यत हुए,मल्ल भी युद्ध के लिए तैयार हुए।
- इसी बीच द्रोण नामक ब्राह्मण ने बुद्ध मार्ग पर चलकर युद्ध

को रोका तथा मल्लों को भी समझाया।

- ब्राह्मण के प्रयास से मल्लों ने अस्थि का आठ भाग किया तथा सात भाग राजाओं को देकर आठवाँ अपने पास रखा।
- द्रोण के हिस्से में केवल 'घड़ा' तथा 'पिसल' नामक भक्त को भस्म ही मिला।
- इस प्रकार पृथ्वी पर धातुगर्भित आठ, घटगर्भित एक तथा भस्मगर्भित एक, कुल दस स्तूप बने।
- बाद में सम्राट् अशोक के समय में हजारों स्तूप बनाये गये।

बुद्धचरित के कुछ प्रमुख पात्र

- **शुद्धोदन-** बुद्ध के पिता
- **माया-** बुद्ध की माता
- **यशोधरा-** बुद्ध की पत्नी
- **राहुल-** बुद्ध का पुत्र
- **असित-** एक मुनि/भविष्यवेत्ता
- **छन्दक-** सेवक
- **कन्थक-** बुद्ध का घोड़ा
- **अराड-** एक ऋषि (जिन्होंने बुद्ध को सांख्य की शिक्षा दी थी)
- **सर्वार्थसिद्ध-** बुद्ध के बचपन का नाम

पाठ्यक्रम में निर्धारित बुद्धचरित का तृतीय सर्ग

ततः कदाचिन्मृदुशाद्वलानि पुंस्कोकिलोन्नादितपादपानि।
शुश्राव पद्माकरमण्डितानि गीतैर्निबद्धानि स काननानि॥ 3/1।।

- **अनुवाद-** तब किसी समय उस सिद्धार्थ ने वन के सम्बन्ध में सुना कि वन कोमल तृणों से सम्पन्न है और वहाँ के वृक्ष कोयलों की ध्वनि से गुंजायमान हैं तथा कमलों के तालाबों से युक्त एवं सुशोभित गीत से निबद्ध हैं। 1

श्रुत्वा ततःस्त्रीजनवल्लभानां मनोज्ञभावं पुरकाननानाम्।
बहिः प्रयाणाय चकार बुद्धिम् अन्तर्गृहे नाग इवावरुद्धः॥

3/2।।

अनुवाद- तब स्त्रियों के प्रिय नगर के उद्यानों की सुन्दरता सुनकर घर के अन्दर बँधे हुए हाथी के समान राजकुमार ने बाहर जाने की इच्छा की। **विशेष-** उपमा अलङ्कार

ततो नृपस्तस्य निशम्य भावं पुत्राभिधानस्य मनोरथस्य।
स्नेहस्य लक्ष्म्या वयसश्च योग्यताम् आज्ञापयामास विहारयात्राम्॥

3/3॥

अनुवाद- इसके बाद राजा ने अपने पुत्र राजकुमार सिद्धार्थ के मनोगत भाव को जानकर प्रेम, लक्ष्मी एवं अवस्था के योग्य वन-विहार यात्रा की आज्ञा दे दिया।

निवर्तयामास च राजमार्गे संपातमार्तस्य पृथग्जनस्य।
मा भूत्कुमारः सुकुमारचित्तः संविग्नचेता इति मन्यमानः॥

3/4॥

अनुवाद- कोमल चित्त वाले के मन में संवेग (वैराग्य) न हो जाये, इस विचार से राजा शुद्धोदन ने राजमार्ग में रोगादि से पीड़ित अन्य लोगों का आवागमन रोक दिया।

प्रत्यङ्गहीनान्विकलेन्द्रियांश्च जीर्णातुरादीन् कृपणांश्च दिक्षु।
ततः समुत्सार्य परेण साम्ना शोभां परां राजपथस्य चक्रुः॥

3/5॥

अनुवाद- तब राजा की आज्ञानुसार, कर्मचारियों ने राजपथ से अङ्गहीनों, इन्द्रियहीनों, वृद्धों, रोगियों एवं गरीब लोगों को परम शान्ति से हटाकर मार्ग को अनेक प्रकार से सजाया।

ततः कृते श्रीमति राजमार्गे श्रीमान्विनीतानुचरः कुमारः।
प्रासादपृष्ठादवतीर्य काले कृताभ्यनुज्ञो नृपमभ्यगच्छत्॥

3/6॥

अनुवाद- राज-पथ के सुसज्जित हो जाने पर राजकुमार, राजा की आज्ञा पाकर सुन्दर एवं विनीत सेवकों के साथ राजमहल से उतरकर उसी समय राजा के निकट गया।

अथो नरेन्द्रः सुतमागताश्रुः शिरस्युपाघ्राय चिरं निरीक्ष्य।
गच्छेति चाज्ञापयति स्म वाचा स्नेहान्न चैनं मनसा मुमोच॥

3/7॥

अनुवाद- इसके बाद प्रेमाश्रु बहाते हुए, राजा शुद्धोदन ने कुमार के सिर को चूमकर चिरकाल तक देखकर 'जाओ' ऐसे वचन से आज्ञा दे दिया किन्तु प्रेमवश उसको मन से नहीं छोड़ा।

ततः स जाम्बूनदभाण्डभृद्भिर्युक्तं चतुर्भिर्निभृतैस्तुरङ्गैः।
अक्लीबविद्वच्छुचिरश्मिधारं हिरण्मयं स्यन्दनमारुरोह॥

3/8॥

अनुवाद- तब वह कुमार सोने के आभूषणों से अलङ्कृत, सुशिक्षित चार अश्वों से संयुक्त सुवर्णमय रथ पर सवार हुआ जिसका सारथि वीर, कुशल तथा अनुरक्त था।

ततः प्रकीर्णोज्ज्वलपुष्पजालं विषक्तमाल्यं प्रचलत्पताकम्।
मार्गं प्रपेदे सदृशानुयात्रः चन्द्रः सनक्षत्र इवान्तरिक्षम्॥

3/9॥

अनुवाद- तब आकाश में नक्षत्रों सहित चन्द्रमा के समान वह राजकुमार योग्य सहचरों के साथ उस मार्ग में आया जहाँ श्वेत पुष्पों का जाल-सा बिछा हुआ था, मालाएँ लटक रहीं थी एवं पताकाएँ फहरा रहीं थीं।

विशेष- उपमा अलङ्कार

कौतूहलात्स्फीततरैश्च नेत्रैः नीलोत्पलार्धैरिव कीर्यमाणम्।
शनैः शनै राजपथं जगाहे पौरैः समन्तादभिवीक्ष्यमाणः॥
3/10॥

अनुवाद- उत्कण्ठावश अत्यन्त विकसित अर्धनील कमल के समान पुरवासियों के नेत्र मानों बिछे हुए हों, ऐसे राजपथ पर, नगरवासियों द्वारा चारों ओर से देखे गये कुमार ने धीरे-धीरे प्रवेश किया।

विशेष- उत्प्रेक्षा अलङ्कार।

उपर्युक्त सभी पद्यों में उपजाति छन्द है।

➢ **प्रमुख सूक्तियाँ**

1. सत्वानिभं दोहदमामनन्ति। 1/6

भावार्थ- माया, शुद्धोदन से कहती हैं, ''गर्भ के अनुसार ही दोहद (गर्भकाल इच्छा) होती है, ऐसा माना जाता है।''

2. मग्नस्य दुःखे जगतो हिताय। 1/20

भावार्थ- यह बुद्ध के विषय में कहा गया है कि-
''दुःख से पीड़ित विश्व के हित के लिए उनका जन्म हुआ है। ''

3. भूपेषु राजेत यथा प्रकाशो ग्रहेषु सर्वेषु रवेर्विभाति। 1/35

भावार्थ- बुद्ध के लिए ही कहा गया है-
''यह सम्पूर्ण पृथ्वी को जीतकर सब राजाओं के ऊपर उसी तरह शोभित होगा जिस प्रकार समस्त ग्रहों के ऊपर सूर्य का प्रकाश।''

4.गुणा हि सर्वा प्रभवन्ति हेतोर्निदर्शनान्यत्र च नो निबोध। 1/40

भावार्थ- ''सब प्रकार के गुण किसी कारण से ही उत्पन्न होते हैं।''

5.उद्यानभूमौ हि कुतो रतिर्मे जराभये चेतसि वर्तमाने। 3/37

➢ **भावार्थ-** सिद्धार्थ, सारथी से कहते हैं कि-
''जरा का भय चित्त में रहते हुए मुझे उद्यान-भूमि में सुख कहाँ से मिलेगा।''

बुद्धचरितम् नाम की सार्थकता

➢ इस महाकाव्य के सम्पूर्ण 28 सर्गों में महात्मा बुद्ध के जीवन-चरित का वर्णन है। इसलिए इस महाकाव्य का नाम 'बुद्धचरितम्' रखा गया है।

➢ बुद्धस्य चरितम् अस्मिन् इति बुद्धचरितम् (बहुव्रीहि समास)।

4.4 स्वप्नवासवदत्तम्

महाकवि भास का परिचय-

➢ **कवि का नाम-** भास (प्रामाणिक जीवनपरिचय अज्ञात)

➢ **उपाधि-** धावक

➢ **गोत्र-** अगस्त्य गोत्र की हैमोदक शाखा में 'भाष' गोत्र है।

➢ **जन्म समय-** 100ई0पू0- 200ई0 के मध्य

➢ **उपासक-** वैष्णवधर्म

➢ **रीति-** वैदर्भी

➢ **गुण-** प्रसाद,माधुर्य एवं ओज तीनों का प्रयोग

➢ **रस-** मुख्यतया शृङ्गार एवं वीररस का प्रयोग।

➢ **शैली-** सरल भाषा का प्रयोग,अकृत्रिम शैली।

➢ **प्रिय अलंकार-** अनुप्रास,उपमा,स्वभावोक्ति,उत्प्रेक्षा, रूपक आदि

➢ **भास की कृतियाँ**

➢ त्रिरुवांकुर नगर निवासी **टी0गणपति शास्त्री** ने सन् -1910-12 में **'भासनाटकचक्रम्'** नाम से भास के 13नाटकों का संग्रह **अनन्तशयन ग्रन्थमाला (त्रिवेन्द्रम)** से प्रकाशित किया।

➢ कथावस्तु के आधार पर भास के 13 नाटकों को चार भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है-

➢ **कथावस्तु के आधार पर भास के नाटकों का वर्गीकरण**

रामायणमूलक	महाभारतमूलक	उदयनकथामूलक	कल्पनामूलक
1.अभिषेकनाटक	3.मध्यमव्यायोग	10.प्रतिज्ञायौगन्धरायण	12.अविमारक
2.प्रतिमानाटक	4.दूतवाक्यम्	11.स्वप्नवासवदत्तम्	13.दरिद्रचारुदत्त
	5.कर्णभार		
	6.दूतघटोत्कच		
	7.पञ्चरात्रम्		
	8.ऊरुभंग		
	9.बालचरित		

भास के रूपकों का संक्षिप्त-परिचय

1. **अभिषेकनाटक-** यह **छः अङ्कों** का नाटक है। इसमें किष्किन्धाकाण्ड से लेकर लङ्काकाण्ड तक की सम्पूर्ण कथा संक्षेप में दी गयी है। अंत में रावण वध के पश्चात् राम के राज्याभिषेक का वर्णन है।
2. **प्रतिमानाटक-** इस नाटक में **सात अङ्क** हैं। इसमें भी राम के जीवन का वर्णन है।
3. **मध्यमव्यायोग-** यह **एक अङ्क** का व्यायोग नामक रूपक है। इसमें मध्यम पाण्डव भीम के द्वारा घटोत्कच के हाथ से एक ब्राह्मण पुत्र को बचाने का वर्णन है। भीम अपने पुत्र घटोत्कच को देखकर आनन्दित होते हैं और हिडिम्बा से उनका पुनर्मिलन होता है।

4- **दूतवाक्यम्-** यह **एकाङ्की** रूपक है। इसमें कृष्ण के दूत बनकर पाण्डवों का सन्धि प्रस्ताव लेकर दुर्योधन के पास जाने का वर्णन है।

5. **कर्णभार-** यह भी **एकाङ्की** है। इसमें कर्ण का,ब्राह्मण वेशधारी इन्द्र को कवच और कुण्डल दान में देने का वर्णन है।

6. **दूतघटोत्कच-** यह **एकाङ्की** नाटक है। अभिमन्यु की मृत्यु के बाद श्रीकृष्ण का घटोत्कच को दूत बनाकर धृतराष्ट्र के पास भेजना और दुर्योधन द्वारा उसका अपमान।
7. **पञ्चरात्र-** इस रूपक में **तीन अङ्क** हैं। यज्ञ की समाप्ति पर द्रोण ने दुर्योधन से दक्षिणा माँगी की पाण्डवों को आधा राज्य दे दो। दुर्योधन शर्त लगाता है कि यदि पाँच रात के अन्दर पाण्डव मिल जाते हैं तो दे दूँगा। द्रोण के प्रयास से पाण्डव मिलते हैं और आधा राज्य प्राप्त करते हैं।
8. **ऊरुभङ्ग-** यह **एकाङ्की** नाटक है। द्रौपदी के अपमान के प्रतीकार स्वरूप भीम द्वारा दुर्योधन की जंघा को तोड़ करके उसको मारने का वर्णन है।
9. **बालचरित-** इस नाटक में **पाँच अङ्क** हैं। इसमें श्रीकृष्ण के जन्म से लेकर कंसवध तक की कथा वर्णित है।
10. **चारुदत्त-** इसमें **चार अङ्क** हैं। इसमें निर्धन ब्राह्मण चारुदत्त और वसन्तसेना नाम की वेश्या के प्रणय का वर्णन है। इसमें भरतवाक्य नहीं है और कथा अधूरी है।
11. **अविमारक-** इस नाटक में **छः अङ्क** हैं। इसमें राजकुमार अविमारक का राजा कुन्तिभोज की पुत्री कुरङ्गी के साथ प्रणय-विवाह का वर्णन है।
12. **प्रतिज्ञायौगन्धरायण-** इस नाटक में **चार अङ्क** हैं। उदयन के वासवदत्ता से प्रेम और विवाह का वर्णन है। यौगन्धरायण द्वारा उदयन को प्रद्योत के यहाँ से छुड़ाने और उसकी नीतिमत्ता का वर्णन है।
13. **स्वप्नवासवदत्तम्-** इसमें **छः अङ्क** हैं। यौगन्धरायण का वासवदत्ता के मरने के प्रवाद को फैलाकर उदयन का पद्मावती से विवाह कराना तथा उदयन के अपहृत राज्य को पुनः प्राप्त कराने का वर्णन है।

स्वप्नवासवदत्तम् का परिचय-

- **लेखक-** महाकवि भास
- **काव्यविधा-** नाटक
- **विभाजन-** 6 अङ्कों में
- **उपजीव्य-** ऐतिहासिक (गुणाढ्यकृत बृहत्कथा)
- **श्लोक संख्या-** 57
- **अङ्क**

अङ्क	श्लोक संख्या	अङ्क	श्लोक संख्या
प्रथम	16	द्वितीय	00
तृतीय	00	चतुर्थ	09
पञ्चम	13	षष्ठ	19
		योग-	**57**

- **नायक-** उदयन
- **नायिका-** वासवदत्ता
- **विदूषक-** वसन्तक
- **कञ्चुकी-** वादरायण (उदयन का), रभ्य (महासेन प्रद्योत का)
- **प्रतिनायक-** आरुणि
- **प्रधान/अङ्की रस-** शृङ्गार रस
- **अन्य रस/गौण रस** वीर, करुण एवं अद्भुत रस
- **नायक कोटि-** धीरललित (दक्षिण नायक)
- **अलङ्कार-** उपमा के साथ-साथ रूपक और उत्प्रेक्षा।
- **गुण-** प्रसाद, माधुर्य और ओज का समन्वय।
- **रीति-** वैदर्भी
- **छन्द-** सर्वाधिक प्रयुक्त छन्दों में अनुष्टुप् (22) और वसन्ततिलका (11) मुख्य हैं।

स्वप्नवासवदत्तम् का संक्षिप्त कथानक

'स्वप्नवासवदत्तम्' उदयन और वासवदत्ता की प्रेम कहानी का उत्तरार्द्ध भाग है। पूर्वार्द्ध की घटना 'प्रतिज्ञायौगन्धरायण' नामक रूपक में वर्णित है। अतः पूर्व की घटना की जानकारी भी आवश्यक हो जाती है। पूर्व के घटना का सारांश इस प्रकार है- ''वत्सराज उदयन, प्रद्योत की पुत्री वासवदत्ता का अपहरण कर उससे प्रेम विवाह कर लेता है। उदयन, वासवदत्ता की सुन्दरता पर इस प्रकार आसक्त हो जाता है कि वह राज्य से सम्बन्धित प्रमुख कार्यों से भी विमुख हो जाता है। इसी का लाभ उठाकर आरुणि नामक उदयन का शत्रु उसके अधिकांश भूभाग को अधिकृत (कब्जा) कर लेता है। इसी भूभाग को प्राप्त करने के लिये यौगन्धरायण नामक उदयन का मन्त्री लावाणक ग्राम में अग्निकाण्ड का षड्यन्त्र रचता है।'' अब इसके बाद की घटना स्वप्नवासवदत्तम् में वर्णित है।

प्रथम अङ्क-

- मगध के राजा 'दर्शक' एवं उनकी बहन पद्मावती के सेवकों द्वारा तपोवन के लोगों को जबरदस्ती हटाया जाता है।
- उज्जयिनी की स्त्रियों के वेश में वासवदत्ता तथा मन्त्री यौगन्धरायण वहीं पर जाते हैं।
- कञ्चुकी, राजपुरुषों को रोकता है कि वे अनायास ही वन के निवासियों को परेशान न करें।
- कञ्चुकी द्वारा यौगन्धरायण को पता चलता है कि राजकुमारी पद्मावती, वन के आश्रम में निवास कर रही अपनी माता से मिलने आ रही हैं। इसीलिए वन प्रदेश खाली कराया जा रहा है।
- यौगन्धरायण मन में सोचता है कि यह वही राजकुमारी

पद्मावती हैं जिनके बारे में 'पुष्पक और भद्र' ज्योतिषियों ने बताया था कि "वह उदयन की महारानी बनेगी।"

- राजकुमारी पद्मावती आश्रम में प्रवेश करती हैं और तापसी को प्रणाम करती हैं।
- राजा प्रद्योत का एक सन्देशवाहक आता है।
- पद्मावती आश्रम के तपस्वियों को मनोनुकूल वस्तुओं को माँगने के लिए आमन्त्रित करती हैं।
- यौगन्धरायण, वासवदत्ता को अपनी बहन बताकर उसे पद्मावती के पास धरोहर रूप में रख देते हैं।
- वासवदत्ता सोचती है, मैं अभागिनी हूँ किन्तु आर्य यौगन्धरायण बिना किसी प्रयोजन के मुझे नहीं छोड़ेंगे।
- आश्रम में एक ब्रह्मचारी का प्रवेश होता है और यौगन्धरायण उससे उसका पता तथा उद्देश्य पूँछते हैं।
- ब्रह्मचारी बताता है कि वह वत्सदेश के लावाणक ग्राम में वेद का अध्ययन करता है लेकिन वत्सराज उदयन के शिकार खेलने के लिए जाने पर गाँव में आग लग जाने से उनकी पत्नी वासवदत्ता जलकर मर गयीं। अतः महाराज उदयन अत्यन्त शोकग्रस्त हैं।
- ब्रह्मचारी कहता है कि रुमण्वान् नामक मन्त्री शोक संतप्त होते हुए भी उदयन की दिन रात सेवा करता है।
- इसके बाद ब्रह्मचारी चला जाता है और यौगन्धरायण भी राजकुमारी पद्मावती के आदेश से चला जाता है।

।।प्रथम अङ्क समाप्त।।

द्वितीय अङ्क-

- प्रवेशक के माध्यम से पता चलता है कि राजकुमारी पद्मावती गेंद खेल रही हैं।
- वासवदत्ता द्वारा पद्मावती को 'महासेन की वधू' कहने पर दासी बताती है कि राजकुमारी, वत्सराज उदयन से विवाह करना चाहती हैं।
- धाय द्वारा सूचना मिलती है कि पद्मावती का विवाह वत्सराज उदयन के साथ सुनिश्चित हो गया है।

।।द्वितीय अङ्क समाप्त।।

तृतीय अङ्क-

- राजप्रासाद का अन्तःपुर विवाहोल्लास से व्याप्त है तथा वासवदत्ता अत्यन्त चिन्ताग्रस्त रहती हैं।
- दासी, महारानी के आज्ञानुसार, उच्चकुल में उत्पन्न वासवदत्ता से वरमाला गूँथने के लिए कहती है।
- वासवदत्ता के पूँछने पर दासी कहती है कि दूल्हा धनुष-बाण से रहित साक्षात् कामदेव है।
- वासवदत्ता 'सपत्नीमर्दन' नामक ओषधि माले में नहीं गूँथती हैं।

।।तृतीय अङ्क समाप्त।।

चतुर्थ अङ्क

- विदूषक विवाह के शुभ-अवसर पर अत्यन्त खुश है।
- पद्मावती और वासवदत्ता प्रमदवन में जाकर आपस में वार्तालाप करतीं हैं।
- उदयन और विदूषक भी प्रमदवन में जाते हैं, उदयन कहते हैं कि "जब उज्जयिनी में वासवदत्ता को देखा था तब कामदेव ने एक साथ पाँचों बाणों का प्रहार कर दिया था, अब पद्मावती को देखने पर कामदेव के पास छठा बाण कहाँ से आ गया।"
- पद्मावती और वासवदत्ता माधवीलताकुञ्ज में जाती हैं क्योंकि वे दोनो महाराज उदयन से छिपना चाहती हैं।
- विदूषक के हठपूर्वक पूँछने पर उदयन बताता है कि वासवदत्ता उसको अधिक प्यारी हैं।
- वासवदत्ता को याद करके राजा के नेत्र अश्रुपूरित हो जाते हैं लेकिन पद्मावती द्वारा पूँछने पर वे काशपुष्प का पराग (कण) पड़ने का बहाना करते हैं।
- विदूषक, राजा को लेकर मगधराजदर्शक' के पास चला जाता है।

।।चतुर्थ अङ्क समाप्त।।

पञ्चम अङ्क-

- 'प्रवेशक' द्वारा पद्मावती के सिर में दर्द होने की सूचना मिलती है।
- उदयन, पद्मावती को देखने के लिए समुद्रगृह नामक भवन में जाते हैं किन्तु पद्मावती बिस्तर पर नहीं मिलती।
- पद्मावती का इन्तजार करते हुए उदयन उसी बिस्तर पर सो जाते हैं।
- पद्मावती के इच्छानुसार आवन्तिका वेशधारिणी वासवदत्ता भी समुद्रगृह में जाती हैं।
- वासवदत्ता, बिस्तर पर सोये हुए उदयन को पद्मावती समझकर बगल में लेट जाती है।
- उदयन स्वप्न में वासवदत्ता को बुलाता है तथा वासवदत्ता उदयन द्वारा देखे जाने के डर से उठकर भागती है जिससे उदयन जाग जाता है।
- उदयन विदूषक को बताता है कि उसने वासवदत्ता को साक्षात् देखा था किन्तु विदूषक द्वारा इसे भ्रान्ति बताकर इसका निराकरण किया जाता है। इसी घटना के कारण इस नाटक का नाम स्वप्नवासवदत्त पड़ा।
- इसके बाद सूचना मिलने पर उदयन अपने सेनापति रुमण्वान् के साथ 'आरुणि' से युद्ध के लिए निकल जाता है।

।।पञ्चम अङ्क समाप्त।।

षष्ठ अङ्क-

- उदयन को सूचना देने के लिए कञ्चुकी, प्रतीहारी से कहता है कि "उज्जयिनी के राजा महासेन प्रद्योत के कञ्चुकी 'रभ्य' तथा 'वसुन्धरा' नाम की धाय (जो माननीया अङ्गारवती द्वारा भेजी गयी है) पर उपस्थित हैं और आपसे मिलना चाहते हैं।
- प्रतीहारी बताती है कि यह महाराज उदयन से मिलने का उचित समय नहीं है क्योंकि **घोषवती वीणा** की आवाज सुनकर महाराज अत्यन्त दुःखित हैं।
- महाराज उदयन वीणावादक से घोषवती वीणा के बारे में पूँछते हैं तो वीणावादक घोषवती वीणा को नर्मदा नदी किनारे कुशों की झाड़ी मे पाया हुआ बताता है।
- सूर्यामुख भवन से उतरते हुए महाराज उदयन से प्रतीहारी सूचना देती है और विष्कम्भक समाप्त होता है।
- घोषवती वीणा को पाकर उदयन अत्यन्त क्षुब्ध हो जाते हैं क्योंकि वीणा वासवदत्ता का स्मरण कराती है।
- राजा की आज्ञा से विदूषक घोषवती वीणा की मरम्मत करवाने जाता है।
- प्रतीहारी से सूचना पाकर राजा शङ्का करता है कि कहीं महासेन प्रद्योत मेरे पद्मावती के विवाह से क्रोधित तो नहीं हैं क्योंकि मैंने उनकी पुत्री वासवदत्ता का अपहरण तो कर लिया था किन्तु उसकी रक्षा न कर सका।
- महाराज प्रद्योत का कञ्चुकी रभ्य कहता है कि उदयन द्वारा पुनः जीते गये वत्स राज्य में आकर मैं बहुत प्रसन्न हूँ।
- रभ्य, उदयन को अभिवादन करके उज्जयिनी का समाचार सुनाता है।
- महारानी अङ्गारवती का सन्देश बताते हुए धात्री कहती है कि "आपने पाणिग्रहण के बिना ही वासवदत्ता से विवाह सम्पन्न कर लिया। इसलिए हम दोनों (प्रद्योत+अङ्गारवती) ने तुम्हारा और वासवदत्ता का चित्र, चित्रपट पर बनवाकर उसी से विधिपूर्वक विवाह भी करा दिया और यह चित्रफलक तुम्हारे पास भेजा जा रहा है।"
- यह सुनकर उदयन कहते हैं कि अपराधी होने पर भी महाराज और माननीया का प्रेम मेरे प्रति कम नहीं हुआ है।
- पद्मावती, चित्रफलक को देखकर कहती है यह आर्या का चित्र तो आवन्तिका से मिलती है।
- उदयन, आवन्तिका को सामने बुलाना चाहते हैं कि पद्मावती बताती है कि वह न्यास रूप में रखी गयी किसी ब्राह्मण की बहन है जो पर पुरुष के सामने नहीं आती।
- प्रतीहारी सूचना देती है, कि "उज्जयिनी के ब्राह्मण बाहर उपस्थित हैं जिनकी बहन महारानी पद्मावती के पास धरोहर रूप में रखी गयी है।"
- उदयन आवाज से पहचान जाते हैं कि यह ब्राह्मण उनका मन्त्री यौगन्धरायण है।
- धात्री,आवन्तिका वेशधारिणी वासवदत्ता को पहचान लेती है।
- यौगन्धरायण, वासवदत्ता को छिपाने जैसे कार्य के लिए महाराज उदयन से क्षमा माँगते हैं।
- उदयन द्वारा 'कारण' पूँछने पर यौगन्धरायण बताता है कि ऐसा यह सब भविष्यवाणी के अनुसार हुआ है।
- यौगन्धरायण, वासवदत्ता का कुशल समाचार बताने के लिए रैभ्य और वसुन्धरा को उसी समय उज्जयिनी वापस भेजना चाहता है किन्तु राजा, पद्मावती और वासवदत्ता के साथ उज्जयिनी जाने का निश्चय करते हैं।

भरतवाक्य के साथ नाटक समाप्त होता है।

स्वप्नवासवदत्तम् का मङ्गलाचरण

उदयनवेन्दुसवर्णावासवदत्ताबलौ बलस्य त्वाम्।
पद्मावतीर्णपूर्णौ वसन्तकम्रौ भुजौ पाताम्॥

अर्थ- उदय होते हुए नये चन्द्रमा के सदृश वर्ण वाली,मद्यपान से बलरहित अथवा अबला (अपनी पत्नी) को मद्य देने वाली,लक्ष्मी के प्रकट होने से सम्पन्न वसन्त जैसी सुन्दर,बलराम की भुजाएँ आपकी रक्षा करें।

- प्रस्तुत मंगलाचरण में बलराम की स्तुति की गयी है।
- उक्त पद्य में **आशीर्वादात्मक** तथा **अष्टपदा** नान्दी है।
- प्रस्तुत मंगलाचरण में मुद्रालंकार तथा श्लेष अलंकार का प्रयोग है।श्लेष के माध्यम से भावी सूचना मिलने के कारण **पत्रावली नान्दी** है।
- प्रस्तुत मंगलाचरण में **आर्या छंद** है।
- इस पद्य में पदों के विन्यास की चतुरता से नाटक के मुख्य पात्र उदयन,वासदत्ता,पद्मावती और वसन्तक की सूचना दी गयी है।

नाटक का भरतवाक्य-

इमां सागरपर्यन्तां हिमवद्विन्ध्यकुण्डलाम्।
महीमेकातपत्राङ्कां राजसिंहः प्रशास्तु नः॥ (स्वप्र.6/19)।।

भावार्थ- हमारे राजसिंह (राजाओं में प्रधान) अर्थात् महाराज उदयन, समुद्ररूप सीमावाली,हिमालय और विन्ध्यपर्वत रूप दो कुण्डलों से युक्त और एक छत्र रूप चिह्न से संयुक्त इस पृथ्वी का पालन करें।

पात्रों का सामान्य परिचय - पुरुष पात्र

- **उदयन-** वत्सदेश का राजा नायक
- **यौगन्धरायण-** उदयन का मन्त्री
- **वसन्तक-** विदूषक,उदयन का मित्र (नर्मसचिव)

- **ब्रह्मचारी-** लावाणक ग्राम का छात्र
- **कञ्चुकी-** राजकुल का सेवक
- **संभषक,भट-** पद्मावती का सेवक
- **रुमण्वान्-** उदयन के अमात्य तथा सेनापति

स्त्री पात्र-

- **वासवदत्ता-** नायिका, उदयन की प्रथम पत्नी, (मगध देश में यही आवन्तिका रूप में निवास करती है।)
- **पद्मावती-** मगधराज दर्शक की बहन, उदयन की द्वितीय पत्नी
- **तापसी-** मगध के निकट तपोवन में रहने वाली एक स्त्री
- **मधुकरिका तथा पद्मिनिका-** पद्मावती की सखियाँ एवं परिचारिकाएँ
- **धात्री-** पद्मावती की उपमाता
- **विजया-** वत्सराज की प्रतीहारी
- **धात्री-** वासवदत्ता की उपमाता
- **महादेवी-** पद्मावती की माता
- **अङ्गारवती-** प्रद्योत की रानी, वासवदत्ता की माता
- **वसुन्धरा-** वासवदत्ता की धात्री
- **वैदेही-** उदयन की माता

स्वप्नवासवदत्तम् की प्रमुख सूक्तियाँ

- **एवमनिर्ज्ञातानि दैवतान्यप्यवधूयन्ते। (अङ्क 1)**
  भावार्थ- प्रथम अङ्क में यौगन्धरायण वासवदत्ता से कहता है कि- इस प्रकार बिना - पहचाने देवता भी तिरस्कृत हो जाते हैं।
- **कालक्रमेण जगतः परिवर्तमाना**
  चक्रारपङ्क्तिरिव गच्छति भाग्यपङ्क्तिः॥ (1/4)
  भावार्थ- यौगन्धरायण, वासवदत्ता से कहता है कि, 'समय के क्रम से बदलती हुई संसार को भाग्य पंक्ति पहिये के अवयवों के समान चलती है।'
- **सुखमर्थो भवेद् दातुं सुखं प्राणाः सुखं तपः।**
  सुखमन्यद् भवेद् सर्वं दुःखं न्यासस्य रक्षणम्॥ (1/10)
  कञ्चुकी, पद्मावती से कहता है, कि- धन देना सरल है, प्राण का देना आसान है, तप के फल को देना सरल है अन्य सब कुछ देना सरल है, परन्तु धरोहर की रक्षा करना कठिन है।
- **तत्प्रत्ययात् कृतमिदं न हि सिद्धवाक्यान्युत्क्रम्य गच्छति विधिः सुपरीक्षितानि। (1/11)**
  भावार्थ- यौगन्धरायण कहता है कि- 'उन सिद्ध पुरुषों में विश्वास के कारण यह किया है भली प्रकार जांचे गये सिद्ध पुरुषों के वाक्य का उल्लंघन कर के भाग्य भी नहीं चलता है।'
- **सर्वजनमनोभिरामं खलु सौभाग्यं नाम। (अङ्क 2)**
  भावार्थ- पद्मावती कहती है कि,- 'सौन्दर्य वही है जो सब लोगों के मन का आह्लादक हो।'
- **कामेनोज्जयिनीं गते मयि तदा कामप्यवस्थां गते**
  दृष्ट्वा स्वैरमवन्तिराजतनयां पञ्चेषवः पातिताः।
  तैरद्यापि सशल्यमेव हृदयं भूयश्च विद्धा वयं
  पञ्चेषुर्मदनो यदा कथमयं षष्ठः शरः पातितः॥(4/1)

भावार्थः - राजा कहते हैं कि, 'उस समय उज्जयिनी में जाने पर और अवन्तिराजकुमारी वासवदत्ता को इच्छा के अनुसार देखकर मेरी अनिर्वचनीय अवस्था में पड़ने पर कामदेव ने अपने पाँचो बाणों से मेरे ऊपर प्रहार किया। आज भी उन बाणों से मेरा चित्त विद्ध ही है। फिर भी (पद्मावती से विवाह होने पर) मैं विद्ध हो गया हूँ कामदेव पाँच बाणों से ही युक्त है तो यह छठा बाण उसने कैसे गिराया।'

- **शरत्कालतीक्ष्णो दुःसह आतपः। (अङ्क-4)**
  विदूषक राजा से कहता है कि- शरद् ऋतु का तीखा धूप असह्य है।
- **अहो सदाक्षिण्यस्य जनस्य परिजनोऽपि सदाक्षिण्य एव भवति। (अङ्क-4)**
  भावार्थ- पद्मावती सोचती है कि,अहो! सभ्य व्यक्ति का सेवक भी सभ्य ही होता है।
- **गुणानां वा विशालानां सत्काराणां च नित्यशः।**
  कर्तारः सुलभा लोके विज्ञातारस्तु दुर्लभाः॥ (4/9)
  भावार्थ- राजा विदूषक से कहता है संसार में महान् गुणों से युक्त और स्वागत सत्कार करने वाले लोग बहुत मिल जाते हैं,लेकिन उसके वास्तविक ज्ञाता बहुत कम ही मिलते हैं।
- **ननु किं शक्यं रक्षितुं प्राप्तकाले। (अङ्क-6)**
  भावार्थ- पद्मावती राजा से कहती है कि,'भला काल आ जाने पर किसे बचाया जा सकता है।'
- **कातरा येऽप्यशक्ता वा नोत्साहस्तेषु जायते।**
  प्रायेण हि नरेन्द्रश्रीः सोत्साहैरेव भुज्यते॥ (6/7)
  भावार्थ- कञ्चुकी रभ्य,उदयन से कहता है कि कायर अथवा जो असमर्थ हैं उनमें उत्साह पैदा नहीं होता। निश्चय ही राजलक्ष्मी प्रायःउत्साह वालों से ही भोगी जाती है।
- **परस्परगता लोके दृश्यते रूपतुल्यता। (6/14)**
  भावार्थ- उदयन पद्मावती से कहते हैं कि संसार में एक दूसरे में रूप सादृश्य देखा जाता है।
- **साक्षिमन्न्यासो निर्यातयितव्यः।**

भावार्थ- उदयन पद्मावती से कहते हैं कि, 'धरोहर साक्षी पूर्वक लौटाई जानी चाहिए।'

➤ **मिथ्योन्मादैश्च युद्धैश्च शास्त्रदृष्टैश्च मन्त्रितैः।**
भवद्यत्नैः खलु वयं मज्जमानाः समुद्धृताः॥ (6/18)
भावार्थ- उदयन,यौगन्धरायण से कहते हैं कि मिथ्या उन्मत्त व्यवहारों और युद्धों, शास्त्रोक्त मन्त्रणाओं एवं आपके द्वारा किये गए प्रयत्नों से, डूबते हुए हम लोग निश्चय ही उबार लिए गये हैं।

स्वप्नवासवदत्तम् का नामकरण

➤ इस नाटक का नामकरण ग्रन्थ के एक घटना विशेष पर आधारित है।
➤ पञ्चम अङ्क में उदयन शिरोवेदना से पीड़ित पद्मावती को देखने जाता है तथा पद्मावती को न देखकर वह उसी की शय्या पर सो जाता है।
➤ वासवदत्ता भी पद्मावती को देखना चाहती है और बिस्तर पर सोयी हुई जानकर वहीं लेट जाती है।
➤ उदयन स्वप्न में कुछ बड़बड़ाता है तो वासवदत्ता वहाँ से जाने लगती है और उदयन भी जागकर उसके पीछे दौड़ता है।
➤ **उदयन इसी 5वें अङ्क में स्वप्न में वासवदत्ता को देखता है** इसलिए यह अङ्क नाटक का सबसे महत्त्वपूर्ण अंक है।
➤ इसी महत्त्वपूर्ण घटना को आधार मानकर महाकवि भास ने इसका नामकरण **'स्वप्नवासवदत्तम्'** किया है जो कि सर्वथा उचित है।
'स्वप्ने वासवदत्ता इति स्वप्नवासवदत्ता'- सप्तमी तत्पुरुष समास ग्रन्थवाची होने के कारण नपुंसकलिङ्ग एकवचन में 'स्वप्नवासवदत्तम्' हुआ।

➤ **महत्वपूर्ण तथ्य-**
➤ अनेक विद्वानों के अनुसार भास 24 नाटकों के रचयिता हैं किन्तु वर्तमान में प्रामाणिक रूप से 13 रूपक ही उपलब्ध हैं।
➤ भास ने 'भूमिका' या प्रस्तावना के स्थान पर 'स्थापना' शब्द का प्रयोग किया है।
➤ भास ने अपने किसी भी रूपक में 'ग्रन्थ' और 'ग्रन्थकार' का नाम नहीं लिया है।
➤ भास ने अपने रूपकों में मुद्रालंकार का प्रयोग किया है।
➤ भास के 13 नाटकों को प्रकाशित कराने का श्रेय श्री टी. गणपतिशास्त्री को जाता है।
➤ स्वप्नवासवदत्तम् के द्वितीय एवं चतुर्थ अङ्क में 'प्रवेशक' तथा पञ्चम एवं षष्ठ अङ्क में 'विष्कम्भक' का प्रयोग किया गया है।
➤ वासवदत्ता की वीणा का नाम **'घोषवती'** है।
➤ उदयन और पद्मावती के विवाह की भविष्यवाणी 'भद्र' और 'पुष्पक' ने की थी।
➤ पद्मावती के घर में वासवदत्ता ही 'आवन्तिका' के रुप में रहती है।
➤ छठें अङ्क में मिश्रविष्कम्भक प्रयुक्त है।
➤ पद्मावती को शिरोवेदना पञ्चम अङ्क में होती है।
➤ वत्स देश की राजधानी कौशाम्बी है।
➤ 'महासेन', उज्जयिनी के राजा प्रद्योत का विशेषण है।
➤ पञ्चम अङ्क को **'स्वप्न अङ्क'** भी कहा जाता है।
➤ लावाणक ग्राम की घटना प्रथम अङ्क में वर्णित है।
➤ दूसरा और तीसरा अङ्क केवल गद्य के माध्यम से लिखा गया है।
➤ उदयन के भवन का नाम 'सूर्यामुख' तथा पद्मावती के आवास का नाम 'समुद्रगृह' है।

प्रमुख पात्रों का चरित्र-चित्रण

1. उदयन

➤ उदयन इस **नाटक का नायक** है तथा **वत्सदेश का राजा** है।
➤ वह **धीरललित (दक्षिण)** कोटि का नायक है।
➤ वह दयालु, उदार तथा वीणा बजानें में निपुण है।
➤ उदयन, दयार्द्रचित्त तथा अपने से बड़ों का आदर करने वाला व्यक्ति है।
➤ उसकी धैर्यता, विद्वता, कुलीनता, आयु तथा रूप को देखकर ही राजा दर्शक अपनी बहन **पद्मावती का विवाह** करते हैं।
➤ उदयन, वासवदत्ता से बहुत ही प्रेम करते हैं इसीलिए राज्य की सुध-बुध खो बैठते हैं।
➤ सुन्दरता में उदयन की तुलना विना धनुष बाण के कामदेव से की गयी है।

2. वासवदत्ता

➤ वासवदत्ता, उज्जयिनी नरेश **प्रद्योत की पुत्री** तथा 'स्वप्नवासवदत्तम्' **नाटक की नायिका** है।
➤ वह दयालु स्वभाव की नारी तथा **अवन्तिराज्य की राजकुमारी** भी है।
➤ वासवदत्ता बुद्धिमती, तथा पतिपरायणा स्त्री है।
➤ वह उदयन की प्रेयसी, शिष्या तथा पत्नी भी है।
➤ अपने पति के हित के लिए वह यौगन्धरायण द्वारा स्वयं को मृत घोषित करवा लेती है।
➤ वासवदत्ता अपनी आँखों के समाने ही अपने पति का विवाह पद्मावती से करवा देती है।
➤ वासवदत्ता का चरित्र त्याग से भरा हुआ है।

3. पद्मावती

➤ पद्मावती, राजा **उदयन की द्वितीय पत्नी** तथा नाटक की

प्रमुख पात्र हैं।
- वह मगध के राजा **दर्शक की बहन** है।
- पद्मावती अत्यन्त सुन्दरी तथा आकर्षण की केन्द्रबिन्दु है।
- वह धर्मपरायणा स्त्री है, इसीलिए वासवदत्ता को न्यासरूप में स्वीकार करती है।
- वह गुरुजनों के प्रति आदरभाव रखती है।
- पद्मावती, उदयन के रूप और गुणों से प्रभावित रहती है तथा भविष्यवाणी के अनुसार उसी से विवाह भी करती है।
- अतः एक आदर्श नारी का सम्पूर्ण गुण पद्मावती में है।

4. यौगन्धरायण
- यौगन्धरायण उदयन का प्रधान अमात्य है तथा इस नाटक में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने वाला पात्र है।
- वह वर्ण से ब्राह्मण है तथा स्वामिभक्ति उसके अन्दर कूट-कूटकर भरी हुयी है।
- वह सभी परिस्थितियों में तथा सब प्रकार के उपायों से अपने स्वामी एवं राज्य का संरक्षण करता है।
- यौगन्धरायण, उदयन के पूर्वमन्त्री 'युगन्धर' का पुत्र है।
- यौगन्धरायण की योजना को सभी उच्चस्तरीय अधिकारी तथा राजा एवं वासवदत्ता भी मानते हैं।
- वासवदत्ता को अपनी बहन बताकर वह अपने योजना को सफल बनाता है।
- यौगन्धरायण के सम्पूर्ण चरित्र को भास ने एक वाक्य में लिखा है- **''यौगन्धरायणो भवान् ननु''**

5. वसन्तक
- वसन्तक इस **नाटक का विदूषक** और राजा उदयन का परम मित्र है।
- वह जाति से ब्राह्मण तथा हास्य का पात्र है।
- प्रत्येक परिस्थिति में वसन्तक, उदयन के साथ ही रहता है।
- वसन्तक खाने-पीने से अत्यन्त खुश रहता है, इसीलिए वासवदत्ता की बड़ाई भी करता है।
- राजा का अत्यन्त प्रिय होने के कारण ही वह, उदयन की अतिप्रिय रानी के बारे में पूछ पाता है।
- वसन्तक बीच-बीच में हँसी मजाक भी करता है।
- सरल स्वभाव होने के साथ-साथ वसन्तक मूर्ख भी है।

6. रुमण्वान्
- रुमण्वान् , उदयन का **प्रधान सेनापति** है।
- वह वीर, धीर एवं गम्भीर भी है।
- वासवदत्ता और यौगन्धरायण का सम्पूर्ण वृत्तान्त जानते हुए भी राजा तक को भनक नहीं लगने देता कि वासवदत्ता जिन्दा हैं।
- उसके गुणों से यौगन्धरायण भी प्रेम करते है।
- रुमण्वान् के सेनापति रहने से उदयन को आरुणि से अपना राज्य मिलता है।

स्वप्नवासवदत्तम् की अङ्कवार प्रमुख घटनाएं

प्रथम अङ्क-
- वेश बदलकर वासवदत्ता और यौगन्धरायण का मगध राज्य में प्रवेश।
- वासवदत्ता को न्यास रूप में पद्मावती के पास छोड़ना।
- लावाणक ग्राम से ब्रह्मचारी का आगमन तथा वासवदत्ता का अग्नि में जलकर मरने की सूचना।

द्वितीय अङ्क-
- वत्सराज उदयन से पद्मावती का विवाह सुनिश्चित होना।

तृतीय अङ्क-
- मगध राजप्रासाद में विवाह का हर्षोल्लास।
- वासवदत्ता द्वारा वरमाला का गूँथना।

चतुर्थ अङ्क-
- उदयन और पद्मावती का विवाह होना।
- विवाहोपरान्त उदयन और विदूषक का प्रमदवन भ्रमण।

पञ्चम अङ्क-
- पद्मावती को शिरोवेदना।
- उदयन द्वारा स्वप्न में वासवदत्ता को देखना
- आरुणि से उदयन का युद्ध।

षष्ठ अङ्क-
- घोषवती वीणा की प्राप्ति।
- रभ्य नामक प्रद्योत के कञ्चुकी का आगमन।
- चित्रफलक से वासवदत्ता की पहचान।
- यौगन्धरायण द्वारा समस्त घटनाओं को बताना

स्वप्नवासवदत्तम्- बिन्दुवार अध्ययन
- 'स्वप्नवासवदत्तम्' के लेखक हैं - **भास**
- 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक में कुल कितने अङ्क हैं? - **छः**
- स्वप्नवासवदत्ता नाटक का नायक उदयन किस कोटि का है - **धीरललित**
- उदयनः कस्य नाटकस्य नायकः? - **स्वप्नवासवदत्तम्**
- संस्कृते अतिप्राचीनरूपकस्य नाम किम्? - **स्वप्नवासवदत्तम्**
- 'स्वप्नवासवदत्तम्' इति नाटकस्य आकरग्रन्थः - **बृहत्कथा**
- लावाणकग्राम की घटना कहाँ वर्णित है? - **स्वप्नवासवदत्तम् में**
- यौगन्धरायण किसका प्रमुख पात्र है? -**स्वप्नवासवदत्तम्**
- रुमण्वान् पात्र का वर्णन है - **स्वप्नवासवदत्तम् में**
- स्वप्नवासवदत्ते वर्णितपात्रेषु उदयनस्य सेनापतिः कः आसीत्? - **रुमण्वान्**
- उदयनस्य चरितं कस्मिन् ग्रन्थे अस्ति - **स्वप्नवासवदत्ते**
- वसन्तक (विदूषक)–युक्तरचना अस्ति - **स्वप्नवासवदत्तम्**
- स्वप्नवासवदत्त-नाटके विदूषकस्य नाम किम्? - **वसन्तकः**
- 'घोषवती वीणा' का सम्बन्ध किस नाटक से है? -**स्वप्नवासवदत्तम्**
- उदयनस्य वीणायाः नाम किम्? - **घोषवती**
- स्वप्नवासवदत्तम् का 'स्वप्न अङ्क' कौन-सा है? - **पञ्चमः**
- वासवदत्ता कस्य राज्यस्य राजकन्या आसीत्? - **अवन्तिकायाः**

- 'चक्रारपंक्तिरिव गच्छति भाग्यपंक्तिः' यह सूक्ति है - **स्वप्नवासवदत्तम्**
- "स्वप्ने नाटके भर्तृस्नेहात् सा हि दग्धाऽप्यदग्धा" कस्य वचनमिदम्?- **ब्रह्मचारिणः**
- 'दुःखं न्यासस्य रक्षणम्' एषा उक्तिः कस्य नाटकस्य? - **स्वप्नवासवदत्तस्य**

4.5 अभिज्ञानशाकुन्तलम्

- **लेखक** – कालिदास
- **विधा** – नाटक
- **अङ्क** – 7 (सात)
- **प्रधानरस** – शृङ्गार (सम्भोगशृङ्गार)
- **कथानक** – राजा दुष्यन्त एवं शकुन्तला का परस्पर प्रेम, विरह एवं मिलन का वर्णन है।
- **प्रमुखपात्र** – दुष्यन्त (नायक), शकुन्तला (नायिका) कण्व, अनसूया, प्रियंवदा, माढव्य (विदूषक), गौतमी, शार्ङ्गरव, शारद्वत, हंसपदिका, वसुमती, मातलि, सानुमती, सर्वदमन (भरत), मारीच ऋषि, अदिति (दाक्षायणी), दुर्वासा, मेनका
- शाकुन्तलम् का उपजीव्य/आधारग्रन्थ है – **1. महाभारत के आदिपर्व का शकुन्तलोपाख्यान (68-74 अध्यायों में), 2. पद्मपुराण के स्वर्गखण्ड में भी यह कथा मिलती है।**
- अभि0 शाकुन्तलम् नाटक की रीति – **वैदर्भी रीति**
- वैदर्भीरीतिसन्दर्भे विशिष्यते – **कालिदासः**
- कालिदास के काव्यों में किस वृत्ति का विशेष प्रयोग है–**कैशिकी**
- कालिदास का प्रिय अलङ्कार – **उपमा** (उपमा कालिदासस्य)।
- अभि0शाकु0 के प्रथम अङ्क का नाम – **आश्रम प्रवेश**
- द्वितीय अङ्क का नाम – **आश्रम निवेश**
- तृतीय अङ्क का नाम – **मिलन अङ्क**
- चतुर्थ अङ्क का नाम – **विदा अङ्क**
- पञ्चम अङ्क का नाम – **प्रत्याख्यान अङ्क**
- षष्ठ अङ्क का नाम – **पश्चात्ताप अङ्क।**
- सप्तम अङ्क का नाम – **पुनर्मिलन अङ्क।**
- शाकुन्तलम् के **चतुर्थ अङ्क** में करुणरस का प्रयोग है।
- शकुन्तला का हस्तिनापुर (पतिगृह) गमन **चतुर्थ अङ्क में** वर्णित है।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् का नायक – **दुष्यन्त**
- दुष्यन्त **धीरोदात्त** कोटि का नायक है।
- राजा दुष्यन्त कहाँ का राजा है – **हस्तिनापुर**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् की नायिका – **शकुन्तला**
- शकुन्तला किस कोटि की नायिका है – **मुग्धा**
- शकुन्तला है – **शकुन्तभिः पक्षिभिः लालिता पालिता इति शकुन्तला**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् का मङ्गलाचरण है – **आशीर्वादात्मक**
- अभि0 शाकुन्तलम् के मङ्गलाचरण में छन्द है – **स्रग्धरा**
- "या सृष्टिः स्रष्टुराद्या....." इत्यादि श्लोक कहाँ का है – **अभि0शाकु0 नाटक का मङ्गलाचरण**
- अभि0शाकु0 के मङ्गलाचरण में किसकी स्तुति की गयी है – **अष्टमूर्ति शिव की**
- **"तत्रापि च चतुर्थोऽङ्कः"** से सम्बन्धित नाटक – **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**
- **"तत्र श्लोकश्चतुष्टयम्"** किससे सम्बन्धित है – **अभि0 शाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क से**
- "काव्येषु नाटकं रम्यम्" इस वाक्य में किस नाटक का संकेत है – **अभिज्ञानशाकुन्तलम् का**
- दुष्यन्त का विनोदप्रिय मित्र – **माढव्य**
- अभि0 शाकुन्तलम् का विदूषक – **माढव्य**
- शकुन्तला की दोनों सखियाँ – **1. अनसूया. 2. प्रियंवदा।**
- शकुन्तला के माता और पिता– **मेनका और ऋषि विश्वामित्र**
- शकुन्तला के पालक (धर्मपिता) पिता – **महर्षि कण्व**
- महर्षि कण्व के दो प्रमुख शिष्य – **शार्ङ्गरव और शारद्वत**
- दुष्यन्त और शकुन्तला का विवाह हुआ – **गान्धर्व विवाह**
- शकुन्तला को किसने शाप दिया – **ऋषि दुर्वासा ने**
- शकुन्तला को शाप का कारण – **अतिथि रूप में पधारे दुर्वासा ऋषि का तिरस्कार**
- शकुन्तला के शाप को जानने वाली – **प्रियंवदा और अनसूया**
- शकुन्तला को शाप मिला– **अभि0शाकु0 के चतुर्थ अङ्क में**
- अभि0शा0 में शाप की कल्पना का कारण – **प्रेम के आदर्शस्वरूप की स्थापना**
- शाप का प्रभाव किस अङ्क में दिखायी पड़ता है – **अभि0शा0 के पञ्चम अङ्क में**
- राजा दुष्यन्त के पश्चात्ताप का वर्णन – **षष्ठ अङ्क में**
- राजा दुष्यन्त और शकुन्तला का पुनर्मिलन होता है – **अभि0शा0 के सप्तम अङ्क में**
- हेमकूट पर्वत पर आश्रम है – **महर्षि मारीच का।**
- दुष्यन्त और शकुन्तला का पुनर्मिलन – **हेमकूट पर्वत के मारीच आश्रम में।**
- शकुन्तला की मुद्रिका प्राप्त होती है– **धीवर मीनपालक को**
- दुष्यन्त और शकुन्तला के पुत्र का नाम– **सर्वदमन (भरत)**
- अभि0 शा0 का प्रारम्भ होता है – **नान्दीपाठ से (या सृष्टिः स्रष्टुराद्या)**
- अभि0शा0 का समापन होता है – **भरत वाक्य से (प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः....)।**

- कालिदास का सर्वस्वभूतग्रन्थ है – **अभिज्ञानशाकुन्तलम्। ''कालिदासस्य सर्वस्वमभिज्ञानशाकुन्तलम्।''**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के विषय में **पाश्चात्त्य विद्वान् गेटे** का कथन – Wouldst thou the young year's blossoms and the fruits of its decline, and all by which the soul is charmed, enraptured adapted, fed wouldst thou the earth and heaven it self in one name combined? I name the o shakuntala? And all at once is said.

संस्कृतरूपान्तरण

वासन्तं कुसुमं फलञ्च युगपद् ग्रीष्मस्य सर्वं च यद्,
यच्चान्यन्मनसो रसायनमतः सन्तर्पणं मोहनम्।
एकीभूतमभूतपूर्वमथवा स्वर्लोकभूलोकयोः,
ऐश्वर्यं यदि वाञ्छसि प्रियसखे! शाकुन्तलं सेव्यताम्॥

- कालिदास का विश्वप्रसिद्ध नाटक है – **अभिज्ञानशाकुन्तलम्।**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के सर्वप्रथम अंग्रेजी अनुवादक – **विलियम जोन्स**
- विलियम जोन्स ने **The last things** की भूमिका में कालिदास को **'भारत का शेक्सपियर'** कहा।
- **महाकवि गेटे** ने अपने सुप्रसिद्ध नाट्यकाव्य **'फाडस्ट'** में कालिदास के अभिज्ञानशाकुन्तलम् और नायिका शकुन्तला की भूरि-भूरि प्रशंसा की।
- कालिदास द्वारा विरचित तीन नाटक हैं – **1. मालविकाग्निमित्रम्** (प्रथमनाटक), **2. विक्रमोर्वशीयम्** (द्वितीय नाटक), **3. अभिज्ञानशाकुन्तलम्** (अन्तिम तथा सर्वश्रेष्ठ नाटक)
- कण्व द्वारा पोषित, मेनका और विश्वामित्र की पुत्री – **शकुन्तला**
- कालिदास के सभी नाटक हैं – **सुखान्त।**
- कालिदास की नाट्यकला का सर्वश्रेष्ठ निदर्शन है – **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् कथाविन्यास, चरित्र चित्रण, संवाद योजना, भाषा – शैली, अलंकार–योजना, रसयोजना, प्रकृतिचित्रण, सभी दृष्टियों से **सर्वश्रेष्ठ नाटक** है।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् में लगभग **196 पद्य** हैं।
- महाकवि कालिदास **रसमयी शैली** के आचार्य हैं।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् में भारतीय संस्कृति की महत्त्वपूर्ण तीन विशेषताओं – **त्याग, तपस्या, और तपोवन** का अच्छा चित्रण किया गया है।
- भरतमुनि के अनुसार नाटक का लक्षण – **''त्रैलोकस्यास्य सर्वस्य नाट्यं भावानुकीर्तनम्।''**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क का प्रारम्भ होता है – **विष्कम्भक से।**
- अनसूया और प्रियंवदा के पुष्पावचयन से प्रारम्भ होता है – **अभिज्ञानशाकुन्तलम् का चतुर्थ अङ्क।**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में वर्णन है – **शकुन्तला की विदाई का।**
- अन्तः प्रकृति और बाह्य प्रकृति का सुन्दर चित्रण किया गया है – **अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में।**
- दुष्यन्त और शकुन्तला की प्रणयगाथा वर्णित है – **अभिज्ञानशाकुन्तलम् में।**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् में लगभग **180 उपमाओं का प्रयोग** किया गया है।
- शकुन्तला **हेमकूट पर्वत पर महर्षि मारीच के आश्रम में** अपनी माता मेनका के साथ वियोग के दिन गुजारती है।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् में दुष्यन्त और शकुन्तला के प्रेम, वियोग और पुनर्मिलन का वर्णन है।
- इस नाटक की कथावस्तु राजा दुष्यन्त के द्वारा शकुन्तला को दिये गये अभिज्ञान (अँगूठी) के आस पास चक्कर लगाती है।
- राजा दुष्यन्त मृग का पीछा करते हुए किस आश्रम में प्रवेश करता है – **महर्षि कण्व के।**
- तीर्थयात्रा पर गए हुए कण्व ऋषि की अनुपस्थिति में ही राजा दुष्यन्त और शकुन्तला का गान्धर्व विवाह आश्रम में ही सम्पन्न हो जाता है।
- शकुन्तला को महर्षि कण्व किसके साथ पतिगृह (हस्तिनापुर) भेजते हैं – **शार्ङ्गरव, शारद्वत और गौतमी।**
- हस्तिनापुर जाते समय शकुन्तला की अगूँठी कहाँ गिर जाती है – **शचीतीर्थ में।**
- दुष्यन्त, शकुन्तला को पहचानने से क्यों इन्कार कर देता है **– दुर्वासा के शापवशात्।**
- शकुन्तला कण्व ऋषि के आश्रम के बाद किस आश्रम में निवास करती है – **ऋषि मारीच के आश्रम में।**
- बालक सर्वदमन (भरत) और शकुन्तला से दुष्यन्त की भेंट कहाँ होती है – **हेमकूटपर्वत स्थित ऋषि मारीच के आश्रम में।**
- महर्षि कण्व का आश्रम था – **मालिनी नदी के तट पर।**
- दुष्यन्त ने जब आश्रम में प्रवेश किया तब महर्षि कण्व कहाँ गए हुए थे – **सोमतीर्थ।**
- शकुन्तला को शाप देने वाले ऋषि थे – **दुर्वासा**
- मारीच ऋषि रहते थे – **हेमकूट पर स्थित आश्रम में**
- दुष्यन्त की कौन रानी संगीत का अभ्यास कर रही है – **हंसपदिका**
- राजा दुष्यन्त की दो रानियाँ – **वसुमती और हंसपदिका**
- राजा दुष्यन्त किस रानी को अधिक प्यार करता है– **वसुमती**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् में किस गुण की प्रधानता है – **प्रसाद गुण**

- कालिदास के नाटकों का प्रतिपाद्य विषय है – **प्रसाद गुण**
- कालिदास के नाटकों का प्रतिपाद्य रस है – **शृङ्गार**
- नाट्यशास्त्र में नान्दी का अर्थ है – **मङ्गलाचरण**
- नाटकों में भरतवाक्य का प्रयोग होता है – **अन्त में**
- शकुन्तला का पालन पोषण हुआ था– **कण्व के आश्रम में**
- शकुन्तला पति के चिन्तन में कहाँ बैठी थी– **कुटिया में**
- राजा की मनःस्थिति जानने के लिए मेनका ने अपनी किस सखी को भेजा था– **सानुमती**
- जर्मनविद्वान् गेटे द्वारा प्रशंसित नाटक है – **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**
- शापनिवृत्ति के लिए ऋषि दुर्वासा से अनुनय विनय करने वाली सखी है– **प्रियंवदा**
- शकुन्तला की अमङ्गलशान्ति के लिए कण्व कहाँ गए थे – **सोमतीर्थ**
- शकुन्तला ने किस तीर्थ में जलवन्दना की थी – **शचीतीर्थ**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् का सर्वश्रेष्ठ अङ्क है – **चतुर्थ**
- वह महिला तपस्विनी जिसके साथ शकुन्तला हस्तिनापुर जाती है – **गौतमी**
- अग्निगर्भा शमी के समान है – **शकुन्तला**
- दुष्यन्त शकुन्तला की वैवाहिक विधि है – **गान्धर्व**
- हस्तिनापुर से शकुन्तला को मारीच आश्रम ले जाने वाली है – **एक दिव्य ज्योति (मेनका)**
- दुष्यन्त को देवासुर संग्राम की सूचना देने वाला है – **इन्द्र का सारथि मातलि**
- वह स्थान जहाँ स्वर्ग से लौटते समय दुष्यन्त रुकता है – **मारीच ऋषि का आश्रम**
- '**अपराजिता रक्षाकरण्डक**' से सम्बद्ध है – **सर्वदमन (भरत)**
- कालिदास के तीनों नाटकों में प्रधानता है – **शृङ्गार रस की।**
- शाकुन्तलम् का प्रारम्भ तथा अन्त होता है – **सम्भोग शृङ्गार से**
- '**राजन् आश्रममृगोऽयं न हन्तव्यो न हन्तव्यः**' किसने कहा – **तपस्वी वैखानस ने**
- भ्रमर से भयभीत शकुन्तला की रक्षा कौन करता है – **राजा दुष्यन्त**
- 'शकुन्तला ऋषि विश्वामित्र एवं मेनका की कन्या हैं' – यह बात राजा दुष्यन्त को किसने बताया **– अनसूया ने**
- हस्तिनापुर से महारानी का सन्देश लेकर कण्व के आश्रम राजा दुष्यन्त के पास कौन जाता है – **करभक नाम का एक सेवक**
- शाकुन्तलम् के किस अङ्क में राजा दुष्यन्त विदूषक माढव्य को आश्रम से हस्तिनापुर वापस भेज देता है– **द्वितीय अङ्क में**
- शकुन्तला को राजा दुष्यन्त के लिए एक प्रेमपत्र लिखने की सलाह कौन देती है – **प्रियंवदा**
- शकुन्तला, सखियों के आग्रह से नलिनी पत्र पर नाखूनों से राजा को प्रेमपत्र लिखती है।

तव न जाने हृदयं मम पुनः कामो दिवाऽपि रात्रावपि।
निर्घृण तपति बलीयस्त्वयि वृत्तमनोरथाया अङ्गानि॥

अभि०शा० 3-13।

- शकुन्तला की अस्वस्थता का समाचार पाकर शान्तिजल लिए हुए कौन आती है – **आर्या गौतमी**
- नाटक में दुर्वासा ऋषि का आगमन किस अङ्क में होता है – **चतुर्थ अङ्क में**
- ऋषि कण्व को आकाशवाणी द्वारा मालूम होता है कि शकुन्तला का दुष्यन्त के साथ गान्धर्व विवाह हो गया है, तथा वह आपन्नसत्त्वा (गर्भिणी) है।

दुष्यन्तेनाहितं तेजो दधानां भूतये भुवः।
अवेहि तनयां ब्रह्मन् अग्निगर्भां शमीमिव॥

अभि०शा० 4/4

अभिज्ञानशाकुन्तलम् के मार्मिक प्रसङ्ग

प्रथम अङ्क – भ्रमर वृत्तान्त और शकुन्तला की सखियों से राजा का वार्तालाप।
द्वितीय अङ्क – शकुन्तला के सौन्दर्य का वर्णन।
तृतीय अङ्क – दुष्यन्त और शकुन्तला के विरह दुःख का वर्णन और दोनों के मिलन का वर्णन।
चतुर्थ अङ्क – शकुन्तला की विदाई।
पंचम अङ्क – राजा दुष्यन्त और शार्ङ्गरव का विवाद।
षष्ठ अङ्क – राजा के शोक का वर्णन।
सप्तम अङ्क – पुत्र सर्वदमन का दर्शन और शकुन्तला से मिलन का वर्णन।

अभिज्ञानशाकुन्तलम् का मङ्गलाचरण

या सृष्टिः स्रष्टुराद्या, वहति विधिहुतं या हविर्या च होत्री, ये द्वे कालं विधत्तः श्रुति विषयगुणा या स्थिता व्याप्य विश्वम्।
यामाहुः सर्वबीजप्रकृतिरिति यया प्राणिनः प्राणवन्तः,
प्रत्यक्षाभिः प्रपन्नस्तनुभिरवतु वस्ताभिरष्टाभिरीशः॥ 1/1 ॥

भावार्थ- जो विधाता की सर्वप्रथम सृष्टि है अर्थात् जलरूप मूर्ति, जो विधिपूर्वक की गयी हवन के हवि को देवताओं के पास ले जाती है अर्थात् अग्निरूप मूर्ति, जो यज्ञकर्ता है अर्थात् यजमान रूपमूर्ति, जो दो समय का निर्माण करतीं हैं,अर्थात् सूर्य और चन्द्ररूप मूर्तियाँ, शब्द जिसका गुण है और जो विश्व में व्याप्त होकर विद्यमान है अर्थात् आकाश रूप मूर्ति, जिसको विद्वान् समस्त बीजों का कारण कहते हैं, अर्थात् पृथ्वीरूपमूर्ति और जिससे सभी प्राणी जीवित रहते हैं अर्थात् वायुरूप मूर्ति, उन प्रत्यक्ष आठ मूर्तियों से युक्त भगवान् शिव आप लोगों की रक्षा

करें।

☆ प्रस्तुत पद्य में अष्टमूर्ति भगवान् शिव की स्तुति की गयी है।
☆ आशीर्वादात्मक मङ्गलाचरण का प्रयोग है।
☆ समासोक्ति के माध्यम से कथानक का सङ्केत होने से पत्रावली नान्दी भी है।
☆ उपर्युक्त श्लोक में स्रग्धरा छन्द तथा अनुप्रास एवं समासोक्ति अलङ्कार है।

अभिज्ञानशाकुन्तलम् का भरतवाक्य

प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः
सरस्वती श्रुतमहतां महीयताम्।
ममापि च क्षपयतु नीललोहितः
पुनर्भवं परिगतशक्तिरात्मभूः॥ 7/35 ॥

भावार्थ- राजा लोग प्रजा के हित के कार्यों में लगे रहें। चारों वेदों से शोभायमान भगवती श्री सरस्वती जगत् में पूजा को प्राप्त हों, अर्थात् वैदिक साहित्य, वेदमार्ग तथा चक्र सहित स्वयंभू भगवान् शङ्कर मेरे पुनर्जन्म का नाश करें। अर्थात् भगवान् शाम्ब शिव की कृपा से मेरा जन्म-मरण रूप यह संसार बन्धन सदा के लिए छूट जाए।

☆ यह उत्तरार्धगत अन्तिम उक्ति महाकवि कालिदास की स्वयं अपनी प्रार्थना है।
☆ इस भरतवाक्य में लोक-कल्याण के लिए भगवान् शिव से प्रार्थना की गयी है।
☆ इस पद्य में रुचिरा या अतिरुचिरा छन्द है।

अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाम का प्रयोजन

1. अभिज्ञायते अनेन इति अभिज्ञानम् अभि+ज्ञा+ल्युट् = अभिज्ञान

अर्थात् जिसके द्वारा पहचाना जाता है।

यहाँ पर अभिज्ञान से भाव है- दुष्यन्त के द्वारा पहचान के लिए शकुन्तला को दी गयी अँगूठी।

शकुन्तलाम् अधिकृत्य कृतं नाटकं शाकुन्तलम्।

शकुन्तला+अण्, ('अधिकृत्य कृते ग्रन्थे' सूत्र से अण् प्रत्यय) अर्थात् शकुन्तला विषयक नाटक।

अभिज्ञानप्रधानं शाकुन्तलम् इति अभिज्ञानशाकुन्तलम्

(मध्यमपदलोपी समास)

शकुन्तला प्रधान नाटक, जिसमें अभिज्ञान (अँगूठी) मुख्य रूप से वर्णित है।

2. अभिज्ञानसहितं शाकुन्तलम् इति अभिज्ञानशाकुन्तलम्

(मध्यमपदलोपी समास)

अभिज्ञान(अँगूठी) के वर्णन से युक्त शकुन्तला-विषयक नाटक।

अभिज्ञानशाकुन्तलम् के नाटकीय पात्रों का परिचय

पुरुष पात्र

क्र.	नाम	परिचय
1.	सूत्रधार	नाटक का आरम्भ करने वाला प्रधान नट और रंगमञ्च का अध्यक्ष।
2.	दुष्यन्त	नाटक का नायक, हस्तिनापुर का राजा।
3.	सूत	दुष्यन्त का सारथि।
4.	सेनापति भद्रसेन	दुष्यन्त का सेनापति।
5.	विदूषक माढव्य	दुष्यन्त का अन्तरङ्ग मित्र और हास्यकारी।
6.	महर्षिकण्व (काश्यप)	आश्रम के कुलपति, शकुन्तला के पालक और धर्मपिता।
7.	मारीच (कश्यप)	एक महर्षि, देवों और राक्षसों के पिता, एक प्रजापति।
8.	भरत (सर्वदमन)	राजा दुष्यन्त और शकुन्तला का पुत्र।
9.	सोमरात	दुष्यन्त का पुरोहित।
10.	मातलि	इन्द्र का सारथि।
11.	वैखानस, हारीत, नारद, गौतम, शाङ्र्गरव, शारद्वत, शिष्य	सभी कण्व के शिष्य, आश्रम के तपस्वी।
12.	रैवतक (दौवारिक)	राजा का भृत्य, द्वारपाल।
13.	करभक	राजा के पास राजमाता का सन्देश पहुँचाने वाला सेवक।
14.	कञ्चुकी (वातायन)	रनिवास की देखभाल करने वाला एक वृद्ध ब्राह्मण।
15.	वैतालिक	स्तुतिपाठक (भाट, चारण)।
16.	श्याल	राजा का साला, नगर रक्षाधिकारी (कोतवाल)।
17.	धीवर (मीनपालक)	मछली पकड़ने वाला।
18.	सूचक	पुलिस के दो सिपाही।
19.	जानुक	
20.	गालव	ऋषि मारीच का शिष्य।
21.	पिशुन	दुष्यन्त का मन्त्री

स्त्रीपात्र

क्र.	नाम	परिचय
22.	नटी	सूत्रधार की पत्नी।
23.	शकुन्तला	नाटक की नायिका, कण्व की धर्मपुत्री, दुष्यन्त की पत्नी, मेनका और विश्वामित्र से उत्पन्न एक

		क्षत्रिय कन्या।
24.	अनसूया	शकुन्तला की अत्यन्त प्रिय और अंतरंग सखी।
25.	प्रियंवदा	
26.	गौतमी	कण्व के आश्रम की अध्यक्षा, एक वृद्धा तापसी।
27.	अदिति (दाक्षायणी)	महर्षि मारीच की पत्नी।
28.	सानुमती	मेनका की सखी, एक अप्सरा।
29.	परभृतिका	राजा की सेविका, उद्यानपालिका।
30.	मधुकरिका	
31.	चतुरिका	राजा की सेविका।
32.	वेत्रवती (प्रतीहारी)	राजा की द्वारपालिका।
33.	यवनी	राजा की एक सेविका।
34.	तापसी (सुव्रता)	मारीच के आश्रम की एक तपस्विनी।

अन्य पात्र

➢ **मघवा (इन्द्र)** – देवताओं के राजा, दुष्यन्त के मित्र।
➢ **इन्द्राणी** – इन्द्र की पत्नी।
➢ **जयन्त** – इन्द्र का पुत्र।
➢ **कौशिक (विश्वामित्र)** – शकुन्तला के जन्मदाता पिता।
➢ **मेनका** – शकुन्तला की माता, एक अप्सरा।
➢ **दुर्वासा** – एक ऋषि, शकुन्तला को शाप देने वाले।
नोट – नाटक में इन पात्रों का केवल नामोल्लेख मात्र हुआ है।
➢ 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में पुरुवंशी (चन्द्रवंशी) राजा दुष्यन्त तथा विश्वामित्र और मेनका की पुत्री शकुन्तला का प्रेम, वियोग, पुनर्मिलन वर्णित है।
➢ शाकुन्तलम् की कथा महाभारत के आदिपर्व तथा पद्मपुराण के स्वर्गखण्ड में वर्णित है।
➢ शाकुन्तलम् का **नायक 'दुष्यन्त'** 'हस्तिनापुर' का राजा है और धीरोदात्त नायक के गुणों से युक्त है।
➢ 'शाकुन्तलम्' की **नायिका शकुन्तला** महर्षि कण्व (काश्यप) के आश्रम में पली है। 'मुग्धा' नायिका है।
➢ 'शाकुन्तलम्' का **प्रमुख 'रस' शृंगार है।** चतुर्थ अङ्क में **करुण** रस है।
➢ शाकुन्तल में **24 छन्दों** का प्रयोग हुआ है। सर्वाधिक प्रयुक्त छन्द आर्या (39) है। तत्पश्चात् वसन्ततिलका (30) है।
➢ अभिज्ञानशाकुन्तलम् में कुल **196 श्लोक** है। सर्वाधिक (35) श्लोक सप्तम अङ्क में हैं।
➢ अभिज्ञानशाकुन्तलम् में **वैदर्भी रीति** और **माधुर्य गुण** प्रयुक्त है।
➢ शाकुन्तलम् में साधारणतया **गद्य के लिए शौरसेनी** और पद्यों के लिए **महाराष्ट्री प्राकृत** का प्रयोग हुआ है।
➢ षष्ठ अङ्क में दोनों सिपाही और धीवर मागधी बोलते हैं।
➢ शाकुन्तलम् में सर्वाधिक उपमा और 'अर्थान्तरन्यास' अलङ्कारों का प्रयोग है।
➢ दुष्यन्त की शकुन्तला से पूर्व अन्य दो रानियाँ हंसपदिका और वसुमती हैं।
➢ शकुन्तला की अनसूया और प्रियंवदा नामक दो सखियाँ हैं।
➢ दुष्यन्त और शकुन्तला का **पुत्र सर्वदमन (भरत)** है।
➢ शाकुन्तलम् का **विदूषक 'माढव्य'** दुष्यन्त का मित्र है। पहली बार द्वितीय अङ्क में मंच पर आता है।
➢ दुष्यन्त का **सेनापति 'भद्रसेन'** और **पुरोहित 'सोमरात'** है।
➢ इन्द्र का सारथी **'मातलि'** और दुष्यन्त का सारथी **'सूत'** है।
➢ **'करभक'** नामक दूत द्वितीय अङ्क में दुष्यन्त की माता का सन्देश लेकर आता है।
➢ शकुन्तला, परित्याग के बाद देवों और राक्षसों के पिता, प्रजापति **'मारीच' (कश्यप)** के आश्रम में रहती है।
➢ वैखानस, शार्ङ्गरव, शारद्वत, गौतम, नारद, हारीत आदि महर्षि कण्व के शिष्य हैं।
➢ ऋषि मारीच का एकमात्र शिष्य जो शकुन्तला-दुष्यन्त के मिलन की सूचना कण्व को देने हेतु सातवें अङ्क में भेजा जाता है उसका नाम **'गालव'** है।
➢ षष्ठ अङ्क में धीवर को पकड़ने वाले **दो सिपाही सूचक व जानुक** हैं और राजा का साला एवं नगर रक्षाधिकारी **श्याल** है।
➢ राजा का **कञ्चुकी 'वातायन'** है वह षष्ठ अङ्क में 'वसन्तोत्सव' की तैयारी में लगी दो उद्यानपालिकाओं **'परभृतिका'** व **'मधुकरिका'** को ऐसा करने से रोकता है।
➢ **वेत्रवती** राजा की द्वारपालिका है। यवनी है, एक अन्य सेविका है।
➢ **अदिति** (दाक्षायणी) मारीच की पत्नी तथा **गौतमी** कण्व के आश्रम की 'एक वृद्धा तापसी' है। गौतमी भी शार्ङ्गरव और शारद्वत के साथ शकुन्तला को छोड़ने हस्तिनापुर जाती है।
➢ मारीच के आश्रम में सर्वदमन (भरत) के साथ रहने वाली तापसी **'सुव्रता'** थी।
➢ **'सानुमती'** शकुन्तला की माता मेनका की सखी है जो षष्ठ अङ्क में राजा और विदूषक की बात अदृश्य रूप से सुनती है।
➢ इन्द्र का पुत्र **जयन्त** तथा पत्नी **इन्द्राणी** (पौलोमी/शची) है।
➢ सुलभकोप ऋषि दुर्वासा, अत्रि और अनसूया के पुत्र हैं वे चतुर्थ अङ्क के आरम्भ में शकुन्तला को शाप देते हैं।
➢ महर्षि कण्व का आश्रम **'मालिनी नदी'** के तट पर विश्वामित्र का आश्रम गौतमी नदी के तट पर तथा 'मारीच' का आश्रम **'हेमकूट पर्वत'** पर था।
➢ दुर्वासा के शाप का असर पञ्चम अङ्क में दिखाई पड़ता है। यह नाटकीयता की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ अङ्क है।
➢ शकुन्तला ने **'शचीतीर्थ'** जो गङ्गा के तट पर स्थित है, में जलवन्दना की, जहाँ उसकी अँगूठी गिरती है।
➢ तृतीय अङ्क में 'प्रियंवदा' कमल-पत्र पर 'नाखून' से प्रेम-पत्र लिखने की सलाह शकुन्तला को देती है जिसे वह फूलों में छिपाकर देवता के प्रसाद के बहाने राजा के पास पहुँचाने को कहती है।
➢ नाटक का आरम्भ **'ग्रीष्म ऋतु'** वर्णन तथा राजा दुष्यन्त

द्वारा आश्रम मृग का पीछा करते हुए होता है।

- राजा पञ्चम अङ्क में हंसपदिका के सङ्गीत की प्रशंसा करता है तथा षष्ठ अङ्क में शकुन्तला तथा उसकी सखियों का चित्र बनाता है।
- दुष्यन्त षष्ठ अङ्क में **'धनमित्र'** नामक व्यापारी की मृत्यु पर उसकी सारी सम्पत्ति उसके गर्भस्थ पुत्र को दे देता है।
- दुष्यन्त के लिए इन्द्र अपना आधा सिंहासन छोड़ देते हैं तथा **राजा को मन्दारमाला** पहनाते हैं।
- राजा द्वारा तिरस्कृत शकुन्तला को प्रसव तक अपने घर में रखने को **'सोमरात'** तैयार होते हैं।
- अष्टमूर्ति शिव की उपासना शाकुन्तलम् के नान्दी में की गई है, यह **मङ्गलाचरण आशीर्वादात्मक** है।
- शाकुन्तल के मङ्गलाचरण में **स्रग्धरा छन्द** है, जिसके प्रत्येक चरण में **21 वर्ण** होते हैं। यह **पत्रावली नान्दी** है।
- जब तक विद्वान् सन्तुष्ट न हो जाय सूत्रधार अभिनय-कौशल को सफल नहीं समझता। वह ग्रीष्म ऋतु पर नटी से गीत सुनाने को कहता है।
- नटी आरम्भ में दो छन्द गाती है एक आर्या –> **(सुभगसलिल.......)** दूसरा उद्‌गाथा –> **(ईषदीषच्चुम्बितानि.....)**
- सूत प्रथम अङ्क के आरम्भ में धनुष पर बाण चढ़ाये राजा की उपमा 'शिव' से देता है।
- प्रथम अङ्क में वैखानस राजा को चक्रवर्ती पुत्र प्राप्त करने का आशीर्वाद देता है।
- समिधा लाने जाता हुआ 'वैखानस' राजा को बताता है कि शकुन्तला के 'प्रतिकूल भाग्य की शान्ति' के लिए कण्व शकुन्तला पर अतिथि सत्कार का भार सौंप कर **'सोमतीर्थ'** गये हुए हैं।
- आश्रम से सरोवर का मार्ग वल्कलों के अग्रभाग से टपकते जल से रेखांकित है।
- राजा आश्रम में प्रवेश से पूर्व अपने आभूषण और धनुष सारथि (सूत) को देकर सादे वेष में प्रवेश करता है।
- आश्रम-प्रवेश के समय राजा की **'दाहिनी' भुजा फड़कती** है जो सुन्दर स्त्री की प्राप्ति का सूचक है।
- आश्रम-प्रवेश पर राजा वाटिका की दाहिनी ओर वृक्षों का सेंचन कर रही (प्रियंवदा आदि) बालिकाओं को देखता है।
- प्रियंवदा कहती है कि शकुन्तला के समीप रहने पर 'बकुल' (मौलश्री) का वृक्ष लता से युक्त लगता है।
- नवमालिका लता आम के वृक्ष से लिपटी है जिसका **'वनज्योत्स्ना'** नाम शकुन्तला ने रखा है।
- प्रियंवदा 'सप्तपर्ण वृक्ष' की वेदी पर राजा को बैठने हेतु कहती है।
- अनसूया द्वारा परिचय पूँछने पर राजा अपने को पुरुवंशी राजा द्वारा नियुक्त धर्माधिकारी बताता है।
- शकुन्तला के जन्म का वृत्तान्त अनसूया राजा को बताती है।
- कौशिक (विश्वामित्र) गौतमी नदी के किनारे तपस्या कर रहे थे।
- प्रियंवदा दो वृक्षों के सेंचन का ऋण बताकर शकुन्तला को रोकती है राजा अपनी अङ्गूठी देकर शकुन्तला को ऋण मुक्त करना चाहता है।
- द्वितीय अङ्क का आरम्भ खिन्न विदूषक के प्रवेश के साथ होता है जो राजा के 'मृगया' के व्यसन से दुःखी है।
- द्वितीय अङ्क में सेनापति और विदूषक 'मृगया' (शिकार) के गुण-दोष की चर्चा करते हैं।
- दुष्यन्त, शकुन्तला के प्रति अपने प्रेम को विदूषक से कहता है और कहीं यह अन्तःपुर में न बता दे इसलिए उस बात को हँसी में कही 'बात' कहता है।
- करभक सन्देश लाता है कि चौथे दिन महारानी (दुष्यन्त की माता) के व्रत (जीवित्पुत्रिका/जिउतियाव्रत) का 'पारण' है।
- राजा अपने स्थान पर 'विदूषक' को भेज देता है।
- तृतीय अङ्क का आरम्भ 'शिष्य' के प्रवेश से होती है जो शकुन्तला के अस्वस्थ होने की खबर प्रियंवदा से प्राप्त होने का अभिनय करता है।
- तृतीय अङ्क का आरम्भ 'विष्कम्भक' से होता है।
- तृतीय अङ्क में दुष्यन्त के शकुन्तला के समीप उपस्थित होने पर दोनों सखियाँ मृग-शावक को उसकी माँ से मिलाने के बहाने से हट जाती हैं।
- दुष्यन्त तृतीय अङ्क में **शकुन्तला से गान्धर्व विवाह** करता है। यह विवाह केवल क्षत्रियों के लिए ही स्वीकृत था।
- गौतमी दोनों सखियों के साथ शकुन्तला का स्वास्थ्य जानने आती है।
- चतुर्थ अङ्क का आरम्भ पुष्प चुनती हुई दो सखियों (प्रियंवदा, अनसूया) के प्रवेश के साथ होता है।
- अनसूया, शकुन्तला के 'भाग्यदेवता' के पूजन के लिए अधिक फूल तोड़ने को कहती है।
- शाप देकर जाते हुए **दुर्वासा को मनाने प्रियंवदा** जाती है।
- शकुन्तला कुटिया के द्वार पर बाएँ हाथ पर मुँह रखे चित्रलिखित सी बैठी है।
- शाप का वृत्तान्त केवल अनसूया और प्रियंवदा को ज्ञात रहता है।
- चौथे अङ्क का आरम्भ भी **शुद्ध विष्कम्भक** के साथ होता है।
- विष्कम्भक के पश्चात् सोकर उठे 'शिष्य' का प्रवेश मंच पर होता है। जो काश्यप के आदेशानुसार 'कितनी रात शेष है' यह जानने के लिए बाहर आता है।
- 'शकुन्तला सुखपूर्वक सोई कि नहीं' यह जानने के लिए गयी हुई प्रियंवदा यह समाचार लाती है कि 'कण्व' ने शकुन्तला के विवाह को अनुमति दे दी है।
- शकुन्तला 'गर्भिणी' है यह समाचार कण्व को **'अशरीरधारी छन्दोमयी'** वाणी ने यज्ञशाला में प्रविष्ट होने पर दिया।
- इस घटना को प्रियंवदा, अनसूया से बताती है।
- अनसूया शकुन्तला की विदाई हेतु नारियल के डिब्बे में बकुल (मौलश्री) की माला, केसर आदि आम की डाल पर लटका

कर रखती है।

- अनसूया शकुन्तला की विदाई के अवसर पर गोरोचन, तीर्थों की मिट्टी, दूब के अग्रभाग आदि वस्तुएँ इकट्ठा करती है।
- स्वस्तिवाचन के समय तीन तापसियाँ शकुन्तला को आशीर्वाद देती हैं।
- पहली तापसी **'महादेवी'** शब्द प्राप्त करने, दूसरी **'वीर पुत्र'** को प्राप्त करने का और तीसरी **'पति से अधिक सम्मान'** प्राप्त करने का आशीर्वाद देती है।
- दो ऋषि कुमार जिनके नाम **नारद** व **गौतम** हैं, वे वृक्षों द्वारा प्रदत्त वस्त्र-आभूषण आदि शकुन्तला के लिए लाते हैं।
- दोनों सखियाँ चित्रकारी से प्राप्त ज्ञान के आधार पर शकुन्तला का शृङ्गार करती हैं।
- पूरे नाटक में **महर्षि कण्व केवल चौथे अङ्क** में दिखाई पड़ते हैं। वे स्नान के उपरान्त **'यास्यत्यद्य शकुन्तलेति'**...... श्लोक के साथ मंच पर प्रविष्ट होते हैं।
- चतुर्थ अङ्क के **22 श्लोकों में 14 श्लोक महर्षि कण्व** ने कहे हैं। चौथे अङ्क के प्रसिद्ध चार श्लोक भी महर्षि कण्व द्वारा कहे गये हैं।
- **ययाति** चंद्रवंश के संस्थापक राजाओं में थे जिनकी **देवयानी** और **शर्मिष्ठा** नाम की दो पत्नियाँ थीं।
- **देवयानी** दानवों के गुरु **शुक्राचार्य की पुत्री** और ययाति की विवाहिता पत्नी थी।
- दानवों के राजा **'वृषपर्वा' की पुत्री शर्मिष्ठा** देवयानी की सेविका के रूप में आयी थी। ययाति ने उससे गान्धर्व विवाह कर लिया।
- ययाति के 5 पुत्रों में **शर्मिष्ठा का पुत्र 'पुरु'** भी था जिसने शुक्राचार्य के शाप से वृद्ध हुए ययाति की वृद्धावस्था अपने ऊपर ले लिया था।
- अग्निवेदी की परिक्रमा करते हुए कण्व ने ऋग्वैदिक छन्द 'त्रिष्टुप्' में शकुन्तला को आशीर्वाद दिया।
- 'त्रिष्टुप्' के प्रत्येक चरण में 11 वर्ण होते हैं, 4 या 5 वर्ण पर यति होती है।
- वृक्षों के प्रथम 'पुष्पोद्गम' के समय शकुन्तला आश्रम में उत्सव मनाया करती थी।
- 'वृक्षों से' कण्व द्वारा शकुन्तला के जाने हेतु आज्ञा माँगने पर वे 'कोयल' की आवाज में आज्ञा प्रदान करते हैं।
- वृक्षों ने शकुन्तला को कोयल की आवाज में जाने की आज्ञा दे दी है। इस बात की कण्व अपरवक्त्र छन्द में पुष्टि करते हैं।
- आकाशवाणी के द्वारा शकुन्तला यात्रा की जो मङ्गल कामना की गई है वह **शाकुन्तलम् का 'मध्यनान्दी'** है।
- जाती हुई शकुन्तला अपनी **लता-बहिन 'वनज्योत्स्ना'** से गले मिलकर विदाई लेती है। जो 'आम्रवृक्ष' से लिपटी है। और इसे धरोहर के रूप में सखियों के हाथ में देती है।
- शकुन्तला कण्व से गर्भ के कारण शिथिल हरिणी के कुशलपूर्वक सन्तानोत्पत्ति का समाचार अपने पास भेजने को कहती है।
- कुशाग्रों से विंधे मुखवाले जिस मृग के मुख पर शकुन्तला ने इंगुदी (हिंगोट) का तेल लगाया था तथा साँवा के चावल से पाला था वह शकुन्तला के जाते समय उसका वस्त्र खींचता है। वह उसे पिता कण्व को सौंपती है।
- शकुन्तला के साथ सरोवर के तट तक आये कण्व क्षीरवृक्ष (पीपल) के नीचे बैठ कर दुष्यंत को भेजने हेतु संदेश देते हैं।
- कमल के पत्ते की ओट में बैठे सहचर (चकवा) को न देख पाने के कारण चकवी रोती (चिल्लाती) है।
- शकुन्तला द्वारा पहले पूजा के रूप में डाले गये 'नीवार' अब कुटी के द्वार पर उगे हैं जो कण्व को उसकी याद दिलायेंगे।
- **''अपराजिता रक्षाकरण्डक''** सिंह शावक के साथ खेलते सर्वदमन के हाथ पर बंधा है जो बालक के माता-पिता के अतिरिक्त अन्य के छूने पर सर्प बनकर डस लेता है।
- षष्ठ अङ्क में इन्द्र-सारथि मातलि राजा में क्रोध या वीरता को जगाने के लिए विदूषक पर आक्रमण करता है।
- मातलि विदूषक पर आक्रमण करके उसे **'मेघप्रतिच्छन्द'** नामक महल के ऊपरी मंजिल पर ले जाता है।
- राजा उस पर आक्रमण हेतु 'यवनी' नामक परिचारिका से धनुष माँगता है।
- मातलि राजा के समक्ष प्रकट होकर राजा को देवासुर संग्राम में इन्द्र के सहायतार्थ चलने हेतु निवेदन करता है।
- **कालनेमि का वंशज 'दुर्जेय'** ने इन्द्र पर आक्रमण किया जिसे केवल दुष्यन्त मार सकता है।
- राजा दुष्यन्त के **मंत्री 'पिशुन'** हैं जिन पर वह देवासुर संग्राम में जाते हुए राज्यभार सौंपता है। विदूषक से यह बात उन्हें बताने के लिए कहता है।
- **हेमकूट किन्नरों का पर्वत** है जहाँ प्रजापति 'मारीच' रहते हैं।
- जब मातलि 'राजा' के आगमन की सूचना (मारीच को) देने जाता है तब राजा अशोक वृक्ष के नीचे बैठता है।
- 'जातकर्म' 16 संस्कारों में चौथा है। जिस अवसर पर सर्वदमन के हाथ पर **'अपराजिता'** नामक रक्षासूत्र बाँधा गया था।
- मारीच **'वत्स, चिरंजीव पृथिवीं पालय'** आशीर्वाद राजा को देते हैं तथा दुर्वासा - शाप का वृत्तान्त दोनों को बताते हैं।
- अदृश्य तेजोमयी मूर्ति के रूप में मेनका 'अप्सरास्तीर्थ' से शकुन्तला को लेकर दाक्षायणी (मारीच-पत्नी) के पास गयी।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक का भरतवाक्य (अन्तिम श्लोक) (प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय) **'रुचिरा' छन्द** में है। जिसके प्रत्येक चरण में 13 वर्ण, 4, 9 पर यति होती है।
- जीवों को बलात् वश में कर लेने के कारण भरत का नाम 'सर्वदमन' था।
- पञ्चम अङ्क में अङ्गूठी के शचीतीर्थ में जलतर्पण के समय गिरने की बात का पता सर्वप्रथम 'गौतमी' के मुख से पता चलता है।

राजा दुष्यन्त

परिचयः –

➤ अभिज्ञानशाकुन्तलम् का धीरोदात्त नायक

महासत्त्वोऽतिगम्भीरः क्षमावानविकत्थनः।
स्थिरो निगूढाहङ्कारो धीरोदात्तो दृढव्रतः॥

(दशरूपक – द्वितीयप्रकाश)

अर्थात् वह (राजा दुष्यन्त) स्थिर स्वभाववाला, क्षमाशील, अतिगम्भीर, महाबली, अहङ्कारशून्य, दृढनिश्चयी, स्वयं प्रशंसा न करने वाला, मधुरभाषी, एवं ललित कलाओं का मर्मज्ञ है।

➤ शकुन्तला का प्रेमी/पति।
➤ पुरुवंशी (चन्द्रवंशी) एक क्षत्रिय राजा (राजर्षि)।
➤ हस्तिनापुर के सम्राट्।
➤ विदूषक (माधव्य) के मित्र।
➤ हंसपदिका और वसुमती नामक रानियों के आदर्शपति।
➤ सर्वदमन (भरत) के पिता।

चारित्रिक विशेषतायें

➤ आदर्श प्रेमी।
➤ सुन्दर एवं गम्भीर आकृति।
➤ आदर्श राजा/उत्तम शासक
➤ विनयशील नैतिक एवं धर्मपरायण।
➤ आखेट (मृगया) प्रेमी।
➤ कलाप्रेमी/कुशलचित्रकार/संगीतप्रेमी
➤ आकर्षक व्यक्तित्व एवं सौन्दर्यशाली।
➤ वीरयोद्धा/पराक्रमी/शूरवीर।
➤ वात्सल्यप्रेमी एवं गुणग्राही।
➤ मधुरभाषी एवं उदार।
➤ सहृदय तथा संयमी।
➤ आदर्श पिता।
➤ मातृभक्त तथा आज्ञाकारीपुत्र।
➤ चरित्रवान् नायक।
➤ लोकोत्तर आदर्शचरित्र

दुष्यन्त के महत्त्वपूर्ण गुण एवं कार्य

➤ दानवों के वधार्थ इन्द्र उसे स्वर्ग में बुलाता है। **(अङ्क-6)**
➤ उसके शारीरिक गठन एवं सौन्दर्य से सभी प्रभावित होते हैं, वह सुन्दर एवं युवा है।
➤ धनुष की टंकार से ही यज्ञ में विघ्न करने वाले राक्षसों को भगा देता है।
➤ प्रियंवदा उसके मधुरभाषण की प्रशंसा करती है। **(अङ्क-1)**
➤ जब तक यह निश्चित नहीं हो जाता है कि शकुन्तला क्षत्रिय कन्या है, तब तक वह अपने विवाह का विचार प्रकट नहीं करता है।
➤ शकुन्तला की प्रेमावस्था देखकर वह उसके पाणिग्रहण और रक्षा की स्वीकृति देता है। **(अङ्क-3)**
➤ वह रुग्ण शकुन्तला को धूप में जाने से रोकता है, और उसकी सेवा-शुश्रूषा करता है।
➤ माता की आज्ञा पाते ही ऋषियों के यज्ञरक्षा रूपी कार्य की विवशता के कारण मित्र विदूषक को तत्काल माता के पास भेजता है। **(अङ्क-2)**
➤ रानी हंसपदिका के संगीत को सुनकर मन्त्रमुग्ध हो जाता है। **(अङ्क-5)**
➤ शकुन्तला तथा उसकी सखियों का चित्र बनाता है। **(अङ्क-6)**
➤ ऋषियों के प्रति बहुत आदरभाव है, उनके कहनें से वह मृग पर बाण नहीं चलाता है।
➤ विनीत वेष में आश्रम में प्रवेश करता है। **(अङ्क-1)**
➤ यज्ञरक्षा हेतु ऋषियों की प्रार्थना सादर स्वीकार करता है।
➤ शार्ङ्गरव के आक्षेपों का उत्तर शान्तिपूर्वक देता है। **(अङ्क-5)**
➤ मारीच ऋषि के दर्शनार्थ उनके आश्रम जाता है। **(अङ्क-7)**
➤ वह धनमित्र नामक व्यापारी की मृत्यु पर शोक प्रकट करता है। उसके गर्भस्थ पुत्र को उसका धन दिलाता है। **(अङ्क-6)**
➤ प्रजा की रक्षा को परमधर्म समझता है।
➤ दुःखियों का दुःख दूर करने को सदा उद्यत रहता है।
➤ परस्त्री की ओर देखना पाप समझता है – **''अनिर्वर्णनीयं परकलत्रम्''** **(अङ्क-5)**
➤ सन्तानहीनता का उसे बहुत दुःख है।
➤ प्रजा के लिए घोषणा करता है कि बन्धुहीनों का वह बन्धु है। **''येन येन वियुज्यन्ते प्रजाः स्निग्धेन बन्धुना''**
➤ शाप के कारण शकुन्तला को न पहचानने पर वह अपने पूर्णसंयम का परिचय देता है। **(अङ्क-5)**
➤ सर्वदमन (भरत) को देखकर वात्सल्य का भाव जाग उठता है। **(अङ्क-7)**
➤ वह शिकार खेलता हुआ कण्व ऋषि के आश्रम में प्रवेश करता है। **(अङ्क-1)**
➤ राजा, मृगया को व्यसन नही अपितु शारीरिक स्वास्थ्य एवं मनोविनोद का साधन मानता है, इससे शरीर हल्का फुल्का एवं फुर्तीला रहता है। **(अङ्क-2)**
➤ राजाद्वारा निर्मित शकुन्तला के चित्रको देखकर विदूषक और सानुमती मन्त्रमुग्ध हो जाते हैं। **(अङ्क 6)**
➤ राजा दुष्यन्त के सौन्दर्य एवं व्यक्तित्त्व से सखियों सहित शकुन्तला प्रभावित होती है।
➤ दाक्षायणी (अदिति) भी दुष्यन्त के व्यक्तित्त्व की प्रशंसा करती हैं। **(अङ्क-7)**
➤ दुष्यन्त की वीरता से प्रभावित होकर इन्द्र अपना आधा इन्द्रासन छोड़ देते हैं, तथा उन्हें मन्दारमाला पहनाते हैं।
➤ इस प्रकार राजा दुष्यन्त कर्त्तव्यपरायण, प्रजाप्रेमी, पराक्रमी, विनीत और अविकत्थन है।

शकुन्तला

परिचय –

➤ अभिज्ञानशाकुन्तलम् की नायिका।
➤ विश्वामित्र और अप्सरा मेनका की पुत्री।
➤ महर्षिकण्व की धर्मपुत्री, (पालिता पुत्री)।
➤ नाट्यशास्त्रीय दृष्टि से मुग्धा नायिका।

- **''शकुन्तैः परिवारिता परिपालिता वा।''** पक्षियों से आवृत या कुछ समय तक पक्षियों द्वारा परिपालित होनें के कारण 'शकुन्तला' यह सार्थक नाम पड़ा।
- मालिनी नदी के तट पर स्थित कण्वाश्रम में निवास।
- राजा द्वारा परित्यक्ता होनें के बाद मारीच आश्रम में निवास।
- राजादुष्यन्त की प्रेमिका/तृतीयपत्नी।
- सर्वदमन (भरत) की माँ।
- अनसूया एवं प्रियंवदा की प्रियसखी।

चारित्रिक विशेषतायें

1. अपूर्वसुन्दरी
2. प्रकृतिप्रिया
3. आदर्शप्रेमिका
4. आश्रमप्रेमी
5. पतिव्रता पत्नी/आदर्शनारी
6. सुशीला एवं लज्जावती
7. स्वाभिमानिनी
8. कार्यकुशला
9. आदर्शपुत्री
10. मधुरभाषिणी
11. सच्ची सखी
12. अन्तर्मन की सहजता

शकुन्तला के चारित्रिक गुण एवं कार्य

- शकुन्तला नैसर्गिक सौन्दर्य की प्रतिमूर्ति है –
  - **इदं किलाव्याजमनोहरं वपुः......** **(1-18)**
  - **इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी....** **(1-17)**
  - **सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यम्....** **(1-20)**
  - **अधरः किसलयरागः......** **(1-21)**
  - **मानुषीषु कथं वा स्यात्......** **(1-26)**
  - **अनाघ्रातं पुष्पं.........** **(2-10)**
  - **चित्रे निवेश्य......** **(2-9)**
- शकुन्तला का पालन पोषण कण्व आश्रम में हुआ है, अतः उसमें स्वाभाविक सरलता, सुशीलता एवं मुग्धता है।
- राजा दुष्यन्त को देखते ही उसके हृदय में कामभाव जागृत होता है, परन्तु वह उसे व्यक्त नहीं करती – **किं नु खलु इमं जनं प्रेक्ष्य....। (अङ्क-1)**
- जब राजा दुष्यन्त उसकी प्रशंसा करता है, तो वह लज्जा से सिर नीचा कर लेती है। **'शकुन्तला अधोमुखी तिष्ठति'**। (अङ्क-1)
- प्रकृति से घनिष्ट प्रेम है। वह वृक्षों, वनस्पतियों और मृगादि से सहोदरों जैसा स्नेह करती है – **''अस्ति मे सोदरस्नेहोऽयेतेषु'' (अङ्क-1)**
- आश्रम के वृक्षों को जल देकर ही वह जलपान करती है, प्रियमण्डना होने पर भी वृक्षों के फूल, पत्तें नहीं तोड़ती – **''पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलम्.....।'' (अङ्क-4/9)**
- वह पतिव्रता है, विवाहोपरान्त पति के चिन्तन में ही व्याकुल और अन्यमनस्क है – **विचिन्तयन्ती यमनन्यमानसा।(4/1)**
- आश्रम से विदाई के समय वृक्षों और मृगादि से भी विदा लेती है। वनज्योत्स्ना से गले मिलती है, आश्रमीय मृगों को स्नेह करती है। **''सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम्।'' (अङ्क-4/9)।**
- राम द्वारा परित्यक्त सीता यथा वाल्मीकि आश्रम में निवास करती हैं, वैसे ही राजा दुष्यन्त द्वारा परित्याग कर दिये जाने पर मारीच ऋषि के आश्रम में वह तपस्विनी के समान जीवन यापन करती रही, वह अपने आपको ही दोष देती है, राजा को नहीं।
- अपने पूज्यजनों का विशेष आदर करती है, राजा से अपने पैर नही दबवाती है। **(अङ्क-3)**
- शार्ङ्गरव के डॉटने पर उसे प्रत्युत्तर नहीं देती है। **(अङ्क-5)**
- ऋषि कण्व एवं आश्रमीय ऋषियों के प्रति उसकी अगाध श्रद्धा है, सखियों के प्रति उसका **निश्छल प्रेम है।**
- राजा के प्रति आसक्ति के कारण उसकी मनःस्थिति उद्विग्न हो जाती है, परन्तु अपनी मुँहबोली-सखियों से भी बताने में उसे **संकोच** होता है।
- वह अपनी सखियों के कहने पर राजा को एक प्रेमपत्र लिखती है – **तव न जाने हृदयं......... (अङ्क-3/13)**
- आश्रम के बाहर जाने पर कण्व शकुन्तला के ऊपर ही **अतिथिसत्कार का भार** सौंपते हैं।
- आश्रम से उसका विशेष लगाव है, आश्रमीय चोटिल मृग को वह इङ्गुदी का तेल लगाती है, उसे श्यामाक चावल की मुट्ठियाँ भर-भर कर खिलाती है।

  यस्य त्वया व्रणविरोपणमिङ्गुदीनाम्.......(अङ्क 4-14)
- शकुन्तला गर्भमन्थरा मृगवधू के सुखप्रसव का समाचार भेजने के लिए पिता कण्व से कहती है। **(अङ्क-4)।**

महर्षि कण्व

परिचय –

- आश्रम के कुलपति।
- शार्ङ्गरव, शारद्वत, नारद, हारीत, वैखानस आदि के गुरु।
- शकुन्तला के पालक पिता।
- 'काश्यप' नाम से नाटक में वर्णित।
- श्रौतविधि से अग्निहोत्र करने वाले एक ऋषि/साधक/तपस्वी।

चारित्रिक विशेषतायें

1. त्रिकालज्ञ नैष्ठिक ब्रह्मचारी।
2. तपस्वी एवं साधक
3. अत्यन्त दयालु, स्नेही एवं धार्मिक।
4. लौकिकव्यवहार में निपुण/लोकाचारज्ञाता/लौकिकज्ञ।
5. आध्यात्मिक प्रभावशाली व्यक्तित्त्व/सिद्धपुरुष।
6. वात्सल्यपूर्ण आदर्श पिता।
7. भविष्यवक्ता।
8. सहृदयता।

महर्षिकण्व के चारित्रिक गुण एवं कार्य

- कण्व का तपोबल असाधारण है, वे वर्तमान, भूत और भविष्य को जानने वाले हैं। **''तपःप्रभावात् प्रत्यक्षं सर्वमेव तत्रभवतः'' (अङ्क-7)**
- कण्व को ज्ञात है कि शकुन्तला पर विपत्ति आएगी, अतः उसके निवारणार्थ वे सोमतीर्थ जाते हैं। **''दैवमस्या प्रतिकूलं शमयितुं सोमतीर्थं गतः'' (अङ्क-1)**

➤ आकाशवाणी द्वारा कण्व को ज्ञात होता है कि दुष्यन्त का तेज (वीर्य) शकुन्तला के गर्भ में पल रहा है, वे इन दोनों के इस गान्धर्वविवाह से सहर्ष सहमत होते हैं। **''दुष्यन्तेनाहितं तेजो......''** **(अङ्क-4/4)**
➤ उनके तपःप्रभाव के कारण शकुन्तला की विदाई के समय वृक्ष आभूषण और रेशमी वस्त्र आदि देते हैं – **''क्षौमं केनचिदिन्दुपाण्डुतरुणा....।''** **(अङ्क-4/5)**
➤ शकुन्तला के प्रति उनका प्रेम निःस्वार्थ है, उसकी विदाई के समय वे सगे माता-पिता के समान व्याकुल होते हैं– **''यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं......।''** **(अङ्क 4/6)** **''शममेष्यति मम शोकः......।''** **(अङ्क 4-21)**
➤ ऋषि होते हुए भी लौकिकव्यवहार को अच्छी तरह जानते हैं। **''वनौकसोऽपि सन्तो लौकिकज्ञा वयम्।''** (अङ्क-4)
➤ ससुराल जाती हुई पुत्री शकुन्तला को सुन्दर उपदेश देते हैं– **''शुश्रूषस्व गुरून् कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीजने।''** **(अङ्क 4-18)**
➤ कण्व द्वारा शार्ङ्गरव के माध्यम से राजा दुष्यन्त को दिया गया सन्देश उनके लौकिकज्ञान की पराकाष्ठा को सूचित करता है – **''अस्मान् साधु विचिन्त्य संयमधनान्।''** **(अङ्क 4-17)**
➤ वे शकुन्तला के साथ अनसूया और प्रियंवदा को हस्तिनापुर नहीं भेजते, क्योंकि उन दोनों का भी विवाह करना है। विवाहिता के साथ कुमारी कन्याओं को भेजना अनुचित समझते हैं।
➤ कण्व शकुन्तला से कहते हैं कि राजा दुष्यन्त के पास पहुँचने पर वहाँ के कार्यों में व्यस्त होकर तुम मेरे विरह दुःख को भूल जाओगी – **''मम विरहजां न त्वं वत्से शुचं गणयिष्यसि''** **(अङ्क 4-19)**
➤ वे कन्या को विदा करके तनावमुक्त जीवन का अनुभव करते हैं – **''अर्थो हि कन्या परकीय एव।''** **(अङ्क 4-22)**
➤ कण्व अपने धर्म, तपस्या, यज्ञ आदि के अनुष्ठान में लगे रहते हैं, और विभिन्न तीर्थस्थानों की यात्रा करते हैं।
➤ अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में ही कण्व का प्रवेश होता है, किन्तु सम्पूर्ण नाटक में उनका प्रभाव परिलक्षित होता है।
➤ अभिज्ञानशाकुन्तलम् चतुर्थ अङ्क के कुल 22 श्लोकों में से 14 प्रसिद्ध श्लोक महर्षि कण्व (काश्यप) के द्वारा कहे गए हैं –

- यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं.............. **(4-6)**

(चार प्रसिद्ध श्लोकों में से एक)

- ययातेरिव शर्मिष्ठा भर्तुर्बहुमता भव...... **(4-7)**
- अमी वेदिं परितः क्लृप्तधिष्ण्याः। **(4-8)**
- पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलम्। **(4-9)**

(चार प्रसिद्ध श्लोकों में से एक)

- अनुमतगमना शकुन्तला। **(4-10)**
- सङ्कल्पितं प्रथममेव मया तवार्थे। **(4-13)**
- यस्य त्वया व्रणविरोपणमिङ्गुदीनाम्। **(4-14)**
- उत्पक्ष्मणोर्नयनयोरूपरुद्धवृत्तिम्। **(4-15)**
- अस्मान् साधु विचिन्त्य संयमधनान्। **(4-17)**

(चार प्रसिद्ध श्लोकों में से एक)

- शुश्रूषस्व गुरून् कुरु प्रियसखीवृत्तिं....। **(4-18)**

(चार प्रसिद्ध श्लोकों में से एक)

- अभिजनवतो भर्तुः श्लाघ्ये स्थिता गृहिणीपदे। **(4-19)**
- भूत्वा चिराय चतुरन्तमहीसपत्नी। **(4-20)**
- शममेष्यति मम शोकः कथं नु वत्से.....। **(4-21)**
- अर्थो हि कन्या परकीय एव। **(4-22)**

➤ अभिज्ञानशाकुन्तलम् चतुर्थ अङ्क के **प्रसिद्ध चारों श्लोक महर्षि कण्व** (काश्यप) द्वारा कहे गये हैं।
➤ अनसूया, प्रियंवदा एवं शकुन्तला तीनों कण्व को **तात** (पिता) कहकर पुकारती हैं।

अनसूया एवं प्रियंवदा

परिचय –

➤ अनसूया और प्रियंवदा दोनों शकुन्तला की प्रिय सखियाँ।
➤ कण्वाश्रम में शकुन्तला के साथ निवास।

दोनों सखियों की चारित्रिक विशेषतायें

- सुन्दररूप एवं समान आयु।
- तपोवन-निवासिनी।
- सामान्य व्यवहारज्ञान से परिचित।
- कामशास्त्र से परिचित।
- आदर्श–सखियाँ।
- शकुन्तला की हितैषिणी।
- सौन्दर्यशालिनी।
- लोकव्यवहारज्ञाता।
- अतिथिसत्कार-निपुणा।
- परिहास/विनोदप्रिया।
- तर्कशीला।
- प्रकृतिप्रेमिका।
- आश्रमप्रिया।
- पारस्परिक स्नेह एवं आत्मीयता।

चारित्रिक गुण एवं कार्य

➤ दोनों सखियाँ शकुन्तला की समवयस्का हैं, और सौन्दर्य में लगभग उसके समान ही हैं – **''अहो समवयोरूपरमणीयं भवतीनां सौहार्दम्।''** (अङ्क-1)
➤ राजा दुष्यन्त तीनों सखियों के परस्पर सौहार्दभाव, समान अवस्था एवं सौन्दर्य की प्रशंसा करता है – **''अहो मधुरमासां दर्शनम्''** (अङ्क-1)
➤ दोनों सखियाँ शकुन्तला के व्यक्तित्व की प्रतिच्छाया सी प्रतीत होती हैं, इनको पृथक् कर शकुन्तला के अस्तित्व एवं व्यक्तित्व की कल्पना कठिन है।
➤ यदि शकुन्तला आश्रमाकाश की चन्द्रलेखा है, तो सखीद्वय तदनुगामी विशाखानक्षत्र **''किमत्र चित्रं यदि विशाखे शशाङ्करेखामनुवर्तेते।''** (अङ्क-3)
➤ प्रथम अङ्क से लेकर चतुर्थ अङ्क तक शकुन्तला के साथ दोनों सखियाँ उपस्थित रहती हैं।
➤ अनसूया एवं प्रियंवदा – ये दोनों पात्र महाकवि कालिदास की नाट्यप्रतिभा की निजी कल्पना से प्रादुर्भूत हैं।
➤ सौन्दर्य में शकुन्तला सबसे अधिक सुन्दर है, परन्तु आयु में अनसूया सबसे बड़ी ज्ञात होती है।
➤ सखियों में परस्पर घनिष्ट प्रेम है, तीनों ही एक दूसरे को सदा सुखी देखना चाहती हैं।

- दोनों सखियों का नाम सार्थक है। अनसूया **(न असूया इति अनसूया)** सभी के प्रति ईर्ष्या द्वेषादि से सर्वथा रहित है, तथा प्रियंवदा **(प्रियं वदति इति प्रियंवदा)** सदा प्रिय मधुर बोलने वाली है।
- सुख दुःख–दोनों में सदा शकुन्तला के साथ रहती हैं, और सर्वदा उसका हितचिन्तन करती हैं।
- तृतीय अङ्क में शकुन्तला को अस्वस्थ देखकर राजा दुष्यन्त से मिलाने का प्रयास करती हैं।
- दोनों सखियाँ कर्मठ, कार्यदक्ष और बुद्धिमती हैं, दोनों आश्रम के वृक्षों को उत्साहपूर्वक सींचती हैं।
- चतुर्थ अङ्क में शकुन्तला की विदाई के समय दोनों उसका शृङ्गार करती हैं।
- तृतीय अङ्क में अपनी बुद्धिमत्ता से राजा दुष्यन्त से यह वचन लेती हैं कि वह शकुन्तला को सदा सुखी रखेगा – **''परिग्रहबहुत्वेऽपि......सखी च युवयोरियम्।''** (अङ्क 3/17)
- दोनों सखियाँ शिष्ट, विनीत, मधुरभाषिणी और वाक्चतुर हैं, प्रथम अङ्क में राजा से मिलने पर अनसूया उनका परिचय पूछती है – **''कतम आर्येण राजर्षिवंशोऽलंक्रियते।''** (अङ्क-1)
- शकुन्तला के प्रति दुर्वासा के भीषण शाप को सुनकर दोनों का हृदय विदीर्ण हो जाता है, शापनिवृत्ति के लिए पूरा प्रयास करती हैं, तथा अपनी प्रियसखी शकुन्तला को कुछ भी नही बताती हैं।
- दोनों सखियाँ शकुन्तला से निःस्वार्थ प्रेम करती हैं, उसे सब प्रकार से सुखी और प्रसन्न रखना चाहती हैं। शकुन्तला जब कामज्वर से ग्रस्त होती है, तब कमलनाल, कमलपत्र और चन्दनादि के लेप से उसका उपचार करतीं हैं।
- दोनों सखियों के लिए शकुन्तला का संयोग जितना मधुर है, उतना ही वियोग दुःखदायी।
- राजा दुष्यन्त उनके आतिथ्यसत्कार, लोकव्यवहार, एवं मधुरभाषण से प्रसन्न होता है – **''भवतीनां सुनृतयैव गिरा कृतमातिथ्यम्।''** (अङ्क-1)
- अनसूया स्वभाव से वाग्विदग्ध, व्यवहारकुशल एवं प्रौढ है, राजा दुष्यन्त जब आश्रम में प्रवेश करता है, तो अनसूया ही उससे वार्तालाप प्रारम्भ करती है – **''आर्य, न खलु किमप्यत्याहितम् इयं नौ प्रियसखी मधुकरेणाभिभूयमाना कातरीभूता।''** (अङ्क-1)
- अनसूया राजा दुष्यन्त से उनका परिचय पूछती है, और अपनी सखी शकुन्तला के जन्म एवं माता-पिता के विषय में राजा से बताती है – **''शृणोत्वार्य अस्ति कोऽपि कौशिक इति गोत्रनामधेयो महाप्रभावो राजर्षिः।''** (अङ्क-1)
- प्रियंवदा, अनसूया की अपेक्षा अधिक विनोदप्रिया एवं चपल है। शकुन्तला जब अनसूया से अपने वल्कलों को ढीला करने को कहती है तो प्रियंवदा परिहास करती है कि मुझे उलाहना न देकर पयोधरविस्तारी अपने यौवन को उलाहना दो – **''अत्र पयोधरविस्तारयितृ आत्मनो यौवनमुपालभस्व।''** (अङ्क-1)
- शकुन्तला द्वारा वनज्योत्सना और आम्रवृक्ष की युगलजोड़ी को स्नेहदृष्टि से देखने पर प्रियंवदा मजाक करती है कि तुम भी इसी तरह अपने अनुकूल वर को प्राप्त करने की सोच रही हो – **''यथा वनज्योत्स्नाऽनुरूपेण पादपेन सङ्गता..... अहमप्यात्मनोऽनुरूपं वरं लभेयेति।''** (अङ्क-1)
- अनसूया में प्रियंवदा की अपेक्षा धैर्य तथा गाम्भीर्य अधिक है। दुर्वासा के शाप को सुनकर जब प्रियंवदा सहसा घबड़ा जाती है – **''हा धिक्, हा धिक् अप्रियमेव संवृत्तम्''** किन्तु अनसूया उसे धैर्यपूर्वक दुर्वासा को मनाने के लिए कहती है – **''गच्छ, पादयोः प्रणम्य निवर्तयैनम्।''** (अङ्क-4)
- प्रियंवदा चपलतावश इस दारुण शापवृत्तान्त को शकुन्तला से कहीं बता न दें इसके लिए अनसूया उसको मना करती है – **''प्रियंवदे! द्वयोरेव नौ मुख एष वृत्तान्तस्तिष्ठतु''**।
- प्रियंवदा के मन में यह शंका उठती है कि पिता कण्व गान्धर्वविवाह के वृत्तान्त को सुनकर न जाने क्या सोचेगें – **''तात इदानीमिमं वृत्तान्तं श्रुत्वा न जाने किं प्रतिपत्स्यत इति''** (अङ्क-4) तो अनसूया अपने विवेक बुद्धि का परिचय देती हुई कहती है कि – **''यथाऽहं पश्यामि तथा तस्यानुमतं भवेत्। गुणवते कन्यका प्रतिपादनीया इत्ययं तावत् प्रथमः संकल्पः।''**
- अनसूया शकुन्तला के भविष्य के प्रति चिन्तित रहती है, वह किसी भी विषय पर सम्यक् उहापोह और विचार-विमर्श करती है। वह चिन्तित है कि राजा दुष्यन्त अपने नगर हस्तिनापुर पहुँचने के बाद शकुन्तला के साथ किये गये गान्धर्व विवाह को स्मरण करेगा या नहीं – **''अद्य स राजर्षिः इतोगतं वृत्तान्तं स्मरति वा न वेति।''** (अङ्क-4)
- प्रियंवदा निःशङ्क और निश्चिन्त स्वभाव वाली है। उसे पूरा विश्वास है कि सुन्दर आकृति वाला दुष्यन्त गुणरहित नहीं हो सकता – **''न तादृशा आकृतिविशेषा गुणविरोधिनो भवन्ति''** (अङ्क-4)
- अनसूया भविष्य के प्रति सचेष्ट और व्यावहारिक बुद्धिवाली है। तृतीय अङ्क में वह राजा से यह वचन लेती है कि अनेक रानियों के बीच शकुन्तला की उपेक्षा न करें। **''वयस्य बहुवल्लभाः राजानः श्रूयन्ते''।** राजा उनकी प्रियसखी शकुन्तला को गौरवपूर्ण स्थान देने का आश्वासन देता है।
- शकुन्तला की विदाई के अवसर पर उसे सजाने के लिए अनसूया आम की डाल पर नारियल के डिब्बे में केसरमालिका को रखे रहती है।
- अनसूया, प्रियंवदा की अपेक्षा तात कण्व के अधिक निकट है, वह पिता के स्वभाव तथा विचारों को ठीक से जानती है, तात कण्व भी शकुन्तला की विदाई के अवसर पर अनसूया को ही बारम्बार सम्बोधित करते हैं।
- प्रियंवदा प्रणयव्यापार के स्वरूप को अच्छी प्रकार जानती है। शकुन्तला और दुष्यन्त के प्रेम में वह सूत्रधार का कार्य करती है। तृतीय अङ्क में शकुन्तला की अस्वस्थता के मूल कारण को प्रियंवदा ठीक से समझती है और उसके उपाय के रूप में शकुन्तला को मदनलेख (प्रेमपत्र) लिखने की प्रेरणा भी

प्रियंवदा देती है, और उस प्रेमपत्र को फूलों में छिपाकर देवता के प्रसाद के बहाने राजा तक पहुँचाने का कार्य भी उसी के द्वारा सम्पन्न होता है।

- अनसूया अतिथि सत्कार करने में निपुण है, राजा दुष्यन्त के आश्रम आने पर वह शकुन्तला से कहती है–''**हला शकुन्तले, गच्छोटजम्। फलमिश्रमर्घमुपहर।**''
- श्राप को सुनकर प्रियंवदा दुर्वासा के समीप जाकर शकुन्तला की मङ्गलकामना हेतु क्षमायाचना करती है। (अङ्क-4)
- अनसूया विचारशील और मितभाषिणी है, वह हँसी, मजाक की बातों में विशेष भाग नहीं लेती। वह सशङ्कवृत्ति की है, सहसा किसी बात पर विश्वास नहीं करती। जबकि प्रियंवदा शीघ्र विश्वास करने वाली, परिहासप्रिया एवं वाक्पटु है।
- अनसूया भविष्य के सुख की विशेष चिन्ता करती है, प्रियंवदा वर्तमान को विशेष महत्त्व देती है।
- अनसूया अधिक व्यवहारिक, धीर और परिपक्व बुद्धि की है जबकि प्रियंवदा भावुक एवं चञ्चल है।

विदूषक (माधव्य)

परिचय –

- राजा दुष्यन्त का अन्तरङ्ग मित्र।
- हास्यरस का एक पात्र।
- 'माधव्य' नामक एक ब्राह्मण।

चारित्रिक विशेषतायें

- भोजनपटु।
- डरपोक एवं अकर्मण्य।
- राजा का परमप्रिय मित्र एवं परामर्शदाता।
- भीरु एवं सरल स्वभाव।

विदूषक का लक्षण

कुसुमवसन्ताद्यभिधः कर्मवपुर्वेषभाषाद्यैः।
हास्यकरः कलहरतिर्विदूषकः स्यात् स्वकर्मज्ञः।

विदूषक स्वामिभक्त, मनोविनोद में निपुण, कुपित नायिकाओं को मनाने वाला, एवं सच्चरित्र होता है। वह अपने ऊँटपटाँग कार्यों, विकृत अङ्गों तथा वेषभूषादि के द्वारा हास्य का वातावरण प्रस्तुत करता है। वह नायक का विश्वासपात्र तथा उसके प्रणय सम्बन्धी क्रियाकलापों में सहायता पहुँचाता है।

विदूषक (माधव्य) के गुण एवं कार्य

- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के विदूषक (माढव्य) का सर्वप्रथम दर्शन द्वितीय अङ्क में होता है।
- विदूषक माधव्य भोजनप्रिय एवं पेटू है। राजा दुष्यन्त शकुन्तला के प्रणयव्यापार में उनसे सहायता करने के लिए कहता है तो वह ''**किं मोदकखण्डिकायाम्**'' कहकर अपनी पेटपूजा पटुता का परिचय देता है।
- इसी प्रकार षष्ठ अङ्क में राजादुष्यन्त शकुन्तला के वियोग में अँगूठी से उपालम्भ देते हैं किन्तु विदूषक को वहाँ भी बुभुक्षा पीड़ित करती है– ''**कथं बुभुक्षया खादितव्योऽस्मि**'' (अङ्क-6)
- वह स्वभाव से अत्यन्त भीरु एवं डरपोक है। शकुन्तला के दर्शन हेतु वह भी उत्सुक था, पर जब वह राक्षसों का वृत्तान्त सुनता है, तब डर जाता है। (अङ्क-2)
- राजा के मृगयाव्यसन के कारण उसको विश्राम का तनिक भी अवसर प्राप्त नहीं होता है, इससे वह अत्यन्त दुःखी है–'**एतस्य मृगयाशीलस्य राज्ञो वयस्यभावेन निर्विण्णोऽस्मि।**'' (अङ्क-2)
- विदूषक अपने प्रत्येक क्रियाकलाप एवं भावभङ्गिमा से सभी को हँसाता है। जब राजा दुष्यन्त के सामने एक ही साथ ऋषियों की यज्ञरक्षा तथा माता की आज्ञा से राजधानी लौटने के दो कार्य उपस्थित होते हैं, तो विदूषक राजा से कहता है कि – ''**त्रिशङ्कुरिवान्तरा तिष्ठ।**'' (अङ्क-2)
- विदूषक यत्र तत्र अपनी मन्दबुद्धिता का भी परिचय देता है, परन्तु वैसे बहुत चतुर है। षष्ठ अङ्क में राजा के द्वारा आम्रमञ्जरी को मदनबाण कहने पर वह काष्ठदण्ड लेकर मारने दौड़ता है। उसकी मूर्खता पर खिन्न राजा भी हँस पड़ता है।
- विदूषक सरलहृदय का व्यक्ति है, राजा को सन्देह हुआ कि यह राजधानी में जाकर कहीं हमारे प्रणयप्रसङ्ग की चर्चा हमारी रानियों से न कर दे, अतः राजा दुष्यन्त ने उससे कहा कि वे सब मजाक की बातें हैं।
  ''**परिहासविजल्पितं सखे न परमार्थेन गृह्यतां वचः**'' (अङ्क-2)
- विदूषक राजा की इस बात को सच मान लेता है और रानियों से इसकी कोई चर्चा नहीं करता है।
- रानी वसुमती के आने पर वह शकुन्तला का चित्र लेकर भाग जाता है, और राजा को वसुमती के क्रोध से बचाता है।
- पञ्चम अङ्क के प्रारम्भ में रूठी रानी हंसपदिका को मनाने के लिए राजा विदूषक को ही भेजता है।
- षष्ठ अङ्क में इन्द्र का सारथि मातलि विदूषक को पीटता है जिससे राजा का क्रोध प्रस्फुटित होता है। तभी राजा दानवों के वधार्थ स्वर्ग को जाता है।
- वह राजा को समय-समय पर सान्त्वना देता है, उसका मनोरञ्जन करता है, और उचित परामर्श भी देता है। (अङ्क-6)

गौतमी

- **परिचय** – ऋषि कण्व की धर्मभगिनी
- कण्वाश्रम की सर्वाधिक वृद्धा तपस्विनी/वरिष्ठ महिला
- आश्रम की व्यवस्थापिका/अध्यक्षा

चारित्रिक विशेषताएँ –

- सम्मानित महिला
- वरिष्ठ तपस्विनी
- बुद्धिमती
- व्यवहारकुशल एवं लोकव्यवहार की ज्ञाता
- अभिभाविका
- अतीव सरल एवं निच्छल व्यक्तित्त्व
- ममतामयी एवं वात्सल्य की प्रतिमूर्ति

चारित्रिक गुण एवं कार्य

- महर्षि कण्व का गौतमी के प्रति सम्मानभाव है, इसीलिए शकुन्तला के साथ उसे हस्तिनापुर तक भेजा जाता है।
- गौतमी में अवस्थानुरूप गाम्भीर्य, सहिष्णुता एवं विवेकशीलता दृष्टिगोचर होती है, राजदरबार में दुष्यन्त जब शकुन्तला के साथ अपने सम्बन्ध को अस्वीकार कर देता है, तब वह शकुन्तला का घूँघट हटाकर स्वयं उसे अपने सम्बन्ध को प्रमाणित करने का आदेश देती है।
- गुरुजनों तथा बन्धु-बान्धवों से पूछे बिना दुष्यन्त एवं शकुन्तला के प्रेम सम्बन्धों को वह अनुचित मानती है।
- शकुन्तला के प्रति उसका हृदय माँ की वात्सल्यमयी ममता से ओतप्रोत है। वह उसे पुत्रीवत् स्नेह करती है। राजा दुष्यन्त द्वारा अस्वीकार कर दिये जाने पर शकुन्तला जब शार्ङ्गरव आदि के पीछे-पीछे आने लगती है तो उस समय गौतमी का वात्सल्यभाव जाग उठता है – **वत्स शार्ङ्गरव, अनुगच्छतीयं खलु नः**
  करुणपरिदेविनी शकुन्तला.......किं वा मे पुत्रिका करोतु।'' (अङ्क 5)
- कण्व के आश्रम में गौतमी अभिभावक की महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है, तापसकन्याओं की देखरेख का उत्तरदायित्व उसी का है।
- प्रथम अङ्क में प्रियंवदा के परिहास से परेशान हुई शकुन्तला गौतमी से शिकायत करने को कहती है –
  इयम् असम्बद्धप्रलापिनी....गौतम्यै निवेदयिष्यामि (अङ्क-1)
- शकुन्तला की अस्वस्थता का समाचार सुनकर गौतमी शान्तिजल लेकर उसके ऊपर छिड़कती है और वात्सल्यभाव से पूछती है–
  'जाते, लघुसन्तापानि तेऽङ्गानि' (अङ्क-3)
- शकुन्तला की विदाई में विलम्ब होता देख गौतमी महर्षिकण्व से भी वापस लौट जाने का निवेदन करती है –
  जाते, परिहीयते गमनवेला....निवर्ततां भवान्। (अङ्क-4)
- कण्व द्वारा शकुन्तला को उपदेश दिये जाने पर गौतमी उसे ठीक से स्मरण करने को कहती है –
  जाते, एतत् खलु सर्वमवधारय। (अङ्क-4)
- गौतमी शकुन्तला को सर्वदा, **'वत्से', 'जाते', 'पुत्रि'** आदि यही सम्बोधन करती है इससे शकुन्तला के प्रति उसका अगाध स्नेह स्वयं व्यक्त होता है।
- शकुन्तला को छोटी-छोटी व्यवहार और शिष्टाचार की बातें भी गौतमी बताती हैं, विदाई के समय कण्व ऋषि के आने पर शकुन्तला को प्रणाम करने को कहती है।
  ''आचारं तावत् प्रतिपद्यस्व'' (अङ्क-4)
- कण्व द्वारा पुत्री शकुन्तला के लिए चक्रवर्ती पुत्र प्राप्त करने का आशीर्वाद सुनकर गौतमी अत्यन्त प्रसन्न होकर कहती है – यह तो केवल आशीर्वाद नहीं, अपितु वरदान है।
  भगवन्, वरः खल्वेषः, नाशीः (अङ्क-4)
- आश्रम की संरक्षिका, व्यवस्थापिका, अध्यक्षा या वरिष्ठ तपस्विनी के रूप में गौतमी का सम्मान सभी आश्रमवासी करते हैं। शकुन्तला को हस्तिनापुर ले जाने के लिए शार्ङ्गरव आदि को गौतमी ही आदेश देती है –
  'गौतमि, आदिश्यन्तां शार्ङ्गरवमिश्राः शकुन्तलानयनाय' (अङ्क-4)

शार्ङ्गरव और शारद्वत

- **परिचय** – शार्ङ्गरव और शारद्वत दोनों कण्व ऋषि के शिष्य।

चारित्रिक गुण एवं कार्य

- कण्व ऋषि इनके नाम के साथ आदरसूचक 'मिश्र' शब्द का प्रयोग करते हैं –
  'आदिश्यन्तां शार्ङ्गरवमिश्राः' (अङ्क-4)
  'क्व ते शार्ङ्गरवमिश्राः' (अङ्क-4)
- दोनों परिपक्व आयु वाले तथा विद्यानिष्णात हैं।
- गुरु कण्व का इन दोनों के ऊपर अटूट विश्वास है, तभी तो उनकी देखरेख में शकुन्तला को पतिगृह (हस्तिनापुर) भेजते हैं।
- राजा दुष्यन्त इन दोनों के गरिमामय व्यक्तित्व को देखकर उन्हें गुरु समान कहता है –

''गुरुशिष्ये गुरुसमे'' – (अङ्क-6)

- शास्त्रज्ञान के साथ ही साथ इन दोनों ऋषियों में लौकिकज्ञान भी विद्यमान है।
- शकुन्तला की विदाई के समय मार्ग में सरोवर को देखकर शार्ङ्गरव महर्षि कण्व से लौट जाने को कहता है –
  ''भगवन् ओदकान्तं स्निग्धो जनोऽनुगन्तव्य इति श्रूयते। तदिदं सरस्तीरम्......।'' (अङ्क-4)
- दोनों ऋषियों को आश्रम के जीवन से प्रेम है और नगर जीवन से घृणा।
- हस्तिनापुर नगर में प्रवेश करते समय एक ओर जहाँ शार्ङ्गरव राजभवन को अग्नि की लपटों से घिरा हुआ समझता है –
  'जनाकीर्णं मन्ये हुतवहपरीतं गृहमिव' (अङ्क-5)
- वहीं दूसरी ओर शारद्वत नगर के भोगासक्त लोगों को उसी प्रकार समझता है, जिस प्रकार स्नात व्यक्ति तैलासिक्त को, पवित्र व्यक्ति अपवित्र को, प्रबुद्ध व्यक्ति सोये हुए को, और स्वच्छन्दचारी व्यक्ति बन्धनयुक्त को समझता है –
  ''अभ्यक्तमिव स्नातः शुचिरशुचिमिव'' (अङ्क-5/11)
- इन दोनों में शार्ङ्गरव अधिक आयु का है, ऋषि कण्व को उस पर अधिक विश्वास है, अतः राजा दुष्यन्त के लिए **(अस्मान् साधु विचिन्त्य संयमधनान्----अङ्क-4.17)** रूपी संदेश उसी को देते हैं। शार्ङ्गरव ही शकुन्तला के साथ हस्तिनापुर जाने वाले दल का नेता है, जबकि ऋषि शारद्वत उससे छोटा और शान्तस्वभाव का है।
- शार्ङ्गरव, शारद्वत की अपेक्षा अधिक वाक्पटु एवं लौकिक व्यवहार का ज्ञाता है, जबकि शारद्वत मितभाषी है। उसके विचार दार्शनिक हैं, उसमें दूसरों के प्रति सहानुभूति है।
- शार्ङ्गरव बहुत बोलने वाला, क्रोधी, असहिष्णु, कठोर और अशान्त प्रकृति का है। वह अपने नाम को चरितार्थ करता है, क्योंकि शार्ङ्गरव का शाब्दिक अर्थ है – **'धनुष के समान शब्द करने वाला।'** राजा दुष्यन्त जब शकुन्तला को नहीं पहचानता और विवाह को अस्वीकार कर देता है, तो वह उसे शठ, अधार्मिक और ऐश्वर्योन्मत्त आदि कहकर फटकारता है –
  ''मूर्च्छन्त्यमी विकाराः प्रायेणैश्वर्यप्रमत्तेषु।'' (अङ्क-5/18)
- शार्ङ्गरव अत्यन्त निर्भय एवं स्पष्टवादी है। दुष्यन्त जब अपने आपको शकुन्तला का पति नहीं मानता, तो शार्ङ्गरव उसे चोर तक कहता है – **''पात्रीकृतो दस्युरिवासि येन'' अङ्क-(5/20)**
- शारद्वत मितभाषी, अक्रोधी, सहिष्णु तथा शान्त प्रकृति का है, जब राजा दुष्यन्त और शार्ङ्गरव का विवाद उग्र रूप धारण करता है, तब वही उसे शान्त करता है –
  ''शार्ङ्गरव, विरम त्वमिदानीम्'' (अङ्क-5)
- शारद्वत राजा दुष्यन्त से अन्ततः कहता है कि शकुन्तला तुम्हारी पत्नी है, तुम इसे रखो या छोड़ो, हम लोग जाते हैं –
  ''तदेषा भवतः कान्ता, त्यज वैनां गृहाण वा'' (अङ्क-5)
- शार्ङ्गरव व्यवहारकुशल नहीं है, वह राजा से झगड़े को बढ़ाता है, जबकि शारद्वत अत्यन्त व्यवहारिक है वह झगड़े को निपटाता है। शारद्वत के कारण ही विवाद शान्त हुआ।
- दुष्यन्त के अपमानजनक व्यवहार से दुखी शकुन्तला जब रोने लगती है, तब शार्ङ्गरव उसे डाँटता है –
  ''अतः परीक्ष्य कर्त्तव्यं विशेषात् सङ्गतं रहः'' (अङ्क-5/24)
- जब दरबार में शकुन्तला को छोड़कर गौतमी सहित दोनों शिष्य आश्रम लौटने लगते हैं, तब शकुन्तला भी उनके पीछे-पीछे लौटने लगती है, तभी शार्ङ्गरव पुनः शकुन्तला को कठोर शब्दों में डाँटता है– **''किं पुरोभागे, स्वातन्त्र्यमवलम्बसे'' (अङ्क-5)**

अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में प्रयुक्त छन्द एवं अलङ्कार

क्र.	श्लोक (वक्ता)	छन्दः	अलङ्कारः
1.	**विचिन्तयन्ती यमनन्यमानसा.......।** (ऋषि दुर्वासा) (4-1) नेपथ्य से	**वंशस्थ** (प्रत्येक चरण में 12 वर्ण)	● काव्यलिङ्ग, उपमा, और श्लेष अलङ्कार।
2.	**यात्येकतोऽस्तशिखरं पतिरोषधीनाम्.......। (4-2)** (कण्व का शिष्य)	**वसन्ततिलका** (प्रत्येक पाद में 14 वर्ण)	● समासोक्ति, तुल्ययोगिता, यथासंख्य और उत्प्रेक्षा अलंकार।
3.	**अन्तर्हिते शशिनि सैव कुमुद्वती मे।** (4-3) (कण्व का शिष्य)	**वसन्ततिलका** (प्रत्येक पाद में 14 वर्ण)	● समासोक्ति काव्यलिङ्ग, और अर्थान्तरन्यास अलङ्कार ● नाटक में ये तीसरा **पताकास्थानक** है।

क्रम	श्लोक	छन्द	अलङ्कार / विशेष
	कर्कन्धूनामुपरि तुहिनं रञ्जयत्यग्रसन्ध्या.......। (बँगला संस्करण में प्राप्त प्रक्षिप्त श्लोक)	**मन्दाक्रान्ता** (प्रत्येक पाद में 17 वर्ण)	• स्वभावोक्ति अलङ्कार।
	पादन्यासं क्षितिधरगुरोर्मूर्ध्नि कृत्वा सुमेरोः......। (बँगला संस्करण में प्राप्त प्रक्षिप्त श्लोक)	**मन्दाक्रान्ता** (प्रत्येक पाद में 17 वर्ण)	• समासोक्ति, अर्थान्तरन्यास और श्लेष अलङ्कार।
4.	**दुष्यन्तेनाहितं तेजो दधानां भूतये भुवः.....।** (4-4) (छन्दोमयी आकाशवाणी)	**अनुष्टुप् या श्लोकवृत्त** (प्रत्येक पाद में 8 वर्ण)	• उपमा अलंकार • इस श्लोक में मार्ग नामक गर्भसन्धि का अङ्ग है।
5.	**क्षौमं केनचिदिन्दुपाण्डु तरुणा माङ्गल्यमाविष्कृतम्......।** (4-5) (कण्व का शिष्य)	**शार्दूलविक्रीडितम्** (प्रत्येक पाद में 19 वर्ण)	उपमालङ्कार।
6.	**यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया......।** (4-6) (महर्षि कण्व)	**शार्दूलविक्रीडितम्** (प्रत्येक पाद में 19 वर्ण)	• व्यतिरेक अलङ्कार। • **प्रसिद्ध चार श्लोकों में से एक।**
7.	**ययातेरिव शर्मिष्ठा भर्तुर्बहुमता भव।** (4-7) (महर्षि कण्व)	**अनुष्टुप्** (प्रत्येक पाद में 8 वर्ण)	• उपमा अलङ्कार। • इस श्लोक में क्रम नामक गर्भसन्धि का अङ्ग तथा आशीः नामक नाटकीय अलङ्कार है।
8.	**अमी वेदिं परितः क्लृप्तधिष्ण्याः।** (4-8) (महर्षि कण्व)	**त्रिष्टुप् (वैदिक छन्द)** (प्रत्येक पाद में 11 वर्ण)	• परिकर अलङ्कार।
9.	**पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं युष्मास्वपीतेषु या......। (4-9)** (महर्षि कण्व)	**शार्दूलविक्रीडितम्** (प्रत्येक पाद में 19 वर्ण)	• समासोक्ति, और काव्यलिङ्ग अलङ्कार। • **प्रसिद्ध चार श्लोकों में से एक।**
10.	**अनुमतगमना शकुन्तला......।** (4-10) (महर्षि कण्व)	**अपरवक्त्रछन्दः** (प्रथम और तृतीय चरण में 11 वर्ण द्वितीय और चतुर्थचरण में 12 वर्ण)	• परिणाम अलङ्कार।
11.	**रम्यान्तरः कमलिनीहरितैः सरोभिः।** (4-11) (देवताओं की आकाशवाणी)	**वसन्ततिलका** (प्रत्येक पाद में 14 वर्ण)	• परिकर, तुल्योगिता, काव्यलिङ्ग और हेतु अलङ्कार।
12.	**उद्गलितदर्भकवला मृग्यः......।** (प्रियंवदा) (4-12)	**आर्या** (प्रथम पाद में 12 वर्ण)	• उत्प्रेक्षा और समासोक्ति अलङ्कार।
13.	**सङ्कल्पितं प्रथममेव मया तवार्थे....।** (4-13) (काश्यप/कण्व)	**वसन्ततिलका** (प्रत्येक पाद में 14 वर्ण)	• समासोक्ति, तुल्ययोगिता सम और काव्यलिङ्ग, अलङ्कार।
14.	**यस्य त्वया व्रणविरोपणमिङ्गुदीनाम्** (4-14) (काश्यप/कण्व)	**वसन्ततिलका** (प्रत्येक पाद में 14 वर्ण)	• स्वभावोक्ति अलङ्कार।
15.	**उत्पक्ष्मणोर्नयनयोरूपरुद्धवृत्तिम्....।** (4-15) (काश्यप/कण्व)	**वसन्ततिलका।** (प्रत्येक पाद में 14 वर्ण)	• काव्यलिङ्ग अलङ्कार।
16.	**एषापि प्रियेण विना गमयति....।** (4-16) **(अनसूया)**	**आर्या** (प्रथम पाद में 12 वर्ण)	• अर्थान्तरन्यास अलङ्कार।
17.	**अस्मान् साधु विचिन्त्य संयमधनानुच्चैः कुलं चात्मनः....।** (4-17) (काश्यप/कण्व)	**शार्दूलविक्रीडितम्** (प्रत्येक पाद में 19 वर्ण)	• अप्रस्तुतप्रशंसा अलङ्कार। • **प्रसिद्ध चार श्लोकों में से एक।**
18.	**शुश्रूषस्व गुरून् कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीजने....।** (4-18)	**शार्दूलविक्रीडितम्।** (प्रत्येक पाद में 19 वर्ण)	• रूपक, हेतु, और अर्थान्तरन्यास अलङ्कार।

	(काश्यप/कण्व)		• इस श्लोकों में 'उपदिष्ट' नामक नाटकीय लक्षण है।
19.	**अभिजनवतो भर्तुः श्लाघ्ये स्थिता गृहिणीपदे......।** (4-19) (काश्यप/कण्व)	**हरिणी** (प्रत्येक पाद में 17 वर्ण)	**प्रसिद्ध चार श्लोकों में से एक।** • उपमा, समुच्चय और काव्यलिङ्ग अलङ्कार। • कुछ लोग "अस्मान् साधु...." के स्थान पर इसे प्रसिद्ध चार श्लोकों में गिनते हैं।
20.	**भूत्वा चिराय चतुरन्तमहीसपत्नी।** (4-20) (काश्यप/कण्व)	**वसन्ततिलका** (प्रत्येक पाद में 14 वर्ण)	• मालादीपक अलङ्कार। • कुछ लोग "पातुं न प्रथमं....." के स्थान पर इसे भी चार प्रसिद्ध श्लोकों में गिनते हैं।
21.	**शममेष्यति मम शोकः कथं नु.....।** (4-21) (काश्यप/कण्व)	**आर्या जातिः**	काव्यलिङ्ग अलङ्कार।
22.	**अर्थो हि कन्या परकीय एव....।** (4-22) (काश्यप/कण्व)	**इन्द्रवज्रा** (प्रत्येक पाद में 11 वर्ण)	उत्प्रेक्षा अलङ्कार।

➤ अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चारों प्रसिद्ध श्लोक महर्षि कण्व ने कहे हैं।
➤ अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में कुल 22 श्लोक हैं, जिसमें 14 श्लोक महर्षि कण्व के द्वारा बोले गए हैं।
➤ चतुर्थ अङ्क में "**उद्गलितदर्भकवला मृग्यः**" (4.12) इस श्लोक को प्रियंवदा तथा "**एषापि प्रियेण विना गमयति रजनी**" (4.16) इस एक श्लोक को अनसूया बोलती है।
➤ अभिज्ञानशाकुन्तलम् के केवल चतुर्थ अङ्क में महर्षि कण्व का दर्शन होता है।
➤ चतुर्थ अङ्क के बाद अनसूया और प्रियंवदा का वर्णन नहीं मिलता है।

अभिज्ञानशाकुन्तलम् के महत्त्वपूर्ण संवाद/कथन/सूक्तियाँ

क्र.	कथन	भावार्थ	वक्ता
01.	**आत्मनो नगरं प्रविश्यान्तःपुर समागत इतोगतं वृत्तान्तं स्मरति वा न वेति।**	राजा अपने नगर में प्रवेश करके और अन्तःपुर की स्त्रियों से मिलकर यहाँ की बातों को याद करेगा अथवा नहीं।	**अनसूया**
02.	**न तादृशा आकृतिविशेषा गुणविरोधिनो भवन्ति।**	उसप्रकार की सुन्दर आकृतियाँ गुणों से रहित नहीं होती हैं।	**प्रियंवदा**
03.	**गुणवते कन्यका प्रतिपादनीयेत्ययं तावत् प्रथमः संकल्पः।**	गुणवान् व्यक्ति को कन्या देनी चाहिए, यह (माता-पिता का) प्रथम संकल्प होता है।	**अनसूया**
04.	**ननु सख्याः शकुन्तलायाः सौभाग्यदेवताऽर्चनीया**	सखि शकुन्तला के सौभाग्यदेवता (पति) की भी तो पूजा करनी है	**अनसूया**
05.	**सखि, अतिथीनामिव निवेदितम्**	सखी! किसी अतिथि की सी यह आवाज है।	**अनसूया**
06.	**ननूटजसन्निहिता शकुन्तला।**	शकुन्तला तो कुटी पर उपस्थित है ही।	**प्रियंवदा**
07.	**अद्य पुनर्हृदयेनासंनिहिता।**	किन्तु आज वह हृदय से अनुपस्थित है। अर्थात् आज उसका मन कहीं और है।	**अनसूया**
08.	**विचिन्तयन्ती यमनन्यमानसा तपोधनं वेत्सि न मामुपस्थितम्** **(4.1)**	एकाग्रचित्त से जिसका चिन्तन करती हुई तू उपस्थित हुए मुझ तपस्वी को नही देख रही हो।	**दुर्वासा (नेपथ्ये)**
	स्मरिष्यति त्वां न स बोधितोऽपि सन् कथां प्रमत्तः प्रथमं कृतामिव॥ **(4.1)**	वह तेरे स्मरण दिलाने पर भी तुझको स्मरण नहीं करेगा, जैसे उन्मत्त व्यक्ति पहले कही बात को स्मरण नहीं करता है।	**दुर्वासा (नेपथ्ये)**

संस्कृत	हिन्दी अर्थ	वक्ता
09. हा धिक्, हा धिक्। अप्रियमेव संवृत्तं कस्मिन्नपि पूजार्हेऽपराद्धा शून्यहृदया शकुन्तला।	हाय हाय धिक्कार है। अनर्थ हो गया। किसी पूजनीय व्यक्ति के प्रति शून्य हृदयवाली शकुन्तला ने कुछ अपराध कर दिया है।	**प्रियंवदा**
10. न खलु यस्मिन् कस्मिन्नपि। एष दुर्वासाः जिस किसी साधारण व्यक्ति के प्रति नहीं। ये **सुलभकोपो महर्षिः**	तो शीघ्र कुपित हो जाने वाले महर्षि दुर्वासा हैं।	**प्रियंवदा**
11. कोऽन्यो हुतवहाद् दग्धुं प्रभवति।	अग्नि के अतिरिक्त और कौन जला सकता है।	**अनसूया**
12. सखि, प्रकृतिवक्रः स कस्यानुनयं प्रतिगृह्णाति	सखी! स्वभाव से टेढ़े वे महर्षि दुर्वासा किसकी प्रार्थना को स्वीकार करते हैं।	**प्रियंवदा**
13. भगवन्, प्रथम इति प्रेक्ष्याविज्ञाततपः प्रभावस्य दुहितृजनस्य भगवतैकोऽपराधो मर्षयितव्य इति।	भगवन्! आपके तप के प्रभाव को न जानने वाली आपकी पुत्रीजन शकुन्तला का यह पहला अपराध है– यह समझकर आपके द्वारा उसका यह एक अपराध क्षमा कर दिया जाना चाहिए।	**प्रियंवदा**
14. न मे वचनमन्यथा भवितुमर्हति।	मेरा वचन असत्य नहीं हो सकता।	**प्रियंवदा** (दुर्वासा)
15. अभिज्ञानाभरणदर्शनेन शापो निवर्तिष्यत इति मन्त्रयमाण एवान्तर्हितः।	'पहचान के आभूषण को दिखाने से मेरा शाप समाप्त हो जाएगा'–यहकथन को बताती है। कहते कहते ही वे अदृश्य हो गए।	**प्रियंवदा** (दुर्वासा)
16. अस्ति तेन राजर्षिणा संप्रस्थितेन स्वनामधेयाङ्कितमङ्गुलीयकं स्मरणीयमिति स्वयं पिनद्धम्	उस राजर्षि के द्वारा अपने नाम से अङ्कित अँगूठी स्मृति-चिह्न के रूप में शकुन्तला की अंगुली में स्वयं पहनायी गयी थी	**अनसूया**
17. वामहस्तोपहितवदनाऽऽलिखितेव प्रियसखी	बायें हाथ पर मुँह रखी हुई प्रियसखी शकुन्तला चित्रित सी बैठी हुई है।	**प्रियंवदा**
18. भर्तृगतया चिन्तयात्मानमपि नैषा विभावयति। किं पुनरागन्तुकम्।	पति के ध्यान में मग्न होने के कारण उसे अपने आपकी सुध नहीं है, फिर अतिथि की बात ही क्या है?	**प्रियंवदा**
19. प्रियंवदे, द्वयोरेव नौ मुख एव वृत्तान्तस्तिष्ठतु	प्रियंवदा, यह समाचार हम दोनों के मुख तक ही सीमित रहे।	**अनसूया**
20. रक्षितव्या खलु प्रकृतिपेलवा प्रियसखी।	स्वभाव से ही कोमल प्रियसखी शकुन्तला की रक्षा करनी चाहिए। (अन्यथा यह समाचार सुनकर उसे बहुत आघात पहुँचेगा)	**अनसूया**

21. को नामोष्णोदकेन नवमालिकां सिञ्चति
कौन नवमालिका (चमेली)
प्रियंवदा

भला

होने

के विषय में मानो नियंत्रित अर्थात्

वाला

गर्मजल से सींचेगा।

शिक्षित किया जा रहा है।

22. तेजोद्वयस्य युगपद् व्यसनोदयाभ्यां
संसार दो तेजों चन्द्रमा और
कण्व का
लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु।
के एक साथ अस्त एवं उदित
शिष्य

राह

सूर्य

होने

से अपनी दशाओं के परिवर्तित

23. इष्टप्रवासजनितान्यबलाजनस्य दुःखानि
निश्चय ही स्त्रियों को अपने इष्टजन
कण्व का शिष्य
नूनमतिमात्र दुःसहानि (4.3)
(प्रियतमों) के प्रवास से उत्पन्न दुःख
अत्यन्त असह्य होते हैं।

24. तेन राज्ञा शकुन्तलायामनार्यमाचरितम्। राजा

ने शकुन्तला के साथ अशिष्ट

अनसूया

व्यवहार किया है।

25. काम इदानीं सकामो भवतु येनासत्यसन्धे

कामदेव की अब इच्छा पूर्ण हो, जिसने

अनसूया

जने शुद्धहृदया सखी पदं कारिता।

असत्यप्रतिज्ञ व्यक्ति (दुष्यन्त)

ाोे़

प्रति शुद्ध हृदयवाली सखी

शकुन्तला का प्रेम कराया है।

26. दुःखशीले तपस्विजने कोऽभ्यर्थ्यताम्। ाष्ट

सहन करने वाले तपस्वियों में से

अनसूया

ननु सखीगामी दोष इति।

किससे प्रार्थना करें। हमारी सखी पर

दोषा

आयेगा।

45. वत्से, इतः सद्योहुताग्नीन् प्रदक्षिणीकुरुष्व पुत्री!

अभी हवन की गयी

महर्षि कण्व

अग्नि

की इधर से प्रदक्षिणा करो।

46. भगवन्! वरः खल्वेषः नाशीः।

भगवन्! यह तो वरदान है, केवल

गौतमी

आशीर्वाद नही।

47. भो भोः संनिहितास्तपोवनतरवः! हे

समीपस्थ तपोवन के वृक्षों!

महर्षि कण्व

सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं ाही

यह शकुन्तला पति के घर जा

सर्वैरनुज्ञायताम् रही

है, आप सभी लोग अनुमति दें।

48. अनुमतगमना शकुन्तला तरुभिरियं वृक्षों

ने इस शकुन्तला को पतिगृह

महर्षि कण्व

वनवासबन्धुभिः। (4.10) जाने

की अनुमति दे दी है।

49. शान्तानुकूलपवनश्च शिवश्च पन्थाः। इसा

शकुन्तला का मार्ग शान्त और

आकाश भाषित

अनुकूल वायु वाला एवं कल्याण

करने

वाला हो।

50. उद्गलितदर्भकवला मृग्यः

मृगियों ने कुश के ग्रास को

प्रियंवदा

परित्यक्तनर्तना मयूराः। (4.12) उगल

दिया है, मोरों ने नाचना

छोड़

दिया है

51. अपसृतपाण्डुपत्रा मुञ्चन्त्यश्रूणीव लताः। (4.12)

लतायें पीले पत्तों को गिराकर मानों

प्रियंवदा

आँसुओं को छोड़ रही हैं।

52. तात, लताभगिनीं वनज्योत्स्नां हे

पिताजी! मैं अपनी लता-बहिन

शकुन्तला

तावदामन्त्रयिष्ये।

वनज्योत्स्ना से विदाई ले लूँ।

53. अद्यप्रभृति दूरपरिवर्तिनी ते खलु आज

से मैं तुमसे दूर हो जाऊँगी।

शकुन्तला

भविष्यामि

54. अस्यामहं त्वयि च सम्प्रति आबा

मैं इस वनज्योत्स्ना और तुम्हारे विषय

महर्षि कण्व

वीतचिन्तः। मा

निश्चिन्त हो गया हूँ।

55. हला एषा द्वयोर्युवयोर्हस्ते

सखियों, इस लता को तुम दोनों के ही हाथ में

शकुन्तला

निक्षेपः सौंप

रही हूँ।

56. अयं जनः कस्य हस्ते इस जन (हम दोनों) को **दोनों सखियाँ**
समर्पितः।
किसके हाथ में सौंप रही हो।

57. को नु खल्वेष निवसने मे सज्जते? यह कौन मेरे वस्त्र से लिपट रहा है।
शकुन्तला

58. सोऽयं न पुत्रकृतकः पदवीं मृगस्ते पुत्रवत् पाला गया यह मृग तोरा मार्ग नहीं छोड़ रहा है।
महर्षि कण्व

59. वत्स किं सहवासपरित्यागिनीं पुत्र, साथ छोड़कर जाने वाली मुझ (शकुन्तला) को
शकुन्तला
मामनुसरसि।
पीछे-पीछे क्यों आ रहे हो।

60. वाष्पं कुरु स्थिरतया विरतानुबन्धम् (4.15)
अश्रुप्रवाह को धैर्यपूर्वक रोको।
महर्षि कण्व

61. मार्गे पदानि खलु ते विषमी इस ऊबड़-खाबड़ भूमि में
महर्षि कण्व
भवन्ति।
तुम्हारे पैर लड़खड़ा रहे हैं।

62. भगवन्, ओदकान्तं स्निग्धो भगवन्, यात्रा के समय प्रियव्यक्ति को
शार्ङ्गरव
जनोऽनुगन्तव्य इति श्रूयते।
जलाशय तक अनुगमन करना चाहिए–ऐसा सुना जाता है।

63. गुर्वपि विरहदुःखमाशाबन्धः साहयति। आशा का बन्धन असह्य वियोग के दुःख को भी सहन करा देता है।
अनसूया
(4.16)

64. अस्मान् साधु विचिन्त्य संयमधनानुच्चैः संयम रूपी धन वाले हम लोगों को तथा अपने
महर्षि कण्व
कुलं चात्मनः।.... (4.17)
ऊँचे कुल को ध्यान में रखते हुए आप कोई व्यवहार करें।

65. भाग्यायत्तमतः परं न खलु इसके आगे तो भाग्य के अधीन है, वह हम वधू के
महर्षि कण्व
तद्वाच्यं वधूबन्धुभिः (4.17)
सम्बन्धियों को नहीं कहना चाहिए।

66. वनौकसोऽपि सन्तो लौकिकज्ञा वयम् वनवासी होते हुए भी हम लोग लोक व्यवहार को जानने वाले हैं।
महर्षि कण्व

67. न खलु धीमतां कश्चिदविषयो नाम
वस्तुतः विद्वानों को कुछ भी अज्ञात नहीं है।
शार्ङ्गरव

68. शुश्रूषस्व गुरून् कुरु प्रियसखीवृत्तिं गुरुजनों = बड़ों की सेवा करना, सपत्नियों के साथ प्रियसखी जैसा व्यवहार करना।
महर्षि कण्व
सपत्नीजने। (4.18)

69. यान्त्येवं गृहिणीपदं युवतयो वामाः इस प्रकार आचरण करने वाली युवतियाँ
महर्षि कण्व
कुलस्याधयः। (4.18)
गृहलक्ष्मी के पद को प्राप्त कर लेती हैं,

और इसके प्रतिकूल आचरण करने वाली

युवतियाँ कुल के लिए आधि बन जाती हैं।

70. वत्से, इमे अपि प्रदेये। न युक्तमनयोः पुत्री इन दोनों का भी विवाह करना है, इनका वहाँ
महर्षि कण्व
तत्र गन्तुम्।
जाना उचित नहीं है।

71. मम विरहजां न त्वं वत्से शुचं मेरे विरह से उत्पन्न शोक को शीघ्र ही भूल
महर्षि कण्व
गणयिष्यसि। (4.19)
जाओगी।

72. तात, कदा नु भूयस्तपोवनं प्रेक्षिष्ये?
पिताजी मैं फिर कब तपोवन को देखूँगी? अर्थात्

शकुन्तला

आप

मुझे कब बुलायेंगे।

73. अतिस्नेहः पापशङ्की

अत्यधिक प्रेम पाप (अनिष्ट) की आशङ्का **दोनों**

सखियाँ

करता

है।

74. भूत्वा चिराय चतुरन्तमहीसपत्नी.... बहुत

दिनों तक चारों समुद्रों तक फैली हुई पृथ्वी

महर्षि कण्व

शान्ते करिष्यसि पदं पुनराश्रमेऽस्मिन्। (4.20)

सपत्नी अर्थात् राजा की पटरानी होकर अपने

पाति

दुष्यन्त के साथ आश्रम आओगी।

75. शममेष्यति मम शोकः कथं नु वत्से

नीवार को देखते हुए मेरा शोक

महर्षि कण्व

त्वया रचितपूर्वम् (4.21)

कैसे शान्त हो सकेगा।

76. गच्छ! शिवास्ते पन्थानः सन्तु।

जाओ! तुम्हारा मार्ग मंगलमय हो।

महर्षि कण्व

77. तात! शकुन्तलाविरहितं शून्यमिव

पिताजी, शकुन्तला से रहित इस सूने

अनसूया एवं

तपोवनं कथं प्रविशावः।

तपोवन में हम कैसे प्रवेश करें।

प्रियंवदा दोनों सखियाँ

78.

हन्त भोः! शकुन्तलां पतिकुलं

अहा!

शकुन्तला को ससुराल भेजकर

महर्षि कण्व

विसृज्य लब्धमिदानीं स्वास्थ्यम्।

मुझे मानसिक शान्ति प्राप्त हुई।

79. अर्थो हि कन्या परकीय एव। (4.22) कन्या

वस्तुतः दूसरे का ही धन है।

महर्षि कण्व

80. जातो ममायं विशदः प्रकामं

यह हृदय उसी प्रकार अत्यन्त

महर्षि कण्व

प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा (4.22) प्रसन्न

हो रहा है, जिस प्रकार धरोहर को

लौटाने पर धरोहर रखने वाले व्यक्ति

मन प्रसन्न होता है।

अभिज्ञानशाकुन्तलम्- बिन्दुवार अध्ययन

- 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के रचयिता हैं - **कालिदास**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् साहित्य की किस विधा के अन्तर्गत है - **नाटक**
- 'अभिज्ञानशाकुन्तले' कति अङ्काः सन्ति? - **7 (सात)**
- 'शाकुन्तलकथायाः' वास्तव्यमुपजीव्यमस्ति - **महाभारतम्**
- 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' का अङ्गी रस है - **शृङ्गार**
- 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में किस रीति का प्रयोग है - **वैदर्भी रीति का**
- 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' का दुष्यन्त नायक है - **धीरोदात्त**
- महाभारतस्य कस्मात् पर्वणः कथां स्वीकृत्य कालिदासेन 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' विरचितम् - **आदिपर्व से**
- 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' का सर्वप्रथम अंग्रेजी अनुवाद किसने किया? **-विलियमजोन्स ने**
- 'शाकुन्तलम्' की कथा और कहाँ प्राप्त है? - **महाभारत/पद्मपुराण दोनों में**
- महाभारत पर आश्रित नाटक है - **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**
- एक आभरण खो जाने से किस कथा में स्थिति बदल गई है - **अभिज्ञानशाकुन्तलम् में**
- 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में 'अभिज्ञान' शब्द से किसका बोध होता है - **अँगूठी का**
- 'अभिज्ञान' शब्द का अर्थ है - **पहचान**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक का उत्स (मूल) है? - **महाभारतम्**
- शाकुन्तलमङ्गलाचरणे कीदृशः शिवः वर्णितः?- **अष्टमूर्तिः**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् का कथानक - **ऐतिहासिक होने पर भी कुछ परिवर्तित है**
- अभिज्ञानशाकुन्तलस्य जर्मनभाषायां प्रथमः अनुवादकः आसीत्? - **जॉर्जफोस्टरः**
- अभिज्ञानशाकुन्तलस्य नान्दीपाठे वर्णिताऽऽद्या सृष्टिरस्ति - **जलम्**
- 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में शकुन्तला को शाप किसने दिया? - **दुर्वासा**
- 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' नाटक का विदूषक है- **माढव्य**
- दुष्यन्त की मनः स्थिति जानने के लिए मेनका ने अपनी किस सखी को भेजा था - **सानुमती**

- अभिज्ञानशाकुन्तलम् में मातलि कौन है?- **इन्द्र का सारथि**
- एक प्रसिद्ध नाटक में मधुकरिका कौन है? - **दुष्यन्त की परिचारिका**
- दुर्वासा ऋषि के क्रोधित हो जाने पर किसने उन्हें प्रसन्न किया? - **प्रियंवदा**
- अभिज्ञानशाकुन्तल में वेत्रवती है - **प्रतीहारी**
- शर्मिष्ठा के पिता थे - **दानवराजवृषपर्वा**
- सानुमती पात्र किस काव्य में है? - **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**
- शारद्वत पात्र का वर्णन किस नाटक में है? - **अभिज्ञानशाकुन्तले**
- अभिज्ञानशाकुन्तलनाटके नायकः कः वर्तते - **दुष्यन्तः**
- अनसूया किस नाटक में एक पात्र है - **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**
- सर्वदमन किस नाटक का पात्र है - **अभिज्ञानशाकुन्तलस्य**
- राजा दुष्यन्तः कुत्र प्रसिद्धः - **अभिज्ञानशाकुन्तले**
- दुष्यन्तः कस्य ग्रन्थस्य नायकः - **अभिज्ञानशाकुन्तलस्य**
- अभिज्ञानशाकुन्तल में ययाति के किस पुत्र का नाम उल्लिखित है? - **पुरु**
- शकुन्तला की सखी कौन है? - **अनसूया/प्रियंवदा**
- शकुन्तला के साथ राजदरबार तक कौन गयी थी? - **गौतमी**
- किसके आग्रह पर शकुन्तला के प्रति दुर्वासा के शाप में लघुता आयी - **प्रियंवदा**
- दुर्वासा ऋषि के आश्रम में पदार्पण के समय शकुन्तला किसके ध्यान में मग्न थी - **दुष्यन्त के**
- अनसूया और प्रियंवदा हैं - **शकुन्तला की सखियाँ**
- दुर्वासा ऋषि ने शकुन्तला को क्या शाप दिया - **कि तू जिसके ध्यान में बैठी है वो तुझे भूल जाएगा**
- दुर्वासा ऋषि ने शापमोचन किस तरह बताया - **-किसी अभिज्ञान (पहचान) देखने से दुष्यन्त को शकुन्तला का स्मरण हो जाएगा**
- अभिज्ञानशाकुन्तले दुर्वाससः शापः कस्य उदाहरणं भवति - **विष्कम्भकस्य**
- चतुर्थ अङ्क की विषयवस्तु मानवीय जीवन की किस घटना पर आधारित है? - **बेटी की शादी होने पर-विदाई के अवसर की**
- 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' नाटक में वर्णित गौतमी है - **कण्व आश्रम की अध्यक्षा**
- गौतमी कौन थी? -**वृद्धा तापसी**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक में गौतमी है - **तपोवन की अध्यक्षा**
- शार्ङ्गरव पात्र का वर्णन किस नाटक में है- **अभिज्ञानशाकुन्तल**
- 'तपोधनं वेत्सि न मामुपस्थितम्' यहाँ तपोधन शब्द प्रयुक्त हुआ है - **दुर्वासा के लिए**
- 'अस्यामहं त्वयि च सम्प्रति वीतचिन्तः' कः? - **कण्वः**
- शकुन्तला को विदाई का सन्देश दिया - **कण्व ने**
- ''मम विरहजां न त्वं वत्से! शुचं गणयिष्यसि'' यहाँ 'मम' से तात्पर्य है? - **कण्व**
- शकुन्तला की माता कौन थी - **मेनका**
- शकुन्तला-दुष्यन्त के पुत्र का नाम है - **सर्वदमन (भरत)**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् में सखियों ने शापवृत्तान्त सर्वप्रथम किसे सुनाया - **किसी को नहीं**
- दुष्यन्त के साथ शकुन्तला के विवाह की सूचना कण्व को कैसे मिली- - **अशरीरिणी छन्दोमयी वाणी**
- 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' नाटक में वर्णित शार्ङ्गरव है - **कण्व का शिष्य**
- अभिज्ञानशाकुन्तलनाटके मारीचस्य शिष्यः कः अस्ति - **गालवः**
- कण्व ऋषि को इस नाम से भी पुकारते थे? - **काश्यप**
- राजा दुष्यन्त की प्रथम पटरानी थी - **वसुमती**
- 'प्रियंवदा' किस नाटक में है - **शाकुन्तलम्**
- पुरु किसका पुत्र था? - **शर्मिष्ठा**
- मघवतः सकाशात् केन सह मनुष्यलोकमवतरति दुष्यन्तः? - **मातलिना**
- मातलि किस नाटक का पात्र है? - **अभिज्ञानशाकुन्तल**
- महर्षि कण्व किनके साथ शकुन्तला को पतिगृह भेजते हैं - **गौतमी, शार्ङ्गरव, शारद्वत**
- कालिदास ने 'सुलभकोपो महर्षिः' किसे कहा है- **दुर्वासा को**
- शाकुन्तले दुष्यन्तपुत्रस्य प्रथमं नाम किम् आसीत्- **सर्वदमनः**
- 'गण्डकस्योपरि पिण्डकः संवृत्तः' है - **मुहावरा**
- 'सर्वथा चक्रवर्तिनं पुत्रमाप्नुहि' से क्या निर्दिष्ट है? - **अभिज्ञानशाकुन्तल के कथानक का प्रयोजन**
- ``......... षड्भागमक्षय्यं ददत्यारण्यका हि नः।'' - **तपः**
- शकुन्तला से 'भर्तुर्बहुमता भव' यह वाक्य किसने कहा है? - **एक तापसी ने**
- 'वामाः कुलस्याधयः' में 'वामा' का अभिप्राय है - **कहे गये ढंग के विपरीत या प्रतिकूल आचरण करने वाली स्त्रियाँ**
- 'वामाः कुलस्याधयः' मे 'वामा' का क्या अर्थ है- **विपरीता**
- 'दिष्ट्या धूमाकुलितदृष्टेरपि यजमानस्य पावक एवाहुतिः पतिता' - इस दृष्टान्त द्वारा किसने अपनी कृतार्थता स्वीकार की है? - **कण्व**
- ''दिष्ट्या धूमाकुलितदृष्टेरपि यजमानस्य पावक एवाहुतिः पतिता।'' इस वाक्य में 'पावक' शब्द से किसको सङ्केतित किया गया है? - **दुष्यन्त को**

➤ 'आमन्त्रयस्व सहचरम्' का अभिप्राय है
- सहचर से विदा ले लो

➤ विदाई के साथ कण्व ने किस श्लोक से शकुन्तला को उपदेश दिया? **- शुश्रूषस्व गुरून् ....**
➤ 'यात्येकतोऽस्तशिखरं पतिरोषधीनाम्' यहाँ 'पतिरोषधीनाम्' शब्द प्रयुक्त हुआ है **- चन्द्रमा के लिए**
➤ "भूयिष्ठं भव दक्षिणा परिजने" में 'परिजन' का अर्थ है? **- सेवकजन**
➤ "आ परितोषाद् विदुषां न साधु मन्ये .... विज्ञानम्।" **- प्रयोग**
➤ अथवा भवितव्यानां .... भवन्ति सर्वत्र। **- द्वाराणि**
➤ गच्छति पुरः शरीरं धावति पश्चादसंस्तुतं चेतः। चीनांशुकमिव केतोः ..... नीयमानस्य **- प्रतिवातं**
➤ "सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु .... मन्तःकरण- प्रवृत्तयः।" **- प्रमाण**
➤ "अतः परीक्ष्य कर्तव्यं विशेषात् सङ्गतं रहः। .... हृदयेष्वेवं वैरीभवति सौहृदम्।।" **- अज्ञात**
➤ येन येन वियुज्यन्ते प्रजाः स्निग्धेन बन्धुना। स स ...... तासां दुष्यन्त इति घुष्यताम्।। **- पापादृते**
➤ "तेजोद्वयस्य युगपद् व्यसनोदयाभ्यां लोको .... इवात्मदशान्तरेषु।" **- नियम्यत**
➤ "तत्र श्लोकचतुष्टयम्" इत्युक्तौ 'तत्र' इति पदेन आशयोऽस्ति।- **अभिज्ञानशाकुन्तलस्य चतुर्थोऽङ्कः**
➤ धीवरेण शकुन्तलाया अङ्गुलीयकप्राप्तिः कस्मिन्नङ्के वर्णिता **- षष्ठ**
➤ 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में विदूषक का चित्रण हुआ है? **- द्वितीय अङ्क में**
➤ 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के किस अङ्क के प्रारम्भ में सर्वप्रथम शुद्ध विष्कम्भक का प्रयोग किया गया है **- तृतीय अङ्क**
➤ 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' नाटक में प्रवेशक का प्रयोग हुआ है **- षष्ठ अङ्क में**
➤ 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के किस अङ्क में 'विष्कम्भक' समाप्त होता है? **- चतुर्थ**
➤ 'अभिज्ञानशाकुन्तलम् में शापवृत्तान्त किस अङ्क में है-**चतुर्थ**
➤ अभिज्ञानशाकुन्तलम् की रचना करते समय कवि कालिदासकी किस मौलिकता के कारण दुष्यन्त का चरित्र उदात्त बन पाया - **दुर्वासा ऋषि के शाप की कल्पना के कारण**
➤ 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अङ्क में विष्कम्भक है? **- अङ्क के प्रारम्भ में**
➤ कालिदास कृत 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' नाटक के किस अङ्क को सर्वाधिक महत्त्व दिया जाता है? - **चतुर्थ**
➤ कस्मिन् अङ्के शकुन्तला मनोगतं गीतवस्तु नलिनीपत्रे नखैर्निक्षिप्तवर्णं करोति? - **तृतीये**
➤ आकाशयानेन सानुमती नामाप्सराः कस्मिन् अङ्के प्रविशति- **- षष्ठे**
➤ शकुन्तलायाः हस्तात् परिभ्रष्टम् अङ्गुलीयकं पुनः कस्मिन्नङ्के राज्ञा आसादितम्? **- षष्ठे**
➤ अभिज्ञानशाकुन्तलस्य कस्मिन्नङ्के कण्वः शकुन्तलामुपदिशति? **- चतुर्थे**
➤ अभिज्ञानशाकुन्तले वायोः विभिन्नस्तरेषु परिभ्रमणं कस्मिन्नङ्के वर्तते **- सप्तमे**
➤ अभिज्ञानशाकुन्तले षष्ठाङ्कगतः धीवरवृत्तान्तः कस्य उदाहरणं भवति? **-प्रवेशकस्य**
➤ किस स्थान पर शकुन्तला की अँगूठी गिरी? - **शचीतीर्थ में**
➤ 'मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति'-अत्र काव्यादर्शकाराभिप्रेतः गुणः कः? **- माधुर्यम्**
➤ शकुन्तला की शापमुक्ति का कारण है? **- अँगूठी**
➤ राजा दुष्यन्त शकुन्तला को पहचान सकते हैं जब वे देखेंगे **- अँगूठी**
➤ अनसूया एवं प्रियंवदा ने अपने किस ज्ञान के आधार पर शकुन्तला को आभूषण पहनाया- **चित्रकारी में आभूषण प्रयोग से प्राप्त ज्ञान के आधार पर ।**
➤ 'शकुन्तला के गर्भ में दुष्यन्त का तेज (वीर्य) पल रहा है'- यह बात कण्व को किसने बताई? **-छन्दोमयी वाणी ने**
➤ शकुन्तला ने विदाई के समय जिस लता का आलिङ्गन किया था उसका क्या नाम था? - **वनज्योत्स्ना**
➤ दुष्यन्त के वंश का नाम था - **पुरु**
➤ शकुन्तला के अनिष्ट निवारण के लिए महर्षि कण्व कहाँ गये थे? - **सोमतीर्थ**
➤ 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अङ्क में कुल कितने श्लोक हैं? **- 22**
➤ अभिज्ञानशाकुन्तलस्य चतुर्थाङ्कस्य कति श्लोकाः प्रसिद्धाः? **-चत्वारः**
➤ ग्रीवाभङ्गाभिरामं मुहुरनुपतति स्यन्दने दत्तदृष्टिः,
पश्चार्द्धेन प्रविष्टः शरपतनभयाद् भूयसा पूर्वकायम्।
दर्भैरर्धावलीढैः श्रमविवृतमुखभ्रंशिभिः कीर्णवर्त्मा,
पश्योदग्रप्लुतत्त्वाद् वियति बहुतरं स्तोकमुर्व्यां प्रयाति।।"
इत्यस्मिन् श्लोके कोऽलङ्कारः **- स्वभावोक्तिः**
➤ 'अभिज्ञानशाकुन्तल' के चतुर्थ अङ्क में "लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु" पद्यांश में अलङ्कार है - **उत्प्रेक्षा**
➤ पक्षिभिः पालिता नायिका का? **- शकुन्तला**
➤ शकुन्तलायाः पालकपिता कः? - **कण्वः**
➤ शक्रावतारतीर्थस्य निवासी कः? - **धीवरः**
➤ 'बलवदपि शिक्षितानामात्मन्यप्रत्ययं चेतः' में अलङ्कार है **- अर्थान्तरन्यास**
➤ दुष्यन्तगतां रतिं प्रति शकुन्तला केन शब्देन प्रतिपाद्यते **- आलम्बनविभावः**

➤ 'परभृत' किस पक्षी को कहते हैं? - **कोयल**
➤ 'शकुन्तला' नाटक का खड़ी बोली गद्य में अनुवाद किया - **राजालक्ष्मण सिंह ने**
➤राजा लक्ष्मण सिंह ने 'अभिज्ञानशाकुन्तल' का अनुवाद कब किया? - **1763 ई०**
➤ हंसपदिका का गीत है - **शाकुन्तलम् में**
➤ गृहिणी किम् उच्यते? - **गृहम्**
➤ दुष्यन्त के साथ शकुन्तला का विवाह सम्पन्न होने पर उसकी सखियाँ हो जाती हैं - **प्रसन्न**
➤ "अविश्रमोऽयं लोकतन्त्राधिकारः" इस उक्ति से युक्त नाटक है- - **अभिज्ञानशाकुन्तलम् में**
➤ "अहो रागपरिवाहिणी गीतिः" राजा दुष्यन्त का यह कथन किसकी प्रशंसा में है? - **हंसपदिका के गाने पर**
➤ 'स्त्रीणामशिक्षितपटुत्वममानुषीषु'– इस उक्ति से युक्त नाटक है - **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**
➤ "श्रद्धा वित्तं विधिश्चेति त्रितयं तत्समागतम्" किस नाटक का श्लोक है? - **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**
➤ "श्रिया दुरापः कथमीप्सितो भवेत्" इदं वाक्यमस्ति? - **अभिज्ञानशाकुन्तले**
➤ "यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया"– कस्य वचनमिदम्? - **कण्वस्य**
➤ "भवितव्यानां द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र" किस ग्रन्थ की उक्ति है? - **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**
➤ "राजरक्षितव्यानि तपोवनानि नाम" यह वाक्य किस नाटक में है? - **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**
➤ "पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलम्" किस काव्य की उक्ति है? - **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**
➤ अभिज्ञानशाकुन्तलस्य नान्दीपाठः कस्मिन् छन्दसि भवति - **स्रग्धरा**
➤ 'अर्थो हि कन्या परकीय एव' में कन्या की उपमा किस उपमान के साथ दी गयी है? - **धरोहर के साथ**
➤ "अनिर्वर्णनीयं परकलत्रम्" यह उक्ति कहाँ की है? - **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**
➤ "अतिस्नेहः पापशङ्की" यह सूक्ति किस ग्रन्थ की है - **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**
➤ "न खलु धीमतां कश्चिदविषयो नाम" सूक्ति है - **अभिज्ञानशाकुन्तलम् की**
➤ "किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्" इति कस्य पंक्तिः? - **अभिज्ञानशाकुन्तलस्य**
➤ 'न प्रभातरलं ज्योतिरुदेति वसुधातलात्' उक्ति है - **अभिज्ञानशाकुन्तले**

➤ "लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु" श्लोकांशोऽयं तिष्ठति - **अभिज्ञानशाकुन्तले**
➤ "भावस्थिराणि जननान्तरसौहृदानि" यह उक्ति है - **अभिज्ञानशाकुन्तले**
➤ "तेजोद्वयस्य युगपद्व्यसनोदयाभ्यां लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु" यह श्लोकांश 'शाकुन्तलम्' के किस अङ्क से है? - **चतुर्थ अङ्क**
➤ "को नामोष्णोदकेन नवमालिकां सिञ्चति" यह कथन किसका है? - **प्रियंवदा**
➤ "कुसुममिव.........यौवनमङ्गेषु सन्नद्धम्" - **लोभनीयं**
➤ "अथवा .... द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र।"- **भवितव्यानां**
➤ "अये, लब्धं नेत्रनिर्वाणम्" इति कः कथयति अभिज्ञानशाकुन्तले? - **दुष्यन्तः**
➤ "सरस्वती श्रुतमहतां महीयताम्" इति कस्य नाटकस्य भरतवाक्येऽस्ति? -**अभिज्ञानशाकुन्तलम्**
➤ "इष्टप्रवासजनितान्यबलाजनस्य दुःखानि नूनमतिमात्रसुदुःसहानि" इति सूक्तिः अस्ति -**कालिदासस्य**
➤ "गुर्वपि विरहदुःखमाशाबन्धः साहयति" इति श्लोकः लभ्यते - **अभिज्ञानशाकुन्तले**
➤ "आ परितोषाद् विदुषां न साधु मन्ये प्रयोगविज्ञानम् बलवदपि शिक्षितानामात्मन्यप्रत्ययं चेतः।।" यह श्लोक किस काव्य का है? - **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**
➤ "वामाः कुलस्याधयः" यह उक्ति किस ग्रन्थ में वर्णित है? - **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**
➤ "कामी स्वतां पश्यति" यह सूक्ति है - **दुष्यन्त की**
➤ शकुन्तलायाः एकस्याः सख्याः नाम आसीत् - **प्रियवंदा**
➤ अभिज्ञानशाकुन्तले कयोः रसयोरपूर्वसम्मेलन विद्यते? - **शृङ्गार-करुणयोः**
➤ "ज्वलति चलितेन्धनोऽग्निर्विप्रकृतः पन्नगः फणां कुरुते।
प्रायः स्वं महिमानं क्षोभात् प्रतिपद्यते हि जनः।।"
यह श्लोक किससे सम्बन्धित है - **अभिज्ञानशाकुन्तलम् / मातलि**
➤ "अचेतनं नाम गुणं न लक्षयेत्" यह पंक्ति किसने किससे कही? - **दुष्यन्त ने अँगूठी से**
➤ "अतः परीक्ष्य कर्तव्यं विशेषात् संगतं रहः" अभिज्ञानशाकुन्तलम् में यह उक्ति किसकी है - **शार्ङ्गरव की**
➤ "सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यं" किस नाटक से उद्धृत है? - **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**
➤ "अनाघ्रातं पुष्पं किसलयमलूनं" वचन किसके सम्बन्ध में है? - **शकुन्तला के**
➤ "प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः........ पुनर्भवं परिगत शक्तिरात्मभूः" यह भरतवाक्य किस ग्रन्थ का है?

- **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**

➢ "न तादृशा आकृतिविशेषा गुणविरोधिनो भवन्ति" प्रियंवदा द्वारा उक्त वाक्य किसके लिए है? - **दुष्यन्त**

➢ "दुष्यन्तेनाहितं तेजो दधानां भूतये भुवः।" अवेहि तनयां ब्रह्मन्नग्निगर्भां शमीमिव।।" यह सूचना कण्व को किससे प्राप्त हुई? - **छन्दोमयी वाणी**

➢ 'शकुन्तला के गर्भ में दुष्यन्त का तेज पल रहा है'-यह कण्व को किसके द्वारा पता चला- **अशरीरिणी छन्दोमयी वाणी**

➢ "सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम्" यह किससे कहा गया? - **लता-पादपों से**

➢ "किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्" यह किस ग्रन्थ में है - **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**

➢ "यान्त्येवं गृहिणीपदं युवतयो वामाः कुलस्याधयः" यह सूक्ति किस नाटक से है? - **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**

➢ "शुश्रूषस्व गुरून्" श्लोक है - **अभिज्ञानशाकुन्तलम् में**

➢ "अर्थो हि कन्या परकीय एव" सूक्ति सम्बद्ध है - **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**

➢ "तत्राऽपि च चतुर्थोऽङ्कस्तत्र श्लोकचतुष्ट्यम्" इत्युक्तिः सङ्गच्छते - **अभिज्ञानशाकुन्तले**

➢ 'पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं.........' इत्यस्ति - **अभिज्ञानशाकुन्तले**

➢ "आ परितोषाद्विदुषां न साधु मन्ये प्रयोगविज्ञानम्" इति वाक्यं वर्तते - **कालिदासस्य**

➢ "अनिर्वर्णनीयं परकलत्रम्" इति वाक्यं अस्ति - **दुष्यन्तस्य**

➢ 'वत्से! सुशिष्यपरिदत्ता विद्येवाशोचनीयासि संवृत्ता" कस्येयमुक्तिः - **कण्वस्य**

➢ 'आर्तत्राणाय वः शस्त्रं न प्रहर्तुमनागसि'–अभिज्ञानशाकुन्तले कस्य वचनमिदम्? -**वैखानसस्य**

➢ "गच्छति पुरः शरीरं धावति पश्चादसंस्तुतं चेतः" कस्य उक्तिरियम् - **दुष्यन्तस्य**

➢ अभिज्ञानशाकुन्तल में "मृगानुसारिणं साक्षात्पश्यामीव पिनाकिनम्" किसने कहा है? - **सूत**

➢ किसने कहा है "अस्ति कालनेमिप्रसूतिर्दुर्जयो नाम दानवगणः" - **मातलि**

➢ "तेजोद्वयस्य युगपद्व्यसनोदयाभ्यां लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु" यह किस पात्र का कथन है - **कण्वशिष्य**

➢ 'उद्गलितदर्भकवला मृग्यः परित्यक्तनर्तना मयूराः अपसृतपाण्डुपत्रा मुञ्चन्त्यश्रूणीव लताः।।' उपर्युक्त पद्य किस पात्र द्वारा कहा गया है - **प्रियंवदा द्वारा**

➢ "कथां प्रमत्तः प्रथमं कृतामिव" यह श्लोकांश है - **अभिज्ञानशाकुन्तलम् में**

➢ "पीड्यन्ते गृहिणः कथं नु तनयाविश्लेषदुःखैर्नवैः" यह उक्ति किसकी है? - **कण्व की**

➢ सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं......... रिक्तस्थान की पूर्ति करें - **सर्वैरनुज्ञायताम्**

➢ "अर्थो हि कन्या परकीय एव" किसके लिए कहा गया है - **शकुन्तला के लिए**

➢ "तन्माऽतिमात्रं मम कृत उत्कण्ठस्व" यह कथन किसका है - **शकुन्तला का**

➢ "गच्छ पादयोः प्रणम्य निवर्तयैनम्" यह कथन है - **अनसूया का प्रियंवदा के प्रति**

➢ "अभिज्ञानाभरणदर्शनेन शापो निवर्तिष्यत" इति यह उक्ति है - **दुर्वासा की**

➢ "सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम्" उक्ति है - **कण्व की**

➢ "पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलम्" यह उक्ति है - **कण्व की**

➢ "किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्"– वाक्य किसके बारे में कहा गया है - **शकुन्तला**

➢ 'मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति' इत्यत्र 'लक्ष्म' शब्दस्य कोऽर्थः? - **चिह्नम्**

➢ 'अथवाऽनार्यः परदारव्यवहारः' यह कथन है - **दुष्यन्त**

➢ "शान्तानुकूलपवनश्च शिवश्च पन्थाः" यह उक्ति किसकी है? - **आकाशभाषित की**

➢ 'अयं जनः कस्य हस्ते समर्पितः' यह कथन है? - **अनसूया और प्रियंवदा का**

➢ "रक्षितव्या खलु प्रकृतिपेलवा प्रियसखी"–यह कथन है - **अनसूया का शकुन्तला के प्रति**

➢ "अर्थो हि कन्या परकीय एव तामद्य सम्प्रेष्य परिग्रहीतुः" यह वक्तव्य किसका है? - **काश्यप का**

➢ "कोऽन्यो हुतवहाद् दग्धुं प्रभवति" यह कथन है - **अनसूया का**

➢ "ओदकान्तं स्निग्धोजनोऽनुगन्तव्य इति श्रूयते" यह कथन किसका है? - **कण्व शिष्य शार्ङ्गरव का**

➢ अभिज्ञानशाकुन्तले परित्यागानन्तरं शकुन्तला कुत्र न्यवसत्? - **मारीचाश्रमे**

➢ "श्रद्धा वित्तं विधिश्चेति त्रितयं तत्समागतम्" इति को निरूपयति - **मारीचः**

➢ "मनोरथा नाम तटप्रपाताः" इयम् उक्तिः उपलभ्यते - **अभिज्ञानशाकुन्तले**

➢ निम्नलिखित पंक्तौ छन्दसः नाम निर्दिशतु "असंशयं क्षत्र परिग्रहक्षमा, यदार्यमस्यामभिलाषि मे मनः।।" - **वंशस्थम्**

➢ "प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः" इति भरतवाक्यांशः कस्यास्ति - **कालिदासस्य**

➢ "अस्ति कालनेमिप्रसूतिर्दुर्जयो नाम दानवगणः" इस पंक्ति को कौन कहता है? - **मातलि**

➤ सागरमुज्झित्वा कुत्र वा महानद्यवतरति- **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**
➤ 'रम्याणि वीक्ष्य मधुरांश्च निशम्य शब्दान्' सूक्ति है

- अभिज्ञानशाकुन्तल

➤ "स्वप्नो नु माया नु मतिभ्रमो नु"–निम्नाङ्कितेषु कतस्मिन् समुपलभ्यते **- अभिज्ञानशाकुन्तले**

वस्तुनिष्ठप्रश्नाः

1. कालिदास की 'नाट्यकृति' नही है –
(A) विक्रमोर्वशीयम् (B) ऋतुसंहारम्
(C) मालविकाग्निमित्रम् (D) अभिज्ञानशाकुन्तलम्

2. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में अङ्कों की संख्या है –
(A) 5 (B) 7
(C) 8 (D) 6

3. शकुन्तला का पालन-पोषण हुआ था –
(A) विश्वामित्र के आश्रम में (B) कण्व के आश्रम में
(C) दुर्वासा के आश्रम में (D) मारीच के आश्रम में

4. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में प्रधान गुण है –
(A) माधुर्य (B) प्रसाद
(C) ओज (D) कोई नहीं

5. शकुन्तला को शाप दिया था –
(A) कण्व ने (B) मारीच ने
(C) विश्वामित्र ने (D) दुर्वासा ने

6. अभिज्ञानशाकुन्तलम् का नायक है –
(A) कण्व (B) माधव्य
(C) दुर्वासा (D) दुष्यन्त

7. शकुन्तला को विदाई के समय रेशमी वस्त्र दिये थे–
(A) सखियों ने (B) मारीच ऋषि ने
(C) वृक्षों ने (D) कण्व ने

8. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में विदूषक है –
(A) शार्ङ्गरव (B) मातलि
(C) माधव्य (D) वसन्तक

9. अभिज्ञानशाकुन्तलम् की नायिका है –
(A) अनसूया (B) गौतमी
(C) प्रियंवदा (D) शकुन्तला

10. भ्रमर से शकुन्तला की रक्षा कौन करता है –
(A) अनसूया (B) दुष्यन्त
(C) गौतमी (D) कण्व

11. मृग का पीछा करते हुए राजा दुष्यन्त किसके आश्रम में पहुँचे –
(A) मारीच के आश्रम में (B) विश्वामित्र के आश्रम में
(C) कण्व के आश्रम में (D) वाल्मीकि के आश्रम में

12. शकुन्तला की विदाई का वर्णन किस अङ्क में है –
(A) द्वितीय अङ्क में (B) पञ्चम अङ्क में
(C) तृतीय अङ्क में (D) चतुर्थ अङ्क में

13. शकुन्तला पति के चिन्तन में बैठी है –
(A) राजभवन में (B) उपवन में
(C) कुटिया के पास (D) नदी के किनारे

14. शकुन्तला की माता का नाम था –
(A) मेनका (B) गौतमी
(C) हंसपदिका (D) वसुमती

15. शकुन्तला के पुत्र का नाम था –
(A) सर्वदमन (भरत) (B) गौतम
(C) हारीत (D) नारद

16. शकुन्तला की अँगूठी गिरी थी –
(A) शचीतीर्थ में (B) मार्ग में
(C) सोमतीर्थ में (D) प्रभातीर्थ में

17. दुष्यन्त की मनःस्थिति जानने के लिए मेनका ने अपनी किस सखी को भेजा था –
(A) सानुमती को (B) भानुमती को
(C) रम्भा को (D) उर्वशी को

18. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में अङ्गी रस है –
(A) शृङ्गार (B) वीर
(C) करुण (D) हास्य

19. "अर्थो हि कन्या परकीय एव" किसने कहा –
(A) दुष्यन्त ने (B) गौतमी ने
(C) शार्ङ्गरव ने (D) कण्व ने

20. दुष्यन्त और शकुन्तला का विवाह था –
(A) गान्धर्व (B) प्राजापत्य
(C) ब्रह्म (D) दैव

21. 'गण्डस्योपरि पिण्डकः संवृत्तः' किसने कहा –
(A) दुष्यन्त (B) कण्व
(C) विदूषक (D) शारद्वत

22. नाटक में 'जो बात सुनने योग्य न हो' उसे कहते हैं –
(A) आत्मगतम् (B) प्रकाशम्
(C) नेपथ्य (D) नान्दी

23. नाटकों में भरतवाक्य का प्रयोग होता है –
(A) मध्य में (B) अन्त में
(C) प्रारम्भ में (D) कहीं भी

24. अभिनेता जहाँ वेशभूषा धारण करते हैं, उसे कहते हैं–
(A) नान्दी (B) पूर्वरङ्ग
(C) नेपथ्य (D) रङ्गमञ्च

25. नाट्यशास्त्र में 'नान्दी' से अभिप्रेत है –
(A) शङ्कर का बैल (B) मङ्गलाचरण
(C) एक देवता (D) अष्टमूर्ति शिव

26. अभिज्ञानशाकुन्तलम् का सर्वप्रथम अंग्रेजी अनुवाद किसने किया –
(A) गेटे (B) विलियम जोन्स

(C) मैक्समूलर (D) शेक्सपियर

27. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के पुरुष पात्रों में नहीं है –
(A) वसन्तक (B) माधव्य
(C) भद्रसेन (D) सोमरात

28. महर्षि कण्व का आश्रम था –
(A) मालिनी नदी के तट पर
(B) गङ्गा नदी के तट पर
(C) यमुना नदी के तट पर
(D) गौतमी नदी के तट पर

29. दुष्यन्त ने जब आश्रम में प्रवेश किया तब महर्षि कण्व कहाँ गये हुए थे –
(A) सोमतीर्थ (B) शचीतीर्थ
(C) माघमेला प्रयाग (D) हरिद्वार

30. अभिज्ञानशाकुन्तलम् का उपजीव्यग्रन्थ है –
(A) भागवतपुराण (B) रामायण
(C) महाभारत (D) वेद

31. मारीच ऋषि का आश्रम है –
(A) हेमकूट पर्वत पर (B) विन्ध्याचल पर
(C) चित्रकूट रामगिरि पर (D) पञ्चवटी पर

32. शकुन्तला के जन्मदाता पिता थे –
(A) कण्व (B) विश्वामित्र
(C) दुर्वासा (D) मारीच

33. शकुन्तला की प्रियसखी है –
(A) प्रियंवदा (B) सानुमती
(C) गौतमी (D) मेनका

34. 'अहो रागपरिवाहिणी गीतिः' राजा दुष्यन्त का यह कथन किसकी प्रशंसा में है –
(A) शकुन्तला के गाने पर
(B) गौतमी के गाने पर
(C) हंसपदिका के गाने पर
(D) वसुमती के गाने पर

35. 'कोऽन्यो हुतवहात् दग्धुं प्रभवति' सूक्ति उद्धृत है –
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से (B) नीतिशतकम् से
(C) उत्तररामचरितम् से (D) मेघदूतम् से

36. अभिज्ञानशाकुन्तलम् का पात्र है –
(A) वसन्तक (B) अगस्त्य
(C) अत्रि (D) शारद्वत

37. दुष्यन्त की विशेष रुचि रही है –
(A) द्यूत में (B) मृगया में
(C) मदिरापान में (D) गजारोहण में

38. अनसूया किसकी सखी है –
(A) उर्मिला की (B) सीता की
(C) शकुन्तला की (D) गौतमी की

39. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में सर्वाधिक प्रयुक्त छन्द है–
(A) आर्या (B) वसन्ततिलका
(C) शार्दूलविक्रीडितम् (D) अनुष्टुप्

40. कण्व थे –
(A) तपस्वी (B) भिक्षुक
(C) पर्यटक (D) गृहस्थ

61. ''पश्यामीव पिनाकिनम्'' यह वाक्य किसने कहा–
(A) दुष्यन्त ने सूत से (B) कण्व ने शार्ङ्गरव से
(C) दुर्वासा ने प्रियंवदा से (D) सूत ने दुष्यन्त से

62. ''भवितव्यानां द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र'' यह सूक्ति है –
(A) मेघदूतम् की (B) नीतिशतकम् की
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् की (D) कादम्बरी की

63. ''न तादृशा आकृतिविशेषा गुणविरोधिनो भवन्ति'' किसने कहा –
(A) अनसूया ने (B) प्रियंवदा ने
(C) शकुन्तला ने (D) गौतमी ने

64. ''अस्तशिखरं'' मे समास है –
(A) द्वन्द्वसमास (B) तत्पुरुषसमास
(C) द्विगुसमास (D) बहुव्रीहिसमास

65. ''उचितं न ते मङ्गलकाले रोदितुम्'' किसने किससे कहा–
(A) गौतमी ने शकुन्तला से
(B) कण्व ने शकुन्तला से
(C) दोनों सखियों ने शकुन्तला से
(D) अनसूया ने प्रियंवदा से

66. ''पातुं न .... व्यवस्यति जलम्'' रिक्तस्थान की पूर्ति करें –
(A) सर्वप्रथमं (B) द्वितीयं
(C) प्रथमं (D) प्रथमा

67. ''सोऽयं न पुत्रकृतकः पदवीं मृगस्ते'' यह कथन किसका है –
(A) प्रियंवदा का अनसूया से
(B) कण्व का शकुन्तला से
(C) राजा का शार्ङ्गरव से
(D) गौतमी का शकुन्तला से

68. ''सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम्'' काश्यप (कण्व) का यह कथन किसके लिए है –
(A) राजा के लिए (B) वृक्षों के लिए
(C) ऋषियों के लिए (D) सखियों के लिए

69. ''शुश्रूषस्व गुरून् कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीजने'' में कण्व ने किसे उपदेश दिया –
(A) प्रियंवदा को (B) अनसूया को
(C) शकुन्तला को (D) राजा को

70. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के पञ्चम अङ्क का नाम है –

(A) आश्रमप्रवेश अङ्क (B) प्रत्याख्यान अङ्क
(C) विदा अङ्क (D) पश्चात्ताप अङ्क

71. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में 'अभिज्ञान' शब्द से संकेतित/सम्बन्धित है –
(A) नूपुर (B) कङ्कण
(C) अँगूठी (D) कङ्कतम्

72. राजा दुष्यन्त की प्रथमपत्नी है –
(A) हंसपदिका (B) वसुमती
(C) शकुन्तला (D) मेनका

73. राजा दुष्यन्त की द्वितीय पत्नी (प्रेमिका) थी –
(A) वसुमती (B) शकुन्तला
(C) हंसपदिका (D) प्रियंवदा

74. राजा दुष्यन्त की तृतीय पत्नी/प्रेमिका है –
(A) अनसूया (B) शकुन्तला
(C) वसुमती (D) हंसपदिका

75. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के मङ्गलाचरण में कालिदास ने किसकी वन्दना की –
(A) विष्णु की (B) जल की
(C) अष्टमूर्ति शिव की (D) आकाश की

76. कण्व का शिष्य है –
(A) माधव्य (B) गालव
(C) शारद्वत (D) वसन्तक

77. शार्ङ्गरव किसका शिष्य है –
(A) विश्वामित्र का (B) दुर्वासा का
(C) मारीच का (D) कण्व का।

78. ''सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तःकरणप्रवृत्तयः'' इस सूक्ति का वक्ता कौन है –
(A) कण्व (B) दुष्यन्त
(C) शकुन्तला (D) मारीच

79. शकुन्तला के साथ हस्तिनापुर तक कौन जाती है –
(A) गौतमी (B) अनसूया
(C) प्रियंवदा (D) मेनका

80. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में ''अग्निगर्भा शमीमिव'' कौन है –
(A) गौतमी (B) कण्व
(C) शकुन्तला (D) प्रियंवदा

81. ''किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्'' किसने, किसके लिए कहा –
(A) दुष्यन्त ने शकुन्तला के लिए
(B) कण्व ने शकुन्तला के लिए
(C) दुष्यन्त ने प्रियंवदा के लिए
(D) शकुन्तला ने दुष्यन्त के लिए

82. ययाति की पत्नी थी –
(A) शर्मिष्ठा (B) गौतमी
(C) सानुमती (D) दाक्षायणी

83. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में ''पुत्रकृतकः श्यामाक-मुष्टिपरिवर्धितकः'' कौन है –
(A) सर्वदमनः (B) मृगः (दीर्घापाङ्गः)
(C) वृक्षः (D) शारद्वतः

84. ''गुर्वपि विरहदुःखमाशाबन्धः साहयति'' किसकी उक्ति है–
(A) अनसूया (B) प्रियंवदा
(C) शकुन्तला (D) गौतमी

85. दुष्यन्त द्वारा परित्यक्ता शकुन्तला किस आश्रम में निवास करती है –
(A) कण्वाश्रम में (B) मारीचाश्रम में
(C) विश्वामित्राश्रम में (D) वशिष्ठाश्रम में

86. शकुन्तलापरित्याग की घटना किस अङ्क में है –
(A) चतुर्थ अङ्क में (B) षष्ठ अङ्क में
(C) पञ्चम अङ्क में (D) सप्तम अङ्क में

87. ''अतः परीक्ष्य कर्त्तव्यं विशेषात् सङ्गतं रहः'' किसने कहा–
(A) शार्ङ्गरव ने (B) कण्व ने
(C) राजा ने (D) शारद्वत ने

88. ''संस्पृष्टमुत्कण्ठया'' के 'संस्पृष्टम्' पद में प्रकृति प्रत्यय है –
(A) सम्+पृच्छ्+क्त्वा (B) सम्+स्पृश्+क्त
(C) सम्+पा+ल्युट् (D) सम्+स्पृ+ष्टम्

89. ''समिद्वन्तः'' में प्रत्यय है –
(A) क्त (B) मतुप्
(C) क्तवतु (D) शतृ

90. ''शुश्रूषस्व'' में लकार है –
(A) लट् (B) लङ्
(C) लोट् (D) विधिलिङ्

91. ''भूयिष्ठम्'' पद में प्रत्यय है –
(A) इष्ठन् (B) क्त
(C) क्तिन् (D) ठ

92. ''प्रत्यर्पितन्यासः'' में समास है –
(A) अव्ययीभाव (B) बहुव्रीहि
(C) द्वन्द्व (D) तत्पुरुष

93. 'न्यषिच्यत' में सन्धि है –
(A) गुण (B) वृद्धि
(C) यण् (D) अयादि

94. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में सर्वाधिक सौन्दर्य वर्णित है –
(A) गौतमी का (B) प्रियंवदा का

(C) शकुन्तला का (D) मेनका का

95. तपस्वी होकर भी लौकिक व्यवहारों के ज्ञाता हैं –
(A) विश्वामित्र (B) दुर्वासा
(C) शार्ङ्गरव (D) कण्व

96. कण्वाश्रम की वरिष्ठतपस्विनी है –
(A) प्रियंवदा (B) दाक्षायणी
(C) गौतमी (D) सानुमती

97. द्वितीय अङ्क में राजा को मृगया न खेलने की सलाह कौन देता है –
(A) सेनापति (B) ऋषि कण्व
(C) दौवारिक (D) माधव्य

98. शकुन्तला की क्षमायाचना के लिए दुर्वासा के पास जाती है –
(A) अनसूया (B) प्रियंवदा
(C) गौतमी (D) मेनका

99. वनज्योत्स्ना और आश्रमवृक्षों के साथ सहोदरों जैसा स्नेह किसका है –
(A) शकुन्तला का (B) प्रियंवदा का
(C) अनसूया का (D) गौतमी का

100. "या सृष्टिः स्त्रष्टुराद्या" के 'सृष्टिः' पद में प्रकृति-प्रत्यय है–
(A) सृज्+क्तिन् (B) सृ+ष्टिः
(C) सृ+क्त (D) सृजन्+ल्युट्

101. 'ओदकान्तम्' पद का क्या अर्थ है –
(A) जल के किनारे तक (B) चावल के पास
(C) चन्द्रमा (D) सूर्य का सारथि

102. "परभृतविरुतं कलं यथा" यहाँ 'परभृत" पद का अर्थ है–
(A) कौआ (B) कोयल
(C) दूसरे की सखी (D) पशु

103. 'कुशेशयरजोमृदुरेणुरस्याः' यहाँ 'कुशेशय' पद का अर्थ है –
(A) कमल (B) नवमालिका
(C) शकुन्तला (D) केसरवृक्ष

104. "अरण्यौकसः" पद का शब्दार्थ है –
(A) वनवासी (B) गृहस्थ
(C) ब्रह्मचारी (D) तपस्वी

105. "ओषधीनां पतिः" कौन है –
(A) सूर्य (B) चन्द्रमा
(C) अरुण (D) आश्विन वैद्य

106. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में 'प्रकृतिवक्रः सः' किसके लिए प्रयुक्त किया गया है –
(A) कण्व के लिए (B) दुष्यन्त के लिए
(C) दुर्वासा के लिए (D) मारीच के लिए

107. 'अनन्यमानसा' किसका विशेषण है –
(A) प्रियंवदा का (B) शकुन्तला का
(C) गौतमी का (D) दुर्वासा का

108. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के नायक दुष्यन्त की प्रकृति है –
(A) धीरललित (B) धीरप्रशान्त
(C) धीरोदात्त (D) धीरोद्धत

109. जर्मन विद्वान् गेटे द्वारा प्रशंसित नाटक है –
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (B) उत्तररामचरितम्
(C) स्वप्नवासवदत्तम् (D) वेणीसंहारम्

110. दुष्यन्त को देवासुरसंग्राम की सूचना देने वाला है–
(A) विदूषक (B) मातलि
(C) मारीच (D) इन्द्र

111. वह स्थान जहाँ स्वर्ग से लौटते समय दुष्यन्त रुकता है–
(A) कण्व आश्रम में (B) मारीच आश्रम में
(C) वशिष्ठ आश्रम में (D) विश्वामित्र आश्रम में

112. 'अपराजिता रक्षाकरण्डक' से सम्बद्ध है –
(A) दुष्यन्त (B) सर्वदमन (भरत)
(C) मारीच (D) कण्व

113. "वामाः कुलस्याधयः" यहाँ 'वामाः' का अर्थ है –
(A) प्रतिकूल आचरण वाली स्त्री (B) सुन्दर स्त्री
(C) बायें भाग में स्थित स्त्री (D) तरुणी स्त्री

114. "भूयिष्ठं भव दक्षिणा परिजने" यहाँ 'परिजन' पद का अर्थ है –
(A) परिवार जन (B) सेवक जन
(C) पड़ोसी जन (D) आश्रमीय जन

115. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में विष्कम्भक है –
(A) अङ्क के अन्त में (B) अङ्क के प्रारम्भ में
(C) अङ्क के मध्य में (D) कहीं भी नहीं

116. दुष्यन्त के वंश का नाम था –
(A) सूर्यवंश (B) यदुवंश
(C) पुरुवंश (D) कुरुवंश

117. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में कण्व ऋषि को किस अन्य नाम से वर्णित किया गया है –
(A) गौतम (B) काश्यप
(C) भारद्वाज (D) मारीच

118. 'शकुन्तला के गर्भ में दुष्यन्त का तेज पल रहा है' – यह बात कण्व को किसने बतायी –
(A) अनसूया एवं प्रियंवदा ने (B) गौतमी ने
(C) अशरीरिणी आकाशवाणी ने (D) शिष्यों ने

119. शकुन्तला ने अपनी विदाई के समय जिस लता का आलिंगन किया, उसका नाम था –
(A) वनज्योत्स्ना (B) केसरलता
(C) सहकारलता (D) लतापत्रिका

120. विदाई के समय कण्व ने किस श्लोक से शकुन्तला को उपदेश दिया –
(A) यास्यत्यद्य शकुन्तलेति....।
(B) पातुं न प्रथमम्.....।
(C) अस्मान् साधु विचिन्त्य.....।
(D) शुश्रूषस्व गुरून्......।

121. दुष्यन्त और शकुन्तला के विवाह की सूचना महर्षि कण्व को किसने दी –
(A) गौतमी ने
(B) अशरीरिणी छन्दोमयी आकाशवाणी ने
(C) सखियों ने
(D) शिष्यों ने

122. ''दिष्ट्या धूमाकुलितदृष्टेरपि यजमानस्य पावक एवाहुतिः पतिता'' – इस वाक्य में 'पावक' शब्द से किसको संकेतित किया गया है –
(A) कण्व को (B) दुष्यन्त को
(C) यज्ञदेवता को (D) यजमान को

123. अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक में वर्णित शार्ङ्गरव है–
(A) दुर्वासा का पुत्र (B) कण्व का भ्राता
(C) कण्व का शिष्य (D) दुष्यन्त का सेवक

124. ''रक्षितव्या खलु प्रकृतिपेलवा प्रियसखी'' यह कथन है –
(A) अनसूया का प्रियंवदा से
(B) अनसूया का गौतमी से
(C) प्रियंवदा का अनसूया से
(D) शकुन्तला का प्रियंवदा से

125. ''अयं जनः कस्य हस्ते समर्पितः'' यह कथन है –
(A) शकुन्तला का (B) अनसूया का
(C) प्रियंवदा का (D) अनसूया प्रियंवदा दोनों का

126. ''अभिज्ञानाभरणदर्शनेन शापो निवर्तिष्यत'' यह उक्ति किसकी है –
(A) गौतमी की (B) कण्व की
(C) दुर्वासा की (D) मारीच की

127. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में अशरीरिणी छन्दोमयीवाणी ने शकुन्तला विषयक वृत्तान्त किसे सुनाया –
(A) कण्व को (B) मेनका को
(C) मारीच को (D) दुष्यन्त को

128. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में शापविषयक वृत्तान्त किस अङ्क में है –
(A) पञ्चम अङ्क में (B) चतुर्थ अङ्क में
(C) तृतीय अङ्क में (D) षष्ठ अङ्क में

129. ''पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं'' यह उक्ति अभिज्ञानशाकुन्तलम् में किसकी है –
(A) शार्ङ्गरव की (B) शारद्वत की
(C) काश्यप (कण्व) की (D) दुर्वासा की

130. अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक में गौतमी है –
(A) शकुन्तला की सखी
(B) एक अप्सरा
(C) तपोवन की वरिष्ठ महिला
(D) मेनका की सखी

131. ''सुलभकोपो महर्षिः'' किसने किसको कहा –
(A) प्रियंवदा ने दुर्वासा को
(B) अनसूया ने दुर्वासा को
(C) गौतमी ने कण्व को
(D) मेनका ने मारीच को

132. मारीच ऋषि की पत्नी है –
(A) गौतमी (B) मेनका
(C) सानुमती (D) दाक्षायणी (अदिति)

133. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में कुल कितने श्लोक हैं –
(A) बयालीस (42) (B) बाइस (22)
(C) छियालीस (46) (D) पच्चीस (25)।

134. ''न खलु धीमतां कश्चिदविषयो नाम'' सूक्ति है–
(A) किरातार्जुनीयम् की (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम् की
(C) शुकनासोपदेश की (B) शिवराजविजयम् की

135. निम्नलिखित में कौन सा कथन असत्य है –
(A) कालिदास वैदर्भी रीति के कवि हैं।
(B) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में सात सर्ग हैं।
(C) शाकुन्तलम् की कथा महाभारत के आदिपर्व से ली गयी है।
(D) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में कण्व, दुर्वासा, मारीच और विश्वामित्र आदि ऋषियों का नाम आया है।

136. कालिदास को किस राजा का आश्रयदाता राजकवि माना जाता है –
(A) पुष्यमित्र (B) चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य
(C) अशोक (D) स्कन्दगुप्त

137. ''अर्थो हि कन्या परकीय एव तामद्य सम्प्रेष्य परिग्रहीतुः'' यह कथन किसका है –
(A) दुर्वासा का (B) काश्यप/कण्व का
(C) मारीच का (D) विश्वामित्र का

138. दुष्यन्त की राजधानी थी –
(A) अयोध्या (B) इन्द्रप्रस्थ
(C) कण्वाश्रम (D) हस्तिनापुर

139. ''कविताकामिनी का विलास'' किस कवि को कहा

गया है –

(A) कालिदास को (B) भारवि को

(C) माघ को (D) दण्डी को

140. शकुन्तला के चरित्र की विशेषता नही है –

(A) सुन्दरी (B) प्रकृतिप्रेमी

(C) कटुभाषिणी (D) लज्जाशीलता

141. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में सर्वप्रथम विदूषक का चित्रण किया गया है –

(A) प्रथम अङ्क में (B) द्वितीय अङ्क में

(C) चतुर्थ अङ्क में (D) इनमें से कोई भी नहीं

142. अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक में प्रवेशक का प्रयोग हुआ है–

(A) तृतीय अङ्क में (B) द्वितीय अङ्क में

(C) षष्ठ अङ्क में (D) पञ्चम अङ्क में

143. किस नाट्यकृति में कालिदास की कला मधुरतम फल के रूप में परिणत हुई है –

(A) विक्रमोर्वशीयम् में

(B) मालविकाग्निमित्रम् में

(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में

(D) इनमें से किसी में नहीं

144. अभिज्ञानशाकुन्तलम् का 'भरतवाक्य' है –

(A) इमां सागरपर्यन्ताम्....।

(B) प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः....।

(C) या सृष्टिः स्रष्टुराद्या....।

(D) पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलम्....।

145. ''लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु'' पद्यांश में अलङ्कार है–

(A) उत्प्रेक्षा (B) उपमा

(C) अर्थान्तरन्यास (D) रूपक

146. ''अतिस्नेहः पापशङ्की'' यह सूक्ति किसने किससे कही–

(A) सखियों ने शकुन्तला से (B) गौतमी ने कण्व से

(C) दुष्यन्त ने सखियों से (D) कण्व ने शकुन्तला से

147. ''रक्षितव्या खलु प्रकृतिपेलवा प्रियसखी'' यहाँ 'प्रकृतिपेलवा प्रियसखी' किसके लिए प्रयुक्त किया गया है।

(A) शकुन्तला के लिए (B) प्रियंवदा के लिए

(C) सानुमती के लिए (D) अनसूया के लिए

148. पतिगृह जाती हुई शकुन्तला को काश्यप/कण्व ऋषि ने आशीर्वाद दिया था –

(A) चक्रवर्ती पुत्र प्राप्त करने का

(B) धन प्राप्त करने का

(C) महादेवी बनने का

(D) पूर्णस्वस्थ रहने का

149. ''मम विरहजां न त्वं वत्से शुचं गणयिष्यसि'' यहाँ 'मम' पद से तात्पर्य है –

(A) कण्व का (B) विश्वामित्र का

(C) दुर्वासा का (D) दुष्यन्त का

150. दुष्यन्त के लिए सन्देश वचन किसने किससे कहा–

(A) कण्व ने शाङ्र्गरव से (B) कण्व ने गौतमी से

(C) कण्व ने प्रियंवदा से (D) कण्व ने शकुन्तला से

151. ''गच्छ, पादयोः प्रणम्य निवर्तयैनम्'' यह कथन है–

(A) अनसूया का प्रियंवदा के प्रति

(B) प्रियंवदा का अनसूया के प्रति

(C) अनसूया का शकुन्तला के प्रति

(D) मेनका का सानुमती के प्रति

152. ''तपोधनं वेत्सि न मामुपस्थितम्'' यहाँ 'तपोधनं' शब्द प्रयुक्त हुआ है –

(A) कण्व के लिए (B) दुर्वासा के लिए

(C) मारीच के लिए (D) शार्ङ्गरव के लिए

153. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में ययाति के किस पुत्र का उल्लेख किया गया है –

(A) यदु का (B) पुरु का

(C) तुर्वसु का (D) द्रुह्यु का

154. सानुमती पात्र है –

(A) उत्तररामचरितम् की (B) किरातार्जुनीयम् की

(C) कादम्बरी की (D) अभिज्ञानशाकुन्तलम् की

155. राजशेखर ने कितने कालिदासों का उल्लेख किया है–
(A) 5 (B) 3
(C) 2 (D) 6

156. अभिज्ञानशाकुन्तलम् की स्त्री-पात्र बोलती हैं –
(A) संस्कृत में (B) शौरसेनी प्राकृत में
(C) पालि में (D) खड़ी हिन्दी में

157. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में सूत्रधार और नटी दोनों ने किस ऋतु का वर्णन किया है –
(A) ग्रीष्म ऋतु का (B) शिशिर ऋतु का
(C) वर्षा ऋतु का (D) हेमन्त ऋतु का

158. ''ग्रीवाभङ्गाभिरामं मुहुरनुपतति स्यन्दने दत्तदृष्टिः'' इस श्लोक में छन्द है –
(A) शार्दूलविक्रीडितम् (B) स्रग्धरा
(C) हरिणी (D) शिखरिणी

159. ''असंशयं क्षत्रपरिग्रहक्षमा'' यहाँ 'क्षत्रपरिग्रहक्षमा' से किसका संकेत है –
(A) प्रियंवदा का (B) अनसूया का
(C) शकुन्तला का (D) क्षत्रियों की क्षमा का

160. ''वत्से, वीर प्रसविनी भव'' शकुन्तला के लिए यह आशीर्वाद किसने दिया –
(A) एक तापसी ने (B) गौतमी ने
(C) मारीच ने (D) कण्व ने

161. ''उद्गलितदर्भकवला मृग्यः परित्यक्तनर्तना मयूराः'' यह कथन किसका है –
(A) प्रियंवदा का (B) अनसूया का
(C) शकुन्तला का (D) गौतमी का

162. ''वामाः कुलस्याधयः'' में 'आधयः' पद का क्या अर्थ है–
(A) मानसिक व्याधि (B) बाधा
(C) मोक्ष (D) आधा

163. ''मा स्म प्रतीपं गमः'' में 'प्रतीपम्' पद का क्या अर्थ है–
(A) प्रतिकूल (विपरीत) (B) अनुकूल
(C) आचरण (D) चरित्र

164. ''तात! कदा नु भूयस्तपोवनं प्रेक्षिष्ये'' यह कथन किसका है –
(A) प्रियंवदा का (B) अनसूया का
(C) शकुन्तला का (D) गौतमी का

165. दुष्यन्त की कौन सी रानी पञ्चम अङ्क में सङ्गीत का अभ्यास कर रही है –
(A) हंसपदिका (B) वसुमती
(C) शकुन्तला (D) दाक्षायणी

166. रानी वसुमती के प्रेम में राजा दुष्यन्त किसे भूल गया है–
(A) हंसपदिका को (B) सानुमती को
(C) प्रियंवदा को (D) शकुन्तला को

167. हंसपदिका अपने गान के माध्यम से किसे उलाहना देती है –
(A) राजा दुष्यन्त को (B) माधव्य को
(C) शकुन्तला को (D) कण्व को

168. कण्व शिष्यों के आने की सूचना राजा दुष्यन्त को किसने दिया –
(A) प्रतीहारी ने (B) कञ्चुकी वातायन ने
(C) विदूषक माधव्य ने (D) पुरोहित सोमरात ने

169. हस्तिनापुर पहुँचकर शकुन्तला का कौन सा नेत्र फड़कने लगा –
(A) बायाँ नेत्र (B) दाहिना नेत्र
(C) दोनों नेत्र (D) कभी बायाँ कभी दायाँ

170. ''भवन्ति नम्रास्तरवः फलागमैः'' यह कथन किसका है –
(A) शार्ङ्गरव का (B) शारद्वत का
(C) कण्व का (D) पुरोहित सोमरात का

171. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में सेनापति का नाम है –
(A) आत्रेय (B) भद्रसेन
(C) मैत्रेय (D) वसन्तक

172. ''स्वभाव एवैष परोपकारिणाम्'' यह कथन किसने किसके लिए कहा है –
(A) शार्ङ्गरव ने राजा दुष्यन्त के लिए
(B) कण्व ने शारद्वत के लिए
(C) दुष्यन्त ने सोमरात के लिए
(D) गौतमी ने दुष्यन्त के लिए

173. शकुन्तला द्वारा पुत्रवत्पालित मृग का क्या नाम है–
(A) दीर्घापाङ्ग (B) मृगानुसारी
(C) मृगाङ्क (D) पिनाकी

174. 'शकुन्तला सन्तानोत्पत्ति तक मेरे घर में ही रहे।' यह वाक्य किसने कहा –
(A) मारीच ने (B) पुरोहित सोमरात ने
(C) कण्व ने (D) दुष्यन्त ने

175. राजा दुष्यन्त की प्रतीहारी (द्वारपालिका) का क्या नाम है–
(A) सानुमती (B) बेतवारानी
(C) वेत्रवती (D) सोमवती

176. ''पाटच्चर, किमस्माभिर्जातिः पृष्टा'' यहाँ 'पाटच्चर' पद का क्या अर्थ है –
(A) चोर (B) श्याल
(C) राजा (D) कोतवाल

177. ''काव्येषु नाटकं रम्यम्'' में किस नाटक का निर्देश है –
(A) उत्तररामचरितम् (B) मालविकाग्निमित्रम्
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (D) वेणीसंहारम्

178. ''इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी'' यहाँ 'तन्वी' पद से किसका सङ्केत किया गया है –
(A) प्रियंवदा का (B) चन्द्रमा का
(C) कमल का (D) शकुन्तला का

179. ''आशङ्कसे यदग्निं तदिदं स्पर्शक्षमं रत्नम्'' यह वाक्य किसने किसके लिए कहा –
(A) राजा ने शकुन्तला के लिए
(B) कण्व ने शिष्य के लिए
(C) शकुन्तला ने राजा के लिए
(D) सखियों ने अग्नि के लिए

180. ''लब्धावकाशो मे मनोरथः'' यह वचन किसका है –
(A) प्रियंवदा का (B) राजादुष्यन्त का
(C) शकुन्तला का (D) कण्व का

181. कौशिकगोत्रनामधेयः राजर्षिः कः अस्ति –
(A) कण्वः (B) मारीचः
(C) विश्वामित्रः (D) दुर्वासाः

182. मेनका के आगमन के समय विश्वामित्र किस नदी के तट पर उग्र तपस्या कर रहे थे –
(A) गौतमी नदी (B) यमुना नदी
(C) मालिनी नदी (D) गङ्गा नदी

183. राजा दुष्यन्त ने शकुन्तला से क्या पूछा –
(A) अपि तपो वर्धते? (B) कुशलिनी अस्ति वा?
(C) स्वास्थ्यं कथम् अस्ति?(D) भवत्याः नाम किम्?

184. ''अधरः किसलयरागः कोमलविटपानुकारिणौ बाहू'' राजा का यह कथन किसके लिए है –
(A) शकुन्तला के लिए – अङ्क 1
(B) प्रियंवदा के लिए – अङ्क 4
(C) अनसूया के लिए – अङ्क 4
(D) तपोवन कि लिए – अङ्क 1

185. ''दूरीकृताः खलु गुणैरुद्यानलता वनलताभिः'' यहाँ 'वनलताभिः' से किसका सङ्केत किया गया है –
(A) रानियों का (B) तापसकुमारियों का
(C) जङ्गली पशुओं का (D) उद्यानसेविकाओं का

186. सोमतीर्थ जाते समय अतिथिसत्कार का दायित्व कण्व ने किसको दिया था –
(A) शिष्य शारद्वत को (B) गौतमी को
(C) शकुन्तला को (D) प्रियंवदा को

187. ''आश्रममृगोऽयं न हन्तव्यो न हन्तव्यः'' यह कथन किसने किससे कहा है –
(A) वैखानस ने दुष्यन्त से (B) कण्व ने शकुन्तला से
(C) राजा ने सूत से (D) शिष्य ने गुरु से

188. ''सर्वथा चक्रवर्तिनं पुत्रमाप्नुहि'' इस वाक्य से क्या निर्दिष्ट है –
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् के कथानक का प्रयोजन
(B) कालिदास को पुत्रप्राप्ति
(C) कुमार कार्तिकेय का जन्म
(D) दुष्यन्त का शकुन्तला से विवाह होना

189. दुष्यन्त तथा शकुन्तला का पुनर्मिलन किस अङ्क में होता है –
(A) चतुर्थ (B) तृतीय
(C) सप्तम (D) प्रथम

190. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के समालोचकों ने किसे ''निसर्गकन्या'' की उपाधि दी है –
(A) प्रियंवदा (B) शकुन्तला
(C) अनसूया (D) मेनका

191. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के किन अङ्कों में अनसूया एवं प्रियंवदा नहीं दिखलायी पड़ती हैं –
(A) प्रथम एवं षष्ठ अङ्को में
(B) द्वितीय एवं सप्तम अङ्क में
(C) तृतीय एवं सप्तम अङ्क में
(D) पञ्चम, षष्ठ एवं सप्तम अङ्कों में

192. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के किन अङ्कों में शकुन्तला की उपस्थिति नहीं है –
(A) द्वितीय एवं षष्ठ अङ्क में
(B) तृतीय एवं सप्तम अङ्क में
(C) पञ्चम एवं षष्ठ अङ्क में
(D) द्वितीय एवं चतुर्थ अङ्क में

193. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में महर्षि कण्व दिखलाई पड़ते हैं–
(A) सभी अङ्कों में
(B) केवल चतुर्थ अङ्क में
(C) प्रथम अङ्क छोड़कर सभी अङ्कों में
(D) केवल चतुर्थ एवं पञ्चम अङ्क में

194. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में विदूषक (माधव्य) का वर्णन प्राप्त होता है –
(A) द्वितीय, पञ्चम एवं षष्ठ अङ्क में
(B) प्रथम एवं तृतीय अङ्क में
(C) द्वितीय एवं तृतीय अङ्क में
(D) द्वितीय एवं चतुर्थ अङ्क में

195. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में राजा की मनःस्थिति जानने के लिए मेनका की सखी सानुमती किस अङ्क में

आती है –
(A) पञ्चम अङ्क में (B) षष्ठ अङ्क में
(C) सप्तम अङ्क में (D) इनमें से कोई नहीं

196. ''धर्मारण्यं प्रविशति.......स्यन्दनालोक भीतः'' रिक्तस्थान की पूर्ति करें –
(A) गजः (B) अश्वः
(C) ऋषिः (D) कण्वः

197. वह 'औषधिविशेष' जिसे मारीच ऋषि ने सर्वदमन के हाथ में बाँधी थी –
(A) सञ्जीवनी (B) अमृतवटी
(C) अपराजिता (D) विशल्यकरणी

198. ''वत्स, चिरञ्जीव पृथ्वीं पालय'' यह आशीर्वाद दुष्यन्त को किसने दिया –
(A) कण्व ने (B) महर्षि मारीच ने
(C) दुर्वासा ने (D) ऋषियों ने

199. मारीच आश्रम में दुष्यन्त और शकुन्तला के पुनर्मिलन की बात महर्षि कण्व को किसने सूचित किया –
(A) गालव ने (B) सर्वदमन ने
(C) शार्ङ्गरव ने (D) गौतम ने

200. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के भरतवाक्य में छन्द है –
(A) मालिनी (B) रुचिरा
(C) वंशस्थ (D) आर्या

उत्तरमाला

1. (B) 2. (B) 3. (B) 4. (B) 5. (D) 6. (D)
7. (C) 8. (C) 9. (D) 10. (B) 11. (C) 12. (D)
13. (C) 14. (A) 15. (A) 16. (A) 17. (A) 18. (A)
19. (D) 20. (A) 21. (C) 22. (A) 23. (B) 24. (C)
25. (B) 26. (B) 27. (A) 28. (A) 29. (A) 30. (C)
31. (A) 32. (B) 33. (A) 34. (C) 35. (A) 36. (D)
37. (B) 38. (C) 39. (A) 40. (A) 41. (C) 42. (B)
43. (A) 44. (A) 45. (A) 46. (B) 47. (B) 48. (B)
49. (A) 50. (B) 51. (C) 52. (B) 53. (C) 54. (C)
55. (B) 56. (A) 57. (B) 58. (D) 59. (C) 60. (A)
61. (D) 62. (C) 63. (B) 64. (B) 65. (C)
66. (C) 67. (B) 68. (B) 69. (C) 70. (B) 71. (C)
72. (A) 73. (A) 74. (B) 75. (C) 76. (C) 77. (D)
78. (B) 79. (A) 80. (C) 81. (A) 82. (A) 83. (B)
84. (A) 85. (B) 86. (C) 87. (A) 88. (B) 89. (B)
90. (C) 91. (A) 92. (B) 93. (C) 94. (C) 95. (D)
96. (C) 97. (D) 98. (B) 99. (A) 100. (A) 101. (A)
102. (B) 103. (A) 104. (A) 105. (B) 106. (C)
107. (B) 108. (C) 109. (A) 110. (B) 111. (B)
112. (B) 113. (A) 114. (B) 115. (B) 116. (C)
117. (B) 118. (C) 119. (A) 120. (D) 121. (B)
122. (B) 123. (C) 124. (A) 125. (D) 126. (C)
127. (A) 128. (B) 129. (C) 130. (C) 131. (A)
132. (D) 133. (B) 134. (B) 135. (B) 136. (B)
137. (B) 138. (D) 139. (A) 140. (C) 141. (B)
142. (C) 143. (C) 144. (B) 145. (A) 146. (A)
147. (A) 148. (A) 149. (A) 150. (A) 151. (A)
152. (B) 153. (B) 154. (D) 155. (B) 156. (B)
157. (A) 158. (B) 159. (C) 160. (A) 161. (A)
162. (A) 163. (A) 164. (C) 165. (A) 166. (A)
167. (A) 168. (B) 169. (B) 170. (A) 171. (B)
172. (A) 173. (A) 174. (B) 175. (C) 176. (A)
177. (C) 178. (D) 179. (A) 180. (B)
181. (C) 182. (A) 183. (A) 184. (A) 185. (B) 186. (C)
187. (A) 188. (A) 189. (C) 190. (B) 191. (D)
192. (A) 193. (B) 194. (A) 195. (B)
196. (A) 197. (C) 198. (B) 199. (A) 200. (B)

4.6 मेघदूतम् (खण्डकाव्य/गीतिकाव्य)

- **लेखक** – कालिदास
- **विधा** – खण्डकाव्य/गीतिकाव्य
- **दो भागों में**–(i) पूर्वमेघ (ii) उत्तरमेघ
- **प्रधानरस** – विप्रलम्भशृङ्गार
- **छन्द** – मन्दाक्रान्ता
- **मेघदूतम् की रीति** – वैदर्भी रीति
- **उपजीव्य** – कथानक ब्रह्मवैवर्तपुराण से एवं दूत की कल्पना वाल्मीकीयरामायण से
- **नायक** – यक्ष (हेममाली) ब्रह्मवैवर्तपुराण के अनुसार
- **नायिका** – यक्षिणी (विशालाक्षी)
- **कथानक** – दूतकाव्य के रूप में एक 'गीतिकाव्य' है, जिसमें एक यक्ष का विरह वर्णित है।
- 50 से अधिक संस्कृत टीकायें।
- मल्लिनाथ की **(सञ्जीवनी टीका)**
- जर्मन विद्वान् **मैक्समूलर ने मेघदूतम् का जर्मन भाषा में पद्यानुवाद** और **श्वेट्ज ने जर्मनभाषा में गद्यानुवाद** किया है।
- **आर्थर राइडर और एच. जी रूक** ने अंग्रेजी में मेघदूतम् का पद्यानुवाद किया है।
- हिन्दीभाषा में मेघदूतम् के **6 पद्यानुवाद** हो चुके हैं।

- क्षेमेन्द्र ने कालिदास के मन्दाक्रान्ता छन्द की प्रशंसा की– **'सुवशा कालिदासस्य मन्दाक्रान्ता विराजते' –सुवृत्ततिलक**
- मेघदूत में उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक आदि अलङ्कारों का सुन्दर प्रयोग है।
- डॉ. कीथ ने मेघदूत को **Elegy (शोकगीत)** कहा है।
- भारतीय मत में मेघदूत शोकगीत या करुणगीत न होकर **विरहगीत** या **विप्रलम्भगीत** है।
- **प्रमुखपात्र–**यक्ष (हेममाली) यक्षिणी (विशालाक्षी) मेघ (बादल) कुबेर (यक्षाधिपति)
- संस्कृत के गीतिकाव्यों का आदिमग्रन्थ महाकवि कालिदास का मेघदूत है।
- दक्षिणावर्तनाथ और मल्लिनाथ ने मेघदूत लिखने में रामायण से प्रेरणा मानी है।
- यक्ष को अलकाधीश्वर कुबेर ने जो शाप दिया उसका आधार पद्मपुराण है।
- वहाँ के योगिनी नामक आषाढ़-कृष्ण-एकादशी-महात्म्य-प्रसंग में यह कथा संक्षेप में है।
- 'ब्रह्मवैवर्तपुराण' को भी मेघदूत का उपजीव्य माना जाता है।
- मेघदूत में 115 पद्य हैं। यह दो भागों पूर्वमेघ और उत्तरमेघ में विभक्त है।
- पूर्वमेघ में 63 और उत्तरमेघ में 52 पद्य हैं।
- मल्लिनाथ ने 121 पद्य स्वीकार किए हैं किन्तु 6 श्लोकों को प्रक्षिप्त माना है।
- मेघदूत का **मुख्य रस विप्रलम्भ शृङ्गार** है।
- पूरे मेघदूत में **मन्दाक्रान्ता छन्द** प्रयुक्त है।
- यक्षों के अधिपति कुबेर हैं। उन्होंने अपने कार्य में प्रमाद करने के कारण किसी अपने अनुचर 'यक्ष' को शाप दे दिया।
- यद्यपि कालिदास ने मेघदूत में कहीं भी इस यक्ष का नाम नहीं लिया परन्तु ब्रह्मवैवर्तपुराण में इस **यक्ष का नाम हेममाली तथा यक्षिणी का नाम विशालाक्षी** मिलता है।
- यक्ष अपनी पत्नी में आसक्ति के कारण अपने कार्य में प्रमाद करता है इसलिए कुबेर ने एक वर्ष तक अपनी पत्नी से वियुक्त रहने का शाप दिया।
- शाप के कारण नष्ट महिमा वाला **यक्ष रामगिरि में** रहता है।
- मेघदूत के आरम्भ में यक्ष अपने शापावधि के 8 माह काट चुका है और चार माह शेष हैं।
- मेघदूत का नायक **यक्ष धीरललित नायक** है। **यक्षिणी स्वकीया एवं पद्मिनी नायिका** है।
- मेघदूत में **प्रसाद एवं माधुर्य गुण** की प्रधानता है और **वैदर्भीरीति** प्रयुक्त है।
- **मेघः एव दूतः यस्मिन् काव्ये तत् 'मेघदूतम्'।** इस प्रकार 'मेघदूतम्' पद में बहुव्रीहि समास प्राप्त है।
- यक्षों के अधिपति **कुबेर की राजधानी 'अलका'** है। इसकी स्थिति हिमालय पर्वत शृंखला के कैलाश नामक शिखर पर बतलायी गयी है।
- **रामगिरि पर्वत** की स्थिति मल्लिनाथ तथा वल्लभ ने **चित्रकूट** मानी है जो बुन्देलखण्ड में है।
- प्रो. विल्सन ने नागपुर से कुछ दूरी पर स्थित रामटेक का प्राचीन नाम रामगिरि माना है।
- रामगिरि सीताजी के स्नान से पवित्र जल वाला तथा घने छायादार वृक्षों से युक्त है।
- आषाढ़ के पहले ही दिन यक्ष पर्वतों से क्रीड़ा करने वाले गजों के तुल्य 'मेघ' को देखता है।
- कश्चित् पद ब्रह्म का वाचक (कः = ब्रह्म, चित् = ब्रह्म) है इस प्रकार दो बार श्रवण होने से मङ्गलाचरण हो जाता है।
- मेघदूत का मङ्गलाचरण **वस्तुनिर्देशात्मक मङ्गलाचरण है।**
- प्रिया के वियोग के कारण दुर्बल यक्ष की कलाई से स्वर्णनिर्मित कङ्गन के गिरने से वह रिक्त कलाई वाला हो गया है।
- अपनी कुशलवार्ता अपनी प्रिया तक पहुँचाने के लिए, अपने निवेदन से पूर्व यक्ष कुटज (गिरिमल्लिका) के पुष्पों से मेघ को अर्घ्य देता है।
- धुआँ, अग्नि, जल एवं वायु से बने जड़ मेघ से भी वह कामार्तता के कारण सन्देश ले जाने का निवेदन करता है।
- यक्ष, मेघ को विश्वविदित **पुष्कर और आवर्तक वंश** में उत्पन्न बताता है।
- यक्ष, मेघ को **इन्द्र का प्रमुख व्यक्ति** और स्वेच्छानुसार आकृति धारण करने में समर्थ बताता है।
- मेघ को सन्तप्तों का एकमात्र शरण बताता है और उसे सन्देश लेकर अलका भेजना चाहता है। अलका के बाहरी उद्यान में स्थित भगवान् शिव के मस्तक पर सुशोभित चन्द्र की चाँदनी से वहाँ के महल धवल हैं।
- चातक (पपीहा) मेघ के बायीं ओर शब्द कर रहा है।
- गर्भाधान उत्सवकाल के परिचय से आकाश में बगुलियाँ पंक्तिबद्ध होकर मेघ का सेवन करती हैं।
- यक्ष को विश्वास है कि वियोग के दिनों की गणना में एकाग्रचित्त यक्षिणी को मेघ अवश्य देखेगा।
- यक्ष मेघ की भाभी (भ्रातृजाया) 'यक्षिणी' को कहता है।
- मानसरोवर जाने को उत्सुक तथा मार्ग में भूख मिटाने के लिए चोंच में मृणाल लिए हुए राजहंस मेघ के साथी होंगे।
- श्रीरामचन्द्र के चरणचिन्हों से युक्त रामगिरि से मेघ विदाई लेता है।
- मेघ 'उत्तरदिशा' की ओर मुख करके अपनी यात्रा का आरम्भ करता है।
- दिङ्नागाचार्य वसुबन्धु के शिष्य थे।
- मल्लिनाथ ने 'दिङ्नाग' को कालिदास का प्रतिद्वन्द्वी माना है। जिन पर कालिदास ने व्यङ्ग्य किया है।
- रामगिरि आश्रम 'गीले स्थल बेतों' से युक्त है।
- इन्द्रधनुष से युक्त श्यामल मेघ की उपमा गोपवेषधारी भगवान् श्रीकृष्ण से की गयी है।

- मेघ की यात्रा में सर्वप्रथम माल प्रदेश पड़ता है।
- थोड़ा पश्चिम में पड़ने वाले माल प्रदेश में वर्षा कर वहाँ की भूमि को सुगन्धित करता हुआ मेघ पुनः उत्तर की ओर चल देता है।
- मेघ ने आम्रकूट पर्वत की दावाग्नि पहले बुझाई थी इसलिए मित्रता के कारण आम्रकूट मेघ को सिर पर (चोटी)धारण करेगा।
- मेघ की यात्रा का **पहला पर्वत आम्रकूट** है। प्रो. विल्सन आधुनिक अमरकण्टक, जो नर्मदा का उद्गम है उसको ही आम्रकूट मानते है।
- आम्रकूट पके हुए आम्र से युक्त आम्र वृक्षों वाला पर्वत है।
- मेघ द्वारा चोटी पर आसीन हो जाने के कारण आम्रकूट पर्वत पृथ्वी के स्तन के समान शोभा प्राप्त करता है। जो देव-दम्पत्तियों द्वारा दर्शनीय है।
- आम्रकूट पर्वत के कुञ्ज वनवासियों की स्त्रियों द्वारा उपभुक्त हैं।
- मेघ के मार्ग में **पहली नदी रेवा (नर्मदा)** मिलती है जो विन्ध्य पर्वत की तलहटी में हाथी के शरीर पर बने चित्र के समान फैली है।
- नर्मदा का जल हाथियों के मदों से सुगन्धित तथा जामुन के कुञ्जों से अवरुद्ध है।
- सिद्ध जनों की स्त्रियाँ मेघ के कम्पन से भयभीत होकर अपने प्रेमियों का आलिङ्गन करेगी।
- रेवा को पार कर मेघ दशार्ण देश पहुँचता है जिसे विल्सन ने आधुनिक छत्तीसगढ़ माना है। यह एक प्राचीन जनपद है। इसकी राजधानी 'विदिशा' थी।
- दशार्ण को **'दशदुर्गों का प्रदेश'** कहा जाता है।
- विदिशा वेत्रवती नदी के तट पर स्थित है।
- वेत्रवती नदी की उपमा भ्रूभङ्गयुक्त नायिका से की गई है।
- आजकल भोपाल से 26 मील पर स्थित मालवा के 'भिलसा' नामक स्थान को ही विदिशा माना जाता है।
- विदिशा में मेघ 'नीचैः' नामक पर्वत पर ठहरता है। यह पर्वत वेश्याओं द्वारा प्रयुक्त सुगन्धित पदार्थों से युक्त गुफाओं वाला है।
- मेघ का मार्ग उज्जयिनी जाते हुए कुछ टेढ़ा होगा परन्तु तब भी यक्ष उसे वहाँ जाने का निवेदन करता है।
- यक्ष का मानना है कि यदि उज्जयिनी की स्त्रियों की चञ्चल कटाक्षों के साथ मेघ ने क्रीड़ा नहीं किया तो वह ठगा गया।
- उज्जयिनी जाते हुए मेघ मार्ग में निर्विन्ध्या नदी से मिलता है जो पक्षियों की पंक्ति रूपी करधनी वाली है।
- निर्विन्ध्या अपनी भँवर रूपी नाभि दिखाती है और उसके द्वारा दिखाया गया विभ्रम ही प्रथम प्रणयवचन है।
- यक्ष कहता है निर्विन्ध्या को पार कर मेघ सिन्धु नदी के समीप पहुँचेगा जो मेघ के विरह में कृश हो गयी है और मेघ को वह उपाय करना चाहिए जिससे वह दुर्बलता त्याग दे।
- 'अवन्ती' में वृद्धजन वत्सराज उदयन की कथा कहा करते हैं।
- उज्जयिनी को **देदीप्यमान स्वर्ग का टुकड़ा** कहा गया है। उज्जयिनी को विशाला भी कहा जाता है।
- वायु को 'शिप्रा नदी' के चाटुकार प्रेमी के रूप में चित्रित किया गया है। इसी नदी के तट पर उज्जयिनी है।
- उज्जयिनी के बाजार को अत्यन्त वैभवशाली बताया गया है।
- उज्जयिनी में उदयन ने **महाराज 'प्रद्योत' की पुत्री वासवदत्ता** का अपहरण किया था।
- उज्जयिनी में प्रद्योत का स्वर्णमय ताल वृक्षों का वन था जिसे प्रद्योत के ही इन्द्र प्रदत्त **'नलगिरि' नामक हाथी** ने नष्ट कर दिया था।
- अलकापुरी के घोड़े पत्तों के समान श्याम वर्ण के हैं और वहाँ के योद्धागण रावण के तलवार से किये गये घावों के निशान को ही आभूषण मानते हैं।
- महाकाल के उद्यान गन्धवती नदी की वायु से कम्पित होते हैं।
- यक्ष महाकाल मंदिर पहुँचे मेघ को शाम के समय तक रुक कर शिव की सन्ध्या पूजन के समय नगाड़े का कार्य करने के लिए कहता है।
- मेघ के सायंकालीन जपाकुसुम के समान लाल रंग की कान्ति से ऐसा प्रतीत होता है जैसे उसने भगवान् शिव की गजासुर के गीले चर्म को धारण करने की इच्छा पूरी कर दी।
- मेघ उज्जयिनी के महल की छतों पर रात्रि व्यतीत करता है।
- उज्जयिनी के पश्चात् मेघ के मार्ग में गम्भीरा नदी आती है।
- **ज्ञातास्वादो विवृतजघनां को विहातुं समर्थः**। प्रसिद्ध सूक्ति गम्भीरा नदी के वर्णन में आती है।
- यक्ष जल को 'गम्भीरा' का वस्त्र, किनारों को नितम्ब तथा बेंत की शाखाओं को उसका हाथ बताता है।
- जङ्गल के गूलरों को पकाने वाली वायु देवगिरि के मार्ग में बहती है।
- **देवगिरि** में निवास करने वाले **स्वामी कार्तिकेय** हैं। जिनका वाहन मयूर है। इनको **स्कन्द भगवान्** भी कहा जाता है।
- महाराजरन्तिदेव का यशरूप **चर्मण्वती (चम्बल)** नदी है।
- चर्मण्वती नदी पार करके मेघ 'दशपुर' की स्त्रियों के उत्सुकता का विषय बनेगा।
- दशपुर से बढ़ते हुए मेघ ब्रह्मवर्त प्रदेश होता हुआ महाभारत की युद्धभूमि कुरुक्षेत्र पहुँचेगा।
- बलराम महाभारत के युद्ध से विमुख रहे। उनकी पत्नी रेवती के आँखों की उपमा सरस्वती नदी से की गयी है। लाङ्गली बलराम का नाम है।
- सरस्वती नदी के जल का सेवन करके अंदर से पवित्र मेघ वर्ण मात्र से श्याम रह जायेगा। बलराम ने भी इसका जलपान किया था।

- कुरुक्षेत्र के आगे कनखल पर्वत के समीप पार्वती जी का उपहास करती सी गङ्गा नदी बहती है।
- गङ्गा का नाम 'जह्नुकन्या' प्रयुक्त है।
- कनखल हरिद्वार का समीपवर्ती माना जाता है।
- कनखल में मेघ की छाया गङ्गा में पड़ने पर प्रयाग के अतिरिक्त वहाँ भी सङ्गम (गङ्गा + यमुना) प्रतीत होगा।
- हिमालय पर मेघ शिव जी के बैल द्वारा उछाले गये कीचड़ की तुल्य शोभा को प्राप्त करेगा।
- हिमालय पर मेघ 'शरभों' को ओलों की वृष्टि से नष्ट-भ्रष्ट कर देता है।
- हिमालय के किसी शिलातल पर भगवान शिव के चरणों की सिद्ध जन पूजा करते हैं मेघ भी उनकी परिक्रमा करता है।
- हिमालय पर मेघ के मृदङ्ग जैसी आवाज से शिव का सङ्गीत पूर्ण हो जायेगा।
- हिमालय पर्वत पर क्रौञ्चरन्ध्र भगवान परशुराम के पराक्रम का प्रमाण है।
- इसी रन्ध्र से हंस मानसरोवर जाते हैं।
- क्रौञ्चरन्ध्र से गुजरता हुआ मेघ राजा बलि को बाँधने के लिए उठाये गये विष्णु के पैर की तरह प्रतीत होगा।
- क्रौञ्चरन्ध्र का दूसरा नाम हंसद्वार है।
- क्रौञ्चरन्ध्र पार करके मेघ हिमालय का अतिथि बनेगा।
- हिमालय पर भ्रमण करती हुई पार्वती जी के लिए मेघ सीढ़ी का कार्य करता है।
- कैलाश पर देवस्त्रियाँ कङ्कणों के अग्रभाग से मेघ को फौव्वारा बना डालेंगी।
- हिमालय पर चीड़ वृक्षों के तनों की रगड़ से लगी आग को मेघ बुझाता है।

उत्तरमेघ

- उत्तरमेघ के प्रथम श्लोक में अलकानगरी की तुलना मेघ के साथ की गयी है।
- मेघ की बिजली की तुलना अलकापुर की स्त्रियों से, इन्द्रधनुष की तुलना सुंदर चित्रों से, मेघ के गर्जन की तुलना अलका में बजाये जाने वाले मृदङ्गों से, जलधारण की मणिजटित फर्शों से तथा मेघ की ऊँचाई की तुलना गगनचुम्बी शिखरों से की गयी है।
- अलका में सदैव छः ऋतुएँ वर्तमान रहती हैं।
- अलका की स्त्रियाँ क्रीड़ा के लिए हाथों में कमल लिए रहती है, बालों में कुन्दपुष्प का तथा मुख पर लोध्रपुष्प का रज लगाये रहती हैं।
- वे जूड़ों में कुरबक का तथा कानों में सुन्दर शिरीष पुष्प लगाकर और माँग में कदम्ब पुष्प सजाती हैं।
- अलका में नित्य फूल खिलते हैं और रात्रियाँ सदैव चाँदनीयुक्त रहती हैं।
- अलका में यक्ष सदैव ही युवावस्था को प्राप्त रहते हैं वहाँ अन्य अवस्थाएँ नहीं हैं।
- कुबेर को रावण का भाई माना जाता है इन्हीं का पुष्पक विमान रावण के पास था।
- कल्पवृक्ष से रतिफल नामक मद्य प्राप्त होता है जिसका सेवन 'यक्षगण' मृदङ्ग आदि के ध्वनि के साथ करते हैं।
- आकाशगङ्गा (मन्दाकिनी) के जल से शीतल तथा किनारे पर मन्दार के वृक्षों से प्राप्त छाया में यक्ष कन्यायें स्वर्णिम बालुका में मणि छिपाने का खेल खेलती है।
- चन्द्रमा की किरणों से पिघलाई गयी झालरों में लटकी चन्द्रकान्त मणि स्त्रियों के सुरतजन्य थकावट को दूर करती है।
- अलका के बाह्य उद्यान का नाम **'वैभ्राज'** है।
- कामदेव भगवान शङ्कर के डर से अपने भौरों की डोरी वाले धनुष का प्रयोग नहीं करता। स्त्रियों के चितवन से काम चलाता है।
- अलका में अलंकरण की समस्त सामग्री एकमात्र कल्पवृक्ष प्रदान करता है।
- यक्ष का घर **कुबेर के घर से उत्तर दिशा में** स्थित है।
- यक्ष के घर में इन्द्रधनुष के सदृश रंग-बिरंगा फाटक लगा है।
- यक्ष के घर के समीप उसकी पत्नी द्वारा दत्तक पुत्र की तरह पाला गया पुष्पगुच्छ से युक्त मन्दारवृक्ष है।
- रावण की तलवार का नाम 'चन्द्रहास' है।
- यक्ष के घर में मरकतमणि की शिलाओं से निर्मित सीढ़ी वाली बावली है।
- यहाँ के हंस वर्षाकाल में भी मानसरोवर नहीं जाते।
- उस बावली के किनारे पर नीलम नामक मणियों से बने शिखरवाला क्रीड़ाशैल है। इस पर सुन्दर केले की बाड़ है।
- क्रीडाशैल पर रक्त अशोक और मौलसिरी (वकुल) नाम के दो वृक्ष हैं।
- क्रीडा शैल पर माधवीलता का कुंज है।
- अशोक यक्षिणी के 'बायें पैर' और बकुल 'मुख की मदिरा' के अभिलाषी हैं।
- दोनों वृक्षों के मध्य में मरकत मणि की वेदी है।
- शैल पर ही स्फटिक के पटरे वाली सोने की वासयष्टि (अड्डा) है जहाँ मोर सायंकाल में बैठता है।
- यह मयूर यक्षिणी की तालियों और कंकणों द्वारा नचाया गया है।
- यक्ष के द्वार के दोनों तरफ **शंख और पद्म का चित्र** बना है।
- 'मेघ' अलकापुरी में यक्ष के घर में बने क्रीड़ा शैल पर बैठता है और जुगनुओं की पंक्ति की सदृश मन्द प्रकाश यक्ष के घर में डालता है।
- यक्ष 'यक्षिणी' को युवतियों की रचना के विषय में ब्रह्मा की प्रथम कृति बताता है।
- यक्ष के घर पर पिंजड़े में **मैना** पाली गयी है।
- यक्ष मेघ से कहता है वह यक्षिणी को देवपूजा करते अथवा

यक्ष का चित्र बनाते या मैना से बात करते देखेगा।

- यक्षिणी वीणा बजाते हुए गीत गाने का प्रयत्न करती है।
- यक्षिणी देहली के पुष्पों को भूमि पर रखकर विरह के दिनों की गणना करती है।
- यक्षिणी विरह के दिनों में भूमि पर ही सोती है।
- यक्ष मेघ से खिड़की पर बैठकर यक्षिणी को देखने के लिए कहता है।
- मेघ के पहुँचने पर यक्षिणी की बायीं आँख फड़कती है।
- मेघ अपने जल बिन्दुओं से शीतल बने वायु से यक्षिणी को जगाता है।
- यक्ष के शाप का अंत हरिबोधिनी या देवोत्थान एकादशी के दिन होता है।
- उसी दिन भगवान विष्णु अपनी शेष शय्या से उठेंगे।
- यक्ष मेघ को पहचान चिह्न के रूप में यक्षिणी के साथ घटित एक घटना को बताता है।
- अंतिम श्लोक में यक्ष मेघ के लिये यह कामना करता है कि उसका उसकी पत्नी 'बिजली' के साथ कभी वियोग न हो।
- मेघदूत पर 50 से अधिक टीकाएं लिखी जा चुकी हैं।

मेघदूत की प्रमुख सूक्तियाँ (पूर्वमेघ)

1. कामार्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु। 5॥
भावार्थ – काम से व्याकुल (जन) चेतन एवं अचेतन के विषय में स्वभाव से ही दीन हो जाते हैं।

2. याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा॥ 6॥
भावार्थ – अधिक गुण वाले व्यक्ति से की गई याचना फलवती न होने पर भी उत्तम है, नीच व्यक्ति से फलीभूत हुयी याचना भी अच्छी नहीं है।

- यहाँ अधिक गुण वाला 'मेघ' है।

**3. आशाबन्धः कुसुमसदृशं प्रायशो ह्यङ्गनानाम्
सद्यः पाति प्रणयि हृदयं विप्रयोगे रुणद्धि॥ 9॥**
भावार्थ – आशा का बन्धन ही प्रेम से ओत-प्रोत, पुष्प सदृश कोमल तथा वियोग से शीघ्र टूटने वाले अबलाओं के हृदय को प्रायः रोके रहता है।

**4. न क्षुद्रोऽपि प्रथमसुकृतापेक्षया संश्रयाय,
प्राप्ते मित्रे भवति विमुखः किं पुनर्यस्तथोच्चैः॥ 17॥**
भावार्थ – नीच व्यक्ति भी पहले किये गये उपकार के कारण मित्र से विमुख नहीं होता फिर जो महान् है वह कैसे (विमुख होगा)?

- आम्रकूट के मित्र मेघ के आम्रकूट पर्वत पर अतिथि रूप में पहुँचने पर। यह सूक्ति कही गयी है।

5. रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय॥ 20॥
भावार्थ – सभी रिक्त पदार्थ हल्के तथा पूर्णता गौरव के लिए होती है।

6. स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु॥ 29॥
भावार्थ – स्त्रियों का प्रिय के प्रति विलास प्रारम्भिक प्रार्थना वाक्य होता है।

- मेघ के प्रति निर्विन्ध्या द्वारा दिखाये गये विभ्रम के संदर्भ में।

7. ज्ञातास्वादो विवृतजघनां को विहातुं समर्थः॥ 45॥
भावार्थ – रस का अनुभव किया हुआ कौन-सा पुरुष जंघा प्रदेश को प्रकट करने वाली स्त्री का परित्याग करने में समर्थ होगा।

- ज्ञातास्वाद से मेघ का और विवृतजघना से गम्भीरा का संकेत।

8. आपन्नार्तिप्रशमनफलाः सम्पदो ह्युत्तमानाम्॥ 57॥
भावार्थ – श्रेष्ठ जनों की सम्पत्तियाँ आर्त्तजनों के कष्टों को दूर कर देने वाली होती है।

- हिमालय की दावाग्नि को मेघ बुझाता है अतः उसे 'उत्तम' कहा गया है।

9. के वा न स्युः परिभवपदं निष्फलारम्भयत्नाः॥ 58॥
भावार्थ – निष्फल कर्म में प्रयत्न करने वाले कौन से व्यक्ति तिरस्कार के पात्र नहीं होते (अर्थात् अवश्य होते हैं)

- मेघ पर आक्रमणरूपी निष्फल प्रयास करने वाले 'शरभों' के संदर्भ में।

उत्तरमेघ की सूक्तियाँ

1. सूर्यापाये न खलु कमलं पुष्यति स्वामभिख्याम्॥ 20॥
भावार्थ – सूर्य के अस्त हो जाने पर कमल निश्चित रूप से अपनी शोभा को धारण नहीं करता।

2. प्रायः सर्वो भवति करुणावृत्तिरार्द्रान्तरात्मा॥ 35॥
भावार्थ – प्रायः सभी कोमल हृदय वाले व्यक्ति दयालु स्वभाव वाले होते हैं।

3. कान्तोदन्तः सुहृदुपगतः सङ्गमात्किञ्चिदूनः॥ 40॥
भावार्थ – मित्र से लिया गया प्रियतम का संदेश स्त्रियों के लिए मिलने से कुछ ही कम होता है।

4. नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण॥ 49॥
भावार्थ – सुखः-दुःख की दशा पहिए की धार (तीलियों) के समान ऊपर-नीचे होती रहती है।

5. प्रत्युक्तं हि प्रणयिषु सतामीप्सितार्थक्रियैव॥ 54॥
भावार्थ – प्रेमी याचकों के अभीष्ट प्रयोजन को सिद्ध करना ही सज्जनों का उत्तर होता है।

मेघदूतम् (व्याख्या 1-10 श्लोक)

**कश्चित्कान्ताविरहगुरुणा स्वाधिकारात्प्रमत्तः
शापेनास्तङ्गमितमहिमा वर्षभोग्येण भर्तुः।
यक्षश्चक्रे जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु
स्निग्धच्छायातरुषु वसतिं रामगिर्याश्रमेषु॥1॥**

अन्वय - स्वाधिकारात् प्रमत्तः कान्ताविरहगुरुणा वर्षभोग्येण भर्तुः शापेन अस्तङ्गमितमहिमा कश्चित् यक्षः जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु स्निग्धच्छायातरुषु रामगिर्याश्रमेषु वसतिं चक्रे।

शब्द	अर्थ
स्वाधिकारात्	अपने कर्त्तव्य पालन में
प्रमत्तः	असावधान

कान्ताविरहगुरुणा	प्रिया के वियोग से दुःसह एक वर्ष पर्यन्त भोगे जाने वाले
भर्तुः	स्वामी-कुबेर के
शापेन	शाप से
अस्तङ्गमितमहिमा	जिसकी महिमा नष्ट हो चुकी है,
कश्चित्	कोई
यक्षः	यक्ष
जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु	जनक की पुत्री सीता जी के स्नान से पवित्र जल वाले
स्निग्धच्छायातरुषु	घने छायादार वृक्षों से युक्त
रामगिर्याश्रमेषु	रामगिरि नामक पर्वत के आश्रमों में
वसतिम्	निवास
चक्रे	किया

अनुवाद- अपने कार्य से असावधान, प्रिया के विरह से दुःसह, एक वर्ष तक भोगने वाले, स्वामी के शाप से नष्ट महिमा वाला, कोई यक्ष जनक की पुत्री के स्नान से पवित्र जल वाले, घने छाया वाले वृक्षों से युक्त, रामगिरि (पर्वत) के आश्रमों में निवास करता था।

व्याकरणात्मक टिप्पणी -

समास

- **स्वाधिकारात् -** अधिक्रियते अस्मिन् इति स्वस्य अधिकारः स्वाधिकारः तस्मात् (षष्ठी तत्पुरुष समास अथवा कर्मधारय समास)
- **अस्तङ्गमितमहिमा -** अस्तं गमितः महिमा यस्य सः (बहुव्रीहि समास)
- **स्निग्धच्छायातरुषु -** छायाप्रधानाः तरवः छायातरवः, स्निग्धाः छायातरवः येषु तेषु - (बहुव्रीहि समास)
- **रामगिर्याश्रमेषु -** रामगिरेः आश्रमेषु रामगिर्याश्रमेषु - षष्ठी तत्पुरुष
- **वर्षभोग्येण -** भोक्तुं योग्यः भोग्यः, वर्षभोग्यस्तेन तत्पुरुष समास
- **जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु -** जनकस्य तनयायाः सीतायाः स्नानैः अवगाहनैः पुण्यानि पवित्राणि उदकानि जलानि येषु तेषु - (बहुव्रीहि समास)
- **कान्ताविरहगुरुणा -** कान्तायाः प्रियायाः विरहः वियोगः तेन गुरुणा - तृतीया तत्पुरुष

कारक -

- **स्वाधिकारात् -** 'जुगुप्साविरामप्रमादार्थानामुपसंख्यानम्' वार्तिक से पञ्चमी का प्रयोग
- **वर्षभोग्येण -** कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे से तृतीया
- **शापेन -** हेतौ सूत्र से तृतीया।
- **प्रमत्तः -** 'जुगुप्साविरामप्रमादार्थानामुपसंख्यानम्' से पंचमी

प्रत्यय -

- **अधिकारः -** अधि + कृ + घञ्
- **प्रमत्तः -** प्र + मद् + क्त
- **भर्तुः -** भृ + तृच्
- **शापेन -** शप् + घञ्
- **गमित -** गम् + णिच् + क्तः
- **महिमा -** महत् + इमनिच्
- **वसतिम् -** वस् + अति
- **चक्रे -** कृ + लिट् प्रथम पुरुष, एकवचन, आत्मनेपद
- **रस -** मेघदूतम् में **विप्रलम्भ शृंगार** का प्रयोग किया गया है। विप्रलम्भ श्रृङ्गार के भी चार भेद होते है

1. पूर्वराज 2. मान 3. प्रवास - भावी, भवन्, भूत 4. करुण इसमें भवन नामक प्रवास का उल्लेख है।

- **छन्द -** सम्पूर्ण मेघदूतम् में **मन्दाक्रान्ता छन्द** का प्रयोग हुआ है।
- **लक्षण -** 'मन्दाक्रान्ता जलधिषडगैर्म्भौ न तौ ताद् गुरू चेत्' अर्थात् इस छन्द में प्रत्येक पाद में 17 अक्षर होते हैं। वे मगण, भगण, नगण, दो तगण और दो गुरु इस क्रम में होते है। चौथे, दसवें और सत्रहवें अक्षर पर यति होती है।
- **अलङ्कार -** इस श्लोक में शाप के प्रति ''स्वाधिकारात्प्रमत्तः'' की हेतुता होने से पदार्थ हेतुक **काव्यलिङ्ग अलङ्कार** है।
- 'कान्ताविरहगुरुणा' यहाँ कान्ता पद का प्रयोग कवि की इस बात का सूचक है कि यक्ष को अपनी पत्नी से विशेष प्रेम था, क्योंकि जो भाव कान्ता पद से व्यक्त होता है वह पत्नी या भार्या से नहीं। यहाँ कान्ता पद का प्रयोग साभिप्राय है, इसलिए **परिकरालङ्कार** है। क्योंकि जहाँ विशेष्य साभिप्राय हो वहाँ परिकर अलङ्कार होता है।
- **लक्षण - ''विशेषणैर्यत् साकूतैरुक्तिः परिकरश्च सः''**
- **विशेष -** ग्रन्थ के निर्विघ्नतापूर्वक समाप्ति के लिए ग्रन्थ के आरम्भ में मङ्गलाचरण किया जाता है। मङ्गलाचरण के तीन भेद हैं-
- **''आशीर्नमस्क्रिया वस्तुनिर्देशो वाऽपि तन्मुखम्''**

1. आशीर्वादात्मक 2. नमस्क्रियात्मक 3. वस्तुनिर्देशात्मक

यहाँ वस्तुनिर्देशात्मक मङ्गलाचरण है।

- काव्य के आरम्भ में 'क' वर्ण का प्रयोग हुआ है, 'क' शब्द वायु, ब्रह्मा और सूर्य का वाचक है अतः देवता वाचक शब्द का प्रयोग होने से मङ्गल का ही अनुष्ठान किया गया है।

श्लोक से पूछे जा सकने वाले सम्भावित प्रश्न -

- इस श्लोक में कौन सा मङ्गलाचरण है? **वस्तुनिर्देशात्मक**
- इसमें कौन सा छन्द प्रयोग किया गया है? **मन्दाक्रान्ता**
- यक्ष को कितने दिनो का शाप मिला था? - **एक साल**
- यक्ष को किसने शाप दिया था? - **यक्षों के स्वामी कुबेर**
- यक्ष को शाप देने का क्या कारण था? **- अपने कार्य से असावधानी के कारण**
- 'कश्चित्' शब्द किसके लिए आया है? - **यक्ष के लिए**
- रामगिरि आश्रम किसके स्नान करने से पवित्र हो गया था? **- जनकतनया सीता के**
- यक्ष को शाप देने की तिथि क्या थी? **- देवोत्थान एकादशी**

➢ चक्रे शब्द किस लकार और वचन में है बताइये? - **कृ लिट् लकार, प्रथम पु., एक.**

श्लोक - 2

तस्मिन्नद्रौ कतिचिदबलाविप्रयुक्तः स कामी
नीत्वा मासान् कनकवलयभ्रंशरिक्तप्रकोष्ठः।
आषाढस्य प्रथमदिवसे मेघमाश्लिष्टसानुं
वप्रक्रीडापरिणतगजप्रेक्षणीयं ददर्श॥2

अन्वय - तस्मिन् अद्रौ अबलाविप्रयुक्तः कनकवलयभ्रंशरिक्तप्रकोष्ठः कामी स कतिचित् मासान् नीत्वा आषाढस्य प्रथमदिवसे आश्लिष्टसानुम् वप्रक्रीडापरिणतगजप्रेक्षणीयम् मेघम् ददर्श।

शब्द	**अर्थ**
तस्मिन्	उस
अद्रौ	पर्वत पर
अबलाविप्रयुक्तः	प्रियतमा से वियुक्त
कनकवलयभ्रंशरिक्त प्रकोष्ठः	स्वर्ण कङ्कण के गिरने से शून्य कलाई वाले
कामी	कामुक
सः	उस यक्ष ने
कतिचित्	कुछ
मासान्	महीनों को
नीत्वा	बिताकर
आषाढस्य	आषाढ मास के
प्रथमदिवसे	प्रथम दिन
आश्लिष्टसानुम्	पर्वत की चोटी से सटे हुए
वप्रक्रीडापरिणतगजप्रेक्षणीयम्	टीले की मिट्टी के उड़ाखने में तिरछा दन्तप्रहार करने वाले हाथी के समान दर्शनीय
मेघम्	मेघ को
ददर्श	देखा।

अनुवाद - उस (रामगिरि) पर्वत पर प्रिया से वियुक्त स्वर्ण कङ्कण के गिरने से शून्य कलाई वाले कामुक उस यक्ष ने कुछ वर्ष बिताकर आषाढ़ के प्रथम दिन पर्वत की चोटी से सटे हुए वप्रक्रीड़ा करने में तिरछा दन्त प्रहार करने वाले हाथी के सदृश दर्शनीय मेघ को देखा।

समास

➢ **अबलाविप्रयुक्तः -** अबलया विप्रयुक्तः - तृतीया तत्पुरुष अथवा अविद्यमानं बलं यस्याः सा अबला - **बहुव्रीहि समास**

➢ कनकवलयभ्रंशरिक्तप्रकोष्ठः - कनकस्य वलयस्य भ्रंशेन रिक्तः प्रकोष्ठः यस्य सः **बहुव्रीहि समास**

➢ **कामी -** कामः अस्य अस्ति इति कामी

➢ **प्रथमदिवसे -** प्रथमेदिवसे प्रथमदिवसे - **कर्मधारय**

➢ **आश्लिष्टसानुम् -** आश्लिष्टं सानु येन तम् - **(बहुव्रीहि समास)**

➢ **वप्रक्रीडापरिणतगजप्रेक्षणीयम् -** वप्रक्रीडासु परिणतः तत्पुरुष स चासौ गजः **(कर्मधारय तत्पुरुष)**

➢ तमिव प्रेक्षणीयम् **(उपमित तत्पुरुष)** अथवा वप्रक्रीडापरिणत गज इव प्रेक्षणीयः तम् - **(कर्मधारयसमास)**

प्रत्यय

➢ **विप्रयुक्तः -** वि + प्र + युज् + क्त (वि+प्र+युज् +क्त)

➢ **कामी -** कम् + घञ् = कामः अथवा कामः अस्य अस्तीति काम + इनि = कामिन् (कामी)

➢ **कतिचित् -** कति + चित्

➢ **नीत्वा -** नी + क्त्वा

➢ **आश्लिष्टः -** आङ् + श्लिष् + क्त

➢ **आधान -** आ + धा + ल्युट्

➢ **प्रेक्षणीयं -** प्र + ईक्ष् + अनीयर्

धातुरूप -

➢ **ददर्श -** दृश् + लिट्। प्रथम पुरुष, एकवचन (परस्मैपद)

➢ **कतिचित् -** कति शब्द नित्य बहुवचनान्त है। इसमें चित् अव्यय का योग हुआ है।

➢ **अलङ्कार -** गजप्रेक्षणीयम् में उपमा वाचक शब्द "इव" लुप्त है अतः यहाँ लुप्तोपमा अलङ्कार है।

श्लोक से बनने वाले सम्भावित प्रश्न

➢ यक्ष कितने माह पर्वत पर व्यतीत कर चुका था? - **आठ माह**

➢ यक्ष ने पर्वत चोटी से किसे देखा? - **मेघ को**

➢ किस माह में यक्ष ने मेघ को सर्वप्रथम देखा? - **आषाढ माह के प्रथम दिन**

➢ यक्ष किस कारण अत्यन्त दुर्बल हो गया था? **अपनी प्रिया के विरह से**

➢ यक्ष ने अपने हाथ में क्या पहन रखा था? **स्वर्ण कङ्कण**

➢ यक्ष की कलाई किसके गिरने से सूनी हो गयी थी? - **स्वर्ण कङ्कण।**

श्लोक - 3

तस्य स्थित्वा कथमपि पुरः कौतुकाधानहेतो
रन्तर्वाष्पश्चिरमनुचरो राजराजस्य दध्यौ।
मेघालोके भवति सुखिनोऽप्यन्यथावृत्ति चेतः
कण्ठाश्लेषप्रणयिनि जने किं पुनर्दूरसंस्थे॥3॥

अन्वय - राजराजस्य अनुचरः अन्तर्वाष्पः कौतुकाधानहेतोः तस्य पुरः कथम् अपि स्थित्वा चिरम् दध्यौ मेघालोके सुखिनः अपि चेतः अन्यथावृत्ति भवति कण्ठाश्लेषप्रणयिनि जने दूरसंस्थे किम् पुनः।

शब्द	**अर्थ**
राजराजस्य	यक्षराज कुबेर का
अनुचरः	आँखो में आँसुओं को भीतर ही भीतर रोककर
कौतुकाधानहेतोः	उत्कण्ठा उत्पन्न करने वाले
तस्य	उस मेघ के
पुरः	सामने

कथमपि	किसी प्रकार, बड़े प्रयत्न से
स्थित्वा	खड़े होकर
चिरम्	बहुत समय तक
दध्यौ	सोचा
मेघालोके	मेघ के दिखाई देने पर
सुखिनः	सुखी व्यक्ति का
अपि	भी
चेतः	चित्त
अन्यथावृत्ति	दूसरे ही प्रकार के व्यवहार वाला
भवति	हो जाता है
कण्ठाश्लेषप्रणयिनि जने	आलिङ्गन की इच्छा वाले व्यक्ति से
किम् पुनः	फिर कहना ही क्या है?
दूरसंस्थे	दूर रहने पर

अनुवाद - यक्षों के राजा कुबेर का सेवक आखों के अन्दर ही अन्दर आँसुओं को रोके हुए, उत्कण्ठा को उत्पन्न करने वाले उस मेघ के सामने किसी प्रकार ठहर कर देर तक सोचता रहा। मेघ के दर्शन होने पर सुखी व्यक्ति का भी चित्त दूसरे प्रकार की वृत्ति वाला (चञ्चल) हो जाता है, फिर कण्ठ के आलिङ्गन के इच्छुकजन प्रिया के दूर स्थित होने पर तो कहना ही क्या।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

समास -

- **राजराजस्य -** राज्ञां राजा राजराजः - **(षष्ठी तत्पुरुष)**
- **अन्तर्वाष्पः -** अन्तः स्तम्भितं वाष्पं **(मध्यमपद लोपी)** यस्य सः **(बहुव्रीहि)**
- **कौतुकाधानहेतोः -** कौतुकस्य आधानं तस्य हेतोः **(षष्ठी तत्पुरुष)**
- **मेघालोके -** मेघस्य आलोकः, तस्मिन् **(षष्ठी तत्पुरुष)**
- **अन्यथावृत्ति -** अन्यथा वृत्तिः यस्य सः **(बहुव्रीहि)**
- **कण्ठाश्लेषप्रणयिनि -** कण्ठस्य आश्लेषः तस्य प्रणयी, तस्मिन् **(षष्ठी तत्पुरुष)**

प्रत्यय

- **अनुचर -** अनु + चर् + अच्
- **कौतुक -** कुतुक + अण्
- **आधानम् -** आङ् + धा + ल्युट्
- **स्थित्वा -** स्था + क्त्वा
- **पुरः, चिरम् -** अव्यय पद हैं दोनों
- **सुखिनः -** सुख + इनि
- **आश्लेष -** आङ् + श्लिष् + घञ् (भावे)
- **प्रणयी -** प्रणय + इनि
- **संस्था -** सम् + स्था + आङ्

धातुरूप

- **दध्यौ -** ध्यै + लिट् प्रथम पुरुष, एकवचन
- **अलङ्कार -** इस श्लोक में उत्तरार्द्ध से पूर्वार्द्ध स्थित चिन्तारूप पदार्थ का समर्थन होने से अर्थान्तरन्यास अलङ्कार और उत्तरार्द्ध में 'किं पुनर्दूरसंस्थे' में अर्थापत्ति अलङ्कार है। इस प्रकार अर्थान्तरन्यास और अर्थापत्ति के निरपेक्ष से स्थित होने के कारण **संसृष्टि अलङ्कार** है।

सम्भावितप्रश्न -

- राजराजस्य शब्द किसके लिए आया है? - **कुबेर के लिए**
- 'जने' शब्द यहाँ किसके लिए आया है? - **(प्रिया) यक्षणी के लिए**
- अपने आँसुओं को कौन अन्दर ही अन्दर रोके रहता है? - **यक्ष**
- 'दध्यौ' शब्द का धातु, लकार और वचन बताइये? **ध्यै + लिट् लकार** , प्रथमपुरुष, एकवचन
- मेघ को देखकर चित्त कैसा हो जाता है? - **चञ्चल**
- 'कि पुनर्दूरसंस्थे' में कौन सा अलङ्कार है? - **अर्थापत्ति**
- मेघालोके में कौन सा समास है? - **षष्ठी तत्पुरुष**

श्लोक - 4

प्रत्यासन्ने नभसि दयिताजीवितालम्बनार्थी
जीमूतेन स्वकुशलमयीं हारयिष्यन् प्रवृत्तिम्।
स प्रत्यग्रैः कुटजकुसुमैः कल्पितार्घाय तस्मै
प्रीतः प्रीतिप्रमुखवचनं स्वागतं व्याजहार॥4

अन्वय - नभसि प्रत्यासन्ने दयिताजीवितालम्बनार्थी सः जीमूतेन स्वकुशलमयीं प्रवृत्तिं हारयिष्यन् प्रत्यग्रैः कुटजकुसुमैः कल्पितार्धाय तस्मै प्रीत प्रीतिप्रमुखवचनम् स्वागतम् व्याजहार।

शब्द	अर्थ
नभसि	श्रावण मास के
प्रत्यासन्ने	सन्निकट आने पर
दयिताजीवितालम्बनार्थी	प्रिया के जीवन धारण के इच्छुक
सः	उस यक्ष ने
जीमूतेन	मेघ द्वारा
स्वकुशलमयीम्	अपने कुशल से पूर्ण
हारयिष्यन्	भेजने की इच्छा से
प्रत्यग्रैः	तत्काल तोड़े गये (ताजे)
कुटजकुसमैः	कुटज (पर्वतीय चमेली) के पुष्पों से
कल्पितार्घाय	अर्घ्य सामग्री तैयार करके
प्रीतः	प्रेमपूर्वक
प्रीतिप्रमुखवचनम्	प्रणय भरे शब्दों से
स्वागतम् व्याजहार	स्वागत कहा

अनुवाद - श्रावण मास के निकट आने पर प्रिया के जीवन को सहारा देने के इच्छुक उस (यक्ष) ने मेघ द्वारा अपने कुशलमय समाचार को भेजने की इच्छा से तत्काल तोड़े गये ताजे कुटज के पुष्पों से अर्घ्य सामग्री तैयार करके उस मेघ के लिए प्रसन्नतापूर्वक प्रणय भरे वचनों से स्वागत कहा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी -

समास -

- **दयिताजीवितालम्बनार्थी -** दयितायाः जीवितम् - **(षष्ठी तत्पुरुष)** दयिताजीवितम् तस्य आलम्बनम् - दयिताजीवितालम्बनार्थी - **(षष्ठी तत्पुरुष समास)**

- **जीमूतेन** - जीवनस्य उदकस्य मूतः पटबन्धः जीमूतः तेन **(तृतीया तत्पुरुषसमास)**
- **स्वकुशलमयीं** - स्वस्य कुशलम् **(षष्ठी तत्पुरुष)**
- **प्रत्यग्रैः** - अग्रं प्रति गतः प्रत्यग्रः तैः **(बहुव्रीहि)**
- **कल्पितार्घाय** - कल्पितोऽर्घो यस्मै तस्मै **(बहुव्रीहिसमास)**
- **प्रीतिप्रमुखवचनम्** - प्रीतिः प्रमुखं येषां येषु वा तानि **(बहुव्रीहि समास)** तानि वचनानि यस्मिन् कर्मणि तत् **(बहुव्रीहिसमास)**
- **स्वागतम्** - सुशोभनम् आगतं तत् **(नित्यकर्मधारय)**

प्रत्यय -

- **प्रत्यासन्ने** - प्रति + आ + सद् + क्त
- **दयिताजीवितालम्बनार्थी** - जीव + क्त , आङ् + लबि + ल्युट् दयिताजीवितालम्बन + णिनि (इन्)
- **स्वकुशलमयीम्** - स्वकुशल + मयट् +ङीप्
- **हारयिष्यन्** - हृ + णिच् = हारि + इट् + स्य + शतृ
- **प्रीतः** - प्रीञ् + क्त
- **प्रीति** - प्रीञ् + क्तिन्
- **स्वागतम्** - सु + आ + गम् + क्त
- **व्याजहार** - वि + आङ् + हृञ् + लिट्
- **प्रवृत्तिम्** - प्र + वृत् + क्तिन्

कारक

- **कुटजकुसुमैः** - अर्घ्य क्रिया के अत्यन्त उपकारक होने से 'साधकतमं करणम्' इससे करण संज्ञा होकर कर्तृकरणयोस्तृतीया सूत्र से तृतीया विभक्ति हुई।
- **नभसि** - नभस् (नपुंसकलिङ्ग, सप्तमी एकवचन)
- **अलङ्कार** - इस श्लोक में प्री, प्र, व , त की असकृत् होने से **वृत्त्यनुप्रास** शब्दालङ्कार है।

सम्भावितप्रश्न -

- यक्ष ने किससे अर्घ्य सामग्री तैयार की? - **कुटज के पुष्पों से**
- जीमूतेन शब्द किसके लिए आया है? - **मेघ के लिए**
- स्वागतम् शब्द में प्रकृति प्रत्यय बताइये? **सु + आ + गम् + क्त**
- 'प्रीतिप्रमुखवचनम्' शब्द में कौन सा समास है? **बहुव्रीहि**
- 'नभसि' शब्द से किस महीने का बोध होता है? - **श्रावण माह का**
- नभसि शब्द का लिङ्ग और वचन बताइये? **नभस् शब्द - सप्तमी एकवचनम्**

श्लोक - 5

धूमज्योतिः सलिलमरुतां सन्निपातः क्व मेघः
संदेशार्थाः क्व पटुकरणैः प्राणिभिः प्रापणीयाः।
इत्यौत्सुक्यादपरिणयन्गुह्यकस्तं ययाचे
कामार्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु॥5

अन्वय - धूमज्योतिः सलिलमरुतां सन्निपातः मेघः क्व? पटुकरणैः प्राणिभिः प्रापणीयाः संदेशार्थाः क्व? इति औत्सुक्यात् अपरिगणयन् गुह्यकः तं ययाचे, हि कामार्ताः चेतनाचेतनेषु प्रकृतिकृपणाः।

शब्द	अर्थ
धूमज्योतिः सलिलमरुताम्	धुआँ, अग्नि, जल व वायु का
सन्निपातः	(संघटन) मिश्रण
मेघः	बादल
क्व	कहाँ?
पटुकरणैः	समर्थ इन्द्रियों वाले
प्राणिभिः	प्राणियों के द्वारा
प्रापणीयाः	पहुचाने योग्य
सन्देशार्थाः	संदेशवाक्य
इति	इस बाद को
औत्सुक्यात्	उत्कण्ठा के कारण
अपरिगणयन्	विचार न करते हुए
गुह्यकः	यक्ष ने
तम्	उस मेघ से
ययाचे	याचना की
हि	क्योंकि
कामार्ताः	काम से पीड़ित प्राणी
चेतनाचेतनेषु	जड़ और चेतन पदार्थों के विषय में
प्रकृतिकृपणाः	स्वभाव से दीन, विवेकशून्य

अनुवाद - धूम, अग्नि, जल और वायु का मिश्रण मेघ कहाँ? और समर्थ इन्द्रियों वाले प्राणियों द्वारा भेजे जाने योग्य सन्देश रूपी वस्तु कहाँ? इसका उत्कण्ठा के कारण विचार नहीं किया, क्योंकि काम पीड़ित चेतन और जड़ के विषय में स्वभाव से दीन होते है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

समास -

- **धूमज्योतिःसलिलमरुतां** - धूमश्च ज्योतिश्च सलिलं च मरुच्च धूमज्योतिः सलिलमरुतः **(इतरेतर द्वन्द्वसमास)**
- **पटुकरणैः** - पटूनि करणानि येषां तैः **(बहुव्रीहि)**
- **संदेशार्थाः** - संदेशाः ते एव अर्थाः **(कर्मधारय)**
- **औत्सुक्यात्** - उत्सुकस्य भावः औत्सुक्यं तस्मात् कारणात् **(बहुव्रीहि)**
- **अपरिगणयन्** - न परिगणयन् इति अपरिगणयन् **(नञ् तत्पुरुष समास)**
- **कामार्ता** - कामेन आर्ता **(तृतीया तत्पुरुष)**
- **चेतनाचेतनेषु** - चेतनाश्च अचेतनाश्च तेषु **(द्वन्द्व समास)**
- **प्रकृतिकृपणाः** - प्रकृत्या कृपणाः **(तृतीया तत्पुरुष समास)**

प्रत्यय -

- **सन्निपातः** - सम्+नि+पत्+घञ्
- **पटुकरणैः** - पटु+डुकृञ्+ल्युट्
- **सन्देशः** - सम्+दिश्+घञ्
- **प्राणिभिः** - प्राण+इनि
- **प्रापणीयाः** - प्र+आप्+णिच्+अनीयर्

- **औत्सुक्यात् -** उत्सुक+ष्यञ्
- **अपरिगणयन् -** नञ्+परि+गण्+शतृ
- **गुह्यकः -** गुह्+ण्वुल्

धातुरूप-

- **ययाचे -** याच् + लिट् प्रथम पुरुष, एकवचन
- **अलङ्कार -** यहाँ मेघ तो अचेतन है किन्तु सन्देश पूर्ण इन्द्रिय से सम्पन्न व्यक्ति ही ले जाने योग्य होता है। इस प्रकार दो विपरीत पदार्थों का कथन होने के कारण **विषमालङ्कार** हुआ।
  इस श्लोक के चतुर्थ चरण के सामान्य से तृतीय चरण के विशेष कथन का समर्थन किया गया है, इसलिए अर्थान्तरन्यास अलङ्कार है।

सम्भावित प्रश्न -

- मेघ कितने तत्वों के मिश्रण से बना है? **4 (चार तत्वों से)**
- मेघ के निर्माण में प्रयुक्त होने वाले तत्वों के नाम लिखिए? **धूआँ, अग्नि, जल, वायु**
- जड़ और चेतन के विषय में स्वभाव से कौन दीन होता है? **कामपीड़ित**
- सन्निपात शब्द का क्या अर्थ है? - **मिश्रण (संघटन)**
- 'ययाचे' शब्द का लकार और वचन लिखिए? **याच्** लिट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन
- 'गुह्यकः' शब्द किसके लिए आया है? **यक्ष के लिए**
- पटुकरणैः शब्द में कौन समास है? **पटूनि करणानि येषां तैः** (बहुव्रीहि)

श्लोक- 6

जातं वंशे भुवनविदिते पुष्करावर्तकानां
जानामि त्वां प्रकृतिपुरुषं कामरूपं मघोनः।
तेनार्थित्वं त्वयि विधिवशाद् दूरबन्धुर्गतोऽहं
याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा॥6

अन्वय - त्वाम् भुवनविदिते पुष्करावर्तकानां वंशे जातं मघोनः कामरूपं प्रकृतिपुरुषं जानामि। तेन विधिवशात् दूरबन्धुः अहं त्वयि अर्थित्वं गतः। अधिगुणे याच्ञा मोघा वरं अधमे लब्धकामा न।

शब्द	अर्थ
त्वाम्	तुमको
भुवनविदिते	लोकप्रसिद्ध
पुष्करावर्तकानाम्	पुष्कर और आवर्तक नाम के
वंशे	कुल में
जातम्	उत्पन्न हुए
कामरूपम्	अपनी इच्छानुसार शरीर को धारण करने वाले
मघोनः	इन्द्र का
प्रकृतिपुरुषम्	प्रधान पुरुष के रूप में
जानामि	जानता हूँ
तेन	इस कारण से
विधिवशात्	भाग्यवश
दूरबन्धुः	अपनी प्रियतमा से वियुक्त
अहम्	मैं
त्वयि	तुमसे
अर्थित्वं गतः	अधिक गुण वाले व्यक्ति से
याच्ञा	याचना
मोघा	निष्फल
अपि	भी
वरम्	अच्छी
अधमे	नीच व्यक्ति के विषय में
लब्धकामाऽपि	सफल होती हुई
न वरम्	अच्छी नही

अनुवाद - (हे मेघ मैं) तुमको संसार में प्रसिद्ध पुष्कर और आवर्तक मेघों के वंशो में उत्पन्न इन्द्र का इच्छानुसार रूप धारण करने वाला प्रधान पुरुष जानता हूँ।
इसलिए दैवयोग से दूर स्थित बन्धु वाला मैं तुम्हारे विषय में याचकत्व को प्राप्त हुआ हूँ। अधिक गुण वाले से की गयी याचना निष्फल होने पर भी अच्छी है, परन्तु (निर्गुण) नीच से की गयी याचना सफल कामना वाली भी अच्छी नही।

व्याकरणात्मक टिप्पणी -

समास -

- **भुवनविदिते -** भुवनेषु विदिते (सप्तमी तत्पुरुष समास)
- **पुष्करावर्तकानाम् -** पुष्कराश्च आवर्तकाश्च, तेषाम् (द्वन्द्व समास)
- **कामरूपम् -** कामं रूपं कामेन रूपं वा यस्य तम् (बहुव्रीहि)
- **प्रकृतिपुरुषम् -** प्रकृतिश्चासौ पुरुषश्च (कर्मधारय)
- **दूरबन्धुः -** दूरे बन्धुः यस्य सः (बहुव्रीहि)
- **विधिवशात् -** विधेः वशः, तस्मात् (बहुव्रीहिसमास)
- **लब्धकामा -** लब्धः कामः यया सा (बहुव्रीहि समास)

प्रत्यय -

- **विदिते -** विद् + क्त
- **जातम् -** जन् + क्त
- **बन्धुः -** बन्ध् + उ
- **अर्थित्वम् -** अर्थ + णिनि - अर्थिन् + त्व
- **गतः -** गम् + क्त
- **याच्ञा -** याच् + नङ् (श्चुत्व) + टाप् (अ)
- **मोघा -** मुह् + घञ् (अ)

धातुरूप-

- **जानामि -** ज्ञा + लट् लकार उत्तमपुरुष, एकवचन
- **अलङ्कार -** "याच्ञा मोघा लब्धकामा" यहाँ सामान्य अर्थ से विशेष अर्थ का समर्थन होने के कारण **अर्थान्तरन्यास** अलंकार है।

सम्भावित प्रश्न -

- इच्छानुसार रूप धारण करने वाला कौन है? **मेघ**
- यक्ष मेघ को किसका प्रधान सेवक मानता है? **इन्द्र का**
- यक्ष मेघ को किस कुल में उत्पन्न हुआ बताता है? **पुष्कर और आवर्तक कुल में**
- अधिक गुण वाले से की गयी निष्फल कामना भी किस प्रकार की है? - **श्रेष्ठ (या अच्छी)**
- 'दूरबन्धुः' शब्द किसके लिए आया है? - **यक्ष के लिए**
- भुवनविदिते में कौन सा समास है? - **भुवनेषु विदिते (सप्तमी तत्पुरुष)**
- इस श्लोक में कौन सा अलङ्कार है? - **अर्थान्तरन्यास**

श्लोक - 7

सन्तप्तानां त्वमसि शरणं तत्पयोद प्रियायाः
संदेशं मे हर धनपतिक्रोधविश्लेषितस्य।
गन्तव्या ते वसतिरलका नाम यक्षेश्वराणां
बाह्योद्यानस्थितहरशिरश्चन्द्रिका धौतहर्म्या॥7

अन्वय - पयोद! त्वं सन्तप्तानां शरणम् असि तत् धनपति क्रोधविश्लेषितस्य मे सन्देशं प्रियायाः हर, ते बाह्योद्यानस्थित-हरशिरश्चन्द्रिका धौतहर्म्या अलका नाम यक्षेश्वराणां वसतिः गन्तव्या।

शब्द	**अर्थ**
पयोद	हे मेघ
त्वम्	तुम
सन्तप्तानाम्	ताप से तपे हुओं का
शरणम्	रक्षक
धनपतिक्रोध-	कुबेर के क्रोध से-
विश्लेषितस्य	(प्रिया से) वियुक्त किये गये
सन्देशम्	संदेश को
प्रियायाः हर	प्रिया के पास ले जाओ
बाह्योद्यानस्थितहर-शिरश्चन्द्रिकाधौतहर्म्या	जिसके महल, बाहर के उद्यान में रहने वाले भगवान् शिव के मस्तक पर स्थित चन्द्रिका से धुले रहते हैं
यक्षेश्वराणाम्	श्रेष्ठ यक्षों की या कुबेर की
वसतिः	निवासस्थान (नगरी)
गन्तव्या	जाने योग्य है!

अनुवाद - (हे) मेघ! तुम (विरह) पीड़ितों के रक्षक हो, इसलिए कुबेर के क्रोध से वियुक्त हुए मेरे सन्देश को प्रिया के पास ले जाओ। तुम्हे बाहर के उद्यान में विद्यमान शिव के सिर पर स्थित चाँदनी से उज्ज्वल महलों से युक्त अलका नाम वाली यक्षों के स्वामी कुबेर की नगरी जाना है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी -

समास -

- **धनपतिक्रोधविश्लेषितस्य -** धनस्य पतिः (षष्ठीतत्पुरुष) धनपतेः क्रोधः (षष्ठी तत्पुरुष) तेन विश्लेषितस्य (तृतीया तत्पुरुष)
- **बाह्योद्यानस्थितहरशिरश्चन्द्रिकाधौतहर्म्या -** बाह्ये उद्याने स्थितस्य हरस्य शिरसि (बहुव्रीहि) अथवा चन्द्रिका तया धौतानि हर्म्याणि यस्यां सा तथोक्ता (बहुव्रीहि) बाह्यं च तत् उद्यानम् (कर्मधारय)
- **यक्षेश्वराणां -** यक्षाणां यक्षेषु वा ईश्वराः यक्षेश्वराः (षष्ठी व सप्तमी तत्पुरुष) अथवा यक्षाश्च ते ईश्वराश्च यक्षेश्वराः (कर्मधारय)

प्रत्यय

- **पयोद -** पयस् + दा + क
- **सन्तप्तानाम् -** सम् + तप् + क्त
- **विश्लेषित -** वि + श्लि + णिच् + क्त
- **प्रियायाः -** प्रीञ् + क + टाप्
- **अलका -** अल् + क्वुन् +टाप्
- **नाम -** यह प्रकाश्य सूचक अव्यय है।
- **गन्तव्या -** गम् + तव्य
- **हर -** हृञ् लोट् मध्यमपुरुष, एकवचन
- **वसति -** वस् + अति

विशेष -

- **अलका** यह कुबेर की राजधानी है।
- कैलाश पर बसी मानी जाती है।
- इसको वसुन्धरा, वसुस्थली, प्रभा भी कहते हैं।
- **अलति भूषयति इति अलका**
- **बाह्योद्यान -**
- इसका नाम **चित्ररथ** अथवा **वैभ्राज** बतलाया गया है।
- अलका में ही कुबेर का रम्य उद्यान है।
- **अलङ्कार -** हे पयोद! इस सार्थक विशेष्य से **परिकरालङ्कार** है।

सम्भावित प्रश्न-

- कुबेर की नगरी कौन सी है? **अलका**
- शिव के सिर की चाँदनी से कहाँ के महल अत्यन्त उज्ज्वल हैं? - **अलका नगरी के**
- विरह पीड़ितों का रक्षक किसे कहा गया है? - **मेघ को**
- पयोद शब्द किसके लिए आया है? **मेघ के लिए**
- अलका शब्द में प्रकृति प्रत्यय बताइये? - **अलति भूषयति इति अलका - अल् + क्वुन् + टाप्**
- 'यक्षेश्वराणां' में कौन समास है? यक्षाणां यक्षेषु वा ईश्वराः यक्षेश्वराः (षष्ठी व सप्तमी तत्पुरुष)
  अथवा
  यक्षाश्च ते ईश्वराश्च यक्षेश्वराः (कर्मधारय)

श्लोक - 8

त्वामारूढं पवनपदवीमुद्गृहीतालकान्ताः
प्रेक्षिष्यन्ते पथिकवनिताः प्रत्ययादाश्वसत्यः।
कः सन्नद्धे विरहविधुरां त्वय्युपेक्षेत जायां
न स्यादन्योऽप्यहमिव जनो यः पराधीनवृत्तिः॥8

अन्वय - पवनपदवीम् आरूढं त्वां पथिकवनिताः प्रत्ययात् आश्वसत्यः उद्गृहीतालकान्ताः प्रेक्षिष्यन्ते। त्वयि सन्नद्धे विरहविधुरां जायां कः उपेक्षेत? अन्य अपि यः जनः अहम् इव पराधीनवृत्तिः न स्यात्।

शब्द	**अर्थ**
पवनपदवीम्	वायु मार्ग में, आकाश में
आरुढम्	चढ़े हुए
त्वाम्	तुमको
पथिकवनिता	परदेश गये हुए व्यक्तियों की स्त्रियाँ
प्रत्ययात्	(पति के शीघ्र आगमन के) विश्वास से
आश्वसत्यः	आश्वस्त होकर
उद्गृहीतालकान्ताः	अपने घुँघराले बालों के अग्रभाग को ऊपर पकड़े हुए
प्रेक्षिष्यन्ते	(उत्कण्ठा से) देखेंगी
त्वयि	तुम्हारे
सन्नद्धे	उमड़ने पर
विरह विधुराम्	विरह से व्याकुल
जायाम्	कान्ता की
उपेक्षेत	उपेक्षा करेगा
अन्य	दूसरा
अहमिव	मेरी तरह
पराधीनवृत्तिः	दूसरों के अधीन जीविका वाला
न स्यात्	न हो तो।

➤ **अनुवाद-** वायु मार्ग में चढ़े हुए तुमको परदेश गये हुए व्यक्तियों की स्त्रियाँ पति के शीघ्र आगमन के विश्वास से आश्वस्त होकर बालों के अग्रभाग को ऊपर पकड़े हुए उत्कण्ठा से देखेंगी। (क्योंकि) तुम्हारे उमड़ने पर विरह से व्याकुल पत्नी की कौन उपेक्षा करेगा, जो मेरे समान दूसरों के अधीन आजीविका वाला न हो।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

समास -

➤ **पवनपदवीम् -** पवनस्य पदवीम् (षष्ठी तत्पुरुष)
➤ **उद्गृहीतालकान्ताः -** अलकानाम् अन्ताः (षष्ठी तत्पुरुष) उद्गृहीतालकाऽन्ता याभिस्ताः (बहुव्रीहि)
➤ पथिकवनिताः - पथिकानाम् वनिताः (षष्ठी तत्पुरुष)
➤ विरहविधुराम् - विरहेण विधुरा (तृतीया तत्पुरुष)
➤ विधुरा - विगता धूः अस्या इति विधुरा (बहुव्रीहि)
➤ पराधीनवृत्तिः - परस्मिन् अधीना वृत्तिः यस्य सः (बहुव्रीहि)

प्रत्यय -

➤ पवनपदवीम् - पुनातीति पवनः पू+ल्युट्
➤ आरूढम् - आङ्+रुह्+क्त
➤ पथिकवनिता - पथिन्+ष्कन्
➤ प्रत्ययात् - प्रति+इ+अच्
➤ आश्वसत्यः - आङ्+श्वस्+शतृ (ङीप् , स्त्रीत्व की विवक्षा में)
➤ प्रेक्षिष्यन्ते - प्र+ईक्ष्+लृटलकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन
➤ सन्नद्धः - सम्+नह्+क्त
➤ जायां - जन्+यक्+टाप्
➤ विरहः - वि+रह्+अच्

धातुरूप -

➤ स्यात् - अस् विधिलिङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन
➤ उपेक्षेत - उप + ईक्ष् + विधिलिङ्, प्रथम पुरुष, एकवचन

कारक -

➤ प्रत्ययात् - 'विभाषा गुणेऽस्त्रियाम्' सूत्र से हेतु में पञ्चमी हुई।
➤ **अलङ्कार -** इस श्लोक में पकार, तकार और दकार की बार-बार आवृत्ति होने से वृत्त्युनुप्रास नामक शब्दालङ्कार है।
(2) सामान्य से विशेष का समर्थन होने के कारण अर्थान्तरन्यास अलङ्कार है।

सम्भावित प्रश्न -

➤ पराधीनवृत्ति वाला कौन है? **यक्ष**
➤ पथिकवनिताः शब्द में कौन सा समास है? **पथिकानाम् वनिताः (षष्ठीतत्पुरुष)**
➤ 'प्रत्ययात्' शब्द में प्रकृति प्रत्यय बताइये? **प्रति+इ+अच्**
➤ इस श्लोक में कौन सा अलङ्कार है? **अर्थान्तरन्यास**

श्लोक -9

मन्दं मन्दं नुदति पवनश्चानुकूलो यथा त्वां
वामश्चायं नदति मधुरं चातकस्ते सगन्धः।
गर्भाधानक्षणपरिचयान्नूनमाबद्धमालाः
सेविष्यन्ते नयनसुभगं खे भवन्तं बलाकाः॥9

अन्वय - अनुकूलः पवनः त्वां मन्दं मन्दं यथा नुदति, अयं सगन्धः ते वामः चातकः मधुरं नदति। गर्भाधानक्षणपरिचयात् खे आबद्धमालाः बलाकाः नयनसुभगं भवन्तम् नूनं सेविष्यन्ते।

अर्थ	**अर्थ**
अनुकूलः	मृदु गति से पीछे-पीछे चलने वाला
पवनः	वायु
मन्दं मन्दम्	बहुत धीरे, मन्थर गति से
यथा त्वां	तुम्हारे समान ही
नुदति	प्रेरित कर रहा है
सगन्धः	गर्व सहित
ते	तुम्हारे
वामः	बाईं ओर स्थित (वामभागस्थ)
चातकः	पपीहा पक्षी
मधुरं नदति	मधुर शब्द कर रहा है
गर्भाधानक्षणपरिचयात्	गर्भाधान के आनन्द से परिचित होने के कारण
खे	आकाश में

आबद्धमालाः	पंक्ति में बँधी हुई
बलाकाः	बगुलियाँ
नयनसुभगम्	नयनों को सुन्दर लगने वाले
भवन्तम्	तुम्हारा
नूनम्	निश्चय ही
सेविष्यन्ते	आश्रय लेगीं (सेवन करेंगी)

अनुवाद - और जैसे कि अनुकूल वायु तुम्हें धीरे धीरे प्रेरित कर रहा है तथा गर्व से भरा यह पपीहा तुम्हारे वाम भाग में स्थित होकर मधुर शब्द कर रहा है। निश्चय ही गर्भ धारण करने वाली बगुलियाँ नेत्रों को सुन्दर लगने वाले आपकी आकाश में सेवा करेंगी।

व्याकरणात्मक टिप्पणी -

समास -

- **गर्भाधानक्षणपरिचयात् -** गर्भस्य आधानम् (षष्ठी तत्पुरुष) तदेव क्षणः (कर्मधारय समास) तस्मिन् परिचयः (सप्तमी तत्पुरुष) अथवा
- गर्भाधाने क्षमः समर्थः परिचयः संगमो यस्य तम् (बहुव्रीहि समास)
- **आबद्धमालाः –** आबद्धा माला याभिः ताः (बहुव्रीहि समास)
- **नयनसुभगम् -** नयनयोः सुभगः (षष्ठी तत्पुरुष)

प्रत्यय -

- **आधान -** आ+धा+ल्युट्
- **आबद्ध -** आ+बन्ध्+क्त
- **बलाका -** बल+अक्+अच्+टाप्

धातुरूप -

- नुदति=नुद्, लट्लकार , प्रथम पुरुष, एकवचन
- नदति - णद् लट्लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन
- सेविष्यन्ते - सेव् लट्लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन
- **अलङ्कार -** इस श्लोक में मकार, नकार, दकार, तथा तकार की असकृत् आवृत्ति होने से अनुप्रास अलङ्कार है।

सम्भावित प्रश्न -

- मेघ के बायें भाग में कौन स्थित है? **चातक (पपीहा)**
- 'नयनसुभगम्' मे कौन सा समास है-**षष्ठीतत्पुरुष/ नयनयोः सुभगः**
- बलाका शब्द में प्रकृति प्रत्यय बताइये? **बल+अक्+अच्+टाप्**
- सेविष्यन्ते का धातु और वचन बताइये? **सेव + लट् लकार, प्रथम पुरुष बहुवचन**

श्लोक - 10

तां चावश्यं दिवसगणनातत्परामेकपत्नी
मव्यापन्नामविहतगतिर्द्रक्ष्यसि भ्रातृजायाम्।
आशाबन्धः कुसुमसदृशं प्रायशो ह्यङ्गनानाम्
सद्यःपाति प्रणयि हृदयं विप्रयोगे रुणद्धि॥10

अन्वय - अविहतगतिः दिवसगणनातत्पराम् एकपत्नीं तां भ्रातृजायां च अव्यापन्नाम् अवश्यं द्रक्ष्यसि, हि आशाबन्धः अङ्गनानां कुसुमसदृशं विप्रयोगे सद्यः पाति प्रणयि हृदयं प्रायशः रुणद्धि।

शब्द	**अर्थ**
अविहतगतिः	बेरोक टोक गति वाला
दिवसगणनातत्पराम्	दिनों की गणना में लगी हुई
एकपत्नीम्	पतिव्रता
भ्रातृजायां	भाभी को
अव्यापन्नाम्	जीवित (आने की आशा से)
अवश्यं	निश्चित हि
द्रक्ष्यसि	देखोगे
आशाबन्धः	आशा का बन्धन
अङ्गनानाम्	महिलाओं का
कुसुमसदृशं	फूल के समान कोमल
विप्रयोगे	वियोग में
सद्यःपाति	शीघ्र नष्ट हो जाने वाला
प्रणयि हृदयं	प्रेमी हृदय को
प्रायशः	प्रायः
रुणद्धि	रोके रखता है।

अनुवाद - (हे मेघ) अबाध गति वाले तुम दिन गिनने में लगी हुई उस पतिव्रता भाभी को अवश्य ही जीवित देखोगे। (क्योंकि) आशा का बन्धन फूल के समान शीघ्र कुम्हलाने वाले स्त्रियों के प्रेमी हृदय को वियोग में प्रायः थामे रहता है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी -

समास-

- दिवसगणनातत्पराम् - दिवसानां गणना (षष्ठी तत्पुरुष) तस्यां तत्परा ताम् (षष्ठी तत्पुरुष)
- अव्यापन्नाम् - न व्यापन्ना (नञ् तत्पुरुष समास)
- एकपत्नीम् - एकः पतिः यस्याः सा एकपत्नी (बहुव्रीहि) एका चाऽसौ पत्नी ताम् एकपत्नी (कर्मधारय)
- भ्रातृजायां - भ्रातुः जाया भ्रातृजाया (षष्ठी तत्पुरुष)
- अविहतगतिः - अविहता गतिः यस्य सः (बहुव्रीहि) अथवा न विहता गतिः यस्य सः (बहुव्रीहि)
- आशाबन्धः - आशा एव बन्धः (कर्मधारय समास) आशायाः बन्धः (षष्ठी तत्पुरुष)
- कुसुमसदृशम् - कुसुमेन सदृशम् (तृतीया तत्पुरुष)
- सद्यःपाति - सद्यः पततीति तच्छीलं (उपपद तत्पुरुष)

प्रत्यय

- गणना - गण+णिच्+युच्+टाप्
- गतिः - गम्+क्तिन्
- विहतः - वि+हन्+क्त

- बन्धः - बन्ध+घञ्
- प्रायशः - प्राय+शस्
- अङ्गना - अङ्ग+नङ्+टाप्
- सद्यःपाति - सद्यस्+पत्+णिनि
- विप्रयोगे - वि+प्र+युज्+घञ्

धातुरूप -

- दक्ष्यसि - दृश्+लृट्लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन
- रुणद्धि - रुध् लट्लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन
- **अलङ्कार -** इस श्लोक की तृतीय पंक्ति में प्रयुक्त आशाबन्ध में रूपक अलङ्कार है।
- कुसुमेन तुल्यम् इति कुसुमसदृशम् इस पद में लुप्तोपमा अलङ्कार है।
- उत्तरार्द्ध में सामान्य से विशेष का समर्थन होने के कारण अर्थान्तरन्यास अलङ्कार भी है।

सम्भावित प्रश्न -

- भ्रातृजाया शब्द किसके लिए आया है? **मेघ की पत्नी लिए**
- अविहतगति वाला कौन है? मेघ
- गणना शब्द में प्रकृति प्रत्यय बताइये? गण् + णिच् + युच् + टाप्

मेघदूतम्-बिन्दुवार अध्ययन

- ऋतुओं का वर्णन किसमें पाया जाता है? - **ऋतुसंहार में**
- ऋतुसंहार है - **गीतिकाव्य**
- ऋतुसंहारे कियद् ऋतूनां वर्णनमस्ति - **6 (षट्)**
- महाकवि कालिदास द्वारा रचित 'ऋतुसंहार' कहलाता है - **गीतिकाव्य**
- राजन्ते ऋतुसंहारे सर्गाः कति वदाधुना - **षट्**
- अध उक्तेष्वेको लघुत्रय्यां नास्ति - **ऋतुसंहारम्**
- मेघदूतम् के रचयिता हैं - **कालिदास**
- कालिदास द्वारा विरचित खण्डकाव्य है - **मेघदूतम्**
- मेघदूतम् के कथानक का मूलस्रोत है - **कविकल्पित**
- 'कालिदासस्य गीतिकाव्ये विरहव्यथा' वर्णिता - **यक्षस्य**
- मेघदूत किस विधा की रचना है? - **गीतिकाव्य**
- मेघदूतम् किस श्रेणी का काव्य है? - **दूतकाव्य**
- मेघदूत है - **खण्डकाव्य**
- खण्डकाव्य है - **मेघदूतम्**
- मेघदूत में किस छन्द का प्रयोग है? - **मन्दाक्रान्ता**
- मेघदूतम् में किसको संस्कृत साहित्य में एक नवीन काव्यप्रकार की उद्भावना का श्रेय प्राप्त है जो इस नाम से विख्यात है - **सन्देशकाव्य**
- मेघदूतोपरि मल्लिनाथेन विरचिता टीका ..... अस्ति? - **सञ्जीवनी**
- मेघदूते कुबेरेण निर्वासितो यक्षः कुत्र वसतिं चक्रे? - **रामगिर्याश्रमेषु**
- मेघदूतम् का प्रधान रस है? - **विप्रलम्भ शृङ्गाररस**
- केवलं मन्दाक्रान्ताच्छन्दसि निबद्धम् - **मेघदूतम्**
- मेघदूतम् में प्रयुक्त छन्द के प्रत्येक चरण में कितने अक्षर होते हैं- **17**
- मेघदूतम् का अङ्गीरस है - **वियोग शृङ्गार**
- मेघदूतम् की कथावस्तु विभक्त है - **खण्डों में**
- मेघदूतम् कितने भागों में विभक्त है - **दो**
- मेघदूतम् का प्रमुख पात्र है - **यक्ष**
- यक्ष का स्वामी कौन था? - **कुबेर**
- यक्ष को कितनी अवधि के लिये अपनी पत्नी से दूर रहना था? - **एक वर्ष**
- मेघदूतम् का नायक है? - **यक्ष**
- मेघदूतम् में यक्ष शापित है - **कुबेर के द्वारा**
- विरही यक्ष कहाँ निवास कर रहा था?- **रामगिरि पर्वत में**
- यक्ष की विरहकथा किस ग्रन्थ में वर्णित है?- **मेघदूत में**
- यक्ष ने मेघ को किस मास के प्रथम दिन को देखा था - **आषाढ के प्रथम दिन**
- पुराणों में 'मेघदूतम्' के विरही यक्ष का नाम मिलता है - **हेममाली**
- विरहिणी यक्षिणी कहाँ निवास कर रही थी?- **अलकापुरी**
- मेघदूते कस्याः नगर्याः वर्णनमस्ति - **उज्जयिन्याः**
- कस्य काव्ये मेघः दूतभावेन कल्पितः - **कालिदासस्य**
- कस्य काव्यस्यारम्भः 'कश्चित्' पदेन भवति? -**मेघदूतस्य**
- 'तस्मिन्नद्रौ कतिचिदबलाविप्रयुक्तःस कामी' मेघदूत की इस पंक्ति के आगे की पंक्ति कौन-सी है? **-नीत्वा मासान्कनकवलय-भ्रंशरिक्तप्रकोष्ठः**
- मेघदूतम् के अनुसार कैलाशपर्वत तक मेघ के सहयात्री कौन होंगे? - **राजहंस**
- 'कण्ठाश्लेषप्रणयिनि जने किं पुनर्दूरसंस्थे' इसमें 'जन' शब्द किसका बोधक है - **यक्षिणी का**
- मेघदूत में मेघ को कितने पदार्थों का सम्मिश्रण कहा गया है? - **चार**
- कालिदास के अनुसार चेतन और अचेतन में कृपण कौन है? - **कामार्त**
- 'याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा' इसमें 'अधिगुण' शब्द से किसका बोध होता है - **मेघ का**
- मेघ की यात्रा के समय वामपार्श्व में किसकी ध्वनि होती है? - **चातक की**
- मेघदूतम् में किस राजा का उल्लेख मिलता है- **उदयन का**
- "तस्मिन्नद्रौ कतिचिदबलाविप्रयुक्तः स कामी"– यहाँ 'अद्रौ' का तात्पर्य है - **पर्वत से**
- 'धूमज्योतिः सलिलमरुतां सन्निपातः क्व मेघः'

प्रस्तुत श्लोकांश में 'सन्निपात' का अर्थ है - **मेघ समूह से**
- मेघदूत में वर्णित 'पुष्करावर्तक' है - **मेघों का कुल**
- 'सम्पत्स्यन्ते कतिपयदिनस्थायिहंसाः दशार्णाः', यहाँ 'दशार्णाः' है एक - **देश**
- मेघदूतम् में 'धूमज्योतिः सलिलमरुतां सन्निपातः' है - **मेघ**
- 'प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु' होते हैं - **कामार्ताः**
- राजहंस कहाँ जाने को उत्सुक हैं - **मानसरोवर**
- यक्ष के विरह का कितना समय बीत चुका है?- **आठ माह**
- ''इत्याख्याते पवनतनयं मैथिलीवोन्मुखी सा'' यहाँ 'सा' से तात्पर्य है - **यक्षिणी**
- यक्ष को शाप किसने दिया था - **कुबेर**
- 'मेघदूतम्' में चेतन और अचेतन में कौन भेद नहीं कर पाते हैं? - **कामार्त**
- ''यक्षश्चक्रे जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु'' इस श्लोकांश में 'जनकतनया' कौन है - **सीता**
- कालिदास के अनुसार निम्नलिखित में से किससे मेघ का सम्पर्क नहीं है - **वृक्ष से**
- स्त्रियों का पहला प्रणयवचन क्या होता है - **स्त्रियों का हाव-भाव या विभ्रमप्रदर्शन करना**
- 'शापान्तो मे भुजगशयनादुत्थिते शार्ङ्गपाणौ'- यहाँ 'शार्ङ्गपाणौ' का अर्थ है -**भगवान् विष्णु**
- 'जीमूतेन स्वकुशलमयीं हारयिष्यन् प्रवृत्तिम्' प्रस्तुत पंक्ति में 'जीमूतेन' का अभिप्राय है - **बादल से**
- मेघदूत के प्रथम श्लोक में 'वर्षभोग्येण' शब्द आया है। यहाँ पर 'न' को 'ण' किस सूत्र से हुआ है?- **कुमति च**
- स्त्रियों का आशाबन्ध कैसा होता है? - **कुसुमसदृश**
- सबसे अधिक लघु (हल्का) कौन होता है?- **रिक्त (मेघ)**
- विदिशा नगरी में कौन-सी नदी थी? - **वेत्रवता**
- 'कृतान्तः' का अर्थ है - **दैव (भाग्य)**
- मेघदूतम् में मेघ को किस नदी से जल ग्रहण करने की सलाह दी गयी है? - **नर्मदा (रेवा)**
- 'मेघदूतम्' में यक्ष के शापान्त की अवधि मानी गयी है- **चार माह**
- 'मेघदूतम्' काव्य में नायक विरही यक्ष को किस कारण से अपनी नायिका से दूर जाना पड़ा? - **अपने कर्त्तव्य पालन में भूल करने के कारण शापवश**
- विन्ध्याचल की तलहटी में बहने वाली नदी है- **नर्मदा (रेवा)**
- यक्ष के प्रवास की अवधि क्या थी? - **एक वर्ष**
- मेघदूतम् में यक्ष के शाप के अवसान का दिन था - **देवप्रबोधिनी एकादशी**
- 'कुन्द' का पुष्प होता है - **सफेद**
- 'शूली' का अर्थ है - **शिव**
- 'कान्तोदन्त' का अर्थ है - **प्रियतम का वृत्तान्त**
- उज्जयिनी में स्थित शिवलिङ्ग का क्या नाम है?- **महाकाल**
- किस काव्य में अलकापुरी का वर्णन प्राप्त होता है- **मेघदूतम्**
- मेघदूतम् की यक्षिणी शापदिवसों की गणना किससे करती है? - **पुष्पों से**
- 'शफर' से अभिप्राय है- **जल में चमकने वाली एक छोटी मछली**
- मेघदूतम् में यक्ष 'वक्रः पन्था यदपि भवतः' कहकर मेघ से किस नगरी में जाने का अनुरोध करता है? - **उज्जयिनी**
- आसु कस्याः नद्या उल्लेखो मेघदूते नास्ति? - **तुङ्गभद्रायाः**
- 'मेघ' एक अचेतन, ज्ञान शून्य, धुआँ-प्रकाश और वायु का - **कामार्ता हि प्रकृतिकृप-** सम्मिश्रण है। सन्देश तो किसी अचेतन प्राणी के द्वारा ही भेजा
- कालिदास का जन्मस्थान अधिकांश विद्वान् उनके ग्रन्थों में वर्णित सामग्री के आधार पर उज्जयिनी मानते हैं। - **वक्रः पन्था यदपि भवतः**
- पूर्वमेघ में भी कुछ श्लोकों से इसी अभिप्राय की ओर संकेत मिलता है। निम्नलिखित में से किस श्लोक को उनमें प्रमुख रूप से सम्मिलित किया जाता है। - **प्रस्थितस्योत्तराशाम्**
- मेघदूत मे किस नगरी का उल्लेख मिलता है? - **अलका**
- 'हरशिरश्चन्द्रिकाधौतहर्म्या' रूपेण वर्णिता नगरी अस्ति- **अलका**
- मेघदूते 'राजराजस्य दध्यौ' इतिपद्ये 'राजराजस्य' इति पदेनाभिहितोऽस्ति - **कुबेरः**
- अलकापुर्याः वर्णनं कुत्र प्राप्यते - **मेघदूते**
- कालिदास ने किस ग्रन्थ में अमरकण्टक के सौन्दर्य का चित्रण किया है? - **मेघदूतम्**
- विदिशा .... नदी के तट पर स्थित है- **बेतवा**
- मेघदूते 'यक्षेश्वराणां वसतिः' का वर्णिता? - **अलका**
- अलकापुरी केषां वसतिः? - **यक्षेश्वराणाम्**
- मेघदूते 'जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु' इत्युल्लेखतः परिचितो भवति - **रामगिर्याश्रमः**
- 'वक्रः पन्था यदपि' इति सङ्केतेन का नगरी ज्ञाता भवति? - **उज्जयिनी**
- मेघदूते इयं नगरी नास्ति वर्णिता - **वाराणसी**
- कविसमयानुसारेण वर्षाकाले के मानसं यान्ति? - **हंसाः**
- 'याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा'। किसने यह लिखा है? - **कालिदास**
- मेघदूतम् में 'दिङ्नाग' कौन हैं? - **बौद्ध**
- प्रसिद्ध टीकाकार, मल्लिनाथ के अनुसार मेघदूतम् में कितने पद्य हैं? - **121**
- मेघदूतम् के प्रारम्भ में निम्न में से किस प्रकार का मङ्गलाचरण किया गया है? -**वस्तुनिर्देशात्मक**
- अलकापुरी में यक्ष का घर कुबेर के महल से किस

दिशा में मेघदूतम् में बताया गया है? - **उत्तर**

➤ 'मेघदूतम्' में मेघ के मार्ग में निम्नलिखित में से क्या नहीं है?

- **अयोध्या**

➤ मेघदूतम् अस्मिन् गीतिकाव्ये का जह्नुकन्या?- **गङ्गा**

➤ "न क्षुद्रोऽपि प्रथमसुकृतापेक्षया संश्रयाय,
प्राप्ते मित्रे भवति विमुखः किं पुनर्यस्तथोच्चैः।"
उपर्युक्त में कौन सा छन्द है? - **मन्दाक्रान्ता**

➤ 'कान्ताविरहगुरुणा' इत्यत्र कति पदानि सन्ति? - **एकम्**

➤ "कामार्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु"
- यह पंक्ति किस ग्रन्थ से है? - **मेघदूतम्**

➤ "रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय"
का सम्बन्ध किस ग्रन्थ से है? - **मेघदूतम्**

➤ निम्नांकित में कौन-सी सूक्ति मेघदूतम् से सम्बद्ध नहीं है -
अकृतार्थेऽपि मनसिजे रतिमुभयप्रार्थना कुरुते।

➤ 'याच्वा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा'
यह पंक्ति कहाँ से उद्धृत है। - **मेघदूतम्**

➤ "प्रीतः प्रीतिप्रमुखवचनं स्वागतं व्याजहार" कुत्रेयमुक्तिः।
- **मेघदूते**

➤ मेघदूतम् काव्य का खड़ी बोली मे अनुवाद किया है?
- **राजा लक्ष्मण सिंह ने**

➤ "स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु"
सूक्ति किस ग्रन्थ में है? - **मेघदूतम् में**

➤ "न क्षुद्रोऽपि प्रथमसुकृतापेक्षया संश्रयाय,
प्राप्ते मित्रे भवति विमुखः किं पुनर्यस्तथोच्चैः"
उपर्युक्त सूक्ति किस ग्रन्थ से उद्धृत है? - **मेघदूतम् से**

➤ "के वा न स्युः परिभवपदं निष्फलारम्भयत्नाः"
यह सूक्ति इस रचना से उद्धृत है - **मेघदूतम्**

➤ "जातं वंशे भुवनविदिते पुष्करावर्तकानाम्' यह उक्ति है- **मेघदूते**

➤ "वेणीभूतप्रतनुसलिलातामतीतस्य सिन्धुः" इयं पंक्तिः अस्ति
- **मेघदूतस्य**

➤ "प्राप्ते मित्रे भवति विमुखः किं पुनर्यस्तथोच्चैः"
यह श्लोकांश उद्धृत है - **मेघदूतम् से**

➤ "कस्यात्यन्तं सुखमुपनतं दुःखमेकान्ततो वा नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण" इस श्लोक का सन्देश है
- **सुख-दुःख परिवर्तनशील है।**

➤ कस्यात्यन्तं सुखमुपनतं दुःखमेकान्ततो वा,
नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण।।
उपर्युक्त श्लोकांश किस ग्रन्थ में मिलता है? - **मेघदूतम्**

➤ "सद्यः पाति प्रणयिहृदयं विप्रयोगे रुणद्धि"
– इस सूक्ति वाला ग्रन्थ है **-मेघदूतम्**

➤ "श्यामास्वङ्गं चकितहरिणी प्रेक्षणे दृष्टिपातं.........."
इति पद्यांशः कस्मिन् ग्रन्थे उपलभ्यते? - **मेघदूते**

➤ 'ज्ञातास्वादो विवृतजघनां को विहातुं समर्थः' कुतः उद्धृतम्- **मेघदूतम्**

➤ 'मेघे माघे गतं वयः' कस्येयमुक्तिः? - **मल्लिनाथस्य**

➤ विप्रलम्भशृङ्गारः अङ्गीरसः भवति अस्मिन् काव्ये - **मेघदूते**

➤ 'तन्वी श्यामा शिखरिदशना पक्वबिम्बाधरोष्ठी'
पंक्ति का सम्बन्ध किस काव्य से है? - **मेघदूतम्**

➤ 'कामार्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाऽचेतनेषु' इति उक्तिः विद्यते?- **मेघसन्देशे**

➤ "कश्चित्कान्ताविरहगुरुणा"
– इत्यंशः कस्य ग्रन्थस्य प्रथमे श्लोके विद्यते - **मेघदूतस्य**

➤ 'त्वत्सम्पर्कात् पुलकितमिव प्रौढपुष्पैः कदम्बैः।'
इत्यस्मिन् पद्यांशे कः अर्थालङ्कारः अस्ति? - **उत्प्रेक्षा**

➤ 'या वः काले वहति सलिलोद्गारमुच्चैर्विमाना
मुक्ताजालग्रथितमलकं कामिनीवाभ्रवृन्दम्।'
इत्यस्य कः शब्दः श्लेषयुक्तः अस्ति? - **उच्चैर्विमाना**

मेघदूतम् (वस्तुनिष्ठप्रश्नाः)

1. मेघ की पत्नी है–

(A) अभिसारिका (B) विशालाक्षी
(C) विद्युत् (D) उज्जयिनी नगरी

2. "ऐश्वर्यं यदि वाञ्छसि प्रियसखे! शाकुन्तलं सेव्यताम्" यह किसके कथन का अनुवाद है–

(A) मैक्समूलर (B) क्षेमेन्द्र
(C) गेटे (D) डॉ० कीथ

3. कालिदास के मन्दाक्रान्ता छन्द की प्रशंसा की है–

(A) मल्लिनाथ ने (B) जयदेव ने
(C) दण्डी ने (D) क्षेमेन्द्र ने

4. 'भासो हासः कविकुलगुरुः कालिदासो विलासः' इति कथनं कस्य अस्ति–

(A) जयदेवस्य (B) बाणस्य
(C) राजशेखरस्य (D) मल्लिनाथस्य

5. सुमेलित करें–

कथनम्	वक्ता
(1) "पुरा कवीनां गणनाप्रसङ्गे कनिष्ठिकाधिष्ठितकालिदासः"	(क) मल्लिनाथ
(2) 'निर्गतासु न वा कस्य कालिदासस्य सूक्तिषु"	(ख) उद्भट
(3) "शृङ्गारे ललितोद्गारे कालिदासत्रयी किमु"	(ग) बाणः

(4) ''उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्'' (घ) राजशेखर

(A) (1) क (2) ग (3) ख (4) घ
(B) (1) घ (2) क (3) ख (4) ग
(C) (1) क (2) ग (3) घ (4) ख
(D) (1) क (2) ख (3) घ (4) ग

6. किस नदी समूह का वर्णन मेघदूतम् में नहीं मिलता है–
(A) वेत्रवती, क्षिप्रा, गम्भीरा
(B) रेवा, निर्विन्ध्या, गन्धवती
(C) गङ्गा, यमुना, सरस्वती
(D) चर्मण्वती, कावेरी, ब्रह्मपुत्र

7. पूर्वमेघ में कालिदास किस नगरी का सर्वोत्कृष्ट वर्णन करते हैं–
(A) अलका का (B) उज्जयिनी का
(C) दशपुर का (D) विदिशा का

8. किस पर्वत समूह का वर्णन कालिदास ने अपने मेघदूतम् में नहीं किया है–
(A) आम्रकूट और कैलास (B) हिमालय और विन्ध्य
(C) देवगिरि और रामगिरि (D) नीचैगिरि और उच्चैगिरि

9. सुमेलित करें– कथनम् वक्ता
(1) कालिदासगिरां सारं कालिदासः सरस्वती (क) श्रीकृष्णः
(2) कालिदासकविता नवं वयः (ख) मम्मटः
(3) कालिदासादीनामिव यशः (ग) मल्लिनाथः
(4) न कालिदासादपरस्य वाणी (घ) उद्भटः
(A) (1) ग (2) घ (3) ख (4) क
(B) (1) ग (2) क (3) ख (4) घ
(C) (1) क (2) ख (3) ग (4) घ
(D) (1) घ (2) ग (3) ख (4) क

10. 'स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु' यह सूक्ति है–
(A) पूर्वमेघ में (B) उत्तरमेघ में
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में (B) श‍ृङ्गारशतकम् में

11. 'याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा' यह कथन है–
(A) पूर्वमेघ के 5वें श्लोक में
(B) पूर्वमेघ के 6वें श्लोक में
(C) पूर्वमेघ के 7वें श्लोक में
(D) पूर्वमेघ के चतुर्थ श्लोक में

12. 'नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण' कालिदास ने इन सुन्दर वचनों को कहा है–
(A) पूर्वमेघ के पूर्वार्द्ध में (B) उत्तरमेघ के उत्तरार्ध में
(C) उत्तरमेघ के पूर्वार्द्ध में (D) पूर्वमेघ के उत्तरार्ध में

13. मेघदूतम् में किस देव का वर्णन नहीं मिलता है–
(A) राम और सीता (B) शिव, पार्वती और कार्तिकेय
(C) विष्णु और बलराम (D) ब्रह्मा, नारद और सन्तोषी

14. यक्ष मेघ का प्रथम दर्शन कहाँ करता है–
(A) रामगिरि में (B) कैलाशपर्वत में
(C) अलकापुरी में (D) विन्ध्यपर्वत में

15. कालिदास का मेघ रूपी दूत की कल्पना प्रेरित है–
(A) महाभारत से (B) वाल्मीकिरामायण से
(C) भागवतपुराण से (D) वेदों से

16. किस ग्रन्थ में एकमात्र मन्दाक्रान्ता छन्द का ही प्रयोग मिलता है–
(A) गीतगोविन्दम् में (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में
(C) मेघदूतम् में (D) रघुवंशम् में

17. सम्पूर्ण मेघदूतम् में किस रस का रसास्वादन होता है–
(A) सम्भोगश‍ृङ्गार का (B) विप्रलम्भश‍ृङ्गार का
(C) करुणरस का (D) शान्तरस का

18. पुराणों में प्राप्त विरही यक्ष के उपयुक्त नाम की कल्पना करें–
(A) विरहदेवः (B) विशालाक्षी
(C) कुमारगन्धर्व (D) हेममाली

19. महाकवि कालिदास ने मेघदूतम् के कथानक को कहाँ से लिया होगा–
(A) भागवतपुराण (B) वायुपुराण
(C) ब्रह्मवैवर्तपुराण (D) इनमें से कोई नहीं

20. रामगिरि पर्वत में यक्ष कितने महीने व्यतीत कर चुका है–
(A) नव माह (B) चार माह
(C) आठ माह (D) दश माह

21. गीतिकाव्य या खण्डकाव्य के रूप में सर्वप्रथम गणना होती है–
(A) गीतगोविन्दम् की (B) वाल्मीकिरामायणम् की
(C) गीता की (D) मेघदूतम् की

22. उदयन या वासवदत्ता की प्रेमकथायें कही जाती हैं–
(A) अलकापुरी में (B) उज्जयिनी में
(C) दशार्ण में (D) विदिशा में

23. मेघदूतम् में सर्वप्रथम किस नदी का वर्णन है–

(A) रेवा (नर्मदा) नदी का (B) वेत्रवती नदी का
(C) निर्विन्ध्या नदी का (D) शिप्रा नदी का

24. शिप्रा नदी के तट पर स्थित महाकाल का मन्दिर किस नगरी में अवस्थित है–
(A) अलकापुरी में (B) उज्जयिनी में
(C) दशार्ण में (D) चित्रकूट में

25. मल्लिनाथ के अनुसार सम्पूर्ण मेघदूतम् में प्रक्षिप्त श्लोकों सहित कुल पद्यों की संख्या है–
(A) लगभग 121 (B) लगभग 132
(C) लगभग 152 (D) लगभग 102

26. कालिदास किस देवता के उपासक माने जाते हैं–
(A) विष्णु के (B) शिव के
(C) शक्ति के (D) राम के

27. भौगोलिक स्थानों के वर्णन से परिपूर्ण ग्रन्थ है–
(A) आभिज्ञानशाकुन्तलम् (B) मेघदूतम्
(C) शिशुपालवधम् (D) किरातार्जुनीयम्

28. ''अनावृतकपाटं द्वारं देहि'' यह कथन है–
(A) कालिदास का (B) विद्योत्तमा का
(C) शारदातनय का (D) कालीदेवी का

29. महाकवि कालिदास के श्वसुर माने जाते हैं–
(A) शारदानन्द (B) ब्रह्मानन्द
(C) शिवानन्द (D) विद्यानन्द

30. ''अस्ति कश्चित् वाग्विशेषः'' विद्योत्तमा का यह कथन किसके लिए कहा गया–
(A) अपने पिता के लिए
(B) शास्त्रार्थ में आए पण्डितों के लिए
(C) मूर्ख कालिदास के लिए
(D) माँ काली की कृपा प्राप्त कालिदास के लिए

31. ''मा कौलीनादसितनयने मय्यविश्वासिनी भूः'' यहाँ 'कौलीनात्' पद का अर्थ है–
(A) यक्षिणी (B) कुलीन वर्ग
(C) लोकापवाद (D) कुलपरम्परा

32. ''अङ्गेनाङ्गं प्रतनु तनुना'' यहाँ 'प्रतनु' पद में विभक्ति एवं वचन है–
(A) प्रथमा एकवचन (B) द्वितीया एकवचन
(C) मूलप्रातिपदिक (D) अव्ययपदम्

33. 'अम्बुवाहम्' पद का अर्थ है–
(A) अभ्र (B) जलमुक्
(C) बादल (D) उपर्युक्त सभी

34. 'प्रक्रमेथाः' पद की व्याकरणात्मक टिप्पणी होगी–
(A) प्र + क्रीम् + तिप् + विधिलिङ्
(B) प्र + क्रम् + सिप् + विधिलिङ्
(C) प्र + कृ + थ + लोट्
(D) प्र + की + सिप् + लट्

35. 'सहस्व' पद में प्रकृति प्रत्यय है–
(A) सह+सिप्+विधिलिङ् (B) सह+तिप्+लोट्
(C) सह+सिप्+लोट् (D) सह+सिप्+लृट्

36. ''तस्योत्सङ्गे निहितमसकृद् दुःखदुःखेन गात्रम्'' यहाँ 'असकृत्' पद का अर्थ है–
(A) एक बार (B) बार-बार
(C) कभी-कभी (D) सम्पूर्ण

37. 'पेशलम्' पद का शब्दार्थ है–
(A) सुन्दर अथवा कोमल (B) आँसू
(C) नवीन (D) कठोर

38. 'विगलितशुचा' में विभक्ति एवं वचन है–
(A) तृतीया एकवचन (B) द्वितीया एकवचन
(C) प्रथमा एकवचन (D) प्रथमा बहुवचन

39. 'या शिखा दाम हित्वा' यहाँ 'दाम' शब्द का अर्थ है–
(A) माला (B) मूल्य
(C) सर्प (D) वियोग

40. 'गत्वा सद्यः कलभतनुतां शीघ्रसम्पातहेतोः' यहाँ 'कलभ' शब्द प्रयुक्त है–
(A) सिंह के बच्चे के लिए
(B) गीदड़ के बच्चे के लिए
(C) हाथी के बच्चे के लिए
(D) कमल के फूल के लिए

41. यक्ष के घर में है–
(A) वापी (B) क्रीडाशैल
(C) मन्दारवृक्ष (D) सभी

42. अलकापुरी स्थित कुबेर के उद्यान का नाम है–
(A) नन्दनोद्यान (B) आनन्दोद्यान
(C) कुमुदोद्यान (D) वैभ्राजोद्यान

43. ''हस्ते लीलाकमलमलके बालकुन्दानुविद्धम्'' इस पंक्ति में वर्णन है–
(A) उज्जयिनी की वनिताओं का
(B) अलकापुरी की कामिनियों का
(C) विदिशा की सुन्दरियों का
(D) दशार्ण की कन्याओं का

44. ''प्रायः सर्वो भवति करुणावृत्तिरार्द्रान्तरात्मा'' यह सूक्ति है–
(A) उत्तरमेघ की
(B) पूर्वमेघ की
(C) हंसदूत की
(D) पूर्वमेघ के अन्तिम श्लोक की

45. मेघदूतम् की अन्तिम पंक्ति है–

(A) मा भूदेवं क्षणमपि च ते विद्युता विप्रयोगः
(B) इष्टान् देशान् जलद विचर प्रावृषा संभृतश्रीः
(C) नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण
(D) सूर्यापाये न खलु कमलं पुष्यति स्वामभिख्याम्

46. मेघदूतम् का नायक है–
(A) कुबेर (B) मेघ
(C) यक्ष (D) शिव

47. यक्ष शाप की एक वर्ष की अवधि कहाँ व्यतीत करता है–
(A) देवगिरि में (B) रामगिरि पर्वत में
(C) उज्जयिनी में (D) अलकापुरी में

48. कैलाशपर्वत तक मेघ के सहयात्री कौन होंगे–
(A) राजहंस (B) चातक
(C) यक्ष (D) बलाका

49. मेघदूतम् के अनुसार भगवान् कार्तिकेय का निवास स्थान कहाँ है–
(A) रामगिरि में (B) कैलाशपर्वत में
(C) देवगिरि में (D) विशाला में

50. यक्षिणी शापदिवसों की गिनती किससे करती है–
(A) फलों से (B) पत्तों से
(C) शङ्ख से (D) फूलों से

51. यक्ष के शाप की समाप्ति किस दिन होगी–
(A) कार्तिक देवोत्थान एकादशी को
(B) हरिशयनी एकादशी को
(C) माघशुक्ल सप्तमी को
(D) आषाढ़ कृष्ण प्रतिपदा को

52. मेघदूतम् का मेघ किसका अनुचर था–
(A) कुबेर का (B) वरुण का
(C) यम का (D) इन्द्र का

53. 'धूमज्योतिस्सलिलमरुतां' के संयोग से पैदा होता है–
(A) यक्ष (B) मेघ
(C) जल (D) प्रकाश

54. ''स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु'' यह पंक्ति किस नदी से सम्बद्ध है–
(A) रेवा (B) निर्विन्ध्या
(C) शिप्रा (D) गम्भीरा

55. मेघदूतम् के अनुसार उज्जयिनी में किसका सुप्रसिद्ध मन्दिर है–
(A) श्रीकृष्ण का (B) यक्ष का
(C) उदयन का (D) महाकाल का

56. 'ज्ञातास्वादो विवृतजघनां को विहातुं समर्थः' यह किस नदी से सम्बद्ध है–
(A) निर्विन्ध्या (B) शिप्रा
(C) रेवा (D) गम्भीरा

57. 'अन्तःशुद्धस्त्वमपि भविता वर्णमात्रेण कृष्णः' यहाँ 'त्वम्' पद से किसका सङ्केत है–
(A) यक्ष का (B) यक्षिणी का
(C) मेघ का (D) कुबेर का

58. 'सगरतनयस्वर्गसोपानपंक्तिम्' यह किस नदी का विशेषण है–
(A) रेवाम् (B) जह्नुकन्याम् (गङ्गाम्)
(C) गम्भीराम् (D) यमुनाम्

59. ''सोपानत्वं कुरु मणितटारोहणायाग्रयायी'' इसमें मेघ का सोपानत्व किसके आरोहण के लिए उद्दिष्ट है–
(A) रति-कामदेव (B) शिव-पार्वती
(C) लक्ष्मी-नारायण (D) यक्ष-यक्षिणी

60. कालिदास के अनुसार यक्षों की एकमात्र अवस्था क्या है–
(A) शैशव (B) जरा
(C) कौमार (D) यौवन

61. ''यत्रोन्मत्तभ्रमरमुखराःपादपा नित्यपुष्पाः'' यहाँ 'यत्र' पद से किस नगरी का सङ्केत है–
(A) उज्जयिनी का (B) विदिशा का
(C) अलका का (D) दशपुर का

62. अलका में कुबेर के भवन से किस दिशा में यक्ष का आवास है–
(A) पूर्व (B) पश्चिम
(C) उत्तर (D) दक्षिण

63. यक्ष के घर के सामने कौन सा वृक्ष है–
(A) अशोक का (B) कल्पवृक्ष का
(C) देवदारु का (D) मदार का

64. यक्ष के आवास के सामने का पहाड़ किससे बना है–
(A) मरकत मणि से (B) इन्द्रनील मणि से
(C) पद्मराग से (D) चन्द्रकान्त मणि से

65. यक्ष के द्वार पर किसका चित्र अङ्कित है–
(A) शङ्ख, चक्र का (B) गदा, पद्म का
(C) शङ्ख-पद्म का (D) चक्र-गदा का

66. ''कच्चिद् भर्तुः स्मरसि रसिके त्वं हि तस्य प्रियेति'' यहाँ 'रसिके' पद किसके लिए प्रयुक्त है–
(A) यक्षिणी (B) मयूरी
(C) सारिका (D) कोकिला

67. ''भूयो भूयःस्वयमपिकृतां मूर्च्छनां विस्मरन्ति'' यह पंक्ति किस वाद्ययन्त्र से सम्बद्ध है–
(A) वीणा (B) पखावत
(C) दुन्दुभि (D) बाँसुरी

68. यक्षों का निवास स्थान है–
(A) रामगिरि (B) हिमालय
(C) अलका (D) उज्जयिनी

69. मेघदूतम् में यक्ष का स्वामी कौन है–

(A) शङ्कर (B) इन्द्र
(C) कुबेर (D) यम

70. ''रिक्तः सर्वो भवति हि लघुःपूर्णता गौरवाय'' यह पंक्ति यक्ष किसके लिए कहता है–
(A) यक्षिणी के लिए (B) मेघ के लिए
(C) कुबेर के लिए (D) अलकापुरी के लिए

71. तस्योत्सङ्गे प्रणयिन इव स्रस्तगङ्गादुकूलाम्'' इस पंक्ति में किसका वर्णन है–
(A) गङ्गा का (B) यक्षिणी का
(C) उज्जयिनी का (D) अलका का

72. ''गर्जितैर्भाययेस्ताः'' यहाँ 'भाययेः' में लकार है–
(A) लिट् (B) लुङ्
(C) विधिलिङ् (D) लोट्

73. ''नेष्यन्ति त्वां सुरयुवतयोयन्त्रधारागृहत्वम्'' यहाँ त्वाम्' पद से किसका सङ्केत है–
(A) मेघ का (B) यक्ष का
(C) कुबेर का (D) इन्द्र का

74. कैलाश की चोटी पर जब मेघ पहुँचेगा, तो कैलाश पर्वत की शोभा किसकी तरह हो जायेगी–
(A) कृष्ण (B) बलराम
(C) नारद (D) काले मेघ

75. 'प्रालेयाद्रिः' पद का अर्थ है–
(A) कैलाश (B) हिमालय
(C) विन्ध्य (D) आम्रकूट

76. 'मोघीकर्तुं चटुलशफरोद्वर्तनप्रेक्षितानि यहाँ 'शफर' पद प्रयुक्त है–
(A) सफेदी के लिए (B) सुन्दरता के लिए
(C) यक्षिणी के लिए (D) मछली के लिए

77. 'मा स्म भूर्विक्लवास्ताः' यहाँ 'मा स्म' पद में लकार है–
(A) लट् (B) लुङ्
(C) लिट् (D) लङ्

78. ''पुण्यं यायास्त्रिभुवनगुरोर्धाम चण्डीश्वरस्य'' यहाँ 'यायाः' पद में प्रकृति प्रत्यय है–
(A) या + विधिलिङ् म० पु० एक०
(B) इण् + लोट् म० पु० बहु०
(C) या + लोट् म० पु० द्विवचन
(D) या+लृट् उ० पु० एकवचन

79. 'दर्शितावर्तनाभेः' पद में विभक्ति है–
(A) पञ्चमी (B) षष्ठी
(C) द्वितीया (D) चतुर्थी

80. रास्ता टेढा होने के बाद भी यक्ष मेघ को उत्तर की ओर ले जाकर किसका दर्शन कराना चाहता है–
(A) स्कन्द का (B) उज्जयिनी का
(C) गम्भीरा का (D) निर्विन्ध्या का

81. 'प्रकृतिकृपणाः' में समास है–
(A) तृतीया तत्पुरुष (B) षष्ठी तत्पुरुष
(D) बहुव्रीहि (D) सप्तमी तत्पुरुष

82. ''प्रत्यासन्ने नभसि दयिता...............'' यहाँ 'नभसि' पद का अर्थ है–
(A) आषाढ मास (B) श्रावण मास
(C) आकाश (D) मेघ

83. ''अन्तर्वाष्पः चिरमनुचरो'' यहाँ 'अन्तर्वाष्पः' पद में समास है–
(A) षष्ठी तत्पुरुष (B) कर्मधराय
(C) बहुव्रीहि (D) अव्ययीभाव

84. मल्लिनाथ 'रामगिरि' पर्वत को कहाँ मानते हैं–
(A) रामगढ़ (मध्यभारत) (B) रामटेक (नागपुर)
(C) चित्रकूट (D) हिमालय पर्वत के पास

85. 'अस्तङ्गमितमहिमा' यहाँ 'महिमा' शब्द में प्रत्यय है–
(A) महत्+इमनिच् (B) महान्+अण्
(C) महा+इतच् (D) महिम+आ

86. 'राजराज' पद में समास होगा–
(A) चतुर्थी तत्पुरुष (B) बहुव्रीहि
(C) तृतीया तत्पुरुष (D) षष्ठी तत्पुरुष

87. 'कनकवलयभ्रंशरिक्तप्रकोष्ठः' यह पद किसका विशेषण है–
(A) सः यक्षः (B) कुबेरः
(C) मेघः (D) उपर्युक्त सभी का

88. ''जानामि त्वां प्रकृतिपुरुषं कामरूपं मघोनः'' यहाँ 'मघोनः' पद किसके लिए और उसमें क्या विभक्ति है–
(A) कुबेर के लिए, पञ्चमी विभक्ति
(B) इन्द्र के लिए, षष्ठी विभक्ति
(C) यक्ष के लिए, द्वितीया विभक्ति
(D) मेघ के लिए, षष्ठी विभक्ति

89. मेघदूतम् के अनुसार सन्तप्त लोगों के लिए एक मात्र सहारा कौन है–
(A) यक्षिणी (B) मेघ
(C) कुबेर (D) यक्ष

90. 'त्वय्युपेक्षेत्' पद में सन्धि है–
(A) हल् सन्धि (B) विसर्ग सन्धि
(C) अयादिसन्धि (D) यण्सन्धि

91. 'द्रक्ष्यसि भ्रातृजायाम्' के अनुसार कौन अपनी भाभी को देखेगा–
(A) यक्ष (B) कुबेर
(C) राजहंस (D) मेघ

92. 'विप्रयोगे रुणद्धि' यहाँ 'रुणद्धि' पद में धातु है–
(A) रुध् (B) रुण्
(C) रोध् (D) रुधृम्

93. ''नूनं यास्यत्यमरमिथुनप्रेक्षणीयामवस्थां, मध्ये श्यामः स्तन इव भुवः शेषविस्तारपाण्डुः'' इस पद्यांश में

अलङ्कार है–
(A) रूपक (B) उपमा
(C) उत्प्रेक्षा (D) निदर्शना

94. 'तन्वी श्यामा शिखरिदशना पक्वबिम्बाधरोष्ठी'' यहाँ अलङ्कार है–
(A) उत्प्रेक्षा (B) उपमा
(C) रूपक (D) दीपक

95. ''सृष्टिराद्येव धातुः'' पद से किसका सङ्केत किया गया है–
(A) मेघ का (B) यक्ष का
(C) यक्षिणी का (D) अलका का

96. मेघदूतम् में किस प्रकार का मङ्गलाचरण है–
(A) आशीर्वादात्मक (B) वस्तुनिर्देशात्मक
(C) नमस्क्रियात्मक (D) उपर्युक्त में कोई नहीं

97. मन्दाक्रान्ता छन्द में होते हैं–
(A) मगण भगण नगण तगण रगण दो गुरु–17
(B) भगण मगण नगण तगण तगण एक गुरु–16
(C) मगण भगण नगण तगण तगण दो गुरु–17
(D) भगण भगण मगण तगण नगण दो गुरु–17

98. मेघदूतम् की व्याख्या की जा सकती है–
(A) मेघः एव दूतः, मेघदूतमधिकृत्य कृतं काव्यं मेघदूतम्
(B) मेघः दूतः यस्मिन् काव्ये तत् मेघदूतम्
(C) केवल पहला सही है।
(D) दोनों सही है

99. संस्कृत साहित्य में 'सन्देशकाव्य' या 'दूतकाव्य' का प्रारम्भ माना जा सकता है–
(A) हंसदूतम् से (B) मेघदूतम् से
(C) नेमिदूतम् से (D) गीतगोविन्दम् से

100. ''सेविष्यन्ते नयनसुभगं खे भवन्तं बलाकाः'' यहाँ 'बलाकाः' पद का अर्थ है–
(A) बालिकायें (B) यक्षिणियाँ
(C) बगुलियाँ (D) वेश्यायें

उत्तरमाला

1. (C)	2. (C)	3. (D)	4. (A)	5. (C)	6. (D)
7. (B)	8. (D)	9. (A)	10. (A)	11. (B)	12. (B)
13. (D)	14. (A)	15. (B)	16. (C)	17. (B)	18. (D)
19. (C)	20. (C)	21. (D)	22. (B)	23. (A)	24. (B)
25. (A)	26. (B)	27. (B)	28. (A)	29. (A)	30. (D)
31. (C)	32. (A)	33. (D)	34. (B)	35. (C)	36. (B)
37. (A)	38. (A)	39. (A)	40. (C)	41. (D)	42. (D)
43. (B)	44. (A)	45. (A)	46. (C)	47. (B)	48. (A)
49. (C)	50. (D)	51. (A)	52. (D)	53. (B)	54. (B)
55. (D)	56. (D)	57. (C)	58. (B)	59. (B)	60. (D)
61. (C)	62. (C)	63. (D)	64. (B)	65. (C)	66. (C)
67. (A)	68. (C)	69. (C)	70. (B)	71. (D)	72. (C)
73. (A)	74. (B)	75. (B)	76. (D)	77. (B)	78. (A)
79. (B)	80. (B)	81. (A)	82. (B)	83. (C)	84. (C)
85. (A)	86. (D)	87. (A)	88. (B)	89. (B)	90. (D)
91. (D)	92. (A)	93. (C)	94. (B)	95. (C)	96. (B)
97. (C)	98. (D)	99. (B)	100. (C)		

4.7 रघुवंशम् का परिचय

- **रचयिता-** महाकवि कालिदास
- **नायक-** दिलीप, रघु, अज, दशरथ, रामादि अनेक रघुवंशी राजागण (सभीनायक धीरोदात्त प्रकृति के) मुख्यरूप से 'राम' धीरोदात्त नायक।
- **काव्यविधा-** 'महाकाव्य'
- **रचनाकाल-** ई. पू. प्रथम शताब्दी से चतुर्थ शताब्दी के मध्य (विद्वानों में मतभेद)
- **सर्ग-** 19 सर्ग

सर्ग क्र.	सर्गों के नाम	श्लोक संख्या
01.	वशिष्ठ आश्रम अभिगमन	95
02.	नन्दिनी वरदान	75
03.	रघुराज्याभिषेक	70
04.	रघुदिग्विजय	88
05.	स्वयंवर-अभिगमन	76
06.	स्वयंवर-वर्णन	86
07.	अज-पाणिग्रहण	71
08.	अजविलाप	95
09.	मृगयावर्णन	82
10.	रामावतार	86
11.	सीता-विवाहवर्णन	93
12.	रावण-वध	104
13.	दण्डका-प्रत्यागमन	79
14.	सीता-परित्याग	87
15.	श्रीराम-स्वर्गारोहण	103
16.	कुमुद्वती-परिणय	88
17.	अतिथि-वर्णन	81
18.	वंशानुक्रम	53
19.	अग्निवर्ण शृङ्गार	57
कुल सर्ग - 19		कुल श्लोक -1569

- सर्वाधिक श्लोकों वाला सर्ग - 12वाँ, श्लोक = 104
- न्यूनतम श्लोकों वाला सर्ग - 18वाँ, श्लोक = 53

रस
- रघुवंश वीररस प्रधान काव्य है।
- वीररस के चार भेद- 1. धर्मवीर 2. युद्धवीर 3. दानवीर 4. दयावीर

- रघुवंश में चारों वीर रसों का वर्णन है।
- रघुवंश के अन्तिम सर्ग में मुक्तरूप से शृङ्गार का वर्णन।
- 'करुणरस' के उद्भावन में रघुवंश का 'अजविलाप' अत्यन्त द्रावक है।
- 'वीररस' के प्रयोग में कालिदास पौराणिक 'अनुष्टुप् छन्द' का प्रयोग करते हैं। (रघु की दिग्विजय, राम-रावण युद्ध)
- कालिदास का प्रिय रस **शृङ्गार** है।

छन्द-योजना

- कालिदास ने छन्द प्रयोग की दृष्टि से गेय छन्दों का अधिक उपयोग किया है।
- रघुवंश के 19 सर्गों में 22 छन्दों का प्रयोग हुआ है।
- सर्वाधिक प्रयुक्त छन्द = उपजाति - 578 श्लोकों में।
- दूसरा सर्वाधिक प्रयुक्त छन्द = अनुष्टुप् - 548 श्लोकों में।
- रघुवंश के नवम सर्ग में विभिन्न छन्दों का प्रयोग।
- रघुवंश के दुःखद प्रसंग के वर्णन में रथोद्धता छन्द का प्रयोग।
- करुण रस के चित्रण में वैतालीय छन्द का प्रयोग 'अजविलाप'
- रघुवंश में कवि ने 'नाराच' (18 वर्ण) जैसे बड़े छन्द का प्रयोग एक बार किया।

कालिदास ने रघुवंश में छन्दों को वर्ण्य विषय से सम्बद्ध किया है-

प्रसंग/वर्ण्य विषय	**सम्बद्ध छन्द का प्रयोग**
करुण प्रसंगों में -	वैतालीय
प्रवास और प्रावृट् -	मन्दाक्रान्ता
हर्षात्मक वातावरण -	प्रहर्षिणी (उपनाम-अन्वर्थनामा)
पराक्रम, शौर्य, राजनीतिक प्रसंग-	वंशस्थ
पौराणिक वृत्त, युद्धयात्रा-	अनुष्टुप्
भव्य चन्द्रोदय, उद्दीपन विभावों के वर्णन में -	रथोद्धता
वीर एवं रौद्र रस के सम्मेलन-	वसन्ततिलका
शुभकार्य के सफल करने के प्रस्थान हेतु, कार्य की सफलता के लिए, सर्गान्त में प्रयोग-	पुष्पिताग्रा
समृद्धिशीलता के प्रसंग-	द्रुतविलम्बित
उदारता, रुचि, औचित्यादि गुणो में प्रयुक्त -	हरिणी
सर्ग समाप्ति के समय, कथानक को शीघ्रता से समाप्त करते समय प्रयोग -	मालिनी

अलंकार-योजना

- रघुवंश में शब्दालंकारों में अनुप्रास का सर्वाधिक प्रयोग।
- यमक का सामान्य प्रयोग।
- अर्थालंकारों में सर्वाधिक उपमा का प्रयोग।
- उत्प्रेक्षा, दृष्टान्त, स्वभावोक्ति, निदर्शना, अर्थान्तरन्यास आदि अलंकारों का सन्निवेश।

शैली-

- वैदर्भी रीति का प्रयोग।
- रघुवंश में आकर्षक चरित्र-चित्रण विशद एवं रुचिर वर्णन, प्रौढ़प्रतिभा, सुन्दर रसव्यञ्जना, सरल अलंकृत शैली का मणिकाञ्चन संयोग।

कथानक का मूल स्रोत-

- रघुवंश का मूलस्रोत- मुख्यतः वाल्मीकि रामायण
- अनुश्रुतियों एवं पौराणिक तथा अन्य स्रोत- पद्मपुराण, वायु पुराण, विष्णुपुराण,
- रघुवंश में रघुवंशीय राजाओं की वंशावली वाल्मीकि रामायण से भिन्न है।

प्रमुख वर्णन

- रघुवंश के 19 सर्गों में दिलीप से लेकर अग्निवर्ण तक रघुवंश के 29 राजाओं का वर्णन। मनु और इक्ष्वाकु सहित कुल 31 राजाओं का वर्णन।
- प्रथम दो सर्ग में दिलीप का वर्णन।
- तीसरे, चौथे और पाँचवें के आधे भाग में रघु का वर्णन।
- पाँचवें के बचे हुए आधे भाग तथा छठें, सातवें और आठवें सर्ग में अज का वर्णन।
- नवम सर्ग में दशरथ का वर्णन।
- दशम से पन्द्रहवें सर्ग तक रामचरित वर्णित है।
- सोलहवें सर्ग में कुश तथा सत्रहवें में कुश पुत्र अतिथि का वर्णन है।
- अठारहवें में निषध तथा नल एवं नभ आदि 21 राजाओं का वर्णन।
- उन्नीसवें सर्ग में अतिविलासी राजा अग्निवर्ण के दुःखद अवसान के साथ ग्रन्थ समाप्त होता है।

रघुवंश में वर्णित राजाओं का क्रम-

दिलीप → रघु → अज → दशरथ

राम लक्ष्मण भरत शत्रुघ्न

कुश लव

अतिथि → निषध → नल → नभ → पुण्डरीक → क्षेमधन्वा → देवानीक

पुत्री अहीनगु (अहीनय)

पारियात्र → शील → उन्नाभ → शङ्खण → व्युषिताश्व → विश्वसह → हिरण्यनाभ → कौशल्य (सोमसुत) → पुत्र → पौष्य → ध्रुवसन्धि → सुदर्शन → अग्निवर्ण

(अन्तिम रघुवंशीय राजा जहाँ तक रघुवंश में वर्णन प्राप्त होता है)

प्रमुख चरित्र

राजा दिलीप-

- रघुवंश महाकाव्य के प्रथम उन्नायक के रूप में वर्णित
- वैवश्वत मनु के शुद्ध वंश से अधिक श्रेष्ठतर चरित्र वाला घोषित किया गया है।
- वायु भी दिलीप के शासन के अनुसार अनुगमन करता था-

यस्मिन् महीं शासति वाणिनीनां
निद्रां विहारार्धपथे गतानाम्।
वातोऽपि नास्त्रंसयदंशुकानि
को लम्बयेदाहरणाय हस्तम्॥ (रघु. 6/75)

राजा रघु-

- रघु के व्यक्तित्त्व की महत्ता इसी से द्योतित होती है क्योंकि उन्हीं के नाम पर सूर्यवंश का नाम रघुवंश पड़ा।
- रघु का चरित्र रघुवंशियों का आदर्श है।
- रघु को रघुवंशम् का केन्द्रीय नायक माना जा सकता है।
- रघु का प्रताप और सूर्य का तेज दोनों एक समय में ही सारी दिशाओं में व्याप्त हो गये-

'प्रतापस्तस्य भानोश्च युगपद्व्यानशे दिशः।' (रघु. 04/15)

राजा अज-

- अज के चरित्र में शील और शौर्य की शृङ्गारिक पीठिका प्रदर्शित है।
- रघुवंश महाकाव्य के **'धीरललित'** नायक हैं।
- चक्रवर्ती सम्राट् रघु के प्रतापी पुत्र।
- रानी इन्दुमती के प्रेमी पति।

राजा दशरथ-

- दशरथ के व्यक्तित्त्व का विकास वाल्मीकि रामायण के आधार पर वर्णित है।
- दशरथ दिग्विजयी सम्राट् रघु के नाती हैं।
- राजा अज के प्रतापी पुत्र हैं।
- दशरथ मानो पृथ्वी पर अवतीर्ण इन्द्र ही हुए थे-

उपगतो विनिनीषुरिव
प्रजा हरिहयोऽरिहयोगविचक्षणः॥ (रघु. 09/18)

राजा राम -

- महाकवि कालिदास राम को विष्णु का अवतार मानते हैं।
- वस्तुतः रघुवंश के वास्तविक नायक राम ही हैं।
- महाकवि ने राम का अपनी काव्य साधना द्वारा सर्वोत्तम चरित्रांकन किया है।
- सर्वाधिक सर्गों में राम का चरित्र दर्शाया गया है।
- रघु और राम के महान् चरित्र का तुलनात्मक अध्ययन करते हुए महाकवि ने रघु को महाकाव्य का प्रधान नायक माना है तभी तो महाकाव्य का नाम रघुवंश पड़ा।
- अन्य आचार्यों ने राम को ही इस महाकाव्य का नायक माना है और कहा कि रघु से लेकर राम तक जो कथा है वह राम कथा को विस्तार देने के लिए है।
- राम राजा बनने की बात सुनकर रोने लगते हैं और वनगमन की आज्ञा पाकर प्रसन्न होते हैं-

पित्रा दत्तां रुदन् रामः प्राङ्महीं प्रत्यपद्यत।
पश्चाद्वनाय गच्छेति तदाज्ञां मुदितोऽग्रहीत्॥
(रघु. 12/07)

शत्रुघ्न-

उपनायक

- अयोध्या नरेश दशरथ के और रानी सुमित्रा के सबसे छोटे पुत्र।
- लवणासुर नामक राक्षस से पीड़ितों की रक्षा करने के लिये वर्णित।
- शत्रुघ्न ने यमुना तट पर मथुरा नगरी बसायी थी

कुश-

- श्रीरामचन्द्र एवं सीता के ज्येष्ठ पुत्र, लव के बड़े भाई।
- राम के बाद शासनारूढ़ होते हैं।
- नागराज की पुत्री कुमुद्वती से विवाह।
- कुशावती नगरी के संस्थापक।
- प्रथम बार रामायण का गान करने वाले कुश एवं लव

अतिथि-

- कुशपुत्र अतिथि शूरवीर एवं जितेन्द्रिय राजा हैं।
- राम के पौत्र तथा कुश एवं कुमुद्वती के पुत्र।

अग्निवर्ण-

- रघुवंशी राजा सुदर्शन का पुत्र।
- अग्निवर्ण रघुवंश का विलासी नायक है।
- महाराज सुदर्शन ने सब शत्रुओं को जीत कर पृथ्वी को निष्कंटक बनाकर अग्निवर्ण को राजा बनाया।
- वह गवाक्षों पर पैर लटका कर दर्शन देता था ऐसा वर्णन है।
- रघु के प्रतापी वंश के अन्तोन्मुख होने का कारण।

नारी पात्र

रानी सुदक्षिणा-

- मगधराज पुत्री सुदक्षिणा राजा दिलीप की उदारचारिता, शीलवती, रूपवती पत्नी हैं।

'तयोर्जगृहतुः पादान् राजा राज्ञी च मागधी।' (रघु. 01/57)

इन्दुमती-

- कवि ने इन्दुमती को आदर्श गृहिणी कहा है-

गृहिणी सचिवः सखी मिथः
प्रियशिष्या ललिते कलाविधौ।
करुणाविमुखेन मृत्युना
हरता त्वां वद किं न मे हृतम्॥ (रघु. 08/67)

- सम्राट् रघु की पुत्रवधू एवं अज की प्रिया पत्नी।

सीता -

- रघुवंश में सीता का जीवन राम के लिए समर्पित है।
- राम के साथ रमण करती हुई सीता राजलक्ष्मी के समान प्रतीत होती थी-

उपस्थितश्चारु वपुस्तदीयम्
कृत्वोपभोगोत्सुकयेव लक्ष्म्या। (रघु. 14/24)

- मिथिला नरेश जनक की पुत्री, अयोध्या नरेश दशरथ की पुत्र वधू।

कैकेयी -

- राजा दशरथ की प्रिय पत्नी।
- कवि ने उन्हे अतिक्रोधशीला चण्डी की उपाधि से विभूषित किया।
- दशरथ से वरदान के रूप में राम के लिए 14 वर्ष का वनवास एवं भरत के लिए राजगद्दी माँगा।

महर्षियों का चरित्र

- **महर्षि वशिष्ठ-** ब्रह्मतेज एवं ब्रह्मज्ञान की साक्षात् मूर्ति हैं।
  पुरुषायुषजीविन्यो निरातङ्का निरीतयः।
  यन्मदीयाः प्रजास्तस्य हेतुस्त्वद्ब्रह्मवर्चसम्॥ (रघु. 01/63)
- **महर्षि कौत्स-** चौदह विद्याओं के अध्येता महर्षि वरतन्तु के शिष्य कौत्स गुरु आज्ञा का पालन करते हुए 14 करोड़ मुद्रा दक्षिणा स्वरूप लेने रघु के पास गये।

प्रतिनायक का चरित्र

इन्द्र-

- प्रतिनायक के रूप में चित्रण।
- इन्द्र की पत्नी का नाम-''शची''।
- पुत्र का नाम-''जयन्त''।
- स्वर्ग का शासक, और देवेन्द्र नाम वाला।
- सारथी का नाम-''मातलि''
  मातलिस्तस्य माहेन्द्रम् -----। (रघु. 12/86)
- रथ में एक हजार घोड़े।
- इनके घोड़े का रंग हरे तथा पीले भी कहीं-कहीं उल्लेख मिलता है।
- हाथी का नाम-''ऐरावत''
- शस्त्र का नाम-''वज्र'
- 100 अश्वमेध यज्ञ करने के कारण-''शतक्रतु''

रावण-

- रावण इस महाकाव्य का प्रतिनायक है।
- लंका का अधिपति तथा पुलस्त्य मुनि का नाती।
- इन्द्र और रावण ऐसे प्रतिनायक का कवि ने पूर्ण विकास नहीं दिखाया।

लवणासुर-

- शत्रुघ्न का प्रतिद्वन्द्वी
- कुम्भीनसी का पुत्र।
- मधूपन्न नामक लवण नगरी का राजा।
- बहुत अत्याचारी राक्षस
- लवणासुर भी महाकाव्य का प्रतिनायक माना जा सकता है।

पशु चरित्र

नन्दिनी-

- कामधेनु की पुत्री नन्दिनी का जीवन्त चित्रण रघुवंश के द्वितीय सर्ग में
- महर्षि वशिष्ठ की दुग्धशीला होमधेनु। (हवन धेनु)
- रंग नवीन पल्लव तथा संध्या के समान श्वेत युक्त लाल
  'तदन्तरे सा विरराज धेनुः
  दिनक्षपामध्यगतेव सन्ध्या॥' (रघु. 02/20)

सिंह/कुम्भोदर-

- रघुवंश महाकाव्य का दूसरा मानवेतर पात्र।
- शंकर के गण निकुम्भ का मित्र।
- इसका नाम कुम्भोदर है।
  'कुम्भोदरं नाम निकुम्भमित्रम्।' (रघु. 02/35)
- भगवान् शंकर का अनुचर-
  'अवेहि मां किङ्करमष्टमूर्त्तेः---।' (रघु. 02/35)

अन्य पात्र

कुमुदनाग-

- अस्त्र ज्ञाता की उपाधि से विभूषित।
- अपनी बहन कुमुद्वती का विवाह कुश से कराता है।

गन्धर्वराज-

- स्वयंवर के लिए विदर्भ नगरी जाते समय नर्मदा के तट पर सेना सहित पड़ाव डाल देता है।
- प्रिय दर्शन नामक गन्धर्वराज का पुत्र प्रियंवद नामक गन्धर्व राजकुमार।
- मतङ्ग ऋषि के श्राप से हाथी का शरीर धारण किया था।
  मतङ्गशापादवलेपमूलादवाप्तवानस्मि मतङ्गजत्वम्।
  अवेहि गन्धर्वपतेस्तनूजं प्रियंवदं मां प्रियदर्शनस्य॥
  (रघु. 05/53)

प्रमुख संवाद

- दिलीप-वशिष्ठ-संवाद - प्रथमसर्ग
- दिलीप-सिंह-संवाद - द्वितीय सर्ग
- इन्द्र-रघु संवाद - तृतीय सर्ग
- कौत्स-रघु संवाद - पञ्चम सर्ग
- राम-परशुराम-संवाद - एकादश सर्ग
- सीता-लक्ष्मण संवाद - चतुर्दश सर्ग
- कुश-नायिका रूप अयोध्या - षोडश सर्ग (स्वप्न संवाद)

रघुवंश के सर्ग एवं सर्गान्त में प्रयुक्त छन्द

सर्ग संख्या	सर्ग में प्रयुक्त छन्द	सर्गान्त में प्रयुक्त छन्द
प्रथम	अनष्टुप्	प्रहर्षिणी
द्वितीय	उपजाति	मालिनी
तृतीय	वंशस्थ	हरिणी
चतुर्थ	अनुष्टुप्	प्रहर्षिणी
पञ्चम	उपजाति	पुष्पिताग्रा
षष्ठ	उपजाति	पुष्पिताग्रा
सप्तम	उपजाति	मालिनी
अष्टम	वैतालीय	मन्दाक्रान्ता
नवम	द्रुतविलम्बित, (विभिन्न छन्दों का प्रयोग)	वसन्ततिलका
दशम	अनुष्टुप्	मालिनी
एकादश	रथोद्धता	मालिनी
द्वादश	अनुष्टुप्	महामालिनी

त्रयोदश	उपजाति	वसन्ततिलका
चतुर्दश	उपजाति	मन्दाक्रान्ता
पञ्चदश	अनुष्टुप्	मन्दाक्रान्ता
षोडश	उपजाति	मन्दाक्रान्ता
सप्तदश	अनुष्टुप्	मन्दाक्रान्ता
अष्टादश	उपजाति	मालिनी
एकोनविंशति	उपजाति	मन्दाक्रान्ता

- उपजाति छन्द का प्रयोग सर्वाधिक 9 सर्गों में निम्नलिखित- (2,5,6,7,13,14,16,18,19)
- अनुष्टुप् छन्द का प्रयोग निम्नलिखित 6 सर्गों में हुआ है- (1,4,10,12,15,17)
- वंशस्थ छन्द का प्रयोग 3 (तृतीय सर्ग) में हुआ है।
- रथोद्धता छन्द का प्रयोग मात्र 11वें (एकादशवें) सर्ग में हुआ है।
- वैतालीय छन्द का प्रयोग 8 (अष्टम) सर्ग में किया गया है।
- द्रुतविलम्बित छन्द का प्रयोग 9वें (नवम)सर्ग में हुआ है।

इस सर्ग मे अनेक छन्दों का प्रयोग हुआ है।

सर्गानुसार वर्णन

मङ्गलाचरण

वागार्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये।
जगतः पितरौ वन्दे पार्वती परमेश्वरौ॥ (रघु. 01/01)

- रघुवंश महाकाव्य का शुभारम्भ पार्वती और शिव के नमस्कारात्मक मङ्गलाचरण से हुआ।
- ग्रन्थारम्भ में कवि ने मङ्गलाचरण के माध्यम से शब्दार्थरूप शिव और पार्वती की वन्दना की।
- वाक् और अर्थ के प्रतीक स्वयं पार्वती एवं शङ्कर हैं, क्योंकि वे जगत के माता-पिता हैं।
- 'व' शब्द अमरत्व का द्योतक है।
- मगण के दोनों अक्षर की देवता पृथ्वी हैं जो रचयिता को अक्षय कीर्ति प्रदान करती है।
- अनुष्टुप् छन्द
- वाक् = वाणी
- अर्थ = लक्ष्मी
- इ = शक्ति (शैव दर्शन के अनुसार)

प्रथम सर्ग

- रघुवंश की कथा का आरम्भ महाराज दिलीप से होता है।
- महाकवि ने दिलीप के पूर्ववर्ती राजाओं की चर्चा करते हुए कहा कि इस वंश का प्रादुर्भाव 'सूर्य' से हुआ।
- इस वंश में 'मनु' पृथ्वी लोक के सर्वप्रथम राजा हैं।
- रघुवंशी राजाओं के जीवन में आश्रम व्यवस्था इस प्रकार होती थी-

शैशवेऽभ्यस्तविद्यानां यौवने विषयैषिणाम्।
वार्धके मुनिवृत्तीनां योगेनान्ते तनुत्यजाम्॥
(रघु. 01/08)

- प्रथम सर्ग में महाराजा दिलीप सन्तान प्राप्ति का उपाय पूँछने अपने गुरु वसिष्ठ के आश्रम जाते हैं।
- वसिष्ठ उन्हे कामधेनु की पुत्री नन्दिनी गाय की सेवा करने का परामर्श देते हैं।

द्वितीय सर्ग

- राजा दिलीप द्वारा कामधेनु की पुत्री नन्दिनी की सेवा का वर्णन है।
- नन्दिनी राजा दिलीप द्वारा की गयी 21 (इक्कीस) दिनों की सेवा से प्रसन्न होती है और उनकी परीक्षा भी लेती हैं।
- कुम्भोदर सिंह का वर्णन।
- दिलीप परीक्षा में सफल होते हैं, नन्दिनी उन्हें पुत्र प्राप्ति का आशीर्वाद देती हैं।

तृतीय सर्ग

- रघु का जन्म, विद्या अध्ययन आदि।
- महाराज दिलीप ने समस्त शास्त्र विद्या और शस्त्र में प्रवीण रघु को युवराज बनाने के उपरान्त अश्वमेध यज्ञ प्रारम्भ किया।
- अदृश्य रूप से इन्द्र द्वारा यज्ञीय अश्व अपहरण कर लिया गया।
- रघु और इन्द्र में घोर युद्ध एवं विजय प्राप्ति।
- रघु का राज्याभिषेक।
- अपनी वंश परम्परा के अनुसार दिलीप तपस्यार्थ वन चले जाते हैं।

चतुर्थ सर्ग

- रघु की दिग्विजय का वर्णन।
- सर्वप्रथम पूर्व दिशा में वंश आदि देशों को जीतकर अपना विजय स्तम्भ गङ्गासागर के द्वीपों में गाड़ दिया।
- कवि ने रघु को सूर्य से अधिक प्रतापी सिद्ध किया है।

दिशि मन्दायते तेजो दक्षिणस्यां रवेरपि।
तस्यामेव रघोः पाण्ड्याः प्रतापं न विषेहिरे॥
(रघु. 04/49)

- भारत के विभिन्न प्रदेशों की मनोरम झाँकी प्रस्तुत की गयी है।

पञ्चम सर्ग

- विश्वजित् यज्ञ करके अपना सर्वस्व दान करने वाले महाराज रघु के त्याग का अत्यन्त प्रभावशाली एवं प्रेरणाप्रद चित्रण हुआ है।
- इस सर्ग के अन्त में विदर्भराज भोज अपनी बहन (पुत्री) इन्दुमती के स्वयंवर का वर्णन।
- रघु पुत्र राजकुमार अज स्वयंवर मे भाग लेने के लिए प्रस्थान करता है।
- ब्रह्मचारी कौत्स अपने गुरु वरतन्तु को दक्षिणा देने के लिए रघु से 14 करोड़ स्वर्ण मुद्राएँ माँगता है।
- इस सर्ग में अज को जगाने के लिए सूत पुत्रों द्वारा गाया गया 'प्रभात-गीत' बहुत प्रसिद्ध एवं मनोरम है। (श्लोक सं - 05/66-74 तक)

षष्ठ सर्ग

- इन्दुमती स्वयंवर का चित्ताकर्षक वर्णन है।
- इन्दुमती अज के गले में वरमाला डालती हैं अर्थात् वररूप अज को चुनती हैं, क्योंकि भौरों की पंक्ति खिले हुए आम के बौरों को छोड़ कर अन्यत्र नहीं जाते-

नहि प्रफुल्लं सहकारमेत्य
वृक्षान्तरं काङ्क्षति षट्पदालिः॥ (रघु. 06/69)

सप्तम सर्ग

- अज का इन्दुमती के साथ विवाह होता है।
- स्वयंवर में आये अन्य राजा अज से युद्ध छेड़ देते हैं और परास्त होते हैं।
- अज को देखने के लिए विदर्भ की नारियों की उत्सुकता का भव्य वर्णन सर्गारम्भ में किया गया है।

अष्टम सर्ग

- महाराज रघु अज को राज्य सौंप कर वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश कर जाते हैं।
- उपवन विहार करते समय नारद की वीणा से गिरी माला के स्पर्श से इन्दुमती का निधन हो जाता है।
- इस सर्ग में अज का अत्यन्त कारुणिक विलाप वर्णित है।
- कारुणिक वर्णन में वियोगिनी (वैतालीय) छन्द का प्रयोग हुआ है
- 'अज-विलाप' ही सर्ग का प्राण है।

विललाप स बाष्पगद्गदं सहजामप्यपहाय धीरताम्।
(रघु. 08/43)

- वसिष्ठ के सन्देश से अज को सान्त्वना मिलती है।
- प्रिया वियोग एवं पुत्र दशरथ का पालन दो तरह की विपरीत परिस्थियों में, वह किसी तरह 8 वर्षों तक जीवित रह सके।
- अन्त में गंगा-सरयू संगम में उन्होंने प्राण त्याग दिये।

नवम सर्ग

- सर्गारम्भ दशरथ के शासन के वर्णन से प्रारम्भ होता है।
- महाराजा दशरथ वन्यगज के भ्रम में श्रवण कुमार की हत्या कर देते हैं।
- दशरथ को श्रवण के माता-पिता द्वारा पुत्र वियोग में मरने का शाप मिलता है।
- इस सर्ग में वसन्त का अत्यन्त मनोरम वर्णन हुआ है-

कुसुम जन्म ततो नवपल्लवास्तदनु षट्पदकोकिलकूजितम्।
(रघु. 09/26)

दशम सर्ग

- दशरथ द्वारा पुत्रेष्टि यज्ञ किया जाना वर्णित है।
- रावण से त्रस्त देवताओं का विष्णु के पास जाने का वर्णन है।
- विष्णु का दशरथ पुत्र राम के रूप में अवतरित होने की घोषणा।
- रामादि चारों भाइयों का जन्म।

एकादश सर्ग

- विश्वामित्र का राम और लक्ष्मण को अपने यज्ञ की रक्षा हेतु आश्रम ले जाना।
- ताटका आदि राक्षसों का वध।
- विश्वामित्र के साथ राम और लक्ष्मण का मिथिला जाना।
- 'सीता स्वयंवर' का वर्णन, राम द्वारा शिव धनुष भंग रामादि चारों भाइयों का विवाह वर्णित है।
- परशुराम के पराभव का वर्णन।

द्वादश सर्ग

- दशरथ राम के राज्याभिषेक का विचार करते हैं, तभी कैकेयी उनसे वरदान माँगती हैं।
- इस सर्ग में राम वनवास से लेकर शूर्पणखा वृत्तान्त, सीता हरण, बालि वध, सीता खोज, राम-रावण युद्ध 'रावणवध' तक की कथा कवि ने शीघ्रता से कही है।
- सर्ग के अन्त में राम को पुष्पक विमान से अयोध्या जाने की सूचना दी गयी है।

त्रयोदश सर्ग

- पुष्पक विमान से अयोध्या लौटने की यात्रा का मनोरम दृश्य राम, सीता को दिखाते हैं, और पवित्र तीर्थों का परिचय कराते हैं।
- भौगोलिक स्थलों का प्रामाणिक वर्णन एवं सीता वियोग की करुण स्मृतियों का चित्रण किया गया है।
- इस प्रसंग में दो महत्त्वपूर्ण वर्णन-

1. **समुद्रवर्णन (02-13 श्लोक)**
   वैदेहि पश्यामलयाद्विभक्तं
   मत्सेतुना फेनिलमम्बुराशिम्॥ (रघु. 13/02)
2. **गङ्गा-यमुना का वर्णन (54-57 श्लोक)**
   'पश्यानवद्याङ्गि! विभाति गङ्गा भिन्नप्रवाहा यमुनातरङ्गैः।'
   (रघु. 13/57)

- पुष्पक विमान राम की इच्छा के अनुसार संचरण करता है-

यथाविधो मे मनसोऽभिलाषः
प्रवर्तते पश्य तथा विमानम्॥ (रघु. 13/19)

चतुर्दश सर्ग

- राम का राज्याभिषेक एवं राम राज्य वर्णित है।
- इस सर्ग में राम के द्वारा लोकापवाद कारण सीता का परित्याग वर्णित है-

"लोकापवादो बलवान् मतो मे" (रघु. 14/40)

- लोकापवाद के कारण छोड़ी गयी सीता राम को लक्ष्मण द्वारा सन्देश देती हैं की जो कृत्य किया गया। वह तुम्हारे उच्च कुल के योग्य है-

मां लोकवादश्रवणादहासीः श्रुतस्य किं तत्सदृशं कुलस्य
(रघु. 14/61)

- सीता वाल्मीकि के आश्रम जाती हैं।
- राम द्वारा सीता की स्वर्णमूर्ति बनवाकर अश्वमेध यज्ञ करने का वर्णन है।

पञ्चदश सर्ग

- राम के आदेश पर शत्रुघ्न लवणासुर से युद्ध के लिए प्रस्थान करते हैं।
- मार्ग में वाल्मीकि आश्रम में रात्रि विश्राम के लिए ठहरते हैं और उसी रात्रि में सीता कुश और लव दो पुत्रों को जन्म देती हैं।
- लवणासुर से घोर युद्ध और उसका वध।
- शत्रुघ्न द्वारा यमुना तट पर मथुरा नगरी की स्थापना।

उपकूलं स कालिन्द्याः पुरीं पौरुषभूषणः।
निर्ममे निर्ममोऽर्थेषु मथुरां मधुराकृति॥ (रघु. 15/28)

➢ राम द्वारा शम्बूक वध और राम के अश्वमेध यज्ञ में लवकुश द्वारा रामायण गान।
➢ राम अपने पुत्रों से रामायण गान सुनते हैं।
अथ प्राचेतसोपज्ञं रामायणमितस्ततः।
मैथिलेयौ कुशलवौ जगतुर्गुरुचोदितौ॥ (रघु. 15/63)
➢ वाल्मीकि सीता की निर्दोषिता बताते हुए राम से उनको स्वीकार करने का अनुरोध करते हैं।
➢ इसी समय सीता के निवेदन पर धरती माँ प्रकट होती हैं और सीता को अपनी गोद में लेकर पाताल चली जाती हैं।
➢ सर्गान्त में भरत को सिन्धु-देश का राजा बनाया जाता है।
➢ भरत का अपने पुत्रों तक्ष और पुष्कल को सिन्धु देश का राज्य सौंप कर अयोध्या लौटना।
➢ लक्ष्मण के पुत्रों को कारापथ का राज्य सौंपा जाता है।
➢ सर्गान्त में राम, लक्ष्मण आदि का महाप्रयाण।

षोडश सर्ग

➢ कुश का राज्याभिषेक एवं कुश के शासन की प्रशंसा
➢ कुशावती को राजधानी बनाना।
➢ अयोध्या की दुर्दशा का वर्णन एवं कुश की स्वप्न में एक तेजोदीप्त अयोध्याधिष्ठात्री देवी के दर्शन का वर्णन है-
'तस्याः पुरः सम्प्रति वीतनाथां जानीहि राजन्नधिदेवतां माम्।' (रघु. 16/09)
➢ देवी के कथनानुसार कुश पुनः अयोध्या को अपनी राजधानी बनाते हैं।
➢ कुश का जल विहार में आभूषण खोने का वर्णन।
➢ कुमुदनाग पर कुश द्वारा गुरुडास्त्र का प्रयोग करने पर कुमुदनाग अपनी बहन कुमुद्वती को कुश को उपहार स्वरूप देता है।
➢ कुमुद्वती एवं कुश विवाह वर्णन।

सप्तदश वर्णन

➢ कुमुदवती से अतिथि नाम का पुत्र जन्म लेता है-
अतिथिं नाम काकुत्स्थात्पुत्रं प्राप कुमुद्वती। (रघु. 17/01)
➢ कुश युद्ध में वीरगति प्राप्त करता है और कुमुद्वती सती हो जाती है।
➢ अतिथि का राज्याभिषेक एवं उसकी राज्यव्यवस्था का वर्णन।
स गुणानां बलानां च षण्णां षण्मुखविक्रमः।
बभूव विनियोगज्ञः साधनीयेषु वस्तुषु॥ (रघु. 17/67)

अष्टादश-सर्ग

➢ इस सर्ग में अतिथि के पुत्र निषध के बाद की अनेक पीढ़ियों के राजाओं का संक्षिप्त वर्णन किया गया है।
➢ 1 निषध 2 नल 3 नभ 4 पुण्डरीक 5 क्षेमधन्वा 6 देवानीक 7 अहीनगु 8 पारियात्रि 9 शिल 10 उन्नाभ 11 वज्रणाभ 12 शंखण 13 व्युषिताश्व 14 विश्वसह 15 हिरण्यनाभ 16 कौशल्य 17 ब्रह्मिष्ठ 18 पुत्र 19 पुष्य 20 ध्रुवसन्धि 21 सुदर्शन आदि राजाओं का संक्षिप्त परिचय।

एकोनविंश सर्ग

➢ इस सर्ग में सुदर्शन पुत्र अग्निवर्ण का वृत्तान्त है।
➢ शासन का समस्त कार्यभार मन्त्रियों पर छोड़कर अहर्निश विलासिता में लिप्त रहता है।
➢ अनेक रानियों दासियों आदि को कामुकता का शिकार बनाने से उसे क्षय रोग हो जाता है।
➢ उसे वैद्यों के उपदेश भी इन दुर्व्यसनों से अलग नहीं कर सके-
''दृष्टदोषमपि तन्न सोऽत्यजत्सङ्गवस्तु भिषजामनाश्रवः।
स्वादुभिस्तु विषयैर्हृतस्ततो दुःखमिन्द्रियगणो निवार्यते॥ (रघु. 19/49)
➢ मन्त्रियों ने गुप्तरूप से गृह उपवन में ही उसे जला दिया-
तं गृहोपवन एव सङ्गताः पश्चिमक्रतुविदा पुरोधसा।
रोगशान्तिमपदिश्य मन्त्रिणः सम्भृते शिखिनि गूढमादधुः॥ (रघु. 19/54)
➢ मन्त्रियों द्वारा अग्निवर्ण की गर्भवती रानी का राज्याभिषेक किया जाता है।
तैः कृतप्रकृतिमुख्यसङ्ग्रहैराशु तस्य सहधर्मचारिणी।
साधु दृष्टशुभगर्भलक्षणा प्रत्यपद्यत नराधिपश्रियम्॥ (रघु. 19/55)
➢ रानी ने विश्वासपात्र मन्त्रियों के साथ विधिपूर्वक पति के राज्य का शासन किया और इस प्रकार रघुवंश की कथा का अन्त होता है।

निष्कर्ष

➢ रघुवंश की कथा का अन्त पतनाभिलाषी राजा के विलासी चरित्र से होता है।
➢ आरम्भ जिस तरह से उदात्त और महान् चरित्र वाले राजा दिलीप से हुआ, वहीं उसका अन्त अत्यन्त ही कारुणिक है।
➢ अग्निवर्ण जैसे विलासी चरित्र का दुःखद अन्त कराकर कवि ने यह तथ्यात्मक आदर्श प्रकट किया है कि-
1- चरित्र की उदात्तता एवं महानता के कारण रघु और राम ने सूर्यवंश को महत्ता प्रदान की।
2- उसी वंश में विलासी कामी नृप अग्निवर्ण ने अपनी दुश्चरित्रता के कारण सूर्यवंश को भ्रष्ट किया और उसका भी अत्यन्त दुःखद अन्त हुआ।
➢ कवि का मूल उद्देश्य रघु और राम के उदात्त चरित्र का वर्णन करना था।

''रघुवंशम् की सूक्तियाँ''

➢ **हेम्नः संलक्ष्यते ह्यग्नौ विशुद्धिः श्यामिकाऽपि वा।** (रघु. 01/10)
सुवर्ण की शुद्धता और श्यामता अग्नि में ही देखी जाती है।
➢ **''सहस्रगुणमुत्स्रष्टुमादत्ते हि रसं रविः।''** (रघु. 01/18)
सूर्य सहस्रगुना (हजारगुना) बरसाने के लिए ही जल लेता है।
➢ **'प्रतिबध्नाति हि श्रेयः पूज्यपूजाव्यतिक्रमः'** (रघु. 01/79)
पूज्यों की पूजा का उल्लङ्घन करना कल्याण को रोकता है।
➢ **'स्ववीर्यगुप्ता हि मनोः प्रसूतिः'** (रघु. 02/04)

मनु के वंश में उत्पन्न राजा लोग अपने ही पराक्रम से आत्मरक्षा कर लेते थे।

➢**'भक्त्योपपन्नेषु हि तद्विधानां प्रसादचिह्नानि पुरः फलानि।'** (रघु. 02/22)

प्रेमी व्यक्तियों के प्रसन्नता के चिह्न निःसन्देह फल के कारण होते हैं।

➢**''न पादपोन्मूलनशक्तिरंहः शिलोच्चये मूर्च्छति मारुतस्य।''** (रघु. 02/34)

सिंह, राजा दिलीप से कहते हैं कि- वृक्ष को उखाड़ने वाली शक्ति रखने वाले वायु का वेग पर्वत के विषय में व्यर्थ होता है।

➢**''शस्त्रेण रक्ष्यं यदशक्यरक्षं, न तद्यशः शस्त्रभृतां क्षिणोति।।''** (रघु. 02/40)

सिंह, दिलीप से कहते हैं कि- रक्षा करने के योग्य वस्तु शस्त्र से नही बचायी जा सकती, वह नष्ट होती हुई भी शस्त्रधारियों की कीर्ति को दूषित नहीं कर सकती।

➢**'स्थातुं नियोक्तुर्न हि शक्यमग्रे, विनाश्य रक्ष्यं स्वयमक्षतेन।'** (रघु. 02/56)

राजा दिलीप, सिंह से कहते हैं कि- रक्षा करने योग्य वस्तु का नाश करके स्वयं बिना नष्ट हुए, नौकर स्वामी के आगे उपस्थित होने के लिए समर्थ नही हो सकता।

➢**'एकान्तविध्वंसिषु मद्विधानां पिण्डेष्वनास्था खलु भौतिकेषु।'** (रघु. 02/57)

राजा दिलीप, सिंह से कहते हैं कि- लोगों के अवश्य नष्ट होने वाले पृथ्वी-जल-तेज-वायु-आकाश इन पाँच महाभूतों से बने शरीर में अपेक्षा नहीं रहती है।

➢**'सम्बन्धमाभाषणपूर्वमाहुः।'** (रघु. 02/58)

राजा दिलीप सिंह से कहते हैं कि- दो व्यक्तियों में बातचीत आरम्भ हो जाय तो उसी से उनका रिश्ता जुड़ जाता है। अर्थात् सम्बन्ध को बातचीत के द्वारा उत्पन्न हुआ कहते हैं।

➢**भवो हि लोकाभ्युदयाय तादृशाम्** (रघु. 03/14)

सत्पात्र को दी हुई शिक्षा सफल होती है।

➢**'पथः श्रुतेर्दर्शयितार ईश्वरा मलीमसामाददते न पद्धतिम्।'** (रघु. 03/46)

रघु, इन्द्र से कहते हैं कि वेद के मार्ग को दिखाने वाले बड़े लोग मलिन (निन्दित) मार्ग का अवलम्बन नहीं करते हैं।

➢**'यशस्तु रक्ष्यं परतो यशोधनैः।'** (रघु. 03/48)

इन्द्र-रघु यश को ही धन मानने वाले लोगों को शत्रु से यश की रक्षा करनी उचित है।

➢**'पदं हि सर्वत्रगुणैर्निधीयते।'** (रघु. 03/62)

गुण ही सर्वत्र शत्रु-मित्रादिकों में पैर को स्थापित करते हैं अर्थात् गुण से ही सर्वत्र आदर होता है।

➢**'गलितवयसामिक्ष्वाकूणामिदं हि कुलव्रतम्।'**(रघु.03/70)

वृद्ध इक्ष्वाकुवंश के राजाओं का यह वन में जाना (वानप्रस्थ होना) कुलागत नियम है।

➢**'प्रणिपातप्रतीकारः संरम्भो ही महात्मनाम्।'** (रघु. 04/64)

महात्माओं का क्रोध (कोप) प्रणाम करने से ही दूर (शान्त) हो जाने वाला होता है।

➢**'आदानं हि विसर्गाय सतां वारि मुचामिव।'** (रघु. 04/86)

सज्जनों का लेना मेघों की भाँति, उसी प्रकार से दूसरे को देनें के लिए होता है।

➢**सूर्ये तपत्यावरणाय दृष्टेः कल्पेत लोकस्य कथं तमिस्त्रा।** (रघु. 05/13)

कौत्स ऋषि रघु से कहते हैं कि- सूर्य के प्रकाशमान होने पर अन्धकार-समूह लोगों की दृष्टि को ढँकने के लिए किसी प्रकार से भी समर्थ नहीं होता।

➢**'पर्यायपीतस्य सुरैर्हिमांशोः कलाक्षयः श्लाघ्यतरो हि वृद्धेः।'** (रघु. 05/16)

कौत्स, रघु से- देवताओं द्वारा क्रम से पीये गये चन्द्रमा की कलाओं का क्षय होना बढ़ने की अपेक्षा निश्चय करके अधिक प्रशंसनीय होता है।

➢**निर्गलिताम्बुगर्भं शरद्घनं नार्दति चातकोऽपि।**(रघु.05/17)

कौत्स, रघु से-चातक (पपीहा) पक्षी भी शरद् कालीन जलरहित मेघ से याचना नहीं करता है।

➢**उष्णत्वमग्न्यातपसम्प्रयोगाच्छैत्यं हि यत्साप्रकृतिर्जलस्य।** (रघु. 05/54)

गन्धर्व राजकुमार प्रियंवद-युवराज अज से कहता है कि- जैसे जल स्वाभाविक शीतल ही है कारण वश गरम हो जाता है, उसी भाँति महात्मा लोग स्वाभाविक शान्त होते हैं।

➢**'प्रातिप्रियं चेद्भवतो न कुर्यां वृथा हि मे स्यात्स्वपदोपलब्धिः।'** (रघु. 05/56)

गन्धर्व राजकुमार प्रियंवद-युवराज अज से कहता है कि- उपकार के बदले मैं आपका प्रत्युपकार न करुँ तो मेरा अपना स्थान प्राप्त करना ही व्यर्थ होगा।

➢**'नक्षत्रताराग्रहसङ्कुलाऽपि ज्योतिष्मती चन्द्रमसैव रात्रिः।'** (रघु. 06/22)

द्वार पालिका सुनन्दा- राजकुमारी इन्दु मती से मगध नरेश परन्तप का परिचय कराती है- ताराग्रह नक्षत्रों से भरी रहने पर भी रात्रि 'चन्द्रमा से ही चाँदनी वाली कहलाती है।'

➢**'भिन्नरुचिर्हि लोकः।'** (रघु. 06/30)

लोग भिन्न-भिन्न रुचि वाले होते हैं, अतः जिसको जो रुचता है (अच्छा लगता है) वही उसके लिए सुन्दर और ग्राह्य होता है।

➢**'नहि प्रफुल्लं सहकारमेत्य वृक्षान्तरं कांक्षति षट्पदालिः।'** (रघु. 06/69)

भ्रमरों की पंक्ति खिले (बौरों से लदे) हुए आम को छोड़कर दूसरे वृक्ष की चाह नहीं करती है।

➢**'रत्नं समागच्छतु काञ्चनेन।'** (रघु. 06/79)

द्वारपालिका सुनन्दा-इन्दुमती से अज को वरण करने के लिए रत्न की शोभा उसके अनुरूप सुवर्ण से ही होती है, दूसरे से नहीं।

➢**'मनो हि जन्मान्तरसङ्गतिज्ञम्।'** (रघु. 07/15)

मन पूर्वजन्म के सम्बन्ध को भली भाँति पहचान लेता है।

➢**ननु तैलनिषेकबिन्दुना सह दीपार्चिरुपैति मेदिनीम्।'** (रघु. 08/38)

दीपक से गिरते हुए तेल के बूँदों के साथ दीपक की लौ भी पृथ्वी पर गिर पड़ती है।

➢**'प्रतिकारविधानमायुषः सति शेषे हि फलाय कल्पते।'** (रघु. 08/40)

दवा आयु शेष रहने पर ही काम करती है अर्थात् आयु के शेष रहने पर ही उपाय सफल होता है।

➢**अभितप्तमयोऽपि मार्दवं भजते कैव कथा शरीरिषु।** (रघु. 08/43)

अजविलाप- अचेतन लोहा भी अग्नि में तपाये जाने पर पिघल जाता है तब शोक से सन्तप्त प्राणियों का क्या कहना।

➢**'विषमप्यमृतं क्वचिद्भवेदमृतं वा विषमीश्वरेच्छया।'** (रघु. 08/46)

अज नारद की वीणा के माला द्वारा इन्दुमती का मृत्यु होने पर- ईश्वर की इच्छा से विष भी कहीं पर अमृत हो जाता है और अमृत भी विष हो जाता है।

➢ **'धिगिमां देहभृतामसारताम्।'** (रघु. 08/51)

अज विलाप करते हुए- देहधारियों की निःसारता को धिक्कार है।

➢ **'वसुमत्या हि नृपाः कलत्रिणः।'** (रघु. 08/83)

महर्षि वशिष्ठ का शिष्य उनके वचनों को कहता है- राजाओं की सच्ची सहधर्मिणी तो पृथ्वी ही है।

➢**'परलोकजुषां स्वकर्मभिर्गतयो भिन्नपथा हि देहिनाम्।** (रघु. 08/85)

वशिष्ठ के वचन को अज से कहता हुआ शिष्य- मृत्यु को प्राप्त हुए जीवों की गति अपने कर्मों के अनुसार भिन्न-भिन्न होती है।

➢**'स्वजनाश्रु किलातिसन्ततं दहति प्रेतमिति प्रचक्षते।'** (रघु. 08/86)

पूर्ववत् - निरन्तर बहने वाले स्वजनों के आँसू मृतात्मा को जलाते हैं ऐसा मनु आदि महर्षि कहते हैं।

➢**'मरणं प्रकृतिः शरीरिणां विकृतिर्जीवितमुच्यते बुधैः।'** (रघु. 08/87)

पूर्ववत् - शरीरधारियों का मरना स्वभाव और जीना विकार कहा जाता है।

➢**'द्रुमसानुमतां किमन्तरं यदि वायौ द्वितयेऽपि ते चलाः।'** (रघु. 08/90)

'वायु के बहने पर यदि वृक्ष और पर्वत दोनों चञ्चल हो उठें तो दोनों में अन्तर ही क्या रह जायेगा।'

➢**'अपथे पदमर्पयन्ति हि श्रुतवन्तोऽपि रजोनिमीलिताः।'** (रघु. 09/74)

कभी-कभी विद्वान् लोग भी जब रजोगुण के आवेश में अन्धे हो जाते हैं तब वे अयोग्य पथ पर पैर बढ़ा लेते हैं या अयोग्य कार्य कर बैठते हैं।

➢**'कृष्यां दहन्नपि खलु क्षितिमिन्धनेद्धो बीजप्ररोहजननीं ज्वलनः करोति।'** (रघु. 09/80)

दशरथ श्रवण के माता-पिता से- घास-फूस ईंधन आदि से जलती अग्नि जोतने योग्य भूमि को जलाता हुआ भी बीज अंकुरित होने योग्य बनाकर भूमि का उपकार ही करता है।

➢**'अव्याक्षेपो भविष्यन्त्याः कार्यसिद्धेर्हि लक्षणम्।'** (रघु. 10/06)

किसी कार्य में विलम्ब नहीं होना पूर्ण होने वाले कार्य की सिद्धि का शुभ लक्षण होता है।

➢ **'याथार्थ्यं वेद कस्तव।'** (रघु. 10/24)

देवताओं द्वारा विष्णु की स्तुति- हे विष्णु! तुम्हारी वास्तविकता कौन जानता है? अर्थात् कोई नहीं।

➢**'स्तुतिभ्यो व्यतिरिच्यन्ते दूराणि चरितानि ते।'** (रघु. 10/30)

पूर्ववत् - हे विष्णु अवाङ्मनस् गोचर आपके चरित्रों की स्तुति का अन्त तक वर्णन नहीं किया जा सकता।

➢**स्वयमेव हि वातोऽग्नेः सारथ्यं प्रतिपद्यते।** (रघु. 10/40)

विष्णु ने देवताओं से- अग्नि की सहायता करने के लिए वायु से कहने की आवश्यकता नहीं पड़ती है वह तो स्वयं उसका सहायक बन जाता है।

➢ **तेजसां हि न वयः समीक्ष्यते।** (रघु. 11/01)

तेजस्वियों की अवस्था नहीं देखी जाती।

➢**'अप्यसुप्रणयिनां रघोः कुले न व्यहन्यत कदाचिदर्थिता।'** (रघु. 11/02)

रघुवंशियों की सदा से यह रीति चली आती है कि यदि कोई उनसे प्राणों की याचना भी करे तो कभी असफल नहीं होती।

रघुकुल रीति सदा चलि आई।
प्राण जाँय पर वचन न जाई।। (मानस-तुलसी)

किं महोरगविसर्पिविक्रमो राजिलेषु गरुडः प्रवर्तते। (रघु. 11/27)

क्या बड़े-बड़े सर्पों पर प्रहार करने वाले गरुड़ जी भी छोटे-छोटे सर्पों पर प्रहार करते हैं। अर्थात् नहीं।

➢**सद्य एव सुकृतां हि पच्यते कल्पवृक्षफलधर्मिकाङ्क्षितम्।**

(रघु. 11/50)
पुण्यात्माओं की अभिलाषा कल्पवृक्ष के समान तत्काल फल देने वाली होती है।

➢**'पावकस्य महिमा सा गण्यते कक्षवज्ज्वलति सागरेऽपि यः।'** (रघु. 11/75)
अग्नि का प्रताप तभी प्रशंसनीय है, जब वह समुद्र में भी वैसे ही भड़ककर जले जैसे सूखी घास के ढेर में जलता है।

➢**'खातमूलमलिनो नदीरयैः पातयत्यति मृदुस्तटद्रुमम्।'** (रघु. 11/76)
परशुराम राम से कहते हैं कि- जिस वृक्ष की जड़ को नदी की प्रचण्ड धारा ने पहले ही खोखली कर दी हो उसे वायु के झोंके से ढह जाने में क्या देर लगती है।

'केवलोऽपि सुभगो नवाम्बुदः किम्पुनस्त्रिदशचापलाञ्छितः।' (रघु. 11/80)
रामद्वारा परशुराम के धनुष को हाथ में लेने पर- नया मेघ अकेला भी सुन्दर होता है फिर यदि वह इन्द्र धनुष से युक्त हो जाय तो उसकी शोभा का क्या कहना।

➢**'निर्जितेषु तरसा तपस्विनां शत्रुषु प्रणतिरेव कीर्तये।'** (रघु. 11/89)
राम द्वारा परशुराम के चरण स्पर्श करने पर- जब कोई पराक्रमी वीर अपने पराक्रम से अपने अपने शत्रु को जीत लेता है तब यदि वह नम्रता भी दिखाता है तो उसकी कीर्ति ही बढ़ती है।

➢**'अत्यारूढो हि नारीणामकालज्ञो मनोभवः।'** (रघु. 12/33)
शूर्पणखा द्वारा राम को अपना पति बनाने को कहने पर- बहुत बढ़ा हुआ स्त्रियों का काम समय और असमय को नहीं पहचानता है।

➢**'काले खलु समारब्धाः फलं बध्नन्ति नीतयः।** (रघु. 12/69)
राम द्वारा विभीषण को राक्षसों का राज देने पर- समय पर आरम्भ की गई नीतियों सफल होती है।

➢**'अपि स्वदेहात् किमुतेन्द्रियार्थाद्यशोधनानां हि यशो गरीयः।'** (रघु. 14/35)
राम द्वारा सीता को त्यागने का निश्चय करने पर- यशस्वियों को अपना यश अपने शरीर से भी अधिक प्यारा है फिर स्त्री भोग की वस्तुओं की तो बात ही क्या।

➢**छाया हि भूमेः शशिनो मलत्वेनारोपिता शुद्धिमतः प्रजाभिः।** (रघु. 14/40)
राम का कथन सीता की निर्दोषिता के विषय में लोक निन्दा को बड़ा मानने पर- चन्द्रमा में पड़ने वाली भूमि को परछाई को लोग निर्मल चन्द्रमा का कलङ्क ही कहते हैं।

➢**'अमर्षणः शोणितकांक्षया किं पदा स्पृशन्तं दशति द्विजिह्वः।'** (रघु. 14/41)
राम-सीता त्याग एवं रावणवध के सम्बन्ध में- असहनशील (क्रोधी) सर्प पैर से दबाने वाले व्यक्ति को रक्त पीने के लिए नही डँसता है वह तो केवल बदला लेने के लिए ही काटता है।

➢**'आज्ञा गुरूणां विचारणीया।'** (रघु. 14/46)
गुरुजनों की आज्ञा विचारणीय नहीं होती।

➢**'त्राणाभावे हि शापास्त्राः कुर्वन्ति तपसो व्ययम्।'** (रघु. 15/03)
लवणासुर को मुनियों नें राम रूपी रक्षक होनें के कारण ही श्राप नहीं दिया- ऐसे मुनि लोग शाप ही अस्त्र है जिनका वे रक्षक के न होने पर ही तप का व्यय करते हैं।

➢**'धर्मसंरक्षणार्थैव प्रवृत्तिर्भुवि शार्ङ्गिणः।'** (रघु. 15/04)
राम द्वारा लवणासुर का वध करने की आज्ञा देना- धर्म रक्षा के लिए ही पृथ्वी पर विष्णु जी का अवतार होता है।

➢**रुरोध सम्मुखीनो हि जयो रन्ध्रप्रहारिणाम्।** (रघु. 15/17)
लवणासुर की शस्त्र हीनता पर- शस्त्रादि से निर्बल शत्रु पर प्रहार करने वाला योद्धा अवश्य ही विजयी होता है।

➢**'गुरुर्विधिबलापेक्षी।'** (रघु. 15/85)
विधि के विधान को कोई नहीं टाल सकता।

➢**'सौभ्रात्रमेषां हि कुलानुसारि।'** (रघु. 16/01)
कालिदास कुश तथा उनके अन्य भाइयों की चर्चा में- सद्भ्रातृभाव कुलक्रमागत (खानदानी) होता है।

➢**'तुल्यपुष्पाभरणा हि धीरः।'** (रघु. 16/74)
सरयू में कुश का भूषण गिरने पर-धीर पुरुष पुष्प और भूषण को समान समझते हैं।

➢**'प्रह्वेष्वनिर्बन्धरुषो हि सन्तः।'** (रघु. 16/80)
कुश द्वारा कुमुदनाग पर प्रहार करने पर सज्जन लोग नम्र व्यक्तियों पर क्रोध करने का हठ नहीं करते, अर्थात् क्रोध नहीं करते।

➢**'वयोरूपविभूतीनामेकैकं मदकारणम्।'** (रघु. 17/43)
राजा अतिथि का गर्व रहित होने का वर्णन अवस्था (युवावस्था) सुन्दर रूप तथा ऐश्वर्य इनमें से एक-एक गर्व का कारण होता है।

➢**'कातर्यं केवला-नीतिः शौर्यं श्वापदचेष्टितम्।'**(रघु. 17/47)
राजा अतिथि की राजनीति एवं शूरता का वर्णन केवल शूरताहीन राजनीति से ही कार्य करना कायरता है तथा केवल राजनीति हीन शूरता से ही कार्य करना हिंसक जन्तुओं की चेष्टा के समान है।

➢**'न हि सिंहो गजास्कन्दी भयाद् गिरिगुहाशयः।** (रघु. 17/52)
अतिथि के दुर्जेय किले का वर्णन- हाथियों पर आक्रमण करने वाला सिंह भय से पहाड़ की कन्दरा में नहीं सोता है अर्थात् निर्भीक होकर भी सिंह सुरक्षित पर्वत कन्दरा में सोता है।

➢**वृद्धौ नदीमुखेनैव प्रस्थानं लवणाम्भसः।** (रघु. 17/54)
अतिथि की उन्नति का वर्णन- बढ़ने पर भी क्षार-समुद्र नदी के रास्ते ही चलता है अर्थात् बृद्धि की प्राप्ति होने पर भी महान् लोग कुमार्ग पर नहीं चलते।

➢**'समीरणसहायोऽपि नाम्भःप्रार्थी दवानलः।'** (रघु. 17/56)

अतिथि द्वारा आक्रमण करने का वर्णन- वायु के सहायक होने पर भी दावाग्नि जल की चाह नहीं करती अर्थात् जल को जलाने की इच्छा नहीं करती' अपितु तृण-काष्ठादि को ही जलाती है।

➢**'हीनान्यनुपकर्तृणि प्रवृद्धानि विकुर्वते।'** (रघु. 17/58)
अतिथि की मित्रता का वर्णन दुर्बल मित्र कोई लाभ नहीं पहुँचाते तथा बलवान मित्र विकार युक्त हो जाते हैं अर्थात् हानि पहुँचाते हैं।

➢**कोशेनाश्रयणीयत्वामिति तस्यार्थसङ्ग्रहः।** (रघु. 17/60)
कोष से आश्रयणीयता होती है अर्थात् लोग धनिक व्यक्तियों का ही आश्रय करते हैं क्योंकि जल से पूर्ण मेघ का ही चातक अभिनन्दन करता है।

➢**प्रवृद्धौ हीयते चन्द्रः समुद्रोऽपि तथाविधः।** (रघु. 17/71)
अतिथि की सर्वदा समृद्धि का वर्णन- बढ़े हुए चन्द्रमा तथा समुद्र भी क्षीण हो जाते हैं।

➢**'उदधेरिव जीमूताः प्रापुर्दातृत्वमर्थिनः।'** (रघु. 17/72)
अतिथि की दानशीलता का वर्णन- निर्जलमेघ समुद्र के पास जाने से उससे अत्यधिक जल पाकर जल को देने वाला बन जाता है।

➢**''सुखानि सोऽभुङ्क्त सुखोपरोधि वृत्तं हि, राज्ञामुपरुद्ध वृत्तम्॥''** (रघु. 18/18)
परियात्र का वर्णन- सुखरोधक राजाओं का व्यापार (प्रजापालन आदि कार्य) सुख को रोकने वाला होता है। अतएव वह कारागार के समान है।

➢**दृष्टो हि वृण्वन्कलभप्रमाणोऽप्याशाः पुरोवातमवाप्य मेघः।** (रघु. 18/38)
बालक सुदर्शन के मुकुट धारण करने का वर्णन- हाथी के प्रमाण वाले (अत्यन्त थोड़े) भी मेघ को पूर्व वायु (पुरवैया हवा) के साथ दिशाओं को घेरते देखा गया है।

➢**''स्वादुभिस्तु विषयैर्हृतस्ततो दुःखमिन्द्रियगणो निवार्यते।''** (रघु. 19/49)
अग्निवर्ण के दोषों का वर्णन- प्रियकर विषयों के वशीभूत इन्द्रिय समूह को इन्द्रिय प्रियकर विषयों से दुःख पूर्वक रोका जाता है।

रघुवंश पर टीकाएँ-
रघुवंश महाकाव्य की व्यापकता का पता इसी से लगाया जा सकता है कि-
➢ रघुवंश की 40 टीकाएँ प्राप्त होती हैं।
➢ मल्लिनाथ की टीका सर्वाधिक प्रमाणित मानी जाती है। उन्होने इसके प्रत्येक शब्द की व्याख्या की है।

प्रमुख टीकाकार एवं टीकाएँ
बल्लभदेव-
➢ रघुवंश महाकाव्य के सबसे प्राचीन टीकाकार।
➢ टीका का नाम- रघुवंशपञ्जिका
➢ पाण्डुलिपि के उपलब्ध, अप्रकाशित
➢ समय-दशमशती

दक्षिणावर्तनाथ-
➢ टीका का नाम- 'रघुवंशदीपिका'
➢ पाण्डुलिपि में अत्यधिक त्रुटि होने से अप्रकाशित
➢ समय-13वीं शती।

मल्लिनाथ-
➢ संस्कृत साहित्य के समर्थ टीकाकार।
➢ टीका का नाम-'सञ्जीवनी'।
➢ समय-15वीं शती।

अरुणगिरिनाथ-
➢ रघुवंश के तीसरे टीकाकार
➢ टीका का नाम- 'प्रकाशिका'
➢ समय- 15वीं शती।

नारायण पण्डित-
➢ अरुण गिरिनाथ का अनुवर्तन किया।
➢ टीका का नाम- 'पदार्थदीपिका'
➢ समय- (वि.स. 1506/1555)

चरित्रवर्धन-
➢ टीका का नाम- 'शिशुहितैषिणी'
समय- 15वी शती

रघुवंश के अन्य टीकाकार
➢ जिन समुद्रसूरि, हेमाद्रि, रत्नचन्द्र, सुमालिविजय, हरिदास मित्र, कृष्णभट्ट, जनार्दन और नल विजयराम प्रमुख हैं।

महत्वपूर्णतथ्य
➢ रघुवंश ध्वनि काव्य है यह ध्वनि काव्य का ज्वलन्त रूप है।
➢ रघुवंश में 19 सर्गों में रघुवंशी राजाओं का चरित्र गान किया गया है।
➢ रघुवंश चरित्रप्रधान काव्य है।
➢ लोकप्रियता की दृष्टि से रघुवंश कालिदास की कृतियों में श्रेष्ठ है।
➢ यह एक पौराणिक काव्य है जिसकी कथा इतिहास, पुराण, रामायण तथा महाभारत से ली गयी है।
➢ इतनी व्यापक और विराट् कथा के आयोजन के फलस्वरूप ही आचार्यों ने कालिदास को 'रघुकार' की उपाधि दी

रघुवंशम्-बिन्दुवार अध्ययन

➢ 'रघुवंश'-महाकाव्यस्य रचनां कः अकरोत्? - **कालिदासः**
➢ 'रघुवंशम्' है? - **महाकाव्यम्**
➢ 'रघुवंशमहाकाव्य' के मङ्गलाचरण में कालिदास ने किसकी वन्दना की? - **शिव-पार्वती की**
➢ रघुवंशे 'जगतः पितरौ' इति कौ वर्णितौ? - **पार्वतीपरमेश्वरौ**
➢ रघुवंशमहाकाव्ये सर्गाः सन्ति **19सर्गाः**
➢ रघुवंशमहाकाव्ये कति राजानो वर्णिताः सन्ति? **31**
➢ रघु के वंश का किसमें वर्णन है? - **रघुवंश में**
➢ रघुवंश में किस वंश के राजाओं का वर्णन है?-**सूर्यवंश के**
➢ रघुवंशमहाकाव्ये सर्वप्रथमं कस्य राज्ञः वर्णनम् अस्ति-**दिलीपस्य**
➢ इक्ष्वाकुवंशे जातः -**रामः**
➢ 'अथ प्रजानामधिपः प्रभाते' इत्यत्र राजार्थकः शब्दः कः- **अधिपः**

- 'रघुवंशे' कस्य वर्णनं नास्ति - **पार्वत्याः**
- 'रघुवंश' में किसकी गो-सेवा वर्णित है - **दिलीप की**
- 'रघुवंश' में दशरथ के पिता कौन हैं - **अज**
- 'नन्दिनी धेनु' का वर्णन किसमें है - **रघुवंशम् में**
- 'रघुवंश' में इन्दुमती किसकी रानी हैं - **अज की**
- राजा दशरथ का सम्बन्ध किस वंश से था - **सूर्यवंश से**
- 'रघुवंश-महाकाव्य' किसकी स्तुति से प्रारम्भ होता है - **शिव-पार्वती की**
- रघुवंशी राजाओं में सर्वप्रथम नाम आता है - **वैवस्वत**
- रघुवंशस्य व्याख्यानं केन विरचितम्? - **मल्लिनाथेन**
- अजविलाप किसमें है - **रघुवंशम् में**
- कालिदासविरचित मालविकाग्निमित्रम् नाटक में अग्निमित्र की द्वितीय पत्नी है - **इरावती**
- 'इन्दुमती' किस महाकाव्य की पात्र है - **रघुवंशम् की**
- 'रघुवंशमहाकाव्य' का पात्र नहीं है - **भीम**
- 'अग्निवर्ण' पात्र है - **रघुवंश का**
- वरतन्तुशिष्यस्य कौत्सस्य वृत्तान्तमस्मिन् काव्ये निबद्धं वर्तते - **रघुवंशे**

- 'इक्ष्वाकूणां दुरापेऽर्थे त्वदधीना हि सिद्धयः' इति कः कं प्रति आह - **दिलीपः वशिष्ठं प्रति**
- 'सन्ध्या' से किसकी तुलना की गयी है - **धेनु की**
- इक्ष्वाकुवंशी राजाओं का निरूपण प्राप्त होता है- **रघुवंशम् में**
- किसका परिश्रम व्यर्थ है - **राजा दिलीप का**
- किसके ऊपर चलाया गया अस्त्र व्यर्थ होगा - **सिंह पर**
- रघुवंशमहाकाव्ये कस्य वंशस्य राज्ञां वर्णनं विद्यते - **इक्ष्वाकुवंशस्य**
- 'योगेनान्ते तनुत्यजाम्' इतीयं पंक्तिः केन आश्रमेण सम्बद्धा - **संन्यासाश्रमेण**
- कौन लज्जा त्यागकर लौट जाय - **राजा दिलीप**
- किसके प्रति शिष्य भक्ति प्रदर्शित करें - **गुरु के प्रति**
- नन्दिनी गाय ने प्रसन्न होकर वरदान दिया था-**पुत्र-प्राप्ति का**
- रघुवंशे रघोः पिता कः? - **दिलीपः**
- रघुवंश के किस सर्ग में सीतापरित्याग का वृत्तान्त है? -**चतुर्दशे**
- रघुवंशस्य चतुर्दशसर्गस्य नाम किम्? - **सीतापरित्यागः**
- रघुवंशस्य कस्मिन् सर्गे दिलीपस्य गोसेवा वर्णिता?- **द्वितीये**
- रघुः किन्नामकं यज्ञं चकार? - **विश्वजित्**
- "श्रुतेरिवार्थं स्मृतिरन्वगच्छत्"–इत्यत्र कोऽलङ्कारः? - **उपमा**
- राजा दिलीप की पत्नी का नाम है? - **सुदक्षिणा**
- दिलीपस्य गोसेवा कस्मिन् महाकाव्ये वर्णिताऽस्ति?- **रघुवंशे**
- 'वागर्थाविव सम्पृक्तौ'–इति कस्य ग्रन्थस्य प्रथमं पद्यम्? - **रघुवंशस्य**
- 'अदूरवर्तिनीं सिद्धिं राजन्विगणयात्मनः' इस पंक्ति को कौन कहता है? - **वशिष्ठ**
- रघुवंशमहाकाव्ये अजः कस्य पुत्रः? - **रघोः**
- गङ्गा-यमुना के सङ्गम का वर्णन प्राप्त होता है - **कालिदास कृत रघुवंश में**
- दिलीपस्य वृत्तं कस्मिन् काव्ये अस्ति? - **रघुवंशे**
- 'श्रुतेरिवार्थं स्मृतिरन्वगच्छत्' प्रस्तुत श्लोकांश उद्धृत है-**रघुवंशे**
- "प्रजानामेव भूत्यर्थं स ताभ्यो बलिमग्रहीत्।
सहस्रगुणमुत्स्रष्टुमादत्ते हि रसं रविः।।"
यह किस ग्रन्थ में मिलता है - **रघुवंशम्**
- "श्रुतेरिवार्थं स्मृतिरन्वगच्छत्" इस उक्ति के रचयिता कौन हैं - **कालिदास**
- "सञ्चारिणी दीपशिखेव" यह उपमा कालिदास के किस काव्य में है - **रघुवंशम् में**
- 'क्व सूर्यप्रभवो वंशः क्व चाल्पविषया मतिः' – पंक्ति किस ग्रन्थ से उद्धृत है? - **रघुवंश में**
- 'न पादपोन्मूलनशक्तिरंहः शिलोच्चये मूर्च्छति मारुतस्य।।' श्लोकांश उद्धृत है - **रघुवंशम् से**
- "प्रांशुलभ्ये फले लोभादुद्बाहुरिव वामनः" यह सूक्ति किस काव्य से है - **रघुवंशम् से**
- "हेम्नः संलक्ष्यते ह्यग्नौ विशुद्धिः श्यामिकाऽपि वा" यह सूक्ति किस काव्य से है - **रघुवंशम् से**
यह कथन किसने किसके लिए कहा- **सिंह ने दिलीप से**
- 'वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये' श्लोकांश किस काव्य में है? - **रघुवंश में**
- "शैशवेऽभ्यस्तविद्यानाम्" इत्यस्ति - **रघुवंशमहाकाव्ये**
- "सञ्चारिणी दीपशिखेव रात्रौ" इति रघुवंशमहाकाव्ये कस्मिन्सन्दर्भे वर्णितं भवति - **इन्दुमती-स्वयंवरः**
- "सन्ततिः शुद्धवंश्या हि परत्रेह च शर्मणे" सूक्ति ग्रहण की गई है - **रघुवंशम् से**
- "शस्त्रेण रक्ष्यं यदशक्यरक्ष्यं न तद्यशः शस्त्रभृतां क्षिणोति" इयमुक्तिः कालिदासस्य कस्मिन् ग्रन्थे अस्ति - **रघुवंशे**
- "ज्ञाने मौनं क्षमा शक्तौ त्यागे श्लाघाविपर्ययः।
गुणा गुणानुबन्धित्वात् तस्य सप्रसवा इव।।"
कस्य गुणाः श्लोकेऽस्मिन् उल्लिखिताः? - **दिलीपस्य**
- पौरेषु सोऽहं बहुलीभवन्तमपां तरङ्गेष्विव तैलबिन्दुम्।
सोढुं न तत्पूर्वमवर्णमीशे आलानिकं स्थाणुमिव द्विपेन्द्रः।।
रघुवंशे कस्येयमुक्तिः? - **रामस्य**
- रघोः वंशस्य आदिमः मनुः कः? - **वैवस्वतमनुः**
- कस्य शापः दिलीपस्य सन्ततिप्रतिबन्धकः आसीत्? - **कामधेनोः शापः**
- रघुवंशमहाकाव्यस्य उपजीव्यम् अस्ति - **रामायणम्**

- दिलीपः किमर्थं बलिमग्रहीत्? - **प्रजाक्षेमाय**
- 'उद्बाहुरिव वामनः' इत्युपमा कस्मिन्महाकाव्ये वर्तते - **रघुवंशे**
- 'मणौ वज्रसमुत्कीर्णे सूत्रस्येवास्ति मे गतिः' – इत्युक्तिः? - **कालिदासस्य**
- राज्ञः दिलीपस्य पत्नी सुदक्षिणा .... राजकन्या आसीत्? - **मगधस्य**
- 'इन्दुमती-स्वयंवर-वर्णनम्' रघुवंशस्य कस्मिन् सर्गे विद्यते? - **षष्ठे**
- 'क्लेशावहा भर्तुरलक्षणाहम्' इत्थं का वदति - **सीता**
- 'तितीर्षुर्दुस्तरं मोहादुडुपेनास्मि सागरम्' इति कालिदासोक्तिः रघुवंशे कुत्रास्ति? - **प्रथमसर्गे**
- आराधय सपत्नीकः प्रीता कामदुधा हि सा का - **नन्दिनी**
- 'प्रसादचिह्नानि पुरः फलानि।' इतीयं पंक्तिः कस्मिन् काव्ये वर्तते? - **रघुवंशे**
- 'यशोधनानां हि यशो गरीयः' इति पंक्तिः कस्मिन् काव्ये वर्तते- **रघुवंशे**
- स्ववीर्यगुप्ता हि मनोः प्रसूतिः–इति पंक्तिः कस्मिन् काव्ये वर्तते - **रघुवंशे**
- वागर्थाविव सम्पृक्तौ कौ? - **पार्वति-परमेश्वरौ**
- 'प्रजानामेव भूत्यर्थं स ताभ्यो बलिमग्रहीत्।' कः?- **दिलीपः**
- 'शस्त्रेण रक्ष्यं यदशक्यरक्ष्यं न तद्यशः शस्त्रभृतां क्षिणोति'- कस्य वचनमिदम्? - **सिंहस्य**
- रघुवंशस्य त्रयोदशसर्गे का कथा वर्णिता अस्ति - **रामस्य अयोध्याप्रत्यागमनम्**
- 'तितीर्षुर्दुस्तरं मोहादुडुपेनास्मि सागरम्'
- 'योगेनान्ते तनुत्यजाम्' कथनम् इदं केषां सन्दर्भे प्रयुक्तम्? - **रघूणाम्**
- राजा दिलीपः किमर्थं राज्यभारं सचिवेषु निचिक्षिवे - **संतानार्थाय विधये**
- रघुवंशस्य .... सर्गे राज्ञः दिलीपस्य गोसेवाचरणव्रतं वर्णितमस्ति- **द्वितीये**
- ''वैदेहिबन्धोर्हृदयं विदद्रे'' – इत्यत्र कस्तावत् वैदेहिबन्धुः- **रामः**

4.8 कुमारसम्भवम्-महाकाव्य का परिचय

- 'कुमारसम्भवम्' महाकाव्य कालिदास की प्रारम्भिक रचना है।
- इसमें कवि शिव-पार्वती विवाह, कुमार कार्तिकेय के जन्म, तथा उनके द्वारा तारकासुर के वध की कथा वर्णित है।
- इस महाकाव्य में **17 सर्ग** हैं।
- किन्तु प्रथम 8 सर्गों को ही कालिदास की रचना माना जाता है।
- 'विवरण टीका' के लेखक- नारायण पण्डित ने कहा कुमारसम्भव काव्य का लक्ष्य पार्वती द्वारा शिव के चित्त का आकर्षण मात्र था।
- काव्यशास्त्रीय आचार्यों ने प्रथम आठ सर्गों से ही उद्धरण दिये हैं।
- मल्लिनाथ की संजीवनी टीका वस्तुतः आठ सर्गों तक ही है।
- मल्लिनाथ के पूर्ववर्ती अरुणगिरिनाथ ने भी आठ सर्गों तक ही टीका लिखी है।
- भाषा, भाव की दृष्टि से परवर्ती सर्ग मौलिक सर्गों की अपेक्षा हीनतर है।
- केवल सीताराम नामक कवि ने संजीवनी नाम से उन सर्गों की व्याख्या की है।
  (सर्वप्रथम टीका सम्पूर्ण काव्य पर 17 सर्ग तक)
- 'कुमारसम्भवम्' में 'सम्भव' शब्द सम्भावना की ही ध्वनि देता है।
- वास्तविक जन्म को प्रकाशित नहीं करता है।

कुमारसम्भवम् - महाकाव्य का परिचय

- **प्रणेता-** महाकवि कालिदास की प्रारम्भिक रचना।
- **नायक-** कुमारसम्भव के नायक शिव दिव्य कोटि के हैं।
- **प्रतिनायक-** तारकासुर
- **सर्ग संख्या-** 17 सर्ग (मूल रूप से 8 सर्गों की रचना को (आगे विवरण) पेज
- **उपजीव्य-** शिवपुराण, रामायण, महाभारत।

रस-

- कुमारसम्भवम् का अङ्गी रस **शृङ्गार** है।
- शिवपार्वती के असाधारण प्रेम और प्रणय लीलाओं का चित्रण इस काव्य में होने से सम्पूर्ण काव्य शृङ्गार मय है।

  तं यथात्मसदृशं वरं वधूरन्वरज्यत वरस्तथैव ताम्।
  सागरादनपगा हि जाह्नवी सोऽपि तन्मुखरसैकवृत्तिभाक्॥
  (कुमार. 08/16)
- चतुर्थ सर्ग में रति के करुण विलाप में आद्यन्त करुण रस छाया हुआ है।

  गत एव न ते निवर्तते स सखा दीप इवानिलाहतः।
  अहमस्य दशेव पश्य माम विषह्यव्यसनेन धूमिताम्॥
  (कुमार. 4/30)
- समाधिस्थ शिव की मूर्ति एवं पार्वती की तपस्या वर्णन में शान्त रस की छटा दिखती है।
- अंग रस के रूप में हास्य रस भी इस महाकाव्य में विन्यस्त है।

छन्द-

- कालिदास को छोटे छन्द अधिक प्रिये थे।
- बड़े छन्दों का प्रयोग सर्गान्त में किया गया है।
- छोटे छन्दों में भी उपजाति और अनुष्टुप् अतिप्रिय छन्द हैं।
- कुमारसम्भव में सर्वाधिक उपजाति छन्द का प्रयोग हुआ।

अलंकार-

कुमारसम्भवम् के सर्गों में प्रयुक्त छन्द

सर्ग संख्या	सर्ग में प्रयुक्त छन्द	सर्गान्त मे प्रयुक्त छन्द

प्रथम सर्ग	उपजाति	मालिनी
द्वितीय सर्ग	अनुष्टुप्	मालिनी
तृतीय सर्ग	उपजाति	मालिनी
चतुर्थ सर्ग	वियोगिनी	पुष्पिताग्रा
पञ्चम सर्ग	वंशस्थ	वसन्ततिलका
षष्ठ सर्ग	अनुष्टुप्	पुष्पिताग्रा
सप्तम सर्ग	उपजाति	मालिनी
अष्टम सर्ग	रथोद्धता	मालिनी
नवम सर्ग	उपजाति	पुष्पिताग्रा
दशम सर्ग	अनुष्टुप्	मन्दाक्रान्ता
एकादश सर्ग	उपजाति	हरिणी
द्वादश सर्ग	उपजाति	हरिणी
त्रयोदश सर्ग	उपजाति	मालिनी
चतुर्दश सर्ग	उपजाति	मालिनी
पञ्चदश सर्ग	उपजाति,वंशस्थ	शार्दूलविक्रीडित
षोडश सर्ग	अनुष्टुप्	हरिणी
सप्तदश सर्ग	वसन्ततिलका	मालिनी

विशेष-

- कुमारसम्भवम् में सर्वाधिक उपजाति छन्द का प्रयोग निम्न लिखित 9 सर्गों में हुआ-
- नव सर्गों में 1,3,7,9,11,12,13,14,15 उपजाति छन्द प्रयुक्त
- सर्गान्त में सर्वाधिक मालिनी छन्द का प्रयोग निम्नलिखित 8 सर्गों में हुआ है।
- आठ सर्गों में 1,2,3,7,8,13,14,17 सर्गान्त में मालिनी छन्द प्रयुक्त
- अनुष्टुप् छन्द का भी विभिन्न सर्गों में प्रयोग हुआ है- 4 सर्गों में 2,6,10,16 अनुष्टुप् छन्द प्रयुक्त
- हरिणी छन्द का प्रयोग निम्नलिखित सर्गों के अन्त में हुआ है-
- तीन सर्गों में 11,12,16 सर्गान्त में हरिणी छन्द प्रयुक्त
- वियोगिनी छन्द का प्रयोग चतुर्थ सर्ग में हुआ है रति विलाप में इसका प्रयोग-

'वियोगिनी विषमे ससजा गुरुः समे सभरा लोऽथ गुरुर्वियोगिनी।'

अथ मोहपरायणा सती विवशा कामवधूर्विबोधिता।
विधिना प्रतिपादयिष्यता नववैधव्यमसह्यवेदनम्।।

(कुमार. 04/01)

कुमारसम्भवम् के सर्गों का नाम एवं श्लोक संख्या

सर्गसंख्या	सर्ग का नाम	सर्ग में श्लोक संख्या
प्रथम सर्ग	उमोत्पत्ति (उमा उत्पत्ति)	60
द्वितीय सर्ग	ब्रह्मसाक्षात्कार	64
तृतीय सर्ग	मदन दहन	76
चतुर्थ सर्ग	रति विलाप	46
पञ्चम सर्ग	तपः फल उदय	86
षष्ठ सर्ग	उमाप्रदान	95
सप्तम सर्ग	उमा परिणय	95
अष्टम सर्ग	उमासुरतवर्णन	91
(श्रीसीताकवि)	उमा परिणय	(मल्लिनाथ)
नवम सर्ग	कैलाश गमन	52
दशम सर्ग	कुमार उत्पत्ति	60
एकादश सर्ग	कुमार उत्पत्ति	50
द्वादश सर्ग	कुमार सेनापतिवर्णन	60
त्रयोदश सर्ग	कुमार सेनापति अभिषेक	51
चतुर्दश सर्ग	देवसेना प्रयाण	51
पञ्चदश सर्ग	देवसेना प्रयाण सुरासुरसैन्य संघट्ट	53
षोडश सर्ग	देवसेना प्रयाण सुरासुरसैन्य संग्रामवर्णन	51
सप्तदश सर्ग	तारकासुर वध	55
		कुल=1096

- **सर्गानुसार कथावस्तु**

सर्ग-1

- हिमालय का भव्य वर्णन
- हिमालय-मैना विवाह
- पार्वती का जन्म और सौन्दर्य
- नारद द्वारा शिव-पार्वती विवाह की चर्चा।
- पार्वती द्वारा शिव की आराधना।

सर्ग-2

- तारकासुर से पीड़ित देवताओं के द्वारा ब्रह्मा की प्रार्थना।
- ब्रह्मा द्वारा उपाय कि शङ्कर-पार्वती पुत्र ही तारक-वध कर सकता है।

सर्ग-3

- देवगण शिव के चित्त में क्षोभ उत्पन्न करने के लिए कामदेव का उपयोग करते हैं।
- कामदेव द्वारा वसन्त ऋतु फैलाना शिव पर बाण चलाना।
- शिव द्वारा कामदेव को भस्मसात् करना।

सर्ग-4

- कामदेव की पत्नी रति का विलाप
- वियोगिनी छन्द का कवि द्वारा प्रयोग।

सर्ग-5

- महाकाव्य का श्रेष्ठ सर्ग।
- पार्वती की घोर तपस्या का वर्णन
- असाध्य शिव को तपस्या ही द्रवित करती है।
- शिव पार्वती का रमणीय संवाद।

सर्ग-6

- विवाहोच्छुक शिव का सन्देश लेकर सप्तर्षिगण हिमालय के पास जाते हैं।

सर्ग-7

- शिव की दर्शनीय वर यात्रा।
- पार्वती-परिणय।

सर्ग-8
- रथोद्धता छन्द में विवाह के अनन्तर शिव पार्वती दाम्पत्य जीवन। केलि विहार वर्णन।
- कुछ विद्वान् 8 सर्ग तक ही कालिदास की रचना मानते हैं।

सर्ग-9
- शिव-पार्वती का विहार यात्रा करते हुए कैलास पर्वत गमन।

सर्ग-10
- कार्तिकेय (कुमार, स्कन्द का गर्भ में आना।)

सर्ग- 11
- कुमार का जन्म तथा बाल्यावस्था वर्णन अर्जुन की चार पत्नी- द्रौपदी, सुभद्रा, नागकन्या लूपी, चित्रांगदा

सर्ग-12
- कुमार का सेनापति बनना।

सर्ग-13
- कुमार का सैन्य संचालन कौशल वर्णन।

सर्ग-14
- देवसेना द्वारा आक्रमण हेतु प्रस्थान।

सर्ग-15
- देवासुर-सेनाओं का संघर्ष।

सर्ग-16
- युद्ध वर्णन

सर्ग-17
- कुमार द्वारा तारकासुर का वध।

प्रमुख सूक्तियाँ

1- 'शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्' (5/33)
2- न धर्मवृद्धेषु वयः समीक्ष्यते। (5/11)
3- आत्मेश्वराणां न हि जातु विघ्नाः। (3/40)
4- कठिनाः खलु स्त्रियः। (4/5)
5- प्रियेषु सौभाग्यफला हि चारुता। (5/1)
6- न रत्नमन्विष्यति मृग्यते हि तत्। (5/45)
7- प्रायेण समग्र्यविधौ गुणानां पराङ्मुखी विश्वसृजः प्रवृत्तिः। (3/28)
8- स्वजनस्य हि दुःखमग्रतो विवृत द्वारमिवोपजायते।। (4/26)
9- क्लेशः फलेन हि पुनर्नवतां विधत्ते। (5/86)
10- नहीश्वरव्याहृतयः कदाचित् पुष्णन्ति लोके विपरीतमर्थम्। (3/63)
11- मनोरथानामगतिर्न विद्यते।
12- प्रायेण गृहिणी नेत्राः कन्यार्थेषु कुटुम्बिनः।
13- विषवृक्षोऽपि संवर्ध्य स्वयं छेत्तुमसाम्प्रतम्
14- एको हि दोषो गुणसन्निपाते निमज्जतीन्दोः किरणेष्विवाङ्कः।
15- न कामवृत्तिर्वचनीयमीक्ष्यते।

महाकाव्य का वैशिष्ट्य
- महाकाव्य का नामकरण कथानक पर आधारित है-
- 'कुमारस्य सम्भवः जन्म यस्मिन् काव्ये तत् कुमारसम्भवम्'
- महाकाव्य के अधिकांश लक्षण कुमारसम्भव में मिलते हैं जो कि विभिन्न आचार्यों द्वारा बताते गये हैं।
- "विकारहेतौ सति विक्रियन्ते येषां न चेतांसि त एव धीराः।" काव्य महादेव को वास्तविक धीर कहा गया है।

कुमारसम्भवम्- बिन्दुवार अध्ययन
- 'कुमारसम्भवमहाकाव्य' के रचयिता कौन हैं? - **कालिदास**
- कुमारसम्भवमहाकाव्ये कति सर्गाः सन्ति? - **सप्तदश**
- कुमारसम्भवमहाकाव्यस्य कस्मिन् सर्गे हिमालयवर्णनमस्ति? - **प्रथम**
- कस्मिन् काव्ये हिमालयवर्णनं प्रथमतः? - **कुमारसम्भवे**
- 'शिव-पार्वत्योः' चर्चा कस्मिन् ग्रन्थे दृश्यते? - **कुमारसम्भवे**
- कुमारसम्भवमहाकाव्ये कुमारः वर्तते - **कार्तिकेयस्य**
- 'कुमारसम्भव' में किस राक्षस का वध वर्णित है? - **तारकासुर**
- कुमारसम्भवे उमातपोवर्णनं कस्मिन् सर्गे कृतम्? - **पञ्चम**
- "स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः" अत्र अलङ्कारोऽस्ति? -**उत्प्रेक्षा**
- "एको हि दोषो गुणसन्निपाते निमज्जतीन्दोः किरणेष्विवाङ्कः" उपर्युक्त सूक्ति कहाँ मिलती है? - **कुमारसम्भवम्**
- "शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्" सूक्ति है - **कुमारसम्भवे**
- "अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयो नाम नगाधिराजः" यह पंक्ति कहाँ प्राप्त होती है? - **कुमारसम्भवम्**
- क्षुद्रेऽपि नूनं शरणं प्रपन्ने ममत्वमुच्चैः शिरसां सतीव - **कुमारसम्भव**
- 'क्लेशः फलेन हि पुनर्नवतां विधत्ते' इयं पंक्ति अस्ति - **कुमारसम्भवस्य**
- "स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः" उक्ति है - **कुमारसम्भवम् की**
- 'शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्' एषा उक्तिः कस्य काव्यस्य? - **कुमारसम्भवम्/ब्रह्मचारी का कथन**
- 'न धर्मवृद्धेषु वयः समीक्ष्यते' – इस उक्ति के रचयिता कौन हैं? - **कालिदास**
- शिव पार्वती विवाह, कार्तिकेय जन्म व कार्तिकेय द्वारा तारकासुर वध – ये समस्त घटनायें किस महाकाव्य की ओर सङ्केत कर रही हैं? - **कुमारसम्भवम्**
- 'प्रियेषु सौभाग्यफला हि चारुता'–इस उक्ति के रचयिता कौन हैं? - **कालिदास**
- 'मनोरथानामगतिर्न विद्यते'-कस्येदं वाक्यम्? -**पार्वत्याः**
- कुमारसम्भवम् महाकाव्यस्य प्रारम्भः कीदृग्विधेन मङ्गलाचरणेन अस्ति? - **वस्तुनिर्देशात्मकेन**

4.9 मृच्छकटिकम्

महाकवि शूद्रक का परिचय
- **वास्तविक नाम-** शिमुक या सिमुक।

- **समय-** प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व।
- **आयु-** 100 वर्ष 10 दिन।
- शूद्रक ने स्वेच्छा से आत्मदाह किया था।
- महापराक्रमी, सुन्दर आकृति वाले एवं ब्राह्मणों में श्रेष्ठ थे।

''द्विजमुख्यतमः कविर्बभूव प्रथितः शूद्रक इत्यगाधसत्त्वः।''

- शूद्रक ऋग्वेद, सामवेद आदि वेदों के ज्ञाता, गणित, संगीत तथा हस्तिविद्या में निपुण थे।
- महाकवि शूद्रक शिव-पार्वती के भक्त थे।
- शूद्रक ने शिव के प्रताप से दिव्य दृष्टि पाकर, पुत्र को राजसिंहासन देकर, महामहिमशाली अश्वमेघ यज्ञ भी किया था।
- 'मृच्छकटिकम्' शूद्रक की एक मात्र रचना है।
- शूद्रक प्रथम नाटककार हैं, जिन्होंने तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था को ही अपनी लेखनी का आधार बनाया।
- **रीति-** वैदर्भी

मृच्छकटिकम् का परिचय

- **लेखक-** शूद्रक
- **विधा-** प्रकरण
- **अङ्क-** 10(दस)
- **प्रधान/अङ्गी रस-** शृङ्गार
- **गौण/अङ्ग रस-** हास्य, करुण, भय तथा अद्भुत।
- **उपजीव्य-** भासकृत दरिद्रचारुदत्त
- डॉ. कान्तानाथ शास्त्री तेलंग के अनुसार 'गुणाढ्य' की बृहत्कथा में वर्णित 'गोपालदारक तथा आर्यक के विद्रोह की कथा।'
- **कुल श्लोक संख्या-** 380 (तीन सौ अस्सी)
- **नायक-** चारुदत्त (धीरप्रशान्त)
- **नायिका-** 1. कुलजा- धूता
  2. वेश्या (गणिका)- वसन्तसेना (प्रगल्भा नायिका)
- **प्रतिनायक-** शकार (संस्थानक)
- **अन्य पात्र-** आर्यक, शर्विलक, विट, सूत्रधार, नटी, रदनिका, मदनिका, धूता, चन्दनक, संवाहक, रोहसेन आदि।
- **पात्र संख्या-** 24 पुरुष और 8 स्त्रीपात्र हैं। सूत्रधार और नटी को छोड़ने पर 30 पात्र स्वीकृत हैं।
- मञ्च पर न आने वाले पात्र- जूर्णवृद्ध, पालक,रेभिल,सिद्ध।

मृच्छकटिकम् में अङ्कवार श्लोक

अङ्क	नाम	श्लोक
प्रथम	अलङ्कारन्यास	58
द्वितीय	द्यूतकर संवाहक	20
तृतीय	सन्धिच्छेद	30
चतुर्थ	मदनिका शर्विलक	33
पञ्चम	दुर्दिन	52
षष्ठ	प्रवहण विपर्यय	27
सप्तम	आर्यकापहरण	9
अष्टम	वसन्तसेना मोटन	47
नवम	न्यायालय (व्यवहार)	43
दशम	संहार (उपसंहार)	61
	योग-	380

मृच्छकटिक- एक तथ्यात्मक अध्ययन

- चारुदत्त धीरप्रशान्त कोटि का नायक है।
- चारुदत्त उज्जयिनी का गरीब ब्राह्मण है।
- वह जन्मना ब्राह्मण और कर्मणा सार्थवाह (व्यापारी) है।
- वसन्तसेना उज्जयिनी की ही एक प्रसिद्ध गणिका है।
- मृच्छकटिकम् नामक प्रकरण में चारुदत्त और वसन्तसेना के पारस्परिक प्रेम का वर्णन है।
- धूता, चारुदत्त की विवाहिता पत्नी है।
- चारुदत्त और धूता के बच्चे का नाम रोहसेन है।
- मैत्रेय इस प्रकरण का विदूषक है। वह जाति से ब्राह्मण तथा चारुदत्त का परम मित्र है।
- शकार, राजा पालक का साला है तथा वसन्तसेना से एकतरफा प्रेम करता है।
- शर्विलक, चौर्यकर्म में निपुण एक ब्राह्मण है, जो वसन्तसेना की क्रीतदासी 'मदनिका' का प्रेमी है।
- चारुदत्त का पूर्वभृत्य संवाहक है जो जुए में सब कुछ हारकर बौद्धभिक्षु बन जाता है।
- सूत्रधार के साग्रह अनुरोध, सिद्धान्न भोजन और प्रचुर दक्षिणा के प्रलोभन पर भी मैत्रेय (विदूषक) उसके घर भोजन करने से इनकार कर देता है।
- चारुदत्त के मित्र जूर्णवृद्ध द्वारा भेजा हुआ शाल मैत्रेय लेकर आता है।
- मैत्रेय अत्यन्त डरपोक है इसलिए मातृबलि देने चौराहे पर रदनिका (चारुदत्त की दासी) के साथ जाता है।
- विट और चेट के साथ शकार द्वारा पीछा किये जाने पर वसन्तसेना, चारुदत्त के घर में छिपती है।
- रात के अँधेरे में शकार, रदनिका को वसन्तसेना समझकर पकड़ लेता है, इस पर मैत्रेय शकार को मारने दौड़ता है।
- वसन्तसेना अपना आभूषण चारुदत्त के घर में रख देती है और बताती है कि वह **'कामदेवायतन उद्यान'** में चारुदत्त को देखकर उसके प्रति अनुरक्त हो गयी थी।
- संवाहक पाटलिपुत्र से आकर उज्जयिनी में चारुदत्त का सेवक बन जाता है।
- चारुदत्त के दरिद्र हो जाने पर संवाहक जुआरी हो जाता है।
- जुए में सर्वस्व हारने पर, चारुदत्त का पुराना नौकर जानकर वसन्तसेना, संवाहक को छुड़ा लेती है।
- वसन्तसेना के हाथी का नाम **'खुण्डमोटक'** है।
  यः सः आर्यायाः खुण्डमोटको नाम दुष्टहस्ती।
- चारुदत्त को रेभिल का संगीत अत्यन्त पसन्द है।
- शर्विलक, चारुदत्त के घर में सेंध काटकर वसन्तसेना के रखे हुए गहने चुरा लेता है और अपनी प्रेयसी मदनिका को गुलामी की जंजीर से छुड़ाता है।
- धूता अपने पति चारुदत्त को चोरी के कलङ्क से बचाने के लिए

अपना 'रत्नावली' नामक आभूषण वसन्तसेना के पास भेजती है।

- वसन्तसेना अपनी माँ के कहने पर भी शकार के पास जाने से मना करती है।
- राजा पालक द्वारा आर्यक को बंदी बनाया जाता है।
- अपने मित्र के बंदी बनाए जाने पर शर्विलक मदनिका को रेभिल के घर पहुँचाकर स्वयं आर्यक को छुड़ाने जाता है।
- वसन्तसेना, धूता के आभूषण को मैत्रेय द्वारा वापस कर देती है।
- वसन्तसेना शाम को चारुदत्त के घर जाती है और वर्षा के कारण रात वहीं बिताती है।
- चारुदत्त **'पुष्पकरण्डक'** नामक बगीचे में जाता है और वसन्तसेना को वहीं बुलवाता है।
- चारुदत्त का पुत्र 'रोहसेन' सोने की गाड़ी के लिए रोता है, इस पर वसन्तसेना अपना आभूषण गाड़ी बनवाने के लिए दे देती है।
- आर्यक, राजा पालक के कैद से भाग जाता है।
- भूलवश वसन्तसेना शकार की गाड़ी में बैठ जाती है।
- बैलगाड़ी उद्यान में पहुँचने पर वसन्तसेना शकार के प्रणय प्रार्थना को ठुकरा देती है, जिससे क्रुद्ध होकर शकार उसका गला दबा देता है।
- वसन्तसेना के मूर्च्छित होने से मृत समझकर शकार भाग जाता है और चारुदत्त के विरुद्ध हत्या का आरोप लगाकर न्यायालय में मुकदमा करता है।
- बौद्धभिक्षु संवाहक वसन्तसेना की रक्षा करता है।
- चारुदत्त पर अभियोग चलता है और विदूषक के बगल से वसन्तसेना का आभूषण मिलने पर चारुदत्त को फाँसी का दण्ड मिलता है।
- फाँसी के वक्त ही भिक्षु वसन्तसेना के साथ वध्यस्थल पर जाता है, शकार भाग खड़ा होता है।
- पालक को मारकर आर्यक राजा बनता है और झूठे अभियोग चलाने के कारण शकार को फाँसी होती है किन्तु चारुदत्त उसे माँफ कर देता है।
- चारुदत्त को राज्य मिलता है और वसन्तसेना को वधू का सम्मानित पद।
- भरतवाक्य के साथ प्रकरण समाप्त होता है।
- मृच्छकटिकम् का अर्थ है - 'मिट्टी की गाड़ी।'
- मृच्छकटिकम् में सात प्राकृतों (शौरसेनी, अवन्तिका, प्राच्या, मागधी, शकारी, चाण्डाली, और ढक्की) का प्रयोग है।
- मृच्छकटिकम् के 30 पात्रों में केवल 6 पात्र ही संस्कृत बोलते हैं।
- संस्कृत बोलने वाले पात्र-चारुदत्त, आर्यक, शर्विलक, विट, सूत्रधार, अधिकरणिक।
- यह प्रगतिवादी एवं समाजवादी रूपक है। इसमें शोषित, दलित एवं उपेक्षित वर्ग का सहानुभूतिपूर्ण चित्रण है।
- जुआ खेलने वालों का प्रमुख- सभिक।
- इसमें वैदर्भी रीति अपनायी गयी है, कहीं-कहीं गौडी रीति का भी आश्रय लिया गया है।
- निम्न कोटि के पात्रों की संख्या अधिक है।
- शकार की बहन राजा पालक की रखैल है।
- मृच्छकटिकम् की कथा आदर्शवादी न होकर यथार्थवादी है।
- प्राकृतों में देशी शब्दों की प्रधानता है।
- **चोरों के देवता**- कार्तिकेय- (**नमो वरदाय कुमार कार्तिकेयाय**)
- **चोरों के गुरु**- कनकशक्ति, ब्रह्मण्यदेव, देवव्रत तथा भास्करनन्दी। (**नमः कनकशक्तये ब्रह्मणदेवाय देवव्रताय नमो भास्करनन्दिने**)
- शर्विलक के गुरु- योगाचार्य। (**नमो योगाचार्याय यस्याहं प्रथमः शिष्यः**)
- योगरोचना- ऐसा द्रव्य जिसको लगाने से चोर आदि को कोई देख नहीं सकता।

मृच्छकटिकम्- अङ्कवार प्रमुख घटनाएँ

प्रथम अङ्क

- चारुदत्त की दरिद्रता का मार्मिक चित्रण।
- विट और चेट सहित शकार के द्वारा वसन्तसेना का पीछा करना।
- अन्धकार का लाभ उठाकर वसन्तसेना का चारुदत्त के घर में छिपना तथा अपने आभूषणों को न्यास (धरोहर) के रूप में चारुदत्त के घर में छोड़ना।

द्वितीय अङ्क

- चारुदत्त के पूर्व सेवक संवाहक का द्यूत में ऋणी होकर वसन्तसेना के पास आना तथा वसन्तसेना द्वारा उसे ऋणमुक्त कराना।
- जुआरी संवाहक का बौद्धभिक्षु बन जाना।
- वसन्तसेना के मत्त हाथी का संवाहक पर आक्रमण करना,सेवक द्वारा संवाहक की रक्षा करना तथा पुरस्कार के रूप में चारुदत्त अपनी बहुमूल्य चादर सेवक को देना।

तृतीय अङ्क

- चारुदत्त के घर में सेंध मारकर शर्विलक द्वारा वसन्तसेना के आभूषणों को चुराना।
- चोरी हुए आभूषणों के बदले में चारुदत्त की पत्नी धूता द्वारा अपनी बहुमूल्य 'रत्नमाला' का दिया जाना।

चतुर्थ अङ्क

- शर्विलक द्वारा चोरी के आभूषण से अपनी प्रेयसी मदनिका को वसन्तसेना के घर से मुक्त कराना तथा वधू के रूप में स्वीकार करना।
- शर्विलक द्वारा अपने बन्दी मित्र आर्यक को छुड़ाने के निमित्त जाना।
- रत्नमाला लेकर गये विदूषक द्वारा वसन्तसेना के विशाल भवन का अवलोकन।

पञ्चम अङ्क

- वसन्तसेना का चारुदत्त के घर में रात बिताना।

➢ वर्षाकाल का भव्य वर्णन।

षष्ठ अङ्क

➢ चारुदत्त के पुत्र रोहसेन का सोने की गाड़ी के लिए जिद करना जबकि दासी रदनिका मिट्टी की गाड़ी (मृत +शकटिका) देती है।

➢ इस दृश्य पर वसन्तसेना का मिट्टी की गाड़ी को आभूषणों से भरना।

➢ वसन्तसेना की गाड़ी भ्रमवश बदल जाना।

➢ चन्दनक सिपाही द्वारा बन्दी आर्यक को अभयदान।

सप्तम अङ्क

➢ आर्यक का चारुदत्त के पास पुष्पकरण्डक उद्यान में जाना और चारुदत्त द्वारा आर्यक के बन्धन को कटवाना।

अष्टम अङ्क

➢ पुष्पकरण्डक उद्यान में शकार द्वारा वसन्तसेना का गला घोंटना।

➢ वसन्तसेना को मृत समझकर शकार द्वारा चारुदत्त पर झूठा अभियोग चलाने के लिए न्यायालय जाना।

➢ बौद्धभिक्षु संवाहक द्वारा वसन्तसेना को उपचार हेतु बौद्ध विहार में ले जाना।

नवम अङ्क

➢ शकार द्वारा अपने पक्ष में निर्णय देने के लिए न्यायाधीश को धमकी।

➢ वसन्तसेना का चारुदत्त के घर जाने सम्बन्धित वसन्तसेना की माता की गवाही।

➢ वसन्तसेना का आभूषण विदूषक के पास से मिलना और चारुदत्त को फाँसी की सजा।

दशम अङ्क

➢ पालक को मारकर आर्यक का राजा बनना।

➢ चारुदत्त को फाँसी से मुक्ति।

➢ वसन्तसेना को वधू पद प्राप्त होना।

मृच्छकटिकम् में अलङ्कार एवं छन्द योजना

➢ मृच्छकटिकम् में स्वाभाविक रूप से अलङ्कारों का प्रयोग है। उपमा,रूपक,उत्प्रेक्षा के साथ-साथ काव्यलिङ्ग,विशेषोक्ति और समासोक्ति अलङ्कारों का विशेष रूप से वर्णन है।

➢ महाकवि शूद्रक ने पूरे मृच्छकटिक में 21 (इक्कीस) प्रकार के छन्दों का प्रयोग किया है।

➢ सर्वाधिक प्रयुक्त छन्दों में वसन्ततिलका, शार्दूलविक्रीडित और उपजाति मुख्य हैं।

मृच्छकटिकम् की सूक्तियाँ

➢ **''अकन्दसमुत्थिता पद्मिनी अवञ्चको वणिक्**
अचौरः सुवर्णकारः अकलहो ग्रामसमागमः
अलुब्धा गणिकेति दुष्करमेते सम्भाव्यन्ते।'' (अङ्क-5)

भावार्थ- पञ्चम अङ्क में विदूषक वसन्तसेना के बारे में कहता है, ''बिना जड़ के उत्पन्न हुई कमलिनी, न ठगने वाला बनिया, न चुराने वाला सुनार, जिसमें झगड़ा न हो ऐसा ग्राम सम्मेलन, न लोभ करने वाली वेश्या, इनकी सम्भावना करना कठिन है।''

➢ **अग्राह्या मूर्धजेष्वेताः स्त्रियो गुणसमन्विताः।**
न लताः पल्लवच्छेदमर्हन्त्युपवनोद्भवाः॥ (8/21)

भावार्थ- आठवें अङ्क में जब शकार, वसन्तसेना को बाल पकड़कर जबरदस्ती गाड़ी से उतारना चाहता है, तब विट, शकार से कहता है, ''सुन्दरता आदि गुणों से युक्त इन नारियों के केश नहीं पकड़ना चाहिए, क्योंकि उद्यान में उत्पन्न होने वाली लताएँ, कोमल पत्ते तोड़ने योग्य नहीं होतीं।''

➢ **अपण्डितास्ते पुरुषा मता मे ये स्त्रीषु च श्रीषु विश्वसन्ति।** (4/12)

भावार्थ- चतुर्थ अङ्क में शर्विलक, मदनिका और वसन्तसेना के समक्ष कहता है,'' वे मनुष्य मुझे मूर्ख लगते हैं जो स्त्रियों और सम्पत्ति पर विश्वास करते हैं। सम्पत्ति तथा स्त्रियाँ सर्पकन्याओं के समान कुटिल गमन करती हैं।''

➢ **दुर्लभा गुणा विभवाश्च। अपेयेषु तडागेषु बहुतरमुदकं भवति।** (अङ्क-2)

भावार्थ- द्वितीय अङ्क में संवाहक, वसन्तसेना से बताता है कि चारुदत्त दान देने के कारण अत्यन्त दरिद्र हो गये हैं, इस पर वसन्तसेना कहती है, ''गुण और सम्पत्ति का एकत्र पाया जाना दुर्लभ है। न पीने योग्य पानी वाले तालाबों में बहुत पानी होता है।''

➢ **अभ्युदयेऽवसाने तथैव रात्रिं दिवमहतमार्गा।**
उद्दामेवकिशोरी नियतिः खलु प्रत्येषितुं याति॥ (10/19)

भावार्थ- दशवें अङ्क में जब चाण्डाल, चारुदत्त को फाँसी के लिए बुलाता है और 'आर्य' सम्बोधन नहीं करता इस पर दूसरा चाण्डाल कहता है,'' सम्पन्नावस्था में और सम्पत्ति के समाप्त होने पर तथा रात और दिन में यह अप्रतिहतगति वाली नियति स्वच्छन्द युवती के समान पुरुष को खोजने के लिए जाती है।''

➢ **अम्भोजिनी लोचनमुद्रणं किं भानावनस्तंगमिते करोति।** (10/58)

भावार्थ- दशवें अङ्क में धूता के आत्मदाह करने के समय चारुदत्त कहते हैं, '' हे प्रिये! पति के विद्यमान रहते ही तुमने यह क्या कठोर निश्चय कर लिया था? क्या सूर्य के अस्त को प्राप्त हुए बिना कमलिनी कभी नेत्र मूँदती है?''

➢ **अयंचसुरतज्वालः कामाग्निः प्रणयेन्धनः।**
नराणां यत्र हूयन्ते यौवनानि धनानि च॥ (4/11)

भावार्थ- चतुर्थ अङ्क में शर्विलक कहता है, '' रतिक्रीडा जिसकी ज्वाला है एवं प्रेम जिसका ईंधन है, ऐसी यह कामवासना रूपी अग्नि है, जिस कामाग्नि में मनुष्यों के यौवन और धन हवन किये जाते हैं।''

➢ **अल्पक्लेशं मरणं द्रारिद्र्यमनन्तकं दुःखम्।** (1/11)

भावार्थ- चारुदत्त प्रथम अङ्क में विदूषक से कहता है, हे मित्र! निर्धनता और मृत्यु में से मृत्यु मुझे अच्छी लगती है, निर्धनता नहीं। मृत्यु में थोड़ा कष्ट है, किन्तु निर्धनता कभी न समाप्त होने वाला दुःख है।''

➢ **अर्थतः पुरुषो नारी या नारी साऽर्थतः पुमान्।** (3/27)

भावार्थ- तृतीय अङ्क में चारुदत्त विदूषक से कहता है, कि ''धन न होने के कारण ही पुरुष नारी तुल्य है और जो नारी है वह धन होने से पुरुष के समान है।''

➢ **अहो धिग् वैषम्यं लोकव्यवहारस्य।** (अङ्क-9)

भावार्थ- नवें अङ्क में शकार द्वारा झूठे अभियोग पर अधिकरणिक (न्यायाधीश) कहता है,'' अहो! लोकव्यवहार की विषमता को धिक्कार है।''

➢ **अहो व्यवहारपराधीनतया दुष्करं खलु परचित्तग्रहणमधिकरणिकैः।** (अङ्क-9)

भावार्थ- नवें अङ्क में अधिकरणिक कहता है,''अहो! न्यायालय के पराधीन होने के कारण न्यायाधीशों के द्वारा दूसरों के मन को जानना कठिन है।''

➢ **अहो! प्रभावः प्रियसङ्गमस्य मृतोऽपि को नाम पुनर्ध्रियेत।** (10/43)

भावार्थ- दशवें अङ्क में चारुदत्त कहता है, प्रिय वसन्तसेने! तुम्हारे कारण नष्ट किया जाता हुआ यह मेरा शरीर तुम्हारे द्वारा ही मुक्त करा दिया गया। ''अहो! प्रियमिलन का महान प्रभाव। अन्यथा मरा हुआ भी कोई फिर जीवित हो सकता है?''

➢ **आलाने गृह्यते हस्ती वाजी वल्गासु गृह्यते।**
हृदये गृह्यते नारी यदिदं नास्ति गम्यताम्॥ (1/50)

भावार्थ- प्रथम अङ्क में विट शकार से कहता है, '' ये भी नहीं सुना तुमने- हाथी खम्भे में बाँधने से रोका जाता है, घोड़ा लगाम से रोका जाता है, स्त्री हृदय से प्रेम करने पर वश में की जाती है, और यदि हृदय में प्रेम नहीं है तो जाइये।''

➢ **इन्द्रः प्रवाह्यमानो गोप्रसवः संक्रमश्च ताराणाम्।**
सुपुरुषप्राणविपत्तिश्चत्वार इमे न द्रष्टव्याः॥ (10/7)

भावार्थ- दशवें अङ्क में दोनों चाण्डाल कहते हैं, '' विसर्जन के लिए ले जाया जाता इन्द्रध्वज, गौ का प्रसव, तारों का पतन और श्रेष्ठ पुरुष का प्राण-त्याग-इन चारों को नहीं देखना चाहिए।''

➢ **इह सर्वस्वफलिनः कुलपुत्रमहाद्रुमाः।**
निष्फलत्वमलं यान्ति वेश्याविहगभक्षिताः॥ (4/10)

भावार्थ- चतुर्थ अङ्क में शर्विलक मदनिका से कहता है, ''इस संसार में अपनी समस्त सम्पत्ति ही जिनका फल है, ऐसे कुलीन पुत्र रूपी महान् वृक्ष वेश्या रूपी पक्षियों द्वारा खाये जाकर पूर्णतः निष्फलता को प्राप्त हो जाते हैं।''

➢ **ईदृशो दासभावः यत्सत्यं कमपि न प्रत्यायति।** (अङ्क-10)

भावार्थ- दशवें अङ्क में चेट कहता है,''दासता ऐसी बुरी है कि सत्य का भी किसी को विश्वास नहीं करा पाती।''

➢ **एते खलु दास्याः पुत्राः अर्थकल्यवर्ता वरटाभीता इव गोपालदारका अरण्ये यत्र यत्र न खाद्यन्ते तत्र तत्र गच्छन्ति।** (अङ्क-1)

भावार्थ- प्रथम अङ्क में विदूषक चारुदत्त से कहता है, कि हे मित्र! ''ये दासी के पुत्र कलेवा जैसे तुच्छ धन, बर्र से डरे हुए गोपाल बालकों के समान वन में वहीं-वहीं जाते हैं, जहाँ काटे नहीं जाते।''

➢ **एष क्रीडति कूपयन्त्रघटिकान्याय प्रसक्तोविधिः।** (10/60)

भावार्थ- दशवें अङ्क के अन्त में चारुदत्त कहता है, ''कूपयन्त्र (रहट) की घटिकाओं की पद्धति का अनुसरण करने वाला वह भाग्य क्रीडा करता है।''

20. कत्ताशब्दो निर्नाणकस्य हरति हृदयं मनुष्यस्य।
ढक्काशब्द इव नराधिपस्य प्रभ्रष्टराजस्य॥ (2/5)

भावार्थ- द्वितीय अङ्क में संवाहक माथुर से कहता है, ''जिस प्रकार भ्रष्ट राज्य वाले राजा के हृदय को ढक्का का शब्द हर लेता है उसी प्रकार कत्ता (जुए का विशेष चिह्न) धनरहित भी जुआरी मनुष्य के मन को हर लेता है।''

➢ **कथं हीनकुसुमादपि सहकारपादपान् मकरन्दबिन्दवो निपतन्ति।** (अङ्क-4)

भावार्थ- चतुर्थ अङ्क में विदूषक द्वारा 'रत्नावली' नामक आभूषण स्वीकार करते समय वसन्तसेना अपने आप से कहती है ''मञ्जरी रहित आम के वृक्ष से भी पुष्पराज की बूँदें कैसे गिर रहीं हैं।''

➢ **कामो वामः।** (अङ्क-5)

भावार्थ- पञ्चम अङ्क में विदूषक, चारुदत्त को समझाता है कि वह वसन्तसेना नामक गणिका से दूर रहे, लेकिन चारुदत्त अधिक ही उत्कण्ठित हो जाता है तो विदूषक कहता है,''काम का स्वभाव तो उल्टा ही होता है,किसी के समझाने से कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।''

➢ **किं कुलेनोपदिष्टेन शीलमेवात्र कारणम्।**
भवन्ति सुतरां स्फीताः सुक्षेत्रे कण्टकिद्रुमाः॥ (8/29)

भावार्थ- आठवें अङ्क में शकार वसन्तसेना को मारने के लिए प्रवृत्त होता है, इस पर विट उसे ढकेल देता है और मना करता है। शकार कहता है- मल्लक के समान कुल में उत्पन्न होकर मैं यह अकार्य कैसे कर सकता हूँ। तब विट कहता है, ''कुल के कथन से क्या लाभ? क्योंकि इस कुकृत्य में तो स्वभाव ही कारण है, जैसे कि अच्छे खेत मे भी काँटो वाले वृक्ष भली-भाँति समृद्ध हो जाते हैं।''

24. किं हीनकुसुमं सहकारपादपं मधुकर्यः पुनः सेवन्ते। (अङ्क-2)

भावार्थ- निर्धन चारुदत्त पर आसक्त होने पर द्वितीय अङ्क में मदनिका, वसन्तसेना से कहती है, ''आर्ये! क्या भ्रमरियाँ मञ्जरी रहित आम के वृक्ष का भी सेवन करती हैं।''

➢ **कूष्माण्डी गोमयलिप्तवृन्ता............भवति पूतिः।** (1/51)

भावार्थ- प्रथम अङ्क में वसन्तसेना के चारुदत्त के घर में घुसने पर शकार विदूषक से कहता है, कि चारुदत्त से कहो कि वसन्तसेना को मुझे सौंप दे तब उससे मेरी मित्रता हो जायेगी

अन्यथा मृत्यु पर्यन्त शत्रुता क्योंकि ''गोबर से लिप्त डण्ठल वाला कद्दू , सूखा हुआ शाक, तला हुआ मांस, हेमन्त ऋतु में बनाया हुआ भात, अधिक समय बीत जाने पर भी विकृत नहीं होते हैं।''

➤ **गगनतले प्रतिवसन्तौ चन्द्रसूर्यावपि विपत्तिं लभेते।** (अङ्क-10)

भावार्थ- दशवें अङ्क में चाण्डाल चारुदत्त से कहता है, '' आर्य! आकाश तल में निवास करने वाले चन्द्रमा और सूर्य भी विपत्ति को प्राप्त होते हैं, फिर मनुष्यों की क्या बात।''

➤ **गणयन्ति न शीतोष्णं रमणाभिमुखाः स्त्रियः।** (5/16)

भावार्थ- पञ्चम अङ्क में वसन्तसेना चारुदत्त के घर जाने की इच्छुक वर्षा होने पर विट से कहती है, कि ''बादल बरसें, गरजें या वज्र ही गिरा दें, किन्तु रमण की इच्छुक कामिनियाँ गर्मी, ठण्डी, बरसात किसी की परवाह नहीं करतीं।''

➤ **गणिका नाम पादुकान्तरप्रविष्टेव लेष्टुका दुःखेन पुरर्निराक्रियते।** (अङ्क-5)

भावार्थ- पाँचवे अङ्क में विदूषक चारुदत्त को वेश्या वसन्तसेना के प्रति भड़काता है और कहता है, कि ''वेश्या तो जूते के अन्दर प्रविष्ट हुई कङ्कड़ के समान फिर दुःख से ही निकाली जाती हैं।''

➤ **गणिका हस्ती कायस्थो भिक्षुष्चाटो रासभश्च यत्रैते निवसन्ति तत्र दुष्टा अपि न जायन्ते।** (अङ्क-5)

भावार्थ- पञ्चम अङ्क में ही विदूषक चारुदत्त से कहता है,कि ''वेश्या, हाथी कायस्थ, भिखारी, धूर्त और गधा- जहाँ ये रहते हैं,वहाँ दुष्ट भी वृद्धि को प्राप्त नहीं होते, सज्जनों की क्या बात।''

➤ **गुणः खल्वनुरागस्य कारणं, न पुनर्बलात्कारः।** (अङ्क-1)

भावार्थ- प्रथम अङ्क में विट, वसन्तसेना से कहता है, तुम वेश्या हो इसलिए समान रूप से सबका सेवन करो। इस पर वसन्तसेना कहती है,कि ''प्रेम का वास्तविक कारण गुण है, न कि बलात्कार।''

➤ **गुणेषु यत्नः पुरुषेण कार्यो न किञ्चिदप्राप्यतमं गुणानाम्।** (4/23)

भावार्थ- चतुर्थ अङ्क में शर्विलक वसन्तसेना से कहता है,कि ''गुणों के अर्जन में मनुष्य को सदा प्रयत्न करना चाहिए, गुणों के द्वारा कुछ भी अलभ्य नहीं है।'' अपने गुणों के उत्कर्ष के कारण चन्द्रमा शिवजी के दुर्लभ मस्तक पर आश्रय पा लिया है।

➤ **गुणेष्वेव हि कर्त्तव्यः प्रयत्नः पुरुषैः सदा।**
गुणयुक्तो दरिद्रोऽपि नेश्वरैरगुणैः समः॥ (4/22)

भावार्थ- शर्विलक कहता है, ''मनुष्यों को गुणों में यत्न करना चाहिए। गुणवान् दरिद्र भी गुणहीन धनिकों के समान नहीं, बल्कि उनसे बढ़कर हैं।''

➤ **छिद्रेष्वनर्था बहुलीभवन्ति।** (9/26)

भावार्थ- नवम अङ्क में चारुदत्त न्यायालय में सोचता है कि ''आपत्ति काल में मनुष्य की भूल होते ही अनेक अनिष्ट एकत्रित हो जाते हैं।''

➤ **त्यजति किल तं जयश्रीर्जहति च मित्राणि बन्धुवर्गश्च।**
भवति च सदोपहास्यो यः खलु शरणागतं त्यजति॥ (6/18)

भावार्थ- षष्ठ अङ्क में आर्यक, चन्दनक से कहता है कि, ''जो शरणागत का त्याग कर देता है, उसको विजयलक्ष्मी त्याग देती हैं, मित्र एवं बन्धुगण भी त्याग देते हैं तथा वह सदा उपहास के योग्य होता है।''

➤ **दरिद्रपुरुषसंक्रान्तमनाः खलु गणिका लोकेऽवचनीया भवति।** (अङ्क-2)

भावार्थ- द्वितीय अङ्क में वसन्तसेना अपनी दासी मदनिका से कहती है, ''निर्धन व्यक्ति में मन लगाने वाली वेश्या निःसन्देह संसार में निन्दनीय नहीं होती।''

➤ **दारिद्र्याद्ध्रियमेति ह्रीपरिगतः प्रभ्रश्यते तेजसो।** (1/14)

भावार्थ- प्रथम अङ्क में चारुदत्त, विदूषक से कहता है, कि ''दरिद्रता से मनुष्य लज्जा को प्राप्त होता है, लज्जा को प्राप्त व्यक्ति तेज से रहित हो जाता है तथा तेजहीन अपमानित होता है।''

➤ **दुष्करं विषमौषधीकर्तुम्।** (अङ्क-8)

भावार्थ- आठवें अङ्क में विट अपने मन में सोचता है कि '' विष को ओषधि बनाना दुष्कर है।''

➤ **द्यूतं हि नाम पुरुषस्यासिंहासनं राज्यम्।** (अङ्क-2)

भावार्थ- द्वितीय अङ्क में दर्दुरक कहता है, ''जुआ भी मनुष्य का विना सिंहासन का राज्य है।''

➤ **द्वयमिदमतीव लोके प्रियं नराणां सुहृच्च वनिता च।** (4/25)

भावार्थ- पञ्चम अङ्क में शर्विलक कहता है, कि ''इस संसार में मित्र और स्त्री दोंनो ही मनुष्यों को अत्यन्त प्रिय हैं, समय आने पर सौ सुन्दरियों से मित्र अधिक प्रमुख है।''

➤ **धनैर्वियुक्तस्य नरस्य लोके किं जीवितेन।** (5/40)

भावार्थ- पञ्चम अङ्क में चारुदत्त अपने आप सोचता है, ''संसार में धनहीन पुरुष के जीवन आदि से ही क्या लाभ है? जिसके प्रतिक्रिया न करने के कारण क्रोध और प्रसन्नता दोनों पहले से ही निष्फल होते हैं।''

➤ **धिक्प्रीतिं परिभवकारिकामनार्याम्।** (8/41)

भावार्थ- अष्टम अङ्क में विट, शकार से कहता है कि, इस हँसी को छोड़ दो तुम्हारे साथ मेरा स्नेह नहीं रहेगा, ''अनादर करने वाली इस निकृष्ट मैत्री को धिक्कार है।''

➤ **न कालमपेक्षते स्नेहः।** अङ्क-7, पेज-212

भावार्थ- चारुदत्त, विदूषक को शीघ्रता से वसन्तसेना को रथ से उतारने को बोलता है और कहता है, कि ''प्रेम समय की अत्यधिक देरी को सहन नहीं करता है।''

➤ **न चन्द्रादातपो भवति।** अङ्क-4, पेज-126

भावार्थ- चतुर्थ अङ्क में मदनिका, शर्विलक द्वारा चुराये हुए आभूषण को चारुदत्त को लौटाने के लिए कहती है इस पर शर्विलक आशंका करता है कि कहीं चारुदत्त अभियोग न लगवा दें। फिर मदनिका, चारुदत्त को लक्ष्य करके कहती है, कि ''चन्द्रमा से गर्मी नहीं होती।''

➤ **न पर्वताग्रे नलिनी प्ररोहति न गर्दभा वाजिधुरं वहन्ति।**

(4/17)

भावार्थ- चतुर्थ अङ्क में शर्विलक वेश्याओं पर तीखा प्रहार करते हुए कहता है, कि "पर्वत की चोटी पर कमलिनी नहीं उगती है, घोड़े के भार को गधे नहीं ले जा सकते हैं, खेत में बोये हुए जौ, धान नहीं हो जाते हैं इसी प्रकार वेश्यालय में उत्पन्न हुई स्त्रियाँ पवित्र नहीं होती हैं।"

➢ **न पुष्पमोषमर्हत्युद्यानलता।** अङ्क-1, पेज-48

भावार्थ- प्रथम अङ्क में शकार से भयभीत होकर वसन्तसेना अपने आभूषण देना चाहती है, इस पर विट कहता है, "उद्यान-लता, पुष्प-हरण के योग्य नहीं है।"

➢ **न युक्तं परकलत्रदर्शनम्।** अङ्क- 1, पेज- 48

भावार्थ- प्रथम अङ्क में चारुदत्त के घर में छिपी वसन्तसेना को देखकर चारुदत्त कहता है, कि "पराई स्त्री का दर्शन करना उचित नहीं।"

➢ **न शक्या हि स्त्रियो रोद्धुं प्रस्थिता दयितं प्रति।** (5/31)

भावार्थ- पञ्चम अङ्क में चारुदत्त के घर जाते समय वर्षा होने लगती है तो वसन्तसेना कहती है, कि "हे इन्द्र! चाहे गरजो या बरसो अथवा सैकड़ों वज्र छोड़ो, फिर भी प्रियतम के प्रति प्रस्थान करती हुई स्त्रियाँ नहीं रोकी जा सकतीं।"

➢ **न ह्याकृतिः सुसदृशं विजहाति वृत्तम्।** (9/16)

भावार्थ- नवम अङ्क में अधिकरणिक चारुदत्त के बारे में कहता है, कि " ऊँची नासिका तथा विशाल नेत्रों से युक्त मुख को धारण करता है। यह मुख निश्चय ही इच्छानुसार लगाये गये दोषों का पात्र नहीं है, क्योंकि हाथी, गाय, अश्व तथा मनुष्यों में उनका आकार अपने अनुकूल चरित्र का त्याग नहीं करता।"

➢ **निशायां नष्टचन्द्रायां दुर्लभो मार्गदर्शकः।** 4/21

भावार्थ- चतुर्थ अङ्क में शर्विलक, मदनिका से कहता है, "आपका अनुशरण करके मैंने विशद बुद्धि प्राप्त की। फिर रात्रि में चन्द्रमा अस्त हो जाता है, उसमें पथ-प्रदर्शन करने वाला दुष्प्राप्य होता है। विवेक भ्रष्ट मुझको आपने उचित मार्ग प्रदर्शित किया है।"

➢ **नृणां लोकान्तरस्थानां देहप्रतिकृतिः सुतः।** 9/42

भावार्थ- न्यायालय में सजा प्राप्त चारुदत्त, मैत्रेय से कहता है, "परलोक में गये हुए जनों का पुत्र अपना प्रतिनिधि होता है।" अतः तुम्हारा मुझ पर जो स्नेह है, वह रोहसेन में लगा दिया जाए।

➢ **पक्षविकलश्च पक्षी शुष्कश्च तरुः सरश्च जलहीनम्।**
सर्पश्चोद्धृतदंष्ट्रस्तुल्य लोके दरिद्रश्च॥ (5/41)

भावार्थ- पञ्चम अङ्क में चारुदत्त, वसन्तसेना से कहता है, "पंखरहित पक्षी, सूखा वृक्ष, जल रहित तालाब तथा दाढ़ उखाड़ा हुआ सर्प एवं दरिद्र ये सब संसार में समान हैं।"

➢ **परोऽपि बन्धुः समसंस्थितस्य मित्रं न कश्चिद्विषमस्थितस्य।** (10/16)

भावार्थ- दशवें अङ्क में चारुदत्त कहता है, "सुख की अवस्था में अन्य जन भी सगे-सम्बन्धी हो जाते हैं, किन्तु आपत्ति में पड़े हुए मनुष्य का कोई मित्र नहीं होता।"

➢ **पुरुषेषु न्यासा निक्षिप्यन्ते, न पुनर्गेहेषु।** अङ्क-1,पेज-50

भावार्थ- प्रथम अङ्क में चारुदत्त के "यह घर धरोहर के योग्य नहीं है" कहने पर वसन्तसेना कहती है, "आर्य! यह झूठ है, पुरुषों पर धरोहर रखी जाती है, न कि घरों में।"

➢ **बहुदोषा हि शर्वरी।** (1/58)

भावार्थ- न्यास रूप में रखे आभूषणों के रक्षणार्थ चारुदत्त विदूषक से कहता है, "ठगी-चोरी से बचाना चाहिए क्योंकि रात्रि वास्तव में बड़ी दोषपूर्ण होती है।"

➢ **मा दुर्गत इति परिभवो नास्ति कृतान्तस्य दुर्गतो नाम।** 1/43

भावार्थ- प्रथम अङ्क में विदूषक शकार को लक्ष्य करके विट से कहता है, "निर्धन का अपमान मत करो, यमराज के समक्ष कोई निर्धन नहीं है" और चरित्रहीन धनवान् भी दुर्दशा को प्राप्त होता है।

➢ **मूले छिन्ने कुतः पादपस्य पालनम्।** अंक-9, पेज-298

भावार्थ- नौवें अङ्क में सजा प्राप्त चारुदत्त, विदूषक से रोहसेन का पालन करने के लिए कहता है, इस पर विदूषक कहता है, "जड़ कट जाने पर वृक्ष का पालन कैसे होगा?"

➢ **य आत्मबलं ज्ञात्वा भारं तुलितं मनुष्यः।** 2/14

भावार्थ- द्वितीय अङ्क में संवाहक अपने से सोचकर कहता है, "जो मनुष्य अपने बल को जानकर उसके अनुसार भार को वहन करता है" उसका पतन नहीं होता है, वह दुर्गम पथ पर चलने से भी विपद्ग्रस्त नहीं होता है।

➢ **यज्ञोपवीतं हि नाम ब्राह्मणस्य महदुपकरणद्रव्यम्।** अङ्क-3,पेज-96

भावार्थ- तृतीय अङ्क में सेंध काटते समय प्रमाणसूत्र भूलने के कारण यज्ञोपवीत से नाप करते हुए शर्विलक कहता है, "यज्ञोपवीत भी ब्राह्मण की बहुत उपयोगी वस्तु है।" विशेषतः हम जैसों की।

➢ **यदा तु भाग्यक्षय पीडिता दशां नरः कृतान्तोपहितां प्रपद्यते।**
तदास्य मित्राण्यपि यान्त्यमित्रतां चिरानुरक्तोऽपि विरज्यते जनः॥ (1/53)

भावार्थ- चारुदत्त, रदनिका को सम्बोधित करके कहता है, "जब मनुष्य दैव द्वारा प्राप्त करायी गयी भाग्यनाश के कारण पीड़ित दशा को प्राप्त हो जाता है, तब इस निर्धन के मित्र भी शत्रुता को प्राप्त हो जाते हैं, दीर्घकाल से प्रेम करने वाला व्यक्ति भी विरक्त हो जाता है।"

➢ **येऽभि भवन्ति साधुं ते पापास्ते च चाण्डालाः।** (10/22)

भावार्थ- फाँसी के समय रोहसेन के पूँछने पर कि 'चाण्डालों मेरे पिता को कहाँ ले जाते हो' तब चाण्डाल कहता है, बालक! चाण्डाल कुल में उत्पन्न होकर भी हम चाण्डाल नहीं है, "जो सज्जन को अपमानित करते हैं वे पापी हैं और वे ही चाण्डाल हैं।"

➢ **राहुगृहीतोऽपि चन्द्रो न वन्दनीयो जनपदस्य।** 10/20

भावार्थ- प्रथम चाण्डाल के चारुदत्त के साथ 'आर्य' सम्बोधन

न करने पर द्वितीय चाण्डाल कहता है, "क्या राहु द्वारा ग्रसित चन्द्रमा भी नगरवासियों के लिए वन्दनीय नहीं होता?"

➢ **वरं व्यायच्छतो मृत्युर्न गृहीतस्य बन्धने।** (6/17)

भावार्थ- आर्यक अपने आप ही कहता है, भीम का अनुकरण करूँगा, मेरी भुजा ही शस्त्र होगी। "लड़ते हुए मृत्यु अच्छी है, कारागार में पड़े हुए की नहीं।"

➢ **विविक्तविश्रम्भरसो हि कामः।** (8/30)

भावार्थ- शकार के प्रणय निवेदन को ठुकराने पर विट अपने मन में सोचता है, यह स्थान मैं खाली करता हूँ क्योंकि "काम निर्जन एवं विश्वस्त स्थान में आनन्ददायक होता है।"

➢ **विषमा इन्द्रियचौरा हरन्ति चिरसञ्चितधर्मम्।** (8/1)

भावार्थ- आठवें अङ्क के प्रारम्भ में भिक्षु कहता है, अज्ञानी जनों धर्म का संचय करो क्योंकि "ये इन्द्रिय रूपी चौर भयङ्कर हैं, ये बहुत समय से संचित धर्म को हर लेते हैं।"

➢ **वीणा हि नामासमुद्रोत्थितं रत्नम्।** (अङ्क-3,पेज-86)

भावार्थ- तृतीय अङ्क में चारुदत्त रेभिल के गानों की प्रशंसा करते हुए कहता है, "वीणा तो वास्तव में बिना समुद्र से निकला हुआ रत्न है।"

➢ **वेश्या श्मशानसुमना इव वर्जनीयाः।** (4/14)

भावार्थ- शर्विलक वेश्याओं के विषय में कहता है, वेश्याएं धन के कारण हँसती और रोती हैं, पुरुष को विश्वास दिलाती हैं किन्तु स्वयं पुरुषों पर विश्वास नहीं करतीं, इस कारण कुलीन एवं शीलयुक्त पुरुष को "श्मशान के पुष्पों के समान वेश्याओं का त्याग कर देना चाहिए।"

➢ **शत्रुः कृतापराधः शरणमुपेत्य पादयोः पतितः।**

शस्त्रेण न हन्तव्यः .... उपकारहतस्तु कर्त्तव्यः॥ (10/55)

भावार्थ- चारुदत्त कहता है, यदि अपराध करने वाला शत्रु शरण में आकर चरणों में गिर गया तो उसे शस्त्र से नहीं मारना चाहिए। शर्विलक पूँछता है कि क्या कुत्तों द्वारा खिलाया जाय? फिर चारुदत्त कहता है, नहीं, किन्तु उसे उपकार द्वारा मरा हुआ कर देना चाहिए। "

➢ **शङ्कनीया हि लोकेऽस्मिन्निष्प्रतापा दरिद्रता।** (3/24)

भावार्थ- वसन्तसेना के आभूषण चोरी हो जाने पर चारुदत्त, विदूषक से कहता है, मित्र! वास्तविकता पर कौन विश्वास करेगा? सभी मुझे तुच्छ अपराधी समझेंगे क्योंकि "इस संसार में पौरुषविहीन निर्धनता शङ्का के योग्य होती है।"

➢ **शून्यमपुत्रस्य गृहं चिरशून्यं नास्ति यस्य सन्मित्रम्।**
मूर्खस्य दिशः शून्याः सर्वं शून्यं दरिद्रस्य॥ (1/8)

भावार्थ- सूत्रधार कहता है, "पुत्रहीन का घर सूना है, जिसका अच्छा मित्र नहीं है उसका सब समय सूना है, मूर्ख के लिए सभी दिशाएँ सूनी हैं, निर्धन के लिए तो सब कुछ सूना है।"

➢ **शून्यैर्गृहैः खलु समाः पुरुषा दरिद्राः।** (5/42)

भावार्थ- चारुदत्त कहता है, "दरिद्र व्यक्ति वस्तुतः सूने घरों, जलरहित कूपों तथा शुष्क वृक्षों के समान है।"

➢ **सत्कारधनः खलु सज्जनः।** (2/15)

भावार्थ- संवाहक, वसन्तसेना से कहता है, "दूसरों का सत्कार करना ही सत्पुरुषों का धन होता है।" चञ्चल सम्पत्ति किसके पास नहीं होता?

➢ **सत्येन सुखं खलु लभ्यते सत्यालापे न भवति पातकम्।**
सत्यमिति द्वे अप्यक्षरे मा सत्यमलीकेन गूहय॥ (9/35)

भावार्थ- श्रेष्ठी कायस्थ कहता है, आर्य चारुदत्त! यहाँ सच कहना चाहिए क्योंकि "निश्चय ही सत्य से सुख प्राप्त होता है , सत्य कहने पर पाप नहीं होता। 'सत्य' में दो अक्षर नष्ट न होने वाले हैं। अतः सत्य को झूठ से न छिपाओ।"

➢ **समीहितसिद्ध्यै प्रवृत्तेन ब्राह्मणोऽग्रे कर्त्तव्यः।** (अङ्क-10,पेज-342)

भावार्थ- धूता के अग्नि में प्रविष्ट होते समय विदूषक कहता है, "अभीष्ट-सिद्धि के लिए प्रवृत्त हुए व्यक्ति को ब्राह्मण आगे करना चाहिए।"

➢ **सर्वः खलु भवति लोके लोकः सुखसंस्थितानां चिन्तायुक्तः।**
विनिपतितानां नराणां प्रियकारी दुर्लभो भवति॥ (10/15)

भावार्थ- फाँसी के समय दोनों चाण्डाल कहते हैं,"संसार में सभी जन सुखी मनुष्यों के ही शुभचिन्तक होते हैं। विपत्ति में पड़े हुए मनुष्यों का हित करने वाला दुर्लभ ही है।"

➢ **सर्वत्रार्जवं शोभते।** (अंक-10,पेज-334)

भावार्थ- दशवें अङ्क में शर्विलक, चारुदत्त के पास जाने में संकोच करता है फिर कहता है, "सरलता सब जगह शोभायमान होती है।"

➢ **सस्यलम्पटवलीवर्दो............न शक्यो वारयितुम्।** (3/2)

भावार्थ- "धान्य के लोभी बैल को, दूसरे की स्त्री में आसक्त पुरुष को, जुए में अनुरक्त मनुष्य को रोका नहीं जा सकता। स्वाभाविक बुराई का निवारण नहीं किया जा सकता।"

➢ **साहसे श्रीः प्रतिवसति।** अङ्क-4, पेज-118

भावार्थ- चतुर्थ अङ्क में शर्विलक अपनी चोरी का गुणगान करते हुए मदनिका से कहता है, अज्ञे! "साहस में लक्ष्मी निवास करती हैं।"

➢ **सुजनः खलु भृत्यानुकम्पकः स्वामी निर्धनकोऽपि शोभते।** (3/1)

भावार्थ- चेट कहता है, "सेवकों पर दया करने वाला सज्जन स्वामी धनहीन होता हुआ भी शोभित होता है।"

➢ **स्त्रियो हि नाम खल्वेता निसर्गादेव पण्डिताः।**
पुरुषाणां तु पाण्डित्यं शास्त्रैरेवोपदिश्यते॥ (4/19)

भावार्थ- शर्विलक मदनिका से कहता है, "स्त्रियाँ तो वस्तुतः स्वभाव से ही कुशल होती हैं, पुरुषों की कुशलता तो शास्त्रों के द्वारा ही सिखायी गयी होती है।"

➢ **स्त्रीषु न रागः कार्यो रक्तं पुरुषं स्त्रियः परिभवन्ति।**
रक्तैव हि रन्तव्या विरक्तभावा तु हातव्याः॥ (4/13)

भावार्थ- शर्विलक कहता है, "स्त्रियों पर प्रेम नहीं करना चाहिए, स्त्रियाँ प्रेमी पुरुष को भी तिरस्कृत कर देती हैं। प्रेम करने वाली स्त्री के साथ ही रमण करना चाहिए, प्रेमहीन स्त्री को तो त्याग ही देना चाहिए।"

➢ **स्वके गेहे कुक्कुरोऽपि तावच्चण्डो भवति किं पुनरहं ब्राह्मणः।**
अङ्क-1,पेज-36

भावार्थ- रदनिका को शकार द्वारा पकड़ने पर विदूषक क्रोधपूर्वक डण्डा उठाकर कहता है, अरे! "अपने घर में तो कुत्ता भी बलवान् होता है फिर मैं ब्राह्मण तो क्या।"

➢ **स्वैर्दोषैर्भवति हि शङ्कितो मनुष्यः।** (4/2)

भावार्थ- शर्विलक कहता है, "वस्तुतः मनुष्य अपने दोषों के कारण शङ्कित हो जाता है।"

मृच्छकटिकम् के प्रमुख पात्रों का सामान्य परिचय

चारुदत्त

- चारुदत्त मृच्छकटिकम् का नायक है। नायक कोटियों के अनुसार चारुदत्त 'धीरप्रशान्त' कोटि का नायक है।
- दशरूपक के अनुसार धीरप्रशान्त का लक्षण है-
  'सामान्यगुणयुक्तस्तु धीरशान्तो द्विजादिकः'
- चारुदत्त उज्जयिनी का एक उदार, दयालु और परोपकारी ब्राह्मण युवक है।
- उसके पूर्वज व्यापारी थे, चारुदत्त भी व्यापार करके अत्यधिक धन-सम्पत्ति अर्जित किया था, किन्तु अपनी अतिशय उदारता और दानशीलता से अत्यन्त दरिद्र हो जाता है।
- कोई व्यक्ति अथवा सेवक जब प्रशंसनीय कार्य करते हैं, तब चारुदत्त उन्हें कुछ न कुछ पुरस्कार अवश्य देता है। इन्हीं गुणों से वसन्तसेना नामक गणिका उस पर मुग्ध हो जाती है।
- चारुदत्त अपराधी के प्रति भी क्रोध नहीं करता और शरण में आये की रक्षा करता है।
- चारुदत्त को अपनी प्रतिष्ठा और चरित्र की विमलता का भी ध्यान है।
- मृत्युदण्ड पाने पर भी उसे डर नहीं है, डर है तो केवल अपयश का।
  'न भीतो मरणादस्मि केवलं दूषितं यशः।'
- चारुदत्त संगीत, कलाप्रेमी तथा धार्मिक प्रवृत्ति का व्यक्ति है। एक प्रकरण के नायक के सभी गुण उसके चरित्र में विद्यमान हैं।

वसन्तसेना

- वसन्तसेना इस प्रकरण की नायिका है। नायिका प्रकार की दृष्टि से वह साधारण स्त्री/गणिका/वेश्या और प्रगल्भा नायिका है।
- वह भी उज्जयिनी की ही एक वैभवशालिनी गणिका है, उसके भवन कुबेर के समान समृद्धशाली हैं।
- वसन्तसेना उदारहृदया स्त्री है, वह अपरिचित संवाहक को भी अभयदान तथा मदनिका को दासता से मुक्तकर देती है। रोहसेन की गाड़ी के लिए वह अपने आभूषण दे देती है।
- वसन्तसेना एक बुद्धिमती, कला-कुशल तथा विदुषी नारी है। वह चारुदत्त का चित्र बनाकर मदनिका को दिखाती है।
- वसन्तसेना ऐश्वर्यशालिनी होते हुए भी सामाजिक संरचना के ज्ञान से अछूती नहीं है, वह जानती है कि वह एक गणिका है और चारुदत्त के अन्तःपुर में प्रवेश करने का अधिकार नहीं रखती-
  "मन्दभागिनी खल्वहं तवाभ्यान्तरस्य।"
- अत्यन्त प्रेम के आवेग से वह वध्यस्थल पर पहुँच जाती है तथा 'कुलवधू' पद को प्राप्त करती है।
- इस प्रकार वसन्तसेना ने अत्यन्त उदार हृदय, अनन्य प्रेम तथा अपूर्व त्याग आदि गुणों से गणिका होने की कालिमा को प्रक्षालित करके एक साध्वी नारी के पद को सुशोभित किया है।

शकार

- 'शकार' महाकविशूद्रक का कल्पनाप्रसूत पात्र है। यह मृच्छकटिकम् का प्रतिनायक है।
- दशरूपक के अनुसार प्रतिनायक लोभी, धीरोद्धत, जड़ प्रकृति वाला,पापी और व्यसनी होता है। शकार भी मूर्खता, प्रवञ्चना, पाप और कायरता आदि दुर्गुणों से परिपूर्ण है।
- शकार किसी रखेली का पुत्र है (काणेलीमातः), राजा पालक की रखेली का भाई, राजा का साला और संस्थानक भी है। वह शकारी प्राकृत बोलता है।
- शकार राजश्यालक होने के कारण अत्यन्त घमण्डी है। वह न्यायालय में धमकी देकर चारुदत्त को दण्ड दिलवाता है।
- उसे पद और धन का भी अभिमान है , इसीलिए वह अपने आपको **'देवपुरुष मनुष्य वासुदेव'** कहता है।
- वह अत्यन्त मूर्ख है और इतिहास विरुद्ध उपमाएं देता है जैसे-
  'द्रोणपुत्रो जटायुः'
- वह दुराग्रही और अस्थिर चित्त वाला है। विट और चेट को कपटपूर्वक हटाकर वह वसन्तसेना का गला घोंट देता है और चारुदत्त पर अभियोग चलाता है।
- शकार के चरित्र में प्रायः सभी दुर्गुणों का पुञ्ज दिखायी देता है।
- वह केवल लम्पट, मूर्ख और धूर्त ही नहीं अपितु मनुष्य रूप में राक्षस ही कहा जा सकता है।

विदूषक

- 'मैत्रेय' मृच्छकटिकम् का विदूषक है।
- दशरूपक के अनुसार वह नायक का सहायक तथा हँसी उत्पन्न करता है- **'हास्यकृच्च विदूषकः'।**
- मैत्रेय, चारुदत्त का सच्चा मित्र है। चारुदत्त की दरिद्रावस्था में

भी वह साथ नहीं छोड़ता। इधर-उधर अपनी उदरपूर्ति करते हुए वह चारुदत्त की सहायता करता है।

- वह चारुदत्त को वेश्या-प्रसंग से हटाना चाहता है। अतः वसन्तसेना को भी घृणित निगाह से देखता है।
- चारुदत्त पर मिथ्या आरोप लगाने पर वह न्यायालय में ही शकार से लड़ बैठता है। चारुदत्त के विना वह जीवित नहीं रहना चाहता।
- मैत्रेय, क्रोधी, भीरु तथा साधारण कोटि का समझदार व्यक्ति है। वह चारुदत्त से कहता है कि जब पूजा करने पर भी देवता प्रसन्न नहीं होते तो देवपूजा से क्या लाभ?
- कहीं-कहीं भोजनप्रिय और पेटू के रूप में विदूषक का दर्शन होता है।
- अतः मैत्रेय एक व्यावहारिक मनुष्य है। वह एक सच्चा मित्र है,यद्यपि बुद्धिमान् मित्र नहीं।

शर्विलक

- शर्विलक चौर्यकला में निपुण तथा प्रेमी हृदय वाला ब्राह्मण है।
- वह चोरी को अच्छा नहीं समझता, केवल स्वतन्त्र व्यवसाय मानकर ही उसे ग्रहण करता है-

''स्वाधीना वचनीयताऽपि हि वरं बद्धो न सेवाञ्जलिः।''

- शर्विलक बुद्धिमान् तथा गुणग्राहक है। वह आपत्ति में मित्र का साथ देता है।
- अत्यन्त परिश्रम से प्राप्त हुई भी मदनिका को छोड़कर वह अपने मित्र आर्यक को बचाने जाता है।
- वह षड्यन्त्र करने में भी कुशल है।

मदनिका

- मदनिका, वसन्तसेना की क्रीतदासी तथा शर्विलक की प्रेयसी है।
- वसन्तसेना उस पर अत्यधिक विश्वास करती है, वह भी वसन्तसेना से अधिक प्रेम करती है।
- चारुदत्त के घर चोरी की बात सुनकर वह मूर्च्छित हो जाती है। वह शर्विलक को सद्गृहिणी की भाँति सत्सम्मति देती रहती है। वसन्तसेना को भी समय-समय पर अच्छे विचार देती है, इसीलिए वसन्तसेना उसकी प्रशंसा करती है-

'साधु मदनिके साधु'

- मदनिका डरती नहीं है, वह शर्विलक जैसे साहसी की पत्नी होने योग्य है।
- उसने दासता से मुक्ति पाकर एक कुशल गृहणी का पद प्राप्त कर लिया है।

धूता

- धूता चारुदत्त की विवाहिता पत्नी है।
- वह एक पतिव्रता नारी तथा पति की अपकीर्ति से डरती है। इसी अपयश से बचाने के लिए वह अपना बहुमूल्य 'रत्नावली' आभूषण, वसन्तसेना के पास भेज देती है।
- धूता अत्यन्त उदार और सरल स्वभाव की है। वह वसन्तसेना से ईर्ष्या नहीं करती और अपने पति के प्रति क्रोध भी नहीं करती।
- पति के अनिष्ट को सुनकर वह अपना प्राण त्याग देना चाहती है।
- वह एक सच्ची पतिव्रता भारतीय नारी है।

संवाहक

- संवाहक पाटलिपुत्र का मूलनिवासी है तथा आजीविका की तलाश में उज्जयिनी आकर चारुदत्त के घर नौकरी करता है।
- चारुदत्त के दरिद्र होने पर वह द्यूतक्रीडा से अपनी आजीविका चलाता है।
- द्यूत में सर्वस्व हार कर वह वसन्तसेना द्वारा मुक्त कराया जाता है।
- इसी लिए संसार से विरक्त होकर वह बौद्धभिक्षु बन जाता है।

विट

- यह सहृदय और बुद्धिमान पात्र है।
- वसन्तसेना की चारुदत्त के प्रति प्रेम देखकर वह वसन्तसेना की प्रशंसा करता है तथा यथासम्भव सहायता भी करता है।
- वह पाप का विरोध करता है और शकार का साथ छोड़कर चला जाता है।

चेट

- इसका नाम स्थावरक है और यह शकार का यानवाहक है।
- चेट को परलोक का भी भय है, सज्जनों के प्रति प्रेम एवं सम्मान है।
- वह स्वयं विपत्ति में पड़कर भी अकार्य नहीं करता तथा चारुदत्त की रक्षा का प्रयास करता है।

अधिकरणिक

- यह 'मृच्छकटिकम्' का न्यायाधीश है।
- अधिकरणिक पवित्र-हृदय वाला एवं न्याय-प्रिय है।
- वह सज्जनता का सम्मान करता है और सच्चाई को ढूँढना चाहता है, किन्तु डरपोक भी है तथा राजश्यालक के दबाव में उचित न्याय नहीं कर पाता।

रोहसेन

- यद्यपि पूरे प्रकरण में रोहसेन की बहुत बड़ी भूमिका नहीं है, फिर भी मृच्छकटिकम् नाम की सार्थकता से रोहसेन का सीधा सम्बन्ध है।
- रोहसेन चारुदत्त और धूता का पुत्र है।
- वह मिट्टी की गाड़ी से नहीं खेलना चाहता और स्वर्ण की गाड़ी के लिए जिद करता है। इसी कारण इस प्रकरण का नाम मृत्+ शकटिकम् = 'मृच्छकटिकम्' पड़ा है।

मृच्छकटिक का नामकरण

मृत्+शकटिका
उपर्युक्त संहिता में तकार के बाद 'श' है, अतः **'स्तोः श्चुना श्चुः'** सूत्र से 'त' के स्थान पर 'च' होगा - मृच्+शकटिका
अब **'शश्छोऽटि'** सूत्र से 'श' के स्थान पर 'छ' आदेश हुआ-मृच् + छकटिका = मृच्छकटिका

- इस प्रकार ग्रन्थवाची पद होने के कारण नपुंसकलिङ्ग एकवचन

में 'मृच्छकटिकम्' बना। इसका हिन्दी अर्थ होगा- 'मिट्टी की गाड़ी'।

- 'मृदः शकटिका यस्मिन् इति मृच्छकटिकम्'- **बहुव्रीहि समास**
- साहित्यदर्पण के अनुसार प्रकरण का नाम, नायक- नायिका के नाम पर होना चाहिए- **'नायिकानायकाख्यानात् - संज्ञा प्रकरणादिषु।'**
- मृच्छकटिक एक प्रकरण है, अतः इसका नामकरण इसके छठवें अङ्क में वर्णित एक विशेष घटना के आधार पर किया गया है।
- चारुदत्त का पुत्र रोहसेन, पड़ोसी बच्चे की गाड़ी को देखकर मिट्टी की गाड़ी से नहीं खेलता और सोने की गाड़ी माँगता है। रदनिका के बहलाने पर भी नहीं मानता, इस पर वसन्तसेना अपने आभूषण, स्वर्ण शकटिका बनवाने के लिए उसके मिट्टी की गाड़ी पर लाद देती है।
- इसप्रकार पूरे प्रकरण में 'मिट्टी की गाड़ी' सम्बन्धी घटना विशेष महत्त्व रखती है।
- इसलिए 'मृच्छकटिकम्' नाम अत्यन्त ही उपयुक्त है।

पात्र- परिचय

पुरुष-पात्र

1. **सूत्रधार-** प्रधान नट एवं मञ्च का व्यवस्थापक।
2. **चारुदत्त-** नायक, उज्जयिनी का ब्राह्मण व्यापारी।
3. **मैत्रेय-** विदूषक एवं चारुदत्त का परम मित्र।
4. **शकार-** प्रतिनायक, राजा पालक का साला, संस्थानक।
5. **विट-** शकार का सहचर।
6. **चेट-** शकार का सेवक।
7. **माथुर-** सभिक, प्रधान जुआरी
8. **दर्दुरक-** जुआरी
9. **संवाहक-** चारुदत्त का भूतपूर्व नौकर, जुआरी एवं बौद्धभिक्षु।
10. **कर्णपूरक-** वसन्तसेना का सेवक।
11. **शर्विलक-** मदनिका का प्रेमी ब्राह्मण, चोर।
12. **वर्धमानक (चेट)-** चारुदत्त का यानवाहक।
13. **बन्धुल-** बन्धुल, वसन्तसेना का आश्रित।
14. **कुम्भीलक-** वसन्तसेना का दास।
15. **चेट-** वसन्तसेना का दास।
16. **विट-** वसन्तसेना का शृङ्गार-सहचर।
17. **रोहसेन-** चारुदत्त का पुत्र।
18. **आर्यक-** गोपाल-बालक, राजा पालक का कैदी, बाद में राजा।
19. **स्थावरक चेट-** शकार का यानवाहक।
20. **वीरक-** पालक का सेनापति, रक्षक
21. **चन्दनक-** पालक का सेनापति, रक्षक
22. **शोधनक-** न्यायालय का नौकर।
23. **अधिकरणिक-** न्यायाधीश।
24. **श्रेष्ठी-** नगर का प्रतिष्ठित पुरुष, न्याय करने में न्यायाधीश का सहायक।
25. **कायस्थ-** न्यायालय का लेखक (पेशकार)
26. **चाण्डाल-** फाँसी देने वाले जल्लाद

स्त्री-पात्र

1. **नटी-** सूत्रधार की पत्नी।
2. **वसन्तसेना-** नायिका, उज्जयिनी की प्रसिद्ध गणिका।
3. **मदनिका-** वसन्तसेना की क्रीतदासी, शर्विलक की प्रेयसी।
4. **रदनिका-** चारुदत्त की परिचारिका।
5. **धूता-** चारुदत्त की पत्नी।
6. **चेटी-** वसन्तसेना की दासी।
7. **छत्रधारिणी-** वसन्तसेना की सेविका।
8. **चेटी-** चारुदत्त की दासी।
9. **वृद्धा-** वसन्तसेना की माता।

मञ्च पर न आने वाले पात्र

1. **जूर्णवृद्ध-** चारुदत्त का मित्र।
2. **पालक-** अवन्ती का राजा।
3. **रेभिल-** चारुदत्त का मित्र, गायक।
4. **सिद्ध-** आर्यक की राज्य-प्राप्ति का भविष्य वक्ता।

मृच्छकटिक का मङ्गलाचरण

पर्यङ्कग्रन्थिबन्धद्विगुणितभुजगाश्लेषसंवीतजानो
रन्तः प्राणावरोधव्युपरतसकलज्ञानरुद्धेन्द्रियस्य।
आत्मन्यात्मानमेव व्यपगतकरणं पश्यतस्तत्त्वदृष्ट्या
शम्भोर्वः पातु शून्येक्षणघटितलयब्रह्मलग्नः समाधिः॥ (1/1)

भावार्थ- पर्यङ्क नामक योगासन में सन्धि-स्थल पर बाँधने से द्विगुणित सर्प के लपेटने से जिस शिव के घुटने बँधे हुए हैं, योग-बल के द्वारा प्राणवायु को भीतर ही रोक देने से जिसकी समस्त इन्द्रियाँ बाह्य ज्ञान से विरत तथा संयत हो गई हैं, जिसने यथार्थ ज्ञान के द्वारा इन्द्रिय-व्यापार निरोधपूर्वक अपने भीतर आत्मा का दर्शन किया है, उस शिव की समाधि जो निराकार ब्रह्म के दर्शन में होने वाली एकाग्रता के कारण ब्रह्म में लगी हुई है- आप सब सभासदों की रक्षा करें।

पातु वो नीलकण्ठस्य कण्ठः श्यामाम्बुदोपमः।
गौरीभुजलता यत्र विद्युल्लेखेव राजते॥ (1/2)

भावार्थ- शिवजी के काले बादल जैसा कण्ठ, जिसमें पार्वती की गौरवर्ण भुजा रूपी लता विद्युत् पंक्ति के समान शोभित होती है, आप सब की रक्षा करें।

- मृच्छकटिक के मङ्गलाचरण में भगवान् शिव की स्तुति की गयी है।
- रूपक की निर्विघ्न समाप्ति के लिए नाटक के प्रारम्भ, मध्य और अन्त में माङ्गलिक पद्यों के प्रयोग का विधान है।
  'ग्रन्थादौ ग्रन्थमध्ये ग्रन्थान्ते च मङ्गलम् आचरेत्।'
- नाट्य की भाषा में इसी माङ्गलिक पद्य को 'नान्दी' कहते हैं-
  'नन्दन्ति देवता अस्यामिति नान्दी।'
- मृच्छकटिक के मङ्गलाचरण के रूप में दो पद्यों का प्रयोग

हुआ है।

- मृच्छकटिक में आशीर्वादात्मक तथा कथावस्तुनिर्देशात्मक मङ्गलाचरण का प्रयोग है।
- द्वितीय श्लोक में समासोक्ति के माध्यम से कथावस्तु का निर्देश है, अतः **'पत्रावली नान्दी'** है।
- मृच्छकटिक में **'अष्टपदा नान्दी'** का प्रयोग हुआ है।
- किसी छन्द के चतुर्थांश/पाद/चरण को एक पद मानने पर- चार पद प्रथम श्लोक में +चार पद द्वितीय श्लोक में। क्योंकिं दोनों श्लोकों के माध्यम से स्तुति की गयी है अतः चार+चार = आठ। अर्थात् अष्टपदा नान्दी।
- नान्दी पाठ का कर्त्ता सूत्रधार होता है।
- मृच्छकटिक के प्रथम पद्य में 'स्रग्धरा छन्द' और द्वितीय में पथ्यावक्त्र छन्द है तथा उपमा, रूपक तथा अनुप्रास अलङ्कारों का प्रयोग हुआ है।

मृच्छकटिक का भरतवाक्य

क्षीरिण्यः सन्तु गावो भवतु वसुमती सर्वसम्पन्नसस्या
पर्जन्यः कालवर्षी सकलजनमनोनन्दिनी वास्तु वाताः।
मोदन्तां जन्मभाजः सततमभिमता ब्राह्मणाः सन्तु सन्तः
श्रीमन्तः पान्तु पृथ्वीं प्रशमितरिपवो धर्मनिष्ठाश्च भूपाः॥
(10/61)

भावार्थ- गौएँ प्रचुर दूध देने वाली हों, पृथ्वी सभी धान्यों से पूर्ण हो, मेघ समय पर बरसने वाला हो, समस्त जनों के मन को आनन्दित करने वाली वायु चले प्राणधारी हमेशा सुखी रहें, पूज्य ब्राह्मण लोग उत्तम शील वाले हों, समृद्धिशाली, शत्रुओं का नाश करने वाले तथा धर्मनिष्ठ राजा पृथ्वी का पालन करें।

- नाटक के अन्त में प्रशस्ति रूप में वर्णित श्लोक को भरतवाक्य कहते हैं।
- भरतवाक्य में लोक कल्याण की कामना की जाती है।
- नाट्य के जन्मदाता आचार्य भरत के सम्मानार्थ प्रयोग होता है।
- सूत्रधार अथवा सारे पात्र संयुक्त रूप से भरतवाक्य बोलते हैं।
- मृच्छकटिक के भरतवाक्य में 'स्रग्धरा छन्द' एवं 'काव्यलिङ्ग' अलङ्कार प्रयुक्त है।

मृच्छकटिकम् बिन्दुवार अध्ययन

- मृच्छकटिकस्य रचयितुर्नाम - **शूद्रकः**
- शूद्रकस्य का रचना अस्ति - **मृच्छकटिकम्**
- शूद्रकेन मानभूतं प्रकरणनाट्यं निर्मितमासीत् - **मृच्छकटिकम्**
- मृच्छकटिकम् इत्यस्य पदस्य हिन्दीभाषायाम् अर्थोऽस्ति - **मिट्टी की गाड़ी**
- 'मृच्छकटिकम्' किस प्रकार का रूपक ग्रन्थ है?- **प्रकरण**
- प्रकरणस्य उदाहरणं भवति - **मृच्छकटिकम्**
- मृच्छकटिकस्य नान्दीपाठे कस्याः देवतायाः समाधेः माध्यमेन रक्षाकामना कृताऽस्ति? - **शङ्करस्य**
- 'मृच्छकटिकम्' की कथा किसमें समायोजित है?- **अङ्कों में**
- 'मृच्छकटिके' कति अङ्काः सन्ति? - **दश**
- 'मृच्छकटिकम्' का नायक कौन है? - **चारुदत्त**
- 'मृच्छकटिकम्' की नायिका है - **कुलजा/वेश्या दोनों**
- चारुदत्तः कस्मिन् रूपके नायकः - **मृच्छकटिके**
- 'चारुदत्त' किस श्रेणी का नायक है? - **धीरप्रशान्त**
- प्रकरण का नायक होता है - **धीरप्रशान्त**
- शकारी प्राकृत का प्रयोग किस नाटक में है- **मृच्छकटिकम्**
- चारुदत्तस्य परिचारिका का? - **रदनिका**
- चारुदत्तस्य सेवकस्य नाम - **संवाहकः**
- शर्विलकस्य प्रेमिकायाः नाम - **मदनिका**
- मृच्छकटिकप्रकरणस्य षष्ठाङ्कस्य नाम - **प्रवहणविपर्ययः**
- 'मृच्छकटिक' प्रकरण के प्रथम अङ्क का नाम है? -**अलङ्कारन्यासः**
- 'मृच्छकटिके' कियन्तः प्राकृतभेदाः प्रयुक्ताः?- **सात**
- मृच्छकटिके .... नाम 'मदनिका-शर्विलकः' अस्ति? -**चतुर्थाङ्कस्य**
- मृच्छकटिकस्य संस्थानकः? - **शकारः**
- धीरप्रशान्तः नायकः कस्य रूपकस्य वर्तते? -**मृच्छकटिकस्य**
- रोहसेनः इति पात्रं कस्मिन् नाटके वर्तते? - **मृच्छकटिके**
- 'मृच्छकटिकम्' की नायिका कौन है? - **वसन्तसेना**
- मृच्छकटिकस्य तृतीयाङ्कस्य नाम किम्? - **सन्धिच्छेदः**
- वसन्तसेनाचारुदत्तयोः चित्रणं कस्मिन् नाटके स्तः? -**मृच्छकटिकम्**
- मैत्रेय विदूषक किस नाटक से सम्बद्ध है?- **मृच्छकटिकम्**
- मृच्छकटिकम् में विदूषक का नाम क्या है? - **मैत्रेय**
- मृच्छकटिके नायकस्य भार्यास्ति - **धूता**
- 'धूता' किस कृति से सम्बन्धित है - **मृच्छकटिकम्**
- कौन-सी नारी पात्र मृच्छकटिकम् में नहीं है? **वसन्तसेना की सखी**
- शकार पात्र का वर्णन किस नाटक में है?- **मृच्छकटिकम्**
- मृच्छकटिके कः नाट्यमञ्चे न दृश्यते - **जूर्णवृद्धः**
- 'मृच्छकटिके' शर्विलकोऽस्ति - **पताकानायकः**
- शर्विलक पात्र विशेष है - **मृच्छकटिके**
- कौन चारुदत्त के घर में सेंध लगाकर वसन्तसेना के गहने चुरा लेता है? - **शर्विलक**
- मृच्छकटिके चौरकर्मनिपुणः शर्विलकोऽस्ति? - **ब्राह्मणः**
- चारुदत्त के पुत्र का क्या नाम है? - **रोहसेन**
- 'रदनिका' इति स्त्रीपात्रं तिष्ठति? - **मृच्छकटिके**

- 'मृच्छकटिकम्' में कौन संस्कृत नहीं बोलता है?- **वसन्तसेना**
- 'मृच्छकटिके' वसन्तसेनां मृत्युमुखात् कः रक्षति? - **संवाहकः**
- 'सन्धिच्छेदकर्मणः' वर्णनं प्राप्यते - **मृच्छकटिके**
- अधस्तनेषु उपजीव्यमहाकाव्याश्रितं नास्ति- **मृच्छकटिकम्**
- किस नाटक में सर्वाधिक शोषित, दलित एवं उपेक्षित वर्ग का सहानुभूतिपूर्ण चित्रण हुआ है? -**मृच्छकटिकम्**
- शूद्रक द्वारा लिखी हुई प्राचीन भारतीय पुस्तक मृच्छकटिकम् का विषय था - **एक निर्धन व्यापारी और एक गणिका की पुत्री की प्रेमगाथा।**
- शकटविपर्यास किसमें होता है? - **मृच्छकटिकम्**
- 'मृच्छकटिके' राजश्यालकस्य भाषा अस्ति - **शकारी**
- किस नाटक मे रथ परिवर्तन से कथानक आगे चलता है -**मृच्छकटिकम्**
- अभिसारिकाओं (वेश्याओं) का बाहुल्य से वर्णन है? - **मृच्छकटिकम्**
- 'अल्पक्लेशं मरणं दारिद्र्यमनन्तकं दुःखम्' इति वाक्यं कः कं प्रति कथयति- **चारुदत्तः विदूषकं प्रति**
- 'समरव्यसनी प्रमादशून्यः' इति एतद्वर्णनं कस्य कवेः? - **शूद्रकस्य**
- 'हृदये गृह्यते नारी' सूक्ति किस ग्रन्थ से उद्धृत है - **मृच्छकटिकम्**
- ''लिम्पतीव तमोङ्गानि वर्षतीवाञ्जनं नभः असत्पुरुषसेवेव दृष्टिर्विफलतां गता'' यह पंक्ति जिस ग्रन्थ से है वह है - **मृच्छकटिकम्**
- ''वेश्याः श्मशानसुमना इव वर्जनीयाः'' पंक्ति ग्रहण की गई है - **मृच्छकटिके**
- ''स्त्रियो हि नाम खल्वेता निसर्गादेव पण्डिताः। पुरुषाणान्तु पाण्डित्यं शास्त्रैरेवोपदिश्यते।।'' प्रस्तुत श्लोक किस पुस्तक से उद्धृत है? - **मृच्छकटिकम्**
- 'मृच्छकटिकम्' में है- **अहो निर्धनता सर्वापदामास्पदम्**
- 'छिद्रेष्वनर्था बहुलीभवन्ति' यह सूक्ति कहाँ लिखित है - **मृच्छकटिक में**
- 'द्वयमिदमतीव लोके प्रियं नराणां सुहृच्च वनिता च' यह श्लोकांश किस ग्रन्थ का है - **मृच्छकटिकम्**
- ''एष क्रीडति कूपयन्त्रघटिकान्यायप्रसक्तो विधिः'' यह सूक्ति किस रचना से है - **मृच्छकटिकम्**
- 'अयं हि पातकी विप्रो न वध्यो मनुरब्रवीत्'– यह कथन किसका है - **अधिकरणिक**
- 'केनोडुपेन परलोकनदीं तरिष्ये' यह कथन किसका है?- **विट**
- ''सुजनः खलु भृत्यानुकम्पकः स्वामी निर्धनकोऽपि शोभते। पिशुनः पुनर्द्रव्यगर्वितो दुष्करः खलु परिणामदारुणः''। कुत्र वर्तते - **मृच्छकटिके** - **मृच्छकटिकम्/शूद्रक**
- 'अपेयेषु तडागेषु बहुतरमुदकं भवति'–वचनमिदं कस्मिन्नाटके दृश्यते? - **मृच्छकटिके**
- 'समन्तत उपस्थित एष राष्ट्रियबन्धः'–'राष्ट्रियबन्धः' का अभिप्राय है - **राजा का बन्धन**
- 'मतिस्तु गौः पङ्कगतेव सीदति' – कथन किसका है? - **अधिकरणिक**
- ''उपासिके! त्वं किल चारुदत्तेन मारितासीति'' – उपासिका का सम्बन्ध है - **बौद्धधर्म से**
- संसार में दरिद्र के समान नहीं है- **म्यान विहीन तलवार**
- 'मांसवृक्षैरियं मूर्खैर्भाराक्रान्ता वसुन्धरा' – किसका कथन है - **विट**
- अदृश्यरूपा चपला जरेव या मनुष्यसत्वं परिभूय वर्धते का? - **निद्रा**
- 'न भीतो मरणादस्मि' कस्येदं वचनम्? - **चारुदत्तस्य**
- मृच्छकटिके कस्य नामपरिवर्तनं जातम्? - **संवाहकस्य**
- 'लिम्पतीव तमोऽङ्गानि वर्षतीवाञ्जनं नभः'-कस्य वचनमिदम् - **विटस्य**
- 'रमणाभिमुखाः स्त्रियः' किं न गणयन्ति - **शीतोष्णाम्**

4.10 किरातार्जुनीयम्

महाकवि भारवि का परिचय

- **पिता** – (i) श्रीधर, (ii) नारायणस्वामी (अवन्तिसुन्दरीकथा के अनुसार)
- **माता** – सुशीला
- **पत्नी** – रसिकवती या रसिका
- **पुत्र** – मनोरथ
- **मूल नाम** – दामोदर
- **गोत्र** – कुशिक
- **जन्म स्थान** – (i) दक्षिण भारत में नासिक प्रदेश के **'अचलपुर'** (एलिचपुर), (ii) धारानगरी (अवन्तिसुन्दरी कथा के अनुसार)
- **समय** – छठवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध/सातवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध

भारवि की वंशपरम्परा

नारायणस्वामी (श्रीधर) – (भारवि के पिता)
↓
भारवि – (दण्डी के प्रपितामह)

↓
मनोरथ – (दण्डी के पितामह)
↓
वीरदत्त-गौरी – (दण्डी के पिता-माता)
↓
दण्डी – (भारवि के प्रपौत्र)

- **सम्प्रदाय** – शैव
- **उपाधि** – 'आतपत्र भारवि'
- **''आधत्ते कनकमयातपत्रलक्ष्मीम्'' (किरात. 5.39)** इस श्लोक में **'कनकमय आतपत्र'** (सोने का छाता) की उपमा को अति सुन्दर मानकर आलोचकों ने कवि का नाम ही **'आतपत्र भारवि'** रख दिया।
- **आश्रयदाता** – 1. विष्णुवर्द्धन (पुलकेशिन द्वितीय के अनुज), 2. सिंहविष्णु (अवन्तिसुन्दरीकथा के अनुसार), 3. दुर्विनीत, 4. महेन्द्रविक्रम (सिंहविष्णु का पुत्र)
- राजा दुर्विनीत ने 'किरातार्जुनीयम्' के 15वें सर्ग पर संस्कृतटीका लिखी।
- 'भारवि' **दण्डी के प्रपितामह** हैं।
- भारवि की वाणी को **'प्रकृतिमधुरा'** कहा जाता है।
- भारवि महाकाव्यों में **'अलङ्कृतकाव्यशैली'** या **'रीतिशैली' के जन्मदाता हैं।** इनके काव्यमार्ग को **विचित्रमार्ग** कहते हैं।
- श्री एन. सी. चटर्जी भारवि को **'ट्रावनकोर' का निवासी** सिद्ध करते हैं।
- एक किंवदन्ती के अनुसार पिता द्वारा अपमानित भारवि उनके वध के लिए उद्यत हो गये, परन्तु पिता द्वारा उनके हित के लिए डाँटा गया, यह जानकर उन्हें बहुत पश्चात्ताप हुआ, और पिता ने छः माह तक ससुराल में सेवा करने का आदेश दिया।
- भारवि का जन्म 560 ई. के लगभग तथा रचनाकाल 580 ई. के लगभग अधिकांश आलोचकों ने माना है।
- भारवि **'अर्थगौरव'** के लिए प्रसिद्ध हैं।
- आचार्य मल्लिनाथ ने भारवि के 'किरातार्जुनीयम्' पर **'घण्टापथ'** नाम की टीका लिखी है।
- भारवि राजनीति के प्रकाण्ड पण्डित हैं।
- मल्लिनाथ, भारवि की कविता की उपमा **'नारिकेलफल'** से करते हैं– **'नारिकेलफलसम्मितं वचः'**
- दक्षिण के **'एहोल शिलालेख'** में भारवि का नाम उल्लिखित है।
- भारवि के किरातार्जुनीयम् को **'लक्ष्म्यन्त'** महाकाव्य, माघ के शिशुपालवधम् को **'श्र्यन्त'** महाकाव्य तथा श्रीहर्ष के नैषधीय चरितम् को **'आनन्दान्त'** महाकाव्य कहते हैं।

महाकवि 'भारवि' विषयक प्रशस्तियाँ

1. भारवेरर्थगौरवम्। **– उद्भट**
2. वृत्तच्छत्रस्य सा कापि वंशस्थस्य विचित्रता।
   प्रतिभा भारवेर्येन सच्छायेनाधिकीकृता।।
   – क्षेमेन्द्र - सुवृत्ततिलक
3. नारिकेलफलसम्मितं वचो भारवेः सपदि तद् विभज्यते।
   स्वादयन्तु रसगर्भनिर्भरं सारमस्य रसिका यथेप्सितम्।।
   – मल्लिनाथ
4. प्रदेशवृत्यापि महान्तमर्थं प्रदर्शयन्ती रसमादधाना।
   सा भारवेः सत्पथदीपिकेव एषा कृतिः कैरिव नोपजीव्या।।
   – कृष्णकवि
5. तादात्म्यं रसभावयोः भारविः स्पष्टमूचिवान्।।
   – शारदातनय
6. ''प्रकृतिमधुरा भारविगिरः।'' **– श्रीधरदास (सदुक्तिकर्णामृत)**
7. वंशस्थवृत्तेन धृतातपत्रो वृत्तेन संदर्शितराजवृत्तिः।
   अर्थप्रकर्षाहृतराजलक्ष्मीर्नृपायते भारविरात्तकीर्तिः।।
   – आचार्य कपिलदेव द्विवेदी
8. There is no doubt of the power of Bharvi in describption, his style at its best has a calm dignity which is certainly attractive, while he excels also in the observation and record of the beauties of nature and of maidens.
   हिन्दी अनुवाद – भारवि की वर्णन-शक्ति के विषय में सन्देह को अवसर नहीं है। उनकी शैली उत्कृष्टरूप में शान्त गौरवमयी है जो निश्चय ही आकर्षक है। वे प्रकृति और प्रमदाओं के सौन्दर्य, निरीक्षण और उन्हें चित्रित करने में सर्वश्रेष्ठ हैं।
   – प्रो. ए. बी. कीथ, संस्कृत साहित्य का इतिहास
9. स मेधावी कविर्विद्वान् भारविः प्रभवो गिराम्।
   अनुसाध्याकरोन्मैत्रीं नरेन्द्रे विष्णुवर्धने।।
   – ऐहोल शिलालेख - रविकीर्ति।
10. अर्थदीधितिसंवीता, सन्नीरजसुहासिनी।
   अज्ञोलूकनिरानन्दा, भा रवेरिव भारवेः।।
   – आचार्य कपिलदेव द्विवेदी

किरातार्जुनीयम्

- **लेखक** – भारवि
- **विधा** – महाकाव्य
- **सर्ग** – 18
- **प्रधानरस** – वीर
- **उपजीव्य** – महाभारत का वनपर्व
- **कथानक** – अर्जुन द्वारा भगवान् शिव की तपस्या से पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति।
- **प्रमुखपात्र** – अर्जुन, द्रौपदी, युधिष्ठिर, भीम, नकुल, सहदेव, श्रीकृष्ण, वनेचर, सुयोधन (दुर्योधन), इन्द्र, किरातवेशधारी शिव, व्यास, यक्ष आदि
- भारवि का प्रामाणिक जीवनवृत्त सर्वथा अप्राप्त है, कुछ किंवदन्तियाँ प्रचलित हैं।
- महाकवि दण्डी विरचित 'अवन्तिसुन्दरीकथा' के अनुसार भारवि का जीवनवृत्त निम्नलिखित है।
- भारवि चालुक्यवंशी सम्राट् पुलकेशिन द्वितीय के अनुज विष्णुवर्धन (615 ई0) के मित्र/सभापण्डित/राजकवि थे।
  स मेधावी कविर्विद्वान् भारविः प्रभवो गिराम्।

अनुरुध्याकरोन्मैत्रीं नरेन्द्रे विष्णुवर्धने॥

- भारवि **कुशिक/कौशिक गोत्रीय** ब्राह्मण थे।
- दण्डी की रचना – **दशकुमारचरितम्।**
- भारवि का सम्बन्ध कोङ्कण के गङ्गवंशी नरेश दुर्विनीत और काञ्ची के पल्लववंशी नरेश सिंहविष्णु तथा उनके पुत्र महेन्द्रविक्रम के साथ भी था।
- सिंहविष्णु से मिलते समय कवि की अवस्था थी – **बीस वर्ष।**
- किरातार्जुनीयम् के 15वें सर्ग की संस्कृत टीका लिखी थी – **विद्वान् नरेश दुर्विनीत ने।**
- एक अन्य किंवदन्ती के अनुसार भारवि धारानगरी के निवासी थे।

भारवि के समय निर्धारण में प्रमुख स्रोत

- पुलकेशिन द्वितीय का एहोल शिलालेख।
- वामन और जयादित्य की काशिकावृत्ति।
- गुम्मरेड्डीपुर का पत्रलेख।
- महाकवि दण्डी की अवन्तिसुन्दरीकथा और उस पर आधारित 'अवन्तिसुन्दरीकथासार'।
- विष्णुवर्धन, सिंहविष्णु तथा दुर्विनीत की ऐतिहासिकता।
- भारवि का जन्मसमय – **560 ई० के लगभग।**
- भारवि का रचनाकाल – **615 ई० के लगभग।**
- भारवि का समय – **600 ई० के आसपास (555 ई० से 625 ई० के मध्य) (छठी शती के उत्तरार्ध से सातवीं शती के पूर्वार्द्ध तक)**
- श्री एन०सी० चटर्जी ने उन्हें **ट्रावनकोर** का निवासी बताया है।
- विद्वानों का मानना है कि महाकवि भारवि विष्णुवर्धन, सिंहविष्णु, महेन्द्रविक्रम एवं दुर्विनीत के आश्रय में रहने वाले एक **दाक्षिणात्य कवि** थे।
- महाकवि भारवि का जन्म – **नासिक के समीपवर्ती बरारप्रान्त के 'अचलपुर' (एलिचपुर) नामक ग्राम में।**
- भारवि **शैवदर्शन** के अनुयायी थे, उन्होंने किरातार्जुनीयम् के 18वें सर्ग में शिवस्तुति की है।
- भारवि किस कवि से प्रभावित थे – **कालिदास से**
- भारवि से कौन प्रभावित था – **महाकवि माघ**
- राजशेखर के अनुसार कालिदास एवं भर्तृमेण्ठ की भाँति भारवि की भी परीक्षा उज्जयिनी में ली गयी थी – **''श्रूयते चोज्जयिन्यां काव्यकारपरीक्षा''**
- **उत्फुल्लस्थलनलिनीवनादमुष्मात्.......कनकमयातपत्रलक्ष्मीम् (5/39)** 'किरातार्जुनीयम्' के इस श्लोक की उपमा के कारण ही उन्हें **'आतपत्रभारवि'** की उपाधि मिली।

भारवि की रचना

- भारवि की रचना/कृति – **''किरातार्जुनीयमहाकाव्यम्' (एकमात्र कृति)**
- सर्ग – **18 (अठारह)**
- श्लोक – **1040 (कुछ विद्वानों के अनुसार-1030)**
- उपजीव्यग्रन्थ – **महाभारत का वनपर्व**
- नायक – **मध्यमपाण्डव अर्जुन (धीरोदात्त)**
- प्रतिनायक – **किरातवेशधारी शिव**
- नायक की प्रकृति – **धीरोदात्त**
- नायिका – **द्रौपदी**
- मुख्य/अङ्गी/प्रधानरस – **वीररस**
- गौण/अङ्गरस – **शृङ्गार आदि**
- रीति एवं गुण – **पाञ्चाली रीति एवं ओजगुण**
- किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग में वैदर्भी रीति
- अलङ्कार – **3 शब्दालङ्कार, 60 अर्थालङ्कार, 7 चित्राक्षर**
- भारवि की शैली – **पाण्डित्यप्रधान अलङ्कृतशैली**
- बृहत्त्रयी में प्रथमस्थान पर परिगणित महाकाव्य –
  1. भारवि का किरातार्जुनीयम् (सर्ग 18),
  2. माघ का शिशुपालवधम् (सर्ग 20),
  3. श्रीहर्ष का नैषधीयचरितम् (सर्ग 22)
- भारवि के किरातार्जुनीयम् का प्रारम्भ – **'श्री'** – शब्द से तथा प्रत्येक सर्ग के अन्तिम श्लोक में **'लक्ष्मी'** पद का प्रयोग हुआ है।
- भारवि के काव्य को कहा जाता है – **''लक्ष्मीपदाङ्क''**
- किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग में श्लोक/पद्य हैं – **46**
- किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग में छन्द – **वंशस्थ** (1-44 श्लोकों तक)
- 45वें श्लोक में (न समयपरिरक्षणं क्षमं ते....) – **पुष्पिताग्रा छन्द**
- अन्तिम 46वें श्लोक में (विधिसमयनियोगाद् दीप्तिसंहारजिह्मम्) – **मालिनी छन्द**
- अर्थगौरव के लिए प्रसिद्ध हैं – **भारवि** (भारवेरर्थगौरवम्)
- नायक अर्जुन और प्रतिनायक किरात (शिव) के नाम पर महाकाव्य का नाम पड़ा – **'किरातार्जुनीयम्'**
- श्रीकृष्णमाचारियर ने किरातार्जुनीयम् की कितनी टीकाओं का उल्लेख किया है – **34**
- किरातार्जुनीयम् की सर्वाधिक प्रसिद्ध, प्रामाणिक एवं सारवती टीका का नाम – **'घण्टापथ' – मल्लिनाथ**
- ''घण्टापथ'' का शाब्दिक अर्थ है – **राजमार्ग**
- किरात की अन्य टीकाओं में सर्वाधिक लोकप्रिय टीका है – **'शब्दार्थदीपिका' – श्री चित्रभानु** (केवल प्रथम तीन सर्गों पर)
- किरातार्जुनीयम् के प्रथम तीन सर्गों को कहा जाता है – **'पाषाणत्रय'**
- भारवि के आश्रयदाता दुर्विनीत ने संस्कृत टीका लिखी – **किरातार्जुनीयम् के 15वें सर्ग पर।**
- 'शब्दावतार' नाम से बृहत्कथा का संस्कृत रूपान्तरण किसने किया – **दुर्विनीत ने**
- किरातार्जुनीयम् का 15वाँ सर्ग प्रसिद्ध है – **चित्रकाव्य के लिए**
- भारवि का एकाक्षर श्लोक – (केवल नकार का प्रयोग)
  न नोननुन्नो नुन्नोनो नाना नानानना ननु।

नुन्नोऽनुन्नो ननुन्नेनो नानेना नुन्ननुन्ननुत्॥

(किरात० – 15/14)

➢ अर्थगौरव का क्या अर्थ है – अल्पशब्दों में प्रभूत अर्थ का सन्निवेश अर्थात् 'गागर में सागर भरना।'

➢ **''नारिकेलफलसम्मितं वचः''** मल्लिनाथ का यह कथन किसके लिए है – भारवि के लिए।

➢ **''प्रसन्नगम्भीरपदा सरस्वती''** यह वाक्य किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है – किरातार्जुनीयम् से

➢ **''स्फुटता न पदैरपाकृता न च न स्वीकृतमर्थगौरवम्''** यह वाक्य किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है – किरातार्जुनीयम् (2/27)

➢ किरातार्जुनीयम् का मुख्य कथानक है – अर्जुन द्वारा किरातवेशधारी भगवान् शङ्कर से पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति।

➢ अर्जुन पाशुपत अस्त्र के लिए भगवान् शङ्कर को प्रसन्न करने के लिए हिमालय (इन्द्रकील) पर्वत की यात्रा व्यास के कहने पर करते हैं।

➢ किरातार्जुनीयम् में 'किरात' से तात्पर्य है–**किरातवेषधारी शिव**

➢ 'किरातार्जुनीयम्' का मङ्गलाचरण है – **वस्तुनिर्देशात्मक**

➢ किरातार्जुनीयम् महाकाव्य का फल है – **नायक अर्जुन को किरातवेशधारी शिव से पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति।**

➢ युधिष्ठिर बारह वर्षों के वनवास के काल में अपने अनुजों और द्रौपदी के साथ कहाँ रहते थे – **द्वैतवन में।**

किरातार्जुनीयम् का नामकरण

➢ किरातश्च अर्जुनश्च किरातार्जुनौ **(द्वन्द्वसमास)** तौ अधिकृत्य कृतं काव्यम् इति किरातार्जुनीयम्।

➢ **किरातार्जुन + 'छ'** ('अधिकृत्य कृते ग्रन्थे' के अर्थ में ''छ'' प्रत्यय)

➢ **'शिशुक्रन्दयमसभद्वन्द्वेन्द्रजननादिभ्यश्छः'** 'सूत्र से ''छ'' प्रत्यय।

➢ किरातार्जुन + छ (ईय) = किरातार्जुनीय। (**''आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम्''** से 'छ' के स्थान पर 'ईय' आदेश हो गया)

➢ ग्रन्थवाची शब्द सदा नपुंसकलिङ्ग में होते हैं, अतः – 'किरातार्जुनीयम्' पद बना।

➢ इस प्रकार नायक अर्जुन और प्रतिनायक (शिव) के नाम पर महाकाव्य का नाम **'किरातार्जुनीयम्'** पड़ा।

किरातार्जुनीयमहाकाव्य के पात्र

➢ अर्जुन **(नायक)**, द्रौपदी **(नायिका)**, किरातवेशधारी शिव **(प्रतिनायक)**, श्रीकृष्ण, युधिष्ठिर, भीम, नकुल, सहदेव, वनेचर, दुर्योधन, कर्ण, भीष्म, परशुराम, यक्ष, द्रोण, इन्द्र, व्यास, मूक (शूकर) आदि प्रमुख पात्र हैं।

किरातार्जुनीयमहाकाव्य के टीकाकार आचार्य मल्लिनाथसूरि का जीवनचरित्र

➢ काश्यपगोत्रीय तेलगू ब्राह्मण – **मल्लिनाथ सूरि**

➢ मल्लिनाथ के पिता – **कार्दिन**

➢ मल्लिनाथ के दो पुत्र – **पेड्डुभट्ट तथा कुमारस्वामी**

➢ कुमारस्वामी की रचना– **प्रतापरुद्रयशोभूषण** (काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ)

➢ मल्लिनाथ की आनुवांशिक उपाधि – **कोलाचल**

➢ मल्लिनाथ की व्यक्तिगत उपाधि – **महामहोपाध्याय**

➢ मल्लिनाथ का समय – **14वीं शताब्दी का उत्तरार्ध**

मल्लिनाथ की सुप्रसिद्ध संस्कृत टीकायें

1. रघुवंशमहाकाव्यम् (कालिदास) – **सञ्जीवनी टीका**
2. कुमारसम्भवम् (कालिदास) – **सञ्जीवनी टीका**
3. मेघदूतम् (कालिदास) – **सञ्जीवनी टीका**
4. किरातार्जुनीयम् (भारवि) – **घण्टापथ टीका**
5. शिशुपालवधम् (माघ) – **सर्वङ्कषा टीका**
6. रावणवध (भट्टि) – **जीवातु टीका**
7. नैषधीयचरितम् (श्रीहर्ष) – **जीवातु टीका**

➢ इसके अतिरिक्त तार्किकरक्षा, नलोदयकाव्य, प्रशस्तपादभाष्य, और लघुशब्देन्दुशेखर पर भी मल्लिनाथ ने टीका लिखी है।

➢ इनका पूरा नाम– **महामहोपाध्याय कोलाचल मल्लिनाथसूरि**

➢ किरातार्जुनीयम् के दूसरे प्रसिद्ध टीकाकार – **चित्रभानु – ''शब्दार्थदीपिका'' (त्रिसागरिका)** (प्रारम्भ के केवल तीन सर्गों पर)

किरातार्जुनीयम् की संक्षिप्त कथा

➢ किरातार्जुनीयम् में कौरवों पर विजय प्राप्ति के लिए अर्जुन का हिमालयपर्वत पर जाकर तपस्या करना, किरातवेशधारी शिव से युद्ध और प्रसन्न हुए भगवान् शिव से पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति का वर्णन है।

➢ **सर्ग – 1.** हस्तिनापुर भेजे गये वनेचर का द्वैतवन में आकर युधिष्ठिर से मिलना, दुर्योधन के शासन प्रबन्ध का वर्णन तथा युधिष्ठिर के लिए/द्रौपदी का उत्तेजनापूर्ण कथन।

➢ **सर्ग – 2.** युधिष्ठिर–भीम का संवाद, व्यास का आगमन।

➢ **सर्ग – 3.** युधिष्ठिर – व्यास संवाद, व्यास द्वारा अर्जुन को पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति के लिए हिमालय पर जाकर तपस्या करने का आदेश, अर्जुन का प्रस्थान।

➢ **सर्ग – 4.** शरद् ऋतु का वर्णन।

➢ **सर्ग – 5.** हिमालय पर्वत का वर्णन।

➢ **सर्ग – 6.** हिमालय पर अर्जुन की तपस्या, तपोविघ्न के लिए इन्द्र द्वारा अप्सराओं को भेजना।

➢ **सर्ग – 7.** इन्द्र द्वारा प्रेषित गन्धर्वों और अप्सराओं के आने और उनके विलासों का वर्णन

➢ **सर्ग – 8.** गन्धर्वों और अप्सराओं का उद्यानविहार और जलक्रीडा।

➢ **सर्ग – 9.** सायंकाल और चन्द्रोदयवर्णन, सुरतवर्णन तथा प्रभातवर्णन।

➢ **सर्ग – 10.** वर्षा आदि का वर्णन, अप्सराओं का चेष्टावर्णन तथा उनका प्रयत्न वैफल्य।

➢ **सर्ग – 11.** मुनिरूप में इन्द्र का आगमन, इन्द्र अर्जुन संवाद, इन्द्र का पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति के लिए अर्जुन को शिवाराधना करने का उपदेश।

➢ **सर्ग – 12.** अर्जुन की तपस्या, शूकर के रूप में मूक नामक दानव का अर्जुन वध के लिए आगमन, तथा किरातवेशधारी शिव का भी आगमन।

- **सर्ग – 13.** शूकररूपधारी मूकदानव पर शिव और अर्जुन के बाणों का प्रहार, उस वराह की मृत्यु, बाण के विषय में शिव के अनुचर और अर्जुन का विवाद।
- **सर्ग – 14.** सेना सहित शिव का आगमन और सेना के साथ अर्जुन का युद्ध।
- **सर्ग – 15.** चित्रयुद्ध वर्णन, (चित्रकाव्य)।
- **सर्ग – 16.** शिव और अर्जुन का अस्त्रयुद्ध।
- **सर्ग – 17.** शिव की सेना के साथ अर्जुन का युद्ध, शिव और अर्जुन का युद्ध।
- **सर्ग – 18.** शिव और अर्जुन का बाहुयुद्ध, शिव का वास्तविक रूप में प्रकट होना, इन्द्रादि का आगमन, अर्जुन को पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति, इन्द्रादि का अर्जुन को विविध अस्त्र देना, सफल मनोरथ अर्जुन का युधिष्ठिर के समीप पहुँचना।
- सम्भोग शृङ्गार का सुन्दर वर्णन है – **सर्ग 8 और 9 में।**
- युद्ध वर्णन में वीररस का वर्णन है – **सर्ग 13 से 17 तक।**
- उपमा अलङ्कार का सुन्दर प्रयोग है – **सर्ग 13 से 17 में।**
- प्रमुख वर्णनवैचित्र्य – सर्ग 4 में **शरद् वर्णन।**
  – सर्ग 5 में **हिमालय वर्णन।**
  – सर्ग 8 में **जलक्रीडा वर्णन।**
  – सर्ग 9 में **सन्ध्या, चन्द्रोदय और सुरत वर्णन।**
  – सर्ग 12 से 18 तक – **युद्ध वर्णन।**
- अर्थगौरव या अर्थगाम्भीर्य के लिए प्रशंसा की जाती है – **महाकवि भारवि की।**
- भारवि को कौन सा रस सर्वाधिक प्रिय है – **वीर और शृङ्गार रस**
- महाकाव्यों में रीतिशैली के जन्मदाता कवि हैं – **भारवि।**
- ग्रन्थ के आरम्भ में **'श्री'** शब्द तथा सर्गान्त श्लोकों में **'लक्ष्मी'** शब्द का प्रयोग किया गया है – **किरातार्जुनीयम् में।**
- किस कवि का काव्यसौन्दर्य 'नारिकेलफलसम्मितम्' माना गया है – **भारवि का।**
- भारवि की प्रशंसा में कही गयी सूक्तियाँ हैं –
  (1) ''भारवेरर्थगौरवम्''
  (2) ''भा रवेरिव भारवेः''
  (3) ''प्रकृतिमधुरा भारविगिरः''
  (4) ''नारिकेलफलसम्मितं वचः''
  (5) ''स्फुटता न पदैरपाकृता''
- केवल 'न' कार को लेकर सर्वप्रथम एकाक्षरी श्लोक लिखने वाले कवि हैं – **भारवि।**
- अपने काव्य में सर्वप्रथम चित्रालङ्कारों का प्रयोग करने वाले कवि हैं – **भारवि** (किरातार्जुनीयम्, सर्ग-15)
- भारवि ने विभिन्न सर्गों में 11 छन्दों का प्रयोग किया है और सर्गान्त श्लोकों में मालिनी और वसन्ततिलका प्रमुख हैं।
- भारवि द्वारा प्रयुक्त मुख्य छन्दों की संख्या है – **13**
- भारवि का अत्यन्त प्रिय छन्द है – **वंशस्थ तथा उपजाति।**
- क्षेमेन्द्र ने वंशस्थ छन्द के लिए प्रशंसा की है – **भारवि की।**
- संस्कृतसाहित्य में रीतिकाव्यपरम्परा के जन्मदाता हैं – **भारवि।**
- किरातार्जुनीयम् में दुर्योधन को किस नाम से वर्णित किया गया है – **सुयोधन।**
- 'राजनीतिपरक महाकाव्य' कहा गया है – किरातार्जुनीयम् को
- शिव और अर्जुन पर आधारित महाकाव्य है – **किरातार्जुनीयम्**
- किरातार्जुनीयम् में एकाक्षर श्लोकों की संख्या है – **7 (सप्त)**
- महाकवि भारवि की मित्रता थी – **चालुक्यवंशी राजा विष्णुवर्धन से**
- भारवि के तीन पुत्र थे, इनके मध्यम पुत्र मनोरथ के चार पुत्र थे, जिनमें एक पुत्र वीरदत्त था इन्हीं वीरदत्त और गौरी के पुत्र दण्डी हुए।
- महाकवि भारवि, दण्डी के प्रपितामह और दण्डी, भारवि के प्रपौत्र थे।
- भारवि **शैव** थे, जबकि **माघ वैष्णव** थे।
- दक्षिण के एहोल शिलालेख में कालिदास और भारवि का नामोल्लेख हुआ। इस शिलालेख का समय 634 ई० है – **''कविताश्रित-कालिदास-भारवि-कीर्तिः''।**
- गुम्मरेड्डीपुर के शिलालेखों से हमें पता चलता है कि राजा दुर्विनीत ने किरातार्जुनीयम् के 15वें सर्ग पर टीका लिखी थी। दुर्विनीत का समय 580 ई० के आसपास माना जाता है।
- भारवि के किरातार्जुनीयम् का उद्धरण जयादित्य की 'काशिकावृत्ति' में उपलब्ध होता है। मैक्समूलर 'काशिका' का समय 660 ई० मानते हैं।
- बाणभट्ट (सप्तम शताब्दी) अपने ''हर्षचरित'' में पूर्ववर्ती सभी कवियों का उल्लेख करते हैं, किन्तु उसमें भारवि का नामोल्लेख नहीं है।
- कीथमहोदय भारवि का समय 550 ई० मानते हैं।
- जैकोबी, मैक्डानल, बलदेव उपाध्याय, चन्द्रशेखर पाण्डेय इत्यादि विद्वानों ने भारवि का समय 600 ई० के लगभग मानते हैं।
- शिवजी अर्जुन की तपस्या की परीक्षा के लिए 'किरात' का वेश धारण करते हैं।
- किरातार्जुनीयम् में **मूक दानव** अर्जुन को मारने के लिए मायावी वाराह का रूप धारण करता है।
- महाकाव्यकारों में **कालिदास** और **अश्वघोष** के बाद **भारवि** का नाम लिया जाता है।
- भारवि व्याकरण, वेदान्त, न्याय, धर्म, राजनीति, कामशास्त्र, पुराण, इतिहास आदि के मूर्धन्य विद्वान् थे।
- उदात्त एवं सजीव वर्णन, कमनीय कल्पनाओं, अर्थगौरव, हृदयग्राही शब्दयोजना, कोमलकान्त पदावली, हृदयस्पर्शी एवं रोचक संवाद, अलङ्कारों का चमत्कारिक प्रयोग, कलात्मक काव्यशैली, मनोहर प्रकृतिचित्रण, रसपेशलता, सजीव चरित्रचित्रण इत्यादि महनीय गुणों ने भारवि को महाकवियों में अत्यन्त उच्चस्थान पर प्रतिष्ठित किया है।

- भारवि राजनीतिशास्त्र और नीतिशास्त्र के प्रकाण्ड पण्डित थे।
- किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में वनेचर की स्वामिभक्ति, सत्यवादिता, निश्छलता, विनम्रता, साहस, स्पष्टवादिता आदि गुणों का चित्रण है।
- द्रौपदी की मानसिकपीड़ा, व्याकुलता, प्रतिकार की तीव्रभावना का वर्णन है।
- अर्जुन की वीरता, भ्रातृभक्ति, कर्तव्यनिष्ठा का वर्णन है।
- भीम की वीरता, नीतिज्ञता, असहिष्णुता का वर्णन है।
- युधिष्ठिर की नीतिज्ञता, शान्तिप्रियता, धर्मपरायणता इत्यादि का वर्णन है।
- किरातार्जुनीयम् प्रथमसर्ग के प्रारम्भ में वनेचर की उक्तियों का तथा उत्तरार्ध में द्रौपदी की उक्तियों का चित्रण है।
- सम्पूर्ण प्रथमसर्ग युधिष्ठिर को सम्बोधित करके लिखा गया है।
- भारवि का संस्कृतसाहित्य में **'अलङ्कृतकाव्यशैली'** तथा **'विचित्रमार्ग के जनक'** के रूप में विशिष्ट स्थान है।
- विचित्रमार्ग की विशेषता यह है कि इसमें कथानक बहुत कम होता है और वर्णन अधिक।
- भारवि की अलंकृतकाव्यशैली में पाण्डित्यप्रदर्शन और अलङ्कार सन्निवेश को प्रधानता दी गयी है, इसमें कलापक्ष की प्रधानता तथा भावपक्ष (हृदयपक्ष) की अप्रधानता का वर्णन है।
- कालिदास के प्रमुख छन्द 6 हैं, भारवि के 13 और माघ के 16 माने गये हैं।
- भारवि ने **वंशस्थ छन्द** का सर्वाधिक प्रयोग किया है, इसके अतिरिक्त इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, द्रुतविलम्बित, प्रमिताक्षरा, प्रहर्षिणी, स्वागता, पुष्पिताग्रा, आदि का प्रयोग मिलता है।
- भारवि **वीररस** के सिद्धहस्त कवि हैं।
- किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में युधिष्ठिर के मुख से किसी उक्ति (कथन) को नहीं कहलाया गया है।
- महाकवि भारवि की **एकमात्र रचना 'किरातार्जुनीय'** का उपजीव्य महाभारत के वनपर्व की एक घटना है।
- किरातश्च अर्जुनश्च (द्वन्द्व) = किरातार्जुन + 'छ' प्रत्यय लगकर 'किरातार्जुनीय' शब्द बना है। ग्रन्थवाची होने पर नपुंसकलिङ्ग में 'किरातार्जुनीयम्' बना।
- इसमें अर्जुन का हिमालय पर्वत पर जाकर तपस्या करने व किरातवेषधारी भगवान् शिव से युद्ध करके उन्हें प्रसन्न कर **'पाशुपत अस्त्र'** प्राप्त करने की कथा है।
- 'किरात' में कुल **18 सर्ग और 1040 श्लोक** हैं।
- 'किरातार्जुनीय' में **कुल 25 छन्दों और मुख्यतः 13 छन्दों का** प्रयोग हुआ है।
- भारवि का **अत्यन्त प्रिय छन्द वंशस्थ** है। तत्पश्चात् उन्होंने **उपजाति** का ज्यादा प्रयोग किया है। 4 सर्गों में वंशस्थ, 3 सर्गों में उपजाति प्रयुक्त है।
- भारवि ने 3 शब्दालंकार, 60 अर्थालंकार और 7 चित्राक्षर अलंकारों का प्रयोग किया है। सर्वाधिक उपमा अलंकार प्रयुक्त है।
- भारवि ने 'किरात' के **15वें सर्ग में** युद्ध प्रसङ्ग में **चित्रालंकारों** का प्रयोग किया है।
- किरातार्जुनीय में **'वीर रस' मुख्य रस** है तथा 'शृंगार' गौण रस है।
- किरात में **'पाञ्चाली रीति'** और 'प्रसाद गुण' है, किन्तु वैदर्भीरीति का भी प्रयोग बाहुल्य है।
- किरात का **नायक 'अर्जुन'** (कहीं-कहीं युधिष्ठिर प्राप्त होता है), **प्रतिनायक किरातवेषधारी 'शिव'** तथा **नायिका 'द्रौपदी'** हैं।
- 'किरात' के 18वें सर्ग में शिव की अत्यन्त भावुक स्तुति की गई है।
- भारवि का प्रसिद्ध **एकाक्षर श्लोक** (न नोननुन्नो....) 15वें सर्ग में मिलता है।
- भारवि ने मङ्गलाचरण में **'श्री' शब्द** तथा सर्गान्त श्लोकों में **'लक्ष्मी'** शब्द का प्रयोग किया है।
- क्षेमेन्द्र ने भारवि के वंशस्थ वृत्त की प्रशंसा की है और वंशस्थ को राजनीतिक चर्चा के लिए सर्वाधिक उपयुक्त माना है।
- काव्य का आरम्भ **'द्वैतवन'** से होता है जहाँ महाराज युधिष्ठिर द्यूतक्रीड़ा में दुर्योधन से हारकर **'तेरह वर्ष'** का वनवास काट रहे होते हैं।
- युधिष्ठिर द्वारा नियुक्त ब्रह्मचारी वेष वाला गुप्तचर वनेचर लौटकर आता है और दुर्योधन के राज्य की शासन प्रणाली का वर्णन करता है।
- द्रौपदी इस समाचार से अत्यधिक क्रुद्ध हुयी और युधिष्ठिर को युद्ध के लिए प्रोत्साहित करती है।
- द्वितीय सर्ग में महर्षि व्यास आते हैं और अर्जुन को पाशुपत अस्त्र प्राप्त करने की सलाह देते हैं।
- अर्जुन तपस्या हेतु **इन्द्रकील** (हिमालय) पर जाते हैं।
- किरातार्जुनीय के प्रारम्भिक तीन सर्ग विशेष कठिन हैं अतः उन्हें **'पाषाण-त्रय'** के नाम से जाना जाता है।
- अर्जुन को **18वें सर्ग में पाशुपत अस्त्र प्राप्त** होता है।
- प्रथमसर्ग के अन्तिम दो श्लोकों में क्रमशः पुष्पिताग्रा और 'मालिनी' छन्दों का प्रयोग हुआ है। प्रथमसर्ग का अन्तिम श्लोक **'विधिसमयनियोगात् ....'** है।
- **'प्रसन्नगम्भीरपदा सरस्वती'** भारवि की भाषा तथा शैली का द्योतक महनीय मन्त्र है।
- भारवि के किरात के **'प्रथमसर्ग' में कुल 46 श्लोक** हैं।

किरातार्जुनीयम् (प्रथमसर्ग)

- 'किरातार्जुनीयम्' में **'वस्तुनिर्देशात्मक मङ्गलाचरण'** किया गया है।
- दुर्योधन के प्रजाविषयक व्यवहार को जानने के लिए युधिष्ठिर ने वनेचर को नियुक्त किया था।
- युधिष्ठिर को प्रणाम करके उसने शत्रु द्वारा जीती गयी पृथ्वी का वर्णन किया। ऐसा करते हुए किरात का मन खिन्न नहीं हुआ।
- शत्रुओं के नाश के लिए यत्न करने वाले युधिष्ठिर की आज्ञा पाकर वह एकान्त में अपनी बात कहता है।
- वनेचर कहता है कि सेवकों द्वारा गुप्तचर रूपी नेत्र वाले

'स्वामी' को धोखा नहीं दिया जाना चाहिए।

- जो स्वामी को उचित सलाह न दे वह बुरा मित्र है और जो स्वामी हितैषी मित्र की न सुने वह बुरा स्वामी है।
- राजाओं का चरित्र स्वभाव से ही कठिनाई से जानने योग्य होता है। वनेचर जो कुछ जान पाया वह युधिष्ठिर का प्रभाव है।
- दुर्योधन अब 'जुएँ' में जीती गई पृथ्वी को 'नीति' से जीतना चाहता है।
- युधिष्ठिर को जीतने के लिए दुर्योधन अपने गुणों से यश का विस्तार करता है।
- दुर्योधन अपने छः शत्रुओं - काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य पर विजय प्राप्त कर लिया।
- दुर्योधन सेवकों से मित्र जैसा, मित्रों से भाइयों जैसा और भाई-बन्धुओं को शासक मानकर व्यवहार करता है।
- दुर्योधन का मधुर वचन दान के बिना नहीं होता, दान आदर-सत्कार को छोड़कर नहीं होता और विशेष आदर गुणों के अनुराग के बिना नहीं होता।
- जितेन्द्रिय दुर्योधन 'अपना कर्तव्य मानकर धर्म-विप्लव' को दण्ड से रोकता है अन्य कारण से नहीं।
- राजाओं के उपहारस्वरूप प्राप्त हाथियों के मदजल से दुर्योधन का आँगन गीलेपन को प्राप्त है।
- कुरुदेश के निवासी कृषि के लिए वर्षा जल पर निर्भर नहीं रहते। कुरुप्रदेश की कृषि अदेवमातृक है।
- दुर्योधन के 'कुबेर' सदृश गुणों से द्रवित पृथ्वी स्वयं धनरूपी दुग्ध देती है।
- दुर्योधन के धनुर्धर लोग मानरूपी धन वाले, धन से सम्मानित और युद्ध में यश पाने वाले हैं।
- महीपाल लोग दुर्योधन के गुणों में अनुराग के कारण उसके आदेश को 'माला' की भाँति शिरोधार्य करते हैं।
- दुर्योधन ने दुःशासन को 'युवराज' नियुक्त किया है।
- वनेचर प्रथमसर्ग के 25वें श्लोक तक का वक्ता है और उसके चले जाने पर युधिष्ठिर द्रौपदी के आवास में प्रवेश करते हैं।
- 'बुरी मनोव्यथाएँ' द्रौपदी को बोलने के लिए उद्यत करती है।
- द्रौपदी कहती है युधिष्ठिर ने मदस्रावी हाथी के समान पृथ्वी को माला की तरह अपने हाथ से त्याग दिया।
- सफल क्रोध वालों के वश में प्राणी स्वयं हो जाता है।
- **वृकोदर (भीम)** धूलधूसरित होकर पैदल ही पर्वतों में घूमता है।
- इन्द्र के समान पराक्रमी अर्जुन ने 'उत्तरकुरुदेश' को जीतकर प्रचुर धन युधिष्ठिर को दिया था, वह अब **'वल्कल वस्त्र'** संग्रह करता है।
- नकुल और सहदेव का शरीर वन में सोने के कारण कठोर हो गया है और दोनों जुड़वे हाथियों के समान हैं।
- युधिष्ठिर कुशवाली भूमि पर सोकर श्रृगाली (सियारिनियों) के शब्दों से निद्रा का परित्याग करते हैं।

किरातार्जुनीयम् के पात्रों का चरित्र-चित्रण

युधिष्ठिर

- सत्य का पालन करने वाले।
- धर्म पर दृढ़ रहने वाले।
- सहनशील और राजनीतिकुशल।
- द्रौपदी और भीम द्वारा उलाहना दिये जाने पर भी उनके मन में विकार उत्पन्न नहीं होता।
- प्रथमसर्ग में युधिष्ठिर एक भी वाक्य नहीं बोलते हैं, केवल श्रोता के रूप में उनका वर्णन है।
- जुयें में हारकर वन में निवास करते हुए भी युधिष्ठिर हस्तिनापुर के राजा दुर्योधन के विचारों, उद्देश्यों और कार्यों को जानने के लिए वनेचर को गुप्तचर के रूप में भेजते हैं।
- किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में भारवि ने भले ही युधिष्ठिर के मुख से कोई बात नहीं कहलवायी हो, फिर भी वनेचर एवं द्रौपदी के कथनों द्वारा उनके व्यक्तित्व की विशेषताएँ परिलक्षित होती हैं।
- भारवि ने पाँचों पाण्डवों के ज्येष्ठ भ्राता युधिष्ठिर को एक कुशल राजनीतिज्ञ, प्रतिज्ञापालक, संयमी एवं धैर्यशाली, सत्यप्रिय, शान्तिप्रिय, धर्मात्मा एवं शास्त्रज्ञ के रूप में चित्रित किया है।

वनेचर

- गुप्तचरों के लिए चार प्रकार के गुण बताये गये हैं – अमूढ़ता, अशैथिल्य, सत्यपरता और ठीक प्रकार से अनुमान कर सकने की क्षमता। युधिष्ठिर द्वारा गुप्तचर बनाकर भेजे गए वनेचर में ये सभी गुण विद्यमान थे।
- वनेचर ब्रह्मचारी के वेश में हस्तिनापुर जाकर सुयोधन (दुर्योधन) के सभी विचारों, योजनाओं, कार्यों और उद्देश्यों को ठीक प्रकार से समझता है, और द्वैतवन में आकर युधिष्ठिर को सम्पूर्ण वृत्तान्त बताता है।
- यद्यपि वनेचर द्वारा लाये गये समाचार युधिष्ठिर के लिए अप्रिय थे, तथापि वह उनको कहने में हिचकिचाया नहीं।
- वनेचर कार्यदक्ष था, उसने दुर्योधन की दुरभिसन्धियों, दुःश्चिंतन और युद्ध की पूर्ण तैयारियों को ठीक प्रकार से जान लिया और राजा युधिष्ठिर से सुस्पष्ट और प्रभावशाली ढंग से वहाँ के सभी गूढ़ रहस्यों को व्यक्त किया।
- वनेचर की वाणी, सौष्ठव और औदार्य गुणों से युक्त थी, और उसके कथन, प्रमाण और तर्कों से पूर्ण निश्चित अर्थों को व्यक्त करने वाले होते थे –

''स सौष्ठवौदार्यविशेषशालिनीं विनिश्चितार्थामिति

वाचमाददे।'' (किरात० 1/3)

➢ वह राजा युधिष्ठिर का सच्चा हितैषी था, और अप्रिय लगने वाले भी हितकारी वचनों को कहने में कोई संकोच नहीं करता–

''न विव्यथे तस्य मनो न हि प्रियं प्रवक्तुमिच्छन्ति मृषा हितैषिणः'' (किरात० 1/2)

➢ वनेचर अतिविनम्र था और अपनी सफलता के लिए अपने स्वामी युधिष्ठिर की कृपा को ही श्रेय देता है –

''तवानुभावोऽयमवेदि यन्मया, निगूढतत्त्वं नयवर्त्म विद्विषाम्'' (किरात० 1/6)

➢ इसप्रकार सम्पूर्ण प्रथमसर्ग में वनेचर को एक कुशल गुप्तचर, सच्चा हितैषी, शिष्टाचारी एवं निरहंकारी, स्वामिभक्त, सत्यवादी, वाक्पटु, निरालस्य, निश्छल, कर्त्तव्यनिष्ठ, विनम्र, निर्भीक, साहसी, स्पष्टवादी, गुणी, कार्यकुशल एवं अत्यन्त बुद्धिमान् के रूप में चित्रित किया गया है।

सुयोधन (दुर्योधन)

➢ महाकवि भारवि ने दुर्योधन को सुयोधन नाम से अभिहित किया है, जो कुरु प्रदेश का राजा है–**''श्रियः कुरूणामधिपस्य'' (किरात. 1/1)**

➢ क्योंकि उसको सुखपूर्वक जीता जा सकता था अथवा उसकी नीतियाँ प्रजा को सुख पहुँचाने वाली थीं।

➢ किरातार्जुनीयम् का 'सुयोधन' कामक्रोधादि रिपुओं को जीतने वाला, प्रजावत्सल एवं आदर्श राजा बनने का दिखावा करता है। – **''स सन्ततं दर्शयते गतस्मयः'' (किरात० 1/10)**

➢ दुर्योधन के राज्य की स्थिरता और सुख प्रजा और सेवकों की अनुरक्ति पर निर्भर है।

➢ सुयोधन अपने राष्ट्र को धन-धान्य से समृद्ध बनाने के लिए कृषि की उन्नति हेतु कृत्रिम सिंचाई के साधन उपलब्ध कराता है।

''सुखेन लभ्या दधतः कृषीवलैः'' (किरात० 1/17)

➢ सुयोधन अहंकार से शून्य होकर सेवकों के साथ मित्रों के समान तथा मित्रों के साथ बन्धु-बान्धव की तरह व्यवहार करता था –

''सखीनिव प्रीतियुजोऽनुजीविनः'' – (किरात० 1/10)

➢ दुर्योधन पराक्रमी शूरवीरों को अपने आस-पास एकत्र किए रहता था जो उसके उत्तम व्यवहार से प्रभावित होकर अपने प्राणों की बाजी लगाकर भी उसका हित करना चाहते थे –

''महौजसो मानधनाः धनार्चिताः....प्रियाणि वाञ्छन्त्यसुभिः समीहितुम्।'' (किरात० 1/19)

➢ यद्यपि दुर्योधन कुटिल स्वभाव वाला है किन्तु आपको जीतने की इच्छा से वह अपने शुभ्र यश एवं पुरुषार्थ को फैला रहा है और प्रजा को यह दिखलाने का प्रयास करता है कि वह निरहंकारी, निरालस्य तथा युधिष्ठिर से कहीं अधिक गुणवान्, दयावान्, क्षमावान्, सत्यवादी तथा धर्मज्ञ है –

''तथापि जिह्मः स भवज्जिगीषया तनोति शुभ्रं गुणसम्पदा यशः।'' (किरात० 1/8)

➢ राजाओं द्वारा भय के कारण नहीं, अपितु श्रद्धा और प्रेम के कारण दुर्योधन के आदेशों का पालन किया जाता था –

''गुणानुरागेण शिरोभिरुह्यते'' (किरात० 1/21)

➢ दुर्योधन को कभी क्रोध करने अथवा शस्त्रों को उठाने की आवश्यकता नहीं होती थी –

''कृतं न वा कोपविजिह्ममाननम्'' (किरात० 1/21)

➢ राजनीति के छः अंगों – सन्धि, विग्रह, यान, आसन, संशय और द्वैधीभाव का प्रयोग करने में सुयोधन (दुर्योधन) कुशल था।

➢ साम, दान, दण्ड, भेद– इन चारों उपायों का सुयोधन सफलतापूर्वक प्रयोग करता था –

''निरत्ययं साम न दानवर्जितम्'' (किरात० 1/12)

➢ न्याय करने में दुर्योधन कभी पक्षपात नहीं करता था –

''गुरूपदिष्टेन रिपौ सुतेऽपि वा निहन्ति दण्डेन स धर्मविप्लवम्'' (किरात० 1/13)

➢ इस प्रकार सुयोधन नीतिज्ञ एवं कुशल प्रशासक, प्रजावत्सल, कुशल राजनीतिज्ञ, राजाओं के प्रति उदार, कूटनीतिज्ञ, उदारवादी राजा के रूप में किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में चित्रित है।

द्रौपदी

➢ किरातार्जुनीयम् की सबसे महत्त्वपूर्ण नारीपात्र द्रौपदी है, जो इस **महाकाव्य की नायिका** है।

➢ प्रथमसर्ग में द्रौपदी की मानसिक पीड़ा एवं अपमानजन्य वेदना अभिव्यक्त होती है।

➢ वनेचर द्वारा बतायी गयी दुर्योधन की कार्यप्रणालियों एवं सफलता को युधिष्ठिर से सुनकर द्रौपदी का क्रोध उद्दीप्त हो उठता है।

➢ युधिष्ठिर की नीतियाँ, सत्यप्रतिज्ञा के पालन और शान्तस्वभाव के कारण सबसे अधिक कष्ट द्रौपदी को झेलने पड़ते हैं।

➢ दुर्योधन से प्रतिशोध लेने की आकांक्षा सबसे अधिक द्रौपदी को है।

➢ द्रौपदी ओजस्विनी वाणी द्वारा युधिष्ठिर के क्रोध को उद्दीप्त करने का प्रयत्न करती है –

''उदाजहार द्रुपदात्मजा गिरः'' (किरात० 1/27)

➢ द्रौपदी युधिष्ठिर से कहती है कि तुम जैसा और कौन होगा, जो स्वयं ही अपनी राजलक्ष्मी और कुलवधू को शत्रुओं द्वारा अपहरण करा दे –

''परैस्त्वदन्यः क इवापहारयेत्........'' (किरात० 1/31)

➢ वह युधिष्ठिर को क्षत्रियों तथा राजाओं के समान आचरण करने का उपदेश करती है, और उसकी सत्यप्रतिज्ञा को ढोंग कहती है।

➢ द्रौपदी पहले भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव के वन में प्राप्त होने वाले कष्टों का वर्णन करती है और उसके बाद स्वयं युधिष्ठिर को होने वाले दुःखों और अपमानों को बताती है –

''पुराधिरूढः शयनं महाधनम्'' (किरात० 1/38)

➢ द्रौपदी युधिष्ठिर से कहती है कि जो मनुष्य क्रोध नहीं कर सकता, शत्रु उससे भय नहीं करते और मित्र उसका आदर नहीं करते – **''न जातहार्देन न विद्विषादरः'' (किरात० 1/**

33)

- वह युधिष्ठिर से कहती है कि वह किसी बहाने से सन्धि को तोड़ दे और समय की प्रतीक्षा न करके अपने पराक्रम से शत्रुओं को जीत लें – **''न समयपरिरक्षणं क्षमं ते''.......। (किरात० 1/45)**
- शान्ति और क्षमा मुनियों के लिए ही उचित है, राजाओं के लिए नहीं, यदि शान्ति और क्षमा का पालन नही करना है तो उसको राजाओं के चिह्न धनुष को छोड़कर जटाओं को धारण करके अग्नि में आहुति देते रहना ही उचित है। यह बात द्रौपदी युधिष्ठिर से कह रही है– **''जटाधरः सञ्जुहुधीह पावकम्'' (किरात० 1/44)**
- इसप्रकार द्रौपदी को एक वीरक्षत्राणी, कुशल राजनीतिज्ञा, स्वाभिमानिनी, कूटनीतिज्ञा, अपमान से दुखी, सहृदया एवं क्रोधोद्दीपन में दक्ष नारी के रूप में चित्रित किया गया है।

किरातार्जुनीयम्-सूक्तियाँ

- हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः।(1/4)
- न हि प्रियं प्रवक्तुमिच्छन्ति मृषा हितैषिणः। (1/2)
- सदानुकूलेषु हि कुर्वते रतिं नृपेष्वमात्येषु च सर्वसम्पदः। (1/5)
- स किं सखा साधु न शास्ति योऽधिपं हितान्न यः संशृणुते स किं प्रभुः(1/5)
- वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः। (1/8)
- निरत्ययं साम न दानवर्जितम्। (1/12)
- नभूरि दानं विरहय्य सत्क्रियाम्। (1/12)
- गुणानुरोधेन विना न सत्क्रिया। (1/12)
- अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता। (1/23)
- तथापि वक्तुं व्यवसाययन्ति मां, निरस्तनारीसमया दुराधयः।।(1/28)
- व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवं भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः।।(1/30)
- अबन्ध्यकोपस्य विहन्तुरापदां भवन्ति वश्याः स्वयमेव देहिनः।(1/33)
- अमर्षशून्येन जनस्य जन्तुना न जातहार्देन न विद्विषादरः।। (1/33)
- विचित्ररूपाः खलु चित्तवृत्तयः। (1/37)
- परैरपर्य्यासितवीर्य्यसम्पदां पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम्।(1/41)
- व्रजन्ति शत्रूनवधूय निःस्पृहाः शमेन सिद्धिं मुनयो न भूभृतः।(1/42)
- निराश्रया हन्त हता मनस्विता। (1/43)
- अरिषु हि विजयार्थिनः क्षितीशाः विदधति सोपधि सन्धिदूषणानि।(1/45)

किरातार्जुनीयम्- बिन्दुवार अध्ययन

- किरातार्जुनीयम् के रचनाकार हैं -**भारवि**
- 'किरातार्जुनीयम्' महाभारत के किस पर्व से लिया गया है - **वनपर्व से**
- महाभारत पर आधारित ग्रन्थ है -**किरातार्जुनीयम्**
- 'किरातार्जुनीयम्' ग्रन्थ में कुल कितने सर्ग हैं **-18**
- 'किरातार्जुनीयम्' का प्रथम पद्य किस छन्द में है - **वंशस्थ**
- 'किरातार्जुनीयम्' महाकाव्य के प्रथम सर्ग में प्रमुखता से प्रयुक्त छन्द कौन-सा है - **वंशस्थ**
- किरातार्जुनीयम् में 'किरात' शब्द किसका बोधक है - **शिवः**
- वनेचर किस वन में युधिष्ठिर के पास आया - **द्वैतवन में**
- 'कुरूणामधिपः' का तात्पर्य है - **दुर्योधन**
- 'किरातार्जुनीयम्' के प्रत्येक सर्ग का अन्तिम पद है - **लक्ष्मी**
- वीररस प्रधान काव्य है - **किरातार्जुनीयम्**
- 'किरातार्जुनीयम्' शब्द निष्पन्न होता है – **-छ प्रत्यय**
- 'किरातार्जुनीयम्' के प्रथम सर्ग में वनेचर वार्तालाप कर रहा है - **युधिष्ठिर से**
- किरातः कस्य महाकाव्यस्य पात्रम् अस्ति - **किरातार्जुनीयस्य**
- 'किरातार्जुनीयम्' महाकाव्य किस पर आधारित है - **महाभारत**
- 'किरातार्जुनीयम्' का नायक कौन है - **अर्जुन**
- 'किरातार्जुनीयम्' का प्रधान रस क्या है - **वीररस**
- द्वैतवन में गुप्तचर किसके पास लौटा - **युधिष्ठिर**
- 'श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीम्' किस प्रकार का मङ्गलाचरण है - **वस्तुनिर्देशात्मक**
- 'अदेवमातृकाः' का प्रयोग किस ग्रन्थ में है - **किरातार्जुनीयम् प्रथमसर्ग में**
- ''स वर्णिलिङ्गी विदितः समाययौ। युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचरः'' इस श्लोक में 'वर्णिलिङ्गी' शब्द का अर्थ है - **ब्रह्मचारी**
- 'किरातार्जुनीयम्' काव्य में दुर्योधन अपनी श्रेष्ठता प्रदर्शित करने के लिए जो आचरण करता है, वह आचरण/नीति निर्धारित है - **मनु के द्वारा**
- 'किरातार्जुनीयम्' में दुर्योधन की शासन व्यवस्था जानने के लिये किसे भेजा गया था - **वनेचरः**
- दुर्योधन कुरु की प्रजा को प्रसन्न करने के लिए जो विशेष व्यवस्था करता है, वह सम्बन्धित है - **सिंचाई व्यवस्था को उन्नत करने में**
- 'मखेष्वखिन्नोऽनुमतः पुरोधसा, धिनोति हव्येन हिरण्यरेतसम्'–प्रस्तुत श्लोक में 'हिरण्यरेतसम्' का अर्थ है - **अग्नि**
- 'किरातार्जुनीयम्' में दुर्योधन की तुलना की गई है - **उरग से**
- 'किरातार्जुनीयम्' में गुप्तचर किस वेष में जाता है - **ब्रह्मचारी**
- 'प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः'–यहाँ 'मादृशां' से तात्पर्य है - **गुप्तचर**
- किरातार्जुनीयस्य कः पाकः प्रथितः -**नारिकेलपाक**
- ब्रह्मचारी विप्र का वेषधारण करने वाला गुप्तचर था - **वनेचर**
- धन जीतकर युधिष्ठिर को कौन देता था - **अर्जुन**

➤ 'किरातार्जुनीयम्' में किस विषय का चमत्कारित्व है - **अर्थगौरव**
➤ 'वनेचर' शब्द का संस्कृत प्रतिशब्द होगा - **गुप्तचर**
➤ किरातार्जुनीयम् में अर्जुन भगवान् शङ्कर से किस अस्त्र की प्राप्ति करते हैं **-पाशुपतास्त्र**
➤ ''सहसा विदधीत न क्रियाम्'' इस वाक्य का हिन्दी में अनुवाद होगा - **सहसा कार्य न करें**
➤ 'किरातार्जुनीयम्' में 'अदेवमातृकाः' कौन हैं - **नदी जलाशय एवं नहरों से सिंचाई करने वाले**
➤ वनेचर की बात सुनने के बाद युधिष्ठिर कहाँ पहुँचे - **द्रौपदी के समीप**
➤ किस प्रकार के वचन दुर्लभ होते हैं - **हितकारी और मनोहर**
➤ 'कथं त्वमेतौ धृतिसंयमौ यमौ विलोकयन्नुत्सहसे न बाधितुम्' इस श्लोक में 'यमौ' किस युग्म के लिए प्रयुक्त है - **नकुल-सहदेव**
➤ महापुरुषों के साथ कैसा विरोध भी अच्छा होता है - **उन्नति कराने वाला**
➤ दुर्योधन यज्ञ कार्य में कैसे लगा रहता है - **दुःशासन को युवराज पद पर बैठा करके**
➤ दुर्योधन कब भयभीत हो जाता है **-युधिष्ठिर का नाम सुनकर**
➤ ''महीभुजे'' में कौन-सी विभक्ति है - **चतुर्थी**
➤ 'विघाताय' में कौन-सी धातु है - **हन्**
➤ 'कृतप्रणामः' में कौन-सा समास है - **बहुव्रीहि**
➤ 'वनेचरः' में कौन-सा प्रत्यय है - **ट**
➤ किस महाकाव्य के प्रत्येक सर्ग के अन्त में 'लक्ष्मी' शब्द का प्रयोग किया गया है - **किरातार्जुनीयम्**
➤ 'किरातार्जुनीयम्' प्रथम सर्ग के अन्त्य श्लोक में कौन-सा छन्द है - **मालिनी**
➤ 'कृषीवल' से तात्पर्य है - **किसान से**
➤ 'नारीसमया' में 'समया' से तात्पर्य है - **मर्यादा**
➤ 'यमौ' कौन हैं - **अश्विनी पुत्र (नकुल एवं सहदेव)**
➤ भीम किसके पुत्र हैं - **वायु के**
➤ 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः'–यह किस ग्रन्थ की उक्ति है - **किरातार्जुनीयम् (वनेचर)**
➤ तवाभिधानाद् व्यथते नताननः, स दुःसहान्मन्त्रपदादिवोरगः'- इत्यत्र 'नताननः' कः - **सुयोधनः**
➤ 'कथं न मन्युर्ज्वलयत्युदीरितः, शमीतरुं शुष्कमिवाग्निरुच्छिखः।' इत्युक्त्या कः प्रेरितः - **युधिष्ठिरः**
➤ अर्जुन किसमें नायक के रूप में वर्णित हैं - **किरातार्जुनीयम्**
➤ किरातार्जुनीयम् शीर्षक में प्रयुक्त 'किरात' शब्द किसके लिये प्रयुक्त हुआ है - **किरातवेशधारी शिव।**
➤ 'कीदृशं वचः दुर्लभं भवति।' उचित शब्द का चयन कर पंक्ति पूर्ण करें - **हितं मनोहारि च**
➤ किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग के आधार पर पाण्डव कहाँ निवास कर रहे थे - **द्वैतवन में**
➤ अर्थगौरवसम्पन्नं काव्यं किं नाम भारवेः - **किरातार्जुनीयम्**
➤ ''प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः'' इत्यत्र 'खलु'अव्ययस्य अर्थ अस्ति - **निश्चयः**
➤ ''भवादृशेषु प्रमदाजनोदितं भवत्यधिक्षेप इवानुशासनम्। तथापि वक्तुं व्यवसाययन्ति मां निरस्तनारीसमया दुराधयः।।'' इस पद्य में 'मां' पद से किसको कहा गया है - **द्रौपदी**
➤ 'अबन्ध्यकोपस्य विहन्तुरापदां, भवन्ति वश्याः स्वयमेव देहिनः' इस पंक्ति में 'अबन्ध्यकोपस्य' का क्या अर्थ है - **सफल क्रोध वाले**
➤ 'किरातार्जुनीयम्' के प्रथमसर्ग में प्रयुक्त छन्द में प्रयुक्त गण हैं? - **जगण तगण जगण रगण**
➤ 'स वल्कवासांसि तवाधुना हरन्' कः - **अर्जुनः**
➤ 'न्यायधारा हि साधवः' का अर्थ है - **सज्जन न्यायमार्ग का ही आश्रय लेते हैं।**
➤ किरातार्जुनीयम् का कथानक लिया गया है - **महाभारत से**
➤ यस्य कथा रामायणाश्रिता नास्ति **-किरातार्जुनीयस्य**
➤ ''पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम्''- इस सूक्ति के रचयिता हैं **-भारवि**
➤ ''अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता'' यह उक्ति किसने कही है **-वनेचर ने**
➤ 'हितं मनोहारि च दुर्लभम्' का अर्थ है **-हितकारी और प्रियवचन दुर्लभ होता है।**
➤ 'वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः' के अनुसार खलजनों के सम्पर्क की अपेक्षा श्रेष्ठ होता है **-साधुजनों का विरोध**
➤ ''अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता'' यह उक्ति कहाँ प्राप्त होती है **-किरातार्जुनीयम्**
➤ ''वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः'' किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है - **-किरातार्जुनीयम्**
➤ 'अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता' कः एवं वदति - **वनेचरः**
➤ ''स्फुटता न पदैरपाकृता, न च न स्वीकृतमर्थगौरवम्'' किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है **-किरातार्जुनीयम् से**
➤ ''न बाधतेऽस्य त्रिगणः परस्परम्'' सूक्ति उद्धृत है - **किरातार्जुनीयम्**
➤ 'न तितिक्षासममस्ति साधनम्'' इदं वाक्यमस्ति - **किरातार्जुनीये**
➤ ''प्रवृत्तिसारा खलु मादृशां गिरः'' इति वचनं वर्तते - **वनेचरस्य**
➤ ''व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवम्'' इति कस्मिन् काव्ये उक्तम् - **किरातार्जुनीये**
➤ 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः' उक्ति है - **वनेचरस्य**
➤ हितं मनोहारि च दुर्लभं........... - **वचः**
➤ ''सहसा विदधीत न क्रियाम्'' सूक्ति है - **किरातार्जुनीयम्**
➤ 'सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः'–किस कवि का प्रिय

श्लोक है - **भारवेः**
- राजाओं का स्वभाव होता है -**दुर्विज्ञेय**
- 'प्रविश्य कृष्णासदनं महीभुजा' में 'कृष्णा' का तात्पर्य है - **द्रौपदी से**
- 'भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः' पंक्ति का भावसाम्य है -**जैसे के संग तैसा**
- "अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता"-कस्य वचनमिदम् - **भारवेः**
- "सहसा विदधीत न क्रियाम्" – इत्ययमुपदेशः केन प्रदत्तः - **युधिष्ठिरेण**
- "निराश्रया हन्त! हता मनस्विता" यह किसकी उक्ति है - **द्रौपदी की**
- "सदानुकूलेषु हि कुर्वते रतिं, नृपेष्वमात्येषु च सर्वसम्पदः" यह किसके द्वारा कहा गया है? - **वनेचर द्वारा**
- "स चिन्तयत्येव भियस्त्वदेष्यतीः, अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता" यह किसके विषय में कहा गया है - **दुर्योधन के**
- "निगूढतत्त्वं नयवर्त्म विद्विषाम्" यह उक्ति किसकी है? - **वनेचर**
- "विचित्ररूपाः खलु चित्तवृत्तयः" यह सुभाषित किस ग्रन्थ से है? - **किरातार्जुनीयम् से**
- "तथापि वक्तुं व्यवसाययन्ति मां निरस्तनारीसमया दुराधयः" यह श्लोकांश किस ग्रन्थ से लिया गया है - **किरातार्जुनीयम्**
- "प्रजासु वृत्तिं यमयुङ्क्त वेदितुम्" यह श्लोकांश कहाँ से उद्धृत है - **किरातार्जुनीयम् से**
- "अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता" यह सूक्ति किसके लिए कथित है - **दुर्योधन के विषय में**
- "पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम्" यह उक्ति किस ग्रन्थ में है? -**किरातार्जुनीयम् में**
- "शमेन सिद्धिं मुनयो न भूभृतः" यह कथन किसका है - **द्रौपदी का**
- "व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवं" सूक्ति किरातार्जुनीयम् के किस सर्ग से उद्धृत है - **प्रथम सर्ग**
- "जटाधरः सञ्जुहुधीह पावकम्" यह कथन किसको कहा गया है - **युधिष्ठिर को**
- "क्रियासु युक्तैर्नृपचारचक्षुषो, न वञ्चनीयाःप्रभवोऽनुजीविभिः" इस उक्ति वाला ग्रन्थ है - **किरातार्जुनीयम्**
- "वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः" यह उक्ति किस ग्रन्थ में किसने कही है - **किरातार्जुनीयम् में, वनेचर ने**
- "हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः" इति केन कथितम् - **भारविणा**
- "व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवं भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः" इत्याद्युक्तिः किरातार्जुनीये भवति - **द्रौपद्याः**
- "वसन्ति हि प्रेम्णि गुणा न वस्तुनि" इति कस्योक्तिः - **भारवेः**
- 'अबन्ध्यकोपस्य विहन्तुरापदां भवन्ति वश्याः स्वयमेव देहिनः' इति वाक्यं कस्मिन् महाकाव्येऽस्ति - **किरातार्जुनीये**
- द्वैतवने युधिष्ठिरं समाययौ - **वनेचरः**
- 'प्रवक्तुमिच्छन्ति मृषा हितैषिणः'-अलङ्कारः कः - **अर्थान्तरन्यासालङ्कारः**
- 'वृणुते हि विमृश्यकारिणं गुणलुब्धाः स्वयमेव सम्पदः' यह उक्ति कहाँ प्राप्त होती है? - **किरातार्जुनीय**
- मल्लिनाथविरचितं किरातार्जुनीयव्याख्यानं किम् - **घण्टापथ**

वस्तुनिष्ठप्रश्नाः

1. "सहसा विदधीत न क्रियाम्" यह किस कवि का प्रिय श्लोक है –

(A) भारवि (B) माघ
(C) कालिदास (D) भवभूति

2. भारवि किसके उपासक थे –

(A) ब्रह्मा (B) शिव
(C) विष्णु (D) सूर्य

3. बृहत्त्रयी में कौन सा महाकाव्य नहीं है –

(A) किरातार्जुनीयम् (B) शिशुपालवधम्
(C) रघुवंशमहाकाव्यम् (D) नैषधीयचरितम्

4. किरातार्जुनीयम् में कितने सर्ग हैं –

(A) 17 (B) 18
(C) 19 (D) 20

5. अर्थगौरव के लिए प्रसिद्ध हैं –

(A) कालिदास (B) दण्डी
(C) भारवि (D) माघ

6. "न नो ननुन्नो नुन्नोनो नाना नानानना ननु" यह श्लोक किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है –

(A) भारवि के किरातार्जुनीयम् से
(B) माघ के शिशुपालवधम् से
(C) कालिदास के रघुवंशम् से

(D) वाल्मीकि के रामायण से

7. ''व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवम्'' यह सूक्ति किसकी है –
(A) माघ (B) दण्डी
(C) भारवि (D) कालिदास

8. किस महाकाव्य के प्रथम तीन सर्गों को ''पाषाणत्रय'' कहा गया है –
(A) रघुवंशम् (B) किरातार्जुनीयम्
(C) नैषधीयचरितम् (D) कुमारसम्भवम्

9. भारवि का वास्तविक नाम था –
(A) रत्नाकर (B) श्रीधर
(C) दामोदर (D) नारायण स्वामी

10. किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में प्रमुख छन्द है –
(A) मालिनी (B) वंशस्थ
(C) वसन्ततिलका (D) पुष्पिताग्रा

11. किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग के अन्तिमश्लोक में छन्द है–
(A) वंशस्थ (B) पुष्पिताग्रा
(C) मालिनी (D) उपेन्द्रवज्रा

12. किरातार्जुनीयम् मङ्गलाचरण में छन्द प्रयुक्त है –
(A) मालिनी (B) वंशस्थ
(C) पुष्पिताग्रा (D) रुचिरा

13. पाण्डव वन में कितने वर्षो तक निवास किये –
(A) 14 वर्ष (B) 15 वर्ष
(C) 18 वर्ष (D) 13 वर्ष

14. किरातार्जुनीयम् का कथानक लिया गया है –
(A) महाभारत वनपर्व से (B) महाभारत आदिपर्व से
(C) महाभारत सभापर्व से (D) महाभारत भीष्मपर्व से

15. किरातार्जुनीयम् के प्रत्येक सर्ग के अन्त में कौन सा शब्द प्रयुक्त हुआ है –
(A) लक्ष्मीः (B) श्रीः
(C) सरस्वती (D) कुरूणाम्

16. ''आतपत्र'' किस कवि की उपाधि है –
(A) माघ (B) भारवि
(C) कालिदास (D) श्रीहर्ष

17. किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग में कुल कितने श्लोक हैं –
(A) 46 (B) 48
(C) 45 (D) 49

18. ''बृहत्त्रयी'' में कौन सा ग्रन्थ परिगणित है –
(A) रामायणम् (B) महाभारतम्
(C) किरातार्जुनीयम् (D) रघुवंशमहाकाव्यम्

19. भारवि का समय विद्वानों ने क्या माना है –
(A) 600 ई० के आसपास (B) 800 ई० के आसपास
(C) कालिदास के पहले (D) प्रथम शताब्दी के आसपास

20. कवियों का उत्तरोत्तर सही कालक्रम माना जाता है–
(A) माघ-भारवि-श्रीहर्ष (B) भास-भारवि-अश्वघोष
(C) भास-माघ-कालिदास (D) वाल्मीकि-भास-भारवि

21. भारवि के बाद किसका समय माना जाता है –
(A) कालिदास का (B) माघ का
(C) व्यास का (D) भास का

22. भारवि, पूर्ववर्ती कवि माने जाते हैं –
(A) व्यास के (B) श्रीहर्ष के
(C) कालिदास के (D) अश्वघोष के

23. किरातार्जुनीयम् का मुख्य रस है –
(A) वीररस (B) शृंगाररस
(C) भयानक रस (D) इनमें से कोई नहीं

24. भारवि का प्रिय अलंकार है –
(A) उपमा (B) उत्प्रेक्षा
(C) रूपक (D) अर्थान्तरन्यास

25. पाण्डवों को अज्ञातवास करना पड़ा –
(A) दो वर्ष (B) एक वर्ष
(C) तेरह वर्ष (D) चौदह वर्ष

26. पाण्डवों ने वनवासकाल में निवास किया –
(A) तुलसीवन में (B) विन्ध्यवन में
(C) द्वैतवन में (D) नन्दनवन में

27. द्रौपदी युधिष्ठिर को किसके प्रति उकसाती है –
(A) भीम के प्रति (B) दुर्योधन के प्रति
(C) वनेचर के प्रति (D) कर्ण के प्रति

28. भारवि के काव्य में किस अलङ्कार की प्रमुखता है–
(A) रूपक अलंकार (B) उत्प्रेक्षा अलङ्कार
(C) उपमा अलंकार (D) चित्रालङ्कार

29. भारवि के पिता का नाम था –
(A) श्रीधर (B) महीधर
(C) लक्ष्मीधर (D) कृष्णधर

30. भारवि की माता थी –
(A) रसिका (B) सुशीला
(C) सुनीता (D) सुगीता

31. किरातार्जुनीयम् का पात्र नहीं है –
(A) भीम (B) दुर्योधन
(C) वनेचर (D) रघु

32. किरातार्जुनीयम् का पात्र है –
(A) दुष्यन्त (B) चारुदत्त
(C) युधिष्ठिर (D) बाली

33. किरातार्जुनीयम् किस विधा का काव्य है –
(A) नाटक (B) चम्पू
(C) आख्यायिका (D) महाकाव्य

34. भारवि की कविता पर प्रभाव पड़ा है –
(A) कालिदास का (B) माघ का
(C) भवभूति का (D) इनमें से किसी का नहीं

35. किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में किस नारी का उदात्त चरित्र वर्णित है –
(A) कुन्ती का (B) द्रौपदी का
(C) गान्धारी का (D) तारा का

36. वनवासकाल में कठोर भूमि में कौन सोते हैं –
(A) अर्जुन-वनेचर (B) नकुल-सहदेव
(C) युधिष्ठिर-कृष्ण (D) दुर्योधन-दु:शासन

37. किरातार्जुनीयम् का नायक है –
(A) अर्जुन (B) वनेचर
(C) दुर्योधन (D) युधिष्ठिर

38. वर्णिलिङ्गी कौन था –
(A) अर्जुन (B) वनेचर
(C) दुर्योधन (D) युधिष्ठिर

39. वनेचर हस्तिनापुर से लौटकर युधिष्ठिर से कहाँ मिला–
(A) विन्ध्यवन में (B) नन्दनवन में
(C) विराटवन में (D) द्वैतवन में

40. वनेचर हस्तिनापुर किस वेष में गया –
(A) राजा के वेष में (B) ब्रह्मचारी के वेश में
(C) मन्त्री के वेष में (D) किसान के वेश में

41. वनेचर हस्तिनापुर का समाचार जानकर किसके पास आता है –
(A) श्रीकृष्ण के पास (B) युधिष्ठिर के पास
(C) दुर्योधन के पास (D) द्रौपदी के पास

42. 'अवन्तिसुन्दरीकथा' के अनुसार भारवि रहने वाले थे –
(A) दक्षिणभारत के (B) उत्तरभारत के
(C) मध्यप्रदेश के (D) पूर्वीभारत के

43. भारवि की कुल कितनी रचनायें हैं –
(A) तीन (B) दो
(C) एक (D) सात

44. द्वैतवन में युधिष्ठिर के पास कौन आता है –
(A) दुर्योधन (B) भीष्म
(C) वनेचर (D) द्रोणाचार्य

45. द्रौपदी की चारित्रिक विशेषता नही है –
(A) वीरक्षत्राणी (B) कुशलराजनीतिज्ञा
(C) तेजस्विनी (D) कुलटा

46. किरातार्जुनीयम् के दुर्योधन को कहते हैं –
(A) सुयोधन (B) दु:शासन
(C) ज्येष्ठभ्राता (D) धनञ्जय

47. वनेचर की चारित्रिक विशेषता नहीं है –
(A) सच्चा हितैषी (B) स्पष्टवक्ता
(C) गुणवान् (D) नीच अहङ्कारी

48. किरातार्जुनीयम् का प्रारम्भ किस पद से होता है –
(A) श्रियः (B) लक्ष्मीः
(C) वनेचरः (D) कुरूणाम्

49. ''न हि प्रियं प्रवक्तुमिच्छन्ति मृषा हितैषिणः'' यह सूक्ति किस ग्रन्थ से उद्धृत है –
(A) शिशुपालवधम् से (B) किरातार्जुनीयम् से
(C) नैषधीयचरितम् से (D) रघुवंशम् से

50. ''विनिश्चितार्थामिति वाचमाददे'' यह वाक्य किसके लिए प्रयुक्त है –
(A) युधिष्ठिर के लिए (B) वनेचर के लिए
(C) दुर्योधन के लिए (D) द्रौपदी के लिए

51. ''वञ्चनीयाः'' पद में प्रत्यय है –
(A) तव्यत् (B) अनीयर्
(C) ल्यप् (D) तुमुन्।

52. 'शास्ति' में लकार, पुरुष और वचन है –
(A) लट्लकार प्रथम पुरुष एकवचन
(B) लृट्लकार, प्रथमपुरुष एकवचन
(C) लिट् लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन
(D) लोट्लकार, प्रथमपुरुष एकवचन

53. ''अतोर्हसि क्षन्तुमसाधु साधु वा'' में कौन किससे क्षमायाचना कर रहा है –
(A) दुर्योधन युधिष्ठिर से (B) वनेचर युधिष्ठिर से
(C) अर्जुन किरात से (D) द्रौपदी युधिष्ठिर से

54. 'न वञ्चनीयाः प्रभवोऽनुजीविभिः' यह कथन किसका है–
(A) वनेचर का युधिष्ठिर से
(B) द्रौपदी का युधिष्ठिर से
(C) युधिष्ठिर का वनेचर से
(D) सेवक का जनता से

55. ''हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः'' यह सूक्ति कहाँ की है –
(A) किरातार्जुनीयम् प्रथमसर्ग की
(B) शिशुपालवधम् प्रथमसर्ग की
(C) रघुवंशमहाकाव्यम् प्रथमसर्ग की (D) नैषधीयचरितम् प्रथमसर्ग की

56. ''स किं सखा साधु न शास्ति योऽधिपम्'' इसे किसने कहा –

(A) युधिष्ठिर ने (B) दुर्योधन ने
(C) वनेचर ने (D) द्रौपदी ने

57. ''नयेन जेतुं जगतीं सुयोधनः'' यहाँ 'सुयोधन' पद प्रयुक्त है –
(A) भारवि के लिए (B) श्रीकृष्ण के लिए
(C) दुर्योधन के लिए (D) युधिष्ठिर के लिए

58. ''वितन्यते तेन नयेन पौरुषम्'' में किसके द्वारा अपने पुरुषार्थों का विस्तार किया जा रहा है –
(A) युधिष्ठिर के द्वारा (B) दुर्योधन के द्वारा
(C) वनेचर के द्वारा (D) भीम के द्वारा

59. ''निहन्ति दण्डेन स धर्मविप्लवम्'' किसके लिए कहा गया है –
(A) दुर्योधन (B) युधिष्ठिर
(C) वनेचर (D) द्रौपदी

60. ''प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः'' कौन किससे कह रहा है।
(A) वनेचर-द्रौपदी से (B) वनेचर-युधिष्ठिर से
(C) द्रौपदी-युधिष्ठिर से (D) इनमें से कोई नहीं

61. ''भवादृशेषु प्रमदाजनोदितं भवत्यधिक्षेप इवानुशासनम्'' कौन किससे कहता है –
(A) वनेचर-युधिष्ठिर से (B) वनेचर-दुर्योधन से
(C) द्रौपदी-युधिष्ठिर से (D) दुर्वासा-शकुन्तला से

62. ''व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवम्'' किसको सम्बोधित करके कहा गया है –
(A) युधिष्ठिर को (B) वनेचर को
(C) द्रौपदी को (D) दुर्योधन को

63. ''परिभ्रमँल्लोहितचन्दनोचितः'' इसमें द्रौपदी किसकी दुर्दशा का वर्णन करती है –
(A) युधिष्ठिर की (B) दुर्योधन की
(C) वनेचर की (D) भीम की

64. ''दुनोति नो कच्चिदयं वृकोदरः'' यहाँ 'वृकोदरः' पद किसके लिए प्रयुक्त है –
(A) युधिष्ठिर के लिए (B) भीम के लिए
(C) दुर्योधन के लिए (D) वनेचर के लिए

65. वनवासकाल में अर्जुन जङ्गल से क्या लाकर युधिष्ठिर को प्रदान करते हैं –
(A) स्वर्ण (B) चाँदी
(C) धन (D) वल्कलवस्त्र

66. किरातार्जुनीयम् में 'युगलभ्राता' के रूप में वर्णन है–
(A) भीम-अर्जुन (B) दुर्योधन-दुःशासन
(C) नकुल-सहदेव (D) वनेचर-युधिष्ठिर

67. ''क्रियासु युक्तैर्नृप चारचक्षुषो न..... प्रभवोऽनु-जीविभिः'' रिक्तस्थान की पूर्ति करें –
(A) रक्षणीयाः (B) वञ्चनीयाः
(C) प्रेषणीयाः (D) पालनीयाः

68. किरातार्जुनीयम् की सूक्ति नहीं है –
(A) हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः
(B) प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः
(C) विचित्ररूपाः खलु चित्तवृत्तयः
(D) भवन्ति नम्रास्तरवः फलोद्गमैः

69. ''प्रविश्य हि घ्नन्ति शठास्तथाविधान्'' यहाँ 'घ्नन्ति' पद में धातु है –
(A) घन् (B) हन्
(C) नन् (D) नी

70. 'परिभ्रमन्' पद में प्रत्यय है –
(A) शतृ (B) शानच्
(C) ल्युट् (D) घञ्

71. ''भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः'' किसने किससे कहा –
(A) भीम ने धृतराष्ट्र से (B) वनेचर ने युधिष्ठिर से
(C) द्रौपदी ने युधिष्ठिर से (D) वनेचर ने दुर्योधन से

72. ''कृतप्रणामस्य महीं महीभुजे'' यहाँ 'महीभुजे' पद में विभक्ति है –
(A) सप्तमी (B) चतुर्थी
(C) तृतीया (D) पञ्चमी

73. किरातार्जुनीयम् में 'किरात' शब्द किसका बोधक है –
(A) भीम का (B) शिव का
(C) अर्जुन का (D) दुर्योधन का

74. ''कुरूणामधिपः'' का तात्पर्य है –
(A) दुर्योधन (B) श्रीकृष्ण
(C) अर्जुन (D) वनेचर

75. वनेचर की बातें सुनने के बाद युधिष्ठिर कहाँ पहुँचे–
(A) द्रौपदी के पास (B) व्यास के पास
(C) श्रीकृष्ण के पास (D) दुर्योधन के पास।

76. दुर्योधन की शासनव्यवस्था जानने के लिए हस्तिनापुर किसे भेजा गया था –
(A) वनेचर को (B) भीम को
(C) नकुल को (D) किसी को नहीं

77. किरातार्जुनीयम् में अर्जुन को शिव से कौन सा अस्त्र प्राप्त हुआ था –
(A) पाशुपतास्त्र (B) आग्नेयास्त्र
(C) वायव्यास्त्र (D) ब्रह्मास्त्र

78. ''निगूढतत्त्वं नयवर्त्म विद्विषाम्'' यह उक्ति किसकी

है–

(A) वनवासी यक्ष की (B) वनेचर की
(C) युधिष्ठिर की (D) द्रौपदी की

79. 'वनेचर' किस ग्रन्थ का पात्र है –

(A) उत्तररामचरितम् (B) कादम्बरी
(C) शिशुपालवधम् (D) किरातार्जुनीयम्

80. किरातार्जुनीयम् में संवाद नहीं है –

(A) युधिष्ठिर-व्यास का (B) वनेचर-युधिष्ठिर का
(C) इन्द्र और अर्जुन का (D) सिंह और दिलीप का

81. भारवि का जन्म स्थान है –

(A) दक्षिणभारत का ज्ञानपुर
(B) दक्षिणभारत का अचलपुर
(C) पूर्वीभारत का सीतापुर
(D) मध्यभारत का शिवपुर

82. किरातार्जुनीयम् में कुशलगुप्तचर के रूप में चित्रित है –

(A) दुर्योधन (B) युधिष्ठिर
(C) वनचेर (D) द्रौपदी

83. किरातार्जुनीयम् निबद्ध है –

(A) अध्यायों में (B) सर्गों में
(C) काण्डों में (D) अङ्कों में

84. किरातार्जुनीयम् (प्रथम सर्ग) में किस पात्र का नाम नही आता है–

(A) वनेचर (B) द्रौपदी
(C) सुयोधन (D) श्रीकृष्ण

85. वनेचर युधिष्ठिर से कहाँ का समाचार बताता है –

(A) हस्तिनापुर के कर्ण का
(B) इन्द्रप्रस्थ के राजा का
(C) हस्तिनापुर के दुर्योधन का
(D) वनाधिराज सिंह का

86. किरातार्जुनीयम् का पात्र नही है –

(A) द्रौपदी (B) युधिष्ठिर
(C) सुयोधन (D) मुरला

87. किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग का आरम्भिक वक्ता है–

(A) वनेचर (B) श्रीकृष्ण
(C) भीम (D) दुर्योधन

88. वनेचर ने हस्तिनापुर का समाचार किससे कहा –

(A) भीम से (B) द्रौपदी से
(C) युधिष्ठिर से (D) अर्जुन से

89. भारवि किरातार्जुनीयम् का मङ्गलाचरण किस पद से करते हैं –

(A) 'श्री' से (B) 'लक्ष्मी' से
(C) 'ॐ' से (D) 'श्रीकृष्ण' से

90. भीम अपने शरीर पर लेपन करते थे –

(A) कमलरस का (B) लालचन्दन का
(C) पीले चन्दन का (D) सुगन्धित इत्र का

91. किरातार्जुनीयमहाकाव्य में कुल श्लोकों की संख्या हैं–

(A) 1050 (B) 1250
(C) 1030 (D) 1150

92. भारवि का आश्रयदाता राजा था –

(A) श्रीहर्ष (B) विक्रमादित्य
(C) पुलकेशिन का भाई विष्णुवर्धन (D) समुद्रगुप्त

93. "नारिकेलफलसम्मितं वचः" सूक्ति किस कवि के लिए है–

(A) श्रीहर्ष (B) माघ
(C) भारवि (D) दण्डी

94. "वनेचरः" में कौन सा प्रत्यय है –

(A) घञ् प्रत्यय (B) ट प्रत्यय
(C) अण् प्रत्यय (D) णिनि प्रत्यय

95. "शमेन सिद्धिं मुनयो न भूभृतः" यह कथन किसका है –

(A) द्रौपदी का (B) युधिष्ठिर का
(C) वनेचर का (D) दुर्योधन का

96. "द्विषां विघाताय विधातुमिच्छतः" के 'विघाताय' पद में धातु है –

(A) घ्रा (B) हन्
(C) विघ् (D) घात्

97. अर्जुन ने किस पर्वत पर तपस्या की –

(A) रैवतक (B) इन्द्रकील
(C) विन्ध्याचल (D) चित्रकूट

98. "किरातश्च अर्जुनश्च" यहाँ कौन सा समास है –

(A) द्विगु (B) द्वन्द्व
(C) तत्पुरुष (D) बहुव्रीहि

99. किरातार्जुनीयम् में प्रत्यय है –

(A) ढक् (B) छ
(C) अच् (D) घ

100. शिशुपालवधम् का उपजीव्य है –

(A) महाभारत आदिपर्व (B) महाभारत सभापर्व
(C) महाभारत वनपर्व (D) महाभारत शान्तिपर्व

उत्तरमाला

1. (A)	**2. (B)**	**3. (C)**	**4. (B)**	**5. (C)**	**6. (A)**
7. (C)	**8. (B)**	**9. (C)**	**10. (B)**	**11. (C)**	**12. (B)**
13. (D)	**14. (A)**	**15. (A)**	**16. (B)**	**17. (A)**	**18. (C)**
19. (A)	**20. (D)**	**21. (B)**	**22. (B)**	**23. (A)**	**24. (D)**
25. (B)	**26. (C)**	**27. (B)**	**28. (D)**	**29. (A)**	**30. (B)**
31. (D)	**32. (C)**	**33. (D)**	**34. (A)**	**35. (B)**	**36. (B)**
37. (A)	**38. (B)**	**39. (D)**	**40. (B)**	**41. (B)**	**42. (A)**
43. (C)	**44. (C)**	**45. (D)**	**46. (A)**	**47. (D)**	**48. (A)**
49. (B)	**50. (B)**	**51. (B)**	**52. (A)**	**53. (B)**	**54. (A)**

55. (A) **56.** (C) **57.** (C) **58.** (B) **59.** (A) **60.** (B) **61.** (C) **62.** (A) **63.** (D) **64.** (B) **65.** (D) **66.** (C)

67. (B) **68.** (D) **69.** (B) **70.** (A) **71.** (C) **72.** (B)
73. (B) **74.** (A) **75.** (A) **76.** (A) **77.** (A) **78.** (B)
79. (D) **80.** (D) **81.** (B) **82.** (C) **83.** (B) **84.** (D)
85. (C) **86.** (D) **87.** (A) **88.** (C) **89.** (A) **90.** (B)
91. (C) **92.** (C) **93.** (C) **94.** (B) **95.** (A) **96.** (B)
97. (B) **98.** (B) **99.** (B) **100.** (B)

4.11 महाकवि-माघ का शिशुपालवधम्

➢ शिशुपालवध-नामक महाकाव्य के रचयिता महाकवि माघ हैं। इन्हें विद्वानों ने श्रेष्ठ महाकाव्य का प्रणेता माना है-

काव्येषु माघः

➢ भारवि के द्वारा प्रवर्तित विचित्र-मार्ग को माघ ने बहुत ऊँचाई पर पहुँचाया तथा भारवि से आगे बढ़ने का सफल प्रयास किया।

➢ माघ के **पितामह सुप्रभदेव** थे जो राजा वर्मलात (या श्रीवर्मल) के सर्वाधिकारी अर्थात् दीवान थे। वे पुण्यात्मा, अनासक्त तथा सात्त्विक वृत्ति के पुरुष थे-

सर्वाधिकारी सुकृताधिकारी श्रीवर्मलाख्यस्य बभूव राज्ञः।
असक्तदृष्टिर्विरजाः सदैव देवोऽपरः सुप्रभदेवनामा।।

➢ सुप्रभदेव के पुत्र का नाम 'दत्तक' था जो अत्यन्त उदार, क्षमाशील, कोमल स्वभाव के एवं धर्मपरायण थे।

➢ इन्हें लोग 'सर्वाश्रय' भी कहते थे क्योंकि सबकी सहायता के लिए वे तत्पर रहते थे।इन्हीं दत्तक के पुत्र महाकवि माघ थे।

➢ माघ सूर्य-पूजक थे।

➢ माघ की मृत्यु 'पादशोथ'-रोग से हुई।

निवासस्थान-

➢ माघ का निवासस्थान श्रीमाल या भिन्नमाल नामक नगर में था।यह नगर अभी माउंटआबू से 40 मील पूर्व जोधपुर प्रमण्डल (राजस्थान) में अवस्थित है।यह नगर उस समय गुर्जर राज्य की राजधानी के रूप में प्रसिद्ध था

➢ श्रीमाल (भीनमाल) में संस्कृत विद्या का महान् केन्द्र था, अनेक विद्याएँ यहाँ पढ़ायी जाती थीं।

➢ वर्मलात नामक राजा इसी नगर में रहते थे। माघ के पितामह उनके प्रधानमन्त्री थे। माघ का परिवार बहुत धनाढ्य था जगत्स्वामी सूर्य के मन्दिर के ये लोग उपासक थे। माघ अनेक शास्त्रों के विद्वान् थे, राजाश्रित होने के कारण अनेक शास्त्रों के अध्ययन की सुविधा इन्हें प्राप्त थी।

माघ का समय-

➢ माघ को 675 ई. के अनन्तर माना जा सकता है। अधिकतर विद्वान् 700 ई. के आसपास ही माघ को स्वीकार करने के पक्षधर हैं।

शिशुपालवध-

➢ यह महाकवि माघ की एकमात्र कृति 20 सर्गों के महाकाव्य के रूप में है।

➢ इसमें 1645 पद्य हैं, पन्द्रहवें सर्ग में 34प्रक्षिप्त श्लोक हैं जिनकी व्याख्या मल्लिनाथ ने नहीं की है। पाँच पद्य कविवंश वर्णन के हैं उन्हें मिलाकर माघ की रचना 1650 पद्यों की है।,

शिशुपालवध की कथा

➢ **सर्ग 1**- देवर्षि नारद का द्वारका में आगमन,श्रीकृष्ण द्वारा

उनका सत्कार, नारद द्वारा शिशुपाल के पूर्वजन्मों तथा उसके अत्याचारों का वर्णन, शिशुपाल को मारने के लिए प्रेरित करना।

- **सर्ग 2**- श्रीकृष्ण, बलराम और उद्धव की मन्त्रणा,बलराम का शिशुपाल पर आक्रमण का प्रस्ताव किन्तु उद्धव का नीतिपूर्ण प्रस्ताव कि इस विषय में शीघ्रता न करके युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में सेना-सहित भाग लें।
- **सर्ग 3**- द्वारका से श्रीकृष्ण का इन्द्रप्रस्थ के लिए प्रस्थान। नगरी, सेना और समुद्र का वर्णन।
- **सर्ग 4**- रैवतक पर्वत का वर्णन।
- **सर्ग 5**- रैवतक पर सैन्य-शिविर की स्थापना।
- **सर्ग 6**- छह ऋतुओं का द्रुतविलम्बित छन्द में 'यमक' का निवेश करते हुए वर्णन।
- **सर्ग 7**- वन-विहार-वर्णन
- **सर्ग 8**- जलक्रीडा-रात्रि-विहार का वर्णन।
- **सर्ग 9**- सन्ध्या, चन्द्रोदय तथा शृङ्गार-विधान का वर्णन।
- **सर्ग 10**- पान-गोष्ठी एवं रात्रि-विहार का वर्णन।
- **सर्ग 11**- प्रभात-वर्णन।
- **सर्ग 12**- श्रीकृष्ण का पुनः प्रस्थान तथा यमुना नदी का वर्णन।
- **सर्ग 13**- श्रीकृष्ण और पाण्डवों का मिलना, नगर-प्रवेश तथा दर्शक नारियों की चेष्टाओं का, अश्वघोष तथा कालिदास से प्रतिस्पर्धा करते हुये वर्णन।
- **सर्ग 14**- युधिष्ठिर द्वारा राजसूय यज्ञ का प्रस्ताव, श्रीकृष्ण की पूजा तथा भीष्म-द्वारा उनकी स्तुति।
- **सर्ग 15**- शिशुपाल का कोप और उनके पक्ष के राजाओं का युद्ध के लिए सन्नद्ध होना।
- **सर्ग 16**- शिशुपाल के दूत का श्रीकृष्ण के समक्ष उभयार्थक शब्दों का प्रयोग, सात्यकि का उत्तर,दूत का पुनः शिशुपाल के पराक्रम का वर्णन करना।
- **सर्ग 17**- श्रीकृष्ण के पक्ष के राजाओं का कोप, सेना की प्रस्तुति तथा प्रस्थान।
- **सर्ग 18**- सेनाओं के घोर युद्ध का वर्णन
- **सर्ग 19**- चित्रालङ्कार से पूर्ण पद्यों के द्वारा व्यूह-रचना एवं विचित्र युद्ध का वर्णन।
- **सर्ग 20** -श्रीकृष्ण और शिशुपाल का शस्त्र-युद्ध, दिव्यास्त्र युद्ध तथा वाग्युद्ध, शिशुपाल के शब्दों से कुपित कृष्ण द्वारा सुदर्शनचक्र से शिशुपाल का शिरश्छेदन , शिशुपाल के तेज का विजयी कृष्ण में प्रवेश।
- यह कथानक महाभारत के सभापर्व (अध्याय 35-43) से लिया गया है, जिसमें युधिष्ठिर के यज्ञ में शिशुपाल के मारे जाने की कथा है।
- श्रीमद्भागवत पुराण के दशम स्कन्ध (अध्याय 71-75) में भी शिशुपाल की कथा प्रायः वैसी ही है, जैसी इस महाकाव्य में वर्णित है इसलिए बहुत से विद्वान् भागवतपुराण को ही इस महाकाव्य का उपजीव्य (स्रोत) बताते हैं।
- विद्वानों के बीच एक लोकोक्ति है- **काव्येषु माघः कवि-कालिदासः।** अर्थात् कवि की दृष्टि से कालिदास श्रेष्ठ हैं किन्तु काव्य (महाकाव्य) के लेखन में माघ उत्कृष्ट हैं
- अलङ्कारवादी महाकवियों में भी माघ अग्रणी हैं क्योंकि प्रौढ़ पाण्डित्य के साथ कथानक को विचित्र मार्ग पर ले जाने की क्षमता इनमें सर्वाधिक है।
- कृष्ण के द्वारा शिशुपाल के मारे जाने का कथानक इतिहास-प्रसिद्ध है, यह कथा महाभारत और भागवतपुराण पर आश्रित है
- इसके नायक कृष्ण हैं जो यदुपति तथा विष्णु के अवतार (जगन्निवासः) हैं।
- महाकाव्य का **प्रधानरस वीर** है, अन्य रसों में शृंगार,हास्य, अद्भुत, भयानक इत्यादि का स्वाभाविक रूप से निवेश हुआ है
- इसके सर्ग छन्दों के नियम का पालन करते हैं पूरा सर्ग एक छन्द में हो और सर्गान्त में एक दो पद्य दूसरे छन्दों में हों।
- प्रथम सर्ग में वंशस्थ है,द्वितीय सर्ग में अनुष्टुप्, तृतीय सर्ग में उपजाति है।
- पंचम सर्ग में वसन्ततिलका है तो षष्ठसर्ग द्रुतविलम्बित छन्द का है, सबके अन्त में छन्द परिवर्तित होते रहें है।
- चतुर्थ सर्ग में अनेक छन्दों का प्रयोग है।
- माघ ने शिशुपालवध के 19वें सर्ग में एकाक्षर,द्व्यक्षर, सर्वतोभद्र, मुरजबन्ध, प्रतिलोमयमक (33-34), गोमूत्रिकाबन्ध, समुद्गयमक (58), अर्धप्रतिलोम-यमक (88) तथा चक्रबन्ध (120) जैसा श्रमसाध्य चित्रकाव्यों का प्रयोग किया है।
- युद्ध का वर्णन माघ ने कई सर्गों में किया है। 19वाँ सर्ग तो चित्रकाव्य के रूप में विचित्र युद्ध का भ्रम देता ही है 20वें सर्ग में दोनों पक्षों के नेताओं द्वारा विविध दिव्यास्त्रों का प्रयोग होता है, शिशुपाल के अस्त्रों को कृष्ण काटते जाते हैं।
- षष्ठसर्ग का षड्ऋतुवर्णन तथा एकादश सर्ग का प्रभातवर्णन अधिक आवर्जक है।
- माघ के पाण्डित्य और कवित्व के विषय में कई प्रशस्तियाँ विख्यात हैं। इनके शब्द भाण्डागार के विषय में कहा गया है-**नवसर्गगते माघे नव शब्दो न जायते (विद्यते)** अर्थात् माघ काव्य में नौ सर्ग समाप्त कर लेने पर संस्कृत में कोई नया शब्द जानने को रह ही नही जाता।
- माघ ने धातुरूपों के प्रयोग स्वाभाविक रूप से किये हैं। जैसे- अचूचुरत् (1/16), विरेजिरे (1/21), अभ्युपेयुषी (1/24), न्यधायिषाताम् (1/13), अपूपुजत् (1/14), निवेशयामासिथ (1/34), उपाजिहीथाः (1/37), अकारि तथा अशिश्रियत् (1/46) , भूतकाल में समुच्चयार्थक लोट् लकार का प्रयोग (1/ 51) अनुचकम्पिरे (1/61), दुःखाकरोति (2/11) इत्यादि।
- माघ की एक अन्य प्रशस्ति है- **माघे मेघे गतं वयः।** अर्थात् महाकाव्य के अध्ययन में और मेघदूत का आनन्द लेने में सारी आयु बीत गयी।
- **माघे सन्ति त्रयो गुणाः-** माघ-विषयक प्रशस्तियों में यह सर्वाधिक प्रसिद्ध है। इसमें एकसाथ कालिदास,भारवि और

दण्डी (या श्रीहर्ष) के साथ माघ की महत्ता का निरूपण किया गया है

उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्।

- **दण्डिनः पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयो गुणाः॥** अर्थात् महाकवि कालिदास की विशिष्टता उपमा के कारण है तो माघ में तीनों गुणों का समन्वित प्रयोग प्रमुख वैशिष्ट्य है।
- माघ की सामान्य उपमाओं में यह बहुत प्रसिद्ध है,जिसके कारण उन्हें '**घण्टामाघ**' का विरुद प्राप्त हुआ है-

उदयति विततोर्ध्व - रश्मि - रज्जा
वहिमरुचौ हिमधाम्नि याति चास्तम्।
वहति गिरिरयं विलम्बि-घण्टा-
द्वय-परिवारित-वारणेन्द्र-लीलाम्॥ (4/20)

- राजनीति की तुलना शब्दविद्या से की गयी है- **शब्दविद्येव नो भाति राजनीतिरपस्पशा (2/112)**

सूक्तियाँ

1. **गृहानुपैतुं प्रणयादभीप्सवो भवन्ति नापुण्यकृतां मनीषिणः (1/14)** महात्मा लोग अपुण्यात्माओं के घर प्रेम से आना नही चाहते।
2. **श्रेयसि केन तृप्यते (1/29)** मंगलमय कार्य में कौन तृप्ति हो सकता है।
3. **सदाभिमानैकधना हि मानिनः (1/67)** मानी (मनस्वी) लोगों का एक मात्र धन स्वाभिमान ही होता है
4. **ज्ञातसारोऽपि खल्वेकः सन्दिग्धे कार्यवस्तुनि (2/12)** सारभूत तत्त्व को जानने पर भी अकेला व्यक्ति अपने कर्तव्य के निर्धारण में संशययुक्त रहता है।
5. **महीयांसः प्रकृत्या मितभाषिणः (2/13)** बड़े लोग स्वभाव से ही कम बोलते हैं।
6. **क्रियासमभिहारेण विराध्यन्तं क्षमेत कः (2/43)** बार-बार विरोध करने वाले को कोई नही सह सकता।
7. **सर्वः स्वार्थं समीहते (2/65)** सभी लोग अपना स्वार्थ देखते हैं।
8. **नान्यस्य गन्धमपि मानभृतः सहन्ते (5/42)** मनस्वी लोग दूसरे की गन्ध को भी नहीं सहते।
9. **शास्त्रं हि निश्चितधियां क्व न सिद्धिमेति (5/47)** निश्चित बुद्धि वाले व्यक्तियों का शास्त्र सर्वत्र सफल होता है।
10. **मन्दोऽपि नाम न महानवगृह्य साध्यः (5/49)** बलवान् व्यक्ति मूर्ख भी क्यों न हो उसे बलपूर्वक वश में नहीं किया जा सकता।
11. **समय एव करोति बलाबलम् (6/44)** समय के प्रभाव से ही कोई बली या निर्बल होता है।
12. **परिभवोऽरिभवो हि सुदुःसहः (6/45)** शत्रु से उत्पन्न पराजय अत्यधिक दुःसह होती है।
13. **भवति महत्सु न निष्फलः प्रयासः (7/1)** महापुरुषों की (सेवा का) कोई प्रयास व्यर्थ नहीं जाता।
14. **क्षणे क्षणे यन्नवतामुपैति तदेव रूपं रमणीयतायाः (4/17)** जो प्रत्येक क्षण में नवीन प्रतीत हो वही सुन्दरता का स्वरूप है।
15. **क्षतसकलविपक्षस्तेजसः स स्वभावः (11/59)** सभी विपक्षियों को नष्ट करना तेज का स्वभाव ही है।
16. **हरत्यघं सम्प्रति हेतुरेष्यतः, शुभस्य पूर्वाचरितैः कृतं शुभैः। शरीरभाजां भवदीयदर्शनं, व्यनक्ति कालत्रितयेऽपि योग्यताम्।**

- युद्ध विद्या का भी निवेश अन्तिम सर्गों में व्यापक रूप से उन्होंने किया है।इसी दृष्टि से यह काव्य शास्त्रकाव्य के रूप में प्रसिद्ध है।

माघ के छन्द प्रयोग-

- माघ ने छन्दों का वैविध्य प्रदर्शित किया है। सर्ग के मुख्य छन्द भी इन्होंने सभी सर्गों में पृथक रखें हैं। केवल अनुष्टुप् का प्रयोग दो सर्गों में है (2,19) अन्य सर्गों में वंशस्थ (सर्ग-1) उपजाति (सर्ग-3), वसन्ततिलका (सर्ग-5), द्रुतविलम्बित (सर्ग-6), पुष्पिताग्रा (सर्ग-7), प्रहर्षिणी (सर्ग-8), प्रमिताक्षरा (सर्ग-9), स्वागता (सर्ग-10), मालिनी (सर्ग-11), वंशस्थ और इन्द्रवंशो की उपजाति (सर्ग-12), मंजुभाषिणी (सर्ग-13), रथोद्धता (सर्ग-14), उद्गता (सर्ग-15), वैतालीय (सर्ग-16),रुचिरा (सर्ग-17), शालिनी (सर्ग-18), औपच्छन्दसिक (सर्ग-20)ये पृथक्-पृथक् मुख्य छन्द हैं। चतुर्थसर्ग में 22 छन्दों का प्रयोग है। पृथ्वी, प्रभा, तोटक, आर्या, शिखरिणी, हरिणी, स्रग्धरा, मत्तमयूर, मन्दाक्रान्ता और शार्दूलविक्रीडित का भी इन्होंने प्रयोग किया है।
- भारवि ने 'किरातार्जुनीय' में शिव का गुणगान किया है तो माघ ने विष्णु के अवतार कृष्ण का माहात्म्य 'शिशुपालवध' में वर्णित किया है।
- भारवि तथा माघ दोनों ने महाभारत से ही अपने ग्रन्थों के कथानक लिये 'श्री' शब्द से काव्यों का आरम्भ किया और संवाद से प्रथम सर्ग का प्रवर्तन किया
- माघकाव्य में कृष्ण-नारद-संवाद है तो भारवि के काव्य में युधिष्ठिर और वनेचर का संवाद है दोनों संवाद ही महाकाव्य की मुख्य घटनाओं को प्रविर्तितकरते हैं
- वनेचर की सूचना से यदि पाण्डवों को शक्ति-संग्रह के अर्थात् महाकवि कालिदास की विशिष्टता पदलालित्य के कारण है तो माघ में तीनों गुणों का समन्वित प्रयोग प्रमुख वैशिष्ट्य है।

- माघ की सामान्य उपमाओं में यह बहुत प्रसिद्ध है, जिसके कारण उन्हें '**घण्टामाघ**' का विरुद प्राप्त हुआ है-

उदयति विततोर्ध्व - रश्मि - रज्जा
वहिमरुचौ हिमधाम्नि याति चास्तम्।
वहति गिरिरयं विलम्बि-घण्टा-
द्वय-परिवारित-वारणेन्द्र-लीलाम्॥ (4/20)

- राजनीति की तुलना शब्दविद्या से की गयी है- **शब्दविद्येव नो भाति राजनीतिरपस्पशा (2/112)**

➤ भारवि सर्ग 5 को और माघ सर्ग 4 को विविध छन्दों से भर देते हैं यहाँ भारवि ने 16 और माघ ने 22 छन्दों का प्रयोग किया है।
➤ भारवि के काव्य में द्रौपदी तथा भीम युधिष्ठिर को उत्तेजित करते हैं तो माघकाव्य में कृष्ण को नारद और बलराम उत्तेजित करते हैं।
➤ युधिष्ठिर को व्यास का सत्परामर्श मिलता है तो कृष्ण को उद्धव का दोनों महाकाव्यों में पुष्पावचय (क्रमशःसर्ग 8 तथा 7), जलक्रीड़ा (उभयत्र सर्ग 8), प्रभात-वर्णन (सर्ग 9तथा माघ में सर्ग 11), सन्ध्या एवं चन्द्रोदय (उभयत्र सर्ग 9), शिबिर-सन्निवेश (क्रमशः सर्ग 7 तथा 5), सुरत-पानगोष्ठी (क्रमशः सर्ग 9तथा 10), नायक को देखकर स्त्रियों की चेष्टाएँ (क्रमशः सर्ग 10 तथा 13), युद्ध-वर्णन (भारविकाव्य में सर्ग 14 तथा 15 माघकाव्य में सर्ग 15, 17-19), चित्रालंकार (भारवि-15, माघ 19) इत्यादि का प्रयोग है किन्तु प्रत्येक स्थल पर भारवि से माघ आगे बढ़ जाते हैं।
➤ भारवि ने अपने काव्य के सर्ग छोटे रखे हैं जबकि माघकाव्य के सर्ग उनसे बड़े हैं।
➤ पण्डितों और समीक्षकों को यह पद्धति आकर्षक लगी। इसीलिए उन्होंने कहा-

तावभा भारवेर्भाति यावन्माघस्य नोदयः।

➤ भारवि की शोभा माघ के उदय के पूर्व तक ही है माघ का उदय होने पर सूर्य की किरणें जैसे मन्द हो जाती हैं वैसे भारवि की शोभा भी मन्द हो गयी।

टीकायें -

➤ शिशुपालवध पर अनेक टीकाएँ हैं जिनमें वल्लभदेव कृत' सन्देहविषौषधि', मल्लिनाथ-कृत 'सर्वङ्कषा', भरतमल्लिक-कृत 'सुबोधा' तथा दिनकरमिश्र -कृत 'सुबोधिनी' मुख्य हैं हिन्दी साहित्य सम्मलेन, प्रयाग से राम प्रताप त्रिपाठी का एवं चौखम्बा विद्याभवन से हरगोविन्द शास्त्री का हिन्दी-अनुवाद पूरे ग्रन्थ पर प्रकाशित है।

शिशुपालवधम्-बिन्दुवार अध्ययन

➤ महाभारत पर आधारित महाकाव्य है - **शिशुपालवध**
➤ शिशुपालवधस्योपजीव्यमस्ति - **महाभारतम्**
➤ 'शिशुपालवधम्' की कथावस्तु विभाजित है - **सर्गों में**
➤ शिशुपालवधस्य किं वैशिष्ट्यम् - **त्रयो गुणाः**
➤ रैवतक पर्वत का वर्णन कहाँ है - **शिशुपालवधम् में**
➤ शिशुपाल का वध किसने किया - **कृष्ण ने**
➤ शिशुपाल के किस सर्ग में यमुना नदी का वर्णन है - **द्वादश सर्ग में**
➤ शिशुपालवधस्य प्रथमसर्गे द्वारिकायां कस्यागमनं दृश्यते? - **नारदस्य**
➤ 'श्रियः पतिः श्रीमति शासितुं जगत्' में 'श्रीमति'शब्द निम्नांकित में से किसका विशेषण है-**वसुदेव का घर का**
➤ 'कुथेननागेन्द्रमिवेन्द्रवाहनम्'इतिउपमासूचकवाक्येनशिशुपालवधे लक्षितः - **नारदः**
➤ 'पिशङ्गमौञ्जीयुजमर्जुनच्छविम्'-किसे समझ लिया गया - **नारद को**
➤ 'शिशुपालवधम्' के रचयिता कौन हैं -**माघः**
➤ 'शिशुपालवध' महाकाव्य में कितने सर्ग हैं -**20** (बीस)
➤ किस महाकाव्य का प्रारम्भ और समाप्ति 'श्री' शब्द से होता है - **शिशुपालवधम्**
➤ शिशुपालवधमहाकाव्यस्य प्रथमसर्गस्य नाम किम्? - **कृष्णनारदसम्भाषणम्**
➤ 'शिशुपालवधम्' के प्रथमसर्ग में कुल कितने श्लोक हैं? - **पचहत्तर (75)**
➤ शिशुपालवध महाकाव्य के किस सर्ग में नारद औरश्रीकृष्ण का वर्णन प्राप्त होता है - **प्रथम सर्ग में**
➤ 'शिशुपालवधम्' के प्रथम सर्ग का प्रधान छन्द है? - **वंशस्थ**
➤ 'शिशुपालवधम्' महाकाव्य में प्रमुख रस है? - **वीर**
➤ शिशुपालवधस्य .... सर्गे श्रीकृष्णनारदसम्भाषणमस्ति? - **प्रथमे**
➤ 'शिशुपालवधम्' का मूलस्रोत है -**महाभारतसभापर्व**
➤ 'श्री' इति शब्देन कस्य काव्यस्य मङ्गलाचरणं प्रारभ्यते - **शिशुपालवधस्य**
➤ उपमा अर्थगौरव और पदलालित्य ये तीन गुण इस काव्य में है - **शिशुपालवधम्**
➤ किसमें नारद का वर्णन है? - **शिशुपालवधम्**
➤ कस्मिन् सन्ति त्रयो गुणाः? - **शिशुपालवधे**
➤ नारदमुनेः स्वागतार्थं को जवेन पीठादुदतिष्ठत्? - **अच्युतः (कृष्णः)**
➤ 'सतीव योषित्प्रकृतिः सुनिश्चला पुमांसमभ्येति भवान्तरेष्वपि।।' .... इति पद्यांशानुसारं 'भवान्तरेषु पुमांसं' किम् अभ्येति? - **स्वभावः**
➤ 'रथाङ्गपाणेः पटलेन रोचिषामृषित्विषः संवलिता विरेजिरे'- 'इत्यत्र रथाङ्गपाणिः' कः -**कृष्णः**
➤ रावणभयात् हेमाद्रिगुहागृहान्तरं कः दिवसानि निनाय - **कौशिकः**
➤ शिशुपालवधानुसारेण कः हिरण्यगर्भाङ्गभूः मुनिः - **नारदः**
➤ किं नाम महाकाव्यं 'श्रियः पतिः' इति उल्लेखेन प्रारभ्यते? - **शिशुपालवधम्**
➤ श्रीकृष्णस्य सम्मुखं गौरवर्णः नारदः कस्याभिरामताम् अचोरयत्? - **चन्द्रमसः**
➤ माघकाव्ये श्रीकृष्णः अम्बरादवतरन्तं कं ऋषिं ददर्श? - **नारदम्**
➤ शिशुपालवध के अनुसार शिशुपाल है - **रावण का जन्मान्तर**
➤ ''हृतेऽपि भारे महतस्त्रपाभरादुवाह दुःखेन भृशानतं शिरः''

कस्य वर्णना इयम्? - **यमवाहनमहिषस्य**

- "स तप्तकार्तस्वरभास्वराम्बरः ...." इति, शिशुपालवधस्य श्लोकांशे 'कार्तस्वर' पदस्य कोऽर्थः? - **सुवर्णम्**
- "सदाभिमानैकधना हि मानिनः" यह सूक्ति है - **शिशुपालवध में**
- "सतीव योषित्प्रकृतिः सुनिश्चला पुमांसमभ्येति भवान्तरेष्वपि" पंक्ति किस ग्रन्थ से उद्धृत है? - **शिशुपालवधम्**
- "नवसर्गगते माघे नव शब्दो न विद्यते" यह सूक्ति किस ग्रन्थ के लिए प्रचलित है -**शिशुपालवधम्**
- 'गतं तिरश्चीनमनूरुसारथेः प्रसिद्धमूर्ध्वज्वलनं हविर्भुजः।' शिशुपालवधे अस्मिन् पद्यांशे 'अनूरुसारथिः' भवति - **सूर्यः**
- "महीयांसः प्रकृत्या मितभाषिणः" इदं वाक्यमस्ति - **शिशुपालवधे**
- 'श्रेयसि केन तृप्यते' सूक्ति ग्रहण की गई है - **शिशुपालवधात्**
- "शरीरभाजां भवदीयदर्शनं व्यनक्ति कालत्रितयेऽपि योग्यताम्" इदं वाक्यमस्ति - **माघकाव्ये**
- "शरीरभाजां भवदीयदर्शनं व्यनक्ति कालत्रितयेऽपि योग्यताम्" यह सूक्ति किस ग्रन्थ में है? - **शिशुपालवधे**
- "क्षणे क्षणे यन्नवतामुपैति तदेव रूपं रमणीयतायाः" इयमुक्तिः वर्तते? - **शिशुपालवधे**
- "हरत्यघं सम्प्रति हेतुरेष्यतः शुभस्य पूर्वाचरितैः कृतं शुभैः। शरीरभाजां भवदीयदर्शनं व्यनक्ति कालत्रितयेऽपि योग्यताम्।।" इस पद्य का कथन किया है -**शिशुपालवध में श्रीकृष्ण ने**
- "क्षणे क्षणे यन्नवतामुपैति, तदेव रूपं रमणीयतायाः" किसने प्रतिपादित किया? - **माघ ने**
- "तथापि शुश्रूषुरहं गरीयसीर्गिरोऽथवा श्रेयसि केन तृप्यते"- शिशुपालवधकाव्ये इतीदं कस्य वचनम्-**श्रीकृष्णस्य वचनम्**
- "न चक्रमस्याक्रमताधिकन्धरम्" कस्य - **रावणस्य**
- स बाल आसीद्वपुषा चतुर्भुजो कः - **शिशुपालः**
- शिशुपालवधे शिशुपालः कीदृशं पात्रम्? - **प्रतिनायकः**
- शिशुपालवधे राजसूययज्ञः केनायोजितः - **युधिष्ठिरेण**
- शिशुपालवधमहाकाव्यानुसारम् इन्द्रस्य सन्देशमादाय कृष्णसभायां क आगतः - **नारदर्षिः**
- 'निधिः श्रुतीनां धनसम्पदामिव।' कस्येदं वर्णनम् - **नारदमुनेः**
- श्रीकृष्णस्य पार्श्वे आकाशमार्गेण कः समागतः - **नारदः**
- "शरीरभाजां भवदीयदर्शनं व्यनक्ति कालत्रितयेऽपि योग्यताम्" शिशुपालवधे कस्य प्रशंसेयम्? - **नारदस्य**
- 'नमुचिद्विषा' इत्यस्य पदस्य कोऽर्थः -**इन्द्रेण**
- 'जगत्प्रभोरप्रसहिष्णु वैष्णवं न चक्रमस्याक्रमताधि कन्धरम्' श्लोकांश मे 'वैष्णवं' पद प्रयुक्त हुआ है - **विष्णुउपासक**
- शिशुपालवधे-"विभिन्नशङ्खः कलुषीभवन्मुहुर्मदेन दन्तीव मनुष्यधर्मणः" कस्य वर्णना इयम् - **कुबेरस्य**
- कस्य गृहे वसता श्रीकृष्णेन नारदः दृष्टः - **वसुदेवस्य**
- नारद-वीणायाः नाम किम् - **महता**

वस्तुनिष्ठप्रश्नाः

1. निम्न में से कौन प्रशस्ति "माघ" के लिए नहीं प्रयुक्त है-
(A) माघे सन्ति त्रयो गुणाः
(B) नवसर्गगते माघे नवशब्दो न विद्यते
(C) मुरारिपदचिन्ता चेत्तदा माघे रतिं कुरु
(D) वृत्तच्छत्रस्य सा कापि वंशस्थस्य

2. माघ किसके लिए प्रसिद्ध हैं -
(A) उपमा (B) अर्थगौरव
(C) पदलालित्य (D) सभी

3. प्रभावकचरित' के अनुसार माघ की माता का क्या नाम है-
(A) गौरी (B) ब्राह्मी
(C) पिङ्गला (D) सुशीला

4. 'शिशुपालवधम्' का उपजीव्य ग्रन्थ है-
(A) महाभारत का वनपर्व (B) महाभारत का आदिपर्व
(C) महाभारत का सभापर्व (D) महाभारत का भीष्मपर्व

5. 'शिशुपालवधम्' के अनुसार देवताओं के मन में प्रथम भय की स्थापना किसके द्वारा किया गया -
(A) रावण के (B) शिशुपाल के
(C) हिरण्यकशिपु के (D) पिनाक के

6. सुमेलित करें-
(अ) हर्षचरितम् (1) 7 उच्छ्वास
(ब) शिशुपालवधम् (2) 6 अंक
(स) वेणीसंहारम् (3) 8 उच्छ्वास
(द) नलचम्पू (4) 20 सर्ग

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	1	2	3	4
(B)	2	1	4	3
(C)	3	4	2	1
(D)	3	4	1	2

7. शिशुपाल किस नगरी में निवास कर रहा है-
(A) कोशल (B) माहिष्मती
(C) अवन्ति (D) मगध

8. शिशुपालवधम् में मङ्गलाचरण का प्रकार है-
(A) आशीर्वादात्मक (B) नमस्कारात्मक
(C) वस्तुनिर्देशात्मक (D) इनमें से कोई नहीं

9. शिशुपालवधम् के अनुसार चन्द्रमा की कितनी कलायें होती हैं-
(A) 64 (B) 16
(C) 27 (D) 12

10. "स बाल आसीद्वपुषा चतुर्भुजो,मुखेन

पुर्णेन्दुनिभस्त्रिलोचनः।'' इस पंक्ति में ''त्रिलोचन'' पद से किसका बोध हो रहा है-
(A) चन्द्र का (B) विष्णु का
(C) नारद का (D) शिशुपाल का

11. ''चतुर्भुजः'' पद में समास है-
(A) अव्ययीभाव (B) द्विगु समास
(C) बहुव्रीहि समास (D) तत्पुरुष

12. ''गतं तिरश्चीनमनूरुसारथेः,प्रसिद्धमूर्ध्वज्वलनं हविर्भुजः।'' इस पंक्ति में 'अनूरुसारथेः' पद का सम्बन्ध है-
(A) श्रीकृष्ण से (B) नारद से
(C) अग्नि से (D) सूर्य से

13. किस कवि ने एक से अधिक महाकाव्यों की रचना की है-
(A) माघ (B) भारवि
(C) वाल्मीकि (D) कालिदास

14. ''क्रमादमुं नारद इत्यबोधि सः।'' इस पंक्ति में ''अबोधि'' पद कहाँ का है -
(A) बुध् धातु,लुङ् लकार प्र.पु.एकवचन
(B) बुध् धातु,लङ् लकार म0पु0एकवचन
(C) बुध् धातु,लङ् लकार उ0पु0एकवचन
(D) बुध् धातु,लृट् लकार प्र.पु.एकवचन

15. निम्न मे से कौन सा विशेषण 'श्रीकृष्ण' के लिए नहीं प्रयुक्त हुआ है -
(A) चक्रिणः (B) अच्युतः
(C) देवकीसुतं (D) शितिवाससः

16. निम्न में से कौन-सा विशेषण नारद के लिए नहीं प्रयुक्त हुआ है -
(A) धातुः सुतः (B) तपोनिधिः
(C) आदिपुरुषः (D) ऋषित्विषः

17. ''शरीरभाजां भवदीयदर्शनं व्यनक्ति कालत्रितयेऽपि योग्यताम्' इस पंक्ति में ''भवदीय'' पद से किसका बोध होता है -
(A) श्रीकृष्ण का (B) इन्द्र का
(C) नारद का (D) शिव का

18. शिशुपालवधम् के अनुसार किसका दर्शन तीनों कालों में पवित्रता को प्रकट करता है-
(A) श्रीकृष्ण का (B) नारद का
(C) पुण्डरीकाक्ष का (D) शिव का

19. ''ऋते रवेः क्षालयितुं क्षमेत कः क्षपातमस्काण्डमलीमसं नभः॥'' इस पंक्ति में 'क्षालयितुं' पद का क्या अर्थ है-
(A) आकाश (B) उन्मत्त
(C) निर्मल करना (D) सूर्य के बिना

20. निम्न मे से कौन-सा विशेषण ''श्रीकृष्ण'' के लिए नहीं प्रयुक्त हुआ है-
(A) विश्वम्भर (B) आदिपुरुष
(C) उपेन्द्र (D) व्रती

21. शिशुपालवधम् के प्रथमसर्ग में कुल कितने श्लोक हैं-
(A) 70 (B) 75
(C) 80 (D) 46

22. निम्न मे से कौन-सा विशेषण ''बलराम'' के लिए नहीं प्रयुक्त हुआ है -
(A) सीरपाणिः (B) रेवतीजानिः
(C) मुसलपाणिः (D) द्वैमातुरः

23. ''क्षणं क्षणोत्क्षिप्तगजेन्द्रकृत्तिना स्फुटोपमं भूतिसितेन शम्भुना'' इस पंक्ति में 'भूतिसितेन' पद से किसका बोध हो रहा है-
(A) नारद (B) शिव
(C) श्रीकृष्ण (D) गजासुर

24. देवताओं के द्वारा तीनों सन्ध्याओं के समय किसको नमस्कार किया जाता था-
(A) रावण (B) श्रीकृष्ण
(C) हिरण्यकशिपु (D) शिशुपाल

25. ''प्रभुर्बुभूषुर्भुवनत्रयस्य यः '' इस पंक्ति में 'यः' पद से किसका बोध हो रहा है-
(A) शिशुपाल (B) रावण
(C) नारद (D) हिरण्यकशिपु

26. निम्न मे से कौन शिशुपालवधम् की पंक्ति नहीं है-
(A) अभीक्ष्णमुष्णैरपि तस्य सोष्मणः।
(B) सदाभिमानैकधना हि मानिनः।
(C) स राशिरासीन्महसां महोज्ज्वलः।
(D) असंशयं सम्प्रति तेजसा रविः।

27. निम्न मे से कौन शिशुपालवधम् की पंक्ति है-
(A) दिदेश यानाय निदेश कारिणः।
(B) विवेश गत्वा स विलासकाननम्।
(C) ददर्श मालूरफलं पचेलिमम्।
(D) विपादनीया हि सतामसाधवः।

28. किसके भय के कारण देवताओं ने दुर्गों का निर्माण कराया-
(A) शिशुपाल (B) हिरण्यकशिपु

(C) रावण (D) द्वैमातुर

29. ''सटाच्छटाभिन्नघनेन बिभ्रता नृसिंह सैहीमतनुं तनुं त्वया।'' इस पंक्ति में 'त्वया' पद से किसका बोध हो रहा है-

(A) रावण (B) श्रीकृष्ण
(C) शिशुपाल (D) नारद

30. ''प्रतिचस्करे''-इस पद में मूल धातु है-

(A) चस्क् धातु (B) कृ धातु
(C) स्कृ धातु (D) क्री धातु

31. 'नमुचिद्विषा'- किस देवता का विशेषण है-

(A) यमराज (B) वरुण
(C) सूर्य (D) इन्द्र

32. निम्न में से कौन सा इन्द्र का विशेषण नहीं है-

(A) कौशिक (B) बलस्य शत्रु
(C) नमुचिद्विषा (D) प्रकम्पनेन

33. ''विकीर्णलोलाग्निकणं सुरद्विषः इस पंक्ति में 'सुरद्विषः' यह विशेषण किसके लिए प्रयुक्त हुआ है-

(A) रावण (B) हिरण्यकशिपु
(C) शिशुपाल (D) यमराज

(B) 2 1 4 3
(C) 4 3 2 1
(D) 3 4 1 2

ें प्राप्त होता हैं-

(A) प्रथमसर्ग (B) तृतीयसर्ग
(C) अष्टम सर्ग (D) चतुर्थ सर्ग

34. 'परेतभर्ता'-किसका विशेषण है-

(A) गणेश (B) वायु
(C) चन्द्रमा (D) यमराज

35. रावण के ''नर्मसचिव''-का काम किस देवता

(A) वैनायक (B) इन्दु
(C) अहस्कर (D) प्रचेता

36. सुमेलित करें-

(अ) विश्वम्भर! (1) वायुः
(ब) नाकिनः (2) वरुणः
(स) प्रचेताः (3) देवता
(द) प्रकम्पनः (4) श्रीकृष्ण

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	1	2	3	4

39. ''समेत्य''-इस पद की व्याकरणात्मक टिप्पणी है-

(A) सम्+आ+इ+ल्यप् (B) सम्+आ+इत्+ल्यप्
(C) सम्+एत्+ल्यप् (D) सम्+एज्+ल्यप्

40. ''कीनाश'' किस देवता का विशेषण है-

(A) श्रीकृष्ण (B) इन्द्र
(C) बलराम (D) यमराज

41. ''तमालपुष्प''-का वर्ण होता है-

(A) पीला (B) उज्ज्वल
(C) श्याम (D) हरा

42. कर्पूरचूर्ण के समान धवल वर्ण किसका है-

(A) श्रीकृष्ण (B) इन्द्र
(C) नारद (D) यमराज

43. ''एणाजिनम्''इस पद का क्या अर्थ है -

(A) मूंज का मेखला (B) अनुकरण करना
(C) सोने की करधनी (D) कृष्णसार मृग का चर्म

44. ''विहङ्गराजाङ्गरुहैरिवायतैः'' - इस पंक्ति में ''विहङ्गराज'' पद से किसका बोध हो रहा हैं -

(A) गरुण (B) नारद
(C) बलराम (D) श्रीकृष्ण

45. ''रणद्भिराघट्टनया नभस्वतः पृथग्विभिन्नश्रुतिमण्डलैः स्वरैः।'' -इस पंक्ति में 'नभस्वतः' पद से किसका बोध हो रहा हैं -

(A) वायु (B) इन्द्र
(C) सूर्य (D) वरुण

46. ''आघट्टनया''-इस पद में मूल धातु है-

(A) घा धातु (B) भू धातु
(C) घट्ट धातु (D) ईक्ष् धातु

47. ''विगृह्य चक्रे नमुचिद्विषा बली य इत्थमस्वास्थ्यमहर्दिवं दिवः'' इस पंक्ति में 'बली यः' पद से किसका बोध हो रहा है-

(A) रावण (B) शिशुपाल
(C) वायु (D) हिरण्यकशिपु

48. ''निवर्त्य सोऽनुव्रजतः कृतानतीनतीन्द्रियज्ञाननिधिर्नभसदः'' इस पंक्ति में ''नभःसदः'' पद से किसका बोध हो रहा है-

(A) देवता (B) श्रीकृष्ण
(C) बलराम (D) इन्द्र

49. ''गिरेस्तडित्वानिव तावदुच्चकैर्जवेन पीBादुदतिष्ठदच्युतः।'' इस पंक्ति में ''तडित्वान्'' इस पद का क्या अर्थ है-

(A) श्रीकृष्ण (B) मेघ
(C) नारद (D) इन्द्र

50. सुमेलित करें-

पंक्ति	**सम्बद्ध देवता**
(अ) विभुर्विभक्तावयवं पुमानिति	(1) इन्द्र
(ब) रणेषु तस्य प्रहिताः प्रचेतसा	(2) रावण
(स) बलस्य शत्रुः प्रशशंस शीघ्रताम्।	(3) वरुण
(द) प्रभुर्बुभूषुर्भुवनत्रयस्य यः	(4) नारद

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	1	2	3	4
(B)	1	2	4	3
(C)	4	3	1	2

(D)	3	4	2	1

51. सुमेलित करें-

सम्बोधन	सम्बोध्य
(अ) चिरन्तनमुनि	(1) श्रीकृष्ण
(ब) व्रती	(2) नारद
(स) त्रिदश	(3) देवता
(द) मातङ्ग	(4) हाथी

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	1	2	3	4
(B)	2	1	4	3
(C)	1	2	4	3
(D)	2	1	3	4

52. सुमेलित करें-

पंक्ति	नारद की उपमा
(अ) सुवर्णसूत्राकलिताधराम्बरां	(1) शिव से
(ब) घनं घनान्ते तडितां गणैरिव	(2) ऐरावत से
(स) चकासतं चारुचमूरुचर्मणा	(3) शुभ्र मेघ से
(द) समूढकर्पूरपरागपाण्डुरम्	(4) बलराम से

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	4	2	1	3
(B)	4	1	2	3
(C)	4	3	1	2
(D)	4	3	2	1

53. ''क्रमादमुं नारद इत्यबोधि सः''-यहाँ 'इत्यबोधि' पद में सन्धि है-
(A) यण् (B) वृद्धि
(C) गुण (D) दीर्घ

54. ''विभुर्विभक्तावयवं पुमानिति।''- इस पंक्ति में 'पुमान्' पद से किसका बोध हो रहा है-
(A) नारद (B) श्रीकृष्ण
(C) शिशुपाल (D) रावण

55. ''धराधरेन्द्रं व्रततीततीरिव।''-इस पंक्ति में''व्रततीततीरिव'' इस पद का क्या अर्थ है-
(A) लता का समूह (B) व्रत का समूह
(C) व्रत धारण करना (D) परिपक्व होना

56. ''विडम्बयन्तं शितिवाससस्तनुम्''-इस पंक्ति में 'शितिवाससः' पद किसके लिए है-
(A) श्रीकृष्ण (B) नारद
(C) बलराम (D) ब्रह्मा

57. ''कुथेन नागेन्द्रमिवेन्द्रवाहनम्।''-इस पंक्ति में ''नागेन्द्र'' पद से किसका बोध हो रहा है-
(A) श्रीकृष्ण (B) नारद
(C) ऐरावत (D) रावण

58. शिशुपालवधम् के अनुसार ''अतीन्द्रियज्ञाननिधिः''- यह विशेषण किसके लिए प्रयुक्त हुआ है-
(A) श्रीकृष्ण (B) नारद
(C) शिव (D) रावण

59. ''सुतेन धातुश्चरणौ भुवस्तले।''-इस पंक्ति में किसका वर्णन है-
(A) शिव (B) विष्णु
(C) नारद (D) रावण

60. ''तमर्ध्यमर्घ्यादिकयादिपूरुषः।''इस पंक्ति में 'आदिपुरुषः' पद से किसका बोध हो रहा है-
(A) नारद (B) श्रीकृष्ण
(C) शिव (D) शिशुपाल

61. कौन श्रीकृष्ण का विशेषण नहीं है-
(A) आदिपुरुष (B) चिरन्तनमुनि
(C) पीताम्बर (D) नीलाम्बर

62. ''त्वमेव साक्षात्करणीय इत्यतः किमस्ति कार्यं गुरु योगिनामपि।''-इस पंक्ति में ''त्वम्'' पद से किसका बोध हो रहा है-
(A) नारद (B) श्रीकृष्ण
(C) ब्रह्मा (D) शिव

63. इति ब्रुवन्तं तमुवाच स व्रती।''-इस श्लोकांश की अग्रिम पंक्ति है-
(A) गिरोऽथवा श्रेयसि केन तृप्यते
(B) तथापि शुश्रूषुरहं गरीयसी
(C) न वाच्यमित्थं पुरुषोत्तम त्वया।
(D) उदीर्णरागप्रतिरोधकं जनैः

64. उदासितारं निगृहीतमानसैः।''-इस श्लोकांश की अग्रिम पंक्ति कौन-सी है-
(A) फणाभृतां छादनमेकमोकसः।
(B) गृहीतमध्यात्मदृशा कथञ्चन।
(C) पुरातनं त्वां पुरुषं पुराविदः।
(D) भवान् भवच्छेदकरैः करोत्यधः।

65. ''लघू करिष्यन्नतिभारभङ्गुराममुं किल त्वं त्रिदिवादवातरः'' इस पंक्ति में ''त्रिदिवात्'' पद का अर्थ है-
(A) पृथ्वी (B) स्वर्ग
(C) पूज्य (D) अवतीर्ण

66. ''उदूढलोकत्रितयेन साम्प्रतं गुरुर्धरित्री क्रियतेतरां त्वया'' इस पंक्ति में ''त्वया'' पद से किसका बोध हो रहा है-
(A) श्रीकृष्ण (B) नारद
(C) वायु (D) वरुण

67. ''निजौजसोज्जासयितुं जगद्द्रुहामुपाजिहीथाः न महीतलं यदि'' -इस पंक्ति में 'उपाजिहीथाः' पद में लकार है-

(A) लुङ् (B) लिट्
(C) लङ् (D) विधिलिङ्

68.''समाहितैरप्यनिरूपितस्ततः पदं दृशः स्याः कथमीश! मादृशाम्।'' - इस पंक्ति में 'मादृशाम्' पद से किसका बोध हो रहा है-
(A) शिव (B) नारद
(C) श्रीकृष्ण (D) ब्रह्मा

69. 'कृष्ण' द्वारा किये गये किसके वध को नारद मृगतुल्य समझते हैं-
(A) शिशुपाल (B) रावण
(C) कंस (D) हिरण्यकशिपु

70. ''क्रमेण पेष्टुं भुवनद्विषामसि''-इस पंक्ति में 'पेष्टुम्' इस पद में धातु प्रत्यय है-
(A) पुज्+क्त (B) पेष्+तुमुन्
(C) पेष्ट्+तुमुन् (D) पिष्+तुमुन्

71.'अहिद्विषा'- किस देवता का विशेषण है-
(A) श्रीकृष्ण (B) इन्द्र
(C) शिव (D) यमराज

72. शिशुपालवधम् के अनुसार इन्द्र शब्द के ''परमैश्वर्य '' रूप पद को किसके द्वारा नष्ट किया गया -
(A) रावण (B) शिशुपाल
(C) कंस (D) हिरण्यकशिपु

73. ''भियां तनूजस्तपनद्युतिर्दितेः''-इस पंक्ति में किसकी विशेषताओं का वर्णन है-
(A) शिशुपाल (B) रावण
(C) कंस (D) हिरण्यकशिपु

74. ''हिरण्यपूर्वं कशिपुं प्रचच्छते''-इस पंक्ति में 'प्रचच्छते ' इस पद में मूल धातु है-
(A) चक्ष् धातु (B) चि धातु
(C) चर्च् धातु (D) चच्छ् धातु

75. शिशुपालवधम् के अन्तिम पद्य में छन्द है-
(A) मालिनी (B) वंशस्थ
(C) पुष्पिताग्रा (D) शार्दूलविक्रीडितम्

76.''सिषेविरे'' रूप है-
(A) सेव् धातु,लिट् लकार, प्र.पु.एकवचन
(B) सेव् धातु,लिट् लकार,प्र.पु.बहुवचन
(C) सेव् धातु,लुङ लकार, प्र.पु.एकवचन
(D) सेव् धातु,लुट् लकार, प्र.पु.बहुवचन

77. सुमेलित करें-

देवता	दिशा
(अ) इन्द्र	(1) पूर्व
(ब) यम	(2) पश्चिम
(स) कुबेर	(3) उत्तर
(द) वरुण	(4) दक्षिण

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	1	2	3	4
(B)	2	1	4	3
(C)	1	4	3	2
(D)	1	4	2	3

78. लक्ष्मी ने ''चंचला''-इस लोकापवाद को किसके गुणों पर आकृष्ट होकर प्राप्त किया-
(A) रावण (B) शिशुपाल
(C) हिरण्यकशिपु (D) कंस

79. ''स सञ्चरिष्णुर्भुवनान्तरेषु यः दृच्छयाशिश्रियदाश्रयः श्रियः।''-इस पंक्ति में 'सः' पद से किसका बोध होता है-
(A) शिशुपाल (B) रावण
(C) गजासुर (D) हिरण्यकशिपु

80. शिशुपालवधम् के अनुसार रावण को इच्छानुसार वरदान किसके द्वारा दिया गया-
(A) पिनाकिनः (B) नमुचिद्विषा
(C) हिरण्यगर्भः (D) पुरुषोत्तमः

81. ''त्रसत्तुषाराद्रिसुता ससम्भ्रमस्वयंग्रहाश्लेषसुखेन निष्क्रयम्।''-इस पंक्ति में 'तुषाराद्रिसुता' पद से किसका बोध हो रहा है-
(A) सीता (B) पार्वती
(C) रुक्मिणी (D) पर्वत

82. ''य इत्थमस्वास्थ्यमहर्दिवं दिवः।'' - इस पंक्ति में यः' पद से किसका बोध हो रहा है-
(A) हिरण्यकशिपु (B) रावण
(C) गजासुर (D) शिशुपाल

83. सुमेलित करें-

पंक्ति	सम्बद्ध
(अ) ततः शरीरीति विभाविताकृतिम्	(1) शिशुपाल
(ब) प्रकाममप्रीयत यज्वनां प्रियः	(2) रावण
(स) पुरीमवस्कन्द लुनीहि नन्दनम्	(3) नारद
(द) स्वयं विधाता सुरदैत्यरक्षसाम्	(4) श्रीकृष्ण

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	1	2	3	4
(B)	4	3	2	1
(C)	3	4	2	1
(D)	3	4	1	2

84. सुमेलित करें-

वीणा	वीणा के स्वामी
(अ) कलावती	(1) तुम्बुरु
(ब) कच्छपी	(2) नारद
(स) महती	(3) सरस्वती
(द) बृहती	(4) विश्वावसु

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	4	3	2	1
(B)	4	3	1	2
(C)	1	3	2	4
(D)	1	4	2	3

85. रावण से भयभीत होकर इन्द्र किस पर्वत की शरण में गये-
(A) आम्रकूट (B) देवगिरि
(C) सुमेरु (D) विन्ध्य

86. भगवान् विष्णु का चक्र किसका कण्ठच्छेद करने में विफल हुआ-
(A) हिरण्यकशिपु (B) शिशुपाल
(C) गजासुर (D) रावण

87. ''विभिन्नशङ्खः कलुषीभवन्मुहुर्मदेन दन्तीव मनुष्यधर्मणः।''- इस पंक्ति में किस देवता का वर्णन है-
(A) वरुण (B) कुबेर
(C) चन्द्रमा (D) वायु

88. ''प्रहर्तुरेवोरगराजरज्जवो जवेन कण्B सभयाः प्रपेदिरे।''- इस पंक्ति में किस देवता के भय का वर्णन है-
(A) इन्द्र (B) वायु
(C) कुबेर (D) वरुण

89. 'परेतभर्तुः महिषः' किसका विशेषण है-
(A) वरुण (B) वायु
(C) यमराज का भैंसा (D) यमराज

90. रावण की स्त्रियों का अलङ्करण किसके द्वारा किया जाता था-
(A) अहस्करः (B) प्रचेतसा
(C) सुरद्विषः (D) नमुचिद्विषा

91. किस देवता ने रावण के त्रास से देवताओं को अनुगृहीत किया-
(A) चन्द्रमा (B) यमराज
(C) इन्द्र (D) वायु

92. आकाश से उतरते हुए श्रीकृष्ण ने नारद को किसके समान नहीं देखा-
(A) शम्भुना (B) शितिवासस
(C) प्रचेतसा (D) ऐरावत

93. शिशुपालवधम् के अनुसार 'शिशुपाल' के पिता का क्या नाम था-
(A) सेनकुमार (B) सात्यकि
(C) दमघोष (D) चन्द्रोदय

94. ''अनुचकम्पिरे''-इस पद में मूल धातु है-
(A) कम्प् धातु (B) चक् धातु
(C) कृ धातु (D) चकम् धातु

95. शिशुपालवधम् के अनुसार निम्न में से कौन सही नहीं है-
(A) नाकिनां देवताओं का विशेषण है।
(B) उपेन्द्र भगवान् कृष्ण के लिए है।
(C) वैनायक गणेश का विशेषण है।
(D) तनूनपात् सूर्य का विशेषण है।

96. सुमेलित करें-

दिशा	गज
(अ) पूर्व	(1) वामन
(ब) पश्चिम	(2) सार्वभौम
(स) उत्तर	(3) अञ्जन
(द) दक्षिण	(4) ऐरावत

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	4	1	2	3
(B)	4	2	1	3
(C)	4	3	2	1
(D)	1	2	3	4

97. सुमेलित करें-

दिशा	हाथी
(अ) दक्षिण-पूर्व	(1) सुप्रतीक
(ब) दक्षिण-पश्चिम	(2) पुष्पदन्त
(स) उत्तर-पश्चिम	(3) कुमुद
(द) पूर्व-उत्तर	(4) पुण्डरीक

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	4	3	2	1
(B)	1	2	3	4
(C)	3	4	2	1
(D)	2	1	3	4

98. ''दशाननादीनभिराद्धदेवता वितीर्ण वीर्यातिशयान् हसत्यसौ।''- इस पंक्ति में किसकी विशेषताओं का वर्णन है-
(A) गजासुर (B) हिरण्यकशिपु
(C) शिशुपाल (D) रावण

99. किसके द्वारा विधाता के शासन का उल्लंघन किया गया

है-

(A) श्रीकृष्ण (B) हिरण्यकशिपु
(C) रावण (D) शिशुपाल

100. शिशुपालवधम् के प्रथम सर्ग का नामकरण है-

(A) कृष्ण सम्भाषण नाम। (B) नारद सम्भाषण नाम।
(C) कृष्ण-नारद सम्भाषण नाम। (D) नारद अवतार नाम।

उत्तरमाला

1-D	2-D	3-B	4-C	5-C	6-C
7-B	8-C	9-B	10-D	11-C	12-D
13-D	14-A	15-D	16-C	17-C	18-B
19-C	20-D	21-B	22-D	23-B	24-C
25-B	26-C	27-D	28-B	29-B	30-B
31-D	32-D	33-A	34-D	35-B	36-C
37-D	38-D	39-A	40-D	41-C	42-C
43-D	44-A	45-A	46-C	47-A	48-A
49-B	50-C	51-A	52-D	53-A	54-A
55-A	56-C	57-C	58-B	59-C	60-B
61-D	62-B	63-C	64-B	65-B	66-A
67-C	68-B	69-C	70-D	71-B	72-D
73-D	74-A	75-D	76-B	77-C	78-C
79-D	80-A	81-B	82-B	83-C	84-C
85-C	86-D	87-B	88-D	89-C	90-A
91-D	92-C	93-C	94-A	95-D	96-C
97-A	98-C	99-D	100-C		

4.12 उत्तररामचरितम्

महाकवि भवभूति का परिचय

- **पितामह** – भट्टगोपाल
- **पिता** – नीलकण्ठ
- **माता** – जतुकर्णी (जातुकर्णी)
- **भवभूति का मूलनाम** – श्रीकण्ठ या भट्टश्रीकण्ठ
- **गुरु** – (i) ज्ञाननिधि (ii) कुमारिलभट्ट
- **भवभूति का दार्शनिक नाम** – उदुम्बर/उम्बिकाचार्य/उम्बेक
- **जन्मस्थान** – दक्षिणभारत में पद्मपुर नगर
- **उपाधि** – (i) पदवाक्यप्रमाणज्ञ, पद = व्याकरण, वाक्य = मीमांसा, प्रमाण = न्याय
  (ii) वश्यवाक्, (iii) परिणतप्रज्ञ, (iv) शिखरिणीकवि
- **वंश/गोत्र** – काश्यप
- **जाति** – कृष्णयजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखापाठी ब्राह्मण
- **आश्रयदाता** – कान्यकुब्जनरेश यशोवर्मा
- **समय**– 650 ई. से 750 ई. के बीच (सातवीं शताब्दी का उत्तरार्ध)
- **रचनायें** – 1. मालतीमाधवम् (प्रकरण)
  2. महावीरचरितम् (नाटक)
  3. उत्तररामचरितम् (नाटक)
- **भवभूति की रीति** – गौडी
  (उत्तररामचरितम् में गौड़ी और वैदर्भी का समन्वय)
- **भवभूति का प्रियरस** – करुण
- **भवभूति के प्रियछन्द** – अनुष्टुप् और शिखरिणी
- **उपासक** – शिव के
- उत्तररामचरितम् में भवभूति अपने आपको **'परिणतप्रज्ञ'** कहते हैं।
- महावीरचरितम् में भवभूति अपने आपको **'वश्यवाक्'** कहते हैं।
- भवभूति के नाटकों में **'अभिधावृत्ति'** मुख्य है।
- भवभूति की कृतियों में **'ओजगुण'** अधिक है।
- **क्षेमेन्द्र ने 'सुवृत्ततिलक'** में भवभूति के शिखरिणी की प्रशंसा में उसे **'निरर्गलतरङ्गिणी'** कहा है –
  भवभूतेः शिखरिणी निरर्गलतरङ्गिणी।
  रुचिरा घनसन्दर्भे या मयूरीव नृत्यति॥ (सु. 3.33)
- भवभूति के तीनों नाटकों में **विदूषक का सर्वथा अभाव** है।

महाकवि भवभूति विषयक प्रशस्तियाँ

1. कवयः कालिदासाद्याः भवभूतिर्महाकविः।
   – अज्ञात समालोचक
   नाटके भवभूतिर्वा वयं वा वयमेव वा।
2. उत्तरे रामचरिते भवभूतिर्विशिष्यते। **– विक्रमार्क**
3. कारुण्यं भवभूतिरेव तनुते। **– अज्ञात**
4. बभूव वाल्मीकभवः कविः पुरा ततः प्रपेदे भुवि भर्तृमेण्ठताम्।
   स्थितः पुनर्योभवभूतिरेखया स वर्तते सम्प्रति राजशेखरः।।
   – राजशेखर - बालरामायण
5. भवभूतेर्शिखरिणी निरर्गलतरङ्गिणी।
   रुचिरा घनसन्दर्भे या मयूरीव नृत्यति।।
   – क्षेमेन्द्र - सुवृत्ततिलक
6. भवभूतेः सम्बन्धाद्भूधरभूरेव भारती भाति।
   एतत्कृतकारुण्ये किमन्यथा रोदिति ग्रावा।।
   – गोवर्धनाचार्य - आर्यासप्तशती।
7. स्पष्टभावरसा चित्रैः पादन्यासैः प्रवर्तिता।
   नाटकेषु नटस्त्रीव भारती भवभूतिना।।
   – धनपाल - तिलकमञ्जरी
8. सुकविद्वितयं मन्ये निखिलेऽपि महीतले।
   भवभूतिः शुकश्चायं वाल्मीकिस्त्रितयोऽनयोः।।
   – भोज - भोजप्रबन्ध
9. रत्नावली पूर्वकमन्यदास्तामसीमभोगस्य वचोमयस्य।

पयोधरस्येव हिमाद्रिजायाः परं विभूषा भवभूतिरेव।।

– जल्हण - सूक्तिमुक्तावली

10. भवभूतिमनादृत्य निर्वाणमतिना मया।
मुरारिपदचिन्तायामिदमाधीयते मनः।।

– जल्हण - सूक्तिमुक्तावली।

11. मान्यो जगत्यां भवभूतिरार्या सारस्वते वर्त्मनि सार्थवाहः।
वाचं पताकामित्रस्य दृष्ट्वा जनः कवीनामनुपृष्ठमेति।।

– उदयसुन्दरीचम्पू

12. भवभूतिजलधिनिर्गतकाव्यामृतरसकणा इव स्फुरन्ति।

यस्य विशेषा अद्यापि विकटेषु कथानिवेशेषु।।

– गौडवहो - वाक्पतिराज

13. जडानामपि चैतन्यं भवभूतेरभूद् गिरा।
ग्रावाप्यरोदीत् पार्वत्याः हसतः स्म स्तनावपि।। **– अज्ञात**

14. अन्तर्मोदं कमपि भवभूतिर्वितनुते।। **– सदुक्तिकर्णामृत**

15. भव्यां यदि विभूतित्वं तात कामयसे तदा।
भवभूतिपदे चित्तमविलम्बं निवेशय।। **– अज्ञात।**

16. भवभूतेर्विच्छित्तिव्यभिचारमुचो गिरां गुम्फाः।
विधिनापि दुर्निवारं तेषां खलु भावभूतत्वम्।।

– विश्वेश्वर पाण्डेय

17. भवभूतेः कवीन्द्रस्य वाणी कामदुधामता।
ब्रह्मानन्दसहोदर्या या तनोति मुदं सदा।।**–कपिलदेव द्विवेदी**

18. साऽम्बा पुनातु भवभूतिपवित्रमूर्तिः। **– भवभूति**

19. भवभूतिर्नाम कविर्निसर्गसौहृदेन भरतेषु वर्तमानः।

– मालतीमाधवस्य प्रस्तावना

20. कविर्वाक्पतिराजश्रीभवभूत्यादिसेवितः।
जितो ययौ यशोवर्मा तद्गुणस्तुतिवन्दिताम्।।

– कल्हण राजतरङ्गिणी

21. तपस्वीं कां गतोऽवस्थामिति स्मराननाविव।
गिरिजायाः स्तनौवन्दे भवभूतिसिताननौ।।**– भवभूति**

उत्तररामचरितम्

- **लेखक** – भवभूति
- **विधा** – नाटक
- **अङ्क** – 7 (सात)
- **प्रधानरस** – करुण
- **उपजीव्य** (i) वाल्मीकीयरामायण उत्तरकाण्ड (सर्ग 42-97 तक) (ii) पद्मपुराण (पातालखण्ड 1-68 तक)
- **विशेषतायें**– (1) सप्तम अङ्क में **गर्भनाटक** की योजना
  (2) प्रथम अङ्क में **चित्रवीथी** की योजना
  (3) **विदूषक रहित** नाटक
  (4) तृतीय अङ्क में **छायाङ्क** की योजना
- **प्रमुखपात्र** – राम (नायक), सीता (नायिका), गोदावरी, भागीरथी, तमसा, मुरला, वासन्ती (वनदेवता), पृथ्वी, आत्रेयी, वशिष्ठ, कौशल्या, मुनिबालक सौधातकि, गुप्तचरदुर्मुख, लव, कुश, चन्द्रकेतु, वाल्मीकि, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, अष्टावक्र, दण्डायन, सुमन्त्र, अरुन्धती, जनक, कञ्चुकी आदि।
- अनुष्टुप् (84 श्लोक), शिखरिणी (30), वसन्ततिलका (26), शार्दूलविक्रीडित (25) आदि।
- उत्तररामचरितम् में भवभूति ने **38 अलङ्कारों का प्रयोग** किया है; और प्रयोग की दृष्टि से उन्हें–उपमा, उत्प्रेक्षा, काव्यलिङ्ग, रूपक, अर्थान्तरन्यास अत्यन्त **प्रिय अलङ्कार** माने जाते हैं।
- इसमें **7 (सात) अङ्कों में** रामायण के उत्तरकाण्ड की कथा वर्णित है।
- राम के वन-प्रत्यागमन के बाद राजगद्दी पाने से लेकर सीता-मिलन तक की सम्पूर्ण कथाएँ कुछ कल्पना-प्रसूत घटनाओं के साथ दिखाई गई हैं। यह **भवभूति का सर्वश्रेष्ठ नाटक** है।
- सप्तम अंक में **'गर्भाङ्क' की कल्पना** है।
- पद्मपुराण में वर्णित रामकथा से उत्तररामचरित की कथा का अधिक साम्य है।
- उत्तररामचरित में **कुल पात्रों की संख्या 30** है। इनके अतिरिक्त 6 पात्रों का उल्लेख मात्र है।
- भवभूति ने उत्तररामचरित में **19 छन्दों का प्रयोग** किया है।
- उत्तररामचरित में **कुल श्लोकों की संख्या 256** है।
- **अनुष्टुप् के पश्चात् शिखरिणी छन्द** का सर्वाधिक प्रयोग हुआ है। मङ्गलाचरण में अनुष्टुप् है।
- भवभूति ने उत्तररामचरित में केवल **'शौरसेनी प्राकृत'** का प्रयोग किया है।
- नाटक का आरम्भ **'चित्रदर्शन'** से होता है।
- प्रथम अङ्क में राम के राज्याभिषेक से उत्पन्न प्रतिक्रिया का निरीक्षण करके **'दुर्मुख'** आता है।
- मङ्गलाचरण में प्राचीन कवियों वाल्मीकि आदि को लक्ष्य करके प्रार्थना की गई है।
- 'उत्तररामचरितम्' में **'नमस्कारात्मक' मङ्गलाचरण** किया गया है।
- महाराज **दशरथ की पुत्री शान्ता** के पति ऋष्यशृङ्ग ने बारह वर्ष चलने वाला यज्ञ प्रारम्भ किया है इसकी सूचना प्रथम अङ्क में प्राप्त होती है।
- महर्षि वशिष्ठ का संदेश लेकर **अष्टावक्र** आते हैं। वे 'कहोड़' के पुत्र हैं।
- लक्ष्मण द्वारा सीता के मनोविनोदार्थ लाये गये चित्रवीथी में सीता के अग्निशुद्धि तक की कथा चित्रित है।
- लक्ष्मण की पत्नी का नाम **'उर्मिला'** है।
- चित्रवीथी बनाने वाले **चित्रकार का नाम अर्जुन** है।
- **सौधातकि** और **दण्डायन** वाल्मीकि के दो शिष्य हैं।

- लक्ष्मण के पुत्र का नाम **'चन्द्रकेतु'** है।
- **शम्बूक** एक शूद्र तपस्वी है।
- चन्द्रकेतु के वृद्ध सारथि **'सुमन्त्र'** हैं।
- **वासन्ती** वनदेवता है और सीता की प्रियसखी है।
- **आत्रेयी** एक तपस्विनी ब्रह्मचारिणी है।
- **तमसा** और **मुरला** दो नदी अधिष्ठात्री देवियाँ हैं।
- महर्षि **वशिष्ठ की पत्नी 'अरुन्धती'** हैं तथा **महर्षि अगस्त्य की पत्नी 'लोपामुद्रा'** हैं।
- द्वितीय अङ्क में राम 'शम्बूक वध' करते हैं।
- पञ्चवटी के पास स्थित गोदावरी नदी से राम के जीवन के प्रति सावधान रहने की प्रार्थना 'लोपामुद्रा' द्वारा 'मुरला' के माध्यम से की गई है।
- प्रसवपीड़ा से पीड़ित होकर सीता ने स्वयं को गङ्गा के प्रवाह में डाल दिया और वहीं उनके दोनों पुत्र उत्पन्न हुए।
- देवी गङ्गा ने दोनों बालकों को महर्षि वाल्मीकि को समर्पित किए।
- तृतीय अङ्क में कुश और लव के `12वीं वर्षगाँठ' की चर्चा है।
- 'गङ्गा' ने सीता को आदेश दिया कि वे अपने हाथों से तोड़े गये पुष्पों से अपने पुराण आदिश्वसुर सूर्य की पूजा करें।
- 'गङ्गा' के प्रभाव से सीता को वन देवता भी नहीं देख पाते।
- तृतीय अङ्क के आरम्भ में सीता 'गोदावरी' के जल से निकलती हैं।
- गोदावरी से निकलती सीता करुणा की मूर्ति एवं शरीरधारिणी विरहव्यथा सी प्रतीत होती हैं।
- अदृश्य सीता के साथ तमसा रहती है और वह सीता को देख सकती है।
- तृतीय अङ्क का आरम्भ **'विष्कम्भक'** से होता है।
- 'वासन्ती' सीता-त्याग के लिए राम की भर्त्सना करती है।
- राम तृतीय अङ्क में 'अश्वमेध' यज्ञ की सूचना देते हैं और सीता की स्वर्ण प्रतिमा को उन्होंने पत्नी के स्थान पर रखा है।
- तृतीय अङ्क का आरम्भ तमसा-मुरला नामक दो नदियों के वार्तालाप से होता है।
- उत्तररामचरित में **`38 अलङ्कारों'** का प्रयोग है सर्वाधिक प्रयोग **'उपमा' (74 बार)** का है।
- चतुर्थ अङ्क का आरम्भ दण्डायन और सौधातकि के वार्तालाप से होता है।
- तृतीय अङ्क में श्लोकों की संख्या **`48'** है।
- चतुर्थ अङ्क में कौशल्या के पूछने पर 'लव' अपने को वाल्मीकि का पुत्र बताता है।
- 'रामकथा' के अभिनय के लिए वाल्मीकि ने इस कथा को कुश के संरक्षण में भरतमुनि के पास भेजा।
- चतुर्थ अङ्क में लव यज्ञ का घोड़ा पकड़ता है।
- पञ्चम अङ्क में लव **'जृम्भक अस्त्र'** का प्रयोग करता है।
- लव राम के शौर्य को कुछ नहीं समझता और उन पर आक्षेप करता है।
- षष्ठ अङ्क में **लव और चन्द्रकेतु में** दिव्य अस्त्रों से **घोर युद्ध** होता है।
- चन्द्रकेतु के 'आग्नेय अस्त्र' की प्रतिकार स्वरूप लव 'वारुण' अस्त्र छोड़ता है।
- सप्तम अङ्क में वाल्मीकि की कृति का 'अप्सराओं' द्वारा अभिनय किया गया है।
- 'उत्तररामचरितम्' का **भरतवाक्य शार्दूलविक्रीडित छन्द** में है।
- उत्तररामचरितम् में **करुणरस प्रधान** है।इसमें वैदर्भी एवं गौडीरीति का प्रयोग है।
- 'उत्तररामचरितम्' सुखान्त नाटक है।
- तृतीय अङ्क में सीता द्वारा पाले गये हाथी, मयूर और कदम्ब की चर्चा आती है।
- मयूर 'कदम्ब' के वृक्ष पर बैठकर मधुर स्वर करता है।
- प्रथम अङ्क में राम ने लोकानुरञ्जन के लिए सीता तक को त्याग देने की बात कही है।

''स्नेहं दयां च सौख्यं च यदि वा जानकीमपि।
आराधनाय लोकस्य मुञ्चतो नास्ति मे व्यथा।।'' (1/12)

- प्रथम अङ्क में राम अष्टावक्र से यह प्रसिद्ध श्लोक कहते हैं।

''लौकिकानां हि साधूनामर्थं वागनुवर्तते।
ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति।।'' (1/10)

- तृतीय अङ्क का आरम्भ राम के करुण रस के उद्घोष के साथ होता है। जिसे मुरला कहती है–

अनिर्भिन्नो गभीरत्वादन्तर्गूढघनव्यथः।
पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः।। (3/1)

- तृतीय अङ्क में सर्वाधिक **अनुष्टुप् (11) छन्द** का प्रयोग हुआ है। **7 'वसन्ततिलका'** वृत्त प्रयुक्त है।
- तृतीय अङ्क का अन्त भी करुण रस के उद्घोष से होता है जिसे तमसा कहती है –

'एको रसः करुण एव निमित्तभेदाद्। (वसन्ततिलका) (3/47)

- लवणासुर के वध के लिए **'शत्रुघ्न'** जाते हैं।
- मूल कथा में अश्वमेधीय अश्व का रक्षक **भरतपुत्र 'पुष्कल'** है, उत्तररामचरित में **लक्ष्मण पुत्र चन्द्रकेतु** है।
- सप्तम अङ्क में गङ्गा और पृथ्वी सीता के चरित्र की पवित्रता की घोषणा करती हैं।
- कवियों ने **'कारुण्यं भवभूतिरेव तनुते'** कहकर भवभूति का यशोगान किया है।
- भवभूति ने चौथे अङ्क में समांस या अमांस मधुपर्क का प्रसंग उठाया है।
- पञ्चवटी में राम का **'शयन-शिलातल'** कदली वन के मध्य में विद्यमान था।
- वासन्ती केवल लक्ष्मण का कुशलक्षेम पूछती है।
- वासन्ती राम को जटायु द्वारा तोड़ा गया काले लोहे का बना रावण का रथ दिखाती है।

उत्तररामचरितम् का मङ्गलाचरण

इदं कविभ्यः पूर्वेभ्यो नमोवाकं प्रशास्महे।
विन्देम देवतां वाचममृतामात्मनः कलाम्॥ 1/1 ॥

भावार्थ- हम अपने पुरातन (वाल्मीकि आदि) कवियों को प्रणाम कर ''ब्रह्मा की अंशभूत सनातनी देवी वाणी (सरस्वती) को प्राप्त करें'', यह कामना करते हैं।

(अर्थात् पहले के वाल्मीकि आदि कवियों को प्रणाम कर हम यह कामना करते हैं कि ब्रह्मा की अंशभूत सनातनी सरस्वती को प्राप्त करें।)

- ☆ उपर्युक्त मङ्गलाचरण में वाणी देवी को नमस्कार किया गया है।
- ☆ नमस्कारात्मक नान्दी प्रयुक्त है।
- ☆ प्रस्तुत श्लोक में 12 पद हैं। अतः द्वादशपदा नान्दी है।
- ☆ अनुप्रास एवं श्लेष अलङ्कार है तथा अनुष्टुप् (पत्थ्यावक्त्र) छन्द का प्रयोग है।
- ☆ शुद्ध नान्दी का प्रयोग हुआ है।

उत्तररामचरितम् का भरतवाक्य

पाप्मभ्यश्च पुनाति वर्धयति च श्रेयांसि सेयं कथा
मङ्गल्या च मनोहरा च जगतो मातेव गङ्गेव च।
तामेतां परिभावयन्त्वभिनयैर्विन्यस्तरूपां बुधाः
शब्दब्रह्मविदः कवेः परिणतां प्राज्ञस्य वाणीमिमाम्॥ 7/21॥

भावार्थ- संसार की माता और गङ्गा की तरह कल्याण करने वाली तथा मनोहर प्रसिद्ध यह रामायण की कथा पापों से पवित्र करती है और कल्याण को बढ़ाती है। विद्वान् लोग अभिनय के द्वारा शब्दब्रह्म को चाहने वाले इस बुद्धिमान् कवि की नाटक के रूप में परिणत ऐसी ही उत्तररामचरितस्वरूप वाणी का विचार करें।

- ☆ इस माङ्गलिक पद्य में संसार के कल्याण के लिए नाटकीय पात्रों की ओर से शुभकामना है।
- ☆ यहाँ उपमा के चारों भेद होने से पूर्णोपमा अलङ्कार है।
- ☆ 'प्रशस्ति' नामक निर्वहण सन्धि का अङ्ग है।
- ☆ शार्दूलविक्रीडित छन्द का प्रयोग हुआ है।

'उत्तररामचरित' नाम की सार्थकता

रामस्य चरितम् इति रामचरितम् **(षष्ठी तत्पुरुष)**

1. उत्तरं च तत् रामचरितम् इति उत्तररामचरितम् **(कर्मधारय समास)**

उत्तररामचरित अधिकृत्य कृतं नाटकं इति उत्तरामचरितम्।
'अधिकृत्य कृते ग्रन्थे' सूत्र से अण् प्रत्यय हुआ-
उत्तरामचरित+अण् (अ)
'लुबाख्यायिभ्यो बहुलम्' वार्तिक से 'अ' का लोप होकर 'उत्तररामचरिम्' बना।
अर्थात् जिसमें राम के जीवन के उत्तरार्द्ध की घटनाओं का वर्णन है, ऐसा नाटक।

2. उत्तरं रामचरितं यस्मिन् तत् **(बहुव्रीहि समास)**

अर्थात् जिसमें उत्तरकालीन रामचरित का वर्णन है।

'उत्तररामचरितम्' की प्रमुख सूक्तियाँ एवं कथनों का विवरण

1. **अपिग्रावा रोदित्यपि दलति वज्रस्य हृदयम्।** (1/28)
   भावार्थ – निर्जन जनस्थान (दण्डकारण्य) में आपके चरितों से पत्थर भी रो पड़े थे और वज्र का भी हृदय फट गया था।
- **वक्ता** – लक्ष्मण, अङ्क - प्रथम (चित्रदर्शन)
  श्रोता – राम एवं सीता।
  छन्द – शिखरिणी। अतिशयोक्ति अलङ्कार
2. **एते हि हृदयमर्मच्छिदः संसारभावाः।**
   ये सांसारिक भाव हृदय के मर्मस्थल को भेदन करने वाले हैं।
- **प्रथम अङ्क** – राम का सीता से कथन
3. **इयं गेहे लक्ष्मीरियममृतवर्तिर्नयनयोः।** (1/38)
   यह (सीता) घर में लक्ष्मी है, यह नेत्रों के लिए अमृत की शलाका है।
- प्रथम अङ्क में राम का कथन
  शिखरिणी छन्द और रूपक अलङ्कार।
4. **''दुर्जनोऽसुखमुत्पादयति''**
   भाव – दुर्जन दुःख उत्पन्न करता है।
   प्रथम अङ्क – सीता का कथन, राम और लक्ष्मण के समक्ष।
5. **तीर्थोदकं च वह्निश्च नान्यतः शुद्धिमर्हतः।** (1/13)
   भाव – तीर्थ, जल और अग्नि, ये अन्य पदार्थों से शुद्धि के योग्य नहीं हैं।
- राम का कथन है। सीता के परिपेक्ष्य में। सीता और लक्ष्मण के सम्मुख प्रथम अङ्क। अनुष्टुप् छन्द। प्रतिवस्तूपमा, दृष्टान्त अलंकार।
6. **नैसर्गिकी सुरभिणः कुसुमस्य सिद्धा मूर्ध्नि स्थितिर्न चरणैरवताडनानि॥** (1/14)
   भावार्थ – सुगन्धित फूल का सिर पर रखा जाना स्वभावसिद्ध है, न कि पैरों से कुचला जाना।
- **प्रथम अङ्क** – राम का कथन। सीता को लक्ष्य करके। सीता और लक्ष्मण के सम्मुख।
  दृष्टान्त अलङ्कार, वसन्ततिलका वृत्त।
7. **सतां केनापि कार्येण लोकस्याराधनं व्रतम्।** (1/41)
   भावार्थ – चाहे जो भी हो, जनता को प्रसन्न रखना सज्जनों का कर्त्तव्य है।

- राम का कथन। दुर्मुख के सम्मुख। अनुष्टुप् छन्द। प्रथम अङ्क

8. सन्तापकारिणो बन्धुजनविप्रयोगा भवन्ति।
भावार्थ – बन्धुजनों का वियोग दुःखदायी होता है।

- सीता का कथन (प्रथम अङ्क) राम, लक्ष्मण के सम्मुख।

9. ते हि नो दिवसा गताः।
भावार्थ – हमारे वे दिन बीत गये। अनुष्टुप् छन्द।

- राम का कथन, लक्ष्मण व सीता के सम्मुख (प्रथम अङ्क)

10. ''सतां सद्भिः सङ्गः कथमपि हि पुण्येन भवति। (2/1)
भावार्थ– सज्जनों का सज्जनों से मिलन बड़े पुण्य से होता है।

- द्वितीय अङ्क (प्रथम श्लोक)
वन देवता का कथन, तापसी से। शिखरिणी वृत्त, अर्थान्तरन्यास अलङ्कार

11. वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि लोकोत्तराणां चेतांसि को हि विज्ञातुमर्हति। (2/7)
भावार्थ – वज्र से भी कठोर और फूल से भी कोमल महापुरुषों के चित्त को कौन जान सकता है।

- द्वितीय अङ्क , वासन्ती का कथन आत्रेयी से।
अनुष्टुप् छन्द। विषम, अप्रस्तुतप्रशंसा अर्थापत्ति अलङ्कार।

12. अनिर्भिन्नो गभीरत्वादन्तर्गूढघनव्यथः।
पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः॥ (3/1)
भावार्थ– गम्भीरता के कारण अप्रकट एवं अन्दर छिपी हुई घोर वेदना से युक्त राम का करुण रस (शोक) पुटपाक के तुल्य है।

- तृतीय अङ्क (प्रथम श्लोक)।
मुरला का कथन तमसा से। लोपामुद्रा का सन्देश।
अनुष्टुप् छन्द, उपमा अलङ्कार

13. वीचीवातैः..............प्रेरितैस्तर्पयेति॥(3/2)
भावार्थ – जल कणों से शीतल, पद्म-पराग की सुगन्ध को लाने वाली, धीरे-धीरे चलने वाली, तरङ्ग-वायुओं से रामचन्द्र की प्रत्येक मूर्च्छा के समय चेतना प्रदान करना।
मुरला द्वारा कहा गया लोपामुद्रा का संदेश 'गोदावरी' के लिए। तमसा के सम्मुख। शालिनी छन्द, समुच्चय अलङ्कार।

14. उचितमेव दाक्षिण्यं स्नेहस्य। संजीवनोपायस्तु मौलिक एव रामभद्रस्याद्य सन्निहितः। (3)
भावार्थ – स्नेह की उदारता उचित ही है। किन्तु रामचन्द्र को होश में लाने का मौलिक उपाय (सीता) आज समीप ही विद्यमान है।

- तमसा का कथन मुरला से

15. ईदृशानां विपाकोऽपि जायते परमाद्भुतः।
यत्रोपकरणीभावमायात्येवंविधो जनः॥ (3/3)
भाव – ऐसे व्यक्तियों (सीता और राम जैसों) की दुरवस्था भी आश्चर्यजनक होती है, जिसमें ऐसे (पृथ्वी और गङ्गा जैसे) लोग सहायक होते हैं।

- **मुरला का कथन** – तमसा से।
अनुष्टुप् वृत्त, काव्यलिङ्ग अलंकार

16. अव्यग्रस्य पुनरस्य शोकमात्रद्वितीयस्य पञ्चवटीप्रवेशो महाननर्थ इति। (3)
भावार्थ – इस समय कार्यों में अव्यस्त और केवल शोकरूपी साथी से युक्त राम का पञ्चवटी में प्रवेश बहुत अनिष्टकारी है।

- मुरला का तमसा से कथन, राम के प्रति।

17. न त्वामवनिपृष्ठवर्तिनीमस्मत्प्रभावाद् वनदेवता अपि द्रक्ष्यन्ति किमुत मर्त्याः? (3)
भावार्थ – भूतल पर विद्यमान तुमको मेरे प्रभाव से वनदेवता भी नहीं देख सकेंगे, साधारण मनुष्यों की बात ही क्या।

- तमसा मुरला से भागीरथी द्वारा सीता से कही गयी बात को बताती है।

18. करुणस्य मूर्तिरथवा शरीरिणी विरहव्यथेव वनमेति जानकी। (3/4)
भावार्थ – सीता करुण रस की साक्षात् मूर्ति अथवा शरीरधारिणी 'वियोगव्यथा' के तुल्य वन (पञ्चवटी) में आ रही हैं।

- गोदावरी से निकलती हुयी सीता को देखकर तमसा का मुरला से कथन।
मञ्जुभाषिणी वृत्त उत्प्रेक्षा अलङ्कार।

19. किसलयमिव..........केतकीगर्भपत्रम्। (3/5)
भावार्थ – हृदयरूपी कमल को सुखाने वाला, कठोर और चिरस्थायी शोक सीता के शरीर को उसी प्रकार मलिन बना रहा है, जैसे शरत्कालीन धूप केतकी के फूल के अंदर के पत्ते को। मालिनी छन्द। उपमा, रूपक अलङ्कार।

- मुरला का तमसा से कथन, सीता के विषय में।

20. अपरिस्फुटनिक्वाणे कुतस्त्येऽपि त्वमीदृशी।
स्तनयित्नोर्मयूरीव चकितोत्कण्ठितं स्थिता॥ (3/7)
भावार्थ – मेघ की अस्पष्ट ध्वनि पर मोरनी के तुल्य तुम कहीं से आये हुए अस्पष्ट शब्द को सुनकर इस प्रकार आश्चर्ययुक्त और उत्कण्ठित हो गई हो।

- तमसा का सीता से कथन।
अनुष्टुप् वृत्त, उपमा अलङ्कार

21. यत्र द्रुमा अपि.........गिरेस्तटानि॥ (3/18)
भावार्थ – जहाँ वृक्ष इत्यादि मेरे बन्धु थे, जहाँ प्रिया के साथ बहुत समय रहा, यह वही आश्रमस्थान है। वसन्ततिलका छन्द। अर्थापत्ति अलंकार।

- राम का कथन नेपथ्य से।

22. अहमेवैतस्य हृदयं जानामि, ममैषः। (3)
भावार्थ – मैं ही इनके हृदय को जानती हूँ और ये मेरे हृदय को।

- सीता का कथन तमसा से।

23. निष्कारणपरित्यागिनोऽप्येतस्य दर्शनेनैवंविधेन कीदृशी मे हृदयावस्था। (3)
भाव – अकारण परित्याग करने वाले भी इनके इस प्रकार के दर्शन से मेरे हृदय की कैसी अवस्था हो रही है।

- सीता का कथन तमसा से।

24. श्लोक–तटस्थं नैराश्यादपि च कलुषं विप्रियवशात्
वियोगे दीर्घेऽस्मिञ्झटिति घटनात्स्तम्भितमिव
प्रसन्नं सौजन्याद्दयितकरुणैर्गाढकरुणं
द्रवीभूतं प्रेम्णा तव हृदयमस्मिन्क्षण इव। (3/13)

भावार्थ – इस समय तुम्हारा हृदय निराशा से उदासीन-सा और अप्रिय कार्य के कारण खिन्न-सा, इस लम्बे विरहकाल में सहसा मिलन के कारण निश्चेष्ट-सा, सज्जनता से प्रसन्न-सा, प्रिय की करुणा से शोकातुर सा और प्रेम से द्रवीभूत सा हो रहा है।

शिखरिणी वृत्त, उत्प्रेक्षा अलंकार।

- तमसा का कथन सीता से।

25. प्रत्ययेन निष्कारणपरित्यागशल्यितोऽपि
बहुमतो मम जन्मलाभः। (3)

भाव – अकारण परित्याग रूपी शल्य से विध कर भी मेरा संसार में जन्म लेना मेरे लिए श्लाघनीय है।

- सीता का कथन तमसा से।

26. अन्तःकरणतत्त्वस्य दम्पत्योः स्नेहसंश्रयात्।
आनन्दग्रन्थिरेकोऽयमपत्यमिति पठ्यते॥ (3/17)

भावार्थ – पति और पत्नी के हृदयरूपी तत्व के प्रेम का आश्रय होने के कारण 'सन्तान' यह अनुपम सुख की गाँठ कही जाती है। अनुष्टुप् छन्द।

- तमसा का कथन सीता से है।

27.ईदृशो जीवलोकस्य परिणामः संवृतः।

भाव – संसार का यही (दुःखद) परिणाम हुआ।

- सीता का कथन वासन्ती को सम्बोधित करके।

28.स्नपयति हृदयेशं स्नेहनिष्यन्दिनी ते धवलमधुरमुग्धा दुग्धकुल्येव दृष्टिः। (3/23)

भावार्थ – श्वेत, मधुर एवं मनोहर तुम्हारी दृष्टि दूध की नहर की तरह अपने हृदयेश्वर को स्नान कराती है।

उपमा, उत्प्रेक्षा अलंकार, मालिनी छन्द।

- तमसा का कथन सीता से।

29.पुनरिदमयं देवो रामः स्वयं वनमागतः। (3/24)

भावार्थ – ये महाराज राम फिर स्वयं इस वन में आए हैं। – हरिणी छन्द

- वासन्ती का कथन राम के सम्मुख वन की वस्तुओं से।

30.पूजार्हः सर्वस्यार्यपुत्रो विशेषतो मम प्रियसख्याः। (3)

भावार्थ – आर्यपुत्र सभी के पूजनीय हैं विशेष रूप से मेरी प्रियसखी (वासन्ती) के।

- **सीता का कथन** – वासन्ती को सम्बोधित करके।

31. त्वं जीवितं............किमतः परेण। (3/26)

- वासन्ती का कथन राम से। राम द्वारा सीता से पहले कही बातें।
- वसन्ततिलका छन्द। आक्षेप अलंकार दशरूपक में यह श्लोक वाक्केलि के उदाहरणस्वरूप दिया गया है।

32. अयि कठोर! .... मन्यसे। (3/27)

- वासन्ती का कथन राम से। द्रुतविलम्बित छन्द, उपमा अलङ्कार।

33.यैवं प्रलपन्तं प्रलापयसि। (3)

भावार्थ – जो इस प्रकार विलाप करते हुए (राम) को और रूला रही है।

- सीता का कथन वासन्ती से।

34. पूरोत्पीडे तटाकस्य परीवाहः प्रतिक्रिया।
शोकक्षोभे च हृदयं प्रलापैरेव धार्यते। (3/29)

भावार्थ – तालाब में जल-प्रवाह की अधिकता होने पर जल को बाहर निकालना ही उसका एकमात्र प्रतीकार है। शोकजन्य क्षोभ में हृदय विलाप के द्वारा ही बचाया जाता है।

अनुष्टुप् छन्द, दृष्टान्त अलंकार।

- तमसा का कथन सीता से।

35. प्रियाशोको जीवं कुसुममिव घर्मो ग्लपयति। (3/30)

भाव – जिस प्रकार धूप फूल को उसी प्रकार प्रिया का शोक जीवन को सुखाता है। शिखरिणी वृत्त। उपमा अलङ्कार।

- तमसा का कथन सीता से राम के प्रति।

36. ''किमिति किलैषा मंस्यत एष परित्याग एषोऽभिषङ्ग इति।'' (3)

भावार्थ – यह (तमसा) क्या सोचेंगी – यह परित्याग और यह आसक्ति?

- सीता का कथन।

37. एकोरसः करुण एव निमित्तभेदाद्। (3/46)

भावार्थ – एक करुण रस ही है जो कारण-भेद से भिन्न होकर पृथक्-पृथक् परिणामों को प्राप्त कराता सा प्रतीत होता है।

वसन्ततिलका छन्द। उपमा (पूरे श्लोक में)

- तमसा का कथन सीता से।
- तृतीय अङ्क के अन्त में गङ्गा, पृथ्वी, वाल्मीकि और वशिष्ठ की प्रार्थना की गयी है।

38. गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः। (4/11)

भावार्थ – गुणवानों में गुण ही पूजा के स्थान होते हैं, न कोई चिह्न-विशेष और न आयु।

शिखरिणी वृत्त। अर्थान्तरन्यास अलंकार।

- **चतुर्थ अङ्क** – अरुन्धती का कथन कौशल्या से।

उत्तररामचरितम् की अन्य सूक्तियाँ

- लतायां पूर्वलूनायां प्रसवस्योद्भवः कुतः
- विना सीतादेव्यां किमिव हि न दुःखं रघुपते
- वीराणां समयो हि दारुणरसः स्नेहकमंबाधते।
- वृद्धास्ते न विचारणीयचरिताः
- प्रसवः खलु प्रकर्षपर्यन्तः स्नेहस्य (तमसा का कथन, अङ्क-3)।
- सुलभसौख्यमिदानीं बालत्वं भवति।

उत्तररामचरितम्- बिन्दुवार अध्ययन

- 'उत्तररामचरितम्' के रचियता हैं? - **भवभूति**
- उत्तररामचरितम् में अङ्क की गिनती है - **7**

- 'करुणरस' प्रधान नाटक है - **उत्तररामचरितम्**
- 'उत्तररामचरितम्' में पात्रों की संख्या है - **30 (तीस)**
- गर्भाङ्क इस नाटक में है - **उत्तररामचरितम्**
- 'उत्तररामचरितम्' के तृतीय अङ्क में कुल कितने श्लोक हैं? - **48**
- विदूषक रहित रचना है? - **उत्तररामचरितम्**
- भवभूति का सम्बन्ध है? - **उत्तररामचरितम् से**
- भवभूति का उत्कर्ष किस नाटक में है?-**उत्तररामचरितम् में**
- छाया अङ्क का सम्बन्ध किस नाटक से है - **उत्तररामचरिते**
- उत्तररामचरितम् नाटक रामायण के - **उत्तरार्द्ध पर आधारित है।**
- उत्तररामचरितम् नाटक का मुख्य रस है - **करुणः**
- भवभूति की मुख्यनाट्यकृति है - **उत्तररामचरितम्**
- महाकवि भवभूति किस रस के प्रयोग में सिद्धहस्त हैं? - **करुण रस**
- 'उत्तररामचरितम्' में किस पात्र की भूमिका नगण्य है? - **विदूषक की**
- उत्तररामचरिते 'पदवाक्यप्रमाणज्ञो भवभूतिर्नाम जतुकर्णीपुत्रः' इति केनोक्तम्? - **सूत्रधारेण**
- उत्तररामचरितम् के तृतीय अङ्क में कवि की मौलिक कल्पना है? - **छाया-सीता व राम का दण्डकारण्य में पुनरागमन**
- छाया-सीता के साथ दण्डकारण्य में आए राम का दर्शन करने वाला दूसरा पात्र है - **तमसा**
- अस्मिन्नाटके अन्तर्नाटकं विद्यते? - **उत्तररामचरिते**
- गर्भाङ्कस्य योजना केन नाटककारेण कृता?- **भवभूतिना**
- उत्तररामचरितं .... प्रयुक्तं भवतीति सूत्रधारो विज्ञापयति - **कालप्रियानाथस्य यात्रायाम्**
- उत्तररामचरितस्य प्रथमाङ्कः उच्यते? - **चित्रदर्शनम्**
- 'चित्रदर्शनम्' इत्याख्यः अङ्कः कस्मिन् नाटके वर्तते? - **उत्तररामचरिते**
- 'उत्तररामचरितम्' में लवकुश के जन्म की किस वर्षगाँठ का वर्णन है? - **बारहवीं**
- 'उत्तररामचरितम्' के तृतीय अङ्क का प्रारम्भ किससे होता है? - **विष्कम्भक**
- 'उत्तररामचरितम्' नाटक का मङ्गलाचरण किस छन्द में है? - **अनुष्टुप्**
- 'उत्तररामचरितम्' के मङ्गलाचरण में किसकी वन्दना की गयी है? - **कवि तथा वाणी**
- 'उत्तररामचरितम्' के तृतीय अङ्क में राम किससे अपनी व्यथा का वर्णन करते हैं? - **वासन्ती से**
- दुबारा दण्डकारण्य मे आये हुये राम के साथ किस पात्र को भवभूति ने तृतीय अङ्क में वर्णित किया है? - **वासन्ती को**
- 'उत्तररामचरितम्' में वर्णित तमसा और मुरला हैं? - **दो नदियाँ**
- उत्तररामचरितम् की कथावस्तु प्रारम्भ होती है? - **राम द्वारा सीता के निर्वासन से**
- 'छायाङ्क' उत्तररामचरितम् का कौन-सा अङ्क है?- **तृतीयः**
- 'उत्तररामचरितम्' के तृतीय अङ्क में दो पात्रों के परस्पर संवाद में नाटकीय तत्त्वों का परिचय मिलता है–ये दो पात्र हैं -**तमसा और मुरला**
- कालप्रियानाथस्य यात्रायामभिनीतम् - **उत्तररामचरितम्**
- उत्तररामचरिते कः रसः - **करुणविप्रलम्भशृङ्गारः**
- सीता राम को कितने वर्षों के अन्तराल पर देखती हैं?-**बारह वर्ष**
- 'उत्तररामचरित' के तृतीय अङ्क में घटनास्थल है? - **पञ्चवटी**
- 'उत्तररामचरितम्' में सीता की सखी है? - **वासन्ती**
- ऋषि अगस्त्य की पत्नी है? - **लोपामुद्रा**
- रामचन्द्र 'छायासीता' को क्यों नहीं देख पाते? - **सीता को दिये गये भागीरथी के आशीर्वाद की वजह से।**
- 'छायाङ्क' का मुख्य कथानक है- **राम-सीता पुनर्मिलन**
- दण्डकारण्य मे राम कितने वर्ष बाद दुबारा आए थे? - **बारह वर्ष बाद**
- 'उत्तररामचरितम्' के तृतीयाङ्क में किस नदी का उल्लेख है? - **गोदावरी**
- रामचन्द्र जी दुबारा दण्डकारण्य किसलिए गये थे? - **तपस्या करते हुए शम्बूक को दण्ड देने के लिए**
- मूर्च्छित राम को चेतना कैसे मिली? - **सीता के कर स्पर्श से**
- कौन-सा रस विवर्त प्राप्त कर लेता है? - **करुण**
- 'उत्तररामचरितम्' नाटक में वर्णित वासन्ती है? - **सीता की सखी**
- 'उत्तररामचरितम्' के तृतीय अङ्क को छायाङ्क कहते हैं? क्योंकि - **मञ्च पर उपस्थित सीता राम को नहीं दिखाई देती।**
- 'उत्तररामचरितम्' में किससे कुश एवं लव के जन्म का रहस्योद्घाटन होता है? - **विष्कम्भक द्वारा**
- 'प्रत्युप्तस्येव दयिते तृष्णादीर्घस्य चक्षुषः। मर्मच्छेदोपमैर्यत्नैः सन्निकर्षो निरुध्यते।।' इस श्लोक के 'प्रत्युप्तस्येव' इस पद में अलङ्कार है? - **उत्प्रेक्षा**
- "आश्च्योतनं नु हरिचन्दनपल्लवानाम्" में 'नु' किस अलङ्कार का वाचक है? - **सन्देह**
- अगस्त्याश्रम में राम के रहने के लिए पर्णकुटी का निर्माण किसने किया था? - **लक्ष्मण**
- 'उत्तररामचरितम्' में राम किस कोटि के नायक हैं? - **धीरोदात्त**
- सीता परित्याग के बाद पुनः राम और सीता का मिलन वर्णित है - **उत्तररामचरितम् में**
- 'उत्तररामचरितम्' में किस काल के समाज एवं संस्कृति का वर्णन है? - **रामायणकालीन**

- ‘आराधनाय लोकस्य मुञ्चतो नास्ति मे व्यथा’ इत्यस्ति? - **उत्तररामचरिते**
- “भवभूतिमहाकवेरिमां निरर्गलतरङ्गिणी” इति वदन्ति - **शिखरिणी**
- “वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि” इत्यत्र किं छन्दः? - **अनुष्टुप्**
- ‘वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि’ इति केनोक्तम्? - **भवभूतिना**
- छाया-सीता इसमें आती है? - **उत्तररामचरितम्**
- छायाङ्क .... में है? - **उत्तररामचरितम्**
- अन्तःकरणतत्त्वस्य दम्पत्योः स्नेहसंश्रयात्।
  आनन्दग्रन्थिरेकोऽयमपत्यमिति पठ्यते।।
  इस श्लोक में किसका महत्त्व प्रतिपादित है?- **पुत्र का महत्त्व**
- तमसा और मुरला दोनों नदियाँ किस काव्य की पात्र हैं? - **उत्तररामचरितम्**
- उत्तररामचरिते भवभूतिना कस्मिन् अङ्के भरतस्य उल्लेखः कृतः? - **चतुर्थे**
- उत्तररामचरिते शम्बूकमुनिः कतमं लोकं प्राप्नोति - **वैराजम्**
- उत्तररामचरितस्य उपजीव्यो ग्रन्थः कः अस्ति?-**वाल्मीकिरामायणम्**
- उत्तररामचरिते कतमः अङ्कः ‘गर्भाङ्कः’ इति नाम्ना प्रसिद्धः - **सप्तमोऽङ्कः**
- ‘दिष्ट्याऽपरिहीनधर्मः खलु स राजा’ संवादेन भवभूतिः परिचाययति - **श्रीरामम्**
- भागीरथी ‘उत्तररामचरितम्’ में किसकी पूजा करने के बहाने सीता को लाती है? - **सूर्य**
- ‘उत्तररामचरितम्’ में अदृश्यरूप में सीता किसके साथ पञ्चवटी में आती हैं? - **गंगा**
- करुण के रस-राजत्व की प्रतिष्ठापना किस ग्रन्थ द्वारा की गई? - **उत्तररामचरितम्**
- ‘उत्तररामचरितम्’ के तृतीय अङ्क का सम्बन्ध किससे है? - **पञ्चवटी से**
- शान्ता थी - **दशरथ की पुत्री**
- ‘सतां सद्भिः सङ्गः कथमपि हि पुण्येन भवति’ का अर्थ है - **सज्जनों का सज्जनों के साथ मिलन बड़े पुण्य से होता है।**
- “प्रियाशोको जीवं कुसुममिव घर्मो ग्लपयति”
  यह उक्ति किससे सम्बन्धित है? - **उत्तररामचरितम्**
- “गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः”
  सूक्ति किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है? - **उत्तररामचरितम्**
- “वितरति गुरुः प्राज्ञे विद्यां यथैव तथा जडे”
  इत्युक्तिः कस्मिन् नाटके आयाति? - **उत्तररामचरिते**
- “एको रसः करुण एव निमित्तभेदाद्” इयमुक्तिः कुत्रोपलभ्यते - **उत्तररामचरितम्**
- “तीर्थोदकं च वह्निश्च नान्यतः शुद्धिमर्हतः”
  यह उक्ति किसे लक्ष्य करके कही गयी है - **सीता**
- “दिष्ट्या अपरिहीनधर्मः खलु स राजा”
  उक्तिरियम् उत्तररामचरिते वर्तते - **सीतायाः**
- ‘एको रसः करुण एव निमित्तभेदात्’
  उक्तिरियम् उत्तररामचरितेऽस्ति? - **तमसायाः**
- ‘ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति”– यह सूक्ति किस कवि की है? - **भवभूतेः**
- “अनिर्भिन्नो गभीरत्वादन्तर्गूढघनव्यथः”, - **भवभूति ने राम के करुण**
- यह किस कवि ने और किस सन्दर्भ में कहा है?-**रस वर्णन में**
- “स्नपयति हृदयेशं स्नेहनिष्यन्दिनी ते, धवलमधुरमुग्धा दुग्धकुल्येव दृष्टिः” उपर्युक्त पद्यांश किस ग्रन्थ से उद्धृत है? - **उत्तररामचरितम् से**
- ‘तोयस्येवाप्रतिहतरयः सैकतं सेतुमोघः” श्लोकांश है? - **उत्तररामचरितम् से**
- “करुणस्य मूर्तिरथवा शरीरिणी विरहव्यथेव वनमेति जानकी”
  यह कथन किसका है? - **तमसा का**
- ‘ईदृशानां विपाकोऽपि जायते परमाद्भुतः” यह कथन है - **मुरला का**
- “अविदितगतयामा रात्रिरेव व्यरंसीत्”
  उत्तररामचरित में यह किसकी उक्ति है? - **राम की**
- “ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति”
  यह वाक्यांश कहाँ से उद्धृत है? - **उत्तररामचरित से**
- ‘शुचिः बिम्बग्राहे मणिः न मृदादयः’
  उत्तररामचरितस्य वाक्यमिदं किं सूचयति?- **प्राज्ञजडक्षत्रप्रभेदम्**

- 'भवभूतिर्विशिष्यते'' यह उक्ति किस नाटक के बारे में है? - **उत्तररामचरितम्**
- 'करुणस्य मूर्तिरथवा' यह उक्ति किसके बारे में है? - **सीता**
- ''किसलयमिव मुग्धं बन्धनाद् विप्रलूनं हृदयकमलशोषी दारुणो दीर्घशोकः'' प्रस्तुत श्लोक किससे उद्धृत है - **उत्तररामचरितम्**
- ''शोकक्षोभे च हृदयं प्रलापैरेव धार्यते'' उक्ति है - **उत्तररामचरितम्**
- ''अयि कठोर! यशः किल ते प्रियम्'' कथन किसका है - **वासन्ती का**
- ''सतां सद्भिः सङ्गः कथमपि हि पुण्येन भवति'' यह किस नाट्यग्रन्थ से सम्बद्ध है - **उत्तररामचरितम्**
- ''अपि ग्रावा रोदित्यपि दलति वज्रस्य हृदयम्'' इसका सम्बन्ध है - **उत्तररामचरितम् से**
- ''करुणस्य मूर्तिरथवा शरीरिणी'' इदं वर्णनं कस्मिन् काव्येऽस्ति? - **उत्तररामचरितम्**
- ''रहस्यं साधूनामनुपधि विशुद्धं विजयते'' जिस कवि की उक्ति है, वह हैं - **भवभूति**
- ''एको रसः करुण एव'' यह कथन है - **भवभूति**
- ''वितरति गुरुः प्राज्ञे विद्यां यथैव तथा जडे'' उत्तररामचरिते कस्य संवादोऽस्ति? - **आत्रेय्याः**
- ''वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि'' पद्यांशोऽयं कस्मिन् नाटके आयाति? - **उत्तररामचरिते**
- 'पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः' उत्तररामचरिते उक्तिरियं भवति? - **मुरलायाः**
- ''एको रसः करुण एव'' यह उक्ति उत्तररामचरितम् के किस अङ्क से सम्बन्धित है- **तृतीय**
- 'पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः'' किस कवि से सम्बद्ध है? - **भवभूति**
- ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति'' के वक्ता हैं- **राम**
- 'पूरोत्पीडे तटाकस्य परीवाहः प्रतिक्रिया' में 'पूरोत्पीडे' शब्द का अर्थ है - **जलवृद्धि**
- ''अन्तःकरणतत्त्वस्य दम्पत्योः स्नेहसंश्रयात् आनन्दग्रन्थिरेकोऽयमपत्यमिति पठ्यते''–यहाँ 'अपत्यम्' शब्द का अर्थ है? - **सन्तान**
- 'पूरोत्पीडे तटाकस्य परीवाहः प्रतिक्रिया' से क्या तात्पर्य है - **तालाब के अधिक भर जाने पर जल को बाहर बहाना ही एकमात्र संरक्षण उपाय होता है।**
- 'लोकोत्तराणां चेतांसि को हि विज्ञातुमर्हति'–इति कस्मिन्नाटके वर्ण्यते - **उत्तररामचरिते**
- प्रियप्रायावृत्तिर्विनयमधुरो वाचि नियमः ... उक्तिः? -**तापस्याः**
- 'विपाक' शब्द का अर्थ है? - **दुरवस्था**
- 'अमरसिन्धु' है? - **गङ्गा**
- 'पौलस्त्यस्य जटायुषा विघटितः' श्लोक में 'पौलस्त्यस्य' से तात्पर्य है? - **रावण से**
- 'पुटपाक' का अभिप्राय है? - **औषधि पकाने का एक विशिष्ट ढंग**
- 'प्रसवः खलु प्रकर्षपर्यन्तः स्नेहस्य' यहाँ 'प्रसवः' शब्द का अर्थ है? - **सन्तान**
- 'त्वं जीवितम्' का अर्थ है? - **तुम जीवन हो**
- 'नीरन्ध्रबालकदली' में 'नीरन्ध्र' पद का अर्थ है - **सघन**
- 'वधूद्वितीय' का अर्थ है - **प्रिया के साथ**
- 'कल्याणि! सञ्जीवय जगत्पतिम्' इस पद्यांश में 'जगत्पतिम्' की व्यञ्जना है? - **राम के लिए**
- 'रात्रिरेव व्यरंसीत्'। कस्मिन् नाटके इदं दृश्यते -**उत्तररामचरिते**
- 'सतां सद्भिः सङ्गः कथमपि हि पुण्येन भवति' – इदं कथनम् उत्तररामचरिते नाटकेऽस्ति - **वनदेवतायाः**
- उत्तररामचरितम् में तमसा और मुरला हैं - **नदी विशेषाधिष्ठात्री देविया**

वस्तुनिष्ठप्रश्नाः

1. ''एको रसः करुण एव निमित्तभेदात्'' यह कथन किसका है–

(A) भास का (B) भारवि का
(C) भवभूति का (D) भर्तृहरि का

2. ''स च कुलपतिराद्यश्छन्दसां यः प्रयोक्ता'' में 'कुलपति' पद से किसका निर्देश किया गया है–

(A) भवभूति का (B) वशिष्ठ का
(C) अगस्त्य का (D) वाल्मीकि का

3. उत्तररामचरितम् में कुल श्लोक संख्या मानी जाती है–

(A) 244 (B) 266
(C) 256 (D) 334

4. अनुष्टुप् के बाद भवभूति का प्रिय छन्द है–

(A) शिखरिणी (B) मन्दाक्रान्ता
(C) शार्दूलविक्रीडितम् (D) मालिनी

5. वशिष्ठ की पत्नी है–

(A) लोपामुद्रा (B) सुनयना
(C) भागीरथी (D) अरुन्धती

6. 'अमरसिन्धुः' पद का क्या अर्थ है–

(A) अमृतसमुद्रः (B) भागीरथी
(C) यमुना (D) पृथिवी

7. उत्तररामचरितम् का छाया अङ्क है–

(A) प्रथम अङ्क (B) सप्तम अङ्क
(C) चतुर्थ अङ्क (D) तृतीय अङ्क

8. 'यथा कार्यहानिर्न भवति तथा कार्यम्' यह कथन किसका है–

(A) आत्रेयी (B) तमसा

(C) मुरला (D) वासन्ती

9. 'हरिणीदृशः' पद में विभक्ति/वचन है–
(A) प्रथमा एक. (B) द्वितीया द्विव.
(C) षष्ठी एक. (D) चतुर्थी एक.

10. ''अयि कठोर! यशः किल ते प्रियम्'' में छन्द है–
(A) उपजाति (B) द्रुतविलम्बित
(C) इन्द्रवज्रा (D) वंशस्थ

11. पञ्चवटी के कदम्बवृक्ष को किसने रोपित किया था–
(A) वासन्ती ने (B) सीता ने
(C) राम ने (D) तमसा ने

12. अपनी प्रिया को मनाने के लिए नलिनीपत्ररूपी छाते को किसने लगाया–
(A) मयूर ने (B) राम ने
(C) गज ने (D) भवभूति ने

13. उत्तररामचरिते 'वारणानां विजेता' कः अस्ति–
(A) रामः (B) गजः
(C) जटायुः (D) रावणः

14. राम का 'करुणरस' है–
(A) पुटपाकवत् (B) हर्षशोकवत्
(C) स्नेहवत् (D) चञ्चलवत्

15. भवभूति के पिता का नाम है–
(A) भट्टगोपाल (B) श्रीकण्ठ
(C) नीलकण्ठ (D) ज्ञाननिधि

16. भवभूति के आश्रयदाता हैं–
(A) यशोवर्मा (B) राजवर्मा
(C) हर्षवर्धन (D) मित्रवर्मा

17. भवभूति के कितने नाटक उपलब्ध हैं–
(A) चार (B) तीन
(C) दो (D) तेरह

18. भवभूति का एक प्रसिद्ध दार्शनिक नाम है–
(A) उम्बेक (B) ज्ञाननिधि
(C) भट्टगोपाल (D) यशोवर्मा

19. भवभूति का गोत्र है–
(A) वत्स (B) काश्यप
(C) गौतम (D) भारद्वाज

20. लोपामुद्रा पत्नी है–
(A) वशिष्ठ की (B) अगस्त्य की
(C) ऋष्यशृङ्ग की (D) वाल्मीकि की

21. उत्तररामचरितम् में नदी के रूप में वर्णन नहीं है–
(A) तमसा का (B) मुरला का
(C) वासन्ती का (D) भागीरथी का

22. ''पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः'' यह कथन है–
(A) तमसा का (B) मुरला का
(C) वासन्ती का (D) सीता का

23. लव और कुश किसके आश्रम में शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं–
(A) वशिष्ठ के (B) अगस्त्य के
(C) विश्वामित्र के (D) वाल्मीकि के

24. सीता को अदृश्य रहने का वरदान किसने दिया–
(A) भागीरथी ने (B) तमसा ने
(C) लोपामुद्रा ने (D) इनमें से सभी ने

25. ''करुणस्य मूर्तिरथवा शरीरिणी'' किसने किसके लिए कहा–
(A) मुरला ने सीता के लिए
(B) तमसा ने जानकी के लिए
(C) वासन्ती ने वैदेही के लिए
(D) सीता ने तमसा के लिए

26. राम दण्डकारण्य में क्यों आए हैं–
(A) शम्बूक के वध हेतु (B) सीता से मिलने हेतु
(C) अगस्त्य के दर्शन हेतु (D) पञ्चवटी में घूमने हेतु

27. कुश और लव की कौन सी वर्षगाँठ मनायी जा रही है–
(A) दसवीं वर्षगाँठ (B) बारहवीं वर्षगाँठ
(C) छठवीं वर्षगाँठ (D) नौवीं वर्षगाँठ

28. ''स्पर्शः पुरा परिचितो नियतं स एव'' कथन है–
(A) राम का (B) सीता का
(C) वासन्ती का (D) तमसा का

29. ''तटस्थं नैराश्यादपि च कलुषं विप्रियवशात्'' इसमें छन्द है–
(A) मन्दाक्रान्ता (B) शिखरिणी
(C) हरिणी (D) शार्दूलविक्रीडितम्

30. 'उल्लापाः' पद का अर्थ है–
(A) उल्लास (B) मदमस्त गज
(C) विलाप (D) मयूर

31. पञ्चवटी में राम के साथ साक्षात् वार्तालाप करती है–
(A) तमसा (B) वनदेवी वासन्ती
(C) प्रिया सीता (D) मुरला

32. लोपामुद्रा गोदावरी से अपना संदेश कहने को किसे भेजती हैं-
(A) मुरला को (B) तमसा को
(C) भागीरथी को (D) वासन्ती को

33. सीता के कर्णमूल से लवलीलता के पत्ते को कौन खींचता था–
(A) करिशावक (B) मयूर
(C) मृग (D) इनमें से कोई नहीं।

34. व्याकृष्टः में प्रकृति-प्रत्यय है–
(A) व्या+कृष्+क्त (B) वि+आङ्+कृष्+क्त

(C) वि+आङ्+कृ+क्त (D) वि+या+कृ+क्त

35. 'आतपत्र' पद का अर्थ है–
(A) नलिनी का पत्र (B) छाता
(C) केले का पत्ता (D) आधा पत्ता

36. 'अनराल' पद का शब्दार्थ है–
(A) सीधा (B) टेढ़ा
(C) कमल (D) नलिनीनाल

37. 'ईदृश्यस्मि' पद का सन्धिविच्छेद होगा–
(A) ईदृश्+अस्मि (B) ईदृशी+अस्मि
(C) ईदृश+अस्मि (D) ईदृश्+यस्मि

38. 'तावपि' पद का सन्धिविच्छेद होगा–
(A) तो+अपि (B) ताव+अपि
(C) तौ+अपि (D) ताव्+अपि

39. 'पति-पत्नी' के अर्थ में अशुद्ध पद है–
(A) दम्पती (B) जम्पती
(C) जायापती (D) इनमें से कोई नहीं।

40. ''प्रसवः खलु प्रकर्षपर्यन्तः स्नेहस्य'' किसने, किससे कहा–
(A) सीता ने तमसा से (B) तमसा ने सीता से
(C) वासन्ती ने राम से (D) तमसा ने मुरला से

41. सीता द्वारा पालित मोर अपनी पत्नी के साथ कहाँ बैठा है–
(A) कदम्ब में (B) पहाड़ में
(C) गोदावरी जल में (D) लताकुञ्ज में

42. 'नीरन्ध्र' पद का अर्थ है–
(A) काला (B) घना
(C) जल (D) बादल

43. 'अदात्' में धातु एवं लकार का सही विकल्प है–
(A) दा+लङ्0+प्र0पु0 एक.
(B) दा+लुङ्+प्र0पु0 बहु.
(C) अद्+लट्+प्र0पु0 एक.
(D) दा+लुङ्+प्र0पु0 एक.

44. ''स्नपयति हृदयेशं स्नेहनिष्यन्दिनी ते'' यहाँ 'हृदयेश' पद से निर्देश है–
(A) सीता का (B) राम का
(C) हृदय का (D) चित्त का

45. ''ददतु तरवः पुष्पैरर्घ्यं फलैश्च मधुश्च्युतः'' यहाँ कौन किसका स्वागत करना चाह रहा है–
(A) राम, वासन्ती का (B) तमसा, राम का
(C) वासन्ती, राम का (D) अगस्त्य, वाल्मीकि का

46. 'शकुनि' पद का अर्थ है–
(A) शगुन (शुभसमय) (B) पक्षी
(C) मृग (D) वृक्ष

47. 'समाश्वसिहि' पद की व्याकरणात्मक प्रकृति है–
(A) सम+आ+श्वास+लोट् मु0पु0एक.
(B) समा+श्वस्+लोट्+म0पु0 द्विव.
(C) सम्+आङ्+श्वस्+लोट् म0पु0 एक.
(D) सम+आ+श्वास+लट् म0पु0 एक.

48. सीता के परित्याग रूपी वनवास को कितने दिन बीत गए हैं–
(A) 12 माह (B) 14 वर्ष
(C) 12 वर्ष (D) 16 वर्ष

49. ''किमभवद् विपिने हरिणीदृशः'' यहाँ 'हरिणीदृशः' पद से किसका निर्देश है–
(A) सीता का (B) हरिणी का
(C) कमललता का (D) नेत्रों का

50. 'उपालम्भः' पद का अर्थ नही है–
(A) ताना मारना (B) शिकायत करना
(C) उलाहना देना (D) उधार देना

51. 'कुरङ्ग' पद का अर्थ है–
(A) मृग (B) पक्षी
(C) वनदेवी (D) वृक्ष

52. भवभूति की अन्तिम तथा सर्वश्रेष्ठ रचना मानी जाती है–
(A) महावीरचरितम् (B) उत्तररामचरितम्
(C) मालतीमाधवम् (D) लवकुशचरितम्

53. उत्तररामचरितम् का प्रधान रस है–
(A) वीररस (B) हास्यरस
(C) करुणरस (D) रौद्ररस

54. ''भवभूतेः शिखरिणी निरर्गलतरङ्गिणी'' यह कथन किसका है–
(A) क्षेमेन्द्र का (B) कालिदास का
(C) बाण का (D) भवभूति का

55. सीता का ज्येष्ठ पुत्र है–
(A) लव (B) कुश
(C) जटायु (D) कुरङ्ग

56. उत्तररामचरितम् में राम की बहन के रूप में उल्लेख है–
(A) मुरला का (B) आत्रेयी का
(C) वासन्ती का (D) शान्ता का

57. ''त्वं जीवितं त्वमसि मे हृदयं द्वितीयम्'' इस पंक्ति में अलङ्कार है–
(A) रूपक (B) उपमा
(C) उत्प्रेक्षा (D) दीपक

58. ''प्रियाशोको जीवं कुसुममिव घर्मो ग्लपयति'' में अलङ्कार है–

(A) उत्प्रेक्षा (B) उपमा
(C) रूपक (D) विभावना

59. 'सोढः' में प्रकृति/प्रत्यय है–
(A) सूङ्+णञ् (B) सह्+क्त
(C) श्रु+ऊढः (D) सृज+क्त

60. 'रयः' पद का अर्थ है–
(A) वेग (B) रेत
(C) भूमि (D) मोर

61. 'काकली' पद का अर्थ है–
(A) तोता (B) तोतली बोली
(C) मयूर (D) घुँघराले बाल

62. 'प्रवान्तु' में धातु एवं लकार है–
(A) प्र+√वा धातु+लोट्+प्र०पु० एक.
(B) प्र+√वा धातु+लोट् प्र०पु० बहु.
(C) √प्रवा धातु + लोट् म०पु० एक.
(D) प्र+√वह् + लोट् + प्र०पु० बहु.

63. 'पुष्' धातु का लङ्लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन में रूप बनेगा–
(A) अपोष्यत् (B) अपूष्यत्
(C) अपुष्यत् (D) अपोष्यति

64. ''शोकक्षोभे च हृदयं प्रलापैरेव धार्यते'' इसमें किस वाच्य का प्रयोग है–
(A) कर्मवाच्य (B) कर्तृवाच्य
(C) भाववाच्य (D) इनमें से कोई नहीं

65. 'वीक्ष्य' पद में प्रत्यय है–
(A) क्तवतु (B) ल्यप्
(C) यत् (D) ष्यञ्

66. 'कुड्मल' पद का शब्दार्थ है–
(A) कमल (B) कली
(C) समान (D) सुन्दर

67. ''विष्वङ्मोहः स्थगयति कथम्'' में 'विष्वक्' पद का अर्थ है–
(A) विशेष (B) विश्वास
(C) चारों ओर से (D) हृदय

68. ''आलिम्पन्नमृतमयैरिव प्रलेपैः'' में 'अमृतमय' पद में प्रत्यय है–
(A) मयट् (B) म्युट्
(C) यक् (D) मुक्

69. ''करान्मम स्विद्यतः स्विद्यन्'' के 'स्विद्यतः' पद में विभक्ति है–
(A) षष्ठी (B) द्वितीया
(C) प्रथमा (D) पञ्चमी

70. ''कदम्बयष्टिः स्फुटकोरकेव'' में अलङ्कार है–
(A) विभावना (B) विशेषोक्ति
(C) उपमा (D) उत्प्रेक्षा

71. ''द्यामभ्युदस्थादरिः'' यहाँ 'अभ्युदस्थात्' पद में लकार है–
(A) लुङ् (B) लङ्
(D) विधिलिङ् (D) लोट्

72. 'पत्रिणाम्' पद का अर्थ है–
(A) पत्राणाम् (B) खगानाम्
(C) शराणाम् (D) पिशाचानाम्

73. ''अहो ! उत्खातितमिदानी मे परित्यागशल्यम्'' यह कथन किसका है–
(A) सीता का (B) वासन्ती का
(C) तमसा का (D) भागीरथी का

74. 'वर्षर्द्धिः' पद में सन्धि है–
(A) दीर्घ (B) व्यञ्जन
(C) यण् (D) गुण

75. उत्तररामचरितम् के तृतीय अङ्क में कुल श्लोक हैं–
(A) 45 (B) 46
(C) 48 (D) 49

76. भवभूति का निवासस्थान माना जाता है–
(A) पद्मपुर (B) धारानगरी
(C) जतुकर्णीनगर (D) अचलपुर

77. ''पदवाक्यप्रमाणज्ञः'' कहा जाता है–
(A) भट्टि को (B) भारवि को
(C) भवभूति को (D) भर्तृहरि को

78. भवभूति के गुरु का नाम है–
(A) ध्याननिधि (B) ज्ञाननिधि
(C) भट्टगोपाल (D) नीलकण्ठ

79. 'जतुकर्णी' नाम है–
(A) श्रीकण्ठ की माता का (B) भवभूति की माँ का
(C) नीलकण्ठ की पत्नी का (D) उपर्युक्त सभी

80. कुमारिलभट्ट के शिष्य और मीमांसादर्शन के विद्वान् माने जाते हैं–
(A) भवभूति (B) भर्तृहरि
(C) भारवि (D) भास

81. उत्तररामचरितम् के टीकाकार घनश्याम, महाकवि भवभूति को मानते हैं–
(A) तमिल (B) द्राविड
(C) उत्तरभारतीय (D) महाराष्ट्रियन

82. उत्तररामचरितम् में प्रयुक्त 'कालप्रियानाथ' पद का अर्थ है–
(A) काल (यमराज) (B) समय के पाबंद
(C) शिव (D) महाकवि

83. भवभूति का अनुमानित समय माना जाता है–
(A) 650 ई० से 750 ई० तक
(B) 750 ई० से 850 ई० तक
(C) 650 ई० पू० से 750 ई० तक
(D) 850 ई० से 950 ई० तक

84. उत्तररामचरितम् में अङ्क हैं–
(A) 6 (B) 7
(C) 8 (D) 5

85. उत्तररामचरितम् का मूल आधार है–
(A) वाल्मीकीयरामायण (B) तुलसीरामायण
(C) भावार्थरामायण (D) महाभारतम्

86. भवभूति मूलतः किस रीति के कवि माने जाते हैं–
(A) वैदर्भीरीति (B) पाञ्चालीरीति
(C) गौडीरीति (D) उपर्युक्त सभी

87. उत्तररामचरितम् की सम्पूर्ण घटना कितने वर्षो की है–
(A) 14 वर्ष (B) 18 वर्ष
(C) 7 वर्ष (D) 12 वर्ष

88. उत्तररामचरितम् के किस अङ्क में राम-सीता का मिलन होता है–
(A) तृतीय अङ्क में (B) चतुर्थ अङ्क में
(C) षष्ठ अङ्क में (D) सप्तम अङ्क में

89. 'गर्भनाटक' की योजना उत्तररामचरितम् के किस अङ्क में है–
(A) सप्तम अङ्क में (B) प्रथम अङ्क में
(C) तृतीय अङ्क में (D) चतुर्थ अङ्क में

90. विदूषक रहित रचना मानी जाती है–
(A) शाकुन्तलम् (B) स्वप्नवासवदत्तम्
(C) उत्तररामचरितम् (D) इनमें से कोई नहीं

91. उत्तररामचरितम् का पात्र है–
(A) सौधातकि (B) दण्डायन
(C) दुर्मुख (D) उपर्युक्त सभी

92. करुणरस का सर्वोत्तम कवि माना जाता है–
(A) भास को (B) भवभूति को
(C) कालिदास को (D) माघ को

93. चन्द्रकेतु किसका पुत्र है–
(A) लक्ष्मण का (B) राम का
(C) वशिष्ठ का (D) ऋष्यश्रृङ्ग का

94. राम ने स्वर्णमयी सीता के साथ कौन सा यज्ञ किया–
(A) वाजपेययज्ञ (B) अश्वमेधयज्ञ
(C) पञ्चमहायज्ञ (D) दशपौर्णमासयज्ञ

95. उत्तररामचरितम् के नायक और नायिका हैं–
(A) राम-वासन्ती (B) लव-आत्रेयी
(C) राम-सीता (D) चन्द्रकेतु-तमसा

96. ''ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति'' किसकी उक्ति है–
(A) राम की (B) सीता की
(C) तमसा की (D) वाल्मीकि की

97. सीताविषयक लोकापवाद राम से किसने बताया–
(A) वाल्मीकि ने (B) वशिष्ठ ने
(C) अष्टावक्र ने (D) दुर्मुख ने

98. ''गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः'' यह सूक्ति किस नाटक से सम्बन्धित है–
(A) उत्तरसीताचरितम् (B) जानकीजीवनम्
(C) उत्तररामचरितम् (D) सीताचरितम्

99. उत्तररामचरितम् के प्रथम अङ्क का नाम है–
(A) छाया अङ्क (B) चित्रदर्शन अङ्क
(C) गर्भाङ्क (D) पञ्चवटीप्रवेश अङ्क

100. उत्तररामचरितम् के तृतीय अङ्क का प्रारम्भ होता है–
(A) तमसा और मुरला के वार्तालाप से
(B) तमसा और सीता के वार्तालाप से
(C) राम और वासन्ती के मिलने से
(D) गोदावरी और भागीरथी के वार्तालाप से

उत्तरमाला

1. (C)	**2. (D)**	**3. (C)**	**4. (A)**	**5. (D)**	**6. (B)**
7. (D)	**8. (D)**	**9. (C)**	**10. (B)**	**11. (B)**	**12. (C)**
13. (B)	**14. (A)**	**15. (C)**	**16. (A)**	**17. (B)**	**18. (A)**
19. (B)	**20. (B)**	**21. (C)**	**22. (B)**	**23. (D)**	**24. (A)**
25. (B)	**26. (A)**	**27. (B)**	**28. (A)**	**29. (B)**	**30. (C)**
31. (B)	**32. (A)**	**33. (A)**	**34. (B)**	**35. (B)**	**36. (A)**
37. (B)	**38. (C)**	**39. (D)**	**40. (B)**	**41. (A)**	**42. (B)**
43. (D)	**44. (B)**	**45. (C)**	**46. (B)**	**47. (C)**	**48. (C)**
	49. (A)	**50. (D)**	**51. (A)**	**52. (B)**	**53. (C)**
54. (A)	**55. (B)**	**56. (D)**	**57. (A)**	**58. (B)**	**59. (B)**
60. (A)	**61. (B)**	**62. (B)**	**63. (C)**	**64. (A)**	**65. (B)**
66. (B)	**67. (C)**	**68. (A)**	**69. (D)**	**70. (C)**	**71. (A)**
72. (C)	**73. (A)**	**74. (D)**	**75. (C)**	**76. (A)**	**77. (C)**
78. (B)	**79. (D)**	**80. (A)**	**81. (B)**	**82. (C)**	**83. (A)**
84. (B)	**85. (A)**	**86. (C)**	**87. (D)**	**88. (D)**	**89. (A)**
90. (C)	**91. (D)**	**92. (B)**	**93. (A)**	**94. (B)**	**95. (C)**
96. (A)	**97. (D)**	**98. (C)**	**99. (B)**	**100. (A)**	

4.13 मुद्राराक्षसम्

विशाखदत्त का परिचय

- **नाम-** विशाखदत्त
- **पिता का नाम-** भास्करदत्त
 (कुछ संस्करणों में इनके पिता का नाम 'पृथु' भी दिया गया है।)
- **पितामह-** बटेश्वरदत्त
- **निवासस्थान-** सम्भवतः बंगाल अथवा बिहार
- **उपासक-** शिव के
- **रीति-** वैदर्भी किन्तु उग्रता या भयङ्करता का वर्णन करने के लिए गौड़ी रीति का प्रयोग।
- **प्रिय छन्द-** अनुष्टुप्, वसन्ततिलका, शार्दूलविक्रीडित।
- **प्रिय अलङ्कार-** अर्थालङ्कार।
- **समय-** अधिकांश विद्वानों के अनुसार चतुर्थ शताब्दी।
- **आश्रयदाता-** तैलङ्ग महोदय के अनुसार 'अवन्तिवर्मा'।
- **रचनाएँ-** 1.मुद्राराक्षस 2.देवीचन्द्रगुप्त 3.अभिसारिकवञ्चितकम्
- 'मुद्राराक्षस' ही विशाखदत्त की एकमात्र प्रामाणिक रचना है।

मुद्राराक्षस का परिचय

- **लेखक-** विशाखदत्त
- **काव्यविधा-** नाटक (ऐतिहासिक)
- **विभाजन-** 7 (सात) अङ्कों में
- **श्लोक संख्या-** 169

अङ्क	अङ्कों का नाम	श्लोक संख्या
प्रथम	मुद्रा-लाभ	27
द्वितीय	राक्षस-विचार	23
तृतीय	कृतक-कलह	33
चतुर्थ	राक्षस-उद्योग	22
पञ्चम	राक्षस-निकार	24
षष्ठ	राक्षस-निर्वेद	21
सप्तम	राक्षस-निग्रह	19
	योग-	169

गुण- ओज,माधुर्य तथा प्रसाद गुणों का समन्वय। मुद्राराक्षस में तीनों गुणों का सम्मिलित रूप से प्रयोग है।
अलङ्कार- उपमा, रूपक, समासोक्ति, उत्प्रेक्षा, श्लेष, अर्थान्तरन्यास अलङ्कारों की प्रधानता।
रीति- वैदर्भी के साथ-साथ गौड़ी रीति।
छन्द- सम्पूर्ण नाटक में 19 प्रकार के छन्दों का प्रयोग है।
- अनुष्टुप् तथा आर्या जैसे छोट छन्द तथा वसन्ततिलका, शिखरिणी, शार्दूलविक्रीडित, स्रग्धरा जैसे बड़े छन्दों का भी प्रयोग है।

मुख्य/प्रधान/अङ्गी रस- वीररस।
उपजीव्य- विष्णुपुराण तथा श्रीमद्भागवतमहापुराण
- दशरूपककार धनञ्जय, मुद्राराक्षस का उपजीव्य 'बृहत्कथा' को मानते हैं।

नायक- चाणक्य (कौटिल्य, विष्णुगुप्त) कुछ विद्वान् चन्द्रगुप्त को नायक मानते हैं।
नायिका- कोई नायिका नहीं। (नायिका विहीन नाटक)
प्रतिनायक- राक्षस (सुबुद्धिशर्मा)
कञ्चुकी- 1.जाजलि (मलयकेतु का)
 2.वैहीनर (चन्द्रगुप्त का)

मुद्राराक्षस का मङ्गलाचरण

धन्या केयं स्थिता ते शिरसि शशिकला किं नु नामैतदस्या,
नामैवास्यास्तदेत्परिचितमपि ते विस्मृतं कस्य हेतोः।
नारीं पृच्छामि नेन्दुं कथयतु विजया न प्रमाणं यदीन्दु-
र्देव्या निह्नोतुमिच्छोरिति सुरसरितं शाठ्यमव्याद्विभोर्वः॥1/1॥

भावार्थ- इस पद्य में शिव और पार्वती का वार्तालाप पूर्वक माङ्गलिक पद्य है-
पार्वती- आपके सिर पर विद्यमान यह धन्य स्त्री कौन है?
शिव- शशिकला।
पार्वती- क्या यह इसका नाम है?
शिव- यह इसका नाम ही है। उसे जानते हुए भी तुम्हें किस कारण भूल गया है?
पार्वती- मैं स्त्री के विषय में पूँछ रही हूँ, चन्द्रमा के विषय में नहीं।
शिव- यदि तुम चन्द्रमा को प्रमाण नहीं मानती तो तुम्हारी सखी विजया ही तुम्हें बतलाएं।
इसप्रकार देवी पार्वती से गङ्गा को छिपाने के इच्छुक भगवान् शिव की कुटिलता आप सबकी रक्षा करे।

पादस्याविर्भवन्तीमवनतिमवने रक्षतः स्वैरपातैः,
सङ्कोचेनैव दोष्णां मुहुरभिनयतः सर्वलोकातिगानाम्।
दृष्टिं लक्ष्येषु नोग्रज्वलनकणमुचं बध्नतो दाहभीतेः,
इत्याधारानुरोधात्त्रिपुरविजयिनः पातु वो दुःखनृत्तम्॥1/2॥

भावार्थ- इच्छानुसार पैर के रखने से होने वाली पृथ्वी की अवनति (रसातल में जाने से) की रक्षा करने वाले, सभी लोकों को पार करने वाली भुजाओं को बार-बार सिकोड़कर ही अभिनय करने वाले, भयङ्कर आग की लपटों को छोड़ने वाली दृष्टि को वस्तुओं पर, भस्म हो जाने के भय से न टिकाने वाले और प्रकार धरातल के सीमित होने के कारण तीनों लोकों को जीतने वाले अर्थात् भगवान् शिव का कठिनतापूर्वक किया गया नृत्य आप सब की रक्षा करे।

- मङ्गलाचरण के दोनों पद्यों में भगवान् शिव की स्तुति की गयी है तथा आशीर्वादात्मक नान्दी है।
- द्वितीय पद्य में कथानक का स्पष्ट संकेत होने से वस्तुनिर्देशात्मक नान्दी है।
- उपर्युक्त पद्यों में अष्टपदा तथा पत्रावली नान्दी भी है।
- प्रथम पद्य में स्रग्धरा छन्द एवं वक्रोक्ति अलङ्कार है।
- द्वितीय श्लोक में भी स्रग्धरा छन्द एवं परिकर अलङ्कार है।

मुद्राराक्षस का संक्षिप्त कथानक

प्रथम अङ्क

- चाणक्य को अपने गुप्तचरों से सूचना मिलती है कि कुसुमपुर नगर में 'नन्द के अमात्य राक्षस' के तीन विश्वासपात्र व्यक्ति हैं जो राक्षस के निर्देशानुसार कार्य कर रहे हैं।
- उन्हीं तीनों में से एक स्वर्णकार चन्दनदास, राक्षस के परिवार को अपने घर में आश्रय दिया था।
- राक्षस नन्दवंश का अनन्य भक्त एवं कुशल राजनीतिज्ञ था।
- चाणक्य, राक्षस को अपने पक्ष में मिलाना चाहता है, इसलिए कूटनीति करता है।
- चाणक्य के गुप्तचर को राक्षस-नामाङ्कित एक मुद्रा मिलती है।
- चाणक्य, शकटदास से एक पत्र लिखवाकर उस पर राक्षस नामाङ्कित मुद्रा से मुद्रित करवाता है। इसी मुद्रा से राक्षस की पराजय होती है।

द्वितीय अङ्क

- अमात्य राक्षस, कुसुमपुर में चन्द्रगुप्त की हत्या का षडयन्त्र करता है, क्योंकि वह चाणक्य द्वारा संरक्षित चन्द्रगुप्त से ईर्ष्या करता है।
- राक्षस, मलयकेतु की दुर्दशा पर पश्चाताप करता है तथा मलयकेतु द्वारा प्रेषित आभूषण को कञ्चुकी से प्राप्त करता है।
- सपेरा के वेश में आये विराधगुप्त नामक राक्षस के गुप्तचर से कुसुमपुर का वृत्तान्त प्राप्त होता है।
- विराधगुप्त द्वारा पता चलता है कि राक्षस का षडयन्त्र असफल हुआ और चाणक्य की बुद्धि से चन्द्रगुप्त के बजाय वैरोचक और बर्बरक की मृत्यु हुई।
- चाणक्य की ही बुद्धि से गर्भगृह में आग लगवाकर चन्द्रगुप्त के शत्रुओं को मार दिया गया।
- सिद्धार्थक के साथ शकटदास, राक्षस के पास जाता है और वृत्तान्त सुनाने पर सिद्धार्थक राक्षस द्वारा पुरस्कृत किया जाता है।
- सिद्धार्थक के पास से राक्षस नामाङ्कित मुद्रा (अंगूठी) मिलती है और राक्षस मुद्रा को शकटदास को व्यवहार के लिए देता है।
- सिद्धार्थक बताता है कि मलयकेतु के पलायन काल से ही चाणक्य और चन्द्रगुप्त एक-दूसरे की आज्ञाओं का उल्लंघन करते हैं।
- राक्षस करभक को कुसुमपुर भेजता है।

तृतीय अङ्क

- कौमुदीमहोत्सव मनाने के लिए चन्द्रगुप्त कुसुमपुर के सुगाङ्ग प्रासाद को जाता है।
- कञ्चुकी, चन्द्रगुप्त से बताता है कि 'प्रतिषेध' के कारण लोगों द्वारा कौमुदीमहोत्सव नहीं मनाया जा रहा है।
- राक्षस द्वारा भेजे गये दो वैतालिकों द्वारा शारदी-रमणीयता का वर्णन किया जाता है।
- चन्द्रगुप्त द्वारा राक्षस की प्रशंसा पर चाणक्य क्रुद्ध होता है।
- चन्द्रगुप्त,चाणक्य का अनादर कर स्वयं राज्य करने की घोषणा हेतु कञ्चुकी को आदेश देकर शयनगृह में चला जाता है।

चतुर्थ अङ्क

- राक्षस, चाणक्य की सफलताओं पर अत्यधिक चिन्ता करता है।

भागुरायण के साथ मलयकेतु, राक्षस के पास जाता है, तथा इसी समय पर आकर करभक नामक सेवक कुसुमपुर का समाचार बतलाता है कि किस प्रकार उत्तेजित किये जाने पर चन्द्रगुप्त ने चाणक्य को अधिकारच्युत कर दिया है।

- मलयकेतु , राक्षस से शत्रु सम्बन्धी वार्ता करके वापस चला जाता है।
- जीवसिद्धि नामक क्षपणक, राक्षस को चाणक्य के सम्पर्क से चन्द्रगुप्त से मिलने के लिए इंगित करता है, क्योंकि यह समय चन्द्रगुप्त का अभ्युदयकाल है।
- सबके चले जाने पर राक्षस भी सूर्यास्त जानकर चला जाता है।

पञ्चम अङ्क

- जीवसिद्धि नामक चाणक्य का गुप्तचर मलयकेतु की सेना में प्रवेश करता है और स्वयं को राक्षस का मित्र बताता है।
- जीवसिद्धि ही मलयकेतु को बताता है कि राक्षस ने विषकन्या के प्रयोग से पर्वतेश्वर को मरवा डाला।
- उसी समय से चाणक्य ने राक्षस का मित्र जानकर मुझे निकाल दिया।
- यह सुनकर मलयकेतु, राक्षस से घृणा करने लगता है। उसी समय मलयकेतु, राक्षस की नामाङ्कित मुद्रा युक्त पत्र तथा कुछ मौखिक सूचनाएँ सिद्धार्थक से प्राप्त करता है।
- इन घटनाओं से मलयकेतु को राक्षस के शत्रुपक्ष में मिल जाने का सन्देह और भी पुष्ट हो जाता है।
- मलयकेतु ,राक्षस को बुलवाकर पत्र तथा आभूषण पेटिका दिखाकर अपमानित करता है और चित्रवर्मा,सिंहनाद,पुष्कराक्ष,सुषेण एवं मेघाक्ष को मरवा डालता है।
- मलयकेतु अपनी सेना को कुसुमपुर घेरने का आदेश देता है, इस पर राक्षस अत्यन्त व्याकुल हो जाता है और मलयकेतु को बंदी बना लिया जाता है।

षष्ठ अङ्क

- सिद्धार्थक अपने मित्र से कहता है कि चाणक्य के आदेशानुसार मैं चित्रवर्मादि पाँच आश्रित राजाओं के मारे जाने तथा मलयकेतु के बन्दी बनाये जाने की सूचना चन्द्रगुप्त को देने जा रहा हूँ।
- राक्षस अपने मित्र चन्दनदास के मृत्युदण्ड की सूचना प्राप्त

करता है।

- राक्षस अत्यन्त व्याकुल हो जाता है तथा चन्दनदास को बचाने का उपाय सोचता है।

सप्तम अङ्क

- चाण्डाल , चन्दनदास को फाँसी देने के लिए तैयार है तथा चन्दनदास की पत्नी वध्यस्थल पर ही विलाप करती है।
- इसी अवसर पर राक्षस आता है, चाण्डाल, राक्षस के आने की सूचना चाणक्य को देता है।
- चन्द्रगुप्त भी वहाँ आता है और राक्षस, चन्द्रगुप्त से प्रणाम करता है।
- चाणक्य के आदेशानुसार चन्द्रगुप्त, राक्षस से प्रणाम करता है और राक्षस आशीर्वाद देता है।
- चाणक्य, चन्दनदास के जीवन के बदले चन्द्रगुप्त के प्रधानामात्य का शस्त्र ग्रहण करने के लिए राक्षस से कहते हैं लेकिन राक्षस संकोच करता है।
- चाणक्य के प्रशंसा करने पर राक्षस अमात्य पद ग्रहण करता है और चन्दनदास को श्रेष्ठ सम्मान के साथ मुक्त किया जाता है।
- मलयकेतु को मुक्त करके उसका पैतृक राज्य उसे दे दिया जाता है।
- सभी बन्दी छोड़ दिये जाते है एवं प्रतिज्ञा पूर्ण होने पर चाणक्य अपनी शिखा को बाँध लेता है।
- भरतवाक्य के साथ नाटक समाप्त होता है।

मुद्राराक्षस का भरतवाक्य

वाराहीमात्योनेस्तनुमवनविधावास्थितस्यानुरूपां,
यस्य प्राग्दन्तकोटिं प्रलयपरिगता शिश्रिये भूतधात्री।
म्लेच्छैरुद्विज्यमाना भुजयुगमधुना संश्रिता राजमूर्तेः,
स श्रीमद्बन्धुभृत्यश्चिरमवतु महीं पार्थिवश्चन्द्रगुप्तः॥ 7/19॥

भावार्थ- पहले प्रलय को प्राप्त हुई पृथ्वी ने रक्षा करने में समर्थ वराह रूप शरीर को धारण करने वाले जिस भगवान् विष्णु के दाँतों के अग्रभाग का आश्रय लिया, उसी पृथ्वी ने अब म्लेच्छों के द्वारा पीड़ित किये जाने पर राजा चन्द्रगुप्त के शरीर को धारण करने वाले भगवान् विष्णु की दोंनो भुजाओं का आश्रय लिया है। ऐश्वर्यसम्पन्न सम्बन्धियों तथा सेवकों वाला वह विष्णु रूप राजा चन्द्रगुप्त चिरकाल तक पृथ्वी की रक्षा करें।

- इस भरतवाक्य में राजा तथा प्रजा के ऐश्वर्य की कामना की गयी है।
- इसका वक्ता राक्षस है।
- इस पद्य में स्रग्धरा छन्द तथा अतिशयोक्ति अलङ्कार है।

पात्र-परिचय

पुरुषपात्र

- **सूत्रधार-** प्रमुख नट तथा मञ्च का संचालक।
- **चाणक्य-** नायक, महान् राजनीतिज्ञ एवं मौर्य साम्राज्य का प्रतिष्ठापक।
- **चन्द्रगुप्त-** उपनायक, मौर्य साम्राज्य का संस्थापक एवं चाणक्य का शिष्य। (कुछ विद्वान् चन्द्रगुप्त को ही नायक मानते हैं)
- **मलयकेतु-** महाराज पर्वतक का पुत्र, राक्षस का सहायक तथा चन्द्रगुप्त का प्रतिद्वन्द्वी।
- **राक्षस-** प्रतिनायक, नन्द का महामात्य तथा चाणक्य का प्रतिद्वन्द्वी।
- **चन्दनदास-** पाटलिपुत्र का मणिकार श्रेष्ठी, राक्षस का मित्र।
- **भागुरायण-** मलयकेतु का कपटी मित्र, चाणक्य का गुप्तचर।
- **जीवसिद्धि-** क्षपणक वेषधारी राक्षस का कपटी मित्र, चाणक्य का गुप्तचर। (वास्तविक नाम- इन्दु शर्मा)
- **सिद्धार्थक-** चाणक्य का विश्वासपात्र गुप्तचर।
- **सुसिद्धार्थक-** चाण्डाल वेशधारी सिद्धार्थक का मित्र।
- **निपुणक-** चाणक्य का गुप्तचर।
- **विराधगुप्त-** राक्षस का गुप्तचर।
- **करभक-** राक्षस का गुप्तचर।
- **जाजलि-** मलयकेतु का कञ्चुकी।
- **प्रियंवदक-** राक्षस का नौकर।
- **शकटदास-** राक्षस का मित्र।
- **वैहीनर-** मौर्य साम्राज्य का कञ्चुकी।
- **वेत्रधारी पुरुष- भासुरक-** मलयकेतु के अनुचर।
- **दौवारिक-** राक्षस का द्वारपाल।
- **पुरुष-** चाणक्य का गुप्तचर।
- **वैतालिक-** राक्षस द्वारा नियुक्त चारणद्वय।
- **बालक-** चन्दनदास का पुत्र।
- **आहितुण्डिक-** सपेरा।
- **शार्ङ्गरव-** चाणक्य का शिष्य।

स्त्री-पात्र

- **नटी-** सूत्रधार की सहायिका
- **शोणोत्तरा-** चन्द्रगुप्त की द्वारपालिका।
- **विजया-** राजकुमार मलयकेतु की द्वारपालिका।
- **कुटुम्बिनी-** चन्दनदास की पत्नी।

मुद्राराक्षस का नामकरण

- मुद्राराक्षस का नामकरण इस नाटक के कथानक की एक महत्त्वपूर्ण घटना के आधार पर किया गया है और वह है- 'राक्षस की मुद्रा प्राप्ति'।
- चाणक्य, चन्द्रगुप्त के राज्य को चिरस्थायी बनाने के लिए राक्षस को उसका अमात्यपद ग्रहण करवाना चाहता है। अचानक ही अपने गुप्तचर निपुणक द्वारा चाणक्य को राक्षस के नाम से अङ्कित उसकी अँगूठी प्राप्त हो जाती है।
- यही अँगूठी (मुद्रा) राक्षस को वश में करने की यन्त्र बन जाती है।

''ननु राक्षस एवास्मदङ्गुलीप्रणयी संवृत्त इति।''

- इसी मुद्रा की सहायता से चाणक्य कपट पत्र के द्वारा राक्षस

और मलयकेतु में भेद उत्पन्न करके राक्षस का निग्रह करने में सफल हो पाया है क्योंकि समस्त चालों की जड़ कपट पत्र पर राक्षस की यही मुद्रा अङ्कित थी।

- मुद्राराक्षस के कथानक से यह स्पष्ट ही है कि इसमें राक्षस, मुद्रा द्वारा ही जीता गया है और इसका नामकरण भी प्रारम्भ में इस बात को स्पष्ट कर देता है-

मुद्रया जितः राक्षसः यस्मिन् इति मुद्राराक्षसः। तद् अधिकृत्य कृतो ग्रन्थः इति 'मुद्राराक्षसम्'।

- यहाँ मध्यमपदलोपी बहुव्रीहि समास है।

प्रमुख पात्रों का चरित्र-चित्रण

चाणक्य

- चाणक्य इस नाटक का नायक है क्योंकि समस्त घटनाओं का एकमात्र नियन्ता चाणक्य ही है।
- वह अत्यन्त व्यवहारकुशल, परमशास्त्रज्ञ तथा अर्थशास्त्र नामक ग्रन्थ के प्रणेता भी हैं।
- चाणक्य निरीह, अनासक्त तथा निःस्वार्थ ब्राह्मण होने के कारण धीरप्रशान्त नायक है-

'सामान्यगुणयुक्तस्तु धीरशान्तो द्विजादिकः।'

- अभिमानी,कपटप्रवीण,क्रोधी व आत्मप्रशंसक होने के कारण वह धीरोद्धत नायक है- **'धीरोद्धतस्त्वहङ्कारी चलश्चण्डो विकत्थनः।'**
- इस प्रकार चाणक्य दोनों कोटियों में आता है।
- चाणक्य, चन्द्रगुप्त का गुरु तथा मार्गदर्शक भी है।
- चाणक्य प्रतिज्ञा लेता है कि जब तक नन्दवंश का समूल नाश नहीं कर दूँगा,तब तक अपनी शिखा नहीं बाधूँगा।
- इसप्रकार अपनी कूटनीति से चाणक्य शत्रुओं का विनाश तथा अमात्य राक्षस को अपने गुट में मिला लेता है।
- नाटक के अन्त में चाणक्य कहता है अब चन्द्रगुप्त के शासन में बन्धन मेरी शिखा का होगा, प्रजाओं का नहीं -

'पूर्णप्रतिज्ञेन मया केवलं बध्यते शिखा।'

राक्षस

- राक्षस अत्यन्त वैभवयुक्त, यशस्वी, प्रतिभाशाली, कुलीनमन्त्री है।
- उसका वास्तविक नाम **सुबुद्धि शर्मा** है। वह ब्राह्मण है।
- राक्षस अपने स्वामी महाराज नन्द के प्रति अत्यन्त निष्ठावान् कूटनीतिज्ञ तथा शस्त्रविद्या में भी प्रवीण है।
- वह स्वार्थ रहित, सहज मानवीय भावनाओं से युक्त भावुक भाग्यवादी भी है किन्तु आवेश में आकर अपनी स्वाभाविक दुष्ट बुद्धि से अपनी निर्णय सम्बन्धी भूलों के कारण दुर्भाग्य का शिकार हो जाता है।
- वह अपनी अस्थिर बुद्धि के कारण ही चाणक्य के परमभक्त जीवसिद्धि तथा सिद्धार्थक जैसे व्यक्तियों पर भी विश्वास कर अपनी पराजय को आमन्त्रित कर लेता है।
- वह पुरुषार्थी की अपेक्षा भाग्यवादी अधिक है, किन्तु उसका सम्पूर्ण जीवन निराशाओं, असफलताओं तथा दुर्भाग्य से परिपूर्ण रहा है।

चन्द्रगुप्त

- चन्द्रगुप्त को इस नाटक का उपनायक कह सकते हैं, यह धीरोदात्त कोटि का है। कुछ लोग इसे ही नाटक का नायक भी मानते हैं।
- विशाल मौर्य साम्राज्य को प्राप्त करके भी अहङ्कार उसे छू तक नहीं गया है।
- चाणक्य उसे अनेक स्थानों पर **'वृषल'** कहकर सम्बोधित करता है।
- वह लोक-रञ्जक तथा प्रकृति प्रेमी भी है, यह उसके कौमुदी महोत्सव के आयोजन से स्पष्ट परिलक्षित होता है।
- अतः मौर्य साम्राज्य का संस्थापक चन्द्रगुप्त सभी गुणों से सम्पन्न है।

मलयकेतु

- मलयकेतु राजा पर्वतक का पुत्र है।
- मलयकेतु का चरित्र चन्द्रगुप्त की अपेक्षा राजकुमार के रूप में अधिक विकसित होता है।
- चाणक्य चालाकी से विषकन्या द्वारा इसके पिता पर्वतक की हत्या करवाकर इसे भयभीत कर कुसुमपुर से भगा देता है।
- मलयकेतु अपने अविवेकी बुद्धि के कारण राक्षस के प्रति अविश्वास रखता है।
- भागुरायण उसे राक्षस के प्रति भड़का देता है इसी से उसे राक्षस के गुण में भी दोष ही दिखलाई पड़ते हैं।
- अतः मलयकेतु अपनी अधीरता, अयोग्यता, अविवेक एवं दुर्नीति के कारण अपना सर्वनाश कर लेता है।

चन्दनदास

- चन्दनदास मुद्राराक्षस नाटक का प्रमुख पात्र है तथा वह राक्षस का अनन्य मित्र है।
- वह कुसुमपुर का प्रतिष्ठित जौहरी है, इसीलिए कुसुमपुर के प्रवासकाल में राक्षस अपने परिवार को उसी के घर पर छोड़ देता है, और वह भी अपना सर्वस्व खोकर भी अपने मित्र के परिवार की रक्षा करता है।
- चाणक्य द्वारा प्राणदण्ड की धमकी से भी वह विचलित नहीं होता।

वह दृढ़तापूर्वक कहता है, क्या मुझे डरा रहे हो, सज्जनों के घर भी मैं राक्षस के परिवार को नहीं भेजूँगा तब असज्जन की तो बात ही क्या।

'आर्य! किं मे भयं दर्शयासि, सन्तमपि गेहे अमात्यराक्षसस्य गृहजनं न समर्पयामि किं पुनरसन्तम्।'

- अतः चन्दनदास का चरित्र एवं व्यक्तित्व त्याग, सदाचार तथा आदर्श से परिपूर्ण है।

मुद्राराक्षस का नायक

- यह प्रश्न अत्यन्त विवादित है कि 'मुद्राराक्षस' का नायक कौन है?

- विद्वानों में इस बात पर मतभेद है किन्तु कुछ निर्णायक कदम बढ़ाने का प्रयास किया जा रहा है।

1. **चाणक्य-** नाटक में सर्वप्रथम हमारा ध्यान चाणक्य आकृष्ट करता है और वही नाटक की कथा को आगे बढ़ाता है।

- यद्यपि चाणक्य के किसी स्वार्थ की पूर्ति नहीं होती फिर भी वीररस प्रधान होने के कारण चाणक्य ही उसका प्रधान आश्रय है। वह फल का भोक्ता भी है।
- चन्द्रगुप्त के राज्य को स्थिर करने के लिए चाणक्य, राक्षस के रूप में एक योग्य अमात्य देने के कारण फल का भोक्ता भी है।

  अतः नायक चाणक्य है।

2. **चन्द्रगुप्त-** कुछ विद्वान् राज्य की प्राप्ति होने के कारण चन्द्रगुप्त को नायक मानते हैं।

- चन्द्रगुप्त विनीत, गम्भीर,शूरवीर प्रसिद्ध नरेश है, इस दृष्टि से धीरोदात्त के सभी गुण उसमें हैं।
- पूरे नाटक में रङ्गमञ्च पर उसकी उपस्थिति केवल तृतीय अङ्क में, कुछ समय के लिए सप्तम अङ्क में ही हुई है, इसलिए चन्द्रगुप्त का पक्ष चाणक्य से न्यून है।

3. **राक्षस-** कुछ विद्वान् केवल मुद्राराक्षस नाम के आधार पर ही राक्षस को नायक मानते हैं।

- राक्षस को नायक मानने पर यह नाटक दुःखान्त हो जायेगा जबकि

  नाट्यशास्त्र के अनुसार नाटक सुखान्त होना चाहिए तथा भारतीय नाटक सुखान्त हैं भी।
- सुलभता से नायक प्राप्त होने से नाटक को दुःखान्त बनाना समीचीन नहीं है, अतः राक्षस प्रतिनायक ही है।

निष्कर्ष-

- यह शत-प्रतिशत सत्य है कि राक्षस को वश में कर लेने से चन्द्रगुप्त को अमात्य लाभ हुआ है, परन्तु वह केवल चाणक्य के हाथ की कठपुतली है।
- सम्पूर्ण नाटक में चन्द्रगुप्त का प्रभाव कहीं भी दृष्टिगत नहीं है, वह केवल चाणक्य पर आश्रित है।
- चतुर्थ अङ्क में चाणक्य और चन्द्रगुप्त के अलग होने का समाचार
- पाकर राक्षस खुश होता है कि बिना चाणक्य के आश्रय के विजय मेरी ही होगी।
- इन सब कारणों से चन्द्रगुप्त नाटक की पृष्ठभूमि में पड़ जाता है और इसीलिए उसे नायक नहीं माना जा सकता।
- इसके विपरीत चाणक्य में नायकोचित सभी गुण विद्यमान हैं, अतः नाटक का नायक चाणक्य ही है।

मुद्राराक्षस की सूक्तियाँ

1.चीयते बालिशस्यापि सत्क्षेत्रपतिता कृषिः। 1/3

भावार्थ- प्रथम अङ्क में सूत्रधार कहता है, ''मूर्ख किसान की भी उर्वरा भूमि में की गयी खेती लहलहा उठती है।''

2.गजेन्द्राश्च नरेन्द्राश्च प्रायः सीदन्ति दुखिताः। 1/16

भावार्थ- चाणक्य कहता है,''भोग करने वाले शेर और राजा स्वभाव से बलशाली होने पर भी प्रायः दुःखित एवं खिन्न रहा करते हैं।''

3.न हि खलु सर्वः सर्वं जानाति।

भावार्थ- प्रथम अङ्क में गुप्तचर कहता है,''सभी लोग सब कुछ नहीं जानते हैं।''

4.अत्यादरः शङ्कनीयः।

भावार्थ- प्रथम अङ्क में चाणक्य के घर जाकर चन्दनदास मन में सोचता है,''आज अत्यधिक आदर किया जाना शङ्कनीय है।''

5.सुलभेष्वर्थलाभेषु परसंवेदने जनः। 1/24

भावार्थ- चाणक्य, चन्दनदास के बारे में सोचता है कि,''कौन ऐसा व्यक्ति है जो पराये की रक्षा के लिए अपने प्राण देने को तैयार है।''

6.दिष्ट्या मित्रकार्येण मे विनाशो जनितः न पुनः पुरुषरोषेण।

भावार्थ- प्रथम अङ्क में चन्दनदास कहता है कि, ''सौभाग्य से मेरा विनाश मित्र के कारण हो रहा है, किसी नरापराध से नहीं।

7. नन्दोन्मूलनदृष्टवीर्यमहिमा बुद्धिस्तु मागान्मम। 1/26

भावार्थ- राक्षस कहता है, ''नन्दवंश का विनाश करने में लगी शक्तिमहिमा वाली मेरी बुद्धि मुझसे अलग न होवे।

8. पुरन्ध्रीणां प्रज्ञा पुरुषगुणविज्ञानविमुखी। 2/7

भावार्थ- राक्षस कहता है, काशपुष्प के अग्रभाग के समान ''स्त्रियों की बुद्धि ही पुरुषों के शौर्यादि गुणों की जानकारी से पराङ्मुख होती है।''

9. एकमपि नीतिबीजं बहुफलतामेति यस्य तव। 2/19

भावार्थ- राक्षस, कौटिल्य के बारे में सोचता है, धन्य हो कौटिल्य ! ''तुम्हारी राजनीति का एक ही बीज अनेक प्रकार के फलों को दे रहा है।''

10. श्रीर्लब्धप्रसरेव वेशवनिता दुःखोपचर्या भृशम्। 3/5

भावार्थ- चन्द्रगुप्त मन ही मन सोचता है, ''आश्चर्य है कि राजलक्ष्मी अतिप्रसिद्ध वाराङ्गना की भाँति अत्यन्त कष्ट से आराध्य होती हैं।''

11. न हि प्रयोजनमनपेक्षमाणः स्वप्नेऽपि चाणक्यश्चेष्टते।

भावार्थ- चाणक्य तृतीय अङ्क में चन्द्रगुप्त से कहता है, वृषल ! ''चाणक्य निष्प्रयोजन कार्य स्वप्न में भी नहीं करता है।''

12. दैवमविद्वांस्सः प्रमाणयन्ति।

भावार्थ- तृतीय अङ्क में चाणक्य कहता है कि ''भाग्य को मूर्ख लोग मानते हैं।''

13. स दोषः सचिवस्यैव यदसत् कुरुते नृपः। 3/32

भावार्थ- कञ्चुकी मन में ही सोचता है कि ''राजा जो कुछ असत् कार्य करता है, वह सब सचिव का ही अपराध माना जाता है।''

14. गण्डस्योपरि विस्फोटः।

भावार्थ- पञ्चम अङ्क में मलयकेतु द्वारा राक्षस पर आरोप लगाने पर राक्षस सोचता है- ''यह दूसरा गण्डस्थल पर फोड़ा बना।''

15. विनैव युद्धादार्येण पराजितं दुर्जयं रिपुकुलमिति।
भावार्थ- सप्तम अङ्क में चन्द्रगुप्त सोचता है कि "संघर्ष के बिना ही आर्य चाणक्य ने कठिनता से जीता जा सकने वाला शत्रु-दल पराजित कर दिया है।"

अङ्कवार प्रमुख घटनाएँ

प्रथम अङ्क
➢ राक्षस के मुद्रा की प्राप्ति।
➢ चाणक्य की इच्छानुसार शकटदास द्वारा कूटपत्र का लेखन।

द्वितीय अङ्क
➢ आहितुण्डिक वेश में राक्षस के गुप्तचर विराधगुप्त का आगमन।
➢ राक्षस के समस्त योजनाओं के असफल होने की सूचना।

तृतीय अङ्क
➢ कौमुदीमहोत्सव तथा निषेध।
➢ चाणक्य, चन्द्रगुप्त का दिखावटी अंतर्द्वन्द्व तथा कृतककलह की समाप्ति।

चतुर्थ अङ्क
➢ मलयकेतु का राक्षस के कृत्य पर संदेह।
➢ राक्षस द्वारा मलयकेतु को समझाने का प्रयत्न।

पञ्चम अङ्क
➢ राक्षस के मुद्रा से अङ्कित पत्र की प्राप्ति।
➢ मलयकेतु का राक्षस के प्रति क्रोध एवं प्रतीकार हेतु राक्षस के पाँच राजाओं की हत्या।

षष्ठ अङ्क
➢ कुसुमपुर के जीर्णोद्यान का वर्णन तथा चन्दनदास को मृत्युदण्ड के लिए बध्यस्थल पर ले जाना।
➢ राक्षस द्वारा आत्मसमर्पण से चन्दनदास को बचाने का निश्चय।

सप्तम अङ्क
➢ राक्षस का आत्मसमर्पण तथा अमात्य पद की प्राप्ति।
➢ चन्दनदास को दण्डमुक्त एवं सम्मानित किया जाना।
➢ चाणक्य का शिखा बन्धन।

महत्वपूर्ण तथ्य
➢ मुद्राराक्षस एक **कूटनीतिक नाटक** है।
➢ यह नाटक, **नायिका एवं विदूषक से रहित** है।
➢ मुद्राराक्षस के पञ्चम एवं षष्ठ अङ्क में 'प्रवेशक' नामक अर्थोपक्षेपक का प्रयोग है।
➢ मुद्राराक्षस के सभी पात्र चन्द्रगुप्त, चाणक्य, नन्द तथा राक्षस इत्यादि **ऐतिहासिक पात्र** हैं।
➢ राजा नन्द के आठ पुत्र थे। राजा तथा आठ पुत्र 'नवनन्द' कहे जाते थे।
➢ मुद्रा का अभिप्राय अँगूठी अथवा मुहर है।
➢ चन्द्रगुप्त का जन्म नन्द तथा 'मुरा' नामक शूद्र स्त्री से हुआ था।
➢ चाणक्य किसी अवसर पर उच्च आसन पर बैठ जाता है जिसके कारण उसे नन्दों द्वारा अपमानित होना पड़ता है।
➢ आसन से उतारने पर वह प्रतिज्ञा करता है कि जब तक वह नन्द वंश का विना नहीं कर देगा तब तक अपनी शिखा नहीं बाँधेगा।
➢ मुद्राराक्षस की घटना एक वर्ष में ही घटित हुई प्रतीत होती है।
➢ नाटक का प्रारम्भ चैत्र मास के पूर्णिमा के दिन से होता है।

मुद्राराक्षस- बिन्दुवार अध्ययन

➢ मुद्राराक्षस का लेखक कौन है - **विशाखदत्त**
➢ मुद्राराक्षस नाटक का नायक कौन है? - **चाणक्य**
➢ मुद्राराक्षस में अङ्कों की संख्या है? - **7**
➢ कस्मिन् रूपके नायिका नास्ति - **मुद्राराक्षसे**
➢ मुद्राराक्षस का प्रधान रस है? - **वीर**
➢ राक्षस पात्र जिस रूपक में है, वह है - **मुद्राराक्षसम्**
➢ मुद्राराक्षस है - **नाटक**
➢ मुद्राराक्षसनाटके नन्दस्य मन्त्री - **राक्षसः**
➢ मुद्राराक्षसस्य प्रथमाङ्कस्य का संज्ञा - **मुद्रालाभः**
➢ किस नाटक में स्त्रियों का प्रयोग नहीं है - **मुद्राराक्षस**
➢ मुद्राराक्षसनाटके मुद्रा केन सम्बद्धा भवति? - **राक्षसेन**
➢ नन्दवंश पर आधारित नाटक कौन-सा है?- **मुद्राराक्षसम्**
➢ सर्वार्थसिद्धिः केन वंशेन सम्बद्धः? - **नन्दवंशेन**
➢ राजनीति और कूटनीतिक विषयों पर आधारित संस्कृत नाटक कौन है? - **मुद्राराक्षसम्**
➢ चन्दनदास सेठ जिस नाटक में आता है, वह नाटक है - **मुद्राराक्षसम्**
➢ अस्मिन्नाटके विदूषकः नास्ति - **मुद्राराक्षसम्**
➢ विशाखदत्त के प्राचीन भारतीय नाटक मुद्राराक्षस की विषयवस्तु है - **चन्द्रगुप्त मौर्य के समय में राजदरबार की दुरभिसन्धियों के बारे में**
➢ मुद्राराक्षसे कौमुदीमहोत्सवः केन निषिद्धः? - **चाणक्येन**
➢ कस्य गृहे स्वकुटुम्बं संन्यस्य राक्षसः नगराद् बहिः जगाम? - **चन्दनदासस्य**
➢ 'सः दोषः सचिवस्यैव यदसत् कुरुते नृपः'–इससे सम्बन्धित ग्रन्थ है - **मुद्राराक्षसम्**
➢ कृतककोपवृत्तान्तः कस्मिन् दृश्यकाव्ये वर्तते?- **मुद्राराक्षसे**
➢ कृतककोपवृत्तान्तः मुद्राराक्षसे कस्मिन्नङ्केऽस्ति? - **तृतीये**
➢ मुद्राराक्षसनाटके चाणक्यः कं श्रेष्ठिनं निगृहीतुम् इच्छति - **चन्दनदासम्**
➢ अधोलिखितेषु नाटकेषु कस्मिन्नाटके स्त्रीपात्रो न? - **मुद्राराक्षसम्**
➢ "न हि खलु सर्वः सर्वं जानाति" इति कुत्र वर्तते - **मुद्राराक्षसे**
➢ "नन्दोन्मूलनदृष्टवीर्यमहिमा बुद्धिस्तु मा गान्मम"–मुद्राराक्षसे

कस्येयमुक्तिः? - **चाणक्यस्य**

- कः नन्दसाम्राज्यस्य महामात्यः, यः अन्ते चन्द्रगुप्तस्य महामात्यपदं स्वीकरोति - **राक्षसः**
- 'प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः प्रारभ्य विघ्नविहिता विरमन्ति मध्याः।' मुद्राराक्षसे कस्येयमुक्तिः - **विराधगुप्तस्य**
- "सुलभेष्वर्थलाभेषु परसंवेदने जनः। क इदं दुष्करं कुर्यादिदानीं शिविना विना।।" मुद्राराक्षसे इयमुक्तिर्भवति - **चाणक्यस्य**
- कः चाणक्यस्य शिष्यः आसीत्? - **चन्द्रगुप्तः**
- मुद्राराक्षसे नान्दीश्लोके कस्य स्तुतिः विद्यते - **शिवस्य**
- मुद्राराक्षसे नाटके किं पात्रं सर्वप्रधानमस्ति - **चाणक्यः**
- "अत्यादरो शङ्कनीयः" – इदं कथनं मुद्राराक्षसनाटकेऽस्ति - **प्रथमेऽङ्के**
- 'न विदूषको नापि नायिका' कस्मिन् रूपके - **बालभारत**

4.14 नैषधीयचरितम्

महाकवि श्रीहर्ष का परिचय-

- **नाम** - श्रीहर्ष
- **पिता** - श्रीहीर
- **माता** - मामल्लदेवी
- **श्रीहर्षं कविराजराजिमुकुटालङ्कारहीरः सुतम्**
  श्रीहीरः सुषुवे जितेन्द्रियं मामल्लदेवी च यम्। 1/145
- **समय-** 12वीं शताब्दी के मध्य से 12वीं शताब्दी के उत्तरार्ध के बीच (सम्भावित)
  आश्रयदाता- जयचन्द्र
  उपाधि-1.नवभारती 2. कविपण्डित (राजा गोविन्दचन्द्र द्वारा)
  उपासक- शिव, विष्णु, सरस्वती
  प्रिय छन्द- उपजाति
- श्रीहीर काशी के राजा गहरवारवंशी विजयचन्द्र की राज्यसभा के प्रधान पण्डित थे।
- श्रीहीर को विजयचन्द्र की राज्यसभा में मिथिला के प्रसिद्ध पण्डित श्री उदयनाचार्य ने शास्त्रार्थ में पराजित किया था।
- श्रीहीर पुत्र श्रीहर्ष ने उदयनाचार्य को पराजित करने का वचन अपने पिता (श्री हीर) को उनके मरते समय दिया था।
- श्रीहर्ष ने 'चिन्तामणि' मन्त्र का एक वर्ष पर्यन्त जप किया था।
- त्रिपुरादेवी के वरदान से श्रीहर्ष **अत्यन्त** उत्कृष्ट विद्वान् हो गये।
- जयचन्द्र की प्रार्थना स्वीकार कर श्रीहर्ष ने नैषधीयचरितम् महाकाव्य की रचना की।
- नैषधीयचरित महाकाव्य की दोष रहित प्रामाणिकता के लिए श्री हर्ष कश्मीर गये थे।
- महाकवि श्रीहर्ष नदी तट पर बैठकर रुद्र मन्त्र का जप किये थे।
- हरिहर कवि को भी श्रीहर्ष का वंशज माना जाता है।
- श्रीहर्ष के निवास स्थान के सम्बन्ध में विद्वान् मतैक्य नहीं हैं।
- कुछ विद्वान् कन्नौज का, कुछ वाराणसी का, कुछ बंगाल का एवं अन्य कश्मीर का निवासी बतलाते हैं। "ताम्बूलद्वयमासनं च लभते यः कान्यकुब्जेश्वरात्।" (नैषध. 22/15)
- कविवर राजशेखर सूरि ने महाकवि श्रीहर्ष की सौ से अधिक रचनायें होने का उल्लेख किया है -
  "खण्डनादिग्रन्थान् परश्शतान् जग्रन्थ।"
- नैषधीयचरित में नैषध के अतिरिक्त 8 ग्रन्थों का उल्लेख किया गया है।
- महाकवि श्रीहर्ष ने अपने नैषधीयचरित में अपनी रचनाओं के साथ-साथ प्रत्येक सर्गान्त श्लोक में अपने माता व पिता का भी उल्लेख किया है। श्रीहर्षं कविराजराजि मुकुटालङ्कारहीरः सुतम्, श्रीहीरः सुषुवे जितेन्द्रियं मामल्लदेवी च यम्।
- श्रीहर्ष के शताधिक ग्रन्थों के नाम का कोई प्रबल प्रमाण उपलब्ध नहीं हैं।
- ये 10 रचनायें अविवादित व प्रमाणित हैं-
  1. नैषधीयचरित 2. स्थैर्यविचारप्रकरण 3. विजय-प्रशस्ति 4. खण्डनखण्डखाद्य 5. गौडोर्वीशकुल-प्रशस्ति 6. अर्णववर्णन 7. छिन्दप्रशस्ति 8. शिवशक्तिसिद्ध 9. नवसाहसाङ्कचरितचम्पू 10. ईश्वराभिसन्धि
- इनमें से नैषधीयचरित व खण्डनखण्डखाद्य के अलावा शेष 8 ग्रन्थ अनुपलब्ध हैं।
- श्रीहर्ष की काव्य शैली प्रसादगुणों से युक्त वैदर्भी शैली है,
- गुण में प्रमुखतः माधुर्य और ओज की प्रचुरता है।
- महाकाव्य में एक स्थल पर श्लेष अलंकार का इतना सुन्दर चित्रण किया है कि, अन्य कवि इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा करते हैं।
  देवः पतिर्विदुषि नैषधराजगत्या
  निर्णीयते न किमु न ब्रियते भवत्या।
  नायं नलः खलु तवातिमहा नलाभो
  यद्येनमुज्झसि वरः कतरः पुनस्ते ॥ नैषध 13/33
- हर्ष ने उपर्युक्त श्लोक के पाँच अर्थ बताये हैं-

1. इन्द्रपक्ष में 2. अग्नि पक्ष में 3. यम पक्ष में 4. वरुण पक्ष में 5. नल पक्ष में

- नैषधीयचरित में 9 निधियों का उल्लेख है-
  महापद्म, पद्म, शंख, मकर, कच्छप, मुकुन्द, कुन्द, नील व खर्व

नैषधीयचरितम् का परिचय

- **लेखक** - श्रीहर्ष
- **काव्यविधा** - महाकाव्य
- **कुल सर्ग** - 22 (बाईस)
- **नायक** - नल (धीरोदात्त)
- **नायिका** - दमयन्ती
- **प्रतिनायक** - 4 नल के रूप में क्रमशः अग्नि, वरुण, इन्द्र

व यम
- **अङ्गीरस/प्रधानरस** -शृङ्गार
- **अन्य रस**-वीर, हास्य, करुण, रौद्र एवं अद्भुत आदि
- **गुण** - माधुर्य, ओज, प्रसाद (प्रायः सभी काव्य गुण पाये जाते हैं)
- **रीति** - मुख्यतः वैदर्भी
- **अलङ्कार** - अनुप्रास (मुख्य रूप से)
- **अन्य अलङ्कार** - अतिशयोक्ति आदि।
- **छन्द** - कुल उन्नीस 19 छन्दों का प्रयोग है जिनमें उपजाति, वसन्ततिलका, अनुष्टुप्, वंशस्थ तथा शिखरिणी प्रमुख हैं। (उपजाति सर्वाधिक 7 सर्गों में है।)

प्रमुख उक्तियाँ
- **''काव्यं नवं नैषधम्''** - चाण्डु पण्डित
- **''नैषधं विद्वदौषधम्''**
- **'उदिते नैषधे काव्ये क्व माघः क्व च भारविः'**
- **नैषधे पदलालित्यम्** अथवा
- **''उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्।**
  नैषधे पदलालित्यम् माघे सन्ति त्रयो गुणाः॥''
- **उपजीव्य** - महाभारत (वनपर्व)
- **अन्य स्रोत** - शतपथ-ब्राह्मण, कथासारित्सागर, कुमारपालप्रतिबोध, लिङ्गपुराण, वायुपुराण, हरिवंश-पुराण, ब्रह्माण्ड-पुराण आदि।
- **कुल श्लोक** - 2804 (लगभग)
- **नोट** - प्रत्येक सर्ग के अन्त के परिचयात्मक सभी श्लोक शार्दूलविक्रीडित छन्द में हैं।
- बृहत्त्रयी का **सबसे बड़ा ग्रन्थ** नैषधीयचरितम् ही है।
- महाभारत के वनपर्व में **'नलोपाख्यान'** उनतीस अध्यायों (58-78) में है।
- नलोपाख्यान की सरल छोटी कथा 'नैषधीयचरित' में बहुत थोड़ी ही ली गयी है।
- नलोपाख्यान एक उपदेश कथा है, जबकि नैषधीयचरितम् एक सरस एवं मनोरम महाकाव्य है।
- नलोपाख्यान के आदि के छः सर्गों की घटना को श्रीहर्ष ने विशाल 22 (बाईस) सर्गों में नैषधीयचरितम् नामक ग्रन्थ में उल्लिखित किया है।

नामकरण
- निषध देश के राजा (नल) का चरित्र वर्णित होने से इस ग्रन्थ का नाम 'नैषधीयचरितम्' रखा गया है।

पात्र-परिचय

- **नल** - नायक, (निषध देश का राजा)
- **दमयन्ती** - नायिका, (विदर्भ देश की राजकुमारी)
- **भीम** - दमयन्ती के पिता, विदर्भ के राजा (कुण्डिनपुर)
- **प्रतिनायक** - इन्द्र, वरुण, अग्नि, यम
- **हंस** - नल - दमयन्ती के प्रेम का सन्देशवाहक, दूत
- **अन्य पात्र** - कला आदि दमयन्ती की सखियाँ, हंस पंक्षी का परिवार आदि
- **दमन** - दमयन्ती का भाई

मङ्गलाचरण

निपीय यस्य क्षितिरक्षिणः कथां तथाद्रियन्ते न बुधाः सुधामपि।
नलः सितच्छत्रितकीर्ति मण्डलः स राशिरासीन्महसां महोज्ज्वलः॥
1/1

भावार्थ- अपने विस्तृत कीर्तिमण्डल को श्वेत छत्र के समान धारण करने वाले तेजपुञ्ज स्वरूप पृथ्वी रक्षक जिस सूर्य की कथा का पूर्णतया पान करके देवगण जैसे चन्द्रमा का आदर नहीं करते वैसे ही वह राजा नल थे। जिनकी कथा का पान करके विद्वान् लोग अमृत का भी वैसा आदर नहीं करते थे। अर्थात् राजा नल का भी कीर्तिमण्डल सूर्य के समान था। जो उत्सवों में देदीप्यमान होता था।

- 'नैषधीयचरितम्' का प्रारम्भ श्रीहर्ष ने नल रूपी कथा वस्तु को संकेत करते हुए वस्तुनिर्देशात्मक मङ्गलाचरण से किया है। मङ्गलाचरण वंशस्थ छन्द में हैं। वस्तुतः प्रथम सर्ग के एक से लेकर एक सौ बयालिस (1-142) श्लोकों तक वंशस्थ छन्द का ही प्रयोग किया है। (जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ) सम्पूर्ण मङ्गलाचरण चरण में संसृष्टि अलंकार है।

प्रमुख पात्रों का चरित्र-चित्रण

नल -
- नल महाकाव्य की कथा के नायक हैं, अतः इन्हें एक प्रमुख पात्र कहा जा सकता है।
- नल के पिता वीरसेन हैं। (**वीरसेनसुतकण्ठभूषणीभूत**-नै.18/4)
- श्रीहर्ष ने राजा नल के गुणों का वर्णन प्रथमसर्ग के प्रथम तीस श्लोकों में किया है।
- **धीरोदात्त नायक** के सभी गुण राजा नल में विद्यमान हैं।
- नल की करुणाशीलता का वर्णन हंस प्रसंग के समय प्रकट होती है।
- गम्भीर, करुणाशील, दानशील, दृढ़प्रतिज्ञ आदि गुणों से अलंकृत होने के कारण नल एक आदर्श नायक हैं।
- वे साधारण राजाओं की भाँति विदर्भनरेश भीमसेन से दमयन्ती की याचना नहीं करने जाते हैं।

दमयन्ती
- नैषधीयचरितम् की एक प्रमुख स्त्री पात्र दमयन्ती है जो इस महाकाव्य की **नायिका** है।
- दमयन्ती एक कुलीन नायिका है। वह विवाह के पहले अन्या (अनूठा परकीया) एवं विवाहोपरान्त स्वा (विवाहिता, स्वीया) कोटि की नायिका है।
- श्रीहर्ष ने दमयन्ती की सुन्दरता का वर्णन करते हुए त्रिलोक की सुन्दरियों से भी सर्वोत्कृष्ट बताया है-

  भुवनत्रयसुभ्रुवामसौ दमयन्ती कमनीयतामदम्।
  उदियाय यतस्तनुश्रिया दमयन्तीति ततोऽभिधां दधौ॥
  नै. 2/18
- दमयन्ती त्रिलोक की सुन्दरियों के सौन्दर्याभिमान का दमन करने वाली है अतः इसका नाम दमयन्ती रखा गया है।

➢ नारद मुनि भी दमयन्ती के अनुरूप वर केवल नल को ही बताते हैं।

➢ दमयन्ती गुणशील, रमणीय के साथ-साथ विवेकशील भी है। इसका परिचय पाँच नलों में से एक को वरण करने से मिलता है।

हंस

जिस प्रकार रामायण में हनुमान व मेघदूतम् में मेघ को दूत बनाया गया है उसी प्रकार ''नैषधीयचरितम्'' में श्रीहर्ष ने **हंस को दूत** बनाया है।

➢ इसके स्वर्ण के समान पंखों को देखकर राजा नल इसके प्रति आकर्षित होते हैं।

➢ नल के द्वारा पकड़े जाने पर हंस सबसे पहले अपने परिवार का परिचय भय, करुणा व विनम्रता पूर्वक मनुष्य वाणी में बताता है।

मदेकपुत्रा जननी जरातुरा नवप्रसूतिर्वरटा तपस्विनी।
गतिस्तयोरेष जनस्तमर्दयन्नहो विधे! त्वां करुणा रुणद्धि नो॥

नै. 1/135

भीमसेन

➢ भीमसेन दमयन्ती के पिता हैं।

➢ वे विदर्भ देश के राजा एवं दमयन्ती स्वयंवर के कर्ता हैं।

➢ भीमसेन एक धर्मोचित पिता के रूप में प्रस्तुत किये गये हैं।

➢ भीमसेन के पुत्र का नाम दम या दमन है।

प्रतिनायक

➢ यहाँ प्रतिनायक के रूप में चार देवताओं इन्द्र, अग्नि, वरुण एवं यम को परिलक्षित किया है।

➢ ये चारों देवता नल से मिलकर, व स्वयं नल का रूप धारण करके स्वयंवर सभा में प्रस्तुत होकर नल को छलने का प्रयास करते हैं।

➢ महाभारत में वर्णित नलोपाख्यान में कल्कि को प्रतिनायक के रूप में चित्रित किया गया है।

नैषधीयचरितम् की टीका एवं टीकाकार

टीका	**टीकाकार**
नैषधीयप्रकाश टीका	नारायण
नैषधदीपिका	चाण्डुपण्डित (प्राचीन टीकाकार)
साहित्यविद्याधरी	विद्याधर
दीपिका	नरहरि
तिलक	चारित्रवर्धन
जीवातु	मल्लिनाथ
सुखावबोध	जिनराज

अन्य टीकाकार - आनन्दराजानक, ईशानदेव, उदयनाचार्य, गोपीनाथ, भगीरथ, आदि।

सर्गवार कथा

प्रथम सर्ग - इस सर्ग में निषध देशाधिपति महाराज नल के शौर्य, गुण, प्रताप एवं उत्कर्ष का वर्णन किया गया है।

➢ राजा नल का विदर्भनरेश भीम की पुत्री दमयन्ती के प्रति कामार्त होना एवं उपवन में जाना इसी सर्ग में है।

➢ उपवन में राजा, हंस पक्षी को पकड़ते हैं और उसकी करुण वाणी सुनकर उसे छोड़ देते हैं।

द्वितीय सर्ग -

➢ हंस के हर्षोल्लास से यह सर्ग आरम्भ होता है।

➢ हंस अपने परिवार से मिलकर पुनः कृतज्ञता प्रकट करने नल के पास उपवन में जाता है।

➢ राजा नल, हंस से दमयन्ती के पास कुण्डिनपुर जाने के लिए आग्रह करते हैं।

➢ हंस कुण्डिनपुर पहुँचकर उपवन में सखियों के साथ विहार कर रही दमयन्ती के पास रुक जाता है।

तृतीय सर्ग -

➢ दमयन्ती, हंस को पकड़ना चाहती है और इसी प्रयास में वह हंस के पीछे-पीछे सघन वन में पहुँच जाती है।

➢ वहाँ एकान्त पाकर हंस राजा नल के अलौकिक गुणों का एवं अनुपम सौन्दर्य का वर्णन करता है।

➢ दमयन्ती, राजा नल के प्रति अपनी आसक्ति प्रकाशित करती हैं।

चतुर्थ सर्ग - [illegible] सफलता की सूचना देता है।

➢ दमयन्ती, राजा नल से मिलने की इच्छा प्रकट करती है और विकल होने लगती हैं।

➢ विदर्भ नरेश भीमसेन अपनी पुत्री दमयन्ती की यह विचित्र दशा देखकर स्वयंवर का निश्चय करते हैं।

पञ्चम सर्ग -

➢ पञ्चम सर्ग का प्रारम्भ देवलोक में महर्षि नारद द्वारा इन्द्र की सभा में दमयन्ती की विलक्षण सुन्दरता का वर्णन करते हुए होता है।

➢ इन्द्र, वरुण, अग्नि, एवं यम देवताओं के साथ पृथ्वीलोक में प्रस्थान करते हैं।

➢ मार्ग में जाते हुए नल का अनुपमेय सौन्दर्य देखकर देवताओं को ईर्ष्या होती है।

➢ देवता, राजा नल को दमयन्ती के पास जाने के लिए कहते हैं एवं दमयन्ती, 'इन्द्र, वरुण, अग्नि व यम' में से किसी को वरण करें ऐसा दमयन्ती से कहने की याचना करते हैं।

➢ राजा नल ऐसा करने के लिए तैयार हो जाते हैं और इन्द्र द्वारा इन्हें अदृश्य होने की शक्ति प्रदान हो जाती है।

षष्ठ सर्ग -

➢ राजा नल अदृश्य रूप में दमयन्ती के राजप्रासाद में पहुँचते हैं।

➢ देवों की दूतियाँ नल के पहुँचने के पहले से ही किसी एक देवता को वरण करने का आग्रह कर रही थीं

➢ दमयन्ती उन्हें मना कर देती है। यह देखकर नल अत्यधिक

प्रसन्न होते हैं।

सप्तम सर्ग -

- राजा नल दमयन्ती के सौन्दर्य का अवलोकन एवं स्वयं को प्रकट कर देने का भी निश्चय कर लेते हैं।
- इस सर्ग में दमयन्ती के नखशिख का स्वरूप भी वर्णित है।

अष्टम सर्ग -

- राजा नल अपने स्वरूप को प्रकट कर, स्वयं को देवदूत बताकर, देवताओं में से किसी एक देवता का वरण करने को कहते हैं।

नवम सर्ग -

- इस सर्ग में नल एवं दमयन्ती में परस्पर वार्तालाप होता है।
- दमयन्ती राजा नल का ही वरण करने को कहती हैं।
- नल, दमयन्ती को उसकी स्वयंवर सभा में आने की स्वीकृति देकर वापस लौट आते हैं।

दशम सर्ग -

- स्वयंवर के कार्यक्रम से यह सर्ग प्रारम्भ होता है
- चारों दिशाओं से आये राजाओं से पृथ्वी के ठसाठस भर जाने का वर्णन है।
- इन्द्रादि चारों देवता भी नल रूप में स्वयंवर में उपस्थित होते हैं।
- विष्णु, देव, अप्सरायें आदि भी स्वयंवर में दर्शनार्थ होते हैं।
- विष्णु राजाओं के वर्णन के लिए सरस्वती को भेजते हैं।

एकादश सर्ग -

- सरस्वती द्वारा राजाओं के वर्णन से यह सर्ग प्रारम्भ होता है।
- नल के प्रति आसक्ति से दमयन्ती स्वयंवर सभा में बैठे सभी राजाओं को क्रमशः छोड़ते हुए आगे बढ़ती जाती है।

द्वादश सर्ग -

- इस सर्ग में भी अन्यान्य अवशिष्ट राजाओं के स्वयंवर में सम्मिलित होकर दमयन्ती द्वारा उपेक्षित होने का वर्णन है।
- सरस्वती विभिन्न देशों के नरेशों का एक-एक करके वर्णन करने के उपरान्त अन्त में नल के समीप पहुँचती है।
- दमयन्ती पाँच राजा को नल के समान देखकर आश्चर्य-चकित हो जाती हैं।

त्रयोदश सर्ग -

- राजा नल के वेश में विद्यमान पाँचों नलों का श्लेष शब्दों का प्रयोग करके वर्णन सरस्वती द्वारा किया जाता है और दमयन्ती आश्चर्य एवं संशय में पड़ जाती हैं।
- दमयन्ती देवताओं और राजा नल में अन्तर न कर सकने के कारण क्षुब्ध एवं दुःखी हो जाती है।

चतुर्दश सर्ग -

- दमयन्ती, देवताओं का मानसिक पूजन करती हैं जिससे देवता प्रसन्न होकर श्लेष शब्दों को समझने की शक्ति प्रदान करते हैं।
- दमयन्ती अपने विवेक से राजा नल को पुष्प माला पहनाकर वरण कर लेती हैं।
- तदुपरान्त सरस्वती व सभी देवता आशीर्वाद देते हैं।

पञ्चदश सर्ग -

- स्वयंवर में दमयन्ती द्वारा नल का वरण करने के उपरान्त भीमसेन विवाह की तैयारी में लग जाते हैं और नल को आमन्त्रित करते हैं।

षोडश सर्ग -

- राजा भीम बारात का पर्याप्त स्वागत सत्कार करते हैं।
- राजा नल वहाँ छः दिन निवास करके पुनः अपनी राजधानी की ओर प्रस्थान करते हैं।
- राजधानी में नल का जनता द्वारा स्वागत किया जाता है।

सप्तदश सर्ग -

- स्वर्ग को प्रस्थान करते हुए देवताओं की कलि/कल्कि से भेंट हो जाती है।
- कलि/कल्कि देवताओं से बतलाता है कि वह दमयन्ती के स्वयंवर में जा रहा है।
- कलि को देवता बताते हैं कि दमयन्ती, नल को वरण कर चुकी है तो वह राजा नल को राज्यच्युत होने और दमयन्ती से वियुक्त होने का शाप दे देता है।
- द्वापर के साथ कलि निषध देश में गया और उपवन में **बिभीतक** वृक्ष का आश्रय लेकर कई वर्षों तक दमयन्ती तथा नल में दोषान्वेषण किया किन्तु कोई दोष नहीं पाया।

अष्टादश -

- यह सर्ग प्रमोदोद्यान के वर्णन से प्रारम्भ होता है।
- कामशास्त्र के मर्मज्ञ नल, एवं नवोढ़ा दमयन्ती की काम क्रीड़ा का वर्णन है।

एकोनविंश सर्ग -

- उषा काल से दूरारूढ़ सूर्य का क्रमिक वर्णन है।
- दमयन्ती द्वारा बन्दीगण को उपहार दिया जाता है।
- तदनन्तर आकाशगंगा में स्नान कर लौटे हुए नल, दमयन्ती के पास आते हैं।

विंश सर्ग -

- नल राजभवन में प्रवेश करते हैं, जहाँ दमयन्ती द्वारा उनका स्वागत होता है।
- दमयन्ती को स्वर्ग कमल देकर, प्रातः कालीन कृत्य के लिए उससे आज्ञा माँगते हैं।
- दमयन्ती व्यथित एवं रुष्ट होकर अपनी सखी के घर चली जाती है।
- दमयन्ती के लौटने पर नल उसकी सखी 'कला' की सहायता से उसका मान भंग करना चाहते हैं और उससे विविध प्रकार के सम्भोगों का स्मरण दिलाते हैं।
- मध्याह्न की सूचना से नल स्नानादि के लिए उठ जाते हैं।

एकविंश सर्ग -

- यह सर्ग नल के चारुचरित वर्णन से प्रारम्भ होता है।
- अर्थ एवं मोक्ष पुरुषार्थो का विस्तृत चित्रण हुआ है।
- चकवी के विरह को दूर करने के लिए सूर्य से प्रार्थना करने

के बहाने सन्ध्योपासन के लिए नल नदी तट पर चले जाते हैं।

द्वाविंश सर्ग -

➢ इसके उपरान्त ग्रन्थ की प्रशस्ति तथा संक्षिप्त परिचय के साथ इस महाकाव्य का उपसंहार होता है।

नैषधीयचरित की प्रमुख सूक्तियाँ

1. अदृष्टमप्यर्थमदृष्टवभवात्करोति सुप्तिर्जनदर्शनातिथिम् 1/39

भावार्थ- चित्रदर्शन के बाद दमयन्ती के द्वारा नल को स्वप्न में देखे जाने का वर्णन किया गया है-
"कभी प्रत्यक्ष दर्शन न किये गये पदार्थ को भी स्वप्न मनुष्यों की दृष्टि का अतिथि बना देता है अर्थात् दिखा देता है।"

2. त्यजन्त्यसञ्शर्म च मानिनो वरं त्यजन्ति न त्वेकमयाचितव्रतम् 1/50

भावार्थ- यह सूक्ति राजा नल के विषय में कही गयी है कि "स्वाभिमानी लोग प्राण और सुख भले ही त्याग देते हैं किन्तु माँगते नहीं हैं। यह उनका व्रत होता है।"

3. स्मरः स रत्यामनिरुद्धमेव यत्सृजत्ययं सर्गनिसर्ग ईदृशः। 1/54

भावार्थ- यह सूक्ति राजा नल के विषय में कही गयी है कि- "प्रकृति का स्वभाव ही ऐसा है कि अनुराग होने पर कामदेव चञ्चलता को जन्म देता है।"

4. क्व भोगमाप्नोति न भाग्यभाग्जनः 1/102

भावार्थ- नल के लिए (कामपीड़ित होने पर), वन में भी तरंगों के वादन, कोयलों तथा भौरों के संगीत एवं मयूर के नृत्य आदि सुख के सभी साधन (संगीत, नृत्य, वाद्य आदि), उपलब्ध हैं। "क्योंकि भाग्यशाली पुरुष को भोग कहाँ नहीं प्राप्त होता है?"

5. विगर्हितं धर्मधनैर्निबर्हणं विशिष्य विश्वासजुषां द्विषामपि। 1/131

भावार्थ- हंस, राजा नल की निन्दा करते हुए कहता है कि - हे राजन! मेरा वध करने से आपको प्राणिवध के साथ विश्वास - घात का भी पाप लगेगा "क्योंकि विश्वास युक्त शत्रुओं का भी वध धर्माचार्यों के द्वारा विशेष रूप से निन्दनीय कहा गया है।

6. नृपः पतङ्गं समधत्त पाणिना ।

भावार्थ- राजा नल ने स्वयं कपट से नारायण की तरह अपने शरीर को छोटा करके शब्द रहित चरण से हंस के पास जाकर हंस (पक्षी) को हाथ से पकड़ लिया।

7. सरोरूहं तस्य दृशैव तर्जितम्, जिताः स्मितेनैव विधोरपि श्रियः। "कुतः परं भव्यमहो महोयसी, तदाननस्योपमितौ दरिद्रता॥" 1/24

भावार्थ- नल के नेत्र के द्वारा कमल और मुस्कुराहट के द्वारा चन्द्रमा की शोभा जीत ली गई है। "नल से अधिक सुन्दर वस्तु क्या हो सकती है, आश्चर्य है कि नल के मुख की उपमा में बहुत दरिद्रता हो गई है।"

8. अपां हि तृप्ताय न वारिधारा स्वादुः सुगन्धिः स्वदते तुषारा 3/93

भावार्थ- दमयन्ती कहती है, हे हंस! उचित अवसर देखकर ही नल के समक्ष यह प्रस्ताव रखना, "क्योंकि, जो जन जल पीकर पूर्णतः तृप्त हो चुका हो, उसे स्वादिष्ट, सुगन्धि और अति शीतल जल की धारा में भी स्वाद नहीं आता।"

9. आर्जवं हि कुटिलेषु न नीतिः।

भावार्थ- इन्द्र का सम्पूर्ण कपटाचार जान लेने पर नल ने वैसे छल वाक्यों का प्रयोग करना चाहा जैसे कि इन्द्र ने किया था, "क्योंकि कुटिल जनों के प्रति सरलता नीति नहीं होती।"

10. कार्यं निदानाद्धि गुणानधीते। (3/17)

भावार्थ- हंस, दमयन्ती से कहता है कि स्वर्ण कमलिनियों के अग्रभाग खाने वाले हम अपने खाद्य के अनुरूप ही शरीर शोभा रूप समृद्धि के भाजन हैं, "क्योंकि कार्य कारण से ही गुण प्राप्त करता है।"

11. घनाम्बुना राजपथेऽति पिच्छिले क्वचिद्बुधैरप्यपथेन गम्यते॥ (9/36)

भावार्थ- दमयन्ती की सखी द्वारा दमयन्ती से कहा गया है जिस विपत्ति में धर्म के अनुसरण से रक्षा नहीं हो पाती है, उस समय धर्म के विरुद्ध आचरण भी उचित होता है, "क्योंकि वर्षा जल से राजमार्ग में कीचड़ हो जाने पर समझदार व्यक्ति अपथ से भी कहीं-कहीं चला करते हैं।"

**12. ममापि साधु प्रतिभात्ययं क्रमः
चकास्ति योग्येन हि योग्यसंगमः (9.56)**

भावार्थ- नल कहता है कि- हे दमयन्ती तू धर्मशील है और यमराज को भी धर्म पर चलने वाला बताया जाता है अतः तुम्हारे लिए यमराज ही वर के रूप में योग्य है उनका ही तुम्हें वरण करना चाहिए "क्योंकि योग्य से योग्य का संगम सुशोभित होता है।"

13. झटिति पराशयवेदिनो हि विज्ञाः 5/109

भावार्थ- नल देवताओं से कहता है कि दमयन्ती को हृदय में बसाकर श्वास लेने वाला मैं (नल) उसके सामने किस प्रकार भावों को सभालने में समर्थ हो सकूँगा "क्योंकि विषयों को विद्वान् भी कठिनता से ही जीत पाते हैं।"

14. द्यौर्न काचिदथवास्ति निरूढा सैव सा चलति यत्र । हि चित्तम् (5/57)

भावार्थ- जहाँ चित्त रमे वहीं स्वर्ग है, इसी भाव का वर्णन है - विद्वान् होकर भी जब कोई स्वर्ग को छोड़कर पृथ्वी पर अनुसरण करे तो खेद है। इससे तो यही स्पष्ट होता है कि 'स्वर्ग कोई विशिष्ट स्थान नहीं है, क्योंकि जहाँ चित्त रमता है वहीं स्वर्ग है।'

15. नैयाय्यमुपेक्षते हि कः।

भावार्थ- नल दमयन्ती से कहता कि यदि तुम नल के बिना

अपने को फाँसी लगाना चाहती हो, तब अन्तरिक्ष जाती तुमको अन्तरिक्ष में वसने वालों का स्वामी इन्द्र हर लेगा, ''क्योंकि न्याय से प्राप्त वस्तु की कौन उपेक्षा करता है?'' अर्थात् कोई नहीं।

16. ब्रुवते हि फलेन साधवो न तु कण्ठेन निजोपयोगिताम् (2.48)

भावार्थ- हंस राजा नल से, दमयन्ती के समीप जाने की आज्ञा माँग रहा है इसी विषय के लिए वह स्वयं को धिक्कारता है कि ओह! उसने आज्ञा क्यों माँगी ''क्योंकि सज्जन व्यक्ति अपनी उपयोगिता कार्य से ही बखानते है, कण्ठ से नहीं।''

17. भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः? (17/70)

भावार्थ- हे बुद्धिमानों! शम क्या है? (कुछ नहीं), प्रिया की प्राप्ति के निमित्त परिश्रम करो, क्योंकि ''जलकर राख हुए शरीर का पुनः आगमन कहाँ होता है? (अर्थात् नहीं होता है)।

18. गरौ गिरः पल्लवनार्थलाघवे
मितं च सारं च वचो हि वाग्मिता (9/8)

भावार्थ- नल, दमयन्ती से कहते हैं कि ''विशेष प्रयोजन से शून्य कुल व नाम के विषय में बताना मेरी जीभ द्वारा उदासीनता होगी ''क्योंकि विस्तार और संकोच दोनों वाणी के विष रूप हैं और थोड़ा किन्तु सारपूर्ण कथन वचनों का पाण्डित्य है।''

19. मुखं विमुच्य श्वसितस्य धारया वृथैव
नासापथधावनश्रमः (9/44)

भावार्थ- नल, दमयन्ती से कहते हैं कि हाय! तुमने सब देवों के नायक (देवेन्द्र) को छोड़कर मनुष्य नल का आदर किया है जो पूर्णतः भ्रम है, ''क्योंकि निःश्वास धारा द्वारा मुँह को छोड़कर नाक के मार्ग से आना-जाना व्यर्थ ही है।''

20. विवेकधाराशतधौतमन्तः सतां न कामः कलुषीकरोति (8/54)

भावार्थ- दमयन्ती की वीणा-वाणी द्वारा प्रशंसित मन वाला नल धैर्य से काम की अवज्ञा करते हुए कहता है, ''विवेक जल की धाराओं से शतवार धोकर उजले किये गये सज्जनों के अन्तःकरण को काम दूषित (काला, विकृत) नहीं करता।''

21. सतां महत्संमुखधावि पौरुषम् । (12/8)

भावार्थ- सगर पुत्रों द्वारा समुद्र खोदे जाने का वर्णन पुराण प्रसिद्ध है यह उनके पुरुषार्थ का ही फल था। क्योंकि ''सज्जनों का पुरुषार्थ बड़ों के सम्मुख दौड़ते हुए आता है।''

22. साधने हि नियमोऽन्यजनानां योगिनां तु
तपसाऽखिलसिद्धिः (5/3)

भावार्थ- नारद ने बिना किसी वाहन के ही आकाश यात्रा कर डाली, क्योंकि ''साधन तो सामान्य जनों को आवश्यक हैं, योगियों की तो तप से ही सब सिद्धि हो जाती है।''

23. स्तवे रवेरप्सु कृताप्लपवैः कृते न मुद्धती जातु
भवेत्कुमुद्वती। (9/148)

भावार्थ- यदि वेद देवों के गुणों के गायक हैं तो इससे दमयन्ती का क्या प्रयोजन है? ''क्योंकि जल मे स्नान किये व्यक्तियों द्वारा सूर्य की स्तुति से कुमुदिनी कभी प्रसन्न नहीं होती है।''

24. ह्रदे गभीरे हृदि चावगाढे शंसन्ति कार्यावतरं हि सन्तः (3/53)

भावार्थ- हंस नल के बारे में थोड़ा बताकर दमयन्ती के मनोभाव को जानने की इच्छा से चुप हो गया, ''क्योंकि सज्जन गहरे सरोवर के आलोडित होने और गूढ़ हृदय का ज्ञान होने पर कार्यावतर करते हैं।''

25. फलेन मूलेन च वारिभूरुहां मेनेरिवेत्थं मम यस्य वृत्तयः (1/133)

भावार्थ- हंस, राजा नल से कहता है, कि ''इस प्रकार मुनि के समान मेरी (हंस) भी जीविका कमलों के फल और कन्द मूल ही है'' और मेरे द्वारा कोई अपराध भी नहीं किया गया है। अतः मुझे मारने (दण्डित) से पृथ्वी भी लज्जित क्यों नहीं हो रही है।

26. मदेकपुत्रा जननी जरातुरा नवप्रसूतिर्वरटा तपस्विनी (1/135)

भावार्थ- हंस अपनी कारुणिक दशा का वर्णन करते हुए नल से कहता है- ''मुझ इकलौते पुत्र तथा वृद्धावस्था से पीड़ित मेरी माता है, नवप्रसूता तथा पतिव्रता मेरी पत्नी है।'' उन दोनों का आलम्ब मैं ही हूँ। हे विधाता! उनको पीड़ित करते हुए तुमको करुणा रोकती नहीं है?

27. अधारि पद्मेषु तदङ्घ्रिणा क्व तच्छयच्छाय लवोऽपि पल्लवे। 1/20

भावार्थ- इसमें कवि ने नल के यौवन के आगमन से शारीरिक सौन्दर्य में हो रही अभिवृद्धि का वर्णन किया है - ''नल के चरणों ने कमलों के प्रति घृणा (या दया) धारण की, नवकिसलयों में उनके हाथ की शोभा का छाया मात्र भी कहाँ था! अर्थात् नहीं था।''

28. कथाप्रसङ्गेषु मिथस्सखीमुखात्तृणेऽपि तन्व्या नलनामनि श्रुते । (1/35)

भावार्थ- इसमें दमयन्ती के श्रवणानुराग का वर्णन ''कभी भी वार्तालाप करते समय, नल नामक तृण के विषय में भी किसी के द्वारा नल शब्द सुन लेने मात्र से दमयन्ती, राजा नल के विषय में चर्चा हो रही है ऐसा समझ कर उनकी बात ध्यान से सुनने लगती थी।''

29. मृगयाऽघाय न भूभृतां ध्नताम् 2/10

भावार्थ- यह सूक्ति राजा नल के शिकार से सम्बन्धित है- ''पृथ्वीपालकों की मृगया पापनिमित्तिका नहीं होती।''

30. मुग्धेषु कः सत्यमृषाविवेकः 8/18

भावार्थ- काम के वशीभूत दमयन्ती, नल के प्रति शालीनता के कारण चुप नहीं रह सकी क्योंकि ''मूढ़ हुए व्यक्तियों में सत्यासत्य का विवेक कहाँ?'' अर्थात् नहीं होता है।

31. गुरूपदेशं प्रतिमेव तीक्ष्णा प्रतीक्षते जातु न कालमार्तिः 3/91

भावार्थ- हंस, दमयन्ती से कहता है सोच-विचार कर कार्य करना विलंब सहन करना है, अतः शीघ्रता करो, ''शिष्य की

कुशाग्र तुल्य, तीव्र, प्रजा के समान गुरु के उपदेश की प्रतीक्षा नहीं करती है।'' वैसे भी पीड़ा विलम्ब की प्रतीक्षा नहीं करती।

32. जनः किलाचारमुचं विगायति 9/13

भावार्थ- नल, स्वनामोच्चारण न करने का कारण बताते हैं कि सज्जन अपना नाम नहीं लेते, महापुरुषों के आचार व्यवहार की परम्परा है। इसलिए वह नाम कहने को उत्साहित नहीं हो पा रहा है, ''क्योंकि लोक, निश्चय ही आचार व्यवहार छोड़ देने वाले की निन्दा करता है।''

33. तरुणीस्तन एव दीप्यते मणिहारावलिरामणीयकम् (2/44)

भावार्थ- हंस, नल से कह रहा है कि हे वीर! दमयन्ती की शृंगार चेष्टा केवल तुझसे ही सुशोभित होगी, क्योंकि मणिमाल की रमणीयता तरुणी के कुचों पर ही दिखती है (शोभित होती है।)''

34. तं धिगस्तु कलयन्नपि वाञ्छामर्थिवागवसरं सहते यः। 5/83

भावार्थ- नल विचार कर रहें हैं कि (देवों का) अभीष्ट कैसे जाना जाय कि वे क्या चाहते हैं? बिना माँगे ही शीघ्र दान देना श्रेष्ठ है, ''जो दाता याचक की इच्छा को समझता हुआ भी याचकों को कहने का अवसर देता है उसे धिक्कार है।''

35. द्विषन्मुखेऽपि स्वदते स्तुतिर्या, तन्मिष्टता नेष्टमुखे त्वमेया। 8/51

भावार्थ- प्रिया दमयन्ती की प्रिय वाणी का पान कर नल पूर्णतः मग्न हो गये क्योंकि ''जो प्रशंसावचन शत्रु के मुख में भी स्वाद देते हैं, वे प्रिय मुख से कहे जायें तो उनकी मिठास क्या असीमित न होगी?'' होगी ही।

36. न मोघसंकल्पधराः किलामराः। 9/145

भावार्थ- दमयन्ती - नल ने मुख से चन्द्र को और शोभा से काम को जीत लिया है किस कारण ये दोनों मेरे वध के लिए प्रण किये बैठे हैं यदि नल की प्रिया होने के कारण है तो मैं जीत गई क्योंकि ''देवता प्रण (संकल्प) धारण निश्चय ही निष्फल नहीं करते हैं।''

37. नामापि जागर्ति हि यत्र शत्रोस्तेजस्विनस्तं कतमे सहन्ते। 8/74

भावार्थ- चंद्र पर कोप करता हुआ मानो आहुति में दिये गये सोम रस का आचमन किया करता है, ''क्योंकि जिसमें शत्रु का नाम भी प्रकट होता है, उसे कौन तेजस्वी जन सहन करते हैं?'' अर्थात् कोई नहीं।

38पलालजालैः पिहितः स्वयं हि प्रकाशमासादयतीक्षुडिम्भः। (8/2)

भावार्थ- देवताओं के कथन कितने समय तक नल को अन्तर्धान कर सकते हैं, ''क्योंकि तिनको से ढका ईख का अंकुर अपने आप ही प्रादुर्भूत हो जाता है।''

39. पिपासुता शान्तिमुपैति वारिणा, न जातु दुग्धान् मधुनोऽधि कादपि । 9/5

भावार्थ- दमयन्ती, नल कहती है कि- कर्णामृतरूपी तुम्हारी वाणी तो सुन ली किन्तु आप के नाम के विषय में सुनने की आकांक्षा शिथिल नहीं हुई। क्योंकि ''प्यास जल से शान्त होती है, अधिक दूध अथवा मधु से नहीं।''

40. बिम्बानुबिम्बो हि विहाय धातुर्न जातु दृष्टातिसरूपसृष्टिः (8/46)

नल को अपने सम्मुख देखकर दमयन्ती नल का प्रतिबिम्ब समझ रही है इसी भाव का वर्णन है -
संसार रूप सागर में प्रतीत होता है कि वीरसेन पुत्र नल प्रतिबिम्ब रूप में विद्यमान हैं, ''क्योंकि विधाता की अतीत समान रूप वाली सृष्टि बिम्ब-प्रतिबिम्ब को छोड़कर कहीं नहीं देखी गयी।''

41. विजृम्भितं यस्य किल ध्वनेरिदं विदग्धनारीवदनं तदाकरः (9/50)

भावार्थ- दमयन्ती से नल कहते हैं कि-
दमयन्ती!तूने देवताओं में से एक को निषेध रूप में स्वीकारा ही है, तेरी ही वाणी में वक्रता है, ''क्योंकि यह जिस ध्वनि (व्यंजनावृत्ति) का प्रसिद्ध विलास है, उसका उद्‌भव स्थान विदुषी नारी का मुख ही है।''

42. विधेरपि स्वारसिकः प्रयासः परस्परं योग्यसमागमाय (3/48)

भावार्थ- हंस, दमयन्ती से कहता है- रात्रि से चन्द्र, उमा से शिव व लक्ष्मी से विष्णु के समान ही संयोग अच्छा होता है, कारण कि ''विधाता भी परमोपयुक्त प्रयत्न परस्पर योग्य सम्मिलन के लिए ही करता है।''

43. शंसति द्विनयनी दृढनिद्रां द्राङ्‌निमेषमिषघूर्णनपूर्णा (5/126)

भावार्थ- इसमें दोनों नयनों के झपकने से मृत्यु की ओर संकेत का एवं जीवन की क्षण भंगुरता का वर्णन किया गया है - नल सोच रहे हैं कि ''झटपट पलक झँपाने के मिस तन्द्रा से पूर्ण दोनों नेत्र मृत्यु का कथन करते हैं।''

44. संदर्भ्यते दर्भगुणेन मल्लीमाला न मृद्वी भृशकर्कशेन (3/49)

दमयन्ती के लिए योग्य वर नल जैसे समस्त पुरुषोचित गुण वाले के अतिरिक्त कोई नहीं है। इसी भाव का वर्णन है-
दमयन्ती जैसी स्त्रीगुण सागर की प्रवाह रूपा, को नल के अतिरिक्त परुष से संयुक्त करना उचित नहीं होगा, ''क्योंकि कोमल मल्लिका पुष्पमाला को अत्यन्त कर्कश कुश तन्तु से गुँथना उचित (योग्य) नहीं होता है।''

45. सुरेषु विघ्नैकपरेषु को नरः करस्थमप्यर्थमवाप्तुमीश्वरः (9/83)

भावार्थ- नल, दमयन्ती का हित समझकर उसे समझाते हुए कहते हैं कि -
हे दमयन्ती! ''देवों के एकान्तत! विघ्नकारी हो जाने पर हाथ में आयी वस्तु को भी कौन मनुष्य प्राप्त करने में समर्थ है?'' अर्थात् कोई नहीं।

46. स्वतः एव सतां परार्थता ग्रहणानां हि यथा यथार्थता 2/61

भावार्थ- हंस, राजा से कहता है कि- हे राजा मैं जो आपको प्रवर्तित कर रहा हूँ, वह क्या पिष्ट-प्रेषण नहीं है? अर्थात् है "क्योंकि जैसे ज्ञान स्वतः प्रमाण होते हैं, वैसे ही सज्जनों की परोपकारशीलता भी स्वतः प्रमाण होती है।"

स्वतः सतां ह्रीः परतोऽपि गुर्वी 6/22

भावार्थ- कवि ने नल को स्वयं अनौचित्य पर लजाने का वर्णन किया है-

लज्जाहीन सुन्दरियों को कटाक्षों से देखते हुए नल अनुराग सहित पुरुष की तरह लज्जित हो गये, क्योंकि "सज्जनों को अन्य जनों की अपेक्षा अपने से ही लज्जा अधिक होती है।"

48.स्वभावभक्तिप्रवणं प्रतीश्वराः कया न वाचा मदमुद्गरन्ति 9/26

भावार्थ- दमयन्ती कहती है कि- "समर्थ जन अपने भाव और भक्ति में लीन भक्त के प्रति किस वाणी से प्रसन्नता नहीं व्यक्त करते हैं?" (अर्थात् प्रत्येक वाणी से व्यक्त करते हैं।)

नैषधीयचरितम्- बिन्दुवार अध्ययन

- 'नैषधीयचरितम्' किस श्रेणी की रचना है? - **महाकाव्य**
- 'नैषधीयचरितम्' कथा का आधार है - **महाभारत**
- 'नैषधीयचरितम्' में नायक कौन है? - **नलः**
- 'नैषधीयचरितम्' में कितने सर्ग स्वीकृत किये गये हैं? - **22**
- 'नैषधीयचरितम्' में मुख्य रस कौन-सा है? - **शृङ्गाररसः**
- किस महाकाव्य को विद्वानों के लिए 'औषधि' कहा जाता है? - **नैषधीयचरितम्**
- 'निषध'-देशेन सम्बन्धितस्य पात्रस्य नामास्ति - **नलः**
- 'विद्वदौषधम्' किं काव्यं निगदितम्? - **नैषधीयचरितम्**
- 'मदेकपुत्रा जननी जरातुरा' इति कथनमस्ति - **हंसस्य**
- किस काव्य में एक पात्र के पाँच रूप हैं? -**नैषधीयचरितम् में**
- हंस का विलाप वर्णन है - **नैषधीयचरितम्**
- "चतुर्दशत्वं कृतवान् कुतस्स्वयं, न वेद्मि विद्यासु चतुर्दशस्वयम्" कः सः? - **नलः**
- "अधारि पद्मेषु तदङ्घ्रिणा क्व तच्छय-च्छायलवोऽपि पल्लवे।" अस्मिन् पद्यांशे कस्य सौन्दर्यं वर्णितम्? - **नलस्य**
- 'कथाप्रसङ्गेषु मिथः सखीमुखात्तृणेऽपि तन्व्या नलनामनि श्रुते।' अत्र 'नल' इत्यस्य पदस्य कोऽर्थः - **तृणम्**
- नैषधीयचरिते काः नलस्य दन्तैः उपमिताः? - **विद्याः**
- "निपीय यस्य क्षितिरक्षिणः कथां तथाद्रियन्ते न बुधाः सुधामपि।"
- इति कस्य कथा अत्र उल्लिखिता? - **नलस्य**
- नल और दमयन्ती की कथा कहाँ चित्रित है? -**नैषधीयचरितम्**
- 'श्रीहर्ष' द्वारा रचित 'नैषधीयचरित' में किस रीति की प्रधानता है? - **वैदर्भी रीति**
- 'शृङ्गारामृतशीतगुः' विशेषण किस काव्य के लिए प्रसिद्ध है? - **नैषधीयचरितम्**
- मल्लिनाथेन कस्य ग्रन्थस्य टीका कृता? - **नैषधीयचरितस्य**
- नैषधीयचरिते कस्यालङ्कारस्य वैशिष्ट्यम्? - **श्लेषस्य**
- "त्यजन्त्यसूञ्शर्म च मानिनो वरं त्यजन्ति न त्वेकमयाचितव्रतम्" इयमुक्तिः - **नैषधीयचरितात्**
- 'फलेन मूलेन च वारिभूरुहां, मुनेरिवेत्थं मम यस्य वृत्तयः।' कं प्रति कस्येयमुक्तिः? - **नलं प्रति हंसस्य**
- नलस्य स्मितेन कस्य श्रियः जिताः? - **विधोः**
- 'क्वचिद् बुधैरप्यपथेन गम्यते' सूक्ति का स्रोत है? - **नैषधीयचरितम्**
- 'फलेन मूलेन च वारिभूरुहां मुनेरिवेत्थं मम यस्य वृत्तयः' नैषधीयचरिते इयमुक्तिर्भवति - **हंसस्य**
- नैषधीयचरितस्य नायिका का? - **दमयन्ती**
- हंसः कस्य दूतः? - **नलस्य**
- नलदमयन्ती कथाचित्रणं कस्मिन् महाकाव्ये प्राप्यते? - **नैषधीयचरिते**
- 'निपीय यस्य क्षितिरक्षिणः कथास्तथाद्रियन्ते न बुधाः सुधामपि' इत्यत्र अर्थालङ्कार अस्ति - **व्यतिरेकः**
- 'अधीतिबोधाचरणप्रचारणैः' इति वाक्यं कस्मिन्महाकाव्ये वर्तते? - **नैषधीयचरिते**
- नैषधीयचरितमहाकाव्यस्य नायिका .... अस्ति? - **स्वकीया**
- 'धिगस्तु तृष्णातरलं भवन्मनः समीक्ष्य पक्षान् मम हेमजन्मनः' इति वाक्यं कः कं वदति? - **हंसो नलं वदति**
- 'नृपः पतङ्गं समधत्त पाणिना' – पंक्तिरियं कस्मात् काव्यात् उद्धृताऽस्ति? - **नैषधमहाकाव्यात्**
- 'भवेदमीभिः कमलोदयः कियान्' इत्यत्र 'अमीभिः' इत्यनेन सर्वनाम्ना परामृश्यन्ते - **हंसपक्षाः**
- 'गतिस्तयोरेष जनः' इत्यत्र हंसः कयोः गतिः? - **मातृवरटयोः**
- 'मितं च सारं च वचो हि वाग्मिता'-कस्य कवेः काव्यमिदम्? - **श्रीहर्षस्य**
- 'अमुष्य विद्या रसनाग्रनर्तकी।' इति कस्य वर्णनम्? - **नलस्य**
- 'नलोपाख्यानाधारितं काव्यं किम्? - **नैषधीयचरितम्**

4.15 राजतरङ्गिणी

महाकवि कल्हण का परिचय

- **कवि का नाम-** कल्हण
- **वास्तविक नाम-** कल्याण
- **पिता का नाम-** महामात्य चम्पक प्रभु या चणपक।
- कल्हण के पिता, कश्मीर-नरेश हर्ष के महामात्य या राजमन्त्री थे। समाज में उनको उच्चस्थान प्राप्त था।
- **समय-** जन्म 1098 ई॰ के लगभग।
- **जन्मस्थान-** कश्मीर का परिहासपुर
- **वंश/जाति-** यद्यपि कल्हण नें अपनी जाति कहीं नहीं लिखा है, फिर भी 'जोनराज' के अनुसार कुलीन ब्राह्मण होने

का अनुमान किया जा सकता है।

- **उपासक-** राजतरङ्गिणी के अनुसार यद्यपि कल्हण का शिव भक्त होना प्रमाणित होता है तथापि उनमें अन्य धर्मों के प्रति सहिष्णुता एवं सहानुभूति थी।
- **कृति-** 'राजतरङ्गिणी' एकमात्र
- **प्रिय छन्द-** अनुष्टुप्

अन्य विशेषताएं

- कल्हण ने वेद, रामायण, महाभारत, पुराण, काव्य, ज्योतिष, अर्थ-शास्त्र आदि का गहन अध्ययन एवं भारतवर्ष का पर्याप्त भ्रमण किया था।
- उनका भौगोलिक ज्ञान एवं सामुद्रिक ज्ञान भी अत्यन्त प्रौढ़ था।
- कल्हण का देश-प्रेम और कवित्व दोनों उच्चकोटि के हैं, राजतरङ्गिणी लिखकर उन्होंने दोनों ही क्षेत्रों को एक महान् अवदान दिया है।
- **आश्रयदाता-** अलकदत्त (राजाश्रय छोड़ने के बाद)
- अलकदत्त की ही प्रेरणा से कल्हण ने राजतरङ्गिणी लिखा।
- **रीति-** वैदर्भी रीति।
- **शैली-** प्रायः महाभारत जैसी।

राजतरङ्गिणी का परिचय

- **लेखक-** कल्हण
- **काव्यविधा-** कल्हण नें स्वयं इसे 'कथा' एवं 'संदर्भ' कहकर उल्लिखित करते हैं।

इयं नृपाणामुल्लासे ह्रासे वा देशकालयोः।
भैषज्यभूतसंवादिकथा युक्तोपयुज्यते।। (राज01/21)
संक्रान्तप्राक्तनानन्त व्यवहारः सुचेतसः।
कस्येदृशो न सन्दर्भो यदि वा हृदयङ्गमः।। (राज01/22)

- **विभाजन-** 8 तरङ्गों में।
- **श्लोक संख्या-** 7826 (सात हजार आठ सौ छब्बीस)

तरङ्ग	श्लोक संख्या
प्रथम	373
द्वितीय	171
तृतीय	530
चतुर्थ	720
पञ्चम	483
षष्ठ	368
सप्तम	1732
अष्टम	3449 (सर्वाधिक श्लोक)

कुल श्लोक-7826

- **उपजीव्य-**'नीलमतपुराण' एवं ग्यारह अन्य ऐतिहासिक ग्रन्थ।

दृग्गोचरं पूर्वसूरिग्रन्था राजकथाश्रया।
मम त्वेकादशगता मतं नीलमुनेरपि।। (राज01/14)

- इसके अतिरिक्त भी कवि ने राजा के अभिलेख, प्रशस्ति-पत्र एवं वंशावलियों के देखे जाने का भी उल्लेख किया है।
- **प्रधान रस/अङ्ग रस/मुख्य रस-** शान्त रस
- **गौण रस/अङ्ग रस-** श्रृङ्गार, वीर तथा हास्य रस
- **छन्द-** मुख्य रूप से अनुष्टुप् का आश्रय लिया गया है। किन्तु बीच-बीच में बड़े छन्दों जैसे-वसन्ततिलका, शार्दूलविक्रीडित और हरिणी का भी प्रयोग है।
- **अलङ्कार-** सहज रूप से अलङ्कारों का प्रयोग है। मुख्यतः उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक, दीपक, अतिशयोक्ति, दृष्टान्त आदि अर्थालङ्कार तथा अनुप्रास आदि शब्दालङ्कार का प्रयोग स्वाभाविक रूप से हुआ है।
- **रीति-** मुख्यतः वैदर्भी रीति किन्तु कहीं-कहीं पर पाञ्चाली और गौडी रीति का भी प्रयोग है।
- राजतरङ्गिणी में वैदर्भी रीति के लिए अनुष्टुप् छन्द तथा गौडी तथा पाञ्चाली रीति के लिए बड़े छन्दों का प्रयोग है।
- **गुण-** प्रसाद के साथ ओज और माधुर्य।

राजतरङ्गिणी नाम की सार्थकता

- राजतरङ्गिणी का हिन्दी अर्थ है - 'राजाओं की नदी।
- 'राज्ञाम् तरङ्गिणी' इति राजतरङ्गिणी- **षष्ठी तत्पुरुष समास।**
- इसमें प्रारम्भ से लेकर अर्थात् महाभारत काल से लेकर 1150 ई० तक के समस्त कश्मीरी राजाओं का रोचक वर्णन होने के कारण इसका नाम राजतरङ्गिणी रखा गया है।
- हजारों वर्षो के ऐतिहासिक राजाओं के प्रत्यक्ष प्रमाण के रूप में राजतरङ्गिणी नाम अत्यन्त समीचीन है।

राजतरङ्गिणी का मङ्गलाचरण

भूषाभोगिफणारत्नरोचिः सिचयचारवे।
नमः प्रलीनमुक्ताय हरकल्पमहीरुहे।। (1/1)

भावार्थ- अलङ्कार स्वरूप सर्पों के फणामण्डल में विद्यमान रत्नों की दीप्ति से देदीप्यमान एवं मुक्तजनों द्वारा आधारित शिव रूपी कल्पतरु को नमस्कार है।

भालं वह्निशिखाङ्कितं दधदधिश्रोत्रं वहन्संभृतं,
क्रीडत् कुण्डलिजृम्भितं जलधिजच्छायाच्छकण्ठच्छविः।
वक्षो विभ्रदहीन कञ्चुकचितं बद्धाङ्गनार्धस्य वो
भागः पुङ्गवलक्ष्मणोस्तु यशसे वामोऽथ वा दक्षिणः।। (1/2)

भावार्थ- तृतीय नेत्र में स्थित अग्नि की लपटों तथा केसर के तिलक से सुशोभित ललाटयुक्त एवं केलि करते हुए सर्पों के चपल मुख तथा झूलते हुए कुण्डलों से शोभायमान कानों वाला, समुद्र से उत्पन्न अथवा शङ्ख की दीप्ति से निर्मल कण्ठ की शोभा से सम्पन्न, वृष के चिह्न से चिह्नित, उत्तम कञ्चुकी से आवृत्त वक्षःस्थल एवं आधी देह से नर और आधी से नारी का वेष धारण किये हुए शिवजी का दाहिना अथवा वामभाग आप लोगों का कल्याण करे।

- राजतरङ्गिणी में दो श्लोकों के माध्यम से भगवान् शिव की वन्दना की गयी है।
- प्रथम श्लोक में नमस्कारात्मक तथा दूसरे श्लोक में आशीर्वादात्मक मङ्गलाचरण का प्रयोग है।
- प्रथम श्लोक में अनुष्टुप् छन्द तथा रूपक अलङ्कार का प्रयोग हुआ है।

➢ द्वितीय में शार्दूलविक्रीडित छन्द और अनुप्रास अलङ्कार प्रयुक्त हुआ है।
➢ मङ्गलाचरण की ही पद्धति को आगे बढ़ाते हुए राजतरङ्गिणीकार महाकवि कल्हण ने सुकवि जनों की वंदना भी की है।

राजतरङ्गिणी का अन्तिम श्लोक

गोदावरी सरिदिवोत्तुमुलैस्तरङ्गैः
वक्त्रैः स्फुटं सपदि सप्तभिरा पतन्ती।
श्रीकान्ति राजविपुलाभिजनाब्धिमध्यं
विश्रान्तये विशति राजतरङ्गिणीयम्। (8/3449)

भावार्थ- जिस प्रकार गोदावरी नदी सातमुखों से निकल कर तथा अपनी ऊँची-ऊँची तरङ्गों को उछालकर बहती हुई समुद्र में जाकर विश्राम करती है, उसी प्रकार राजाओं की नदी यह राजतरङ्गिणी अपने पहले वाले सात तरङ्गों के साथ बहती हुई उच्चकुलोत्पन्न श्रीकान्तिराज रूपी समुद्र में विश्राम करने के लिए प्रविष्ट हो रही है।

➢ यह अन्तिम श्लोक प्रकारान्तर से राजा जयसिंह के विषय में है।
➢ वसन्ततिलका छन्द एवं उपमा तथा रूपक अलङ्कारों का प्रयोग है।

राजतरङ्गिणी का तरङ्गवार संक्षिप्त कथानक

प्रथम तरङ्ग- राजतरङ्गिणी के प्रथम तरङ्ग में गोनन्द प्रथम से लेकर युधिष्ठिर तक 75 राजाओं का विवरण है। इन राजाओं ने 1014 वर्ष 9 दिन तक कश्मीर पर राज्य किया।

➢ इन राजाओं में गोनन्द तृतीय के पहले तक 52 राजा+गोनन्द तृतीय से युधिष्ठिर तक 23 राजा- 52+23=75
➢ प्रथम तरङ्ग में गोनन्द तृतीय से पूर्व केवल 19 राजाओं के नामों का वर्णन है। शेष 33 राजाओं के नाम अप्राप्त हैं।

द्वितीय तरङ्ग- पूरे राजतरङ्गिणी में द्वितीय तरङ्ग सबसे छोटा है इसमें सिर्फ 171 श्लोक हैं। इस तरङ्ग में कश्मीर के 192 वर्षों के कुल छः राजाओं के कार्यकाल का वर्णन किया गया है।

तृतीय तरङ्ग- इस तरङ्ग में गोनन्दवंश के अन्तिम राजा बालादित्य तक दश राजाओं के 536 वर्षों के राज्यकाल का वर्णन है।

चतुर्थ तरङ्ग- इसमें 260 वर्षों तक राज्य करने वाले 17 राजाओं का इतिहास निरूपित है।

पञ्चम तरङ्ग- अवन्ति वर्मा के राज्यारोहण के साथ उत्पथवंश के सूत्रपात्र का वर्णन तथा कल्यपालवंशज संकट वर्मा, सुगन्धा देवी और शङ्करवर्धन के राज्यकाल का निरूपण है। इस तरङ्ग में 83 वर्ष 4 माह के शासन काल का वर्णन है।

षष्ठ तरङ्ग- इसमें 10 राजाओं के 936 ई॰ से 1003 ई॰ तक अर्थात् 64 वर्ष, 8 माह, 15 दिन तक के कश्मीरी शासकों का विवरण दिया गया है।

सप्तम तरङ्ग- इस तरङ्ग में कश्मीर के छः राजाओं के 98 वर्ष (सन् 1003 से 1101 ई॰) तक के समय का चित्रण है। ये छः राजा उदयराज के वंशज हैं।

अष्टम तरङ्ग- यह तरङ्ग, राजतरङ्गिणी का सबसे बड़ा भाग है। इस तरङ्ग में सातवाहन वंश के उच्चल, सुस्सल, भिक्षाचर और जयसिंह आदि राजाओं की जीवनगाथा तथा कृत्यों का प्रत्यक्षीकरण कराया गया है।

कुछ महत्वपूर्ण तत्थ्य

➢ राजतरङ्गिणी एक ऐसी रचना है, जिसे संस्कृत के महाकाव्यों का 'मुकुटमणि' कहा जा सकता है।
➢ राजतरङ्गिणी के समस्त राजा कश्मीरी हैं और स्वयं कवि भी कश्मीर के ही निवासी हैं।
➢ राजतरङ्गिणी में वर्णित समस्त राजाओं में प्रथम राजा गोनन्द प्रथम तथा अंतिम राजा जयसिंह हैं।
➢ राजतरङ्गिणी के पूर्वार्द्ध की अपेक्षा उत्तरार्द्ध भाग अधिक प्रामाणिक है।
➢ एक ही ग्रन्थ में इतने सारे राजाओं को ऐतिहासिक वर्णन प्राप्त होने के कारण 'कल्हण' विदेशों में भी आदरणीय हैं।
➢ महाभारतकाल से लेकर सन् 1150 ई॰ तक के कश्मीरी नरेशों का इतिवृत्त तथा चरित्राङ्कन हुआ है।
➢ राजतरङ्गिणी के प्रारम्भिक छः तरङ्ग छोटे हैं तथा अन्तिम दो बड़े हैं, जिनमें आठवाँ तरङ्ग सर्वाधिक बड़ा है।
➢ आरम्भ से लेकर 812 ई॰ तक के राजाओं का वर्णन, बिना तिथि, किन्तु 813-814 ई॰ से तिथि क्रम का स्पष्ट उल्लेख कल्हण ने किया है, जिनमें आठवाँ तरङ्ग तो कवि की स्वयं आँखो देखी और अनुभूत घटनाओं का प्रामाणिक लेखा-जोखा है।
➢ राजा हर्ष के उत्थान और पतन का विशद विवरण भारतीय इतिहास का एक महत्वपूर्ण अध्याय है।
➢ कल्हण ने हर्ष का रोमाञ्चक इतिहास 1400 पद्यों में लिखा है, यह अंश उनके समय का न केवल कच्चा-चिट्ठा, बल्कि एक विराट् महाकाव्य भी है।
➢ कल्हण ने राजतरङ्गिणी की रचना 1149 ई॰ में प्रारम्भ करके इसके अगले वर्ष सन् 1150 में पूर्ण की। इसके लिखने के समय कश्मीर में जयसिंह का शासन था।
➢ राजतरङ्गिणी में लगभग 2500 वर्षों का कश्मीरी इतिहास है।
➢ इसमें 400 घटनाएं तिथिक्रम से युक्त हैं।
➢ कल्हण ने किसी राजा का वर्णन पक्षपातपूर्ण नहीं किया है बल्कि राजाओं के गुणों के साथ दुर्गुणों का वर्णन भी न्यायाधीश की भाँति, समान रूप से किया है।

राजतरङ्गिणी परम्परा

➢ इस राजतरङ्गिणी की परम्परा को 'जोनराज' ने आगे बढ़ाया जिसमें जयसिंह के पश्चात् के राजाओं का वर्णन है।
➢ जोनराज ने अपने समय के राजा जैनुल-आब्दीन (1419 से 1470 ई॰) तक के इतिवृत्त को बनाए रखा।
➢ इनकी राजतरङ्गिणी को **'जोनराजकृत-राजतरङ्गिणी'** या **'द्वितीयराजतरङ्गिणी'** कहा जाता है।
➢ इसके बाद जोनराज के शिष्य 'श्रीवर' ने इसको क्रमिक रूप से चलाया। जोनराज की मृत्यु 1459ई. में ही हो गयी।
➢ इसमें श्रीवर ने जैनुल-आब्दीन (1459) से 1486 तक का वर्णन किया है। यह **'तृतीय-राजतरङ्गिणी'** है।
➢ इसके आगे इस परम्परा को **'शुक'** नामक कवि ने बढ़ाया और सन् 1596ई॰ तक का चित्रण किया। यह राजतरङ्गिणी का **चौथा प्रवाह** है।
➢ राजतरङ्गिणी परम्परा के सभी कवि कश्मीरी ही हैं तथा 'शुक' कवि के पश्चात् यह परम्परा अवरुद्ध हो गयी।

राजतरङ्गिणी- बिन्दुवार अध्ययन

➢ कल्हण की 'राजतरङ्गिणी' को किसने आगे बढ़ाया?
- जोनराज एवं श्रीवर

- कल्हण की पुस्तक का क्या नाम है? - **राजतरङ्गिणी**
- कल्हण द्वारा रचित 'राजतरङ्गिणी' निम्नलिखित में से किससे सम्बन्धित है– - **कश्मीर के इतिहास से**
- 'राजतरङ्गिणी' किस कवि की रचना है? - **कल्हणः**
- 'कल्हण' की 'राजतरङ्गिणी' की रचना किस शताब्दी में हुई थी?- **12वीं शताब्दी ई0**
- 'द्वितीयराजतरङ्गिणी' के लेखक हैं - **जोनराज**

4.16 नीतिशतकम्

महाकवि भर्तृहरि का परिचय

- विक्रमसंवत् के प्रवर्तक विक्रमादित्य के बड़े भाई।
- **पत्नी** – पिङ्गला
- **गुरु** – (i) गोरखनाथ (ii) वसुरात (बौद्धमत में)
- **भाई (अनुज)** – विक्रमादित्य
- **पिता** – गन्धर्वसेन (मालवदेश के राजा)
- ईत्सिंग के कथन के आधार पर **भर्तृहरि को बौद्ध** कहा जाता है।
- भर्तृहरि **वेदान्तोक्त ब्रह्म के उपासक** थे।
- **भर्तृहरि का समय** – (i) 57 ई. पू. अथवा (ii) 575 से 650 ई.
- **भर्तृहरि की शैली/रीति एवं गुण** – वैदर्भीरीति, प्रसाद और माधुर्यगुण
- **मुक्तक काव्य के प्रथमकवि** – भर्तृहरि
- **भर्तृहरि के प्रिय छन्द** – शार्दूलविक्रीडित, शिखरिणी
- मृत्यु 650 ई. (चीनी यात्री इत्सिंग के अनुसार)
- **रचनायें– (i) वाक्यपदीयम्** (व्याकरणग्रन्थ), (ii) **नीतिशतकम्** (मुक्तककाव्य) 111 श्लोक, (iii) **शृङ्गारशतकम्** (मुक्तककाव्य) 103 श्लोक, (iv) **वैराग्यशतकम्** (मुक्तककाव्य) 111 श्लोक

नीतिशतकम्

- **लेखक** – भर्तृहरि
- **विधा** – मुक्तककाव्य
- **कुलश्लोक** – 111
- **कुलपद्धतियाँ** – 10 (मङ्गलाचरण सहित 11पद्धतियाँ)
  1. अज्ञपद्धति (मूर्खनिन्दापद्धति)
  2. विद्वत्पद्धति
  3. मानशौर्यपद्धति
  4. अर्थपद्धति
  5. दुर्जनपद्धति
  6. सुजनपद्धति
  7. परोपकारपद्धति
  8. धैर्यपद्धति
  9. दैवपद्धति
  10. कर्मपद्धति
- मुक्तक का लक्षण–"**पूर्वापरनिरपेक्षेणापि हि येन रसचर्वणा क्रियते तदेव मुक्तकम्।**"
  इसप्रकार अर्थप्रकाशन के लिए एक दूसरे की अपेक्षा न रखने वाले स्वतन्त्र पद्य (श्लोक) मुक्तक कहे जाते हैं।
- नीतिशतक में वर्ण्य विषय को ग्यारह पद्धतियों में समाहित किया गया है।
- भर्तृहरि ने नीतिशतक में ब्रह्म की स्तुति के पश्चात् 'मूर्ख-निन्दा' से ग्रन्थ का आरम्भ किया है।
- नीतिशतक में भर्तृहरि की शैली प्रसादगुण से युक्त और मुहावरेदार है।
- नीतिशतक के मङ्गलाचरण में अनन्त, ज्ञानमय स्वानुभवमात्र से जानने योग्य, ज्योतिस्वरूप **ब्रह्म को नमस्कार** किया गया है।
- नीतिशतक का **मङ्गलाचरण नमस्कारात्मक** है।
- मङ्गलाचरण **(दिक्कालाद्यनवच्छिन्नानन्तचिन्मात्रमूर्तये)** में **अनुष्टुप्** छन्द प्रयुक्त है।
- विद्वानों के ईर्ष्याग्रस्त होने तथा राजाओं के राजमद से चूर होने के कारण और शेष लोगों के अज्ञानता के कारण भर्तृहरि का ज्ञान उनके शरीर में ही जीर्ण हो गया।
- अज्ञानी को प्रसन्न किया जा सकता है, विद्वान् को आसानी से प्रसन्न किया जा सकता है, परन्तु अल्पज्ञानी को ब्रह्मा भी प्रसन्न नहीं कर सकते।
- घड़ियाल के मुख से मणि निकाली जा सकती है, समुद्र पार किया जा सकता है, सर्प को पुष्प सदृश सिर पे धारण किया जा सकता है परन्तु दुराग्रही मूर्ख को नहीं समझाया जा सकता।
- बालू से तेल, मृगतृष्णा से जल, खरगोश के सिर पर सींग प्राप्त हो सकती है, परन्तु दुराग्रही मूर्ख को प्रसन्न नहीं किया जा सकता।
- विधाता ने मूर्खों के लिए एकमात्र 'मौन' को ही आभूषण बनाया है।
- पंडितों के सम्पर्क में आने पर अल्पज्ञ का दुराभिमान दूर हो जाता है।
- मनुष्य की घृणास्पद हड्डी को चबाता हुआ कुत्ता सामने खड़े देवराज से हड्डी छीने जाने का संदेह करता है।
- गङ्गा स्वर्ग से शिव के मस्तक को, शिव के सिर से हिमालय को, हिमालय से पृथ्वी को और पृथ्वी से समुद्र को प्राप्त हुई। इस प्रकार विवेकभ्रष्ट व्यक्ति का पतन सैकड़ों प्रकार से होता है।
- अग्नि जल से, सूर्यताप छाते से, हाथी अंकुश से, बैल व गधे दण्ड से नियन्त्रित किये जा सकते हैं। मूर्खता की कोई औषधि (उपाय) नहीं है।
- साहित्य, सङ्गीत एवं कला से विहीन व्यक्ति साक्षात् पशु के समान है।
- विद्या, तप, दान, ज्ञान, शील, गुण और धर्म से विहीन व्यक्ति पृथ्वी के भार स्वरूप हैं और मनुष्य रूप में पशु हैं।
- मूर्खों के साथ इन्द्र के भवन में रहने की अपेक्षा वनचरों के

साथ वन में रहना श्रेष्ठ है।

- सत्कवियों के अवमानना से राजा की मूर्खता प्रकट होती है।
- विद्यारूपी धन वाले विद्वान् की तुलना कभी राजा के साथ नहीं हो सकती।
- ब्रह्मा हंस के कमलवन में निवास के सुख को नष्ट कर सकता है, परन्तु उसके नीर-क्षीर विवेक को नष्ट नहीं कर सकता।
- 'वाणी' (विद्या) रूपी आभूषण कभी नष्ट नहीं होता और यही सर्वश्रेष्ठ आभूषण है।
- विद्या ही परदेश गमन पर सर्वश्रेष्ठ धन सिद्ध होती है। यह गुरुओं की भी 'गुरु' है।
- राजागण विद्या की पूजा करते हैं धन की नहीं।
- क्षमा के होने पर कवच की, क्रोध के रहते शत्रु की, बन्धुजनों के रहते अग्नि की, अच्छे मित्र के रहते औषधि की, विद्या के रहते धन की, लज्जा के रहते आभूषण की तथा कवित्व रहने पर राज्य की कोई आवश्यकता नहीं होती।
- बुद्धि की जड़ता को सत्संगति हरती है।
- सत्सङ्गति कीर्ति को सभी दिशाओं में फैलाती है।
- सत्सङ्गति मनुष्य का सब प्रकार से हित करती है।
- तेजहीन होने पर भी आत्मसम्मानी सिंह सूखी घास नहीं खाता।
- कुत्ता अपने स्वामी के सामने भोजन के लिए दीनता प्रकट करता है परन्तु गजराज सैकड़ों अनुनय पर खाता है।
- उसका जन्म धन्य है जिसके जन्म से वंश का अभ्युदय हो।
- आयु निश्चय ही तेजस्विता का हेतु नहीं है।
- 'धन' के समक्ष सभी गुण तिनके के समान हो जाते हैं।
- धनवान् ही सभी गुणों वाला माना जाता है क्योंकि सभी गुण धन में ही शोभा पाते हैं।
- धन की तीन गतियाँ मानी गयी हैं – (i) दान (ii) भोग, और (iii) नाश। जो न दान देता है ओर न ही उपभोग करता है उसके धन का नाश होता है।
- वेश्या की भाँति 'राजनीति' नाना रूपों वाली है।
- राजा को पृथ्वी रूपी गाय को दुहने के लिए प्रजारूपी बछड़े का पालन करना चाहिए। तभी पृथ्वी कल्पतरु की भाँति फलती है।
- दुर्जन व्यक्ति 'विद्या' से युक्त होने पर भी भयंकर होता है।
- 'अपकीर्ति' के रहते मृत्यु की आवश्यकता नहीं होती।
- सेवा धर्म परम कठिन है और यह योगियों के लिए भी दुर्बोध है।
- सज्जनों की मैत्री दिन के उत्तरार्द्ध की तरह और दुर्जनों की पूर्वार्द्ध की तरह होती है।
- शिकारी मृग का, मछुआरा मछली का, दुर्जन सत्पुरुषों के अकारण शत्रु होते हैं।
- विपत्ति में धैर्य, समृद्धि में क्षमा, युद्ध में पराक्रम, सभा में वाक्पटुता तथा कीर्ति और वेदशास्त्र में रुचि आदि गुण महापुरुषों में स्वाभाविक होते हैं।
- सज्जनों के लिए तलवार की धार पर चलने जैसे कठिन सेवा व्रत स्वाभाविक होते हैं।
- अच्छे आचरण वाला पुत्र, पति का हित चाहने वाली पत्नी, विपत्ति तथा सुख में समान व्यवहार करने वाला मित्र पुण्यवानों को प्राप्त होते है।
- सच्चा मित्र दूसरे मित्र को पाप कर्म से दूर करता है हितकारी कार्यों में लगाता है तथा छिपाने योग्य बातों को छिपाता है।
- मनुष्य की तीन कोटियाँ हैं – नीच, मध्यम तथा उत्तम।
- नीच विघ्न के भय से कार्य आरम्भ नहीं करते, मध्यम आरम्भ करते हैं परन्तु विघ्न आने पर छोड़ देते हैं परन्तु उत्तम व्यक्ति विघ्नों के आने पर भी कार्य को पूरा करते हैं।
- मनस्वी कार्यार्थी सुख-दुःख की परवाह नहीं करते।
- 'धैर्यवान् पुरुष' न्यायोचित मार्ग से एक कदम भी विचलित नहीं होते।
- धैर्यशाली पुरुष इस सम्पूर्ण त्रिलोक को जीत लेता है।
- सभी आभूषणों का कारण शील (सदाचार) है और यही सर्वोत्कृष्ट आभूषण है।
- भाग्य ही एकमात्र आश्रय है, पौरुष को धिक्कार है।
- 'भाग्य' ही सबसे बलवान है।
- अत्यंत शीघ्रता में किये गये कार्यों का परिणाम मृत्युपर्यन्त शूल की भाँति हृदय को जलाने वाला होता है।
- पहले की गई तपस्या से संचित भाग्य ही निश्चित ही यथोचित समय पर फल देते हैं। रूप, कुल, शील, विद्या, सेवा आदि नहीं।

नीतिशतकम् की महत्त्वपूर्ण सूक्तियाँ

1. विभूषणं मौनमपण्डितानाम् (1.7)
2. विवेकभ्रष्टानां भवति विनिपातः शतमुखः। (1.10)
3. मूर्खस्य नास्त्यौषधम् (1.11)
4. साहित्यसङ्गीतकलाविहीनः साक्षात् पशुः पुच्छविषाणहीनः (1.12)
5. वाग्भूषणं भूषणम् (1.19)
6. विद्याविहीनः पशुः (1.20)
7. सत्सङ्गतिः कथय किं न करोति पुंसाम् (1.22)
8. प्रारब्धमुत्तमजना न परित्यजन्ति (1.27)
9. न खलु वयस्तेजसो हेतुः (1.38)
10. सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ते (1.41)
11. वाराङ्गनेव नृपनीतिरनेकरूपा – (वसन्ततिलका) (38)
12. सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः (1.58)
13. स्वभाव एवैष परोपकारिणाम् (1.71)
14. न निश्चितार्थाद् विरमन्ति धीराः (1.81)
15. मनस्वी कार्यार्थी न गणयति दुःखं न च सुखम् (शिखरिणी) (1.82)
16. शीलं परं भूषणम् (1.83)
17. न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः (वसन्ततिलका) (1.84)
18. विधिरहो बलवानिति मे मतिः (1.92)
19. ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रह्मापि नरं न रञ्जयति (1.3)
20. न तु प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्तमाराधयेत् (4)

21. यदा किञ्चित् किञ्चित् बुधजनसकाशादवगतं
    तदा मूर्खोऽस्मीति ज्वर इव मदो मे व्यपगतः। (8)
22. न हि गणयति क्षुद्रो जन्तुः परिग्रहफल्गुताम् (9)
23. धिक् तां च तं च मदनं च इमां च मां च।
24. सर्वः कृच्छ्रगतोऽपि वाञ्छति जनः सत्त्वानुरूपं फलम्। (22)
25. तत्तेजस्वी पुरुषः परकृतनिकृतिं कथं सहते (29)
26. नानाफलं फलति कल्पलतेव भूमिः। (वसन्ततिलका) (37)
27. यं यं पश्यसि तस्य तस्य पुरतो मा ब्रूहि दीनं वचः। (शार्दूलविक्रीडित)
28. मणिना भूषितः सर्पः किमसौ न भयङ्करः (अनुष्टुप्) (42)
29. छायेव मैत्री खलसज्जनानाम् (उपजाति) (41)
30. सतां केनोद्दिष्टं विषममसिधाराव्रतमिदम् (शिखरिणी) (57)
31. विभाति कायः करुणापराणां परोपकारेण न तु चन्दनेन। (उपजाति)
32. ये निघ्नन्ति निरर्थकं परहितं ते के न जानीमहे (शार्दूलविक्रीडित)
33. निजहृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः। (मालिनी) (70)
34. प्रायो गच्छति यत्र भाग्यरहितस्तत्रैव यान्त्यापदः। (शार्दूलविक्रीडित) 84)
35. यत्पूर्वं विधिना ललाटलिखितं तन्मार्जितुं कः क्षमः। (शार्दूलविक्रीडित)
36. भाग्यानि पूर्वतपसा खलु सञ्चितानि, काले फलन्ति पुरुषस्य यथैव वृक्षाः। (वसन्ततिलका) (97)
37. आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः। (अनुष्टुप्)

नीतिशतकम्

मङ्गलाचरण

दिक्कालाद्यनवच्छिन्नानन्तचिन्मात्रमूर्तये।
स्वानुभूत्येकमानाय नमः शान्ताय तेजसे॥ 1

अन्वय - दिक्कालाद्यनवच्छिन्नानन्तचिन्मात्रमूर्तये, स्वानुभूत्येकमानाय शान्ताय तेजसे नमः।।

शब्द	**अर्थ**
दिक्	प्राच्यादि दिशायें
काल	भूत, वर्तमान व भविष्य काल
आदि	इत्यादि
अनवच्छिन्न	मापा नहीं जा सकता ऐसे
अनन्त	अन्तरहित
चिन्मात्रमूर्तये	चैतन्यरूप विग्रह वाले
स्वानुभूत्येकमानाय	अपने अनुभव मात्र से ज्ञात होने वाले को
शान्ताय	कल्याणकारक को
तेजसे	ज्योति स्वरूप वाले को
नमः	नमस्कार

अनुवाद - दिशा और काल आदि द्वारा अपरिमेय, अनन्त तथा ज्ञानमय स्वरूप वाले, केवल निजी अनुभव द्वारा जानने योग्य, एवं ज्योतिः स्वरूप ब्रह्म को नमस्कार है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

सन्धि-

- दिक्कालादि - दिक्काल + आदि (दीर्घ सन्धि)
- अनवच्छिन्नानन्त - अनवच्छिन्न + अनन्त (दीर्घ सन्धि)
- दिक्कालाद्यनवच्छिन्नानन्त - दिक्कालादि + अनवच्छिन्नानन्त (यण् सन्धि)
- चिन्मात्र - चित् + मात्र (अनुनासिकसन्धि)
- स्वानुभूतिः - स्व + अनुभूतिः (दीर्घसन्धि)
- अनुभूत्येकमानाय - अनुभूति + एकमानाय (यण्सन्धि)

समास -

- **दिक्कालाद्यनवच्छिन्न -** दिशश्च कालाश्च इति दिक्कालाः (द्वन्द्व समास)
- दिक्कालौ आदी येषां ते, दिक्कालादयः (बहुव्रीहिः)
- दिक्कालादिभिः अनवच्छिन्नं, दिक्कालाद्यनवच्छिन्नम् (तृतीया तत्पुरुष)
- स्वानुभूत्येकमानाय - स्वस्य अनुभूतिः, (षष्ठी तत्पुरुष) स्वानुभूतिः एव एकं मानं यस्य तत् (बहुव्रीहि समास)

प्रत्यय -

- मूर्तिः - मूर्च्छ + क्तिन्
- अनुभूतिः - अनु + भू + क्तिन्
- मानाय - मान् + ल्युट्
- शान्ताय - शम् + क्त
- चिन्मात्रम् - चिद् + मात्रच्
- अलङ्कार - इस श्लोक में स्वभावोक्ति अलङ्कार है।

कारक -

- तेजसे नमः - 'नमः स्वस्तिस्वाहास्वधालंवषड्योगाच्च' सूत्र से चतुर्थी हुई।
- छन्द - इसमें अनुष्टुप् छन्द है।

छन्द का लक्षण -

श्लोके षष्ठं गुरुज्ञेयं सर्वत्र लघु पञ्चमम्।
द्विचतुः पादयोर्ह्रस्वं सप्तमं दीर्घमन्ययोः॥

अनुष्टुप् के प्रत्येक चरण में 8 अक्षर होते हैं। इसमें षष्ठ अक्षर सदा गुरु होता है और पञ्चम अक्षर सदा लघु। द्वितीय और चतुर्थ चरण में सप्तम अक्षर लघु होता है और प्रथम तथा तृतीय चरण में गुरु होता है। अन्य अक्षर लघु या गुरु हो सकते हैं।

सम्भावित प्रश्न -

- इस श्लोक में किस प्रकार का मंगलाचरण है? - **नमस्कारात्मक**
- मंगलाचरण में किस देवता की स्तुति की गयी है? - **(ज्योतिः स्वरूप) ब्रह्म की**
- इस श्लोक में कौन-सा छन्द है? - **अनुष्टुप्**
- 'चिन्मात्रम्' शब्द में किस प्रत्यय का प्रयोग हुआ है? - **मात्रच् प्रत्यय**
- 'स्वानुभूत्येकमानाय' में समास बताइये?
  (एकं मानम् एकमानम्) **कर्मधारय** अथवा
  (स्वानुभूतिः एकमानम् मुख्यप्रमाणं यस्य तत्) **बहुव्रीहि समास**

श्लोक -2

बोद्धारो मत्सरग्रस्ताः प्रभवः स्मयदूषिताः।

अबोधोपहताश्चान्ये जीर्णमङ्गे सुभाषितम्॥2

अन्वय - बोद्धारः मत्सरग्रस्ताः, प्रभवः स्मयदूषिताः।
अन्ये च अबोधोपहताः, सुभाषितम् अङ्गे जीर्णम्।

शब्द		**अर्थ**
बोद्धारः	=	समझने वाले, शिक्षित लोग
मत्सरग्रस्ताः	=	ईर्ष्या से जकड़े हुए (द्वेष से भरे)
प्रभवः		स्वामी या समर्थ लोग
स्यमदूषिताः		गर्व से विकृत (घमण्ड से चूर)
अन्ये		दूसरे लोग
च		और
अबोधोपहताः		अज्ञान से नष्ट
सुभाषितम्		सुन्दर वचन
अङ्गे		कहने वाले के मुख में ही
जीर्णम्		जीर्ण हो रहा है

अनुवाद - अज्ञानी मनुष्य आसानी से प्रसन्न किया जा सकता है, विशेषज्ञ पण्डितगण द्वेष से ग्रस्त हैं और नृपवर्ग गर्व से चूर हैं। दूसरे लोग तो अज्ञान के मारे हुए हैं। अतः बेचारा सुभाषित मेरे शरीर के भीतर ही बूढ़ा हो गया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी -

सन्धि -

➢ अबोधोपहताः - अबोध + उपहताः (गुणसन्धि)
चान्ये - च + अन्ये (दीर्घ सन्धि)

समास -

➢ मत्सरग्रस्ताः - मत्सरेण ग्रस्ता (तृतीया तत्पुरुष)
➢ स्मयदूषिताः - स्मयेन दूषिताः (तृतीया तत्पुरुष)
➢ अबोधः - न बोधः अबोधः (नञ् तत्पुरुष)
➢ अबोधोपहताः - अबोधेन उपहताः (तृतीया तत्पुरुष)

प्रत्यय -

➢ बोद्धारः - बुध + तृच्
➢ ग्रस्ताः - ग्रस् + क्त
➢ दूषिताः - दूष् + णिच् + क्त
➢ उपहताः - उप + हन् + क्त
➢ जीर्णः - जृ + क्त
➢ सुभाषितम् - सु + भाष् + क्त

छन्द - इस श्लोक में अनुष्टुप् छन्द है।

सम्भावित प्रश्न -

➢ पण्डित जन या विद्वान् लोग किससे ग्रस्त हैं? - **द्वेष से**
➢ राजा लोग (नृपवर्ग) किसके ग्रसित हैं?- **अहङ्कार (गर्व से)**
➢ 'मत्सरग्रस्ताः' में कौन-सा समास है? मत्सरेण ग्रस्ताः (तृतीया तत्पुरुष समास)
➢ 'बोद्धारः' शब्द में प्रकृति प्रत्यय बताइये?- **बुध+तृच्**
➢ 'प्रभवः' शब्द का क्या अर्थ है? - **स्वामी या समर्थ लोग**
➢ 'अबोधोपहताश्चान्ये' इसमें 'अन्ये' शब्द किसके लिए आया है? - **सामान्य जनों के लिए (जो अज्ञानी है)**
➢ 'सुभाषितम्' शब्द में प्रकृति प्रत्यय बताइये? **सु+भाष्+क्त**
➢ 'उपहता' शब्द में कौन-सी धातु है? **उप+हन्+क्त**

अबोधः शब्द में कौन-सा समास है?
(न बोधः अबोधः) **नञ् तत्पुरुषसमास**

श्लोक - 3

अज्ञः सुखमाराध्यः सुखतरमाराध्यते विशेषज्ञः।
ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रह्मापि नरं न रञ्जयति॥3

अन्वय - अज्ञः सुखम् आराध्यः विशेषज्ञः सुखतरम् आराध्यते ज्ञानलवदुर्विदग्धं नरं ब्रह्मा अपि न रञ्जयति।

शब्द		**अर्थ**
अज्ञः	-	न जानने वाला व्यक्ति (मूर्ख)
सुखम्	-	आसानी से
आराध्यः	-	प्रसन्न या सन्तुष्ट करने योग्य
विशेषज्ञः	-	विशेष रूप से जानने वाला
सुखतरम्	-	और अधिक आसानी से
आराध्यते	-	सन्तुष्ट किया जा सकता है
ब्रह्मा अपि	-	ब्रह्मा भी
ज्ञानलवदुर्विदग्धम्	-	अल्पज्ञान से गर्वित
नरम्	-	मनुष्य को
न रञ्जयति	-	प्रसन्न नहीं कर सकता

अनुवाद - अज्ञानी मनुष्य आसानी से प्रसन्न किया जा सकता है, विशेषज्ञ तो और भी आसानी से प्रसन्न किया जा सकता है। लेकिन रञ्च ज्ञान के कारण गर्वित मूढजन को ब्रह्मा भी प्रसन्न नहीं कर सकते।

व्याकरणात्मक टिप्पणी -

सन्धि

➢ ब्रह्मापि - ब्रह्मा+अपि (दीर्घसन्धि)

समास

➢ अज्ञः - न ज्ञः अज्ञः (नञ् तत्पुरुष)
➢ विशेषज्ञः - विशेषं जानातीति (उपपद तत्पुरुष)
➢ ज्ञानलवदुर्विदग्धं - ज्ञानस्य लवः (षष्ठी तत्पुरुष)
➢ ज्ञानलवेन दुर्विदग्धं (तृतीया तत्पुरुष)

प्रत्यय -

➢ अज्ञः - ज्ञा+क
➢ आराध्यः - आ+राध्+ण्यत्
➢ विशेषज्ञः - विशेष+ज्ञा+क
➢ दग्धः - दह्+क्त
➢ ब्रह्मा - बृंह्+मन्
➢ नरम् - नृ+अच्
➢ सुखतरम् - सुख+तरप्
➢ रञ्जयति - रञ्ज्+णिच्+लट् प्रथम पुरुष, एक.

अलङ्कार - इस श्लोक में रंजन का सम्बन्ध होने पर भी असम्बन्ध बताया गया है, इसलिए अतिशयोक्ति अलङ्कार है।

छन्द - इसमें **आर्या** छन्द का प्रयोग किया गया है।

लक्षण -

यस्याः पादे प्रथमे द्वादशमात्रास्तथा तृतीयेऽपि।
अष्टादश द्वितीये चतुर्थके पञ्चदश साऽऽर्या॥

जिसके प्रथम तथा तृतीय चरण में बारह-बारह मात्रायें हों द्वितीय चरण में अट्ठारह तथा चतुर्थ चरण में पन्द्रह मात्रायें हों, वह आर्या छन्द है।

सम्भावित प्रश्न -

- किसे आसानी से प्रसन्न किया जा सकता है? - **अज्ञानी को**
- अत्यन्त शीघ्र किसे प्रसन्न किया जा सकता है? - **पण्डित को (विशेषज्ञ को)**
- किस प्रकार के मनुष्यों को ब्रह्मा भी नहीं प्रसन्न कर सकते ? - **अल्प ज्ञान के कारण गर्वित मनुष्यों को**
- थोड़े से ज्ञान से अहंकारी जनों को कौन नहीं प्रसन्न कर सकता है? - **ब्रह्मा भी**
- 'ब्रह्मापि' में कौन सन्धि है? - (ब्रह्मा+अपि) **दीर्घ सन्धि**
- विशेषज्ञः में कौन समास है? - (विशेषं जानातीति) **उपपद तत्पुरुष समास**
- आराध्यः मे प्रकृति प्रत्यय बताइये? **आ+राध्+ण्यत्**
- इस श्लोक में कौन-सा छन्द है?- **आर्या**

श्लोक - 4

प्रसह्य मणिमुद्धरेन्मकरवक्त्रदंष्ट्रान्तरा
त्समुद्रमपि संतरेत्प्रचलदूर्मिमालाकुलम्।
भुजङ्गमपि कोपितं शिरसि पुष्पवद्धारये
न्न तु प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्तमाराधयेत्॥4

अन्वय - मकरवक्त्रदंष्ट्रान्तरात् प्रसह्य मणिम् उद्धरेत् प्रचलदूर्मिमालाकुलम् समुद्रम् अपि संतरेत्।कोपितम् भुजङ्गमपि शिरसि पुष्पवत् धारयेत् तु प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्तम् न आराधयेत्।

शब्द	**अर्थ**
मकरवक्त्रदंष्ट्रान्तरात्	मगर के मुख में स्थित दाढ़ो के बीच से
मणिम्	रत्न को
प्रसह्य	बलपूर्वक
उद्धरेत्	निकाल ले
प्रचलत् ऊर्मिमालाकुलम्	चञ्चल लहरों द्वारा विक्षुब्ध
समुद्रम् अपि	समुद्र को भी
सन्तरेत्	पार कर ले
कोपितम्	क्रुद्ध
भुजङ्गम् अपि	सर्प को भी
पुष्पवत्	फूल की तरह
शिरसि	शिर पर
धारयेत्	धारण कर ले
प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्तम्	हठी मूर्ख व्यक्ति के मन को
न आराधयेत्	सन्तुष्ट करने की चेष्टा न करें।

अनुवाद - कोई चाहे तो मगर के मुँह में हाथ डालकर उसके दाँतो के बीच से मणि को जबर्दस्ती खींचकर निकाल सकता है, लहराती तरंगो से उमड़ते समुद्र को हाथों से तैर कर पार कर सकता है, अपने सिर पर क्रोध से जलते हुए साँप को पुष्पमाला की तरह धारण कर सकता है, परन्तु जिद्दी मूर्ख के मन को कोई प्रसन्न नहीं कर सकता।

व्याकरणात्मक टिप्पणी -

सन्धि -

ऊर्मिमालाऽऽकुलम् - ऊर्मिमाला+आकुलम् (दीर्घसन्धि)
पुष्पवद्धारयेत् - पुष्पवत्+धारयेत् (जश्त्वसन्धि)

समास -

मकरवक्त्रम् - मकरस्य वक्त्रम् (षष्ठी तत्पुरुष)
मकरवक्त्रदंष्ट्रानाम् अन्तरं मकरवक्त्रदंष्ट्रान्तरं (षष्ठी तत्पु०)
प्रचलदूर्मिमालाकुलम् - प्रचलन्त्यः ताः ऊर्मयः च प्रचलदूर्मयः (कर्मधारय), प्रचलदूर्मीनां मालाः प्रचलदूर्मिमालाः (षष्ठीतत्पुरुष) ताभिः मालाभिः आकुलम् (तृतीया तत्पुरुष)
प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्तम् - प्रतिनिविष्टः च असौ मूर्खजनः प्रतिनिविष्टमूर्खजनः (कर्मधारय), प्रतिनिविष्टमूर्खजनस्य चित्तम् (षष्ठी तत्पुरुष)

प्रत्यय -

वक्त्र - वच्+त्र
दंष्ट्रा - दंश्+ष्ट्रन्+टाप्
प्रसह्य - प्र+सह् ल्यप्
भुजङ्ग - भुज+गम्+खच्
कोपितम् - कुप्+क्त
पुष्पवत् - पुष्प+वतुप्
प्रतिनिविष्ट - प्रति+नि+विश्+क्त
आराधयेत् - आ + राध् + तिप् (विधिलिङ् प्रथम पु., एक.)

अलङ्कार - इस श्लोक में मणि निकालने आदि का असम्बन्ध होने पर भी सम्बन्ध दिखाया गया है, अतः अतिशयोक्ति अलङ्कार है।

छन्द - इसमें पृथ्वी छन्द का प्रयोग किया गया है।

लक्षण - ''जसौ जसयला वसुग्रहयतिश्च पृथ्वी गुरुः।'' इसके प्रत्येक चरण में 17 अक्षर होते हैं। प्रत्येक चरण में जगण, सगण, जगम, सगम, यगण, एक लघुवर्ण तथा एक गुरु वर्ण हो उसे पृथ्वी कहते हैं।

सम्भावित प्रश्न -

- किसके मन को प्रसन्न नहीं किया जा सकता? - **मूर्खो के मन को**
- इस श्लोक में कौन-सा अलङ्कार है? - **अतिशयोक्ति**
- प्रतिनिविष्ट में प्रकृति प्रत्यय बताइये? - **प्रति+नि+विश्+क्त**
- इस श्लोक में कौन-सा छन्द है? - **पृथ्वी**
- भुजङ्ग शब्द में कौन-सा प्रत्यय है? - **खच् प्रत्यय**
- पुष्प के समान किसे सिर पर धारण किया जा सकता है? **क्रुद्ध साँप को**
- आराधयेत् में कौन-सा लकार है? **विधिलिङ्**

श्लोक - 5

लभेत सिकतासु तैलमपि यत्नतः पीडयन्
पिबेच्च मृगतृष्णिकासु सलिलं पिपासार्दितः।
कदाचिदपि पर्यटञ्छशविषाणमासादयेत्
न तु प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्तमाराधयेत्॥5

अन्वय - यत्नतः पीडयन् सिकतासु अपि तैलम् लभेत पिपासार्दितः मृगतृष्णिकासु सलिलम् पिबेत् पर्यटन् कदाचित् शशविषाणम् अपि आसादयेत् प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्तम् तु न आराधयेत्।

शब्द	अर्थ
यत्नतः	प्रयत्न या उपाय से
पीडयन्	दबाता हुआ
सिकतासु अपि	बालू के कणों में भी
तैलम्	तेल को
लभेत	पा लें
पिपासार्दितः	प्यास से सताया हुआ
मृगतृष्णिकासु	मृगमरीचिकाओं में
सलिलम्	पानी को
पिबेत्	पी लें
पर्यटन्	घूमता हुआ
कदाचित्	कभी भी
शशविषाणम्	खरगोश के सींग को
आसादयेत्	पा लें

प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्तम्-दुराग्राही मूर्ख के चित्त को
न आराधयेत् सन्तुष्ट करने की चेष्टा न करें।

अनुवाद - मनुष्य परिश्रम करके बालू से भी तेल निकाल सकता है। प्यास से पीड़ित होकर मृगमरीचिका में भी पानी पी सकता है, कभी इधर-उधर घूमते हुए खरगोश के सींग को भी प्राप्त कर सकता है, किन्तु दुराग्रही मूर्खों के मन को प्रसन्न करने के लिए कभी भी यत्न नहीं करना चाहिए क्योंकि वे कभी भी प्रसन्न नहीं हो सकते।

व्याकरणात्मक टिप्पणी -

सन्धि -

पिबेच्च - पिबेत्+च (व्यञ्जन सन्धि)
पिपासार्दितः - पिपासा+अर्दितः (दीर्घसन्धि)
पर्यटञ्छशविषाणम् - पर्यटन्+शशविषाणम् (व्यञ्जन)

समास

मृगतृष्णिकासु - मृगाणां तृष्णा मृगतृष्णा (षष्ठी तत्पुरुष)
शशविषाणम् - शशस्य विषाणम् **(षष्ठी तत्पुरुष)**
पिपासार्दितः - पिपासया अर्दितः **(तृतीया तत्पुरुष)**

प्रत्यय -

यत्नतः - यत्न + तसिल्
पीडयन् - पीड् + णिच् + शतृ
तैलम् - तिल + अण्
पिपासा - पा + सन् + अ + टाप्
अर्दितः - अर्द् + क्त
पर्यटन् - परि + अट् + शतृ

छन्द- इस श्लोक में पृथ्वी छन्द का प्रयोग किया गया है।

अलङ्कार- इस श्लोक में अतिशयोक्ति अलङ्कार है।

सम्भावित प्रश्न-

- मृगतृष्णिकासु शब्द में समास बताइये ?
  मृगाणां तृष्णा मृगतृष्णा (षष्ठी तत्पुरुष)
  मृगाणां तृष्णा अस्याम् **(बहुव्रीहि समास)**
- किसके मन को प्रसन्न करना असम्भव है? **मूर्खों के मन को**
- इस श्लोक में कौन-सा छन्द है? **पृथ्वी**
- इस श्लोक में कौन-सा अलङ्कार है? - **अतिशयोक्ति**
- अर्दितः शब्द में कौन-सा प्रत्यय है? - **अर्द्+क्त (प्रत्यय)**

श्लोक - 6

व्यालं बालमृणालतन्तुभिरसौ रोद्धुं समुज्जृम्भते
भेत्तुं वज्रमणिं शिरीषकुसुमप्रान्तेन सन्नह्यते।
माधुर्यं मधुबिन्दुना रचयितुं क्षाराम्बुधेरीहते
मूर्खान्यः प्रतिनेतुमिच्छति बलात्सूक्तैः सुधास्यन्दिभिः॥6

अन्वय - यः मूर्खान् बलात् सुधास्यन्दिभिः सूक्तैः प्रतिनेतुम् इच्छति असौ बालमृणालतन्तुभिः व्यालं रोद्धुं सन्नह्यते मधुबिन्दुना क्षाराम्बुधेः माधुर्यं रचयितुम् ईहते।

शब्द	अर्थ
यः	जो
बलात्	बलपूर्वक (हठपूर्वक)
सुधास्यन्दिभिः	अमृत टपकाने वाले
सूक्तैः	सुन्दर वचनों से
प्रतिनेतुम्	बहलाने या मनोरञ्जन करने के लिए
बालमृणालतन्तुभिः	कोमल कमलनाल के सूत्रों से
व्यालम्	मतवाला हाथी
रोद्धुम्	रोकने या बाँधने के लिए
समुज्जृम्भते	अभ्यास करता है
शिरीषकुसुमप्रान्तेन	कोमल शिरीष फूल के छोर से
वज्रमणिम्	हीरे को
भेत्तुम्	काटने का
सन्नह्यते	प्रयास करता है
मधुबिन्दुना	मधु की बूँद से
क्षाराम्बुधेः	खारे समुद्र के
माधुर्यम्	मिठास को
रचयितुम्	बनाना
ईहते	चाहता है

अनुवाद - जो अपनी अमृतवर्षिणी सूक्तियों द्वारा मूर्खों को बलात् प्रसन्न करना चाहता है, वह कोमल कमल नाल के तन्तु से मदमत्त हाथी को बाँधना चाहता है, शिरीष पुष्प के किनारे से वज्रमणि हीरे को काटना चाहता है और खारे समुद्र को दो-एक बूँद मधु डालकर मीठा बनाने की चेष्टा करता है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी -

सन्धि -
तन्तुभिरसौ - तन्तुभिः+असौ (विसर्ग सन्धि)
क्षाराम्बुधेरीहते - क्षार+अम्बुधेः (दीर्घ सन्धि) + ईहते (विसर्ग सन्धि)

समास -
सुधास्यन्दिभिः - सुधां स्यन्दन्ते तच्छीलानि सुधास्यन्दीनि तैः (तृतीया तत्पुरुष)
सूक्तैः - शोभनानि उक्तानि इति सूक्तानि (प्रादि तत्पुरुषसमास)
बालमृणालतन्तुभिः - बालं च तत् मृणालम् (कर्मधारय) तस्य तन्तवः तैः (षष्ठी तत्पुरुष)
शिरीषकुसुमप्रान्तेन - शिरीषकुसुमस्य प्रान्तः शिरीषकुसुमप्रान्तः तेन (तृतीया तत्पुरुष) शिरीषस्य कुसुमम् (षष्ठी तत्पुरुष) शिरीषं चेदं कुसुमम् (कर्मधारय समास)
मधुबिन्दुना - मधुनः बिन्दुः (षष्ठी तत्पुरुष)
क्षाराम्बुधेः - क्षारः चासौ अम्बुधिः (कर्मधारय)

प्रत्यय
सुधास्यन्दिभिः - सुधा+स्यन्द्+णिनि+भिस्
प्रतिनेतुम् - प्रति+नी+तुमुन्
रोद्धुम् - रुध्+तुमुन्
रचयितुम् - रच्+तुमुन्
माधुर्य - मधुर+ष्यञ्

कारक -
बलात् - हेतौ से पञ्चमी

छन्द - शार्दूलविक्रीडित
अलङ्कार - मालानिदर्शन
लक्षण - 'सूर्याश्वैर्मसजस्तताः सगुरवः शार्दूलविक्रीडितम्'
इसके प्रत्येक चरण में 19 अक्षर होते हैं। तथा प्रत्येक चरण में क्रमशः मगण, सगण, जगण, सगण, तगण, तगण तथा एक गुरु वर्ण आयें उसे शार्दूलविक्रीडित कहते हैं। (12 तथा 7 अक्षरों पर यति)

➢ 'प्रतिनेतुम्' शब्द में प्रकृति प्रत्यय बताइये? - **प्रति+नी+तुमुन्**
➢ 'व्यालम्' शब्द का क्या अर्थ है? - **मतवाला हाथी**
➢ 'वज्रमणिम्' शब्द में समास बताइये? - **वज्रः मणिः (कर्मधारय समास)**
➢ इस श्लोक में कौन-सा छन्द है? - **शार्दूलविक्रीडित**

श्लोक - 7

स्वायत्तमेकान्तहितं विधात्रा विनिर्मितं छादनमज्ञतायाः।
विशेषतः सर्वविदां समाजे विभूषणं मौनमपण्डितानाम्॥7

अन्वय- विधात्रा अपण्डितानां स्वायत्तम् एकान्तहितं मौनम् अज्ञतायाः छादनं विनिर्मितम्। सर्वविदां समाजे विशेषतः विभूषणं भवति।

शब्द	अर्थ
विधात्रा	ब्रह्मा ने
अपण्डितानाम्	मूर्खों का
स्वायत्तम्	अपने अधीन
एकान्तहितम्	अत्यन्त हितकारी
मौनम्	मौन को
अज्ञतायाः	मूर्खता का
छादनम्	आवरण
विनिर्मितम्	बनाया है
सर्वविदाम्	सब कुछ जानने वाले
समाजे	समाज में
विशेषतः	अधिक करके
विभूषणम्	आभूषण

अनुवाद - विधाता ने मूर्खों के अपने हाथ में रहने वाले और अत्यन्त हितकारी मौन को मूर्खता को छिपाने का आवरण बनाया है, जो विद्वानों की सभा में विशेष रूप से आभूषण हो जाता है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी -

समास -
अपण्डितानाम् - नः पण्डिताः अपण्डिताः (नञ् तत्पुरुष समास)
स्वायत्तम् - स्वस्य आयत्तम् (षष्ठी तत्पुरुष)
एकान्तहितम् - एकः एव अन्तो यस्य (बहुव्रीहिसमास), एकान्तं हितम् इति एकान्तहितम् (सुप्सुपासमास)
सर्वविदाम् - सर्वं विदन्तीति सर्वविदः (नित्यसमास)

प्रत्यय -
विधात्रा - वि + धा +तृच्
छादनम् - छद् + णि + ल्युट्
विनिर्मितम् - वि + निर् + मा + क्त
विभूषणम् - वि + भूष् + ल्युट्
सर्वविदाम् - सर्व + विद् + क्विप्
विशेषः - वि+शिष्+घञ्
समाजे - सम्+अज्+घञ्
मौनम् - मुनि+अण्
हितम् - धा+क्त
विशेषतः - विशेष+तसिल्

छन्द - उपजाति छन्द है

सम्भावित प्रश्न -
➢ विद्वानों की सभा में मूर्खों के लिए किसे आभूषण सदृश कहा गया है? - **मौन को**
➢ विधाता शब्द में कौन-सा प्रत्यय है? - **वि+धा+तृच्**
➢ छादनम् शब्द का प्रकृति प्रत्यय बताइये? - **छद्+णिच्+ल्युट्**
➢ पण्डित् शब्द में कौन-सा प्रत्यय है? - **इतच्**
➢ मूर्खों के लिए किसे आवरण के समान बताया गया है? **मौन को**
➢ एकान्तहितम् शब्द में कौन समास है?
एकान्तं हितम् इति एकान्तहितम् -**सुप्सुपासमास**
➢ इस श्लोक में कौन-सा छन्द है? - **उपजाति**

श्लोक - 8

यदा किञ्चिज्ज्ञोऽहं गज इव मदान्धः समभवं

तदा सर्वज्ञोऽस्मीत्यभवदवलिप्तं मम मनः।
यदा किञ्चित्किञ्चिद् बुधजनसकाशादवगतं
तदा मूर्खोऽस्मीति ज्वर इव मदो मे व्यपगतः॥8

अन्वय - यदा अहम् किञ्चिज्ज्ञः गज इव मदान्धः समभवम् तदा सर्वज्ञः अस्मि इति मम मनः अवलिप्तम् यदा बुधजनसकाशात् किञ्चित् किञ्चित् अवगतम् तदा मूर्खः अस्मि इति मे मदः ज्वर इव व्यपगतः।

शब्द	**अर्थ**
यदा	जब
अहम्	मैं
किञ्चिज्ज्ञः	थोड़ा-सा जानने वाला
गज इव	हाथी की तरह
मदान्धः	मद से अंधा
समभवम्	हो गया था
तदा	तब
सर्वज्ञः	सब कुछ जानने वाला
अस्मि	हूँ
इति	इस प्रकार
मम	मेरा
मनः	मन
अवलिप्तम्	गर्व से युक्त
बुधजनसकाशात्	विद्वानों की संगति से
किञ्चित् किञ्चित्	थोड़ा-थोड़ा
अवगतम्	सीखा
मदः	घमण्ड
ज्वर इव	ज्वर की तरह
व्यपगतः	दूर हो गया

अनुवाद - जब मैं अल्पज्ञ होकर भी मतवाले हाथी के जैसा मदान्ध हो गया तब यह समझकर कि मैं सर्वज्ञ हूँ - सब कुछ जानता हूँ, मेरा मन आकाश पर चढ़ गया। जब मैं पण्डितों की संगति से थोड़ा-थोड़ा जानने लगा तब मैं अपने को मूर्ख समझने लगा और तब मेरा गर्व ज्वर के जैसा धीरे-धीरे हटने लगा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी -

सन्धि -

मदान्धः - मद+अन्धः (दीर्घसन्धि)
सर्वज्ञोऽस्मि - सर्वज्ञः+अस्मि (विसर्गसन्धि)
ज्वर इव - ज्वरः+इव (विसर्ग सन्धि)

समास -

किञ्चिज्ज्ञः - किञ्चित् जानाति इति किञ्चिज्ज्ञः (नित्यसमास)
सर्वज्ञः - सर्व जानाति इति सर्वज्ञः (नित्यसमास)
सर्वेषां ज्ञः सर्वज्ञः (षष्ठी तत्पुरुष)
मदान्धः - मदेन अन्धः (तृतीयातत्पुरुष)
बुधजनसकाशात् - बुध एव जनः (मयूरव्यंसकादि)
तस्य सकाशम् (षष्ठी तत्पुरुष)
बुधाः च ते जनाः बुधजनाः तेषां सकाशात् (षष्ठीतत्पुरुष)

प्रत्यय -

किञ्चिज्ज्ञः - ज्ञा+क
सर्वज्ञः - सर्व+ज्ञा+क
अवलिप्तम् - अव+लिप्+क्त
अवगतम् - अव+गम्+क्त
व्यपगतः - वि+अप्+गम्+क्त

छन्द - इस श्लोक में शिखरिणी छन्द है।

लक्षण - रसै रुद्रैश्छिन्ना यमनसभला गः शिखरिणी।
इसके प्रत्येक चरण में 17 अक्षर होते है। 6 तथा 11 अक्षरों पर यति होती है। क्रमशः यगण, मगण, नगण, सगण, भगण, एक लघु तथा एक गुरु वर्ण होता है।

सम्भावित प्रश्न -

➢ 'मदान्धः' शब्द में सन्धि एवं समास बताइये?
मद+अन्धः **(दीर्घ सन्धि)**
मदेन अन्धः **(तृतीया तत्पुरुष)**
➢ 'सर्वज्ञ' शब्द में समास बताइये?
सर्वं जानातीति सर्वज्ञः **(नित्यसमास)** अथवा
सर्वेषां ज्ञः सर्वज्ञः **(षष्ठी तत्पुरुष)**
➢ व्यपगतः शब्द में प्रकृति प्रत्यय बताइये? **वि+अप्+गम्+क्त**
➢ इस श्लोक में कौन-सा छन्द है? **शिखरिणी**

श्लोक -9

कृमिकुलचितं लालाक्लिन्नं विगन्धि जुगुप्सितं
निरुपमरसप्रीत्या खादन्खरास्थि निरामिषम्।
सुरपतिमपि श्वा पार्श्वस्थं विलोक्य न शङ्कते
न हि गणयति क्षुद्रो जन्तुः परिग्रहफल्गुताम्॥9

अन्वय- श्वा कृमिकुलचितम् लालाक्लिन्नम् विगन्धि जुगुप्सितम् निरामिषम् खरास्थि निरुपमरसप्रीत्या खादन् पार्श्वस्थम् सुरपतिम् अपि विलोक्य न शङ्कते। क्षुद्रः जन्तुः परिग्रहफल्गुताम् न गणयति।

शब्द	**अर्थ**
श्वा	कुत्ता
कृमिकुलचितम्	कीड़ों से भरी हुई
लालाक्लिन्नम्	लार से भीगी
विगन्धि	दुर्गन्ध से युक्त
जुगुप्सितम्	निन्दित
निरामिषम्	मांसरहित
खरास्थि	गदहे की हड्डी
निरुपमरसप्रीत्या	अनुपम रस के प्रेम से
खादन्	खाता हुआ
पार्श्वस्थम्	पास में खड़े हुए को
सुरपति	इन्द्र
विलोक्य	देखकर
न शङ्कते	लज्जा नहीं करता है
क्षुद्रो जन्तुः	नीचप्राणी
परिग्रहफल्गुताम्	स्वीकृत की गयी वस्तु की तुच्छता को
न गणयति	विचार नहीं करता

अनुवाद - कुत्ता कीड़ो से भरी, लार से भीगी, दुर्गन्धमय, हेय निर्मांस, गदहे की हड्डी को बड़े चाव से चबाता हुआ अपने पास खड़े हुए इन्द्र को भी देख कर नहीं लजाता, परवाह नहीं करता। नीच, अपनाई हुई वस्तु की तुच्छता की परवाह नहीं करता - स्वगृहीत वस्तु की क्षुद्रता पर ध्यान नहीं देता।

व्याकरणात्मक टिप्पणी -

समास -

कृमिकुलचितम् - कृमीणां कुलानि (षष्ठी तत्पुरुष) तैः चितम् (तृतीया तत्पुरुष)
लालाक्लिन्नम् - लालया क्लिन्नम् (तृतीया तत्पुरुष)
विगन्धि - विगतः गन्धः यस्य तत् (बहुव्रीहि)
निरामिषम् - निर्गतम् आमिषं यस्मात् (बहुव्रीहि)
खरास्थि - खरस्य अस्थि (षष्ठी तत्पुरुष)
निरुपमरसप्रीत्या - निः नास्ति उपमा यस्य स निरुपमः (प्रादिबहुव्रीहि समास) निरुपमः (कर्मधारय समास) निरुपमरसे प्रीतिः (सप्तमी तत्पुरुष)
सुरपतिम् - सुराणां पतिः सुरपतिः (षष्ठी तत्पुरुष)
परिग्रहफल्गुताम् - परिग्रहस्य फल्गुता (षष्ठी तत्पुरुष)

प्रत्यय -

श्वा - श्वि+कनिन्
चितम् - चि+क्त
क्लिन्नम् - क्लिद्+क्त
जुगुप्सितम् - जु+गुप्+क्त
पार्श्वस्थम् - पार्श्व+स्था+क
विलोक्य - वि+लुकि+ल्यप्
खादन् - खाद्+शतृ

छन्द - हरिणी

लक्षण - **''नसमरसलागः षड्वेदैर्हयैर्हरिणी मता''** हरिणी के प्रत्येक चरण में नगण, सगण, मगण, रगण, सगण, लघु तथा गुरु होते हैं। छठे, दसवें तथा अन्त में विराम होता है।

अलङ्कार - इस श्लोक में अप्रस्तुतप्रशंसा एवम् अन्तिम चरण में अर्थान्तरन्यास अलङ्कार है। इनके एक साथ होने से इसमें सङ्कर अलङ्कार भी है।

सम्भावित प्रश्न -

➢ अपनाई गई वस्तु की तुच्छता पर कौन ध्यान नहीं देता? **नीच व्यक्ति**
➢ सुरपति शब्द किसके लिए आया है? - **इन्द्र के लिए**
➢ निरामिष शब्द का क्या अर्थ है? - **मांसरहित**
➢ विगन्धि शब्द में समास बताइये? विगतः गन्धः यस्य तत् **(बहुव्रीहिसमास)**
➢ विलोक्य में कौन-सा प्रत्यय प्रयुक्त हुआ है? वि + लुकि + ल्यप्
➢ इस श्लोक में कौन-सा छन्द है? हरिणी

श्लोक - 10

शिरः शार्वं स्वर्गात्पशुपतिशिरस्तः क्षितिधरम्
महीध्रादुत्तुङ्गादवनिमवनेश्चापि जलधिम्।
अधोऽधो गङ्गेयं पदमुपगता स्तोकमथवा
विवेकभ्रष्टानां भवति विनिपातः शतमुखः॥10

अन्वय - इयम् गङ्गा स्वर्गात् शार्वम् शिरः पशुपतिशिरस्तः क्षितिधरम् उत्तुंगात् महीध्रात् अवनिम् अवनेः च अपि जलधिम् अधोऽधः स्तोकम् पदम् उपगता अथवा विवेकभ्रष्टानाम् विनिपातः शतमुखः भवति।

शब्द	**अर्थ**
इयम्	यह
गङ्गा	गङ्गा
स्वर्गात्	स्वर्ग से
शार्वम्	शिव जी के
शिरः	शिर पर
पशुपतिशिरस्तः	शिव जी के मस्तक से
क्षितिधरम्	हिमालय पर्वत पर
उत्तुङ्गात्	ऊँचे
महीध्रात्	पर्वत से
अवनिम्	पृथ्वी को
अवनेः	पृथ्वी से
जलधिम्	समुद्र को
अधोऽधः	नीचे नीचे
स्तोकम्	तुच्छ
पदम्	पद को
उपगता	पहुँचकर
अथवा	क्योंकि
विवेकभ्रष्टानाम्	भ्रष्ट विचार वालों का
शतमुखः	सैकड़ों प्रकार से
विनिपातः	पतन
भवति	होता है

अनुवाद - गङ्गा स्वर्ग से शिव के मस्तक पर गिरीं। शिव के मस्तक से हिमालय पहाड़ पर, हिमालय से पृथ्वी पर और पृथ्वी पर से गिरकर समुद्र में जा मिलीं। इस तरह यह नीचे से नीचे गिरती गई।
(वास्तव में बात यह है कि) जिनका विवेक भ्रष्ट हो गया है उनका पतन सैकड़ों प्रकार से होता है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी -

सन्धि -

महीध्रादुत्तुङ्गात् - महीध्रात्+उत्तुङ्गात्+अवनिम् (व्यञ्जन सन्धि)
अवनेश्च - अवनेः+च (विसर्ग सन्धि)
चापि - च+अपि (दीर्घ सन्धि)
अधोऽधः - अधः+अधः (विसर्गसन्धि, पूर्वरूपसन्धि)
गङ्गेयम् - गङ्गा+इयम् (गुणसन्धि)

समास -

शार्वम् - शर्वस्य इदम् (षष्ठी तत्पुरुष)
पशुपतिशिरस्तः - पशूनाम् पतिः पशुपतिः (षष्ठी तत्पुरुष)
पशुपतेः शिरः पशुपतिशिरः (षष्ठी तत्पुरुष)
क्षितिधरम् - क्षितेः धरः क्षितिधरः (षष्ठी तत्पुरुष)
विवेकभ्रष्टानाम् - विवेकात् भ्रष्टाः विवेकभ्रष्टाः (पञ्चमी तत्पुरुष)
भ्रष्टः विवेकः येषां ते भ्रष्टविवेकाः वा विवेकभ्रष्टाः (बहुव्रीहि समास)
शतमुखः - शतं मुखानि यस्य सः (बहुव्रीहि समास)

प्रत्यय -
गङ्गा - गम्+गन्+टाप्
क्षितिधरः - धृ+अच्
जलधिः - जल+धा+कि
उपगता - उप+गम्+क्त
भ्रष्टः - भ्रंश्+क्त
विवेकः - वि+विच्+घञ्
शिरस्तः - शिरः+तसिल्
विनिपातः - वि+नि+पत्+घञ्
शार्वम् - शर्व+अण्

छन्द - शिखरिणी

अलङ्कार - इस श्लोक में पर्याय और अर्थान्तरन्यास अलङ्कार है।

सम्भावितप्रश्न -

- गङ्गा सर्वप्रथम स्वर्ग से कहाँ गिरी? **-शिव के मस्तक पर**
- समुद्र में मिलने से पहले गङ्गा कहाँ गिरी थी? **पृथ्वीपर**
- गङ्गा के अवतरित होने का सही क्रम है -
  स्वर्ग - शिव के मस्तक पर - हिमालय - पृथ्वी - समुद्र
- विवेक भ्रष्ट मनुष्यों का पतन कितने प्रकार से होता है? - **सैकड़ों प्रकार से**
- गङ्गेयम् शब्द में कौन-सी सन्धि है? - गङ्गा+इयम् **(गुणसन्धि)**
- शतमुखः में कौन-सा समास है? - शतं मुखानि यस्य सः **(बहुव्रीहि समास)**
- इस श्लोक में कौन-सा छन्द है? - **शिखरिणी**
- 'पशुपति' शब्द किसके लिए आया है? - **शिव के लिए**

नीतिशतकम् बिन्दुवार अध्ययन

- 'नीतिशतकम्' के रचयिता हैं? - **भर्तृहरि**
- भर्तृहरि ने नीतिशतक लिखा है - **छन्दों में**
- शतकत्रय के रचयिता हैं? - **भर्तृहरि**
- भारतीय जनश्रुति महाराज भर्तृहरि को - **विक्रमसंवत् के संस्थापक महाराज विक्रमादित्य का बड़ा भाई मानती है।**
- शतकत्रय ग्रन्थ के रचनाकार ने और किस प्रसिद्ध ग्रन्थ की रचना की है? - **वाक्यपदीयम्**
- नीतिशतक में कितने पद्य हैं - **एक सौ ग्यारह (111)**
- नीतिशतकम् साहित्य की किस विधा के अन्तर्गत है - **मुक्तककाव्य**
- नीतिशतक में कितने प्रकार के प्राणी बताये गये हैं- **चार**
- नीतिशतककार के अनुसार सभा में किस उपाय के द्वारा मूर्ख अपनी मूर्खता को छिपा सकता है? - **मौन रहकर**
- नीतिशतककार के मतानुसार क्रोधी राजा के प्रिय होते हैं - **कोई व्यक्ति भी नहीं।**
- दुष्टों की मित्रता की तुलना की गयी है? - **छाया से**
- सभी प्रकार की विपत्तियों से रक्षा होती है - **पूर्वकृत पुण्यों के कारण**
- मैनाक किसका पुत्र है? - **हिमालय का**
- प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन .... कैः? - **नीचैः**
- विभाति कायः करुणाकुलानां .... रिक्तस्थान की पूर्ति करें? - **परोपकारेण न चन्दनेन**
- 'ये परहितं स्वार्थाय निघ्नन्ति' नीतिशतकम् के अनुसार वे लोग हैं? - **मानुषराक्षसाः**
- नीतिशतकम् का विषय - **मनुष्य मात्र की नीति कुशलता का उपदेश देने वाला है**
- नीतिशतकम् की भाषा - **अति सरल, सुबोध है**
- थोड़े से ज्ञान से स्वयं को ज्ञानी मानने वाले मनुष्य को कौन नहीं समझा सकते हैं? - **ब्रह्मा**
- अपनी अज्ञता छिपाने के लिये मूढ़ जनों का एकमात्र उपाय है? - **मौनावलम्बन**
- स्वाभिमान और सम्मान के पात्र होते हैं - **विद्वज्जन**
- 'नास्त्युद्यमसमो ....' रिक्तस्थान की पूर्ति करें? - **बन्धुः**
- पर्वत के पंख काटे थे? - **इन्द्र**
- सुप्रसिद्ध कविजन निर्धन होकर रहते हैं, तो इसमें दोषी है? **राजा**
- शूरवीर महीतल पर अपना प्रभाव प्रकट कर सकता है? - **पराक्रम से**
- नीतिशतकम् में 'पूर्वतपसा खलु सञ्चितानि' हैं? - **भाग्यानि**
- भर्तृहरि ने विद्याविहीन मानव को क्या कहा? - **पशु**
- राजनीति की तुलना की गयी है - **वेश्या से**
- महाराज भर्तृहरि की प्रमुख रचना है - **नीतिशतक**
- धन की कौन-सी गति नहीं होती है - **सन्तोष प्राप्ति**
- नीतिशतकम् अपनी गेयता के कारण - **गीतिकाव्य है**
- नीतिशतककार के मतानुसार सम्पत्ति काल में महापुरुषों की मनोवृत्ति होती है? - **कमल के समान कोमल**
- सबका आभूषण क्या है? - **शील**
- सबसे बड़ा साधन है? - **परहितसाधन**
- संसार में सबसे अधिक मनोहर तथा कष्टकारक कौन होता है? - **रमणी**

- निम्न विकल्पों में से किसे भर्तृहरि ने मूर्ख एवं दुराग्रही व्यक्ति
को प्रसन्न करने की अपेक्षा अधिक सरल नहीं कहा है? - **नाव से नदी पार करना**
- 'यं यं पश्यसि तस्य तस्य पुरतो मा ब्रूहि दीनं वचः''। इस सूक्ति के माध्यम से किसे शिक्षा दी जा रही है? - **चातक को**
- ''आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महारिपुः। नास्त्युद्यमसमो बन्धुः कृत्वा यं नावसीदति।।'' इस श्लोक में किसका महत्त्व प्रतिपादित है? - **कर्म का**
- साहित्य, संगीत एवं कला से अपरिचित व्यक्ति होता है? - **परमपशु**
- भर्तृहरि के अनुसार सर्वोत्कृष्ट आभूषण है? - **शील**
- 'आरम्भगुर्वी क्षयिणी क्रमेण लघ्वी पुरा वृद्धिमती च पश्चात्।' में छन्द है- - **उपजाति**
- निम्न में कौन-सी कृति भर्तृहरि की नहीं है?- **पञ्चतन्त्रम्**
- मित्राणि तथा रिपवः जायन्ते - **व्यवहारेण**
- भर्तृहरेः गुहा अस्ति। - **पुष्करसमीपे**
- मनुष्य का कौन-सा भूषण स्थायी है? - **परिष्कृत वाणी**
- कवि ने वृक्ष, मेघ तथा सत्पुरुष को कहा है?- **परोपकारी**
- वृक्ष कब झुक जाते हैं? - **फल आने पर**
- नये जल से युक्त होने पर कौन अधिक लटक जाता है? - **मेघ (घन)**
- समृद्धि के समय कौन अभिमान रहित होता है?- **सत्पुरुष**
- विद्या किं ददाति? - **विनयम्**
- पात्रत्वाद् किं आप्नोति? - **धनम्**
- येन बालः न पाठितः सः पिता कीदृशः? - **वैरीवत्**
- अपठितः बालः सभामध्ये कथमिव शोभते? - **हंसमध्ये बकवत्**
- ते मनुष्याः भूमौ भारः एव सन्ति। - **ये विद्याहीनाः**
- भर्तृहरिरचित-वाक्यपदीयम् सम्बद्धम् अस्ति - **व्याकरणदर्शनेन**
- फलोद्गमैः के नम्राः भवन्ति? - **तरवः**
- नवाम्बुभिः के दूरविलम्बिनः सन्ति? - **मेघाः**
- समृद्धिभिः के उद्धताः न भवन्ति? - **सत्पुरुषाः**
- स्वभाव एवैष परोपकारिणाम्– इदं पद्यं कस्मिन् वृत्ते निबद्धम्?- **वंशस्थवृत्ते**
- पुरुषस्य भूषणं किम्? - **वाक्**
- मनुष्यं किं सज्जीकरोति? - **वाणी**
- विद्या से हीन मनुष्य के जीवन से क्या लाभ? - **विद्याहीनस्य नरस्य कः लाभः जीवितेन**
- भर्तृहरि के नीतिशतकम् में 'तदा मूर्खोऽस्मीति ज्वर इव
- यः नित्यं नीतिशास्त्रं शृणोति अधीते सः कस्माद् पराभवं न आप्नोति? - **शक्रात्**
- के न भुक्ताः वयमेव भुक्ताः? - **भोगाः**
- किं न तप्तम्, वयमेव तप्ताः - **तपः**
- का न जीर्णा, वयमेव जीर्णाः - **तृष्णा**
- कः न यातः? वयमेव याताः - **कालः**
- धनात् किं प्राप्यते? - **धर्मः**
- या बालं न पाठयति सा माता कीदृशी? - **शत्रु**
- कः सुखम् आराध्यः? - **अज्ञः**
- सुखतरं कः आराध्यते? - **विशेषज्ञः**
- ज्ञानलवदुर्विदग्धं जनं कः न रञ्जयति? - **ब्रह्मा अपि**
- क्षीणेषु वित्तेषु कां जानीयात्? - **भार्याम्**
- ये धर्मं न वदन्ति, ते भवन्ति - **वृद्धाः न**
- चन्दनात् अपि अधिकः शीतलः कः वर्तते? - **चन्द्रः**
- कः नरः कुलीनः, पण्डितः, श्रुतवान्, गुणज्ञः च भवति? - **यस्य वित्तम् अस्ति**
- धीमतां कालः येन गच्छति? - **काव्यशास्त्रविनोदेन**
- मूर्खाणां समयः कथं गच्छति? - **निद्रया कलहेन च**
- लोभात् किं न भवति? - **पुण्यम्**
- के सत्पुरुषाः भवन्ति? - **ये स्वार्थं विहाय परोपकारं कुर्वन्ति**
- मानुषराक्षसाः किं कुर्वन्ति?- **स्वार्थाय परहितं नाशयन्ति**
- स्वार्थाविरोधेन परहितं कुर्वाणाः के? - **सामान्याः**
- 'ये निघ्नन्ति निरर्थकं परहितं ते के न जानीमहे' अस्ति - **शार्दूलविक्रीडितच्छन्दसि**
  कः पुत्रः? - **यः सुचरितैः पितरं प्रीणयेत्**
- सा पत्नी या - **भर्तुः हितमिच्छति**
- किं नाम मित्रम्? - **सुखदुःखयोः समक्रियम्**
- 'एतत्त्रयं जगति पुण्यकृतो लभन्ते' इदं पद्यं कस्मिन् वृत्ते निबद्धम्? - **वसन्ततिलका**

- बुद्धिमानों के सम्पर्क में आने से मदो मे व्यपगतः' का तात्पर्य है **पर ज्ञानी होने का नशा उतर जाता है।**

- निम्न में से कौन सी कृति भर्तृहरि की नहीं है? - **भट्टिकाव्यम्**
- यत्र पादत्रये कथां प्रति पद्यस्य अन्तिमपादे नीतिः उच्यते तादृशं काव्यं किम्? - **नीतिशतकम्**
- 'अनुत्तम' का क्या अर्थ है?- **जिससे उत्कृष्ट कोई और न हो**
- नीतिशतकम् में राजनीति को कितने स्वरूपों को धारण करने वाली कहा गया है? - **10**
- नीतिशतकम् के अनुसार धन की कितने दशायें होती हैं?- **3**
- "सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः" श्लोकांश में 'परमगहनो' का क्या अर्थ है? - **अत्यन्त कठिन**
- "ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रह्मापि नरं न रञ्जयति"-श्लोकांश में 'रञ्जयति' का तात्पर्य है। - **प्रसन्नकरना**
- "मूर्ध्नि वा सर्वलोकस्य शीर्यते वन एव वा" श्लोकांश में 'मूर्ध्नि' शब्द का अर्थ है? - **ऊपर**
- 'कन्था' शब्द का अर्थ है - **जीर्णवस्त्र**
- "न हि गणयति क्षुद्रो जन्तुः परिग्रहफल्गुताम्" इस वाक्य में 'गणयति' का तात्पर्य है। - **विचारने से**
- "शूरे निर्घृणता मुनौ विमतिता दैन्यं प्रियालापिनि" - इस श्लोकांश में 'निर्घृणता' का क्या अर्थ है। - **निर्दयता**
- 'नागेन्द्र' का अर्थ है - **श्रेष्ठ हाथी**
- 'शूली' का अर्थ है - **शिव**
- 'लुब्धक' का अर्थ है - **बहेलिया**
- "सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ते" यह उक्ति कहाँ प्राप्त होती है - **नीतिशतकम्**
- "सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ते" किसकी उक्ति है- **भर्तृहरि**
- "यां चिन्तयामि सततं मयि सा विरक्ता" पंक्ति किस पुस्तक से उद्धृत है - **नीतिशतकम्**
- "दुर्जनः परिहर्तव्यो विद्ययालङ्कृतोऽपि सन्" यह वचन किसने कहा है? - **भर्तृहरि ने**
- 'न मूर्खजनसम्पर्कः सुरेन्द्रभवनेष्वपि' यह सूक्ति कहाँ प्राप्त होती है? - **नीतिशतक**
- "विधिरहो बलवानिति मे मतिः" यह सुभाषित किस ग्रन्थ में है - **नीतिशतकम् में**
- "मन्यामहे मलयमेव यदाश्रयेण कङ्कोलनिम्बकुटजा अपि चन्दनाः स्युः" यह श्लोकांश किस ग्रन्थ से उद्धृत है? - **नीतिशतकम् से**
- "विद्याविहीनः पशुः" यह उक्ति किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है - **नीतिशतकम् से**
- "प्रारब्धमुत्तमजना न परित्यजन्ति" श्लोकांश उद्धृत है - **नीतिशतकम् से**
- "भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्ताः" यह श्लोकांश किस ग्रन्थ से उद्धृत है? - **वैराग्यशतक**
- "सेवाधर्मो परमगहनो योगिनामप्यगम्यः" कथन है - **भर्तृहरि का**
- नीतिशतकम् मे कितनी पद्धतियाँ हैं? - **10**
- "अज्ञः सुखमाराध्यः सुखतरमाराध्यते विशेषज्ञः" कस्य ग्रन्थस्य वर्तते - **नीतिशतकस्य**
- "विपदि धैर्यमथाभ्युदये क्षमा" यह पंक्ति किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है - **नीतिशतकम्**
- "मा ब्रूहि दीनं वचः" यह उक्ति किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है - **नीतिशतकम्**
- "प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः" के कर्ता कौन हैं **-भर्तृहरि**
- 'न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः' – यह उक्ति कहाँ प्राप्त होती है? - **नीतिशतक**
- 'साहित्यसंगीतकलाविहीनः साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः।' उक्ति कहाँ से उद्धृत है? - **नीतिशतक से**
- "सर्वे गुणाः .... आश्रयन्ति।" रिक्तस्थानं पूरयित्वा सूक्तिं निर्मापयत - **ज्ञानम्**
- 'न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति' वाक्यमिदं लोट्लकारे परिवर्तयत - **न्याय्यात् पथः प्रविचलन्त**
- नीतिशतके भर्तृहरेः भार्यायाः नाम किम्? - **पिङ्गल**

नीतिशतकम् (वस्तुनिष्ठप्रश्नाः)

1. विक्रमसंवत् के प्रवर्तक महाराज विक्रमादित्य का ज्येष्ठ भाई माना जाता है–
(A) भवभूति को (B) भर्तृमेण्ठ को
(C) भट्टि को (D) भर्तृहरि को

2. राजा भर्तृहरि की प्रेमिका (पत्नी) मानी जाती है–
(A) अञ्चला (B) पिङ्गला
(C) मङ्गला (D) चञ्चला

3. भर्तृहरि की रचना मानी जाती है–
(A) वैराग्यशतकम् (B) शृङ्गारशतकम्
(C) नीतिशतकम् (D) उपर्युक्त तीनों

4. 'शतकत्रय' में परिगणित हैं–
(A) शृङ्गारशतकम्, वैराग्यशतकम्, नीतिसारम्
(B) वैराग्यशतकम्, नीतिसारशतकम्, शृङ्गारशतकम्
(C) शृङ्गारशतकम्, नीतिशतकम्, वैराग्यशतकम्
(D) उपर्युक्त तीनों।

5. भर्तृहरि के पिता माने जाते हैं–
(A) मित्रसेन (B) गन्धर्वसेन
(C) चित्रसेन (D) चित्रभानु

6. महाकवि भर्तृहरि की अन्तिम रचना मानी जाती है–
(A) शृङ्गारशतकम् (B) नीतिशतकम्
(C) वैराग्यसारम् (D) वैराग्यशतकम्

7. नीतिशतक की श्लोक संख्या मानी जाती है–
(A) लगभग 130 (B) लगभग 150
(C) लगभग 111 (D) लगभग 100 से कुछ कम

8. नीतिशतक किस काव्यपरम्परा का ग्रन्थ माना जाता है–
(A) महाकाव्य (B) खण्डकाव्य
(C) मुक्तककाव्य (D) चम्पूकाव्य

9. भर्तृहरि वस्तुतः किस रीति के कवि माने जाते हैं–
(A) पाञ्चाली रीति (B) वैदर्भी रीति
(C) अलङ्कृतकाव्यशैली (D) इनमें कोई नहीं

10. ''नानाफलं फलति कल्पलतेवभूमिः'' इस काव्यांश में अलङ्कार है–
(A) यमक (B) उत्प्रेक्षा
(C) उपमा (D) अर्थान्तरन्यास

11. ''राजन् दुधुक्षसि यदि क्षितिधेनुमेनाम्'' यहाँ ''क्षितिधेनुम्'' पद में अलङ्कार है–
(A) यमक (B) श्लेष
(C) रूपक (D) इनमें से कोई नहीं

12. ''धिक् तां च तं च मदनं च इमां च मां च'' इस वाक्यांश में 'माम्' पद से किसका संकेत किया गया है–
(A) विक्रमादित्य का (B) महामन्त्री का
(C) मदन कामदेव का (D) कवि भर्तृहरि का

13. ''यं यं पश्यसि तस्य तस्य पुरतो मा ब्रूहि दीनं वचः'' इस पंक्ति के माध्यम से कवि किसको समझा रहा है–
(A) मेघों को (B) आकाश को
(C) चातकमित्र को (D) वसुधा को

14. भर्तृहरि का सबसे प्रिय छन्द है–
(A) वसन्ततिलका (B) शिखरिणी
(C) शार्दूलविक्रीडितम् (D) द्रुतविलम्बितम्

15. ''विभूषणं मौनमपण्डितानाम्'' प्रस्तुत सूक्ति किस ग्रन्थ से उद्धृत है–
(A) शृङ्गारशतकम् से (B) नीतिशतकम् से
(C) वैराग्यशतकम् से (D) इनमें से कोई नहीं

16. भर्तृहरि के नीतिशतकम् के मङ्गलाचरण में किस देव की स्तुति है–
(A) विधाता ब्रह्मा की (B) शङ्कर की
(C) दिक्कालादि की (D) ब्रह्म की

17. नीतिशतक के मङ्गलाचरण में छन्द है–
(A) आर्या (B) उपजाति
(C) शालिनी (D) अनुष्टुप्

18. ''लभेत सिकतासु तैलम्'' यहाँ 'सिकता' पद का अर्थ है–
(A) पत्थर (B) लोहा
(C) बालू (D) जल

19. ''व्यालं बालमृणालतन्तुभिरसौ'' यहाँ 'व्यालम्' पद का अर्थ है–
(A) दुष्टगज (B) हिरन
(C) व्याघ्र (D) शिकारी

20. ''नहि गणयति क्षुद्रो जन्तुः परिग्रहफल्गुताम्'' यहाँ 'फल्गुता' पद का अर्थ है–
(A) असारता (B) तुच्छता
(C) निःसारता (D) उपर्युक्त तीनों

21. ''हुतभुक्'' पद का शब्दार्थ होगा–
(A) जल (B) अग्नि
(C) आहुति (D) हवनसामग्री

22. ''भवन्ति नम्रास्तरवः फलोद्‌गमैः' यह श्लोक प्राप्त होता है–
(A) नीतिशतकम् में (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में
(C) दोनों में (D) किसी में नही

23. ''भाग्यानि पूर्वतपसा खलु सञ्चितानि, काले फलन्ति पुरुषस्य यथैव वृक्षाः'' इस पंक्ति का वक्ता है–
(A) भर्तृमेण्ठ (B) भट्टनारायण
(C) भवभूति (D) भर्तृहरि

24. ''नेता यस्य बृहस्पतिः'' यहाँ 'यस्य' पद से किसका संकेत किया गया है–
(A) इन्द्र का (B) कुबेर का
(C) रावण का (D) उपर्युक्त सभी का

25. 'न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः' यह सूक्ति उदधृत है–
(A) नीतिचरितम् से (B) नीतिसारसंग्रह से
(C) नीतिशतकम् से (D) नीतिवचनम् से

26. ''प्रारब्धमुत्तमजनाः न परित्यजन्ति'' किसका कथन है–
(A) रावण का (B) भर्तृमेण्ठ का
(C) भवभूति का (D) भर्तृहरि का

27. ''निजहृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः'' यहाँ क्रियापद है–
(A) सन्तः (B) सन्ति
(C) कियन्तः (D) विकसन्तः

28. ''यद्धात्रा निजभालपट्टलिखितम्'' यहाँ 'धात्रा' पद में विभक्ति एवं वचन है–
(A) प्रथमा एकवचन (B) द्वितीया एकवचन
(C) तृतीया एकवचन (D) षष्ठी एकवचन

29. ''गर्जन्ति केचित् वृथा'' यहाँ 'गर्जन्ति' पद का कर्ता है–
(A) सिंहाः (B) अम्भोदाः
(C) गजाः (D) चातकाः

30. 'मा ब्रूहि दीनं वचः' यहां 'ब्रूहि' पद में धातु एवं लकार है–

(A) बृ लोट् म०पु० एक०
(B) ब्रू लट् म०प्र० एक०
(C) ब्रू लोट् म०पु० एक०
(D) ब्रूह लोट् प्र०पु० एक०

31. 'शुचौ कैतवम्' में 'कैतवम्' पद का शब्दार्थ है–
(A) कपट (B) निश्छल
(C) पवित्र (D) सज्जन

32. ''पिशुनता यद्यस्ति किं पातकैः'' इस वाक्यांश में 'पिशुनता' पद का अर्थ है–
(A) चुगुलखोरी (B) चोरी
(C) स्त्रीचरित्र (D) पाप की गठरी

33. 'भूभुजाम्' पद में विभक्ति/वचन है–
(A) द्वितीया एकवचन
(B) प्रथमा, एकवचन
(C) षष्ठी, बहुवचन
(D) सप्तमी, एकवचन

34. ''छायेव मैत्री खलसज्जनानाम्'' यहाँ अलङ्कार है–
(A) रूपक (B) उपमा
(C) यमक (D) उत्प्रेक्षा

35. ''सतां केनोद्दिष्टं विषममसिधाराव्रतमिदम्'' इस श्लोकांश में छन्द है–
(A) शिखरिणी (B) मन्दाक्रान्ता
(C) शार्दूलविक्रीडितम् (D) हरिणी

36. ''एका नारी सुन्दरी वा दरी वा'' यहाँ 'दरी' पद का अर्थ है–
(A) कुरूप (B) गुफा
(C) बिछौना (D) निवासस्थान

37. भर्तृहरि के गुरु माने जाते हैं–
(A) गोवर्धन (B) गोरखनाथ
(C) गयानाथ (D) गन्धर्वसेन

38. 'सङ्गतिः' में प्रत्यय है–
(A) अण् (B) क्त
(C) क्तिन् (D) ङीष्

39. नीतिशतककार के अनुसार सभा में किस उपाय के द्वारा मूर्ख अपनी मूर्खता को छिपा सकता है-
(A) विचार पूर्वक बोलकर (B) कम बोलकर
(C) चुप रहकर (D) हँस कर हँसा कर

40. ''मूर्ध्नि वा सर्वलोकस्य'' श्लोकांश में 'मूर्ध्नि' का अर्थ है–
(A) आगे (B) पीछे
(C) नीचे (D) ऊपर

41. प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन कैः?
(A) जनैः (B) बालैः
(C) नीचैः (D) सज्जनैः

42. 'ये परहितं स्वार्थाय निघ्नन्ति' नीतिशतक के अनुसार वे लोग हैं–
(A) उत्तमाः (B) मानुषराक्षसाः
(C) सामान्याः (D) सत्पुरुषाः

43. पर्वत के पंख किसने काटे?
(A) इन्द्र ने (B) विष्णु ने
(C) शिव ने (D) ब्रह्मा ने

44. ''नास्त्युद्यमसमो.....'' रिक्तस्थान की पूर्ति करें–
(A) मित्रम् (B) रिपुः
(C) बन्धुः (D) कर्म

45. 'विद्याविहीनः' होते हैं–
(A) गौः (B) अश्वः
(C) पशुः (D) हस्ती

46. शतकत्रय के रचयिता हैं–
(A) भट्टि (B) भर्तृहरि
(C) अमरूक (D) भवभूति

47. भर्तृहरि किस देश के राजा थे–
(A) गोरखपुर के (B) मालवदेश के
(C) महाराष्ट्र के (D) प्रयाग के

48. 'शतकत्रय' के रचनाकार ने और किस प्रसिद्धग्रन्थ की रचना की थी–
(A) अष्टाध्यायी की (B) महाभाष्यम् की
(C) वाक्यपदीयम् की (D) वैयाकरणभूषणसार की

49. जहाँ अर्थ की दृष्टि से प्रत्येक श्लोक स्वतन्त्र होता है, वह है–
(A) महाकाव्य (B) खण्डकाव्य
(C) चम्पूकाव्य (D) मुक्तककाव्य

50. व्यक्ति धन प्राप्त करता है–
(A) अपने भाग्य से (B) अपने दुष्कर्मों से
(C) वरदान से (D) गुरुकृपा से

51. किसके चित्त को बदला नहीं जा सकता–
(A) सज्जनों के (B) भक्तों के
(C) मूर्ख के (D) योगी के

52. सान (कसौटी) पर तराशी गई मणि–
(A) नष्ट होती है (B) शोभा को प्राप्त होती है
(C) मलिन हो जाती है (D) कुछ नहीं होती

53. मदक्षीण हाथी–
(A) बलवान् होता है
(B) मोटा हो जाता है
(C) रङ्ग परिवर्तित हो जाता है
(D) सुशोभित होता है

54. मनस्वियों की वृत्ति किसके समान होती है?
(A) सूर्य के समान (B) देवराज इन्द्र के समान
(C) फूलों के समान (D) पृथ्वी के समान

55. धन की गतियाँ होती हैं–
(A) तीन (B) दो
(C) चार (D) असंख्य

56. भर्तृहरि के अनुसार सभी गुण आश्रय लेते हैं–
(A) साहस का (B) धन का
(C) सज्जन का (D) कर्म का

57. कुल का नाश हो जाता है–
(A) सुपुत्र से (B) कर्म से
(C) कुपुत्र से (D) पुत्रियों से

58. सैकड़ों प्रकार की चाटुकारिता से खाता है–
(A) कुत्ता (B) मनुष्य
(C) निर्धन (D) हाथी

59. कुत्ता भोजन देने वाले के सामने क्या करता है–
(A) पूँछ हिलाता है (B) गुर्राता है
(C) भौंकने लगता है (D) काट लेता है

60. 'कठिन असिधाराव्रत' किसको कहा गया है?
(A) धन को (B) विद्या को
(C) तलवार की धार को (D) सेवा को

61. 'नीतिशतकम्' का मङ्गलाचरण है–
(A) आशीर्वादात्मक (B) नमस्कारात्मक
(C) वस्तुनिर्देशात्मक (D) इनमें से कोई नहीं

62. सदा रहने वाला आभूषण है–
(A) बाजूबन्द
(B) चन्द्रमा जैसा स्वच्छ मोतियों का हार
(C) विधिवत् स्नान
(D) सुसंस्कृता वाणीरूपी आभूषण

63. परिवर्तनशील संसार में जीवन सार्थक होता है–
(A) जो अपने लिए कमाता है
(B) जो सभी के लिए कमाता है
(C) जो अपने वंश (राष्ट्र) की उन्नति करता है
(D) जो दूसरों की उन्नति को सहन नहीं करता है।

64. मनुष्य हाथी के समान मदान्ध कब हो जाता है–
(A) जब सुरापान कर लेता है।
(B) जब धनिकों के सम्पर्क में आता है।
(C) जब थोड़ा ज्ञान पा लेता है।
(D) जब कार्य में सफल हो जाता है।

65. मनुष्य का सर्वज्ञ होने का ज्वर कब उतरता है–
(A) जब कुछ विद्वानों के सम्पर्क में आता है
(B) जब उसे सभा में जाना पड़ता है
(C) जब असफलता मिलती है
(D) जब कार्य करता है

66. नीतिशतक में वर्णन है–
(A) धर्म का (B) नीति का
(C) राजा का (D) पशुओं का

67. 'चाणक्यनीति' के लेखक हैं–
(A) भवभूति (B) भारवि
(C) कौटिल्य (चाणक्य) (D) भर्तृमेण्ठ

68. 'शतकत्रय' में सम्मिलित नहीं है–
(A) नीतिशतक (B) वैराग्यशतक
(C) अमरुकशतक (D) शृङ्गारशतक

69. किस विद्वान् के अनुसार भर्तृहरि को बौद्ध कहा जाता है–
(A) डॉ कीथ (B) मैक्समूलर
(C) ब्रील (D) ईत्सिंग

70. भर्तृहरि लेखक नहीं माने जाते हैं–
(A) नीतिशतकम् के (B) वाक्यपदीयम् के
(C) वैराग्यशतकम् के (D) काव्यालङ्कार के

71. 'वाक्यपदीयम्' और 'नीतिशतकम्' के मङ्गलाचरण की तुलना से ज्ञात होता है कि भर्तृहरि–
(A) शिव के उपासक थे
(B) वेदान्तोक्त ब्रह्म के उपासक थे
(C) विष्णु के उपासक थे
(D) इनमें से कोई नहीं।

72. भर्तृहरि ने अपने शतकों में वर्णन नहीं किया–
(A) आचार शिक्षा का (B) सज्जन प्रशंसा का
(C) युद्ध वर्णन का (D) स्त्रियों की रमणीयता का

73. "निजहृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः" सूक्ति उद्धृत है–
(A) नीतिसारम् से (B) शृङ्गारशतकम् से
(C) वैराग्यशतकम् से (D) नीतिशतकम् से

74. "बोद्धारो मत्सरग्रस्ताः प्रभवः स्मयदूषिताः" यह पंक्ति नीतिशतक की किस पद्धति से उदधृत है–
(A) दुर्जनपद्धति से (B) मूर्खपद्धति से
(C) मानशौर्यपद्धति से (D) परोपकारपद्धति से

75. "अज्ञः सुखमाराध्यः सुखतरमाराध्यते विशेषज्ञः" पंक्ति में 'अज्ञः' पद का अर्थ है–
(A) विद्वान् (B) अज्ञानी
(C) सज्जन (D) इनमें से कोई नहीं

76. "न तु प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्तमाराधयेत्" यहाँ 'आराधयेत्' पद में लकार है–
(A) लोट् (B) विधिलिङ्
(C) लृट् (D) लङ्

77. "ब्रह्माऽपि नरं न रञ्जयति" यह कैसे व्यक्ति के लिए कहा गया है–
(A) विद्वान् के लिए (B) मानी के लिए
(C) परोपकारी के लिए (D) मूर्ख के लिए

78. प्रयत्नपूर्वक पीसता हुआ कोई व्यक्ति बालू के कणों से भी कभी तेल प्राप्त कर सकता है लेकिन–

(A) धन प्राप्त नहीं कर सकता
(B) सम्मान प्राप्त नहीं कर सकता
(C) यश प्राप्त नहीं कर सकता
(D) दुराग्रही मूर्खजन के चित्त को वश में नहीं कर सकता।

79. थोड़े से ज्ञान से स्वयं को पण्डित मानने वाले मनुष्य को नहीं समझा सकते–
(A) गणेश (B) ब्रह्मा
(C) विष्णु (D) महेश

80. अपनी अज्ञता को छिपाने के लिए मूढ़जनों का एकमात्र उपाय है–
(A) हास्यावलम्बन (B) क्रोधावलम्बन
(C) मौनावलम्बन (D) प्रगल्भावलम्बन

81. मेरी विद्वत्ता का मद–
(A) ज्वर की भाँति उतर गया
(B) ज्वार भाँटे की तरह उतर गया
(C) बाढ़ की भाँति उतर गया
(D) इनमें से कोई नहीं

82. विवेकभ्रष्ट व्यक्तियों का–
(A) अनेक प्रकार से पतन हो जाता है
(B) धन बढ़ जाता है
(C) मान बढ़ जाता है
(D) इनमें से कोई नहीं

83. राजा प्रशंसा प्राप्त करता है–
(A) विद्वानों को अपने राज्य से निर्वासित करके
(B) विद्वानों का सम्मान करके
(C) विद्वानों को माला पहना के
(D) विद्वानों से वार्तालाप करके

84. शत्रुओं के प्रति श्रेयस्कर है–
(A) उनका सहयोग करना
(B) उनका सम्मान करना
(C) उनके कल्याण की कामना करना
(D) वीरता प्रदर्शित करना।

85. ऐसे राजा का विश्वास नहीं करना चाहिए–
(A) जो सज्जन हो (B) जो विद्वान् हो
(C) जो क्रोधी हो (D) जो दयालु हो।

86. स्त्रीजनों के प्रति–
(A) प्रगल्भतापूर्वक व्यवहार करना चाहिए
(B) क्रोधप्रदर्शन करना चाहिए
(C) अपमानपूर्वक व्यवहार करना चाहिए
(D) असहिष्णुतापूर्ण व्यवहार करना चाहिए।

87. गुरुजनों के विषय में–
(A) क्रुद्ध होना चाहिए
(B) अनादर भाव होना चाहिए
(C) क्षमाशीलता और सहिष्णुता होनी चाहिए
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

88. विद्याधन प्रदान करता है–
(A) सर्वत्र सम्मान समादर
(B) विद्यार्थियों को उत्कृष्ट अभ्युदय
(C) अनिर्वचनीय सुख
(D) उपर्युक्त सभी तत्व

89. परोपकारियों का स्वभाव–
(A) ईर्ष्यालु होता है
(B) अति नम्र होता है
(C) परसम्पत्ति की इच्छा करते हैं
(D) स्वार्थ में लगे रहते हैं।

90. सज्जन की चारित्रिक विशेषता है–
(A) अनुदारता (B) साभिमानिता
(C) स्वाभिमानिता (D) परोपकाराभावः

91. उत्तम व्यक्ति वही है जो–
(A) स्वार्थसिद्धि के साथ-साथ परहित साधन के लिए भी उद्योगशील होते हैं।
(B) जो दूसरे के कार्य में यदा-कदा व्यवधान पैदा नही करते हैं
(C) जो अपना भला चाहते हैं।
(D) इनमें से कोई नहीं।

92. "वाराङ्गनेव नृपनीतिरनेक......." रिक्तस्थान की पूर्ति करें–
(A) भूपा (B) रूपा
(C) रुपाम् (D) स्वरूपा

93. 'विरहितः' इस पद का अर्थ होगा–
(A) वीर हित (B) विरहाग्नि
(C) वीर रस (D) अभाव

94. "यस्यास्ति वित्तं स नरः कुलीनः, स पण्डितः स श्रुतवान् गुणज्ञः' इस श्लोक में छन्द है–
(A) अनुष्टुप् (B) उपजाति
(C) वंशस्थ (D) मन्दाक्रान्ता

95. नीतिशतक में विषय वर्णन के अनुसार पद्धतियाँ हैं–
(A) 12 (B) 16
(C) 18 (D) 11

96. 'शालिनी' छन्द के प्रत्येक चरण में वर्ण होते हैं–
(A) 9 (B) 17
(C) 11 (D) 12

97. "रे रे चातक सावधानमनसा....." इस श्लोक का भावार्थ है–
(A) अपनी दीनता को प्रकट करना
(B) दीनता को बार बार कहना
(C) कभी कभी दीनता प्रगट करना
(D) हर किसी के सामने दीनता प्रगट न करना

98. ''एते सत्पुरुषाः परार्थघटकाः......ते के न जानीमहे'' नीतिशतकम् के इस श्लोक द्वारा मनुष्यों की श्रेणियाँ हैं–
(A) 3 (B) 2
(C) 4 (D) 5

99. 'सत्यानृता' में सन्धि है–
(A) यण् (B) अयादि
(C) दीर्घ (D) प्रकृतिभाव

100. ''अम्भोजिनीवनविहारविलासमेव'' में 'विहार' पद में धातु, प्रत्यय, एवं उपसर्ग है–
(A) वि + ह + ढक् (B) वि + हृ + घञ्
(C) वि + ह्य + ठक् (D) वि + हृ + अण

उत्तरमाला-नीतिशतकम्

1. (D)	2. (B)	3. (D)	4. (C)	5. (B)	6. (D)
7. (C)	8. (C)	9. (B)	10. (C)	11. (C)	12. (D)
13. (C)	14. (C)	15. (B)	16. (D)	17. (D)	18. (C)
19. (A)	20. (D)	21. (B)	22. (C)	23. (D)	24. (A)
25. (C)	26. (D)	27. (B)	28. (C)	29. (B)	30. (C)
31. (A)	32. (A)	33. (C)	34. (B)	35. (A)	36. (B)
37. (B)	38. (C)	39. (C)	40. (D)	41. (C)	42. (B)
43. (A)	44. (C)	45. (C)	46. (B)	47. (B)	48. (C)
49. (D)	50. (A)	51. (C)	52. (B)	53. (D)	54. (C)
55. (A)	56. (B)	57. (C)	58. (D)	59. (A)	60. (D)
61. (B)	62. (D)	63. (C)	64. (C)	65. (A)	66. (B)
67. (C)	68. (C)	69. (D)	70. (D)	71. (B)	72. (C)
73. (D)	74. (B)	75. (B)	76. (B)	77. (D)	78. (D)
79. (B)	80. (C)	81. (A)	82. (A)	83. (B)	84. (D)
85. (C)	86. (A)	87. (C)	88. (D)	89. (B)	90. (C)
91. (A)	92. (B)	93. (D)	94. (B)	95. (D)	96. (C)
97. (D)	98. (C)	99. (C)	100. (B)		

4.17 कादम्बरी (शुकनासोपदेश)

महाकवि बाणभट्ट का परिचय

बाणभट्ट का वंशवृक्ष

वत्स
।
कुबेर
(कर्मकाण्डी श्रुतिशास्त्र सम्पन्न ब्राह्मण)
।
पाशुपत
।
अर्थपति (इनके 11 पुत्र हुए)
।
चित्रभानु
।
बाणभट्ट
।
भूषणभट्ट (पुलिन्दभट्ट, पुलिनभट्ट)

- **निवास** – शोण (सोन) नदी के पास 'प्रीतिकूट' नामक ग्राम। (वर्तमान में शाहाबाद, आरा, बिहार।)
- **राज्याश्रय** – सम्राट् हर्ष के सभापण्डित
- **पितामह** – अर्थपति
- **पिता** – चित्रभानु
- **माता** – राजदेवी
- **गुरु** - भर्वु या भर्त्सु
- **पत्नी** – कवि मयूरभट्ट की बहन
- **पुत्र** - भूषणभट्ट (पुलिन या पुलिन्दभट्ट)
- **बहन** – मालती
- **बाण के दो भाई** – चित्रसेन और मित्रसेन
- बाण ने स्वयं हर्षचरितम् के प्रथम तीन उच्छ्वासों तथा कादम्बरी की प्रस्तावना के पद्यों में अपना परिचय दिया है।
- **वंश/गोत्र** – वात्स्यायन / वत्स वंश (ब्राह्मण)
- **उपासक** – शिव (शैव)
- **बाण की रीति** – पाञ्चाली
- बाल्यावस्था में ही बाण की माता का स्वर्गवास।
- 14 वर्ष की आयु में बाण के पिता का भी स्वर्गवास।
- राजा हर्ष ने इन्हें ''**महानयं भुजङ्गः**'' (बहुत चरित्रभ्रष्ट) कहा।
- **हर्ष का राज्याभिषेक** अक्टूबर 606 ई. में हुआ, और उनकी मृत्यु 648 ई. में हुई।
- **ह्वेनसांग** ने 629 से 645 ई. तक भारत भ्रमण किया था और वह हर्ष के निकट सम्पर्क में भी आया था।
- **बाण का समय** – सातवीं शताब्दी ई. का पूर्वार्द्ध
- **बाणभट्ट का विवाह** महाकवि मयूर भट्ट (सूर्यशतकम्) की बहन से हुआ था।
- **बाण की रचनायें**– 1. कादम्बरी (कथा), 2. हर्षचरितम् (आख्यायिका), 3. चण्डीशतकम् (मुक्तक), 4.मुकुटताडितक (नाटक), 5. पार्वतीपरिणय (नाटक)
- हर्षवर्धन के चचेरे भाई कृष्ण के निमन्त्रण पर बाणभट्ट हर्ष के राजदरबार में पहुँचे।
- **उपाधियाँ/कथन**

उपाधि/कथन		वक्ता
वश्यवाणी कविचक्रवर्ती	–	हर्षवर्धन
बाणस्तु पञ्चाननः	–	श्रीचन्द्रदेव
पञ्चबाणस्तु बाणः	–	जयदेव
कविताकामिनीकौतुक	–	जयदेव
गद्यसम्राट्	–	बलदेव उपाध्याय
वाणी बाणो बभूव	–	गोवर्धनाचार्य

कवितातरुगहनविहरणमयूरः	–	वामनभट्टबाण
कविताकाननकेसरी	–	चन्द्रदेव
तुरङ्गबाण	–	आलोचक
बाणः कवीनामिह चक्रवर्ती	–	सोड्ढल
महानयं भुजङ्गः	–	हर्षवर्धन
गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति	–	आलोचक
बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्	–	समालोचक
भट्टबाणस्य भारतीम्	–	गङ्गादेवी
वाणी बाणस्य मधुरशीलस्य	–	धर्मदास

➢ **हर्ष के दरबार में दो अन्य विद्वान्**– (i) मातङ्गदिवाकर, (ii) मयूरभट्ट

महाकवि बाणभट्ट विषयक प्रशस्तियाँ

1. युक्तं कादम्बरीं श्रुत्वा कवयो मौनमाश्रिताः।
   बाणध्वनावनध्यायो भवतीति स्मृतिर्यतः।।
   सोमेश्वर – कीर्तिकौमुदी
2. रुचिरस्वरवर्णपदा रसभाववती जगन्मनो हरति।
   सा किं तरुणी? **नहि नहि वाणी बाणस्य मधुरशीलस्य॥**
   – विदग्धमुखमण्डन - धर्मदास
3. जाता शिखण्डिनी प्राक् यथा शिखण्डी तथावगच्छामि।
   प्रागल्भ्यमधिकमाप्तुं **वाणी बाणो बभूव** ह।।
   – गोवर्धनाचार्य
4. श्लेषे केचन शब्दगुम्फविषये केचिद्रसे चापरे-
   ऽलंकारे कतिचित्सदर्थविषये चान्ये कथावर्णने।
   आः सर्वत्र गभीरधीरकविताविन्ध्याटवी चातुरी-
   सञ्चारी कविकुम्भिकुम्भभिदुरो **बाणस्तु पञ्चाननः॥**
   – चन्द्रदेव
5. **बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्।** **– अज्ञात**
6. वागीश्वरं हन्त भजेऽभिनन्दमर्थेश्वरं वाक्पतिराजमीडे।
   रसेश्वरं स्तौमि च कालिदासं **बाणं तु सर्वेश्वरमानतोऽस्मि॥**
   – सोड्ढल (उदयसुन्दरी)
7. हृदि लग्नेन बाणेन यन्मन्दोऽपि पदक्रमः।
   भवेत्कविकुरङ्गाणां चापलं तत्र कारणम्।। **– त्रिलोचन**
8. शश्वद्बाणद्वितीयेन नमदाकारधारिणा।
   धनुषेव गुणाढ्येन निःशेषो रञ्जितो जनः।। **– त्रिविक्रमभट्ट।**
9. यस्याश्चौरः चिकुरनिकुरः कर्णपूरो मयूरः।
   भासो हासः कविकुलगुरुः कालिदासो विलासः।।
   हर्षो हर्षः हृदयवसतिः **पञ्चबाणस्तु बाणः।**
   केषां नैषा कथय कविताकामिनी कौतुकाय।।
   – जयदेव - प्रसन्नराघव
10. केवलोऽपि स्फुरन् बाणः करोति विमदान् कवीन्।
    किं पुनः क्लृप्तसन्धानः पुलिन्ध्रकृतसन्निधिः।।
    – धनपाल - तिलकमञ्जरी
11. वाणीपाणिपरामृष्टवीणानिक्वाणहारिणीम्।
    भावयन्ति कथं वान्ये भट्टबाणस्य भारतीम्।। **– गङ्गादेवी**
12. सुबन्धुर्बाणभट्टश्च कविराज इति त्रयः।
    वक्रोक्तिमार्गनिपुणाश्चतुर्थो विद्यते न वा।।
    – कविराज - राघवपाण्डवीय
13. दण्डिन्युपस्थिते सद्यः कवीनां कम्पितं मनः।
    प्रविष्टे त्वन्तरे बाणे कण्ठे वागेव रुध्यते।। **– हरिहर**
14. कादम्बरीसहोदर्या सुधया वै बुधे हृदि।
    हर्षाख्यायिकया ख्यातिं बाणोऽब्धिरिव लब्धवान्।।
    – धनपाल (तिलकमञ्जरी)
15. शब्दार्थयोः समो गुम्फः पाञ्चालीरीतिरुच्यते।
    शिलाभट्टारिका वाचि बाणोक्तिषु च सा यदि।।
    – भोज - सरस्वतीकण्ठाभरण
16. प्रतिकविभेदनबाणः **कवितातरुगहनविहरणमयूरः।**
    सहृदयलोकसुबन्धुर्जयति श्रीभट्टबाणकविराजः**– वामनभट्टबाण**
17. बाणस्य हर्षचरिते निशितामुदीक्ष्य।
    शक्तिं न केऽत्र कवितास्त्रमदं त्यजन्ति।। **– सोड्ढल**
18. सहर्षचरितारब्धादद्भुतकादम्बरी कथा।
    बाणस्य गण्यनार्येव स्वच्छन्दा भ्रमति क्षितौ।। **– राजशेखर**
19. परिशीलितैव सरसं कविराजैर्बहुभिरत्र वाग्देवी।
    बाणेन तु वैजात्यात्कथयति नामैव वाणीति।।
    – विश्वेश्वर पाण्डेय
20. कादम्बरीरसभरेण समस्त एव।
    मत्तो न किञ्चिदपि चेतयते जनोऽयम्।। **– भूषणभट्ट**
21. कादम्बरीरसज्ञानामाहारोऽपि न रोचते। **– अज्ञात**
22. नृत्यति यद्रसनायां वेधोन्मुखलासिका वाणी।
    – पार्वतीपरिणय
23. द्विजेन तेनाक्षतकण्ठकौण्ठ्यया महामनोमोहमलीमसान्धया।
    अलब्धवैदग्ध्यविलासमुग्धया धिया निबद्धेयमतिद्वयी कथा।।
    – कादम्बरी कथामुख
24. ''यादृग् गद्यविधौ बाणः पद्यबन्धेऽपि तादृशः'' **– भोजराज**

कादम्बरी

➢ **लेखक** – बाणभट्ट
➢ **काव्यविधा** – कथा
➢ **दो खण्ड** – (i) पूर्वार्द्ध (ii) उत्तरार्द्ध
➢ **प्रधानरस** – शृङ्गाररस
➢ **उपजीव्य** – गुणाढ्य की 'बृहत्कथा'
➢ **नायक** – चन्द्रापीड (शूद्रक)
➢ **नायिका** – कादम्बरी
➢ **सहनायक** – वैशम्पायन (पुण्डरीक)
➢ **सहनायिका** – महाश्वेता

➢ **वैशिष्ट्य** – तीन जन्मों की कथा
➢ **प्रमुखपात्र** – चन्द्रापीड, कादम्बरी, पुण्डरीक, महाश्वेता, शूद्रक, तारापीड, विलासवती, शुकनास, मनोरमा, वैशम्पायन, इन्द्रायुध (घोड़ा) पत्रलेखा (दासी) जाबालि, हारीत, चाण्डालकन्या, शबर, कपिञ्जल, शुक, हंस, चित्ररथ
➢ कादम्बरी उत्तरार्ध की रचना बाण के पुत्र **भूषणभट्ट** (भूषणबाण/पुलिन्द/पुलिनभट्ट/पुलिन्ध्र) ने की।
➢ **कादम्बरी की रीति** – पाञ्चाली
➢ **कादम्बरी में अलङ्कार** – विरोधाभास, श्लेष, परिसंख्या, अनुप्रास, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा।
➢ **कादम्बरी के प्रमुखवर्णन–**
शूद्रकवर्णन, शुकवर्णन, चाण्डालकन्यावर्णन, विन्ध्याटवीवर्णन, शबरसैन्यवर्णन, शाल्मलीवृक्षवर्णन जाबाल्याश्रमवर्णन, जाबालिवर्णन, उज्जयिनीवर्णन, तारापीडवर्णन, इन्द्रायुधवर्णन, अच्छोदसरोवरवर्णन, महाश्वेतावर्णन, कादम्बरीवर्णन आदि।

कादम्बरी का मङ्गलाचरण

रजोजुसे जन्मनि सत्त्ववृत्तये
स्थितौ प्रजानां प्रलये तमःस्पृशे।
अजाय सर्गस्थितनाशहेतवे
त्रयीमयाय त्रिगुणात्मने नमः॥ 1 ॥

भावार्थ- प्रजाओं की सृष्टि करने में रजोगुण का सेवन करने वाले, पालन करने में सत्त्वगुण का धारण करने वाले, नाश करने में तमोगुण का स्पर्श करने वाले, सृष्टि, स्थित तथा प्रलय के कारणभूत वेदों के स्वरूप तथा तीनों गुणों (सत्त्व, रज और तम) से युक्त ब्रह्म को नमस्कार है।

☆ 'कादम्बरी' में नमस्कारात्मक मङ्गलाचरण का प्रयोग है।
☆ प्रस्तुत पद्य में निराकार ब्रह्म की स्तुति की गयी है।
☆ अनुप्रास एवं यथासंख्या अलङ्कार का प्रयोग है।
☆ बाणभट्ट ने कादम्बरी के मङ्गलाचरण के रूप में 20 पद्यों में कविवंश-वर्णन, सज्जन-प्रशंसा, दुर्जन-निन्दा आदि का वर्णन किया है।
☆ मङ्गलाचरण रूपी बीसों पद्यों में वंशस्थ छन्द का प्रयोग किया गया है।
☆ मङ्गलाचरण के द्वितीय पद्य में भगवान् शङ्कर के चरणधूलियों की वन्दना की गयी है।
☆ तीसरे श्लोक में बाणभट्ट ने अपने गुरु 'भर्वु' (भत्सु) को नमस्कार किया है।
☆ पाँचवे श्लोक में दुर्जनों की निन्दा है।
☆ छठे और सातवें पद्य में दुर्जन और सज्जन में अन्तर स्पष्ट किया है।
☆ आठवें तथा नौवें श्लोक में कथा-प्रशंसा है।
☆ दसवें से उन्नीसवें श्लोक तक कविवंश-वर्णन है।
☆ बीसवें श्लोक में कादम्बरी कथा की प्रशंसा है।

➢ **कादम्बरी में तीन जन्मों का नाम**

चन्द्रापीड	वैशम्पायन	पत्रलेखा	इन्द्रायुध	चाण्डालकन्या
1.चन्द्रमा	पुण्डरीक	रोहिणी	कपिञ्जल	लक्ष्मी
2.चन्द्रापीड	वैशम्पायन	पत्रलेखा	इन्द्रायुध	-
3.शूद्रक	शुक	-	कपिञ्जल	चाण्डालकन्या

➢ कादम्बरी की कथा एक जन्म से सम्बद्ध न होकर चन्द्रापीड और पुण्डरीक के तीन जन्मों से सम्बन्ध रखती है।
➢ कादम्बरी के दो भाग हैं– पूर्वार्द्ध व उत्तरार्द्ध।
➢ 'कादम्बरी' का नायक चन्द्रापीड धीरोदात्त नायक है।
➢ 'कादम्बरी' की नायिका कादम्बरी विवाह से पूर्व **'परकीया मुग्धा नायिका'** है, किन्तु विवाह के बाद **'स्वकीया मध्या नायिका'** है।
➢ कादम्बरी का प्रमुख रस **'शृङ्गार'** तथा गुण **'माधुर्य'** है।
➢ कादम्बरी में **पाञ्चाली रीति** की बहुलता है। **'शब्दार्थयोः समोगुम्फः पाञ्चाली रीतिरुच्यते॥'**
➢ 'बृहत्कथासरित्सागर' के 'उनसठवें तरङ्ग' मकरन्दिका-वृत्तान्त का अवलम्बन लेकर बाण ने कादम्बरी-कथा की रचना की।
➢ कादम्बरी का शाब्दिक अर्थ **'मदिरा'** है।
➢ कादम्बरी के उत्तरार्द्ध में भूषणभट्ट ने कहा – **कादम्बरी रसभरेण समस्त एव, मत्तो न किञ्चिदपि चेतयतो जनोऽयम्॥**
➢ कादम्बरी के मङ्गलाचरण में त्रिगुण-स्वरूप अजन्मा परमब्रह्म को नमस्कार किया गया है।
➢ यह ब्रह्म प्राणियों के प्रादुर्भाव में रजोगुण युक्त, स्थितिकाल में सात्विक गुणवाला तथा प्रलयकाल में तमोगुण वाला होता है।
➢ कादम्बरी का मङ्गलाचरण **नमस्कारात्मक** है।
➢ कादम्बरी के मङ्गलाचरण में **वंशस्थ छन्द** है।
➢ कादम्बरी के द्वितीय श्लोक में भगवान् शिव की चरण धूलियों की स्तुति की गयी है।
➢ चतुर्थ श्लोक में बाण ने अपने गुरु **भर्वु (भत्सु)** के चरणों की वन्दना की।
➢ बाण ने दो श्लोकों (8, 9) में कादम्बरी कथा की प्रशंसा की है।
➢ कादम्बरी की रचना में बाण को गुणाढ्य की **बृहत्कथा** तथा सुबन्धु की **वासवदत्ता** से प्रेरणा मिली है, और इन्हें पीछे छोड़ना बाण का लक्ष्य रहा है। इसीलिए बाणभट्ट ने कादम्बरी को **अतिद्वयी** (अर्थात् वासवदत्ता और बृहत्कथा का अतिक्रमण करने वाली) कथा कहा है।
➢ कादम्बरी कथा का आरम्भ राजा शूद्रक के प्रभाव और उनकी **राजधानी 'विदिशा'** के वैभव वर्णन से होता है।
➢ शूद्रक के दरबार में एक 'चाण्डालकन्या' 'वैशम्पायन' नामक शुक को लेकर आती है।

- यह तोता मनुष्य की बोली बोलता है और राजा की प्रशंसा में एक आर्या छन्द (दाहिना पैर उठाकर) पढ़ता है –
  स्तनयुगमश्रुस्नातं समीपतरवर्तिहृदयशोकाग्नेः।
  चरति विमुक्ताहारं व्रतमिव भवतो रिपुस्त्रीणाम्॥
- यही शुक राजा शूद्रक के सामने अपने जन्म, 'हारीत' के द्वारा महर्षि जाबालि के आश्रम में पहुँचने का वृत्तान्त बताता है।
- मुनि जाबालि उज्जयिनी नरेश तारापीड के पुत्र चन्द्रापीड तथा उसके मित्र मन्त्री शुकनास के पुत्र वैशम्पायन की कथा का वर्णन करते हैं।
- शुक का जन्म 'विन्ध्याटवी' में एक विशाल शाल्मली के वृक्ष पर हुआ था।
- उज्जयिनी मालवा की राजधानी है।
- तारापीड की पत्नी **'विलासवती'** और शुकनास की पत्नी का नाम **'मनोरमा'** है।
- चन्द्रापीड के तीन जन्म क्रमशः **चन्द्रमा, चन्द्रापीड और शूद्रक** हैं।
- पुण्डरीक के तीन जन्म क्रमशः **पुण्डरीक, वैशम्पायन और शुक हैं।**
- चन्द्रापीड की सेविका (ताम्बूलवाहिनी) पत्रलेखा पूर्व जन्म में रोहिणी रहती है।
- चन्द्रापीड का घोड़ा इन्द्रायुध पूर्व जन्म में पुण्डरीक का मित्र 'कपिञ्जल' रहता है।
- चाण्डालकन्या पूर्व जन्म में पुण्डरीक की माता लक्ष्मी रहती है।
- दिग्विजय के लिए निकले चन्द्रापीड किन्नर मिथुन का पीछा करते **'अच्छोद सरोवर'** पहुँच जाता है।
- अच्छोद सरोवर पर तप करती हुई **'महाश्वेता' गन्धर्वराज हंस और गौरी की पुत्री** है।
- पुण्डरीक के कान पर लगी पारिजात की कुसुम-मञ्जरी से महाश्वेता आकर्षित होती है।
- तरलिका महाश्वेता की सहचरी है।
- गन्धर्वराज **चित्ररथ और मदिरा की पुत्री कादम्बरी** है।
- केयूरक कादम्बरी का अनुचर (वीणावाहक) है।
- **पुण्डरीक महर्षि श्वेतकेतु और लक्ष्मी का पुत्र** है।
- पुण्डरीक ने चन्द्रमा को वियोगाग्नि में तड़पने और चन्द्रमा पुण्डरीक को साथ-साथ दुःख भोगने का शाप दिया था।
- पत्रलेखा कुलूताधिपति की पुत्री है।
- कादम्बरी की सहचरी मदलेखा है।
- इन्द्रायुध अश्व का सजीव वर्णन करने के कारण बाण को **'तुरङ्गबाण'** कहा जाता है।

कादम्बरी (शुकनासोपदेश)

- चन्द्रापीड के राज्याभिषेक के अवसर पर तारापीड का मंत्री 'शुकनास' चन्द्रापीड को उपदेश देता है।
- शुकनास चन्द्रापीड के लिए 'तात' सम्बोधन प्रयुक्त करते हैं।
- शुकनास के अनुसार युवावस्था के प्रभाव से उत्पन्न अन्धकार सूर्य से भेदा नहीं जा सकता तथा मणियों एवं दीपक के प्रकाश से दूर नहीं किया जा सकता।
- लक्ष्मी से उत्पन्न मद दारुण होता है तथा वृद्धावस्था में भी शान्त नहीं होता।
- ऐश्वर्य रूपी 'तिमिर' रोग अञ्जन की शलाका से भी ठीक नहीं होता।
- दर्प (अभिमान) की दाहज्वर शीतल उपचारों से ठीक नहीं किया जा सकता।
- राग (अनुराग) का मल स्नान एवं शौच आदि कार्यों से भी दूर नहीं होता।
- राज्य-सुख की निद्रा रात बीत जाने पर भी नहीं टूटती।
- (i) जन्म से प्राप्त ऐश्वर्य, (ii) नयी युवावस्था (iii) अनुपम सौन्दर्य तथा (iv) अलौकिक शक्ति 'चारों' अनर्थ की परम्पराएं हैं।
- 'युवावस्था' के आरम्भ में शास्त्रजल के प्रक्षालन के पश्चात् भी 'बुद्धि' कलुषता को प्राप्त करती है।
- श्वेतता (स्वच्छता) को त्यागे बिना भी युवकों की दृष्टि लालिमा (राग) से युक्त रहती है।
- जिस प्रकार वात्या (बवंडर) सूखे पत्ते को उसी प्रकार रजोगुण से उत्पन्न भ्रान्ति पुरुष को अपनी इच्छा से घुमाती है।
- उपभोगमृगतृष्णा इन्द्रिय-हरिणों को नष्ट कर देती है।
- जिस प्रकार जल के कारण कसैले पदार्थ मीठा स्वाद देते हैं उसी प्रकार युवावस्था के कारण विषय में अनुरक्ति मधुर प्रतीत होती है।
- विषयों में आसक्ति दिग्भ्रमित व्यक्ति की तरह पुरुष को नष्ट करती है।
- चन्द्रापीड जैसे व्यक्ति ही उपदेश के योग्य होते हैं।
- जिस प्रकार स्फटिक मणि में चन्द्रमा की किरणें उसी प्रकार निर्मल हृदय में उपदेश सरलता से प्रविष्ट होता है।
- जिस प्रकार थोड़ा सा पवित्र जल भी कान में पड़ने पर पीड़ा पहुँचाता है उसी प्रकार गुरु का पवित्र उपदेश भी अशिष्ट को कष्ट पहुँचाते हैं।
- शिष्ट व्यक्ति की शोभा को गुरूपदेश हाथी के शंखाभूषण की तरह बढ़ा देते हैं।
- प्रदोष के चन्द्रमा की तरह गुरु-वचन दोषरूपी अन्धकार को दूर करता है।
- काम के बाणों से जर्जर हृदय में उपदेश जल की तरह चू जाता है।
- गुरु का उपदेश 'जलविहीन' स्नान है।
- भय से लोग प्रतिध्वनि की तरह राजा के वचन का अनुसरण करते हैं।
- अभिमानरूपी सूजन से बन्द कान में गुरूपदेश नहीं सुनाई पड़ता।
- शुकनास सर्वप्रथम लक्ष्मी के विषय में चन्द्रापीड को उपदिष्ट करता है।

शुकनासोपदेश में 'लक्ष्मी' हेतु प्रयुक्त प्रमुख विशेषण और संज्ञापद

1. इन्द्रियहरिणहारिणी 2 . खड्गमण्डलोत्पलवनविभ्रमभ्रमरी
3. अपरिचिता 4. अनार्या
5. अप्रत्ययबहुला 6. वसुजननी
7. तरङ्गबुद्बुद्चञ्चला 8. तमोबहुला
9. भीमसाहसैकहार्यहृदया 10. अचिरद्युतिकारिणी
11. तोयराशिसम्भवा 12. ईश्वरतामादधाना
13. अमृतसहोदरा, कटुविपाका 14. विग्रहवती, अप्रत्यक्षदर्शना
15. पुरुषोत्तमरता 16. खलजनप्रिया
17. चपला 18. व्याधगीतिः
19. परामर्शधूमलेखा 20. निवासजीर्णवलभी
21. तिमिरोद्गतिः, पुरःपताका 22. उत्पत्तिनिम्नगा, आपानभूमिः
23. सङ्गीतशाला, आवासदरी 24. उत्सारणवेत्रलता, अकालप्रावृड्
25. कपटनाटकस्य प्रस्तावना 26. राहुजिह्वा
27. आलेख्यगता, पुस्तमयी 28. उत्कीर्णा, श्रुता
29. दुराचारा

शुकनासोपदेश में वर्णित लक्ष्मी के गुण/अवगुण

1. रागम् (पारिजातपल्लवेभ्यः) 2. एकान्तवक्रताम् (इन्दुशकलात्)
3. चञ्चलताम् (उच्चैःश्रवसः) 4. मोहनशक्तिम् (कालकूटात्)
5. मदम् (वारुणीमदिरायाः) 6. नैष्ठुर्यम् (कौस्तुभमणेः)
7. न परिचयं रक्षति। 8. नाभिजनमीक्षते।
9. न रूपमालोकयते। 10. न कुलक्रममनुवर्तते।
11. न शीलं पश्यति। 12. न वैदग्ध्यं गणयति।
13. न श्रुतम् आकर्णयति। 14. न धर्ममनुरुध्यते।
15. न त्यागमाद्रियते। 16. न विशेषज्ञतां विचारयति।
17. नाचारं पालयति। 18. न सत्यमनुबुध्यते।
19. न लक्षणं प्रमाणीकरोति। 20. तृष्णां संवर्धयति।
21. अशिवप्रकृतित्वमातनोति। 22. बलोपचयमाहरन्ती।

लक्ष्मी के लिए प्रयुक्त उपमाएँ

1. गन्धर्वनगरलेखेव
2. आरूढमन्दरपरिवर्तावर्तभ्रान्तिजनितसंस्कारेव।
3. कमलिनीसञ्चरणव्यतिकरलग्ननलिननालकण्टकेव।
4. विविधगन्धगजगण्डमधुपानमत्तेव।
5. लतेव, गङ्गेव। 6. पातालगुहेव।
7. हिडिम्बेव। 8. प्रावृडिव।
9. दुष्टपिशाचीव। 10. अनिमित्तमिव।
11. रेणुमयीव। 12. दीपशिखेव।
13. वात्येव।

शुकनासोपदेश की प्रमुख सूक्तियाँ

1. अतिगहनं तमो यौवनप्रभवम्।
भावार्थ – युवावस्था में उत्पन्न होने वाला (अज्ञानरूप) अन्धकार अत्यन्त दुर्दमनीय होता है।

- पूरे शुकनासोपदेश का वक्ता शुकनास है और श्रोता चन्द्रापीड है।

2. अपरिणामोपशमो दारुणो लक्ष्मीमदः।
धन-मद अन्तिम अवस्था में भी शान्त नहीं होता।

3. चन्दनप्रभवो न दहति किमनलः?
क्या चन्दन से उत्पन्न अग्नि जलाती नहीं?

4. तरलहृदयमप्रतिबुद्धं च मदयन्ति धनानि।
चञ्चल मन वाले तथा अजागरूक बुद्धि वाले व्यक्ति को धन मतवाला बना देता है।

5. दुरन्तेयमुपभोगतृष्णिका।
उपभोगरूपी मृगतृष्णिका अत्यधिक दुःखदायी अन्तवाली है।

6. प्रतिशब्द इव राजवचनमनुगच्छति जनो भयात्।
भय से मनुष्य प्रतिध्वनि की तरह राजा के वचन का अनुसरण करते हैं।

7. इयमनार्या (लक्ष्मीः) लब्धापि खलु दुःखेन परिपाल्यते।
नीच स्वभाव वाली (लक्ष्मी) इसको पा लेने पर भी कष्ट से पालन होता है।

8. विह्वला हि राजप्रकृतिः।
राज-स्वभाव निश्चय ही व्याकुल करने वाला है।

9. राज्यविषविकारतन्द्राप्रदा राजलक्ष्मीः।
राजलक्ष्मी राज्यरूपी विष से उत्पन्न आलस्य (तन्द्रा) को देने वाली है।

10. सरस्वतीपरिगृहीतमीर्ष्ययेव नालिङ्गति लक्ष्मीः।
सरस्वती द्वारा स्वीकृत व्यक्ति को लक्ष्मी ईर्ष्या के कारण आलिङ्गन नहीं करती।

कादम्बरी बिन्दुवार अध्ययन

- 'कादम्बरी' के लेखक कौन हैं? - **बाणभट्ट**
- कादम्बरी साहित्य की किस विधा के अन्तर्गत आती है? - **कथा**
- शुकनास ने किसे उपदेश दिया - **चन्द्रापीड को**
- कादम्बरी की कथा है - **कल्पनाप्रसूत**
- कादम्बरी में कितने जन्मों की कथा है? - **तीन**
- 'चन्द्रापीड' किस ग्रन्थ का नायक है? - **कादम्बरी**
- 'कादम्बरी' में किसके तीन जन्मों का वर्णन है? - **चन्द्रापीड**
- मुख्यतः कादम्बरी की शैली है - **पाञ्चाली**
- शुकनासोपदेश किस ग्रन्थ का अंश है? - **कादम्बरी**
- कादम्बरी में पार्श्व नायिका कौन है? - **महाश्वेता**
- कादम्बरी का प्रमुख नायक है - **चन्द्रापीड**
- कादम्बरी एक सुन्दर उदाहरण है? - **गद्यकाव्य का**
- तारापीडस्य मन्त्री कः? - **शुकनासः**
- चन्द्रापीडः .... अवतारः। - **चन्द्रमसः**
- कादम्बर्यां शुकनासस्य पुत्रः कः - **वैशम्पायनः**
- कादम्बरी में नायिका कौन है? - **कादम्बरी**
- कादम्बरी के कथानक का मूलस्रोत है - **गुणाढ्य की बृहत्कथा**

- कादम्बर्याः उत्तरार्धं कः विरचितवान्? - **भूषणभट्टः**
- कादम्बरी के प्रारम्भ में बाणभट्ट ने कितने श्लोकों की रचना की है? - **20**
- कादम्बरी के प्रथम मङ्गलाचरण में किसकी वन्दना की गई है? - **त्रिगुणमयपरब्रह्म**
- कादम्बरी का प्रधानरस है - **शृङ्गार**
- 'खल्वनर्थपरम्परा' में 'खलु' शब्द से क्या आशय है? - **निश्चित ही**
- वैशम्पायन की प्रेमिका थी - **महाश्वेता**
- चन्द्रापीड की प्रेमिका थी - **कादम्बरी**
- शुकनास किस राजा का प्रधान अमात्य था?- **तारापीड का**
- शुकनासोपदेश में शुकनास, कादम्बरी कथा में कौन है? - **मन्त्री**
- चन्द्रापीड के पिता का नाम था - **तारापीडस्य**
- विलासवती किसकी पत्नी थी? - **तारापीड की**
- चन्द्रापीड का विवाह किससे होता है? - **कादम्बरी**
- पत्रलेखा किसकी पुत्री थी? - **कुलूतेश्वर की**
- शूद्रक अवतार था - **चन्द्रापीड**
- हारीत पुत्र था - **महर्षि जाबालि का**
- शुकनासोपदेश में शुकनास के अतिरिक्त दूसरा पात्र है - **चन्द्रापीड**
- किसके गुण दोषों का वर्णन शुकनास ने किया है? - **लक्ष्मी के**
- राजतन्त्र शासन परम्परा में उपदेश दिये जाते हैं - **राज्याभिषेक के अवसर पर**
- लक्ष्मी ने निष्ठुरता का गुण किससे प्राप्त किया? - **कौस्तुभमणि से**
- लक्ष्मी 'पातालगुहेव..........' है - **तमोबहुला**
- लक्ष्मी से कुप्रभावित राजा 'दर्शनप्रदानमपि............. गणयन्ति - **अनुग्रहं**
- 'निर्मलापि कालुष्यमुपयाति' में किसकी ओर संकेत है? - **बुद्धि**
- कौन-सा राजा सिद्धादेश होता है? - **आरूढप्रतापः**
- 'लक्ष्मी 'साधुभाव' की क्या है? - **वध्यशाला**
- 'राज्यविषविकारतन्द्राप्रदा' है - **राजलक्ष्मी**
- "उत्कुपितलोचना इव तेजस्विनो नेक्षन्ते" ऐसा आचरण करते हैं - **लक्ष्मी से प्रभावित राजा**
- चन्द्रापीड को राज्याभिषेक पर उपदेश देता है- **शुकनास**
- 'कादम्बरी' शब्द का अर्थ है - **सुरा**
- 'कादम्बरी' में चन्द्रापीड किस राज्य का युवराज है? - **उज्जयिनी**
- कादम्बरी का शुक पक्षी पूर्व जन्म में कौन था? -**वैशम्पायन**
- शूद्रक की राजसभा में शुकपक्षी को कौन लाया था? - **मातङ्गिनी (चाण्डालकन्या**
- 'शुकनासोपदेश' में किसे अविनयों (दुराचारों) का घर नहीं कहा गया है? - **ऐश्वर्यतिमिरान्धत्वम्**
- शुकनासोपदेशानुसारेण अहङ्कारस्य एकं प्रबलं कारणं वर्तते - **गर्भेश्वरत्वम्**
- लक्ष्मीमद कैसा होता है - **अन्तिम अवस्था में भी नष्ट न होने वाला**
- किस प्रकार के राजा का आदेश सिद्ध योगी के समान सफल होता है? - **आरूढ प्रताप वाले का**
- बिना जल वाला स्नान कौन-सा है?- **गुरूपदेशरूपीस्नान**
- गुरूपदेशस्य महत्त्वमस्मिन्नुपवर्णितं विस्तरेण- **कादम्बर्याम्**
- राजप्रकृति कैसी होती है? - **विह्वला**
- 'चिकीर्षुः' किस धातु से बना है? - **कृ**
- राजा शूद्रक की राजधानी - **विदिशा**
- निम्नलिखित अवतरण में किसके विशेषण हैं? 'अतिशुद्ध-स्वभावमपि कृष्णचरितम् अकरमपि हस्तस्थित-सकल-भुवनतलं राजानम् अद्राक्षीत्। - **शूद्रक**
- शाल्मली वृक्ष का वर्णन किस ग्रन्थ में है? - **कादम्बरी**
- 'त्रिभुवनप्रसवभूमिरिव विस्तीर्णा' विशेषता किसके लिए प्रयुक्त है? - **विदिशा**
- 'विन्ध्यवनभूमिरिव वेत्रलतावती' किसका विशेषण है? - **प्रतीहारी**
- कादम्बरी में वर्णित इन्द्रायुध था? - **घोड़ा**
- इन्द्रायुध किसका अवतार था? - **कपिञ्जल का**
- लक्ष्मी की उत्पत्ति हुई है - **जलधि (समुद्र) से**
- पुण्डरीकः कस्मात् कारणात् मृतः - **विरहतापेन**
- पत्रलेखा इसकी पात्र है - **कादम्बरी की**
- अधूरी कादम्बरी का पूरण इनसे हुआ - **पुलिन्दभट्ट**
- कादम्बरीकथायां पुण्डरीकस्य सखा कः? - **कपिञ्जलः**
- इस कथा का आधार पुनर्जन्म सिद्धान्त पर विश्वास है - **कादम्बरी**
- शूद्रक का वर्णन है - **कादम्बरी**

- लक्ष्मी चाञ्चल्यमस्मिन्नुपवर्णितमस्ति - **कादम्बर्याम्**
- वैशम्पायनवृत्तान्तः कुत्रोपवर्णितः - **कादम्बर्याम्**
- "न वैदग्ध्यं गणयति" इत्यस्मिन् वाक्ये वैदग्ध्यशब्दस्य कोऽर्थः - **पाण्डित्य**
- चन्द्रापीडस्य सेविका अस्ति - **पत्रलेखा**
- 'चन्द्रापीड' पात्र कहाँ वर्णित है? - **कादम्बरी में**
- 'कादम्बरी' शब्द प्रसिद्ध है - **मदिरा**
- वेत्रवती नदी किस नगरी में स्थित है? - **विदिशा में**
- 'अच्छोदसरोवर' का वर्णन कहाँ प्राप्त होता है? - **कादम्बरी**
- राजा शूद्रक की तुलना किससे नहीं की गई है? - **वरुण से**
- 'मन्मथः' पद का अर्थ है - **कामदेव**
- अप्रतिहतशक्ति से युक्त है - **गुह (कार्तिकेय)**
- 'गुह इवाप्रतिहतशक्तिः'- यहाँ 'गुह' का अभिप्राय है - **कार्तिकेय**
- राजहंस को किसने विमान बनाया? - **कमलयोनि (ब्रह्मा) ने**
- किसने राजा की ओर मुख करके आर्या छन्द को पढ़ा? - **विहङ्गराज ने**
- कौन उस आर्या छन्द को सुनकर आश्चर्यचकित हो गया? - **राजा**
- समस्त मन्त्रिमण्डल में प्रधानमन्त्री है - **कुमारपालित**
- किसके वर्णों के उच्चारण में स्पष्टता थी? - **शुक के**
- चन्द्रापीड का राज्याभिषेक करने की इच्छा किसे हुई? - **तारापीड को**
- "आसीदशेषनरपति शिरः"–यह कथन किसके लिए कहा गया है? - **शूद्रक**
- कादम्बरी कथा के अनुसार विदिशा जिस राजा की राजधानी थी, उसका नाम है - **शूद्रक**
- 'त्रयीमयाय त्रिगुणात्मने नमः' इस वाक्य में परमात्मा की कितनी अवस्थाओं का वर्णन किया गया है? - **तीन**
- 'हर इव जितमन्मथः' अंश के आधार पर जितेन्द्रिय राजा शूद्रक है - **शिव के समान**
- कादम्बरी में वर्णित विदिशा नगरी किस नदी के किनारे स्थित है? - **वेत्रवती**
- कादम्बर्याः तिर्यक्पात्रं वैशम्पायनः कस्मिन्नाश्रमे लब्धवानाश्रयम्? - **जाबाल्याश्रमे**
- कादम्बर्याः 'शूद्रक' ऐतिहासिकः पात्रमस्ति न वा? निश्चीयताम् - **कल्पितः**
- कादम्बर्याः वास्तविकी कथा केनोक्ताऽऽसीत्? - **जाबालिना**
- कादम्बर्यां महाश्वेता कं देवमुपवीणयति स्म? - **शिवम्**
- चाण्डालकन्या प्रथमे जन्मनि का आसीत्? - **लक्ष्मी**
- चाण्डालकन्ययाऽऽनीतः शुकः क आसीत्? - **पुण्डरीकः**
- महाश्वेतावृत्तान्ते किं नाम सरो वर्णितम्? - **अच्छोदसरः**
- कादम्बरीकथायां पुण्डरीकस्यानुरागः कं प्रति आसीत्? - **महाश्वेताम्**
- 'महाश्वेता' का वर्णन कहाँ प्राप्त होता है? - **कादम्बरी**
- शुकनास के उपदेश के पश्चात् प्रसन्न हृदय वाला राजा कहाँ गया? - **अपने भवन में**
- 'धिया निबद्धेयमतिद्वयी कथा' के अन्तर्गत 'अतिद्वयी' कथा से दो किन कथाओं का उल्लेख है? - **बृहत्कथा तथा वासवदत्ता**
- 'विन्ध्याटवी वर्णन' किस ग्रन्थ का अंश है? - **कादम्बरीकथामुखम् में**
- कौस्तुभमणि को कौन धारण करता है? - **विष्णु**
- महाश्वेता किसका पर्यायवाची है? - **सरस्वती**
- "स्तनयुगमश्रुस्नातम्" .... इत्यादि कादम्बरीकथा-मुखश्लोकस्य वक्ताऽस्ति- **वैशम्पायनशुकः**
- 'कादम्बरीरसज्ञानामाहारोऽपि न रोचते' इत्यत्र 'कादम्बरी' पदे कोऽलङ्कारः? - **श्लेषः**
- कादम्बर्यां विन्ध्याटवीवर्णने अचेतनपदार्थानां चेतनदेवताभिः उपमाकरणस्य मूले चमत्कारोऽस्ति? - **श्लेषस्य**
- "अनुज्झितधवलतापि सरागैव भवति यूनां दृष्टिः"–यह सूक्ति किस ग्रन्थ से सम्बन्ध रखती है? - **कादम्बरी शुकनासोपदेश**
- "अतिगहनं तमो यौवनप्रभवम्" सूक्ति किस ग्रन्थ की है? - **कादम्बरी (शुकनासोपदेश)**
- "गन्धर्वनगरलेखेव पश्यत एव नश्यति" इदं वाक्यमस्ति - **कादम्बर्याम्**
- "सुभाषितं हारि विशत्यधो-गलान्न दुर्जनस्या- र्करिपोरिवामृतम्" इति केन कविनोक्तम्? - **बाणमहाकविना**
- "रजोजुषे जन्मनि सत्त्ववृत्तये" श्लोक जिसमें उपलब्ध है, वह ग्रन्थ है - **कादम्बरी**
- "अकारणाविष्कृतवैरदारुणादसज्जनात् कस्य भयं न जायते"-श्लोकांश के रचयिता हैं? - **बाणभट्टः**
- 'स्फुरत्कलालापविलासकोमला'–यह वाक्यांश किसके वैशिष्ट्य को प्रकट करता है - **कथाकाव्यस्य**
- 'सर्वथा निष्फला प्रज्ञा' इति वाक्यं .... विद्यते - **कादम्बर्याम्**
- 'कालो हि गुणाश्च दुर्निवारतामारोपयन्ति मदनस्य सर्वदा'- वाक्यमेतद् .... वदति? - **महाश्वेता**
- महाश्वेतायाः प्रेम्णि कः स्वप्राणान् त्यक्तवान्? - **पुण्डरीकः**
- 'अंशुमयीमिव तनुच्छायानुलिप्तभूतलाम्।' - इयं पंक्तिः कां वर्णयति - **महाश्वेताम्**
- महाश्वेतायाः प्रियकरः कः - **पुण्डरीकः**

➤ "असज्जनात् कस्य भयं न जायते" यह वचन किस ग्रन्थ का है - **कादम्बरी**

➤ 'अकालकुसुमप्रसवा इव मनोहराकृतयोऽपि लोकविनाश हेतवः, श्मशानाग्नय इवातिरौद्रभूतयः, तैमिरिका इवादूरदर्शिनः, उपसृष्टा इव क्षुद्राधिष्ठितभवनाः, श्रूयमाणा अपि प्रेतपटहा इवोद्वेजयन्ति।' प्रस्तुत गद्यांश किस ग्रन्थ से उद्धृत है? - **कादम्बरी (शुकनासोपदेश)**

➤ 'ऐश्वर्यतिमिरान्धत्वम्' यह कथन किस ग्रन्थ का है? - **शुकनासोपदेश का**

➤ "पुरुषोत्तमरताऽपि खलजनप्रिया" यह उक्ति किसके लिए है? - **लक्ष्मी के लिए**

➤ "रुचिरस्वरवर्णप्रदा रसभाववती जगन्मनो हरति" किस कवि की रचना के लिए कहा गया है? - **बाणभट्ट**

➤ "लब्धापि दुःखेन परिपाल्यते" किसका कथन है? - **तारापीड का**

➤ "मनस्तु साधुध्वनिभिः पदे पदे हरन्ति सन्तो मणिनूपुरा इव" पंक्तियाँ किस ग्रन्थ से उद्धृत हैं? - **कादम्बरी**

➤ 'स्तनयुगमश्रुस्नातं समीपतरवर्ति हृदयशोकाग्नेः। चरति विमुक्ताहारं व्रतमिव भवतो रिपुस्त्रीणाम्।।' इति श्लोकः निबद्धः वर्तते - **कादम्बर्याम्**

➤ "सर्वथा न कञ्चन स्पृशन्ति शरीरधर्माणमुपतापाः" कस्माद् ग्रन्थादेतत् वाक्यमुद्धृतम्? - **कादम्बरी**

➤ "अचिरेण च तस्याः स्वयं पतितैः फलैरपूर्य्यत भिक्षाभाजनम्" कस्य सम्बन्धे उक्तिः? - **महाश्वेतायाः सम्बन्धे**

➤ "किमिव हि दुष्करमकरुणानाम्" सूक्ति ग्रहण की गई है - **कादम्बरी से**

➤ 'नास्ति जीवितादन्यदभिमततरमिह जगति सर्वजन्तूनाम्' सूक्ति किस ग्रन्थ की है? - **कादम्बरी**

➤ "अन्तरिते च तस्मिन् शबरसेनापतौ .... पिबन्निवास्माकमायूंषि।" इत्यत्र रिक्तस्थानम् पूरयत - **जीर्णशबरः**

➤ 'स्वस्यैवाविनयस्य फलमनेनानुभूयते' इतीदं कस्य वचनम्? - **जाबालिमुनेः**

➤ पुण्डरीकः महाश्वेतावियोगेन तप्तः शरीरं त्यक्त्वा अपरस्मिन् जन्मनि कः बभूव? - **वैशम्पायनः**

➤ शुकनासोपदेशानुसारेण लक्ष्मीः सरस्वतीपरिगृहीतं जनं कस्मात् नालिङ्गति - **ईर्ष्याकारणात्**

कादम्बरी-शुकनासोपदेशः वस्तुनिष्ठप्रश्नाः)

1. बाण की गद्यशैली है–
(A) गौड़ी (B) वैदर्भी
(C) लाटी (D) पाञ्चाली

2. बाणभट्ट के पिता का नाम है–
(A) कुबेर (B) चित्रभानु
(C) वत्स (D) अर्थपति

3. बाणभट्ट के पुत्र का नाम है–
(A) मुरारिभट्ट (B) मयूरभट्ट
(C) भूषणभट्ट (पुलिन्द) (D) नयनभट्ट

4. बाणभट्ट किस गोत्र में उत्पन्न हुए–
(A) वत्सगोत्र (B) भृगुगोत्र
(C) काश्यपगोत्र (D) गौतमगोत्र

5. बाणभट्ट का निवास स्थान है–
(A) उज्जयिनी
(B) गया बिहार
(C) अचलपुर
(D) शोणनदी के तट पर प्रीतिकूट ग्राम

6. शुकनास के अनुसार शास्त्रजलप्रक्षालित बुद्धि भी कब कालुष्य को प्राप्त होती है–
(A) वृद्धावस्थायाम् (B) यौवनारम्भे
(C) बाल्यावस्थायाम् (D) इनमें से कोई नहीं

7. तारापीड का पुत्र है–
(A) शुकनास (B) वैशम्पायन
(C) चन्द्रापीड (D) पुण्डरीक

8. वैशम्पायन किसका पुत्र है–
(A) तारापीड का (B) शुकनास का
(C) चन्द्रापीड का (D) पुण्डरीक का

9. तारापीड का मन्त्री है–
(A) शुकनास (B) इन्द्रायुध
(C) अर्थपति (D) चित्रभानु

10. चन्द्रापीड को किससे प्यार है–
(A) महाश्वेता से (B) चाण्डालकन्या से
(C) कादम्बरी से (D) पत्रलेखा से

11. चन्द्रापीड की माता है–
(A) रानी विलासवती (B) पत्रलेखा
(C) महाश्वेता (D) मनोरमा

12. पुण्डरीक के पिता हैं–
(A) चित्रभानु (B) अर्थकेतु
(C) शुकनास (D) श्वेतकेतु

13. महाश्वेता का आश्रम कहाँ स्थित है–
(A) अच्छोदसरोवर में (B) हेमकूट में
(C) मानसरोवर में (D) पम्पासरोवर में

14. कादम्बरी किसकी पुत्री है–
(A) शूद्रक की (B) श्वेतकेतु की
(C) गन्धर्वराज चित्ररथ की (D) शुकनास की

15. कादम्बरी की माता का नाम है–
(A) विलासवती (B) पत्रलेखा
(C) हंसपदिका (D) मदिरा

16. कादम्बरी कथा का उत्तरार्द्धभाग किसकी रचना है–
(A) बाणभट्ट (B) मयूरभट्ट
(C) पुलिन्दभट्ट या भूषणभट्ट (D) केयूरभट्ट

17. तारापीड की राजधानी है–

(A) उज्जयिनी (B) विदिशा
(C) कश्मीर (D) मालवा

18. कादम्बरी कथा का मुख्य रस है–
(A) अद्भुतरस (B) वीररस
(C) करुणरस (D) शृङ्गाररस

19. कादम्बरी कथा का प्रधान नायक है–
(A) चन्द्रापीड (B) वैशम्पायन
(C) जाबालि (D) कपिञ्जल

20. बाणभट्टस्य मातुः नाम अस्ति–
(A) वसुमतीदेवी (B) राजदेवी
(C) महाश्वेता (D) महादेवी

21. शूद्रक पूर्वजन्म में क्या था–
(A) तारापीड (B) वैशम्पायन
(C) चन्द्रापीड (D) कपिञ्जल

22. बाणभट्ट की कादम्बरी क्या है–
(A) कथा (B) आख्यायिका
(C) मुक्तक (D) महाकाव्य

23. कादम्बरी के कथामुख के प्रारम्भ में किस राजा का वर्णन है–
(A) तारापीड का (B) चन्द्रापीड का
(C) शूद्रक का (D) पुण्डरीक का

24. युवा चन्द्रापीड को सारगर्भित उपदेश किसने दिया–
(A) वैशम्पायन (B) पुण्डरीक
(C) शूद्रक (D) शुकनास

25. ''न परिचयं रक्षति। नाभिजनमीक्षते। न रूपमालोकयते। न कुलक्रममनुवर्तते।'' ये पंक्तियाँ कादम्बरी में किस प्रसङ्ग में आयी हैं–
(A) कादम्बरी सौन्दर्यवर्णन
(B) चाण्डालकन्या वर्णन
(C) लक्ष्मी की निन्दा
(D) महाश्वेता गुणवर्णन

26. यह सारा काव्यजगत् किस कवि का उच्छिष्ट माना जाता है–
(A) बाणभट्ट का (B) कालिदास का
(C) श्रीहर्ष का (D) दण्डी का

27. ''भवादृशा एव भवन्ति भाजनान्युपदेशानाम्'' यहाँ 'भवादृशा' पद से किसका संकेत है–
(A) शूद्रक का (B) चन्द्रापीड का
(C) तारापीड का (D) बाणभट्ट का

28. 'करिणः' पद का अर्थ है–
(A) गजाः (B) अश्वाः
(C) किरणम् (D) हस्ताः

29. पुरुषों के लिए समग्र मलों को धोने में समर्थ बिना जल का स्नान है–
(A) सरस्वती कृपा (B) गुरु का उपदेश
(C) बल-पौरुष (D) देव-दर्शन

30. 'रजनिकरगभस्तयः' में 'गभस्तयः पद का अर्थ है–
(A) गर्भिणी (B) किरणें
(C) अन्धकार (D) प्रकाश

31. हारीत पुत्र था–
(A) महर्षि अगस्त्य का (B) महर्षि जाबालि का
(C) महर्षि श्वेतकेतु का (D) महर्षि विश्वामित्र का

32. शाल्मली वृक्ष का वर्णन किस ग्रन्थ में है–
(A) कादम्बरी शुकनासोपदेश में
(B) कादम्बरी कथामुख में
(C) कादम्बरी महाश्वेतावृत्तान्त में
(D) कादम्बरी उत्तरार्द्ध में

33. ''अतिगहनं तमो यौवनप्रभवम्'' एषा सूक्तिः कुतः उद्धृता अस्ति–
(A) कादम्बरी–कथामुखात्
(B) कादम्बरी-शुकनासोपदेशात्
(C) कादम्बरी-उत्तरार्द्धभागात्
(D) कादम्बर्यां नास्ति

34. चन्द्रापीड के चरित्र की विशेषता नहीं है–
(A) सहृदयप्रेमी (B) विवेकी युवक
(C) अस्पष्टवक्ता (D) पराक्रमी राजपुत्र

35. ''वाणी बाणो बभूव'' इति कथनं कस्य अस्ति–
(A) गोवर्द्धनाचार्यस्य (B) जयदेवस्य
(C) राजशेखरस्य (D) श्रीचन्द्रदेवस्य

36. ''बाणः कवीनामिह चक्रवर्ती'' यह किसका कथन है–
(A) सोड्ढल का (B) त्रिलोचन का
(C) धर्मदास का (D) मङ्खक का

37. ''बाणस्तु पञ्चाननः'' यह किसका कथन है–
(A) मंखक का (B) श्रीचन्द्रदेव का
(C) गोवर्द्धन का (D) राजशेखर का

38. ''अपरिणामोपशमो दारुणो लक्ष्मीमदः'' यह सूक्ति कहाँ से उद्धृत है–
(A) कादम्बरी शुकनासोपदेश से
(B) कादम्बरी कथामुख से
(C) कादम्बरी महाश्वेतावृत्तान्त से
(D) कादम्बरी उत्तरार्द्ध भाग से

39. ''गन्धर्वनगरलेखेव पश्यत एव नश्यति'' यह कथन किसके लिए कहा गया है–
(A) सरस्वती के लिए (B) लक्ष्मी के लिए
(C) दुष्टों के लिए (D) राजधानी के लिए

40. 'दुष्टा, पिशाची, अनार्या, दुराचारिणी' आदि पदों का प्रयोग बाण ने किसके लिए किया है–
(A) दुष्टमहिलाओं के लिए (B) चाण्डालकन्या के लिए
(C) लक्ष्मी के लिए (D) रानी विलासवती के लिए

41. ''यथा यथा चेयं चपला दीप्यते'' यहाँ 'चपला' पद से किसका सङ्केत किया गया है–
(A) भगवती सरस्वती का (B) लक्ष्मी का
(C) अनार्या स्त्रियों का (D) विलासवती का

42. ''कुमार! तथा प्रयतेथाः यथा नोपहस्यसे जनैः, न निन्द्यसे साधुभिः, न धिक्क्रियसे गुरुभिः'' यह कथन किसने किससे कहा–
(A) चन्द्रापीड ने शुकनास से
(B) शुकनास ने चन्द्रापीड से
(C) तारापीड ने शुकनाम से
(D) शुकनास ने तारापीड से

43. बड़े-बूढ़ों के उपदेश को बकवास समझकर उसकी उपेक्षा कर देते हैं–
(A) दुष्ट राजागण (B) सेवकगण
(C) सैनिकगण (D) चन्द्रापीड

44. ''न प्रणमन्ति देवताभ्यः, न पूजयन्ति द्विजातीन् न मानयन्ति मान्यान्, न अभ्युत्तिष्ठन्ति गुरून्'' इन पंक्तियों में किसका वर्णन है–
(A) राजाओं का (B) सेवकों का
(C) विद्वानों का (D) देवताओं का

45. 'इषवः' पद का अर्थ है–
(A) शर (B) बाण
(C) तीर (D) उपर्युक्त सभी

46. 'कुलीराः इव तिर्य्यक् परिभ्रमन्ति' यहाँ 'कुलीर' पद का अर्थ है–
(A) कुम्हार (B) कद्दू
(C) केकड़ा (D) सर्प

47. 'खद्योत' पद का अर्थ है–
(A) आकाश (B) खरगोश
(C) प्राणी (D) जुगनू

48. ''कदलिका कामकरिणः'' यहाँ 'कदलिका' पद का अर्थ है–
(A) एक पुष्प विशेष (B) सरस्वती
(C) केले का बगीचा (D) लक्ष्मी

49. ''राहुजिह्वा धर्मेन्दुमण्डलस्य'' यहाँ 'राहुजिह्वा' पद प्रयुक्त है–
(A) राहुग्रस्त जीभ के लिए
(B) राहुग्रह के लिए
(C) लक्ष्मी के लिए
(D) राजाओं के जिह्वा के लिए

50. 'आशीविषाः' पद का अर्थ है–
(A) आशीर्वाद (B) सर्प
(C) विष (D) रोष

51. भीम किस राक्षसी पर मोहित हुए थे–
(A) शूर्पणखा (B) हिडिम्बा
(C) हेरम्बा (D) हाहाडम्बिका

52. लक्ष्मी कहाँ से पैदा होती हैं
(A) विष्णु के पैरों से (B) ब्रह्मा की नाभि से
(C) क्षीरसागर से (D) शिव की जटाओं से

53. लक्ष्मी ने पारिजात के पल्लवों से क्या ग्रहण किया–
(A) कुटिलता (B) अस्थिरता
(C) सम्मोहन शक्ति (D) राग

54. लक्ष्मी 'कर्कशता' कहाँ से ग्रहण करती हैं
(A) कौस्तुभमणि से (B) मदिरा से
(C) उच्चैःश्रवा से (D) हालाहल से

55. पुरुषों में स्थित समस्त दोषों को गुणरूप में परिणत कर देते हैं–
(A) गुरूपदेश (B) लक्ष्मी की प्राप्ति
(C) राज्यप्राप्ति (D) बुद्धिवैभव

56. शुकनास, अनर्थ परम्परा की कड़ी में किसे नहीं मानते हैं–
(A) जन्मजातप्रभुता (B) युवावस्था
(C) अनुपमसौन्दर्य (D) शक्त्यसम्पन्नता

57. ''विदितवेदितव्यस्य अधीतसर्वशास्त्रस्य ते नाल्पम-प्युपदेष्टव्यमस्ति'' यहाँ 'अधीतसर्वशास्त्रस्य' पद किसके लिए प्रयुक्त है–
(A) शुकनास (B) चन्द्रापीड
(C) वैशम्पायन शुक (D) तारापीड

58. 'निम्नगा' पद का अर्थ है–
(A) नदी (B) गङ्गोत्री
(C) सूची (D) समुद्र

59. 'अमृतसहोदरापि कटुविपाका' कौन है–
(A) लक्ष्मी (B) अमृत
(C) जलधि (D) चाण्डालकन्या

60. महाकवि मयूरभट्ट की बहन से विवाह हुआ था–
(A) बाणभट्ट का (B) वामनभट्ट का
(C) भूषणभट्ट का (D) महिमभट्ट का

61. ''परस्परं विरुद्धचेन्द्रजालमिव दर्शयन्ती प्रकटयति जगति निजं चरितम्'' इस पंक्ति में किसका वर्णन है–
(A) शुकनास का (B) लक्ष्मी का
(C) तारापीड का (D) चाण्डालकन्या का

62. 'उपशशाम' में लकार है–
(A) लृट् (B) लुट्
(C) लिट् (D) लङ्

63. 'दातारम्' पद में प्रकृति-प्रत्यय है–
(A) दा+तृच्+ द्वितीया, बहु. (B) दा+अम्+प्रथमा, एक.
(C) दा+तृच्+द्वितीया, एक. (D) दाञ्+घञ्+प्रथमा, बहु.

64. 'वारि' शब्द का तृतीया एक. में रूप होगा–
(A) वारेण (B) वारिणा
(C) वारिया (D) वारिसा

65. ''अवधारयन्तः'' में प्रत्यय है
(A) शानच् (B) तृच्
(C) शतृ (D) घञ्

66. ''ग्रहैरिव गृह्यन्ते मन्त्रैरिवावेश्यन्ते, पिशाचैरिव

ग्रस्यन्ते'' इत्यादि स्थलों में अलङ्कार है–
(A) रूपक (B) उत्प्रेक्षा
(C) निदर्शना (D) उपमा

67. ''पुरुषोत्तमरतापि खलजनप्रिया, रेणुमयीव स्वच्छमपि कलुषीकरोति'' इन पंक्तियों में अलङ्कार है–
(A) विरोधाभास (B) दीपक
(C) निदर्शना (D) उत्प्रेक्षा

68. '''विग्रहवत्यप्यप्रत्यक्षदर्शना'' इस पद में सन्धि है–
(A) हल्सन्धि (B) गुणसन्धि
(C) वृद्धिसन्धि (D) यण्सन्धि

69. 'अपरिणामोपशमः' का सन्धिविच्छेद होगा–
(A) अपरिणामा+ओपशम् (B) अपरिणाम+उपशमः
(C) अपरिणाम+औपशम (D) अपरीयाम+उपशमः

70. 'राजप्रकृतिः' में समास है–
(A) षष्ठी तत्पु. (B) बहुव्रीहि
(C) द्वन्द्व (D) अव्ययीभाव

71. 'विटान् पान्ति इति' इस व्युत्पत्ति से होगा–
(A) विटपाः (B) विटकाः
(C) विटकान् (D) विटायाः

72. शुकनासोपदेश में मुख्य प्रतिपाद्य विषय है–
(A) द्यूतक्रीडा का
(B) राज्यसञ्चालन का
(C) लक्ष्मी को प्राप्त करने की विधियों का
(D) युवावस्था में लक्ष्मीजन्य मानसिक विकृतियों एवं उनसे होने वाली हानियों का

73. कादम्बरी कथा का नामकरण हुआ है–
(A) नायक के नाम पर (B) नायिका के नाम पर
(C) दासी के नाम पर (D) शुकनास के नाम पर

74. चन्द्रापीड के एक जन्म का नाम था–
(A) वैशम्पायन (B) पुण्डरीक
(C) कपिञ्जल (D) शूद्रक

75. लक्ष्मी, पापी समझकर किसके पास तक नहीं जाती–
(A) विद्वानों के (B) धनहीनों के
(C) विनयशील के (D) राजाओं के

76. ''कुप्यन्ति हितवादिने'' यहाँ 'हितवादिने' में कौन सी विभक्ति किस सूत्र से हुई है–
(A) तृतीया–''हेतौ''
(B) षष्ठी–''षष्ठी शेषे''
(C) चतुर्थी–''क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः''
(D) सप्तमी–''आधारोऽधिकरणम्''

77. ''अकालप्रावृड्गुणकलहंसकानाम्, प्रस्तावना कपटनाटकस्य, पुरः पताका सर्वाविनयानाम्'' इत्यादि पंक्तियों में अलङ्कार है–
(A) उपमा (B) रूपक
(C) उत्प्रेक्षा (D) दीपक

78. समुद्रमन्थन से लक्ष्मी सहित कितने रत्न निकले थे–
(A) 18 (B) 17
(C) 14 (D) 19

79. 'असिधारा' पद का अर्थ है–
(A) तलवार की धार (B) जलधारा
(C) लक्ष्मी की चञ्चलता (D) समुद्र-प्रवाह

80. सरस्वती द्वारा अपनाये गए व्यक्ति को ईर्ष्या के कारण कौन नहीं अपनाती–
(A) राजागण (B) लक्ष्मी
(C) शुकनास (D) कादम्बरी

81. ''अकाला चासौ प्रावृट् इति अकालप्रावृट्'' यहाँ समास है–
(A) नञ् तत्पुरुष (B) कर्मधारय
(C) अव्ययीभाव (D) बहुव्रीहि

82. विदिशा, किस नदी के किनारे स्थित थी–
(A) वेत्रवती के (B) सरयू के
(C) गङ्गा के (D) महानदी के

83. चाण्डालकन्या किसके समीप आयी–
(A) महाश्वेता के (B) कादम्बरी के
(C) पुण्डरीक के (D) शूद्रक के

84. 'त्रिभुवनप्रसवभूमिरिव विस्तीर्णा'' विशेषता किसके लिए प्रयुक्त है–
(A) विदिशा (B) उज्जयिनी
(C) विन्ध्याटवी (D) हेमकूट

85. वैशम्पायन की प्रेमिका थी–
(A) कादम्बरी (B) महाश्वेता
(C) चाण्डालकन्या (D) विनता

86. कादम्बरी में वर्णन नहीं है–
(A) अच्छोदसरोवर का (B) पम्पासरोवर का
(C) शाल्मलीवृक्ष का (D) देवदारु का

87. वैशम्पायन पूर्व जन्म में था–
(A) शूद्रक (B) पुण्डरीक
(C) कुमारपालित (D) चन्द्रापीड

88. 'तुरङ्गबाण' किसकी उपाधि है–
(A) बाणभट्ट की
(B) अभिनवबाण की
(C) अम्बिकादत्तव्यास की
(D) भवभूति की

89. ''आधुनिक बाण'' के रूप में जाना जाता है–
(A) सुबन्धु को (B) बाण को
(C) अम्बिकादत्त व्यास को (D) दण्डी को

90. बाणभट्ट के भाई थे–
(A) 4 (B) 6
(C) 2 (D) 5

91. ''सम्पत्तिरूपी तिमिर में होने वाला अन्धापन कष्टकर होता है'' किसने कहा–
(A) चन्द्रापीड ने (B) तारापीड ने

(C) द्वारपाल ने (D) शुकनास ने

92. ''अहङ्कार से उत्पन्न उष्णता, शीतल औषधियों से भी शान्त नहीं होती'' यह कथन किसने किससे कहा–
(A) शुकनास ने चन्द्रापीड से
(B) चन्द्रापीड ने शुकनास से
(C) शुकनास ने तारापीड से
(D) चन्द्रापीड ने तारापीड से

93. ''त्रयीमयाय त्रिगुणात्मने नमः'' इस सूक्ति वाक्य में 'नमः' के योग में किस विभक्ति का प्रयोग हुआ है–
(A) चतुर्थी (B) षष्ठी
(C) पञ्चमी (D)प्रथमा

94. राज्याभिषेक के समय किसकी आवश्यकता होती है–
(A) सेना की (B) विश्राम की
(C) धन की (D) उपदेश की

95. कादम्बरी में वर्णित 'इन्द्रायुध' था–
(A) मन्त्री (B) राजा
(C) घोड़ा (D) वज्र

96. कादम्बरी विभक्त है–
(A) एक भाग में (B) तीन भागों में
(C) दो भागों में (D) चार भागों में

97. कादम्बरी की कथा का अन्त होता है–
(A) तारापीड-पत्रलेखा के मिलन से
(B) चाण्डालकन्या-शूद्रक के मिलन से
(C) वैशम्पायन-जाबालि के मिलन से
(D) चन्द्रापीड-कादम्बरी के मिलन से

98. कामपीड़ा में दिवङ्गत हो गया था–
(A) तारापीड (B) वैशम्पायन
(C) पुण्डरीक (D) द्वैपायन

99. चन्द्रापीड पिता के बुलाने पर आता है–
(A) उज्जयिनी में (B) अच्छोदसरोवर में
(C) विदिशा में (D) हेमकूटपर्वत में

100. चन्द्रापीड का राज्याभिषेक करने की इच्छा किसे हुई–
(A) वैशम्पायन को (B) शुकनास को
(C) तारापीड को (D) कादम्बरी को

उत्तरमाला

1. (D)	2. (B)	3. (C)	4. (A)	5. (D)	6. (B)
7. (C)	8. (B)	9. (A)	10. (C)	11. (A)	12. (D)
13. (A)	14. (C)	15. (D)	16. (C)	17. (A)	18. (D)
19. (A)	20. (B)	21. (C)	22. (A)	23. (C)	24. (D)
25. (C)	26. (A)	27. (B)	28. (A)	29. (B)	30. (B)
31. (B)	32. (B)	33. (B)	34. (C)	35. (A)	36. (A)
37. (B)	38. (A)	39. (B)	40. (C)	41. (B)	42. (B)
43. (A)	44. (A)	45. (D)	46. (C)	47. (D)	48. (C)
49. (C)	50. (B)	51. (B)	52. (C)	53. (D)	54. (A)
55. (A)	56. (D)	57. (B)	58. (A)	59. (A)	60. (A)
61. (B)	62. (C)	63. (C)	64. (B)	65. (C)	66. (B)
67. (A)	68. (D)	69. (B)	70. (A)	71. (A)	72. (D)
73. (B)	74. (D)	75. (C)	76. (C)	77. (B)	78. (C)
79. (A)	80. (B)	81. (B)	82. (A)	83. (D)	84. (A)
85. (B)	86. (D)	87. (B)	88. (A)	89. (C)	90. (C)
91. (D)	92. (A)	93. (A)	94. (D)	95. (C)	96. (C)
97. (D)	98. (C)	99. (A)	100. (C)		

4.18 हर्षचरितम्

लेखक - बाणभट्ट
काव्यविधा- आख्यायिका
उच्छ्वास- ८ (आठ)
उच्छ्वासों का नाम

उच्छ्वास-	**नाम**
प्रथम	वात्स्यायनवंश वर्णन
द्वितीय	राजदर्शन
तृतीय	राजवंश-वर्णन
चतुर्थ	चक्रवर्ति-जन्मवर्णन
पञ्चम	महाराज-मरण-वर्णन
षष्ठ	राजप्रतिज्ञा-वर्णन
सप्तम	छत्रलब्धि
अष्टम	विन्ध्याद्रिनिवेशन

उपजीव्य- ऐतिहासिक घटना

रीति- पाञ्चाली
शैली- उत्कृष्ट गद्य-शैली
प्रधान/अङ्गी रस- वीररस **अङ्ग रस-** करुण, शृङ्गार

हर्षचरितम्

➢ महाराज हर्षवर्धन का जीवन-परिचय होने के कारण इस आख्यायिका का नाम 'हर्षचरित' पड़ा।
हर्षस्य चरितम् अस्मिन् इति हर्षचरिततम्- **बहुव्रीहि समास**
''आख्यायिका कथावत्स्यात्कवेर्वंशानुकीर्तनम्।
अस्यामन्यकवीनां च वृत्तं पद्यं क्वचित्क्वचित्॥
कथांशानां व्यवच्छेद आश्वास इति बध्यते।
आर्यावक्त्रापवक्त्राणां छन्दसा येन केनचित्॥'' (सा०द०)

➢ उपर्युक्त लक्षणानुसार 'हर्षचरित' में यत्र-तत्र वक्त्र छन्द का प्रयोग किया गया है।

➢ कथावस्तु के आधार पर इस आख्यायिका के दो खण्ड है-
1. महाकवि बाणभट्ट का जीवन परिचय (1-2 उच्छ्वासों में)

2. महाराज हर्ष का जीवन चरित (3-8 उच्छ्वासों में)

- हर्षचरित 8 उच्छ्वासों में विभक्त आख्यायिका है।

हर्षचरित का मङ्गलाचरण

नमस्तुङ्गशिरश्चुम्बिचन्द्रचामरचारवे।
त्रैलोक्यनगरारम्भमूलस्तम्भाय शम्भवे॥

भावार्थ- त्रिभुवन रूपी नगर के निर्माण- आरम्भ के मूलस्तम्भ, उन्नत मस्तक पर चन्द्र के चँवर की शोभा है, उन भगवान् शङ्कर को नमस्कार है।

- इस माङ्गलिक पद्य में भगवान् शिव की स्तुति की गयी है।
- यह नमस्कारात्मक मङ्गलाचरण है।
- इसमें अनुष्टुप् छन्द का प्रयोग है।
- हर्षचरित के मङ्गलाचरण के रूप में 21 श्लोकों का प्रयोग किया गया है।
- मङ्गलाचरण से प्रारम्भ करके प्रारम्भिक 21 इक्कीस श्लोकों में देव स्तुति, पूर्ववर्त्ती कवियों का स्मरण, सज्जन प्रशंसा एवं दुर्जनों की निन्दा है।
- द्वितीय श्लोक में **पार्वती** की स्तुति है।
- तृतीय में महाकवि **व्यास** का स्मरण।
- श्लोक 4,5,6 में कुकवि निन्दा।
- सातवें,आठवें श्लोक में 'काव्य के देश के आधार पर रूप भेद।'
- नवें श्लोक में व्यास की वाणी तथा महाभारत की प्रशंसा।
- दशवें श्लोक में आख्यायिकाकारों की वन्दना।
- ग्यारहवें में '**सुबन्धु** एवं उनकी रचना '**वासवदत्ता**' की प्रशंसा।
- बारहवें में कवि '**हरिश्चन्द्र**' की प्रशंसा।
- तेरहवें में कवि '**सातवाहन**' की प्रशंसा।
- चौदहवें में '**प्रवरसेन**' एवं उनकी कृति '**सेतुबन्ध**' की प्रशंसा।
- पन्द्रहवें में महाकवि '**भास**' की प्रशंसा।
- सोलहवें में '**महाकवि कालिदास**' की प्रशंसा।
- सत्रहवें में '**गुणाढ्य की बृहत्कथा**' की प्रशंसा।
- अठारहवें में कवि '**आढ्यराज**' की प्रशंसा।
- उन्नीसवें तथा बीसवें में 'आख्यायिका लेखन की इच्छा'
- इक्कीसवें में 'महाराज हर्ष के विजय की कामना।'

हर्षचरित के कथावस्तु का सारांश

भाग-1

प्रथम उच्छ्वास

- इस भाग में प्रथम एवं द्वितीय उच्छ्वास की कथा है। जिसमें महाकवि बाणभट्ट के 'वात्स्यायन' वंश का वर्णन है।
- कथानक का प्रारम्भ ब्रह्मलोक में बैठे ब्रह्मा जी से होती है, जो इन्द्रादि देवताओं की उपस्थिति में शाश्वत ब्रह्म के विषय में चर्चा कर रहे थे।
- ब्रह्मा जी की सेवा में मनु, दक्ष, चाक्षुष आदि प्रजापति तथा सप्तर्षि आदि महर्षि संलग्न थे।
- अन्य विद्वानों से किसी मत पर दुर्वासा से मन्दपाल नामक दूसरे मुनि से झगड़ा हो जाता है।
- दुर्वासा, 'मुनि अत्रि' के पुत्र तथा तारापति (चन्द्रमा) के भाई हैं जो क्रोध के कारण सामगान को स्वरभङ्ग कर देते हैं।

''मुनिरत्रेस्तनयस्तारापतेर्भ्राता नाम्ना दुर्वासा द्वितीयेन मन्दपालनाम्ना मुनिना सह कलहायमानः सामगायन्क्रोधान्धो विस्वरम् अकरोत्।''

- ब्रह्मा जी के पास चँवर डोलाती सरस्वती, दुर्वासा के स्वरहीन पाठ को सुनकर हँस पड़ती है।
- सरस्वती के हँसने पर दुर्वासा उन्हें मर्त्यलोक में जाने का शाप दे देते हैं-

''दुर्विनीते! व्यपनयामि ते विद्याजनितामुन्नतिमिमाम्, अधस्ताद् गच्छ मर्त्यलोकम्।''

- सावित्री भी ब्रह्मा जी के पास में सदेह (शरीर सहित) बैठी हैं और दुर्वासा को अपमानित करती हैं।
- तत्पश्चात् ब्रह्मा जी अभिशप्त सरस्वती के साथ सावित्री को भी मर्त्यलोक भेजने का निर्णय लेते हैं।

''वत्से सरस्वती! विषादं मा गाः एषा त्वामनुयास्यति त्वया।''

- सरस्वती ने ब्रह्मा जी की तीन बार प्रदक्षिणा करके सावित्री के साथ मर्त्यलोक के लिए प्रस्थान किया।
- ब्रह्मलोक से आते समय सरस्वती, 'हिरण्यवाह' नामक महानद (अब सोन नदी) की रमणीयता से इसी स्थान पर रहने की इच्छा व्यक्त करती हैं तथा सावित्री भी इसी का समर्थन करती हैं।
- इसी स्थान पर सरस्वती ने बालू का शिवलिङ्ग बनाकर शिव की अष्टमूर्तियों का ध्यान किया और कई दिन बिताए।
- एक दिन घोड़े पर सवार एक 18 वर्ष के नवयुवक और साथ में कुछ लोगों को आते हुए उन दोंनो ने देखा।
- परिचय करने पर पता चला कि वह युवक, महर्षि च्यवन और सुकन्या के पुत्र 'दधीचि' हैं।
- प्रथम दर्शन में ही सरस्वती और दधीचि एक दूसरे पर आसक्त हो जाते हैं।
- सोननदी के पार च्यवन आश्रम में रहते हुए दधीचि काम से पीड़ित होकर क्षीण हो जाते हैं।
- मालती नामक दूती इस बात की सूचना लेकर सरस्वती के पास आती है और सरस्वती भी प्रणय की स्वीकृति दे देती हैं।
- सरस्वती, दधीचि से बताती है कि ''वह दुर्वासा द्वारा शापित होकर मर्त्यलोक में आयी हैं।''
- एक वर्ष तक साथ रहते हुए सरस्वती गर्भिणी होती हैं।
- पुत्र जन्म के पश्चात् ब्रह्मा जी के प्रभाव से शाप का अन्त होता है और सरस्वती, सावित्री के साथ ब्रह्मलोक चली जाती हैं।
- सरस्वती के वियोग में दधीचि अपने पुत्र को भाई की पत्नी

को सौपकर वन में चले गये।

- भाई की पत्नी 'अक्षमाला' ने अपने और दधीचि के पुत्र को समान रूप से पाला-पोसा तथा एक का नाम 'सारस्वत' तथा दूसरे का नाम 'वत्स' रखा।
- बड़े होने पर अपने हमवयस्क भाई और मित्र 'वत्स' का विवाह कराकर तथा उसी प्रदेश में प्रीति होने के कारण 'प्रीतिकूट' नामक निवास बनाकर सारस्वत भी वन चले गये।
- इसी वंश परम्परा में कुबेर तथा कुबेर के चार पुत्र- अच्युत, ईशान, हर और पाशुपत हुए।
- पाशुपत के एक ही पुत्र अर्थपति के भृगु, हंस, शुचि,कवि, महीदत्त, धर्म,जातवेदस्, चित्रभानु, त्र्यक्ष, अहिदत्त और विश्वरूप नामक ग्यारह पुत्र हुए।
- चित्रभानु और राजदेवी से बाण पैदा हुए, किशोरावस्था में चन्द्रसेन और मातृषेण आदि आवारा मित्रों का साथ पाकर, तथा युवावस्था में स्वच्छन्द होकर बाण खिल्ली के पात्र बन गये।
- तत्पश्चात् विद्वत्जनों के सम्पर्क से बाण विद्वान् होकर देश-देशान्तर में भ्रमण किये तथा बाद में अपने गाँव प्रीतिकूट आकर मोक्षसुख जैसा अनुभव किया।

प्रथम उच्छ्वास समाप्त

द्वितीय उच्छ्वास

- ग्रीष्म ऋतु के एक शाम को महाराज हर्ष के भाई कृष्ण के द्वारा भेजे गये भृत्य का आगमन होता है।
- चन्द्रसेन उस मेखलक नामक भृत्य को बाण के पास ले आता है।
- मेखलक द्वारा सन्देश प्राप्त होता है कि महाराज के भाई कृष्ण ने बाण को राजकुल में आने का निवेदन किया है।
- उस दिन मेखलक को विश्राम और भोजन कराने के लिए बाण ने चन्द्रसेन को आदेशित किया तथा राजकुल में जाने का इरादा पक्का किया।
- अगले दिन सुबह पूजापाठ करके श्वेत वस्त्र, श्वेत माला, श्वेत चन्दन धारण करके सभी लोगों से आज्ञा लेकर बाण प्रीतिकूट से निकल गये।
- पहले दिन बाण चण्डिका वन पार करके '**मल्लकूट**' नामक गाँव में अपने मित्र जगत्पति के घर ठहरे।
- दूसरे दिन गङ्गा नदी पार करके '**यष्टिगृहक**' नामक गाँव में रात बितायी।
- अगले दिन राप्ती नदी के किनारे **मणिपुर** नामक ग्राम के समीप छावनी में पहुँचे तत्पश्चात् राजभवन को गये।
- मेखलक के परिचय बताने पर '**परियात्र**' नामक दौवारिक बाण को अन्दर ले जाता है।
- अन्दर पहुँचकर बाण ने अनेक प्रकार के हाथी, घोड़े और ऊटों को देखा।
- हजारों राजाओं से भरे तीन ड्योढियों को पार करके चौथी में बाण ने चक्रवर्ती महाराज हर्ष को देखा।
- महाराज हर्ष ने बाण की ओर देखा और मालवराज के पुत्र से कहा-''यह तो लम्पट है।'' ''**महानयं भुजङ्गः।**''
- बाण, महाराज हर्ष से कहते हैं, देव! मैं तो गृहस्थ हूँ मेरे अन्दर कौन-सी भुजङ्गता है- ''**का मे भुजङ्गता।**''
- बाण के अपने अनेकों गुणों के बारे में बताने पर हर्ष कहते हैं, मैंने भी ऐसा ही सुना है- ''**एवमस्माभिः श्रुतम्।**''
- इस प्रकार बाण, हर्ष से प्रसन्न होकर उन्हें अत्यन्त उदार बताते हैं- ''अतिदक्षिणः खलु देवो हर्षः।''

द्वितीय उच्छ्वास समाप्त

भाग-2

तृतीय उच्छ्वास

- शरद् ऋतु के एक दिन बाण अपने गाँव प्रीतिकूट में लौट आये और अपने बन्धु-बान्धुओं से भेंट की।
- ग्रामीण तथा परिवारी जनों ने बाण का स्वागत-सत्कार किया।
- बाण के सबसे छोटे-चचरे भाई श्यामल की इच्छा पर बाण ने देव हर्ष के जीवन- चरित को कहना प्रारम्भ किया।
- 'श्रीकण्ठ' नाम का एक जनपद था। वह पुण्यशाली लोगों का निवास और पृथ्वी पर स्वर्ग के समान था।
- कुबेर की नगरी अलका के समान उस श्रीकण्ठ जनपद की राजधानी थी **स्थाणीश्वर** (थानेश्वर)।
- उस स्थाणीश्वर में '**पुष्यभूति**' नाम का एक राजा हुआ जो भगवान् शिव का अनन्य भक्त था।
- पुष्यभूति ने सुना था कि कोई '**भैरवाचार्य**' नामक दाक्षिणात्य महाशैव हैं, जो साक्षात् शिव के अवतार हैं।
- पुष्यभूति, विना देखे ही **भैरवाचार्य** के प्रति श्रद्धा करने लगे और उनके दर्शन की आकांक्षा करने लगे।
- एक दिन एक परिव्राजक, पुष्यभूति से मिलने आता है और बताता है कि 'वह भैरवाचार्य की आज्ञा से आया है।'
- वह परिव्राजक भैरवाचार्य द्वारा दिये गये 'रत्नजटित पाँच चाँदी के कमलों' को पुष्यभूति को अर्पित करता है।
- अगले दिन मिलने की बात कहकर पुष्यभूति, परिव्राजक को विदा करते हैं।
- दूसरे दिन राजा सरस्वती नदी के पास जंगल के आश्रम में भारी साधुओं के बीच **भैरवाचार्य** को देखा।
- भैरवाचार्य दूर से ही राजा को देखकर, तथा उनके पास जाकर श्रीफल का उपहार भेंट कर '**स्वस्ति**' का उच्चारण किया।
- राजा उनको प्रणाम करके, आशीर्वाद प्राप्त करके लौट आते हैं।
- अगले दिन भैरवाचार्य राजा से मिलने जाते हैं और अपने शिष्य पातालस्वामी द्वारा ब्रह्मराक्षस के हाथ से छीने गये'अट्टहास' नामक कृपाण भेंट करते हैं।
- कुछ दिन बाद राजा, कृष्णचतुर्दशी को भैरवाचार्य द्वारा दीक्षित किये गये और उनके शिष्य टीटिभ, कर्णताल और पातालस्वामी से मिले।
- राजा को लक्ष्मी द्वारा **हर्ष** नामक पुत्र की प्राप्ति का वरदान

मिलता है।

- राजा के ही प्रयास से लक्ष्मी द्वारा **भैरवाचार्य** को सिद्धि प्राप्त होती है।
- राजा, टीटिभ आदि के साथ लौट आते हैं।

* तृतीय उच्छ्वास समाप्त *

चतुर्थ उच्छ्वास

- पुष्यभूति के वंश में 'प्रभाकरवर्धन' नामक राजाधिराज हुआ जिसका दूसरा नाम 'प्रतापशील' था, जो सूर्यभक्त था।
- उस राजा की 'यशोवती' नाम की पटरानी थी।
- स्वप्न के बाद रानी गर्भवती होती हैं और राज्यवर्धन का जन्म होता है। समय के साथ राज्यवर्धन बड़े हुए।
- तत्पश्चात् जेठ महीने के कृष्ण पक्ष की कृत्तिका नक्षत्र में द्वादशी तिथि को **हर्ष** पैदा हुए।
- पूरे राज्य में उत्सव मनाया जाने लगा और धीरे-धीरे समय बीतने पर हर्ष भी बढ़ने लगे।
- जब हर्ष अपने पैरों पर चलने लगे, तब उनकी माता यशोवती ने एक पुत्री **'राज्यश्री'** को जन्म दिया।
- रानी यशोवती के भाई का आठ वर्षीय पुत्र भण्डि भी दोनों राजकुमारों के अनुचर के रूप में रहने लगा।
- राजा प्रभाकरवर्धन ने मालवराज के पुत्र कुमारगुप्त और माधवगुप्त को अनुचर हर्ष के रूप में नियुक्त करते हैं।
- इधर 'राज्यश्री' भी यौवन को प्राप्त हो गयी और राजा को उसके विवाह की चिन्ता सताने लगी।
- इसके बाद पत्नी और दोनों पुत्रों से सलाह कर मौखरि-वंशीय क्षत्रिय कुल में उत्पन्न 'अवन्तिवर्मा' के पुत्र 'ग्रहवर्मा' के साथ विवाह सुनिश्चित हुआ।
- ज्योतिषियों ने लग्न निकाला और सारी तैयारियों के बाद विवाह सम्पन्न हुआ तथा दस दिनों तक रुकने के बाद ग्रहवर्मा अपनी वधू राज्यश्री के साथ अपने निवास स्थान पर चला गया।

* चतुर्थ उच्छ्वास समाप्त *

पञ्चम उच्छ्वास

- किसी समय राजा प्रभाकरवर्धन अपने पुत्र राज्यवर्धन के साथ हूणों से युद्ध करने के लिए उत्तरापथ की ओर गये।
- एक रात हर्ष को किसी अनिष्ट का स्वप्न आता है, कुरंगक नामक लेखहारक (पत्रों का आदान-प्रदान करने वाला) महाराज के बीमारी की सूचना लेकर आता है।
- आनन-फानन में हर्ष उनके पास जाने के लिए उद्यत हुए और रास्ते में बहुत ही अपशकुन दिखायी दिया।
- अगले दिन दोपहर स्कन्धावार पहुँचकर हर्ष ने काफी सन्नाटा देखा। हर जगह शोक ही बिखरा था।
- हर जगह उनके स्वास्थ्य सम्बन्धी यज्ञ, पूजन, पाठ, जप आदि किया जा रहा था। वैद्यकुमार सुषेण भी अप्रसन्न थे।
- राजा का दाह ज्वर बढ़ता ही जा रहा था। इसी बीच हर्ष को देखकर पिता जी ने उसे अपने पास बुलाकर आलिङ्गन किया और शोक न करने का आग्रह किया।
- आयुर्वेद के श्रेष्ठ वैद्य कुमार '**रसायन**' भी राजा के' दाह को कम करने में असमर्थ हो गये।
- यशोवती की प्रतीहारी हर्ष, को सूचना देती है कि महाराज के जीते जी देवी यशोवती आत्मदाह करने जा रही हैं।
- हर्ष के अनुनय-विनय के बाद भी माता ने हर्ष को आलिङ्गन करके अग्नि में प्रवेश किया।
- माँ की मृत्यु के पश्चात् हर्ष पिता के पास गये। शोकातुर हर्ष को देखकर राजा दुःखी हुए और राज्यविषयक कुछ उपदेश देकर हमेशा के लिए आँखे मूँद लिए।
- राजपुरोहितों की उपस्थिति में हर्ष द्वारा सरस्वती नदी के किनारे महाराज का अंतिम संस्कार किया गया।
- इस प्रकार दुःखी हर्ष, बड़े भाई के दर्शन की उत्कण्ठा से उनके आगमन की प्रतीक्षा करने लगे।

* पञ्चम उच्छ्वास समाप्त *

षष्ठ उच्छ्वास

- महाराज की मृत्यु के पश्चात् उनकी समस्त वस्तुएं ब्राह्मणों को दान दे दी गयीं।
- राज्यवर्धन के आने पर देव हर्ष अपने शोक को रोक न सके और वे शोक आँखों से निकल पड़े।
- पिता की मृत्यु के शोक से राज्यवर्धन ने तलवार छोड़कर संन्यास अपनाने का निर्णय लिया।
- इस निर्णय से हर्ष अत्यन्त दुःखी हुए, इसी बीच राज्यश्री का सेवक आता है।
- उस संवादक नामक परिचारक से पता चलता है कि 'मालवराज ने ग्रहवर्मा की हत्या कर दी, तथा राज्यश्री को कारागार में डाल दिया।'
- जीजा की मृत्यु, बहन का बंदी बनना, इसको अपने राज्य पर आक्रमण की आशङ्का से राज्यवर्धन, भण्डि सहित दस हजार घोड़ों की सेना के साथ मालवराज से युद्ध के लिए निकल पड़े।
- दुःखद घटनाओं के साथ जी रहे हर्ष को कुन्तल नामक घुड़सवार आकर बताता है कि राज्यवर्धन, मालव राज्य को जीत लिये लेकिन गौडाधिपति द्वारा छल से मारे गये।
- देव हर्ष ने अपने प्रधानसेनापति 'सिंहनाद', और गजसेनापति स्कन्दगुप्त से विचार-विमर्श करके युद्ध प्रयाण के लिए तैयारियाँ शुरु कर दी।

* षष्ठ उच्छ्वास समाप्त *

सप्तम उच्छवास

- ज्योतिषियों को बुलाकर हर्ष ने सेना के प्रयाण का मुहूर्त निकलवाया।
- युद्ध सम्बन्धी सारी तैयारियाँ पूरी हुईं, सामान हाथियों, बैलगाड़ियों पर लाये गये और अनेक राजाओं से राजद्वार भरा हुआ था।
- वीर सम्राट् ने राजसमूह को योग्यतानुसार विभक्त किया और सैनिक प्रयाण की आज्ञा दिया।

- कटक से जाने के बाद रास्ते में महाराज **प्राग्ज्योतिषेश्वर** का दूत हंसवेग, हर्ष को प्रणाम करके उन्हें 'आभोग' नामक छत्र प्रदान करता है।
- हंसवेग बताता है कि उसके महाराज ने पूँछा है कि, 'क्या आप उनका सहयोग स्वीकार करेंगे?'' हर्ष के सकारात्मक उत्तर देने पर हंसवेग चला जाता है।
- मालव सेना को जीतने गया भण्डि भी आकर हर्ष से मिलता है और बताता है कि 'गुप्त' नामक व्यक्ति ने कुशस्थल (कान्यकुब्ज) पर अधिकार कर लिया तब देवी राज्यश्री बन्धन से छूटकर अपने परिवार के साथ विन्ध्याचल के जंगल में चली गयीं।
- भण्डि के निवेदन पर हर्ष दूसरे दिन राज्यवर्धन द्वारा जीते गये सेना, हाथी, घोड़ों को देखने जाते हैं और कुछ लोगों को बहन राज्यश्री को खोजने के लिए विन्ध्याटवी भेजते हैं।
- हर्ष अपनी सेना के साथ उसी वनग्राम में दो दिन बिताते हैं।

* सप्तम उच्छ्वास समाप्त *

अष्टम उच्छ्वास

- दूसरे दिन हर्ष वन ग्राम से निकलकर विन्ध्याटवी में गये तभी **शरभकेतु** नाम के जंगली प्रदेशों के राजा का पुत्र **व्याघ्रकेतु** एक शबर युवक के साथ हर्ष से मिलने आया
- उस युवक को कुछ दूर पर रोककर ही व्याघ्रकेतु ने बताया कि वह युवक '**भूकम्प**' नाम के शबर सेनापति का भांजा '**निर्घात**' है जो विन्ध्याटवी के पत्ते-पत्ते की खबर रखता है।
- उसी द्वारा बताए गये मार्ग से हर्ष, ग्रहवर्मा के मित्र एक बौद्ध भिक्षु के पास राज्यश्री का पता लगाने के लिए जाते हैं।
- वहीं बौद्ध आश्रम में किसी अन्य भिक्षु द्वारा बताया जाता है कि 'कोई सुन्दर स्त्री विपत्ति में आत्मदाह करने के लिए तैयार है, कृपया उसकी रक्षा करें।
- अपने शिष्यों के साथ बौद्ध (दिवाकरमित्र) आगे-आगे चले, उनके पीछे हर्ष भी अपने सामन्तों के साथ गये।
- वहाँ पहुँच कर हर्ष ने मूर्च्छित-सी एवं अग्नि-प्रवेश के लिए तैयार राज्यश्री को देखा और दौड़कर उसके ललाट को अपने हाथों पर टिका लिया।
- उस रात राज्यश्री को लेकर हर्ष बौद्ध आश्रम में चले गये और रात्रि व्यतीत किया।
- दिवाकरमित्र '**एकावली**' नाम की एक अक्षमाला हर्ष की भुजाओं में बाँध दिया।
- हर्ष ने दिवाकरमित्र से निवेदन किया कि वह राज्यश्री को गौडाधिपति की हत्या तक अपने आश्रय में ही रखें।
- निर्घात को इनाम देकर विदा करने के बाद हर्ष, आचार्य और राज्यश्री सहित कटक लौट आये।

* अष्टम उच्छ्वास समाप्त *

हर्षचरित की उच्छ्वासवार प्रमुख घटनाएं

प्रथम उच्छ्वास

- ब्रह्मा जी की गोष्ठी में विवाद।
- दुर्वासा का सरस्वती को शाप देना।
- ब्रह्मलोक से सरस्वती और सावित्री का प्रस्थान।
- दधीचि वर्णन।
- सारस्वत का जन्म।

द्वितीय उच्छ्वास

- भ्राता कृष्ण के दूत मेखलक का आगमन तथा कृष्ण का संदेश बाण को देना।
- बाण का राजद्वार गमन।
- प्रतीहार परियात्र वर्णन।
- बाण का हर्ष से भेंट।

तृतीय उच्छ्वास

- बाण का अपने गाँव प्रीतिकूट लौटना।
- बाण के भाइयों की हर्षचरित सुनाने की प्रार्थना।
- पुष्यभूति वर्णन।
- भैरवाचार्य का वर्णन।
- पुष्यभूति का श्रीकण्ठ नाग से युद्ध।
- प्रसन्न लक्ष्मी का पुष्यभूति को वर देना।

चतुर्थ उच्छ्वास

- प्रभाकरवर्धन तथा राज्यवर्धन का वर्णन।
- हर्ष का जन्म।
- राज्यश्री का जन्म एवं विवाह।

पञ्चम उच्छ्वास

- युद्ध के लिए राज्यवर्धन का प्रयाण।
- कुरंगक का आगमन।
- यशोवती का आत्मदाह वर्णन।
- प्रभाकरवर्धन की मृत्यु।

षष्ठ उच्छ्वास

- राज्यवर्धन का लौटना।
- ग्रहवर्मा की मृत्यु एवं राज्यश्री को कारावास।
- राज्यवर्धन का युद्ध हेतु प्रयाण एवं मृत्यु।
- हर्ष की दिग्विजय प्रतिज्ञा।

सप्तम उच्छ्वास

- युद्ध हेतु सैनिकों का प्रयाण।
- हंसवेग तथा छत्रवर्णन।
- भण्डि का आगमन।
- विन्ध्याटवी वर्णन।

अष्टम उच्छ्वास

- हर्ष का विन्ध्याटवी प्रवेश।
- बौद्धभिक्षु दिवाकरमित्र वर्णन।
- हर्ष का राज्यश्री से मिलन।

प्रमुख पात्रों का परिचय

सरस्वती और सावित्री

- सरस्वती वाणी की अधिष्ठात्री देवी एवं ब्रह्माजी की कुमारी

कन्या थीं सावित्री, सरस्वती की सखी थीं।

- दुर्वासा के शाप के पश्चात् सरस्वती के साथ सावित्री भी मर्त्यलोक पर आती हैं।
- सरस्वती का दधीचि से प्रेम हो जाता है।
- सरस्वती मुग्धा और सावित्री प्रगल्भा थीं।
- सरस्वती, दधीचि के प्रति अनुराग की बात छिपाये रहती हैं और मालती के जाने पर सावित्री से बताती हैं।
- इस प्रकार सरस्वती एक सहिष्णु, लज्जाशील तथा सावित्री एक सवेदनशील नारी हैं।

बाण

- हर्षचरित के रचयिता बाण भी इस आख्यायिका के मुख्य पात्र हैं।
- बाण ने इस आख्यायिका में स्वयं को 'उत्तम पुरुष' से नहीं बल्कि 'अन्य पुरुष' के माध्यम से कहा है।
- साधारण व्यक्ति की तरह बाण ने खुद के गुणों के साथ दोषों का भी वर्णन किया है।
- 14 वर्ष की आयु में ही माता-पिता की मृत्यु के पश्चात् बाण मारे-मारे फिरने लगे।
- घुमक्कड़ होने के साथ-साथ अपने भाई-बन्धुओं से मिलकर रहे।
- अपने गुरु 'भर्वुशर्मा' से विद्वता को प्राप्त करके यश रूपी शरीर से अमर हो गये।

राज्यवर्धन

- एक आज्ञाकारी पुत्र, स्नेहशील भाई और वीर योद्धा के रूप में राज्यवर्धन का वर्णन है।
- पिता की आज्ञानुसार वे हूणों से युद्ध के लिए चले जाते हैं।
- माता-पिता की मृत्यु पश्चात् राज्यवर्धन अपने घर आते हैं और संन्यासी होने की इच्छा व्यक्त करते हैं।
- अपने जीजा की मृत्यु के पश्चात् गौडाधिपति द्वारा छल से मार दिये जाते हैं।
- हर्ष के प्रति उनका हृदय सर्वथा अकलुषित था।

हर्षवर्धन

- हर्ष एक चक्रवर्ती सम्राट् थे। उनके अन्दर सद्गुणों का भण्डार छिपा था। हर्ष को **आख्यायिका का नायक** भी कह सकते हैं।
- हर्ष जन्म से ही एक महापुरुष थे, किसी ज्योतिषी ब्राह्मण ने जन्म के पूर्व ही भविष्य वाणी की थी।
- हर्ष का अपने पिता के प्रति अनन्य भक्ति थी। इसीलिए पिता के बीमार पड़ने पर वे कुछ खाते नहीं हैं।
- भाई राज्यवर्धन एवं बहन राज्यश्री के प्रति भी उनका उच्च आदर्श था।
- अपने ममेरे भाई भण्डि के प्रति भी उनका सहोदर जैसे प्रेम था।
- भाई और जीजा की मृत्यु के बाद वे शत्रु विनाश की प्रतिज्ञा लेते हैं।
- इस प्रकार हर्ष का व्यक्तित्व निर्भीक, साहसी, कर्त्तव्य परायण एवं स्नेहमय मिलता है।

राज्यश्री

- राज्यश्री प्रभाकरवर्धन की पुत्री, तथा हर्षवर्धन की बहन थी। उसका विवाह ग्रहवर्मा से हुआ था।
- ग्रहवर्मा की मृत्यु के पश्चात् उसे बंदी बना लिया जाता है।
- बंदीगृह से छूटने पर वही सुन्दरी विन्ध्याटवी में जाकर आत्मदाह का प्रयत्न करती है।
- वह हर्ष और दिवाकरमित्र द्वारा बचाई जाती है बाद में कषाय वस्त्र धारण करने की इच्छा व्यक्त करती है।
- इस प्रकार राज्यश्री भारतीय नारी के अनुकूल आचरण करती है।

प्रमुख सूक्तियाँ

1. निर्गतासु न वा कस्य कालिदासस्य सूक्तिषु। प्रीतिर्मधुरसान्द्रासु मञ्जरीष्विव जायते॥ (1/16)

भावार्थ- "नई निकली हुई मञ्जरियों के समान मधुर एवं सरस कालिदास की सूक्तियों में उत्तरमात्र से ही किसे आनन्द नहीं आता।"

2. सहजलज्जाधनस्य प्रमदाजनस्य प्रथमाभिभाषणमशालीनता।

भावार्थ- सावित्री, विकुक्षि नामक भृत्य से कहती है, "सहज लज्जाशील नारियों का पहले ही बोल बैठना बड़ी ही धृष्टता है।"

3. परोपकारः सतां व्यसनम्। (2/2)

भावार्थ- दूसरे का उपकार करना सज्जनों का एक स्वाभाविक व्यसन होता है।

4. सलिलानि इव गतानुगतिकानि लोलानि खलु भवन्त्यविवेकिनां मनांसि।

भावार्थ- "मन्दबुद्धियों के चित्त जल की तरह अस्थिर और दूसरों के कहे पर चलते हैं।"

5. न कुतूहलि कस्य मनश्चरितम् च महात्मनां श्रोतुम्। (3/2)

भावार्थ- "महात्माओं के चरित सुनने के लिए भला किसके मन में कुतूहल पैदा नहीं होता।"

6. प्रतनुगुणग्राह्याणि कुसुमानीव हि भवन्ति सतां मनांसि।

भावार्थ-"जैसे महीन सूत से फूल बँध जाते हैं उसी प्रकार सज्जनों के मन थोड़े गुणों से भी गृहीत हो जाते हैं।"

7. भवादृशा एव भाजनं भूतेः।

भावार्थ- "आप जैसे लोग ही ऐश्वर्य के भाजन होते हैं।"

8. लोके हि लोहेभ्यः कठिनतराः खलु स्नेह-मया बन्धनपाशाः।

भावार्थ- "सचमुच संसार में स्नेह के बंधनपाश लोहे से भी बढ़कर सख्त होते हैं।"

9. महासत्त्वता हि प्रथममवलम्बनं लोकस्य पश्चाद्राजबीजिता।

भावार्थ- ''महासत्त्वता ही संसार का पहला आलम्बन है, फिर राजपुत्रता।''

10. सज्जनमाधुर्याणामभृतदास्यो दश दिशः।

भावार्थ- ''सभी दिशाएं सज्जनों के मधुर स्वभाव के कारण ही अवैतनिक दासी बन जाती हैं।''

11. सेवाभीरवो हि सन्तः।

भावार्थ- ''सज्जन लोग अपनी सेवा से डरते हैं।''

12. अलोहः खलु संयमनपाशः सौजन्यमभिजातानाम्।

भावार्थ- ''सचमुच कुलीन पुरुषों का सौजन्य बिना लोहे के बना हुआ बाँधने वाला पाश है।''

13. एकोऽपि प्रतिसंख्यानक्षण आधारीभवति धृतेः।

भावार्थ- ''विवेक का एक क्षण भी धृति के लिए बड़ा सहारा होता है।''

14. अर्थिजने च किमिव नातिसृजन्ति महान्तः।

भावार्थ- ''बड़े लोग प्रार्थी के लिए क्या नहीं दे डालते।''

15. भव्या न द्विरुच्चारयन्ति वाचम्।

भावार्थ- ''भाग्यशाली लोग उसी बात को दुबारा नहीं करते।''

तत्थ्यात्मक ज्ञान

- हर्षचरित एक शुद्ध आख्यायिका है।
- हर्षचरित बाण की सर्वप्रथम रचना है।
- हर्षचरित का वक्ता स्वयं कवि है।
- यह विशुद्ध साहित्यक शैली में निबद्ध एक रोचक वर्णनात्मक प्रबन्धकाव्य है।
- ऐतिहासिक काव्य लिखने की परम्परा, उपलब्ध ग्रन्थों में 'हर्षचरित' से ही माना जाता है।

हर्षचरितम् बिन्दुवार अध्ययन

- हर्षचरित का रचयिता कौन हैं? - **बाणभट्टः**
- बाणभट्ट कृत हर्षचरित है - **आख्यायिका**
- आख्यायिका है - **हर्षचरितम्**
- सत्यं किमस्ति - **हर्षचरितम् आख्यायिका वर्तते**
- 'हर्षचरितं' कीदृशं काव्यम्? - **गद्यम्**
- सम्राट्हर्षवर्धनस्य पितुः नाम किम् - **प्रभाकरवर्धनः**
- बाणभट्ट की आत्मकथा जिस रचना में है, वह है - **हर्षचरितम्**
- 'हर्षचरितम्' में उच्छ्वास हैं - **8**
- राज्यश्रीः पात्र .... है? - **हर्षचरितम्**
- महासत्त्वता हि प्रथममवलम्बनं लोकस्य इति...... अकथयत्? - **प्रभाकरवर्धनः हर्षवर्धनम्**
- हर्षचरिते रसायनः कः ? - **वैद्यकुमारकः**
- कुरङ्गकेन हर्षचरिते किं कर्म कृतम्? - **वार्ताप्रदानम्**
- रुग्णः प्रभाकरवर्धनः उपचारहेतोः कुत्र गतः - **धवलगृहे**
- एकदा प्रत्युषसि हर्षः स्वप्ने अग्निना दह्यमानं कमपश्यत् - **केसरिणम्**
- ''निर्गतासु न वा कस्य कालिदासस्य सूक्तिषु। प्रीतिर्मधुरसान्द्रासु मञ्जरीष्विव जायते।।'' कस्मिन् ग्रन्थे उपलभ्यतेऽयं श्लोकः? - **हर्षचरिते**
- 'अतिदुर्धरो बान्धवस्नेहः सर्वप्रमाथी'–हर्षचरिते इयमुक्तिर्भवति - **हर्षवर्धनस्य**
- हर्षचरिते पञ्चमे उच्छ्वासे 'विश्वस्तानां यशसा स्थातुमिच्छामि लोके न वपुषा'-इत्युक्तिर्भवति- **यशोमत्याः**
- हर्षचरितस्य तृतीये उच्छ्वासे उल्लिखितः आचार्यः अस्ति - **भैरवाचार्यः**
- वज्रायुधस्य वर्णनमस्ति - **हर्षचरिते**
- श्रीहर्षस्य सहोदरी राजश्रीः कं अपरिणयत् - **ग्रहवर्मा**

4.19 दशकुमारचरितम्

महाकवि दण्डी के दशकुमारचरितम् का परिचय

लेखक - दण्डी

समय - सप्तम शती का प्रारम्भिक काल

पिता - मनोरथ/वीरदत्त

माता - गौरी

पितामह - भारवि (अवन्तिसुन्दरी कथानुसार)

जन्मस्थल - अवन्तिसुन्दरी के अनुसार दण्डी के पूर्वज गुजरात राज्य के 'आनन्दपुर' के रहने वाले थे। बाद में एलिचपुर आकर रहने लगे। इसके बाद स्वयं काञ्ची में आकर बसे।

- संस्कृत गद्यकाव्य के इतिहास में गद्य के लेखक के रूप में दण्डी का नाम अमर है।
- एक प्रशस्ति में वाल्मीकि और व्यास के बाद तीसरा स्थान दण्डी को ही दिया गया।

जाते जगति वाल्मीकौ कविरित्यभिधाभवत्।
कवी दूती ततो व्यासे कवयस्त्वयि दण्डिनि॥

कृतित्व - दण्डी के नामतः निम्न ग्रन्थ प्रचलित ग्रन्थ है-

1. दशकुमारचरितम् 2. काव्यादर्श 3. अवन्तिसुन्दरीकथा 4. छन्दोविचिति 5. कलापरिच्छेद 6. द्विसन्धानकाव्य

- दण्डी की प्रशस्ति के रूप में **'दण्डिनः पदलालित्यम्'** अत्यधिक प्रसिद्ध आभाणक है।

दशकुमारचरितम्

विधा - कथा/आख्यायिका

(यद्यपि दशकुमारचरित में गद्य के दोनों लक्षण प्राप्त होते हैं किन्तु स्वयं दण्डी इसे कथा मानते हैं)

विभाजन - वर्तमान ग्रन्थ 3 भागों में उपलब्ध है।

(i) पूर्वपीठिका - पाँच उच्छ्वास

(ii) मूलग्रन्थ दशकुमारचरितम् - आठ उच्छ्वास
(iii) उत्तरपीठिका
उपजीव्य - मौलिक कल्पना, गुणाढ्य कृत बृहत्कथा।
प्रधानरस- अद्भुत रस
रीति - वैदर्भी
गुण - प्रसाद
मुख्य अलङ्कार - उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा

- दण्डी सुकुमार मार्ग के कवि हैं।
- दण्डी के बारे में कहा गया है- **'कविर्दण्डी कविर्दण्डी कविर्दण्डी न संशयः।'**

नायक - राजवाहन
नायिका - अवन्तिसुन्दरी
प्रतिनायक - मानसार
अन्य पात्र - राजहंस (राजा), वसुमती (रानी), धर्मपाल, पद्मोद्भव, सितवर्मा, उपहारवर्मा, अपहारवर्मा, सुमन्त्र, सुमित्र, कामपाल, सुश्रुत, रत्नोद्भव, सुमति, सत्यवर्मा, मित्रगुप्त, मन्त्रगुप्त, अर्थपाल, विश्रुत, पुष्पोद्भव, प्रमति, सोमदत्त
प्रमुख टीकाएं -
(i) भूषण टीका - शिवरामपण्डित
(ii) पदचन्द्रिका - कविन्द्राचार्य
(iii) लघुदीपिका - भानुचन्द्र

नोट- ये टीकाएं केवल मध्यभाग की हैं पूर्वपीठिका और उत्तरपीठिका की नहीं।

- मध्य भाग के सप्तम उच्छ्वास में ओष्ठ्य वर्णों का बिल्कुल प्रयोग नहीं है।

दशकुमारों का विवरण

राजहंस **प्रहारवर्मा**

1.राजवाहन 2.अपहारवर्मा 3.उपहारवर्मा

धर्मपाल

सुमन्त्र सुमित्र कामपाल

4.मित्रगुप्त 5.मन्त्रगुप्त 6.अर्थपाल

पद्मोद्भव **सितवर्मा**

सुश्रुत रत्नोद्भव सुमति सत्यवर्मा

7.विश्रुत 8.पुष्पोद्भव 9.प्रमति 10सोमदत्त

राजकुमारों के नाम - 1. राजवाहन 2. उपहारवर्मा 3. अपहार वर्मा 4. मित्रगुप्त 5. मन्त्रगुप्त 6. अर्थपाल 7. विश्रुत 8. पुष्पोद्भव 9. प्रमति 10. सोमदत्त

उच्छ्वास विवरण

पूर्वपीठिका (5 उच्छ्वास)

उच्छ्वास	वर्णन
प्रथम	पुष्पपुरी, राजहंस, वसुमती आदि का वर्णन।
द्वितीय	कुमारों की दिग्विजय यात्रा का वर्णन।
तृतीय	सोमदत्त का चारित्रिक वर्णन।
चतुर्थ	पुष्पोद्भव का चारित्रिक वर्णन।
पञ्चम	राजवाहन का चारित्रिक वर्णन प्रारम्भ (अवन्तिसुन्दरी से विवाह)

मूलग्रन्थ दशकुमारचरितम् (8 उच्छ्वास)

उच्छ्वास	नाम (वर्णन)
प्रथम	राजवाहन-चरित
द्वितीय	अपहारवर्मा-चरित
तृतीय	उपहारवर्मा-चरित
चतुर्थ	अर्थपाल-चरित
पञ्चम	प्रमति-चरित
षष्ठ	मित्रगुप्त-चरित
सप्तम	मन्त्रगुप्त-चरित
अष्ठम	विश्रुत-चरित

उत्तरपीठिका - 4-5 पृष्ठात्मक

- उत्तर भाग में विश्रुत चरित की समाप्ति और ग्रन्थ की समाप्ति।

दशकुमारचरितम् की कथावस्तु का सारांश

- मगधदेश की राजधानी पुष्पपुरी पर राजहंस का शासन था। उसके 3 मन्त्री थे - धर्मपाल, पद्मोद्भव और सितवर्मा।
- धर्मपाल के तीन पुत्र हुए - 1. सुमन्त्र 2. सुमित्र 3. कामपाल। इनमें कामपाल यायावर (अवारा) था, अतः घर छोड़कर चला गया।
- पद्मोद्भव के दो पुत्र हुए - सुश्रुत और रत्नोद्भव। और सितवर्मा के भी दो पुत्र ही सुमति और सत्यवर्मा हुए।
- सत्यवर्मा संसार की असारता से खिन्न होकर तीर्थयात्रा पर निकल गया।
- राजहंस सर्वथा सुखी होने पर भी सन्तानहीनता के कारण बहुत चिन्तित थे।
- मालवनरेश मानसार ने मगध पर आक्रमण किया जहाँ वह बन्दी बना लिया गया।
- राजहंस ने मानसार का राज्य उसे लौटा दिया।
- मानसार अपनी पराजय स्वीकार न कर सका और शिव की आराधना से एक मारक गदा प्राप्त कर पुनः राजहंस पर आक्रमण कर दिया।
- मानसार से पराजित होकर राजहंस मन्त्रियों तथा रानियों सहित वन चले गये।
- राजहंस को वामदेव ऋषि के आशीर्वाद से एक पुत्र की प्राप्ति हुयी।
- राजा राजहंस तथा वसुमती ने पुत्र का नाम राजवाहन रखा।
- लगभग इसी समय चारों मन्त्रियों के भी एक-एक पुत्र हुए।

तथा उनके नाम मित्रगुप्त, मन्त्रगुप्त, विश्रुत और प्रमति रखे गये।

- तभी कामपाल के पुत्र अर्थपाल, रत्नोद्भव के पुत्र पुष्पोद्भव, और सत्यवर्मा के पुत्र सोमदत्त भी वापस राजा के पास वन पहुँच गये।
- इसी समय राजहंस को ज्ञात हुआ कि उनका मित्र मिथिला नरेश प्रहारवर्मा शबरसेनाओं द्वारा मारा गया। प्रहारवर्मा के दो पुत्र उपहारवर्मा और अपहारवर्मा थे। इनका भी पालन-पोषण राजा राजहंस ने किया।
- ये 10 कुमार बड़े होकर दिग्विजय के लिए निकले और अपने अभियान के समय एक दूसरे से अलग हो गए।
- क्रमशः वे इस कथा के नायक राजवाहन से मिलते गये और अपनी अद्भुत कथाएँ सुनाते गये।

मङ्गलाचरण

ब्रह्माण्डच्छत्रदण्डः शतधृतिभवमम्भोरुहो नालदण्डः
क्षोणोनौकूपदण्डः क्षरदमरसरित्पट्टिकाकेतुदण्डः।

भावार्थ- भगवान् त्रिविक्रम (वामन) का वह चरण दण्ड - जो ब्रह्माण्ड रूपी छाते के दण्ड के समान है, ब्रह्मा के उत्पत्ति स्थान कमल के नाल दण्ड के समान है, पृथ्वीरूपी नौका के कूपदण्ड के समान है, आकाश गङ्गारूपी पताका के ध्वजदण्ड के समान है, ग्रह-नक्षत्र मण्डलरूप रथचक्रों की धुरी के समान है, तीनों लोकों के जीतने के चिह्न स्वरूप स्तम्भ (खूँटा) के समान है, अथवा जो राक्षसों के लिए यम दण्ड स्वरूप है - आपका कल्याण करें।

- यह आशीर्वादात्मक मङ्गलाचरण है।
- मङ्गलाचरण में भगवान् विष्णु की आराधना हुयी है।
- भगवान् विष्णु के द्वारा वामन अवतार में तीन पग पृथ्वी की याचना का वर्णन है।
- अन्त में भगवान् ने प्रसन्न होकर बलि को सुतल लोक में सानन्द निवास करने का स्थान दिया।

पूर्वपीठिका

- पूर्वपीठिका पाँच उच्छ्वासों में विभक्त है-

प्रथम उच्छ्वास

- माङ्गलिक पद्य के बाद राजहंस का सामान्य परिचय है।
- राजहंस, मगध की राजधानी **पुष्पपुरी** में निवास करते थे।
- उनकी पत्नी का नाम **वसुमती** तथा पुत्र का नाम **राजवाहन** था।

द्वितीय उच्छ्वास

- ऋषि वामदेव की इच्छा से राजहंस अपने पुत्र राजवाहन को उसके मित्रों के साथ दिग्विजय के लिए भेजते हैं।
- विन्ध्याटवी में पहुँचकर राजवाहन अपने मित्रों का साथ छोड़कर किसी मातङ्ग की सहायता के लिए चले गये।
- राजवाहन की सहायता से मातङ्ग को असुरराज की कन्या कालिन्दी तथा पाताललोक की प्राप्ति हुई।
- कालिन्दी द्वारा एक मणि उपहारस्वरूप प्राप्त करके राजवाहन पाताल से पृथ्वी पर आये तथा बहुत ढूँढने पर उनकी मुलाकात सर्वप्रथम सोमदत्त से हुई।

तृतीय उच्छ्वास

- इसमें सोमदत्त अपना वृत्तान्त राजवाहन से बताता है कि- राजा वीरकेतु की पुत्री वामलोचना थी जो अत्यन्त सुन्दर थी।
  उसकी सुन्दरता पर मुग्ध होकर लाटदेश के राजा मत्तपाल ने वीरकेतु पर आक्रमण करके वामलोचना को प्राप्त कर लेता है।
- सोमदत्त की सहायता से मत्तपाल मारा जाता है तथा वीरकेतु , वामलोचना का विवाह सोमदत्त से कर देते हैं।
- इसके बाद पुष्पोद्भव का आगमन होता है।

चतुर्थ उच्छ्वास

- इस उच्छ्वास में पुष्पोद्भव अपना वृत्तान्त राजकुमार राजवाहन से सुनाता है कि- पुष्पोद्भव किसी वैश्य के साथ उज्जयिनी जाता है।
  वहाँ बालचन्द्रिका नामक युवती मालव पर शासन कर रहे दारुवर्मा के कुकर्मों के बारे में बताती है।
- बालचन्द्रिका के साथ मिलकर पुष्पोद्भव, दारुवर्मा को मार देता है तथा किसी सिद्ध के आदेश से बालचन्द्रिका और पुष्पोद्भव का विवाह होता है। यह सुनकर राजवाहन प्रसन्न होता है और पुष्पोद्भव के साथ अवन्तिपुरी चला जाता है।

पञ्चम उच्छ्वास

- वहाँ राजवाहन मालवदेश की कन्या अवन्तिसुन्दरी को देखता है। राजवाहन, अवन्तिसुन्दरी को अपने पूर्वजन्म की पत्नी 'यज्ञवती' बताता है।
- अवन्तिसुन्दरी भी पूर्वजन्म की बात याद करके राजवाहन को अपने पूर्वजन्म के पति 'शाम्ब' रूप में पहचानती है।
- इन्द्रजाल विद्येश्वर के सहयोग से दोनों का विवाह हो जाता है।
- पूर्वपीठिका यहीं पर समाप्त हो जाती है।

मूलग्रन्थ दशकुमारचरितम्

- इसमें आठ उच्छ्वास हैं-

प्रथम उच्छ्वास

- इसमें राजवाहन, अवन्तिसुन्दरी को 14 भुवनों का वृत्तान्त सुनाता है।
- मार्कण्डेय ऋषि द्वारा दिये गये सुरतमञ्जरी के शाप का भी वर्णन है।
- अपहारवर्मा द्वारा चण्डवर्मा मारा जाता है।

द्वितीय उच्छ्वास

- इसमें अपहारवर्मा का वृत्तान्त वर्णित है।
- अङ्गदेश के चम्पा शहर में निवास कर रहे मरीचि नामक ऋषि एक काममञ्जरी नामक वेश्या पर आसक्त हो जाते हैं।
- तपस्या को छोड़कर ऋषि गृहस्थ बन जाते हैं। तत्पश्चात् वैराग्य धारण कर लेते हैं।
- अपहारवर्मा की मित्रता धनमित्र से होती है।
- काममञ्जरी की छोटी बहन रागमञ्जरी से अपहारवर्मा का

विवाह हो जाता है।

तृतीय उच्छ्वास

- इस उच्छ्वास में उपहारवर्मा का वृत्तान्त वर्णित है।
- वह मिथिला जाता है जहाँ के राजा प्रहारवर्मा थे।
- उपहारवर्मा पुष्करिका के सहयोग से विकटवर्मा को मार देता है जिसने नगरवासियों को परेशान कर रखा था।
- पुष्करिका द्वारा सुन्दरता का वर्णन करने पर कलिन्दवर्मा की पुत्री कल्पसुन्दरी से उपहारवर्मा का विवाह हो जाता है।

चतुर्थ उच्छ्वास

- इसमें अर्थपाल की जीवनकथा का वर्णन है।
- अर्थपाल काशीनगरी को जाता है तथा सिंहघोष से अपने माता-पिता की रक्षा करके सिंहघोष को जेल में डलवा देता है।
- पूर्णभद्र के सहयोग से चण्डघोष की पुत्री मणिकर्णिका से अर्थपाल का विवाह हो जाता है।
- चण्डघोष, सिंहघोष का जीजा था।

पञ्चम उच्छ्वास

- इसमें प्रमति का वृत्तान्त है जो राजवाहन को खोजते हुए विन्ध्याचल के समीप चला जाता है।
- वहाँ से भगवान् शिव के उत्सव में शामिल होने के लिए प्रमति श्रावस्ती चला गया।
- श्रावस्ती के राजा धर्मवर्मन् थे उनकी पुत्री का नाम नवमालिका था।
- राजकुमारी की सहेली के सहयोग से प्रमति अन्तःपुर जाता है, जहाँ राजा, उसके व्यक्तित्व से प्रभावित होते हैं।
- राजा अपनी पुत्री नवमालिका का विवाह प्रमति से कर देते हैं तथा सम्पूर्ण राज्य भी प्रमति को सौंप देते हैं।

षष्ठ उच्छ्वास

- इस उच्छ्वास में मित्रगुप्त का वृत्तान्त वर्णित है।
- वह राजवाहन को ढूँढ़ने सुह्य-प्रदेश के दामलिप्तनगर में जाता है।
- वहाँ के राजा तुङ्गधन्वा थे जिनका पुत्र भीमधन्वा तथा पुत्री कन्दुकावती थी।
- कन्दुकावती से मित्रगुप्त का प्रेम-प्रसङ्ग सुनकर भीमधन्वा मित्रगुप्त को समुद्र में फेंकवा देता है लेकिन वह बच जाता है।
- मित्रगुप्त ने कन्दुकावती को एक राक्षस से बचाता है और उसे उसके पिता तुङ्गधन्वा को समर्पित कर देता है।
- राजा तुङ्गधन्वा प्रसन्न होकर मित्रगुप्त और कन्दुकावती का विवाह कर देते हैं।

सप्तम उच्छ्वास

- इसमें मन्त्रगुप्त का वृत्तान्त वर्णित है।
- वह राजकुमार राजवाहन को खोजने कलिङ्ग देश में जाता है।
- वहाँ के राजा कर्दन थे उनकी कन्या का नाम कनकलेखा था।
- मन्त्रगुप्त, कनकलेखा को एक सिद्ध तथा राक्षस से बचाता है और उसे लेकर अन्तःपुर जाता है।
- राजा कर्दन प्रसन्न होकर स्त्रियों, बेटी और नागरिकों के साथ उत्सव मनाने समुद्र तट के जंगल में जाते हैं, जहाँ जयसिंह कनकलेखा का अपहरण कर लेता है।
- मन्त्रगुप्त पुनः कनकलेखा को बचाता है और प्रसन्न होकर राजा, कनकलेखा का विवाह मन्त्रगुप्त से कर देते हैं।

अष्टम उच्छ्वास

- इस उच्छ्वास में विश्रुत का चरित वर्णित है।
- विश्रुत राजवाहन को खोजने अश्मक देश जाता है वहाँ के राजा वसन्तभानु थे।
- विश्रुत ने वसन्तभानु की सहायता की और प्रचण्डवर्मा मारा जाता है।
- मित्रवर्मा की पुत्री मञ्जुवादिनी से विश्रुत का विवाह हो जाता है।

उत्तरपीठिका

- इसमें विश्रुतचरित का उत्तरार्ध भाग तथा ग्रन्थ का उपसंहार वर्णित है-
- विवाह के पश्चात् विश्रुत को प्रचण्डवर्मा का राज्य मिल जाता है।
- अपनी पत्नी मञ्जुवादिनी को वहीं छोड़कर विश्रुत, राजवाहन की खोज में निकलता है जहाँ अङ्ग नरेश सिंहवर्मा के आमन्त्रण पर जाते समय राजवाहन से मुलाकात होती है।
- इसके बाद वहाँ उपस्थित अपहारवर्मा, उपहारवर्मा, अर्थपाल, प्रमति, मित्रगुप्त,मन्त्रगुप्त और विश्रुत तथा पाटलिपुत्र के युवराज सोमदत्त पत्नी के साथ राजवाहन के साथ मिलकर रहने लगे।
- तत्पश्चात् राजा राजहंस के आज्ञापत्र को लिये हुए पुष्पपुर के राजकर्मचारियों का आगमन होता है।
- पत्र के माध्यम से 'सबके कल्याण' और अपने-अपने राज्य पर शासन करने का आदेश प्राप्त होता है।
- राजा स्वयं वानप्रस्थ-आश्रम में जाने की इच्छा करते हैं।
- इस प्रकार राजवाहन आदि सभी राजकुमार राजहंस की आज्ञा से समस्त पृथ्वी मण्डल का न्यायपूर्वक पालन करने लगे।

दशकुमारचरितम् समाप्त

प्रमुख सूक्तियाँ

1. **'मूढोऽसि! नान्यत्या पिष्ठतममात्मत्यागात्। आत्मानमात्मनानवसाद्यैवोद्धरन्ति सन्तः।** (पेज-45)

भावार्थ- अपहारवर्मा कहता है कि- वत्स, अज्ञानी हो। आत्महत्या से बढ़कर अतिशय-पाप पूर्ण कार्य दूसरा नहीं है। सज्जन अपना नाश न करके अपने उद्योग से अपना उद्धार करते हैं।

2. **धनार्जनस्य बहवः, नैकोऽपिच्छिन्नकण्ठप्रतिसंधानपूर्वस्य प्राणलभस्य।** (पेज-45)

भावार्थ- अपहारवर्मा कहता है कि-धन कमाने के उपाय बहुत है; कटे गले को जोड़कर प्राण प्राप्त करने के उपाय एक भी नही है।

3. मृत्युहस्तवर्तिनः किं ममामुष्या वैरानुबन्धेन
भावार्थ- मौत के हाथ पड़े हुये मुझे उसके साथ वैर लेने से क्या लाभ (पेज-49)

4. बुद्धिमत्प्रयुक्तं नाभ्युपैति शोभाम् इति।
भावार्थ- राजवाहन कहता है कि- बुद्धिमान् के द्वारा किया गया कौन उपाय निश्चय ही शोभित नहीं होता। (पेज-111)

5. गृहिणः प्रियहिताय दारगुणाः इति।
भावार्थ- मित्रगुप्त कहता है कि-पत्नी के गुण गृहस्थ के प्रिय और हित के लिये होते हैं। (पेज-196)

6. 'दुष्करसाधनं प्रज्ञा' इति।
भावार्थ- मित्रगुप्त कहता है कि-जो कार्य करना कठिन है, उसके करने का उपाय बुद्धि है। (पेज-209)

7. श्रुत्वा चित्रेयं दैवगतिः। अवसरेषु पुष्कलः पुष्पकारः
भावार्थ- राजवाहन कहता है कि-यह सुनकर 'यह भाग्य-गति विचित्र है। मौकों पर खूब पुरुषार्थ दिखाया'। (पेज-212)

8. 'चित्तज्ञाननानुवर्तिनोऽनर्थ्या अपि प्रियाः स्युः। दक्षिणा अपि तद्भावबहिष्कृता द्वेष्या भवेयुः'।
भावार्थ- विश्रुत कहता है कि- मनोभाव का अनुसरण करने वाले अवाञ्छनीय व्यक्ति भी प्रिय हो सकते हैं और उस चित्र के भाव से दूर रहने वाले द्वेष पात्र हो सकते हैं। (पेज-253)

9. न चान्यदस्ति पापिष्ठं तत्र दौर्बल्यात्।
भावार्थ- विश्रुत कहता है कि- दुर्बलता से बढ़कर परम पापी दूसरी वस्तु नहीं। (पेज-284)

10. अर्थमूला हि दण्डविशिष्टकर्मारम्भाः।
भावार्थ- विश्रुत कहता है कि-राजनीति और श्रेष्ठ कार्यों के आरम्भ के मूल में धन ही है। (पेज-284)

11. दैव्याः शक्तेः पुरो न बलवती मानवी शक्तिः।
भावार्थ- विश्रुत कहता है कि-ईश्वरीय ताकत के आगे आदमी की ताकत बली नही है।' (पेज-286)

महत्त्वपूर्ण तथ्य

- ऋषि वामदेव तथा राजहंस का संवाद द्वितीय उच्छ्वास में होता है।
- राजवाहन 8 राजकुमारों के साथ दिग्विजय यात्रा पर निकलतें हैं।
- राजवाहन को सर्वप्रथम सोमदत्त अपना वृत्तान्त सुनाते हैं।
- सोमदत्त को मणि कुदेश मे प्राप्त होती है।
- कुदेश के स्वामी का नाम वीरकेतु था।
- मत्तकाल का वध सोमदत्त ने किया था।
- सोमदत्त का विवाह वामलोचना से हुआ।
- पुष्पोद्भव के पिता का नाम रत्नोद्भव तथा माता का नाम सुवृत्ता था।
- पुष्पोद्भव वैश्यपुत्र चन्द्रपाल के साथ उज्जयिनी गया था।
- मालवनरेश का नाम मानसार था।
- मानसार का पुत्र दर्पसार था।
- दर्पसार ने अपना राज्य चण्डवर्मा तथा दारुवर्मा को सौंप दिया था।
- राजकुमार राजवाहन पुष्पोद्भव के साथ अवन्तिकापुरी गये।
- वसन्त ऋतु का वर्णन पञ्चम उच्छ्वास में है।
- मालवनरेश की पुत्री अवन्तिसुन्दरी थी।
- अवन्तिसुन्दरी राजवाहन की पूर्वजन्म की पत्नी यज्ञवती थी।
- राजवाहन का नाम पूर्वजन्म मे शाम्ब था।
- पूर्वपीठिका की समाप्ति राजवाहन तथा अवन्तिसुन्दरी के विवाह से होता है।
- राजकुमार द्वारा 14 भुवनों का वर्णन मूलग्रन्थ के प्रथम उच्छ्वास में है।
- चण्डवर्मा द्वारा राजवाहन तथा पुष्पोद्भव का हरण किया जाता है।
- राजवाहन पर बँधी चाँदी की जंजीर एक अप्सरा के रूप में बदल जाती है।
- अप्सरा का नाम सुरतमञ्जरी था।
- सुरतमञ्जरी नामक अप्सरा को मार्कण्डेय ऋषि से शाप प्राप्त था।
- अवन्तिसुन्दरी के भाई का नाम दर्पसार था।
- अपहारवर्मा के द्वारा चण्डवर्मा मारा जाता है।
- मरीचि नामक महर्षि चम्पा नगरी में रहते थे।
- महर्षि मरीचि काममञ्जरी पर आसक्त हो गये थे।
- जैन साधु का नाम वसुपालित था।
- वसुपालित को विरूपक भी कहा जाता था।
- वसुपालित का सम्पूर्ण धन सुन्दरक तथा काममञ्जरी ने ले लिया था।
- मिथिला के राजा प्रहारवर्मा तथा राजहंस परम मित्र थे।
- कलिन्दवर्मा की पुत्री कल्पसुन्दरी थी।
- विकटवर्मा का नाश उपहारवर्मा द्वारा हुआ।
- पूर्णभद्र काशी ग्रामाध्यक्ष का बेटा था।
- पूर्णभद्र काशी नरेश चण्डसिंह के प्रधानमंत्री कामपाल द्वारा पकड़ा गया।
- कुसुमपुर के राजा का नाम रिपुञ्जय था रिपुञ्जय का मन्त्री धर्मपाल था।
- धर्मपाल का पुत्र सुमित्र था।
- सुमित्र का सौतेला भाई कामपाल था।
- मणिभद्र की कन्या तारावली जिसने कामपाल को बचाया था।
- कामपाल प्रथम जन्म में शौनक, द्वितीय मे शूद्रक तथा तृतीय में कामपाल था।
- चण्डसिंह की पुत्री कांतिमती थी।
- कामपाल ने कांतिमती से विवाह किया।
- चण्डघोष की मृत्यु क्षयरोग से हुयी।
- चण्डघोष की मृत्यु के बाद सिंहघोष राजगद्दी पर बैठा जिसने कामपाल को कैद करवा दिया।
- अर्थपाल का विवाह चण्डघोष की पुत्री मणिकर्णिका से हुआ।

- प्रमति का सम्पूर्ण वर्णन पञ्चम उच्छ्वास में है।
- प्रमति का विवाह नवमालिका से हुआ था।
- मित्रगुप्त का विवाह कन्दुकावती से हुआ।
- धूमिनी, गोमिनी, निम्बवती और नितम्बवती का वर्णन छठें उच्छ्वास में है।
- यक्ष वर्णन छठवें उच्छ्वास में है।
- कलिंग देश की पुत्री कनकलेखा थी।
- कनकलेखा का विवाह मन्त्रगुप्त से हुआ।
- विश्रुत वर्णन आठवें उच्छ्वास में प्राप्त होता है।
- विदर्भ राज्य का राजा पुण्यवर्मा।
- पुण्यवर्मा की मृत्यु के पश्चात् अनन्तवर्मा राजा बना।
- पुण्यवर्मा वृद्ध मंत्री वसुरक्षित थे।
- अनन्तवर्मा का धूर्त सेवक विहारभद्र था।
- विहारभद्र ने राजविद्या के विषय में बताया।
- राजविद्याएं 4 होती हैं। 1. त्रयी 2. वार्त्ता 3. आन्वीक्षिकी 4. दण्ड।
- अश्मक नरेश का नाम वसन्तभानु था।
- अनन्तवर्मा की पत्नी वसुन्धरा थी
- अनन्तवर्मा और वसुन्धरा के पुत्र का नाम - भास्करवर्मा तथा पुत्री का नाम मञ्जुवादिनी था।
- विश्रुत द्वारा प्रचण्डवर्मा का वध हुआ।
- विश्रुत का विवाह मञ्जुवादिनी से हुआ।
- विश्रुत द्वारा भास्करवर्मा को विदर्भ का राजा बनाया गया।

दशकुमारचरितम्- बिन्दुवार अध्ययन

- दण्डिना रचितं गद्यकाव्यं किम्? - **दशकुमारचरितम्**
- 'बृहत्कथा' आधारित ग्रन्थ है - **दशकुमारचरितम्**
- दशकुमारचरितं केन प्रणीतम् - **दण्डिना**
- दशकुमारचरिते अयं प्रतिनायकः भवति - **मानसारः**
- 'दशकुमारचरितम्' में उच्छ्वासों की संख्या है - **आठ**
- दशकुमारचरिते कियती संख्याऽस्ति राजकुमाराणाम्- **दस**
- कुत्र पदलालित्यं प्रसिद्धम्? - **दशकुमारचरिते**
- किस प्राचीन गद्यकाव्य में लोक जीवन का सर्वाधिक चित्रण है? - **दशकुमारचरितम्**
- दशकुमारचरितस्य नायकः कः? - **राजवाहनः**
- विश्रुतस्य वृत्तान्तं कुत्र वर्णितम् - **दशकुमारचरिते**
- पुण्यवर्मा कस्य देशस्य नृप आसीत् दशकुमारचरिते - **विदर्भदेशस्य**
- दशकुमारचरितानुसारं राजहंसस्य राजधानी आसीत्? - **पुष्पपुरीनगर्याम्**
- 'राजवाहन' नामक राजकुमार का वर्णन है - **दशकुमारचरितम् में**
- दशकुमारचरिते पूर्वपीठिकायां निबद्धानामुच्छ्वासानां संख्या वर्तते - **05**
- दशकुमारचरितस्य कस्मिन् चरिते सुरतमञ्जर्याः उपाख्यानमस्ति? - **राजवाहनचरिते**
- दशकुमारचरिते मगधनरेशस्य पुत्रः कः? - **राजवाहनः**
- 'दशकुमारचरितम्' की कथावस्तु का विचार कहाँ से लिया गया है - **बृहत्कथा**
- दशकुमारचरिते अथ सोऽप्याचचक्षे – ''देव, मयापि परिभ्रमता कोऽपि कुमारः .... दृष्टः'' – इत्यादिषु कस्य परिभ्रमणमुल्लिखितम्? - **विश्रुतस्य**
- ओष्ठ्यवर्णानामभावोऽस्ति दशकुमारचरितस्य उच्छ्वासे - **सप्तमे**
- दशकुमारचरितम् में दण्डी ने कौन-सी रीति का प्रयोग किया है? - **वैदर्भी रीति**
- विश्रुतः कया सह विवाहमकरोत् - **मञ्जुवादिन्या**
- प्रचण्डवर्माणं कः हतवान् - **विश्रुतः**
- दशकुमारचरितम् इति कः वाङ्मयप्रकारः?- **आख्यायिका**
- दुर्भिक्ष का वर्णन किस काव्य में है?- **दशकुमारचरितम्**

4.20 प्रबोधचन्द्रोदयम्

कृष्ण मिश्र का परिचय

- **नाम-** कृष्ण मिश्र
- **जाति-** ब्राह्मण
- **निवास स्थान-** बिहार
- **समय-** 1050 ई॰ के आस-पास या 11वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध।
- जेजाकमुक्ति के चन्देल राजा कीर्तिवर्मा के शासनकाल में कृष्ण मिश्र का जन्म हुआ था। गोपाल सम्भवतः कीर्तिवर्मा के सेनापति थे। जिनका उल्लेख 'प्रबोधचन्द्रोदय' के प्रस्तावना में आया है। 1065 ई॰ में कीर्तिवर्मा पुनः राजा बने थे।
- **प्रिय छन्द-** शार्दूलविक्रीडित और वसन्ततिलका।
- **उपासक-** वेदान्ती होने के कारण कृष्ण मिश्र ब्रह्म की उपासना करते थे।
- **कृति-** प्रबोधचन्दोदय एक मात्र।

प्रबोधचन्द्रोदय का परिचय

लेखक- कृष्ण मिश्र
काव्यविधा- नाटक
उपविधा- प्रतीकात्मक नाटक/ दार्शनिक नाटक/ रूपकात्मक नाटक
विभाजन- 6 अङ्कों में
श्लोक संख्या- 191

अङ्क	श्लोक संख्या
प्रथम	31
द्वितीय	38
तृतीय	26
चतुर्थ (विवेक-उद्योग)	30
पञ्चम (वैराग्य-प्रादुर्भाव)	33
षष्ठ (जीवन्मुक्ति)	33
कुल श्लोक-	**191**

उपजीव्य- अद्वैत- वेदान्तदर्शन
प्रधान रस/अङ्गी रस- शान्त रस
अन्य रस- हास्य रस
गुण- प्रसाद एवं माधुर्य
रीति- वैदर्भी
छन्द- 'प्रबोधचन्द्रोदय' में कुल 15 प्रकार के छन्दों का प्रयोग हुआ है, जिनमें शार्दूलविक्रीडित, स्रग्धरा, वसन्ततिलका, शिखरिणी, मन्दाक्रान्ता, मालिनी, हरिणी जैसे बड़े छन्द एवं अनुष्टुप्, उपजाति, पुष्पिताग्रा, आर्या तथा प्रहर्षिणी जैसे छोटे छन्द हैं।

- सर्वाधित प्रयुक्त छन्दों में क्रमशः शार्दूलविक्रीडित (55) अनुष्टुप् (35) तथा वसन्ततिलका (28) मुख्य हैं।

नायक- विवेक
नायिका- मति
प्रतिनायक- महामोह

प्रबोधचन्द्रोदय का मङ्गलाचरण

मध्याह्नार्कमरीचिकास्विव पयः पूरो यदज्ञानतः
खं वायुर्ज्वलनो जलं क्षितिरिति त्रैलोक्यमुन्मीलति।
तत्त्वत्वं विदुषां निमीलति पुनः स्रग्भोगिभोगोपमं
सान्द्रानन्दमुपास्महे तदमलं स्वात्मावबोधं महः॥ (1/1)

भावार्थ- मध्याह्न सूर्य की मरीचिका में जलराशि की तरह जिसके अज्ञान से आकाश, वायु, तेज, जल और पृथ्वी इस क्रम से त्रैलोक्य प्रकट होता है और जिसके ज्ञान से माला सर्प की तरह लीन हो जाता है, उस आनन्द स्वरूप तथा स्वप्रकाशरूप उस ब्रह्म की हम उपासना करते हैं।

अन्तर्नाडीनियमितमरुल्लङ्घितब्रह्मरन्ध्रं
स्वान्ते शान्तिप्रणयिनि समुन्मीलदानन्दसान्द्रम्।
प्रत्यक् ज्योतिर्जयति यमिनः स्पष्टलालाटनेत्र
व्याजव्यक्तीकृतमिव जगद्व्यापि चन्द्रार्धमौलेः॥(1/2)

भावार्थ- सुषुम्ना नाड़ी में प्राण को अवरुद्ध करके ब्रह्मरन्ध्र से प्रवेशित करने के लिए शान्तियुक्त हृदय में आनन्द रूप से प्रकटित होने वाला तपोनिष्ठ महादेव की तृतीय दृष्टि के रूप में प्रकटीभूत महादेव की प्रत्यक् ज्योति की जय हो।

- कृष्णमिश्र ने दो पद्यों के माध्यम से मङ्गलाचरण किया है।
- उपर्युक्त दोंनो श्लोकों में **नमस्क्रियात्मक मङ्गलाचरण** का प्रयोग है।
- नाटक होने के कारण **अष्टपदा नान्दी** का प्रयोग है।
- प्रथम श्लोक में 'ब्रह्म' तथा द्वितीय श्लोक में 'शिव के प्रत्यक् ज्योति' की स्तुति है।
- प्रथम पद्य में शार्दूलविक्रीडित छन्द एवं उपमा अलङ्कार का प्रयोग हुआ है।
- द्वितीय श्लोक में मन्दाक्रान्ता छन्द एवं रूपक अलङ्कार प्रयुक्त है।

प्रबोधचन्द्रोदय का भरतवाक्य

पर्जन्योऽस्मिन् जगति महतीं वृष्टिमिष्टां विधत्तां
राजानः क्ष्मां गलितविविधोपप्लवाः पालयन्तु।
हत्वोन्मेषोपहततमसस्त्वत्प्रसादान्महान्तः
संसाराब्धिं विषयममतातङ्कपङ्कं तरन्तु॥ (6/33)

भावार्थ- मेघ इस धरा पर यथेच्छ वृष्टि किया करें, अनेक प्रकार के उपद्रवों से रहित होकर राजागण पृथ्वी का पालन करें तुम्हारे प्रसाद से महान् जन तत्क्षण अज्ञान को दूरकर विषय रूप ममता पङ्कपूर्ण संसार सागर को पार कर जाएं।

- इस भरतवाक्य में संसार के कल्याण की कामना की गयी है।
- भरतवाक्य में मन्दाक्रान्ता छन्द का प्रयोग है।

'प्रबोधचन्द्रोदय' नाम की सार्थकता

- **'प्रबोधचन्द्रस्य उदयः यस्मिन् अस्ति इति प्रबोधचन्द्रोदयः** (बहुव्रीहि समास)। इस प्रकार ग्रन्थवाची होने के कारण नपुंसकलिङ्ग एकवचन में 'प्रबोधचन्द्रोदयम् प्रयोग सिद्ध हुआ।
- 'प्रबोधचन्द्रोदयम्' में बहुव्रीहि समास है।
- नाटक में पुरुष और उनकी पत्नी उपनिषद् का पुत्र है-

प्रबोधचन्द्र।

- प्रबोधचन्द्र का जन्म इस नाटक का मुख्य बिन्दु है इसीलिए इस नाटक का शीर्षक 'प्रबोधचन्द्रोदय' ही हुआ।
- इस प्रकार यह नाटक के लिए उपयुक्त शीर्षक है।

प्रबोधचन्द्रोदय का संक्षिप्त कथानक

प्रथम अङ्क

- नान्दी पाठ के बाद सूत्रधार बताता है कि यह नाटक श्रीमान् गोपाल की आज्ञा से मञ्चन किया जा रहा है, "क्योंकि राजा कीर्तिवर्मा की दिग्विजय यात्रा के प्रसङ्ग से 'ब्रह्मानन्द' सुख से विमुख होकर हमने (गोपाल) नाना प्रकार के विषय रसों से दूषित दिन बिताए हैं, अब निश्चिन्त होकर हम शान्तरस के नाटक से अपने को आनन्दित करना चाहते हैं इसलिए श्रीकृष्णमिश्र द्वारा रचित 'प्रबोधचन्द्रोदय' नाम के नाटक को कीर्तिवर्मा के सामने अभिनीत करें।"
- मन की दो पत्नियाँ हैं- 'प्रवृत्ति और 'निवृत्ति'। 'प्रवृत्ति' के पुत्र का नाम 'मोह' तथा 'निवृत्ति' के पुत्र का नाम विवेक है।
- दोंनो आपस में विरोधी हैं, विवेक के पक्ष में शान्ति, श्रद्धा आदि तथा मोह के पक्ष में काम, लोभ, तृष्णा, क्रोध, हिंसा आदि हैं।
- 'रति, विवेक से डरती है तो काम उसे न डरने के लिए उत्साहित करता है।
- यम, नियम आदि विवेक के मंत्री हैं। चित्त विकार उनका शत्रु है।
- 'रति' के पूँछने पर 'काम' बताता है कि वह और 'विवेक'एक ही पिता के पुत्र हैं किन्तु विषय का लोभ ही हमेशा से सहोदरों में विरोध कराता आया है।
- 'काम' आगे बताता है कि उसके कुल में 'विद्या' नाम की राक्षसी जन्म ग्रहण करने वाली है।
- 'रति' डर जाती है और 'काम' से लिपट जाती है फिर 'काम' कहता है "धीरज रखो मेरे रहते 'विद्या' की उत्पत्ति कैसे होगी"
- 'विवेक' अपनी पत्नी 'मति' से कहता है कि 'काम' ने संसार को बंधन में डाल रखा है और हम शुद्धि बुद्धि वाले को यह अभागा 'पापी' बता रहा है।
- 'मति' प्रश्न करती है कि मनुष्य तो आनन्दस्वरूप है फिर काम ने बंधन में कैसे डाला?
- विवेक बताता है कि एक चतुर आदमी भी स्त्रियों के द्वारा प्रताड़ित होकर बंधन में पड़ जाता है।
- मति के इससे मुक्ति के विषय में पूँछने पर विवेक बताता है कि उपनिषद् के साथ हमारा सम्बन्ध होने से प्रबोध की उत्पत्ति होगी तभी यह बन्धन छूट सकता है।

➢ प्रथम अङ्क समाप्त ➢

द्वितीय अङ्क

- विवेक के 'प्रबोधोदय' प्रतिज्ञा को सुनकर महाराज 'मोह' दम्भ से कहते हैं कि हमारे वंश के क्षय का समय आ गया है अतः आप लोग प्रतीकार करें, पृथ्वी पर सबसे बड़ा मुक्तिस्थल 'काशी' है वहाँ जाकर निःश्रेयश को विघ्नित करें।
- अहङ्कार, वेदान्तियों की भर्त्सना करते हुए दम्भ के आश्रम में जाता है तो दम्भ उसे पितामह के रूप में पहचानकर प्रणाम करता है।
- अहङ्कार दम्भ से कहता है- मैंने तुम्हे द्वापर के अन्त में देखा था अब तुम बड़े हो गये हो और अपनी वृद्धता के कारण तुम्हें नहीं पहचान सका।
- मोह के बारे में पूँछने पर दम्भ बताता है कि महाराज मोह इन्द्रलोक से आकर काशी को अपनी राजधानी बनाना चाहते हैं। क्योंकि वे विवेक के मार्ग को अवरुद्ध करना चाहते हैं।
- मोह के साथ चार्वाक मत भी आया और अपने मत का प्रचार किया। चार्वाक के सिद्धान्त से मोह प्रसन्न हुआ।
- चार्वाक मोह से कहता है कि- विष्णुभक्ति नाम की एक योगिनी है, यद्यपि कलि ने उसका प्रचार रोक दिया है,तथापि उसका बड़ा प्रभाव है। वह जहाँ रहती है, उस वंश की ओर ताकना भी हमारे लिए कठिन हो जाता है। आगे भी कहता है।
- 'पुरी' से आये 'मद-मान' के पत्र से पता चलता है कि शान्ति अपनी माता श्रद्धा के साथ विवेक को उपनिषद् से मिलाने के लिए रातदिन उपनिषद् को समझाती है अतः आप प्रतीकार करें।
- इस पर मोह ने कहा- शान्ति की क्या बात है, जब काम उसके विपक्ष में है।
- महामोह ने 'शान्ति' को वशीकृत करने के लिए उसकी माता 'श्रद्धा' को 'मिथ्यादृष्टि' से ग्रसित करवा देता है।

➢ द्वितीय अङ्क समाप्त ➢

तृतीय अङ्क

- मिथ्यादृष्टि से ग्रसित होकर श्रद्धा, शान्ति द्वारा वन, पर्वत, नदी तट आदि पर खोजी जाती है। करुणा नामक सखी के कहने पर शान्ति पाखण्डालयों में भी खोजती है।
- वहाँ पर जैन और बौद्ध साधुओं के बीच को तामसी श्रद्धा दिखाई पड़ती है।
- उसके बाद 'शान्ति', सोमसिद्धान्ती भिक्षुओं को मदिरापान कराती हुई कापालिकी वेशधारिणी राजसी श्रद्धा को देखती है।
- शान्ति सोचती है कि राजसी श्रद्धा उसकी माँ नहीं हो सकती, तब 'करुणा बताती कि 'श्रद्धा' 'विष्णुभक्ति के पास है।

➢ तृतीय अङ्क समाप्त ➢

चतुर्थ अङ्क

- श्रद्धा और मैत्री का प्रवेश होता है। मैत्री ने श्रद्धा से कहा कि तुम्हें महाभैरवी के चंगुल से विष्णुभक्ति ने बचाया है इसलिए तुम्हें देखने चली आयी।
- विवेक, मोह से युद्ध करने के लिए 'वस्तुविचार' को बुलाता है। 'वस्तुविचार' तैयार हो जाता है।
- 'क्षमा' ने कहा कि मेरे द्वारा क्रोध के जीतने पर हिंसा, मद, मात्सर्य आदि स्वयं हार मान लेंगे।
- लोभ को जीतने वाले सन्तोष के सलाह पर राजा (विवेक) ने

सेना को वाराणसी भेजने का आदेश दिया।

➢ चतुर्थ अङ्क समाप्त ➢

पञ्चम अङ्क

➢ विवेक की सेना द्वारा जब मोह पक्ष का संहार हो जाता है तब श्रद्धा इस निष्कर्ष पर पहुँचती है कि आत्मीयों का विरोध कुलसंहारक होता है।
➢ विष्णुभक्ति, श्रद्धा को मुनिजन के हृदय में रहने का वरदान देती है।
➢ विष्णुभक्ति के श्रद्धा से युद्ध के बारे में पूँछने पर श्रद्धा बताती है कि आदि केशव मन्दिर से चलकर दोनों सेनाएं आमने सामने हुईं।
➢ विवेक ने 'न्यायदर्शन' को दूत रूप में मोह के पास भेजा।
➢ दूत ने मोह से कहा कि आप देवस्थल छोड़ दें नहीं तो समूल नष्ट कर दिये जायेंगे।
➢ मोह क्रोधित होकर युद्ध के लिए उद्यत हुआ और हारकर कहीं छिप गया।
➢ अपनी पत्नी प्रवृत्ति और अनेक पुत्रों की मृत्यु से 'मन' जर्जरित हो गया और वैराग्य की ओर झुककर निवृत्ति को पत्नी के पद पर नियुक्त किया।

➢ पञ्चम अङ्क समाप्त ➢

षष्ठ अङ्क

➢ शान्ति और श्रद्धा के दिन आराम से बीतने लगे। श्रद्धा द्वारा ज्ञात होता है कि मोह ने दुष्टता का त्याग नहीं किया है, उसने पुरुष को फुसलाने के लिए 'मधुमती' को नियुक्त किया है।
➢ 'मधुमती' ने पुरुष को अपने माया में फँसाया तथा 'तर्क' ने पुरुष को मायाजाल से सचेत किया।
➢ उपनिषद्, विवेक से मिलती हैं। पुरुष से उपनिषद् अपनी बीती बातें बताती हैं।
➢ पुरुष के पूँछने पर उपनिषद् बताती है कि वह इतने दिन मठ चत्वर, पुराने देवागारों में बितायी क्योंकि यज्ञविद्या, मीमांसा और तर्कविद्याओं ने उसे आश्रय नहीं दिया।
➢ उपनिषद् ने आज्ञा का स्वरूप बताया और इसी समय निदिध्यासन प्रकट हुआ।
➢ निदिध्यासन, पुरुष के समक्ष ही उपनिषद् से निवेदन किया कि आपके गर्भ से 'विद्या' और 'प्रबोध' नामक दो सन्तानें होंगी। उनमें 'विद्या' को सङ्कर्ष विद्या द्वारा मन में संक्रान्त करा दें और प्रबोधचन्द्र को पुरुष के हाथों सौंपकर विवेक के साथ विष्णुभक्ति के पास चली जायें।
➢ प्रबोध के जन्म से सबका अज्ञानान्धकार दूर हो गया। पुरुष को विष्णुभक्ति के प्रसाद से मुक्ति मिली। भरतवाक्य के साथ नाटक समाप्त

प्रबोधचन्द्रोदय के प्रमुख पात्रों की विशेषताएँ

विवेक

➢ विवेक, प्रबोधचन्द्रोदय नाटक का नायक एवं राजा है।
➢ विवेक के पत्नी का नाम मति है। नाटक की सभी घटनाएं इन्हीं पात्रों के आस-पास घूमती हैं।
➢ विवेक काशी नगरी को दम्भ, अहङ्कार, मोह, लोभ आदि शत्रुओं से मुक्त कराना चाहता है।
➢ यम, नियम इत्यादि विवेक के मन्त्री हैं। 'वस्तुविचार' विवेक का प्रमुख पात्र है।
➢ विवेक, वस्तुविचार को आगे करके 'मोह' से युद्ध करता है, जिसमें मोह पराजित होता है।
➢ विवेक और उपनिषद् से ही प्रबोधचन्द्र का जन्म होता है।
➢ अन्त में विवेक विष्णुभक्ति के पास चला जाता है।

मति

➢ मति इस नाटक की प्रमुख स्त्री पात्र, नायिका तथा विवेक की पत्नी है।
➢ वह अनेक विषयों पर विवेक से प्रश्न पूँछा करती है और विवेक उसे हर जानकारी देते हैं।
➢ 'विवेक और उपनिषद् के संबन्ध से ही प्रबोधजन्म होगा यह सुनकर मति को न तो क्रोध आया और न ही विचलित हुई।
➢ इस प्रकार मति कर्त्तव्यपरायणा, पतिव्रता स्त्री है।

मोह

➢ मोह इस नाटक का प्रतिनायक तथा प्रमुख पात्र है।
➢ मोह का पक्ष संख्या में ज्यादा है, किन्तु विवेक के साथ युद्ध में हार जाता है।
➢ चार्वाक, मोह पक्ष से विवेक के साथ युद्ध करके मारा जाता है और मोह कहीं छिप जाता है।
➢ मोह ने इन्द्रलोक को छोड़कर काशी में रहने का निर्णय लिया जिसका विवेक ने विरोध किया।
➢ अपने भाइयों की मृत्यु के बाद भी मोह ने अपना कुटिल चाल नहीं त्यागा और मधुमती को अपने कार्यों में नियुक्त किया।
➢ सब प्रकार से प्रयास करने पर भी मोह को कहीं सफलता नहीं मिलती है।
➢ अपने हठी स्वभाव के कारण मोह, विवेक से पीछे नहीं हटता और अपने स्वाभिमान की रक्षा करता है।

अङ्कवार प्रमुख घटनाएँ

प्रथम अङ्क

➢ विवेक तथा मोह के पक्षकारों का वर्णन।
➢ विवेक- मति का वार्तालाप तथा प्रबोधचन्द्र के जन्म की उद्घोषणा।

द्वितीय अङ्क

➢ दम्भ आश्रम का वर्णन।
➢ मोह का इन्द्रलोक त्याग एवं काशी वास।

तृतीय अङ्क

➢ श्रद्धा का मिथ्यादृष्टि से ग्रस्त होना।
➢ शान्ति द्वारा श्रद्धा को ढूढ़ना।

चतुर्थ अङ्क

➢ राजा का सन्तोष से युद्ध सम्बंधी सलाह।
➢ राजा के आदेश पर सैनिकों का वाराणसी प्रस्थान।

पञ्चम अङ्क

➢ मोहपक्ष का संहार।

➢ मोह के पिता 'मन' का विलाप।

षष्ठ अङ्क

➢ प्रबोधचन्द्र का जन्म।

➢ विवेक का विष्णुभक्ति के पास जाना।

प्रबोधचन्द्रोदय का पात्र-परिचय

पुरुष - पात्र

1. **सूत्रधार**-प्रधान नट एवं मञ्च का प्रबन्धक।
2. **विवेक**-प्रधान नायक (राजा)
3. **वस्तुविचार**-विवेक का नौकर
4. **सन्तोष**- सत्य का सहचर
5. **पुरुष**-उपनिषद् का पति
6. **प्रबोधचन्द्र**-उपनिषद् का पुत्र
7. **वैराग्य, निदिध्यासन, संकल्प**-मन से उत्पन्न
8. **पारिपार्श्वक, पुरुष, सारथि, प्रतीहारी**- अन्य जन
9. **मोह**- प्रतिनायक
10. **चार्वाक**-मोह का मित्र
11. **काम, कोध,लोभ, दम्भ, अहङ्कार**-मोह के अमात्य
12. **मन**- संकल्प रूप
13. **वटु, शिष्य, दौवारिक**-अन्य लोग
14. **दिगम्बर भिक्षु, कापालिक**-बौद्ध, जैनमत के प्रचारक

स्त्री-पात्र

1. **नटी**-सूत्रधार की पत्नी
2. **मति**-विवेक की पत्नी
3. **श्रद्धा**- शान्ति की माता
4. **शान्ति**- विवेक की बहन
5. **करुणा**-शान्ति की सखी
6. **मैत्री**- श्रद्धा की सखी
7. **उपनिषद्**- वेदान्त विद्या, प्रबोध की माँ
8. **सरस्वती**-विष्णुभक्ति की सखी
9. **क्षमा**- विवेक की दासी
10. **मिथ्यादृष्टि**- मोह की पत्नी
11. **विभ्रमावती**- मोह की सखी
12. **रति**- काम की पत्नी
13. **हिंसा**- क्रोध की पत्नी
14. **तृष्णा**-लोभ की पत्नी

प्रबोधचन्द्रोदय की सूक्तियाँ

1. स्मरणमपि कामिनीनामलमिह मनसो विकाराय। (1/16)

भावार्थ- काम, रति से कहता है कि "स्त्रियों का स्मरण भी मन को विकृत करने में पर्याप्त होता है।"

2. नूनमन्धकारलेखया सहस्त्ररश्मेस्तिरस्कारो यथा तथा मायया स्फुरन्महाप्रकाशसागरस्य देवस्याप्यभिभवः।

भावार्थ- मति, विवेक से कहती है कि-आर्यपुत्र, जिस प्रकार सूर्य का अभिनव अन्धकार द्वारा होता है उसी प्रकार माया द्वारा ब्रह्म का अभिनव हुआ।

3. एताः प्रविश्य सदयं हृदयं नराणां,
किं नाम वामनयना न समाचरन्ति॥ (1/27)

भावार्थ- राजा, मति से कहता है, "मोहित करती हैं, मदयुक्त बनाती हैं, धिक्कारती हैं, खुश करती हैं, तकलीफ देती हैं, "हृदय में प्रवेश करके स्त्रियाँ पुरुषों का क्या नहीं कर देती हैं।"

4. यस्य हस्तौ च पादौ च मनश्चैव सुसंयतम्।
विद्या तपश्च तीर्थं च स तीर्थफलमश्नुते॥ (2/14)

भावार्थ- दम्भ अहङ्कार से कहता है, शास्त्रकारों ने कहा है- "जिस व्यक्ति के हाथ पैर तथा मन संयत है और विद्या तथा तप भी ठिकाने है वही व्यक्ति तीर्थफल प्राप्त करता है।"

5. उद्वेजयति सूक्ष्मोऽपि चरणं कण्टकाङ्कुरः। (2/27)

भावार्थ- चार्वाक कहता है- "छोटा-सा भी कण्टक चरण को उद्विग्न कर देता है।"

6. न खलु भावानुबन्धः प्रेमाकालेनापि विघटते।

भावार्थ- द्वितीय अङ्क में मिथ्यादृष्टि, मोह से कहती है, "भावनुबन्धी प्रेम पर समय की आँच नहीं लगती है।

7. अहो साधुरयं सौगतधर्मो यत्र सौख्यं मोक्षश्च।

भावार्थ- तृतीय अङ्क में बौद्धभिक्षु कहता है, "अहा! धन्य है यह सौगतधर्म जिसमें सुख तथा मोक्ष दोंनो है।

8. अहिंसा परमोधर्मोऽस्ति।

भावार्थ- तृतीय अङ्क में क्षपणक भयवश कहता है, "महानुभाव, अहिंसा परम धर्म है।"

9. सा विष्णुभक्ति सहिता, वसति हृदये महात्मनाम्। (3/24)

भावार्थ- करुणा से क्षपणक श्रद्धा के बारे में कहता है, "वह विष्णु भक्ति के साथ महात्माओं के हृदय में वास करती है।"

10. सहन्ते संतापं तदपि धनिनां द्वारि कृपणाः। (4/19)

भावार्थ- सन्तोष कहता है, " फिर भी कृपणजन धनिकों के दरवाजे पर सन्ताप सहा करते हैं।"

11. कुलस्त्रीणां नैसर्गिकं शीलं यद्विपन्मग्नस्य स्वामिनः समयप्रतीक्षणमिति।

भावार्थ- छठे अङ्क में शान्ति कहती है, "स्त्रियों का यही तो स्वाभाविक चरित्र होता है कि वे विपत्ति में फंसे स्वामी के सुसमय की प्रतीक्षा करती हैं।"

12. नान्योऽस्ति पन्था भवमुक्ति हेतुः। (6/17)

भावार्थ- राजा कहता है, "संसार से मुक्ति का कोई उपाय नहीं है।शिवाय ब्रह्मज्ञान के।"

तथ्यात्मक ज्ञान

➢ प्रतीकात्मक नाटक के प्रवर्तक कृष्ण मिश्र हैं।

➢ प्रबोधचन्द्रोदय एक सुखान्त नाटक है।

➢ सैद्धान्तिक दृष्टि से यह नाटक अद्वैत वेदान्त एवं विष्णुभक्ति का समन्वयात्मक रूप उपस्थित करता है।

➢ लेखक ने अमूर्तभावों को मानवों का रूप देने पूर्ण सफलता पाई है।

➢ इसे छायानाटक तथा भावनाटक की भी संज्ञा दी जाती हैं

- इस नाटक के प्रथम एवं चतुर्थ अङ्क में विष्कम्भक तथा षष्ठ अङ्क में प्रवेशक का प्रयोग है।
- यद्यपि रङ्गमञ्च की दृष्टि से यह नाटक उपयुक्त नहीं है फिर भी लेखक का उद्देश्य स्पष्ट है।

❑❑

कौटिल्य अर्थशास्त्र

- **लेखक - कौटिल्य**
- **जन्म** - अनुमानतः 375 ईसा पूर्व

  पिता का नाम - चणक

  आवास - पाटलिपुत्र

  अन्य नाम - कौटिल्य, विष्णुगुप्त

  अध्ययन - तक्षशिला

  व्यवसाय - चन्द्रगुप्त मौर्य के महामंत्री

  रचनाएं - अर्थशास्त्र, चाणक्यनीति

अर्थशास्त्र ग्रन्थ परिचय

- **लेखक -** कौटिल्य

  रचनाकाल - लगभग 300 ई॰ पू॰

  विभाजन - अधिकरण, प्रकरण और अध्याय में
- अर्थशास्त्र में कुल 15 अधिकरण, 180 प्रकरण तथा 150 अध्याय हैं।

  श्लोक - बीच में प्रयुक्त श्लोकों की संख्या 340 है।

  शैली - गद्य शैली
- यद्यपि अर्थशास्त्र गद्य में लिखा गया है किन्तु वर्णों की संख्या से यदि छन्द बनायें तो लगभग **छः हजार अनुष्टुप् छन्द** बनेंगे।

अर्थशास्त्र के 15 अधिकरणों के नाम

अधिकरण	नाम	प्रकरण	अध्याय
प्रथम अधिकरण	विनयाधिकारिक	16	21
द्वितीय अधिकरण	अध्यक्ष-प्रचार	39	36
तृतीय अधिकरण	धर्मस्थीय	20	20
चतुर्थ अधिकरण	कण्टक-शोधन	13	13
पञ्चम अधिकरण	योग-वृत्त	7	6
षष्ठ अधिकरण	मण्डल-योनि	2	2
सप्तम अधिकरण	षाड्गुण्य	29	18
अष्टम अधिकरण	व्यसनाधिकारिक	8	5
नवम अधिकरण	अभियास्यत्कर्म	12	7
दशम अधिकरण	साङ्ग्रामिक	13	6
एकादश अधिकरण	वृत्तसंघ	2	1
द्वादश अधिकरण	आबलीयस	9	5
त्रयोदश अधिकरण	दुर्गलम्भोपाय	6	5
चतुर्दश अधिकरण	औपनिषदिक	3	4
पञ्चदश अधिकरण	तन्त्रयुक्ति	1	1

ग्रन्थ की विषय वस्तु का संक्षिप्त परिचय-

- प्रथम अधिकरण का नाम है- **'विनयाधिकारिक'**
- प्रथम अधिकरण में कुल 21 अध्याय हैं।
- प्रथम अधिकरण में राजा के अनुशासन, शास्त्र-शिक्षा, मन्त्रियों तथा पुरोहित के गुण, उनके प्रलोभन, गुप्तचर, सभा, राजदूत, राजकुमार, अन्तःपुर तथा राजा की सुरक्षा का विधान है।
- द्वितीय अधिकरण का नाम **'अध्यक्षप्रचार'** है।
- अध्यक्ष प्रचार में कुल 36 अध्याय हैं।
- यह सबसे बड़ा अधिकरण है।
- इस अधिकरण में विभिन्न शासन-विभागों के अध्यक्षों के कर्तव्य आदि का वर्णन करते हुए ग्राम-रचना, गोचर भूमि, वन, दुर्ग आदि सन्निधाता के कर्तव्य, कर-ग्रहण, राज्य कोष, रत्न परीक्षा, मुद्राध्यक्ष इत्यादि का वर्णन है।
- तृतीय अधिकरण का नाम **'धर्मस्थीय'** है।
- इस अधिकरण में कुल 20 अध्याय हैं।
- इस अधिकरण में न्यायशासन, विधिनियम, विवाह-प्रकार, दम्पती के कर्तव्य, स्त्रीधन, पुत्रों के 12 भेद, दाय विभाग तथा व्यवहार के विषय में विवेचन किया गया है।
- चतुर्थ अधिकरण का नाम **'कण्टन-शोधन'** है।
- इस अधिकरण में 13 अध्याय हैं।
- इस अधिकरण में शिल्पियों तथा व्यापारियों की विपत्तियों से रक्षा, भ्रष्टाचारियों का दमन, विभिन्न अपराधों के लिए दण्ड की व्यवस्था आदि का निरूपण है।
- पाँचवाँ अधिकरण **'योग-वृत्त'** के नाम से जाना जाता है।
- इस अधिकरण में कुल 6 अध्याय हैं।
- इस अधिकरण में उपांशुवध, राज्यकोष वृद्धि, कर्मचारियों का भरण-पोषण, राज्यसंकट का प्रतीकार आदि वर्णित है।
- छठें अधिकरण का नाम है, **'मण्डलयोनि'**।
- इस अधिकरण में 2 अध्याय हैं।
- इस अधिकरण में मण्डल की रचना, राज्य की सात प्रकृतियों अन्तर्राष्ट्र सम्बन्ध तथा तीन शक्तियों का वर्णन है।
- राज्य की सात प्रकृतियाँ हैं - 1. राजा 2. अमात्य 3. राष्ट्र 4. दुर्ग 5. कोश 6. बल 7. सुहृत्
- तीन शक्तियाँ - 1. उत्साह 2. मन्त्र 3. प्रभुशक्ति।
- सातवें अधिकरण को **'षाड्गुण्य'** के नाम से जाना जाता है।
- इस अधिकरण में कुल 18 अध्याय हैं।
- इस अधिकरण में सन्धि, विग्रह, आसन, यान (आक्रमण) संश्रय और द्वैधीभाव के रूप में राजनीति के षड्गुणों का विचार किया गया है।
- इसमें सेना की कमी तथा आदेशातिक्रमण जैसे विषयों का भी निरूपण है।
- आँठवा अधिकरण **'व्यसनाधिकारिक'** नाम से जाना जाता है।
- इस अधिकरण में कुल 5 अध्याय हैं।
- इस 5 अध्यायों में राजा पर मृगया, द्यूत, स्त्री सेवन आदि दोषों के कारण आयी विपत्तियों का एवं राष्ट्र पर आये अन्य

संकटों का वर्णन है।
- नौवाँ अधिकरण **'अभियास्यत्कर्म'** है।
- इस अधिकरण में 7 अध्याय हैं।
- नौवें अधिकरण के अध्यायों में युद्ध विषयक सम्पूर्ण वृत्तान्त है।
- इसमें अर्थ-अनर्थ तथा संशय सम्बन्धी आपत्तियाँ और उनके प्रतीकार के उपायों से प्राप्त होने वाली सिद्धियाँ हैं।
- दसवें अधिकरण को **'साङ्ग्रामिक'** कहा जाता है।
- इस अधिकरण में कुल 6 अध्याय हैं।
- इन अध्यायों में छावनी का निर्माण, आक्रमण के समय सेना की रक्षा, कूट-युद्ध में सेनाओं के कार्य, प्रकृतिव्यूह, विकृतिव्यूह और प्रतिव्यूह की रचना इत्यादि का वर्णन है।
- ग्यारहवाँ अधिकरण का नाम **'वृत्तसंघ'** है।
- इस अधिकरण में मात्र 1 अध्याय है।
- इसमें विभिन्न व्यवसायों के संघों को वश में रखने, सामादि नीतियों के प्रयोग, संघ तोड़ने तथा उपांशुवध का वर्णन है
- बारहवाँ अधिकरण **'आबलीयस'** नाम से जाना जाता है।
- इस अधिकरण में 5 अध्याय हैं।
- इसमें दुर्बल राजा के द्वारा शक्ति बढ़ाने के उपायों का वर्णन है।
- शक्तिशाली शत्रु के राज्य में दूत भेजना, गुप्तचरों का प्रयोग, सम्पत्तिनाश कराना, आपूर्ति का अवरोध इत्यादि दुर्बल राजा करते हैं।
- तेरहवाँ अधिकरण **'दुर्गलम्भोपाय'** है।
- इस अधिकरण में 5 अध्याय हैं।
- इसमें शत्रु के दुर्ग को अधिकृत करने के विविध उपायों का एवं विजित राज्य में शान्ति-स्थापना का वर्णन है।
- चौदहवाँ अधिकरण **'औपनिषदिक'** नाम से जाना जाता है।
- इस अधिकरण में 4 अध्याय हैं।
- इन अध्यायों में हत्या, अन्धीकरण, अपने को अदृश्य बनाना, अन्धकार में देखना, शत्रुवध के लिए मन्त्रौषधि का प्रयोग इन प्रयोगों के प्रतीकार इत्यादि रहस्यपूर्ण विषयों का वर्णन है।
- पन्द्रहवें अधिकरण का नाम **'तन्त्रयुक्ति'** है।
- इसमें एक अध्याय है।
- इसमें ग्रन्थ की विषयवस्तु तथा अर्थ-निर्णय के लिए सहायक युक्तियों का प्रतिपादन है।

कौटिल्य का अर्थशास्त्र

प्रथम अधिकरण, प्रथम प्रकरण-द्वितीय अध्याय

विद्यासमुद्देशः आन्वीक्षकीस्थापना

1. आन्वीक्षकी त्रयी वार्ता दण्डनीतिश्चेति विद्याः।

अर्थ- आन्वीक्षकी, त्रयी, वार्ता और दण्डनीति - ये चार विद्यायें हैं।

2. त्रयी वार्ता दण्डनीतिश्चेति मानवाः। त्रयीविशेषो ह्यान्वीक्षकीति।

अर्थ-मनु सम्प्रदाय के अनुयायी आचार्य त्रयी, वार्त्ता और दण्डनीति इन तीन विद्याओं को मानते हैं। उनका मत है कि आन्वीक्षकी का समावेश त्रयी के अन्तर्गत हो जाता है।

3. वार्ता दण्डनीतिश्चेति बार्हस्पत्याः। संवरणमात्रं हि त्रयी लोकयात्राविद इति।

अर्थ- आचार्य **बृहस्पति** के अनुयायी विद्वान् केवल दो ही विद्यायें मानते हैं वार्त्ता और दण्डनीति। उनके मतानुसार त्रयी तो लोकयात्राविद् लोगों की आजीविका का साधन मात्र है

4. दण्डनीतिरेका विद्येत्यौशनसाः। तस्यां हि सर्वविद्यारम्भाः प्रतिबद्धा इति।

अर्थ- शुक्राचार्य के अनुयायी विद्वानों ने तो केवल दण्डनीति को ही विद्या माना है, और उसी को सम्पूर्ण विद्याओं का स्थान एवं कारण स्वीकार किया है।

5. चतस्र एव विद्या इति कौटिल्यः। ताभिर्धर्माथौ यद्विद्यात्तद्विद्यानां विद्यात्वम्।

अर्थ- आचार्य कौटिल्य उक्त चारों विद्याओं को मानते हैं और उनकी यथार्थता धर्म तथा अधर्म के ज्ञान में बताते हैं

6. साङ्ख्यं योगो लोकायतं चेत्यान्वीक्षकी। धर्माधर्मौ त्रय्यामर्थानर्थौ वार्तायां नयापनयौ दण्डनीत्याम्। बलाबले चैतासां हेतुभिरन्वीक्षमाणान्वीक्षकी लोकस्योपकरोति, व्यसनेऽभ्युदये च बुद्धिमवस्थापयति; प्रज्ञावाक्यक्रियावैशारद्यं च करोति।

अर्थ- सांख्य, योग और लोकायत (नास्तिक दर्शन), ये आन्वीक्षकी विद्या के अन्तर्गत हैं। त्रयी में धर्म-अधर्म का, वार्त्ता में अर्थ-अनर्थ का और दण्डनीति में सुशासन-दुःशासन का ज्ञान प्रतिपादित है)

त्रयी आदि विद्याओं की प्रधानता अप्रधानता (बलाबल), को भिन्न-भिन्न युक्तियों से, निर्धारित करती हुई आन्वीक्षकी विद्या लोक का उपकार करती है, सुख-दुःख से बुद्धि को स्थिर रखती है; और सोचने, विचारने, बोलने तथा कार्य करने में सक्षम बनाती है।

प्रदीपः सर्वविद्यानामुपायः सर्वकर्मणाम्।
आश्रयः सर्वधर्माणां शश्वदान्वीक्षकी मता॥

अर्थ- यह आन्वीक्षकी विद्या सर्वदा ही सब विद्याओं का प्रदीप सभी कार्यों का साधन और सब धर्मों का आश्रय अर्थ मानी गई है

प्रथम अधिकरण-सप्तम प्रकरण-ग्यारहवाँ अध्याय

गूढपुरुषोत्पत्तिः

- **उपधाभिः शुद्धामात्यवर्गो गूढपुरुषानुत्पादयेत्।**
  धर्मोपधा आदि उपायों के द्वारा अमात्यवर्ग की परीक्षा कर लेने के अनन्तर राजा गुप्तचरों की नियुक्ति करें।
- **कापटिकोदास्थितगृहपतिवैदेहकतापसव्यञ्जनान् सत्रितीक्ष्णरसदभिक्षुकीश्च।**
  अर्थ- कापटिक, उदास्थित, गृहपतिक, वैदेहक, तापस, सत्री, तीक्ष्ण, रसद और भिक्षुकी आदि अनेक प्रकार के गुप्तचर होते हैं।
- **परमर्मज्ञः प्रगल्भश्छात्रः कापटिकः।**
  अर्थ- दूसरों के रहस्यों को जानने वाला, बड़ा, प्रगल्भ (दबंग) और विद्यार्थी की वेश-भूषा में रहने वाला गुप्तचर

'**कापटिक**' कहलाता है।

- **तमर्थमानाभ्यामुत्साह्यमन्त्री ब्रूयात्- राजानं मां च प्रमाणं कृत्वा यस्य यदकुशलं पश्यति तत्तदानीमेव प्रत्यादिशेति।**
अर्थ- इस गुप्तचर को धन, मान और सत्कार से सन्तुष्ट कर मन्त्री उससे कहे 'जिस-किसी की भी तुम हानि होते देखो, राजा को और मुझे प्रमाण मान कर तत्काल ही तुम मुझे सूचित कर दो।
- **प्रव्रज्याप्रत्यवसितः प्रज्ञाशौचयुक्त उदास्थितः।**
अर्थ- बुद्धिमान्, सदाचारी, संन्यासी के वेष में रहने वाले गुप्तचर का नाम '**उदास्थित**' है।
- **स वार्ताकर्मप्रदिष्टायां भूमौ प्रभूतहिरण्यान्तेवासी कर्म कारयेत्।**
अर्थ- वह अपने साथ बहुत से विद्यार्थी और बहुत सा धन लेकर, वहाँ जाकर विद्यार्थियों द्वारा कार्य करवाये, जहाँ कृषि, पशुपालन एवं व्यापार के लिए भूमि नियुक्त है।
- **कर्मफलाच्च सर्वप्रव्रजितानां ग्रासाच्छादनावसथान्-प्रतिविदध्यात्।**
अर्थ- उस कार्य को करने से जो लाभ हो, उससे वह सब संन्यासियों के भोजन, वस्त्र एवं निवास का प्रबन्ध करें
- **वृत्तिकामांश्चोपजयेत् - एतोनैववेषेण राजार्थश्चरितव्यो भक्तवेतनकाले चोपस्थातव्यमिति।**
अर्थ- जो भी इस प्रकार की आजीविका की इच्छा करें, उन्हें सब तरह से अपने वश में कर ले और उनसे कहे, तुम्हें इसी वेष में राजा का कार्य करना है। जब तुम्हारे वेतन तथा भत्ते का समय आये, यहाँ उपस्थित हो जाना।
- **सर्वप्रव्रजिताश्च स्वं स्वं वर्गमुपजपेयुः।**
अर्थ- दूसरे संन्यासी भी अपने-अपने सम्प्रदाय के संन्यासियों को इसी प्रकार समझा-बुझा दें।
- **कर्षको वृत्तिक्षीणः प्रज्ञाशौचयुक्तो गृहपतिकव्यञ्जनः।**
अर्थ- बुद्धिमान्, पवित्र हृदय और गरीब किसान के वेष में रहने वाले गुप्तचर को 'गृहपतिक' कहते हैं।
- **स कृषि कर्मप्रदिष्टायां भूमाविति समानं पूर्वेण।**
अर्थ- वह कृषिकार्य के लिए नियुक्त भूमि में जाकर 'उदास्थित' गुप्तचर के ही समान कार्य करें।
- **वाणिजको वृत्तिक्षीणः प्रज्ञाशौचयुक्तो वैदेहकव्यञ्जनः।**
अर्थ- बुद्धिमान्, पवित्र हृदय, गरीब, व्यापारी के वेष में रहने वाला गुप्तचर '**वैदेहक**' है।
- **स वणिक्कर्मप्रदिष्टायां भूमाविति समानं पूर्वेण।**
अर्थ- वह व्यापारकार्य के लिए नियुक्त भूमि में जाकर '**उदास्थित**' गुप्तचर की भाँति कार्य करे।
- **मुण्डो जटिलो वा वृत्तिकामस्तापसव्यञ्जनः।**
अर्थ- जीविका के लिए सिर मुँड़ाये या जटा धारण किये हुए, राजा का कार्य करने वाला गुप्तचर ही '**तापस**' है।
- **स नगराभ्याशेप्रभूतमुण्डजटिलान्तेवासी शाकं यवसमुष्टिं वा मासद्विमासान्तरं प्रकाशमश्नीयात्, गूढमिष्टमाहारम्।**
अर्थ- वह कहीं नगर के समीप ही बहुत से मुंड या जटिल विद्यार्थियों को लेकर रहे और महीने दो महीने तक लोगों के सामने हरा शाक या मुट्ठीभर अनाज खाता रहे, वैसे छिपे तौर पर अपनी इच्छानुसार सुस्वादु भोजन करता रहे।
- **वैदेहकान्तेवासिनश्चैनं समिद्धयोगैरर्चयेयुः।**
अर्थ- वैदेहक तथा उसके अनुचर तापस गुप्तचर की पूजा-अर्चना करें।
- **शिष्याश्चास्यावेदयेयुः- असौ सिद्धः सामेधिक इति। समेधाशास्तिभिश्चाभिगतानामङ्गविद्यया शिष्य-संज्ञाभिश्च कर्माण्यभिजनेऽवसितान्यादिशेदल्पलाभ-मग्निदाहं चोरभयं दूष्यवधं तुष्टिदानं विदेशप्रवृत्ति ज्ञानम् इदमद्यश्वोवा भविष्यतीदं वा राजा करिष्यतीति।**

अर्थ- शिष्यमंडली घूम-घूम कर यह प्रचार करे कि यह तपस्वी पूर्ण सिद्ध, भविष्य वक्ता और लौकिक शक्तियों से संपन्न है। अपना भविष्य-फल जानने की इच्छा से आये हुए लोगों की पारिवारिक पहचान, उनके शारीरिक चिह्नों के माध्यम से तथा अपने शिष्यों के संकेतों के अनुसार बतावे। ऐसा भी बतावे कि इन-इन कार्यों में थोड़ा लाभ का योग है। इसके अतिरिक्त वह, आग लगने, चोरी हो जाने, दुष्ट लोगों के वध स्वरूप इनाम देने, देश-विदेश के फल, यह कार्य आज होगा या कल, या इस कार्य को राजा करेगा, आदि बातें भी उसको बतावे।

- **तदस्य गूढाः सत्रिणश्च संवादयेयुः।**
अर्थ- इस प्रश्नोत्तर प्रसंग में '**तापस**' गुप्तचर की दूसरे सत्री आदि गुप्तचर सहायता करें।
- **सत्वप्रज्ञावाक्यशक्तिसम्पन्नानां राजभाव्यमनुव्याहरेन्मन्त्रिसंयोगं च।**
अर्थ- प्रश्नकर्ताओं में यदि धीर, बुद्धिमान्, चतुर लोग हों तो उनसे वह, राजा की ओर से, धन प्राप्त होने की बात कहे; मन्त्री के साथ भी उनकी मुलाकात का संयोग बताये।
- **मन्त्री चैषां वृत्तिकर्मभ्यां वियतेत।**
अर्थ- जब मन्त्री से इन लोगों की मुलाकात हो तो उचित यह होगा कि ऐसे लोगों को मंत्री धन तथा आजीविका आदि देकर, गुप्तचर की भविष्यवाणी को सच्ची सिद्ध कर दे।
- **ये च कारणादभिक्रुद्धास्तानर्थमानाभ्यां शमयेत्, अकारणक्रुद्धान् तूर्णींदण्डेन राजद्विष्टकारिणश्च।**
अर्थ- जो लोग किसी कारण वश क्रुद्ध हो गए हों उन्हें धन एवं सम्मान देकर संतुष्ट किया जाय। जो बिना कारण ही क्रुद्ध हों तथा राजा से द्वेष रखते हों, उनका चुपचाप वध करवा डाले।
- **''पूजिताश्चार्थमानाभ्यां राज्ञा राजोपजीविनाम्। जानीयुः शौचमित्येताः पञ्च संस्थाः प्रकीर्तिताः॥**
अर्थ- इस प्रकार धन और मान से राजा द्वारा सम्मानित गुप्तचर तथा अमात्य आदि राजोपजीवी पुरुषों के सद्व्यवहारों को भली भाँति जान लें। पाँच प्रकार के गुप्तचर पुरुषों की नियुक्ति और उनके कार्यों के विवरण का यही विधान है।

नोट- ये पाँच गुप्तचर (कापटिक,उदास्थित, गृहपतिक, वैदेहक तापस) एक ही स्थान पर रहकर कार्य करने के कारण 'संस्था' कहलाते हैं।

- **ये चास्य सम्बन्धिनोऽवश्यभर्तव्यास्ते लक्षणमङ्गविद्यां जम्भकविद्यां मायागतमाश्रमधर्मं निमित्तमन्तर-**

चक्रमित्यधीयानाः सत्रिणः संसर्गविद्या वा।
अर्थ- जो राजा के संबंधी न हों किन्तु जिनका पालन-पोषण करना राजा के लिए आवश्यक हो, जो सामुद्रिक विद्या, ज्योतिष, व्याकरण आदि अंगो का शुभाशुभ फल बताने वाली विद्या, वशीकरण, इन्द्रजाल, धर्मशास्त्र, शकुनशास्त्र, पक्षिशास्त्र, कामशास्त्र तथा तत्संबंधी नाचने गाने की कला में निपुण हो वे **सत्री** कहलाते हैं।

- **ये जनपदे शूरास्त्यक्तात्मानो हस्तिनं व्यालं वा द्रव्यहेतोः प्रतियोधयेयुस्ते तीक्ष्णाः।**
  अर्थ- अपने देश में रहने वाले ऐसे व्यक्ति, जो द्रव्य के लिए अपने प्राणों की भी परवाह न करके हाथी, बाघ और साँप से भी भिड़ जाते हैं, उन्हें **'तीक्ष्ण'** कहते हैं।
- **ये बन्धुषु निःस्नेहाः क्रूराश्चलसाश्च ते रसदाः।**
  अर्थ- अपने भाई-बन्धुओं से भी स्नेह न रखने वाले क्रूरप्रकृति और आलसी स्वभाव वाले व्यक्ति **'रसद'** (जहर देने वाला) कहलाते हैं।
- **परिव्राजिका वृत्तिकामा दरिद्रा विधवा प्रगल्भा ब्राह्मण्यन्तःपुरे कृतसत्कारा महामात्रकुलान्यधिगच्छेत्।**
  अर्थ- आजीविका की इच्छुक, दरिद्र, प्रौढ, विधवा, दबंग, ब्राह्मणी, रनिवास में सम्मानित, प्रधान अमात्यों के घर में प्रवेश पानेवाली **परिव्राजिका** (संन्यासिनी के वेश में खुफिया का काम करने वाली) नाम की गुप्तचरी कहलाती है।
- **एतया मुण्डावृषल्यो व्याख्याताः इति सञ्चाराः।**
  अर्थ- इसी प्रकार मुंडा (मुंडित बौद्ध-भिक्षुणी) और वृषली (शूद्रा) आदि नारी गुप्तचरियों को भी जान लेना चाहिए। ये सभी **'संचार'** नामक गुप्तचर हैं।

महत्वपूर्ण तथ्य

- कौटिल्य के अनुसार अर्थ का अभिप्राय है - मनुष्यों की बस्ती अर्थात् वह प्रदेश जिसमें मनुष्य बसते हैं।
- अर्थशास्त्र उस शास्त्र को कहते है जिसमें राज्य की प्राप्ति और उसके पालन के उपायों का वर्णन हो।
- कौटिल्य ने दो प्रकार के संघराज्यों का उल्लेख किया है।
- प्रथम संघ राज्य राजा उपाधि धारण करने वाले राजशासित राज्य।
- दूसरे बिना राजा की उपाधि धारण करने वाले राजशासित राज्य।
- प्रथम संघराज्य के प्रमुख नाम - लिच्छिविक, वृजिक, मल्लक, मद्रक, कुकुर, कुरु और पाञ्चाल।
- दूसरे संघराज्य के प्रमुख नाम - कांबोज, सुराष्ट्र, क्षत्रिय और श्रेणी आदि।
- कौटिल्य के अनुसार एक चिरस्थायी एवं सर्वांगीण साम्राज्य की सुरक्षा-व्यवस्था के लिए मंत्रिपरिषद् का होना आवश्यक है।
- जातक, महावस्तु तथा अशोक के शिलालेखों में मंत्रिपरिषद् को 'परिसा' कहा गया है।
- कौटिल्य ने मन्त्रिपरिषद् के प्रमुख चार सदस्य बताये हैं,

1. मन्त्री 2. पुरोहित 3. सेनापति 4. युवराज।

- इनके अतिरिक्त पौर, जानपद आदि परिषद् के सदस्य होते थे।
- कौटिल्य के अनुसार मन्त्री और अमात्य दो अलग-अलग पद थे।
- कौटिल्य ने राज्यधिकारियों को तीन भागों में विभक्त किया हैं-
  प्रथम श्रेणी में - मंत्री, पुरोहित, सेनापति, युवराज।
  द्वितीय श्रेणी में - दौवारिक, अंतर्वंशिक, प्रशास्तृ, समाहर्ता, सन्निधाता
  तृतीय श्रेणी में - प्रदेष्टा, नायक, पौर, व्यावहारिक, कार्मातिक, सभ्य, दण्डपाल, दुर्गपाल तथा अंतपाल।
- कौटिल्य ने दूतों की तीन श्रेणियाँ बतायी है।
  1. निसृष्टार्थ 2. परिमितार्थ 3. शासनहर
- कौटिल्य ने कार्य भेद से गुप्तचरों के नौ विभाग किये है।
  1.कापटिक 2. उदास्थित 3. गृहपतिक 4. वैदहेक 5. तापस 6. सत्री 7 तीक्ष्ण 8 रसद 9 भिक्षुकी।
- अर्थ विभाग के सबसे बड़े अधिकारी को समाहर्त्ता कहा गया है।
- अर्थ विभाग के अन्य अधिकारियों तथा कर्मचारियों की श्रेणी -
  1. सन्निधाता (भण्डारो का अधिकारी)
  2. स्थानिक (जनपद के चतुर्थांश का अधिकारी)
  3. गोप (गाँवों का अधिकारी)
  4. प्रदेष्टा (स्थानिक तथा गोप का सहायक अधिकारी)
  5. अक्षपटलाध्यक्ष (अकाउंट जनरल)
  6. कोषाध्यक्ष, अर्थकारणिक (मुख्य अकाउंटेट)
  7. कार्मिक (अर्थकारिण का अधीनस्थ कर्मचारी)
  8. गाणनिक्य (जिलों का हिसाब-किताब रखने वाले कर्मचारी)
  9. साँख्यानक (गणना करने वाले)
  10. लेखक (क्लर्क)
  11. नीवीग्राहक, गोपलफ, अपयुक्त, निधानक, निबंधक, प्रतिग्राहक, दायक और मैत्रिवैयावृत्यक आदि का नाम उल्लेखनीय है।
- अर्थशास्त्र का मंगलाचरण - **'नमः शुक्रबृहस्पतिभ्याम्'**।
- अर्थशास्त्र के मंगलाचरण में शुक्राचार्य और बृहस्पति को नमस्कार किया गया है।
- प्रथम अधिकरण में प्रमुख प्रकरण है - विद्यासमुद्देश, इन्द्रियजय तथा अमात्योत्पत्ति।
- द्वितीय अधिकरण में प्रमुख प्रकरण है - दुर्गविनिवेश।
- पञ्चम अधिकरण में दंडव्यवस्था नामक प्रकरण महत्वपूर्ण है।
- षष्ठ अधिकरण में प्रकृतियों के गुण, शांति तथा उद्योग का वर्णन है।
- 'छह गुणों का उद्देश्य' का वर्णन सातवें अधिकरण में है।
- आठवें अधिकरण का नाम है - 'व्यसनाधिकारिक'
- आठवें अधिकरण में प्रकृतियों के व्यसन का वर्णन है।
- नवम अधिकरण में आक्रमण का निरूपण किया गया है।
- दशम अधिकरण में छावनी का निर्माण, दंडव्यूह, मंडलव्यूह प्रकृतिव्यूह इत्यादि का रचना इत्यादि का वर्णन है।
- भेदक प्रयोग तथा उपांशुदंड का वर्णन एकादश अधिकरण में है।
- द्वादश अधिकरण में दूतकर्म, मंत्रयुद्ध, शस्त्र, अग्नि और रथों

का गूढ प्रयोग इत्यादि का वर्णन है।

- तेरहवें अधिकरण में उपजाप, योगवामन, शत्रु के दुर्ग को तोड़ना इत्यादि का वर्णन है।

अर्थशास्त्र के सम्भावित प्रश्न-

- अर्थशास्त्र के अनुसार चार विद्यायें कौन-कौन सी है? - **1.आन्वीक्षकी 2.त्रयी 3.वार्त्ता 4.दण्डनीति**
- मनु सम्प्रदाय कुल कितने विद्याओं को मानते है? -**तीन** (1.त्रयी 2.वार्त्ता 3.दण्डनीति)
- आचार्य बृहस्पति कितने विद्याओं को मानते है? - **दो** (1.वार्त्ता 2.दण्डनीति)
- वार्त्ता तथा दण्डनीति को विद्या कौन मानता है? **आचार्य बृहस्पति**
- केवल दण्डनीति को विद्या कौन मानता है? - **शुक्राचार्य**
- चारों विद्याओं (आन्वीक्षकी, त्रयी, वार्त्ता, दण्डनीति) को कौन मानता है - **आचार्य कौटिल्य।**
- आन्वीक्षकी विद्या के अन्तर्गत कौन-कौन से दर्शन आते हैं? **सांख्य, योग तथा लोकायत**
- सभी विद्याओं का प्रदीप कौन है? **आन्वीक्षकी**
- सभी कार्यों का साधन और सब धर्मों का आश्रय किस विद्या को माना गया है? **आन्वीक्षकी।**
- 'प्रदीपः सर्वविद्यानामुपायः---------किस ग्रन्थ से लिया गया है।?- **कौटिल्य अर्थशास्त्र**
- प्रथम अधिकरण का क्या नाम है? - **विनयाधिकारिक**
- स्थायी गुप्तचरों की संख्या कितनी होती है? **पाँच**
- स्थायी गुप्तचरों के क्या नाम हैं? **1.कापटिक 2.उदास्थित 3.गृहपतिक 4.वैदेहक 5.तापस**
- दूसरों के रहस्यों को जानने वाला, प्रगल्भ और विद्यार्थी की वेष-भूषा में कौन-सा गुप्तचर रहता है? - **कापटिक**
- संन्यासी के वेष में कौन-सा गुप्तचर निवास करता है? - **उदास्थित**
- किसान के वेष में रहने वाले गुप्तचर का क्या नाम है?- **गृहपतिक**
- व्यापारी के वेष में कौन-सा गुप्तचर निवास करता है? - **वैदेहक**
- सिर मुँड़ाये या जटा धारण कर के कौन-सा गुप्तचर रहता है? **तापस**
- कामशास्त्र तथा तत्संबधी नाचने-गाने की कला में कौन गुप्तचर निपुण होता है? **सत्री**
- प्राणों की परवाह न करके हाथी,बाघ और साँप से कौन-सा गुप्तचर भिड़ जाता है? **तीक्ष्ण**
- क्रूरप्रकृति और आलसी स्वभाव वाला कौन-सा गुप्तचर होता है? **रसद**
- सत्री, तीक्ष्ण, रसद, परिव्राजिका, मुण्डा तथा वृषली किस गुप्तचर के अन्तर्गत आते है? **संचार**

अर्थशास्त्र- बिन्दुवार अध्ययन

- कौटिल्य लेखक थे? - **अर्थशास्त्र के**
- कौटिल्यस्य अपरनाम किम्? - **चाणक्यः**
- कौटिल्य का अर्थशास्त्र कितने अधिकरणों में विभाजित है? - **15**
- अर्थशास्त्रस्य प्रथमाधिकरणं वर्तते - **विनयाधिकारिकम्**
- अर्थशास्त्रस्य द्वितीयाधिकरणं वर्तते? - **अध्यक्षप्रचारः**
- अर्थशास्त्रस्य तृतीयाधिकरणं वर्तते - **धर्मस्थीयम्**
- अर्थशास्त्रस्य चतुर्थाधिकरणं वर्तते - **कण्टकशोधनम्**
- कौटिल्य नाम्ना व्यवह्रयते - **चाणक्यः**
- अर्थशास्त्रे विद्यासमुद्देशः कुत्र वर्तते?- **विनयाधिकारिके**
- दुर्गविनिवेशः कुत्र उपदिष्टः - **अध्यक्षप्रचारे**
- इन्द्रियजयः अर्थशास्त्रे कुत्र उपदिष्टः?- **विनयाधिकारिके**
- कौटिल्यार्थशास्त्रानुसारेण आन्वीक्षकी विद्या अस्ति - **सांख्यं योगो लोकायतं च**
- कौटिल्यार्थशास्त्रानुसारेण कीदृशो दण्डः सर्वाधिकः प्रजामुद्वेजयति? - **तीक्ष्णदण्डः**
- अमात्यपरीक्षोपायेषु नास्ति - **मोक्षोपधा**
- कति आढको भवेद् द्रोणः - **चतुराढकाः**
- दायभाग में श्रेष्ठ भाग का अधिकारी पुत्र होता है - **ज्येष्ठ**
- पुत्रों में कौन श्रेष्ठ होता है? - **औरस**
- अमात्योत्पत्तिः कुत्र उपदिष्टा? - **विनयाधिकारिके**
- दण्डनीतेः अपरं नाम किम्? - **कौटिलीय-अर्थशास्त्रम्**
- अमात्यानां शौचाशौचज्ञानार्थं कौटिल्येन उपधासु या न निर्दिष्टा? - **मोक्षोपधा**
- मन्त्रिपरिषदं द्वादशामात्यान्कुर्वीत् इति कस्य मान्यता? - **मानवानाम्**
- समयाचारिकं कुत्रोपदिष्टमर्थशास्त्रे? - **योगवृत्ते**
- कौटिल्येन यो गूढपुरुषेषु न निर्दिष्टः - **कार्मिकः**
- सन्धिकर्म कुत्रोपदिष्टम्? - **षाड्गुण्ये**
- कौटिल्य के 'अर्थशास्त्र' में किस पहलू पर प्रकाश डाला गया है? - **राजनीतिक नीतियाँ**
- अमात्यपरीक्षायाः कतिविधः उपायः? - **चतुर्विधः**
- कौटिल्यानुसारं विद्याः सन्ति? - **चतुर्विधा**
- अर्थशास्त्रे आन्वीक्षकीत्रयीवार्तानां योगक्षेमसाधनो भवति - **दण्ड**
- कौटिल्यानुसारं त्रयी के संवरणमात्रं मन्यन्ते?- **बार्हस्पत्याः**
- कौटिल्यानुसारं मानवाः कां विद्यां पृथक् न मन्यन्ते? - **आन्वीक्षकीम्**
- कौटिल्येन विधेः चत्वारः चरणाः स्वीकृताः - **धर्मः, व्यवहारः, चरित्रं, राजशासनश्च**
- अर्थशास्त्रात् किं बलवत् - **धर्मशास्त्रम्**
- अक्षपटलाध्यक्षस्य कार्यमासीत्? - **आयव्ययविवरणस्य रक्षणम्**
- नीतिविषयकग्रन्थस्य कर्त्ता - **शुक्राचार्यः**
- कौटिल्येन सेनायाः श्रेण्यः कतिधा उल्लिखिताः - **सप्त**
- अधोलिखितेषु क्रमः कुत्र पालितः? - **सन्धिः, विग्रहः, यानं, आसनम्**
- अर्थशास्त्रे उद्धृतं 'पितृपैतामहानमात्यान् कुर्वीत' इति मतं कस्य? - **कौणपदन्तस्य**
- अर्थशास्त्रे उद्धृतं 'सहाध्यायिनोऽमात्यान्कुर्वीत' इति मतं कस्य?

-**भारद्वाजस्य**

- अमात्यानां शौचाशौचज्ञानं कथं ज्ञातव्यमिति कौटिल्यः अभिप्रैति? - **उपधाभिः**
- "त्रय्या हि रक्षितो लोकः प्रसीदति न सीदति"–इति कस्याभिप्रायः? - **कौटिल्यस्य**
- कौटिल्यानुसारं कः मन्त्रं श्रोतुं न अर्हति - **अश्रुतशास्त्रार्थः**
- कौटिलीयार्थशास्त्रे 'अर्थ' शब्दस्य कोऽर्थः? - **मनुष्यवती भूमिः**
- अर्थशास्त्रानुसारेण वार्ता शब्दस्यार्थः कः - **कृषिः, पशुपालनं, वाणिज्यम्**
- कौटिलीयार्थशास्त्रे सर्वविद्यानां प्रदीपः सर्वकर्मणाम् उपायः सर्वधर्माणां च आश्रयः का विद्या प्रोक्ता? - **आन्वीक्षकी**
- कौटिलीयार्थशास्त्रे एतत् वैश्यस्य स्वधर्मो न भवति - **याजनम्**

❑❑

5.

झारखण्ड प्रवक्ता प्रतिदर्श प्रश्न पत्र

1. कौन-सी भाषा शतम् वर्ग की नहीं है-
(A) संस्कृत (B) फारसी
(C) जर्मन (D) रूसी

2. मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाओं का समय है-
(A) 4000 ई0पू0 से 2000 ई0पू0तक
(B) 2000 ई0पू0 से 1000 ई0पू0तक
(C) 1000 ई0 से वर्तमान समय तक
(D) 500 ई0पू0 से 1000 ई0तक

3. निम्नलिखित में से कौन-सी पालि की विषेशता नहीं है-
(A) ऋ,ऌ,ऐ,औ का लुप्त होना
(B) तीनों वचनों का प्रयोग
(C) हलन्त शब्दों का अभाव
(D) लेट् लकार का प्रयोग

4. वररुचि ने प्राकृत के कितने प्रकारों को स्वीकार किया है-
(A) 3 (B) 2
(C) 4 (D) 7

5. रणन-सिद्धान्त के मूल प्रवर्तक हैं-
(A) मैक्समूलर (B) प्लेटो
(C) न्वारे (D) हेस

6. भाषा-उत्पत्ति विषयक किस सिद्धान्त को अधिकांश विद्वान् स्वीकार करते हैं-
(A) सम्पर्क-सिद्धान्त (B) प्रतीक-सिद्धान्त
(C) इङ्गित-सिद्धान्त (D) समन्वय-सिद्धान्त

7. 'नवसाहसाङ्कचरित' महाकाव्य का मुख्य रस कौन-सा है-
(A) शृङ्गार (B) वीर
(C) शान्त (D) करुण

8. गीतिकाव्य का उद्भव माना जाता है-
(A) कालिदास की ऋतुसंहार से
(B) ऋग्वेद की ऋचाओं से

(C) सामवेद के साम से
(D) रामायण के श्लोकों से

9. 'चौरपञ्चाशिका' किस विधा की रचना है-
(A) कथा (B) गीतिकाव्य
(C) नाटक (D) महाकाव्य

10. गद्य का प्रथम रूप कहाँ दिखलाई देता है-
(A) वासवदत्ता में (B) दशकुमारचरित में
(C) कादम्बरी में (D) यजुर्वेद में

11. सुबन्धु किस रीति के कवि हैं-
(A) वैदर्भी (B) गौडी
(C) पाञ्चाली (D) लाटी

12. 'बृहत्कथामञ्जरी' किसकी रचना है-
(A) सोमदेव (B) बुधस्वामी
(C) क्षेमेन्द्र (D) गुणाढ्य

13. 'रीति-सिद्धान्त' के प्रवर्तक हैं -
(A) आनन्दवर्धन (B) कुन्तक
(C) आचार्य मम्मट (D) वामन

14. ध्वनि प्रतिष्ठापक परमाचार्य कौन हैं-
(A) आनन्दवर्धन (B) अभिनवगुप्त
(C) आचार्य मम्मट (D) आचार्य विश्वेश्वर

15. 'सेश्वरसांख्यदर्शन' किसे कहा जाता है-
(A) सांख्यदर्शन को (B) योगदर्शन को
(C) न्यायदर्शन को (D) वैशेषिकदर्शन को

16. निम्न में से कौन-सा आश्रम-व्यवस्था में पठित नहीं है-
(A) गृहस्थ आश्रम (B) वर्ण आश्रम
(C) ब्रह्मचर्य आश्रम (D) संन्यास आश्रम

17. सुमेलित कीजिए-
क. भट्टलोल्लट 1. अनुमितिवाद
ख. अभिनवगुप्त 2. उत्पत्तिवाद
ग. भट्टनायक 3. अभिव्यक्तिवाद
घ. शङ्कुक 4. भुक्तिवाद

	क	ख	ग	घ
(A)	2	3	4	1
(B)	1	4	3	2
(C)	2	3	1	4
(D)	4	1	2	3

18. सुमेलित कीजिए-
क. कुन्तक 1. अलङ्कार-सम्प्रदाय
ख. भरत 2. औचित्य-सम्प्रदाय
ग. आनन्दवर्धन 3. ध्वनि-सिद्धान्त
घ. क्षेमेन्द्र 4. वक्रोक्ति-सम्प्रदाय
ङ. भामह 5. रस-सम्प्रदाय

	क	ख	ग	घ	ङ
(A)	1	2	3	4	5
(B)	4	5	3	2	1
(C)	2	1	4	5	3
(D)	5	4	1	3	2

19. चतुर्वर्णों में किसकी गिनती नहीं होती है-
(A) ब्राह्मण (B) वैश्य
(C) पुरुषार्थ (D) शूद्र

20. हिन्दू धर्म में कितने संस्कारों को स्वीकृत किया गया है-
(A) 18 (B) 4
(C) 8 (D) 16

21. वेदान्त दर्शन को और किस नाम से जाना जाता है-
(A) पूर्वमीमांसा (B) कर्ममीमांसा
(C) धर्ममीमांसा (D) उत्तरमीमांसा

22. सुमेलित कीजिए-
क. बौद्धदर्शन 1. स्याद्वाद
ख. चार्वाकदर्शन 2. सत्कार्यवाद
ग. सांख्यदर्शन 3. अनात्मवाद
घ. जैनदर्शन 4. भौतिकवाद

	क	ख	ग	घ
(A)	1	3	2	4
(B)	4	2	3	1
(C)	3	4	2	1
(D)	2	1	4	3

23. न्यायदर्शन के प्रवर्तक हैं-
(A) गौतम (B) शङ्कर
(C) कपिल (D) कणाद

24. 'उपनिषद्' वेदों का कौन-सा भाग है-
(A) कर्मकाण्ड (B) ज्ञानकाण्ड
(C) अभिचार (D) ज्योतिष

25. 'सह वीर्यं करवावहै' शान्तिपाठ का अंश किस उपनिषद् से उद्धृत है-
(A) ईशावास्योपनिषद् (B) केनोपनिषद्
(C) कठोपनिषद् (D) मुण्डकोपनिषद्

26. सुमेलित कीजिए-
दर्शन - तत्त्व/पदार्थ
क. सांख्य 1. 26
ख. योग 2. 16
ग. वेदान्त 3. 7
घ. न्याय 4. 25
ङ. वैशेषिक 5. 17

	क	ख	ग	घ	ङ
(A)	4	1	5	2	3
(B)	1	3	4	5	2
(C)	4	5	2	3	1

शिक्षक पात्रता परीक्षा 2018

UP-TET

संस्कृत

मॉडल पेपर (1-12)

विजयी भव

लेखक

सर्वज्ञभूषण

प्रकाशक

संस्कृतगङ्गा

59, मोरी, दारागंज, इलाहाबाद

मो. 9839852033, 7800138404

UP-TET संस्कृत पाठ्यक्रम (1-5 प्राथमिक स्तर)

1. वर्ण विचार- स्वर, व्यञ्जन
2. माहेश्वर सूत्र
3. प्रत्याहार
4. वर्णों का उच्चारणस्थान
5. वर्णों का आभ्यन्तर एवं बाह्यप्रयत्न
6. व्याकरणशास्त्र की प्रसिद्ध संज्ञायें एवं परिभाषायें
   गुण, वृद्धि, ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत, अनुनासिक, लिङ्ग, वचन, पुरुष, विभक्ति, कारक, गण, लकार आदि
7. सन्धि (स्वर, व्यञ्जन एवं विसर्ग)
8. समास (पाँच प्रकार)
9. कारक (प्रमुख सूत्र)
10. प्रत्यय- क्त्वा, ल्यप्, तव्यत्, अनीयर्, तुमुन्, क्त, क्तवतु, शतृ, शानच्, ल्युट्, आदि।
11. उपसर्ग एवं अव्यय
12. पर्यायवाची शब्द
13. विलोमशब्द
14. वाच्यपरिवर्तन (कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य, भाववाच्य)
15. संस्कृतसंख्यायें (1 से 100 तक)
16. शरीर के अंगों के नाम, घर, परिवार, परिवेश, पशु, पक्षी, एवं घरेलू उपयोग की वस्तुओं के संस्कृत नाम
17. **शब्दरूप-**
   (i) अकारान्त पुंलिङ्ग - राम, बालक, छात्र आदि
   (ii) इकारान्त पुंलिङ्ग - हरि, मुनि, कवि आदि
   (iii) उकारान्त पुंलिङ्ग - गुरु, भानु, साधु आदि
   (iv) ऋकारान्त पुंलिङ्ग - पितृ, मातृ, जामातृ आदि
   (v) आकारान्त स्त्रीलिङ्ग - रमा, बालिका, लता आदि
   (vi) ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग - नदी, जननी, नगरी आदि
   (vii) ऋकारान्त स्त्रीलिङ्ग - मातृ, स्वसृ, दुहितृ आदि
   (viii) अकारान्त नपुंसकलिङ्ग - फल, जल, ज्ञान आदि
18. सर्वनाम रूप- तद्, एतद्, यत्, किम्, सर्व, अस्मद्, युष्मद्, भवत् आदि।
19. धातुरूप (क्रियायें) - भू, गम्, पठ्, वस्, अस्, शक्, प्रच्छ्, पा, दृश्, स्था, नी, नश्, आप्, इष्
   लभ्, याच्, ग्रह्, कथ्, जन्, दा, ज्ञा, चुर्, भाष्, शीङ्, विद्, सेव्, क्री, कृ
20. कवियों एवं लेखकों की रचनायें
21. संस्कृत सूक्तियाँ
22. अपठित अनुच्छेद
23. मॉडल पेपर (10 आदर्श प्रश्नपत्र)
24. विगत वर्षों के प्रश्नपत्रों का व्याख्यात्मक हल

01	UP-TET (संस्कृत)	मॉडल पेपर

1. 'वर्ण' का अर्थ है-
(A) पद (B) शब्द
(C) अक्षर (D) वाक्य

2. स्वर के कितने भेद होते हैं-
(A) 2 (B) 3
(C) 4 (D) 5

3. व्यञ्जन का दूसरा नाम है-
(A) अच् (B) शल्
(C) यण् (D) हल्

4. स्वर को और क्या कहते हैं-
(A) हल् (B) अच्
(C) अक् (D) जश्

5. स्पर्श व्यञ्जन के अन्तर्गत कौन से वर्ण आते हैं-
(A) क से ञ तक (B) क से न तक
(C) क से म तक (D) क से ज्ञ तक

6. व्यञ्जनों के कुल कितने भेद हैं-
(A) 2 (B) 3
(C) 4 (D) 5

7. माहेश्वर सूत्र में कितने सूत्रों की गणना होती है?
(A) 12 (B) 13
(C) 16 (D) 14

8. 'त' का उच्चारण स्थान है?
(A) कण्ठ (B) दन्त
(C) मूर्धा (D) तालु

9. अन्तःस्थ के अन्तर्गत कितने वर्ण सम्मिलित किये गये हैं?
(A) श् ष् स् ह् (B) य् व् र् ल्
(C) अ इ उ ण् (D) क्ष् त्र् ज्ञ् ह्

10. अच् प्रत्याहार के अन्तर्गत आने वाले वर्ण हैं-
(A) अ इ उ ऋ ऌ
(B) अ इ उ ण्
(C) अ इ उ ऋ ऌ ए ओ
(D) अ इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ

11. दीर्घ सन्धि का उदाहरण है-
(A) रमेशः (B) सदैव
(C) श्रीशः (D) पावकः

12. गुण सन्धि का सूत्र है-
(A) वृद्धिरेचि (B) अकः सवर्णे दीर्घः
(C) आद्‌गुणः (D) इको यणचि

13. 'रामश्शेते' किस सूत्र का उदाहरण है-
(A) ष्टुना ष्टुः (B) स्तोः श्चुना श्चुः
(C) झलां जशोऽन्ते (D) झलां जश् झशि

14. 'यथाशक्ति' में कौन सा समास है?
(A) तत्पुरुष (B) अव्ययीभाव
(C) बहुव्रीहि (D) द्वन्द्व

15. 'पितरौ' में समास है?
(A) अव्ययीभाव (B) तत्पुरुष
(C) बहुव्रीहि (D) द्वन्द्व

16. कर्मकारक में कौन सी विभक्ति होती है?
(A) द्वितीया (B) तृतीया
(C) चतुर्थी (D) पञ्चमी

17. 'पुत्रेण सह माता गच्छति' यहाँ रेखाङ्कित पद में कौन सी विभक्ति है?
(A) द्वितीया (B) तृतीया
(C) चतुर्थी (D) पञ्चमी

18. 'अहं पुस्तकं पठामि' को कर्मवाच्य में परिवर्तित कीजिये-
(A) मया पुस्तकः पठ्यते
(B) मया पुस्तकं पठ्येते
(C) मया पुस्तकं पठ्यते
(D) मम पुस्तकं पठ्यते

19. पा+क्त्वा मिलकर बनेगा-
(A) पात्वा (B) पीत्वा
(C) पीक्त्वा (D) पित्वा

20. नी धातु का लृट्लकार प्रथम पुरुष एकवचन का रूप होगा

(A) नीष्यते (B) नेष्यति

(C) नष्यति (D) निष्यति

21. 'पितृ' शब्द का द्वितीया बहुवचन में रूप बनेगा-

(A) पितॄन् (B) पितृन्

(C) पितृन (D) पितान्

22. '26' को संस्कृत में क्या कहेंगे-

(A) षटविंशतिः (B) षडविंशतिः

(C) षट्विंशतः (D) षड्विंशतिः

23. निम्नलिखित में से अव्यय पद नहीं है-

(A) ऋते (B) कदा

(C) एकधा (D) जाल्जः

24. 'बृहत्कथा' के लेखक कौन हैं?

(A) सुबन्धु (B) बाणभट्ट

(C) गुणाढ्य (D) दण्डी

25. निम्नलिखित पदों में कौन सा पद अशुद्ध है?

(A) रामः हरिश्च गच्छतः

(B) ते अत्र कदा आगच्छन्ति

(C) किं अहं पठानि?

(D) अयम् एका बालिका आगच्छति

26. निम्नलिखित में से किसका पर्यायवाची समूह सही नहीं है-

(A) अमृतम् - त्रिदशाहारः, सुधा, अमिय

(B) अश्वः - घोटकः, वाहः, वाजी

(C) गङ्गा - मन्दाकिनी, विष्णुपदी, भीष्मसूः

(D) कामदेवः - स्कन्धः, मयुः, कुमारः

27. उच्चारणकौशल से सम्बन्धित नहीं है-

(A) अक्षराभिव्यक्ति (B) गति

(C) विराम (D) भावातिरेक

28. आगमन विधि का सही क्रम है?

(A) निरीक्षण, उदाहरण, नियमनिर्धारण, परीक्षण

(B) उदाहरण, प्रस्ताव, निरीक्षण, नियमनिर्धारण, परीक्षण

(C) उदाहरण, निरीक्षण, नियमनिर्धारण, परीक्षण

(D) उदाहरण, प्रस्ताव, नियमनिर्धारण, निरीक्षण, परीक्षण

29. निम्नलिखित में से कौन संस्कृत शिक्षण पद्धति है-

(A) व्याकरणपद्धति (B) विश्लेषणात्मक पद्धति

(C) अनुवादपद्धति (D) उपर्युक्त सभी

30. निम्नलिखित में से शिक्षणसूत्र है?

(A) पूर्ण से अंश की ओर

(B) अनिश्चित से निश्चित की ओर

(C) सरल से कठिन की ओर

(D) उपर्युक्त सभी

उत्तरमाला

1.C 2.B 3.D 4.B 5.C 6.C 7.D 8.B 9.B 10.D 11.C 12.C 13.B 14.B 15.D 16.A 17.B 18.C 19.B 20.B 21.A 22.D 23.D 24.C 25.D 26.D 27.D 28.B 29.D 30.D

02	UP-TET (संस्कृत)	मॉडल पेपर

1. 'अष्टाध्यायी' के लेखक हैं?
(A) कात्यायन　(B) पतञ्जलि
(C) पाणिनि　(D) शाकटायन

2. अयादि सन्धि का सूत्र है?
(A) वृद्धिरेचि　(B) आद्गुणः
(C) इको यणचि　(D) एचोऽयवायावः

3. आभ्यन्तर प्रयत्न कितने प्रकार के होते हैं-
(A) चार　(B) पाँच
(C) छः　(D) सात

4. 'जश्' प्रत्याहार के अन्तर्गत कौन से वर्ण आते हैं?
(A) ज ब ग ण द श
(B) ज ब ग ङ ण द श
(C) ज ब ग ड द
(D) ज भ ग ड द

5. मूर्धा से बोले जाने वाले वर्णों को चुनिये-
(A) ऋ, ट, ठ, ड, ढ, ण, र, ष
(B) ऋ, च, छ, ज, झ, ञ
(C) ल्, त, थ, द, ध, न
(D) प, फ, ब, भ, म

6. विद्या+अर्थी में सन्धि है-
(A) दीर्घ सन्धि　(B) यण् सन्धि
(C) गुण सन्धि　(D) वृद्धि सन्धि

7. 'चक्रपाणिः' में समास है-
(A) अव्ययीभाव　(B) बहुव्रीहि
(C) द्विगु　(D) द्वन्द्व

8. 'वृक्षात् पत्राणि पतन्ति' में 'वृक्षात्' में कौन सी विभक्ति है?
(A) तृतीया　(B) चतुर्थी
(C) पञ्चमी　(D) द्वितीया

9. 'वयं जलं पास्यामः' का कर्मवाच्य होगा?
(A) अस्माभिः जलं पास्यते
(B) मया जलं पास्यते
(C) मह्यम् जलं पिबति
(D) अहं जलं पिबामि

10. 'पीतः' में प्रकृति प्रत्यय होगा-
(A) पि + क्त　(B) पा + क्त
(C) पा + तः　(D) पिब् + क्त

11. दृश् धातु विधिलिङ्लकार मध्यमपुरुष बहुवचन का रूप होगा-
(A) पश्येतम्　(B) पश्येत्
(C) पश्येत　(D) पश्येयम्

12. 'नद्यः' पद 'नदी' शब्द के किस विभक्ति एवं वचन का रूप है-
(A) प्रथमा एकवचन　(B) द्वितीया द्विवचन
(C) प्रथमा बहुवचन　(D) तृतीया बहुवचन

13. 'उन्नीस' को संस्कृत में कहेंगे -
(A) नवदश　(B) ऊनविंशतिः
(C) एकोनविंशतिः　(D) उपर्युक्त सभी

14. निम्नलिखित में कौन शब्द 'उपसर्ग' नहीं है-
(A) प्र　(B) परा
(C) सम्　(D) अम्

15. निम्नलिखित विलोम शब्दों में अशुद्ध युग्म को चुनिये-
(A) रुग्णः - रोगी
(B) शोकः - आनन्दः
(C) महायोगी - महाभोगी
(D) मलिनम् - पवित्रम्

16. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में कितने अङ्क हैं?
(A) 5　(B) 6
(C) 7　(D) 9

17. 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' किस आचार्य का काव्य लक्षण है?

(A) विश्वनाथ (B) मम्मट
(C) दण्डी (D) आनन्दवर्धन

18. संस्कृत में कितने लिङ्ग हैं?

(A) पाँच (B) दो
(C) तीन (D) चार

19. 'सत्सङ्गतिः कथय किं न करोति पुंसाम्' किस ग्रन्थ की सूक्ति है?

(A) कादम्बरी (B) नीतिशतकम्
(C) पञ्चतन्त्र (D) सुभाषितरत्नावली

20. 'मुझे पढ़ना अच्छा लगता है।' इसका अनुवाद होगा-

(A) मह्यम् पठनं रोचति
(B) मया पठनं रोचते
(C) अहं पठनं रोचते
(D) मह्यं पठनं रोचते

21. गीता महाभारत के किस पर्व से लिया गया है?

(A) सभापर्व (B) उद्योगपर्व
(C) भीष्मपर्व (D) आदिपर्व

22. 'सन्धिः' पद में लिङ्ग है?

(A) स्त्रीलिङ्ग (B) नपुंसकलिङ्ग
(C) उभयलिङ्ग (D) पुँल्लिङ्ग

23. निष्ठासंज्ञक प्रत्यय कौन हैं?

(A) शतृ + शानच् (B) क्त - क्तवतु
(C) ण्वुल् + तृच् (D) तव्यत् - अनीयर्

24. 'करुणरस' का स्थायीभाव है?

(A) हास (B) शोक
(C) उत्साह (D) रौद्र

25. अव्ययीभावसमास किस लिङ्ग में होता है?

(A) नित्यपुँल्लिङ्ग (B) नित्यस्त्रीलिङ्ग
(C) नित्यनपुंसकलिङ्ग (D) उपर्युक्त सभी

26. भाषाकौशल के प्रकार हैं?

(A) दो (B) तीन
(C) चार (D) पाँच

27. नाटक को किसके अन्तर्गत सम्मिलित किया गया है?

(A) श्रव्य साधन (B) दृश्य साधन
(C) दृश्य - श्रव्य साधन (D) उपर्युक्त सभी

28. शब्दावली को वर्गीकृत करके सरल संस्कृतभाषा का रूप प्रस्तुत किया-

(A) भण्डारकर (B) हरबर्ट
(C) दोनों (D) दोनो में से कोई नहीं

29. इवान पावलाव ने रिसर्च किया-

(A) बिल्ली (B) कुत्ता
(C) छिपकली (D) उपर्युक्त सभी

30. व्याकरण शिक्षण का उद्देश्य है?

(A) शब्दों के विभिन्न रूपों का ज्ञान प्रदान करना
(B) छात्रों की तर्कशक्ति एवं रचनात्मक वृत्ति का विकास करना
(C) शुद्ध वाक्य रचना की योग्यता को प्रदान करना
(D) उपर्युक्त सभी

उत्तरमाला

1.C 2.D 3.B 4.C 5.A 6.A 7.B 8.C 9.A 10.B 11.C 12.C 13.D 14.D 15.A 16.C 17.A 18.C 19.B 20.D 21.C 22.D 23.B 24.B 25.C 26.C 27.C 28.A 29.B 30.D

03 UP-TET (संस्कृत) मॉडल पेपर

1. बाह्य प्रयत्न के कितने भेद हैं?
(A) 5 (B) 4
(C) 7 (D) 11

2. 'ङ' का उच्चारणस्थान है-
(A) दन्त (B) कण्ठ
(C) नासिका (D) कण्ठ + नासिका

3. 'एच्' प्रत्याहार में वर्ण होते हैं-
(A) ए ओ ऐ औ (B) ए ओ ऐ औ ह य व र
(C) ए औ (D) ए ओ ङ् ऐ औ च्

4. 'दिगम्बरः' का सन्धि-विच्छेद है?
(A) दिग + अम्बरः (B) दिक् + अम्बरः
(C) दिक + अम्बरः (D) दिग् + अम्बरः

5. 'रामलक्ष्मणौ' पद में समास है?
(A) अव्ययीभाव (B) तत्पुरुष
(C) बहुव्रीहि (D) द्वन्द्व

6. कौन सी धातु 16 द्विकर्मक धातुओं के अन्तर्गत नहीं आती?
(A) जि (B) मथ्
(C) कृ (D) कृष्

7. 'हरये क्रुध्यति' पद में किस सूत्र से चतुर्थी विभक्ति हुई है?
(A) भीत्रार्थानां भयहेतुः
(B) हेतौ
(C) अकथितं च
(D) क्रुधद्रुहेर्ष्याऽसूयार्थानां यं प्रति कोपः

8. 'गुरवे' किस विभक्ति एवं वचन का रूप है?
(A) द्वितीया विभक्ति एकवचन
(B) चतुर्थी विभक्ति एकवचन
(C) षष्ठी विभक्ति एकवचन
(D) सप्तमी विभक्ति एकवचन

9. लृट्लकार सम्बन्धित है-
(A) वर्तमानकाल से (B) भविष्यत्काल से
(C) आज्ञार्थक से (D) भूतकाल से

10. 'पृच्छेव' किस पुरुष व वचन का रूप है?
(A) प्रथम पुरुष, एकवचन
(B) मध्यमपुरुष, एकवचन
(C) उत्तमपुरुष, बहुवचन
(D) उत्तमपुरुष, द्विवचन

(प्रश्न 11 से 15 तक के सभी उत्तर अपठित पद्यांश के आधार पर दीजिये)-

''प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः
प्रारभ्य विघ्ननिहता विरमन्ति मध्याः
विघ्नैर्मुहुर्मुहुरपि प्रतिहन्यमानाः
प्रारब्धमुत्तमजनाः न परित्यजन्ति''

11. उपर्युक्त श्लोक किस ग्रन्थ से उद्धृत है?
(A) सुभाषितग्रन्थरत्नाकर से
(B) नीतिशतकम् से
(C) पञ्चतन्त्र से
(D) विदुरनीति से

12. विघ्न के भय से किस तरह के प्राणी कार्य को आरम्भ नहीं करते?
(A) मध्यमकोटि के (B) अधमकोटि के
(C) उत्तमकोटि के (D) अधमाधम कोटि के

13. श्रेष्ठ पुरुष विघ्नों के बार-बार आने पर भी क्या करते हैं?
(A) कार्य को अधूरा छोड़ देते हैं।
(B) कार्य को प्रारम्भ ही नहीं करते हैं।
(C) कार्य को पूरा करते हैं।
(D) उपर्युक्त में से कुछ नही करते हैं।

14. उपर्युक्त श्लोक का शीर्षक क्या हो सकता है?
(A) दयालुता (B) कर्मशीलता
(C) परोपकार (D) शौर्य

15. इस श्लोक में कितने कोटि के मनुष्य बताये गये हैं?
(A) 2 (B) 3
(C) 4 (D) 5

16. लघुसिद्धान्तकौमुदी के रचनाकार हैं?
(A) भट्टोजिदीक्षित (B) वरदराजाचार्य
(C) कात्यायन (D) पतञ्जलि

17. 'पठ्' धातु में 'शतृ' प्रत्यय लगाने पर रूप बनेगा-
(A) पठितः (B) पठन्
(C) पठित्वा (D) पठिता

18. 'त्वया पत्रं लिख्यते' कर्मवाच्य को कर्तृवाच्य में परिवर्तित कीजिये-
(A) त्वं पत्रं लिखति (B) त्वया पत्रं लिखसि
(C) त्वं पत्राणि लिखसि (D) त्वं पत्रं लिखसि

19. 'मेरे साथ मेरा मित्र विद्यालय जाता है।' इसका अनुवाद होगा-
(A) मया सह मम मित्रः विद्यालयं गच्छति
(B) मया सह मम मित्रं विद्यालयं गच्छति
(C) मया सह मां मित्रं विद्यालयं गच्छति
(D) मह्यम् सह मम मित्रः विद्यालयं गच्छति

20. 'सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते' - यह सूक्ति कहाँ से उद्धृत है?
(A) महाभारत से (B) रामायण से
(C) गीता से (D) पुराण से

21. कोयल, कबूतर, चिड़ियाँ को क्रमशः संस्कृत में कहते हैं-
(A) परभृतः, पारावतः, चञ्चुः
(B) पारावतः, परभृतः, चटका
(C) परभृतः, पारावतः, चटका
(D) चटका, परभृतः, पारावतः

22. संस्कृत में लकार कितने हैं?
(A) 8 (B) 9
(C) 10 (D) 11

23. 'सरस्वती' का पर्यायवाची शब्द है?
(A) ब्राह्मी (B) गीः
(C) विधात्री (D) उपर्युक्त सभी

24. 10,000 संख्या को संस्कृत में कहते हैं-
(A) प्रयुतम् (B) अयुतम्
(C) नियुतम् (D) सहस्रम्

25. रामायण का अपर नाम है-
(A) चतुर्विंशतिसाहस्री संहिता
(B) शतसाहस्री संहिता
(C) षड्त्रिंशत्साहस्री संहिता
(D) पञ्चमवेद

26. यम – नचिकेता का संवाद प्राप्त होता है?
(A) ईशोपनिषद् में (B) कठोपनिषद् में
(C) तैत्तिरीयोपनिषद् में (D) केनोपनिषद् में

27. भाषाकौशल का सही क्रम है?
(A) भाषणकौशल, श्रवणकौशल, लेखनकौशल, पठनकौशल
(B) श्रवणकौशल, भाषणकौशल, पठनकौशल, लेखनकौशल
(C) श्रवणकौशल, भाषणकौशल, लेखनकौशल, पठनकौशल
(D) श्रवणकौशल, लेखनकौशल, पठनकौशल, भाषणकौशल

28. दृश्य साधन के अन्तर्गत नहीं आता है?
(A) रेडियो (B) रेखाचित्र
(C) मानचित्र (D) प्रदर्शनी

29. निगमन विधि के सोपान का सही क्रम है?
(A) नियम, स्पष्टीकरण, प्रयोगप्रदर्शन, पुनःपरीक्षण
(B) स्पष्टीकरण, पुनःपरीक्षण, प्रयोग प्रदर्शन, नियम
(C) नियम, स्पष्टीकरण, पुनःप्रदर्शन, पुनः परीक्षण
(D) नियम, प्रयोग प्रदर्शन, स्पष्टीकरण, पुनः प्रदर्शन

30. थार्नडाइक का अधिगम सिद्धान्त है?
(A) उद्दीपक अनुक्रिया सिद्धान्त
(B) सम्बद्ध प्रतिक्रिया सिद्धान्त
(C) पुनर्बलन का सिद्धान्त
(D) सक्रिय अनुबन्ध सिद्धान्त

उत्तरमाला

1.D 2.D 3.A 4.B 5.D 6.C 7.D 8.B 9.B 10.D 11.B 12.B 13.C 14.B 15.B 16.B 17.B 18.D 19.B 20.C 21.C 22.C 23.D 24.B 25.A 26.B 27.B 28.A 29.A 30.A

04	UP-TET (संस्कृत)	मॉडल पेपर

1. सिद्धान्तकौमुदी के रचनाकार हैं?
(A) वरदराज (B) भट्टोजिदीक्षित
(C) पाणिनि (D) कात्यायन

2. झश् प्रत्याहार के अन्तर्गत आने वाले वर्ण हैं-
(A) झ, भ, घ, ढ, ध
(B) झ, भ, घ, ढ, ध, ज, ब, ग, ड, द
(C) झ, भ, घ, ढ, ध
(D) झ, भ, घ, ढ, ध, ज, ब, ग, ड, द, ख, फ

3. कण्ठ से किन वर्णों का उच्चारण होता है?
(A) अ, ह, क (B) इ, च, छ, ज
(C) ट, ठ, ऋ (D) लृ, त, थ, द

4. ऊष्म वर्ण कौन-कौन से हैं-
(A) क से न तक
(B) क से म तक
(C) शल् प्रत्याहार के वर्ण
(D) यण् प्रत्याहार के वर्ण

5. 'स्वागतम्' में सन्धि है?
(A) दीर्घ (B) यण्
(C) गुण (D) वृद्धि

6. 'इको यणचि' सूत्र है?
(A) गुणसन्धि का (B) यण्सन्धि का
(C) वृद्धिसन्धि का (D) दीर्घसन्धि का

7. 'उत्तरपदप्रधानः' समास कौन है?
(A) तत्पुरुष (B) अव्ययीभाव
(C) बहुव्रीहि (D) द्वन्द्व

8. 'पञ्चपात्रम्' में समास है-
(A) द्वन्द्व (B) अव्ययीभाव
(C) कर्मधारय (D) द्विगु

9. दृश् धातु में तुमुन् प्रत्यय का योग करने पर बनता है-
(A) दर्शितुम् (B) पश्यतुम्
(C) द्रष्टुम् (D) दृष्टम्

10. 'ददति' रूप 'दा' धातु के किस लकार, पुरुष एवं वचन में होता है?
(A) लोट्लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन
(B) लट्लकार, मध्यमपुरुष, एकवचन
(C) लट्लकार, प्रथमपुरुष, बहुवचन
(D) लृट्लकार, प्रथमपुरुष, बहुवचन

11. 'पितरि' किस विभक्ति एवं वचन का रूप है?
(A) प्रथमा विभक्ति, बहुवचन
(B) तृतीया विभक्ति, एकवचन
(C) पञ्चमी विभक्ति, एकवचन
(D) सप्तमी विभक्ति, एकवचन

12. 'रमा' शब्द का चतुर्थी विभक्ति एकवचन का रूप है?
(A) रमाम् (B) रमया
(C) रमायै (D) रमायाः

13. 'मह्यं मोदकं रोचते' इस वाक्य में 'मह्यं' पद में चतुर्थी किस सूत्र से हुई है?
(A) सम्बोधने च (B) स्पृहेरीप्सितः
(C) रुच्यर्थानां प्रीयमाणः (D) हेतौ

14. 'सः दुग्धं पिबति' इसका कर्मवाच्य होगा-
(A) तेन दुग्धः पीयते (B) तेन दुग्धं पीयते
(C) तया दुग्धं पीयते (D) ते दुग्धः पीयते

15. उपमा प्रयोग के लिए कौन सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं?
(A) भारवि (B) श्रीहर्ष
(C) कालिदास (D) दण्डी

16. दिलीप की पत्नी का क्या नाम था?
(A) मालती (B) वसुमती
(C) सुदक्षिणा (D) दमयन्ती

17. 'गुर्वपि विरहदुःखमाशाबन्धः साहयति' यह कथन किसका है-
(A) प्रियंवदा का (B) अनसूया का
(C) गौतमी का (D) कण्व का

18. 'उनचास' को कहते हैं-

(A) एकोनपञ्चाशत् (B) ऊनपञ्चाशत्

(C) नवचत्वारिंशत् (D) उपर्युक्त सभी

19. 'श्वः अहं विद्यालयं गमिष्यामि' इस वाक्य में अव्यय पद है-

(A) अहम् (B) श्वः

(C) विद्यालयम् (D) कोई नही

20. उपसर्ग का प्रयोग कहाँ होता है?

(A) धातुओं के बाद (B) धातुओं के पूर्व

(C) धातुओं के मध्य (D) धातु और प्रत्यय के मध्य

21. 'किल' अव्यय पद का अर्थ है?

(A) नीचे (B) इसलिए

(C) अवश्य ही (D) यहाँ से

22. गन्धर्वराजपुत्री का आसीत्?

(A) तरलिका (B) मदलेखा

(C) पत्रलेखा (D) कादम्बरी

23. बृहत्त्रयी के अन्तर्गत कौन नहीं सम्मिलित है?

(A) किरातार्जुनीयम् (B) नैषधीयचरितम्

(C) रघुवंशम् (D) शिशुपालवधम्

24. वेदाङ्गों की संख्या है-

(A) पाँच (B) चत्वारि

(C) षट् (D) सप्त

25. 'रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्' यह किसका लक्षण है-

(A) जगन्नाथ (B) भोज

(C) मम्मट (D) विश्वनाथ

26. दृश्य साधन के अन्तर्गत आता है?

(A) श्यामपट्ट (B) ग्रामोफोन

(C) ध्वनिपञ्चिका (D) रेडियो

27. शिक्षा का अर्थ है?

(A) जीवनपर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया

(B) मनुष्य जन्म से लेकर मृत्यु तक सीखता है

(C) मनुष्य को मनुष्य बनाने में सहायक होती है

(D) उपर्युक्त सभी

28. पठन शिक्षण की सर्वोत्तम विधि है?

(A) वर्णमालाविधि (B) शब्दशिक्षणविधि

(C) वाक्शिक्षणविधि (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

29. सर्वप्रथम किस भाषा में ध्वनि का वैज्ञानिक विश्लेषण किया गया है?

(A) फ्रेन्च भाषा में (B) संस्कृत भाषा में

(C) अरबी भाषा में (D) ग्रीक भाषा में

30. संस्कृतशिक्षण के स्तर होते हैं?

(A) प्रारम्भिक स्तर (B) मध्यस्तर

(C) उच्चस्तर (D) उपर्युक्त सभी

उत्तरमाला

1.B 2.B 3.A 4.C 5.B 6.B 7.A 8.D 9.C 10.C 11.D 12.C 13.C 14.B 15.C 16.C 17.B 18.D 19.B 20.B 21.C 22.D 23.C 24.C 25.A 26.A 27.D 28.C 29.B 30.D

05	UP-TET (संस्कृत)	मॉडल पेपर

1. वार्तिककार कौन हैं?
(A) पाणिनि (B) कात्यायन
(C) पतञ्जलि (D) वरदराज

2. 'ऊष्म व्यञ्जन' के अन्तर्गत वर्ण आते हैं?
(A) य् व् र् ल् (B) श् ष् स् र्
(C) श् ष् स् ह् (D) अ इ उ ण्

3. पाणिनि के अनुसार प्रत्याहारों की संख्या है?
(A) 41 (B) 42
(C) 40 (D) 44

4. इक् प्रत्याहार के अन्तर्गत वर्ण हैं?
(A) इ, उ, ण, ऌ (B) अ, इ, उ, ण
(C) इ, उ, ऋ, ऌ (D) इ, उ, ऋ, क्

5. च् वर्ण का उच्चारणस्थान है?
(A) दन्त (B) कण्ठ
(C) मूर्धा (D) तालु

6. 'नायकः' इस पद का सन्धि-विच्छेद है-
(A) ने + अकः (B) ना + यकः
(C) नाय + कः (D) नै + अकः

7. सच्चित् में सन्धि है?
(A) जश्त्व (B) अनुस्वार
(C) ष्टुत्व (D) श्चुत्व

8. 'नमः शिवाय' इस वाक्य के 'शिवाय' पद में कौन सी विभक्ति है?
(A) तृतीया (B) चतुर्थी
(C) पञ्चमी (D) षष्ठी

9. कारक कितने होते हैं?
(A) नौ (B) छह
(C) सात (D) आठ

10. 'युधिष्ठिरः' में कौन सा समास है?
(A) अलुक् तत्पुरुष
(B) नञ् तत्पुरुष
(C) प्रादि तत्पुरुष
(D) उपपद तत्पुरुष

11. जिसमें अन्यपद की प्रधानता होती है वह समास है?
(A) अव्ययीभाव (B) तत्पुरुष
(C) बहुव्रीहि (D) द्वन्द्व

12. 'धेनु' शब्द का चतुर्थी एकवचन में क्या रूप होता है?
(A) धेनवः (B) धेनुना
(C) धेनवे (D) धेनोः

13. रामस्य पद 'राम' शब्द के किस विभक्ति वचन का रूप है?
(A) तृतीया विभक्ति, एकवचन
(B) पञ्चमी विभक्ति, द्विवचन
(C) षष्ठी विभक्ति, एकवचन
(D) सप्तमी विभक्ति, द्विवचन

14. 'स्था' धातु का लोट्लकार मध्यमपुरुष द्विवचन में रूप होता है-
(A) तिष्ठाम् (B) तिष्ठतम्
(C) तिष्ठाव (D) तिष्ठेतम्

15. 'गच्छेयम्' गम् धातु का रूप होता है-
(A) लट्लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन
(B) लोट्लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन
(C) विधिलिङ्लकार, उत्तमपुरुष, एकवचन
(D) लङ्लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन

16. 'त्यक्त्वा' शब्द में प्रयुक्त प्रकृति एवं प्रत्यय है?
(A) त्यज् + क्त (B) त्यज् + क्त्वा
(C) त्यज् + तुमुन् (D) त्यज् + ल्यप्

17. 'बालिका गीतं गायति' का कर्मवाच्य पद होगा-

(A) बालिकया गीतः गीयते

(B) बालिकेन गीतः गायते

(C) बालिकया गीतं गीयते

(D) बालिकया गीतं गायते

18. 'सीता रामेण सह वनं गच्छति' इस वाक्य में अव्यय पद कौन सा है?

(A) सीता (B) रामेण

(C) सह (D) वनम्

19. उपसर्ग का अन्य नाम है?

(A) सर्वनाम (B) संज्ञा

(C) उपपद (D) प्रादि एवं गति

20. 'मैं पुस्तक लिखता हूँ।' इसका शुद्ध अनुवाद होगा-

(A) अहं पुस्तक लिखति

(B) अहं पुस्तकं लिखसि

(C) अहं च पुस्तकानि लिखावः

(D) अहं पुस्तकं लिखामि

21. संस्कृत में पुरुष कितने होते हैं?

(A) दो (B) तीन

(C) चार (D) पाँच

22. '86' को संस्कृत में कहेंगे-

(A) षड्शीतिः (B) षट्शीतिः

(C) षटशीतिः (D) षडशीतिः

23. कादम्बरी कथा की नायिका है?

(A) महाश्वेता (B) पत्रलेखा

(C) मदलेखा (D) कादम्बरी

24. रघुवंशम् में सिंह का क्या नाम था?

(A) लम्बोदरः (B) कुम्भोदरः

(C) कुम्भकर्णः (D) कुम्भउदरः

25. 'पुरस्कृता वर्त्मनि पार्थिवेन' यह सूक्ति कहाँ से उद्धृत है?

(A) कादम्बरी (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम्

(C) रघुवंशम् (D) कुमारसम्भवम्

26. ईशावास्योपनिषद् किस वेद का उपनिषद् है?

(A) ऋग्वेद (B) यजुर्वेद

(C) सामवेद (D) अथर्ववेद

27. भण्डारकर विधि में निम्नलिखित में से कौन सी विशेषता है?

(A) विश्लेषण

(B) संस्कृत को वार्तालाप द्वारा पढ़ना

(C) अनुवाद और व्याकरण के माध्यम से पढ़ाना

(D) शब्दावली के प्राचीन रूप को ग्रहण करना

28. निम्नलिखित में से कौन सा वाणी का भेद नहीं है-

(A) परा (B) पश्यन्ती

(C) वैखरी (D) उत्तमा

29. भाषा शिक्षण की दृष्टि से कौन सी अवस्था अधिक प्रभावी है?

(A) किशोरावस्था (B) प्रौढ़ावस्था

(C) वृद्धावस्था (D) शैशवावस्था

30. भारत में देवभाषा किसे कहा गया है?

(A) संस्कृत (B) प्राकृत

(C) पाली (D) अपभ्रंश

उत्तरमाला

1.B 2.C 3.B 4.C 5.D 6.D 7.D 8.B 9.B 10.A 11.C 12.C 13.C 14.B 15.C 16.B 17.C 18.C 19.D 20.D 21.B 22.D 23.D 24.B 25.C 26.B 27.C 28.D 29.D 30.A

06 UP-TET (संस्कृत) मॉडल पेपर

1. महाभाष्यकार कौन हैं?
(A) पाणिनि (B) कात्यायन
(C) पतञ्जलि (D) भट्टोजिदीक्षित

2. ऌट्लकार का प्रयोग होता है?
(A) वर्तमानकाल (B) भविष्यकाल
(C) भूतकाल (D) आज्ञार्थक

3. चर् प्रत्याहार के अन्तर्गत वर्ण नहीं आता है?
(A) ट् (B) ष्
(C) क् (D) ह्

4. 'ए' का उच्चारणस्थान लिखिये-
(A) कण्ठतालु (B) कण्ठोष्ठ
(C) दन्तोष्ठ (D) तालु

5. 'षण्णवतिः' संख्या है?
(A) 86 (B) 96
(C) 66 (D) 76

6. 'नदी' शब्द का पञ्चमी एकवचन रूप है-
(A) नद्यै (B) नद्या
(C) नद्याः (D) नद्याम्

7. नन्दिनी का आसीत्?
(A) महिषी (B) कामधेनोः पुत्री
(C) पशुः (D) देवी

8. 'कोऽन्योहुतवहाद् दग्धुं प्रभवति'-यह कथन किसका है?
(A) प्रियंवदा (B) अनसूया
(C) गौतमी (D) कण्व

9. 'लभ्' धातु में क्त्वा प्रत्यय का रूप होगा-
(A) लभित्वा (B) लब्ध्वा
(C) लभित्वा (D) लभब्ध्वा

10. भू धातु लोट्लकार, मध्यमपुरुष, बहुवचन का रूप है?
(A) भवत (B) भवथ
(C) भवतः (D) भवता

11. 'पास्यामि' में 'पा' धातु के किस लकार, पुरुष और वचन का रूप होता है?
(A) लट्लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन में
(B) लट्लकार, उत्तमपुरुष, एकवचन में
(C) ऌट्लकार, उत्तमपुरुष, एकवचन में
(D) लोट्लकार, उत्तमपुरुष, एकवचन में

12. गद्यत्रयी के अन्तर्गत कौन से कवि आते हैं?
(A) बाणभट्ट, सुबन्धु, अम्बिकादत्तव्यास
(B) बाणभट्ट, सुबन्धु, दण्डी
(C) दण्डी, सुबन्धु, गुणाढ्य
(D) बाणभट्ट, दण्डी, हर्ष

13. 'अहं ह्यः विद्यालयं गतवान्' इस वाक्य में अव्यय पद होगा-
(A) अहम् (B) गमिष्यामि
(C) विद्यालयम् (D) ह्यः

14. 'चौरात् बिभेति' में 'चौरात्' पद में कौन-सी विभक्ति है?
(A) सप्तमी (B) चतुर्थी
(C) पञ्चमी (D) तृतीया

15. करणकारक में कौन सी विभक्ति होती है?
(A) द्वितीया (B) चतुर्थी
(C) पञ्चमी (D) तृतीया

16. 'पीतम् अम्बरं यस्य सः' यह समास होगा?
(A) पीताम्बरम् (B) पीताम्बरः
(C) पीलाम्बरः (D) पीलावस्त्रः

17. 'हरित्रातः' में कौन सा तत्पुरुष समास है?
(A) द्वितीया तत्पुरुष समास
(B) तृतीया तत्पुरुष समास
(C) चतुर्थी तत्पुरुष समास
(D) पञ्चमी तत्पुरुष समास

18. 'धातृ + अंशः' सन्धि होने पर बनेगा–
(A) धात्रृंशः (B) धातृंशः
(C) धात्रशः (D) धात्रंशः

19. 'पवित्रम्' पद का सन्धि-विच्छेद होगा-
(A) पौ + इत्रम् (B) पो + इत्रम्
(C) पू + एत्रम् (D) पु + इत्रम्

20. 'गंगा नदी सभी नदियों में प्रसिद्ध और पवित्र मानी जाती हैं।' इसका अनुवाद होगा–
(A) गङ्गानद्यः सर्वासु नदीषु प्रसिद्धः पवित्रः च मन्यते।
(B) गङ्गानदी सर्वासु नदीषु प्रसिद्धः पवित्रा च मन्यते।
(C) गङ्गानदी सर्वासु नदीषु प्रसिद्धा पवित्रा च मन्यते।
(D) गङ्गानदी सर्वासु नद्यः प्रसिद्धः पवित्रः च मन्यते

21. निम्नलिखित में से भिन्न पद को चुनिये-
(A) स्कन्धः (B) चक्षुः
(C) कपोलः (D) काकः

22. 'विद्वान्' का पर्यायवाची नहीं है?
(A) सुधी (B) कोविदः
(C) धीमान् (D) श्रीमान्

23. सत्संज्ञक प्रत्यय है-
(A) शतृ-शानच् (B) क्त्वा-ल्यप्
(C) तव्यत् अनीयर् (D) क्त-क्तवतु

24. 'टि' संज्ञा करने वाला सूत्र है-
(A) अलोऽन्त्यात्पूर्व .... (B) अचोऽन्त्यादि ....
(C) अर्थवदधातुरप्रत्ययः .... (D) अदर्शनं ....

25. रघुवंश कैसा ग्रन्थ है?
(A) नाटक (B) महाकाव्य
(C) गीतिकाव्य (D) गद्यकाव्य

26. अशुद्ध विलोमयुग्म को चुनिये-
(A) अल्पज्ञः - बहुज्ञः
(B) असीमः - ससीमः
(C) अमावस्या - पूर्णिमा
(D) गृहीतः - स्वीकृतः

27. मौनपठन में क्या दोष है?
(A) शक्ति कम लगती है।
(B) समय कम लगता है।
(C) उच्चारण पर कम ध्यान रहता है।
(D) भावग्रहण करने में सहायता करता है।

28. निम्नलिखित में से कौन सा मौखिक रचना में नहीं आता-
(A) कहानी कथन (B) प्रश्नोत्तर
(C) अभिनय (D) पत्र-लेखन

29. चित्रों पर प्रश्न करना किस स्तर पर रचना कार्य में उपयुक्त रहेगा-
(A) पूर्वप्रारम्भिक (B) प्रारम्भिक
(C) माध्यमिक (D) उच्च

30. व्याकरण पद्धति को निम्नलिखित में से और किस नाम से जाना जाता है-
(A) पाणिनि पद्धति (B) पाठशाला पद्धति
(C) हरबार्टीय पद्धति (D) सामान्यीकरण

उत्तरमाला

1.C 2.B 3.D 4.A 5.B 6.C 7.B 8.B 9.B 10.A 11.C 12.B 13.D 14.C 15.D 16.B 17.B 18.D 19.B 20.C 21.D 22.D 23.A 24.B 25.B 26.D 27.C 28.D 29.A 30.B

07	UP-TET (संस्कृत)	मॉडल पेपर

1. 'प्रगृह्यसंज्ञा' करने वाला सूत्र है-
(A) प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम्
(B) ईदूदेद् द्विवचनं प्रगृह्यम्
(C) चादयोऽसत्त्वे
(D) आदिरन्त्येन सहेता

2. 'मया' पद किस विभक्ति एकवचन का रूप है?
(A) अस्मद्, तृतीया, एकवचन
(B) युष्मद्, तृतीया, एकवचन
(C) अस्मद्, द्वितीया, बहुवचन
(D) अस्मद्, चतुर्थी, एकवचन

3. 'सर्वस्य' रूप किस विभक्ति व वचन का रूप है?
(A) द्वितीया, विभक्ति बहुवचन
(B) षष्ठी, विभक्ति एकवचन
(C) पञ्चमी एकवचन
(D) प्रथमा द्विवचन

4. 'रमया' रूप है रमा शब्द का-
(A) तृतीया एकवचन (B) द्वितीया एकवचन
(C) चतुर्थी एकवचन (D) षष्ठी एकवचन

5. 'पुत्री' को संस्कृत में कहते हैं?
(A) तनया (B) सुता
(C) आत्मजा (D) उपर्युक्त सभी

6. 'विष्णु' का पर्यायवाची है?
(A) गरुडध्वजः (B) अच्युतः
(C) अधोक्षजः (D) उपर्युक्त सभी

7. निम्नलिखित में से अव्यय पद है?
(A) अलम् (B) अनारतम्
(C) अत्रैव (D) उपर्युक्त सभी

8. उपसर्ग कितने हैं?
(A) 20 (B) 22
(C) 23 (D) 24

9. आ + अ से योग होने पर क्या बनेगा?
(A) अ (B) आ
(C) इ (D) ई

10. 'मध्वरिः' का सन्धि-विच्छेद है?
(A) मधि + अरिः (B) मधु + रिः
(C) मधु + अरिः (D) मधु + वरिः

11. विशेषण और विशेष्य का समास है?
(A) द्विगु समास (B) कर्मधारय समास
(C) द्वन्द्व समास (D) तत्पुरुष समास

12. 'यूपदारु' में कौन सा तत्पुरुष समास है?
(A) तृतीया तत्पुरुष (B) द्वितीया तत्पुरुष
(C) चतुर्थी तत्पुरुष (D) पञ्चमी तत्पुरुष

13. 'अण्' प्रत्याहार के अन्तर्गत वर्ण आते हैं?
(A) अ, न् (B) अ इ उ
(C) अ य् (D) मात्र अ वर्ण

14. ऋ एवं टवर्ग का उच्चारणस्थान है-
(A) तालु (B) मूर्धा
(C) नासिका (D) कण्ठ

15. चतुर्थी विभक्ति होती है-
(A) करणकारक में (B) सम्प्रदानकारक में
(C) कर्मकारक में (D) अपादानकारक में

16. 'पादेन खञ्जः' में तृतीया किस सूत्र से हुई है?
(A) येनाङ्गविकारः (B) जटाभिस्तापसः
(C) जनिकर्तुः प्रकृतिः (D) हेतौ

17. 'कृ + शानच्' प्रत्यय के योग से शब्द बनेगा-
(A) करवाणः (B) कुरवाणः
(C) कुर्वानः (D) कुर्वाणः

18. 'क्तिन्' प्रत्यय किस लिङ्ग में होता है?
(A) पुँल्लिङ्ग में (B) स्त्रीलिङ्ग में
(C) नपुंसकलिङ्ग में (D) तीनों लिङ्गों में

19. 'हर इव जितमन्मथः' यह किसके लिये प्रयोग हुआ है?

(A) चन्द्रापीड (B) वैशम्पायन

(C) शूद्रक (D) कामदेव

20. 'अस्ति' किस लकार का रूप है?

(A) लृट् (B) लट्

(C) लङ् (D) लोट्

21. 'अभवम्' रूप में पुरुष और वचन बताइए-

(A) मध्यम पुरुष एकवचन

(B) उत्तम पुरुष बहुवचन

(C) मध्यम पुरुष बहुवचन

(D) उत्तम पुरुष एकवचन

22. वाच्य कितने प्रकार के होते हैं?

(A) दो (B) तीन

(C) चार (D) पाँच

23. खण्डान्वयपद्धति का अपर नाम है?

(A) प्रश्नोत्तरविधि (B) समाहारविधि

(C) प्रत्यक्षविधि (D) निर्बाध विधि

24. श्रवणकौशल साधन के अन्तर्गत सम्मिलित है-

(A) टेपरिकॉर्डर (B) आकाशवाणी

(C) दूरवाणी (D) उपर्युक्त सभी

25. भाषा की सबसे छोटी इकाई है?

(A) ध्वनि (B) शब्द

(C) पद्य (D) वाक्य

26. पारायण पद्धति का तात्पर्य है-

(A) मौन पठन

(B) सस्वर पठन

(C) कई बार आवृत्ति करना

(D) अर्थग्रहण करना

27. संस्कृत के एकोनत्रिंशत् को कहते हैं?

(A) 19 (B) 29

(C) 39 (D) 49

28. 'दाराः' शब्द किस लिङ्ग और किस वचन में प्रयोग होता है?

(A) पुँल्लिङ्ग बहुवचन में (B) पुँल्लिङ्ग एकवचन में

(C) स्त्रीलिङ्ग एकवचन में (D) स्त्रीलिङ्ग बहुवचन में

29. छन्दशास्त्र के प्रणेता हैं?

(A) लगधाचार्य (B) पिङ्गल

(C) केदारभट्ट (D) वराहमिहिर

30. 'प्रस्थानत्रयी' के अन्तर्गत नहीं आता है?

(A) ब्रह्मसूत्र (B) उपनिषद्

(C) गीता (D) पुराण

उत्तरमाला

1.B 2.A 3.B 4.A 5.D 6.D 7.D 8.B 9.B 10.C 11.B 12.C 13.B 14.B 15.B 16.A 17.D 18.B 19.C 20.B 21.D 22.B 23.A 24.D 25.A 26.C 27.B 28.A 29.B 30.D

08	UP-TET (संस्कृत)	मॉडल पेपर

1. रामायण में कितने काण्ड हैं?
(A) पञ्च (B) सप्त
(C) अष्ट (D) नव

अपठित पद्यांश से प्रश्नों (2 से 6) के उत्तर दीजिये-
स त्वं निवर्तस्व विहाय लज्जां गुरोर्भवान्दर्शितशिष्यभक्तिः।
शस्त्रेण रक्ष्यं यदशक्यरक्ष्यं न तद्यशः शस्त्रभृतां क्षिणोति।।

2. उपर्युक्त यह श्लोक किस महाकाव्य से उद्धृत है?
(A) कुमारसम्भवम् से (B) किरातार्जुनीयम् से
(C) रघुवंशम् से (D) शिशुपालवधम् से

3. इस श्लोक में किसका संवाद है?
(A) राजा - प्रजा का
(B) सिंह - दिलीप का
(C) दिलीप - सुदक्षिणा का
(D) दिलीप - धेनु का

4. 'गुरोर्भवान्दर्शितशिष्यभक्तिः'-इसमें 'भवान्' पद से किसका बोध हो रहा है?
(A) सिंह का (B) राजा दिलीप का
(C) वशिष्ठ का (D) कामदेव का

5. जो रक्षणीय वस्तु शस्त्र के द्वारा रक्षित नहीं हो सकती वह शस्त्रधारियों के किस वस्तु को क्षीण नहीं करती?
(A) फल को (B) यश को
(C) ज्ञान को (D) कर्म को

6. 'निवर्तस्व' पद में लकार एवं वचन है?
(A) लट्लकार म. पु. एकवचन
(B) लृट्लकार प्र. पु. एकवचन
(C) लोट्लकार म. पु. एकवचन
(D) लङ्लकार म. पु. एकवचन

7. 'विसर्ग' का उच्चारण स्थान है?
(A) तालु (B) कण्ठ
(C) मूर्धा (D) दन्त

8. 'प्रत्याहार' विधायक सूत्र है?
(A) अणुदित्सवर्णस्य चाप्रत्ययः
(B) हलोऽनन्तरा संयोगः
(C) आदिरन्त्येन सहेता
(D) उपदेशेऽजनुनासिक इत्

9. स्वरों के उच्चारण में कौन सा प्रयत्न होता है?
(A) स्पृष्ट (B) ईषत् विवृत
(C) ईषत्स्पृष्ट (D) विवृत

10. 'शे + अनम्' का सन्धि रूप होगा
(A) शेनम् (B) शयनम्
(C) शनम् (D) शायनम्

11. 'झल्' प्रत्याहार के बाद 'झश्' वर्णों के आने पर क्या आदेश होता है?
(A) हश् (B) अक्
(C) खश् (D) जश्

12. 'त्रिभुवनम्' का समास विग्रह होगा-
(A) त्रयाणां भुवनानां समाहारः
(B) तिसृणां भुवनानां समाहारः
(C) त्रयाणां भुवनानां यस्य सः
(D) त्रिभिः भुवनं समाहारः

13. 'अष्टाध्यायी' में समास है?
(A) बहुव्रीहि (B) द्विगु
(C) कर्मधारय (D) तत्पुरुष

14. निम्नलिखित में से द्विकर्मक धातु नहीं है?
(A) जि (B) रुध्
(C) ब्रू (D) गम्

15. 'जिससे नियमपूर्वक विद्या पढ़ी जाय' उसमें कौन सी विभक्ति प्रयोग होती है?
(A) चतुर्थी (B) पञ्चमी
(C) सप्तमी (D) द्वितीया

16. कर्मवाच्य में कर्ता की विभक्ति होनी चाहिये-

(A) द्वितीया (B) प्रथमा

(C) तृतीया (D) षष्ठी

17. 'रामः वेदं पठति' कर्तृवाच्य को कर्मवाच्य में परिवर्तित कीजिये-

(A) रामेण वेदः पठ्यते (B) रामैः वेदं पठ्यते

(C) रामेण वेदं पठ्यते (D) रामाः वेदः पठतम्

18. 'प्रणम्य' में धातु एवं प्रत्यय है?

(A) प्र + नम् + क्त्वा (B) प्र + नम् + ल्यप्

(C) प्र + णम् + ल्युट् (D) प्र + नम् + क्त

19. 'मातरि' किस विभक्ति एवं वचन का रूप है?

(A) प्रथमा विभक्ति, बहुवचन

(B) द्वितीया विभक्ति, द्विवचन

(C) सप्तमी विभक्ति, एकवचन

(D) षष्ठी विभक्ति, एकवचन

20. लौकिक संस्कृत में किस लकार का प्रयोग नहीं मिलता है?

(A) लट् (B) लेट्

(C) लुङ् (D) लङ्

21. 'जानीहि' में लकार पुरुष एवं वचन बताइये?

(A) लट्लकार म. पु. एकवचन

(B) लोट्लकार म. पु. एकवचन

(C) लङ्लकार उ. पु. बहुवचन

(D) लृट्लकार प्र. पु. बहुवचन

22. 'ईश्वरः सर्वत्र अस्ति' इसमें अव्यय पद है?

(A) अस्ति (B) सर्वत्र

(C) ईश्वरः (D) उपर्युक्त सभी

23. 'पौण्ड्र' किसके शंख का नाम है?

(A) अर्जुन (B) कृष्ण

(C) भीम (D) युधिष्ठिर

24. 'पदलालित्यम्' किस कवि के लिये कहा गया है?

(A) भारवि (B) माघ

(C) कालिदास (D) दण्डी

25. 'दस लाख' को संस्कृत में कहते हैं?

(A) प्रयुतम् (B) नियुतम्

(C) अयुतम् (D) वियुतम्

26. निम्नलिखित में किस अर्थ वाली धातुयें अकर्मक होती है?

(A) क्रीडा (B) शयन

(C) जागरण (D) उपर्युक्त सभी

27. प्राचीनकाल के प्रधान शिक्षाग्रन्थों में किसकी गिनती नहीं थी?

(A) कौटिल्यशिक्षा (B) याज्ञवल्क्यशिक्षा

(C) पाणिनीयशिक्षा (D) भारद्वाजशिक्षा

28. निम्नलिखित में से कौन सा व्याख्यान का अंग है?

(A) भावग्रहण (B) प्रतिश्रवण

(C) सम्यक्बोध (D) वाक्याध्याहार

29. छात्रों मे समालोचनात्मक शक्ति का विकास गद्य-शिक्षण के किस स्तर पर होना चाहिए-

(A) पूर्व प्रारम्भिक स्तर (B) माध्यमिक स्तर

(C) प्रारम्भिक स्तर (D) उच्च स्तर

30. गद्यशिक्षण में निम्नलिखित में से किसका विशेष महत्त्व नहीं है?

(A) लययुक्त सस्वरवाचन का

(B) अनुकरण वाचन का

(C) विचार विश्लेषणात्मक प्रश्न का

(D) शब्दार्थ का

उत्तरमाला

1.B 2.C 3.B 4.B 5.B 6.C 7.B 8.C 9.D 10.B 11.D 12.A 13.B 14.D 15.B 16.C 17.A 18.B 19.C 20.B 21.B 22.B 23.C 24.D 25.A 26.D 27.A 28.D 29.D 30.A

09	UP-TET (संस्कृत)	मॉडल पेपर

निम्नलिखित पद्यांश के आधार पर (प्रश्न 1 से 5 तक) के प्रश्नों के उत्तर दीजिये-

अकारणाविष्कृतवैरदारुणात् असज्जनात्कस्य भयं न जायते।
विषं महाहेरिव यस्य दुर्वचः सुदुःसहं सन्निहितं सदा मुखे।।

1. यह श्लोक किस कवि से सम्बन्धित है?
(A) कालिदास से (B) बाणभट्ट से
(C) भारवि से (D) दण्डी से

2. 'विषं महाहेरिव यस्य दुर्वचः' में 'महाहेः' पद का क्या अर्थ है?
(A) दुष्टजन (B) शत्रु
(C) महासर्प (D) सज्जन

3. उपर्युक्त श्लोक किसके विषय में कहा गया है?
(A) सज्जनों के (B) दुर्जनों के
(C) सर्पों के (D) विद्वानों के

4. उपर्युक्त श्लोक में किस छन्द का प्रयोग किया गया है?
(A) अनुष्टुप् (B) इन्द्रवज्रा
(C) वंशस्थ (D) उपेन्द्रवज्रा

5. अकारण वैर करने वाले कौन होते हैं?
(A) सज्जन पुरुष (B) स्वार्थीपुरुष
(C) असज्जन पुरुष (D) विषैले सर्प

6. 'ऋलृवर्णयोर्मिथः सावर्ण्यं वाच्यम्' से किसकी सवर्णता बतायी गयी है?
(A) ऋ, ए की (B) अ, ऋ की
(C) ऋ, लृ की (D) ऋ, लृ की

7. इचुयशानां---रिक्तस्थान की पूर्ति करिये-
(A) मूर्धा (B) तालु
(C) कण्ठः (D) ओष्ठः

8. अन्तस्थ वर्णों का आभ्यन्तर प्रयत्न होता है?
(A) स्पृष्ट (B) ईषत्स्पृष्ट
(C) विवृत (D) संवृत

9. सन्धि कहाँ-कहाँ नित्य मानी जाती है?
(A) एकपद में (B) धातु उपसर्ग में
(C) समास में (D) उपर्युक्त सभी में

10. मनीषा का सन्धि-विच्छेद होगा-
(A) मनः + ईषा (B) मनस् + ईषा
(C) मनी + षा (D) मनः + इषा

11. प्रगृह्यसंज्ञक हैं?
(A) हरी (B) गङ्गे
(C) विष्णू (D) उपर्युक्त सभी

12. सम्बोधन में कौन सी विभक्ति का प्रयोग होता है?
(A) प्रथमा (B) द्वितीया
(C) तृतीया (D) षष्ठी

13. 'तिलेषु तैलम्' वाक्य में 'तिलेषु' पद में प्रयुक्त विभक्ति है?
(A) तृतीया (B) पञ्चमी
(C) सप्तमी (D) चतुर्थी

14. गङ्गा हिमालय से निकलती है?
(A) गङ्गा हिमालयात् निर्गच्छति।
(B) गङ्गायाः हिमालयात् निर्गच्छति
(C) गङ्गा हिमालयम् निर्गच्छति
(D) गङ्गा हिमालयस्य निर्गच्छति

15. शतृ प्रत्यय किस काल का बोधक है?
(A) वर्तमानकाल (B) भूतकाल
(C) भविष्यकाल (D) किसी का नहीं

16. 'अहं गच्छामि' का भाववाच्य में परिवर्तन होने पर बनेगा?
(A) मया गमयति (B) मया गम्यते
(C) मह्यं गमयामि (D) अहं गम्यते

17. 'पठनीयम्' पद में धातु और प्रत्यय है-
(A) पठ् + अनीयर् (B) पठ् + तुमुन्
(C) पठ् + शतृ (D) पठ् + ल्यप्

18. चटका में स्त्री प्रत्यय है?

(A) चाप् (B) डाप्

(C) टाप् (D) कोई नही

19. 'स्था' धातु के लट्लकार उत्तमपुरुष, एकवचन का रूप है–

(A) स्थाति (B) स्थानि

(C) स्थामि (D) तिष्ठामि

20. 'रमायाम्' रमा प्रातिपदिक के किस विभक्ति एवं वचन का रूप है?

(A) द्वितीया एकवचन (B) चतुर्थी एकवचन

(C) षष्ठी बहुवचन (D) सप्तमी एकवचन

21. 'सत्यर्थे पृथगर्थायाः स्वरव्यञ्जनसंहतेः' यह किस अलङ्कार का लक्षण है?

(A) अनुप्रास (B) यमक

(C) श्लेष (D) उपमा

22. '101' संख्या को संस्कृत में क्या कहेगें?

(A) द्वयाधिकशतम् (B) एकाधिकः शतम्

(C) एकाधिकशतम् (D) एकशतं एकम्

23. त्रिवर्ग के अन्तर्गत आते हैं?

(A) धर्म, अर्थ, मोक्ष (B) धर्म, मोक्ष, काम

(C) धर्म, अर्थ, काम (D) अर्थ, धर्म, मोक्ष

24. 'द्विरेफः' पद का अर्थ है?

(A) सारङ्ग (B) मृग

(C) बगुला (D) भौंरा

25. भिन्न अव्यय पद चुनिये–

(A) इदानीम् (B) सम्प्रति

(C) अधुना (D) कदा

26. संस्कृत के गद्य एवं पद्यखण्ड का शुद्ध उच्चारण सहित पढ़ने का सिद्धान्त है?

(A) अभ्यास का सिद्धान्त

(B) प्रयत्न का सिद्धान्त

(C) रुचि का सिद्धान्त

(D) स्वाभाविकता का सिद्धान्त

27. हरबार्टीय पञ्चपदी में निम्नलिखित में से कौन सा पद नहीं है?

(A) व्याख्यान (B) प्रस्तावना

(C) तुलना (D) सामान्यीकरण

28. आयोग द्वारा प्रस्तुत द्वितीय योजना में कौन सी भाषा नहीं है?

(A) मातृभाषा या क्षेत्रीयभाषा

(B) संस्कृत

(C) अंग्रेजी

(D) उर्दू

29. वेदमन्त्रों में शिक्षा का तात्पर्य है?

(A) पाठशाला में पढ़ने जाना

(B) विकास की प्रक्रिया

(C) ज्ञानोपार्जन का साधन

(D) ठीक से उच्चारण करने की विधा

30. संस्कृतभाषा में पत्र-लेखन का उपयोग किस स्तर पर होना चाहिए?

(A) प्रारम्भिक स्तर (B) मध्यस्तर

(C) उच्चस्तर (D) मध्य एवं उच्चस्तर

उत्तरमाला

1.B 2.C 3.B 4.C 5.C 6.D 7.B 8.B 9.D 10.B 11.D 12.A 13.C 14.A 15.A 16.B 17.A 18.C 19.D 20.D 21.B 22.C 23.C 24.D 25.D 26.A 27.A 28.D 29.D 30.C

10 | UP-TET (संस्कृत) | मॉडल पेपर

केयूराणि न भूषयन्ति पुरुषं हारा न चन्द्रोज्ज्वलाः
न स्नानं न विलेपनं न कुसुमं नालङ्कृता मूर्धजाः।
वाण्येका समलङ्करोति पुरुषं या संस्कृता धार्यते,
क्षीयन्ते खलु भूषणानि सततं वाग्भूषणं भूषणम्।।

1. उपर्युक्त पद्य किस कवि से सम्बद्ध है?
(A) माघ (B) कालिदास
(C) भारवि (D) भर्तृहरि

2. उपर्युक्त श्लोक में किसकी विशेषता बतायी गयी है?
(A) आभूषण की (B) पुरुष की
(C) कुसुम की (D) वाणी की

3. कौन सा आभूषण कभी नष्ट नहीं होता?
(A) बाजूबन्द (B) सुसंस्कृतवाणी
(C) पुष्पहार (D) मणिहार

4. उपर्युक्त श्लोक में छन्द है?
(A) शिखरिणी (B) शार्दूलविक्रीडितम्
(C) स्रग्धरा (D) मन्दाक्रान्ता

5. 'संस्कृता' में धातु प्रत्यय बताइये-
(A) सम् + √कृ + क्त + टाप्
(B) सम् + √कृ + टाप्
(C) सम् + √कृ + ल्यप् + टाप्
(D) सम् + √कृ + यत् + टाप्

6. निम्नलिखित में से बाह्य प्रयत्न के अन्तर्गत नहीं आता?
(A) संवार (B) नाद
(C) विवार (D) स्पृष्ट

7. खर् प्रत्याहार का बाह्य प्रयत्न है?
(A) संवार, नाद, घोष
(B) विवार, श्वास, अघोष
(C) उदात्त, अनुदात्त, स्वरित
(D) अल्पप्राण, महाप्राण

8. ऋकार के भेद हैं?
(A) 18 (B) 12
(C) 30 (D) 16

9. उपध्मानीय का उच्चारणस्थान है?
(A) तालु (B) जिह्वा
(C) मूर्धा (D) ओष्ठ

10. पररूप सन्धि का सूत्र है-
(A) अदेङ् गुणः (B) वृद्धिरादैच्
(C) इको यणचि (D) एङि पररूपम्

11. 'शार्ङ्गिञ्जयः' का सन्धि विच्छेद है?
(A) शार्ङ्गिञ् जयः (B) शार्ङ्गिन + जयः
(C) शार्ङ्गिन् + जयः (D) शार्ङ्गिग + जयः

12. 'द्रोणो व्रीहिः' किस सूत्र का उदाहरण है-
(A) प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा
(B) वचनमात्रे प्रथमा
(C) सम्बोधने च
(D) प्रातिपदिकार्थे प्रथमा

13. 'गर्गान् शतं दण्डयति' यह किस विभक्ति का उदाहरण है?
(A) प्रथमा (B) द्वितीया
(C) तृतीया (D) चतुर्थी

14. 'अब्राह्मणः' में समास है?
(A) नञ् बहुव्रीहि (B) द्विगु
(C) नञ् तत्पुरुष (D) द्वन्द्व

15. 'लतायाम्' किस विभक्ति एवं वचन का रूप है?
(A) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन
(B) तृतीया विभक्ति, एकवचन
(C) पञ्चमी विभक्ति, एकवचन
(D) सप्तमी विभक्ति, एकवचन

16. 'अभवः' पद में लकार एवं वचन है?
(A) लट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन
(B) लोट्लकार प्रथमपुरुष द्विवचन
(C) लङ्लकार म.पु. एकवचन
(D) लङ्लकार म.पु. बहुवचन

17. 'विद्वदौषधम्' किस कवि के लिए प्रसिद्ध है?
(A) दण्डी (B) श्रीहर्ष
(C) माघ (D) भारवि

18. 'षट्षष्टिः' संख्या को हिन्दी में कहते हैं?
(A) 64 (B) 66
(C) 76 (D) 68

19. 'पठन्' में प्रकृति प्रत्यय है?
(A) पठ् + ल्युट् (B) पठ् + क्त्वा
(C) पठ् + शानच् (D) पठ् + शतृ

20. 'त्वं पत्रं पठसि' का वाच्यपरिवर्तन कीजिये-
(A) त्वया पत्रं पठ्यते (B) त्वत् पत्रं पठ्यते
(C) त्वया पत्रः पठ्यते (D) त्वया पत्रं पाठयति

21. शुद्ध वाक्य है-
(A) रमा संस्कृतं पठिष्यसि
(B) त्वं सदा सत्यं वदेयुः
(C) त्वं कुत्र निवसति
(D) अहं ग्रामम् अगच्छम्

22. 'मम ग्रामं परितः वृक्षाः सन्ति?' हिन्दी अनुवाद होगा
(A) मेरे गाँव के चारो ओर पेड़ हैं।
(B) मेरे गाँव में वृक्ष हैं।
(C) हमारे गाँव में पेड़ हैं।
(D) हमारे गाँव के दोनों ओर पेड़ पौधे हैं।

23. 'लूता' का हिन्दी अर्थ है–
(A) भौंरा (B) मछली
(C) मकड़ी (D) भालू

24. 'लघुत्रयी' के अन्तर्गत सम्मिलित है?
(A) रघुवंशम् (B) मेघदूतम्
(C) कुमारसम्भवम् (D) उपर्युक्त सभी

25. वररुचि किसे कहते हैं?
(A) पाणिनि को (B) कात्यायन को
(C) पतञ्जलि को (D) भट्टोजिदीक्षित को

26. माहेश्वरसूत्रों की प्राप्ति किसको हुई थी?
(A) पतञ्जलि को (B) पाणिनि को
(C) कात्यायन को (D) वरदराज को

27. सस्वर पाठन का उद्देश्य है?
(A) पठन की गति पर नियन्त्रण प्राप्त कर सकें
(B) बोधग्रहण की गति में वृद्धि करना
(C) पठन गति बढ़ाना एवं इसमें शीघ्रता लाना
(D) उपर्युक्त सभी

28. श्लोक के एक-एक पद का अर्थ करते जाना, किस प्रणाली का द्योतक है-
(A) व्याख्या प्रणाली (B) तुलना प्रणाली
(C) समीक्षाप्रणाली (D) गीत तथा नाट्य प्रणाली

29. गद्यशिक्षण में 'भगीरथ प्रयत्न' का अर्थ स्पष्ट करने के लिए आप क्या करेंगे-
(A) मानचित्र दिखायेंगे
(B) अन्तःकथा कहेंगे अर्थात् गंगावतरण की कथा सुनायेंगे
(C) तुलना करेंगे
(D) भगीरथ का चित्र बनायेंगे

30. सस्वर पठन क्यों आवश्यक है?
(A) शुद्ध उच्चारण के लिए
(B) भावग्रहण के लिए
(C) काठिन्य निवारण के लिए
(D) बोध प्रश्न के लिए

उत्तरमाला

1.D 2.D 3.B 4.B 5.A 6.D 7.B 8.C 9.D 10.D 11.C 12.A 13.B 14.C 15.D 16.C 17.B 18.B 19.D 20.A 21.D 22.A 23.C 24.D 25.B 26.B 27.A 28.A 29.B 30.A

11	UP-TET (संस्कृत)	मॉडल पेपर

1. 'पुष्पेभ्यः स्पृहयति' वाक्य में 'पुष्पेभ्यः' में कौन-सी विभक्ति एवं वचन है?
(A) द्वितीया बहुवचन (B) चतुर्थी एकवचन
(C) चतुर्थी बहुवचन (D) षष्ठी बहुवचन

2. 'कवीनां कालिदासः श्रेष्ठः' इस वाक्य में 'कवीनां' पद में विभक्ति वचन है-
(A) तृतीया एकवचन (B) षष्ठी बहुवचन
(C) षष्ठी एकवचन (D) पंचमी द्विवचन

3. महाकवि कालिदास की रचनायें हैं-
(A) छह (B) पाँच
(C) सात (D) तीन

4. 'बालको हसति' में किस सूत्र से सन्धि की गयी है-
(A) अतोरोरप्लुतादप्लुते (B) आद्गुणः
(C) हशि च (D) ससजुषो रुः

5. 'प्रेजते' में सन्धि का विधान करने वाला सूत्र है-
(A) वृद्धिरेचि (B) आद्गुणः
(C) इको यणचि (D) एङि पररूपम्

6. 'नवरात्रम्' पद में समास होगा-
(A) द्विगु (B) कर्मधारय
(C) तत्पुरुष (D) द्वन्द्व

7. 'प्रतिदिनम्' पद में समास बताइये-
(A) अव्ययीभाव (B) द्वन्द्व
(C) तत्पुरुष (D) द्विगु

8. 'भुज्' धातु में 'क्त' प्रत्यय लगाने पर रूप बनेगा-
(A) भुक्तवान् (B) भोक्ता
(C) भुक्तम् (D) भुक्त्वा

9. 'गायन्' शब्द में प्रयुक्त प्रकृति एवं प्रत्यय हैं-
(A) गै + शतृ (B) गै + यत्
(C) गै + शानच् (D) गै + तुमुन्

10. 'को नामोष्णोदकेन नवमालिकां सिञ्चति' इस उक्ति का वक्ता कौन है-
(A) प्रियंवदा (B) गौतमी
(C) कण्व (D) अनसूया

11. 'श्रुतेरिवार्थं स्मृतिरन्वगच्छत्' सूक्ति किस ग्रन्थ से उद्धृत है?
(A) चन्द्रापीडकथा (B) रघुवंशम्
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (D) इनमें से कोई नहीं

12. निम्नलिखित में कर्तृवाच्य का उदाहरण नहीं है-
(A) रमेशः ग्रन्थं पश्यति
(B) अहं रामकथां शृणोमि
(C) छात्रेण हस्यते
(D) सः पयः पिबति

13. अशुद्ध शब्द का चयन करें-
(A) मनः (B) दुखम्
(C) लक्ष्मीः (D) दधि

14. 'विद्वस्' शब्द का द्वितीया बहुवचन में रूप होगा-
(A) विद्वांसम् (B) विदुषान्
(C) विदुषः (D) विद्वान्

15. 'पितृ' शब्द का पञ्चमी एकवचन में रूप होता है?
(A) पितरस्य (B) पित्रात्
(C) पितुः (D) पित्रः

16. 'पठ्' धातु का लोट् लकार, मध्यमपुरुष, द्विवचन में रूप होगा-
(A) पठन्तु (B) पठन्ति
(C) पठतम् (D) पठानि

17. धातु से पहले जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं-
(A) प्रत्यय (B) उपसर्ग
(C) सर्वनाम (D) इनमें से कोई नही।

18. **'बालकः अद्य पठन् गच्छति' इस वाक्य में अव्यय पद है-**

(A) अद्य (B) पठन्

(C) गच्छति (D) बालकः

19. **'60' को संस्कृत में क्या कहेंगे-**

(A) षट्शीतिः (B) षष्टिः

(C) षट्शती (D) षड्विंशतिः

20. **'त्र्यशीतिः' का संख्यात्मक रूप होगा-**

(A) 63 (B) 73

(C) 83 (D) 23

21. **जिह्वामूलीय वर्णो का उच्चारणस्थान है-**

(A) मूर्धा (B) दन्तोष्ठ

(C) जिह्वामूल (D) कण्ठ

22. **'अच्' प्रत्याहार के अन्तर्गत नहीं आता-**

(A) ए (B) ण

(C) ऋ (D) औ

23. **'अन्तःस्थ' अथवा 'अर्द्धस्वर' के अन्तर्गत नहीं आता है-**

(A) श (B) र

(C) ल (D) य

24. **शुकनास किसका मन्त्री था?**

(A) दिलीप का (B) दुष्यन्त का

(C) तारापीड का (D) शूद्रक का

25. **किस राजा ने नन्दिनी की सेवा की थी?**

(A) रघु ने (B) दिलीप ने

(C) दशरथ ने (D) राम ने

26. **'हारीत' किसका पुत्र था?**

(A) जाबालि का (B) विश्वामित्र का

(C) भारद्वाज का (D) वशिष्ठ का

27. **'शकुनिः' शब्द का अर्थ है-**

(A) शकुनि मामा (B) पक्षी

(C) वृक्ष (D) पुत्र

28. **'प्रदोषः' शब्द का विलोम होगा-**

(A) संध्या (B) प्रबुद्धः

(C) प्रकाशः (D) प्रत्यूषः

29. **कक्षा में 'शिक्षण सामग्री' के अन्तर्गत नहीं गिना जाता है-**

(A) श्यामपट्ट (B) चाक

(C) दण्ड (D) चार्ट

30. **शिक्षण में सहायक दृश्य सामग्री के अन्तर्गत नहीं आता है-**

(A) श्यामपट्ट/बोर्ड (B) चित्र

(C) चार्ट (D) रेडियो।

उत्तरमाला

1.C 2.B 3.C 4.C 5.D 6.A 7.A 8.C 9.A 10.A 11.B 12.C 13.B 14.C 15.C 16.C 17.B 18.A 19.B 20.C 21.C 22.B 23.A 24.C 25.B 26.A 27.B 28.D 29.C 30.D

12	UP-TET (संस्कृत)	मॉडल पेपर

1. 'अधिकरण' में विभक्ति होती है-
(A) तृतीया-विभक्ति (B) प्रथमा विभक्ति
(C) सप्तमी विभक्ति (D) पञ्चमी विभक्ति

2. 'नदीनां गङ्गा पवित्रतमा' वाक्य में रेखांकित पद में विभक्ति है-
(A) षष्ठी (B) प्रथमा
(C) तृतीया (D) चतुर्थी

3. कालिदास की रचना नहीं है-
(A) रघुवंशम् (B) ऋतुसंहारम्
(C) रत्नावली (D) मेघदूतम्

4. अशुद्ध शब्द को चयनित करें-
(A) हनूमान् (B) कोषः
(C) सन्यासी (D) शृण्वन्

5. कर्मवाच्य में प्रधानता होती है-
(A) कर्ता की (B) क्रिया की
(C) कर्म की (D) इनमें से कोई नहीं

6. 'सच्चरितम्' का सन्धि-विच्छेद होगा-
(A) सच् + चरितम् (B) सत् + चरितम्
(C) सच्चरि + तम् (D) सच्च + चरितम्

7. 'महा + औषधिः' में सन्धि कीजिए-
(A) महोषधिः (B) महाऔषधिः
(C) महौषधिः (D) महौषिधिः

8. 'हरिहरौ' पद में समास होगा-
(A) अव्ययीभाव (B) द्वन्द्व
(C) तत्पुरुष (D) द्विगु

9. 'पीताम्बरः' पद में समास है-
(A) बहुव्रीहि (B) कर्मधारय
(C) तत्पुरुष (D) अव्ययीभाव

10. 'दर्शनीयः' पद में धातु है-
(A) दृश् (B) दृक्
(C) पश्य (D) इनमें से कोई नहीं

11. 'सृष्टि' में कौन सा प्रत्यय है?
(A) क्त (B) क्तिन्
(C) शतृ (D) क्त्वा

12. 'नी' धातु में तुमुन् प्रत्यय लगाने पर रूप होगा-
(A) नयनम् (B) नीतिम्
(C) नीतम् (D) नेतुम्

13. 'बलवती हि भवितव्यता' सूक्ति किस ग्रन्थ में प्राप्त होती है-
(A) मेघदूतम् में (B) उत्तररामचरितम् में
(C) रघुवंशम् मे (D) कादम्बरी में।

14. 'क्व' इस अव्यय पद का अर्थ है-
(A) कहाँ (B) कब
(C) कितना (D) कैसे

15. संस्कृत में 'कन्धा' के लिए शब्द प्रयोग होता है-
(A) कण्ठः (B) हनुः
(C) कटिः (D) स्कन्धः

16. 'षोडश' शब्द को संख्यात्मक रूप में परिवर्तित करें-
(A) 61 (B) 16
(C) 63 (D) 36

17. प्राचीन संस्कृत शिक्षण पद्धति के अन्तर्गत नहीं आने वाले विकल्प का चयन कीजिए-
(A) व्यक्तिगत शिक्षा पर विशेष बल था
(B) विद्यार्थी नियम से उठते थे और प्रतिदिन अध्ययन करते थे।
(C) प्राचीन प्रणाली में स्मृति पर अधिक जोर था।
(D) छात्र की रुचि का विशेष ध्यान रखा जाता था।

18. हरबार्टीय पञ्चपदी का सही क्रम है-
(A) प्रस्तावना, विषयोपस्थापन, तुलना, प्रयोग, सामान्यीकरण
(B) विषयोपस्थापन, तुलना, प्रस्तावना, प्रयोग, सामान्यीकरण
(C) प्रस्तावना, विषयोपस्थापन, तुलना, सामान्यीकरण, प्रयोग
(D) विषयोपस्थापन, प्रस्तावना, तुलना, सामान्यीकरण, प्रयोग।

19. 'व' का उच्चारणस्थान है-
(A) दन्त + तालु (B) कण्ठ + तालु
(C) कण्ठ + ओष्ठ (D) दन्त + ओष्ठ

20. स्वरों का आभ्यन्तर प्रयत्न है?
(A) विवृत (B) ईषत्विवृत
(C) संवृत (D) स्पृष्ट

21. 'चय्' प्रत्याहार के अन्तर्गत वर्ण आते हैं?
(A) च ट त व क प (B) च ट त क प
(C) च ट त क प य (D) च ट त व क प य्

22. 'अनुभवति' पद में लगा हुआ उपसर्ग है?
(A) अनु (B) अन्
(C) अ (D) आप्

23. 'सर्व' पुँल्लिङ्ग सप्तमी एकवचन में रूप होगा-
(A) सर्वस्य (B) सर्वेभ्यः
(C) सर्वेषु (D) सर्वस्मिन्

24. 'एधि' किस धातु, लकार, वचन का रूप है-
(A) अस्, लोट्लकार, मध्यमपुरुष, एकवचन
(B) अस्, लट्, मध्यमपुरुष, एकवचन
(C) एध्, लट्, मध्यमपुरुष, बहुवचन
(D) एध्, लोट्, प्रथमपुरुष, एकवचन

25. 'स्वर्गः' पद का पर्यायवाची शब्द है?
(A) नाकः (B) सुरलोकः
(C) स्वः (D) उपर्युक्त सभी

26. 'गाँव के दोनों ओर वृक्ष हैं।' इसका संस्कृत में अनुवाद होगा-
(A) ग्रामः उभयतः वृक्षाः सन्ति।
(B) ग्रामम् उभयतः वृक्षाः सन्ति।
(C) ग्रामम् सर्वतः वृक्षः अस्ति।
(D) ग्रामस्य उभयतः वृक्षाः सन्ति।

27. 'विधिः' पद का अनेकार्थक शब्द है?
(A) विधान (B) भाग्य
(C) ब्रह्मा (D) उपर्युक्त सभी

28. मूल्यांकन प्रणाली के पाठसूत्र में निम्नलिखित में से कौन सा पद नहीं है?
(A) उद्देश्य (B) कथोपकथन
(C) पाठ्य-बिन्दु (D) छात्र से कार्य

29. संस्कृत आयोग द्वारा प्रस्तुत भाषा के विषय में प्रथम योजना में कौन सी भाषा सम्मिलित नहीं है?
(A) मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा
(B) अंग्रेजी या हिन्दी या अन्य आधुनिक भाषा
(C) संस्कृत या कोई अन्य प्राचीन भाषा
(D) अरबी

30. निम्नलिखित में से कौन सी पठन शिक्षा की विधि नहीं है?
(A) देखो और कहो विधि (B) अक्षर-बोध विधि
(C) अनुध्वनि विधि (D) व्याख्यान विधि

उत्तरमाला

1.C 2.A 3.C 4.C 5.C 6.B 7.C 8.B 9.A 10.A 11.B 12.D 13.D 14.A 15.D 16.B 17.D 18.C 19.D 20.A 21.B 22.A 23.D 24.A 25.D 26.B 27.D 28.B 29.D 30.D

प्राथमिक शिक्षक भर्ती परीक्षा (SUPER TET)

UP-TET

प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर

संस्कृतम्

व्याख्यात्मक हल

गुरुमन्त्र

सम्पादक

सर्वज्ञभूषण

लेखक

सुमन सिंह

सत्यप्रकाश साहू

www.Sanskritganga.org

➢ **प्रकाशक**

संस्कृतगङ्गा (पञ्जीकृत)

59, मोरी, दारागञ्ज, प्रयागराज

(कोतवाली दारागञ्ज के आगे, गङ्गाकिनारे संकटमोचन छोटे हनुमान मन्दिर के पास)

कार्यालय - 9839852033

email-Sanskritganga@gmail.com

www.Sanskritganga.org

➢ **ISBN : 978-81-938257-2-3**

➢ **प्रकाशन-सहयोग**

युनिवर्सल बुक

1519, अल्लापुर, प्रयागराज

Mob.: 9453460552

➢ मुख्यवितरक

राजू पुस्तक केन्द्र

अल्लापुर, इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश)

मो० –9453460552

➢ पुस्तक डाक द्वारा भी मँगवा सकते हैं–

Mob. : 8004545096, 8004545092

➢ प्रथमसंस्करण : सितम्बर - 2019

➢ **मूल्य – 120/-** (एक सौ बीस रुपये मात्र)

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

1. राजू पुस्तक भण्डार, अल्लापुर, इलाहाबाद
   सम्पर्क सूत्र : 0532-2503638, 9453460552
2. संस्कृतगङ्गा, दारागञ्ज, इलाहाबाद - 7800138404
3. गौरव बुक एजेन्सी, कैण्ट, वाराणसी
4. विजय मैग्जीन सेन्टर, बलरामपुर
5. जायसवाल बुक सेन्टर, हरदोई
6. शिवशंकर बुक स्टाल, जौनपुर
7. न्यू पूर्वांचल बुक स्टाल, जौनपुर
8. कृष्णा बुक डिपो बस्ती
9. मौर्या बुक डिपो, पाण्डेयपुर, वाराणसी
10. मनीष बुक स्टोर, गोरखपुर
11. द्विवेदी ब्रदर्स, गोरखपुर
12. विद्यार्थी पुस्तक मन्दिर, गोरखपुर
13. रंजन मिश्रा, गोरखपुर (बस स्टैण्ड)
14. आशीर्वाद बुक डिपो, अमीनाबाद, लखनऊ
15. मालवीय पुस्तक केन्द्र, अमीनाबाद, लखनऊ
16. मॉडर्न मैग्जीन बुक शॉप, कपूरशाला, लखनऊ
17. साहू बुक स्टॉल, अलीगंज, लखनऊ
18. भूमि मार्केटिंग, लखनऊ
19. दुर्गा स्टोर, राजा की मण्डी, आगरा
20. महामाया पुस्तक केन्द्र, बिलासपुर
21. डायमण्ड बुक स्टाल, ज्वालापुर, हरिद्वार
22. कम्पटीशन बुक हाउस, सब्जी मण्डी रोड, बरेली
23. अजय गुप्ता बुक स्टोर, लखीमपुर
24. शिवशंकर बुक स्टाल, रीवा
25. कृष्णा बुक एजेन्सी, वाराणसी
26. गर्ग बुक डिपो, जयपुर
27. अग्रवाल बुक सेन्टर, मुखर्जी नगर, नयी दिल्ली
28. चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी (सभी बुक स्टालों पर
29. विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक वाराणसी
30. मोतीलाल बनारसी दास, वाराणसी
31. केशवी बुक डिस्ट्रीब्यूटर्स, नयी दिल्ली – 93
32. महावीर बुक स्टाल, खजूरी बाजार, इन्दौर
33. हिन्दी बुक डिपो, मुरादाबाद
34. माँ बुक स्टेशनर्स, शहडोल छत्तीसगढ़
35. परिमल प्रकाशन, नई दिल्ली, मो.: 9891143247

संस्कृतगङ्गा उवाच

प्रिय मित्राणि !

नमः संस्कृताय।

- 'गुरुमन्त्र' नामक यह पुस्तक आपकी सेवा में समर्पित है। इसमें UP-TET में संस्कृत विषय से सम्बद्ध जो 30 प्रश्न आते हैं उन्हीं की व्याख्या प्रस्तुत की जा रही है।
- सन् 2013 से अब तक के सभी संस्कृत से सम्बन्धित प्रश्न इस व्याख्यात्मक हल में सम्मिलित किए गए हैं।
- सभी प्रश्नों की प्रामाणिक व्याख्या सही सन्दर्भ ग्रन्थ के साथ आपको पढ़ने को मिलेगी।
- जो प्रश्न आयोग ने पूछे हैं, उसी प्रकरण से सम्बन्धित सभी महत्त्वपूर्ण प्रश्न इस व्याख्या में सम्मिलित किये गए हैं। मुझे विश्वास है कि इस व्याख्यात्मक हल से सभी आवश्यक प्रकरणों का अध्ययन भी लगभग पूर्ण हो जाएगा, किन्तु इस पुस्तक के साथ आपको **'विजयी भव'** नामक पुस्तक भी अवश्य पढ़नी चाहिए, जो UP-TET (संस्कृत) के लिए विशेष रूप से लिखी गयी है।
- **'प्रश्न बोलते हैं'** यह इस पुस्तक का सन्देश है; क्योंकि जो प्रश्न परीक्षाओं में पूछे गये हैं, उसी तरह के सभी महत्त्वपूर्ण प्रश्न इस पुस्तक में व्याख्यायित हैं; इससे सिद्ध होता है कि मानो एक प्रश्न अपनी तरह के सभी प्रश्नों की सूचना दे देता है।
- इस व्याख्या को 'गुरुमन्त्र' की तरह अमोघ अस्त्र बनाने में संस्कृत के जिन वीरों का अविस्मरणीय योगदान रहा उनमें **सत्यप्रकाश साहू, श्यामकिशोर मिश्र 'JNU', अम्बिकेश प्रताप सिंह, आशुतोष शुक्ल, संतोष यादव (साहब), स्वागतम् मौर्य, संगीता राय, सुमन सिंह, अमित मिश्र 'बस्ती', केदारनाथ तिवारी** आदि मुख्य हैं।
- यह प्रयास किया गया है कि पुस्तक पूर्णरूपेण शुद्ध हो, फिर भी प्रमाद या अज्ञानवशात् कुत्रचित् मुद्रणदोष या गलत उत्तर छप गया हो तो कृपया हमें सूचित करें– **8004545096, 9839852033**

संस्कृतगङ्गा, दारागञ्ज, प्रयागराज
5 सितम्बर, 2019, शिक्षक दिवस

सम्पादक
सर्वज्ञभूषण

अनुक्रमणिका

Call M

1. UP-TET संस्कृतम् | उच्च प्राथमिक स्तर (कक्षा- 6 से 8 तक) | जून 2013

01. अभितः के योग में विभक्ति प्रयुक्त होती है-
(A) षष्ठी (B) पञ्चमी
(C) तृतीया (D) द्वितीया

व्याख्या-

- **'अभितः-परितः-समया-निकषा-हा-प्रतियोगेऽपि'** इस वार्तिक से अभितः (दोनों ओर या सब ओर), परितः (चारों ओर), समया (समीप), निकषा (समीप), हा (धिक्कार) तथा प्रति (ओर) अव्ययों के योग में द्वितीया विभक्ति होती है।
  उदाहरण- अभितः कृष्णं गोपाः, परितः कृष्णं गोपाः- कृष्ण के चारों ओर ग्वाले हैं। यहाँ अभितः एवं परितः के योग में 'कृष्ण' में द्वितीया विभक्ति हुई है।
- **भीत्रार्थानां भयहेतुः (1.4.25)** सूत्र से भयार्थक और त्राणार्थक धातुओं के योग में जिससे भय हो और जिससे रक्षा की जाय उसकी अपादान सञ्ज्ञा होकर पञ्चमी विभक्ति का प्रयोग होता है। उदाहरण- चोराद् बिभेति, चोरात् त्रायते।
- **येनाङ्गविकारः (2.3.20)** सूत्र से जिस अङ्ग के द्वारा अङ्गी का विकार द्योतित होता है उस विकृत अंग से तृतीया विभक्ति होती है।
  उदाहरण- **अक्ष्णा** काणः, **पादेन** खञ्जः, **शिरसा** खल्वाटः, **कर्णेन** बधिरः आदि।
- 'ऋते' के योग में पञ्चमी विभक्ति तथा 'कृते' के योग में षष्ठी विभक्ति होती है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

02. 'काव्यप्रकाश' पुस्तक के रचयिता हैं-
(A) आचार्य कुन्तक (B) आचार्य मम्मट
(C) आनन्दवर्धन (D) श्रीहर्ष

व्याख्या-

ग्रन्थ	ग्रन्थकार	ग्रन्थविभाजन
काव्यप्रकाश	- आचार्य मम्मट	- 10 उल्लास
वक्रोक्तिजीवितम्	- कुन्तक	- चार उन्मेष
ध्वन्यालोक	- आनन्दवर्धन	- चार उद्योत
चन्द्रालोक	- जयदेव	- दस मयूख
रसगंगाधर	- पण्डितराज जगन्नाथ	- चार आनन
दशरूपक	- आचार्य धनञ्जय	- चार प्रकाश
साहित्यदर्पण	- विश्वनाथ	- 10 परिच्छेद
खण्डनखण्डखाद्य	- श्रीहर्ष	- दार्शनिकग्रन्थ

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि काव्यप्रकाश के रचयिता आचार्य मम्मट हैं। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

03. गत्यात्मक धातुओं के योग में विभक्ति होती है-
(A) तृतीया (B) पञ्चमी
(C) सप्तमी (D) द्वितीया

व्याख्या-

- **गतिबुद्धिप्रत्यवसानार्थशब्दकर्माकर्मकाणामणि कर्ता स णौ (1.4.52)** सूत्र से गति अर्थ वाली जैसे गम्, चल्, इण् आदि धातुएँ, बुद्धि अर्थ वाली (जैसे बुध्, ज्ञा, विद् आदि धातुएँ, प्रत्यवसानार्थ अर्थात् जैसे भक्ष्, भुज्, अद्, अश् आदि धातुएँ जिनका कर्म कोई शब्द हो, जैसे पठ्, उच्चर् आदि, अकर्मक धातुएँ जैसे- आस्, स्था, हस् आदि धातुओं की अणिजन्त अवस्था का कर्त्ता इन धातुओं को प्रेरणार्थक करने पर कर्म में बदल जाता है और कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे- शत्रून् स्वर्गम् अगमयत्।
- **सहयुक्तेऽप्रधाने (2.3.19)-** सूत्र से सहार्थक शब्द (सह, सार्धं, साकं, समम्) से युक्त अप्रधान में तृतीया विभक्ति होती है-
  उदाहरण- पुत्रेण सह आगतः पिता। पुत्र के साथ पिता आया।
  रामेण सह सीता वनं गतवती- राम के साथ सीता वन गयी।
- **आधारोऽधिकरणम् (1.4.45)-** सूत्र से कर्ता और कर्म के द्वारा कर्ता में रहने वाली क्रिया के आधार को अधिकरण कारक कहते हैं और 'सप्तम्यधिकरणे च' (2.3.36) सूत्र से अधिकरण में सप्तमी विभक्ति होती है।
  उदाहरण- देवदत्तः कटे आस्ते (देवदत्त चटाई पर बैठता है।)
  मोक्षे इच्छास्ति (मोक्ष सम्बन्धी इच्छा है।)
- **आख्यातोपयोगे (1.4.29)-** सूत्र से नियमपूर्वक विद्या पढ़ने में आख्याता अर्थात् पढ़ाने वाले की अपादान सञ्ज्ञा होती है और 'अपादाने पञ्चमी' से पञ्चमी विभक्ति होती है।
  उदाहरण- उपाध्यायादधीते।
  स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि गति अर्थवाली धातुओं से द्वितीया विभक्ति होती है। **इसलिए विकल्प 'D' सही है।**

04. निम्नलिखित में से कौन सा शब्द अशुद्ध है-
(A) पूज्य **(B) पूजनीय**
(C) पूज्यनीय **(D) इनमें से कोई नहीं**

व्याख्या-

शुद्ध शब्द		**अशुद्ध शब्द**
पूजनीय	-	पूज्यनीय
आशीर्वाद	-	आर्शीवाद
शृङ्खला	-	श्रृंखला
शृङ्गार	-	श्रृङ्गार

अतः विकल्प 'C' सही है।

05. 'छात्रः उपविशति' है-
(A) कर्तृवाच्य **(B) कर्मवाच्य**
(C) भाववाच्य **(D) इनमें से कोई नहीं**

व्याख्या-* वाच्य तीन प्रकार का होता है- कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य, भाववाच्य। कर्तृवाच्य के वाक्य में कर्ता मुख्य होता है, कर्ता में प्रथमा विभक्ति होती है, और कर्ता के अनुसार ही क्रिया का रूप होता है। अर्थात् 'छात्रः उपविशति' वाक्य में कर्ता छात्र है और क्रिया विश् धातु, लट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन की है और इस वाक्य में कर्ता की प्रधानता है इसलिए यह वाक्य कर्तृवाच्य का है।

***कर्तृवाच्य के अन्य उदाहरण-** बालकः पुस्तकं पठति, अहं गृहं गच्छामि, अहं पुस्तकानि पठामि, बालिका फलम् खादति।

➤ **कर्मवाच्य-** कर्मवाच्य के वाक्य में कर्म की प्रधानता होती है और कर्म के अनुसार क्रिया का प्रयोग किया जाता है। कर्म में प्रथमा विभक्ति, कर्त्ता में तृतीया विभक्ति और क्रिया कर्म के अनुसार होती है। उदाहरण- रामेण पुस्तकं पठ्यते, बालकेन ग्रन्थः पठ्यते, त्वया लेखः लिख्यते, बालिकया फलम् खाद्यते आदि वाक्यों में कर्त्ता में तृतीया, कर्म में प्रथमा और क्रिया कर्म के अनुसार प्रयुक्त है अतः ये वाक्य कर्मवाच्य के उदाहरण हैं।

➤ **भाववाच्य-** भाववाच्य के वाक्यों में कर्म का प्रयोग नहीं होता है। भाववाच्य के वाक्यों में कर्त्ता में तृतीया विभक्ति और क्रिया में प्रथमपुरुष एकवचन या नपुंसकलिङ्ग एकवचन का प्रयोग होता है- उदाहरण- रामेण स्थीयते, बालिकया हस्यते, बालकेन शय्यते आदि। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

06. किरातार्जुनीयम् में सर्ग हैं-
(A) उन्नीस **(B) अठारह**
(C) सत्रह **(D) सोलह**

व्याख्या-

ग्रन्थ		**सर्ग**		**ग्रन्थकार**
1. किरातार्जुनीयम्	-	18	-	भारवि
2. रघुवंशम्	-	19	-	कालिदास
3. कुमारसम्भवम्	-	17	-	कालिदास
4. शिशुपालवधम्	-	20	-	माघ
5. हरविजयम्	-	50	-	रत्नाकर
6. रावणवध (भट्टिकाव्य)	-	22	-	भट्टि
7. बुद्धचरितम्	-	28	-	अश्वघोष
8. नैषधीयचरितम्	-	22	-	श्रीहर्ष
9. जानकीहरणम्	-	20-25	-	कुमारदास
10. सौन्दरानन्दम्	-	18	-	अश्वघोष

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि किरातार्जुनीयम् महाकाव्य में 18 सर्ग हैं जो भारवि की रचना है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

07. 'नाट्याख्यं पञ्चमं वेदम्' यह कथन है-
(A) भरतमुनि का **(B) अश्वघोष का**
(C) श्रीहर्ष का **(D) शूद्रक का**

व्याख्या-

➤ आचार्य भरतमुनि ने नाट्यशास्त्र के प्रथम अध्याय में नाटक को पाँचवे वेद के रूप में उल्लिखित किया है-

नाट्याख्यं पञ्चमं वेदं सेतिहासं करोम्यहम्।।

(ना.शा. 1.15)

भगवान् ब्रह्मा ने सभी वेदों का स्मरण करते हुए संकल्प किया कि मैं नाट्य नामक ऐसे पाँचवे वेद की इतिहास सहित रचना करता हूँ। अतः भरतमुनि ने नाटक को 'पाँचवा वेद' कहा है।

➤ अश्वघोष का सम्बन्ध बौद्ध सम्प्रदाय से है अश्वघोष की निम्नलिखित रचनाएँ प्राप्त हैं- बुद्धचरितम्, सौन्दरानन्द, शारिपुत्रप्रकरण, सूत्रालङ्कार, वज्रसूची, महायान श्रद्धोत्पादक, गण्डीस्तोत्रगाथा, राष्ट्रपाल आदि।

➤ कन्नौज के राजा जयन्तचन्द्र (जयचन्द्र) श्रीहर्ष के आश्रयदाता थे। श्रीहर्ष के पिता का नाम **श्रीहीर** तथा माता का नाम **मामल्लदेवी** था। **'नैषधं विद्वदौषधम्'** श्रीहर्ष के विषय में प्रचलित उक्ति है अर्थात् श्रीहर्ष के द्वारा रचित नैषधीयचरितम् महाकाव्य जिसमें 22 सर्ग हैं विद्वानों के लिए औषधि है।

➤ 'शूद्रकोऽग्निं प्रविष्टः' यह कथन शूद्रक के लिए है अर्थात् शूद्रक राजा अग्नि में प्रविष्ट हुए। **शूद्रक** के द्वारा रचित **मृच्छकटिकम्** जो एक प्रकरण ग्रन्थ है, जिसमें **दस अङ्क** हैं। जिसके नायक **चारुदत्त** तथा गणिका नायिका **वसन्तसेना** एवं कुलजा नायिका धूता है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

08. 'रुच्यर्थानां प्रीयमाणः' सूत्र में विभक्ति प्रयुक्त होती है-
(A) प्रथमा **(B) द्वितीया**
(C) तृतीया **(D) चतुर्थी**

व्याख्या-

- **'रुच्यर्थानां प्रीयमाणः'** सूत्र से रुच् धातु के योग में जिसे कोई वस्तु अच्छी लगती है उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे- बालकाय मिष्ठान्नं रोचते (बालक को मिठाई अच्छी लगती है) इस वाक्य में रुच् धातु का प्रयोग है और प्रीयमाण बालक है अतः बालक में चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग है। इसीप्रकार- बालकाय पठनं रोचते, मह्यं भ्रमणं रोचते, शिशवे दुग्धं रोचते आदि ।
- **'कर्तुरीप्सिततमं कर्म'** सूत्र से कर्ता द्वारा अपनी क्रिया से सबसे अधिक चाहा हुआ कर्म कहलाता है अर्थात् कर्ता अपनी क्रिया के द्वारा जिसे सबसे अधिक चाहता है उसकी कर्म सञ्ज्ञा होती है 'कर्मणि द्वितीया' से द्वितीया विभक्ति होती है।
  उदाहरण- अहं जलं पिबामि, सः नगरं गच्छति, रामः पत्रं लिखति, छात्रः विद्यालयं गच्छति।
- **'कर्तृकरणयोस्तृतीया'** सूत्र से अनुक्त कर्ता और करण में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे- रामेण बालिः हतः, रामः दण्डेन सर्पं हन्ति, मोहनः दात्रेण लुनाति।
  स्पष्टीकरण- इसप्रकार स्पष्ट है कि 'रुच्यर्थानां प्रीयमाणः' सूत्र से चतुर्थी विभक्ति होती है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

09. 'नित्यनपुंसकलिङ्गैकवचनान्तः' समास होता है-
(A) बहुव्रीहि समास
(B) द्विगु समास
(C) द्वन्द्व समास
(D) अव्ययीभाव समास

व्याख्या*- 'पूर्वपदार्थप्रधानोऽव्ययीभावः' सूत्र से जिस पद में पूर्वपद की प्रधानता हो उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं। 'अव्ययीभावश्च' (2.4.18) सूत्र से अव्ययीभाव समास नित्य नपुंसकलिङ्ग में होता है।

उदाहरण- सुमद्रम्, अधिगोपम्, उपकृष्णम् आदि।

*'**संख्यापूर्वो द्विगुः'** सूत्र से जिस तत्पुरुष समास में पूर्वपद संख्यावाची होता है उसे द्विगु समास कहते हैं।

उदाहरण- पञ्चगवम्, पञ्चवटी, त्रिभुवनम्, पञ्चामृतम् आदि।

- **द्वन्द्व-** 'चार्थे द्वन्द्वः' सूत्र से जिसमें सभी पदों की प्रधानता हो वह द्वन्द्वसमास होता है। उदाहरण- हरिहरौ, ईशकृष्णौ, रामलक्ष्मणौ, शिवकेशवौ आदि।
- **बहुव्रीहि समास-** 'अन्यपदार्थप्रधानो बहुव्रीहिः' से जिस समास में अन्य पद की प्रधानता हो उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं।
  उदाहरण- पीताम्बरः, लम्बोदरः, जितेन्द्रियः, नीलकण्ठः आदि।
  स्पष्टीकरण- इसप्रकार स्पष्ट है कि 'अव्ययीभावश्च' सूत्र से अव्ययीभाव समास नित्य नपुंसकलिङ्ग में होता है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

10. 'अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते' इस उक्ति का मूलस्रोत है-
(A) कठोपनिषद् **(B) ईशावास्योपनिषद्**
(C) तैत्तिरीयोपनिषद् **(D) श्रीमद्भगवद्गीता**

व्याख्या-

उपनिषद् और उनकी प्रसिद्ध सूक्तियाँ

कठोपनिषद्

(1) आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु।
(2) इमा रामाः सरथाः सतूर्या।
(3) सस्यमिव मर्त्यः पच्यते सस्यमिवाजायते पुनः।

ईशावास्योपनिषद्

(1) अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नुते।
(2) तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्।
(3) तत्र को मोहः कः शोक एकत्वमनुपश्यतः।

तैत्तिरीयोपनिषद्

(1) सत्यं वद, धर्मं चर
(2) मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्य देवो भव।

श्रीमद्भगवद्गीता

(1) गतासूनगतासूंश्च नानुशोचन्ति पण्डिताः।
(2) आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते।
(3) पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते' यह सूक्ति ईशावास्योपनिषद् से गृहीत है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

11. 'रामः गच्छति' का भाववाच्य होगा-
(A) रामः गम्यते **(B) रामेण गच्छति**
(C) रामः गमयति **(D) रामेण गम्यते**

व्याख्या- संस्कृत में वाच्य तीन प्रकार के होते हैं- कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य, भाववाच्य।

- कर्तृवाच्य के वाक्यों में कर्ता की प्रधानता होती है कर्ता में प्रथमा विभक्ति होती है कर्ता के अनुसार क्रिया का प्रयोग किया जाता है।
- कर्मवाच्य के वाक्यों में कर्म की प्रधानता होती है कर्म में प्रथमा विभक्ति और कर्म के अनुसार क्रिया का प्रयोग किया जाता है और अनुक्त कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है।
- भाववाच्य के वाक्यों में क्रिया की प्रधानता होती है इसप्रकार के वाक्यों में कर्म नहीं होता कर्ता में तृतीया विभक्ति और

क्रिया में हमेशा प्रथमपुरुष एकवचन का प्रयोग होता है। 'रामः गच्छति' यह वाक्य कर्तृवाच्य का वाक्य है इसे भाववाच्य में बदलने पर 'राम' इस पद में तृतीया विभक्ति 'रामेण' एवं गम् धातु का रूप प्रथम पुरुष एकवचन में गम्यते होगा

स्पष्टीकरण- इसका भाववाच्य 'रामेण गम्यते' होगा। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

12. 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः' सूक्ति किस ग्रन्थ की है-

(A) रघुवंशम् **(B) मेघदूतम्**
(C) किरातार्जुनीयम् **(D) नीतिशतकम्**

व्याख्या-

ग्रन्थ ग्रन्थकार सूक्ति

किरातार्जुनीयम् - भारवि

(i) हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः (हितकारी और मनोहर वचन दुर्लभ हैं)
(ii) पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम् (मनस्वी पुरुषों के लिए पराभव भी उत्सव के ही समान है)
(iii) न हि प्रियं प्रवक्तुमिच्छन्ति मृषा हितैषिणः (कल्याण चाहने वाले लोग मिथ्याभूत मधुर वचन बोलने की इच्छा नहीं करते हैं।

कालिदास - रघुवंशम्

(i) क्रिया हि वस्तूपहिता प्रसीदति।
(ii) तेजसां हि न वयः समीक्ष्यते।
(iii) धिगिमां देहभृतामसारताम्।

कालिदास - मेघदूतम्

(i) प्रायः सर्वो भवति करुणावृत्ति रार्द्रान्तरात्मा।
(ii) नीचैः गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण।
(iii) रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय।

भर्तृहरि - नीतिशतकम्

(i) सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः
(ii) विद्याविहीनः पशुः
(iii) सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ते।

अतः विकल्प 'C' सही है।

13. अव्यय शब्द है-

(A) सर्वदा **(B) नदी**
(C) अहम् **(D) सः**

व्याख्या- कुछ प्रमुख अव्यय एवं उनके अर्थ-

अग्रतः = आगे
अचिरेण = शीघ्र, जल्दी
अतएव = इसलिए
अतः = इसलिए
स्वस्ति = आशीर्वाद
शनैः = धीरे-धीरे
विपरीतम् = विरुद्ध
अतीव = बहुत ही
अत्र = यहाँ
सर्वदा = हमेशा
सदैव = हमेशा
सह = साथ
साकम् = साथ
सार्धम् = साथ

➤ 'नदी' शब्द ईकारान्त है प्रथमा विभक्ति एकवचन में नदी रूप बनता है। यह सुबन्त पद है।
➤ 'अहम्' शब्द अस्मद् शब्द का पुँल्लिङ्ग प्रथमा विभक्ति एक वचन का रूप है। यह सर्वनाम पद है।
➤ 'सः' शब्द तत् सर्वनाम पुँल्लिङ्ग प्रथमा विभक्ति एकवचन का रूप है।

स्पष्टीकरण- इस प्रकार स्पष्ट है कि 'सर्वदा' यह शब्द अव्यय है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

14. अर्थगौरव के लिए प्रसिद्ध हैं-

(A) भारवि **(B) कालिदास**
(C) बाणभट्ट **(D) दण्डी**

व्याख्या-

***उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्।**
दण्डिनः पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयो गुणाः॥

अर्थात् कालिदास उपमा के लिए, भारवि अर्थगौरव के लिए, दण्डी पदलालित्य के लिए एवं माघ उपमा, अर्थगौरव और पदलालित्य इन तीनों के लिए प्रसिद्ध हैं।

*बाणभट्ट के लिए प्रसिद्धि है- बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्। वाणी बाणो बभूव ह। कविताकामिनी कौतुकाय।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि अर्थगौरव के लिए भारवि प्रसिद्ध हैं। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

15. उपमेय और उपमान में अभेद प्रदर्शित किया जाता है-

(A) उपमा अलङ्कार में **(B) रूपक अलङ्कार में**
(C) उत्प्रेक्षा अलङ्कार में **(D) अनुप्रास अलङ्कार में**

व्याख्या-

➤ **उपमा अलङ्कार-** 'प्रस्फुटं सुन्दरं साम्यम् उपमा' अर्थात् उपमान और उपमेय के सादृश्य को उपमा अलङ्कार कहते हैं।

उदाहरण-

वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये।
जगतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ॥

इस श्लोक में 'पार्वतीपरमेश्वरौ' उपमेय है, 'वागर्थौ' उपमान है, 'सम्पृक्तौ' साधारण धर्म है और 'इव' उपमावाचक शब्द है। यहाँ उपमान और उपमेय में सादृश्य दिखाया गया है अतः उपमा अलङ्कार है।

➤ **रूपक अलङ्कार-** 'तद्रूपकमभेदो य उपमानोपमेययोः' अर्थात् जहाँ उपमेय और उपमान में अभेद प्रदर्शित किया जाय वहाँ रूपक अलङ्कार होता है।

उदाहरण- यस्य रणान्तःपुरे पराड्मुखी भवति रिपुसेना।। यहाँ रण के ऊपर अन्तःपुरत्व रूप आरोप्यमाण शब्दतः उपात्त है नायिका तथा रिपुसेना का आरोप्यमाण अर्थतः आक्षिप्त होता है। इसलिए रणान्तःपुर रूप एकदेश में स्पष्टरूप से वर्तमान यह एकदेश विवर्ति रूपक है।

➤ **उत्प्रेक्षा अलङ्कार-** 'भवेत्सम्भावनोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य परात्मना' अर्थात् किसी प्रस्तुत वस्तु की अप्रस्तुत के रूप में सम्भावना करने को उत्प्रेक्षा कहते हैं।

उदाहरण-

ऊरुः कुरङ्गकहशश्चञ्चलचेलाञ्चलो भाति।
सपताकः कनकमयो विजयस्तम्भः स्मरस्ये वा।।

➤ **अनुप्रास अलङ्कार-** 'अनुप्रासः शब्दसाम्यं वैषम्येऽपि स्वरस्य यत्' अर्थात् स्वरों में समानता न होते हुए भी समान व्यञ्जनों अथवा वर्णों का बार-बार आना अनुप्रास अलङ्कार है। उदाहरण- लताकुञ्जं गुञ्जन्मदवदलिपुञ्जं चपलयन्। समालिङ्गन्नङ्गं द्रुततरमनङ्गं प्रबलयन्। आदि उदाहरण में ङ्ग-ङ्ग, न्द-न्द, आदि का वर्णसाम्य होने के कारण अनुप्रास अलङ्कार है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

16. महान् व्याकरणाचार्य पाणिनि ने संस्कृत की वर्णमाला को बाँटा है-
(A) 10 खण्डों में (B) 12 खण्डों में
(C) 14 खण्डों में (D) 16 खण्डों में

व्याख्या- भगवान् शङ्कर के नृत्य करने के अवसर पर उनके डमरू से यह ध्वनि निकली।

नृत्तावसाने नटराजराजो ननाद ढक्कां नवपञ्चवारम्।
उद्धर्तुकामः सनकादिसिद्धान् एतद् विमर्शे शिवसूत्रजालम्।।

1. अइउण् 2. ऋलक् 3. एओङ् 4. ऐऔच् 5. हयवरट् 6. लण् 7. ञमङणनम् 8. झभञ् 9. घढधष् 10. जबगडदश् 11. खफछठथचटतव् 12. कपय् 13. शषसर् 14. हल्।

स्पष्टीकरण- इसप्रकार इन्हीं चौदह माहेश्वरसूत्रों से संस्कृत वर्णमाला की रचना हुई है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

17. 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' कथन है-
(A) आचार्य मम्मट का
(B) आनन्दवर्धनाचार्य का
(C) आचार्य विश्वनाथ का
(D) क्षेमेन्द्र का

व्याख्या-

➤ **आचार्य मम्मट का काव्यलक्षण-** 'तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्.कृती पुनः क्वापि' अर्थात् दोषों से रहित, गुणों से युक्त यदि कहीं पर अलङ्कार न भी हों तो शब्द और अर्थ की समष्टि काव्य है।

➤ **आनन्दवर्धन का काव्यलक्षण-** 'काव्यस्यात्मा ध्वनिः' अर्थात् काव्य की आत्मा ध्वनि है।

➤ **आचार्य विश्वनाथ का काव्यलक्षण-** 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' अर्थात् रसात्मक वाक्य ही काव्य है।

➤ **आचार्य क्षेमेन्द्र का काव्यलक्षण-** 'औचित्यं रससिद्धस्य स्थिरं काव्यस्य जीवितम्' औचित्य ही रस का जीवितभूत अर्थात् उसका प्राण है और काव्य में चमत्कारी तत्त्व है।

स्पष्टीकरण- 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' यह काव्यलक्षण आचार्य विश्वनाथ का है। **इसलिए विकल्प 'C' सही है।**

18. पण्डितराज जगन्नाथ ने काव्य की परिभाषा दी है
(A) वाक्यं रसात्मकं काव्यम्
(B) रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्
(C) शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्
(D) ननु शब्दार्थौ काव्यम्

व्याख्या-

विश्वनाथ- 'वाक्यं रसात्मकं काव्यं' रसात्मक वाक्य ही काव्य है।

पंडितराज जगन्नाथ- 'रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्' रमणीय अर्थ का प्रतिपादन करने वाला शब्द काव्य है।

भामह- 'शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्' शब्द एवं अर्थ के सहित ही काव्य है।

स्पष्टीकरण- अतः विकल्प 'B' सही है।

19. 'दूतवाक्यम्' कृति है-
(A) भास (B) भवभूति
(C) भारवि (D) कालिदास

व्याख्या-

➤ **महाकवि भास की तेरह रचनाएँ-** प्रतिज्ञायौगन्धरायण, स्वप्नवासवदत्तम्, ऊरुभंग, दूतवाक्यम्, पञ्चरात्रम् , बालचरित, दूतघटोत्कच, कर्णभार, मध्यमव्यायोग, प्रतिमानाटक, अभिषेकनाटक, अविमारक, चारुदत्त।

➤ **महाकवि भवभूति–** महाकवि भवभूति की तीन रचनाएँ हैं- मालतीमाधवम्, महावीरचरितम्, उत्तररामचरितम्।

➤ **भारवि-** भारवि की केवल एक रचना प्राप्त होती है जो कि किरातार्जुनीयम् है यह महाकाव्य है, जिसमें 18 सर्ग हैं, इसे 'बृहत्त्रयीकाव्य' की सञ्ज्ञा प्राप्त है।

➤ **कालिदास की सात रचनाएँ-** ऋतुसंहारम्, मेघदूतम्,

रघुवंशम्, कुमारसम्भवम्, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोर्वशीयम्।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'दूतवाक्यम्' महाकवि भास की रचना है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

20. 'उमेशः' शब्द में किस सूत्र के अनुसार सन्धि की गई है-
(A) इको यणचि (B) आद्गुणः
(C) खरि च (D) तोर्लि

व्याख्या-

➢ 'इको यणचि' सूत्र से इक् (इ, उ, ऋ, ऌ) के बाद अच् (स्वर) आने पर इक् (इ, उ, ऋ, ऌ) के स्थान पर यण् (य् व् र् ल्) आदेश हो जाता है। जैसे- यदि + अपि = यद्यपि, अभि + उदयः = अभ्युदयः, वधू + आदेशः = वध्वादेशः।

➢ 'आद्गुणः' सूत्र से यदि अ/आ के बाद ह्रस्व या दीर्घ इ,उ,ऋ,ऌ आते हैं तो दोनों मिलकर क्रमशः ए, ओ, अर्, अल् गुण हो जाता है।

उदाहरण- उमा + ईशः = उमेशः
रमा + ईशः = रमेशः
गण + ईशः = गणेशः
सुर + ईशः = सुरेशः

➢ **खरि च -** 'खरि च' सूत्र से चर्त्व सन्धि का विधान होता है इसमें वर्ग के प्रथम, द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ वर्ण के आगे किसी वर्ग के प्रथम या द्वितीय अक्षर के आने पर वे अपने वर्ग के प्रथम अक्षर में बदल जाते हैं। उदाहरण- छेद् + ता = छेत्ता, लिभ् + सा = लिप्सा, हृद् + स्थनम् = हृत्स्थनम्।

➢ **तोर्लि-** 'तोर्लि' सूत्र से परसवर्ण सन्धि का विधान होता है, लकार के परे होने पर तवर्ग के स्थान पर परसवर्ण आदेश होता है।

उदाहरण- तत् + लयः = तल्लयः
विद्वान् + लिखति = विद्वाल्लिँखति।

अतः विकल्प 'B' सही है।

21. पञ्चविंशतिः शब्द का हिन्दी अर्थ होता है-
(A) पन्द्रह (B) पच्चीस
(C) पैंतीस (D) पचास

व्याख्या-

15	-	पञ्चदश
25	-	पञ्चविंशतिः
35	-	पञ्चत्रिंशत्
45	-	पञ्चचत्वारिंशत्
55	-	पञ्चपञ्चाशत्
65	-	पञ्चषष्टिः
75	-	पञ्चसप्ततिः
85	-	पञ्चाशीतिः
95	-	पञ्चनवतिः
एक हजार	-	सहस्रम्
दस हजार	-	अयुतम्
एक लाख	-	लक्षम्
दस लाख	-	नियुतम्, प्रयुतम्
एक करोड़	-	कोटिः
दस करोड़	-	दशकोटिः
एक अरब	-	अर्बुदम्
दस अरब	-	दशार्बुदम्
एक खरब	-	खर्वम्
दस खरब	-	दशखर्वम्
एक नील	-	नीलम्
दस नील	-	दशनीलम्
एक पद्म	-	पद्मम्
दस पद्म	-	दशपद्मम्
महाशंख	-	महाशंखम्

अतः विकल्प 'B' सही है।

22. भोक्तुम् में प्रयुक्त प्रकृति एवं प्रत्यय है-
(A) भुज् + तुमुन् (B) भुक् + तुमुन्
(C) भोज + तुमुन् (D) भुज् + क्त्वा

व्याख्या-

भुज् + तुमुन् = **भोक्तुम्,** अद् + तुमुन् = **अत्तुम्**
क्षिप् + तुमुन् = **क्षेप्तुम्,** शुच् + तुमुन् = **शोचितुम्**
श्रु + तुमुन् = **श्रोतुम्,** सिच् + तुमुन् = **सेक्तुम्**
लिख् + तुमुन् = **लेखितुम्,** यज् + तुमुन् = **यष्टुम्**
भिद् + तुमुन् = **भेत्तुम्,** बुध् + तुमुन् = **बोधितुम्**
नी + तुमुन् = **नेतुम्,** जि + तुमुन् = **जेतुम्**

स्पष्टीकरण- इसप्रकार 'भोक्तुम्' में भुज् धातु एवं तुमुन् प्रत्यय है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

23. हितोपदेशः में सन्धि है-
(A) दीर्घ (B) गुण
(C) वृद्धि (D) यण्

व्याख्या-

➢ **दीर्घ सन्धि-** 'अकः सवर्णे दीर्घः' सूत्र से अ/आ, इ/ई, उ/ऊ एवं ऋ वर्ण के बाद इनके सवर्ण वर्ण आते हैं तो क्रमशः आ, ई, ऊ, ॠ हो जाते हैं जैसे- हिम + आलयः = हिमालयः, विद्या

+ आलयः = विद्यालयः, श्री + ईशः = श्रीशः, गुरु + उपदेशः = गुरूपदेशः, मुनि + इन्द्रः = मुनीन्द्रः।

➤ **गुणसन्धि-** 'आद्‌गुणः' सूत्र से जब अ/आ के बाद ह्रस्व या दीर्घ इ, उ, ऋ, ऌ आते हैं तो क्रमशः ए, ओ, अर्, अल् गुण हो जाता है।

उदाहरण-
हित + उपदेशः = हितोपदेशः, रमा + ईशः = रमेशः, राजा + इन्द्रः = राजेन्द्रः, महा + उत्सवः = महोत्सवः, तव + ऌकारः = तवल्कारः आदि।

➤ **वृद्धिसन्धि-** 'वृद्धिरेचि' सूत्र से जब अ/आ के बाद ए/ऐ अथवा ओ/औ आते हैं तो क्रमशः ऐ और औ हो जाता है।
उदाहरण- सदा + एव = सदैव, लता + एषा = लतैषा, मत + ऐक्यम् = मतैक्यम् आदि।

➤ **यण् सन्धि-** 'इको यणचि' सूत्र से जब ह्रस्व या दीर्घ इ, उ, ऋ, ऌ के बाद असमान स्वर आए तो उनके स्थान पर क्रमशः य्, व्, र्, ल् हो जाता है।
उदाहरण- मधु + अरिः = मध्वरिः, वधू + आदेशः = वध्वादेशः, सु + आगतम् = स्वागतम् आदि।
अतः विकल्प 'B' सही है।

24. भवभूति का सम्बन्ध है-
(A) मालविकाग्निमित्रम् से
(B) रघुवंशम् से
(C) अष्टाध्यायी से
(D) उत्तररामचरितम् से

व्याख्या- *महाकवि भवभूति का समय सातवीं शताब्दी का उत्तरार्ध है, इनका प्रिय रस **करुण** एवं प्रियछन्द **अनुष्टुप्** एवं **शिखरिणी** है। महाकवि भवभूति की तीन रचनाएँ हैं- मालतीमाधवम् (प्रकरण), महावीरचरितम् (नाटक), उत्तररामचरितम् (नाटक)

➤ महाकवि कालिदास की सात रचनाएँ हैं-
महाकाव्य - रघुवंशम्, कुमारसम्भवम्
नाटक- मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोर्वशीयम्, अभिज्ञान-शाकुन्तलम्।

➤ अष्टाध्यायी महर्षि पाणिनि की रचना है, जिसमें आठ अध्याय प्रत्येक अध्याय में चार पाद एवं लगभग 4000 सूत्र हैं। जो व्याकरण का सर्वोत्कृष्ट ग्रन्थ है।
स्पष्टीकरण- इसप्रकार मालविकाग्निमित्रम् और रघुवंशम् का सम्बन्ध कालिदास से, अष्टाध्यायी का सम्बन्ध पाणिनि से जबकि उत्तररामचरितम् का सम्बन्ध भवभूति से है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

25. 'पीताम्बरः' का विग्रह है-
(A) पीतम् च तत् अम्बरम्
(B) पीतम् अम्बरम् यस्य सः
(C) पीतम् अम्बरम् येन सः
(D) पीतम् अम्बरम् यस्मिन्

व्याख्या- बहुव्रीहि समास में अनेक पद होते हैं, परन्तु वे किसी अन्य पद के विशेषण होते हैं। इसमें अन्य पद के अर्थ की प्रधानता होती है। 'अन्यपदप्रधानो बहुव्रीहिः'

1.	पीताम्बरः	पीतम् अम्बरं यस्य सः (विष्णुः)
2.	गजाननः	गजः आननः यस्य सः (गणेशः)
3.	नीलाम्बरः	नीलम् अम्बरं यस्य सः (बलरामः)
4.	वीणापाणिः	वीणा पाणौ यस्याः सा (सरस्वती)
5.	चन्द्रशेखरः	चन्द्रः शेखरे यस्य सः (शिवः)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि 'पीतम् अम्बरं यस्य सः' पीताम्बरः का विग्रह है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

26. गलत वर्तनी वाला शब्द चुनिए
(A) पुँलिङ्ग **(B) स्त्रीलिङ्ग**
(C) नपुंसकलिङ्ग **(D) उभयलिंग**

व्याख्या- संस्कृत में तीन लिङ्ग होते हैं- पुँल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग, नपुंसकलिङ्ग जबकि संस्कृत में उभयलिंग नहीं होता है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

27. राजपुत्रः में समास है-
(A) तत्पुरुष **(B) कर्मधारय**
(C) द्विगु **(D) अव्ययीभाव**

व्याख्या-

समास	विग्रहवाक्य	पद
तत्पुरुष	राज्ञः पुत्रः	राजपुत्रः
	प्रजायाः पतिः	प्रजापतिः
	राज्ञः सेवकः	राजसेवकः
कर्मधारय	घन इव श्यामः	घनश्यामः
	नीलम् इव कमलम्	नीलकमलम्
	कृष्णः सर्पः	कृष्णसर्पः
द्विगुसमास	पञ्चानां गवां समाहारः	पञ्चगवम्
	त्रयाणां भुवनानां समाहारः	त्रिभुवनम्
	पञ्चानां पात्राणां समाहारः	पञ्चपात्रम्
अव्ययीभाव समास	विघ्नानाम् अभावः	निर्विघ्नम्
	ग्रामस्य समीपम्	उपग्रामम्
	दिनं दिनं प्रति	प्रतिदिनम्

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'राजपुत्रः' में तत्पुरुष समास है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

28. 'चन्द्रशेखरः' में समास है-
(A) तत्पुरुष **(B) अव्ययीभाव**
(C) बहुव्रीहि **(D) द्वन्द्व**

व्याख्या-

- **तत्पुरुष समास-** 'उत्तरपदप्रधानो तत्पुरुषः' सूत्र से जिसमें उत्तरपद की प्रधानता होती है उसे तत्पुरुष समास कहते हैं।
- **अव्ययीभाव समास-** 'पूर्वपदप्रधानोऽव्ययीभावः' सूत्र से जिसमें पूर्वपद की प्रधानता हो, उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं।
- **बहुव्रीहि समास-** 'अन्यपदप्रधानो बहुव्रीहिः' से न तो पूर्वपद प्रधान हो और न ही उत्तरपद प्रधान हो बल्कि अन्यपद प्रधान हो उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं।

'चन्द्रशेखरः'- चन्द्रः शेखरे यस्य सः अर्थात् शिखर पर चन्द्रमा है जिसके वह 'भगवान् शिव' यहाँ पर अन्यपद की प्रधानता है। अतः बहुव्रीहि समास है।

- **द्वन्द्व समास-** 'चार्थे द्वन्द्वः' से जिसमें पूर्व और उत्तर दोनों पदों की प्रधानता हो उसे द्वन्द्व समास कहते हैं।

समास	पद	विग्रह वाक्य
तत्पुरुष	नरपतिः	नराणां पतिः
	मुनिश्रेष्ठः	मुनिषु श्रेष्ठः
अव्ययीभाव	सुमद्रम्	मद्राणां समृद्धिः
	अतिहिमम्	हिमस्य अत्ययः
बहुव्रीहि	चन्द्रशेखरः	चन्द्रः शेखरे यस्य सः
	चित्रगुः	चित्रा गावः यस्य सः
द्वन्द्व	पितरौ	माता च पिता च
	हरिहरौ	हरिश्च हरश्च

अतः विकल्प 'C' सही है।

29. निम्नाङ्कित में से कौन द्विकर्मक धातु नहीं है-
(A) कृष् **(B) दण्ड्**
(C) मन् **(D) मथ्**

व्याख्या- दुह्, याच्, पच्, दण्ड्, रुध्, प्रच्छ्, चि, ब्रू, शास्, जि, मथ्, मुष्, नी, हृ, कृष्, वह् ये द्विकर्मक धातुएँ हैं।
स्पष्टीकरण- कृष्, दण्ड्, मथ्, की गणना द्विकर्मक धातुओं के अन्तर्गत हुई है जबकि मन् की गणना इसके अन्तर्गत नहीं है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

30. छन्दानुगत शिक्षण प्रणाली है-
(A) गद्य की **(B) पद्य की**
(C) व्याकरण की **(D) कथा की**

व्याख्या-

- गद्य शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत की गद् धातु से की जाती है जिसका अर्थ है 'स्पष्ट कहना चाहिए।' संस्कृत गद्य शिक्षण में समास की शैली अपनी विशेषता है, समास के ज्ञान के बिना अर्थग्रहण एवं व्याख्या कार्य सम्भव नहीं है।
- पद्य शिक्षण में छन्द का विशेष महत्त्व होता है सारे पद्य किसी न किसी छन्द में ही होते हैं। इस प्रकार के शिक्षण में अन्वय पर विशेष ध्यान दिया जाता है। पद्यात्मक पाठ तीन प्रकार के होते हैं- सूचनात्मक, सूक्तिरूप, रसात्मक।
- **व्याकरण शिक्षण-** पाणिनि द्वारा रचित अष्टाध्यायी व्याकरण का सर्वोत्कृष्ट ग्रन्थ है। इन्होंने सूत्र शैली में व्याकरण जैसे दुरूह तथा विस्तृत शास्त्र को सरल एवं संक्षिप्त बना दिया। पाणिनि ने शब्दों को तीन श्रेणियों में विभक्त किया है- सुबन्त, तिङन्त तथा अव्यय।
- सन्धि, समास, कारक आदि व्याकरण शिक्षण के अङ्ग हैं।
- संस्कृत साहित्य में कथा के लिए निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग होता रहा है- आख्यायिका,कथा,कथानिका,वृत्तान्त।

कथा शिक्षण के द्वारा छात्रों की कल्पना-शक्ति का विकास करना, उनकी तर्कशक्ति को विकसित करना तथा उनके चरित्र-निर्माण में योगदान कथा-शिक्षण के प्रमुख उद्देश्य हैं। कथा शिक्षण का यह उद्देश्य है कि बालक हानिकारक मनोरञ्जन की ओर न जाकर स्वस्थ मनोरञ्जन की ओर उन्मुख हो। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

उत्तरमाला

1.D	2.B	3.D	4.C	5.A	6.B	7.A	8.D	9.D	10.B	11.D	12.C
13.A	14.A	15.B	16.C	17.C	18.B	19.A	20.B	21.B	22.A	23.B	24.D
25.B	26.D	27.A	28.C	29.C	30.B						

2. UP-TET संस्कृतम् | प्राथमिक स्तर (कक्षा- 1 से 5 तक) | फरवरी 2014

01. शिक्षण में नैदानिक परीक्षण की आवश्यकता होती है-
(A) छात्र की पारिवारिक आय की जाँच करने के लिए
(B) स्वास्थ्य परीक्षण के लिए
(C) छात्र की विषयगत कमजोरियों को दूर करने के लिए
(D) छात्रों में प्रतिस्पर्द्धा की भावना का विकास करने के लिए

व्याख्या-
- नैदानिक परीक्षा व्यक्ति में किसी प्रकार की असामान्यता, अयोग्यता, कमजोरी, अक्षमता व्यतिक्रम की ठीक पहचान, निदान अथवा नैदानिक परीक्षा (डायग्नोस्टिक टेस्ट) कहलाती है।
- शिक्षण के सन्दर्भ में छात्र कमजोर क्यों है? इसके कारण व कठिनाइयों की जानकारी प्राप्त करने हेतु जो परीक्षण किया जाता है वह निदानात्मक परीक्षण कहलाता है।
- निदानात्मक परीक्षण का मुख्य उद्देश्य छात्र की कमजोरियों का पता लगाना है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

02. कक्षा शिक्षण में सबसे आवश्यक शिक्षण सामग्री कौन सी है-
(A) रेडियो (B) चार्ट
(C) श्यामपट (D) ग्रामोफोन

व्याख्या-
- श्यामपट शिक्षणसंस्था में उतना ही आवश्यक है जितना कि डेस्क, बेंच, कुर्सी, मेज, रजिस्टर या अन्य वस्तुएँ।
- यह शिक्षा का सबसे सस्ता और महत्त्वपूर्ण साधन है, श्यामपट शिक्षण का अभिन्न अंग है।
- श्यामपट पर लिखे अक्षर स्पष्ट हों।
- श्यामपट कार्य में स्वच्छता हो।
- अक्षरों का सीधा होना आवश्यक है।
- श्यामपट पर समानान्तर पंक्तियाँ (सीधी लाइन) होनी चाहिए।
- **उद्देश्य-** बच्चों के ध्यान को आकर्षित करना, रुचि पैदा करना, कक्षा में अनुशासन बनता है।
- कठिन अंशों के समझाने में सहायक

अतः विकल्प 'C' सही है।

03. लेखन शिक्षण में प्रतिलेख का तात्पर्य है-
(A) पुस्तक से कुछ अंश को देखकर लिखना
(B) अध्यापक बोलता है छात्र लिखता है
(C) एक छात्र बोलता है अन्य छात्र लिखते हैं
(D) स्मरण के आधार पर लिखना

व्याख्या-
- **लेखन के प्रकार-** अनुलेख, प्रतिलेख, श्रुतिलेख।
- **प्रतिलेख-** प्रतिलेख में छात्र स्वतन्त्र रूप से किसी पुस्तक या पत्र-पत्रिका के किसी भाग का अनुकरण करके अपनी कापी में लिखता है। कक्षा 4, 5, 6 में प्रतिलेख कराया जा सकता है।
- **अनुलेख-** अनुलेख का अर्थ है लिखावट के पीछे या बाद में लिखना, अनुलेख का प्रारम्भिक कक्षाओं में विशेष महत्त्व है।
- **श्रुतिलेख-** श्रुतिलेख सुना हुआ लेख है इसमें अध्यापक बोलता है और छात्र सुनकर लिखता है। सुनने समझने की योग्यता के शिक्षण और परीक्षण का श्रुतिलेख अच्छा साधन है। इसका उद्देश्य छात्रों की श्रवणेन्द्रियों को प्रशिक्षित करना है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

04. निम्नलिखित में से कौन अशुद्ध वाचन का कारण नहीं है-
(A) वर्णों की ध्वनियों का ज्ञान न होना
(B) प्रयत्न लाघव
(C) उच्चारणसम्बन्धी अभ्यास की कमी
(D) सस्वर वाचन का अभ्यास

व्याख्या- छात्रों को अपने भाव कुशलतापूर्वक व्यक्त करने, अच्छा सम्प्रेषण करने और सुस्पष्ट उच्चारण करने के लिये 'वाचन' सिखाया जाता है। वाचन सिखाते समय कुछ महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं का ध्यान रखना चाहिए जिससे अनुकरण वाचन करते समय छात्रों के अधिगम में बढ़ोत्तरी हो।
- **शुद्ध वाचन के कारण-**
  1. ध्वनियों का यथावत् ज्ञान।
  2. स्वरतन्त्र का स्वस्थ और निर्बाध होना।
  3. लय, यति, आरोह-अवरोह का ज्ञान।
  4. ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत आदि का शुद्ध ज्ञान होना।
  5. उच्चारण करते समय धैर्य, माधुर्य आदि गुणों का

ध्यान रखना।

6. सस्वर वाचन का अभ्यास।

➢ इसी प्रकार अशुद्ध वाचन के प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं-

1. प्रत्यत्न लाघव।
2. वर्णों की ध्वनियों का ज्ञान न होना।
3. उच्चारण सम्बन्धी अभ्यास की कमी।
4. ह्रस्व, दीर्घादि का अनभ्यास।
5. धैर्य, माधुर्य आदि पर ध्यान न देना।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'सस्वर वाचन' अशुद्ध वाचन का कारण न होकर शुद्ध वाचन का कारण है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

05. छन्दोबद्धता होती है-

(A) गद्यपाठों में **(B) नाटकपाठों में**
(C) पद्यपाठों में **(D) कहानी पाठों में**

व्याख्या- छन्द, मात्रा, यति, गति आदि नियमों से युक्त रचना पद्य कहलाती है। पद्यपाठ में छन्द, यति का विशेष महत्त्व होता है। वाचन करते समय जहाँ यति का निर्देश होता है वहाँ पर रुकना पड़ता है। वाचन, व्याख्या, भाव, मूल्यांकन आदि पद्य शिक्षण के अंग हैं।

➢ नाटक में नाटकीयता, संवाद, भाव भंगिमा, चतुर्विध अभिनय-सात्विक, वाचिक, कायिक, आङ्गिक का ध्यान रखा जाता है।

➢ गद्य पाठ दो प्रकार का होता हैं- कथा और आख्यायिका। गद्यशिक्षण छन्दरहित रचना होती है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

06. 'क' वर्ण का उच्चारण स्थान है-

(A) मूर्धा **(B) तालु**
(C) कण्ठ **(D) ओष्ठ**

व्याख्या-

➢ **'अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः'** से अ एवं कवर्ग (क ख ग घ ङ) ह एवं विसर्ग का उच्चारणस्थान कण्ठ है।

➢ **'ऋटुरषाणां मूर्धा'** से सभी प्रकार के ऋकार, टवर्ग (ट ठ ड ढ ण) र और ष का उच्चारणस्थान मूर्धा है।

➢ **'उपूपध्मानीयानामोष्ठौ'** से अठारह प्रकार के उकार, पवर्ग (प फ ब भ म) और उपध्मानीय का उच्चारण स्थान ओष्ठ है।

➢ **'इचुयशानां तालु'** से सभी इकार, चवर्ग (च छ ज झ ञ), य, श का उच्चारणस्थान तालु है।

➢ **'ऌतुलसानां दन्ताः'** से सभी प्रकार के ऌकार, तवर्ग (त थ द ध न), ल और स का उच्चारणस्थान दन्त है।

➢ **'ञमङणनानां नासिका च'** से ञ् म् ङ् ण् न् का उच्चारण स्थान नासिका है।

➢ **'एदैतोः कण्ठतालु'** से ए और ऐ का उच्चारणस्थान कण्ठ एवं तालु है।

➢ **'ओदौतोः कण्ठोष्ठम्'** से ओ और औ का उच्चारणस्थान कण्ठ और ओष्ठ है।

➢ **'वकारस्य दन्तोष्ठम्'** से व का उच्चारणस्थान दन्त और ओष्ठ है।

➢ **'जिह्वामूलीयस्य जिह्वामूलम्'** जिह्वामूलीय और विसर्ग का उच्चारणस्थान जिह्वामूलस्थान है।

➢ **'नासिकाऽनुस्वारस्य'** अनुस्वार का उच्चारणस्थान नासिका है।

स्पष्टीकरण- इसप्रकार कवर्ग का उच्चारण स्थान कण्ठ है **अतः विकल्प 'C' सही है।**

	वर्ग	उच्चारण स्थान
1.	अ, कवर्ग (क ख ग घ ङ), ह एवं विसर्ग	कण्ठ
2.	ऋ, टवर्ग (ट ठ ड ढ ण), र, ष	मूर्धा
3.	उ, पवर्ग (प फ ब भ म), उपध्मानीय, विसर्ग	ओष्ठ
4.	इ, चवर्ग (च छ ज झ ञ), य, श	तालु
5.	ऌ, तवर्ग (त थ द ध न), ल, स	दन्त
6.	ञ् म् ङ् ण् न्	नासिका
7.	ओ, औ	कण्ठ ओष्ठ
8.	व	दन्त ओष्ठ
9.	अनुस्वार	नासिका और अपने वर्ग का स्थान
10.	जिह्वामूलीय, विसर्ग	जिह्वामूल

07. इक्ष्वाकुवंशी राजाओं का निरूपण प्राप्त होता है-

(A) दशकुमारचरितम् में **(B) रघुवंशम् में**
(C) मेघदूतम् में **(D) कादम्बरी में**

व्याख्या-

➢ इक्ष्वाकुवंशी राजाओं का वर्णन कालिदास कृत रघुवंशम् में प्राप्त होता है जो महाकाव्य है। इसमें उन्नीस सर्ग हैं जिसे लघुत्रयी काव्य की सञ्ज्ञा प्राप्त है।

रघुवंश में प्राप्त अन्य वर्णन- कामधेनु की पुत्री नन्दिनी की सेवा, रघु का जन्म, इन्दुमती स्वयंवर, अज विलाप, श्रवण कुमार की हत्या, सीता हरण, सीता परित्याग आदि।

➢ **दशकुमारचरितम् -** दण्डी द्वारा रचित गद्य रचना है जिसमें दस राजकुमारों की कथा वर्णित है। दशकुमारचरितम् में आठ उच्छ्वास हैं। दण्डी की अन्य रचनाएँ हैं- काव्यादर्श, अवन्तिसुन्दरीकथा, छन्दोविचिति, कलापरिच्छेद, द्विसन्धानकाव्य।

- **मेघदूतम् -** मेघदूतम् महाकवि कालिदास की रचना है जिसमें विरही यक्ष की कथा का वर्णन है इसके दो भाग हैं- पूर्वमेघ तथा उत्तरमेघ। मेघदूतम् में मन्दाक्रान्ता छन्द का प्रयोग किया गया है। मेघदूतम् को खण्डकाव्य/गीतिकाव्य/सन्देशकाव्य/दूतकाव्य की सञ्ज्ञा प्राप्त है।
- **कादम्बरी-** महाकवि बाणभट्ट विरचित कादम्बरी कथाग्रन्थ है जिसमें तीन जन्मों की कथा का वर्णन प्राप्त होता है। इसका नायक चन्द्रापीड तथा नायिका कादम्बरी है। अपूर्ण कादम्बरी को बाणभट्ट के पुत्र पुलिनभट्ट (भूषणभट्ट) ने पूर्ण किया।
- कादम्बरी में शूद्रक वर्णन, शुक वर्णन, पम्पासरोवर वर्णन, विन्ध्याटवी वर्णन, शाल्मलीवृक्ष वर्णन, चाण्डालकन्यावर्णन, प्रभात वर्णन, जाबालि आश्रम वर्णन प्राप्त होता है।
- शुकनासोपदेश नामक प्रसिद्ध उपदेश कादम्बरी का ही एक अंश है।
- राजाओं की वंशावली है-
  मनु, दिलीप, रघु, अज, दशरथ, राम, लव, कुश, अतिथि, निषध, नल, नभ, पुण्डरीक, क्षेमधन्वा, देवानीक, अहीनग, पारियात्र, शिल, उन्नाभ, वज्रनाभ, शंखण, व्युषिताश्व, विश्वसह, हिरण्यनाभ, कौशल्य, ब्रह्मिष्ठ, पुत्र, पुष्य, ध्रुवसन्धि, सुदर्शन, अग्निवर्ण।
  इस प्रकार रघुवंशम् में इक्ष्वाकुवंशी राजाओं की वंशावली दी गई है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

08. अष्टाध्यायी ग्रन्थ सम्बन्धित है-
(A) व्याकरण से **(B) नाट्यशास्त्र से**
(C) अलङ्कार से **(D) काव्यशास्त्र से**

व्याख्या- अष्टाध्यायी महर्षि पाणिनि की रचना है जो कि व्याकरण शास्त्र से सम्बन्धित है। अष्टाध्यायी में आठ अध्याय हैं। जैसा कि इसके नाम से ही स्पष्ट है। प्रत्येक अध्याय में चार-चार पाद एवं लगभग चार हजार सूत्र हैं। जो सञ्ज्ञासूत्र, परिभाषासूत्र, नियमसूत्र आदि में विभक्त हैं। अष्टाध्यायी के ऊपर आचार्य कात्यायन ने वार्तिक एवं आचार्य पतञ्जलि ने महाभाष्य नामक ग्रन्थ लिखा।

- नाट्यशास्त्र आचार्य भरतमुनि की रचना है जो 36 अध्यायों में विभक्त है। इसमें नाट्य सम्बन्धी विषयवस्तु का वर्णन प्राप्त होता है। आचार्य भरतमुनि का प्रसिद्ध रससूत्र 'विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगात् रसनिष्पत्तिः' है।
- अलङ्कारशास्त्रियों ने अलङ्कारों को दो भागों में विभाजित किया है-शब्दालङ्कार और अर्थालङ्कार। अनुप्रास, यमक, श्लेष, वक्रोक्ति आदि शब्दालङ्कार तथा उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, विरोधाभास आदि अर्थालङ्कार हैं।

काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ

नाट्यशास्त्र	-	आचार्य भरतमुनि
काव्यालङ्कार	-	भामह
काव्यालङ्कारसूत्र	-	वामन
काव्यप्रकाश	-	मम्मट
साहित्यदर्पण	-	विश्वनाथ
रसगंगाधर	-	पण्डितराज जगन्नाथ
काव्यादर्श	-	दण्डी
ध्वन्यालोक	-	आनन्दवर्धन
चन्द्रालोक	-	जयदेव
दशरूपक	-	धनञ्जय

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि अष्टाध्यायी व्याकरण से सम्बद्ध ग्रन्थ है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

09. महर्षि पाणिनि ने संस्कृत की वर्णमाला को विभाजित किया है।
(A) 12 खण्डों में **(B) 14 खण्डों में**
(C) 16 खण्डों में **(D) 18 खण्डों में**

व्याख्या- महर्षि पाणिनि द्वारा रचित चौदह माहेश्वर सूत्रों पर वर्णमाला आधारित है-
चौदह माहेश्वर सूत्र हैं-
1. अ इ उ ण् **2.** ऋ ऌ क् **3.** ए ओ ङ् **4.** ऐ औ च् **5.** ह य व र ट् **6.** ल ण् **7.** ञ म ङ ण न म् **8.** झ भ ञ् **9.** घ ढ ध ष् **10.** ज ब ग ड द श् **11.** ख फ छ ठ थ च ट त व् **12.** क प य् **13.** श ष स र् **14.** ह ल्।
इसप्रकार आचार्य पाणिनि की सम्पूर्ण वर्णमाला चौदह खण्डों में विभाजित है। **अच्** = स्वर, **हल्** = व्यञ्जन, **अल्** = स्वर और व्यञ्जन दोनों। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

10. तवर्ग का उच्चारण स्थान है-
(A) कण्ठ **(B) तालु**
(C) दन्त **(D) मूर्धा**

व्याख्या-

उच्चारण स्थान	वर्ण
1. कण्ठ	अ, कवर्ग, ह एवं विसर्ग
2. मूर्धा	ऋ, टवर्ग, र, ष
3. ओष्ठ	उ, पवर्ग, उपध्मानीय
4. तालु	इ, चवर्ग, य, श
5. दन्त	ऌ, तवर्ग, ल, स
6. नासिका और अपने वर्ग	ञ्, म्, ङ्, ण्, न्

	का स्थान
7. कण्ठोष्ठ्य	ओ, औ
8. दन्तोष्ठ्य	व
9. नासिका	अनुस्वार
10. जिह्वामूल	जिह्वामूलीय

अतः तवर्ग का उच्चारणस्थान दन्त है। **इसलिए विकल्प 'C' सही है।**

11. गम् धातु का लोट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन में क्या रूप बनता है-
(A) गच्छतु (B) गच्छेत्
(C) गमिष्यति (D) अगच्छत्

व्याख्या-
गम् धातु भ्वादिगण की धातु है जिसके रूप परस्मैपद में चलते हैं- लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् में गम् को गच्छ् आदेश होता है-

(1) लट्लकार-

गच्छति	गच्छतः	गच्छन्ति
गच्छसि	गच्छथः	गच्छथ
गच्छामि	गच्छावः	गच्छामः

(2) लोट्लकार-

गच्छतु	गच्छताम्	गच्छन्तु
गच्छ	गच्छतम्	गच्छत
गच्छानि	गच्छाव	गच्छाम

(3) लङ्लकार-

अगच्छत्	अगच्छताम्	अगच्छन्
अगच्छः	अगच्छतम्	अगच्छत
अगच्छम्	अगच्छाव	अगच्छाम

(4) विधिलिङ् -

गच्छेत्	गच्छेताम्	गच्छेयुः
गच्छेः	गच्छेतम्	गच्छेत
गच्छेयम्	गच्छेव	गच्छेम

(5) लृट् लकार-

गमिष्यति	गमिष्यतः	गमिष्यन्ति
गमिष्यसि	गमिष्यथः	गमिष्यथ
गमिष्यामि	गमिष्यावः	गमिष्यामः

गम् धातु की तरह कुछ अन्य धातुओं के रूप भी चलते हैं जैसे- पठ्, चल, पा, हस्, वद् आदि।

स्पष्टीकरण- इसप्रकार **'गच्छतु'** रूप लोट्लकार प्रथम पुरुष एकवचन में, **गच्छेत्** विधिलिङ् लकार प्रथमपुरुष एकवचन, **गमिष्यति** लृट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन, **अगच्छत्** लङ्लकार प्रथमपुरुष एकवचन में बनता है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

12. 'पित्रा' पितृ शब्द के किस विभक्ति एवं वचन का रूप है-
(A) द्वितीया एकवचन (B) चतुर्थी बहुवचन
(C) तृतीया एकवचन (D) तृतीया द्विवचन

व्याख्या-
पितृ शब्द ऋकारान्त पुँल्लिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पिता	पितरौ	पितरः
द्वितीया	पितरम्	पितरौ	पितॄन्
तृतीया	पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभिः
चतुर्थी	पित्रे	पितृभ्याम्	पितृभिः
पञ्चमी	पितुः	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
षष्ठी	पितुः	पित्रोः	पितॄणाम्
सप्तमी	पितरि	पित्रोः	पितृषु
सम्बोधन	हे पितः!	हे पितरौ!	हे पितरः!

इसी प्रकार कर्तृ, हर्तृ धातृ आदि के रूप चलते हैं।
स्पष्टीकरण- 'पित्रा' शब्द तृतीया विभक्ति एकवचन में बनता है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

13. 'अष्टाविंशतिः' शब्द का अर्थ है-
(A) अट्ठारह (B) अट्ठाइस
(C) अड़तीस (D) अड़तालिस

व्याख्या-
अट्ठारह (18) - अष्टादश
अट्ठाइस (28) - अष्टाविंशतिः
अड़तीस (48) - अष्टात्रिंशत्
अड़तालिस (48) - अष्टचत्वारिंशत्, अष्टाचत्वारिंशत्।

1. एकः, एकम्, एका	26. षड्विंशतिः
2. द्वौ, द्वे, द्वे	27. सप्तविंशतिः
3. त्रयः, त्रीणि, तिस्रः	28. अष्टाविंशतिः
4. चत्वारः, चत्वारि, चतस्रः	29. नवविंशतिः, एकोनत्रिंशत्
5. पञ्च	30. त्रिंशत्
6. षट्	31. एकत्रिंशत्
7. सप्त	32. द्वात्रिंशत्
8. अष्ट, अष्टौ	33. त्रयस्त्रिंशत्
9. नव	34. चतुस्त्रिंशत्

10. दश	35. पञ्चत्रिंशत्
11. एकादश	36. षट्त्रिंशत्
12. द्वादश	37. सप्तत्रिंशत्
13. त्रयोदश	38. अष्टात्रिंशत्
14. चतुर्दश	39. नवत्रिंशत्, एकोनचत्वारिंशत्
15. पञ्चदश	40. चत्वारिंशत्
16. षोडश	41. एकचत्वारिंशत्
17. सप्तदश	42. द्विचत्वारिंशत्, द्वाचत्वारिंशत्
18. अष्टादश	43. त्रिचत्वारिंशत्, त्रयश्चत्वारिंशत्
19. नवदश, एकोनविंशतिः	44. चतुश्चत्वारिंशत्
20. विंशतिः	45. पञ्चचत्वारिंशत्
21. एकविंशतिः	46. षट्चत्वारिंशत्
22. द्वाविंशतिः	47. सप्तचत्वारिंशत्
23. त्रयोविंशतिः	48. अष्टचत्वारिंशत्, अष्टाचत्वारिंशत्
24. चतुर्विंशतिः	49. नवचत्वारिंशत्, एकोनपञ्चाशत्
25. पञ्चविंशतिः	50. पञ्चाशत्।

अतः विकल्प 'B' सही है।

14. 'पावकः' शब्द का सन्धि-विच्छेद होता है-
(A) प + आवकः **(B) पा + आवकः**
(C) पौ + अकः **(D) पो + अकः**

व्याख्या-
अयादि सन्धि- जब ए, ऐ, ओ, औ के बाद कोई स्वर आए तो ए को अय्, ऐ को आय्, ओ को अव्, औ को आव् हो जाता है।
पौ + अकः
प् + औ + अकः
प् + आव् + अकः
पावकः
इस प्रकार के अन्य उदाहरण-
गायकः = गै + अकः
पवनः = पो + अनः
भवनम् = भो + अनम्
पावनः = पौ + अनः
शायकः = शै + अकः
चयनम् = चे + अनम्
अतः विकल्प 'C' सही है।

15. जगदीशः में किस सूत्र से सन्धि हुई है-
(A) तोर्लि **(B) मोऽनुस्वारः**
(C) खरि च **(D) झलां जशोऽन्ते**

व्याख्या-
➢ **तोर्लि-** जब तवर्ग (त् थ् द् ध् न्) के बाद ल् हो तो तवर्ग के स्थान पर ल् हो जाता है
उदाहरण-
उद् + लिखितम् = उल्लिखितम्
विद्वान् + लिखति = विद्वाँल्लिखति
तद् + लीनः = तल्लीनः
➢ **मोऽनुस्वारः -** पद के अन्त में म् और उसके बाद कोई भी व्यञ्जन आए तो म् के स्थान पर अनुस्वार (ं) हो जाता है।
हरिम् + वन्दे = हरिं वन्दे
त्वम् + करोषि = त्वं करोषि
रामम् + भजामि = रामं भजामि।
➢ **खरि च-** वर्ग के प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ वर्ण के आगे किसी वर्ग के प्रथम या द्वितीय अक्षर के आने पर वे अक्षर वर्ग के प्रथम अक्षर में बदल जाते हैं-
उदाहरण- छेद् + ता = छेत्ता, लिभ् + सा = लिप्सा आदि।
➢ **झलां जशोऽन्ते-** पद के अन्त में वर्ग के प्रथम द्वितीय तृतीय और चतुर्थ वर्ण के बाद व्यञ्जन आने पर पहले वर्ग को तृतीय होता है-
उदाहरण- जगत् + ईशः = जगदीशः = (त् को द्)
अप् + जम् = अब्जम् = (प् को ब्)
अतः विकल्प 'D' सही है।

16. 'राम' शब्द के तृतीया एकवचन का रूप होता है-
(A) रामैः **(B) रामेण**
(C) रामम् **(D) रामेषु**

व्याख्या- राम शब्द अकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्द है जिसके रूप निम्नवत् चलते हैं-

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	रामः	रामौ	रामाः
द्वितीया	रामम्	रामौ	रामान्
तृतीया	रामेण	रामाभ्याम्	रामैः
चतुर्थी	रामाय	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
पञ्चमी	रामात्	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
षष्ठी	रामस्य	रामयोः	रामाणाम्
सप्तमी	रामे	रामयोः	रामेषु
सम्बोधन	हे राम!	हे रामौ!	हे रामा!

➢ राम शब्द की ही तरह बालक, श्याम, सुरेश, महेश, गणेश आदि के रूप चलते हैं।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि राम शब्द का तृतीया एकवचन में 'रामेण' रूप बनता है। **अतः विकल्प**

'B' सही है।

17. 'पठामः' पठ् धातु का रूप होता है-
(A) लट्लकार उत्तमपुरुष बहुवचन में
(B) लोट्लकार उत्तमपुरुष बहुवचन में
(C) लङ्लकार उत्तमपुरुष बहुवचन में
(D) विधिलिङ्लकार उत्तमपुरुष बहुवचन में

व्याख्या-
पठ् धातु भ्वादिगण की धातु है जिसके रूप निम्नवत् चलते हैं-

लट्लकार

पठति	पठतः	पठन्ति
पठसि	पठथः	पठथ
पठामि	पठावः	पठामः

विधिलिङ्लकार

पठेत्	पठेताम्	पठेयुः
पठेः	पठेतम्	पठेत
पठेयम्	पठेव	पठेम

लङ्लकार

अपठत्	अपठताम्	अपठन्
अपठः	अपठतम्	अपठत
अपठम्	अपठाव	अपठाम

लृट्लकार

पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति
पठिष्यसि	पठिष्यथः	पठिष्यथ
पठिष्यामि	पठिष्यावः	पठिष्यामः

अतः विकल्प 'A' सही है।

18. दा धातु में क्त्वा प्रत्यय का योग करने पर होता है-
(A) दात्वा (B) दयित्वा
(C) दत्त्वा (D) दायित्वा

व्याख्या-
दा + क्त्वा = **दत्त्वा**
कृ + क्त्वा = **कृत्त्वा**
पा + क्त्वा = **पीत्त्वा**
गम् + क्त्वा = **गत्त्वा**
स्था + क्त्वा = **स्थित्त्वा**
ज्ञा + क्त्वा = **ज्ञात्त्वा**
पत् + क्त्वा = **पतित्त्वा**
दृश् + क्त्वा = **दृष्ट्वा**

अतः विकल्प 'C' सही है।

19. 'सः पादेन खञ्जः अस्तिः' वाक्य में 'पादेन' पद में तृतीया विभक्ति का विधायक सूत्र है-
(A) रुच्यर्थानां प्रीयमाणः
(B) येनाङ्गविकारः
(C) अधिशीङ्स्थासां कर्म
(D) अकथितं च

व्याख्या-
- **येनाङ्गविकारः -** शरीर के जिस अंग के विकार से शरीरधारी का विकार ज्ञात होता है, उस अंगवाचक शब्द में तृतीया विभक्ति होती है-
  ***सः पादेन खञ्जः अस्ति-** वह पैर से लगड़ा है। यहाँ पर पैर के द्वारा पूरे शरीर का विकार (लँगड़ा होना) सूचित होता है अतः पाद में तृतीया विभक्ति होकर पादेन रूप बना।
  अन्य उदाहरण- हस्तेन खञ्जः, कर्णाभ्यां बधिरः, अक्ष्णा काणः आदि।
- **'रुच्यर्थानां प्रीयमाणः'** सूत्र से रुच् धातु का प्रयोग होने पर जिसे प्रिय लगे उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है- हरये रोचते भक्तिः, बालकाय पठनं रोचते, शिशवे दुग्धं रोचते।
- **'अधिशीङ्स्थासां कर्म'** सूत्र से अधि उपसर्ग से युक्त शीङ्, स्था, आस् धातु के आधार की कर्म सञ्ज्ञा होकर द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे- रामः आसनम् अधितिष्ठति, हरिः वैकुण्ठम् अधिशेते, बालकः प्रकोष्ठम् अधिशेते।
- **अकथितं च** सूत्र से दुह् आदि जो सोलह धातुएँ हैं उनका प्रयोग होने पर द्वितीया विभक्ति होती है, उदाहरण- गोपालः गां दोग्धि पयः, गुरुः छात्रं प्रश्नं पृच्छति, बलिं याचते वसुधाम् आदि।

स्पष्टीकरण- अतः स्पष्ट है कि विकल्प 'B' सही है।

20. संस्कृत के प्रत्येक लकार में पुरुष होते हैं-
(A) दो (B) तीन
(C) चार (D) पाँच

व्याख्या-
- संस्कृत में लकारों की संख्या दस है।
  लट् वर्तमाने लेट् वेदे भूते लुङ् लङ् लिटस्तथा।
  विध्याशिषोस्तु लिङ्लोटौ लुट् लृट् लृङ् च भविष्यति।।
- प्रत्येक लकार में तीन पुरुष होते हैं- प्रथमपुरुष, मध्यमपुरुष, उत्तमपुरुष।
- प्रत्येक पुरुष के तीन वचन होते हैं- एकवचन, द्विवचन, बहुवचन।

तिङस्त्रीणि त्रीणि प्रथममध्यमोत्तमाः। (पा. 1.4.101)

स्पष्टीकरण- स्पष्ट है कि संस्कृत में प्रत्येक लकार में तीन पुरुष होते हैं। अतः विकल्प (B) सही है।

21. निम्नलिखित में से कौन सा उपकरण श्रव्य-दृश्य दोनों है-
(A) टेपरिकार्डर (B) चार्ट
(C) टेलीविजन (D) ग्रामोफोन

व्याख्या- टेपरिकार्डर जिससे केवल ध्वनि को रिकार्ड करके सुना जा सकता है पर इसके द्वारा देखा नहीं जा सकता है। चार्ट केवल दृश्य सामग्री है जबकि ग्रामोफोन श्रव्य सामग्री। टेलीविज़न के द्वारा हम देखते और सुनते भी हैं, यहाँ दोनों कार्य एक साथ होते हैं अतः टेलीविज़न श्रव्य दृश्य सामग्री है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

22. संस्कृत में भविष्यत्काल के लिए प्रयोग किया जाता है-
(A) लट्लकार (B) लोट्लकार
(C) लृट्लकार (D) लङ्लकार

व्याख्या- संस्कृत में दस लकार हैं जिनका प्रयोग निम्नवत् होता है-

लकार		प्रयोग
1. लट्लकार	-	वर्तमान
2. लोट्लकार	-	आज्ञा अर्थ
3. लङ्लकार	-	भूतकाल (अनद्यतन)
4. विधिलिङ्लकार	-	आज्ञा या चाहिए अर्थ में
5. लृट्लकार	-	भविष्यत् काल
6. लुट्लकार	-	भविष्यत् (अनद्यतन)
7. आशीर्लिङ् लकार	-	आशीर्वाद
8. लृङ् लकार	-	हेतुहेतुमद् भविष्यत्
9. लिट् लकार	-	परोक्षभूत
10. लुङ् लकार	-	सामान्यभूत

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि भविष्यत् काल के लिए लृट्लकार का प्रयोग किया जाता है जबकि लट्लकार का प्रयोग वर्तमान काल, लोट्लकार का प्रयोग आज्ञा अर्थ में एवं लङ्लकार का प्रयोग भूतकाल (अनद्यतन) के लिए होता है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

23. 'तेन' में विभक्ति है-
(A) प्रथमा (B) द्वितीया
(C) तृतीया (D) चतुर्थी

व्याख्या- तद् शब्द पुँल्लिङ्ग के रूप

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सः	तौ	ते
द्वितीया	तम्	तौ	तान्
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पञ्चमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

'तेन' रूप तद् शब्द पुँल्लिङ्ग के तृतीया विभक्ति एकवचन में बनता है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

24. 'आगत्य' में प्रत्यय है-
(A) क्त्वा (B) क्त
(C) ल्यप् (D) शतृ

व्याख्या-

➢ **क्त्वा प्रत्यय-**
गम् + क्त्वा = गत्वा
हस् + क्त्वा = हसित्वा
पठ् + क्त्वा = पठित्वा

➢ **क्त प्रत्यय-** क्त प्रत्यय को मूल धातु से जोड़ने पर कृदन्त रूप भूतकाल का अर्थ देता है इस प्रत्यय में 'त' शेष बचता है-
गम् + क्त = गतः, कृ + क्त = कृतः, पठ् + क्त = पठितः

➢ **ल्यप् प्रत्यय-** पूर्वकालिक क्रिया बनाने के लिए धातुओं में क्त्वा प्रत्यय जोड़ते है परन्तु यदि धातुओं के पहले उपसर्ग या अव्यय हो तो क्त्वा के स्थान पर ल्यप् हो जाता है ल्यप् का य शेष बचता है।
आगत्य = में आङ् उपसर्ग पूर्वक गम् धातु का प्रयोग है यहाँ पर क्त्वा के स्थान पर ल्यप् आदेश हुआ है।
इसीप्रकार प्राप्य, प्रकृत्य, अनुभूय, आनीय आदि।
शतृप्रत्यय- शतृ में अत् शेष बचता है-
पठ् + शतृ = पठत्
गम् + शतृ = गच्छत् आदि
प्रत्यय लगने के बाद इनके रूप तीनों लिङ्गों में चलते हैं। जैसे- पठन्, पठन्ती, पठत्।
अतः विकल्प 'C' सही है।

25. 'बिभ्यति' शब्द में मूलधातु एवं लकार है-
(A) भी धातु लट्लकार
(B) भी धातु लृट्लकार
(C) बिभ् धातु लट्लकार
(D) बिभ्य धातु लट्लकार

व्याख्या- भी धातु (डरना), यह जुहोत्यादिगण की धातु है-

लट् लकार

बिभेति	बिभीतः	बिभ्यति
बिभेषि	बिभीथः	बिभीथ
बिभेमि	बिभीवः	बिभीमः

लोट्लकार

बिभेतु	बिभीताम्	बिभ्यतु
बिभीहि	बिभीतम्	बिभीत
बिभयानि	बिभयाव	बिभयाम

लङ्लकार

अबिभेत्	अबिभीताम्	अबिभयुः
अबिभेः	अबिभीतम्	अबिभीत
अबिभयम्	अबिभीव	अबिभीम

विधिलिङ्

बिभीयात्	बिभीयाताम्	बिभीयुः
बिभीयाः	बिभीयातम्	बिभीयात
बिभीयाम्	बिभीयाव	बिभीयाम

लृट्लकार

भेष्यति	भेष्यतः	भेष्यन्ति
भेष्यसि	भेष्यथः	भेष्यथ
भेष्यामि	भेष्यावः	भेष्यामः

स्पष्टीकरण- बिभ्यति शब्द 'भी' धातु के लट्लकार प्रथमपुरुष बहुवचन में बनता है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

26. भारतीय भाषाओं की जननी है-
(A) हिन्दी **(B) संस्कृत**
(C) द्रविड़ **(D) पंजाबी**

व्याख्या- प्राचीन भारतीय भाषाओं का स्वरूप ऋग्वेद से प्राप्त होता है। ऋग्वेद ही सबसे प्राचीन वेद है, अतः भारतीय भाषाओं की जननी संस्कृत है। संस्कृत शब्द सम् + कृ + क्त प्रत्यय के योग से बनता है।

- सारी भाषाओं की उत्पत्ति संस्कृत से हुई है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**
- द्रविड़ भाषा द्राविड़ परिवार की भाषा है जो यूरोप एशिया के अन्तर्गत आती है।
- हिन्दी भाषा की उत्पत्ति संस्कृत से हुई है।
- पंजाबी भाषा हिन्दी के अन्तर्गत आने वाली उपभाषा है।

27. सबसे प्राचीन वेद है-
(A) ऋग्वेद **(B) यजुर्वेद**
(C) सामवेद **(D) अथर्ववेद**

व्याख्या- सबसे प्राचीन वेद ऋग्वेद है। जिसका विभाजन दो रूपों में हुआ है- अष्टक तथा मण्डल में। ऋग्वेद में आठ अष्टक, 64 अध्याय तथा 10552 मन्त्र हैं। ऋग्वेद के मण्डल क्रम में 85 अनुवाक, 1028 सूक्त एवं 10552 मन्त्र हैं।

- **यजुर्वेद** को 'अध्वर्युवेद' भी कहा जाता है। यजुर्वेद की दो शाखाएँ हैं- कृष्ण यजुर्वेद और शुक्ल यजुर्वेद।
- **सामवेद-** सामवेद में गीतियुक्त मन्त्रों का वर्णन है इसलिए इसे गायन का वेद कहा जाता है। सामवेद के दो भाग है- पूर्वार्चिक तथा उत्तरार्चिक।
- **अथर्ववेद-** अथर्ववेद सबसे अर्वाचीन (नया) वेद है। अथर्ववेद की नौ शाखाएँ हैं।

स्पष्टीकरण- अतः विकल्प 'A' सही है।

28. शतृ प्रत्यययुक्त शब्द है-
(A) कथितः **(B) कर्तुम्**
(C) पठन् **(D) पठित्वा**

व्याख्या-

कथ् + क्त = **कथितः** कृ + तुमुन् = **कर्तुम्**
पठ् + शतृ = **पठन्** पठ् + क्त्वा = **पठित्वा**

अतः विकल्प 'C' सही है।

29. 'समुद्र' शब्द का पर्यायवाची शब्द होता है-
(A) निशिचरः **(B) दिनकरः**
(C) रत्नाकरः **(D) सुधाकरः**

व्याख्या- समुद्र के पर्यायवाची शब्द

शब्द		पर्यायवाची
समुद्रः	=	अब्धिः, अकूपारः, उदधिः, सिन्धुः, सागरः, अर्णवः, रत्नाकरः, जलनिधिः, पारावरः, सरस्वान्।
निशिचरः	=	रात्रिचरः, नक्तञ्चरः, निशाचरः, रजनीचरः
सूर्यः	=	आदित्यः, सविता, भास्करः, दिनमणिः, विवस्वान्, हरिः, मार्तण्डः, इनः, पतङ्गः, भगः, सूरः, रविः, दिनकरः, भानुः, प्रभाकरः, अंशुमाली।
सुधाकरः	=	शशिः, मृगाङ्कः, विधुः, निशाकरः,रजनीशः

अतः विकल्प 'C' सही है।

30. 'भूतबलिः' पद में कौन सा समास है?
(A) अव्ययीभाव समास
(B) तत्पुरुष समास
(C) बहुव्रीहि समास
(D) द्वन्द्व समास

व्याख्या-

समास	पद		विग्रह
अव्ययीभाव	प्रतिदिनम्	-	दिनं दिनं प्रति
	उपगङ्गम्	-	गङ्गायाः समीपम्
	उपतटम्	-	तटस्य समीपम्
	पञ्चगङ्गम्	-	पञ्चानां गङ्गानां समाहारः
तत्पुरुष	भूतबलिः	-	भूतेभ्यो बलिः
	सूर्योदयः	-	सूर्यस्य उदयः
	राजपुरुषः	-	राज्ञः पुरुषः
बहुव्रीहि	जितेन्द्रियः	-	जितानि इन्द्रियाणि येन सः
	घनश्यामः		घन इव श्यामः
	दिव्याम्बरः		दिव्यम् अम्बरं यस्य सः
द्वन्द्व	रामकृष्णः		रामश्च कृष्णश्च
	धवखदिरौ		धवश्च खदिरश्च
	पाणिपादम्		पाणिः च पादं च

अतः विकल्प 'B' सही है।

उत्तरमाला

1. C	2. C	3. A	4. D	5. C	6. C	7. B	8. A	9. B	10. C	11. A	12. C
13. B	14. C	15. D	16. B	17. A	18. C	19. B	20. B	21. C	22. C	23. C	24. C
25. A	26. B	27. A	28. C	29. C	30. B						

3. UP-TET संस्कृतम् | उच्च प्राथमिक स्तर (कक्षा- 6 से 8 तक) | फरवरी 2014

01. किस शिक्षणसूत्र के अन्तर्गत उदाहरण प्रस्तुत करने के पश्चात् नियम बताए जाते हैं?
(A) पूर्ण से अंश की ओर
(B) आगमन से निगमन की ओर
(C) अनुभव से तर्क की ओर
(D) अनिश्चित से निश्चित की ओर

व्याख्या- शिक्षण सूत्र के अन्तर्गत आगमन विधि, निगमन विधि, अन्वेषण विधि, प्रश्नावली विधि, पुनरावृत्ति विधि आदि विधियाँ आती हैं।

➢ **आगमन विधि-** यह विधि विशिष्ट से सामान्य की ओर होती है। इस विधि के अन्तर्गत छात्रों के समक्ष कुछ उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं फिर उन्हीं के माध्यम से विषयवस्तु एवं सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया जाता है। इस विधि का सर्वाधिक प्रयोग माध्यमिक स्तर पर होता है।

➢ **निगमन विधि-** यह सामान्य से विशिष्ट की ओर होती है। इसमें विद्यार्थी के सम्मुख कुछ सिद्धान्तों को प्रस्तुत किया जाता है; उसके उपरान्त उन सिद्धान्तों का निरूपण किया जाता है, यह उच्च शिक्षा में बहुत उपयोगी है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि उदाहरण प्रस्तुत करने के बाद नियम, 'आगमन से निगमन की ओर' में बताये जाते हैं। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

02. संस्कृत वर्णों का क्रम निम्नलिखित में से किस पद्धति पर आधारित है?
(A) वैज्ञानिक पद्धति पर
(B) मनोवैज्ञानिक पद्धति पर
(C) अवैज्ञानिक पद्धति पर
(D) इनमें से सभी

व्याख्या-

➢ संस्कृत वर्णों का क्रम वैज्ञानिक पद्धति पर आधारित है। व्याकरण शास्त्र में पाणिनि का नाम महत्त्वपूर्ण है। यास्क के पश्चात् भाषा को सरल करने वाले आचार्यों में पाणिनि विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं।

➢ अष्टाध्यायी पाणिनि की ऐसी कृति है जिसको यदि भाषाविज्ञान के वैज्ञानिक विवेचन के लिए मेरुदण्ड की संज्ञा दी जाय तो वह अत्युक्ति नहीं होगी। उन्होंने सूत्र-शैली में व्याकरण जैसे दुरूह तथा विस्तृत शास्त्र को सरल तथा संक्षिप्त बना दिया है।

➢ लौकिक तथा वैदिक संस्कृत का तुलनात्मक अध्ययन भी पाणिनि की अष्टाध्यायी की एक विशेषता है।

➢ शिव के डमरू से प्राप्त चौदह माहेश्वर सूत्रों से पाणिनि ने लगभग 4000 सूत्र बना लिये। वे माहेश्वर सूत्र निम्नवत् हैं- (1) अइउण् (2) ऋऌक् (3) एओङ् (4) ऐऔच् (5) हयवरट् (6) लण् (7) ञमङणनम् (8) झभञ् (9) घढधष् (10) जबगडदश् (11) खफछठथचटतव् (12) कपय् (13) शषसर् (14) हल्।

➢ पाणिनि ने सर्वप्रथम (अच्) स्वरों को बताया तत्पश्चात् अन्तःस्थ वर्णों को बताने के बाद वर्ग के पञ्चमाक्षर वर्णों को बताया फिर क्रमशः चतुर्थ वर्ण, तृतीय वर्ण, द्वितीय वर्ण, प्रथम वर्ण और ऊष्म वर्णों को बताया।

➢ पाणिनि ने इस पद्धति को एक वैज्ञानिक पद्धति की तरह प्रयोग किया। जिसके कारण हम संस्कृत वर्णों के क्रम को देखकर यह कह सकते हैं कि यह वैज्ञानिक पद्धति पर आधारित है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

03. शिक्षण कार्य में किया जाने वाला मूल्यांकन होता है?
(A) केवल आन्तरिक (B) केवल बाह्य
(C) आन्तरिक बाह्य दोनों (D) अप्रत्यक्ष

व्याख्या-

➢ शिक्षण कार्य में किया जाने वाला मूल्यांकन आन्तरिक और बाह्य दोनों होता है।

➢ भाषा में चिन्तन, बालक की विचारधारा, उसका व्यवहार, आचरण आदि की जाँच मूल्यांकन के अन्तर्गत आती है।

➢ मूल्यांकन को दो भागों में विभक्त किया गया है- (1) आन्तरिक मूल्यांकन (2) बाह्य मूल्यांकन

मूल्यांकन
आन्तरिक | **बाह्य**

(1) आन्तरिक मूल्यांकन - जब शिक्षक कक्षा में छात्रों से बीच-बीच में प्रश्न पूछकर मौखिक रूप से या लिखवाकर जाँच करता है वह आन्तरिक मूल्यांकन कहा जाता है। इससे बालक के ज्ञान, अभिव्यक्ति, क्षमता व सृजनशीलता का पता लगाया जाता है। इससे बालक के उच्चारण, वाक्य प्रयोग और शब्दबोध का पता लगाया जाता है।

(2) बाह्य मूल्याङ्कन- यह मूल्याङ्कन शिक्षक के पढ़ाने के बाद छात्रों से प्रश्न करके पता लगाया जाता है। शिक्षक छात्रों से वस्तुनिष्ठ प्रश्न, लघु उत्तरीय प्रश्न और निबन्धात्मक प्रश्न पूछते हैं। इस मूल्याङ्कन का उद्देश्य यह जानना है कि एक इकाई का शिक्षण करने के बाद उस इकाई में बालकों ने कितनी उपलब्धि की।

मूल्याङ्कन	
आन्तरिक मूल्याङ्कन	**बाह्य मूल्याङ्कन**
उच्चारण	वस्तुनिष्ठ प्रश्न
वाक्य प्रयोग	लघु उत्तरीय प्रश्न
बोधप्रश्न	निबन्धात्मक प्रश्न

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि शिक्षण कार्य में किया जाने वाला मूल्याङ्कन आन्तरिक एवं बाह्य दोनों प्रकार का होता है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

04. 'लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु' श्लोकांश स्थित है?
(A) मृच्छकटिके
(B) रघुवंशे
(C) मेघदूते
(D) अभिज्ञानशाकुन्तले

व्याख्या-

➤ महाकवि कालिदास द्वारा विरचित अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क से यह सूक्ति उद्धृत है- इस सूक्ति को कण्व के शिष्य के द्वारा कहा गया है-
'लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु'
यह संसार दो तेजों के साथ-साथ अस्त और उदय के द्वारा मानो अपने दशा-विशेषों में नियन्त्रित हो रहा है।

➤ मृच्छकटिकम् कवि शूद्रक की रचना है। यह 10 अङ्कों का प्रकरणग्रन्थ है।
शून्यमपुत्रस्य गृहं चिरशून्यं नास्ति यस्य सन्मित्रम्।
मूर्खस्य दिशः शून्याः सर्वं शून्यं दरिद्रस्य। (मृच्छ. 1/8)
पुत्रहीन व्यक्ति का घर सूना है अर्थात् बालक के बिना किसी भी व्यक्ति का घर सूना लगता है, जिस व्यक्ति के सच्चे मित्र नहीं है उसका घर भी सदा सूना रहता है। मूर्ख के लिए सभी दिशाएँ सूनी रहती हैं और निर्धन के लिए सब कुछ सूना है।

➤ महाकवि कालिदास द्वारा रचित रघुवंश महाकाव्य है। इसमें राजा दिलीप द्वारा नन्दिनी की सेवा का वर्णन है **'तदन्तरे सा विरराज धेनुर्दिनक्षपामध्यगतेव सन्ध्या'** (रघुवंशम् 2/20) वह नन्दिनी सुदक्षिणा और दिलीप के बीच में, दिन और रात्रि के मध्य में स्थित सन्ध्याकाल की भाँति सुशोभित हुई।

➤ मेघदूतम् महाकवि कालिदास जी द्वारा रचित है, इसमें यक्ष-यक्षिणी के विरह का वर्णन है।
'याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा'
(मेघदूतम् पूर्व-6)
अर्थात् अधिक गुण वाले से की गयी याचना निष्फल भी अच्छी है, परन्तु निर्गुण से की गयी याचना सफल कामना वाली भी अच्छी नहीं है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु' यह सूक्ति 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' से उद्धृत है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

05. 'चिह्न' के स्थान पर 'चिन्ह' का प्रयोग कौन सा दोष है?
(A) अशुद्ध वर्ण विपर्यय
(B) अशुद्ध आगम
(C) अशुद्ध वर्ण लोप
(D) अशुद्ध मात्रा-भेद

व्याख्या- अशुद्ध वर्ण विपर्यय अर्थात् वर्णों का अनुचित स्थान पर स्थान परिवर्तन। 'चिह्न' शब्द में हकार के पश्चात् नकार का प्रयोग होता है किन्तु 'चिन्ह' में हकार और नकार का परस्पर स्थान परिवर्तन होकर वर्ण विपर्यय हुआ है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

06. निम्नलिखित में से श्रव्य अधिगम सामग्री है?
(A) टेपरिकार्डर **(B) टेलीविजन**
(C) फ्लैशबोर्ड **(D) सिनेमा**

व्याख्या- शिक्षण कार्य में छात्रों की व्यक्तिगत भिन्नताओं जैसे- प्रतिभाशाली, औसत एवं मन्दबुद्धि के आधार पर विषयवस्तु समझाने के लिए समय-समय पर शिक्षक को विभिन्न शिक्षण सहायक सामग्रियों का प्रयोग करना पड़ता है, जो इसप्रकार से हैं-
1. दृश्य सहायक सामग्री
2. श्रव्य सहायक सामग्री
3. दृश्य श्रव्य सहायक सामग्री

(1) दृश्य सामग्री- इनमें वह सामग्री आती है जिसे देखकर ही शिक्षार्थी ज्ञान प्राप्त कर सकता है। इस प्रकार की सामग्री को निम्नाङ्कित चार्ट से दिखाया जा सकता है-
प्रक्षेपी दृश्य सामग्री- फिल्म स्ट्रिप्स, मूक चलचित्र, प्रोजेक्टर्स, मैजिक लैन्टर्न, एपीस्कोप, एपिडाइस्कोप, स्टीरियोस्कोप स्लाइड।
अप्रक्षेपी- श्यामपट्ट, मानचित्र, एटलस, चार्ट, ग्लोब, डायग्राम, चित्र, रेखाचित्र, नमूना मॉडल भित्ति, चित्र बुलेटिन

बोर्ड, फ्लेनल बोर्ड, ग्राफ्स, लपेट फलक आदि

(2) श्रव्य सामग्री- यह वह सामग्री है जिसे कानों से सुनकर ज्ञान प्राप्त करते हैं। टेपरिकार्डर, रेडियो, ग्रामोफोन, रिकार्ड-प्लेयर आदि।

(3) दृश्य-श्रव्यसामग्री- यह वह सामग्री होती है जिसके द्वारा सुनकर एवं देखकर ज्ञान प्राप्त किया जाता है-

(1) टेलीविजन (2) वीडियो (3) कम्प्यूटर (4) चलचित्र

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि श्रव्य अधिगम सामग्री के अन्तर्गत 'टेपरिकार्डर' आता है जबकि टेलीविजन, सिनेमा यह श्रव्य और दृश्य दोनों के अन्तर्गत आता है। फ्लैश बोर्ड केवल दृश्य के अन्तर्गत आता है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

07. 'न पादपोन्मूलनशक्तिरंहः शिलोच्चये मूर्च्छति मारुतस्य' श्लोकांश उद्धृत है?

(A) किरातार्जुनीयम् से

(B) रघुवंशम् से

(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से

(D) उत्तररामचरितम् से

व्याख्या-

➢ **रघुवंशम्-** महाकवि कालिदास जी द्वारा रचित रघुवंश महाकाव्य 19 सर्गों में विभाजित है। रघुवंश महाकाव्य के द्वितीय सर्ग में सिंह राजा दिलीप से कहता है-

अलं महीपाल! तव श्रमेण प्रयुक्तमप्यस्त्रमितो वृथा स्यात्।
न पादपोन्मूलनशक्तिरंहः शिलोच्चये मूर्च्छति मारुतस्य॥

(रघु. 2/34)

हे पृथ्वी के पालन करने वाले महाराज दिलीप! आपका श्रम करना व्यर्थ है, अतः रहने दीजिये, क्योंकि मेरे ऊपर चलाया गया अस्त्र भी वैसा ही व्यर्थ होगा, जैसा कि वृक्षों को उखाड़ने की शक्ति रखने वाले वायु का वेग पर्वत के विषय में व्यर्थ होता है।

➢ **किरातार्जुनीयम्-** 'न हि प्रियं प्रवक्तुमिच्छन्ति मृषा हितैषिणः।' (किरात 1/2) 'स्वामी का हित चाहने वाले असत्य प्रिय नहीं बोलना चाहते।'

➢ **अभिज्ञानशाकुन्तलम्-** सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तःकरणप्रवृत्तयः।। (अभि. 1/22)

सन्देहास्पद विषयों में सज्जनों के अन्तःकरण की प्रवृत्तियाँ ही प्रमाण होती हैं।

➢ **उत्तररामचरितम्- 'पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः'** (उत्तर. 3/1) गाम्भीर्य के कारण बाहर अप्रकाशित, भीतर ही भीतर छिपी हुई गाढ़ वेदनावाला राम का करुण रस (सीताजन्य वियोगशोक) पुटपाक के सदृश है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'न पादपोन्मूलन-शक्तिरंहः'....यह सूक्ति रघुवंशम् से उद्धृत है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

08. महाकवि कालिदास द्वारा रचित 'ऋतुसंहारम्' कहलाता है-

(A) महाकाव्य **(B) खण्डकाव्य**

(C) गीतिकाव्य **(D) नाटक**

व्याख्या-

कवि	ग्रन्थ	विभाजन	प्रकृति
कालिदास	ऋतुसंहारम्	6 सर्ग	गीतिकाव्य
कालिदास	रघुवंशम्	19 सर्ग	महाकाव्य
कालिदास	मेघदूतम्	2 खण्ड	खण्डकाव्य
कालिदास	अभिज्ञानशाकुन्तलम्	7 अङ्क	नाटक
कालिदास	विक्रमोर्वशीयम्	5 अङ्क	त्रोटक
कालिदास	मालविकाग्निमित्रम्	5 अङ्क	नाटक

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि कालिदास की रचना 'ऋतुसंहारम्' गीतिकाव्य के अन्तर्गत है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

09. 'काव्यादर्श' के रचनाकार हैं?

(A) भवभूति **(B) कालिदास**

(C) दण्डी **(D) भारवि**

व्याख्या-

कवि	ग्रन्थ	विभाजन
भवभूति	उत्तररामचरितम्	7 अङ्क
	मालतीमाधवम्	10 अङ्क
	महावीरचरितम्	7 अङ्क
कालिदास	अभिज्ञानशाकुन्तलम्	7 अङ्क
	मालविकाग्निमित्रम्	5 अङ्क
	विक्रमोर्वशीयम्	5 अङ्क
	मेघदूतम्	2 खण्ड
	कुमारसम्भवम्	17 सर्ग
	रघुवंशम्	19 सर्ग
	ऋतुसंहारम्	6 सर्ग
भारवि	किरातार्जुनीयम्	18 सर्ग
दण्डी	काव्यादर्श	3 परिच्छेद
	दशकुमारचरितम्	आठ उच्छ्वास
	अवन्तिसुन्दरीकथा	गद्यकाव्य

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'काव्यादर्श' के रचनाकार 'दण्डी' हैं। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

10. कालिदास विरचित नाटक नहीं है?
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(B) मालविकाग्निमित्रम्
(C) स्वप्नवासवदत्तम्
(D) विक्रमोर्वशीयम्

व्याख्या-

कवि	ग्रन्थ	नायक	नायिका
कालिदास	अभिज्ञानशाकुन्तलम्	दुष्यन्त	शकुन्तला
	मालविकाग्निमित्रम्	अग्निमित्र	मालविका
	विक्रमोर्वशीयम्	पुरुरवा	उर्वशी
	मेघदूतम्	यक्ष	यक्षिणी
	रघुवंशम्	राम	सीता
	कुमारसम्भवम्	शिव	पार्वती
भास	स्वप्नवासवदत्तम्	उदयन	वासवदत्ता

उपर्युक्त उल्लेखों से स्पष्ट है कि 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक भास द्वारा विरचित है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

11. महाकवि कालिदास की अनुपम कृति 'मेघदूतम्' है-
(A) नाटक **(B) महाकाव्य**
(C) आख्यायिका **(D) गीतिकाव्य**

व्याख्या-

कवि	ग्रन्थ	प्रकृति	उपजीव्यग्रन्थ
कालिदास	मेघदूतम्	गीतिकाव्य	बह्मवैवर्तपुराण
विशाखदत्त	मुद्राराक्षस	नाटक	इतिहास प्रसिद्ध (विष्णुपुराण)
बाणभट्ट	हर्षचरितम्	आख्यायिका	इतिहास प्रसिद्ध
माघ	शिशुपालवधम्	महाकाव्य	महाभारत (सभापर्व)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि कालिदास द्वारा रचित मेघदूतम् 'गीतिकाव्य' की श्रेणी में आता है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

12. कादम्बरी गद्यकाव्य का नायक है?
(A) पुण्डरीक **(B) तारापीड**
(C) चन्द्रापीड **(D) शुकनास**

व्याख्या-

ग्रन्थ	नायक	नायिका
कादम्बरी	चन्द्रापीड	कादम्बरी
मृच्छकटिकम्	चारुदत्त	वसन्तसेना/धूता
किरातार्जुनीयम्	अर्जुन	द्रौपदी
नैषधीयचरितम्	नल	दमयन्ती

➤ **पुण्डरीक-** चन्द्रापीड का मित्र और महाश्वेता का प्रेमी था।
➤ **तारापीड-** चन्द्रापीड के पिता, उज्जयिनी के राजा और विलासवती के पति थे।
➤ **शुकनास-** यह वैशम्पायन के पिता और राजा तारापीड के मन्त्री थे।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि कादम्बरी गद्यकाव्य का नायक चन्द्रापीड है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

13. 'कीदृशं वचः दुर्लभम्' भवति–
(A) सत्यम् **(B) प्रियम्**
(C) हितं मनोहारि च **(D) मनोहारि**

व्याख्या- उपर्युक्त पंक्ति भारवि द्वारा रचित किरातार्जुनीयम् महाकाव्य के प्रथमसर्ग से उद्धृत है जिसमें वनेचर दुर्योधन की राजव्यवस्था को जानकर वापस आकर युधिष्ठिर से कहता है-

क्रियासु युक्तैर्नृप चारचक्षुषो
न वञ्चनीयाः प्रभवोऽनुजीविभिः।
अतोऽर्हसि क्षन्तुमसाधु साधु वा
हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः॥ (किरात. 1/4)

कार्यों में नियुक्त किये गये अनुचरों के द्वारा गुप्तचररूपी नेत्रों वाले स्वामी लोग ठगे नहीं जाने चाहिये। प्रशंसा के द्वारा गुप्तचरों को अपने राजा को कभी भी ठगना नहीं चाहिए। इसलिए मेरा (वनेचर का) वचन अप्रिय हो अथवा प्रिय, आप क्षमा करने योग्य हैं क्योंकि परिणाम में कल्याण करने वाला तथा तुरन्त ही प्रिय मधुर लगने वाला वचन इस संसार में दुर्लभ होता है। **'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः'** अर्थात् हितकारी और मनोहारी वचन दुर्लभ होते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि 'हितकारी और मनोहारी वचन दुर्लभ होते हैं।' **अतः विकल्प 'C' सही है।**

14. 'शफरी' पद पर्यायवाची है?
(A) शत्रु का **(B) मीन का**
(C) समुद्र का **(D) शम्भु का**

व्याख्या-

शब्द	पर्यायवाची
शफरी	मीनः, मत्स्यः, झषः, अण्डजः, विसारः, शकुली, जलजीवनम्।

शत्रु	अरिः, रिपुः, वैरी, अमित्रः, सपत्नः, अरातिः, अभिघाती।
समुद्र	सागरः, अर्णवः, रत्नाकरः, सिन्धुः, उदधिः, अब्धिः, अकूपारः, जलनिधिः, पारावरः, सरित्पतिः आदि।
शम्भु	शिवः, पशुपतिः, महेश्वरः, शङ्करः, हरः, चन्द्रशेखरः।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि 'शफरी' पद का पर्यायवाची 'मीन' है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

15. 'सुकरम्' शब्द का विपरीतार्थक शब्द है?
(A) निष्कर्म (B) सुकर्म
(C) कुकर्म (D) दुष्करम्

व्याख्या-

शब्द		विपरीतार्थक शब्द
सुकरम्	-	दुष्करम्
सुकर्म	-	कुकर्म
सुकृत्यः	-	कुकृत्यः
सत्कारः	-	तिरस्कारः
सत्कर्म	-	दुष्कर्म
सुगम	-	दुर्गम

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि 'सुकरम्' का विपरीत अर्थ 'दुष्करम्' होगा। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

16. किस प्रत्याहार में सभी स्वर आते हैं-
(A) अल् (B) अच्
(C) अट् (D) अम्

व्याख्या-

➤ प्रत्याहार बनाने वाला सूत्र है- 'आदिरन्त्येन सहेता'।
➤ वर्णों या पदों के संक्षेपीकरण को 'प्रत्याहार' कहते हैं। 'प्रत्याह्रियन्ते संक्षिप्यन्ते वर्णाः यत्र स प्रत्याहारः।'
➤ प्रत्याहार 42 या 43 माने गये हैं।
☆ **अच् प्रत्याहार** अ, इ, उ, ऋ, ऌ, ए, ओ, ऐ, औ (सम्पूर्ण स्वर)
☆ **अल्** = अ इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ ह य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स ह। (सम्पूर्ण वर्ण)
☆ **अट्** = अ इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ ह य व र।
☆ **अम्** = अ इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ ह य व र ल ञ म ङ ण न।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि अच् प्रत्याहार के अन्तर्गत सारे स्वर आ जाते हैं। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

17. वर्गों के पञ्चम वर्णों का उच्चारण स्थान है?
(A) तालु (B) कण्ठ
(C) नासिका (D) मूर्धा

व्याख्या-

सूत्रम्	वर्णाः	उच्चारण स्थान
अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः	अ, कवर्ग (क् ख् ग् घ् ङ्), ह, विसर्ग (कण्ठ्य वर्ण)	कण्ठ
इचुयशानां तालु	इ, चवर्ग (च् छ् ज् झ् ञ्), य्, श् (तालव्य वर्ण)	तालु
ञमङणनानां नासिका च	ञ् म् ङ् ण् न् (अनुनासिक वर्ण)	नासिका
ऋटुरषाणां मूर्धा	टवर्ग (ट् ठ् ड् ढ् ण्), र्, ष् (मूर्धन्यवर्ण)	मूर्धा

➤ पाणिनीयशिक्षा के अनुसार उच्चारणस्थान आठ माने गये हैं-
''अष्टौ स्थानानि वर्णानाम् , उरः कण्ठः शिरस्तथा।
जिह्वामूलं च दन्तश्च नासिकोष्ठौ च तालु च।।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि वर्गों के पञ्चम वर्णों का उच्चारण स्थान नासिका है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

18. 'ब्रह्मर्षिः' शब्द में प्रयुक्त सन्धि है?
(A) दीर्घ (B) अयादि
(C) गुण (D) वा शरि

व्याख्या-

➤ **गुण सन्धि-** इस सन्धि का सूत्र 'आद्गुणः' है। 'आद्गुणः' सूत्र से ही गुणसन्धि का विधान होता है।
यदि अ या आ के बाद ह्रस्व या दीर्घ इ, उ, ऋ, ऌ आते हैं तो दोनों मिलकर क्रमशः ए, ओ, अर्, अल् गुण हो जाता है।
उदाहरण-
उप + इन्द्रः = उपेन्द्रः
सुर + ईशः = सुरेशः
राजा + इन्द्रः = राजेन्द्रः
हित + उपदेशः = हितोपदेशः
महा + उत्सवः = महोत्सवः
ब्रह्म + ऋषिः = ब्रह्मर्षिः
ग्रीष्म + ऋतुः = ग्रीष्मर्तुः

➤ **दीर्घसन्धि-** 'अकः सवर्णे दीर्घः' सूत्र से दीर्घ सन्धि होती है।
उदाहरण-
हिम + आलयः = हिमालयः

सती + इव = सतीव
विद्या + अर्थी = विद्यार्थी
अद्य + अपि = अद्यापि
गिरि + ईशः = गिरीशः
गुरु + उपदेशः = गुरूपदेशः
होतृ + ऋकारः = होतॄकारः

➤ **अयादि सन्धि-** 'एचोऽयवायावः' सूत्र से अयादि सन्धि होती है।

उदाहरण-
पौ + अकः = पावकः
पो + इत्रम् = पवित्रम्
भो + अनम् = भवनम्
नै + अकः = नायकः

➤ **वा शरि-** 'वा शरि' सूत्र से विकल्प से विसर्ग सन्धि का विधान होता है।

उदाहरण-
हरिः शेते या हरिश्शेते।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'ब्रह्मर्षिः' गुणसन्धि का उदाहरण है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

19. 'रामश्चिनोति' पद का सन्धि-विच्छेद होता है-
(A) रामश्चिन + उति (B) राम + श्चिनोति
(C) रामश् + चिनोति (D) रामस् + चिनोति

व्याख्या-

➤ **श्चुत्व सन्धि-** श्चुत्व सन्धि का सूत्र है- (स्तोः श्चुना श्चुः) सकार या तवर्ग (त् थ् द् ध् न्) के पहले या बाद में शकार या चवर्ग (च् छ् ज् झ् ञ्) का योग हो तब स् को श् तथा तवर्ग को चवर्ग में हो जाता है।

स्तोः	स् तवर्ग (त् थ् द् ध् न्) पूर्व में या बाद में
श्चुना	श् चवर्ग (च् छ् ज् झ् ञ्) योग होने पर
श्चुः	श् चवर्ग (च् छ् ज् झ् ञ्) आदेश हो जाय

उदाहरण-

रामस् + चिनोति		(स् को श् आदेश)
रामश् + चिनोति	=	रामश्चिनोति
सत् + चित्	=	सच्चित्
सद् + जनः	=	सज्जनः
शार्ङ्गिन् + जयः	=	शार्ङ्गिञ्जयः
बृहद् + झरः	=	बृहज्झरः

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि 'रामश्चिनोति' पद का सन्धि-विच्छेद-रामस् +चिनोति है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

20. 'भावुकः' शब्द का सन्धि-विच्छेद होगा-
(A) भौ + आवुकः (B) भो + वुकः
(C) भाव + उकः (D) भौ + उकः

व्याख्या-

➤ **एचोऽयवायावः-** यह अयादि सन्धि का सूत्र है। जब ए, ऐ, ओ और औ के बाद कोई भी स्वर वर्ण आये तो ए को अय्, ऐ को आय्, ओ को अव्, औ को आव् आदेश हो जाता है, तब अयादि सन्धि होती है।

उदाहरण- (ए के बाद स्वर = अय्)
चे + अनम् = चयनम्
ने + अनम् = नयनम्
(ऐ के बाद स्वर = आय्)
नै + अकः = नायकः
दै + अकः = दायकः
गै + इका = गायिका
(ओ के बाद स्वर = अव्)
पो + अन = पवन
भो + अनम् = भवनम्
साधो + ए = साधवे
(औ के बाद स्वर = आव्)
भौ + उकः = भावुकः
श्रौ + इका = श्राविका
द्वौ + एव = द्वावेव
एतौ + अपि = एतावपि

अतः विकल्प 'D' सही है।

21. 'हरिं वन्दे' पद में सन्धि होती है?
(A) 'मोऽनुस्वारः' सूत्र से
(B) 'झलां जश् झशि' सूत्र से
(C) 'एचोऽयवायावः' सूत्र से
(D) 'अतो रोरप्लुतादप्लुते' सूत्र से

व्याख्या-

➤ **मोऽनुस्वारः** - यह व्यञ्जन सन्धि का सूत्र और अनुस्वार विधायक सन्धि है। पदान्त में 'म्' के बाद कोई भी व्यञ्जन वर्ण आये तो 'म्' के स्थान पर अनुस्वार (ं) हो जाता है।

उदाहरण- हरिम् + वन्दे = हरिं वन्दे (यहाँ पर 'म्' के बाद व्यञ्जन वर्ण (व) आया है। इसलिये 'म्' को अनुस्वार (ं) हो गया है।

अन्य उदाहरण-
त्वम् + करोषि = त्वं करोषि
रामम् + भजामि = रामं भजामि

➤ **झलां जश् झशि-** इस सूत्र से अपदान्त जश्त्व सन्धि होती है। अपदान्त में झलों (वर्ग के प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ वर्ण) के बाद कोई झश् (वर्ग का तीसरा, चौथा वर्ण) प्रत्याहार का वर्ण होने पर जश् अपने वर्ग का तीसरा वर्ण (ज, ब, ग, ड, द) हो जाता है-
क्रुध् + धः = क्रुद्धः
युध् + धः = युद्धः

➤ **एचोऽयवायावः** - अयादि सन्धि का सूत्र है जो स्वर सन्धि के अन्तर्गत परिगणित है।
उदाहरण-
पौ + अकः = पावकः
गै + अकः = गायकः
शे + अनम् = शयनम्

➤ **अतो रोरप्लुतादप्लुते -** यह सूत्र उत्व सन्धि का विधान करता है और विसर्ग सन्धि के अन्तर्गत आता है।
यदि रु के र् से पूर्व ह्रस्व अ हो और बाद में भी ह्रस्व अ हो तो रु (र्) के स्थान पर 'उ' हो जाता है।
अ + उ = ओ बन जाने पर गुण सन्धि तथा पूर्वरूप सन्धि होकर (अ + उ + अ) तीनों का एक 'ओ' बन जाता है।
शिवस् + अर्च्यः
शिवर् + अर्च्यः
शिव उ + अर्च्यः
गुण हुआ = शिवो अर्च्यः = शिवोऽचर्यः
पूर्वरूप = शिवोऽर्च्यः,
अन्य उदाहरण- देवोऽपि, शिवोऽत्र, सोऽहम्
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त उल्लेखों से स्पष्ट है कि 'हरिं वन्दे' पद में 'मोऽनुस्वारः' सूत्र से सन्धि हुई है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

22. महाकवि भवभूति किस रस के प्रयोग में सिद्धहस्त हैं?
(A) शृङ्गाररस **(B) वीररस**
(C) करुणरस **(D) शान्तरस**

व्याख्या-

कवि		ग्रन्थ		प्रिय रस
कालिदास	-	अभिज्ञानशाकुन्तलम्	-	शृङ्गार रस
भवभूति	-	उत्तररामचरितम्	-	करुण रस
भारवि	-	किरातार्जुनीयम्	-	वीर रस, शृङ्गाररस
माघ	-	शिशुपालवधम्	-	वीर रस
बाणभट्ट	-	कादम्बरी	-	शृङ्गार रस
श्रीहर्ष	-	नैषधीयचरितम्	-	शृङ्गार रस
भास	-	स्वप्नवासवदत्तम्	-	शृङ्गार रस
महर्षि वेदव्यास	-	महाभारत	-	शान्त रस

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि 'महाकवि भवभूति' करुण रस के सिद्धहस्त कवि हैं। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

23. 'एकोनविंशतिः' शब्द का अर्थ है?
(A) इक्कीस **(B) उन्नीस**
(C) इक्यावन **(D) इक्यानबे**

व्याख्या-

हिन्दी संख्या		संस्कृत संख्या
19	-	एकोनविंशतिः, नवदश, ऊनविंशतिः
21	-	एकविंशतिः
51	-	एकपञ्चाशत्
66	-	षट्षष्टिः
91	-	एकनवतिः
96	-	षण्णवतिः
98	-	अष्टनवतिः
100	-	शतम्
महत्त्वपूर्ण तथ्य-		
1000	-	सहस्रम्
10,000	-	अयुतम्
1,00,000	-	लक्षम्
10,00,000	-	नियुतम्, प्रयुतम्

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि 'एकोनविंशति' पद का अर्थ उन्नीस है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

24. शुद्ध वाक्य का चयन कीजिए-
(A) विप्रं गां ददाति **(B) विप्रस्य गां ददाति**
(C) विप्राय गां ददाति **(D) विप्रे गां ददाति**

व्याख्या-

➤ **कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम् (1.4.32)-**
दान क्रिया के कर्म द्वारा जिसको कर्ता सन्तुष्ट करता है उसे सम्प्रदान कहते हैं।

➤ **विप्राय गां ददाति- (ब्राह्मण को गाय देता है।)**
इस वाक्य में दान क्रिया के कर्म 'गो' द्वारा 'विप्र' को सन्तुष्ट किया गया है। इसलिए 'कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्' सूत्र से विप्र की सम्प्रदान संज्ञा हुई है और 'चतुर्थी सम्प्रदाने' से चतुर्थी विभक्ति होकर 'विप्राय' बना है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

25. 'हितोपदेशः' में किससे सन्धि की गई है?
(A) वृद्धिरेचि (B) झलां जश् झशि
(C) आद्गुणः (D) अकः सवर्णे दीर्घः

व्याख्या-

- **गुण सन्धि-** 'आद्गुणः' सूत्र से गुण सन्धि। यदि अ या आ के बाद ह्रस्व या दीर्घ इ, उ, ऋ और ऌ आते हैं तो दोनों मिलकर क्रमशः ए, ओ, अर्, अल् गुण हो जाते हैं।

उदाहरण-
हित + उपदेशः = हितोपदेशः
गङ्गा + उदकम् = गङ्गोदकम्
गण + ईशः = गणेशः
जित + इन्द्रियः = जितेन्द्रियः
गङ्गा + ईशः = गङ्गेशः
जल + ऊर्मिः = जलोर्मिः
वसन्त + ऋतुः = वसन्तर्तुः
तव + ऌकारः = तवल्कारः

- **वृद्धि सन्धि-** (वृद्धिरेचि) वृद्धिसन्धि करने वाला सूत्र है- इसके उदाहरण निम्नलिखित हैं-

उदाहरण-
अत्र + एव = अत्रैव
कृष्ण + ऐक्यम् = कृष्णैक्यम्
तथा + एव = तथैव
महा + औषधि = महौषधि

- **झलां जश् झशि-** यह सूत्र व्यञ्जन सन्धि के अन्तर्गत आता है। अपदान्त जश्त्व सन्धि 'झलां जश् झशि' सूत्र से जश्त्व सन्धि होती है।

उदाहरण-
क्रुध् + धः = क्रुद्धः
शुध् + धः = शुद्धः
लभ् + धम् = लब्धम्
युध् + धः = युद्धः

- **अकः सवर्णे दीर्घः -** दीर्घ सन्धि करने वाला सूत्र है। यह स्वर सन्धि के अन्तर्गत परिगणित है।

उदाहरण-
तथा + अपि = तथापि
दिवा + आकरः = दिवाकरः
मुनि + इन्द्रः = मुनीन्द्रः
वधू + उत्सवः = वधूत्सवः
भानु + उदयः = भानूदयः
पितृ + ऋणम् = पितृणम्

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि 'हितोपदेशः' में 'आद्गुणः' सूत्र से गुण सन्धि हुई है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

26. 'उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीः' वाक्य के 'उद्योगिनं' पद में कौन सी विभक्ति है?
(A) तृतीया (B) द्वितीया
(C) चतुर्थी (D) षष्ठी

व्याख्या- नारायणपण्डित कृत हितोपदेश ग्रन्थ में यह सूक्ति उद्धृत है- **'उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीः'** अर्थात् उद्योगी जो पुरुषों में सिंह के समान पराक्रमी है ऐसे श्रेष्ठ मनुष्य को लक्ष्मी मिलती है।
इस सूक्ति में विशेष्य पद 'पुरुषसिंहम्' विशेषण 'उद्योगिनम्' है। जो विभक्ति और वचन विशेष्य पद का होता है, वही विभक्ति, वचन विशेषण पद का भी होता है। इसलिए विशेष्य पद 'पुरुषसिंहम्' में द्वितीया, एकवचन है और विशेषण पद होने के कारण 'उद्योगिनं' में भी द्वितीया एकवचन है।
अतः विकल्प 'B' सही है।

- **दम्पत्योः कलहो नास्ति तत्र श्रीः स्वयमागता॥**
जहाँ पति-पत्नी में कलह नहीं होता, उन दोनों में ऐकमत्य और सामञ्जस्य बना रहता है, वहाँ समृद्धि एवं सम्पत्ति स्वयं उपस्थित होती है।
- महाकवि भर्तृहरि द्वारा रचित नीतिशतकम् में यह सुभाषित उद्धृत है- **'सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ते'** अर्थात् सभी गुण स्वर्ण के आश्रित होते हैं।
जिस व्यक्ति के पास धन है वह व्यक्ति कुलीन है, वह पण्डित है, वह शास्त्रज्ञ है, वह गुणों को जानने वाला है, वही वक्ता है और वह दर्शन के योग्य है क्योंकि धन समृद्धि में सभी गुण आश्रित होते हैं।
- **दानं भोगो नाशस्तिस्रो गतयो भवन्ति वित्तस्य।**
यो न ददाति न भुङ्क्ते तस्य तृतीया गतिर्भवति॥
मानव जीवन में धन सम्पत्ति का स्वरूप तीन प्रकार का होता है। धन का उत्तम स्वरूप दान धर्म में, मध्यम स्वरूप उपभोग में तथा निष्कृष्ट स्वरूप अपहार एवं नाश में अभिव्यक्त होता है। जो सम्पन्न व्यक्ति धन का दान तथा उपभोग नहीं करता, उसका धन अन्त में परकीयों के द्वारा अपहृत होता है।

27. 'चौराद् बिभेति' वाक्य में 'चौराद्' पद में पञ्चमी विभक्ति का विधायक सूत्र है?
(A) अकथितं च
(B) भीत्रार्थानां भयहेतुः
(C) येनाङ्गविकारः
(D) ध्रुवमपायेऽपादानम्

व्याख्या-

- **'भीत्रार्थानां भयहेतुः' (1.4.25)** - इस सूत्र से भय अर्थवाली और त्राणार्थक धातुओं के योग में जिससे भय हो या जिससे रक्षा की जाय, उसकी अपादानसंज्ञा होती है।

उदाहरण-

चौराद् बिभेति - (चोर से डरता है)
चौराद् त्रायते - (चोर से रक्षा करता है)

- पहले उदाहरण में चौराद् (भय का हेतु) में पञ्चमी विभक्ति 'भी' (भय) धातु के कारण लगी है। अर्थात् 'भीत्रार्थानां भयहेतुः' सूत्र से चोर से भय होने के कारण उसकी अपादान संज्ञा और अपादाने पञ्चमी से 'चौराद्' में पञ्चमी विभक्ति हुई है।
- दूसरे उदाहरण में 'त्रा' धातु के योग में चोर की 'भीत्रार्थानां भयहेतुः' सूत्र से अपादानसंज्ञा और 'अपादाने पञ्चमी' से पञ्चमी विभक्ति हुई है।
- **अकथितं च- (1.4.51)-** 'अकथितं च' सूत्र से 16 धातुओं से युक्त या उनके समान अर्थ वाली धातुओं के योग होने पर द्वितीया विभक्ति का विधान होता है। इन सोलह धातुओं को द्विकर्मक धातुएँ भी कहते हैं।
दुह्, याच्, पच्, दण्ड्, रुध्, प्रच्छ्, चि, ब्रू, शास्, जि, मथ्, मुष्, नी, हृ, कृष्, वह् ।।

उदाहरण-

गां दोग्धि पयः (गाय से दूध दुहता है।)
बलिं याचते वसुधाम् (विष्णु बलि से पृथ्वी माँगते हैं।)
तण्डुलान् ओदनं पचति (चावलों से भात पकाता है।)

- **येनाङ्गविकारः (2.3.20)-** येनाङ्गविकारः सूत्र से तृतीया विभक्ति का विधान होता है।

उदाहरण-

कर्णेन बधिरः (कान से बहरा है)।
अक्ष्णा काणः (आँख से काना है)।
पादेन खञ्जः (पैर से लँगड़ा है)।

- **ध्रुवमपायेऽपादानम् - (1.4.24)-** 'ध्रुवमपायेऽपादानम्' से अपादान संज्ञा 'अपादाने पञ्चमी' से पञ्चमी विभक्ति होती है। अपाय का अर्थ है - विश्लेष या अलगाव (अलग होना)

उदाहरण-

1. वृक्षात् पत्राणि पतन्ति - (वृक्ष से पत्ते गिरते हैं।)
2. धावतो अश्वात् पतति - (दौड़ते हुये घोड़े से गिरता है)
3. ग्रामात् आयाति - (गाँव से आता है।)

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'चोराद् बिभेति' में 'भीत्रार्थानां भयहेतुः' से पञ्चमी विभक्ति हुई है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

28. 'अद्य अहं पाठं न पठिष्यामि' वाक्य में अव्यय पद है?

(A) अद्य	**(B) अहं**
(C) पाठं	**(D) पठिष्यामि**

व्याख्या-

अव्ययपद	-	हिन्दी
अद्य	-	आज
अत्र	-	यहाँ
अधः	-	नीचे
अन्तरा	-	बीच में
आशु	-	शीघ्र
इतस्ततः	-	इधर-उधर, जहाँ-तहाँ
उभयतः	-	दोनों ओर, दोनों तरफ
ऋते	-	बिना, सिवाय
किल	-	निश्चय, सचमुच

स्पष्टीकरण-

- **अहं-** यह अस्मद् शब्द का रूप है। प्रथमा एकवचन में 'अहं' पद बनता है।
- **पाठं-** इसमें 'पाठ' प्रातिपदिक से द्वितीया एकवचन में 'पाठं' रूप बना।
- **पठिष्यामि -** यह पठ् धातु के लृट्लकार उत्तम पुरुष एकवचन की क्रिया है।
उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट होता है कि 'अद्य' (आज) पद अव्यय पद है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

29. 'निर्मक्षिकम्' समस्त पद का समास-विग्रह होगा?

(A) निर्गता मक्षिका यस्मात् सः
(B) निर्गता मक्षिका यस्मिन् सः
(C) मक्षिकाणाम् अभावः
(D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या-

सामासिक पद		लौकिक विग्रह		समास का नाम
निर्मक्षिकम्	-	मक्षिकाणाम् अभावः	-	अव्ययीभाव
सुमद्रम्	-	मद्राणां समृद्धिः	-	अव्ययीभाव
इतिहरि	-	हरिशब्दस्य प्रकाशः	-	अव्ययीभाव
अनुरूपम्	-	रूपस्य योग्यम्	-	अव्ययीभाव
प्रत्यर्थम्	-	अर्थम् अर्थं प्रति	-	अव्ययीभाव
यूपदारु	-	यूपाय दारु	-	तत्पुरुष
गोहितम्	-	गोभ्यो हितम्	-	तत्पुरुष

काव्यनिपुणः	-	काव्ये निपुणः	-	तत्पुरुष
कण्ठेकालः	-	कण्ठे कालो यस्य सः	-	बहुव्रीहि
अपुत्रः	-	अविद्यमानः पुत्रो यस्य	-	बहुव्रीहि
मार्दङ्गिकवैणविकम्	-	मार्दङ्गिकाश्च वैणविकाश्च	-	द्वन्द्व
प्रावृट्शरदौ	-	प्रावृट् च शरच्च	-	द्वन्द्व
धर्मार्थौ	-	धर्मश्च अर्थश्च	-	द्वन्द्व

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि 'निर्मक्षिकम्' का समास विग्रह 'मक्षिकाणाम् अभावः' है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

30. 'रुच्यर्थानां प्रीयमाणः' सूत्र से 'रुच्' धातु के योग में जो विभक्ति प्रयुक्त होती है, वह है-
(A) तृतीया (B) पञ्चमी
(C) सप्तमी (D) चतुर्थी

व्याख्या-

➢ **रुच्यर्थानां प्रीयमाणः (1.4.33) -** रुच् धातु और इसके समान अर्थवाली धातुओं के योग में प्रीयमाण अर्थात् प्रसन्न होने वाले व्यक्ति की सम्प्रदान संज्ञा होती है।

उदाहरण- हरये रोचते भक्तिः (हरि को भक्ति अच्छी लगती है।)

स्पष्टीकरण- रुच् धातु के योग में जो प्रसन्न होने वाला व्यक्ति है उसमें 'रुच्यर्थानां प्रीयमाणः' सूत्र से सम्प्रदानसंज्ञा और 'चतुर्थी सम्प्रदाने' से चतुर्थी विभक्ति होकर 'हरये' बना।

➢ **तृतीया विभक्ति-** येनाङ्गविकारः (2.3.20) - इस सूत्र से तृतीया विभक्ति होती है।

उदाहरण-
पादेन खञ्जः (पैर से लगड़ा है।)
शिरसा खल्वाटः (सिर से गंजा है।)
कर्णेन बधिरः (कान से बहरा है।)
अक्ष्णा काणः (आँख से काना है।)

➢ **पञ्चमी विभक्ति-** 'भीत्रार्थानां भयहेतुः' (1.4.25) - सूत्र से अपादान संज्ञा और 'अपादाने पञ्चमी' से पञ्चमी विभक्ति होती है।

उदाहरण-
चोरात् त्रायते (चोर से रक्षा करता है।)
चोराद् बिभेति (चोर से डरता है।)

➢ **सप्तमी-** 'यस्य च भावेन भावलक्षणम्' (2.3.37) - सूत्र से सप्तमी विभक्ति होती है।

उदाहरण-
(i) सूर्ये अस्तं गते गोपाः गृहम् अगच्छन् (सूर्य के अस्त होने पर ग्वाले घर गये)
(ii) गोषु दुह्यमानासु गतः (गायों के दुहे जाने पर वह गया)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट होता है कि 'रुच्यर्थानां प्रीयमाणः' से सम्प्रदान संज्ञा और चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग होता है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

उत्तरमाला

1.B	2.A	3.C	4.D	5.A	6.A	7.B	8.C	9.C	10.C	11.D	12.C
13.C	14.B	15.D	16.B	17.C	18.C	19.D	20.D	21.A	22.C	23.B	24.C
25.C	26.B	27.B	28.A	29.C	30.D						

4. UP-TET संस्कृतम् | प्राथमिक स्तर (कक्षा- 1 से 5 तक) | फरवरी 2016

01. 'आकर्णयन्' शब्द में कौन सा प्रत्यय प्रयुक्त है?

(A) क्त (B) क्तवतु
(C) शतृ (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या-

- **क्त प्रत्यय-** क्त प्रत्यय को मूल धातु में जोड़ने पर कृदन्त रूप भूतकाल का अर्थ देता है इस प्रत्यय में त शेष रहता है उदाहरण- गतः, पृष्टः, लिखितः, कथितः, पठितः, हसितः आदि।
- **क्तवतु-** क्तवतु प्रत्यय का प्रयोग भूतकालिक क्रिया और भूतकालिक विशेषण के रूप में होता है उदाहरण- पठितवान्, कृतवान्, भुक्तवान्, गतवान् आदि। इनका रूप तीनों लिङ्गों में चलता है।
- **शतृ-** परस्मैपदी धातुओं से शतृ प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है शतृ में अत् शेष बचता है- उदाहरण- कथयन्, आकर्णयन्, पश्यन्, भवन्, हसन्, खादन् आदि। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

02. किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग में प्रयुक्त छन्द है-

(A) अनुष्टुप् (B) जगती
(C) वंशस्थ (D) उपजाति

व्याख्या-

- किरातार्जुनीयम् महाकवि भारवि की रचना है जिसमें 18 सर्ग हैं।
- किरातार्जुनीयम् महाकाव्य की गणना बृहत्त्रयी के अन्तर्गत की जाती है। बृहत्त्रयी के महाकाव्य हैं- किरातार्जुनीयम्, शिशुपालवधम्, नैषधीयचरितम्।
- किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में वंशस्थ छन्द का प्रयोग किया गया है- वंशस्थ छन्द का लक्षण है- जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ
- नैषधीयचरितम् और शिशुपालवध के प्रथमसर्ग में भी वंशस्थ छन्द का प्रयोग किया गया है।
- वाल्मीकि रामायण अनुष्टुप् छन्द में निबद्ध है।
- जगती छन्दों का प्रयोग प्रायः वेदों में हुआ है।
- नैषधीयचरितम् के द्वितीय सर्ग में उपजाति छन्द का प्रयोग है।

अतः विकल्प 'C' सही है।

03. अक् प्रत्याहार के अन्तर्गत कौन-कौन से वर्ण आते हैं-

(A) अ, इ, उ, ऋ, ऌ (B) अ, इ, उ
(C) ऋ, ऌ (D) सभी स्वर

व्याख्या- महर्षि पाणिनि ने भगवान् शङ्कर के डमरू से उत्पन्न चौदह माहेश्वर सूत्रों से प्रत्याहार का निर्माण किया था। प्रत्याहारों की संख्या 42 है। 'आदिरन्त्येन सहेता' सूत्र से आदि वर्ण जिस इत्सञ्ज्ञक अन्तिम वर्ण से मिलता है उसे प्रत्याहार कहते हैं-

1. अ इ उ ण् 2. ऋऌक् 3. ए ओ ङ् 4. ऐ औ च् 5. हयवरट् 6. लण् 7. ञमङणनम् 8. झभञ् 9. घढधष् 10. जबगडदश् 11. खफछठथचटतव् 12. कपय् 13. शषसर् 14. हल्

- अण् प्रत्याहार के अन्तर्गत आने वाले वर्ण हैं- अ इ उ।
- अक् प्रत्याहार के अन्तर्गत आने वाले वर्ण - अ इ उ ऋ ऌ।
- अच् प्रत्याहार के अन्तर्गत आने वाले वर्ण - अ इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ। इन्हें स्वर वर्ण भी कहा जाता है।

इसप्रकार स्पष्ट है कि अ इ उ ऋ ऌ ये पाँच वर्ण अक् प्रत्याहार के अन्तर्गत आते हैं। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

04. स्पर्श व्यञ्जनों के वर्ग हैं-

(A) दो (B) पाँच
(C) चार (D) तीन

व्याख्या-

- **स्पर्श व्यञ्जन-** 'कादयो मावसानाः स्पर्शाः' से स्पर्श व्यञ्जन वे हैं जिन वर्णों के उच्चारण में मुख के विभिन्न भागों का स्पर्श होता है इनके पाँच वर्ग हैं और पाँचों वर्गों में पाँच-पाँच वर्ण हैं। स्पर्श व्यञ्जनों की संख्या 25 है।

क वर्ग	-	क ख ग घ ङ
च वर्ग	-	च छ ज झ ञ
ट वर्ग	-	ट ठ ड ढ ण
त वर्ग	-	त थ द ध न
प वर्ग	-	प फ ब भ म

इसप्रकार स्पर्श व्यञ्जनों के पाँच वर्ग हैं अतः विकल्प 'B' सही है।

- वेदों की संख्या चार है- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद।
- स्वर के तीन भेद हैं- ह्रस्व दीर्घ प्लुत।

05. 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' किस प्रकार का वाक्य है?
(A) सङ्केतवाचक (B) विस्मयबोधक
(C) प्रश्नवाचक (D) इच्छावाचक

व्याख्या-
सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्॥
मन्त्र के द्वारा ऋषि की यह इच्छा है कि सभी लोग सुखी होवें, सभी लोग रोग से मुक्त होवें सभी लोग अच्छा देखें। अतः यह इच्छावाचक वाक्य है। अतः विकल्प (D) सही है।

- **विस्मयबोधक-** जो शब्द हृदय में अचानक उठने वाले भावों को प्रकट करे वह विस्मयबोधक कहलाते हैं। इनका सम्बन्ध वाक्य में किसी दूसरे शब्द के साथ नहीं रहता है। जैसे- बाप रे-बाप, तौबा-तौबा, त्राहि-त्राहि आदि।
- **प्रश्नवाचक-** जिन वाक्यों में क्या, क्यों, कहाँ, कैसे आदि प्रश्नवाचक शब्द प्रयोग किए जाएँ तो वे वाक्य प्रश्नवाचक वाक्य कहलाते हैं- वह कहाँ जाता है? क्या वह काम करता है? आदि।

06. निम्नलिखित वर्णों में से किस वर्ण का उच्चारण स्थान दन्तोष्ठ है-
(A) व् (B) म्
(C) प् (D) क्

व्याख्या-

वर्णों के उच्चारणस्थान

वर्ण	उच्चारण स्थान	सूत्र
अ, क्, ख्, ग्, घ्, ङ्, ह्, (:)	**कण्ठ**	अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः
इ, च्, छ्, ज्, झ्, ञ्, य्, श्	**तालु**	इचुयशानां तालु
ऋ ट् ठ् ड् ढ् ण् र् ष्	**मूर्धा**	ऋटुरषाणां मूर्धा
ऌ त् थ् द् ध् न् ल् स्	**दन्त**	ऌतुलसानां दन्ताः
उ प् फ् ब् भ् म्	**ओष्ठ**	उपूपध्मानीयानामोष्ठौ
ञ् म् ङ् ण् न्	**नासिका**	ञमङणनानां नासिका च
ए, ऐ	**कण्ठतालु**	एदैतोः कण्ठतालु
व्	**दन्तोष्ठ**	वकारस्य दन्तोष्ठम्
ओ, औ	**कण्ठोष्ठ**	ओदौतोः कण्ठोष्ठम्

स्पष्टीकरण- म् एवं प् का उच्चारणस्थान ओष्ठ तथा क् वर्ण का उच्चारणस्थान कण्ठ है जबकि व् वर्ण का उच्चारणस्थान दन्तोष्ठ है, अतः विकल्प 'A' सही है।

07. 'बहुज्ञ' का विपरीतार्थक शब्द है-
(A) अभिज्ञ (B) अल्पज्ञ
(C) सर्वज्ञ (D) बहुज्ञ

व्याख्या-

शब्द		विपरीतार्थक शब्द
बहुज्ञ	-	अल्पज्ञ
ब्रह्म	-	जीव
बोध्यम्	-	दुर्बोध्यम्
सद्गति	-	दुर्गति
दैत्य	-	देव
तिमिर	-	ज्योति
स्वदेश	-	परदेश
सर्वज्ञ	-	अल्पज्ञ
सुबुद्धि	-	दुर्बुद्धि

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि 'बहुज्ञ' का विपरीतार्थक शब्द 'अल्पज्ञ' है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

08. 'धीशः' पद में सन्धि है-
(A) दीर्घसन्धि (B) गुणसन्धि
(C) वृद्धिसन्धि (D) अयादिसन्धि

व्याख्या-
- **दीर्घसन्धि-** 'अकः सवर्णे दीर्घः' सूत्र से यदि ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ, ऋ के बाद ह्रस्व या दीर्घ अ इ उ ऋ आए तो उनके स्थान पर दीर्घ एकादेश हो जाता है-
अ/आ + अ/आ = आ
इ/ई + इ/ई = ई
उ/ऊ + उ/ऊ = ऊ
धीशः = धी + ईशः (ई + ई)
क्षितीशः = क्षिति + ईशः (इ + ई)
- **गुण सन्धि-** 'आद् गुणः' सूत्र से अ/आ के बाद ह्रस्व या दीर्घ इ उ ऋ ऌ आए तो क्रमशः ए, ओ, अर्, अल् गुण हो जाता है।
उदाहरण-
सुर + ईशः = सुरेशः
हित + उपदेशः = हितोपदेशः
नर + इन्द्रः = नरेन्द्रः
- **वृद्धि सन्धि-** 'वृद्धिरेचि' सूत्र से यदि अ/आ के बाद ए/ऐ आए तो ऐ, तथा ओ या औ के आने पर औ हो जाता है।
अ/आ + ए/ऐ = ऐ
अ/आ + ओ/औ = औ

उदाहरण- सदा + एव = सदैव, जल + ओघः = जलौघः आदि।

➤ **अयादि सन्धि-** 'एचोऽयवायावः' सूत्र से ए, ऐ, ओ, औ के बाद स्वर आए तो ए को अय्, ऐ को आय्, ओ को अव्, औ को आव् होता है।

शे + अनम् = शयनम्
भो + अनम् = भवनम्
नै + अकः = नायकः
पौ + अकः = पावकः।

अतः विकल्प 'A' सही है।

09. 'रमायाः' में विभक्ति वचन है-
(A) द्वितीया विभक्ति बहुवचन
(B) तृतीया विभक्ति एकवचन
(C) चतुर्थी विभक्ति एकवचन
(D) षष्ठी विभक्ति एकवचन

व्याख्या-

रमा शब्द- आकारान्त स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	रमा	रमे	रमाः
द्वितीया	रमाम्	रमे	रमाः
तृतीया	रमया	रमाभ्याम्	रमाभिः
चतुर्थी	रमायै	रमाभ्याम्	रमाभ्यः
पञ्चमी	रमायाः	रमाभ्याम्	रमाभ्यः
षष्ठी	रमायाः	रमयोः	रमाणाम्
सप्तमी	रमायाम्	रमयोः	रमासु
सम्बोधन	हे रमे!	हे रमे!	हे रमाः!

स्पष्टीकरण- रमा शब्द द्वितीया विभक्ति बहुवचन में रमाः, तृतीया विभक्ति एकवचन में रमया, चतुर्थी विभक्ति एकवचन में रमायै एवं षष्ठी विभक्ति एकवचन में रमायाः रूप बनता है

अतः विकल्प 'D' सही है।

10. संस्कृत व्याकरण में कति शब्द किस वचन में प्रयोग किया जाता है?
(A) एकवचन **(B) द्विवचन**
(C) बहुवचन **(D) उपर्युक्त सभी में**

व्याख्या- 'कति' शब्द (कितना) का रूप नित्य बहुवचन में ही चलता है-

प्रथमा	द्वितीया	तृतीया	चतुर्थी	पञ्चमी	षष्ठी	सप्तमी
कति	कति	कतिभिः	कतिभ्यः	कतिभ्यः	कतीनाम्	कतिषु

➤ इसीप्रकार तीन से अठारह तक की संख्या के रूप केवल बहुवचन में चलते हैं।

➤ द्विवचन में चलने वाला रूप - द्वि (दो)

➤ एकवचन में चलने वाला रूप - एकः, एकम्, एकेन, एकस्मै, एकस्मात्, एकस्य, एकस्मिन्

अतः विकल्प 'C' सही है।

11. उपसर्गों की संख्या है-
(A) बीस **(B) बाईस**
(C) पच्चीस **(D) अट्ठाईस**

व्याख्या-

➤ उपसर्गों की संख्या बाईस है जो हैं- प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव, निस्, निर्, दुस्, दुर्, वि, आङ्, नि, अधि, अपि, अति, सु, उद्, अभि, प्रति, परि, उप।

➤ सांख्यकारिका के अनुसार तत्त्वों की संख्या पच्चीस है- पञ्चतन्मात्रा, पञ्चमहाभूत, पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच कर्मेन्द्रियाँ, मन, बुद्धि, अहङ्कार, पुरुष, प्रकृति।

➤ माघ विरचित शिशुपालवध में बीस सर्ग हैं जिसे बृहत्त्रयी में स्थान प्राप्त है। बृहत्त्रयी- 1. किरातार्जुनीयम् 2. शिशुपालवधम् 3. नैषधीय चरितम्।

➤ अश्वघोष द्वारा रचित बुद्धचरितम् में अट्ठाईस (28) सर्ग हैं।

अतः विकल्प 'B' सही है।

12. संस्कृत के सुप्रसिद्ध नाटककार विशाखदत्त की प्रसिद्ध कृति का नाम है-
(A) हितोपदेश **(B) नीतिशतकम्**
(C) मृच्छकटिकम् **(D) मुद्राराक्षसम्**

व्याख्या- हितोपदेश नामक ग्रन्थ के लेखक नारायण पण्डित हैं जिसमें पाँच परिच्छेद हैं- (1) प्रस्ताविका (2) मित्रलाभ (3) सुहृद्भेद (4) विग्रह (5) सन्धि। हितोपदेश में सरल संस्कृत होने के कारण भारतवर्ष में इसका अधिक प्रचार है। प्रारम्भिक छात्रों के लिए इसका उपयोग किया जाता है।

➤ **नीतिशतकम्-** नीतिशतकम् के रचनाकार भर्तृहरि हैं इन्होंने नीतिशतक के अतिरिक्त वैराग्यशतकम् और शृङ्गारशतकम् की रचना की जिसे **'शतकत्रय'** की सञ्ज्ञा प्राप्त है। भर्तृहरि ने वाक्यपदीयम् नामक व्याकरण ग्रन्थ भी लिखा था।

➤ **मृच्छकटिकम्-** मृच्छकटिकम् रूपक का एक भेद प्रकरण ग्रन्थ है जिसमें दस अंक हैं। यह महाकवि शूद्रक द्वारा रचित है।

➤ **मुद्राराक्षस-** विशाखदत्त प्रणीत मुद्राराक्षस नामक नाटक है जिसमें सात अंक हैं। इस नाटक में चाणक्य के द्वारा मुद्रा को आधार बनाकर नन्दवंश के शासक को पदच्युत कर चन्द्रगुप्त

को राजसिंहासन पर अभिषिक्त करने का वर्णन किया गया है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

13. शिवराजविजय नामक पुस्तक के लेखक हैं-
(A) बाणभट्ट
(B) अम्बिकादत्त व्यास
(C) भास
(D) कालिदास

व्याख्या-

➢ **बाणभट्ट की रचनाएँ-** हर्षचरितम्, कादम्बरी, पार्वतीपरिणय, चण्डीशतक, मुकुटताडितकम्

➢ **अम्बिकादत्त व्यास की रचनाएँ-** गणेशशतकम्, शिवराजविजय, प्राकृतप्रवेशिका, अनुष्टुब्लक्षणोद्धारः, रत्नपुराणम्, गुप्ताशुद्धिप्रदर्शनम्, बालव्याकरणम्, सहस्रनामरामायणम् आदि।

➢ **भास की रचनाएँ -** उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर भास की रचनाओं को चार भागों में बाँटा जा सकता है-
1. उदयनकथामूलक- प्रतिज्ञायौगन्धरायण, स्वप्नवासवदत्ता
2. महाभारतमूलक- ऊरुभंग, दूतवाक्यम्, पञ्चरात्रम्, बालचरितम्, दूतघटोत्कच, कर्णभार, मध्यमव्यायोग।
3. रामायणमूलक- प्रतिमानाटक, अभिषेकनाटक
4. कल्पनामूलक - अविमारक, चारुदत्त

कालिदास द्वारा रचित सात ग्रन्थ हैं-

➢ **नाटक-** अभिज्ञानशाकुन्तलम्, विक्रमोर्वशीयम्, मालविकाग्निमित्रम् **महाकाव्य** - रघुवंशम्, कुमारसम्भवम् **खण्डकाव्य** (गीतिकाव्य) - ऋतुसंहारम्, मेघदूतम्
उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि शिवराजविजय नामक ग्रन्थ के लेखक अम्बिकादत्त व्यास हैं। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

14. 'अष्टाशीतिः' पद का अर्थ है-
(A) 78 **(B) 88**
(C) 87 **(D) 18**

व्याख्या-

70	-	सप्ततिः
71	-	एकसप्ततिः
72	-	द्विसप्ततिः, द्वासप्ततिः
73	-	त्रिसप्ततिः
74	-	चतुःसप्ततिः
75	-	पञ्चसप्ततिः
76	-	षट्सप्ततिः
77	-	सप्तसप्ततिः
78	-	अष्टसप्ततिः, अष्टासप्ततिः
79	-	नवसप्ततिः, एकोनाशीतिः
80	-	अशीतिः
81	-	एकाशीतिः
82	-	द्व्यशीतिः
83	-	त्र्यशीतिः
84	-	चतुरशीतिः
85	-	पञ्चाशीतिः
86	-	षडशीतिः
87	-	सप्ताशीतिः
88	-	**अष्टाशीतिः**
89	-	नवाशीतिः, एकोननवतिः
90	-	नवतिः
10	-	दश
11	-	एकादश
12	-	द्वादश
13	-	त्रयोदश
14	-	चतुर्दश
15	-	पञ्चदश
16	-	षोडश
17	-	सप्तदश
18	-	अष्टादश
19	-	नवदश, एकोनविंशतिः
20	-	विंशतिः

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 78 को अष्टसप्ततिः, 88 को अष्टाशीतिः, 87 को सप्ताशीतिः, 18 को अष्टादश कहते हैं। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

15. गङ्गोदकम् का सन्धि-विच्छेद है-
(A) गङ्गो + दकम् **(B) गङ्ग + उदकम्**
(C) गङ्गोद + कम् **(D) गङ्गा + उदकम्**

व्याख्या- आद्गुणः सूत्र से यदि अ/आ के बाद इ/ई, उ/ऊ और ऋ एवं ऌ आते हैं तो दोनों मिलकर क्रमशः ए, ओ, अर्, अल् हो जाता है।
गङ्गा + उदकम् में गकारोत्तरवर्ती आ है एवं उसके बाद उ आ रहा है तो दोनों मिलकर ओ होगा- गङ्गा + उदकम् = गङ्गोदकम्
इससे स्पष्ट है कि गङ्गोदकम् का सन्धि विच्छेद गङ्गा + उदकम् होगा। अतः विकल्प 'D' सही है।

➢ इसीप्रकार अन्य उदाहरण-

हित + उपदेशः = हितोपदेशः
पीन + ऊरुः = पीनोरुः
महा + उत्सवः = महोत्सवः
देव + ऋषिः = देवर्षिः
महा + ऋषिः = महर्षिः आदि।

16. 'पवित्रम्' में सन्धि-विच्छेद कीजिए-
(A) पो + इत्रम् **(B) पौ + इत्रम्**
(C) पव + इत्रम् **(D) पा + इत्रम्**

व्याख्या-

➢ 'एचोऽयवायावः' सूत्र से जब ए, ऐ, ओ, औ के बाद कोई स्वर वर्ण आता है तो ए को अय् , ऐ को आय्, ओ को अव् तथा औ को आव् हो जाता है।

➢ पो + इत्रम् इस पद में पकारोत्तरवर्त्ती ओकार है और उसके बाद इ यह स्वर वर्ण है तब प् में जो ओ है उसका अव् हो जाएगा-
प् + ओ + इत्रम् = प् + अव् + इत्रम् = पवित्रम्।

➢ इसी प्रकार अन्य उदाहरण-
गै + इका = गायिका
दै + अकः = दायकः
शै + अकः = शायकः आदि।
अतः विकल्प 'A' सही है।

17. निम्नाङ्कित में अरविन्दम् शब्द का पर्याय है-
(A) नीरम् **(B) गगनम्**
(C) वायुः **(D) कमलम्**

व्याख्या-

➢ **कमलम् के पर्यायवाची शब्द-** अरविन्दम्, नीरजम्, पंकजम्, पुण्डरीकम्, इन्दीवरम्, उत्पलम्, पद्मम्, कुशेशयम्, जलजम्, पुष्करम्ः, शतपत्रम् आदि।

➢ **गगनम् के पर्यायवाची शब्द-** नभः, पुष्करः, व्योम, अम्बरम्, खम्, द्यौः, विहायसम्, द्यु आदि।

➢ **वायु के पर्यायवाची शब्द -** पवन, समीर, अनिल, वात, मारुत, सदागति, गन्धवाह, श्वसन, जगत्प्राण आदि।

➢ **नीरम् के पर्यायवाची शब्द -** जलम्, आपः, तोयम्, वारि, क्षीरम्, अम्बु, अम्भः आदि।
स्पष्टीकरण- इस विवरण से स्पष्ट है कि नीरम् जल का पर्याय, गगनम् आकाश का, वायु हवा का, कमलम्, अरविन्दम् का पर्यायवाची शब्द है। **इसलिए विकल्प 'D' सही है।**

18. संस्कृतम् शब्द में निम्नाङ्कित में से कौन-सा उपसर्ग है-
(A) समु **(B) सम्**
(C) स **(D) सम**

व्याख्या-

➢ उपसर्गों की कुल संख्या बाईस है- प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव, निस्, निर्, दुस्, दुर्, वि, आङ्, नि, अधि, अपि, अति, सु, उद्, अभि, प्रति, परि, उप।

➢ समु, सम, स इनकी गणना उपसर्गों में नहीं है जबकि सम् की गणना उपसर्गों में है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

19. आदि में जुड़ने वाले तथा अर्थ परिवर्तन करने वाले शब्दांश को कहते हैं-
(A) परसर्ग **(B) प्रत्यय**
(C) विसर्ग **(D) उपसर्ग**

व्याख्या-

➢ जो अव्यय धातु या धातु से बने हुए विशेषण, सञ्ज्ञा आदि शब्दों के पूर्व जोड़े जाते हैं उन्हें उपसर्ग कहते हैं। इनके द्वारा धातु का अर्थ कुछ परिवर्तित हो जाता है।

➢ उपसर्ग से कभी धातु का अर्थ उलटा हो जाता है, कभी वही रहते हुए अधिक विशिष्ट हो जाता है। जैसे जय शब्द में यदि परा उपसर्ग लगा दिया जाय तो पराजय एवं वि उपसर्ग लगा दिया जाय तो ठीक उल्टा अर्थ विजय हो जाता है।

➢ **प्रत्यय-** धातु या शब्द के बाद जो शब्द जोड़े जाते हैं उन्हें प्रत्यय कहते हैं ये प्रत्यय तीन प्रकार के होते हैं- कृदन्त प्रत्यय, तद्धित प्रत्यय, स्त्रीप्रत्यय। गच्छन्, पठन्, चलन्, खादितः, पीतः, गौरी, अजा, बालिका, केशा आदि प्रत्यययुक्त शब्द हैं।

➢ **विसर्ग-** पद के अन्त रु को विसर्ग आदेश हो जाता है।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि आदि में जुड़ने वाले तथा अर्थपरिवर्तन करने वाले शब्दांश को उपसर्ग कहते हैं। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

20. निम्न में से शुद्ध वाक्य को चुनिए-
(A) सः पुस्तकं पठसि
(B) सा विद्यालयं गच्छतः
(C) तौ विद्यालयं गच्छतः
(D) के पुस्तकं पठथ

व्याख्या-

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
सः	तौ	ते
त्वम्	युवाम्	यूयम्
अहम्	आवाम्	वयम्

कर्ता के अनुसार ही क्रिया का प्रयोग किया जाता है।
'तौ विद्यालयं गच्छतः' यह वाक्य शुद्ध है क्योंकि 'दो बालक विद्यालय जाते हैं'- में क्रिया वर्तमान काल की है। 'तौ' यह रूप प्रथमपुरुष द्विवचन का है अतः गम् धातु का रूप प्रथमपुरुष द्विवचन में गच्छतः होगा। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

21. 'कृष्ण के दोनों ओर ग्वाले हैं' की संस्कृत है-
(A) कृष्णस्य उभयतः गोपाः सन्ति
(B) कृष्णम् उभयतः गोपाः सन्ति
(C) कृष्णाय उभयतः गोपाः सन्ति
(D) कृष्णः उभयतः गोपाः सन्ति

व्याख्या-

- **उभसर्वतसोः कार्याधिगुपर्यादिषु त्रिषु।**
द्वितीयाम्रेडितान्तेषु ततोऽन्यत्रापि दृश्यते॥
इस वार्तिक से उभयतः, सर्वतः के योग में द्वितीया विभक्ति करनी चाहिए एवं धिक्कार एवं द्वित्व किए गए शब्द के योग में भी द्वितीया विभक्ति होती है।
- उपर्युक्त वाक्य में उभयतः का प्रयोग किया गया है अतः इसके योग में कृष्णम् में द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होगा 'कृष्णम् उभयतः गोपाः सन्ति'- कृष्ण के दोनों ओर ग्वाले हैं। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

22. ग् व्यञ्जन है-
(A) अन्तःस्थ व्यञ्जन **(B) ऊष्म व्यञ्जन**
(C) स्पर्श व्यञ्जन **(D) संयुक्त व्यञ्जन**

व्याख्या-

- **अन्तःस्थ व्यञ्जन-** यण् प्रत्याहार के अन्तर्गत आने वाले वर्ण अन्तःस्थ वर्ण हैं। अन्तःस्थ व्यञ्जनों की संख्या चार है- य, व, र, ल।
- **ऊष्म व्यञ्जन-** जिन वर्णों के उच्चारण में वायु की रगड़ से ऊष्मा उत्पन्न होती है वे ऊष्म व्यञ्जन कहे जाते हैं। इनकी संख्या चार है- श, ष, स, ह।
- **स्पर्श व्यञ्जन-** जिन वर्णों के उच्चारण में मुख के विभिन्न भागों का स्पर्श होता है उन्हें स्पर्श व्यञ्जन कहते हैं इनकी संख्या 25 है-
क वर्ग - क ख ग घ ङ
च वर्ग - च छ ज झ ञ
ट वर्ग - ट ठ ड ढ ण
त वर्ग - त थ द ध न
प वर्ग - प फ ब भ म।
- **संयुक्त व्यञ्जन -** दो व्यञ्जनों के योग से बनने वाले वर्ण संयुक्त व्यञ्जन कहलाते हैं-
क् + ष = क्ष, त् + र = त्र, ज् + ञ + ज्ञ।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि ग् व्यञ्जन की गणना स्पर्श व्यञ्जनों के अन्तर्गत हुई है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

23. पुराणों की संख्या कितनी है-
(A) 18 **(B) 20**
(C) 15 **(D) 24**

व्याख्या- महर्षि वेदव्यास द्वारा रचित पुराणों की संख्या अठारह है- ब्रह्मपुराण, पद्मपुराण, विष्णुपुराण, वायुपुराण, भागवतपुराण, नारदपुराण, मार्कण्डेयपुराण, अग्निपुराण, भविष्यपुराण, ब्रह्मवैवर्तपुराण, लिङ्गपुराण, वराहपुराण, स्कन्दपुराण, वामनपुराण, कूर्मपुराण, मत्स्यपुराण, गरुडपुराण, ब्रह्माण्डपुराण। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

24. 'छात्र पढ़े हुए श्लोकों को कण्ठाग्र करेगा' यह व्यवहारगत परिवर्तन किस उद्देश्य का है?
(A) ज्ञान का **(B) अभिव्यक्ति का**
(C) अभिग्रहण का **(D) अभिरुचि का**

व्याख्या-

- **अभिरुचि का सिद्धान्त-** शिक्षण को सफल एवं प्रभावशाली बनाने के लिए यह आवश्यक है कि विषय वस्तु में छात्रों की रुचि उत्पन्न की जाय। जब छात्रों की रुचि उत्पन्न हो जाएगी तब वह तल्लीन होकर उसका सरलता से ज्ञान प्राप्त कर सकेगा। बालक की जिस कार्य में रुचि होती है, उसे वह ध्यान से करता है। इस सिद्धान्त के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए 'पिन्सेण्ट' ने लिखा है कि जब तक छात्रों में सक्रिय रुचि न होगी, तब तक शिक्षण का सर्वोत्तम कार्य नहीं होगा। इसप्रकार छात्र पढ़े हुए श्लोकों को कण्ठाग्र (याद) करें यह अभिरुचि सिद्धान्त के अन्तर्गत आता है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

25. छात्रों को उच्चारण-अभ्यास कराने हेतु सहायक सामग्री है-
(A) श्यामपट्ट **(B) फ्लैशकार्ड**
(C) रेडियो **(D) टेपरिकार्डर**

व्याख्या-

- **श्यामपट्ट-** स्वच्छता, शुद्धता तथा तीव्रता के मानक स्थापित करने में श्यामपट्ट का महत्त्व अधिक है। वर्तनी को समझने

में यह छात्रों की सहायता करता है। किसी पाठ के दौरान श्यामपट्ट पर बनाया गया कोई निदर्श चित्र समूची कक्षा का ध्यान पाठ की ओर आकृष्ट करता है। श्यामपट्ट पर लिखकर तथा रेखाचित्र बनाकर शिक्षक पाठ की तात्त्विक बातों पर बल दे सकता है। श्यामपट्ट एक ऐसा साधन है जो हमेशा कक्षा में उपलब्ध रहता है।

- **रेडियो-** रेडियो शिक्षा और मनोरंजन का महत्त्वपूर्ण उपकरण है। आधुनिक शिक्षा मनोविज्ञान में खेल द्वारा शिक्षा का महत्त्वपूर्ण स्थान है। रेडियो की सहायता से विश्व तथा उससे सम्बन्धित विभिन्न सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, राष्ट्रीय मामलों में छात्रों के दृष्टिकोण को व्यापक बना सकते हैं।
- **फ्लैश कार्ड-** इसे फ्लोनलो ग्राफ फ्लोनेल बोर्ड नाम से भी जाना जाता है। यह लकड़ी का बोर्ड होता है जिस पर फेल्ट चढ़ा रहता है। इस पर चित्रों को केवल थोड़ा सा दबाकर चिपकाया जा सकता है। फ्लोनल बोर्ड का उपयोग प्रदर्शित सामग्री के विकासशील पक्षों को समझाने के लिया किया जा सकता है।
- **टेप रिकार्डर-** उच्चारण अभ्यास के लिए टेप रिकार्डर की बहुत उपादेयता है, यह श्रव्य सामग्री के अन्तर्गत आता है। इसके द्वारा हम विशिष्ट भावों तथा विचारों को टेप रिकार्डर में भरकर हम उसका उपयोग विभिन्न अवसरों तथा मनचाहे अवसरों पर कर सकते हैं।

स्पष्टीकरण- अतः उच्चारणदृष्ट्या टेपरिकार्डर एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सहायक सामग्री है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

26. निम्नलिखित में बाणभट्ट की कृति नहीं है-
(A) कादम्बरी **(B) हर्षचरितम्**
(C) चण्डीशतकम् **(D) दशकुमारचरितम्**

व्याख्या- महाकवि बाणभट्ट महाराज श्रीहर्ष के राज्याश्रित कवि थे जिनका समय सातवीं शताब्दी है। बाणभट्ट की रचनाएँ हैं- हर्षचरितम्, कादम्बरी, पार्वतीपरिणय, चण्डीशतकम्, मुकुटताडितकम्

- आचार्य दण्डी की रचनाएँ हैं- दशकुमारचरितम्, काव्यादर्श, अवन्तिसुन्दरीकथा, छन्दोविचिति, कलापरिच्छेद, द्विसन्धानकाव्य।

स्पष्टीकरण- कादम्बरी, हर्षचरितम्, चण्डीशतकम् ये तीनों बाणभट्ट की रचनाएँ हैं जबकि दशकुमारचरितम् दण्डी की रचना है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

27. 'पहले उदाहरण प्रस्तुत किए जाएँ, बाद में नियम' यह शिक्षण सूत्र है-
(A) अनुभव से तर्क की ओर
(B) विशेष से सामान्य की ओर
(C) पूर्ण से अंश की ओर
(D) सरल से कठिन की ओर

व्याख्या-

- **अनुभव से तर्क की ओर-** इस सूत्र के अनुसार बालक की शिक्षा उसकी रुचियों, रुझानों आदि के अनुसार प्रारम्भ करनी चाहिए और जैसे-जैसे उसका ज्ञान बढ़ता जाए वैसे-वैसे तार्किक बनाइए। शिक्षक को पढ़ाने से पूर्व बालक में विषय की समझ विकसित करनी चाहिए।
- **विशेष से सामान्य की ओर-** इस सूत्र का अर्थ है विभिन्न विशिष्ट उदाहरणों या तथ्यों के आधार पर कोई सामान्य नियम निकलवाना। इस सूत्र का प्रयोग करते समय शिक्षक छात्रों के सामने कुछ विशिष्ट उदाहरण या तथ्य प्रस्तुत करता है और छात्र उनका परीक्षण करके उनसे सम्बन्धित नियम निकालते हैं।
- **पूर्ण से अंश की ओर-** अनुभवी मनोवैज्ञानिकों ने यह सिद्ध किया कि वस्तुओं के विषय में बालक के विचार खण्डों में नहीं होते हैं अतः इस सूत्र के अनुसार बालक को पूर्ण का ज्ञान कराया जाए और बाद में उसके अंशों को बताया जाए। इसी सिद्धान्त के आधार पर इकाई योजना का जन्म हुआ। सामाजिक अध्ययन के शिक्षक को इस सूत्र के अनुसार छात्रों को पहले सम्पूर्ण पाठ की रूपरेखा बतानी चाहिए और बाद में उसके विभिन्न अंगों का पृथक् - पृथक् रूप से विवेचन करना चाहिए।
- **सरल से कठिन की ओर-** इस सूत्र का अर्थ है कि बालक को पहले विषय की सरल बातें बताई जाएँ उसके बाद में जटिल बातों का ज्ञान कराया जाना चाहिए। जैसे- सामाजिक अध्ययन के शिक्षक को इस सूत्र के अनुसार अन्तर्राष्ट्रीयता के विषय में पढ़ाने से पूर्व स्थानीय, प्रादेशिक तथा राष्ट्रीय समाजों के विषय में पढ़ाना चाहिए।

स्पष्टीकरण- अतः पहले उदाहरण प्रस्तुत कर जो नियम बनाए जाते हैं यह नियम विशेष से सामान्य की ओर का नियम है। **इसलिए विकल्प 'B' सही है।**

28. संस्कृत शिक्षण में प्रयोग किए जाने वाला दृश्य उपकरण है-
(A) सिनेमा **(B) टेपरिकार्डर**
(C) फ्लैश कार्ड **(D) ग्रामोफोन**

व्याख्या-

➢ संस्कृत शिक्षण में तीन प्रकार के साधनों का उपयोग किया जाता है जो निम्नवत् है-

श्रव्य-दृश्य सामग्री

श्रव्य सामग्री	दृश्य सामग्री	श्रव्य दृश्य सामग्री
1. रेडियो	1. चित्रविस्तारक यन्त्र	1. चलचित्र
2. ग्रामोफोन	2. स्लाइड	2. समाचार सम्बन्धी फ़िल्म
3. टेप रिकार्डर	3. मूक फ़िल्म	3. दूरदर्शन
	4. छायाचित्र	4. वीडियो टेप
	5. पोस्टर	5. ड्रामा
	6. मैग्नेटिक बोर्ड	
	7. फ्लैश कार्ड	
	8. वुलेटिन बोर्ड	
	9. मानचित्र	
	10. चित्र	
	11. नमूना	
	12. रेखाचित्र	
	13. चार्ट	
	14. पोस्टर	

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त चार्ट से स्पष्ट है कि सिनेमा, टेपरिकार्डर, ग्रामोफोन श्रव्य सामग्री है जबकि फ्लैश कार्ड दृश्य उपकरण है, **अतः विकल्प 'C' सही है।**

29. संस्कृत का अध्यापक एक-एक शब्द का अर्थ स्पष्ट करता है-
(A) प्रत्यय विधि **(B) व्याख्या विधि**
(C) मूल्याकंन विधि **(D) समवाय विधि**

व्याख्या- संस्कृत का अध्यापक छात्रों को पढ़ाते समय श्लोक या गद्यखण्ड के एक-एक शब्द का अर्थ बताता है और उसकी व्याख्या छात्रों को समझाता है। अध्यापक उन शब्दों की व्युत्पत्ति और व्याकरण के बारे में भी जानकारी देता है अतः यह विधि व्याख्या विधि के अन्तर्गत आती है। **इसलिए विकल्प 'B' सही है।**

30. 'अधिशीङ्स्थासां कर्म' सूत्र सम्बन्धित है-
(A) प्रथमा विभक्ति से
(B) द्वितीया विभक्ति से
(C) तृतीया विभक्ति से
(D) चतुर्थी विभक्ति से

व्याख्या-

➢ **प्रथमा विभक्ति से सम्बन्धित दो सूत्र हैं-**

(1) प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा (2.3.46) अर्थात् प्रातिपदिकार्थ मात्र, लिङ्ग मात्र, परिमाण मात्र तथा वचन मात्र में प्रथमा विभक्ति होती है।

उदाहरण- कृष्णः, श्रीः, ज्ञानम्, तटः, तटी, तटम्, द्रोणोव्रीहिः आदि।

(2) सम्बोधने च (2.3.47)- अर्थात् सम्बोधन अर्थ में प्रातिपदिक से प्रथमा विभक्ति होती है।

उदाहरण- हे राम!, हे कृष्ण!, हे पुत्र! आदि।

➢ **अधिशीङ्स्थासां कर्म** (1.4.46)- अर्थात् यदि शीङ्, स्था और आस् धातु के पहले अधि उपसर्ग लगा हो तो क्रिया के आधार की कर्म सञ्ज्ञा होकर 'कर्मणि द्वितीया' से द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे- हरिः वैकुण्ठम् अधिशेते, बालकः भूमिम् अधितिष्ठति आदि।

➢ कर्तुरीप्सिततमं कर्म, तथायुक्तं चानीप्सितम्, अभिनिविशश्च आदि सूत्रों से भी कर्मसंज्ञा होकर द्वितीया विभक्ति का विधान होता है।

➢ **कर्तृकरणयोस्तृतीया** (2.3.18)- सूत्र से अनुक्त कर्ता तथा करण कारक में तृतीया विभक्ति होती है, जैसे- रामेण बाणेन हतो वाली।

➢ इसके अतिरिक्त अपवर्गे तृतीया, सहयुक्तेऽप्रधाने, येनाङ्गविकारः, इत्थम्भूतलक्षणे आदि सूत्रों से तृतीया विभक्ति होती है।

➢ **रुच्यर्थानां प्रीयमाणः, धारेरुत्तमर्णः, स्पृहेरीप्सितः, तादर्थ्ये चतुर्थी वाच्या** आदि सूत्रों से चतुर्थी विभक्ति का विधान होता है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि 'अधिशीङ्स्थासां कर्म' से द्वितीया विभक्ति का विधान होता है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

उत्तरमाला

1.C	2.C	3.A	4.B	5.D	6.A	7.B	8.A	9.D	10.C	11.B	12.D
13.B	14.B	15.D	16.A	17.D	18.B	19.D	20.C	21.B	22.C	23.A	24.D
25.D	26.D	27.B	28.C	29.B	30.B						

5. UP-TET संस्कृतम् | उच्च प्राथमिक स्तर (कक्षा- 6 से 8 तक) | फरवरी 2016

01. 'बालकैः हस्यते' वाक्य में वाच्य परिवर्तन होगा-
(A) बालकाः हसन्ति (B) बालकः हसति
(C) बालिका हसति (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या- संस्कृत में तीन वाच्य होते हैं-
(1) कर्तृवाच्य (2) कर्मवाच्य (3) भाववाच्य

- ➤ सकर्मक धातुओं के दो वाच्यों में रूप होते हैं- कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य
- ➤ अकर्मक (कर्म रहित) धातुओं के रूप कर्तृवाच्य और भाववाच्य में ही होते हैं, कर्मवाच्य में नहीं होते हैं।
- ➤ कर्तृवाच्य में कर्ता मुख्य होता है और क्रिया हमेशा कर्ता के अनुसार ही चलती है।
- ➤ जबकि कर्मवाच्य में कर्म मुख्य होता है, कर्म के अनुसार क्रिया का पुरुष, वचन और लिङ्ग होता है।
- ➤ कर्तृवाच्य में कर्ता में प्रथमा, कर्म में द्वितीया परन्तु कर्मवाच्य में कर्ता में तृतीया, कर्म में प्रथमा, क्रिया कर्म के अनुसार रहती है।
- ➤ भाववाच्य में कर्ता में तृतीया, कर्म होगा ही नहीं। क्रिया प्रथमपुरुष एकवचन की होगी।

उदाहरण- बालकैः हस्यते (भाववाच्य- कर्ता में तृतीया, कर्म नहीं है और क्रिया प्रथम पुरुष एकवचन की है।)
बालकाः हसन्ति (कर्तृवाच्य होने के कारण कर्ता में प्रथमा और क्रिया कर्ता के अनुसार)। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

02. शिक्षण प्रक्रिया किस सीमा तक सफल है, इसका पता लगाया जाता है-
(A) मूल्याङ्कन से
(B) समाज से
(C) प्रधानाचार्य से
(D) इनमें से किसी से नहीं

व्याख्या- शिक्षण प्रक्रिया किस सीमा तक सफल है इसका पता मूल्याङ्कन द्वारा लगाया जाता है।

1. मूल्याङ्कन एक प्रक्रिया है जो निरन्तर चलती रहती है।
2. मूल्याङ्कन में छात्रों के व्यवहार के विषय में सामग्री एकत्रित करने के समस्त साधन सम्मिलित रहते हैं।
3. मूल्याङ्कन शिक्षा प्रणाली का एक अभिन्न अंग है, जो शिक्षा के उद्देश्यों से घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित है।
4. मूल्याङ्कन केवल निर्देश की उपलब्धि को ही नहीं मानता है, वरन् उन्नत भी बनाता है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

03. अच्छे पठन के गुण बताए गए हैं-
(A) मनुस्मृति में
(B) याज्ञवल्क्य शिक्षा में
(C) अर्थशास्त्र में
(D) निरुक्त में

व्याख्या-

- ➤ याज्ञवल्क्य शिक्षा के पूर्वार्द्ध में अच्छे पठन के गुण बताए गये हैं-

कूर्मोऽङ्गानीव संहृत्य चेष्टां दृष्टिं दृढं मनः।
स्वस्थः प्रशान्तो निर्भीतो वर्णानुच्चारयेद्बुधः॥
(याज्ञवल्क्यशिक्षा, पूर्वार्द्ध, श्लोक-23)

अर्थात् वेदाध्ययन के प्रारम्भ के समय में वर्णों का उच्चारण किस प्रकार करना चाहिए, कैसी मनःस्थिति हो- इस विषय में आचार्य कहते हैं- जिस प्रकार कछुआ अपने अङ्गों को संकुचित कर लेता है, उसी प्रकार स्वस्थचित्त, भयरहित, शान्त-दान्त होकर वेदाभ्यासार्थी अपनी चेष्टा, दृष्टि और मन को दृढ़ता से एकाग्र बनाकर स्वस्थचित्त होकर वेद के अक्षरों को उच्चारित करे।

- ➤ अच्छे पठन के गुण पाणिनीय शिक्षा में भी बताये गये हैं-

गीती शीघ्री शिरःकम्पी तथा लिखितपाठकः।
अनर्थज्ञोऽल्पकण्ठश्च षडेते पाठकाधमाः॥

अधम पाठक हैं- जो गीत के समान गा गाकर मन्त्र पढ़ते हैं। जो शीघ्रता से हड़बड़ा कर पढ़ने वाले, जैसा पुस्तक में शुद्ध या अशुद्ध लिखा हो वैसा पढ़ने वाले अधम पाठक होते हैं।

माधुर्यमक्षरव्यक्तिः पदच्छेदस्तु सुस्वरः।
धैर्यं लयसमत्वं च षडेते पाठका गुणाः॥

1. पाठकर्ता में सर्वप्रथम गुण-स्वर में माधुर्य होना चाहिए, जिसे सुनकर साधारण लोग भी आकृष्ट हो जायें।
2. अक्षरव्यक्ति, पाठ करते समय पद का सुस्पष्ट उच्चारण हो।
3. पद के विभाजन का ज्ञान हो।
4. सुस्वर पदों के उच्चारण में कण्ठस्वर आकर्षक हो।
5. धैर्य चित्त वाला, उसे किसी भी प्रकार की घबड़ाहट न हो।
6. लयसमत्व अर्थात् सभी पाठक समवेत स्वर में उच्चारण करें,

न कि आगे-पीछे इस प्रकार 6 गुण पाठक में कहे गये हैं।

➢ **मनुस्मृति में धर्म का लक्षण बताया गया है-**
श्रुतिः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः।
एतच्चतुर्विधः प्राहुः साक्षाद् धर्मस्य लक्षणम्॥
(मनु. 1.7)

श्रुति-वेद, स्मृति-धर्मशास्त्र, सदाचार-भद्रपुरुषों का आचार व्यवहार जो अपने को प्रिय लगे तथा उचित संकल्प से उत्पन्न-इच्छा ये चार धर्म के लक्षण के मूल कहे गये हैं।

➢ **अर्थशास्त्र-** आचार्य कौटिल्य द्वारा प्रणीत अर्थशास्त्र है। इसमें पन्द्रह अधिकरण हैं।
कौटिल्य के अनुसार विद्याएँ चार मानी गई हैं-
''आन्वीक्षकी, त्रयी, वार्ता- दण्डनीतिश्चेति विद्याः।''
(1) आन्वीक्षकी (2) त्रयी (3) वार्ता (4) दण्डनीति।

➢ **निरुक्त-** आचार्य वार्ष्यायणि ने षड्भावविकार माने हैं-
जायते, अस्ति, विपरिणमते, वर्धते, अपक्षीयते, विनश्यति।
जायते (उत्पन्न होना), अस्ति (होना), परिवर्तन होना, बढ़ना, घटना, नष्ट होना। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

04. हितोपदेश का सम्बन्ध किस विधि से है-
(A) सूत्रविधि
(B) कहानी कथन विधि
(C) भाषणविधि
(D) उपर्युक्त सभी

व्याख्या-

➢ **सूत्रविधि-** आचार्य पाणिनि द्वारा विरचित ग्रन्थ अष्टाध्यायी जिसमें सूत्रों के द्वारा विषय का ज्ञान कराया गया है।

➢ **कहानी कथन विधि-** हितोपदेश के लेखक नारायण पण्डित हैं। इसमें कहानी कथन के द्वारा विषय को बताया गया है। जिससे पढ़ने में रुचि और समझने में सुगमता बनी रहे। इसीप्रकार के अन्य और भी ग्रन्थ हैं- विष्णुशर्मा द्वारा विरचित पञ्चतन्त्र, नीतिकथा, कथामंजरी आदि।

➢ **भाषणविधि-** भाषण विधि में नेता, व्यक्ति विशेष के द्वारा मुख से बोली जाने वाली बातों को जो पुस्तक आदि में प्रकाशित किया जाता है वह भाषण विधि के अन्तर्गत आता है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

05. संस्कृत शिक्षण में कठिन उच्चारण वाली ध्वनियों के लिए सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है-
(A) सक्रियता का सिद्धान्त
(B) क्रमबद्धता का सिद्धान्त
(C) अभ्यास का सिद्धान्त
(D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या-

➢ संस्कृत शिक्षण में कठिन उच्चारण वाली ध्वनियों के लिए **अभ्यास का सिद्धान्त** सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है-
भाषा एक कला है, केवल विज्ञान नहीं। प्रत्येक कला में अभ्यास की आवश्यकता होती है। संस्कृत में भी अभ्यास तथा पुनरावृत्ति की आवश्यकता होती है। संस्कृत भाषा की शिक्षा देने के लिए बोलने, पढ़ने तथा लिखने में अभ्यास कराया जाना आवश्यक है।

☆ छात्रों को कठिन ध्वनियों का शुद्ध उच्चारण सहित वाचन करने का अभ्यास कराना।
☆ पाठगत शब्दों एवं कठिन वाक्यों के उच्चारण का अभ्यास कराना।
☆ संस्कृत की उक्तियों एवं मुहावरों का ज्ञान कराना।
☆ संस्कृत व्याकरण सम्बन्धी अशुद्धियों को शुद्ध कराना।
☆ संस्कृत में अपने भावों को अभिव्यक्त कराना।
☆ संस्कृत के पद्यखण्डों एवं गद्यखण्डों को शुद्ध उच्चारण सहित पढ़ने का अभ्यास कराना।

अतः विकल्प 'C' सही है।

06. अर्थ समझते हुए वैदिक मन्त्रों के सस्वर पाठ को कहा जाता है-
(A) पारायणविधि **(B) सूत्रविधि**
(C) वाद-विवाद विधि **(D) उपर्युक्त सभी**

व्याख्या- अर्थ समझते हुए वैदिक मन्त्रों के सस्वर पाठ को पारायणविधि कहा जाता है।
पारायण विधि- वैदिक मन्त्रों का सस्वर पाठ। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

07. हरिस् + शेते में सन्धि किस सूत्रानुसार होगी?
(A) स्तोः श्चुना श्चुः **(B) ष्टुना ष्टुः**
(C) झलां जश् झशि **(D) झलां जशोऽन्ते**

व्याख्या-

➢ **'स्तोः श्चुना श्चुः'**
सकार या तवर्ग (त् थ् द् ध् न्) के पूर्व या बाद में शकार या चवर्ग (च् छ् ज् झ् ञ्) का योग होने पर 'स्' को 'श्' और तवर्ग को चवर्ग हो जाता है।

स्तोः	स् तवर्ग	के पूर्व में होने पर
श्चुना	श् चवर्ग	के साथ योग होने पर
श्चुः	श् चवर्ग	हो जाय

उदाहरण-

हरिस् + शेते
हरिश् + शेते = हरिश्शेते (स् के बाद श् के योग होने पर स् आदेश)

अन्य उदाहरण-

1. सत् + चित् = सच्चित्
2. रामस् + शेते = रामश्शेते .
3. कस् + चित् = कश्चित्
4. सद् + जनः = सज्जनः
5. शार्ङ्गिन् + जयः = शार्ङ्गिञ्जयः

➢ **ष्टुना ष्टुः -** सकार या तवर्ग के पहले या बाद में षकार या टवर्ग का योग होने पर स् को ष् और तवर्ग को टवर्ग हो जाता है।

उदाहरण-

तत् + टीका = तट्टीका
रामस् + षष्ठः = रामष्षष्ठः
चक्रिन् + ढौकसे = चक्रिण्ढौकसे

➢ **झलां जश् झशि-** यदि अपदान्त में झल् प्रत्याहार (झ् भ् घ् ढ् ध् ज् ब् ग् ड् द् ख् फ् छ् ठ् थ् च् ट् त् क् प् श् ष् स् ह्) अर्थात्- वर्ग के पहले, दूसरे, तीसरे, चौथे वर्ण के बाद यदि कोई झश् प्रत्याहार का वर्ण हो तो अपने वर्ग का तृतीय वर्ण अर्थात् जश् हो जाता है।

उदाहरण-

क्रुध् + धः = क्रुद्धः
शुध् + धः = शुद्धः
लभ् + धः = लब्धः
युध् + धः = युद्धः

➢ **झलां जशोऽन्ते-** यदि पदान्त में झल् प्रत्याहार के बाद कोई भी स्वर तथा वर्ग के तीसरे, चौथे, पाँचवे वर्ण या य् व् र् ल् में से कोई वर्ण आये तो पहले वाले वर्ण के स्थान में उसी वर्ग का तीसरा वर्ण जश् हो जाता है।

(पूर्व में) झल् प्रत्याहार = झ् भ् घ् ढ् ध् ज् ब् ग् ड् द् ख् फ् छ् ठ् थ् च् ट् त् क् प् श् ष् स् ह् = 24 वर्ण
(बाद में) झश् प्रत्याहार = झ् भ् घ् ढ् ध् ज् ब् ग् ड् द् = 12 वर्ण
(ऐसा होने पर जश् ज् ब् ग् ड् द् आदेश होता है।

उदाहरण-

अच् + अन्तः = अजन्तः
वाक् + ईशः = वागीशः
षट् + आननः = षडाननः
दिक् + अम्बरः = दिगम्बरः
एतत् + मुरारिः = एतद्मुरारिः

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि हरिश्शेते में 'स्तोः श्चुना श्चुः' प्रवृत्त होता है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

08. पूर्वपदार्थ प्रधान होता है-
(A) तत्पुरुष समास में
(B) बहुव्रीहि समास में
(C) द्वन्द्व समास में
(D) अव्ययीभाव समास में

व्याख्या-

➢ **अव्ययीभावसमास-** 'प्रायेण पूर्वपदार्थप्रधानोऽव्ययीभावः' अर्थात् जहाँ प्रायः पूर्वपद की प्रधानता रहती है, वहाँ अव्ययीभाव समास होता है।

उदाहरण-

अधिहरि, अधिगोपम्, उपकृष्णम्, यथाशक्ति, प्रत्येकम्

➢ **तत्पुरुष समास -** 'प्रायेणोत्तर-पदार्थ-प्रधानस्तत्पुरुषः' जिसमें प्रायः उत्तरपद का अर्थ प्रधान होता है, वह तत्पुरुष समास होता है।

उदाहरण-

राजपुरुषः	राज्ञः पुरुषः
कूपपतितः	कूपं पतितः
कृष्णश्रितः	कृष्णं श्रितः

➢ **बहुव्रीहि समास-** प्रायेणान्य-पदार्थ-प्रधानो बहुव्रीहिः जिस समास में प्रायः अन्य पद का अर्थ प्रधान हो वह बहुव्रीहि समास कहलाता है।

उदाहरण-

जितेन्द्रियः - जितानि इन्द्रियाणि येन सः
चक्रपाणिः - चक्रं पाणौ यस्य सः विष्णुः
दशाननः - दश आननानि यस्य सः रावणः

➢ **द्वन्द्व समास-** 'चार्थे द्वन्द्वः'
जिसमें प्रायः पूर्वपद तथा उत्तरपद प्रधान होते हैं वह द्वन्द्व समास कहलाता है। यह समस्त पद प्रधान समास है। इसमें 'च' से दो या दो से अधिक संज्ञाओं को जोड़ा जाता है।

सीतारामौ	सीता च रामश्च	सीता और राम
मयूरौ	मयूरी च मयूरः च	मयूरी और मयूर
अहोरात्रम्	अहः च रात्रि च	रात और दिन

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि पूर्वपद की प्रधानता अव्ययीभाव समास में होती है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

09. जिस समास में पहला पद संख्यावाची हो वह समास है-

(A) द्विगु (B) द्वन्द्व
(C) कर्मधारय (D) तत्पुरुष

व्याख्या-

- **द्विगु-** 'संख्यापूर्वो द्विगुः'- अर्थात् जिस समानाधिकरण तत्पुरुष में पूर्व पद या प्रथम पद संख्यावाची होता है, द्विगु समास कहलाता है।

उदाहरण-

पञ्चगवम् - पञ्चानां गवां समाहारः
पञ्चवटी - पञ्चानां वटानां समाहारः
पञ्चपात्रम् - पञ्चानां पात्राणां समाहारः

- **द्वन्द्व-** प्रायेणोभय-पदार्थ-प्रधानो द्वन्द्वः
जिस समास में प्रायः दोनों पदों का अर्थ प्रधान हो, वह द्वन्द्व समास कहा जाता है।

उदाहरण-

हरिहरौ- हरिश्च हरश्च
पितरौ- माता च पिता च
रामलक्ष्मणौ- रामश्च लक्ष्मणश्च

- **कर्मधारय-** 'तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः' तत्पुरुष समास का ही एक भेद कर्मधारय है और कर्मधारय का ही एक भेद द्विगु है।

विशेषणं विशेष्येण बहुलम् (2.1.56)

उदाहरण- नीलं च तत् उत्पलम् = नीलोत्पलम्
घन इव श्यामः = घनश्यामः
शाकप्रियः पार्थिवः = शाकपार्थिवः
विशेषण और विशेष्य दोनों एक ही पदार्थ को कहते हैं इसलिये इन्हें समानाधिकरण कहा जाता है।

- **तत्पुरुष-** 'प्रायेणोत्तर-पदार्थ-प्रधानस्तत्पुरुषः' -
प्रायः उत्तरपद की प्रधानता जिस समास में होती है वह तत्पुरुष समास होता है।

कृष्णं श्रितः = कृष्णश्रितः
आशाम् अतीतः = आशातीतः
सुखं प्राप्तः = सुखप्राप्तः
कष्टम् आपन्नः = कष्टापन्नः
शङ्कुलया खण्डः = शङ्कुलाखण्डः
धान्येन अर्थः = धान्यार्थः

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि संख्यावाची पद जहाँ पूर्व में हो वह द्विगु समास माना जाता है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

10. 'पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः' किस कवि से सम्बद्ध है?

(A) कालिदास (B) भास
(C) भवभूति (D) अश्वघोष

व्याख्या-

- **भवभूति-** भवभूति की तीन रचनाएँ हैं- मालतीमाधवम्, महावीरचरितम्, उत्तररामचरितम्। भवभूति द्वारा रचित सात अङ्कों से युक्त नाटक उत्तररामचरितम् है। जिसमें राम के दुःख को दर्शाया गया है- मुरला, तमसा नदी से कहती है-

अनिर्भिन्नो गम्भीरत्वादन्तर्गूढघनव्यथः।
पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः॥

(उत्तर. 3/1)

'राम का करुणरस पुटपाक के सदृश है।'

- **कालिदास-** कालिदास अभिज्ञानशाकुन्तलम् के लेखक हैं। अभिज्ञानशाकुन्तलम् सात अङ्कों का नाटक है।

'भवितव्यानां द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र'

(अभिज्ञानशा. 1/16)

भावी (होनहार) घटनाओं के लिए सर्वत्र ही द्वार हो जाते हैं।

- **भास-** भास प्रारम्भिक रूपककार माने जाते हैं। भास की कुल 13 रचनायें प्राप्त होती हैं जो निम्नलिखित हैं-
प्रतिज्ञायौगन्धरायण, स्वप्नवासवदत्ता, प्रतिमानाटक, अभिषेकनाटक, ऊरुभंग, दूतवाक्य, पञ्चरात्र, दूतघटोत्कच, कर्णभार, मध्यमव्यायोग, बालचरित, अविमारक और चारुदत्त।
'स्वप्नवासवदत्तम्' में सूक्ति कही गयी है-

'चक्रारपंक्तिरिव गच्छति भाग्यपंक्तिः'

भाग्यचक्र पहिये के अरों की तरह समयानुसार ऊपर नीचे घूमता हुआ रहता है।

- **अश्वघोष-** बौद्ध महाकवि अश्वघोष महान् धर्मप्रचारक, दार्शनिक तथा उच्चकोटि के विद्वान् भी थे। अश्वघोष की रचनायें निम्न हैं-
बुद्धचरितम् - 28 सर्गों का महाकाव्य है।
सौन्दरनन्द - 18 सर्गों का संस्कृत महाकाव्य है।
शारिपुत्रप्रकरण - 9 अङ्कों का नाटक है।
अश्वघोष के दोनों महाकाव्य बुद्धचरितम् और सौन्दरनन्द शान्तरस प्रधान काव्य हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः' यह सूक्ति उत्तररामचरितम् की है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

11. 'क्व सूर्यप्रभवो वंशः क्व चाल्पविषया मतिः' पंक्ति किस ग्रन्थ से उद्धृत है?
(A) रघुवंशम्
(B) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(C) उत्तररामचरितम्
(D) मेघदूतम्

व्याख्या-

➢ महाकवि कालिदास द्वारा रचित रघुवंशम् महाकाव्य 19 सर्गों से युक्त है। यह महाकाव्य लघुत्रयी के अन्तर्गत सम्मिलित है। महाकवि कालिदास ने रघुवंशम् महाकाव्य के प्रथमसर्ग में इस सूक्ति को उद्धृत किया है-
क्व सूर्यप्रभवो वंशः क्व चाल्पविषया मतिः।
तितीर्षुर्दुस्तरं मोहादुडुपेनास्मि सागरम्।। (रघु. 1/2)
कहाँ सूर्य से उत्पन्न हुआ वंश (रघुकुल) और कहाँ थोड़े विषयों का ग्रहण करने वाली मेरी बुद्धि अतः उसके वर्णन करने में मैं अज्ञान से 'नौका' द्वारा दुस्तर, सागर पार करने की इच्छा करने वाले की भाँति हूँ।

➢ **अभिज्ञानशाकुन्तलम्-** अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटकों में सर्वश्रेष्ठ नाटक है। यह भी महाकवि कालिदास जी द्वारा विरचित ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ की नायिका शकुन्तला की प्रशंसा में नायक दुष्यन्त यह कहता है-
किमिव ही मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम् (अभि.1/20)
क्योंकि सुन्दर आकृतियों के लिए क्या वस्तु अलङ्कार नहीं होती है।

➢ **भवभूति-** महाकवि भवभूति द्वारा रचित नाटक ग्रन्थ उत्तररामचरितम् है। यह सात अङ्कों से युक्त है। इसमें राम और सीता के वियोगजन्य दुःख को दर्शाया गया है। इस ग्रन्थ का तृतीय अङ्क छाया अङ्क के नाम से प्रसिद्ध है।
उत्तररामचरितम् के तृतीय अङ्क में तमसा राम के दुख को देखकर कहती हैं-
एको रसः करुण एव निमित्तभेदाद्
भिन्नः पृथक् पृथगिवाश्रयते विवर्तान्
आवर्तबुद्बुद्तरङ्गमयान्विकारान्
अम्भो यथा सलिलमेव तु तत्समग्रम्।। (उत्तर. 3/48)
अहो राम तथा सीता के जीवन की घटनाओं का विचित्र क्रम अथवा अहो! रचनावैचित्र्य से एक ही करुण रस विभावादि निमित्तों के भेदों से भिन्न होता हुआ मानों शृङ्गारादि रूप में प्रतीत होने वाले अलग-अलग वास्तविक परिणामों का आश्रय होता है, जैसे एक ही जल के भँवर, बुद्बुद् तथा तरङ्गरूप विकारों में परिवर्तन होता है परन्तु वह सब वास्तव में जल ही है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'क्व सूर्यप्रभवो' यह सूक्ति रघुवंशम् महाकाव्य की है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

12. 'कौन्तेय' पद में कौन सा प्रत्यय विद्यमान है?
(A) इञ् **(B) अञ्**
(C) ढक् **(D) ण्यत्**

व्याख्या-

☆ कौन्तेयः- कुन्त्याः अपत्यं पुमान् (कुन्ती की सन्तान) 'स्त्रीभ्यो ढक्' से ढक् प्रत्यय।
कुन्ती + ढक् — कौन्तेयः (कुन्ती की सन्तान)
☆ औडुलोमिः (उडलोम्नः अपत्यम्) - उडुलोमन् + इञ्
सूत्र = बाह्वादिभ्यश्च (उडुलोमन् नामक व्यक्ति की सन्तति)
☆ दाक्षिः = दक्ष + इञ् (दक्ष की सन्तान)
सूत्र = अत इञ्
☆ दौहित्रः - दुहितृ + अञ् = लड़की की सन्तान
सूत्र- अनृष्यानन्तर्ये बिदादिभ्योऽञ् अर्थात् धेवता
☆ कार्यम् - कृ + ण्यत्
सूत्र = ऋहलोर्ण्यत्
☆ धार्यम् = धृ + ण्यत्
☆ हार्यम् = हृ + ण्यत्

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'कौन्तेय' पद से ढक् प्रत्यय का विधान किया गया है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

13. कर्तृ शब्द में कौन सा प्रत्यय है?
(A) तव्य **(B) तृच्**
(C) तव्यत् **(D) अनीयर्**

व्याख्या-

धातु	तृच्	तव्यत्	अनीयर्
कृ	कर्तृ	कर्तव्यः	करणीयः
भू	भवितृ	भवितव्यः	भवनीयः
दा	दातृ	दातव्यः	दानीयः
ज्ञा	ज्ञातृ	ज्ञातव्यः	ज्ञानीयः
गम्	गन्तृ	गन्तव्यः	गमनीयः
हृ	हर्तृ	हर्तव्यः	हरणीयः

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि 'कर्तृ' पद में 'तृच्' प्रत्यय है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

14. 'उपगङ्गम्' में कौन सा समास है?
(A) तत्पुरुष (B) अव्ययीभाव
(C) कर्मधारय (D) द्विगु

व्याख्या-

समास के उदाहरण

अव्ययीभाव	तत्पुरुष	कर्मधारय	द्विगु
उपगङ्गम्	सुखप्राप्तः	कर्पूरगौरः	पञ्चगवम्
प्रत्यर्थम्	हरित्रातः	कृष्णसर्पः	पञ्चकपालः
ससखि	नखभिन्नः	नीलोत्पलम्	पञ्चपात्रम्
पञ्चगङ्गम्	यूपदारु	घनश्यामः	पञ्चवटी
उपशरदम्	भूतबलिः	अखिलभूषणानि	त्रिभुवनम्
प्रतिविपाशम्	चोरभयम्	कृष्ण-चतुर्दशी	त्रिलोकी
अध्यात्मम्	राजपुरुषः	निर्मलगुणाः	नवरात्रम्
प्रतिदिनम्	सत्सङ्गतिः	महाकविः	त्रिफला
यथाशक्ति	अक्षशौण्डः	चन्द्रमुखम्	चतुर्युगम्
इतिहरि	काव्यनिपुणः	पीतकृष्णः	सप्ताहः
सुमद्रम्	अर्धपिप्पली		

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि 'उपगङ्गम्' अव्ययीभावसमास का उदाहरण है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

15. 'किरातार्जुनीयम्' में अर्जुन भगवान् शङ्कर से किस अस्त्र की प्राप्ति करता है?
(A) पाशुपत (B) चक्र
(C) गदा (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या-

➤ किरातार्जुनीयम् महाकाव्य में अर्जुन को 18वें सर्ग में शिव जी के द्वारा पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति होती है।
'ज्वलदनलपरीतं रौद्रमस्त्रं दधानं धनुरुपपदमस्मै वेदमभ्यादिदेश'
(किरात 18/44)

➤ उत्तररामचरितम् में राम के पुत्र होने के कारण लव को जृम्भक अस्त्र और वारुण अस्त्र प्राप्त होता है।

➤ उत्तररामचरितम् में ही लक्ष्मण के पुत्र चन्द्रकेतु के पास आग्नेय अस्त्र रहता है।

➤ हनुमान् जी के पास हमेशा गदा रहता था। इनका अस्त्र गदा ही था।

➤ विष्णु जी अपने हाथों में सुदर्शन नाम का चक्र लिये रहते थे। इसीलिये इन्हे 'चक्रपाणिः' भी कहा जाता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति अर्जुन को होती है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

16. 'उत्तररामचरितम्' कृति है?
(A) दण्डी (B) भवभूति
(C) भास (D) श्रीहर्ष

व्याख्या-

➤ **भवभूति-** 'उत्तररामचरितम्' महाकवि भवभूति द्वारा प्रणीत ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ में सात अङ्क हैं। यह करुण रस प्रधान ग्रन्थ है। मालतीमाधवम्, महावीरचरितम् भी महाकवि भवभूति के द्वारा रचित ग्रन्थ हैं।

➤ **दण्डी-** काव्यादर्श, दशकुमारचरितम् आदि ग्रन्थों के लेखक हैं।

➤ **भास -** भास द्वारा रचित 13 नाटक हैं-
(1) प्रतिज्ञायौगन्धरायण (2) स्वप्नवासवदत्ता (3) प्रतिमानाटकम् (4) अभिषेकनाटकम् (5) ऊरुभंगम् (6) दूतवाक्यम् (7) पञ्चरात्रम् (8) दूतघटोत्कच (9) कर्णभार (10) मध्यमव्यायोग (11) बालचरित (12) अविमारक (13) चारुदत्त।

➤ **श्रीहर्ष-** श्रीहर्ष की रचना नैषधीयचरितम् 22 सर्गों में निबद्ध है। इसके नायक नल और नायिका दमयन्ती हैं। यह ग्रन्थ बृहत्त्रयी के अन्तर्गत परिगणित है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'उत्तररामचरितम्' महाकवि भवभूति की रचना है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

17. अन्तःस्थ वर्ण हैं?
(A) श् ष् स् ह् (B) य् र् ल् व्
(C) क्ष् त्र् ज्ञ् (D) क् ख् ग् घ्

व्याख्या-

➤ **यणोऽन्तःस्थाः -** यण् को अन्तःस्थ भी कहते हैं। यण् प्रत्याहार के अन्तर्गत - य् व् र् ल् 4 वर्ण आते हैं।

➤ **शल ऊष्माणः -** शल् को ऊष्मवर्ण कहते हैं।
शल् प्रत्याहार के अन्तर्गत - श् ष् स् ह् 4 वर्ण आते हैं।

➤ संयुक्त व्यञ्जन हैं - क्ष, त्र, ज्ञ
क् + ष = क्ष
त् + र = त्र
ज् + ञ = ज्ञ

➤ स्पर्श व्यञ्जन हैं- क से म तक के 25 वर्ण **'कादयो मावसानाः स्पर्शाः'**

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त उल्लेख से स्पष्ट है कि अन्तःस्थ वर्ण चार हैं- य् व् र् ल्। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

18. ऊष्म व्यञ्जन हैं-
(A) य् व् र् ल् **(B) च् छ् ज् झ् ञ्**
(C) प् फ् ब् भ् **(D) श् ष् स् ह्**

व्याख्या-
- **शल ऊष्माणः -** शल् प्रत्याहार के अन्तर्गत श् ष् स् ह् ये 4 वर्ण आते हैं। इन्हें ही ऊष्म वर्ण भी कहते हैं।
- **यणोऽन्तःस्थाः -** यण् प्रत्याहार के अन्तर्गत य् व् र् ल् ये 4 वर्ण आते हैं। इन्हें ही अन्तःस्थ वर्ण भी कहते हैं।
- **इचुयशानां तालु -** इ, च वर्ग (च् छ् ज् झ् ञ्) य् श् ये वर्ण तालु से बोले जाते हैं अर्थात् इनका उच्चारण स्थान तालु है।
- **उपूपध्मानीयानाम् ओष्ठौ-** उ प् फ् ब् भ् म् और उपध्मानीय वर्ण, ओष्ठ से उच्चरित होते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि ऊष्म व्यञ्जन 'श् ष् स् ह्' ये 4 वर्ण हैं। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

19. 'दैत्यारि' में कौन सी सन्धि है?
(A) स्वरसन्धि **(B) व्यञ्जन सन्धि**
(C) विसर्ग सन्धि **(D) पूर्वरूप सन्धि**

व्याख्या- सन्धि तीन प्रकार की होती है- (1) स्वरसन्धि (2) व्यञ्जनसन्धि (3) विसर्ग सन्धि
- **स्वरसन्धि के अन्तर्गत-** दीर्घ, गुण, वृद्धि, यण्, अयादि, पूर्वरूप, पररूप इत्यादि सन्धियाँ आती हैं।
- **दीर्घसन्धि-** सूत्र- **'अकः सवर्णे दीर्घः'** (6.1.101) अक् (अ, इ, उ, ऋ, ऌ) के बाद यदि कोई सवर्ण स्वर हो तो पूर्व और पर दोनों के स्थान पर दीर्घ आदेश हो जाय।
  अकः- अ, इ, उ, ऋ, ऌ (पूर्व में)
  सवर्णे- अ/आ, इ/ई, उ/ऊ, ऋ/ॠ, ऌ (बाद में)
  दीर्घः- दीर्घ आदेश हो।
  उदाहरण- दैत्यारिः - दैत्य + अरिः = दैत्यारिः
  विद्यार्थी = विद्या + अर्थी (आ+अ = आ)
  श्रीशः = श्री + ईशः (ई + ई = ई)
  गिरीशः = गिरि + ईशः (इ + ई = ई)
- **व्यञ्जनसन्धि-** व्यञ्जन सन्धि को हल् सन्धि भी कहते हैं। यदि पूर्व में व्यञ्जन और बाद में स्वर या व्यञ्जन आये तो वह व्यञ्जनसन्धि होती है।
  उदाहरण-
  सत् + चित् = सच्चित्
  जगत् + ईशः = जगदीशः
  तत् + टीका = तट्टीका
- **विसर्ग सन्धि-** विसर्ग के साथ स्वर या व्यञ्जन के मिलने पर विसर्ग में जो विकार होता है उसे विसर्ग सन्धि कहते हैं।
  उदाहरण-
  मनः + रथः = मनोरथः
- विसर्ग सदा किसी न किसी स्वर के बाद ही आता है। दुःख तथा रामः में क्रमशः उ और अ के बाद है।
- **पूर्वरूप सन्धि-** सूत्र- एङः पदान्तादति (6.1.109) पद के अन्त में एङ् (ए, ओ) के बाद ह्रस्व 'अ' हो तो 'एङ्' तथा 'अ' दोनों के स्थान पर पूर्वरूप आदेश हो जाता है।
  उदाहरण-
  हरे + अव = हरेऽव
- ए + अ दोनों के स्थान पर पूर्वरूप ए होकर हर् ए व = हरेव हो जाता है।
- सन्धि होने के पहले अ विद्यमान था, तो अ को सूचित करने के लिए 'ऽ' (अवग्रह) का प्रयोग करने पर 'हरेऽव' रूप बनता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त उल्लेख से स्पष्ट होता है कि 'दैत्यारिः' में दीर्घ सन्धि है जो कि स्वर सन्धि के अन्तर्गत परिगणित है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

20. 'नायकः' में सन्धि है?
(A) नी + अकः **(B) नौ + अकः**
(C) नै + अकः **(D) ने + अकः**

व्याख्या-

शब्द	सन्धि	सन्धिविच्छेद	सूत्र
नायकः	अयादि	नै + अकः	एचोऽयवायावः
पावकः	अयादि	पौ + अकः	एचोऽयवायावः
मध्वरिः	यण्	मधु + अरिः	इको यणचि
विद्यालयः	दीर्घ	विद्या + आलयः	अकः सवर्णे दीर्घः
महौषधिः	वृद्धि	महा + ओषधिः	वृद्धिरेचि
रमेशः	गुण	प्र + एजते	एङि पररूपम्
हरेऽव	पूर्वरूप	हरे + अव	एङः पदान्तादति

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त तालिका के अनुसार नायकः का सन्धि विच्छेद 'नै + अकः' है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

21. 'अक्ष्णा काणः' इसमें 'अक्ष्णा' शब्द के साथ तृतीया विभक्ति इस सूत्र से प्रयुक्त है?
(A) सहयुक्तेऽप्रधाने **(B) येनाङ्गविकारः**
(C) अपवर्गे तृतीया **(D) हेतौ**

व्याख्या-
- **येनाङ्गविकारः - (2.3.20)**
  जिस विकृत अङ्ग द्वारा अङ्गी का विकार लक्षित हो उस

विकृत अङ्ग से तृतीया विभक्ति होती है।

उदाहरण- 'अक्ष्णा काणः' (आँख से काना है।)

इस वाक्य में अङ्ग आँख के विकृत होने से व्यक्ति का शरीर विकारयुक्त कहलाता है, अतः अङ्ग अक्षि (आँख) में 'येनाङ्गविकारः' सूत्र से तृतीया विभक्ति हुई है।

- **सहयुक्तेऽप्रधाने (2.3.19)**
- सह और सह के पर्यायवाची शब्द साकं, समं, सार्धं के योग होने पर भी सहार्थक शब्द से युक्त अप्रधान में तृतीया विभक्ति होती है।
- पुत्रेण सह आगतः पिता (पुत्र के साथ पिता आया)
  इस वाक्य में 'आगतः' क्रिया के साथ पिता का सम्बन्ध प्रधान है और पुत्र का सम्बन्ध आगतः क्रिया में साथ आने से अप्रधान है अतः 'सहयुक्तेऽप्रधाने' सूत्र से अप्रधान कर्ता पुत्र में तृतीया विभक्ति होती है।
- **अपवर्गे तृतीया (2.3.6)**
- अपवर्ग का अर्थ है फलप्राप्ति अर्थात् क्रिया की समाप्ति पर फल की प्राप्ति हो जाय।
- 'फल की प्राप्ति' अर्थ के द्योतित होने पर काल और मार्गवाची शब्दों से अत्यन्त संयोग में तृतीया विभक्ति होती है।
  उदाहरण- अह्ना क्रोशेन वा अनुवाकोऽधीतः।
  (दिनभर या कोशभर में अनुवाक पढ़ लिया)
  इस वाक्य में अध्ययन की समाप्ति पर फलप्राप्ति हो रही है अर्थात् दिन भर में या कोश भर में अनुवाक याद कर लिया गया।
- अतः अपवर्गे तृतीया सूत्र से कालवाचक अह्न और मार्गवाचक कोश में तृतीया विभक्ति हुई है।
- **हेतौ- (2.3.23)-** हेतु शब्द के वाचक अर्थ में तृतीया विभक्ति होती है। हेतु द्रव्य, गुण एवं कर्म तीनों का साधक होता है तथा वह क्रियाहीन एवं क्रियायुक्त दोनों प्रकार का होता है। करण, कारक होने के कारण केवल क्रियायुक्त होता है।
  उदाहरण- दण्डेन घटः (दण्ड से घड़ा बनता है।)
  यह द्रव्य के प्रति हेतु का उदाहरण है। यहाँ दण्ड हेतु है। घट द्रव्य के बनने में दण्ड हेतु है। अतः 'हेतौ' सूत्र से दण्ड में तृतीया विभक्ति हुई है।
  अन्य उदाहरण- पुण्येन दृष्टो हरिः (पुण्य के कारण हरि को देखा गया)
  पुष्पेण सुन्दरः (पुष्प के कारण सुन्दर है।)
  स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'अक्ष्णा काणः में' 'येनाङ्गविकारः' सूत्र से तृतीया विभक्ति हुई है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

22. परस्मैपदी देने के अर्थ में 'दा' धातु से प्रथम पुरुष बहुवचन में रूप बनेगा-
(A) ददाति **(B) ददन्ति**
(C) ददति **(D) ददसि**

व्याख्या-

लट्लकार (परस्मैपदी)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र.पु.	ददाति	दत्तः	ददति
म.पु.	ददासि	दत्थः	दत्थ
उ.पु.	ददामि	दद्वः	दद्मः

लोट्लकार

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र.पु.	ददातु	दत्ताम्	ददतु
म.पु.	देहि	दत्तम्	दत्त
उ.पु.	ददानि	ददाव	ददाम

लङ्लकार

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र.पु.	अददात्	अदत्ताम्	अददुः
म.पु.	अददाः	अदत्तम्	अदत्त
उ.पु.	अददाम्	अदद्व	अदद्म

विधिलिङ्

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र.पु.	दद्यात्	दद्याताम्	दद्युः
म.पु.	दद्याः	दद्यातम्	दद्यात
उ.पु.	दद्याम्	दद्याव	दद्याम

लृट्लकार

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र.पु.	दास्यति	दास्यतः	दास्यन्ति
म.पु.	दास्यसि	दास्यथः	दास्यथ
उ.पु.	दास्यामि	दास्यावः	दास्यामः

अतः विकल्प 'C' सही है।

23. 'द्व्यधिकपञ्चशतम्' किस संख्या का वाचक है?
(A) 52 **(B) 25**
(C) 50 **(D) 502**

व्याख्या-

अङ्क	संस्कृत
502	द्व्यधिकपञ्चशतम्
52	द्विपञ्चाशत् / द्वापञ्चाशत्

50	पञ्चाशत्
25	पञ्चविंशतिः

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि 'द्व्यधिकपञ्चशतम्' संख्या का वाचक '502' है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

24. 'जलनिधिः' पद का पर्याय शब्द है-
(A) मेघः **(B) चन्द्रः**
(C) समुद्रः **(D) मत्स्यः**

व्याख्या-

शब्द	पर्यायवाची
समुद्रः	जलनिधिः, पारावरः, उदधिः, उदन्वान्, अर्णवः, रत्नाकरः, सिन्धुः, अब्धिः, अकूपारः, सागरः, सरित्पतिः, अपांपतिः।
मेघः	धाराधरः, घनः, जलधरः, वारिदः, जीमूतः, नीरदः, वारिधरः, पयोदः, पयोधरः, अम्बुदः, वारिवाहः, बलाहकः।
चन्द्रः	इन्दुः, चन्द्रमाः, सोमः, निशापतिः, ओषधीशः, शशाङ्कः, विधुः, सुधांशुः, हिमांशुः, कलानिधिः, क्षपाकरः, मृगाङ्कः, शशधरः।
मत्स्यः	मीनः, शफरी, झषः, जलजीवनम्, अण्डजः, विसारः, शकुली।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'जलनिधिः' का पर्याय 'समुद्र' है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

25. 'नदी' शब्द से सप्तमी विभक्ति एकवचन में रूप बनेगा-
(A) नदीम् **(B) नद्याः**
(C) नद्याम् **(D) नदीषु**

व्याख्या-

(नदी शब्द ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग)

प्र.वि.	नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वि.वि.	नदीम्	नद्यौ	नदीः
तृ.वि.	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
च.वि.	नद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
पं.वि.	नद्याः	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
ष.वि.	नद्याः	नद्योः	नदीनाम्
स.वि.	नद्याम्	नद्योः	नदीषु
सम्बोधन	हे नदि!	हे नद्यौ!	हे नद्यः!

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि 'नदी' शब्द के सप्तमी विभक्ति एकवचन में 'नद्याम्' रूप बनेगा। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

26. अशुद्ध वाक्य का चयन कीजिए-
(A) रामं विना जीवितुं नोत्सहे
(B) रामेण विना जीवितुं नोत्सहे
(C) रामात् विना जीवितुं नोत्सहे
(D) रामस्य विना जीवितुं नोत्सहे

व्याख्या-

➢ **पृथग्विनानानाभिस्तृतीयाऽन्यतरस्याम् (2.3.32) -** पृथक्, विना और नाना इन तीन अव्यय पदों के योग में तृतीया विभक्ति होती है पक्ष में पञ्चमी और द्वितीया विभक्तियाँ भी होती हैं।

स्पष्टीकरण- इस नियम के अनुसार 'विना' के प्रयोग में द्वितीया, तृतीया और पञ्चमी विभक्ति का प्रयोग होता है। **इसलिये अशुद्ध वाक्य विकल्प 'D' सही है।**

27. बृहत्त्रयी में नहीं गिना जाता -
(A) रघुवंशम् **(B) किरातार्जुनीयम्**
(C) नैषधीयचरितम् **(D) शिशुपालवधम्**

व्याख्या-

➢ बृहत्त्रयी के अन्तर्गत तीन महाकाव्यों को गिना जाता है-
(1) किरातार्जुनीयम् - भारवि - 18 सर्ग
(2) शिशुपालवधम् - माघ - 20 सर्ग
(3) नैषधीयचरितम् - श्रीहर्ष - 22 सर्ग

➢ लघुत्रयी के अन्तर्गत कालिदास द्वारा रचित तीन ग्रन्थ आते हैं-
(1) रघुवंशम् - कालिदास - 19 सर्ग
(2) कुमारसम्भवम् - कालिदास - 17 सर्ग
(3) मेघदूतम् - कालिदास - 2 खण्ड

➢ गद्यबृहत्त्रयी के अन्तर्गत तीन गद्यकाव्य आते हैं-
(1) वासवदत्ता - सुबन्धु
(2) कादम्बरी - बाणभट्ट
(3) दशकुमारचरितम् - दण्डी

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि 'रघुवंशम्' बृहत्त्रयी के अन्तर्गत नहीं आता है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

28. राजा दिलीप की पत्नी का नाम है-
(A) इन्दुमती
(B) सुदक्षिणा
(C) लक्ष्मी
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

व्याख्या-

राजा (पति)		रानी (पत्नी)
दिलीप	-	सुदक्षिणा
अज	-	इन्दुमती
विष्णु	-	लक्ष्मी
दुष्यन्त	-	शकुन्तला
राम	-	सीता
शिव	-	पार्वती
अगस्त्य	-	लोपामुद्रा
वशिष्ठ	-	अरुन्धती
चारुदत्त	-	धूता/वसन्तसेना
अर्जुन	-	सुभद्रा
भारवि	-	रसिका
भर्तृहरि	-	पिङ्गला
कालिदास	-	विद्योत्तमा

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि राजा दिलीप की पत्नी 'सुदक्षिणा' थी। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

29. 'लताकुञ्जं गुञ्जन्मदवदलिपुञ्जं चपलयन्' में अलङ्कार है-
(A) यमक **(B) अनुप्रास**
(C) श्लेष **(D) इनमें से कोई नही**

व्याख्या-

➢ **अनुप्रास अलङ्कार- अनुप्रासः शब्दसाम्यं वैषम्येऽपि स्वरस्य यत्।** स्वरों में समानता न होते हुए भी समान व्यञ्जनों की अथवा वर्णों का बार-बार आना अर्थात् उनकी आवृत्ति होना अनुप्रास अलंकार कहलाता है।

उदाहरण-
लताकुञ्जं गुञ्जन्मदवदलिपुञ्जं चपलयन्
समालिङ्गन्नङ्गं द्रुततरमनङ्गं प्रबलयन्।
मरुन्मन्दं मन्दं दलितमरविन्दं तरलयन्
रजो वृन्दं विन्दन् किरति मकरन्दं दिशि दिशि॥
इस श्लोक में ङ्ग, ङ्ग और न्द, न्द का वर्णसाम्य होने के कारण अनुप्रास अलङ्कार है।

अन्य उदाहरण-
ततोऽरुणपरिस्पन्दमन्दीकृतवपुः शशी।
दध्रे कामपरिक्षामकामिनीगण्डपाण्डुताम्॥
इस उदाहरण में न्द, न्द, ण्ड, ण्ड में आवृत्ति होने के कारण अनुप्रास अलङ्कार है।

➢ **यमक अलङ्कार- सत्यर्थे पृथगर्थायाः स्वरव्यञ्जनसंहतेः**
क्रमेण तेनैवावृत्तिर्यमकं विनिगद्यते॥
स्वरों और व्यञ्जनों के सार्थक समूह की पुनरावृत्ति जहाँ इस प्रकार हो कि प्रत्येक आवृत्ति में अर्थ में परिवर्तन हो जाय वहाँ यमक अलङ्कार होता है। निरर्थक पदों की आवृत्ति में भी यमक होता है।
नवपलाशपलाशवनं पुरः स्फुटपरागपरागतपङ्कजम्।
मृदुलतान्तलतान्तमलोकयत् स सुरभिं सुरभिं सुमनोभरैः॥
इस श्लोक में पलाश-पलाश, पराग-पराग, लतान्त-लतान्त पदों की आवृत्ति है परन्तु अर्थ भिन्न भिन्न होने के कारण यहाँ यमक अलङ्कार है।

➢ **श्लेष अलङ्कार-**
श्लिष्टैः पदैरनेकार्थाभिधाने श्लेष इष्यते।
वर्णप्रत्ययलिङ्गानां प्रकृत्योः पदयोरपि॥
श्लेषाद्विभक्तिवचनभाषाणामष्टधा च सः॥
श्लिष्ट पदों से अनेक अर्थों का अभिधान होने पर श्लेषालङ्कार होता है।
वर्ण, प्रत्यय, लिङ्ग, प्रकृति, पद, विभक्ति, वचन और भाषा इनके श्लिष्ट होने के कारण वर्णश्लेष, प्रत्ययश्लेष आदि भेदों से यह अलङ्कार आठ प्रकार का होता है।
पृथुकार्त्तस्वरपात्रं भूषितनिःशेषपरिजनं देव।
विलसत्करेणुगहनं सम्प्रति सममावयोः सदनम्॥
हे राजन्! इस समय हम दोनों का घर एक समान है क्योंकि आपका घर विशाल (पृथु) स्वर्णपात्रों से युक्त है (कार्त्तस्वर = स्वर्ण के पात्र = बर्तन) और मेरा घर भी वाक्यों के आर्त्तस्वर का स्थान है (पृथुक = बालक, आर्त्तस्वर = रुदन, पात्र = स्थान। आपका घर सम्पूर्ण सेवकों से सुशोभित है (भूषित-निःशेष-परिजनं) और मेरा घर भी पृथ्वी पर लेटने वाले परिजनों से युक्त है (भूषित = भू = पृथ्वी, उषित = वस् + क्त = बसा हुआ) आदि पदों में श्लेष अलङ्कार है क्योंकि यहाँ दो-दो अर्थ हैं।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि विकल्प 'B' सही है।

30. 'जीवेषु मानवाः श्रेष्ठाः' वाक्य में रेखाङ्कित पद में विभक्ति विधायक सूत्र है?
(A) आधारोऽधिकरणम्
(B) सप्तम्यधिकरणे च
(C) यतश्च निर्धारणम्
(D) साध्वसाधुप्रयोगे च

व्याख्या-

➢ **यतश्च निर्धारणम् (2.3.41)–**

जाति, गुण, क्रिया और संज्ञा (नाम) के द्वारा किसी समुदाय से एक भाग को पृथक् किया जाता है तो उस समुदाय वाचक शब्द से षष्ठी एवं सप्तमी विभक्ति होती है।

जाति द्वारा निर्धारण का उदाहरण-

जीवेषु मानवाः श्रेष्ठाः - (जीवों में मनुष्य श्रेष्ठ है)

जीव समुदाय का वाचक है। जीव समुदाय में मानव श्रेष्ठ बताया गया है। अतः 'यतश्च निर्धारणम्' सूत्र से जीव शब्द में षष्ठी विभक्ति बहुवचन लगाकर 'जीवानाम्' बनेगा और सप्तमी विभक्ति बहुवचन लगने पर 'जीवेषु' बना।

➢ **गुण द्वारा निर्धारण का उदाहरण-**
गवां गोषु वा कृष्णा बहुक्षीरा (गायों में काली गाय बहुत दूध देने वाली है।)

➢ **क्रिया के द्वारा निर्धारण का उदाहरण-**
गच्छतां गच्छत्सु वा धावञ्छीघ्रः (चलने वालों में दौड़ने वाला शीघ्र होता है।)

➢ **संज्ञा द्वारा निर्धारण का उदाहरण-**
छात्राणां छात्रेषु वा मैत्रः पटुः (छात्रों में मैत्र पटु अर्थात् कुशल है।)

➢ **आधारोऽधिकरणम् - (1.4.45)-** कर्ता और कर्म के आधार को ही अधिकरण कहते हैं।

➢ **सप्तम्यधिकरणे च (2.3.36)-** अधिकरण कारक में सप्तमी विभक्ति होती है। सूत्र में 'च' का प्रयोग दूरवाची और समीपवाची शब्दों में भी सप्तमी विभक्ति हो- यह बताने के लिये हुआ है।

☆ आधार तीन प्रकार का होता है-
1. औपश्लेषिक आधार
2. वैषयिक आधार
3. अभिव्यापक आधार

➢ **औपश्लेषिक आधार का उदाहरण-**
देवदत्तः कटे आस्ते (देवदत्त चटाई पर बैठता है।)।

➢ **वैषयिक आधार-**
मोक्षे इच्छाऽस्ति (मोक्ष सम्बन्धी इच्छा है।)।

➢ **अभिव्यापक आधार-**
सर्वस्मिन्नात्मा अस्ति (सब में आत्मा व्याप्त है)।

➢ **साध्वसाधुप्रयोगे च- (वार्तिक)**
साधु और असाधु के प्रयोग में भी सप्तमी विभक्ति होती है।
असाधुः मातुले। मामा के लिये अहितकारी हैं।
इस वाक्य में 'असाधु' के प्रयोग के कारण मातुले मे सप्तमी विभक्ति 'साध्वसाधुप्रयोगे च' वार्तिक से हुई।
कृष्णः साधुः मातरि (कृष्ण माता के लिये हितकर है)
इस वाक्य में साधु के प्रयोग के कारण 'मातरि' में सप्तमी विभक्ति 'साध्वसाधुप्रयोगे च' से हुई है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

उत्तरमाला

1. A	2. A	3. B	4. B	5. C	6. A	7. A	8. D	9. A	10. C	11. A	12. C
13. B	14. B	15. A	16. B	17. B	18. D	19. A	20. C	21. B	22. C	23. D	24. C
25. C	26. D	27. A	28. B	29. B	30. C						

6. UP-TET संस्कृतम् | प्राथमिक स्तर (कक्षा- 1 से 5 तक) | 2016

01. 'शाल्मली वृक्ष' का वर्णन किस ग्रन्थ में प्राप्त होता है?
(A) रघुवंशम् (B) किरातार्जुनीयम्
(C) शिवराजविजय (D) कादम्बरी

व्याख्या-

- **कादम्बरी-** कादम्बरी बाणभट्ट द्वारा विरचित गद्यकाव्य है। जिसके दो भाग हैं- पूर्वभाग और उत्तरभाग। पूर्वभाग को बाणभट्ट ने लिखा परन्तु उत्तरभाग इनके पुत्र पुलिन्दभट्ट (भूषणभट्ट) द्वारा लिखा गया है।
  कादम्बरी वर्णन- कादम्बरी कथामुख में शूद्रकवर्णन, चाण्डालकन्यावर्णन, शुकवर्णन, विन्ध्याटवीवर्णन, अगस्त्याश्रमवर्णन, पम्पासरोवर एवं शाल्मलीवृक्ष आदि का वर्णन प्राप्त होता है।
- **रघुवंशम् -** यह महाकविकालिदास द्वारा विरचित महाकाव्य है। इस महाकाव्य में 19 सर्ग हैं। इसमें 31 रघुवंशी राजाओं का वर्णन प्राप्त होता है।
  रघुवंशम् के मुख्य वर्णन- राजा दिलीप द्वारा नन्दिनी (गाय) की सेवा' रघु दिग्विजय वर्णन, इन्दुमती-स्वयंवर वर्णन, अज विलाप, राम आदि पुत्रों का जन्म और सीता स्वयंवर आदि का वर्णन मिलता है।
- **किरातार्जुनीयम् -** महाकवि भारवि की एकमात्र रचना किरातार्जुनीयम् महाकाव्य है। यह बृहत्त्रयी के अन्तर्गत आता है। यह महाकाव्य महाभारत के वनपर्व की एक घटना को अधिकृत करके रचा गया है। जो 18 सर्गों में वर्णित है।
  प्रमुख वर्णन- युधिष्ठिर वनेचर संवाद, इन्द्रकील पर्वत वर्णन, अर्जुन की कठिन तपस्या, सुरत एवं प्रभात वर्णन और पाशुपत-अस्त्र प्राप्ति आदि का वर्णन मिलता है।
- **शिवराजविजय-** यह अम्बिकादत्तव्यास द्वारा विरचित ऐतिहासिक उपन्यास है। तीन विराम तथा 12 निःश्वासों में विभक्त है।
  प्रमुख वर्णन- इसमें सूर्योदय वर्णन, सूर्यास्त वर्णन, चन्द्रोदय वर्णन, ब्रह्मचारिगुरु, योगिराज वर्णन, यवनयुवक आदि का वर्णन है।
  स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से ज्ञात होता है कि शाल्मली वृक्ष का वर्णन कादम्बरी कथामुख में मिलता है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**
  स्रोत- कादम्बरी कथामुख - तारिणीश झा, भू० पेज-32

02. पुत्र-प्राप्ति की कामना से राजा दिलीप ने किस ऋषि के आश्रम में गो-सेवा की?
(A) काश्यप (B) अत्रि
(C) वशिष्ठ (D) विश्वामित्र

व्याख्या-

- **वशिष्ठ-** रघुवंशमहाकाव्य कालिदास द्वारा विरचित 19 सर्गों का महाकाव्य है। इस महाकाव्य में राजा दिलीप की पत्नी मगध वंश की राजकुमारी सुदक्षिणा की सन्तानहीनता के कारण दिलीप अपने कुलगुरु वशिष्ठ के आश्रम में पहुँचे और उन्होंने अपने दुःख का वर्णन किया। वशिष्ठ ने राजा को कामधेनु की पुत्री नन्दिनी (गौ) की सेवा का उपदेश दिया। तदनुसार राजा पत्नी सहित वहीं रहकर नन्दिनी की सेवा में लग गये।
- **काश्यप-** अभिज्ञानशाकुन्तलम् में काश्यप एक त्रिकालज्ञ महर्षि हैं। इन्होंने शकुन्तला को पुत्री के तुल्य पाला है। उसके अनिष्ट निवारणार्थ वे सोमतीर्थ जाते हैं। गान्धर्व विवाह के लिए स्वीकृति देते हैं और शकुन्तला की विदाई के समय सच्चे पिता के तुल्य करुण भाव से द्रवित हो जाते हैं।
- **अत्रि-** महर्षि अत्रि और सती अनसूया के पुत्र दुर्वासा ऋषि हैं। अत्रि ऋषि की गणना सप्तर्षियों में की जाती है।
  सप्तर्षि- कश्यप, अत्रि, भारद्वाज, गौतम, विश्वामित्र, जमदग्नि एवं वशिष्ठ हैं।
- **विश्वामित्र-** विश्वामित्र और मेनका की पुत्री शकुन्तला है। विश्वामित्र भी सप्तर्षियों में परिगणित हैं।
  स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि राजा दिलीप ने वशिष्ठ ऋषि के आश्रम में गो-सेवा की। **अतः विकल्प 'C' सही है।**
  स्रोत- रघुवंशमहाकाव्यम् - श्रीहरिगोविन्द मिश्र, पेज-14

03. संस्कृत में प्रसिद्ध नाटककार विशाखदत्त की कृति का नाम है-
(A) हितोपदेश (B) मुद्राराक्षस
(C) शिशुपालवध (D) मृच्छकटिक

व्याख्या-

- **मुद्राराक्षस-** यह विशाखदत्त द्वारा विरचित सात अङ्कों का नाटक है। वीररस प्रधान मुद्रा (राक्षस की अँगूठी) के द्वारा राक्षस को वश में करने के मुख्य कथानक होने से इसे

मुद्राराक्षस कहते हैं। इसमें कुल 29 पात्र हैं। यह विदूषक एवं नायिका विहीन नाटक है।

- **हितोपदेश-** हितोपदेश पञ्चतन्त्र पर आश्रित नीतिकथाओं में सर्वाधिक प्रचलित है। इसकी रचना बंगाल के राजा धवलचन्द्र के आश्रित नारायण पण्डित ने की थी। हितोपदेश चार भागों में विभक्त है- मित्रलाभ, सुहृद्भेद, विग्रह तथा सन्धि।
- **शिशुपालवधम् -** यह माघकवि की एकमात्र रचना 20 सर्गों के महाकाव्य के रूप में है। देवर्षि नारद के द्वारा इन्द्र का सन्देश द्वारकापुरी में कृष्ण को मिलता है जिसमें शिशुपाल के अत्याचार से जगत् के रक्षा की प्रार्थना है।
- **मृच्छकटिकम् -** मृच्छकटिक के रचयिता के रूप में शूद्रक संस्कृत जगत् में विख्यात हैं। यह एक प्रकरणग्रन्थ है जिसमें 10 अङ्क हैं। इस प्रकरणग्रन्थ का नायक चारुदत्त और गणिका नायिका वसन्तसेना है। कुलजा नायिका धूता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि प्रसिद्ध नाटककार विशाखदत्त की रचना का नाम मुद्राराक्षस है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- संस्कृतगङ्गा साहित्यम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-291

04. 'मनुस्मृति' के अनुसार धर्म के लक्षण हैं-

(A) आठ **(B) दस**
(C) पाँच **(D) चार**

व्याख्या-

- मनुस्मृति के प्रणेता 'मनु' ही कहे जाते हैं। इसमें 12 अध्याय और 2694 श्लोक हैं।

धर्म के दस लक्षण इसप्रकार हैं-

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्॥

(मनुस्मृति- 6.92)

- ब्रह्म, दैव, आर्ष, प्राजापत्य, आसुर, गान्धर्व, राक्षस और पैशाच ये आठ प्रकार के विवाह होते हैं।

ब्राह्मो दैवस्तथैवार्षः प्राजापत्यस्तथाऽसुरः।
गान्धर्वो राक्षसश्चैव पैशाचश्चाष्टमोऽधमः।। (मनु0)

पाँच- मनुस्मृति के तृतीय अध्याय में पञ्चमहायज्ञों का विधान किया गया है-

अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञस्तु तर्पणम्।
होमो दैवो बलिर्भौतो नृयज्ञोऽतिथिपूजनम्॥

(3.70)

पढ़ना-पढ़ाना, सन्ध्योपासन करना ब्रह्मयज्ञ कहलाता है और माता-पिता आदि की सेवा शुश्रूषा तथा भोजन आदि से तृप्त करना पितृयज्ञ है। प्रातः सायं हवन करना देवयज्ञ है। कीटों, पक्षियों, कुत्तों, भृत्यों आदि को भोजन का भाग बचाकर देना नृयज्ञ या 'बलिवैश्वदेवयज्ञ' कहलाता है। अतिथियों को भोजन देना और सेवा सत्कार करना नृयज्ञ अथवा अतिथियज्ञ कहलाता है।

चार- मनुस्मृति में धर्म का लक्षण बताया गया है-

श्रुतिः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः।
एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम्॥

(मनुस्मृति- 1.7)

श्रुति-वेद, स्मृति-धर्मशास्त्र, सदाचार-भद्रपुरुषों का आचार-व्यवहार, जो अपने को प्रिय लगे तथा उचित संकल्प से उत्पन्न इच्छा- ये चार धर्म के मूल कहे गये हैं। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- मनुस्मृति (6/92)-शिवराज कौण्डिन्यायन, पेज-446

05. 'अनाथपरिपालनं हि धर्मः अस्मद्विधानाम्' सूक्ति का सम्बन्ध है-

(A) सुभाषितरत्नावली **(B) चन्द्रापीडकथा**
(C) नीतिशतकम् **(D) वैराग्यशतकम्**

व्याख्या-

- **कादम्बरी-** बाणभट्ट द्वारा विरचित कादम्बरी गद्यकाव्य में चन्द्रापीडकथा का वर्णन किया गया है। इस गद्यकाव्य में तीन जन्मों की कथा का वर्णन है- (1) चन्द्रमा, चन्द्रापीड, शूद्रक (2) पुण्डरीक, वैशम्पायन, शुक

'अनाथपरिपालनं हि धर्मः अस्मद्विधानाम्' अनाथों का परिपालन ही हम लोगों का धर्म है। कादम्बरी की चन्द्रापीड कथा में यह वाक्य जाबालि ऋषि के पुत्र हारीत ने कहा है।

- **नीतिशतकम् -** भर्तृहरि द्वारा विरचित नीतिशतक मुक्तककाव्य है। इसमें कहा गया है कि-

सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः॥

सेवाधर्म बहुत कठिन है, योगियों के लिए भी इसको निभाना और समझना कठिन है।

- **वैराग्यशतकम् -** भर्तृहरि द्वारा रचित वैराग्यशतकम् में कहा गया है कि **'मनसि च परितुष्टे कोऽर्थवान् को दरिद्रः।'** मन से सन्तुष्ट होने पर न कोई धनी है और न कोई दरिद्र। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- कादम्बरी (कथामुख) - तारिणीश झा, पेज-383

06. अर्जुन के धनुष का नाम है–

(A) पाञ्चजन्य **(B) गाण्डीव**
(C) पाशुपत **(D) पुष्पधन्वा**

व्याख्या- महाभारत के 18 पर्वों में से भीष्मपर्व नामक पर्व से श्रीमद्भगवद्गीता उद्धृत है। इसमें 18 अध्याय हैं।

➤ **गाण्डीव-**

'गाण्डीवं स्त्रंसते हस्तात्त्वक्चैव परिदह्यते।
न च शक्नोम्यवस्थातुं भ्रमतीव च मे मनः॥'

(गीता 1/30)

अर्जुन कहते हैं कि मेरे हाथ से गाण्डीव धनुष गिर रहा है और त्वचा भी बहुत जल रही है तथा मेरा मन भ्रमित सा हो रहा है इसलिए मैं खड़ा रहने में भी समर्थ नहीं हूँ।

इस श्लोक में स्पष्ट है कि गाण्डीव अर्जुन के धनुष का नाम है।

➤ **पाञ्चजन्य-**

पाञ्चजन्यं हृषीकेशो देवदत्तं धनञ्जयः।
पौण्ड्रं दध्मौ महाशङ्खं भीमकर्मा वृकोदरः॥

(गीता-1.15)

शंख का नाम		शंखधारियों के नाम
पाञ्चजन्य	-	कृष्ण
देवदत्त	-	अर्जुन
पौण्ड्र	-	भीम
अनन्तविजय	-	युधिष्ठिर
सुघोष	-	नकुल
मणिपुष्पक	-	सहदेव

अनन्तविजयं राजा कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः।
नकुलः सहदेवश्च सुघोषमणिपुष्पकौ॥

(गीता-16)

➤ **पाशुपत-** किरातार्जुनीयम् भारवि की एकमात्र कृति है। इस महाकाव्य में 18 सर्ग हैं। अर्जुन की तपस्या से प्रसन्न होकर शिव जी ने उनको पाशुपतास्त्र प्रदान किया था।

➤ **पुष्पधन्वा-** पुष्पधन्वा कामदेव को कहा जाता है। अमरकोष में पुष्पधन्वा के 21 नाम बताये गये हैं-

मदनो मन्मथो मारः प्रद्युम्नो मीनकेतनः।
कन्दर्पो दर्पकोऽनङ्गः कामः पञ्चशरः स्मरः॥

(1.1.26-27)

शम्बरारिर्मनसिजः कुसुमेषुरनन्यजः।
पुष्पधन्वा रतिपतिर्मकरध्वज आत्मभूः॥

➤ **ब्रह्मसूर्ऋष्यकेतुः स्यात् -** मदन, मन्मथ, मार, प्रद्युम्न, मीनकेतन, कन्दर्प, दर्पक, अनंग, काम, पञ्चशर, स्मर, शम्बरारि, मनसिज, कुसुमेषु, अनन्यज, पुष्पधन्वन्, रतिपति, मकरध्वज, आत्मभू, ब्रह्मसू, ऋष्यकेतु।।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट होता है कि अर्जुन के धनुष का नाम गाण्डीव था। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- गीता (1/30)

07. 'क्रीडनकम्' शब्द का अभिप्राय है-
(A) खेल **(B) खेलना**
(C) खेल का मैदान **(D) खिलौना**

व्याख्या-

	संस्कृत शब्द		हिन्दी अर्थ
(i)	क्रीडनकम्	-	खिलौना
(ii)	क्रीडा	-	खेल
(iii)	क्रीडाक्षेत्रम्	-	खेल का मैदान
(iv)	क्रीडति	-	खेलना
(v)	क्रीडकः	-	खिलाड़ी

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'क्रीडनकम्' शब्द का अर्थ खिलौना है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- संस्कृत सम्भाषणशब्दकोश - सर्वज्ञभूषण, पेज-64

08. 'आश्रमे वटाश्वत्थनिम्बाशोकाम्रामलक-वृक्षाः आसन्', वाक्य में उल्लिखित वृक्षों की संख्या है–
(A) चार **(B) पाँच**
(C) छह **(D) सात**

व्याख्या- "वट-अश्वत्थ-निम्ब-अशोक-आम्र-आमलक..." इससे स्पष्ट है कि इस वाक्य में 6 वृक्षों की गणना की गयी है।

1.	वट	=	बरगद
2.	अश्वत्थ	=	पीपल
3.	निम्ब	=	नीम
4.	अशोक	=	अशोक
5.	आम्र	=	आम
6.	आमलक	=	आँवला

अतः विकल्प 'C' सही है।

09. विजातीय पद का चयन कीजिए–
(A) लूता **(B) एला**
(C) लवङ्गम् **(D) मधुयष्टि**

व्याख्या-

संस्कृत शब्द		अर्थ
लूता	-	मकड़ी
एला	-	इलायची
लवङ्गम्	-	लौंग
मधुयष्टि	-	मुलेठी

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त अर्थों से स्पष्ट होता है कि एला,

लवङ्गम् , मधुयष्टि ये तीनों एक प्रजाति के हैं और लूता (मकड़ी) इनसे भिन्न है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- सम्भाषण शब्दकोश - सर्वज्ञभूषण, पेज-36,28,39,29

10. 'चतुस्त्रिंशत्' संख्या है–

(A) 304 (B) 430
(C) 43 (D) 34

व्याख्या-

संख्या		संस्कृत संख्या
34	-	चतुस्त्रिंशत्
43	-	त्रिचत्वारिंशत्
304	-	चतुरधिकत्रिशतम्
430	-	त्रिंशदधिकचतुश्शतम्

अतः विकल्प 'D' सही है।

स्रोत- रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-139

11. 'आभ्यन्तर प्रयत्न' के प्रकार हैं–

(A) पाँच (B) दो
(C) चार (D) तीन

व्याख्या-

प्रयत्न- प्रयत्न दो प्रकार का होता है। बाह्यप्रयत्न और आभ्यन्तरप्रयत्न।

- **आभ्यन्तर प्रयत्न-** 5 प्रकार का होता है-

(1) स्पृष्ट	(2) ईषत्स्पृष्ट	(3) विवृत
स्पर्श वर्णों का	अन्तःस्थानाम्	स्वरों का
(क से म तक)	यण्	(अच्)
(4) ईषद्विवृत	**(5) संवृत**	
ऊष्मवर्ण	अ	
(शल्)		

- **बाह्य प्रयत्न-** यह 11 प्रकार का होता है। विवार, संवार, श्वास, नाद, घोष, अघोष, अल्पप्राण, महाप्राण, उदात्त, अनुदात्त, स्वरित।
- **अन्तःस्थवर्ण-** यण् प्रत्याहार के अन्तर्गत चार वर्ण आते हैं- य् व् र् ल्। इन्हें अन्तःस्थ वर्ण भी कहते हैं।
- स्वरों का बाह्य प्रयत्न उदात्त अनुदात्त और स्वरित होता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि आभ्यन्तर प्रयत्न पाँच प्रकार का होता है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- संज्ञाप्रकरणम् - राममुनि पाण्डेय, पेज-11

12. उपेन्द्रः पद का सन्धि-विच्छेद है–

(A) उप + एन्द्रः (B) उप + इन्द्रः
(C) उपा + इन्द्रः (D) उप + ऐन्द्रः

व्याख्या- गुणसन्धि **सूत्र-** आद्गुणः

आद्गुणः सूत्र से यदि अ या आ के बाद ह्रस्व या दीर्घ इ, उ, ऋ, ऌ आते हैं तो दोनों मिलकर क्रमशः ए, ओ, अर् और अल् गुण हो जाता है।

उदाहरण-

अ + ई = ए
अ + इ = ए
आ + इ = ए
आ + ई = ए आदि

उदाहरण- उप + इन्द्रः = उपेन्द्रः
रमा + ईशः = रमेशः
महा + ईशः = महेशः
महा + उत्सवः = महोत्सवः

अतः विकल्प 'B' सही है।

स्रोत- संज्ञाप्रकरणम् - राममुनि पाण्डेय, पेज-22

13. 'सकार' का 'शकार' से योग होने पर क्या परिवर्तन होता है?

(A) सकार का रेफ हो जाता है।
(B) सकार का शकार हो जाता है।
(C) सकार का सकार हो जाता है।
(D) सकार का विसर्ग हो जाता है।

व्याख्या- स्तोः श्चुना श्चुः - यह सूत्र कहता है कि स् और तवर्ग (त् थ् द् ध् न्) के किसी वर्ण का जब श् और चवर्ग (च् छ् ज् झ् ञ्) के किसी भी वर्ण से योग होता है। तो सकार के स्थान पर शकार और तवर्ग के स्थान पर चवर्ग हो जाता है।

स्थानी- स् त् थ् द् ध् न्
आदेश- श् च् छ् ज् झ् ञ्

उदाहरण-

रामस् + शेते = रामश्शेते
रामस् + चिनोति = रामश्चिनोति

अतः विकल्प 'B' सही है।

स्रोत- संज्ञाप्रकरणम् - राममुनि पाण्डेय, पेज-45

14. 'भूतपूर्वः' इस समस्त पद का विग्रह होगा–

(A) पूर्वे भूतः (B) पूर्वं भूतः
(C) पूर्वस्य भूतः (D) पूर्वात् भूतः

व्याख्या- समास पाँच प्रकार का होता है-

1. केवल समास 2. अव्ययीभाव समास
3. तत्पुरुष समास 4. बहुव्रीहि समास 5. द्वन्द्व समास।

➢ केवल समास का उदाहरण है- भूतपूर्वः

समस्तपद	लौकिक विग्रह	अलौकिक विग्रह
भूतपूर्वः	पूर्वं भूतः	पूर्व अम् भूत सु

➢ **'सह सुपा'** सूत्र से भूतपूर्वः में केवल समास हुआ है।

अन्य उदाहरण-

समस्तपद	लौकिक विग्रह	अलौकिक विग्रह
वागर्थाविव	वागर्थौ इव	वागर्थ औ इव
अदृष्टपूर्वः	पूर्वम् अदृष्टः	पूर्व अम् अदृष्ट सु
जीमूतस्येव	जीमूतस्य इव	जीमूत ङस् इव

अतः विकल्प 'B' सही है।

स्रोत- समासप्रकरणम् - राममुनि पाण्डेय, पेज-5

15. 'हरये रोचते भक्तिः' वाक्य में 'हरये' पद में विभक्ति है–
(A) तृतीया **(B) पञ्चमी**
(C) चतुर्थी **(D) सप्तमी**

व्याख्या-

➢ **चतुर्थी-** 'रुच्यर्थानां प्रीयमाणः'-
रुच् धातु और इसके समान अर्थवाली धातुओं के योग में प्रीयमाण प्रसन्न होने वाले व्यक्ति की सम्प्रदानसंज्ञा होती है।
उदाहरण- हरये रोचते भक्तिः (हरि को भक्ति अच्छी लगती है।) इस वाक्य में रुच् धातु के योग में प्रीयमाण = प्रसन्न होने वाले हरि की 'रुच्यर्थानां प्रीयमाणः' सूत्र से सम्प्रदानसंज्ञा हुई और 'चतुर्थी सम्प्रदाने' सूत्र से चतुर्थी विभक्ति होकर 'हरये' बना।

➢ **तृतीया-** येनाङ्गविकारः (2.3.20) जिस विकृत अङ्ग के द्वारा अङ्गी का विकार द्योतित होता है, उस विकृत अङ्ग से तृतीया विभक्ति होती है।
उदाहरण- (1) अक्ष्णा काणः (2) कर्णेन बधिरः (3) पादेन खञ्जः आदि। यहाँ अक्ष्णा, कर्णेन और पादेन में तृतीया विभक्ति हुई है।

➢ **पञ्चमी-** भीत्रार्थानां भयहेतुः (1.4.25) भय के अर्थवाली और त्राणार्थक धातुओं के योग में जिससे भय हो और जिससे रक्षा की जाय, उसकी अपादानसंज्ञा होती है और उसमें पञ्चमी विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे- चोराद् बिभेति (चोर से डरता है) यहाँ 'चोराद्' में पञ्चमी विभक्ति हुई है।

➢ **सप्तमी-** निमित्तात् कर्मयोगे-
कर्म योग में निमित्तवाची शब्द से सप्तमी विभक्ति होती है यदि वह निमित्त (फल) उस क्रिया के कर्म से संयुक्त हो।
उदाहरण- चर्मणि द्वीपिनं हन्ति (चमड़े के लिए द्वीपी अर्थात् गैंडे को मारता है) यहाँ 'चर्मणि' में सप्तमी विभक्ति है।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि 'हरये रोचते भक्तिः' वाक्य में 'हरये' पद में चतुर्थी विभक्ति है।

अतः विकल्प 'C' सही है।

स्रोत- कारकप्रकरणम् (1.4.33)-राममुनि पाण्डेय, पेज-66

16. परिमाणमात्र में कौन सी विभक्ति होती है?
(A) प्रथमा **(B) चतुर्थी**
(C) द्वितीया **(D) पञ्चमी**

व्याख्या-

➢ **प्रथमा-** प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा-
प्रातिपदिकार्थमात्र में, लिङ्गमात्र की अधिकता में, परिमाणमात्र में और वचनमात्र (संख्यामात्र) अर्थ में प्रथमा विभक्ति होती है। यह सूत्र प्रथमा विभक्ति का विधान करता है। प्रथमा विभक्ति की सु, औ, जस् का प्रयोग प्रातिपदिकार्थ, लिङ्ग, परिमाण एवं वचन (संख्या) को अभिव्यक्त कराने के लिए होता है।
प्रातिपदिकार्थ का उदाहरण- कृष्णः, श्रीः, ज्ञानम्, उच्चैः, नीचैः
लिङ्ग - तटः, तटी, तटम्
परिमाण - द्रोणो व्रीहिः
वचनमात्रे - एकः, द्वौ, बहवः

➢ **चतुर्थी-** स्पृहेरीप्सितः (1.4.26) स्पृह् धातु के योग में ईप्सित (जिसको चाहा जाय) की सम्प्रदानसंज्ञा होती है।
उदाहरण- पुष्पेभ्यः स्पृहयति (फूलों को चाहता है)
स्पृह् धातु के योग होने पर पुष्पेभ्यः की 'स्पृहेरीप्सितः' से सम्प्रदानसंज्ञा और 'चतुर्थी सम्प्रदाने' से चतुर्थी विभक्ति हुई।

➢ **द्वितीया-** अधिशीङ्स्थासां कर्म (1.4.46) अधि उपसर्गपूर्वक शीङ्, स्था, आस् धातुओं के आधार की कर्मसंज्ञा होती है। जैसे- अधिशेते, अधितिष्ठति, अध्यास्ते वा वैकुण्ठं हरिः।
उदाहरण- 'अधिशेते वैकुण्ठं हरिः' - (हरि वैकुण्ठ में सोते हैं) इस वाक्य में 'शयन क्रिया' का आधार वैकुण्ठ है। अधि उपसर्गपूर्वक स्था धातु से निष्पन्न 'अधिशेते' के योग में आधार वैकुण्ठ की 'अधिशीङ्स्थासांकर्म' सूत्र से कर्म संज्ञा हुई और 'कर्मणि द्वितीया' सूत्र से द्वितीया विभक्ति होकर वैकुण्ठम् बना।
अन्य उदाहरण-
हरिः वैकुण्ठम् अध्यास्ते।
हरिः वैकुण्ठम् अधितिष्ठति।

➢ **पञ्चमी-** जनिकर्तुः प्रकृतिः (1.4.30) 'जन्' धातु के कर्ता के कारण की अपादान संज्ञा होती है।
उदाहरण- ब्रह्मणः प्रजाः प्रजायन्ते (ब्रह्मा से प्रजाएँ उत्पन्न होती हैं) इस वाक्य में जन् (जायते) धातु का कर्ता प्रजा है

और उसकी प्रकृति (कारण) ब्रह्मा है, अतः 'जनिकर्तुः प्रकृतिः' सूत्र से कारण ब्रह्मा की अपादान संज्ञा हुई और 'अपादाने पञ्चमी' सूत्र से पञ्चमी विभक्ति होकर ब्रह्मणः बना।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त उल्लेख से स्पष्ट होता है कि परिमाणमात्र में प्रथमा विभक्ति होती है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- कारकप्रकरणम् (2.3.46)-राममुनि पाण्डेय,पेज-22

17. व्यायामेन शरीरं स्वस्थं भवति। वाक्य के रेखाङ्कित पद में प्रयुक्त कारक है–

(A) कर्म **(B) करण**

(C) सम्प्रदान **(D) अपादान**

व्याख्या-

➢ **करण-** साधकतमं करणम्- (1.4.42)
क्रिया की सिद्धि में जो सबसे अधिक सहायक होता है उसे करण कहते हैं।
उदाहरण- व्यायामेन शरीरं स्वस्थं भवति। (व्यायाम करने से शरीर स्वस्थ होता है) 'साधकतमं करणम्' से व्यायाम की करण संज्ञा और 'कर्तृकरणयोस्तृतीया' से तृतीया विभक्ति हुई है।
अन्य उदाहरण- रामेण बाणेन हतो वाली।
रामः जलेन मुखं प्रक्षालयति।

➢ **कर्म-** कर्तुरीप्सिततमं कर्म (1.4.49) कर्ता की क्रिया के द्वारा सबसे अधिक चाहे गये पदार्थ की कर्मसंज्ञा होती है।
उदाहरण- पयसा ओदनं भुङ्क्ते- (दूध से चावल खाता है) यहाँ ओदन (चावल) कर्ता को अभीष्ट है वह दूध से चावल खाना चाहता है इसलिये ओदनं में 'कर्तुरीप्सिततमं कर्म' से कर्मसंज्ञा और 'कर्मणि द्वितीया' से द्वितीया विभक्ति हुई।
जबकि 'पयसा' करणकारक है चावल खाने में सहायक होने के कारण 'साधकतमं करणम्' से पयसा की करणसंज्ञा 'कर्तृकरणयोस्तृतीया' से तृतीया विभक्ति हुई है।

➢ **सम्प्रदान-** कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम् (1.4.32) दान क्रिया के कर्म द्वारा कर्ता जिसको सन्तुष्ट करता है उसे सम्प्रदान कहते हैं। चतुर्थी सम्प्रदाने (2.3.13) - से चतुर्थी विभक्ति होती है।
उदाहरण- विप्राय गां ददाति (ब्राह्मण को गाय देता है।)
'कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्' सूत्र से विप्र की सम्प्रदान संज्ञा हुई और 'चतुर्थी सम्प्रदाने' सूत्र से सम्प्रदान विप्र में चतुर्थी विभक्ति होकर 'विप्राय' बना।

➢ **अपादान-** आख्यातोपयोगे (1.4.29) नियमपूर्वक विद्या पढ़ने में आख्याता अर्थात् पढ़ाने वाले की अपादान संज्ञा होती है।

➢ **उपाध्यायादधीते-** (वह उपाध्याय से नियमपूर्वक पढ़ता है) इस वाक्य में नियम विशेष पालन करते हुए उपाध्याय से पढ़ता है अतः 'आख्यातोपयोगे' सूत्र से उपाध्याय की अपादान संज्ञा हुई और 'अपादाने पञ्चमी' सूत्र से पञ्चमी विभक्ति होकर 'उपाध्यायाद्' बना।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'व्यायामेन शरीरं स्वस्थं भवति' में 'व्यायामेन' में करण कारक है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- कारकप्रकरणम् - राममुनि पाण्डेय, पेज-58

18. 'नवपलाशपलाशवनं.....' में अलङ्कार है–

(A) श्लेष **(B) यमक**

(C) अनुप्रास **(D) उत्प्रेक्षा**

व्याख्या-

➢ **श्लेष- श्लिष्टैः पदैरनेकार्थाभिधाने श्लेष इष्यते।**
वर्णप्रत्ययलिङ्गानां प्रकृत्योः पदयोरपि॥
श्लेषाद्विभक्तिवचनभाषाणामष्टधा च सः।
श्लिष्ट पदों से अनेक अर्थों का अभिधान होने पर श्लेषालङ्कार होता है।
वर्ण, प्रत्यय, लिङ्ग, प्रकृति, पद, विभक्ति, वचन और भाषा इनके श्लिष्ट होने के कारण वर्णश्लेष, प्रत्ययश्लेष आदि भेदों से यह अलङ्कार आठ प्रकार का होता है।
उदाहरण-
प्रतिकूलतामुपगते हि विधौ विफलत्वमेति बहुसाधनता।
अवलम्बनाय दिनभर्तुरभून्न पतिष्यतः करसहस्रमपि।।
विधि (दैव) अथवा विधु (चन्द्रमा) के प्रतिकूल होने पर सब साधन विफल हो जाते हैं। अस्त होने के समय सूर्य की हजार किरणें भी सहारा देने को पर्याप्त न हो सकीं (क्योंकि विधु प्रतिकूल दिशा में स्थित था।) पूर्णिमा के दिन सूर्यास्त के समय सूर्य की विपरीत पूर्व दिशा में चन्द्रमा निकला करता है। जब सहस्रकर वाले सूर्य भी विधु की प्रतिकूलता के समय गिरने से न बचे तो विधि की प्रतिकूलता में औरों की तो बात ही क्या।
स्पष्टीकरण- यहाँ 'विधौ' इस पद में 'विधि' और 'विधु' शब्दों के अन्तिम वर्ण (इकार और उकार) औकार के रूप में आ गये हैं, अतः उक्त दोनों वर्णों का यहाँ श्लेष है।

➢ **यमक-**
सत्यर्थे पृथगर्थायाः, स्वरव्यञ्जनसंहतेः।
क्रमेण तेनैवावृत्तिर्यमकं विनिगद्यते॥
स्वर और व्यञ्जनों के सार्थक समूह की पुनरावृत्ति जहाँ इस प्रकार हो कि प्रत्येक आवृत्ति में अर्थ में परिवर्तन हो जाय वहाँ यमक अलंकार होता है। निरर्थक पदों की आवृत्ति में भी

यमक होता है।

उदाहरण-

नवपलाशपलाशवनं पुरः स्फुटपरागपरागतपङ्कजम्।
मृदुलतान्तलतान्तमलोकयत् ससुरभिं सुरभिं सुमनोभरैः॥

जिसमें पलाशों का वन नवीन पलाशों से युक्त हो गया है और कमल बढ़े हुए पराग से युक्त हो गये हैं एवं लतान्त (लताओं के प्रान्त) जिसमें मृदु कोमल और लतान्त (झुके हुये) हो गये हैं; पुष्पों की अधिकता से सुरभि (सुगन्धित) उस सुरभि (वसन्तऋतु) को श्रीकृष्ण ने रैवतक पर्वत पर देखा।

➢ **अनुप्रास- 'अनुप्रासः शब्दसाम्यं वैषम्येऽपि स्वरस्य यत्'** अर्थात् स्वरों में समानता न होते हुए भी समान व्यञ्जनों अथवा वर्णों की बार-बार आवृत्ति अनुप्रास अलङ्कार है।

उदाहरण-

समालिङ्गन्नङ्गं द्रुततरमनङ्गं प्रबलयन्।
मरुन्मन्दं मन्दं दलितमरविन्दं तरलयन्॥

यहाँ पर ङ्ग, ङ्ग और न्द, न्द का वर्णसाम्य है अतः यह अनुप्रास अलङ्कार है।

➢ **उत्प्रेक्षा- साम्यं वाच्यमवैधर्म्यं वाक्यैक्य उपमा द्वयोः** जहाँ उपमान और उपमेय का साम्य अथवा सादृश्य हो जो एक में प्रतिपादित हो और जिसमें वैधर्म्य की कोई भी चर्चा नहीं होती है। वहाँ पर उत्प्रेक्षा अलङ्कार होता है।

उदाहरण-

मधुरः सुधावदधरः पल्लवतुल्योऽतिपेलवः पाणिः।
चकितमृगलोचनाभ्यां सदृशीचपले च लोचने तस्याः॥

अतः विकल्प 'B' सही है।

स्रोत- छन्दोऽलङ्कारसौरभम् - राजेन्द्रमिश्र, पेज-60

19. 'तस्मै' पद का विभक्ति एवं वचन है–
(A) चतुर्थी एकवचन **(B) षष्ठी एकवचन**
(C) सप्तमी एकवचन **(D) सप्तमी बहुवचन**

व्याख्या-

तद् शब्द पुँल्लिङ्ग में

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सः	तौ	ते
द्वितीया	तम्	तौ	तान्
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पञ्चमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

स्पष्टीकरण- अतः 'तस्मै' पद चतुर्थी एकवचन में बनता है **इसलिए विकल्प 'A' सही है।**

षष्ठी एकवचन - तस्य

सप्तमी एकवचन - तस्मिन्

सप्तमी बहुवचन - तेषु

स्रोत- रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-133

20. 'अकथितं च' सूत्र के अन्तर्गत कितनी द्विकर्मक धातुएँ हैं?
(A) 16 **(B)** 14
(C) 13 **(D)** 10

व्याख्या-

➢ 'अकथितं च' सूत्र कर्मसंज्ञा करता है। इसमें 16 धातुएँ परिगणित हैं।

दुह्याच्-पच्-दण्ड्-रुधि-प्रच्छि-चि-ब्रू-शासु-जि-मथ-मुषाम्।
कर्मयुक् स्यादकथितं तथा स्यान्नीहृकृष्वहाम्॥

(1) दुह् (2) याच् (3) पच् (4) दण्ड् (5) रुध् (6) प्रच्छ् (7) चि (8) ब्रू (9) शास् (10) जि (11) मथ् (12) मुष् (13) नी (14) हृ (15) कृष् (16) वह्।।

➢ **माहेश्वर सूत्रों की संख्या- 14 है, जो इस प्रकार हैं-**
1. अइउण् 2. ऋऌक् 3. एओङ् 4. ऐऔच् 5. हयवरट् 6. लण् 7. ञमङणनम् 8. झभञ् 9. घढधष् 10. जबगडदश् 11. खफछठथचटतव् 12. कपय् 13. शषसर् 14. हल्

➢ **बाह्ययत्न 11 प्रकार के होते हैं-**
(1) संवार (2) विवार (3) श्वास (4) नाद (5) घोष (6) अघोष (7) अल्पप्राण (8) महाप्राण (9) उदात्त (10) अनुदात्त (11) स्वरित

➢ **लकार 10 होते हैं-**
(1) लट् (2) लिट् (3) लुट् (4) लोट् (5) लङ् (6) ऌट् (7) विधिलिङ् (8) ऌङ् (9) आशीर्लिङ् (10) लुङ् लकार

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि द्विकर्मकधातुएँ 16 हैं। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- कारकप्रकरणम् - राममुनि पाण्डेय, पेज-32

21. 'सम्प्रति वायु-प्रदूषणस्य दूरीकरणाय नगरे उद्यानम् आवश्यकम्।' वाक्य में 'अव्यय' पद है-
(A) दूरीकरणाय **(B) नगरे**
(C) आवश्यकम् **(D) सम्प्रति**

व्याख्या-

दूरीकरणाय - दूर करने के लिए
नगरे - नगर में
आवश्यकम् - महत्त्वपूर्ण
सम्प्रति - इसी समय, अब

अतः सम्प्रति पद अव्यय है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

अन्य अव्यय पद-

इदानीम् - अब/इस समय
अधुना - अब
अधुनापि - आज की/अभी
अधुनैव - अभी

स्रोत- सम्भाषण-शब्दकोश - सर्वज्ञभूषण, पेज-114

22. 'जानीहि' 'ज्ञा' धातु का रूप है–
(A) लट्लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन में
(B) लङ्लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन में
(C) लोट्लकार, मध्यमपुरुष, एकवचन में
(D) लुट्लकार, उत्तमपुरुष, एकवचन में

व्याख्या-

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
		लट्लकार	
प्र.पु.	जानाति	जानीतः	जानन्ति
म.पु.	जानासि	जानीथः	जानीथ
उ.पु.	जानामि	जानीवः	जानीमः
		लोट्लकार	
प्र.पु.	जानातु	जानीताम्	जानन्तु
म.पु.	जानीहि	जानीतम्	जानीत
उ.पु.	जानानि	जानाव	जानाम
		लङ्लकार	
प्र.पु.	अजानात्	अजानीताम्	अजानन्
म.पु.	अजानाः	आजानीतम्	अजानीत
उ.पु.	अजानाम्	अजानीव	अजानीम
		लुट्लकार	
प्र.पु.	ज्ञाता	ज्ञातारौ	ज्ञातारः
म.पु.	ज्ञातासि	ज्ञातास्थः	ज्ञातास्थ
उ.पु.	ज्ञातास्मि	ज्ञातास्वः	ज्ञातास्मः

स्पष्टीकरण- 'जानीहि' यह लोट्लकार मध्यमपुरुष एकवचन का रूप है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-184

23. क्रिया में वर्तमानकालिक निरन्तरता द्योतित करने के लिए प्रयुक्त होने वाला प्रत्यय है–
(A) क्त्वा **(B) तुमुन्**
(C) क्त **(D) शतृ**

व्याख्या-

➤ **क्त्वा प्रत्यय (पूर्वकालिक क्रिया)-** मुख्य क्रिया को करने से पहले जो काम किया जाता है उसे पूर्वकालिक क्रिया कहते हैं। 'करें या करके' अर्थ में क्त्वा और ल्यप् होते हैं। क्त्वा का त्वा शेष बचता है। धातु से पहले उपसर्ग नहीं होगा तो क्त्वा होगा। यदि उपसर्ग होगा तो ल्यप् होगा। दोनों प्रत्ययान्त शब्द अव्यय होते हैं।

उदाहरण-

क्रीड् + क्त्वा = क्रीडित्वा (खेल करके)
कृ + क्त्वा = कृत्वा (करके)
ज्ञा + क्त्वा = ज्ञात्वा (जानकर)

➤ **तुमुन् प्रत्यय (उत्तरकालिक क्रिया)-** तुमुन् प्रत्यय 'के लिए' अर्थ में प्रयुक्त होता है। तुमुन् का 'तुम्' शेष रहता है। तुमुन् प्रत्ययान्त शब्द अव्यय होता है अतः रूप नहीं चलते। तुमुन् प्रत्यय निमित्त या प्रयोजन सूचित करने के लिए धातु के आगे तुम् (तुमुन् प्रत्यय) का प्रयोग होता है।

उदाहरण-

दा + तुमुन् = दातुम् (देने के लिए)
पठ् + तुमुन् = पठितुम् (पढने के लिए)
गम् + तुमुन् = गन्तुम् (जाने के लिए)

➤ **क्त प्रत्यय- (भूतकालिक कृदन्त)-** भूतकाल में (काम के पूर्णतया समाप्त हो जाने पर धातु से क्त और क्तवतु प्रत्यय होते हैं। इनमें 'क्त' में 'त' और क्तवतु में 'तवत्' शेष रहता है। क्त प्रत्यय सकर्मक धातुओं से कर्मवाच्य में तथा अकर्मक धातुओं से भाववाच्य में होता है।

क्त प्रत्ययान्त शब्दों के रूप अकारान्त शब्दों की तरह तीनों लिङ्गों में चलते हैं।

पुं.	स्त्री.	नपु.
गतः	गता	गतम्
पठितः	पठिता	पठितम्

➤ **शतृ प्रत्यय (वर्तमान कालिक कृदन्त)-**

हिन्दी के जाता हुआ, खाता हुआ, आदि अर्थों में परस्मैपदी धातुओं से शतृ (अन्) और आत्मनेपदी धातुओं से शानच् (आन्) प्रत्यय होते हैं।

➤ इन प्रत्ययों से बने शब्द विशेषणों की तरह प्रयुक्त होते हैं। अतः इनके लिङ्ग, वचन, विभक्ति अपने विशेष्य के अनुसार

होते हैं।

➤ शतृ में अन् और शानच् में आन् शेष बचता है।

उदाहरण-

	पु.	स्त्री.	नपु.
गम् + शतृ	गच्छन्	गच्छन्ती	गच्छत्
हस् + शतृ	हसन्	हसन्ती	हसत्
लिख् + शतृ	लिखन्	लिखन्ती	लिखत्
पठ् + शतृ	पठन्	पठन्ती	पठत्

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि वर्तमानकालिक क्रिया कृदन्त प्रत्यय शतृ प्रत्यय है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- संज्ञाप्रकरणम् - राममुनि पाण्डेय, पेज-117

24. 'मया रामः दृश्यते' वाक्य का वाच्य-परिवर्तन करने पर वाक्य होगा–
(A) अहं रामः पश्यामि (B) अहं रामं पश्यामि
(C) अहं रामं दर्शयामि (D) मया रामं पश्यामि

व्याख्या-

➤ वाच्य तीन प्रकार का होता है- (1) कर्तृवाच्य (2) कर्मवाच्य (3) भाववाच्य

➤ कर्तृवाच्य में कर्ता में प्रथमा, कर्म में द्वितीया और क्रिया कर्ता के अनुसार होती हैं।

➤ कर्मवाच्य में कर्म की प्रधानता होती है, कर्म के अनुसार ही क्रिया का पुरुष, विभक्ति और वचन होते हैं। कर्मवाच्य के कर्म में प्रथमा, कर्ता में तृतीया और क्रिया कर्म के अनुसार होती है।

➤ भाववाच्य के वाक्य में क्रिया की प्रधानता होती है, भाववाच्य में कर्ता में तृतीया होती है। क्रिया में प्रथमपुरुष एकवचन का प्रयोग किया जाता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त नियम के अनुसार-
मया को अहं, रामः को रामम् और दृश्यते कर्ता के अनुसार 'पश्यामि' में परिवर्तित हो जायेगा। यह कर्तृवाच्य में बनेगा- (कर्तृवाच्य) अहं रामं पश्यामि (मैं राम को देखता हूँ)। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-53

25. ''मैं मुख से बोलता हूँ'' वाक्य का अनुवाद होगा-
(A) अहं मुखं वदामि
(B) अहं मुखं वदति
(C) अहं मुखेन वदिष्यामि
(D) अहं मुखेन वदामि

व्याख्या- 'मैं मुख से बोलता हूँ' वाक्य में बोलना रूपी कार्य मुख से हो रहा है अर्थात् बोलने में मुख साधन है इसलिए 'साधकतमं करणम्' सूत्र से मुख की करण सञ्ज्ञा और 'कर्तृकरणयोस्तृतीया' सूत्र से तृतीया विभक्ति।
'मैं' यह शब्द उत्तमपुरुष एकवचन का रूप इसी के अनुसार बोलना क्रिया भी उत्तमपुरुष एकवचन की होगी। यहाँ पर बोलना क्रिया लट्लकार की है अतः इसका अनुवाद होगा **अहं मुखेन वदामि। अतः विकल्प 'D' सही है।**

26. संस्कृत-काव्यशिक्षण का उद्देश्य नहीं है–
(A) छात्रों को रसानुभूति कराना।
(B) गति, यति, लय एवं भाव के अनुसार श्लोक-पाठ करने की क्षमता का विकास करना।
(C) शब्द भण्डार में वृद्धि करना।
(D) कविता के उदात्त भावों का विकास करना।

व्याख्या-

➤ **काव्यशिक्षण के उद्देश्य-**

1. संस्कृत कविता के प्रति छात्रों में सामान्य अनुराग उत्पन्न करना।
2. गति, यति, लय एवं भाव के अनुसार श्लोक पाठ करने की योग्यता उत्पन्न करना।
3. कविता के मुख्य भावों का परिष्कार करते हुए उनमें उदात्त भावों का विकास करना।
4. कविता के अन्तर्गत शब्द योजना के आधार पर दृश्य चित्रों की उद्भावना करना।
5. संस्कृत कविता का रसास्वादन करके अपने शब्दों में उनकी व्याख्या करने की क्षमता प्रदान करना।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त उद्देश्यों में 'शब्दभण्डार में वृद्धि करना' सम्मिलित नहीं है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

27. गद्य शिक्षण में किसका विशेष महत्त्व नहीं है?
(A) अनुकरण वाचन का
(B) विचार विश्लेषण का
(C) काठिन्य निवारण का
(D) लययुक्त सस्वर वाचन का

व्याख्या-

➤ गद्यकाव्य में शिक्षक के द्वारा अनुकरणवाचन कराया जाता है और विचार विश्लेषण भी होता है। जो कठिन-कठिन शब्द हैं उनका काठिन्य निवारण शिक्षक के द्वारा होता है।

➤ लययुक्त सस्वर वाचन पद्यकाव्य में होता है न कि गद्यकाव्य में। पद्यकाव्य में छन्दों के प्रयोग के साथ लययुक्त सस्वर वाचन किया जाता है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

28. श्लोक के एक-एक पद का अर्थ करते जाना किस प्रणाली का द्योतक है?
(A) व्याख्या प्रणाली का
(B) तुलना प्रणाली का
(C) समीक्षा प्रणाली का
(D) गीत एवं नाट्य प्रणाली का

व्याख्या-

- संस्कृत शिक्षण की पद्धतियों के निम्नलिखित शीर्षक हैं- 1. व्याकरण पद्धति 2. विश्लेषणात्मक पद्धति 3. व्याख्यापद्धति 4. अनुवाद पद्धति 5. प्रत्यक्ष पद्धति 6. हरबार्टीय पद्धति 7. मूल्यांकन का दृष्टिकोण 8. भण्डारकर विधि 9. पाठ्यपुस्तक पद्धति 10. निर्बाध पद्धति 11. स्फोटवाद 12. मीमांसा विधि 13. प्राचीन एवं नवीन पद्धतियों का समन्वय
- व्याख्या पद्धति में शिक्षक एक-एक शब्द को लेकर उसका अर्थ स्पष्ट करता है।
- व्याख्या से शब्दों का अर्थ स्पष्ट हो जाता है और छात्र नये-नये शब्दों का अर्थ जानकर उनका प्रयोग सीख जाते हैं। इस प्रकार छात्रों के शब्द-भण्डार की वृद्धि होती है।
- विषय ज्ञान की दृष्टि से भी व्याख्या विधि अच्छी होती है इससे सामग्री पर अच्छा प्रकाश पड़ जाता है और छात्र विषय वस्तु को ठीक समझ लेता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि व्याख्या प्रणाली के अन्तर्गत श्लोक के एक-एक पद का अर्थ किया जाता है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

29. संस्कृत भाषा में कहानी शिक्षण करते समय शिक्षक को बचना चाहिए-
(A) चित्र या मुखौटा के प्रयोग से
(B) वार्तालाप से
(C) हाव-भाव प्रदर्शन से
(D) पुस्तक प्रयोग से

व्याख्या-

- छात्रों की कल्पनाशक्ति का विकास करना, उनकी तर्कशक्ति को विकसित करना तथा उनके चरित्र निर्माण में योग देना कथाशिक्षण के प्रमुख उद्देश्य हैं।
- उपर्युक्त उद्देश्यों की प्राप्ति तभी होती है जब कथा को उपयुक्तरीति से पढ़ाया जाए। जैसे-

(1) कथा कण्ठस्थ करके न सुनाई जाए। कण्ठस्थ करके सुनाने में स्वाभाविकता नहीं रहती। कथा को भलीभाँति समझकर अपने शब्दों में उसे सुनाना चाहिए, पद्यों को कण्ठस्थ कर लेना चाहिए।

(2) कथा-कहानी सुनाते समय पुस्तक का आश्रय यथासम्भव नहीं लेना चाहिए।

(3) अध्यापक को कथा के सन्दर्भ, उसकी पृष्ठभूमि, तत्कालीन सामाजिक परिस्थितियों, परम्पराओं एवं मान्यताओं का ज्ञान होना आवश्यक है।

(4) कथा संकोच व हिचकिचाहट से न कही जाए।

(5) यदि आवश्यक हो तो अध्यापक को यथावसर वाचिक अभिनय की ओर ध्यान देना चाहिए। उसकी मुखाकृति एवं अङ्गसञ्चालन का भी महत्त्व है।

(6) अध्यापक के कथन की भाषा सरल एवं सुबोध हो, शैली आकर्षक होनी चाहिए।

(7) कथा सुनाने में अध्यापक का दृष्टिकोण कहानी की विचारधारा के अनुसार चलना चाहिए। अध्यापक की तन्मयता, उत्सुकता तथा उत्साह कथा शिक्षण का प्राण है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि कहानी शिक्षण में अध्यापक को पुस्तक-प्रयोग से बचना चाहिए। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- संस्कृतशिक्षण - डॉ. रामशकल पाण्डेय, पृष्ठ- 237-38

30. 'फ्लैश कार्ड' शिक्षण-अधिगम सामग्री है–
(A) दृश्य-श्रव्य **(B) श्रव्य**
(C) दृश्य **(D) इनमें से कोई नहीं**

व्याख्या- शिक्षण कार्य में शिक्षण सामग्रियों का प्रयोग

1. दृश्य सहायक सामग्री
2. श्रव्य सहायक सामग्री
3. दृश्य श्रव्य सहायक सामग्री

- **दृश्य सामग्री-** इसमें वह सामग्री आती है जिसे देखकर ही शिक्षार्थी ज्ञान प्राप्त कर सकता है। इस प्रकार की सामग्री को चार्ट से दिखाया जा सकता है।
- **प्रक्षेपी दृश्य सामग्री-** फिल्म, स्ट्रिप्स, मूक चलचित्र, प्रोजेक्टर्स मैजिक लैन्टर्स, एपीस्कोप एपिडाइस्कोप, स्टीरियोस्कोप स्लाइड
- **अप्रक्षेपी-** श्यामपट्ट, मानचित्र, एटलस, चार्ट, ग्लोब, डायग्राम चित्र, रेखाचित्र नमूना मॉडल बुलेटिन-बोर्ड, फ्लेनल बोर्ड, ग्राफ्स लेपेट, फ्लैश कार्ड।
- **श्रव्यसामग्री-** यह वह सामग्री है जो कानों से सुनकर ज्ञान

प्राप्त करते हैं।

उदाहरण-

1. टेप रिकार्डर, 2. रेडियो, 3. ग्रामोफोन, 4. रिकार्ड-प्लेयर

➤ **दृश्य-श्रव्य-सामग्री-**

यह वह सामग्री होती है जिसके द्वारा सुनकर एवं देखकर ज्ञान प्राप्त किया जाता है, जो निम्न प्रकार से हैं-

1. टेलीविजन 2. वीडियो 3. कम्प्यूटर 4. चलचित्र

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि फ्लैश कार्ड दृश्य सामग्री के अन्तर्गत आता है। अतः विकल्प 'C' सही है।

उत्तरमाला

1. D	2. C	3. B	4. B	5. B	6. B	7. D	8. C	9. A	10. D	11. A	12. B
13. B	14. B	15. C	16. A	17. B	18. B	19. A	20. A	21. D	22. C	23. D	24. B
25. D	26. C	27. D	28. A	29. D	30. C						

7. UP-TET संस्कृतम् | उच्च प्राथमिक स्तर (कक्षा- 6 से 8 तक) | 2016

01. 'रामेण बाणेन हतो वाली' में 'करण' है-
(A) राम (B) बाण
(C) राम और बाण (D) वाली

व्याख्या- 'क्रियासिद्धौ प्रकृष्टोपकारकं करणसञ्ज्ञं स्यात्' अर्थात् क्रिया की सिद्धि में जो सबसे अधिक उपकारक अर्थात् सहायक होता है उसकी करण सञ्ज्ञा होती है।

➢ **रामेण बाणेन हतो वाली-** राम ने बाण से वाली को मारा। यहाँ बाण के द्वारा हनन क्रिया होती है इसलिए 'बाण' प्रकृष्ट उपकारक है, इसलिए बाण की करण सञ्ज्ञा होती है।

स्पष्टीकरण- इस प्रकार 'रामेण बाणेन हतो वाली' में बाण करण है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

स्रोत- कारकप्रकरण - राममुनि पाण्डेय, पेज-57

02. 'भीत्रार्थानां भयहेतुः' सूत्र का उदाहरण वाक्य है–
(A) रक्ष मां पापात्।
(B) वृक्षात् पत्राणि पतन्ति।
(C) असौ उपाध्यायात् अधीते।
(D) रामः पापात् जुगुप्सते।

व्याख्या-

➢ **'भीत्रार्थानां भयहेतुः'** अर्थात् जिससे डरा जाता है या जिससे रक्षा की जाती है उसमें अपादान संज्ञा होकर पञ्चमी विभक्ति होती है।

'रक्ष मां पापात्' अर्थात् पाप से मेरी रक्षा करो यहाँ पर पाप से रक्षा करने की ओर संकेत किया है इसलिए 'पाप' इस शब्द में पञ्चमी विभक्ति हुई है।

अन्य उदाहरण- सः चौरात् बिभेति (वह चोर से डरता है), पिता पुत्रं पापात् त्रायते (पिता पुत्र को पाप से बचाता है।)

➢ 'वृक्षात् पत्राणि पतन्ति' (वृक्ष से पत्ते गिरते हैं), में ध्रुवमपायेऽपादानम् से वृक्ष की अपादान सञ्ज्ञा और अपादाने पञ्चमी से पञ्चमी विभक्ति हुई है

➢ 'असौ उपाध्यायात् अधीते' (गुरु से अध्ययन करता है), में 'आख्यातोपयोगे' इस सूत्र से उपाध्याय की अपादान सञ्ज्ञा और 'अपादाने पञ्चमी' से पञ्चमी विभक्ति।

➢ रामः पापात् जुगुप्सते (राम पाप से घृणा करता है) इस वाक्य में 'जुगुप्साविरामप्रमादार्थानामुपसंख्यानम्' वार्तिक से पापात् में पञ्चमी विभक्ति हुई है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

स्रोत- अष्टाध्यायी (1.5.25)

03. करुणरस का स्थायीभाव है-
(A) उत्साह (B) रति
(C) करुणा (D) शोक

व्याख्या-

रस	स्थायीभाव	देवता
शृङ्गार	रति	विष्णु
वीररस	उत्साह	महेन्द्र
बीभत्स	जुगुप्सा	महाकाल
करुण	शोक	यम
अद्भुत	विस्मय	ब्रह्मा
हास्य	हास	प्रमथ
रौद्र	क्रोध	रुद्र
भयानक	भय	काल
शान्त	शम	श्रीनारायण

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि करुण रस का स्थायीभाव शोक है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- संस्कृतगङ्गा साहित्यम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-303

04. केवल वैदिक संस्कृत में प्रयुक्त होने वाला लकार है-
(A) लेट् (B) लिङ्
(C) लुङ् (D) ऌङ्

व्याख्या- संस्कृत में दस लकार बताये गये हैं जो इस प्रकार हैं-

1. लट्लकार - वर्तमान काल
2. लिट्लकार - अनद्यतन परोक्षभूतकाल (बहुत प्राचीन काल को सूचित करने के लिए)
3. लुट्लकार - अनद्यतन भविष्यकाल (आज के पश्चात् भविष्य काल को सूचित करने के लिए)
4. ऌट्लकार - सामान्य भविष्यत् काल
5. लेट्लकार - (संशय अर्थ में) लेट् लकार का प्रयोग वेदों में किया जाता है। लौकिक संस्कृत में नहीं।
6. लोट्लकार - प्रेरणा तथा आज्ञा अर्थ में
7. लङ्लकार - (अनद्यतन भूतकाल) अब से पहले के भूतकाल को सूचित करने के लिए
8. लिङ्लकार - इसके दो भेद हैं

(i) विधिलिङ् - विधि, निमन्त्रण, आमन्त्रण, सम्प्रश्न, प्रार्थना (चाहिए अर्थ में)
(ii) आशीर्लिङ् - आशीर्वाद अर्थ में
9. लुङ्लकार - (सामान्यभूत) सामान्यभूतकाल को सूचित करने के लिए
10. लृङ्लकार - (हेतु हेतुमद्भाव भूत) जहाँ एक क्रिया के कारण दूसरी क्रिया हो।

अतः विकल्प 'A' सही है।

स्रोत- ऋक्सूक्तसंग्रह - हरिदत्तशास्त्री, पेज-32

05. 'धा' धातु से 'क्त्वा' प्रत्यय का योग होकर शब्द बनता है–
(A) धात्वा **(B) धायित्वा**
(C) धोत्वा **(D) हित्वा**

व्याख्या-

	धातु	क्त्वा	क्त	क्तवतु
1.	धा	हित्वा	हितः	हितवान्
2.	दुह्	दुग्ध्वा	दुग्धः	दुग्धवान्
3.	दह्	दग्ध्वा	दग्धः	दग्धवान्
4.	दा	दत्त्वा	दत्तः	दत्तवान्
5.	दृश्	दृष्ट्वा	दृष्टः	दृष्टवान्
6.	प्रच्छ्	पृष्ट्वा	पृष्टः	पृष्टवान्

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि 'धा + क्त्वा' से 'हित्वा' बनता है। 'धा' के 'हि' आदेश। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-223

06. 'सेव्' धातु से 'शानच्' प्रत्यय का योग होकर शब्द बनता है-
(A) सेवामानः **(B) सेवमानः**
(C) सेवशानः **(D) सेवानः**

व्याख्या-

धातु	क्त	शानच्	तुमुन्	अनीयर्
सेव्	सेवितः	सेवमानः	सेवितुम्	सेवनीयः
स्था	स्थितः	-	स्थातुम्	स्थानीयः
कृ	कृतः	कुर्वाणः	कर्तुम्	करणीयः
शी	शयितः	शयानः	शयितुम्	शयनीयः
धा	हितः	दधानः	धातुम्	धानीयः
प्रच्छ्	पृष्टः	-	प्रष्टुम्	प्रच्छनीयः
हन्	हतः	-	हन्तुम्	हननीयः

अतः विकल्प 'B' सही है।

स्रोत- रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-224

07. उच्च प्राथमिक स्तर गद्य-शिक्षण का उद्देश्य नहीं है–
(A) छात्रों के शब्द भण्डार में वृद्धि करना।
(B) छात्रों के सूक्ति भण्डार में वृद्धि करना।
(C) छात्रों को स्पष्ट एवं शुद्ध उच्चारण में प्रशिक्षित करना।
(D) छात्रों में अभिनय-कला का विकास करना।

व्याख्या- उच्चप्राथमिक स्तर में गद्य शिक्षण का उद्देश्य है-
1. छात्रों के शब्दभण्डार में वृद्धि हो, ताकि वे नये शब्दों का अर्थ समझकर उचित प्रयोग कर सकें।
2. वे पाठगत ध्वनियों, शब्दों एवं वाक्यों का शुद्ध उच्चारण कर सकें।
3. छात्रों के सूक्ति भण्डार एवं शब्दभण्डार में वृद्धि करना।
4. वे पाठगत भावों और विचारों को ग्रहण कर सकें।
5. संस्कृत के प्रति उनमें अनुराग उत्पन्न हो सके।
6. छात्रों को अपने चरित्र-विकास में सहायता मिल सके।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'छात्रों में अभिनय कला का विकास करना' उच्च प्राथमिक स्तर गद्य शिक्षण का उद्देश्य नहीं है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

08. पहले नियम बताकर उदाहरण दिया जाता है–
(A) आगमन शिक्षण विधि में
(B) निगमन शिक्षण विधि में
(C) व्याख्यान विधि में
(D) प्रश्नोत्तर विधि में

व्याख्या-
- **निगमन शिक्षण विधि -** यह सामान्य से विशिष्ट की ओर होता है। इसमें विद्यार्थी के सामने कुछ सिद्धान्तों (नियमों) को प्रस्तुत किया जाता है उसके पश्चात् उन सिद्धान्तों का निरूपण किया जाता है। यह उच्च शिक्षा में बहुत उपयोगी है।
- **आगमन शिक्षण विधि-** यह विधि विशिष्ट से सामान्य की ओर होती है। इस विधि के अन्तर्गत छात्रों के समक्ष कुछ उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं फिर उन्हीं के माध्यम से विषयवस्तु एवं सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया जाता है। इस विधि का सर्वाधिक प्रयोग माध्यमिक स्तर पर होता है।
- **व्याख्यान विधि-** इस विधि के अन्तर्गत छात्रों के समक्ष मौखिक रूप से व्याख्यान द्वारा शिक्षण कार्य करता है। व्याख्यान को सजीव बनाने के लिए वह शिक्षण उपकरणों जैसे- मॉडल, चार्ट, रेखाचित्र, और मानचित्र इत्यादि का प्रयोग करता है।
- **प्रश्नोत्तर विधि-** इस विधि के अन्तर्गत छात्रों के समक्ष

शिक्षक अपने प्रश्नों के माध्यम से क्रिया करता है और वाद-विवाद प्रतियोगिता आदि का आयोजन होता है। छात्रों में प्रश्न-उत्तर कराया जाता है। वह प्रश्नोत्तर विधि के अन्तर्गत आता है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

09. छात्रों को उच्चारण अभ्यास कराने के लिए शिक्षक को सहायक-सामग्री प्रयोग करनी चाहिए–
(A) श्यामपट्ट का **(B) टेपरिकॉर्डर का**
(C) फ्लैशकार्ड का **(D) रेडियो का**

व्याख्या- छात्रों को उच्चारण अभ्यास कराने के लिए शिक्षक को सहायक-सामग्री के रूप में टेप रिकार्डर को प्राथमिकता देनी चाहिये।

(1) टेप रिकार्डर- टेप रिकार्डर सामाजिक अध्ययन के शिक्षण में बहुत उपादेय है। हम अपने विशिष्ट भावों को टेप-रिकार्डर में भर लें फिर जब मन चाहे अवसर पाकर उसको सुना जा सकता है। यह रेडियो की तुलना में सर्वश्रेष्ठ सहायक-सामग्री है।

(2) श्यामपट्ट- यह शिक्षा का महत्त्वपूर्ण उपकरण तो है परन्तु दुर्भाग्यवश भारत में यह उपेक्षित विद्यालय का उपकरण है। श्यामपट्ट या चाकबोर्ड आकर्षक वस्तु न होने के कारण, इसका उपयोग कम ही किया जाता है। शुद्धता, स्वच्छता तथा तीव्रता के मानक स्थापित करने में इसका महत्त्व अधिक है। परन्तु हम श्यामपट्ट को एक निश्चित समय में उपयोग में ला सकते हैं। परन्तु हम इसका मनचाहे समय पर उपयोग नहीं कर सकते।

(3) रेडियो- रेडियो शिक्षा और मनोरंजन का महत्त्वपूर्ण उपकरण है। आधुनिक शिक्षा-मनोविज्ञान में खेल द्वारा शिक्षा का महत्त्वपूर्ण स्थान है। रेडियो के कार्यक्रम निश्चित समय पर आते हैं यदि रात्रि के साढ़े आठ बजे किसी का कार्यक्रम प्रसारित होता है, तो हम यदि कहीं व्यस्त रहे तो वह कार्यक्रम नहीं सुन पायेंगे।

स्पष्टीकरण- इसलिये उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि टेप-रिकार्डर ही छात्रों को उच्चारण अभ्यास कराने के लिये शिक्षक को सहायक सामग्री के रूप में उपयोग में लानी चाहिये। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

10. संस्कृत में कथा (कहानी) शिक्षण का उद्देश्य नहीं है–
(A) छात्रों की कल्पना शक्ति का विकास करना।
(B) छात्रों को संस्कृत ध्वनि-विज्ञान से परिचित कराना।
(C) छात्रों की तर्कशक्ति को विकसित करना।
(D) छात्रों का उत्तम चरित्र-निर्माण करना।

व्याख्या- संस्कृत में कथा (कहानी) शिक्षण का उद्देश्य निम्नलिखित है-

1. छात्रों की कल्पना शक्ति का विकास करना
2. छात्रों की तर्कशक्ति को विकसित करना
3. छात्रों के चरित्र निर्माण में सहायता प्रदान करना
4. बालक हानिकारक मनोरंजन की ओर न जाकर स्वस्थ मनोरंजन की ओर उन्मुख हों।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त उद्देश्यों में 'छात्रों को संस्कृत ध्वनि विज्ञान से परिचित कराना' नहीं परिगणित है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

11. उच्च प्राथमिक स्तर पर छात्रों की परीक्षा-प्रणाली उपयुक्त होगी–
(A) केवल लिखित
(B) केवल मौखिक
(C) शास्त्रार्थ
(D) लिखित एवं मौखिक दोनों

व्याख्या-

- भाषा के चार मूल उद्देश्यों बोलना, लिखना, पढ़ना और सुनना को ध्यान में रखते हुए एवं संस्कृत भाषा की विशेषताओं की रक्षा करते हुए मूल्यांकन की कोई विधि अपनायी जानी चाहिए। संस्कृत भाषा की परीक्षा सामान्यतः दो रूपों में होनी चाहिए। (1) मौखिक परीक्षा (2) लिखित परीक्षा।

(1) मौखिक परीक्षा- द्वारा ही उच्चारण की शुद्धता, मौखिक आत्मप्रकाशन की क्षमता तथा दूसरों के विचारों को सुनकर समझने की योग्यता की जाँच हो सकती है।

- मौखिक परीक्षा प्रणाली को हम निम्नलिखित प्रकार से कर सकते हैं-

(i) श्रुतलेख
(ii) अध्यापक संस्कृत में किसी विषय पर बोले और छात्रों से उसका सारांश लिखने को कहे।
(iii) मौखिक रूप से कुछ प्रश्नों का उत्तर देने के लिए छात्रों के समक्ष प्रश्न प्रस्तुत करना।
(iv) छात्रों को संस्कृत सुनाने और उनसे उसका भाव लिखने को कहना।

(2) लिखित परीक्षा-

(i) लिखित परीक्षा में वस्तुनिष्ठ परीक्षणों का प्रयोग किया जाना चाहिए, किन्तु निबन्धात्मक परीक्षाओं का अपना पृथक् महत्त्व है।

(ii) शैली एवं पठन परीक्षा वस्तुनिष्ठ परीक्षणों द्वारा नहीं हो पाती। इनकी जाँच करने के लिए तो निबन्धात्मक परीक्षाओं का ही आश्रय लेना पड़ता है।

(iii) लिखित परीक्षा में निबन्धात्मक परीक्षाओं एवं वस्तुनिष्ठ परीक्षाओं का समन्वित रूप ही रहना चाहिये।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त उल्लेखों से स्पष्ट है कि उच्च प्राथमिक स्तर पर परीक्षा प्रणाली लिखित और मौखिक दोनों करायी जानी चाहिये। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

12. राजा 'शूद्रक' के प्रधान अमात्य का नाम था–
(A) वैशम्पायन **(B) कुमारपालित**
(C) पुण्डरीक **(D) चन्द्रापीड**

व्याख्या-
- **कुमारपालित-** कुमारपालित राजा शूद्रक के प्रधान अमात्य थे।
- **वैशम्पायन-** बाणभट्ट विरचित कादम्बरीकथा का महत्त्वपूर्ण पात्र है। वैशम्पायन पूर्व जन्म में पुण्डरीक था। इस जन्म में वह राजा तारापीड के मन्त्री शुकनास का पुत्र और राजकुमार चन्द्रापीड का अभिन्न मित्र है।
- **पुण्डरीक-** पुण्डरीक दिव्यलोक में निवास करने वाले महामुनि श्वेतकेतु को देखकर आकृष्ट हुई लक्ष्मी का मानस-पुत्र है।
- **चन्द्रापीड-** चन्द्रापीड कादम्बरी कथा का प्रमुख नायक है।
- कादम्बरी कथा में तीन जन्मों का वर्णन है चन्द्रापीड के तीन जन्मों का नाम- चन्द्रमा, चन्द्रापीड तथा शूद्रक।

स्रोत- कादम्बरीकथामुख - समीरशर्मा, पेज-72

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि शूद्रक का प्रधान अमात्य 'कुमारपालित' था। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

13. 'काव्यादर्श' के रचयिता हैं-
(A) भास **(B) भारवि**
(C) शूद्रक **(D) दण्डी**

व्याख्या-

ग्रन्थ		ग्रन्थकार
काव्यादर्श	-	दण्डी
काव्यप्रकाश	-	मम्मट
ध्वन्यालोक	-	आनन्दवर्धन
साहित्यदर्पण	-	विश्वनाथ
रसगंगाधर	-	पण्डितराज जगन्नाथ

- महाकवि भारवि द्वारा रचित केवल एक ही ग्रन्थ किरातार्जुनीयम् है जिसमें 18 सर्ग हैं। 'भारवेरर्थगौरवम्' भारवि के लिए प्रसिद्ध उक्ति है।
- महाकवि शूद्रक प्रणीत मृच्छकटिकम् एक प्रकरण ग्रन्थ है जिसमें दस अङ्क हैं।
- महाकवि भास के तेरह नाटक प्रसिद्ध हैं जिन्हें चार भागों में बाँटा गया है-
- **उदयन कथामूलक-** प्रतिज्ञायौगन्धरायण, स्वप्नवासवदत्तम्
- **महाभारतमूलक-** ऊरुभंग, दूतवाक्य, पञ्चरात्रम्, बालचरित, दूतघटोत्कच, कर्णभार, मध्यमव्यायोग।
- **रामायणमूलक-** प्रतिमानाटक, अभिषेकनाटकम्
- **कल्पनामूलक-** अविमारक, चारुदत्त।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि काव्यादर्श के रचयिता 'दण्डी' हैं। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- संस्कृतगङ्गा साहित्यम् - सर्वज्ञभूषण, पेज-300

14. 'उत्तररामचरितम्' में किस काल के समाज और संस्कृति का वर्णन है?
(A) महाभारतकालीन **(B) पुराणकालीन**
(C) रामायणकालीन **(D) कालिदासकालीन**

व्याख्या-
- उत्तररामचरितम् भवभूति द्वारा रचित एक नाटक है जिसमें सात अङ्क हैं। इसके नायक श्रीराम तथा नायिका सीता एवं अंगी रस करुण है। उत्तररामचरितम् रामायण के उत्तरकाण्ड पर आधारित है। इसमें सीता के स्वीकार किए जाने का वर्णन है। उत्तररामचरितम् में रामायणकालीन समाज और संस्कृति का वर्णन है।
- किरातार्जुनीयम्, नैषधीयचरितम्, शिशुपालवधम् आदि महाकाव्यों में महाभारतकालीन समाज और संस्कृति का वर्णन है। महाभारत वेदव्यास की रचना है जिसमें 18 पर्व हैं।
- पुराणों की संख्या 18 है- विष्णुपुराण, भागवतपुराण, अग्निपुराण, मत्स्यपुराण, मार्कण्डेयपुराण, भविष्यपुराण, ब्रह्माण्डपुराण, ब्रह्मवैवर्तपुराण, ब्रह्मपुराण, वामनपुराण, वराहपुराण, वायुपुराण, नारदपुराण, पद्मपुराण, लिङ्गपुराण, गरुडपुराण, कूर्मपुराण, स्कन्दपुराण।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि उत्तररामचरितम् में रामायण कालीन समाज और संस्कृति का वर्णन है। **अतः विकल्प 'C' सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशङ्कर शर्मा ऋषि, पेज-528

15. निम्नाङ्कित में से कौन 'भवभूति' की रचना नहीं है?
(A) महावीरचरितम् **(B) नैषधीयचरितम्**
(C) मालतीमाधवम् **(D) उत्तररामचरितम्**

माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड द्वारा आयोजित

प्रशिक्षित स्नातकशिक्षक-चयनपरीक्षा

TGT

संस्कृतम्

व्याख्यात्मक-हलप्रश्नपत्रम्

लेखक
सर्वज्ञभूषण

सम्पादक
रमाकान्त मौर्य

प्रकाशक
संस्कृतगङ्गा
59, मोरी, दारागंज, इलाहाबाद
मो. 9839852033
7800138404

प्रकाशन-सहयोग
युनिवर्सल बुक्स
1519, अल्लापुर, इलाहाबाद
☎: 0532-2503638
मो. 9453460552

* **प्रकाशनाधिकारिणी संस्था**

संस्कृतगङ्गा (पञ्जीकृत)
59, मोरी, दारागञ्ज, इलाहाबाद
(कोतवाली दारागञ्ज के आगे, गङ्गाकिनारे संकटमोचन छोटे हनुमान मन्दिर के पास), Mb. : 9839852033
email-Sanskritganga@gmail.com

* पुस्तकें डाक द्वारा भी आर्डर कर सकते हैं–

Mob. : 7800138404

* **प्रकाशक**

युनिवर्सल बुक
1519 अल्लापुर, इलाहाबाद
☎ : 0532-2503638

ISBN : 978-81-932244-7-2

* **मुख्यवितरक**

राजू पुस्तक केन्द्र
अल्लापुर, इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश)
मो० 9453460552

* **अक्षर संयोजक- संस्कृतगङ्गा, दारागंज, इला.**

* प्रथम संस्करण – 15 अगस्त - 2014
* षष्ठ संशोधित संस्करण - मई- 2018
* **मूल्य – ` 140/-** (एक सौ चालीस रुपये मात्र)

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

षष्ठसंस्करणे संस्कृतगङ्गा उवाच

प्रियसंस्कृतमित्राणि!

नमः संस्कृताय

- संस्कृतगङ्गा, दारागञ्ज, इलाहाबाद की यह षष्ठ प्रस्तुति '**TGT परीक्षा व्याख्यात्मक हलप्रश्नपत्र**' के रूप में आपकी सेवा में समर्पित है।
- यह पुस्तक उ0 प्र0 माध्यमिक शिक्षा सेवा चयनबोर्ड, इलाहाबाद द्वारा आयोजित सन् 1999 से लेकर अब तक के प्रशिक्षित स्नातकशिक्षक चयनपरीक्षा (T.G.T.) संस्कृत का व्याख्यात्मक हलप्रश्नपत्र है।
- यद्यपि बाजारों में कुछ और हलप्रश्नपत्र आपको मिलेंगे किन्तु उनमें मुद्रणदोष तथा यत्र कुत्रापि उत्तर भी गलत हो गये हैं। अतः उन सभी मुद्रणदोषों को दूर करके सही और प्रामाणिक उत्तर देने का प्रयास किया गया है, क्योंकि संस्कृत में तो एक हलन्त, विसर्ग और अनुस्वार की गलती भी अर्थ का अनर्थ कर सकती है।
- यहाँ सभी प्रश्नों के चारों विकल्पों पर व्याख्यान किया गया है। चार विकल्पों में से जो उत्तर सही है वह क्यों सही है? और जो तीन गलत हैं, वह क्यों गलत हैं? इसकी वैज्ञानिक विवेचना ही इस हलप्रश्नपत्र का वैशिष्ट्य है।
- सम्पादकमण्डल के सभी सदस्यों के द्वारा यह पूरा प्रयास किया गया है कि इसमें मुद्रणदोष न हों, तथा सभी प्रश्नों का सही और प्रामाणिक विवेचन किया जाय, फिर भी प्रमादवशात् कुत्रचित् दोषदर्शन हों तो कृपया हमें अवश्य सूचित करें। हमें मिस्डकॉल करें या कॉल करें– **09839852033**
- अन्त में उन सभी संस्कृतमित्रों को हार्दिक धन्यवाद, जिन्होंने इस पुस्तक के प्रूफ संशोधन में मनसा, वाचा, कर्मणा संस्कृतगङ्गा का सहयोग किया। विशेषकर – **मनीष शर्मा, सत्यप्रकाश साहू, अम्बिकेश सिंह, रागिनी शुक्ला, सुमन सिंह।**

- सर्वज्ञभूषणः

TGT संस्कृत पाठ्यक्रम

संस्कृतसाहित्य–गद्य, पद्य एवं नाटक–अधोलिखित ग्रन्थों के निर्धारित अंशों के आधार पर शब्दार्थ, सूक्तियाँ, हिन्दी रूपान्तर, अन्वय, सुभाषित, शब्दों की व्याकरणात्मक टिप्पणी, पात्रों का चरित्र-चित्रण तथा ग्रन्थकर्ता का परिचय– इनसे सम्बद्ध बहुविकल्पीय प्रश्न परीक्षा में प्रष्टव्य होंगे।

- कादम्बरी (शुकनासोपदेश)
- शिवराजविजयम् (प्रथम निःश्वास)
- किरातार्जुनीयम् (प्रथमसर्ग)
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (चतुर्थ अङ्क)
- उत्तररामचरितम् (तृतीय अङ्क)
- मेघदूतम् (सम्पूर्ण)
- नीतिशतकम् (सम्पूर्ण)

व्याकरण– डॉ० बाबूराम सक्सेना कृत ''संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका'' के आधार पर संज्ञाप्रकरण, सन्धि, समास, कारक, प्रत्याहारों का ज्ञान एवं प्रत्ययों का सामान्य परिचय।

शब्दरूप– अकारान्त, इकारान्त, उकारान्त, ऋकारान्त पुंलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग एवं नपुंसकलिङ्ग शब्दों का रूप।

सर्वनामरूप– सर्व, यत्, तद्, किम्, युष्मद्, अस्मद्, इदम्, अदस् सर्वनामों के रूप।

धातुरूप– भू, गम्, पठ्, पा, भी, श्रु, लभ्, हन्, दुह्, दा, दिव्, जन्, तुद्, प्रच्छ्, ब्रू तथा चुर् धातुओं के लट्, लोट्, लृट्, लङ् और विधिलिङ् इन पाँचों लकारों में रूप।

संस्कृतसंख्या– एक से सौ तक की संख्याओं के संस्कृत-शब्दों का ज्ञान। पूरणी संख्याओं का ज्ञान

अनुवाद एवं निबन्ध–हिन्दी वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद। संस्कृत में पत्रलेखन एवं निबन्ध, संस्कृत सूक्तियों का ज्ञान, वाच्यपरिवर्तन, अशुद्धि परिमार्जन।

प्रशिक्षणात्मक-संस्कृत– संस्कृत प्रशिक्षण की दृष्टि से व्याकरण, अनुवाद, गद्य, पद्य आदि की पाठन विधियों का सामान्य परिचय।

संस्कृतसाहित्य का इतिहास– संस्कृत कवियों का सामान्य परिचय, प्रसिद्ध रचनायें एवं रचनाकार

अनुक्रमणिका

पेज

निर्धारित समय : 2 घण्टे] **[पूर्णांक : 425 अंक**

आवश्यक निर्देश

1. अभ्यर्थी अपना अनुक्रमाङ्क केवल आवरण पृष्ठ तथा प्रश्न-पुस्तिका के साथ दिए गए उत्तर-पत्रक के निर्दिष्ट स्थान पर लिखेंगे, अन्यत्र कहीं नहीं।
2. प्रश्न-पुस्तिका मिलने के उपरान्त अभ्यर्थी को तुरन्त सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि पुस्तिका में पूरे पृष्ठ हैं तथा कोई प्रश्न छूट तो नहीं गया है। यदि कोई विसंगति है, तो प्रश्न-पुस्तिका मिलने के 10 मिनट के भीतर ही कक्ष-निरीक्षक को सूचित करना चाहिए तथा त्रुटिरहित दूसरी पुस्तिका प्राप्त कर लेनी चाहिए।
3. प्रश्न-पुस्तिका में किसी विसंगति के अतिरिक्त, किसी भी स्थिति में, अभ्यर्थी को कोई दूसरी प्रश्न-पुस्तिका नहीं दी जाएगी। अभ्यर्थी को प्रश्न-पुस्तिका को उपयोग में लाने और उत्तर-पत्रक को पूरित करने में सावधानी बरतनी चाहिए।
4. अभ्यर्थी को **125 प्रश्नों** के उत्तर देने हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। गलत उत्तर के लिए **नकारात्मक अंक नहीं** दिये जायेंगे।
5. उत्तर-पत्रक को भरने के पूर्व अभ्यर्थी उत्तर-पत्रक पर मुद्रित महत्वपूर्ण निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
6. अभ्यर्थी उत्तर-पत्रक में उस प्रश्न संख्या के सामने दिए गए चार विकल्पों में से एक सही विकल्प को उत्तर पत्रक में दिए गए निर्देशानुसार भरे। केवल उत्तर-पत्रक का ही मूल्यांकन होगा।
7. किसी भी परिस्थिति में प्रश्न-पुस्तिका का कोई भी कागज अलग नहीं करना है।
6. अभ्यर्थी परीक्षा भवन में प्रवेशपत्र के अतिरिक्त सादा या लिखा कोई अन्य कागज नहीं लायेंगे। यदि कोई अभ्यर्थी कोई अतिरिक्त कागज, नोटबुक, पुस्तक, कैलकुलेटर, स्लाइड, रूल, मोबाइल फोन आदि अपने साथ परीक्षाभवन में रखे पाया जाता है, तो वह अनुचित साधन-प्रयोग के अन्तर्गत दण्डित किया जा सकता है।
9. प्रश्न-पुस्तिका के अन्त में रफ-कार्य हेतु लगे कागज का प्रयोग रफ-कार्य हेतु किया जा सकता है।
10. केवल काला/नीला बाल पेन उत्तर भरने के लिए प्रयोग करें।

नोट– सभी प्रश्नपत्रों के पूर्व में यही आवश्यकनिर्देश रहता है, अतः इसकी पुनरावृत्ति अगले प्रश्नपत्रों में नहीं की जायेगी।

सन्दर्भग्रन्थ सूची

1. कादम्बरी (शुकनासोपदेश) – तारिणीश झा
2. शिवराजविजयम् (प्रथम निःश्वास) – रमाशंकर मिश्र
3. किरातार्जुनीयम् (प्रथमसर्ग) – रामसेवक दुबे
4. अभिज्ञानशाकुन्तलम् – कपिलदेव द्विवेदी
5. उत्तररामचरितम् – कपिलदेव द्विवेदी
6. मेघदूतम् (सम्पूर्ण) – विजेन्द्रकुमार शर्मा
7. नीतिशतकम् (सम्पूर्ण) – तारिणीश झा
8. अष्टाध्यायी (सूत्रपाठ) – गोपालदत्त पाण्डेय
9. रूपचन्द्रिका – चौखम्भा, वाराणसी
10. बृहद् अनुवाद चन्द्रिका – चक्रधर नौटियाल
11. रचनानुवादकौमुदी – कपिलदेव द्विवेदी
12. संस्कृतसाहित्य का इतिहास – कपिलदेव द्विवेदी
13. संस्कृतव्याकरणप्रवेशिका – बाबूराम सक्सेना
14. लघुसिद्धान्तकौमुदी – गोविन्दाचार्य

प्रशिक्षित-स्नातकशिक्षक-चयनपरीक्षा (TGT)–1999

1. निम्नलिखित में शुद्ध वाक्य कौन-सा है?
(A) ग्रामस्य बहिः विद्यालयोऽस्ति।
(B) ग्रामे बहिः विद्यालयोऽस्ति।
(C) ग्रामात् बहिः विद्यालयोऽस्ति।
(D) ग्रामं बहिः विद्यालयोऽस्ति।

व्याख्या–
(A) 'दूरान्तिकार्थैः षष्ठ्यन्यतरस्याम्' (2/3/34) सूत्र से निकट शब्द के योग में ग्राम में 'षष्ठी विभक्ति' का प्रयोग होगा। यथा–ग्रामस्य निकटं विद्यालयोऽस्ति।
(B) 'सप्तम्यधिकरणे च' (2/3/36) सूत्र से ग्राम में सप्तमी विभक्ति का प्रयोग होगा। यथा–ग्रामे विद्यालयोऽस्ति।
(C) 'अपपरिबहिरञ्चवः पञ्चम्या' (2/1/12) सूत्र से अप, परि, बहिस् का पञ्चम्यन्त पद के साथ वैकल्पिक समास का विधान है, इसलिए 'बहिः' के योग में पञ्चमी विभक्ति का प्रयोग होगा। यथा–**ग्रामात् बहिः विद्यालयोऽस्ति।** अतः विकल्प (C) सही है।
(D) 'अभितः-परितः-समया-निकषा-हा-प्रतियोगेऽपि'–वार्तिक से 'अभितः' के योग में ग्राम में द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होगा यथा–ग्रामम् अभितः विद्यालयोऽस्ति।

2. निम्नलिखित में शुद्ध वाक्य के क्रमाङ्क का निर्देश कीजिए?
(A) कृष्णस्य उभयतः गोपालाः सन्ति।
(B) कृष्णं उभयतः गोपालाः सन्ति।
(C) कृष्णेन उभयतः गोपालाः सन्ति।
(D) कृष्णात् उभयतः गोपालाः सन्ति।

व्याख्या–
(A) 'कर्तृकर्मणोः कृति' (2/3/65) सूत्र से कृष्ण में षष्ठी विभक्ति का विधान होगा यथा–कृष्णस्य कृतिः।
(B) "उभसर्वतसोः कार्या धिगुपर्यादिषु त्रिषु। द्वितीयाम्रेडितान्तेषु ततोऽन्यत्रापि दृश्यते।।" वार्तिक से 'उभयतः' के योग में कृष्ण में द्वितीया विभक्ति का विधान हुआ है। यथा–**कृष्णं उभयतः गोपालाः सन्ति।**
(C) 'सहयुक्तेऽप्रधाने' (2/3/19) सूत्र से कृष्ण में तृतीया विभक्ति का विधान होगा।
यथा–कृष्णेन सह गोपालः आगतः।
(D) 'आरात्' शब्द के योग में पञ्चमी विभक्ति का प्रयोग होता है। यथा–कृष्णात् आरात् गोपालाः सन्ति।
अतः उपर्युक्त विकल्प (B) सही है।

3. 'गां दोग्धि पयः' 'बलिं भिक्षते वसुधाम्।' उपर्युक्त वाक्यों में क्रमशः 'गाम्' और 'बलिम्' में कर्मकारक द्वितीया विभक्ति का विधायक सूत्र कौन-सा है?
(A) अधिशीङ्स्थासां कर्म
(B) उपान्वध्याङ्वसः
(C) अकथितं च (दुह्याच्पच्दण्ड् .....)
(D) अभिनिविशश्च

व्याख्या–
(A) 'अधिशीङ्स्थासां कर्म' (1/4/46) सूत्र से शीङ्, स्था, और आस् धातुओं के पहले 'अधि' उपसर्ग लगा हो तो क्रिया के आधार की कर्मसंज्ञा होगी।
यथा–हरिः वैकुण्ठम् अधितिष्ठति।
(B) 'उपान्वध्याङ्वसः' (1/4/48) सूत्र से वस् धातु के पूर्व उप, अनु, अधि और आङ् में से कोई उपसर्ग लगा हो तो क्रिया के आधार की कर्मसंज्ञा होगी। यथा– हरिः वैकुण्ठम् उपवसति अनुवसति आवसति वा।
(C) **'अकथितं च'** (1/4/51) सूत्र से अपादानादिकारक की अविवक्षा में 'गाम्' और 'बलिम्' में कर्मकारक द्वितीया विभक्ति का प्रयोग हुआ है। यथा–
(i) गां दोग्धि पयः। (ii) बलिं भिक्षते वसुधाम् (दुह्याच्पच्........आदि इस कारिका में सोलह द्विकर्मकधातुओं की गणना है।) अतः विकल्प (C) सही है।
(D) 'अभिनिविशश्च' (1/4/47) सूत्र से विश् धातु के पूर्व 'अभि' और 'नि' उपसर्ग क्रमशः लगे हों तो क्रिया के आधार की कर्मसंज्ञा होगी।
यथा– सः सन्मार्गम् अभिनिविशते।

4. नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलम्, और वषट् शब्दों के योग में कौन-सी विभक्ति होती है?
(A) द्वितीया विभक्ति (B) तृतीया विभक्ति
(C) चतुर्थी विभक्ति (D) पञ्चमी विभक्ति

व्याख्या–
(A) 'अन्तरान्तरेण युक्ते' (2/3/4) सूत्र से 'अन्तरा' और 'अन्तरेण' शब्दों के योग में द्वितीया होगी।
(B) 'प्रकृत्यादिभ्य उपसंख्यानम्' वार्तिक से प्रकृति, सम, सुख, दुःख आदि शब्दों के योग में तृतीया होगी।
(C) 'नमः-स्वस्तिस्वाहास्वधाऽलंवषड्योगाच्च' (2/3/16) सूत्र से नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलम्, वषड् शब्दों के योग में **चतुर्थी विभक्ति** होती है।

1. (C) 2. (B) 3. (C) 4. (C)

(D) 'अन्यारादितरर्तेदिक्छब्दाञ्चूत्तरपदाजाहियुक्ते' (2/3/29) सूत्र से अन्य, आरात्, इतर, ऋते, दिक् शब्द, अञ्चूत्तरपद शब्द आच्-प्रत्ययान्त, आहि-प्रत्ययान्त शब्दों के योग में पञ्चमी होती है।
अतः विकल्प (C) सही है।

5. निम्नलिखित में कौन-सा वाक्य शुद्ध है?
A. कविषु कालिदासः श्रेष्ठः।
B. कवीनां कालिदासः श्रेष्ठः।
C. कविभ्यः कालिदास श्रेष्ठः।
D. कविभिः कालिदासः श्रेष्ठः।
(A) केवल A (B) केवल B
(C) केवल C (D) A और B दोनों

व्याख्या– 'यतश्च निर्धारणम्' (2/3/41) सूत्र से किसी समुदाय से एक को पृथक् करना निर्धारण कहलाता है जिससे निर्धारण होता है उसमें **षष्ठी और सप्तमी विभक्ति** प्रयुक्त होती है। यथा– (i) कवीनां कालिदासः श्रेष्ठः।
(ii) कविषु कालिदासः श्रेष्ठः। अतः विकल्प (D) सही है।

6. निम्नलिखित में शुद्ध विभक्ति का प्रयोग किस वाक्य में है?
(A) मयि मोदकं रोचते (B) माम् मोदकं रोचते
(C) मया मोदक रोचते (D) मह्यं मोदकं रोचते

व्याख्या–
(A) 'साध्वसाधुप्रयोगे च' वार्तिक से साधु एवं असाधु दोनों शब्दों के प्रयोग में सप्तमी विभक्ति का प्रयोग होगा। यथा–त्वं मयि साधुः असि।
(B) 'अकथितं च' (1/4/51) सूत्र से अपादानादि की अविवक्षा में कर्मसंज्ञा होकर द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होगा। यथा– माणवकं धर्मं ब्रूते।
(C) 'सहयुक्तेऽप्रधाने' (2/3/19) सूत्र से 'सह' के योग में तृतीया होगी। यथा–सः मया सह गच्छति।
(D) 'रुच्यर्थानां प्रीयमाणः' (1/4/33) रुच्यर्थ धातुओं के योग में प्रीयमाण की सम्प्रदानसंज्ञा होकर ''चतुर्थी सम्प्रदाने'' (2/3/13) सूत्र से **चतुर्थी विभक्ति** का प्रयोग हुआ है। यथा–मह्यं मोदकं रोचते।
अतः विकल्प (D) सही है।

7. निम्नलिखित में शुद्ध है?
(A) मातरं स्मरति (B) मातुः स्मरति
(C) मातरि स्मरति (D) मात्रा स्मरति

व्याख्या–
(A) 'कर्मणि द्वितीया' (2/3/2) सूत्र से माता में द्वितीया विभक्ति होगी। यथा–सः मातरं पश्यति।
(B) 'अधीगर्थदयेशां कर्मणि' (2/3/52) 'अधि' उपसर्ग पूर्वक इक् स्मरणे धातु के अर्थवाली धातुओं के कर्म में सम्बन्ध मात्र की विवक्षा में **षष्ठी विभक्ति** का प्रयोग हुआ है। यथा–**सः मातुः स्मरति।** अतः विकल्प (B) सही है।
(C) 'साधुनिपुणाभ्यामर्चायां सप्तम्यप्रतेः' (2/3/43) अर्च (सत्कार, प्रशंसा, पूजा) अर्थ में 'साधु' और 'निपुण' शब्दों के योग में सप्तमी होगी यथा–
(i) मातरि साधुः, (ii) मातरि निपुणः
(D) 'संज्ञोऽन्यतरस्यां कर्मणि' (2/3/22) सूत्र से 'सम्' उपसर्ग-पूर्वक 'ज्ञा' धातु के अनभिहित कर्म में विकल्प से तृतीया विभक्ति होगी। यथा–सः मात्रा सञ्जानीते।
सः मातरं सञ्ज्ञानीते।

8. कृते के साथ विभक्ति प्रयोग होती है?
(A) तृतीया (B) चतुर्थी
(C) पञ्चमी (D) षष्ठी

व्याख्या–
A. 'पृथग्विनानानाभिस्तृतीयाऽन्यतरस्याम्' (2/3/32) सूत्र से पृथक्, विना, नाना, अव्यय पदो के योग में द्वितीया, तृतीया और पञ्चमी विभक्ति होती है।
B. 'क्रुधद्रुहेर्ष्याऽसूयार्थानां यं प्रति कोपः' (1/4/37) सूत्र से क्रुध्, द्रुह्, ईर्ष्य्, असूय-धातुओं के प्रयोग में चतुर्थी विभक्ति होती है।
C. 'दूरान्तिकार्थेभ्यो द्वितीया च' (2/3/35) सूत्र से दूर तथा अन्तिक अर्थ वाले शब्दों से पञ्चमी, द्वितीया और तृतीया विभक्ति होती है।
D. 'कर्तृकर्मणोः कृति' (2/3/65) सूत्र से कृत् प्रत्ययान्त शब्दों के योग में अनभिहितकर्ता और कर्म में **षष्ठी विभक्ति** होती है। अतः विकल्प `D' सही है।

9. 'धिक्' के योग में कौन-सी विभक्ति होती है–
(A) षष्ठी (B) पञ्चमी
(C) तृतीया (D) द्वितीया

व्याख्या– A. 'षष्ठी चानादरे' (2/3/38) सूत्र से अनादर अर्थ में षष्ठी और सप्तमी विभक्ति होती है।
यथा– रुदति रुदतः वा प्राव्राजीत्
B. 'भीत्रार्थानां भयहेतुः' (1/4/25) सूत्र से भय अर्थवाली और रक्षा अर्थवाली धातुओं के प्रयोग में भय के हेतु में पञ्चमी होती है। यथा– चोरात् बिभेति।

5. (D) 6. (D) 7. (B) 8. (D) 9. (D)

C. 'हेतौ' (2/3/23) सूत्र से हेतु शब्द के वाची शब्दों में तृतीया होती है। जैसे–अध्ययनेन वसति।

D. उभयतः, सर्वतः, धिक्, उपर्युपरि, अध्यधि, अधोऽधः इन अव्ययपदों के योग में **द्वितीया विभक्ति** होती है। जैसे–धिक् कृष्णाभक्तम्। अतः विकल्प `D' सही है। (विस्तृत व्याख्या के लिए प्रश्न संख्या-2 देखें)

10. शरीर के किसी अङ्ग के विकार में कौन-सी विभक्ति होती है?

(A) द्वितीया (B) चतुर्थी

(C) तृतीया (D) षष्ठी

व्याख्या–

A. 'अनुर्लक्षणे' (1/4/84) सूत्र से लक्षण द्योतित होने पर 'अनु' शब्द की कर्मप्रवचनीय संज्ञा होकर 'कर्मप्रवचनीययुक्ते द्वितीया' (2/3/8) सूत्र से द्वितीया विभक्ति होती है। यथा–पर्जन्यो जपम् अनु प्रावर्षत्!

B. 'हितयोगे च' वार्तिक से 'हित' शब्द के योग में चतुर्थी होगी। यथा–ब्राह्मणाय हितम्।

C. 'येनाङ्गविकारः' (2/3/20) सूत्र से जिस अङ्ग में विकार हो, उसमें **तृतीयाविभक्ति** होती है। यथा–सः अक्ष्णा काणः अस्ति! अतः विकल्प `C' सही है।

D. 'षष्ठी हेतुप्रयोगे' (2/3/26) सूत्र से 'हेतु' शब्द में षष्ठी विभक्ति का विधान होता है। यथा–सः अन्नस्य हेतोः वसति!

11. 'स्वस्ति' के योग में कौन-सी विभक्ति होती है?

(A) चतुर्थी (B) पञ्चमी

(C) षष्ठी (D) सप्तमी

व्याख्या–

A. 'स्वस्ति' के योग में **चतुर्थी विभक्ति** का विधान होता है। यथा–प्रजाभ्यः स्वस्ति (विस्तृत व्याख्या के लिए प्रश्न संख्या-4 देखें)

B. 'अपादाने पञ्चमी' (2/3/28) अपादान में पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा–ग्रामात् आयाति।

C. 'षष्ठी शेषे' (2/3/50) सूत्र से सम्बन्ध मात्र में षष्ठी विभक्ति होगी। यथा–राज्ञः पुरुषः।

D. 'निमित्तात्कर्मयोगे' वार्तिक से निमित्तवाची शब्दों में सप्तमी विभक्ति होती है। यथा–चर्मणि द्वीपिनं हन्ति। अतः विकल्प `A' सही है।

12. 'जटाभिः तापसः' में तृतीयाविभक्ति विधायक सूत्र है?

(A) अपवर्गे तृतीया (B) दिवः कर्म च

(C) हेतौ (D) इत्थम्भूतलक्षणे

व्याख्या–

A. 'अपवर्गे तृतीया' (2/3/6) सूत्र से–क्रोशेन अनुवाकोऽधीतः।

B. 'दिवः कर्म च' (1/4/43) सूत्र से–(i) अक्षैः दीव्यति। (ii) अक्षान् दीव्यति।

C. 'हेतौ' (2/3/23) सूत्र से –(i) दण्डेन घटः। (ii) पुण्येन दृष्टः हरिः

D. **'इत्थम्भूतलक्षणे'** (2/3/21) सूत्र से–जटाभिः तापसः। अतः विकल्प `D' सही है।

13. संस्कृत व्याकरण की दृष्टि से शुद्ध रूप है?

(A) उपरोक्त (B) उर्पयुक्त

(C) अपरोक्त (D) उपर्युक्त

व्याख्या– * संस्कृत व्याकरण की दृष्टि से उपर्युक्त शब्द शुद्ध है। यहाँ **उपरि+उक्त = उपर्युक्त** में यण्सन्धि होगी। शेष तीनों विकल्प वर्तनी दोष से युक्त हैं।
* 'उपरि' अव्यय शब्द है।
अतः विकल्प `D' सही है।

14. निम्नलिखित में कौन-सा शुद्ध है?

(A) महानता (B) महान्ता

(C) महत्ता (D) महनता

व्याख्या–

'तस्य भावस्त्वतलौ' (5/1/119) सूत्र से 'महत्' प्रातिपदिक से 'तल्' प्रत्यय करने पर स्त्रीलिङ्ग में 'महत्ता' रूप सिद्ध होगा। 'महान्' यह प्रथमान्त रूप है, इससे 'तल्' प्रत्यय का विधान नही होगा, अतः 'महानता' अशुद्ध है। इसलिए विकल्प `C' सही है।

15. निम्नलिखित में शुद्ध वाक्य कौन-सा है?

(A) गुरुः शिष्याय क्रुध्यति।

(B) गुरुः शिष्यम् क्रुध्यति।

(C) गुरुः शिष्ये क्रुध्यति।

(D) गुरुः शिष्यस्य क्रुध्यति।

व्याख्या– 'क्रुधद्रुहेर्ष्याऽसूयार्थानां यं प्रति कोपः' (1/4/37) सूत्र से क्रुध्, द्रुह्, ईर्ष्य्, असूय धातुओं के योग में जिस पर क्रोध किया जाय उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है।
यथा–गुरुः शिष्याय क्रुध्यति।
अतः विकल्प `A' सही है।

10. (C) 11. (A) 12. (D) 13. (D) 14. (C) 15. (A)

16. 'रमेश मेरा मित्र है' का संस्कृत में शुद्ध अनुवाद कौन-सा है?
(A) रमेशः मम मित्रम् अस्ति
(B) रमेशः मया मित्रम् अस्ति
(C) रमेशः मम् मित्रं अस्ति
(D) रमेशः मह्यं मित्रं असि।

व्याख्या– * शुद्ध अनुवाद–रमेशः मम मित्रम् अस्ति।
* 'मित्र' शब्द नित्य नपुंसकलिङ्ग शब्द है।
अतः विकल्प `A' सही है।

17. अधोलिखित में कौन-सा वाक्य अशुद्ध है?
(A) अचिराय देवदत्तो गमिष्यति
(B) अचिरे देवदत्तो गमिष्यति
(C) अचिरात् देवदत्तो गमिष्यति
(D) अचिरेण देवदत्तो गमिष्यति

व्याख्या– अचिरेण, अचिराय, अचिरात्–ये सभी 'शीघ्र' अर्थवाची अव्यय पद हैं, जबकि 'अचिरे' कोई अव्यय नहीं है, अतः विकल्प B अशुद्ध वाक्य है। इसीलिए इसका उत्तर `B' सही है।

18. 'गङ्गा हिमालय से निकलती है' का संस्कृत अनुवाद है–
(A) गङ्गा हिमालयेन निःसरति
(B) गङ्गा हिमालयात् निःसरति
(C) गङ्गा हिमालयस्य निःसरति
(D) गङ्गा हिमालयात निसरत्

व्याख्या– 'भुवः प्रभवः' (1/4/31) सूत्र से कर्ता के प्रकट होने का जो प्रथमस्थान होता है। वह 'अपादान' संज्ञक होगा और ''अपादाने पञ्चमी'' सूत्र से उसमें पञ्चमी विभक्ति का प्रयोग होता है यथा–गङ्गा हिमालयात् निःसरति। यहाँ 'गङ्गा' कर्तृपद है और 'हिमालय' अपादान है।
अतः विकल्प `B' सही है।

19. 'वाराणसी भारत का प्रमुख धार्मिक नगर है'–इसका अनुवाद है?
(A) वाराणसी भारतस्य प्रमुखं धार्मिकनगरम् अस्ति।
(B) वाराणसी भारतस्य प्रमुखः धार्मिकनगरः अस्ति।
(C) वाराणसी भारते प्रमुख नगरम् सन्ति।
(D) वाराणसी भारतस्य प्रमुखं धार्मिकनगर सन्ति।

व्याख्या– 'नगर' शब्द नपुंसकलिङ्ग है।
अनुवाद–वाराणसी भारतस्य प्रमुखं धार्मिकनगरम् अस्ति
अतः विकल्प `A' सही है।

20. 'यहाँ भगवान् विश्वनाथ का प्रसिद्ध मन्दिर है'–का अनुवाद है?
(A) इदम् भगवतो शंकरस्य प्रसिद्ध मन्दिराणि अस्ति
(B) तत्र भगवतः शंकरस्य प्रसिद्धः मन्दिरे अस्ति
(C) तत्र भगवतः शिवस्य प्रसिद्धं देवालयम् सन्ति
(D) अत्र भगवतः विश्वनाथस्य प्रसिद्धमन्दिरम् अस्ति।

व्याख्या– अनुवाद–अत्र भगवतः विश्वनाथस्य प्रसिद्धमन्दिरम् अस्ति। 'मन्दिर' शब्द नित्य नपुंसकलिङ्ग है। 'भगवत्' शब्द की षष्ठी में 'भगवतः' रूप बनेगा। कर्तानुसार 'अस्ति' क्रिया का प्रयोग है। 'अत्र' अव्ययपद है।
अतः विकल्प `D' सही है। शेष विकल्प अशुद्ध हैं।

21. 'काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना मदन मोहन मालवीय ने की थी'–का अनुवाद है?
(A) काशी हिन्दू विश्वविद्यालयानां स्थापना मदन मोहन मालवीयः करोति।
(B) काशी हिन्दू विश्वविद्यालये स्थापनां मदन मोहन मालवीयः अकरोत्।
(C) काशी हिन्दू विश्वविद्यालयस्य स्थापना मदनमोहनमालवीयः अकरोत्।
(D) काशी हिन्दू विश्वविद्यालयः स्थापना मदन मोहन मालवीयः करोतः।

व्याख्या– 'मदनमोहनमालवीयः' यह प्रथमपुरुष एकवचन का कर्ता है, और 'अकरोत्' लङ्लकार प्र0पु0 एक0 की क्रिया है, सम्बन्ध मात्र में षष्ठीविभक्ति का प्रयोग है।
अतः विकल्प `C' सही है।

22. 'बौद्धों का तो यह अत्यन्त पवित्र तीर्थ है'–का संस्कृत में अनुवाद है–
(A) बौद्धस्य इदमत्यन्तं पवित्रं तीर्थम् अस्ति।
(B) बौद्धानाम् अयम् अत्यन्तं पवित्र तीर्थं अस्ति।
(C) बौद्धानाम् तु इदम् अत्यन्तं तीर्थम् स्तः।
(D) बौद्धानां तु इदम् अत्यन्तं पवित्रं तीर्थम् अस्ति।

व्याख्या– 'तीर्थ' शब्द नपुंसकलिङ्ग है।
बौद्धानां तु इदम् अत्यन्तं पवित्रं तीर्थम् अस्ति।
अतः विकल्प `D' सही है।

23. 'वह गाय से दूध दुहता है' का सही अनुवाद होगा?
(A) सः गवा पयः दोग्धि (B) सः गां पयः दुहति
(C) सः गोभि पयः दोग्धि (D) सः गां पयः दोग्धि

व्याख्या– यहाँ गाय वस्तुतः अपादानकारक है किन्तु अपादान की अविवक्षा में ''अकथितं च'' (1/4/51) सूत्र से कर्मकारक हुआ, ''कर्मणि द्वितीया'' सूत्र से द्वितीयाविभक्ति का प्रयोग हुआ है। यथा–सः गां दोग्धि पयः। अतः विकल्प `D' सही है।

16. (A) 17. (B) 18. (B) 19. (A) 20. (D) 21. (C) 22. (D) 23. (D)

24. प्रत्यय का ज्ञान कराने के लिए सर्वप्रथम?
(A) प्रत्यय की परिभाषा बतायेंगे
(B) प्रत्यय युक्त शब्दों में से कुछ शब्द बतायेंगे
(C) कुछ प्रत्यय युक्त शब्दों के अर्थ को बतायेंगे
(D) प्रत्यययुक्त शब्दों के साथ कुछ वाक्यों को प्रस्तुत करेंगे।

व्याख्या–प्रत्यययुक्त शब्दों को देखकर छात्र को उन शब्दों की रचना और अर्थ जानने की सहज जिज्ञासा होगी, तभी शिक्षक, छात्र को प्रत्ययों का ज्ञान करायेगा। अतः विकल्प (D) सर्वाधिक उपयुक्त है।

25. हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद बनाने के लिए पहले?
(A) धातु एवं शब्दरूपों का ज्ञान करायेंगे
(B) लकारों का ज्ञान करायेंगे
(C) लकारों से कुछ हिन्दी वाक्यों का संस्कृत अनुवाद पूछेंगे
(D) किसी एक लकार के एकपुरुष और एकवचन के वाक्य संस्कृत में श्यामपट्ट पर लिखेंगे।

व्याख्या–छात्र के सम्मुख श्यामपट्ट पर एक लकार के एकपुरुष और एकवचन के वाक्यों को लिखने से उसे उस वाक्य का अर्थ जानने की जिज्ञासा होगी और वह छात्र उसी तरह के अन्य वाक्यों को भी जानना और समझना चाहेगा। तभी शिक्षक उसे हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद की प्रक्रिया बतायेगा। अतः विकल्प `D' सर्वाधिक उपयुक्त है।

26. निम्नलिखित वर्गों में विधिलिङ्लकार के रूप किस वर्ग में हैं?
(A) भवतु, भवता **(B) लभताम्, सेवन्ताम्,**
(C) रुन्धः, रुणद्धि **(D) भवेत्, लभेय**

व्याख्या–
A भू धातु लोट्लकार प्र.पु. का रूप-भवतु, भवताम्, भवन्तु।
B. लभ् धातु (आत्मनेपद) लोट्लकार प्र0पु0– लभताम् लभेताम्, लभन्ताम्।
सेव् धातु लोट्लकार प्र0पु0– सेवताम्, सेवेताम्, सेवन्ताम्
C. 'रुध्' (रोकना) लट्लकार प्र0पु0-रुणद्धि, रुन्धः, रुन्धन्ति
D. 'लभ्' धातु विधिलिङ् लकार उ0पु0–**लभेय,** लभेवहि, लभेमहि
'भू' धातु विधिलिङ् लकार प्र0पु0–**भवेत्,** भवेताम्, भवेयुः
अतः विकल्प `D' सही है।

27. 'हन्' (मारना) धातु के लङ्लकार के प्रथमपुरुष एकवचन में क्या रूप होगा?
(A) अहन् **(B) अहताम्**
(C) अघ्नन् **(D) अहः**

व्याख्या– 'हन्' धातु लङ्लकार का रूप
प्र0पु0 अहन्, अहताम्, अघ्नन्
म0पु0 अहन्, अहतम्, अहत
उ0प्र0 अहनम्, अहन्व, अहन्म
अतः विकल्प `A' सही है।

28. 'दुह्' धातु परस्मैपद लट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन में रूप होगा?
(A) दोग्धि **(B) दोहति**
(C) दुहति **(D) दुहोति**

व्याख्या– 'दुह' धातु लट्लकार का रूप–
प्र0पु0 **दोग्धि**, दुग्धः, दुहन्ति
म0पु0 धोक्षि, दुग्धः, दुग्ध
उ0पु0 दोह्मि, दुह्वः, दुह्मः
अतः विकल्प `A' सही है।
नोट–दोहति, दुहति, दुहोति रूप दुह् धातु के दसों लकारों में कहीं नहीं बनता है। अतः ये सभी गलत हैं।

29. संस्कृत में भविष्यकाल के लिए किस लकार का प्रयोग किया जाता है?
(A) लट्लकार **(B) लोट्लकार**
(C) लृट्लकार **(D) लङ्लकार**

लकार		**काल बोधक**
A. लट्लकार	–	वर्तमानकाल में
B. लोट्लकार	–	आज्ञा अर्थ में
C. **लृट्लकार**	–	**भविष्यकाल में**
D. लङ्लकार	–	भूतकाल में

अतः विकल्प `C' सही है।

30. नीचे लिखे धातु रूपों में आत्मनेपद के रूप किस वर्ग में है?
(A) लभै, लभावहै, लभामहै
(B) पास्यामि, पास्यावः, पास्यामः
(C) ब्रूयात्, ब्रूयाताम्, ब्रूयुः
(D) गच्छेत्, गच्छेताम्, गच्छेयुः

व्याख्या–
A. 'लभ्' धातु आत्मनेपद लोट्लकार उ0पु0– **लभै, लभावहै, लभामहै**
B. 'पा' धातु परस्मैपद लृट्लकार उ0पु0– पास्यामि, पास्यावः, पास्यामः
C. 'ब्रू' धातु परस्मैपद विधिलिङ् प्रथमपुरुष– ब्रूयात्, ब्रूयाताम् , ब्रूयुः
D. 'गम्' धातु परस्मैपद विधिलिङ् प्रथमपुरुष– गच्छेत्, गच्छेताम्, गच्छेयुः
अतः विकल्प `A' सही है।

24. (D) 25. (D) 26. (D) 27. (A) 28. (A) 29. (C) 30. (A)

31. 'दा' धातु के मध्यमपुरुष के रूप किस वर्ग में है?
(A) ददाति, दत्तः, ददति (B) ददासि, दत्थः, दत्थ
(C) ददामि, दद्वः, दद्मः (D) दद्यात्, दद्याताम्, दद्युः

'दा' धातु लट्लकार का रूप–
(A) प्र०पु० ददाति, दत्तः, ददति
(B) म०पु० ददासि, दत्थः, दत्थ
(C) उ०पु० ददामि, दद्वः, दद्मः
(D) 'दा' धातु विधिलिङ्लकार का रूप–
प्र०पु० दद्यात्, दद्याताम्, दद्युः। अतः विकल्प `B' सही है।

32. 'पीतम् अम्बरम् इति पीताम्बरम्' में कौन-सा समास है?
(A) बहुव्रीहिसमास (B) केवलसमास
(C) कर्मधारयसमास (D) तत्पुरुषसमास

व्याख्या–
A. 'अनेकमन्यपदार्थे' (2/2/24) सूत्र से 'पीतम् अम्बरं यस्य सः = पीताम्बरः' में बहुव्रीहिसमास।
B. 'सह सुपा' (2/1/4) सूत्र से 'पूर्वं भूतः = भूतपूर्वः' में केवलसमास हुआ।
C. 'विशेषणं विशेष्येण बहुलम्' (2/1/57) सूत्र से 'पीतम् अम्बरम्=पीताम्बरम्' में **कर्मधारयसमास** है।
D. 'पञ्चमी भयेन' (2/1/37) सूत्र से 'चोरात् भयम् = चोरभयम्' में पञ्चमी तत्पुरुषसमास हुआ।
अतः विकल्प `C' सही है।

33. कर्मधारय समास किसका भेद है?
(A) अव्ययीभावसमास का
(B) तत्पुरुषसमास का
(C) द्विगुसमास का
(D) बहुव्रीहिसमास का

व्याख्या–
A. अव्ययीभावसमास में प्रथमपद अव्यय होता है। इसमें पूर्वपद का अर्थ प्रधान होता है।
अष्टाध्यायी में 'अव्ययीभावश्च' दो सूत्र हैं। "अव्ययीभावश्च" (1.1.41) सूत्र से अव्ययीभावसमास को प्राप्तशब्द अव्ययसंज्ञक होते हैं। तथा 'अव्ययीभावश्च' (2.4.18) सूत्र से अव्ययीभावसमास होने के बाद निष्पन्न शब्द नपुंसकलिङ्ग हो जाता है।
B. तत्पुरुषसमास में उत्तरपद का अर्थ प्रधान होता है। **तत्पुरुष का भेद कर्मधारय समास** है।
C. जिस समास में प्रथमपद संख्यावाची हो, वह द्विगु समास होता है। द्विगुसमास कर्मधारय का भेद है।
D. बहुव्रीहिसमास में अन्यपद प्रधान होता है।
अतः विकल्प `B' सही है।

34. 'पौर्वशालः' का विग्रह है?
(A) पौर्व एवं शालः (B) पूर्वस्यां शालायां भवः
(C) शालायाः पूर्वः (D) पूर्व शाला यस्य

व्याख्या– 'तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च' (2/1/51) सूत्र से दिशावाची शब्द 'पौर्वशालः' का समासविग्रह **'पूर्वस्यां शालायां भवः'** होगा। अतः विकल्प `B' सही है।

35. 'माता च पिता च' के निम्नलिखित तीन रूपों में कौन-सा अशुद्ध है?
1. पितरौ 2. मात्पितरौ 3. मातापितरौ
(A) पहला (B) दूसरा
(C) तीसरा (D) तीनों

व्याख्या–
* 'पिता मात्रा' (1/2/70) सूत्र से 'माता च पिता च = **पितरौ**', एकशेष द्वन्द्व होगा।
* 'चार्थे द्वन्द्वः' (2/2/29) सूत्र से 'माता च पिता च = **मातापितरौ**' भी होगा। किन्तु 'मात्पितरौ' यह अशुद्ध प्रयोग है। अतः विकल्प `B' सही है।

36. 'पञ्चवटी' में समास है?
(A) द्विगुसमास (B) द्वन्द्वसमास
(C) अव्ययीभावसमास (D) बहुव्रीहिसमास

व्याख्या–
A. 'अकारान्तोत्तरपदो द्विगुः स्त्रियामिष्टः' वार्तिक से 'पञ्चानां वटानां समाहारः = पञ्चवटी' में **द्विगुसमास** होकर स्त्रीलिङ्ग में प्रयोग हुआ।
B. 'अल्पाच्तरम्' (2/2/34) सूत्र से 'शिवश्च केशवश्च = शिवकेशवौ' इस द्वन्द्वसमास में 'शिव' पद का पूर्वप्रयोग हुआ।
C. 'नदीभिश्च' (2/1/20) सूत्र से 'द्वयोः यमुनयोः समाहारः = द्वियमुनम्' में अव्ययीभावसमास होगा।
D. 'अनेकमन्यपदार्थे' (2/2/24) सूत्र से 'ऊढः रथः येन सः=ऊढरथः' में बहुव्रीहि समास होगा।
अतः विकल्प `A' सही है।

31. (B) 32. (C) 33. (B) 34. (B) 35. (B) 36. (A)

37. निम्नलिखित वर्गों में किस वर्ग में समास का उदाहरण अशुद्ध है?
(A) अव्ययीभाव – यथाक्रमम्, उपगङ्गम्
(B) द्विगु – पञ्चगङ्गम्, द्वियमुनम्
(C) तत्पुरुष – ग्रामगतः, सुखप्राप्तः
(D) द्वन्द्व – रामकृष्णौ, पितरौ

व्याख्या– 'नदीभिश्च' (2/1/20) सूत्र से–
''पञ्चानां गङ्गानां समाहारः = पञ्चगङ्गम्''
''द्वयोः यमुनयोः समाहारः = द्वियमुनम्'' में अव्ययीभाव समास होगा, न कि द्विगुसमास। अतः विकल्प `B' सही है।

38. 'इन्द्रश्च अग्निश्च' का समस्त रूप होगा?
(A) इन्द्राग्निः (B) इन्द्राग्नयः
(C) अग्नीन्द्रः (D) इन्द्राग्नी

व्याख्या–
* 'चार्थे द्वन्द्वः' (2/2/29) सूत्र से ''**इन्द्रश्च अग्निश्च = इन्द्राग्नी**'' में द्वन्द्वसमास होगा।
* यदि द्वन्द्वसमास में घिसंज्ञक व अजादि एवं अदन्त पद का एकसाथ प्रयोग हो तो 'विप्रतिषेधे परं कार्यम्' इस नियम के आधार पर अजादि अदन्त पद का पूर्वनिपात होता है।
* यहाँ 'इन्द्र' पद अजादि एवं अदन्त है अतः 'इन्द्र' पद का पूर्वप्रयोग हुआ है। अतः विकल्प `D' सही है।

39. 'किंसखा' में कौन-सा समास है?
(A) द्वन्द्व (B) द्विगु
(C) अव्ययीभाव (D) कर्मधारय

व्याख्या–
A. 'अजाद्यदन्तम्' (2/2/33) सूत्र से ''ईशश्च कृष्णश्च = ईशकृष्णौ'' इस द्वन्द्वसमास में 'ईश' पद का पूर्वनिपात हुआ।
B. 'त्रयाणां भुवनानां समाहारः = त्रिभुवनम्' में द्विगुसमास होगा।
C. 'अव्ययं विभक्तिसमीप.....' इस सूत्र से 'कृष्णस्य समीपम् इति उपकृष्णम्' में अव्ययीभावसमास हुआ।
D. 'कुत्सितः सखा = किं सखा' यहाँ पर 'किम्' शब्द का निन्दा (क्षेप, अर्थात् कुत्सित) अर्थ होने के कारण ''किं क्षेपे'' (2.1.64) सूत्र से **कर्मधारयसमास** हुआ। अतः विकल्प `D' सही है।

40. 'अष्टाविंशतिः' शब्द का क्या अर्थ है?
(A) अठारह (B) अड़तिस
(C) अट्ठाईस (D) अड़तालिस

	शब्द		अर्थ
A.	अष्टादश (18)	–	अठारह
B.	अष्टात्रिंशत् (38)	–	अड़तिस
C.	**अष्टाविंशतिः (28)**	–	**अट्ठाईस**
D.	अष्टचत्वारिंशत् (48)	–	अड़तालिस

अतः विकल्प `C' सही है।

41. `55' संख्या का वाचक संस्कृत शब्द कौन सा है?
(A) पञ्चपञ्चाशत् (B) पञ्चापञ्चशत
(C) पञ्चपञ्च (D) पञ्चशताम्

व्याख्या– 55 (पचपन) का संस्कृतवाचक शब्द है–
पञ्चपञ्चाशत्
अतः विकल्प `A' सही है। शेष विकल्प अशुद्ध हैं।

42. निम्नलिखित में से कौन-सा वाक्य शुद्ध है?
(A) एकविंशतयः छात्रा कक्षायाम्
(B) एकविंशतिः छात्राः कक्षायाम्
(C) एकविशताः छात्राः कक्षायाम्
(D) एकविंशततमी छात्राः कक्षायाम्

व्याख्या– 'एकोनविंशतिः से नवनवतिः' तक सारे शब्द स्त्रीलिङ्ग हैं। 'विंशत्यादिरानवतेः' के अनुसार 'विंशति' शब्द से लेकर 'नवति' पर्यन्त संख्यावाची शब्द स्त्रीलिङ्ग एकवचन में होते हैं। अतः विकल्प `B' सही है। शेष सभी विकल्प अशुद्ध हैं।

43. संस्कृत शब्द 'चत्वारिंशत्' किस संख्या का वाचक है?
(A) 400 (B) 104
(C) 40 (D) 44

संख्या		संख्यावाचक शब्द
(A) 400	–	चतुःशती, चतुःशतम्
(B) 104	–	चतुरधिकैकशतम्
(C) 40	–	**चत्वारिंशत्**
(D) 44	–	चतुश्चत्वारिंशत्

अतः विकल्प `C' सही है।

37. (B) 38. (D) 39. (D) 40. (C) 41. (A) 42. (B) 43. (C)

44. शुद्ध वाक्य का चयन कीजिए?
(A) त्रिः बालाः गच्छन्ति
(B) त्रयः बालः गच्छन्ति
(C) त्रीणि बालाः गच्छन्ति
(D) तिस्त्रः बालाः गच्छन्ति

व्याख्या–
* त्रि (तीन) का रूप केवल बहुवचन में चलता है।
* पुंलिङ्ग में त्रयः, त्रीन्, त्रिभिः, त्रिभ्यः, त्रिभ्यः, त्रयाणाम्, त्रिषु।
* नपुंसकलिङ्ग का रूप–त्रीणि, त्रीणि, त्रिभिः, त्रिभ्यः, त्रिभ्यः, त्रयाणाम्, त्रिषु।
* स्त्रीलिङ्ग में तिस्रः, तिस्रः, तिसृभिः, तिसृभ्यः, तिसृभ्यः, तिसृणाम्, तिसृषु। अतः **तिस्त्रः बालाः गच्छन्ति।** (तीन लड़कियाँ जाती हैं) यह वाक्य शुद्ध है। अतः विकल्प `D' सही है। शेष वाक्यों में लिङ्गगत विशेष्य विशेषण की अशुद्धियाँ हैं।

45. शुद्ध वाक्य का चयन कीजिए?
(A) चतुरः विप्रान् आमन्त्र्य भोजय।
(B) चत्वारि विप्रान् आमन्त्र्य भोजय।
(C) चतस्त्रः विप्रान् आमन्त्र्य भोजय।
(D) चत्वारि विप्रान् आमन्त्र्य भोजय।

व्याख्या–
* चतुर् (चार) का रूप तीनों लिङ्गों में केवल बहुवचन में चलता है। **पुंलिङ्ग–** 1. चत्वारः 2. चतुरः 3. चतुर्भिः 4. चतुर्भ्यः 5. चतुर्भ्यः 6. चतुर्णाम् 7. चतुर्षु।
* **नपुंसकलिङ्ग–** 1. चत्वारि 2. चत्वारि 3. चतुर्भिः 4. चतुर्भ्यः 5. चतुर्भ्यः 6. चतुर्णाम् 7. चतुर्षु।
* **स्त्रीलिङ्ग–** 1. चतस्रः 2. चतस्रः 3. चतसृभिः 4. चतसृभ्यः 5. चतसृभ्यः 6. चतसृणाम् 7. चतसृषु।
* शुद्ध वाक्य–**चतुरः विप्रान् आमन्त्र्य भोजय** (चार ब्राह्मणों को बुलाकर भोजन कराओ)
* 'चतुरः' रूप द्वितीया का बहुवचन है, 'विप्रान्' भी द्वितीया बहुवचन का रूप है, 'आमन्त्र्य' में ल्यप् प्रत्यय है, 'भोजय' लोट्लकार म0 प्र0 एकवचन का रूप है, अतः विकल्प `A' शुद्ध है। शेष विकल्प अशुद्ध है।

46. संख्यावाची शब्द 'षण्णवतिः' किस अङ्क का वाचक है।
(A) 69 **(B) 96**
(C) 79 **(D) 66**

अंक		**संख्यावाची शब्द**
69	–	एकोनसप्ततिः, नवषष्टिः
96	–	**षण्णवतिः**
79	–	एकोनाशीतिः, नवसप्ततिः
66	–	षट्षष्टिः

अतः विकल्प `B' सही है।

47. निम्नलिखित में शुद्ध वाक्य है?
(A) तत्र पञ्च जनाः निवसन्ति।
(B) तत्र पञ्चाः जनाः निवसन्ति।
(C) तत्र पञ्चा जनैः निवसति।
(D) तत्र पच्चसु जनाः निवसति।

व्याख्या–
* पञ्चन् (पाँच) शब्द तीनों लिङ्गों में बहुवचनान्त है। यथा–पञ्च, पञ्च, पञ्चभिः, पञ्चभ्यः, पञ्चभ्यः, पञ्चानाम्, पञ्चसु।
* इसलिए **'तत्र पञ्च जनाः निवसन्ति'**–यह शुद्ध वाक्य है। अतः विकल्प `A' सही है।

48. निम्नलिखित में कौन-सा वाक्य शुद्ध है?
(A) अष्टानि फलानि आनय।
(B) अष्टौ फलानि आनय।
(C) अष्टाः फलानि आनय।
(D) अष्टे फलानि आनय।

व्याख्या–
* 'अष्टन्' (आठ) का रूप केवल बहुवचन में चलता है– अष्टौ, अष्टौ, अष्टाभि अष्टाभ्यः, अष्टाभ्यः, अष्टानाम् अष्टासु।
* 'अष्टन्' का रूप तीनों लिङ्गों में एकसमान चलता है।
* फल शब्द नपुंसकलिङ्ग है। द्वितीया विभक्ति बहुवचन का रूप है - फलानि।
* अतः **''अष्टौ फलानि आनय''**- यह शुद्ध वाक्य है। यहाँ विकल्प `B' सही है।

49. निम्नलिखित वाक्यों में शुद्ध वाक्य कौन-सा है?
(A) ये सुकृतिभिः असूयन्ति ते पापात्मनः।
(B) ये सुकृतिभ्यः असूयन्ति ते पापात्मानः।
(C) ये सुकृतिषु असूयन्ति ते पापात्मनः।
(D) ये सुकृतिनाम् असूयन्ति ते पापात्मनः।

व्याख्या–*''क्रुधद्रुहेर्ष्याऽसूयार्थानां यं प्रति कोपः'' (1.4.37) सूत्र से क्रुध्, द्रुह, ईर्ष्य्, असूय धातुओं के योग में तथा इन धातुओं के समान अर्थ रखने वाली धातुओं के योग में जिसके ऊपर क्रोध आदि किया जाता है, वह सम्प्रदान संज्ञक होता है, और उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है। अतः
* इस उदाहरण में 'असूय' धातु का प्रयोग होने से 'सुकृतिभ्यः' में चतुर्थी विभक्ति का बहुवचन है।
अतः विकल्प `B' सही है।

44. (D) 45. (A) 46. (B) 47. (A) 48. (B) 49. (B)

50. निम्नलिखित वाक्यों में शुद्ध वाक्य कौन-सा है?
(A) शिशुः क्रीडनकं रोचते
(B) शिशुं क्रीडनकं रोचते
(C) शिशवे क्रीडनकं रोचते
(D) शिशोः क्रीडनकं रोचते

व्याख्या– 'रुच्यर्थानां प्रीयमाणः' (1/4/33) सूत्र से रुच्यर्थ (अभिलाषार्थक) धातुओं के प्रयोग में प्रीयमाण व्यक्ति की सम्प्रदानसंज्ञा होकर 'चतुर्थी सम्प्रदाने' (2/3/13) सूत्र से उसमें चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग होता है। यथा–**शिशवे क्रीडनकं रोचते।** यहाँ 'रोचते' क्रियापद का प्रयोग होने से 'शिशवे' में चतुर्थी विभक्ति का एकवचन है। अतः विकल्प `C' सही है।

51. माहेश्वरसूत्रों में चौथा सूत्र है?
(A) ऐऔच् **(B) हयवरट्**
(C) खफछठथचटतव् **(D) हल्**

व्याख्या–
* माहेश्वर सूत्र– अइउण्, ऋलृक्, एओङ्, ऐऔच्, हयवरट्, लण्, ञमङणनम्, झभञ्, घढधष्, जबगडदश्, खफछठथचटतव्, कपय्, शषसर्, हल्।
* उपर्युक्त क्रम में चौथा सूत्र **'ऐऔच्'** है।
अतः विकल्प `A' सही है।

52. सिद्धान्तकौमुदी का रचनाकार कौन है?
(A) पाणिनि **(B) पतञ्जलि**
(C) भट्टोजिदीक्षित **(D) वरदराज**

	ग्रन्थ		रचनाकार
A.	अष्टाध्यायी	–	पाणिनि
B.	महाभाष्यम्	–	पतञ्जलि
C.	**सिद्धान्तकौमुदी**	–	**भट्टोजिदीक्षित**
D.	लघुसिद्धान्तकौमुदी	–	वरदराज

अतः विकल्प `C' सही है।

53. स्वरों के व्यवधान के बिना आये हुए व्यञ्जनों की क्या संज्ञा होती है?
(A) पदम् **(B) निष्ठा**
(C) संहिता **(D) संयोग**

व्याख्या–
A. 'सुप्-तिङन्तं पदम्' (1/4/14) सूत्र से सुबन्त और तिङन्त की ''पदसंज्ञा'' होती है।
B. ''क्तक्तवतू निष्ठा'' (1/1/26) सूत्र से क्त और क्तवतु प्रत्ययों की ''निष्ठासंज्ञा'' होती है।
C. ''परः सन्निकर्षः संहिता'' (1/4/109) सूत्र से अति समीप वर्णों की ''संहितासंज्ञा'' होती है।
D. ''हलोऽनन्तराः संयोगः'' (1/1/7) सूत्र से स्वरों के व्यवधान के बिना आये हुए व्यञ्जनों की **''संयोगसंज्ञा''** होती है। अतः विकल्प `D' सही है।

54. वृद्धिसन्धि विधायक सूत्र है?
(A) वृद्धिरेचि **(B) वृद्धिरादैच्**
(C) एङः पदान्तादति **(D) एङि पररूपम्**

व्याख्या–
A. **'वृद्धिरेचि'** (6/1/88) वृद्धिसन्धि विधायक सूत्र है।
B. 'वृद्धिरादैच्' (1/1/1) वृद्धिसंज्ञक सूत्र है।
C. 'एङः पदान्तादति' (6/1/109) पूर्वरूपसन्धि विधायक सूत्र है।
D. 'एङि पररूपम्' (6/1/94) 'पररूपसन्धि' विधायक सूत्र है। अतः विकल्प `A' सही है।

55. ''पितुः + इच्छा'' में सन्धि होने पर–
(A) पितोच्छा **(B) पितोछा**
(C) पितुरिच्छा **(D) पितुः इच्छा**

व्याख्या– 'पितुः + इच्छा'–यहाँ ''विसर्जनीयस्य सः'' (8.3.34) सूत्र से विसर्ग को सकार; फिर सकार को ''ससजुषो रुः'' (8.2.66) 'रु' आदेश। इसके बाद 'रु' के उकार की इत्संज्ञा, लोप होकर ''रोऽसुपि'' सूत्र से **'पितुरिच्छा'** पद सिद्ध होगा। अतः विकल्प `C' सही है।

56. ''हरिस् + शेते'' में सन्धि होने पर कौन-सा रूप बनेगा?
(A) हरिशयते **(B) हरिण्शेते**
(C) हरिश्शेते **(D) हरिशेते**

व्याख्या–
''स्तोः श्चुना श्चुः'' (8/4/40) सूत्र से जब सकार या तवर्ग, शकार या चवर्ग के योग में आता है, तो सकार और तवर्ग के स्थान में क्रम से शकार और चवर्ग हो जाता है। यथा– रामस् + शेते = रामश्शेते। **हरिस् + शेते = हरिश्शेते।** अतः विकल्प `C' सही है।

50. (C) 51. (A) 52. (C) 53. (D) 54. (A) 55. (C) 56. (C)

57. निम्नलिखित किस स्थिति में 'ष्टुना ष्टुः' सूत्र प्रयुक्त होगा?
(A) आ+ उष्णम् **(B) रामस् + चिनोति**
(C) तत् + टीका **(D) वाक् + हरिः**

व्याख्या–
A. 'आद् गुणः' (6/1/87) सूत्र से 'आ + उष्णम् – ओष्णम्' में गुणसन्धि होगी।
B. 'स्तोः श्चुना श्चुः' (8/4/40) सूत्र से 'रामस् + चिनोति = रामश्चिनोति' होगा।
C. 'ष्टुना ष्टुः (8/4/41) सूत्र से **'तत् + टीका = तट्टीका'** शब्द बनेगा। जब स् अथवा तवर्ग ष् या टवर्ग के योग में आता है तो 'स्' के स्थान पर 'ष्' और तवर्ग के स्थान पर टवर्ग हो जाता है। अतः विकल्प `C' सही है।
D. 'झयो होऽन्यतरस्याम्' (8/4/62) सूत्र से 'वाक् + हरिः = वाग्घरिः' शब्द बनेगा।

58. ''सन् + षष्ठः = सन्षष्ठः'' इस उदाहरण में किस सूत्र का नियम प्रयुक्त होगा?
(A) शात् **(B) शश्छोऽटि**
(C) तोः षि **(D) न पदान्ताट्टोरनाम्**

व्याख्या–
A. 'शात्' (8/4/44) सूत्र से ''विश् + नः = विश्नः''
B. शश्छोऽटि (8/4/63) सूत्र से ''तद् + शिवः = तच्छिवः'' शब्द बनेगा।
C. **'तोः षि' (8/4/43)** सूत्र से ''सन् + षष्ठः = सन्षष्ठः'' शब्द बनेगा। अतः विकल्प `C' सही है।
D. 'न पदान्ताट्टोरनाम्' (8/4/42) सूत्र से ''षट् + सन्तः = षट्सन्तः'' शब्द बनेगा

59. 'एतत् + मुरारिः = एतन्मुरारिः' सन्धि में किस सूत्र की प्रवृत्ति है?
(A) मोऽनुस्वारः
(B) यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा
(C) न पदान्ताट्टोरनाम्
(D) तोर्लि

व्याख्या–
A. 'मोऽनुस्वारः' (8/3/23) सूत्र से ''हरिम् + वन्दे = हरिं वन्दे'' शब्द बनेगा।
B. **'यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा'** (8/4/45) सूत्र से ''एतत् + मुरारिः = एतन्मुरारिः'' शब्द बनेगा।
C. 'न पदान्ताट्टोरनाम्' (8/4/42) सूत्र से 'षट्+ते = षट् ते' बनेगा
D. 'तोर्लि' (8/4/60) सूत्र से ''तत् + लयः = तल्लयः'' शब्द बनेगा।
विकल्प `B' सही है।

60. 'कः + अत्र' का सन्धि रूप है?
(A) को अत्र **(B) कोऽत्र**
(C) कः अत्र **(D) कोऽत्रा**

व्याख्या–
'अतो रोरप्लुतादप्लुते' (6/1/113) सूत्र से ''कः + अत्र = **कोऽत्र**'' शब्द बनेगा। अतः विकल्प `B' सही है।

61. 'मनीषा' में सन्धि होगी?
(A) पररूप
(B) प्रकृतिभाव
(C) पूर्वरूप
(D) दीर्घ

व्याख्या–
A. ''शकन्ध्वादिषु पररूपं वाच्यम्'' वार्तिक से ''मनस् + ईषा = मनीषा'' में **पररूपसन्धि** होगी।
B. 'ईदूदेद् द्विवचनं प्रगृह्यम्' (1/1/11) सूत्र से हरी + एतौ = हरी एतौ की प्रगृह्यसंज्ञा होकर प्रकृतिभाव हुआ।
C. 'एङः पदान्तादति' (6/1/109) सूत्र से ''हरे + अव = हरेऽव'' में पूर्वरूपसन्धि है।
D. 'अकः सवर्णे दीर्घः' (6/1/101) सूत्र से 'विष्णु + उदयः = विष्णूदयः' में दीर्घसन्धि है।
अतः विकल्प `A' सही है।

62. 'सखि' शब्द का द्वितीया एकवचन में रूप होगा–
(A) सखिम् **(B) सखीन्**
(C) सखी **(D) सखायम्**

व्याख्या–
सखि (मित्र) इकारान्त पुंलिङ्ग शब्द के 'सखा, **सखायम्**, सख्या, सख्ये, सख्युः, सख्युः सख्यौ' सातों विभक्तियों के एकवचन में ये रूप बनते हैं।
अतः विकल्प `D' सही है।

57. (C) 58. (C) 59. (B) 60. (B) 61. (A) 62. (D)

63. निम्नलिखित वर्गों में केवल पुंलिङ्ग शब्द किस वर्ग में हैं?
(A) सखा, हरिः, दाराः
(B) महिमा, सविता, अञ्जलिः
(C) मधुरम्, फलम्, जलम्
(D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या–
A. * सखा, हरिः, दाराः, पुंलिङ्ग शब्द हैं।
* दाराः, अक्षताः, लाजाः, असवः, प्राणाः नित्य पुंलिङ्ग एवं बहुवचनान्त शब्द हैं।
B. सविता, अञ्जलिः, आपः, अप्सराः, सुमनसः आदि स्त्रीलिङ्ग शब्द हैं।
C. मधुरम्, वारि, फलम्, जलम्, वनम्, चर्म, जगत्, तेजः, आदि नपुंसकलिङ्ग शब्द हैं।
अतः विकल्प `A' सही है।

64. 'माता' रूप का मूल प्रातिपदिक शब्द–
(A) आकारान्त **(B) उकारान्त**
(C) इकारान्त **(D) ऋकारान्त**

व्याख्या–
A. रमा, बालिका, कविता, आकारान्त स्त्रीलिङ्गशब्द हैं।
B. धेनु, रेणु, उकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द हैं।
C. मति, बुद्धि इकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द हैं।
D. मातृ (माता) दुहितृ (पुत्री) **ऋकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द** हैं। अतः विकल्प `D' सही है।

65. सर्वनाम शब्द 'इदम्' स्त्रीलिङ्ग षष्ठी विभक्ति बहुवचन का रूप होगा?
(A) एषामो **(B) एतेषाम्**
(C) एतासाम् **(D) आसाम्**

व्याख्या– 'इदम्' स्त्रीलिङ्ग का सातों विभक्तियों के बहुवचन में क्रमशः इसप्रकार रूप चलेगा इमाः, इमाः, आभिः, आभ्यः, आभ्यः, **आसाम्,** आसु'
अतः विकल्प `D' सही है।

66. निम्नलिखित में चतुर्थी विभक्ति एकवचन का कौन-सा रूप है?
(A) भानौ **(B) राज्ञः**
(C) दध्ने **(D) हरेः**

व्याख्या–
A. भानु उकारान्त पुंलिङ्ग शब्द का एकवचन में–'भानुः भानुम्, भानुना, भानवे, भानोः, भानोः, भानौ' रूप सातों विभक्तियों में बनता है।
B. 'राजन्' अन्नन्त पुंलिङ्ग शब्द का एकवचन में 'राजा, राजानम्, राज्ञा, राज्ञे, राज्ञः, राज्ञः, राज्ञि/राजनि' रूप सातों विभक्तियों में बनता है।
C. 'दधि' इकारान्त नपुंसकलिङ्ग का रूप एकवचन में– 'दधि, दधि, दध्ना, **दध्ने**, दध्नः, दध्नः, दध्नि/दधनि' सातों विभक्तियों में बनता है।
D. 'हरि' इकारान्त पुंलिङ्ग का रूप एकवचन में–'हरिः, हरिम्, हरिणा, हरये, हरेः, हरेः, हरौ' सातों विभक्तियों में बनता है।
अतः विकल्प `C' सही है।

67. अप् (जल) शब्द के रूप कितने वचनों में चलते हैं?
(A) केवल एकवचन **(B) केवल बहुवचन**
(C) केवल द्विवचन **(D) इनमें से कोई नहीं**

व्याख्या–
A. 'एक' शब्द का रूप केवल एकवचन में बनता है। यथा– (पुंलिङ्ग) एकः, एकम् एकेन, एकस्मै, एकस्मात् एकस्य, एकस्मिन्।
B. अप् (जल) शब्द का रूप **केवल बहुवचन** में चलता है। यथा–आपः, अपः, अद्भिः, अद्भ्यः, अद्भ्यः, अपाम्, अप्सु। अतः विकल्प `B' सही है। 'अप्' शब्द स्त्रीलिङ्ग में है।
C. 'द्वि' (दो) का रूप केवल द्विवचन में चलता है यथा– द्वौ, द्वौ, द्वाभ्याम्, द्वाभ्याम्, द्वाभ्याम्, द्वयोः द्वयोः।

68. ''असौ, अमू, अमी'' में किस प्रातिपदिक के रूप हैं?
(A) इदम् शब्द पुंल्लिङ्ग के
(B) अदस् शब्द पुंल्लिङ्ग के
(C) इदम् शब्द स्त्रीलिङ्ग के
(D) इदम् शब्द नपुंसकलिङ्ग के

व्याख्या–
A. इदम् (यह) शब्द का पुंलिङ्ग प्रथमा में– ''अयम्, इमौ, इमे'' रूप बनता है।
B. **'अदस्' (वह) शब्द का पुंलिङ्ग प्रथमा में–** ''असौ, अमू, अमी'' रूप बनता है।
C. इदम् स्त्रीलिङ्ग शब्द का प्रथमा में– ''इयम्, इमे, इमाः'' रूप बनता है।
D. 'इदम्' शब्द नपुंसकलिङ्ग का प्रथमा में– ''इदम् इमे इमानि'' रूप बनता है।
अतः विकल्प `B' सही है।

63. (A) 64. (D) 65. (D) 66. (C) 67. (B) 68. (B)

69. निम्नलिखित वर्गों में चतुर्थी विभक्ति के रूप किस वर्ग में है?

(A) कः, कौ **(B) तम्, तौ**
(C) तस्याः, ताभ्याम् **(D) तस्मै, ताभ्यः**

व्याख्या–

A. किम् (कौन) पुंलिङ्ग का रूप प्रथमा में–
''कः, कौ, के'' बनता है।

B. तद् (वह) पुंलिङ्ग का रूप द्वितीया में–
''तम्, तौ, तान्'' बनता है।

C. 'तद्' स्त्रीलिङ्ग का रूप षष्ठी में–
''तस्याः, तयोः, तासाम्'' बनता है।

D. तद् पुंलिङ्ग चतुर्थी विभक्ति में–
''**तस्मै,** ताभ्याम्, तेभ्यः'' रूप बनता है
तद् स्त्रीलिङ्ग चतुर्थी विभक्ति में–
''तस्यै, ताभ्याम्, **ताभ्यः**'' बनता है।
अतः विकल्प `D' सही है।

70. निम्नलिखित में से स्त्रीलिङ्ग तृतीयाविभक्ति का रूप कौन-सा है?

(A) नद्यः **(B) रमया**
(C) धेनोः **(D) स्त्रियै**

व्याख्या–

A. 'नदी' शब्द का रूप प्रथमा में–
'नदी, नद्यौ, नद्यः' बनता है।

B. 'रमा' शब्द का रूप तृतीयाविभक्ति में–
'**रमया**, रमाभ्याम्, रमाभिः' बनता है।

C. धेनु शब्द का रूप षष्ठी विभक्ति में–
'धेनोः' धेन्वोः, धेनूनाम्' बनता है।

D. 'स्त्री' शब्द का रूप चतुर्थी विभक्ति में–
स्त्रियै, स्त्रीभ्याम्, स्त्रीभ्यः बनता है।

अतः विकल्प `B' सही है।

71. सर्वनाम शब्द 'तद्' पुंलिङ्ग प्रथमाविभक्ति बहुवचन का रूप होगा–

(A) तानि
(B) तत्
(C) ते
(D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या–
तद् का पुंलिङ्ग प्रथमा विभक्ति में–
'सः, तौ, **ते'** रूप चलता है।
नपुंसकलिङ्ग में 'तत्, ते, तानि' रूप चलता है अतः विकल्प `C' सही है।

72. 'युष्मद्' सर्वनाम शब्द पञ्चमी विभक्ति बहुवचन का रूप होगा–

(A) युष्मत्
(B) युष्मभ्यम्
(C) युष्माभिः
(D) युष्मात्

व्याख्या– युष्मद् सर्वनाम का तीनों लिङ्गों में एकसमान रूप चलता है।

A. युष्मद् शब्द का पञ्चमी विभक्ति में–
''त्वत्, युवाभ्याम्, **युष्मत्**'' रूप बनता है

B. चतुर्थी विभक्ति में–
''तुभ्यम् युवाभ्याम्, युष्मभ्यम्'' रूप बनता है।

C. तृतीया में ''त्वया, युवाभ्याम्, युष्माभिः'' रूप बनता है।

D. 'युष्मात्' रूप युष्मद् शब्द की सातों विभक्ति में कहीं नहीं बनता है। अतः विकल्प `A' सही है।

73. 'भू' धातु का 'भवत' रूप–

(A) विधिलिङ् लकार म.पु. बहुवचन का है।
(B) लोट्लकार म.पु. बहुवचन का है।
(C) लङ्लकार म.पु. बहुवचन का है।
(D) लोट्लकार प्र.पु. एकवचन का है।

व्याख्या–

A. भू धातु का विधिलिङ्लकार म.पु. में–
''भवेः, भवेतम्, भवेत'' रूप बनता है

B. **लोट्लकार म.पु.** में–
'भव भवतम् **भवत**' रूप बनता है

C. लङ्लकार म.पु. में–
अभवः, अभवतम्, अभवत रूप बनता है

D. लोट् लकार प्र.पु. में–
'भवतु, भवताम् , भवन्तु' रूप बनता है
अतः विकल्प `B' सही है।

69. (D) 70. (B) 71. (C) 72. (A) 73. (B)

74. 'चुर्' धातु का 'चोरयतम्' रूप–
(A) लट्लकार म.पु. द्विवचन का है।
(B) लोट्लकार म.पु. द्विवचन का है।
(C) विधिलिङ् लकार म.पु. द्विवचन का है।
(D) लङ् लकार म.पु. द्विवचन का है।

व्याख्या–

A. 'चुर्' धातु लट्लकार म.पु. में– 'चोरयसि, चोरयथः, चोरयथ' रूप बनता है।

B. **लोट्लकार म.पु. में** – परस्मैपद
'चोरय, **चोरयतम्,** चोरयत' रूप चलता है

C. विधिलिङ्लकार म.पु. में–
'चोरयेः चोरयेतम् चोरयेत' रूप चलता है

D. लङ्लकार म.पु. में–
अचोरयः, अचोरयतम्, अचोरयत रूप चलता है।

अतः विकल्प `B' सही है।

75. 'लभ्' धातु लट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन में रूप होगा–
(A) लभते (B) लभेते
(C) लभेत (D) लभति

व्याख्या–

A+B 'लभ्' धातु आत्मनेपदी का रूप लट्लकार प्र0पु0 में– '**लभते,** लभेते, लभन्ते' बनता है

C. विधिलिङ्लकार प्रथमपुरुष में–
'लभेत, लभेयाताम्, लभेरन्' रूप बनता है।

D. 'लभति' रूप लभ् धातु के दशों लकारों में कहीं नहीं बनता है। क्योंकि यह धातु आत्मनेपदी है, न कि उभयपदी। अतः विकल्प `A' सही है।

76. कादम्बरी किस प्रकार की रचना है?
(A) आख्यायिका (B) ऐतिहासिकग्रन्थ
(C) कथा (D) चम्पूकाव्य

काव्य	विधा
A. हर्षचरितम् (बाणभट्ट)	– आख्यायिका
B. शिवराजविजयम् (अम्बिकादत्तव्यास)	– ऐतिहासिक उपन्यास
C. **कादम्बरी (बाणभट्ट)**	**– कथा**
D. नलचम्पू (त्रिविक्रमभट्ट)	– चम्पूकाव्य

अतः विकल्प `C' सही है।

77. ''कदलीदलकुञ्जायितस्य एतत्कुटीरस्य समन्तात् पुष्पवाटिका, पूर्वतः परम-पवित्र-पानीयं परस्सहस्त्र-पुण्डरीक-पटल-परिलसितं पतत्रि-कुल-कूजित-पूजितं पयःपूरितं सर आसीत्।''
उपर्युक्त गद्यांश किस रचना से उद्धृत है?
(A) कादम्बरी से
(B) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से
(C) शिवराजविजयम् से
(D) उत्तररामचरितम् से

व्याख्या–

A. 'भवादृशा एव भवन्ति भाजनानि उपदेशानाम्' कादम्बरी (शुकनासोपदेश) से

B. 'न तादृशा आकृतिविशेषा गुणविरोधिनो भवन्ति'– अभिज्ञानशाकुन्तलम् में प्रियंवदा का कथन।

C. 'कदलीदलकुञ्जायितस्य........पूरितं सर आसीत्'– **शिवराजविजयम्** से

D. 'कर्तव्यानि खलु दुःखितैर्दुःखनिर्वापणानि'– उत्तररामचरितम् तृतीय अङ्क में तमसा का कथन।

अतः विकल्प `C' सही है।

78. ''अकालकुसुमप्रसवा इव मनोहराकृतयोऽपि लोक-विनाश-हेतवः, श्मशानाग्नय इवातिरौद्रभूतयः, तैमिरिका इवादूरदर्शिनः, उपसृष्टा इव क्षुद्राधिष्ठित भवनाः, श्रूयमाणा अपि प्रेतपटहा इवोद्वेजयन्ति।''
प्रस्तुत गद्यांश किस ग्रन्थ से उद्धृत है?
(A) शिवराजविजयम्
(B) उत्तररामचरितम्
(C) कादम्बरी (शुकनासोपदेश)
(D) अभिज्ञानशाकुन्तलम्

व्याख्या–

A. 'वेदा एतस्यैव वन्दिनः, गायत्री अमुमेव गायति' - शिवराजविजयम् से

B. 'प्रणय एव व्याहरति शोकश्च'–उत्तररामचरितम्

C. 'अकालकुसुमप्रसवा इव..... प्रेतपटहा इवोद्वेजयन्ति'– कादम्बरी (शुकनासोपदेश) से अवतरित इस गद्यांश में शुकनास, चन्द्रापीड को उपदेश देते हुए कहते हैं कि– लक्ष्मी से उन्मत्त राजागण असमय में खिलने वाले फूलों के समान सुन्दर आकृति के होते हुए भी लोगों के विनाश के कारण होते हैं।

D. कोऽन्यो हुतवहाद् दग्धुं प्रभवति–अभिज्ञानशाकुन्तलम्।

अतः विकल्प `C' सही है।

74. (B) 75. (A) 76. (C) 77. (C) 78. (C)

79. शुकनास ने किसे उपदेश दिया?
(A) तारापीड को (B) वैशम्पायन को
(C) चन्द्रापीड को (D) पुण्डरीक को

व्याख्या–
A. तारापीड उज्जयिनी के राजा हैं, और चन्द्रापीड के पिता हैं।
B. वैशम्पायन, शुकनास का पुत्र है।
C. शुकनास तारापीड का प्रधान अमात्य है, जो **चन्द्रापीड को** राज्याभिषेक के समय उपदेश देता है।
D. पुण्डरीक के अगले जन्म का नाम ''वैशम्पायन'' है।
अतः विकल्प `C' सही है।

80. गद्यकार बाणभट्ट का स्थितिकाल क्या है?
(A) षष्ठ शताब्दी ई. (B) सप्तम शताब्दी ई.
(C) अष्टम शताब्दी ई. (D) नवम शताब्दी ई.

	कवि		स्थितिकाल (समय)
A.	भारवि	–	षष्ठ शताब्दी ई.
B.	**बाणभट्ट**	–	**सप्तम शताब्दी का पूर्वार्द्ध**
C.	वामन	–	अष्टम शताब्दी ई.
D.	रत्नाकर	–	नवम शताब्दी ई.

अतः विकल्प `B' सही है।

81. ''तेजोद्वयस्य युगपद्व्यसनोदयाभ्यां लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु''–यह किस पात्र का कथन है?
(A) काश्यप (B) कण्वशिष्य
(C) अनसूया (D) प्रियंवदा

व्याख्या–
A. 'ययातेरिव शर्मिष्ठा भर्तुर्बहुमता भव – काश्यप की उक्ति है।
B. 'तेजोद्वयस्य युगपद्व्यसनोदयाभ्यां लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु' (अभि.शा. 4/2) – प्रस्तुत सूक्ति में कण्व का शिष्य कहता है कि–
संसार दो तेजों (सूर्य, चन्द्रमा) का एक साथ अस्त एवं उदित होने से अपनी अवस्थाओं के परिवर्तन से मानों लोक को नियन्त्रित किया जा रहा है।
C. 'काम इदानीं सकामो भवतु'–अनसूया का कथन
D. 'एष दुर्वासाः सुलभकोपो महर्षिः'–प्रियंवदा का कथन
अतः विकल्प `B' सही है।

82. ''उद्गलितदर्भकवला मृग्यः परित्यक्तनर्तना मयूराः अपसृतपाण्डुपत्रा मुञ्चन्त्यश्रूणीव लताः।''
उपर्युक्त पद्य किस पात्र द्वारा कहा गया है?
(A) काश्यप द्वारा (B) अनसूया द्वारा
(C) प्रियंवदा द्वारा (D) गौतमी द्वारा

व्याख्या–
A. ''मम विरहजां न त्वं वत्से शुचं गणयिष्यसि'' कण्व का कथन है।
B. 'रक्षितव्या खलु प्रकृतिपेलवा प्रियसखी'–अनसूया का कथन।
C. ''उद्गलितदर्भकवला.....मुञ्चन्त्यश्रूणीव लताः'' (अभि. 4/12) प्रस्तुत पद्य में शकुन्तला के विदाई के समय प्रियंवदा कहती है–शकुन्तला के जाने के वियोग में हरिणियों ने कुश के ग्रास को उगल दिया है, मयूरों ने नाचना छोड़ दिया है।
D. 'वरः खल्वेषः नाशीः'–गौतमी का कथन है
अतः विकल्प `C' सही है।

83. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में ययाति के किस पुत्र का नाम उल्लिखित है?
(A) यदु (B) तुर्वशु
(C) पुरु (D) द्रुध्यु

व्याख्या–
* ''ययातेरिव शर्मिष्ठा भर्तुर्बहुमता भव।
सुतं त्वमपि सम्राजं सेव **पूरुमवाप्नुहि**।।'' अभि.शा. (4/7)
* प्रस्तुत श्लोक से यह ज्ञात होता है कि–
ययाति के पुत्र का नाम पुरु था।
पुरु की माता शर्मिष्ठा थीं।
* राजा दुष्यन्त भी पुरुवंशीय क्षत्रिय थे।
अतः विकल्प `C' सही है।

84. 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः' यह सूक्ति किस ग्रन्थ में आयी है?
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में
(B) किरातार्जुनीयम् में
(C) नीतिशतकम् में
(D) मेघदूतम् में

व्याख्या–
A. 'श्रिया दुरापः कथमीप्सितो भवेत्' अभिज्ञानशाकुन्तलम्
B. 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः' **(किरातार्जुनीयम् 1/4)**– वनेचर, हस्तिनापुर से लौटने के पश्चात् युधिष्ठिर से कहता है कि–हितकारी और प्रियवाणी दुर्लभ होती है।
C. ''विभूषणं मौनमपण्डितानाम्''–नीतिशतकम् 7 से
D. 'रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय'– मेघदूतम् 20 से
अतः विकल्प `B' सही है।

79. (C) 80. (B) 81. (B) 82. (C) 83. (C) 84. (B)

85. 'निराश्रया हन्त! हता मनस्विता' यह किसकी उक्ति है?
(A) वनेचर की (B) द्रौपदी की
(C) युधिष्ठिर की (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या–
(A) 'वसूपमानस्य वसूनि मेदिनी'– वनेचर
(B) 'निराश्रया हन्त! हता मनस्विता' (किरातार्जुनीयम् 1/43)– द्रौपदी युधिष्ठिर को उलाहना देते हुए कहती है कि– यदि आप जैसे लोग दुःसह अपमान को सहन कर लेंगे, तो मानवता आश्रयहीन होकर नष्ट हो जायेगी।
(C) किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में युधिष्ठिर की एक भी उक्ति नहीं है। वह केवल श्रोता है।
अतः विकल्प `B' सही है।

86. ''सदानुकूलेषु हि कुर्वते रतिं, नृपेष्वमात्येषु च सर्वसम्पदः'' यह किसके द्वारा कहा गया है?
(A) द्रौपदी द्वारा (B) वनेचर द्वारा
(C) दुर्योधन द्वारा (D) युधिष्ठिर द्वारा

व्याख्या–
(A) ''विजित्य यः प्राज्यमयच्छदुत्तरान्, कुरूनकुप्यं वसु वासवोपमः''–द्रौपदी द्वारा
(B) ''सदानुकूलेषु हि कुर्वते रतिं, नृपेष्वमात्येषु च सर्वसम्पदः'' (किरात. 1/5)–प्रस्तुत पद्य में **वनेचर** युधिष्ठिर से कहता है कि राजाओं और मन्त्रियों के परस्पर अनुकूल होने पर राज्य में सारी समृद्धियाँ अनुराग करती हैं।
(C+D) किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में दुर्योधन और युधिष्ठिर के द्वारा एक भी उक्ति नहीं कही गयी है।
* प्रथमसर्ग में केवल वनेचर एवं द्रौपदी की उक्ति है।
अतः विकल्प `B' सही है।

87. 'स चिन्तयत्येव भियस्त्वदेष्यतीः, अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता' यह किसके विषय में कहा गया है?
(A) दुर्योधन के विषय में
(B) वनेचर के विषय में
(C) युधिष्ठिर के विषय में
(D) दुःशासन के विषय में

व्याख्या–
(A) 'स चिन्तयत्येव भियस्त्वदेष्यतीः, अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता' (किरातार्जुनीयम् 1/23)– वनेचर, युधिष्ठिर से कहता है कि–वह (दुर्योधन) आप की ओर से आने वाली विपत्तियों को सोचता ही है (क्योंकि) अहो! बलशाली से विरोध करना दुःखमय परिणाम वाला होता है। इसलिए यह कथन **दुर्योधन के विषय में** कहा गया है।
(B) 'प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः'–वनेचर के विषय में
(C) 'मृगद्विजालूनशिखेषु बर्हिषाम्' युधिष्ठिर के विषय में
(D) 'निधाय दुःशासनमिद्धशासनः' दुःशासन की चर्चा
अतः विकल्प `A' सही है।

88. ''न क्षुद्रोऽपि प्रथमसुकृतापेक्षया संश्रयाय, प्राप्ते मित्रे भवति विमुखः किं पुनर्यस्तथोच्चैः''
उपर्युक्त सूक्ति किस ग्रन्थ से उद्धृत है?
(A) मेघदूतम् से
(B) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से
(C) उत्तररामचरितम् से
(D) नीतिशतकम् से

व्याख्या–
(A) 'न क्षुद्रोऽपि.......पुनर्यस्तथोच्चैः' (पूर्वमेघ/17) **मेघदूतम्** में विरही यक्ष मेघ से कहता है कि–छोटा व्यक्ति भी आश्रय के लिए मित्र के आने पर पहले किये हुए उपकार को सोचकर मुँह नहीं मोड़ता, फिर जो (आम्रकूट पर्वत) उतना महान् है, उसकी बात ही क्या?
(B) ''आः, अतिथिपरिभाविनि!''–अभिज्ञानशाकुन्तलम् से
(C) ''यत्र द्रुमा अपि मृगा अपि बन्धवो मे''–उत्तररामचरितम् से
(D) 'सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः'–नीतिशतकम् से
अतः विकल्प `A' सही है।

89. मेघदूतम् किस छन्द में रचित है?
(A) स्रग्धरा (B) शार्दूलविक्रीडित
(C) मन्दाक्रान्ता (D) शिखरिणी

व्याख्या–
(A) ''या सृष्टिः स्रष्टुराद्या वहति विधिहुतं या हविर्या च होत्री''– अभिज्ञानशाकुन्तलम् के इस मङ्गल श्लोक में स्रग्धरा छन्द है। इसके प्रत्येक चरण में 21 वर्ण होते हैं।
(B) ''या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता'' में शार्दूलविक्रीडित छन्द है, इसके प्रत्येक चरण में 19 वर्ण होते हैं।
(C) सम्पूर्ण मेघदूत में **''मन्दाक्रान्ता छन्द''** है।

86. (B) 87. (A) 88. (A) 89. (C)

वृत्तरत्नाकर में मन्दाक्रान्ता का लक्षण–''मन्दाक्रान्ता जलधिषडगैम्भौं नतौ ताद् गुरू चेत्'' अर्थात् जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः मगण, भगण, नगण, तगण, तगण तथा दो गुरु वर्ण आयें और जलधि (4), षट् (6), अग (7 कुलपर्वत) संख्यक वर्णों पर यति होती है, उसे मन्दाक्रान्ता छन्द कहते हैं।

मन्दाक्रान्ता के प्रत्येक चरण में 17 वर्ण होते हैं।

(D) ''यदा किञ्चिद्ज्ञोऽहं द्विप इव मदान्धः समभवम्'' नीतिशतक के इस श्लोक में ''शिखरिणी छन्द'' है, इसके प्रत्येक चरण में 17-17 अक्षर होते हैं।

90. ''स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु''–सूक्ति किस ग्रन्थ में है?

(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में
(B) किरातार्जुनीयम् में
(C) नीतिशतकम् में
(D) मेघदूतम् में

व्याख्या–

(A) 'गुर्वपि विरहदुःखमाशाबन्धः साहयति'–अभिज्ञान शाकुन्तलम् से

(B) 'निरस्तनारीसमया दुराधयः'–किरातार्जुनीयम् से

(C) 'वाराङ्गनेव नृपनीतिरनेकरूपा'–नीतिशतकम् से

(D) 'स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु' **(पूर्वमेघ/29)**– मेघदूतम् से प्रस्तुत पद्य में यक्ष, मेघ से निर्विन्ध्या नदी के विषय में कहता है कि–स्त्रियों का प्रियतम के प्रति किया गया हाव-भाव ही पहला प्रार्थनावाक्य होता है।

अतः विकल्प `D' सही है।

91. भवभूति का स्थितिकाल क्या है?

(A) पञ्चम शताब्दी **(B) षष्ठ शताब्दी**
(C) सप्तम शताब्दी **(D) अष्टम शताब्दी**

	कवि		**स्थितिकाल (समय)**
(A)	विशाखदत्त	–	पञ्चम शताब्दी
(B)	दण्डी	–	षष्ठ शताब्दी
(C)	भवभूति	–	**सप्तम शताब्दी**
(D)	वामन	–	अष्टम शताब्दी

अतः विकल्प `C' सही है।

92. ''अनिर्भिन्नो गभीरत्वादन्तर्गूढघनव्यथः'' यह किस कवि ने और किस सन्दर्भ में कहा?

(A) कालिदास ने मेघ के वर्णन में
(B) भारवि ने द्रौपदी के व्यथा के वर्णन में
(C) भवभूति ने राम के करुणरस वर्णन में
(D) भर्तृहरि ने मूर्ख (जड़) के वर्णन में

व्याख्या–

(A) 'जातं वंशे भुवनविदिते पुष्करावर्तकानां'–कालिदास ने मेघ के विषय में कहा है।

(B) 'तथापि वक्तुं व्यवसाययन्ति मां, निरस्तनारीसमया दुराधयः'–भारवि ने द्रौपदी के व्यथा के वर्णन में।

(C) 'अनिर्भिन्नो गभीरत्वादन्तर्गूढघनव्यथः' **(उत्तररामचरितम् 3/1)**– प्रस्तुत पंक्ति में भवभूति राम के करुणरस का वर्णन करते हुए कहते हैं कि–गम्भीरता के कारण अप्रकट एवं अन्दर छिपी हुई घोर वेदना से युक्त राम का करुणरस पुटपाक के तुल्य है।

(D) ''न तु प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्तमाराधयेत्''–भर्तृहरि ने 'नीतिशतकम्' में मूर्ख व्यक्तियों के बारे में कहा है।

अतः विकल्प `C' सही है।

93. ''स्नपयति हृदयेशं स्नेहनिष्यन्दिनी ते, धवलमधुरमुग्धा दुग्धकुल्येव दृष्टिः'' उपर्युक्त पद्यांश किस ग्रन्थ से उद्धृत है।

(A) उत्तररामचरितम् से
(B) मेघदूतम् से
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से
(D) नीतिशतकम् से

व्याख्या–

(A) 'स्नपयति हृदयेशं.......दृष्टिः'–प्रस्तुत पद्यांश उत्तररामचरितम् से उद्धृत है। **(उत्तररामचरितम् 3/23)**

(B) ''सद्यः पाति प्रणयि हृदयं विप्रयोगे रुणद्धि''–मेघदूतम् से उद्धृत है।

(C) 'अतिस्नेहः पापशङ्की'–अभिज्ञानशाकुन्तलम् से उद्धृत है

(D) ''माधुर्यं मधुबिन्दुना रचयितुं क्षाराम्बुधेरीहते''–नीतिशतकम् से उद्धृत है।

अतः विकल्प `A' सही है।

90. (D) 91. (C) 92. (C) 93. (A)

94. ''मन्यामहे मलयमेव यदाश्रयेण, कङ्कोलनिम्बकुटजा अपि चन्दनानि।'' यह पद्यांश किस ग्रन्थ से उद्धृत है?
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से
(B) नीतिशतकम् से
(C) उत्तररामचरितम् से
(D) शुकनासोपदेश से

व्याख्या–
(A) 'मलयतटोन्मूलिता चन्दनलतेव देशान्तरे जीवितं धारयिष्यामि'–अभिज्ञानशाकुन्तलम् से
(B) ''मन्यामहे मलयमेव यदाश्रयेण कङ्कोलनिम्बकुटजा अपि चन्दनानि'' **(परिशिष्ट-17)–नीतिशतकम्** से उद्धृत है।
(C) ''आश्च्योतनं नु हरिचन्दनपल्लवानाम्''–उत्तररामचरित से
(D) ''चन्दनप्रभवो न दहति किमनलः''–शुकनासोपदेश से
अतः विकल्प `B' सही है।

95. ''दुर्जनः परिहर्तव्यो विद्ययालङ्कृतोऽपि सन्''–यह वचन किसने कहा है?
(A) भर्तृहरि ने (B) कालिदास ने
(C) भवभूति ने (D) भारवि ने

व्याख्या–
(A) ''दुर्जनः परिहर्तव्यो विद्ययालङ्कृतोऽपि सन्'' **भर्तृहरि** नीतिशतकम्–43 में कहते हैं कि– विद्या से अलंकृत होने पर भी दुष्ट का साथ छोड़ देना चाहिए।
(B) 'न खलु धीमतां कश्चिदविषयो नाम'– कालिदास ने अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में कहा है।
(C) 'राक्षसकुलप्रलयधूमकेतो किमद्यापि ते मन्युविषयः''–भवभूति ने उत्तररामचरितम् में कहा है।
(D) ''व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवं'–भारवि ने किरातार्जुनीयम् में कहा है।
अतः विकल्प `A' सही है।

96. ''विधिरहो बलवानिति मे मतिः'' यह सुभाषित किस ग्रन्थ में आया है?
(A) नीतिशतकम् में
(B) उत्तररामचरितम् में
(C) कादम्बरी (शुकनासोपदेश में)
(D) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में

व्याख्या–
(A) ''विधिरहो बलवानिति मे मतिः'' **(नीतिशतकम्/86)**– प्रस्तुत सुभाषित में भर्तृहरि कहते हैं कि–'भाग्य ही बलवान् है, ऐसी मेरी सम्मति है'
(B) ''विष्वङ्मोहः स्थगयति कथं मन्दभाग्यः करोमि'–उत्तररामचरितम् से उद्धृत है।
(C) ''न लक्षणं प्रमाणीकरोति''–कादम्बरी (शुकनासोपदेश) से उद्धृत है।
(D) ''भाग्यायत्तमतः परं न खलु तद् वाच्यं वधूबन्धुभिः''–अभिज्ञानशाकुन्तलम् में चतुर्थ अङ्क में कण्व कहते हैं।
अतः विकल्प `A' सही है।

97. 'तस्मिन्नद्रौ कतिचिदबलाविप्रयुक्तः स कामी' मेघदूतम् की इस पंक्ति के आगे की पंक्ति कौन-सी है?
(A) वप्रक्रीडापरिणतगजप्रेक्षणीयं ददर्श
(B) जीमूतेनस्वकुशलमयीं हारयिष्यन् प्रवृत्तिम्
(C) नीत्वा मासान्कनकवलयभ्रंशरिक्तप्रकोष्ठः
(D) अन्तर्वाष्पश्चिरमुनचरो राजराजस्य दध्यौ

व्याख्या–
* तस्मिन्नद्रौ कतिचिदबलाविप्रयुक्तः स कामी
* नीत्वा मासान्कनकवलयभ्रंशरिक्तप्रकोष्ठः
* प्रस्तुत पद्य कालिदास कृत मेघदूतम् का दूसरा श्लोक है। अतः विकल्प `C' सही है।

98. शकुन्तला से 'भर्तुर्बहुमता भव' यह वाक्य किसने कहा है?
(A) काश्यप ने (B) एक तापसी ने
(C) गौतमी ने (D) प्रियंवदा ने

व्याख्या–
(A) ''सुतं त्वमपि सम्राजं सेव पूरुमवाप्नुहि''–कण्व, शकुन्तला के लिए कहते हैं।
(B) ''भर्तुर्बहुमता भव''–कण्वाश्रम की **एक तापसी**, शकुन्तला को आशीर्वाद देते हुए कहती है कि– 'पति द्वारा बहुत सम्मान वाली हो।'
(C) ''वरः खल्वेषः नाशीः''–गौतमी, शकुन्तला के लिए कहती है।
(D) ''भर्तुर्गेहेऽनुभवितव्या राजलक्ष्मीः''–प्रियंवदा, शकुन्तला के लिए कहती है।
उपर्युक्त सभी कथन अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क से उद्धृत हैं, अतः विकल्प `B' सही है।

94. (B) 95. (A) 96. (A) 97. (C) 98. (B)

99. ''को नामोष्णोदकेन नवमालिकां सिञ्चति''–यह वाक्य किस ग्रन्थ में आया है?
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में
(B) मेघदूतम् में
(C) किरातार्जुनीयम् में
(D) अभिज्ञानशाकुन्तलम् चतुर्थ अङ्क के चौथे श्लोक में

व्याख्या–

(A) ''को नामोष्णोदकेन नवमालिकां सिञ्चति''– **अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क** में प्रियंवदा अनसूया से शकुन्तला के विषय में कहती है कि–भला कौन नवमालिका (चमेली) को गर्म जल से सींचता है।

(B) ''चूडापाशे नवकुरबकं चारु कर्णे शिरीषम्''–मेघदूतम् में

(C) ''शमीतरुं शुष्कमिवाग्निरुच्छिखः''–किरातार्जुनीयम् के प्रथम अङ्क में द्रौपदी युधिष्ठिर से कहती है।

(D) ''अवेहि तनयां ब्रह्मन्नग्निगर्भां शमीमिव''–(अभिज्ञान-शाकुन्तलम् के 4/4 श्लोक में) आकाशवाणी के माध्यम से यह श्लोक कण्व को सुनायी पड़ता है।

अतः विकल्प `A' सही है।

100. 'अदेवमातृकाः'' शब्द का प्रयोग किस ग्रन्थ में है?
(A) किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में
(B) अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में
(C) उत्तररामचरितम् के तृतीय अङ्क में
(D) कादम्बरी (शुकनासोपदेश) में

व्याख्या–

(A) 'वितन्वति क्षेममदेवमातृकाश्चिराय तस्मिन् कुरवश्चकासति' **(किरातार्जुनीयम् 1/17)** प्रस्तुत पद्य में 'अवेदमातृकाः' शब्द का प्रयोग हुआ है जिसका अर्थ है–वर्षा के जल पर निर्भर न रहने वाले (कुरुदेशवासी)।

(B) 'क्षौमं' = रेशमीवस्त्र (अभिज्ञानशाकुन्तलम् 4/5)

(C) 'स्तनयित्नोः' = बादल के (उत्तररामचरितम् 3/7)

(D) 'अनार्या'–लक्ष्मी के लिए आया है– कादम्बरी शुकनासोपदेश में।

अतः विकल्प `A' सही है।

99. (A) 100. (A)

प्रशिक्षित-स्नातकशिक्षक-चयनपरीक्षा (TGT)–2001

1. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में 'अभिज्ञान' शब्द से किसका बोध होता है?
(A) नथुनी **(B) पायल**
(C) अँगूठी **(D) लॉकेट**

व्याख्या –
'तेन राजर्षिणा सम्प्रस्थितेन स्वनामधेयाङ्कितमङ्गुलीयकं स्मरणीयमिति स्वयं पिनद्धम्'– (अभि.शाकु., अङ्क-4)
अनसूया के इस कथन से यह ज्ञात होता है कि अभिज्ञान-शाकुन्तलम् में 'अभिज्ञान' का तात्पर्य **''अँगूठी''** से है।

	शब्द	**अर्थ**
(A)	नासाभरणम् (नपु.)	नथुनी
(B)	नूपुरम् (नपु.)	पायल
(C)	अङ्गुलीयकम् (नपु.)	अँगूठी
(D)	कण्ठभूषा (स्त्री.)	लॉकेट

अतः विकल्प (C) सही है।

2. शकुन्तला की सखी कौन थी?
(A) गौतमी **(B) मालविका**
(C) उर्वशी **(D) अनसूया और प्रियंवदा**

व्याख्या –
(A) गौतमी, कण्वाश्रम की अध्यक्षा है।
(B) मालविका, कालिदास कृत मालविकाग्निमित्रम् की नायिका है।
(C) उर्वशी, कालिदासकृत विक्रमोर्वशीयम् की नायिका है।
(D) **अनसूया और प्रियंवदा** शकुन्तला की सखियाँ हैं। अतः विकल्प (D) सही है।

3. शकुन्तला के साथ राजदरबार तक कौन गयी थी?
(A) गौतमी **(B) मेनका**
(C) अनसूया **(D) प्रियंवदा**

व्याख्या –
(A) **''त्वया सह गौतमी यास्यति''** – कण्व के इस कथन से ज्ञात होता है कि शकुन्तला के साथ गौतमी दुष्यन्त के राजदरबार हस्तिनापुर तक जाती है।
* गौतमी के साथ शार्ङ्गरव एवं शारद्वत भी हस्तिनापुर जाते हैं।
(B) मेनका – एक अप्सरा है, जो विश्वामित्र की पत्नी एवं शकुन्तला की जन्मदात्री माता है।
(C) + (D) अनसूया एवं प्रियंवदा, शकुन्तला के साथ हस्तिनापुर नही जाती हैं। ''न युक्तमनयोस्तत्र गन्तुम्'' अतः विकल्प (A) सही है।

4. अभिज्ञानशाकुन्तलम् का विदूषक कौन है?
(A) माढव्य **(B) मैत्रेय**
(C) वसन्तक **(D) माणवक**

	ग्रन्थ		**विदूषक**
(A)	अभिज्ञानशाकुन्तलम्	–	**माढव्य**
(B)	मृच्छकटिकम्	–	मैत्रेय
(C)	रत्नावली	–	वसन्तक
(D)	विक्रमोर्वशीयम्	–	माणवक

अतः विकल्प (A) सही है।

5. किसके आग्रह पर शकुन्तला के प्रति दुर्वासा के शाप में लघुता आयी –
(A) अनसूया **(B) प्रियंवदा**
(C) कण्व **(D) गौतमी**

व्याख्या –
(A) ''गच्छ पादयोः प्रणम्य निवर्तयैनम्'' – अनसूया, प्रियंवदा को दुर्वासा ऋषि को मनाने के लिए भेजती है।
(B) ''प्रकृतिवक्रः स कस्यानुनयं प्रतिगृह्णाति! किमपि पुनः सानुक्रोशः कृतः'' – **प्रियंवदा** कहती है कि– स्वभाव से टेढे वह (दुर्वासा) भला किसकी प्रार्थना को स्वीकार करते हैं, फिर भी मैंने कुछ दयायुक्त कर लिया है। अर्थात् प्रियंवदा के आग्रह से शाप में कमी आयी। अतः विकल्प (B) सही है।
(C) कण्व, दुर्वासा ऋषि के आगमन के समय सोमनाथ तीर्थ गये थे।
(D) गौतमी को इस बात की जानकारी नहीं थी कि ऋषि दुर्वासा आश्रम में आये हैं।

1. (C) 2. (D) 3. (A) 4. (A) 5. (B)

6. 'कथां प्रमत्तः प्रथमं कृतामिव' – यह श्लोकांश है?
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में
(B) शुकनासोपदेश में
(C) शिवराजविजयम् में
(D) मेघदूतम् में

व्याख्या –
(A) ''कथां प्रमत्तः प्रथमं कृतामिव'' **(अभिज्ञानशाकुन्तलम् 4/1)** – ऋषि दुर्वासा नेपथ्य में शकुन्तला को शाप देते हुए कहते हैं कि 'याद दिलाये जाने पर भी वह (दुष्यन्त) तुमको याद नहीं करेगा। जैसे कोई प्रमत्त व्यक्ति पूर्व में किये गये कार्यों को स्मरण नहीं करता।
(B) ''कल्याणाभिनिवेशो लक्ष्मीमेव प्रथमम्''–(शुकनासोपदेश)
(C) ''अरुण एष प्रकाशः पूर्वस्यां भगवतो मरीचिमालिनः'' (शिवराजविजयम्)
(D) ''आषाढस्य प्रथमदिवसे मेघमाश्लिष्टसानुम्'' – (मेघदूतम्)
अतः विकल्प (A) सही है।

7. 'पीड्यन्ते गृहिणः कथं नु तनया विश्लेषदुःखैर्नवैः' – यह उक्ति किसकी है –
(A) प्रियंवदा की (B) अनसूया की
(C) गौतमी की (D) कण्व की

व्याख्या –
(A) 'एते खलु हस्तिनापुरगामिन ऋषयः शब्दायन्ते' – प्रियंवदा
(B) 'यद्यपि गान्धर्वेण विधिना निवृत्तकल्याणा शकुन्तला....' – अनसूया
(C) 'वरः खल्वेषः नाशीः' – गौतमी
(D) 'पीड्यन्ते गृहिणः कथं नु तनया विश्लेषदुःखैर्नवैः' – प्रस्तुतपद्य में **कण्व**, शकुन्तला की विदाई के समय कहते हैं कि – जंगल में रहने वाले मेरी भी स्नेह के कारण ऐसी व्याकुलता है तो गृहस्थ लोग पुत्री के वियोग के दुःख में कितना अधिक दुःखी होते होंगे। (अभि. 4/6)
अतः विकल्प (D) सही है।

8. ''सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं............'' रिक्तस्थान की पूर्ति करें –
(A) सर्वैरनुज्ञायताम् (B) नादत्ते
(C) अनुमतगमना (D) स्नेहेन

व्याख्या –
(A) 'सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं **सर्वैरनुज्ञायताम्**' (अभि. 4/9) – कण्व
(B) 'नादत्ते प्रियमण्डनाऽपि भवताम्' – कण्व
(C) 'अनुमतगमना शकुन्तला तरुभिरियं वनवासबन्धुभिः'–कण्व
(D) 'नादत्ते प्रियमण्डनापि भवतां स्नेहेन या पल्लवम्'–कण्व
अतः विकल्प (A) सही है।

9. ''अर्थो हि कन्या परकीय एव'' – किसके लिए कहा गया है?
(A) शकुन्तला के लिए (B) प्रियंवदा के लिए
(C) अनसूया के लिए (D) गौतमी के लिए

व्याख्या –
(A) 'अर्थो हि कन्या परकीय एव' (अभि. 4/22)– कण्व **शकुन्तला के लिए** कहते हैं कि – ''कन्या वस्तुतः दूसरे का ही धन है''
(B) + (C) ''निगृह्यशोकमनुगच्छतं मां प्रस्थितम्'' – कण्व, अनसूया प्रियंवदा के लिए कहते हैं।
(D) 'कथं वा गौतमी मन्यते' – कण्व गौतमी से कहते हैं।
अतः विकल्प (A) सही है।

10. 'तन्माऽतिमात्रं मम कृत उत्कण्ठस्व' – यह कथन किसका है?
(A) काश्यप का (B) शकुन्तला का
(C) प्रियंवदा का (D) अनसूया का

व्याख्या –
(A) 'मम विरहजां न त्वं वत्से शुचं गणयिष्यसि' – काश्यप
(B) 'तन्माऽतिमात्रं मम कृत उत्कण्ठस्व' – **शकुन्तला** कण्व से कहती है कि मेरे लिए आप अत्यधिक दुःखी मत होइए।
(C) 'को नामोष्णोदकेन नवमालिकां सिञ्चति' – प्रियंवदा
(D) 'काम इदानीं सकामो भवतु' – अनसूया
अतः विकल्प (B) सही है।

11. किरातार्जुनीयम् महाभारत के किस पर्व से लिया गया है?
(A) वनपर्व से (B) आदिपर्व से
(C) भीष्मपर्व से (D) सभापर्व से

	ग्रन्थ		उपजीव्य
(A)	**किरातार्जुनीयम्**	–	**वनपर्व (महाभारत)**
(B)	अभिज्ञानशाकुन्तलम्	–	आदिपर्व (महाभारत)
(C)	गीता	–	भीष्मपर्व (महाभारत)
(D)	शिशुपालवधम्	–	सभापर्व (महाभारत)

अतः विकल्प (A) सही है।

6. (A) 7. (D) 8. (A) 9. (A) 10. (B) 11. (A)

12. किरातार्जुनीयम् में कुल कितने सर्ग हैं?
(A) 18 **(B) 19**
(C) 20 **(D) 22**

महाकाव्य		सर्ग
(A) **किरातार्जुनीयम्**	**–**	**18**
(B) रघुवंशमहाकाव्यम्	–	19
(C) शिशुपालवधम्	–	20
(D) नैषधीयचरितम्	–	22

अतः विकल्प (A) सही है।

13. ''हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः'' – सूक्ति किस ग्रन्थ से है?
(A) मेघदूतम् से
(B) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से
(C) किरातार्जुनीयम् से
(D) नीतिशतकम् से

व्याख्या –
(A) 'सद्यः पाति प्रणयि हृदयं विप्रयोगे रुणद्धि मेघदूतम् (पूर्व भाग-9) से
(B) 'गुर्वपि विरहदुःखमाशाबन्धः साहयति'–अभि. शाकु.–16
(C) 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः' **(किरात. 1/4)** – वनेचर, युधिष्ठिर से कहता है कि – हितकारी और मनोहारी वचन दुर्लभ होते हैं।
(D) नानाफलं फलति कल्पलतेव भूमिः–नीतिशतकम्-38
अतः विकल्प (C) सही है।

14. 'निगूढतत्त्वं नयवर्त्म विद्विषाम्' – यह उक्ति किसकी है?
(A) वनेचर की **(B) दुर्योधन की**
(C) द्रौपदी की **(D) युधिष्ठिर की**

व्याख्या –
(A) 'निगूढतत्त्वं नयवर्त्म विद्विषाम्' (किरात. 1/6)– **वनेचर**, युधिष्ठिर से कहता है कि – गुप्त रहस्यों वाला नीतिमार्ग जो मेरे द्वारा जाना गया वह आपका प्रभाव है।
(C) 'शमीतरुं शुष्कमिवाग्निरुच्छिखः' – द्रौपदी
नोट – किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में दुर्योधन एवं युधिष्ठिर की एक भी उक्ति नहीं है।
अतः विकल्प (A) सही है।

15. 'तथापि वक्तुं व्यवसाययन्ति मां निरस्तनारीसमया दुराधयः'–यह श्लोकांश किस ग्रन्थ से लिया गया है?
(A) मेघदूतम् से **(B) किरातार्जुनीयम् से**
(C) नीतिशतकम् से **(D) शिवराजविजयम् से**

व्याख्या –
(A) 'ह्रीमूढानां भवति विफलप्रेरणा चूर्णमुष्टिः'–(उत्तरमेघ)
(B) 'तथापि वक्तुं व्यवसाययन्ति मां, निरस्तनारीसमया दुराधयः **(किरात. 1/28)**– प्रस्तुत पद्य में द्रौपदी युधिष्ठिर से कहती है कि – नारी की मर्यादा को नष्ट करने वाली दुष्ट मनोव्यथाएँ मुझे कुछ कहने के लिए उद्यत कर रही हैं।
(C) 'दुर्जनः परिहर्तव्यो विद्ययाऽलंकृतोऽपि सन्' – (नीतिशतकम्)
(D) 'सत्यः पात्यन्ते, सन्तश्च सन्ताप्यन्ते'–(शिवराजविजयम्)
अतः विकल्प (B) सही है।

16. मेघदूतम् है –
(A) कथा **(B) महाकाव्य**
(C) खण्डकाव्य **(D) नाटक**

ग्रन्थ		काव्यविधा
(A) कादम्बरी	–	कथा
(B) किरातार्जुनीयम्	–	महाकाव्य
(C) मेघदूतम्	–	**खण्डकाव्य**/गीतिकाव्य
(D) अभिज्ञानशाकुन्तलम्	–	नाटक

अतः विकल्प (C) सही है।

17. मेघदूतम् में अभिशप्त यक्ष कहाँ रहता था?
(A) नर्मदा के तट पर **(B) अलकापुरी में**
(C) आम्रकूट पर्वत पर **(D) रामगिरि पर्वत में**

व्याख्या –
(A) **नर्मदा** (रेवा) – मेघ के मार्ग में पड़ने वाली पहली नदी है।
(B) **अलका** – यह कुबेर की राजधानी है। शाप के पूर्व यक्ष अलकापुरी में ही निवास करता था।
(C) **आम्रकूट** – मेघ के मार्ग का पहला पर्वत।
(D) 'स्निग्धच्छायातरुषु वसतिं रामगिर्याश्रमेषु' – प्रस्तुत श्लोकांश से ज्ञात होता है कि – अभिशप्त यक्ष **रामगिरि पर्वत** पर रहता था। (पूर्वमेघ–1)
अतः विकल्प (D) सही है।

12. (A) 13. (C) 14. (A) 15. (B) 16. (C) 17. (D)

18. मेघदूतम् के अनुसार कैलाशपर्वत तक मेघ के सहयात्री कौन होंगे?
(A) राजहंस (B) बलाका
(C) चातक (D) नलगिरि

व्याख्या –
(A) **राजहंस**– कैलाशपर्वत तक मेघ के सहयात्री। ''आ कैलासाद् .... भवतो राजहंसाः सहायाः'' (पूर्वमेघ-11)
(B) **बलाका** – आकाश में पंक्तिबद्ध होकर बगुलियाँ मेघ से मिलती हैं। ''सेविष्यन्ते नयनसुभगं खे भवन्तं बलाकाः'' (पूर्वमेघ-10)
(C) **चातक**–मेघ के वामपार्श्व (बाईं ओर) में बोलता है।
(D) **नलगिरि** – राजा प्रद्योत का हाथी है।
अतः विकल्प (A) सही है।

19. 'कण्ठाश्लेषप्रणयिनि जने किं पुनर्दूरसंस्थे' – इसमें 'जन' शब्द किसका बोधक है –
(A) मेघ का (B) यक्षिणी का
(C) राजहंस का (D) चातक का

व्याख्या –
कण्ठ के आलिङ्गन से प्रेम करने वाली मेरी प्रिया रूप जन के दूर होने पर क्या कहा जाय।
इस पद में सप्तमी के कारण ऐसे व्यक्ति की ओर संकेत कर रहा है, जो उस यक्ष के कण्ठालिङ्गन का इच्छुक हो और वह व्यक्ति केवल उसकी प्रिया ही हो सकती है जो उससे दूर स्थित है। 'जने' से अर्थ यहाँ पर प्रिया अर्थात् यक्षिणी है।
अतः विकल्प (B) सही है।
स्रोत- 1. मेघदूतम् (पूर्वमेघ-3) आर0बी0 शास्त्री
2. मेघदूतम्- विजेन्द्र शर्मा, पेज-07

20. कालिदास के अनुसार कितने तत्वों की समष्टि से मेघ बनता है?
(A) पाँच (B) चार
(C) तीन (D) दो

व्याख्या –''धूमज्योतिःसलिलमरुतां सन्निपातः क्व मेघः''– (पूर्वमेघ /5) धुआँ, ज्योति (प्रकाश), जल, वायु इन **चार तत्वों** के सन्निपात से मेघ बना है। अतः विकल्प (B) सही है।

21. कालिदास के अनुसार चेतन और अचेतन में कृपण कौन है?
(A) कामार्त (B) शोकार्त
(C) क्षुधार्त (D) रोगार्त

व्याख्या – ''**कामार्ता** हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु'' (पूर्वमेघ–5)– कालिदास कहते हैं कि – कामार्त व्यक्ति स्वाभाविक रूप से चेतन और अचेतन में भेद करने में कृपण (दीन) हो जाते हैं।

शब्द	**अर्थ**
कामार्त	कामपीड़ित
शोकार्त	शोक से पीड़ित
क्षुधार्त	भूख से पीड़ित
रोगार्त	रोग से पीड़ित

अतः विकल्प (A) सही है।

22. 'याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा' – इसमें 'अधिगुण' शब्द से किसका बोध होता है?
(A) यक्ष का (B) मेघ का
(C) गङ्गा का (D) कुबेर का

व्याख्या –
(A) यक्ष- कुबेर का सेवक था जो अपनी प्रिया से दूर रामगिरि पर्वत में रहता था।
(B) 'याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा' (पूर्वमेघ/6)– यहाँ **'अधिगुण' शब्द मेघ के लिए** आया है।
(C) गङ्गा को भगीरथ धरती पर लाये थे, अतः इसे 'भागीरथी' भी कहते हैं।
(D) कुबेर-अलकापुरी का राजा था। जिसने यक्ष को अपनी प्रिया से एकवर्ष तक दूर रहने का शाप दिया था।
अतः विकल्प (B) सही है।

23. मेघ की यात्रा के समय वामपार्श्व में किसकी ध्वनि होती है?
(A) राजहंस की (B) बलाका की
(C) चातक की (D) सारिका की

व्याख्या –
(A) राजहंस मानसरोवर जाते समय आकाश मार्ग में मेघ के सहयात्री होंगे।
(B) आकाश में पंक्तिबद्ध बगुलियाँ मेघ को देखती हैं।
(C) **'वामश्चायं नदति मधुरश्चातकस्ते सगन्धः'** (पूर्वमेघ /10) – मेघ की यात्रा के समय वामपार्श्व (बाईं ओर) **चातक** बोलते हैं।
(D) यक्ष के घर में यक्षिणी द्वारा पिंजड़े में सारिका (मैना) पाली गयी है।
अतः विकल्प (C) सही है।

18. (A) 19. (B) 20. (B) 21. (A) 22. (B) 23. (C)

24. उत्तररामचरितम् में कुल कितने अङ्क हैं?
(A) 5 **(B) 6**
(C) 7 **(D) 10**

ग्रन्थ		अङ्क
(A) मालविकाग्निमित्रम्	–	5
(B) स्वप्नवासवदत्तम्	–	6
(C) **उत्तररामचरितम्**	–	**7**
(D) मृच्छकटिकम्	–	10

अतः विकल्प (C) सही है।

25. उत्तररामचरितम् में ''छाया अङ्क'' कौन-सा है?
(A) प्रथम **(B) द्वितीय**
(C) तृतीय **(D) चतुर्थ**

अङ्क		नाम
(A) प्रथम अङ्क	–	चित्रदर्शन
(B) द्वितीय अङ्क	–	पञ्चवटीप्रवेश
(C) **तृतीय अङ्क**	**–**	**छाया अङ्क**
(D) चतुर्थ अङ्क	–	कौशल्याजनकयोग

अतः विकल्प (C) सही है।

26. ''त्वं जीवितं त्वमसि मे हृदयं द्वितीयम्'' – उत्तररामचरित में यह किसकी उक्ति है?
(A) वासन्ती की **(B) तमसा की**
(C) मुरला की **(D) सीता की**

व्याख्या –
(A) ''त्वं जीवितं त्वमसि मे हृदयं द्वितीयम्'' (उत्तररामचरितम् 3/26)– **वासन्ती** राम को उलाहना देते हुए कहती हैं कि – 'तुम मेरा जीवन हो, तुम मेरा दूसरा हृदय हो' इत्यादि सैकड़ों वचन आपने सीता के लिए कहा था!
(B) 'विरहव्यथेव वनमेति जानकी' – तमसा
(C) 'शरदिज इव घर्मः केतकीगर्भपत्रम्' – मुरला
(D) 'अहमेवैतस्य हृदयं जानामि ममैषः' – सीता
अतः विकल्प (A) सही है।

27. उत्तररामचरित के तृतीय अङ्क में राम किससे अपनी व्यथा का वर्णन करते हैं?
(A) वासन्ती से **(B) तमसा से**
(C) मुरला से **(D) सीता से**

व्याख्या –
(A) राम **वासन्ती से** अपनी विरहव्यथा का वर्णन करते हैं।
(B) तमसा, सीता के साथ रहती है।
(C) तमसा और मुरला – ये दोनों नदियाँ हैं।
(D) सीता, अपनी बात तमसा से कहती है, क्योंकि पूरे तृतीय अङ्क में राम के साथ वासन्ती और सीता के साथ तमसा रहती है।
अतः विकल्प (A) सही है।

28. 'पुरोत्पीडे तटाकस्य परीवाहः प्रतिक्रिया' में 'पुरोत्पीडे' शब्द का क्या अर्थ है –
(A) वाणी
(B) जलवृद्धि
(C) सरोवर
(D) बादल

शब्द		अर्थ
(A) भारतीनिर्घोषः	–	वाणी
(B) **पुरोत्पीडे**	**–**	**जलवृद्धि**
(C) तटाकः	–	सरोवर
(D) स्तनयित्नुः	–	बादल

अतः विकल्प (B) सही है।

29. 'तोयस्येवाप्रतिहतरयः सैकतं सेतुमोघः' श्लोकांश है?
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से
(B) नीतिशतकम् से
(C) मेघदूतम् से
(D) उत्तररामचरितम् से

व्याख्या –
(A) 'प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा' – अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(B) 'हतविधिपरिपाकः केन वा लङ्घनीयः' – नीतिशतकम्
(C) 'नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण' – मेघदूतम्
(D) 'तोयस्येवाप्रतिहतरयः सैकतं सेतुमोघः' **(उत्तररामचरितम् अङ्क 3/36)** – राम कहते हैं कि – अबाध गति से जाने वाला जलप्रवाह रेत के पुल को तोड़कर फैल जाता है। अतः विकल्प (D) सही है।

24. (C) 25. (C) 26. (A) 27. (A) 28. (B) 29. (D)

30. करुणरस प्रधान नाटक है?
(A) उत्तररामचरितम् (B) मुद्राराक्षसम्
(C) मालतीमाधवम् (D) अभिज्ञानशाकुन्तलम्

	नाटक		प्रधानरस
(A)	**उत्तररामचरितम्**	–	**करुणरस**
(B)	मुद्राराक्षसम्	–	वीररस
(C)	मालतीमाधवम्	–	शृंगाररस
(D)	अभिज्ञानशाकुन्तलम्	–	शृंगाररस

अतः विकल्प (A) सही है।

31. उत्तररामचरित में वर्णित तमसा और मुरला हैं?
(A) दो नदियाँ
(B) वनदेवियाँ
(C) सीता की परिचारिका
(D) लव कुश की परिचारिका

व्याख्या –
(A) 'ततः प्रविशति नदीद्वयम्' – प्रस्तुत पंक्ति तमसा और मुरला के लिए प्रयुक्त है अर्थात् ये **दोनों नदियाँ हैं।**
(B) वासन्ती वनदेवी है और सीता की सखी भी है।
(C) सीता राजा जनक की पुत्री और राम की पत्नी हैं। कुश और लव इनके दो पुत्र हैं। वनवासकाल में इनकी कोई परिचारिका नही थी।
(D) कुश और लव दोनों राम और सीता के पुत्र हैं। कुश बड़ा भाई और लव छोटा है। इनकी भी किसी परिचारिका का उल्लेख नहीं है।
अतः विकल्प (A) सही है।

32. ''करुणस्य मूर्तिरथवा शरीरिणी, विरहव्यथेव वनमेति जानकी'' – यह कथन किसका है?
(A) मुरला का (B) सीता का
(C) राम का (D) तमसा का

व्याख्या –
(A) ''हृदयकमलशोषी दारुणो दीर्घशोकः'' – मुरला
(B) 'दिष्ट्या अपरिहीनधर्मः खलु स राजा' – सीता
(C) 'यत्कल्याणं वयसि तरुणे भाजनं तस्य जातः' – राम
(D) 'करुणस्य मूर्तिरथवा शरीरिणी विरहव्यथेव वनमेति जानकी' (उत्तर. 3/4) – जब सीता गोदावरी से निकलकर पञ्चवटी में प्रवेश करने लगती हैं, तब **तमसा कहती है** – सीता करुणरस की साक्षात् मूर्ति अथवा शरीरधारिणी वियोग व्यथा के तुल्य पञ्चवटी में आ रही हैं।
अतः विकल्प (D) सही है।

33. भवभूति किसके आश्रित कवि थे –
(A) यशोवर्मा के
(B) विक्रमादित्य के
(C) हर्षवर्धन के
(D) विष्णुवर्धन के

	कवि		राज्याश्रय
(A)	**भवभूति**	–	**यशोवर्मा**
(B)	कालिदास	–	विक्रमादित्य
(C)	बाणभट्ट	–	हर्षवर्धन
(D)	भारवि	–	विष्णुवर्धन

अतः विकल्प (A) सही है।

34. शिवराजविजयम् के लेखक हैं?
(A) दण्डी (B) अम्बिकादत्तव्यास
(C) कालिदास (D) भारवि

	ग्रन्थ		लेखक
(A)	दशकुमारचरितम्	–	दण्डी
(B)	**शिवराजविजयम्**	–	**अम्बिकादत्तव्यास**
(C)	ऋतुसंहारम्	–	कालिदास
(D)	किरातार्जुनीयम्	–	भारवि

अतः विकल्प (B) सही है।

35. 'संस्कृत संजीवनी समाज' की स्थापना किसने की?
(A) गोविन्ददास ने
(B) कुसुमदेव ने
(C) माधवभट्ट ने
(D) अम्बिकादत्तव्यास ने

व्याख्या –
* संस्कृत शिक्षा प्रणाली में सुधार के लिए 'संस्कृत संजीवनी समाज' नामक संस्था की स्थापना **अम्बिकादत्त व्यास जी** ने की थी।
अतः विकल्प (D) सही है।

30. (A) 31. (A) 32. (D) 33. (A) 34. (B) 35. (D)

36. संस्कृतसाहित्य में प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास का सौभाग्य किसे प्राप्त है?
(A) नवसाहसाङ्कचरितम् (B) शिवराजविजयम्
(C) कादम्बरी (D) हर्षचरितम्

व्याख्या –
(A) नवसाहसाङ्कचरितम् – संस्कृतसाहित्य का प्रथम ऐतिहासिक महाकाव्य है।
(B) **शिवराजविजयम्** – संस्कृतसाहित्य का प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास।
(C) कादम्बरी – बाणभट्ट कृत कादम्बरी तीन जन्मों की एक काल्पनिक 'कथा' है।
(D) हर्षचरितम् – यह एक 'आख्यायिका' ग्रन्थ है, इसमें कुल 8 उच्छ्वास हैं।
अतः विकल्प (B) सही है।

37. शिवराजविजयम् का प्रधानरस कौन सा है?
(A) करुणरस (B) शृंगाररस
(C) शान्तरस (D) वीररस

	ग्रन्थ		प्रधानरस
(A)	उत्तररामचरितम्	–	करुणरस
(B)	नैषधीयचरितम्	–	शृंगाररस
(C)	शारिपुत्रप्रकरणम्	–	शान्तरस
(D)	**शिवराजविजयम्**	–	**वीररस**

अतः विकल्प (D) सही है।

38. शिवराजविजयम् की सम्पूर्ण कथा कितने निःश्वासों में विभक्त है?
(A) 5 (B) 8
(C) 10 (D) 12

	ग्रन्थ		विभाजन
(A)	सरस्वतीकण्ठाभरणम्	–	5 परिच्छेद
(B)	हर्षचरितम्	–	8 उच्छ्वास
(C)	काव्यादर्श	–	3 परिच्छेद
(D)	**शिवराजविजयम्**	–	**12 निःश्वास**

अतः विकल्प (D) सही है।

39. शिवराजविजय में किस रीति का आश्रय लिया गया है?
(A) गौडी (B) वैदर्भी
(C) पाञ्चाली (D) इनमें से कोई नहीं

	ग्रन्थ		मुख्य रीति
(A)	महावीरचरितम्	–	गौडी रीति
(B)	अभिज्ञानशाकुन्तलम्	–	वैदर्भी रीति
(C)	**शिवराजविजयम्**	–	**पाञ्चाली** (कहीं कहीं वैदर्भी और गौडी का समन्वय)

अतः विकल्प (C) सही है।

40. भर्तृहरि ने नीतिशतक लिखा है?
(A) गद्य में (B) गद्य, पद्य में
(C) छन्द में (D) श्लोक में

	ग्रन्थ		विधा
(A)	कादम्बरी	–	गद्य में
(B)	अभिज्ञानशाकुन्तलम्	–	गद्य, पद्य में
(C)	**नीतिशतकम्**	–	**विभिन्न छन्दों में**
(D)	गीता	–	श्लोक (अनुष्टुप्) में

अतः विकल्प (C) सही है।

41. नीतिशतक में कितने प्रकार के प्राणी बताये गये हैं?
(A) तीन (B) चार
(C) छः (D) आठ

व्याख्या – प्रायेणाधममध्यमोत्तमगुणः संसर्गतो जायते।
(A) नीतिशतक में भर्तृहरि ने **तीन प्रकार** के प्राणी बताये हैं–
1. अधम 2. मध्यम 3. उत्तम
(B) चार वेद – ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद
(C) ऋतुसंहारम् के 6 सर्गों में वर्णित षट् ऋतुयें – ग्रीष्म, वर्षा, शरद्, हेमन्त, शिशिर, वसन्त
(D) अष्टमूर्ति शिव – जल, अग्नि, यजमान, सूर्य, चन्द्र, आकाश, पृथ्वी, वायुरूप मूर्ति।
अतः विकल्प (A) सही है।

42. 'विद्याविहीनः पशुः' यह उक्ति किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है?
(A) नीतिशतकम् से
(B) मेघदूतम् से
(C) उत्तररामचरितम् से
(D) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से

व्याख्या –
(A) **'विद्याविहीनः पशुः'** – विद्या से विहीन व्यक्ति पशु है, **(नीतिशतकम्–17)**
(B) 'स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु'–(मेघदूतम्–19)
(C) 'भवति ननु लाभो हि रुदितम्' – (उत्तररामचरितम्)
(D) 'उचितं न ते मङ्गलकाले रोदितुम्'–(अभिज्ञान. शाकु.)
अतः विकल्प (A) सही है।

36. (B) 37. (D) 38. (D) 39. (C) 40. (C) 41. (A) 42. (A)

43. 'प्रारब्धमुत्तमजना न परित्यजन्ति' – श्लोकांश उद्धृत है?
(A) मेघदूतम् से (B) कादम्बरी से
(C) नीतिशतकम् से (D) किरातार्जुनीयम् से

व्याख्या –

(A) 'के वा न स्युः परिभवपदं निष्फलारम्भयत्नाः'–(मेघदूतम्)

(B) 'पुरुषोत्तमरतापि खलजनप्रिया'–(कादम्बरी शुकनासोपदेश)

(C) **'प्रारब्धमुत्तमजना न परित्यजन्ति'** – भर्तृहरि कहते हैं कि – उत्तम प्रकृति के लोग विघ्नों द्वारा बार-बार आहत किये जाने पर भी आरम्भ किये हुए कार्य को नहीं त्यागते हैं। – **(नीतिशतकम्-73)**

(D) 'मनोरमामात्मवधूमिव श्रियम्' – (किरातार्जुनीयम्)

अतः विकल्प (C) सही है।

44. 'सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः' – श्लोकांश में 'परमगहनो' का क्या अर्थ है?
(A) अत्यन्त कठिन (B) असंगत बोलने वाले
(C) धोखा न देने वाले (D) लज्जावाली

	शब्द	**अर्थ**
(A)	**परमगहनो**	**– अत्यन्तकठिन (असम्भव)**
(B)	जल्पकः	– असंगत बोलने वाले
(C)	अवञ्चकः	– धोखा न देने वाले
(D)	ह्रीमति	– लज्जावाली

अतः विकल्प (A) सही है।

45. कादम्बरी की कथा है?
(A) कल्पनाप्रसूत
(B) रामायण पर आधारित
(C) महाभारत पर आधारित
(D) पूर्णतः काल्पनिक

	ग्रन्थ	**उपजीव्य**
(A)	**कादम्बरी**	– **कल्पनाप्रसूत** (गुणाढ्य बृहत्कथा)
(B)	अभिषेकनाटक	– रामायण पर आधारित
(C)	वेणीसंहारम्	– महाभारत पर आधारित
(D)	मालतीमाधवम्	– पूर्णतः काल्पनिक

अतः विकल्प (A) सही है।

46. कादम्बरी में कितने जन्मों की कथा है?
(A) दो (B) तीन
(C) चार (D) पाँच

व्याख्या –

कादम्बरी में **तीन जन्मों** की कथा का वर्णन है।

तीन जन्मों के नाम –

1	2	3
पुण्डरीक	वैशम्पायन	शुक
चन्द्रमा	चन्द्रापीड	शूद्रक

अतः विकल्प (B) सही है।

47. 'ऐश्वर्यतिमिरान्धत्वम्' यह कथन किस ग्रन्थ का है?
(A) शुकनासोपदेश का
(B) मेघदूतम् का
(C) नीतिशतकम् का
(D) किरातार्जुनीयम् का

व्याख्या –

(A) ''ऐश्वर्यतिमिरान्धत्वम्' – कादम्बरी **शुकनासोपदेश** में शुकनास, चन्द्रापीड को उपदेश देते हुए कहते हैं कि – ऐश्वर्यरूपी अन्धकार की चिकित्सा अञ्जनलिप्त शलाका से नहीं की जा सकती है।

(B) 'मन्दायन्ते न खलु सुहृदामभ्युपेतार्थकृत्याः – मेघदूतम् से

(C) 'सत्संगतिः कथय किं न करोति पुंसाम् – नीतिशतकम् से

(D) 'गुणानुरोधेन विना न सत्क्रिया' – किरातार्जुनीयम् से

अतः विकल्प (A) सही है।

48. 'पार्वतीपरिणय' किसकी रचना है?
(A) कालिदास (B) बाणभट्ट
(C) माघ (D) कुमारदास

रचना		**रचनाकार**
(A) ऋतुसंहारम्	–	कालिदास
(B) **पार्वतीपरिणयम्**	–	**बाणभट्ट**
(C) शिशुपालवधम्	–	माघ
(D) जानकीहरणम्	–	कुमारदास

अतः विकल्प (B) सही है।

43. (C) 44. (A) 45. (A) 46. (B) 47. (A) 48. (B)

49. कर्ता का इष्टतम कारक है?
(A) कर्मकारक (B) करणकारक
(C) सम्प्रदानकारक (D) अपादानकारक

व्याख्या –
(A) 'कर्तुरीप्सिततमं कर्म' (1/4/49) सूत्र से कर्ता अपनी क्रिया द्वारा जिसको सबसे अधिक चाहता है उसकी **कर्मसंज्ञा** होती है यथा – हरिं भजति।
(B) 'साधकतमं करणम्' (1/4/42) – करणकारकसंज्ञा
(C) 'कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्' (1/4/32) – सम्प्रदानसंज्ञा
(D) 'ध्रुवमपायेऽपादानम्' (1/4/24) – अपादानकारक संज्ञा
अतः विकल्प (A) सही है।

50. 'इत्थंभूतलक्षणे' से सम्बन्धित विभक्ति है?
(A) द्वितीया विभक्ति (B) तृतीया विभक्ति
(C) चतुर्थी विभक्ति (D) पञ्चमी विभक्ति

व्याख्या –
(A) 'तथायुक्तं चानीप्सितम्' (1/4/50) – 'द्वितीयाविभक्ति का सूत्र। ग्रामं गच्छन् तृणं स्पृशति।
(B) **'इत्थंभूतलक्षणे'** (2/3/21) सूत्र से किसी विशेष लक्षण को प्राप्त हुए व्यक्ति अथवा वस्तु के लक्षण में **तृतीया विभक्ति** होती है। यथा – जटाभिः तापसः।
(C) रुच्यर्थानां प्रीयमाणः (1/4/33) – चतुर्थी विभक्ति में। यथा– चन्दनाय चाकलेहः रोचते।
(D) पराजेरसोढः (1/4/26) – पञ्चमी विभक्ति में। यथा– बालकः अध्ययनात् पराजयते।
अतः विकल्प (B) सही है।

51. 'प्रजाभ्यः स्वस्ति' में चतुर्थी विभक्ति का सूत्र है –
(A) हितयोगे च (B) रुच्यर्थानां प्रीयमाणः
(C) चतुर्थी सम्प्रदाने (D) नमःस्वस्तिस्वाहास्वधा...

व्याख्या –
(A) हितयोगे च (वार्तिक) – ब्राह्मणाय हितम्
(B) रुच्यर्थानां प्रीयमाणः – (1/4/33) हरये रोचते भक्तिः
(C) चतुर्थी सम्प्रदाने (2/3/13) – विप्राय गां ददाति
(D) **नमःस्वस्तिस्वाहास्वधाऽलंवषड्योगाच्च** (2/3/16) सूत्र से नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलम् और वषट् अव्यय पदों के योग में भी चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा – प्रजाभ्यः स्वस्ति। अतः विकल्प (D) सही है।

52. 'चौराद् बिभेति' में पञ्चमी विभक्ति किस सूत्र से है?
(A) पञ्चमी विभक्ते (B) भीत्रार्थानां भयहेतुः
(C) आख्यातोपयोगे (D) जनिकर्तुः प्रकृतिः

व्याख्या –
(A) अपादाने पञ्चमी (2/3/28) – धावतोऽश्वात् पतति
(B) **भीत्रार्थानां भयहेतुः** (1/4/25) – सूत्र से भय और त्राण अर्थवाली धातुओं के योग में भय के कारण की अपादानसंज्ञा होकर उसमें पञ्चमी विभक्ति होती है यथा – चौराद् बिभेति
(C) आख्यातोपयोगे (1/4/29) – उपाध्यायात् अधीते
(D) जनिकर्तुः प्रकृतिः (1/4/30) – ब्रह्मणः प्रजाः प्रजायन्ते
अतः विकल्प (B) सही है।

53. अनुक्त कर्म में विभक्ति है?
(A) द्वितीया (B) तृतीया
(C) चतुर्थी (D) पञ्चमी

व्याख्या –
(A) **'कर्मणि द्वितीया'** (2/3/2) सूत्र से अनुक्त कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है, यथा – हरिं भजति।
(B) 'कर्तृकरणयोस्तृतीया' (2/3/18) – सूत्र से अनुक्त कर्ता तथा करण में तृतीया विभक्ति होती है।
(C) 'चतुर्थी सम्प्रदाने' (2/3/13) सूत्र से अनभिहित सम्प्रदान कारक में चतुर्थी विभक्ति होती है।
यथा – ब्राह्मणाय गां ददाति।
(D) अपादाने पञ्चमी (2/3/28) सूत्र से अनभिहित (अनुक्त) अपादान कारक में पञ्चमी विभक्ति होती है।
यथा – बालकः ग्रामात् आयाति।
अतः विकल्प (A) सही है।

54. 'पादेन खञ्जः' में तृतीया विभक्ति है?
(A) 'येनाङ्गविकार' से
(B) 'सहयुक्तेऽप्रधाने' से
(C) 'साधकतमं करणम्' से
(D) 'कर्तृकरणयोस्तृतीया' से

व्याख्या –
(A) **'येनाङ्गविकारः'** (2/3/20) सूत्र से जिस अङ्ग के द्वारा अङ्गी का विकार लक्षित हो उसमें तृतीया विभक्ति होती है। यथा – पादेन खञ्जः।
(B) 'सहयुक्तेऽप्रधाने' (2/3/19) सूत्र से – पुत्रेण सह आगतः पिता।
(C) 'साधकतमं करणम्' (1/4/42) सूत्र से–बाणेन हतो बाली।
(D) 'कर्तृकरणयोस्तृतीया' (2/3/18) सूत्र से–रामेण हतो बाली।
अतः विकल्प (A) सही है।

49. (A) 50. (B) 51. (D) 52. (B) 53. (A) 54. (A)

55. 'बलिं याचते वसुधाम्' यहाँ 'बलि' की कर्मसंज्ञा विधायक सूत्र है?
(A) अकथितं च
(B) अपवर्गे तृतीया
(C) तथायुक्तं चानीप्सितम्
(D) अभिनिविशश्च

व्याख्या –
(A) **'अकथितं च'** (1/4/51) सूत्र से जब वक्ता अपादान आदि कारक न कहना चाहे तो वहाँ **कर्मकारक** तथा द्वितीया विभक्ति होती है यथा – बलिं याचते वसुधाम्।
(B) 'अपवर्गे तृतीया' (2/3/6) सूत्र से–अह्ना अनुवाकोऽधीतः।
(C) 'तथायुक्तं चानीप्सितम्' (1/4/50) सूत्र से – ग्रामं गच्छन् तृणं स्पृशति।
(D) 'अभिनिविशश्च' (1/4/47) सूत्र से – अभिनिविशते सन्मार्गम्।
अतः विकल्प (A) सही है।

56. लृट्लकार किस काल का बोधक है?
(A) भूतकाल **(B) आज्ञार्थक**
(C) भविष्यकाल **(D) वर्तमानकाल**

	लकार		**कालबोधक**
(A)	लङ्लकार	–	भूतकाल
(B)	लोट्लकार	–	आज्ञार्थक
(C)	**लृट्लकार**	–	**भविष्यकाल**
(D)	लट्लकार	–	वर्तमानकाल

अतः विकल्प (C) सही है।

57. संस्कृत में 'धातुरूप' कहते हैं?
(A) संज्ञापद को **(B) कर्मपद को**
(C) क्रियापद को **(D) विशेषणपद को**

व्याख्या –
संस्कृत में **क्रियापद** को धातुरूप कहते हैं।
अतः विकल्प (C) सही है।

58. इनमें से कौन-सी धातु सकर्मक नहीं है?
(A) पठ् **(B) हन्**
(C) लिख् **(D) नृत्**

व्याख्या – नृत् (नाचना) अकर्मक धातु है। शेष सभी सकर्मक धातुएँ हैं। यथा– नृत्यति, नृत्यतः नृत्यन्ति
अतः विकल्प (D) सही है।

59. 'गच्छेत्' किस लकार का रूप है?
(A) लट्लकार का **(B) लोट्लकार का**
(C) लङ्लकार का **(D) विधिलिङ्लकार का**

व्याख्या –
'गम्' धातु का रूप निम्न लकारों में इस प्रकार चलता है –
(A) लट्लकार प्र. पु. – गच्छति गच्छतः गच्छन्ति
(B) लोट्लकार प्र. पु. – गच्छतु गच्छताम् गच्छन्तु
(C) लङ्लकार प्र. पु. – अगच्छत् अगच्छताम् अगच्छन्
(D) **विधिलिङ्लकार** प्र. पु.–**गच्छेत्** गच्छेताम् गच्छेयुः
अतः विकल्प (D) सही है।

60. 'भू' धातु लट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप है?
(A) भवामि **(B) भवथ**
(C) भवन्ति **(D) भवति**

व्याख्या – भू धातु के रूप निम्न लकारों में इस प्रकार है–
(A) लट्लकार उ. पु. – भवामि भवावः भवामः
(B) लट्लकार म. पु. – भवसि भवथः भवथ
(C)+(D) लट्लकार प्र. पु.– **भवति** भवतः भवन्ति
अतः विकल्प (D) सही है।

61. 'सखि' शब्द का प्रथमा बहुवचन का रूप है?
(A) सखा **(B) सखायौ**
(C) सखायः **(D) इनमें से कोई नहीं**

व्याख्या –
'सखि' (मित्र) इकारान्त पुंलिङ्ग का रूप प्रथमा में – ''सखा सखायौ **सखायः**'' बनता है। अतः विकल्प (C) सही है।

62. 'भूपति' शब्द का षष्ठी एकवचन का रूप है?
(A) भूपत्याः **(B) भूपत्युः**
(C) भूपतेः **(D) भूपतयः**

व्याख्या –
भूपति (राजा) शब्द का रूप षष्ठी विभक्ति में –
* **भूपतेः** भूपत्योः भूपतीनाम्
* प्रथमा में – भूपतिः भूपती भूपतयः
* ''भूपत्याः, भूपत्युः'' रूप सातों विभक्तियों में कहीं नहीं बनता है। अतः विकल्प (C) सही है।

55. (A) 56. (C) 57. (C) 58. (D) 59. (D) 60. (D) 61. (C) 62. (C)

63. 'विश्वपा' शब्द का सप्तमी एकवचन का रूप है?
(A) विश्वपायाम् **(B) विश्वपि**
(C) विश्वपोः **(D) विश्वासु**

व्याख्या –
* विश्वपा (आकारान्त पुंलिङ्ग) शब्द का सप्तमी विभक्ति में– ''**विश्वपि,** विश्वपोः, विश्वपासु'' रूप बनता है।
* विश्वपायाम् विश्वासु रूप सातों विभक्तियों में कहीं नहीं बनता है। अतः विकल्प (B) सही है।

64. 'नदी' शब्द का द्वितीया बहुवचन का रूप है?
(A) नदीः **(B) नद्यः**
(C) नदीन् **(D) नद्या**

व्याख्या –
* 'नदी' (ईकारान्त, स्त्रीलिङ्ग) शब्द का रूप निम्न विभक्तियों में इसप्रकार बनता है–

प्रथमा में –	नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वितीया में –	नदीम्	नद्यौ	**नदीः**
तृतीया में –	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः

* 'नदीन्' रूप सातों विभक्तियों में कहीं नहीं बनता है।
अतः विकल्प (A) सही है।

65. 'गो' शब्द का षष्ठी बहुवचन का रूप होगा?
(A) गोनाम् **(B) गोवाम्**
(C) गवाम् **(D) गवानाम्**

व्याख्या –
* 'गो' (गाय या बैल) ओकारान्त पुंलिङ्ग का रूप षष्ठी विभक्ति में – ''गोः, गवोः, **गवाम्**'' बनता है।
* गोनाम्, गोवाम्, गवानाम् रूप सातों विभक्तियों में कहीं नहीं बनते हैं। अतः विकल्प (C) सही है।

66. 'तत्' शब्द का स्त्रीलिङ्ग, षष्ठी बहुवचन का रूप है?
(A) तेषाम् **(B) तस्याम्**
(C) तासाम् **(D) ताषाम्**

व्याख्या –

तत् (स्त्रीलिङ्ग) का षष्ठी में –	तस्याः	तयोः	**तासाम्**
सप्तमी में –	तस्याम्	तयोः	तासु
पुंलिङ्ग षष्ठी में –	तस्य	तयोः	तेषाम्

* 'ताषाम्' रूप तीनों लिङ्गों, सातों विभक्तियों में कहीं नहीं बनता है। अतः विकल्प (C) सही है।

67. 'अस्मद्' शब्द का चतुर्थी बहुवचन में रूप होगा?
(A) मह्यम् **(B) आवाभ्याम्**
(B) अस्मत् **(D) अस्मभ्यम्**

व्याख्या –
* **अस्मद्** (सर्वनाम) का चतुर्थी विभक्ति में रूप –
मह्यम् आवाभ्याम् **अस्मभ्यम्।**
* पञ्चमी विभक्ति में – मत्, आवाभ्याम्, अस्मत्
अतः विकल्प (D) सही है।

68. 'युष्मद्' शब्द का षष्ठी एकवचन का रूप है?
(A) तव **(B) त्वत्**
(C) युष्मत् **(D) युष्माकम्**

व्याख्या –
* **युष्मद्** (सर्वनाम) का षष्ठी विभक्ति में रूप –
तव युवयोः युष्माकम्
* पञ्चमी विभक्ति में – त्वत्, युवाभ्याम्, युष्मत्
अतः विकल्प (A) सही है।

69. 'सर्व' शब्द का स्त्रीलिङ्ग सप्तमी एकवचन का रूप है?
(A) सर्वस्मिन् **(B) सर्वस्याम्**
(C) सर्वयोः **(D) सर्वेषु**

व्याख्या –
* '**सर्व**' शब्द (स्त्रीलिङ्ग) का सप्तमी में रूप –
सर्वस्याम् सर्वयोः सर्वासु
* 'सर्व' शब्द पुंलिङ्ग में सप्तमी का रूप –
सर्वस्मिन् सर्वयोः सर्वेषु
अतः विकल्प (B) सही है।

70. 'तद्' शब्द का पुंलिङ्ग द्वितीया बहुवचन का रूप बनता है?
(A) तौ **(B) तम्**
(C) तान् **(D) तेषाम्**

व्याख्या –
* तद् शब्द पुंलिङ्ग द्वितीया विभक्ति में– ''तम् तौ **तान्**'' रूप बनता है।
* षष्ठी में – ''तस्य, तयोः, तेषाम्''
अतः विकल्प (C) सही है।

63. (B) 64. (A) 65. (C) 66. (C) 67. (D) 68. (A) 69. (B) 70. (C)

71. 'अकः सवर्णे दीर्घः' सूत्र है?
(A) स्वरसन्धि का (B) व्यञ्जनसन्धि का
(C) विसर्गसन्धि का (D) यण्सन्धि का

व्याख्या –
(A) 'अकः सवर्णे दीर्घः' (6/1/101) सूत्र से अक् प्रत्याहार (अ, इ, उ, ऋ, ऌ) के बाद समान स्वर (ह्रस्व या दीर्घ) आये तो दोनों के स्थान पर दीर्घस्वरसन्धि होगी। यथा – देव + आलयः = देवालयः
(B) 'स्तोः श्चुना श्चुः' (8/4/40) सूत्र से – सत् + चित् = सच्चित्
(C) 'रोऽसुपि' (8/2/69) सूत्र से – अहन् + अहन् = अहरहः
(D) 'इको यणचि' (6/1/77) सूत्र से – सुधी + उपास्यः = सुध्युपास्यः
अतः विकल्प (A) सही है।

72. 'पावकः' का सन्धिविच्छेद है?
(A) प + अकः (B) पो + अकः
(C) पौ + अकः (D) पाव + अकः

व्याख्या – 'एचोऽयवायावः' (6/1/78) सूत्र से ए, ओ, ऐ, औ के स्थान पर क्रमशः अय्, अव्, आय्, आव् हो जाता है यथा–**पौ + अकः = पावकः** (औ + अ = आव्) अतः विकल्प (C) सही है। अन्य सभी विकल्प गलत है।

73. 'रामश्चलति' उदाहरण है –
(A) यण्सन्धि का (B) गुणसन्धि का
(C) हल्सन्धि का (D) दीर्घसन्धि का

व्याख्या –
(A) 'इको यणचि' (6/1/77) सूत्र से – यदि + अपि = यद्यपि (यण् सन्धि)
(B) 'आद्गुणः' (6/1/87) सूत्र से – गङ्गा + उदकम् = गङ्गोदकम् (गुणसन्धि)
(C) 'स्तोः श्चुना श्चुः' (8/4/40) सूत्र से स और तवर्ग के किसी वर्ण का जब श और चवर्ग के किसी वर्ण से योग होता है तो 'स्' के स्थान पर 'श्' और तवर्ग के स्थान पर चवर्ग हो जाता है यथा – रामस् + चलति =रामश्चलति। यह **हल्सन्धि का सूत्र** है।
(D) 'अकः सवर्णे दीर्घः' (6/1/101) सूत्र से – कवि + इन्द्रः = कवीन्द्रः (दीर्घ सन्धि)
अतः विकल्प (C) सही है।

74. 'तट्टीका' शब्द किस सूत्र से बना है?
(A) स्तोः श्चुना श्चुः (B) एङि पररूपम्
(C) ष्टुना ष्टुः (D) झलां जशोऽन्ते

व्याख्या –
(A) 'स्तोः श्चुना श्चुः' (8/4/40) सूत्र से – रामस् + शेते = रामश्शेते।
(B) 'एङि पररूपम्' (6/1/94) सूत्र से – प्र + एजते = प्रेजते।
(C) **'ष्टुना ष्टुः'** (8/4/41) सूत्रानुसार स और तवर्ग के स्थान पर ष् और टवर्ग हो जाता है यथा – तत् + टीका = तट्टीका
(D) 'झलां जशोऽन्ते' (8/2/39) सूत्र से – वाक् + ईशः = वागीशः।
अतः विकल्प (C) सही है।

75. 'शिवोऽर्च्यः' का सन्धि विच्छेद होगा?
(A) शिवस् + अर्च्यः (B) शिवो + अर्च्य
(C) शिव + अर्च्य (D) शिवस् + च

व्याख्या – शिवस् + अर्च्यः यहाँ 'ससजुषो रुः' (8/2/66) सूत्र से पदान्त 'स्' के स्थान पर 'रु' आदेश होकर शिव रु + अर्च्यः पुनः 'अतो रोरप्लुतादप्लुते' (6/1/113) सूत्र से 'रु' के स्थान पर 'उ' आदेश होकर शिव उ + अर्च्यः बना फिर 'आद् गुणः' (6/1/87) से गुण होकर शिवो + अर्च्यः बना।
पुनः 'एङः पदान्तादति' सूत्र से पूर्वरूप आदेश होकर शिवो + अर्च्यः = शिवोऽर्च्यः रूप सिद्ध होता है।
अतः विकल्प (A) सही है।

76. 'मनोरथः' का सन्धि विच्छेद है?
(A) मनो + रथः (B) मनर् + रथः
(C) मनस् + रथः (D) मन + रथ

व्याख्या – यहाँ **'मनस् + रथः'** में सकार के स्थान पर 'रु' आदेश। अनुबन्धलोप होकर 'मनर्' + रथः' यहाँ ''रो रि'' और ''हशि च'' दोनों सूत्रों की प्राप्ति होगी, तदनन्तर ''हशि च'' सूत्र से उत्व होकर 'मन उ रथः' बनेगा। पुनः ''आद् गुणः'' से गुण होकर 'मनोरथः' सिद्ध होगा। अतः विकल्प (C) सही है।

71. (A) 72. (C) 73. (C) 74. (C) 75. (A) 76. (C)

77. 'अधिहरि' में समास है –
(A) अव्ययीभावसमास (B) तत्पुरुषसमास
(C) केवलसमास (D) बहुव्रीहिसमास

व्याख्या –

(A) 'अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि......साकल्यान्तवचनेषु' (2/1/6) सूत्र से विभक्ति अर्थ में 'अधि' अव्यय का 'हरि ङि' सुबन्त के साथ समास होकर 'हरौ इति = अधिहरि' में **अव्ययीभावसमास** होगा।

(B) 'षष्ठी' (2/2/8) सूत्र से – 'राज्ञः पुरुषः = राजपुरुषः' में षष्ठी तत्पुरुषसमास होगा।

(C) 'सह सुपा' (2/1/4) सूत्र से – ''पूर्वं भूतः = भूतपूर्वः'' में केवलसमास होगा।

(D) 'अनेकमन्यपदार्थे' (2/2/24) सूत्र से – ''ऊढः रथः येन सः = ऊढरथः'' में बहुव्रीहिसमास होगा।

अतः विकल्प (A) सही है।

78. 'अब्राह्मणः' में तत्पुरुषसमास है?
(A) तृतीयातत्पुरुष के कारण
(B) द्वितीयातत्पुरुष के कारण
(C) नञ्तत्पुरुष के कारण
(D) पञ्चमीतत्पुरुष के कारण

व्याख्या –

(A) 'तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन' (2/1/30) सूत्र से – शङ्कुलया खण्डः = शङ्कुलाखण्डः (तृतीयातत्पुरुष)

(B) 'द्वितीया श्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नैः' (2/1/24) सूत्र से–आशाम् अतीतः = आशातीतः (द्वितीयातत्पुरुष)

(C) ''न लोपो नञः'' (6/3/73) सूत्रानुसार नञ् के न् का लोप हो जाता है, ञ् इत्संज्ञक होकर लोप हो जाता है केवल अ बचता है। यथा– **न ब्राह्मणः = अब्राह्मणः (नञ् तत्पुरुष)**

(D) ''पञ्चमी भयेन'' (2/1/37) सूत्र से – चोराद् + भयम् = चोरभयम् (पञ्चमीतत्पुरुष)

अतः विकल्प (C) सही है।

79. द्वन्द्वसमास के भेद हैं?
(A) दो भेद (B) तीन भेद
(C) पाँच भेद (D) एक भेद

व्याख्या –

द्वन्द्वसमास के **तीन भेद** हैं –

1. इतरेतर द्वन्द्वसमास
2. समाहार द्वन्द्वसमास
3. एकशेष द्वन्द्वसमास

नोट– द्वन्द्वसमास के मुख्यतः दो ही भेद हैं। 'एकशेष' तो वृत्ति है किन्तु आयोग ने इसका उत्तर तीन माना है।

अतः विकल्प (B) सही है।

80. 'चन्द्रशेखरः' में समास है?
(A) तत्पुरुष (B) अव्ययीभाव
(C) बहुव्रीहि (D) द्वन्द्व

व्याख्या –

(A) 'स्तोकान्तिकदूरार्थकृच्छ्राणि क्तेन' (2/1/39) सूत्र से – अन्तिकात् आगतः = अन्तिकादागतः (अलुक् तत्पुरुष)

(B) विभक्ति अर्थ में 'अध्यात्मम्' में अव्ययीभावसमास।

(C) 'अनेकमन्यपदार्थे' (2/2/24) सूत्र से जहाँ अन्य पद की प्रधानता हो, वहाँ बहुव्रीहिसमास होता है यथा– चन्द्रः शेखरे यस्य सः = चन्द्रशेखरः

(D) 'धर्मादिष्वनियमः' वार्तिक से - धर्मश्च अर्थश्च = धर्मार्थौ अथवा अर्थधर्मौ (द्वन्द्वसमास)

अतः विकल्प (C) सही है।

81. 'धवखदिरौ' में समास है?
(A) द्विगुसमास (B) द्वन्द्वसमास
(C) कर्मधारयसमास (D) तत्पुरुषसमास

व्याख्या –

(A) 'तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च' (2/1/51) सूत्र से 'पञ्चानां गवां समाहारः = पञ्चगवम्' में द्विगुसमास है।

(B) 'चार्थे द्वन्द्वः' (2/2/29) सूत्रानुसार 'च' के अर्थ में अनेक सुबन्तों का समास होता है और उसकी द्वन्द्वसंज्ञा होती है। यथा – 'धवश्च खदिरश्च = धवखदिरौ' में द्वन्द्वसमास।

(C) 'विशेषणं विशेष्येण बहुलम्' (2/1/57) सूत्र से – ''कृष्णः सर्पः = कृष्णसर्पः'' में कर्मधारयसमास है।

(D) 'कर्तृ-करणे कृता बहुलम्' (2/1/32) सूत्र से 'हरिणा त्रातः = हरित्रातः' में तृतीया तत्पुरुषसमास है।

अतः विकल्प (B) सही है।

77. (A) 78. (C) 79. (B) 80. (C) 81. (B)

82. 'भूतपूर्वः' में समास विधायक सूत्र है?
(A) कुगतिप्रादयः
(B) उपसर्जनं पूर्वम्
(C) प्राक् कडारात् समासः
(D) सह सुपा

व्याख्या –
(A) 'कुगतिप्रादयः' (2/2/18) सूत्र से 'कुत्सितः पुरुषः = कुपुरुषः' में गतितत्पुरुषसमास होगा।
(B) 'उपसर्जनं पूर्वम्' (2/2/30) सूत्र से उपसर्जनसंज्ञा का समास में पूर्वनिपात होता है।
(C) 'प्राक् कडारात् समासः' (2/1/3) यह अधिकार सूत्र है।
(D) **'सह सुपा'** (2/1/4) सूत्र से समर्थ सुबन्त का समर्थ सुबन्त के साथ विकल्प से समास होता है। यथा– "पूर्वं भूतः = भूतपूर्वः" में केवलसमास होगा।
अतः विकल्प (D) सही है।

83. '49' का संस्कृत शब्दात्मक रूप होगा?
(A) नवचत्वारिंशत् **(B) नवपञ्चाशत्**
(C) एकोनचत्वारिंशत् **(D) एकोनत्रिंशत्**

	संख्या		शब्दात्मक रूप
(A)	**49**	–	**नवचत्वारिंशत्**
(B)	59	–	नवपञ्चाशत्
(C)	39	–	एकोनचत्वारिंशत्
(D)	29	–	एकोनत्रिंशत्

अतः विकल्प (A) सही है।

84. '99' का संस्कृत शब्द होगा?
(A) नवतिः
(B) नवनवतिः
(C) षण्णवतिः
(D) एकोननवतिः

	संख्या		संस्कृत-शब्द
(A)	90	–	नवतिः
(B)	**99**	**–**	**नवनवतिः**
(C)	96	–	षण्णवतिः
(D)	89	–	एकोननवतिः

अतः विकल्प (B) सही है।

85. '33' को संस्कृत में कैसे लिखेंगे?
(A) त्रयोत्रिशत्
(B) त्रयशती
(C) त्रयस्त्रिंशत्
(D) त्रयोस्त्रिशती

व्याख्या – "33" का संस्कृत शब्दात्मक रूप त्रयस्त्रिंशत् होगा। अतः विकल्प (C) सही है। शेष विकल्प गलत है।

82. (D) 83. (A) 84. (B) 85. (C)

प्रशिक्षित-स्नातकशिक्षक-चयनपरीक्षा (TGT)–2003

1. ''अन्तःकरणतत्त्वस्य दम्पत्योः स्नेहसंश्रयात् आनन्दग्रन्थिरेकोऽयमपत्यमिति पठ्यते'' – यहाँ 'अपत्यम्' शब्द का अर्थ है?

(A) विश्वास (B) सन्तान
(C) सीधा (D) गर्भिणी

व्याख्या –प्रस्तुत श्लोक में तमसा कहती है कि – पति और पत्नी के हृदयरूपी तत्त्व के प्रेम का आश्रय होने के कारण 'सन्तान' यह अनुपम सुख की गाँठ कही जाती है। (उत्तर रामचरितम् 3/17)

	शब्द		अर्थ
(A)	प्रत्ययः	–	विश्वास
(B)	**अपत्यम्**	**–**	**सन्तान**
(C)	अनरालम्	–	सीधा
(D)	आपन्नसत्वा	–	गर्भिणी

अतः विकल्प (B) सही है।

2. ''स वर्णिलिङ्गी विदितः समाययौ युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचरः'' – इस श्लोक में 'वर्णिलिङ्गी' शब्द का अर्थ है?

(A) ब्रह्मचारी (B) ब्राह्मण
(C) राजा लोग (D) आत्मीयजन

शब्द		अर्थ
(A) वर्णिलिङ्गी	–	**ब्रह्मचारी**
(B) द्विजः	–	ब्राह्मण
(C) क्षितीशाः	–	राजा लोग
(D) परेतरान्	–	आत्मीयजन

अतः विकल्प (A) सही है।

3. 'किरातार्जुनीयम्' काव्य में दुर्योधन अपनी श्रेष्ठता प्रदर्शित करने के लिए जो आचरण करता है वह आचरण/नीति निर्धारित है –

(A) बृहस्पति के द्वारा (B) नारद के द्वारा
(C) मनु के द्वारा (D) कामन्दक के द्वारा

व्याख्या – ''कृतारिषड्वर्गजयेन मानवीमगम्यरूपां पदवीं प्रपित्सुना'' (किरात. 1/9) अर्थात् छः शत्रुओं के समुदाय पर विजय प्राप्त करने वाला वह दुर्योधन **मनु द्वारा प्रतिपादित** आचरण का पालन करता है।
अतः विकल्प (C) सही है।

4. दुर्योधन कुरु की प्रजा को प्रसन्न करने के लिए जो विशेष व्यवस्था करता है, वह सम्बन्धित है –

(A) करों को उदार बनाने में
(B) उपहार बाँटने में
(C) कृष्ण के साथ सम्बन्धों को सुधारने में
(D) सिंचाई व्यवस्था को उन्नत करने में

व्याख्या –'वितन्वति क्षेममदेवमातृकाश्चिराय तस्मिन् कुरवश्चकासति' (किरात. 1/17) अर्थात् वर्षा के जल पर ही निर्भर न रहने वाले कुरुदेशवासी (नदी, नहर से **सिंचाई करने की व्यवस्था** दुर्योधन द्वारा की गई है) धान्य आदि सम्पत्ति को धारण करते शोभित होते हैं।
अतः विकल्प (D) सही है।

5. 'किरातार्जुनीयम्' का कथानक लिया गया है?

(A) वनपर्व से (B) सभापर्व से
(C) आदिपर्व से (D) भीष्मपर्व से

	ग्रन्थ		महाभारत का पर्व
(A)	**किरातार्जुनीयम्**	–	**वनपर्व से**
(B)	शिशुपालवधम्	–	सभापर्व से
(C)	अभिज्ञानशाकुन्तलम्	–	आदिपर्व से
(D)	गीता	–	भीष्मपर्व से

अतः विकल्प (A) सही है।

6. 'मखेष्वखिन्नोऽनुमतः पुरोधसा, धिनोति हव्येन हिरण्यरेतसम्' – प्रस्तुत श्लोक में 'हिरण्यरेतसम्' का अर्थ है?

(A) अग्नि (B) इन्द्र
(C) कुबेर (D) ब्रह्मा

व्याख्या – वनेचर, दुर्योधन के विषय में कहता है कि – पुरोहित की आज्ञा के अनुसार बिना थके हुए यज्ञों में हव्य के द्वारा अग्नि को प्रसन्न करता है। (किरात. 1/22)

	शब्द		अर्थ
(A)	**हिरण्यरेताः**	–	**अग्नि**
(B)	वासवः	–	इन्द्र
(C)	वसुः	–	कुबेर
(D)	स्रष्टा	–	ब्रह्मा

अतः विकल्प (A) सही है।

1. (B) 2. (A) 3. (C) 4. (D) 5. (A) 6. (A)

7. 'ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रह्मापि नरं न रञ्जयति' – श्लोकांश में 'रञ्जयति' का तात्पर्य है?
(A) मूर्ख (B) ज्ञाता
(C) बलपूर्वक (D) प्रसन्न करना

व्याख्या – अल्पज्ञान के कारण गर्वित अर्थात् थोड़ी सी जानकारी से स्वयं को पण्डित मानने वाले मूर्ख मनुष्य को ब्रह्मा भी प्रसन्न नहीं कर सकते हैं। (नीतिशतकम् /3)

	शब्द		अर्थ
(A)	अज्ञः	–	मूर्ख
(B)	बोद्धारः	–	ज्ञाता
(C)	प्रसह्य	–	बलपूर्वक
(D)	**रञ्जयति**	–	**प्रसन्न करना**

अतः विकल्प (D) सही है।

8. नीतिशतककार के अनुसार सभा में किस उपाय के द्वारा मूर्ख अपनी मूर्खता को छिपा सकता है?
(A) कम बोलकर (B) मौन रहकर
(C) विचारपूर्वक बोलकर (D) हँसकर

व्याख्या –
'विशेषतः सर्वविदां समाजे, **विभूषणं मौनमपण्डितानाम्**' अर्थात् विद्वानों की सभा में मूर्ख **मौन रहकर** अपनी मूर्खता को छिपा सकता है। (नीतिशतकम्/7)
अतः विकल्प (B) सही है।

9. ''मूर्ध्नि वा सर्वलोकस्य शीर्यते वन एव वा'' – श्लोकांश में 'मूर्ध्नि' शब्द का अर्थ है-
(A) आगे (B) पीछे
(C) ऊपर (मस्तक) (D) नीचे

व्याख्या – भर्तृहरि कहते हैं कि स्वाभिमानी पुरुष की पुष्प-गुच्छ की भाँति या तो सब लोगों के मस्तक पर चढ़ता है अथवा वन में ही जीर्ण-शीर्ण हो जाता है।
(नीतिशतकम्/26)

	शब्द		अर्थ
(A)	अग्रे	–	आगे
(B)	पश्चात्	–	पीछे
(C)	**मूर्ध्नि**	–	**ऊपर (मस्तक)**
(D)	अधः	–	नीचे

अतः विकल्प (C) सही है।

10. 'उत्तररामचरितम्' की कथावस्तु प्रारम्भ होती है?
(A) शम्बूक वध के लिए राम के दण्डकारण्य जाने से
(B) राम द्वारा सीता के निर्वासन से
(C) राम-सीता के पुनर्मिलन से
(D) लव-कुश का चन्द्रकेतु युद्ध से

व्याख्या –
(A) शम्बूक वध के लिए राम का दण्डकारण्य में जाना– द्वितीय अङ्क
(B) उत्तररामचरित के कथानक का आरम्भ **राम द्वारा सीता के निर्वासन से होता है – प्रथम अङ्क**
(C) राम-सीता का पुनर्मिलन – **तृतीय अङ्क**
(D) चन्द्रकेतु से लव-कुश का युद्ध – षष्ठ अङ्क
अतः विकल्प (B) सही है।

11. 'उत्तररामचरितम्' में पात्रों की संख्या है –
(A) 8 (B) 30
(C) 5 (D) 12

व्याख्या – * उत्तररामचरितम् में कुल 30 पात्र है। इसके अतिरिक्त 6 पात्रों का केवल उल्लेख मात्र है।
* पुरुषपात्र 19 और स्त्रीपात्र 11 हैं। अतः विकल्प `B' सही है।

12. 'उत्तररामचरितम्' में वर्णित तमसा और मुरला हैं?
(A) सीता की सखियाँ
(B) दो नदियाँ
(C) लव कुश की परिचारिकाएं
(D) राक्षसियाँ

व्याख्या – * 'ततः प्रविशति नदीद्वयम्' – प्रस्तुत पंक्ति तमसा और मुरला के लिए प्रयुक्त है अर्थात् ये **दो नदियाँ** हैं।
* सीता की सखी वासन्ती (वनदेवी) हैं।
अतः विकल्प (B) सही है।

13. 'उत्तररामचरितम्' नाटक के तृतीय अङ्क में प्रधानरस है?
(A) करुणरस (B) वीररस
(C) शृङ्गाररस (D) विप्रलम्भशृङ्गार

ग्रन्थ		प्रधान रस
(A) **उत्तररामचरितम्**	**–**	**करुणरस**
(B) शिवराजविजयम्	–	वीररस
(C) स्वप्नवासवदत्तम्	–	शृङ्गाररस
(D) मेघदूतम्	–	विप्रलम्भशृङ्गार

अतः विकल्प (A) सही है।

7. (D) 8. (B) 9. (C) 10. (B) 11. (B) 12. (B) 13. (A)

14. 'छायाङ्क' उत्तररामचरितम् का कौन-सा अङ्क है?
(A) द्वितीय (B) तृतीय
(C) चतुर्थ (D) सप्तम

अङ्क		नाम
(A) द्वितीय अङ्क	–	पञ्चवटीप्रवेश
(B) **तृतीय अङ्क**	–	**छाया अङ्क**
(C) चतुर्थ अङ्क	–	कौशल्याजनकयोग
(D) सप्तम अङ्क	–	सम्मेलन अङ्क

अतः विकल्प (B) सही है।

15. ''ईदृशानां विपाकोऽपि जायते परमाद्भुतः'' यह कथन किसका है?
(A) मुरला का (B) तमसा का
(C) वासन्ती का (D) सीता का

व्याख्या –
(A) ''ईदृशानां विपाकोऽपि जायते परमाद्भुतः'' (उत्तर 3/3) – **मुरला कहती है** कि – ऐसे व्यक्तियों (राम और सीता) की दुरवस्था भी अत्यन्त आश्चर्यजनक होती है, जिसमें ऐसे (पृथ्वी और गङ्गा जैसे) लोग सहायक होते हैं। अतः विकल्प (A) सही है।
(B) 'तटस्थं नैराश्यादपि च कलुषं विप्रियवशात्' – तमसा
(C) 'पुनरिदमयं देवो रामः स्वयं वनमागतः' – वासन्ती
(D) 'ईदृशो मे पुत्रकः संवृत्तः'' – सीता का कथन

16. 'विपाक' शब्द का अर्थ है?
(A) कृत्रिम नदी (B) घास
(C) स्वभाव (D) दुरवस्था

शब्द		अर्थ
(A) कुल्या	–	कृत्रिम नदी (नहर)
(B) शष्पम्	–	हरीघास
(C) निसर्गः	–	स्वभाव
(D) **विपाकः**	–	**दुरवस्था**

अतः विकल्प (D) सही है।

17. 'उत्तररामचरितम्' के तृतीय अङ्क में दो पात्रों के परस्पर संवादों में नाटकीयतत्वों का परिचय मिलता है, ये दो पात्र हैं –
(A) राम और वासन्ती (B) सीता और तमसा
(C) तमसा और मुरला (D) सीता और मुरला

व्याख्या –
(A) तृतीय अङ्क में राम, वासन्ती से वार्तालाप करते हैं अर्थात् राम के साथ वासन्ती रहती है।
(B) तृतीय अङ्क में सीता के साथ तमसा रहती है।
(C) तृतीय अङ्क **तमसा और मुरला** नामक दो नदियों के परस्पर वार्तालाप से आरम्भ होता है जिसमें राम पञ्चवटी में पुनः आ रहे हैं, इसकी सूचना मिलती है। यह वार्तालाप 'विष्कम्भक नामक नाटकीय तत्व का उदाहरण है। अतः विकल्प (C) सही है।
(D) मुरला को अगस्त्य पत्नी लोपामुद्रा गोदावरी के पास भेजती हैं, इसका सीता के साथ कोई संवाद नहीं होता।

18. ''पौलस्त्यस्य जटायुषा विघटितः'' श्लोक में 'पौलस्त्यस्य' से तात्पर्य है?
(A) सुग्रीव से (B) रावण से
(C) लक्ष्मण से (D) हनुमान् से

व्याख्या – ''पौलस्त्यस्य जटायुषा विघटितः कार्ष्णायसोऽयं रथः'' – वासन्ती कहती है कि – जटायु द्वारा तोड़ा गया यह रावण का लोहे का रथ है। पुलस्त्य ऋषि की गणना सप्तर्षियों में होती है। पुलस्त्य रावण के दादा थे। इसी पुलस्त्य से अपत्य अर्थ में 'अण्' प्रत्यय लगकर पौलस्त्य बना जो यहाँ रावण का बोध करा रहा है। (उत्तर. 3/43)

कपीन्द्रः = सुग्रीव, सौमित्रः = लक्ष्मण ,वायुपुत्रः = हनुमान्, **पौलस्त्यः = रावण,** को कहा गया है।
अतः विकल्प (B) सही है।

19. मेघदूतम् में किस राजा का उल्लेख मिलता है?
(A) उदयन का (B) शूद्रक का
(C) दुष्यन्त का (D) राम का

व्याख्या –

ग्रन्थ		राजा का उल्लेख/वर्णन
(A) **मेघदूतम्**	–	**उदयन का**
(B) कादम्बरी	–	शूद्रक का
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम्	–	दुष्यन्त का
(D) उत्तररामचरितम्	–	राम का

नोट–''प्राप्यावन्तीनुदयनकथाकोविदग्रामवृद्धान्'' (पूर्वमेघ-31)
अतः विकल्प (A) सही है।

14. (B) 15. (A) 16. (D) 17. (C) 18. (B) 19. (A)

20. ''प्राप्ते मित्रे भवति विमुखः किं पुनर्यस्तथोच्चैः'' यह श्लोकांश उद्धृत है?
(A) मेघदूतम् से
(B) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से
(C) किरातार्जुनीयम् से
(D) शिवराजविजयम् से

व्याख्या –
(A) उपर्युक्त पंक्ति **मेघदूतम् में यक्ष**, मेघ से कहता है कि – छोटा व्यक्ति भी आश्रय के लिए मित्र के आने पर पहले किये गये उपकार को सोचकर उसका सत्कार करने में मुँह नहीं मोड़ता फिर जो महान् हैं, उसकी बात ही क्या। (पूर्वमेघ/17)
(B) 'चित्रकर्म परिचयेनाङ्गेषु त आभरणविनियोगं कुर्वः – अभिज्ञानशाकुन्तलम् में
(C) 'नयेन जेतुं जगतीं सुयोधनः' – किरातार्जुनीयम् से
(D) 'कलितमानवदेहामिव सरस्वतीम्'–शिवराजविजयम् से
अतः विकल्प (A) सही है।

21. अनसूया और प्रियंवदा हैं?
(A) शकुन्तला की सखियाँ
(B) दुष्यन्त की रानियाँ
(C) कण्व आश्रम की अध्यक्षा
(D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या –
(A) अनसूया और प्रियंवदा **शकुन्तला की सखियाँ** हैं। अनसूया गम्भीर प्रकृति की है। प्रियंवदा हास्यप्रकृति की है। अतः विकल्प (A) सही है।
(B) हंसपदिका और वसुमती राजा दुष्यन्त की रानियाँ हैं। इनमें प्रथम रानी हंसपदिका है।
(C) गौतमी कण्व आश्रम की अध्यक्षा है।

22. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' नाटक में वर्णित गौतमी हैं?
(A) दुष्यन्त की परिचारिका
(B) कण्व आश्रम की अध्यक्षा
(C) मारीच आश्रम की तपस्विनी
(D) एक अप्सरा

व्याख्या –
(A) मधुकरिका – दुष्यन्त की परिचारिका है।
(B) **गौतमी – कण्व आश्रम की अध्यक्षा हैं।**
(C) सुव्रता – मारीच के आश्रम की एक तपस्विनी स्त्री
(D) मेनका – एक अप्सरा (शकुन्तला की माता)
अतः विकल्प (B) सही है।

23. दुष्यन्त के साथ शकुन्तला का विवाह सम्पन्न होने पर उसकी सखियाँ हो जाती हैं?
(A) प्रसन्न **(B) चिन्तित**
(C) क्रोधित **(D) ईर्ष्याग्रस्त**

व्याख्या – 'शकुन्तलाऽनुरूपभर्तृगामिनी संवृत्तेति निर्वृतं मे हृदयम्' – अनसूया चतुर्थ अङ्क के आरम्भ में कहती है कि – शकुन्तला अपने योग्य पति को पा गयी है, इसलिए मेरा हृदय **सुखी (प्रसन्न)** है। अतः विकल्प (A) सही है।

24. ''तपोधनं वेत्सि न मामुपस्थितम्'' – यहाँ 'तपोधन' शब्द प्रयुक्त हुआ है?
(A) कण्व के लिए **(B) दुष्यन्त के लिए**
(C) दुर्वासा के लिए **(D) जंगल के लिए**

व्याख्या – * प्रस्तुत पद्य में 'तपोधन' शब्द का प्रयोग **ऋषि दुर्वासा** के लिए प्रयुक्त है। (अभिज्ञान. 4/1)
* कण्व के लिए 'काश्यप' तथा दुष्यन्त के लिए 'पौरव' शब्द का प्रयोग अभिज्ञान शाकुन्तलम में हुआ है।
अतः विकल्प (C) सही है।

25. ''गच्छ, पादयोः प्रणम्य निवर्तयैनं'' – यह कथन है?
(A) अनसूया का प्रियंवदा के प्रति
(B) प्रियंवदा का अनसूया के प्रति
(C) शकुन्तला का अनसूया के प्रति
(D) अनसूया का शकुन्तला के प्रति

व्याख्या – गच्छ, पादयोः प्रणम्य निवर्तयैनं – अभिज्ञान – शाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में **अनसूया, प्रियंवदा से कहती है** कि–जाओ (दुर्वासा) के चरणों में प्रणाम करके इन्हें लौटा लाओ। अतः विकल्प (A) सही है।

26. शकुन्तला की शापमुक्ति का कारण है?
(A) मोतियों की माला **(B) कङ्गन**
(C) बाजूबन्द **(D) अँगूठी**

व्याख्या – * ''ततो न मे वचनमन्यथाभवितुमर्हति, किन्त्वभिज्ञानाभरणदर्शनेन शापो निवर्तिष्यत'' अर्थात् – मेरा वचन अन्यथा नहीं हो सकता किन्तु पहचान (अभिज्ञान) के आभूषण **(अँगूठी) को दिखलाने से शाप समाप्त** हो जायेगा।
* अनसूया कहती है– 'अस्ति तेन राजर्षिणा संप्रस्थितेन स्वनामधेयाङ्कितम् **अङ्गुलीयकम्**.......''
अतः विकल्प (D) सही है।

20. (A) 21. (A) 22. (B) 23. (a) 24. (C) 25. (A) 26. (D)

27. शिवराजविजयम् विभक्त है?
(A) सर्गों में
(B) खण्डों में
(C) उन्मेषों में
(D) निःश्वास एवं विरामों में

ग्रन्थ	विभाजन
(A) किरातार्जुनीयम्	– 18 सर्गों में
(B) मेघदूतम्	– 2 खण्डों में
(C) वक्रोक्तिजीवितम्	– 4 उन्मेषों में
(D) **शिवराजविजयम्**	– **3 विराम, 12 निःश्वासों में**

अतः विकल्प (D) सही है।

28. नीतिशतककार के मतानुसार क्रोधी राजा के प्रिय होते हैं?
(A) उसके अपने परिजन
(B) उसके घनिष्ठ मित्र
(C) उसके निजी सेवक
(D) कोई व्यक्ति भी नहीं

व्याख्या – 'न कश्चिच्चण्डकोपानामात्मीयो नाम भूभुजाम्' – अर्थात् प्रचण्डक्रोध वाले राजाओं का **कोई भी व्यक्ति आत्मीय नहीं होता है।** (नीतिशतकम् /47)
अतः विकल्प (D) सही है।

29. दुष्टों की मित्रता की तुलना की गयी है?
(A) छाया से
(B) कोयल से
(C) सर्प से
(D) विष से

व्याख्या – ''आरम्भगुर्वी क्षयिणी क्रमेण.....छायेव मैत्री खलसज्जनानाम्'' (नीतिशतकम्/50) के अनुसार दुष्टों एवं सज्जनों की मित्रता **छाया के समान** होती है।
अतः विकल्प (A) सही है।

30. सभी प्रकार की विपत्तियों से रक्षा होती है?
(A) पूर्वकृत पुण्यों के कारण
(B) वीरता के कारण
(C) देवताओं की सहायता से
(D) प्रत्युत्पन्नमति से

व्याख्या – 'कृत्स्ना च भूर्भवति सन्निधिरत्नपूर्णा यस्यास्ति पूर्वसुकृतं विपुलं नरस्य' (नीतिशतकम् /100) – अर्थात् जिस पुरुष का पूर्वजन्म का पुण्य बहुत अधिक है सब लोग उसके लिए सज्जन बन जाते हैं, और पृथिवी उत्तम निधियों एवं रत्नों से परिपूर्ण हो जाती है। अर्थात् **पूर्वकृत पुण्यों के कारण** उसकी सभी विपत्तियों से रक्षा होती है। अतः विकल्प (A) सही है।

31. 'कन्था' शब्द का अर्थ है?
(A) जीर्णवस्त्र **(B) सरलता**
(C) तुच्छता **(D) समुद्र**

शब्द		अर्थ
(A) **कन्था**	–	**जीर्णवस्त्र (कथरी)**
(B) आर्जवम्	–	सरलता
(C) फल्गु	–	तुच्छता, निःसारता
(D) अर्णवः	–	समुद्र

अतः विकल्प (A) सही है।

32. 'मेघदूतम्' में यक्ष शापित है?
(A) शिव के द्वारा **(B) कुबेर के द्वारा**
(C) हिमालय के द्वारा **(D) मेघ के द्वारा**

व्याख्या – मेघदूतम् में यक्ष कुबेर का सेवक था और **कुबेर के द्वारा** ही उसे अपनी प्रिया से एक वर्ष दूर रहने का शाप दिया गया था। ''शापेनास्तङ्गमितमहिमावर्षभोग्येण भर्तुः'' (पूर्वमेघ-01)
अतः विकल्प (B) सही है।

33. ''तस्मिन्नद्रौ कतिचिदबलाविप्रयुक्तः स कामी'' – यहाँ 'अद्रौ' का तात्पर्य है?
(A) पर्वत से **(B) घर से**
(C) सूक्ष्म वस्त्र से **(D) मार्ग से**

शब्द		अर्थ
(A) **अद्रिः**	–	**पर्वत**
(B) आगारम्	–	घर
(C) अंशुकानि	–	सूक्ष्मवस्त्र
(D) वर्त्म	–	मार्ग

अतः विकल्प (A) सही है।

27. (D) 28. (D) 29. (A) 30. (A) 31. (A) 32. (B) 33. (A)

34. 'धूमज्योतिः सलिलमरुतां सन्निपातः क्व मेघः' – प्रस्तुत श्लोकांश में 'सन्निपात' का अर्थ है?
(A) जूही की कली से (B) गर्जन से
(C) चमेली से (D) मेघसमूह से

व्याख्या – 'धूमज्योतिःसलिलमरुतां सन्निपातः क्व मेघः' (पूर्वमेघ/5) – कहाँ धुएँ, अग्नि (प्रकाश), जल और वायु से बना है मेघ।

	शब्द		अर्थ
(A)	यूथिका	–	जूही की कली
(B)	स्तनित	–	गर्जन
(C)	मालती	–	चमेली
(D)	**सन्निपात**	–	**मेघसमूह (सम्मिश्रण)**

अतः विकल्प (D) सही है।

35. मेघदूत में वर्णित 'पुष्करावर्तक' है?
(A) यक्ष का दूत (B) मेघों का निवास स्थान
(C) मेघों का कुल (D) अलकापुरी का मेघ

व्याख्या – 'जातं वंशे भुवनविदिते पुष्करावर्तकानां' (पूर्वमेघ/6) प्रस्तुत पद्य में यक्ष मेघ से कहता है कि – तुम संसार में प्रसिद्ध पुष्कर और आवर्तक नामक **मेघों के कुल** में उत्पन्न हो। पुष्कर और आवर्तक मेघों का कुल है।
अतः विकल्प (C) सही है।

36. 'सम्पत्स्यन्ते कतिपयदिनस्थायिहंसा दशार्णाः' है–यहाँ 'दशार्णाः' है एक–
(A) पर्वत (B) देश
(C) नदी (D) राजा

व्याख्या – 'सम्पत्स्यन्ते कतिपयदिनस्थायिहंसा दशार्णाः' (पूर्वमेघ/24) अर्थात् दशार्ण देश कुछ ही दिनों तक रहने वाले राजहंसों से मुक्त हो जायेगा।
(A) 'आम्रकूट' एक पर्वत का नाम है।
(B) **'दशार्ण' देश का नाम है।**
(C) 'नर्मदा' नदी है।
(D) 'उदयन' वत्सदेश का राजा है।
अतः विकल्प (B) सही है।

37. अव्ययीभावसमास की सिद्धि होने पर सम्पूर्ण पद हो जाता है –
(A) पुंलिङ्ग (B) स्त्रीलिङ्ग
(C) नपुंसकलिङ्ग (D) उपर्युक्त तीनों

व्याख्या – 'अव्ययीभावश्च' (2/4/18) सूत्र से अव्ययीभाव समास की सिद्धि होने पर सम्पूर्ण पद **नपुंसकलिङ्ग** हो जाता है, – 'गोपि इति' = अधिगोपम्
अतः विकल्प (C) सही है।

38. 'विष्णोः पश्चात्' का सम्पूर्ण पद है?
(A) उपविष्णुन् (B) अनुविष्णो
(C) अनुविष्णवे (D) अनुविष्णु

व्याख्या – 'अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि'................... (2/1/6) सूत्र से 'विष्णु ङस् अनु' के साथ समास होकर **''विष्णोः पश्चात् = अनुविष्णु''** पद बनेगा जिसमें अव्ययीभावसमास है।
अतः विकल्प (D) सही है।

39. 'निर्मक्षिकम्' में समास है –
(A) नञ्समास (B) तृतीयातत्पुरुष
(C) सप्तमीतत्पुरुष (D) अव्ययीभाव

व्याख्या –
(A) 'नञ्' (2/2/6) सूत्र से ''न ब्राह्मणः = अब्राह्मणः'' में नञ्समास है।
(B) 'तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन' (2/1/30) सूत्र से 'धान्येन अर्थः = धान्यार्थः' में तृतीयातत्पुरुषसमास है।
(C) 'सप्तमी शौण्डैः' (2/1/40) सूत्र से ''अक्षेषु शौण्डः = अक्षशौण्डः'' में सप्तमीतत्पुरुषसमास है।
(D) ''अव्ययंविभक्ति समीप'' ..... (2/1/6) सूत्र से अभाव अर्थ में 'निर्' अव्यय का 'मक्षिकाणाम्' सुबन्त के साथ समास होकर **''मक्षिकाणाम् अभावः = निर्मक्षिकम्'' में अव्ययीभावसमास है।**
अतः विकल्प (D) सही है।

40. 'नखभिन्नः' में समास है?
(A) तृतीयातत्पुरुष (B) कर्मधारय
(C) बहुव्रीहि (D) द्वन्द्वसमास

व्याख्या –
(A) 'कर्तृ-करणे कृता बहुलम्' (2/1/32) सूत्र से अनुक्त कर्ता और करण में आने वाली तृतीया में अन्त होने वाले पदों का कृदन्त पद के साथ समास होता है। यथा– **''नखैः भिन्नः = नखभिन्नः''** में तृतीयातत्पुरुषसमास है।
(B) 'विशेषणं विशेष्येण बहुलम्' (2/1/57) सूत्र से 'निर्मलाः गुणाः = निर्मलगुणाः' में कर्मधारयसमास है।
(C) 'अनेकमन्यपदार्थे' (2/2/24) सूत्र से ''कण्ठे कालो यस्य सः = कण्ठेकालः'' में बहुव्रीहिसमास है।
(D) 'चार्थे द्वन्द्वः' (2/2/29) सूत्र से ''हस्तश्च चरणश्च = हस्तचरणम्'' में द्वन्द्वसमास है।
अतः विकल्प (A) सही है।

34. (D) 35. (C) 36. (B) 37. (C) 38. (D) 39. (D) 40. (A)

41. षष्ठी तत्पुरुष युक्त समास है?
(A) दूरादागतः (B) राजपुरुषः
(C) धान्यार्थः (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या –
(A) 'पञ्चम्याः स्तोकादिभ्यः' (6/3/2) सूत्र से 'दूरात् आगतः = दूरादागतः' में पञ्चमीतत्पुरुषसमास है।
(B) 'षष्ठी' (2/2/8) सूत्र से षष्ठ्यन्त सुबन्त का समर्थ सुबन्त के साथ समास होता है। यथा–**'राज्ञः पुरुषः = राजपुरुषः'**
(C) 'तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन' (2/1/30) सूत्र से ''धान्येन अर्थः = धान्यार्थः'' में तृतीयातत्पुरुषसमास है।
अतः विकल्प (B) सही है।

42. समास में प्रथम शब्द संख्यावाचक हो तो वह द्विगु समास होगा जब दूसरा शब्द हो –
(A) संज्ञा (B) अव्यय
(C) विशेषण (D) उपसर्ग

व्याख्या –
(A) 'संख्यापूर्वो द्विगुः' (2/1/52) सूत्र से जिस समास में प्रथम पद संख्यावाची हो और **दूसरा संज्ञाशब्द हो** तो वह द्विगुसंज्ञक होगा। यथा–''त्रयाणां लोकानां समाहारः = त्रिलोकी''
(B) प्रथमपद अव्यय या उपसर्ग रहे तो अव्ययीभावसमास होता है।
(C) प्रथमपद विशेषण रहे तो कर्मधारयसमास होता है।
अतः विकल्प (A) सही है।

43. 'पीताम्बरः' में समास है?
(A) बहुव्रीहि (B) कर्मधारय
(C) द्विगु समास (D) अव्ययीभाव

व्याख्या –
(A) 'अनेकमन्यपदार्थे' (2/2/24) सूत्र से अन्यपद के अर्थ में अनेक प्रथमान्त पदों का विकल्प से समास होता है। यथा – **''पीतम् अम्बरं यस्य सः = पीताम्बरः'' में बहुव्रीहिसमास है।**
(B) 'विशेषणं विशेष्येण बहुलम्' (2/1/57) सूत्र से पीतम् च तत् अम्बरम् = पीताम्बरम् में कर्मधारयसमास है।
(C) ''तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च'' (2/1/51) सूत्र से 'पञ्चानां गवां समाहारः = पञ्चगवम्' में द्विगुसमास है।
(D) 'अव्ययं विभक्ति - समीप - समृद्धि .....' (2/1/6) सूत्र से 'शक्तिम् अनतिक्रम्य = यथाशक्ति' में अव्ययीभाव समास हुआ है।
अतः विकल्प (A) सही है।

44. 'बालक' शब्द का द्वितीया बहुवचन का रूप है?
(A) बालकम्
(B) बालकौ
(C) बालकान्
(D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या –
'बालक' शब्द का द्वितीयाविभक्ति में निम्न रूप बनता है –
बालकम् – बालकौ – **बालकान्**
अतः विकल्प (C) सही है।

45. 'कवि' शब्द का पञ्चमी एकवचन का रूप है?
(A) कवेः (B) कविभ्याम्
(C) कविभ्यः (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या –
'कवि' इकारान्त पुंलिङ्ग शब्द का पञ्चमी विभक्ति में – '**कवेः** कविभ्याम् कविभ्यः' रूप बनता है।
अतः विकल्प (A) सही है।

46. 'सुधियम्' किस विभक्ति का रूप है?
(A) तृतीया (B) द्वितीया
(C) चतुर्थी (D) पञ्चमी

व्याख्या –
(A) सुधी (पण्डित) ईकारान्त पुंलिङ्ग शब्द का तृतीया में – 'सुधिया, सुधीभ्याम्, सुधीभिः'
(B) द्वितीयाविभक्ति में – '**सुधियम्,** सुधियौ, सुधियः'
(C) चतुर्थीविभक्ति में – 'सुधिये, सुधीभ्याम्, सुधीभ्यः'
(D) पञ्चमीविभक्ति में – 'सुधियः, सुधीभ्याम्, सुधीभ्यः'
अतः विकल्प (B) सही है।

47. पञ्चमीविभक्ति में 'भानु' का सही रूप होगा?
(A) भानवे (B) भानोभ्याम्
(C) भानुना (D) भानोः

व्याख्या –
(A) 'भानु' शब्द का चतुर्थीविभक्ति में – ''भानवे, भानुभ्याम्, भानुभ्यः'' रूप बनता है।
(C) तृतीया विभक्ति में – ''भानुना, भानुभ्याम्, भानुभिः''
(D) पञ्चमीविभक्ति में – **भानोः**, भानुभ्याम्, भानुभ्यः
अतः विकल्प (D) सही है।
नोट – 'भानोभ्याम्' रूप भानु शब्द के सातों विभक्तियों में कहीं नहीं बनता है।

41. (B) 42. (A) 43. (A) 44. (C) 45. (A) 46. (B) 47. (D)

48. 'स्वयम्भुवि' किस विभक्ति का रूप है?
(A) तृतीया
(B) चतुर्थी
(C) षष्ठी
(D) सप्तमी

व्याख्या –
(A) 'स्वयम्भू' (ब्रह्मा) शब्द का तृतीयाविभक्ति में – ''स्वयम्भुवा, स्वयम्भूभ्याम्, स्वयम्भूभिः''
(B) चतुर्थीविभक्ति में – ''स्वयम्भुवे, स्वयम्भूभ्याम्, स्वयम्भूभ्यः'' रूप बनता है।
(C) षष्ठी विभक्ति में – ''स्वयम्भुवः, स्वयम्भुवोः, स्वयम्भुवाम्''
(D) सप्तमी विभक्ति में– **स्वयम्भुवि**, स्वयम्भुवोः, स्वयम्भुषु
अतः विकल्प (D) सही है।

49. 'फलानाम्' किस विभक्ति का रूप है?
(A) द्वितीया
(B) तृतीया
(C) पञ्चमी
(D) षष्ठी

व्याख्या –
(A) फल (नपुंसकलिङ्ग) का रूप द्वितीयाविभक्ति में– ''फलम् फले फलानि''
(B) तृतीयाविभक्ति में – ''फलेन, फलाभ्याम्, फलैः''
(C) पञ्चमीविभक्ति में – ''फलात्, फलाभ्याम्, फलेभ्यः''
(D) षष्ठीविभक्ति में – ''फलस्य, फलयोः, **फलानाम्**''
अतः विकल्प (D) सही है।

50. षष्ठी विभक्ति में 'दधि' का सही रूप होगा?
(A) दध्नोः
(B) दध्नाभाम्
(C) दधि
(D) दधीनि

व्याख्या – 'दधि' इकारान्त नपुंसकलिङ्ग का रूप षष्ठी विभक्ति में – ''दध्नः **दध्नोः** दध्नाम्'' बनता है।
प्रथमा और द्वितीया – ''दधि, दधिनी, दधीनि''
* 'दध्नाभाम्' रूप सातों विभक्तियों में कहीं नहीं बनता है।
अतः विकल्प (A) सही है।

51. 'अभिनिविशश्च' सूत्र है?
(A) करणकारक का **(B) कर्मकारक का**
(C) सम्प्रदानकारक का **(D) अपादानकारक का**

व्याख्या –
(A) ''साधकतमं करणम्'' (1/4/42)– करणकारक का सूत्र
(B) अभिनिविशश्च (1/4/47) – **कर्मकारक** का सूत्र
(C) स्पृहेरीप्सितः (1/4/36) – सम्प्रदानकारक का सूत्र
(D) पराजेरसोढः (1/4/26) – अपादानकारक का सूत्र
अतः विकल्प (B) सही है।

52. 'अभितः' के योग में विभक्ति होती है?
(A) द्वितीया **(B) तृतीया**
(C) चतुर्थी **(D) पञ्चमी**

व्याख्या –
(A) **'अभितः**-परितः-समया-निकषा-हा-प्रतियोगेऽपि' वार्तिक से अभितः, परितः, समया, निकषा, हा और प्रति शब्दों के योग में **द्वितीयाविभक्ति** होती है।
(B) सह, साकं, सार्धं, समं आदि शब्दों के योग में तृतीयाविभक्ति होती है।
(C) नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलम्, वषट् शब्दों के योग में चतुर्थीविभक्ति होती है।
(D) अन्य, आरात्, इतर, ऋते, प्राक्, प्रत्यक् शब्दों के योग में पञ्चमी विभक्ति होती है।
अतः विकल्प (A) सही है।

53. तृतीया विभक्ति तब होती है जब –
(A) काल अर्थ द्योतित होने पर
(B) हीन अर्थ द्योतित होने पर
(C) अनादर अर्थ द्योतित होने पर
(D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या –
(A) 'अपवर्गे तृतीया' (2/3/6) सूत्र से अपवर्ग (फल प्राप्ति) द्योतित होने पर **काल और मार्गवाची शब्दों से** अत्यन्तसंयोग गम्यमान होने पर **तृतीयाविभक्ति** होती है। यथा – अह्ना क्रोशेन अधीतः।
(B) 'हीने' (1/4/86) सूत्र से द्वितीयाविभक्ति होती है।
(C) 'षष्ठी चानादरे' (2/3/38) सूत्र से षष्ठी या सप्तमी विभक्ति होती है।
अतः विकल्प (A) सही है।

48. (D) 49. (D) 50. (A) 51. (B) 52. (A) 53. (A)

54. **'येनाङ्गविकारः' सूत्र है?**
(A) करणकारक का **(B) कर्मकारक का**
(C) सम्प्रदानकारक का **(D) अपादानकारक का**

व्याख्या –
(A) **'येनाङ्गविकारः'** (2/3/20)–**करणकारक** का सूत्र है।
(B) 'उपान्वध्याङ्वसः' (1/4/48)– कर्मकारक का सूत्र है।
(C) 'अनुप्रतिगृणश्च' (1/4/41)–सम्प्रदानकारक का सूत्र है।
(D) 'वारणार्थानामीप्सितः' (1/4/27)–अपादान का सूत्र है।
अतः विकल्प (A) सही है।

55. **'बालकाय मोदकं रोचते' वाक्य में बालकाय है?**
(A) चतुर्थी विभक्ति में
(B) द्वितीया विभक्ति में
(C) तृतीया विभक्ति में
(D) पञ्चमी विभक्ति में

व्याख्या –
(A) 'रुच्यर्थानां प्रीयमाणः' (1/4/33) सूत्रानुसार रुच्यर्थ धातुओं के प्रयोग में प्रीयमाण (प्रसन्न होने वाले) व्यक्ति की सम्प्रदानसंज्ञा होकर उसमें **चतुर्थी विभक्ति** का प्रयोग होता है। यथा – बालकाय मोदकं रोचते। यहाँ 'बालकाय' में चतुर्थीविभक्ति है।
(B) तण्डुलान् ओदनं पचति – 'अकथितं च' (1/4/51) सूत्र से 'तण्डुलान्' में द्वितीयाविभक्ति है।
(C) प्रकृत्या चारु – 'प्रकृत्यादिभ्य उपसंख्यानम्' वार्तिक से 'प्रकृत्या' में तृतीयाविभक्ति।
(D) चोरात् त्रायते – 'भीत्रार्थानां भयहेतुः' (1/4/25) सूत्र से 'चोरात्' में पञ्चमीविभक्ति।
अतः विकल्प (A) सही है।

56. **जब 'क्रुध्' तथा 'द्रुह्' धातु उपसर्ग सहित हों तो जिसके प्रति क्रोध या द्रोह किया जाता है वह होता है –**
(A) सम्प्रदानसंज्ञा में **(B) करणसंज्ञा में**
(C) कर्मसंज्ञा में **(D) अपादानसंज्ञा में**

व्याख्या –
(A) ''क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः'' (1.4.37) सूत्र से क्रुध, दुह, ईर्ष्य, असूय धातुओं तथा इनके तुल्यार्थ धातुओं के प्रयोग में जिस पर क्रोध किया जाय, उसकी सम्प्रदानसंज्ञा होती है।
(B) ''हेतौ'' (2/3/23) सूत्र से हेतु अर्थ के वाची शब्दों की करणसंज्ञा होती है। यथा– अध्ययनेन वसति।
(C) 'क्रुधद्रुहोरुपसृष्टयोः कर्म' (1/4/38) सूत्र से क्रुध्, द्रुह् धातु उपसर्ग सहित हों तो उसकी **कर्मसंज्ञा** होती है। यथा–रामम् अभिक्रुध्यति। अतः विकल्प (C) सही है।
(D) 'आख्यातोपयोगे' (1/4/29) सूत्र से नियमपूर्वक विद्या पढ़ने में 'आख्याता' (व्याख्याता/गुरु) की अपादानसंज्ञा होती है। यथा– उपाध्यायात् अधीते।

57. **अपादानकारक मूलतः प्रयुक्त होता है?**
(A) संयोग के अर्थ में
(B) वियोग के अर्थ में
(C) पराजित करने के अर्थ में
(D) दया करने के अर्थ में

व्याख्या – 'ध्रुवमपायेऽपादानम्' (1/4/24) सूत्र से जिससे **वियोग (अलगाव)** होता है, उसकी अपादानसंज्ञा होकर उसमें 'अपादाने पञ्चमी' (2.3.28) से पञ्चमीविभक्ति का प्रयोग होता है। यथा – ग्रामात् आयाति। अतः विकल्प (B) सही है।

58. **धातुयें कितने प्रकार की होती हैं।**
(A) दो प्रकार से **(B) चार प्रकार से**
(C) तीन प्रकार से **(D) पाँच प्रकार से**

व्याख्या – धातुएँ **तीन प्रकार** की होती हैं,
1. परस्मैपदी, 2. आत्मनेपदी, 3. उभयपदी
अतः विकल्प (C) सही है।

59. **आसन्न भविष्य के लिए प्रयुक्त होता है?**
(A) लिट्लकार **(B) लुट्लकार**
(C) लृट्लकार **(D) लङ्लकार**

	लकार		**काल बोधक**
(A)	लिट्लकार	–	परोक्षभूत
(B)	लुट्लकार	–	अनद्यतन भविष्य
(C)	**लृट्लकार**	–	**आसन्न भविष्य**
(D)	लङ्लकार	–	अनद्यतन भूत

अतः विकल्प (C) सही है।

54. (A) 55. (A) 56. (C) 57. (B) 58. (C) 59. (C)

60. 'भू' धातु का रूप लोट्लकार मध्यमपुरुष एकवचन में होगा–
(A) भव (B) भवतम्
(C) भवत (D) भवन्तु

व्याख्या –
* 'भू' धातु लोट्लकार म. पु. का रूप –
भव भवतम् भवत
* प्रथमपुरुष में – भवतु भवताम् भवन्तु
अतः विकल्प (A) सही है।

61. 'भू' धातु लिट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन में रूप बनता है?
(A) बभूव (B) बभूवतुः
(C) बभूवुः (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या – 'भू' धातु लिट्लकार प्र. पु. में – **बभूव** बभूवतुः बभूवुः रूप बनता है। अतः विकल्प (A) सही है।

62. 'गम्' धातु लिट्लकार मध्यमपुरुष बहुवचन में रूप बनता है?
(A) **जगाम** **(B) जग्मुः**
(C) जग्म (D) अगच्छत्

व्याख्या –
* 'गम्' धातु लिट्लकार म. पु. में –
* ''जगमिथ जग्मथुः **जग्म**'' रूप बनता है।
* प्रथमपुरुष में – ''जगाम जग्मतुः जग्मुः''
गम् धातु लङ्लकार प्र. पु. में –
''अगच्छत् अगच्छताम् अगच्छन्''
अतः विकल्प (C) सही है।

63. `99' का संस्कृत शब्दात्मक रूप होगा?
(A) नवनवतिः (B) षण्णवतिः
(C) नवतिः (D) एकनवतिः

संख्या		**शब्दात्मक रूप**
(A) **99**	–	**नवनवतिः (एकोनशतम्)**
(B) 96	–	षण्णवतिः
(C) 90	–	नवतिः
(D) 91	–	एकनवतिः

अतः विकल्प (A) सही है।

64. 'तुम कुसुमपुर जाओ' का संस्कृत अनुवाद है?
(A) त्वां कुसुमपुरं गच्छ (B) त्वं कुसुमपुरं गच्छ
(C) त्वं कुसुमपुरं गच्छेत् (D) त्वां गच्छेत् कुसुमपुरम्

व्याख्या – यहाँ 'त्वम्' मध्यम पुरुष एकवचन का कर्ता है, और 'गच्छ' लोट्लकार मध्यमपुरुष एकवचन की क्रिया है। और 'कुसुमपुरं' कर्म है, इसमें द्वितीया का एकवचन है।
त्वं कुसुमपुरं गच्छ (तुम कुसुमपुर जाओ)
अतः विकल्प (B) सही है।

65. 'किं करवाणि ते' का अर्थ है?
(A) मैं तुम्हारे लिए क्या कर सकता हूँ।
(B) तुम मेरे लिए क्या कर सकते हो।
(C) तुम्हें क्या करना है।
(D) मैं तुमसे क्या करवाता हूँ।

व्याख्या – 'किं करवाणि ते'–का अर्थ है 'मैं तुम्हारे लिए क्या कर सकता हूँ।' यहाँ 'ते' अर्थात् 'तव' युष्मद् शब्द का षष्ठी का एकवचन का रूप है, और 'करवाणि' लोट्लकार उत्तमपुरुष एकवचन की क्रिया है। अतः विकल्प (A) सही है।

66. 'एतदासनमास्यतां' का अर्थ है?
(A) तुम आसन ग्रहण कर।
(B) यह आसन ग्रहण करें।
(C) इस आसन पर वह आ गया।
(D) इस आसन पर मैं आता हूँ।

व्याख्या– एतत् = यह, आसनम् = आसन, आस्यताम् = ग्रहण करें या बैठें। 'आस्' धातु लोट्, प्र० पु०, एक०, कर्मणि। अर्थात् यह आसन ग्रहण करें।
अतः विकल्प (B) सही है।

67. संस्कृत व्याकरण में मूल स्वरों की संख्या है?
(A) पाँच (B) छः
(C) सात (D) आठ

व्याख्या – संस्कृतव्याकरण में मूल स्वरों की संख्या पाँच है। अ, इ, उ, ऋ, लृ मूलस्वर हैं। कुल स्वर नव हैं– अ, इ, उ, ऋ, ऌ, ए, ओ, ऐ, औ।
अतः विकल्प (A) सही है।

68. सन्धि है –
(A) दो पदों का मेल
(B) दो वर्णों का मेल
(C) दो दूरवर्ती पदों का मेल
(D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या – 'परः सन्निकर्षः संहिता' (1/4/109) सूत्र से वर्णों की अत्यधिक सामीप्यता को 'संहिता' कहते हैं। जैसे– सुधी +उपास्यः = सुध्युपास्यः अर्थात् दो वर्णों के मेल को सन्धि कहते हैं। जबकि 'समर्थः पदविधिः' (2/1/1) सूत्र से दो पदों के बीच समास होता है। अतः विकल्प (B) सही है।

60. (A) 61. (A) 62. (C) 63. (A) 64. (B) 65. (A) 66. (B) 67. (A) 68. (B)

69. सन्धि के कारण हो सकता है –
(A) लोप
(B) कोई नया वर्ण
(C) दो में से एक का द्वित्व
(D) उपर्युक्त तीनों परिवर्तन

व्याख्या –
(A) प्रथम शब्द के अन्तिम अक्षर का लोप –
रामः आयाति = राम आयाति।
(B) दोनों के स्थान में कोई नया वर्ण –
रमा + ईशः = रमेशः (आ + ई = ए)
(C) दो में से एक का द्वित्व –
एकस्मिन् + अवसरे = एकस्मिन्नवसरे
उपर्युक्त तीनों विकल्प सही है, अर्थात् सन्धि में **लोप, आगम और द्वित्त्व तीनों कार्य** होता है इसलिए विकल्प (D) सही है।

70. स्वरसन्धि का परिणाम 'ओ' होगा –
(A) यदि 'अ' या 'आ' के बाद 'उ' या 'ऊ' हो
(B) यदि 'अ' या 'आ' के बाद 'इ' या 'ई' हो
(C) यदि 'अ' या 'आ' के बाद 'ऋ' या 'ॠ' हो
(D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या –
(A) आद्गुणः (6/1/87) सूत्र से यदि अ या आ के बाद उ या ऊ आये तो गुण होकर ओ हो जाता है। यथा – नील + उत्पलः = नीलोत्पलः
(B) अ, आ + इ, ई = ए (गण + ईशः = गणेशः)
(C) अ, आ + ऋ, ॠ = अर् (देव + ऋषिः = देवर्षिः)
अतः विकल्प (A) सही है।

71. यदि 'अ' या 'आ' के बाद 'इ' या 'ई' आए तो होगा–
(A) ए **(B) ऐ**
(C) ओ **(D) औ**

व्याख्या – 'आद्गुणः' (6/1/87) सूत्र से अ या 'आ' वर्ण के बाद इ या ई हो तो गुण आदेश 'ए' होता है। यथा – उप + इन्द्रः =उपेन्द्रः। यहाँ अ + इ = ए हो गया।
गुणसन्धि में– अ, आ + इ, ई = ए
अ, आ + उ, ऊ = ओ
अ, आ + ऋ, ॠ = अर्
अ, आ + ऌ = अल्
अतः विकल्प (A) सही है।

72. स्वरसन्धि में अर् होगा –
(A) यदि 'ऋ' के बाद 'अ' आये
(B) यदि 'अ' के बाद 'ऋ' आये
(C) यदि 'अ' के बाद 'उ' आये
(D) यदि अ के बाद अर् आये

व्याख्या – यदि 'अ' या 'आ' के बाद 'ऋ' आये तो उसके स्थान में गुण होकर 'अर्' हो जाता है यथा –
ग्रीष्म + ऋतुः =ग्रीष्मर्तुः, अ + ऋ = अर् अतः विकल्प (B) सही है।

73. अच् 'सन्धि' कहते हैं –
(A) व्यञ्जनसन्धि को **(B) स्वरसन्धि को**
(C) विसर्गसन्धि को **(D) इनमें से कोई नहीं**

व्याख्या – हल्सन्धि को व्यञ्जनसन्धि कहते हैं। स्वर सन्धि को अच्सन्धि कहते हैं। क्योंकि 'अच् ' प्रत्याहार में सभी स्वर वर्ण आ जाते हैं। अतः विकल्प (B) सही है।

74. 'मातृ + औदार्यम्' का शुद्ध रूप है –
(A) मात्रोदार्यम् **(B) मात्रौदार्यम्**
(C) मातृदार्यम् **(D) मातृऔदार्यम्**

व्याख्या – 'इको यणचि' (6/1/77) सूत्र से इक् के स्थान पर यण् आदेश होकर "मातृ + औदार्यम् = मात्रौदार्यम्" बनेगा। अतः विकल्प (B) सही है।

75. 'नायकः' का सन्धिविच्छेद है –
(A) ना + अकः **(B) ने + अकः**
(C) न + अकः **(D) नै + अकः**

व्याख्या – 'एचोऽयवायावः' (6/1/78) सूत्रानुसार एच् = ए, ओ, ऐ, औ के स्थान पर क्रमशः अय्, अव्, आय्, आव् आदेश होकर – नै + अकः =नायकः बनेगा।
अतः विकल्प (D) सही है।

76. "स्तोः श्चुना श्चुः" के अनुसार सन्धि रूप है –
(A) प्रश्नः **(B) शिवच्छाया**
(C) हरिश्शेते **(D) तट्टीका**

व्याख्या –
(A) 'शात्' (8/4/44) सूत्र से – प्रश् + नः = प्रश्नः
(B) 'छे च' (6/1/73) सूत्र से – शिव + छाया = शिवच्छाया
(C) 'स्तोः श्चुना श्चुः' (8/4/40) सूत्र से हरिस् + शेते = हरिश्शेते
(D) 'ष्टुना ष्टुः' (8/4/41) सूत्र से तत् + टीका = तट्टीका
अतः विकल्प (C) सही है।

69. (D)	70. (A)	71. (A)	72. (B)	73. (B)	74. (B)	75. (D)	76. (C)

77. शिवराजविजयम् काव्य की रीति है –
(A) पाञ्चाली
(B) गौडी
(C) वैदर्भी
(D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या – (A) अम्बिकादत्तव्यास कृत शिवराजविजयम् में पाञ्चाली रीति का प्रयोग है।
(B) उत्तररामचरितम् में वैदर्भी एवं गौडीरीति का समन्वय है। किन्तु भवभूति गौडीरीति के कवि माने जाते हैं।
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में वैदर्भीरीति का प्रयोग है।
अतः विकल्प (A) सही है।

78. 'शिवराजविजयम्' काव्य का प्रारम्भ होता है?
(A) सूर्योदय वर्णन से
(B) कोंकण यात्रा से
(C) रघुवीर सिंह की तोरण यात्रा से
(D) हनुमान् मंदिर के वर्णन से

व्याख्या–'अरुण एष प्रकाशः पूर्वस्यां भगवतो मरीचिमालिनः'– प्रस्तुत पंक्ति से शिवराजविजयम् का आरम्भ होता है जिसमें सूर्योदय का वर्णन है। अतः विकल्प (A) सही है।

79. गोपीनाथ है –
(A) शिवाजी का मित्र
(B) अफजल खाँ का दूत
(C) हनुमान् मंदिर का पुजारी
(D) रघुवीर सिंह का गुरु

व्याख्या – 'शिवराजविजयम्' में गोपीनाथ अफजल खाँ का दूत था जो शिवाजी के पास सन्धि का प्रस्ताव लेकर आता है। अतः विकल्प (B) सही है।

80. 'चन्द्रापीड' किस ग्रन्थ का नायक है –
(A) शिवराजविजयम्
(B) कादम्बरी
(C) मेघदूतम्
(D) अभिज्ञानशाकुन्तलम्

	ग्रन्थ		**नायक**
(A)	शिवराजविजयम्	–	शिवाजी
(B)	**कादम्बरी**	**–**	**चन्द्रापीड**
(C)	मेघदूतम्	–	यक्ष (हेममाली)
(D)	अभिज्ञानशाकुन्तलम्	–	दुष्यन्त

अतः विकल्प (B) सही है।

81. 'कादम्बरी' में किसके तीन जन्मों का वर्णन है?
(A) चन्द्रापीड **(B) कपिञ्जल**
(C) पुण्डरीक **(D) लक्ष्मी**

व्याख्या – * कादम्बरी कथामुखम् में मुख्यतः चन्द्रापीड के तीन जन्मों की कथा का वर्णन है। चन्द्रापीड के तीनों जन्मों के नाम – चन्द्रमा चन्द्रापीड शूद्रक।
* वैशम्पायन के तीनों जन्मों के नाम–पुण्डरीक, वैशम्पायन, शुक
अतः विकल्प (A) सही है।

82. 'वैशम्पायन' की प्रेमिका थी?
(A) कादम्बरी **(B) महाश्वेता**
(C) चाण्डालकन्या **(D) इनमें से कोई नहीं**

	प्रेमी		**प्रेमिका**
(A)	चन्द्रापीड	–	कादम्बरी
(B)	**वैशम्पायन**	**–**	**महाश्वेता**

अतः विकल्प (B) सही है।

83. 'कादम्बरी' में वर्णन नहीं है?
(A) अच्छोदसरोवर का
(B) पम्पासरोवर का
(C) शाल्मलीवृक्ष का
(D) देवदारु का

व्याख्या – कादम्बरी में – शूद्रकवर्णन, शुकवर्णन, विन्ध्याटवीवर्णन, शबरसैन्यवर्णन, शाल्मलीवृक्षवर्णन, जाबालि आश्रमवर्णन, अच्छोदसरोवर, पम्पासरोवर आदि का वर्णन है। किन्तु देवदारु वृक्ष का वर्णन रघुवंश के द्वितीयसर्ग में है। अतः विकल्प (D) सही है।

77. (A) 78. (A) 79. (B) 80. (B) 81. (A) 82. (B) 83. (D)

84. 'शिवराजविजयम्' किस विधा में लिखा गया है –
(A) नाटक (B) उपन्यास
(C) महाकाव्य (D) कथा

	ग्रन्थ		विधा
(A)	उत्तररामचरितम्	–	नाटक
(B)	**शिवराजविजयम्**	–	**ऐतिहासिक उपन्यास**
(C)	किरातार्जुनीयम्	–	महाकाव्य
(D)	कादम्बरी	–	कथा

अतः विकल्प (B) सही है।

85. 'तिलकमञ्जरी' के लेखक हैं –
(A) हर्ष (B) रत्नाकर
(C) धनपाल (D) दण्डी

	ग्रन्थ		रचनाकार
(A)	रत्नावली	–	हर्ष
(B)	हरविजयम्	–	रत्नाकर
(C)	**तिलकमञ्जरी**	–	**धनपाल**
(D)	दशकुमारचरितम्	–	दण्डी

अतः विकल्प (C) सही है।

84. (B) 85. (C)

प्रशिक्षित-स्नातकशिक्षक-चयनपरीक्षा (TGT)–2004 (निरस्त)

1. वर्णमाला में वर्णों की संख्या है?
(A) ग्यारह (B) तेरह
(C) छियालिस (D) तैंतीस

व्याख्या–`14 माहेश्वर' सूत्रों के आधार पर वर्णमाला में 9 स्वर और 33 व्यञ्जन मिलाकर कुल 42(बयालिस) वर्ण हैं। किन्तु चारों विकल्पों में बयालिस नहीं है। अतः यहाँ आ, ई, ऊ, ॠ (दीर्घ स्वरों) को जोड़कर **छियालिस (46) वर्ण** माना गया है। अतः विकल्प (C) सही है।

2. यण् सन्धि होगी जब–
(A) आ + ई (B) इ + ई
(C) अ + ए (D) इ + अ

व्याख्या–
(A) आ + ई = ए होकर (रमा + ईशः = रमेशः) में गुणसन्धि होगी
(B) इ + ई = ई होकर (हरि + ईशः = हरीशः) में दीर्घसन्धि होगी
(C) अ + ए = ऐ होकर (मम + एवम् = ममैवम्) में वृद्धिसन्धि होगी
(D) 'इको यणचि' (6/1/77) सूत्र से इक् के बाद कोई असमान स्वर हो तो इक् के स्थान पर यण् आदेश हो जाता है यथा– **इति + अत्र = इत्यत्र** (इ + अ = य्)
अतः विकल्प `D' सही है।

3. यदि अ या आ के बाद ए या ऐ आये तो होगा–
(A) ए (B) ऐ
(C) ओ (D) औ

व्याख्या– * 'वृद्धिरेचि' (6/1/88) सूत्र से अवर्ण से एच् (ए, ओ, ऐ, औ) परे हो तो दोनों के स्थान में वृद्धि एकादेश हो जाता है। यथा–
* कृष्ण + एकत्वम् (अ + ए = ऐ) = कृष्णैकत्वम्
* नृप + ऐश्वर्यम् = नृपैश्वर्यम् (अ + ऐ = ऐ)
* इस प्रकार अ/आ + ए/ऐ = ऐ

अतः विकल्प `B' सही है।

4. स्वर सन्धि में अय् होगा–
(A) ए + अ (B) ऐ + अ
(C) ओ + अ (D) औ + अ

व्याख्या–एचोऽयवायावः (6/1/78) सूत्र से एच् (ए, ओ, ऐ, औ) के बाद यदि कोई भी स्वर हो तो एच् के स्थान में क्रमशः अय्, अव्, आय्, आव् हो जाता है यथा–
(A) ने + अनम् = नयनम् **(ए + अ = अय्)**
(B) नै + अकः = नायकः (ऐ + अ = आय्)
(C) पो + अनः = पवनः (ओ + अ = अव्)
(D) पौ + अकः = पावकः (औ + अ = आव्)
अतः विकल्प `A' सही है।

5. हल् सन्धि में विकार होता है?
(A) व्यञ्जन का (B) स्वर का
(C) विसर्ग का (D) उपर्युक्त तीनों का

व्याख्या–
(A) हल् एक प्रत्याहार जिसके अन्तर्गत समस्त व्यञ्जन आते है इस प्रकार **हल्सन्धि में व्यञ्जन का विकार** होता है यथा–तद् + शिवः = तच्छिवः
(B) अच् प्रत्याहार के अन्तर्गत सभी स्वर आते हैं, इसलिए स्वर सन्धि को 'अच्सन्धि' भी कहते हैं। यथा– हरे + अव = हरेऽव
(C) विसर्गसन्धि में विसर्ग का विकार होता है। यथा– विष्णुः + त्राता = विष्णुस्त्राता।
अतः विकल्प `A' सही है।

6. 'गङ्गोदकम्' का सन्धिविच्छेद है?
(A) गङ्गा + उदकम् (B) गङ्गो + उदकम्
(C) गङ्ग + उदकम् (D) गङ्गा + उदके

व्याख्या– 'आद् गुणः' (6/1/87) सूत्र से अवर्ण के बाद ह्रस्व या दीर्घ इ, उ, ऋ, ऌ आयें तो दोनों के स्थान में गुण हो जाता है। यथा– **गङ्गा + उदकम्** (आ + उ = ओ) = **गङ्गोदकम्।** अतः विकल्प `A' सही है।

1. (C) 2. (D) 3. (B) 4. (A) 5. (A) 6. (A)

7. 'कस्मिंश्चित्' का सन्धि विच्छेद है?
(A) कस्मिन् + श्चित
(B) कस्मिन् + चित्
(C) कस्मि + चित
(D) कस्मिनः + श्चितन्

व्याख्या–'नश्छव्यप्रशान्' (8/3/7) सूत्र से **कस्मिन् + चित् = कस्मिंश्चित्** में व्यञ्जन सन्धि है। अतः विकल्प `B' सही है।

8. 'झलां जश् झशि' के अनुसार सन्धि रूप है?
(A) तट्टीका **(B) षण्मुखः**
(C) सच्चित् **(D) युद्धम्**

व्याख्या–
(A) ''ष्टुना ष्टुः (8/4/41)'' सूत्र से तत् + टीका = तट्टीका में व्यञ्जनसन्धि है।
(B) ''यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा'' (8/4/45) सूत्र षट् + मुखः = षण्मुखः में व्यञ्जन सन्धि है।
(C) ''स्तोः श्चुना श्चुः'' (8/4/40) सूत्र से सत् + चित् = सच्चित् में श्चुत्वसन्धि है।
(D) ''झलां जश् झशि'' (8/4/53) सूत्र से झल् प्रत्याहार के बाद झश् प्रत्याहार का वर्ण हो तो झल् को जश् आदेश हो जाता है। यथा– **युध् + धम् = युद्धम्**
अतः विकल्प `D' सही है।

9. 'यशस्कम्' का सन्धि विच्छेद है?
(A) यश + कम् **(B) यश + अस्कम्**
(C) यशः + स्कम् **(D) यशः + कम्**

व्याख्या– 'विसर्जनीयस्य सः' (8/3/34) सूत्र से पदान्त विसर्ग के बाद खर् हो तो विसर्ग के स्थान पर स् हो जाता है यथा–**यशः + कम् = यशस्कम्।** अतः विकल्प `D' सही है।

10. 'तत्' सर्वनाम शब्द का षष्ठी विभक्ति का रूप है?
(A) तेन **(B) तस्य**
(C) तस्मिन् **(D) तस्मै**

व्याख्या–
(A) 'तद्' पुंलिङ्ग का रूप तृतीया विभक्ति में तेन, ताभ्याम्, तैः बनता है
(B) षष्ठी विभक्ति में– **तस्य** तयोः तेषाम्
(C) सप्तमी विभक्ति में– तस्मिन् तयोः तेषु
(D) चतुर्थी विभक्ति में– तस्मै ताभ्याम् तेभ्यः
अतः विकल्प `B' सही है।

11. 'त्वत्' किस सर्वनाम का रूप है?
(A) तत् **(B) इदम्**
(C) अस्मद् **(D) युष्मद्**

व्याख्या–
(A) 'तद्' (वह) का रूप तीनों लिङ्गों में अलग-अलग चलता है।
पुंलिङ्ग पञ्चमी विभक्ति में–'तस्मात्, ताभ्याम्, तेभ्यः' रूप बनता है।
(B) 'इदम्' (यह) सर्वनाम का रूप तीनों लिङ्गों में चलता है।
पुंलिङ्ग पञ्चमी विभक्ति में–'अस्मात्, आभ्याम्, एभ्यः' रूप बनता है।
(C) 'अस्मद्' सर्वनाम का रूप तीनों लिङ्गों में एक समान चलता है अर्थात् लिङ्ग बदलने पर रूप नहीं बदलता है। पञ्चमी विभक्ति में–'मत्, आवाभ्याम्, अस्मत्' रूप बनता है।
(D) **युष्मद् सर्वनाम** का रूप भी तीनों लिङ्गों में एकसमान चलता है।
पञ्चमी विभक्ति में–**'त्वत्,** युवाभ्याम्, युष्मत्' रूप चलता है। अतः विकल्प `D' सही है।

12. 'मह्यम्' किस सर्वनाम का रूप है?
(A) अस्मद् का **(B) युष्मद् का**
(C) एतद् का **(D) अदस् का**

व्याख्या–
(A) **'अस्मद्' सर्वनाम** का रूप चतुर्थी विभक्ति में– **'मह्यम्'** आवाभ्याम्, अस्मभ्यम्' बनता है।
अतः विकल्प `A' सही है।
(B) 'युष्मद्' (तुम) सर्वनाम का चतुर्थी विभक्ति में–तुभ्यम्, युवाभ्याम्, युष्मभ्यम् रूप बनता है।
(C) एतत् (यह) सर्वनाम का रूप तीनों लिङ्गो में बनता है। पुंलिङ्ग चतुर्थीविभक्ति में–'एतस्मै, एताभ्याम्, एतेभ्यः' रूप बनता है।
(D) अदस् (वह) का रूप तीनों लिङ्गों में बनता है। पुंलिङ्ग चतुर्थी विभक्ति में–
'अमुष्मै, अमूभ्याम्, अमीभ्यः' रूप बनता है।

7. (B) z 12. (A)

13. 'एकोनसप्ततिः' कौन-सी संख्या है?
(A) 79 **(B) 71**
(C) 70 **(D) 69**

	संख्या	शब्द
(A)	79	एकोनाशीतिः/नवसप्ततिः
(B)	71	एकसप्ततिः
(C)	70	सप्ततिः
(D)	**69**	**एकोनसप्ततिः/नवषष्टिः**

अतः विकल्प `D' सही है।

14. `89' का संस्कृत रूप होगा?
(A) नवतिः **(B) नवनवतिः**
(C) एकोननवतिः **(D) षडशीतिः**

	संख्या	संस्कृतरूप
(A)	90	नवतिः
(B)	99	नवनवतिः/एकोनशतम्
(C)	**89**	**एकोननवतिः/नवाशीतिः**
(D)	86	षडशीतिः

अतः विकल्प `C' सही है।

15. 'द्वि' शब्द के रूप किन वचनों में हो सकते हैं?
(A) द्विवचन में
(B) एकवचन में
(C) बहुवचन में
(D) उपर्युक्त तीनों वचनों में

व्याख्या–
(A) **'द्वि'** (दो) के रूप **केवल द्विवचन** में चलते हैं। 'द्वि' (दो) के रूप तीनों लिङ्गो में अलग-अलग चलते हैं।
(B) 'एक' (एक) के रूप केवल एकवचन में चलते हैं। तीनो लिङ्गो में चलते हैं।
(C) 'त्रि' (तीन) से लेकर 'अष्टादशन्' (अठारह) तक की संख्याओं के रूप केवल बहुवचन में चलते हैं।
अतः विकल्प `A' सही है।

16. उपसर्ग धातु के साथ कहाँ आता है?
(A) पहले **(B) पीछे**
(C) आगे-पीछे **(D) इनमें से कोई नहीं**

व्याख्या–
(A) 'उपसर्ग' का प्रयोग **धातु के पहले** होता है।
(B) 'प्रत्यय' का प्रयोग धातु या शब्द के बाद (पीछे) होता है।
अतः विकल्प `A' सही है।

17. 'उच्चैः' का स्वरूप क्या है?
(A) अव्यय **(B) प्रत्यय**
(C) उपसर्ग **(D) सर्वनाम**

व्याख्या–
(A) **'उच्चैः' अव्ययपद** है, कुछ अव्यय पद निम्नवत् हैं– अग्रतः (आगे), अतएव (इसलिए), अथ (इसके बाद), अन्तिकम् (पास), अन्यथा (नहीं तो), कथमपि (जैसे-तैसे) चेत् (यदि/अगर)।
(B) प्रत्यय धातु या शब्द के पीछे लगते हैं, कृदन्तप्रत्यय– तव्यत्, तव्य, अनीयर्, यत्, क्यप्, ण्यत्, क्त, क्तवतु, शतृ, शानच्, तुमुन्, ल्यप्, क्त्वा, ण्वुल्। तद्धितप्रत्यय–अण्, मतुप्, ढक्, इञ्, यत्, ठन्, तल्, इमनिच्, ष्यञ्, कन्, ठञ्।
(C) उपसर्गों की संख्या 22 है जो निम्नवत् हैं– प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव, निस्, निर्, दुस्, दुर्, वि, आङ्, नि, अधि, अपि, अति, सु, उद्, अभि, प्रति, परि, उप।
(D) सर्वनामशब्द– अस्मद्, युष्मद्, सर्व, यत्, तद्, किम् आदि। अतः विकल्प `A' सही है।

18. संस्कृत में कितने लकार हैं?
(A) पाँच **(B) दश**
(C) तीन **(D) आठ**

व्याख्या– संस्कृत में **दश लकार** हैं, जो निम्नवत हैं–
1. लट्लकार – वर्तमानकाल
2. लिट्लकार – परोक्षभूत
3. लुट्लकार – अनद्यतन भविष्य
4. लृट्लकार – भविष्यत काल
5. लेट्लकार – वेदों में प्रयुक्त
6. लोट्लकार – आज्ञार्थक
7. लङ्लकार – अनद्यतन भूत
8. (i) विधिलिङ् – चाहिए अर्थ में
   (ii) आशीर्लिङ् – आशीर्वाद
9. लुङ्लकार – सामान्यभूत
10. लृङ्लकार – हेतुहेतुमद् भविष्य

अतः विकल्प `B' सही है।

13. (D) 14. (C) 15. (A) 16. (A) 17. (A) 18. (B)

19. 'सामान्य भविष्य' के लिए प्रयुक्त होता है।
(A) लङ्लकार (B) लोट्लकार
(C) लृट्लकार (D) लट्लकार

व्याख्या–सामान्य भविष्य के लिए **लृट्लकार** का प्रयोग किया जाता है? अतः विकल्प `C' सही है।

20. प्रत्येक लकार में पुरुष होते हैं?
(A) एक (B) दो
(C) तीन (D) चार

व्याख्या–प्रत्येक लकार में **तीन पुरुष** होते हैं–
1. प्रथम पुरुष 2. मध्यम पुरुष 3. उत्तम पुरुष
अतः विकल्प `C' सही है।

21. 'भद्रं भूयाद् भवतः' का अर्थ है?
(A) आपका भला हो
(B) हे मान्यवर! आप कैसे हैं।
(C) भद्र कैसे हैं।
(D) आप भले तो हैं।

व्याख्या–'भद्रं भूयाद् भवतः' का अर्थ है–**आपका भला** हो। अतः विकल्प `A' सही है।

22. 'एका क्रिया द्व्यर्थकरी प्रसिद्धा' का अर्थ है?
(A) एक बार काम करना काफी है।
(B) एक काम ही प्रसिद्ध है।
(C) दो प्रयोजन प्रसिद्ध हैं।
(D) एक पन्थ दो काज।

व्याख्या–'एका क्रिया द्व्यर्थकरी प्रसिद्धा' लोकोक्ति का अर्थ–**'एक पन्थ दो काज'** है। अतः विकल्प `D' सही है।

23. 'डण्डा सबको ठीक करता है'–सही संस्कृत रूप है?
(A) दण्डः न शास्ति सर्वः प्रजाः।
(B) दण्डः शास्ति सर्वाः प्रजाः।
(C) दण्डः शास्ति सर्वः प्रजाः।
(D) दण्डः शास्ति प्रजा सर्वा।

व्याख्या–दण्डः शास्ति सर्वाः प्रजाः–डण्डा सबको ठीक करता है। अतः विकल्प `B' सही है।

24. 'दृश्' धातु का लृट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन में रूप होगा?
(A) अपश्यत् (B) द्रक्ष्यति
(C) द्रक्ष्यन्ति (D) पश्यतु

व्याख्या–
(A) 'दृश्' धातु लङ्लकार प्र०पु० में–'अपश्यत्, अपश्यताम्, अपश्यन्' रूप बनता है।
(B) लृट्लकार प्रथमपुरुष में–**'द्रक्ष्यति,** द्रक्ष्यतः, द्रक्ष्यन्ति'
(D) लोट्लकार प्रथमपुरुष में–'पश्यतु, पश्यताम्, पश्यन्तु'
अतः विकल्प `B' सही है।

25. भू धातु लट्लकार उत्तमपुरुष एकवचन में रूप होगा?
(A) भवामि
(B) भवावः
(C) भवामः
(D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या–'भू' धातु लट्लकार उत्तमपुरुष में–'भवामि, भवावः, भवामः' रूप बनता है। अतः विकल्प `A' सही है।

26. तृतीया विभक्ति में 'कवि' शब्द का सही रूप होगा?
(A) कविना (B) कवये
(C) कवयः (D) कवौ

व्याख्या–
(A) 'कवि' शब्द का तृतीयाविभक्ति में–**'कविना,** कविभ्याम्, कविभिः' रूप बनता है।
(B) चतुर्थीविभक्ति में–'कवये, कविभ्याम्, कविभ्यः'
(C) प्रथमा में–'कविः, कवी, कवयः' रूप बनता है।
(D) सप्तमी विभक्ति में–'कवौ, कव्योः, कविषु' रूप बनता है।
अतः विकल्प `A' सही है।

27. 'मालायाम्' किस विभक्ति का रूप है?
(A) द्वितीया
(B) पञ्चमी
(C) सप्तमी
(D) षष्ठी

व्याख्या–
(A) 'माला' शब्द का रूप द्वितीयाविभक्ति में–'मालाम्, माले, मालाः'
(B) पञ्चमीविभक्ति में–'मालायाः, मालाभ्याम्, मालाभ्यः'
(C) **सप्तमीविभक्ति** में–**'मालायाम्,** मालयोः, मालासु'
(D) षष्ठीविभक्ति में–'मालायाः, मालयोः, मालानाम्'
अतः विकल्प `C' सही है।

19. (C)	20. (C)	21. (A)	22. (D)	23. (B)	24. (B)	25. (A)	26. (A)
27. (C)							

28. 'नदीः' किस विभक्ति का रूप है?
(A) सप्तमी का (B) द्वितीया का
(C) तृतीया का (D) पञ्चमी का

व्याख्या–
(A) 'नदी' ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग का रूप सप्तमीविभक्ति में–'नद्याम्, नद्योः, नदीषु' बनता है।
(B) **द्वितीयाविभक्ति** में–'नदीम्, नद्यौ, **नदीः**'
(C) तृतीयाविभक्ति में–'नद्या, नदीभ्याम्, नदीभिः'
(D) पञ्चमीविभक्ति में–'नद्याः, नदीभ्याम्, नदीभ्यः'
अतः विकल्प `B' सही है।

29. द्वितीयाविभक्ति में 'दधि' का रूप होगा?
(A) दध्नोः (B) दध्ना
(C) दध्नः (D) दधीनि

व्याख्या–
(A) 'दधि' नपुंसकलिङ्ग का रूप षष्ठीविभक्ति में–'दध्नः, दध्नोः, दध्नाम्' बनता है।
(B) तृतीयाविभक्ति में–'दध्ना, दधिभ्याम्, दधिभिः' बनता है।
(C) पञ्चमीविभक्ति में–'दध्नः, दधिभ्याम्, दधिभ्यः'
(D) **द्वितीयाविभक्ति** में–'दधि, दधिनी, **दधीनि**'
अतः विकल्प `D' सही है।

30. 'मधुनी' किस विभक्ति का रूप है?
(A) द्वितीया (B) चतुर्थी
(C) षष्ठी (D) सप्तमी

व्याख्या– 'मधु' (उकारान्त) नपुंसकलिङ्ग का रूप–
(A) **द्वितीयाविभक्ति** में–'मधु, **मधुनी**, मधूनि' बनता है।
(B) चतुर्थीविभक्ति में– 'मधुने, मधुभ्याम्, मधुभ्यः'
(C) षष्ठीविभक्ति में– 'मधुनः, मधुनोः, मधूनाम्'
(D) सप्तमीविभक्ति में– 'मधुनि, मधुनोः, मधुषु'
अतः विकल्प `A' सही है।

31. 'येनाङ्गविकारः' सूत्र है?
(A) करणकारक का (B) कर्मकारक का
(C) सम्प्रदानकारक का (D) अपादानकारक का

व्याख्या–
(A) 'येनाङ्गविकारः' (2/3/20) सूत्र से जिस अङ्ग के विकार से अङ्गी के सम्पूर्ण शरीर का विकार लक्षित हो, उसमें **तृतीयाविभक्ति** का प्रयोग होता है यथा– अक्ष्णा काणः।
(B) 'कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे' (2/3/5) सूत्र से अत्यन्तसंयोग गम्यमान होने पर कालवाची और मार्गवाची शब्दो में द्वितीया विभक्ति होती है यथा– मासं कल्याणी।
(C) 'परिक्रयणे सम्प्रदानमन्यतरस्याम्' (1/4/44) सूत्र से परिक्रयण क्रिया में साधकतम कारक की विकल्प से सम्प्रदानसंज्ञा होती है यथा– (i) शताय परिक्रीतः, (ii) शतेन परिक्रीतः।
(D) 'अन्तर्धौ येनादर्शनमिच्छति' (1/4/28) सूत्र से अन्तर्धान (छुपना) होने की क्रिया में कर्ता जिससे छुपना चाहता है उसकी अपादानसंज्ञा होती है यथा–मातुः निलीयते कृष्णः। अतः विकल्प `A' सही है।

32. 'अभितः' के योग में विभक्ति होती है?
(A) द्वितीया (B) तृतीया
(C) चतुर्थी (D) पञ्चमी

व्याख्या–
(A) अभितः, परितः, समया, निकषा, हा, प्रति के योग में **द्वितीयाविभक्ति** होती है।
अतः विकल्प `A' सही है।
(B) सह, साकम्, सार्धम्, समम्, प्राय, गोत्र, पृथक्, विना, नाना, स्तोक, अल्प आदि के योग में तृतीया विभक्ति होती है।
(C) नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलम्, वषट्, के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है।
(D) अन्य, आरात्, ऋते, प्राक्, प्रत्यक्, बहिः, शब्दों के योग में पञ्चमी विभक्ति होती है।

33. 'अन्तराऽन्तरेण युक्ते' सूत्र है?
(A) कर्मकारक का (B) करणकारक का
(C) अपादानकारक का (D) अधिकरणकारक का

व्याख्या–
(A) 'अन्तराऽन्तरेण युक्ते' (2/3/4) सूत्र से अन्तरा, अन्तरेण पदों के योग में **द्वितीयाविभक्ति** होती है।
यथा–अन्तरेण हरिं न सुखम्।
(B) 'संज्ञोऽन्यतरस्यां कर्मणि' (2/3/22) सूत्र से सम् उपसर्ग पूर्वक 'ज्ञा' धातु के अनभिहित कर्म में विकल्प से तृतीयाविभक्ति होती हैं (पक्ष में द्वितीया)
यथा–सः पित्रा पितरं वा सञ्जानीते।
(C) 'पृथग्विनानानाभिस्तृतीयाऽन्यतरस्याम्' (2/3/32) सूत्र से पृथक्, विना, नाना इन तीन पदों के योग में तृतीया विभक्ति होती है, पक्ष में पञ्चमी और द्वितीया विभक्ति भी होती है। यथा–पृथक् रामात्, रामेण-रामं वा।
(D) 'निमित्तात्कर्मयोगे' वार्तिक से निमित्तवाची शब्दों में सप्तमी विभक्ति होती है यदि वह निमित्त कर्म (फल) से युक्त हो यथा– चर्मणि द्वीपिनं हन्ति।
अतः विकल्प `A' सही है।

28. (B)	29. (D)	30. (A)	31. (A)	32. (A)	33. (A)

34. चतुर्थी विभक्ति तब आती है? जब–
(A) अनादर अर्थ द्योतित हो
(B) अतसुच् प्रत्ययान्त शब्दों के योग में
(C) कर्म-प्रवचनीय में
(D) अपवर्ग द्योतित होने पर

व्याख्या–
(A) **'मन्यकर्मण्यनादरे विभाषाऽप्राणिषु'** (2/3/17) सूत्र से अनादर भाव गम्यमान होने पर दिवादिगण मन् धातु के कर्म में (यदि वह प्राणीवाचक न हो तो) विकल्प से **चतुर्थी विभक्ति** होती है यथा–अहं न त्वां तृणाय मन्ये।
(B) 'षष्ठ्यतसर्थप्रत्ययेन' (2/3/30) सूत्र से अतसुच् प्रत्ययान्त शब्दों के योग में षष्ठी विभक्ति होती है। यथा–ग्रामस्य दक्षिणतः।
(C) कर्म-प्रवचनीय में द्वितीया, पञ्चमी, सप्तमी विभक्ति का प्रयोग होता है।
(D) 'अपवर्गे तृतीया' (2/3/6) सूत्र से अपवर्ग (फलप्राप्ति) द्योतित होने पर कालवाची और मार्गवाची शब्दों से तृतीयाविभक्ति होती है। यथा–क्रोशेन अनुवाकः अधीतः। अतः विकल्प `A' सही है।

35. 'व्याघ्रः चर्मणि द्वीपिनं हन्ति' वाक्य में 'चर्मणि' है?
(A) तृतीया विभक्ति में (B) द्वितीया विभक्ति में
(C) सप्तमी विभक्ति में (D) पञ्चमी विभक्ति में

व्याख्या–
(A) 'रामेण बाणेन हतो बाली'–अनुक्त कर्ता तथा करण कारक में तृतीयाविभक्ति का विधान 'कर्तृकरणयोस्तृतीया' (2/3/18) सूत्र से हुआ है।
(B) 'पर्जन्यो जपम् अनु प्रावर्षत्'–यहाँ जपम् में 'अनुर्लक्षणे' (1/4/84) सूत्र से लक्षण द्योतित होने पर 'अनु' की कर्मप्रवचनीय संज्ञा होकर, कर्मप्रवचनीय के योग में द्वितीया विभक्ति होती है।
(C) 'व्याघ्रः चर्मणि द्वीपिनं हन्ति' यहाँ 'चर्मणि' में **सप्तमी विभक्ति** का प्रयोग 'निमित्तात्कर्मयोगे' वार्तिक से हुआ है।
(D) 'प्रासादात् प्रेक्षते' यहाँ 'प्रासादात्' में पञ्चमीविभक्ति का प्रयोग 'ल्यब्लोपे कर्मण्यधिकरणे च' वार्तिक से हुआ है। अतः विकल्प `C' सही है।

36. 'स्पृहा' के योग में विभक्ति होती है?
(A) चतुर्थी (B) तृतीया
(C) द्वितीया (D) सप्तमी

व्याख्या–
(A) 'स्पृहेरीप्सितः' (1/4/36) सूत्र से 'स्पृह्' धातु के योग में 'ईप्सितपदार्थ' की सम्प्रदानसंज्ञा होकर उसमें **चतुर्थीविभक्ति** होती है। यथा–सः पुष्पेभ्यः स्पृहयति।
(B) 'हेतौ' (2/3/23) सूत्र से हेतु अर्थ के वाची शब्दो में तृतीया विभक्ति होती है। यथा–दण्डेन घटः।
(C) 'तथायुक्तं चानीप्सितम्' (1/4/50) सूत्र से कर्ता के द्वारा अनीप्सितपदार्थ की भी कर्मसंज्ञा होती है यथा–ओदनं भुञ्जानो विषं भुङ्क्ते।
(D) 'सप्तम्यधिकरणे च' (2/3/36) सूत्र से अधिकरण में सप्तमी विभक्ति का प्रयोग होता है। यथा– सर्वस्मिन् आत्मा अस्ति।
अतः विकल्प `A' सही है।

37. समास, जिसमें प्रायः उत्तरपद के अर्थ की प्रधानता होती है
(A) अव्ययीभाव (B) तत्पुरुष
(C) बहुव्रीहि (D) द्वन्द्व

व्याख्या–
(A) 'प्रायेण पूर्वपदार्थप्रधानोऽव्ययीभावः' – अर्थात् अव्ययीभाव में पूर्वपद के अर्थ की प्रधानता होती है। यथा– उपकृष्णम्।
(B) प्रायेणोत्तर-पदार्थ-प्रधानस्तत्पुरुषः–अर्थात् **तत्पुरुष समास** में उत्तरपद के अर्थ की प्रधानता होती है। यथा–राजपुरुषः।
(C) प्रायेणान्य-पदार्थ-प्रधानो बहुव्रीहिः–अर्थात् बहुव्रीहि समास में अन्यपद की प्रधानता होती है। यथा– वीणापाणिः
(D) प्रायेणोभय-पदार्थ-प्रधानो द्वन्द्वः–अर्थात् द्वन्द्वसमास में उभय (दोनों) पदों की प्रधानता होती है। यथा– रामलक्ष्मणौ।
अतः विकल्प `B' सही है।

38. 'विष्णु के बाद' का सम्पूर्ण पद है?
(A) अनुविष्णु (B) अनुविष्णषु
(C) इतिविष्णु (D) सुविष्णु

व्याख्या–'अव्ययं विभक्तिसमीप...........साकल्यान्तवचनेषु' (2/1/6) सूत्र से 'पश्चात्' अर्थ में 'अनु' अव्यय का विष्णु ङस् सुबन्त के साथ 'विष्णोः पश्चात् = **अनुविष्णु**' में अव्ययीभाव समास हुआ। अतः विकल्प `A' सही है।

34. (A) 35. (C) 36. (A) 37. (B) 38. (A)

39. 'सहरि' में समास है?
(A) बहुव्रीहि (B) अव्ययीभाव
(C) तत्पुरुष (D) द्वन्द्व

व्याख्या–
(A) 'अप्पूरणीप्रमाण्योः' (5/4/116) सूत्र से–'स्त्री प्रमाणी यस्य सः = स्त्रीप्रमाणः' में बहुव्रीहिसमास है।
(B) 'अव्ययीभावे चाकाले' (6/3/81) सूत्र से **अव्ययीभाव समास** में 'सह' को 'स' आदेश हो, किन्तु कालवाचक होने पर नहीं। यथा– हरेः सादृश्यम् = सहरि
(C) 'कर्तृकरणे कृता बहुलम्' (2/1/32) सूत्र से 'हरिणा त्रातः = हरित्रातः' में तृतीया तत्पुरुषसमास है।
(D) 'अल्पाच्तरम्' (2/2/34) सूत्र से 'शिवश्च केशवश्च = शिवकेशवौ' इस द्वन्द्वसमास में 'शिव' पद का पूर्वनिपात हुआ। अतः विकल्प `B' सही है।

40. चौरभयम् में समास है?
(A) पञ्चमीतत्पुरुष (B) सप्तमीतत्पुरुष
(C) अव्ययीभाव (D) द्वन्द्वसमास

व्याख्या–
(A) 'पञ्चमी भयेन' (2/1/37) सूत्र से पञ्चम्यन्त सुबन्त का भयवाचक सुबन्त के साथ **पञ्चमी तत्पुरुषसमास** होता है। यथा–चोराद् भयम् = चोरभयम्
(B) 'सप्तमी शौण्डैः' (2/1/40) सूत्र से 'अक्षेषु शौण्डः = 'अक्षशौण्डः' में सप्तमी तत्पुरुषसमास
(C) 'झयः' (5/4/111) सूत्र से 'समिधः समीपं = उपसमिधम्' इस अव्ययीभावसमास में 'टच्' प्रत्यय हुआ।
(D) 'चार्थे द्वन्द्वः' (2/2/29) सूत्र से 'द्वौ च दश च = 'द्वादश' में द्वन्द्वसमास है। अतः विकल्प `A' सही है।

41. चतुर्थी तत्पुरुषसमास है?
(A) यूपदारु (B) द्विमूर्धः
(C) धवखदिरौ (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या–
(A) 'चतुर्थी तदर्थार्थ-बलि-हित-सुखरक्षितैः' (2/1/36) सूत्र से **'यूपाय दारु = यूपदारु' में चतुर्थी तत्पुरुषसमास** है।
(B) 'अनेकमन्यपदार्थे' (2.2.24) सूत्र से–'द्वौ मूर्धानौ यस्य सः = द्विमूर्धः' में बहुव्रीहि समास है।
(C) 'चार्थे द्वन्द्वः' (2/2/29) सूत्र से–'धवश्च खदिरश्च = धवखदिरौ' में द्वन्द्वसमास है।
अतः विकल्प `A' सही है।

42. समास में प्रथम शब्द संख्यावाचक हो तो वह समास होगा?
(A) नञ् तत्पुरुष (B) अव्ययीभाव
(C) बहुव्रीहि (D) द्विगु

व्याख्या–
(A) **नञ् तत्पुरुष** – सुबन्त के साथ 'नञ्' अव्यय का समास होने पर नञ् तत्पुरुष समास होगा। यथा– न भावः इति अभावः
(B) **अव्ययीभाव**– जहाँ पूर्वपदार्थप्रधान हो, और समस्तपद की अव्ययसंज्ञा हो तो वह अव्ययीभावसमास होगा। यथा– उपकृष्णम्
(C) **बहुव्रीहि** – जहाँ अन्यपदार्थ की प्रधानता हो, वह बहुव्रीहि होगा। यथा– चन्द्रः मौलौ यस्य सः = चन्द्रमौलिः (शिवः)
(D) **द्विगु** – 'संख्यापूर्वो द्विगुः' (2/1/52) सूत्रानुसार प्रथमशब्द संख्यावाचक और द्वितीयशब्द संज्ञा हो तो **द्विगुसमास** होता है। यथा– पञ्चानां वटानां समाहारः = पञ्चवटी।
अतः विकल्प `D' सही है।

43. 'शशिशेखरः' में समास है?
(A) बहुव्रीहि (B) कर्मधारय
(C) द्वन्द्व (D) नञ्तत्पुरुष

	शब्द	समास
(A)	**शशिशेखरः**	**बहुव्रीहि**
(B)	पीताम्बरम्	कर्मधारय
(C)	अहिनकुलम्	समाहारद्वन्द्व
(D)	अब्राह्मणः	नञ् तत्पुरुष

अतः विकल्प `A' सही है।

44. 'राम' शब्द का षष्ठी बहुवचन का रूप है?
(A) रामस्य (B) रामयोः
(C) रामाणाम् (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या–राम अकारान्त पुंलिङ्ग का रूप षष्ठीविभक्ति में– 'रामस्य, रामयोः, **रामाणाम्'** बनता है।
अतः विकल्प `C' सही है।

39. (B) 40. (A) 41. (A) 42. (D) 43. (A) 44. (C)

45. **'साधु' शब्द का सप्तमी एकवचन का रूप है?**
(A) साधौ **(B) साधुषु**
(C) साधुना **(D) साधुभिः**

व्याख्या–'साधु' उकारान्त पुंलिङ्ग का रूप सप्तमी विभक्ति में–'**साधौ,** साधोः, साधुषु' बनता है। तृतीया विभक्ति में– 'साधुना, साधुभ्याम्, साधुभिः' रूप बनता है।
अतः विकल्प `A' सही है।

46. **'धेनवः' किस विभक्ति का रूप है?**
(A) प्रथमा में **(B) तृतीया में**
(C) चतुर्थी में **(D) षष्ठी में**

व्याख्या–
(A) धेनु (गाय) उकारान्त स्त्रीलिङ्ग का रूप प्रथमाविभक्ति में– 'धेनुः, धेनू, **धेनवः**' रूप बनता है।
(B) तृतीयाविभक्ति में– 'धेन्वा, धेनुभ्याम्, धेनुभिः' रूप बनता है।
(C) चतुर्थी विभक्ति में– 'धेन्वै, धेनुभ्याम्, धेनुभ्यः' रूप बनता है।
(D) षष्ठी विभक्ति में–'धेन्वाः, धेन्वोः, धेनूनाम्' रूप बनता है।
अतः विकल्प `A' सही है।

47. **छोटी से छोटी व्यक्त खण्ड ध्वनि को कहते हैं?**
(A) वर्ण **(B) पद**
(C) शब्द **(D) वाक्य**

व्याख्या– * छोटी से छोटी व्यक्त खण्ड ध्वनि को '**वर्ण**' (अक्षर) कहते हैं।
* वर्णों के समूह को 'पद' या 'शब्द' कहते हैं।
* पदों के समूह को 'वाक्य' कहते हैं।
अतः विकल्प `A' सही है।

48. **कुल स्वर संख्या है।**
(A) पाँच **(B) दस**
(C) तेरह **(D) तैंतीस**

व्याख्या–माहेश्वर सूत्रों में कुल नौ स्वर (अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ बताये गये हैं।) दीर्घ आ, ई, ऊ, ॠ को मिलाकर **तेरह स्वर** हो जाते हैं। यह प्रश्न विवादित है। क्योंकि संस्कृत में मूल स्वर पाँच (अ, इ, उ, ऋ, लृ) और कुल स्वर नव माने जाते हैं।
दिये गये विकल्पों में `C' सही है।

49. **वाक्य में सन्धि करना अथवा न करना है?**
(A) ऐच्छिक **(B) निषिद्ध**
(C) उपर्युक्त दोनों **(D) इनमें से कोई नहीं।**

व्याख्या–"संहितैकपदे नित्या नित्या धातूपसर्गयोः।
नित्या समासे वाक्ये तु सा विवक्षामपेक्षते।।"
अर्थात् एक पद में, धातु और उपसर्ग के योग में, और समास में सन्धि करना नित्य है परन्तु **वाक्य में सन्धि विवक्षाधीन (ऐच्छिक)** होती है। अतः विकल्प `A' सही है।

50. **धातु और उपसर्ग में सन्धि करना है?**
(A) ऐच्छिक **(B) अनिवार्य**
(C) निषिद्ध **(D) उपर्युक्त तीनों**

व्याख्या– धातु और उपसर्ग में सन्धि करना **नित्य (अनिवार्य)** है। विस्तृत व्याख्या के लिए उपर्युक्त प्रश्न देखें।
अतः विकल्प `B' सही है।

51. **'द्रक्ष्यति' किस धातु का लृट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप है?**
(A) द्रक्ष् **(B) दृश्य**
(C) दृश् **(D) पश्य्**

व्याख्या– '**दृश्**' धातु लृट्लकार प्रथमपुरुष में '**द्रक्ष्यति,** द्रक्ष्यतः द्रक्ष्यन्ति' रूप बनता है। अतः विकल्प `C' सही है।

52. **'नम्' धातु लृट्लकार उत्तमपुरुष एकवचन का रूप है?**
(A) नंस्यति **(B) नंस्यतः**
(C) नंस्यामि **(D) नष्यति**

व्याख्या– * 'नम्' धातु (प्रणाम करना) लृट्लकार प्रथमपुरुष में नंस्यति, नंस्यतः, नंस्यन्ति रूप बनता है।
* उत्तम पुरुष में–**नंस्यामि,** नंस्यावः, नंस्यामः रूप बनता है।
अतः विकल्प `C' सही है।

53. **'द्वि' शब्द के रूप कौन-कौन लिङ्ग में होंगे?**
(A) पुंलिङ्ग में **(B) स्त्रीलिङ्ग में**
(C) नपुंसकलिङ्ग में **(D) उपर्युक्त तीनों लिङ्गो में**

व्याख्या– * **तीनों लिङ्गों में** 'द्वि' शब्द का रूप केवल द्विवचन में चलता है।
* पुंल्लिङ्ग में–द्वौ, द्वौ, द्वाभ्याम्, द्वाभ्याम् द्वाभ्याम्, द्वयोः, द्वयोः रूप चलता है।
* नपुंसकलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग में एकसमान–द्वे, द्वे, द्वाभ्याम्, द्वाभ्याम्, द्वाभ्याम्, द्वयोः, द्वयोः रूप चलता है।
अतः विकल्प `D' सही है।

45. (A) 46. (A) 47. (A) 48. (C) 49. (A) 50. (B) 51. (C) 52. (C) 53. (D)

54. संस्कृत में 'दशहजार' होगा?
(A) अयुतम् **(B) सहस्रम्**
(C) लक्षम् **(D) नियुतम्**

	संख्या	**संस्कृत शब्द**
(A)	**दश हजार**	**अयुतम्**
(B)	एक हजार	सहस्रम्
(C)	एक लाख	लक्षम्
(D)	दश लाख	नियुतम्/प्रयुतम्

अतः विकल्प `A' सही है।

55. मैनाक किसका पुत्र है?
(A) इन्द्र का **(B) हिमालय का**
(C) समुद्र का **(D) दैत्य का**

व्याख्या–मैनाक, **हिमालय का** पुत्र था। हिमालय के पंख इन्द्र ने काटे थे। मैनाक इन्द्र के डर से समुद्र में जाकर छुप गया था। 'तुषाराद्रेः सूनोरहह! पितरि क्लेशविवशे' (नीतिशतकम्/29) अतः विकल्प `B' सही है।

56. प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन..........कैः?
(A) नीचैः **(B) मध्याः**
(C) परित्यजन्ति **(D) धीराः**

व्याख्या–
(A) 'प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः' अर्थात् अधम कोटि के मनुष्य विघ्न के भय से कार्य आरम्भ नहीं करते हैं। नीतिशतकम्/73
(B) 'प्रारभ्य विघ्नविहता विरमन्ति मध्याः'–मध्यम श्रेणी के लोग कार्य को आरम्भ करके विघ्न आ जाने पर कार्य से विरत हो जाते हैं।
(C) 'प्रारब्धमुत्तमजना न परित्यजन्ति' अर्थात् श्रेष्ठ मनुष्य कार्य को पूर्ण करते हैं।
(D) 'न्याय्यात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः' अर्थात् धीर पुरुष न्यायोचित मार्ग से एक कदम भी विचलित नहीं होते हैं। अतः विकल्प `A' सही है।

57. विभाति कायः करुणाकुलानां.........रिक्त स्थान की पूर्ति करे?
(A) कुण्डलेन
(B) कङ्कणेन
(C) परोपकारेण न चन्दनेन
(D) परोपकारिणाम्

व्याख्या–
(A) श्रोत्रं श्रुतेनैव न कुण्डलेन
(B) दानेन पाणिर्न तु कङ्कणेन।
(C) विभाति कायः करुणापराणां **परोपकारेण न चन्दनेन** (नीतिशतकम्/63)
(D) स्वभाव एवैष परोपकारिणाम्। (नीतिशतकम्/62)
अतः विकल्प `C' सही है।

58. 'ये परहितं स्वार्थाय निघ्नन्ति' नीतिशतकम् के अनुसार वे लोग हैं?
(A) सत्पुरुषाः **(B) सामान्याः**
(C) मानुषराक्षसाः **(D) इनमें से कोई नहीं**

व्याख्या–
(A) 'एते सत्पुरुषाः परार्थघटकाः स्वार्थान्परित्यज्य ये'–अर्थात् जो लोग अपने स्वार्थ को त्यागकर दूसरों का प्रयोजन सिद्ध करते हैं वे सज्जनपुरुष हैं।
(B) 'सामान्यास्तु परार्थमुद्यमभृतः स्वार्थाविरोधेन ये'–अर्थात् जो अपने स्वार्थ की हानि किए बिना ही दूसरों का हित करते हैं, वे सामान्य लोग हैं।
(C) 'तेऽमी **मानुषराक्षसाः** परहितं स्वार्थाय निघ्नन्ति ये' अर्थात् जो अपने स्वार्थ के लिए दूसरों के हित को नष्ट करते हैं, वे मनुष्यों में राक्षसस्वरूप हैं। (नीतिशतकम्/65) अतः विकल्प `C' सही है।

59. नास्त्युद्यमसमो .... रिक्त स्थान की पूर्ति करें?
(A) लज्जा **(B) भूषणम्**
(C) रिपुः **(D) बन्धुः**

व्याख्या–
(A) 'लज्जाङ्गनायाः कृशता कटौ च'–अर्थात् स्त्री का लज्जा उत्कृष्ट आभूषण है, कमर का पतला होना उसकी शोभा है। नीतिशतकम्/परिशिष्ट-7
(B) 'शीलं हि सर्वस्य नरस्य भूषणम्' अर्थात् शील (सदाचार) सभी मनुष्यों का उत्कृष्ट आभूषण है। नीतिशतकम्/परिशिष्ट-7
(C) 'आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः' अर्थात् निश्चित रूप से आलस्य मनुष्य के शरीर में रहने वाला महान् शत्रु है। नीतिशतकम्/परिशिष्ट-1
(D) 'नास्त्युद्यमसमो **बन्धुः**कृत्वा यं नावसीदति' अर्थात् कार्य में प्रवृत्ति (उद्यम) के समान अन्य कोई बन्धु नहीं है। नीतिशतकम्/परिशिष्ट-1
अतः विकल्प `D' सही है।

54. (A) 55. (B) 56. (A) 57. (C) 58. (C) 59. (D)

60. पर्वत के पंख किसने काटे थे?
(A) इन्द्र (B) विष्णु
(C) शिव (D) ब्रह्मा

व्याख्या–पर्वत के पंख **इन्द्र** ने काटा था ''वरं पक्षच्छेदः समदमघवन्मुक्तकुलिश.......'' (नीतिशतकम्/29)
अतः विकल्प `A' सही है।

61. लक्ष्मी ने निष्ठुरता का गुण किससे प्राप्त किया?
(A) कौस्तुभमणि (B) उच्चैःश्रवा
(C) कालकूट (D) मदिरा

व्याख्या–लक्ष्मी ने निम्नवत् गुण प्राप्त किया
(A) **कौस्तुभमणि से** **निष्ठुरता**
(B) **उच्चैःश्रवा से** चञ्चलता
(C) कालकूट से **मोहनशक्ति**
(D) मदिरा से मादकता
अतः विकल्प `A' सही है।

62. लक्ष्मी 'पातालगुहेव...........' है?
(A) विटपकानध्यारोहति
(B) तमोबहुला
(C) चिरद्युतिकारिणी
(D) प्रकटितविविध-संक्रान्तिः

व्याख्या–
(A) 'लतेव विटपकानध्यारोहति' अर्थात् लक्ष्मी लता की भाँति धूर्तो का आश्रय लेती है।
(B) 'पातालगुहेव **तमोबहुला**' अर्थात् लक्ष्मी पातालगुफा के समान अत्यन्त अन्धकार से युक्त है। –(शुकनासोपदेश)
(C) 'प्रावृडिवाचिरद्युतिकारिणी' अर्थात् लक्ष्मी वर्षा ऋतु के समान क्षणिक प्रकाश उत्पन्न करने वाली है।
(D) 'दिवसकरगतिरिव प्रकटितविविधसंक्रान्तिः' अर्थात् लक्ष्मी सूर्य की गति के समान अनेक प्रकार के लोगों को प्रकाशित करती है। अतः विकल्प `B' सही है।

63. लक्ष्मी से कुप्रभावित राजा 'दर्शनप्रदानमपि...... गणयन्ति–
(A) अनुग्रहं (B) वर प्रदानं
(C) पावनं (D) उपकारं

व्याख्या–
(A) 'दर्शनप्रदानमपि **अनुग्रहं** गणयन्ति'–लक्ष्मी से कुप्रभावित राजा दर्शन देना भी अनुग्रह करना समझते हैं। –(शुकनासोपदेश)
(B) 'आज्ञामपि वरप्रदानं मन्यन्ते'–आज्ञा देना भी वरदान मानते हैं।
(C) 'स्पर्शमपि पावनमाकलयन्ति'–स्पर्श को भी पवित्र करने वाला समझते हैं।
(D) 'दृष्टिपातमप्युपकारपक्षे स्थापयन्ति'–आँखों से देख भर लेने को भी उपकार की श्रेणी में रखते हैं।
अतः विकल्प `A' सही है।

64. कौन-सा राजा सिद्धादेश होता है?
(A) भीरुप्रकृतिः (B) उन्मत्तः
(C) आरुढप्रतापः (D) तरलहृदयः

व्याख्या–'**आरुढप्रतापो** हि राजा त्रैलोक्यदर्शीव सिद्धादेशो भवति'–अर्थात् प्रताप की स्थापना (विस्तार) करने वाला राजा त्रैलोक्यदर्शी की भाँति सिद्धादेश होता है। –शुकनासोपदेश
अतः विकल्प `C' सही है।

65. लक्ष्मी 'साधुभाव' की क्या है?
(A) प्रस्तावना (B) कदलिका
(C) राहुजिह्वा (D) वध्यशाला

व्याख्या–
(A) 'प्रस्तावना कपटनाटकस्य'–लक्ष्मी कपटनाटक की प्रस्तावना है।
(B) 'कदलिका कामकरिणः'–कामदेव रूपी हाथी का कदली वन है।
(C) 'राहुजिह्वा धर्मेन्दुमण्डलस्य'–धर्म रूपीचन्द्रमण्डल के लिए राहुजिह्वा है।
(D) '**वध्यशाला** साधुभावस्य'–सुजनता का हत्यागृह है।
अतः विकल्प `D' सही है।

66. 'उत्तररामचरितम्' के रचयिता हैं?
(A) भारवि (B) भवभूति
(C) भर्तृहरि (D) भरतमुनि

	ग्रन्थ	**रचनाकार**
(A)	किरातार्जुनीयम्	भारवि
(B)	**उत्तररामचरितम्**	**भवभूति**
(C)	नीतिशतकम्	भर्तृहरि
(D)	नाट्यशास्त्रम्	भरतमुनि

अतः विकल्प `B' सही है।

60. (A) 61. (A) 62. (B) 63. (A) 64. (C) 65. (D) 66. (B)

67. 'अमरसिन्धु' है?
(A) रेवा **(B) वेत्रवती**
(C) चर्मण्वती **(D) गङ्गा**

	प्राचीन नाम	**आधुनिक नाम**
(A)	रेवा	नर्मदा
(B)	वेत्रवती	बेतवा
(C)	चर्मण्वती	चम्बल
(D)	**अमरसिन्धु**	**गङ्गा**

अतः विकल्प `D' सही है।

68. उत्तररामचरितम् के तृतीय अङ्क का मुख्य रस है?
(A) करुणरस **(B) वीररस**
(C) शृङ्गाररस **(D) शान्तरस**

	ग्रन्थ	**मुख्यरस**
(A)	उत्तररामचरितम्	**करुणरस**
(B)	वेणीसंहारम्	वीररस
(C)	कर्पूरमञ्जरी	शृङ्गाररस
(D)	शारिपुत्रप्रकरणम्	शान्तरस

अतः विकल्प `A' सही है।

69. शिवराजविजयम् किस श्रेणी का काव्य है?
(A) महाकाव्य **(B) ऐतिहासिक उपन्यास**
(C) गीतिकाव्य **(D) ऐतिहासिक काव्य**

व्याख्या–

	ग्रन्थ	**विधा**
(A)	जानकीहरणम्	महाकाव्य
(B)	**शिवराजविजयम्**	**ऐतिहासिक उपन्यास**
(C)	नीतिशतकम्	गीतिकाव्य (मुक्तककाव्य)
(D)	राजतरङ्गिणी	ऐतिहासिक काव्य

अतः विकल्प `B' सही है।

70. मेघदूतम् में 'धूमज्योतिः सलिलमरुतां सन्निपातः' है?
(A) यक्ष **(B) मेघ**
(C) कुबेर **(D) इन्द्र**

व्याख्या–'धूमज्योतिः सलिलमरुतां सन्निपातः क्व मेघः' (पूर्वमेघ/5) अर्थात् धुएँ, ज्योति, जल और वायु से मिलकर मेघ बना है। अतः विकल्प `B' सही है।

71. 'प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु' होते हैं?
(A) मूढजनाः
(B) विद्वज्जनाः
(C) राजानः
(D) कामार्ताः

व्याख्या–'**कामार्ता** हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु' (पूर्वमेघ/5) क्योंकि कामपीड़ित लोग जड़ और चेतन पदार्थों के विषय में स्वभावतः दीन हो जाते हैं। अतः विकल्प `D' सही है।

72. राजहंस कहाँ जाने को उत्सुक हैं?
(A) कैलासपर्वत **(B) वैकुण्ठ**
(C) मानसरोवर **(D) स्वर्गलोक**

व्याख्या–
तच्छुत्वा ते श्रवणसुभगं गर्जितं मानसोत्काः।
सम्पत्स्यन्ते नभसि भवतो राजहंसाः सहायाः।। (पूर्वमेघ/11)
मेघ के सहयात्रियों का वर्णन करते हुए यक्ष कहता है कि–मानसरोवर जाने को उत्सुक राजहंस कैलासपर्वत तक तुम्हारे साथी होगें? अतः विकल्प `C' सही है।

73. शिवराजविजयम् का विभाजन हुआ है?
(A) निःश्वास में **(B) उच्छ्वास में**
(C) खण्ड में **(D) तरङ्ग में**

	ग्रन्थ	**विभाजन**
(A)	**शिवराजविजयम्**	**3 विराम, 12 निःश्वास**
(B)	हर्षचरितम्	8 उच्छ्वास
(C)	मेघदूतम्	2 खण्ड (पूर्व, उत्तर)
(D)	राजतरङ्गिणी	8 तरङ्ग

अतः विकल्प `A' सही है।

74. किरातार्जुनीयम् में दुर्योधन की तुलना की गयी है?
(A) उरग से **(B) शुक से**
(C) द्विप से **(D) सिंह से**

व्याख्या–
''स दुःसहान्मन्त्रपदादिवो**रगः**'' (किरात-1/24) के अनुसार दुर्योधन की तुलना **उरग** (साँप) से की गयी है।
अतः विकल्प `A' सही है।

67. (D) 68. (A) 69. (B) 70. (B) 71. (D) 72. (C) 73. (A) 74. (A)

75. अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक में गौतमी है?
(A) शकुन्तला की सखी
(B) तपोवन की अध्यक्षा
(C) अप्सरा
(D) दुष्यन्त की प्रतीहारी

व्याख्या–
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक में अनसूया और प्रियंवदा शकुन्तला की सखियाँ हैं।
(B) गौतमी तपोवन (कण्वाश्रम) की **अध्यक्षा** हैं।
(C) मेनका, सानुमती–अप्सरा हैं।
(D) वेत्रवती, दुष्यन्त की प्रतीहारी है।
अतः विकल्प `B' सही है।

76. उत्तररामचरितम् के तृतीय अङ्क का घटना स्थल है?
(A) अयोध्या
(B) जनस्थानप्रदेश
(C) पञ्चवटी
(D) वाल्मीकि आश्रम

	अङ्क		घटना स्थल
(A)	प्रथम अङ्क	–	अयोध्या
(B)	द्वितीय अङ्क	–	जनस्थानप्रदेश
(C)	**तृतीय अङ्क**	–	**पञ्चवटी**
(D)	चतुर्थ अङ्क	–	वाल्मीकि आश्रम

अतः विकल्प `C' सही है।

77. सुप्रसिद्ध कविजन निर्धन होकर रहते हैं, तो इसमें दोषी है?
(A) प्रजा **(B) राजा**
(C) मन्त्री **(D) सेनापति**

व्याख्या–''विख्याताः कवयो वसन्ति विषये यस्य **प्रभोर्निर्धनाः**''– 'तज्जाड्यं वसुधाधिपस्य........' (नीतिशतकम्/12) अर्थात् जिस राजा के राज्य में सुप्रसिद्ध कविजन निर्धन होकर निवास करते हैं, तो वह राजा की जड़ता (मूर्खता) है। अतः विकल्प `B' सही है।

78. किरातार्जुनीयम् में गुप्तचर किस वेष में जाता है?
(A) सैनिक **(B) संन्यासी**
(C) ब्रह्मचारी **(D) मन्त्री**

व्याख्या–'स वर्णिलिङ्गी विदितः समाययौ'(किरात० 1/1) अर्थात् वह ब्रह्मचारी का वेश धारण करने वाला वनेचर सारा वृत्तान्त जानकर लौट आया। अतः विकल्प `C' सही है।

79. शुकनासोपदेश, कादम्बरी का अंश है, उसके रचयिता हैं?
(A) बाणभट्ट **(B) गुणाढ्य**
(C) सुबन्धु **(D) क्षेमेन्द्र**

	ग्रन्थ		रचयिता
(A)	**कादम्बरी**	–	**बाणभट्ट**
(B)	बृहत्कथा	–	गुणाढ्य
(C)	वासवदत्ता	–	सुबन्धु
(D)	बृहत्कथामञ्जरी	–	क्षेमेन्द्र

अतः विकल्प `A' सही है।

80. कैलासपर्वत में कौन सी नगरी बसी है?
(A) पाटलिपुत्र **(B) द्वारकापुरी**
(C) अलकापुरी **(D) उज्जयिनी**

व्याख्या– * कालिदास कृत मेघदूतम् में वर्णन आता है कि कैलासपर्वत पर अलकापुरी नामक नगरी अवस्थित है। ''तस्योत्सङ्गे प्रणयिन इव स्रस्तगङ्गादुकूलां न त्वं दृष्ट्वा न **पुनरलकां** ज्ञास्यसे कामचारिन्'' (पूर्वमेघ-66)
* पाटलिपुत्र (पटना) – बिहार में, द्वारकापुरी – गुजरात में, उज्जयिनी – मध्य प्रदेश में स्थित है।
अतः विकल्प `C' सही है।

81. राजा दुष्यन्त शकुन्तला को पहचान सकते हैं, जब वे देखेंगें?
(A) कुण्डल **(B) हार**
(C) अँगूठी **(D) केयूर**

व्याख्या–'**अभिज्ञानाभरणदर्शनेन** शापो निवर्तिष्यत' दुर्वासा के इस कथन से ज्ञात होता है कि जब राजा दुष्यन्त पहचान का आभूषण (अँगूठी) देखेंगे, तब शकुन्तला को पहचान सकेंगे। अतः विकल्प `C' सही है।

82. शिवराजविजयम् के कथानक के प्रारम्भ का काल है?
(A) रात्रि **(B) सायंकाल**
(C) मध्याह्न **(D) प्रातःकाल**

व्याख्या– '**अरुण एष प्रकाशः** पूर्वस्यां भगवतो मरीचिमालिनः'–प्रस्तुत पंक्ति से यह विदित होता है कि शिवराजविजयम् के कथानक का आरम्भ प्रातःकालीन सूर्योदय वर्णन से होता है। अतः विकल्प `D' सही है।

75. (B) 76. (C) 77. (B) 78. (C) 79. (A) 80. (C) 81. (C) 82. (D)

83. 'सुलभकोपो महर्षिः' हैं?
(A) कण्व (B) दुर्वासा
(C) दुष्यन्त (D) शकुन्तला

व्याख्या–
(A) कण्व नैष्ठिक ब्रह्मचारी हैं।
(B) दुर्वासा सुलभकोप महर्षि हैं। प्रियंवदा– 'एष **दुर्वासाः** सुलभकोपो महर्षिः' – (अभि० शाकु० अङ्क-4)
(C) दुष्यन्त पुरुवंशी राजा तथा हस्तिनापुर के सम्राट् हैं।
(D) शकुन्तला अतिथिपरिभाविनी है। जो कण्व की पालिता पुत्री और विश्वामित्र मेनका की जन्मना पुत्री है।
अतः विकल्प `B' सही है।

84. विषयों की आसक्ति मनुष्य को............... करती है?
(A) नष्ट (B) बुद्धिमान्
(C) समृद्ध (D) प्रसन्न

व्याख्या–'नाशयति च दिङ्मोहः... पुरुषमत्यासङ्गो विषयेषु' विषयों के सुख में आसक्ति, मनुष्य को **नष्ट कर** देती है। (कादम्बरी शुकनासोपदेश) अतः विकल्प `A' सही है।

85. सोमनाथ तीर्थ को धूलि में किसने मिला दिया।
(A) शहाबुद्दीन (B) कुतुबुद्दीन
(C) अकबर (D) महमूद गजनवी

व्याख्या– (A) गजनी देश पर प्रथम आक्रमण मो० शहाबुद्दीन गोरी ने किया। इसी ने भारत में यवनराज्य का बीजारोपण किया।
(B) कुतुबुद्दीन भारत का प्रथम विदेशी सम्राट् था।
(C) अकबर को 'गूढशत्रु' कहा गया है।
(D) **महमूद गजनवी ने** सोमनाथ तीर्थ को धूलि में मिलाया **''सोमनाथतीर्थमपि धूलीचकार''**– (शिवराजविजयम्)
* वह भारत पर बारह बार आक्रमण किया। इसकी मृत्यु 1087 ई० में हुई थी
नोट–उपर्युक्त सभी तथ्य शिवराजविजयम् पर आधारित हैं। अतः विकल्प `D' सही है।

86. ऋषि वशिष्ठ की पत्नी थीं?
(A) अदिति (B) लोपामुद्रा
(C) अरुन्धती (D) मेनका

	पति		**पत्नी**
(A)	मारीच	–	अदिति
(B)	अगस्त्य	–	लोपामुद्रा
(C)	**वशिष्ठ**	–	**अरुन्धती**
(D)	विश्वामित्र	–	मेनका

अतः विकल्प `C' सही है।

87. सोमनाथ तीर्थ का देवता है?
(A) ब्रह्मा (B) विष्णु
(C) राम (D) महादेव

व्याख्या–सोमनाथ तीर्थ के देवता भगवान् **शिव** हैं। ''त्यजेमामकिञ्चितकरीं जडां **महादेवप्रतिमाम्**'' – (शिवराजविजयम्) अतः विकल्प `D' सही है।

88. शकुन्तला को विदाई का सन्देश दिया?
(A) कण्व ने (B) दुर्वासा ने
(C) तपोवन के वृक्षों ने (D) मृगों ने

व्याख्या–
(A) 'शुश्रूषस्व गुरून् कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीजने' इस श्लोक के माध्यम से कण्व, ससुराल जाती हुई शकुन्तला को उपदेश देते हैं। (अभिज्ञान 4/18)
(B) 'स्मरिष्यति त्वां न स बोधितोऽपि सन्, कथां प्रमत्तः प्रथमं कृतामिव''(अभि० 4/1) प्रस्तुत श्लोक में दुर्वासा कुटिया के पास बैठी हुई शकुन्तला को शाप देते हैं।
(C) ''अनुमतगमना शकुन्तला तरुभिरियं वनवासबन्धुभिः'' (अभि० 4/10) इस श्लोक से यह ज्ञात होता है कि तपोवन के वृक्षों के द्वारा शकुन्तला को पतिगृह जाने की अनुमति प्राप्त हुई।
(D) 'उद्गलितदर्भकवला मृग्यः' (अभि० 4/12) ससुराल जाती हुई शकुन्तला के वियोग में मृगियों ने कुश के ग्रास को उगल दिया है।
अतः विकल्प `A' सही है।

89. शूरवीर महीतल पर अपना प्रभाव प्रकट कर सकता है?
(A) धन से (B) ज्ञान से
(C) पराक्रम से (D) अहङ्कार से

व्याख्या–नीतिशतकम् में भर्तृहरि कहते है, कि शूरवीर पराक्रम से धरती पर अपना प्रभाव प्रकट करते हैं। ''एकेनापि हि **शूरेण** पादाक्रान्तं महीतलम्'' (नीति० परि०-2)
अतः विकल्प `C' सही है।

83. (B) 84. (A) 85. (D) 86. (C) 87. (D) 88. (A) 89. (C)

90. नीतिशतकम् में 'पूर्वतपसा खलु सञ्चितानि' है?
(A) कर्माणि (B) भाग्यानि
(C) फलानि (D) गुणानि

व्याख्या–'भाग्यानि पूर्वतपसा खलु सञ्चितानि' (नीतिशतकम्/98) पहले की गई तपस्या से सञ्चित भाग्य ही निश्चय रूप से यथोचित समय पर फल देते हैं।
अतः विकल्प `B' सही है।

91. द्वैतवन में गुप्तचर किसके पास लौट आया?
(A) दुर्योधन (B) युधिष्ठिर
(C) कृष्ण (D) भीष्म

व्याख्या–'स वर्णिलिङ्गी विदितः समाययौ, **युधिष्ठिरं** द्वैतवने वनेचरः'(किरात० 1/1) अर्थात् ब्रह्मचारी का वेश धारण करने वाला वनेचर सारा वृत्तान्त जानकर द्वैतवन में युधिष्ठिर के पास लौट आया। अतः विकल्प `B' सही है।

92. 'राजविषविकारतन्द्राप्रदा' है?
(A) राजलक्ष्मी (B) सरस्वती
(C) युवावस्था (D) सुन्दरता

व्याख्या–'राज्यविषविकारतन्द्राप्रदा **राजलक्ष्मीः**' (शुकनासोपदेश) राजलक्ष्मी राज्य रूपी विष के विकार से उत्पन्न तन्द्रा प्रदान करती है। अतः विकल्प `A' सही है।

93. 'प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः'–यहाँ 'मादृशां' से तात्पर्य है?
(A) भीम (B) युधिष्ठिर
(C) गुप्तचर (D) द्रौपदी

व्याख्या– 'प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः' (किरात० 1/25) प्रस्तुत पंक्ति में वनेचर युधिष्ठिर से कहता है कि–हम जैसों की वाणी केवल बात बताने वाली है।
अतः विकल्प `C' सही है।

94. यक्ष के विरह का कितना समय बीत चुका है?
(A) एक वर्ष (B) आठ मास
(C) चार मास (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

व्याख्या–
(A) कुबेर ने यक्ष को अपनी पत्नी से एक वर्ष दूर रहने का शाप दिया था। ''शापेनास्तङ्गमितमहिमा वर्षभोग्येण भर्तुः'' (पूर्वमेघ-01)
(B) यक्ष रामगिरि पर्वत पर जिस दिन मेघ को देखता है तब तक विरह के **आठ मास** बीत चुके हैं।
(C) यक्षिणी से मिलन में अभी चार मास बाकी है, अर्थात् वियोग का अभी चार मास शेष है। ''शेषान् मासान् गमयचतुरो लोचने मीलयित्वा'' (उत्तरमेघ-50)
अतः विकल्प `B' सही है।

95. ''इत्याख्याते पवनतनयं मैथिलीवोन्मुखी सा'' यहाँ 'सा' से तात्पर्य है?
(A) सीता (B) विद्युत्
(C) यक्षिणी (D) हनुमान्

व्याख्या–'इत्याख्याते पवनतनयं मैथिलीवोन्मुखी सा' (उत्तरमेघ/40) अर्थात् इसप्रकार कहने पर ऊपर को मुख किये हुए वह (**मेरी प्रिया**) तुम्हारी सारी बात सुनेगी, जैसे सीताजी ने हनुमान् जी की बात सुनी थी। अतः विकल्प `C' सही है।

96. सीता, राम को कितने वर्षों के अन्तराल पर देखती हैं?
(A) 14 वर्ष (B) 20 वर्ष
(C) 10 वर्ष (D) 12 वर्ष

व्याख्या–''अद्य खल्वायुष्मतोः कुशलवयो**र्द्वादशस्य जन्मवत्सरस्य** संख्यामङ्गलग्रन्थिरभिवर्तते''–तमसा के इस कथन से ज्ञात होता है कि आज लवकुश के जन्म की **12वीं वर्षगाँठ** है। इसी समय राम पञ्चवटी में शम्बूक को दण्ड देने के लिए आये। अर्थात् सीता, राम को **12 वर्षों के अन्तराल के** बाद देखती हैं। अतः विकल्प `D' सही है।

97. धन जीतकर युधिष्ठिर को कौन देता था?
(A) भीम (B) नकुल
(C) सहदेव (D) अर्जुन

व्याख्या–''विजित्य यः प्राज्यमयच्छदुत्तरान्, कुरूनकुप्यं वसु **वासवोपमः**'' (किरात० 1/35) द्रौपदी के इस कथन से ज्ञात होता है, कि अर्जुन ने उत्तर कुरु प्रदेश को जीतकर प्रचुर मात्रा में सोना-चाँदी रूपी धन युधिष्ठिर को दिया था।
अतः विकल्प `D' सही है।

98. यक्ष को शाप दिया था?
(A) इन्द्र (B) नारद
(C) कुबेर (D) दुर्वासा

व्याख्या–कुबेर ने यक्ष को अपनी पत्नी से एक वर्ष तक दूर रहने का शाप दिया था। ''शापेनास्तङ्गमितमहिमा वर्षभोग्येण **भर्तुः**'' (पूर्वमेघ/1) अतः विकल्प `C' सही है।

90. (B) 91. (B) 92. (A) 93. (C) 94. (B) 95. (C) 96. (D) 97. (D) 98. (C)

99. महमूद गजनवी ने सिन्धु नदी पार करके किसे अपनी राजधानी बनाया?
(A) गजिनी को (B) तक्षशिला को
(C) काबुल को (D) तेहरान को

व्याख्या–महमूद गजनवी ने सिन्धुनदी पार करके 'गजिनी' नामक अपनी राजधानी में प्रवेश किया – ''सिन्धुनदमुत्तीर्य स्वकीयां...... **गजिनीं नाम राजधानीं** प्राविशत्'' (शिवराजविजयम्) अतः विकल्प `A' सही है।

100. शिवराजविजयम् में कान्यकुब्ज के राजा थे?
(A) शहाबुद्दीन (B) पृथ्वीराज
(C) कुतुबुद्दीन (D) जयचन्द्र

	राज्य	राजा/युवराज
(A)	गोरदेश	शहाबुद्दीन (मो० गोरी)
(B)	दिल्ली	पृथ्वीराजचौहान
(C)	दिल्ली	कुतुबुद्दीन (प्रथम विदेशी भारत सम्राट्)
(D)	**कान्यकुब्ज**	**जयचन्द्र**

अतः विकल्प `D' सही है।

101. उत्तररामचरित में सीता की सखी है?
(A) लोपामुद्रा (B) वासन्ती
(C) अरुन्धती (D) तमसा और मुरला

व्याख्या–
(A) लोपामुद्रा, अगस्त्य की पत्नी हैं।
(B) **वासन्ती,** सीता की सखी है।
(C) अरुन्धती, वशिष्ठ की पत्नी हैं।
(D) तमसा और मुरला दो नदियाँ हैं।
अतः विकल्प `B' सही है।

102. बाणभट्ट ने किस रीति में अपने काव्य की रचना की?
(A) वैदर्भी (B) गौडी
(C) पाञ्चाली (D) इनमें से कोई नहीं

	रीति		कवि
(A)	वैदर्भी	–	कालिदास
(B)	गौडी	–	भवभूति
(C)	**पाञ्चाली**	–	**बाणभट्ट**

अतः विकल्प `C' सही है।

103. तेजस्वी पुरुष स्वाभाविक रूप से होते हैं?
(A) भीरु (B) शूरवीर
(C) गृहस्थ (D) संन्यासी

व्याख्या–भर्तृहरि, नीतिशतकम् में कहते हैं कि तेजस्वी पुरुष स्वाभाविक रूप से **शूरवीर** होते हैं ''तत्तेजस्वी पुरुषः परकृतनिकृतिं कथं सहते''। (नीतिशतकम्-30)
अतः विकल्प `B' सही है।

104. ''मम विरहजां न त्वं वत्से! शुचं गणयिष्यसि'' यहाँ 'मम' से तात्पर्य है?
(A) कण्व (B) शकुन्तला
(C) सर्वदमन भरत (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या–मम विरहजां न त्वं वत्से शुचं गणयिष्यसि (अभिज्ञान 4/19) कण्व शकुन्तला से कहते हैं कि तुम पवित्र और तेजस्वी पुत्र को जन्म देकर, मेरे विरह से उत्पन्न शोक को नहीं गिनोगी।
(A) 'मम' शब्द **कण्व के** लिए आया है।
(B) 'त्वम्' शब्द शकुन्तला के लिए आया है।
(C) दुष्यन्त और शकुन्तला के पुत्र का नाम भरत (सर्वदमन) है।
अतः विकल्प `A' सही है।

105. अभिज्ञानशाकुन्तलम् है?
(A) महाकाव्य (B) नाटक
(C) गद्यकाव्य (D) व्याकरणग्रन्थ

	ग्रन्थ		विधा
(A)	कुमारसम्भवम्	–	महाकाव्य
(B)	**अभिज्ञानशाकुन्तलम्**	–	**नाटक**
(C)	अवन्तिसुन्दरीकथा	–	गद्यकाव्य (कथा)
(D)	वाक्यपदीयम्	–	व्याकरणग्रन्थ

अतः विकल्प `B' सही है।

106. ''उत्कुपितलोचना इव तेजस्विनो नेक्षन्ते'' ऐसा आचरण करते हैं?
(A) सज्जन (B) युवकजन
(C) मूर्खजन (D) लक्ष्मी से प्रभावित राजा

व्याख्या–''उत्कुपितलोचना इव तेजस्विनो नेक्षन्ते''– शुकनासोपदेश में शुकनास चन्द्रापीड को उपदेश देते हुए कहते हैं कि–**लक्ष्मी से प्रभावित राजा** नेत्ररोगियों के समान तेजस्वियों को नहीं देखते हैं। अतः विकल्प `D' सही है।

99. (A) 100. (D) 101. (B) 102. (C) 103. (B) 104. (A) 105. (B) 106. (D)

107. 'विद्याविहीनः' है?
(A) गौः **(B) अश्वः**
(C) पशुः **(D) हस्ती**

व्याख्या–'विद्या राजसु पूज्यते न हि धनं 'विद्याविहीनः **पशुः**' (नीतिशतकम्/16)–भर्तृहरि विद्या से हीन व्यक्ति को पशु कहते हैं। अतः विकल्प `C' सही है।

108. ''विचित्ररूपाः खलु चित्तवृत्तयः''–यह सुभाषित किस ग्रन्थ से है?
(A) मेघदूतम् से **(B) किरातार्जुनीयम् से**
(C) उत्तररामचरितम् से **(D) शिवराजविजयम् से**

व्याख्या–
(A) ''एकः सूते सकलमबलामण्डनं कल्पवृक्षः''–मेघदूतम् से
(B) ''विचित्ररूपाः खलु चित्तवृत्तयः''–**किरातार्जुनीयम्** से
(C) ''ननु लाभो हि रुदितम्''–उत्तररामचरितम् से
(D) ''कार्यं वा साधयेयं देहं वा पातयेयम्''–शिवराजविजयम् से। अतः विकल्प `B' सही है।

109. मुनि अगस्त्य की पत्नी है?
(A) शान्ता **(B) लोपामुद्रा**
(C) वासन्ती **(D) तमसा और मुरला**

	पात्र	परिचय
(A)	शान्ता	– राम की बहन, ऋष्यशृङ्ग की पत्नी
(B)	**लोपामुद्रा**	– **अगस्त्य की पत्नी**
(C)	वासन्ती	– सीता की सखी
(D)	तमसा और मुरला	– दो नदी देवियाँ

अतः विकल्प `B' सही है।

110. चन्द्रापीड को राज्याभिषेक पर उपदेश देता है?
(A) तारापीड **(B) शुकनास**
(C) वैशम्पायन **(D) पत्रलेखा**

व्याख्या–
(A) तारापीड उज्जयिनी का राजा है।
(B) **शुकनास** तारापीड का प्रधान अमात्य है, जो चन्द्रापीड को राज्याभिषेक के समय उपदेश देता है।
(C) वैशम्पायन, शुकनास का पुत्र है।
(D) पत्रलेखा, चन्द्रापीड की ताम्बूलकरङ्कवाहिनी है।
अतः विकल्प `B' सही है।

111. 'पति' शब्द का चतुर्थी विभक्ति में रूप होगा?
(A) पत्या **(B) पत्ये**
(C) पत्युः **(D) पत्योः**

व्याख्या–
(A) 'पति' इकारान्त पुंलिङ्ग का रूप तृतीया विभक्ति में ''पत्या, पतिभ्याम्, पतिभिः'' बनता है।
(B) चतुर्थी विभक्ति में–''**पत्ये**, पतिभ्याम्, पतिभ्यः''
(C) षष्ठी विभक्ति में–''पत्युः, पत्योः, पतीनाम्''
(D) सप्तमी विभक्ति में–''पत्यौ, पत्योः, पतिषु''
अतः विकल्प `B' सही है।

112. 'सुधियम्' किस विभक्ति का रूप है?
(A) द्वितीया **(B) चतुर्थी**
(C) पञ्चमी **(D) सप्तमी**

व्याख्या–
(A) 'सुधी' (पण्डित) द्वितीयाविभक्ति में– ''**सुधियम्**, सुधियौ, सुधियः'' रूप बनता है।
(B) चतुर्थीविभक्ति में–''सुधिये, सुधीभ्याम्, सुधीभ्यः''
(C) पञ्चमीविभक्ति में–''सुधियः, सुधीभ्याम्, सुधीभ्यः''
(D) सप्तमीविभक्ति में–''सुधियि, सुधियोः, सुधीषु''
अतः विकल्प `A' सही है।

113. 'चक्रपाणिः' में कौन-सा समास है?
(A) नञ्तत्पुरुष **(B) कर्मधारय**
(C) बहुव्रीहि **(D) द्वन्द्व**

	पद		समास
(A)	अभावः	–	नञ् तत्पुरुषसमास
(B)	पुरुषव्याघ्रः	–	कर्मधारयसमास
(C)	**चक्रपाणिः**	–	**बहुव्रीहिसमास**
(D)	ईशकृष्णौ	–	द्वन्द्वसमास

अतः विकल्प `C' सही है।

114. अव्ययीभावसमास में पद के अन्त में लिङ्ग होता है?
(A) नपुंसकलिङ्ग **(B) पुंलिङ्ग**
(C) स्त्रीलिङ्ग **(D) तीनों लिङ्ग**

व्याख्या– 'अव्ययीभावश्च' (2/4/18) सूत्र से अव्ययीभाव समास **नपुंसकलिङ्ग** में होता है। यथा–अहः अहः प्रति =प्रत्यहम् (नपुंसकलिङ्ग) अतः विकल्प `A' सही है।

107. (C)	108. (B)	109. (B)	110. (B)	111. (B)	112. (A)	113. (C)	114. (A)

115. 'प्रत्यक्षम्' में समास है?
(A) नञ्तत्पुरुष (B) अव्ययीभाव
(C) द्वन्द्व (D) कर्मधारय

पद		**समास**
(A) असत्यम्	–	नञ् तत्पुरुषसमास
(B) **प्रत्यक्षम्**	–	**अव्ययीभावसमास**
(C) अहिनकुलम्	–	(समाहार) द्वन्द्वसमास
(D) नीलोत्पलम्	–	कर्मधारयसमास

अतः विकल्प `B' सही है।

116. 'ऋते' के योग में विभक्ति होती है?
(A) द्वितीया (B) तृतीया
(C) चतुर्थी (D) पञ्चमी

व्याख्या–''अन्यारादितरर्ते-दिक्छब्दाञ्चूत्तरपदाजाहियुक्ते'' (2.3.29) सूत्र से 'ऋते' के योग में **पञ्चमी विभक्ति** होती है। अतः विकल्प `D' सही है।

117. कर्मवाच्य क्रिया का कर्ता किस विभक्ति में आता है?
(A) प्रथमा (B) तृतीया
(C) कर्म के अनुसार (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या–
(A) कर्मवाच्य में कर्म में प्रथमाविभक्ति होती है।
(B) कर्त्ता में **तृतीयाविभक्ति** होती है।
(C) कर्म के अनुसार क्रिया का चयन होता है।
यथा–तेन अहं दृश्ये।
1. कर्त्ता में तृतीया – तेन
2. कर्म में प्रथमा – अहं
3. क्रिया कर्म के अनुसार उ0 पु0 एकवचन में– दृश्ये
अतः विकल्प `B' सही है।

118. क्रुध् धातु के योग में जिस पर क्रोध किया जाय उसमें विभक्ति होती है?
(A) चतुर्थी (B) द्वितीया
(C) तृतीया (D) पञ्चमी

व्याख्या–
(A) 'क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः' (1/4/37) सूत्र से जिस पर क्रोध किया जाय उसमें **चतुर्थी विभक्ति** का विधान होता है। यथा–गुरुः शिष्याय क्रुध्यति।
(B) 'क्रुधद्रुहोरुपसृष्टयोः कर्म' (1/4/38) सूत्र से उपसर्ग से युक्त क्रुध् और द्रुह् धातुओं के योग में जिस पर क्रोध किया जाय उस कारक की कर्मसंज्ञा होती है। यथा–गुरुः शिष्यम् अभिक्रुध्यति।
(C) 'सह' के योग में तृतीयाविभक्ति होती है। यथा– पुत्रेण सह आगतः पिता।
(D) 'ऋते' के योग में पञ्चमीविभक्ति होती है। यथा– ऋते ज्ञानात् न मुक्तिः।
अतः विकल्प `A' सही है।

119. उपसर्ग क्या हैं?
(A) प्रत्यय (B) शब्द
(C) कृदन्त (D) अव्यय

व्याख्या– उपसर्ग मूलतः **अव्यय** हैं। अव्यय चार प्रकार के होते हैं।
1. उपसर्ग 2. क्रियाविशेषण
3. समुच्चयबोधक 4. मनोविकारसूचक
उपसर्ग–जो अव्यय धातु या धातु से बने विशेषण, संज्ञा आदि शब्दों के पूर्व जोड़े जाते हैं, उनको उपसर्ग कहते हैं।
''उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते।
प्रहाराहारसंहार-विहारपरिहारवत्।।''
अतः विकल्प `D' सही है।

120. नाम के बाद जो प्रत्यय जुड़ते हैं, उन्हें क्या कहते हैं?
(A) तद्धित (B) तिङन्त
(C) कृदन्त (D) णिजन्त

व्याख्या–
(A) नाम के बाद जो प्रत्यय जुड़ते हैं उन्हें **'तद्धितप्रत्यय'** कहा जाता है। उन शब्दों को **'तद्धितान्त'** कहते हैं।
(B) धातुओं मे जो प्रत्यय जुड़ते हैं, उन्हें 'तिङन्त' कहते हैं।
(C) धातु में जिस प्रत्यय को जोड़कर संज्ञा, विशेषण, अथवा अव्यय पद बनता है, उसको कृत्प्रत्यय कहते हैं, और इसके द्वारा जो शब्द सिद्ध होता है उसे 'कृदन्त' कहते हैं।
(D) किसी धातु में जब प्रेरणा का अर्थ बताना हो तो णिच् प्रत्यय जोड़ देते हैं, जिसे 'णिजन्त' कहते हैं।
अतः विकल्प `A' सही है।

115. (B) 116. (D) 117. (B) 118. (A) 119. (D) 120. (A)

121. कर्तृवाच्य में कर्म कौन-सी विभक्ति में आता है?
(A) प्रथमा **(B) द्वितीया**
(C) तृतीया **(D) चतुर्थी**

व्याख्या– कर्तृवाच्य के कर्ता में – प्रथमाविभक्ति
* कर्म में – **द्वितीयाविभक्ति**
* क्रिया – कर्ता के अनुसार
* यथा– सः ओदनं खादति।

अतः विकल्प `B' सही है।

122. 'नारीभिः आभूषणानि धार्यन्ते' में वाच्यपरिवर्तन होगा?
(A) नारी भूषणानि धारयति
(B) नारी आभूषणानि धारयन्ति
(C) नार्याः आभूषणानि धारयन्ति
(D) नार्यः आभूषणानि धारयन्ति

व्याख्या–'नारीभिः आभूषणानि धार्यन्ते' यह कर्मवाच्य का वाक्य है, इसको कर्तृवाच्य में परिवर्तन करने पर– **'नार्यः आभूषणानि धारयन्ति'** ऐसा वाक्य बनेगा। अतः विकल्प `D' सही है।

123. 'रामः पुस्तकानि पठति' में वाच्यपरिवर्तन करने पर वाक्य होगा?
(A) रामेण पुस्तकं पठ्यन्ते।
(B) रामेण पुस्तकं पठ्यते
(C) रामेण पुस्तकानि पठ्यन्ते
(D) रामेण पुस्तकानि पठ्यते

व्याख्या–
* 'रामः पुस्तकानि पठति' कर्तृवाच्य है। सर्वप्रथम कर्ता में तृतीया विभक्ति - **रामेण**
* तत्पश्चात् कर्म में प्रथमा बहुवचन - **पुस्तकानि**
* अन्त में कर्म के अनुसार क्रिया अर्थात् प्रथमा बहुवचन की क्रिया का चयन - **पठ्यन्ते**
* इसप्रकार **'रामेण पुस्तकानि पठ्यन्ते'** कर्मवाच्य होगा। अतः विकल्प `C' सही है।

124. भवान् घटान् ...... 'भर दो' के लिए संस्कृतपद होगा?
(A) पूरयतु **(B) पूरयन्तु**
(C) पूरय **(D) पूरयत**

व्याख्या– 'भवत्' (आप) शब्द के साथ सदा प्रथमपुरुष की क्रिया का प्रयोग होता है। भवान् घटान् पूरयतु। (आप घड़ों को भर दें) यहाँ 'पूरयतु'–लोट्लकार प्र0पु0 एकवचन का रूप होता है। अतः विकल्प `A' सही है।

125. जिस क्रिया का वाच्य कर्म है। उसे कहते हैं?
(A) कर्तृवाच्य **(B) कर्मवाच्य**
(C) भाववाच्य **(D) तीनों वाच्य**

व्याख्या–
(A) कर्तृवाच्य में कर्ता मुख्य होता है। कर्ता में प्रथमा विभक्ति तथा कर्म में द्वितीया विभक्ति और क्रिया कर्ता के अनुसार प्रयुक्त होती है। यथा–सः ग्रामं गच्छति।
(B) कर्मवाच्य में कर्म मुख्य होता है, क्रिया कर्म के अनुसार प्रयुक्त होती है, कर्म में प्रथमाविभक्ति तथा कर्ता में तृतीयाविभक्ति का प्रयोग होता है।
यथा–(i) तेन ग्रामः गम्यते। (ii) मया पुस्तकं पठ्यते
(C) भाववाच्य के कर्ता में तृतीया, क्रिया में प्रथमपुरुष एकवचन का प्रयोग यथा–
1. तेन भूयते 2. त्वया भूयते 3. मया भूयते
अतः विकल्प `B' सही है।

121. (B) 122. (D) 123. (C) 124. (A) 125. (B)

प्रशिक्षित-स्नातकशिक्षक-चयनपरीक्षा (TGT)–2004

1. सन्ध्यक्षर होता है?
(A) क, ख, ग, घ, ङ (B) य, र, ल, व
(C) श, ष, स, ह (D) ए, ऐ, ओ, औ

(A) स्पर्शव्यञ्जन – क्, ख्, ग्, घ्, ङ्
(B) अन्तस्थवर्ण – य्, र्, ल्, व्
(C) ऊष्मवर्ण – श्, ष्, स्, ह्
(D) **सन्ध्यक्षर – ए, ऐ, ओ, औ**
अतः विकल्प (D) सही है।

2. 'अष्टाध्यायी' का दूसरा नाम है?
(A) वाक्यानुशासन (B) शब्दानुशासन
(C) अर्थानुशासन (D) अनुशासन

अष्टाध्यायी के तीन और नाम हैं –
1. **शब्दानुशासन**
2. अष्टक
3. वृत्तिसूत्र
अतः विकल्प (B) सही है।

3. 'जन्' धातु लङ्लकार प्रथमपुरुष बहुवचन में होगा–
(A) अजागरुः (B) अजायत
(C) अजायेताम् (D) अजायन्त

व्याख्या – 'जन्' धातु आत्मनेपद लङ्लकार प्रथमपुरुष में – 'अजायत, अजायेताम्, **अजायन्त**' रूप बनता है।
अतः विकल्प (D) सही है।
नोट – 'अजागरुः' रूप दशों लकारों में कहीं नहीं बनता है।

4. 'जलमुच्' शब्द का प्रथमाविभक्ति एकवचन का रूप होगा?
(A) जलमुचि (B) जलमुक्/जलमुग्
(C) जलमुचौ (D) जलमुचः

व्याख्या – 'जलमुच्' शब्द का प्रथमा विभक्ति में – ''**जलमुक्** जलमुचौ जलमुचः'' रूप बनता है।
अतः विकल्प (B) सही है।

5. 'पञ्चगवम्' का विग्रह वाक्य होगा?
(A) पञ्चानां गोवां समाहारः
(B) पञ्चानां गवा समाहारः
(C) पञ्चानां गवां समाहारः
(D) पञ्चानां गवेतरा समाहारः

व्याख्या – 'तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च' (2/1/51) सूत्र से ''**पञ्चानां गवां समाहारः**=पञ्चगवम्'' में द्विगुसमास होगा। अतः विकल्प (C) सही है। अन्य विकल्प गलत हैं।

6. ''क्त और क्तवतु'' किस नाम से प्रसिद्ध हैं?
(A) निष्ठा (B) सत्
(C) घ (D) पद

	प्रत्यय		संज्ञा
(A)	**क्त, क्तवतु**	–	**निष्ठासंज्ञा**
(B)	शतृ, शानच्	–	सत्संज्ञा
(C)	तरप्, तमप्	–	घसंज्ञा
(D)	सुप्, तिङ्	–	पदसंज्ञा

अतः विकल्प (A) सही है।

7. 'रुदति पुत्रे माता जगाम' के रेखाङ्कित शब्द में कौन-सी विभक्ति है?
(A) चतुर्थी (B) षष्ठी
(C) सप्तमी (D) पञ्चमी

व्याख्या – * 'षष्ठी चानादरे' (2/3/38) सूत्र से एक क्रिया से दूसरी क्रिया लक्षित हो और अनादर अर्थ गम्यमान हो वहाँ जिसका अनादर किया जाता है, उसमें षष्ठी या सप्तमी विभक्ति होती है। यथा – 'रुदति पुत्रे माता जगाम' इस वाक्य में पुत्र शब्द में **सप्तमी विभक्ति** का प्रयोग हुआ है।
* सम्प्रदान में चतुर्थी, सम्बन्ध में षष्ठी और अपादान में पञ्चमी का प्रयोग होता है। अतः विकल्प (C) सही है।

1. (D) 2. (B) 3. (D) 4. (B) 5. (C) 6. (A) 7. (C)

8. 'ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति' यह वाक्यांश कहाँ से उद्धृत है?
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से (B) उत्तररामचरितम् से
(C) शिवराजविजयम् से (D) नीतिशतकम् से

व्याख्या –
(A) न खलु धीमतां कश्चिदविषयो नाम – अभिज्ञानशाकुन्तलम् से
(B) 'ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति' (**उत्तररामचरित** 1/10) राम कहते हैं कि – प्राचीन महर्षियों की वाणी के पीछे अर्थ स्वयं चलता है।
(C) 'मन्दिराणि मन्दुरी क्रियन्ते' – शिवराजविजयम् से
(D) 'हतविधिपरिपाकः केन वा लङ्घनीयः' – नीतिशतकम्
अतः विकल्प (B) सही है।

9. निम्नलिखित में से शुद्ध वाक्य कौन-सा है?
(A) विपदि ददातु मे धनान् भवान्।
(B) विपदि दादतु मम धनानि भवान्।
(C) विपदि ददातु मे धनं भवान्।
(D) ददतु धने विपदि।

व्याख्या – **विपदि ददातु मे धनं भवान्** (आप मुझको विपत्ति में धन दो) * यहाँ 'विपदि' में सप्तमीविभक्ति
* 'ददातु' लोट्लकार प्र0 पु0 एकवचन की क्रिया,
* 'मे' अस्मद् शब्द का चतुर्थी एकवचन * 'धनं' कर्म है जिसमें द्वितीया विभक्ति है * 'भवान्' कर्ता है, जिसमें प्रथमा विभक्ति है।
अतः विकल्प (C) सही है।

10. 'याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा' – यह पंक्ति कहाँ से उद्धृत है?
(A) मेघदूतम् से (B) किरातार्जुनीयम् से
(C) शिवराजविजयम् से (D) शुकनासोपदेश से

व्याख्या –
(A) 'याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा' अर्थात् गुणी व्यक्ति के प्रति की गई याचना निष्फल होने पर भी श्रेष्ठ है, पर नीच से मनचाहा फल पा जाना भी अच्छा नहीं है। **(पूर्वमेघ/6)**
(B) 'प्रवक्तुमिच्छन्ति मृषा हितैषिणः' – किरातार्जुनीयम् से
(C) 'गायत्री अमुमेव गायति' – शिवराजविजयम् से
(D) 'राज्यविषविकारतन्द्राप्रदा राजलक्ष्मीः' – शुकनासोपदेश
अतः विकल्प (A) सही है।

11. शकुन्तला के साथ दुष्यन्त के राजदरबार तक कौन गयी थी?
(A) प्रियंवदा (B) अनसूया
(C) मेनका (D) गौतमी

व्याख्या – * शकुन्तला के साथ राजदरबार तक **गौतमी** जाती। शार्ङ्गरव, शारद्वत भी गौतमी के साथ जाते हैं।
* अनसूया, प्रियंवदा राजदरबार तक नहीं जाती हैं।
* मेनका, शकुन्तला की माता है, जो कि एक अप्सरा है।
अतः विकल्प (D) सही है।

12. दुष्यन्त की मनःस्थिति जानने के लिए मेनका अपनी किस सखी को भेजती है?
(A) उर्वशी को (B) तिलोत्तमा को
(C) सानुमती को (D) भानुमती को

व्याख्या – मेनका, दुष्यन्त की मनःस्थिति जानने के लिए अपनी सखी **'अप्सरा सानुमती'** को भेजती है।
अतः विकल्प (C) सही है।

13. 'परि अभूषयत् = पर्यभूषयत्' इस विग्रहवाक्य में कौन-सा समास है?
(A) द्विगुसमास (B) बहुव्रीहिसमास
(C) द्वन्द्वसमास (D) अव्ययीभावसमास

व्याख्या –
(A) 'पञ्चवटी' में द्विगुसमास है।
(B) 'शशिशेखरः' में बहुव्रीहिसमास है।
(C) 'पितरौ' में द्वन्द्वसमास है।
(D) 'पर्यभूषयत्' में **अव्ययीभावसमास** है।
अतः विकल्प (D) सही है।

14. अभिज्ञानशाकुन्तलम् का विदूषक कौन है?
(A) माढव्य (B) मैत्रेय
(C) वसन्तक (D) माणवक

ग्रन्थ		विदूषक
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम्	–	**माढव्य**
(B) मृच्छकटिकम्	–	मैत्रेय
(C) स्वप्नवासवदत्तम्	–	वसन्तक
(D) विक्रमोर्वशीयम्	–	माणवक

अतः विकल्प (A) सही है।

8. (B) 9. (C) 10. (A) 11. (D) 12. (C) 13. (D) 14. (A)

15. पञ्चोपास्य देवताओं में कौन-कौन से देवता शामिल हैं?
(A) शिव, गणेश, सूर्य, विष्णु, दुर्गा
(B) अरविन्दम्, अशोक, चूतम्, नवमल्लिका, नीलोत्पल
(C) अहिल्या, द्रौपदी, सीता, तारा, मन्दोदरी
(D) दुग्धम्, दधि, घृतम्, मूत्रम्, गोमयम्

व्याख्या –
(A) पञ्चोपास्यदेवता – **शिव, गणेश, सूर्य, विष्णु, दुर्गा।**
(B) कामदेव के पञ्चबाण – अरविन्दम्, अशोकम्, चूतम्, नवमल्लिका, नीलोत्पलम्।
(C) पञ्चकन्या – अहिल्या, द्रौपदी, सीता, तारा, मन्दोदरी।
(D) पञ्चगव्यम् – दुग्धम्, दधि, घृतम्, मूत्रम्, गोमयम्।
अतः विकल्प (A) सही है।

16. 'शुकनासोपदेश' किस ग्रन्थ का अंश विशेष है?
(A) रघुवंशम् **(B) कादम्बरी**
(C) महाभारतम् **(D) रामायणम्**

व्याख्या – बाणभट्ट कृत **कादम्बरी कथा का एक भाग** शुकनासोपदेश है। महाभारत को 'शतसाहस्रीसंहिता' एवं रामायण को 'चतुर्विंशतिसाहस्रीसंहिता' भी कहते हैं।
अतः विकल्प (B) सही है।

17. कादम्बरी किस प्रकार का ग्रन्थ है?
(A) आख्यायिका **(B) कथा**
(C) नाटक **(D) महाकाव्य**

	ग्रन्थ		काव्य विधा
(A)	हर्षचरितम् (बाण)	–	आख्यायिका
(B)	**कादम्बरी (बाण)**	–	**कथा**
(C)	महावीरचरितम् (भवभूति)	–	नाटकम्
(D)	रघुवंशम् (कालिदास)	–	महाकाव्यम्

अतः विकल्प (B) सही है।

18. 'किरातार्जुनीयम्' ग्रन्थ में किस विषय का चमत्कारित्व है?
(A) अर्थगौरव का **(B) उपमा का**
(C) पदलालित्य का **(D) उपर्युक्त तीनों का**

व्याख्या – किरातार्जुनीयम् **अर्थगौरव** के लिए प्रसिद्ध है।

	कवि		प्रसिद्धि
(A)	**भारवि**	–	**अर्थगौरव**
(B)	कालिदास	–	उपमा
(C)	दण्डी	–	पदलालित्य
(D)	माघ	–	अर्थगौरव, उपमा, पदलालित्य

अतः विकल्प (A) सही है।

19. 'कादम्बरी' शब्द का अर्थ है?
(A) सुरा **(B) विष**
(C) अमृत **(D) जल**

	शब्द		अर्थ
(A)	**कादम्बरी**	–	**सुरा (मदिरा)**
(B)	कालकूट	–	विष
(C)	सुधा	–	अमृत
(D)	पयः	–	जल/दूध

अतः विकल्प (A) सही है।

20. 'नैषधीयचरितम्' किस श्रेणी की रचना है?
(A) महाकाव्य **(B) खण्डकाव्य**
(C) गद्यकाव्य **(D) नाटक**

व्याख्या –

	ग्रन्थ		विधा
(A)	**नैषधीयचरितम्**	–	**महाकाव्य**
(B)	ऋतुसंहारम्	–	खण्डकाव्य
(C)	शिवराजविजयम्	–	गद्यकाव्य
(D)	उत्तररामचरितम्	–	नाटक

अतः विकल्प (A) सही है।

21. 'नैषधीयचरितम्' में मुख्य रस कौन-सा है?
(A) वीररस **(B) शृङ्गाररस**
(C) करुणरस **(D) शान्तरस**

व्याख्या –

	ग्रन्थ		मुख्यरस
(A)	महावीरचरितम्	–	वीररस
(B)	**नैषधीयचरितम्**	–	**शृङ्गाररस**
(C)	कुन्दमाला	–	करुणरस
(D)	बुद्धचरितम्	–	शान्तरस

अतः विकल्प (B) सही है।

15. (A) 16. (B) 17. (B) 18. (A) 19. (A) 20. (A) 21. (B)

22. 'प्रतिसर्ग' लक्षण है?

(A) धर्ममार्ग का (B) काव्य का

(C) पुराण का (D) नीतिकाव्य का

व्याख्या – पुराण के पाँच लक्षण निम्नवत् हैं –

1. सर्ग
2. **प्रतिसर्ग**
3. वंश
4. वंशानुचरित
5. मन्वन्तर

सर्गश्च प्रतिसर्गश्च
वंशो मन्वन्तराणि च।
वंशानुचरितं चैव
पुराणं पञ्चलक्षणम्।।

अतः विकल्प (C) सही है।

23. शकुन्तला की माता कौन थी?

(A) मेनका (B) शर्मिष्ठा

(C) मदिरा (D) मैना

	पुत्री/पुत्र		माता
(A)	**शकुन्तला**	–	**मेनका**
(B)	पुरु	–	शर्मिष्ठा
(C)	कादम्बरी	–	मदिरा
(D)	पार्वती	–	मैना

अतः विकल्प (A) सही है।

24. स्वप्नवासवदत्तम् का 'स्वप्न अङ्क' कौन-सा है?

(A) द्वितीय (B) तृतीय

(C) चतुर्थ (D) पञ्चम

व्याख्या – 'स्वप्नवासवदत्तम्' महाकविभास की रचना है। इसमें 6 अङ्क हैं। इसका नायक उदयन तथा नायिका वासवदत्ता तथा पद्मावती। इसके पञ्चम अङ्क में राजा स्वप्न में वासवदत्ता का नाम लेते हैं। अतः **पञ्चम अङ्क** 'स्वप्न अङ्क' है। इसलिए विकल्प `D' सही है।

25. 'प्रतिमा' नाटक में कितने अङ्क हैं?

(A) 5 (B) 6

(C) 7 (D) 10

	नाटक		अङ्क
(A)	मालविकाग्निमित्रम्	–	5 अङ्क
(B)	अभिषेकनाटकम्	–	6 अङ्क
(C)	**प्रतिमानाटकम्**	–	**7 अङ्क**
(D)	मालतीमाधवम्	–	10 अङ्क

अतः विकल्प (C) सही है।

26. 'वसन्तक' किस नाटक से सम्बन्धित है?

(A) मालविकाग्निमित्रम् (B) मृच्छकटिकम्

(C) रत्नावली (D) मालतीमाधवम्

	नाटक		विदूषक
(A)	मालविकाग्निमित्रम्	–	गौतम
(B)	मृच्छकटिकम्	–	मैत्रेय
(C)	**रत्नावली**	–	**वसन्तक**
(D)	मालतीमाधवम्	–	विदूषक का अभाव

अतः विकल्प (C) सही है।

27. भास का 'दूतवाक्यम्' किस पर आधारित है?

(A) रामायण पर (B) महाभारत पर

(C) ललितविस्तार पर (D) कविकल्पनाप्रसूत

	ग्रन्थ		उपजीव्य
(A)	महावीरचरितम्	–	वाल्मीकिरामायण
(B)	**दूतवाक्यम्**	–	**महाभारत**
(C)	बुद्धचरितम्	–	ललितविस्तार
(D)	मालतीमाधवम्	–	कविकल्पित

अतः विकल्प (B) सही है।

28. माहेश्वर सूत्रों में 'ह्' व्यञ्जन कितनी बार प्रयुक्त हुआ है?

(A) 15 (B) 2

(C) 14 (D) 8

व्याख्या – माहेश्वर सूत्र 14 हैं – जिसके 5 वें सूत्र हयवरट् में पहली बार 'ह' प्रयुक्त है और 14वें सूत्र 'हल्' में दूसरी बार 'ह' प्रयुक्त है। अतः माहेश्वर सूत्र में 'ह' **दो बार प्रयुक्त है।** अतः विकल्प `B' सही है।

22 (C) 23. (A) 24. (D) 25. (C) 26. (C) 27. (B) 28. (B)

29. 'कादम्बरी' में चन्द्रापीड किस राज्य का युवराज है?

(A) कौशाम्बी **(B) धारानगरी**

(C) सतारा **(D) उज्जयिनी**

	राजधानी		युवराज/राजा
(A)	कौशाम्बी	–	उदयन
(B)	धारानगरी	–	भोजराज
(C)	सतारा	–	शिवाजी
(D)	**उज्जयिनी**	–	**चन्द्रापीड**

अतः विकल्प (D) सही है।

30. दिवम् 'दिव्' शब्द का किस विभक्ति का रूप है?

(A) प्रथमा **(B) द्वितीया**

(C) तृतीया **(D) चतुर्थी**

व्याख्या –

(A) दिव् (आकाश, स्वर्ग) वकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द का रूप प्रथमा में – ''द्यौः, दिवौ, दिवः'' बनता है।

(B) **द्वितीया में** – ''दिवम्, दिवौ, दिवः'' बनता है।

(C) तृतीया में – ''दिवा, द्युभ्याम्, द्युभिः'' बनता है।

(D) चतुर्थी में – ''दिवे, द्युभ्याम्, द्युभ्यः'' बनता है।

अतः विकल्प (B) सही है।

31. 'युवन्' शब्द का षष्ठीविभक्ति एकवचन का रूप है–

(A) यूनः **(B) यूनि**

(C) यूनोः **(D) यूनाम्**

व्याख्या – * 'युवन्' नकारान्त पुंलिङ्ग का रूप षष्ठी में – ''**यूनः**, यूनोः, यूनाम्'' बनता है। अतः विकल्प `A' सही है।

* सप्तमी में – ''यूनि, यूनोः, युवसु'' बनता है।

32. ''अस्मद्' शब्द का चतुर्थी विभक्ति बहुवचन का रूप होगा?

(A) मयि **(B) अस्मभ्यम्**

(C) अस्माकम् **(D) अस्मत्**

व्याख्या –

(A) अस्मद् शब्द का सप्तमी में – ''मयि, आवयोः, अस्मासु''

(B) चतुर्थीविभक्ति में – ''मह्यम्, आवाभ्याम्, **अस्मभ्यम्**''

(C) षष्ठी विभक्ति में – ''मम, आवयोः, अस्माकम्''

(D) पञ्चमी में– ''मत्, आवाभ्याम्, अस्मत्''

अतः विकल्प (B) सही है।

33. 'विद्वस्' शब्द का सप्तमी बहुवचन का रूप है?

(A) विद्वत्सु **(B) विदुषाम्**

(C) विदुषोः **(D) विदुषि**

व्याख्या – * 'विद्वस्' (सकारान्त) पुंलिङ्ग का सप्तमी में – ''विदुषि, विदुषोः, **विद्वत्सु**'' रूप बनता है।

* षष्ठीविभक्ति में– ''विदुषः, विदुषोः, विदुषाम्'' रूप बनता है।

अतः विकल्प (A) सही है।

34. 'अदस्' शब्द का नपुंसकलिङ्ग द्वितीया बहुवचन का रूप होगा?

(A) अमू **(B) अमूनि**

(C) अमून् **(D) अमू**

व्याख्या – * अदस् (वह) नपुंसकलिङ्ग द्वितीया में – 'अदः, अमू, अमूनि रूप बनता है।

* पुंलिङ्ग, द्वितीया विभक्ति में – 'अमुम्, अमू, अमून्' रूप बनता है। अतः विकल्प `B' सही है।

35. 'गुणिने' किस विभक्ति का रूप है?

(A) तृतीया **(B) द्वितीया**

(C) पञ्चमी **(D) चतुर्थी**

व्याख्या – * 'गुणिन्' (नकारान्त, पुंलिङ्ग) शब्द का तृतीया विभक्ति में–गुणिना, गुणिभ्याम्, गुणिभिः * द्वितीयाविभक्ति–गुणिनम्, गुणिनौ, गुणिनः * चतुर्थीविभक्ति–**गुणिने,** गुणिभ्याम्, गुणिभ्यः * पञ्चमी विभक्ति में–गुणिनः, गुणिभ्याम्, गुणिभ्यः।

36. 'हन्' धातु का रूप लोट्लकार मध्यमपुरुष एकवचन में होगा?

(A) हंसि **(B) जहि**

(C) हतः **(D) हन्तु**

व्याख्या – * 'हन्' (मारना) धातु लोट्लकार मध्यमपुरुष में– ''**जहि,** हतम्, हत'' रूप बनता है।

* लट्लकार म. पु. में – हंसि, हथः, हथ।

* लट्लकार प्र. पु. में – हन्ति, हतः, घ्नन्ति।

* लोट्लकार प्र. पु. में – हन्तु, हताम्, घ्नन्तु।

अतः विकल्प (B) सही है।

29. (D) 30. (B) 31. (A) 32. (B) 33. (A) 34. (B) 35. (D) 36. (B)

37. व्यञ्जन वर्ण की सही मात्रा है?

(A) एकमात्रा (B) द्विमात्रा
(C) त्रिमात्रा (D) अर्धमात्रा

व्याख्या – एकमात्रो भवेद् ह्रस्वो द्विमात्रोदीर्घ उच्यते।
त्रिमात्रस्तु प्लुतो ज्ञेयो **व्यञ्जनं चार्धमात्रिकम्।**
अर्थात् –
* व्यञ्जन **अर्धमात्रिक** है। यथा – क्, ख्, ग् आदि
* ह्रस्वस्वर एकमात्रिक – अ, इ, उ, ऋ, ऌ।
* दीर्घस्वर द्विमात्रिक – आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ओ, ऐ, औ।
* प्लुतस्वर त्रिमात्रिक – अ ३, उ३ आदि

अतः विकल्प (D) सही है।

38. 'गवेषणा' शब्द का सन्धि-विच्छेद होगा –

(A) गवे + एषणा (B) गो + एषणा
(C) गव + एषा (D) गवि + एषा

व्याख्या –**'गो + एषणा = गवेषणा'** यहाँ "एचोऽयवायावः" (6.1.78) सूत्र से 'ओ' के स्थान पर 'अव्' आदेश होकर 'गवेषणा' सिद्ध होगा। यहाँ अयादिसन्धि है।
अतः विकल्प (B) सही है।

39. `32' का संस्कृत शब्दात्मक रूप होगा?

(A) द्वात्रिंशत् (B) द्वाविंशतिः
(C) द्विचत्वारिंशत् (D) द्विपञ्चाशत्

	संख्या		शब्दात्मक रूप
(A)	**32**	–	**द्वात्रिंशत्**
(B)	22	–	द्वाविंशतिः
(C)	42	–	द्विचत्वारिंशत्
(D)	52	–	द्विपञ्चाशत्

अतः विकल्प (A) सही है।

40. 'रथस्य पश्चात्' इस विग्रहवाक्य का समास होगा?

(A) रथिपत् (B) पथपश्चात्
(C) अनुरथम् (D) पश्चात्रथेन

व्याख्या – अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि - - - - (2/1/6) सूत्र से 'अनु' अव्यय का पश्चात् अर्थ में रथं सुबन्त के साथ अव्ययीभावसमास होकर (रथस्य पश्चात्) 'अनुरथम्' बनेगा।
अतः विकल्प (C) सही है।

41. सुबन्त पद के साथ सुबन्त पद के समास को कहा जाता है?

(A) सुबसुबा (B) सुपुसुपा
(C) सुप्सुपा (D) सुसुपा

व्याख्या – "सह सुपा" (2/1/4) सूत्र से – 'सुबन्तं समर्थेन सह समस्यते' अर्थात् सुबन्त पद का समर्थ सुबन्त पद के साथ समास होता है। जिसे **'सुप्सुपा'** या केवलसमास कहते हैं। यथा– पूर्वं भूतः = भूतपूर्वः। अतः विकल्प (C) सही है।

42. 'कादम्बरी' के रचयिता हैं?

(A) बाणभट्ट (B) सुबन्धु
(C) दण्डी (D) धनपाल

	रचना		रचनाकार
(A)	**कादम्बरी**	–	**बाणभट्ट**
(B)	वासवदत्ता	–	सुबन्धु
(C)	दशकुमारचरितम्	–	दण्डी
(D)	तिलकमञ्जरी	–	धनपाल

अतः विकल्प (A) सही है।

43. 'घि' व्याकरण का एक शब्द है?

(A) आमशब्द (B) विधिशब्द
(C) पारिभाषिकशब्द (D) संज्ञाशब्द

व्याख्या – "शेषो घ्यसखि" (1.4.7) सूत्र से 'घि' संज्ञा का विधान होता है। अतः **'घि' संज्ञाशब्द** है। 'द्वन्द्वे घि' (2/2/32) सूत्रानुसार द्वन्द्वसमास में 'घि' संज्ञक शब्द का प्रथम प्रयोग होता है। विकल्प (D) सही है।

44. 'सीता जाया यस्य सः' एक शब्द में होगा?

(A) सीताजाया (B) सीतापत्नी
(C) सीताजानिः (D) सीतापतिः

व्याख्या –**"जायायाः निङ्"** (5/4/134) सूत्र से बहुव्रीहि समास में यदि 'जाया' शब्द आये तो तदन्त को निङ् समासान्त आदेश होता है, 'निङ्' के 'ङ्' की इत्संज्ञा होती है।
(i) सीता जाया यस्य सः = **सीताजानिः**
(ii) युवतिः जाया यस्य सः = युवजानिः
(iii) इसीप्रकार भूजानिः, महीजानिः आदि भी बनेंगे।

37. (D) 38. (B) 39. (A) 40. (C) 41. (C) 42. (A) 43. (D) 44. (C)

45. 'प्रजासु वृत्तिं यमयुङ्क्त वेदितुम्' – यह श्लोकांश कहाँ से उद्धृत है?
(A) किरातार्जुनीयम् से
(B) प्रतिमानाटकम् से
(C) मालविकाग्निमित्रम् से
(D) शिशुपालवधम् से

व्याख्या – 'प्रजासु वृत्तिं यमयुङ्क्त वेदितुम्' (**किरात. 1/1**) अर्थात् प्रजाओं के व्यवहार को जानने के लिए युधिष्ठिर ने जिसको (वनेचर) नियुक्त किया था, वह द्वैतवन में युधिष्ठिर के पास लौट आया। अतः विकल्प (A) सही है।

46. 'वनेचर' शब्द का संस्कृत प्रतिशब्द होगा?
(A) ब्रह्मचारी **(B) गुप्तचर**
(C) वर्णिलिङ्गी **(D) दूत**

व्याख्या – वने चरतीति वनेचरः (वन में विचरण करने वाला) किरातार्जुनीयम् में 'वनेचर' शब्द **गुप्तचर** के लिए प्रयुक्त है। अतः विकल्प (B) सही है।

47. 'वैराग्यशतकम्' किस प्रकार की रचना है?
(A) ऐतिहासिक **(B) महाकाव्य**
(C) खण्डकाव्य **(D) व्याकरणग्रन्थ**

	ग्रन्थ		**विधा**
(A)	शिवराजविजयम्	–	ऐतिहासिक उपन्यास
(B)	शिशुपालवधम्	–	महाकाव्य
(C)	**वैराग्यशतकम्**	–	**खण्डकाव्य**
(D)	महाभाष्यम्	–	व्याकरणग्रन्थ

अतः विकल्प (C) सही है।

48. 'शतकत्रय' के रचयिता हैं?
(A) भर्तृहरि **(B) भट्टि**
(C) मयूरभट्ट **(D) भोज**

व्याख्या –
(A) **भर्तृहरि** शतकत्रय के रचयिता हैं।
शतकत्रय के अन्तर्गत –
1. नीतिशतकम्
2. शृङ्गारशतकम्
3. वैराग्यशतकम्।
(B) भट्टि की रचना रावणवध/भट्टिकाव्य है।
(C) मयूरभट्ट, सूर्यशतकम् के रचयिता हैं।
(D) भोज, रामायणचम्पू के रचनाकार हैं। विकल्प `A' सही

49. 'भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्ताः' यह श्लोकांश किस ग्रन्थ से उद्धृत है?
(A) अमरुशतक से **(B) नीतिशतक से**
(C) मुद्राराक्षस से **(D) वैराग्यशतक से**

व्याख्या – "भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्ताः" –
प्रस्तुत सूक्ति भर्तृहरि के **वैराग्यशतक** से उद्धृत है, जिसमें वे कहते हैं कि – 'भोगों को हम नहीं भोगते बल्कि भोग हमें भोगते हैं।' अतः विकल्प (D) सही है।

50. भर्तृहरि ने विद्याविहीन मानव को क्या कहा?
(A) भूभारभूता **(B) पशु**
(C) दुर्जन **(D) हृदयहीन**

व्याख्या –
* भर्तृहरि कहते हैं, कि – जिनके पास न तो विद्या, न तप, न दान, न ज्ञान, न शील, न गुण और न तो धर्म है वे पृथ्वी पर भुविभारभूता है (नीतिशतकम्)
* विद्या राजसु पूज्यते नहि धनं **विद्याविहीनः पशुः** – अर्थात् विद्या से विहीन मनुष्य पशु है। (नीतिशतकम्/17)

अतः विकल्प (B) सही है।

51. 'शतकत्रय' ग्रन्थ के रचनाकार ने और किस प्रसिद्ध ग्रन्थ की रचना की है?
(A) अष्टाध्यायी **(B) महाभाष्यम्**
(C) वाक्यपदीयम् **(D) सिद्धान्तकौमुदी**

	व्याकरणग्रन्थ		**रचनाकार**
(A)	अष्टाध्यायी	–	पाणिनि
(B)	महाभाष्यम्	–	पतञ्जलि
(C)	**वाक्यपदीयम्**	–	**भर्तृहरि**
(D)	सिद्धान्तकौमुदी	–	भट्टोजिदीक्षित

अतः विकल्प (C) सही है।

45. (A) 46. (B) 47. (C) 48. (A) 49. (D) 50. (B) 51. (C)

52. शकुन्तला-दुष्यन्त के पुत्र का नाम है?
(A) सर्वदमन (भरत) (B) चन्द्रापीड
(C) वैशम्पायन (D) पुरु

	पुत्र		माता-पिता
(A)	**सर्वदमन (भरत)**	–	**शकुन्तला - दुष्यन्त**
(B)	चन्द्रापीड	–	विलासवती - तारापीड
(C)	वैशम्पायन	–	मनोरमा - शुकनास
(D)	पुरु	–	शर्मिष्ठा - ययाति

अतः विकल्प (A) सही है।

53. 'किरातार्जुनीयम्' में अर्जुन को कौन-सा प्रसिद्ध अस्त्र प्राप्त हुआ है?
(A) गाण्डीव (B) पाशुपतास्त्र
(C) अग्निबाण (D) जृम्भकास्त्र

व्याख्या – * किरातार्जुनीयम् के 18 वें सर्ग में अर्जुन को शिव से **'पाशुपत अस्त्र'** की प्राप्ति होती है।
* 'गाण्डीव' अर्जुन के धनुष का नाम है।
* 'अग्निबाण' अग्निदेवता से सम्बन्धित है।
* 'जृम्भकास्त्र' कुश और लव को जन्मजात प्राप्त था।
अतः विकल्प (B) सही है।

54. 'किरातार्जुनीयम्' में किरात है?
(A) गणेश (B) शिव
(C) राहु (D) युधिष्ठिर

व्याख्या – किरातार्जुनीयम् में किरातवेशधारी **भगवान् 'शिव'** हैं। जिनका अर्जुन के साथ इन्द्रकील पर्वत पर घनघोर युद्ध होता है। और बाद में प्रसन्न होकर वह अर्जुन को 'पाशुपत अस्त्र' प्रदान करते हैं। अतः विकल्प (B) सही है।

55. 'कादम्बरी' का शुक पक्षी पूर्वजन्म में कौन था?
(A) शूद्रक (B) वैशम्पायन
(C) पत्रलेखा (D) कपिञ्जल

व्याख्या – बाणभट्ट कृत कादम्बरी में तीन जन्मों की कथा का वर्णन है।
तीन जन्मों के नाम निम्नवत् हैं –

	प्रथम जन्म		द्वितीय जन्म		तृतीय जन्म
(A)	चन्द्रमा	–	चन्द्रापीड	–	शूद्रक
(B)	पुण्डरीक	–	**वैशम्पायन**	–	शुक
(C)	कपिञ्जल	–	इन्द्रायुध	–	कपिञ्जल

अतः विकल्प (B) सही है।

56. 'कादम्बरी' में पार्श्वनायिका कौन है?
(A) पत्रलेखा (B) विलासवती
(C) महाश्वेता (D) कादम्बरी

व्याख्या –
(A) पत्रलेखा, ताम्बूलकरङ्कवाहिनी है।
(B) विलासवती, तारापीड की पत्नी है।
(C) **महाश्वेता,** पार्श्वनायिका (सहनायिका) है।
(D) कादम्बरी, नायिका है।
अतः विकल्प (C) सही है।

57. 'अभिज्ञानाभरणदर्शनेन शापो निवर्तिष्यत इति' – यह उक्ति किसकी है?
(A) कण्व की (B) अनसूया की
(C) दुर्वासा की (D) गौतमी की

व्याख्या –
(A) भगिन्यास्ते मार्गमादेशय – कण्व का कथन।
(B) अतिथीनामिव निवेदितम् – अनसूया का कथन।
(C) 'अभिज्ञानाभरणदर्शनेन शापो निवर्तिष्यत इति'– प्रियंवदा के आग्रह पर **दुर्वासा ऋषि** कहते हैं कि – पहचान (अभिज्ञान) के आभूषण (अँगूठी) को दिखलाने से शकुन्तला का शाप समाप्त हो जायेगा।
(D) वरः खल्वेषः, नाशीः – गौतमी का कथन।
अतः विकल्प (C) सही है।

58. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' नाटक का उत्स (मूल) है?
(A) महाभारत (B) रामायण
(C) श्रीमद्भागवतपुराण (D) कविकल्पित

	ग्रन्थ		उत्स (उपजीव्य)
(A)	**अभिज्ञानशाकुन्तलम्**	–	**महाभारत (आदिपर्व)**
(B)	अभिषेकनाटकम्	–	वाल्मीकिरामायण
(C)	कुमारसम्भवम्	–	श्रीमद्भागवतपुराण
(D)	ऋतुसंहारम्	–	कविकल्पित

अतः विकल्प (A) सही है।

52. (A) 53. (B) 54. (B) 55. (B) 56. (C) 57. (C) 58. (A)

59. 'सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम्' उक्ति है?

(A) कण्व की (B) शकुन्तला की

(C) अनसूया की (D) प्रियंवदा की

व्याख्या –

(A) 'सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम्' – **कण्व** तपोवन के वृक्षों को सम्बोधित करते हुए कहते हैं कि – यह शकुन्तला पति के घर (ससुराल) जा रही है, अतः आप सभी लोग अनुमति दें। (अभिज्ञान. 4/9)

(B) 'लताभगिनीं वनज्योत्स्नां तावदामन्त्रयिष्ये' – शकुन्तला का कथन।

(C) 'न मे उचितेष्वपि निजकरणीयेषु कार्येषु हस्तपादं प्रसरति' – अनसूया का कथन

(D) 'उद्गलितदर्भकवला मृग्यः परित्यक्तनर्तना मयूराः' – प्रियंवदा का कथन

अतः विकल्प (A) सही है।

60. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में सखियों ने शापवृत्तान्त' सर्वप्रथम किसे सुनाया?

(A) कण्व को (B) मेनका को

(C) शकुन्तला को (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या –

* 'अग्निशरणं प्रविष्टस्य शरीरं विना छन्दोमय्या वाण्या' – अर्थात् यज्ञशाला में गये हुए (कण्व को) शरीर रहित छन्दोमयी वाणी के द्वारा विवाहवृत्तान्त बतलाया गया है।
* 'द्वयोरेव नौ मुख एष वृत्तान्तस्तिष्ठतु' अनसूया के इस कथन से ज्ञात होता है कि सखियों ने शापवृत्तान्त किसी को भी नहीं बताया।

अतः विकल्प (D) सही है।

61. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में 'अभिज्ञान' कहाँ पर गिरा था?

(A) प्रभासखण्ड में (B) मानसरोवर में

(C) सरयूनदी में (D) शचीतीर्थ में

व्याख्या – अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक में अभिज्ञान (अँगूठी) शक्रावतार प्रदेश के शचीतीर्थ में गिरी थी। शचीतीर्थ गङ्गा नदी के किनारे अवस्थित है। अतः विकल्प (D) सही है।

62. रामचन्द्र 'छायासीता' को क्यों नहीं देख पाये?

(A) दुर्वासा के अभिशाप के कारण

(B) गोदावरी के आशीर्वाद के कारण

(C) भागीरथी के अभिशाप के कारण

(D) भागीरथी के आशीर्वाद के कारण

व्याख्या – उत्तररामचरितम् के तृतीय अङ्क में **भागीरथी के आशीर्वाद** के कारण सीता को राम नहीं देख पाते हैं, किन्तु सीता राम को देखतीं हैं। सीता को राम स्पर्श से पहचानते हैं। अतः विकल्प (D) सही है।

63. 'उत्तररामचरितम्' नाटक का मुख्यरस है?

(A) करुणरस (B) शृङ्गार रस

(C) वीररस (D) विप्रलम्भशृङ्गार

	ग्रन्थ		**मुख्य रस**
(A)	**उत्तररामचरितम्**	–	**करुणरस**
(B)	कुमारसम्भवम्	–	शृङ्गाररस
(C)	मुद्राराक्षसम्	–	वीररस
(D)	मेघदूतम्	–	विप्रलम्भ शृङ्गार

अतः विकल्प (A) सही है।

64. उत्तररामचरित की अङ्कसंख्या है?

(A) 4 (B) 5

(C) 6 (D) 7

	नाटक		**अङ्क**
(A)	रत्नावली	–	4 अङ्क
(B)	विक्रमोर्वशीयम्	–	5 अङ्क
(C)	स्वप्नवासवदत्तम्	–	6 अङ्क
(D)	**उत्तररामचरितम्**	–	**7 अङ्क**

अतः विकल्प (D) सही है।

65. 'अविदितगतयामा रात्रिरेव व्यरंसीत्' – उत्तररामचरित में यह किसकी उक्ति है?

(A) तमसा की (B) मुरला की

(C) राम की (D) सीता की

व्याख्या –

(A) तमसा का कथन– ''परिपाण्डुदुर्बलकपोलसुन्दरम्'' – उत्तररामचरितम् 3/4

(B) मुरला का कथन– ''शरदिज इव घर्मः केतकीगर्भपत्रम्'' – उत्तररामचरितम्-3/5

(C) ''अशिथिलपरिरम्भव्यापृतैकैकदोष्णोः अविदितगतयामा रात्रिरेव व्यरंसीत्'' –

59. (A) 60. (D) 61. (D) 62. (D) 63. (A) 64. (D) 65. (C)

प्रस्तुत पंक्ति में **राम कहते हैं** कि गाढ़ आलिङ्गन में व्यस्त एक-एक बाहु वाले हम दोनों की रात्रि, विगत प्रहरों के ज्ञान के बिना ही, बीत गई। (उत्तररामचरितम् 1/27)

(D) 'कियच्चिरं वा मेघान्तरेण पूर्णचन्द्रदर्शनम्' – सीता कहती हैं कि – मेघ के व्यवधान के कारण पूर्ण चन्द्रमा का दर्शन कितनी देर और हो सकता है अर्थात् अधिक देर तक राम का दर्शन नहीं हो सकता

अतः विकल्प (C) सही है।

66. छायाङ्क का मुख्य कथानक है?
(A) राम-सीता का पुनर्मिलन
(B) राम-तमसा का मिलन
(C) राम-सीता का प्रथममिलन
(D) तमसा-वासन्ती का मिलन

व्याख्या – उत्तररामचरितम् तृतीय अङ्क (छायाङ्क) का मुख्य कथानक राम-सीता का पुनर्मिलन है। राम-सीता का पुनर्मिलन तृतीय अङ्क में स्पर्शजन्य है। सीता छाया के रूप में विद्यमान हैं, जिसे तमसा के अलावा कोई नहीं देख सकता, जबकि सीता सबको देख पा रहीं हैं। सीता के साथ तमसा, जबकि राम के साथ वासन्ती उपस्थित है। अतः विकल्प (A) सही है।

67. 'मेघदूतम्' में शाप कितने वर्ष का था?
(A) एक वर्ष **(B) दो वर्ष**
(C) चार मास **(D) आठ मास**

व्याख्या – * 'शापेनास्तङ्गमितमहिमा वर्षभोग्येण भर्तुः' (पूर्वमेघ/1) अर्थात् **एक वर्ष तक** भोगे जाने वाले स्वामी कुबेर के शाप से विनष्ट महिमा वाला यक्ष रामगिरि पर्वत में निवास करता है। शाप के आठ माह बीत गये हैं, केवल चार माह शेष हैं– ''शेषान्मासान्गमय चतुरो लोचने मीलयित्वा'' (उत्तरमेघ-50)

अतः विकल्प (A) सही है।

68. 'मेघदूतम्' में अभिशप्त यक्ष कहाँ निवास कर रहा था?
(A) आम्रकूट में **(B) कैलाश में**
(C) रामगिरि में **(D) मानसरोवर में**

व्याख्या –

(A) आम्रकूट, मेघ के मार्ग का प्रथमपर्वत है।

(B) कैलाशपर्वत पर अलकापुरी नगरी अवस्थित है।

(C) 'स्निग्धच्छायातरुषु वसतिं रामगिर्याश्रमेषु' अर्थात् घनी छाया से युक्त **रामगिरि** के आश्रमों में वह यक्ष निवास करने लगा। (पूर्वमेघ /1) अतः विकल्प (C) सही है।

(D) राजहंस मानसरोवर जाने को उत्सुक हैं।

69. 'कण्ठाश्लेषप्रणयिनि जने किं पुनर्दूरसंस्थे' – यहाँ 'जन' शब्द से किसकी ओर संकेत है?
(A) यक्षिणी **(B) कुबेर**
(C) मेघ **(D) इनमें से कोई नहीं**

व्याख्या – कण्ठ के आलिङ्गन से प्रेम करने वाली मेरी प्रिया रूप जन के दूर होने पर क्या कहा जाय। इस पद में सप्तमी के कारण ऐसे व्यक्ति की ओर संकेत कर रहा है, जो उस यक्ष के कण्ठालिङ्गन का इच्छुक हो और वह व्यक्ति केवल उसकी प्रिया ही हो सकती है जो उससे दूर स्थित है। 'जने' से अर्थ यहाँ पर प्रिया अर्थात् यक्षिणी है। अतः विकल्प (A) सही है।

स्रोत- (i) मेघदूतम् (पूर्वमेघ-3) आर0बी0 शास्त्री
(ii) मेघदूतम्- विजेन्द्र शर्मा, पेज-07

70. 'मेघदूतम्' में चेतन और अचेतन में कौन भेद नहीं कर पाते हैं?
(A) विलासी **(B) भोगी**
(C) कामार्त **(D) संन्यासी**

व्याख्या – 'कामार्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु' – अर्थात् कामपीड़ित लोग जड़ और चेतन के विषय में स्वभावतः दीन हो जाते हैं। (पूर्वमेघ/5) अतः विकल्प (C) सही है।

71. ''यक्षश्चक्रे जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु'' इस श्लोकांश में 'जनकतनया' कौन है?
(A) यक्षिणी **(B) सीता**
(C) गङ्गा **(D) इनमें से कोई नहीं**

व्याख्या – प्रस्तुत श्लोकांश में 'जनकतनया' मिथिलानरेश जनक की पुत्री सीता के लिए आया है। (पूर्वमेघ/1)

72. 'मेघदूतम्' में 'दिङ्नाग' कौन हैं?
(A) मीमांसक **(B) नैयायिक**
(C) बौद्ध **(D) वेदान्ती**

व्याख्या – 'दिङ्नागानां पथि परिहरन् स्थूलहस्तावलेपान्' (पूर्वमेघ/14) प्रस्तुतपंक्ति में दिङ्नाग शब्द का प्रयोग दिशाओं के आठ हाथियों के लिए प्रयुक्त है। कुछ विद्वान् इस श्लोक का एक अर्थ बौद्धों के पक्ष में भी करते हैं। यहाँ 'दिङ्नाग' शब्द से **बौद्धदार्शनिक दिङ्नाग** अर्थ लेते हैं।

अतः विकल्प (C) सही है।

66. (A) 67. (A) 68. (C) 69. (A) 70. (C) 71. (B) 72. (C)

73. 'अस्' धातु का लट्लकार उत्तमपुरुष बहुवचन में रूप होगा?

(A) अस्ति (B) स्तः
(C) सन्ति (D) स्मः

व्याख्या – * 'अस्' धातु का लट्लकार प्रथमपुरुष में "अस्ति, स्तः, सन्ति" रूप बनता है।

* लट्लकार उत्तमपुरुष में–अस्मि, स्वः, **स्मः** रूप बनता है। अतः विकल्प (D) सही है।

74. 'गम्' धातु का लङ्लकार उत्तमपुरुष बहुवचन में रूप बनता है?

(A) अगच्छम् (B) अगच्छाव
(C) अगच्छाम (D) अगच्छः

व्याख्या – * गम् धातु लङ्लकार उत्तमपुरुष में – "अगच्छम् अगच्छाव, **अगच्छाम**" रूप बनता है।

* मध्यमपुरुष में – "अगच्छः, अगच्छतम्, अगच्छत" रूप बनता है। अतः विकल्प (C) सही है।

75. 'सन्धि' का तात्पर्य है?

(A) श्रेष्ठ पदीयता (B) पदार्थसम्बन्ध
(C) परः सन्निकर्षः संहिता (D) वाक्यार्थ सम्बन्ध

व्याख्या – परः सन्निकर्षः संहिता (1/4/109) सूत्रानुसार वर्णों के अत्यधिक सामीप्य को संहिता कहते हैं, जैसे – 'सुधी + उपास्यः' में इकार और उकार में अत्यधिक सामीप्य है, इसलिए दोनों के सामीप्य को संहिता (सन्धि) कहेंगे। अतः विकल्प (C) सही है।

76. 'नयन' शब्द का सन्धिविच्छेद होगा?

(A) नौ + आय (B) नै + अन
(C) नो + अन (D) ने + अन

व्याख्या – एचोऽयवायावः (6/1/78) सूत्र से एच् के बाद अच् आने पर एच् के स्थान पर क्रमशः अय्, अव्, आय्, आव् हो जाता है। यथा–ने + अन = नयन (ए + अ = अय्) अतः विकल्प (D) सही है।

77. निम्नलिखित में से अव्ययीभावसमास हैं–

(A) पञ्चनरम् (B) पञ्चनदम्
(C) पञ्चाननम् (D) पञ्चगवम्

व्याख्या –

(A) 'पञ्चानां नराणां समाहारः = पञ्चनरम्' में "तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च" (2.1.51) सूत्र से द्विगुसमास होगा।

(B) **'पञ्चानां नदीनां समाहारः=पञ्चनदम्'** में "नदीभिश्च" (2.1.20) सूत्र से अव्ययीभाव समास हुआ।

(C) * 'पञ्चानाम् आननानां समाहारः = पञ्चाननम्' में द्विगुसमास।

* पञ्च आननानि यस्य सः = पञ्चाननः, (शिवः) में 'अनेकमन्यपदार्थे" सूत्र से दशाननः, षडाननः गजाननः आदि में बहुव्रीहि भी हो सकता है।

(C) 'पञ्चानां गवां समाहारः=पञ्चगवम्' में "तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च" (2.1.51) तथा "संख्यापूर्वो द्विगुः" सूत्र से द्विगुसमास होगा। अतः विकल्प `B' सही है।

78. 'अति+इव = अतीव' में सन्धि का नियम है?

(A) इको यणचि (B) अकः सवर्णे दीर्घः
(C) वृद्धिरादैच् (D) सर्वत्र विभाषा गोः

व्याख्या –

(A) 'इको यणचि' (6/1/77) सूत्र से इक् के स्थान पर यण् आदेश होता है अच् पर में हो तब
यथा – खलु + एषः = खल्वेषः

(B) **'अकः सवर्णे दीर्घः'** (6/1/101) सूत्र से अक् (अ, इ, उ, ऋ, ऌ) के पश्चात् कोई सवर्ण स्वर हो तो दोनों के स्थान पर दीर्घ एकादेश होता है।
यथा – अति + इव = अतीव

(C) 'वृद्धिरादैच्' (1/1/1) सूत्र "आ, ऐ, औ," की वृद्धिसंज्ञा करता है।

(D) 'सर्वत्र विभाषा गोः' (6/1/122) सूत्र से – गो + अग्रम् = गो अग्रम् होगा। अतः विकल्प (B) सही है।

79. 'राज्ञा पूजितः = राजपूजितः' में कौनसा समास है?

(A) तत्पुरुष (B) अव्ययीभाव
(C) द्विगु (D) बहुव्रीहि

व्याख्या –

(A) 'कर्तृ-करणे कृता बहुलम्' (2/1/32) सूत्र से अनुक्त कर्त्ता और करण में आने वाले तृतीयान्त पदों का कृदन्त पद के साथ समास होता है।
यथा–राज्ञा पूजितः=राजपूजितः (तृतीया तत्पुरुषसमास)

(B) 'अव्ययीभावे चाकाले' (6/3/81) सूत्र से 'सह' को 'स' आदेश होकर "क्षत्राणां सम्पत्तिः = सक्षत्रम्" में अव्ययीभावसमास।

(C) 'पञ्चानां गवां समाहारः=पञ्चगवम्' में द्विगुसमास है।

(D) "अनेकमन्यपदार्थे" (2.2.24) सूत्र से 'उढो रथो येन सः ऊढरथः' में बहुव्रीहिसमास है।
अतः विकल्प (A) सही है।

73. (D) 74. (C) 75. (C) 76. (D) 77. (B) 78. (B) 79. (A)

80. 'ज्ञानाय इदं ज्ञानार्थम्' में समास है?
(A) द्वितीयातत्पुरुष (B) तृतीयातत्पुरुष
(C) चतुर्थीतत्पुरुष (D) पञ्चमीतत्पुरुष

व्याख्या –
(A) ''द्वितीया श्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नैः (2/1/24) सूत्र से पतित अर्थ में – नरकं पतितः = नरकपतितः में द्वितीया तत्पुरुषसमास है।
(B) 'शङ्कुलया खण्डः = शङ्कुलाखण्डः' में तृतीया तत्पुरुषसमास है।
(C) ''चतुर्थी तदर्थार्थ–बलि-हित-सुख–रक्षितैः'' (2/1/36) सूत्र से अर्थ (के लिए) के अर्थ में **'ज्ञानाय इदम् = ज्ञानार्थम्' में चतुर्थी तत्पुरुषसमास** है।
(D) ''पञ्चमी भयेन'' (2/1/37) सूत्र से 'चोराद् भयम् = चोरभयम्' में पञ्चमी तत्पुरुषसमास है।
अतः विकल्प (C) सही है।

81. 'पुनर् + रमते' का सन्धिरूप है?
(A) पुनरमते (B) पुनो रमते
(C) पुनः रमते (D) पुना रमते

व्याख्या – ''रो रि'' सूत्र से पूर्व रेफ का लोप होकर ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः (6/3/111) सूत्र से 'अ' के स्थान पर दीर्घ एकादेश होकर विसर्गसन्धि में **'पुना रमते'** रूप बनता है। अतः विकल्प (D) सही है।

82. यण् प्रत्याहार में होगा?
(A) य, क, व, ल (B) ष, अ, र, ल
(C) य्, व्, र्, ल् (D) य, र, ल, ष

व्याख्या – यण् प्रत्याहार के अन्तर्गत **य्, व्, र्, ल्** वर्ण आते हैं। यह प्रत्याहार दो सूत्रों से बना है– हयवरट् और लण्। अतः विकल्प (C) सही है।

83. यदि 'उपसर्ग' क्रिया से युक्त हो तो उसे कहेंगे?
(A) संज्ञा (B) परिभाषा
(C) गति (D) अधिकार

व्याख्या – ''उपसर्गाः क्रियायोगे'' (1/4/59) सूत्र से जब उपसर्ग क्रिया से युक्त हो तो उसे **गतिसंज्ञक** कहते हैं। यथा– प्रकरोति। अतः विकल्प (C) सही है।

84. 'पाणी च पादौ च' का सामासिक पद होगा?
(A) पाणीपादौ (B) पाणीपादः
(C) पाणिपादौ (D) पाणिपादम्

व्याख्या – ''द्वन्द्वश्च प्राणि-तूर्य-सेनाङ्गानाम्'' (2/4/2) सूत्र से प्राणी के अङ्गवाचक शब्दों से द्वन्द्वसमास सदैव एकवचन में होता है। यथा – पाणी च पादौ च = पाणिपादम्
अतः विकल्प (D) सही है।

85. 'घनश्यामः' में समास है?
(A) षष्ठीतत्पुरुष (B) पञ्चमीतत्पुरुष
(C) उपमान-कर्मधारय (D) द्वन्द्वसमास

व्याख्या –
(A) 'षष्ठी' (2/2/8) सूत्र से राज्ञः पुरुषः = राजपुरुषः में षष्ठी तत्पुरुषसमास है।
(B) ''पञ्चम्याः स्तोकादिभ्यः'' (6/3/2) सूत्र से 'स्तोकात् मुक्तः = स्तोकान्मुक्तः' में पञ्चमी तत्पुरुषसमास है।
(C) ''उपमानानि सामान्यवचनैः'' (2/1/55) सूत्रानुसार उपमान वाचक सुबन्त का साधारण धर्म के वाचक सुबन्त के साथ समास होता है। यथा – **'घन इव श्यामः = घनश्यामः'** में कर्मधारयसमास है।
(D) 'क्षुद्रजन्तवः' (2/4/8) सूत्र से यूका च लिक्षा च = 'यूकालिक्षम्' में द्वन्द्वसमास है।
अतः विकल्प (C) सही है।

86. 'राजहंसः' इस पद का विग्रहवाक्य होगा?
(A) राजा इव हंस (B) हंसानां राजानां
(C) हंस एव राजा स (D) हंसानां राजा

व्याख्या – षष्ठी (2/2/8) सूत्र से षष्ठ्यन्त सुबन्त का समर्थ सुबन्त के साथ समास होता है। यथा – **'हंसानां राजा =राजहंसः'** में षष्ठी तत्पुरुषसमास है।
अतः विकल्प (D) सही है।

87. 'स्पृहेरीप्सितः' सूत्र है?
(A) कर्मकारक का (B) करणकारक का
(C) अपादानकारक का (D) सम्प्रदानकारक का

व्याख्या –
(A) 'अभिनिविशश्च' (1/4/47) सूत्र कर्मकारक का है।
(B) 'हेतौ' (2/3/23) सूत्र करणकारक का है।
(C) 'पराजेरसोढः' (1/4/26) सूत्र अपादानकारक का है।
(D) 'स्पृहेरीप्सितः' (1/4/36) सूत्र से 'स्पृह्' धातु के योग में ईप्सितपदार्थ की **सम्प्रदानसंज्ञा** होती है। यथा –पुष्पेभ्यः स्पृहयति।
अतः विकल्प (D) सही है।

80. (C) 81. (D) 82. (C) 83. (C) 84. (D) 85. (C) 86. (D) 87. (D)

88. 'हेत्वर्थक' अनु शब्द को कहते हैं?
(A) कर्मप्रवचनीय (B) व्यपेक्षा
(C) अतिदेश (D) विभाषा

व्याख्या – * 'अनुर्लक्षणे' (1/4/84) सूत्र से हेत्वर्थक 'अनु' शब्द **कर्मप्रवचनीय** है।
* कर्मप्रवचनीय में द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है।
अतः विकल्प (A) सही है।

89. 'अभिनिविशश्च' सूत्र सम्बन्धित है?
(A) अपादानकारक से (B) करणकारक से
(C) सम्प्रदानकारक से (D) कर्मकारक से

व्याख्या –
(A) 'भुवः प्रभवः' (1/4/31)–अपादानकारक का सूत्र है।
(B) 'साधकतमं करणम्' (1/4/42) – करणकारक का सूत्र है।
(C) 'रुच्यर्थानां प्रीयमाणः' (1/4/33) – सम्प्रदानकारक का सूत्र है।
(D) 'अभिनिविशश्च' (1/4/47) सूत्र से विश् धातु के पूर्व अभि और नि उपसर्ग क्रमशः लगे हों तो क्रिया के आधार की **कर्मसंज्ञा** होती है यथा – सन्मार्गम् अभिनिविशते। अतः यह सूत्र कर्मकारक से सम्बन्धित है। अतः विकल्प (D) सही है।

90. 'वपुषा चतुर्भुजः' वाक्य में वपुषा में किस सूत्र पर आधारित तृतीया है?
(A) इत्थम्भूतलक्षणे (B) हेतौ
(C) येनाङ्गविकारः (D) अपवर्गे तृतीया

व्याख्या –
(A) **'इत्थम्भूतलक्षणे'** (2/3/21) सूत्र से किसी विशेष धर्म को प्राप्त हुए व्यक्ति अथवा वस्तु के लक्षण में तृतीयाविभक्ति होती है। यथा – वपुषा चतुर्भुजः।
(B) 'हेतौ' (2/3/23) सूत्र से – दण्डेन घटः
(C) 'येनाङ्गविकारः' (2/3/20) सूत्र से – अक्ष्णा काणः
(D) 'अपवर्गे तृतीया' (2/3/6) सूत्र से–अह्ना अनुवाकोऽधीतः मासेन व्याकरणम् अधीतवान्।
अतः विकल्प (A) सही है।

91. 'धारेरुत्तमर्णः' सूत्र किस कारक के साथ सम्बन्धित है?
(A) अपादानकारक से
(B) अधिकरणकारक से
(C) सम्प्रदानकारक से
(D) करणकारक से

व्याख्या –
(A) 'वारणार्थानामीप्सितः' (1/4/27) – अपादान से सम्बन्धित है।
(B) 'यस्य च भावेन भावलक्षणम्' (2/3/37) – अधिकरण कारक से सम्बन्धित है।
(C) **'धारेरुत्तमर्णः'** (1/4/35) सूत्र से णिजन्त 'धृ' धातु के योग से उत्तमर्ण (ऋण देने वाले की) की **सम्प्रदानसंज्ञा** होती है यथा – भक्ताय धारयति मोक्षं हरिः।
(D) 'प्रकृत्यादिभ्य उपसंख्यानम्' (वार्तिक) – करणकारक से सम्बन्धित है।
अतः विकल्प (C) सही है।

92. 'दिवः कर्म च' यह सूत्र वैकल्पिक रूप से किस कारक से सम्बन्धित हो सकता है?
(A) कर्मकारक से
(B) सम्प्रदानकारक से
(C) अधिकरणकारक से
(D) अपादानकारक से

व्याख्या –
(A) **'दिवः कर्म च'** (1/4/43) इस सूत्र से दिव् धातु के साधकतम कारक की विकल्प से **कर्मसंज्ञा** होती है तथा पक्ष में तृतीयाविभक्ति होती है। यथा – अक्षैः अक्षान् वा दीव्यति।
(B) ''तादर्थ्ये चतुर्थी वाच्या'' (वार्तिक) – सम्प्रदानकारक से सम्बन्धित है।
(C) 'यतश्चनिर्धारणम्' (2/3/41) – अधिकरणकारक से सम्बन्धित है।
(D) 'भीत्रार्थानां भयहेतुः' (1/4/25) – अपादानकारक से सम्बन्धित है।
अतः विकल्प (A) सही है।

88. (A) 89. (D) 90. (A) 91. (C) 92. (A)

93. 'शिवराजविजयम्' किस प्रकार का काव्य है?
(A) ऐतिहासिककाव्य (B) कथाकाव्य
(C) पद्यकाव्य (D) चम्पूकाव्य

	काव्य		विधा
(A)	**शिवराजविजयम्**	–	**ऐतिहासिक उपन्यास**
(B)	कादम्बरी	–	कथाकाव्य
(C)	नीतिशतकम्	–	पद्यकाव्य (मुक्तककाव्य)
(D)	नलचम्पू	–	चम्पूकाव्य

अतः विकल्प (A) सही है।

94. 'शिवराजविजयम्' में शिवाजी के अतिरिक्त और किसका चरित्र चित्रण है?
(A) भैरोसिंह (B) गौरसिंह
(C) गुजरालसिंह (D) मोहनसिंह

व्याख्या – 'शिवराजविजयम्' में शिवाजी के अतिरिक्त **गौर सिंह** का भी चरित्र-चित्रण है।
अतः विकल्प (B) सही है।

95. 'शिवराजविजयम्' में कहाँ की घटना का वर्णन है?
(A) महाराष्ट्र (B) राजस्थान
(C) दिल्ली (D) बिहार

व्याख्या – शिवराजविजयम् में **महाराष्ट्र की घटना** का वर्णन है। अतः विकल्प (A) सही है।

96. 'शिवराजविजयम्' में किस तरह की चेतना का प्रकाश है?
(A) राष्ट्रीय (B) प्रादेशिक
(C) दैशिक (D) कालिक

व्याख्या – अम्बिकादत्तव्यास कृत शिवराजविजयम् में **राष्ट्रीय चेतना का प्रकाश** है।
अतः विकल्प (A) सही है।

97. 'शिवराजविजयम्' के रचयिता कहाँ के प्राध्यापक थे?
(A) कानपुर (B) पटना
(C) जयपुर (D) दिल्ली

व्याख्या – 'शिवराजविजयम्' के रचयिता 'अम्बिकादत्तव्यास' **पटना** के संस्कृत कालेज में प्राध्यापक थे।
अतः विकल्प (B) सही है।

98. 'भवभूतिर्विशिष्यते' यह उक्ति किस नाटक के बारे में है?
(A) महावीरचरितम् (B) मालतीमाधवम्
(C) उत्तररामचरितम् (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या – 'उत्तरे रामचरिते भवभूतिर्विशिष्यते' – विक्रमार्क के इस प्रशस्ति से ज्ञात होता है कि **'भवभूतिर्विशिष्यते' उत्तररामचरित नाटक के बारे में कहा गया है।** महावीरचरितम् और मालतीमाधवम् नाटक भी भवभूति की कृतियाँ हैं। अतः विकल्प (C) सही है।

99. 'उत्तररामचरितम्' के तृतीय अङ्क में किस नदी का उल्लेख है?
(A) कावेरी (B) कृष्णा
(C) गोदावरी (D) यमुना

व्याख्या–'उत्तररामचरितम्' के तृतीय अङ्क में **गोदावरी नदी** का उल्लेख है। मुरला– ''सखि तमसे, प्रेषितास्मि भगवतोऽगस्त्यस्य पत्न्या लोपामुद्रया सरिद्वरां गोदावरीमभिधातुम्।'' (उत्तररामचरितम्-अङ्क-3) अतः विकल्प (C) सही है।

100. 'करुणस्य मूर्तिरिव' यह उक्ति किसके बारे में है?
(A) तमसा (B) शम्बूक
(C) भागीरथी (D) सीता

व्याख्या – 'करुणस्य मूर्तिरथवा शरीरिणी' – अर्थात् सीता करुणरस की साक्षात् मूर्ति अथवा शरीरधारिणी हैं, यह तमसा का कथन है। (उत्तररामचरि 3/4)
अतः विकल्प (D) सही है।

101. 'स्वाराज्यम्' का सन्धि विच्छेद है?
(A) स + राज्यम् (B) स्वर् + राज्यम्
(C) सु + राज्यम् (D) सो + राज्यम्

व्याख्या – **'स्वर् + राज्यम्'** यहाँ 'स्वर्' इस अव्ययपद के रेफ का ''रो रि'' (8/3/14) सूत्र से लोप करके ''ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः'' (6.3.111) सूत्र से पूर्व अण् अर्थात् 'व' में विद्यमान अकार को दीर्घ होकर 'स्वाराज्यम्' बना।
अतः विकल्प (B) सही है।

93. (A) 94. (B) 95. (A) 96. (A) 97. (B) 98. (C) 99. (C) 100. (D) 101. (B)

102. 'मतैक्यम्' में निम्न सूत्र से सन्धि कार्य होता है?
(A) अदेङ्गुणः (B) वृद्धिरादैच्
(C) वृद्धिरेचि (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या –
(A) 'अदेङ्गुणः' (1/1/2) सूत्र से 'अ, ए, ओ' की गुणसंज्ञा होती है।
(B) 'वृद्धिरादैच्' (1/1/1) सूत्र से 'आ, ऐ, औ' की वृद्धि संज्ञा होती है।
(C) 'वृद्धिरेचि' (6/1/88) सूत्र से **''मत + ऐक्यम् = मतैक्यम्''** में **वृद्धिसन्धि** होती है।
अतः विकल्प (C) सही है।

103. 'प्रत्यक्षम्' शब्द में समास है?
(A) तत्पुरुष (B) कर्मधारय
(C) अव्ययीभाव (D) द्विगुसमास

	शब्द		समास
(A)	ग्रामगतः	–	द्वितीयातत्पुरुष
(B)	पीताम्बरम्	–	कर्मधारय
(C)	**प्रत्यक्षम्**	–	**अव्ययीभाव**
(D)	चतुर्युगम्	–	द्विगुसमास

अतः विकल्प (C) सही है।

104. ''शिखया परिव्राजकः'' यहाँ किस कारक में तृतीया विभक्ति है?
(A) कर्मणि (B) कर्तरि
(C) संज्ञायाम् (D) करणे

व्याख्या – 'इत्थम्भूतलक्षणे' (2/3/21) सूत्र से 'शिखया' में तृतीयाविभक्ति का विधान **करणकारक** से हुआ है। यथा – (i) शिखया परिव्राजकः। (ii) जटाभिस्तापसः
अतः विकल्प (D) सही है।

105. 'अस्मद्' शब्द का द्वितीया बहुवचन का विकल्प रूप होगा?
(A) मा (B) नौ
(C) नः (D) माम्

व्याख्या – 'अस्मद्' शब्द का द्वितीया विभक्ति में ''माम् , आवाम् , अस्मान्'' रूप बनता है।
विकल्प में – ''मा, नौ, **नः**'' रूप भी बनता है।
अतः विकल्प (C) सही है।

106. `25' का संस्कृत शब्दात्मक रूप होगा?
(A) पञ्चविंशतिः (B) पञ्चपञ्चाशत्
(C) पञ्चदश (D) एकोनपञ्चाशत्

	संख्या		संस्कृत शब्दात्मक रूप
(A)	**25**	–	**पञ्चविंशतिः**
(B)	55	–	पञ्चपञ्चाशत्
(C)	15	–	पञ्चदश
(D)	49	–	एकोनपञ्चाशत्

अतः विकल्प (A) सही है।

107. 'अस्' धातु का लोट्लकार मध्यमपुरुष एकवचन में रूप होगा?
(A) अस्तु (B) स्ताम्
(C) सन्तु (D) एधि

व्याख्या –
* 'अस्' धातु लोट्लकार प्रथमपुरुष में ''अस्तु, स्ताम्, सन्तु'' रूप चलता है।
* मध्यमपुरुष में – **''एधि**, स्तम्, स्त'' रूप चलता है।
अतः विकल्प (D) सही है।

108. 'हन्' धातु लङ्लकार उत्तमपुरुष बहुवचन में रूप होगा?
(A) अहनम् (B) अघ्नन्
(C) अहन्म (D) जहि

व्याख्या –
* 'हन्' धातु लङ्लकार उ. पु. में – ''अहनम्, अहन्व, **अहन्म''** रूप बनता है।
* 'हन्' धातु लोट्लकार म. पु. में – ''जहि, हतम्, हत'' रूप बनता है।
* लङ्लकार प्रथमपुरुष में– ''अहन्, अहताम्, अघ्नन्''
अतः विकल्प (C) सही है।

109. 'त्वं चन्द्रं पश्य' इसका कर्मवाच्य में रूप होगा?
(A) तेन चन्द्रः दृष्टः। (B) त्वयि चन्द्रं पश्यति।
(C) त्वया चन्द्रः पश्यामि। (D) त्वया चन्द्रः दृश्यताम्।

व्याख्या – 'त्वं चन्द्रं पश्य' – कर्मवाच्य में कर्त्ता में तृतीया, कर्म में प्रथमा तथा क्रिया कर्म के अनुसार प्रयुक्त होती है। इसलिए – **''त्वया चन्द्रः दृश्यताम्''** होगा।
अतः विकल्प (D) सही है।

102. (C) 103. (C) 104. (D) 105. (C) 106. (A) 107. (D) 108. (C) 109. (D)

110. ''सहसा विदधीत न क्रियाम्'' इस वाक्य का हिन्दी में अनुवाद होगा?
(A) हठपूर्वक कार्य करें (B) हठपूर्वक कार्य न करें
(C) सहसा कार्य करें (D) सहसा कार्य न करें

व्याख्या – 'सहसा विदधीत न क्रियाम्' – यह भारवि की उक्ति है, जिसका अर्थ है–**अचानक (सहसा) कार्य न करें।** अतः विकल्प (D) सही है।

111. 'मैं यश नही चाहता' इसका संस्कृत अनुवाद होगा?
(A) अहं यशं न इच्छति (B) अहं यशं इच्छामि
(C) न अहं यशं लिप्समि (D) अहं यशः न इच्छामि

व्याख्या – * मैं यश नहीं चाहता – अहं यशः न इच्छामि। यहाँ 'यशस्' (नपु0) शब्द का द्वितीया एकवचन में रूप बनेगा–'यशः' * 'अहम्' उत्तमपुरुष का कर्ता है, अतः 'इच्छामि' लट्लकार उ0पु0 एकवचन की क्रिया का प्रयोग है।
अतः विकल्प (D) सही है।

112. 'कादम्बरी' में मन्त्री शुकनास ने किसे उपदेश दिया है?
(A) तारापीड को (B) चन्द्रापीड को
(C) पुण्डरीक को (D) वैशम्पायन को

व्याख्या – * शुकनास, तारापीड का प्रधान अमात्य था।
* तारापीड के पुत्र '**चन्द्रापीड**' को राज्याभिषेक के समय शुकनास ने उपदेश दिया। अतः विकल्प (B) सही है।

113. 'शूद्रक' की राजसभा में शुकपक्षी को कौन लाया था?
(A) प्रतीहारी (B) पत्रलेखा
(C) पुण्डरीक (D) मातङ्गिनी (चाण्डालकन्या)

व्याख्या – * शूद्रक की राजसभा में शुकपक्षी को **मातङ्गिनी (चाण्डालकन्या)** लेकर आती है।
* प्रतीहारी, शूद्रक के राजदरबार की द्वाररक्षिका है।
* पत्रलेखा, चन्द्रापीड की ताम्बूलकरङ्कवाहिनी है।
* पुण्डरीक, चन्द्रापीड का मित्र है।
अतः विकल्प (D) सही है।

114. शिवराजविजयम् के रचयिता को किस सम्मान से विभूषित किया गया था?
(A) घटिकाशतक (B) दीपशिखा
(C) वाग्देवतावतार (D) श्रीकण्ठपदलाञ्छन

	कवि		**उपाधि**
(A)	**अम्बिकादत्तव्यास**	–	**घटिकाशतक/शतावधान**
(B)	कालिदास	–	दीपशिखा
(C)	मम्मट	–	वाग्देवतावतार
(D)	भवभूति	–	श्रीकण्ठपदलाञ्छन

अतः विकल्प (A) सही है।

115. शिवराजविजयम् में निःश्वास संख्या कितनी है?
(A) 12 (B) 8
(C) 3 (D) 5

व्याख्या – शिवराजविजयम् में तीन विराम एवं **बारह निःश्वास** हैं। अतः विकल्प (A) सही है।

116. 'किरातार्जुनीयम्' में दुर्योधन की शासन व्यवस्था जानने के लिए किसे भेजा गया था?
(A) भीम को (B) अर्जुन को
(C) सहदेव को (D) वनेचर को

व्याख्या – भारवि कृत 'किरातार्जुनीयम्' में दुर्योधन की शासन व्यवस्था को जानने के लिए युधिष्ठिर ने **वनेचर को** नियुक्त किया था। ''श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीं''.... 'युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचरः' (किरात0 1/1)
अतः विकल्प (D) सही है।

117. ''नारिकेलफलसम्मितं वचः'' किस कवि के बारे में कहा गया है?
(A) कालिदास (B) भारवि
(C) भवभूति (D) बाणभट्ट

व्याख्या –
(A) 'कविकुलगुरुः कालिदासो विलासः' कालिदास के बारे में जयदेव की प्रशस्ति है।
(B) **'नारिकेलफलसम्मितं वचः' – भारवि के विषय** में मल्लिनाथ की प्रशस्ति है।
(C) 'साम्बा पुनातु भवभूतिपवित्रमूर्तिः'–भवभूति
(D) 'वश्यवाणी कविचक्रवर्ती' – बाणभट्ट के विषय में हर्षवर्धन की प्रशस्ति है।
अतः विकल्प (B) सही है।

118. 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः'–यह उक्ति किसकी है?
(A) वनेचर की (B) द्रौपदी की
(C) युधिष्ठिर की (D) अर्जुन की

व्याख्या –
(A) 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः' – **वनेचर** कहता है कि–हितकारी और प्रियवाणी दुर्लभ होती है। (किरात. 1/4)
(B) 'भवत्यधिक्षेप इवानुशासनम्' – द्रौपदी की उक्ति है।
नोट – किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में केवल वनेचर एवं द्रौपदी की उक्तियाँ हैं।
अतः विकल्प (A) सही है।

110. (D) 111. (D) 112. (B) 113. (D) 114. (A) 115. (A) 116. (D) 117. (B) 118. (A)

119. 'मेघदूतम्' में यक्ष को किसने अभिशाप दिया?
(A) इन्द्र ने (B) वायु ने
(C) कुबेर ने (D) कामदेव ने

व्याख्या – 'मेघदूतम्' में अलकापुरी के स्वामी **कुबेर** ने यक्ष को अपनी प्रिया से एक वर्ष तक दूर रहने का शाप दिया था। अतः विकल्प (C) सही है।

120. कालिदास के अनुसार निम्नलिखित में से किससे मेघ का सम्पर्क नहीं है?
(A) धुएं से (B) ज्योति से
(C) सलिल से (D) वृक्ष से

व्याख्या – 'धूमज्योतिःसलिलमरुतां सन्निपातः क्व मेघः' – (पूर्वमेघ/5) प्रस्तुत पंक्ति से विदित होता है कि मेघ – धुआँ, ज्योति, सलिल (जल), वायु से निर्मित है।
अतः विकल्प (D) सही है।

121. मेघदूतम् किस श्रेणी का काव्य है?
(A) चम्पूकाव्य (B) स्मार्तकाव्य
(C) गद्यकाव्य (D) दूतकाव्य

व्याख्या – * कालिदास कृत 'मेघदूतम्' **दूतकाव्य** है। इसे खण्डकाव्य या गीतिकाव्य भी कहते हैं।
* नलचम्पू, रामायणचम्पू, भारतचम्पू आदि चम्पूकाव्य हैं।
* कादम्बरी, दशकुमारचरितम्, वासवदत्ता आदि गद्यकाव्य हैं।
अतः विकल्प (D) सही है।

122. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में शाप वृत्तान्त किस अङ्क में है?
(A) प्रथम (B) तृतीय
(C) चतुर्थ (D) षष्ठ

व्याख्या –
(A) प्रथम अङ्क में राजा दुष्यन्त कण्व के आश्रम में प्रवेश करता है।
(B) तृतीय अङ्क में दुष्यन्त और शकुन्तला का मिलन होता है।
(C) चतुर्थ अङ्क में दुर्वासा शकुन्तला को शाप देते हैं। इसी अङ्क में शकुन्तला की विदाई होती है।
(D) षष्ठ अङ्क में राजा दुष्यन्त पश्चाताप करता है।
अतः विकल्प (C) सही है।

123. 'पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलम्' – यह उक्ति किसकी है?
(A) कण्व की (B) अनसूया की
(C) प्रियंवदा की (D) शकुन्तला की

व्याख्या –
(A) 'पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलम्' – प्रस्तुत पंक्ति में **कण्व**, शकुन्तला के विदाई के समय समीपस्थ तपोवन के वृक्षों को सम्बोधित करते हुए कहते हैं कि – आप लोगों को बिना जल पिलाये जो पहले जल पीने का प्रयास नहीं करती थी। वह शकुन्तला आज पतिगृह जा रही है। (अभिज्ञान 4/9)
(B) 'एषापि प्रियेण विना गमयति रजनीं विषाददीर्घतराम्'– अनसूया की उक्ति।
(C) 'अपसृतपाण्डुपत्रा मुञ्चन्त्यश्रूणीव लताः' – प्रियंवदा की उक्ति है।
(D) 'को नु खल्वेष निवसने मे सज्जते' – शकुन्तला की उक्ति है। अतः विकल्प (A) सही है।

124. ''किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्'' – यह वाक्य किसके बारे में कहा गया है?
(A) दुर्वासा (B) शकुन्तला
(C) कण्व (D) मेनका

व्याख्या –
(A) 'सुलभकोपो महर्षिः' – यह वाक्य प्रियंवदा दुर्वासा के लिए कहती है।
(B) **'किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्' – दुष्यन्त शकुन्तला के लिए** कहता है कि सुन्दर आकृतियों के लिए कौन सी वस्तु अलङ्कार नहीं है।
(C) नैष्ठिक ब्रह्मचारी – कण्व के लिए प्रयुक्त है।
(D) मेनका, शकुन्तला की जन्मदात्री माता है।
अतः विकल्प (B) सही है।

125. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में अभिज्ञान का सम्बन्ध किस वस्तु से है?
(A) घुंघरू (B) पायल
(C) बाली (D) अँगूठी

व्याख्या – कालिदास कृत 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में अभिज्ञान से तात्पर्य, दुष्यन्त द्वारा शकुन्तला को दी गयी **'अँगूठी'** से है। अतः विकल्प (D) सही है।

119. (C) 120. (D) 121. (D) 122. (C) 123. (A) 124. (B) 125. (D)

प्रशिक्षित-स्नातकशिक्षक-चयनपरीक्षा (TGT)–2005

1. शुकनासोपदेश की विषयवस्तु में निम्न में से कौन सम्मिलित नहीं है?
(A) युवावस्था जन्यविकार
(B) लक्ष्मीमद
(C) उत्तराधिकार के प्रति लापरवाही
(D) ऐश्वर्य सम्बन्धी दोष

व्याख्या–
* बाणभट्ट कृत कादम्बरी (कथा) का अंश शुकनासोपदेश है?
* इसमें 'गर्भेश्वरत्वमभिनवयौवनत्वमप्रतिमरूपत्वममानुष-शक्तित्वञ्चेति' अर्थात्–
(i) जन्मतः प्राप्त ऐश्वर्य
(ii) नई जवानी
(iii) अनुपम सौन्दर्य
(iv) अलौकिक शक्ति,
* इन चारों को अनर्थों की महान् परम्परा कहा गया है।
अतः **उत्तराधिकार के प्रति लापरवाही** शुकनासोपदेश की विषयवस्तु नहीं है।
इसलिए विकल्प (C) सही उत्तर है।

2. शिवराजविजयम् का मङ्गलाचरण है?
(A) अम्बिकादत्तव्यास द्वारा लिखा गया है
(B) महाभारत से उद्धृत है
(C) श्रीमद्भगवद्गीता से उद्धृत है
(D) श्रीमद् भागवतपुराण से उद्धृत है

व्याख्या–
* अम्बिकादत्तव्यास कृत शिवराजविजयम् प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास है
* "विष्णोर्माया भगवती यया सम्मोहितं जगत् (10-1-25)" –पूर्णतः मङ्गलपरक श्लोक है।
* "हिंस्रः स्वपापेन विहिंसितः खलः साधुः समत्वेन भयाद् विमुच्यते" (10/7/31) –वस्तुनिर्देशात्मक मङ्गलाचरण है
* उपर्युक्त दोनों मङ्गलाचरण श्रीमद्भागवतपुराण से उद्धृत हैं।
अतः विकल्प (D) सही है।

3. किरातार्जुनीयम् ग्रन्थ में किरात कौन है?
(A) युधिष्ठिर का गुप्तचर (B) एक प्रसिद्ध भील
(C) भगवान् शिव (D) एकलव्य

व्याख्या– * युधिष्ठिर का गुप्तचर वनेचर है।
* वनेचर भील जाति का है।
* किरात **भगवान् शिव** हैं।
* निषादराज हिरण्यधनु का पुत्र एकलव्य है।
अतः विकल्प (C) सही है।

4. 'बृहत्त्रयी' का एक ग्रन्थ 'किरातार्जुनीयम्' है शेष दो ग्रन्थों के नाम हैं–
(A) शिशुपालवधम्,कादम्बरी
(B) शिशुपालवधम्, नैषधीयचरितम्
(C) नैषधीयचरितम्, वेमभूपालचरितम्
(D) नैषधीयचरितम्, तिलकमञ्जरी

व्याख्या– * बृहत्त्रयी के अन्तर्गत तीन महाकाव्यों की गणना की जाती है–
1. किरातार्जुनीयम् (भारवि)
2. **शिशुपालवधम् (माघ)**
3. **नैषधीयचरितम् (श्रीहर्ष)**
* 'वेमभूपालचरितम्' वामनभट्ट की रचना है।
* 'तिलकमञ्जरी' धनपाल की रचना है
अतः विकल्प (B) सही है।

5. किरातार्जुनीयम् में 'अदेवमातृका' कौन है?
(A) नदी जलाशय एवं नहरों से सिंचाई करने वाले
(B) बादलों की वर्षा पर निर्भर रहने वाले
(C) देवताओं की कृपा प्राप्ति के लिए यज्ञानुष्ठान करने वाले
(D) राक्षसी शक्तियों के भरोसे कार्य सिद्धि करने वाले

व्याख्या– * "वितन्वति क्षेममदेवमातृकाश्चिराय तस्मिन् कुरवश्चकासति" (किरात0 1/17) अर्थात् वर्षा के जल पर ही निर्भर न रहने वाले कुरुदेशवासी (नदी, जलाशय, एवं नहरों से सिंचाई करने वाले) अदेवमातृक हैं।
* नदी, जलाशय एवं नहरों से सिंचाई करने वालों को अदेवमातृक कहा जाता है।
* वर्षा के जल पर निर्भर रहने वाले देवमातृक की श्रेणी में आते हैं।
अतः विकल्प (A) सही है।

1. (C) 2. (D) 3. (C) 4. (B) 5. (A)

6. निम्न विकल्पों में से किसे भर्तृहरि ने मूर्ख एवं दुराग्रही व्यक्ति को प्रसन्न करने की अपेक्षा अधिक सरल नहीं कहा है?

(A) मगर की दाढ़ से बलात् मणि निकाल लेना।

(B) क्रुद्ध सर्प को पुष्प की भाँति सिर पर धारण करना।

(C) कभी मृगतृष्णा से जल प्राप्ति कर लेना।

(D) नाव से नदी पार करना।

व्याख्या–

* भर्तृहरि कहते हैं कि– यदि कोई चाहे तो–मगर के मुख की दाढों के बीच से बलपूर्वक मणि को बाहर निकाल सकता है– 'प्रसह्य मणिमुद्धरेत् मकरवक्त्रदंष्ट्रान्तरात्'
* उठती हुई तरङ्गमालाओं से उमड़ते सागर को भी तैर कर पार कर सकता है।
* क्रुद्ध सर्प को भी फूल की तरह शिर पर धारण कर सकता है।
* प्रयत्नपूर्वक मर्दित करने पर कदाचित् बालुका से भी तेल निकल सकता है।
* मरुस्थल में भी मृगतृष्णा का जल पिया जा सकता है।
* पृथ्वी पर भ्रमण करते-करते किसी समय खरगोश की सींग भी प्राप्त किया जा सकता है
* परन्तु दुराग्रही (हठी) मूर्ख व्यक्ति के मन को प्रसन्न नहीं किया जा सकता है। –नीतिशतकम्-4

अतः विकल्प (D) सही उत्तर है।

7. ''वामाः कुलस्याधयः'' में वामा का अभिप्राय है?

(A) सुन्दर युवतियाँ

(B) अच्छे स्वभाव वाली स्त्रियाँ

(C) मनोनुकूल व्यवहार करने वाली स्त्रियाँ

(D) कहे गये ढंग के विपरीत आचरण करने वाली स्त्रियाँ

व्याख्या–

* ''यान्त्येवं गृहिणीपदं युवतयो वामाः कुलस्याधयः'' (अभिज्ञान 4/18) प्रस्तुत पंक्ति में कण्व भारतीय संस्कृति के अनुरूप अपनी पालिता पुत्री शकुन्तला को आदर्श गृहिणी होने का उपदेश देते हुए कहते हैं कि–इस प्रकार युवतियाँ गृहस्वामिनी (गृहलक्ष्मी) पद को प्राप्त कर लेती हैं और इसके प्रतिकूल (विपरीत) आचरण करने वाली युवतियाँ कुल के लिए आधि (मानसिक कष्ट का कारण) बन जाती हैं।
* **यहाँ 'वामाः' का अर्थ, 'कहे गये ढंग के विपरीत आचरण करने वाली स्त्रियों' के लिए है।**
* 'आधयः' का तात्पर्य-मानसिक व्याधि से है।

अतः विकल्प (D) सही है।

8. ''दिष्ट्या धूमाकुलितदृष्टेरपि यजमानस्य पावक एवाहुतिः पतिता।'' इस वाक्य में 'पावक' शब्द से किसको सङ्केतित किया गया है?

(A) शकुन्तला को (B) दुष्यन्त को

(C) कण्व को (D) यज्ञशाला को

व्याख्या–

* ''दिष्ट्या धूमाकुलितदृष्टेरपि यजमानस्य पावक एवाहुतिः पतिता'' अर्थात्–सौभाग्य से धुएं के द्वारा व्याकुल दृष्टि वाले यजमान की आहुति अग्नि में ही पड़ी।–अभिज्ञानशाकुन्तलम् अङ्क-4
* 'यजमान' शब्द कण्व के लिए प्रयुक्त है।
* **'पावक', शब्द से दुष्यन्त की ओर सङ्केत है।**
* 'आहुति', शब्द शकुन्तला के लिए प्रयुक्त है।

अतः विकल्प (B) सही है।

9. अनसूया एवं प्रियंवदा ने अपने किस ज्ञान के आधार पर शकुन्तला को आभूषण पहनाया?

(A) उन्होंने आभूषण पहनाने का प्रशिक्षण लिया था

(B) गौतमी ने उन्हें आभूषण पहनाना बताया था

(C) शकुन्तला ने स्वतः अपने ज्ञान से आभूषण पहना

(D) चित्रकारी में आभूषण प्रयोग से प्राप्त ज्ञान के आधार पर पहनाया।

व्याख्या– ''चित्रकर्मपरिचयेनाङ्गेषु त आभरणविनियोगं कुर्वः।'' अर्थात् चित्रकला से प्राप्त ज्ञान के आधार पर हम तुम्हारे अङ्गों में आभूषण पहनाती हूँ? अनसूया एवं प्रियंवदा का यह कथन है। –अभिज्ञानशाकुन्तलम्-अङ्क-4

अतः विकल्प (D) सही है।

10. भवभूति का मूल नाम था?

(A) श्रीपति (B) उम्बेक

(C) श्रीकण्ठ (D) नीलकण्ठ

व्याख्या–

* भवभूति का मूलनाम **'श्रीकण्ठ'** या **'भट्ट श्रीकण्ठ'** था।
* 'श्रीकण्ठपदलाच्छन' इनकी उपाधि है।
* 'उम्बेक' या उम्बिकाचार्य इनका दार्शनिक नाम था।
* 'नीलकण्ठ' भवभूति के पिता का नाम था।
* भवभूति की माता का नाम 'जातुकर्णी' था

अतः विकल्प (C) सही है।

6. (D) 7. (D) 8. (B) 9. (D) 10. (C)

11. 'पुम् + कोकिलः' की सन्धि होगी?
(A) पुस्कोकिलः (B) पुंस्कोकिलः
(C) पुङ्कोकिलः (D) पुंकोकिलः

व्याख्या– यहाँ 'पुमः खय्यम्परे (8/3/6)' सूत्र से पुम् + कोकिलः = **पुँस्कोकिलः, पुंस्कोकिलः** में व्यञ्जनसन्धि है।
अतः विकल्प (B) सही है।

12. समास की प्रक्रिया होती है?
(A) दो वर्णों के बीच
(B) दो पदों के बीच
(C) दो वाक्यों के बीच
(D) एक वर्ग और एक पद के बीच

व्याख्या–
* ''समर्थः पदविधिः'' (2/1/1) सूत्रानुसार जिन पदों में सामर्थ्य होगा, उन्हीं में तत्सम्बन्धी विधि होगी अर्थात् समास सुबन्त पद का सुबन्त पद के साथ होता है।
* ''समसनं समासः''–अनेक पदों का एक साथ रखा जाना समास कहलाता है।
* दो वर्णों के बीच सन्धि कार्य होता है, जबकि **दो या दो से अधिक पदों** के बीच समास होता है।

अतः विकल्प (B) सही है।

13. 'अक्ष्णा काणः' में तृतीया विभक्ति हुई है?
(A) येनाङ्गविकारः सूत्र से (B) कर्तृकरणयोस्तृतीया से
(C) अपवर्गे तृतीया से (D) इत्थंभूतलक्षणे से

व्याख्या–
(A) **'येनाङ्गविकारः'** (2/3/20) सूत्र से जिस अङ्ग के विकार से अङ्गी में विकार लक्षित हो उस अङ्ग में तृतीया का प्रयोग होता है यथा–अक्ष्णा काणः।
अतः विकल्प (A) सही है।
(B) 'कर्तृकरणयोस्तृतीया' (2/3/18) सूत्र से अनुक्त कर्ता और करणकारक में तृतीया विभक्ति होती है। यथा– रामेण बाणेन हतो बाली।
(C) 'अपवर्गे तृतीया' (2/3/6) सूत्र से अपवर्ग (फलप्राप्ति) द्योतित होने पर कालवाची और भाववाची शब्दों से अत्यन्त संयोग गम्यमान होने पर तृतीया विभक्ति होती है यथा– अह्ना अनुवाकः अधीतः।
(D) इत्थंभूतलक्षणे (2/3/21) सूत्र से जिस लक्षण से कोई व्यक्ति या वस्तु ज्ञापित हो उसमें तृतीया होती है यथा–जटाभिः तापसः।

14. 'मुक्तये हरिं भजति' से मुक्तये में चतुर्थी हुई–
(A) 'चतुर्थी सम्प्रदाने' द्वारा
(B) 'स्पृहेरीप्सितः' सूत्र से
(C) 'क्लृपि संपद्यमाने च' वार्तिक से
(D) 'तादर्थ्ये चतुर्थी वाच्या' से

व्याख्या –
(A) 'चतुर्थी सम्प्रदाने' (2/3/13) सूत्र से अनभिहित सम्प्रदान कारक में चतुर्थी होती है यथा–विप्राय गां ददाति।
(B) 'स्पृहेरीप्सितः' (1/4/36) सूत्र से स्पृह् धातु के योग में ईप्सित पदार्थ की सम्प्रदानसंज्ञा होती है और 'चतुर्थी सम्प्रदाने' सूत्र से उसमें चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग होता है यथा–सः पुष्पेभ्यः स्पृहयति।
(C) 'क्लृपि सम्पद्यमाने च' वार्तिक से क्लृप् अर्थ वाली धातु के योग में सम्पद्यमान अर्थ में चतुर्थी विभक्ति होती है–भक्तिर्ज्ञानाय सम्पद्यते।
(D) **'तादर्थ्ये चतुर्थी वाच्या'** वार्तिक से जिस प्रयोजन के लिए कोई कार्य किया जाता है उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा–सः मुक्तये हरिं भजति।
अतः विकल्प (D) सही है।

15. 'चर्मणि द्वीपिनं हन्ति' यहाँ चर्मणि में सप्तमी का प्रयोग हुआ है?
(A) ''सप्तम्यधिकरणे च'' से
(B) ''निमित्तात्कर्मयोगे'' से
(C) ''यस्य च भावेन भावलक्षणम्'' से
(D) ''यतश्च निर्धारणम्'' से

व्याख्या–
(A) 'सप्तम्यधिकरणे च' (2/3/36) सूत्र से अधिकरणकारक में सप्तमी होती है यथा–सः स्थाल्यां पचति।
(B) **'निमित्तात्कर्मयोगे'** वार्तिक से निमित्तवाची शब्दों में सप्तमी विभक्ति होती है, यदि वह निमित्त फल से युक्त हो यथा–सः चर्मणि द्वीपिनं हन्ति।
अतः विकल्प (B) सही है।
(C) 'यस्य च भावेन भावलक्षणम्' (2/3/37) सूत्र से जिस क्रिया से दूसरी क्रिया लक्षित हो उस क्रिया में सप्तमी होती है। यथा–सः गोषु दुह्यमानासु गतः।
(D) यतश्च निर्धारणम् (2/3/41) सूत्र से जिससे निर्धारण होता है, उसमें षष्ठी और सप्तमी विभक्ति होती है। यथा–नृणां नृषु वा द्विजः श्रेष्ठः।

11. (B) 12. (B) 13. (A) 14. (D) 15. (B)

16. 'चर्' प्रत्याहार में निम्नलिखित वर्ण आते हैं?
(A) च्, ट्, त्, क्, प्
(B) च्, ट्, त्, क्, प्, श्, ष्, स्
(C) श्, ष्, स्
(D) श्, ष्, स्, ह्

व्याख्या–
(A) चय् प्रत्याहार–च् ट् त् क् प्
(B) **चर् प्रत्याहार–च् ट् त् क् प् श् ष् स्**
(C) शर् प्रत्याहार–श् ष् स्
(D) शल् प्रत्याहार–श् ष् स् ह्
* कुल प्रत्याहारों की संख्या `42' है।
* बाबूराम सक्सेना `43' प्रत्याहार मानते हैं।
विकल्प (B) सही है।

नोट–'आदिरन्त्येन सहेता' (1/1/71) सूत्र से इत्संज्ञक वर्ण से युक्त आदि वर्ण मध्यस्थ एवं अपने का बोधक होता है यथा– अण् = अ, इ, उ वर्णों का बोधक है। यही प्रत्याहार की प्रक्रिया है।

17. 'हन्ति' रूप कहाँ बनता है?
(A) प्रथमपुरुष बहुवचन में
(B) मध्यमपुरुष एकवचन में
(C) प्रथमपुरुष एकवचन में
(D) उत्तमपुरुष एकवचन में

व्याख्या– * हन् (मारना) धातु लट्लकार
* प्रथमपुरुष में–''हन्ति हतः घ्नन्ति''
* मध्यमपुरुष में–''हंसि हथः हथ''
* उत्तमपुरुष में–''हन्मि हन्वः हन्मः''
अतः विकल्प (C) सही है।

18. 'ददति' रूप बनता है?
(A) प्रथमपुरुष एकवचन में
(B) प्रथमपुरुष द्विवचन में
(C) प्रथमपुरुष बहुवचन में
(D) उत्तमपुरुष बहुवचन में

व्याख्या– दा (देना) धातु परस्मैपद लट्लकार
प्रथमपुरुष में–''ददाति दत्तः **ददति**'' रूप बनता है।
मध्यमपुरुष में–''ददासि दत्थः दत्थ'' रूप बनेगा।
उत्तमपुरुष में–''ददामि दद्वः दद्मः'' रूप बनता है।
अतः विकल्प (C) सही है।

19. ''यं यं पश्यसि तस्य तस्य पुरतो मा ब्रूहि दीनं वचः'' इस सूक्ति के माध्यम से किसे शिक्षा दी जा रही है?
(A) राजा को **(B) बादल को**
(C) चातक को **(D) याचक को**

व्याख्या– प्रस्तुत सूक्ति में भर्तृहरि चातक के माध्यम से मानवों को यह सन्देश देना चाहते हैं कि–जिस जिस को देखते हो, उस-उस के सामने अपना दीनवचन मत कहो।
''रे रे चातक! सावधानमनसा मित्र! क्षणं श्रूयताम्''
नीतिशतकम/परिशिष्ट/3
अतः विकल्प (C) सही है।
नोट– कवि यहाँ चातक के माध्यम से याचक को भी यही शिक्षा देना चाहते हैं कि सभी से याचना नहीं करनी चाहिए। अतः इसका `D' विकल्प भी सही माना जा सकता है; किन्तु 'चातक' का श्लोक में नाम लेने के कारण सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प `C' ही होगा।

20. 'आमन्त्रयस्व सहचरम्' का अभिप्राय है?
(A) सहचर से मिल लो **(B) सहचर से बात कर लो**
(C) सहचर को छोड़ दो **(D) सहचर से विदा ले लो**

व्याख्या– 'आमन्त्रयस्व सहचरम्'–अर्थात् **सहचर से विदा ले लो।** यह नेपथ्य का कथन है। (अभिज्ञान/अङ्क 3) अतः विकल्प (D) सही है।

21. ''गुरुः छात्रेण सह विद्यालयं गच्छति'' का कर्मवाच्य होगा?
(A) गुरुणा सह छात्र विद्यालयं गच्छति
(B) गुरु छात्रेण सह विद्यालयं गच्छति
(C) गुरुणा छात्रेण सह विद्यालयं गम्यते
(D) गुरुणा छात्रेण सह विद्यालयः गम्यते

व्याख्या– कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य में परिवर्तन के लिए कर्त्ता में तृतीयाविभक्ति और कर्म में प्रथमाविभक्ति का प्रयोग होता है, तथा क्रिया कर्म के अनुसार प्रयुक्त होती है। यथा–
गुरुणा छात्रेण सह विद्यालयः गम्यते।
अतः विकल्प (D) सही है।

22. 'याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा' इस श्लोकांश में 'अधिगुणे' शब्द से किसका सङ्केत किया गया है?
(A) कुबेर का **(B) यक्ष का**
(C) मेघ का **(D) रामगिरिपर्वत का**

व्याख्या– * 'याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा' अर्थात् गुणी व्यक्ति के प्रति की हुई याचना निष्फल होने पर भी श्रेष्ठ है, पर नीच से मनचाहा फल पा जाना भी अच्छा नहीं है। (पूर्वमेघ/6)
* यहाँ **'अधिगुणे' शब्द मेघ के लिए** प्रयुक्त है जिसका अर्थ है अधिक गुणवान् होना।
अतः विकल्प (C) सही है।

16. (B)	17. (C)	18. (C)	19. (C)	20. (D)	21. (D)	22. (C)

23. दुष्यन्त के साथ शकुन्तला के विवाह की सूचना महर्षिकण्व को किसने दी?
(A) गौतमी ने
(B) अनसूया एवं प्रियंवदा ने
(C) अशरीरिणी छन्दोमयी वाणी ने
(D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या–

(A) गौतमी को इस घटनाचक्र (शकुन्तला के विवाह) की जानकारी नहीं थी।

(B) 'द्वयोरेव नौ मुख एष वृत्तान्तस्तिष्ठतु'–अनसूया के इस कथन से ज्ञात होता है कि दोनों सखियों ने पूरे घटना चक्र के बारे में किसी को नहीं बताया।

(C) 'अग्निशरणं प्रविष्टस्य शरीरं विना छन्दोमय्या वाण्या' अर्थात् यज्ञशाला में गये हुए (कण्व) को शरीररहित छन्दोमयी वाणी के द्वारा शकुन्तला के विवाह की सूचना दी गयी। –(अभिज्ञान/4/प्रियंवदा का कथन)
अतः विकल्प (C) सही है।

24. 'पुटपाक' का अभिप्राय है?
(A) एक प्रकार का व्यञ्जन
(B) एक प्रकार का आभूषण
(C) एक प्रकार की औषधि
(D) औषधि पकाने का विशिष्ट ढंग

व्याख्या– * मुरला – ''पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः'' अर्थात् राम का करुणरस (शोक) पुटपाक के तुल्य है। –(उत्तररामचरितम् 3/1)
* 'पुटपाक' आयुर्वेद का पारिभाषिक शब्द है, यह औषधि पकाने का एक विशिष्ट ढंग है।
अतः विकल्प (D) सही है।

25. 'चन्द्रशेखर' में बहुव्रीहि समास है, इसका विग्रह है–
(A) चन्द्रः शेखरः यस्य (B) चन्द्रः शेखरे यस्य
(C) चन्द्र शिखर यस्य (D) चन्द्रः शिखरे यस्य

व्याख्या–
* 'अनेकमन्यपदार्थे' (2/2/24) सूत्र से 'चन्द्रः शेखरे यस्य सः = चन्द्रशेखरः' (चन्द्र है जिसके सिर पर अर्थात् भगवान् शिव) में बहुव्रीहि समास है।
* अतः विकल्प (B) सही है। शेष विकल्प अशुद्ध है।

26. 'सः ग्रामे निवसति' में क्रियापद को लङ्लकार में परिवर्तित करने पर वाक्य बनेगा?
(A) सः ग्रामे अनिवसत् (B) सः ग्रामे अनिवसति
(C) सः ग्रामे न्यवसत् (D) सः ग्रामे न्यवसति

व्याख्या–
लङ्लकार में 'नि + वस्' का रूप–
प्र0पु0–''**न्यवसत्** न्यवसताम् न्यवसन्'' होगा
अतः वाक्य '**सः ग्रामे न्यवसत्**' बनेगा।
अतः विकल्प (C) सही है।

27. 'पुरुषोत्तमरताऽपि खलजनप्रिया' यह उक्ति किसके लिए है?
(A) चाण्डालकन्या के लिए
(B) कादम्बरी के लिए
(C) महाश्वेता के लिए
(D) लक्ष्मी के लिए

व्याख्या–
* 'पुरुषोत्तमरताऽपि खलजनप्रिया'–शुकनासोपदेश
* शुकनास, चन्द्रापीड को उपदेश देते हुए कहते हैं कि यह **लक्ष्मी** पुरुषोत्तम (पुरुषों में श्रेष्ठ-विष्णु) में आसक्त होते हुए भी दुष्ट जनों से प्रेम करने वाली है।
* 'चाण्डालकन्या' कादम्बरी कथा की एक पात्र है, जो शूद्रक के दरबार में वैशम्पायन नामक शुक को लेकर आती है।
* 'महाश्वेता कादम्बरी ग्रन्थ में पार्श्वनायिका है। इसके माता पिता का नाम हंस और गौरी है।
अतः विकल्प (D) सही है।

28. 'कादम्बरी किस विधा की रचना है?
(A) महाकाव्य (B) आख्यायिका
(C) गद्यकाव्य-कथा (D) ऐतिहासिक महाकाव्य

	ग्रन्थ	**विधा**
(A)	हरविजयम्	महाकाव्य
(B)	हर्षचरितम्	आख्यायिका
(C)	**कादम्बरी**	**कथा (गद्यकाव्य)**
(D)	बुद्धचरितम्	ऐतिहासिक महाकाव्य

अतः विकल्प (C) सही है।

23. (C) 24. (D) 25. (B) 26. (C) 27. (D) 28. (C)

29. 'शिवराजविजयम्' प्रथमनिःश्वास में पहले ही पुष्पचयन करने वाला कौन है?
(A) श्यामवटु (B) गौरवटु
(C) गुरूजी (D) बालिका

व्याख्या–
* 'मयैव पूर्वमवचितानि कुसुमानि'–गौरवटु से श्यामवटु कहता है कि मेरे द्वारा पहले ही पुष्प चुन लिए गये हैं।
* प्रथम निःश्वास में सर्वप्रथम पुष्पचयन करने वाला **श्यामवटु** है।
* बालिका (सौवर्णी) श्यामवटु और गौरवटु की बहन है।
अतः विकल्प (A) सही है।

30. योगिराज ने पहली बार कब समाधि लगायी थी?
(A) युधिष्ठिर के समय में
(B) विक्रमादित्य के समय में
(C) दुराचारपूर्ण (यवनकाल) समय में
(D) इनमें से कोई नहीं?

व्याख्या– ''यौधिष्ठिरे समये कलितसमाधिरहं वैक्रमसमये उदस्थाम्। पुनश्च वैक्रमसमये समाधिमाकलय्य अस्मिन् दुराचारमये समयेऽहमुत्थितोऽस्मि।''–योगिराज के इस कथन से ज्ञात होता है कि–
(A) योगिराज प्रथमबार **युधिष्ठिर के समय में** समाधि लगाये थे और विक्रमादित्य के समय उठते हैं।
(B) द्वितीयबार विक्रमादित्य के समय समाधि लगाते हैं और दुराचारसमय (यवनकाल) में उठते हैं।
(C) फिर कहते हैं कि मैं पुनः जाकर समाधि ही लगाऊँगा अर्थात् तृतीयबार यवनकाल में समाधिस्थ होगें।–(शिवराजविजयम्)। अतः विकल्प (A) सही है।

31. वनेचर की बात सुनने के बाद युधिष्ठिर कहाँ पहुँचे?
(A) अपने विश्रामगृह में (B) द्रौपदी के समीप
(C) व्यास के समीप (D) हिमालय पर्वतपर

व्याख्या– * 'प्रविश्य कृष्णासदनं महीभुजा, तदाचचक्षेऽनुजसन्निधौ वचः' अर्थात् राजा युधिष्ठिर वनेचर से सारा समाचार जानकर **द्रौपदी के आवास में** प्रविष्ट होकर छोटे भाइयों के समीप सम्पूर्ण वृत्तान्त द्रौपदी से कहते हैं।–(किरात० 1/26)
* यहाँ 'कृष्णा' शब्द द्रौपदी के लिए प्रयुक्त है।
अतः विकल्प (B) सही है।

32. किस प्रकार के वचन दुर्लभ होते हैं?
(A) प्रिय किन्तु असत्य (B) हितकारी और मनोहर
(C) हानिकर एवं कठोर (D) सत्य और अप्रिय

व्याख्या– ''हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः'' (किरात० 1/4) वनेचर युधिष्ठिर से कहता है कि हितकारी और मनोहर (प्रिय) वचन दुर्लभ होते हैं। अतः विकल्प (B) सही है।

33. मेघदूत किस विधा की रचना है?
(A) गद्यकाव्य (B) महाकाव्य
(C) गीतिकाव्य (D) सट्टक

	ग्रन्थ	**विधा**
(A)	तिलकमञ्जरी	गद्यकाव्य
(B)	भट्टिकाव्य	महाकाव्य
(C)	**मेघदूतम्**	**गीतिकाव्य/खण्डकाव्य**
(D)	कर्पूरमञ्जरी	सट्टक

अतः विकल्प (C) सही है।

34. स्त्रियों का पहला प्रणयवचन क्या होता है?
(A) प्रेम की बातें करना
(B) नैन से नैन मिलाना
(C) स्त्रियों का हाव-भाव या विभ्रमप्रदर्शन करना
(D) सामने आ-आ कर हट जाना

व्याख्या– ''स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु'' पूर्वमेघ/29 अर्थात् स्त्रियों का प्रियतम के प्रति किया गया हाव-भाव अर्थात् **विभ्रम प्रदर्शन करना** ही पहला प्रार्थनावाक्य होता है।
अतः विकल्प (C) सही है।

35. 'शान्तानुकूलपवनश्च शिवश्च पन्थाः' यह उक्ति किसकी है।
(A) कण्व की (B) प्रियंवदा की
(C) आकाशभाषित (D) कण्वशिष्य

व्याख्या–
(A) 'शान्ते करिष्यसि पदं पुनराश्रमेऽस्मिन्'–कण्व की उक्ति है।
(B) ''अपसृतपाण्डुपत्रा मुञ्चन्त्यश्रूणीव लताः''–प्रियंवदा की उक्ति है।
(C) ''शान्तानुकूलपवनश्च शिवश्च पन्थाः''–शकुन्तला की विदाई के समय **आकाशवाणी** होती है कि–तुम्हारा मार्ग शान्त और अनुकूल वायु वाला एवं कल्याणकारी हो।–(अभिज्ञान 4/11)
(D) ''क्षौमं केनचिदिन्दुपाण्डुतरुणा माङ्गल्यमाविष्कृतम्''–कण्व शिष्य का कथन है।
अतः विकल्प (C) सही है।

29. (A) 30. (A) 31. (B) 32. (B) 33. (C) 34. (C) 35. (C)

36. विदाई के समय कण्व ने किस श्लोक से शकुन्तला को उपदेश दिया?
(A) 'शुश्रूषस्व गुरून्'
(B) 'अस्मान् साधु विचिन्त्य'
(C) 'पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलम्'
(D) 'एषापि प्रियेण विना गमयति।'

व्याख्या–

(A) **'शुश्रूषस्व गुरून् कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीजने'** (अभिज्ञान 4/18) इस श्लोक में कण्व शकुन्तला को उपदेश देते हुए कहते हैं कि–गुरुजनों की सेवा करना, सौतों के साथ प्रियसखी जैसा व्यवहार करना आदि। अतः विकल्प (A) सही है।

(B) 'अस्मान् साधु विचिन्त्य संयमधनानुच्चैः कुलं चात्मनः' (अभिज्ञान 4/17) इस श्लोक में कण्व, शार्ङ्गरव के माध्यम से दुष्यन्त को संदेश भेजते हैं।

(C) 'पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलम्' (अभिज्ञान 4/9) प्रस्तुत श्लोक में कण्व तपोवन के वृक्षों को सम्बोधित करते हुए शकुन्तला को ससुराल जाने की अनुमति देने को कहते हैं।

(D) 'एषापि प्रियेण विना गमयति'–अनसूया की उक्ति है।

37. रामचन्द्रजी दुबारा दण्डकारण्य किसलिए गये थे?
(A) राक्षसों के वध के लिए
(B) सीता से मिलने के लिए
(C) दण्डकारण्य देखने के लिए
(D) तपस्या करते हुए शम्बूक को दण्ड देने के लिए

व्याख्या–

* भवभूति कृत उत्तररामचरित नाटक में राम दुबारा दण्डकारण्य में तपस्या करते हुए **शूद्र शम्बूक को दण्ड देने के लिए** गये थे।
* दण्डकारण्य के पञ्चवटी प्रदेश में राम पहली बार 'वनवास' काल में गये थे।

अतः विकल्प (D) सही है।

38. मूर्च्छित राम को चेतना कैसे मिली?
(A) शीतल वायु के स्पर्श से
(B) शीतल जल के स्पर्श से
(C) सीता के कर (हस्त) स्पर्श से
(D) वाल्मीकि के कर स्पर्श से

व्याख्या– 'पाणिस्पर्शो हि रामभद्रस्य जीवनोपायः'–अर्थात् तमसा, सीता से कहती है कि–तुम्हारे **हाथ का स्पर्श** राम को जीवित करने का उपाय है। उत्तररामचरित/तृतीय अङ्क अतः विकल्प (C) सही है।

39. कौन-सा रस विवर्त्त प्राप्त कर लेता है?

(A) शृङ्गार	**(B) शान्त**
(C) करुण	**(D) हास्य**

व्याख्या–

''एको रसः करुण एव निमित्तभेदाद्
भिन्नः पृथक्पृथगिव श्रयते विवर्तान्।'' (उत्तररामचरित 3/47) तमसा कहती है कि–एक **करुण रस** ही कारण भेद से भिन्न होकर पृथक्-पृथक् (शृङ्गार आदि) परिणामों को प्राप्त होता है। अतः विकल्प (C) सही है।

40. 'रामश्चिनोति' में निम्न सूत्र से सन्धिकार्य होता है?

(A) ष्टुना ष्टुः	**(B) स्तोः श्चुना श्चुः**
(C) खरि च	**(B) झलां जशोऽन्ते**

व्याख्या–

(A) 'ष्टुना ष्टुः' (8/4/41) सूत्र से 'तत् + टीका = तट्टीका' में व्यञ्जनसन्धि है।

(B) **'स्तोः श्चुना श्चुः'** (8/4/40) सूत्र से रामस् + चिनोति=रामश्चिनोति में व्यञ्जन (श्चुत्व) सन्धि है। अतः विकल्प (B) सही है।

(C) 'खरि च' (8/4/55) सूत्र से उत् + स्थानम् = उत्थानम् में व्यञ्जन सन्धि है।

(D) 'झलां जशोऽन्ते' (8/2/39) सूत्र से वाक् + ईशः = वागीशः में व्यञ्जनसन्धि है।

41. 'प्रार्च्छति' का सन्धि विच्छेद है?

(A) प्रा + ऋच्छति	**(B) प्रर + ऋच्छति**
(C) प्र + ऋच्छति	**(D) प्रार्च्छ + ति**

व्याख्या–

* 'उपसर्गादृति धातौ' (6/1/91) सूत्रानुसार अवर्णान्त उपसर्ग के पश्चात् ऋकारादि धातु हो तो (अ और ऋ) दोनों के स्थान में वृद्धि एकादेश हो जाता है यथा–

प्र + ऋच्छति (अ + ऋ) = प्रार्च्छति
अतः विकल्प (C) सही है।

36. (A) 37. (D) 38. (C) 39. (C) 40. (B) 41. (C)

42. 'व्यूढोरस्कः' में समास है?
(A) अव्ययीभाव (B) कर्मधारय
(C) बहुव्रीहि (D) द्वन्द्व

	पद	**समास**
(A)	अधिगोपम्	अव्ययीभाव
(B)	नीलकमलम्	कर्मधारय
(C)	**व्यूढोरस्कः**	**बहुव्रीहि**
(D)	नक्तन्दिवम्	द्वन्द्व

अतः विकल्प (C) सही है।

43. 'वैकुण्ठम् अध्यास्ते हरिः' यहाँ किस अर्थ में कर्म संज्ञा होती है?
(A) अपादान अर्थ में (B) सम्प्रदान अर्थ में
(C) सम्बन्ध अर्थ में (D) आधार अर्थ में

व्याख्या–
(A) 'जनिकर्तुः प्रकृतिः' (1/4/30) सूत्र से जन् धातु के कर्त्ता के कारण की अपादानसंज्ञा होती है। यथा–ब्राह्मणः प्रजाः प्रजायन्ते।
(B) 'रुच्यर्थानां प्रीयमाणः' (1/4/33) सूत्र से रुच्यर्थ धातुओं के प्रयोग में प्रीयमाण (प्रसन्न होने वाले) व्यक्ति की सम्प्रदान संज्ञा होती है। यथा–हरये भक्तिः रोचते।
(C) 'अधीगर्थदयेशां कर्मणि' (2/3/52) सूत्र से सम्बन्ध मात्र की विवक्षा में षष्ठी विभक्ति होती है।
यथा–मातुः स्मरति।
(D) 'अधिशीङ्स्थासां कर्म' (1/4/46) सूत्र से शीङ्, स्था, आस् धातुओं के पहले 'अधि' उपसर्ग लगा हो तो क्रिया के **आधार की कर्मसंज्ञा** होती है। यथा–वैकुण्ठम् अध्यास्ते हरिः। अतः विकल्प (D) सही है।

44. युष्मद्' शब्द का सप्तमी बहुवचन का रूप होता है?
(A) त्वयि (B) युष्मासु
(C) युष्माकम् (D) युस्मत्

व्याख्या–
* युष्मद् सर्वनाम का पञ्चमी विभक्ति में रूप–'त्वत् युवाभ्याम् युष्मत्' बनता है।
* षष्ठी विभक्ति में–'तव युवयोः युष्माकम्' रूप बनता है।
* सप्तमी विभक्ति में–'त्वयि युवयोः **युष्मासु**' रूप बनता है। अतः विकल्प (B) सही है।

45. '96' का संस्कृत रूप होगा?
(A) षट्सप्ततिः (B) षडशीतिः
(C) षण्णवतिः (D) षट्षष्टिः

	संख्या	**संस्कृत रूप**
(A)	76	षट्सप्ततिः
(B)	86	षडशीतिः
(C)	**96**	**षण्णवतिः**
(D)	66	षट्षष्टिः

अतः विकल्प (C) सही है।

46. हन् धातु लोट्लकार मध्यमपुरुष एकवचन का रूप होता है?
(A) जहि (B) हन्तु
(C) हंसि (D) वध

व्याख्या–
(A) हन् धातु लोट्लकार मध्यमपुरुष में–''**जहि** हतम् हत'' रूप बनता है।
(B) प्रथमपुरुष में–'हन्तु हताम् घ्नन्तु' रूप बनता है।
(C) लट्लकार मध्यमपुरुष में–'हंसि हथः हथ' रूप बनता है।
(D) 'वध' रूप ''हन्'' धातु के दसों लकारों में कहीं नहीं बनता है।
अतः विकल्प (A) सही है।

47. 'पा' धातु लृट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप होगा?
(A) पास्यसि (B) पिबिष्यति
(C) पास्यति (D) पास्यामि

व्याख्या–
(A) 'पा' धातु (पीना) लृट्लकार मध्यमपुरुष में–'पास्यसि पास्यथः' पास्यथ रूप बनता है।
(B) पिबिष्यति रूप 'पा' धातु के दसों लकारों में कहीं नहीं बनता है।
(C) लृट्लकार प्रथमपुरुष में–'**पास्यति** पास्यतः पास्यन्ति' रूप बनता है।
(D) उत्तमपुरुष में–'पास्यामि पास्यावः, पास्यामः'
अतः विकल्प (C) सही है।

42. (C) 43. (D) 44. (B) 45. (C) 46. (A) 47. (C)

48. 'रामः अश्वं ग्रामं नयति' इसका कर्मवाच्य होगा?
(A) रामः अश्वं नीयते
(B) रामेण अश्वः ग्रामं नयते
(C) रामेण ग्रामः अश्वं नयते
(D) रामेण अश्वः ग्रामं नीयते

व्याख्या–
* 'रामः अश्वं ग्रामं नयति' इस कर्तृवाच्य का कर्मवाच्य **'रामेण अश्वः ग्रामं नीयते'** होगा
* कर्मवाच्य के कर्त्ता में तृतीया विभक्ति, कर्म में प्रथमा विभक्ति, क्रिया कर्म के अनुसार सदा आत्मनेपद में प्रयुक्त होती है।
* किन्तु द्विकर्मक वाक्यों के लिए नियम है कि ''गौणे कर्मणि दुह्यादेः''– अर्थात् दुह्, याच् आदि द्वादश धातुओं के वाच्यपरिवर्तन के समय गौणकर्म में परिवर्तन हो, किन्तु नी, हृ, कृष्, वह् इन चार धातुओं के मुख्यकर्म में परिवर्तन हो। यहाँ 'अश्वम्' और 'ग्रामम्' दो कर्म हैं, और 'नी' धातु का प्रयोग है। अतः मुख्यकर्म 'अश्व' में प्रथमाविभक्ति हुई। अतः विकल्प (D) सही है।

49. 'अत्रभवतां भवताम् आगमनेन धन्या वयम्' इस वाक्य का हिन्दी अनुवाद होगा?
(A) यहाँ आपके आगमन से वे धन्य हुए
(B) यहाँ आपके आगमन से मैं धन्य हुआ
(C) यहाँ आप लोगों के आगमन से हम धनवान् हुए
(D) पूजनीय आप लोगों के आगमन से हम लोग धन्य हुए

व्याख्या– 'भवत्' प्रातिपदिक के पूर्व 'अत्र' अव्यय का प्रयोग करने से उसका अर्थ पूजनीय होगा।
अतः विकल्प (D) सही है।

50. 'यात्येकतोऽस्तशिखरं पतिरोषधीनाम्' यहाँ 'पतिरोषधीनाम्' शब्द प्रयुक्त हुआ है?
(A) चन्द्रमा के लिए
(B) सूर्य के लिए
(C) कण्व के लिए
(D) विश्वामित्र के लिए

व्याख्या–
* यात्येकतोऽस्तशिखरं पतिरोषधीना–
माविष्कृतोऽरुणपुरःसर एकतोऽर्कः''– (अभिज्ञान 4/2)

अर्थात् एक ओर वनस्पतियों का स्वामी चन्द्रमा अस्ताचल के शिखर को जा रहा है और एक ओर अरुण को आगे किए हुए सूर्य प्रकट (उदय) हो रहा है।
* यहाँ **'पतिरोषधीनाम्' चन्द्रमा के लिए** आया है।
* 'अर्कः' शब्द सूर्य के लिए प्रयुक्त है।

अतः विकल्प (A) सही है।

51. अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक में वर्णित शार्ङ्गरव है?
(A) कण्व का शिष्य
(B) मारीच का शिष्य
(C) दुष्यन्त का पुरोहित
(D) राजा ययाति का पुत्र

व्याख्या–
(A) शार्ङ्गरव तथा शारद्वत-**कण्व के शिष्य** हैं।
(B) गालव, मारीच का शिष्य है।
(C) सोमरात, दुष्यन्त का पुरोहित है।
(D) पुरु, राजा ययाति का पुत्र है।
अतः विकल्प (A) सही है।

52. 'अयं जनः कस्य हस्ते समर्पितः' यह कथन है।
(A) शकुन्तला का
(B) अनसूया और प्रियंवदा का
(C) कण्व का
(D) कण्व शिष्य का

व्याख्या–
(A) 'एषा द्वयोर्युवयोर्हस्ते निक्षेपः' शकुन्तला, दोनों सखियों से कहती है कि ये लता (वनज्योत्सना) तुम दोनों के हाथ में (मेरी) धरोहर है।
(B) 'अयं जनः कस्य हस्ते समर्पितः'–**अनसूया एवं प्रियंवदा** शकुन्तला से कहती है कि हम दोनों को किसे सौंप रही हो? अतः विकल्प (B) सही है।
(C) 'अवैमि ते तस्यां सोदर्यास्नेहम्'–कण्व, शकुन्तला से कहते हैं कि इस (वनज्योत्स्ना) पर तुम्हारा सगी बहन सा प्रेम है।
(D) निष्ठ्यूतश्चरणोपरागसुभगो लाक्षारसः केनचित्'–कण्व शिष्य का कथन है। (अभि० 4/5)

48. (D) 49. (D) 50. (A) 51. (A) 52. (B)

53. 'रक्षितव्या खलु प्रकृतिपेलवा प्रियसखी'–यह कथन है?
(A) अनसूया का शकुन्तला के प्रति
(B) प्रियंवदा का शकुन्तला के प्रति
(C) अनसूया का प्रियंवदा के प्रति
(D) कण्व का शकुन्तला के प्रति

व्याख्या–
(A) 'रक्षितव्या खलु प्रकृतिपेलवा प्रियसखी'–**अनसूया**, प्रियंवदा से शकुन्तला के लिए कहती है कि– हमें स्वभाव से कोमल प्रियसखी की रक्षा करनी चाहिए।
(B) 'को नामोष्णोदकेन नवमालिकां सिञ्चति'–प्रियंवदा, शकुन्तला के लिए कहती है कि भला कौन नवमालिका (चमेली) को गर्म जल से सींचता है।
(C) 'गच्छ, पादयोः प्रणम्य निवर्तयैनं'–अनसूया, प्रियंवदा से कहती है।
(D) 'ययातेरिव शर्मिष्ठा भर्तुर्बहुमता भव'–कण्व, शकुन्तला के लिए कहते हैं।
अतः विकल्प (A) सही है।

54. 'प्रसवः खलु प्रकर्षपर्यन्तः स्नेहस्य' यहाँ प्रसवः शब्द का अर्थ है?
(A) सन्तान **(B) गर्भावस्था**
(C) प्रसववेदना **(D) सन्तानोत्पत्ति**

व्याख्या–
'प्रसवः खलु प्रकर्षपर्यन्तः स्नेहस्य'–तमसा कहती है कि वस्तुतः **सन्तान** प्रेम की चरम सीमा होती है।
अतः विकल्प (A) सही है।

55. 'पूरोत्पीडे तटाकस्य परीवाहः प्रतिक्रिया' यह कथन है?
(A) तमसा का **(B) मुरला का**
(C) सीता का **(D) राम का**

व्याख्या–
(A) 'पुरोत्पीडे तटाकस्य परीवाहः प्रतिक्रिया'–**तमसा** कहती है कि तालाब में जलप्रवाह की अधिकता होने पर जल को बाहर निकालना ही उसका एकमात्र प्रतिकार है। (उत्तररामचरित 3/29)
(B) 'पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः'–मुरला का कथन है।
(C) 'एष परित्याग एषोऽभिषङ्ग इति'–सीता का कथन
(D) 'मया लब्धः पाणिर्ललितलवलीकन्दलनिभः'–राम का कथन
अतः विकल्प (A) सही है।

56. 'त्वं जीवितं त्वमसि मे हृदयं द्वितीयं' त्वं कौमुदी नयनयोरमृतं त्वमङ्गे' यह कथन है?
(A) सीता का **(B) वासन्ती का**
(C) मुरला का **(D) तमसा का**

व्याख्या–
(A) 'ईदृशो मे पुत्रकः संवृत्तः'–सीता का कथन
(B) 'त्वं जीवितं त्वमसि मे हृदयं द्वितीयं, त्वं कौमुदी नयनयोरमृतं त्वमङ्गे'–प्रस्तुत पद्य में **वासन्ती** राम को उलाहना देते हुए कहती है कि–'तुम मेरा जीवन हो, तुम मेरा दूसरा हृदय हो, तुम मेरे नेत्रों के लिए चाँदनी हो, तुम मेरे अङ्गों के लिए अमृत हो। इत्यादि सैकड़ों शब्दों से आपने सीता को बहलाया था।
(उत्तररामचरित 3/26)
(C) 'ईदृशानां विपाकोऽपि जायते परमाद्भुतः'–मुरला का कथन
(D) 'द्रवीभूतं प्रेम्णा तव हृदयमस्मिन्क्षण इव'–तमसा का कथन
अतः विकल्प (B) सही है।

57. 'उत्तररामचरितम्' नाटक में वर्णित 'वासन्ती' है?
(A) राक्षसी **(B) नदी**
(C) लव-कुश की परिचारिका **(D) सीता की सखी**

व्याख्या–
* भवभूति कृत उत्तररामचरितम् नाटक में **वासन्ती (वनदेवता) सीता की सखी** है। अतः विकल्प (D) सही है।
* तमसा और मुरला-दो नदी पात्र हैं।

58. 'उत्तररामचरितम्' के छायाङ्क में प्रधानरस है?
(A) वीररस **(B) करुणरस**
(C) शृङ्गाररस **(D) विप्रलम्भशृङ्गार**

	ग्रन्थ	**प्रधानरस**
(A)	वेणीसंहारम्	वीररस
(B)	**उत्तररामचरितम् (छायाङ्क)**	**करुणरस**
(C)	मालविकाग्निमित्रम्	शृङ्गाररस
(D)	मेघदूतम्	विप्रलम्भशृङ्गार

अतः विकल्प (B) सही है।

53. (A) 54. (A) 55. (A) 56. (B) 57. (D) 58. (B)

59. 'रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय' यह श्लोकांश उद्धृत है?
(A) नीतिशतकम् से (B) किरातार्जुनीयम् से
(C) उत्तररामचरितम् से (D) मेघदूतम् से

व्याख्या–
(A) 'भवति हृदयदाही शल्यतुल्यो विपाकः'–नीतिशतकम् से
(B) 'मखेष्वखिन्नोऽनुमतः पुरोधसा'–किरातार्जुनीयम् से
(C) 'उत्पीड इव धूमस्य मोहः प्रागावृणोति माम्'–उत्तररामचरितम् से
(D) **'रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय'** (पूर्वमेघ/20) अर्थात् रिक्त सब हल्के होते हैं और भरा-पूरा होना गौरव (वृद्धि) के लिए होता है। अतः विकल्प (D) सही है।

60. मेघदूत में किस नगरी का उल्लेख मिलता है?
(A) अयोध्या (B) अलका
(C) काञ्ची (D) मथुरा

व्याख्या– कालिदास कृत मेघदूतम् (खण्डकाव्य) में **'अलका'** नगरी का उल्लेख है। जहाँ यक्ष निवास करते हैं। **''गन्तव्या ते वसतिरलका नाम यक्षेश्वराणाम्''– (पूर्वमेघ-7)** अतः विकल्प (B) सही है।

61. 'शापान्तो मे भुजगशयनादुत्थिते शार्ङ्गपाणौ'–यहाँ 'शार्ङ्गपाणौ' का अर्थ है?
(A) भगवान् सूर्य (B) भगवान् शङ्कर
(C) भगवान् विष्णु (D) भगवान् राम

व्याख्या– शापान्तो मे भुजगशयनादुत्थिते शार्ङ्गपाणौ' (उत्तरमेघ/50) यक्ष, मेघ से शापान्त में यक्षिणी को सुख की आशा बाँधने का वर्णन करते हुए कहता है कि–**विष्णु भगवान्** के शय्या पर से उठने पर (अर्थात् अगली देवोत्थान एकादशी को) मेरा शाप बीत जायेगा। अतः यहाँ 'शार्ङ्गपाणिः' पद का अर्थ 'भगवान् विष्णु' है।
अतः विकल्प (C) सही है।

62. 'कथं त्वमेतौ धृतिसंयमौ यमौ विलोकयन्नुत्सहसे न बाधितुम्' इस श्लोक में 'धृतिसंयमौ' किस युग्म के लिए प्रयुक्त है?
(A) राम-लक्ष्मण (B) नकुल-सहदेव
(C) भीम-अर्जुन (D) बलराम-कृष्ण

व्याख्या– यह श्लोकांश द्रौपदी का कथन है जिसमें युधिष्ठिर को लक्ष्य करके वह कहती है कि–इन दोनों **(नकुल सहदेव)** को देखते हुए आप धैर्य और संयम छोड़ने के लिए क्यों नहीं साहस करते। (किरात0 1/36) अतः विकल्प (B) सही है।

63. 'राजनीति' की तुलना की गयी है?
(A) नारी से (B) वेश्या से
(C) छाया से (D) रानी से

व्याख्या– 'वाराङ्गनेव नृपनीतिरनेकरूपा'–इस पंक्ति में भर्तृहरि कहते हैं कि–'राजाओं की नीति (राजनीति) **वाराङ्गना (वेश्या)** की तरह अनेक रूपों वाली है। नीतिशतकम्/अर्थपद्धति/39 अतः विकल्प (B) सही है।

64. 'न हि गणयति क्षुद्रो जन्तुः परिग्रहफल्गुताम्' इस श्लोक में 'गणयति' का तात्पर्य है?
(A) गणना करने से (B) संख्या गिनने से
(C) विचारने से (D) शत्रुता करने से

व्याख्या–
न हि गणयति क्षुद्रो जन्तुः परिग्रहफल्गुताम्' अर्थात् क्षुद्र (नीच) व्यक्ति अपनायी गयी वस्तु की तुच्छता पर **विचार नहीं करते हैं।** नीतिशतकम्/अज्ञपद्धति/9
अतः विकल्प (C) सही है।

65. 'शूरे निर्घृणता मुनौ विमतिता दैन्यं प्रियालापिनि'– इस श्लोकांश में 'निर्घृणता' का क्या अर्थ है?
(A) घृणा (B) निर्दयता
(C) सज्जनता (D) दुर्जनता

व्याख्या– प्रस्तुत पंक्ति का अर्थ है–वीर में **निर्दयता**, मुनि में बुद्धिहीनता, मधुरभाषी में दीनता। (नीतिशतकम्/दुर्जनपद्धति/44) अतः निर्घृणता का अर्थ निर्दयता है।
अतः विकल्प (B) सही है।

66. नीतिशतककार के मतानुसार सम्पत्तिकाल में महापुरुषों की मनोवृत्ति होती है?
(A) विशाल पर्वत की शिलाओं की समूह की भाँति कठोर
(B) कमल के समान कोमल
(C) पीपल पात की तरह चञ्चल
(D) पवन के समान गतिशील

व्याख्या–''सम्पत्सु महतां चित्तं भवत्युत्पलकोमलम्। आपत्सु च महाशैलशिलासंघातकर्कशम्।।'' (नीतिशतकम्/सुजनपद्धति/56) अर्थात् महापुरुषों का चित्त (मनोवृत्ति) सम्पत्तिकाल में **कमल के समान कोमल** रहता है और विपत्ति में विशाल पर्वत की शिलाओं के समूह के समान कठोर होता है। अतः विकल्प (B) सही है।

59. (D)	60. (B)	61. (C)	62. (B)	63. (B)	64. (C)	65. (B)	66. (B)

67. 'जीमूतेन स्वकुशलमयीं हारयिष्यन् प्रवृत्तिम्' प्रस्तुत पंक्ति में 'जीमूतेन' का अभिप्राय है?
(A) पवन से (B) बादल से
(C) शकुन्तला से (D) यशोमति से

व्याख्या– जीमूतेन स्वकुशलमयीं हारयिष्यन् प्रवृत्तिम्' अर्थात् (यक्ष) मेघ के द्वारा अपना कुशल समाचार पहुँचाने की इच्छा करता है। अतः यहाँ **'जीमूत' का अर्थ है–मेघ (बादल)** (पूर्वमेघ/4) अतः विकल्प (B) सही है।

68. चन्द्रापीड की प्रेमिका थी?
(A) महाश्वेता (B) कादम्बरी
(C) शकुन्तला (D) चाण्डालकन्या

	पति/प्रेमी	**पत्नी/प्रेमिका**
(A)	वैशम्पायन	महाश्वेता
(B)	**चन्द्रापीड**	**कादम्बरी**
(C)	दुष्यन्त	शकुन्तला
(D)	श्वेतकेतु	लक्ष्मी

अतः विकल्प (B) सही है।

69. शुकनास किस राजा का प्रधान अमात्य था?
(A) राम का (B) दुष्यन्त का
(C) दशरथ का (D) तारापीड का

व्याख्या– * **तारापीड** का प्रधान अमात्य शुकनास था
* दुष्यन्त का प्रधान अमात्य पिशुन था।
* दशरथ और राम के प्रधान अमात्य सुमन्त्र थे।
अतः विकल्प (D) सही है।

70. सप्तमी विभक्ति में 'गुरु' का सही रूप होगा?
(A) गुरवे (B) गुरौ
(C) गुरुणा (D) गुरो

व्याख्या–
(A) 'गुरु' उकारान्त पुंलिङ्ग का रूप चतुर्थी विभक्ति में– ''गुरवे गुरुभ्याम् गुरुभ्यः'' बनता है।
(B) सप्तमी विभक्ति में–**''गुरौ** गुर्वोः गुरुषु'' रूप बनता है।
(C) तृतीया विभक्ति में–''गुरुणा गुरुभ्याम् गुरुभिः'' रूप बनता है।
(D) 'गुरो' रूप सातों विभक्तियों में कहीं नहीं बनता है। अतः विकल्प (B) सही है।

71. 'प्रध्यम्' किस विभक्ति का रूप है?
(A) द्वितीया (B) तृतीया
(C) पञ्चमी (D) सप्तमी

व्याख्या– 'प्रधी' ईकारान्त पुंलिङ्ग शब्द का रूप–
(A) द्वितीया विभक्ति में–**'प्रध्यम्** प्रध्यौ प्रध्यः' बनता है।
(B) तृतीया विभक्ति में–'प्रध्या प्रधीभ्याम् प्रधीभिः' बनता है।
(C) पञ्चमी विभक्ति में–'प्रध्यः प्रधीभ्याम् प्रधीभ्यः' बनता है।
(D) सप्तमी विभक्ति में–'प्रध्यि प्रध्योः प्रधीषु' होता है।
अतः विकल्प (A) सही है।

72. 'पति' शब्द का सप्तमी एकवचन का रूप होगा?
(A) पतीन् (B) पत्ये
(C) पत्युः (D) पत्यौ

व्याख्या– 'पति' इकारान्त पुंलिङ्ग शब्द के रूप–
(A) द्वितीया विभक्ति में–'पतिम् पती पतीन्' बनता है
(B) चतुर्थी विभक्ति में–'पत्ये पतिभ्याम् पतिभ्यः' होता है
(C) षष्ठी विभक्ति में–'पत्युः पत्योः पतीनाम्' बनता है
(D) सप्तमी विभक्ति में–**'पत्यौ** पत्योः पतिषु' बनता है।
अतः विकल्प (D) सही है।

73. 'बालक' शब्द का षष्ठी बहुवचन का रूप होगा?
(A) बालकान् (B) बालकानाम्
(C) बालकेन (D) बालकेभ्यः

व्याख्या– 'बालक' अकारान्त पुंलिङ्ग शब्द का रूप–
(A) द्वितीया विभक्ति में–''बालकम् बालकौ बालकान्''
(B) षष्ठी विभक्ति में–''बालकस्य बालकयोः **बालकानाम्**''
(C) तृतीया विभक्ति में–''बालकेन बालकाभ्याम् बालकैः''
(D) पञ्चमी विभक्ति में–''बालकात् बालकाभ्याम् बालकेभ्यः।''
अतः विकल्प (B) सही है।

74. 'अक्षिषु' किस विभक्ति का रूप है?
(A) सप्तमी (B) द्वितीया
(C) तृतीया (D) चतुर्थी

व्याख्या– 'अक्षि' इकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द के रूप–
(A) सप्तमी विभक्ति में–अक्षिण अक्ष्णोः **अक्षिषु**
(B) द्वितीया विभक्ति में–अक्षि अक्षिणी अक्षीणि
(C) तृतीया विभक्ति में–अक्ष्णा अक्षिभ्याम् अक्षिभिः
(D) चतुर्थी विभक्ति में–अक्ष्णे अक्षिभ्याम् अक्षिभ्यः
अतः विकल्प (A) सही है।

67. (B) 68. (B) 69. (D) 70. (B) 71. (A) 72. (D) 73. (B) 74. (A)

75. 'ष्टुना ष्टुः' के अनुसार सन्धि रूप है?
(A) तट्टीका (B) सच्चित्
(C) विश्नः (D) वृक्षाल्लगुडम्

व्याख्या–
(A) **'ष्टुना ष्टुः'** (8/4/41) सूत्र से **तत् + टीका = तट्टीका** में त् का ट् से योग होने पर त् के स्थान पर ट् आदेश हुआ है।
(B) 'स्तोः श्चुना श्चुः' (8/4/40) सूत्र से सत् + चित् = सच्चित्।
(C) 'शात्' (8/4/44) सूत्र से विश् + नः = विश्नः।
(D) 'तोर्लि' (8/4/60) सूत्र से वृक्षात् + लगुडम् = वृक्षाल्लगुडम्।
अतः विकल्प (A) सही है।

76. 'तुम कानपुर जाओ' का सही संस्कृत अनुवाद है?
(A) गच्छ त्वं कर्णपुरम् (B) कर्णपुरं त्वं गच्छेत्
(C) कर्णपुर त्वाम् गच्छ (D) त्वं कर्णपुरं गच्छेय

व्याख्या– तुम कानपुर जाओ–आज्ञार्थक है इसलिए लोट्लकार की क्रिया का प्रयोग होगा–**गच्छ त्वं कर्णपुरम्।**
अतः विकल्प (A) सही है।

77. '91' का संस्कृत शब्दात्मक रूप होगा?
(A) एकनवतिः (B) नवनवतिः
(C) एकोननवतिः (D) एकाशीतिः

	संख्या	**संस्कृतरूप**
(A)	**91**	**एकनवतिः**
(B)	99	नवनवतिः
(C)	89	एकोननवतिः
(D)	81	एकाशीतिः

अतः विकल्प (A) सही है।

78. 'अनद्यतन भविष्य' के लिए प्रयुक्त होता है?
(A) लट् (B) लिट्
(C) लुट् (D) लङ्

	लकार	**कालबोधक**
(A)	लट्लकार	वर्तमान काल
(B)	लिट्लकार	परोक्ष भूत
(C)	**लुट्लकार**	**अनद्यतन भविष्य**
(D)	लङ्लकार	अनद्यतन भूतकाल

अतः विकल्प (C) सही है।

79. गम् धातु का लुङ्लकार प्रथमपुरुष बहुवचन में रूप बनता हैं–
(A) जगाम (B) अगमन्
(C) गम्यात् (D) अगमाम

व्याख्या– गम् धातु का रूप–
(A) लिट्लकार प्रथमपुरुष में–''जगाम जग्मतुः जग्मुः''।
(B) लुङ्लकार प्रथमपुरुष में–''अगमत् अगमताम् अगमन्''।
(C) आ. लिङ् प्रथमपुरुष में–''गम्यात् गम्यास्ताम् गम्यासु''।
(D) लुङ्लकार उत्तमपुरुष में–''अगमम् अगमाव अगमाम''।
अतः विकल्प (B) सही है।

80. भू धातु का लुङ्लकार प्रथमपुरुष एकवचन में रूप होता है?
(A) अभूत् (B) अभूवन्
(C) अभूत (D) बभूव

व्याख्या– भू धातु लुङ्लकार प्रथमपुरुष में रूप–**''अभूत्,** अभूताम् अभूवन्'' बनता है।
मध्यमपुरुष में–''अभूः अभूतम् अभूत'' बनता है।
लिट्लकार प्रथमपुरुष में–बभूव बभूवतुः बभूवुः
अतः विकल्प (A) सही है।

81. 'हल्' सन्धि कहते है?
(A) स्वरसन्धि को (B) व्यञ्जनसन्धि को
(C) विसर्गसन्धि को (D) मुखसन्धि को

व्याख्या–
(A) स्वरसन्धि को अच्सन्धि भी कहते हैं।
(B) **व्यञ्जनसन्धि को हल्सन्धि** भी कहा जाता है।
(C) विसर्ग में हुए विकार को विसर्ग सन्धि कहते हैं
(D) 'मुखसन्धि' नाटक में प्रयुक्त होती है।
अतः विकल्प (B) सही है।

82. पितृ + आकृतिः का शुद्ध सन्धि रूप है?
(A) पितृ आकृतिः (B) पतिकृतिः
(C) पित्राकृतिः (D) पित्राराकृतिः

व्याख्या– * 'इको यणचि' (6/1/77) सूत्र से इक् के स्थान पर यण् (अर्थात् ऋ को र्) आदेश होकर **पितृ + आकृतिः = पित्राकृतिः** में यण् सन्धि होगी।
* त् और र् के संयोग से 'त्र' बनता है।
अतः विकल्प (C) सही है।

75. (A)	76. (A)	77. (A)	78. (C)	79. (B)	80. (A)	81. (B)	82. (C)

83. 'पावकः' का सन्धि विच्छेद है?
(A) पा + अकः (B) पो + अकः
(C) पै + अकः (D) पौ + अकः

व्याख्या– 'एचोऽयवायावः' (6/1/78) सूत्र से 'औ' के स्थान पर 'आव्' आदेश होकर **पौ + अकः = पावकः** में अयादि सन्धि है।
अतः विकल्प (D) सही है।

84. चतुर्थी तत्पुरुष युक्त समास है?
(A) यूपदारु (B) चौरभयम्
(C) राजपुरुषः (D) सभापण्डितः

	पद	समास
(A)	**यूपदारु**	**चतुर्थीतत्पुरुष**
(B)	चौरभयम्	पञ्चमीतत्पुरुष
(C)	राजपुरुषः	षष्ठीतत्पुरुष
(D)	सभापण्डितः	सप्तमीतत्पुरुष

अतः विकल्प (A) सही है।

85. 'द्विगु' समास युक्त शब्द है?
(A) दूरादागतः (B) त्रिभुवनम्
(C) चन्द्रशेखरः (D) हरिहरौ

व्याख्या–
(A) 'स्तोकान्तिकदूरार्थकृच्छ्राणि क्तेन' (2.1.39) सूत्र से दूरात् आगतः दूरादागतः में पञ्चमी तत्पुरुषसमास है।
(B) 'तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च' (2/1/51) सूत्र से **त्रयाणां भुवनानां समाहारः त्रिभुवनम् में द्विगुसमास** है।
(C) 'अनेकमन्यपदार्थे' (2/2/24) सूत्र से चन्द्रः शेखरे यस्य सः = चन्द्रशेखरः में बहुव्रीहि समास है।
(D) 'द्वन्द्वे घि' (2/2/32) सूत्र से 'हरिश्च हरश्च = हरिहरौ' इस द्वन्द्वसमास में घिसंज्ञक 'हरि' शब्द का पूर्वप्रयोग हुआ है। और "चार्थे द्वन्द्वः" से द्वन्द्वसमास हुआ।
अतः विकल्प (B) सही है।

86. 'चक्रपाणिः' में समास है?
(A) द्वन्द्व (B) बहुव्रीहि
(C) द्विगु (D) तत्पुरुष

	पद	समास
(A)	चटकौ	द्वन्द्वसमास
(B)	**चक्रपाणिः**	**बहुव्रीहिसमास**
(C)	पञ्चग्रामम्	द्विगुसमास
(D)	मेघात्यस्तः	तत्पुरुषसमास

अतः विकल्प (B) सही है।

87. यदि 'अ' या 'आ' के बाद 'उ' या 'ऊ' आये तो होगा?
(A) ए (B) ऐ
(C) ओ (D) औ

व्याख्या– आद्गुणः (6/1/87) सूत्र से अ या आ के बाद स्वर हो तो (इ, उ, ऋ, ऌ) दोनों के स्थान पर गुण हो जाता है यथा–
अ, आ + इ, ई = ए
अ, आ + उ, ऊ = ओ
अ, आ + ऋ, ॠ = अर्
अ, आ + ऌ = अल्
रमा + ईशः = रमेशः (आ + ई = ए)
गङ्गा + उदकम् = गङ्गोदकम् (आ + उ = ओ)
अतः विकल्प (C) सही है।

88. 'हिमस्य अत्ययः' का सम्पूर्ण पद है?
(A) अनुहिमम् (B) अतिहिमम्
(C) उपहिमम् (D) उपहिमाय

व्याख्या– 'अव्ययं विभक्ति समीप.....' (2/1/6) सूत्र से यहाँ नाश अर्थ में अति अव्यय का हिमस्य सुबन्त के साथ **'हिमस्य अत्ययः = अतिहिमम्'** में अव्ययीभाव समास है?
अतः विकल्प (B) सही है।

89. 'निर्मक्षिकम्' में समास है?
(A) द्वितीया तत्पुरुष (B) अव्ययीभाव
(C) नञ् तत्पुरुष (D) सप्तमी तत्पुरुष

	पद	समास
(A)	प्रलयगतः	द्वितीयातत्पुरुष
(B)	**निर्मक्षिकम्**	**अव्ययीभाव**
(C)	अगर्दभः	नञ् तत्पुरुष
(D)	अक्षशौण्डः	सप्तमी तत्पुरुष

अतः विकल्प (B) सही है।

83. (D) 84. (A) 85. (B) 86. (B) 87. (C) 88. (B) 89. (B)

90. 'हरित्रातः में समास है?
(A) अव्ययीभाव (B) तृतीया तत्पुरुष
(C) पञ्चमी तत्पुरुष (D) द्विगु

व्याख्या–
(A) ''अव्ययं विभक्तिसमीप''.....आदि सूत्र से 'शक्तिम् अनतिक्रम्य इति यथाशक्ति' में अव्ययीभाव समास है।
(B) 'कर्तृकरणे कृता बहुलम्' (2/1/32) सूत्र से '**हरिणा त्रातः = हरित्रातः' में तृतीया तत्पुरुषसमास** है।
(C) 'पञ्चमी भयेन' (2/1/37) सूत्र एवं 'भयभीतभीतिभीभिरिति वाच्यम्' वार्तिक से 'वृकाद् भीतिः = वृकभीतिः' में पञ्चमी तत्पुरुषसमास है।
(D) 'तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च' (2/1/51) सूत्र से 'षण्णां मातॄणामपत्यं पुमान् इति = षाण्मातुरः' में द्विगुसमास है
अतः विकल्प (B) सही है।

91. 'उपान्वध्याङ्वसः' सूत्र है?
(A) करणकारक का (B) कर्मकारक का
(C) अपादानकारक का (D) सम्प्रदानकारक का

व्याख्या–
(A) कर्तृकरणयोस्तृतीया' (2/3/18) सूत्र से अनुक्त कर्त्ता तथा करणकारक में तृतीया होती है। यथा–रामेण गम्यते।
(B) 'उपान्वध्याङ्वसः' (1/4/48) सूत्रानुसार यदि वस् धातु के पूर्व उप, अनु, अधि और आङ् उपसर्ग लगा हो तो क्रिया के आधार की **कर्मसंज्ञा** होती है यथा–हरिः वैकुण्ठम् अनुवसति।
(C) 'अकर्तर्यृणे पञ्चमी' (2/3/24) सूत्र से कर्तृभिन्न हेतुभूत ऋणवाचक शब्द से पञ्चमी विभक्ति होती है यथा–शताद् बद्धः।
(D) ''उत्पातेन ज्ञापिते च'' वार्तिक से उत्पात से जो बात जानी जाय उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है यथा–वाताय कपिला विद्युत्।
अतः विकल्प (B) सही है।

92. 'परितः' के योग में विभक्ति होती है?
(A) द्वितीया (B) तृतीया
(C) चतुर्थी (D) पञ्चमी

व्याख्या–
(A) अभितः, परितः, समया, निकषा, हा, प्रति, उभयतः सर्वतः, धिक्, उपर्युपरि, अध्यधि, अधोऽधः, अन्तरा, अन्तरेण, शब्दों के योग में **द्वितीयाविभक्ति** होती है।
(B) सह, साकम्, सार्धम्, समम्, प्राय, गोत्र, पृथक्, विना, नाना, आदि शब्दों के योग में तृतीया विभक्ति होती है।
(C) नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलम्, वषट्, शब्दों के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है।
(D) अन्य, आरात्, इतर, ऋते, प्राक्, प्रत्यक्, बहिः, दक्षिणा, उत्तरा, पूर्वा, दक्षिणाहि, उत्तराहि, स्तोक, अल्प, कृच्छ्र, कतिपय, दूर, अन्तिक शब्दों के योग में पञ्चमी विभक्ति होती है।
अतः विकल्प (A) सही है।

93. 'इत्थंभूतलक्षणे' सूत्र है?
(A) करणकारक का (B) सम्प्रदानकारक का
(C) अपादानकारक का (D) अधिकरणकारक का

	सूत्र	सम्बन्धित कारक
(A)	**इत्थम्भूतलक्षणे**	**करणकारक**
(B)	रुच्यर्थानां प्रीयमाणः	सम्प्रदानकारक
(C)	भुवः प्रभवः	अपादान
(D)	यतश्च निर्धारणम्	अधिकरण

अतः विकल्प (A) सही है।

94. 'तस्मै श्रीगुरवे नमः' वाक्य में 'श्रीगुरवे' है?
(A) द्वितीया विभक्ति में (B) पञ्चमी विभक्ति में
(C) षष्ठी विभक्ति में (D) चतुर्थी विभक्ति में

व्याख्या–
(A) 'कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे' (2/3/5) सूत्र से कालवाची और मार्गवाची शब्दों में द्वितीया विभक्ति होती है यथा–क्रोशं कुटिला नदी।
(B) 'दूरान्तिकार्थेभ्यो द्वितीया च' (2/3/35) सूत्र से दूर तथा अन्तिक वाले शब्दों से द्वितीया, पञ्चमी और तृतीया विभक्ति होती है यथा–ग्रामस्य दूरात् दूरम् दूरेण वा
(C) 'षष्ठी हेतुप्रयोगे' (2/3/26) सूत्र से वाक्य में हेतु शब्द का प्रयोग होने पर हेतु (कारण) और हेतु शब्द में अर्थात् दोनों में षष्ठी विभक्ति होती है। यथा–अन्नस्य हेतोः वसति।
(D) 'नमः स्वस्तिस्वाहास्वधाऽलंवषड्योगाच्च' (2/3/16) सूत्र से 'नमः' शब्द के योग में '**श्रीगुरवे' में चतुर्थी विभक्ति** का प्रयोग हुआ है। यथा–तस्मै श्रीगुरवे नमः।
अतः विकल्प (D) सही है।

90. (B) 91. (B) 92. (A) 93. (A) 94. (D)

95. 'भीत्रार्थानां भयहेतुः' सूत्र है?
(A) कर्मकारक का (B) सम्प्रदानकारक
(C) अपादानकारक का (D) अधिकरणकारक का

सूत्र	सम्बन्धितकारक
(A) अकथितं च	कर्मकारक
(B) धारेरुत्तमर्णः	सम्प्रदानकारक
(C) **भीत्रार्थानां भयहेतुः**	**अपादानकारक**
(D) आधारोऽधिकरणम्	अधिकरणकारक

अतः विकल्प (C) सही है।

96. 'यस्य च भावेन भावलक्षणम्' सूत्र है?
(A) करणकारक का (B) कर्मकारक का
(C) अधिकरणकारक का (D) अपादानकारक का

व्याख्या–
(A) 'हेतौ' (2/3/23) सूत्र से हेतु अर्थ के वाची शब्दों में तृतीया विभक्ति होती है, यथा–अध्ययनेन वसति।
(B) 'कर्मणि द्वितीया' (2/3/2) सूत्र से अनुक्त कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है। यथा–हरिं भजति।
(C) 'यस्य च भावेन भावलक्षणम्' (2/3/37) सूत्रानुसार जिस क्रिया में कोई दूसरी क्रिया लक्षित होती है वहाँ पहली क्रिया के आश्रयवाचक शब्द में सप्तमी होती है। यथा–सः गोषु दुह्यमानासु गतः।
(D) ''जुगुप्साविरामप्रमादार्थानामुपसंख्यानम्'' वार्तिक से जुगुप्सा, विराम, प्रमाद अर्थवाली धातुओं के योग में जिस वस्तु से घृणा हो उसमें पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा–सः पापात् जुगुप्सते।
अतः विकल्प (C) सही है।

97. विप्र-बालिका के अपहर्ता यवनयुवक का वध किसने किया?
(A) श्यामसिंह ने (B) गौरसिंह ने
(C) ब्रह्मचारी गुरु ने (D) शिवाजी ने

व्याख्या– * बालिका के अपहर्ता का वध **गौरसिंह** ने किया।
* बालिका की उम्र 7 वर्ष थी।
* गौरसिंह 16 वर्षीय था।
* यवन युवक 20 वर्ष का था।
* शिवाजी शिवराजविजयम् ग्रन्थ के नायक हैं।
अतः विकल्प (B) सही है।

98. शिवराजविजयम् में कुल निःश्वास हैं?
(A) 10 (B) 12
(C) 18 (D) 36

ग्रन्थ	विभाजन
(A) काव्यादर्श (दण्डी)	3 परिच्छेद
(B) शिवराजविजयम्	**3 विराम 12 निःश्वास**
(C) महाभारत (व्यास)	18 पर्व
(D) शृङ्गारप्रकाश (भोज)	36 प्रकाश

अतः विकल्प (B) सही है।

99. 'शिवराजविजयम्' के रचयिता हैं?
(A) अम्बिकादत्तव्यास (B) कालिदास
(C) भवभूति (D) क्षेमेन्द्र

ग्रन्थ	रचनाकार
(A) **शिवराजविजयम्**	**अम्बिकादत्तव्यास**
(B) ऋतुसंहारम्	कालिदास
(C) महावीरचरितम्	भवभूति
(D) कविकण्ठाभरणम्	क्षेमेन्द्र

अतः विकल्प (A) सही है।

100. 'शिवराजविजयम्' क्या है?
(A) महाकाव्य (B) गीतिकाव्य
(C) नाटक (D) ऐतिहासिक उपन्यास

ग्रन्थ	विधा
(A) राघवपाण्डवीयम्	महाकाव्य
(B) हंसदूतम्	गीतिकाव्य
(C) प्रसन्नराघवम्	नाटक
(D) **शिवराजविजयम्**	**ऐतिहासिक उपन्यास**

अतः विकल्प (D) सही है।

101. सोमनाथ मन्दिर पर किसने आक्रमण किया?
(A) बाबर ने (B) औरङ्गजेब ने
(C) महमूद गजनवी ने (D) मुहम्मद गोरी ने

व्याख्या– सोमनाथ मन्दिर पर **महमूद गजनवी** ने आक्रमण किया था।
अतः विकल्प (C) सही है।

95. (C) 96. (C) 97. (B) 98. (B) 99. (A) 100. (D) 101. (C)

102. पण्डित अम्बिकादत्तव्यास की जन्मभूमि है?
(A) जयपुर (B) प्रयाग
(C) पटना (D) काशी

व्याख्या– * अम्बिकादत्तव्यास जी का जन्म **राजस्थान** में **जयपुर** के निकट 'रावतजी का धूला' नामक गाँव में हुआ था।
* इनका जन्म चैत्रशुक्लपक्ष अष्टमी सम्वत् 1915 (1858 ई0) में तथा मृत्यु सम्वत् 1957 (1900 ई0) में हुई थी।
* इनके पिता का नाम दुर्गादत्त तथा पितामह पं0 राजाराम थे।
अतः विकल्प (A) सही है।

103. कादम्बरी कथा के विषय में निम्न में से कौन सी बात गलत है?
(A) शुक ने शूद्रक को सुनाया
(B) जाबालि ने शुक को सुनाया
(C) महाश्वेता ने चन्द्रापीड को सुनाया
(D) शुकनास ने चन्द्रापीड को सुनाया

व्याख्या–
(A) शुक, राजा शूद्रक को विन्ध्यारण्य में अपने जन्म से लेकर महर्षि जाबालि के आश्रम में पहुँचने तक का वृत्तान्त सुनाया।
(B) शुक, जाबालि मुनि से अपने पूर्व-जन्म की कथा सुनता है।
(C) महाश्वेता चन्द्रापीड को कुमार पुण्डरीक के साथ अपने अधूरे प्रेम की कथा सुनाती है।
(D) शुकनास चन्द्रापीड को उपदेश देते हैं न कि पूर्वजन्म की कथा सुनाते हैं।
अतः विकल्प (D) सही उत्तर है।

104. शुकनासोपदेश में किसे अविनयों (दुराचारों) का घर नहीं कहा गया है?
(A) गर्भेश्वरत्वम् (B) अभिनवयौवनत्वम्
(C) अप्रतिमरूपत्वम् (D) ऐश्वर्यतिमिरान्धत्वम्

व्याख्या– शुकनासोपदेश में निम्न को अविनयों (दुराचारों) का घर कहा गया–
(A) गर्भेश्वरत्वम्–कुल परम्परा से प्राप्त प्रभुता
(B) अभिनवयौवनत्वम्–नवयौवन अर्थात् नई जवानी तरुणावस्था का होना
(C) अप्रतिमरूपत्वम्–अनुपम या अद्वितीय सौन्दर्य का होना
(D) अमानुषशक्तित्वम्–अलौकिक शक्ति सम्पन्न होना
* **ऐश्वर्यतिमिरान्धत्वम्** को अविनयों (दुराचारों, दुर्विचारों) का घर नहीं कहा गया है?
अतः विकल्प (D) सही उत्तर है।

105. लक्ष्मीमद कैसा होता है?
(A) मदिरापान के समान
(B) विषपान के समान
(C) शीघ्रविनाशी
(D) अन्तिम अवस्था में भी नष्ट न होने वाला

व्याख्या–''अपरिणामोपशमो दारुणो लक्ष्मीमदः''– अर्थात् धन सम्पत्ति का भयंकर मद **अन्तिम अवस्था में भी शान्त नहीं होता है।** –शुकनासोपदेश
अतः विकल्प (D) सही है।

106. किस प्रकार के राजा का आदेश सिद्धयोगी के समान सफल होता है?
(A) प्रचुर धन वाले का
(B) अतिशय बलवान् का
(C) आरूढ़ प्रताप वाले का
(D) सरल व्यवहार वाले का

व्याख्या– 'आरूढप्रतापो राजा त्रैलोक्यदर्शीव सिद्धादेशो भवति' अर्थात् आरूढ़ प्रताप वाले राजा का आदेश सिद्धयोगी के समान सफल होता है? –शुकनासोपदेश
अतः विकल्प (C) सही है।

107. बिना जल वाला स्नान कौन-सा है?
(A) धूप स्नान
(B) मन्त्र स्नान
(C) मानसिक स्नान
(D) गुरूपदेश रूपी स्नान

व्याख्या– ''गुरूपदेशश्च नाम पुरुषाणामखिलमलप्रक्षालनक्षममजलं स्नानम्''–अर्थात् **गुरु का उपदेश** तो पुरुषों के लिए समग्र मलों (मानसिक विकारों) को धोने में समर्थ बिना जल (जलरहित)का स्नान है। – शुकनासोपदेश
अतः विकल्प (D) सही है।

102. (A) 103. (D) 104. (D) 105. (D) 106. (C) 107. (D)

108. उत्तररामचरित के तृतीय अङ्क को छायाङ्क कहते हैं?
(A) इसमें राम को सीता का चित्र दिखाया गया है।
(B) इस अङ्क में सीता की छाया सभी पात्रों एवं दर्शकों को दिखाई पड़ती है।
(C) इस अङ्क में राम को सीता की छाया दिखाई देती है।
(D) मंच पर उपस्थित सीता राम को नहीं दिखाई देती।

व्याख्या– मंच पर उपस्थित सीता को राम नहीं देख पाते हैं किन्तु सीता राम को देखती हैं। सीता, राम के लिए स्पर्श जन्य हैं। भागीरथी गंगा की कृपा से सीता को कोई भी नहीं देख पाता है। इसीलिए उत्तररामचरितम् के तृतीय अङ्क को 'छायाङ्क' कहते हैं। अतः विकल्प (D) सही है।

109. रोती हुई बालिका को शान्त करने के लिए किसको आदेश दिया गया था?
(A) गौरवटु को **(B) श्यामवटु को**
(C) सेवक को **(D) किसी को भी नहीं**

व्याख्या– ''ब्रह्मचारिगुरुणा बालिकां सान्त्वयितुं श्यामबटुमादिश्य कथितम्'' (शिवराजविजयम्)
रोती बालिका को शान्त कराने के लिए ब्रह्मचारी गुरु ने **श्यामवटु** को आदेश दिया। अतः विकल्प (B) सही है।

110. गौरवटु का परिचय है?
(A) वह शिवाजी का सेनानी है।
(B) वह आश्रम में निवास करने वाला विद्यार्थी है।
(C) वह श्यामवटु का बड़ा भाई है।
(D) वह संन्यस्त ब्रह्मचारी है।

व्याख्या– गौरवटु आश्रम में निवास करने वाला विद्यार्थी है। अर्थात् उपर्युक्त विकल्पों में से इस प्रश्न के उत्तर के लिए विकल्प (B) सर्वश्रेष्ठ विकल्प है। किन्तु गौरवटु के परिचय में कही गयी ये सारी बातें लगभग सत्य हैं, अतः यह प्रश्न विवादित हो सकता है।

111. किस प्रकार का व्यक्ति उपदेश का पात्र होता है?
(A) ज्ञानी
(B) पठनशील
(C) प्रौढ़
(D) सांसारिक विषयास्वाद से रहित

व्याख्या– अयमेव चानास्वादितविषयरसस्य ते काल उपदेशस्य' अर्थात् विषय का उपभोग या अनुभव न किए हुए तुम्हारे लिए उपदेश का यही समय उचित है। – **(शुकनासोपदेश)**
अतः विकल्प (D) सही है।

112. किरातार्जुनीयम् में समस्त सर्गों की संख्या है?
(A) 18 **(B) 19**
(C) 20 **(D) 22**

व्याख्या–

महाकाव्य	**सर्ग**
(A) **किरातार्जुनीयम्**	**18**
(B) रघुवंशमहाकाव्यम्	19
(C) शिशुपालवधम्	20
(D) नैषधीयचरितम्	22

अतः विकल्प (A) सही है।
नोट– यह प्रश्न आयोग का पसंदीदा प्रश्न है। न जाने क्यों इसी प्रश्न को लगभग प्रतिवर्ष दुहराया जा रहा है।

113. महापुरुषों के साथ कैसा विरोध भी अच्छा होता है?
(A) महापुरुषों को पराजित करने वाला
(B) धन-सम्पत्ति दिलाने वाला
(C) उन्नति कराने वाला
(D) मित्रता बढ़ाने वाला

व्याख्या– ''समुन्नयन्भूतिमनार्यसङ्गमाद्वरं, विरोधोऽपि समं महात्मभिः!'' अर्थात् ऐश्वर्य को बढ़ाते हुए मनुष्य के लिए नीचों के संग की अपेक्षा महापुरुषों के साथ विरोध करना भी अच्छा **(उन्नति कराने वाला)** होता है। (किरात0 1/8)
अतः विकल्प (C) सही है।

114. दुर्योधन यज्ञ कार्य में कैसे लगा रहता है?
(A) चारों ओर सैनिक नियुक्त करके
(B) शत्रुओं को कैद करके
(C) मित्रों को उपकृत करके
(D) दुःशासन को युवराज पद पर बैठा करके

व्याख्या– 'स यौवराज्ये नवयौवनोद्धतं विधाय दुःशासनमिद्धशासनः' (किरात 1/22) नवयौवन के कारण अति गर्विष्ठ दुःशासन को युवराज के पद पर नियुक्त कर पुरोहित की आज्ञा के अनुसार बिना थके हुए यज्ञों में हव्य के द्वारा अग्नि को दुर्योधन प्रसन्न करता है।
अतः विकल्प (D) सही है।

108. (D) 109. (B) 110. (B) 111. (D) 112. (A) 113. (C) 114. (D)

115. महाकवि भारवि किस शैली के प्रवर्तक माने जाते हैं?
(A) सरल **(B) कठोर**
(C) अर्थगौरव **(D) इनमें से कोई नहीं**

व्याख्या– *महाकवि भारवि **अर्थगौरव शैली** के प्रवर्तक माने जाते है यथा–
उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्।
दण्डिनः पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयो गुणाः''–उद्भट
अतः विकल्प (C) सही है।

116. दुर्योधन कब भयभीत हो जाता है?
(A) श्रीकृष्ण की माया शक्ति सोचकर
(B) युधिष्ठिर का नाम सुनकर
(C) पाण्डवों की दैवीय शक्ति से
(D) विदुर के उपदेश सुनकर

व्याख्या– ''तवाभिधानाद् व्यथते नताननः
स दुःसहान्मन्त्रपदादिवोरगः।'' अर्थात् अति असह्य मन्त्रपद रूप आपके **(युधिष्ठिर) नाम से तथा अर्जुन के पराक्रम को** स्मरण करके नीचे मुख किए (वह दुर्योधन) पीड़ा का अनुभव करता है। –(किरात 1/24)
अतः विकल्प (B) सही है।

117. मेघदूतम् के प्रथमश्लोक में 'वर्षभोग्येण' शब्द आया है। यहाँ पर 'न' को 'ण' किस सूत्र से हुआ?
(A) रषाभ्यां नो णः समानपदे
(B) पूर्वपदात्संज्ञायामगः
(C) अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि
(D) कुमति च

व्याख्या– * 'रषाभ्यां नो णः समानपदे' सूत्र से रेफ और षकार से परे नकार के स्थान पर णकार आदेश होता है यथा–चतुर् + नाम् = चतुर्णाम्
* 'वर्षभोग्येण' शब्द में ''**कुमति च**'' सूत्र से न को ण आदेश हुआ है।
अतः विकल्प (D) सही है।

118. स्त्रियों का आशाबन्ध कैसा होता है?
(A) नवनीतसदृश **(B) पाषाणसदृश**
(C) कुसुमसदृश **(D) वज्रसदृश**

व्याख्या– ''**आशाबन्धः कुसुमसदृशं प्रायशो ह्यङ्गनानां। सद्यः पाति प्रणयि हृदयं विप्रयोगे रुणद्धि॥**''
अर्थात् आशा का बन्धन **फूल के समान** शीघ्र कुम्भलाने वाले स्त्रियों के प्रेमी हृदय को वियोग में प्रायः थामे रहता है। **(पूर्वमेघ/9)** अतः विकल्प (C) सही है।

119. 'शकुन्तला के गर्भ में दुष्यन्त का तेज (वीर्य) पल रहा है।' यह बात कण्व को किसने बताई?
(A) अनसूया एवं प्रियंवदा ने
(B) गौतमी ने
(C) अशरीरिणी वाक्शक्ति (छन्दोमयी आकाशवाणी)
(D) कण्व के तपोबल ने

व्याख्या–
''**अग्निशरणं प्रविष्टस्य शरीरं विना छन्दोमय्या वाण्या।**''
प्रियंवदा के इस कथन से ज्ञात होता है कि–यज्ञशाला में गये हुए कण्व को शरीररहित छन्दोमयी वाणी (आकाशवाणी) के द्वारा यह समाचार बतलाया गया है। (अभिज्ञान/अङ्क-4)
अतः विकल्प (C) सही है।

120. सबका आभूषण क्या है?
(A) स्वर्ण **(B) धन**
(C) शील **(D) सत्य**

व्याख्या–
''**सर्वेषामपि सर्वकारणमिदं शीलं परं भूषणम्**'' अर्थात् शील ही एक ऐसा उत्कृष्ट आभूषण है, जो मनुष्य को शोभावर्द्धक साधनों से अत्यधिक शोभावान् बनाता है, अतः शील ही सर्वोत्तम आभूषण है। अतः विकल्प (C) सही है।

121. सबसे अधिक लघु (हल्का) कौन होता है?
(A) तूल **(B) मन**
(C) रिक्त **(D) तिनका**

व्याख्या–''रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय''
मेघदूतम् के इस श्लोकांश से ज्ञात होता है कि रिक्त को सबसे हल्का माना गया है, अतः विकल्प (C) सही है।

122. शकुन्तला ने विदाई के समय जिस लता का आलिङ्गन किया था उसका क्या नाम था?
(A) वनज्योत्स्ना **(B) नवमालिका (चमेली)**
(C) लताभगिनी **(D) केसरलता**

व्याख्या–(उपेत्य लतामालिङ्ग्य) 'वनज्योत्स्ने! चूतसङ्गतापि मां प्रत्यालिङ्गेतोगताभिः शाखाबाहुभिः।' शकुन्तला के इस कथन से स्पष्ट है कि विदाई के समय उसने **वनज्योत्स्ना** लता का आलिङ्गन किया था। (अभिज्ञान/अङ्क-4)
अतः विकल्प (A) सही है।

115. (C)	116. (B)	117. (D)	118. (C)	119. (C)	120. (C)	121. (C)	122. (A)

123. सबसे बड़ा पुण्यसाधन क्या है?
(A) दान **(B) पूजन**
(C) तीर्थयात्रा **(D) परहितसाधन**

व्याख्या– ''सन्तः स्वयं परहिते विहिताभियोगः।''
अर्थात् सन्त लोग स्वयं दूसरे के हितसाधन (परहित साधन) में आग्रहशील होते है। (नीतिशतकम् 64)
अतः सबसे बड़ा पुण्य **परहितसाधन** है।
विकल्प (D) सही है।

124. भवभूति के आश्रयदाता नरेश का नाम था?
(A) यशोवर्मा
(B) चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य
(C) विष्णुवर्धन
(D) हर्षवर्धन

	कवि	राज्याश्रय
(A)	**भवभूति**	**यशोवर्मा**
(B)	कालिदास	चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य
(C)	भारवि	विष्णुवर्धन
(D)	बाणभट्ट	हर्षवर्धन

अतः विकल्प (A) सही है।

125. संसार में सबसे अधिक मनोहर तथा कष्टकारक कौन होता है?
(A) धन **(B) ज्ञान**
(C) रमणी **(D) यश**

व्याख्या– सबसे अधिक मनोहर तथा कष्टकारक **रमणी** (स्त्री) को माना गया है।
अतः विकल्प (C) सही है।

123. (D) 124. (A) 125. (C)

प्रशिक्षित-स्नातकशिक्षक-चयनपरीक्षा (TGT)–2009

1. 'पा' धातु परस्मैपदी का लट्लकार प्रथमपुरुष द्विवचन का रूप है?
(A) पिबसि (B) पिबतः
(C) पिबति (D) पिबामि

व्याख्या–
'पा' धातु सकर्मक, अनिट्, परस्मैपद का लट्लकार में रूप निम्नवत् है–

प्रथमपुरुष	पिबति	**पिबतः**	पिबन्ति
मध्यमपुरुष	पिबसि	पिबथः	पिबथ
उत्तमपुरुष	पिबामि	पिबावः	पिबामः

अतः विकल्प (B) सही है।

2. 'भी' धातु परस्मैपद लट्लकार मध्यमपुरुष एकवचन का रूप है?
(A) बिभेमि (B) बिभेषि
(C) बिभेतु (D) बिभीत

व्याख्या–
(A) 'भी' (डरना) धातु का रूप लट्लकार-
उत्तम पुरुष में–बिभेमि बिभीवः बिभीमः बनता है।
(B) मध्यमपुरुष में–**बिभेषि** बिभीथः बिभीथ बनता है।
(C) लोट्लकार प्रथमपुरुष में–बिभेतु बिभीताम् बिभ्यतु
(D) लोट्लकार मध्यमपुरुष में–बिभीहि बिभीतम् बिभीत
अतः विकल्प (B) सही है।

3. माहेश्वर सूत्र में 'ह' कितनी बार आया है?
(A) चौदह (B) दो
(C) नौ (D) बयालिस

व्याख्या–
(A) चौदह माहेश्वर सूत्र हैं यथा–
अइउण्, ऋऌक्, एओङ्, ऐऔच्, हयवरट्, लण् ञमङणनम्, झभञ्, घढधष्, जबगडदश्, खफछठथचटतव्, कपय्, शषसर्, हल्।
(B) उपर्युक्त चौदह माहेश्वर सूत्रों में 'हल्' और 'हयवरट्' सूत्र में 'ह' का प्रयोग हुआ है अर्थात् **'ह' दो बार** प्रयुक्त है। प्रथम 5वें सूत्र में तथा द्वितीय 14वें सूत्र में।
(C) उपर्युक्त माहेश्वर सूत्र के चार सूत्रों में स्वर का प्रयोग है जो कुल मिलाकर नौ है। यथा– अ, इ, उ, ऋ, ऌ, ए, ओ, ऐ, औ।
(D) अन्तिम 10 सूत्रों में 34 व्यञ्जन प्रयुक्त हैं किन्तु 'ह' का दो बार प्रयोग होने से कुल 33 व्यञ्जन ही हैं। स्वर और व्यञ्जन कुल मिलाकर 42 वर्ण हैं।
अतः विकल्प (B) सही है।

4. वर्णमाला में व्यञ्जनों की संख्या है?
(A) 31 (B) 41
(C) 33 (D) 39

व्याख्या– * पाणिनि के चौदह माहेश्वरसूत्रों में कुल 42 वर्ण हैं जिनमें 33 व्यञ्जन तथा 9 स्वर हैं।
* इस प्रकार संस्कृत वर्णमाला में **व्यञ्जनों की संख्या `33'** है।
अतः विकल्प (C) सही है।

5. 'अदस्' शब्द का स्त्रीलिङ्ग प्रथमा एकवचन का रूप है?
(A) असौ (B) अदः
(C) अमू (D) अमूः

व्याख्या– अदस् (वह) सर्वनाम का रूप स्त्रीलिङ्ग प्रथमाविभक्ति में–"**असौ** अमू अमूः"
नपुंसकलिङ्ग प्रथमाविभक्ति में–"अदः, अमू , अमूनि"
अतः विकल्प (A) सही है।

6. भगवान् अगस्त्य की पत्नी का नाम था?
(A) अदिति (B) अरुन्धती
(C) लोपामुद्रा (D) वसुमती

	पति	**पत्नी**
(A)	मारीच	अदिति
(B)	वशिष्ठ	अरुन्धती
(C)	**अगस्त्य**	**लोपामुद्रा**
(D)	दुष्यन्त	हंसपदिका/वसुमती/शकुन्तला

अतः विकल्प (C) सही है।

1. (B) 2. (B) 3. (B) 4. (C) 5. (A) 6. (C)

7. ''किसलयमिव मुग्धं बन्धनाद् विप्रलूनं हृदयकमलशोषी दारुणो दीर्घशोकः'' प्रस्तुत श्लोक किस पुस्तक से उद्धृत है?
(A) मेघदूतम् से
(B) नीतिशतकम् से
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से
(D) उत्तररामचरितम् से

व्याख्या–
(A) ''सद्यः पाति प्रणयि हृदयं विप्रयोगे रुणद्धि''–मेघदूतम्-(पूर्वभाग-9)
(B) ''भवति हृदयदाही शल्यतुल्यो विपाकः''–(नीतिशतकम्/95)
(C) ''कस्मिन्नपि पूजार्हेऽपराद्धा शून्यहृदया शकुन्तला''–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (अङ्क-4)
(D) **''हृदयकमलशोषी दारुणो दीर्घशोकः''**–उत्तररामचरितम् 3/5) यह मुरला का कथन है, जो सीता के लिए कहा गया है।
अतः विकल्प (D) सही है।

8. 'लृ' का उच्चारणस्थान है?
(A) कण्ठ **(B) दन्त**
(C) तालु **(D) मूर्धा**

व्याख्या–
(A) ''अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः''–अर्थात् अ, क्, ख्, ग्, घ्, ङ्, ह् और विसर्ग, का उच्चारणस्थान कण्ठ है।
(B) **'लृतुलसानां दन्ताः'**–अर्थात् **लृ**, त्, थ्, द्, ध्, न्, ल्, स्, का उच्चारणस्थान **दन्त** है।
(C) ''इचुयशानां तालु''–अर्थात् इ, च्, छ्, ज्, झ्, ञ्, य्, श् का उच्चारणस्थान तालु है।
(D) 'ऋटुरषाणां मूर्धा''–अर्थात् ऋ, ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्, र्, ष् का उच्चारणस्थान मूर्धा है। अतः विकल्प (B) सही है।

9. 'पावकः' का सन्धिविच्छेद है?
(A) पो + अकः **(B) पाव + अकः**
(C) प + आवक **(D) पौ + अकः**

व्याख्या– 'एचोऽयवायावः' (6/1/78) सूत्र से ए, ऐ ओ, औ के बाद कोई भी स्वर आये तो इनके स्थान पर क्रमशः अय् , आय् ,आव् , आदेश हो जाता है।**''पौ + अकः = पावकः''** में अयादिसन्धि है। अतः विकल्प (D) सही है।

10. 'भीत्रार्थानां भयहेतुः' में कौन-सा कारक है?
(A) सम्प्रदान **(B) अपादान**
(C) करण **(D) अधिकरण**

व्याख्या–
(A) ''क्रियार्थोपपदस्य च कर्मणि स्थानिनः'' (2/3/14) सूत्र से अप्रयुज्यमान तुमुन् प्रत्ययान्त क्रिया का प्रयोग होने पर उसके कर्म में चतुर्थी होती है यथा– सः फलेभ्यो याति।
(B) **''भीत्रार्थानां भयहेतुः''** (1/4/25) सूत्र से भय के हेतु (कारण) में **अपादानकारक** और पञ्चमी विभक्ति होती है यथा– सः चौराद् बिभेति।
(C) ''हेतौ'' (2/3/23) सूत्रानुसार हेतु अर्थ के वाची शब्दों में तृतीया विभक्ति होती है यथा– अध्ययनेन वसति।
(D) ''निमित्तात्कर्मयोगे'' वार्तिक से निमित्तवाची शब्दों से सप्तमी विभक्ति होती है, यदि वह निमित्त फल से युक्त हो यथा– सः केशेषु चमरीं हन्ति।
अतः विकल्प (B) सही है।

11. उपसर्ग धातु के साथ कहाँ आता है?
(A) पहले **(B) पीछे**
(C) आगे-पीछे **(D) लग नहीं सकता।**

व्याख्या– उपसर्ग धातुओं से बने हुए विशेषण, संज्ञा, आदि शब्दों के **पूर्व (पहले)** जोड़ा जाता है यथा–विहार, परिहार, संहार में 'हृ' धातु के पहले वि, परि, सम् उपसर्ग लगे हैं। अतः विकल्प (A) सही है।

12. ''हनुमते नमः'' में हनुमते में कौन सी विभक्ति है?
(A) चतुर्थी **(B) पञ्चमी**
(C) षष्ठी **(D) सप्तमी**

व्याख्या–
(A) ''नमःस्वस्तिस्वाहास्वधाऽलंवषड्योगाच्च'' (2/3/16) सूत्र से 'नमः' आदि शब्दों के योग में **चतुर्थी विभक्ति** होती है। यथा– हनुमते नमः।
(B) ''पञ्चम्यपाङ्परिभिः'' (2/3/10) सूत्र से अप, आङ् तथा परि इन तीन कर्मप्रवचनीयों के योग में पञ्चमीविभक्ति होती है। यथा– आ मुक्तेः संसारः।
(C) ''षष्ठी शेषे'' (2/3/50) सूत्र से शेष अर्थों में षष्ठीविभक्ति होती है (कर्म, करण, इत्यादि कारकों तथा प्रातिपदिक से भिन्न) यथा– राज्ञः पुरुषः।
(D) ''सप्तम्यधिकरणे च'' (2/3/36) सूत्र से अधिकरणकारक में सप्तमीविभक्ति होती है। यथा–मोक्षे इच्छाऽस्ति।
अतः विकल्प (A) सही है।

7. (D) 8. (B) 9. (D) 10. (B) 11. (A) 12. (A)

13. लट्लकार किस काल का बोधक है?
(A) भविष्यकाल का
(B) विधि, आज्ञा, आशीष अर्थ का
(C) भूतकाल का
(D) वर्तमानकाल का

लकार	कालबोधक
(A) लृट्लकार	भविष्यकाल का
(B) लिङ्लकार	विधि, आज्ञा, आशीष अर्थ का
(C) लङ्लकार	अनद्यतन भूत का
(D) **लट्लकार**	**वर्तमानकाल** का

अतः विकल्प (D) सही है।

14. तिलकमञ्जरी के लेखक हैं?
(A) भास (B) धनपाल
(C) कल्हण (D) बिल्हण

रचना	रचनाकार
(A) प्रतिज्ञायौगन्धरायण	भास
(B) **तिलकमञ्जरी**	**धनपाल**
(C) राजतरङ्गिणी	कल्हण
(D) विक्रमाङ्कदेवचरितम्	बिल्हण

अतः विकल्प (B) सही है।

15. कादम्बरी में किसके तीन जन्मों का वर्णन है?
(A) तारापीड (B) चन्द्रापीड
(C) कपिञ्जल (D) पुण्डरीक

व्याख्या–
(A) तारापीड उज्जयिनी के राजा तथा चन्द्रापीड के पिता हैं। इनका प्रधान अमात्य शुकनास, चन्द्रापीड को राज्याभिषेक के समय उपदेश देता है?
(B) कादम्बरी में मुख्यतः **चन्द्रापीड के तीन जन्मों का वर्णन** है तीन जन्म निम्नवत् है–"चन्द्रमा, चन्द्रापीड, शूद्रक"
(C) कपिञ्जल वैमानिक द्वारा शापित पात्र है, जो इन्द्रायुध नामक अश्व बन जाता है।
(D) श्वेतकेतु और लक्ष्मी पुण्डरीक के माता-पिता हैं। पुण्डरीक के तीन जन्म–"पुण्डरीक, वैशम्पायन, शुक"। अतः विकल्प (B) सही है।

नोट– यहाँ चन्द्रापीड और पुण्डरीक दोनों विकल्प नहीं देना चाहिए, इससे छात्रों को संदेह होता है। चूँकि कादम्बरी का नायक चन्द्रापीड है, अतः नायकत्व को आधार मानकर विकल्प `B' ही सही होगा। अन्यथा विकल्प B' और `D' दोनों को सही मानना होगा।

16. "रामः पुस्तकं पठति" का कर्मवाच्य क्या होगा?
(A) रामेण पुस्तकं पठेत (B) रामेण पुस्तकं पठितानि
(C) रामेण पुस्तके पठ्यते (D) रामेण पुस्तकं पठ्यते

व्याख्या– कर्मवाच्य के कर्ता में तृतीयाविभक्ति और कर्म में प्रथमाविभक्ति होती है, तथा क्रिया कर्म के अनुसार प्रयुक्त होती है– अतः '**रामेण पुस्तकं पठ्यते**' कर्मवाच्य होगा। यहाँ पुस्तकम् 'पुस्तक' शब्द का प्रथमा एकवचन का रूप है। अतः विकल्प (D) सही है। अन्य विकल्प अशुद्ध है।

17. "अर्थो हि कन्या परकीय एव तामद्य सम्प्रेष्य परिग्रहीतुः।" यह वक्तव्य किसका है?
(A) गौतमी का (B) काश्यप का
(C) दुष्यन्त का (D) मेनका का

व्याख्या– प्रस्तुतपद्य में **कण्व (काश्यप)** शकुन्तला को विदा करने के पश्चात् कहते हैं कि अर्थो हि...(अभि.4/23) कन्या वस्तुतः पराया धन है, आज उसको प्राप्तकर्त्ता (पति) को दे देने पर मेरी अन्तरात्मा उसी प्रकार प्रसन्न हो रही है जिस प्रकार धरोहर को लौटा देने पर धरोहर को रखने वाले का मन प्रसन्न हो जाता है। **(अभिज्ञान 4/22)** अतः विकल्प (B) सही है।

18. 'सम्बोधने च' सूत्र से विभक्ति होती है?
(A) सप्तमी (B) षष्ठी
(C) द्वितीया (D) प्रथमा

व्याख्या–
(A) "सप्तमीपञ्चम्यौ कारकमध्ये" (2/3/7) सूत्र से दो कारक के मध्य में वर्तमान जो कालवाचक और मार्गवाचक शब्द उनमें सप्तमी और पञ्चमीविभक्ति होती है। यथा–'अद्य भुक्त्वा अयं द्वयहे द्वयहाद् वा भोक्ता' (यह आज खाकर दो दिन बाद खायेगा)
(B) "अधिकरणवाचिनश्च" (2/3/68) सूत्र अधिकरणवाची क्त प्रत्ययान्त के योग में कर्त्ता कारक में षष्ठी विभक्ति होती है यथा– 'इदम् एषाम् आसितम् (यह इनका आसन है)
(C) "अकथितं च" (1/4/51) सूत्र से जहाँ अपादानादि कारक अविवक्षित हों तो वहाँ कर्मकारक होता है (दुह्, याच्, पच् आदि 16 धातुओं के योग में वक्ता स्वतन्त्र है चाहे अपादानादि संज्ञा करे या कर्मसंज्ञा) यथा– तण्डुलान् ओदनं पचति।
(D) **"सम्बोधने च"** (2/3/47) सूत्र से सम्बोधन अर्थ में प्रातिपदिक से **प्रथमाविभक्ति** होती है यथा– हे राम! अत्र आगच्छ। अतः विकल्प (D) सही है।

13. (D) 14. (B) 15. (B) 16. (D) 17. (B) 18. (D)

19. 'द्वादश' पद में समास है?
(A) बहुव्रीहि (B) तत्पुरुष
(C) अव्ययीभाव (D) द्वन्द्व

व्याख्या–
(A) 'अनेकमन्यपदार्थे' (2/2/24) सूत्र से 'चक्रं पाणौ यस्य सः = चक्रपाणिः' में बहुव्रीहि समास है।
(B) ''पूर्वसदृशसमोनार्थकलहनिपुणमिश्रश्लक्ष्णैः'' (2/1/31) सूत्र से 'मासेन पूर्वः = मासपूर्वः' में तत्पुरुषसमास है।
(C) ''अव्ययीभावे चाकाले'' (6/3/81) सूत्र से 'चक्रेण युगपत् = सचक्रम्' में 'सह' को 'स' आदेश होकर अव्ययीभावसमास हुआ है।
(D) ''चार्थे द्वन्द्वः'' (2/2/29) सूत्र से **'द्वौ च दश च = द्वादश' में द्वन्द्वसमास** है।
अतः विकल्प (D) सही है।

20. 'द्वौ पादौ यस्य सः' किसका विग्रह है?
(A) दिपादः (B) द्विपात्
(C) द्विपद् (D) द्विपदी

व्याख्या– ''संख्या-सु-पूर्वस्य'' (5/4/140) से 'द्वौ पादौ यस्य सः = द्विपात्' में 'अलोऽन्त्यस्य' सूत्र की सहायता से 'पाद' के अकार का समासान्त लोप करके **'द्विपात्'** बना। इसमें **बहुव्रीहिसमास** है। अतः विकल्प (B) सही है।

21. 'शिवराजविजयम्' के कथानक के आरम्भ का काल है?
(A) रात्रि (B) प्रातः
(C) मध्याह्न (D) सायं

व्याख्या– शिवराजविजयम् के कथानक का आरम्भ–'अरुण एष प्रकाशः पूर्वस्यां भगवतो मरीचिमालिनः' पंक्ति से होता है इसमें **सूर्योदय (प्रातःकाल)** का वर्णन है।
अतः विकल्प (B) सही है।

22. चन्द्रापीड के पिता का नाम था?
(A) श्वेतकेतु (B) तारापीड
(C) शुकनास (D) हंस

	सन्तान	**पिता**
(A)	पुण्डरीक	श्वेतकेतु
(B)	**चन्द्रापीड**	**तारापीड**
(C)	वैशम्पायन	शुकनास
(D)	महाश्वेता	गन्धर्वराज हंस

अतः विकल्प (B) सही है।

23. राजप्रकृति कैसी होती है?
(A) विह्वला (B) उज्ज्वला
(C) निर्मला (D) सुलभा

व्याख्या– ''अहङ्कारदाहज्वरमूर्च्छान्धकारिता **विह्वला** हि राजप्रकृतिः' अर्थात् राजा का स्वभाव अभिमान रूपी तीव्रताप से उत्पन्न होने वाली मूर्च्छा के कारण अन्धकार तुल्य बना हुआ एवं व्याकुल करता है? –शुकनासोपदेश
अतः विकल्प (A) सही है।

24. 'चिकीर्षुः' किस धातु से बना है?
(A) चि (B) कृष्
(C) सु (D) कृ

व्याख्या– 'चिकीर्षुः' (कर्तुम् इच्छा) सन्नन्त प्रयोग है। किसी कार्य के करने की इच्छा का अर्थ बतलाने के लिए धातु के अनन्तर सन् प्रत्यय लगाया जाता है जैसे–**कृ + सन् = चिकीर्षुः** (करने की इच्छा)। अतः विकल्प (D) सही है।

25. 'उवाच' किस लकार का रूप है?
(A) लट् (B) लिट्
(C) लङ् (D) लिङ्

व्याख्या– ब्रू (बोलना) धातु का रूप–
(A) लट्लकार प्रथमपुरुष में– ब्रवीति ब्रूतः ब्रुवन्ति
(B) **लिट्लकार** प्रथमपुरुष में– **उवाच** ऊचतुः ऊचुः
(C) लङ्लकार प्रथमपुरुष में– अब्रवीत् अब्रूताम् अब्रुवन्
(D) आशीर्लिङ् प्रथमपुरुष में– उच्यात् उच्यास्ताम् उच्यासुः
अतः विकल्प (B) सही है।

26. वनेचर किस वन में युधिष्ठिर के पास आया?
(A) विन्ध्याटवी में (B) दण्डकारण्य में
(C) द्वैतवन में (D) पञ्चवटी में

व्याख्या– * ''स वर्णिलिङ्गी विदितः समाययौ
युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचरः।'' (किरात० 1/1)
अर्थात् वह ब्रह्मचारी का वेश धारण करने वाला वनेचर सारा वृत्तान्त जानकर **द्वैतवन में** युधिष्ठिर के पास लौट आया। अतः विकल्प (C) सही है।
* विन्ध्याटवी' का वर्णन कादम्बरी में है, तथा दण्डकारण्य एवं पञ्चवटी का वर्णन उत्तररामचरितम् में है।

19. (D) 20. (B) 21. (B) 22. (B) 23. (A) 24. (D) 25. (B) 26. (C)

27. 'कुरूणामधिपः' का तात्पर्य है?
(A) अर्जुन (B) भीम
(C) दुर्योधन (D) दुःशासन

व्याख्या– * 'श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीं' (किरात0 1/1) अर्थात् कुरुदेश के **राजा (दुर्योधन)** के प्रजापालन के व्यवहार को जानने के लिए........।

* यहाँ 'कुरूणामधिपः' शब्द दुर्योधन के लिए आया है। भारवि दुर्योधन के लिए सुयोधन शब्द का भी प्रयोग करते हैं। अतः विकल्प (C) सही है।
* किरातार्जुनीयम् में 'वृकोदरः' शब्द भीम के लिए तथा 'धनञ्जयः' शब्द अर्जुन के लिए प्रयुक्त है।

28. 'महीभुजे' में कौन-सी विभक्ति है?
(A) प्रथमा (B) चतुर्थी
(C) षष्ठी (D) सप्तमी

व्याख्या– * ''कृतप्रणामस्य महीं महीभुजे, जितां सपत्नेन निवेदयिष्यतः'' (किरात0 1/2) अर्थात् प्रणाम करने के बाद शत्रु द्वारा जीती गई पृथ्वी का वृत्तान्त महाराज युधिष्ठिर से वर्णन करते हुए.....।

* यहाँ **'महीभुजे' में चतुर्थी विभक्ति** का विधान– ''क्रियार्थोपपदस्य च कर्मणि स्थानिनः'' सूत्र से हुआ है?

अतः विकल्प (B) सही है।

29. 'विघाताय' में कौन सी धातु है?
(A) धा (B) तन्
(C) हन् (D) गम्

व्याख्या– ''द्विषां विघाताय विधातुमिच्छतो'' (किरात 1/3) अर्थात् शत्रुओं के नाश के लिए यत्न करने की इच्छा वाले। 'विघाताय' में चतुर्थी का विधान–'तुमर्थाच्च भाववचनात्' सूत्र से हुआ है। **विघाताय में वि उपसर्ग + हन् धातु + घञ्** प्रत्यय है। अतः विकल्प (C) सही है।

30. किरातार्जुनीयम् का प्रथम पद्य किस छन्द में है?
(A) वंशस्थ (B) स्त्रग्धरा
(C) अनुष्टुप् (D) मन्दाक्रान्ता

व्याख्या–

(A) 'श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीं'–किरातार्जुनीयम् के इस पद्य में वस्तुनिर्देशात्मक मङ्गलाचरण है जिसमें **'वंशस्थ छन्द'** है।

(B) ''या सृष्टिः स्रष्टुराद्या वहति विधिहुतं या हविर्या च होत्री'' अभिज्ञानशाकुन्तलम् के इस पद्य में आशीर्वादात्मक मङ्गलाचरण है जिसमें स्त्रग्धराछन्द है।

(C) 'नत्त्वा सरस्वतीं देवीं शुद्धां गुण्यां करोम्यहम्'–लघुसिद्धान्त कौमुदी के इस पद्य में वस्तुनिर्देशात्मक/नमस्कारात्मक मङ्गलाचरण अनुष्टुप् में छन्द है।

(D) 'कश्चित् कान्ताविरहगुरुणा स्वाधिकारात्प्रमत्तः''–मेघदूतम् के इस पद्य में वस्तुनिर्देशात्मक मङ्गलाचरण है जिसमें मन्दाक्रान्ता छन्द है। अतः विकल्प (A) सही है।

31. यक्ष ने मेघ को किस मास के प्रथमदिन को देखा था?
(A) चैत्र (B) श्रावण
(C) माघ (D) आषाढ़

व्याख्या– ''आषाढस्य प्रथमदिवसे मेघमाश्लिष्टसानुं, वप्रक्रीडापरिणतगजप्रेक्षणीयं ददर्श।'' (पूर्वमेघ/2) प्रस्तुत पंक्ति से ज्ञात होता है कि यक्ष ने मेघ को आषाढ़ के प्रथम दिन देखा था। अतः विकल्प (D) सही है।

32. विदिशा नगरी में कौन सी नदी थी?
(A) चर्मण्वती (B) गम्भीरा
(C) वेत्रवती (D) शिप्रा

	नदी किनारे स्थित	**नगर/नगरी**
(A)	चर्मण्वती	दशपुर
(B)	गम्भीरा	मालवा
(C)	**वेत्रवती**	**विदिशा**
(D)	शिप्रा	उज्जयिनी

अतः विकल्प (C) सही है।

33. 'कृतान्तः' का अर्थ है?
(A) मित्र के द्वारा लाया गया
(B) प्रियतम का समाचार
(C) दैव (भाग्य)
(D) कम बोलने वाली

व्याख्या– ''क्रूरस्तस्मिन्नपि न सहते सङ्गमं नौ कृतान्तः'' (उत्तरमेघ/44) अर्थात् क्रूर दैव उस चित्र में भी हम दोनों का मिलन सहन नहीं करता।

	शब्द	**अर्थ**
(A)	सुहृदुपनतः	मित्र के द्वारा लाया गया
(B)	कान्तोदन्तः	प्रियतम का समाचार
(C)	**कृतान्तः**	**दैव या भाग्य**
(D)	परिमितभाषिणी	कम बोलने वाली स्त्री

अतः विकल्प (C) सही है।

27. (C) 28. (B) 29. (C) 30. (A) 31. (D) 32. (C) 33. (C)

34. 'नागेन्द्र' का अर्थ है?
(A) श्रेष्ठ हाथी (B) पर्वतराज
(C) चन्द्रमा (D) समुद्र

व्याख्या– ''नागेन्द्रो निशिताङ्कुशेन समदो दण्डेन गोगर्दभौ'' (नीतिशतकम्/11) अर्थात् मतवाला हाथी तीखे अङ्कुश से, बैल और गधे डण्डे से वश में किये जा सकते।

	शब्द	अर्थ
(A)	**नागेन्द्रः**	**श्रेष्ठ हाथी**
(B)	नगेन्द्रः	पर्वतराज
(C)	रजनिकरः	चन्द्रमा
(D)	अर्णवः	समुद्र

अतः विकल्प (A) सही है।

35. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में कण्व ऋषि को किस अन्य नाम से वर्णित किया गया है?
(A) दुर्वासा (B) वशिष्ठ
(C) गौतमी (D) काश्यप

व्याख्या– * अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक में कण्व को **'काश्यप'** के नाम से भी वर्णित किया गया है।
* 'गौतमी' एवं 'दुर्वासा' भी अभिज्ञानशाकुन्तलम् के पात्र हैं, जबकि 'वशिष्ठ' उत्तररामचरितम् के पात्र हैं।
अतः विकल्प (D) सही है।

36. दुष्यन्त के वंश का नाम था?
(A) रघुवंश (B) पुरु
(C) काश्यप (D) कुशिक

	राजा/कवि	गोत्र/वंश
(A)	राम	रघुवंशी (सूर्यवंशी)
(B)	**दुष्यन्त**	**पुरुवंशी (चन्द्रवंशी)**
(C)	भवभूति	काश्यप
(D)	भारवि	कुशिक

अतः विकल्प (B) सही है।

37. उत्तररामचरित के तृतीय अङ्क का नाम है?
(A) छाया (B) चित्रदर्शन
(C) सम्मेलन (D) कौशल्याजनकयोग

	अङ्क	नाम
(A)	**तृतीय अङ्क**	**छाया**
(B)	प्रथम अङ्क	चित्रदर्शन
(C)	सप्तम अङ्क	सम्मेलन
(D)	चतुर्थ अङ्क	कौशल्याजनकयोग

द्वितीय अङ्क-पञ्चवटी प्रवेश, पञ्चम अङ्क- कुमार विक्रम, षष्ठ अङ्क- कुमार-प्रत्यभिज्ञान अतः विकल्प (A) सही है।

38. मुरला एवं तमसा कौन हैं?
(A) सीता की सखियाँ (B) सेविकाएँ
(C) तपस्विनियाँ (D) नदियाँ

व्याख्या– भवभूति कृत उत्तररामचरितम् नाटक में तमसा और मुरला **दो नदियाँ** है। इनका वर्णन तृतीय अङ्क में है। 'ततः प्रविशति नदीद्वयम्' अतः विकल्प (D) सही है।

39. ''त्वं जीवितम्'' का अर्थ है?
(A) तुम जीवित हो
(B) तुम जियो
(C) तुम जीवन हो
(D) तुम्हारे जीते जी

व्याख्या– ''त्वं जीवितं त्वमसि मे हृदयं द्वितीयम्'' (उत्तररामचरित 3/26) अर्थात् **'तुम मेरा जीवन हो,** तुम मेरा दूसरा हृदय हो!' अतः विकल्प (C) सही है।

40. ''हरि + रम्यः'' में किस वर्ण का लोप हुआ है?
(A) स् (B) र्
(C) विसर्ग (D) य्

व्याख्या– * 'हरिस् + रम्यः' इस दशा में सकार को 'ससजुषो रुः' (8/2/66) सूत्र से रु आदेश होकर 'हरिर् रम्यः' रूप बना।
* पुनः 'र्' के बाद र् होने से ''रो रि'' (8/3/14) सूत्र से पूर्व **र् का लोप** होकर 'हरि + रम्य' बना
* अन्त में ''ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः'' (6/3/111) सूत्र से 'अण्' (इ) के स्थान में दीर्घादेश होकर हरी रम्यः बना।
अतः विकल्प (B) सही है।

41. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में किस रीति का प्रयोग है?
(A) वैदर्भी रीति (B) गौडीरीति
(C) पाञ्चालीरीति (D) इनमें से कोई नहीं

	ग्रन्थ	मुख्य रीति
(A)	**अभिज्ञानशाकुन्तलम्**	**वैदर्भी रीति**
(B)	उत्तररामचरितम्	गौड़ी एवं वैदर्भी रीति
(C)	कादम्बरी	पाञ्चाली रीति

अतः विकल्प (A) सही है।

34. (A) 35. (D) 36. (B) 37. (A) 38. (D) 39. (C) 40. (B) 41. (A)

42. ''कोऽन्यो हुतवहाद् दग्धुं प्रभवति'' कथन है।
(A) प्रियंवदा का (B) अनसूया का
(C) कण्व का (D) गौतमी का

व्याख्या–
(A) 'कास्मिन्नपि पूजार्हेऽपराद्धा शून्यहृदया शकुन्तला'(अभि0,अङ्क-4) –प्रियंवदा का कथन
(B) **'कोऽन्यो हुतवहाद् दग्धुं प्रभवति'–अनसूया का कथन**
(C) 'सुतं त्वमपि सम्राजं सेव पूरुमवाप्नुहि'–कण्व का कथन
(D) 'वरः खल्वेषः नाशीः''(अभि0,अङ्क-4)–गौतमी का कथन अतः विकल्प (B) सही है।

43. 'अतिस्नेहः पापशङ्की' यह सूक्ति किस ग्रन्थ में है?
(A) नीतिशतकम् में
(B) उत्तररामचरितम् में
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में
(D) शिवराजविजयम् में

व्याख्या–
(A) 'पापान्निवारयति योजयते हिताय'– (नीतिशतकम्/66)
(B) ''सञ्जीवनौषधिरसो हृदि नु प्रसक्तः''– उत्तररामचरितम्/3/11
(C) **'अतिस्नेहः पापशङ्की'–अभिज्ञानशाकुन्तलम्/ अङ्क–4**
(D) 'हिंस्रः स्वपापेन विहिंसितः खलः, साधुः समत्वेन भयाद् विमुच्यते'– शिवराजविजयम् का मङ्गलाचरण है जो भागवतपुराण से उद्धृत है। अतः विकल्प (C) सही है।

44. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में विष्कम्भक है?
(A) अङ्क के अन्त में (B) अङ्क के प्रारम्भ में
(C) अङ्क के मध्य में (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या– विष्कम्भक द्वारा भूत या भावी घटना की सूचना दी जाती है। अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क के **प्रारम्भ में विष्कम्भक का प्रयोग** है। अतः विकल्प (B) सही हैं।

45. किरातार्जुनीयम् महाकाव्य में सर्ग है?
(A) 18 (B) 17
(C) 19 (D) 50

	महाकाव्य	सर्ग संख्या
(A)	**किरातार्जुनीयम्**	**18**
(B)	कुमारसम्भवम्	17 (कुछ विद्वान् 8 सर्ग भी मानते हैं)
(C)	रघुवंशमहाकाव्यम्	19
(D)	हरविजयम्	50

अतः विकल्प (A) सही है।

46. 'अर्थगौरव' के लिए कौन कवि प्रसिद्ध हैं–
(A) माघ (B) दण्डी
(C) भारवि (D) कालिदास

	कवि	प्रसिद्धि
(A)	माघ	उपमा, पदलालित्य, अर्थगौरव
(B)	दण्डी	पदलालित्य
(C)	**भारवि**	**अर्थगौरव**
(D)	कालिदास	उपमा

अतः विकल्प (C) सही है।

47. बाण ने 'कादम्बरी' में किस रीति का प्रयोग किया है?
(A) गौडी (B) वैदर्भी
(C) पाञ्चाली (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या– बाणभट्ट ने कादम्बरी में पाञ्चाली रीति का प्रयोग किया है– ''शब्दार्थयोः समो गुम्फः पाञ्चालीरीतिरिष्यते''

	कवि	रीति
(A)	सुबन्धु	गौडीरीति
(B)	भर्तृहरि	वैदर्भी
(C)	**बाणभट्ट**	**पाञ्चाली**

अतः विकल्प (C) सही है।

48. 'रुचिरस्वरवर्णपदा रसभाववती जगन्मनो हरति' किस कवि की रचना के लिए कहा गया है?
(A) कालिदास (B) भवभूति
(C) बाणभट्ट (D) भारवि

व्याख्या–
(A) 'निर्गतासु न वा कस्य कालिदासस्य सूक्तिषु'–कालिदास के विषय में बाणभट्ट ने कहा।
(B) 'उत्तरे रामचरिते भवभूतिर्विशिष्यते'–भवभूति के विषय में विक्रमार्क ने कहा
(C) **'रुचिरस्वरवर्णपदा रसभाववती जगन्मनो हरति'–** बाणभट्ट के विषय में धर्मदास ने कहा
(D) 'प्रकृतिमधुरा भारविगिरः'–भारवि के विषय में श्रीधरदास ने कहा। अतः विकल्प (C) सही है।

42. (B) 43. (C) 44. (B) 45. (A) 46. (C) 47. (C) 48. (C)

49. 'विलासवती' किसकी पत्नी थी?
(A) शुकनास (B) तारापीड
(C) चन्द्रापीड (D) पुण्डरीक

	पति	पत्नी
(A)	शुकनास	मनोरमा
(B)	**तारापीड**	**विलासवती**
(C)	चन्द्रापीड	कादम्बरी
(D)	पुण्डरीक	महाश्वेता

अतः विकल्प (B) सही है।

50. चन्द्रापीड का विवाह किससे होता है?
(A) महाश्वेता (B) मनोरमा
(C) कादम्बरी (D) लक्ष्मी

व्याख्या– * बाणभट्ट कृत कादम्बरी कथा में **चन्द्रापीड का विवाह कादम्बरी के साथ** होता है। अतः विकल्प (C) सही है।
* 'मनोरमा' शुकनास की पत्नी है, और लक्ष्मी, श्वेतकेतु की पत्नी है।
* 'महाश्वेता' से पुण्डरीक प्रेम करता है।

51. मेघदूतम् में किस छन्द का प्रयोग है?
(A) स्रग्धरा (B) मन्दाक्रान्ता
(C) हरिणी (D) शिखरिणी

व्याख्या– सम्पूर्ण मेघदूतम् में **मन्दाक्रान्ता छन्द** का प्रयोग है। अतः विकल्प (B) सही है।

52. मेघदूतम् में मेघ को किस नदी से जल-ग्रहण करने की सलाह दी गई है?
(A) यमुना (B) गोदावरी
(C) जाह्नवी (D) नर्मदा

व्याख्या– मेघदूतम् में यक्ष मेघ को **रेवा (नर्मदा) नदी** का जल-ग्रहण करने की सलाह देता है। ''जम्बूकुञ्जप्रतिहतरयं तोयमादाय गच्छेः'' (पूर्वमेघ/20) अतः विकल्प (D) सही है।

53. 'मेघदूतम्' में यक्ष के शापान्त की अवधि मानी गयी है?
(A) तीन माह (B) चार माह
(C) दो माह (D) एक सप्ताह

व्याख्या– ''शापान्तो मे भुजगशयनादुत्थिते शार्ङ्गपाणौ शेषान्मासान्गमय चतुरो लोचने मीलयित्वा।'' (उत्तरमेघ/50) अर्थात् भगवान् के शेष-शय्या पर से उठते ही (आने वाली देवोत्थान एकादशी को) मेरा शाप समाप्त हो जाएगा। अतः **शेष चार मासों** को आखें मूदकर बिता डालो।
अतः विकल्प (B) सही है।

54. किस नाट्यकृति में गर्भाङ्क मिलता है?
(A) मालतीमाधवम् में (B) महावीरचरितम् में
(C) उत्तररामचरितम् में (D) स्वप्नवासवदत्तम् में

व्याख्या– * भवभूति कृत **उत्तररामचरित के 7वें अङ्क में गर्भाङ्क की योजना** है। अतः विकल्प (C) सही है।
* 'मालतीमाधवम्' और 'महावीरचरितम्' दोनों भवभूति की रचनायें हैं, जबकि स्वप्नवासवदत्तम्' भास की रचना है।

55. 'उत्तररामचरितम्' में किससे कुश एवं लव के जन्म का रहस्योद्घाटन होता है?
(A) विष्कम्भक द्वारा (B) प्रवेशक द्वारा
(C) चूलिका द्वारा (D) आकाशभाषित द्वारा

व्याख्या–
* विष्कम्भक–भूत और भावी घटनाओं की सूचना मध्यमश्रेणी के पात्रों द्वारा दी जाती है। इनकी भाषा संस्कृत होती है।
* विष्कम्भक का प्रयोग सदैव अङ्क के प्रारम्भ में होता है।
* उत्तररामचरितम् के तृतीय अङ्क में तमसा के कथन द्वारा **कुश एवं लव के जन्म की सूचना शुद्ध विष्कम्भक के द्वारा** दी गयी है। ''तदैव तत्र दारकद्वयं च प्रसूता''
अतः विकल्प (A) सही है।

56. 'सहयुक्तेऽप्रधाने सूत्र है?
(A) कर्मकारक का (B) करणकारक का
(C) सम्प्रदानकारक का (D) अपादानकारक का

	सूत्र	सम्बन्धित कारक
(A)	उपान्वध्याङ्वसः	कर्मकारक
(B)	**सहयुक्तेऽप्रधाने**	**करणकारक**
(C)	राधीक्ष्योर्यस्य विप्रश्नः	सम्प्रदानकारक
(D)	जनिकर्तुः प्रकृतिः	अपादानकारक

अतः विकल्प (B) सही है।

57. 'सूर्ये अस्तं गते गोपाः गृहम् अगच्छन्' में विभक्ति है?
(A) चतुर्थी (B) पञ्चमी
(C) सप्तमी (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या– ''यस्य च भावेन भावलक्षणम्'' (2/3/37) सूत्र से जहाँ एक क्रिया के घटित होने पर दूसरी क्रिया सूचित हो वहाँ पहली क्रिया के आश्रय वाचक शब्द में **सप्तमी विभक्ति** होती है यथा– सूर्ये अस्तं गते गोपाः गृहम् अगच्छन्।
अतः विकल्प (C) सही है।

49. (B) 50. (C) 51. (B) 52. (D) 53. (B) 54. (C) 55. (A) 56. (B) 57. (C)

58. 'बालक' शब्द का चतुर्थी एकवचन का रूप है?
(A) बालकेभ्यः (B) बालकाय
(C) बालकाभ्याम् (D) बालकात्

व्याख्या– 'बालक' अकारान्त पुंलिङ्ग शब्द का रूप चतुर्थी विभक्ति में "**बालकाय,** बालकाभ्याम् बालकेभ्यः" बनता है। पञ्चमी विभक्ति में–"बालकात्, बालकाभ्याम्, बालकेभ्यः" रूप बनता है। अतः विकल्प (B) सही है।

59. 'अस्मद्' शब्द सप्तमी एकवचन का रूप है?
(A) मया (B) मम
(C) मयि (D) माम्

व्याख्या– 'अस्मद्' शब्द का सातों विभक्तियों का एकवचन में रूप–अहम्, माम्, मया, मह्यम्, मत्, मम, **मयि।** अतः सप्तमी एकवचन में 'मयि' रूप बनता है। इसलिए विकल्प (C) सही है।

60. 'तेरह' के लिए संस्कृत में शब्द है?
(A) त्रयदशम् (B) त्रिदश
(C) त्रयोदश (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या– तेरह के लिए '**त्रयोदश**' संस्कृतशब्द है। अतः विकल्प (C) सही है।

61. कालिदास किस राजा के आश्रयदाता कवि थे?
(A) चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य (B) धवलचन्द्र
(C) अवन्तिवर्मा (D) यशोवर्मा

	कवि	**आश्रयदाता राजा**
(A)	**कालिदास**	**चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य**
(B)	नारायणपण्डित	धवलचन्द्र
(C)	आनन्दवर्धन	अवन्तिवर्मा
(D)	भवभूति	यशोवर्मा

अतः विकल्प (A) सही है।

62. 'रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय'–प्रस्तुत सूक्ति किस ग्रन्थ से उद्धृत है?
(A) कादम्बरी से (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से
(C) रघुवंशम् से (D) मेघदूतम् से

व्याख्या–
(A) 'अप्रत्ययबहुला च दिवसान्त'– (कादम्बरी/शुकनासोपदेश)
(B) 'मम विरहजां न त्वं वत्से शुचं गणयिष्यसि'– (अभिज्ञान/अङ्क 4)
(C) 'स्ववीर्यगुप्ता हि मनोः प्रसूतिः'–(रघुवंशम् 2/4)
(D) 'रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय'– पूर्वमेघ/20

अतः विकल्प (D) सही है।

63. उत्तररामचरित के तृतीय अङ्क में कुल कितने श्लोक हैं?
(A) 46 (B) 22
(C) 48 (D) 256

	ग्रन्थ	**श्लोक**
(A)	किरातार्जुनीयम् (प्रथमसर्ग)	46
(B)	अभिज्ञानशाकुन्तलम् (चतुर्थ अङ्क)	22
(C)	उत्तररामचरितम् (तृतीय अङ्क)	48
(D)	**उत्तररामचरितम् (सम्पूर्ण)**	**256**

अतः विकल्प (C) सही है।

64. 'बृहत्कथा' के लेखक है?
(A) नारायण पण्डित (B) विष्णुशर्मा
(C) गुणाढ्य (D) क्षेमेन्द्र

व्याख्या–

	कथा साहित्य	**लेखक**
(A)	हितोपदेश	नारायणपण्डित
(B)	पञ्चतन्त्रम्	विष्णुशर्मा
(C)	**बृहत्कथा**	**गुणाढ्य**
(D)	बृहत्कथामञ्जरी	क्षेमेन्द्र

अतः विकल्प (C) सही है।

65. "सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः" किस कवि का प्रिय श्लोक है?
(A) भारवि का (B) कालिदास का
(C) बाणभट्ट का (D) माघ का

व्याख्या– 'सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः (बिना विचार किये किसी भी कार्य को सहसा नहीं करना चाहिए) यह **भारवि का प्रिय श्लोक** है। अतः विकल्प (A) सही है।

66. निम्न में से कौन-सा युग्म सही नहीं है?
(A) मृच्छकटिकम्– शूद्रक
(B) वेणीसंहारम्– भट्टनारायण
(C) मुद्राराक्षसम्– विशाखदत्त
(D) राजतरङ्गिणी– क्षेमेन्द्र

व्याख्या– राजतरङ्गिणी, कल्हण की रचना है। अतः विकल्प (D) सही है।

58. (B) 59. (C) 60. (C) 61. (A) 62. (D) 63. (C) 64. (C) 65. (A) 66. (D)

67. 'किरातार्जुनीयम्' के प्रत्येक सर्ग का अन्तिम पद है?
(A) लक्ष्मी (B) विभु
(C) शिव (D) श्री

व्याख्या– * ''दिनकृतमिव लक्ष्मीस्त्वां समभ्येतु भूयः'' (किरात० 1/46) किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग की अन्तिम पंक्ति है, इसमें **'लक्ष्मी' पद का प्रयोग** हुआ है।
* इसीप्रकार किरातार्जुनीयम् के प्रत्येकसर्ग का अन्तिम पद लक्ष्मी है। अतः विकल्प (A) सही है।

68. किरातार्जुनीयम् में 'किरात' शब्द किसका बोधक है?
(A) कोल-भील (B) किरीटधारी
(C) शङ्कर (D) कार्तिकेय

व्याख्या– भारवि कृत महाकाव्य किरातार्जुनीयम् में 'किरात' शब्द **भगवान् शङ्कर का बोधक** है।
अतः विकल्प (C) सही है।

69. 'कवीनां कविषु वा कालिदासः श्रेष्ठः'' में प्रयुक्त विभक्ति है?
(A) चतुर्थी (B) सप्तमी
(C) पञ्चमी (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या– * ''यतश्च निर्धारणम्'' (2/3/41) सूत्र से किसी समुदाय से एक को पृथक् करना 'निर्धारण' कहलाता है।
* जिससे निर्धारण होता है उसमें **षष्ठी और सप्तमी विभक्ति** होती है यथा–कवीनां कविषु वा कालिदासः श्रेष्ठः।
अतः विकल्प (B) सही है।

70. शकुन्तला के साथ दुष्यन्त के राजदरबार तक कौन गयी थी?
(A) प्रियंवदा (B) गौतमी
(C) अनसूया (D) मालविका

व्याख्या– ''त्वया सह गौतमी यास्यति'' (अभि० शा० अङ्क 4) कण्व के इस कथन से ज्ञात होता है कि– शकुन्तला के साथ दुष्यन्त के दरबार तक **गौतमी जाती है** तथा इसके साथ शार्ङ्गरव और शारद्वत भी जाते हैं।
अतः विकल्प (B) सही है।

71. 'चौरभयम् में कौन-सा समास है?
(A) द्वितीया तत्पुरुष (B) तृतीया तत्पुरुष
(C) षष्ठी तत्पुरुष (D) पञ्चमी तत्पुरुष

व्याख्या–
(A) ''द्वितीया श्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नैः'' (2/1/24) सूत्र से 'कष्टम् आपन्नः = कष्टापन्नः' में द्वितीया तत्पुरुषसमास है।
(B) ''पूर्वसदृशसमोनार्थकलहनिपुणमिश्रश्लक्ष्णैः'' (2/1/31) सूत्र से 'गुडेन मिश्रं=गुडमिश्रम्' में तृतीया तत्पुरुषसमास है।
(C) ''षष्ठी'' (2/2/8) सूत्र से 'राज्ञः पुरुषः = राजपुरुषः' में षष्ठी तत्पुरुषसमास है।
(D) ''पञ्चमी भयेन'' (2/1/37) सूत्र से 'चौराद् भयं = चौरभयम्' में **पञ्चमी तत्पुरुषसमास है।**
अतः विकल्प (D) सही है।

72. 'तथेति' का सन्धि विच्छेद होगा?
(A) तथ + इति (B) तथा + तेति
(C) तथा + इति (D) तथा + इत

व्याख्या– ''आद्गुणः'' (6/1/87) सूत्र से यदि अ/आ के बाद स्वर हो तो दोनों के स्थान में गुण आदेश हो।
यथा–**तथा + इति** = तथेति। (आ + इ = ए)
अतः विकल्प (C) सही है।

73. निम्नलिखित में कौन-सा कथन असत्य है?
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक में सात अङ्क हैं।
(B) शकुन्तला की कथा महाभारत के आदिपर्व में वर्णित है।
(C) कालिदास वैदर्भी रीति के कवि हैं।
(D) मालविकाग्निमित्रम् नाटक में सात अङ्क हैं।

व्याख्या– विकल्प (D) असत्य है, क्योंकि मालविकाग्निमित्रम् कालिदास कृत नाटक है। जिसमें पाँच अङ्क हैं।
अतः विकल्प (D) सही है।

74. महाभारत को जाना जाता है?
(A) जयसंहिता (B) आदिकाव्य
(C) सौप्तिक संहिता (D) अरण्यसंहिता

व्याख्या– * महाभारत को **'जयसंहिता'** भी कहा जाता है।
* महाभारत में एक लाख श्लोक हैं। इसके रचयिता ''वेदव्यास'' हैं।
* रामायण का अपर नाम ''चतुर्विंशतिसाहस्री संहिता'' है।
* रामायण को 'आदिकाव्य' कहते हैं। वाल्मीकि को 'आदिकवि' कहा जाता है। अतः विकल्प (A) सही है।

67. (A)	68. (C)	69. (B)	70. (B)	71. (D)	72. (C)	73. (D)	74. (A)

75. संस्कृत में दस हजार होगा?
(A) सहस्रम् **(B) नियुतम्**
(C) लक्षम् **(D) अयुतम्**

व्याख्या–

	संख्या	संस्कृत शब्द
(A)	एक हजार	सहस्रम्
(B)	दस लाख	नियुतम्/प्रयुतम्
(C)	एक लाख	लक्षम्
(D)	**दस हजार**	**अयुतम्**

नोट–सहस्रम्, नियुतम्, लक्षम्, अयुतम्, सभी नपुंसकलिङ्ग शब्द हैं। अतः विकल्प (D) सही है।

76. '99' का संस्कृत शब्दात्मक रूप होगा?
(A) नवनवतिः **(B) त्रिनवतिः**
(C) अष्टानवतिः **(D) नवतिः**

व्याख्या–

	संख्या	शब्द
(A)	**99**	**नवनवतिः**
(B)	93	त्रिनवतिः/त्रयोनवतिः
(C)	98	अष्टानवतिः/अष्टनवतिः
(D)	90	नवतिः

अतः विकल्प (A) सही है।

77. अनुनासिक वर्णों की संख्या है?
(A) तीन **(B) चार**
(C) पाँच **(D) सात**

व्याख्या– अनुनासिक वर्णों का उच्चारण मुख और नासिका दोनों से होता है। ''मुखनासिकावचनोऽनुनासिकः'' (1.1.8) **इनकी संख्या 5** है। यथा–
'ञमङणनानां नासिका च'–**ञ्, म्, ङ्, ण्, न्**
अतः विकल्प (C) सही है।

78. ''नारिकेलफलसम्मितं वचः'' किस कवि के बारे में कहा जाता है?
(A) महाकवि बाण **(B) कालिदास**
(C) भास **(D) भारवि**

व्याख्या– प्रसिद्ध टीकाकार मल्लिनाथ ने **भारवि** की रचना की उपमा नारियल के फल से दी है। जो ऊपर से कठोर, किन्तु अन्दर से कोमल और सरस होता है। ''नारिकेलफलसम्मितं वचो भारवेः सपदि तद् विभज्यते''–मल्लिनाथ।
अतः विकल्प (D) सही है।

79. किरातार्जुनीयम् में कितने सर्ग हैं?
(A) 28 **(B) 18**
(C) 22 **(D) 13**

व्याख्या–

	ग्रन्थ	सर्ग
(A)	बुद्धचरितम्	28
(B)	**किरातार्जुनीयम्**	**18**
(C)	भट्टिकाव्य (रावणवध)	22
(D)	राघवपाण्डवीयम्	13

अतः विकल्प (B) सही है।
नोट–यह प्रश्न इसी प्रश्नपत्र में प्रश्न संख्या 45 में एक बार पूछा जा चुका है। कृपया प्रश्न संख्या 45 देखें।

80. कादम्बरी में वर्णित शुक पूर्वजन्म में था?
(A) शूद्रक **(B) वैशम्पायन**
(C) तारापीड **(D) चन्द्रापीड**

व्याख्या– बाणभट्ट कृत कादम्बरी में तीन जन्मों की कथा है। जिसमें शुक के पूर्वजन्म का नाम वैशम्पायन था। यथा–
1. पुण्डरीक 2. **वैशम्पायन** 3. शुक

81. मेघदूतम् की कथावस्तु विभक्त है?
(A) खण्डों में **(B) निःश्वासों में**
(C) अध्यायों में **(D) सर्गों में**

व्याख्या–

	ग्रन्थ	विभाजन
(A)	**मेघदूतम्**	**खण्डों में** (पूर्वमेघ, उत्तरमेघ)
(B)	शिवराजविजयम्	3 विराम, 12 निःश्वास
(C)	कविकण्ठाभरण (क्षेमेन्द्र)	5 अध्याय, 55 कारिकाएँ
(D)	ऋतुसंहार	6 सर्ग, 144 श्लोक

अतः विकल्प (A) सही है।

82. 'रघुवंश' है?
(A) महाकाव्य **(B) गीतिकाव्य**
(C) नाटक **(D) व्याकरणग्रन्थ**

व्याख्या–

	ग्रन्थ	विधा
(A)	**रघुवंशम्**	**महाकाव्य**
(B)	गङ्गालहरी	गीतिकाव्य
(C)	बालरामायणम्	नाटक
(D)	अष्टाध्यायी	व्याकरणग्रन्थ

अतः विकल्प (A) सही है।

75. (D) 76. (A) 77. (C) 78. (D) 79. (B) 80. (B) 81. (A) 82. (A)

83. ''एको रसः करुण एव निमित्तभेदाद्'' से सम्बद्ध रचना है?
(A) मेघदूतम् **(B) वाल्मीकिरामायणम्**
(C) उत्तररामचरितम् **(D) नीतिशतकम्**

व्याख्या–
(A) 'एकः सख्यास्तव सह मया वामपादाभिलाषी'–मेघदूतम्
(B) 'एको हि कुरुते पापं कालपाशवशं गतः'–वाल्मीकि रामायण
(C) 'एको रसः करुण एव निमित्तभेदाद्'–**उत्तररामचरितम्।**
(D) 'एको देवः केशवो वा शिवो वा'–नीतिशतकम्
अतः विकल्प (C) सही है।

84. विदूषक रहित रचना है?
(A) उत्तररामचरितम् **(B) मृच्छकटिकम्**
(C) शिशुपालवधम् **(D) नैषधीयचरितम्**

व्याख्या– उत्तररामचरितम् विदूषक रहित रचना है। मृच्छकटिकम् का विदूषक 'मैत्रेय' है। शिशुपालवधम् और नैषधीयचरितम् दोनों महाकाव्य हैं। अतः विकल्प `A' सही है।

85. 'भू' धातु परस्मैपद का लङ्लकार मध्यमपुरुष एकवचन का रूप है?
(A) अभवन् **(B) भवतु**
(C) अभवः **(D) भवताम्**

व्याख्या– भू धातु परस्मैपद लङ्लकार का रूप प्रथमपुरुष में–अभवत् अभवताम् अभवन् बनता है
मध्यमपुरुष में–**अभवः** अभवतम् अभवत
लोट्लकार प्रथमपुरुष में–भवतु भवताम् भवन्तु
अतः विकल्प (C) सही है।

86. 'सतीर्थ्यः' का अर्थ है?
(A) सहपाठी **(B) सूर्य**
(C) थाल्हा **(D) दोना**

व्याख्या– ''तावत् तस्यैव सतीर्थ्योऽपरस्तत्समानवयाः कस्तुरिका–रेणुरूषित इव श्यामः।'' (शिवराजविजयम्)

	शब्द	अर्थ
(A)	**सतीर्थ्यः**	**सहपाठी/सहाध्यायी**
(B)	इनः	स्वामी
(C)	आलवालम्	थाल्हा
(D)	पुटकम्	दोना

अतः विकल्प (A) सही है।

87. योगिराज किस राजा के काल में प्रथमबार समाधिस्थ हुए थे?
(A) युधिष्ठिर **(B) विक्रमादित्य**
(C) यवनकाल **(D) हर्षवर्धन**

व्याख्या– ''यौधिष्ठिरे समये कलितसमाधिरहं वैक्रम-समये उदस्थाम्। पुनश्च वैक्रम-समये समाधिमाकलय्य अस्मिन् दुराचारमये समयेऽहमुत्थितोऽस्मि। (शिवराज0प्र0नि0)
योगिराज के इस कथन से ज्ञात होता है कि–
* योगिराज प्रथमबार युधिष्ठिर के समय में समाधि लगाते हैं और विक्रमादित्य के समय में उठते हैं।
* द्वितीय बार विक्रमादित्य के समय में समाधि लगाते हैं, और दुराचारसमय (यवनकाल) में उठते हैं।
* फिर कहते हैं कि मैं पुनः जाकर समाधिस्थ होऊँगा अर्थात् तृतीयबार यवनकाल में समाधिस्थ होंगे।

अतः विकल्प (A) सही है।

88. 'अपजिहीर्षुः' में कौन सी धातु है?
(A) आप् **(B) जि**
(C) हृ **(D) हृष्**

व्याख्या– ''मा स्म गमदन्योऽपि कश्चित् कन्यकामपजिहीर्षुरिति।'' (शिवराजविजयम्) 'अपजिहीर्षुः' सन्नन्तप्रयोग है। जिसका अर्थ है– अपहरण करने की इच्छा वाला। **'अप + हृ + सन् + उ' = अपजिहीर्षुः' में अप उपसर्ग एवं हृ धातु है।** अतः विकल्प (C) सही है।

89. 'चन्द्रहास' का अर्थ है?
(A) उदीयमान चन्द्र **(B) तलवार**
(C) चन्द्र का उपहास
(D) चाँदनी के समान ह्रास वाला

व्याख्या– चन्द्रहास का अर्थ **'तलवार'** है
''कृपाणः, करपालः, असिः, खड्गः'' आदि शब्द चन्द्रहास के पर्यायवाची शब्द हैं। अतः विकल्प (B) सही है।

90. 'वर्णिलिङ्गी' का अर्थ है।
(A) वर्ण एवं लिङ्ग **(B) वर्णी एवं चिह्न**
(C) ब्रह्मचारी के वेश वाला **(D) शिव**

व्याख्या– * वर्णिलिङ्गी का अर्थ है–**ब्रह्मचारी** वेश वाला।
* ब्रह्मचारी की वेशभूषा से युक्त व्यक्ति को 'वर्णिलिङ्गी' कहा जाता है।
* ''वर्णः प्रशस्तिः अस्ति अस्य इति वर्णी, तस्य लिङ्गं चिह्नं वर्णिलिङ्गम्। वर्णिलिङ्गम् अस्य अस्ति इति वर्णिलिङ्गी।''

अतः विकल्प (C) सही है।

83. (C) 84. (A) 85. (C) 86. (A) 87. (A) 88. (C) 89. (B) 90. (C)

91. 'उह्यते' में कौन सी धातु है?
(A) ऊह (B) या
(C) वह् (D) ह्वा

व्याख्या– ''गुणानुरागेण शिरोभिरुह्यते'–(किरात0 1/21) **वह् धातु** का रूप कर्मवाच्य में–लट्लकार प्रथमपुरुष में– ''उह्यते उह्येते उह्यन्ते'' बनता है। अतः विकल्प (C) सही है।

92. 'पत्यौ' में कौन सी विभक्ति है?
(A) प्रथमा द्विवचन (B) द्वितीया द्विवचन
(C) तृतीया एकवचन (D) सप्तमी एकवचन

व्याख्या–
(A) 'पति' इकारान्त पुंलिङ्ग का रूप प्रथमाविभक्ति में– 'पतिः, पती, पतयः' बनता है।
(B) द्वितीयाविभक्ति में–''पतिम् पती पतीन्'' बनता है।
(C) तृतीयाविभक्ति में–'पत्या पतिभ्याम् पतिभिः'।
(D) सप्तमी विभक्ति में–''**पत्यौ** पत्योः पतिषु'' रूप बनता है। अतः विकल्प (D) सही है।

93. यक्ष का प्रवास किस पर्वत पर था?
(A) देवगिरि (B) नीलगिरि
(C) रामगिरि (D) उदयगिरि

व्याख्या– ''स्निग्धच्छायातरुषु वसतिं रामगिर्याश्रमेषु''(पूर्वमेघ/1) अर्थात् (यक्ष) घनी छाया से युक्त वृक्षों वाले **रामगिरि पर्वत** के आश्रमों में निवास करने लगा।
अतः विकल्प (C) सही है।

94. यक्ष की पत्नी कहाँ रहती थी?
(A) अमरावती (B) विदिशा
(C) उज्जयिनी (D) अलकापुरी

व्याख्या– * ''न त्वं दृष्ट्वा न पुनरलकां ज्ञास्यसे कामचारिन्''। (पूर्वमेघ/66)
* यक्ष की पत्नी विशालाक्षी '**अलकापुरी**' में रहती थी।
* 'विदिशा' शूद्रक की राजधानी है।
* 'उज्जयिनी' तारापीड की राजधानी थी
* 'अमरावती' इन्द्र की पुरी है। अतः विकल्प (D) सही है।

95. यक्ष का स्वामी कौन था?
(A) कुबेर (B) यम
(C) इन्द्र (D) वरुण

व्याख्या– * ''श्रुत्वा वार्तां जलदकथितां तां धनेशोऽपि सद्यः'' (उत्तरमेघ/प्रक्षिप्त)
प्रस्तुत पंक्ति में धनेशः, कुबेर के लिए प्रयुक्त है।
* ''सन्देशं मे हर धनपतिक्रोधविश्लेषितस्य'' यहाँ 'धनपति' का अर्थ भी 'कुबेर' है। अतः **यक्ष का स्वामी कुबेर** था अतः विकल्प (A) सही है।

96. गौतमी कौन थी?
(A) शकुन्तला की सखी (B) वृद्धा तापसी
(C) आश्रम की परिचारिका (D) कण्व की पत्नी

व्याख्या– कालिदास कृत अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में गौतमी नामक स्त्रीपात्र का उल्लेख है। जो कण्वाश्रम की अध्यक्षा तथा **एक वृद्धा तापसी** भी है।
अतः विकल्प (B) सही है।

97. शकुन्तला का दुष्यन्त के साथ विवाह किस विधि से हुआ था?
(A) ब्रह्म (B) गान्धर्व
(C) प्राजापत्य (D) दैव

व्याख्या– * ''यद्यपि गान्धर्वेण विधिना निर्वृत्तकल्याणा शकुन्तलाऽनुरूपभर्तृगामिनी संवृत्तेति'' अर्थात् गान्धर्व विधि से सम्पन्न विवाह वाली, शकुन्तला अपने योग्य पति को प्राप्त हो गयी है। (अभिज्ञान अङ्क-04)
* अनसूया के इस कथन से स्पष्ट है कि **शकुन्तला का दुष्यन्त के साथ गान्धर्व विवाह** हुआ था।
नोट–'कल्याण' का शाब्दिक अर्थ 'विवाह' है क्योंकि कालिदास दक्षिण भारत के थे और आज भी दक्षिण भारत में विवाह को ''कल्याणम्'' कहते हैं। गान्धर्वविवाह को हिन्दी में प्रेमविवाह और आधुनिक काल में प्रचलित Love marriage गान्धर्वविवाह का ही प्रतिरूप है। अतः विकल्प (B) सही है।

98. ''वामाः कुलस्याधयः'' में 'वामा' का अर्थ है?
(A) बायीं ओर स्थित (B) सुन्दर
(C) प्रतिकूल (D) महिला

व्याख्या– * ''यान्त्येवं गृहिणीपदं युवतयो वामाः कुलस्याधयः'' (अभिज्ञान 4/18) प्रस्तुत पंक्ति में कण्व भारतीय संस्कृति के अनुरूप अपनी पालित पुत्री शकुन्तला को आदर्श गृहिणी होने का उपदेश देते हुए कहते हैं कि–इसप्रकार युवतियाँ गृहस्वामिनी पद को प्राप्त कर लेती हैं, और इसके प्रतिकूल आचरण करने वाली युवतियाँ कुल के लिए आधि (मानसिक कष्ट का कारण) बन जाती हैं।
* अतः यहाँ '**वामा' का अर्थ प्रतिकूल** है।
अतः विकल्प (C) सही है।

91. (C) 92. (D) 93. (C) 94. (D) 95. (A) 96. (B) 97. (B) 98. (C)

99. ''भूयिष्ठं भव दक्षिणा परिजने'' में 'परिजन' का अर्थ है?
(A) सौत (B) अत्यधिक
(C) उदार (D) सेवकजन

व्याख्या– ''भूयिष्ठं भव दक्षिणा परिजने भाग्येष्वनुत्सेकिनी'' (अभिज्ञान० 4/18) अर्थात्–सेवक-सेविकाओं के प्रति अत्यधिक उदार रहना और अच्छे भाग्य पर अभिमान मत करना।

	शब्द	अर्थ
(A)	सपत्नी	सौत
(B)	भूयिष्ठम्	अत्यधिक
(C)	दक्षिणा	उदार
(D)	**परिजन**	**सेवकजन/आश्रितजन**

नोट– भूयिष्ठं में 'बहु + इष्ठन्' प्रत्यय है।
अतः विकल्प (D) सही है।

100. 'विचिन्त्य' में कौन-सा प्रत्यय है?
(A) ल्यप् (B) क्विप्
(C) कनिन् (D) यत्

व्याख्या–

	शब्द	प्रत्यय
(A)	**विचिन्त्य**	**वि + चिन्त् + ल्यप्**
(B)	श्रीः	श्रिञ् + क्विप्
(C)	श्वा	श्वि + कनिन्
(D)	चेयम्	चि + यत्

अतः विकल्प (A) सही है।

101. 'पठ्' धातु के विधिलिङ् में प्रथमपुरुष बहुवचन का रूप होता है?
(A) पठानि (B) पठेयुः
(C) अपठाव (D) पठन्ति

व्याख्या–
(A) पठ् धातु का रूप लोट्लकार उत्तमपुरुष में–पठानि, पठाव, पठाम, बनता है।
(B) विधिलिङ् प्रथमपुरुष में–'पठेत्, पठेताम्, **पठेयुः**'
(C) लङ्लकार उत्तमपुरुष में–'अपठम्, अपठाव, अपठाम'
(D) लट्लकार प्रथमपुरुष में–'पठति, पठतः, पठन्ति'
अतः विकल्प (B) सही है।

102. गम् धातु लृट्लकार उत्तमपुरुष में एकवचन का रूप है?
(A) गमिष्यामि (B) गच्छताम्
(C) अगच्छत् (D) अगच्छन्

व्याख्या–
(A) गम् धातु लृट्लकार उत्तमपुरुष में–
गमिष्यामि, गमिष्यावः, गमिष्यामः रूप बनता है।
(B) लोट्लकार प्रथमपुरुष में–'गच्छतु, गच्छताम्, गच्छन्तु'
(C)+(D) लङ्लकार प्रथमपुरुष में–'अगच्छत्, अगच्छताम्, अगच्छन्' रूप बनता है।
अतः विकल्प (A) सही है।

103. हन् धातु से वर्तमानकाल में प्रथमपुरुष एकवचन का शुद्ध रूप होता है?
(A) हनति (B) घ्नन्ति
(C) हन्ति (D) हनन्ति

व्याख्या– * हन् धातु परस्मैपद लट्लकार प्रथमपुरुष में–**'हन्ति**, हतः, घ्नन्ति' रूप बनता है।
* हनति, हनन्ति रूप हन् धातु के दसों लकारों में कहीं नहीं बनते हैं। अतः विकल्प (C) सही है।

104. निम्नांकित में शुद्ध वाक्य कौनसा है?
(A) युवां पुस्तकं पठथ
(B) यूयं पुस्तकं पठथम्
(C) यूयं पुस्तकं पठथ
(D) आवां पुस्तक पठथ

व्याख्या– कर्ता के अनुसार क्रिया का प्रयोग होता है, इसलिए यहाँ मध्यमपुरुष बहुवचन की क्रिया के साथ मध्यमपुरुष बहुवचन के कर्ता का प्रयोग होकर–**'यूयं पुस्तकं पठथ'** शुद्ध वाक्य है। अतः विकल्प (C) सही है।

105. इनमें शुद्ध वाक्य है–
(A) बालिका जलात् मुखं प्राक्षालयति
(B) बालिका जले मुखं प्रक्षालयति
(C) बालिका जलेन मुखं प्रक्षालयति
(D) बालिका जलानि मुखं प्रक्षालयति

व्याख्या– ''साधकतमं करणम्'' (1/4/42) सूत्र से क्रिया की सिद्धि में जो पदार्थ सबसे अधिक सहायक होता है, उसकी करणसंज्ञा होकर उसमें तृतीया विभक्ति का विधान होता है। यथा–**बालिका जलेन मुखं प्रक्षालयति।** (बालिका जल से मुख धोती है) अतः विकल्प (C) सही है।

99. (D) 100. (A) 101. (B) 102. (A) 103. (C) 104. (C) 105. (C)

106. ''शोकक्षोभे च हृदयं प्रलापैरेव धार्यते''–उक्ति है?
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् की
(B) स्वप्नवासवदत्तम् की
(C) उत्तररामचरितम् की
(D) मृच्छकटिकम् की

व्याख्या– भवभूति विरचित उत्तररामचरितम् नाटक के तृतीय अङ्क में तमसा राम को विलाप करते हुए देखकर कहती है कि– ''शोकजन्य क्षोभ में हृदय विलाप के द्वारा ही बचाया जाता है।'' **(उत्तररामचरितम् 3/29)** अतः विकल्प (C) सही है।

107. 'ओ' के उपरान्त यदि कोई स्वर आवे तो उसके स्थान पर हो जाता है?
(A) अय् **(B) अव्**
(C) आय् **(D) आव्**

व्याख्या– ''एचोऽयवायावः (6/1/78)'' सूत्र से एच् प्रत्याहार (ए, ओ, ऐ, औ) के बाद कोई स्वर आये तो उसके स्थान पर क्रमशः अय्, अव्, आय्, आव् आदेश हो जाता है। यथा–
(A) हरे + ए = हरये (ए + ए = अय्)
(B) **विष्णो + ए = विष्णवे (ओ + ए = अव्)**
(C) नै + अकः = नायकः (ऐ + अ = आय्)
(D) पौ + अकः = पावकः (औ + अ = आव्)
अतः विकल्प (B) सही है।

108. 'वाक् + ईशः' = वागीशः में सन्धि का सूत्र है?
(A) झलां जश् झशि **(B) झलां जशोऽन्ते**
(C) खरि च **(D) झयो होऽन्यतरस्याम्**

व्याख्या–
(A) ''झलां जश् झशि'' (8/4/53) सूत्र से बुध् + धिः = बुद्धिः में व्यञ्जन सन्धि है।
(B) **''झलां जशोऽन्ते''** (8/2/39)" सूत्र से पदान्त झल् के स्थान में जश् आदेश हो जाता है। यथा– वाक् + ईशः = वागीशः
(C) ''खरि च'' (8/4/55) सूत्र से उद् + थानम् = उत्थानम् में सन्धि हुई।
(D) ''झयो होऽन्यतरस्याम्'' (8/4/62)" सूत्र से वाक् + हरिः = वाग्घरिः में व्यञ्जनसन्धि है।
अतः विकल्प (B) सही है।

109. 'महाराजः' में समास है?
(A) द्विगु **(B) द्वन्द्व**
(C) कर्मधारय **(D) तत्पुरुष**

व्याख्या–
(A) पञ्चानां खट्वानां समाहारः = पञ्चखट्वा/पञ्चखट्वी में द्विगुसमास है।
(B) ''विशिष्टलिङ्गो नदीदेशोऽग्रामाः'' (2/4/7) सूत्र से 'गङ्गा च शोणश्च = गङ्गाशोणम्' में द्वन्द्वसमास में समाहारवद्भाव (नपुंसकलिङ्ग, एकवद्भाव) किया गया।
(C) 'राजाहः सखिभ्यष्टच्' (5/4/91) सूत्र से **'महान् चासौ राजा = महाराजः'** में समासान्त 'टच्' प्रत्यय होकर ''विशेषणं विशेष्येण बहुलम्'' (2.1.57) सूत्र से **कर्मधारयसमास** है।
(D) ''सप्तमी शौण्डैः'' (2/1/40) सूत्र से 'चक्रे बन्धः = चक्रबन्धः' में सप्तमी तत्पुरुषसमास है।
अतः विकल्प (C) सही है।

110. 'पीताम्बरः' में कौन-सा समास है?
(A) तत्पुरुष **(B) बहुव्रीहि**
(C) द्विगु **(D) द्वन्द्व**

व्याख्या–

	पद	**समास**
(A)	यूपदारु	तत्पुरुष
(B)	**पीताम्बरः**	**बहुव्रीहि**
(C)	चतुर्युगम्	द्विगु
(D)	हरिहरौ	द्वन्द्व

अतः विकल्प (B) सही है।

111. ''आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महारिपुः।
नास्त्युद्यमसमो बन्धुः कृत्वा यं नावसीदति॥''
इस श्लोक में किसका महत्त्व प्रतिपादित है?
(A) ज्ञान का **(B) धर्म का**
(C) कर्म का **(D) मित्र का**

व्याख्या– * प्रस्तुत श्लोक में भर्तृहरि कहते हैं कि– आलस्य निश्चित रूप से मनुष्यों के शरीर में स्थित महान् शत्रु है। उद्यम के समान कोई बन्धु नहीं है, जिसे करके मनुष्य दुःख नहीं पाता है। (नीतिशतकम्/कर्मपद्धति) अतः इस श्लोक में **कर्म का महत्त्व** बतलाया गया है।
अतः विकल्प (C) सही है।

106. (C) 107. (B) 108. (B) 109. (C) 110. (B) 111. (C)

112. ''सेवाधर्मो परमगहनो योगिनामप्यगम्यः'' कथन है?
(A) भवभूति का (B) भर्तृहरि का
(C) कालिदास का (D) भारवि का

व्याख्या–
(A) ''सस्वेदरोमाञ्चितकम्पिताङ्गी''(भवभूति/उत्तररामचरितम्-3/42)
(B) ''सेवाधर्मो परमगहनो योगिनामप्यगम्यः'' भर्तृहरि/नीतिशतकम्
(C) 'सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम्'' (कालिदास/अभिज्ञान-49)
(D) ''सदानुकूलेषु हि कुर्वते रतिम्'' (भारवि/किरातार्जुनीयम्–1/5)
अतः विकल्प (B) सही है।

113. ''विधिरहो बलवानिति मे मतिः'' सूक्ति उद्धृत है?
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् से
(B) किरातार्जुनीयम् से
(C) उत्तररामचरितम् से
(D) नीतिशतकम् से

व्याख्या–
(A) ''विभवगुरुभिः कृत्यैस्तस्य प्रतिक्षणमाकुला'' (अभिज्ञान0 4/19)
(B) ''विधीयतां तत्र विधेयमुत्तरम्'' (किरातार्जुनीयम् 1/25)
(C) 'विरहव्यथेव वनमेति जानकी'' (उत्तर0 3/4)
(D) **''विधिरहो बलवानिति मे मतिः'' (नीतिशतकम्-85) से**
अतः विकल्प (D) सही है।

114. साहित्य, सङ्गीत एवं कला से अपरिचित व्यक्ति होता है?
(A) परममूर्ख (B) परमबुद्धिमान
(C) परमपशु (D) परमदुष्ट

व्याख्या– ''साहित्य–सङ्गीत-कलाविहीनः, साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः'' (अज्ञपद्धति)
साहित्य, संगीत और कला से अपरिचित व्यक्ति बिना सींग एवं पूँछ का **साक्षात् पशु** है।
''तृणं न खादन्नपि जीवमान-स्तद्भागधेयं **परमं पशूनाम्''**। (नीतिशतकम्) अतः विकल्प (C) सही है।

115. योगिराज पुनः कब समाधिस्थ हुए?
(A) युधिष्ठिर के समय (B) विक्रमादित्य के समय
(C) भोजराज के समय (D) पृथ्वीराज के समय

व्याख्या– इसका विकल्प (B) सही है।
नोट–इस प्रश्न की विस्तृत व्याख्या के लिए प्रश्न संख्या-87 देखें।

116. किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग में छन्द है?
(A) वसन्ततिलका (B) उपेन्द्रवज्रा
(C) वंशस्थ (D) उपजाति

व्याख्या– भारवि कृत किरातार्जुनीयम् महाकाव्य के प्रथमसर्ग में (1/44) श्लोक तक **वंशस्थ छन्द** है तथा 45वें एवं 46वें श्लोक में क्रमशः पुष्पिताग्रा एवं मालिनी छन्द है।
अतः विकल्प (C) सही है।
नोट–कृपया प्रश्न संख्या-30 भी देखें।

117. 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः'' उक्ति है?
(A) युधिष्ठिर की (B) दुर्योधन की
(C) वनेचर की (D) द्रौपदी की

व्याख्या– * 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः' अर्थात् हितकारी और प्रियवाणी दुर्लभ होती है। (किरात0 1/4)
* उपर्युक्त पंक्ति **वनेचर की उक्ति** है। किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में युधिष्ठिर और दुर्योधन की एक भी उक्ति नहीं है। केवल वनेचर एवं द्रौपदी की उक्तियाँ है।
अतः विकल्प (C) सही है।

118. ''अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता'' सूक्ति किसके लिए कथित है?
(A) दुर्योधन के विषय में (B) युधिष्ठिर के विषय में
(C) भीम के विषय में (D) द्रौपदी के विषय में

व्याख्या–
(A) ''अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता''– (किरात. 1/23) यह उक्ति दुर्योधन के विषय में है।
(B) ''पुरोपनीतं नृप! रामणीयकं, द्विजातिशेषेण यदेतदन्धसा'' युधिष्ठिर के विषय में (किरात. 1/39)
(C) ''परिभ्रमँल्लोहितचन्दनोचितः पदातिरन्तर्गिरि रेणुरूषितः'' भीम के विषय में (किरात. 1/34)
(D) ''तथापि वक्तुं व्यवसाययन्ति मां, निरस्तनारीसमया दुराधयः'' (किरात. 1/28)
द्रौपदी के विषय में। अतः विकल्प (A) सही है।

112. (B) 113. (D) 114. (C) 115. (B) 116. (C) 117. (C) 118. (A)

119. 'पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम्' यह उक्ति किस ग्रन्थ में है?
(A) नीतिशतकम्' में (B) किरातार्जुनीयम् में
(C) मुद्राराक्षसम् में (D) शिशुपालवधम् में

व्याख्या–
(A) 'परोपकारैर्न तु चन्दनेन'–(नीतिशतकम्/63)
(B) **'पराभवोप्युत्सव एव मानिनाम्'–(किरात. 1/41)**
(C) 'परायत्तःप्रीतेः कथमिव रसं वेत्ति पुरुषः'–'मुद्राराक्षस/अङ्क 3)
(D) 'परिभवोऽरिभवो हि सुदुःसहः'–(शिशुपाल० 6/45)
अतः विकल्प (B) सही है।

120. 'शमेन सिद्धिं मुनयो न भूभृतः' यह कथन किसका है।
(A) द्रौपदी का (B) वनेचर का
(C) दुर्योधन का (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या– प्रस्तुत सूक्ति में **द्रौपदी**, युधिष्ठिर को उलाहना देते हुए कहती है कि–निष्काम तपस्वीजन शान्ति के द्वारा (काम, क्रोध आदि) शत्रुओं को जीतकर सिद्धि प्राप्त करते हैं, राजा नहीं। (किरात० 1/42) अतः विकल्प (A) सही है।

121. 'बलिं याचते वसुधाम्' में किस सूत्र से 'बलि' की कर्मसंज्ञा हुई है।
(A) कर्तुरीप्सिततमं कर्म (B) अधिशीङ्स्थासां कर्म
(C) तथायुक्तं चानीप्सितम् (D) अकथितं च

व्याख्या–
(A) ''कर्तुरीप्सिततमं कर्म'' (1/4/49) सूत्र से कर्ता अपनी क्रिया के द्वारा जिस पदार्थ को सबसे अधिक चाहता है उसकी कर्मसंज्ञा होती है। यथा–भक्तः हरिं भजति।
(B) ''अधिशीङ्स्थासां कर्म'' (1/4/46) सूत्र से यदि शीङ्, स्था और आस् धातुओं के पहले 'अधि' उपसर्ग लगा हो तो क्रिया के आधार की कर्मसंज्ञा होती है यथा–हरिः वैकुण्ठम् अधिशेते।
(C) ''तथायुक्तं चानीप्सितम् (1/4/50) सूत्र से ईप्सित पदार्थ के साथ-साथ अनीप्सित पदार्थ की भी कर्मसंज्ञा होती है। यथा–ग्रामं गच्छन् तृणं स्पृशति।
(D) **''अकथितं च''** (1/4/51) सूत्र से अपादानादि कारकों की अविवक्षा में (दुह्, याच् आदि 16 धातुओं के योग में) प्रकृत सूत्र से अपादान आदि कारकों की कर्मसंज्ञा होती है। यथा–बलिं याचते वसुधाम् (बलि से पृथ्वी माँगता है) अतः विकल्प (D) सही है।

122. 'उपगङ्गम्' में कौन सा समास है?
(A) तत्पुरुष (B) द्वन्द्व
(C) अव्ययीभाव (D) बहुव्रीहि

व्याख्या–
(A) ''पूर्वसदृशसमोनार्थकलहनिपुणमिश्रश्लक्ष्णैः'' (2/1/31) सूत्र से 'मात्रा सदृशः = मातृसदृशः' में तृतीया तत्पुरुषसमास है।
(B) ''चार्थे द्वन्द्वः'' (2/2/29) सूत्र से पाणी च पादौ च = पाणिपादम् में द्वन्द्वसमास है।
(C) ''ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य'' (1/2/47) सूत्र से **गङ्गायाः समीपम् = उपगङ्गम्' इस अव्ययीभाव समास** में ह्रस्व का विधान किया गया।
(D) ''अनेकमन्यपदार्थे'' (2/2/24) सूत्र से 'वीराः पुरुषाः सन्ति यस्मिन् ग्रामे सः = वीरपुरुषको ग्रामः' में बहुव्रीहि समास है। अतः विकल्प (C) सही है।

123. 'कष्टापन्नः' समास का विग्रह क्या है?
(A) कष्टम् आपन्नः (B) कष्टेन आपन्नः
(C) कष्टे आपन्नः (D) कष्टाय आपन्नः

व्याख्या– ''द्वितीया श्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नैः'' (2/1/24) सूत्र से **'कष्टम् आपन्नः = कष्टापन्नः' में द्वितीया तत्पुरुषसमास है।** अतः विकल्प (A) सही है।

124. 'वाग्युद्धम्' समास का विग्रह है?
(A) वाचि युद्धम् (B) वाचे युद्धम
(C) वाचा युद्धम् (D) वाचो युद्धम्

व्याख्या– ''पूर्वसदृशसमोनार्थकलहनिपुणमिश्रश्लक्ष्णैः (2/1/31)" सूत्र से कलह अर्थ में ''वाचा युद्धम् = वाग्युद्धम्'' में तृतीया तत्पुरुषसमास है। अतः विकल्प (C) सही है।

125. 'पितृ' शब्द का सप्तमी एकवचन में रूप क्या होगा?
(A) पितरि (B) पितुः
(C) पित्रे (D) पित्रा

व्याख्या–
(A) 'पितृ' ऋकारान्त पुंलिङ्ग शब्द का रूप **सप्तमी में–पितरि, पित्रोः, पितृषु बनता है।**
(B) षष्ठी विभक्ति में–पितुः, पित्रोः, पितॄणाम्
(C) चतुर्थी विभक्ति में–पित्रे, पितृभ्याम्, पितृभ्यः
(D) तृतीया विभक्ति में–पित्रा, पितृभ्याम्, पितृभिः
अतः विकल्प (A) सही है।

119. (B) 120. (A) 121. (D) 122. (C) 123. (A) 124. (C) 125. (A)

प्रशिक्षित-स्नातकशिक्षक-चयनपरीक्षा (TGT)–2010

1. 'घटिका-शतक' की उपाधि से विभूषित किये गये हैं?
(A) बाणभट्ट (B) भर्तृहरि
(C) अम्बिकादत्तव्यास (D) कालिदास

कवि	उपाधि
(A) बाणभट्ट	गद्यसम्राट्/तुरङ्गबाण
(B) भर्तृहरि	शतकत्रयकार
(C) **अम्बिकादत्तव्यास**	**घटिकाशतक/शतावधान/अभिनवबाण**
(D) कालिदास	दीपशिखा/रघुकार/कविकुलगुरु

अतः विकल्प (C) सही है।

2. बाणभट्ट का काल माना जाता है?
(A) ई०पू० प्रथम शताब्दी
(B) सातवीं शताब्दी का उत्तरार्ध
(C) छठी शताब्दी
(D) सातवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध

कवि	अनुमानित काल
(A) कालिदास	ई०पू० प्रथम शताब्दी
(B) भवभूति	सातवीं शताब्दी का उत्तरार्ध
(C) भारवि	छठी शताब्दी
(D) **बाणभट्ट**	**सातवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध**

अतः विकल्प (D) सही है।

3. 'गां दोग्धि पयः' में 'गां' की संज्ञा होगी?
(A) कर्म (B) करण
(C) अधिकरण (D) अपादान

व्याख्या–

(A) ''अकथितं च'' (1/4/51) सूत्र से दुह्, याच्, आदि सोलह धातुओं के योग में या तो करण, सम्प्रदान, अपादान इत्यादि का प्रयोग करें अथवा इनके स्थान पर कर्मकारक का प्रयोग करें यथा–'सः गां दोग्धि पयः'–(वह गाय से दूध दुहता है) यहाँ 'गाय' वस्तुतः अपादानकारक है किन्तु अपादान की अविवक्षा में **कर्मकारक** है। अतः विकल्प (A) सही है।

(B) ''संज्ञोऽन्यतरस्यां कर्मणि'' (2/3/22) सूत्र से 'सम्' उपसर्गपूर्वक 'ज्ञा' धातु के अनभिहित कर्म में विकल्प से करणकारक होकर तृतीया विभक्ति होती है। यथा– सः पित्रा पितरं वा सञ्जानीते।

(C) ''आधारोऽधिकरणम्'' (1.4.45) सूत्र से 'आधार' की अधिकरणसंज्ञा होकर ''सप्तम्यधिकरणे च'' से सप्तमीविभक्ति होगी। यथा– सःकटे आस्ते।

(D) ''आख्यातोपयोगे'' (1/4/29) सूत्र से जिससे नियमपूर्वक विद्या पढ़ी जाती है, उसकी अपादान संज्ञा होकर पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा–सः अध्यापकात् संस्कृतं पठति।

4. कादम्बरी के कथानक का आधार है?
(A) महाभारत (B) पद्मपुराण
(C) वाल्मीकिरामायण (D) बृहत्कथा

व्याख्या–

ग्रन्थ	कथानक का आधार
(A) किरातार्जुनीयम्	महाभारत (वनपर्व)
(B) अभिज्ञानशाकुन्तलम्	पद्मपुराण और महाभारत (आदिपर्व)
(C) उत्तररामचरितम्	वाल्मीकिरामायण
(D) **कादम्बरी**	**बृहत्कथा**

अतः विकल्प (D) सही है।

5. निम्नलिखित में से किसका सम्बन्ध 'उत्तररामचरितम्' से नहीं है?
(A) विदूषक का अभाव
(B) करुणरस की प्रधानता
(C) गर्भाङ्क की योजना
(D) अष्टपदा नान्दी

व्याख्या– भवभूति कृत उत्तररामचरितम् नाटक में विदूषक का अभाव, करुणरस की प्रधानता, तथा गर्भाङ्क की योजना–ये तीनों शैलीगत विशेषताएँ हैं, किन्तु 'अष्टपदा' नान्दी का वर्णन नहीं है। इसमें **'द्वादशपदा' नान्दी का प्रयोग** है।
अतः विकल्प (D) सही उत्तर है।

1. (C) 2. (D) 3. (A) 4. (D) 5. (D)

6. राजा शूद्रक की राजधानी थी?
(A) विदिशा (B) उज्जयिनी
(C) अवन्तिका (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या– * राजा '**शूद्रक' की राजधानी 'विदिशा'** है, जो वेत्रवती नदी के किनारे अवस्थित थी।

* तारापीड की राजधानी 'उज्जयिनी' है, जो 'शिप्रा' नदी के किनारे अवस्थित थी। उज्जयिनी को 'अवन्तिका' (विशाला) भी कहा जाता है। जो महाकाल की भी नगरी मानी जाती है। अतः विकल्प (A) सही है।

7. 'छायाङ्क' का सम्बन्ध किस नाटक से है?
(A) उत्तररामचरितम्
(B) मालविकाग्निमित्रम्
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(D) स्वप्नवासवदत्तम्

व्याख्या–

(A) भवभूति कृत 'उत्तररामचरितम्' नाटक के तृतीय अङ्क में सीता छाया रूप में उपस्थित हैं, इसलिए इस अङ्क को 'छायाङ्क' के नाम से जाना जाता है।
छायाङ्क भवभूति की मौलिक कल्पना है अर्थात् इसका वर्णन 'वाल्मीकिरामायण' में नहीं है।
अतः विकल्प (A) सही है।

(B) मालविकाग्निमित्रम् कालिदास द्वारा लिखित 5 अङ्कों का नाटक है।

(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् कालिदास का सर्वोत्कृष्ट नाटक है जो 7 अङ्कों में विभक्त है। इस नाटक का अंग्रेजी में अनुवाद 'विलियम जोन्स' ने किया तथा इसकी प्रशंसा 'गेटे' ने अपनी पुस्तक 'फाउस्ट' में किया है।

(D) 'स्वप्नवासवदत्तम्' भास कृत नाटक है, जिसमें 6 अङ्क हैं।
अतः विकल्प `A' सही है।

8. निम्न में पूर्व से पर की ओर सही कालक्रम है?
(A) माघ, भारवि, कालिदास
(B) माघ, कालिदास, भारवि
(C) कालिदास, भारवि, माघ
(D) कालिदास, माघ, भारवि

कवियों का कालक्रम इसप्रकार है–

1. कालिदास	–	ई0पू0 प्रथम शताब्दी
2. भारवि	–	छठी शताब्दी ई0
3. माघ	–	सातवीं शताब्दी ई0

अतः विकल्प (C) सही है।

9. अभिज्ञानशाकुन्तलम् का नायक दुष्यन्त है?
(A) धीरोदात्त (B) धीरोद्धत
(C) धीरललित (D) धीरप्रशान्त

नायक	**कोटि**
(A) **दुष्यन्त**	**धीरोदात्त** (अभिज्ञानशाकुन्तलम्)
(B) भीम	धीरोद्धत (वेणीसंहारम्)
(C) उदयन	धीरललित (स्वप्नवासवदत्तम्)
(D) चारुदत्त	धीरप्रशान्त (मृच्छकटिकम्)

अतः विकल्प (A) सही है।

10. किरातार्जुनीयम् महाकाव्य में सर्गों की कुल संख्या है?
(A) 17 (B) 18
(C) 19 (D) 22

महाकाव्य	**सर्ग**
(A) कुमारसम्भवम्	17
(B) **किरातार्जुनीयम्**	**18**
(C) रघुवंशमहाकाव्यम्	19
(D) नैषधीयचरितम्	22

अतः विकल्प (B) सही है।

11. विन्ध्याचल की तलहटी में बहने वाली नदी है?
(A) गङ्गा (B) नर्मदा
(C) कावेरी (D) व्यास

व्याख्या– ''रेवां द्रक्ष्यस्युपलविषमे विन्ध्यपादे विशीर्णां भक्तिच्छेदैरिव विरचितां भूतिमङ्गे गजस्य'' (पूर्वमेघ/19) अर्थात् विन्ध्याचल की तलहटी में बिखरी हुई **नर्मदा नदी** को हाथी के शरीर पर चित्रकारी की रेखाओं के प्रकारों से बनायी गयी शृङ्गाररेखा के समान देखोगे।
अतः विकल्प (B) सही है।

6. (A) 7. (A) 8. (C) 9. (A) 10. (B) 11. (B)

12. 'निधिः' शब्द किस लिङ्ग का है–
(A) पुंलिङ्ग (B) स्त्रीलिङ्ग
(C) नपुंसकलिङ्ग (D) उभयलिङ्ग

व्याख्या–
(A) **पुंलिङ्ग शब्द–निधिः**, विधिः, प्रविधिः, जलधिः, आधिः, व्याधिः, उदधिः, समाधिः, प्रधीः, सुधीः, अग्निः, रश्मिः, दाराः, असवः, प्राणाः, महिमा
(B) **स्त्रीलिङ्ग शब्द**–आपः, अप्सराः, वर्षाः, सिकता, सभा, सुमनाः, देवता, पूः, द्यौः, गीः, वाक्ः, प्रावृट्, रुचिः, मतिः, बुद्धिः
(C) **नपुंसकलिङ्ग**–दधि, अस्थि, सक्थि, अभ्र, कलत्रम्, जलम्, मित्रम्, वनम्, कुसुमम्, गात्रम्, ऋणम्, पुस्तकम्, ज्ञानम्
(D) **उभयलिङ्गी**– अशनि, भरणि, अरणि, श्रोणि, योनि, उर्मि, सुधि, गौः
अतः विकल्प (A) सही है।

13. निम्नलिखित में पुंलिङ्ग शब्द कौन-सा नहीं है?
(A) निधिः (B) विधिः
(C) प्रविधिः (D) सरणी

व्याख्या– निधिः, विधिः, प्रविधिः पुंलिङ्ग शब्द हैं। 'धि' जिनके अन्त में हो, ऐसे शब्द सामान्यतया पुंलिङ्ग होते हैं। अतः विकल्प (D) उत्तर सही है।

14. भारत में सोमनाथ मन्दिर पर आक्रमण करने वाला शासक था?
(A) मुहम्मद गोरी (B) कुतुबुद्दीन ऐबक
(C) महमूद गजनवी (D) बाबर

व्याख्या– सोमनाथ मन्दिर पर महमूद गजनवी ने आक्रमण कर उसे लूटा।
अतः विकल्प (C) सही है।

15. 'मेघदूतम्' में यक्ष का नाम है?
(A) राजवाहन (B) बुद्ध
(C) हेममाली (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या– * महाकवि कालिदास कृत 'मेघदूतम्' नामक गीतिकाव्य में यक्ष का किसी नाम से वर्णन नहीं मिलता है। क्योंकि प्रथम श्लोक में ही यह कह दिया गया कि–'कश्चित् कान्ताविरहगुरुणा स्वाधिकारात्प्रमत्तः (पूर्वमेघ/1)। अतः विकल्प (D) सही है। ब्रह्मवैवर्तपुराण में यक्ष का नाम 'हेममाली' तथा यक्षिणी का नाम 'विशालाक्षी' मिलता है। चूँकि यह पुराण मेघदूतम् का उपजीव्य ग्रन्थ है, अतः इस आधार पर मेघदूतम् के यक्ष का नाम 'हेममाली' भी कहा जा सकता है। अतः विकल्प C भी सही हो सकता है।
* दण्डी कृत दशकुमारचरितम् में राजहंस के पुत्र 'राजवाहन' का उल्लेख मिलता है।
* बुद्ध अश्वघोष विरचित 'बुद्धचरितम्' के नायक हैं।

16. कौन-सी रचना बाणभट्ट की नहीं है?
(A) हर्षचरित (B) कादम्बरी
(C) तिलकमञ्जरी (D) मुकुटताडितम्

व्याख्या– * हर्षचरितम्, कादम्बरी, मुकुटताडितम् रचनाएँ बाणभट्ट कृत हैं।
* **'तिलकमञ्जरी'** धनपाल की रचना है।
अतः विकल्प (C) सही है।

17. 'भी' धातु लोट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप होगा?
(A) भयतु (B) विभीतु
(C) बभयतु (D) बिभेतु

व्याख्या– * 'भी' धातु लोट्लकार प्रथमपुरुष में **''बिभेतु** बिभीताम् बिभ्यतु'' रूप बनता है।
* भयतु, विभीतु, बभयतु रूप 'भी' धातु के दसों लकारों में कहीं नहीं बनते हैं। अतः विकल्प (D) सही है।

18. 'अर्थो हि कन्या परकीय एव' सूक्ति है?
(A) गौतमी की (B) अनसूया की
(C) शार्ङ्गरव की (D) कण्व की

व्याख्या–
(A) 'वरः खल्वेषः नाशीः'–गौतमी
(B) 'गुर्वपि विरहदुःखमाशाबन्धः साहयति'–अनसूया
(C) 'ओदकान्तं स्निग्धो जनोऽनुगन्तव्य इति श्रूयते'–शार्ङ्गरव
(D) **'अर्थो हि कन्या परकीय एव'–कण्व**
अतः विकल्प (D) सही है।

19. राजा दुष्यन्त की प्रथम पटरानी थी?
(A) सानुमती (B) वसुमती
(C) शकुन्तला (D) मेनका

व्याख्या– राजा दुष्यन्त की प्रथम पटरानी हंसपदिका है किन्तु आयोग वसुमती को प्रथम पटरानी मानता है। जो कि

12. (A) 13. (D) 14. (C) 15. (D) 16. (C) 17. (D) 18. (D) 19. (B)

मेरी दृष्टि में अनुचित है। क्योंकि अभिज्ञानशाकुन्तलम् के पञ्चम अङ्क में हंसपदिका सङ्गीत का अभ्यास करते हुए दुष्यन्त को उलाहना देती है। किन्तु हंसपदिका का चारो विकल्पों में नाम न होने से वसुमती ही ठीक है।
अतः विकल्प (B) सही है।

20. युष्मद् शब्द का चतुर्थी बहुवचन का रूप है?
(A) तुभ्यः (B) वः
(C) युष्मेभ्यः (D) युष्मेभ्यम्

व्याख्या– * युष्मद् शब्द का चतुर्थी विभक्ति में– तुभ्यम् युवाभ्याम्, युष्मभ्यम् रूप बनता है विकल्प से– **ते वाम वः**
* 'तुभ्यः युष्मेभ्यः, युष्मेभ्यम् रूप युष्मद् शब्द के सातों विभक्तियों में कहीं नहीं बनता है। अतः विकल्प (B) सही है।

21. 'राजन्' शब्द का सप्तमी एकवचन का रूप होगा?
(A) राजि (B) राज्ञि
(C) राज्ञि एवं राजनि (D) राजनि

व्याख्या– राजन् (राजा) शब्द का रूप सप्तमी विभक्ति में–**राज्ञि/राजनि** राज्ञोः राजसु बनता है।
अतः विकल्प (C) सही है।

22. 'लभ्' धातु आत्मनेपद के विधिलिङ् मध्यमपुरुष बहुवचन का रूप है?
(A) लभेध्वम् (B) लभध्वम्
(C) लभेत (D) लभेः

व्याख्या–
(A) लभ् (पाना) आत्मनेपद का रूप–(विधिलिङ्लकार) मध्यमपुरुष में– ''लभेथाः, लभेयाथाम्, **लभेध्वम्**'' बनता है।
(B) लोट्लकार मध्यमपुरुष में–'लभस्व, लभेथाम्, लभध्वम्'
(C) विधिलिङ् प्रथमपुरुष में–'लभेत, लभेयाताम्, लभेरन्'
अतः विकल्प (A) सही है।

23. 'ब्रू' धातु के लोट्लकार अन्यपुरुष एकवचन का रूप है?
(A) वदतु (B) ब्रवतु
(C) ब्रवीतु (D) ब्रूहि

व्याख्या– ब्रू धातु लोट्लकार का रूप–
* प्रथमपुरुष (अन्यपुरुष) में–'**ब्रवीतु**, ब्रूताम्, ब्रुवन्तु' बनता है।
* मध्यमपुरुष में–ब्रूहि, ब्रूतम्, ब्रूत।
* वदतु, ब्रवतु रूप ब्रू धातु में कहीं नहीं बनते हैं।
अतः विकल्प (C) सही है।

24. 'जन्' धातु आत्मनेपद के विधिलिङ्लकार उत्तम पुरुष एकवचन का रूप है?
(A) जायेयम् (B) जायेत
(C) जाये (D) जायेय

व्याख्या– जन् धातु आत्मनेपद विधिलिङ् लकार का रूप– उत्तमपुरुष में–'**जायेय,** जायेवहि, जायेमहि' है।
अतः विकल्प (D) सही है।

25. सन्धि है?
(A) पदविधि (B) वर्णविधि
(C) इनमें से दोनों (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या– * समास का साधारण अर्थ है–'संक्षेप' दो पदों के मेल को समास कहते हैं। अतः समास पदविधि है
यथा–पूर्वं भूतः = भूतपूर्वः
* सन्धि का साधारण अर्थ है–'मेल' दो वर्णों के मेल को सन्धि कहते है अर्थात् सन्धि **वर्णविधि** है
यथा–खलु + एषः = खल्वेषः। अतः विकल्प (B) सही है।

26. ''रामेण बाणेन हतः बाली'' वाक्य में 'बाली' कौन कारक है?
(A) कर्ता (B) कर्म
(C) प्रातिपादिक (D) करण

व्याख्या–
(A) 'रामेण बाणेन हतः बाली' वाक्य में राम की ''स्वतन्त्रः कर्ता'' (1/4/54) सूत्र से कर्तृसंज्ञा हुई तथा कर्तृकरणयोस्तृतीया (2/3/18) सूत्र से उसमें तृतीयाविभक्ति का प्रयोग हुआ है।
(B) उपर्युक्त उदाहरण में 'क्त' प्रत्यय के द्वारा कर्म उक्त होने के कारण **'बाली' रूप कर्म में** प्रथमाविभक्ति हुई। ''उक्ते सर्वत्र प्रथमा'' इतिनियमात्। अतः विकल्प (B) सही है।
(C) ''कृत्तद्धितसमासाश्च'' (1/2/46) सूत्र से कृदन्त, तद्धितान्त और समास की प्रातिपदिकसंज्ञा होती है। ''अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्'' (1.2.45) सूत्र से भी प्रातिपदिकसंज्ञा होती है।
(D) 'कर्तृकरणयोस्तृतीया'' (2/3/18) सूत्र से अनुक्त कर्त्ता राम में तथा करणकारक बाण में तृतीया विभक्ति हुई है यथा–रामेण बाणेन हतः बाली यहाँ साधकतमं करणम् (1/4/42) सूत्र से बाण की करणसंज्ञा हुई है।

20. (B) 21. (C) 22. (A) 23. (C) 24. (D) 25. (B) 26. (B)

27. ''द्रोणो व्रीहिः'' वाक्य के 'व्रीहिः' पद में कौन-सी विभक्ति है?
(A) प्रातिपदिकार्थ मात्र में प्रथमा
(B) परिमाणमात्र में प्रथमा
(C) परिमाण सामान्य को बताने में प्रथमा
(D) परिमाण विशेष को बताने में प्रथमा

व्याख्या– * ''प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा'' (2/3/46) सूत्र से केवल प्रातिपदिकार्थ, लिङ्गमात्र के अधिक अर्थ, परिमाणमात्र के अधिक अर्थ एवं संख्यामात्र अर्थ बताने के लिए प्रथमाविभक्ति होती है।
* 'द्रोणो व्रीहिः' का अर्थ है द्रोण रूप परिमाण से नापा हुआ व्रीहि! अतः **'व्रीहिः' पद में प्रातिपदिकार्थ मात्र में प्रथमा** विभक्ति हुई।
* किन्तु 'द्रोणः' पद में परिमाणमात्र में प्रथमा विभक्ति हुई है। यहाँ द्रोणः और व्रीहिः में 'मेय-मापक' या 'परिच्छेद्य-परिच्छेदकभाव' सम्बन्ध है। इसका अर्थ है– ''द्रोणरूपं यत् परिमाणं तत्परिछिन्नो व्रीहिः'' अतः विकल्प (A) सही है।

28. 'भवान् वपति' का कर्मवाच्य होगा?
(A) त्वया वायते **(B) त्वया वपते**
(C) भवता वप्यते **(D) भवता उप्यते**

व्याख्या– कर्मवाच्य में कर्त्ता में तृतीयाविभक्ति, कर्म में प्रथमा तथा क्रिया कर्म के अनुसार आत्मनेपद में आती है यथा–**भवता उप्यते।**
अतः विकल्प (D) सही है।

29. निम्नलिखित में से शुद्ध वाक्य है?
(A) श्रान्ताः जनाः शीघ्रं शयन्ते
(B) श्रान्ताः जनाः शीघ्रं शेरते
(C) श्रान्ताः जनाः शीघ्रं शयन्ति
(D) श्रान्ताः जनाः शीघ्रः स्वपिति

व्याख्या– शीङ् धातु (सोना) आत्मनेपद के प्रथमपुरुष बहुवचन का रूप 'शेरते' बनता है। इसलिए ''श्रान्ताः जनाः शीघ्रं शेरते'' वाक्य सही है। शीङ् धातु का रूप लट्लकार प्र0पु0 में– शेते शयाते शेरते बनता है।
अतः विकल्प (B) सही है।

30. शुद्ध वाक्य छाँटिए–
(A) सः कौचित् साधूं पश्यति
(B) सः कञ्चित् साधुं पश्यति
(C) सः कञ्चित् साधून् पश्यति
(D) सः कश्चन् साधू पश्यसि

व्याख्या– प्रस्तुत वाक्यों में–**सः कञ्चित् साधुं पश्यति** (वह किसी साधु को देखता है) शुद्ध है। यहाँ 'किम्' शब्द से 'चित्' प्रत्यय करके द्वितीयाविभक्ति एकवचन में 'कञ्चित्' रूप बनेगा जो 'साधुं' का विशेषण है।
अतः विकल्प (B) सही है।

31. ''कार्यं वा साधयेयं देहं वा पातयेयम्' उक्ति है?
(A) पृथ्वीराज की **(B) शिवाजी की**
(C) युधिष्ठिर की **(D) विक्रमादित्य की**

व्याख्या–''कार्यं वा साधयेयं देहं वा पातयेयम्'–अर्थात् 'या कार्य सिद्ध होगा अथवा शरीर नष्ट होगा'–यह **शिवाजी** की सारगर्भित महती प्रतिज्ञा है। –शिवराजविजयम्
अतः विकल्प (B) सही है।

32. भारवि का आश्रयदाता था?
(A) पुलकेशिन का भाई
(B) हर्ष
(C) यशोवर्मा
(D) पुलकेशिन

कवि	राज्याश्रय
(A) **भारवि**	**पुलकेशिन द्वितीय का भाई (विष्णुवर्धन)**
(B) बाणभट्ट	सम्राट् हर्षवर्द्धन
(C) भवभूति	यशोवर्मा
(D) रविकीर्ति	पुलकेशिन द्वितीय

अतः विकल्प (A) सही है।

33. भारवि थे–
(A) दाक्षिणात्य **(B) औदीच्य**
(C) पश्चिमी भारत के **(D) पूर्वी भारत के**

व्याख्या– 'आतपत्र भारवि' दक्षिण भारत के एलिचपुर (अचलपुर) नामक स्थान के निवासी थे। अतः सभी विद्वान् उन्हें एक मत होकर **दाक्षिणात्य** मानते हैं।
अतः विकल्प (A) सही है।

27. (A) 28. (D) 29. (B) 30. (B) 31. (B) 32. (A) 33. (A)

34. 'न खलु धीमतां कश्चिदविषयो नाम' सूक्ति है?
(A) किरातार्जुनीयम् की
(B) शिवराजविजयम् की
(C) शुकनासोपदेश की
(D) अभिज्ञानशाकुन्तलम् की

व्याख्या–
(A) ''न बाधतेऽस्य त्रिगणः परस्परम्'' (किरातार्जुनीयम् 1/11)
(B) ''नाहं मूर्तीःविक्रीणामि; किन्तु भिनद्मि''–शिवराजविजयम्-प्र0नि0)
(C) ''न परिचयं रक्षति''– शुकनासोपदेश
(D) ''न खलु धीमतां कश्चिदविषयो नाम''– **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**,अङ्क-9) अतः विकल्प (D) सही है।

35. 'बाणस्तु पञ्चाननः'' सूक्ति किसने कही?
(A) चन्द्रदेव ने (B) मल्लिनाथ ने
(C) जयदेव ने (D) कृष्णकवि ने

व्याख्या–
(A) ''बाणस्तु पञ्चाननः'' **चन्द्रदेव** (बाणभट्ट की प्रशंसा में)
(B) ''नारिकेलफलसम्मितं वचो भारवेः सपदि तद् विभज्यते'' मल्लिनाथ (भारवि की प्रशंसा में)
(C) ''कविकुलगुरुः कालिदासो विलासः'' जयदेव (कालिदास की प्रशंसा में)
(D) ''न कालिदासादपरस्य वाणी'' श्री कृष्णकवि (कालिदास की प्रशंसा में)
अतः विकल्प (A) सही है।

36. 'ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रह्मापि नरं न रञ्जयति'' पद्य में अलङ्कार है?
(A) अतिशयोक्ति (B) व्यतिरेक
(C) अप्रस्तुतप्रशंसा (D) दीपक

व्याख्या–
(A) ''ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रह्मापि नरं न रञ्जयति'' (नीति.-03) –**अतिशयोक्तिऽलंकार** है।
(B) ''क्षीयन्ते खलु भूषणानि सततं वाग्भूषणं भूषणम्'' (नीति.-16) –व्यतिरेक अलङ्कार है।
(C) ''न त्वस्य दुग्धजलभेदविधौ प्रसिद्धां वैदग्ध्यकीर्तिमपहर्तुमसौ समर्थः'' (नीति.-26) –अप्रस्तुतप्रशंसा अलङ्कार
(D) ''मणिः शाणोल्लीढः समरविजयी हेतिदलितो मदक्षीणो नागः शरदि सरिदाश्यानपुलिना'' (नीति.-36) – दीपक अलङ्कार है। अतः विकल्प (A) सही है।

37. लघुत्रयी के अन्तर्गत कौन-कौन से ग्रन्थ आते हैं?
(A) वासवदत्ता, कादम्बरी, दशकुमारचरितम्
(B) कुमारसम्भवम्, मेघदूतम्, रघुवंशम्
(C) किरातार्जुनीयम्, शिशुपालवधम्, नैषधीयचरितम्
(D) कुमारसम्भवम्, मेघदूतम्, कादम्बरी

व्याख्या–
त्रयी ग्रन्थ
(A) गद्यत्रयी –वासवदत्ता, कादम्बरी, दशकुमारचरितम्
(B) **लघुत्रयी –कुमारसम्भवम्, मेघदूतम्, रघुवंशम्**
(C) बृहत्त्रयी –किरातार्जुनीयम्, शिशुपालवधम्, नैषधीयचरितम्
अतः विकल्प (B) सही है।

38. 'शुकनासोपदेश' किस ग्रन्थ का अंश है?
(A) रघुवंशम् (B) नलोपाख्यान
(C) कादम्बरी (D) हर्षचरित

व्याख्या–
(A) रघुवंशम् कालिदास कृत महाकाव्य है।
(B) महाभारत के वनपर्व में 'नलोपाख्यान' की कथा है।
(C) गद्यसम्राट् बाणभट्ट कृत **कादम्बरी का अंश शुकनासोपदेश** है। इस अंश में उज्जयिनी के राजा तारापीड के प्रधान अमात्य शुकनास द्वारा चन्द्रापीड को उपदेश दिया गया है।
(D) हर्षचरित बाणभट्ट कृत आख्यायिका है। जिसमें 8 उच्छ्वास हैं।
अतः विकल्प (C) सही है।

39. किरातार्जुनीयम् का गुप्तचर किस वेष में हस्तिनापुर जाता है?
(A) संन्यासी (B) मन्त्री
(C) ब्रह्मचारी (D) सैनिक

व्याख्या– ''स वर्णिलिङ्गी विदितः समाययौ युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचरः।'' (किरात0 1/1)
अर्थात् वह **ब्रह्मचारी का वेश** धारण करने वाला सारा वृत्तान्त जानकर द्वैतवन में युधिष्ठिर के पास लौट आया। अतः विकल्प (C) सही है।

34. (D) 35. (A) 36. (A) 37. (B) 38. (C) 39. (C)

40. संस्कृत में कितने लकार होते हैं?
(A) बीस **(B) चालीस**
(C) सत्रह **(D) दस**

व्याख्या– संस्कृत में कुल **दस लकार** माने गये हैं जो निम्नवत् हैं–लट्, लिट्, लुट्, ऌट्, लेट्, लोट्, लङ्, लिङ्, (विधिलिङ्/आशीर्लिङ्)। लुङ्, ऌङ्
लेट् लकार का प्रयोग केवल वेद में पाया जाता है।
अतः विकल्प (D) सही है।

41. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में कुल कितने श्लोक हैं?
(A) अड़तालिस **(B) बयालिस**
(C) छियालिस **(D) बाइस**

	ग्रन्थ	श्लोक संख्या
(A)	उत्तररामचरितम् (तृतीय अङ्क)	अड़तालिस
(B)	उत्तररामचरितम् (षष्ठ अङ्क)	बयालिस
(C)	किरातार्जुनीयम् (प्रथमसर्ग)	छियालिस
(D)	**अभिज्ञानशाकुन्तलम् (चतुर्थ अङ्क)**	**बाइस**

अतः विकल्प (D) सही है।

42. 'शिशुपालवधम्' की कथावस्तु विभाजित है?
(A) अङ्कों में **(B) सर्गों में**
(C) अध्यायों में **(D) पर्वों में**

ग्रन्थ	विभाजन	
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम्	अङ्कों में	(7 अङ्क)
(B) **शिशुपालवधम्**	**सर्गों में**	(20 सर्ग)
(C) गीता	अध्यायों में	(18 अध्याय)
(D) महाभारत	पर्वों में	(18 पर्व)

अतः विकल्प (B) सही है।

43. 'होतृ + ऋकारः' में कौन-सी सन्धि है?
(A) वृद्धि **(B) गुण**
(C) दीर्घ **(D) यण्**

व्याख्या–
(A) ''वृद्धिरेचि'' (6/1/88) सूत्र से अवर्ण से एच् परे हों तो पूर्व-पर (दोनों) के स्थान में वृद्धि एकादेश होता है। यथा– गङ्गा + ओघः = गङ्गौघः (गङ्गा का प्रवाह)
(B) ''आद्गुणः'' (6/1/87) सूत्र से अवर्ण के बाद स्वर हो तो दोनों के स्थान में गुण आदेश होता है। यथा–गङ्गा + उदकम् = गङ्गोदकम्
(C) ''अकः सवर्णे दीर्घः'' (6/1/101) सूत्र से ह्रस्व अथवा दीर्घ अ, इ, उ, ऋ, ऌ स्वर के पश्चात् सवर्ण ह्रस्व या दीर्घ आयें तो दोनों के स्थान में **दीर्घ आदेश** होता है यथा– **होतृ + ऋकारः = होतृकारः**
(D) ''इको यणचि'' (6/1/77) सूत्र से धातृ + अंशः = धात्रंशः में यण्सन्धि है। अतः विकल्प (C) सही है।

44. 'अभितः या सर्वतः' के योग में कौन-सी विभक्ति होती है?
(A) द्वितीया **(B) तृतीया**
(C) चतुर्थी **(D) पञ्चमी**

व्याख्या–
(A) अभितः, परितः, समया, निकषा, हा, प्रति, उभयतः, सर्वतः, धिक्, उपर्युपरि, अध्यधि, अधोऽधः, अन्तरा, अन्तरेण शब्दों के योग में द्वितीया विभक्ति होती है।
(B) सह, साकम्, सार्धम्, समम्, प्राय, गोत्र, प्रकृति, पृथक्, विना, नाना, शब्दों के योग में तृतीया विभक्ति होती है।
(C) नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलम्, वषट्, शब्दों के योग में चतुर्थीविभक्ति होती है।
(D) अन्य, आरात्, ऋते, प्राक्, प्रत्यक्, बहिः, दक्षिणा, उत्तरा, पूर्वा, उत्तराहि, दक्षिणाहि, कृच्छ्र, कतिपय, दूर, अन्तिक, आदि शब्दों के योग में पञ्चमी विभक्ति होती है।
अतः विकल्प (A) सही है।

45. ''हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः'' यह किस ग्रन्थ की किसकी उक्ति है?
(A) शिशुपालवधम् (श्रीकृष्ण)
(B) हर्षचरितम् (राज्यश्री)
(C) किरातार्जुनीयम् (वनेचर)
(D) किरातार्जुनीयम् (युधिष्ठिर)

व्याख्या– ''हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः'' (किरात0 1/4) अर्थात् हितकर और प्रियवाणी दुर्लभ होती है। यह उक्ति वनेचर, युधिष्ठिर से कहता है।
अतः विकल्प (C) सही है।

40. (D) 41. (D) 42. (B) 43. (C) 44. (A) 45. (C)

46. निम्नलिखित वाक्यों में कौन-सा वाक्य शुद्ध है?
(A) बालकः अध्यापकेन पुस्तकं पठति।
(B) बालकः अध्यापकात् पुस्तकं पठति।
(C) बालकः अध्यापकात् पुस्तकानि पठन्ति।
(D) बालकाः अध्यापकेन पुस्तकानि पठति।

व्याख्या– * प्रस्तुत वाक्यों में (A) और (B) दोनों सही हैं। आयोग ने सर्वप्रथम (B) को सही उत्तर माना था पुनः विषय-विशेषज्ञों द्वारा संशोधित होकर दोनों को सही माना गया। यहाँ अध्यापक की ''साधकतमं करणम्'' (1/4/42) सूत्र से करणसंज्ञा होकर उसमें तृतीया का विधान हुआ है। यह आयोग के विषय विशेषज्ञों का मत है।

* यहाँ पञ्चमी का प्रयोग नहीं होगा क्योंकि यह नहीं प्रतिलक्षित हो रहा है कि बालक अध्यापक से नियमपूर्वक पढ़ रहा है।

* किन्तु मुझे लगता है कि ''आख्यातोपयोगे'' सूत्र से यहाँ 'अध्यापक' की अपादानसंज्ञा होकर पञ्चमी विभक्ति होगी, और इसका सही उत्तर (B) को माना जाना चाहिए। यही प्रश्नकर्ता को भी अभीष्ट है।

47. ''बालकाय मोदकाः रोचन्ते'' में बालक की सम्प्रदान संज्ञा किस सूत्र से है?
(A) धारेरुत्तमर्णः **(B) रुच्यर्थानां प्रीयमाणः**
(C) स्पृहेरीप्सितः **(D) तुमर्थाच्चभाववचनात्**

व्याख्या–
(A) ''धारेरुत्तमर्णः'' (1/4/35) सूत्र से णिजन्त धृ धातु के योग में उत्तमर्ण (ऋण देने वाला) की सम्प्रदानसंज्ञा होती है यथा–श्यामः अश्वपतये शतं धारयति।
(B) **''रुच्यर्थानां प्रीयमाणः''** (1/4/33) सूत्र से रुच् धातु तथा रुच् के समान अर्थवाली धातुओं के योग में प्रसन्न होने वाले (प्रीयमाण) की सम्प्रदानसंज्ञा होती है यथा– विष्णवे रोचते भक्तिः, बालकाय मोदकाः रोचन्ते।
(C) ''स्पृहेरीप्सितः'' (1/4/36) सूत्र से स्पृह् (चाहना) धातु के योग में जिसे चाहा जाय उस पदार्थ की सम्प्रदानसंज्ञा होकर उसमें चतुर्थी का विधान होता है। यथा–सः पुष्पेभ्यः स्पृहयति।
(D) ''तुमर्थाच्चभाववचनात्'' (2/3/15) सूत्र से तुमुन् प्रत्ययान्त भाववाचक शब्द में चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग होता है यथा–यागाय याति (यष्टुं याति)=यज्ञ के लिए जाता है। शयनाय इच्छति (शयितुम् इच्छति)
अतः विकल्प (B) सही है।

48. यण् सन्धि का उदाहरण है?
(A) विद्या + आलयः = विद्यालयः
(B) गङ्गा + ओघः = गङ्गौघः
(C) गुरु + आदेशः = गुर्वादेशः
(D) महा + इन्द्रः = महेन्द्रः

व्याख्या–
(A) अकः सवर्णे दीर्घः (6/1/101) सूत्र से विद्या + आलयः = विद्यालयः में दीर्घसन्धि है।
(B) ''वृद्धिरेचि'' (6/1/88) सूत्र से गङ्गा + ओघः = गङ्गौघः में वृद्धिसन्धि है।
(C) ''इको यणचि'' (6/1/77) सूत्र से **गुरु + आदेशः = गुर्वादेशः में यणसन्धि है।**
(D) ''आद्गुणः'' (6/1/87) सूत्र से महा + इन्द्रः = महेन्द्रः में गुणसन्धि है।
अतः विकल्प (C) सही है।

49. प्रत्युप्तस्येव दयिते तृष्णादीर्घस्य चक्षुषः।
मर्मच्छेदोपमैर्यत्नैः सन्निकर्षो निरुध्यते॥
इस श्लोक में अलङ्कार है?
(A) उपमा **(B) उत्प्रेक्षा**
(C) रूपक **(D) अतिशयोक्ति**

व्याख्या–
(A) प्रत्युप्तस्येव दयिते तृष्णादीर्घस्य चक्षुषः।
मर्मच्छेदोपमैर्यत्नैः सन्निकर्षो निरुध्यते।।
(उत्तररामचरितम् 3/46)
* प्रस्तुत श्लोक में **उपमा और उत्प्रेक्षा**–'प्रत्युप्तस्येव' में इव उत्प्रेक्षा सूचक है। तथा 'मर्मच्छेदोपमैः' में उपमा है।
* आयोग ने प्रथमदृष्ट्या उपमाऽलङ्कार को सही उत्तर माना था किन्तु बाद में संशोधित करके दोनों उत्तरों को सही माना गया।
(B) ''करुणस्य मूर्तिरथवा शरीरिणी''
विरहव्यथेव वनमेति जानकी'' –उत्प्रेक्षाऽलङ्कार
(C) ''त्वं जीवितं त्वमसि में हृदयं द्वितीयम्'' –रूपकालङ्कार
(D) ''निष्पीडितेन्दुकरकन्दलजो नु सेकः'' –अतिशयोक्ति
अतः विकल्प (A) और (B) दोनों सही है।

46. (A+B) 47. (B) 48. (C) 49. (A और B)

50. 'अयि कठोर! यशः किल ते प्रियम्' यह कथन किसका है?
(A) सीता का   (B) वासन्ती का
(C) तमसा का   (D) मुरला का

व्याख्या–
(A) ''अहमेवैतस्य हृदयं जानामि, ममैषः'' सीता का कथन
(B) ''अयि कठोर! यशः किल ते प्रियम्'' **वासन्ती** का कथन
(C) ''अन्तःकरणतत्त्वस्य दम्पत्योः स्नेहसंश्रयात्'' तमसा का कथन
(D) ''अनिर्भिन्नो गभीरत्वादन्तर्गूढघनव्यथः'' मुरला का कथन
अतः विकल्प (B) सही है।

51. 'नारिकेलफलसम्मितं वचः' सूक्ति किस कवि के लिए है?
(A) कालिदास   (B) भारवि
(C) श्रीहर्ष   (D) बाणभट्ट

व्याख्या–
(A) ''निर्गतासु न वा कस्य कालिदासस्य सूक्तिषु''
–कालिदास के विषय में (बाणभट्ट–हर्षचरित में)
(B) ''नारिकेलफलसम्मितं वचः''
–भारवि के विषय में मल्लिनाथ ने कहा
(C) ''नैषधं विद्वदौषधम्''
–श्रीहर्ष कृत नैषधमहाकाव्य के लिए
(D) ''नहि नहि वाणी बाणस्य मधुरशीलस्य''
बाणभट्ट के विषय में (धर्मदास)
अतः विकल्प (B) सही है।

52. 'ओदकान्तं स्निग्धोजनोऽनुगन्तव्यः इति श्रूयते'' यह कथन किसका है?
(A) कण्व का
(B) अनसूया का
(C) प्रियंवदा का
(D) कण्वशिष्य शार्ङ्गरव का

व्याख्या–
(A) ''अर्थो हि कन्या परकीय एव'' –कण्व की उक्ति
(B) ''आत्मनो नगरं प्रविश्यान्तःपुरसमागत इतो गतं वृत्तान्तं स्मरति वा न वेति'' –अनसूया का कथन
(C) ''अग्निशरणं प्रविष्टस्य शरीरं विना छन्दोमय्या वाण्या''
–प्रियंवदा का कथन
(D) ''ओदकान्तं स्निग्धोजनोऽनुगन्तव्यः इति श्रूयते'' –
शार्ङ्गरव कहता है कि प्रियव्यक्ति का जलाशय तक अनुगमन करना चाहिए।
अतः विकल्प (D) सही है।

53. 'आश्च्योतनं नु हरिचन्दनपल्लवानाम्' में नु किस अलङ्कार का वाचक है?
(A) उत्प्रेक्षा   (B) उपमा
(C) अतिशयोक्ति   (D) सन्देह

व्याख्या–
(A) 'आयान्त्या परिदुर्मनायितमिव त्वां वीक्ष्य बद्धस्तया' (उत्तर० 3/37) –उत्प्रेक्षा अलङ्कार
(B) ''अन्तर्व्यापृतविद्युदम्बुद इव द्यामभ्युदस्थादरिः'' (उत्तर० 3/43) –उपमाऽलङ्कार
(C) ''आनन्देन जडतां पुनरातनोति'' (उत्तर० 3/12)
–अतिशयोक्ति
(D) ''आश्च्योतनं नु हरिचन्दनपल्लवानाम्'' (उत्तर03/11)
–सन्देहालङ्कार
अतः विकल्प (D) सही है।

54. नीरन्ध्रबालकदली' में नीरन्ध्र का अर्थ है?
(A) कृपा   (B) केला
(C) सघन   (D) सीधा

व्याख्या– ''नीरन्ध्रबालकदलीवनमध्यवर्ति, कान्तासखस्य शयनीयशिलातलं ते।' (उत्तररामचरितम् 3/21)

शब्द	**अर्थ**
(A) अनुक्रोश	दया/कृपा
(B) कदली	केला
(C) **नीरन्ध्र**	**सघन**
(D) अनराल	सीधा

अतः विकल्प (C) सही है।

55. ''वधूद्वितीयः'' का अर्थ है?
(A) दो स्त्रियाँ
(B) दूसरी स्त्री
(C) दूसरे की स्त्री
(D) प्रिया के साथ (पत्नी के साथ)

व्याख्या– ''क्वासौ दुरात्मा यः प्रियायाः पुत्रं वधूद्वितीय-मभिभवति।'' (उत्तररामचरितम्) राम कहते हैं कि वह दुष्ट कहाँ है, जो प्रिया सीता के वधू-युक्त पुत्र पर आक्रमण कर रहा है? वधूद्वितीयः का अर्थ है–**वधूयुक्त (पत्नी के साथ)**
अतः विकल्प (D) सही है।

50. (B)   51. (B)   52. (D)   53. (D)   54. (C)   55. (D)

56. यक्ष का प्रवास कितने दिनों का था?
(A) पाँच वर्ष (B) तीन वर्ष
(C) एक वर्ष (D) तीन मास

व्याख्या– कालिदास कृत मेघदूतम् में यक्ष को कुबेर की राजधानी अलकापुरी में निवास करते समय स्वकार्य में प्रमाद के कारण **एक वर्ष का प्रवास** मिला था।
''शापेनास्तङ्गमितमहिमा वर्षभोग्येण भर्तुः'' (मेघदूतम्-01)
अतः विकल्प (C) सही है।

57. ''कृतप्रणामः'' में कौन-सा समास है?
(A) तत्पुरुष (B) कर्मधारय
(C) द्वन्द्व (D) बहुव्रीहि

	पद	समास
(A)	षड्वर्गः	षष्ठीतत्पुरुष (षण्णां वर्गः)
(B)	सत्क्रिया	कर्मधारय (सती क्रिया)
(C)	नक्तन्दिवम्	द्वन्द्व (नक्तं च दिवा च)
(D)	**कृतप्रणामः**	**बहुव्रीहि (कृतः प्रणामः येन सः)**

अतः विकल्प (D) सही है।

58. 'वनेचरः' में कौन सा प्रत्यय लगा है?
(A) घञ् (B) ष्यञ्
(C) ट (D) मनिन्

व्याख्या–
(A) अनु + भू + घञ् = अनुभावः
(B) ऋ + ण्यत् = आर्यः
(C) **वने + चर् + ट = वनेचरः**
(D) हा + मनिन् = जिह्मः
अतः विकल्प (C) सही है।

59. 'अश्रौषम्' में कौन-सा लकार है?
(A) लुङ्लकार (B) लोट्लकार
(C) लिट्लकार (D) लङ्लकार

व्याख्या–
(A) **अश्रौषम् = श्रु + लुङ् + मिप्**
(B) श्रूयताम् = श्रु + लोट् + कर्मणि + प्र0 पु0 एक0।
(C) इयेष = इष् = लिट् + तिप्
(D) अभवत् =भू + लङ् + तिप्
अतः विकल्प (A) सही है।
नोट–उपर्युक्त सभी धातुरूप शिवराजविजयम् से हैं।

60. 'वैक्रमः' में कौन-सा प्रत्यय है?
(A) अण् (B) यत्
(C) ईयसुन् (D) मतुप्

व्याख्या–
(A) **विक्रम + अण् = वैक्रमः**
(B) समान + तीर्थ + यत् = सतीर्थ्यः
(C) नेद् + ईयसुन् = नेदीयसि
(D) भग + मतुप् + ङीप् = भगवती
अतः विकल्प (A) सही है।
नोट–उपर्युक्त सभी शब्द शिवराजविजयम् से हैं।

61. 'आठ को पुंलिङ्ग में क्या कहेंगे?
(A) अष्टम् (B) अष्टौ
(C) अष्टाः (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या– 'अष्टन्' का रूप तीनों लिङ्गों में एक समान चलता है। यथा– 1. 'अष्ट/**अष्टौ**, 2. अष्ट/अष्टौ, 3. अष्टभिः/अष्टाभिः, 4. अष्टभ्यः/अष्टाभ्यः, 5. अष्टभ्यः/अष्टाभ्यः, 6. अष्टानाम्/अष्टानाम्, 7. अष्टसु/अष्टासु
अतः विकल्प (B) सही है।

62. 'भवभूति' का सम्बन्ध किस कृति-से नहीं है?
(A) उत्तररामचरितम् (B) महावीरचरितम्
(C) बुद्धचरितम् (D) मालतीमाधवम्

व्याख्या– * उत्तररामचरितम्, महावीरचरितम्, मालतीमाधवम् भवभूति कृत विदूषकरहित नाटक हैं।
* बुद्धचरितम्, अश्वघोष कृत महाकाव्य है। जिसमें कुल 28 सर्ग हैं।
अतः विकल्प (C) सही उत्तर है।

63. दुष्यन्त और शकुन्तला की कथा महाभारत के किस पर्व में प्राप्त होती है?
(A) वनपर्व (B) भीष्मपर्व
(C) आदिपर्व (D) सभापर्व

व्याख्या– दुष्यन्त और शकुन्तला की कथा महाभारत के आदिपर्व शकुन्तलोपाख्यान (अध्याय 67-74 के बीच) में प्राप्त होती है।

	ग्रन्थ	महाभारत का पर्व
(A)	किरातार्जुनीयम्	वनपर्व
(B)	गीता	भीष्मपर्व
(C)	**अभिज्ञानशाकुन्तलम्**	**आदिपर्व**
(D)	शिशुपालवधम्	सभापर्व

अतः विकल्प (C) सही है।

56. (C) 57. (D) 58. (C) 59. (A) 60. (A) 61. (B) 62. (C) 63. (C)

64. किस महाकाव्य के प्रत्येक सर्ग के अन्त में 'लक्ष्मी' शब्द का प्रयोग किया गया है?
(A) रघुवंशम् (B) शिशुपालवधम्
(C) किरातार्जुनीयम् (D) नैषधीयचरितम्

व्याख्या–
(A) कालिदास कृत रघुवंशमहाकाव्य 19 सर्गों तथा 1569 श्लोकों में विभक्त है।
(B) माघ कृत शिशुपालवधमहाकाव्य के प्रत्येक सर्ग का प्रारम्भ 'श्री' शब्द से और अन्त भी 'श्री' शब्द से होता है। इस पर मल्लिनाथ की 'सर्वङ्कषा' नाम की टीका है।
(C) **किरातार्जुनीय महाकाव्य के प्रत्येक सर्ग का आरम्भ 'श्री' शब्द से तथा अन्त 'लक्ष्मी' शब्द से होता है।** अतः इसे 'लक्ष्मीपदाङ्क' भी कहा जाता है। मल्लिनाथ ने इस पर **'घण्टापथ'** नामक टीका लिखी है।
(D) श्रीहर्ष कृत 'नैषधीयचरितम्' 22 सर्गों तथा 2830 श्लोकों में विभक्त है इस महाकाव्य के नायक नल (धीरोदात्त कोटि) के हैं। इसके प्रत्येक सर्ग के अन्त में 'आनन्द' पद का प्रयोग है, अतः इसे ''आनन्दाङ्क महाकाव्य'' भी कहते हैं। अतः विकल्प (C) सही है।

65. 'राजा ब्राह्मणाय गां ददाति' वाक्य में रेखाङ्कित शब्द की संज्ञा है?
(A) कर्म (B) करण
(C) अपादान (D) सम्प्रदान

व्याख्या–
(A) ''अकथितं च'' (1/4/51) सूत्र से अपादान आदि कारक की अविवक्षा में (दुह् याच् आदि 16 धातुओं के योग में) कर्मसंज्ञा होकर द्वितीया विभक्ति होती है यथा– सुधां क्षीरनिधिं मथ्नाति।
(B) 'साधकतमं करणम्' (1/4/42) सूत्र से क्रिया की सिद्धि में जो पदार्थ सबसे अधिक सहायक होता है, उसकी करणकारक संज्ञा होती है यथा–सः कन्दुकेन क्रीडति।
(C) 'ध्रुवमपायेऽपादानम्' (1.4.24) सूत्र से अपादानसंज्ञा का विधान होता है। यथा– सः अश्वात् पतति।
(D) यहाँ ''कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्'' सूत्र से 'ब्राह्मण' पद की सम्प्रदानसंज्ञा होकर ''चतुर्थी सम्प्रदाने'' सूत्र से **चतुर्थी विभक्ति** का विधान हुआ है। यथा– राजा ब्राह्मणाय गां ददाति। अतः विकल्प (D) सही है।

66. अष्टाध्यायी के रचनाकार हैं?
(A) भट्टोजिदीक्षित (B) भर्तृहरि
(C) वरदराज (D) पाणिनि

व्याख्या–

	व्याकरणग्रन्थ	**रचनाकार**
(A)	सिद्धान्तकौमुदी	भट्टोजिदीक्षित
(B)	वाक्यपदीयम्	भर्तृहरि
(C)	मध्यसिद्धान्तकौमुदी	वरदराज
(D)	**अष्टाध्यायी**	**पाणिनि**

अतः विकल्प (D) सही है।

67. मेघदूतम् में यक्ष के शाप के अवसान का दिन था?
(A) वैशाख पूर्णिमा
(B) भाद्रपदकृष्ण अष्टमी
(C) भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी
(D) देवप्रबोधिनी एकादशी

व्याख्या– ''शापान्तो मे भुजगशयनादुत्थिते शार्ङ्गपाणौ'' (उत्तरमेघ/50) भगवान् विष्णु आषाढ़ शुक्ल एकादशी को शेषनाग की शय्या पर सोते हैं और कार्तिक शुक्ल एकादशी को जगते हैं। आषाढ़ शुक्ल एकादशी को 'हरिशयनी एकादशी' भी कहा जाता है। कार्तिक शुक्ल एकादशी को 'हरिप्रबोधनी एकादशी' या देवप्रबोधिनी भी कहा जाता है। उपर्युक्त वाक्यों से यह स्पष्ट होता है कि हरिशयनी एकादशी को यक्ष मेघ को देखता है तथा हरिप्रबोधिनी एकादशी को यक्ष के शाप का अवसान हो जायेगा।
अतः विकल्प (D) सही है।

68. 'अस्मद्' शब्द का स्त्रीलिङ्ग में क्या रूप होगा?
(A) अहम् (B) त्वम्
(C) मया (D) कोई लिङ्ग नहीं होता

व्याख्या– 'अस्मद्' सर्वनाम शब्द का तीनो लिङ्गों में एक समान रूप चलता है।
अतः विकल्प (D) सही है।

69. 'श्री' शब्द के द्वितीया बहुवचन का रूप होगा?
(A) श्रियः (B) श्रीन्
(C) श्रीः (D) श्रियम्

व्याख्या– * 'श्री' ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग का द्वितीया विभक्ति में–''श्रियम् श्रियौ **श्रियः**'' रूप बनता है।
* प्रथमा विभक्ति में– ''श्रीः श्रियौ श्रियः''
* पञ्चमी, षष्ठी एकवचन में भी ''श्रियः'' रूप बनता है।
* 'श्रीन्' रूप सातों विभक्तियों में कहीं नहीं बनता है।
अतः विकल्प (A) सही है।

64. (C) 65. (D) 66. (D) 67. (D) 68. (D) 69. (A)

70. 'मति' शब्द का चतुर्थी एकवचन का रूप है?
(A) मत्यै (B) मतये
(C) मत्यै, मतये (B) मत्यै, मतये दोनों नहीं

व्याख्या– मति (बुद्धि) इकारान्त स्त्रीलिङ्ग का रूप–चतुर्थी विभक्ति में–**मत्यै/मतये**, मतिभ्याम्, मतिभ्यः बनता है। अतः विकल्प (C) सर्वाधिक उपयुक्त है।

71. कादम्बरी और हर्षचरितम् में बाण ने किस देवता की स्तुति की है?
(A) शिव (B) विष्णु
(C) इनमें से दोनों (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या– बाणभट्ट ने हर्षचरितम् में शिव की तथा कादम्बरी के मङ्गलाचरण में ब्रह्मा, विष्णु, महेश (शिव) की स्तुति की है। अतः विकल्प (C) सर्वाधिक उपयुक्त है।

72. भर्तृहरि के अनुसार सर्वोत्कृष्ट आभूषण है?
(A) विनय (B) क्षमा
(C) शील (D) वाक्संयम

व्याख्या– ''सर्वेषामपि सर्वकारणमिदं **शीलं परं भूषणम्।**'' अर्थात् शील सभी का सर्वश्रेष्ठ आभूषण है। (नीतिशतकम्/ धैर्यपद्धति) अतः विकल्प (C) सही है।

73. 'प्रत्यक्षम्' में समास है?
(A) तत्पुरुष (B) द्वन्द्व
(C) बहुव्रीहि (D) अव्ययीभाव

पद	समास	विग्रह
(A) मेघात्यस्तः	तत्पुरुष	(मेघम् अत्यस्तः)
(B) इन्द्राग्नी	द्वन्द्व	(इन्द्रश्च अग्निश्च)
(C) बहुव्रीहिः	बहुव्रीहि	(बहुः व्रीहिः यस्य सः)
(D) प्रत्यक्षम्	**अव्ययीभाव**	(अक्षम् अक्षं प्रति)

अतः विकल्प (D) सही है।

74. शुक के पूर्व जन्म का नाम था?
(A) इन्द्रायुध (B) चन्द्रापीड
(C) पुण्डरीक (D) कपिञ्जल

व्याख्या– * बाणभट्ट की कादम्बरी 'कथा' में शुक के तीन जन्मों का वर्णन है– प्रथमजन्म में–**पुण्डरीक**, द्वितीय जन्म में–वैशम्पायन, तृतीय जन्म में–शुक।
* चन्द्रापीड के क्रमशः तीन जन्मों के नाम–चन्द्रमा, चन्द्रापीड, शूद्रक।
* इन्द्रायुध पूर्व जन्म में कपिञ्जल था। अतः विकल्प (C) सही है।

75. 'वीररस' प्रधानकाव्य है?
(A) उत्तररामचरितम् (B) नैषधीयचरितम्
(C) कुमारसम्भवम् (D) किरातार्जुनीयम्

ग्रन्थ	लेखक	प्रधानरस
(A) उत्तररामचरितम्	भवभूति	करुणरस
(B) नैषधीयचरितम्	श्रीहर्ष	शृङ्गाररस
(C) कुमारसम्भवम्	कालिदास	शृङ्गाररस
(D) **किरातार्जुनीयम्**	भारवि	**वीररस**

अतः विकल्प (D) सही है।

76. 'तेन सुप्यते' किस वाच्य का वाक्य है?
(A) कर्तृवाच्य (B) कर्मवाच्य
(C) भाववाच्य (D) इनमें से दोनों

व्याख्या– * **भाववाच्य** के कर्ता में तृतीयाविभक्ति होती है।
* कर्म होता ही नहीं है।
* क्रिया सदा प्रथमपुरुष एकवचन में होती है। यथा–''तेन सुप्यते, मया सुप्यते, त्वया सुप्यते'' अर्थात् भाववाच्य की क्रिया पर पुरुष का प्रभाव नहीं पड़ता है। अतः विकल्प (C) सही है।

77. कुबेर द्वारा यक्ष को शाप दिये जाने पर वह किस पर्वत पर जाकर रहने लगा–
(A) विन्ध्याचल (B) अरावली
(C) आम्रकूट (D) रामगिरि

व्याख्या– ''स्निग्धच्छाया तरुषु वसतिं रामगिर्याश्रमेषु'' (मेघदूत-1) इससे पता चलता है कि विरही यक्ष अलकापुरी से आकर चित्रकूट के रामगिरि पर्वत पर निवास करने लगा।

78. 'रामः गच्छति' का कर्मवाच्य होगा–
(A) रामः गम्यते (B) रामेण गच्छति
(C) रामेण गम्यते (D) रामः गमयति

व्याख्या– यहाँ राम अनुक्त कर्त्ता है इसलिए 'कर्तृकरणयोस्तृतीया' सूत्र से राम में तृतीया विभक्ति तथा गम् धातु का कर्मणि एकवचन में गम्यते रूप होता है। **'रामेण गम्यते'**। अतः विकल्प (C) सही है।

79. 'कुन्द' का पुष्प होता है?
(A) लाल (B) सफेद
(C) पीला (D) बहुरङ्गी

पुष्प	रंग	ऋतु	पुष्प	रंग	ऋतु
कमल	लाल	ग्रीष्म, शरद्	**कुन्द**	**सफेद**	**हेमन्त**
लोध्र	पीला	शिशिर	कुरबक	लाल	वसन्त
शिरीष	हरा	ग्रीष्म	कदम्ब	पीला	वर्षा
जपापुष्प	लाल		कुमुद	सफेद	

70. (C) **71.** (C) **72.** (C) **73.** (D) **74.** (C) **75.** (D) **76.** (C) **77.** (D)
78. (C) **79.** (B)

80. निम्नलिखित में से कौन गीतिकाव्य का ग्रन्थ नहीं है?
(A) कुमारसम्भवम् (B) ऋतुसंहारम्
(C) मेघदूतम् (D) B और C दोनों

व्याख्या– ऋतुसंहारम् और मेघदूतम् कालिदास कृत गीतिकाव्य एवं खण्डकाव्य है। **कुमारसम्भवम्** 17 सर्गों का महाकाव्य है। अतः विकल्प (A) सही है।

81. 'दुधुक्षसि' में कौन-सी धातु है?
(A) दुधु (B) दुह्
(C) धुक्ष् (D) दुक्ष्

व्याख्या– * दुधुक्षसि सन् प्रत्ययान्त धातु है।
दुह् + सन् + लट् मध्यमपुरुष, एकचवन।
अतः विकल्प (B) सही है।

82. 'सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ते' सूक्ति किस ग्रन्थ से सम्बद्ध है?
(A) मेघदूतम् (B) नीतिशतकम्
(C) शिवराजविजयम् (D) उत्तररामचरितम्

व्याख्या–
(A) ''सेविष्यन्ते नयनसुभगं खे भवन्तं बलाकाः'' (पूर्वमेघ/10)
(B) ''सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ते'' (नीतिशतकम्/33)
(C) ''सत्यं न लक्षितो मया समयवेगः'' –(शिवराजविजयम्-प्र0नि0)
(D) ''सीदन्नन्धे तमसि विधुरो मज्जतीवान्तरात्मा'' (उत्तररामचरितम् 3/38)
अतः विकल्प (B) सही है।

83. 'पितुः' पितृ शब्द का कौन-सा रूप है?
(A) षष्ठी एकवचन (B) द्वितीया बहुवचन
(C) प्रथमा बहुवचन (D) सप्तमी एकवचन

व्याख्या– पितृ (ऋकारान्त) पुंलिङ्ग का रूप–
(A) **षष्ठी विभक्ति** में–**पितुः**, पित्रोः, पितृणाम्।
(B) द्वितीया विभक्ति में–पितरम्, पितरौ, पितॄन्।
(C) प्रथमा विभक्ति में–पिता, पितरौ, पितरः।
(D) सप्तमी विभक्ति में–पितरि, पित्रोः, पितृषु।
अतः विकल्प (A) सही है।

84. 'चतुरशीतिः' किसे कहते हैं?
(A) 84 (B) 48
(C) 44 (D) 480

व्याख्या–

	संख्या		**संस्कृतशब्द**
(A)	**84**	–	चतुरशीतिः
(B)	48	–	अष्टचत्वारिंशत्/अष्टाचत्वारिंशत्
(C)	44	–	चतुःचत्वारिंशत्
(D)	480	–	अशीत्यधिकं चतुःशतम्

अतः विकल्प (A) सही है।

85. 'दीपावलिः' का सन्धिविच्छेद होगा?
(A) दीपा + वलिः (B) दीपा + अवलिः
(C) दीप + आवलिः (D) दीप + वलिः

व्याख्या– ''अकः सवर्णे दीर्घः'' (6/1/101)" सूत्र से **दीप + आवलिः =दीपावलिः** में दीर्घसन्धि है।
अतः विकल्प (C) सही है।

86. ''नैकः' में कौन सा समास है?
(A) नञ्समास (B) अव्ययीभावसमास
(C) एकशेषद्वन्द्वसमास (D) सुप्सुपा समास

व्याख्या–
(A) ''नञ्'' (2/2/6) सूत्र से 'न निर्भिन्नः = अनिर्भिन्नः' में नञ् तत्पुरुष समास है।
(B) ''नदीभिश्च'' (2/1/20) सूत्र से पञ्चानां गङ्गानां समाहारः = पञ्चगङ्गम् में अव्ययीभावसमास है।
(C) ''सरूपाणामेकशेष एकविभक्तौ'' (1/2/64) सूत्र से दोनों पदों में भिन्नलिङ्ग रहने पर पुंलिङ्ग का विधान करता है। यथा अजश्च अजा च = अजौ में एकशेष द्वन्द्वसमास है।
(D) ''सह सुपा'' (2/1/4) सूत्र से ''न एकः = नैकः'' में **सुप्सुपा समास** है। अतः विकल्प (D) सही है।

87. 'प्रत्यक्षम्' में कौन सा समास है?
(A) केवलसमास (B) अव्ययीभावसमास
(C) कर्मधारयसमास (D) द्वन्द्वसमास

व्याख्या– इस प्रश्न पत्र के प्रश्न संख्या-73 में यही प्रश्न पूछा गया है। अर्थात् एक ही प्रश्नपत्र में यह प्रश्न दो बार पूछा गया है।

शब्द	**समास**
(A) भूतपूर्वः	केवलसमास
(B) **प्रत्यक्षम्**	**अव्ययीभाव**
(C) घनश्यामः	कर्मधारय
(D) रामकृष्णौ	द्वन्द्वसमास

80. (A) 81. (B) 82. (B) 83. (A) 84. (A) 85. (C) 86. (D) 87. (B)

88. 'गवाक्षः' पद में कौन-सा समास है?
(A) बहुव्रीहि (B) तत्पुरुष
(C) केवलसमास (D) द्वन्द्वसमास

	पद	समासविग्रह
(A)	द्वित्राः	बहुव्रीहि (द्वौ वा त्रयो वा)
(B)	**गवाक्षः**	**तत्पुरुष** (गोः सदृशः अक्षः)
(C)	वागर्थाविव	केवलसमास
(D)	पितरौ	द्वन्द्वसमास (माता च पिता च)

अतः विकल्प (B) सही है।

89. 'अन्तर् + राष्ट्रियः' का सम्मिलित रूप होगा?
(A) अन्ताराष्ट्रियः (B) अन्तर्राष्ट्रियः
(C) अन्तर्राष्ट्रीयः (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या– अन्तर् + राष्ट्रियः = में ''रो रि'' (8/3/14) सूत्र से पूर्व र् का लोप हुआ–अन्त + राष्ट्रियः पुनः 'ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः' (6/3/111) सूत्र से अकार को दीर्घादेश होकर **'अन्ताराष्ट्रियः'** रूप बना।
अतः विकल्प (A) सही है।

90. 'अलं श्रमेण' इस वाक्य में कौन-सी विभक्ति, किस कारक से है?
(A) 'श्रम' हेतु है इसलिए हेतौ से तृतीया है।
(B) 'श्रम' करण है अतः 'कर्तृकरणयोस्तृतीया' से तृतीया है।
(C) करण कारक है। अतः तृतीया है।
(D) उक्त वाक्य अशुद्ध है।

व्याख्या– 'अलं श्रमेण'–इस वाक्य में क्रिया श्रूयमाण (प्रयुक्त) नहीं है फिर भी अर्थतः साधन क्रिया का बोध हो रहा है यानी–श्रमेण साध्यं नास्ति! इस क्रिया का करण है श्रम। अतः श्रम में कर्तृकरणयोस्तृतीया से तृतीया विभक्ति हुई। अतः विकल्प (B) सही है।

91. शुद्ध शब्द चुनिए–
(A) अम्बरीसः (B) अम्बरीशः
(C) अम्बरिशः (D) अम्बरीषः

व्याख्या– 'अब्' धातु से 'ईषन्' प्रत्यय करके 'अरुड्' आगम होकर 'अम्बरीषः' पद बनेगा। **'अम्बरीषः'** शब्द शुद्ध है। यहाँ तालव्य 'श' नही होगा। क्योंकि यहाँ 'ईश' शब्द नहीं है। अतः विकल्प (D) सही है।

92. अशुद्ध वाक्य चुनिए–
(A) बालः चित्रम् अवलोकते
(B) चिन्तकः आलोचते
(C) तरुणः वस्त्रं धरति
(D) सा स्वयं लेपयति

व्याख्या– इस प्रश्न पर सभी अभ्यर्थियों को अङ्क दिया गया है। चयन बोर्ड द्वारा पूर्व में (D) को सही माना गया था। बाद में विषयविशेषज्ञों द्वारा निर्णय के बाद चारों विकल्पों को सही माना गया। अतः उपर्युक्त चारों विकल्प शुद्ध हैं।

93. शुद्ध शब्द चुनिए–
(A) सहोदरा (B) सहोदरी
(C) दोनों शुद्ध हैं (D) दोनों अशुद्ध हैं

व्याख्या– * **'सहोदरा' शब्द शुद्ध है** इसका उल्लेख शुकनासोपदेश में है–
''अमृतसहोदरापि कटुविपाका''–अर्थात् (लक्ष्मी) अमृत की सगी बहन (सहोदरा) होने पर भी कड़वे फल देने वाली है।
अतः विकल्प (A) सही है।
* सहोदरी शब्द अशुद्ध है। क्योंकि यहाँ किसी भी सूत्र से ङीप्, ङीष्, या ङीन् नहीं होगा।

94. 'इनः' से तात्पर्य है–
(A) सेवक (B) स्वामी
(C) गुलाम (D) पापी

व्याख्या– * ''इनश्च दिनस्य'' अर्थात् 'दिन के स्वामी हैं'– सूर्य (शिवराजविजयम्) यहाँ 'इनः' का अर्थ = स्वामी है।
* 'परिजन' का अर्थ सेवकजन है।
* 'क्रीतदासः' का अर्थ गुलाम है। अतः विकल्प (B) सही है।

95. 'दम्भोलिः' शब्द का क्या अर्थ है?
(A) वज्र (B) पाषाण
(C) कमल (D) भ्रमर

व्याख्या–
(A) ''दम्भोलिघटितेयं रसना, या दारुणदानवोदन्तोदीरणैर्न दीर्य्यते।'' अर्थात् यह (मेरी) जिह्वा **वज्र** से बनी है जो कि दारुण दानवों के वृत्तान्त के वर्णन से फट नहीं जाती है। –शिवराजविजयम्/ब्रह्मचारी गुरु
(B) 'दृषद्' का अर्थ पत्थर (पाषाण) है।
(C) 'कुशेशय' का शाब्दिक अर्थ–'कमल' है।
(D) 'षट्पदः' का अर्थ– 'भ्रमर' है।
अतः विकल्प (A) सही है।

88. (B)	89. (A)	90. (B)	91. (D)	92. (*)	93. (A)	94. (B)	95. (A)

96. 'पञ्चबाणस्तु बाणः' कथन किसका है?
(A) जयदेव का
(B) चन्द्रदेव का
(C) गङ्गादेवी का
(D) त्रिविक्रमभट्ट का

व्याख्या–
(A) ''पञ्चबाणस्तु बाणः'' –**जयदेव** (बाणभट्ट के विषय में)
(B) ''बाणस्तु पञ्चाननः''
चन्द्रदेव (बाणभट्ट के विषय में)
(C) ''भट्टबाणस्य भारतीम्''
गङ्गादेवी (बाणभट्ट के विषय में)
(D) ''धनुषेव गुणाढ्येन निःशेषोरञ्जितो जनः''–
त्रिविक्रमभट्ट (बाणभट्ट के विषय में)
अतः विकल्प (A) सही है।

97. 'अधीत' शब्द की व्युत्पत्ति का ठीक विकल्प चुनिए–
(A) अधि + इट् + यत्
(B) अधि + इट् + क्त
(C) अधि + इङ् + क्त
(D) अधि + इट् + क्तवतु

व्याख्या– 'विदित-वेदितव्यस्याधीतसर्वशास्त्रस्य ते नाल्पमप्युपदेष्टव्यमस्ति'–शुकनासोपदेश। **अधि + इङ् + क्त = अधीतः।** अतः विकल्प (C) सही है।

98. 'लघिमा' की व्युत्पत्ति हेतु ठीक विकल्प चुनिए–
(A) लघु + इमनिच् **(B) लघु + मनिन्**
(C) लघु + मतुप् **(D) लघु + वतुप्**

व्याख्या–
(A) **लघु + इमनिच् = लघिमा**
(B) लघु शब्द से 'मनिन्' प्रत्यय नही होगा, क्योंकि 'मनिन्' कृत् प्रत्यय है।
(C) लघु + मतुप् = लघुमान्।
(D) लघु + वतुप् = लघुवान्। अतः विकल्प (A) सही है।

99. 'परभृत' किस पक्षी को कहते हैं?
(A) कौआ **(B) कोयल**
(C) कबूतर **(D) मयूर**

व्याख्या–''परभृतविरुतं कलं यथा प्रतिवचनीकृतमेभिरीदृशम्'' (अभिज्ञान 4/10)

	शब्द	अर्थ
(A)	काकः	कौआ
(B)	**परभृतः**	**कोयल**
(C)	कपोतः	कबूतर
(D)	मयूरः	मोर

अतः विकल्प (B) सही है।

100. आरम्भगुर्वी क्षयिणी क्रमेण
लघ्वी पुरा वृद्धिमती च पश्चात्।
दिनस्य पूर्वार्द्धपरार्द्ध भिन्ना
छायेव मैत्री खलसज्जनानाम्।।
इस श्लोक में छन्द है?
(A) इन्द्रवज्रा **(B) उपेन्द्रवज्रा**
(C) उपजाति **(D) वसन्ततिलका**

व्याख्या–
(A) 'अर्थो हि कन्या परकीय एव'–
इन्द्रवज्रा/अभिज्ञानशाकुन्तलम् 4/22
(B) 'अलं महीपाल तव श्रमेण'– उपेन्द्रवज्रा/रघुवंशम् 2/34
(C) **आरम्भगुर्वी....खलसज्जनानाम्''–उपजाति/नीति./50**
(D) ''अन्तर्हिते शशिनि सैव कुमुद्वती मे''
वसन्ततिलका/अभिज्ञानशाकुन्तलम् 4/3
अतः विकल्प (C) सही है।

101. ''उदतूतुलत्'' में कौन-सा लकार है?
(A) लङ् **(B) लिङ्**
(C) लुङ् **(D) लृङ्**

व्याख्या–
* ''महादेवमूर्तावपि, गदामुदतूतुलत्'' अर्थात् महादेव की मूर्ति पर भी (उस महमूद) ने गदा उठाई। –(शिवराजविजयम्)
* **उत् + तुल् + लुङ् (तिप्) = उदतूतुलत्**
अतः विकल्प (C) सही है।

102. 'आदिदेश' में पुरुष वचन है?
(A) प्रथमपुरुष एकवचन
(B) मध्यमपुरुष बहुवचन
(C) उत्तमपुरुष द्विवचन
(D) मध्यमपुरुष एकवचन

व्याख्या– 'आदिदेश' दिश् धातु (उभयपदी) लिट्लकार **प्रथमपुरुष एकवचन** का रूप है।
अतः विकल्प (A) सही है।

96. (A) 97. (C) 98. (A) 99. (B) 100. (C) 101. (C) 102. (A)

103. 'विदित-वेदितव्यः' में कौन-सा समास है?
(A) अव्ययीभाव (B) द्विगु
(C) बहुव्रीहि (D) तत्पुरुष

व्याख्या– ''विदित-वेदितव्यस्याधीतसर्वशास्त्रस्य'' – कादम्बरी शुकानासोपदेश

* विदितं वेदितव्यं येन तस्य = विदित-वेदितव्यः (ज्ञातव्य वस्तुओं का ज्ञाता है जो अर्थात् चन्द्रापीड) **बहुव्रीहि**
* गिरिषु इति–अन्तर्गिरि में अव्ययीभावसमास है
* 'अष्टाध्यायी' मे द्विगुसमास है।
* वाचा युद्धम् = 'वाक्युद्धम्' में तत्पुरुषसमास है।

अतः विकल्प (C) सही है।

104. 'इच्छन्' में कौन-सा प्रत्यय है?
(A) खच् (B) तृच्
(C) यत् (D) शतृ

व्याख्या–

(A) 'प्रियंवदः' में खच् प्रत्यय है।
(B) 'कर्ता' में तृच् प्रत्यय है।
(C) 'गेयम्' में यत् प्रत्यय है
(D) **इच्छन् में शतृ प्रत्यय है।**
अतः विकल्प (D) सही है।

105. अधोलिखित में कौन वर्ण 'झष्' प्रत्याहार में आता है?
(A) ख (B) ज
(C) ट (D) ध

व्याख्या– झष् प्रत्याहार=**झ, भ, घ, ढ, ध** वर्ण आते हैं। अतः विकल्प (D) सही है।

106. 'सन्तः' में कौन सी धातु है?
(A) सद् (B) अस्
(C) सु (D) तन्

व्याख्या–

(A) सद् धातु का लट्लकार प्रथमपुरुष में–सीदति सीदतः सीदन्ति रूप चलता है।
(B) **अस् + लट् (शतृ) = सन्तः।** अस् धातु का शत्रन्तरूप– सत् सन्तौ सन्तः चलता है।
(C) 'सु (निचोड़ना) लट्लकार प्रथमपुरुष में–सुनोति सुनुतः सुन्वन्ति रूप चलता है।
(D) तन् (फैलाना) लट्लकार प्रथमपुरुष में–तनोति तनुतः तन्वन्ति रूप चलता है।
अतः विकल्प (B) सही है।

107. 'शूली' का अर्थ है?
(A) भाले वाला (B) शिव
(C) काँटेदार (D) कष्टप्रद

व्याख्या–

* ''कुर्वन्सन्ध्याबलिपटहतां शूलिनः श्लाघनीयाम्'' पूर्वमेघ/37
* 'शूलिनः' षष्ठी एकवचन का रूप है जो शङ्कर जी के लिए प्रयुक्त है। अतः **'शूली' का अर्थ 'शिव' है।**
* शूलम् (त्रिशूलम्) अस्य अस्ति इति शूली अर्थात् शिवः। शूल + इनि = शूलिन् (शूली) अतः विकल्प (B) सही है।

108. 'लुब्धक' का अर्थ है?
(A) लोभी (B) लुभावना
(C) उपलब्ध (D) बहेलिया

व्याख्या– ''लुब्धकधीवरपिशुना निष्कारणमेव वैरिणो भवति'' नीतिशतकम्/दुर्जनपद्धति–51

यहाँ **लुब्धक का अर्थ बहेलिया** है।

धीवरः = मछुआरा, पिशुनः = चुगुलखोर

अतः विकल्प (D) सही है।

109. 'कान्तोदन्त' का अर्थ है?
(A) चमकते दाँत (B) प्रियतम का वृत्तान्त
(C) प्रिया के दाँत (D) प्रिय का अन्त

व्याख्या–

* ''कान्तोदन्तः सुहृदुपनतः सङ्गमात्किञ्चिदूनः'' अर्थात् स्त्रियों के लिए मित्र द्वारा लाया गया **प्रियतम का समाचार** (वृत्तान्त) समागम से कुछ ही कम होता है। उत्तरमेघ/40
* यहाँ 'कान्तोदन्त' का अर्थ 'प्रियतम का समाचार' है।

अतः विकल्प (B) सही है।

110. उज्जयिनी में स्थित शिवलिङ्ग का क्या नाम है?
(A) वैद्यनाथ (B) महाकाल
(C) मार्कण्डेय (D) विश्वनाथ

व्याख्या– ''अप्यन्यस्मिञ्जलधर! महाकालमासाद्य काले'' अर्थात् **महाकाल** मन्दिर में अन्य समय में भी पहुँचकर तुम्हें वहाँ ठहर जाना चाहिए। (पूर्वमेघ/37)

अतः विकल्प (B) सही है।

103. (C) 104. (D) 105. (D) 106. (B) 107. (B) 108. (D) 109. (B) 110. (B)

111. किस काव्य में अलकापुरी का वर्णन प्राप्त होता है?
(A) पवनदूत
(B) मेघदूतम्
(C) रघुवंशम्
(D) किरातार्जुनीयम्

व्याख्या– कालिदास कृत **मेघदूतम् में** अलकापुरी का वर्णन है। ''गन्तव्या ते वसतिरलका नाम यक्षेश्वराणाम्'' (पूर्वमेघ-7)
अतः विकल्प (B) सही है।

112. मेघदूत किस विधा का ग्रन्थ है?
(A) महाकाव्य **(B) खण्डकाव्य**
(C) नाटक **(D) चम्पू**

	ग्रन्थ	विधा
(A)	जानकीहरणम्	महाकाव्य
(B)	**मेघदूतम्**	**खण्डकाव्य**
(C)	वेणीसंहारम्	नाटक
(D)	नलचम्पू	चम्पू

अतः विकल्प (B) सही है।

113. भारतवर्ष में सर्वप्रथम यवन शासन का बीजारोपण किसने किया?
(A) महमूद गजनवी ने **(B) शहाबुद्दीन ने**
(C) कुतुबुद्दीन ने **(D) अलाउद्दीन ने**

व्याख्या– * अम्बिकादत्तव्यास कृत शिवराजविजयम् उपन्यास में गोर देश का निवासी **शहाबुद्दीन (मो0 गोरी) ने भारत में यवनशासन का बीजारोपण किया।**
* महमूद गजनवी 'गजनी' देश का निवासी था जिसने सोमनाथ मन्दिर को लूटा था।
* शहाबुद्दीन (मो0 गोरी) का गुलाम कुतुबुद्दीन भारत का प्रथमसम्राट् बना।

अतः विकल्प (B) सही है।

114. पत्रलेखा किसकी पुत्री थी?
(A) गन्धर्वराज की **(B) शुकनास की**
(C) तारापीड की **(D) कुलूतेश्वर की**

	पुत्र/पुत्री		पिता
(A)	कादम्बरी	–	गन्धर्वराज चित्ररथ
(B)	वैशम्पायन	–	शुकनास
(C)	चन्द्रापीड	–	तारापीड
(D)	**पत्रलेखा**	**–**	**कुलूतेश्वर**

अतः विकल्प (D) सही है।

115. कादम्बरी में कितने जन्म की कथा वर्णित है?
(A) दो जन्म
(B) एक जन्म
(C) तीन जन्म
(D) चार जन्म

व्याख्या– बाणभट्ट कृत कादम्बरी में तीन जन्मों की कथा है। यथा–

प्रथम जन्म	द्वितीय जन्म	तृतीय जन्म
चन्द्रमा	चन्द्रापीड	शूद्रक
पुण्डरीक	वैशम्पायन	शुक
लक्ष्मी	–	चाण्डालकन्या
कपिञ्जल	इन्द्रायुध	–
रोहिणी	पत्रलेखा	–

अतः विकल्प (C) सही है।

116. मेघदूतम् की यक्षिणी शापदिवसों की गणना किससे करती है–
(A) पुष्पों से
(B) लेखनी से
(C) मणियों से
(D) अन्नकणों से

व्याख्या– ''शेषान् मासान् विरहदिवसस्थापितस्यावधेर्वा, विन्यस्यन्ती भुवि गणनया **देहलीदत्तपुष्पैः।**'' (उत्तरमेघ/27)
अर्थात् वियोग के दिन से निश्चित की हुई अवधि के शेष महीनों को देहली पर रखे हुए **पुष्पों से** गिनकर धरती पर रखती है वह यक्षिणी।
अतः विकल्प (A) सही है।

111. (B) 112. (B) 113. (B) 114. (D) 115. (C) 116. (A)

117. 'कण्ठाश्लेषप्रणयिनि जने किं पुनर्दूरसंस्थे' इनमें 'जन' शब्द किसका बोधक है?
(A) राजहंस (B) मेघ (C) यक्षिणी (D) चातक

व्याख्या– कण्ठ के आलिङ्गन से प्रेम करने वाली मेरी प्रिया रूप जन के दूर होने पर क्या कहा जाय। इस पद में सप्तमी के कारण ऐसे व्यक्ति की ओर संकेत कर रहा है, जो उस यक्ष के कण्ठालिङ्गन का इच्छुक हो और वह व्यक्ति केवल उसकी प्रिया ही हो सकती है जो उससे दूर स्थित है। 'जने' से अर्थ यहाँ पर प्रिया अर्थात् यक्षिणी है। अतः विकल्प (C) सही है।

स्रोत- (i) मेघदूतम् (पूर्वमेघ-3) आर0बी0 शास्त्री
(ii) मेघदूतम्- विजेन्द्र शर्मा, पेज-07

118. 'कृदन्त' की संज्ञा होती है?
(A) प्रत्यय (B) धातु (C) संयोग (D) प्रातिपदिक

व्याख्या–

(A) "प्रत्ययः" (3/1/1) सूत्र से सुप्, क्यच्, सन् आदि की प्रत्यय संज्ञा होती है।

(B) "भूवादयो धातवः" (1/3/1) सूत्र से भू आदि की धातु संज्ञा होती है।

(C) "हलोऽनन्तरा संयोगः" (1/1/7) सूत्र से अच् (स्वर) के व्यवधान से रहित व्यञ्जनों (हल्) की संयोगसंज्ञा होती है।

(D) "कृत्तद्धितसमासाश्च" (1/2/46) सूत्र से कृदन्त, तद्धितान्त तथा समास की **प्रातिपदिक संज्ञा** होती है।

अतः विकल्प (D) सही है।

119. शिवराजविजयम्' के सम्बन्ध में क्या सही नहीं है?
(A) इसके लेखक अम्बिकादत्तव्यास हैं।
(B) इसके नायक शिवाजी हैं।
(C) शिवराजविजयम् में तेरह निःश्वास हैं।
(D) शिवराजविजयम् प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास है।

व्याख्या– * शिवराजविजयम् में बारह निःश्वास एवं तीन विराम है, इसके नायक शिवाजी हैं। अतः विकल्प (C) सही उत्तर है।

120. 'व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवं'–सूक्ति किरातार्जुनीयम् के किस सर्ग से उद्धृत है?
(A) प्रथमसर्ग (B) द्वितीयसर्ग
(C) तृतीयसर्ग (D) चतुर्थसर्ग

व्याख्या– "व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवं" अर्थात् जो कपटीजनों के साथ कपटी नहीं बनते वे मूढबुद्धि पराजय को प्राप्त होते हैं। **(किरात0 1/30)**

अतः विकल्प (A) सही है।

121. रघुवंश में कुल कितने सर्ग हैं?
(A) पचास (B) सत्रह
(C) उन्नीस (D) अट्ठाइस

	महाकाव्य	**सर्ग**
(A)	हरविजयम्	50
(B)	कुमारसम्भवम्	17
(C)	**रघुवंशम्**	**19**
(D)	बुद्धचरितम्	28

अतः विकल्प (C) सही है।

122. 'शिवराजविजयम्' में कितने निःश्वास है।
(A) 10 (B) 36
(C) 3 (D) 12

	ग्रन्थ	**विभाजन**
(A)	साहित्यदर्पण	10 परिच्छेद
(B)	शृङ्गारप्रकाश	36 प्रकाश
(C)	व्यक्तिविवेक	3 विमर्श
(D)	**शिवराजविजयम्**	**3 विराम, 12 निःश्वास**

अतः विकल्प (D) सही है।

123. किसने शकुन्तला को शाप के प्रभाव से मुक्त करने के लिए दुर्वासा से प्रार्थना की?
(A) प्रियंवदा (B) गौतमी
(C) अनसूया (D) मेनका

व्याख्या– 'गच्छ पादयोः प्रणम्य निवर्तयैनं'–अनसूया, प्रियंवदा से कहती है कि जाओ चरणों में प्रणाम करके उन्हें (दुर्वासा को) लौटा लाओ। 'प्रकृतिवक्रः स कस्यानुनयं प्रतिगृह्णाति! किमपि पुनः सानुक्रोशःकृतः' अर्थात् **प्रियंवदा** कहती है कि–स्वभाव से टेढ़े वे (महर्षि दुर्वासा) किसकी प्रार्थना को स्वीकार करते हैं? फिर भी (मैंने) कुछ दयायुक्त कर लिया। इसप्रकार प्रियंवदा ने शकुन्तला की शापमुक्ति के लिए दुर्वासा से प्रार्थना की। अतः विकल्प (A) सही है।

117. (C) 118. (D) 119. (C) 120. (A) 121. (C) 122. (D) 123. (A)

124. रघुवंशियों का कौन-सा कालक्रमानुसार युग्म सही है?
(A) रघु, अज, दशरथ, राम (B) दिलीप, अज, दशरथ, राम
(C) अज, दिलीप, रघु, राम (D) राम, दशरथ, रघु, अज

व्याख्या– कालिदास कृत रघुवंशम् में वर्णित '31' राजाओं का कालक्रम इस प्रकार है?– मनु (वैवस्वत), दिलीप, **रघु, अज, दशरथ, राम,** लव, कुश, अतिथि, निषध, नल, नभ, पुण्डरीक, क्षेमधन्वा, देवानीक, अहीनग, पारियात्र, शिल, उन्नाभ, वज्रणाभ, शंखण, व्युषिताश्व, विश्वसह, हिरण्यनाभ, कौशल्य, ब्रह्मिष्ठ, पुत्र, पुष्य, ध्रुवसन्धि, सुदर्शन, अग्निवर्ण। तत्पश्चात् अग्निवर्ण की पत्नी तथा गर्भस्थ बालक को राज्याधिकार। अतः विकल्प (A) सही है।

125. महाभारत को कहा जाता है।
(A) जयसंहिता (B) आदिकाव्य
(C) सौप्तिक संहिता (D) अरण्यसंहिता

व्याख्या– * महाभारत को **जयसंहिता** के नाम से भी जाना जाता है। इसे **'शतसाहस्त्रीसंहिता'** भी कहते हैं।
* 'आदिकाव्य' वाल्मीकिरामायण को कहते हैं। इसे **'चतुर्विंशति-साहस्त्री-संहिता'** भी कहते हैं।
अतः विकल्प (A) सही है।

124. (A) 125. (A)

प्रशिक्षित-स्नातकशिक्षक-चयनपरीक्षा (TGT)–2013

1. निम्नलिखित में कौन शब्द शुद्ध है?
(A) अक्षतः (B) दाराः
(C) लाजः (D) वर्षा

व्याख्या–

- **''दाराऽक्षतलाजाऽसूनां बहुत्वं च''**–(पाणिनीयलिङ्गानुशासन 106) दारा, अक्षत तथा लाजा - शब्द पुँल्लिङ्ग होते हैं तथा ये शब्द सदा बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं।
यथा– **दाराः** = पत्नी, **अक्षताः** = बिना टूटे चावल, **लाजाः** = खील, भाड़ में भुने हुए चावल।
- **''अप्सुमनस्समासिकतावर्षाणां बहुत्वं च''** – (पाणिनीयलिङ्गानुशासन–29)
अप्, सुमनस्, समा, सिकता तथा वर्षा–ये शब्द स्त्रीलिङ्ग में होते हैं, तथा बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं।
यथा– **आपः** = जल, **सुमनसः** = फूल, **समाः** = संवत्सर **सिकताः** = बालू, **वर्षाः** = वर्षा, ऋतु विशेष।
- अमरकोश में भी कहा गया है कि–
आपः सुमनसो वर्षा अप्सरः सिकताः समाः।
एते स्त्रियां बहुत्वे स्युरेकत्वेऽप्युत्तरत्रयम्॥
- उपर्युक्त प्रश्न में अक्षतः, लाजः, वर्षा– ये एकवचनान्त रूप में उल्लिखित हैं, जबकि इन्हें नित्य बहुवचनान्त बताया गया है। किन्तु **'दाराः' शब्द नित्यबहुवचनान्त और पुँल्लिङ्ग होने से सही उत्तर है,** अतः विकल्प (B) सही है।

2. कर्ता द्वारा अनीप्सित पदार्थ की क्या संज्ञा होगी?
(A) कर्ता (B) कर्म
(C) करण (D) सम्प्रदान

व्याख्या–

(A) **''स्वतन्त्रः कर्ता''** (1.4.54) सूत्र से क्रिया की सिद्धि में जो स्वतन्त्ररूपेण अर्थात् प्रमुखतया विवक्षित होता है, वह कर्तासंज्ञक होता है।
जैसे– 'अनुजः पचति' यहाँ पचन क्रिया के निष्पादन में 'अनुज' प्रधानतया विवक्षित है; अतः कर्त्ता हुआ। उक्त कर्ता में **''प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा''** सूत्र से 'अनुजः' में प्रथमा विभक्ति हुई।

(B) **''तथायुक्तं चानीप्सितम्''** (1.4.50) सूत्र से ईप्सिततम (अभीष्टतम) के समान क्रिया से युक्त होने पर अनीप्सित (अनभीष्ट) की भी कर्मसंज्ञा होती है।
जैसे– **'ग्रामं गच्छन् तृणं स्पृशति'** – यहाँ स्पर्श क्रिया से युक्त 'तृण' कर्त्ता को अनीप्सित है, फिर भी उक्तसूत्र से 'तृण' की कर्मसंज्ञा होती है। इसी प्रकार गमनक्रिया के सम्बन्ध से कर्ता का ईप्सिततम 'ग्राम' है जिसकी **''कर्तुरीप्सिततमं कर्म''** (1.4.49) से कर्मसंज्ञा होती है। 'ग्राम' और 'तृण' दोनों में **''कर्मणि द्वितीया''** (2.3.2) सूत्र से द्वितीया विभक्ति हुई। अतः विकल्प `B' सही है।

(C) **''साधकतमं करणम्''** (1.4.42) सूत्र से क्रिया की सिद्धि में जो सबसे अधिक उपकारक (सहायक) हो, उसकी 'करणसंज्ञा' होती है।
जैसे–**'परशुना छिनत्ति'** यहाँ छेदनक्रिया में सबसे अधिक उपकारक (सहायक) 'परशु' है; अतः इसकी करणसंज्ञा होकर **''कर्तृकरणयोस्तृतीया''** (2.3.18) से तृतीया हुई।

(D) **''कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्''** (1.4.32) सूत्र से दान क्रिया के कर्म के द्वारा कर्ता जिसे अच्छी प्रकार से युक्त (लक्षित या सम्बन्धित) करना चाहता है, उसकी सम्प्रदानसंज्ञा होती है।
जैसे– 'छात्रः संस्कृतगङ्गायै पुस्तकं ददाति' यहाँ छात्र (कर्ता) दानक्रिया के कर्म (पुस्तक) के द्वारा 'संस्कृतगङ्गा' को सर्वाधिक लक्षित (सम्बद्ध) करता है। अतः 'संस्कृतगङ्गा' की सम्प्रदान संज्ञा होकर **''चतुर्थी सम्प्रदाने** (2.3.13) सूत्र से चतुर्थी विभक्ति होकर 'संस्कृतगङ्गायै' बन गया।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतव्याकरणम् पेज-90 प्रश्न-22

3. 'वामाः कुलस्याधयः' यह उक्ति किस ग्रन्थ में वर्णित है?
(A) उत्तररामचरितम्
(B) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(C) नीतिशतकम्
(D) किरातार्जुनीयम्

1. (B) 2. (B) 3. (B)

व्याख्या–

	ग्रन्थ		सूक्ति
(A)	यथा स्त्रीणां तथा वाचां साधुत्वे दुर्जनो जनः	–	उत्तररामचरितम् (1/5)
(B)	यान्त्येवं गृहिणीपदं युवतयो **वामाः कुलस्याधयः**	–	अभिज्ञानशाकुन्तलम् (4/18)
(C)	यां चिन्तयामि सततं मयि सा विरक्ता	–	नीतिशतकम् (परिशिष्ट)
(D)	भवादृशेषु प्रमदाजनोदितं भवत्यधिक्षेप इवानुशासनम्	–	किरातार्जुनीयम् (1/28)

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-161 प्रश्न-113

4. 'सुखी' शब्द का तृतीया एकवचन में क्या रूप होता है–

(A) सुख्या **(B) सुखिना**
(C) सुख्यः **(D) सुख्युः**

व्याख्या–

- 'सुखम् इच्छति इति = सुखी' शब्द ईकारान्त पुंलिङ्ग शब्द है, जिसका रूप निम्नवत् होगा– 1.सुखीः, 2. सुख्यम्, 3. सुख्या, 4. सुख्ये, 5. सुख्युः, 6. सुख्युः, 7. सुख्यि, सम्बो0 हे सुखीः। अतः विकल्प `A' सही है।
- जबकि 'सुखिन्' इन्नन्त शब्द का रूप 'गुणिन्' की तरह चलेगा– 1. सुखी, 2. सुखिनम्, 3. सुखिना, 4.सुखिने, 5. सुखिनः, 6. सुखिनः, 7. सुखिनि, सम्बो0 हे सुखिन्।

5. किरातार्जुनीयम् प्रथमसर्ग में सर्वाधिक प्रयुक्त छन्द में प्रयुक्त गण है–

(A) जगण तगण जगण रगण
(B) जगण तगण जगण दो गुरुवर्ण
(C) तगण तगण जगण गुरु गुरु
(D) तगण भगण जगण जगण गुरु गुरु

व्याख्या–

(A) किरातार्जुनीयम् प्रथमसर्ग में कुल 46 श्लोक हैं। जिसके अन्तिम 46वें श्लोक में मालिनी छन्द, तथा 45वें श्लोक में पुष्पिताग्रा छन्द है। शेष प्रथम श्लोक से लेकर 44वें श्लोक तक वंशस्थ है। अतः किरातार्जुनीयम् प्रथमसर्ग में **सर्वाधिक प्रयुक्त छन्द 'वंशस्थ'** होगा। जिसका लक्षण है– **''जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ''** अर्थात् ''जगण तगण जगण रगण'' गणों वाला छन्द वंशस्थ कहा जाता है, इसके प्रत्येक चरण में 12 अक्षर होते हैं।
यथा– ''श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीम्'' (किरात0 1/1)
अतः विकल्प `A' सही है।

(B) ''जगण तगण जगण दो गुरुवर्ण'' से युक्त छन्द 'उपेन्द्रवज्रा' कहा जाता है, इसका लक्षण निम्नवत् है–
''उपेन्द्रवज्रा जतजास्ततो गौ''
अर्थात् उपेन्द्रवज्रा के प्रत्येक चरण में जगण, तगण, जगण तथा दो गुरु वर्ण होते हैं। इसके प्रत्येक चरण में 11 वर्ण होते हैं। यथा– ''त्वमेव माता च पिता त्वमेव''

(C) ''तगण, तगण, जगण गुरु गुरु'' – इन गणों से युक्त छन्द 'इन्द्रवज्रा' कहा जाता है–
''स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः''
इसके प्रत्येक चरण में 11वर्ण होते हैं।
यथा– ''अर्थो हि कन्या परकीय एव''

(D) ''तगण भगण जगण जगण गुरु गुरु'' इन गणों से युक्त छन्द को 'वसन्ततिलका' कहते हैं। इसका लक्षण है–
''उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः'' इसके प्रत्येक चरण में 14 वर्ण होते हैं। यथा– ''न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः'' – नीतिशतकम्

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-231 प्रश्न-85

6. 'सत्यनिष्ठ' शब्द में कौन सा समास है?

(A) अव्ययीभाव
(B) तत्पुरुष
(C) बहुव्रीहि
(D) द्वन्द्व

व्याख्या–

सामासिकपद	समासविग्रह	समास का नाम
(A) निर्जनम्	जनानाम् अभावः	अव्ययीभाव
(B) सत्याग्रहः	सत्यस्य आग्रहः/सत्ये आग्रहः	तत्पुरुष
(C) सत्यनिष्ठः	सत्ये निष्ठा यस्य सः	**बहुव्रीहि**
(D) सत्यानृतम्	सत्यं च अनृतं च	द्वन्द्वसमास

अतः विकल्प `C' सही है।

नोट– 'सत्यनिष्ठः, धर्मनिष्ठः, ज्ञाननिष्ठः, कर्मनिष्ठः, संस्कृतनिष्ठः' इत्यादि सभी में बहुव्रीहि समास है।

स्रोत–रचनानुवादकौमुदी पेज–99

4. (A) 5. (A) 6. (C)

7. 'सुप्' प्रत्याहार में कितने प्रत्यय होते हैं?
(A) 20 **(B) 21**
(C) 22 **(D) 24**

व्याख्या– (A) माघ के शिशुपालवधम् में 20 सर्ग हैं।

(B) **सुप् प्रत्याहार में 21 प्रत्यय आते हैं।** यथा– 1. सु औ जस् 2. अम् औट् शस् 3. टा भ्याम् भिस् 4. ङे भ्याम् भ्यस् 5. ङसि भ्याम् भ्यस्, 6. ङस् ओस् आम् 7. ङि ओस् सुप्

(C) उपसर्गों की संख्या 22 है। यथा– प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव, निस्, निर्, दुस्, दुर्, वि, आङ्, नि, अधि, अपि, अति, सु, उद्, अभि, प्रति, परि, उप।

(D) वैशेषिकदर्शन के अनुसार 24 गुण होते है। यथा– रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, संख्या, परिमाण, पृथक्त्व, संयोग, विभाग, परत्व, अपरत्व, गुरुत्व, द्रवत्व, स्नेह, शब्द, बुद्धि, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, धर्म, अधर्म तथा संस्कार–ये चौबीस गुण के भेद हैं।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतव्याकरणम् पेज-38

8. पुंलिङ्ग 'सर्व' शब्द का प्रथमा विभक्ति बहुवचन में क्या रूप होता है?
(A) सर्वाः **(B) सर्वे**
(C) सर्वौ **(D) सर्वः**

व्याख्या–

- 'सर्व' शब्द का (पुंलिङ्ग) प्रथमा विभक्ति में –
''सर्वः सर्वौ सर्वे'' रूप होगा। अतः विकल्प `B' सही है।
- 'सर्व' शब्द (स्त्रीलिङ्ग) प्रथमाविभक्ति में–
''सर्वा सर्वे सर्वाः'' रूप होगा।
- 'सर्व' शब्द (नपुंसकलिङ्ग) प्रथमा विभक्ति में–
''सर्वम् सर्वे सर्वाणि'' रूप होगा।

9. शुकनास के उपदेश के पश्चात् प्रसन्न हृदयवाला राजा कहाँ गया?
(A) राजदरबार में **(B) उद्यान में**
(C) अपने भवन में **(D) वन में**

व्याख्या–

- कादम्बरी शुकनासोपदेश के अनुसार प्रसन्न हृदय वाला राजा चन्द्रापीड मन्त्री शुकनास के उपदेश को सुनकर अपने भवन में जाता है– **''उपशान्तवचसि शुकनासे चन्द्रापीडः ताभिः उपदेशवाग्भिः प्रक्षालितः इव.... प्रीतहृदयः मुहूर्तं स्थित्वा स्वभवनम् आजगाम।** (कादम्बरी शुकनासोपदेश)
- कादम्बरी कथामुख के अनुसार राजदरबार में राजा शूद्रक रहता है, जब चाण्डालकन्या वैशम्पायन शुक को लेकर आती है।
- अश्वघोष विरचित बुद्धचरितम् नायक बुद्ध उद्यान में भ्रमण करते हैं।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् नायक राजा दुष्यन्त वन में मृग का शिकार करने जाते हैं।

10. उत्तररामचरितम् में लव कुश के जन्म की किस वर्षगाँठ का वर्णन है–
(A) आठवीं **(B) दसवीं**
(C) बारहवीं **(D) चौदहवीं**

व्याख्या–

- उत्तररामचरितम् के तृतीय अङ्क के विष्कम्भक में भगवती भागीरथी के कथन को तमसा द्वारा मुरला से कुछ इस प्रकार कहा जा रहा है–
तमसा–उक्तमेव भगवत्या भागीरथ्या–'वत्से देवयजनसम्भवे सीते! अद्य खल्वायुष्मतोः **कुशलवयोर्द्वादशस्य जन्मवत्सरस्य** संख्यामङ्गलग्रन्थिरभिवर्तते।
- यहाँ **'द्वादशस्य जन्मवत्सरस्य'** पद का अर्थ **'बारहवीं वर्षगाँठ'** है, अतः विकल्प `C' सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा साहित्यम् पेज-180 प्रश्न-27

11. उत्तररामचरितम् के तृतीय अङ्क का प्रारम्भ किससे होता है–
(A) नान्दी **(B) आकाशभाषित**
(C) सूत्रधार **(D) विष्कम्भक**

व्याख्या–

- भवभूति विरचित उत्तररामचरितम् के तृतीय अङ्क का प्रारम्भ **शुद्ध विष्कम्भक** द्वारा तमसा और मुरला नामक दो सखियों के परस्पर वार्तालाप से होता है। उत्तररामचरितम् तृतीय अङ्क का प्रारम्भ– (ततः प्रविशति नदीद्वयम्)
एका–सखि मुरले! किमसि सम्भ्रान्तेव? यहाँ से लेकर मुरला द्वारा कथित पाँचवें श्लोक–''शरदिज इव घर्मः केतकीगर्भपत्रम्।' से होता है। अतः विकल्प `D' सही है।
- उत्तररामचरितम् (प्रथम अङ्क) का प्रारम्भ ''इदं कविभ्यः पूर्वेभ्यो नमोवाकं प्रशास्महे'' इस द्वादशपदा पत्रावली नामक नान्दी से होता है, इसके बाद सूत्रधार का प्रवेश होता है।
- रूपक के दश भेदों में 'भाण' नामक रूपक में आकाशभाषित

7. (B) 8. (B) 9. (C) 10. (C) 11. (D)

का प्रयोग होता है। अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क का निम्नलिखित श्लोक भी आकाशभाषित का उदाहरण है– ''रम्यान्तरः कमलिनीहरितैः सरोभिः'' अभि0 शा0 4/11

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-24

12. नीतिशतकम् में राजनीति को कितने स्वरूपों को धारण करने वाली कहा गया है?
(A) 8 **(B) 9**
(C) 10 **(D) 11**

व्याख्या–भर्तृहरि विरचित नीतिशतकम् के अर्थपद्धति में राजनीति को वेश्या के समान अनेकरूपों वाली कहा गया है, जिसमें राजनीति के दस रूपों की गणना की गयी है–

सत्यानृता च परुषा प्रियवादिनी च
हिंस्रा दयालुरपि चार्थपरा वदान्या।
नित्यव्यया प्रचुरनित्यधनागमा च
वाराङ्गनेव नृपनीतिरनेकरूपा।।

राजनीति के दस रूप– 1. सत्या (सत्यवादिनी) 2. अनृता (झूठी) 3. परुषा (कठोर) 4. प्रियवादिनी 5. हिंस्रा (क्रूरता) 6. दयालुता 7. अर्थपरा (स्वार्थ परायणता) 8. वदान्या (बहुप्रदा, उदारस्वभाव) 9. नित्यव्यया (नित्य खर्चीली) 10. प्रचुरनित्यधनागमा (अत्यधिक धन देने वाली) इस प्रकार वेश्या के समान राजनीति भी अनेक रूपों वाली होती है। अतः विकल्प `C' सही है।

13. शकुन्तला के अनिष्टनिवारण के लिए महर्षि कण्व कहाँ गये थे?
(A) हिमालय **(B) सोमतीर्थ**
(C) कुरुक्षेत्र **(D) प्रयाग**

व्याख्या–महाकवि कालिदास द्वारा विरचित अभिज्ञानशाकुन्तलम् के प्रथम अङ्क में जब राजा दुष्यन्त मृग का पीछा करते हुए कण्वाश्रम के निकट पहुँचता है और वैखानस के द्वारा मृग को न मारने का अनुरोध स्वीकार करके यह पूँछता है कि– 'क्या कुलपति कण्व आश्रम में विद्यमान हैं।– ''**अपि सन्निहितोऽत्र कुलपतिः**'' तो इसके उत्तर में वैखानस कहता है कि–

वैखानसः– 'इदानीमेव दुहितरं शकुन्तलामतिथिसत्काराय नियुज्य **दैवमस्याः प्रतिकूलं शमयितुं सोमतीर्थं गतः**'

वैखानस के इस कथन से स्पष्ट है कि कण्व शकुन्तला के अनिष्ट निवारण के लिए सोमतीर्थ गये हुए हैं। अतः विकल्प `B' सही है।

- कालिदासकृत कुमारसम्भवम् में हिमालय का वर्णन है– **''अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा, हिमालयो नाम नगाधिराजः''** – कुमारसम्भवम् (1.1)
- कुरुक्षेत्र (प्रदेश) में कौरवों का शासन था। इसका उल्लेख महाभारत एवं किरातार्जुनीयम् में आया है– ''**श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीम्**''– (किरात. 1/1)
- प्रयाग में गङ्गा, यमुना, सरस्वती का सङ्गम है। तथा यहीं दारागञ्ज प्रयाग में संस्कृतगङ्गा का प्रधानकार्यालय भी स्थित है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-21

14. उत्तररामचरितम् नाटक का मङ्गलाचरण किस छन्द में है–
(A) गायत्री **(B) अनुष्टुप्**
(C) उपजाति **(D) वंशस्थ**

व्याख्या–

(A) 'गायत्री छन्द' का प्रयोग प्रायः ऋग्वेद में हुआ है। यह वैदिक छन्द है। इस छन्द में 24 अक्षर होते हैं।

(B) उत्तररामचरितम् के मङ्गलाचरण में **अनुष्टुप् छन्द है**–
इदं कविभ्यः पूर्वेभ्यो नमोवाकं प्रशास्महे।
विन्देम देवतां वाचममृतामात्मनः कलाम्।।
इसमें पथ्यावक्त्र नामक छन्द है, जो अनुष्टुप् छन्द का ही एक भेद है। इस मङ्गलाचरण में द्वादशपदों वाली पत्रावली नामक नान्दी का प्रयोग है। इसमें वाल्मीकि आदि प्राचीन कवियों तथा वाणी (सरस्वती) की वन्दना की गयी है।

(C) उपजाति छन्द के प्रत्येक पाद में 11 वर्ण होते हैं। यह इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा दोनों छन्दों के मिश्रण से बनता है। किसी चरण में इन्द्रवज्रा छन्द होता है और किसी में उपेन्द्रवज्रा। यथा–
विद्या विवादाय धनं मदाय शक्तिः परेषां परपीडनाय।
खलस्य साधोर्विपरीतमेतत् ज्ञानाय दानाय च रक्षणाय।।

(D) किरातार्जुनीयम् के मङ्गलाचरण में 'वंशस्थछन्द' का प्रयोग है। जिसका लक्षण है– ''जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ''
किरातार्जुनीयम् का वस्तुनिर्देशात्मक मङ्गलाचरण है, जो निम्नवत् है– ''**श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीम्......युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचरः**''– किरातार्जुनीयम्–1/1

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-250 प्रश्न-23

12. (C) 13. (B) 14. (B)

15. संस्कृतवाङ्मय में गद्य का प्रयोग सर्वप्रथम किस ग्रन्थ में हुआ है?
(A) ऋग्वेद (B) यजुर्वेद
(C) कादम्बरी (D) हर्षचरितम्

व्याख्या–

(A) ऋग्वेद में ऋचाओं का सङ्कलन है, जो पद्यात्मक है। इसमें गायत्री, उष्णिक्, अनुष्टुप्, बृहती, पंक्ति, त्रिष्टुप्, जगती आदि छन्दों का प्रयोग है। अतः संस्कृतवाङ्मय में सर्वप्रथम पद्य का प्रयोग 'ऋग्वेद' में हुआ है, न कि गद्य का।

(B) **'गद्यात्मको यजुः'** अर्थात् गद्य में रचे गये मन्त्रों को 'यजुष्' (√यज् + उसि प्रत्यय) कहते हैं।

- **''अनियताक्षरावसानं यजुः''** अर्थात् जिसमें पद्यों के समान अक्षरों की संख्या निश्चित नहीं होती, अर्थात् गद्यात्मक भाग को यजुष् कहा जाता है। अतः संस्कृतवाङ्मय में गद्य का सर्वप्रथम प्रयोग यजुर्वेद में मानना चाहिए, इसलिए विकल्प `B' सही है।
- इसीतरह यजुर्वेद के बाद ब्राह्मणग्रन्थ, आरण्यकग्रन्थ और उपनिषद्ग्रन्थ भी अधिकांशतः गद्यात्मक हैं।

(C) बाणभट्ट विरचित कादम्बरी कथा में गद्य का प्रयोग है, लेकिन कादम्बरी के पहले यजुर्वेद में गद्य का सर्वप्रथम प्रयोग हो चुका है।

(D) 'हर्षचरितम्' बाणभट्ट विरचित आख्यायिका ग्रन्थ है, यह भी गद्यात्मक है, किन्तु संस्कृतवाङ्मय की सर्वप्रथम गद्य रचना नहीं है।

16. निम्नलिखित शब्दों में कौन शुद्ध है?
(A) भूपत्युः
(B) भूपतेः
(C) भूपत्ये
(D) भूपत्या

व्याख्या–

- ''पतिः समास एव'' (1.4.8) सूत्र से 'पति' शब्द समास में ही 'घि' संज्ञक होता है। यहाँ 'पति' शब्द का 'भू' शब्द के साथ समास होने से 'भूपति' शब्द बना, जिसका इकारान्त पुँल्लिङ्ग 'हरि' शब्द की तरह रूप चलेगा।
  1. भूपतिः, 2. भूपतिम्, 3. भूपतिना, 4. भूपतये, 5. भूपतेः, 6. भूपतेः, 7. भूपतौ, सम्बो० हे भूपते!
- इसप्रकार 'पति' शब्द जब किसी शब्द के साथ समास के अन्त में आता है तब उसके रूप 'हरि' के समान होते हैं। अतः **'भूपति' शब्द का पञ्चमी और षष्ठी विभक्ति के एकवचन में 'भूपतेः' रूप बनता है।**
  इसलिए विकल्प `B' सही है।
- 'पति' शब्द का रूप– 1. पतिः, 2. पतिम्, 3. पत्या, 4. पत्ये, 5. पत्युः, 6. पत्युः, 7. पत्यौ, सम्बो० हे पते!
- अतः विकल्प में दिये गये भूपत्युः, भूपत्ये, भूपत्या– रूप अशुद्ध हैं, जबकि `B' विकल्प ''भूपतेः'' शुद्ध है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतव्याकरणम् पेज-148 प्रश्न-13

17. 'पितृतुल्यः' शब्द में कौन समास है?
(A) अव्ययीभाव
(B) तत्पुरुष
(C) बहुव्रीहि
(D) द्वन्द्व

सामासिक पद	समासविग्रह	समास का नाम
(A) प्रत्यर्थम्	अर्थम् अर्थं प्रति	अव्ययीभाव
(B) पितृतुल्यः	**पित्रा तुल्यः**	**तत्पुरुष**
(C) द्विपात्	द्वौ पादौ यस्य सः	बहुव्रीहि
(D) पितरौ/मातापितरौ	माता च पिता च	द्वन्द्व

अतः विकल्प `B' सही है।

स्रोत–रचनानुवादकौमुदी कपिलदेव द्विवेदी पेज–94

18. ''वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः'' यह उक्ति किस ग्रन्थ में किसने कही है?
(A) शिवराजविजय में, सेनापति ने
(B) किरातार्जुनीय में, वनेचर ने
(C) किरातार्जुनीय में, युधिष्ठिर ने
(D) शिवराजविजय में, शिवाजी ने

व्याख्या–

(A) एहि, एहि, समये समायातोऽसि (शिवराजविजय, चतुर्थनिःश्वास) आओ, आओ, ठीक समय पर आ गये – दुर्गाध्यक्ष (सेनापति)

(B) **वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः** (किरात०-1/8) – **वनेचर**

(D) ''प्राणाः यान्तु न च धर्मः'' (शिवराजविजय द्वितीय निःश्वास) – शिववीरः (शिवाजी) अर्थात् प्राण भले ही चलें जाय, पर धर्म न जाय। अतः विकल्प `B' सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-155

15. (B) 16. (B) 17. (B) 18. (B)

19. किरातार्जुनीयम् (प्रथमसर्ग) के कथानक में किसका वर्णन नहीं है?
(A) द्वैतवन में पाण्डवों का निवास
(B) गुप्तचर द्वारा दुर्योधन का वृत्तान्त
(C) द्रौपदी का क्रोध
(D) द्रौपदी के क्रोध का युधिष्ठिर द्वारा समर्थन

व्याख्या–

(A) **''स वर्णिलिङ्गी विदितः समाययौ युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचरः''** किरातार्जुनीयम् की इस पंक्ति से स्पष्ट है कि युधिष्ठिर आदि पाण्डव द्वैतवन में निवास करते थे।

(B) 'दुरोदरच्छद्मजितां समीहते, नयेन जेतुं जगतीं सुयोधनः' 'तवानुभावोऽयमवेदि यन्मया निगूढतत्त्वं नयवर्त्म विद्विषाम्' आदि पंक्तियों से स्पष्ट है कि वनेचर रूपी गुप्तचर द्वारा युधिष्ठिर दुर्योधन का वृत्तान्त जानते हैं।

(C) (i) नृपस्य मन्युव्यवसायदीपिनीः उदाजहार द्रुपदात्मजा गिरः, (ii) तथापि वक्तुं व्यवसाययन्ति मां निरस्तनारीसमया दुराधयः, इत्यादि कथनों से स्पष्ट है कि दुर्योधन के उत्कर्ष को सुनकर द्रौपदी द्वारा युधिष्ठिर के ऊपर क्रोध किया जाता है।

(D) द्रौपदी के क्रोध करने पर युधिष्ठिर न तो उसके क्रोध का समर्थन करते हैं और न ही विरोध। किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में युधिष्ठिर केवल एक शान्तचित्त श्रोता के रूप में पहले वनेचर द्वारा हस्तिनापुर का समाचार सुनते हैं, बाद में द्रौपदी की क्रोधपूर्ण फटकार। **अतः विकल्प `D' सही है।**

20. महर्षि कण्व किनके साथ शकुन्तला को पतिगृह भेजते हैं?
(A) शार्ङ्गरव
(B) शारद्वत
(C) गौतमी
(D) उपर्युक्त सभी

व्याख्या– 'गौतमि, आदिश्यन्तां शार्ङ्गरवमिश्राः शकुन्तलानयनाय'

- काश्यपः–'वत्से, इमे अपि प्रदेये। न युक्तमनयोस्त्र गन्तुम्। त्वया सह गौतमी यास्यति'।

अभिज्ञानशाकुन्तलम् (चतुर्थ अङ्क) की इन पंक्तियों से स्पष्ट है कि शकुन्तला को पतिगृह ले जाने के लिए **शार्ङ्गरव, शारद्वत और गौतमी-तीनों हस्तिनापुर तक जाते हैं।** अतः विकल्प `D' सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा TGT व्याख्यात्मक हल पेज-23 प्रश्न-3

21. 'गुरु + आदेशः' में सन्धि होने पर बनता है?

(A) गुरूदेशः	**(B) गुरादेशः**
(C) गुर्वादेशः	**(D) गुरोदेशः**

व्याख्या– ''इको यणचि'' सूत्र से इक् (इ, उ, ऋ, लृ) के बाद असमान स्वर आने पर यण् (य् व् र् ल्) आदेश होता है। इस नियम के अनुसार– गुरु + आदेशः

गुर् उ + आदेशः

गुर् व् + आदेशः

('इको यणचि' सूत्र से 'उ' के स्थान पर 'व्' आदेश) **गुर्वादेशः** अतः विकल्प `C' सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतव्याकरणम् पेज-188

22. 'शीतोष्णम्' पद में क्या समास है?

(A) अव्ययीभाव	**(B) तत्पुरुष**
(C) बहुव्रीहि	**(D) द्वन्द्व**

व्याख्या–

सामासिकपद	समास विग्रह	समास का नाम
A. उपकृष्णम्	कृष्णस्य समीपम्	अव्ययीभाव
B. कवोष्णम्	ईषद् उष्णम्	तत्पुरुष
C. शीतापम्	शीता आपो यस्य तद्	बहुव्रीहि
D. **शीतोष्णम्**	**शीतं च उष्णं च**	**द्वन्द्व**

विशेष–''कवञ्चोष्णे (6.3.107) सूत्र से 'उष्ण' शब्द के परे होने पर तत्पुरुषसमास में ईषद्वाचक 'कु' को 'कव', 'का' और 'कद्' आदेश होता है। यथा– ईषद् उष्णम् = कवोष्णम्, कोष्णम्, कदुष्णं वा। (थोड़ा गरम)

- 'शीतं च उष्णं च' इस लौकिक विग्रह और शीत सु + उष्ण सु इस अलौकिक विग्रह में ''चार्थे द्वन्द्वः'' सूत्र से समास होने पर ''शीतोष्ण'' शब्द बना; ये दोनों शब्द परस्पर विरुद्ध तो हैं ही, अद्रव्यवाची (गुणवाची) भी हैं; अतः **''विप्रतिषिद्धं चानधिकरणवाचि''** (2.4.13) सूत्र द्वारा विकल्प से एकवद्भाव होने पर 'शीतोष्णम्' पद सिद्ध हो जाता है। वैकल्पिक रूप 'शीतोष्णे' भी बनेगा। इसी तरह (i) सुखदुःखम्/सुखदुःखे (ii)जीवितमरणम्/जीवितमरणे (iii) हानिलाभम्/हानिलाभे (iv) जयाजयम्/जयाजये आदि भी द्वन्द्व समास के उदाहरण हैं। अतः विकल्प `D' सही है।
- 'शीतं च उष्णं च = शीतोष्णम्' में विशेषणोभय पद कर्मधारयसमास भी हो सकता है।

19. (D) 20. (D) 21. (C) 22. (D)

23. जब कोई क्रिया कृदन्त रूप से प्रकट की जाती है, तो उस क्रिया के कर्ता अथवा कर्म में कौन सी विभक्ति का प्रयोग होता है?
(A) द्वितीया (B) तृतीया
(C) षष्ठी (D) सप्तमी

व्याख्या–
(A) **''विभाषोपसर्गे''** (2.3.59) सूत्र द्वारा द्यूतार्थक अथवा क्रय विक्रय रूप व्यवहारार्थक 'दिव्' धातु के उपसर्ग युक्त होने पर कर्म में विकल्प से षष्ठी विभक्ति होती है। पक्ष में द्वितीया विभक्ति होती है।
यथा–शतस्य प्रतिदीव्यति (षष्ठी)
शतं प्रतिदीव्यति (द्वितीया)
वह द्यूतक्रीड़ा में सौ रुपये जीतता है।
(B) **''कृत्यानां कर्तरि वा''** (2.3.71) सूत्र से जिन शब्दों के अन्त में कृत्य प्रत्यय लगे रहते हैं, उनका प्रयोग होने पर कर्ता में तृतीया या विकल्प से षष्ठी होती है। जैसे–
(i) गुरुः मया पूज्यः
गुरुः मम पूज्यः — गुरूजी मेरे पूज्य हैं।
(ii) मया सेव्यः हरिः
मम सेव्य हरिः — हरि मेरे सेव्य हैं।
यहाँ 'मया' पद में तृतीया तथा 'मम' पद में षष्ठी विभक्ति है।
(C) **''कर्तृकर्मणोः कृति''** (2.3.65) सूत्र से कृत्प्रत्ययान्त कृदन्त के योग में अनभिहित कर्ता और कर्म में षष्ठी विभक्ति होती है। अतः विकल्प `C' सही है।
जैसे–**(i) कर्ता में षष्ठी**–'कृष्णस्य कृतिः' यहाँ पर क्रिया का बोधक 'कृति' शब्द है जो कि √कृ + क्तिन् प्रत्यय से बना है, और कर्ता 'कृष्ण' है। अतः कृत् प्रत्ययान्त 'कृतिः' शब्द के साथ 'कृष्ण' शब्द में षष्ठी होकर 'कृष्णस्य' रूप बना। अन्य उदाहरण–यानस्य गतिः, शिशूनां रोदनम्, संस्कृतस्य अध्येता आदि।
(ii) कर्म में षष्ठी–'जगतः कर्ता कृष्णः' यहाँ कृत् प्रत्ययान्त कर्ता (कृ + तृच्) पद के योग में कर्मकारक 'जगत्' पद में षष्ठी होकर 'जगतः' रूप बन गया।
अन्य उदाहरण–शत्रूणाम् अघातः, धनस्य प्राप्तिः, विषस्य भोजनम् आदि।
(D) **''षष्ठी चानादरे''** (2.3.38) सूत्र से जहाँ एक की क्रिया से दूसरे की क्रिया लक्षित हो और अनादर अर्थ गम्यमान हो, वहाँ जिसका अनादर किया जाता है उसमें षष्ठी या सप्तमी विभक्ति होती है।
जैसे– (i) रुदति पुत्रे वनं प्राव्राजीत्।
(ii) रुदतः पुत्रस्य वनं प्राव्राजीत्।
रोते हुए पुत्रादि को छोड़कर परिव्राजक अर्थात् संन्यासी बन गया।
यहाँ 'रुदति' में सप्तमी तथा 'रुदतः' में षष्ठी विभक्ति है।

24. निम्नलिखित में शुद्ध शब्द क्या नहीं है?
(A) मञ्चे
(B) अधिमञ्चम्
(C) मञ्चे अधि
(D) मञ्चस्य उपरि

व्याख्या– (A) **आधारोऽधिकरणम्** (1.4.45) सूत्र से 'मञ्च' रूपी आधार की अधिकरणसंज्ञा होकर 'सप्तम्यधिकरणे च' (2.3.36) सूत्र से सप्तमी होकर 'मञ्चे' यह शुद्ध प्रयोग बनेगा।
(B) **अधिशीङ्स्थासां कर्म** (1.4.46) सूत्र से क्रिया के आधार की कर्मसंज्ञा का विधान होने से 'अधिमञ्चम्' प्रयोग भी शुद्ध है। यहाँ अव्ययीभावसमास भी हो सकता है।
(C) **'मञ्चे अधि'** यह शुद्ध प्रयोग नही है क्योंकि 'अधि' उपसर्ग के कारण 'मञ्चम्' ऐसा द्वितीयान्त प्रयोग होना चाहिए था। जबकि यहाँ सप्तम्यन्त प्रयोग है।
अतः विकल्प `C' सही उत्तर होगा।
(D) **षष्ठ्यतसर्थप्रत्ययेन** (2.3.30) सूत्रसे अतसुच् प्रत्ययान्त शब्दों के योग में षष्ठी विभक्ति होती है। यथा–
ग्रामस्य उपरि उपरिष्टात् वा। मञ्चस्य उपरि उपरिष्टात् वा।

25. कादम्बरी का उपजीव्य ग्रन्थ है?
(A) महाभारत (B) अवन्तिसुन्दरी कथा
(C) बृहत्कथा (D) वासवदत्ता

व्याख्या– (A) **महाभारत**–महाभारत के लेखक का नाम कृष्णद्वैपायन वेदव्यास है, वे ऋषि पराशर तथा सत्यवती के पुत्र थे। महाभारत में एक लाख से अधिक श्लोक हैं, इसे 'शतसाहस्रीसंहिता' भी कहते हैं। यह 18 पर्वों में विभक्त है, इसका प्रधानरस 'शान्त' माना गया है। कुछ लोग 'वीररस' को भी इसका प्रधानरस मानते हैं। महाभारत को

23. (C) 24. (C) 25. (C)

उपजीव्य मानकर निम्नलिखित ग्रन्थों की रचना हुई–

ग्रन्थ	लेखक	उपजीव्य
(i) अभिज्ञानशाकुन्तलम्	कालिदास	महाभारत आदिपर्व
(ii) किरातार्जुनीयम्	भारवि	महाभारत वनपर्व
(iii) शिशुपालवधम्	माघ	महाभारत सभापर्व
(iv) नैषधीयचरितम्	श्रीहर्ष	महाभारत वनपर्व
(v) नलचम्पू	त्रिविक्रमभट्ट	महाभारत वनपर्व

- 'श्रीमद्भगवद्गीता' महाभारत के भीष्मपर्व (अध्याय–25-42) से उद्धृत है।

(B) **अवन्तिसुन्दरीकथा**– यह महाकवि दण्डी की रचना है। इसमें मालवनरेश की पुत्री अवन्तिसुन्दरी का प्रणयवृत्तान्त वर्णित है।

(C) **बृहत्कथा**–गुणाढ्य के द्वारा 'बृहत्कथा' पैशाची प्राकृत में लिखी गयी। इसे बाणभट्ट की **कादम्बरी कथा का उपजीव्य** माना जाता है। अतः विकल्प `C' सही है।

(D) **वासवदत्ता**–इस एकमात्र गद्यकाव्य के लेखक सुबन्धु हैं। इसका कथानक पूर्णतः काल्पनिक है। इसमें राजकुमार कन्दर्पकेतु तथा राजकुमारी वासवदत्ता के प्रेम और विवाह का रोचक वर्णन है। यह प्रत्यक्षरश्लेषप्रधान रचना मानी जाती है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-31

26. नियमपूर्वक विद्या स्वीकार करने पर वक्ता में किस विभक्ति का प्रयोग होता है?
(A) तृतीया (B) चतुर्थी
(C) पञ्चमी (D) षष्ठी

व्याख्या–

(A) **तृतीया**– ''हेतौ'' (2.3.23) सूत्र द्वारा हेतु अर्थ के वाची शब्दों में तृतीया विभक्ति होती है।
यथा–(i) दण्डेन घटः (दण्ड से घड़ा बनता है)
(ii) पुण्येन दृष्टः हरिः (पुण्य के कारण हरि का दर्शन हुआ)
(iii) अध्ययनेन प्रयागे वसति (अध्ययन के कारण प्रयाग में रहता है।

(B) **चतुर्थी**–''तादर्थ्ये चतुर्थी वाच्या'' (वा0) तादर्थ्य में चतुर्थी विभक्ति होती है, अर्थात् जिस प्रयोजन के लिए कोई कार्य किया जाता है, उस प्रयोजन में चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे–मुक्तये हरिं भजति।

(C) **पञ्चमी**–''आख्यातोपयोगे'' (1.4.29) सूत्र से नियमपूर्वक विद्या स्वीकार करने पर वक्ता/आख्याता (पढ़ाने वाला) अपादान संज्ञक होता है, और उसमें **पञ्चमी विभक्ति** होती है। जैसे– उपाध्यायात् अधीते (वह उपाध्याय से नियमपूर्वक पढ़ता है) अतः विकल्प `C' सही है।

(D) **षष्ठी**– ''षष्ठी हेतुप्रयोगे'' (2.3.26) सूत्र द्वारा वाक्य में 'हेतु' शब्द का प्रयोग होने पर हेतु (कारण) में तथा 'हेतु' शब्द में षष्ठीविभक्ति होती है। यथा–अन्नस्य हेतोः वसति। (वह अन्न के कारण रहता है)

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतव्याकरणम् पेज-99 प्रश्न-49

27. उत्तररामचरितम् में अदृश्यरूप में सीता किसके साथ पञ्चवटी में आती हैं?
(A) गोदावरी (B) गङ्गा
(C) तमसा (D) वासन्ती

व्याख्या–

- भवभूति विरचित उत्तररामचरितम् (तृतीय अङ्क) में सीता अदृश्य रूप से गङ्गा के साथ पञ्चवटी में आती हैं, क्योंकि तृतीय अङ्क का प्रारम्भ मुरला और तमसा की बातचीत से होता है– **''ततः प्रविशति नदीद्वयम्''** उस समय सीता पञ्चवटी में नहीं थीं।
- गोदावरी के अगाध सरोवर से निकलती हुई सीता को देखकर तमसा एक श्लोक कहती है, जिसमें सीता का वर्णन है– **''परिपाण्डुदुर्बलकपोलसुन्दरं ---- विरहव्यथेव वनमेति जानकी''** (उ.रा.च. 3/4) इससे भी सिद्ध होता है कि सीता के पञ्चवटी में आने से पहले तमसा और मुरला वहाँ उपस्थित हैं। अतः तृतीय अङ्क में अदृश्य रूप से सीता तमसा के साथ रहती तो है, परन्तु पञ्चवटी में आती है गङ्गा के साथ।
- गोदावरी, गङ्गा, तमसा सभी नदी पात्र हैं। वासन्ती, वनदेवी और सीता की सखी है। जो पंचवटी में राम के साथ रहती है।

28. किरातार्जुनीयम् का नायक कौन है?
(A) युधिष्ठिर (B) अर्जुन
(C) शिव (किरातवेशधारी) (D) भीम

व्याख्या– ● किरातार्जुनीयम् महाकाव्य के नायक अर्जुन हैं, क्योंकि पाशुपतास्त्र की प्राप्ति इस ग्रन्थ का प्रयोजन है, और यह अस्त्र किरातवेशधारी शिव से अर्जुन को प्राप्त हुआ है। इन्द्रकील पर्वत पर तपस्या करने भी अर्जुन ही जाते हैं। किरातवेषधारी शिव से युद्ध भी अर्जुन ही करते हैं। इस ग्रन्थ का नामकरण भी किरातवेषधारी शिव और अर्जुन

26. (C) 27. (B) 28. (B)

के नाम पर किया गया है इससे सिद्ध होता है कि **इस महाकाव्य के नायक अर्जुन ही हैं।**

- युधिष्ठिर पाँचों पाण्डवों में सबसे बड़े हैं और प्रथमसर्ग में वनेचर की बातों को सुनते हैं, किन्तु ये नायक नहीं हैं।
- किरातवेषधारी शिव किरातार्जुनीयम् के सहनायक हैं।
- भट्टनारायण विरचित वेणीसंहारम् के भीम धीरोद्धत कोटि के नायक हैं।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-169 प्रश्न-37

29. ''बाणस्तु पञ्चाननः'' यह उक्ति किसकी है?
(A) भामह
(B) राजशेखर
(C) क्षेमेन्द्र
(D) श्रीचन्द्रदेव

व्याख्या–

कवि	उक्ति
(A) भामह	शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्
(B) राजशेखर	शब्दार्थौ ते शरीरम् (काव्यपुरुष की कल्पना)
(C) क्षेमेन्द्र	औचित्यं रससिद्धस्य स्थिरं काव्यस्य जीवितम्
(D) **श्रीचन्द्रदेव**	**बाणस्तु पञ्चाननः**

अतः विकल्प `D' सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-192 प्रश्न-37

30. नाट्य में कितने रस होते हैं?
(A) 7 **(B) 8**
(C) 9 **(D) 10**

व्याख्या–

- आचार्य भरत और धनञ्जय के अनुसार नाटक में आठ रस माने गये हैं– **''अष्टौ नाट्ये रसाः स्मृताः''**
अतः विकल्प `B' सही है।
- आचार्य मम्मट आदि ने 'शान्तरस' को नवम रस के रूप में स्वीकार किया है–''काव्ये तु शान्तोऽपि नवमो रसः''
- आचार्य विश्वनाथ ने नवरस के अतिरिक्त 'वात्सल्य' नामक दसवें रस की कल्पना की है।
- रुद्रट ने 'प्रेयान्' नामक दसवें रस की उद्भावना की है, तथा रूपगोस्वामी ने 'मधुर' नामक भक्तिरस को प्रधानरस माना है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-303

31. 'सुश्री' शब्द के पञ्चमी विभक्ति के एकवचन में क्या रूप होता है?
(A) सुश्रीः **(B) सुश्रिये**
(C) सुश्रियः **(D) सुश्रिया**

व्याख्या–'सुश्री' (सुन्दर शोभावाला) ईकारान्त पुंलिङ्ग शब्द का सातों विभक्तियों में एकवचन का रूप निम्नवत् है–

1. सुश्रीः 2. सुश्रियम्
3. सुश्रिया 4. सुश्रिये
5. सुश्रियः 6. सुश्रियः
7. सुश्रियि, सम्बो० हे सुश्रीः।

अतः विकल्प `C' सही है।

32. शहाबुद्दीन नामक यवन ने निम्नलिखित में क्या नहीं किया?
(A) गजनीदेश पर आक्रमण
(B) महमूद के वंशजों की हत्या
(C) दिल्लीश्वर पृथ्वीराज की हत्या
(महमूद गजनवी की हत्या)
(D) दिल्ली पर आक्रमण

व्याख्या–आयोग का यह प्रश्न विवादित हो सकता है, क्योंकि इस प्रश्न में दिये गये सभी विकल्प गलत हैं। मैं कोष्ठक के अन्दर एक विकल्प प्रस्तुत कर रहा हूँ, जो इस प्रश्न का सही उत्तर हो सकता है।

(A) **गजनी देश पर आक्रमण**–''गोरदेशवासी कश्चित् शहाबुद्दीन नामा प्रथमं गजनीदेशमाक्रम्य....."(अर्थात् शहाबुद्दीन नामक किसी गोरदेश के निवासी ने पहले गजिनी देश पर आक्रमण किया)

(B) **महमूद गजनबी के वंशजों की हत्या**–''महामदकुलं धर्मराजलोकाध्वन्यध्वनीनं विधाय सर्वाः प्रजाश्च पशुमारं मारयित्वा........" (महमूद के वंशजों को यमलोक के मार्ग का पथिक बनाकर अर्थात् मारकर)

(C) **दिल्लीश्वर पृथ्वीराज की हत्या**–''ततो दिल्लीश्वरं पृथ्वीराजं कान्यकुब्जेश्वरं जयचन्द्रं च.......उभावपि विशस्य'' (दिल्ली के सम्राट् पृथ्वीराज तथा कन्नौज के अधिपति राजा जयचन्द्र........दोनों को मारकर)

(D) **दिल्ली पर आक्रमण**–''पञ्चाशदुत्तर-द्वादशशतमितेऽब्दे (1250) दिल्लीमश्वयाम्बभूव...." (संवत् 1250 में घुड़सवार सेना के साथ दिल्ली पर चढ़ाई कर दी)

नोट– उपर्युक्त सभी उद्धरण शिवराजविजय से है।

29. (D) 30. (B) 31. (C) 32. (C)

विशेष–महमूद गजनबी की हत्या शहाबुद्दीन ने नहीं की थी। बल्कि वह स्वयं अपनी मृत्यु से विक्रमसंवत् 1087में मर गया था– **''अथ कालक्रमेण सप्ताशीत्युत्तरसहस्त्रतमे (1087) वैक्रमाब्दे सशोकं कष्टं च प्राणांस्त्यक्तवति महामदे....''** (विक्रमसंवत् 1087 में शोक एवं कष्ट के साथ महमूद गजनबी की मृत्यु हो जाने पर......) इससे स्पष्ट है कि शहाबुद्दीन ने दिल्लीश्वर पृथ्वीराज की हत्या तो की थी किन्तु महमूद गजनबी की हत्या नही की थी।
अतः कोष्ठक में दिया गया विकल्प `C' सही है।

33. महाकवि भवभूति के राम किस प्रकृति के नायक हैं?
(A) धीरप्रशान्त (B) धीरललित
(C) धीरोद्धत (D) धीरोदात्त

ग्रन्थ	नायक	प्रकृति
(A) मृच्छकटिकम्	चारुदत्त	धीरप्रशान्त
(B) स्वप्नवासवदत्तम्	उदयन	धीरललित
(C) वेणीसंहारम्	भीम	धीरोद्धत
(D) उत्तररामचरितम् और महावीरचरितम्	**राम**	**धीरोदात्त**

अतः विकल्प `D' सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-298

34. कादम्बरी के प्रारम्भ (मङ्गलाचरण) में बाणभट्ट ने कितने श्लोकों की रचना की है–
(A) 10 (B) 15
(C) 20 (D) 25

व्याख्या– कादम्बरी कथा के प्रारम्भ में महाकवि बाणभट्ट ने वंशस्थ छन्दों में **20 श्लोकों** की रचना की है, जो निम्नवत् हैं–

श्लोक — **वर्ण्यविषय**

1. रजोजुषे जन्मनि सत्त्ववृत्तये – निर्विकार त्रिगुणमय परब्रह्म परमेश्वर की वन्दना
2. जयन्ति बाणासुरमौलिलालिता–शङ्कर के चरणधूलि की वन्दना
3. जयत्युपेन्द्रः स चकार दूरतो – नृसिंह भगवान् की वन्दना
4. नमामि भर्वोश्चरणाम्बुजद्वयम् – गुरु भर्वु की वन्दना
5. अकारणाविष्कृतवैरदारुणात् – दुर्जनों की निन्दा
6. कटु क्वणन्तो मलदायकाः खलाः – दुर्जनों की कटुवाणी की निन्दा और सज्जनों की मधुरवाणी की प्रशंसा।
7. सुभाषितं हारि विशत्यधो गलात् – दुर्जन द्वारा सुन्दर वचनों की उपेक्षा एवं सज्जनों द्वारा सुभाषितों का आदर
8. स्फुरत्कलालाप-विलासकोमला – कथाप्रशंसा
9. हरन्ति कं नोज्ज्वलदीपकोपमैः – कथाप्रशंसा
10. बभूव वात्स्यायनवंशसम्भवो – कविबाणभट्ट का वंशवर्णन
11. उवास यस्य श्रुतिशान्तकल्मषे – कविवंशवर्णन (कुबेर की विद्वत्ता)
12. जगुर्गृहेऽभ्यस्तसमस्तवाङ्मयैः – कविवंशवर्णन (कुबेर की विद्वत्ता)
13. हिरण्यगर्भो भुवनाण्डकादिव – कविवंशवर्णन (अर्थपति)
14. विवृण्वतो यस्य विसारि वाङ्मयम् – कविवंशवर्णन (अर्थपति की विद्वत्ता)
15. विधानसम्पादित दानशोभितैः – कविवंशवर्णन (अर्थपति का यज्ञ)
16. स चित्रभानुं तनयं महात्मनाम् – कविवंशवर्णन (चित्रभानु)
17. महात्मनो यस्य सुदूरनिर्गताः – कविवंशवर्णन (चित्रभानु)
18. दिशामलीकालकभङ्गतां गतः – कविवंशवर्णन (चित्रभानु)
19. सरस्वतीपाणिसरोजसम्पुट – कविवंशवर्णन (बाणभट्ट)
20. द्विजेन तेनाक्षतकण्ठकौण्ठ्यया – कविवंशवर्णन (बाणभट्ट की कादम्बरी कथा की प्रशंसा)

अतः विकल्प `C' सही है।

35. ''एको रसः करुण एव'' – यह उक्ति उत्तररामचरितम् के किस अङ्क से सम्बन्धित है?
(A) प्रथम अङ्क
(B) द्वितीय अङ्क
(C) तृतीय अङ्क
(D) चतुर्थ अङ्क

व्याख्या–
(A) लौकिकानां हि साधूनामर्थं वागनुवर्तते – प्रथम अङ्क
(B) सतां सद्भिः सङ्गः कथमपि हि पुण्येन भवति–द्वितीय अङ्क
(C) **एको रसः करुण एव निमित्तभेदात् – तृतीय अङ्क**
(D) गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः– चतुर्थ अङ्क
अतः विकल्प `C' सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-25

33. (D) 34. (C) 35. (C)

36. किरातार्जुनीयम् की कथा महाभारत के किस पर्व से सम्बन्धित है?
(A) आदिपर्व (B) सभापर्व
(C) वनपर्व (D) भीष्मपर्व

	महाभारतकापर्व	सम्बन्धित ग्रन्थ
(A)	आदिपर्व	अभिज्ञानशाकुन्तलम् (कालिदास)
(B)	सभापर्व	शिशुपालवधमहाकाव्यम् (माघ)
(C)	**वनपर्व**	**किरातार्जुनीयमहाकाव्यम् (भारवि)**
(D)	भीष्मपर्व	श्रीमद्भगवद्गीता (व्यास)

अतः विकल्प `C' सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-168 प्रश्न-14

37. ''पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम्'' यह वचन किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है–
(A) उत्तररामचरितम् (B) नीतिशतकम्
(C) किरातार्जुनीयम् (D) अभिज्ञानशाकुन्तलम्

ग्रन्थ	सूक्ति
(A) उत्तररामचरितम् (2.26)	''पुराभूतः शोको विकलयति मां नूतन इव''
(B) नीतिशतकम् (दैवपद्धति)	''प्रायो गच्छति यत्र भाग्यरहितः तत्रैव यान्त्यापदः''
(C) **किरातार्जुनीयम् (1/41)**	**''पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम्''**
(D) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (7/35)	''प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः, सरस्वती श्रुतमहतां महीयताम्''

अतः विकल्प `C' सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-221 प्रश्न-37

38. कादम्बरी के प्रथम मङ्गलाचरण में किसकी वन्दना की गयी है?
(A) ब्रह्मा (B) विष्णु
(C) महेश (D) त्रिगुणमय परब्रह्म

व्याख्या– बाणभट्ट विरचित कादम्बरी के प्रथमश्लोक के मङ्गलाचरण में त्रिगुणमय परब्रह्म की वन्दना की गयी है।
यथा– रजोजुषे जन्मनि सत्त्ववृत्तये स्थितौ प्रजानां प्रलये तमःस्पृशे।
अजाय सर्गस्थितिनाशहेतवे त्रयीमयाय त्रिगुणात्मने नमः॥
यहाँ 'त्रयीमयाय' और 'त्रिगुणात्मने' पद से स्पष्ट है कि कादम्बरी कथामुख के मङ्गलाचरण में **त्रिगुणमयपरब्रह्म की वन्दना** की गयी है। इस माङ्गलिक पद्य में वंशस्थ छन्द है। अतः विकल्प `D' सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-31

39. निम्नलिखित में कौन शब्द शुद्ध है?
(A) कुमार्यः (B) कुमार्या
(C) कुमार्योः (D) उपर्युक्त सभी

व्याख्या– 'कुमारी' ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द है, जिसका रूप 'नदी' की तरह चलेगा।
(A) प्रथमाविभक्ति का रूप–कुमारी कुमार्यौ कुमार्यः
(B) तृतीया विभक्ति का रूप–कुमार्या कुमारीभ्याम् कुमारीभिः
(C) षष्ठी विभक्ति का रूप–कुमार्याः कुमार्योः कुमारीणाम्
(D) स्पष्ट है कि **'कुमार्यः, कुमार्या, कुमार्योः'** ये सभी 'कुमारी' शब्द के रूप हैं, अतः उपर्युक्त सभी रूप शुद्ध हैं, इसलिए विकल्प `D' सही है।

40. मेघदूतम् में किस छन्द का प्रयोग किया गया है?
(A) उपजाति (B) वंशस्थ
(C) मन्दाक्रान्ता (D) भुजङ्गप्रयात

व्याख्या–
- महाकवि कालिदास द्वारा विरचित मेघदूत नामक खण्डकाव्य (गीतिकाव्य) में प्रारम्भ से लेकर अन्त तक केवल एकमात्र **मन्दाक्रान्ता छन्द** का ही प्रयोग किया गया है। जिसका लक्षण है– **''मन्दाक्रान्ता जलधिषडगैर्म्भौ नतौ ताद् गुरू चेत्''** अर्थात् जिस छन्द के प्रत्येक चरण में मगण भगण नगण तगण तगण गुरु गुरु वर्ण होते हैं, उसे मन्दाक्रान्ता छन्द कहते हैं, इसके चौथे, छठवें एवं सातवें अक्षर पर यति (विराम) होती है। इसके प्रत्येक चरण में 17 वर्ण होते हैं। यथा–**कश्चित् कान्ताविरहगुरुणा स्वाधिकारात् प्रमत्तः**
अतः विकल्प `C' सही है।
- **उपजाति**–अनन्तरोदीरितलक्ष्मभाजौ, पादौ यदीयावुपजातयस्ताः। इत्थं किलान्यास्वपि मिश्रितासु, स्मरन्ति जातिष्विदमेव नाम।। उपजाति के प्रत्येक पाद में 11 वर्ण होते हैं। यह इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा दोनों छन्दों के मिश्रण से बनता है। किसी चरण में इन्द्रवज्रा छन्द होता है और किसी में उपेन्द्रवज्रा। यथा–
कर्पूरगौरं करुणावतारं, संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे, भवं भवानीसहितं नमामि॥

36. (C) 37. (C) 38. (D) 39. (D) 40. (C)

- **वंशस्थ**– ''जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ''
  वंशस्थ छन्द के प्रत्येक चरण में 12 वर्ण होते हैं, इसके प्रत्येक चरण में क्रमशः ''जगण तगण जगण रगण'' होते हैं। बृहत्त्रयी (किरातार्जुनीयम् शिशुपालवधम्, नैषधीयचरितम्) ग्रन्थों के प्रथमसर्ग के अन्तिम कुछ श्लोकों को छोड़कर सम्पूर्ण सर्ग में वंशस्थ छन्द का ही प्रयोग है। यथा–
  (i) श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीम् – किरातार्जुनीयम् 1/1
  (ii) श्रियः पतिः श्रीमति शासितुं जगत्– शिशुपालवधम् 1/1
  (iii) निपीय यस्य क्षितिरक्षिणः कथाम् – नैषधीयचरितम् 1/1
- **भुजङ्गप्रयात**– ''भुजङ्गप्रयातं चतुर्भिर्यकारैः''
  भुजङ्गप्रयात छन्द के प्रत्येक चरण में चार यगण होते हैं, इस प्रकार प्रत्येक चरण में 12 वर्ण होते हैं।
  यथा– नमस्ते सदा वत्सले मातृभूमे
  त्वया हिन्दुभूमे सुखं वर्धितोऽहम्
  महामङ्गले पुण्यभूमे त्वदर्थे
  पतत्वेष कायो नमस्ते नमस्ते।।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-228 प्रश्न-25

41. ''विपदि धैर्यमथाभ्युदये क्षमा'' यह उक्ति किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है?
(A) उत्तररामचरितम् (B) किरातार्जुनीयम्
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (D) नीतिशतकम्

व्याख्या– ग्रन्थ उक्ति
(A) उत्तररामचरितम्–'सन्तापकारिणो बन्धुजनविप्रयोगा भवन्ति'
(B) किरातार्जुनीयम् (1/33) – ''अबन्ध्यकोपस्य विहन्तुरापदां भवन्ति वश्याः स्वयमेव देहिनः''
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (प्रथम अङ्क) – 'विनीतवेषेण प्रवेष्टव्यानि तपोवनानि नाम' (दुष्यन्त)
(D) **नीतिशतकम् (सुजनपद्धति)** – 'विपदि धैर्यमथाभ्युदये क्षमा' विपत्ति में धैर्य रखना चाहिए। (द्रुतविलम्बित छन्द) अतः विकल्प `D' सही है।

42. निम्नलिखित में सही शब्द क्या है?
(A) उपरोक्त (B) उपर्युक्त
(C) उपरिउक्त (D) उपरूक्त

व्याख्या– उपरि + उक्त = उपर्युक्त
यहाँ ''इको यणचि'' सूत्र से 'इ' के स्थान पर 'य्' आदेश होकर यण् सन्धि होकर **'उपर्युक्त'** यह रूप सिद्ध होगा, अतः विकल्प `B' सही उत्तर है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतव्याकरणम् पेज-161 प्रश्न-82

43. रूपक के भेदक तत्त्व, जिनके आधार पर उनमें अन्तर किया जाता है, वे कितने हैं?
(A) 3 (B) 4
(C) 5 (D) 10

व्याख्या–
(A) ''वस्तु नेता रसस्तेषां भेदकः'' दशरूपक के इस कथन के अनुसार **(i) वस्तु (कथावस्तु) (ii)नायक और (iii) रस**-रूपकों के यही तीन भेदक तत्त्व हैं।
अतः विकल्प `A' सही है।
(B) नाट्यवृत्तियाँ चार है– (i) सात्वती (ii) भारती (iii) कैशिकी, (iv) आरभटी
इनमें 'भारती' शब्दवृत्ति है, शेष तीनों अर्थवृत्तियाँ कहलाती हैं।
(C) अर्थप्रकृतियाँ पाँच हैं–बीज, बिन्दु, पताका, प्रकरी तथा कार्य।
(D) रस पर आश्रित होने वाला रूपक 10 प्रकार का ही होता है– 1. नाटक 2. प्रकरण 3. भाण 4. प्रहसन 5.डिम 6. व्यायोग 7. समवकार 8. वीथी 9. अङ्क 10. ईहामृग
नाटकं सप्रकरणं भाणः प्रहसनं डिमः।
व्यायोगसमवकारौ वीथ्यङ्केहामृगा इति॥
(दशरूपक, प्रथमप्रकाश)

44. क्रिया से कौन उक्त होते हैं?
(A) कर्ता (B) कर्म
(C) भाव (D) उपर्युक्त सभी

व्याख्या– क्रिया से कर्ता, कर्म और भाव सभी उक्त होंगे। जब कर्ता उक्त होगा तो कर्तृवाच्य का वाक्य होगा, जब कर्म उक्त होगा तो कर्मवाच्य और भाव (क्रिया) के उक्त होने पर भाववाच्य होगा। इस प्रकार क्रिया के द्वारा कर्ता, कर्म और भाव सभी उक्त हो सकते हैं।
अतः विकल्प `D' सही है।

45. निम्नलिखित में कौन सा वाक्य शुद्ध है?
(A) शतस्त्रिय पठन्ति
(B) शताः स्त्रीणां कियन्मूल्यम्
(C) विंशतिः फलानि सन्ति
(D) त्रिशताः बालिका पठन्ति

व्याख्या– ● **''शतादिः सङ्ख्या''** (पाणिनीयलिङ्गानुशासनम्–146) सूत्र के अनुसार संख्यावाचक शतम्, सहस्रम् आदि शब्द नपुंसकलिङ्ग में होते हैं।

41. (D) 42. (B) 43. (A) 44. (D) 45. (C)

- ''**विंशत्यादिरानवतेः**'' (पाणिनीयलिङ्गानुशासनम्-13) सूत्र के अनुसार 'विंशति' शब्द से लेकर 'नवति' पर्यन्त संख्यावाची शब्द स्त्रीलिङ्ग में होते हैं। अतः एकोनविंशतिः (19) से नवनवतिः (99) तक के शब्द स्त्रीलिङ्ग एकवचन में होते हैं।
- उक्त नियम के अनुसार 'शतः, शताः, त्रिशताः' रूप नहीं बनेंगे क्योंकि 'शतम्' शब्द नपुंसकलिङ्ग में कहा गया है। इस दृष्टि से विकल्प `C' सही उत्तर होगा।
- किन्तु प्रश्नपत्र में मुद्रणदोष के कारण '**सन्ति**' के स्थान पर '**शन्ति**' रूप छप गया है, कृपया उसे सुधार लिया जाय। साथ ही आयोग से निवेदन है कि संस्कृत के पेपर में मुद्रणदोषों से बचा जाना चाहिए, क्योंकि संस्कृत भाषा में तो एक हलन्त, विसर्ग, अनुस्वार आदि की गलती से भी महान् अनर्थ हो सकता है।

46. क्रुध्, द्रुह्, ईर्ष्य्, असूय् धातुओं तथा इनके समान अर्थ वाली धातुओं के योग में जिस पर क्रोध किया जाता है, उसकी क्या संज्ञा होती है?

(A) करण
(B) सम्प्रदान
(C) अपादान
(D) अधिकरण

व्याख्या– • **क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः** (1.4.37) सूत्र के अनुसार क्रुध्, द्रुह्, ईर्ष्य्, असूय् धातुओं तथा इनके समान अर्थ वाली धातुओं के योग में जिस पर क्रोध किया जाता है, उसकी **सम्प्रदानसंज्ञा** होती है। यथा– हरये क्रुध्यति, हरये द्रुह्यति, हरये असूयति। अतः विकल्प `B' सही है।

- '**साधकतमं करणम्**' (1.4.42) सूत्र से क्रिया की सिद्धि में जो पदार्थ सबसे अधिक उपकारक (सहायक) होता है, उसकी करणकारक संज्ञा होती है। यथा– बालकः जलेन स्नाति।
- ''**पराजेरसोढः**'' (1.4.26) सूत्र से यदि √जि धातु के पूर्व 'परा' उपसर्ग लगा हो तो जो असह्य पदार्थ होता है, उसकी अपादानसंज्ञा होती है। यथा– अध्ययनात् पराजयते।
- **आधारोऽधिकरणम्** (1.4.45) सूत्र से कर्ता और कर्म में रहने वाली क्रिया का, कर्ता और कर्म के द्वारा, जो आधार होता है, उसकी अधिकरणसंज्ञा होती है। यथा– (i) कटे आस्ते (ii) मोक्षे इच्छा अस्ति (iii) सर्वस्मिन् आत्मा अस्ति।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतव्याकरणम् पेज-98 प्रश्न-38

47. उत्तररामचरितम् में कितने अङ्क है?

(A) 6
(B) 7
(C) 10
(D) 9

	व्याख्या– ग्रन्थ	अङ्कों की संख्या
(A)	स्वप्नवासवदत्तम् (भास)	6
	अभिषेकनाटकम् (भास)	6
	अविमारकम् (भास)	6
	कुन्दमाला (दिङ्नाग)	6
	वेणीसंहारम् (भट्टनारायण)	6
(B)	**उत्तररामचरितम् (भवभूति)**	**7**
	प्रतिमानाटकम् (भास)	7
	अभिज्ञानशाकुन्तलम् (कालिदास)	7
	मुद्राराक्षसम् (विशाखदत्त)	7
	महावीरचरितम् (भवभूति)	7
	अनर्घराघवम् (मुरारि)	7
	प्रसन्नराघवम् (जयदेव)	7
(C)	मृच्छकटिकम् (शूद्रक)	10
	मालतीमाधवम् (भवभूति)	10
	बालरामायणम् (राजशेखर)	10
(D)	शारिपुत्रप्रकरणम् (अश्वघोष)	09

अतः विकल्प `B' सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-183 प्रश्न-84

48. कादम्बरी का प्रधानरस क्या है?

(A) वीर
(B) शृङ्गार
(C) करुण
(D) शान्त

	व्याख्या– ग्रन्थ	प्रधानरस
(A)	किरातार्जुनीयम् (भारवि)	– वीररस
(B)	**कादम्बरी (बाणभट्ट)**	**– शृङ्गार**
(C)	उत्तररामचरितम् (भवभूति)	– करुण
(D)	बुद्धचरितम् (अश्वघोष)	– शान्तरस

अतः विकल्प `B' सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-191 प्रश्न-18

46. (B) 47. (B) 48. (B)

49. तिङ् प्रत्याहार में कितने प्रत्यय होते हैं?

(A) 18 **(B) 12**
(C) 7 **(D) 21**

व्याख्या– (A) तिङ् प्रत्याहार में **18 प्रत्यय** आते हैं–

परस्मैपद	**आत्मनेपद**
तिप् तस् झि	त आताम् झ
सिप् थस् थ	थास् आथाम् ध्वम्
मिप् वस् मस्	इट् वहि महिङ्

(B) सनादि प्रत्यय 12 होते हैं–
1. सन् 2. क्यच् 3. काम्यच् 4. क्यङ् 5. क्यष् 6. क्विप् 7. णिच् 8. यङ् 9. यक् 10. आय 11. ईयङ् 12. णिङ्

(C) कृत्यसंज्ञक प्रत्यय 07 होते हैं।
तव्यत्, तव्य, अनीयर्, यत्, क्यप्, ण्यत्, केलिमर्।

- शतृ और शानच्– इन दो प्रत्ययों की '**सत् संज्ञा**' होती है।
- क्त और क्तवतु – इन दो प्रत्ययों की '**निष्ठासंज्ञा**' होती है।
- तरप् और तमप् – इन दो प्रत्ययों की '**घ संज्ञा**' होती है।

(D) सुप् प्रत्याहार में 21 प्रत्यय आते हैं– सु औ जस्, अम् औट् शस्, टा भ्याम् भिस्, ङे भ्याम् भ्यस्, ङसि भ्याम् भ्यस्, ङस् ओस् आम्, ङि ओस् सुप्।अतः विकल्प `A' सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतव्याकरणम् पेज-50 प्रश्न-211

50. नायक कितने प्रकार के होते हैं?

(A) 3 **(B) 4**
(C) 5 **(D) 6**

व्याख्या–

(A) नायिका तीन प्रकार की होती है– (i) स्वकीया (ii) परकीया (iii) साधारणस्त्री ''**स्वान्या साधारणस्त्रीति तद्गुणा नायिका त्रिधा**'' (दशरूपक, द्वितीय प्रकाश)

- स्वकीया नायिका तीन प्रकार की होती है–
(i) मुग्धा (ii) मध्या (iii) प्रगल्भा

(B) **नायक चार प्रकार के होते हैं–**
(i) धीरललित (ii) धीरप्रशान्त (iii) धीरोदात्त (iv) धीरोद्धत ''**भेदैश्चतुर्धा ललितशान्तोदात्तोद्धतैरयम्**– (दशरूपक द्वितीयप्रकाश) अतः विकल्प `B' सही है।

- शृङ्गार की दृष्टि से नायक के चार भेद किये गये हैं–
(i) दक्षिण नायक (ii) शठनायक
(iii) धृष्टनायक (iv)अनुकूलनायक

(C) नाटक में **पाँच अर्थप्रकृतियाँ** हैं–
1. बीज 2. बिन्दु
3. पताका 4. प्रकरी 5. कार्य

बीजबिन्दुपताकाख्यप्रकरीकार्यलक्षणाः।
अर्थप्रकृतयः पञ्च ता एताः परिकीर्तिताः॥ (दशरूपक)

- नाटक में पाँच कार्यावस्थायें हैं–
1. आरम्भ 2. यत्न
3. प्राप्त्याशा 4. नियताप्ति
5. फलागम

अवस्थाः पञ्च कार्यस्य प्रारब्धस्य फलार्थिभिः।
आरम्भ-यत्न-प्राप्त्याशा-नियताप्ति-फलागमः॥
(दशरूपक, प्रथमप्रकाश)

- नाटक में **पाँच सन्धियाँ** मानी गयी हैं–
1. मुखसन्धि
2. प्रतिमुखसन्धि
3. गर्भसन्धि
4. अवमर्शसन्धि (विमर्शसन्धि)
5. उपसंहृति/निर्वहणसन्धि

''**मुखप्रतिमुखे गर्भः सावमर्शोपसंहृतिः**'' – (दशरूपक)

5 अर्थप्रकृतियाँ + 5 कार्यावस्था = 5 सन्धि

1. बीज	+ आरम्भ	= मुखसन्धि
2. बिन्दु	+ प्रयत्न	= प्रतिमुखसन्धि
3. पताका	+ प्राप्त्याशा	= गर्भसन्धि
4. प्रकरी	+ नियताप्ति	= अवमर्शसन्धि
5. कार्य	+ फलागम	= उपसंहृति

(D) मम्मट के अनुसार **काव्यप्रयोजन 6** होते हैं–
1. यशसे (यश की प्राप्ति)
2. अर्थकृते (धनोपार्जन के लिए)
3. व्यवहारविदे (उचित आचार व्यवहार का ज्ञान)
4. शिवेतरक्षतये (अमंगल के नाश हेतु)
5. सद्यःपरनिर्वृतये (तत्काल परमानन्द की प्राप्ति)
6. कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे (कान्ता/प्रिया के समान उपदेश देने के लिए)।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-303

49. (A) 50. (B)

51. उत्तररामचरितम् के तृतीय अङ्क की घटना किस स्थान पर घटित होती है?
(A) वाल्मीकि आश्रम (B) चित्रकूट
(C) अयोध्या (D) पञ्चवटी

अङ्क	**घटना-स्थान**
1. प्रथम अङ्क	अयोध्या
2. द्वितीय अङ्क	दण्डकारण्य का जनस्थान प्रदेश
3. तृतीय अङ्क	**दण्डकारण्य का पञ्चवटी प्रदेश**
4. चतुर्थ अङ्क	महर्षि वाल्मीकि के आश्रम का समीपवर्ती स्थान
5. पञ्चम अङ्क	वाल्मीकि के आश्रम का समीपवर्ती स्थान
6. षष्ठ अङ्क	वाल्मीकि के आश्रम का समीपवर्ती स्थान
7. सप्तम अङ्क	वाल्मीकि के आश्रम का समीपवर्ती स्थान

अतः विकल्प `D' सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा TGT व्याख्यात्मक पेज-61 प्रश्न-76

52. प्रसिद्ध टीकाकार मल्लिनाथ के अनुसार मेघदूतम् में कितने पद्य हैं?
(A) 115 (B) 120
(C) 121 (D) 125

व्याख्या– ● मेघदूतम् में 'सञ्जीवनी' नाम की टीका के रचयिता महामहोपाध्याय मल्लिनाथ जी के अनुसार पूर्वमेघ में 63 और उत्तरमेघ में 52 इस प्रकार इसमें कुल 115 श्लोक हैं।

- टीकाकार मल्लिनाथ ने कुल 121 पद्यों में सञ्जीवनी टीका लिखी है किन्तु 06 पद्यों को उन्होंने प्रक्षिप्त मानकर कुल 115 पद्यों को ही प्रामाणिक कहा है।
  अतः विकल्प `A' सही है।
- यद्यपि आयोग ने इसका उत्तर `C' अर्थात् 121 माना है, मुझे लगता है इसमें पुनः विचार किया जाना चाहिए।
- मेघदूत के श्लोकों के विषय में बहुत मतभेद है, कुछ विद्वानों का मत द्रष्टव्य है।

मेघदूत की टीका, टीकाकार और श्लोकसंख्या

1. काश्मीरी टीकाकार वल्लभदेव की टीका में – कुल = 112 श्लोक-1 प्रक्षिप्त = 111 श्लोक प्रामाणिक
2. स्थिरदेव की टीका में – 111 श्लोक
3. दक्षिणावर्त, पूर्णसरस्वती, और परमेश्वर की टीकाओं में – 110 श्लोक
4. विजयसूरि और मेघराज की टीकाओं में – 127 श्लोक
5. जनार्दन, लक्ष्मीनिवास, सुमतिविजय और मेघलता आदि टीका में – 126 श्लोक
6. नेमिदूत, शीलदूत, सारोद्धारिणी, दिवाकर उपाध्याय और कनककीर्तिगण की टीका में – 125 श्लोक
7. सरस्वतीतीर्थ और क्षेमहंसमणि की टीका में–123 श्लोक
8. चारित्रवर्धन की टीका में – 122 श्लोक
9. जिनसेन की टीका में – 120 श्लोक
10. सिंहली अनुवाद में – 118 श्लोक
11. तिब्बती अनुवाद में– 117 श्लोक
12. **मल्लिनाथ की 'सज्जीवनी' टीका में -121-06=115 श्लोक**
13. मकरन्द मिश्र की टीका में – 118 श्लोक
14. रामनाथ तर्कालङ्कार की टीका में – 111 श्लोक
15. शाश्वत, सनातनगोस्वामी, कल्याणमल्ल, कविरत्न चक्रवर्ती और हरगोविन्द वाचस्पति की टीका में– 115 श्लोक
16. भगीरथमिश्र और भरतमलिक की टीका में – 114 श्लोक
17. विल्सन के आलोचनात्मक संस्करण में – 116 श्लोक
18. गिल्डमाइस्टर के अनुसार – 113 श्लोक
19. स्टेन्तसलर के अनुसार – 112 श्लोक
20. मैकडॉनल के संस्करण में – 111 श्लोक
21. डॉ. एस. के. डे के विचार में – 110 या 111 श्लोक
22. जे. हर्टेल के अनुसार– 108 श्लोक
23. पार्श्वाभ्युदय के अनुसार– 120 श्लोक

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-198 प्रश्न 25

53. कर्मवाच्य में कर्म में क्या विभक्ति होती है?
(A) प्रथमा (B) द्वितीया
(C) तृतीया (D) षष्ठी

व्याख्या– ● कर्मवाच्य में क्रिया के द्वारा कर्म उक्त होता है, अतः उक्तत्वात् **कर्म में प्रथमा विभक्ति** तथा कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है। अतः विकल्प `A' सही है।

- कर्तृवाच्य में कर्ता उक्त होता है, अतः कर्ता में प्रथमाविभक्ति तथा कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है।
- जहाँ प्रथमादि विभक्तियाँ नहीं होती वहाँ 'शेषे षष्ठी' सूत्र से षष्ठी विभक्ति होती है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा व्याकरणम् पेज-128 प्रश्न 90

51. (D) 52. (A/C) 53. (A)

54. निम्नलिखित शब्दों में सही क्या है?
(A) अन्तरर्राष्ट्रिय (B) अन्तराराष्ट्रिय
(C) अन्ताराष्ट्रिय (D) अन्तर्राष्ट्रीय

व्याख्या– अन्तर् + राष्ट्रिय
अन्त + राष्ट्रिय (**''रो रि''** सूत्र से रेफ के बाद
अन्ताराष्ट्रिय रेफ आने से पूर्व रेफ का लोप)
''ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः'' सूत्र से ढकार और रेफ के लोप में निमित्तभूत जो ढकार और रेफ, उनके परे होने पर पूर्व अण् के स्थान पर दीर्घ होता है।
अतः विकल्प `C' सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-236 प्रश्न 44

55. मेघदूतम् में मेघ को कितने पदार्थों का सम्मिश्रण कहा गया है?
(A) 3 (B) 4
(C) 5 (D) 6

व्याख्या– महाकवि कालिदास द्वारा विरचित मेघदूतम् नामक खण्डकाव्य (गीतिकाव्य) के पञ्चम श्लोक में लिखा है कि– **''धूमज्योतिः सलिलमरुतां सन्निपातः क्व मेघः''** अर्थात् धूम, अग्नि, जल और वायु का सम्मिश्रण कहाँ मेघ? इससे स्पष्ट है कि (i) धूम = धुँआ (ii) ज्योतिः = तेज/अग्नि (iii) सलिलम् = जल (iv) मरुत् = वायु –इन चार पदार्थों का सम्मिश्रण ही मेघ कहलाता है।
अतः विकल्प `B' सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-37

56. 'चुर्' धातु के सम्बन्ध में क्या सही कथन है?
(A) चुर् धातु में णिच् प्रत्यय नहीं लगता है।
(B) चुर् धातु से स्वार्थ में णिच् होता है।
(C) चुर् धातु में णिच् प्रत्यय लगाना ऐच्छिक है
(D) चुर् धातु केवल आत्मनेपदी धातु है।

व्याख्या– ● **''सत्याप - पाश - रूप - वीणा - तूल - श्लोक - सेना - लोम - त्वच - वर्म - वर्ण - चूर्ण - चुरादिभ्यो णिच्''** (3.1.25)
सत्याप, पाश, रूप, वीणा, तूल, श्लोक, सेना, लोम, त्वच, वर्म, वर्ण, चूर्ण आदि नामधातुओं और चुर् आदि गणपठित धातुओं से परे **स्वार्थ में णिच् प्रत्यय** होता है।
अतः विकल्प `B' सही है।

- 'चुर्' आदि धातुओं से तो स्वार्थ में णिच् होता ही है, णिच् प्रत्यय ऐच्छिक नहीं अपितु अनिवार्य है और 'चुर्' धातु परस्मैपदी होती है, न कि आत्मनेपदी। इसका रूप होगा– चोरयति, चोरयतः चोरयन्ति। अतः विकल्प A, C,और D असत्यकथन हैं, जबकि विकल्प `B' सही है।

57. 'अष्टन्' शब्द का प्रथमा विभक्ति का क्या रूप होगा?
(A) अष्टः (B) अष्टन्
(C) अष्टौ (D) अष्टाः

व्याख्या– ● 'अष्टन्' शब्द का रूप– 1. अष्टौ 2. अष्टौ 3. अष्टाभिः 4. अष्टाभ्यः 5. अष्टाभ्यः 6. अष्टानाम् 7. अष्टासु
- **''अष्टन आ विभक्तौ''** (7.2.84) सूत्र से यदि अष्टन् शब्द के बाद व्यञ्जनवर्ण से आरम्भ होने वाले विभक्ति प्रत्यय जुड़े हों तो 'न्' के स्थान में 'आ' हो जाता है, किन्तु 'न्' के स्थान में 'आ' का होना वैकल्पिक है। 1. अष्ट 2. अष्ट 3. अष्टभिः 4. अष्टभ्यः 5. अष्टभ्यः 6. अष्टानाम् 7. अष्टसु
- इस प्रकार 'अष्टौ' और 'अष्ट' दोनों सही हैं जबकि ''अष्टः, अष्टन्, अष्टाः'' ये रूप कहीं नहीं बनते।

अतः विकल्प `C' सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतव्याकरणम् पेज-129 प्रश्न 01

58. अव्यय शब्दों में किस विभक्ति प्रत्यय का लोप होता है?
(A) प्रथमा का
(B) द्वितीया का
(C) तृतीया का
(D) सभी का

व्याख्या– **''अव्ययादाप् सुपः''** (2.4.82) सूत्र से अव्यय से परे 'आप्' तथा 'सुप्' का लोप होता है।
- 'आप्' के द्वारा 'चाप्, टाप्, डाप्' स्त्रीलिङ्ग प्रत्ययों का ग्रहण होता है।
- 'सुप्' के द्वारा इक्कीस विभक्तियों का ग्रहण होता है। इस प्रकार अव्यय से परे सभी विभक्तियों में सभी सुप् प्रत्ययों का लोप होना चाहिए अतः विकल्प `D' सही होना चाहिए। किन्तु आयोग ने इसका उत्तर `A' माना है, मुझे लगता है आयोग को इसके उत्तर में पुनर्विचार करना चाहिए। ऐसा भी हो सकता है कि यह मेरी अज्ञानता हो, और मैं गलत भी हो सकता हूँ।

54. (C) 55. (B) 56. (B) 57. (C) 58. (D/A)

59. 'कादम्बरी' निम्नलिखित में से क्या है?
(A) आख्यायिका (B) कथा
(C) रूपक (D) उपन्यास

काव्यविधा	**उदाहरण**
(A) आख्यायिका	हर्षचरितम्
(B) **कथा**	**कादम्बरी,** वासवदत्ता आदि
(C) रूपक	अभिज्ञानशाकुन्तलम्, मृच्छकटिकम् आदि
(D) उपन्यास	शिवराजविजय आदि

अतः विकल्प `B' सही है।

विशेष–'धिया निबद्धेयमतिद्वयी कथा' 'कथाजनस्याभिनवावधूरिव' 'नवैः पदार्थैरुपपादिताः कथाः' इत्यादि कथनों से सिद्ध है कि बाणभट्ट ने कादम्बरी के मङ्गलाचरण में इसे स्वयं 'कथा' कहकर सम्बोधित किया है।

- 'कादम्बरीरसज्ञानामाहारोऽपि न रोचते' 'कादम्बरी रसभरेण समस्त एव' सहर्षचरितारब्धादद्भुतकादम्बरी कथा' इत्यादि कथनों से भी स्पष्ट है कि 'कादम्बरी' कथा ग्रन्थ है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-192 प्रश्न 22

60. 'असज्जनात् कस्य भयं न जायते' यह वचन किस ग्रन्थ का है?
(A) नीतिशतकम् (B) मेघदूतम्
(C) किरातार्जुनीयम् (D) कादम्बरी

व्याख्या–

	ग्रन्थ	**सूक्ति**
(A)	नीतिशतकम् –	'नास्ति येषां यशःकाये जरामरणजं भयम्'
(B)	मेघदूतम् –	कामार्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु– (पूर्वमेघ-5)
(C)	किरातार्जुनीयम्–	'अमर्षशून्येन जनस्य जन्तुना न जातहार्दन न विद्विषादरः' (1/33)
(D)	**कादम्बरी –**	**'असज्जनात् कस्य भयं न जायते'** (कथामुख-05)

अतः विकल्प `D' सही है।

61. 'हल्'–प्रत्याहार में कितने वर्ण होते हैं?
(A) 33 (B) 34
(C) 35 (D) 36

व्याख्या– ● 'हल्' प्रत्याहार के अन्तर्गत 'हयवरट्' सूत्र से लेकर अन्तिम 'हल्' सूत्र तक के वर्णों की गणना की जायगी, इस प्रकार कुल 34 वर्ण आते हैं।

- किन्तु 'हल्' प्रत्याहार के अन्तर्गत व्यञ्जन वर्ण गिने जाते हैं और संस्कृतवर्णमाला में व्यञ्जनवर्णों की संख्या 33 मानी गयी है, अतः 'हयवरट्' सूत्रस्थ 'ह' वर्ण तथा 'हल्' सूत्रस्थ 'ह' वर्ण की दो बार गिनती करना पुनरावृत्ति मात्र होगी, अतः मेरी दृष्टि में इसका उत्तर `A' अर्थात् 33 वर्ण मानना चाहिए। किन्तु आयोग ने इसका उत्तर `B' माना है। इसका निर्णय सुधी पाठकजन विद्वानों से परामर्श करके स्वयं कर लें।

62. निम्नलिखित में से 'युष्मद्' शब्द के लिए क्या सही कथन है?
(A) मध्यमपुरुषवाची है।
(B) सम्बोधन पद का प्रयोग वर्जित है।
(C) तीनों लिङ्गों में एक समान रूप होते हैं
(D) उपर्युक्त सभी सही है।

व्याख्या– ● 'युष्मद्' (तुम) शब्द मध्यमपुरुषवाचक है, इसके सम्बोधन में रूप नहीं चलते हैं तथा पुंलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग, नपुंसकलिङ्ग तीनों लिङ्गों में इसके रूप एकसमान चलते हैं। अतः विकल्प `D' सही है।

यथा– (i) त्वं युवकः असि –पुंलिङ्ग
(ii) त्वं युवती असि –स्त्रीलिङ्ग
(iii) त्वं मित्रम् असि – नपुंसकलिङ्ग

- युष्मद् शब्द का रूप तीनों लिङ्गों के सातों विभक्तियों के एकवचन में इस प्रकार होंगे– 1. त्वम् 2. त्वाम् 3.त्वया 4. तुभ्यम्, 5. त्वत्, 6. तव, 7. त्वयि
- 'युष्मद्' 'अस्मद्' आदि शब्दों का सम्बोधन रूप नहीं होता।

63. श्रव्यकाव्य के कितने भेद होते हैं?
(A) 1 (B) 3
(C) 5 (D) 6

व्याख्या–
- मुख्यतः काव्य के दो भेद हैं– (i) श्रव्यकाव्य (ii) दृश्यकाव्य **''दृश्यश्रव्यत्वभेदेन पुनः काव्यं द्विधास्मृतम्''** (सा. द.)
- श्रव्यकाव्य के पुनः तीन भेद किये गये हैं–
  (i) गद्यकाव्य
  (ii) पद्यकाव्य
  (iii) चम्पूकाव्य

अतः विकल्प `B' सही है।

59. (B) 60. (D) 61. (A/B) 62. (D) 63. (B)

काव्य
- श्रव्य
  - गद्य
    - कथा
    - आख्यायिका
  - पद्य
    - महाकाव्य
    - खण्डकाव्य
  - चम्पू
- दृश्य
  - रूपक (नाटक आदि 10 भेद)
  - उपरूपक (नाटिका आदि 18 भेद)

64. मेघदूतम् के प्रारम्भ में किस प्रकार का मङ्गलाचरण किया गया है?
(A) आशीर्वादात्मक (B) नमस्कारात्मक
(C) वस्तुनिर्देशात्मक (D) उपर्युक्त सभी

व्याख्या– ● ग्रन्थ की निर्विघ्न समाप्ति के लिए ग्रन्थारम्भ में मङ्गलाचरण किया जाता है। मङ्गलाचरण तीन प्रकार का होता है– (i) आशीर्वादात्मक (ii) नमस्क्रियात्मक, (iii) वस्तुनिर्देशात्मक

''आशीर्नमस्क्रिया वस्तुनिर्देशो वाऽपि तन्मुखम्''

● मेघदूतम् में **वस्तुनिर्देशात्मक मङ्गलाचरण** किया गया है। अतः विकल्प `C' सही है।

ग्रन्थ	मङ्गलाचरण	प्रकृति
1. अभिज्ञानशाकुन्तलम्	या सृष्टिः स्रष्टुराद्या .....(स्रग्धरा)	आशीर्वादात्मक
2. उत्तररामचरितम्	इदं कविभ्यः पूर्वेभ्यो नमो..... (अनुष्टुप्)	नमस्कारात्मक
3. मेघदूतम्	कश्चित् कान्ता विरहगुरुणा (मन्दाक्रान्ता)	वस्तुनिर्देशात्मक

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-202 प्रश्न-96

65. 'ग्रीष्म + ऋतुः' में सन्धि होने पर क्या शब्द बनता है?
(A) ग्रीष्मृतुः
(B) ग्रीष्मरतुः
(C) ग्रीष्मर्तुः
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

व्याख्या– ग्रीष्म + ऋतुः
ग्रीष्म् अ + ऋतुः
ग्रीष्म् अर् तुः ('आद् गुणः' सूत्र से अ + ऋ = अर् हो गया)
ग्रीष्मर्तुः (गुणसन्धि)
अतः विकल्प `C' सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतव्याकरणम् पेज-185

66. 'युवन्' शब्द का प्रथमा बहुवचन में क्या रूप होता है?
(A) युवानः (B) युवा
(C) युवानम् (D) यूनः

व्याख्या– ● 'युवन्' शब्द का प्रथमा विभक्ति का रूप– **''युवा युवानौ युवानः''** अतः विकल्प `A' सही है।

● 'युवन्' शब्द नकारान्त पुंलिङ्ग शब्द का रूप सातों विभक्तियों के एकवचन में इस प्रकार चलेगा– 1. युवा 2. युवानम् 3. यूना 4. यूने 5. यूनः 6. यूनः 7. यूनि, सम्बो० हे युवन्।

स्रोत–रचनानुवादकौमुदी पेज-137

67. मेघदूतम् के अनुसार अलकापुरी में यक्ष का घर कुबेर के महल से किस दिशा में बताया गया है?
(A) पूर्व (B) उत्तर
(C) पश्चिम (D) दक्षिण

व्याख्या–उत्तरमेघ के 15वें श्लोक में विरही यक्ष, मेघ से अपने घर का परिचय बताते हुए कहता है कि – अलकापुरी में मेरा घर कुबेर के घर के उत्तर में है– **''तत्रागारं धनपतिगृहानुत्तरेणास्मदीयम्''** अतः विकल्प `B' सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-200 प्रश्न-62

68. उत्तररामचरितम् का 'छायाङ्क' नाम से कौन सा अङ्क प्रसिद्ध है?
(A) द्वितीय अङ्क (B) तृतीय अङ्क
(C) चतुर्थ अङ्क (D) पञ्चम अङ्क

उत्तररामचरितम् के अङ्क	अङ्कों के नाम	श्लोक संख्या
प्रथम अङ्क	चित्रदर्शनाङ्क	51
द्वितीय अङ्क	पञ्चवटीप्रवेशाङ्क	30
तृतीय अङ्क	छायाङ्क	48
चतुर्थ अङ्क	कौशल्याजनकयोगाङ्क	29

64. (C) 65. (C) 66. (A) 67. (B) 68. (B)

पञ्चम अङ्क	कुमारविक्रमाङ्क	35
षष्ठ अङ्क	कुमारप्रत्यभिज्ञानाङ्क	42
सप्तम अङ्क	सम्मेलनाङ्क	21
		256

अतः विकल्प `B' सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-234 प्रश्न-05

69. ''बलिं याचते वसुधाम्'' इस वाक्य में 'बलि' में द्वितीया विभक्ति क्यों होती है?
(A) बलि गौण कर्म है
(B) अपादानादि की विशेष विवक्षा नहीं, अपितु अविवक्षा है।
(C) ''अकथितं च'' सूत्र से कर्मसंज्ञा होती है
(D) उपर्युक्त सभी कारणों से

व्याख्या– (A) 'बलिं याचते वसुधाम्' इस उदाहरण में– गौणकर्म–बलिम्, प्रधानकर्म–वसुधा, द्विकर्मकधातु–√याच् = याचते अतः 'अकथितं च' सूत्र से गौणकर्म 'बलि' की भी अपादान की अविवक्षा में कर्मसंज्ञा होकर द्वितीया विभक्ति हो गयी।

(B) इस उदाहरण में अपादान की विवक्षा होने पर वाक्य बनता– 'बलेः याचते वसुधाम्।' यहाँ 'बलि' की अपादान संज्ञा होकर पञ्चमी एकवचन में 'बलेः' रूप बना। किन्तु अपादान की विशेष विवक्षा न होने पर 'अकथितं च' सूत्र से 'बलि' की भी कर्मसंज्ञा हुई और द्वितीया विभक्ति होकर वाक्य बना–बलिं याचते वसुधाम्।

(C) यदि पाणिनीयसूत्र ''अकथितं च'' (1.4.51) नहीं होता तो यहाँ 'बलि' की कर्मसंज्ञा नहीं हो सकती थी, और द्वितीया विभक्ति का विधान भी नहीं हो पाता।

(D) इस प्रकार सिद्ध होता है कि 'बलिं याचते वसुधाम्' इस वाक्य के 'बलिम्' पद में द्वितीयाविभक्ति का विधान उपर्युक्त तीनों कारणों से होता है, अतः विकल्प `D' सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प है।

70. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में श्लोकों की संख्या क्या है?
(A) 34
(B) 18
(C) 22
(D) 24

अभिज्ञानशाकुन्तलम् के अङ्क	श्लोक संख्या
1. प्रथम अङ्क	34
2. द्वितीय अङ्क	18
3. तृतीय अङ्क	24
4. चतुर्थ अङ्क	**22**
5. पञ्चम अङ्क	31
6. षष्ठ अङ्क	32
7. सप्तम अङ्क	35
	196

अतः विकल्प `C' सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-163 प्रश्न-133

71. 'भू' धातु का लोट्लकार मध्यमपुरुष के बहुवचन में क्या रूप होता है?
(A) भवत
(B) भव
(C) भवतम्
(D) भवतु

व्याख्या– 'भू' धातु का लोट्लकार

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्र.पु.	भवतु	भवताम्	भवन्तु
म.पु.	भव	भवतम्	**भवत**
उ.पु.	भवानि	भवाव	भवाम

अतः विकल्प `A' सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा TGT व्याख्यात्मक पेज-16 प्रश्न-73

72. उत्तररामचरितम् में निम्नलिखित में से कौन सा पात्र नहीं है?
(A) नायक
(B) विदूषक
(C) नायिका
(D) सूत्रधार

व्याख्या–(A) उत्तररामचरितम् के नायक– राम।

(B) उत्तररामचरितम् में विदूषक पात्र का अभाव है।

(C) उत्तररामचरितम् की नायिका– सीता।

(D) उत्तररामचरितम् के प्रथम अङ्क में नान्दीपाठ के बाद सूत्रधार का प्रवेश होता है।

अतः विकल्प `B' सही है।

69. (D) 70. (C) 71. (A) 72. (B)

73. अकारान्त पुँल्लिङ्ग 'प्रथम' शब्द का तृतीया विभक्ति बहुवचन में क्या रूप होता है?
(A) प्रथमे **(B) प्रथमेन**
(C) प्रथमैः **(D) प्रथमौ**

व्याख्या– ● 'प्रथम' अकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्द का तृतीया विभक्ति में रूप ''प्रथमेन प्रथमाभ्याम् **प्रथमैः**'' अतः विकल्प `C' सही है।

● 'प्रथम' शब्द का सातों विभक्तियों के एकवचनान्त रूप–
1. प्रथमः 2. प्रथमम्
3. प्रथमेन 4. प्रथमाय
5.प्रथमात् 6. प्रथमस्य
7. प्रथमे।

74. लौकिक प्रयोग की दृष्टि से कौन अशुद्ध है?
(A) सत्यमेव जयते **(B) धर्मः जयति सर्वदा**
(C) न्यायो जयति सर्वत्र **(D) सत्यं जयति सर्वत्र**

व्याख्या– ● 'जि' धातु परस्मैपदी है, अतः इसके परस्मैपदी रूप ही शुद्ध हैं।

जयति	जयतः	जयन्ति
जयसि	जयथः	जयथ
जयामि	जयावः	जयामः

● **'विपराभ्यां जेः'** (1.3.19) सूत्र द्वारा 'वि' तथा 'परा' उपसर्गपूर्वक 'जि' धातु से आत्मेनपद होता है। यथा–विजयते, पराजयते आदि।

● 'सत्यमेव जयते' इस प्रयोग में 'जि' धातु का आत्मनेपद रूप प्रयुक्त है, जो कि लौकिक प्रयोग की दृष्टि से अशुद्ध है, अतः विकल्प `A' सही है।

● किन्तु ''सत्यमेव जयते'' यह मुण्डकोपनिषद् का वाक्य है, जो कि हमारे भारतवर्ष का ध्येयवाक्य (Motto)भी है, अतः लौकिक प्रयोग की दृष्टि से भले ही अशुद्ध दिखायी पड़ रहा हो, किन्तु उपनिषद्वाक्य होने के कारण यह आर्षप्रयोग है।

75. कर्म के उक्त होने पर कर्ता में कौन विभक्ति होती है?
(A) प्रथमा **(B) द्वितीया**
(C) सम्बोधन **(D) तृतीया**

व्याख्या– ● कर्म के उक्त होने पर कर्ता अनुक्त होगा, और अनुक्त कर्ता में **''कर्तृकरणयोस्तृतीया''** (2.3.18)सूत्र से तृतीया विभक्ति होगी। अतः विकल्प `D' सही है।

● एक वाक्य में क्रिया के द्वारा कोई एक ही उक्त होगा, यदि कर्म उक्त हो गया तो कर्ता अनुक्त हो जायेगा।

● कर्म उक्त होगा तो कर्म में प्रथमा विभक्ति होगी, और वह कर्मवाच्य का वाक्य होगा। वैसे भी कर्मवाच्य का कर्ता तृतीयान्त ही होता है।

● इस प्रकार उक्त कर्म में प्रथमा, अनुक्त कर्म में द्वितीया, अनुक्तकर्ता में तृतीया, तथा सम्बोधन में प्रथमा विभक्ति होती है।

76. ''ध्यानावस्थितैर्भवादृशैर्न ज्ञायते कालवेगः'' यह उक्ति किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है?
(A) उत्तररामचरितम् **(B) कादम्बरी**
(C) शिवराजविजयः **(D) किरातार्जुनीयम्**

व्याख्या– पं. अम्बिकादत्तव्यास विरचित **'शिवराजविजय'** नामक ऐतिहासिक उपन्यास के प्रथम निश्वास में यह कथन ब्रह्मचारिगुरु द्वारा योगिराज के लिए कहा गया है–
''ध्यानावस्थितैर्भवादृशैर्न ज्ञायते कालवेगः''
अर्थात् ध्यानमग्न आप जैसे योगियों को समय की गति का पता नहीं चलता। अतः विकल्प `C' सही है।

ग्रन्थ	**उक्ति**
(A) उत्तररामचरितम्	'भगवतः कालप्रियानाथस्य यात्रायामार्यमिश्रान् विज्ञापयामि'
(B) कादम्बरी (शुकनासोपदेश)	भवादृशा एव भवन्ति भाजनानि उपदेशानाम्।
(C) **शिवराजविजय**	ध्यानावस्थितैर्भवादृशैर्न ज्ञायते कालवेगः
(D) किरातार्जुनीयम्	'भवादृशेषु प्रमदाजनोदितं भवत्यधिक्षेप इवानुशासनम्' (किरात0–1/28)

77. जिस कारण या प्रयोजन से कोई कार्य किया जाता है, उसमें क्या विभक्ति होती है?
(A) तृतीया **(B) चतुर्थी**
(C) पञ्चमी **(D) षष्ठी**

व्याख्या–
(A) **''हेतौ''** (2.3.23) सूत्र के अनुसार जिस कारण या प्रयोजन से कोई कार्य किया जाता है, या होता है, उस हेतु अर्थ के वाची शब्दों में **तृतीया विभक्ति** होती है।
यथा– (i) पुण्येन दृष्टो हरिः। (ii) अध्ययनेन वसति।
अतः विकल्प `A' सही है

73. (C) 74. (A) 75. (D) 76. (C) 77. (A)

(B) **'तादर्थ्ये चतुर्थी वाच्या'** (वा0) इस वार्तिक के अनुसार तादर्थ्य में चतुर्थी विभक्ति होती है। अर्थात् जिस प्रयोजन के लिए कोई कार्य किया जाता है, उस प्रयोजन में चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा–मुक्तये हरिं भजति

(C) **अकर्तर्यृणे पञ्चमी** (2.3.24) सूत्र से हेतुभूत ऋणवाचक शब्द से पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा– शताद् बद्धः।

(D) **'षष्ठी हेतुप्रयोगे'** (2.3.26) सूत्र से वाक्य में 'हेतु' शब्द का प्रयोग होने पर हेतु = कारण में तथा 'हेतु' शब्द में षष्ठी विभक्ति होती है। यथा– अन्नस्य हेतोर्वसति।

78. उत्तररामचरितम् में भागीरथी किसकी पूजा करने के बहाने सीता को लाती हैं?

(A) शिव (B) विष्णु
(C) ब्रह्मा (D) सूर्य

व्याख्या–भवभूति विरचित उत्तररामचरितम् (तृतीय अङ्क) में उल्लेख है कि भागीरथी (गङ्गा) सीता को अपने पुरातन श्वसुर **सूर्य की पूजा** करने के बहाने गोदावरी परिसर के पास पञ्चवटी तक लाती हैं– **''आत्मनः पुराणश्वसुरमेतावतो मानवस्य राजर्षिवंशस्य प्रसवितारं सवितारम् अपहतपाप्मानं देवं स्वहस्तापचितैः पुष्पैरुपतिष्ठस्व।''** यहाँ 'सवितारम्' पद का अर्थ 'सूर्य' है। अतः विकल्प `D' सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-24

79. जो बात अन्य विभक्तियों से न कहने की इच्छा हो, उसमें किस विभक्ति का प्रयोग होता है?

(A) द्वितीया (B) तृतीया
(C) पञ्चमी (D) षष्ठी

व्याख्या–

(A) अपादानादि की अविवक्षा में **''अकथितं च''** सूत्र से कर्मसंज्ञा होकर द्वितीया विभक्ति का विधान होता है। यथा–गोपालः गां पयः दोग्धि।

(B) **''अपवर्गे तृतीया''** (2.3.6) सूत्र से अपवर्ग (फलप्राप्ति) द्योतित होने पर काल और मार्गवाची शब्दों से अत्यन्त संयोग गम्यमान होने पर तृतीया विभक्ति होती है। यथा– अह्ना अनुवाकः अधीतः।

(C) अन्य, आरात्, इतर, ऋते आदि शब्दों के योग में पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा– आरात् वनात्।

(D) **''षष्ठी शेषे''** (2.3.50) सूत्र से शेष अर्थों में षष्ठी विभक्ति होती है। शेष अर्थ हैं– कर्म, करण, सम्प्रदान आदि कारकों से भिन्न तथा प्रातिपदिकार्थ से भिन्न।

- इसप्रकार जहाँ प्रथमा से सप्तमी पर्यन्त किसी भी विभक्ति का प्रयोग विहित नही है, ऐसे सम्बन्धमात्र की विवक्षा में षष्ठी विभक्ति होती है– **'कर्मादीनामपि सम्बन्धमात्रविवक्षायां षष्ठ्येव'** यथा–सतां गतम्, मातुः स्मरति आदि।

अतः विकल्प `D' सही है।

80. बाणभट्ट के गद्य की रीति क्या है?

(A) वैदर्भी
(B) गौडी
(C) पाञ्चाली
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

व्याख्या– रीति	**कवि**
A. वैदर्भीरीति	कालिदास
B. गौडीरीति	भवभूति
C. **पाञ्चाली रीति**	**बाणभट्ट**

अतः विकल्प `C' सही है।

- पाञ्चाली रीति के विषय में कहा गया है कि– **शब्दार्थयोः समो गुम्फः पाञ्चालीरीतिरुच्यते।**
- कवि कालिदास के विषय में प्रसिद्धि है कि– **'वैदर्भीरीतिसन्दर्भे कालिदासो विशिष्यते'** वैदर्भी कविता स्वयं वृतवती श्रीकालिदासं वरम्'

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-191 प्रश्न-01

81. 'सुख + ऋतः' में सन्धि होने पर क्या शब्द बनता है?

(A) सुखार्तः
(B) सुखर्तः
(C) सुखरतः
(D) सुखारतः

व्याख्या–**'ऋते च तृतीया समासे'** इस वार्तिक से यदि पूर्व में अवर्ण हो और पर में 'ऋत' शब्द हो, और दोनों शब्दों में तृतीया तत्पुरुष समास हो गया हो तो (अ + ऋ = आर्) वृद्धिसन्धि होगी। सुखार्तः (सुख से युक्त)

'सुखेन ऋतः' इस विग्रह में तृतीयातत्पुरुषसमास होकर **'सुख + ऋत'** बना। यहाँ पर **'आद्गुणः'** सूत्र से गुणसन्धि हो सकती थी। उसे बाधकर **'ऋते च तृतीया समासे'** इस

78. (D) 79. (D) 80. (C) 81. (A)

वार्तिक से 'सुख' में अकार और 'ऋतः' के ऋकार के स्थान पर **'उरण् रपरः'** सूत्र की सहायता से रपर सहित 'आर्' वृद्धि हुई– **सुख् + आर् + त** बना, वर्णसम्मेलन और रेफ का ऊर्ध्वगमन होकर 'सुखार्तः' सिद्ध हुआ। अतः विकल्प `A' सही है।

- इसीतरह धनेन ऋतः = धनार्तः
  दुःखेन ऋतः = दुःखार्तः
  भयेन ऋतः = भयार्तः आदि भी बनेंगे।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतव्याकरणम् पेज-75 प्रश्न-49

82. निमित्त शब्द का अर्थ रखने वाले शब्दों का प्रयोग होने पर सर्वनाम शब्द में किस विभक्ति का प्रयोग होता है?
(A) द्वितीया
(B) तृतीया
(C) चतुर्थी
(D) द्वितीया से सप्तमी तक सभी का

व्याख्या– **'निमित्तपर्यायप्रयोगे सर्वासां प्रायदर्शनम्'** इस वार्तिक से निमित्त शब्द का अर्थ रखने वाले शब्दों का प्रयोग होने पर सर्वनाम शब्दों में प्रायः सभी विभक्तियाँ होती हैं; जैसे–

1. किं निमित्तम् 2. किं निमित्तम्
3. केन निमित्तेन 4. कस्मै निमित्ताय
5. कस्मात् निमित्तात् 6. कस्य निमित्तस्य
7. कस्मिन् निमित्ते

अतः विकल्प `D' सही है।

83. 'दिव्' धातु का लोट्लकार प्रथमपुरुष के द्विवचन में क्या रूप होता है?
(A) दीव्यतम्
(B) दीव्यतात्
(C) दीव्यताम्
(D) दीव्यत

व्याख्या–दिवादिगणीय 'दिव्' धातु का लोट्लकार का रूप

प्र. पु.	दीव्यतु/दीव्यतात्	**दीव्यताम्**	दीव्यन्तु
म. पु.	दीव्य/दीव्यतात्	दीव्यतम्	दीव्यत
उ. पु.	दीव्यानि	दीव्याव	दीव्याम

स्पष्ट है कि 'दिव्' धातु का लोट्लकार प्र. पु. द्विवचन का रूप **'दीव्यताम्'** बनेगा, अतः विकल्प `C' सही है।

84. बाणभट्ट किस सम्राट् के सभापण्डित थे?
(A) चन्द्रगुप्त (B) यशोवर्मा
(C) हर्षवर्धन (D) शाहजहाँ

	सम्राट्	**सभापण्डित**
A.	चन्द्रगुप्त	चाणक्य
B.	यशोवर्मा	भवभूति
C.	**हर्षवर्धन**	**बाणभट्ट**
D.	शाहजहाँ	पण्डितराजजगन्नाथ

अतः विकल्प `C' सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-12

85. ''नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण' यह वचन किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है?
(A) उत्तररामचरितम्
(B) स्वप्नवासवदत्तम्
(C) किरातार्जुनीयम्
(D) मेघदूतम्

	व्याख्या– ग्रन्थ	**सूक्ति**
A.	उत्तररामचरितम् –	कर्तव्यानि खलु दुःखितैर्दुःखनिर्वापणानि (3/129)
B.	स्वप्नवासवदत्तम् –	चक्रारपंक्तिरिव गच्छति भाग्यपंक्तिः (1/4)
C.	किरातार्जुनीयम् –	''द्विषन्निमित्ता यदियं दशा ततः समूलमुन्मूलयतीव ये मनः'' (1/41)
D.	**मेघदूतम्** –	नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण (उत्तरमेघ–49)

अतः विकल्प `D' सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-207 प्रश्न-82

86. निम्नलिखित वाक्यों में शुद्ध क्या है?
(A) रामेण भार्या त्यज्यते (B) रामेण भार्यां त्यजति
(C) रामः भार्या त्यजति (D) रामेण भार्या त्याजयति

व्याख्या– ● 'रामेण भार्या त्यज्यते' यह कर्मवाच्य का शुद्ध वाक्य है।

- कर्ता में तृतीया – रामेण
- कर्म में प्रथमा – भार्या
- क्रिया में यक् प्रत्यय – त्यज् + यक् + त = त्यज्यते
- क्रिया कर्म के अनुसार लट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन (आत्मनेपद) की है, अतः विकल्प `A' सही है।

82. (D) 83. (C) 84. (C) 85. (D) 86. (A)

87. क्रिया अकर्मक होती है, जब....(गलत विकल्प चुनिए)
(A) जब धातु का अर्थ बदल जाए।
(B) जब धातु के अर्थ में कर्म समाविष्ट हो।
(C) जब धातु का कर्म अत्यन्त प्रसिद्ध हो।
(D) जब कर्म शब्दों से लिखा न हो।

व्याख्या– वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी के आत्मनेपदप्रक्रिया में भट्टोजिदीक्षित ने अकर्मकक्रिया की परिभाषा बतायी है–
धातोरर्थान्तरे वृत्तेर्धात्वर्थेनोपसंग्रहात्।
प्रसिद्धेरविवक्षातः कर्मणोऽकर्मिका क्रिया।।
अर्थात् धातु अकर्मक होती है जब–

1. **धातोरर्थान्तरे वृत्तेः**–धातु के अर्थ बदल जाने से
उदाहरण–भारवाहः भारं वहति (भारवाहक भार ढोता है) यहाँ 'भारम्' कर्म है और क्रिया 'वहति' है। यहाँ 'वहति' क्रिया भार ढोने के अर्थ में प्रयुक्त है, अतः यह सकर्मक क्रिया है। किन्तु यदि इस क्रिया का अर्थ बदल जाय तो यही क्रिया अकर्मक हो जायेगी। जैसे–नदी वहति (नदी बहती है) इस तरह यहाँ धातु का अर्थ बदल जाने से सकर्मक धातु भी अकर्मक बन गयी।
2. **धात्वर्थेनोपसंग्रहात्**–धातु के अर्थ में ही कर्म समाविष्ट हो जाने से
उदाहरण–
(i) राजीवः जीवति (राजीव जीवन धारण करता है) यहाँ पर 'जीवति' क्रिया अकर्मक हो गयी है क्योंकि धातु के अर्थ के अन्दर ही कर्म समाविष्ट है, अलग से कोई कर्म लग नहीं सकता।
(ii) नर्तकः नृत्यति (नर्तक नाचता है) इस वाक्य में भी कर्म धातु के अर्थ में ही अन्तर्भूत हो गया है। अतः कर्म लगाने की योग्यता नहीं है। अतः 'नृत्यति' क्रिया भी अकर्मक हो गयी है।
3. **प्रसिद्धेः**–जब धातु का कर्म अत्यन्त प्रसिद्ध हो
उदाहरण–मेघः वर्षति (मेघ बरसता है) यहाँ कर्ता–मेघ, क्रिया–वर्षति तथा 'जल' रूपी कर्म अत्यन्त प्रसिद्ध है। अतः मेघ द्वारा जलवर्षण की प्रसिद्धि होने के कारण यहाँ 'मेघः जलं वर्षति' कहने की कोई आवश्यकता नहीं है। इस तरह 'मेघः वर्षति' में 'वर्षति' क्रिया को अकर्मक माना जाता है।
4. **अविवक्षातः कर्मणः**–वक्ता के द्वारा वाक्य में कर्म की विवक्षा न करने से
उदाहरण–'हितान्न यः संशृणुते स किम्प्रभुः' (हितकारक पुरुष से जो सुनता नहीं वह कुत्सित स्वामी है) यहाँ हितैषी पुरुष से सुने जाने वाले कर्म की अविवक्षा की गयी है, अतः 'संशृणुते' यह अकर्मक क्रिया मानी जाती है। यहाँ 'हितवचनम्' कर्म तो लगाया जा सकता था, किन्तु वक्ता के द्वारा कर्म की विवक्षा नही गयी की है। अतः यह क्रिया भी अकर्मक है।

इस प्रकार चार स्थलों में क्रिया अकर्मक हो जाती है–
(i) धातु का अर्थ बदल जाने से
(ii) धातु के अर्थ में ही कर्म के समाविष्ट हो जाने से
(iii) धातु का कर्म अत्यन्त लोक प्रसिद्ध होने से
(iv) वक्ता के द्वारा वाक्य में कर्म की अविवक्षा होने से
अतः उपर्युक्त प्रश्न में अकर्मकक्रिया के सन्दर्भ में विकल्प A B C सही हैं और विकल्प `D' गलत है। इसलिए सही उत्तर `D' होगा।

88. 'ब्रू' धातु का विधिलिङ् मध्यमपुरुष द्विवचन का क्या रूप होता है?
(A) ब्रूयात् **(B) ब्रूयात**
(C) ब्रूयाव **(D) ब्रूयातम्**

व्याख्या–'ब्रू' धातु अदादिगणीय विधिलिङ्लकार का रूप निम्नवत् है–

प्र. पु.	ब्रूयात्	ब्रूयाताम्	ब्रूयुः
म. पु.	ब्रूयाः	**ब्रूयातम्**	ब्रूयात
उ. पु.	ब्रूयाम्	ब्रूयाव	ब्रूयाम

स्पष्ट है कि 'ब्रू' धातु विधिलिङ्लकार म. पु. द्विवचन का रूप है– **ब्रूयातम्**
अतः विकल्प `D' सही है।

89. 'यथामति' शब्द में कौन समास है?
(A) अव्ययीभाव **(B) तत्पुरुष**
(C) बहुव्रीहि **(D) द्वन्द्व**

व्याख्या–
(A) **अव्ययीभावसमास**– (i) मतिम् अनतिक्रम्य = **यथामति,** (ii) शक्तिम् अनतिक्रम्य = यथाशक्ति, (iii) बुद्धिम् अनतिक्रम्य = यथाबुद्धि, (iv) ज्ञानम् अनतिक्रम्य = यथाज्ञानम्, (v) यथेच्छम्, यथाकामम् आदि।
(B) **तत्पुरुष**– यूपाय दारु = यूपदारु
(C) **बहुव्रीहि**– युक्तः योगः यस्य = युक्तयोगः
(D) **द्वन्द्व**–युधिष्ठिरश्च अर्जुनश्च = युधिष्ठिरार्जुनौ।
अतः विकल्प `A' सही है।

87. (D) 88. (D) 89. (A)

90. उत्तररामचरितम् के मङ्गलाचरण में किसकी वन्दना की गयी है?
(A) शिव (B) शक्ति
(C) विष्णु (D) कवि तथा वाणी

व्याख्या– ● भवभूति विरचित उत्तररामचरितम् का मङ्गलाचरण इस प्रकार है–

इदं कविभ्यः पूर्वेभ्यो नमोवाकं प्रशास्महे।
विन्देम देवतां वाचममृतामात्मनः कलाम्॥

- उपर्युक्त मङ्गलाचरण से स्पष्ट है कि कवि ने प्रथमपंक्ति में प्राचीन वाल्मीकि आदि कवियों की वन्दना करके ब्रह्मा की अंशभूत सनातनी वाणी (सरस्वती) की वन्दना की है। अतः **इस मङ्गलाचरण में कवि तथा वाणी दोनों की वन्दना** है। अतः विकल्प `D' सही है।
- रघुवंशम् में शिव-पार्वती की, अभिज्ञानशाकुन्तलम् में अष्टमूर्तिशिव की वन्दना की गयी है।
- शिवराजविजय में विष्णु की माया का वर्णन है।

91. अच् प्रत्याहार में कितने स्वर होते हैं?
(A) 5 (B) 6
(C) 8 (D) 9

व्याख्या– 'अच्' प्रत्याहार में सभी 09 स्वर आते हैं। इसीलिए स्वरों को 'अच्' भी कहते हैं। "अइउण् ऋलृक् एओङ् ऐऔच्" इन चार सूत्रों में कहे गये कुल 09 स्वर हैं।

(A) अक् = अ इ उ ऋ लृ = 05 वर्ण
(B) छव् = छ् ठ् थ् च् ट् त् = 06 वर्ण
(C) इच् = इ उ ऋ लृ ए ओ ऐ औ = 08 वर्ण
(D) **अच्** = अ इ उ ऋ लृ ए ओ ऐ औ = **09 वर्ण**
अतः विकल्प `D' सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतव्याकरणम् पेज-38 क्र.सं.-29

92. किरातार्जुनीयम् का प्रधान रस क्या है?
(A) श्रृङ्गाररस (B) करुणरस
(C) वीररस (D) शान्तरस

व्याख्या–

(A) **श्रृङ्गाररस प्रधानग्रन्थ–** (i) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (ii) नैषधीयचरितम् (iii) मृच्छकटिकम् (iv) स्वप्नवासवदत्तम् (v) रत्नावली

(B) **करुणरस प्रधानग्रन्थ–** (i) उत्तररामचरितम् (ii) कुन्दमाला (iii) वाल्मीकीयरामायणम्

(C) **वीररस प्रधानग्रन्थ–** (i) **किरातार्जुनीयम्** (ii) शिशुपालवधम् (iii) शिवराजविजयः (iv) मुद्राराक्षसम् (v) महावीरचरितम्

(D) **शान्तरस प्रधानग्रन्थ–** (i) महाभारतम् (ii) बुद्धचरितम् (iii) शारिपुत्रप्रकरणम्

अतः विकल्प `C' सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-169 प्रश्न-23

93. अनुष्टुप् छन्द में कितने अक्षर होते हैं?
(A) 24 (B) 28
(C) 32 (D) 36

छन्द	वर्णों की संख्या
(A) गायत्री	24
(B) उष्णिक्	28
(C) **अनुष्टुप्**	**32**
(D) बृहती	36

अतः विकल्प `C' सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-305

94. शिवराजविजय के प्रथमविराम में कितने निःश्वास हैं?
(A) 3 (B) 4
(C) 5 (D) 6

व्याख्या–अम्बिकादत्तव्यास के प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास के शिवराजविजय में कुल तीन विराम हैं, और प्रत्येक विराम में चार-चार निःश्वास हैं। इस प्रकार शिवराजविजय में कुल तीन विराम और 12 निःश्वास हैं।

- इससे स्पष्ट है कि इसके प्रथम विराम में चार निःश्वास हैं। अतः विकल्प `B' सही है।
- दण्डी के काव्यादर्श में तीन परिच्छेद, श्रीहर्ष की रत्नावली में 4 अङ्क, क्षेमेन्द्र के कविकण्ठाभरण में 05 अध्याय, कालिदास के ऋतुसंहारम् में 6 सर्ग हैं।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-229 प्रश्न-53

90. (D) 91. (D) 92. (C) 93. (C) 94. (B)

95. कौस्तुभमणि को कौन धारण करता है?
(A) ब्रह्मा (B) विष्णु
(C) शिव (D) इन्द्र

व्याख्या– महाकवि बाणभट्ट विरचित कादम्बरी के कथामुख के सातवें श्लोक में लिखा है–

'तदेव धत्ते हृदयेन सज्जनो
हरिर्महारत्नमिवातिनिर्मलम्'

जैसे **विष्णु कौस्तुभमणि** को अपने हृदय में धारण करते हैं, उसी प्रकार सज्जन सुभाषित को अपने हृदय में धारण करते हैं। अतः विकल्प `B' सही है।

	देवता	सम्बद्ध वस्तुयें
(A)	ब्रह्मा	वेद, सरस्वती
(B)	**विष्णु**	**कौस्तुभमणि,** लक्ष्मी, शंख, चक्र, गदा
(C)	शिव	हालाहलविष, पार्वती, अर्धचन्द्र, सर्प
(D)	इन्द्र	ऐरावत, वज्र, शची

96. अफजल खाँ को मारने के पश्चात् वीर शिवाजी ने रणभूमि की सफाई का कार्य निम्नलिखित में किसे सौंपा?
(A) गौरसिंह (B) सेनापति
(C) माल्यश्रीक (D) सचिव

व्याख्या–अम्बिकादत्तव्यास विरचित शिवराजविजय के द्वितीय निःश्वास के अन्त में लिखा है कि– ''ससेनः शिववीरश्च विजयशङ्खनादैः रोदसी सम्पूर्य **रणाङ्गणशोधनाधिकार-माल्यश्रीकाय समर्प्य** प्रतापदुर्गं प्रविश्य मातुः चरणौ प्रणनाम।'' (शिवराजविजय द्वितीयनिःश्वास) अर्थात् शिवाजी ने अफजलखाँ के मुगल सैनिकों पर विजय प्राप्त करने के बाद रणभूमि की सफाई का काम माल्यश्रीक को सौंपकर प्रतापगढ़ में प्रवेशकर माता के चरणों में प्रणाम किया। अतः विकल्प `C' सही है।

97. 'जलमग्न' शब्द में कौन समास है?
(A) अव्ययीभाव (B) तत्पुरुष
(C) द्वन्द्व (D) बहुव्रीहि

सामासिकपद	समासविग्रह	समास
(A) उपजरसम्	जरायाः समीपम्	अव्ययीभाव
(B) जलमग्नः	जले मग्नः	सप्तमी तत्पुरुष
(C) अन्नजलम्	अन्नं च जलं च	द्वन्द्व
(D) जलजाक्षी	जलजे इव अक्षिणी यस्याः	बहुव्रीहि

अतः विकल्प `B' सही है।

स्रोत–रचनानुवादकौमुदी पेज-94

98. भारतवर्ष में यवनराज्य का बीजारोपण निम्नलिखित में किसने किया?
(A) महमूद गजनवी
(B) कुतुबुद्दीन
(C) शहाबुद्दीन
(D) मुहम्मद गोरी

व्याख्या– अम्बिकादत्तव्यास विरचित शिवराजविजय के प्रथम निःश्वास में वर्णन है कि महमूद गजनवी की संवत् 1087 में मृत्यु के बाद कोई गोर देशवासी शहाबुद्दीन ने गजिनी देश पर आक्रमण किया, दिल्ली पर चढ़ाई की, पृथ्वीराज चौहान और जयचन्द्र को मारकर भारत में यवनराज्य का बीजारोपण किया– **गोरदेशवासी कश्चित् शहाबुद्दीन नामा प्रथमं गजिनीदेशमाक्रम्य ... दिल्लीमश्वयाम्बभूव। ततो दिल्लीश्वरं पृथ्वीराजं कान्यकुब्जेश्वरं जयचन्द्रं च ... उभावपि विशस्य... स एव प्राधान्येन भारते यावनराज्याङ्कुराऽरोपकोऽभूत्।**
अतः इससे स्पष्ट है कि भारत में यवन राज्य का बीजारोपण शहाबुद्दीन (मु0 गोरी) ने किया। यद्यपि इतिहास में शहाबुद्दीन ही मुहम्मद गोरी है किन्तु शिवराजविजय में शहाबुद्दीन ही नाम मिलता है अतः आयोग को इसका उत्तर `C' मानना चाहिए। यद्यपि आयोग ने इसका उत्तर `D' माना है।

- शहाबुद्दीन और मुहम्मद गोरी ये दोनों विकल्प एक साथ देना उचित नहीं है।
- कुतुबुद्दीन शहाबुद्दीन का क्रीतदास (गुलाम) है, जिसे शहाबुद्दीन ने भारत का प्रथम सम्राट् बनाया।

''तस्यैव च कश्चित् क्रीतदासः कुतुबुद्दीन नामा प्रथमभारत– सम्राट् सञ्जातः'' (शिवराजविजयः)

- महमूद गजनवी ने भारत में 12 बार आक्रमण किया तथा सोमनाथ मन्दिर को लूटा था।

''सः ज्ञातास्वादः पौनःपुन्येन द्वादशवारमागत्य भारतमलुलुण्ठत्''
इतिहासकारों की दृष्टि से इसने भारत में 17 बार आक्रमण किया था।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-36

95. (B) 96. (C) 97. (B) 98. (C)

99. सम्बोधन और प्रथमा विभक्ति के किस वचन में अन्तर होता है?
(A) एकवचन (B) द्विवचन
(C) बहुवचन (D) किसी में भी नहीं

व्याख्या–

प्रथमाविभक्ति	**सम्बोधन**
• रामः, रामौ, रामाः	राम! रामौ, रामाः
• रमा, रमे, रमाः	रमे! रमे, रमाः
• हरिः, हरी, हरयः	हरे! हरी, हरयः
• गुरुः, गुरू, गुरवः	गुरो! गुरू, गुरवः
• नदी नद्यौ नद्यः	नदि! नद्यौ, नद्यः
• भवान् भवन्तौ भवन्तः	भवन्! भवन्तौ भवन्तः
• पिता पितरौ पितरः	पितः! पितरौ पितरः
• राजा राजानौ राजानः	राजन्! राजानौ राजानः

• इससे स्पष्ट है कि सम्बोधन और प्रथमा विभक्ति के रूपों में केवल एकवचन में ही अन्तर है, शेष द्विवचन और बहुवचन में एकसमान ही रूप चलते हैं। अतः विकल्प `A' सही है।

100. सन्धि निम्नलिखित में से किनमें अवश्य करनी चाहिए?
(A) एकपद में
(B) धातु तथा उपसर्ग के मध्य
(C) समास में
(D) उपर्युक्त सभी में

व्याख्या– संहिता (सन्धि) के विषय में एक कारिका व्याकरणजगत् में अतिप्रसिद्ध है–
संहितैकपदे नित्या नित्या धातूपसर्गयोः।
नित्या समासे वाक्ये तु सा विवक्षामपेक्षते॥
अर्थात् एकपद में, धातु तथा उपसर्ग के मध्य, तथा समास में संहिता (सन्धि) अनिवार्य है। वाक्य में वक्ता या लेखक के इच्छाधीन है।
अतः विकल्प `D' सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतव्याकरणम् पेज-78 प्रश्न-107

101. मेघदूतम् में मेघ के मार्ग में निम्नलिखित में से क्या नहीं है?
(A) नर्मदा नदी (B) विदिशा
(C) उज्जयिनी (D) अयोध्या

व्याख्या–(A) **नर्मदा नदी**–(रेवा नदी)–मेघदूतम् में आम्रकूट पर्वत के आगे विन्ध्याचल की तलहटी में बिखरी हुई रेवा नदी (नर्मदा) का वर्णन मिलता है–
''रेवां द्रक्ष्यस्युपलविषमे विन्ध्यपादे विशीर्णाम्''
(B) **विदिशा**–मेघमार्ग में दशार्ण देश की राजधानी के रूप में विदिशा का वर्णन मिलता है– **तेषां दिक्षु प्रथितविदिशालक्षणां राजधानीम्' (पूर्वमेघ-25)**
(C) **उज्जयिनी**–मेघमार्ग में विदिशा के आगे उज्जयिनी का विशद वर्णन मिलता है। कवि कालिदास मेघ का रास्ता टेढा होने पर भी उसे उज्जयिनी जाने की सलाह देते हैं–
''वक्रः पन्था यदपि भवतः प्रस्थितस्योत्तराशां सौधोत्सङ्गप्रणयविमुखो मा स्म भूरुज्जयिन्याः। (पूर्वमेघ-28)
(D) **अयोध्या**– सम्पूर्ण मेघदूतम् में मेघ के मार्ग में अयोध्या का कहीं वर्णन नहीं है। अतः विकल्प `D' सही है।

102. निम्नलिखित वाक्यों में कौन सा वाक्य शुद्ध है?
(A) रामः पठति (B) रामेण पठ्यते
(C) रामः पाठयति (D) सभी शुद्ध हैं।

व्याख्या–(A) **'रामः पठति'** (राम पढ़ता है)– यह कर्तृवाच्य का वाक्य है। कर्ता के अनुसार लट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन की क्रिया का प्रयोग है, अतः यह वाक्य शुद्ध है।
(B) **रामेण पठ्यते** (राम के द्वारा पढ़ा जाता है)– यह कर्मवाच्य का वाक्य है, कर्ता में तृतीया विभक्ति तथा क्रिया में यक् प्रत्यय के बाद आत्मनेपद का प्रयोग है। इसलिए यह वाक्य भी शुद्ध है।
(C) **रामः पाठयति** (राम पढ़ाता है)– यह णिजन्त कर्तृवाच्य का प्रयोग है, अतः यह भी शुद्ध है। यद्यपि प्रश्नपत्र में मुद्रणदोष के कारण 'पाठयति' की जगह 'पाठ्यार्त' छप गया है, इसे सुधार लेना चाहिए। आयोग को ऐसे मुद्रणदोषों से अवश्य बचना चाहिए, अन्यथा छात्रों का नुकसान होता है।
(D) स्पष्ट है इसके सभी प्रयोग शुद्ध हैं।
अतः विकल्प `D' सही है।

103. पठ् धातु का लङ्लकार के मध्यमपुरुष एकवचन का क्या रूप होता है?
(A) अपठन् (B) अपठत
(C) अपठः (D) अपठम्

व्याख्या– 'पठ्' धातु लङ्लकार का रूप

प्र. पु.	अपठत्	अपठताम्	अपठन्
म. प्र.	**अपठः**	अपठतम्	अपठत
उ. पु.	अपठम्	अपठाव	अपठाम

99. (A) 100. (D) 101. (D) 102. (D) 103. (C)

स्पष्ट है 'पठ्' धातु लङ्लकार (भूतकाल) मध्यमपुरुष एकवचन का रूप–**'अपठः'** बनेगा, अतः विकल्प `C'सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतव्याकरणम् पेज-135 प्रश्न-18

104. भाववाच्य के लिए निम्नलिखित में क्या सही नहीं है?
(A) भाववाच्य तभी होता है, जब क्रिया अकर्मक हो।
(B) कर्ता तृतीयान्त होता है।
(C) क्रिया केवल प्रथमपुरुष एकवचन में प्रयुक्त होती है।
(D) भाववाच्य में क्रिया कर्ता के वचन के अनुसार होती है।

व्याख्या– वाच्य तीन प्रकार के होते हैं–
1. कर्तृवाच्य 2. कर्मवाच्य 3. भाववाच्य

भाववाच्य के नियम–
(i) भाववाच्य में क्रिया अकर्मक होती है।
(ii) कर्ता तृतीयान्त होता है।
(iii) क्रिया केवल प्रथमपुरुष एकवचन में प्रयुक्त होती है।

- विकल्प `D' भाववाच्य के लिए सही नही है। क्योंकि कर्तृवाच्य में क्रिया, कर्ता के पुरुष और वचन के अनुसार होती है, न कि भाववाच्य में। अतः विकल्प `D' सही उत्तर है।

105. अशुद्ध वाक्य बताइये?
(A) कति बालिकाः
(B) कति जनाः पठन्ति
(C) कतयः मुनयः जपन्ति
(D) कति फलानि सन्ति

व्याख्या–
- **'अव्ययं कतियुष्मदः'** (पाणिनीयलिङ्गानुशासनम्-186) सूत्रानुसार अव्ययसंज्ञक शब्द, कति, यति, तति, युष्मद् तथा अस्मद् शब्द–अविशिष्टलिङ्ग अर्थात् तीनों लिङ्गों में समानरूप रहते हैं।
- 'कति' शब्द का रूप नित्यबहुवचनान्त तथा तीनों लिङ्गों में एकसमान चलता है–

1. कति 2. कति
3. कतिभिः 4. कतिभ्यः
5. कतिभ्यः 6. कतीनाम्
7. कतिषु

- स्पष्ट है 'कति' शब्द का 'कतयः' रूप कहीं नहीं बनता अतः विकल्प `C' अशुद्ध है तथा कति बालिकाः, कति जनाः पठन्ति, कति फलानि सन्ति–ये तीनों वाक्य शुद्ध हैं। अतः विकल्प `C' सही उत्तर होगा।

106. नीतिशतकम् के अनुसार धन की कितनी दशायें होती हैं?
(A) 2 (B) 3
(C) 4 (D) 5

व्याख्या– भर्तृहरि विरचित नीतिशतकम् के अर्थपद्धति के अन्तर्गत एक श्लोक में धन की तीन दशायें बतायी गयी हैं–
''दानं भोगो नाशस्तिस्रो गतयो भवन्ति वित्तस्य।
यो न ददाति न भुङ्क्ते तस्य तृतीया गतिर्भवति।।
अर्थात् धन की तीन गतियाँ (दशायें) होती हैं–
(i) दान, (ii) अपने सुखों के लिए उपयोग, (ii) विनाश। जो व्यक्ति न तो धन का दान करता है, और न ही स्वयं उपभोग करता है, उसके धन की तीसरी गति अर्थात् नाश होता है। अतः इसका सही उत्तर विकल्प `B' होगा।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-176 प्रश्न-55

107. राजा शूद्रक की राजधानी का क्या नाम था?
(A) उज्जयिनी (B) विदिशा
(C) हस्तिनापुर (D) थाणेश्वर

व्याख्या–

राजधानी	राजा
(A) उज्जयिनी	तारापीड
(B) विदिशा	**शूद्रक**
(C) हस्तिनापुर	दुष्यन्त
(D) थाणेश्वर	हर्षवर्धन

अतः विकल्प `B' सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-295

108. निम्नलिखित में शुद्ध वाक्य क्या है?
(A) हरिः वैकुण्ठम् उपवसति
(B) हरिः वैकुण्ठम् अनुवसति
(C) हरिः वैकुण्ठे वसति
(D) उपर्युक्त सभी शुद्ध हैं।

व्याख्या–
(A) हरिः वैकुण्ठम् उपवसति।
(B) हरिः वैकुण्ठम् अनुवसति।

104. (D) 105. (C) 106. (B) 107. (B) 108. (D)

- उपान्वध्याङ्वसः (1.4.48) सूत्र से यदि वस् धातु के पूर्व उप, अनु, अधि और आङ् उपसर्ग लगा हो तो उसके आधार की कर्मसंज्ञा होती है।
- यहाँ 'वस्' धातु में 'उप' उपसर्ग लगकर = उपवसति तथा 'वस्' धातु में 'अनु' उपसर्ग लगकर = अनुवसति प्रयोग बना है, इसीलिए 'वैकुण्ठम्' में कर्मसंज्ञा होकर द्वितीया विभक्ति हो गयी है। इसीलिए विकल्प A और B दोनों शुद्ध हैं।

(C) हरिः वैकुण्ठे वसति– यहाँ 'वस्' धातु में उप, अनु अधि, आङ् आदि कोई उपसर्ग नही जुड़ा है, अतः 'आधारोऽधिकरणम् सूत्र से 'वैकुण्ठ' रूपी आधार की अधिकरणसंज्ञा होकर सप्तमी विभक्ति हो गयी। अतः यह वाक्य भी शुद्ध है।

अतः विकल्प `D' इसका सही उत्तर है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतव्याकरणम् पेज-91 प्रश्न-41

109. यक्ष के प्रवास की अवधि क्या थी?

(A) 1 वर्ष **(B) 2 वर्ष**
(C) 3 वर्ष **(D) 4 वर्ष**

व्याख्या–मेघदूतम् के प्रथम श्लोक में ही यक्ष के प्रवास की अवधि एक वर्ष बतायी गयी है–**''शापेनास्तङ्गमितमहिमा वर्षभोग्येण भर्तुः''** (पूर्वमेघ – 01)

वर्षभोग्येण = एक वर्ष भोगे जाने योग्य

इससे स्पष्ट है कि विकल्प `A' सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-37

110. किरातार्जुनीयम् महाकाव्य में कितने सर्ग हैं–

(A) 22 **(B) 17**
(C) 18 **(D) 20**

व्याख्या– महाकाव्य		**सर्गों की संख्या**
(A) नैषधीयचरितम्	–	22
(B) कुमारसम्भवम्	–	17
(C) **किरातार्जुनीयम्**	**–**	**18**
(D) शिशुपालवधम्	–	20

अतः विकल्प `C' सही है।

नोट–यह प्रश्न आयोग लगभग हर साल पूछता है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-168 प्रश्न-04

111. 'साधु + इति' में सन्धि होने पर बनता है?

(A) साधोइति **(B) साध्विति**
(C) साधूति **(D) साधुरिति**

व्याख्या– साधु + इति
साध् उ + इति
साध् व् + इति ('इको यणचि' सूत्र से 'उ' के
साध्विति स्थान पर 'व्' आदेश)

अतः विकल्प `B' सही है।

नोट– यद्यपि आयोग के प्रश्नपत्र में 'साध्विति' के स्थान पर 'साधिति' छपा है, जिसे मुद्रणदोष मानना चाहिए।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतव्याकरणम् पेज-189

112. गद्यकाव्य के कितने भेद हैं–

(A) 2 **(B) 6**
(C) 4 **(D) 5**

व्याख्या– ● गद्यकाव्य के दो मुख्य भेद माने गये हैं–
(i) कथा (ii) आख्यायिका

अतः विकल्प `A' सही है।

- अग्निपुराण में गद्यकाव्य के पाँच भेद बताये गये हैं–
  1. कथा 2. आख्यायिका
  3. खण्डकथा 4. परिकथा
  5. कथानिका
- पं. अम्बिकादत्तव्यास 'उपन्यास' नामक भेद भी मानते हैं।
- समास के प्रयोग की दृष्टि से गद्य के चार प्रकार माने गये हैं–
  1. मुक्तक 2. वृत्तगन्धि
  3. उत्कलिकाप्राय 4.चूर्णक।

113. किरातार्जुनीयम् शब्द में कौन सा तद्धित प्रत्यय लगता है?

(A) फ **(B) घ**
(C) ख **(D) छ**

किरातार्जुन + छ
किरातार्जुन + ईय (आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम्'
किरातार्जुनीयम् से 'छ' के स्थान पर 'ईय' आदेश)

अतः विकल्प `D' सही है।

(A) गार्ग्य + फ (आयन) = गार्ग्यायणः
(B) क्षत्र + घ (इय) = क्षत्रियः
(C) ग्राम + खञ् (ईन) = ग्रामीणः
(D) किरातार्जुन + छ (ईय) = किरातार्जुनीयम्

संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-237 प्रश्न-68

109. (A) 110. (C) 111. (B) 112. (A) 113. (D)

114. शुद्ध वाक्य बताइये?
(A) वर्षायां न गन्तव्यः
(B) वर्षायां न गन्तव्यम्
(C) वर्षायां न गमनीयम्
(D) वर्षासु न गन्तव्यम्।

व्याख्या–●'अप् सुमनस्समासिकतावर्षाणां बहुत्वं च' पाणिनीयलिङ्गानुशासनम्-29वें सूत्र के अनुसार **आपः** (जल), **सुमनसः** (फूल), **समाः** (संवत्सर), **सिकताः** (बालू), **वर्षाः** (ऋतुविशेष) ये शब्द स्त्रीलिङ्ग में होते हैं तथा सदा बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं।

● अमरकोश में भी लिखा है–
आपः सुमनसो वर्षा अप्सरः सिकताः समाः।
एतेस्त्रियां बहुत्वे स्युरेकत्वेऽप्युत्तरत्रयम्॥

● गम् + तव्यत् = गन्तव्यः/गन्तव्या/गन्तव्यम्
गम् + अनीयर् = गमनीयः/गमनीया/गमनीयम्।

● इससे स्पष्ट होता है कि विकल्प A, B, C में वर्षा शब्द एकवचनान्त है, जबकि विकल्प `D' में 'वर्षासु' पद सप्तमी बहुवचनान्त है तथा 'गम् + तव्यत् = गन्तव्यम्' भी शुद्ध प्रयोग है। अतः `D' विकल्प शुद्ध है।

115. मेघदूतम् में प्रयुक्त छन्द के प्रत्येक चरण में कितने अक्षर होते हैं?
(A) 14 **(B) 15**
(C) 16 **(D) 17**

व्याख्या– ● मेघदूतम् में आद्यन्त मन्दाक्रान्ता छन्द का प्रयोग है। जिसका लक्षण है– **''मन्दाक्रान्ता जलधिषडगैर्म्भौ नतौ ताद् गुरू चेत्''** मन्दाक्रान्ता छन्द के प्रत्येक चरण में 17 वर्ण होते हैं। इसमें क्रमशः मगण, भगण, नगण तगण, तगण तथा दो गुरु वर्ण होते हैं। इसमें 4-6-7 पर यति होती है अर्थात् चौथे, दसवें और सत्रहवें वर्ण पर यति (विराम) होती है। अतः विकल्प `D' सही है।

● वसन्ततिलका के प्रत्येक चरण में 14 अक्षर, मालिनी छन्द में 15 तथा पञ्चचामर में 16 अक्षर होते हैं।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-237 प्रश्न-55

116. रूपक के कितने भेद होते हैं?
(A) 5
(B) 8
(C) 10
(D) 12

व्याख्या– (A) रूपक में पाँच प्रकार के अर्थोपक्षेपकों का प्रयोग किया जाता है– 1. विष्कम्भक 2. चूलिका 3.अङ्कास्य 4. अङ्कावतार 5. प्रवेशक।

(B) दशरूपक के अनुसार सात्त्विक भाव आठ हैं–

1. स्तम्भ	2. प्रलय
3. रोमाञ्च	4. स्वेद
5. वैवर्ण्य	6. वेपथु (कम्पन)
7. अश्रु	8. वैस्वर्य (स्वरभङ्ग)

(C) **'रूपकं तत्समारोपात् दशधैव रसाश्रयम्'** दशरूपक की इस पंक्ति के अनुसार **रूपक के दश भेद** बताये गये हैं–

1. नाटक	2. प्रकरण
3. भाण	4. प्रहसन
5. डिम	6. व्यायोग
7. समवकार	8. वीथी
9. अङ्क	10. ईहामृग।

अतः विकल्प `C' सही है।

(D) श्रीमद्भागवत महापुराण में 12 स्कन्ध हैं।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-304

117. 'मा ब्रूहि दीनं वचः' यह उक्ति किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है?
(A) उत्तररामचरितम्
(B) वाल्मीकीयरामायणम्
(C) किरातार्जुनीयम्
(D) नीतिशतकम्

व्याख्या–

	ग्रन्थ	**सूक्ति**
(A)	उत्तररामचरितम्	नैताः प्रियतमाः वाचः
(B)	वाल्मीकीयरामायणम्	नहि निम्बात् स्रवेत् क्षौद्रं लोके निगदितं वचः

114. (D) 115. (D) 116. (C) 117. (D)

(C) किरातार्जुनीयम् हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः

(D) **नीतिशतकम्** **यं यं पश्यसि तस्य तस्य पुरतो मा ब्रूहि दीनं वचः**

अतः विकल्प `D' सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-155 क्र.सं.-27

118. आधार कितने प्रकार का होता है, जिसमें सप्तमी विभक्ति का प्रयोग होता है?

(A) 2 **(B) 3**

(C) 4 **(D) 5**

व्याख्या–'औपश्लेषिको वैषयिकोऽभिव्यापकश्च इत्याधारः त्रिधा' इस वृत्ति से स्पष्ट है कि आधार तीन प्रकार का होता है– 1. औपश्लेषिक आधार–कटे आस्ते,
2. वैषयिक आधार– मोक्षे इच्छा अस्ति,
3. अभिव्यापक आधार–सर्वस्मिन् आत्मा अस्ति।
अतः विकल्प `B' सही है।

119. ''कार्यं वा साधयेयं देहं वा पातयेयम्'' यह सारगर्भित प्रतिज्ञा किसकी थी?

(A) राम
(B) दुष्यन्त
(C) अर्जुन
(D) शिवाजी

व्याख्या–

नायक	**प्रतिज्ञा**
(A) **राम–**	स्नेहं दयां च सौख्यं च यदि वा जानकीमपि। आराधनाय लोकस्य मुञ्चतो नास्ति मे व्यथा।। उत्तररामचरितम् 1/12
(B) **दुष्यन्त**	परिग्रहबहुत्वेऽपि द्वे प्रतिष्ठे कुलस्य मे। समुद्ररसना चोर्वी सखी च युवयोरियम्।। अभिशा0 3/17
(C) **अर्जुन–**	'सुदुर्लभाः सर्वमनोरमा गिरः' (किरात0 14/5)
(D) **शिवाजी–**	''कार्यं वा साधयेयं देहं वा पातयेयम्''

अतः विकल्प `D' सही है। (शिवराजविजयम्)

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-186 प्रश्न-34

120. 'शम्भु' शब्द का चतुर्थी विभक्ति एकवचन का क्या रूप होता है?

(A) शम्भवाय **(B) शम्भवायै**

(C) शम्भवे **(D) शम्भव्या**

व्याख्या– 'शम्भु' उकारान्त पुंलिङ्ग का रूप 'गुरु' की तरह चलेगा– 1. शम्भुः, 2. शम्भुम्, 3. शम्भुना, **4.शम्भवे,** 5. शम्भोः, 6. शम्भोः, 7. शम्भौ, सम्बो0 हे शम्भो।
स्पष्ट है विकल्प `C' सही है।

121. महाकवि भवभूति की कितनी रचनायें हैं?

(A) 3 **(B) 4**

(C) 5 **(D) 7**

व्याख्या–

	कवि	**रचनायें**
(A)	महाकविभवभूति	तीन रचनायें– (i) मालतीमाधवम् (प्रकरण) (ii) महावीरचरितम् (नाटक) (iii)उत्तररामचरितम् (नाटक)
(B)	भर्तृहरि	चार रचनायें– 1. शृङ्गारशतकम् (मुक्तक) 2. नीतिशतकम् (मुक्तक) 3. वैराग्यशतकम् (मुक्तक) 4.वाक्यपदीयम् (व्याकरणग्रन्थ)
(C)	बाणभट्ट	पाँच रचनायें– (i) कादम्बरी (कथा) (ii) हर्षचरितम् (आख्यायिका) (iii) चण्डीशतकम् (मुक्तक) (iv) मुकुटताडितक (नाटक) (v) पार्वतीपरिणय (नाटक)।
(D)	कालिदास	सात रचनायें– 1. कुमारसम्भवम् (महाकाव्य) 2. रघुवंशम् (महाकाव्यम्) 3. विक्रमोर्वशीयम् (त्रोटक) 4. मालविकाग्निमित्रम् (नाटक) 5. अभिज्ञानशाकुन्तलम् (नाटक) 6. ऋतुसंहारम् (गीतिकाव्य) 7.मेघदूतम् (खण्डकाव्य)।

अतः विकल्प `A' सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-11

118. (B) 119. (D) 120. (C) 121. (A)

122. 'अस्मद्' शब्द का पञ्चमी एकवचन में क्या रूप होता है?

(A) माम् **(B) मत्**

(C) मम **(D) अस्मत्**

व्याख्या– 'अस्मद्' (मैं) शब्द का सातों विभक्तियों के एकवचन में रूप–

1. अहम् 2. माम्
3. मया 4. मह्यम्
5. मत् 6. मम
7. मयि

स्पष्ट है कि 'अस्मद्' शब्द का पञ्चमी एकवचन में '**मत्**' रूप बनता है, अतः विकल्प `B' सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा TGT व्याख्यात्मक पेज-33 प्रश्न-67

123. पण्डित अम्बिकादत्तव्यास को निम्नलिखित में से किस उपाधि से विभूषित नहीं किया गया है?

(A) घटिकाशतक **(B) साहित्याचार्य**

(C) शतावधान **(D) मीमांसक**

व्याख्या–पं० अम्बिकादत्तव्यास को निम्नलिखित उपाधियों से विभूषित किया गया है–

1. घटिकाशतक (ब्रह्मामृतवर्षिणी सभा द्वारा प्रदत्त)
2. साहित्याचार्य (संस्कृतसाहित्य के विद्वान् होने के कारण)
3. शतावधान (100 प्रश्नों को सुनकर क्रमशः उनका सही उत्तर देने के कारण)
4. सुकवि (भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की काशी कवितावर्धिनी सभा द्वारा प्रदत्त)
5. भारतरत्न (काशी की महासभा द्वारा प्रदत्त)
6. अभिनवबाण/आधुनिकबाण (संस्कृत सीखने के अभिनव प्रणाली के आविष्कार करने के कारण)
7. भारतभूषण
8. महाकवि

स्पष्ट है कि उपर्युक्त सभी उपाधियाँ अम्बिकादत्तव्यास जी की हैं किन्तु 'मीमांसक' उपाधि इनकी नहीं है।
अतः विकल्प `D' सही है।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-284

124. बाणभट्ट की गद्यकृतियाँ कितनी हैं?

(A) 1 **(B) 2**

(C) 3 **(D) 4**

व्याख्या–बाणभट्ट की कुल पाँच कृतियाँ प्रसिद्ध हैं–
(i) कादम्बरी (कथा) गद्यकाव्य
(ii) हर्षचरितम् (आख्यायिका) गद्यकाव्य
यही दो रचनायें इनकी गद्यकृतियाँ हैं।
अतः विकल्प `B' सही है।

- बाण की शेष तीन रचनायें निम्नवत् हैं–
(i) चण्डीशतकम् (मुक्तककाव्य)
(ii) मुकुटताडितक (नाटक)
(iii) पार्वतीपरिणय (नाटक)

स्रोत–संस्कृतगङ्गा संस्कृतसाहित्यम् पेज-12

125. 'पुष्पधन्वा' किसे कहा जाता है?

(A) विष्णु **(B) ब्रह्मा**

(C) इन्द्र **(D) कामदेव**

व्याख्या–● अमरकोश में कामदेव के 21 नामों की चर्चा है–

''मदनो मन्मथो मारः प्रद्युम्नो मीनकेतनः।
पुष्पधन्वा रतिपतिर्मकरध्वज आत्मभूः॥''

- स्पष्ट है कि पुष्पधन्वा = कामदेव के लिए प्रयुक्त है। अतः विकल्प `D' सही है।
- विष्णु को 'चतुर्भुजः' ब्रह्मा को 'चतुराननः' तथा इन्द्र को 'पाकशासनः' भी कहते हैं।

स्रोत–संस्कृतगङ्गा सम्भाषणशब्दकोश पेज-153

नमः संस्कृताय

122. (B) 123. (D) 124. (B) 125. (D)

प्रशिक्षित-स्नातकशिक्षक-चयनपरीक्षा (TGT)–2011

1. ''श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीम्'' किस प्रकार का मङ्गलाचरण है-

(A) आशीर्वादात्मक

(B) नमस्कारात्मक

(C) वस्तुनिर्देशात्मक

(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

ग्रन्थ	उपास्य देवता	मंगलाचरण	छन्द
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम्	अष्टमूर्तिशिव	आशीर्वादात्मक	स्रग्धरा
(B) कादम्बरी	त्रिगुणात्मक ब्रह्म	नमस्कारात्मक	वंशस्थ
(C) किरातार्जुनीयम्	मूलतः शैव	वस्तुनिर्देशात्मक	वंशस्थ

अतः विकल्प (C) सही है।

2. भारवि की शैली में कौन सा तत्त्व प्रधान है –

(A) ओजप्रधान्यता

(B) वैदर्भीरीति की प्रधानता

(C) गौडीरीति की प्रधानता

(D) अर्थगौरवता

ग्रन्थ/ग्रन्थकार	विशेषताएँ
(A) अनर्घराघव (मुरारि)	गौडीरीति, ओजगुण
(B) अभिज्ञानशाकुन्तलम् .	वैदर्भीरीति, प्रसादगुण

''वैदर्भीरीतिसन्दर्भे कालिदासो विशिष्यते''

(C) वेणीसंहार	गौडीरीति, ओजगुण
(D) किरातार्जुनीयम्	अर्थगौरवता, रीतिवादी या अलंकृतकाव्यशैली के जन्मदाता **''भारवेरर्थगौरवम्''**

अतः विकल्प (D) सही है।

3. 'अर्थगौरवता' का अर्थ है –

(A) गौरव गरिमा से युक्त बातें कहना

(B) शब्द से ज्यादा अर्थ पर जोर देना

(C) थोड़े से शब्दों में ज्यादा अर्थ कह देना

(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

व्याख्या – समालोचकों ने कवियों की प्रशंसा में कहा है कि–

''उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्।
दण्डिनः पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयो गुणाः।।''

1. उपमा अलङ्कार की दृष्टि से कालिदास अद्वितीय कवि हैं।
2. अर्थगौरव अर्थात् **थोड़े से शब्दों में ज्यादा अर्थ कह देना** यह भारवि की विशेषता है।
3. पदों में लालित्य के लिए दण्डी प्रसिद्ध हैं।
4. महाकवि माघ में उपमा, अर्थगौरव और पदलालित्य–ये तीनों गुण विद्यमान हैं।

अतः विकल्प (C) सही है।

4. 'भारवि' इस शब्द का अर्थ है –

(A) जिसको रवि अर्थात् सूर्य की चमक भाये

(B) भार को ढोने वाला

(C) सूर्य की कान्ति

(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

व्याख्या – 'किरातार्जुनीयम्' भारवि का एकमात्र ग्रन्थ है, 'भारवि' शब्द का अर्थ है –

'भा' दीप्तौ धातु चमकने, प्रकाश या कान्ति अर्थ में होती है,

रवि = सूर्य

अर्थात् भारवि का अर्थ है – **सूर्य की कान्ति या प्रकाश**

अतः विकल्प (C) सही है।

1. (C) 2. (D) 3. (C) 4. (C)

5. **'किरातार्जुनीयम्' रचना साहित्य की किस विधा के अन्तर्गत आती है?**
(A) गीतिकाव्य **(B) खण्डकाव्य**
(C) महाकाव्य **(D) स्तोत्रकाव्य**

	विधा	**ग्रन्थ**	**ग्रन्थकार**
(A)	गीतिकाव्य	गीतगोविन्द	जयदेव
(B)	खण्डकाव्य	मेघदूतम्	कालिदास
(C)	महाकाव्य	किरातार्जुनीयम्	भारवि
(D)	स्तोत्रकाव्य	(i) चण्डीशतक	बाणभट्ट
		(ii) शिवमहिम्नस्तोत्र	पुष्पदन्त

नोट- 'मेघदूतम्' को गीतिकाव्य, दूतकाव्य तथा सन्देशकाव्य भी कहा जाता है।

अतः विकल्प (C) सही है।

6. **'मेघदूतम्' रचना साहित्य की किस विधा के अन्तर्गत आता है-**
(A) नाटक **(B) महाकाव्य**
(C) गीतिकाव्य **(D) स्तोत्रकाव्य**

विधा	**ग्रन्थ**	**ग्रन्थकार**
(A) नाटक	उत्तररामचरितम्	भवभूति
(B) महाकाव्य	शिशुपालवधम्	माघ
(C) गीतिकाव्य	मेघदूतम्	कालिदास
(D) स्तोत्रकाव्य	सौन्दर्यलहरी	शङ्कराचार्य

अतः विकल्प (C) सही है।

7. **'मेघदूतम्' में किस छन्द का प्रयोग हुआ है?**
(A) शार्दूलविक्रीडितम् **(B) मन्दाक्रान्ता**
(C) मालिनी **(D) उपर्युक्त सभी का**

	ग्रन्थों में प्रयुक्त छन्द	**ग्रन्थ**
(A)	शार्दूलविक्रीडितम्	अमरुकशतकम्
(B)	मन्दाक्रान्ता	मेघदूतम् (सम्पूर्ण ग्रन्थ में)
(C)	मालिनी	किरातार्जुनीयम् (प्रथमसर्ग के अन्तिम 46 वें श्लोक में)

अतः विकल्प (B) सही है।

8. **'मेघदूतम्' को संस्कृत साहित्य में एक नवीन काव्य प्रकार की उद्भावना का श्रेय प्राप्त होता है, जो इस नाम से विख्यात है –**
(A) सन्देशकाव्य **(B) खण्डकाव्य**
(C) गीतिकाव्य **(D) स्तोत्रकाव्य**

व्याख्या – * कालिदास की भाषा - शैली, भाव-व्यञ्जना, अलङ्कार निवेश, प्रणयाभिव्यक्ति, मार्मिक सन्देश तथा प्राञ्जल चित्रण कला के माध्यम से मेघदूत ने एक पृथक् साहित्य प्रकार को जन्म दिया जिसे **'दूतकाव्य'** या **'सन्देशकाव्य'** कहा जाता है।

* संस्कृत का स्तोत्र साहित्य बड़ा ही विशाल सरस एवं हृदयस्पर्शी है। संस्कृत में अनेक स्तोत्रकाव्य लिखे गये जैसे – मयूरभट्ट का सूर्यशतक, बाणभट्ट का चण्डीशतक तथा शिवताण्डवस्तोत्र, रामरक्षास्तोत्र आदि।

मेघदूत को संस्कृत साहित्य में एक नवीन काव्य प्रकार की उद्भावना का श्रेय प्राप्त होता है जो 'संदेशकाव्य' के नाम से विख्यात है तथा गीतिकाव्यों में मधुर पदावली के साथ संगीतमय छन्दों का प्रयोग होने के कारण 'गीतिकाव्य' और यक्ष के जीवन के एक अंश का वर्णन होने के कारण 'खण्डकाव्य' भी कहा जाता है।

संस्कृत साहित्य के दूतकाव्य या सन्देशकाव्य -

1. जम्बूकवि –चन्द्रदूत (959ई.)
2. धोयी –पवनदूत (1100 ई.)
3. वेदान्तदेशिक (वेंकटनाथ)–हंससन्देश (1280 ई.)
4. त्रिवेणी - शुकसन्देश, भृंगसन्देश (सत्रहवीं शतब्दी पूर्वार्द्ध)
5. रूपगोस्वामी –हंसदूत (सत्रहवीं शताब्दी)
6. विमलकीर्ति - चन्द्रदूत (1625 ई.)
7. नन्दकिशोरचन्द्र गोस्वामी - शुकदूत
8. नित्यानन्दशास्त्री - हनुमद्दूत

अतः विकल्प (A) सही है।

9. **मेघदूतम् के रचयिता हैं –**
(A) भारवि **(B) कालिदास**
(C) भवभूति **(D) श्रीहर्ष**

5. (C) 6. (C) 7. (B) 8. (A) 9. (B)

व्याख्या –

	रचयिता	रचनाएँ	अनुमानित समय
(A)	भारवि	किरातार्जुनीयम्	छठी शताब्दी ई.
(B)	कालिदास	अभिज्ञानशाकुन्तलम् मेघदूतम्, कुमारसम्भवम् मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोर्वशीयम् , रघुवंशम्, ऋतुसंहारम्	ई.पू. प्रथम शताब्दी
(C)	भवभूति	उत्तररामचरितम् महावीरचरितम् मालतीमाधवम्	सातवीं शताब्दी
(D)	श्रीहर्ष	नैषधीयचरितम्	बारहवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध

अत: उत्तर (B) सही है।

10. कालिदास किसी एक विशिष्ट अलङ्कार के प्रयोग में अतुलनीय हैं, वह अलङ्कार है –
(A) रूपक (B) श्लेष
(C) अनुप्रास (D) उपमा

	कवि	अलङ्कार
(A)	अश्वघोष –	उपमा, रूपक, अनुप्रास
(B)	सुबन्धु –	श्लेष, विरोधाभास, परिसंख्या, उत्प्रेक्षा
(C)	श्रीहर्ष –	उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति, श्लेष, अनुप्रास,
(D)	कालिदास –	उपमा

संस्कृत जगत् में एक प्रसिद्धि है कि –

उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्।
दण्डिनः पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयो गुणाः।।

अत: विकल्प (D) सही है।

11. 'मेघदूतम्' का नायक है –
(A) देवता (B) मनुष्य
(C) यक्ष (D) किन्नर

ग्रन्थनाम	नायक	नायककोटि
(i) शिशुपालवधम्	श्रीकृष्ण	देवता (धीरोदात्त)
(ii) उत्तररामचरितम्	श्रीराम	देवता (धीरोदात्त)
(iii) कुमारसम्भवम्	शिव	देवता (धीरोदात्त)
(iv) मृच्छकटिकम्	चारुदत्त	मनुष्य (धीरप्रशान्त)
(v) स्वप्नवासवदत्तम्	उदयन	राजा (धीरललित)
(vi) नैषधीयचरितम्	नल	राजा (धीरोदात्त)
(vii) मेघदूतम्	यक्ष	यक्ष (धीरललित)

अत: विकल्प (C) सही है।

12. 'मेघदूतम्' का प्रधान रस है –
(A) शृङ्गाररस (B) करुणरस
(C) शान्तरस (D) वीररस

रस	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	विभाजन
शृङ्गार	मेघदूतम्	कालिदास	दो भाग (पूर्व, उत्तर)
	रत्नावली	हर्षदेव	चार अङ्क, नाटिका
	प्रियदर्शिका	हर्षदेव	चार अङ्क, नाटिका
करुण	कुन्दमाला	दिङ्नाग	छः अंक, नाटक
	उत्तररामचरितम्	भवभूति	सात अङ्क, नाटक
	प्रसन्नराघव	जयदेव	सात अङ्क, नाटक
शान्त	प्रबोधचन्द्रोदय	कृष्णमिश्र	छः अङ्क, नाटक
	जीमूतवाहन	हर्षदेव	पाँच अङ्क, नाटक
वीररस	वेणीसंहार	भट्टनारायण	छः अङ्क , नाटक
	शिशुपालवधम्	माघ	20 सर्ग , महाकाव्य

अत: विकल्प (A) सही है।

13. 'मेघदूतम्' काव्य कितने भागों में विभक्त है-
(A) दो (B) तीन
(C) चार (D) पाँच

	ग्रन्थ	विभाजन
(A)	मेघदूतम्	दो खण्डों में – पूर्वमेघ, उत्तरमेघ
	कादम्बरी	पूर्वभाग और उत्तरभाग
(B)	शिवराजविजयम्	तीन विराम, 12 निःश्वास

10. (D) 11. (C) 12. (A) 13. (A)

	काव्यादर्श	तीन परिच्छेद
(C)	रसगङ्गाधर	चार आनन
	दशरूपक	चार प्रकाश
(D)	काव्यालङ्कारसूत्र	पाँच अधिकरण
	पञ्चतन्त्र	पाँच तन्त्र या पाँच खण्ड

1. मित्रभेद 2. मित्र सम्प्राप्ति 3. काकोलूकीय 4.लब्धप्रणाश 5.अपरीक्षितकारक, अत: विकल्प (A) सही है।

14. 'मेघदूतम्' काव्य में नायक विरही यक्ष को किस कारण से अपनी नायिका से दूर जाना पड़ा ?

(A) पत्नी अपने पिता के घर चली गयी थी

(B) पति-पत्नी में कुछ वैमनस्य हो गया था

(C) अपने कर्तव्यपालन में भूल करने के कारण शापवश

(D) अपने कर्तव्यपालन में परदेश जाने के कारण

व्याख्या – कालिदास विरचित 'मेघदूतम्' खण्डकाव्य में नायक विरही यक्ष को अपने कर्तव्यपालन में भूल करने के कारण कुबेर के शापवश अपनी नायिका यक्षिणी से दूर एक वर्ष के लिए रामगिरि पर्वत में रहना पड़ा।

कश्चित्कान्ताविरहगुरुणा स्वाधिकारात्प्रमत्त:
शापेनाऽस्तङ्गमितमहिमा वर्षभोग्येण भर्तु:
यक्षश्चक्रे जनकतनया स्नानपुण्योदकेषु
स्निग्धच्छाया तरुषु वसतिं रामगिर्याश्रमेषु।।(पूर्वमेघ-1)

मेघदूत के इस प्रथम श्लोक से ही सिद्ध होता है कि अपने कर्त्तव्यपालन में भूल करने के कारण कुबेर के शाप के कारण विरही यक्ष रामगिरि आश्रम में निवास कर रहा था, अत: विकल्प (C) सही है।

15. विरहिणी यक्षिणी कहाँ निवास कर रही थी?

(A) उज्जयिनी में **(B) काशी में**

(C) अलकापुरी में **(D) विदर्भ में**

व्याख्या - * विरही यक्ष मेघ से यक्षों के निवास स्थान अलकापुरी में अपनी यक्षिणी के पास सन्देश ले जाने का निवेदन करता है –

***''गन्तव्या ते वसतिरलका नाम यक्षेश्वराणाम्''(पूर्वमेघ-7)**

***''तस्योत्सङ्गे प्रणयिन इव स्त्रस्तगङ्गादुकूलां**

*** त्वं दृष्ट्वा न पुनरलकां ज्ञास्यसे कामचारिन् (पूर्वमेघ-66)**

इच्छानुसार विचरण करने वाले हे मेघ! जिस प्रकार कोई कामिनी, जिसकी गंगा जल के समान (श्वेत) साड़ी खिसक गई हो अपने प्रिय के गोद में बैठी हो, उसी प्रकार उस कैलास की गोद में तुम अलका को देखोगे ।

इससे सिद्ध होता है कि यक्षिणी अलकापुरी में निवास कर रही है।

* 'मेघदूतम्' में उज्जयिनी के राजा प्रद्योत एवं महाकाल मन्दिर आदि का भी वर्णन है।

* काशी एवं विदर्भ देश का वर्णन मेघदूत में नहीं है।

अत: विकल्प (C) सही है।

16. मेघदूतम् के कथानक का मूलस्त्रोत है-

(A) ऐतिहासिक

(B) कविकल्पित

(C) जनश्रुति पर आधारित

(D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या - कविकल्पित- मेघदूतम् कालिदास की प्रौढ एवं परिष्कृत कृति है। इसमें कवि की प्रौढ कल्पना, उदात्त भावना, परिष्कृत शैली एवं कोमलकान्त पदावली का सामञ्जस्य दिखाई देता है। यह कवि की कल्पना का मनोरम प्रसून है, अतएव विश्व के सभी सहृदयों ने इसकी मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है।

ऐतिहासिक- * राजतरङ्गिणी कल्हण की एकमात्र रचना है। इसका विभाजन आठ तरङ्गों में हुआ है। 'राजतरङ्गिणी' में कलियुग के आरम्भ से 1150 ई. तक के कश्मीर का राजनीतिक तथा सांस्कृतिक इतिहास काव्य रूप में वर्णित है। यह एक ऐतिहासिक काव्य है।

* अम्बिकादत्तव्यास विरचित शिवराजविजय एक ऐतिहासिक उपन्यास है।

जनश्रुति पर आधारित- लोककथा या जनश्रुति पर आधारित गुणाढ्य की बृहत्कथा, बृहत्कथामञ्जरी, कथासरित्सागर आदि ग्रन्थ हैं अत: विकल्प (B) सही है।

14. (C) 15. (C) 16. (B)

17. यक्ष को कितनी अवधि के लिए अपनी पत्नी से दूर रहना था?

(A) एक वर्ष (B) दो वर्ष

(C) छः वर्ष (D) आजीवन

व्याख्या – कालिदास विरचित 'मेघदूतम्' खण्डकाव्य में कुबेर ने यक्ष को अपने कार्य से असावधान होने के कारण अपनी प्रिया से एक वर्ष तक अलग रहने का श्राप दे दिया–

कश्चित्कान्ताविरहगुरुणा स्वाधिकारात्प्रमत्तः

शापेनास्तङ्गमितमहिमा वर्षभोग्येण भर्तुः। (पूर्वमेघ–1)

अतः विकल्प (A) सही है।

18. विरही यक्ष कहाँ निवास कर रहा था?

(A) अलकापुरी (B) हिमालय पर्वत

(C) मानसरोवर (D) रामगिरि पर्वत

(A) **अलका –** अलका यक्षों की नगरी तथा कुबेर की राजधानी है। माना जाता है कि 'अलका' कैलास पर्वत पर स्थित है।

(B) **हिमालय –** हिमालय भारत की उत्तर दिशा में स्थित है। 'मेघदूतम्' में कालिदास ने इसका वर्णन किया है। **'प्रालेयाद्रेरुपतटमतिक्रम्य तांस्तान्विशेषान्** (पूर्वमेघ–61)

(C) **मानसरोवर –** यह कैलास पर्वत पर स्थित है। यक्ष मेघ से कहता है कि राजहंस मानसरोवर तक आपके साथी बने रहेंगे। **'आकेलासाद् बिसकिलयच्छेदपाथेयवन्तः'**

(पूर्व.११)

(D) **रामगिरि –** कुबेर से शापित यक्ष रामगिरि के आश्रमों में निवास करने लगा। मल्लिनाथ इसे चित्रकूट में मानते हैं।

यक्षश्चक्रे जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु

स्निग्धच्छायातरुषु वसतिं रामगिर्याश्रमेषु।।

(पूर्वमेघ. – 1)

अतः विकल्प (D) सही है।

19. ''नीतिशतकम्'' साहित्य की किस विधा के अन्तर्गत है –

(A) खण्डकाव्य (B) मुक्तककाव्य

(C) प्रबन्धकाव्य (D) नाट्यग्रन्थ

	काव्यविधा	**ग्रन्थ**	**रस**
(A)	खण्डकाव्य	मेघदूतम्	विप्रलम्भ श्रृङ्गार
(B)	मुक्तककाव्य	नीतिशतकम्	विभिन्न रस
(C)	महाकाव्य	रघुवंशम्	वीररस
(D)	नाट्यग्रन्थ	अभिज्ञानशाकुन्तलम्	श्रृङ्गार रस

अतः विकल्प (B) सही है।

20. 'नीतिशतकम्' के रचयिता हैं –

(A) भारवि (B) भवभूति

(C) भर्तृहरि (D) भूषणभट्ट

	रचयिता	**रचनाएँ**	**अनुमानित समय**
(A)	भारवि	किरातार्जुनीयम्	पञ्चम–षष्ठ ई.
(B)	भवभूति	उत्तररामचरितम्	680 ई. 750 ई.
		महावीरचरितम्	
		मालतीमाधवम्	
(C)	भर्तृहरि	नीतिशतकम्	575-650 ई.
		श्रृङ्गारशतकम्	
		वैराग्यशतकम्	
(D)	भूषणभट्ट	कादम्बरी का उत्तरार्द्ध भाग	

अतः विकल्प (C) सही है।

21. विरहिणी यक्षिणी कहाँ निवास कर रही थी?

(A) उज्जयिनी में (B) काशी में

(C) अलकापुरी में (D) विदर्भ में

(A) **उज्जयिनी –** आधुनिक उज्जैन। इसे 'विशाला' 'अवन्ती' या 'अवन्तिका' भी कहा जाता है। उज्जयिनी आकर वत्स के राजा उदयन ने यहाँ के राजा प्रद्योत की प्रियपुत्री वासवदत्ता का अपहरण किया था।

'प्रद्योतस्य प्रियदुहितरं वत्सराजोऽत्र जह्रे'' (पूर्वमेघ–34)

(B) **काशी –** आधुनिक बनारस, यहाँ भगवान् विश्वनाथ का प्रसिद्ध मन्दिर है जिसकी गणना द्वादश ज्योतिर्लिङ्गों में होती है। इसका वर्णन मेघदूत में नहीं है।

17. (A) 18. (D) 19. (B) 20. (C) 21. (C)

(C) **अलका –** यक्ष मेघ से कहता है कि – **'गन्तव्या ते वसतिरलका नाम यक्षेश्वराणाम् ...।'** (पूर्वमेघ 7)

'तत्रागारं धनपतिगृहानुत्तरेणास्मदीयम् ...।' (उत्तरमेघ 12)

इन श्लोकों से स्पष्ट है कि यक्ष का घर कुबेर के घर से उत्तर दिशा में स्थित है। अत: यक्षिणी अलका में निवास कर रही थी।

(D) **विदर्भ –** विदर्भ दण्डी की जन्मभूमि है इसका वर्णन मेघदूत में नहीं है।

अत: विकल्प (C) सही है।

22. 'नीतिशतकम्' का विषय है –

(A) किसी एक सम्प्रदाय से सम्बन्धित है

(B) विज्ञान पर आधारित है

(C) आध्यात्मिक संचेतना पर आधारित है

(D) मनुष्य मात्र को नीति कुशलता का उपदेश देने वाला है

व्याख्या – 'नीतिशतकम्' में कहीं नीतिपरक अनुभवजन्य उपदेश निर्दिष्ट है तो कहीं रमणियों के रूप विलास का आकर्षण अंकित है और कहीं संसार की असारता चित्रित है। इसमें जिन नीति सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया गया है, वे जगत् की समस्त मानव जाति अथवा धर्म के लिए अनुकरणीय है अर्थात् यह मनुष्यमात्र को नीतिकुशलता का उपदेश देने वाला ग्रन्थ है।

अत: विकल्प (D) सही है।

23. 'नीतिशतकम्' की भाषा –

(A) क्लिष्ट है (B) अलङ्कार प्रधान है

(C) अति सरल सुबोध है (D) अति गम्भीर है

व्याख्या – नीतिशतक की भाषा सरल और स्वाभाविक है। कहीं भी ऐसा प्रतीत नहीं होता कि कोई शब्द अनावश्यक रूप से बलात् प्रयुक्त हो। भाषा इतनी सुबोध है कि कवि के पद्यों में गुम्फित तात्पर्य को समझने में कोई भी कठिनाई नहीं होती। पद्यों की पदावली इतनी सरस है कि स्वयं ही उसमें संगीतात्मकता एवं गेयता आ गई है।

अत: विकल्प (C) सही है।

24. थोड़े से ज्ञान से स्वयं को ज्ञानी मानने वाले मनुष्य को कौन नहीं समझा सकते हैं –

(A) ब्रह्मा (B) विष्णु

(C) महेश (D) गणेश

व्याख्या – अज्ञानी मनुष्य को आसानी से प्रसन्न किया जा सकता है, विशेषज्ञ को तो और भी आसानी से प्रसन्न किया जा सकता है। लेकिन रञ्चमात्र ज्ञान के कारण गर्वित मूढजन को ब्रह्मा भी प्रसन्न नहीं कर सकते।

अज्ञः सुखमाराध्यः सुखतरमाराध्यते विशेषज्ञः।

ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रह्मापि नरं न रञ्जयति।।

(नीतिशतक मूर्खपद्धति श्लोक -3)

अत: विकल्प (A) सही है।

25. अपनी अज्ञता छिपाने के लिए मूढ जनों का एकमात्र उपाय है –

(A) मौनावलम्बन (B) प्रगल्भावलम्बन

(C) हारावलम्बन (D) क्रोधावलम्बन

व्याख्या – भर्तृहरि ने 'नीतिशतकम्' में बताया है कि विधाता ने मूर्खों को अपने हाथ में रहने वाले और अत्यन्त हितकारी मौन को अपनी मूर्खता को छिपाने का साधन बनाया है, जो विद्वानों की सभा में विशेष रूप से आभूषण स्वरूप हो जाता है। **स्वायत्तमेकान्त .... विभूषणं मौनमपण्डितानाम्।** (नीतिशतकम् – 07)

अत: विकल्प (A) सही है।

26. स्वाभिमान और सम्मान के पात्र होते हैं –

(A) राजा (B) धनवान्

(C) विद्वज्जन (D) राज्याधिकार

व्याख्या – 'मानशौर्यपद्धति' में भर्तृहरि अनेक श्लोकों में विद्वानों के स्वाभिमान एवं सम्मान की बात करते हैं जैसे –

'तज्जाड्यं वसुधाधिपस्य सुधियस्त्वर्थं विनापीश्वराः...।' (नीति. 12)

येषां तान्प्रति मानमुज्झत नृपाः। कस्तैः सह स्पर्धते।' (नीति. 13)

अधिगतपरमार्थान्पण्डितान्मावमंस्था-

स्तृणमिव लघुलक्ष्मीर्नैव तान्संरुणद्धि। (नीति. 14)

उपर्युक्त पंक्तियों से स्पष्ट है कि विद्वज्जन स्वाभिमान और

22. (D) 23. (C) 24. (A) 25. (A) 26. (C)

सम्मान के पात्र होते हैं। अत: विकल्प (C) सही है।

27. सत्संगति के प्रभाव से –

(A) मनुष्य की बुद्धि तीव्र होती है

(B) सत्य और सदाचरण में उसकी प्रवृत्ति होती है

(C) मान-मर्यादा और प्रतिष्ठा प्राप्त करता है

(D) पाप आदि से मुक्त होकर उपर्युक्त सभी सद्‌गुण विकसित होते हैं।

व्याख्या – सत्संगति के प्रभाव को आचार्य भर्तृहरि ने इस प्रकार बताया है –

* जाड्यं धियो हरति – सत्संगति बुद्धि की जडता को हरती है।
* सिञ्चति वाचि सत्यम् – वाणी में सत्य का सिञ्चन करती है।
* मानोन्नतिं दिशति – मान की उन्नति करती है।
* पापमपाकरोति – पाप को दूर करती है।
* चेत: प्रसादयति – चित्त को प्रसन्न करती है।
* दिक्षु तनोति कीर्तिम् – दिशाओं में कीर्ति का विस्तार करती है।
* सत्संगति: कथय किं न करोति पुंसाम्।

भला सज्जनों की संगति मनुष्य का क्या लाभ नहीं करती। अर्थात् सत्संगति से उपर्युक्त सभी गुण विकसित होते हैं।

अत: विकल्प (D) सही है।

28. धन की और कौन सी गति नहीं होती –

(A) दान (B) भोग

(C) नाश (D) सन्तोष प्राप्ति

व्याख्या- आचार्य भर्तृहरि ने धन की तीन गतियाँ बतायी हैं-

दानं भोगो नाशस्तिस्रो गतयो भवन्ति वित्तस्य।

यो न ददाति न भुङ्क्ते तस्य तृतीया गतिर्भवति।।

(नीतिशतकम्-34)

धन की तीन गतियाँ

दान | भोग | नाश

उपर्युक्त विकल्पों में **सन्तोष प्राप्ति** धन की त्रिविध गतियों में परिगणित नहीं है अत: विकल्प (D) सही है।

29. भारतीय जनश्रुति महाराज भर्तृहरि को –

(A) विक्रमसंवत् के संस्थापक महाराज विक्रमादित्य का बड़ा भाई मानती है।

(B) कालिदास के समकक्ष मानती है।

(C) गुजरात और महाराष्ट्र के समीप स्थित राज्य का राजा मानती है।

(D) विदिशा के राजा का कनिष्ठ भाई मानती है।

व्याख्या – प्राचीन अन्य संस्कृत कवियों की भाँति भर्तृहरि ने भी अपने समय का निर्देश नहीं किया है। शतकत्रय के रचयिता महाकवि भर्तृहरि का जीवन और उनका समय अभी तक निश्चित नहीं है। दन्त कथाओं के आधार पर उन्हें उज्जैन के प्रसिद्ध सम्राट् तथा विक्रमसंवत् के प्रवर्तक महाराज विक्रमादित्य का ज्येष्ठ भाई माना जाता है।

अत: विकल्प (A) सही है।

30. महाराज भर्तृहरि की प्रमुख रचनाएँ हैं –

(A) नीतिशतकम् (B) शृङ्गारशतकम्

(C) वैराग्यशतकम् (D) उपर्युक्त तीनों ही।

व्याख्या -

भर्तृहरि की प्रमुख रचनाएँ

नीतिशतकम्	शृङ्गारशतकम्	वैराग्यशतकम्
(111 श्लोक)	(100 श्लोक)	(100 श्लोक)

उपर्युक्त तीनों रचनाएँ भर्तृहरि की हैं इन्हें **'शतकत्रय'** भी कहा जाता है। अत: विकल्प (D) सही है।

31. नीतिशतकम् अपनी गेयता के कारण –

(A) गीतिकाव्य है (B) रीतिकाव्य है

(C) वक्रोक्तियुक्त है (D) इनमें से कोई नहीं है

व्याख्या – भर्तृहरि छन्दों के प्रयोग में भी अन्य संस्कृत कवियों की भाँति सिद्धहस्त थे। उनके छन्दों में अतिशय लालित्य है। एक समर्थ कवि की तरह भाषा की सहज व्यवस्था भी उनके छन्दों में दृष्टिगोचर होती है। भर्तृहरि ने अपने मुक्तकों में बड़ी ही कुशलता से छन्दों का प्रयोग किया है जो गेयात्मकता से परिपूर्ण है। इसलिए इसे गीतिकाव्य की संज्ञा दी गई है।

अत: विकल्प (A) सही है।

27. (D) 28. (D) 29. (A) 30. (D) 31. (A)

32. 'अभिज्ञान' शब्द का अर्थ है –

(A) ज्ञान होना (B) स्मरण होना

(C) पहचान (D) अभियान होना

व्याख्या - अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के चतुर्थ अङ्क में जब दुर्वासा ऋषि शकुन्तला को शाप देकर निर्बाध गति से जा रहे थे तभी प्रियंवदा दुर्वासा को मनाने के लिए जाती है तब दुर्वासा ऋषि कहते हैं कि –

''न मे वचनमन्यथाभवितुमर्हति, किं त्वभिज्ञानाभरणदर्शनेन शापो निवर्तिष्यत इति।''

मेरा वचन असत्य नहीं हो सकता किन्तु पहचान के आभूषण के दिखाने से मेरा शाप समाप्त हो जाएगा। यहाँ **'अभिज्ञान'** शब्द का अर्थ **पहचान** है। इसलिए विकल्प (C) सही है।

स्रोत- अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज -188

33. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के रचयिता हैं -

(A) भवभूति (B) कालिदास

(C) श्रीहर्ष (D) भास

(A) भवभूति - भवभूति विरचित तीन नाटक उपलब्ध होते हैं-

(1) मालतीमाधव (2) महावीरचरित (3)उत्तररामचरित

* मालतीमाधव दश अङ्कों का प्रकरण है। इसमें मालती और माधव तथा मकरन्द और मदयन्तिका के प्रणय और परिणय का वर्णन है।
* महावीरचरित में अङ्कों की संख्या सात है इसमें राम विवाह से लेकर राम-राज्याभिषेक तक रामायण की कथा वर्णित है।
* उत्तररामचरित में अङ्कों की संख्या सात है, इसमें रामायण के उत्तरकाण्ड की कथा का वर्णन है।

(B) कालिदास - कालिदास विरचित नाटकों की संख्या तीन तथा कुल रचनाएँ सात हैं-

नाटक- 1. मालविकाग्निमित्रम् 2. विक्रमोर्वशीयम् 3. अभिज्ञानशाकुन्तलम्

महाकाव्य- 1. रघुवंशम् 2. कुमारसम्भवम्

गीतिकाव्य एवं खण्डकाव्य- 1. ऋतुसंहारम् 2. मेघदूतम्

अतः विकल्प (B) सही है।

(C) श्रीहर्ष - नैषधीयचरित के सर्गान्त श्लोकों में श्रीहर्ष की निम्न रचनाओं का उल्लेख है-

नैषधीयचरितम् — **स्थैर्यविचारप्रकरण**
श्रीविजयप्रशस्ति — **खण्डनखण्डखाद्य**
गौडोर्वीशकुलप्रशस्ति — **नवसाहसाङ्कचरितचम्पू**
अर्णववर्णन — **छिन्दप्रशस्ति**
शिवशक्तिसिद्धि

(D) भास - भास के नाम से सम्प्रति तेरह नाटक प्राप्त होते हैं सन् 1909 ई0 में 'श्री टी0 गणपति शास्त्री' ने ट्रावनकोर राज्य से इन्हें प्राप्त किया था-

1. प्रतिज्ञायौगन्धरायण
2. स्वप्नवासवदत्तम्
— उदयन कथामूलक

3. ऊरुभंग
4. दूतवाक्यम्
5. पञ्चरात्रम्
6. बालचरित
7. दूतघटोत्कच
8. कर्णभार
9. मध्यमव्यायोग
— महाभारतमूलक

10. प्रतिमानाटक
11. अभिषेकनाटक
— रामायणमूलक

12. अविमारक
13. चारुदत्त
— कल्पनामूलक

34. अभिज्ञानशाकुन्तलम् साहित्य की किस विधा के अन्तर्गत है-

(A) महाकाव्य है (B) नाटक है

(C) नाटिका है (D) चन्द्रकाव्य है

ग्रन्थविधा	ग्रन्थकार	ग्रन्थ	विभाजन
महाकाव्य	कालिदास	रघुवंशम्	19 सर्ग
		कुमारसम्भवम्	17 सर्ग
	भारवि	किरातार्जुनीयम्	18 सर्ग
नाटक	कालिदास	अभिज्ञानशाकुन्तलम्	7 अङ्क
		विक्रमोर्वशीयम्	5 अङ्क

32. (C) 33. (B) 34. (B)

		मालविकाग्निमित्रम्	5 अङ्क
	भवभूति	उत्तररामचरितम्	7 अङ्क
		महावीरचरितम्	7 अङ्क
नाटिका	हर्ष	रत्नावली	4 अङ्क

अत: विकल्प (B) सही है।

35. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के सहित कालिदास ने कितने नाटक लिखे हैं?

(A) दो (B) तीन

(C) चार (D) पाँच

(A) कालिदास ने दो महाकाव्य लिखे हैं- **रघुवंशम्, कुमारसम्भवम्।**

(B) कालिदास के तीन नाटक हैं- **अभिज्ञानशाकुन्तलम्, विक्रमोर्वशीयम्, मालविकाग्निमित्रम्।**

(C) कालिदास कृत अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक का चतुर्थ अङ्क सर्वश्रेष्ठ है, तथा चतुर्थ अङ्क के चार श्लोक अत्यन्त प्रसिद्ध हैं।

काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला।
तत्रापि च चतुर्थोऽङ्कः तत्र श्लोकचतुष्टयम् ।।

(D) कालिदास कृत विक्रमोर्वशीयम् तथा मालविकाग्निमित्रम् में अङ्कों की संख्या पाँच है।

अत: विकल्प (B) सही है।

36. अभिज्ञानशाकुन्तलम् का कथानक-

(A) ऐतिहासिक है

(B) उत्पाद्य है

(C) ऐतिहासिक होने पर भी कुछ परिवर्तित है

(D) इनमें से कुछ भी नहीं है।

व्याख्या – दुष्यन्त और शकुन्तला की कथा महाभारत के आदिपर्व अध्याय (67 से 74) में प्राप्त होती है। कालिदास ने इसमें पर्याप्त परिवर्तन करके इसे नाटकोपयोगी कथा का रूप दिया। यथा दुर्वासा के शाप, अनसूया, प्रियंवदा गौतमी, दुर्वासा, शार्ङ्गरव, शारद्वत आदि पात्रों की नूतन कल्पना, सानुमती की कल्पना, भ्रमर की कल्पना आदि। पद्मपुराण के स्वर्गखण्ड में भी यह कथा प्राप्त होती है। परन्तु पद्मपुराण की कथा महाभारत और शाकुन्तल की कथा पर निर्भर है, उसे शाकुन्तल की कथा का मूल नहीं माना जा सकता है। पद्मपुराण में वर्णित कथा का अधिकांश भाग शाकुन्तल के वर्णन का अनुवाद मात्र प्रतीत होता है। अभिज्ञानशाकुन्तल का कथानक ऐतिहासिक होने पर भी कुछ परिवर्तित है ।अत: विकल्प (C) सही है।

37. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में कितने अङ्क हैं?

(A) पाँच (B) छः

(C) सात (D) आठ

A. * **मालविकाग्निमित्रम् –** कालिदास – पाँच अङ्क– नायक धीरोदात्त कोटि का माना जाता है
* **विक्रमोर्वशीयम् –** कालिदास – पाँच अङ्क – चतुर्थ अंक में राजा का विलाप अपभ्रंश छन्दों में किया गया है।
* **बालचरितम् –** भास – पाँच अङ्क – श्रीकृष्ण के जन्म से कंस वध तक की घटना का वर्णन।

B. * **स्वप्नवासवदत्तम् –** भास – छः अङ्क – उदयन, वासवदत्ता तथा रत्नावली की प्रणय कथा।
* **अभिषेकनाटकम् –** भास – छः अङ्क – रामायण कथा का संक्षेप में वर्णन।
* **अविमारकम्** – भास – छः अङ्क – अविमारक तथा कुरंगी की प्रणय कथा।
* **वेणीसंहारम् –** भट्टनारायण – छः अङ्क – नाटक का प्रारम्भ और अन्त दोनों वीर रस से युक्त है।

C. * **अभिज्ञानशाकुन्तलम् –** कालिदास – सात अङ्क – दुर्वासा ऋषि का शाप कवि की मौलिक कल्पना।
* **मुद्राराक्षसम् –** विशाखदत्त – सात अङ्क –नायिका का अभाव
* **उत्तररामचरितम् –** भवभूति – सात अङ्क – विदूषक विहीन

D. * **वाल्मीकिरामायण –** महर्षि वाल्मीकि – सात काण्ड – आदिकाव्य / आर्षकाव्य–रामकथा का वर्णन

अत: विकल्प (C) सही है।

38. अभिज्ञानशाकुन्तलम् का कौन सा अङ्क सर्वश्रेष्ठ माना गया है-

(A) पहला (B) दूसरा

(C) तीसरा (D) चौथा

व्याख्या – अभिज्ञानशाकुन्तलम् के अङ्कों के नाम– पहला अङ्क – आश्रम प्रवेश, दूसरा अङ्क – आश्रम निवेश तीसरा अङ्क – विवाह, चौथा अङ्क – विदाई ,पाँचवा अङ्क –

35. (B) 36. (C) 37. (C) 38. (D)

प्रत्याख्यान, छठा अङ्क – पश्चाताप, सातवाँ अङ्क – मिलन

शाकुन्तल के विषय में विद्वज्जनों में एक प्रसिद्ध सूक्ति है–

काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला।
तत्रापि च चतुर्थोऽङ्कस्तत्र श्लोकचतुष्टयम्।।

शाकुन्तल के चतुर्थ अङ्क के चार श्लोक अपने भाव कल्पना, कवित्व और अर्थोदात्तता के कारण अत्यन्त प्रसिद्ध हैं। एक श्लोक में पुत्री की विदाई का मार्मिक वर्णन है, दूसरे में पुत्री का पतिग्रह के लिए आदर्श शिक्षा दी गई है, तीसरे में सुकुमार भावनाओं का चित्रण तथा चौथे में ऋषि कण्व का राजा दुष्यन्त के लिए आदर्श सन्देश है। इसलिए **चतुर्थ अङ्क को सर्वश्रेष्ठ अङ्क** माना गया है।

अत: विकल्प (D) सही है।

39. दुर्वासा ऋषि के आश्रम में पदार्पण के समय शकुन्तला किसके ध्यान में मग्न थी?
(A) कण्व ऋषि के
(B) दुष्यन्त के
(C) सद्यः प्रसूता हरिणी के
(D) नवपल्लवयुक्त लता के

व्याख्या – दुर्वासा ऋषि के कण्व आश्रम में पदार्पण के समय शकुन्तला दुष्यन्त के चिन्तन में मग्न थी। यह देखकर ऋषि दुर्वासा शकुन्तला को सम्बोधित करते हुए कहते हैं–

आः, अतिथिपरिभाविनि,
विचिन्तयन्ती . . . प्रथमं कृतामिव।। (अभि.शा.4/1)

अये अतिथि का तिरस्कार करने वाली! मुझ तपस्वी का तुमने अनादर किया है, जिसका (दुष्यन्त का) स्मरण तू कर रही है वह याद दिलाए जाने पर भी तुम्हें स्मरण नहीं करेगा जैसे उन्मत व्यक्ति पहले कही गयी बात को भूल जाता है। वैसे ही वह (दुष्यन्त) तुम्हें भूल जायेगा।

अत: विकल्प (B) सही है।

40. दुर्वासा ऋषि ने शकुन्तला को क्या शाप दिया?
(A) कि तू याद करी विद्या भूल जाएगी
(B) कि तू अस्वस्थ हो जाएगी
(C) कि तेरा पुत्र तुझे भूल जाएगा
(D) कि तू जिसके ध्यान में बैठी है वो भूल जाएगा

व्याख्या – अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के चतुर्थ अङ्क में दुष्यन्त को याद कर रही शकुन्तला को ऋषि दुर्वासा ने नेपथ्य से वंशस्थ छन्द में निम्न शाप दिया–

विचिन्तयन्ती यमनन्यमानसा, तपोधनं वेत्सि न मामुपस्थितम्
स्मरिष्यति त्वां न स बोधितोऽपि सन् कथां प्रमत्तः प्रथमं कृतामिव।।

(अभि० 4\1)

अनन्यहृदय से जिसका चिन्तन करती हुई तू उपस्थित हुए मुझ तपस्वी को नहीं देख रही है, वह तेरे स्मरण दिलाने पर भी तुझको स्मरण नहीं करेगा, जैसे उन्मन्त व्यक्ति पहले कही बात को स्मरण नहीं करता है।

अत : विकल्प (D) सही है।

41. दुर्वासा ऋषि ने शाप मोचन किस तरह बताया?
(A) छः महीने बाद दुष्यन्त को स्वतः शकुन्तला का स्मरण हो जाएगा
(B) बसन्त ऋतु में आम्रमञ्जरी देखकर दुष्यन्त को शकुन्तला की याद आ जाएगी।
(C) किसी अभिज्ञान (पहचान) को देखने से दुष्यन्त को शकुन्तला का स्मरण हो जाएगा।
(D) पुनर्जन्म में दुष्यन्त को शकुन्तला का स्मरण हो जाएगा।

व्याख्या – दुर्वासा ऋषि ने शकुन्तला को अतिथि तिरस्कार करने के लिए शाप देकर तीव्र गति से चले जा रहे थे तभी अनसूया ने प्रियंवदा को मनाने के लिए भेजा, क्षमा याचना करने पर दुर्वासा ऋषि ने कहा–

''ततो मे वचनमन्यथाभवितुं नार्हति। किं त्वभिज्ञानाभरण-दर्शनेन शापो निवर्तिष्यत इति मन्त्रयमाण एवान्तर्हितः।''

(अभि०चतुर्थ अङ्क)

मेरा वचन अन्यथा अर्थात् असत्य नहीं हो सकता है परन्तु पहचान का आभूषण दिखाने से शाप की समाप्ति हो जाएगी ऐसा कहते हुए वह अन्तर्धान हो गए। यह बात प्रियंवदा अनसूया से बताती है।

अत: विकल्प (C) सही है।

39. (B) 40. (D) 41. (C)

42. कण्व ऋषि को इस नाम से भी पुकारते थे-

(A) गौतम ऋषि (B) कश्यप ऋषि
(C) काश्यप ऋषि (D) विश्वामित्र ऋषि

व्याख्या - 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अङ्क में महर्षि कण्व (काश्यप) का प्रवेश होता है- (ततः प्रविशति स्नानोत्तीर्णः काश्यपः) जब अनसूया और प्रियवंदा, शकुन्तला को आभूषण पहनाने का अभिनय करती हैं, उसके बाद स्नान करके आये हुए काश्यप का प्रवेश होता है। यहाँ 'काश्यप' पद कण्व के लिए प्रयुक्त है।

* एक गौतम ऋषि–अहल्या के पति और शतानन्द के पिता भी है, लेकिन उनका वर्णन शाकुन्तलम् में नहीं है।
* गौतम महर्षि का कण्व शिष्य है।
* मारीच (कश्यप) देवों और राक्षसों के पिता हैं।
* विश्वामित्र–शकुन्तला के जन्मदाता पिता हैं।

अतः विकल्प (C) सही है।

43. चतुर्थ अङ्क की विषय वस्तु मानवीय जीवन की किस घटना पर आधारित है?

(A) बच्चे के जन्म के अवसर की
(B) बच्चे के गुरुकुल जाने के अवसर की
(C) बेटी की शादी होने पर विदाई के अवसर की
(D) मृत्यूपरान्त श्मशान जाने के अवसर की।

व्याख्या - कालिदास विरचित 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अङ्क को विशेष रूप से सभी सहृदय एवं विद्वानों ने मुक्त कण्ठ से सराहा है–

काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला।
तत्रापि च चतुर्थोऽङ्कस्तत्र श्लोकचतुष्टयम्।।

शाकुन्तल के चतुर्थ अङ्क के श्लोकों में पुत्री की विदाई का मार्मिक वर्णन है एवं पुत्री को पतिगृह के लिए आदर्शशिक्षा दी गई है–

➔ **यास्यत्यद्य शकुन्तलेति ......(4.6)**
➔ **शुश्रूषस्व गुरून् . . . . वामाः कुलस्याधयः।''(4.18)**
➔ **अस्मान् साधु . . . . वाच्यं वधूबन्धुभिः।। (4/17)**

इत्यादि श्लोको में भावसौन्दर्य की दृष्टि से बेटी की शादी होने पर विदाई के अवसर पर मानवीय जीवन की मार्मिक घटना का वर्णन है।

अतः विकल्प (C) सही है।

44. 'अर्थो हि कन्या परकीय एव' में कन्या की उपमा किस उपमान के साथ दी गयी है?

(A) कमलिनी के साथ (B) चाँदनी के साथ
(C) धरोहर के साथ (D) ब्याज के साथ

व्याख्या - 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अङ्क के 22 वें श्लोक में कण्व ने कन्या की उपमा न्यास (धरोहर) से की है।

अर्थो हि कन्या परकीय एव
तामद्य सम्प्रेष्य परिग्रहीतुः।
जातो ममायं विशदः प्रकामं
प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा।।

(अभि.शा.4/22)

वस्तुतः कन्या पराई सम्पत्ति है। आज उसको पति के पास भेजकर मेरी अन्तरात्मा उसी प्रकार अत्यन्त प्रसन्न हो रही है, जैसे धरोहर को लौटाने पर धरोहर रखने वाले का मन प्रसन्न होता है।

अतः विकल्प (C) सही है।

45. अभिज्ञानशाकुन्तलम् की रचना करते समय कवि कालिदास की किस मौलिकता के कारण दुष्यन्त का चरित्र उदात्त बन पाया?

(A) शकुन्तला जैसी प्रकृति पुत्री को प्रेम करने के कारण
(B) भारतवर्ष के वीर सम्राट् की छवि प्रस्तुत करने के कारण
(C) दुर्वासा ऋषि के शाप की कल्पना के कारण
(D) पहचान के रूप में अँगूठी देने के कारण

व्याख्या - मूलकथा में राजा सारी घटनाएँ याद होने पर भी लोकापवाद के डर से शकुन्तला को स्वीकार नहीं करता है। आकाशवाणी के द्वारा समर्थन होने पर उसे स्वीकार करता है। इससे राजा का चरित्र अत्यन्त निम्न कोटि का ज्ञात होता है, किन्तु अभिज्ञान शाकुन्तल में दुर्वासा के शाप

42. (C) 43. (C) 44. (C) 45. (C)

के कारण राजा दुष्यन्त शकुन्तला को नहीं पहचानता, इससे दुष्यन्त का चरित्र उदात्त बना रहता है। यह कालिदास की मौलिक कल्पना है।

''**विचिन्तयन्ती यमनन्यमानसा**'' इस श्लोक के माध्यम से दुर्वासा शकुन्तला को चतुर्थ अङ्क में शाप देते हैं।

अत: विकल्प (C) सही है।

46. साहित्य की सभी विधाओं में से सर्वाधिक रम्यतापूर्ण विधा है-

(A) महाकाव्य (B) खण्डकाव्य
(C) कथा (D) नाटक

(A) महाकाव्य - सर्गबन्धो महाकाव्यं तत्रैको नायकः सुरः।

(सा.द.6/315)

जिसमें सर्गों का निबन्धन हो, वह महाकाव्य कहलाता है।

(B) खण्डकाव्य - खण्डकाव्यं भवेत्काव्यस्यैकदेशानुसारि च।

(सा.द.6/329)

काव्य के एक अंश का अनुसरण करने वाला खण्डकाव्य होता है।

(C) कथा - कथायां सरसं वस्तु गद्यैरेव विनिर्मितम्।

(सा.द.6/332)

कथा में सरस वस्तु गद्य द्वारा ही बनायी जाती है।

(D) नाटक - नाटकं ख्यातवृत्तं स्यात्पञ्चसन्धिसमन्वितम्।।

(सा.द.6/7-11)

नाटक का वृत्त (कथा) ख्यात अर्थात् रामायणादि इतिहास में प्रसिद्ध होना चाहिए।

इन सभी विधाओं में नाटक सर्वाधिक रम्यतापूर्ण विधा है। विद्वज्जनों में प्रसिद्ध सूक्ति है- '**काव्येषु नाटकं रम्यं . . .।**'

अत: विकल्प (D) सही है।

47. उत्तररामचरितम् के रचयिता हैं-

(A) भास (B) कालिदास
(C) विशाखदत्त (D) भवभूति

महाकवि भास की रचनायें

ग्रन्थ	विभाजन
प्रतिज्ञायौगन्धरायण	चार अंक
स्वप्नवासवदत्तम्	छह अंक
ऊरुभङ्ग	एकांकी
दूतवाक्य	एकांकी
पञ्चरात्र	तीन अंक
बालचरित	पाँच अंक
दूत-घटोत्कच	एकांकी
कर्णभार	एकांकी
मध्यमव्यायोग	एकांकी
प्रतिमानाटक	सात अंक
अभिषेक नाटक	छह अंक
अविमारक	छह अंक
चारुदत्त	चार अंक

कालिदास की रचनायें

अभिज्ञानशाकुन्तलम्	सात अंक
विक्रमोर्वशीयम्	पाँच अंक (त्रोटक)
मालविकाग्निमित्रम्	पाँच अंक
रघुवंशम्	उन्नीस सर्ग
कुमारसम्भवम्	सत्रह सर्ग
मेघदूतम्	दो भाग (पूर्व, उत्तर)
ऋतुसंहारम्	छः सर्ग

विशाखदत्त की रचना

मुद्राराक्षसम्	सात अंक

भवभूति की रचनायें

मालतीमाधवम्	दस अंक (प्रकरण)
महावीरचरितम्	सात अंक
उत्तररामचरितम्	सात अंक

अत: विकल्प (D) सही है।

48. निम्नलिखित में से कौन रचना भवभूति की नहीं है-

(A) प्रतिमानाटकम् (B) उत्तररामचरितम्
(C) मालतीमाधवम् (D) महावीरचरितम्

* प्रतिमानाटकम् – भास – सात अङ्क – रामायण कथा का संक्षिप्त वर्णन
* उत्तररामचरितम् – भवभूति – सात अङ्क – रामायण उत्तरकाण्ड की कथा
* मालतीमाधवम् – भवभूति – दस अङ्क – मालती –माधव तथा

46. (D) 47. (D) 48. (A)

मकरन्द और मदयन्तिका का प्रणय और परिणय का वर्णन

*महावीरचरितम् – भवभूति – सात अङ्क – राम विवाह से राम राज्याभिषेक तक रामायण कथा का वर्णन

* प्रतिमानाटकम् महाकवि भास द्वारा रचित है शेष तीनों रचना महाकवि भवभूति द्वारा रचित हैं।

अत: विकल्प (A) सही है।

49. 'उत्तररामचरितम्' नाटक रामायण के-
(A) पूर्वार्द्ध पर आधारित है
(B) उत्तरार्द्ध पर आधारित है
(C) सम्पूर्ण रामायण पर आधारित है
(D) रामायण के एक अंश पर आधारित है।

व्याख्या – * उत्तररामचरितम् भवभूति का अन्तिम और सर्वोत्कृष्ट नाटक है। अंकों की संख्या सात, तथा प्रधानरस करुण है। इसकी कथा **वाल्मीकि रामायण के उत्तरकाण्ड की कथा पर आश्रित है** होने के कारणरा यह नाटक रामायण के उत्तरार्द्ध पर आधारित माना जायेगा।

* उत्तररामचरितम् नाटक के सातवें अंक में 'गर्भनाटक' की योजना भवभूति की मौलिक कल्पना है।

अत: विकल्प (B) सही है

स्रोत- *संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास – कपिलदेव द्विवेदी, पेज 403-404*

50. उत्तररामचरितम् का प्रधानरस है-
(A) शृंगार रस (B) वीर रस
(C) शान्त रस (D) करुण रस

रस	ग्रन्थनाम	विभाजनसंख्या	ग्रन्थप्रकार
A. शृङ्गार	नैषधीयचरितम्	22 सर्ग	महाकाव्य
	मृच्छकटिकम्	10 अंक	प्रकरण
B. वीर	महावीरचरितम्	7 अङ्क	नाटक
	शिशुपालवधम्	20 सर्ग	महाकाव्य
C. शान्त	महाभारत	18 पर्व	ऐतिहासिक महाकाव्य
D. करुण	उत्तररामचरितम्	7 अंक	नाटक
	वाल्मीकिरामायण	7 काण्ड	आदिकाव्य

अत: विकल्प (D) सही है।

51. उत्तररामचरितम् में अङ्कों की गिनती है-
(A) पाँच (B) छ:
(C) सात (D) आठ

ग्रन्थनाम	कवि	विभाजन
नागानन्दम्	हर्षदेव	पाँच अङ्क
स्वप्नवासवदत्तम्	भास	छ: अङ्क
वेणीसंहारम्	भट्टनारायण	छ: अङ्क
मुद्राराक्षसम्	विशाखदत्त	सात अङ्क

अत: विकल्प (C) सही है।

52. उत्तररामचरितम् के तृतीय अङ्क में कवि की मौलिक कल्पना है-
(A) छाया सीता व राम का दण्डकारण्य में पुनरागमन
(B) लक्ष्मण व सीता का मिलन
(C) वाल्मीकि आश्रम को छोड़कर सीता का दण्डकारण्य में प्रवेश
(D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या – * 'उत्तररामचरितम्' के तृतीय अङ्क में 'छायादृश्य' भवभूति की मौलिक कल्पना है। इसमें सीता अदृश्य रहते हुए राम की दयनीय स्थिति देखती हैं और मूर्छित राम को हस्तस्पर्श से होश में लाती हैं।

* वासन्ती, तमसा और मुरला ये पात्र एवं राम का दण्डकारण्य में पुनरागमन भवभूति की अपनी मौलिक कल्पनायें है।

अत: विकल्प (A) सही है।

53. छाया सीता के साथ दण्डकारण्य में आए राम का दर्शन करने वाला दूसरा पात्र है-
(A) भागीरथी (B) तमसा
(C) मुरला (D) इनमें से कोई नहीं

(A) भागीरथी – 'उत्तररामचरितम्' में भागीरथी गंगा अधिष्ठात्री देवी के रूप में हैं।

(B) तमसा – छायाङ्क नामक तृतीय अङ्क में सीता और तमसा अदृश्य रहते हुए राम और वासन्ती का वार्तालाप सुनती है। भागीरथी तमसा से कहती हैं-

'तमसे, त्वयि प्रकृष्टप्रेमैव वधूर्जानकी।
अत: त्वमेवास्या: प्रत्यनन्तरीभव'।

49. (B) 50. (D) 51. (C) 52. (A) 53. (B)

इस कथन से सिद्ध है कि छाया सीता के साथ तमसा राम का दर्शन करती हैं।

(C) मुरला - एक नदी की अधिष्ठात्री देवी के रूप में हैं।

अतः विकल्प (B) सही है।

54. दण्डकारण्य में राम कितने वर्ष बाद दुबारा आये थे?

(A) आठ वर्ष बाद (B) दस वर्ष बाद

(C) बारह वर्ष बाद (D) चौदह वर्ष बाद

'उत्तररामचरितम्' के द्वितीय अङ्क में सीता गङ्गा के प्रवाह में दो बच्चों को जन्म देती हैं। गंगा और पृथ्वी उसे बाहर लाती हैं। दूध छोड़ने के बाद बालक वाल्मीकि के पास रहते हैं। रामायण में अन्य प्रसंग में वर्णित क्रौञ्च वध और शम्बूक वध उत्तररामचरितम् के इसी अङ्क में वर्णित हैं। सीता परित्याग के 12 वर्ष बाद शम्बूक के प्रसंग से राम दण्डकारण्य आते हैं और पूर्वानुभूत स्थानों का दर्शन करते हैं।

अतः विकल्प (C) सही है।

55. दुबारा दण्डकारण्य में आये हुए राम के साथ किस पात्र को भवभूति ने तृतीय अङ्क में वर्णित किया है?

(A) तमसा को (B) वासन्ती को

(C) मुरला को (D) भागीरथी को

व्याख्या - उत्तररामचरितम् के तृतीय अङ्क में भवभूति के द्वारा तमसा, वासन्ती, मुरला और भागीरथी आदि पात्रों का वर्णन किया गया है -

तमसा - भागीरथी के आदेश से तमसा सीता के साथ रहती हैं।

अहमप्याज्ञापिता 'तमसे, त्वयि प्रकृष्टप्रेमैव वधूर्जानकी, अतस्त्वमेवास्याः प्रत्यनन्तरीभव' इति।

वासन्ती - वासन्ती वनदेवी हैं, और सीता की प्रियसखी भी हैं। जो पञ्चवटी में आये हुए राम का स्वागत करती हैं-

ददतु तरवः पुष्पैरर्घ्यं फलैश्च मधुश्च्युतः

स्फुटितकमलामोदप्रायाः प्रवान्तु वनानिलाः। (3/24)

वासन्ती हो राम के साथ रहती है।

मुरला - मुरला को लोपामुद्रा के द्वारा गोदावरी नदी के पास सन्देश देने के लिए भेजा जाता है कि–राम पञ्चवटी जायेंगे तो सीता के साथ बिताये गये पल को याद करेगें जिससे उन्हे मूर्च्छा की आशंका रहेगी अतः हे भगवती गोदावरी, पूजनीय आपको सावधान रहना चाहिए।

मुरला - सखि तमसे, प्रेषितास्मि भगवतो अगस्त्यस्य पत्न्या लोपामुद्रया सरिद्वरां गोदावरीमभिधातुम्......

भागीरथी - उक्तमत्र भगवत्या 'वत्से देवयजनसम्भवे सीते, अद्य खल्वायुष्मतोः कुशलवयोर्द्वादशस्य जन्मवत्सरस्य संख्यामङ्गलग्रन्थिरभिवर्तते।

भगवती भागीरथी ने कहा - 'हे यज्ञभूमि से उत्पन्न पुत्री सीता, आज चिरंजीवी कुश और लव की बारहवीं मंगलमयी वर्षगाँठ है।

नोट- तमसा सीता के साथ रहती हैं

वासन्ती वनदेवी है और सीता की प्रियसखी है, वह राम के साथ रहती है। अतः विकल्प (B) सही है।

56. तृतीय अङ्क में सीता वियोगजन्य शोक के कारण मूर्च्छित राम को पुनः चेतना कैसे प्राप्त होती है?

(A) भागीरथी के जल स्पर्श के द्वारा

(B) वासन्ती के सान्त्वना भरे वचनों द्वारा

(C) लव-कुश का दर्शन प्राप्त करने के द्वारा

(D) छाया-सीता के हाथ के स्पर्श द्वारा

व्याख्या - उत्तररामचरितम् नाटक के तृतीय अङ्क में राम के मूर्च्छित होने पर तमसा सीता से कहती हैं–

त्वमेव ननु कल्याणि! सञ्जीवय जगत्पतिम्।
प्रियस्पर्शो हि पाणिस्ते तत्रैष निरतो जनः।। 3/10

हे मंगलमयी सीते! तुम ही अवश्य जगत् के स्वामी राम को होश में लाओ, क्योंकि तुम्हारे हाथ का स्पर्श उन्हें प्रिय है और यह राम उसमें अनुरक्त हैं।

इसके बाद भूमि पर पड़े हुए और अश्रुपूर्ण सीता के हाथ के स्पर्श द्वारा प्रसन्न एवं सचेतन राम का प्रवेश होता है।

अतः विकल्प (D) सही है।

57. '' पूरोत्पीडे तटाकस्य परीवाहः प्रतिक्रिया'' से क्या तात्पर्य है-

(A) तालाब के अधिक भर जाने पर जल को बाहर बहाना ही एकमात्र संरक्षण उपाय होता है।

(B) तालाब को भरने के लिए जल को बाहर से डालना ही उपाय होता है।

(C) तालाब के अधिक भर जाने पर बाहर का पानी रोक देना ही उपाय होता है।

54. (C) 55. (B) 56. (D) 57. (A)

(D) तीनों ही अर्थ सही नहीं है।

व्याख्या - उत्तररामचरितम् के तृतीय अङ्क में तमसा सीता से कह रही हैं–

पूरोत्पीडे तटाकस्य परीवाहः प्रतिक्रिया।
शोकक्षोभे च हृदयं प्रलापैरेव धार्यते।। (3/29)

तालाब में जल प्रवाह की अधिकता होने पर जल को बाहर निकालना ही उसका एकमात्र प्रतीकार है। शोकजन्य क्षोभ में हृदय विलाप के द्वारा ही बचाया जाता है।

अतः विकल्प (A) सही है।

स्रोत - उत्तररामचरितम् - कपिलदेव द्विवेदी, पेज-218

58. संस्कृत के संख्यावाचक शब्दों के अनुसार पन्द्रह को कहते हैं-
(A) पञ्चाशत् (B) पञ्चदश
(C) पंचापंचे (D) इनमें से कोई नहीं

संस्कृत संख्या	
(A) पञ्चाशत् (50)	पचास
(B) पञ्चदश (15)	पन्द्रह
(C) पंचापंचे	रूप नहीं बनता।

अतः विकल्प (B) सही है।

स्रोत- *रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज- 139*

59. अस्सी की संख्या को संस्कृत में कहते हैं-
(A) अशीतिः (B) अष्टादश
(C) अष्टाविंशतिः (D) अष्टाशीतिः

संस्कृत संख्या	**हिन्दी संख्या**
(A) अशीतिः	अस्सी (80)
(B) अष्टादश	अठारह (18)
(C) अष्टाविंशतिः	अट्ठाइस (28)
(D) अष्टाशीतिः	अठासी (88)

अतः विकल्प (A) सही है।

स्रोत- *रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज- 139*

60. 'एकोनविंशतिः' को हिन्दी में कहते हैं-
(A) एक सौ बीस (B) इक्कीस
(C) बीस (D) उन्नीस

हिन्दी संख्या	**संस्कृत संख्या**
(A) एक सौ बीस (120)	विंशत्यधिकशतम्
(B) इक्कीस (21)	एकविंशतिः
(C) बीस (20)	विंशतिः
(D) उन्नीस (19)	एकोनविंशतिः,नवदश

अतः विकल्प (D) सही है।

स्रोत- *रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज - 139-140*

61. 'पञ्चाशत्' को हिन्दी में कहते हैं-
(A) पाँच सौ (B) पचपन
(C) पचास (D) पन्द्रह

	हिन्दी संख्या	**संस्कृत संख्या**
(A)	पाँच सौ (500)	पञ्चशती/पञ्चशतम्
(B)	पचपन (55)	पञ्चपञ्चाशत्
(C)	पचास (50)	पञ्चाशत्
(D)	पन्द्रह (15)	पञ्चदश

अतः विकल्प (C) सही है।

स्रोत- *रचनानुवादकौमुदी–कपिलदेव द्विवेदी, पेज–139*

62. निम्नलिखित शब्दों में से किस शब्द में 'इको यणचि' सूत्र से सन्धि हुई है?
(A) प्रत्येकः (B) भवनम्
(C) परोपकारः (D) अत्रैकः

पद	**विच्छेद**	**सन्धि/सूत्र**
(A) प्रत्येकः	प्रति+एकः	यण् सन्धि / इको यणचि
(B) भवनम्	भो+अनम्	अयादि सन्धि / एचोऽयवायावः
(C) परोपकारः	पर+उपकारः	गुणसन्धि / आद्गुणः
(D) अत्रैकः	अत्र+एकः	वृद्धिसन्धि / वृद्धिरेचि

अतः विकल्प (A) सही है।

58. (B) 59. (A) 60. (D) 61. (C) 62. (A)

63. 'आद्गुणः' से निम्नलिखित में से किस शब्द में गुण सन्धि हुई है-

(A) गुर्वाज्ञा (B) नायकः

(C) गङ्गौघः (D) गङ्गोदकम्

पद	विच्छेद	सन्धि/सूत्र
(A) गुर्वाज्ञा	गुरु +आज्ञा	यण्सन्धि / इको यणचि
(B) नायकः	नै+अकः	अयादिसन्धि / एचोऽयवायावः
(C) गङ्गौघः	गङ्गा+ओघः	वृद्धिसन्धि / वृद्धिरेचि
(D) गङ्गोदकम्	गङ्गा+उदकम्	गुणसन्धि / आद्गुणः

अतः विकल्प (D) सही है।

64. संस्कृत व्याकरण के अनुसार 'हल्' का अर्थ है-

(A) स्वर (B) व्यञ्जन

(C) अनुनासिक (D) अननुनासिक

व्याख्या- स्वर- स्वरों का दूसरा नाम 'अच्' भी है, क्योंकि पाणिनि के अनुसार सभी स्वर 'अच्' प्रत्याहार के अन्तर्गत आ जाते हैं। अइउण् से ऐऔच् के बीच सभी 9 स्वर कहे गये हैं।

(B) व्यञ्जन- व्यञ्जन का दूसरा नाम 'हल्' भी है। पाणिनि के चतुर्दश सूत्रों में हयवरट् से हल् तक के सभी 33 वर्ण व्यञ्जन हैं।

(C) अनुनासिक- मुखनासिकावचनोऽनुनासिकः(1-1-8) मुख और नासिका से एक साथ उच्चरित होने वाले वर्ण अनुनासिक संज्ञक होते हैं। जैसे – ङ् ञ् ण् न् म्।

(D) अननुनासिक – जो अनुनासिक न हों वे अननुनासिक कहलाते हैं। यथा– क,ख,ग,घ आदि

अतः विकल्प (B) सही है।

65. हल् सन्धि होती है जब –

(A) स्वर के बाद व्यञ्जन आये

(B) स्वर के बाद स्वर आये

(C) व्यञ्जन के बाद व्यञ्जन आये

(D) इनमें से कोई नहीं।

व्याख्या – * जब व्यञ्जन के बाद व्यञ्जन आये तो हल् (व्यञ्जन) सन्धि होती है। जैसे– स्तोः श्चुना श्चुः (8.4.40) जब सकार तवर्ग, शकार या चवर्ग के योग में आता है तो सकार और तवर्ग के स्थान में क्रम से शकार और चवर्ग हो जाता है जैसे – सत्+ चित्=सच्चित् (सत्य और ज्ञान)।

* जब स्वर के बाद स्वर आये तो स्वर (अच्) सन्धि होती है। जैसे – रमा+ईशः=रमेशः ।

अतः विकल्प (C) सही है।

66. 'उज्ज्वलः' शब्द में कौन-कौन वर्ण समीप आने पर सन्धि हुई है-

(A) ज्+ज (B) द्+ज्

(C) छ+ज (D) च्+ज

व्याख्या – स्तोः श्चुना श्चुः (8.4.40) यदि तवर्ग से पहले या बाद में श् या चवर्ग आवे तो स् को श् और तवर्ग को चवर्ग हो जाता है। जैसे–

उत्+ज्वलः = 'झलां जशोऽन्ते' सूत्र से त् को द्

उद्+ज्वलः = 'स्तोः श्चुना श्चुः' सूत्र से 'द्' को ज्

= उज्ज्वलः

अतः विकल्प (B) सही है।

67. समास का अर्थ है-

(A) मास सहित (B) संक्षिप्तीकरण

(C) समान आस वाला (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या – समास एक संज्ञा है **''अनेकपदानामेकपदीभवनं समासः''** अनेक पद मिलकर एक पद होना समास है। समास का विग्रह है – **'समसनं समासः'** अर्थात् संक्षिप्त होने को समास कहते हैं। सम् + अस् + घञ् = समासः

अतः विकल्प (B) सही है।

68. अव्ययीभाव समास का प्रथम पद होता है-

(A) प्रत्यय (B) संख्यावाचक

(C) उपसर्ग (D) अव्यय

63. (D)	64. (B)	65. (C)	66. (B)	67. (B)	68. (D)

व्याख्या - अव्ययीभाव समास - अव्ययीभाव समास में पहला शब्द अव्यय रहता है और दूसरा शब्द संज्ञा, दोनों मिलकर अव्यय हो जाते हैं। अव्ययीभाव समास वाले शब्द के रूप नहीं चलते। अव्ययीभाव समास नपुंसकलिङ्ग के एकवचन में रहता है। इस समास में प्राय: पूर्व पदार्थ प्रधान रहता है। जैसे–

यथाकामम् = कामम् अनतिक्रम्य (जितनी इच्छा हो उतना)

उपसर्ग- जो अव्यय पद धातु या धातु से बने हुए विशेषण, संज्ञा आदि शब्दों के पूर्व जोड़े जाते हैं, उन्हें उपसर्ग कहते हैं। उपसर्गों की संख्या 22 होती है–

प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव, निस् , निर् , दुस् , दुर् , वि, आङ् , नि , अधि, अपि, अति, सु, उद्, अभि, प्रति, परि, उप एते प्रादय:।

प्रत्यय - जो शब्द या धातुओं के अन्तिम में जुड़ते हैं, वह प्रत्यय कहलाते हैं । जैसे– क्त्वा, ल्यप् , तुमुन् , अनीयर् आदि

संख्यावाचक - एकम् द्वे त्रीणि चत्वारि पञ्च आदि संख्यावाचक पद हैं। अत: विकल्प (D) सही है।

69. द्विगु समास का प्रथम पद होता है-

(A) संख्यावाचक **(B) विशेषण**

(C) उपमानवाचक **(D) इनमें से कुछ नहीं**

(A) जब समास में प्रथम शब्द संख्यावाची हो और दूसरा कोई संज्ञा तो उस समास को द्विगु समास कहते हैं। **'' संख्यापूर्वो द्विगु:''**

उदाहरण - **पञ्चानां गवां समाहार: - पञ्चगवम्**

चतुर्णां युगानां समाहार: - चतुर्युगम्।

(B) जब प्रथम शब्द विशेषण हो और दूसरा विशेष्य, तो उस समास को विशेषणपूर्वपद कर्मधारय कहते हैं।

उदाहरण - कृष्ण: सर्प: = कृष्णसर्प:

नीलम् उत्पलम् = नीलोत्पलम्

(C) उपमानवाचक सुबन्त का समान विभक्ति, समानवचन वाले सुबन्तों के साथ कर्मधारय समास होता है।

उदाहरण - घन इव श्याम: = घनश्याम:

कर्पूर इव गौर: = कर्पूरगौर:

अत: विकल्प (A) सही है।

70. अन्यपद प्रधान जिस समास में होता है, उसे कहते हैं-

(A) तत्पुरुष समास **(B) कर्मधारय समास**

(C) बहुव्रीहि समास **(D) अव्ययीभाव समास**

व्याख्या - तत्पुरुष समास – प्रायेण उत्तरपदार्थ–प्रधानस्तत्पुरुष:, तत्पुरुष समास में उत्तरपद प्रधान होता है। कर्मधारय तत्पुरुष समास का भेद है।

बहुव्रीहि समास - अनेकमन्यपदार्थे (2-2-24) जब दो या दो से अधिक सभी समस्त शब्द किसी अन्य शब्द के विशेषण बन जाते हैं तब उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं।

अन्यपदार्थप्रधानो बहुव्रीहि:– बहुव्रीहि समास में समास के दोनों पदों में से किसी में प्रधानत्व नहीं रहता, दोनों मिलकर किसी तीसरे का प्रधानत्व सूचित करते हैं।

अव्ययीभाव - प्रायेण पूर्वपदार्थप्रधान: अव्ययीभाव:– अव्ययीभाव समास में प्राय: पूर्व पद प्रधान रहता है।

अत: विकल्प (C) सही है।

71. समानाधिकरण तथा व्यधिकरण किस समास के भेद हैं-

(A) कर्मधारय **(B) अव्ययीभाव**

(C) बहुव्रीहि **(D) तत्पुरुष**

(A) कर्मधारय – तत्पुरुष समास के दो भेद होते हैं– समानाधिकरण तथा व्यधिकरण। समानाधिकरण तत्पुरुष को कर्मधारय तत्पुरुष भी कहते हैं। कर्मधारय का ही भेद द्विगु समास है। यथा– कृष्णसर्प:, पञ्चवटी आदि।

(B) अव्ययीभाव - अव्ययीभाव समास में प्राय: दो पद होते हैं – इनमें से प्रथम पद प्राय: अव्यय रहता है और दूसरा संज्ञा शब्द। दोनों मिलकर अव्यय हो जाते हैं। इनके रूप नहीं चलते हैं। जैसे– उपकृष्णम् , यथाशक्ति।

(C) बहुव्रीहि - इसमें प्रथम शब्द दूसरे शब्द का विशेषण होता है और दोनों मिलकर किसी तीसरे के विशेषण बनते हैं। उन्हें बहुव्रीहि समास कहते हैं। जैसे– चन्द्रमौलि:, वीणापाणि:।

(D) तत्पुरुष समास- उस समास को कहते हैं जिसमें प्रथम शब्द द्वितीय शब्द की विशेषता बताये। इसमें प्रथम पद विशेषण होता है और द्वितीय पद विशेष्य होता है, और चूँकि विशेष्य प्रधान होता है। इसलिए तत्पुरुष को 'प्रायेण उत्तरपदार्थप्रधानस्तत्पुरुष:' ऐसी व्याख्या की गई है। इसके

69. (A) 70. (C) 71. (D)

मुख्यत: दो भेद हैं – 1. समानाधिकरण तत्पुरुष 2.व्यधिकरण तत्पुरुष

नोट :- समानाधिकरण और व्यधिकरण भेद बहुव्रीहि के भी होते हैं किन्तु प्रधानत्वेन तत्पुरुष ही सही माना जाना चाहिए किन्तु यह प्रश्न विवादित हो सकता है।

अत: विकल्प (D) सही है।

72. 'येनाङ्गविकार:' सूत्र के अनुसार जिस अङ्ग में विकार हो, उसमें किस विभक्ति का प्रयोग होता है?

(A) प्रथमा (B) द्वितीया
(C) तृतीया (D) पञ्चमी

व्याख्या - प्रथमा विभक्ति - प्रथमा विभक्ति करने वाले दो सूत्र हैं-

A. प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा (2.3.46)

प्रातिपदिकार्थमात्र, लिङ्गमात्र, परिमाणमात्र, वचनमात्र में प्रथमा विभक्ति होती है।

प्रातिपदिकार्थ मात्र का उदाहरण – उच्चै:, नीचै:, कृष्ण:, श्री:, ज्ञानम्।

लिङ्गमात्र का उदाहरण – तट:, तटी, तटम्।

परिमाणमात्र का उदाहरण – द्रोणो व्रीहि:।

वचनमात्र का उदाहरण – एक:, द्वौ, बहव:।

* **सम्बोधने च** (2.3.47) सम्बोधन अर्थ में भी प्रातिपदिक से प्रथमा विभक्ति होती है। उदाहरण – हे राम!

B. द्वितीया विभक्ति - कर्मणि द्वितीया (2.3.2) अनुक्ते कर्मणि द्वितीया स्यात्।

अनुक्त कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है। उदा०- हरिं भजति।

C. तृतीया -येनाङ्गविकार: - जिस विकृत अङ्ग से अङ्गी का विकार लक्षित हो, उसके वाचक शब्द से तृतीया होती है।

उदाहरण – पादेन खञ्ज:। यहाँ 'पादेन' में तृतीया विभक्ति है।

D. पञ्चमी- अपादाने पञ्चमी - अपादान में पञ्चमी विभक्ति होती है-

उदाहरण – धावतोऽश्वात् पतति – दौड़ते हुए घोड़े से गिरता है।

अत: विकल्प (C) सही है।

73. 'क्रियान्वयित्वं कारकत्वम्' अर्थात् क्रिया से सम्बन्धित पद कारक की श्रेणी में आता है, इस परिभाषा के अनुसार कौन सी विभक्ति कारक नहीं है-

(A) प्रथमा (B) तृतीया
(C) षष्ठी (D) सप्तमी

व्याख्या - 'क्रियान्वयित्वं कारकत्वम्' अर्थात् क्रिया के साथ जिसका साक्षात् सम्बन्ध होता है उसे कारक कहते हैं। संस्कृत में कारकों की संख्या छ: है-

कर्त्ता कर्म च करणं च सम्प्रदानं तथैव च।

अपादानाऽधिकरणं इत्याहु: कारकाणि षट्।।

अर्थात् कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, अधिकरण ये 6 कारक हैं। किन्तु सम्बन्ध को कारक नहीं माना जाता, क्योंकि क्रिया के साथ इसका साक्षात् सम्बन्ध नहीं होता, सम्बन्ध में षष्ठी विभक्ति का विधान होता है, अत: षष्ठी कारक विभक्ति नहीं है। अत: विकल्प (C) सही है।

* **प्रथमा -** ''प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा''

प्रातिपदिकार्थ से लिङ्ग या परिमाण मात्र के अधिक होने में तथा संख्यामात्र अर्थ में प्रथमा विभक्ति होती है।

* **तृतीया -** ''कर्तृकरणयोस्तृतीया''

अनभिहित (अनुक्त) कर्ता और करण में तृतीया विभक्ति होती है। यथा – रामेण बाणेन हतो बाली। यहाँ 'रामेण'- कर्ता में तृतीया 'बाणेन' – करण में तृतीया।

* **सप्तमी -** ''सप्तम्यधिकरणे च'' अधिकरण कारक में सप्तमी विभक्ति होती है। यथा-

1. कटे आस्ते 2. स्थाल्यां पचति 3. मोक्षे इच्छास्ति ४. सर्वस्मिन् आत्मा अस्ति।

74. 'रुच्यर्थानां प्रीयमाण:' सूत्र के अनुसार रुच् धातु के योग में कौन सी विभक्ति होती है?

(A) द्वितीया (B) तृतीया
(C) चतुर्थी (D) पञ्चमी

(A) **द्वितीया- अधिशीङ्स्थासां कर्म -** शीङ्, स्था, आस् धातुओं के पूर्व यदि अधि उपसर्ग लगा हो, तो क्रिया के आधार की कर्म संज्ञा होती है और कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे- अधिशेते वैकुण्ठं हरि:।

72. (C) 73. (C) 74. (C)

(B) **तृतीया - सहयुक्तेऽप्रधाने -** सह के अर्थवाची शब्दों के योग में अप्रधान में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे- पुत्रेण सह आगतः पिता।

(C) **चतुर्थी - रुच्यर्थानां प्रीयमाणः -** रुचि अर्थ वाली धातुओं के योग में प्रीयमाण व्यक्ति की सम्प्रदान संज्ञा होती है और "चतुर्थी सम्प्रदाने" सूत्र से सम्प्रदान में चतुर्थी विभक्ति होती है। – उदा०– हरये रोचते भक्तिः

(D) **पञ्चमी -'जनिकर्तुः प्रकृतिः' -** जन् धातु के कर्त्ता के कारण की अपादान संज्ञा होती है। जैसे– ब्रह्मणः प्रजाः प्रजायन्ते।

अतः विकल्प (C) सही है।

75. अकारान्त शब्द से आप क्या समझते हैं?
(A) जिस शब्द का अन्तिम वर्ण ह्रस्व अ हो
(B) जिस शब्द का अन्तिम वर्ण दीर्घ आ हो
(C) जिस शब्द का अन्तिम वर्ण ह्रस्व अ अथवा दीर्घ आ हो
(D) इनमें से कोई सही नहीं है।

व्याख्या – जिस शब्द का अन्तिम वर्ण ह्स्व अ हो उसे अकारान्त शब्द कहते हैं। जैसे – राम। यहाँ राम के मकार में ह्स्व अकार है इसलिए 'राम' शब्द अकारान्त पुंलिङ्ग शब्द है। बालक, नायक, चालक, गायक आदि भी अकारान्त पुंलिङ्ग शब्द हैं। इसी प्रकार रमा, शब्द दीर्घ आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द है।

अतः विकल्प (A) सही है।

76. 'बालक' शब्द के सप्तमी विभक्ति एकवचन में रूप बनता है –
(A) रामस्य (B) रामात्
(C) रामाय (D) रामे

व्याख्या –

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	बालकः	बालकौ	बालकाः
द्वितीया	बालकम्	बालकौ	बालकान्
तृतीया	बालकेन	बालकाभ्याम्	बालकैः
चतुर्थी	बालकाय	बालकाभ्याम्	बालकेभ्यः
पञ्चमी	बालकात्	बालकाभ्याम्	बालकेभ्यः
षष्ठी	बालकस्य	बालकयोः	बालकानाम्
सप्तमी	**बालके**	बालकयोः	बालकेषु
सम्बोधन	हे बालक !	हे बालकौ !	हे बालकाः !

नोट – विकल्प 'राम' का दिया गया है और प्रश्न में 'बालक' का रूप पूछा गया है। यह आयोग की छोटी सी भूल है। कृपया आप अपनी समझदारी से 'D' विकल्प को सही मान लें।

77. 'हरि' शब्द के रूपों में 'हरौ' रूप किस विभक्ति और किस वचन का रूप है?
(A) द्वितीया विभक्ति द्विवचन
(B) प्रथमा विभक्ति का द्विवचन
(C) षष्ठी विभक्ति एकवचन
(D) सप्तमी विभक्ति का एकवचन

हरि (विष्णु) इकारान्त पुंलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	हरिः	हरी	हरयः
द्वितीया	हरिम्	हरी	हरीन्
तृतीया	हरिणा	हरिभ्याम्	हरिभिः
चतुर्थी	हरये	हरिभ्याम्	हरिभ्यः
पञ्चमी	हरेः	हरिभ्याम्	हरिभ्यः
षष्ठी	हरेः	हर्योः	हरीणाम्
सप्तमी	**हरौ**	हर्योः	हरिषु
सम्बोधन	हे हरे !	हे हरी !	हे हरयः !

अतः विकल्प (D) सही है।

स्रोत-*रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी, पेज- 123*

78. 'लता' शब्द के सप्तमी विभक्ति के एकवचन का रूप है –
(A) लते (B) लतौ
(C) लतायाम् (D) लतासु

'लता' शब्द आकारान्त स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र.वि.	लता	लते	लताः
द्वि.वि.	लताम्	लते	लताः

75. (A) 76. (D) 77. (D) 78. (C)

तृ.वि.	लतया	लताभ्याम्	लताभिः
च.वि.	लतायै	लताभ्याम्	लताभ्यः
पं.वि.	लतायाः	लताभ्याम्	लताभ्यः
ष.वि.	लतायाः	लतयोः	लतानाम्
स.वि.	**लतायाम्**	लतयोः	लतासु
सम्बो०	हे लते!	हे लते!	हे लताः!

अतः विकल्प (C) सही है।

79. 'फलम्' शब्द नपुंसकलिङ्ग में है, इसमें 'फले' रूप निम्न किस विभक्ति में नहीं आता?
(A) प्रथमा (B) द्वितीया
(C) पञ्चमी (D) सप्तमी

फल अकारान्त नपुंसकलिङ्ग

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	फलम्	**फले**	फलानि
द्वितीया	फलम्	**फले**	फलानि
तृतीया	फलेन	फलाभ्याम्	फलैः
चतुर्थी	फलाय	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
पञ्चमी	फलात्	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
षष्ठी	फलस्य	फलयोः	फलानाम्
सप्तमी	**फले**	फलयोः	फलेषु
सम्बोधन	हे फल!	हे फले!	हे फलानि!

'फले' रूप प्रथमा, द्वितीया तथा सप्तमी में बनता है जबकि पञ्चमी में 'फले' रूप नहीं बनता है। अतः विकल्प (C) सही है।

***स्रोत**-संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका–बाबूराम सक्सेना, पेज 80-81*

80. 'सर्वम्' सर्वनाम शब्द के रूपों में 'सर्वे' रूप तीनों लिङ्गों में प्रयुक्त होता है निम्नलिखित में गलत कथन को चुनिये -
(A) 'सर्वे' रूप पुँल्लिङ्ग में प्रथमा विभक्ति के बहुवचन में होता है।
(B) 'सर्वे' रूप पुँल्लिङ्ग में सप्तमी विभक्ति के एकवचन में होता है।
(C) 'सर्वे' रूप स्त्रीलिंङ्ग के प्रथमा, द्वितीया विभक्ति के द्विवचन में होता है।
(D) 'सर्वे' रूप नपुंसकलिङ्ग के प्रथमा, द्वितीया विभक्ति के द्विवचन में होता है।

* सर्व (सब) शब्द के पुँलिङ्ग प्रथमा विभक्ति बहुवचन में 'सर्वे' रूप बनता है। **सर्वः सर्वौ सर्वे**
* स्त्रीलिङ्ग एवं नपुंसकलिङ्ग के प्रथमा एवं द्वितीया विभक्ति के द्विवचन में 'सर्वे' रूप बनता है।
* **'सर्व'** शब्द का पुँल्लिङ्ग सप्तमी एकवचन में 'सर्वस्मिन्' रूप बनता है 'सर्वे' नहीं बनता, अतः विकल्प (B) सही है।

81. 'अस्मद्' व 'युष्मद्' शब्दों से बनने वाले क्रमशः 'मम' और 'तव' रूप किस विभक्ति किस वचन के रूप हैं?
(A) चतुर्थी विभक्ति एकवचन
(B) द्वितीया विभक्ति बहुवचन
(C) षष्ठी विभक्ति एकवचन
(D) सप्तमी विभक्ति द्विवचन

अस्मद्

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम्, मा	आवाम्, नौ	अस्मान्, नः
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यम्, मे	आवाभ्याम्, नौ	अस्मभ्यम्, नः
पञ्चमी	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
षष्ठी	मम, मे	आवयोः, नौ	अस्माकम्, नः
सप्तमी	मयि	आवयोः	अस्मासु

युष्मद्

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम्, त्वा	युवाम्, वाम्	युष्मान्, वः
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
चतुर्थी	तुभ्यम्, ते	युवाभ्याम्, वाम्	युष्मभ्यम्, वः
पञ्चमी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
षष्ठी	तव, ते	युवयोः, वाम्	युष्माकम्, वः
सप्तमी	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

अतः विकल्प (C) सही है

79. (C) 80. (B) 81. (C)

82. 'अस्मद्' व 'युष्मद्' में क्रमशः 'आवयोः' व 'युवयोः' किस विभक्ति किस वचन में बनते हैं?

(A) षष्ठी विभक्ति एकवचन

(B) षष्ठी विभक्ति द्विवचन

(C) सप्तमी विभक्ति बहुवचन

(D) चतुर्थी विभक्ति एकवचन

प्रश्न संख्या 81 की व्याख्या से स्पष्ट हैं कि 'अस्मद्' और 'युष्मद्' शब्दों के क्रमशः 'आवयोः' और 'युवयोः रूप षष्ठी विभक्ति द्विवचन में बनते हैं, अतः विकल्प (B) सही है।

83. 'भू' धातु का 'भवामि' रूप है –

(A) लट् लकार का (B) लोट् लकार का

(C) लृट् लकार का (D) लङ् लकार का

A. भू धातु (होना) लट् लकार

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्र.पु.	भवति	भवतः	भवन्ति
म.पु.	भवसि	भवथः	भवथ
उ.पु.	**भवामि**	भवावः	भवामः

B. लोट्लकार (आज्ञार्थ)

प्र.पु.	भवतु	भवताम्	भवन्तु
म.पु.	भव	भवतम्	भवत
उ.पु.	भवानि	भवाव	भवाम

C. लृट्लकार (सामान्य भविष्य)

प्र.पु.	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
म.पु.	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उ.पु.	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

D. लङ्लकार (अनद्यतनभूत)

प्र.पु.	अभवत्	अभवताम्	अभवन्
म.पु.	अभवः	अभवतम्	अभवत
उ.पु.	अभवम्	अभवाव	अभवाम

अतः विकल्प (A) सही है।

84. 'पठिष्यामि' रूप है –

(A) लट्लकार का

(B) लोट्लकार का

(C) लृट्लकार का

(D) लङ्लकार का

A. 'पठ्' धातु (पढ़ना) लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र.पु.	पठति	पठतः	पठन्ति
म.पु.	पठसि	पठथः	पठथ
उ.पु.	पठामि	पठावः	पठामः

B. लोट् लकार

प्र.पु.	पठतु	पठताम्	पठन्तु
म.पु.	पठ	पठतम्	पठत
उ.पु.	पठानि	पठाव	पठाम

C. लृट् लकार

प्र.पु.	पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति
म.पु.	पठिष्यसि	पठिष्यथः	पठिष्यथ
उ.पु.	**पठिष्यामि**	पठिष्यावः	पठिष्यामः

D. लङ्लकार

प्र.पु.	अपठत्	अपठताम्	अपठन्
म.पु.	अपठः	अपठतम्	अपठत
उ.पु.	अपठम्	अपठाव	अपठाम

अतः विकल्प (C) सही है।

85. लङ्लकार सूचक है –

(A) वर्तमानकाल का (B) भूतकाल का

(C) भविष्यत्काल का (D) आज्ञार्थक लकार का

* **वर्तमानकाल** – लट् लकार

* **भूतकाल**

आसन्नभूत (लुङ्) | परोक्षभूत (लिट्) | अनद्यतनभूत (लङ्)

82. (B) 83. (A) 84. (C) 85. (B)

* **भविष्यतकाल**

- सामान्य भविष्य (लृट्)
- अनद्यतन भविष्य (लुट्)

* **आज्ञार्थक लकार** – लोट् लकार

विशेष – लट् वर्तमाने लेट् वेदे भूते लुङ् लङ् लिटस्तथा।
विध्याशिषोस्तु लिङ्लोटौ लुट् लृट लृङ् च भविष्यतः।।

अतः विकल्प (B) सही है।

86. 'अददात्' धातुरूप 'दा' धातु के किस लकार का रूप है?
(A) लट् लकार (B) लोट् लकार
(C) लङ् लकार (D) लृट् लकार

दा धातु = देना लट् लकार

प्र.पु.	ददाति	दत्तः	ददति
म.पु.	ददासि	दत्थः	दत्थ
उ.पु.	ददामि	दद्वः	दद्मः

लोट् लकार

प्र.पु.	ददातु	दत्ताम्	ददतु
म.पु.	देहि	दत्तम्	दत्त
उ.पु.	ददानि	ददाव	ददाम

लङ् लकार

प्र.पु.	**अददात्**	अदत्ताम्	अददुः
म.पु.	अददाः	अदत्तम्	अदत्त
उ.पु.	अददाम्	अदद्व	अदद्म

लृट् लकार

प्र.पु.	दास्यति	दास्यतः	दास्यन्ति
म.पु.	दास्यसि	दास्यथः	दास्यथ
उ.पु.	दास्यामि	दास्यावः	दास्यामः

अतः विकल्प (C) सही है।

***स्रोत**-रचनानुवादकौमुदी – कपिलदेव द्विवेदी, पेज –167*

87. 'बालक मोदकं रोचते' यह अशुद्ध वाक्य है, इसका शुद्ध वाक्य होगा –
(A) बालकेन मोदकं रोचते
(B) बालकाय मोदकं रोचते
(C) बालकात् मोदकं रोचते
(D) बालकः मोदकं रोचते

व्याख्या – रुच्यर्थानां प्रीयमाणः (1.4.33) सूत्र से रुच् तथा रुच्यर्थक धातुओं के योग में प्रसन्न होने वाला सम्प्रदान कहलाता है, उसमें चतुर्थी होती है। जैसे – **बालकाय मोदकं रोचते।** (बालक को लड्डू अच्छा लगता है) यहाँ रुच् धातु होने के कारण 'प्रीयमाण' बालक में चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग किया गया है।

अतः विकल्प (B) सही है

88. 'उभयतः कृष्णस्य गोपाः' अशुद्ध वाक्य का शुद्ध रूप होगा–
(A) उभयतः कृष्ण गोपाः
(B) उभयतः कृष्णं गोपाः
(C) उभयतः कृष्णेन गोपाः
(D) उभयतः कृष्णाय गोपाः

व्याख्या– उभसर्वतसोः कार्या धिगुपर्यादिषु त्रिषु।
द्वितीयाम्रेडितान्तेषु ततोऽन्यत्रापि दृश्यते।। (वा.)

उभयतः, सर्वतः, धिक्, उपर्युपरि, अध्यधि, अधोऽधः–इन छः अव्यय पदों के योग में द्वितीया विभक्ति होती है।

जैसे – उभयतः कृष्णं गोपाः।

अतः विकल्प (B) सही है।

89. 'त्वं पाठं पठतु' का शुद्ध रूप है–
(A) त्वं पाठं पठानि (B) त्वं पाठं पठताम्
(C) त्वं पाठं पठन्तु (D) त्वं पाठं पठ

व्याख्या – कर्तृवाच्य के प्रयोग में कर्ता के अनुसार क्रिया के पुरुष एवं वचन होते हैं। इसलिए 'त्वं पाठं पठतु' को शुद्ध वाक्य बनाने के लिए 'त्वं' मध्यम पुरुष एकवचन कर्ता के साथ आज्ञार्थक होने के कारण लोट्लकार मध्यम पुरुष एकवचन की क्रिया लगेगी तब वाक्य होगा – **त्वं पाठ पठ।** (तुम पाठ पढ़ो।)

अतः विकल्प (D) शुद्ध है।

90. 'अहं ग्रामं गच्छसि' अशुद्ध वाक्य का शुद्ध वाक्य होगा–
(A) अहं ग्रामं गच्छति (B) अहं ग्राममं गच्छति
(C) अहं ग्रामं गच्छामि (D) अहं ग्राम गच्छामः

व्याख्या – 'अहं ग्रामं गच्छसि' कर्तृवाच्य का वाक्य है

86. (C) 87. (B) 88. (B) 89. (D) 90. (C)

किन्तु कर्ता के अनुरूप क्रिया न होने से वाक्य अशुद्ध है। अब इस वाक्य को शुद्ध करने के लिए कर्ता '**अहं**' उत्तम पुरुष एकवचन के साथ क्रिया भी उत्तम पुरुष एकवचन की होगी तब वाक्य होगा - **अहं ग्रामं गच्छामि।** (मैं गाँव जाता हूँ।)

अत: विकल्प (C) सही है।

91. संस्कृत शिक्षण की विधियों में निम्नलिखित विधियों में से कौन सी विधि सम्मिलित नहीं है-

(A) प्राचीन विधि (B) मध्यकालीन विधि

(C) नवीन विधि (D) नवीनतम विधि

व्याख्या- संस्कृत शिक्षण की विधियों में **मध्यकालीन विधि** सम्मिलित नहीं है। जबकि संस्कृत शिक्षण की **प्राचीन विधि** वैदिक काल से ही संस्कृत के अध्ययन-अध्यापन में शामिल है। इसके बाद आधुनिक प्रयोगों एवं अनुसन्धानों के बाद संस्कृत शिक्षणविधि में **नवीन विधि** एवं **नवीनतम उपागम विधि** को भी सम्मिलित किया गया है।

अत: विकल्प (B) सही है।

92. संस्कृत व्याकरण की शिक्षण (पाठन) की प्राचीन व अर्वाचीन इन दोनों विधियों में निम्न में से कौन सी विधियाँ दोनों में सम्मिलित है –

(A) सूत्र विधि अथवा कण्ठस्थीकरण विधि

(B) अन्वय-व्यतिरेक विधि

(C) सहयोग - समवाय विधि

(D) आगमन-निगमन विधि

व्याख्या – आगमनविधि – उदाहरण देकर नियम निर्धारण करना आगमन विधि है। जोसफलेण्डन कहते हैं – 'यदि छात्रों के सामने बहुत उदाहरण, तत्त्व, वस्तुयें आदि प्रस्तुत करने के बाद नियमों का बोध कराया जाय, तो आगमन विधि का अनुसरण करना कहा जाता है।'

लक्ष्य को दिखाकर लक्षण करना – आगमन है। भगवान् पतञ्जलि भी '**लक्ष्यलक्षणं व्याकरणम्**' कहकर आगमनविधि ही स्वीकार करते हैं।

निगमनविधि – जोसफलेण्डन कहते हैं कि – 'शिक्षणं निगमनविधि द्वारा प्रथमं परिभाषा नियमो वा पाठ्यते, तत: सावधानमर्थं व्याख्याय प्रयोगान् प्रदर्श्य तत्त्वानि स्पष्टीक्रियन्ते।' इति

इस विधि के द्वारा अध्यापक सर्वप्रथम नियमों को बताता है, फिर उदाहरण देकर उनका समन्वय सूत्र या नियम के अन्तर्गत करता है। आगमन निगमन पद्धति में विरोध नहीं अपितु आगमन पद्धति के लिए निगमनपद्धति पूरक हो सकती है। निगमन पद्धति को **परम्परागत पद्धति, सूत्रपद्धति** या **लक्षणपद्धति** भी कहते हैं। इस प्रकार संस्कृत व्याकरण शिक्षण पद्धति के प्राचीन एवं अर्वाचीन दोनों पद्धतियों में इनकी गणना होती है, अत: विकल्प (D) सही है।

93. संस्कृत अनुवाद शिक्षण में दुभाषिया विधि से क्या तात्पर्य है –

(A) इसमें पाठ्यपुस्तक के प्रत्येक पाठ के अन्त में अनुवाद हेतु वाक्य दिये जाते हैं।

(B) इसमें एक व्यक्ति मातृभाषा में बोलता है तथा दूसरा व्यक्ति उसका संस्कृत रूपान्तर करता जाता है।

(C) इस विधि में शिक्षक पहले आदर्श अनुवाद प्रस्तुत करता है, उसको समझकर छात्र आदर्श अनुवाद के अनुकरण पर अनुवाद करता है।

(D) इस विधि में अनुवाद को याद करना सिखाया जाता है।

व्याख्या – संस्कृत अनुवाद शिक्षण में दुभाषिया विधि उसे कहते हैं जिसमें एक व्यक्ति मातृभाषा में बोलता है तथा दूसरा व्यक्ति उसका संस्कृत में रूपान्तर करता जाता है। अत: विकल्प (B) सही है।

अनुवाद विधि – इस विधि को परम्परागत विधि अथवा अर्थबोधविधि के नाम से भी जाना जाता है। इसके अनुसार अध्यापक कोई श्लोक स्वयं पढ़कर अर्थ कहता है अथवा छात्र द्वारा श्लोक का वाचन कराते हुए स्वयं सहायक बनकर अर्थ करता है।

अनुवाद विधि के गुण

1. छात्रों का शब्दकोशीय ज्ञान बढ़ता है।
2. वाक्यरचना में दक्षता बढ़ती है।

91. (B) 92. (D) 93. (B)

3. सरलता एवं सुगमता से विषय का ज्ञान बढ़ता है।
4. छात्रों में वैचारिक शक्ति बढ़ती है।
5. कठिन शब्दों का अर्थ स्पष्ट होता है।

अनुवाद विधि के दोष

1. किसी भाषा के मूलभाव की पूर्ण रक्षा करना इस पद्धति से कठिन है।
2. छात्र निष्क्रिय रहते हैं।
3. यह विधि अमनोवैज्ञानिक है।
4. इससे भाषागत सौन्दर्य का ह्रास होता है।

94. संस्कृत पद्य शिक्षण में गीत तथा नाट्यविधि किस स्तर की कक्षाओं के लिए सर्वाधिक उपयुक्त है?
(A) प्रारम्भिक कक्षाएँ
(B) माध्यमिक कक्षाएँ
(C) उच्चतर कक्षाएँ
(D) इनमें से किसी के लिए नहीं

व्याख्या – संस्कृत पद्यशिक्षण में गीत तथा नाट्य विधि **प्राथमिक स्तर** के छात्रों के लिए सर्वाधिक उपयोगी होती है। प्राथमिक स्तर के छात्रों के लिए पाठ्यसहगामी क्रियाओं में संस्कृत शिक्षण अत्यन्त प्रभावी हो जाता है। जैसे –

* प्रात:कालीन प्रार्थना और संस्कृत श्लोकों एवं मन्त्रों का उच्चारण करना।
* संस्कृतभाषा में लघु-लघु कथायें सुनाना।
* शुद्धोच्चारण के लिए लय सहित श्लोकों का व्यक्तिगत एवं सामूहिक ज्ञान कराना।
* छोटे छोटे लघु नाटकों के माध्यम से बच्चों को शिक्षित करना। अत: विकल्प (A) सही है।

95. संस्कृत पद्य-शिक्षण में अन्वय का बहुत महत्त्व है, अन्वय से क्या तात्पर्य है?
(A) पद्य का उच्चारण करना।
(B) पद्य में प्रयुक्त श्लोकों को कर्ता, क्रिया, कर्म के अनुसार क्रम में लगाकर वाक्य बनाना।
(C) पद्य में प्रयुक्त शब्दों में व्याकरण का प्रयोग बनाना।
(D) पद्य में प्रयुक्त भाव, रस, अलंकार आदि की योजना को स्पष्ट करना।

व्याख्या – संस्कृत पद्य शिक्षण में अर्थज्ञान एवं भावज्ञान के लिए कर्ता, कर्म, क्रिया आदि पदों का एक विशेष क्रम आवश्यक होता है, इसी क्रम ज्ञान को जानने के लिए 'अन्वय' आवश्यक होता है।

इसके लिए श्लोक में विद्यमान प्रधान वाक्य खोजना चाहिए प्रधान वाक्य के अन्वेषण के लिए कर्ता, कर्म, क्रिया का ज्ञान आवश्यक है, तदनन्तर क्रियाविशेषण, अव्यय इत्यादि को लिखना चाहिए। यही संस्कृतपद्य शिक्षण में 'अन्वय' कहा जाता है। **अनु+अय: = अन्वय:** अर्थात् एक के बाद क्रम से दूसरे का आना। अत: विकल्प (B) सही है।

96. 'कादम्बरी' शब्द का अर्थ है –
(A) कदम्ब ऋषि की कन्या
(B) कदम्ब के वृक्ष की मञ्जरी
(C) मदिरा
(D) अमृत

व्याख्या – 'कादम्बरी' शब्द का अर्थ है – मदिरा। इसके समान आह्लादक एवं मादक होने के कारण इस कथा का नाम कादम्बरी रखा गया।

* कादम्बरी के उत्तरार्द्ध में भूषणभट्ट ने कहा भी है – **'कादम्बरी रसभरेण समस्त एव मत्तो न किञ्चिदपि चेतयते जनोऽयम्।'**
* कदम्बरस्य प्रिया इयं कादम्बरी, कदम्बर + अण् 'तस्येदम्' इति सूत्रेण, ततो ङीप्।
* कदम्बस्य पुष्पं कदम्बं तेषां समूह: कादम्बं तत् राति लातीति 'आतोऽनुपसर्गे क:' इति सूत्रेण 'क' प्रत्यय: =कादम्बरम्, स्त्रियाम् 'षिद्गौरादिभ्यश्च' इति सूत्रेण ङीषि तु कादम्बरी।
* कादम्बरी गन्धर्वराज की पुत्री है। उसको उद्देश्य करके रची गयी कथा 'कादम्बरी' कहलाती है। क्योंकि **'कादम्बरीमधिकृत्य कृता कथा'** इस अर्थ में कादम्बरी शब्द से **'अधिकृत्य कृते ग्रन्थे'** सूत्र से 'अण्' प्रत्यय होता है। उस अण् का 'लुबाख्यायिकाभ्यो बहुलम्' वार्तिक से लोप हो जाने पर 'लुपि युक्तवद्व्यक्तिवचने' सूत्र से प्रकृतिवत् लिङ्ग और वचन करके 'कादम्बरी' शब्द की सिद्धि होती है।

अत: विकल्प (C) सही है।

94. (A) 95. (B) 96. (C)

97. शुकनासोपदेश में शुकनास 'कादम्बरी' कथा में कौन है?

(A) राजा (B) मन्त्री

(C) युवराज (D) चाण्डालकन्या

व्याख्या – शुकनासोपदेश कादम्बरी–कथा का एक अंश है।

* कादम्बरी में उज्जयिनी के राजा के रूप में तारापीड का वर्णन हुआ है।
* राजा तारापीड के सुयोग्य मन्त्री का नाम ही शुकनास है।
* शुकनास ने ही युवराज चन्द्रापीड को राज्याभिषेक के समय उपदेश दिये थे।
* कादम्बरी–कथा में ही एक चाण्डालकन्या का भी उल्लेख हुआ है, जो राजा शूद्रक के दरबार में शुक को लेकर आती है।

अत: विकल्प (B) सही है।

98. 'शुकनासोपदेश' में शुकनास के अतिरिक्त दूसरा पात्र है –

(A) वैशम्पायन (B) चन्द्रापीड

(C) तारापीड (D) शूद्रक

(A) **वैशम्पायन –** कादम्बरी में वैशम्पायन महाश्वेता के शाप के कारण शुक हो गया जो अपने पूर्व जन्म का वृत्तान्त राजा शूद्रक को बताता है। इसकी चर्चा कादम्बरी कथामुख में आती है।

(B) **चन्द्रापीड –** 'शुकनासोपदेश' में युवराज चन्द्रापीड को राज्याभिषेक के समय शुकनास लक्ष्मी (धन)एवं राजमद के मद से बचने का उपदेश देते हैं चन्द्रापीड ही शुकनासोपदेश में शुकनास के अतिरिक्त दूसरा पात्र है। उपदेशकर्ता -शुकनास एवं श्रोता- चन्द्रापीड है।

(C) चन्द्रापीड के पिता का नाम तारापीड था।

(D) चन्द्रापीड ही तीसरे जन्म में शूद्रक था।

अत: विकल्प (B) सही है।

99. किसके गुणदोषों का वर्णन शुकनास ने किया है-

(A) राजा के (B) युवराज के

(C) लक्ष्मी के (D) प्रजा के

व्याख्या - शुकनासोपदेश में मन्त्री शुकनास ने लक्ष्मी के गुण- दोषों का वर्णन किया है।

* **आलोकयतु तावत् कल्याणाभिनिवेशी लक्ष्मीमेव प्रथमम्.** (कल्याण के इच्छुक आप पहले लक्ष्मी को ही देखें) इस कथन से स्पष्ट होता है कि शुकनास चन्द्रापीड से सर्वप्रथम लक्ष्मी के गुण–दोषों को बतलाते हैं।
* **विश्वरूपत्वमिव ग्रहीतुमाश्रिता नारायणमूर्तिम्।** (मानो अनेक प्रकार के रूप धारण करने के लिए विष्णु के शरीर का आश्रय लिया हो।
* **अमृतसहोदरापि कटुविपाका। पुरुषोत्तमरतापि खलजनप्रिया।** उत्तम पुरुषों में आसक्त होने पर भी दुष्ट जनों से प्रीति करती हैं। मानो लक्ष्मी धूलिमयी भी होकर स्वच्छ को भी मलिन कर देती है।
* **वध्यशाला साधुभावस्य, राहुजिह्वा धर्मेन्दुमण्डलस्य।** उपर्युक्त पंक्तियों से सिद्ध होता है कि शुकनास चन्द्रापीड से सर्वप्रथम लक्ष्मी के ही गुण–दोषों की सर्वप्रथम चर्चा करता है। अन्त में राजा के भी गुण- दोषों की चर्चा शुकनासोपदेश में की गयी है। विकल्प (C) सही है।

100. राजतन्त्र शासन परम्परा में उपदेश दिए जाते हैं-

(A) विवाह - संस्कार के अवसर पर

(B) राज्याभिषेक के अवसर पर

(C) विद्योपार्जन के अवसर पर

(D) वानप्रस्थ जाने के अवसर पर

व्याख्या - एवं समतिक्रामत्सु दिवसेषु राजा चन्द्रापीडस्य **यौवराज्याभिषेकं चिकीर्षुः** प्रतीहारानुपकरणसम्भारसंग्रहार्थमादिदेश। समुपस्थितयौवराज्याभिषेकं च तं कदाचित् दर्शनार्थमागतमारूढविनयमपि विनीततरमिच्छञ्शुकनासः सविस्तरमुवाच . . .

उपर्युक्त पंक्तियों में राजा तारापीड राजकुमार चन्द्रापीड को युवराज पद पर अभिषेक करने की इच्छा हुई तो राजा तारापीड ने अभिषेक सम्बन्धी सम्पूर्ण सामग्री एकत्र करने के लिए आदेश दिया।

* अभिषेकसमय एव चैतेषां मङ्गलकलशजलैरिव प्रक्षाल्यते दाक्षिण्यम्, अग्निकार्यधूमेनेव मलिनीक्रियते हृदयम् . . .

इत्यादि पंक्तियों से सिद्ध होता है कि राजतन्त्र शासन परम्परा में उपदेश राज्याभिषेक के समय पर ही दिये जाने चाहिए।

अत: विकल्प (B) सही है।

97. (B) 98. (B) 99. (C) 100. (B)

101. 'कादम्बरी' रचना के लेखक कौन हैं-

(A) भट्टनारायण (B) भट्टोजिदीक्षित

(C) बाणभट्ट (D) दण्डी

रचनाकार - रचनाएँ - अनुमानित काल

(A) भट्टनारायण - वेणीसंहार - सातवीं आठवीं शताब्दी

(B) भट्टोजिदीक्षित–वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी– सोलहवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध

(C) बाणभट्ट - कादम्बरी - सातवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध

(D) दण्डी - दशकुमारचरितम् - छठी शताब्दी ई.

अत: विकल्प (C) सही है।

102. 'कादम्बरी' रचना साहित्य की किस विधा के अन्तर्गत आती है-

(A) चम्पूकाव्य (B) महाकाव्य

(C) कथा (D) आख्यायिका

विधा	ग्रन्थ/ग्रन्थकार	विभाजन
(A) चम्पूकाव्य	नलचम्पू / त्रिविक्रमभट्ट	7 उच्छ्वास
(B) महाकाव्य	किरातार्जुनीयम् / भारवि	18 सर्ग
(C) कथा	कादम्बरी / बाणभट्ट	दो भाग
(D) आख्यायिका	हर्षचरितम् / बाणभट्ट	8 उच्छ्वास

अत: विकल्प (C) सही है।

103. 'कादम्बरी' रचना एक सुन्दर उदाहरण है –

(A) गद्यकाव्य का

(B) पद्यकाव्य का

(C) मिश्रितकाव्य का

(D) उपर्युक्त में से किसी का नहीं

(A) गद्यकाव्य – बाणभट्टकृत 'कादम्बरी' कथा गद्यकाव्य का सुन्दर उदाहरण है। इसमें चन्द्रापीड के तीन जन्मों की कथा वर्णित है।

'कथायां सरसं वस्तु गद्यैरेव विनिर्मितम्। (सा.द.7./332)

कथा में सरसवस्तु गद्य द्वारा ही बनाई जाती है।

(B) पद्यकाव्य – पद्यकाव्य के अन्तर्गत महाकाव्य, गीतिकाव्य, खण्डकाव्य एवं मुक्तककाव्य आदि आते हैं।

(C) मिश्रितकाव्य – जिन काव्यग्रन्थों में गद्य-पद्य मिश्रित हों वे मिश्रितकाव्य (चम्पूकाव्य) कहलाते हैं – जैसे – नलचम्पू।

'गद्यपद्यमयं काव्यं चम्पूरित्यभिधीयते।'

(सा.द. 7/336)

अत: विकल्प (A) सही है।

104. बाणभट्ट की शैली की प्रमुख विशेषता है –

(A) कान्तासम्मित उपदेश की सरस शैली

(B) अलंकारप्रधान शैली

(C) दोनों का सम्मिश्रण

(D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या – काव्यप्रकाशकार मम्मट ने काव्य प्रयोजन के सम्बन्ध में उपदेश की त्रिविध शैली बताते हैं –

1. प्रभुसम्मित या शब्दप्रधान शैली – शब्दप्रधान, वेदादि, जैसे- राजाज्ञाएँ
2. सुहृत् शैली अर्थप्रधान - इतिहास-पुराण आदि
3. कान्तासम्मित रसप्रधान – काव्य (महाकाव्य, खण्डकाव्य, नाटक आदि)। मम्मट की इन शैलियों से स्पष्ट है कि काव्य कान्तासम्मित उपदेश शैली में होता है और कादम्बरी एक गद्यकाव्य है। साथ ही साथ बाणभट्ट ने अलंकारों का चमत्कार दिखाया है– विरोधाभास, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, परिसंख्या आदि।

1. उपमा – क्वचिन्मत्तेव कोकिलकुलप्रलापिनी, क्वचिदुन्मत्तेव वायुवेगकृततालशब्दा, क्वचिद् विधवेव उन्मुक्ततालपत्रा.. आदि

2. विरोधाभास – अपरिमित - बहलपत्रसञ्चयापि सप्तपर्णभूषिता

3. परिसंख्या – रतेषु केशग्रहा:, काव्येषु दृढबन्धा:, शास्त्रेषु चिन्ता ... न प्रजानामासन्।

इससे स्पष्ट होता है कि बाणभट्ट की शैली कान्तासम्मित उपदेशशैली के साथ-साथ अलंकार प्रधान शैली भी है।

अत: विकल्प (C) सही उत्तर है।

105. 'कादम्बरी' के कथानक का मूलस्त्रोत है –

(A) महाभारत

(B) रामायण

(C) उत्पाद्य (कवि-कल्पित)

(D) गुणाढ्य की बृहत्कथा

101. (C) 102. (C) 103. (B) 104. (C) 105. (D)

ग्रन्थनाम	कवि	मूलस्रोत/उपजीव्य
किरातार्जुनीयम्	भारवि	महाभारत, वनपर्व
उत्तररामचरितम्	भवभूति	रामायण, उत्तरकाण्ड
ऋतुसंहारम्	कालिदास	उत्पाद्य (कविकल्पित)
कादम्बरी	बाणभट्ट	**गुणाढ्य की बृहत्कथा** (सुमनस् वृत्तान्त)

अत: विकल्प (D) सही है।

106. शिवराजविजयम् साहित्य की किस विधा के अन्तर्गत आता है –
(A) कथा (B) आख्यायिका
(C) ऐतिहासिक उपन्यास (D) निबन्धसंग्रह

विधा	ग्रन्थ	ग्रन्थकार
(A) कथा	(i) कादम्बरी	बाणभट्ट
	(ii) वासवदत्ता	सुबन्धु
	(iii) दशकुमारचरितम्	दण्डी
(B) आख्यायिका	हर्षचरितम्	बाणभट्ट
(C) ऐतिहासिक उपन्यास	शिवराजविजयम्	अम्बिकादत्तव्यास
(D) निबन्ध संग्रह	निबन्ध शतकम्	कपिलदेव द्विवदी

अत: विकल्प (C) सही है।

107. शिवराजविजयम् के रचनाकार हैं –
(A) बाणभट्ट (B) दण्डी
(C) पण्डिता क्षमाराव (D) अम्बिकादत्त व्यास

ग्रन्थकार ग्रन्थ

(A) **बाणभट्ट -** कादम्बरी, हर्षचरितम्, मुकुटताडितम्, चण्डीशतकम्, पार्वतीपरिणय

(B) **दण्डी-** दशकुमारचरितम् , अवन्तिसुन्दरीकथा

(C) **पण्डिता क्षमाराव -** कथापञ्चकम् , ग्रामज्योति: , कथामुक्तावलि:

(D) **अम्बिकादत्तव्यास -** शिवराजविजयम् , सामवतम् आदि

अत: विकल्प (D) सही है।

108. शिवराजविजयम् रचना के नायक हैं –
(A) महाराष्ट्र केसरी शिवाजी
(B) शिवजी
(C) अवरङ्गजीव (औरंगजेब)
(D) अफजलखान

व्याख्या – अम्बिकादत्तव्यास के ऐतिहासिक उपन्यास 'शिवराजविजयम्' के नायक महाराष्ट्र केशरी शिवाजी हैं क्योंकि साहित्यदर्पणकार विश्वनाथ ने नायक के जो लक्षण बतलाये हैं, वे शिवाजी पर पूर्णत: घटित होता है –
त्यागी कृती कुलीन: सुश्रीको रूपयौवनोत्साही।
दक्षोऽनुरक्तलोकस्तेजोवैदग्ध्यशीलवान्नेता।। (सा०द०3/30)
शिवाजी के दश वर्षों का वर्णन ही शिवराजविजयम् में किया गया है।

1. शिवजी – रुद्र के ग्यारह रूप बतलाये गये हैं, जिनमें एक शिवजी भी हैं, जो निम्नवत् है –
महादेव:, शिव:, रुद्र:, शङ्कर:, नीललोहित:, ईशान:, विजय:, भीम:, देवदेव:, भवोद्भव:, आदित्य:।

2. औरंगजेब – शिवराजविजयम् की कथा के अनुसार 'आलमगीर' उपाधिधारी औरंगजेब अकबर का प्रपौत्र था, और उस समय दिल्ली के सम्राट् पद को कलङ्कित कर रहा था।

3. अफजलखान – बीजापुर के नवाब शाइस्ता खाँ ने अफजल खाँ को शिवाजी को जीतने के लिए भेजा है। यह (अफजल खाँ) प्रतिज्ञा करके आया था कि मैं शिवाजी को जीवित पकड़ लूँगा, किन्तु अन्त में वह वीर शिवाजी के द्वारा मारा जाता है।

अत: विकल्प (A) सही है।

109. शिवराजविजयम् में प्रयुक्त 'ताम्रचूडभक्षणपातकेन' का अर्थ है –
(A) ताँम्बे का चूड़ा चबाना रूपी पाप से
(B) मुर्गा खाने के पाप से
(C) लाल चूड़ी तोड़ना रूपी पाप से
(D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या – ग्रन्थकार ने प्रथम विराम के चार नि:श्वासों में से प्रथम नि:श्वास के अन्तिम वाले भाग में कहा है –
सतत-ताम्रचूडभक्षण-पातकेनेव ...
(मानो निरन्तर मुर्गा खाने के पातक (पाप) से ...)
'शिवराजविजयम्' के कुछ प्रमुख शब्दार्थ –

106. (C) 107. (D) 108. (C) 109. (B)

* पतत्रि पक्षी
* मरीचिमाली सूर्य
* रोलम्ब भ्रमर
* पतङ्ग सूर्य
* अलि भ्रमर
* शाखी वृक्ष

अत: विकल्प: (B) सही है।

110. शिवराजविजयम् में विप्रकन्या का अपहरण किया था –
(A) द्रविणों ने
(B) एक यवन बालक ने
(C) जंगली जाति के लोगों ने
(D) आर्यों ने

व्याख्या – सन्ध्या का समय है। योगिराज, ब्रह्मचारी गुरु की कुटिया पर पधारे हैं। योगिराज से जैसे ही ब्रह्मचारी गुरु ने कुछ कुशलक्षेम पूछने की इच्छा की, तभी बालिका का करुण विलाप सुनाई पड़ा। योगिराज के पूछने पर ब्रह्मचारी गुरु ने कहा कि कल कोई मुसलमान इस कन्या को सुन्दरी समझकर नदी के तट से माता के हाथ से छीनकर रोती हुई बालिका को लेकर भाग गया था।

एनां च सुन्दरीमाकलय्य कोऽपि यवनतनयो नदीतटान्मातुर्हस्तादाच्छिद्य क्रन्दतीं नीत्वाऽपससार।

इस पंक्ति से स्पष्ट होता है कि विप्रकन्या का अपहरण एक यवन बालक ने किया था।

अत: विकल्प (B) सही उत्तर है।

111. विप्र कन्या की उपमा दी गयी है–
(A) लक्ष्मी देवी से (B) पार्वती देवी से
(C) सरस्वती देवी से (D) दुर्गा देवी से

व्याख्या – यां च सप्तवर्षकल्पाम्, यावनत्रासेन नि:शब्दं रुदतीम्, परमसुन्दरीम्, कलितमानवदेहामिव सरस्वतीं सान्त्वयन् मरन्दमधुरा: अप: पाययन् ...

(लगभग सात वर्ष की कन्या यवनों के भय से शब्दरहित रोती हुई, अत्यन्त सुन्दरी, मानव-शरीर धारण किये हुए सरस्वती जैसी ...)

शिवराजविजयम् की इन पंक्तियों से समझा जा सकता है कि विप्र कन्या की उपमा लक्ष्मी, पार्वती, दुर्गा से नहीं बल्कि सरस्वती से दी गयी है।

अत: चारों विकल्पों में से विकल्प (C) सही है।

112. ब्रह्मचारी बालकों ने पहाड़ से उतरकर आने वाले योगी से प्रार्थना की –
(A) विद्याध्ययन कराने की
(B) अपने आश्रम में आने की
(C) उपदेश देने की
(D) राजनीति सिखाने की

व्याख्या – शिवराजविजय में योगिराज के द्वारा पर्वत कन्दरा से नीचे उतरने पर ब्रह्मचारी बालकों (गौर सिंह, श्याम सिंह) ने अपने आश्रम में आने की प्रार्थना की जो कि शिवराजविजय के इस कथन से स्पष्ट होता है –

'इत आगम्यतां सनाथ्यतामेष आश्रम:'
इति सप्रणाममभिगम्य वदत्सु निखिलेषु ...।

अत: विकल्प (B) सही है।

113. महमूद निवासी था –
(A) बुखारा का (B) यरूशलम् का
(C) ताशकन्द का (D) गजिनी का

व्याख्या – 'शिवराजविजयम्' में भारत की दशा का वर्णन करते हुए ब्रह्मचारी गुरु योगिराज से बतलाते हैं कि –

कश्चन गजिनी - स्थाननिवासी महामदो यवन: ससेन: प्राविशद् भारते वर्षे।

उपर्युक्त पंक्तियों से स्पष्ट है कि महमूद गजिनी देश का निवासी है, अत: विकल्प (D) सही उत्तर होगा।

114. महमूद ने भारत पर आक्रमण किया –
(A) भारत की धन सम्पत्ति लूटने के लिए
(B) इस्लाम के प्रचार के लिए
(C) अपने साम्राज्य के विस्तार के लिए
(D) उपर्युक्त तीनों के लिए

* कश्चन गजिनी – स्थाननिवासी महामदो यवन: ससेन: प्राविशद् भारते वर्षे। स च प्रजा: विलुण्ठ्य मन्दिराणि निपात्य, प्रतिमा: विभिद्य ... स्वदेशमनैषीत्।

* एवं स ज्ञातास्वाद: पौन:पुन्येन द्वादशवारमागत्य भारतमलुलुण्ठत्। तस्मिन्नेव च स्वसंरम्भे एकदा गुर्जरदेशचूडायितं सोमनाथतीर्थमपि धूलीचकार।

* नाहं मूर्ती: विक्रीणामि, किन्तु भिनद्मि' इति।

* स मूर्तिखण्डानि च क्रमेलकपृष्ठेष्वारोप्य सिन्धुनदमुत्तीर्य स्वकीयां विजयध्वजिनीं गजिनीं नाम राजधानीं प्राविशत्।

शिवराजविजयम् की इन पंक्तियों से स्पष्ट है कि

110. (B)	111. (C)	112. (B)	113. (D)	114. (A)

महमूद का भारत पर आक्रमण करने का एकमात्र कारण धनसम्पत्ति लूटना था, न कि अन्य कार्य।

अत: ग्रन्थ के अनुसार विकल्प (A) सही होगा।

115. पवित्र भारत के पराधीन होने का कारण था –
(A) पृथ्वीराज चौहान और जयचन्द की आपसी फूट
(B) पृथ्वीराज चौहान का कमजोर होना
(C) जयचन्द द्वारा पृथ्वीराज चौहान को नीचा दिखाने की भावना
(D) यवनों का आक्रामक रुख अपना लेना

* ततो दिल्लीश्वरं पृथ्वीराजं कान्यकुब्जेश्वरं जयचन्द्रं च पारस्परिकविरोधज्वरग्रस्तं विस्मृत-राजनीतिं भारतवर्षदुर्भाग्यायमाणमाकलय्यानायासेनोभावपि विशस्य, वाराणसीपर्यन्तमखण्डमण्डलमकण्ट-कमकीटकिट्टं महारत्नमिव महाराज्यमङ्गीचकार।
* शिवराजविजय के इस कथन में निहित है कि भारत के पराधीन होने का प्रमुख कारण पृथ्वीराज चौहान और जयचन्द्र की आपसी फूट का होना था।

अत: उत्तर विकल्प (A) होगा।

116. पं. अम्बिकादत्तव्यास की अन्य रचनाओं में शामिल है –
(A) बिहारी-बिहार
(B) सामवत (नाटक)
(C) शिव-विवाह
(D) भारत-भारती

व्याख्या – अम्बिकादत्तव्यास जी ने संस्कृत भाषा में 27 ग्रन्थ लिखे हैं। जिनमें संस्कृत में रचित कुछ रचनाएँ प्रमुख हैं –

1. शिवराजविजयम् (ऐतिहासिक-उपन्यास)
2. सामवतनाटकम्
3. गुप्ताशुद्धिप्रदर्शनम्
4. रत्नपुराणम्
5. गणेशशतकम्

* बिहारी-बिहार – यह भी अम्बिकादत्तव्यास की ही रचना है, किन्तु बिहारी के दोहों पर हिन्दी में लिखित है।
* भारत-भारती – यह हिन्दी-साहित्य के कवि मैथिलीशरण गुप्त की रचना है।
यद्यपि उक्त चारों विकल्पों में बिहारी-बिहार और सामवतम् दोनों अम्बिकादत्त व्यास की ही रचना है, किन्तु संस्कृत में सामवतम् (नाटक)है।

अत: विकल्प (B) सही उत्तर होगा।

117. किरातार्जुनीयम् के रचनाकार हैं –
(A) भारवि (B) भवभूति
(C) कालिदास (D) श्रीहर्ष

ग्रन्थकार	ग्रन्थ	शैली
(A) भारवि	किरातार्जुनीयम्	पाण्डित्य प्रधान अलङ्कृत शैली के जन्मदाता
(B) भवभूति	उत्तररामचरितम्	वैदर्भी-उत्तररामचरितम्/ भवभूति गौड़ी रीति के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं।
(C) कालिदास	(i) रघुवंशम्	
	(ii) कुमारसम्भवम्	वैदर्भीरीतिसन्दर्भे कालिदासो विशिष्यते।
(D) श्रीहर्ष	नैषधीयचरितम्	

अत: विकल्प (A) सही है।

118. 'किरातार्जुनीयम्' शीर्षक में प्रयुक्त 'किरात' शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है –
(A) चाण्डाल जाति के लिए
(B) किरात नामक पात्र के लिए
(C) शिव जो किरात वेषधारी हैं
(D) अर्जुन जो किरात वेषधारी हैं।

व्याख्या – 'किरातार्जुनीयम्' शीर्षक में प्रयुक्त 'किरात' शब्द भगवान् शिव के लिए प्रयुक्त हुआ है। नायक अर्जुन किरातवेषधारी भगवान् शिव से अमोघ 'पाशुपत अस्त्र' प्राप्त करता है, जो महाकाव्य का फल भी है।

* किरातश्च अर्जुनश्च इति किरातार्जुनौ (द्वन्द्व समास)
* किरातार्जुन + छ "शिशुक्रन्दयमसभ द्वन्द्वेन्द्रजननादिभ्यश्छ:" सूत्र से 'छ' प्रत्यय
* 'आयनेयीनीयिय: फढखछघां प्रत्ययादीनाम्' सूत्र से 'छ' को 'ईय' आदेश होकर किरातार्जुनीय बना। ग्रन्थवाची शब्द होने के कारण नपुंसकलिङ्ग होकर 'किरातार्जुनीयम्' शब्द बना।
* मल्लिनाथ ने 'किरातार्जुनीयम्' की 'घण्टापथ' नामक टीका की है।
* इसका कथानक महाभारत के वनपर्व से लिया गया है।
* कुल 18 सर्ग हैं। 18वें सर्ग में अर्जुन को पाशुपत

115. (A) 116. (B) 117. (A) 118. (C)

अस्त्र की प्राप्ति होती है।

* भारवि दाक्षिणात्य थे। इनका समय छठीं शताब्दी उत्तरार्द्ध या सातवीं शदी का पूर्वार्ध माना जाता है।

* 'स्फुटता न पदैरपाकृता न च न स्वीकृतमर्थगौरवम्'
– किरातार्जुनीयम् (2/27)

अतः विकल्प (C) सही है।

119. 'किरातार्जुनीयम्' के प्रथम सर्ग के आधार पर पाण्डव कहाँ निवास कर रहे थे।
(A) खाण्डववन में (B) अद्वैतवन में
(C) वृन्दावन में (D) द्वैतवन में

व्याख्या – भारवि विरचित 'किरातार्जुनीयम्' के प्रथमसर्ग के आधार पर पाण्डव द्वैतवन में निवास कर रहे थे –

श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीं
प्रजासु वृत्तिं यमयुङ्क्तवेदितुम्।
स वर्णिलिङ्गी विदितः समाययौ
युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचरः।। 1/1

अतः विकल्प (D) सही है।

120. 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः' का अर्थ है –
(A) हितकारी वचन दुर्लभ होता है।
(B) मनोहारि वचन दुर्लभ होता है
(C) हितकारी और प्रियवचन दुर्लभ होता है
(D) दुर्लभ वचन ही हितकारी होता है।

व्याख्या – महाकवि भारवि वनेचर से युधिष्ठिर को लक्षित करके कहलवाते हैं कि –

क्रियासु युक्तैर्नृपचारचक्षुषो
न वञ्चनीयाः प्रभवोऽनुजीविभिः।
अतोऽर्हसि क्षन्तुमसाधुसाधु वा
हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः।।(कि. 1/4)

हे राजन्! करणीय कार्यों में स्वामी द्वारा नियुक्त किये गये सेवकों को चाहिए कि वे गुप्तचररूपी नेत्रों वाले प्रभुओं को धोखा न दें। अतएव मेरे अप्रिय अथवा प्रिय कथन को आप सहन करें क्योंकि 'हितकारिणी के साथ ही साथ मनोहारिणी वाणी भी दुर्लभ होती है।'

अतः विकल्प (C) सही है।

121. ब्रह्मचारी विप्र का वेषधारण करने वाला गुप्तचर था –
(A) यक्ष (B) वनेचर
(C) ब्राह्मण (D) वैश्य

व्याख्या – यक्ष – यक्ष कालिदास कृत 'मेघदूतम्' नामक खण्डकाव्य का नायक है।

(B) **वनेचर –** 'किरातार्जुनीयम्' में भारवि ने उस वर्णी या ब्रह्मचारी के लिङ्ग अर्थात् चिह्न (वेशभूषा) से युक्त व्यक्ति को वर्णिलिङ्गी कहा है। यह वनेचर के लिए प्रयुक्त हुआ है, जो युधिष्ठिर के गुप्तचर के रूप में ब्रह्मचारी के वेष में हस्तिनापुर जाता है।

'स वर्णिलिङ्गी विदितः समाययौ
युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचरः।। (कि. 1/1)

(C) ब्राह्मण – संस्कृत रूपकों में विदूषक पात्र ब्राह्मण होता है।

(D) वैश्य – प्रकरण का नायक ब्राह्मण, मन्त्री अथवा वैश्य होता है।

अतः विकल्प (B) सही है।

122. 'वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः' के अनुसार खलजनों के सम्पर्क की अपेक्षा श्रेष्ठ होता है –
(A) साधुजनों का साथ
(B) साधुजनों का विरोध
(C) दुष्टजनों का साथ
(D) मूर्ख लोगों का विरोध

व्याख्या – किरातार्जुनीयम् में वनेचर युधिष्ठिर को बताता है कि कुटिल प्रवृत्तिवाला दुर्योधन आपको जीत लेने की लालसावश अपनी गुण सम्पत्ति से कीर्ति का विस्तार कर रहा है, क्योंकि ऐश्वर्य का अभ्युत्थान करने वाला, महापुरुषों के साथ किया गया विरोधभाव भी दुष्टों के संसर्ग की अपेक्षा अच्छा है।'

अतः विकल्प (B) सही है।

123. राजाओं का स्वभाव होता है –
(A) दुर्विज्ञेय (B) विज्ञेय
(C) अप्रत्यक्ष (D) प्रत्यक्ष

व्याख्या – वनेचर के लिए दुर्योधन की दुरुह नीतियों को समझना कोई सामान्य बात नहीं है, फिर भी इस दुष्कर कार्य को पूरा करने वाला अहङ्कारहीन वह वनेचर विनम्रतापूर्वक इस शत्रु राजनीति को जानने का श्रेय युधिष्ठिर को देता है।

'निसर्गदुर्बोधमबोधविक्लवाः
क्व भूपतीनां चरितं क्व जन्तवः।
तवानुभावोऽयमवेदि यन्मया
निगूढतत्त्वं नयवर्त्म विद्विषाम्।।(कि. 1/6)

119. (D) 120. (C) 121. (B) 122. (B) 123. (A)

कहाँ स्वाभाविक रूप से बहुत कठिनाई पूर्वक समझ में आने वाला राजाओं का चरित्र और अज्ञान से विकल मुझ जैसे प्राणी कहाँ? फिर भी जो मेरे द्वारा गुप्त रहस्यों वाला नीतिमार्ग जान लिया गया वह निश्चित रूप से आपका प्रभाव ही है। अतः "**निसर्गदुर्बोधं.... भूपतीनां चरितम्** " से स्पष्ट है कि राजाओं का स्वभाव ही दुर्विज्ञेय होता है।

विकल्प (A) सही है।

124. 'प्रविश्य कृष्णासदनं महीभुजा' में कृष्णा का तात्पर्य है –

(A) कृष्ण से (B) द्रौपदी से
(C) कुन्ती से (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या – वार्ता का निवेदन करने के उपरान्त पारितोषिक लेकर वनेचर के चले जाने पर राजा युधिष्ठिर द्वारा द्रौपदी भवन में प्रवेश करके भाइयों के समीप यह वृत्तान्त वर्णित किया गया–

इतीरयित्वा गिरमात्तसत्क्रिये
गतेऽथ पत्यौ वनसन्निवासिनाम्।
प्रविश्य कृष्णासदनं महीभुजा
तदाचचक्षेऽनुजसन्निधौ वचः।। (कि. 1/26)

यहाँ कृष्णासदनम् = द्रौपदी के भवन में, महीभुजा = युधिष्ठिर के द्वारा, प्रविश्य = प्रवेश करके

अतः विकल्प (B) सही है।

125. 'भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः' पंक्ति का भावसाम्य निम्नलिखित में से किसके साथ बैठता है?

(A) जैसी करनी, वैसी भरनी
(B) जैसे के संग तैसा
(C) जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरत देखी तिन तैसी
(D) इनमें से किसी के साथ नहीं

व्याख्या – द्रौपदी युधिष्ठिर को शत्रुओं के प्रति उत्तेजित करते हुए कहती हैं कि –

मूढबुद्धि वाले वे लोग पराभव प्राप्त करते हैं, जो मायावियों के विषय में स्वयं मायावी नहीं होते।

व्रजन्ति वे मूढधियः पराभवं
भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः।। (कि. 1/30)

स्पष्ट है कि इन पंक्तियों का भावसाम्य "जैसे के संग तैसा" से मिलता है, अतः विकल्प (B) सही है।

124. (B) 125. (B)

डिजिटल भारत में डिजिटल संस्कृत

प्रिय संस्कृत मित्रों,

आज पूरी दुनिया में डिजिटलीकरण का दौर चल रहा है, जिसमें भारत भी बढ़-चढ़ कर भूमिका निभा रहा है, मा०प्रधानमन्त्री जी का सपना है कि भारत पूर्णत: डिजिटल भारत हो उसी प्रकार संस्कृतगङ्गा का सपना है कि संस्कृत भी डिजिटलीकरण में पीछे न रहे तो आइये हम सब मिलकर संस्कृत को डिजिटलसंस्कृत बनाने का सङ्कल्प लें-

हमारे डिजिटल उपक्रम-

Sanskritganga online classes

"संस्कृतस्य प्रसाराय"

संस्कृतगङ्गा Online Classes

↳ TGT, PGT, UGC संस्कृत की कक्षायें घर बैठे करें।
↳ संस्कृत प्रतियोगी परीक्षा सम्बन्धी समाधान (समय निर्धारित)
↳ सम्पर्क करें - 7800138404

www.sanskritganga.org

↳ यहाँ आप TGT, PGT, UGC आदि कक्षाओं में प्रवेश हेतु ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं।
↳ हमारे संस्कृतगंगा प्रकाशन की समस्त पुस्तकें आर्डर कर सकते हैं।
↳ संस्कृतगङ्गा के विषय में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

Sanskrit Ganga Channel

YouTube

↳ हमारे YouTube चैनल को Subscribe करें ताकि आपको मिल सके संस्कृत के विशेष ऑडियो, वीडियो
↳ TGT, PGT, UGC संस्कृत से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण वीडियो
↳ महत्त्वपूर्ण सूक्तियों की व्याख्या
↳ अन्य शैक्षिक प्रेरणात्मक ऑडियो, वीडियो आदि।